1807

BIBLIORUM
SACRORUM
TOMUS
TERTIUS.

220.6 Card
1514

איוב : א

CAP. I. א

ille vir erat & :ejus nomen Ijob ,Hus terra in fuit Vir
איש היה בארץ־עוץ איוב שמו והיה האיש ההוא 1
ſunt nati Et .malo à recedens & ,Deum timens & ,rectus & ,perfectus
2 תם וישר וירא אלהים וסר מרע : ויולדו
ſeptem ejus *res pecuaria* fuit Et .filiæ tres & ,filii ſeptem ei
3 לו שבעה בנים ושלוש בנות : ויהי מקנהו שבעת
juga quingenta & ,camelorum millia tria & ,*pecoris* millia
אלפי־צאן ושלשת אלפי גמלים וחמש מאות צמד־
: valde multum famulitium & ,aſinæ quingentæ & ,*bovis*
בקר וחמש מאות אתונות ועבדה רבה מאד
ibant Et .Orientis filiis omnibus *præ magnus* ille vir eratque
4 ויהי האיש ההוא גדול מכל־בני־קדם : והלכו
, mittebant & : ſuo die *vir* domum convivium faciebant & ejus filii
בניו ועשו משתה בית איש יומו ושלחו
bibendum ad & ,veſcendum ad ſuas ſorores tres vocabantque
וקראו לשלשת אחיתיהם לאכל ולשתות
, Jiob mittebat & , convivii dies *circuierunt* cùm ,fuit Et .eis cum
5 עמהם : ויהי כי הקיפו ימי המשתה וישלח איוב
aſcenſiones faciebat aſcendere & ,manè in *manicabat* & ,eos ſanctificabat &
ויקדשם והשכים בבקר והעלה עלות
peccaverunt Forſitan ;Ijob dicebat nam : ipſorum omnium numerum
מספר כלם כי אמר איוב אולי חטאו
Ijob faciebat ſic *:ſuo corde* in Deo *benedixerunt* & , mei filii
בני וברכו אלהים בלבבם ככה יעשה איוב
, Dei filii venerunt & , dies fuit Et .diebus cunctis
6 כל־הימים : ויהי היום ויבאו בני האלהים
.eorum medium in Satan etiam venit & ; *Dominum ſuper ſtandum ad*
להתיצב על־יהוה ויבוא גם־השטן בתוכם :
Satan reſpondit & *? venies* Unde : Satan ad Dominus Dixitque
7 ויאמר יהוה אל־השטן מאין תבא ויען השטן
perambulando à & , *terra in* circumeundo A : dixit & , Domino
את־יהוה ויאמר משוט בארץ ומהתהלך
tuum cor poſuiſti Nunquid : Satan ad Dominus Dixitque *.ea in*
8 בה : ויאמר יהוה אל־השטן השמת לבך
, perfectus vir , terra in *ipſe ſicut* non quòd , Ijob meum ſervum ſuper
על־עבדי איוב כי אין כמהו בארץ איש תם
Satan reſpondit Et ?malo à recedens & , Deum timens ,rectus &
9 וישר ירא אלהים וסר מרע : ויען השטן את־
Nonne ? Deum Ijob *timens* gratis Nunquid :dixit & ,Domino
10 יהוה ויאמר החנם ירא איוב אלהים : הלא
• quod omne circa & ,ejus domum circa & ,eum circa ſepem poſuiſti tu
את שכת בעדו ובעד־ביתו ובעד כל־אשר
erupit ejus *res pecuaria* & ,benedixiſti ejus manuum operi *? circuitu à* ei
לו מסביב מעשה ידיו ברכת ומקנהו פרץ
; ei quod omne *in* tange &,tuam manum nunc mitte verùm Et .terra in
11 בארץ : ואולם שלח־נא ידך וגע בכל־אשר־לו
.tibi *benedixerit tuas facies ſuper non ſi*
אם־לא על־פניך יברכך :

Verſio VULG. LAT.

LIBER JOB.

CAP. I.

1 VIr erat in terra Hus, nomine Job, & erat vir ille ſimplex, & rectus, ac timens Deū,
2 & recedens à malo: Natíque ſunt ei ſeptem filii, et tres filiæ.
3 Et fuit poſſeſſio ejus, ſeptem millia ovium, & tria millia camelorum, quingenta quoque juga boum, et quingentæ aſinæ, ac familia multa nimis: erátque vir ille magnˀ inter omnes
4 Orientales. Et ibant filii ejus, & faciebant conviviū per domos, unuſquiſque in die ſuo. Et mittentes vocabant tres ſorores ſuas, ut comederent & bi-
5 berent cum eis. Cúmque in orbem tranſiſſent dies convivii, mittebat ad eos Job, & ſanctificabat illos, conſurgénſque diluculò offerebat holocauſta pro ſingulis. Dicebat enim; Ne fortè peccaverint filii mei, & benedixerint Deo in cordibus ſuis. Sic faciebat Job
6 cunctis diebus. Quâdam autem die, cùm veniſſent filii Dei ut aſſiſterent coram Domino, affuit inter eos etiam Satan.
7 Cui dixit Dominus, Unde venis? Qui reſpondens, ait; Circuivi terram, & perambulavi
8 eam. Dixítque Dominus ad eum; Numquid conſiderâſti ſervum meum Job, quòd non ſit ei ſimilis in terra, homo ſimplex, & rectus, ac timens Deū,
9 & recedens à malo? Cui reſpondens Satan, ait; Numquid
10 Job fruſtrà timet Deum? Nónne tu vallâſti eum, ac domum ejus, univerſámque ſubſtantiam per circuitum, operibus manuum ejus benedixiſti, & poſſeſſio ejus crevit in terra?
11 Sed extende paululùm manum tuam, & tange cuncta quæ poſſidet, niſi in faciem benedixerit tibi.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΙΩ'Β.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ α'.

1 † (α) Ἄνθρωπός τις ἦν ἐν χώρᾳ τῇ Αὐσίτιδι,
ᾧ ὄνομα Ἰὼβ, † καὶ ἦν ὁ ἄνθρωπος ἐκεῖνος
(β) ἀληθινὸς, ἄμεμπτος, δίκαιος,
θεοσεβὴς, † ἀπεχόμενος ἀπὸ παντὸς πονηροῦ
2 πράγματος. † Ἐγένοντο δὲ αὐτῷ υἱοὶ ἑπτὰ καὶ
3 θυγατέρες (γ) τρεῖς. † Καὶ ἦν τὰ κτήνη αὐτοῦ
πρόβατα ἑπτακισχίλια, † κάμηλοι (δ) τρισχίλιαι,
† ζεύγη βοῶν πεντακόσια, † (ε) θήλειαι
ὄνοι νομάδες πεντακόσιαι, † καὶ ὑπηρεσία πολλὴ
σφόδρα, † καὶ ἔργα μεγάλα ἦν αὐτῷ ἐπὶ τῆς
γῆς, † καὶ ἦν ὁ ἄνθρωπος ἐκεῖνος εὐγενὴς τῶν
4 ἀφ' ἡλίου ἀνατολῶν. † Συμπορευόμενοι δὲ οἱ
υἱοὶ αὐτοῦ πρὸς ἀλλήλους, † (ζ) ἐποιοῦντο πότον
καθ' ἑκάστην ἡμέραν, † συμπαραλαμβάνοντες
ἅμα καὶ τὰς τρεῖς ἀδελφὰς αὐτῶν, † ἐσθίειν καὶ
5 πίνειν μετ' αὐτῶν. † Καὶ ὡς ἂν συνετελέσθησαν
αἱ ἡμέραι τοῦ πότου, † (η) ἀπέστελλεν Ἰὼβ καὶ
ἐκαθάριζεν αὐτοὺς ἀνιστάμενος τὸ πρωῒ,
† (θ) καὶ προσέφερε περὶ αὐτῶν θυσίας, κατὰ τὸν
ἀριθμὸν αὐτῶν, † καὶ μόσχον ἕνα περὶ ἁμαρτίας
(ι) περὶ τῶν ψυχῶν αὐτῶν· † ἔλεγε γὰρ Ἰὼβ, Μή
ποτε οἱ υἱοί μου (κ) ἐν τῇ διανοίᾳ αὐτῶν κακὰ
ἐνενόησαν (λ) πρὸς θεόν. † (μ) οὕτως οὖν
6 ἐποίει Ἰὼβ πάσας τὰς ἡμέρας. † Καὶ ἐγένετο
ὡς ἡ ἡμέρα αὕτη, † (ν) καὶ ἰδοὺ ἦλθον οἱ ἄγγελοι
τοῦ θεοῦ παραστῆναι ἐνώπιον τοῦ κυρίου,
7 † καὶ ὁ διάβολος ἦλθε μετ' (ξ) αὐτῶν. † Καὶ
εἶπεν ὁ κύριος τῷ διαβόλῳ, Πόθεν παραγέγονας; † καὶ ἀποκριθεὶς ὁ διάβολος τῷ κυρίῳ,
εἶπε, † Περιελθὼν τὴν γῆν καὶ ἐμπεριπατήσας
8 τὴν ὑπ' οὐρανὸν πάρειμι. † Καὶ εἶπεν αὐτῷ
(ο) ὁ κύριος, † Προσέσχες τῇ διανοίᾳ σου
κατὰ (π) τοῦ παιδός μου Ἰὼβ; † ὅτι οὐκ ἔστι (ρ)
κατ' αὐτὸν ἐπὶ τῆς γῆς; † ἄνθρωπος ἄμεμπτος,
(σ) ἀληθινὸς, θεοσεβὴς, † ἀπεχόμενος
9 ἀπὸ παντὸς πονηροῦ πράγματος; † Ἀπεκρίθη
δὲ ὁ (τ) διάβολος, καὶ εἶπεν ἐναντίον
τοῦ κυρίου, † Μὴ δωρεὰν Ἰὼβ σέβεται (υ) τὸν κύριον;
10 † Οὐ σὺ περιέφραξας (φ) τὰ ἔξω αὐτοῦ, καὶ τὰ ἔσω τῆς οἰκίας αὐτοῦ, † καὶ τὰ (χ) ἔξω
πάντων τῶν ὄντων (ψ) αὐτοῦ κύκλῳ; † τὰ δὲ ἔργα
τῶν χειρῶν αὐτοῦ εὐλόγησας; † καὶ τὰ κτήνη
11 αὐτοῦ πολλὰ ἐποίησας ἐπὶ τῆς γῆς; † Ἀλλὰ
ἀπόστειλον τὴν χεῖρά σου, καὶ ἅψαι πάντων
ὧν ἔχει· † (∴) ἦ μὴν εἰς πρόσωπόν σε εὐλογήσει.

MS. A. Ἰώβ. (α) Ἄνθρωπος ἦν (β) ἄμεμπτος, δίκαιος, ἀληθινὸς, θεοσεβὴς, (γ) τρεῖς. (δ) τρισχίλιοι, (ε) ὄνοι θήλειαι νομάδες πεντακόσιοι, (ζ) ἐποίουν (η) ἀπέστειλεν (θ) προσέφερέν τε θυσίας περὶ αὐτῶν, (ι) ὑπὲρ τῶν ψυχῶν (κ) ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτῶν (λ) πρὸς τὸν θεόν. (μ) οὕτως ἐποίει πάσας τὰς ἡμέρας αὐτῶν. (ν) καὶ ἦλθον (ξ) αὐτῶν περιελθὼν τὴν γῆν, † καὶ ἐμπεριπατήσας τὴν ὑπ' οὐρανόν. Καὶ εἶπεν ὁ κύριος πρὸς τὸν διάβολον, (ο) ὁ θεὸς, (π) τοῦ θεράποντός μου (ρ) ἄνθρωπος ὅμοιος αὐτῷ τῶν ἐπὶ τῆς γῆς; (σ) δίκαιος, ἀληθινὸς, (τ) διάβολος ἐναντίον κυρίου, Μὴ δωρεὰν (υ) τὸν θεόν; (φ) αὐτοῦ τὰ ἔξω, (χ) ἔξωθεν (ψ) αὐτῷ κυκλόθεν; (∴) εἰ μὴ

JOB.

CAP. I.

HOmo quidam erat in (a)
regione Auſitide, cui nomen Job:
& erat homo ille verax, ſine (b)
crimine, juſtus, colens Deū, abſtinens ab omni mala re. Nati ſunt
autē ei filii ſeptem, & filiæ tres.
Et erant pecora ejus oves ſeptie
mille, cameli ter mill. juga boum quingenta, fœminæ aſin
paſcuales quingentæ: & (c)
miniſterium multum valdè, &
opera magna erant ei ſuper ter
ram: & erat homo ille (d) n
bilis, inter eos qui à Solis ort
Convenientes autem filii eju
adinvicèm, faciebant convivi
per (e) ſingulos dies, aſſument
ſimul & tres ſorores ſuas,
comederent, & biberent cum e
Cúmque (f) conſummati eſſen
dies convivii; mittebat Job, et
purificabat eos exurgens manè,
*& offerebat pro eis victimas ſecundùm numerum eorum, & vitulum * unum pro peccato, pro animabus eorum. Dicebat enim*
Job, Ne (g) fortè filii mei i
mente ſua cogitaverint mala er
ga Deum. Sic igitur faciebat Jo
omnibus diebus. Et factum
ſicut dies hæc; & ecce ve
runt (h) angeli Dei, ut ſta
coram Domino, & diabolus v
nit (i) cum eis. Et dixit Do
nus diabolo, unde ades? &
ſpondens diabolus Domino,
xit; Poſtquàm circuivi terram
& perambulavi eam, quæ ſu
cœlo; adſum. Et dixit ei Do
minus; Attendiſti mente tuâ ſu
per puerum meum Job? quò
non eſt juxta eum in terra? ho
mo (k) ſine crimine, verax, co
lens Deum, abſtinens ab omni ma
la re? Reſpondit autem diabolu
& dixit coram Domino; Nu
gratìs Job (l) colit Dominum
Nónne tu munîſti ea quæ extr
ipſum, et quæ intra domum
& quæ extrà ex omnibus
ſunt in circuitu ejus? opera autem manuum ejus benedixiſti, &
pecora ejus multa feciſti per
terram? Sed mitte manum tuam,
& tange omnia quæ habet: certè
(m) in faciem te benedicet

תרגום TARGUM.

א

גבר הוה בארעא דעוץ איוב שמיה והוה גברא ההוא שלים ותריץ דחיל מן קדם יי ועדי מן ביש : ואתילידו ליה שבע בנין ותלת בנן : והוה ניתיה 1 2 3
שבעא אלפין דען מן אלפא לכל ברא ותלתא אלפין דגמליא מן אלפא לכל ברתא וחמש מאה פדנין דתורין לגרמיה וחמש מאה אתנן לגרם אתתיה
ופולחנא סגיעא לחדא והוה גברא ההוא רב בנכסין מכל בני מדנחא : ואזלין בנוי ועבדין שירותא בית גבר יומיה עד משלם יומי שבעא ומשדרין 4
ומזמנין לתלת אחיתהון למיכל ולמשתי עמהון : והוה כד שלימו יומי שירותא ושדר איוב וזמנינון ומקדים בצפרא ומסק עלון סכומי כולהון ארום אמר 5
איוב דלמא חבון בני וארגיזו קדם יי ברעיוניהון הכדין יעבד איוב כל יומיא : והוה ביומא דדינא בריש שתא ואתו כתי מלאכיא למקום בדינא 6
קדם יי ואתי לחוד סטנא במציעהון : ואמר יי לסטנא מנן את אתי ואתיב סטנא קדם יי ואמר מן שוט בארעא למבדק בעובדי בני אנשא ומן מהלכא בדיה : 7
ואמר יי לסטנא אפשר דשויתא לבך בעבדי איוב ארום לית דכמיה בארעא דעממי גבר שלים ותריץ דחיל מן קדם יי ועדי מן ביש : ואתיב סטנא קדם יי 8 9
ואמר האפשר דיי למגן איוב דחיל מן קדם יי : הלא מימרך עללתא אמטולתיה ואמטול ביתיה ואמטול כל דיליה מן חזור חזור עובדי ידוי ברכתא וניתוי 10
תקיפו בארעא : וברם אושיט כדון מחת ידך וקרב בכל די ליה אין לא באנפי מימרך ירגזונך : 11

Versio SYRIACA

* ܟܬܒܐ ܕܐܝܘܒ *

* ܒܫܡ ܐܒܐ ܘܒܪܐ ܘܪܘܚܐ ܩܕܝܫܐ ܚܕ ܐܠܗܐ ܡܫܪܝܢܢ ܠܡܟܬܒ ܟܬܒܐ ܕܐܝܘܒ ܙܕܝܩܐ *

* ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

1 * ܓܒܪܐ ܚܕ ܐܝܬ ܗܘܐ ܒܐܪܥܐ ܕܥܘܨ. ܐܝܘܒ ܫܡܗ. ܓܒܪ ܗܘܐ ܬܡܝܡ ܘܙܕܝܩ. ܘܕܚܠ ܠܐܠܗܐ ܘܣܛܐ
2 ܡܢ ܒܝܫܬܐ. * ܘܐܬܝܠܕܘ ܠܗ ܫܒܥܐ ܒܢܝܢ. ܘܬܠܬ ܒܢܬܐ. * ܘܗܘܐ ܩܢܝܢܗ ܫܒܥܐ ܐܠܦܝܢ ܥܢܐ.
3 ܘܬܠܬܐ ܐܠܦܝܢ ܓܡܠܐ. ܘܚܡܫ ܡܐܐ ܦܕܢܝܢ ܕܬܘܪܐ. ܘܚܡܫܡܐܐ ܐܬܢܢ. ܘܦܘܠܚܢܐ ܣܓܝܐܐ ܛܒ. ܘܓܒܪܐ
4 ܗܘ ܪܒ ܗܘܐ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܒܢܝ ܡܕܢܚܐ. * ܘܐܙܠܝܢ ܗܘܘ ܒܢܘܗܝ. ܘܥܒܕܝܢ ܡܫܬܝܐ ܒܒܝܬ ܓܒܪ
5 ܒܝܘܡܗ. ܘܡܫܕܪܝܢ ܘܩܪܝܢ ܠܬܠܬ ܐܚܘܬܗܘܢ. ܠܡܐܟܠ ܘܠܡܫܬܐ ܥܡܗܘܢ. * ܘܗܘܐ ܕܟܕ ܡܫܠܡܝܢ ܝܘܡܬ
ܡܫܬܝܐ. ܡܫܕܪ ܐܝܘܒ ܘܡܩܕܫ ܠܗܘܢ. ܘܩܐܡ ܐܝܘܒ ܒܨܦܪܐ. ܘܡܣܩ ܕܒܚܐ ܠܡܢܝܢ ܟܠܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܐܡܪ
6 ܐܝܘܒ ܕܠܡܐ ܚܛܘ ܒܢܝ. ܘܐܪܓܙܘ ܠܐܠܗܐ ܒܠܒܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܥܒܕ ܗܘܐ ܐܝܘܒ ܟܠܗܘܢ ܝܘܡܬܐ. * ܘܗܘܐ
ܝܘܡܐ. ܘܐܬܘ ܒܢܝ ܐܠܗܝܡ ܠܡܩܡ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܐܬܐ ܐܦ ܣܛܢܐ ܒܝܢܬܗܘܢ. ܠܡܩܡ ܩܕܡ ܡܪܝܐ.
7 * ܘܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܣܛܢܐ. ܡܢ ܐܝܟܐ ܐܬܝܬ. ܘܥܢܐ ܣܛܢܐ ܘܐܡܪ ܠܡܪܝܐ. ܚܕܪܬ ܐܪܥܐ ܘܗܠܟܬ ܒܗ.
8 * ܘܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܣܛܢܐ. ܐܢ ܣܡܬ ܠܒܟ ܥܠ ܥܒܕܝ ܐܝܘܒ. ܕܠܝܬ ܐܟܘܬܗ ܒܐܪܥܐ: ܓܒܪܐ ܬܡܝܡ
9 ܘܙܕܝܩ. ܘܕܚܠ ܠܐܠܗܐ. ܘܣܛܐ ܡܢ ܒܝܫܬܐ. * ܘܥܢܐ ܣܛܢܐ ܘܐܡܪ ܠܡܪܝܐ. ܕܠܡܐ ܡܓܢ
10 ܕܚܠ ܐܝܘܒ ܠܐܠܗܐ. * ܠܐ ܐܢܬ ܐܓܢܬ ܥܠܘܗܝ. ܘܥܠ ܒܝܬܗ. ܘܥܠ ܟܠ ܡܕܡ ܕܐܝܬ
11 ܠܗ ܡܢ ܟܠ ܕܘܟ. ܘܥܒܕܐ ܕܐܝܕܘܗܝ ܒܪܟܬ. ܘܩܢܝܢܗ ܣܓܝ ܒܐܪܥܐ. * ܒܪܡ ܫܕܪ ܐܝܕܟ
ܘܩܪܘܒ ܒܟܠܡܕܡ ܕܐܝܬ ܠܗ. ܐܢ ܠܐ ܒܐܦܝܟ ܢܓܕܦ.

Versio ARABICA.

* بسم الآب والابن والروح القدس * وله المجد ابدا *

* كتاب ايوب الصديق *

* الفصل الاول *

1 * كان رجلا واحدا بارض عوص اسمه ايوب * رجل كان صالحا وصديقا وخائفا لله ويبعد من السوء *
2 * وولد له سبع بنين وثلاث بنات * 3 وكان قنيانه سبعة الاف من الغنم * وثلاثة الاف جمل * وخمسمائة
فدان بقر * وخمسمائة اتان * وبقله كثير جدا * وكان ذلك الرجل اكبر من جميع بني المشرق * 4 وكان
يذهبون بنوه فيصنعون متكا في بيت الرجل ليومه * ويبعثون فيدعون ثلاثة اخواتهم ليأكلوا
5 ويشربوا معهم * فكانت اذا عادت ايام المتكاء بعث ايوب فقدسهم * وبكر ايوب في الصباح * فاصعد
ذبائح بعدد كلهم * من اجل انه قال ايوب * لعل بني اخطوا وشتموا الله بقلوبهم * هكذا كان ايوب
6 يصنع كل الايام * فكان ذات يوم واذا بنو الوهيم وقفوا قدام الرب * وجاء ايضا الشيطان بينهم ليقف
7 قدام الرب * فقال الرب للشيطان * من اي مكان اتيت * اجاب الشيطان وقال للرب * طفت في الارض
8 وسلكت فيها * فقال الرب للشيطان * هوذا قد جعلت قلبك على عبدي ايوب * الذي ليس مثله
9 في الارض رجل صالح مستقيم * ويخاف الله * ويبعد من السوء * فاجاب الشيطان وقال للرب * اباطلا يخاف
10 الله ايوب * انت حفظت يدك عليه وعلي بيته وعلي بنيه وعلي كل شي له في كل مكان * واعمال يديه
11 باركت * وقنيانه اكثرت في الارض * ولكن ابسط يدك * فاقرب الي كل شي له * فانه في وجهك يشتمك *

LIBER JOB.

IN NOMINE PATRIS & FILII ET SPIRITUS SANCTI, unius Dei, aggredimur scriptionem libri Job Justi.

VERSIONIS ARABICÆ Translatio Latina.

IN NOMINE PATRIS & FILII ET SPIRITUS SANCTI, cui laus semper.

LIBER JOB JUSTI.

CAP. I.

Erat vir quidam in terra 1
Us, cujus nomen Job: vir
erat rectus ac justus, & ti-
mens Deum, & remotus à
malo: Cui nati sunt septem 2
filii, ac tres filiæ: Et fuit 3
ejus possessio septem millia
ovium, & tria millia came-
lorũ, et quingenta juga bo-
um, & quingentæ asinæ, &
supellectilia multa valdè:
erátque vir ille maximus
omnium filiorum Orientis.
Ibántque filii ejus, & fa- 4
ciebant convivium in domo
uniuscujusque viri in die
suo, & mittebant & voca-
bant tres sorores suas ut e-
derent & biberent secum.
Cúmque reverterentur dies 5
convivii, mittebat Job &
sanctificabat eos; Et sur-
gens Job diluculò, eleva-
bat hostias juxta numerum
omnium eorum: quoniam
dicebat Job, Forte filii mei
peccaverunt, & contume-
liis Deum affecerunt in cor-
dibus suis. Sic Job facie-
bat omnibus diebus. Fuit- 6
que dies cùm venissent filii
Elohim & steterint coram
Domino, venit quoque satan
inter eos ut staret coram
Domino. Dixitque Domi- 7
nus ad satan Unde venisti?
Respondit satan & dixit
Domino, Circuivi terram,
ambulavique in ea. Dixit 8
Dominus satani; En jam
posuisti cor tuum super ser-
vum meum Job, cui non est
similis in terra, vir rectus
ac justus, & timet Deum,
& secedit à malo? Re- 9
spondítque satan & dixit
Domino, num frustrà timet
Deum Job? Tu servâsti 10
manum tuam super eum, &
super domum ejus, & su-
per filios ejus, & super o-
mne quod habet in omni
loco, & opera manuum e-
jus benedixisti, & possessio-
nem ejus multiplicâsti in
terra, Sed extende ma- 11
num tuam, & tange omne
quod habet; certè in fa-
cie tua te conviciis affi-
ciet.

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAPUT. I.

Vir erat in terra *Us* nomine Job, & erat vir ille perfectus & rectus, timens Dominum, & recedens à malo. Et nati sunt ei septem filii, & tres filiæ. Et fuit pos-
sessio ejus septem millia ovium, *mille singulis filiis*, & tria millia camelorum, *mille singulis filiabus*, & quingenta juga boum *sibimetipsi*, & quingentæ asinæ *pro* 1 2 3
uxore sua, & agricultura multa: erátque vir ille dives super omnes filios orientales. Et ibant filii ejus & faciebant convivium per domos, unusquisque in die suo,
donec complerentur dies septem: & mittebant, & *invitabant* tres sorores suas, ut comederent & biberent cum eis. Et cùm *peractæ essent* dies convivii, mittebat Job, 4
& invitabat eos, & surgebat diluculo, & offerebat holocausta juxta numerum omnium eorum; quia dicebat Job, Ne fortè peccaverint filii mei, & *provocaverint* 5
Dominum in *animis* suis: sic faciebat Job cunctis diebus. Et fuit *die* judicii *in principio anni*, & venerunt catervæ angelorum ut starent *in judicio* coram Domino:
& venit etiam Sathan inter eos, ut staret coram Domino. Et dixit Dñs ad Sathanam, Unde venis? & *respondit* Sathan coram Dño, *& dixit*; A *circumeundo* in terra, 6
ad scrutandum opera filiorum hominis, & ambulando per eam. Et dixit Dominus ad Sathanam, Nunquid posuisti cor tuum *in* servum meum Job, quòd non est similis 7
ei in terra *gentium*, vir perfectus & rectus, timens à facie Domini & recedens à malo? Et respondit Sathan coram Domino, & ait, Nunquid gratis timet Job coram 8
Domino? Nonne *verbo tuo* protexisti *circa* eum & *circa* homines domus ejus, & *circa* omnia quæ habet per circuitum? operibus manuum ejus benedixisti, & *pos-* 9
sessiones ejus *creverunt* in terra. Veruntamen extende nunc *plagam manus tua*, & *tange omnia* quæ possidet, *si non ad faciem verbi tui provocabit te.* 10
11

איוב : ב

quod omne Ecce :Satan ad DOMINUS dixit Et
12 וַיֹּאמֶר יְהוָה אֶל־הַשָּׂטָן הִנֵּה כָל־אֲשֶׁר־
: tuam manum mittas ne eum in tantùm : tua manu in *ei*
לוֹ בְּיָדֶךָ רַק אֵלָיו אַל־תִּשְׁלַח יָדֶךָ
; dies fuit Et .DOMINI *faciebus cum* à Satan eſt egreſſus &
13 וַיֵּצֵא הַשָּׂטָן מֵעִם פְּנֵי יְהוָה׃ וַיְהִי הַיּוֹם
ſui fratris domo in vinum *bibentes & comedentes* ejus filiæ & ,ejus filii &
וּבָנָיו וּבְנֹתָיו אֹכְלִים וְשֹׁתִים יַיִן בְּבֵית אֲחִיהֶם
Boves : dixit & , Ijob ad venit nuncius Et .primogeniti
14 הַבְּכוֹר׃ וּמַלְאָךְ בָּא אֶל־אִיּוֹב וַיֹּאמַר הַבָּקָר
.eorum *manus ſuper paſcentes* aſinæ & , *arantes fuerunt*
הָיוּ חֹרְשׁוֹת וְהָאֲתֹנוֹת רֹעוֹת עַל־יְדֵיהֶם׃
percuſſerunt pueros & , eos *cepit* & , *Seba eſt delapſa* Et
15 וַתִּפֹּל שְׁבָא וַתִּקָּחֵם וְאֶת־הַנְּעָרִים הִכּוּ
.tibi *nunciandum ad* ,ego ſolus ,ego tantùm evaſi & ; gladii *os ad*
לְפִי־חָרֶב וָאִמָּלְטָה רַק־אֲנִי לְבַדִּי לְהַגִּיד לָךְ׃
Dei Ignis : dixit & , venit *hic* & , loquente illo Adhuc
16 עוֹד זֶה מְדַבֵּר וְזֶה בָּא וַיֹּאמַר אֵשׁ אֱלֹהִים
: eos *edit* & , pueris in & , *pecore* in eſt ſuccenſus &,cœlo de cecidit
נָפְלָה מִן־הַשָּׁמַיִם וַתִּבְעַר בַּצֹּאן וּבַנְּעָרִים וַתֹּאכְלֵם
illo Adhuc .tibi *indicandum ad* , ego ſolus ,ego tantùm evaſi &
17 וָאִמָּלְטָה רַק־אֲנִי לְבַדִּי לְהַגִּיד לָךְ׃ עוֹד זֶה
tria poſuerunt *Chaſdim* : dixit & , venit *hic* & , loquente
מְדַבֵּר וְזֶה בָּא וַיֹּאמַר כַּשְׂדִּים שָׂמוּ שְׁלֹשָׁה
& , eos tulerunt & , camelos ſuper *vaſtaverunt* & , *capita*
רָאשִׁים וַיִּפְשְׁטוּ עַל־הַגְּמַלִּים וַיִּקָּחוּם וְאֶת־
, ego tantùm evaſi & : gladii *os ad* percuſſerunt pueros
הַנְּעָרִים הִכּוּ לְפִי־חָרֶב וָאִמָּלְטָה רַק־אֲנִי
: dixit & ,venit *hic* & ,loquente illo Adhuc .tibi *indicandum ad*,ego ſolus
18 לְבַדִּי לְהַגִּיד לָךְ׃ עַד זֶה מְדַבֵּר וְזֶה בָּא וַיֹּאמַר
ſui fratris domo in vinum *bibentes & comedentes* tuæ filiæ & , tui Filii
בָּנֶיךָ וּבְנוֹתֶיךָ אֹכְלִים וְשֹׁתִים יַיִן בְּבֵית אֲחִיהֶם
, deſertum trans à venit magnus ventus ecce Et .primogeniti
19 הַבְּכוֹר׃ וְהִנֵּה רוּחַ גְּדוֹלָה בָּאָה מֵעֵבֶר הַמִּדְבָּר
, pueros ſuper ceciditque , domus angulos quatuor *in tetigit* &
וַיִּגַּע בְּאַרְבַּע פִּנּוֹת הַבַּיִת וַיִּפֹּל עַל־הַנְּעָרִים
.tibi *indicandum ad* ,ego ſolus ,ego tantùm evaſi & : ſunt mortui &
וַיָּמוּתוּ וָאִמָּלְטָה רַק־אֲנִי לְבַדִּי לְהַגִּיד לָךְ׃
; ſuum caput totondit & , ſuum pallium ſcidit & , Ijob ſurrexit Et
20 וַיָּקָם אִיּוֹב וַיִּקְרַע אֶת־מְעִלוֹ וַיָּגָז אֶת־רֹאשׁוֹ
ſum egreſſus Nudus : dixit Et ; *ſe incurvavit* &,terram in ſe proſtravit &
21 וַיִּפֹּל אַרְצָה וַיִּשְׁתָּחוּ׃ וַיֹּאמֶר עָרֹם יָצָתִי
DOMINUS : illuc revertar nudus & , meæ matris utero ex
מִבֶּטֶן אִמִּי וְעָרֹם אָשׁוּב שָׁמָּה יְהוָה
.benedictum DOMINI nomen ſit *: cepit* DOMINUS &, dedit
נָתַן וַיהוָה לָקָח יְהִי שֵׁם יְהוָה מְבֹרָךְ׃
inſulſum *dedit* nec , Ijob peccavit non hoc omni In
22 בְּכָל־זֹאת לֹא־חָטָא אִיּוֹב וְלֹא־נָתַן תִּפְלָה
.Deo
לֵאלֹהִים׃

CAP. II. ב

ſuper ſtandum ad , Dei filii venerunt & , dies fuit Et
1 וַיְהִי הַיּוֹם וַיָּבֹאוּ בְּנֵי הָאֱלֹהִים לְהִתְיַצֵּב עַל־
ſtandum ad,eorum medium in Satan etiam venit & ; DOMINUM
יְהוָה וַיָּבוֹא גַם־הַשָּׂטָן בְּתֹכָם לְהִתְיַצֵּב
, Ubi : Satan ad DOMINUS Dixitque .*DOMINUM ſuper*
2 עַל־יְהוָה׃ וַיֹּאמֶר יְהוָה אֶל־הַשָּׂטָן אֵי
: dixit & , DOMINO Satan reſpondit & *? venies* unde
מִזֶּה תָּבֹא וַיַּעַן הַשָּׂטָן אֶת־יְהוָה וַיֹּאמַר
.*ea in* perambulando & , *terra in* circumeundo A
מִשֻּׁט בָּאָרֶץ וּמֵהִתְהַלֵּךְ בָּהּ׃

Verſio VULG. LAT.

12 Dixit ergò Dominus ad Satan; Ecce, univerſa quæ habet, in manu tua ſunt: tantùm in eum ne extendas manum tuam. Egreſſúſque eſt Satan à facie Domini. 13 Cùm autem quâdam die filii & filiæ ejus comederent & biberent vinũ in domo fratris ſui primogeniti, 14 Nuntius venit ad Job, qui diceret; Boves arabant, & aſinæ paſcebantur juxta eos, 15 Et irruerunt Sabæi, tulerúntque omnia, & pueros percuſſerunt gladio, & evaſi ego ſol⁹ ut nuntiarẽ tibi. 16 Cúmque adhuc ille loqueretur, venit alter, & dixit; Ignis Dei cecidit è cœlo, & tactas oves pueróſque conſumpſit, & effugi ego ſolus ut nuntiarem tibi. 17 Sed & illo adhuc loquente, venit alius, & dixit; Chaldæi fecerunt tres turmas, & invaſerunt camelos, & tulerunt eos, necnon & pueros percuſſerunt gladio, & ego fugi ſol⁹ ut nuntiarem tibi. 18 Adhuc loquebatur ille, & ecce alius intravit, & dixit; Filiis tuis & filiabus veſcentibus & bibentibus vinum in domo fratris ſui primogeniti, 19 Repentè ventus vehemens irruit à regione deſerti, & concuſſit quatuor angulos domûs, quæ corruens oppreſſit liberos tuos, & mortui ſunt, et effugi ego ſolus ut nuntiarem tibi. 20 Tunc ſurrexit Job, & ſcidit veſtimenta ſua, & tonſo capite corruens in terram, adoravit, 21 Et dixit; Nudus egreſſus ſum de utero matris meæ, & nudus revertar illuc: Dominus dedit, Dominus abſtulit: ſicut Domino placuit, ita factum eſt: ſit nomen Domini benedictum. 22 In omnibus his non peccavit Job labiis ſuis, neque ſtultum quid contra Deum locutus eſt.

CAP. II.

1 FActum eſt autem, cùm quâdam die veniſſent filii Dei, & ſtarent coram Domino, veniſſet quoque Satan inter eos, & 2 ſtaret in conſpectu ejus, Ut diceret Dominus ad Satan; Unde venis? Qui reſpondens ait; Circuivi terram, & perambulavi eam.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

12 † (ω) Τότε εἶπεν ὁ κύριος τῷ διαβόλῳ, † Ἰδοὺ πάντα ὅσα ἐστὶν αὐτῷ, (α) δίδωμι ἐν τῇ χειρί σου, † ἀλλ' αὐτοῦ μὴ ἅψῃ. † καὶ ἐξῆλθεν ὁ διάβολος (β) παρὰ τοῦ κυρίου. 13 † Καὶ ἦν ὡς ἡ ἡμέρα αὕτη, † οἱ υἱοὶ Ἰὼβ καὶ αἱ θυγατέρες αὐτοῦ (γ) ἔπινον οἶνον † ἐν τῇ οἰκίᾳ τοῦ ἀδελφοῦ αὐτῶν τοῦ πρεσβυτέρου. 14 † Καὶ ἰδοὺ ἄγγελος ἦλθε πρὸς Ἰὼβ, καὶ εἶπεν αὐτῷ, † Τὰ ζεύγη τῶν βοῶν ἠροτρία, † καὶ αἱ θήλειαι 15 ὄνοι ἐβόσκοντο ἐχόμεναι αὐτῶν, † Καὶ ἐλθόντες οἱ αἰχμαλωτεύοντες ᾐχμαλώτευσαν (δ) αὐτάς, † καὶ τοὺς παῖδας (ε) ἀπέκτειναν ἐν μαχαίραις· σωθεὶς δὲ ἐγὼ μόνος ἦλθον τοῦ ἀπαγγεῖλαί σοι. 16 † Ἔτι τούτου λαλοῦντος, ἦλθεν ἕτερος ἄγγελος (ζ), καὶ εἶπε πρὸς Ἰὼβ, † Πῦρ ἔπεσεν ἐκ τοῦ οὐρανοῦ (η), † καὶ κατέκαυσε τὰ πρόβατα, καὶ τοὺς ποιμένας (θ) κατέφαγεν ὁμοίως· † (ι) σωθεὶς δὲ ἐγὼ μόνος 17 ἦλθον τοῦ ἀπαγγεῖλαί σοι. † Ἔτι τούτου λαλοῦντος, (κ) ἦλθεν ἕτερος ἄγγελος, † καὶ εἶπε πρὸς Ἰὼβ, Οἱ ἱππεῖς ἐποίησαν ἡμῖν (λ) κεφαλὰς τρεῖς, καὶ ἐκύκλωσαν τὰς καμήλους, καὶ ᾐχμαλώτευσαν αὐτάς, † καὶ τοὺς παῖδας ἀπέκτειναν ἐν μαχαίραις· † (μ) ἐσώθην δὲ ἐγὼ μόνος, καὶ ἦλθον τοῦ ἀπαγγεῖλαί σοι. 18 † Ἔτι τούτου λαλοῦντος, ἄλλος ἄγγελος ἔρχεται (ν) λέγων τῷ Ἰὼβ, † Τῶν υἱῶν σου καὶ τῶν θυγατέρων σου † ἐσθιόντων καὶ πινόντων (ξ) παρὰ † τῷ ἀδελφῷ αὐτῶν τῷ πρεσβυτέρῳ, 19 † Ἐξαίφνης πνεῦμα μέγα (ο) ἐπῆλθεν ἐκ τῆς ἐρήμου, † καὶ ἥψατο τῶν τεσσάρων γωνιῶν τῆς οἰκίας, † καὶ ἔπεσεν ἡ οἰκία ἐπὶ τὰ παιδία σου, καὶ ἐτελεύτησαν· (π) ἐσώθην δὲ ἐγὼ μόνος, καὶ ἦλθον τοῦ ἀπαγ- 20 γεῖλαί σοι. † Οὕτως (ρ) ἀναστὰς Ἰὼβ ἔρρηξε τὰ ἱμάτια ἑαυτοῦ, † καὶ ἐκείρατο τὴν κόμην τῆς (σ) κεφαλῆς, † καὶ πεσὼν χαμαί, 21 προσεκύνησε (τ), Καὶ εἶπεν, † Αὐτὸς γυμνὸς ἐξῆλθον ἐκ κοιλίας μητρός μου, γυμνὸς καὶ ἀπελεύσομαι ἐκεῖ· † ὁ κύριος ἔδωκεν, ὁ κύριος ἀφείλατο· † ὡς τῷ κυρίῳ ἔδοξεν, (υ) οὕτως ἐγένετο· † εἴη τὸ ὄνομα κυρίου (φ) εὐλογη- 22 μένον. † Ἐν τούτοις πᾶσι τοῖς συμβεβηκόσιν αὐτῷ (χ) οὐδὲν ἥμαρτεν Ἰὼβ ἐναντίον τοῦ κυρίου· † καὶ οὐκ ἔδωκεν ἀφροσύνην τῷ θεῷ.

12 Tunc dixit Dominus diabolo; Ecce, omnia quæcunque ſunt ei, do in manum tuam: ſed ipſum ne tetigeris. Et exivit diabolus à Domino. 13 Et erat ſicut dies hæc, filii Job, & filiæ ejus bibebant vinum in domo fratris ſui ſenioris. 14 Et ecce nuntius venit ad Job, & dixit ei; Juga boum arabant, & fœminæ aſinæ paſcebantur conjunctæ eis, 15 Et (n) venientes prædones prædati ſunt eas, & pueros interfecerunt in gladiis: ſalvatus autem ego ſolus veni ut annuntiarem tibi. 16 Adhuc (o) iſto loquente, venit alius nuntius, & dixit ad Job; Ignis (p) cecidit de cælo, & combuſſit oves, & paſtores devoravit ſimiliter: ſalvatus autem ego ſolus veni ut annuntiarem tibi. 17 Adhuc iſto loquente venit alius nuntius, & dixit ad Job; (q) Equites fecerunt nobis capita tria, & circumdederũt camelos, et ceperunt eas, et pueros occiderunt in gladiis: ſalvatus autem ſum ego ſolus, & veni ut annuntiarem tibi. 18 Adhuc iſto loquente, alius nuntius advenit, dicens Job; Filiis tuis & filiabus tuis manducantibus, & bibentibus apud fratrẽ ſuum ſeniorem, 19 Repentè (r) ſpiritus magnus irruit è deſerto, & tetigit quatuor angulos domûs, & cecidit domus ſuper parvulos tuos, & mortui ſunt: ſalvatus autem ſum ego ſolus, & veni ut annuntiarem tibi. 20 Sic exurgens Job conſcidit (ſ) veſtimenta ſua, et totondit comam (t) capitis, et procumbens humi 21 adoravit, Et dixit; Ipſe nudus egreſſ⁹ ſum de utero matris meæ, nudus et revertar illuc: Dominus dedit, Dominus abſtulit: (u) ſicut Domino placuit; ita factum eſt: ſit nomen Domini (x) bene- 22 dictum. In omnibus his, quæ acciderunt ei, nihil peccavit Job coram Domino: et (y) non dedit inſipientiam Deo.

ΚΕΦ. β'.

1 † Ἐγένετο δὲ ὡς ἡ ἡμέρα αὕτη, † καὶ ἦλθον οἱ ἄγγελοι τοῦ θεοῦ παραστῆναι (α) ἔναντι κυρίου, † καὶ ὁ διάβολος (β) ἦλθεν ἐν μέσῳ αὐτῶν παραστῆναι (γ) ἐναντίον τοῦ κυρίου. 2 † Καὶ εἶπεν ὁ κύριος τῷ διαβόλῳ, Πόθεν σὺ ἔρχῃ; † τότε εἶπεν ὁ διάβολος (δ) ἐνώπιον τοῦ κυρίου, † Διαπορευθεὶς τὴν ὑπ' οὐρανόν, καὶ (ε) ἐμπεριπατήσας τὴν σύμπασαν, πάρειμι.

CAP. II.

1 FActum eſt autem ut dies hæc; et venerunt (a) angeli Dei, ut aſſiſterent coram Domino, et diabolus venit in medio eorum, ut aſſiſteret coram Domino. 2 Et dixit Dominus diabolo, Unde tu advenis? Tunc dixit diabolus in conſpectu Domini; Poſtquàm peragravi eam quæ ſub cælo, et obambulavi univerſam; adſum.

MS.A. (ω) Καὶ εἶπεν (α) ἐν τῇ χειρί σου δέδωκα, ἀλλὰ (β) ἀπὸ προσώπου κυρίου. Καὶ ἐγένετο ὡς ἡ ἡμέρα αὕτη, καὶ οἱ υἱοὶ τοῦ Ἰὼβ (γ) ἤσθιον καὶ ἔπινον (δ) αὐτούς, (ε) ἐπάταξαν ἐν στόματι μαχαίρας, καὶ ἐσώθην ἐγὼ μόνος, καὶ ἦλθον (ζ) πρὸς Ἰὼβ, καὶ εἶπεν αὐτῷ, Πῦρ (η) ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ κατέφαγε τὰ (θ) κατέκαυσεν (ι) καὶ ἐσώθην ἐγὼ μόνος, καὶ ἦλθον (κ) ἕτερος ἄγγελος ἔρχεται πρὸς Ἰὼβ, καὶ λέγει αὐτῷ, Οἱ (λ) ἀρχὰς τρεῖς, (μ) καὶ ἐσώθην ἐγὼ (ν) πρὸς Ἰὼβ, λέγων, Τῶν (ξ) παρὰ * τῷ υἱῷ σου τῷ (ο) ἦλθεν ἀπὸ τῆς (π) καὶ ἐσώθην ἐγὼ (ρ) ἀκούσας Ἰὼβ, ἀναστὰς διέρρηξεν τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, (σ) κεφαλῆς αὐτοῦ, καὶ κατεπάσατο γῆν ἐπὶ τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ, καὶ πεσὼν (τ) τῷ κυρίῳ, Καὶ εἶπεν, (υ) οὕτω καὶ ἐγένετο· (φ) εὐλογημένον εἰς τοὺς αἰῶνας. Ἐν (χ) οὐχ ἥμαρτεν Ἰὼβ οὐδὲν ἔναντι κυρίου, οὐδὲ ἐν τοῖς χείλεσιν αὐτοῦ· καὶ οὐκ

Κεφ. β'. MS.A. (α) ἐνώπιον κυρίου, (β) ἐν μέσῳ αὐτῶν ἦλθεν (γ) ἔναντι κυρίου. (δ) ἔναντι κυρίου, (ε) ἐνπεριπατήσας τὴν γῆν, πάρειμι.

תרגום TARGUM.

12 13 וַאֲמַר יְיָ לְסָטְנָא הָא כָּל דְּאִית לֵיהּ מְסִיר בִּידָךְ לְחוּד לְוָתֵיהּ לָא תוֹשִׁיט יְדָךְ וּנְפַק סָטְנָא בְּהַרְמָנָא מִן קֳדָם יְיָ : וַהֲוָה אִתְחוֹלֵי יוֹמָא שְׁבוּעֲתָא
14 51 וּבְנוֹי וּבְנָתֵיהּ אָכְלִין וְשָׁתִין חַמְרָא בְּבֵית אֲחוּהוֹן בּוּכְרָא : וְאִזְגַּד אֲתָא לְוַת אִיּוֹב וַאֲמַר תּוֹרַיָּא הֲוָאָה רָדְיָן וַאֲתָנָן רָעֲן עַל סִטְרֵיהוֹן : וּנְפַלַת בְּתַכֵּיף
16 לִילִית מַלְכַּת זְמַרְגַּד וּדְבַרְתִּנּוּן וְיַת עוּלֵמַיָּא קְטַלוּ אוֹכְלוּסָהָא לְפִתְגַּם דְּחָרֶב וְאִשְׁתְּזֵבִית לְחוּד אֲנָא בִּלְחוֹדִי לְחַוָּאָה לָךְ : עַד כְּדוּן דֵּין מְמַלֵּל וְדֵין
17 אֲתָא וַאֲמַר אֶשָּׁתָא מִן קֳדָם יְיָ נְפַלַת מִן שְׁמַיָּא וְאוֹקִידַת בְּעָנָא וּבְעוּלֵמַיָּא וְגַמְרְתִּנּוּן וְאִשְׁתְּזֵבִית לְחוּד אֲנָא לִבְלְחוֹדִי לְחַוָּאָה לָךְ : עַד כְּדוּן דֵּין מְמַלֵּל
וְדֵין אֲתָא וַאֲמַר כַּסְדָּאֵי מְנִיאוּ תְּלָתָא רֵישֵׁי אוֹכְלוּסִין וְאִתְפְּשַׁטוּ עַל גַּמְלַיָּא וְדַבְּרְנוּן וְיַת עוּלֵמַיָּא קְטַלוּ לְפִתְגַּם דְּחָרֶב וְאִשְׁתְּזֵבִית לְחוּד אֲנָא לִבְלְחוֹדִי
18 16 לְחַוָּאָה לָךְ : עַד כְּדוּן דֵּין מְמַלֵּל וְדֵין אֲתָא וַאֲמַר בְּנָךְ וּבְנָתָךְ אָכְלִין וְשָׁתִין חֲמַר בְּבֵית אֲחוּהוֹן בּוּכְרָא : וְהָא זַעְפָּא רַבְּתָא אֲתָא מִסִּטְרֵי מַדְבְּרָא
20 וְקָרִיב בְּאַרְבַּע זָוְיָן דְּבֵיתָא וּנְפַל עַל עוּלֵמַיָּא וּמִיתוּ וְאִשְׁתְּזֵבִית לְחוּד אֲנָא לִבְלְחוֹדִי לְחַוָּאָה לָךְ : וְקָם אִיּוֹב וּבְזַע יַת מְעִילֵיהּ וְסַפַּר יַת רֵישֵׁיהּ
21 וּנְפַל עַל אַרְעָא וּסְגִיד : וַאֲמַר עַרְטִילַי נְפָקִית מִן כְּרֵסָא דְּאִמִּי וְעַרְטִילַי אֱתוּב לְבֵית קְבוּרְתָּא מֵימְרָא דַּיְיָ יְהַב וּמֵימְרָא דַּיְיָ וּבֵית דִּינֵיהּ נְסִיב יְהֵי שְׁמָא
22 דַּיְיָ מְבָרַךְ : בְּכָל דָּא לָא חָב אִיּוֹב וְלָא מְסַדַּר מִלֵּי מְחָטֵי קֳדָם יְיָ :

ב

1 2 וַהֲוָה יוֹם דִּינָא רַבָּא יוֹם שְׁבוּק סָרְחָנַיָּא וַאֲתוֹ כִּתֵּי מַלְאֲכַיָּא לְמֵיקוּם בְּדִינָא קֳדָם יְיָ וַאֲתָא לְחוּד סָטְנָא בִּמְצִיעֵיהוֹן לְמֵיקוּם בְּדִינָא קֳדָם יְיָ : וַאֲמַר
יְיָ לְסָטְנָא מְנָן אַתְּ אָתֵי וַאֲתִיב סָטְנָא קֳדָם יְיָ וַאֲמַר מִן לְמֵשׁוּט בְּאַרְעָא לְמִבְדַּק בְּעוֹבָדֵי בְּנֵי נָשָׁא וּמִן מַהְלְכָא בַּהּ :

Verſio SYRIACA.

* ܘܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܣܛܢܐ. ܗܐ ܟܠܡܕܡ ܕܐܝܬ ܠܗ ܡܫܠܡ ܒܐܝܕܝܟ. ܒܠܚܘܕ ܒܓܘܫܡܗ ܠܐ ܬܘܫܛ ܐܝܕܟ. 12
ܘܢܦܩ ܣܛܢܐ ܡܢ ܩܕܡ ܐܦܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. * ܘܗܘܐ ܝܘܡܐ. ܘܒܢܘܗܝ ܘܒܢܬܗ ܕܐܝܘܒ. ܐܟܠܝܢ ܗܘܘ 13
ܘܫܬܝܢ ܚܡܪܐ ܒܒܝܬ ܐܚܘܗܘܢ ܩܫܝܫܐ. * ܘܡܠܐܟܐ ܐܬܐ ܠܘܬ ܐܝܘܒ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܬܘܪܐ ܕܪܕܝܢ ܗܘܘ ܒܦܕܢܐ. ܘܐܬܢܐ 14
ܪܥܝܢ ܗܘܝ ܥܠ ܐܝܕܝܗܘܢ * ܘܢܦܠܘ ܥܠܝܗܘܢ ܫܒܝܐ. ܘܕܒܪܘ ܐܢܘܢ. ܘܠܥܠܝܡܐ ܩܛܠܘ ܒܦܘܡ ܣܝܦܐ. 15
ܘܐܫܬܘܙܒܬ ܐܢܐ ܒܠܚܘܕܝ. ܕܐܚܘܝܟ. * ܘܥܕ ܗܘ ܡܡܠܠ. ܐܬܐ ܐܚܪܢܐ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܢܘܪܐ ܕܐܠܗܐ ܢܦܠܬ 16
ܡܢ ܫܡܝܐ. ܘܐܘܩܕܬ ܒܥܢܐ ܘܒܪܥܘܬܐ. ܘܐܟܠܬ ܐܢܘܢ. ܘܐܫܬܘܙܒܬ ܐܢܐ ܒܠܚܘܕܝ. ܕܐܚܘܝܟ. * ܘܥܕ ܗܘ 17
ܡܡܠܠ. ܐܬܐ ܐܚܪܢܐ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܟܠܕܝܐ ܐܬܥܒܕܘ ܬܠܬܐ ܪܫܝܢ. ܘܢܦܠܘ ܥܠ ܓܡܠܐ. ܘܕܒܪܘ
ܐܢܘܢ. ܘܠܥܠܝܡܐ ܩܛܠܘ ܒܦܘܡ ܣܝܦܐ. ܘܐܫܬܘܙܒܬ ܐܢܐ ܒܠܚܘܕܝ ܕܐܚܘܝܟ. * ܘܥܕ ܗܘ ܡܡܠܠ. ܐܬܐ 18
ܐܚܪܢܐ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܒܢܝܟ ܘܒܢܬܟ ܐܟܠܝܢ ܗܘܘ ܘܫܬܝܢ. ܒܒܝܬ ܐܚܘܗܘܢ ܩܫܝܫܐ. * ܘܗܐ ܪܘܚܐ ܪܒܬܐ 19
ܐܬܬ ܡܢ ܥܒܪܐ ܕܡܕܒܪܐ. ܘܐܬܚܒܛܬ ܒܐܪܒܥ ܙܘܝܬܗ ܕܒܝܬܐ. ܘܢܦܠ ܥܠ ܛܠܝܐ ܘܡܝܬܘ. ܘܐܫܬܘܙܒܬ
ܐܢܐ ܒܠܚܘܕܝ ܕܐܚܘܝܟ. * ܘܩܡ ܐܝܘܒ ܘܨܪܐ ܢܚܬܘܗܝ. ܘܓܙ ܪܫܗ. ܘܢܦܠ ܥܠ ܐܪܥܐ ܘܣܓܕ. * ܘܐܡܪ. 20 21
ܥܪܛܠܝ ܢܦܩܬ ܡܢ ܟܪܣܗ ܕܐܡܝ. ܘܥܪܛܠܝ ܐܗܦܘܟ. ܡܪܝܐ ܝܗܒ. ܘܡܪܝܐ ܢܣܒ. ܢܗܘܐ ܫܡܗ
ܕܡܪܝܐ ܡܒܪܟ. * ܘܒܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ ܠܐ ܚܛܐ ܐܝܘܒ. ܐܦܠܐ ܚܛܐ ܥܠ ܐܠܗܐ. 22

* ܩܦܠܐܘܢ * ܒ *

* ܘܗܘܐ ܝܘܡܐ. ܘܐܬܘ ܒܢܝ ܐܠܗܐ ܠܡܩܡ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܐܬܐ ܐܦ ܣܛܢܐ ܒܝܢܬܗܘܢ ܠܡܩܡ 1
ܩܕܡ ܡܪܝܐ. * ܘܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܣܛܢܐ. ܡܢ ܐܝܟܐ ܐܬܝܬ. ܥܢܐ ܣܛܢܐ. ܘܐܡܪ ܠܡܪܝܐ. 2
ܚܕܪܬ ܐܪܥܐ. ܘܗܠܟܬ ܒܗ.

Verſio ARABICA.

* فقال الرب للشيطان * فان كل شي له مسلما اليك وفي يديك * ولكن عليه لا تبسط يدك * 12
فخرج الشيطان من قدام وجه الرب * وكان يوم بنوا ايوب وبناته ياكلون ويشربون عند اخيهم 13
الاكبر * ورسول اتا ايوب فقال له * البقر كانت تسوق الفدادين * والاتن يرتعين الى جانبها * 14
* فوقع الجيش فساقها * والغلمان قتلوا بالسيف * وفلتت انا وحدي وجيت لاخبرك * وبينما هو يتكلم 15 16
جاء اخر * فقال له * نار من الله سقطت من السماء ووقعت في الغنم والرعيان * فاحرقهم * وفلتت انا
وحدي فجيت لاخبرك * وبينما هو يتكلم فجاء اخر فقال له * الكلدانيون افترقوا ثلاثة فرق * 17
ووقعوا على الجمال واستاقوها * والغلمان قتلوا بالسيف * وفلتت انا وحدي وجيت لاخبرك * وبينما هو 18
يتكلم جاء اخر فقال له * بنوك وبناتك كانوا ياكلون ويشربون عند اخيهم الاكبر * فاذا ريح 19
شديدة جات من اقطار القفر * فانتشبت في اربع زوايا البيت وسقطت على الصبيان * فماتوا * وافلتت
انا وحدي وجيت لاخبرك * فقام ايوب وشق ملحفته * وجز راسه وسقط على الارض ساجدا * فقال * 20 21
عريان خرجت من بطن امي * وعريان اعود * الرب اعطا والرب اخذ * يكون اسم الرب مباركا من الان
والى الدهر * وفي هذا كله لم يخطي ايوب ايضا ولا افترى على الله * 22

* الفصل الثاني *

* فكان ذات يوم فاتوا بنوا الوهيم فوقفوا قدام الرب * وجاء الشيطان ايضا بينهم * ووقف قدام الرب * 1
* فقال الرب للشيطان * من اين اتيت * اجاب الشيطان وقال للرب * طفت في الارض وسلكت فيها * 2

INTERP. ARABICA.

* *Dixitque Dominus ſa-* 12
tani, Omne quod habet,
(a) eſt tibi traditum, &
in manibus tuis, ſed
ſuper eum ne extendas
manum tuam : egreſſúſ-
que eſt ſatan è conſpe-
ctu Domini. Et quo- 13
dam die filii Job, ac fi-
liæ ejus comedebant ac
bibebant apud fratrem
ſuum natu majorem, Et 14
venit nuntius ad Job,
dixitque ei ; Boves du-
cebant juga, & aſinæ
paſcebantur prope eos,
Et irruit turma, & du- 15
xit eos: & famuli occiſi
ſunt gladio, & evaſi e-
go (b) ſolus & veni, ut
tibi nuntiarem : Adhuc 16
eo loquente venit alius et
dixit, Ignis Dei cecidit
de cœlo, & ſuccenſus
eſt in ovibus & paſto-
ribus, & combuſſit eos;
& effugi ego (c) ſolus,
& veni ut tibi nuntia-
rem. Adhuc eo loquen- 17
te venit ad eum alius
& dixit, Chaldæi divi-
ſerunt ſe in tres partes,
& irruerunt in camelos,
duxerúntque eos: & pu-
eri occiſi ſunt gladio :
& evaſi ego (d) ſolus,
venique ut nuntiarem
tibi. Et dum ipſe lo- 18
queretur, venit alius &
dixit ei ; Filii tui & fi-
liæ tuæ edebant & bi-
bebant apud fratrem ſu-
um natu majorem, Et 19
ecce ventus vehemens
venit ex finibus deſerti,
& alliſit quatuor angu-
los domûs, & cecidit
ſuper filios, & mortui
ſunt, & evaſi ego (e) ſo-
lus, & veni ut tibi
nuntiarem. Surrexitque 20
Job, ſciditque pallium
ſuum, & totondit caput
ſuum, ac cecidit ſuper
terram adorans, Et ait, 21
Nudus egreſſus ſum de
ventre matris meæ, &
nudus revertar. Dominus
dedit, & Dominus acce-
pit : Sit nomen Domini
benedictum ex nunc &
uſque in ſeculum. Et 22
in his omnibus non pec-
cavit Job adhuc, neque
blaſphemavit Deum.

CAP. II.

ET quâdam die ve- 1
nerunt filii Elohim, &
ſteterunt coram Domino,
& venit ſathan quoque
inter eos & ſtetit coram
Domino. Dixitque Do- 2
minus ad Sathan, Unde
venis? Reſpondit Sathan,
& dixit Domino, Cir-
cuivi terram & ambula-
vi in ea.

INTERP. SYRIACA.

(a) traditum eſt in mani-
bus tuis, (*b*) ſolus ut tibi
(*c*) ſolus ut tibi (*d*) ſolus
ut tibi (e) ſolus ut tibi.

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et dixit Dominus ad Sathanam : En univerſa quæ habet, *tradita ſunt* in manu tua; tantùm in eum ne extendas manum tuam : & egreſſus eſt Sathanas *cum poteſtate* 12
à facie Domini. Et factum eſt die primo hebdomadis, & filii ejus & filiæ ejus comedebant & bibebant vinum in domo fratris ſui primogeniti. Et nuncius venit ad 13 14
Job, & ait : Boves arabant, & aſinæ paſcebantur juxta eos : Et irruit repentè Lilith regina Zamargad, & tulit eos, & pueros occiderunt exercitus ejus in ore 15
gladii ; & evaſi tantùm ego ſolus ut nunciarem tibi. Adhuc iſte loquebatur, & alius venit, & ait : Ignis cecidit de cœlo à facie Domini, & combuſſit oves & pue- 16
ros & conſumpſit eos; & evaſi tantùm ego ſolus ut nunciarem tibi. Adhuc iſte loquebatur, & alius venit, & ait : Chaldæi conſtituerunt tres turmas, & diffuſi ſunt 17
ſuper camelos & tulerunt eos, & pueros occiderunt in ore gladii ; & evaſi *tantùm* ego ſolus ut nunciarem tibi. Adhuc iſte loquebatur, & alius venit & ait : Filii 18
tui & filiæ tuæ comedebant & bibebant vinum in domo fratris ſui primogeniti : Et ecce turbo magnus venit à latere deſerti, & tetigit quatuor angulos domus, & 19
ruit ſuper pueros, & mortui ſunt : & evaſi *tantùm* ego ſolus ut nunciarem tibi. Et ſurrexit Job, & ſcidit pallium ſuum, & totondit caput ſuum, & cecidit ſuper ter- 20
ram & adoravit. Et dixit : Nudus egreſſus ſum de ventre matris meæ, & nudus revertar illuc ad domum ſepulturæ : verbum Domini dedit, et *verbum Domini & do-* 21
mus judicii ejus abſtulit, ſit nomen Domini benedictum. In omnibus his non peccavit Job, neque *inſtituit* verba blaſphemiæ coram Domino. 22

CAP. II.

ET fuit dies judicii magni dies remiſſionis delictorum, et venerunt catervæ angelorum ut ſtarent in judicio coram Domino, et venit etiam Sathanas in medio eorum, 1
ut ſtaret in judicio coram Domino. Et dixit Dominus ad Sathanan : Unde venis ? et reſpondit Sathanas Domino, et dixit : A diſcurrendo in terram ut inquirerem 2
opera filiorum hominum, et ab ambulando in ea.

איוב : ג

tuum cor poſuiſti Nunquid : Satan ad DOMINUS Dixitque
3 וַיֹּאמֶר יְהוָה אֶל־הַשָּׂטָן הֲשַׂמְתָּ לִבְּךָ
vir , terra in *ipſe ſicut* non quòd , Ijob meum ſervum *ad*
אֶל־עַבְדִּי אִיּוֹב כִּי אֵין כָּמֹהוּ בָּאָרֶץ אִישׁ
ipſe adhuc & ; malo à recedens & , Deum timens , rectus & , perfectus
תָּם וְיָשָׁר יְרֵא אֱלֹהִים וְסָר מֵרָע וְעֹדֶנּוּ
eum *deglutiendum ad* , eum *in* me incitâſti & ; ſuam perfectionem *in tenens*
מַחֲזִיק בְּתֻמָּתוֹ וַתְּסִיתֵנִי בוֹ לְבַלְּעוֹ
Pellem : dixit & , DOMINO Satan reſpondit Et ? gratis
4 חִנָּם׃ וַיַּעַן הַשָּׂטָן אֶת־יְהוָה וַיֹּאמַר עוֹר
. ſua anima pro dabit viro quæ cuncta & , pelle pro
בְּעַד־עוֹר וְכֹל אֲשֶׁר לָאִישׁ יִתֵּן בְּעַד נַפְשׁוֹ׃
, ejus os *ad* tange & , tuam manum nunc *mitte* Veruntamen
5 אוּלָם שְׁלַח־נָא יָדְךָ וְגַע אֶל־עַצְמוֹ
. tibi *benedixerit tuas facies ad non ſi* ; ejus carnem *ad* &
וְאֶל־בְּשָׂרוֹ אִם־לֹא אֶל־פָּנֶיךָ יְבָרְכֶךָּ׃
; tua manu in *ipſe* Ecce : Satan ad DOMINUS Dixitque
6 וַיֹּאמֶר יְהוָה אֶל־הַשָּׂטָן הִנּוֹ בְיָדֶךָ
à Satan eſt egreſſus Et . ſerva ejus animam veruntamen
7 אַךְ אֶת־נַפְשׁוֹ שְׁמֹר׃ וַיֵּצֵא הַשָּׂטָן מֵאֵת
vola à , *mala inflammatione in* Ijob percuſſit & ; DOMINI *faciebus*
פְּנֵי יְהוָה וַיַּךְ אֶת־אִיּוֹב בִּשְׁחִין רָע מִכַּף
ſe ſcalpendum ad , teſtam ſibi tulit Et . ejus verticem ad uſque & , ejus pedis
8 רַגְלוֹ וְעַד קָדְקֳדוֹ׃ וַיִּקַּח־לוֹ חֶרֶשׂ לְהִתְגָּרֵד
: ſua uxor ei dixit Et . cineris medio in *ſedens* ipſe & ; ea *in*
9 בּוֹ וְהוּא יֹשֵׁב בְּתוֹךְ־הָאֵפֶר׃ וַתֹּאמֶר לוֹ אִשְׁתּוֹ
. morere & , Deo *benedic* ? tuam perfectionem *in tenens tu* Adhuc
עֹדְךָ מַחֲזִיק בְּתֻמָּתֶךָ בָּרֵךְ אֱלֹהִים וָמֻת׃
etiam : loqueris *fatuarum unam loqui* Secundùm : eam ad dixit Et
10 וַיֹּאמֶר אֵלֶיהָ כְּדַבֵּר אַחַת הַנְּבָלוֹת תְּדַבֵּרִי גַּם
non malum & , Deo à *ſuſcipiemus* bonum
אֶת־הַטּוֹב נְקַבֵּל מֵאֵת הָאֱלֹהִים וְאֶת־הָרָע לֹא
. ſuis labiis in Ijob peccavit non hoc omni in ? ſuſcipiemus
נְקַבֵּל בְּכָל־זֹאת לֹא־חָטָא אִיּוֹב בִּשְׂפָתָיו׃
, hoc malum omne Ijob *ſocii* tres audierunt Et
11 וַיִּשְׁמְעוּ שְׁלֹשֶׁת רֵעֵי אִיּוֹב אֵת כָּל־הָרָעָה הַזֹּאת
, Themanites Eliphaz , ſuo loco è *vir* venerunt & : *eum ſuper veniens*
הַבָּאָה עָלָיו וַיָּבֹאוּ אִישׁ מִמְּקֹמוֹ אֱלִיפַז הַתֵּימָנִי
ſimul convenerunt & ; Nahamathites Sophar & , Suchites Bildad &
וּבִלְדַּד הַשּׁוּחִי וְצוֹפַר הַנַּעֲמָתִי וַיִּוָּעֲדוּ יַחְדָּו
elevaverunt Et . eum conſolandum ad & , ei condolendum ad *veniendum ad*
12 לָבוֹא לָנוּד־לוֹ וּלְנַחֲמוֹ׃ וַיִּשְׂאוּ
levaverunt & : eum cognoverunt non & , longè à ſuos oculos
אֶת־עֵינֵיהֶם מֵרָחוֹק וְלֹא הִכִּירֻהוּ וַיִּשְׂאוּ
ſparſerunt & , ſuum pallium *vir* ſciderunt & ; fleverunt & , ſuam vocem
קוֹלָם וַיִּבְכּוּ וַיִּקְרְעוּ אִישׁ מְעִלוֹ וַיִּזְרְקוּ
terra in eo cum ſederunt Et . cœlum in ſua capita ſuper pulverem
13 עָפָר עַל־רָאשֵׁיהֶם הַשָּׁמָיְמָה׃ וַיֵּשְׁבוּ אִתּוֹ לָאָרֶץ
eum ad *loquens* non & ; noctibus ſeptem & , diebus ſeptem
שִׁבְעַת יָמִים וְשִׁבְעַת לֵילוֹת וְאֵין־דֹּבֵר אֵלָיו
. valde dolor creverat quòd videbant quia : verbum
דָּבָר כִּי רָאוּ כִּי־גָדַל הַכְּאֵב מְאֹד׃

CAP. III. ג

. ſuo diei maledixit & , ſuum os Ijob aperuit hoc Poſt
1 אַחֲרֵי־כֵן פָּתַח אִיּוֹב אֶת־פִּיהוּ וַיְקַלֵּל אֶת־יוֹמוֹ׃
: *ea in* ſum natus , dies Pereat : dixit & , Ijob reſpondit Et
2 וַיַּעַן אִיּוֹב וַיֹּאמַר׃ יֹאבַד יוֹם אִוָּלֶד בּוֹ
3 , *obſcuritas* ſit illa Dies . vir eſt Conceptus : dixit nox &
4 וְהַלַּיְלָה אָמַר הֹרָה גָבֶר׃ הַיּוֹם הַהוּא יְהִי חֹשֶׁךְ
. *lux* eam ſuper *irradiet* nec ; deſuper Deus illam requirat ne
אַל־יִדְרְשֵׁהוּ אֱלוֹהַּ מִמָּעַל וְאַל־תּוֹפַע עָלָיו נְהָרָה׃

Verſio VULG. LAT.

3 Et dixit Dominus ad Satan;
Numquid conſiderâſti ſervum
meum Job, quòd non ſit ei
ſimilis in terra, vir ſimplex
& rectus, ac timens Deum,
& recedens à malo, & ad-
huc retinens innocentiam?
Tu autem commoviſti me ad-
verſùs eum, ut affligerem eum
4 fruſtrà. Cui reſpondens Sa-
tan ait; Pellem pro pelle,
& cuncta quæ habet homo,
5 dabit pro anima ſua: Alio-
quin mitte manum tuam, &
tange os ejus & carnem, &
tunc videbis quòd in faciem
6 benedicat tibi. Dixit ergò
Dominus ad Satan; Ecce in
manu tua eſt, veruntamen
7 animam illius ſerva. Egreſ-
ſus igitur Satan à facie Do-
mini, percuſſit Job ulcere
peſſimo, à planta pedis uſque
8 ad verticem ejus: Qui teſtâ
ſaniem radebat, ſedens in ſter-
9 quilinio. Dixit autem illi uxor
ſua, Adhuc tu permanes in ſim-
plicitate tua? benedic Deo
10 & morere. Qui ait ad il-
lam, Quaſi una de ſtultis
mulieribus locuta es: ſi bo-
na ſuſcepimus de manu Dei,
mala quarè non ſuſcipiamus?
In omnibus his non pecca-
11 vit Job labiis ſuis. Igitur
audientes tres amici Job o-
mne malum, quod accidiſſet
ei, venerunt ſinguli de loco
ſuo, Eliphaz Themanites, &
Baldad Suhites, & Sophar
Naamathites. Condixerant e-
nim, ut pariter venientes vi-
ſitarent eum, & conſolaren-
12 tur. Cúmque elevâſſent pro-
cul oculos ſuos, non cogno-
verunt eum, & exclamantes
ploraverunt, ſciſſíſque veſti-
bus ſparſerunt pulverem ſu-
per caput ſuum in cœlum.
13 Et ſederunt cum eo in terra
ſeptem diebus & ſeptem no-
ctibus, & nemo loquebatur
ei verbum: videbant enim
dolorem eſſe vehementem.

CAP. III.

1 Poſt hæc aperuit Job os
2 ſuum, & maledixit diei ſuo. Et
3 locutus eſt; Pereat dies in qua
natus ſum, & nox in qua di-
ctum eſt; Conceptus eſt
4 homo. Dies ille vertatur in
tenebras, non requirat eum
Deus deſuper, & non illuſtre-
tur lumine.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

3 † Εἶπε δὲ ὁ κύριος πρὸς τὸν (ζ) διάβο-
λον, † Προσέσχες οὖν τῷ θεράποντί μου
Ἰὼβ, † ὅτι οὐκ ἔστι κατ᾽ αὐτὸν τῶν ἐπὶ τῆς
γῆς; (η) ἄνθρωπος ἄκακος, † ἀληθινὸς,
ἄμεμπτος, θεοσεβὴς, † ἀπεχόμενος ἀπὸ
παντὸς κακοῦ, ἔτι δὲ ἔχεται ἀκακίας· † σὺ
δὲ εἶπας (θ) ὑπάρχοντα αὐτοῦ διακενῆς ἀπο-
4 λέσαι. † Ὑπολαβὼν δὲ ὁ διάβολος εἶπε
τῷ κυρίῳ, Δέρμα ὑπὲρ δέρματος,
† (ι) ὅσα ὑπάρχει ἀνθρώπῳ ὑπὲρ τῆς ψυ-
5 χῆς αὐτοῦ ἐκτίσει. † Οὐ μὴν δὲ ἀλλὰ ἀ-
ποστείλας τὴν χεῖρά σου, ἅψαι τῶν ὀστῶν
αὐτοῦ καὶ τῶν σαρκῶν αὐτοῦ· † (∴) ἦ μὴν εἰς
6 πρόσωπόν σε εὐλογήσει. † Εἶπε δὲ ὁ
κύριος τῷ διαβόλῳ, Ἰδοὺ παραδίδωμί
σοι αὐτόν· † μόνον τὴν ψυχὴν αὐτοῦ (κ)
7 διαφύλαξον. † Ἐξῆλθε δὲ ὁ διάβολος (∗) ἀ-
πὸ τοῦ κυρίου· † καὶ ἔπαισε τὸν Ἰὼβ ἕλκει πο-
8 νηρῷ ἀπὸ ποδῶν ἕως κεφαλῆς. † Καὶ ἔλα-
βεν (λ) ὄστρακον, ἵνα τὸν ἰχῶρα ξύῃ, † καὶ
ἐκάθητο ἐπὶ τῆς κοπρίας ἔξω τῆς πόλεως.
9 † Χρόνου δὲ πολλοῦ προβεβηκότος, εἶπεν
(μ) αὐτῷ ἡ γυνὴ αὐτοῦ, † (ν) Μέχρι τί-
νος καρτερήσεις, λέγων, Ἰδοὺ ἀναμένω
χρόνον ἔτι μικρὸν, προσδεχόμενος τὴν
ἐλπίδα τῆς σωτηρίας μου; † ἰδοὺ γὰρ ἠ-
φάνισταί (ξ) σου τὸ μνημόσυνον ἀπὸ τῆς
γῆς· (ο) † υἱοὶ καὶ θυγατέρες, ἐμῆς κοιλίας
ὠδῖνες καὶ πόνοι, † οὓς εἰς τὸ κενὸν ἐκοπί-
ασα μετὰ μόχθων· † (π) σύ τε αὐτὸς ἐν σα-
πρίᾳ σκωλήκων κάθησαι διανυκτερεύων
αἴθριος, † (ρ) κἀγὼ πλανωμένη καὶ λάτρις
† τόπον ἐκ τόπου (σ) καὶ οἰκίαν ἐξ οἰκίας,
† προσδεχομένη τὸν ἥλιον πότε (τ) δύ-
σεται, † ἵνα ἀναπαύσωμαι (υ) τῶν μόχθων
μου, † καὶ τῶν ὀδυνῶν αἵ με νῦν συνέχουσιν.
† (∗) ἀλλὰ εἰπόν τι ῥῆμα (φ) εἰς κύριον, καὶ τε-
10 λεύτα. † Ὁ δὲ ἐμβλέψας, (χ) εἶπεν αὐ-
τῇ, † Ὥσπερ μία τῶν ἀφρόνων γυναι-
κῶν (ψ) ἐλάλησας. † εἰ τὰ ἀγαθὰ ἐδεξά-
μεθα ἐκ χειρὸς κυρίου, (ω) τὰ κακὰ οὐχ
ὑποίσομεν; † (α) ἐν πᾶσι τούτοις τοῖς συμ-
βεβηκόσιν αὐτῷ (β) οὐδὲν ἥμαρτεν Ἰὼβ
11 τοῖς χείλεσιν ἐναντίον τοῦ θεοῦ. † Ἀκού-
σαντες δὲ οἱ τρεῖς φίλοι αὐτοῦ τὰ κακὰ πάν-
τα τὰ ἐπελθόντα αὐτῷ, † παρεγένοντο
ἕκαστος ἐκ τῆς (γ) ἰδίας χώρας πρὸς
αὐτόν· † Ἐλιφὰζ ὁ Θαιμανῶν βασιλεὺς,
† (δ) Βαλδὰδ ὁ (ε) Σαυχέων τύραννος, † (ζ)
Σωφὰρ Μιναίων βασιλεύς· † καὶ παρεγένοντο
(η) πρὸς αὐτὸν ὁμοθυμαδὸν, τοῦ παρακα-
12 λέσαι καὶ ἐπισκέψασθαι αὐτόν. † Ἰδόντες
δὲ αὐτὸν πόρρωθεν, οὐκ ἐπέγνωσαν· † καὶ
βοήσαντες φωνῇ μεγάλῃ ἔκλαυσαν, † (θ) ῥή-
ξαντες ἕκαστος τὴν ἑαυτοῦ στολὴν, καὶ κατα-
13 πασάμενοι (ι) γῆν, † Παρεκάθισαν αὐτῷ
ἑπτὰ ἡμέρας καὶ ἑπτὰ νύκτας, † καὶ οὐδεὶς
αὐτῶν (κ) ἐλάλησεν· † ἑώρων γὰρ τὴν πλη-
γὴν δεινὴν οὖσαν καὶ μεγάλην σφόδρα.

ΚΕΦ. γ'.

1 † (α) Μετὰ τοῦτο ἤνοιξεν Ἰὼβ τὸ στόμα
αὐτοῦ, † καὶ κατηράσατο τὴν ἡμέραν αὐτοῦ,
2 (β) Λέγων, † Ἀπόλοιτο ἡ ἡμέρα ἐν ᾗ
3 (γ) ἐγεννήθην, † καὶ ἡ νὺξ ἐκείνη, ᾗ εἶπαν,
4 Ἰδοὺ ἄρσεν. † (δ) Ἡ νὺξ ἐκείνη εἴη σκότος, καὶ μὴ ἀναζητήσαι αὐ-
τὴν ὁ κύριος ἄνωθεν, † μηδὲ ἔλθοι εἰς αὐτὴν φέγγος.

Dixit autem Dominus ad diabo- 3
lum, Attendiſti igitur famulo
meo Job? quòd non eſt juxta e-
um de iis qui ſunt ſuper terram,
homo innocens, verax, irrepre-
henſibilis, timens Deum, abſti-
nens ab omni malo: adhuc autem
(b) retinet innocentiam. Tu (c)
verò dixiſti ſubſtantiam ejus fru-
ſtrà perdere. Suſcipiens autem 4
diabolus dixit Domino; Pellem
pro pelle, (d) quæcunque ſunt ho-
mini, pro anima ſua pendet. A- 5
lioquin autem mittens manum
tuam, tange oſſa ejus, & carnes
ejus: certè in faciem te benedicet.
Dixit autem Dominus diabolo, 6
Ecce trado tibi eum: tantummo-
dò (e) animam ejus cuſtodi.
Exivit autem diabolus à Domi- 7
no, & percuſſit Job ulcere ma-
ligno, à pedibus uſque ad caput:
Et ſumpſit teſtam, ut (f) ſaniem 8
raderet, & ſedebat in (g) ſter-
quilinio extra civitatē. (h) Tem- 9
pore autem multo tranſacto, di-
xit ei uxor ejus; Quouſque ſu-
ſtinebis, dicens, Ecce permaneo
tempus adhuc parvum, expectans
ſpem ſalutis meæ? Ecce enim de-
letum eſt memoriale tuum de
terra; filii, & filiæ, mei uteri
dolores, & labores, quos in va-
cuum laboravi cum ærumnis: tu
verò ipſe in putredine vermium
ſedes, pernoctans ſub dio: & e-
go errans, & ancilla, locum (i)
ex loco, & domum è domo, ex-
pectans Solem, quando occidet, ut
requieſcam ab ærumnis meis, &
doloribus, qui me nunc premunt.
Sed dicito (k) aliquod verbum
in Dominum, & morere. Ille ve- 10
rò inſpiciens dixit ei; Tanquam
una (l) inſipientum mulierum
locuta es. Si bona ſuſcepimus
de manu Domini; mala cur non
ſuſtinebimus? In omnibus his,
quæ acciderunt ei, nihil peccavit
Job labiis coram Deo. Cùm au- 11
diſſent autē tres amici ejus, mala
omnia quæ ſupervenerant ei; ad-
venerunt unuſquiſque è propria
regione ad eum: Eliphaz Tæma-
norum rex, Baldad Sauchæorum
tyrannus, Sophar Minæorum rex:
& acceſſerunt ad eum (m) una-
nimiter ad conſolandum, & vi-
ſitandum eum. Cùm vidiſſent 12
autem eum de longè, non agno-
verunt: & clamantes voce (n)
magnâ ploraverunt, ſcindentes
unuſquiſque ſtolam ſuam, & a-
ſpergentes terram, Aſſederunt 13
(o) ei ſeptem dies, & ſeptem no-
ctes, & nemo eorum locutus eſt:
videbant enim plagam eſſe gra-
vem, et magnam valdé.

CAP. III.

Poſt hæc aperuit Job os ſu- 1
um, et maledixit diei ſuæ, Di- 2
cens; Pereat dies in qua natus 3
ſum, et nox illa, (a) quâ dixe-
runt; Ecce maſculus. (b) Nox illa 4
ſit tenebræ, neque requirat eam
Dominus deſuper: nec veniat in
eam lumen:

MS.A. (ζ) σατανᾶν, (η) ἄνθρωπος ὅμοιος αὐτῷ, ἄμεμπτος, δίκαιος, ἀληθινὸς, θεοσεβὴς, (θ) τὰ ὑπάρχοντα αὐτοῦ ἀπολέσαι διακενῆς. (ι) καὶ πάντα ὅσα ὑπάρχει τῷ ἀνθρώπῳ, δώσει ὑπὲρ τῆς ψυχῆς αὐτοῦ. (∴) εἰ μὴ εἰς (κ) διατήρησον. (∗) παρὰ τοῦ (λ) Ἰὼβ ὄστρακον, ἵνα ἀποξέῃ τὸν ἰχῶρα αὐτοῦ, καὶ αὐτὸς ἐκάθητο (μ) τῷ Ἰὼβ ἡ (ν) Μέχρις τίνος (ξ) τὸ μνημόσυνόν σου (ο) υἱοί σου, καὶ θυγατέρες, τῆς ἐμῆς (π) σὺ δὲ (ρ) καὶ ἐγὼ πλανῆτις (σ) περιερχομένη, καὶ (τ) δύσῃ, (υ) τῶν μόχθων, καὶ τῶν περιεχουσῶν με ὀδυνῶν (∗) ἀλλ᾽ (φ) πρὸς (χ) αὐτῇ εἶπεν, Ἵνα τί ὥσπερ (ψ) οὕτως ἐλάλησας. εἰ τὰ μὲν ἀγαθὰ (ω) τὰ δὲ κακὰ (α) ἐν τούτοις πᾶσιν (β) οὐχ ἥμαρτεν Ἰὼβ, οὐδὲ ἐν τοῖς χείλεσιν αὐτοῦ ἐναντίον (γ) ἰδίας πόλεως πρὸς αὐτὸν, τοῦ παρακαλέσαι καὶ ἐπισκέψασθαι αὐτόν. (δ) Βαλδὰς (ε) Αὐχαίων (ζ) καὶ Σωφὰρ ὁ Μιναίων (η) ὁμοθυμαδὸν πρὸς αὐτὸν, (θ) ῥήξαντες δὲ ἕκαστος (ι) γῆν ἐπὶ τὰς κεφαλὰς αὐτῶν, Παρεκάθηντο αὐτῷ (κ) ἐλάλησεν πρὸς αὐτὸν λόγον· ἑώρων γὰρ Κεφ. γ'. MS.A. (α) Καὶ μετὰ ταῦτα (β) Καὶ ἀπεκρίθη Ἰὼβ, λέγων, (γ) ἐγεννήθην ἐν αὐτῇ, καὶ ἡ νὺξ ἐν ᾗ εἶπον, (δ) Ἡ ἡμέρα ἐκείνη

תרגום TARGUM.

ואמר יי לסטנא אפשר דשויתא לבך בעבדי איוב ארום לית דכמוהי בארעא דעממי גבר שלים ותריץ דחיל מן קדם יי ועדי מן ביש ועוד כדון הוא 3
מתקף בשלימותיה וגריתא מימרי ביה לסלעמותיה מגן : ואתיב סטנא קדם יי ואמר אברא אמטול אברא וכל די לבר נש ימסור אמטול 4
נפשיה : ברם אושיט כדון מחת ידך וקריב לגרמיה ולבסריה אין לא באנפי מימרך ירגזנך : ואמר יי לסטנא הא מסיר בידך לחוד ית נפשיה 5 6
נטר : ונפק סטנא בהרמנא מן קדם יי ומחא ית איוב בשיחנא בישא מפרסת רגליה ועד מוקריה : ונסיב ליה פחר לאתקרצפא ביה והוא 7 8
יתב באמצע קטמא : ואמרת ליה דינה אתתיה עד כדון אנת מתקף בשלימותך בריך מימרא דיי ומית : ואמר לה הכמה די ממללן חדא 9 10
מן נשיא דעבדין קלנא בבית אבהתהון הכדין אנת ממללא לחוד ית טבא נקבל מן קדם יי וית בישא לא נקבל בכל דא לא חב איוב
בספותוהי ברם ברעיוניה הרהר במלין : ושמעו תלתא חברי איוב ית כל בישתא הדא דאתת עלוהי [כד חמון ית אילני פרדסיהון די יבישו ולחם 11
סעודתהון אתהפך לבסרא חיא וחמר משתיהון אתהפך לדמא] ואתו גבר מאתריה [ובהא זכותא אתפציו מן אתר מזומן להון בגהנם] אליפז דמן
תימן ובלדד די מן שוח וצופר די מן נעמה ואתחברו כחדא למיתי למנד ליה ולנחמותיה : ווקפו ית עיניהון מן רחיק ולא אשתמודעוהי וארימו 12
קלהון ובכו ובזעו גבר מעיליה ודרקון עפרא על רישהון לצית שמיא : ויתיבו עמיה לארעא שבעא יומין ושבעא לילון ולית די ממלל עמיה 13
פתגם ארום דחמון ארום סגא כיבא לחדא :

ג

מן בתר כדין פתח איוב ית פומיה ולטט ית יומיה : ואתיב איוב ואמר : יהובד יומא דאתילדית ביה [ומלאכא די ממני על עבור] ולילייא די 1 2 3
אמר אתברא גבר : יומא ההוא יהי קבלא לא יתבעניה אלהא מן לעלא ולא תפע עלוי שפרפרא : 4

Verſio SYRIACA.

3 * ܘܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܣܛܢܐ. ܗܐ ܫܡܬ ܠܒܟ ܥܠ ܥܒܕܝ ܐܝܘܒ. ܕܠܝܬ ܐܟܘܬܗ ܒܐܪܥܐ: ܓܒܪܐ ܬܡܝܡܐ ܘܬܪܝܨܐ.
ܘܕܚܠ ܠܐܠܗܐ. ܘܣܢܐ ܡܢ ܒܝܫܬܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܗܫܐ ܡܚܝܠ ܒܬܡܝܡܘܬܗ. ܘܐܢܬ ܐܓܪܬ ܒܝ ܒܗ
4 ܕܐܘܒܕܝܘܗܝ ܡܓܢ. * ܘܥܢܐ ܣܛܢܐ ܘܐܡܪ ܠܡܪܝܐ. ܡܫܟܐ ܚܠܦ ܡܫܟܐ. ܘܟܠܡܕܡ ܕܐܝܬ ܠܒܪܢܫܐ
5 ܢܬܠ ܚܠܦ ܢܦܫܗ. * ܐܠܐ ܦܫܘܛ ܐܝܕܟ ܘܩܪܘܒ ܠܓܪܡܘܗܝ ܐܘ ܠܒܣܪܗ. ܐܢ ܠܐ ܥܠ
6 7 ܐܦܝܟ ܡܓܕܦ. * ܘܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܣܛܢܐ. ܗܐ ܡܫܠܡ ܒܐܝܕܝܟ. ܒܪܡ ܠܢܦܫܗ ܛܪ. * ܘܢܦܩ ܣܛܢܐ ܡܢ ܩܕܡ
8 ܐܦܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܘܡܚܝܗܝ ܠܐܝܘܒ ܒܫܘܚܢܐ ܒܝܫܐ. ܡܢ ܦܣܬܐ ܕܪܓܠܗ. ܘܥܕܡܐ ܠܩܪܩܦܬܗ. * ܘܢܣܒ
9 ܠܗ ܚܪܦܐ ܠܡܓܪܕ ܒܗ. ܘܝܬܒ ܗܘܐ ܥܠ ܩܛܡܐ. * ܘܐܡܪܐ ܠܗ ܐܢܬܬܗ. ܥܕܟ ܡܚܝܠ ܐܢܬ ܒܬܡܝܡܘܬܟ
10 ܐܝܬ ܠܡܣܪܒܘ. ܘܚܕܐ ܠܐܠܗܟ. ܘܡܘܬ. * ܐܡܪ ܠܗ. ܐܝܟ ܕܡܡܠܠܐ ܚܕܐ ܡܢ ܣܟܠܬܐ. ܡܠܠܬܝ. ܛܒܬܐ
ܕܐܠܗܐ ܩܒܠܢ. ܘܒܝܫܬܗ ܠܐ ܢܩܒܠ. ܘܒܟܠܗܝܢ ܗܠܝܢ ܠܐ ܚܛܐ ܐܝܘܒ ܘܐܦܠܐ ܓܕܦ ܠܐ ܠܐܠܗܐ
11 ܒܣܦܘܬܗ. * ܘܫܡܥܘ ܬܠܬܐ ܪܚܡܘܗܝ ܕܐܝܘܒ ܟܠܗܝܢ ܒܝܫܬܐ ܗܠܝܢ ܕܐܬܝ ܥܠܘܗܝ. ܘܐܬܘ ܐܢܫ
ܡܢ ܐܬܪܗ. ܐܠܝܦܙ ܬܝܡܢܝܐ. ܘܒܠܕܕ ܫܘܚܝܐ. ܘܨܘܦܪ ܢܥܡܬܝܐ. ܘܐܙܕܡܢܘ ܐܟܚܕܐ
12 ܠܡܬܐ ܠܡܒܝܐܘ ܠܗ ܘܠܡܒܝܐܘܬܗ. * ܘܐܪܝܡܘ ܥܝܢܝܗܘܢ ܡܢ ܪܘܚܩܐ ܘܠܐ ܐܫܬܘܕܥܘܗܝ. ܘܐܪܝܡܘ ܩܠܗܘܢ
13 ܘܒܟܘ. ܘܨܪܘ ܐܢܫ ܡܪܛܘܛܗ. ܘܙܪܩܘ ܥܦܪܐ ܥܠ ܪܫܝܗܘܢ ܠܘܬ ܫܡܝܐ. * ܘܝܬܒܘ ܥܡܗ ܥܠ ܐܪܥܐ. ܫܒܥܐ
ܝܘܡܝܢ: ܘܫܒܥܐ ܠܠܝܢ. ܘܠܝܬ ܕܐܡܪ ܡܠܬܐ. ܡܛܠ ܕܚܙܘ ܕܟܐܒܐ ܗܘ ܣܓܝ ܠܗ.
* ܩܦܠܐܘܢ * ܓ *
1 * ܘܡܢ ܒܬܪ ܗܠܝܢ ܦܬܚ ܐܝܘܒ ܦܘܡܗ. ܘܠܛ ܝܘܡܐ ܕܐܬܝܠܕ ܒܗ. ܘܥܢܐ
2 3 ܐܝܘܒ ܘܐܡܪ. * ܢܐܒܕ ܝܘܡܐ ܕܐܬܝܠܕܬ ܒܗ. ܘܠܠܝܐ ܕܐܡܪܝܢ ܒܗ ܕܐܬܒܛܢ ܓܒܪܐ. * ܝܘܡܐ ܗܘ ܢܗܘܐ
ܚܫܘܟܐ. ܠܐ ܢܬܒܥܝܘܗܝ ܐܠܗܐ ܡܢ ܠܥܠ. ܘܠܐ ܢܕܢܚ ܥܠܘܗܝ ܢܘܗܪܐ.

Verſio ARABICA.

3 * فقال الرب للسيطان* انك قد وضعت قلبك على عبدي ايوب* الذي ليس مثله في الارض رجلا
صالحا نقيا خايفا لله عادلا من السوء* وحتي الان هو مستمسك بصلاحه* وانت تغريني به لاهلكه باطلا*
4 5 * فاجاب السيطان فقال للرب* جلد مكان جلد* وكل شي للرجل فانه يعطيه فداء نفسه ويفلت* فان
6 كان ليس كذلك فابسط يدك فاقترب الي بشره او الي عظمه* فانه في وجهك يشتمك* فقال الرب
7 للسيطان فانه مسلم في يديك* ولكن فاحتفظ من نفسه* فخرج السيطان من قدام وجه الرب*
8 فضرب ايوب بقرحة سوء من موطاء رجليه وحتي دماغه* فاخذ له خزفا ليجرده به* وجلس على الرماد*
9 10 * فقالت له امراته* حتي الي الان ايضا انت مستمسك بصلاحك* اشتم الاهك ومت* قال لها* مثل
كلام واحدة من السفيهات تكلمت* نعم الله قبلنا* وبلواه لا نقبل* وفي هذا كله لم يخطي ايوب ايضا
11 ولم افتري على الله بشفتيه* وسمع ثلاثة احباب ايوب جميع هذه البلوي الذي جات عليه*
فتواعدوا واتوا اليه كل رجل من بلده* اليفاز التيمي* وبلداد السوحاني* وصوفار النعماني* فتواعدوا
12 جميعا لياتوه* وليسلوا قلبه ويعزوه* فرفعوا اعينهم من بعيد فلم يعرفوه* ورفعوا اصواتهم فبكوا* وشق
13 كل رجل ملحفه* وذروا ترابا على روسهم الي السماء* وجلسوا معه على الارض سبعة ايام وسبعة ليالي*
وليس احد يقول كلمة* لانهم راوا انه قد عظمت ضربته جدا* * الفصل الثالث*
1 2 * ومن بعد ذلك فتح ايوب فاه فلعن يوما ولد فيه وقال* ليهلك اليوم الذي ولدت فيه* والليل
3 الذي قيل فيه انه قد حبل به في ذلك الرجل* ويكون مظلما* لا يطلبه الله من فوق* ولا يشرق عليه النور*

INTERP. ARABICA.

3 * *Dixit Dominus Sathanæ, Appoſuiſtine cor tuum ſuper ſervum meum Job, cui non eſt par in terra, vir rectus & juſtus ac timens Deum, declinans à malo, & adhuc retinens eſt ſuam probitatem? & tu provocas me ut illum perdam immeritò.* 4 *Reſpondit Sathan dicens Domino, Pellis pro pelle, & omne quod habet homo dat pro anima ſua, & liberatur:* 5 *Alioquin, extende manum tuam, & tange carnem ejus aut os ejus, & quidem in facie tua conviciabitur tibi.* 6 *Dixit Dominus Satanæ, Ecce in manibus tuis eſt traditus, ſed ſerva animam ejus.* 7 *Egreſſúſque eſt Satan de coram facie Domini, & percuſſit Job ulcere malo; à planta pedis et uſque ad cerebrum ejus,* 8 *Sumpſitque ſibi teſtam, ut eâ ſe râderet, & ſedebat ſuper cinere,* 9 *Dixitque ei uxor ejus, Adhuc conſtans es in tua innocentia? conviciare Deo tuo & morere,* 10 *Dixit ei, ut loquitur una è ſtultis locuta es; beneficia Dei accepimus, tribulationes autem ejus nónne ſuſcipiemus? Et in his omnib' non peccavit Job, neque Deum blaſphemavit labiis ſuis.* 11 *Perceperúntque tres amici Job omnes has calamitates, quæ venerunt ſuper eum, & condicto tempore venerunt ad eum unuſquiſque de regione ſua; Elifaz Temanites, & Baldad Subites, & Sofar Naamatites: cõdixerũt omnes ut venirent ad eum, & confortarent cor ejus, & conſolarentur eum;* 12 *Levaverúntque de longè oculos ſuos, & non cognoverunt eum, & elevaverunt voces ſuas, & ploràrunt, & unuſquiſque ſcidit ſuum veſtimentũ, & ſparſerunt pulverem ſuper capita ſua verſùs cœlum,* 13 *Sederúntq; cum eo ſuper terram ſeptem diebus et ſeptem noctibus, & nullus dicebat verbum, quia viderunt ejus percuſsionem jam creviſſe valdè.*

CAP. III.

1 *Poſt hoc aperuit Job os ſuum, & maledixit diei in qua natus eſt, (a) dixitque,* 2 *Pereat dies in qua natus ſum, & nox in qua dictum eſt, Jam conceptus eſt ille homo;* 3 *Et (b) ſit tenebroſa, non requirat eã Deus deſuper, nec ei oriatur lux:*

INTERP. SYRIACA.

(a) Et reſpondens Job dixit, (b) dies illa

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

3 Et dixit Dominus ad Sathanan: Nunquid poſuiſti cor tuum ad ſervum meum Job? quia non eſt ei ſimilis in terra populorum; vir perfectus & rectus, timens à facie Domini, & recedens à malo: & adhuc ipſe retinet perfectionem ſuam, & commoviſti verbum meum adverſus eum ut affligeret eum fruſtrà. 4 Et reſpondit Sathanas coram Domino & ait: Membrum pro membro, & omnia quæ habet filius hominis, tradet pro anima ſua. 5 Veruntamen extende nunc plagam manus tuæ, & tange os ejus & *carnem* ejus, ſi non in conſpectu verbi tui irritabit te. 6 Et dixit Dominus ad Sathanan: Ecce traditus eſt in manu tua: veruntamen animam illius ſerva. 7 Et egreſſus eſt Sathanas *cum licentia* à facie Domini, & percuſſit Job ſcabie peſſimâ à planta pedis ejus uſque ad verticem ejus. 8 Et tulit ſibi teſtam ut ſcalperet ſe cum ea: & ipſe ſedebat in medio cineris. 9 Et dixit ei *Dinah* uxor ejus: Adhuc tu retines ſimplicitatem tuam? benedic verbo Domini, & morere. 10 Et dixit ei: Sicut loquitur una de mulieribus quæ operantur ignominiam in domo patris ſui, ſic tu loqueris: tantummodò bonum recipiemus à facie Domini, & malum non ſuſcipiemus? In omnibus his non peccavit Job labris ſuis; *ſed in animo ſuo cogitavit verba.* 11 Et audierunt tres ſocii Job omne malum iſtud quod venerat ſuper eum, *cùm vidiſſent arbores hortorum ſuorum areſactas, & panem cibi ſui converſum in carnem vivam, & vinum potus ſui in ſanguinem:* & venerunt unuſquiſque de loco ſuo, *& ob hoc meritum liberati ſunt à loco deſtinato ipſis in Gehenna;* Eliphaz qui erat de Theman, & Baldad qui erat de Sua, & Sophar qui erat de Naama, & conjuncti ſunt ſimul ut venirent & moverent capita ſua *in* eum, & conſolarentur eum. 12 Et levaverunt oculos ſuos à longè, & cognoverunt eum: & levaverunt vocem ſuam & fleverunt, & ſciderunt unuſquiſque pallium ſuum, & aſperſerunt pulverem ſuper capita ſua verſus cœlum. 13 Et ſederunt cum eo in terra ſeptem diebus & ſeptem noctibus, & nemo loquebatur ei verbum, quia videbant quòd creſcebat dolor vehementer.

CAPUT. III.

1 2 3 Poſt hæc aperuit Job os ſuum, & maledixit diei ſuo. Et *reſpondit* Job & ait: Pereat dies in qua natus ſum, *& Angelus qui præfectus eſt conceptui:* & nox, qua dixit [*quis*,] Creatus eſt vir. 4 Dies illa ſit tenebroſa: Non requirat eam Deus deſuper, neque luſtretur matuti na luce.

איוב : ד

illam ſuper habitet : mortis umbra & , obſcuritas illam Polluant
5 יִגְאָלֻהוּ חֹשֶׁךְ וְצַלְמָוֶת תִּשְׁכָּן־עָלָיו
illam Noctem .diei amari tanquam illam terreant ; nubes
6 עֲנָנָה יְבַעֲתֻהוּ כִּמְרִירֵי יוֹם׃ הַלַּיְלָה הַהוּא
numerum in ; anni diebus in adunetur ne , caligo eam tollat
יִקָּחֵהוּ אֹפֶל אַל־יִחַדְּ בִּימֵי שָׁנָה בְּמִסְפַּר
, ſolitaria ſit illa nox Ecce .veniat non menſium
7 יְרָחִים אַל־יָבֹא׃ הִנֵּה הַלַּיְלָה הַהוּא יְהִי גַלְמוּד
, diei maledicentes eam Execrentur .illa in canticum veniat non
8 אַל־תָּבֹא רְנָנָה בוֹ׃ יִקְּבֻהוּ אֹרְרֵי־יוֹם
:ejus crepuſculi ſtellæ Obtenebrentur .ſuum luctum ſuſcitare parati
9 הָעֲתִידִים עֹרֵר לִוְיָתָן׃ יֶחְשְׁכוּ כּוֹכְבֵי נִשְׁפּוֹ
.auroræ palpebras in videat nec ; non & ,lucem ad expectet
יְקַו־לְאוֹר וָאַיִן וְאַל־יִרְאֶה בְּעַפְעַפֵּי־שָׁחַר׃
dolorem abſcondit & , mei uteri fores concluſit non Quòd
10 כִּי לֹא סָגַר דַּלְתֵי בִטְנִי וַיַּסְתֵּר עָמָל
ventre ex ?ſum mortuus vulva à non quid Ut .meis oculis ab
11 מֵעֵינָי׃ לָמָּה לֹּא מֵרֶחֶם אָמוּת מִבֶּטֶן
cur & ? genua me prævenerunt Cur ? expiravi & ,ſum egreſſus
12 יָצָאתִי וְאֶגְוָע׃ מַדּוּעַ קִדְּמוּנִי בִרְכָּיִם וּמַה־
: quieſcerem & ,jacerem nunc Etenim ? ſugerem quòd , ubera
13 שָּׁדַיִם כִּי אִינָק׃ כִּי־עַתָּה שָׁכַבְתִּי וְאֶשְׁקוֹט
conſulibus & , regibus Cum .mihi eſſet requies tunc , dormirem
14 יָשַׁנְתִּי אָז יָנוּחַ לִי׃ עִם־מְלָכִים וְיֹעֲצֵי
principibus cum Vel .ſibi ſolitudines ædificantibus , terræ
15 אָרֶץ הַבֹּנִים חֳרָבוֹת לָמוֹ׃ אוֹ עִם־שָׂרִים
Vel .argento ſuas domos implentibus , eis aurum
16 זָהָב לָהֶם הַמְמַלְאִים בָּתֵּיהֶם כָּסֶף׃ אוֹ
non parvuli ſicut ; eſſem non , abſconditus abortivus ſicut
כְנֵפֶל טָמוּן לֹא אֶהְיֶה כְּעֹלְלִים לֹא־
requieverunt ibi & ;terrorem ceſſaverunt impii Ibi .lucem viderunt
17 רָאוּ אוֹר׃ שָׁם רְשָׁעִים חָדְלוּ רֹגֶז וְשָׁם יָנוּחוּ
audierunt non ; fuerunt pacati vincti Pariter .robore feſſi
18 יְגִיעֵי כֹחַ׃ יַחַד אֲסִירִים שַׁאֲנָנוּ לֹא שָׁמְעוּ
manumiſſus ſervus & ; idem ibi magnus & Parvus .exactoris vocem
19 קוֹל נֹגֵשׂ׃ קָטֹן וְגָדוֹל שָׁם הוּא וְעֶבֶד חָפְשִׁי
amaris vitu & ; lucem laboranti dedit quid Ut .ſuo domino à
20 מֵאֲדֹנָיו׃ לָמָּה יִתֵּן לְעָמֵל אוֹר וְחַיִּים לְמָרֵי
eam effodiunt & ; ipſa non & , mortem ad Expectantibus ? animo
21 נָפֶשׁ׃ הַמְחַכִּים לַמָּוֶת וְאֵינֶנּוּ וַיַּחְפְּרֻהוּ
cùm exultabunt ;gaudium ad Lætantibus .abſconditis theſauris præ
22 מִמַּטְמוֹנִים׃ הַשְּׂמֵחִים אֱלֵי־גִיל יָשִׂישׂוּ כִּי
texit & ;eſt abſcondita ejus via cujus viro .ſepulchrum invenerint
23 יִמְצְאוּ־קָבֶר׃ לְגֶבֶר אֲשֶׁר־דַּרְכּוֹ נִסְתָּרָה וַיָּסֶךְ
meum ſuſpirium mei panis facies ad Quia ? eum circa Deus
24 אֱלוֹהַּ בַּעֲדוֹ׃ כִּי־לִפְנֵי לַחְמִי אַנְחָתִי
favorem Quia .mei rugitus aqua ſicut ſunt effuſi & ; veniet
25 תָבֹא וַיִּתְּכוּ כַמַּיִם שַׁאֲגֹתָי׃ כִּי פַחַד
Non .mihi veniet ,ſum veritus quod & ; mihi evenit & , expavi
26 פָּחַדְתִּי וַיֶּאֱתָיֵנִי וַאֲשֶׁר יָגֹרְתִּי יָבֹא לִי׃ לֹא
.tremor venit & ,requievi non & , quievi neque ,fui tranquillus
שָׁלַוְתִּי וְלֹא שָׁקַטְתִּי וְלֹא־נָחְתִּי וַיָּבֹא רֹגֶז׃

CAP. IV. ד

verbum tentabimus Nunquid : dixit & , Themanites Eliphaz reſpondit Et
1 וַיַּעַן אֱלִיפַז הַתֵּימָנִי וַיֹּאמַר׃ הֲנִסָּה דָבָר
2 erudiviſti Ecce ? poterit quis ſermones in cohibere & ?laſſaberis , te ad
3 אֵלֶיךָ תִּלְאֶה וַעְצֹר בְּמִלִּין מִי יוּכָל׃ הִנֵּה יִסַּרְתָּ
;tui ſermones erexerunt Labantem .roboraſti laſſas manus & ; multos
4 רַבִּים וְיָדַיִם רָפוֹת תְּחַזֵּק׃ כּוֹשֵׁל יְקִימוּן מִלֶּיךָ
.roboraſti curvantia genua &
וּבִרְכַּיִם כֹּרְעוֹת תְּאַמֵּץ׃

Verſio VULG. LAT.

5 Obſcurent eum tenebræ, & umbra mortis, occupet eum caligo, & involvatur amaritu-
6 dine. Noctem illam tenebroſus turbo poſſideat, non computetur in diebus anni, nec
7 numeretur in menſibus. Sit nox illa ſolitaria, nec laude di-
8 gna: Maledicant ei qui maledicunt diei, qui parati ſunt
9 ſuſcitare Leviathan: Obtenebrentur ſtellæ caligine ejus: expectet lucem & non videat, nec ortum ſurgentis auroræ.
10 Quia non concluſit oſtia ventris, qui portavit me, nec abſtulit mala ab oculis meis.
11 Quarè non in vulva mortuus ſum, egreſſus ex utero non ſta-
12 tim perii? Quarè exceptus genibus? cur lactatus uberi-
13 bus? Nunc enim dormiens ſilerem, & ſomno meo requi-
14 eſcerem: Cum regibus & conſulibus terræ, qui ædificant
15 ſibi ſolitudines: Aut cum principibus, qui poſſident aurum: & replent domos ſuas
16 argento: Aut ſicut abortivum abſconditum non ſubſiſterem, vel qui concepti non vi-
17 derunt lucem. Ibi impii ceſſaverunt à tumultu, & ibi re-
18 quieverunt feſſi robore. Et quondam vincti pariter ſine moleſtia, non audierunt vocem
19 exactoris. Parvus & magnus ibi ſunt, & ſervus liber à do-
20 mino ſuo. Quarè miſero data eſt lux, & vita his, qui in a-
21 maritudine animæ ſunt? Qui exſpectant mortem, & non venit, quaſi effodientes theſau-
22 rum. Gaudéntque vehementer cùm invenerint ſepulchrũ.
23 Viro cujus abſcondita eſt via, & circumdedit eum Deus te-
24 nebris? Antequàm comedam ſuſpiro: & tanquàm inundantes aquæ, ſic rugitus meus:
25 Quia timor, quem timebam, evenit mihi: & quod verebar,
26 accidit. Nónne diſſimulavi? nónne ſilui? nónne quievi? & venit ſuper me indignatio.

CAP. IV.

1 RESpondens autem Eliphaz
2 Themanites, dixit; Si cœperimus loqui tibi, forſitan moleſtè accipies, ſed conceptum ſermonem tenere quis poterit?
3 Ecce docuiſti multos, & ma-
4 nus laſſas roborâſti: Vacillantes confirmaverunt ſermones tui, & genua trementia confortâſti:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

5 † Ἐκλάβοι δὲ αὐτὴν σκότος καὶ σκιὰ θανάτου, † (ε) ἐπέλθοι ἐπ' αὐτὴν γνόφος·
6 † καταραθείη ἡ (ζ) ἡμέρα Καὶ ἡ νὺξ ἐκείνη, † ἀπενέγκοιτο αὐτὴν σκότος· † μὴ εἴη εἰς ἡμέρας (η) ἐνιαυτοῦ, † μὴ δὲ ἀριθ-
7 μηθείη εἰς ἡμέρας μηνῶν. † Ἀλλὰ ἡ νὺξ ἐκείνη εἴη (θ) ὀδύνη, † καὶ μὴ ἔλθοι ἐπ'
8 αὐτὴν εὐφροσύνη, μηδὲ χαρμονή. † Ἀλλὰ καταράσαιτο αὐτὴν ὁ καταρώμενος τὴν ἡμέραν ἐκείνην, † ὁ μέλλων τὸ μέγα κῆτος
9 (ι) χειρώσασθαι. † Σκοτωθείη τὰ ἄστρα τῆς νυκτὸς ἐκείνης· ὑπομείναι, (κ) καὶ εἰς φωτισμὸν μὴ ἔλθοι, † καὶ μὴ ἴδοι Ἑωσφόρον
10 ἀνατέλλοντα. † Ὅτι οὐ συνέκλεισε πύλας γαστρὸς μητρός μου, † ἀπήλλαξε γὰρ ἂν (λ)
11 πόνον ἀπὸ ὀφθαλμῶν μου. † Διατί γὰρ ἐν κοιλίᾳ οὐκ ἐτελεύτησα; † ἐκ γαστρὸς δὲ ἐξῆλ-
12 θον, καὶ οὐκ εὐθὺς ἀπωλόμην; † (μ) Ἱνατί δὲ συνήντησάν μοι (ν) τὰ γόνατα; † ἱνα-
13 τί δὲ μαστοὺς ἐθήλασα (ξ); † Νῦν ἂν κοιμηθεὶς ἡσύχασα, ὑπνώσας δὲ ἀνεπαυσά-
14 μην † Μετὰ βασιλέων (ο) βουλευτῶν γῆς,
15 † οἳ ἐγαυριῶντο ἐπὶ ξίφεσιν, † (π) Ἢ μετὰ ἀρχόντων, ὧν πολὺς ὁ χρυσὸς, οἳ ἔπλη-
16 σαν τοὺς οἴκους αὐτῶν ἀργυρίου· † Ἢ ὥσπερ ἔκτρωμα ἐκπορευόμενον ἐκ μήτρας μητρὸς,
17 † ἢ ὥσπερ νήπιοι οἳ οὐκ εἶδον φῶς. † Ἐκεῖ ἀσεβεῖς (ρ) ἐξέκαυσαν θυμὸν ὀργῆς, † ἐκεῖ ἀνεπαύσαντο κατάκοποι (σ) τῷ σώματι.
18 † Ὁμοθυμαδὸν δὲ (τ) οἱ αἰώνιοι οὐκ ἤκουσαν
19 φωνὴν φορολόγου. † Μικρὸς καὶ μέγας ἐκεῖ ἐστι, καὶ θεράπων (υ) δεδοικὼς τὸν κύριον
20 αὐτοῦ. † Ἱνατί γὰρ δέδοται τοῖς ἐν (φ) πικρίᾳ φῶς; † ζωὴ δὲ ταῖς ἐν ὀδύναις ψυχαῖς,
21 † Οἳ (χ) ἱμείρονται τοῦ θανάτου, καὶ οὐ τυγχάνουσιν, † ἀνορύσσοντες (ψ) ὥσπερ θησαυ-
22 ρούς, † Περιχαρεῖς δὲ ἐγένοντο ἐὰν (ω) κα-
23 τατύχωσι; † Θάνατος ἀνδρὶ ἀνάπαυμα,
24 † Συνέκλεισε γὰρ ὁ θεὸς κατ' αὐτοῦ. † Πρὸ γὰρ τῶν σίτων μου (α) στεναγμὸς ἥκει, δακρύω
25 δὲ ἐγὼ συνεχόμενος φόβῳ. † Φόβος γὰρ (β) ὃν ἐφρόντισα ἦλθέ μοι, † καὶ ὃν ἐδεδοίκειν
26 συνήντησέ μοι. † Οὔτε εἰρήνευσα, οὔτε ἡσύχασα, οὔτε ἀνεπαυσάμην, ἦλθε δέ μοι ὀργή.

5 Sed (c) excipiant illam tenebræ, & umbra mortis: ſuperveniat in eam (d) caligo: (e) maledicta ſit dies
6 Et nox illa: auferant eam tenebræ: (f) non ſit in diebus anni, neque numeretur in diebus
7 menſium: Sed nox illa ſit (g) dolor, & non veniat ſuper eam
8 lætitia, neque (h) gaudium: Sed maledicat ei, qui maledicit diem illam: (i) qui habet magnum
9 cetum opprimere: Obtenebreſcant ſydera noctis illius: (k) permaneat, & in lucem non veniat, & non videat Luciferum exorientem.
10 Quoniam non concluſit portas ventris matris meæ: abſtuliſſet enim utique laborem ab
11 oculis meis. Quarè enim in ventre non obii? ex utero autem
12 exii, & non protinus perii? Ut quid autem occurrerunt mihi genua? quarè autem ubera ſuxi?
13 Nunc utique dormiens quieſcerem; ſomnum autem capiens re-
14 quieſcerem Cum regibus, conſiliariis terræ, qui gloriabantur in
15 gladiis, Aut cum principibus, quibus multum fuit aurum, qui compleverunt domos ſuas argen-
16 to: Aut tanquam abortivum exiens de vulva matris: aut tanquam infantes, qui non viderunt
17 lucem. Ubi impii (l) accenderunt furorem iræ: ibi requie-
18 verunt fatigati corpore: Pariter autem (m) ſeculares non audie-
19 runt vocem (n) exactoris: Puſillus & magnus ibi eſt, & ſervus
20 (o) timens dominum ſuum. Ut quid enim data eſt eis, qui in amaritudine ſunt, lux; & vita animabus, quæ ſunt in doloribus?
21 Qui deſiderant mortem, & non contingit illis; effodientes quaſi
22 theſauros: Læti autem facti ſunt,
23 ſi fuerint conſequuti: Mors viro (p) requies: (q) concluſit e-
24 nim Deus ſuper eum: Ante eſcas quippe meas (r) gemitus adeſt, & (ſ) fleo ego coarctatus timore.
25 Timor enim, quem verebar, venit mihi; et quem metueram, occurrit
26 mihi; Neque in (t) pace fui, neque in ſilentio, neque in requie: venit autem mihi (u) ira.

MS.A. (ε) καὶ ἐπέλθοι (ζ) ἡμέρα ἐκείνη Καὶ (η) ἐνιαυτῶν, (θ) ὀδυνηρά, (ι) χειρώσασθαι, (κ) καὶ μὴ ἔλθοι, καὶ μὴ φωτίσαι, μηδὲ ἴδοι (λ) κόπον (μ) Καὶ ἱνατί συνήντησέν (ν) γόνατα; (ξ) μαστούς μου; Νῦν (ο) καὶ βουλευτῶν (π) Καὶ μετὰ (ρ) ἔπαυσαν (σ) σώματι. (τ) δι' αἰῶνος οὐκέτι ἤκουσαν (υ) οὐ δεδοικὼς (φ) πικρίᾳ ψυχῆς φῶς; (χ) ὁμείρονται θανάτου, (ψ) αὐτὸν ὥσπερ θησαυρόν, (ω) κατατύχωσιν θανάτου. Θάνατος γὰρ ἀνδρὶ ἀνάπαυσις, οὗ ἡ *ὁδὸς ἀπεκρύβη, συνέκλεισεν γὰρ ὁ κύριος κατ' (α) στεναγμός μοι ἥκει, (β) ὃν εὐλαβούμην, ἦλθέν μοι, καὶ ὃν

ΚΕΦ. Δ'.

1 † Ὑπολαβὼν δὲ Ἐλιφὰζ ὁ Θαιμανίτης,
2 λέγει, † Μὴ πολλάκις σοι λελάληται ἐν κόπῳ; † ἰσχὺν δὲ ῥημάτων σου τίς ὑποίσει;
3 † Εἰ γὰρ σὺ ἐνουθέτησας πολλοὺς, † καὶ χεῖρας
4 (α) ἀσθενοῦς παρεκάλεσας, † (β) Ἀσθενοῦντάς τε ἐξανέστησας ῥήμασι, † (γ) γόνασί τε ἀδυνατοῦσι (δ) θάρσος περιέθηκας.

CAP. IV.

1 SUſcipiens autem Eliphas Thema-
2 nites, ait; Num (a) ſæpe tibi ſermo eſt habitus in moleſtia? pondus autem verborum tuorum
3 quis ſuſtinebit? Si enim tu erudiviſti multos, & manus infir-
4 mas conſolatus es, Et eos qui infirmabantur, erexiſti verbis, genibúſque impotentibus fiduciam circumpoſuiſti:

MS.A. (α) ἀσθενούντων (β) Ἀσθενοῦντας δὲ (γ) γόνασιν δὲ (δ) περιέθηκας θάρσος.

תרגום TARGUM.

5 יְטַנְּנוּן יָתֵיהּ חֲשׁוֹכָא וְטוּלֵי מוֹתָא תִּשְׁרֵי עֲלוֹי עֲנָנָא יְבַעֲתוּן יָתֵיהּ הֵיךְ מְרִירֵי יוֹמָא [צַעֲרָא דְאִצְטַעַר יִרְמְיָה עַל חוּרְבַּן בֵּית מַקְדְּשָׁא וְיוֹנָה בְּאִטַּלְקוּתֵיהּ בְּיַמָּא
6 7 דְטוּרְסִים ׃] לֵילְיָא הַהוּא יְדַבְּרִנֵּיהּ קַבְלָא לָא יִתְיַחַד עִם יוֹמִין טָבִין דְּשַׁתָּא בְּמִנְיַן רֵישֵׁי יַרְחַיָּא לָא יֵעוֹל ׃ הָא לֵילְיָא הַהוּא יְהֵי צַעֲרָא לָא תֵעוֹל רְנָנָא
8 9 [דְתַרְנְגוֹל בָּרָא לְמִקַלְּסָא] בֵיהּ ׃ יְלַטְטוּנֵיהּ נְבִיָּיא דִי לָטְטִין יוֹמָא דְפוּרְעָנוּתָא דְאִטִימוּסָא לְאַדְכָּר בְּאִתְעָרוּתְהוֹן אֲלְיוּתְהוֹן ׃ יִתְחַשְׁכוּן כּוֹכְבֵי נֶשֶׁף שֵׁירוּיֵהּ
10 11 יִסְתַּכֵּי לְאַנְהָרָא וְלָא יֶחֱמֵי בְּתַפּוּרֵי קְרִיצְתָּא ׃ אֲרוּם לָא אֲחַד פָּאתֵי דַלְתָּתֵי דְהִנּוּן דָּשֵׁי כְּרֵסִי וְטַמַּר עֲמָלָא מִן עֵינַי ׃ לְמָא לָא מִן רַחְמָא אֱמוּת מִכְּרֵסָא כַּד
12 13 14 נְפָקִית וְאֶתְנַגֵּד ׃ מַה דֵּין אַקְדִּימוּ יָתִי רְכוּבַיָּא וּמָה תְּדַיָּא אֲרוּם אֵינִיק ׃ אֲרוּם הַשְׁתָּא שְׁכִיבִית וְאֶשְׁדּוֹךְ דְּמָכִית בְּכֵן יְנוּחַ לִי ׃ עִם מַלְכַיָּא וְיָעֲטֵי אַרְעָא
15 16 דִּמְשַׁכְלְלִין צַדְיָן לְהוֹן ׃ אוֹ עִם רַבְרְבַיָּא דִּדְהַב לְהוֹן דִּמְמַלְיָן קוּרְטוֹרֵיהוֹן סִימָא ׃ אוֹ הֵיךְ נִפְלָא דִטְמִיעַ בִּמְעַיָּנָא לֵית אֶפְשַׁר דְאֶהֱוֵי הֵיךְ טַלְיָא דְלָא חֲמוֹן
17 18 נְהוֹר אוֹרָיְתָא ׃ תַּמָּן רַשִׁיעַיָּא דַעֲבַדוּ תְּתוּבָא פְּסָקוּ רוּגֵז גֵּהִנָּם וְתַמָּן יְנוּחוּן תַּלְמִידַיָּא דְאִשְׁתַּלְהֵי חֵילְהוֹן בְּאוֹרָיְתָא ׃ כַּחֲדָא אֲסִירֵי מִדְרְשַׁיָּא שְׁלִיאוּ לָא
19 20 שְׁמַעוּ יַנְקֵי בֵּית רַבָּא קָל אֲמוֹרָאָה ׃ יַעֲקֹב דְאִתְקְרֵי דַרְדַּק וְאַבְרָהָם דְאִתְקְרֵי קַשִׁישׁ תַּמָּן הוּא וְיִצְחָק עַבְדָא דַיְיָ דִּנְפַק בַּר חוֹרִין מִן כּוּפְתָּא מִן קִירִיס דִּידֵיהּ ׃
21 22 לְמָה יְהִיב לְלָעֵי נְהוֹרָא וְחַיֵּי לִמְרִירֵי נְפַשׁ ׃ דְּאוֹרְכִין לְמוֹתָא וְלֵיתוֹי וְחָפְסִין לֵיהּ מִן טוּמְעַיָּא ׃ דַּהֲווּ חָדְיָן לְדִיצָא הַשְׁתָּא יֶחְדוּן אֲרוּם יַשְׁכְּחוּן בֵּית קְבוּרְתָּא ׃
23 24 25 כָּל אִלֵּין מְרִירָתָא לִגְבַר דִּי אוֹרְחֵיהּ מְטַמְּרָא וְטַלֵּל אֱלָהָא אַמְטוּלְתֵיהּ ׃ אֲרוּם קֳדָם סְעוּדָתִי תַּנְחָתִי תֵעוֹל וְנָתְזָן הֵיךְ מוֹי אַכְלְיוּתִי ׃ אֲרוּם דְּלוּחָא דְלָחֵית וַאֲתַת
26 לְוָתִי וּמָה דִּדְלָחֵית יֵיתֵי לִי ׃ לָא שְׁלֵיית מִבְּסוּרְתָּא דְתוֹרֵי וְאַתְנָן וְלָא שְׁדוֹכִית מִן בְּסוּרְתָּא דִיקְדְתָּא וְלָא נְיָחִית מִבְּסוּרְתָּא דִגְמַלַּיָּא וַאֲתָא רוּגְזָא
עַל בְּסוּרְתָּא דִי בְנַיָּא ׃

ד

1 2 3 וַאֲתִיב אֱלִיפַז דְּמִן תֵּימָן וַאֲמַר ׃ הַעַל נִסְיוֹן פִּתְגָמָא דִּמְטָא לְוָתָךְ תִּשְׁתַּלְהֵי וּלְמְעַכְּבָא בְּמִלַּיָּא מַן יָכוֹל ׃ הָא כְּסַנְתָּ סַגִּיעִין וִידַיָּא חַלָּשַׁיָּא תַּקֵּפְתָּא ׃
4 דְּתָקֵל בְּחוֹבָא יְקִימוּן מִלָּךְ וְאַרְכּוּבַיָּא דְּחָמְטָן בַּעֲבֵירָא תְּחֵיל ׃

Verſio SYRIACA.

4 5 * ܢܚܦܘܢܝܗܝ ܚܫܘܟܐ ܘܛܠܠܐ ܕܡܘܬܐ. ܢܬܪܟܢ ܥܠܘܗܝ ܥܢܢܐ. ܢܬܥܬܕܘܢܝܗܝ ܡܪ̈ܝܪܝ ܢܦܫܐ. * ܠܠܝܐ ܗܘ
ܢܚܦܘܢܝܗܝ ܥܡܛܢܐ. ܝܘܡܐ ܗܘ ܠܐ ܢܬܚܫܒ ܒܡܢܝܢܐ ܕܝܘܡܬܐ ܕܫܢܬܐ. ܘܒܡܢܝܢܐ ܕܝܪ̈ܚܐ ܠܐ ܢܥܘܠ.
6 7 * ܠܠܝܐ ܗܘ ܢܗܘܐ ܡܚܪܒ .. ܘܠܐ ܬܐܬܐ ܒܗ ܠܬܫܒܘܚܬܐ. * ܢܠܘܛܘܢܝܗܝ ܠܝ̈ܛܝ ܝܘܡܐ. ܕܥܬܝܕܝܢ
8 ܠܡܥܝܪܘ ܠܠܘܝܬܢ.. * ܢܚܫܟܘܢ ܟܘܟ̈ܒܝ ܢܫܦܗ. ܢܣܟܐ ܠܢܘܗܪܐ ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗ. ܘܠܐ ܢܚܙܐ ܙܠܝ̈ܩܝ
9 10 ܫܦܪܐ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܚܕ ܬܪ̈ܥܐ ܕܟܪܣܐ ܕܐܡܝ. ܘܛܫܐ ܥܡܠܐ ܡܢ ܥܝ̈ܢܝ. * ܠܡܢܐ ܠܐ ܡܝܬܬ ܡܢ ܡܪܒܥܐ. ܘܡܢ
11 12 ܟܪܣܐ ܠܡܢܐ ܢܦܩܬ. ܘܐܒܕܬ ܗܘܝܬ .. * ܠܡܢܐ ܩܕܡܘܢܝ ܒܘܪ̈ܟܐ. ܘܠܡܢܐ ܬܕ̈ܝܐ ܕܐܝܢܩ. * ܗܫܐ ܓܝܪ ܫܟܝܒ
13 14 ܗܘܝܬ ܘܫܠܐ. ܘܕܡܟ ܗܘܝܬ ܘܢܝܚ. * ܥܡ ܡܠܟ̈ܐ ܘܥܡ ܡܠܟ̈ܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܕܒܢܝܢ ܠܗܘܢ ܚܘܪ̈ܒܐ. * ܐܘ
15 ܥܡ ܫܠܝ̈ܛܢܐ ܕܐܝܬ ܠܗܘܢ ܕܗܒܐ. ܘܡܠܝܢ ܒ̈ܬܝܗܘܢ ܣܐܡܐ. * ܐܘ ܥܡ ܝܚ̈ܛܐ ܛܡܝܪ̈ܐ. ܐܝܟ ܠܐ ܗܘܝܬ.
16 ܐܝܟ ܥܘ̈ܠܐ ܕܠܐ ܚܙܘ ܢܘܗܪܐ. * ܕܬܡܢ ܪ̈ܫܝܥܐ ܫܠܝܘ ܡܢ ܪܘܓܙܐ. ܘܬܡܢ ܐܬܬܢܝܚܘ ܕܠܐܝܘ
17 18 ܒܚܝ̈ܝܗܘܢ. * ܘܐܣܝܪ̈ܐ ܫܬܝܩܝܢ. ܘܠܐ ܫܡܥܝܢ ܩܠܐ ܕܡܫܥܒܕܢܐ. * ܙܥܘܪܐ ܘܪܒܐ ܬܡܢ ܐܢܘܢ. ܘܥܒܕܐ
19 20 ܕܡܬܚܪܪ ܡܢ ܡܪܗ. * ܠܡܢܐ ܡܬܝܗܒ ܢܘܗܪܐ ܠܡܠܐܐ. ܘܚܝ̈ܐ ܠܡܪ̈ܝܪܝ ܢܦܫܐ. * ܕܡܣܟܝܢ ܠܡܘܬܐ
21 22 ܘܠܝܬ. ܘܚܦܪܝܢ ܠܗ ܐܝܟ ܕܠܣܝܡܬܐ. * ܕܚܕܝܢ ܘܪܘܙܝܢ .. ܟܕ ܡܫܟܚܝܢ ܩܒܪܐ. * ܠܓܒܪܐ
23 ܕܐܘܪܚܗ ܡܛܫܝܐ .. ܘܣܟܪ ܐܠܗܐ ܒܐܦܘܗܝ. * ܡܛܠ ܕܡܢ ܩܕܡ ܠܚܡܝ. ܐܢܚܬܝ ܐܬܬ. ܘܢܒܥܘ
24 25 ܐܝܟ ܡܝܐ ܓܥܬܝ. * ܡܛܠ ܕܕܚܠܬܐ ܕܕܚܠܬ ܐܬܬ ܥܠܝ. ܘܡܢ ܡܕܡ ܕܕܚܠܬ ܡܢܗ ܡܛܝܢܝ. * ܠܐ
ܫܠܝܬ ܘܠܐ ܫܠܝܬ ܘܠܐ ܢܚܬ. ܐܬܐ ܪܘܓܙܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܕ * ܘܥܢܐ ܐܠܝܦܙ ܬܝܡܢܝܐ ܘܐܡܪ.
1 2 * ܐܢ ܪܕܦ ܠܡܡܠܠܘ ܥܡܟ. ܬܠܐܐ. ܘܠܡܟܠܐ ܡܠܝܢ ܡܢܘ ܡܫܟܚ. * ܗܐ ܪܕܝܬ ܣܓܝܐܐ. ܘܐܝܕܝܐ
3 ܕܡܪ̈ܦܝܢ ܐܚܝܠܬ. * ܟܪ̈ܝܗܐ ܠܐ ܢܩܝܡܘܢ ܡܠܝܟ. ܘܒܘܪ̈ܟܐ ܕܪ̈ܦܝܢ ܐܚܝܠܬ.
4

Verſio ARABICA.

4 5 * يغطيه الظلام وضلال الموت * تميل عليه السحاب * يبتغونه مريرو النفس * ذلك الليل يغطيه الغمام
6 ذلك اليوم لا يحسب في عدد ايام السنة * وفي عدد الشهور لا يدخل فيه * ذلك الليل يكون معدوما * ولا
7 8 يدخل فيه التسبحة * يلعنه لاعنو اليوم الذين هم معتادين ان يأتوا لعبادتنا * تظلم كواكب صبحه *
9 10 * حين لم يأخذ ابواب ارحام امي * وستر العمل من عيني * لماذا لم أمت من الرحم * ومن البطن لماذا
11 12 خرجت * هلكت الآن * لماذا ربتني الحجور * ومن الاثداء لماذا استرضعت * لعلني الآن كنت
13 مضطجعا ساكتا ونايما اكون * وساكنا * مع الملوك وسلاطين الارض الذين يبنون لهم الخرايب *
14 15 * أو مع الصالحين الذين لهم الذهب * وملوا بيوتهم من الفضة * أو من الاشياء المدفونة * كيف
16 لم اكن مثل الاطفال الذين لم يروا الضوء * فان هنالك الاشرار سكتوا من ان يغضبوا * وهناك
17 18 يستريحون الذين تعبوا في حياتهم * وجميع الاسراء سكوت * ولا يسمعون صوت المستعبد لهم * الصغير
19 20 والكبير هناك كانوا * والعبد الذي يتحرر وسيده * لماذا يعطي النور المتعوبين * والحياة لم تري نفس
21 * الذين ينتظرون الموت * وليس * يطلبونه مثل الوديعة * يفرحون ويجمعون ويسرون اذا ما وجدوا قبرا *
22 23 * لرجل طريقه مستوره ويجن الله عليه * لان من قدام حزني صعد تنهدي * وانسقاط مثل الماء صياحي *
24 25 * لان المخافة التي حسبت جاءت علي * ومن الذي كنت افزع اتاني * لم اسكت ولم اهدا * ولم استريح
1 2 وأتا الغضب * الفصل الرابع * فأجاب اليفاز التيمي * وقال * ان عدت ان
3 اتكلم معك تضيق * ولامساك الكلام عنك من الذي يستطيع * فاني قد ارضيت كثيرا * وايدي
4 مرضوضة قد قويتها * الضعفاء لا يقيمون كلامك * والركب المرتعدة فانك قد قويتها *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

4 Tegat eam caligo, et umbra mortis, inclinentur ſuper eam nubes, et (c) expectant eam acerbi animo. 5 Illam noctem cooperiat caligo; dies illa non computetur in numero dierum anni, & in numerum menſium non ingrediatur. 6 Nox illa ſit deſolata, nec ingrediatur eam laus. 7 Maledicant ei maledicentes diei, (d) qui ſunt aſſueti venire ad noſtrum obſequium. 8 Obſcurentur ſtellæ matutini (e) ejus. 9 Quia non (f) abſtulit portas vulvæ matris meæ, et non texit laborem ab oculis meis. 10 Quarè non mortuus ſum inde à vulva, & de utero cur egreſſus ſum? periiſſem utinam. 11 Cur educaverunt me (g) ſinus? & cur de uberibus lac ſuxi? 12 Fortè nunc eſſem jacens, et tranquillus, et dormiens, et quietus. 13 Cum regibus, et principibus terræ, qui ſibi ædificant ruinas. 14 Aut cum (h) fœlicibus, quibus eſt aurum, & quorum domus plenæ ſunt argento. 15 Aut (i) rebus humo ſepultis: quomodo non fui ſicut infantes, qui non viderunt lucem? 16 Quoniam ibi iniqui deſinunt irritare, ibique quieſcunt qui laboraverunt in vita ſua; 17 Et omnes captivi ſilentes ſunt; nec audiunt vocem ſubjicientis eos. 18 Parvus & magnus ibi ſunt, & ſervus qui emancipatur (k), & dominus ejus. 19 Cur datur lux feſſis? (l) et vitam cur videt anima eorum? 20 Qui expectant mortem, et non adeſt? expetunt eam quaſi theſaurum. 21 Gaudent et congregantur, & lætantur cùm invenerint ſepulchrum? 22 Viro cujus via eſt abſcondita, & quem Deus protegit? 23 Equidem (m) ante luctum meum aſcendit gemitus meus, & exundat ſicut aqua clamor meus; 24 Quoniam timor quem metui, venit ſuper me, & id à quo timebam evenit mihi: 25 Non ſilui, non fui tranquillus, non quievi; tamen venit indignatio.

CAP. IV.

1 RESpondit Eliphaz Temanitez, et dixit; 2 Si verba ſubtexam tecum, (a) faſtidis; at ſermonem à te continere quis poſſit? 3 (b) Nam ego ſatisfeci multis, & manus quaſſatas (c) ego roboravi. 4 Infirmi non confirmarent verba tua, etiã genua tremula tu quidem corroboraſti,

INTERP. SYRIACA.

(c) horreſcant eam ut amaritudines diei. (d) qui ſunt parati ad excitandũ Leviathan, (e) ejus, expectent lucem, & non adſit illi, neque aſpiciat radios auroræ, (f) clauſit (g) genua? (h) principibus, (i) abortivis abſconditis: (k) à dño ſuo. (l) et vita acerbis ãnimo? (m) ante panem Cap. iv. (a) te angis; (b) Ecce corripuſti multos, (c) corroboraſti.

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Coinquinent eã tenebræ, et umbra mortis; habitent in ea nubes; & conturbent eã quaſi amaritudo diei, *dolor quo affect⁹ eſt Jirmejah ob excidiũ dom⁹ ſanctuarii, et Jonah* 5
cum ejiceretur in mare Tarſenſe. Noctem illam occupent tenebræ; ne computetur in dieb⁹ ſolennib⁹ anni: in numero Kalendarũ menſium non veniat. In nocte illa ſit 6 7
tribulatio, non veniat cantus *galli ſylveſtris ut reſonet* in ea. Maledicant ei *prophetæ* qui maledicunt diei ultionis, *quæ parata eſt*, cùm ſuſcitantur, *commemorare* lamen- 8
tationem ſuam. Obſcurentur ſtellæ noctis caligine ejus, expectet lucem & non adſit, neque videat ſurgentem auroram. Quoniam non concluſit *meat⁹* portarũ *mearum* 9 10
quæ ſunt oſtia ventris *mei*: nec abſcondit laborẽ ob oculis meis. Quare non à vulva mortuus ſum? & quando egreſſus ſum de ventre, defeci? Quare prævenerunt me 11 12
genua; & quare ubera, ut ſugerem? Jam enim cubarẽ et requieſcerẽ: dormirem, tunc quies eſſet mihi, Cum regib⁹ et conſiliariis terræ, qui ædificant ſibi ſolitudines: 13 14
Aut cum principib⁹ quibus eſt aurũ, qui implent curias ſuas argento. Aut ſicut abortivũ quod abſconditũ eſt in ventre, non ſubſiſterem, vel ſicut parvuli qui non vide- 15 16
runt lucem *legis*. Ibi impii qui egerunt pœnitentiã, ceſſaverunt à tumultu gehennæ, & ibi quieverunt diſcipuli quorũ virtus laboravit in lege. Simul vincti in gymnaſiis 17 18
quieverũt: non audierunt parvuli in domo magiſtri vocem doctoris. Jacob qui vocat⁹ eſt parv⁹, et Abraham qui vocat⁹ eſt vetus, ibi ſunt, & Iſaac ſerv⁹ Dñi, qui egreſſus 19
eſt liber ab alligatione à *Domino ſuo*. Quare datur fatigato lux, et vita his qui amaro ſunt animo? Qui expectant mortẽ et non venit; et ſcrutantur eã magis quàm theſauros 20 21
abſconditos. Qui lætabantur in exultatione, modò lætantur cùm invenerint domum ſepulchri. Omnes hæ amaritudines ſunt viro cuj⁹ via abſcondita eſt, & obumbravit 22 23
De⁹ apud eum. Quoniam ante prandiũ meum gemit⁹ me⁹ venit, & fluunt velut aquæ rugit⁹ mei. Quia timor quẽ timebam venit mihi; & quod formidabã, evenit mihi. 24 25
Nonne diſſimulavi, quoniam nunciatum eſt mihi de bobus & aſinis? & nonne dormivi quoniam nunciatum eſt mihi de incendio? & nonne quievi quando 26
nunciatũ eſt mihi de camelis, & venit indignatio quoniam nunciatũ eſt mihi de morte filiorum?

CAP. IV.

ET reſpondit Eliphaz qui erat de Theman & dixit: Nunquid propter tentationem rei quæ ad te pervenit, deficis; & retinere verba quis poterit? Ecce caſtigabas 1 2 3
multos & manus *infirmas* roborabas. Et corruentem in peccatum ſuſcitabant verba tua, & genua labentia in delictum confortabas. 4

איוב : ה

, te ad usque pertigit ; tulisti ægrè & , te ad venit nunc Quia
5 כי עתה תבוא אליך ותלא תגע עדיך
integritas & , tua expectatio ; tua fiducia tuus timor Nonne .es territus &
6 ותבהל : הלא יראתך כסלתך תקותך ותם
ubi & ; periit innocens ille quis nunc Recordare ? tuarum viarum
7 דרכיך : זכר נא מי הוא נקי אבד ואיפה
; iniquitatem arantes vidi Quemadmodum ? fuerint succisi recti
8 ישרים נכחדו : כאשר ראיתי חרשי און
; peribunt Dei mente A .illum metent , laborem seminantes &
9 וזרעי עמל יקצרהו : מנשמת אלוה יאבדו
; leonis vox & , leonis Rugitus .consumentur ejus naris spiritu à &
10 ומרוח אפו יכלו : שאגת אריה וקול שחל
; præda absque periit major Leo .sunt evulsi leunculorum dentes &
11 ושני כפירים נתעו : ליש אבד מבלי טרף
; est dictum furtive verbum me ad Et .se separabunt leonis filii &
12 ובני לביא יתפרדו : ואלי דבר יגנב
visionibus à ramusculis In .eo de pusillum mea auris suscepit &
13 ותקח אזני שמץ מנהו : בשעפים מחזינות
,mihi occurrit Pavor .homines super soporem cadere in , noctis
14 לילה בנפל תרדמה על אנשים : פחד קראני
spiritus Et .fecit pavere meorum ossium multitudinem & ; tremor &
15 ורעדה ורב עצמותי הפחיד : ורוח
.meæ carnis crinem faciet horripilare;transibit meas facies super
על פני יחלף תסמר שערת בשרי :
; meis oculis coram imago : ejus aspectum agnoscam non & , Stabit
16 יעמד ולא אכיר מראהו תמונה לנגד עיני
? justificabitur Deo præ homo Nunquid .audiam vocem & silens murmur
17 דממה וקול אשמע : האנוש מאלוה יצדק
; credet non suis servis in Ecce ? vir mundabitur suo factore præ an
18 אם מעשהו יטהר גבר : הן בעבדיו לא יאמין
domos habitantes Etiam .gloriationem ponet suis angelis in &
19 ובמלאכיו ישים תהלה : אף שכני בתי
facies ad ,eos conterent ; eorum fundamentum pulvere in quorum , luti
חמר אשר בעפר יסודם ידכאום לפני
, ponentem non propter : conterentur vesperam ad manè A .tineæ
20 עש : מבקר לערב יכתו מבלי משים
? eis in eorum dignitas est profecta Nonne .peribunt seculum in
21 לנצח יאבדו : הלא נסע יתרם בם
.sapientia in non & ,morientur
ימותו ולא בחכמה :

CAP. V. ה

.obtueberis sanctis de quem ad & : tibi respondens est si ,nunc Clama
1 קרא נא היש עונך ואל מי מקדשים תפנה :
.invidia interficiet ardelionem & ; iracundia occidet stultum Quia
2 כי לאויל יהרג כעש ופתה תמית קנאה :
ejus habitaculo sum imprecatus & ,radicantem stultum vidi Ego
3 אני ראיתי אויל משריש ואקוב נוהו
,porta in conterentur & ; salute à ejus filii Elongabuntur .statim
4 פתאם : ירחקו בניו מישע וידכאו בשער
spinis de & ,comedet famelicus ejus messem Cujus .eruens non &
5 ואין מציל : אשר קצירו רעב יאכל ואל מצנים
egredietur non Quia .eorum virtutem sitibundi absorbebit & ,eam capiet
6 יקחהו ושאף צמים חילם : כי לא יצא
Quia .molestia germinabit non humo de & : iniquitas pulvere de
7 מעפר און ומאדמה לא יצמח עמל : כי
.volatum elevabunt prunæ filii & : est natus laborem ad homo
אדם לעמל יולד ובני רשף יגביהו עוף :
ponam Deum ad & ; Deum ad quæram ego Veruntamen
8 אולם אני אדרש אל אל ואל אלהים אשים
.meum eloquium
דברתי :

Versio VULG. LAT.

5 Nunc autem venit super te plaga, & defecisti : tetigit te, &
6 conturbatus es. Ubi est timor
tuus, fortitudo tua, patientia tua, & perfectio viarum
7 tuarum ? Recordare, obsecro
te, quis unquam innocens periit ? aut quando recti deleti
8 sunt ? Quin potiùs vidi eos,
qui operantur iniquitatem, &
seminant dolores, & metunt
9 eos, Flante Deo periisse, &
spiritu iræ ejus esse consum-
10 ptos : Rugitus leonis, & vox
leænæ, & dentes catulorum
11 leonum contriti sunt. Tigris
periit eò quòd non haberet
prædam, & catuli leonis dissi-
12 pati sunt. Porrò ad me dictum
est verbum absconditum, &
quasi furtivè suscepit auris
13 mea venas susurri ejus. In horrore visionis nocturnæ, quando solet sopor occupare homi-
14 nes, Pavor tenuit me, & tremor, & omnia ossa mea per-
15 territa sunt : Et cùm spiritus
me præsente transiret, inhor-
16 ruerunt pili carnis meæ. Stetit quidam, cujus non agnoscebam vultum, imago coram oculis meis, et vocem quasi auræ
17 lenis audivi. Numquid homo,
Dei comparatione justificabitur, aut factore suo purior erit
18 vir ? Ecce qui serviunt ei, non
sunt stabiles, & in angelis suis
19 reperit pravitatem : Quantò
magis hi qui habitant domos
luteas, qui terrenum habent
fundamentum, consumentur
20 velut à tinea ? De manè usque
ad vesperam succidentur : &
quia nullus intelligit, in æter-
21 num peribunt. Qui autem
reliqui fuerint, auferentur ex
eis : moriëntur, & non in sapientia.

CAP. V.

1 VOca ergò, si est qui tibi
respondeat, & ad aliquem san-
2 ctorum convertere. Verè
stultum interficit iracundia, &
3 parvulum occîdit invidia. Ego
vidi stultum firmâ radice, &
maledixi pulchritudini ejus
4 statim. Longè fient filii ejus
à salute, & conterentur in por-
5 ta, & non erit qui eruat. Cujus
messem famelicus comedet, &
ipsum rapiet armatus, & bibent sitientes divitias ejus.
6 Nihil in terra sine causa fit,
& de humo non oritur dolor.
7 Homo nascitur ad laborem,
8 & avis ad volatum. Quam
ob rem ego deprecabor Dominum, & ad Deum ponam
eloquium meum :

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

5 †(*)Νῦν δὲ ἥκει ἐπὶ σὲ πόνος, καὶ ἥψατό σου,
6 (ε)σὺ δὲ ἐσπούδασας. †Πότερον (ζ) οὐχ ὁ φόβος
σου ἐστὶν ἐν ἀφροσύνῃ, †καὶ ἡ ἐλπίς σου καὶ
7 ἡ κακία τῆς ὁδοῦ σου; †Μνήσθητι οὖν (η) τίς
καθαρὸς ὢν ἀπώλετο, †ἢ πότε ἀληθι-
8 νοὶ (θ) ὁλόρριζοι ἀπώλοντο; †Καθ' ὃν
τρόπον εἶδον τοὺς ἀροτριῶντας τὰ ἄτοπα,
†οἱ δὲ σπείροντες αὐτὰ ὀδύνας θεριοῦσιν
9 (ι) ἑαυτοῖς. †Ἀπὸ προστάγματος κυρίου
ἀπολοῦνται, †ἀπὸ δὲ πνεύματος ὀργῆς αὐτοῦ
10 ἀφανισθήσονται. †Σθένος λέοντος, φωνὴ
δὲ λεαίνης, †γαυρίαμα δὲ δρακόντων ἐσβέ-
11 σθη. †Μυρμηκολέων ὤλετο παρὰ τὸ μὴ
ἔχειν (κ) βοράν, †σκύμνοι δὲ λεόντων
12 ἔλιπον ἀλλήλους. †Εἰ δέ τι ῥῆμα ἀληθινὸν ἐγεγόνει ἐν λόγοις σου, †(λ) οὐθὲν ἄν
σοι τούτων κακὸν ἀπήντησε. †Πότερον
(÷)οὐ δέξεταί (μ) μου τὸ οὖς ἐξαίσια παρ'
13 αὐτοῦ; †Φόβῳ δὲ καὶ ἠχῷ νυκτερινῇ †ἐμ-
14 πίπτων φόβος ἐπ' ἀνθρώπους, †(ν) φρίκη
μοι συνήντησε καὶ τρόμος, †καὶ μεγάλως
15 μου τὰ ὀστᾶ (ξ) διέσεισε, †Καὶ πνεῦμα
ἐπὶ πρόσωπόν μου ἐπῆλθεν, †ἔφριξαν
16 δέ μου τρίχες καὶ σάρκες. †(ο) Ἀνέστην καὶ
οὐκ ἐπέγνων, †εἶδον καὶ οὐκ ἦν μορφὴ πρὸ
ὀφθαλμῶν μου, †ἀλλ' ἢ αὔραν καὶ φωνὴν
17 ἤκουον. †Τί γάρ; μὴ καθαρὸς ἔσται βροτὸς (π) ἐναντίον τοῦ κυρίου; †ἢ ἀπὸ τῶν
18 ἔργων αὐτοῦ ἄμεμπτος ἀνήρ; †Εἰ κατὰ
παίδων αὐτοῦ οὐ πιστεύει, †κατὰ δὲ ἀγγέλων
19 αὐτοῦ σκολιόν τι ἐπενόησε. †(ρ) Τοὺς δὲ
κατοικοῦντας οἰκίας πηλίνας, (σ) ἐξ ὧν
καὶ αὐτοὶ ἐκ τοῦ αὐτοῦ πηλοῦ ἐσμεν, †ἔπαι-
20 σεν αὐτοὺς σητὸς τρόπον, †(τ) Καὶ ἀπὸ
πρωΐθεν μέχρι ἑσπέρας οὐκ ἔτι εἰσί, †παρὰ
τὸ μὴ δύνασθαι αὐτοὺς ἑαυτοῖς βοηθῆσαι,
21 ἀπώλοντο. †Ἐνεφύσησε γὰρ αὐτοῖς καὶ (υ) ἐξηράνθησαν, †ἀπώλοντο παρὰ τὸ μὴ ἔχειν
αὐτοὺς σοφίαν.

MS.A. (*)Νυνὶ (ε) σὺ δὲ ἐσπούδακας. (ζ) οὐχὶ (η) ὅτι οὐδεὶς καθαρὸς (θ) ὁλόρριζοι (ι) ἐν αὐτοῖς. (κ) βορράν, (λ) οὐδὲν ἂν τούτων κακῶν συνήντησέν μοι. (÷) οὐκ οὖν (μ) σου τὸ οὖς μου ἐξαίσια; ἐξαίσιοι γὰρ παρ' αὐτοῦ φόβοι καὶ ἠχὼ νυκτερινή, (ν) φρίκη δέ μοι (ξ) συνέσεισεν, (ο) Καὶ ἀνέστην (π) ἔναντι κυρίου; (ρ) Ἐᾷ δὲ τοὺς (σ) ἐξ ὧν καὶ αὐτοὶ ἐσμεν ἐκ τοῦ αὐτοῦ πηλοῦ, (τ) Ἀπὸ πρωΐθεν ἕως ἑσπέρας καὶ οὐκ ἔτι εἰσίν, καὶ παρὰ (υ) ἐπιλάθησαν, καὶ παρὰ τὸ μὴ ἔχειν αὐτοὺς σοφίαν, ἀπώλοντο.

Nunc autem venit super te labor, 5
& tetigit te : (b) Turbatus es.
Nonne timor tuus est in (c) stul- 6
titia? & spes tua, & iniquitas
viæ tuæ? Recordare igitur quis 7
cùm mundus esset, periit, vel
quando veraces radicitùs perie-
runt? Quemadmodum vidi eos 8
qui arabant absurda : qui autem
seminant ea, dolores metent si-
bi: A præcepto Domini peribunt: 9
à spiritu autem iræ ejus delebun-
tur. *Robur leonis, & vox le- 10
næ, & gaudium draconum ex-
tinctum est. (d) Myrmicoleon 11
periit, eò quòd non haberet escã:
& catuli leonum divisi sunt ab
invicém. Si quod (e) autem ver- 12
bum verax fuisset in sermonibus
tuis; nihil tibi horum malum ac-
cidisset. Nunquid non capiet
auris mea ab eo (f) magnifica?
(g) Timore autem, & sonitu no- 13
cturno incidens timor super ho-
mines, Horror mihi occurrit, & 14
tremor, & valdè ossa mea con-
cussit, Et spiritus in (h) faciem 15
meam incurrit; horruerunt au-
tem pili mihi, & carnes: (i) Sur- 16
rexi, & non cognovi : vidi, &
non erat figura ante oculos meos:
sed (k) auram & vocem audi-
ebam : Quid enim? Nunquid 17
homo coram Domino mundus e-
rit, vel de operibus suis inculpa-
bilis vir? Si contra (l) servos 18
suos non credit, & adversus an-
gelos suos pravũ quid advertit;
Habitantes autem domos (m) lu- 19
teas, ex quibus & ipsi de eodem
luto sumus? Percussit illos tan-
quam tinea, Et à manè usque 20
ad vesperam ultrà non sunt : eò
quòd non possent sibi ipsis subve-
nire, perierunt : (n) Insufflavit 21
enim eis, et exaruerunt: interierũt,
quia non habebant sapientiam.

ΚΕΦ. Ε'. 5.

1 †Ἐπικάλεσαι δέ, εἴ τις (α) σοι ὑπακούσεται,
2 †ἢ εἴ τινα (β) ἀγγέλων ἁγίων ὄψῃ. †Καὶ
γὰρ ἄφρονα ἀναιρεῖ ὀργή, †πεπλανημένον
3 δὲ θανατοῖ ζῆλος. †Ἐγὼ δὲ (γ) ἑώρακα
ἄφρονας ῥίζαν βάλλοντας, †ἀλλ' (δ) εὐ-
4 θέως ἐβρώθη αὐτῶν ἡ δίαιτα. †Πόρρω (ε)
γένοιντο οἱ υἱοὶ αὐτῶν ἀπὸ σωτηρίας, †κολα-
βρισθείησαν δὲ ἐπὶ θύραις ἡσσόνων, †καὶ οὐκ ἔσται
5 ὁ ἐξαιρούμενος. †Ἃ γὰρ ἐκεῖνοι (ζ) συνήγαγον,
δίκαιοι ἔδονται, αὐτοὶ δὲ ἐκ κακῶν οὐκ
(η) ἐξαίρετοι ἔσονται· †ἐκσιφωνισθείη
6 αὐτῶν ἡ ἰσχύς. †Οὐ γὰρ μὴ ἐξέλθῃ (θ)
ἐκ τῆς γῆς κόπος, †οὐδὲ ἐξ ὀρέων ἀνα-
7 βλαστήσει πόνος. †Ἀλλὰ ἄνθρωπος (ι) γεν-
νᾶται κόπῳ, †νεοσσοὶ δὲ (κ) γυπὸς τὰ ὑψη-
8 λὰ πέτονται. †Οὐ μὴν δὲ (*) ἀλλὰ ἐγὼ δε-
ηθήσομαι κυρίου, †κύριον δὲ (λ) τὸν πάν-
των δεσπότην ἐπικαλέσομαι,

MS.A. (α) σου εἰσακούσεται, (β) ἁγίων ἀγγέλων (γ) ἑόρακα (δ) εὐθὺς ἡ δίαιτα αὐτῶν ἐβρώθη. (ε) ἐγένοντο (ζ) ἔθεισαν, (η) ἐξερεθήσονται καὶ ἐξιφωνισθείη (θ) ἐκ γῆς (ι) ἐν κόπῳ γεννᾶται, (κ) γυπῶν (*) ἀλλ' (λ) τὸν παντοκράτορα ἐπικαλέσομαι,

CAP. V.

INvoca autem, si quis tibi re- 1
spondeat, vel, si quem angelorum
sanctorum aspicias: Etenim stul- 2
tum perimit ira : (a) errantem
autem occîdit zelus. Ego autem 3
vidi stultos radicem mittentes;
(b) sed statim absumpta est illo-
rum habitatio. Longè fiant filii 4
eorum à salute, & (c) conteran-
tur super januas minorum; &
non erit qui eripiat. Quæ enim 5
illi * congregaverunt; (d) justi
comedent : ipsi (e) verò de ma-
lis non liberabuntur: exhauriatur
(f) fortitudo eorum : Non enim 6
(g) prodiet de terra labor, neq; de
montibus germinabit molestia. Sed 7
homo nascitur labori : (h) pulli
autem vulturis aptissimè voli-
tant. Veruntamen ego deprecabor 8
Dominũ: Dominum autem omniũ
horum dominatorem invocabo:

תרגום TARGUM.

ארום כדון תיתי ליתך ותשתלהי תמטי גבך ואתבהלתא : הלא דחלתך סכויך סברך ושלמות אורחתך : אדכר כדון מן דזכי כאברהם הובד והאן תריצין 5 6 7
כיצחק ויעקב אתכחדו : היכמה די חמיתי דרא דטובענא עבדי שקרא ופלחי לעות ישתלמון כמניה : מן מימר אלהא יהובדון ומן זעפא דנחיריה ישתיצון : 8 9
אכליות עשו דמתיל לאריא טרפא וקל אדום דמתיל לשחלא מרתיחין כדביא בחטופיהון ורברבנוי דמתילין לליתא מתפרשין למבז בזתא : היכמה 10 11
דאריא יהובד מדלית עדאה היכדין יהובד ישמעאל מדלית זכותא ובנוי לסטיא אתפרשו מן אורחין תריצין : תא ישמעאל דמתיל לאריון יהובד
מדלית זכותא ובנוי דלוט דמתיל לליתא יתפרשון מקהלא : לותי פתגם אתאמר בנמיר ואליפת אודני קצת דאתמצי מנידיה : במחשבתא דמן חזותא 12 13
בליליא כד נפלת שנתא על בני נשא : דלוחא ערעני ורתיתא וסוגעי אברי דליח : וזיקא על אפי יעבר מצלהבא עלעולא בסרי : יקום ולא אשתמודע 14 15 16
חזויה דמו לקבל עיני חשי וקל סוגעין אשמע : אברו ואמר אפשר דבר נש מאלהא יזכי אם מן דעבדיה ידכי גבר : הא בעבדוי נביא לא ימין ובאונדוי ישוי 17 18
עילא : כל דכן רשיעיא דשרין בקבורת טנא די בעפרא שתאסיהון ידכנון קדם וחלא : מצפר לרמש משתפפין מן דלית משוי להון ארכא לעלמא 19 20
יהובדון : הלא מדלית זכותא להון אנטל סעיד מנהון ימותון ולא בחכמתא : 21

ה

קרי כדון האית עני לך ולמן מן קדישיא תתפני : ארום לשטיא יקטול רוגיה דקירים ושבירא תמית טננא דבריתא : אנא חמית שטיא דמתנציב ולטטית 1 2 3
מדוריה בתכיף : מתרחקין בנוי מפורקנא לעלמא דאתי וישתפפון במעלנא דגהנם ביום דינא רבא ולית דפצי : די חצדיה כפיני ייכלון ופולמוסין במני זינא 4 5
ידברוניה ויבזון לסטיסין נכסיהון : ארום לא נפיק מעפרא שקר ומן אדמתא לא ירבי לעות : ארום בר נש לממלעי באוריתא אתברי ובני מזיקי בגובהא 6 7
יטוסון : הא ארום בר נש ללעות אתיליד וסופוהי היך גציו דנתרין מן גומריא ומתגבהין היכדין יעוף : ברם אנא אתבע אולפן מן תקיפא ולאלהא 8
אשוי מלתי :

Verſio SYRIACA.

5 6 * ܗܫܐ ܕܐܬܬ ܠܟ ܠܐܝܬ܂ ܘܩܪܒܬ ܠܟ ܘܐܬܕܠܚܬ܂ * ܗܐ ܕܚܠܬܟ ܗܘܬ ܣܒܪܟ܂ ܘܬܘܟܠܢܟ
7 8 ܘܬܡܝܡܘܬܐ ܕܐܘܪܚܬܟ܂ * ܐܬܕܟܪ ܗܫܐ ܡܢܘ ܙܟܝܐ ܕܐܒܕ܂ ܘܐܝܟܐ ܬܪܝܨܐ ܕܐܬܥܩܪܘ܂ * ܐܝܟܢܐ ܕܚܙܝܬ ܕܪܗܛܝܢ ܒܚܛܗܐ ܘܙܪܥܝܢ
9 ܥܡܠܐ ܢܚܨܕܘܢܝܗ܂ * ܡܢ ܢܫܡܬܗ ܕܐܠܗܐ ܐܒܕܝܢ܂ ܘܡܢ ܪܘܚܐ ܕܪܘܓܙܗ ܡܫܬܠܡܝܢ܂ * ܢܗܡܬܗ ܕܐܪܝܐ܂
10 11 ܘܩܠܐ ܕܓܘܪܝܐ ܕܐܪܝܐ܂ ܘܫܢܝܗ ܕܓܘܪܝܐ ܐܬܬܒܪ܂ * ܐܪܝܐ ܐܒܕ ܡܢ ܕܠܐ ܐܝܬ ܠܗ ܛܥܡܐ܂ ܘܒܢܝ ܓܘܪܝܐ ܐܬܦܪܕܘ܂
12 13 * ܘܠܝ ܦܬܓܡܐ ܐܬܡܠܠ܂ ܘܫܡܥܬ ܐܕܢܝ ܐܝܟ ܩܠܝܠ ܡܢܗ܂ * ܒܪܥܝܢܐ ܕܚܙܘܐ ܕܠܠܝܐ܂ ܟܕ ܢܦܠ ܫܢܬܐ
14 ܥܠ ܒܢܝ ܐܢܫܐ܂ * ܕܚܠܬܐ ܩܪܬܢܝ ܘܪܬܝܬܐ܂ ܘܣܓܝܐܐ ܕܓܪܡܝ ܐܬܙܝܥܘ܂ * ܘܪܘܚܐ ܥܠ ܐܦܝ ܥܒܪܬ܂
15 16 ܘܐܙܕܩܦ ܣܥܪܐ ܕܒܣܪܝ܂ * ܘܩܡܬ ܘܠܐ ܐܣܬܟܠܬ ܘܠܐ ܗܘܐ ܚܙܘܐ ܠܩܘܒܠ ܥܝܢܝ܂ ܘܫܡܥܬ ܩܠܐ ܕܡܡܠܠ
17 18 ܘܐܡܪ܂ * ܐܢܫܐ ܡܢ ܐܠܗܐ ܢܙܕܕܩ܂ ܐܘ ܡܢ ܥܒܘܕܗ ܢܬܕܟܐ ܓܒܪܐ܂ * ܗܐ ܒܥܒܕܘܗܝ ܠܐ ܡܗܝܡܢ܂
19 ܘܒܡܠܐܟܘܗܝ ܣܐܡ ܬܡܗܐ܂ * ܐܦ ܠܥܡܪܝ ܒܬܝ ܛܝܢܐ ܕܐܫܬܐܣܘ ܒܥܦܪܐ ܡܬܡܟܟܝܢ܂ ܘܡܬܚܒܠܝܢ ܩܕܡ
20 21 ܥܘܬܐ܂ * ܡܢ ܨܦܪܐ ܠܪܡܫܐ ܡܬܡܟܟܝܢ܂ ܕܠܐ ܢܬܝܬܒܘܢ ܠܥܠܡ ܢܐܒܕܘܢ܂ * ܗܐ ܫܩܠ
1 ܝܘܬܪܢܗܘܢ ܡܢܗܘܢ܂ ܘܡܝܬܝܢ ܒܗܘܢ ܘܠܐ ܒܚܟܡܬܐ܂ * ܦܨܚܠܐ * ܗ * * ܩܪܝ ܗܫܐ
2 3 ܐܢ ܐܝܬ ܕܥܢܐ ܠܟ܂ ܘܠܡܢ ܡܢ ܩܕܝܫܐ ܬܬܦܢܐ܂ * ܡܛܠ ܕܠܣܟܠܐ ܩܛܠ ܪܘܓܙܐ܂ ܘܠܫܛܝܐ ܡܡܝܬ ܚܣܡܐ܂ * ܐܢܐ
4 ܚܙܝܬ ܠܥܘܠܐ ܕܡܫܪܫ܂ ܘܐܬܠܛ ܕܝܪܗ ܡܚܕܐ܂ * ܢܪܚܩܘܢ ܒܢܘܗܝ ܡܢ ܦܘܪܩܢܐ ܘܢܬܡܟܟܘܢ ܒܬܪܥܐ܂
5 6 ܘܠܝܬ ܕܦܪܩ ܠܗܘܢ܂ * ܕܚܨܕܘ ܟܦܢܐ ܢܐܟܠܘܢ܂ ܘܨܗܝܐ ܢܫܬܘܢ ܩܢܝܢܗܘܢ܂ * ܡܛܠ
7 ܕܠܐ ܢܦܩ ܡܢ ܥܦܪܐ ܥܘܠܐ܂ ܘܠܐ ܡܢ ܐܪܥܐ ܢܦܪܥ ܥܡܠܐ܂ * ܡܛܠ ܕܒܪܢܫܐ ܠܥܡܠܐ ܐܬܝܠܕ܂ ܘܒܢܝ
8 ܦܪܚܬܐ ܡܪܝܡܝܢ ܓܦܐ܂ * ܒܪܡ ܐܢܐ ܐܒܥܐ ܡܢ ܐܠܗܐ܂ ܘܡܠܬܝ ܠܐܠܗܐ ܐܣܝܡ܂

Verſio ARABICA.

5 6 * من اجل انها الآن جات عليك فتعبت * وبلغت اليك فتحيرت * فالآن مخافتك هي ملامتك * ورجاوك
7 8 وصلاح طريقتك * اذكر الآن اي زاكي هلك * او اي صالح بهت * كما قد رايت * الذين يحرثون في
9 الخطاه ويزرعون فان عملهم يحصدون * ومن نسمة الله يبيدون * ومن روح غضبه يفنون * همهمة الاسد
10 11 وصوت جرو الاسد وانياب الاسد تنكسر * الاسد يهلك من قبل ان ليس له مفترس * وابناء الاسد
12 13 يتبددون * وعلي جواب القول ارجع * وقبلت اذني مثل اصغر منه * في السكوت برويا الليل * في وقوع
14 السنة العميقة على الناس * المخافة دعتني والرهبة * وكثير عظامي تقلقلت * والروح عبر على وجهي *
15 16 وقامت شعر جسدي * وقمت ولم افهم * وليس منظرا مقابل عيني * وسمعت نغمة وصوتا يقول * اء الانسان
17 18 قدام الله يزكو * او من صانعه يخلص الرجل * فانه لعبيده لا يامن * وفي ملايكته يجعل التحيير * وايضا
19 20 الذين هم حلولا في بيوت الطين التي بتراب مكلسة يتواضعون قدام الظلام * من الصباح الي
21 العشي يتواضعون * ليلا يجعلوا سكانا للدهر * ويبادون * فقد اخذ نفعهم منهم * وبقيتهم فيهم يموتون * ولا
1 بالحكمة * الفصل الخامس * فادعوا الآن ان كان لك مجيبا والا من القديسين *
2 3 والتفت * من اجل ان السفيه يقتله الغضب * والسخيف يقتله الحمية * ان رايت منافقا استقام وهلكت
4 5 ذريته من بعده * بنوه يتباعدون من الخلاص * ويتواضعون في الباب * وليس لهم مخلصا * الذي
6 يحصد جوعا ياكل * وللعطش يستفرغون * ويتخلل العطش في اناهم * من اجل انه ليس يخرج من
7 التراب اثم * ولا ايضا من الثرا يظهر الشر * من اجل ان الانسان للعمل ولد * وابناء الطير يرفعون
8 الاجنحه * لكني انا اطلب الي الله * والي الله اصنع كلمي *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Jam eò quòd evenerit 5
tibi, tu fatigareris? &
pervenerit ad te, obstupeſceres? Modò timor 6
tuus eſt reprehenſio tua, &
ſpes tua, & rectitudo viæ
tuæ. Cogita modò quis 7
innocens perierit, aut quis
juſtꝰ confuſus ſit. ut quidem 8
vidi, qui in peccatis
currunt, & ſeminant, opera
ſanè ſua metiunt,
Flatu Dei pereunt, & ſpiritu 9
furoris ejus conſumuntur,
Rugitus leonis, 10
& vox catuli leonis, &
canini leonis, franguntur;
Leo perit eò quòd 11
non habeat prædam, &
catuli leonum diſſipantur.
Et mihi ſermonis reſponſum 12
datum eſt, ex
quo ferè minimum percepit
auris mea. In ſilentio, 13
in viſione noctis,
quando occupat ſopor
profundus homines, Timor 14
vocavit me, & pavor,
& pleraq; oſſa mea
contremuerunt, Et ſpiritus 15
tranſiit ſuper faciem
meam, & ſteterunt pili
corporis mei, Et ſurrexi 16
& nihil intellexi, nec aderat
ſpectrum coram oculis
meis; & audivi obmurmurationem,
& vocem dicentem, Anne homo 17
coram Deo juſtificabitur?
aut præ factore ſuo
purgabitur vir? Quandoquidem 18
in ſervis ſuis
non credit, & in angelis
ſuis ponit ſtuporem;
Quanto magis ii qui habitant 19
in domibus luti,
quæ ſunt pulvere oblitæ,
humiliabuntur coram caligine:
A mane uſque ad 20
veſperam humiliabuntur,
ne habitatores collocentur
in æternum, ſed pereant.
Ecce abſtulit utilitatem 21
eorum ab ipſis, (d) et
reſidui eorum in ipſis morientur,
& non in ſapientia.

CAP. V.

INvoca autem modò, 1
(a) ſi quem habes propitium
& patronum ex ſanctis
& convertere. Quoniam 2
ſtultum occidit furor,
& (b) amentem interficit
ira. Equidem vidi 3
iniquum (c) ſe erigentem,
& perire progeniem ejus
(d) poſt ipſum: Et filii 4
ejus recedent à ſalute, &
humiliabuntur in porta,
& non habebunt redemptorem.
Qui meſſuerit, 5
famem comedet, & ad
ſitim evacuabuntur, &
(e) penetrabit filius in vaſa
ipſorum; Quoniam 6
non egreditur è terra iniquitas,
nec de humo emergit
malitia: Quia 7
homo ad laborem natus
eſt, & filii volucrum extollunt
alas. At ego (f) 8
Deum precor, et ad Deum
facio eloquium meum;

INTERP. SYRIACA.

(d) et nomen eorum in ipſis morietur, Ca. v. (a) ſi quis ſit qui reſpondeat tibi, & ad quemnã ex ſanctis converteris? (b) ſtultum interficit odium. (c) proficere, (d) ſubitò: (e) poſſeſſionem eorum perdet ſitis; (f) de Deo exquiro,

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Nunc enim venit ad te & defeciſti: tetigit te & turbatꝰ es. Nonne timor tuus erat expectatio tua: ſpes tua & perfectio viarū tuarum? Recordare nunc quis eſt juſtus 5 6 7
ſicut Abraham qui perierit, & ubi recti ſicut Iſaac & Jacob deleti ſunt? Quemadmodum vidi generationē diluvii, operantes iniquitatem & facientes laborem retributionem 8
accipient ab eo. A verbo Dei peribunt, & à turbine naris ejus conſumentur. Rugitus Eſau, qui comparatꝰ eſt leoni rapaci, & vox Edom quæ comparata eſt leænæ, 9 10
ſæviunt ſicut urſi in rapina ſua, & principes ejus qui comparati ſunt leænæ ſeparati ſunt ut diripiant prædam. *Sicut leo perit cùm non ſit ei præda, ſic* peribit 11
Iſmahel eò quod non habet meritum: & filii ejus prædones qui ſeparati ſunt à viis rectis. *Targum aliud*: Iſmahel, qui comparatus eſt *leonibus*, peribit,
eò quòd non habeat meritum: *& filii Lot, qui aſſimilatus eſt leoni veteri, ſeparabuntur à congregatione*. Ad me autem dictum eſt verbū *ſecretò*, & didicit auris mea 12
aliquid quod redundavit ex eo. In cogitationibus viſionis nocturnæ, quando irruit ſomnus ſuper filios hominum. Timor accidit mihi & tremor, & multitudinem membrorum 13 14
meorum pavere fecit. Et turbo ſuper faciem meam tranſivit: inflammat tempeſtas carnem meam. Aſtitit quidam cujus aſpectum non agnoſcebam; ſimilitudo 15 16
erat in conſpectu oculorū meorum: ſuſurrationem, & quaſi vocem multorum audiebam. Clamavit & dixit: Nunquid poteſt filius hominis Dei comparatione juſtificari, 17
aut factore ſuo mundior erit vir? Ecce ſervis ſuis prophetis non credit, & in angelis ſuis ponit occaſionem. Quanto magis impii qui habitant in ſepulchris luti, 18 19
quorum fundamenta ſunt in pulvere, conterentur coram verme! De manè uſque ad veſperam *contriti* ſunt: eò quòd non imponit eis terminum, in æternum peribunt. 20
Nonne quia non eſt eis juſtitia, ablatum eſt auxilium eorum, morientur & non in ſapientia? 21

CAP. V.

VOca nunc ſi eſt qui tibi reſpondeat, & ad aliquem ex ſanctis reſpice. Quia ſtultum interficiet ira Dñi, & inſipientem occidet invidia inſaniæ. Ego vidi ſtultum 1 2 3
plantatum, & maledixi habitaculo ejus repentè. Longè ſint filii ejus à ſalute in ſeculo venturo, & conterantur in portis Gehennæ in die judicii magni, & non ſit 4
qui eripiat. Cujus meſſem famelici comedent, & armati armis bellicis tollent eum, & diripient prædones ſubſtantiam ejus. Quoniam non egreditur de pulvere iniquitas, 5 6
& de terra non oritur labor. Filius enim hominis ad laborandum in lege creatus eſt, & filius dæmonum in altum volat. *Targum aliud:* Filius enim hominis *ad laborem* 7
natus eſt, & exitus ejus eſt ad modum ſcintillarum, quæ ſparguntur à prunis & ſurſum feruntur, ſic avolabit. Veruntamen ego quæram doctrinam à fortiſſimo, 8
& ad Deum ponam eloquium meum.

non ad usque mirabilia ; investigatio non & , magna Facientem

9 עֹשֶׂה גְדֹלוֹת וְאֵין חֵקֶר נִפְלָאוֹת עַד־אֵין

super aquas mittentem & ; terræ facies super pluviam Dantem numerum

10 מִסְפָּר: הַנֹּתֵן מָטָר עַל־פְּנֵי אָרֶץ וְשֹׁלֵחַ מַיִם עַל־

denigrati & ; excelso in humiles ponendum Ad .platearum facies

11 פְּנֵי חוּצוֹת: לָשׂוּם שְׁפָלִים לְמָרוֹם וְקֹדְרִים

non & , callidorum cogitationes irritas Facientem .salute sunt elevati

12 שָׂגְבוּ יֶשַׁע: מֵפֵר מַחְשְׁבוֹת עֲרוּמִים וְלֹא־

sapientes Capientem .consistentiam eorum manus , facient

13 תַעֲשֶׂינָה יְדֵיהֶם תּוּשִׁיָּה: לֹכֵד חֲכָמִים

Interdiu .præcipitatur pravorum consilium & ; eorum calliditate in

14 בְּעָרְמָם וַעֲצַת נִפְתָּלִים נִמְהָרָה: יוֹמָם

servavit Et .meridie in palpabunt nocte veluti & ; obscuritati occurrent

15 יְפַגְּשׁוּ־חֹשֶׁךְ וְכַלַּיְלָה יְמַשְׁשׁוּ בַצָּהֳרָיִם: וַיֹּשַׁע

tenui fuit Et .indigum fortis manu de & ; eorum ore ab ,gladio à

16 מֵחֶרֶב מִפִּיהֶם וּמִיַּד חָזָק אֶבְיוֹן: וַתְּהִי לַדַּל

, hominis beatitudines Ecce .suum os compescuit iniquitas & ; spes

17 תִּקְוָה וְעֹלָתָה קָפְצָה פִּיהָ: הִנֵּה אַשְׁרֵי אֱנוֹשׁ

.reprobes ne Saddai correctionem & : Deus eum increpaverit

יוֹכִחֶנּוּ אֱלוֹהַּ וּמוּסַר שַׁדַּי אַל־תִּמְאָס:

.sanabunt ejus manus &,transfiget :fasciabit & , faciet dolere ipse Quia

18 כִּי הוּא יַכְאִיב וְיֶחְבָּשׁ יִמְחַץ וְיָדָו תִּרְפֶּינָה:

.malum te in tanget non septima in & :te eruet angustiis sex In

19 בְּשֵׁשׁ צָרוֹת יַצִּילֶךָּ וּבְשֶׁבַע לֹא־יִגַּע בְּךָ רָע:

.gladii manibus è bello in & , morte à te redimet fame In

20 בְּרָעָב פָּדְךָ מִמָּוֶת וּבְמִלְחָמָה מִידֵי חָרֶב:

cùm vastitate à timebis non & ; te abscondes linguæ flagello In

21 בְּשׁוֹט לָשׁוֹן תֵּחָבֵא וְלֹא־תִירָא מִשֹּׁד כִּי

ne terræ bestia à & ; ridebis fame in &,vastitate In .venerit

22 יָבוֹא: לְשֹׁד וּלְכָפָן תִּשְׂחָק וּמֵחַיַּת הָאָרֶץ אַל־

bestia & : tuum pactum agri lapidibus cum Quia .timeas

23 תִּירָא: כִּי עִם־אַבְנֵי הַשָּׂדֶה בְרִיתֶךָ וְחַיַּת

,tuum tentorium pax quòd scies Et .tibi erit pacifica agri

24 הַשָּׂדֶה הָשְׁלְמָה־לָךְ: וְיָדַעְתָּ כִּי־שָׁלוֹם אָהֳלֶךָ

scies Et .peccabis non & , tuum habitaculum visitabis &

25 וּפָקַדְתָּ נָוְךָ וְלֹא תֶחֱטָא: וְיָדַעְתָּ

.terræ herba sicut tuæ propagines & ; tuum semen multum quòd

כִּי־רַב זַרְעֶךָ וְצֶאֱצָאֶיךָ כְּעֵשֶׂב הָאָרֶץ:

tritici acervum ascendere sicut ; sepulchrum in maturitate in Ingredieris

26 תָּבוֹא בְכֶלַח אֱלֵי־קָבֶר כַּעֲלוֹת גָּדִישׁ

, illud audi : ipsum sic,illud investigavimus hoc Ecce .suo tempore in

27 בְּעִתּוֹ: הִנֵּה־זֹאת חֲקַרְנוּהָ כֶּן־הִיא שְׁמָעֶנָּה

.tibi scito tu &

וְאַתָּה דַע־לָךְ:

CAP. VI. ו

1 appenderetur appendendo Utinam : dixit & , Ijob respondit Et

2 וַיַּעַן אִיּוֹב וַיֹּאמַר: לוּ שָׁקוֹל יִשָּׁקֵל

.pariter elevarent bilancibus in meum infortunium & ; mea ira

כַּעְשִׂי וְהַיָּתִי בְּמֹאזְנַיִם יִשְׂאוּ־יָחַד:

mea verba ideo : gravesceret marium arena præ nunc Quia

3 כִּי עַתָּה מֵחוֹל יַמִּים יִכְבָּד עַל־כֵּן דְּבָרַי

earum venenum quarum , mecum Saddai sagittæ Quia .sunt absorpta

4 לָעוּ: כִּי חִצֵּי שַׁדַּי עִמָּדִי אֲשֶׁר חֲמָתָם

rudet Nunquid .me invadunt instructi Dei terrores : meus spiritus bibens

5 שֹׁתָה רוּחִי בִּעוּתֵי אֱלוֹהַּ יַעַרְכוּנִי: הֲיִנְהַק־

? suum pabulum super bos mugiet an ? gramen super onager

פֶּרֶא עֲלֵי־דֶשֶׁא אִם יִגְעֶה־שּׁוֹר עַל־בְּלִילוֹ:

sapor est an ? sale absque insipidum comedetur Nunquid

6 הֲיֵאָכֵל תָּפֵל מִבְּלִי־מֶלַח אִם־יֶשׁ־טַעַם

ægritudines sicut illa ,mea anima tangere Renuit ? vitelli saliva in

7 בְּרִיר חַלָּמוּת: מֵאֲנָה לִנְגּוֹעַ נַפְשִׁי הֵמָּה כִּדְוֵי

.meæ carnis

לַחְמִי:

Verſio VULG. LAT.

9 Qui facit magna & inſcrutabilia, & mirabilia abſque numero: 10 Qui dat pluviam ſuper faciem terræ, & irrigat aquis universa: 11 Qui ponit humiles in ſublime, & mœrentes erigit ſoſpitate: 12 Qui diſſipat cogitationes malignorum, ne poſſint implere manus eorum quod cœperant: 13 Qui apprehendit ſapientes in aſtutia eorum, & conſilium pravorum 14 diſſipat: Per diem incurrent tenebras, & quaſi in nocte ſic 15 palpabunt in meridie. Porrò ſalvum faciet egenum à gladio oris eorum, & de manu 16 violenti pauperem. Et erit egeno ſpes, iniquitas autem 17 contrahet os ſuum. Beatus homo, qui corripitur à Deo: increpationem ergò Domini ne 18 reprobes: Quia ipſe vulnerat, & medetur: percutit, & 19 manus ejus ſanabunt. In ſex tribulationibus liberabit te: & in ſeptima non tanget te ma- 20 lum. In fame eruet te de morte, & in bello de manu gladii. 21 A flagello linguæ abſconderis, & non timebis calamitatem 22 cùm venerit. In vaſtitate & fame ridebis, & beſtias terræ 23 non formidabis. Sed cum lapidibus regionũ pactum tuum, & beſtiæ terræ pacificæ erunt 24 tibi. Et ſcies quod pacem habeat tabernaculum tuum, & viſitans ſpeciem tuam, non 25 peccabis. Scies quoque quoniam multiplex erit ſemen tuum, & progenies tua quaſi 26 herba terræ. Ingredieris in abundantia ſepulchrum, ſicut infertur acervus tritici in tem- 27 pore ſuo. Ecce, hoc, ut inveſtigavimus, ita eſt: quod auditum, mente pertracta.

CAP. VI.

1 RESpondens autem Job, di- 2 xit; Utinam appenderentur peccata mea, quibus iram merui: & calamitas, quam patior, 3 in ſtatera. Quaſi arena maris, hæc gravior appareret: unde & verba mea dolore ſunt ple- 4 na: Quia ſagittæ Domini in me ſunt, quarum indignatio ebibit ſpiritum meũ, & terrores Domini militant contra me. 5 Numquid rugiet onager cùm habuerit herbam? aut mugiet bos cùm ante præſepe plenum 6 ſteterit? Aut poterit comedi inſulſũ, quod non eſt ſale conditum? aut poteſt aliquis guſtare, quod guſtatum affert 7 mortem? Quæ priùs nolebat tangere anima mea, nunc præ anguſtia, cibi mei ſunt,

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

9 † Τὸν ποιοῦντα μεγάλα καὶ ἀνεξιχνίαστα, † ἔνδοξά τε καὶ ἐξαίσια, ὧν οὐκ ἔστιν ἀριθμός, 10 † Τὸν διδόντα ὑετὸν (μ) ἐπὶ τὴν γῆν, † ἀποστέλλοντα ὕδωρ ἐπὶ τὴν ὑπ' οὐρανόν, 11 † Τὸν ποιοῦντα ταπεινοὺς εἰς ὕψος, καὶ ἀπολωλότας ἐξεγείροντα, 12 † (ν) Διαλλάσσοντα βουλὰς πανούργων, † καὶ οὐ μὴ ποιήσουσιν αἱ χεῖρες αὐτῶν ἀληθές. 13 † Ὁ καταλαμβάνων σοφοὺς ἐν τῇ (ξ) φρονήσει, † βουλὴν δὲ πολυπλόκων ἐξέστησεν. 14 † (ο) Ἡμέρας συναντήσεται αὐτοῖς σκότος, † τὸ δὲ μεσημβρινὸν (*) ψηλαφήσαισαν ἴσα νυκτί, 15 Ἀπόλοιντο δὲ ἐν πολέμῳ. † ἀδύνατος δὲ 16 ἐξέλθοι ἐκ χειρὸς δυνάστου. (π) Εἴη δὲ ἀδυνάτῳ ἐλπίς, † ἀδίκου δὲ στόμα ἐμφρα- 17 χθείη. † Μακάριος δὲ ἄνθρωπος ὃν ἤλεγξεν ὁ κύριος (ρ), † νουθέτημα δὲ παντοκράτο- 18 ρος μὴ ἀπαναίνου. † Αὐτὸς γὰρ ἀλγεῖν ποιεῖ, καὶ πάλιν ἀποκαθίστησιν· † (σ) ἔπαισεν, 19 καὶ αἱ χεῖρες αὐτοῦ (τ) ἰάσαντο. † Ἑξάκις ἐξ ἀναγκῶν (υ) σε ἐξελεῖται, † ἐν δὲ τῷ 20 ἑβδόμῳ, (φ) οὐ μὴ ἅψηταί σου κακόν. † Ἐν λιμῷ ῥύσεταί σε ἐκ θανάτου, † (χ) ἐν πολέ- 21 μῳ δὲ ἐκ χειρὸς σιδήρου λύσει σε. † Ἀπὸ μάστιγος γλώσσης (ψ) σε κρύψει, † καὶ οὐ 22 μὴ φοβηθῇς ἀπὸ κακῶν ἐρχομένων. † Ἀδίκων καὶ ἀνόμων καταγελάσῃ· † ἀπὸ δὲ θη- 23 ρίων ἀγρίων (ω) οὐ μὴ φοβηθῇς· † Θῆρες 24 γὰρ ἄγριοι εἰρηνεύσουσί σοι. † (α) Εἶτα γνώσῃ ὅτι εἰρηνεύσει σου ὁ οἶκος· † ἡ δὲ δίαιτα τῆς σκηνῆς σου οὐ μὴ ἁμάρτῃ. 25 (β) † Γνώσῃ δὲ ὅτι πολὺ τὸ σπέρμα σου, † τὰ δὲ τέκνα σου ἔσται ὥσπερ τὸ παμβότανον 26 τοῦ ἀγροῦ. † (γ) Ἐλεύσῃ δὲ ἐν τάφῳ ὥσπερ σῖτος ὥριμος κατὰ (δ) καιρὸν θεριζόμενος, † ἢ ὥσπερ θημωνία ἅλωνος καθ' ὥραν 27 συγκομισθεῖσα. † Ἰδοὺ ταῦτα οὕτως ἐξιχνιάσαμεν· ταῦτά ἐστιν ἃ ἀκηκόαμεν· † Σὺ δὲ γνῶθι σεαυτῷ, εἴ (ε) τι ἔπραξας.

ΚΕΦ. ϛʹ.

1 2 † ΥΠολαβὼν δὲ Ἰὼβ, λέγει, † (α) Εἰ γάρ τις ἱστῶν στήσαι μου τὴν ὀργήν,, † τὰς δὲ ὀδύνας μου ἄραι ἐν ζυγῷ ὁμοθυμαδόν. 3 † Καὶ δὴ ἄμμου παραλίας (β) βαρυτέρα ἔσται. † ἀλλ' ὡς ἔοικε τὰ ῥήματά μου ἐστὶ 4 φαῦλα. † Βέλη γὰρ κυρίου ἐν τῷ σώματί μου ἐστίν, † ὧν ὁ (γ) θυμὸς αὐτῶν ἐκπίνει μου τὸ αἷμα, † ὅταν ἄρξωμαι λαλεῖν, 5 κεντοῦσί με. † Τί γάρ; μὴ διακενῆς κεκράξεται ὄνος ἄγριος, ἀλλ' ἢ τὰ σῖτα ζητῶν; † εἰ δὲ καὶ ῥήξει φωνὴν βοῦς ἐπὶ 6 φάτνης ἔχων τὰ βρώματα; † Εἰ βρωθήσεται ἄρτος ἄνευ ἁλός; † εἰ δὲ καὶ ἐστὶ 7 γεῦμα ἐν ῥήμασι κενοῖς; † (δ) Οὐ δύναται γὰρ παύσασθαί μου ἡ ὀργή. † βρόμον γὰρ ὁρῶ τὰ σῖτά μου ὥσπερ ὀσμὴν λέοντος.

Qui facit magna, & non veſtigabilia, glorioſaque, & magnifica, quorum non eſt numerus, 9 *Qui dat pluviam ſuper terram, qui mittit aquam ſuper (i) eam quæ ſub cœlo,* 10 *Qui facit humiles in altitudinem, & ſuſcitat eos qui perierant,* 11 *Qui (k) avertit conſilia verſutorum, & non facient manus eorum veritatem:* 12 *Qui * capit ſapientes in prudentia: conſilium autem aſtutorum (l) disjecit:* 13 *In die (m) occurrent eis tenebræ: in meridie autem palpent tanquam in nocte,* 14 *Et pereant in bello: infirmus autem egrediatur de manu potentis:* 15 16 *Sit autem (n) infirmo ſpes, injuſti autem os obſtruatur.* 16 *Beatus autem homo, quem arguit Dominus: monitionem verò Omnipotentis ne renuas.* 17 *Ipſe enim dolere facit, & rurſus (o) reſtituit: percuſſit, & manus ejus ſanaverunt:* 18 *(p) Sexies de neceſſitatibus te eruet, & in (q) ſeptimo non te tanget malum.* 19 *In fame te liberabit à morte, in prælio verò de manu ferri ſolvet te:* 20 *A flagello linguæ abſcondet te, & non timebis à malis (r) venientibus:* 21 *(ſ) Injuſtos, & iniquos deridebis: & feroces beſtias non (t) timebis.* 22 *Beſtiæ enim feræ pacatæ erunt tibi:* 23 24 *Deindè ſcies quòd in pace erit domus tua: (u) habitatio autem tabernaculi tui non peccabit.* 24 *Scies autem quòd multum ſemen tuum, & filii tui erunt, quaſi omnis herba campi,* 25 *Et venies in ſepulchrum, tanquam frumentum maturum, quod in tempore meſſuerunt, vel ſicut acervus areæ in tempore comportatus.* 26 *Ecce hæc ita exquiſivimus: hæc ſunt quæ audivimus: Tu verò ſcito tibi ipſi, ſi quid egeris.* 27

CAP. VI.

REſpondens autem Job, dicit; 1 *Si verò quis (a) appendens, appenderet iram meam, & dolores meos tolleret in ſtatera pariter:* 2 *Et utique arenâ maris * gravior erit.* 3 *Sed ut videtur, verba (b) mea ſunt mala: Sagittæ enim (c) Domini in corpore meo ſunt;* 4 *quarum furor earum bibit ſanguinem meum: cùm incœpero loqui, ſtimulant me.* *Quid enim? nunquid (d) fruſtrà onager clamabit, niſi eſcas requirens? nunquid & erumpet vocem bos, cùm habeat in præſepe cibos?* 5 *Nunquid poteſt (e) ſine ſale edi panis, aut eſt ſapor in ſermonibus vanis?* 6 *Non poteſt enim ceſſare (f) ira mea: ſætorem enim video eſcas meas, ſicut eſt odor leonis.* 7

MS.A. (μ) ἐπὶ τῆς γῆς, τὸν ἀποστέλλοντα (ν) Τὸν διαλλάσσοντα (ξ) φρονήσει αὐτῶν, βουλὰς δὲ (ο) Ἐν ἡμέρᾳ αὐτοῖς συναντήσεται σκότος, (*) ψηλαφήσειαν (π) Καὶ εἴη ἀδυνάτῳ ἐλπίς, καὶ ἀδίκου στόμα (ρ) ἐπὶ τῆς γῆς, νουθέτημα (σ) πατάξει, (τ) ἰάσονται. (υ) ἐξελεῖταί σε, (φ) οὐχ ἅψεται (χ) καὶ ἐν πολέμῳ ἐκ χειρὸς σιδήρου ῥύσεταί σε. (ψ) κρύψει σε, καὶ οὐ φοβηθήσῃ ἀπὸ κακῶν ἐρχομένων. † Καὶ οὐ φοβηθήσῃ ἀπὸ ταλαιπωρίας, † ὅτι ἐλεύσεται) ταλαιπωρία. Ἀδίκων (ω) τῆς γῆς οὐ φοβηθήσῃ· (α) † Ὅτι μετὰ τῶν λίθων τοῦ ἀγροῦ ἡ διαθήκη σου, † καὶ τὰ θηρία τοῦ ἀγροῦ εἰρηνεύσουσι σοι. † Καὶ γνώσῃ ὅτι ἐν εἰρήνῃ τὸ σπέρμα σου, † καὶ ἡ ἐπισκοπὴ τῆς εὐπρεπείας σου, καὶ σὺ μὴ ἁμάρτῃς. Εἶτα γνώσῃ (β) Καὶ γνώσῃ ὅτι (γ) Ἀπελεύσῃ (δ) καιρὸν αὐτοῦ θεριζόμενος, (ε) τί ἐποίησας. Κεφ. ϛʹ. MS.A. (α) Τί γάρ; (β) βαρύτεραί εἰσιν. (γ) θυμὸς ἐκπίνει μου (δ) Οὐ δύναται δέ μου παύσασθαι ἡ ψυχή.

תרגום TARGUM.

9 10 11 עבד רברבן ולית סכום פרישן עד דלית מנין: דיהב מטרא על אפי ארעא דישראל ומשדר מיא על אפי מחוזי עממיא: מטול לשואה מכיכי אולצנא

12 13 לרומא ואוכמי מסכינותא תקפו פורקנא: דבטל מחשבתהון דמצראי דחכימו לאבאשא לישראל ולא עבדא אידיהון מלכת חכמתהון: מאחד

14 15 חכימי פרעה בחכימותהון ומלכת אסטגנינוהי עוקמניא אוחית עליהון: בימם יערעון חשוך והיך ליליא ימשמשון בטיהרא: ופרק עמיה מן קטילא

16 17 דפומהון ומן יד מלך תקיף עמא חשיכא: והות למסכנא סברא ובלהא דרשיעי טפות פומה: הא טוביה דאברהם גברא חסידא דיכסנניה אלהא ואנת

18 19 20 ישראל מרדותא דשדי לא תרחיק: ארום הוא מיתי כיבא ומעל סמתירא ימחי וידוי מסין: בשית עקתין יפצנך ובשביעתא לא יקריב בך ביש: בכפן

21 22 דמצרים פרקך ממותא ובקרבא דעמלק מקטול סיפא: בנוקא דלישן דבלעם תטמר ביני ענניא ולא תדחל מן חבל מדינאי כד ייתי: לחבל סיחון ולאולצן

23 מדברא תחיך ומן משרית עוג דמתיל לחיות ברא לא תדחל: ארום עם לוחי אבנא דאתיהיבו בפומבי בחקלא קימך וכנענאי דמתילין לחיות ברא

24 25 26 אשלימו עמך: ותנדע ארום שלם בית משכנך ותסער מדור בית אולפנך ולא תחויק: ותנדע ארום סגיעין בנך ובני בנך היך עסבא דחקלא: תעול בשלימות

27 שניך בכובא לקבורתא היך מסק גדישא בעדניה: הא דא בששנא יתה הכדין היא קבלנה ואנת דע לך:

ו

1 2 ואתיב איוב ואמר: מאים מתקל יתקל רוגזי ואתרגשותי במסחתא יטלון כחדא: ארום כדון יתיר מחלא דימא יתיקר בנין כן מלי משתלהין: ארום גירי שדי

3 4 בגופי די ארסהון שתיא רוחי ביעותא דמן קדם אלהא יסדרון לקבלי: האפשר דמבריס מרודא עלוי דתאה היך ינעי תורא על אספסתיה: האפשר דמתאכל

5 6 7 תבשילא מדלית מלחא אין אית טעם בריר חלמונא: הא כמה דלא מתאכל מידי בשש בלא מלחא הכדין לית טעמא בדירא דחלמונא: סריבת

למקרב נפשי הנון מחשבין היך דוויא לסעודתי: הא סריבת למקרב נפשי הנון עבדין יתי אחסנים והות מסתיא לסעודתי:

Versio *SYRIACA*

9 10 * ܕܥܒܕ ܪܘܪܒܬܐ ܕܠܐ ܣܟ܂ ܘܬܕܡܪܬܐ ܕܠܐ ܡܢܝܢ܂ * ܕܫܕܪ ܡܛܪܐ ܥܠ ܐܦܝ ܐܪܥܐ܂ ܘܡܫܕܪ ܡܝܐ ܥܠ ܐܦܝ
11 12 ܫܘܩܐ܂ * ܠܡܣܡ ܡܟܝܟܐ ܠܪܘܡܐ ܀ ܘܡܟܝܟܐ ܢܬܥܫܢܘܢ ܒܦܘܪܩܢܐ܂ * ܡܒܛܠ ܡܚܫܒܬܐ ܕܚܟܝܡܐ܂ ܕܠܐ
13 ܢܥܒܕܢ ܐܝܕܝܗܘܢ ܚܟܡܬܐ܂ * ܐܚܕ ܚܟܝܡܐ ܒܚܟܡܬܗܘܢ ܀ ܘܡܪܥܝܬܐ ܕܢܟܝܠܐ ܡܒܛܠ܂ * ܒܐܝܡܡܐ
14 15 ܢܓܫܫܘܢ ܐܝܟ ܕܒܚܫܘܟܐ ܀ ܘܐܝܟ ܕܒܠܠܝܐ ܢܡܫܫܘܢ ܒܛܗܪܐ܂ * ܦܪܩ ܡܢ ܣܝܦܐ ܦܘܡܗܘܢ܂ ܘܡܢ
16 17 ܐܝܕܐ ܕܥܫܝܢܐ ܠܡܣܟܝܢܐ܂ * ܘܢܗܘܐ ܠܡܣܟܝܢܐ ܣܒܪܐ܂ ܘܥܘܠܐ ܢܣܟܘܪ ܦܘܡܗ܂ * ܛܘܒܘܗܝ ܠܓܒܪܐ
18 ܕܡܪܕܐ ܠܗ ܐܠܗܐ ܀ ܘܡܪܕܘܬܗ ܕܫܡܝܐ ܠܐ ܢܣܠܐ܂ * ܡܛܠ ܕܗܘ ܡܚܐ ܘܡܚܒܫ܂ ܘܡܚܐ܂ ܘܐܝܕܘܗܝ ܡܐܣܝܢ܂
19 20 * ܒܫܬ ܐܘܠܨܢܝܢ ܢܦܨܝܟ ܀ ܘܒܫܒܥܬܐ ܠܐ ܢܬܩܪܒ ܠܟ ܒܝܫܬܐ܂ * ܒܟܦܢܐ ܢܦܪܩܟ ܡܢ ܡܘܬܐ ܀ ܘܒܩܪܒܐ ܡܢ
21 22 ܐܝܕܝ ܣܝܦܐ܂ * ܡܢ ܫܘܛܐ ܕܠܫܢܐ ܬܬܛܫܐ ܀ ܘܠܐ ܬܕܚܠ ܡܢ ܬܒܪܐ ܟܕ ܐܬܐ܂ * ܠܒܙܬܐ ܘܠܟܦܢܐ ܬܓܚܟ܂
23 24 ܘܡܢ ܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ ܠܐ ܬܕܚܠ܂ * ܡܛܠ ܕܥܡ ܟܐܦܐ ܕܒܪܐ ܩܝܡܟ܂ ܘܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ ܢܫܬܠܡܢ ܠܟ܂ * ܘܬܕܥ
25 ܕܫܠܡ ܗܘ ܡܫܟܢܟ܂ ܘܬܬܦܢܐ ܠܡܫܪܝܟ ܀ ܘܠܐ ܬܚܛܐ܂ * ܘܬܕܥ ܕܣܓܝ ܙܪܥܟ ܀ ܘܝܠܝܕܝܟ ܐܝܟ ܥܣܒܐ ܕܐܪܥܐ܂
26 27 * ܘܬܥܘܠ ܒܢܝܚܐ ܠܩܒܪܐ ܀ ܐܝܟ ܡܚܘܣܬܐ ܕܥܒܘܪܐ ܒܙܒܢܗ܂ * ܗܕܐ ܒܨܝܢ ܀ ܘܗܟܢܐ ܗܝ ܫܡܥܢܝܗ܂ ܘܐܢܬ
ܕܥ ܠܟ܂

* ܩܦܠܐܘܢ * ܘ *

1 2 * ܘܥܢܐ ܐܝܘܒ ܘܐܡܪ܂ * ܠܘ ܕܡܢ ܡܬܩܠ ܗܘܐ ܪܘܓܙܝ ܀ ܘܡܚܘܬܝ ܒܡܣܐܬܐ ܐܟܚܕܐ܂ ܡܛܠ ܕܗܫܐ
3 4 ܡܢ ܚܠܐ ܕܝܡܡܐ ܝܩܪ܂ ܡܛܠ ܗܢܐ ܡܠܝ ܒܠܝܥܢ܂ * ܡܛܠ ܕܐܓܪܘܗܝ ܕܚܝܠܬܢܐ ܒܒܣܪܝ܂ ܘܚܡܬܗܘܢ ܫܬܝܐ
5 6 ܪܘܚܝ܂ ܘܕܚܠܬܗ ܕܐܠܗܐ ܩܪܒܬܢܝ܂ * ܕܠܡܐ ܥܪܕܐ ܥܠ ܬܕܐܐ ܢܥܩܪ܂ ܐܘ ܬܘܪܐ ܥܠ ܫܦܝܬܗ ܢܓܥܐ܂ * ܐܘ ܡܬܐܟܠ
7 ܦܟܝܗܐ ܕܠܐ ܡܠܚܐ܂ ܐܘ ܐܝܬ ܛܥܡܐ ܒܚܠܒܐ ܕܣܪܩܐ܂ * ܡܐܣܬ ܢܦܫܝ ܒܡܚܘܬܗ܂ ܐܘ ܡܩܥܐ ܐܝܟ ܪܘܝܐ܂

Versio *ARABICA*.

9 10 * الذي صنع كباير بلا منتها وعجايب لا تحصي * الذي بعث المطر علي وجه الارض * وارسل المياه علي
11 12 وجه الاسواق * ليصنع الضعفاء في العلو والمتواضعين يتعظمون بالخلاص * يبطل فكر الحكماء ليلا تتم
13 14 علي ايديهم الحيله * ياخذ الحكماء بحكمتهم وراي الماكرين يبطل * في النهار يتحسسون مثل الظلام
15 16 ومثل الذي في الليل يتحسسون في الظهيرة * يخلص من السيف افواههم ومن يد العظيم المسكين *
17 18 ويكون للمسكين رجاء والمنافق يسد فاه * طوبا لرجل يودبه الله وموعظة العزيز لا يرفض * من
19 اجل انه يكسر ويجبر * ويضرب ويداه تشفي * في ستة كربات يخلصك * وفي السابعة لا يقرب اليك
20 21 السو * في الجوع يخلصك من الموت وفي القتال من يدي السيف * من سوط اللسان تستتر * ولا تخاف
22 23 من البلاء اذا ما ياتي * علي النهب وعلي الجوع تهزي * ومن حيوانة القفر لا ترهب * من اجل انه مع
24 حجارة القفر ميثاقك * وحيوانات القفر سلمت اليك * فتعرف انه سالما خباك * فترجع الي مستقرك
25 26 ولا تخطي * وتعلم ان كثيرا زرعك وولدك مثل عشب الارض * وتدخل بالراحة الي القبر مثل
27 مصعد الكديس في اوانه * هذه فهمناها وكذلك سمعناها * وانت فاقبل اليك * الفصل السادس *
1 2 * فاجاب ايوب وقال * ليت لي من يوزن غيظي والذي اصابني بالميزان معا * من اجل انه من رمال
3 4 البحر اعظم * من اجل ذلك فان اقوالي ممتنعة * لان سهام العزيز في بشري * وحميها تشرب روحي *
5 6 وهيبة الله افزعتني * العل يستروح حمار الوحش علي الحشيش * او يعج الثور علي الجرور * او يوكل
7 التفه بغير ملح * او يكون طعما في ريق الحمقاء * ملت نفسي بفكاكها * او يصرح مثل السكران قتالي *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Qui fecit magnalia ſine fine, et miracula ſine numero: Qui miſit pluvias ſuper faciem terræ, & miſit aquas ſuper faciem platearum: ut collocet imbecilles in excelſo, & humiles exaltentur in ſalute. Diſſipat cogitationem ſapientum (g) ne perficiatur per manus eorum aſtutia. Deprehendit ſapientes in eorum ſapientia, et intentionem aſtutorũ diſſipat: In die palpabunt quaſi in tenebris; & velut is qui eſt in nocte, palpabunt in meridie: Eruit à gladio ora eorum, et à manu potentis pauperem. Et erit pauperi ſpes, & iniquus claudet os ſuum. Beatus vir quem Domin⁹ erudit, & diſciplinã excelſi non deſpicit: Quoniam ipſe frangit & conſolidat, & percuit, & manus ejus ſanant. In ſex triſtitiis liberabit te, & in ſeptima non accedet ad te malũ. In fame eruet te à morte, & in bello è manib⁹ gladii, (h) A voce linguæ protegêris, neque formidabis (i) tribulationẽ cùm venerit: Propter rapinã & famem ridebis, neque timebis ob beſtiã deſerti: Quoniam cum lapidibus deſerti eſt pactum tuum, beſtiæ deſerti tradent ſe tibi: Et ſcies ſalvum eſſe tentorium tuum, & revertêris ad tabernaculum tuum, & non peccabis: Et cognoſces eſſe multiplex ſemen tuum, & ſobolem tuam ſicut herbam terræ: Et ingredêris cum tranquillitate ſepulchrum, ſicut acervus frumenti in tempore ſuo. Hec intelleximus, et ſic audivimus ea: tu ergò (k) reſipiſce. 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27

CAP. VI.

Reſpondit Job & dixit, Utinam adeſſet qui iram meam & quod evenit mihi, in ſtatera ſimul appenderet, Quoniam modò crevit magis quàm arenæ maris; proptereà ſermones mei ſunt detenti: Quia ſagittæ potentis ſunt in carne mea, & furor earum ebibit ſpiritum meum, & timor Dei terruit me. Num onager ſuper herbam reſpirat, et bos mugit ſuper ſectum gramen? Num comeditur inſipidum ſine ſale, aut eſt guſtus (a) in ſucco portulacæ? (b) Deſperat animus meus libertatem ſuam, aut (c) incedit velut ebrius pugna mea. 1 2 3 4 5 6 7

INTERP. SYRIACA.

(g) ne exequantur manus eorum ſapientiam. (h) A virga (i) confractionem (k) ſcito hoc tibi. CAP. vi. (a) in albumine vitelli? (b) Tædet animam meam in percuſſione ſua, (c) vociferatur velut

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Qui facit magna quorum non eſt *ſupputatio*, & mirabilia donec non ſit numerus. Qui dat pluviam ſuper faciem terræ Iſrael, & mittit aquas ſuper faciem *provinciarum* populorum. Ut ponat humiles fame in ſublime, & denigrati inopia confortentur ſalute. Qui irritas fecit cogitationes Ægyptiorum, qui callidè cogitaverunt, ut malè facerent Iſrael, & non eſt operata manus eorum conſilium ſapientiæ ſuæ. Qui comprehendit ſapientes Pharaonis in ſapientia eorum, & conſilium aſtrologorum ſuorũ perverſorum *recidere fecit* ſuper eos. Per diem incurrebant tenebris, & ſicut in nocte palpabant in meridie. Et redemit populum ſuum ab occiſione oris eorum, et de manu regis fortis populum pauperem. Et fuit pauperi ſpes, et *flagitium* impii obturavit os ſuum. Ecce beatus eſt Abraham vir *pius*, quem corripiebat Deus: et tu Iſrael diſciplinam omnipotentis ne abjicias. Quoniam ipſe adducit plagam, et adfert medecinam; percutit, et manus ejus ſanant. In ſex tribulationibus liberabit te, et in ſeptima non accedet ad te malum. In fame Ægypti redemit te à morte, et in bello Amalec de occiſione gladii. In nocumento linguæ Balaam abſconderis inter *nubes*, et non timebis à vaſtitate Madianitarum cùm venerit. In vaſtitate Sion et in fame deſerti ridebis, et à caſtris Og qui comparatus eſt beſtiæ *feræ* terræ, non timebis. Quoniam cum tabulis lapideis quæ datæ ſunt *publicè* in agro, eſt pactum tuum: et Cananæi qui comparati ſunt beſtiis agri, inierunt pacem tecum. Et ſcies quoniam pax erit in *domo* doctrinæ tuæ, et præparabis habitaculum domus ſanctuarii tui, et non nocebis. Et ſcies quia multi ſunt filii tui, et filii filiorum tuorum quaſi herba agri. Ingredieris in perfectione annorum tuorum in ſenio in *ſepulchrum*, ſicut tollitur acervus tritici in tempore ſuo. Ecce hoc ſcrutati ſumus, et ita eſt: ſuſcipe illud: et tu ſcito tibi. 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27

CAP. VI.

Et reſpondit Job et dixit: Utinam appendendo appenderetur ira mea; et conturbatio mea in ſtatera levarentur ſimul. Quoniam nunc arenã maris gravior eſſet: ideò verba mea deficiunt. Quoniam ſagittæ omnipotentis in me ſunt, quarũ venenũ bibit ſpiritus me⁹: turbationes quæ ſunt à facie Dei, ordinantur contra me. Nunquid poteſt *rudere* onager ſuper herbam? *quomodo* mugiet bos ſuper pabulum ſuũ? Nunquid comedi poteſt pulmentũ abſq; ſale, aut eſt guſt⁹ in albumine ovi & albugine vitelli? *Targum aliud: Sicut non comeditur quicquam pulmenti abſq; ſale, ſic non eſt ſapor in mutilagine vitelli.* Quæ renuit tangere anima mea, ipſa reputata ſunt quaſi infirmitas prandio meo. *Targum aliud:* Quæ renuit tangere anima mea, ipſa *faciunt me infirmum, & fuit ſufficientia* prandio meo. 2 3 4 5 6 7

איוב : ז

? Deus det meam expectationem & ,mea petitio veniat det Quis
מִי־יִתֵּן תָּבוֹא שֶׁאֱלָתִי וְתִקְוָתִי יִתֵּן אֱלוֹהַּ׃ 8
.me succidat & ,suam manum solvat ; me conterat & , Deus velit Et
וְיֹאֵל אֱלוֹהַּ וִידַכְּאֵנִי יַתֵּר יָדוֹ וִיבַצְּעֵנִי׃ 9
; parcet non ,ægritudine in consolidescã & ,mea consolatio adhuc erit Et
וּתְהִי־עוֹד נֶחָמָתִי וַאֲסַלְּדָה בְחִילָה לֹא יַחְמוֹל 10
? sperem ut ,mea fortitudo Quæ .Sancti eloquia abscondi non quia
כִּי־לֹא כִחַדְתִּי אִמְרֵי קָדוֹשׁ׃ מַה־כֹּחִי כִּי אֲיַחֵל 11
lapidum fortitudo An ? meam animam prolongem ut ,meus finis quis &
וּמַה־קִּצִּי כִּי־אַאֲרִיךְ נַפְשִׁי׃ אִם־כֹּחַ אֲבָנִים 12
meum auxilium Nonne ? ænea mea caro an ? mea fortitudo
כֹּחִי אִם־בְּשָׂרִי נָחוּשׁ׃ הַאִם אֵין עֶזְרָתִי 13
suo socio à Dissoluto ? me à est expulsa subsistentia & ? me in
בִי וְתֻשִׁיָּה נִדְּחָה מִמֶּנִּי׃ לַמָּס מֵרֵעֵהוּ 14
sunt prævaricati mei Fratres .derelinquet Saddai timorem & ,misericordia
חֶסֶד וְיִרְאַת שַׁדַּי יַעֲזוֹב׃ אַחַי בָּגְדוּ 15
præ Nigrescentes .transibunt torrentium impetus sicut : torrens sicut
כְמוֹ־נָחַל כַּאֲפִיק נְחָלִים יַעֲבֹרוּ׃ הַקֹּדְרִים מִנִּי־ 16
: excidentur ,effluxerint tempore In .nix occultabitur eis super ,gelu
קָרַח עָלֵימוֹ יִתְעַלֶּם־שָׁלֶג׃ בְּעֵת יוֹרְבוּ נִצְמָתוּ 17
: eorũ viæ semitæ Declinabunt .suo loco de extinguentur eo incalescendo in
בְּחֻמּוֹ נִדְעֲכוּ מִמְּקוֹמָם׃ יִלָּפְתוּ אָרְחוֹת דַּרְכָּם 18
; Thema semitas Respexerunt .peribunt & , nihilum in ascendent
יַעֲלוּ בַתֹּהוּ וְיֹאבֵדוּ׃ הִבִּיטוּ אָרְחוֹת תֵּמָא 19
quoniam ,sunt affecti Pudore .sibi expectaverunt Seba itinera
הֲלִיכֹת שְׁבָא קִוּוּ לָמוֹ׃ בֹּשׁוּ כִּי־ 20
nunc Quia .pudore sunt affecti & : illud usque venerunt : speravit
בָטָח בָּאוּ עָדֶיהָ וַיֶּחְפָּרוּ׃ כִּי־עַתָּה 21
: dixi verè Num .timetis & ,fractionem videbitis : nihil fuistis
הֱיִיתֶם לֹא תִּרְאוּ חֲתַת וַתִּירָאוּ׃ הֲכִי־אָמַרְתִּי 22
me liberate Et ? me pro donate vestra facultate de & ,mihi Afferte
הָבוּ לִי וּמִכֹּחֲכֶם שִׁחֲדוּ בַעֲדִי׃ וּמַלְּטוּנִי 23
, me Docete : me redimetis terribilium manu è & , hostis manu è
מִיַּד־צָר וּמִיַּד עָרִיצִים תִּפְדּוּנִי׃ הוֹרוּנִי 24
Quàm .me intelligere facite erravi quo & ; tacebo ego &
וַאֲנִי אַחֲרִישׁ וּמַה־שָּׁגִיתִי הָבִינוּ לִי׃ מַה־ 25
increpans increpabit quid & ! rectitudinis eloquia sunt roborata
נִּמְרְצוּ אִמְרֵי־יֹשֶׁר וּמַה־יּוֹכִיחַ הוֹכֵחַ
ventum in & : cogitabitis sermones increpandum ad Nonne ! vobis ex
מִכֶּם׃ הַלְהוֹכַח מִלִּים תַּחְשֹׁבוּ וּלְרוּחַ 26
fodietis & ; projicietis pupillum super Etiam ? desperati eloquia
אִמְרֵי נוֹאָשׁ׃ אַף־עַל־יָתוֹם תַּפִּילוּ וְתִכְרוּ 27
super & : me in respicite velitis nunc Et .vestrum sodalem super
עַל־רֵיעֲכֶם׃ וְעַתָּה הוֹאִילוּ פְנוּ־בִי וְעַל־ 28
: iniquitas sit ne ,nunc Convertimini .mentiar si ,vestram faciem
פְּנֵיכֶם אִם־אֲכַזֵּב׃ שֻׁבוּ נָא אַל־תְּהִי עוֹלָה 29
mea lingua in est Nunquid .ea in mea justitia , adhuc revertimini &
וְשֻׁבִי עוֹד צִדְקִי־בָהּ׃ הֲיֵשׁ־בִּלְשׁוֹנִי 30
? infortunia intelliget non meum palatum an ? iniquitas
עוֹלָה אִם־חִכִּי לֹא־יָבִין הַוּוֹת׃

CAP. VII. ז

? ejus dies mercenarii dies sicut & : terram super homini militia Nonne
הֲלֹא־צָבָא לֶאֱנוֹשׁ עֲלֵי־אָרֶץ וְכִימֵי שָׂכִיר יָמָיו׃ 1
.suum opus expectabit mercenarius sicut & ,umbram anhelabit servus Sicut
כְּעֶבֶד יִשְׁאַף־צֵל וּכְשָׂכִיר יְקַוֶּה פָעֳלוֹ׃ 2
ærumnæ noctes & ; vanitatis menses mihi accepi hæreditate Sic
כֵּן הָנְחַלְתִּי לִי יַרְחֵי־שָׁוְא וְלֵילוֹת עָמָל 3
.mihi numeraruut
מִנּוּ־לִי׃

Versio VULG. LAT.

8 Quis det ut veniat petitio
mea : & quod expecto, tribuat
9 mihi Deus ? Et qui cœpit,
ipse me conterat : ſolvat ma-
num ſuam, & ſuccîdat me ?
10 Et hæc mihi ſit conſolatio, ut
affligens me dolore, non par-
cat, nec contradicam ſermo-
11 nibus Sancti. Quæ eſt enim
fortitudo mea, ut ſuſtineam ?
aut quis finis meus, ut patien-
12 ter agam ? Nec fortitudo la-
pidum fortitudo mea, nec caro
13 mea ænea eſt. Ecce, non eſt
auxilium mihi in me, & ne-
ceſſarii quoque mei receſſe-
14 runt à me. Qui tollit ab ami-
co ſuo miſericordiam, timo-
15 rem Dñi derelinquit. Fratres
mei præterierunt me, ſicut tor-
rens qui raptim tranſit in
16 convallibus. Qui timent prui-
17 nam, irruet ſuper eos nix. Tem-
pore, quo fuerint diſſipati,
peribunt : & ut incaluerit, ſol-
18 ventur de loco ſuo. Involutæ
ſunt ſemitæ greſſuum eorũ:
ambulabunt in vacuum, & per-
19 ibunt. Conſiderate ſemitas
Thema, itinera Saba, & ex-
20 pectate pauliſper. Confuſi ſunt
quia ſperavi : venerunt quo-
que uſque ad me, & pudore
21 cooperti ſunt. Nunc veni-
ſtis : & modò videntes pla-
22 gam meam timetis. Numquid
dixi ; Afferte mihi, et de ſub-
ſtantia veſtra donate mihi ?
23 Vel, Liberate me de manu ho-
ſtis, & de manu robuſtorum e-
24 ruite me ? Docete me, & ego
tacebo : & ſiquid fortè igno-
25 ravi, inſtruite me. Quare de-
traxiſtis ſermonibus veritatis,
cũ è vobis nullꝰ ſit qui poſſit
26 arguere me ? Ad increpandum
tantùm eloquia concinnatis, et
27 in ventũ verba profertis. Su-
per pupillũ irruitis, & ſubver-
28 tere nitimini amicũ veſtrũ. Ve-
runtamen ꝙ cœpiſtis explete:
præbete aurem, & videte an
29 mentiar. Reſpondete, obſecro,
abſq; contentione: et loquen-
30 tes id ꝙ juſtũ eſt, judicate. Et
non invenietis in lingua mea
iniquitatem : nec in faucibus
meis ſtultitia perſonabit.

CAP. VII.

1 Militia eſt vita hominis ſu-
per terram : & ſicut dies mer-
2 cenarii, dies ejus. Sicut ſer-
vus deſiderat umbram, & ſicut
mercenarius præſtolatur finem
3 operis ſui : Sic & ego ha-
bui menſes vacuos, & noctes
laborioſas enumeravi mihi.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

8 † Εἰ γὰρ δῴη καὶ (ε) ἔλθοι μου ἡ αἴτησις,
† καὶ τὴν ἐλπίδα μου δῴη (ζ) ὁ κύριος.
9 † Ἀρξάμενος ὁ κύριος (η) τρωσάτω με, εἰς
10 τέλος δὲ μή με ἀνελέτω. † Εἴη δέ (θ) μου
πόλις τάφος, ἐφ' ἧς ἐπὶ τειχέων ἡλλό-
μην, ἐπ' αὐτῆς † (ι) οὐ φείσομαι· οὐ γὰρ ἐψευ-
11 σάμην (κ) ῥήματα ἅγια θεοῦ μου. † Τίς
γάρ μου ἡ ἰσχὺς, ὅτι ὑπομένω; † ἢ τίς
μου ὁ χρόνος, ὅτι ἀνέχεταί μου ἡ ψυχή;
12 † Μὴ ἰσχὺς λίθων ἡ ἰσχύς μου; † ἢ αἱ
13 σάρκες μου εἰσὶ (λ) χάλκειαι; † Ἦ οὐκ
ἐπ' αὐτῷ ἐπεποίθειν; † βοήθεια δὲ ἀπ'
14 ἐμοῦ ἄπεστιν. † (μ) Ἀπείπατό με ἔλεος,
15 (ν) ἐπισκοπὴ δὲ κυρίου ὑπερεῖδέ με. † Οὐ
προσεῖδόν με οἱ ἐγγύτατοί μου; † ὥσπερ
χειμάρρους ἐκλείπων, † ἢ ὥσπερ (ξ) κῦμα
16 παρῆλθόν με. † Οἵτινές με (ο) διευλα-
βοῦντο νῦν ἐπιπεπτώκασί μοι, † ὥσπερ χι-
17 ὼν ἢ κρύσταλλος πεπηγώς. † Καθὼς (π)
τακεῖσα θέρμης γενομένης, οὐκ ἐπεγνώσθη
18 ὅπερ ἦν, † (ρ) Οὕτω κἀγὼ κατελείφθην
ὑπὸ πάντων, † ἀπωλόμην (σ) δὲ καὶ
19 ἔξοικος ἐγενόμην. † Ἴδετε ὁδοὺς Θαι-
μανῶν, (τ) ἀτραποὺς Σαβῶν † οἱ διορῶν-
20 τες. † Καὶ αἰσχύνην ὀφειλήσουσιν, † οἱ ἐπὶ
21 πόλεσιν καὶ χρήμασι πεποιθότες. † (υ) Ἀ-
τὰρ δὲ καὶ ὑμεῖς ἐπέβητέ μοι ἀνελεημόνως,
† ὥστε ἰδόντες τὸ ἐμὸν τραῦμα φοβήθητε.
22 † Τί γάρ; μήτι ὑμᾶς ᾔτησα, ἢ τῆς παρ'
23 ὑμῶν ἰσχύος ἐπιδέομαι, † Ὥστε σῶσαί με
(φ) ἐξ ἐχθρῶν, ἢ ἐκ χειρὸς δυναστῶν ῥύ-
24 σασθαί με; † Διδάξατέ με, ἐγὼ δὲ κω-
φεύσω· † εἰ τι πεπλάνημαι, φράσατέ μοι.
25 † Ἀλλ' ὡς ἔοικε φαῦλα (χ) ἀληθινοῦ ῥή-
ματα, † οὐ γὰρ (ψ) παρ' ὑμῶν ἰσχὺν αἰτοῦμαι.
26 † Οὐδὲ (ω) ἔλεγχος ὑμῶν ῥήμασί με παύ-
σει, † οὐδὲ γὰρ ὑμῶν φθέγμα ῥήματος ἀν-
27 έξομαι. † Πλὴν ὅτι (α) ἐπ' ὀρφανῷ ἐπι-
πίπτετε, † ἐνάλλεσθε δὲ ἐπὶ φίλῳ ὑμῶν.
28 † Νυνὶ δὲ (β) εἰσβλέψας εἰς πρόσωπα ὑ-
29 μῶν, οὐ ψεύσομαι. † Καθίσατε δὴ καὶ
μὴ εἴη (γ) ἄδικον, † καὶ πάλιν τῷ δικαίῳ
30 συνέρχεσθε. † Οὐ γάρ ἐστιν (δ) ἐν γλώσ-
σῃ μου ἄδικον, † ἢ ὁ λάρυγξ μου οὐχὶ
σύνεσιν μελετᾷ;

ΚΕΦ. ζ'.

1 Πότερον οὐχὶ πειρατήριόν ἐστιν ὁ βίος
ἀνθρώπου ἐπὶ τῆς γῆς; † καὶ ὥσπερ (α)
2 μισθίου αὐθημερινοῦ ἡ ζωὴ αὐτοῦ; † Ἢ
ὥσπερ θεράπων δεδοικὼς τὸν κύριον αὐτοῦ,
καὶ (β) τετυχὼς σκιᾶς; † ἢ ὥσπερ μι-
3 σθωτὸς ἀναμένων τὸν μισθὸν αὐτοῦ; † Οὕ-
τως (γ) κἀγὼ ὑπέμεινα μῆνας κενοὺς,
† νύκτες δὲ ὀδυνῶν δεδομέναι μοί εἰσιν.

Si enim det, & veniat poſtula- 8
tio mea, & ſpem meam det Do-
minus : Qui cœpit Dominus, 9
vulneret me : in (g) finem au-
tem ne me tollat : Sit (h) autem 10
mea civitas ſepulchrum, ſuper
cujus muros ſaltabam ſuper eam:
non parcã: non enim mentitꝰ ſum
verba ſancta Dei mei. Quæ enim 11
virtus mea, ut ſufferam ? aut
(i) quod tempus meum, ut ſuſti-
neat anima mea ? Nunquid vir- 12
tus lapidum virtus mea, aut car-
nes meæ ſunt æneæ ? Aut non in 13
ipſo confidebam? Sed adjuto-
rium à me receſſit : Negavit me 14
miſericordia, & viſitatio Do-
mini me deſpexit : Propinqui 15
mei non reſpexerunt me : tan-
quam torrens deficiens, aut ſicut
fluctus, tranſierunt me : Qui 16
verebantur me, nunc irruerunt
ſuper me : ſicut nix aut gelu
concretum. Quemadmodùm 17
quod liquefactum eſt calore ex-
orto, non cognitum eſt quod erat:
Ita & ego derelictus ſum ab o- 18
mnibus: Perii autem, & exul de
domo mea factus ſum. Vias (k) 19
Themanorum videte, ſemitas Sa-
bæorum intuentes : Et confuſi- 20
onem debebunt, qui in civitatibus
& pecuniis confiderunt. Nunc 21
autem, & vos inſurrexiſtis in
me ſine miſericordia. Itaque vi-
dentes vulnus meum timete.
Quid enim ? nunquid aliquid 22
vos petii, aut fortitudine veſtrâ
indigeo ? Ut ſalvetis me de ini- 23
micis, vel de manu potentium li-
beretis me? Docete me, & ego 24
obmuteſcam : ſi quid erravi, di-
cite mihi : Sed ut (l) videtur, 25
vilia veracis verba : non enim
à vobis fortitudinem peto, Neque 26
correptio veſtra verbis me ſeda-
bit : neque enim eloquutionem
ſermonis veſtri ſuſtinebo. Ve- 27
runtamen ſuper pupillum irrui-
tis, & inſultatis ſuper amicum
veſtrum. Nunc autem (m) in- 28
ſpiciens in facies veſtras, non
mentiar. (n) Sedete, obſecro, et 29
non ſit injuſtum, & rurſus juſto
adeſtote. Non eſt enim in lingua 30
mea iniquitas, aut fauces meæ
nóane intellectum meditantur?

CAP. VII.

Nunquid non tentatio eſt vi- 1
ta hominus ſuper terram? & ſic-
ut quotidiani mercenarii vita e-
jus? Aut tanquam ſervus me- 2
tuens dominum ſuum, & conſe-
quutus umbrã? aut tanquã mer-
cenariꝰ expectans mercedẽ ſuã?
Sic et ego expectavi menſes va- 3
nos : & noctes dolorum datæ
ſunt mihi.

MS.A. (ε) ἔλθῃ (ζ) ὁ θεός. (η) τρωσάτω, εἰς τέλος (θ) μοι ἡ πόλις μου τάφος, (ι) οὐ μὴ φίσωμαι· (κ) ἐν ῥήματι ἁγίου θεοῦ μου. (λ) χαλκαῖ; (μ) Ἀπίπατο δέ με (ν) καὶ ἐπισκοπὴ κυρίου (ξ) κύματα (ο) εὐλαβοῦντο (π) τακεὶς θέρμης γενομένης, οὐκέτι ἐγνώσθη (ρ) Οὕτως καὶ ἐγὼ (σ) τε καὶ (τ) καὶ ἀτραποὺς * ἀσεβῶν οἱ διορῶντες αἰσχύνθηται. Αἰσχύνην οἱ ὁρῶντες ὀφιλήσουσιν, οἱ ἐπὶ (υ) Ἀτὰρ δὴ (φ) ἐκ χειρὸς κακῶν, ἢ ῥύσασθαί με ἐκ χειρὸς δυνάστου; (χ) ἄνδρος ἀληθινοῦ (ψ) παρ' ὑμῶν ῥῆμα οὐδὲ ἰσχὺν (ω) ὁ ἔλεγχος ὑμῶν τὰ ῥήματά μου παύσει, οὐδὲ * φθέγγματος ῥήματος ὑμῶν ἀνέξομαι. (α) ὀρφανῷ (β) ἐμβλέψας (γ) ἄδικον ἐν κρίσει, καὶ πάλιν (δ) ἄδικον ἐν γλώσσῃ μου, οὐχὶ δὲ καὶ ὁ * λάρυξ μου σύνεσιν μελετᾷ; Κεφ. ζ'. MS.A. (α) * μισθοῦ (β) τετυχηκώς (γ) καὶ ἐγώ

תרגום TARGUM.

מן יהיב ותיתי שילתי וסברי יתן אלהא : ושרי אלהא לממסכן יתי יתיר ידיה ויעתיר יתי : ותהי דא תנחומתי ואבוע ברתיחא ולא יחוס על רשיעא 8 10 9
ארום לא כסיתי מלי קדישא : מה חילי ארום אוריך ומה סופי ארום נגרנא נפשי : אין חילא היך אבניא חילי אין בסרי קרים כנחשא : המדלית סיועי 11 12
בי וחוכמתא אתברחת מני : לנברא דמנע מן חבריה חסדא ודחלת שדי ישבוק : אחי בזוו היך נחלא היך מפקנות פצדי נחליא עברין : דשחימין 13 14 15
מן צנתא עליהון יתחיל תלגא : בעדן דחבו דר טובענא אשתרבבו אתמגרו ברתחיה אתמחיאו מן אתריהון : מטול דמקלקלין אסרטי 16 17 18
אורחיהון סלקין ללמא ויהובדון : אסתכו אסרטי תימא הלכתא דזמרגד סברו להון : בהיתו ארום אתרחיצו בטעותהון אתו לנבדה ואתכסיפו : 19 20
ארום כדון הויתון כלא הויתון חמיתון תברא ואתבהלתון : הבקושטא אמרית הבו לי ומן נכסיכון שחדו אמטולתי : ושזבוני מן יד מעיקא 21 22 23
ומן ידיהון דתקיפי פרוקו יתי : אליפו יתי ואנא אשתוק ומה דשליתי אסכילו לי : מה בסימין הנון מלין תריצין ומן דכשר לכסנא יכסן מנכון : 24 25
אפשר דלכסנא במליא אתון חשבין ולקבלא אמתילו מלי יאושא : רגיז על יתם תשרון ותחשלון על חבריכון : וכדון שרו אסתכלו בי וקדמיכון 26 27 28
אם אכזב : תובו כדון לא תהי רשעא ותובו תוב לזכאותי בדה : האית בלישני רשעא אין מוריני לא יתבין רגושתא : 29 30

ז

הלא חילא לבר נש עלוי ארעא והיך יומי אגירא יומוי : היך עבדא דשאף טולא והיך אגירא דמודיק סטריה : הכדין אחסנית לי ירחין דמגן 1 2 3
ולילון דלעות חשיבו לי :

Verſio SYRIACA.

8 * ܡܢܘ ܢܬܠ ܠܝ ܕܬܐܬܐ ܫܐܠܬܝ .· ܘܣܒܪܝ ܢܬܠ ܐܠܗܐ. * ܘܢܬܦܝܣ ܐܠܗܐ. ܘܢܕܟܝܢܝ. ܘܢܦܫܘܛ
9 10 ܐܝܕܗ ܘܢܫܡܠܝܢܝ. * ܘܬܗܘܐ ܬܘܒ ܒܘܝܐܐ ܕܝܠܝ. ܘܐܫܬܡܠܐ ܐܦ ܒܚܝܠܐ ܕܠܐ ܚܘܣܪܢ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܕܓܠܬ ܒܡܐܡܪܗ
11 12 ܕܩܕܝܫܐ. * ܘܡܢܐ ܗܘ ܚܝܠܝ ܕܐܣܝܒܪ. ܘܡܢܐ ܗܘ ܚܪܬܝ ܕܐܓܪܓ ܢܦܫܝ. * ܠܘ ܐܝܟ ܚܝܠܐ ܕܟܐܦܐ ܚܝܠܝ.
13 14 ܐܘ ܒܣܪܝ ܕܢܚܫܐ ܗܘ .· * ܗܐ ܠܐ ܥܘܕܪܢܗ ܥܡܝ .· ܘܦܘܪܩܢܗ ܐܬܪܚܩ ܡܢܝ. * ܕܟܠܐ ܫܠܡܐ ܡܢ ܚܒܪܗ .·
15 16 ܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܡܐ ܫܒܩ. * ܐܚܝ ܕܓܠܘ ܐܝܟ ܢܚܠܐ .· ܘܐܝܟ ܪܕܝܐ ܕܢܚܠܐ. * ܕܕܚܠܝܢ ܗܘܘ ܡܢ ܓܠܝܕܐ .·
17 ܣܓܝ ܥܠܝܗܘܢ ܬܠܓܐ. * ܘܒܥܕܢܐ ܕܕܢܚ ܒܗܘܢ. ܦܫܪܝܢ. ܘܒܚܘܡܗܘܢ ܦܫܪܝܢ ܡܢ ܐܬܪܘܬܗܘܢ.
18 19 * ܢܬܥܩܡܘܢ ܫܒܝܠܐ ܕܐܘܪܚܬܗܘܢ. ܘܢܣܩܘܢ ܒܬܗܪܐ ܘܢܐܒܕܘܢ. * ܕܚܙܘ ܠܐܘܪܚܬܐ ܕܬܝܡܢܐ. ܘܫܒܝܠܐ
20 21 ܕܫܒܐ ܣܟܝܘ ܠܗܘܢ .· * ܒܗܬܘ ܒܡܕܡ ܕܐܬܬܟܠܘ .· ܘܡܛܘ ܠܗ ܘܐܬܒܗܬܘ. * ܐܦ ܐܢܬܘܢ ܗܘܝܬܘܢ
22 ܥܠܝ. ܡܛܠ ܕܥܕܠܐ ܚܙܝܬܘܢ ܫܘܓܫܐ. ܕܚܠܬܘܢ .· * ܠܡܐ ܐܡܪܬ ܠܟܘܢ. ܗܒܘ ܠܝ. ܐܘ ܡܢ ܩܢܝܢܟܘܢ
23 24 ܫܘܚܕܘ ܚܠܦܝ .· * ܘܦܨܘܢܝ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܒܥܠܕܒܒܝ .· ܐܘ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܥܫܝܢܐ ܦܪܘܩܘܢܝ .· * ܐܠܦܘܢܝ. ܘܐܢܐ
25 ܐܫܬܘܩ. ܘܡܕܡ ܕܛܥܝܬ ܚܘܘܢܝ. * ܠܡܢܐ ܕܚܩܬܘܢ ܡܠܬܐ ܕܩܘܫܬܐ. ܘܡܢ ܡܢܟܘܢ ܡܟܣ ܘܡܚܘܐ.
26 27 * ܗܫܐ ܠܡܒܨܝܘ ܡܠܐ ܐܬܚܫܒܬܘܢ. ܘܥܠ ܪܘܚ ܡܠܝ ܐܬܪܥܝܬܘܢ .· * ܗܐ ܥܠ ܝܬܡܐ ܡܬܪܘܪܒܝܢ ܐܢܬܘܢ .·
28 29 ܘܡܥܩܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܪܚܡܝܟܘܢ .· * ܘܗܫܐ ܩܒܠܘ ܘܚܘܪܘ. ܘܩܕܡܝܟܘܢ ܐܡܠܠ. ܘܠܐ ܐܕܓܠ. * ܬܘܒܘ ܗܫܐ.
30 ܘܠܐ ܬܗܘܘܢ ܐܝܟ ܥܘܠܐ. ܬܘܒܘ ܗܫܐ ܘܙܟܘ. * ܕܠܡܐ ܐܝܬ ܒܠܫܢܝ ܥܘܠܐ .· ܐܘ ܦܘܡܝ ܠܐ ܡܡܠܠ ܩܘܫܬܐ .·
1 * ܩܦܠܐܘܢ. * ܙ * * ܗܐ ܙܒܢܐ ܗܘ ܠܒܪܢܫܐ ܥܠ ܐܪܥܐ. ܘܐܝܟ ܝܘܡܬܐ ܕܐܓܝܪܐ ܝܘܡܬܗ.
2 3 * ܘܐܝܟ ܥܒܕܐ ܕܡܣܟܐ ܠܛܠܠܐ. ܘܐܝܟ ܐܓܝܪܐ ܕܡܣܟܐ ܠܫܘܠܡ ܥܒܕܗ. * ܗܟܢܐ ܝܪܬܬ ܠܝ ܝܪܚܐ
ܣܪܝܩܐ ܘܠܠܝܘܬܐ ܕܥܡܠܐ. ܠܐ ܐܬܡܢܝܘ ܠܝ.

Verſio ARABICA.

8 9 * مَن الذي يعطيني ان تاتي مسالتي ورجاي يعطيني * فيرضا الله ويطهرني * ويبسط يده فيكملني *
10 11 * فيكون ايضا عزاي * واستتم ايضا بقوة بلا قدر * من اجل اني لم اكذب بقول القدوس * وكم تكون
12 قوتي حتي اصبر وماذا تكون اخرتي حتي اطيل بروحي * فلو كانت قوتي مثل قوة الحجر * او بشري كان
13 14 نحاسا * فانه ليس عونه معي * وخلاصه قد تباعد مني * الذي يمنع السلام من صاحبه خشية العالي
15 16 يترك * اخوتي كذبوا مثل الاودية * ومثل السواقي الجارية * الذين كانوا يفزعون من الجليد عليهم
17 18 كثر الثلج * وفي ساعة يظهر فيهم يتحللون * وبسخونتهم يتحللون من اماكنهم * تعوج سبل
19 20 طرايقهم ويصعدون في التحيير فيهلكون * لما نظروا طرايق اليمن والي مسالك سبا قصدوا * خزوا في
21 الذي توكلوا * بلغوا اليه فبهتوا * وانتم ايضا كنتم علي من اجل انه من قبل ان تروا تحريكا
22 23 فزعتم * الو اني قلت لكم هبوا لي * ومن اموالكم ارشوا بدلي * وفكوني من يدي معاندي * او من يد
24 25 العزيز نجوني * فاعلموني وانا اصمت * وعاذا طغيت فانبوني * لماذا تدفعون قول الصدق * ومن الذي
26 27 ينصح ويعظ منكم * فالان لتفتيش الكلام تفكرون * وعلي روح كلمتي تتفهمون * فهوذا علي اليتيم
28 29 تتكبرون * ولاحبايكم تحزنون * والان فاقبلوا وانظروا وقدامكم اتكلم ولا اكذب * توبوا من الان ولا
30 تكونوا مثل الاشرار * عودوا الان وازكوا * العلّ ترون في لساني اثما * او فمي ليس ينطق بالصدق *
1 2 * الفصل السابع * * فان الان زمانا للناس علي الارض * ومثل ايام الاجير ايامه * ومثل ايام العبد الذي
3 يرتقب الظل * ومثل الاجير الذي ينتظر تمام فاعله * هكذا ورثت اشهرا بطالة وليالي العمل لم تحسب لي *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Quis mihi det ut veniat 8
poſtulatio mea, & ſpem
meam (d) *det mihi: Et* 9
placetur Deus, & me
mundet: & extendat
manum ſuam, & me
perficiat, Sitque denuò 10
conſolatio mea, &
perficiar quoque virtute
(e) *ſine menſura, quandoquidem*
non ſum mentitus
in ſermonem ſanctiſſimi;
Et quanta eſt 11
fortitudo mea, ut ſuſtineam?
& quinam eſt
finis meus, ut patientiam
habeam? Si eſſet fortitudo 12
mea ut fortitudo
lapidis, aut caro mea
eſſet ænea: Quoniam 13
auxilium ejus non eſt
mecum, & ſalus ejus
jam receſſit à me. Qui 14
probibet pacem ab amico
ſuo, timorem altiſſimi
dereliquit. Fratres 15
mei mentiti ſunt, velut
torrentes & ſicut rivuli
fluentes. Qui timebant 16
glaciem, multiplicata
eſt ſuper eos nix;
Et tempore quo exoritur 17
in eos dies, liqueſcunt,
& in calore ſuo diſſolventur
de locis ſuis:
Et detorquebuntur ſemitæ 18
viarum eorum, &
aſcendent in ſtupore, &
peribunt: Eò quòd reſpexerint 19
ad vias Auſtri,
ſemitas Saba intenderint.
Confuſi ſunt 20
in eo in quo confiſi ſunt;
ad illud pervenerunt, &
ſtupore capti ſunt. Vos 21
quoque fuiſtis contra me,
quoniam antequam vidiſſetis
perturbationem,
deterriti eſtis. Quid 22
ſi dixiſſem vobis, Date
mihi, aut de bonis veſtris
ſæneramini pro me,
Et liberate me de manibus 23
adverſariorum meorum,
aut de manu potentis
eruite me? Docete 24
me, & ego ſilebo:
& qua in re erraverim,
indicate mihi. Quare 25
repellitis ſermonem veritatis?
& quis veſtrûm
(f)*hortatur et cōmonet?*
Modò ad verba diſquirenda 26
excogitatis, &
contra ſpiritū ſermonis
mei meditamini. Ecce adverſùs 27
pupillū elevamini,
& amicos veſtros
contriſtatis. Jam verò, 28
admittite & conſiderate,
& corā vobis loquar,
& non mentiar. Pœniteat 29
vos modò, & ne ſitis
velut ſceleſti; convertimini
modò, & innocentes
eſtote. Num in 30
lingua mea (g) *videtis*
iniquitatem, aut os meū
non profert veritatem?

CAP. VII.

Nunc enim tempus 1
eſt homini ſuper terram,
& ſicut dies mercenarii
dies ejus, Et ſicut dies 2
ſervi qui expectat umbram,
& ſicut mercenarius
qui expectat † *ultimatum*
opus factoris ſui:
Sic poſſedi menſes otioſos, 3
& noctes laboris
non ſunt computatæ
mihi.

INTERPR. SYRIACA. (*d*) det Deus: (*e*) ſine inopia, (*f*) redarguit & increpat? (*g*) eſt iniquitas, † ut abſolvatur opus ſuum:

PA^R^APH. CHALD. Verſio Latina.

Quis det ut veniat petitio mea, & expectationem meam det Deus. Et Deus qui cœpit pauperem me *facere*, ſolvat manum ſuam; & divitem me faciat. 8 9
Et hæc erit conſolatio mea, & exultabo cùm venerit *furor* ſuper *impium*, & non parcet, quia non celavi verba ſancti. Quæ eſt enim fortitudo mea ut expectem? & quis 10 11
eſt finis meus cur protraham animam meam? Nunquid ſicut fortitudo petrarum eſt fortitudo mea, aut caro mea eſt robuſta ſicut æs? Nunquid non eſt auxilium in me, 12 13
& ſapientia expulſa eſt à me? Qui prohibet à viro amico ſuo miſericordiam, timorem omnipotentis derelinquit. Fratres mei diripuerunt ſicut alveus torrentis, 14 15
ſicut egreſſio rivorum torrentium qui pertranſeunt. Qui denigrati ſunt propter frigus, contra eos prævalebit nix. In tempore quo peccaverunt generatio diluvii, 16 17
diſſipati ſunt, conſumpti ſunt in furore ſuo, & *deleti ſunt* de loco ſuo. Pro eo quòd diſſipaverunt greſſus viarum ſuarum; aſcendunt in vanum & peribunt. Conſideraverunt 18 19
ſemitas Thema, itinera Zamargadi expectaverunt ſibi. Confuſi ſunt quia ſperaverunt in idolis ſuis, venerunt uſque illuc, & erubuerunt. Quoniam 20 21
nunc fuiſtis quaſi non eſſetis; vidiſtis interitum, & *conturbati fuiſtis*. Nunquid verè dixi: Date mihi, & de ſubſtantiis veſtris munera date pro me. Et liberate me de 22 23
manu hoſtis, & de manu robuſtorum redimite me. Docete me, & ego tacebo; & ſi erravi, intelligere facite me. Quàm ſuaves ſunt ſermones rectorum! & qui aptus 24 25
eſt ex vobis ad corripiendum, corripiat. Nunquid ad corripiendum verbis vos cogitatis; & tenebris comparatis verba deſperata? Iram ſuper pupillum miſiſtis, & cogitatis 26 27
contra amicum veſtrum. Nunc autem incipite & contemplamini me, & [*videte*] an mentiar coram vobis. Convertimini nunc, ne ſit *iniquus*, & convertimini 28 29
adhuc ut juſtificer in eo. Nunquid eſt iniquitas in lingua mea, aut guttur meum non intelligit tumultus? 30

CAP. VII.

NOnne militia eſt filio hominis ſuper terram: & ſicut dies mercenarii, dies ejus? Sicut ſervus qui deſiderat umbram, & ſicut mercenarius qui expectat mercedem 1 2
operis ſui: Sic poſſedi mihi menſes vanitatis, & noctes laborioſas enumeraverunt mihi. 3

איוב : ח

: vesperam est mensum & ,surgam quando ,dixi & ,jacui Si
4 אִם־שָׁכַבְתִּי וְאָמַרְתִּי מָתַי אָקוּם וּמִדַּד־עָרֶב
est Induta .crepusculum ad usque evagationibus sum saturatus &
5 וְשָׂבַעְתִּי נְדֻדִים עֲדֵי־נָשֶׁף׃ לָבַשׁ
.se dissolvit & ,se scidit mea cutis :pulveris *ramento* & ,*verme* mea caro
בְּשָׂרִי רִמָּה וְגוּשׁ עָפָר עוֹרִי רָגַע וַיִּמָּאֵס׃
.*expectationis* *fine in* defecerunt & :radio *præ veloces* fuerunt mei Dies
6 יָמַי קַלּוּ מִנִּי־אָרֶג וַיִּכְלוּ בְּאֶפֶס תִּקְוָה׃
meus oculus revertetur non : *meæ vitæ* ventus quod Memento
7 זְכֹר כִּי־רוּחַ חַיָּי לֹא־תָשׁוּב עֵינִי
tui oculi ,me videntis oculus me *intuebitur* Non .bonum *videndum ad*
8 לִרְאוֹת טוֹב׃ לֹא־תְשׁוּרֵנִי עֵין רֹאִי עֵינֶיךָ
, infernum ad descendens sic ;*abiit* & nubes *Defecit* .*ego* non & ,me in
9 בִּי וְאֵינֶנִּי׃ כָּלָה עָנָן וַיֵּלַךְ כֵּן יוֹרֵד שְׁאוֹל
non & ; suam domum ad ultrà revertetur Non .ascendet non
10 לֹא יַעֲלֶה׃ לֹא־יָשׁוּב עוֹד לְבֵיתוֹ וְלֹא
;meum os prohibebo non ego Etiam .ejus locus ampliùs eum cognoscet
11 יַכִּירֶנּוּ עוֹד מְקֹמוֹ׃ גַּם־אֲנִי לֹא אֶחֱשָׂךְ־פִּי
amaritudine in , confabulabor : mei spiritus *angustia* in loquar
אֲדַבְּרָה בְּצַר רוּחִי אָשִׂיחָה בְּמַר
me super *pones* *quòd* ,cetus aut ,ego mare Nunquid .meæ animæ
12 נַפְשִׁי׃ הֲיָם־אָנִי אִם־תַּנִּין כִּי־תָשִׂים עָלַי
se tollet ; meus lectus me consolabitur , dixero Si ? custodiam
13 מִשְׁמָר׃ כִּי־אָמַרְתִּי תְּנַחֲמֵנִי עַרְשִׂי יִשָּׂא
visionibus à & ,*somniis in* me conteres Et .meũ cubile meo eloquio in
14 בְשִׂיחִי מִשְׁכָּבִי׃ וְחִתַּתַּנִי בַחֲלֹמוֹת וּמֵחֶזְיֹנוֹת
.meis ossibus *præ* mortem,mea anima *strangulationem* elegit Et .me terrebis
15 תְּבַעֲתַנִּי׃ וַתִּבְחַר מַחֲנָק נַפְשִׁי מָוֶת מֵעַצְמוֹתָי׃
quia , me à cessa : sum victurus seculum in non ,*sum Abominatus*
16 מָאַסְתִּי לֹא־לְעֹלָם אֶחְיֶה חֲדַל מִמֶּנִּי כִּי־
quòd & , eum magnifices quòd , homo Quid .mei dies vanitas
17 הֶבֶל יָמָי׃ מָה־אֱנוֹשׁ כִּי תְגַדְּלֶנּוּ וְכִי־
momenta ad ? matutinis in eum visites Et ? tuum cor eum *ad* ponas
18 תָשִׁית אֵלָיו לִבֶּךָ׃ וַתִּפְקְדֶנּוּ לִבְקָרִים לִרְגָעִים
me *dimittes* non : me à *recedes* non Quousque .eum probabis
19 תִּבְחָנֶנּוּ׃ כַּמָּה לֹא־תִשְׁעֶה מִמֶּנִּי לֹא־תַרְפֵּנִי
tibi operabor quid , Peccavi ? meam salivam *me absorbere ad usque*
20 עַד־בִּלְעִי רֻקִּי׃ חָטָאתִי מָה אֶפְעַל לָךְ
fui & , tibi occursum in me posuisti quid ut ? *hominis* custos
נֹצֵר הָאָדָם לָמָה שַׂמְתַּנִי לְמִפְגָּע לָךְ וָאֶהְיֶה
facies transire & ,*meam prævaricationem tolles* non cur Et ? *onus in me super*
21 עָלַי לְמַשָּׂא׃ וּמֶה לֹא־תִשָּׂא פִשְׁעִי וְתַעֲבִיר
,*mane* me quæres & ,accumbam pulvere in nunc quia ? meam iniquitatem
אֶת־עֲוֺנִי כִּי־עַתָּה לֶעָפָר אֶשְׁכָּב וְשִׁחֲרְתַּנִי
.*ego* non &
וְאֵינֶנִּי׃

CAP. VIII. ח

, hæc loqueris Usquequo : dixit & ,Suchites Bildad respondit Et
1 2 וַיַּעַן בִּלְדַּד הַשּׁוּחִי וַיֹּאמַר׃ עַד־אָן תְּמַלֶּל־אֵלֶּה
,judicium pervertet Deus Nunquid ? tui oris *dicta* *validus* spiritus &
3 וְרוּחַ כַּבִּיר אִמְרֵי־פִיךָ׃ הַאֵל יְעַוֵּת מִשְׁפָּט
, ei peccaverint tui filii Si ? justitiam pervertet *Saddai* *an* &
4 וְאִם־שַׁדַּי יְעַוֵּת־צֶדֶק׃ אִם־בָּנֶיךָ חָטְאוּ־לוֹ
,Deum *ad surrexeris* mane tu Si .eorũ *prævaricationis manu in eos emisit* &
5 וַיְשַׁלְּחֵם בְּיַד־פִּשְׁעָם׃ אִם־אַתָּה תְּשַׁחֵר אֶל־אֵל
nunc quia , *tu* rectus & ,mundus Si : fueris deprecatus *Saddai ad* &
6 וְאֶל־שַׁדַּי תִּתְחַנָּן׃ אִם־זַךְ וְיָשָׁר אָתָּה כִּי־עַתָּה
erit Et .tuæ justitiæ habitaculum reddet pacificum & ,te super suscitabit
7 יָעִיר עָלֶיךָ וְשִׁלַּם נְוַת צִדְקֶךָ׃ וְהָיָה
Quia .valde crescet tuum novissimum & ,parvum tuum principium
8 רֵאשִׁיתְךָ מִצְעָר וְאַחֲרִיתְךָ יִשְׂגֶּה מְאֹד׃ כִּי־
investigationem ad te præpara & ; pristinam generationem *nunc* interroga
שְׁאַל־נָא לְדֹר רִישׁוֹן וְכוֹנֵן לְחֵקֶר
: eorum patrum
אֲבוֹתָם׃

Versio VULG. LAT.

4 Si dormiero, dicam; Quando consurgam? & rursum expectabo vesperã, & replebor doloribus usque ad tenebras.
5 Induta est caro mea putredine & sordibus pulveris, cutis mea aruit, et contracta est.
6 Dies mei velociùs transierunt quàm à texente tela succiditur, et consumpti sunt absque ulla
7 spe. Memento quia ventus est vita mea, et non revertetur oculus meus ut videat bona.
8 Nec aspiciet me visus hominis: oculi tui in me, et non
9 subsistam. Sicut consumitur nubes, et pertransit: sic qui descenderit ad inferos, non
10 ascendet. Nec revertetur ultrà in domũ suam, neq; cognoscet
11 eum ampliùs locus ejus. Quapropter et ego non parcam ori meo, loquar in tribulatione spiritûs mei: confabulabor cum amaritudine animæ
12 meæ. Numquid mare ego sum, aut cetus, quia circumdedisti
13 me carcere? Si dixero; Consolabitur me lectulus meus, et relevabor loquens mecum in
14 strato meo: Terrebis me per somnia, et per visiones hor-
15 rore concuties. Quam ob rem elegit suspendium anima
16 mea, et mortẽ ossa mea. Desperavi, nequaquàm ultrà jam vivam: parce mihi, nihil enim
17 sunt dies mei. Quid est homo, quia magnificas eũ? aut quid
18 apponis erga eũ cor tuũ? Visitas eũ diluculò, et subitò pro-
19 bas illũ: Usquequò non parcis mihi, nec dimittis me ut glu-
20 tiam salivã meã? Peccavi, quid faciã tibi, ô custos hominum? quarè posuisti me contrarium tibi, & factus sum mihimetipsi
21 gravis? Cur non tollis peccatũ meum, & quarè non aufers iniquitatẽ meã? ecce, nunc in pulvere dormiã: & si manè me quæsieris, non subsistam.

CAP. VIII.

1 Respondens autem Baldad
2 Sunites, dixit; Usquequò loquêris talia, & spiritus multi-
3 plex sermones oris tui? Numquid Deus supplantat judiciũ, aut Omnipotens subvertit quod
4 justũ est? Etiã si filii tui peccaverunt ei, & dimisit eos in
5 manu iniquitatis suæ: Tu tamen si diluculò consurrexeris ad Deum, & Omnipotentem
6 fueris deprecatus: Si mundus & rectus incesseris, statim evigilabit ad te, & pacatũ reddet
7 habitaculũ justitiæ tuæ: In tantum, ut si priora tua fuerint parva, & novissima tua multi-
8 plicentur nimis. Interroga enim generationẽ pristinam, et diligenter investiga patrũ memoriam:

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

4 † Ἐὰν κοιμηθῶ, λέγω, Πότε ἡμέρα; †
ὡς δ' ἂν ἀναστῶ, πάλιν, Πότε ἑσπέρα;
† πλήρης δὲ (δ) γίνομαι ὀδυνῶν (ε) ἀπὸ
5 ἑσπέρας ἕως πρωΐ. † Φύρεται δέ μου
τὸ σῶμα ἐν σαπρίᾳ σκωλήκων, † τήκω
δὲ βώλακας γῆς ἀπὸ ἰχῶρος (ζ) ξύων.
6 † Ὁ δὲ βίος μου ἐστὶν ἐλαφρότερος
(η) λαλιᾶς, † ἀπόλωλε δὲ ἐν κενῇ ἐλπίδι.
7 † (θ) Μνήσθητι οὖν ὅτι πνεῦμά μου ἡ
ζωή, † καὶ οὐκ ἔτι ἐπανελεύσεται ὀφθαλμός
8 μου ἰδεῖν ἀγαθόν. † (ι) Οὐ περιβλέψεταί
με ὀφθαλμὸς ὁρῶντός με, † οἱ ὀφθαλμοί
σου ἐν ἐμοί, καὶ οὐκ ἔτι εἰμί·
9 † Ὥσπερ νέφος ἀποκαθαρθὲν ἀπ' οὐρανοῦ.
† ἐὰν γὰρ ἄνθρωπος καταβῇ εἰς ᾅδην, (κ)
10 οὐκ ἔτι μὴ ἀναβῇ, † Οὐδ' οὐ μὴ ἐπιστρέψῃ
εἰς τὸν ἴδιον οἶκον, † (λ) οὐδ' οὐ μὴ
11 ἐπιγνῷ αὐτὸν ἔτι ὁ τόπος αὐτοῦ. † Ἀτὰρ
οὖν οὐδὲ ἐγὼ φείσομαι τῷ στόματί
μου, † (μ) λαλήσω ἐν ἀνάγκῃ ὤν, † ἀνοίξω
πικρίαν ψυχῆς μου συνεχόμενος.
12 † Πότερον θάλασσά εἰμι ἢ δράκων, (ν)
ὅτι κατέταξας ἐπ' ἐμὲ φυλακήν; † (ξ)
13 Εἶπα ὅτι παρακαλέσει με ἡ κλίνη μου, †
ἀνοίσω δὲ πρὸς ἐμαυτὸν (ο) ἰδίᾳ λόγον
14 τῇ κοίτῃ μου. (π) Ἐκφοβεῖς με ἐνυπνί-
15 οις, καὶ ἐν ὁράμασί με καταπλήσσεις. † (ρ)
Ἀπαλλάξεις ἀπὸ πνεύματός μου τὴν
ψυχήν μου, † ἀπὸ δὲ θανάτου τὰ ὀστᾶ
16 μου. Οὐ γὰρ εἰς τὸν αἰῶνα ζήσομαι, ἵνα
μακροθυμήσω. † ἀπόστα ἀπ' ἐμοῦ, κενὸς
17 γάρ μου ὁ βίος. † Τί γάρ ἐστιν ἄνθρωπος
ὅτι ἐμεγάλυνας αὐτόν; ἢ ὅτι προσ-
18 έχεις τὸν νοῦν εἰς αὐτόν; † Ἢ ἐπισκοπὴν
αὐτοῦ (σ) ποιήσῃ ἕως τὸ πρωΐ; †
19 καὶ εἰς ἀνάπαυσιν αὐτὸν κρινεῖς; Ἕως τίνος
οὐκ ἐᾷς με, οὐδὲ προΐῃ με, † ἕως ἂν
20 καταπίω τὸν πτύελόν (τ) μου; † Εἰ ἐγὼ ἥμαρτον,
(υ) τί δυνήσομαι πρᾶξαι, † ὁ ἐπιστάμενος
τὸν νοῦν τῶν ἀνθρώπων; † διατί
ἔθου με κατεντευκτήν σου, † εἰμὶ δὲ
21 ἐπὶ σοὶ φορτίον; (φ) † Διατί οὐκ ἐποιήσω
τῆς ἀνομίας μου λήθην, † καὶ καθαρισμὸν (χ)
τῆς ἁμαρτίας μου; νυνὶ δὲ εἰς γῆν ἀπελεύσομαι,
ὀρθρίζων δὲ οὐκ ἔτι εἰμί.

ΚΕΦ. η'.

1 Ὑπολαβὼν δὲ Βαλδὰδ ὁ Σαυχίτης, λέ-
2 γει, † Μέχρι τίνος λαλήσεις ταῦτα, πνεῦμα
(α) πολυρρῆμον τοῦ στόματός σου; †
3 Μὴ ὁ κύριος ἀδικήσει κρίνων; † ἢ ὁ τὰ
πάντα ποιήσας ταράξει τὸ δίκαιον; † (β)
4 Εἰ οἱ υἱοί σου ἥμαρτον ἐναντίον αὐτοῦ, † ἀπέ-
5 στειλεν ἐν χειρὶ (γ) ἀνομίας αὐτῶν. † Σὺ
δὲ ὄρθριζε πρὸς κύριον παντοκράτορα δεό-
6 μενος. † Εἰ καθαρὸς εἶ καὶ ἀληθινὸς (δ),
δεήσεως ἐπακούσεταί σου, † ἀποκαταστήσει
7 δέ σοι δίαιταν δικαιοσύνης. † Ἔσται οὖν
τὰ μὲν πρῶτά σου ὀλίγα, τὰ δὲ ἔσχατά σου
8 ἀμύθητα. † Ἐπερώτησον (ε) γὰρ γενεὰν
πρώτην, † ἐξιχνίασον δὲ κατὰ γένος πατέρων·

Si dormiero, dico; Quando (a) 4
dies? & si surrexero, rursùs;
Quando vesper? repleor autem
doloribus à vespera usque ad
mané. Et conspergitur cor- 5
pus meum in putredine vermium:
infundo autem glebas terræ
à sanie radens: Et vi- 6
ta mea (b) exilior est, quàm
loquela: (c) periit autem in
vana spe. Recordare ergò, 7
quia spiritus est vita mea; &
non revertetur ultrà oculus
meus ad cernendum bonum;
Non circumspiciet me oculus 8
videntis me: oculi tui in me,
& non ultrà sum, Tanquàm 9
(d) nubes expurgata de cœlo.
Si enim homo descenderit ad
infernum, ultrà non ascendet:
Et non revertetur ampliùs in 10
domum suam, neque cognoscet
ampliùs eum locus ejus. Pro- 11
pterea itaque & ego non parcam
ori meo: loquar, cùm (e)
in necessitate sim: aperiam *(f)*
amaritudinem animæ meæ compressus.
Utrùmne mare sum 12
ego, aut draco, quia statuisti
super me (g) custodiam? Di- 13
xi quia (h) consolabitur me
lectus meus: & (i) referam
ad meipsum privatim sermonem
thoro meo. Exterres me 14
per somnia, & per visiones
me obstupefacis: (k) Absol- 15
ves à spiritu meo animam meam:
& à morte (l) ossa mea.
Non enim in sempiternum vi- 16
vam, ut (m) longanimiter a-
gam: discede à me: vana est
enim (n) vita mea. Quid e- 17
nim est homo, quòd magnificâsti
eum? aut quòd adhibes
mentem erga eum? Num (o) 18
visitationem ejus facies usque
mané? & in (p) requie ju-
dicabis eum? Usquequò non si- 19
nis me, neque dimittis me, do-
nec deglutiam salivam (q)
meã? Si ego peccavi, quid (r) po- 20
tero facere; qui scis mentem
hominum? quarè constituisti
me, ut (s) loquerer adversùs
te; sum autem super te (t)
onus? Quarè non fecisti ini- 21
quitatis meæ oblivionem, & purgationem peccati mei? Nunc autem
in terram abibo: manè autem surgens ultrà non ero.

CAP. VIII.

Respondens autem Baldad 1
Sauchites, ait; Usquequò lo- 2
quêris hæc, (a) spiritus multiloquus
oris tui? Nunquid 3
Dominus injustè aget judicans?
aut qui omnia fecit, turbabit
(b) justitiam? Si filii tui pec- 4
caverunt coram eo, misit in
manu iniquitates eorum. Tu 5
autem diluculò surge ad Dominum
omnipotentem deprecans:
Si mundus es, & verax; de- 6
precationem exaudiet tuam: re-
stituet autem tibi habitaculum
justitiæ: Et erunt priora qui- 7
dem tua pauca, novissima autem
tua inenarrabilia. Inter- 8
roga enim generationem primam,
& investiga per genus
patrum:

MS. A. (δ) γίνωμαι (ε) ἀφ' ἑσπέρας (ζ) ζέων. (η) δρομέως, (θ) Μνήσθητι δὲ ὅτι (ι) Οὐκ* ἀλένοι μοι ὁ ὀφθαλμός (κ) οὐ μὴ ἂν ἀναβῇ ἔτι, Οὐδὲ μὴ ἐπιστραφῇ ἔτι εἰς (λ) οὐδὲ μὴ ἐπιγνῷ αὐτὸν ὁ τόπος αὐτοῦ ἔτι. Τοιγαροῦν (μ) λαλήσω δὲ ἐν ἀνάγκῃ ὢν τοῦ πνεύματός μου, ἀνοίξω τὸ στόμα μου ἐν πικρίᾳ ψυχῆς συνεχόμενος. (ν) ἐπεὶ κατέταξας κατ' ἐμοῦ (ξ) Εἶπον, Παρακαλέσει (ο) διὰ λόγον ἰδίᾳ τῇ (π) Διατί ἐκφοβεῖς (ρ) Ἀπαλλάσσεις δὲ ἀπὸ πνεύματος τὴν ζωήν μου, τὴν δὲ ψυχήν μου ἀπὸ τοῦ σώματός μου. Οὐ γὰρ (σ) ποιῇ τὸ πρωΐ; (τ) μου ἐν ὀδύνῃ; Εἰ (υ) τί δύναμαί σοι πρᾶξαι, (φ) Καὶ διατί οὐ λήθην ἐποιήσω τῆς ἁμαρτίας μου, (χ) τῆς ἀνομίας Κεφ. η'. MS. A. (α) πολυρῆμον (β) Εἰ υἱοί (γ) τὴν ἀνομίαν (δ) εἶ, δεήσεώς σου ἐπακούσεται, (ε) γενεὰν

תרגום TARGUM.

4 אִין שְׁכִיבִית וַאֲמַרִית אֵימָתַי אֵקוּם וְנַדְּיֵית בְּרַמְשָׁא וּשְׂבַעִית נִדְּדַת שֵׁינְתָא עַד עִדָּן שַׁפְרַפְרָא : לְבַשׁ בִּסְרִי מוֹרְנֵי וְגַרְגִּשְׁתָּא דְעַפְרָא מַשְׁכִּי רְטַט וְאִתְמְסֵי : 5
6 יוֹמַי קַלִּילוּ מִן גַּרְדִּית מָחֵי וּפְסַקוּ מִדְּלֵית סִבְרָא : אִדְכַּר אֲרוּם הֵיךְ רוּחָא חַיַּי לָא תְתוּב עֵינִי לְמֶחֱמֵי טָב : 7 לָא תִסְכֵּי יָתִי עֵינָא דְחָמְיָא יָתִי עֵינָךְ 8
9 בְּמֵימְרִי וְלָא אִיתַי : הֵיכְמָא דְפָסֵק עֲנָנָא וְאָזֵל הֵכְדֵין דְּנָחֵית לְבֵי קְבוּרְתָּא לָא יִסַּק : לָא יְתוּב תּוּב לְבֵיתֵיהּ וְלָא אִשְׁתְּמוֹדְעֵיהּ תּוּב אַתְרֵיהּ : 10 לְחוּד אֲנָא 11
11 לָא אֶמְנַע פּוּמִי אֲמַלֵּל בְּעָקַת רוּחִי אֲשִׂיחַ בִּמְרִיר נַפְשִׁי : הַכְמִצְרָאֵי דְּאִתְחַיַּבוּ לְמִטְבַּע בְּיַמָּא דְסוּף אִתְחַיֵּיבִית אֲנָא אִין כְּפַרְעֹה דְּאִשְׁתַּנַּק בְּמִצּוֹעֵיהּ
13 בְּחוֹבֵיהּ אֲרוּם תְּמַנֵּי עֲלַי מַטְּרָא : תָּא הֵיכִימָא רַבָּא אֲנָא דְּמִתְרְגֵף לְקִצַּיָּא אִין לִוְיָתָן דְּאֵטִימוּס לְאִתְחֲדָא אֲרוּם תְּשַׁוֵּי עֲלַי נְטִירָא : אֲרוּם
14 15 אֲמַרִית תְּנַחֲמַנַּנִי דַּרְגְּשִׁי יְסוֹבַר בְּמִלֵּי בֵּית מִשְׁכְּבִי : וְתַבְרַתַּנִי בְּחֶלְמַיָּא וּמֵחֶזְוָנַיָּא תְּבַעְתַּ יָתִי : וּבְחַרַת שִׁרְנוּקָא נַפְשִׁי מוֹתָא מִן קִיּוּם גַּרְמַי : רְחִיקִית 16
17 18 דְּלָא לַעֲלַם אֱחֵי פְּסַק מִנִּי אֲרוּם לְמָא יוֹמַי : מַה בַּר נָשׁ אֲרוּם תְּרַבְּנֵיהּ וַאֲרוּם תְּשַׁוֵּי לְוָתֵיהּ לִבָּךְ : וְתִסְעֲרִנֵּיהּ לְצַפְרַיָּא לְשַׁעְתָּא תִּבְחֲנִנֵּיהּ : כְּמָה לָא 19
20 תִּשְׁבּוֹק מִנִּי לָא תְשַׁלְּנַנִּי עַד דְּאֶבְלַע רוּקִי : חָבֵית מָה אֶעְבֵּד לָךְ נַטְרֵיהּ דְּבַר נָשָׁא לְמָא שַׁוִּיתַנִי לְמֶארַע לָךְ וַהֲוֵיתִי עֲלַי לְמַטּוֹל : וּמָה דֵין לָא תִשְׁבּוֹק מְרוֹדִי 21
וְתַעְבַּר יַת עֲוָיָתִי אֲרוּם כְּדוֹן לְעַפְרָא אֶשְׁכּוּב וְתִתְבְּעִנַּנִי וְלָא אִיתַי :

ח

1 3 וַאֲתִיב בִּלְדַּד דְּמִן שׁוּחַ וַאֲמַר : עַד אֵימָתַי תְּמַלֵּל כְּאִלֵּין וְזַעְפָּא רַבָּא מֵימְרֵי פוּמָךְ : אֶפְשַׁר דֶּאֱלָהָא יְעַקֵּם דִּינָא וְאִם שַׁדַּי יְקַלְקֵל צִדְקָא : אִין בְּנָךְ חָבוּ 2 4
5 6 קֳדָמוֹי וְשַׁדְּרִנּוּן בַּאֲתַר מְרָדֵיהוֹן : אִין אַתְּ תַּקְדִּים בִּצְלוֹ קֳדָם אֱלָהָא וּלְוָת שַׁדַּי תְּצַלֵּי : אִין בְּרִיר וּתְרִיץ אַתְּ אֲרוּם כְּדוֹן יִתְגַּבַּר עֲלָךְ וִישַׁלֵּם יָאֵית צִדְקָךְ : וִיהֵוֵי 7
שֵׁירוּתָךְ זְעֵיר וְסוֹפָךְ יִסְגֵּא לַחֲדָא : אֲרוּם שְׁאַל כְּדוֹן לְדָר קַדְמָאֵי וְכַוֵּן לְפִשְׁפּוּשׁ אַבְהַתְהוֹן : 8

Verſio SYRIACA.

4 * ܐܢ ܕܡܟܬ ܘܐܡܪܬ ܐܦ ܐܡܬܝ ܐܩܘܡ. ܘܡܫܚܬ ܥܕܡܐ ܠܪܡܫܐ. ܘܕܡܟܬ ܘܐܫܬܓܫܬ ܥܕܡܐ ܠܨܦܪܐ. * ܠܒܫ ܒܣܪܝ
5 ܩܛܡܐ. ܘܓܘܫܡܝ ܥܦܪܐ. ܡܫܟܝ ܐܬܩܦܕ ܘܐܬܡܣܝ. * ܝܘܡܝ ܩܠܝܠܝܢ ܡܢ ܚܘܛܐ ܕܓܪܕܝܐ. ܘܫܠܡܘ
6 ܕܠܐ ܣܒܪܐ. * ܐܬܕܟܪ ܕܪܘܚܐ ܚܝܐ. ܘܗܦܟܐ ܥܝܢܝ ܠܡܚܙܐ ܛܒܬܐ. * ܠܐ ܬܚܙܝܢܝ ܥܝܢܐ ܕܚܙܝܐ ܠܝ. ܘܥܝܢܝܟ
7 8 ܒܝ. ܘܠܝܬܝ. * ܐܝܟ ܕܡܬܒܕܪ ܥܢܢܐ ܘܐܙܠ. ܗܟܢܐ ܡܢ ܕܢܚܬ ܠܫܝܘܠ ܠܐ ܢܣܩ. * ܘܠܐ ܢܗܦܘܟ ܬܘܒ ܠܒܝܬܗ.
9 10 ܘܠܐ ܢܫܬܘܕܥܝܘܗܝ ܬܘܒ ܐܬܪܗ. * ܐܦ ܐܢܐ ܠܐ ܐܚܘܣ ܦܘܡܝ. ܐܡܠܠ ܒܥܩܬܐ ܕܪܘܚܝ. ܘܐܫܬܥܐ ܒܡܪܝܪܘܬ ܢܦܫܝ.
11 * ܡܛܠ ܕܝܡܐ ܐܢܐ ܐܘ ܬܢܝܢܐ. ܕܣܡܬ ܥܠܝ ܢܛܘܪܐ. * ܡܛܠ ܕܐܡܪܬ ܕܬܒܝܐܢܢܝ. ܘܐܬܒܝܐܢ ܡܢ ܫܘܥܩܐ
12 13 ܕܡܫܟܒܝ. * ܗܫܐ ܐܬܒܗܠܬܢܝ ܒܚܠܡܐ. ܘܒܚܙܘܢܐ ܐܕܚܠܬܢܝ. * ܘܒܨܝܬ ܢܦܫܝ ܡܢ ܐܒܕܢܐ. ܘܓܪܡܝ
14 15 ܡܢ ܡܘܬܐ. * ܐܬܚܡܠܬ ܠܝ. ܘܠܐ ܗܘܐ ܠܥܠܡ ܐܚܐ. ܗܘܝ ܢܝܚ ܒܝ. ܡܛܠ ܕܥܢܝܢܐ ܐܢܘܢ ܝܘܡܝ. * ܡܢܘ
16 17 ܒܪܢܫܐ ܕܬܘܒܕܝܘܗܝ. ܘܬܣܝܡ ܠܒܟ ܥܠܘܗܝ. * ܘܬܣܥܘܪܝܘܗܝ ܒܨܦܪܐ. ܘܒܫܥܬܐ ܬܒܩܝܘܗܝ. * ܥܕܡܐ ܠܡܬܝ ܗܘ ܠܐ
18 19 ܬܫܒܩܢܝ ܐܦ ܠܐ ܬܬܠ ܠܝ ܙܒܢܐ ܕܐܒܠܥ ܪܘܩܝ. * ܐܢ ܚܛܝܬ. ܡܢܐ ܐܥܒܕ ܠܟ ܥܒܘܕܗ ܕܒܪܢܫܐ.
20 ܠܡܢܐ ܣܡܬܢܝ ܠܦܓܥܐ ܠܟ. ܘܗܘܝܬ ܥܠܝ ܠܡܘܒܠܐ. * ܘܥܕܡܐ ܠܡܬܝ ܠܐ ܬܫܒܘܩ ܚܘܒܝ. ܘܬܥܒܪ
21 ܣܟܠܘܬܝ. ܕܗܫܐ ܥܠ ܥܦܪܐ ܐܫܟܘܒ. ܘܬܒܥܝܢܝ. ܘܠܝܬܝ. * ܫܩܠܐ * ܚ *
1 ܘܥܢܐ ܒܠܕܕ
2 ܫܘܚܝܐ ܘܐܡܪ. * ܥܕܡܐ ܠܡܬܝ ܬܡܠܠ ܗܠܝܢ. ܘܪܘܚܐ ܕܪܒܘܬܐ ܡܠܝܐ ܦܘܡܟ. * ܕܠܡܐ ܐܠܗܐ ܡܥܩܡ ܕܝܢܐ. ܐܘ
3 4 ܚܝܠܬܢܐ ܡܥܩܡ ܟܐܢܘܬܐ. * ܐܢ ܒܢܝܟ ܚܛܘ ܠܗ. ܫܕܪ ܐܢܘܢ ܒܐܝܕ ܚܛܗܝܗܘܢ. * ܘܐܢ ܐܢܬ ܬܒܥܐ ܡܢ ܐܠܗܐ.
5 6 ܘܡܢ ܚܝܠܬܢܐ ܬܬܟܫܦ. * ܘܐܢ ܕܟܐ ܐܢܬ ܘܬܪܝܨ. ܗܫܐ ܢܬܬܥܝܪ ܥܠܝܟ. ܘܢܫܠܡ ܥܡܪܐ ܕܙܕܝܩܘܬܟ. * ܘܢܗܘܐ ܫܘܪܝܟ
7 8 ܙܥܘܪܐ. ܘܐܚܪܝܬܟ ܬܣܓܐ ܛܒ. * ܫܐܠ ܠܕܪܐ ܩܕܡܝܐ. ܘܐܬܒܩܐ ܒܫܘܥܝܬܐ ܕܐܒܗܝܗܘܢ.

Verſio ARABICA.

4 5 * فان هجعت وقلت متي اقوم * فسكنت الي العشي فهجعت واضطربت للصباح * البس اذ بشري غبارا
6 7 وجسدي ترابا * جلدي تقبض وعسي * ايامي اقل من خيط السلك * بادت لانه ليس رجاء * اذكر ان
8 9 الروح حية هي * فتعود عيني ان تري خيرا * لا تراني لي عين تراني * وعيناك في وليس انا * كما تضمحل
10 السحاب وتذهب * هكذا من يهبط الي الهاوية لا يصعد * ولا يرجع ايضا الي بيته * ولا يعرف ايضا مكانه
11 12 * وانا ايضا فلا امسك فمي * اتكلم بكرب روحي واخبر بمرارة فمي * ابحر انا ام تنين * حتي تقيم علي
13 14 الحراس * لاني قلت اني اتعزا واتقوي من كربة مضجعي * فالان قد اقلقتني بالاحلام وبالرويا ارهبتني
15 16 * وامتحنت نفسي من الهلاك وعظامي من الموت * قد ايست * وليس للدهر احيا * وترفق بي من اجل
17 18 انها عدم ايام حياتي * من هو الانسان حتي تهلكه وتضع عليه قلبك * وفي الصباح تفتقده * وفي الوقت
19 20 تمتحنه * حتي متي الان لا تتركني * ولا تمهلني حتي ابتلع ريقي * فان كنت اخطيت فماذا اصنع بك
21 يا صانع الناس * لماذا جعلتني للتفجع * كنت علي ثقل * وحتي متي لا تترك احوابي * وتترك خطاياي *
فانا الان علي التراب اضطجع * فتطلبني ولا تجدني *   * الفصل الثامن *
1 2 * فاجاب بلداد الشوحي * فقال * حتي متي تتكلم بهذا * وروح العظمة ملا فمك * العل الله يجور في
3 4 القضاء * او العزيز يظلم في الحق * ان كان بنوك اخطيوا له * فابعثهم بخطاياهم * وان كنت انت فاطلب
5 6 7 من الله والي القوي فتضرع * ان كنت زاكيا صالحا * فالان يستيقظ عليك ويتمم عاقبة صلاحك * فيكون
8 اوليك صغيرا واخرتك جدا تكثر * اسال الان عن الاجيال القديمة * وتفهم اخبار ابائهم *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Si dormiero, dico etiam; quando ſurgam? (a) et ſilui uſque ad veſperas, & dormivi, & perturbatus ſum uſque ad matutinum. 4
Induta eſt quidem caro mea pulvere, & corpus meum terrâ: pellis mea (b) contracta eſt, & putrefacta eſt: 5
Dies mei teneriores ſunt (c) filo ſutorio: perierunt, eò quòd non ſit ſpes. 6
Memento quòd ſpiritus vivens eſt, & revertetur oculus meus videre bonum. 7
Non apparet mihi oculus, qui me videt, & oculi tui in me, & non ſum ego. 8
Sicut diſſipatur nubes, & perit, ſic qui deſcendit in foveam non aſcendet, 9
Nec revertetur adhuc ad domum ſuã, nec etiam cognoſcet locum ſuum. 10
Etiam ego non tenebo os meum, loquar in mœrore ſpiritûs mei, & enarrabo in amaritudine (d) oris mei. 11
Num mare ſum ego aut draco, ut conſtituas ſuper me cuſtodes? 12
Quoniã dixi, Ego conſolabor, & confortabor à calamitate cubilis mei. 13
Modò conturbâſti me in ſomniis, & in viſione me terruiſti: 14
Et inveſtigâſti animam meam à perditione, et oſſa mea à morte. 15
Jam viribꝰ defectus ſum, nec in æternum vivã, & lenis in me eſto, quoniam (e) nihil ſunt dies vitæ meæ. 16
Quis eſt homo, ut perdas eum, et apponas erga eum cor tuum, 17
Et in matutinis viſitas eum, et in momento probas illũ? 18
Quouſque jam non dimittes me, neque tempus mihi dabis, ut deglutiam ſalivam meam? 19
Si peccavi, quid faciam tibi O factor hominum? quare poſuiſti me (f) in calamitate, & factus es mihi onus? 20
Et quouſque non dimittes debita mea, & parces peccatis meis? Ego modò ſuper terra dormiam, quæres me, (g) & non invenies me. 21

CAP. VIII.

Reſponditque Beldad Subites, & dixit; 1
Uſquequo loquêris hæc, & ſpiritus ſuperbiæ implebit os tuum? 2
Nunquid Deus falſat judicium, aut Potens (a) opprimit in vero? 3
Si filii tui ei peccaverunt, miſit eos in peccatis eorum: 4
Sin verò tu, ora Deum, & Potenti ſupplica. 5
Si es innocens probus, modò expergiſcetur ad te, (b) & perficiet finem probitatis tuæ: 6
Et erit initium tuum parvũ, & finis tuus valdè augebitur. 7
Interroga modo antiquas generationes, & intellige hiſtorias patrum earum. 8

INTERP. SYRIACA.

(a) & dimetior (b) conſumpta eſt, (c) tela araneæ: (d) animæ meæ. (e) vanitas (f) ut occurram tibi, (g) & non ero. *CAP. viii.* (a) pervertit jus? (b) & pacabit habitaculum juſtitiæ tuæ:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Si cubui, tum dixi, Quando conſurgam? & inſtabilis fui veſperè, & ſaturatus ſum inſomnii vagationibus uſque ad tempus matutinum. 4 Induta eſt caro mea vermibus 5 & glebâ pulveris: pellis mea contremuit, et tabefacta eſt. 6 Dies mei velociores ſunt radio textoris, & ſucciſi ſunt abſque ſpe. 7 Recordare quia ſicut ventus eſt vita mea: non revertetur oculus meus ut videat bona. 8 Neque aſpiciat me oculus videntis me: oculi tui in verbum meum, & non ſubſiſtam. 9 Ecce ſicut ceſſat fumus & deficit; ſic qui deſcendit ad ſepulchrum, non aſcendet. 10 Non revertetur ampliùs in domum ſuam, neque cognoſcet eum ampliùs locus ejus. 11 Veruntamen ego non prohibeo os meum: loquar in tribulatione ſpiritus mei: meditabor in amaritudine animæ meæ. 12 Nunquid ut Ægyptii qui condemnati ſunt ut ſubmergerentur in mari rubro, condemnatus ſum ego: aut ſicut Pharao qui ſuffocatus eſt in medio ejus *in peccato ſuo*, quoniam conſtituis ſuper me cuſtodiam? *Targum aliud: Nunquid ſicut mare magnum ego ſum, quod commovetur ad extrema? An Leviathan cui prope abeſt ut capiatur, quòd apponis mihi* cuſtodiam? 13 Si enim dixi: Conſolabitur me lectus meus; ſuſtinebit verba mea domus ſtrati mei: 14 Terruiſti me inſomniis, & per viſiones conturbas me. 15 Elegit ſuffocationem anima mea; & mortem magis quam ſuſtentationem meipſius. 16 Abjeci; nequaquam in ſempiternum vivam: dimitte me, quoniam nihil ſunt dies mei. 17 Quid eſt filius hominis quia magnificas eum, & quia ponis ad eum cor tuum? 18 Et viſitas eum diluculò, & ſubitò probas illum. 19 Uſquequo non parces mihi, nec dimittes me, donec deglutiam ſalivam meam? 20 Peccavi: quid faciam tibi cuſtos filiorum hominis? quare poſuiſti me in contrarium tibi, & factus ſum mihimetipſi in onus? 21 Et quare non dimittis transgreſſionem meam, & transfers iniquitatem meam? quoniam nunc in pulvere dormiam, & quæres me, & non ero.

CAP. VIII.

1 Et reſpondit Bildad qui erat de Suah, & ait: 2 Uſquequo loquêris talia: & ſicut ventus magnus erunt verba oris tui? 3 Nunquid Deus ſubvertet judicium, aut omnipotens corrumpet juſtitiam? 4 Si filii tui peccaverunt coram eo, & dimiſit eos in locum tranſgreſſionis ſuæ: 5 Si tu manè Deum in oratione præveneris, & ad omnipotentem oraveris. 6 Si mundus & rectus es tu, nunc enim confortabitur ſuper te, & *perficiet* pulchritudinem juſtitiæ tuæ. 7 Et erit principium tuum parvum, & noviſſimum tuum multiplicabitur nimis. 8 Interroga enim nunc generationem priorem, & attende inquiſitioni patrum eorum.

איוב : ט

ſuper noſtri dies umbra quia ; neſcimus & , *nos* heri Quia

9 כִּֽי־תְמוֹל אֲנַחְנוּ וְלֹא נֵדָע כִּי צֵל יָמֵינוּ עֲלֵי־

ſuo corde è & , tibi dicent , te docebunt ipſi Nonne .terram

10 אָֽרֶץ׃ הֲלֹא־הֵם יוֹרוּךָ יֹאמְרוּ לָךְ וּמִלִּבָּם

? luto abſque juncus creſcet Nunquid ? eloquia proferent

11 יוֹצִאוּ מִלִּֽים׃ הֲיִגְאֶה־גֹּמֶא בְּלֹא בִצָּה

non , ſuo virore in eo Adhuc ? aqua abſque *pratum* creſcet

12 יִשְׂגֶּה־אָחוּ בְלִי־מָֽיִם׃ עֹדֶנּוּ בְאִבּוֹ לֹא

ſemitæ Sic .areſcet *herbæ omnis facies ad* & ; ſuccidetur

13 יִקָּטֵף וְלִפְנֵי כָל־חָצִיר יִיבָֽשׁ׃ כֵּן אָרְחוֹת

.peribit *hypocritæ* ſpes & ; Dei obliviſcentium omnium

כָּל־שֹׁכְחֵי אֵל וְתִקְוַת חָנֵף תֹּאבֵֽד׃

.ejus fiducia araneæ domus & ; *ejus* ſpes *abominabitur Quem*

14 אֲשֶׁר־יָקוֹט כִּסְלוֹ וּבֵית עַכָּבִישׁ מִבְטַחֽוֹ׃

non & , eam *in roborabit* : ſtabit non & , *ſua domo ſuper* Innitetur

15 יִשָּׁעֵן עַל־בֵּיתוֹ וְלֹא יַעֲמֹד יַחֲזִיק בּוֹ וְלֹא

ſuo horto *ſuper &* ; *Solis facies ad ipſe Tener* , .permanebit

16 יָקֽוּם׃ רָטֹב הוּא לִפְנֵי־שָׁמֶשׁ וְעַל־גַּנָּתוֹ

ejus radices fontem *Super* .egredietur tener ejus ramus

17 יֹנַקְתּוֹ תֵצֵֽא׃ עַל־גַּל שָׁרָשָׁיו

; ſuo loco è eum *deglutierit* Si .*aſpiciet lapidum* domum ; *intricabuntur*

18 יְסֻבָּכוּ בֵּית אֲבָנִים יֶחֱזֶֽה׃ אִם־יְבַלְּעֶנּוּ מִמְּקֹמוֹ

; ejus viæ gaudium illud Ecce .te vidi Non : *eo in* negabit &

19 וְכִחֶשׁ בּוֹ לֹא רְאִיתִֽיךָ׃ הֶן־הוּא מְשׂוֹשׂ דַּרְכּוֹ

reprobabit non Deus Ecce .germinabunt *alio pulvere* de &

20 וּמֵעָפָר אַחֵר יִצְמָֽחוּ׃ הֶן־אֵל לֹא יִמְאַס־

impleat Donec .malignorum manum *in* apprehendet nec ; perfectum

21 תָּם וְלֹא־יַחֲזִיק בְּיַד־מְרֵעִֽים׃ עַד־יְמַלֵּה

te habentes Odio .jubilatione tua labia & , tuum os riſu

22 שְׂחוֹק פִּיךָ וּשְׂפָתֶיךָ תְרוּעָֽה׃ שֹׂנְאֶיךָ

.*ipſum* non impiorum *tentorium* & ; pudore induentur

יִלְבְּשׁוּ־בֹשֶׁת וְאֹהֶל רְשָׁעִים אֵינֶֽנּוּ׃

C A P. IX. ט

; ita quòd novi Verè : dixit & , Ijob reſpondit Et

1 2 וַיַּעַן אִיּוֹב וַיֹּאמַֽר׃ אָמְנָם יָדַעְתִּי כִי־כֵן

voluerit Si ? Deo cum homo ſe juſtificabit *quid* &

3 וּמַה־יִּצְדַּק אֱנוֹשׁ עִם־אֵֽל׃ אִם־יַחְפֹּץ

.mille ex unum ei reſpondebit non ; eo cum contendere

לָרִיב עִמּוֹ לֹא־יַעֲנֶנּוּ אַחַת מִנִּי־אָֽלֶף׃

, cum ad induravit quis : robore fortis & , corde Sapiens

4 חֲכַם לֵבָב וְאַמִּיץ כֹּחַ מִֽי־הִקְשָׁה אֵלָיו

qui ; cognoverunt non & ,montes *Transferens* ? habuit pacem &

5 וַיִּשְׁלָֽם׃ הַמַּעְתִּיק הָרִים וְלֹא יָדָעוּ אֲשֶׁר

; ſuo loco è terram *Tremefaciens* .ſuo *naſo* in eos ſubvertit

6 הֲפָכָם בְּאַפּֽוֹ׃ הַמַּרְגִּיז אֶרֶץ מִמְּקוֹמָהּ

; orietur non & , Soli *Dicens* .contremiſcent ejus columnæ &

7 וְעַמּוּדֶיהָ יִתְפַלָּצֽוּן׃ הָאֹמֵר לַחֶרֶס וְלֹא יִזְרָח

, ſolus cœlos *Extendens* .ſignabit ſtellas *ſupra* &

8 וּבְעַד כּוֹכָבִים יַחְתֹּֽם׃ נֹטֶה שָׁמַיִם לְבַדּוֹ

, *His Faciens* .maris excelſa ſuper *calcans* &

9 וְדוֹרֵךְ עַל־בָּמֳתֵי יָֽם׃ עֹֽשֶׂה־עָשׁ

non donec , magna *Faciens* .*auſtri penetralia &* , *Chima &* , *Chejil*

10 כְּסִיל וְכִימָה וְחַדְרֵי תֵמָֽן׃ עֹשֶׂה גְדֹלוֹת עַד־אֵין

tranſibit Ecce .*numerus non donec* ,mirabilia & ; *inveſtigatio*

11 חֵקֶר וְנִפְלָאוֹת עַד־אֵין מִסְפָּֽר׃ הֵן יַעֲבֹר

.eum intelligam non & , *præteribit* & ; videbo non & , me ſuper

עָלַי וְלֹא אֶרְאֶה וְיַחֲלֹף וְֽלֹא־אָבִין לֽוֹ׃

: eum ad dicet quis ? eum faciet reſtituere quis , *rapiet En*

12 הֵן יַחְתֹּף מִי יְשִׁיבֶנּוּ מִֽי־יֹאמַר אֵלָיו

? facis Quid

מַֽה־תַּעֲשֶֽׂה׃

Verſio VULG. LAT.

9 (Heſterni quippè ſumus, & ignoram⁹ quoniã ſicut umbra
10 dies noſtri ſunt ſup terrã:) Et ipſi docebunt te : loquentur tibi,& de corde ſuo proferent
11 eloquia. Numquid virere poteſt ſcirpus abſque humore? aut creſcere carectum ſine aqua?
12 Cùm adhuc ſit in flore, nec carpatur manu, ante
13 omnes herbas areſcit : Sic viæ omnium qui obliviſcuntur Deum, & ſpes hypocritæ peribit :
14 Non ei placebit vecordia ſua, & ſicut tela aranearum fiducia ejus.
15 Innitetur ſuper domum ſuam,& non ſtabit : fulciet eam, & non
16 conſurget : Humectus videtur antequàm veniat Sol, & in ortu ſuo germen ejus egredietur.
17 Super acervum petrarum radices ejus denſabuntur, & inter lapides commorabitur.
18 Si abſorbuerit eum de loco ſuo, negabit eum, & dicet ;
19 Non novi te. Hæc eſt enim lætitia viæ ejus, ut rurſum de
20 terra alii germinentur. Deus non projiciet ſimplicem, nec porriget manum malignis :
21 Donec impleatur riſu os tuum,
22 & labia tua jubilo. Qui oderunt te,induentur confuſione : & tabernaculum impiorum non ſubſiſtet.

CAP. IX.

1 2 Et reſpondens Job,ait;Verè ſcio quòd ita ſit, & quòd non juſtificetur homo compoſitus
3 Deo. Si voluerit contendere cum eo,non poterit ei reſpon-
4 dere unum pro mille. Sapiens corde eſt, & fortis robore : quis reſtitit ei, & pa-
5 cem habuit? Qui tranſtulit montes; & neſcierunt hi quos
6 ſubvertit in furore ſuo. Qui commovet terram de loco ſuo, & columnæ ejus concutiuntur.
7 Qui præcepit Soli,& non oritur: & ſtellas claudit quaſi ſub
8 ſignaculo: Qui extendit cœlos ſolus, & graditur ſuper fluctus
9 maris. Qui facit Arcturum, & Oriona, & Hyadas, & in-
10 teriora Auſtri. Qui facit magna, & incomprehenſibilia, & mirabilia, quorum non
11 eſt numerus. Si venerit ad me, non videbo eum : ſi abi-
12 erit, non intelligam. Si repentè interroget, quis reſpondebit ei? vel quis dicere poteſt, Cur ita facis?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

9 † Χθιζοὶ γάρ ἐσμεν, καὶ οὐκ οἴδαμεν· † (ζ) Σκιὰ γάρ ἐστιν ἡμῶν (η) ἐπὶ
10 τῆς γῆς ὁ βίος· † Ἢ οὐχ οὗτοί σε διδάξουσι (θ) καὶ ἀναγγελοῦσι, † καὶ
11 ἐκ καρδίας ἐξάξουσι ῥήματα; † Μὴ θάλλει πάπυρος ἄνευ ὕδατος, † ἢ ὑψω-
12 θήσεται βούτομον ἄνευ πότου; Ἔτι ὂν ἐπὶ ῥίζης, † καὶ οὐ μὴ θερισθῇ, πρὸ τοῦ πιεῖν † (ι) πᾶσα βοτάνη οὐχὶ ξηραί-
13 νεται; † Οὕτως τοίνυν ἔσται τὰ ἔσχατα πάντων τῶν ἐπιλανθανομένων (κ) τοῦ κυρίου· ἐλπὶς γὰρ ἀσεβοῦς (λ) ἀπολεῖ-
14 ται· † Ἀοίκητος (μ) γὰρ αὐτοῦ ἔσται ὁ οἶκος (ν)· † ἀράχνη δὲ αὐτοῦ ἀπο-
15 βήσεται ἡ σκηνή. † Ἐὰν ὑπερείσῃ τὴν οἰκίαν αὐτοῦ, οὐ μὴ στῇ· † ἐπιλαβομένου δὲ (ξ) αὐτοῦ, οὐ μὴ ὑπομείνῃ· †
16 Ὑγρὸς γάρ ἐστιν ὑπὸ ἡλίου· † καὶ ἐκ σαπρίας αὐτοῦ ὁ ῥάδαμνος αὐτοῦ ἐξε-
17 λεύσεται. † (ο) Ἐπὶ συναγωγὴν λίθων κοιμᾶται· † ἐν δὲ μέσῳ χαλίκων ζήσε-
18 ται. † Ἐὰν καταπίῃ, (π) ὁ τόπος ψεύσεται αὐτόν. † οὐχ ἑώρακας τοιαῦ-
19 τα, Ὅτι καταστροφὴ ἀσεβοῦς τοιαύτη, † ἐκ δὲ γῆς (ρ) ἄλλον ἀναβλαστήσει. †
20 Ὁ γὰρ κύριος οὐ μὴ (ς) ἀποποιήσηται τὸν ἄκακον· † πᾶν δὲ δῶρον ἀσεβοῦς οὐ δέ-
21 ξεται. † Ἀληθινῶν δὲ στόμα ἐμπλήσει γέλωτος, † (σ) τὰ δὲ χείλη αὐτῶν ἐξομολο-
22 γήσεως. † Οἱ δὲ ἐχθροὶ αὐτῶν (τ) ἐνδύσονται αἰσχύνην, † δίαιτα δὲ ἀσεβοῦς οὐκ ἔσται.

Heſterni enim ſumus, & neſcimus : umbra enim eſt noſtra ſuper terram vita. 9
Aut nunquid non hi docebunt te, & referent, & è corde proferent verba? 10
Nunquid viret ſcirpus ſine aqua? aut (c) exaltabitur pratum ſine potu? 11
Adhuc in ſua radice conſiſtit, & non metetur : antequàm ſatiat omnis herba, nonne areſcit? 12
Sic igitur erunt noviſſima omnium qui obliviſcuntur Domini : ſpes enim impii peribit : 13
Inhabitabilis enim ejus erit domus : (d) aranea autem evadet ejus tabernaculum : 14
Si (e) ſuffulſerit domum ſuam, non ſtabit : & cùm ceperit, non permanebit: 15
(f) Humidus enim eſt ſub Sole, & de putredine ejus (g) germen ejus aſcendet. 16
In (h) congregatione lapidum dormit, in medio autem ſilicum vivet. 17
Si (i) abſorbuerit ; locus mentietur eum. 18
Non vidiſti talia, Quoniam ſubverſio impii talis, de terra autem alterum germinabit. 19
Dominus enim non (k) improbabit innocentem, nec ullum munus impii accipiet : 20
Veracium autem os implebit riſu; labia autem eorum confeſſione. 21
Inimici autem eorum induentur confuſionem, & tabernaculum impii non erit. 22

ΚΕΦ. θʹ.

1 2 † Ὑπολαβὼν δὲ Ἰὼβ, λέγει, † Ἐπ' ἀληθείας οἶδα, ὅτι οὕτως ἐστί· † πῶς γὰρ
3 ἔσται δίκαιος βροτὸς παρὰ κυρίῳ; † Ἐὰν γὰρ βούληται κριθῆναι (α) αὐτῷ, οὐ μὴ ὑπακούσῃ αὐτῷ, † ἵνα μὴ ἀντείπῃ
4 πρὸς ἕνα λόγον αὐτοῦ ἐκ χιλίων. † Σοφὸς γάρ ἐστι διανοίᾳ, κραταιός τε καὶ μέγας. † τίς σκληρὸς γενόμενος ἐναν-
5 τίον αὐτοῦ ὑπέμεινεν; † Ὁ παλαιῶν ὄρη καὶ οὐκ οἴδασιν, † ὁ καταστρέφων
6 αὐτὰ (β) ὀργῇ· † Ὁ σείων τὴν ὑπ' οὐρανὸν ἐκ θεμελίων; † οἱ δὲ στῦλοι αὐ-
7 τῆς σαλεύονται· † Ὁ λέγων τῷ ἡλίῳ (γ) καὶ οὐκ ἀνατέλλει, † κατὰ δὲ ἄ-
8 στρων κατασφραγίζει. † Ὁ τανύσας τὸν οὐρανὸν μόνος, † καὶ περιπατῶν (δ) ὡς
9 ἐπ' ἐδάφους ἐπὶ θαλάσσης· † Ὁ ποιῶν Πλειάδα καὶ Ἕσπερον καὶ Ἀρκτοῦρον, καὶ
10 ταμεῖα Νότου· † Ὁ ποιῶν μεγάλα καὶ ἀνεξιχνίαστα, † ἔνδοξά τε καὶ ἐξαίσια,
11 ὧν οὐκ ἔστιν ἀριθμός. † Ἐὰν ὑπερβῇ με, οὐ μὴ ἴδω· † (ε) ἐὰν παρέλθῃ με, οὐδ' ὡς ἔ-
12 γνων. † Ἐὰν ἀπαλλάξῃ, τίς ἀποστρέψει; † ἢ τίς ἐρεῖ αὐτῷ, Τί ἐποίησας;

CAP. IX.

Reſpondens autem Job, ait; 1
Verè ſcio, quia ita eſt, Quomodò enim erit juſtus homo apud Dominum? 2
Si enim voluerit judicari cum eo, non obaudiet ei : ut non (a) contradicat ad unum ſermonem ejus de mille : 3
Sapiens eſt enim mente, robuſtúſque & magnus. Quis durus factus ante (b) cum permanſit? 4
Qui in (c) vetuſtatem perducit montes, & neſciunt : qui vertit eos in ira : 5
Qui commovet (d) eam, quæ ſub cælo, à fundamentis, & columnæ ejus (e) quatiuntur : 6
Qui dicit Soli, & non oritur : contra ſydera autem ſignaculum ponit : 7
Qui extendit cælum ſolus, & ambulat ſuper mare, tanquàm ſuper pavimentum. 8
Qui facit Pleiada, & Heſperum, & (f) Arcturum, & penetralia Auſtri. 9
Qui facit magna, & non veſtigabilia, glorioſáque, & mirabilia, quorum non eſt numerus. 10
Si tranſgreſſus me fuerit, non videbo : ſi præterierit me, neque ſic novi: 11
Si removerit, quis reſtituet? aut quis dicet ei, Quid feciſti? 12

MS.A. (ζ) Σκιὰ δέ ἐστιν (η) ὁ βίος ἐπὶ τῆς γῆς· (θ) ῥήματα, † καὶ ἀναγγελοῦσίν σοι σύνεσιν σοφίας; καὶ ἐκ καρδίας σε διδάξουσιν ῥήματα; Μὴ (ι) πᾶσαν βοτάνην, † ἐὰν δὲ μὴ πίῃ ξηραίνεται. (κ) τοῦ θεοῦ· (λ) ὀλεῖται· (μ) δὲ ἔσται αὐτοῦ (ν) καὶ ὁδὸς αὐτοῦ· ἡ δὲ σκηνὴ αὐτοῦ ἀράχνη ἀποβήσεται. Ἐὰν ὑπερείσῃ (ξ) αὐτοῦ, (ο) Ἐπὶ συναγωγῆς (π) αὐτὸν ὁ τόπος ψεύσεται. οὐχ ἑόρακας (ρ) ἄλλο (ς) ἀποποιήσεται (σ) καὶ τὰ χείλη αὐτῶν ἀγαλλιάσεως. (τ) ἐνδύσονται αἰσχύνην, καὶ δίαιτα ἀσεβοῦς

Κεφ. θʹ. MS.A. (α) μετ' αὐτοῦ, (β) ἐν ὀργῇ· (γ) μὴ ἀνατέλλειν, καὶ οὐκ (δ) ἐπὶ θαλάσσης ὡς ἐπ' ἐδάφους· (ε) καὶ ἐὰν

תרגום TARGUM.

9 10 11 אֲרוּם מֵאֶתְמָלֵי אֲנַחְנָא וְלָא נֵדַע אֲרוּם הֵיךְ טוּלָא יוֹמָנָא עֲלַוֵי אַרְעָא׃ הֲלָא אִנּוּן יַלְפוּנָךְ וְיֵימְרוּן לָךְ וּמֵרְעוּתְהוֹן וּמֵרַעְיוֹנֵיהוֹן יַפְּקוּן מִלִּין׃ הַאֶפְשַׁר
12 13 דְּאִתְנְאֵי נוֹמָא בְּלָא בִצָּא יִסְגֵּא עַרְקָא בְּלָא מַיָּא׃ עַד דִּי הוּא בְּנִיוֹתֵיהּ לָא אִתְלִישׁ וְקֳדָם כָּל עִסְבָּא יִיבַשׁ׃ הָכְדֵין אָסְרַט כָּל דְּשָׁלְיָין אֱלָהָא
14 15 16 וּסְבַר מְדִילָטוּר תְּהוֹבַד׃ דִּי תְתוּחַ סְבַרְיֵיהּ וְהֵיךְ בֵּי מְטַוְיָאתָא רוּחְצָנֵיהּ׃ מִסְתְּמִיךְ עַל בֵּיתֵיהּ וְלָא יְקוּם וְתִתְקַף בֵּידֵיהּ וְלָא יִתְקַיָּם׃ רְטִיב הוּא קֳדָם
17 18 מַדְנַח שִׁמְשָׁא וְעַל פַּרְווֹנֵיהּ יַנְקוּתֵיהּ תִּפּוֹק׃ דִּי עַל אִיגַּר שָׁרְשׁוֹי חָרְשִׁין בֵּית אַבְנַיָּא יִעְוֵין׃ אִם יְסַלְעֲמִנֵּיהּ מִן אַתְרֵיהּ וּמְכַדֵּב בֵּיהּ לָא חֲמֵית יָתָךְ׃
19 20 21 הָא הוּא חֶדְוַת אוֹרְחֵיהּ וּמִן עַפְרָא אוֹחֲרָן יְלַבְלְבוּן׃ הָא אֱלָהָא לָא יְרַחִיק שְׁלִים וְלָא יִתְקַף בְּיַד מַבְאֲשִׁין׃ עַד דִּימַלֵּא חוֹכָא פּוּמָךְ וְסִפְוָתָךְ הֵיךְ
22 יַבָּבָא׃ סָנְאָךְ יִלְבְּשׁוּן בַּהֲתָא וּמַשְׁכְּנָא דְּרַשִׁיעֵי לֵיתוֹהִי׃

ט

1 2 3 4 וַאֲתִיב אִיּוֹב וַאֲמַר׃ בְּרַם בְּקוּשְׁטָא יְדַעִית אֲרוּם הֵיכְנָא וּמָה יִזְכֵּי בַּר נָשׁ עִם אֱלָהָא׃ אִם יִצְבֵּי לְמִנְצֵי עִמֵּיהּ לָא יְתִיבִנֵּיהּ חֲדָא מִן אֲלַף׃ חַכִּימָא
5 6 לִבָּא וְאַלִּים חֵילָא מַן אַקְשֵׁי לְוָתֵיהּ וְאִשְׁלֵים׃ דִּמְסַלֵּק מַלְכִין תַּקִּיפִין הֵיךְ טוּרַיָּא וְלָא יַדְעוּ אֲרוּם הֲפִיכְנוּן בְּרוּגְזֵיהּ׃ דִּמַרְגִּיז אַרְעָא מֵאַתְרָהּ וְעַמּוּדֶיהָ מִתְרַפְּפִין׃
7 8 9 דְּאָמַר לְשִׁמְשָׁא וְלָא יִדְנַח וְאַמְטוּל כּוֹכְבַיָּא יַחְתּוֹם בַּעֲנָנֵי׃ דִּמְתַח שְׁמַיָּא לִבְלְחוֹדוֹהִי וּמְטַיֵּיל עַל רוּם תְּקוֹף יַמָּא׃ דַּעֲבַד עָשׁ נִפְלָא וְכִימָא וְאִדְרוֹנֵי שִׁטְרֵי
10 11 מוֹלְיָא בִּסְטַר דָּרוֹמָא׃ דַּעֲבַד רַבְרְבָן עַד דְּלֵית סוֹף וּפְרִישָׁן עַד דְּלֵית מִנְיָן׃ הָא יֶעְבַּר עֲלַי בִּשְׁמֵי מְרוֹמָא וְלָא אֶחְמֵי וְיַחְלוֹף וְלָא אֶתְבְּיַין לֵיהּ׃ הָא יַחְתּוֹף אֱנָשׁ
12 בְּעָלְמָא וּמַן יְתִיבִנֵּיהּ מַן יֵימַר לֵיהּ מָה אַתְּ עָבֵד׃

Verſio SYRIACA.

9 * ܕܐܬܡܠܝ ܓܝܪ. ܚܢܢ ܠܐ ܝܕܥܝܢ. ܘܐܝܟ ܛܠܠܐ ܕܛܠܠܐ ܝܘܡܝܢ ܥܠ ܐܪܥܐ. * ܘܗܐ ܗܢܘܢ ܢܠܦܘܢܟ ܘܢܐܡܪܘܢ
10 ܠܟ. ܘܡܢ ܠܒܗܘܢ ܢܦܩܘܢ ܡܠܐ. * ܕܠܡܐ ܣܓܝܐܝܢ ܐܓܡܐ ܒܐܬܪܐ ܨܗܝܐ. ܐܘ ܢܦܐ ܐܓܡܐ ܐܝܟܐ ܕܠܝܬ ܡܝܐ.
11 12 * ܥܕ ܗܘ ܒܫܒܛܗ. ܠܐ ܡܬܠܩܛ. ܘܩܕܡ ܟܠ ܥܣܒܐ ܝܒܫ. * ܗܟܢܐ ܐܢܘܢ ܐܘܪܚܬܗ ܕܟܠ ܡܢ
13 ܕܛܥܐ ܠܐܠܗܐ. ܘܣܒܪܗ ܕܥܘܠܐ ܬܐܒܕ. * ܘܬܬܩܛܥ ܬܘܟܠܢܗ. ܘܒܝܬܐ ܕܥܢܟܒܝܬܐ ܒܝܬܗ. * ܢܬܬܟܠ
14 15 ܥܠ ܒܝܬܗ. ܘܠܐ ܢܩܘܡ. ܘܢܚܒܘܫܝܘܗܝ. ܘܠܐ ܢܬܡܟܢ. * ܐܝܟ ܪܛܝܒܘܬܐ ܗܘ ܩܕܡ ܫܡܫܐ. ܘܥܠ ܓܠܠܐ ܥܩܪܘܗܝ
16 ܡܬܦܫܛܝܢ. * ܘܒܝܬܐ ܕܟܐܦܐ ܚܙܐ. * ܐܢ ܢܥܩܪܝܘܗܝ ܡܢ ܐܬܪܗ. ܢܟܕܒܝܘܗܝ ܘܢܐܡܪ ܠܗ ܕܠܐ ܚܙܝܬܟ.
17 18 19 * ܗܐ ܗܘܝܘ ܕܒܨܐ ܟܠܗܝܢ ܐܘܪܚܬܗ. ܘܡܢ ܐܪܥܐ ܐܚܪܢܐ ܢܬܚܙܐ. * ܠܐ ܡܣܠܐ ܐܠܗܐ ܠܬܡܝܡܐ. ܘܠܐ ܐܚܕ
20 ܐܝܕܐ ܕܒܝܫܐ. * ܥܕܡܐ ܕܢܬܡܠܐ ܦܘܡܟ ܓܘܚܟܐ. ܘܣܦܘܬܟ ܬܫܒܘܚܬܐ. * ܣܢܐܝܟ ܢܠܒܫܘܢ
21 22 ܒܗܬܬܐ. ܘܡܫܟܢܐ ܕܪܫܝܥܐ. ܠܐ ܡܫܬܟܚ.

* ܫܠܡ * ܛ *

1 * ܘܥܢܐ ܐܝܘܒ ܘܐܡܪ. * ܫܪܝܪܐܝܬ ܝܕܥ ܐܢܐ ܕܗܟܢܐ ܗܝ. ܘܠܐ ܙܟܐ ܠܐܠܗܐ ܐܢܫ. * ܐܢ ܢܨܒܐ ܠܡܬܕܝܢܘ
2 ܥܡܗ. ܠܐ ܢܦܢܐ ܠܗ ܚܕܐ ܡܢ ܐܠܦ. * ܚܟܝܡ ܠܒܗ ܗܘ. ܘܚܣܝܢ ܚܝܠܗ. ܡܢܘ ܐܬܩܫܝ
3 4 ܠܗ ܘܗܘܐ ܚܠܝܡ. * ܗܘ ܕܡܥܬܩ ܛܘܪܐ ܘܠܐ ܝܕܥܝܢ. ܘܗܦܟ ܐܢܘܢ ܒܪܘܓܙܗ. * ܗܘ ܕܙܝܥ ܐܪܥܐ
5 6 ܡܢ ܫܬܐܣܝܗ. ܘܥܡܘܕܝܗ ܡܬܬܙܝܥܝܢ. * ܗܘ ܕܐܡܪ ܠܫܡܫܐ ܘܠܐ ܕܢܚ. ܘܥܠ ܐܦܝ ܟܘܟܒܐ ܚܬܡ. * ܗܘ
7 8 ܕܡܬܚ ܫܡܝܐ ܒܠܚܘܕܘܗܝ: ܘܕܪܟ ܥܠ ܪܡܘܬܗ ܕܝܡܐ. * ܗܘ ܕܥܒܕ ܟܝܡܐ ܘܥܝܘܬܐ ܘܓܢܒܪܐ. ܘܬܚܘܡܝ
9 10 ܬܝܡܢܐ. * ܗܘ ܕܥܒܕ ܪܘܪܒܬܐ ܕܠܐ ܣܟܐ. ܘܚܝܠܘܬܐ ܕܠܐ ܡܬܡܢܝܢ. * ܘܐܢ ܢܥܒܪ ܥܠܝ. ܠܐ ܚܙܐ ܐܢܐ ܠܗ.
11 12 ܘܐܢ ܢܟܪܟ ܠܝ. ܠܐ ܡܪܓܫ ܐܢܐ ܒܗ. * ܗܐ ܐܢ ܐܬܒܪܝܬ. ܡܢܘ ܢܬܒܥܝܘܗܝ ܡܢ ܐܝܕܗ. ܘܡܢܘ ܢܐܡܪ ܠܗ
ܡܢܐ ܥܒܕܬ ܗܟܢ:

Verſio ARABICA.

9 10 * فان الذي كان بالامس نحن لا نعرفه * ومثل افياء الظلال ايامنا على الارض * وهوذا هم يعلمونك
11 ويقولون لك * ومن قلوبهم يخرجون الكلام * العل يكثر الاجام في الموضع العطشان * او ينبت البردي
12 13 حيث ليس امياه * الذي بينما هو في قصبته لا يقطع * وقبل كل حشيش ييبس * هكذا طرايق كل
14 15 من ينسا الله * ورجاء الحنيف يهلك * وينقطع اتكاله * وبيت العنكبوت بيته * ويتكل على بيته فلا
16 17 يقوم * ويستمسك فلا يثبت * مثل الرطوبة هو قدام الشمس وعلى الامواج اصوله تنبسط * وبيت الحجار
18 19 يبصر * ان قلعه من مكانه وكذب به * فقال له اني اراك * فانه يفحص جميع طرايقه * ومن التراب آخر
20 21 يشرق * ولا يرفض الله الصالحين * ولا ياخذ بيدي المسيئين * حتى يمتلي فمك ضحكا وشفتاك تسبيحا
22 * بغضاءك يلبسون خزيا * ومسكن المنافق لا يوجد *

* الفصل التاسع *

1 2 * فاجاب ايوب وقال * حقا اني لاعلم انه لكذلك ولا يغلب الله احد * ان اراد ان يحاجه فانه واحدا
3 4 5 من الف لا يجيبه * فانه حكيما قلبه عظيمة قوته * من الذي استصعب عليه فكان سالما * ذلك الذي
6 يسير الجبال لا يعلم * والذي يقلبها بغضبه * ذلك الذي زعزع الارض من اواسيها وسكانها يرعدون *
7 8 * ذلك الذي امر الشمس فلم تشرق * وختم على وجه الكواكب * ذلك الذي بسط السماء وحده * ووطي
9 10 على عظمة البحر * ذلك الذي صنع الثريا والعيوق * والجبار واطراف التيمن * ذلك الذي صنع الكباير
11 12 التي لا تنتهي * والقوة التي لا تحصا * فهو ان جاز فليس اراه * وان طاف حوالي ليس استبينه * والان
ان انكسر من الذي يغير عليه * ومن الذي يقول له ماذا صنعت هكذا *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

(*Nam quod heri extitit, nos neſcimus;* & *(c) ſicut umbra umbræ dies noſtri ſuper terram.)* 9 *Et en ipſæ docebunt te,* & *dicent tibi;* & *de cordibus ſuis educent ſermonem.* 10 *Num multiplicantur paludes in loco ſitibundo, aut viget ſcirpus ubi non ſunt aquæ?* 11 *Qui dum in virga ſua eſt non colligitur,* & *ante omnem herbam areſcit.* 12 *Sic ſunt ſemitæ omnis qui obliviſcitur Deum,* & *ſpes perverſi peribit,* 13 *Et fiducia ejus frangetur,* & *domus araneæ domus ejus.* 14 *Et confidet in domo ſua, nec ſtabit,* & *apprehendet eam, nec permanebit,* 15 *Velut humiditas eſt coram ſole,* & *ſuper undas radices ejus (d) extenduntur,* 16 *Et domum lapidum videt.* 17 *Si eradicaverit eam de loco ſuo, negabit eam, dicens ei; (e) Ipſe te video:* 18 *Quoniam inveſtigabit omnes vias ejus,* & *de terra alius apparebit.* 19 *Deus autem non repellit juſtos, nec tenet manus iniquorum.* 20 *Donec impleatur os tuum riſu,* & *labia tua laude;* 21 *Oſores tui induentur confuſione,* & *habitaculum iniqui non reperietur.* 22

CAP. IX.

R*Eſpondit Job* & *dixit,* 1 *Verè ſcio ſic eſſe, nec vincit Deum quiſquam:* 2 *Si velit contendere cum eo, non reſpondebit ei unum ex mille.* 3 *Sapiens enim eſt cor ejus,* & *fortis ejus potentia. Quis reſtitit ei,* & *evaſit incolumis?* 4 *Qui transfert montes, neſcit?* & *qui evertit eos in furore ſuo?* 5 *Qui conturbavit terram à fundamentis,* & *habitores ejus contremiſcunt:* 6 *Qui præcepit ſoli,* & *non ortus eſt,* & *clauſit ſuper facies ſtellarum:* 7 *Qui extendit cœlum ſolus,* & *calcavit ſuper magnificentiam maris.* 8 *Qui fecit Pleiadas,* & *Arcturum,* & *Gigantem,* & *terminos Auſtri:* 9 *Qui fecit magnalia ſine fine,* & *potentias quæ non numerantur.* 10 *(a) Quòd ſi ipſe tranſierit prope me, non video eum:* & *ſi circum me ierit, non ſentio eum.* 11 *Et modò ſi fractus fuerim, (b) quis zelabit adversùs eum;* & *quis dicet ei, (†) Cur feciſti ſic?* 12

INTERP. SYR. (c) ſicut umbra ſunt dies (d) ſuſtentantur, (e) Non te video. Ca. ix. (a) Ecce ſi (b) quis requiret illud de manu ejus; (†) Quid tu facis?

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quoniam ab heri ſumus nos, & neſcimus, quia ſicut umbra ſunt dies noſtri ſuper terram. 9 Nonne ipſi docebunt te, & dicent tibi, & de *voluntate & mente ſua* proferent ſermones? 10 Nunquid poteſt creſcere ſcirpus abſque cœno, aut creſcere carectum abſque aqua? 11 Dum eſt in culmine ſuo, non evellitur, & ante omne fœnum areſcet. 12 Sic ſemitæ omnium qui ignorant Deum, & ſpes *à delatore* peribit. 13 Quoniam auferetur ſpes ejus, & ſicut domus araneæ fiducia ejus. 14 Innititur ſuper domum ſuam & non ſtabit; confortabitur in ea, & non permanebit. 15 Viridis eſt antequàm oriatur ſol, & in horto ſuo germen ejus egredietur. 16 Super acervum radices ejus condenſantur: domum lapidum implicabit. 17 Si abſorbuerit eum de loco ſuo, & mentitus fuerit ei, [*dicens*:] Non vidi te: 18 Ecce hoc ipſum eſt gaudium viæ ejus, & de pulvere alio germinabunt. 19 Ecce Deus non projiciet perfectum, neque confortabit manum malignantium. 20 Donec impleat os tuum riſu, & labia tua jubilatione. 21 Inimici tui induentur confuſione, & tabernaculum impiorum non ſubſiſtet. 22

CAP. IX.

ET reſpondit Job & dixit: 1 Verè utique ſcio quia ita eſt, & quomodo juſtificabitur filius hominis cum Deo? 2 Si voluerit contendere cum eo, non reſpondebit ei unum de mille. 3 Sapiens corde eſt & fortis robore: quis arguit eum, & pacem habuit? 4 Qui transfert reges *fortes inſtar montium*, & neſciunt quòd ſubvertit eos in ira ſua. 5 Qui commovet terram de loco ſuo, & columnæ ejus concutiuntur. 6 Qui dicit ad ſolem & non oritur, & ſtellas ſigillat nubibus. 7 Qui extendit cœlos ſolus, & deambulat per altitudinem fortitudinis maris. 8 Qui fecit arcturum, oriona & hyadas, & cubicula *dominationis* planetarum in latere Auſtrali. 9 Qui facit magnalia ita ut non ſit finis, & mirabilia ita ut non ſit numerus. 10 Ecce tranſibit ſuper me *in cœlis excelſis*, & non videbo; & abibit, nec intelligam illum. 11 Ecce auferet hominem *in* ſeculo, & quis erit qui reducat illum? quis dicet ei: Quid tu facis? 12

איוב : י

adjutores ſe incurvaverunt eo ſub ; ſuum naſum avertet non Deus
13 אֱלוֹהַּ לֹא־יָשִׁיב אַפּוֹ תַּחְתָּו שָׁחֲחוּ עֹזְרֵי
? eo cum mea verba eligam : ei reſpondebo ego quia Etiam .ſuperbiæ
14 רָהַב׃ אַף כִּי־אָנֹכִי אֶעֱנֶנּוּ אֶבְחֲרָה דְבָרַי עִמּוֹ׃
. me judicare facientem ad ; reſpondebo non , fuero juſtus ſi Qui
15 אֲשֶׁר אִם־צָדַקְתִּי לֹא אֶעֱנֶה לִמְשֹׁפְטִי
quòd credam non ;mihi reſponderit & ,invocavero Si .deprecabor
16 אֶתְחַנָּן׃ אִם־קָרָאתִי וַיַּעֲנֵנִי לֹא אַאֲמִין כִּי־
multiplicabit & ;me cõteret turbine in Qui .meam vocem auſcultaverit
17 יַאֲזִין קוֹלִי׃ אֲשֶׁר־בִּשְׂעָרָה יְשׁוּפֵנִי וְהִרְבָּה
ſed ;meum ſpiritum reducere me dabit Non .gratis mea vulnera
18 פְּצָעַי חִנָּם׃ לֹא־יִתְּנֵנִי הָשֵׁב רוּחִי כִּי
: ecce robuſtus potentiam ad Si .amaritudinibus me ſaturabit
19 יַשְׂבִּעַנִי מַמְּרֹרִים׃ אִם־לְכֹחַ אַמִּיץ הִנֵּה
,me juſtificavero Si ? me faciet convenire quis , judicium ad ſi &
20 וְאִם־לְמִשְׁפָּט מִי יוֹעִידֵנִי׃ אִם־אֶצְדָּק
.me faciet perverſum & , ego integer : me condemnabit meum os
פִּי יַרְשִׁיעֵנִי תָּם אָנִי וַיַּעְקְשֵׁנִי׃
.meam vitam reprobabo : meam animam noſcam non ,ego Perfectus
21 תָּם אָנִי לֹא־אֵדַע נַפְשִׁי אֶמְאַס חַיָּי׃
.conſumens ipſe ,impium & ,perfectum ; dixi ideo , ipſum Unum
22 אַחַת הִיא עַל־כֵּן אָמַרְתִּי תָּם וְרָשָׁע הוּא מְכַלֶּה׃
.ſubſannabit innocentium tentationem ad , ſubito occidat , flagellum Si
23 אִם־שׁוֹט יָמִית פִּתְאֹם לְמַסַּת נְקִיִּם יִלְעָג׃
: operiet ejus judicum facies , impii manu in eſt data Terra
24 אֶרֶץ נִתְּנָה בְיַד־רָשָׁע פְּנֵי־שֹׁפְטֶיהָ יְכַסֶּה
præ fuerunt leves mei dies Et ? ipſe quis ubi , non ſi
25 אִם־לֹא אֵפוֹא מִי־הוּא׃ וְיָמַי קַלּוּ מִנִּי־
cum Tranſierunt .bonum viderunt non , fugerunt : curſore
26 רָץ בָּרְחוּ לֹא־רָאוּ טוֹבָה׃ חָלְפוּ עִם־
Si .eſcam ad volabit aquila ſicut ; Ebeh navibus
27 אֳנִיּוֹת אֵבֶה כְּנֶשֶׁר יָטוּשׂ עֲלֵי־אֹכֶל׃ אִם־
.cõfortabo & ,meas facies relinquam : mei eloquii obliviſcar ,me dicere
אָמְרִי אֶשְׁכְּחָה שִׂיחִי אֶעֶזְבָה פָנַי וְאַבְלִיגָה׃
.me mundabis non quòd novi ;meos dolores omnes Timui
28 יָגֹרְתִּי כָל־עַצְּבֹתָי יָדַעְתִּי כִּי־לֹא תְנַקֵּנִי׃
me lavero Si ? laborabo vanè jam quid ut : ero impius Ego
29 30 אָנֹכִי אֶרְשָׁע לָמָּה־זֶּה הֶבֶל אִיגָע׃ אִם־הִתְרָחַצְתִּי
Tunc : meas volas puritate in mundavero & , nivis aquis in
31 בְמוֹ־שָׁלֶג וַהֲזִכּוֹתִי בְּבֹר כַּפָּי׃ אָז
.mea veſtimenta me abominabuntur & ,me demerges foveam in
בַּשַּׁחַת תִּטְבְּלֵנִי וְתִעֲבוּנִי שַׂלְמוֹתָי׃
.judicium in ſimul ingrediemur ,ei reſpondebo , ego ſicut vir non Quia
32 כִּי־לֹא־אִישׁ כָּמֹנִי אֶעֱנֶנּוּ נָבוֹא יַחְדָּו בַּמִּשְׁפָּט׃
.nos ambos ſuper ſuam manum ponat , arguens nos inter eſt Non
33 לֹא יֵשׁ־בֵּינֵינוּ מוֹכִיחַ יָשֵׁת יָדוֹ עַל־שְׁנֵינוּ׃
non ejus terror & , ſuam virgam me deſuper Removeat
34 יָסֵר מֵעָלַי שִׁבְטוֹ וְאֵמָתוֹ אַל־
ſic non quia : eum timebo non & , Loquar .me terreat
35 תְּבַעֲתַנִּי׃ אֲדַבְּרָה וְלֹא אִירָאֶנּוּ כִּי־לֹא־כֵן
.me apud ego
אָנֹכִי עִמָּדִי׃

CAP. X. יוד

me adverſum relinquam , meis vitis in mea anima eſt Pertæſa
1 נָקְטָה נַפְשִׁי בְּחַיָּי אֶעֶזְבָה עָלַי
Dicam .meæ animæ amaritudine in loquar : meum eloquium
2 שִׂיחִי אֲדַבְּרָה בְּמַר נַפְשִׁי׃ אֹמַר
quid ſuper me ſcire fac ; me reum peragas Ne : Deum ad
אֶל־אֱלוֹהַּ אַל־תַּרְשִׁיעֵנִי הוֹדִיעֵנִי עַל־מַה־
.mecum litiges
תְּרִיבֵנִי׃

Verſio VULG. LAT.

13 Deus, cujus iræ nemo reſiſtere poteſt, & ſub quo curvantur 14 qui portant orbem. Quantus ergò ſum ego, ut reſpondeam ei, & loquar verbis meis cum 15 eo? Qui etiam ſi habuero quidpiam juſtum, non reſpondebo, ſed meum judicem de- 16 precabor. Et cùm invocantem exaudierit me, non credo quòd audierit vocem meam. 17 In turbine enim conteret me, & multiplicabit vulnera mea 18 etiam ſine cauſa. Non concedit requieſcere ſpiritũ meum, & implet me amaritudi- 19 nibus. Si fortitudo quæritur, robuſtiſſimus eſt: ſi æquitas judicii, nemo audet pro me te- 20 ſtimonium dicere. Si juſtificare me voluero, os meum condemnabit me: ſi innocentem oſtendero, pravum me com- 21 probabit. Etiam ſi ſimplex fuero, hoc ipſum ignorabit anima mea, & tædebit me 22 vitæ meæ. Unum eſt quod locutus ſum, & innocentem 23 & impium ipſe conſumit. Si flagellat, occîdat ſemel, & non de pœnis innocentum ri- 24 deat. Terra data eſt in manus impii, vultum judicum ejus operit: quòd ſi non ille 25 eſt, quis ergo eſt? Dies mei velociores fuerunt curſore: fugerunt, & non viderunt bo- 26 num. Pertranſierunt quaſi naves poma portantes, ſicut 27 aquila volans ad eſcam. Cùm dixero, Nequaquàm ita loquar: commuto faciem meam, 28 & dolore torqueor. Verebar omnia opera mea, ſciens quòd 29 non parceres delinquenti. Si autem & ſic impius ſum, quarè 30 fruſtrà laboravi? Si lot⁹ fuero quaſi aquis nivis, & fulſerint velut mundiſſimæ manus meæ: 31 Tamen ſordibus intinges me, & abominabuntur me veſti- 32 menta mea. Neq; enim viro qui ſimilis meî eſt, reſpondebo: nec qui mecum in judicio 33 ex æquo poſſit audiri. Non eſt qui utrumq; valeat arguere, & ponere manum ſuam in 34 ambobus. Auferat à me virgam ſuam, & pavor ejus non 35 me terreat. Loquar, & non timebo eum: neque enim poſſum metuens reſpondere.

CAP. X.

1 TÆdet animam meam vitæ meæ, dimittam adverſùm me eloquiũ meũ, loquar in amari- 2 tudine animæ meæ. Dicam Deo, Noli me condemnare: indica mihi cur me ita judices.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

13 † Αὐτὸς γὰρ ἀπέστραπται (ζ) ὀργὴν, † ὑπ' αὐτοῦ (η) ἐκάμφθησαν κήτη τὰ ὑπ' οὐρανόν. 14 † Ἐὰν δέ μου (θ) ὑπακούσηται, ἢ διακρινεῖ τὰ ῥήματά μου. † (ι) 15 Ἐὰν γὰρ ὦ δίκαιος, οὐκ εἰσακούσεταί μου, † τοῦ κρίματος αὐτοῦ δεηθήσομαι. 16 † Ἐάν τε καλέσω (κ) καὶ μὴ ὑπακούσῃ, † οὐ πιστεύω ὅτι εἰσακήκοέν (λ) μου τῆς 17 φωνῆς. † Μὴ γνόφῳ με ἐκτρίψῃ. † πολλὰ δέ μου τὰ (μ) συντρίμματα πεποίηκε διακενῆς. 18 † Οὐκ ἐᾷ γάρ με ἀναπνεῦσαι· † ἐνέπλησε δέ με πικρίας, † 19 Ὅτι μὲν γὰρ ἰσχύει κρατεῖ. † τίς οὖν κρίματι 20 αὐτοῦ ἀντιστήσεται; † Ἐὰν γὰρ ὦ δίκαιος, τὸ στόμα μου ἀσεβήσει· † ἐάν τε ὦ ἄμεμπτος, σκολιὸς ἀποβήσομαι. 21 † Εἴτε γὰρ ἠσέβησα, οὐκ οἶδα τῇ ψυχῇ, † (ν) 22 πλὴν ἀφαιρεῖταί μου ἡ ζωή. † Διὸ εἶπον, Μέγαν καὶ δυνάστην ἀπολλύει ὀργή, 23 † Ὅτι φαῦλοι ἐν θανάτῳ (ˢ) ἐξαισίῳ, † ἀλλὰ δίκαιοι καταγελῶνται. † 24 Παραδέδονται γὰρ εἰς χεῖρας ἀσεβοῦς, † πρόσωπα κριτῶν (ξ) αὐτῆς συγκαλύπτει. † εἰ δὲ μὴ αὐτός (ο) ἐστι, τίς 25 ἐστιν; † Ὁ δὲ βίος μου ἐστὶν ἐλαφρότερος δρομέως· † ἀπέδρασαν, καὶ οὐκ εἴ- 26 δοσαν. † Ἦ καὶ ἔστι ναυσὶν ἴχνος ὁδοῦ, † ἢ ἀετοῦ πετομένου ζητοῦντος (π) βο- 27 ράν; † Ἐάν τε γὰρ εἴπω, Ἐπιλήσομαι λαλῶν, † συγκύψας τῷ προσώπῳ στε- 28 νάξω· (ρ) Σείομαι πᾶσι τοῖς μέλεσιν, † οἶδα γὰρ ὅτι οὐκ ἀθῷόν με ἐάσεις. † (σ) 29 Ἐπειδὴ δέ εἰμι ἀσεβής, διὰ τί οὐκ 30 ἀπέθανον; † Ἐὰν γὰρ (ς) ἀπολούσωμαι χιόνι, καὶ ἀποκαθάρωμαι χερσὶ καθα- 31 ραῖς, † Ἱκανῶς (τ) ἐν ῥύπῳ με ἔβαψας, 32 † ἐβδελύξατο δέ με (υ) ἡ στολή. † Οὐ γὰρ εἶ ἄνθρωπος κατ' ἐμέ, (φ) ᾧ ἀντικρινοῦμαι, † ἵνα ἔλθωμεν ὁμοθυμαδὸν 33 εἰς κρίσιν. † (χ) Εἴθε ἦν ὁ μεσίτης ἡμῶν, (ψ) καὶ ἐλέγχων, καὶ διακούων ἀνα- 34 μέσον ἀμφοτέρων. † (ω) Ἀπαλλαξάτω ἀπ' ἐμοῦ τὴν (α) ῥάβδον, ὁ δὲ φόβος αὐτοῦ 35 μή με στροβείτω, † Καὶ οὐ μὴ φοβηθῶ, ἀλλὰ λαλήσω· † (β) οὐ γὰρ οὕτω συνεπίσταμαι.

13 Ipſe (g) enim avertit à ſe iram, (h) incurvati ſunt ceti, qui ſub cælo: 14 Si verò me audierit, vel dijudicat verba mea: 15 Quòd ſi etiam fuero juſtus, non exaudiet me, judicium ejus rogabo: 16 Si (i) verò invocavero, & non exaudierit, non credam, quòd exaudiverit vocem meam: 17 Ne (k) caligine me conterat: multas autem tribulationes meas fecit in (l) vanum; 18 Non enim ſinit me reſpirare: implevit autem me amaritudine, 19 Quoniam ſcilicèt (m) valet potentiâ. Quis igitur judicio ejus reſiſtet? 20 Quòd ſi etiam (n) fuero juſtus, os meum impia loquetur: ſive (o) fuero ſine crimine, pravus evadam. 21 Si enim impiè egi, non novi animo: veruntamen aufertur vita mea. 22 (p) Quapropter dixi, Magnum & potentem diſperdit ira, 23 Quia nequam homines in magna morte erunt, ſed juſti deridentur. 24 (q) Traditi enim ſunt in manus impii: (r) facies judicum ejus operit. Quòd ſi non ipſe eſt; (ſ) quis eſt? 25 (t) Vita autem mea levior eſt curſore: aufugerunt, & non viderunt. 26 Nunquid & eſt (u) navibus veſtigium viæ, aut aquilæ volantis quærentis eſcam? 27 Quòd etſi locutus fuero, Obliviſcar, dum loquor: declinans in faciem ingemiſcam: 28 Commoveor omnibus membris: ſcio enim, quòd non inſontem me ſines: 29 Et quia ſum iniquus; quarè (x) non ſum mortuus? 30 Nam ſi lotus fuero nive, & mundatus fuero mundis manibus; 31 Satis in ſorde me tinxiſti; & execratum eſt veſtimentum. 32 Non es enim homo ſicut ego, cui contradicam, ut veniamus pariter in judicium. 33 Utinam eſſet nobis medians, & arguens, & diſceptans inter utrumque. 34 Avertat à me virgam: timor autem ejus non me tranſverſum agat: 35 Et non timebo; (y) ſed loquar: non enim (z) ſic conſcius ſum.

ΚΕΦ. ί.

1 † (α) Κάμνων τῇ ψυχῇ μου, † στένων (β) ἐπαφήσω ἐπ' αὐτὸν † τὰ ῥήματά μου. λαλήσω πικρίᾳ ψυχῆς μου συνεχόμενος, 2 † Καὶ ἐρῶ πρὸς Κύριον, Μή με ἀσεβεῖν δίδασκε· † καὶ διατί με οὕτως (γ) ἔκρινας;

CAP. X.

1 LAborans animâ meâ, gemens (a) dimittam ſuper me verba mea: loquar amaritudine animæ meæ compreſſus: 2 Et dicam ad Dominum; Noli me (b) docere impium eſſe, & cur me ita judicâſti?

MS. A. (ζ) ὀργῇ, (η) ἐκάμφθη (θ) εἰσακούσῃ, ἢ διακρινῇ (ι) Ἐάν τε γὰρ (κ) καὶ εἰσακούσῃ, (λ) μου. Μὴ ἐν γνόφῳ (μ) συντρίμματά μοι πεποίηκεν (ν) πλὴν ὅτι ἀφῄρηταί (ˢ) * ἐξωσίῳ ἀπολοῦνται, (ξ) αὐτοῦ (ο) ἐστι. Ὁ δὲ βίος μου ἐλαφρότερός ἐστιν δρομέως· ἀπέδρα, καὶ οὐκ ἴδον. (π) * βορράν; (ρ) Σίομε γὰρ πᾶσιν (σ) Ἐπειδή εἰμι (ς) ἀπολούσομαι (τ) με ἐν ῥύπῳ (υ) ἡ στολή μου. (φ) οὐ ἀντικρινοῦμαι, (χ) Εἰ γὰρ ἦν (ψ) καὶ ὁ διελέγχων, καὶ διακούων (ω) δυεῖν δέ μοι χεῖρα. Ἀπαλλαξάτω (α) ῥάβδον αὐτοῦ, καὶ ὁ φόβος αὐτοῦ (β) οὐ γὰρ συνεπίσταμαι ἐμαυτῷ ἄδικον.

MS. A. Κεφ. ί. (α) Κάμνω δὲ τῇ (β) ἐπ' ἐμαυτὸν ἐπαφήσω τὸν θυμόν μου. Τὰ δὲ ῥήματά μου λαλήσω ἐν πικρίᾳ ψυχῆς συνεχόμενος, (γ) ἔκρινες;

תרגום TARGUM.

13 אֱלָהָא לָא יְתִיב רוּגְזֵיהּ תְּחוֹתוֹי שְׁחַן רַשִׁיעַיָּא יִתְחַבְּרוּן גִּיוְתְּנַיָּא דִּמְסַיְּעִין בְּסוּגְעָא׃ 14 אַף כָּל דְּכֵן אֲרוּם אֲנָא אֲתִיבְנֵיהּ אֶבְחַר פִּתְגָּמַי עִמֵּיהּ׃
15 דְּאִין זַכָּיֵית לָא אֲתִיב לְמַן דְּדָיֵין יָתִי אֶצְלֵי׃ 16 אִין קְרֵית וְאַתִּיב יָתִי לָא אֵימִין אֲרוּם יְצִית לְקָלִי׃ 17 דְּעַד חוּטֵי בִינְתָא מְדַקְדֵּק עִמִּי וְאַסְגֵּי הַלְבָּשׁוּשַׁי מַגָּן׃
18 לָא יִשְׁבְּקִנַּנִי לַאֲתָבָא רוּחִי אֲרוּם יַסְבְּעִנַּנִי מְרִירַיָּא׃ 19 אִם לְחֵילָא תַּלִּים הָא הוּא וְאִין לְדִינָא מַן יַסְהִיד עֲלַי׃ 20 אִין זַכֵּי אֲנָא פּוּמִי יְחַיְּבִנַּנִי שְׁלִים אֲנָא
וּמְקַלְקֵל יָתִי׃ 21 שְׁלִים אֲנָא לָא אֶנְדַּע נַפְשִׁי אַרְחִיק חַיָּי׃ 22 חֲדָא מִכֻּלָּא הִיא בְּגִין כֵּן אֲמָרִית שְׁלִים וְחַיָּב הוּא מְשֵׁיצֵי׃ 23 אִין בְּרוּגְזָא יְמוֹת בִּתְכֵּיף כַּר
מִתְמַסְמְסִין זַכָּאִין יְדַחֵךְ׃ 24 אַרְעָא אִתְמְסַרַת בְּיַד חַיָּבָא מִן קֳדָם יְיָ דַּיָּנָהָא יְחַפֵּי זְכוּתָא אִין לָא דֵּיכִי מַן הוּא׃ 25 יוֹמַי קְלִילוּ יַתִּיר מִן טוּל עוֹפָא דְרָהֵט עֲרָקוּ
לָא חֲמוֹן טָבְתָא׃ 26 חַלְפִין עִם אַלְפַיָּא דְּטְעִינִין מְגַדַּיָּא הֵיךְ נִשְׁרָא דְּטָיֵס עַל מֵיכְלָא׃ 27 אִין אֵימַר אִתְנְשֵׁי מִלַּי אֶשְׁבּוֹק רוּגְזִי וְאֶתְגַּבַּר׃ 28 כְּנַשִׁית כּוּלְהוֹן
צַעֲרַי יְדַעִית אֲרוּם לָא תְזַכֵּי יָתִי׃ 29 אֲנָא אִתְחַיַּב לְמָא דֵין לִלְמָא אֶלְעֵי׃ 30 אִין אַסְחֵיית בְּמֵי תַלְגָא וְדַכְּאֵית בְּאַהֲלָא יְדַי׃ 31 הֵיכְדֵין בְּשְׁחוּתָא תְּטַמְּשִׁנַּנִי
וּמְרַחֲקִין יָתִי כְּסוּתִי׃ 32 אֲרוּם לָא בַר נָשׁ דִּכְמִי אֲתִיבְנֵיהּ נֵעוּל כַּחֲדָא בְּדִינָא׃ 33 לָא אִית בֵּינָנָא מַכְסִין יְשַׁוֵּי יְדֵיהּ עַל תַּרְוֵינָנָא׃ 34 יַעְדֵּי מֵעֲלַי מַחְתֵיהּ וּדְחַלְתֵּיהּ
לָא תְבַעֲתִנַּנִי׃ 35 אֲמַלֵּל וְלָא אֶדְחַל מִנֵּיהּ אֲרוּם לָא הֵכְנָא אֲנָא כַּחֲדֵי׃

י

1 אִתְגְּזֶרַת נַפְשִׁי בְּחַיַּי אֶשְׁבּוֹק עֲלַי מִלַּי אֲמַלֵּל בִּמְרִירוּת נַפְשִׁי׃ 2 אֵימַר לֶאֱלָהָא לָא תְחַיְּבִנַּנִי אוֹדַע יָתִי מְטוּל מָה תִּנְצֵי עִמִּי׃

Verſio SYRIACA.

13 * ܐܠܗܐ ܠܐ ܡܗܦܟ ܪܘܓܙܗ. ܘܬܚܘܬܘܗܝ ܢܬܟܦܦܘܢ ܡܥܕܪܢܐ ܣܓܝܐܐ. * ܐܦ ܐܢܐ ܐܢ ܐܥܢܝܘܗܝ. ܘܐܓܒܐ
14 15 ܡܠܝ ܠܘܩܒܠܗ. * ܐܢ ܠܐ ܐܙܕܕܩ. ܠܐ ܐܬܥܢܐ. ܘܠܕܝܢܝ ܐܬܟܫܦ. * ܐܢ ܩܪܝܬ ܐܢܐ ܢܥܢܝܢܝ. ܠܐ ܡܗܝܡܢ ܐܢܐ
16 17 ܕܫܡܥ ܒܩܠܝ. * ܕܒܥܠܥܠܐ ܢܫܚܩܢܝ. ܘܢܣܓܐ ܡܚܘܬܝ ܡܓܢ. ܘܐܦ ܪܘܚܝ ܠܐ ܫܒܩ.
18 * ܘܠܐ ܫܒܩܢܝ ܕܐܬܢܝܚ ܪܘܚܝ. ܡܛܠ ܕܐܣܒܥܢܝ ܡܪܪܐ. * ܐܢ ܒܚܝܠܐ. ܚܝܠܬܢ ܗܘ. ܘܐܢ
19 20 ܒܕܝܢܐ. ܡܢܘ ܢܩܘܡ ܠܘܩܒܠܗ. * ܐܢ ܐܙܕܕܩ ܦܘܡܝ ܢܚܝܒܢܝ. ܘܐܢ ܬܡܝܡ ܐܢܐ ܢܥܩܡܢܝ. * ܬܡܝܡ ܐܢܐ. ܘܠܐ
21 22 ܝܕܥ ܐܢܐ. ܢܦܫܝ ܘܐܣܠܝܬ ܚܝܝ. * ܚܕܐ ܗܝ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܡܪܬ ܕܠܙܕܝܩܐ ܘܠܪܫܝܥܐ ܗܘ ܡܫܠܡ. * ܐܢ ܡܚܘܬܗ
23 24 ܡܢ ܫܠܝ ܡܡܝܬ. ܠܢܣܝܘܢܐ ܕܙܕܝܩܐ ܡܓܚܟ. * ܐܪܥܐ ܐܫܠܡܗ ܒܐܝܕܝ ܪܫܝܥܐ. ܘܐܦܝ ܕܝܢܐ ܡܟܣܐ.
25 ܘܐܠܐ ܗܪܟܐ ܡܢܘ ܡܫܟܚ. * ܝܘܡܝ ܩܠܝܠܝܢ ܡܢ ܪܗܛܐ. ܥܪܩܘ. ܘܠܐ ܚܙܘ ܛܒܬܐ. * ܥܒܪܘ ܥܡ ܐܠܦܐ
26 27 ܕܡܠܝܢ ܒܫܒܝܠܐ ܐܝܟ ܢܫܪܐ ܕܦܪܚ ܠܡܐܟܘܠܬܗ. * ܟܕ ܐܡܪ ܐܢܐ ܕܐܛܥܐ ܬܘܢܝܝ. ܐܢ
28 ܐܫܒܘܩ ܪܘܓܙܝ ܡܢ ܩܕܡܝ. ܘܐܬܒܝܐ ܐܢܐ. * ܘܐܢ ܐܫܬܘܩ ܐܢܐ ܕܚܠ ܐܢܐ ܡܢ ܟܠ ܟܐܒܝ. ܘܝܕܥܬ
29 30 ܕܐܢܬ ܠܐ ܡܙܟܐ ܐܢܬ ܠܝ. * ܘܐܢ ܐܚܛܝܬ. ܠܡܢܐ ܗܟܢܐ ܣܪܝܩܐܝܬ ܠܐܝܬ. * ܘܐܢ ܐܣܚܐ
31 ܒܡܝܐ ܕܬܠܓܐ. ܘܐܬܕܟܐ ܐܢܐ ܒܒܘܪܝܬܐ ܐܝܕܝ. * ܘܗܝܕܝܢ ܒܚܡܬܐ ܬܨܒܥܢܝ. ܘܢܬܢܟܦܘܢ ܡܢܝ ܡܐܢܝ.
32 * ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܐ ܓܒܪܐ ܕܐܟܘܬܝ. ܕܐܦܢܐ ܠܗ ܦܬܓܡܐ. ܘܢܥܘܠ ܐܟܚܕܐ ܠܕܝܢܐ. * ܠܘܝ ܐܝܬ ܒܝܢܝܬܢ
33 34 ܡܟܣܢܐ ܕܢܣܝܡ ܐܝܕܗ ܒܝܢ ܬܪܝܢ. * ܘܢܥܒܪ ܡܢܝ ܫܒܛܗ. ܘܕܚܠܬܗ ܠܐ ܬܒܥܬܢܝ.
* ܐܡܠܠ ܘܠܐ ܐܕܚܠ ܡܢܗ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܐ ܗܟܢܐ ܐܢܐ ܥܡܗ.
35 * ܩܦܠܐܘܢ * ܝ *
1 2 * ܐܬܩܛܥܬ ܢܦܫܝ ܒܚܝܝ. ܐܫܒܘܩ ܥܠܝ ܡܠܝ. ܘܐܡܠܠ ܒܡܪܪܐ ܕܢܦܫܝ. * ܘܐܡܪ ܠܐܠܗܐ. ܠܐ ܬܚܝܒܢܝ. ܘܐܘܕܥܢܝ
ܡܛܠ ܡܢܐ ܕܢܬ ܥܡܝ.

Verſio ARABICA.

13 14 * الله لا يرد غضبه وتحته يتواضع معينو الكثير * وانا ايضا اخاطبه وارسم كلامي قدامه * فان لم
15 16 اكن صادقا فلا اجاب والى دياني اتضرع * فان ظننت انه اذا دعوت يجيبني * فاني لا اصدق حتى يسمع
17 18 صوتي * انه في جميع شعر راسي بالقوة ضربني * واكثر كلامي باطلا * ولم يتركني لتستريح روحي *
19 20 لانه قد اشبعني مرارات * ان كان في القوة فانه قوي * وان كان للمحاكمة فمن يواجهه * ان انا زكوت
21 22 ففمي دحضني وان كنت صالحا عوجني * اصالحا انا لست ادري * قد ابغضت الحياة نفسي * واحدة هي *
23 من اجل هذا فاني اقول ان الصالحين والمنافقين هو يبيدهم * ان كان سوطه فانه بسرعة يقتل * وعلى
24 سخافة الزاكيين يستهزي * الارض جعلها بيد المنافقين * ووجوه الديانين مغطية * ولكن غضبه
25 26 من يقاسيه * ايامي اسرع من الركض هربت ولم ترى خيرا * جازت مع سفاين كثيرة للغداء * مثل
27 النسر الذي يطير على ماكلته * مع مرارتي نسيت اخباري * فان تركت فكري او كلامي ضاقت علي
28 29 * وان انا صمت خفت من كل سوء لاني اعلم انك لا تزكيني * وان انا دحضت لماذا مثل العدم تهلكني
30 31 * فان اغتسلت بماء الثلج وتطهرت بطهارة يدي * عند ذلك في العمق تغرقني ويتباعد مني لبوسي
32 33 * من اجل انه ليس هو رجل مثلي فارد عليه * وندخل جميعا في القضاء * فليت الان كان قاضيا
34 35 بيننا * فيضع يده على فم كلينا * ويبعد مني سوطه * ومخافته لا ترعبني * فاتكلم ولا افزع منه * من
اجل اني لست مواجهه *

* الفصل العاشر *

1 * ضاقت نفسي بحياتي *
2 اهممت همي * واتكلم بمرارة نفسي * فاقول لله * لا تدحضني * واخبرني على ماذا تدينني *

INTERP. ARABICA.

Deus non retrahet furorem 13
ſuum, & ſub ipſo
humiliabuntur auxiliantes
multis. Et ego quoque 14
alloquar eum, & proponam
ſermones meos
coram ipſo. Si non fuero 15
verax, non exaudiar,
& judici meo
ſupplicabo. (c) Etiamſi 16
arbitratus ſum, cùm eum
invocavero, me exauditurum;
non tamen credam,
donec audiat vocem
meam, Quoniam 17
ipſe in ſingulis pilis capitis
mei cum validitate
me percuſſit: & fruſtrà
multiplicabo(d) ſermones
meos, Et non 18
permiſit ut quieſceret
ſpiritus meus: nam ſaturavit
me amaritudinibus
(†). Si in fortitudine, 19
ipſe eſt fortiſſimus: Et
ſi in lite, quis occurrat
ei? Si ego innocens fuero, 20
ore meo me condemnabit:
Et ſi fuero
juſtus: ipſe (e) me declinabit.
(f) An ſim juſtus, 21
neſcio: jam odit vitam
meam anima mea. Unum 22
eſt (proptereà dico
ego) quòd juſtos, &
iniquos ipſe perdit. Si 23
acciderit flagellum ejus,
ſtatim occidit, & ſtultitiam
innocentium deridet.
Terram poſuit in 24
manu iniquorum, &
vultus judicum ſunt velati.
At furorem ejus
quis poteſt ſuſtinere?
Dies mei velociùs curſu 25
fugerunt, & non viderunt
bonum; Tranſierunt 26
cum (g) navibus
aptiſſimis ad currendum,
velut aquila quæ volat
ſuper eſcam ſuam. Cùm 27
amaritudine mea oblitus
ſum narrationum mearum.
Si omiſero cogitationem
meam aut ſermones
meos, ægrè fero.
Et ſi tacuero, timeo (h) 28
omne malum: quia ſcio
quòd tu me non juſtificabis.
Quòd ſi reprobatus 29
ſum, cur ut (i) nihilum
perdis me? Si autem 30
lavero me aquis
nivium, & mundavero
me in puritate manuum
mearum; Tunc in profundum 31
me immerges,
& recedet à me indumentum
meum: Quoniam 32
ipſe non eſt vir ſicut
ego, ut reſpondeam ei,
& ingrediamur ſimul in
judicium. Utinam modo 33
eſſet (k) judex inter nos,
ut poneret manum ſuam
ſuper os utriuſque noſtrûm,
Et removeret à 34
me flagellum ſuum, &
formido ejus non me conturbaret:
Et loquerer, 35
& eum non formidarem:
quoniam ego non ſum adverſarius
ipſius.

CAP. X.

TÆdet animam meam 1
vitæ meæ, curâ
meâ ſum anxius, & loquar
in amaritudine animæ
meæ; Dicam Deo, Ne 2
me reprobes. Indica mihi
quare me judices?

INTERP. SYRIACA.

(c) Si invocavero ipſe, et reſponderit mihi; (d) vulnera mea, (†) et tribulationibus inebriavit me. (e) me pervertet. (f) Perfectꝰ ſi eſſem, at non cognoſcerem: (g) navibus multis inimicorum, (h) omnem anguſtiam: (i) vanum (k) reprehenſor

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Deus non avertit iram ſuam: ſub eo curvantur *impii*; *confringentur ſuperbi* qui auxiliantur in multitudine. Quanto minus ego reſpondebo ei, & eligam verba mea 13 14
cum eo? Qui ſi juſtificatus fuero, non reſpondebo: ad judicem meum orabo. Si vocavero, & reſponderit mihi, non credam quòd auſcultaverit vocem meam. 15 16
Uſque ad filum capilli conterit me, & multiplicat plagas meas gratis. Non permittit me attrahere ſpiritum meum, quia ſatiat me amaritudinibus. Quantum ad fortitudinem, 17 18
robuſtiſſimus eſt; & ſi ad judicium, quis teſtificabitur pro me? Si juſtificatus fuero, os meum condemnabit me; perfectus ego ſum, et diſſipat me. Perfectus 19 20
ego ſum, neſcio animam meam: abjicio vitam meam. Una menſura eſt: ideò dixi, Perfectum & peccatorem ipſe conſumit. Si in furore occidit ſubitò, 21 22
quando tabeſcent innocentes ridebit. Terra tradita eſt in manu impii, à facie *Domini judices* ejus *operiunt* juſtitiã: ſi non eſt hic, quis eſt? Dies mei velociores ſunt umbrâ 23 24
avis volantis; fugerunt, non viderunt bonum. Tranſierunt cum navibus onuſtis optimis fructibus, ſicut aquila quæ volat ad cibum. Si dixero, Obliviſcar ſermonum 25 26
meorum, dimittam iram meam & confortabor: *Congregavi* omnes tribulationes meas: novi quòd non juſtificabis me. Ego meipſum condemno: quare 27 28
fruſtra laboro? Si lotus fuero in aquis nivis, et mundavero ſapone manus meas: Tunc in fovea intinges me, et abominabuntur me veſtimenta mea. Non eſt enim 29 30
filius hominis ſimilis mei ut reſpondeam ei: et ingrediamur ſimul in judicio. Non eſt inter nos arguens qui ponat manum ſuam ſuper nos ambos. Auferat à me 31 32
plagam ſuam, et timor ejus non me terreat. Loquar, et non timebo eum; neque enim ſic ego ſum apud me. 33

CAP. X.

EXciſa eſt anima mea in vita mea; dimittam adverſus me eloquium meum: loquar in amaritudine animæ meæ. Dicam Deo: Ne condemnes me: indica mihi quare 1 2
contendis mecum?

איוב : יא

laborem reprobes quòd , opprimas quòd tibi bonum Nunquid
הֲטוֹב לְךָ כִּי־תַעֲשֹׁק כִּי תִמְאַס יְגִיעַ 3
oculi Nunquid ? irradies impiorum consilium super & ; tuarum volarum
כַּפֶּיךָ וְעַל־עֲצַת רְשָׁעִים הוֹפָעְתָּ׃ הַעֵינֵי 4
dies sicut Nunquid ? videbis hominis videre secundùm num ? tibi carnis
בָשָׂר לָךְ אִם־כִּרְאוֹת אֱנוֹשׁ תִּרְאֶה׃ הֲכִימֵי 5
quæras Quòd ? viri dies sicut tui anni an ? tui dies hominis
אֱנוֹשׁ יָמֶיךָ אִם־שְׁנוֹתֶיךָ כִּימֵי גָבֶר׃ כִּי־תְבַקֵּשׁ 6
quòd te scire Super .inquiras meum peccatum & ,meam iniquitatem
לַעֲוֹנִי וּלְחַטָּאתִי תִדְרוֹשׁ׃ עַל־דַּעְתְּךָ כִּי־ 7
tuæ Manus .eruens tua manu de non & : egerim impiè non
לֹא אֶרְשָׁע וְאֵין מִיָּדְךָ מַצִּיל׃ יָדֶיךָ 8
Memento ? me degluties & ,circùm pariter me fecerunt & ,me elaboraverunt
עִצְּבוּנִי וַיַּעֲשׂוּנִי יַחַד סָבִיב וַתְּבַלְּעֵנִי׃ זְכָר־ 9
.me facies redire pulverem in & ; me feceris lutum sicut quòd ,quæso
נָא כִּי־כַחֹמֶר עֲשִׂיתָנִי וְאֶל־עָפָר תְּשִׁיבֵנִי׃
? me coagulabis caseum sicut & ,me fundes lac sicut Nonne
הֲלֹא כֶחָלָב תַּתִּיכֵנִי וְכַגְּבִנָּה תַּקְפִּיאֵנִי׃ 10
.me cooperies nervis & ossibus in & ,me vesties carne & Pelle
עוֹר וּבָשָׂר תַּלְבִּישֵׁנִי וּבַעֲצָמוֹת וְגִידִים תְּשֹׂכְכֵנִי׃ 11
custodivit tua visitatio & ;mecum fecisti misericordiam & Vitas
חַיִּים וָחֶסֶד עָשִׂיתָ עִמָּדִי וּפְקֻדָּתְךָ שָׁמְרָה 12
hoc quòd novi : tuo corde in abscondisti hæc Et .meum spiritum
רוּחִי׃ וְאֵלֶּה צָפַנְתָּ בִלְבָבֶךָ יָדַעְתִּי כִּי־זֹאת 13
non mea iniquitate ab & : me observabis & ,peccavi Si .tecum
עִמָּךְ׃ אִם־חָטָאתִי וּשְׁמַרְתָּנִי וּמֵעֲוֹנִי לֹא 14
non ,fui justus & ;mihi veh ,egi impiè Si .me mundes
תְנַקֵּנִי׃ אִם־רָשַׁעְתִּי אַלְלַי לִי וְצָדַקְתִּי לֹא־ 15
.meam afflictionem vide & ,ignominia Saturus .meum caput elevabo
אֶשָּׂא רֹאשִׁי שְׂבַע קָלוֹן וּרְאֵה עָנְיִי׃
sis mirabilis ,revertaris & ;me venêris leo sicut ,multiplicetur Et
וְיִגְאֶה כַּשַּׁחַל תְּצוּדֵנִי וְתָשֹׁב תִּתְפַּלָּא 16
tua indignatio se multiplicet & ,me coram tuos testes Renoves .me in
בִי׃ תְּחַדֵּשׁ עֵדֶיךָ נֶגְדִּי וְתֶרֶב כַּעַשְׂךָ 17
vulva de quid ut Et .mecum militia & ,mutationes : mecum
עִמָּדִי חֲלִיפוֹת וְצָבָא עִמִּי׃ וְלָמָּה מֵרֶחֶם 18
Quemadmodum .me videat non oculus & ,expirabo ? me eduxisti
הֹצֵאתָנִי אֶגְוַע וְעַיִן לֹא־תִרְאֵנִי׃ כַּאֲשֶׁר 19
parum Nónne .deferar sepulchrum ad utero ab ;ero fuissem non
לֹא־הָיִיתִי אֶהְיֶה מִבֶּטֶן לַקֶּבֶר אוּבָל׃ הֲלֹא־מְעַט 20
Antequam .paululum confortabo & ,me à deponat ;cesset ? mei dies
יָמַי יֶחְדַּל יְשִׁית מִמֶּנִּי וְאַבְלִיגָה מְּעָט׃ בְּטֶרֶם 21
.mortis umbræ & ,tenebræ terram ad ;revertar non & ,vadam
אֵלֵךְ וְלֹא אָשׁוּב אֶל־אֶרֶץ חֹשֶׁךְ וְצַלְמָוֶת׃
. ordines non & ,mortis umbræ caligo sicut obscuritatis Terram
אֶרֶץ עֵיפָתָה כְּמוֹ־אֹפֶל צַלְמָוֶת וְלֹא סְדָרִים 22
.caligo sicut tenebrescet &
וַתֹּפַע כְּמוֹ־אֹפֶל׃

CAP. XI. יא

multitudini Nunquid : dixit & ,Nahamathites Sophar respondit Et
וַיַּעַן צֹפַר הַנַּעֲמָתִי וַיֹּאמַר׃ הֲרֹב 1
2 labiorum vir num & ,respondebitur non verborum
דְּבָרִים לֹא יֵעָנֶה וְאִם־אִישׁ שְׂפָתַיִם
non & ,subsannâsti & ,facient tacere homines tuæ Nugæ ? justificabitur
יִצְדָּק׃ בַּדֶּיךָ מְתִים יַחֲרִישׁוּ וַתִּלְעַג וְאֵין 3
fui mundus & ;mea doctrina Puræ ,dixisti Et .pudefaciens
מַכְלִם׃ וַתֹּאמֶר זַךְ לִקְחִי וּבַר הָיִיתִי 4
.tuis oculis in
בְעֵינֶיךָ׃

Versio VULG. LAT.

3 Numquid bonum tibi videtur,
si calumnieris me, & opprimas me opus manuum tuarum,
& consilium impiorum adju-
4 ves? Numquid oculi carnei
tibi sunt: aut sicut videt homo,
5 & tu videbis? Numquid sic-
ut dies hominis dies tui, &
anni tui sicut humana sunt
6 tempora, Ut quæras iniqui-
tatem meam, & peccatum
7 meum scruteris? Et scias quia
nihil impium fecerim, cùm sit
nemo qui de manu tua possit
8 eruere. Manus tuæ fecerunt
me, & plasmaverunt me totum
in circuitu: & sic repentè præ-
9 cipitas me? Memento, quæso,
quòd sicut lutum feceris me, et
10 in pulverem reduces me. Nónne sicut lac mulsisti me, & sic-
11 ut caseum me coagulâsti? Pel-
le & carnibus vestisti me: ossi-
bus & nervis compegisti me:
12 Vitam & misericordiam tri-
buisti mihi, & visitatio tua cu-
13 stodivit spiritum meum. Licèt
hæc celes in corde tuo, tamen
scio quia universorum memi-
14 neris. Si peccavi, & ad ho-
ram pepercisti mihi: cur ab
iniquitate mea mundum me es-
15 se non pateris? Et si impius
fuero, væ mihi est: & si justus,
non levabo caput, saturatus
16 afflictione & miseriâ. Et pro-
pter superbiam quasi leænam
capies me, reversúsque mira-
17 biliter me crucias. Instauras
testes tuos contra me, & mul-
tiplicas iram tuam adversùm
me, & pœnæ militant in me.
18 Quarè de vulva eduxisti me?
qui utinam consumptus essem
19 ne oculus me videret. Fuissem
quasi non essem, de utero trans-
20 latus ad tumulum. Numquid
non paucitas dierum meorum
finietur brevi? dimitte ergò
me, ut plangam paululùm do-
21 lorem meum: Antequàm va-
dam & non revertar, ad ter-
ram tenebrosam, & opertam
22 mortis caligine: Terram mi-
seriæ & tenebrarum, ubi um-
bra mortis, & nullus ordo,
sed sempiternus horror inha-
bitat.

CAP. XI.

1 Respondens autem Sophar
2 Naamathites, dixit; Num-
quid qui multa loquitur, non
& audiet? aut vir verbosus
3 justificabitur? Tibi soli ta-
cebunt homines? & cùm cæ-
teros irriseris, à nullo confuta-
4 beris? Dixisti enim; Purus est
sermo meus, & mundus sum
in conspectu tuo.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

3 † Ἦ καλόν σοι (δ) ἐὰν ἀδικήσω; † ὅ-
τι ἀπείπω (ε) ἔργα χειρῶν σου, βου-
4 λῇ δὲ ἀσεβῶν προσέσχες. † Ἦ ὥσπερ
βροτὸς ὁρᾷ, καθορᾷς; † ἢ καθὼς ὁρᾷ
5 ἄνθρωπος, (ζ) βλέψῃ; † Ἦ ὁ βίος
σου (η) ἀνθρώπινός ἐστιν, ἢ τὰ ἔτη σου
6 ἀνδρός, † Ὅτι ἀνεζήτησας τὴν ἀνομίαν
μου, καὶ τὰς ἁμαρτίας μου ἐξιχνίασας;
7 † (θ) Οἶδας γὰρ ὅτι οὐκ ἠσέβησα· ἀλ-
λὰ τίς ἐστιν ὁ ἐκ τῶν χειρῶν σου ἐξαι-
8 ρούμενος; † Αἱ χεῖρές σου (ι) ἔπλα-
σάν με καὶ ἐποίησάν με, † μετὰ ταῦτα
9 μεταβαλών με ἔπαισας. † Μνήσθητι, ὅτι
πηλόν με ἔπλασας, † εἰς δὲ γῆν με πά-
10 λιν ἀποστρέφεις. † Ἦ οὐχ ὥσπερ γάλα
με ἤμελξας, † (κ) ἐτύρωσας δέ με ἴσα
11 τυρῷ; † (λ) Δέρμα δὲ καὶ κρέας με ἐνέ-
δυσας, † ὀστέοις δὲ καὶ νεύροις (μ) με ἐ-
12 νεῖρας. † Ζωὴν δὲ καὶ (ν) ἔλεος ἔθου παρ'
ἐμοί, † ἡ δὲ ἐπισκοπή σου ἐφύλαξέ μου
13 τὸ πνεῦμα. † Ταῦτα ἔχων ἐν σεαυτῷ,
οἶδα ὅτι πάντα δύνασαι· ἀδυνατεῖ δέ
14 σοι (ξ) οὐθέν. † Ἐάν τε γὰρ ἁμάρ-
τω, (ο) φυλάσσεις με, † ἀπὸ δὲ ἀνομίας
15 οὐκ ἀθῷόν με (π) πεποίηκας. † Ἐάν τε
γὰρ ἀσεβήσω, (ρ) οἴμοι· † ἐὰν δὲ ὦ δί-
καιος, οὐ δύναμαι ἀνακύψαι, † πλήρης
16 (σ) γὰρ ἀτιμίας εἰμί. † Ἀγρεύομαι (τ)
γὰρ ὥσπερ λέων εἰς σφαγήν. † (υ) πάλιν
γὰρ μεταβαλὼν δεινῶς με ὀλέκεις,
17 Ἐπανακαινίζων ἐπ' ἐμὲ τὴν ἔτασίν
(*)μου· † ὀργῇ δὲ μεγάλῃ μοι ἐχρήσω, (φ)
18 ἐπήγαγες δὲ ἐπ' ἐμὲ πειρατήρια. † Ἱ-
νατί οὖν ἐκ κοιλίας με ἐξήγαγες, καὶ
οὐκ ἀπέθανον, † ὀφθαλμὸς δέ με οὐκ
19 εἶδε, Καὶ ὥσπερ οὐκ ὢν (χ) ἐγενόμην;
† διατί γὰρ ἐκ γαστρὸς εἰς μνῆμα οὐκ (ψ)
20 ἀπηλλάγην; † Ἦ οὐκ ὀλίγος ἐστὶν (ω)
ὁ βίος τοῦ χρόνου μου; † ἔασόν με ἀ-
21 ναπαύσασθαι μικρὸν, † Πρὸ τοῦ με πο-
ρευθῆναι ὅθεν οὐκ (α) ἀναστρέψω, † εἰς
22 γῆν σκοτεινὴν καὶ γνοφεράν, † Εἰς γῆν
σκότους αἰωνίου, οὗ οὐκ ἔστι φέγγος, οὐδὲ
ὁρᾶν ζωὴν βροτῶν.

Aut bonum (c) est tibi, si 3
iniquè egero? quia despexisti
opera manuum tuarum; &
ad consilium impiorum animad-
vertisti? Aut sicut mortalis 4
videt, despectas? aut sicut
homo videt, perspicies? Aut 5
humana est vita tua, aut an-
ni tui sunt viri? Quoniam 6
inquisivisti iniquitatem meam,
& peccata mea investigâsti.
Scis enim me non egisse im- 7
piè: sed quis est qui de ma-
nibus tuis eripiat? Manus tuæ 8
(d) plasmaverunt me, & fe-
cerunt me: posteà (e) mu-
tans percussisti me. Memor 9
esto, quod lutum finxisti me,
& in terram me iterum con-
vertes. Nónne tanquàm lac 10
mulsisti me, & coagulâsti me
æquè, ac caseum? Pelle au- 11
tem & carne vestîsti me, os-
sibúsque & nervis (f) con-
seruisti me: Vitam autem, 12
& misericordiam posuisti apud
me: & visitatio tua custo-
divit spiritum meum. Hæc 13
cùm habeas in teipso; scio
quòd omnia potes: & nihil
tibi evadit impossibile. Quòd 14
si & peccavero, custodis me:
ab iniquitate autem non (g)
insontem me fecisti. Sive e- 15
nim impiè egero, væ mihi:
& si justus (h) fuero, non
possum suspicere: plenus enim
sum opprobrio: Et (i) ca- 16
pior sicut leo ad occisionem.
Iterum enim (k) commutans
sæpe me perdis, (l) Instau- 17
rans in me inquisitionem me-
am: irâ autem magnâ mi-
hi usus es: & induxisti super
me tentationes. Quarè ergò de 18
ventre eduxisti me, & non
sum mortuus? oculus autem
non vidisset me, Et essem, 19
tanquàm non fuissem? Cur e-
nim de utero in monumentum
non sum translatus? Aut nun- 20
quid non est (m) parva vita
temporis mei? Patere me (n)
requiescere pusillùm: Antequàm 21
eam, undè non revertar, ad
terram tenebrosam, & (o) caliginosam, Ad (p) terram tenebrarum 22
æternarum, ubi non est lux, neque est videre vitam hominum.

ΚΕΦ. ια'.

1 † Ὑπολαβὼν δὲ Σωφὰρ ὁ Μιναῖος, λέ-
2 γει, † Ὁ τὰ πολλὰ λέγων, καὶ ἀντακούσε-
ται· † ἢ καὶ ὁ εὔλαλος οἴεται (α) εἶναι δί-
καιος; † εὐλογημένος (β) γεννητὸς γυ-
3 ναικὸς ὀλιγόβιος. † Μὴ πολὺς ἐν ῥή-
μασι γίνου, † οὐ γάρ ἐστιν ὁ ἀντικεί-
4 μενός σοι. † Μὴ γὰρ λέγε, Ὅτι καθα-
ρός εἰμι τοῖς ἔργοις, † καὶ ἄμεμπτος ἐν-
αντίον αὐτοῦ.

CAP. XI.

Respondens autem Sophar 1
Minæus, ait; (a) Qui mul- 2
ta dicit; & vicissim audiet:
aut etiam eloquens putat se
esse justum? benedictus natus
mulieris brevis vitæ: Nè mul- 3
tus sis in verbis, cùm nemo
sit, qui contradicat tibi. No- 4
li enim dicere, Quia mundus
sum operibus, & irreprehen-
sibilis ante eum:

MS. A. (δ) ἐστὶν ἐὰν ἀσεβήσω; (ε) με ἔργα (ζ) βλέψεις;
(η) ἀνθρώπινος, ἢ τὰ (θ) Οἶδα γὰρ (ι) ἐποίησάν με καὶ ἔ-
πλασάν με, μετὰ δὲ ταῦτα (κ) ἔπηξας (λ) Δέρμα καὶ κρέας (μ) ἔνειράς με. (ν) ἔλεον (ξ) οὐδέν. (ο) φυλάξεις (π) ἐάσεις. (ρ) οἴμμοι ἐάν τε ὦ δίκαιος,
οὐ δυνήσομαι ἀνακύψαι, (σ) γάρ εἰμι ἀνομίας. (τ) δὲ (υ) καὶ πάλιν μεταβαλών με δεινῶς (*)σου (φ) καὶ ἐπήγειρας ἐπ' ἐμὲ (χ) ἐγενόμην; διὰ τί δὲ ἐκ
(ψ) ἀπῆλθον; (ω) ὁ χρόνος τοῦ βίου μου; (α) ἀναστρέφω,

MS.A. Κεφ. ια'. (α) δίκαιος εἶναι; (β) γυναικὸς γεννητὸς

תרגום TARGUM.

הַתְקֵין קֳדָמָךְ אֲרוּם תִּטְלוֹם אֲרוּם תְּרַחֵק לְעוּת יְדָךְ וְעַל מִלְכַּת דְּרַשִּׁיעֵי אוֹפַעְתְּ׃ הַעַיְנִין כְּבַר בִּשְׂרָא לָךְ אִין כְּמֶחְמֵי בַר נָשׁ תֶּחֱמֵי׃ הַכְיוֹמֵי בַר נָשׁ 3 4 5
יוֹמָךְ אִין שְׁנַיךְ הֵיךְ יוֹמֵי גַּבְרָא׃ אֲרוּם תִּבְעֵי לַעֲוָיָתִי וּלְחוֹבִי תִּתְבַּע׃ עַל מַנְדְּעָךְ אֲרוּם לָא אִתְחַיֵּיב וְלֵית מִן יְדָךְ פָּצֵי׃ יְדָךְ צַיְּרוּנִי וַעֲבַדוּ יָתִי כַּחֲדָא 6 7 8
חֲזוֹר וְסַלְעַמְתָּא יָתִי׃ אִדְכַר כְּדוֹן אֲרוּם אֵיךְ טִינָא עֲבַדְתַּנִי וּלְעַפְרָא תְּתִיבִנַּנִי׃ הֲלָא הֵיךְ חֶלְבָּא סַנֵּנְתָּא יָתִי וְהֵיךְ גּוּבְנִין קְרַשְׁתָּא יָתִי׃ 9 10
מַשְׁכָא וּבִסְרָא אַלְבֵּשְׁתַּנִי וּבְגַרְמַיָּא וְגִידַיָּא אַשְׁתֵּיתַנִי׃ חַיֵּי וְחִסְדָּא עֲבַדְתָּא עִמִּי וְדִכְרָנָךְ נַטְרַת רוּחִי׃ וְאִלֵּין אֲטֵישְׁתָּא בְלִבָּךְ יְדַעִית אֲרוּם דָּא נַבָּךְ׃ 11 12 13
אִין חָבֵית וְנַטַּרְתַּנִי וּמִן חוֹבִי לָא תְזַכֵּנַּנִי׃ אִין חָבֵית חֲבַל עֲלַי מִן דִּינָא רַבָּא וְזָכֵיתִי לָא אֱזוֹקוֹף רֵישִׁי מִן קֳדָם חַיָּבַיָּא דְּאֶסְבַּע חִסוּדָא וְאֶחֱמֵי סִגּוּפִי׃ וְאָרִים 14 15 16
יְדֵיהּ הֵיךְ אַרְיָא תְצוּד יָתִי וְתְתוּב תְּדַיֵּין בִּי׃ תְּחַדֵּת סָהֲדָךְ לְקִבְלִי וְתַסְגֵּי רוּגְזָךְ בַּהֲדֵי מִתְחַלְּפָן מַחְוָתָה מִתְחַלִּין גַּבַּי׃ וּלְמָא מִן רַחְמָא אַפֵּקְתַּנִי אֶתְנַגִּיד 17 18
וְעַיְנָא לָא תִסְכְּנַנִי׃ הֵיכְמָה דְּלָא הֲוֵיתִי אֱהֵי מִן כְּרֵיסָא לְבֵי קְבוּרְתָּא אֶתְעַל׃ הֲלָא קַלִּילִין יוֹמַי וּפָסְקִין וְשַׁוִּי עֲלַי וְאֵנוּחַ זְעֵיר׃ עַד דְּלָא אֵיזֵיל 19 20 21
וְלָא אֲתוּב לְאַרְעָא חֲשׁוֹכָא וְטוּלָא דְמוֹתָא׃ אַרְעָא דְּתִימוּרְהָא הֵיךְ קְבַל טוּלֵי מוֹתָא וְלָא סִדְרֵי יָתוּב בְּנֵי נָשָׁא וּמְפַעְפְּעָא הֵיךְ קְבַל׃ 22

יא

וַאֲתִיב צוֹפַר דְּמִן נַעֲמָה וַאֲמַר׃ אֶפְשַׁר דִּמְסַגֵּי מִלַּיָּא לָא יִתּוֹתַב וְאִין בַּר נָשׁ מָרֵי סִפְוָן יִזְכֵּי׃ כַּדְבוּבָךְ גּוּבְרַיָּא מַשְׁתְּקִין וּדְחֵכְתָּא וְלֵית דְּמַכְסֵף׃ וְתֵימַר 1 2 3 4
דְּכֵי אוּלְפָנִי וּבְרִיר הֲוֵיתִי בְּעֵינָךְ׃

Verſio SYRIACA.

3 * ܠܐ ܣܦܩ ܠܟ܂ ܕܬܛܠܘܡ ܐܢܬ ܘܡܫܘܛ ܐܢܬ ܠܥܡܠܐ ܕܐܝܕܝܟ܂ ܘܥܠ ܬܪܥܝܬܐ ܕܪ̈ܫܝܥܐ ܚܪܝܬ܂ * ܕܠܡܐ : ܥܝܢ̈ܝܟ
4 ܐܝܟ ܥܝ̈ܢܐ ܒܣܪܢܝ̈ܬܐ ܐܢܝܢ܂ ܐܘ ܐܝܟ ܡܐ ܕܚܙܐ ܗܘ ܕܐܢܫܐ ܚܙܐ ܐܢܬ܂ * ܐܘ ܝܘܡ̈ܬܟ ܐܝܟ ܝܘܡ̈ܬܗ ܕܐܢܫܐ ܐܢܘܢ܂
5 ܐܘ ܫܢܝ̈ܟ ܐܝܟ ܝܘܡ̈ܬܗ ܕܓܒܪܐ܂ * ܕܡܒܨܐ ܐܢܬ ܠܟܠ ܣܟܠܘܬܝ ܘܠܟܠ ܚܛܗ̈ܝ܂ * ܘܝܕܥ ܐܢܬ ܕܙܟܝ
6 7 ܐܢܐ܂ ܘܟܕ ܕܠܝܬ ܡܢ ܐܝܕܝܟ ܡܦܨܢܘܬܐ܂ * ܐܝܕܝܟ ܠܐܝ ܒܝ ܘܥܒܕܘܢܝ܂ ܘܡܢ ܒܬܪ ܗܠܝܢ ܨܒܐ ܐܢܬ ܠܡܚܝܒܘܬܝ܂
8 ܘܠܡܛܒܥܘܬܝ܂ * ܐܬܕܟܪ ܕܐܝܟ ܛܝܢܐ ܗܘ ܥܒܕܬܢܝ܂ ܘܠܥܦܪܐ ܡܗܦܟ ܐܢܬ ܠܝ܂ * ܘܐܝܟ ܚܠܒܐ ܗܘ
9 10 ܪܒܝܬܢܝ܂ ܘܐܝܟ ܓܒܬܐ ܩܦܝܬܢܝ܂ * ܡܫܟܐ ܘܒܣܪܐ ܐܠܒܫܬܢܝ܂ ܘܒܓܝܕ̈ܐ ܘܒܓܪ̈ܡܐ ܥܫܢܬܢܝ܂ * ܘܚܝܐ
11 12 ܘܫܠܡܐ ܥܒܕܬ ܥܡܝ܂ ܘܦܘܩܕ̈ܢܝܟ ܢܛܪܬ ܪܘܚܝ܂ * ܘܗܠܝܢ ܛܫܝܬ ܒܠܒܟ܂ ܝܕܥ ܗܘܝܬ ܕܗܠܝܢ ܗܘܝ
13 ܒܪܥܝܢܟ܂ * ܐܢ ܚܛܝܬ܂ ܢܛܪ ܐܢܬ ܠܝ܂ ܘܡܢ ܚܛܗ̈ܝ ܠܐ ܡܙܟܐ ܐܢܬ ܠܝ܂ * ܐܢ ܚܛܝܬ܂ ܘܝ ܠܝ܂ ܘܐܢ
14 15 ܐܙܕܕܩܬ܂ ܠܐ ܐܪܝܡ ܪܝܫܝ܂ ܣܒܥܬ ܨܥܪܐ܂ ܘܚܙܝܬ ܡܘܟܟܝ܂ * ܘܐܢ ܐܬܬܪܝܡ܂ ܐܝܟ ܐܪܝܐ ܬܨܘܕܢܝ܂ ܘܬܬܘܒ
16 ܐܝܟ ܡܬܚܝܠ ܥܠܝ܂ * ܘܬܚܕܬ ܙܝܢܟ ܥܠܝ܂ ܘܬܣܓܐ ܪܘܓܙܟ ܠܘܩܒܠܝ܂ ܘܫܚܠܦܬ ܡܫܪ̈ܝܬܟ
17 ܥܠܝ܂ * ܘܠܡܢܐ ܡܢ ܡܪܒܥܐ ܐܦܩܬܢܝ܂ ܡܝܬ ܗܘܝܬ ܘܥܝܢܐ ܠܐ ܚܙܬܢܝ܂ * ܘܗܘܝܬ ܐܝܟ ܕܠܐ ܗܘܝܬ܂
18 19 ܘܡܢ ܟܪܣܐ ܠܩܒܪܐ ܐܝܟ ܐܬܝܒܠܬ܂ * ܙܥܘܪܝܢ ܐܢܘܢ ܝܘܡ̈ܬܐ ܕܚܝܝ܂ ܦܪܘܩ ܡܢܝ܂ ܘܐܫܠܐ ܘܐܬܢܝܚ
20 ܩܠܝܠ܂ * ܥܕܠܐ ܐܙܠ܂ ܘܬܘܒ ܠܐ ܐܗܦܘܟ܂ ܠܐܪܥܐ ܚܫܘܟܬܐ ܘܛܠܠܝ ܡܘܬܐ܂ * ܐܪܥܐ ܕܫܝܘܠ ܐܝܟ ܚܪܒܐ
21 22 ܘܛܠܠܝ ܡܘܬܐ܂ ܘܠܝܬ ܒܗ ܣܕܪ̈ܐ ܕܕܪ̈ܐ܂ ܘܡܬܚܡܡܐ ܐܝܟ ܚܘܡܐ܂ * ܦ̈ܣܘܩܐ * ܡܐ *

1 * ܘܥܢܐ ܨܘܦܪ ܢܥܡܬܝܐ܂ ܘܐܡܪ܂ * ܣܘܓܐܐ ܕܡ̈ܠܐ ܠܐ ܫܡܥ܂ ܘܐܦܠܐ ܓܒܪܐ ܡܡܠܠܐ ܒܡܠܬܗ
2 ܡܙܕܕܩ܂ * ܡܛܠ ܕܠܡ̈ܠܝܟ ܡܝ̈ܬܐ ܗܘܘ ܫܬܩܝܢ܂ ܐܢܬ ܡܡܠܠ ܐܢܬ܂ ܘܠܝܬ ܕܟܠܐ ܠܟ܂ ܘܐܢ ܡܒܙܚ ܐܢܬ
3 ܠܝܬ ܕܡܟܣ ܠܟ܂ * ܘܐܡܪ ܐܢܬ ܕܙܕܝܩ ܐܢܐ܂ ܘܙܟܝ ܗܘܝܬ ܠܘܩܒܠ ܢܦܫܟ܂
4

Verſio ARABICA.

3 4 * اما كفاك ان ظلمت * الا ورفضت عمل يديك * وعلى فكر المنافقين اطلعت * العل عينيك مثل
5 اعين البشر هي * او مثل نظر الانسان تنظر * او ايامك مثل ايام الانسان هي * او سنوك مثل ايام الرجل
6 7 هي * حين تفحص على احوالي وعلى خطاياي * وانت تعلم اني بري * وليس من يديك منجا * يداك
8 9 تعبتا في وصنعتاني * ومن بعد ذلك تريد ان تدحضني وتغرقني * اذكر انك مثل الطين صنعتني * والى
10 11 التراب تردني * ومثل اللبن ربيتني ومثل الجبنة مصيتني * والجلد والبشر البستني * وبالعصب والعظام
12 13 قويتني * والحياة والسلام صنعت معي * ووصاياك حفظها روحي * وهولاي كتمت في قلبك * قد كنت
15 اعلم ان هذه كانت في فكرك ** فان خطيت الويل لي * وان صلحت لم ارفع راسي * شبعت هوانا * وابصرت
16 17 اتضاعي * وان ارتفعت مثل الاسد تصطادني * وترجع متجبرا علي * وتعري سلاحك تجاهي * وتكثر
18 19 غضبك الي * والجنود تبدلها علي * ولماذا من الرحم اخرجتني * هلكت الان وعين لم ترني * وكنت
20 كاني لم اكن * ومن البطن الى القبر وديتني * فقليلة هي ايام حياتي * فكف عني فاسكت واستريح قليلا
21 22 * قبل ان اذهب * وايضا لا ارجع الى الظلمة واطباق الموت * الخاوية مثل القفر وظلال الموت * وليس فيها
صفوف الجيال * وملتهبة مثل السراب *
* الفصل الحادي عشر *

1 2 * فاجاب صوفار النعماتي فقال * انه بكثرة القول لا يجيب * ولا ايضا الرجل المتكلم بقوله يزكوا * فان
3 على كلامك الاموات يصمتون * انت تتكلم وليس من يمنعك * وان استهزيت فليس احد يعنفك
4 * وتقول انك صالحا سلكت * وزاكيا كنت عند نفسك *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Nonne ſufficit tibi quòd 3
oppreſſeris, ſed et deſpicis
opus manuũ tuarum, &
ad cogitationem ſceleſtorum
reſpexiſti? Num oculi 4
tui ſunt ſicut oculi
carnis? aut ſicut videt
homo, tu vides? Diéſne 5
tui ſicut dies hominis ſũt?
an anni tui ſicut dies viri
ſunt: Dum ſcrutaris delicta 6
mea, et peccata mea,
Et tu ſcis me eſſe innocentem? 7
cùm nullum ſit de
manu tua effugiũ? Manꝰ 8
tuæ laboraverunt in me,
et fecerunt me, et poſt hoc
vis me condemnare, &
ſubmergere? Memento 9
quòd tu ſicut lutum feciſti
me, et ad terram reduces
me, Et ſicut lac nutrivisti 10
me, & ſicut caſeum
me condenſâſti. Et 11
pelle & carne me veſtîſti,
& nervis ac oſſibus
me corroborâſti, Et vitam, 12
& pacem mecum feciſti,
& mandata tua cuſtodivit
ſpiritus meus: Et 13
hæc abſcondiſti in corde
tuo? Jam ſciebam hæc
eſſe in cogitatione tua. (†)
Si peccavero, væ mihi; ſi 15
juſtificatus fuero, non attollam
caput meum: ſaturatus
ſum abjectione, &
vidi ſubmiſſionem meam.
Si me extollam, ſicut leo 16
me venaberis, & reverteris
fortificatꝰ cõtra me:
Et (l) enudabis arma 17
tua contra me, & multiplicabis
furorem tuum
adverſùm me, & exercitus
immutas contra me.
Et quare de vulva eduxiſti 18
me? periiſſem modò,
& oculus non me
vidiſſet, Et ac ſi non 19
eſſem, fuiſſem, & ab utero
ad ſepulcrũ me tranſtuliſſent.
Pauci ſunt 20
dies vitæ meæ: recede
à me, ut ſileam & quieſcam
paululùm, Antequã 21
vadam, & ampliùs non
revertar (m) ad tenebras,
& opercula mortis,
Quæ eſt deſolata 22
velut (n) ſolitudo &
umbra mortis: nec ſunt
in ipſa ordines generationum,
& ardens eſt velut (o) æſtus.

CAP. XI.

Reſpondit Soſar Naamathites & dixit, Copiam 1 2
verborũ non exaudit,
nec quoque vir loquax
ſuo ſermone juſtificabitur:
Quoniam ad 3
verba tua mortui ſilerent.
Tu loqueris, & non eſt
qui te cohibeat; & ſi ſubſannes,
nullus eſt qui te
redarguat, Et dicis te 4
juſtè inceſſiſſe, & innocentem
te extitiſſe (a) apud
animam tuam.

INTERP. SYR.

(†) 14. Quod ſi peccarem, obſervares me, & à peccatis meis non juſtificares me. (l) accerſes arma (m) ad terram tenebrarũ & opercula (n) fovea (o) fovea Cap. xi. (a) in conſpectu animæ tuæ.

PARAPH. CHALD. Verſio Latina,

Nunquid rectum eſt coram te ſi calumnieris, & projicias laborem manus tuæ, & conſilium impiorum illuſtres. Nunquid ſunt tibi oculi ſicut carnali homini : 3 4
aut ſicut videt filius hominis, vides? Nunquid ſicut dies filii hominis ſunt dies tui? aut anni tui ſunt ſicut dies viri? Ut quæras iniquitatem meam, & 5 6
peccatum meum requiras? In ſcientia enim tua non condemnabor, & nullus eſt qui de manu tua eruat. Manus tuæ formaverunt me, & fecerunt me ſimul in circuitu, 7 8
& diſperdis me. Memento nunc quòd ſicut lutum feceris me, & in pulverem reduces me. Nonne ſicut lac depurâſti me, & ſicut caſeum coagulâſti me? Pelle & 9 10
carne veſtîſti me, & oſſibus & nervis compegiſti me. Vitam & miſericordiam feciſti mecum, & memoria tua cuſtodivit ſpiritum meum. Et hæc abſcondiſti in corde 11 12
tuo : novi quòd hæc ſint apud te. Si peccavi, ſervâſti me : & ab iniquitate mea non mundabis me? Si peccavi, perditio mihi à *judicio magno:* & ſi juſtus fuero, non 13 14
levabo caput meum propter impios, ſed ſatiabor opprobrio, & videbo afflictionem meam. Leva autem manum tuam, ſicut leo venaberis me; & converſus judicabis 15 16
me. Innovas teſtes tuos contra me, & multiplicas iram tuam mecum: mutantur plagæ, militant apud me. Quare enim de vulva eduxiſti me? expirâſſem, & oculus 17 18
non videret me. Fuiſſem quaſi non eſſem; de utero ad ſepulturam adductus fuiſſem. Nonne veloces ſunt dies mei & deficientes? at pone mihi [*ſpacium*,] & me 19 20
recolligam paululum. Antequam vadam & non revertar ad terram tenebroſam & umbram mortis : Terram cujus vapor eſt ſicut caligo umbrarum mortis, nec ſunt 21 22
ordines ut habitent filii hominum, ſed tenebreſcit ſicut caligo.

CAP. XI.

Et reſpondit Sophar de Naama, & dixit : Nunquid illi qui multa loquitur non reſpondetur? & an filius hominis habens labia, juſtificabitur? Mendacia tua viros 1 2 3
tacere faciunt, & irrides : nec eſt qui pudore te afficiat. Et dixiſti : Munda eſt doctrina mea, & mundus ſum in oculis tuis. 4

.tecum sua labia aperiret & , loqui Deum dabit quis verè Et
5 ואולם מי־יתן אלוה דבר ויפתח שפתיו עמך:
: essentia in duplicia quia , sapientiæ occulta tibi indicaret Et
6 ויגד־לך תעלמות חכמה כי־כפלים לתושיה
investigatione Num .tua iniquitate de Deus te facit latere quòd scito &
7 ודע כי־ישה לך אלוה מעונך: החקר
? invenies Saddai perfectionem ad usque Num ? invenies Deum
אלוה תמצא אם עד־תכלית שדי תמצא:
? cognosces quid inferno præ profundam ? operaberis quid , cœlorum altis
8 גבהי שמים מה־תפעל עמקה משאול מה־תדע:
.mari præ latitudo & ; ejus mensura terra præ Longa
9 ארכה מארץ מדה ורחבה מני־ים:
quis & , fecerit congregare & , fecerit claudere & , succiderit Si
10 אם־יחלף ויסגיר ויקהיל ומי
,iniquitatem vidit & ; mendacii homines novit ipse Quia ? eum averteret
11 ישיבנו: כי־הוא ידע מתי־שוא וירא־און
onagri pullus & , cordabitur concavus vir Et .intelliget non &
12 ולא יתבונן: ואיש נבוב ילבב ועיר פרא
expanderis & , tuum cor præparaveris tu. Si .nascetur homo
13 אדם יולד: אם־אתה הכינות לבך ופרשת
, eam elonga , tua manu in iniquitas Si : tuas volas eum ad
14 אליו כפך: אם־און בידך הרחיקהו
tunc Quia .iniquitatem tuis tentoriis in facias habitare ne &
15 ואל־תשכן באהליך עולה: כי־אז
.timebis non & , firmatus eris & , macula à tuas facies elevabis
תשא פניך ממום והיית מצק ולא תירא:
.recordaberis transierunt aquæ sicut ; oblivisceris laboris tu Quia
16 כי־אתה עמל תשכח כמים עברו תזכר:
.eris mane sicut , tenebresces : tempus surget meridie præ Et
17 ומצהרים יקום חלד תעפה כבקר תהיה:
non &, cubabis Et .jacebis fiducia in , fodies & ; spes est quia, confidisti Et
18 19 ובטחת כי־יש תקוה וחפרת לבטח תשכב: ורבצת ואין
impiorum oculi Et .multi tuas facies deprecabuntur & : exterrens
20 מחריד וחלו פניך רבים: ועיני רשעים
.animæ exhalatio eorum spes & : eis ab peribit refugium & , deficient
תכלינה ומנוס אבד מנהם ותקותם מפח־נפש:

CAP. XII. יב

; populus vos quòd Verè : dixit & , Ijob respondit Et
1 2 ויען איוב ויאמר: אמנם כי אתם־עם
; vobis sicut cor mihi Etiam .sapientia morietur vobiscum &
3 ועמכם תמות חכמה: גם־לי לבב כמוכם
? hæc sicut non quo cum Et .vobis à ego cadens non
לא־נפל אנכי מכם ואת־מי־אין כמו־אלה:
: illi respondit & , Deum ad clamanti ; ero , suo socio Irrisio
4 שחק לרעהו אהיה קרא לאלוה ויענהו
cogitationi est contempta Lampas .perfectus justus Irrisio
5 שחוק צדיק תמים: לפיד בוז לעשתות
tentoria tranquilla Erunt .pedis nutatione ad paratus ; pacati
6 שאנן נכון למועדי רגל: ישליו אהלים
qui ei : Deum provocantibus confidentiæ & , prædonum
לשדדים ובטחות למרגיזי אל לאשר
quæso interroga verè Et .sua manu in Deum adduxit
7 הביא אלוה בידו: ואולם שאל־נא
.tibi indicabit & , cœlorum volatile & ; te docebit & , jumenta
בהמות ותרך ועוף השמים ויגד־לך:
pisces tibi narrabunt & : te docebit & , terræ loquere Vel
8 או שיח לארץ ותרך ויספרו לך דגי
manus quòd , his omnibus in novit non Quis .maris
9 הים: מי לא־ידע בכל־אלה כי יד־
? hoc fecit DOMINI
יהוה עשתה זאת:

Versio VULG. LAT.

5 Atque utinam Deus loqueretur tecum, & aperiret labia sua 6 tibi. Ut ostenderet tibi secreta sapientiæ, & quòd multiplex esset lex ejus, & intelligeres quòd multò minora exigaris ab eo, quàm meretur iniquitas 7 tua. Forsitan vestigia Dei comprehendes, & usque ad perfectum Omnipotentẽ reperies? 8 Excelsior cœlo est, & quid facies? profundior inferno, & 9 unde cognosces? Longior terrâ mensura ejus, & latior mari. 10 Si subverterit omnia, vel in unum coarctaverit, quis contra-11 dicet ei? Ipse enim novit hominum vanitatem, & videns iniquitatẽ, nónne considerat? 12 Vir vanus in superbiam erigitur, & tanquam pullum onagri 13 se liberum natum putat. Tu autem firmâsti cor tuum, & expandisti ad eum manus tuas. 14 Si iniquitatem, quæ est in manu tua, abstuleris à te, & non manserit in tabernaculo tuo 15 injustitia: Tunc levare poteris faciem tuam absque macula, & eris stabilis, & non time-16 bis. Miseriæ quoque oblivisceris, & quasi aquarum quæ 17 præterierunt recordaberis. Et quasi meridianus fulgor consurget tibi ad vesperam: & cùm te consumptum putave-18 ris, orieris ut Lucifer. Et habebis fiduciam, propositâ tibi spe, & defossus securus dormi-19 es. Requiesces, & non erit qui te exterreat: & deprecabuntur faciem tuam plurimi. 20 Oculi autem impiorum deficient, & effugium peribit ab eis, & spes illorum abominatio animæ.

CAP. XII.

1 Respondens autem Job, di-2 xit; Ergò vos estis soli homines, & vobiscum morietur sa-3 pientia? Et mihi est cor, sicut & vobis, nec inferior vestrî sum: quis enim hæc, quæ nô-4 stis, ignorat? Qui deridetur ab amico suo sicut ego, invocabit Deum & exaudiet eum: deridetur enim justi simplici-5 tas. Lampas contempta apud cogitationes divitum, parata 6 ad tempus statutum. Abundant tabernacula prædonum, & audacter provocant Deum, cùm ipse dederit omnia in ma-7 nus eorum. Nimirùm interroga jumenta, & docebunt te: & volatilia cœli, & indica-8 bunt tibi. Loquere terræ, & respondebit tibi: & narra-9 bunt pisces maris. Quis ignorat quòd omnia hæc manus Domini fecerit?

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

5 † Ἀλλὰ πῶς ἂν (γ) ὁ κύριος λαλήσαι πρὸς σέ, † καὶ (δ) ἀνοίξει χείλη αὐτοῦ 6 μετὰ σοῦ; † Εἶτα ἀναγγελεῖ σοι δύναμιν σοφίας, † ὅτι διπλοῦς (ε) ἔσται τῶν κατὰ σέ· † καὶ τότε γνώσῃ, ὅτι ἄξιά σοι (ζ) ἀπέβη 7 ἀπὸ κυρίου ὧν ἡμάρτηκας. † (ε) Ἢ ἴχνος κυρίου εὑρήσεις, † ἢ εἰς τὰ ἔσχατα ἀφίκου 8 (ζ) ἃ ἐποίησεν ὁ παντοκράτωρ; † Ὑψηλὸς ὁ οὐρανός, (η) καὶ τί ποιήσεις; † βαθύτερα δὲ τῶν ἐν ᾅδου, τί οἶδας; † Ἢ 9 μακρότερα (θ) μέτρου γῆς, ἢ εὖρος θα-10 λάσσης; † Ἐὰν δὲ καταστρέψῃ τὰ πάντα, 11 τίς ἐρεῖ αὐτῷ, Τί ἐποίησας; † Αὐτὸς γὰρ οἶδεν ἔργα ἀνόμων, † ἰδὼν δὲ (ι) ἄτοπα 12 οὐ παρόψεται. † Ἄνθρωπος δὲ ἄλλως νήχεται (κ) λόγοις· † βροτὸς δὲ γεννητὸς 13 γυναικὸς (λ) ἴσα ὄνῳ ἐρημίτῃ. † Εἰ γὰρ σὺ καθαρὰν ἔθου τὴν καρδίαν σου, † (μ) ὑπτιάζεις δὲ χεῖρας πρὸς αὐτόν, † 14 Εἰ ἄνομόν τί ἐστιν ἐν χερσί σου, πόρρω ποίησον αὐτὸ ἀπὸ σοῦ, † ἀδικία δὲ ἐν 15 διαίτῃ σου μὴ αὐλισθήτω· † Οὕτως γὰρ ἀναλάμψει (ν) σου τὸ πρόσωπον, ὥσπερ ὕδωρ καθαρόν, † ἐκδύσῃ δὲ ῥύπον, καὶ οὐ 16 μὴ (ξ) φοβηθήσῃ· † Καὶ τὸν κόπον ἐπιλήσῃ, ὥσπερ κῦμα παρελθόν, (ο) καὶ οὐ 17 πτοηθήσῃ· † Ἡ δὲ εὐχή σου ὥσπερ Ἑωσφόρος, † ἐκ δὲ μεσημβρίας ἀνατελεῖ 18 σοι ζωή· † Πεποιθώς τε ἔσῃ, ὅτι ἐστί σοι ἐλπίς, † ἐκ δὲ μερίμνης καὶ φροντί-19 δος ἀναφανεῖταί σοι εἰρήνη· † Ἡσυχάσεις γάρ, καὶ οὐκ ἔσται ὁ πολεμῶν σε· † (π) μεταβαλόμενοι δὲ πολλοί σου δεηθήσονται. 20 † (ρ) Σωτηρία δὲ αὐτοὺς ἀπολείψει· † ἡ γὰρ ἐλπὶς αὐτῶν (σ) ἀπώλεια, † ὀφθαλμοὶ δὲ ἀσεβῶν (τ) τακήσονται.

5 Sed (b) quomodò Dominus loquetur ad te, & aperiet labia sua tecum? 6 Deindè annuntiabit tibi (c) virtutem sapientiæ, quia duplex erit ad ea, quæ circa te: & tunc scies quia digna eveniunt tibi à Domino, quæ (d) peccâsti. 7 Aut vestigium Domini invenies? aut ad ultima pervenisti, 8 quæ fecit Omnipotens? Sublime (e) est cœlum, & quid facies? profundiora autem iis quæ in inferno; quid nôsti? 9 Nónne longiora quàm mensura terræ, vel latitudo maris? 10 Si autem subverterit omnia, quis dicet illi, Quid fecisti? 11 Ipse enim novit opera iniquorum: videns autem absurda non despiciet. 12 Homo verò aliter (f) natat sermonibus: & vir natus mulieris tanquàm onager solitarius. 13 Nam si tu mundum posuisti cor tuum, & (g) extendis manum ad eum; 14 Si iniquum quid est in manu tua, longè facito illud à te, & (h) iniquitas in domo tua non maneat: 15 Sic enim fulgebit facies tua tanquàm aqua pura: exues autem sordem, & non timebis: 16 Et laborem oblivisceris tanquàm fluctũ qui præterit, & non terreberis: 17 Et oratio tua tanquàm Lucifer erit: (i) de meridie autem orietur tibi vita: 18 Confidénsque eris, quia est tibi spes: & de cura, ac solicitudine (k) apparebit tibi pax. 19 Quiesces enim, & non erit qui oppugnet te: (l) transmutati autem multi rogabunt te; 20 Salus autem eos deseret: spes enim eorum perditio, & (m) oculi impiorum tabescent.

ΚΕΦ. ιβ'.

1 2 † Ὑπολαβὼν δὲ Ἰὼβ, λέγει, † (α) Εἶτα ὑμεῖς ἐστε ἄνθρωποι, † ἢ μεθ' ὑμῶν τελευ-3 τήσει σοφία; † (β) Κἀμοὶ μὲν καρδία 4 καθ' ὑμᾶς ἐστιν, † Δίκαιος γὰρ ἀνὴρ καὶ ἄμεμπτος (γ) ἐγενήθη εἰς χλεύασμα· † 5 Εἰς χρόνον γὰρ τακτὸν ἡτοίμαστο (δ) πεσεῖν ὑπὸ ἄλλων, † οἴκους τε (ε) αὐτοῦ ἐκπορθεῖσθαι ὑπὸ ἀνόμων. † οὐ μὴν δὲ ἀλλὰ μηδεὶς πεποιθέτω πονηρὸς ὢν ἀθῷος ἔ-6 σεσθαι, † (ζ) Ὅσοι παροργίζουσι τὸν κύ-7 ριον, ὡς οὐχὶ καὶ ἔτασις αὐτῶν ἔσται. † Ἀλλὰ δὴ (η) ἐρώτησον τετράποδα ἐάν σοι (η) εἴπωσι, † πετεινὰ δὲ οὐρανοῦ ἐάν σοι (θ) 8 ἀπαγγείλωσιν. † Ἐκδιήγησαι (ι) γῇ, ἐάν σοι φράσῃ, † (κ) καὶ ἐξηγήσονταί σοι οἱ 9 ἰχθύες τῆς θαλάσσης. † (λ) Τίς οὖν οὐκ ἔγνω ἐν πᾶσι τούτοις, ὅτι χεὶρ κυρίου ἐποίησε ταῦτα;

CAP. XII.

1 Respondens autem Job, ait; 2 Itaque vos estis homines: aut vobiscum (a) morietur sapientia? 3 Et mihi quidem cor juxta vos est: 4 Sed justus vir, & sine crimine venit in derisum: 5 In tempus autem statutum paratus fuerat, ut vaderet ab (b) aliis, & domus ejus ut devastarentur ab iniquis. Veruntamen nemo confidat, cùm malignus sit, futurum se insontem, 6 Quicunque irritant Dominum, tanquàm inquisitio in eos non sit futura: 7 Sed tamen interroga quadrupedia, si tibi respondeant; volatilia autem cœli, si tibi annuntient: 8 Enarra terræ, si tibi dicat; & exponent tibi pisces maris. 9 Quis igitur non cognovit in omnibus his, quòd manus Domini fecit hæc?

MS.A. (γ) λαλήσαι ὁ κύριος (δ) ἀνοίξῃ (ε) ἐστιν (ζ) παρέβη (ε) Μὴ ἴχνος (ζ) ὧν (η) γῆ δὲ βαθεῖα, καὶ τί ποιήσεις; ἢ βαθύτερα τοῦ (θ) μέτρων γῆς ἐπίστασαι, ἢ εὖρος (ι) ἄτοπον (κ)* ἀλόγοις· (λ)* ὄνῳ ἐρημείτῃ. (μ) ὑπτίασας δὲ τὰς χεῖράς σου πρὸς (ν) τὸ πρόσωπόν σου, (ξ) φοβηθῇς· Καὶ τῶν κόπων σου (ο) καὶ οὐ μὴ (π) μεταβαλλομένου (ρ) Καὶ σωτηρία αὐτοὺς (σ) ἀπολεῖται, (τ) τακήσονται. † παρ' αὐτῷ γὰρ σοφία καὶ δύναμις. Κεφ. ιβ'. MS.A. (α) Μὴ ὑμεῖς ἐστε ἄνθρωποι μόνοι, ἢ μεθ' (β) Καὶ ἐμοὶ (γ) ἐγενόμην εἰς χλευασμόν· (δ) πεσεῖν με ὑπ' ἄλλοις, (ε) μου (ζ) Ὅσοι γὰρ ὀργίζουσιν (η) ἐπερώτησον (η) εἴπῃ, πετεινά τοῦ (θ) ἀναγγείλῃ. (ι) δὲ γῇ, (κ) καὶ εἰ ἐξηγήσονταί (λ) Ὅτι τίς οὐκ

תרגום TARGUM.

5 6 7 וברם מן יתן אלהא ממלל ויפתח ספותוי עמך: ויחוי לך כסוין דחוכמתא ארום כופלא לחוכמתא ודע ארום אנשי לך אלהא מעויך: אפשר
8 9 דפשפוש אלהא תשכח אין עד סיפי שדי תשכח: בגבהי שמיא מה את עבד באוריתא דעמיקא מן שיול מה את ידע: דנגידא יתיר מן ארעא
10 11 משחתה ופתיה יתיר מן ימא: אין יחלוף ויחוד שמיא בעננין ויכנוש משרין מן יתיבניה: ארום הוא חכים גברי שקרא ואפשר דחמי שקר ולא
12 13 אתבין: וגבר חריף יתחכם לביה ועילא דמרודא היך בר נש אתיליד: הא ובר נש מפלפל ידיק ועולם מסרבן דאתבן גברא רבא מתעבד: אין את
14 15 כוונתא לבך ותפרוס לותיה בצלו ידיך: אין שקר בידך רחק יתיה ולא תשרי במשכנך עולא: ארום הידין תזקוף אפיך דלא מום ותהוי סנין
16 17 מחבולא ולא תדחל: ארום את לעוות תתנשי היך מוי דעברו תדכר: ומטהר יומך יקום גושמך דהלך בגרגושתא דפעפועא דקבלא היך צפרא
18 19 20 תהוי: ותתרחיץ ארום אית סבר ותתקין בי קבורתא לרוחצן תשכוב: ותרבע ולא דמניד וישחרון אפך סגיען: ועינין דרשיעיא תשתיצון
ושיזבותא הובד מנהון וסברתהון מפח נפש:

יב

1 2 3 ואתיב איוב ואמר: בקושטא ארום אתון חבריא ועמכון תסוף חוכמתא: לחוד לי לבא דכמתכון לא פריש אנא מנכון ועם מן לית דכמת
4 5 אלין: חוכא לחבריה אהי דקרי לאלהא ועני יתיה חיך לזכאה ושלימא: אודא דבסיר לרשיעא מן מחשבא שליו מכון להרפתקי זמנא: הא בוערא
6 בסיר לעשו דמן מחשבתת רחיץ שליו ברם הוא מעתד לאודעזעת רגלא: ובני עשו דשלוין במשכניהון יתמסרון לבזוין ובני ישמעאל דרחיצין
יתמסרון לשאר אומיא דמרגיזין אלהא דכמתהון זמן אלהא בידיה: הא ובני ישמעאל דשלוין במשכניהון יתמסרון לבזוין ועמונאי ומואבאי
7 דשרין לרחצן יתמסרון ביד רשיעיא דמרגזין אלוה היך פרעה דאיתי אלוה עלוהי מחתא בידיה: וברם שיל כדון בעירי וילפונך ועופא דשמיא ויחוי לך:
8 9 או מלל לארעא ותלפנך וישתעון לך נוני ימא: מן לא ידע בכל אלין ארום מחת ידא דיי עבדת דא:

Verſio SYRIACA.

5 6 * ܒܪܡ ܡܢ ܥܒܕ ܕܢܬܠ ܗܘܐ ܠܐܠܗܐ ܦܬܓܡܐ. ܘܡܪܝܡ ܗܘܐ ܣܦܘܬܗ ܥܡܟ. * ܘܡܚܘܐ ܗܘܐ ܠܟ
ܟܣܝܬܐ ܕܚܟܡܬܐ. ܡܛܠ ܕܐܝܬ ܠܗ ܟܦܠܐ ܒܚܟܡܬܐ. ܘܕܥ ܗܘܝܬ ܕܫܒܩ ܗܘܐ ܠܟ ܐܠܗܐ
ܣܟܠܘܬܟ.
7 8 * ܒܥܘܩܒܗ ܕܐܠܗܐ. ܡܫܟܚ ܐܢܬ ܠܡܕܪܟ. ܐܘ ܠܣܘܦܗ ܕܚܣܝܢܐ. ܡܫܟܚ ܐܢܬ ܠܡܕܪܟܘ. * ܪܘܡܗ
ܕܫܡܝܐ: ܡܛܐ ܐܢܬ. ܐܘ ܠܥܘܡܩܗ ܕܫܝܘܠ. ܡܢ ܐܝܟܐ ܡܕܪܟ ܐܢܬ. * ܐܪܝܟܐ ܡܢ ܐܪܥܐ ܡܫܘܚܬܗ. ܘܦܬܝܐ ܗܝ 9
10 ܡܢ ܝܡܐ. * ܐܢ ܢܥܒܪ ܢܐܣܘܪ ܘܢܟܢܫ. ܡܢܘ ܢܦܢܝܘܗܝ. * ܡܛܠ ܕܗܘܝܘ ܝܕܥ ܐܡܬܝ ܗܘܐ ܙܒܢܐ.
11 12 ܘܚܙܐ ܥܘܠܐ. ܘܗܘܘ ܡܬܒܝܢ. * ܓܒܪܐ ܕܝܢ ܕܟܝܐ ܡܬܚܝܠ. ܘܚܝܠܬܢܐ ܡܥܕܪ ܠܒܪܢܫܐ. * ܐܢ ܐܢܬ ܬܬܪܨ ܠܒܟ.
13 14 ܘܬܦܫܘܛ ܠܘܬܗ ܐܝܕܝܟ. * ܐܢ ܐܝܬ ܗܘܐ ܥܘܠܐ ܒܐܝܕܝܟ. ܢܪܚܩܝܗܝ ܡܢܟ. ܘܠܐ ܢܥܡܪ ܒܡܫܟܢܟ ܥܘܠܐ. * ܗܝܕܝܢ
15 16 ܬܪܝܡ ܐܝܕܝܟ. ܘܡܢ ܢܟܝܢܐ ܠܐ ܬܕܚܠ. * ܘܗܝܕܝܢ ܥܡܠܟ ܬܛܥܐ. ܘܐܝܟ ܡܝܐ ܕܪܕܝܢ ܬܬܕܒܪ. * ܘܡܢ ܛܗܪܐ ܢܩܘܡ
17 18 ܨܥܪܐ. ܘܚܫܘܟܐ ܢܗܘܐ ܐܝܟ ܨܦܪܐ. * ܘܬܬܟܝܠ ܕܐܝܬ ܠܟ ܣܒܪܐ. ܘܬܕܡܟ ܘܬܬܢܝܚ. * ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܡܢ ܕܡܥܝܪ ܠܟ. ܢܒܥܘܢ
19 20 ܐܦܝܟ ܣܓܝܐܐ. * ܘܥܝܢܝܗܘܢ ܕܥܘܠܐ ܢܚܫܟܢ. ܘܬܘܩܦܗܘܢ ܢܐܒܕ ܡܢܗܘܢ. ܘܣܒܪܐ ܕܢܦܫܬܗܘܢ.
1 2 * ܘܥܢܐ * ܐܝܘܒ * ܘܐܡܪ. * ܒܫܪܪܐ ܐܢܬܘܢ ܐܢܬܘܢ ܥܡܡܐ. ܘܥܡܟܘܢ ܬܡܘܬ ܚܟܡܬܐ.
3 4 * ܐܦ ܠܝ ܠܒܐ ܐܝܬ ܠܝ ܐܝܟ ܕܠܟܘܢ. ܘܠܐ ܗܘܝܬ ܒܨܝܪ ܡܢܟܘܢ. * ܠܡܢ ܕܐܝܟ ܗܠܝܢ ܗܘܝ ܠܗ. ܘܗܘܐ ܓܘܚܟܐ
5 ܠܚܒܪܘܗܝ. ܘܩܪܐ ܠܐܠܗܐ ܘܥܢܝܗ. ܙܕܝܩܐ ܕܬܡܝܡ ܒܟܠ ܡܕܡ. * ܠܡܥܒܪܘ ܣܟܠܘܬܐ ܘܥܘܠܐ. ܘܠܡܫܪܪܘ
6 ܪܓܠܐ ܡܬܬܙܝܥܢܝܬܐ. * ܢܥܒܪܘܢ ܡܫܟܢܝܗܘܢ ܕܒܙܘܙܐ. ܘܣܒܪܐ ܕܡܪܓܙܝܢ ܠܐܠܗܐ. ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܐܠܗܐ
7 ܒܠܒܗܘܢ. * ܘܐܢ ܠܐ ܗܟܢܐ ܫܐܠ ܠܒܥܝܪܐ. ܘܢܠܦܘܢܟ. ܘܠܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ ܘܢܚܘܘܢܟ. * ܘܡܠܠ ܥܡ ܐܪܥܐ. ܘܬܠܦܟ.
8 9 ܘܢܫܬܥܘܢ ܠܟ ܢܘܢܝ ܝܡܐ. * ܡܢܘ ܕܠܐ ܝܕܥ ܒܟܠܗܝܢ ܗܠܝܢ. * ܕܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ ܥܒܕܬ ܟܠܗܝܢ.

Verſio ARABICA.

5 6 * ولكن من الذي يقدر يجاوب الله بالقول * او يرفع شفتيه معك * يوريك سراير الحكمة من اجل ان
7 للحكمة اقفالا * فكنت تعلم ان الله سيترك لك خطاياك * سر الله انت تستطيع ان تعلم * او على منتهي
8 9 العزيز تستطيع ان تقوم * ارتفاع السماء هل تعرف * او غور الهاوية من اين تدري * اطول من الارض
10 11 مسحها واعرض هي من البحر * فان جاء ليأخذ وليجمع من الذي يرده * لانه يعلم متى يكون
12 13 الزمان * ويبصر الاثم وهو يفهم * والرجل الطاهر يتقوى * والجبار يعين الانسان * لو انك اصلحت
14 15 قلبك ورفعت اليه يديك * فان كان اثما في يديك باعدك * ولم يحل في مسكنك اثم * وعند ذلك ترفع
16 17 يديك * ومن الضر لا تخاف * وعند ذلك تنسى عملك * ومثل المياه الجارية تساق * ومن الظهر يقع
18 19 الخزي * والظلام يكون مثل الصبح * وتتكل ان لك رجاء وتنام وتستريح * وليس من يوقظك * يطلبون
20 وجهك الكثير * واعين المنافقين تظلم * وقوتهم تبيد منهم * ورجاء انفسهم *

* الفصل الثاني عشر *

1 2 * فاجاب ايوب وقال * بالصدق انتم اقوام *
3 4 ومعكم تموت الحكمة * وانا ايضا لي قلب مثلكم * وما كنت باصغر منكم * فمن اصاب مثل هذا *
5 فكان ضحكا لاصحابه * ودعا الله فاجابه الذي يرتضي بالصالحين الذين بلا عيب * ليبعد السفاهة
6 والاثم * وليثبت رجلا مترعرعة * تتباعد مساكن الناهبين * ورجاء الذين يغضبون الله * لان ليس الله
7 8 في قلوبهم * فان كان ليس كذلك فسال الحيوانة فتعلمك * ولطاير السماء فتخبرك * واخبر الارض
9 فتعلمك * ويعلمك سمك البحر * من الذي لم يعلم بهذه كلها * ان يد الرب صنعتها *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

(b) Sed quis poteſt Deo reſpondere in ſermone, aut extollere labia ſua tecum, 5 *Et oſtendere tibi ſecreta ſapientiæ? (quoniam ſapientiæ ſunt ſeræ) ſanè ſcires quod Deus dimitteret tibi peccata tua.* 6 *(c) Secretum Dei potèsne ſcire? aut terminos Potentis vales deprehendere?* 7 *Sublimitatem cœli potèsne percipere? aut profunditatem inferni undenam percipies?* 8 *Longior eſt terrâ menſura ejus, & latior eſt mari.* 9 *Si (d) venerit ad accipiendum & colligendum, quis poterit eum impedire?* 10 *Quia ſcit quando eſt tempus, & videt iniquitatem, & ipſe intelligit:* 11 *Vir autem purus confortatur, et Potentiſſimus auxiliatur homini.* 12 *Si tu direxeris cor tuum, & elevaveris manus tuas ad eum:* 13 *Si fuerit iniquitas in manibus tuis, removebit eam, & non habitabit in domo tua ſcelus.* 14 *Tunc attolles manus tuas, & (e) à nocumento non timebis:* 15 *Et tunc oblivìſcêris laboris tui, et ſicut aquæ fluentes ducêris.* 16 *Et ſupra meridiem ſurget ignominia: & tenebræ erunt velut matutinum:* 17 *Et confides te ſpem habere, & dormies, & requieſces,* 18 *Et non erit qui te excitet: expetent faciem tuam multi,* 19 *Et oculi iniquorum obſcurabuntur, et vis eorum peribit ab ipſis, & ſpes animarum ſuarum,* 20

CAP. XII.

Reſpondit Job & dixit, 1 *Cùm veritate vos eſtis gentes, & vobiſcũ morietur ſapientia.* 2 *Et ego etiam habeo cor ſicut vos, & non ſum minor vobis.* 3 *Is cui acciderunt ſimilia his, & fuit deriſio amicis ſuis; invocabit Deũ, & exaudiet is qui complacet ſibi in juſtis qui ſunt ſine macula:* 4 *Repellendo ſtultitiam & ſcelus, & confirmando pedem titubantem.* 5 *(a) Elongabuntur habitacula prædonum, & ſpes illorum qui irritant Deum: quia Deus non eſt in cordibus eorum.* 6 *Et ſi non eſt ſic, interroga belluam, & docebit te; & volucrem cœli, & enarrabit tibi:* 7 *Et expone terræ, & erudiet te, & erudient te piſces maris.* 8 *Quis ignorat quòd manus Domini fecerit omnia?* 9

INTERP. SYRIACA.

(*b*) Verùm quis *ita* fecit, ut Deo det reſponſum, & extollat (*c*) Inquiſitionem Dei (*d*) tranſierit (*e*) ab anguſtia *CAP. xii.* (*a*) Tranſibunt

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Veruntamen quis dabit ut Deus loquatur, & aperiat labia ſua tibi! Annunciaret enim tibi ſecreta ſapientiæ, quoniam in duplum eſt ſapientia ejus: & ſcito quòd re- 5 6
um ageret te Deus ob tuam iniquitatem. Nunquid inveſtigationem Dei invenies: aut uſque ad fines omnipotentis reperies? In altitudine cœli quid tu facies? in le- 7 8
ge quæ profundior eſt inferno, quid tu ſcies? Cujus menſura longior eſt terra, & latior mari. Si tranſierit & clauſerit cœlos nubibus, & congregaverit exercitus; 9 10
quis avertet eum? Quoniam ipſe novit viros falſitatis, & quomodo videre poteſt iniquitatem ut non intelligat? Et vir diſertus ſapientior fiet in corde ſuo, & pullus 11 12
onagri ſicut filius hominis naſcitur. *Targum aliud: Et homo ſolers perpendebit; & adoleſcens refractarius, qui prudens evaſerit, vir magnus fiet.* Si tu direxeris 13
cor tuum, & extenderis ad eum in oratione manus tuas: Si qua iniquitas eſt in manu tua, longè eam facito; neque habitet in tabernaculo tuo iniquitas. Tunc enim 14 15
levabis vultum tuum abſque macula, & eris purgatus à corruptione, & non timebis. Quoniam tu laboris obliviſceris, & quaſi aquarum quæ præterierunt recordabe- 16
ris. Et de meridie dierum tuorum conſurget corpus tuum, quod abit in glebam; *quia* obſcuritas tenebrarum quaſi lux matutina erit. Et confides quoniam eſt tibi 17 18
ſpes, & præparabis domum ſepulturæ, & ſecurus dormies. Et cubabis, & non erit qui exterreat, & deprecabuntur faciem tuam plurimi. Et oculi impiorum con- 19 20
ſumentur, & liberatio peribit ab eis, & ſpes eorum mœror animæ.

CAP. XII.

ET reſpondit Job & dixit: In veritate quia vos eſtis ſocii, & vobiſcum deficit ſapientia. Veruntamen eſt mihi cor ſicut vobis: non ſum ego differens à vobis, & 1 2 3
apud quem non ſunt ſicut iſta? Deriſio amico ejus ſum, qui invocat Deum & reſpondet ei: irridet juſtum & perfectum. Torris contemptus eſt impiis, qui à co- 4 5
gitationibus ſecur⁹ eſt, præparans ſe ad tempus ſtatutũ. *Targum aliud: Fax contempta eſt Eſau, qui* à cogitationibus *confidenter* ſecurus eſt; *ſed futurum eſt ut vacillet*
ei pes. Et filii *Eſau* qui proſperè degunt in tabernaculis ſuis, tradentur direptoribus; Filii autẽ *Iſmahel qui confidenter agunt*, tradentur *reliquis gentibus, quæ* provocant 6
Deum ſicut *ipſi; paravit Deus manu ſua. Targum aliud. Et* filii Iſmahel qui proſperè degunt in tabernaculis ſuis, tradentur direptoribus, Amonitæ autem et Moabitæ
qui morantur confidenter tradentur in manũ impiorũ qui provocant Deũ, ſicut Pharaõ, ſup quẽ adduxit Deus plagas manu ſua. Veruntamen interroga nunc jumenta, et 7
docebunt te; et aves cœli, et nunciabunt tibi. Aut loquere terræ, et docebit te: et narrabunt tibi piſces maris. Quis neſcit omnia hæc, quoniã *plaga man⁹* Dñi fecit hoc? 8 9

איוב : יג

carnis omnis ſpiritus & ; viventis omnis anima *ejus* manu in Cujus
אֲשֶׁר בְּיָדוֹ נֶפֶשׁ כָּל־חָי וְרוּחַ כָּל־בְּשַׂר־ 10
? *ſibi guſtabit cibum palatum &* ; *probabit* ſermones auris Nónne .viri
אִישׁ׃ הֲלֹא־אֹזֶן מִלִּין תִּבְחָן וְחֵךְ אֹכֶל יִטְעַם־לוֹ׃ 11
.intelligentia dierum longitudine & , ſapientia decrepitis In
בִּישִׁישִׁים חָכְמָה וְאֹרֶךְ יָמִים תְּבוּנָה׃ 12
.intelligentia & , conſilium ei : fortitudo & , ſapientia ipſo Cum
עִמּוֹ חָכְמָה וּגְבוּרָה לוֹ עֵצָה וּתְבוּנָה׃ 13
non & , virum *ſuper* claudet : ædificabitur non & , diruet Ecce
הֵן יַהֲרוֹס וְלֹא יִבָּנֶה יִסְגֹּר עַל־אִישׁ וְלֹא 14
,eas emittet & ; areſcent & , *aquis in detinebit* Ecce .aperietur
יִפָּתֵחַ׃ הֵן יַעְצֹר בַּמַּיִם וְיִבָשׁוּ וִישַׁלְּחֵם 15
: *perſiſtentia* & fortitudo illo Cum .terram ſubvertent &
וְיַהַפְכוּ אָרֶץ׃ עִמּוֹ עֹז וְתוּשִׁיָּה 16
, *ſpoliatum* conſiliarios *faciens Ire* .faciens errare & , errans *ei*
לוֹ שֹׁגֵג וּמַשְׁגֶּה׃ מוֹלִיךְ יוֹעֲצִים שׁוֹלָל 17
ligavit & , ſolvit regum Vinculum .*infatuabit* judices &
וְשֹׁפְטִים יְהוֹלֵל׃ מוּסַר מְלָכִים פִּתֵּחַ וַיֶּאְסֹר 18
, *ſpoliatum ſacerdotes ire Faciens* .eorum *lumbis* in cingulum
אֵזוֹר בְּמָתְנֵיהֶם׃ מוֹלִיךְ כֹּהֲנִים שׁוֹלָל 19
diſcretionem & , veracibus labium *Removens* .ſubvertet fortes &
וְאֵתָנִים יְסַלֵּף׃ מֵסִיר שָׂפָה לְנֶאֱמָנִים וְטַעַם 20
; principes ſuper deſpectionem *Effundens* .tollet ſenum
זְקֵנִים יִקָּח׃ שׁוֹפֵךְ בּוּז עַל־נְדִיבִים 21
de profunda *Revelans* .*debilitavit* fortium fortitudinem &
וּמְזִיחַ אֲפִיקִים רִפָּה׃ מְגַלֶּה עֲמֻקוֹת מִנִּי־ 22
Multiplicans .mortis umbram lucem ad educit & ; *tenebra*
חֹשֶׁךְ וַיֹּצֵא לָאוֹר צַלְמָוֶת׃ מַשְׂגִּיא 23
Removens .eas ducit & , gentibus *diſtendens* : eas perdit & , gentes
לַגּוֹיִם וַיְאַבְּדֵם שֹׁטֵחַ לַגּוֹיִם וַיַּנְחֵם׃ מֵסִיר 24
abſque ſolitudine in eos facit errare & , terræ populi *capitum* cor
לֵב רָאשֵׁי עַם־הָאָרֶץ וַיַּתְעֵם בְּתֹהוּ לֹא־
eos fecit errare & : lucem non & , *tenebram* Palpabunt .via
דָרֶךְ׃ יְמַשְׁשׁוּ־חֹשֶׁךְ וְלֹא־אוֹר וַיַּתְעֵם 25
.ebrius ſicut
כַּשִּׁכּוֹר׃

CAP. XIII. יג

.ſibi intellexit & , mea auris audivit : meus oculus vidit omnia Ecce
הֶן־כֹּל רָאֲתָה עֵינִי שָׁמְעָה אָזְנִי וַתָּבֶן לָהּ׃ 1
.*vobis à ego cadens* non : ego etiam novi , vos *ſcire* Sicut
כְּדַעְתְּכֶם יָדַעְתִּי גַם־אָנִי לֹא־נֹפֵל אָנֹכִי מִכֶּם׃ 2
Deum ad altercari & ; loquar *Saddai* ad ego Attamen
אוּלָם אֲנִי אֶל־שַׁדַּי אֲדַבֵּר וְהוֹכֵחַ אֶל־אֵל 3
medici , *mendacii concinnatores* vos verè Et .*volam*
אֶחְפָּץ׃ וְאוּלָם אַתֶּם טֹפְלֵי־שָׁקֶר רֹפְאֵי 4
eſſet & ; taceretis tacendo *dabit Quis* .vos omnes *nihili*
אֱלִל כֻּלְּכֶם׃ מִי־יִתֵּן הַחֲרֵשׁ תַּחֲרִישׁוּן וּתְהִי 5
, meam *argumentationem* quæſo Audite : ſapientiam ad vobis
לָכֶם לְחָכְמָה׃ שִׁמְעוּ־נָא תוֹכַחְתִּי 6
loquemini *Deo* Nunquid .attendite meorum labiorum *litibus* &
וְרִבוֹת שְׂפָתַי הַקְשִׁיבוּ׃ הַלְאֵל תְּדַבְּרוּ 7
ejus *facies* Nunquid ? dolum loquemini *ei* & ? iniquitatem
עַוְלָה וְלוֹ תְּדַבְּרוּ רְמִיָּה׃ הֲפָנָיו 8
quod bonum Nónne ? *litigabitis* Deo *an* ? accipietis
תִּשָּׂאוּן אִם־לָאֵל תְּרִיבוּן׃ הֲטוֹב כִּי־ 9
? *eum in* illudetis , *hominem in illudere ut* An ? vos inquireret
יַחְקֹר אֶתְכֶם אִם־כְּהָתֵל בֶּאֱנוֹשׁ תְּהָתֵלּוּ בוֹ׃
.acceperitis *facies* abſcondito in ſi , vos arguet Arguendo
הוֹכֵחַ יוֹכִיחַ אֶתְכֶם אִם־בַּסֵּתֶר פָּנִים תִּשָּׂאוּן׃ 10
? vos ſuper cadet ejus pavor & ; vos terrebit ejus *celſitudo* Nónne
הֲלֹא שְׂאֵתוֹ תְּבַעֵת אֶתְכֶם וּפַחְדּוֹ יִפֹּל עֲלֵיכֶם׃ 11

Verſio VULG. LAT.

10 In cujus manu anima omnis
viventis, & ſpiritus univerſæ
11 carnis hominis. Nónne auris
verba dijudicat, & fauces
comedentis, ſaporem?
12 In antiquis eſt ſapientia, & in
13 multo tempore prudentia. Apud
ipſum eſt ſapientia &
fortitudo, ipſe habet conſilium
14 & intelligentiam. Si deſtruxerit,
nemo eſt qui ædificet:
ſi incluſerit hominem,
15 nullus eſt qui aperiat. Si continuerit
aquas, omnia ſiccabuntur:
& ſi emiſerit eas,
16 ſubvertent terram. Apud ipſum
eſt fortitudo & ſapientia:
ipſe novit & decipientem,
17 et eum qui decipitur. Adducit
conſiliarios in ſtultum
finem, & judices in ſtuporem.
18 Balteum regum diſſolvit, &
præcingit fune renes eorum.
19 Ducit ſacerdotes inglorios, &
20 optimates ſupplantat: Commutans
labium veracium, &
doctrinam ſenum auferens.
21 Effundit deſpectionem ſuper
principes, eos, qui oppreſſi
22 fuerant, relevans. Qui revelat
profunda de tenebris,
& producit in lucem umbram
23 mortis. Qui multiplicat gentes
& perdit eas, & ſubverſas
24 in integrum reſtituit. Qui immutat
cor principum populi
terræ, & decipit eos ut fruſtrà
25 incedant per invium: Palpabunt
quaſi in tenebris, & non
in luce, & errare eos faciet
quaſi ebrios.

CAP. XIII.

1 Ecce omnia hæc vidit oculus
meus, et audivit auris
mea, et intellexi ſingula.
2 Secundùm ſcientiam veſtram
et ego novi: nec inferior ve-
3 ſtrî ſum. Sed tamen ad Omnipotentem
loquar, et diſputare
4 cum Deo cupio: Priùs vos
oſtendens fabricatores mendacii,
et cultores perverſorum
5 dogmatum. Atque utinam taceretis,
et putaremini eſſe ſa-
6 pientes. Audite ergò correptionem
meam, et judicium
labiorum meorum attendite.
7 Numquid Deus indiget veſtro
mendacio, ut pro illo loqua-
8 mini dolos? Numquid faciem
ejus accipitis, et pro Deo ju-
9 dicare nitimini? Aut placebit
ei quem celare nihil poteſt?
aut decipietur ut homo,
10 veſtris fraudulentiis? Ipſe vos
arguet, quoniam in abſcondito
faciem ejus accipitis.
11 Statim ut ſe commoverit, turbabit
vos, et terror ejus irruet
ſuper vos.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

10 † (μ) Εἰ μὴ ἐν χειρὶ αὐτοῦ ψυχὴ πάντων
(ν) ζώντων, καὶ πνεῦμα παντὸς ἀνθρώπου.
11 † (ξ) Οὖς μὲν γὰρ ῥήματα διακρίνει,
† λάρυγξ δὲ σῖτα γεύεται. †
12 Ἐν πολλῷ χρόνῳ (ο) σοφία, † ἐν δὲ
13 πολλῷ βίῳ ἐπιστήμη. † Παρ' αὐτῷ σοφία
καὶ δύναμις, † (π) αὐτῷ βουλὴ καὶ σύνεσις.
14 † Ἐὰν (ρ) καταβάλῃ, τίς οἰκοδομήσει;
† (σ) ἐὰν κλείσῃ κατ' ἀνθρώπων,
15 τίς ἀνοίξει; † Ἐὰν κωλύσῃ τὸ ὕδωρ, ξηρανεῖ
τὴν γῆν· † (τ) ἐὰν δὲ ἐπαφῇ, ἀπώλεσεν
16 αὐτὴν καταστρέψας. † Παρ' αὐτῷ
κράτος καὶ ἰσχύς, † (υ) αὐτῷ ἐπιστήμη καὶ
17 σύνεσις. † Διάγων βουλευτὰς (ϛ) αἰχμαλώτους,
† κριτὰς δὲ γῆς ἐξέστησε. † (φ)
18 Καθιζάνων βασιλεῖς ἐπὶ θρόνους, † καὶ (χ)
19 περιέδησε ζώνῃ ὀσφύας αὐτῶν. † (ψ) Ἐξαποστέλλων
ἱερεῖς αἰχμαλώτους, † δυνάστας
20 δὲ γῆς κατέστρεψε. † Διαλλάσσων χείλη
πιστῶν, † σύνεσιν δὲ πρεσβυτέρων ἔγνω.
21 † Ἐκχέων ἀτιμίαν ἐπ' ἄρχοντας, † ταπεινοὺς
22 δὲ ἰάσατο. † (ω) Ἀνακαλύπτων βαθέα
ἐκ σκότους, † ἐξήγαγε δὲ εἰς φῶς
23 σκιὰν θανάτου. † Πλανῶν ἔθνη καὶ ἀπολλύων
αὐτά, † καταστρωννύων ἔθνη καὶ
24 καθοδηγῶν αὐτά. † Διαλλάσσων καρδίας
(α) ἀρχόντων γῆς· † ἐπλάνησε δὲ αὐτοὺς
25 ἐν ὁδῷ ᾗ οὐκ ᾔδεισαν. † (β) Ψηλαφήσαισαν
σκότος (γ) καὶ μὴ φῶς,
† πλανηθείησαν δὲ ὥσπερ ὁ μεθύων.

Si non in manu ejus eſt anima omnium viventium, & 10
ſpiritus omnis hominis? Nam 11
(c) auris quidem dijudicat
verba, fauces autem cibos guſtant:
In (d) multo tempore 12
ſapientia eſt, & in multa
vita eſt ſcientia. Apud eum 13
ſapientia, & virtus; ipſi eſt
conſilium, & intellectus. Si 14
deſtruxerit, quis ædificabit?
ſi clauſerit contra homines,
quis aperiet? Si prohibuerit aquam; 15
ſiccabit terram: quòd
etſi emiſerit, perdidit evertens
eam. Apud ipſum potentia, 16
& fortitudo; ipſi ſcientia, &
intellectus. (e) Qui ducit conſultores 17
captivos: judices autem
terræ, in pavorem miſit.
Qui collocat reges ſuper ſedes, 18
& circumdedit (f) baltheo lumbos eorum. Qui emittit 19
ſacerdotes captivos; Dynaſtas
autem terræ evertit.
Qui (g) permutat labia fidelium, 20
intelligentiam autē (h)
ſenum cognovit. Qui effundit 21
ignominiā ſup principes: humiles
autem ſanavit. Qui revelat 22
profunda de tenebris, & produxit
in lucem umbram mortis.
Decipiens gentes, & perdens 23
eas: ſternens gentes, & in viam
ducens eas. (i) Permutans 24
corda principum terræ; errare
fecit eos in via, quam non
noverant: (k) Palpent tenebras, & non lucem: (l) errent autem, tanquam ebrius. 25

ΚΕΦ. ιγ'.

1 † Ἰδοὺ ταῦτα (α) ἑώρακέ μου ὁ ὀφθαλμός,
2 (β) καὶ ἀκήκοέ μου τὸ οὖς· † Καὶ
οἶδα ὅσα καὶ ὑμεῖς ἐπίστασθε, † (γ) καὶ οὐκ
3 ἀσυνετώτερός εἰμι ὑμῶν. † Οὐ μὴν δὲ
(δ) ἀλλ' ἐγὼ πρὸς κύριον λαλήσω, † ἐλέγξω
δὲ ἐναντίον αὐτοῦ ἐὰν βούληται. †
4 (ε) Ὑμεῖς δέ ἐστε ἰατροὶ ἄδικοι, καὶ ἰαταὶ
5 κακῶν πάντες. † Εἴη δὲ ὑμῖν κωφεῦσαι,
6 καὶ ἀποβήσεται ὑμῖν (ζ) σοφία. † (η) Ἀκούσατε
δὲ ἔλεγχον τοῦ στόματός μου, †
7 κρίσιν δὲ χειλέων μου προσέχετε. † Πότερον
οὐκ ἔναντι κυρίου λαλεῖτε, † ἔναντι δὲ
8 αὐτοῦ φθέγγεσθε δόλον; † (ϛ) Ἢ ὑποστελεῖσθε;
(θ) ὑμεῖς δὲ αὐτοὶ κριταὶ γίνεσθε.
9 † Καλὸν γὰρ ἐὰν ἐξιχνιάσῃ ὑμᾶς· εἰ
γὰρ τὰ πάντα ποιοῦντες προστεθήσεσθε
10 (ι) αὐτῷ, Οὐθὲν ἧττον ἐλέγξει ὑμᾶς. †
εἰ δὲ καὶ κρυφῇ (κ) πρόσωπα θαυμάσεσθε,
11 Πότερον (λ) οὐχ ἡ δεινὰ αὐτοῦ στροβήσει
ὑμᾶς, † (μ) ὁ φόβος δὲ παρ' αὐτοῦ ἐπιπεσεῖται
ὑμῖν,

CAP. XIII.

Ecce hæc (a) vidit oculus meus, & audivit auris mea: Et 1 2
novi, quæcunque & vos ſcitis,
& non ſum minùs intelligens,
quàm vos. Veruntamen ego 3
ad Dominum loquar, & arguam
in conſpectu ejus, ſi voluerit.
Vos autem eſtis (b) medici 4
injuſti, & curatores malorum
omnes: Sit autem vobis obmuteſcere, 5
& evadet vobis ſapientia.
Audite ergò increpationem 6
oris mei, & judicium labiorum
meorum animadvertite.
Nunquid non coram Domino 7
loquimini, & ante conſpectum
ejus profertis dolum? An (c) 8
ſubtrahetis vos? vos autem ipſi
judices ſitis: Bonum enim 9
ſi inveſtiget vos: ſi enim omnia
facientes adjiciemini ei; Nihilominùs 10
arguet vos. (d) Quòd
& ſi occultas perſonas mirati
fueritis; Nónne commotio 11
ejus verſabit vos? Timor
autem ab eo cadet ſuper vos.

MS.A. (μ) Ὅτι ἐν χειρὶ (ν) τῶν ζώντων, (ξ) Νοῦς μὲν (ο) σοφία εὑρίσκεται, ἐν δὲ μακρῷ βίῳ (π) παρ' αὐτῷ (ρ) καταστρέψῃ, (σ) ἐὰν δὲ καὶ ἀποκλίσῃ κατὰ ἀνθρώπου, (τ) ἐὰν δὲ καὶ ἐπαφῇ, (υ) παρ' αὐτῷ (ϛ) γῆς αἰχμαλώτους, (φ) Καθίζων (χ) περιζωννύων αὐτοὺς * ζώνῃ ὀσφρύος (ψ) Ὁ ἐξαποστέλλων (ω) Ὁ ἀποκαλύπτων βαθέα (α) ἀρχόντων· ἐπλάνησεν δὲ αὐτοὺς ὁδῷ (β) Ψηλαφήσαισαν (γ) καὶ οὐ φῶς,

Κεφ. ιγ'. MS.A. (α) ἑόρακεν (β) καὶ τὸ οὖς μου ἀκήκοεν· (γ) καί γε νεώτερος ὑμῶν οὐκ εἰμὶ ἀσυνετώτερος ὑμῶν. (δ) ἀλλὰ πρὸς κύριον λαλήσω ἐγώ, (ε) Ὑμεῖς γάρ ἐστε (ζ) εἰς σοφίαν. (η) Ἀκούσατε ἔλεγχον στόματός μου, κρίσει δὲ (ϛ) Εἰ (θ) αὐτοὶ ὑμεῖς κριταὶ γενέσθαι, καλῶς γε λαλοῦντες, ἐὰν γὰρ ἐξιχνιάσῃ ὑμᾶς, εἰ καὶ τὰ πάντα (ι) ὁδῷ αὐτοῦ, (κ) πρόσωπον * θαυμάσεσθε, (λ) οὐχὶ δειλία αὐτοῦ (μ) φόβος δὲ κυρίου ἐπιπεσεῖται ὑμῖν, Καὶ ἀποβήσεται ὑμῶν

תרגום TARGUM.

דִּי בִידֵיהּ נַפְשְׁתָא דְכָל חַי וְרוּחָא דְכָל בְּסַר גְּבַר : הֲלָא אוּדְנָא מִלִּין תִּבְחַן וּמוֹרִינָא מֵיכְלָא יִטְעַם לֵיהּ : בְּקַשִּׁישַׁיָּא חָכְמְתָא וְנוּגְדֵי יוֹמִין בִּינְתָא : 10 11
עִמֵּיהּ חוּכְמְתָא וּגְבוּרְתָּא דִּילֵיהּ מִלְּכָא וּבִינְתָא : הָא יַצְדֵי וְלָא יִתְבְּנֵי יִסְגּוֹר עַל גְּבַר בִּקְבוּרְתָּא וְלָא יִתְפְּתַח : הָא אֲחַד בְּמַיָּא וּמִתְיַבְּשִׁין וְכַד יְשַׁלְּחִנּוּן 12 13 14 15
מִתְהַפְכִין בְּאַרְעָא : גַּבֵּיהּ עוּשְׁנָא וְחוּכְמְתָא דִּי לֵיהּ שָׁלֵי וּמַשְׁלֵי : דְּמוֹבִיל מָרֵי מַלְכַיָּא כַּד מִשְׁתַּלְשְׁלִין וְנָגוּדַיָּא יִתְלַעַב : שׁוּשִׁילְתָּא דְמַלְכַיָּא מְשָׁרֵי 16 17
וְאָסַר קְמוּר בְּחַרְצֵיהוֹן : דְּמוֹלִיךְ רַבְרְבָנַיָּא בַּבְהוּתָא וְתַקִּיפַיָּא מְקַלְקֵל : מַעְדֵּי קְשׁוֹט סִפְוָתָא מִמְּהֵימְנִין וּטְעַם סָבַיָּא יְסַלֵּק : שָׁדֵי בְּסִרְנוּתָא עַל סַרְכַיָּא 18 19 20 21
וְתָקוֹף מַלְכַיָּא מַחְלִישׁ : מְגַלֵּי עֲמִיקָתָא מִן חֲשׁוֹכָא וּמַפֵּק לִנְהוֹרָא טוּלֵי מוֹתָא : מַפִּישׁ לְעַמְמַיָּא וּמְאַבְדְנוּן מְשַׁטַּח מְצוּדָתָא לְאוּמַּיָּא וְדַבְּרִנּוּן : 22 23
מַעְדֵּי חָכְמַת לִבָּא דְרֵישֵׁי עַמָּא דְאַרְעָא וּמַתְעֵנוּן בִּלְמָא דְלֵית אוֹרְחָא : יְמַשְׁמְשׁוּן חֲשׁוֹךְ וְלָא נְהוֹרָא וּמַתְעֵנוּן הֵיךְ רַוֵּי : 24 25

יג

הָא כּוּלָּא חֲמָת עֵינִי שְׁמַעַת אוּדְנִי וְאִתְבַּיְנַת לַהּ : הֵיךְ מַנְדַּעְכוֹן יְדַעִית אוּף אֲנָא וְלֵית פְּרִישׁ אֲנָא מִנְּכוֹן : בְּרַם אֲנָא לְוָת שַׁדַּי אֲמַלֵּל וּמִכְסָנָא 1 2 3
עִם אֱלָהָא אֲצְבֵי : וּבְרַם אַתּוּן מְחַבְּרֵי שְׁקַר כְּמַאסֵי אֱלִיל וּמוֹדְקָא דִּפְלִטְיָה סַכִּינָא הַכְדֵין כּוּלְכוֹן : לְוַי דְּמִשְׁתַּק תִּשְׁתְּקוּן וּתְהֵי לְכוֹן לְחוּכְמְתָא : שְׁמַעוּ 4 5 6
כְדוּן מַכְסְנוּתִי וּמַצּוּת סִפְוָתִי אֲצִיתוּ : הַלֶאֱלָהָא אַתּוּן מְמַלְּלִין שְׁקַר וּלְוָתֵיהּ תְּמַלְּלוּן נְכִילְתָא : הַאַפּוֹי תִּסְבוּן אִין לֶאֱלָהָא תִנְצוּן : הֲתַקִּין אֲרוּם יִפְשׁוֹשׁ 7 8 9
יַתְכוֹן אִין הֵיךְ דְּמִתְלַעְבָא בְּבַר נָשׁ תִּתְלַעֲבוּן בֵּיהּ : מַכְסָנָא יַכְסֵן יַתְכוֹן אִין בְּטוֹמְרָא אַפּוֹי תִּסְבוּן : הֲלָא בְּאִזְדַּקְפוּתֵיהּ עַל כּוּרְסֵי דִינָא רְתִיתֵיהּ 10 11
תַּבְעִית יַתְכוֹן וּרְתִיתֵיהּ יִפּוֹל עֲלֵיכוֹן :

Verſio *SYRIACA.*

10 * ܡܛܠ ܕܒܐܝܕܗ ܐܝܬ ܢܦܫܬܐ ܕܟܠܢܫ. ܘܪܘܚܐ ܕܟܠܗ ܒܣܪ ܐܢܫ. * ܐܕܢܐ ܡܠܬܐ ܒܚܪܐ. ܘܚܟܐ ܛܥܡ
11 ܡܐܟܘܠܬܐ. * ܘܒܣܝܒܐ ܚܟܡܬܐ. ܘܒܣܘܓܐܐ ܕܝܘܡܬܐ ܣܘܟܠܐ. * ܥܡܗ ܗܝ ܚܟܡܬܐ ܘܓܢܒܪܘܬܐ.
12 13 14 ܕܝܠܗ ܗܘ ܬܪܥܝܬܐ ܘܣܘܟܠܐ. * ܗܐ ܐܢ ܢܣܘܚ. ܡܢܘ ܢܒܢܐ. ܘܐܢ ܐܚܕ ܥܠ ܐܢܫ. ܡܢܘ ܢܦܬܚ. * ܐܢ ܢܟܐ
15 16 ܠܡܝܐ. ܢܝܒܫܘܢ. ܘܐܢ ܢܫܒܘܩ ܢܗܦܟܘܢ ܐܪܥܐ. * ܕܝܠܗ ܗܘ ܬܘܩܦܐ ܘܚܟܡܬܐ. ܕܝܠܗ ܗܘ ܛܥܝܐ
17 18 ܘܡܛܥܝܢܐ. * ܡܥܒܪ ܡܠܟܐ ܠܫܒܝܐ. ܘܕܝܢܐ ܡܫܛܐ. * ܡܫܪܐ ܡܐܣܪܐ ܕܡܠܟܐ. ܘܐܣܪ ܚܪܨܝܗܘܢ.
19 ܡܥܒܪ ܠܟܘܡܪܐ ܠܫܒܝܐ. ܘܠܓܢܒܪܐ ܡܦܠ. * ܡܥܒܪ ܡܠܬܐ ܡܢ ܡܗܝܡܢܐ. ܘܡܕܥܐ
20 21 ܕܣܒܐ ܢܣܒ. * ܐܫܕ ܒܣܝܪܘܬܐ ܥܠ ܪܘܪܒܢܐ. ܘܚܝܠܗܘܢ ܕܥܫܝܢܐ ܡܪܦܐ. * ܡܓܠܐ ܥܡܝܩܬܐ
22 23 ܡܢ ܚܫܘܟܐ. ܘܡܦܩ ܢܘܗܪܐ ܡܢ ܛܠܠܐ ܕܡܘܬܐ. * ܡܣܓܐ ܠܥܡܡܐ ܘܡܘܒܕ ܠܗܘܢ. ܦܪܣ ܠܥܡܡܐ.
24 ܘܡܫܒܩ ܠܗܘܢ. * ܡܥܒܪ ܠܒܐ ܕܪܫܐ ܕܥܡܐ ܕܐܪܥܐ. ܘܡܛܥܐ ܠܗܘܢ ܒܫܦܝܐ ܕܠܐ ܐܘܪܚܐ. * ܢܓܫܘܢ
25 ܒܚܫܘܟܐ ܘܠܐ ܒܢܘܗܪܐ. ܢܓܫܘܢ ܚܫܘܟܐ ܘܠܐ ܢܘܗܪܐ. ܘܡܛܥܐ ܠܗܘܢ ܐܝܟ ܪܘܝܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܓ *

1 2 * ܗܐ ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ ܚܙܬ ܥܝܢܝ. ܘܫܡܥܬ ܐܕܢܝ. ܘܐܣܬܟܠܬ. * ܐܝܟ ܝܕܥܬܟܘܢ. ܝܕܥ ܐܦ ܐܢܐ. ܘܠܐ ܗܘܝܬ
3 ܒܨܝܪ ܡܢܟܘܢ. * ܒܪܡ ܐܢܐ ܥܡ ܫܕܝ ܐܡܠܠ. ܘܡܟܣܢܘܬܝ ܥܡ ܐܠܗܐ ܐܡܠܠ. * ܒܪܡ ܐܢܬܘܢ
4 5 ܐܝܬܝܟܘܢ. ܡܡܠܠܝܢ ܫܘܩܪܐ ܐܝܬܝܟܘܢ. ܘܡܥܒܕܝܢ ܐܣܝܘܬܐ ܥܠ ܡܕܡ ܐܝܬܝܟܘܢ. * ܡܢ ܢܬܠ ܕܢܫܬܩܘܢ ܫܬܩܐ.
6 7 ܘܬܗܘܐ ܠܟܘܢ ܗܕܐ ܚܟܡܬܐ. * ܫܡܥܘ ܗܫܐ ܟܘܢܝܬܝ. ܘܨܘܬܘ ܕܝܢܐ ܕܣܦܘܬܝ. * ܠܐ ܠܐܠܗܐ ܡܡܠܠܝܢ
8 ܐܝܬܝܟܘܢ ܥܘܠܐ. ܘܥܠܘܗܝ ܡܡܠܠܝܢ ܐܝܬܝܟܘܢ ܢܟܠܐ. * ܐܦܘܗܝ ܢܣܒܝܢ ܐܝܬܝܟܘܢ. ܐܘ ܥܡ ܐܠܗܐ ܕܐܢܝܢ ܐܝܬܝܟܘܢ.
9 10 * ܛܒ ܠܟܘܢ ܕܢܒܨܐ ܠܟܘܢ. ܐܘ ܐܝܟ ܕܡܬܒܨܐ ܒܪܢܫܐ ܡܬܒܨܝܢ ܐܝܬܝܟܘܢ ܒܗ. * ܡܟܣܘ ܢܟܣܐ ܠܟܘܢ.
11 ܐܢ ܒܛܘܫܝܐ ܐܦܘܗܝ ܢܣܒܝܢ ܐܝܬܝܟܘܢ. * ܕܚܠܬܗ ܬܒܥܬܟܘܢ. ܘܐܝܡܬܗ ܬܦܠ ܥܠܝܟܘܢ.

Verſio *ARABICA.*

10 11 * مِنْ اَجْلِ اَنْ بِيَدِكَ اَنْفُس جَمِيعِ الاَحْيَاءِ وَرُوحُ كُلِّ بَشَرٍ وَاِنْسَانٍ * الاُذُنُ تَسْمَعُ الكَلاَمَ * وَالحَنَكُ يَطْعَمُ
12 13 الطَّعَامَ * وَفِي الاَكَابِرِ الحِكْمَة * وَفِي طُولِ الاَيَّامِ البَيَانُ * مَعَهُ الحِكْمَةُ وَالجَبَرُوتُ * لَهُ الفَهْمُ وَالبَيَانُ * فَاِنَّهُ اِنْ
14 15 هَدَمَ مَنِ الَّذِي يَبْنِي * وَاِنْ اَغْلَقَ فِي وَجْهِ الاِنْسَانِ مَنِ الَّذِي يَفْتَحُ * وَاِنْ زَجَرَ المِيَاهَ فَاِنَّهَا تَيْبَسُ * وَاِنْ
16 17 اَرْسَلَهَا اَقْلَبَتِ الاَرْضَ * لَهُ القُوَّةُ وَالحِكْمَة * لَهُ العَظَمَةُ وَالخَلاَصُ * يُدَبِّرُ المُلُوكَ بِالعَجَبِ * وَالدَّيَّانِينَ يُسَفِّهُ
18 19 * يُهْبِطُ المُلُوكَ اِلَى البَابِ وَيَشُدُّ الرِّبَاطَ فِي اَوْسَاطِهِمْ * يُدَبِّرُ الكَهَنَةَ بِالتَّعَجُّبِ وَالعُظَمَاءَ يَحُطُّهُمْ * يُبْعِدُ
20 21 الكَلاَمَ مِنَ المُوقِنِينَ * وَيَاخُذُ الحِلْمَ مِنَ المَشَايِخِ * يُلْقِي السَّخَافَةَ عَلَى السَّلاَطِينِ * وَمُرَادَةَ الاَقْوِيَاءِ يَرْفُضُهَا
22 23 * يُظْهِرُ الخَفِيَّاتِ مِنَ الظَّلاَمِ * وَيُخْرِجُ النُّورَ مِنْ طَبَاقِ المَوْتِ * يُضِلُّ الشُّعُوبَ وَيُبَدِّدُهَا يَسْطَحُ الاُمَمَ
24 25 وَيَرْفُضُهَا * يُسَخِّفُ قُلُوبَ رُؤَسَاءِ شَعْبِ الاَرْضِ * وَيُضِلُّهُمْ فِي حَيْرَةٍ بِلاَ طَرِيقٍ * يَجُسُّونَ فِي الظَّلاَمِ وَلاَ فِي
الضَّوْءِ مُجَسِّسُونَ الظُّلْمَةَ وَلاَ النُّورَ * وَيُضِلُّهُمْ مِثْلَ السَّكَارَى *

* اَلفَصْلُ الثَّالِثَ عَشَرَ *

1 * هُوَذَا
2 هٰذَا كُلُّهُ قَدْ اَبْصَرَتْ عَيْنَايَ وَسَمِعَتْ اُذُنِي وَفَهِمَتْ * مِثْلَ مَعْرِفَتِكُمْ فَاِنِّي اَنَا اَعْرِفُ * وَمَا كُنْتُ بِاَنْقَصَ
3 4 مِنْكُمْ * وَلٰكِنْ عِنْدَ العَزِيزِ اَتَكَلَّمُ * وَيَنْبَغِي لِلّٰهِ اُخْبِرُ * وَلٰكِنَّكُمْ اَنْتُمْ تَتَكَلَّمُونَ بِالزُّورِ * وَتُعَالِجُونَ الشِّفَا
5 6 بِلاَ شَيْءٍ * فَلَيْتَ كَانَ اَحَدٌ يُسْكِتُكُمْ سُكُوتًا وَيَكُونُ لَكُمْ هٰذِهِ حِكْمَةً * فَاسْمَعُوا الآنَ مَوْعِظَتِي * وَاَنْصِتُوا
7 8 قَضَاءَ شَفَتِي * اَعَلَى اللّٰهِ تَتَكَلَّمُونَ بَاطِلاً * وَعَلَيْهِ تَقُولُونَ اِثْمًا * اَبِوَجْهِهِ تَاخُذُونَ * اَوْ مَعَ اللّٰهِ تَدِينُونَ * اَخِيرًا
9 10 لَكُمْ اَنْ يَمْتَحِنَكُمْ * اَوْ مِثْلَ مَا يَدِينُ كُلَّ اِنْسَانٍ تَسْتَقْصُونَ بِهِ * تَبْكِيتًا يُبَكِّتُكُمْ * اَوْ بِوَجْهِهِ تَاخُذُونَ
11 * مَخَافَتُهُ تُرْهِبُكُمْ * وَفَزَعُهُ يَسْقُطُ عَلَيْكُمْ *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Quoniã in manu ejˀ ſunt animæ omnium viventium, et ſpiritus omnis carnis et hominis. 10 *Auris audit verba, & palatus guſtat cibum,* 11 *Et in ſenioribus ſapientia, & longitudine dierum prudentia.* 12 *Cum ipſo eſt ſapientia & fortitudo, ipſius eſt intelligentia & prudentia:* 13 *Quia ſi ipſe deſtruit, quis ædificat? & ſi claudit in faciem hominis, quis aperiet?* 14 *Et ſi increpat aquas, areſcunt, & ſi dimittit eas, ſubvertunt terram,* 15 *Ipſius eſt fortitudo & ſapientia, ipſius eſt magnificentia & ſalus:* 16 *Regit reges in ſtupore, & judices facit ſtultos:* 17 *Et deſcendere facit reges ad portã, & ſtringit vinculo renes eorum.* 18 *Ducit ſeniores in ſtupore, & magnates deprimit.* 19 *Removet verba à fidelibus, & tollit intellectum à ſenioribˀ:* 20 *Injicit imbecillitatem ſuper principes, & proterviam potentium* (b) *deſpicit:* 21 *Eruit abſcondita è tenebris, & educit lumen è mortis operculo:* 22 *In errorem inducit populos, &* (c) *diſſipat eos: Proſternit gentes, &* (d) *repellit eas,* 23 (e) *Debilitat corda principum populi terræ, et errare facit eos in ſtupore abſque via:* 24 *Palpabunt in tenebris, & non in luce: palpitabunt tenebras, & non lucem: & vacillare facit eos ſicut ebrios.* 25

CAP. XIII.

Ecce hæc omnia viderunt oculi mei, & audierunt aures meæ, & intellexit. 1 *Juxta ſcientiam veſtram ego ſcio, & non ſum inferior vobis:* 2 *Sed ad Potentem loquar, &* (a) *tribulationem meam Deo exponam.* 3 *At verò vos loquimini falſitatem, & exercetis curationem abſque ulla re.* 4 *Utinam aliquis eſſet qui vobis imponeret ſilentium, ſanè eſſet vobis hoc ſapientiæ.* 5 *Audite mòdò hortationẽ meam, & auſcultate judicium labiorum meorũ.* 6 *Numquid contra Deum loquimini iniquitatem, & de eo dicitis* (b) *ſcelus?* 7 *Nùm perſonam ejus accipitis, aut cum Deo contenditis?* 8 *Meliùs eſtne vobis, ut probet vos? an quemadmodum judicat omnem hominem, vos judicatis eum?* 9 *Corripiens corripiet vos: numquid faciem ejus accipitis?* 10 *Timor ejus terreat vos, ac terror ejus cadat ſuper vos.* 11

INTERP. SYR.

(*b*) debilitat: (*c*) diſperdit (*d*) derelinquit (*e*) Infatuat *CAP. xiii.* (*a*) redargutionem meam (*b*) fraudem?

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

In cujus manu anima eſt omnis viventis, & ſpiritus omnis carnis viri. Nonne auris verba probat, & palatum cibum guſtat ſibi? In antiquis eſt ſapientia, & in longævis dierum prudentia. Apud eum eſt ſapientia & fortitudo, ſuum eſt conſilium & intelligentia. Ecce deſtruet, & non ædificabitur; concludet hominem in ſepulchro, nec aperietur. Ecce continebit aquas, & ſiccabuntur, & cùm emiſerit eas, effundentur in terram. Apud eum eſt fortitudo & ſapientia, ipſe habet errantem & decipientem. Qui ducit conſiliarios in catenis, & principes ad inſaniam redigit. Catenam regum diſſolvit, & accingit balteo lumbos eorum. Qui ducit *magnates inter ſpolia,* & fortes diſſipat. Aufert veritatem labiorum veracium, & eloquium ſenum tollit. Effundit deſpectionem ſuper principes, & fortitudinem regum infirmare facit. Qui revelat profunda de tenebris, & producit in lucem umbras mortis. Multiplicat populos, & diſperdit eos; extendens rete gentibus, et capit eos. Auferens ſapientiam cordis principum *populi* terræ, et errare facit eos in vacuum ubi non eſt via. Palpant tenebras et non lucem, et errare facit eos quaſi ebrios. 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25

CAP, XIII.

Ecce omnia hæc vidit oculus meus: audivit auris mea, et intellexit ſibi. Secundùm ſcientiam veſtram novi etiam ego, nec differo ego à vobis. Veruntamen ad omnipotentem loquar: et diſputare cum Deo volo. Et vos utique eſtis coacervantes mendacium; quaſi medici idolis, *& caro mortua quam excîdit culter,* ſic eſtis omnes vos. *Utinam* tacentes taceatis, et ſit vobis in ſapientiam? Audite nunc correctionem meam, et contentionem labiorum meorum auſcultate. Nunquid Deo loquemini mendacium, et ad eum loquemini *dolum*? Nunquid faciem ejus accipietis, aut pro Deo contendetis? Nonne rectum eſſet quòd ſcrutaretur vos? an quemadmodum irridetur filius hominis, irridetis *eum*? Corripiendo corripiet vos, ſi in abſcondito faciem ejus accipitis. Nonne cùm elevatus fuerit ſuper ſolium judicii, terror ejus conturbabit vos, et timor ejus irruet ſuper vos. 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11

איוב : יד

.vestra *tergora* *luti* *tergoribus* , *cineris* *parabolæ* vestræ Memoriæ
12 זִכְרֹנֵיכֶם מִשְׁלֵי־אֵפֶר לְגַבֵּי־חֹמֶר גַּבֵּיכֶם׃
.*quid* me super transeat & ; ego loquar & , me de Tacete
13 הַחֲרִישׁוּ מִמֶּנִּי וַאֲדַבְּרָה־אָנִי וְיַעֲבֹר עָלַי מָה׃
, meis dentibus *in* meam carnem *tollam* quid Propter
14 עַל־מָה ׀ אֶשָּׂא בְשָׂרִי בְשִׁנָּי
non , me occidet Ecce ? *mea vola in* *ponam* meam animam &
15 וְנַפְשִׁי אָשִׂים בְּכַפִּי׃ הֵן יִקְטְלֵנִי לֹא
Etiam .arguam ejus *facies* *ad* meas vias veruntamen : sperabo
16 אֲיַחֵל אַךְ־דְּרָכַי אֶל־פָּנָיו אוֹכִיחַ׃ גַּם־
.intrabit *hypocrita* ejus *facies ad* non quia ; salutem in mihi ipse
הוּא־לִי לִישׁוּעָה כִּי־לֹא לְפָנָיו חָנֵף יָבוֹא׃
.vestris auribus *in* meam *indicationem* & , meum sermonem audiendo Audite
17 שִׁמְעוּ שָׁמוֹעַ מִלָּתִי וְאַחֲוָתִי בְּאָזְנֵיכֶם׃
.*ero justus* ego quòd novi : judicium disposui nunc Ecce
18 הִנֵּה־נָא עָרַכְתִּי מִשְׁפָּט יָדַעְתִּי כִּי־אֲנִי אֶצְדָּק׃
.*expirabo &* , tacuero nunc quia ? mecum *litigabit* *ipse* Quis
19 מִי־הוּא יָרִיב עִמָּדִי כִּי־עַתָּה אַחֲרִישׁ וְאֶגְוָע׃
non *tuis faciebus* à tunc : mecum facias ne duo Veruntamen
20 אַךְ־שְׁתַּיִם אַל־תַּעַשׂ עִמָּדִי אָז מִפָּנֶיךָ לֹא
ne tuus terror & : elonga me *desuper* *tuam Volam* .me abscondam
21 אֶסָּתֵר׃ כַּפְּךָ מֵעָלַי הַרְחַק וְאֵמָתְךָ אַל־
.mihi responde & , loquar vel : respondebo ego & , voca Et .me terreat
22 תְּבַעֲתַנִּי׃ וּקְרָא וְאָנֹכִי אֶעֱנֶה אוֹ אֲדַבֵּר וַהֲשִׁיבֵנִי׃
, meam Prævaricationem ? peccata & , iniquitates mihi Quot
23 כַּמָּה לִי עֲוֺנוֹת וְחַטָּאוֹת פִּשְׁעִי
; *abscondes* *tuas facies* quid Ut .me cognoscere fac meum peccatum &
24 וְחַטָּאתִי הֹדִעֵנִי׃ לָמָּה־פָנֶיךָ תַסְתִּיר
propulsatum folium Nónne ? tibi *inimicum in* *me reputabis &*
25 וְתַחְשְׁבֵנִי לְאוֹיֵב לָךְ׃ הֶעָלֶה נִדָּף
scribes Nam ? persequeris siccam stipulam & , *confringes*
26 תַּעֲרוֹץ וְאֶת־קַשׁ יָבֵשׁ תִּרְדֹּף׃ כִּי־תִכְתֹּב
.*mearum pueritiarum iniquitates me facies possidere* & , amaritudines me contra
עָלַי מְרֹרוֹת וְתוֹרִישֵׁנִי עֲוֺנוֹת נְעוּרָי׃
: meas semitas omnes *custodies* & , meos pedes *cippo in* *pones* *Et*
27 וְתָשֵׂם בַּסַּד ׀ רַגְלַי וְתִשְׁמוֹר כָּל־אָרְחֹתָי
ipse Et .imprimetur meorum pedum *radices* super
28 עַל־שָׁרְשֵׁי רַגְלַי תִּתְחַקֶּה׃ וְהוּא
.tinea *illud* comedit vestimentum ut ; veterascet *putredo* ut
כְּרָקָב יִבְלֶה כְּבֶגֶד אֲכָלוֹ עָשׁ׃

CAP. XIV. יד

.*tremore* saturus & , *dierum* *brevis* *mulieris* natus Homo
1 אָדָם יְלוּד אִשָּׁה קְצַר יָמִים וּשְׂבַע־רֹגֶז׃
non & , umbra velut fugit & ; est succisus & , est egressus flos Sicut
2 כְּצִיץ יָצָא וַיִּמָּל וַיִּבְרַח כַּצֵּל וְלֹא
adduces me & : tuos oculos aperuisti hunc super Etiam .stabit
3 יַעֲמוֹד׃ אַף־עַל־זֶה פָּקַחְתָּ עֵינֶךָ וְאֹתִי תָבִיא
Non ? immundo ex mundum dabit Quis .tecum judicium in
4 בְמִשְׁפָּט עִמָּךְ׃ מִי־יִתֵּן טָהוֹר מִטָּמֵא לֹא
ejus mensium numerus , ejus dies definiti Si .unus
5 אֶחָד׃ אִם חֲרוּצִים ׀ יָמָיו מִסְפַּר־חֳדָשָׁיו
, eo *desuper* Recede .præteribit non & , fecisti ejus *statuta* : tecum
6 אִתָּךְ חֻקָּו עָשִׂיתָ וְלֹא יַעֲבֹר׃ שְׁעֵה מֵעָלָיו
Quia .suum diem mercenarius sicut *velit* donec , desinet &
7 וְיֶחְדָּל עַד־יִרְצֶה כְּשָׂכִיר יוֹמוֹ׃ כִּי
ej⁹ *rejuvenescētia & : innovabitur* adhuc & , fuerit præcisa si , spes *ligno* est
יֵשׁ לָעֵץ תִּקְוָה אִם־יִכָּרֵת וְעוֹד יַחֲלִיף וְיֹנַקְתּוֹ
pulvere in & : ejus radix terra in senuerit Si .desinet non
8 לֹא תֶחְדָּל׃ אִם־יַזְקִין בָּאָרֶץ שָׁרְשׁוֹ וּבֶעָפָר
.ejus *stirps* *morietur*
יָמוּת גִּזְעוֹ׃

Versio VULG. LAT.

12 Memoria vestra comparabitur cineri, & redigentur in lutum 13 cervices vestræ. Tacete paulisper, ut loquar quodcunque 14 mihi mens suggesserit. Quarè lacero carnes meas dentibus meis, & animam meam porto 15 in manibus meis? Etiam si occiderit me, in ipso sperabo: veruntamen vias meas in con- 16 spectu ejus arguã. Et ipse erit salvator meus: non enim veniet in conspectu ejus omnis 17 hypocrita. Audite sermonem meum, & ænigmata percipite 18 auribus vestris. Si fuero judicatus, scio quòd justus in- 19 veniar. Quis est qui judicetur mecum? veniat: quarè ta- 20 cens consumor? Duo tantùm ne facias mihi, & tunc à facie 21 tua non abscondar: Manum tuam longè fac à me, & for- 22 mido tua non me terreat. Voca me, & ego respondebo tibi: aut certè loquar, & tu re- 23 sponde mihi. Quantas habeo iniquitates & peccata! scelera mea & delicta ostende mihi. 24 Cur faciem tuam abscondis, & arbitraris me inimicum tu- 25 um? Contra folium, quod vento rapitur, ostendis potentiam tuam, et stipulam siccam 26 persequeris: Scribis enim contra me amaritudines, et consumere me vis peccatis 27 adolescentiæ meæ. Posuisti in nervo pedem meum, et observâsti omnes semitas meas, et vestigia pedum meorum con- 28 siderâsti: Qui quasi putredo consumendus sum, et quasi vestimentum, quod comeditur à tinea.

CAP. XIV.

1 Homo natus de muliere, brevi vivens tempore, reple- 2 tur multis miseriis. Qui quasi flos egreditur et conteritur, et fugit velut umbra, et nunquam in eodem statu perma- 3 net. Et dignum ducis super hujuscemodi aperire oculos tuos, et adducere eum tecum 4 in judicium? Quis potest facere mundum de immundo conceptum semine? nónne tu 5 qui solus es? Breves dies hominis sunt, numerus mensium ejus apud te est: constituisti terminos ejus, qui præteriri 6 non poterunt. Recede paululùm ab eo, ut quiescat, donec optata veniat, sicut mercena- 7 rii, dies ejus. Lignum habet spem: si præcisum fuerit, rursum virescit, et rami ejus pul- 8 lulant. Si senuerit in terra radix ejus, et in pulvere emortuus fuerit truncus illius,

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

12 † Ἀποβήσεται δὲ ὑμῶν τὸ γαυρίαμα ἶσα 13 σποδῷ, † τὸ δὲ σῶμα πήλινον. † Κωφεύσατε ἵνα λαλήσω, καὶ ἀναπαύσωμαι (ν) θυμοῦ, 14 † Ἀναλαβὼν τὰς σάρκας μου τοῖς (ξ) ὀδοῦσι, † ψυχὴν δέ μου θήσω (ο) ἐν χει- 15 ρί. † Ἐάν με χειρώσηται ὁ δυνάστης, ἐπεὶ καὶ ἦρκται, † (π) ἦ μὴν λαλήσω καὶ 16 ἐλέγξω ἐναντίον αὐτοῦ· † Καὶ τοῦτό μοι ἀποβήσεται εἰς σωτηρίαν, † (ρ) οὐ γὰρ ἐν- 17 αντίον αὐτοῦ δόλος εἰσελεύσεται. † Ἀκούσατε ἀκούσατε τὰ ῥήματά μου, † ἀναγ- 18 γελῶ γὰρ ὑμῶν ἀκουόντων. † Ἰδοὺ ἐγὼ ἐγγύς εἰμι τοῦ κρίματός μου, † οἶδα ἐ- 19 γὼ ὅτι δίκαιος ἀναφανοῦμαι. † Τίς γάρ ἐστιν ὁ κριθησόμενός μοι, (σ) ὅτι νῦν κω- 20 φεύσω καὶ ἐκλείψω; † Δυεῖν δέ μοι (τ) χρήσῃ, τότε ἀπὸ τοῦ προσώπου σου οὐ 21 κρυβήσομαι. † Τὴν (υ) χεῖρα ἀπ' ἐμοῦ ἀπέχου, † καὶ ὁ φόβος σου μή με κατα- 22 πλησσέτω. † Εἶτα καλέσεις, ἐγὼ δέ σοι (φ) ὑπακούσομαι· † ἢ λαλήσεις, ἐγὼ δὲ 23 σοι δώσω (χ) ἀνταπόκρισιν. † Πόσαι εἰσὶν αἱ ἁμαρτίαι μου καὶ ἀνομίαι μου; 24 (ψ) δίδαξόν με τίνες εἰσί; † Διατί ἀπ' ἐμοῦ κρύπτῃ, † ἥγησαι δέ με (ω) ὑπεναν- 25 τίον σοι; † Ἢ (α) ὡς φύλλον κινούμενον ὑπὸ ἀνέμου εὐλαβηθήσῃ; † (ʹ) ἢ ὡς χόρτῳ φερομένῳ ὑπὸ πνεύματος † ἀντί- 26 κεισαί (β) μοι; Ὅτι κατέγραψας κατ' ἐμοῦ κακὰ, (γ) περιέθηκας δέ μοι νεότη- 27 τος ἁμαρτίας. † Ἔθου δέ μου τὸν πόδα (δ) ἐν κωλύματι, ἐφύλαξας δέ μου πάντα τὰ ἔργα, † εἰς δὲ ῥίζας (ε) τῶν 28 ποδῶν μου ἀφίκου. (ζ) Ὃ παλαιοῦται ἶσα ἀσκῷ, ἢ ὥσπερ ἱμάτιον σητόβρωτον.

12 Evadet autem elatio vestra tanquàm cinis, corpus autem luteum. 13 Obmutescite ut loquar, et requiescam ab ira, 14 Apprehendens meas carnes dentibus, & animam meam ponam in manu. 15 Licèt opprimat me, qui Potens est, quoniam & cœpit; tamen loquar, & coram eo arguam: 16 Et hoc mihi evadet in salutem: non enim coram eo dolus ingredietur. 17 Audite, audite verba mea: narrabo enim vobis audientibus: 18 Ecce ego appropinquo judicio meo: novi ego, quòd justus apparebo. 19 Quis est enim qui judicium sit facturus mihi; (e) quia nunc obmutescam, & deficiam? 20 Duo (f) autem mihi præbeas: tunc à (g) facie tua non abscondar: 21 Manum aufer à me, & timor tuus non me terreat. 22 Deindè vocabis, ego autem tibi obediam: aut (h) loquêris, ego autem tibi dabo responsum. 23 Quot sunt peccata mea, & iniquitates meæ? doce me quænam sunt? 24 Cur absconderis à me, & putas me esse contrarium tibi? 25 Nunquid quasi folium, quod movetur à vento, vereberis? aut quasi fœno, quod fertur à spiritu, opposuisti te mihi? 26 Quoniam scripsisti contra me mala, & imposuisti mihi peccata juventutis: 27 Et posuisti in (i) impedimento pedem meum, & observâsti omnia opera mea: & (k) ad radices pedum meorum pervenisti: 28 Qui veterascit (l) sicut uter, aut velut vestimentum, quod à tinea comestum est.

ΚΕΦ. ιδʹ.

1 † Βροτὸς γὰρ γεννητὸς γυναικὸς, ὀ- 2 λιγόβιος, καὶ πλήρης ὀργῆς, † Ἢ ὥσπερ ἄνθος ἀνθῆσαν ἐξέπεσεν, † ἀπέδρα 3 δὲ ὥσπερ σκιὰ, καὶ οὐ μὴ στῇ. † Οὐχὶ καὶ τούτου λόγον ἐποιήσω, † καὶ τοῦτον ἐποίησας (α) εἰσελθεῖν ἐν κρίματι ἐνώ- 4 πιόν σου; † Τίς γὰρ (β) καθαρὸς ἔ- 5 σται ἀπὸ ῥύπου; (γ) ἀλλ' οὐθείς, † Ἐὰν καὶ μία ἡμέρα ὁ βίος αὐτοῦ ἐπὶ τῆς γῆς. † ἀριθμητοὶ δὲ μῆνες αὐτοῦ (δ) παρ' αὐτοῦ· 6 † εἰς χρόνον ἔθου, καὶ οὐ μὴ ὑπερβῇ. † Ἀπόστα (ε) ἀπ' αὐτοῦ, ἵνα ἡσυχάσῃ, καὶ εὐδοκήσῃ τὸν βίον, ὥσπερ ὁ μισθωτός. 7 † Ἔστι γὰρ δένδρῳ ἐλπίς, † (ζ) ἐὰν γὰρ ἐκκοπῇ, ἔτι ἐπανθήσει, † καὶ ὁ ῥάδαμνος 8 αὐτοῦ οὐ μὴ ἐκλείπῃ. † Ἐὰν γὰρ γηράσῃ ἐν γῇ ἡ ῥίζα αὐτοῦ, † (η) ἐν δὲ πέτρᾳ τελευτήσῃ, τὸ στέλεχος αὐτοῦ

CAP. XIV.

1 Homo enim natus ex muliere, brevi vivens tempore, & plenus (a) iracundiæ, 2 Aut tanquam flos efflorescens decidit, aufugit autem velut umbra: & non stabit. 3 Nunquid & huj⁹ rationẽ fecisti, & hunc fecisti venire in judiciũ corã te? 4 Quis enim mundus erit à sorde? at nemo, 5 Et si unus dies sit vita ejus super terram: dinumerati enim sunt menses ejus (b) ab eo: ad tempus posuisti, & non transgredietur. 6 Discede (c) ab eo, ut requiescat, & benè velit vitam, sicut mercenarius. 7 Est enim arbori spes: Si enim excisa fuerit, adhuc pullulabit, & (d) germen ejus non deficiet: 8 Si enim senuerit in terra radix ejus, & in (e petra autem interierit; truncus ejus

MS. A. (ν) θυμῷ μου, (ξ) ὀδοῦσίν μου, (ο) ἐν χερσίν μου. Ἐὰν μή με (π) οὐ μὴν δὲ ἀλλὰ λαλήσω καὶ ἐλέγξω ὑμᾶς ἐναντίον αὐτοῦ· (ρ) οὐ γὰρ εἰσελεύσεται ἐναντίον αὐτοῦ δόλος. Ἀκούσατέ μου, ἀκούσατέ μου τὰ ῥήματα, (σ) ἵνα νῦν (τ) χρεία, (υ) χεῖρά σου ἀπόσχου ἀπ' ἐμοῦ, (φ) ὑπακούσω· λαλήσεις, (χ) ἀπόκρισιν. (ψ) τίνες εἰσὶν δίδαξόν με. Διατί με ἀποκρύπτῃ, (ω) ὥσπερ ὑπεναντίον σου; (α) ὥσπερ (ʹ) ἢ ὡς χόρτον φερόμενον (β) δέ μοι. (γ) καὶ περιέθηκάς μοι (δ) ἐν κυκλώματι, καὶ ἐφύλαξές μου (ε) ποδῶν μου (ζ) Οἱ παλαιοῦνται

Κεφ. ιδʹ. MS. A. (α) ἐν κρίματι εἰσελθεῖν ἐπὶ σοῦ; (β) ἔσται καθαρὸς (γ) οὐδὲ εἷς, Ἐὰν καὶ μιᾶς ἡμέρας γένηται ὁ βίος (δ) παρ' αὐτῷ. εἰς χρόνον γὰρ ἔθου, (ε) ἀπ' ἐμοῦ, ἵνα ἡσυχάσω, καὶ εὐδοκήσω μου τὸν βίον, ὥσπερ μισθωτός. (ζ) ἐὰν δὲ καὶ ἐκκοπῇ, πάλιν ἀνθήσει, (η) ἐὰν δὲ πέτραις τελευτήσει,

תרגום TARGUM.

12 13 14 דִּכְרָנְכוֹן מְתִיל לִקְטָמָא לְגַב טִינָא גַבֵּיכוֹן׃ שְׁתוּקוּ מִנִּי וַאֲמַלֵּל אֲנָא וְיֶעְבַּר עֲלַי מַדְּעַם׃ מְטוּל מָה אֶטּוּל בִּסְרִי בְּכַכַּי וְנַפְשִׁי אֲשַׁוֵּי כַּד עַל גַּב יְדוֹי׃
15 16 17 הָא אִין יִקְטְלִנַּנִי קֳדָמוֹי אֲצַלֵּי בְּרַם אוֹרְחָתִי קֳדָמוֹי אַכְסַן׃ לְחוֹד הוּא לִי לְפוּרְקָנָא אֲרוּם לָא קֳדָמוֹי דִּילְטוֹר יֵעוּל׃ שְׁמָעוּ וְקַבִּילוּ מִלְּתִי וְתַנְוִיי
18 19 20 בְּאוּדְנֵיכוֹן׃ הָא כְדוֹן סַדָּרִית דִּינָא יְדַעִית אֲרוּם בְּהָדֵי אֲנָא אֶזְכֵּי׃ מַן הוּא דְּיִנְצֵי בַּהֲדִי אֲרוּם הַשְׁתָּא אִשְׁתּוּק וְאֶתְנְגִיד׃ לְחוֹד תַּרְתֵּין לָא תַעְבֵּד עִמִּי
21 22 23 הֵידֵין מִן קֳדָמָךְ לָא אִטַּמַּר׃ יְדָךְ מֵעֲלַוֵּי אַרְחֵק וּדְחַלְתָּךְ לָא תְבַעֲתִינַנִי׃ וְתִקְרֵי וַאֲנָא אָתִיב אוֹ אֲמַלֵּל וְתָתִיבִנַנִי׃ כְּמָה לִי עֲוָיָן וְחוֹבִין מְרוֹדִי וְסוֹרְחָנִי
24 25 26 אוֹדַע יָתִי׃ לְמָה שְׁכִנְתָּךְ תְּסַלֵּק וְתַחְשְׁבִנַנִי לִבְעֵל דְּבָבָא לָךְ׃ הֲטַרְפָּא דִּשְׁקִיף תְּתַבַּר וְיַת גִּלָא יְבֵשׁ תִּרְדּוֹף׃ אֲרוּם תִּכְתּוֹב עֲלַי מְרִירָתָא
27 28 וְתֵרְתִּנַנִי עֲוַיַּת טַלְיוּתִי׃ וּתְשַׁוֵּי כַּד בְּשִׁיעַ רַגְלַי וְתִנְטוֹר כּוּלְהוֹן אַסְרָטַי עַל סִמְיוֹנֵי רַגְלַי תִּרְשׁוֹם׃ וְהוּא הֵיךְ רִקְבּוּבִית יִתְבְּלֵי הֵיךְ לְבוּשׁ דְּנַמְרֵיהּ
זְחִיל׃

יד

1 2 3 בַּר נָשׁ דְּאִתְיְלִיד מִן אִתְּתָא נְוִיץ יוֹמִין וּשְׂבַע רוּגְזָא׃ הֵיךְ נִיצָא נְפַק וְאִתְמוֹלַל וַעֲרַק הֵיךְ טוּלָא וְלָא יְקוּם׃ לְחוֹד עַל דֵּין פְּקַחְתָּא עֵינָךְ וְיָתִי
4 5 תָּעֵיל לְדִינָא עִמָּךְ׃ מַן יִתֵּן דַּכֵּי מִן גְּבַר דְּאִסְתְּאַב בְּחוֹבִין אֱלָהֵין אֱלָהָא דִּי הוּא חַד דִּי יִשְׁבּוֹק לֵיהּ׃ אִין לָא יְתוּב סְרִיגִין יוֹמוֹי מִנְיַן יַרְחוֹי גַּבָּךְ גְּזֵרְתּוֹי
6 7 עֲבַדְתְּ וְלָא יֶעְבַּר׃ פְּסִיק מִנֵּיהּ וְיִפְסוֹק מְחָתֵיהּ עַד דִּיקַבֵּל סוֹטְרֵיהּ הֵיךְ כַּאֲגִירָא בְּיוֹמֵיהּ׃ אֲרוּם אִית לְאִילָנָא סְבַר אִין יִתְקַץ תּוּב יִשְׁבְּשֵׁב וְיַנְקוּתֵיהּ
8 לָא תִפְסוֹק׃ אִין מִתְסַב בְּאַרְעָא שׁוֹרְשֵׁיהּ וּבְעַפְרָא יְסוּף נִצְבֵיהּ׃

Verſio SYRIACA.

* ܐܬܕܟܪܘ ܕܡܢ ܥܦܪܐ ܗܘ ܫܘܠܛܢܟܘܢ. ܘܠܘܬ ܓܒ ܛܝܢܐ ܗܘ ܡܬܘܬܒܟܘܢ. * ܫܬܘܩܘ ܡܢܝ. ܘܐܡܠܠ 12
ܐܦ ܐܢܐ. ܘܐܡܪ ܟܠܡܕܡ ܕܥܒܪ ܥܠܝ. * ܠܡܢܐ ܫܩܠ ܐܢܐ ܒܣܪܝ ܒܫܢܝ. ܘܢܦܫܝ ܣܝܡܐ ܒܐܝܕܝ. * ܐܢ 13 14
ܢܩܛܠܢܝ. ܠܗ ܗܘ ܡܣܟܐ ܐܢܐ ܒܠܚܘܕ. ܡܛܠ ܕܐܘܪܚܬܝ ܩܕܡܘܗܝ ܐܝܬܝܢ. * ܘܐܦ ܗܘ ܢܗܘܐ ܠܝ 15 16
ܦܪܘܩܐ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܥܐܠ ܩܕܡܘܗܝ ܢܟܦܐ. * ܫܡܥܘ ܫܡܥܘ ܡܠܝ. ܘܐܚܘܝܘ ܕܐܡܪ ܩܕܡܝܟܘܢ. * ܗܐ 17 18
ܐܦ ܐܢܐ ܡܚܘܐ ܐܢܐ ܕܝܢܝ. ܘܝܕܥ ܐܢܐ ܕܙܟܝ ܐܢܐ. * ܡܢܘ ܕܕܐܢ ܥܡܝ. ܘܗܫܐ ܐܫܬܘܩ ܘܐܬܬܢܝܚ. * ܒܪܡ 19 20
ܬܪܬܝܢ. ܠܐ ܬܥܒܕ ܠܝ. ܘܗܝܕܝܢ ܡܢ ܩܕܡܝܟ ܠܐ ܐܬܛܫܐ. * ܐܝܕܟ. ܠܐ ܬܪܚܩ ܡܢܝ. ܘܕܚܠܬܟ ܠܐ ܬܒܥܬܢܝ. 21
* ܩܪܝܢܝ. ܘܐܢܐ ܐܥܢܐ. ܐܘ ܐܡܠܠ. ܘܐܢܬ ܦܢܝ ܠܝ ܦܬܓܡܐ. * ܟܡܐ ܐܝܬ ܠܝ ܥܘܠܐ ܘܚܘܒܐ. ܥܘܠܝ ܘܚܛܗܝ 22 23
ܐܘܕܥܢܝ. * ܠܡܢܐ ܡܗܦܟ ܐܢܬ ܐܦܝܟ ܡܢܝ. ܘܚܫܒܬܢܝ ܠܟ ܐܝܟ ܒܥܠܕܒܒܐ. * ܠܛܪܦܐ ܢܫܝܦܐ 24 25
ܕܒܪܘܚܐ ܕܝܫ ܐܢܬ. ܘܚܝܠܐ ܢܫܝܦܐ ܪܕܦ ܐܢܬ. * ܕܟܬܒܬ ܥܠܝ ܡܪܝܪܬܐ. ܘܡܥܗܕ ܐܢܬ ܥܠܝ ܚܛܗܐ ܕܛܠܝܘܬܝ. 26
* ܘܣܡܬ ܪܓܠܝ ܒܩܘܠܪܐ. ܘܢܛܪܬ ܟܠܗܝܢ ܐܘܪܚܬܝ. ܘܥܠ ܥܩܒܬܐ ܕܪܓܠܝ ܐܬܒܩܝܬ. * ܘܗܘ ܐܝܟ ܙܩܐ ܕܒܠܐ. 27 28
ܘܐܝܟ ܠܒܘܫܐ ܕܐܟܠܗ ܣܣܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܝܕ *

* ܒܪܢܫܐ ܗܘ ܝܠܝܕ ܐܢܬܬܐ. ܒܨܝܪ ܝܘܡܝܢ ܗܘ. ܘܡܩܒܠ ܙܘܥܐ. * ܘܐܝܟ ܫܘܫܢܬܐ ܢܦܩ. ܘܢܒܠ 1 2
ܘܢܚܡܐ. ܘܥܪܩ ܐܝܟ ܛܠܠܐ. ܘܠܐ ܩܐܡ. * ܐܦ ܥܠ ܗܢܐ ܦܬܚܬ ܥܝܢܝܟ. ܘܠܗ ܡܥܠܬ ܠܕܝܢܐ ܥܡܟ. 3
* ܡܢܘ ܢܬܠ ܕܟܝܐ ܡܢ ܛܢܦܐ. ܐܦܠܐ ܚܕ. * ܐܢ ܦܣܝܩܝܢ ܐܢܘܢ ܝܘܡܘܗܝ: ܘܡܢܝܢܐ ܕܝܪܚܘܗܝ 4 5
ܫܠܡ. ܢܡܘܣܐ ܣܡܬ ܠܗ. ܕܠܐ ܢܥܒܪ ܥܠܘܗܝ. * ܘܢܩܘܐ ܥܕܡܐ ܕܢܫܠܡ ܐܝܟ ܐܓܝܪܐ ܝܘܡܘܗܝ. * ܡܛܠ 6
ܕܐܝܬ ܠܩܝܣܐ ܣܒܪܐ. ܕܐܢ ܡܬܦܣܩ ܬܘܒ ܡܦܪܥ. ܘܣܘܟܘܗܝ ܠܐ ܚܣܪܝܢ. * ܘܐܢ ܢܥܬܩ ܒܐܪܥܐ 7 8
ܥܩܪܗ. ܘܒܥܦܪܐ ܬܡܘܬ ܢܨܒܬܗ.

Verſio ARABICA.

* اذكروا ان من التراب سلطانكم وعلي جانب الطين مسكنكم * فاصمتوا عني فاتكلم ايضا انا * واقول 12 13
جميع الذي جار علي * ماذا انا اخذ لحمي باسناني ونفسي موضوعة في يدي * فان هو قتلني * فاياه 14 15
ارجوا فقط لان طرايقي بين يديه * وهو يكون لي مخلصا من اجل انه لا يدخل قدامه بذيل * فاسمعوا 16 17
سمعا قولي ومعرفتي اقولها قدامكم * فاني ايضا اقرب قضاي * وانا اعلم اني بري * من الذي يحتج علي * 18 19
حتي الآن اسكت واطمان * ولكن كلتيهما لا تبعد عني * وعند ذلك من بين يديك لا تنساني * ويدك 20 21
لا تبعدها عني ومخافتك لا تفزعني * ادعوني وانا اجيب * او اتكلم فترد علي الجواب * كم لي من الآثام 22 23
والاحواب * اثامي وخطاياي فاعلمني * لماذا ترد وجهك عني وجعلتني لك مثل العدو * للورق اليابس 24 25
المنثور تدوس * او للقش اليابس تطرد * حين كتبت علي التبعة * وتذكر علي ايام صباي * وجعلت 26 27
رجلي في الوثاق * وتحفظ جميع طرايقي * وعلي فوه رجلي تنظر * وهو مثل السقاء البالي * ومثل 28
اللبوس الذي قد اكله السوس *

* الفصل الرابع عشر *

* كذلك هو الانسان ولد الامراة وناقص الايام هو * وقابل الافزاع * مثل النبات يخرج ثم ييبس ويحترق * 1 2
ويذهب مثل الظل ولا يبقا * وايضا علي هذا فتحت عينيك * واياه تدخل في القضاء معك * من 3 4
الذي يخرج الطاهر من الدنس * ولا احدا * ان كانت ايام حياته قد انقطعت * وعدد شهوره قد 5
انقضت * حدا جعلت لا يتجاوز * ويقيم حتي تسرع مثل الاجير ايامه * من اجل انه يكون للعود رجاء 6 7
ان هو قطع فانه ايضا يخلف واغصانه لا تنفد * وان عتق في الارض اصله وفي التراب يموت نباته * 8

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Mementote quia de terra 12
eſt principatus veſter, &
ſecus lutum eſt habitatio
veſtra. Silete à me, & 13
loquar ego etiam, & dicam
omnia quæ ſuper me
tranſierunt. Quare ego 14
accipio carnē meā dentib⁹
meis, & anima mea poſita
in manibus meis. Si ipſe 15
occiderit me, in ipſo ſperabo
tantùm; quoniam viæ
meæ in conſpectu ejus, Et 16
ipſe erit mihi ſalvator;
quoniam non intrat in
conſpectum ejus profan⁹.
Audientes audite ſermonem 17
meum, & (c) ſcientiam
meam dicam coram
vobis: Quoniam ego quoque 18
exponam judicium
meum, & ego ſcio me eſſe
immunem. Quis eſt qui 19
litigat adverſùm me:
ut nunc taceā, & (d) tutus
ſim? Veruntamen duo 20
hæc ne removeas à me,
& tunc de conſpectu tuo
non oblivíſcêris mei; Manum 21
tuam ne elonges à
me, et timor tuus non me
terreat. Voca me, & ego 22
reſpondebo: aut loquar,
& tu reſponſum mihi dabis.
Quot ſunt mihi ſcelera 23
& debita? ſcelera
mea & peccata mea notifica
mihi. Cur avertis faciem 24
tuam à me? & poſuiſti
me tibi quaſi inimicum?
Folia ſicca dilapſa 25
conculcas, & ſtipulas
ſiccas perſequeris? Cùm 26
ſcripſeris contra me (e)
vindictam, & commemoras
adverſùm me delicta
juventutis meæ; Et poſueris 27
pedes meos in vinculo,
& obſervaveris
omnes ſemitas meas, &
conſideres vim pedum
meorum: Ipſe verò ſit 28
quaſi uterculus marcidus,
& velut veſtimentum,
quod jam comeſtum eſt à
tinea.

CAP. XIV.

Sic eſt homo natus de 1
muliere, & paucorum dierum,
& ſuſceptibilis timorum
eſt: Sicut ol⁹ egreditur, 2
(a) tum exſiccatur,
& comburitur, & abit
velut umbra, & non remanet.
Etiam ſuper hunc 3
aperuiſti oculos tuos, &
adducis eum tecum in
judicium? Quis producit 4
mundum de immundo?
nec ull⁹ quidē, (b) Si dies 5
vitæ ejus præciſi ſunt, &
numerus menſium ej⁹ jam
finivit: (c) terminum poſuiſti
quē non præteribit,
Permanet donec percurrant 6
ſicut mercenarii dies
ejus. Nam ligno ſpes eſt 7
quòd ſi abſciſſum fuerit,
rurſus germinet, & rami
ejus non pereant. Quòd 8
ſi ſenuerit in terra radix
ejus, & in terra mortuum
fuerit germen ejus;

INTERP. SYRIACA.

(c) declarationem meā (d) requieſcā? (e) correptionē, *Cap. xxii.* (a) marceſcit, & exſiccatur, & fugit (b) Si dies ejus præciſi (c) legem

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Memoria veſtra comparata eſt cineri: apud lutum ſunt dorſa veſtra. Tacete à me, & loquar; & tranſeat ſuper me quicquid fuerit. Quare tollam carnem meam 12 13
dentibus meis, & animam meam ponam quaſi in ſuperficie manuum *ejus*? Ecce ſi occiderit me, coram eo orabo: veruntamen vias meas coram eo arguam. Attamen 14 15
ipſe eſt mihi in ſalutem, quoniam non ingredietur coram eo delator. Audite & ſuſcipite verba mea, & conventionem meam in auribus veſtris. Ecce nunc ordinavi 16 17
judicium: ſcio quoniam juſtus inveniar. Quis eſt qui contendat mecum? quoniam nunc ſi tacuero, emoriar. Attamen duo ne facias mihi: tunc à facie 18 19
tua non abſcondar. Manum tuam longè fac à me, & timor tuus ne conturbet me. Et vocabis, & ego reſpondebo tibi: aut loquar, & reſpondebis mihi. Quantas 20 21
habeo iniquitates & peccata? ſcelera mea & delicta mea oſtende mihi. Quare majeſtatem tuam aufers, & arbitraris me inimicum tuum? Nunquid folium quod 22 23
impellitur conteres, & ſtipulam ſiccam perſequêris? Scribis enim contra me amaritudines, & hæreditare me facis iniquitates adoleſcentiæ meæ. Et ponis velut 24 25
in nervo pedes meos, & obſervas omnes ſemitas meas; & veſtigia pedum meorum ſignâſti. Et quaſi putredo corrumpitur, & ſicut veſtimentum quod conſumit tinea. 26 27

CAP. XIV. 28

Filius hominis natus de muliere brevis dierum & ſatiatus ira: Sicut flos egreditur & conteritur; & fugit velut umbra, & non permanet. Veruntamen ſuper 1 2 3
hunc aperuiſti oculos tuos, & me adduces tecum in judicium. Quis dabit mundum è *viro* qui eſt pollutus in peccatis, niſi Deus qui unus eſt, qui parcet ei? Si non 4 5
convertatur perplexi erunt dies ejus: numerus menſium ejus apud te eſt: decreta ei feciſti, & non præteribit. Recede ab eo, & ceſſet plaga ejus, donec accipiat ſtipendium 6
ſuum ſicut mercenarius in die ſuo. Habet enim arbor ſpem ſi ſucciſa fuerit; adhuc enim germinabit, & ramus ejus non ceſſabit. Si ſenuerit in terra radix 7 8
ejus, & in pulvere defecerit plantatio ejus:

איוב : טו

.plantatio ſicut *meſſem* faciet & ; germinabit *aquarum odore Ab*
מֵרֵיחַ מַיִם יַפְרִחַ וְעָשָׂה קָצִיר כְּמוֹ־נָטַע׃ 9
? *ille* ubi & , homo *obiit &* ; *infirmabitur* & , morietur vir Et
וְגֶבֶר יָמוּת וַיֶּחֱלָשׁ וַיִּגְוַע אָדָם וְאַיּוֹ׃ 10
.areſcet & , exiccabitur fluvius & ; mari de aquæ Abierunt
אָזְלוּ־מַיִם מִנִּי־יָם וְנָהָר יֶחֱרַב וְיָבֵשׁ׃ 11
non *cælos non ad uſque* , reſurget non & , *jacuit* vir Et
וְאִישׁ שָׁכַב וְלֹא־יָקוּם עַד־בִּלְתִּי שָׁמַיִם לֹא 12
det Quis .ſuo ſomno à ſuſcitabuntur non & ; expergiſcentur
יָקִיצוּ וְלֹא יֵעֹרוּ מִשְּׁנָתָם׃ מִי יִתֵּן 13
: *tuum naſum converti ad uſque* me abſcondas ,me abſcondas ſepulchro in
בִּשְׁאוֹל תַּצְפִּנֵנִי תַּסְתִּירֵנִי עַד־שׁוּב אַפֶּךָ
fuerit mortuus Si .mei recorderis & , *ſtatutum* mihi ponas
תָּשִׁית לִי חֹק וְתִזְכְּרֵנִי׃ אִם־יָמוּת 14
venire uſque ; expectabo *meæ militiæ* diebus cunctis ? vivet nunquid , vir
גֶּבֶר הֲיִחְיֶה כָּל־יְמֵי צְבָאִי אֲיַחֵל עַד־בּוֹא
opus *ad* ; tibi reſpondebo ego & , Vocabis .mei *mutatitionem*
חֲלִיפָתִי׃ תִּקְרָא וְאָנֹכִי אֶעֱנֶךָּ לְמַעֲשֵׂה 15
; *numerabis* meos greſſus nunc Quia ? *concupiſces* tuarū manuum
יָדֶיךָ תִכְסֹף׃ כִּי־עַתָּה צְעָדַי תִּסְפּוֹר 16
faſciculo in Signata .*meum peccatum ſuper obſervabis* non
לֹא תִשְׁמוֹר עַל־חַטָּאתִי׃ חָתֻם בִּצְרוֹר 17
mons verè Et .*mea prævaricatione ſuper conſues &* ,*mea prævaricatio*
פִּשְׁעִי וַתִּטְפֹּל עַל־עֲוֹנִי׃ וְאוּלָם הַר־ 18
Lapides .ſuo loco è transferetur ſaxum & ; defluet cadens
נוֹפֵל יִבּוֹל וְצוּר יֶעְתַּק מִמְּקֹמוֹ׃ אֲבָנִים 19
; terræ pulverem ejus *ſponte naſcentia inundabit* , aquæ contuderunt
שָׁחֲקוּ מַיִם תִּשְׁטֹף סְפִיחֶיהָ עֲפַר־אָרֶץ
: ibit & ,perpetuum in *ei Prævalebis* .perdidiſti hominis expectationē &
וְתִקְוַת אֱנוֹשׁ הֶאֱבַדְתָּ׃ תִּתְקְפֵהוּ לָנֶצַח וַיַּהֲלֹךְ 20
; neſciet & ,ejus filii *fient Inclyti* .eum *emittes* & , ejus *facies mutans*
מְשַׁנֶּה פָנָיו וַתְּשַׁלְּחֵהוּ׃ יִכְבְּדוּ בָנָיו וְלֹא יֵדָע 21
; dolebit eo *ſuper* ejus caro Veruntamen .*eis advertet* non & , *vileſcent* &
וְיִצְעֲרוּ וְלֹא־יָבִין לָמוֹ׃ אַךְ־בְּשָׂרוֹ עָלָיו יִכְאָב 22
.lugebit *ſe ſuper* ejus anima &
וְנַפְשׁוֹ עָלָיו תֶּאֱבָל׃

CAP. XV. טו

ſapiens Nunquid : dixit & , Temanites Eliphaz reſpondit Et
וַיַּעַן אֱלִיפַז הַתֵּימָנִי וַיֹּאמַר׃ הֶחָכָם 1
? ſuum ventrem Euro implebit & ; *venti* ſcientiam reſpondebit
יַעֲנֶה דַעַת־רוּחַ וִימַלֵּא קָדִים בִּטְנוֹ׃ 2
? *eis in proficiet* non , ſermonibus & ; proderit non verbo in *Arguere*
הוֹכֵחַ בְּדָבָר לֹא יִסְכּוֹן וּמִלִּים לֹא־יוֹעִיל בָּם׃ 3
.*Dei facies ad loquelam imminues* & ; timorem *diſſipabis* tu Etiam
אַף־אַתָּה תָּפֵר יִרְאָה וְתִגְרַע שִׂיחָה לִפְנֵי־אֵל׃ 4
.verſutorum linguam *eliges* & ; tuum os tua iniquitas *docebit* Quia
כִּי־יְאַלֵּף עֲוֹנְךָ פִיךָ וְתִבְחַר לְשׁוֹן עֲרוּמִים׃ 5
teſtimonium reddent tua labia & ; ego non & , tuum os *te peraget Reum*
יַרְשִׁיעֲךָ פִיךָ וְלֹא־אָנִי וּשְׂפָתֶיךָ יַעֲנוּ־ 6
collium facies ad & ? eris natus *Adam primus* Nunquid .*te in*
בָךְ׃ הֲרִאישׁוֹן אָדָם תִּוָּלֵד וְלִפְנֵי גְבָעוֹת 7
te ad diminuetur & ; audies Dei ſecreto in Nunquid ? es formatus
חוֹלָלְתָּ׃ הַבְסוֹד אֱלוֹהַּ תִּשְׁמָע וְתִגְרַע אֵלֶיךָ 8
non & , *intelliges* ? ſciamus non *&* , nôſti Quid ? ſapientia
חָכְמָה׃ מַה־יָּדַעְתָּ וְלֹא נֵדָע תָּבִין וְלֹא־ 9
provectius ,nos inter decrepitus etiam ,canus Etiam ? *illud* nobiſcum
עִמָּנוּ הוּא׃ גַּם־שָׂב גַּם־יָשִׁישׁ בָּנוּ כַּבִּיר 10
; Dei conſolationes te à parum Nonne .diebus tuo patre *præ*
מֵאָבִיךָ יָמִים׃ הַמְעַט מִמְּךָ תַּנְחֻמוֹת אֵל 11
quid & ; tuum cor te *capiet* Quid ? tecum *latet* verbum &
וְדָבָר לָאַט עִמָּךְ׃ מַה־יִּקָּחֲךָ לִבֶּךָ וּמַה־ 12
? tui oculi *connivent*
יִרְזְמוּן עֵינֶיךָ׃

Verſio VULG. LAT.

9 Ad odorem aquæ germinabit, et faciet comam quaſi cùm primùm plantatum eſt: 10 Homo verò cùm mortuus fuerit, & nudatus atque conſumpt⁹, ubi, 11 quæſo, eſt? Quomodò ſi recedant aquæ de mari, & fluvius 12 vacuefactus areſcat: Sic homo cùm dormierit, non reſurget; donec atteratur cœlum, non evigilabit, nec conſurget 13 de ſomno ſuo. Quis mihi hoc tribuat, ut in inferno protegas me, & abſcondas me, donec pertranſeat furor tuus, & conſtituas mihi tempus, in quo 14 recorderis mei? Putáſne mortuus homo rurſum vivat? cunctis diebus, quibus nunc milito, expecto donec veniat im-15 mutatio mea. Vocabis me, et ego reſpondebo tibi: operi manuum tuarum porriges dex-16 teram. Tu quidem greſſus meos dinumerâſti, ſed parce 17 peccatis meis. Signâſti quaſi in ſacculo delicta mea, ſed cu-18 râſti iniquitatem meam. Mons cadens defluit, & ſaxum trans-19 fertur de loco ſuo. Lapides excavant aquæ, & alluvione paulatim terra conſumitur: & hominē ergò ſimiliter perdes. 20 Roborâſti eum paululùm ut in perpetuum tranſiret: immutabis faciem ejus, & emittes 21 eum. Sive nobiles fuerint filii ejus, ſive ignobiles, non in-22 telliget. Attamen caro ejus dum vivet dolebit, & anima illius ſuper ſemetipſo lugebit.

CAP. XV.

1 RESpondens autem Eliphaz 2 Themanites, dixit; Numquid ſapiens reſpondebit quaſi in ventum loquens, & implebit 3 ardore ſtomachum ſuum? Arguis verbis eum qui non eſt æqualis tibi, & loqueris quod 4 tibi non expedit. Quantum in te eſt, evacuâſti timorem, et 5 tuliſti preces coram Deo. Docuit enim iniquitas tua os tuū, & imitaris linguam blaſphe-6 mantium. Condemnabit te os tuum, & non ego: & labia 7 tua reſpondebunt tibi. Numquid primus homo tu natus es, 8 & ante colles formatus? Numquid conſilium Dei audîſti, & inferior te erit ejus ſapientia? 9 Quid nôſti quod ignoremus? quid intelligis quod neſciam⁹? 10 Et ſenes & antiqui ſunt in nobis, multò vetuſtiores quàm pa-11 tres tui. Numquid grande eſt ut conſoletur te Deus? ſed verba tua prava hoc prohibent. 12 Quid te elevat cor tuum, & quaſi magna cogitans, attonitos habes oculos?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

9 † Ἀπὸ ὀσμῆς ὕδατος ἀνθήσει, † (ϑ) ποιήσει δὲ θερισμὸν, ὥσπερ νεόφυτον. † 10 Ἀνὴρ δὲ τελευτήσας ᾤχετο, † (ι) πεσὼν 11 δὲ βροτὸς οὐκ ἔτι ἐστί. † Χρόνῳ γὰρ σπανίζεται θάλασσα, † (κ) ποταμὸς δὲ ἐρημωθεὶς ἐξηράνθη. 12 † Ἄνθρωπος δὲ κοιμηθεὶς (λ) οὐ μὴν ἀναστῇ † ἕως ἂν ὁ οὐρανὸς οὐ μὴ συῤῥαφῇ, † καὶ οὐκ ἐξυπνισθήσονται ἐξ ὕπνου αὐτῶν. 13 † Εἰ γὰρ ὄφελον ἐν ᾅδῃ με (μ) ἐφύλαξας, † ἔκρυψας δέ με ἕως ἂν παύσηταί σου ἡ ὀργὴ, καὶ τάξῃ μοι χρόνον ἐν ᾧ μνείαν 14 μου ποιήσῃ. † Ἐὰν γὰρ ἀποθάνῃ ἄνθρωπος, ζήσεται † συντελέσας ἡμέρας τοῦ βίου αὐτοῦ. † (ν) ὑπομενῶ ἕως πάλιν 15 γένωμαι. † Εἶτα (ξ) καλέσεις, ἐγὼ δέ σοι ὑπακούσομαι, † τὰ δὲ ἔργα τῶν χει-16 ρῶν σου μὴ ἀποποιοῦ. Ἠρίθμησας δέ μου τὰ ἐπιτηδεύματα, καὶ οὐ μὴ παρ-17 έλθῃ σε οὐδὲν τῶν ἁμαρτιῶν μου. † Ἐσφράγισας δέ μου (ʼ) τὰς ἀνομίας ἐν βαλαντίῳ, (ο) ἐπεσημήνω δὲ εἴ τι ἄκων παρ-18 έβην. † Καὶ πλὴν ὄρος (π) πίπτον διαπεσεῖται, † καὶ πέτρα παλαιωθήσεται 19 ἐκ τοῦ τόπου αὐτῆς. † Λίθους (ρ) ἐλέαναν ὕδατα, † καὶ κατέκλυσεν ὕδατα ὕπτια τοῦ χώματος τῆς γῆς· † καὶ 20 ὑπομονὴν ἀνθρώπου ἀπώλεσας. † Ὤσας αὐτὸν εἰς τέλος, καὶ ᾤχετο· † (σ) ἐπέστησας αὐτῷ (τ) τὸ πρόσωπον, καὶ ἐξ-21 απέστειλας. † Πολλῶν δὲ γενομένων τῶν υἱῶν αὐτοῦ, οὐκ οἶδεν· † (υ) ἐὰν δὲ ὀλίγοι 22 γένωνται, οὐκ ἐπίσταται. Ἀλλ' ἢ αἱ σάρκες αὐτοῦ ἤλγησαν, † ἡ δὲ ψυχὴ αὐτοῦ (φ) ἐπένθησεν.

ΚΕΦ. ιε'.

1 † ὙΠολαβὼν δὲ Ἐλιφὰζ ὁ (α) Θαι-2 μανίτης, λέγει, (β) † Πότερον σοφὸς ἀπόκρισιν δώσει συνέσεως (γ) πνεῦμα, † 3 καὶ ἐνέπλησε πόνον γαστρὸς, † (δ) Ἐλέγχων ἐν ῥήμασιν οἷς οὐ δεῖ, † καὶ ἐν λόγοις οἷς 4 οὐδὲν ὄφελος; † (ε) Οὐ καὶ σὺ ἀπεποιήσω φόβον, † συνετελέσω δὲ ῥήματα 5 τοιαῦτα ἔναντι (ζ) τοῦ κυρίου; † Ἔνοχος εἶ ῥήμασι στόματός σου, † (η) οὐδὲ διέ-6 κρινας ῥήματα δυναστῶν. † (ʼ) Ἐλέγξαι σε τὸ σὸν στόμα καὶ μὴ ἐγὼ, † τὰ δὲ χεί-7 λη σου (ϑ) καταμαρτυρήσουσίν σου. † Τί γάρ; μὴ πρῶτος (ι) ἀνθρώπων ἐγεννή-8 θης; † ἢ πρὸ θινῶν ἐπάγης; † Ἢ σύνταγμα κυρίου (κ) ἀκήκοας; † ἢ συμβούλῳ σοι ἐχρήσατο ὁ θεός; † εἰς δέ σε 9 ἀφίκετο σοφία; † Τί γὰρ οἶδας, ὃ οὐκ οἴδαμεν; † ἢ τί (λ) συνίεις σὺ, ὃ οὐ 10 καὶ ἡμεῖς; † Καί γε πρεσβύτης καί γε παλαιὸς ἐν ἡμῖν, † βαρύτερος τοῦ πατρός 11 σου ἡμέραις. † Ὀλίγα ὧν ἡμάρτηκας μεμαστίγωσαι, † μεγάλως ὑπερβαλλόντως λε-12 λάληκας. † (μ) Τί ἐτόλμησεν ἡ καρδία σου; † ἢ (ν) τί ἐπήνεγκαν οἱ ὀφθαλμοί σου,

9 Ab odore aquæ germinabit, & faciet meſſem, ſicut novella plantatio. 10 Vir verò cùm mortuus fuerit, abiit: & mortalis, cum ceciderit, non ultrà eſt. 11 Tempore enim rareſit (f) mare, (g) & fluvius deſolatus exaruit. 12 Homo autem cùm dormierit, non utique reſurget: quoaduſque cœlum (h) non ſit conſutum: & non excitabuntur de ſomno ſuo. 13 Itaque utinam apud inferos me cuſtodîſſes, & abſcondiſſes me, donec requieſceret ira tua, & conſtituas mihi tempus, in quo memoriam meî facias. 14 Si enim mortuus fuerit homo; vivet conſummatis diebus vitæ ſuæ: (i) ſuſtinebo donec rurſus fiam: 15 Deindè vocabis, & ego obediam tibi: ſed opera manuum tuarum ne repellas. 16 Numerâſti autem adinventiones meas, & non præteribit te ullum peccatorum meorum: 17 Signâſti autem in ſacculo iniquitates meas, & annotâſti, ſi quid invitus erravi: 18 Et quidem mons cadens decidet, & petra veteraſcet de loco ſuo: 19 lapides levigaverunt aquæ, & demerſerunt aquæ ſupina cumuli terræ: & (k) patientiam hominis perdidiſti: 20 Impuliſti eum in finem, & abiit: (l) adjeciſti ei faciem, & dimiſiſti: 21 Et cùm multi fuerunt filii ejus, neſcit: ſin autem pauci (m) fuerint, ignorat: 22 Sed carnes ejus doluerunt, & anima ejus luxit.

CAP. XV.

1 REſpondens autem Eliphaz 2 Themanites, ait; Nunquid ſapiens reſponſionem dabit ſcientiæ (a) ſpiritus: & (b) implevit dolorem ventris, 3 Arguens in verbis quibus non oportet, & in ſermonibus, quibus nulla utilitas? 4 Nonne & tu (c) repuliſti timorem, (d) conſummâſti autem verba talia coram Domino? 5 Reus es verbis oris tui, neque dijudicâſti verba potentum: 6 Arguat te os tuum, & non ego: Et labia tua teſtificabuntur contra te. 7 Quid enim? nunquid primus homo natus es? aut ante colles (e) concretus es? 8 Aut (f) conſtitutionē Domini audîſti? aut conſiliario te uſus eſt Deus, & 9 in te pervenit ſapientia? Quid enim nôſti, quod non novimus? aut quid intelligis tu, quod non & nos? 10 Sed & ſenex & antiquus in nobis eſt patre tuo (g) gravior diebus: 11 Pauca præ iis quæ peccâſti, accepiſti verbera: valdè ſupra modum locutus es. 12 (h) Quid auſum fuit cor tuum? aut quid ſuſtinuerunt oculi tui,

MS.A. (ϑ) καὶ ποιήσει θερισμὸν, (ι) καὶ πεσὼν βροτὸς (κ) ποταμοὶ δὲ ἐρημωθέντες ξηρανθήσονται. (λ) οὐ μὴ ἀναστῇ καὶ οὐ μὴ ἐξεγερθῇ ἕως ἂν ὁ οὐρανὸς παλαιωθῇ, καὶ οὐκ (μ) φυλάξεις, κρύψεις δέ με (ν) ὑπομενῶ σαι ἕως ἂν πάλιν (ξ) καλέσεις με, ἐγὼ (ʼ) τὰ ἁμαρτήματα ἐν (ο) καὶ ἐπεσημήνω εἴ τι (π) * πίπτων πεσεῖται, (ρ) ἐλέανεν (σ) καὶ ἐπέστησας (τ) τὸ πρόσωπόν σου, καὶ ἐξαπέστειλας. (υ) ἐάν τε (φ) ἐπ' αὐτῷ ἐπένθησεν. Κεφ. ιε'. MS.A. (α)* Θεμανίτης, (β) Τίνα ἄρα σοφὸς (γ) πνεύματος; ἐμπλήσει δὲ (δ) Ἐλέγχων με ἐν ῥήμασιν κενοῖς, ἐν λόγοις (ε) Ὅτι καὶ σοὶ (ζ) κυρίου; (η) καὶ οὐ (ʼ) Ἐλέγξει (ϑ) καταμαρτυρήσει (ι) ἄνθρωπος (κ) ἀκήκοας; ἢ εἰς σὲ ἀφίκετο σοφία; (λ) σὺ νοήσεις, ὃ οὐχί (μ) Τί ὅτι (ν) Τί σοι

תרגום TARGUM.

מן הנית מוי ילבלב ויעביד ואוא היך נצבא: וגברא ימות ויתמקמק אתנגיד בר נש ואן הוא: אלו מוי מן ימא דסוף והדרו לבית כנשתהון ויורדנא אתנגיב 9 10 11
ויתיבש קדם ארונא דיי והדרו על בית פרצידיהון: ובר נש שכיב ולא יקום עד דלית שמיא לא יתערון רשיעיא ולא מתערין מבית דמכהון: לוי בבית 12 13
קבורתא תטשנני תטמרנני עד דיתוב רוגזך תשוי לי גזירא ותדכרנני: אין ימות גברא רשיעא אפשר דיחי מטול היכנא כל יומי חילי אוריך עד דייתי חלופי 14
חיי: תהי קרי ואנא אתיב לך לעובדי אידך תרגג: ארום כדון פסיעתי תמני לא תנטור על סורחני: חתים בספר דכרניא מרודי ותחבר על עויתי: וברם 15 16 17 18
טור נפל יהר וטינר מסתלק מן אתריה: תא וברם לוט דאתפרש מאברהם דמתיל לטור רם נתר ותקיפא סלק איקר שכנתיה מסדום דהוא אתריה:
אבניא שיפא מיא שטפא כתדא עפרא דארעא וסבר בר נש הובדתא: תשלמניה לעלמא ויזיל מתני קלסתריה ותשדרניה: שרין ביקר בנוי ולא 19 20 21
יידע ומצטערין ולא יתבין להון: ברם בסריה מן רחשא עלוי כאב ונפשיה בבית דינא עלוי מתאבלא: תא ברם בסריה עד לא יסתתם גוללא 22
עלוהי כאב ונפשיה שבעתא יומי אבלא עלוי מתאבלא בבית קבורתא:

טו

ואתיב אליפז דמן תימן ואמר: האפשר דחכימא יתיב דעתא דדמי לזעפא וימלי היך רוח קדומא כרסיה: דמכסן במלין ולא יליף ומליא דלית משׁשא 1 2 3
בהון: לחוד את אין תפש דחלתא ותבצור מלתא קדם אלהא: ארום יאלף סורחנך פומך ותהי בחר לישנא דחכימיא: יחיבנך פומך ולא אנא 4 5 6
וספותך יסהדון בך: הא בקדמאי אדם בלא אבא ואמא אתילדתא וקדם גלמתא אתבריתא: אפשר דברז אלהא תשמע ואטפת לותך חוכמתא: מה 7 8 9
ידעתא ולא נדע תתבין ולא נבנא הוא: לחוד סיב וקשיש בנא ודרב מאבוך יומיא: תא לחוד אליפז דסיב ובלדד דקשיש בהדרנא וצופר דרב מאבוך 10
יומין: הזעיר מנך נחמתא דאלהא ומללא בניח חיי למללא נבך: מה ילפנך רעיונך ומה מרמזין עינך: 11 12

Versio SYRIACA.

9 10 * ܡܢ ܪܝܚܐ ܕܡ̈ܝܐ ܢܦܪܥ܆ ܘܢܥܒܕ ܛܪ̈ܦܐ ܐܝܟ ܢܨܒܬܐ܂ * ܘܓܒܪܐ ܡܝܬ ܘܒܠܐ܂ ܘܐܒܕ ܒܪܢܫܐ ܘܠܝܬܘܗܝ܂ * ܢܚܪܒܘܢ
11 12 ܡ̈ܝܐ ܡܢ ܝܡܐ܆ ܘܢܗܪܐ ܚܪܒ ܘܝܒܫ܂ * ܘܓܒܪܐ ܕܫܟܒ ܠܐ ܩܐܡ܂ ܥܕ ܕܒܠܝܢ ܫܡܝܐ ܠܐ ܢܬܬܥܝܪܘܢ܂ ܘܠܐ ܢܬܢܥܪܘܢ
13 ܡܢ ܫܢܬܗܘܢ܂ * ܡܢ ܝܗܒ ܕܒܫܝܘܠ ܬܛܫܝܢܢܝ܂ ܘܬܟܣܝܢܢܝ ܥܕܡܐ ܕܢܥܒܪ ܪܘܓܙܟ܂ ܘܬܣܝܡ ܠܝ
14 ܩܝܡܐ ܕܬܬܕܟܪܢܝ܂ * ܐܢ ܡܝܬ ܓܒܪܐ ܢܚܐ܆ ܒܟܠܗܘܢ ܝܘ̈ܡܬܐ ܕܛܠܝܘܬܗ ܡܣܟܐ ܥܕܡܐ
15 ܕܬܐܬܐ ܣܝܒܘܬܗ܂ * ܐܢ ܬܩܪܝܢܝ܂ ܐܥܢܝܟ܂ ܘܥܠ ܥܒܕ ܐܝ̈ܕܝܟ ܐܬܪܥܐ܂ * ܡܛܠ ܕܗܫܐ ܫܒܝ̈ܠܝ ܠܐ
16 17 ܬܡܢܐ܂ ܘܠܐ ܬܛܪ ܥܠ ܚܛ̈ܗܝ܂ * ܚܬܘܡ ܒܟܝ̈ܣܐ ܣܟ̈ܠܘܬܝ܂ ܘܐܥܒܪ ܡܢܝ ܚܛ̈ܗܝ܂ * ܫܪܝܪܐܝܬ ܛܘܪܐ
18 19 ܪܒܐ ܢܦܠ܂ ܐܘ ܫܘܥܐ ܡܫܬܢܐ ܡܢ ܕܘܟܬܗ܂ * ܟܐ̈ܦܐ ܫܚܩܝܢ ܡ̈ܝܐ܂ ܐܘ ܫܥܝܐ ܥܦܪܐ ܕܐܪܥܐ܂
20 ܣܒܪܗ ܕܒܪܢܫܐ ܐܘܒܕܬ܂ * ܬܬܩܦܝܘܗܝ ܠܥܠܡ܂ ܘܢܗܠܟ܂ ܒܒܗܬܬܐ ܕܐ̈ܦܘܗܝ ܬܫܕܝܘܗܝ܂ * ܐܢ ܢܣܓܘܢ
21 22 ܒܢܘ̈ܗܝ܂ ܠܐ ܝܕܥ܂ ܘܐܢ ܢܒܨܪܘܢ ܠܐ ܡܣܬܟܠ ܒܗܘܢ܂ * ܒܪܡ ܒܣܪܗ ܥܠܘܗܝ ܟܐܒ܂ ܘܢܦܫܗ ܥܠܘܗܝ
1 ܬܬܐܒܠ܂ * ܩܦܠܐܘܢ * ܝܗ * ܘܥܢܐ ܐܠܝܦܙ ܬܝܡܢܝܐ ܘܐܡܪ܂ * ܚܟܝܡ
2 3 ܪܘܚܐ ܢܦܢܐ ܒܝܕܥܬܐ܂ ܘܢܡܠܐ ܟܪܣܗ ܚܡܬܐ܂ * ܕܢܟܣ ܡ̈ܠܐ ܕܠܐ ܦܩܚܢ܂ ܘܡ̈ܠܐ ܕܠܝܬ ܒܗܝܢ ܚܝܠܐ܂
4 5 * ܐܦ ܐܢܬ ܡܒܛܠ ܐܢܬ ܕܚܠܬܐ܂ ܘܡܣܓܐ ܐܢܬ ܡܡܠܠܐ ܩܕܡ ܐܠܗܐ܂ * ܡܛܠ ܕܢܠܦ ܦܘܡܟ ܣܟܠܘܬܐ܂
6 ܘܬܓܒܐ ܐܢܬ ܠܫܢܐ ܕܢܟܠܐ܂ * ܢܚܝܒܟ ܦܘܡܟ܂ ܘܠܐ ܐܢܐ܂ ܘܣܦܘ̈ܬܟ ܢܣܗ̈ܕܢ ܒܟ ܩܕܡܝ܂ * ܕܠܡܐ܂ ܩܕܡ
7 8 ܒܢܝ̈ܢܫܐ ܐܬܝܠܕܬ܂ ܐܘ ܩܕܡ ܪ̈ܡܬܐ ܐܬܒܛܢܬ܂ * ܒܐܪ̈ܙܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܫܡܥܬ܂ ܐܘ ܐܬܓܠܝܬ ܠܟ ܚܟܡܬܐ܂ * ܡܢܐ ܝܕܥ
9 10 ܐܢܬ ܕܚܢܢ ܠܐ ܝܕܥܝܢܢ܂ ܐܘ ܡܢܐ ܡܣܬܟܠ ܐܢܬ ܕܠܐ ܗܘܐ ܠܘܬܢ܂ * ܗܐ ܐܝܬ ܒܢ ܕܣܒ܂ ܐܦ ܐܝܬ ܒܢ ܕܩܫܝܫ܂
11 ܘܩܕܝܡ ܐܦ ܡܢ ܐܒܘܟ ܒܝܘ̈ܡܬܐ܂ * ܐܥܒܪ ܡܢܟ ܡܘܥܕܢܘܬܗ ܕܐܠܗܐ܂ ܘܡܠܠ ܒܢܝܚܐ ܥܡ ܢܦܫܟ܂
12 * ܠܡܢܐ ܐܬܬܪܝܡ ܠܒܟ܂ ܘܠܡܢܐ ܡܪܡܙܢ ܥܝܢܝ̈ܟ܂

Versio ARABICA.

9 10 * من رايحة الماء يفرع * ويصنع ورقا مثل المنصوب * والرجل يبلا ويموت * ويبيد الانسان فلا يكون
11 12 * تنفد المياه من البحر * والنهر يخرب وييبس * والرجل اذا اضطجع لا يقوم حتى تبلا السماء لا يستيقظون
13 من سنتهم ولا ينتبهون * من الذي صنع انك في الهاوية تخبيني وتسترني حتى يجوز غضبك * وتجعل
14 15 لي ميثاقا لتذكرني * لعل ان مات الرجل يحيا * وجميع ايام شبابه ينتظر ان ياتي كبره * ان تدعوني
16 فاني اجيبك * وعلى عمل يديك افتكر * من اجل ان طرايقي الان لا تحصي * ولا تحفظ على خطاياي
17 18 * احتم في الاصرار اثامي * وابعد مني خطاياي * احقا ان الجبل العظيم يسقط * او الكهف يزول من مكانه
19 20 * الحجر تسحق بالماء ويطحن غبار الارض * رجاء الانسان اهلكت * تعظمه للدهر فيجري * بخزية
21 22 وجهه تلقيه * فان كثر بنوه لا يعلم * وان قلوا لم يعرف * ولكن جسده عليه يتوجع * ونفسه عليه
1 تجزع * الفصل الخامس عشر * فاجاب اليفاز التيمني وقال
2 3 * حكيم الروح يجيب بالمعرفة * ويملا بطنه حمية * ليبكت اقاويل لا تنفع * وكلاما ليس فيه
4 5 فضل * وانت ايضا تبطل المخافة وتكثر الكلام قدام الله * حتى يالف فمك الخطا وترضا بلسان
6 7 المكر * فيدحضك فمك ولا انا * وشفتاك يشهدن عليك قدامي * اعساك قبل الناس ولدت او من
8 9 قبل الروابي حبلت * او باسرار الرب سمعت * او ظهرت لك الحكمة * ماذا الذي تعلم ونحن لا نعلمه *
10 او ماذا تفهم وليس هو عندنا * فهوذا فينا الشيخ وايضا فينا الكبير * والذي اقدم ايضا من ابيك
11 12 اياما * ابعد عنك تغيظ الله * وتكلم بالسكون عند نفسك * لماذا ارتفع قلبك * ولماذا تغمض عينيك *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Ab odore aquarum pullu- 9
labit, et faciet folia velut
plantatum. Vir autem (d) 10
marceſcit, & moritur; &
perit homo, nec erit. De- 11
ficient aquæ de mari, &
flumen deſtruetur &
areſcet. Et vir, cùm ja- 12
cuerit, non reſurget: do-
nec marceſcat cælum non
excitabuntur à ſomno
ſuo, nec evigilabunt. Quis 13
faciat ut in inferno abſ-
condas me, & protegas
me donec pertranſeat fu-
ror tuus? & ponas mihi
fœdus ut recorderis mei?
Anne ſi moritur vir, vi- 14
vet? & omnibus diebus
juventutis ſuæ expectat
donec veniat ſua ſene-
ctus. Si vocabis me, et ego 15
reſpondebo tibi, & de
opere manuum tuarum
cogitabo. Quoniam ſemi- 16
tas meas præſentes ne nu-
meres, neq; obſerves con-
tra me peccata mea. Clau- 17
de in ſacculis ſcelera
mea, & remove à me pec-
cata mea. Verúmne eſt 18
ingentem montem cadere,
aut rupem migrare è loco
ſuo? Lapis conteritur a- 19
quis? (e) *& molitur pul-*
vis terræ? ſpem hominis
perdidiſti. Magnificabis 20
eum in æternum, & (f)
curret: confuſione faciei
ejus dejicies eum: Adeo- 21
que ſi multiplicati fue-
rint filii ejus, neſcit: &
ſi diminuti fuerint, igno-
rat (g). *At* (h) *corpus ejus* 22
ſuper eum dolet, & ani-
ma ejus ſuper eum con-
ſternatur.

CAP. XV.

RESpondit Eliſaz Te- 1
manitez et dixit, Sapiens 2
ſpiritu reſpondet cum ſci-
entia, & implet ventrem
ſuum irâ, ut arguat dicta 3
quæ non (a) *proſunt, &*
verba in quibus non eſt
virtus. Et tu adhuc ir- 4
ritum facis timorem, &
multiplicas ſermones co-
ram Deo. Ita ut componat 5
os tuum peccatum, &
complaceas tibi in lingua
doli. Te condemnet os tu- 6
um, & non ego: & labia
tua teſtentur contra te in
conſpectu meo. Num 7
fortè ante homines natus
es, vel ante colles conce-
ptus? An Domini ſecreta 8
audiviſti, aut apparuit
tibi ſapientia? Quid 9
ſcis quod nos neſciamus?
aut quid intelligis quod
non ſit apud nos? Ecce 10
inter nos eſt ſenex, & in-
ter nos quoque eſt gran-
dævus, & qui antiquior
eſt etiam patre tuo die-
bus. (b) *Remove à te irri-* 11
tationem Dei, & loquere
cum tranquillitate apud
animam tuam. Quare 12
elatum eſt cor tuum? &
(c) *quare contrahis oculos*
tuos,

INTERP. SYRIACA.

(d) moritur, & marceſcit; (e) aut ſponte naſcens de pulvere terræ? (f) incedit: (g) eos (h) caro ejus CAP. XV. (a) ſunt recta, (b) Cohibe à te minas Dei, (c) quid annuunt oculi tui,

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ab amœnitate aquarum germinabit, & faciet ramum ſicut plantatio. Vir autem moritur & debilitatur: interit filius hominis, & ubi eſt? Abierunt aquæ de ma- 9 10
ri rubro, & reverſæ ſunt ad locum congregationis ſuæ: & Jordanis exſiccatus eſt & aruit ante arcam Domini, & reverſæ ſunt ad locum alvei ſui. Et filius hominis 11 12
dormit, & non conſurgit donec non ſint cœli: non evigilabunt impii, nec ſuſcitabuntur à domo ſomni ſui. *Utinam* in domo ſepulturæ celes me, & abſcondas me 13
donec avertatur furor tuus, & ponas mihi ſtatutum ut recorderis mei? Si moriatur vir impius, nunquid poteſt vivere? propterea omnibus diebus militiæ meæ expe- 14
ctabo, donec veniat immutatio vitæ meæ. Vocabis, & ego reſpondebo tibi: opera manuum tuarum concupiſces. Nunc enim greſſus meos numeraſti, ne obſer- 15 16
ves ſcelera mea. Signatum eſt in libro memorialium delictum meum, & accumulas ſuper iniquitates meas. Veruntamen mons cadens defluet; & petra transferetur de 17 18
loco ſuo. *Targum aliud*: Veruntamen *Lot, qui ſeparatus eſt ab Abraham, qui ſimilis erat monti excelſo, diffluxit; & fortis ſuſtulit gloriam majeſtatis ſuæ de Sedom, quæ*
locus ejus erat. Lapides comminuunt aquæ, & inundant ſponte naſcentia pulveris terræ: ſic ſpem filii hominis perdidiſti. Perficies eum in ſeculo, & abibit, im- 19 20
mutans vultum ejus, & dimittes eum. Habitant in gloria filii ejus, & neſcit; tribulantur, & non attendit eis. Veruntamen caro ejus *à vermibus* ſuper eum dolebit: 21 22
& anima ejus *in domo judicii* ſuper eum luget. *Targum aliud*: Veruntamen caro ejus antequam claudatur feretrum ſuper eum, dolebit: & anima ejus *ſeptem diebus*
luctus ſuper eum luget in domo ſepulturæ.

CAP. XV.

ET reſpondit Eliphaz, qui erat de Theman, & ait: Nunquid ſapiens poteſt reſpondere ſententiam quæ ſimilis ſit vento, & implebit quaſi vento urente ventrem ſu- 1 2
um. Qui arguit verbis, & nihil docet, & ſermonibus in quibus non eſt utilitas. Attamen ſi tu multiplicâſſes timorem, & minuiſſes verbum coram Deo. Docebit enim 3 4 5
te iniquitatem tuam os tuum, & eliges linguam ſapientum. Condemnabit te os tuum & non ego, & labia tua teſtificabuntur contra te. Nunquid cum primo homine 6 7
citra patrem et matrem genitus es, et ante colles creatus es? Nunquid in ſecreto Dei audîſti, et extincta eſt tibi ſapientia? Quid nôſti quod neſciamus? quid intel- 8 9
ligis quod non ſit nobiſcum? Veruntamen canus et longævus inter nos, et major patre tuo diebus. *Targum aliud*: Veruntamen *Eliphaz qui* canus *eſt*, et *Bildad* 10
longævus *eſt nobiſcum*, et *Sophar qui* major *eſt* patre tuo diebus. Nunquid parum tibi ſunt conſolationes Dei? et verbum in quiete videtur *loqui* apud te. Quid do- 11 12
cet te cogitatio tua, et quid annuunt oculi tui?

איוב : יו

tuo ore ex protulisti & ; tuus spiritus *Deum* *ad* respondit Quia
13 כִּי־תָשִׁיב אֶל־אֵל רוּחֶךָ וְהֹצֵאתָ מִפִּיךָ
natus se justificet quòd & ; sit mundus quòd homo Quid . sermones
14 מִלִּין׃ מָה־אֱנוֹשׁ כִּי־יִזְכֶּה וְכִי־יִצְדַּק יְלוּד
fuerunt mundi non cœli & ; credet non suis sanctis in Ecce ? *mulieris*
15 אִשָּׁה׃ הֵן בִּקְדֹשָׁיו לֹא יַאֲמִין וְשָׁמַיִם לֹא־זַכּוּ
bibens vir ; *graveolens* & , abominabilis *quia* Etiam . ejus oculis in
16 בְעֵינָיו׃ אַף כִּי־נִתְעָב וְנֶאֱלָח אִישׁ־שֹׁתֶה
, vidi hoc & ; me audi , tibi *Nunciabo* ? iniquitatem aquam sicut
17 כַמַּיִם עַוְלָה׃ אֲחַוְּךָ שְׁמַע־לִי וְזֶה־חָזִיתִי
. suis patribus à *celarunt* non & ; *indicarunt* sapientes Quod . narrabo &
18 וַאֲסַפֵּרָה׃ אֲשֶׁר־חֲכָמִים יַגִּידוּ וְלֹא כִחֲדוּ מֵאֲבוֹתָם׃
. eorum mediū *in* alienus transivit non & ; terra est data solis Eis
19 לָהֶם לְבַדָּם נִתְּנָה הָאָרֶץ וְלֹא־עָבַר זָר בְּתוֹכָם׃
annorum numerus & ; *se excrucians* ipse impius diebus Cunctis
20 כָּל־יְמֵי רָשָׁע הוּא מִתְחוֹלֵל וּמִסְפַּר שָׁנִים
pace in ; ejus auribus in timorum Sonitus . *timendo sunt absconditi*
21 נִצְפְּנוּ לֶעָרִיץ׃ קוֹל־פְּחָדִים בְּאָזְנָיו בַּשָּׁלוֹם
; tenebris à redire credet Non . *ei superveniet* vastator
22 שׁוֹדֵד יְבוֹאֶנּוּ׃ לֹא־יַאֲמִין שׁוּב מִנִּי־חֹשֶׁךְ
; *ubinam* *panem ad* *ipse* *Vagans* . gladium *ad* *ipse* *conspectum* &
23 וְצָפוּ הוּא אֱלֵי־חָרֶב׃ נֹדֵד הוּא לַלֶּחֶם אַיֵּה
eum Terrebunt . tenebrarum dies sua manu in est paratus quòd novit
24 יָדַע כִּי־נָכוֹן בְּיָדוֹ יוֹם־חֹשֶׁךְ׃ יְבַעֲתֻהוּ
. *hastiludium* ad paratus rex sicut *ei prævalebit* ; *coarctatio* & tribulatio
צַר וּמְצוּקָה תִּתְקְפֵהוּ כְּמֶלֶךְ עָתִיד לַכִּידוֹר׃
. se *roborabit* *Saddai* *ad* & ; suam manum Deum *ad* extendit Quia
25 כִּי־נָטָה אֶל־אֵל יָדוֹ וְאֶל־שַׁדַּי יִתְגַּבָּר׃
. ejus scutorum *umbonum* densitate in ; collo in eum *ad* Curret
26 יָרוּץ אֵלָיו בְּצַוָּאר בַּעֲבִי גַּבֵּי מָגִנָּיו׃
super *lubricum* fecit & ; suo adipe in *suas facies* operuit Quia
27 כִּי־כִסָּה פָנָיו בְּחֶלְבּוֹ וַיַּעַשׂ פִּימָה עֲלֵי־
habitabunt non domos , *excisas* civitates inhabitavit Et . *inguine*
28 כָסֶל׃ וַיִּשְׁכּוֹן עָרִים נִכְחָדוֹת בָּתִּים לֹא־יֵשְׁבוּ
non & , ditabitur Non . *acervos in* sunt paratæ quæ : *sibi*
29 לָמוֹ אֲשֶׁר הִתְעַתְּדוּ לְגַלִּים׃ לֹא־יֶעְשַׁר וְלֹא
. eorum *complementum* terra in *extendetur* nec ; ejus *facultas* stabit
יָקוּם חֵילוֹ וְלֹא־יִטֶּה לָאָרֶץ מִנְלָם׃
; flamma siccabit ejus tenerum ramum , tenebris è recedet Non
30 לֹא־יָסוּר מִנִּי־חֹשֶׁךְ יֹנַקְתּוֹ תְּיַבֵּשׁ שַׁלְהָבֶת
; *errans* *mendacio in* credet Non . ejus oris spiritu in recedet &
31 וְיָסוּר בְּרוּחַ פִּיו׃ אַל־יַאֲמֵן בַּשָּׁו נִתְעָה
; *complebitur* suo die non In . ejus *immutatio* erit mendacium sed
32 כִּי־שָׁוְא תִּהְיֶה תְמוּרָתוֹ׃ בְּלֹא־יוֹמוֹ תִּמָּלֵא
; ejus acerbam uvam vitis sicut *Dejiciet* . viruit non ejus ramus &
33 וְכִפָּתוֹ לֹא רַעֲנָנָה׃ יַחְמֹס כַּגֶּפֶן בִּסְרוֹ
hypocritæ *comitium* Quia . ejus florem olea tanquam projiciet &
34 וְיַשְׁלֵךְ כַּזַּיִת נִצָּתוֹ׃ כִּי־עֲדַת חָנֵף
, *latorem* Concipere . *muneris* *tentoria* peredit ignis & ; *solitarium*
35 גַּלְמוּד וְאֵשׁ אָכְלָה אָהֳלֵי־שֹׁחַד׃ הָרֹה עָמָל
. fraudem parabit eorum venter & ; mendacium parere &
וְיָלֹד אָוֶן וּבִטְנָם תָּכִין מִרְמָה׃

CAP. XVI. יו

consolatores : *multa* hæc sicut Audivi : dixit & , Ijob respondit Et
1 2 וַיַּעַן אִיּוֹב וַיֹּאמַר׃ שָׁמַעְתִּי כְאֵלֶּה רַבּוֹת מְנַחֲמֵי
te roborabit quid aut ? *spiritus* verbis finis Nunquid . vos omnes *miseriæ*
3 עָמָל כֻּלְּכֶם׃ הֲקֵץ לְדִבְרֵי־רוּחַ אוֹ מַה־יַּמְרִיצְךָ
? responderis si
כִּי תַעֲנֶה׃

Verſio VULG. LAT.

13 Quid tumet contra Deum ſpiritus tuus, ut proferas de ore tuo hujuſcemodi ſermones ?
14 Quid eſt homo, ut immaculatus ſit, & ut juſtus appareat
15 natus de muliere ? Ecce inter ſanctos ejus nemo immutabilis, & cœli non ſunt mundi
16 in conſpectu ejus. Quantò magis abominabilis & inutilis homo, qui bibit quaſi aquam
17 iniquitatem ? Oſtendam tibi, audi me : quod vidi narrabo
18 tibi. Sapientes confitentur, & non abſcondunt patres
19 ſuos. Quibus ſolis data eſt terra, & non tranſivit alienus
20 per eos. Cunctis diebus ſuis impius ſuperbit, & numerus annorum incertus eſt tyranni-
21 dis ejus. Sonitus terroris ſemper in auribus illius : & cùm pax ſit, ille ſemper inſidias ſu-
22 ſpicatur. Non credit quòd reverti poſſit de tenebris ad lucem, circumſpectans undique
23 gladium. Cùm ſe moverit ad quærendum panẽ, novit quòd paratus ſit in manu ejus tene-
24 brarum dies. Terrebit eum tribulatio, & anguſtia vallabit eum, ſicut regem qui præpara-
25 tur ad prælium. Tetendit enim adverſùs Deum manum ſuam, & contra Omnipotentẽ
26 roboratus eſt. Cucurrit adverſùs eum erecto collo, & pingui
27 cervice armatus eſt. Operuit faciem ejus craſſitudo, & de lateribus ejus arvina dependet.
28 Habitavit in civitatibus deſolatis, & in domib⁹ deſertis, quæ
29 in tumulos ſunt redactæ. Non ditabitur, nec pſeverabit ſubſtantia ejus, nec mittet in terra
30 radicem ſuam. Non recedet de tenebris : ramos ejus areſaciet flamma, & auferetur ſpiritu o-
31 ris ſui. Non credet fruſtrà errore decept⁹, quòd aliquo pre-
32 tio redimendus ſit. Antequàm dies ejus impleantur, peribit :
33 & manus ejus areſcent. Lædetur quaſi vinea in primo flore botrus ejus, & quaſi oliva pro-
34 jiciens florem ſuum. Congregatio enim hypocritæ ſterilis, & ignis devorabit tabernacula eorum, qui munera libenter
35 accipiunt. Concepit dolorem, & peperit iniquitatem, & uterus ejus præparat dolos.

CAP. XVI.

1 REſpondens autem Job, di-
2 xit ; Audivi frequenter talia : conſolatores onerosi omnes
3 vos eſtis. Numquid habebunt finem verba ventoſa ? aut aliquid tibi moleſtum eſt ſi loquaris ?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

13 † Ὅτι θυμὸν ἔρρηξας ἔναντι κυρίου, † ἐξήγαγες δὲ ἐκ στόματος ῥήματα τοιαῦ-
14 τα; † Τίς γὰρ ὢν (ξ) βροτὸς, ὅτι ἔσται ἄμεμπτος; † ἢ ὡς ἐσόμενος δίκαιος γεν-
15 νητὸς γυναικός; † Εἰ κατὰ ἁγίων οὐ (ο) πιστεύει, † οὐρανὸς δὲ οὐ καθαρὸς ἐναντίον
16 (π) αὐτοῦ. † Ἔα δὲ, ἐβδελυγμένος καὶ ἀκάθαρτος ἀνὴρ, πίνων (ρ) ἀδικίας ἴσα
17 ποτῷ. † (σ) Ἀναγγελῶ δέ σοι, ἄκουέ
18 μου, † ἃ δὴ ἑώρακα, ἀναγγελῶ σοι, † Ἃ σοφοὶ (τ) ἐροῦσιν, καὶ οὐκ ἔκρυψαν πατέρες
19 αὐτῶν. † Αὐτοῖς μόνοις ἐδόθη ἡ γῆ, † καὶ
20 οὐκ ἐπῆλθεν ἀλλογενὴς ἐπ' αὐτούς. † Πᾶς ὁ βίος (υ) ἀσεβοῦς ἐν φροντίδι, † ἔτη δὲ
21 ἀριθμητὰ δεδομένα δυνάστῃ. † Ὁ δὲ φόβος αὐτοῦ ἐν ὠσὶν αὐτοῦ· † ὅταν δοκῇ ἤδη (φ)
22 εἰρηνεύειν, ἥξει αὐτοῦ ἡ καταστροφή. † Μὴ πιστευέτω ἀποστραφῆναι ἀπὸ σκότους, (χ) ἐντέταλται γὰρ ἤδη εἰς χεῖρας σιδή-
23 ρου, † (ψ) Κατατέτακται δὲ εἰς σῖτα γυψίν. † οἶδε δὲ ἐν ἑαυτῷ ὅτι μένει εἰς πτῶμα· † (ω) ἡμέρα δὲ σκοτεινὴ αὐτὸν στρο-
24 βήσει, † Ἀνάγκη δὲ καὶ θλῖψις αὐτὸν καθέξει, † ὥσπερ στρατηγὸς πρωτοστάτης
25 (α) πίπτων· † Ὅτι ἦρκεν χεῖρας (β) ἐναντίον (γ) τοῦ κυρίου, † ἔναντι δὲ κυρίου παν-
26 τοκράτορος ἐτραχηλίασεν. † Ἔδραμε δὲ ἐναντίον αὐτοῦ ὕβρει † ἐν (δ) πάχει νώτου
27 ἀσπίδος αὐτοῦ. † Ὅτι ἐκάλυψε τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἐν στέατι αὐτοῦ, † καὶ ἐποίησε
28 περιστόμιον ἐπὶ τῶν (ε) μηρίων. † Αὐλισθείη δὲ πόλεις ἐρήμους, (ζ) εἰσέλθοι δὲ εἰς οἴκους ἀοικήτους· † ἃ δὲ (η) ἐκεῖνοι
29 ἡτοίμασαν, ἄλλοι ἀποίσονται. † Οὔτε μὴ πλουτισθῇ, οὔτε μὴ μείνῃ (θ) αὐτοῦ τὰ ὑπάρχοντα· † (ι) οὐ μὴ βάλῃ ἐπὶ τὴν γῆν
30 σκιὰν, † Οὐδὲ μὴ ἐκφύγῃ (κ) τὸ σκότος· † τὸν βλαστὸν αὐτοῦ (λ) μαράναι ἄνεμος, † (μ) ἐκπέσοι δὲ αὐτοῦ τὸ ἄνθος.
31 † Μὴ πιστευέτω ὅτι ὑπομενεῖ, † κενὰ γὰρ
32 (ν) ἀποβήσεται αὐτῷ. † Ἡ τομὴ αὐτοῦ πρὸ ὥρας φθαρήσεται, † καὶ ὁ ῥάδαμνος αὐτοῦ οὐ
33 μὴ πυκάσῃ. † Τρυγηθείη δὲ (ξ) ὡς ὄμφαξ πρὸ ὥρας, (ο) ἐκπέσοι δὲ ὡς ἄνθος
34 ἐλαίας. † Μαρτύριον γὰρ ἀσεβοῦς θάνατος· † πῦρ δὲ (π) καύσει οἴκους δωροδεκτῶν.
35 † Ἐν γαστρὶ δὲ λήψεται ὀδύνας, † ἀποβήσεται δὲ αὐτῷ κενὰ, ἡ δὲ κοιλία αὐτοῦ ὑποίσει (ρ) δόλον.

13 Quòd furorem erupiſti ante Dominum, (i) protuliſti autem ex ore verba talia? (k) Quis
14 enim cùm homo ſit, quia erit ſine crimine? aut tanquàm futurus juſtus natus de muliere? (l)
15 Si in ſanctis non credit, & cœlum non eſt mundum ante
16 eum: Sine (m) verò, abominatus & immundus vir bibens injuſtitias quaſi potionem?
17 Annuntiabo autem tibi, audi me: quæ utique vidi, an-
18 nuntiabo tibi: Quæ ſapientes dicent & non celaverunt parentes eorum.
19 Ipſis ſolis data eſt terra: nec ſupervenit illis extraneus.
20 Omnis vita impii in (n) ſolicitudine: anni autem (o) numerati potenti dati ſunt;
21 Timor autem ipſius in auribus ipſius: cùm putaverit ſe eſſe jam in pace, veniet ejus (p) ſubverſio.
22 Non credat converti à tenebris: (q) decretus enim eſt jam in manus ferri,
23 Et diſpoſitus in eſcas vulturum: novit autem in ſeipſo, quòd manet in ruinam: dies autem tenebroſa ipſum
24 verſabit: Anguſtia autem & tribulatio ipſum comprimet, ſicut dux in prima acie deci-
25 dens: Quia elevavit manus contra Deum, & contra Dominum omnipotentem induravit
26 cervicem. Cucurrit autem contra eum injuriâ in craſſitudine
27 dorſi ſcuti ſui. Quia operuit (r) faciem ejus in adipe ſuo, & fecit (ſ) periſtomium ſuper
28 femora. Habitet autem civitates deſertas, & ingrediatur in domos nõ habitatas: quæ autem illi paraverunt, alii auferent.
29 Et non ditabitur, nec permanebit ſubſtantia ejus: non immittet ſuper terram umbrã,
30 Neque effugiet tenebras: ſtirpem ejus areſaciet ventus, & decidat flos ejus.
31 Non credat, quia ſuſtinebit: vana enim evadent ei.
32 Præciſio ejus ante horam corrumpetur; & ramus ejus non (t) condenſabitur:
33 Vindemietur, ſicut acerſta ante horam, & decidat tanquàm flos olivæ.
34 (u) Teſtimonium enim impii mors: & ignis comburet domos eorum qui munera accipiunt.

(x) Concipiet & in ventre gemitus : evadent autem ei vana,
35 & venter ejus ſuſtinebit dolum.

ΚΕΦ. ιϛ'.

1 2 † ὙΠολαβὼν δὲ Ἰὼβ, λέγει, † Ἀκήκοα τοιαῦτα πολλὰ, † παρακλήτορες κακῶν
3 πάντες. † Τί γάρ; μὴ τάξις ἐστὶ ῥήμασι πνεύματος; † ἢ τί παρενοχλήσει σοι ὅτι ἀποκρίνῃ;

CAP. XVI.

1 REſpondens autem Job, ait;
2 Audivi talia multa: conſolatores (a) malorum omnes.
3 Quid ergò? nunquid ordo eſt ſermonibus ſpiritûs? aut quid moleſtum tibi erit, quod reſpondeas?

MS. A. (ξ) βροτὸς ἔσται (ο) πιστεύει μέμψις, ὁ οὐρανὸς δὲ (π) αὐτοῦ, † ἄστρα δὲ οὐκ ἄμεμπτα. Ἔα δὲ, (ρ) ἀδικίαν (σ) Ἀναγγέλλω οὖν σοι, σὺ δέ μου ἄκουε, ἃ δὴ ἑόρακα, ἀναγγέλλω (τ) ἀνήγγειλαν, καὶ οὐκ (υ) ἀσεβῶν (φ) εἰρηνεύεσθαι, τότε ἥξει ἡ καταστροφὴ αὐτοῦ. (χ) ἐντέτακται γὰρ ἤδη εἰς χεῖρας (ψ) † Καταπέπτει δὲ εἰς ἐξάλειψιν, καὶ κατατέτακται εἰς (ω) ἡμέρα σκοτεινὴ στροβήσει αὐτὸν, (α) πεπτωκώς· (β) ἔναντι (γ) κυρίου. (δ) πανεχίνῳ τῆς ἀσπίδος αὐτοῦ. (ε) μηρῶν αὐτοῦ † αὐχένος δὲ αὐτοῦ ὕβρεις. Αὐλισθείη (ζ) καὶ εἰσέλθοι εἰς (η) ἐκεῖνος ἡτοίμασεν, (θ) τὰ ὑπάρχοντα αὐτοῦ· (ι) οὐδὲ μὴ (κ) σκότος· (λ) μαραίνει (μ) καὶ ἐκπέσοι αὐτοῦ (ν) αὐτῷ ἀναβήσεται. (ξ) ὥσπερ (ο) καὶ ἐκπέσοι ὥσπερ (π) κατακαύσει οἴκους δωροδεκτῶν. Καὶ ἐν γαστρὶ λήμψονται (ρ) πόνον.

תרגום TARGUM.

13 14 15 אֲרוּם תְּתִיב לֶאֱלָהָא רוּחָךְ וְתַהַנְפֵּק מִפּוּמָךְ מִלַּיָא : מָה בַּר נָשׁ אֲרוּם יִזְכֵּי וַאֲרוּם יִזְדַּכֵּי יְלוּד אִתְּתָא : הָא בְּקַדִּישׁוֹי עִלָּאֵי לָא יְהֵימִין וְאַנְגְּלֵי מְרוֹמָא לָא זַכָּאִין
16 17 18 קֳדָמוֹי : כָּל דְּכֵן מְרַחֵק וּמְסָאַב בַּר נָשׁ שָׁתֵי הֵיךְ מוֹי עַיְלְתָא : אֲחַוֵּי לָךְ קַבֵּל מִנִּי וְדֵין דַּחֲמֵיתִי וְאִשְׁתָּעֵי : דִּי חַכִּימַיָא יְחַוּוֹן וְלָא מְכַדְּבִין מִן מְסוֹרְתָּא דַּאֲבָהַתְהוֹן :
19 20 תָּא דְּשִׁבְטוֹי דְּיַעֲקֹב חַכִּימַיָא יְתוּבוּן וְלָא יִכְסוּן מִמְּסַרָּה דְּאַלְפוּנוּן אֲבָהַתְהוֹן : לְהוֹן בִּלְחוֹדֵיהוֹן אִתְיְהִיבַת אַרְעָא וְלָא עֲבַר חִילוֹנַי בִּמְצִיעֵיהוֹן : כָּל יוֹמֵי
רַשִׁיעָא הוּא מִתְפַּס וּמִנְיַן שְׁנַיָא אִתְטִישׁוּ לְתַקִּיפָא : תָּא כָּל יוֹמֵי דְּעֵשָׂו רַשִׁיעָא מוֹרְכִין לֵיהּ דְּיַעֲבֵד תְּתוּבָא וְלָא תָב מִנְיַן שְׁנַיָא אִטַּמְרוּ לְיִשְׁמָעֵאל תַּקִּיפָא :
21 22 קָל דְּלוּחָא בְּגֵיהִנָּם בְּאוּדְנוֹי כַּד שָׁרִין צַדִּיקֵי בִּשְׁלָמָא בְּחַיֵּי עָלְמָא בִּזְוִיתָא יֵיתֵנֵיהּ : לָא יְהֵימִין לְמִתַּב מִן חֲשׁוֹכָא וְאִטְמוּס הוּא לְקַטָּלִין בְּחַרְבָּא :
23 24 25 מְנַדֵּד הוּא לִמְזוֹנָא הָאן הוּא יְדַע אֲרוּם מְעַתַּד בִּידֵיהּ יוֹם חֲשׁוֹכָא : יְבַעֲתוּנֵיהּ עָקָא וּמְעִיקָא יְחוּרוּנֵיהּ הֵיךְ מַלִּיךְ דְּאִטְמוּס לִנְגוּדָק : מְטוּל דְּאוֹשִׁיט לֶאֱלָהָא
26 27 28 יְדֵיהּ וּלְוָת שַׁדַּי יִתְגַּבַּר : יִרְהוּט לְוָתֵיהּ בְּתוּקְפָּא בְּקוּשִׁי רוּם תַּרְסוֹי : אֲרוּם חַפָּא אַפּוֹי בְּשׁוּמְנֵיהּ וַעֲבַד רוּטְבָא עֲלַוֵּי כִּפְלָא : וַעֲבַד שְׁכוּנָן בְּקִרְוִין צַדְיָין יְתִיב
29 30 בְּבָתַיָא דְּלָא יִתְבוּן לְהוֹן דִּי אִתְעַתַּדוּ לִינוּרִין : לָא יִתְעַתַּר וְלָא יִתְקַיֵּם עֻתְרֵיהּ דְּקֹרַח וְלָא יִתְמְתַח לְאַרְעָא מִנְהוֹן וּמֵהָלֵין טָבְתָא דְּדָתָן וַאֲבִירָם : לָא יֶעְדֵּי
31 32 מִן חֲשׁוֹכָא שִׁבְשֵׁיהּ תְּיַבֵּשׁ שַׁלְהוֹבִיתָא וְיֶעְדֵּי בְּזַעְפָּא דְּפוּמֵיהּ דֶּאֱלָהָא : לָא יְהֵימִין בְּבַר נָשׁ דִּבְשִׁקְרָא תָּעֵי אֲרוּם שִׁקְרָא תְּהֵי פֵּרוּנֵיהּ : בְּלָא יוֹמֵיהּ תִּתְמְלֵי
33 34 קְבוּרְתֵּיהּ וְעוּבֵיהּ לָא תְּהֵי עַבּוּפְיָא : תָּא עַד לָא יוֹמֵי תִּתְמְלֵי סִבְתֵיהּ וְכַלְּתֵיהּ לָא תְּהֵי נְנָנָא : יַתֵּר הֵיךְ גּוּפְנָא בּוֹסְרֵיהּ וְיִטְלוֹק הֵיךְ זֵיתָא לַבְלְבֵיהּ : אֲרוּם
35 סִיעַת דִּילָטוֹר לְצַעֲרָא וְאֶשָּׁתָא נַסֵּרַת מַשְׁכְּנֵי שׁוֹחֲדָא : דְּחָשְׁלִין לָעוּת וּמְמַלְּלִין שְׁקַר וְרַעְיוֹנֵי כְּרֵסְהוֹן מַתְכְּנִין נִכְלָא :

יו

1 2 3 וַאֲתִיב אִיּוֹב וַאֲמַר : שְׁמַעִית כְּאִלֵּין סַגִּיעָתָא מְנַחֲמִין דִּלְעוּת כּוּלְכוֹן : הַאִית סוֹף לְמִלֵּי זִיקָא אוֹ מָה יְבַסְמִנָךְ אֲרוּם תְּתִיב :

Verſio SYRIACA.

13 * ܕܡܪܝܡ ܐܢܬ ܠܘܬ ܐܠܗܐ ܪܘܚܟ. ܘܡܦܩ ܐܢܬ ܡܢ ܦܘܡܟ ܡܠܐ. * ܡܢܘ ܐܢܫܐ ܕܢܙܕܟܐ. ܐܘ ܡܢܘ ܝܠܝܕ ܕܢܙܕܕܩ
14 ܢܫܐ ܐܢܬܬܐ. * ܗܐ ܒܩܕܝܫܘܗܝ ܠܐ ܡܬܬܟܝܠ. ܘܫܡܝܐ ܠܐ ܕܟܝܢ ܩܕܡܘܗܝ. * ܐܦ ܠܐ ܡܣܬܠܝܐ ܘܡܬܟܪܐ 15
16 ܓܒܪܐ. ܢܫܬܐ ܥܘܠܐ ܐܝܟ ܡܝܐ. * ܐܚܘܝܟ ܫܡܥܝܢܝ. ܘܡܕܡ ܕܚܙܝܬ ܐܫܬܥܐ. * ܕܚܟܝܡܐ ܚܘܝܘ ܘܠܐ ܟܣܝܘ 17
18 ܐܒܗܝܗܘܢ. * ܠܗܘܢ ܒܠܚܘܕܝܗܘܢ ܐܬܝܗܒܬ ܐܪܥܐ. ܘܠܐ ܥܒܪ ܢܘܟܪܝܐ ܒܝܢܬܗܘܢ. * ܟܠܗ ܝܘܡܬܗܘܢ 19
20 ܕܚܝܘܗܝ ܡܬܪܘܪܒ ܥܘܠܐ. ܘܡܢܝܢ ܫܢܘܗܝ ܢܛܝܪܢ ܠܚܣܝܢܐ. * ܩܠܐ ܕܕܚܠܬܐ ܒܐܕܢܘܗܝ. ܘܒܫܠܡܐ ܒܙܘܙܐ ܢܐܬܐ 21
22 ܥܠܘܗܝ. * ܠܐ ܡܗܝܡܢ ܕܢܗܦܘܟ ܡܢ ܚܫܘܟܐ. ܚܙܐ ܚܪܒܐ. * ܥܪܩ ܗܘ ܠܩܛܘܠܐ ܕܕܝܢܐ. ܘܐܝܟܐ ܕܗܘ. ܝܕܥ 23
24 ܕܡܬܩܢܐ ܗܘ ܒܐܝܕܗ ܝܘܡܐ ܕܚܫܘܟܐ. * ܢܪܕܦܘܢܝܗܝ ܐܘܠܨܢܐ. ܘܐܢܢܩܐ ܢܕܪܟܘܢܝܗܝ. ܐܝܟ ܡܠܟܐ ܕܡܬܩܢ
25 ܠܩܪܒܐ. * ܡܛܠ ܕܐܪܝܡ ܥܠ ܐܠܗܐ ܐܝܕܗ ܘܥܠ ܚܣܝܢܐ ܐܬܓܢܒܪ. * ܘܪܗܛ ܠܗ ܒܨܘܪܐ ܙܩܝܦܐ. 26
ܘܒܥܒܝܘܬܐ ܕܨܘܪܗ. ܒܣܘܓܐܐ ܕܙܝܢܐ. * ܘܟܣܐ ܐܦܘܗܝ ܒܬܪܒܗ. ܘܥܒܕ ܟܝܡܐ ܥܠ ܥܝܘܬܐ. 27
28 * ܘܐܘܬܒ ܩܘܪܝܐ ܚܪܝܒܬܐ ܕܠܐ ܡܬܝܬܒܢ. ܘܐܬܛܝܒ ܠܩܪܒܐ. * ܠܐ ܢܟܬܪ. ܘܠܐ ܢܩܘܡ ܚܝܠܗ. ܘܠܐ ܢܬܪܡܐ ܡܠܘܗܝ ܥܠ 29
ܐܪܥܐ. * ܘܠܐ ܢܬܦܢܐ ܡܢ ܚܫܘܟܐ. ܘܣܘܟܘܗܝ ܬܘܒܫ ܫܠܗܒܝܬܐ. ܢܬܛܥܐ ܒܪܘܚܐ ܕܦܘܡܗ. * ܘܠܐ 30
31 ܢܗܝܡܢ ܒܕܓܠܘܬܐ ܕܡܛܥܝܢܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܣܪܝܩ ܗܘܐ ܡܨܒܬܗ. * ܘܕܠܐ ܒܝܘܡܘܗܝ ܢܝܒܫ. ܘܐܝܕܘܗܝ ܠܐ 32
33 ܢܫܟܚܢ. * ܢܬܥܩܪ ܐܝܟ ܓܦܬܐ ܒܣܪܗ. ܘܢܫܬܕܐ ܐܝܟ ܙܝܬܐ ܢܨܒܬܗ. * ܡܛܠ ܕܟܢܘܫܬܐ ܕܥܘܠܐ ܠܚܘܪܒܐ ܬܗܘܐ
34 ܠܚܣܘܪܐ ܘܠܚܘܪܒܐ. ܘܢܘܪܐ ܬܐܟܘܠ ܡܫܟܢܐ ܕܥܘܠܐ. * ܒܛܢܘ ܥܡܠܐ ܘܝܠܕܘ ܥܘܠܒܐ. ܘܟܪܣܬܗܘܢ ܡܠܝܐ ܢܟܠܐ. 35

* ܫܠܡ * ܝܗ *

1 * ܘܥܢܐ ܐܝܘܒ ܘܐܡܪ. * ܫܡܥܬ ܕܣܓܝܐܬܐ ܐܝܟ ܗܠܝܢ. 2
3 ܘܡܒܝܐܢܐ ܒܥܘܠܐ ܐܢܬܘܢ ܟܠܟܘܢ. * ܠܐ ܬܥܩܘܢ ܠܢܦܫܝ ܒܡܠܐ. ܐܢ ܬܘܣܦܘܢ ܬܡܠܠܘܢ ܥܡܝ. ܠܐ ܐܦܢܐ ܦܬܓܡܐ.

Verſio ARABICA.

13 * حين ترفع إلى الله روحك وتخرج من فمك الكلام * فمن من الناس يزكوا * أو من الذي هو ولد 14
15 المرأة أن يستطيع أن يتبرأ * فإنه بقديسيه لا يأمن * والسماء ليست بطاهرة قدامه * وإن أرفض أو 16
17 كرب الرجل أفيشرب الإثم مثل الماء * إني أخبرك فاسمعني * والذي رأيت فإني أبين * فإن الحكماء قد 18
19 أظهروا ولم يكتموا من آبائهم * لهم وحدهم أعطيت الأرض ولم يدخل غريب بينهم * جميع أيامه 20
21 المنافق يستكبر * وعدد سنيه يحفظ للقوي * صوت الرهبة في أذنيه * والغفلة يأتي السلاب عليه *
22 * فلا يصدق أنه يرجع من ظلمة * ينظر السيف * فيهرب إلى جهود القضاء * حيث ما يكون فإنه يعلم 23
24 أنه مستعد له يوم الظلمة * يطلبه الضر ويدركه الضيق * مثل الملك المستعد للقتال * لأجل 25
26 أنه رفع على الله يده * وعلى العزيز تجبر * وعدا عليه بعنق رفيع * وبغلظ الرقبة * بكثرة صفوف
27 السلاح * وغطى وجهه بشحمه * وجعل الثريا فوق العيوق * وأثبت القرى الخربة التي لا تسكن * 28
29 واستعد للقتال * فلا يثبت * ولا تقوم قوته * ولا يلقي كلاما على الأرض * ولا يفارقون الظلمة * 30
31 وأغصانه تيبس بالاشتعال * تسعه بروح فمه * ولا يصدق بالكذب المضل * من أجل أن باطلا كان
32 منبته * وفي غير أيامه ييبس * ويداه لا تجدن * يقلع مثل الجفنة لحمه * ويطرح مثل الزيتون نباته * 33
34 * لأن جماعة الحنفاء تكون للخراب والخلاء * والنار تأكل مساكن الأشرار * حبلوا الإثم * وولدوا 35
العنت * وبطونهم مملوءة غشا *

* الفصل السادس عشر *

1 * فأجاب أيوب وقال * قد سمعت كثيرا مثل هذا * وأنتم تعزونني بالإثم كلكم * فلا تؤذن روحي 2
3 بالكلام * وأيضا فإن تقولون لي فلا أجيب *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Dum elevas ad Deum ſpiritum tuum? & producis de ore tuo ſermones? Quiſnam hominum eſt, qui ſit innocens? aut quis eſt natus mulieris, ut poſſit ſe juſtificare? 13 14
Quandoquidem ſanctis ſuis non fidit, & cœlum non eſt mundum coram ipſo? 15
Et ſi deſpiciatur aut contriſtetur vir, num bibet iniquitatem velut aquam? 16
Ego verò narrabo tibi: audi me; et quæ vidi, exponam. 17
Nam ſapientes patefecerunt, & non abſconderunt (d) à diebus ſuis: 18
Ipſis ſolis data eſt terra, & non ingreſſus eſt advena inter eos. 19
Omnibus diebus vitæ ſuæ ſuperbit impius, & numerus annorũ ejus ſervabitur Potenti. 20
Vox terroris in auribus ejus, & (e) ex inſperato veniet prædo adverſus eum. 21
Non credit ſe reverſurum è tenebris: videbit gladium, 22
Et fugiet ad (f) violentiam judicii: ubicunque fuerit, novit (g) ſibi paratum eſſe diem tenebrarum: 23
Perſequetur eum tribulatio, & comprehendet eum anguſtia velut regem paratum ad bellum: 24
Quoniam levavit manum ſuam adverſùs Deum, & contra potentem confortatus eſt: 25
Et cucurrit adverſùs eum erecto collo, & pingui cervice cum copia ordinum armorum: 26
Et operuit faciem ſuam pinguedine ſuâ, & collocavit Pleiadas ſuper Arcturũ: 27
Et (h) confirmavit oppida deſolata quæ non habitantur, et præparatus eſt ad bellũ. 28
(i) Non reſiſtet, nec ſtabit vis ejus, nec eſfundet verba ſuper terram, 29
Neque recedent à tenebris, & rami ejus areſcent flammâ; & proprii oris ſpiritu delirabit: 30
Et non credet mendacio decipienti; quia vana erat ejus planta. 31
Præter dies ſuos areſcit, & manus ejus non invenient: 32
Eradicabitur velut vitis caro ejus, & projicietur velut oliva planta ejus: 33
Quoniam congregatio perverſorum erit in ruinam & deſolationem, & ignis devorabit habitaculũ iniquorum. 34
Conceperunt iniquitatem, & pepererunt (k) perniciem; & ventres eorum ſunt pleni dolo. 35

CAP. XVI.

RESpondit Job & dixit, 1
Audivi jam multa his ſimilia, & vos omnes me conſolamini cum iniquitatẽ. 2
Nolite affligere animam meam verbis: quòd ſi ulteriùs mihi loquamini, non reſpondebo. 3

INTERP. SYRIACA.

(d) patres eorum: (e) in pace ſuperveniet (f) comminationem (g) in manu ſua eſſe (h) frequentia reddidit (i) Non permanebit, (k) oppreſſionem;

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quòd ducas ad Deum ſpiritum tuum, & proferas de ore tuo ſermones. Quid eſt filius hominis ut juſtificetur, aut innocens ſit natus de muliere? Ecce in ſanctis ſuperioribus non credit, & angeli excelſi non ſunt mundi coram eo. Quanto magis abominabilis & immundus filius hominis, qui bibit ſicut aquam iniquitatem! Nunciabo tibi, audi me, & quod vidi narrabo. Quod ſapientes annunciaverunt, & non negaverunt quæ tradita ſunt à patribus eorum. *Targum aliud:* Quod *tribus Jaacob* ſapientes *convertentur* & non *occultabunt de eo quod docuerunt eos patres eorum.* Quibus ſolis data eſt terra, & non tranſiit alienus inter eos. Omnibus diebus impii ipſe contaminatur, & numerus annorum abſconditus eſt robuſto. *Targum aliud:* Omnibus diebus *Eſau* impii *expectârunt eum ut pœnitentiam ageret, ſed non pœnituit:* numerus annorum abſconditus eſt *Iſmahel* robuſto. Vox timorum in gehenna in auribus ejus, quando habitabunt juſti in pace in vita æterna, vaſtitas veniet ei. Non credet *in vita ſua* reverti à tenebris, & paratus eſt iis qui occidunt gladio. Vagatur ipſe ad eſcam ubi eſt; ſcit quod parata eſt in manu ejus dies tenebrarum. Conturbabunt eum tribulatio & anguſtia, circundabunt eum ſicut regem qui *paratus eſt ad ſcabellum.* Quoniam extendit in Deum manum ſuam, & contra omnipotentem roboratus eſt. Curret ad eum in fortitudine, in duritia umbonis clypeorum ipſius. Et operuit vultum ſuum pinguedine ſua, & fecit arvinam ſuper ilia. Et fecit tabernacula in civitatibus deſertis, ut habitaret in domibus quæ erant inhabitabiles, & quæ paratæ erant in acervos. Non ditabitur, neque permanebunt divitiæ *Korach,* neque extendetur in terram quicquam ex eis, *& ex illis bona Dathan & Abiram.* Non recedet à tenebris, ramum ejus areſaciet flamma, & auferetur per ſpiritum oris Dei. Non credet *in filio* hominis qui in falſitate errat, quia falſa erit permutatio ejus. Abſq; die ſuo implebitur ſepulchrum ejus, & ramus ejus non erit vireſcens. *Targum aliud: Cum nondum fuerit dies ejus* implebitur *ſenectus ejus, & ſponſa ejus non erit nupta.* Excutiet ſicut vitis *omphacem* ſuam, & projiciet ſicut oliva ramum ſuum. Quoniam turma delatoris in tribulatione, & ignis conſumpſit tabernacula muneris. Qui cogitant laborem & loquuntur iniquitatem, & cogitationes ventris eorum præparant dolos. 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35

CAP. XVI.

ET reſpondit Job & ait: Audivi ſicut hæc multa: conſolatores laboris vos omnes eſtis. Nunquid habebunt finem verba ventoſa, aut quid ſuave tibi erit, quia reſpondes? 1 2 3

איוב : יז

pro vestra anima esset utinam , loquar vos sicut ego Etiam
4 גַּם אָנֹכִי כָּכֶם אֲדַבֵּרָה לוּ יֵשׁ נַפְשְׁכֶם תַּחַת
moverem & ; sermonibus in vos super me adjungerem ; mea anima
נַפְשִׁי אַחְבִּירָה עֲלֵיכֶם בְּמִלִּים וְאָנִיעָה
motio & ; meo ore in vos Roborarem .meum caput in vos super
5 עֲלֵיכֶם בְּמוֹ רֹאשִׁי׃ אֲאַמִּצְכֶם בְּמוֹ־פִי וְנִיד
prohibebitur non , fuero locutus Si .prohiberet meorum labiorum
6 שְׂפָתַי יַחְשֹׂךְ׃ אִם־אֲדַבְּרָה לֹא־יֵחָשֵׂךְ
Veruntamen ? abibit me à quid , desiero & ; meus dolor
7 כְּאֵבִי וְאַחְדְּלָה מַה־מִנִּי יַהֲלֹךְ׃ אַךְ־
.meum conventum omnem desolâsti , me fecit laborare nunc
עַתָּה הֶלְאָנִי הֲשִׁמּוֹתָ כָּל־עֲדָתִי׃
mea macies ,me in surrexit & ; fuit testem in , me fecisti rugare Et
8 וַתִּקְמְטֵנִי לְעֵד הָיָה וַיָּקָם בִּי כַחֲשִׁי
, mihi est adversatus & , rapuit ejus Nasus .respondebit meas facies in
9 בְּפָנַי יַעֲנֶה׃ אַפּוֹ טָרַף וַיִּשְׂטְמֵנִי
suos oculos acuet meus hostis ; suis dentibus in me super frenduit
חָרַק עָלַי בְּשִׁנָּיו צָרִי יִלְטוֹשׁ עֵינָיו
percusserunt opprobrio in , suo ore in me super Hiârunt .me in
10 לִי׃ פָּעֲרוּ עָלַי בְּפִיהֶם בְּחֶרְפָּה הִכּוּ
Deus me Concludet .replebuntur me super simul ;meas maxillas
11 לְחָיָי יַחַד עָלַי יִתְמַלָּאוּן׃ יַסְגִּירֵנִי אֵל
.me faciet divertere impiorum manus super & ; iniquum ad
אֶל־עֲוִיל וְעַל־יְדֵי רְשָׁעִים יִרְטֵנִי׃
, meam cervicem in apprehendit & , me contrivit & , eram Quietus
12 שָׁלֵו הָיִיתִי וַיְפַרְפְּרֵנִי וְאָחַז בְּעָרְפִּי
Circuibunt .scopum in sibi me statuit & ; me dispersit contritum &
13 וַיְפַצְפְּצֵנִי וַיְקִימֵנִי לוֹ לְמַטָּרָה׃ יָסֹבּוּ
effundet : parcet non & , meos renes scindet ;ejus magni me super
עָלַי רַבָּיו יְפַלַּח כִּלְיוֹתַי וְלֹא יַחְמֹל יִשְׁפֹּךְ
facies super diruptione me Rumpet .meum fel terram in
14 לָאָרֶץ מְרֵרָתִי׃ יִפְרְצֵנִי פֶרֶץ עַל־פְּנֵי־
super consui Saccum .potens sicut me super curret : rupturæ
15 פָרֶץ יָרֻץ עָלַי כְּגִבּוֹר׃ שַׂק תָּפַרְתִּי עֲלֵי
sunt lutificatæ meæ Facies.meum cornu pulvere in deturpavi & : meam cutem
16 גִלְדִּי וְעֹלַלְתִּי בֶעָפָר קַרְנִי׃ פָּנַי חֳמַרְמְרָה
non quòd Eo .mortis umbra meis palpebris super & , fletu præ
17 מִנִּי־בֶכִי וְעַל עַפְעַפַּי צַלְמָוֶת׃ עַל לֹא־
operias ne , Terra .munda mea oratio & ; meis volis in rapina
18 חָמָס בְּכַפָּי וּתְפִלָּתִי זַכָּה׃ אֶרֶץ אַל־תְּכַסִּי
Etiam .meo clamori locus sit ne & ; meum sanguinem
19 דָמִי וְאַל־יְהִי מָקוֹם לְזַעֲקָתִי׃ גַּם־
.excelsis in meus testis & ;meus testis cœlis in ecce nunc
עַתָּה הִנֵּה בַשָּׁמַיִם עֵדִי וְשָׂהֲדִי בַּמְּרוֹמִים׃
argueret Et .meus oculus stillavit Deum ad :mei socii Interpretes
20 21 מְלִיצַי רֵעָי אֶל־אֱלוֹהַּ דָּלְפָה עֵינִי׃ וְיוֹכַח
anni Quia .suo sodali hominis filius & , Deo cum vir
22 לְגֶבֶר עִם־אֱלוֹהַּ וּבֶן־אָדָם לְרֵעֵהוּ׃ כִּי־שְׁנוֹת
.ambulabo , revertar non , semita & ; venient numeri
מִסְפָּר יֶאֱתָיוּ וְאֹרַח לֹא־אָשׁוּב אֶהֱלֹךְ׃

CAP. XVII. יז

Si .mihi sepulchra , sunt succisi mei dies :est corruptus meus Spiritus —
1 2 רוּחִי חֻבָּלָה יָמַי נִזְעָכוּ קְבָרִים לִי׃ אִם־
.meus oculus moraretur eorũ irritationib⁹ in & ;mecum illusores non
לֹא הֲתֻלִים עִמָּדִי וּבְהַמְּרוֹתָם הָלֵן עֵינִי׃
meam manum ad ipse quis : tecum mihi pignora ,nunc Pone
3 שִׂימָה נָּא עָרְבֵנִי עִמָּךְ מִי־הוּא לְיָדִי
propterea ;intelligentia ab abscondisti eorum cor Quia ? se percutiat
4 יִתָּקֵעַ׃ כִּי־לִבָּם צָפַנְתָּ מִשָּׂכֶל עַל־כֵּן
ejus filiorum oculi & ; amicis indicabit blandiciem Ad .exaltabis non
5 לֹא תְרֹמֵם׃ לְחֵלֶק יַגִּיד רֵעִים וְעֵינֵי בָנָיו
antea gehennnæ ignis & ;populorum comparare ad me statuit Et .consumẽtur
6 תִּכְלֶינָה׃ וְהִצִּיגַנִי לִמְשֹׁל עַמִּים וְתֹפֶת לְפָנִים
.ero
אֶהְיֶה׃

Versio VULG. LAT.

4 Poteram & ego similia vestrî loqui: atque utinã esset anima 5 vestra pro anima mea: Consolarer & ego vos sermonibus, & moverẽ caput meum super 6 vos: Roborarem vos ore meo: & moverem labia mea, quasi 7 parcens vobis. Sed quid agã? si locutus fuero, non quiescet dolor meus: & si tacuero, non 8 recedet à me. Nunc autem oppressit me dolor meus, & in nihilum redacti sunt omnes ar- 9 tus mei. Rugæ meæ testimonium dicunt contra me: & suscitatur falsiloquus adversùs faciẽ meam contradicens mihi. 10 Collegit furorẽ suum in me, & comminans mihi, infremuit contra me dentibus suis: hostis meus terribilib⁹ oculis me 11 intuitus est. Aperuerunt super me ora sua, & exprobrantes percusserunt maxillam meam, 12 satiati sunt pœnis meis. Conclusit me Deus apud iniquum, et manibus impiorũ me tradi- 13 dit. Ego ille quondam opulentus, repentè contritus sum: tenuit cervicem meam, confregit me, & posuit me sibi 14 quasi in signum, Circumdedit me lanceis suis, convulneravit lumbos meos, non pepercit, & effudit in terra viscera 15 mea. Concîdit me vulnere super vulnus, irruit in me quasi 16 gigas. Saccum consui super cutem meã, & operui cinere car- 17 nem meam. Facies mea intumuit à fletu, & palpebræ 18 meæ caligaverunt. Hæc passus sum absque iniquitate manûs meæ, cùm haberem mun- 19 das ad Deum preces. Terra, ne operias sanguinem meum, neque inveniat in te locum la- 20 tendi clamor meus. Ecce enim in cœlo testis meus, & consci- 21 us meus in excelsis. Verbosi amici mei: ad Deum stillat o- 22 culus meus. Atque utinam sic judicaretur vir cum Deo, quomodò judicatur filius hominis 23 cum collega suo. Ecce enim breves anni transeunt: & semitam, per quam non revertar, ambulo.

CAP. XVII.

1 Spiritus meus attenuabitur, dies mei breviabuntur, & solum mihi superest sepulchrum. 2 Non peccavi, & in amaritudinibus moratur oculus meus. 3 Libera me, Domine, & pone me juxta te, & cujusvis manus 4 pugnet contra me. Cor eorum longè fecisti à disciplina, pro- 5 pterea non exaltabuntur. Prædam pollicetur sociis, & oculi 6 filiorum ejus deficient. Posuit me quasi in proverbium vulgi, & exemplum sum coram eis.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

4 † (α) Κἀγὼ καθ᾽ ὑμᾶς λαλήσω, † (β) εἰ ὑπέκειτό γε ἡ ψυχὴ ὑμῶν ἀντὶ τῆς (γ) 5 ἐμῆς, † Εἶτ᾽ ἐναλοῦμαι ὑμῖν (δ) ῥήμασι· 6 † κινήσω δὲ καθ᾽ ὑμῶν κεφαλήν. † Εἴη δὲ ἰσχὺς ἐν τῷ στόματί μου, (ε) κίνησιν δὲ χειλέ- 7 ων οὐ φείσομαι. † Ἐὰν γὰρ λαλήσω, οὐκ ἀλγήσω (ζ) τὸ τραῦμα· † ἐὰν δὲ καὶ σιωπήσω, τί 8 ἔλαττον τρωθήσομαι; † Νῦν δὲ κατάκοπόν με πεποίηκε μωρὸν σεσηπότα, † καὶ ἐπελάβου 9 μου. Εἰς μαρτύριον (η) ἐγενήθη, † καὶ ἀνέστη ἐν ἐμοὶ τὸ ψεῦδός μου, κατὰ πρόσωπόν μου ἀν- 10 ταπεκρίθη. † Ὀργῇ χρησάμενος (θ) κατέβαλέ με, † ἔβρυξεν ἐπ᾽ ἐμὲ τοὺς ὀδόντας, βέλη πειρατῶν αὐτοῦ ἐπ᾽ ἐμοὶ (ι) ἔπεσεν. † ἀκίσιν 11 ὀφθαλμῶν ἐνήλατο, † Ὀξεῖ ἔπαισέ με (κ) εἰς τὰ γόνατα, † ὁμοθυμαδὸν δὲ κατέδραμον (λ) 12 ἐπ᾽ ἐμοί. † Παρέδωκε γάρ με ὁ κύριος εἰς χεῖρας (μ) ἀδίκων, † ἐπὶ δὲ ἀσεβέσιν ἔρ- 13 ριψέ με. † Εἰρηνεύοντα διεσκέδασέ με· † λαβών με τῆς κόμης διέτιλε, † κατέστησέ με 14 ὥσπερ σκοπόν. † Ἐκύκλωσάν με λόγχαις βάλλοντες εἰς νεφρούς μου, οὐ φειδόμενοι † ἐξέ- 15 χεαν εἰς (ν) τὴν γῆν τὴν χολήν μου. † Κατέβαλόν με πτῶμα ἐπὶ πτώματι, † ἔδραμον (ξ) 16 πρὸς μὲ δυνάμενοι. † Σάκκον (ο) ἔρραψαν ἐπὶ βύρσης μου, † τὸ δὲ σθένος μου (π) ἐν γῇ 17 ἐσβέσθη. † Ἡ γαστήρ μου συγκέκαυται ἀπὸ κλαυθμοῦ, ἐπὶ δὲ (ρ) βλεφάροις μου σκιά. 18 † Ἄδικον δὲ οὐδὲν ἦν ἐν χερσί μου, † εὐχὴ 19 δέ μου καθαρά. † Γῆ μὴ ἐπικαλύψῃς ἐφ᾽ αἵματι (σ) τῆς σαρκός μου, μηδὲ εἴη τόπος 20 (*) τῇ κραυγῇ μου. † Καὶ νῦν ἰδοὺ ἐν οὐρανοῖς ὁ (τ) μάρτυς μου, † ὁ δὲ συνίστωρ μου ἐν ὑψί- 21 στοις. † Ἀφίκοιτό (υ) μου ἡ δέησις πρὸς κύριον, † ἔναντι δὲ αὐτοῦ (φ) στάζοι μου ὁ ὀφθαλ- 22 μός. † Εἴη δὲ (χ) ἔλεγχος ἀνδρὶ ἔναντι κυρίου, † καὶ (ψ) υἱῷ ἀνθρώπου τῷ πλησίον 23 αὐτοῦ. † Ἔτη δὲ ἀριθμητὰ (ω) ἥκασιν, † ὁδῷ δὲ ᾗ οὐκ ἐπαναστραφήσομαι, πορεύσομαι.

4 Et ego secundùm vos loquar: Si (b) subjecta esset anima vestra pro mea; 5 Deindè insultabo in vos verbis, & movebo contra vos caput. 6 Sit autem fortitudo in ore meo: motui autem labiorum non parcam. 7 Si enim loquar, non dolebo (c) vulnus. Quod etsi tacebo, quid minùs vulnerabor? 8 Nunc autem lassatum me feci, (d) stultum, putrem: (e) & apprehendisti me. 9 In (f) testimonium fuit, & surrexit super (g) me mendacium meum: contra faciem meam respondit. 10 Iracundiâ usus dejecit me: fremuit super me dentibus: sagittæ piratarum ejus super me deciderunt: acie (h) oculorum irruit, 11 (i) Mucrone percussit me in genibus: & simul concurrerunt in me. 12 Tradidit enim me Dominus in manus injustorum, (k) & super impios projecit me: 13 In pace cùm essem, discerpsit me, (l) tenens me comâ divulsit: statuit me sicut signum. 14 Circundederunt me lanceis emittentes in renes meos: non parcentes effuderunt in terram fel meum. 15 Dejecerunt me ruinam super ruinam: cucurrerunt erga me potentes: 16 Cilicium assuerunt corio meo, robur autem meum in terra extinctum est: 17 Venter meus combustus est à fletu, & super palpebras meas (m) umbra. 18 Injustum autem nihil fuit in manu mea: deprecatio autem mea munda. 19 Terra, (n) ne operias super sanguinem carnis meæ, nec sit locus clamori meo: 20 Et ecce nunc in cœlis est testis meus, & conscius meus in excelsis. 21 Perveniat oratio mea ad Dominum: & coram eo stillet oculus meus: 22 Sit autem redargutio viro coram Domino, & (o) filii hominis ad proximum suum. 23 Anni enim dinumerati venerunt: & viâ, per quam non revertar, ambulabo.

MS.A. (α) Καὶ ἐγὼ δὲ καθ᾽ (β) εἴγε ὑπέκειτο ἡ (γ) ἐμῆς ψυχῆς, (δ) λόγοις· (ε) καὶ κίνησιν χειλέων (ζ) τὸ τραῦμά μου· (η) ἐγενήθην, (θ) κατέβαλέν με, ἔβρυξεν δὲ ἐπ᾽ ἐμὲ τοὺς ὀδόντας αὐτοῦ, βέλη πειρατηρίων (ι) ἔπεσεν. (κ) ἐπὶ τὰ (λ) ἐπ᾽ ἐμέ. (μ) ἀδίκου, ἐπὶ δὲ ἀσεβεῖς (ν) γῆν τὴν ζωήν μου. (ξ) ἐπ᾽ ἐμὲ δυνατοί. (ο) *ἔρριψαν ἐπὶ βύρσῃ (π) εἰς γῆν ἐσβέσθη. (ρ) βλεφάρων μου σκιὰ θανάτου. Ἄδικον γὰρ (σ) σαρκός μου, (*) τῆς κραυγῆς (τ) μάρτυς, ὁ δὲ (υ) ἡ δέησίς μου (φ) στάξαι ὁ ὀφθαλμός μου. (χ) ὁ ἔλεγχός μου ἔναντι (ψ) υἱὸς ἀνθρώπου (ω) ἥκουσίν μοι, ὁδῷ

ΚΕΦ. ιζʹ.

1 † Ὀλέκομαι πνεύματι φερόμενος, † δέομαι δὲ ταφῆς, καὶ οὐ τυγχάνω. 2 † Λίσσομαι κάμνων (α) καὶ τί ποιήσας; † ἔκλεψαν δέ μου (β) τὰ ὑπάρχοντα ἀλλότριοι. 3 Τίς ἐστιν οὗτος; τῇ χειρί μου συνδεθήτω. 4 † Ὅτι καρδίαν αὐτῶν (γ) ἔκρυψας ἀπὸ φρονήσεως, 5 † διὰ τοῦτο (δ) οὐ μὴ ὑψώσῃς αὐτούς. † Τῇ μερίδι ἀναγγελεῖ κακίας, † ὀφθαλμοὶ (ε) δὲ ἐφ᾽ 6 υἱοῖς ἐτάκησαν. † (ζ) Ἔθου δέ με θρύλλημα ἐν ἔθνεσι, (η) γέλως δὲ αὐτοῖς ἀπέβην.

CAP. XVII.

1 Perco spiritu agitatus: oro autem sepulchrum, & non contingit mihi. 2 (a) Preces adhibeo cum labore; & (b) quid feci? & furati sunt extranei bona mea. 3 Quis est iste? manu meâ ligetur. 4 Quia cor eorum (c) abscondisti à prudentia: propter hoc ne exaltaveris eos. 5 (d) Parti nuntiabit mala: & (e) oculi super filios tabuerunt. 6 Posuisti autem me (f) fabulam in nationibus, & risus illis deveni.

MS.A. (α) καὶ τί ποιήσω; (β) ἀλλότριοι τὰ ὑπάρχοντα. (γ) ἔκρυψαν (δ) οὖν μὴ (ε) δέ μου ἐφ᾽ (ζ) Ἔθου με (η) καὶ ἀπέβην αὐτοῖς *γέλος.

תרגום TARGUM.

4 5 לחוד אנא כותכון אמלל לוי דאית נפשכון חלופי נפשי אחבר עליכון במליא ואטלטל עליכון במו רישי׃ אחילכון במו פומי וטלטול ספותי
6 7 8 יחמנע׃ אין אמלל לא יפסוק כיבי ואפסוק מה מני ייזל׃ לחוד כדון שלהיני צדיתא כל סיעתי׃ ונקפתני לסהיד הוה ואקים לאסהדא עלי
9 10 כדבובי על אפי׃ רוגזיה תבר ונטר לי דבבו עסי עלי בככוי מעיקי היך אזמל חריף עינוי לי׃ פתחין עלי פומהון בחסודא מחו ליסתי כחדא
11 12 עלי בנסא מתמלאין׃ ימסרנני אלהא לות מרי זדונא ועל ידי דרשיען ממרטט יתי׃ שליוא הויתי ודעדקנני ואחד בקדלי ותברנני ואוקמנני
13 14 15 ליה לפלנסא׃ יחזרון עלי גררוי יקטע כליתי ולא יחוס ישדי לארעא מרירתי׃ יתקפנני תקוף על אפי תקוף ירהוט עלי היך גברא׃ סקא
16 17 חיטית עלוי משכי ופלפלית בעפרא איקרי׃ אפי מטשטשין מן בכותא ועל תימורי טולי מותא׃ על דלית חטופא בידי וצלותי דכיא׃
18 19 20 ארעא לא תחפין אדמי ולא יהי אתר לקבלתי׃ לחוד כדון דאית בשמיא מסהדי ומסהיד עלי במרומיא׃ פרקליטי חברי קדם אלהא דלפת
21 22 עיני׃ אפשר דמכסן בר נש עם אלהא והיך אנש עם חבריה׃ מטול דשני מנין אתין ואסרטא דלא אתוב איזיל׃

יז

1 2 3 נפשי מתחבלא יומי דעיכו קבורן מתקנן לי׃ אין לא מתלעבין בהדי ובפרוגיהון תבית עיני׃ שוי כדון ערב יתי עמך מן הוא לידי יקים׃
4 5 6 ארום לבהון אטשתא מסכלתנו מטול היכנא לא תרומם להום׃ למפלג על אחוית חבריא ועיני בנוי תשתיצון׃ ועתדני למתלין בעמיא ונהנם
מן לניו אהי׃

Verſio SYRIACA.

[illegible]
4 [illegible]
5 [illegible]
6 [illegible]
7 8 [illegible]
9 [illegible]
10 [illegible]
11 [illegible]
12 [illegible]
13 [illegible]
14 [illegible]
15 16 [illegible]
17 18 [illegible]
19 20 [illegible]
21 [illegible]
22 [illegible]
1 [illegible]
2 [illegible]
3 4 [illegible]
5 6 [illegible]
[illegible]

Verſio ARABICA.

* وايضا انا مثلكم اتكلم * فليت الان انفسكم كانت بدل نفسي * قد امتحنتكم بالقول * وبذت 4
برأسي عليكم * خصمتكم بكلامكم * وكلام شفتي لم امنعه منكم * ان تكلمت فلم يذهب وجعي * 5 6
وان سكت فمن الذي يفرج لي * من اجل انه قد اتعبني * وحفظ جميع شهاداتي * واقامني فكنت 7 8
شاهدا * وقام علي كذبي * قدامه تكلمت * غضبه قد كسرني وسحقني * واصر علي باسنانه * اعداي اغمضوا 9
اعينهم * وعلي فتحوا افواههم بالحقد * وضربوا خدي جميعهم وامتلوا علي حمية * واسلمني الى الملك 10 11
المنافق * وبيد الفاجر اسلمني * ساكنا كنت فظلمني * واخذ بعنقي وبددني * اقامني له مثل الغرض * 12
* وكثرت علي سهامه فالقاها في كلايتي ولم يرثا * القى على الارض مرارتي * ثلمني ثلمة في جوف ثلمة * 13 14
وعدا علي مثلما يعدوا على الجبار * والمسح اكتسيت على جسدي * وغطيت بالتراب راسي * ووجهي 15 16
تسود من البكاء * ونواظري من ظلال الموت * حين ليس اثم في يدي * وصلاتي طاهرة * فان الارض لا 17 18
تغطي دمي * ولا يكون مكانا لصياحي * وهوذا في السماء شهودي * وعارفي في العلو * اخوتي واحبتي عند 19 20
الله * فاضت عيني * ليت كان يبكت الانسان الله * مثلما يبكت الرجل صاحبه * الذي عدد سنيه ياتي * 21 22
والى الطريق التي لا يرجع ينطلق * الفصل السابع عشر * روحي كربت * وايامي انطفت 1
اعدوا لي حربا * فانه ليس اثم عندي * وفي مرارتهم باتت روحي * اصنع الان سكناي عندك * 2 3
من هذا الذي يسلم يدي * لان مسكني عندك * قلوبهم منعتها من الفهم * من اجل هذا يرتفعون 4
في القسمة * ويتكبر الكئيب على حبيبه * وعيون ابنائهم تظلم * واقيم سلطانا على الشعوب * وغشاء 5 6
على وجوههم يكون *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

4 Ego quoque ſicut vos loquar. utinam modò (a) eſſent animæ veſtræ pro anima mea: probarem vos ſermone, & moverem caput meum ſuper vos: 5 Diſquirerem vos ſermonibus veſtris, & verba labiorum meorum non prohiberem à vobis. 6 Si loquar, non recedet à me dolor meus; & ſi tacuero, quis me refocillabit? 7 Quia jam defatigavit me, & obſervavit omnia teſtimonia mea; 8 Et conſtituit me, ac fui teſtis, & inſurrexit in me mendacium meum: coram ipſo locutus ſum, 9 Et ira ejus fregit me laceravitque, & frenduit ſuper me dentibus ſuis. Inimici mei (b) clauſerunt oculos ſuos. 10 Et adverſùm me aperuerunt ora ſua (c) cum indignatione, & percuſſerunt genas meas ſimul, & impleti ſunt contra me furore. 11 Et tradidit me angelo impio, & in manum perverſi tradidit me. 12 Pacificus eram, & oppreſſit me; & tenuit collum meum, & diſſipavit me: conſtituit me ſibi tanquã ſcopum, 13 Et multiplicatæ ſunt contra me ſagittæ ejus, & jaculatus eſt eas in renes meos, & non commotus eſt pietate: effudit ſuper terram fel meum, 14 (d) Incuſſit mihi labem intra labem, & irrupit in me ac ſi irrumperet in gigantem. 15 Unde cilicio indutus ſum ſuprà corpus meum, & (e) cooperui pulvere caput meum: 16 Et deturpata eſt facies mea præ fletu, & pupillæ meæ ab umbra mortis; 17 Cùm non ſit iniquitas in manibus meis, & oratio mea pura. 18 Quoniam terra non tegit ſanguinem meum, & non eſt locus clamori meo, 19 Et (f) ecce in cœlo ſunt teſtes mei, & cognoſcentes me, in excelſo: 20 Fratres meos & amicos meos ad Deum profudit oculus meus. 21 utinam argueret homo Deum, ſicut vir proximum ſuum arguit, 22 Cujus numerus annorum venit, quique ad viam per quam non revertetur, proficiſcitur.

CAP. XVII.

1 Spiritus meus contriſtatus eſt, et dies mei extincti ſunt, paraverunt mihi (†) bellũ. 2 Certè non eſt penes me iniquitas, tamen in amaritudinibus illorũ pernoctavit ſpiritus meus. 3 Fac modò habitationem meam apud te. Quis eſt ille qui fœdus ineat in manu mea, quandoquidem habitatio mea apud te eſt? 4 Corda eorũ cohibuiſti ab intelligentia, propterea extolluntur cũ diviſione. 5 Et exaltatur amicus in amicũ ſuum, et oculi filiorũ eorũ obſcurabuntur. 6 Et conſtituam principem (a) ſuper populos, & velamen ſuper oculos eorum (b) erit;

INTERP. SYRIACA.

(a) factæ eſſent (b) appoſuerunt oculos in me: (c) cum probro; (d) Dirumpit me ruptura intra rupturam, & incurrit in me ſicut in gigantem. (e) inquinavi (f) nunc ecce CAP. xvii. (†) ſepulchrum. (a) populorum, (b) ero;

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Attamen ego ſicut vos loquar: utinam eſſet anima veſtra pro anima mea: componerem ſuper vos ſermones: moverem ſuper vos caput meum. Roborarem vos ore 4
meo, & motus labiorum meorum prohiberetur. Si locutus fuero non *ceſſabit* dolor meus: & ſi ceſſavero, quid decedet à me? Attamen nunc laborare me facit: 6 7
deſoláſti omnem turbam meam. Et confregiſti cervicem meam, in teſtem fuit, & ſuſcitavit in teſtimonium contra me mendacium meum in faciem meam. Furore ſuo 8 9
confregit & obſervavit mihi inimicitiam; infremuit contra me dentibus ſuis: *adverſarius meus* quaſi novaculam acuit oculos ſuos contra me. Aperuerunt ſuper me 10
os ſuum in opprobrium, percuſſerunt maxillas meas, ſimul contra me repleti ſunt ira. Tradidit me Deus ſuperbis, & per manus impiorum convellit me. Opulentus 11 12
eram, & comminuit me: & tenuit cervicem meam, & confregit me, & poſuit me ſibi in ſcopum. Circundederunt me ſagittæ ejus, ſuccidit renes meos & non peper- 13 14
cit: effudit in terram fel meum. Exarſit in me furore ſuper furorem, cucurrit contra me ſicut fortis. Saccum conſui ſuper cutem meam, & aſperſi ſuper pulvere gloriam 15 16
meam. Facies mea obliterata eſt fletu, & ſuper palpebras meas umbra mortis. Quoniam non eſt rapina in manibus meis, & oratio mea munda. Terra ne operias ſan- 17 18
guinem meum, neq; ſit locus clamori meo. Attamen nunc, *quod* eſt in cœlis teſtis meus, & teſtificans ſuper me in excelſis. Paracliti mei ſocii mei, coram Deo ſtillat 19 20
oculus meus. Nunquid poteſt filius hominis arguere cum Deo, ſicut homo cum amico ſuo? Quia annorum numerus venit, & ſemitam per quam non revertar, am- 21 22
bulabo.

CAP. XVII

Anima mea corrupta eſt, dies mei ſucciſi ſunt, ſepulchra parentur mihi. Si non ſunt irriſores mecum, & in commutatione eorum manet oculus meus. Pone nunc fide- 1 2
juſſorem me apud te: quis eſt qui *manui mea ſpondeat*. Quoniam cor eorum abſcondiſti ab intellectu, propterea non exaltabis eos. Qui ad dividendum annun- 3 4
ciat sociis, oculi filiorum ejus conſumentur. Et ſtatuiſti me in proverbia in populis; & ab interiori gehenna ero. 5 6

איוב : יח

umbra ſicut meæ *phantaſiæ* & ; meus oculus *indignatione præ* caligavit Et
7 וַתֵּכַהּ מִכַּעַשׂ עֵינִי וִיצֻרַי כַּצֵּל
ſuper innocens & ,hoc ſuper recti Stupebunt .*ipſæ* univerſæ
8 כֻּלָּם׃ יָשֹׁמּוּ יְשָׁרִים עַל־זֹאת וְנָקִי עַל־
mundus & ; ſuam viam juſtus tenebit Et .ſuſcitabitur *hypocritam*
9 חָנֵף יִתְעֹרָר׃ וְיֹאחֵז צַדִּיק דַּרְכּוֹ וּטֳהָר־
, revertimini omnes vos verè *Et* .fortitudinem addet manibus
10 יָדַיִם יֹסִיף אֹמֶץ׃ וְאוּלָם כֻּלָּם תָּשֻׁבוּ
mei Dies .ſapientem vos inter inveniam non & ; *nunc* venite &
11 וּבֹאוּ נָא וְלֹא־אֶמְצָא בָכֶם חָכָם׃ יָמַי
.mei cordis *poſſeſſiones* ; ſunt evulſæ meæ cogitationes ,tranſierunt
עָבְרוּ זִמֹּתַי נִתְּקוּ מוֹרָשֵׁי לְבָבִי׃
.tenebrarum *faciebus* à propinquam lucem ; *ponent* diem in Noctem
12 לַיְלָה לְיוֹם יָשִׂימוּ אוֹר קָרוֹב מִפְּנֵי־חֹשֶׁךְ׃
.*mea ſtrata* ſtravi tenebris in ; *meam domum* ſepulchrum expectavero Si
13 אִם־אֲקַוֶּה שְׁאוֹל בֵּיתִי בַּחֹשֶׁךְ רִפַּדְתִּי יְצוּעָי׃
meam ſororem & , meam matrem ; tu meus Pater : vocavi Foveam
14 לַשַּׁחַת קָרָאתִי אָבִי אָתָּה אִמִּי וַאֲחֹתִי
meam præſtolationem & ? mea præſtolatio nunc ubi Et .vermem
15 לָרִמָּה׃ וְאַיֵּה אֵפוֹ תִקְוָתִי וְתִקְוָתִי
pariter num ; *deſcendent inferni Fulcra* ? *eam intuebitur* quis
16 מִי יְשׁוּרֶנָּה׃ בַּדֵּי שְׁאֹל תֵּרַדְנָה אִם־יַחַד
? requies pulvere *ſuper*
עַל־עָפָר נָחַת׃

Verſio VULG. LAT.

7 Caligavit ab indignatione oculus meus, & membra mea quaſi in nihilum redacta ſunt. 8 Stupebunt juſti ſuper hoc, & innocens contra hypocritam 9 ſuſcitabitur. Et tenebit juſtus viam ſuam, et mundis manibus 10 addet fortitudinem. Igitur omnes vos convertimini, & venite, & non inveniam in vo- 11 bis ullum ſapientem. Dies mei tranſierunt, cogitationes meæ diſſipatæ ſunt, torquentes 12 cor meum. Noctem verterunt in diem, & rurſum poſt tene- 13 bras ſpero lucem. Si ſuſtinuero, infernus domus mea eſt, & in tenebris ſtravi lectulum 14 meum. Putredini dixi, Pater meus es: mater mea, & ſoror 15 mea, vermibus. Ubi eſt ergò nunc præſtolatio mea, & patientiam meam quis conſiderat? 16 In profundiſſimum infernũ deſcendent omnia mea: putáſne ſaltem ibi erit requies mihi?

Verſio GRÆCA L.XX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

7 † (θ) Πεπώρωνται γὰρ ἀπὸ ὀργῆς οἱ ὀφθαλμοί μου, † (ι) πεπολιόρκημαι μεγάλως ὑπὸ πάντων. † Θαῦμα ἔσχεν ἀληθινοὺς (κ) ἐπὶ 8 τούτῳ, † δίκαιος δὲ ἐπὶ παρανόμῳ ἐπαναστᾶίη. 9 † Σχοίη δὲ πιστὸς τὴν ἑαυτοῦ ὁδὸν, † (λ) καθαρὸς δὲ χεῖρας ἀναλάβοι θάρσος. 10 † Οὐ μὴν δὲ ἀλλὰ πάντες ἐρείδετε καὶ (μ) δεῦτε δὴ, οὐ γὰρ εὑρίσκω ἐν ὑμῖν ἀληθές. 11 (ν) Αἱ ἡμέραι μου παρῆλθον ἐν βρόμῳ, † ἐῤῥάγη δὲ τὰ ἄρθρα τῆς καρδίας μου. 12 † Νύκτα εἰς ἡμέραν (ξ) ἔθηκα, † φῶς ἐγγὺς 13 ἀπὸ προσώπου σκότους. † Ἐὰν γὰρ ὑπομείνω, ᾅδης μου ὁ οἶκος, † ἐν δὲ γνόφῳ ἔστρωταί μου ἡ στρωμνή. 14 † Θάνατον (ο) ἐπεκαλεσάμην πατέρα μου εἶναι, † μητέρα δέ μου καὶ ἀδελφὴν σαπρίαν. 15 † Ποῦ οὖν μου (π) ἔτι ἐστὶν ἡ ἐλπὶς, † ἢ τὰ ἀγαθά μου (ρ) ὄψομαι; 16 † Ἢ μετ᾽ ἐμοῦ εἰς (σ) ᾅδην καταβήσονται; † ἢ ὁμοθυμαδὸν ἐπὶ χώματος καταβησόμεθα;

Cæcati enim ſunt ab ira oculi 7 mei: expugnatus ſum valdè ab omnibus. Admiratio tenuit vera- 8 ces ſuper hoc: juſtus autem ſuper inimicum conſurgat. (g) Te- 9 neat autem fidelis viam ſuam: & purus manibus ſumat audaciam. Veruntamen omnes in- 10 cumbite, & venite, quæſo: non enim invenio in vobis veritatem. Dies mei tranſierunt in ſtrepitu, 11 & (h) rupti ſunt articuli cordis mei. Noctem in diem (i) 12 poſui: lumen propè à facie tenebrarum. Nam ſi ſuſtinuero, in- 13 feri domus mea erunt: & in caligine ſtratum eſt ſtratum meum. Interitum appellavi patrem me- 14 um eſſe, matrem autem meam, & ſororem, tabem. Ubi igitur 15 eſt mea jam ſpes? aut bona mea videbo? Aut mecum ad inferos 16 deſcendent? aut pariter ſuper pulverem deſcendemus?

MS.A. (θ) Πεπήρωνται γὰρ ἀπὸ ὀργῆς σου οἱ (ι) καὶ πεπολιόρκημαι ὑπὸ πάντων μεγάλως. (κ) ἐπὶ τούτοις, δικαίῳ γὰρ παράνομος ἐπανέστη. (λ) καὶ ὁ καθαρὸς χέρσιν (μ) δεῦτε, οὐ γὰρ (ν) Καὶ ἡμέραι μου παρῆλθον ἐν δρόμῳ, (ξ) ἔθηκαν, (ο) προσεκαλεσάμην (π) ἔτι ἡ ἐλπὶς, (ρ) ὄψομαι ἔτι; (σ) τὸν ᾅδην καταβύσεται;

CAP. XVIII. יח

ponetis Uſquequo : dixit & , Suchites Bildad reſpondit Et
1 וַיַּעַן בִּלְדַּד הַשֻּׁחִי וַיֹּאמַר׃ עַד־אָנָה תְּשִׂימוּן 2
reputamur Cur : loquemur poſtea & ,intelligatis ? ſermonibus fines
3 קִנְצֵי לְמִלִּין תָּבִינוּ וְאַחַר נְדַבֵּר׃ מַדּוּעַ נֶחְשַׁבְנוּ
ſuam animam *Rapiens* ? veſtris oculis in *ſumus clauſi* ; jumentum ut
4 כַבְּהֵמָה נִטְמִינוּ בְּעֵינֵיכֶם׃ טֹרֵף נַפְשׁוֹ
transferetur & ; terra derelinquetur te propter nunquid ,ſuo furore in
בְּאַפּוֹ הַלְמַעַנְךָ תֵּעָזַב אָרֶץ וְיֶעְתַּק
non & ; extinguetur impiorum lux Etiam ? ſuo loco è ſaxum
5 צוּר מִמְּקֹמוֹ׃ גַּם אוֹר רְשָׁעִים יִדְעָךְ וְלֹא־
; ejus tabernaculo in *tenebreſcit* Lux .ejus ignis ſcintilla ſplendebit
6 יִגַּהּ שְׁבִיב אִשּׁוֹ׃ אוֹר חָשַׁךְ בְּאָהֳלוֹ
; ejus potentiæ greſſus Arctabuntur .extinguetur eum ſuper ejus lucerna &
7 וְנֵרוֹ עָלָיו יִדְעָךְ׃ יֵצְרוּ צַעֲדֵי אוֹנוֹ
rete *in* eſt miſſum Quia .ſuum conſilium eum projiciet &
8 וְתַשְׁלִיכֵהוּ עֲצָתוֹ׃ כִּי־שֻׁלַּח בְּרֶשֶׁת
Apprehendet .ambulabit *retiaculum* ſuper & ; ejus pedibus in
9 בְּרַגְלָיו וְעַל־שְׂבָכָה יִתְהַלָּךְ׃ יֹאחֵז
Abſconditus .*ſitibundos* eum *ſuper* roborabit ; laqueus calcaneum *in*
10 בְּעָקֵב פָּח יַחֲזֵק עָלָיו צַמִּים׃ טָמוּן
Undique .ſemitam ſuper ejus decipula & ; ejus *funis* terra in
11 בָּאָרֶץ חַבְלוֹ וּמַלְכֻּדְתּוֹ עֲלֵי נָתִיב׃ סָבִיב
Erit .ſuis pedibus *in* eum diſpergent & ; terrores eum terrebunt
12 בִּעֲתֻהוּ בַלָּהוֹת וֶהֱפִיצֻהוּ לְרַגְלָיו׃ יְהִי־
Comedet .ejus *coſtæ* *paratum exitium* & ; ejus *robur* famelicum
13 רָעֵב אֹנוֹ וְאֵיד נָכוֹן לְצַלְעוֹ׃ יֹאכַל
Evelletur .mortis primogenitus ejus *ramos* comedet ; ejus cutis *ramos*
14 בַּדֵּי עוֹרוֹ יֹאכַל בַּדָּיו בְּכוֹר מָוֶת׃ יִנָּתֵק
regem ad eum faciet incedere & ; ejus fiducia ejus tabernaculo è
מֵאָהֳלוֹ מִבְטַחוֹ וְתַצְעִדֵהוּ לְמֶלֶךְ
ſuper ſpargetur ; *ei non propter*, ejus tabernaculo in Habitabit .terrorum
15 בַּלָּהוֹת׃ תִּשְׁכּוֹן בְּאָהֳלוֹ מִבְּלִי־לוֹ יְזֹרֶה עַל־
; ſiccabuntur ejus radices Deorſum .ſulphur ejus habitaculum
16 נָוֵהוּ גָפְרִית׃ מִתַּחַת שָׁרָשָׁיו יִבָשׁוּ
.ejus *meſſis* excidetur ſurſum *de* &
וּמִמַּעַל יִמַּל קְצִירוֹ׃

CAP. XVIII.

1 Reſpondens autem Baldad 2 Suhites, dixit; Uſque ad quem finem verba jactabitis? intelligite priùs, & ſic loquamur. 3 Quarè reputati ſumus ut jumenta, & ſorduimus coram vobis? 4 Qui perdis animã tuam in furore tuo, numquid propter te derelinquetur terra, & transferentur rupes de loco ſuo? 5 Nónne lux impii extinguetur, nec ſpendebit flamma ignis e- 6 jus? Lux obtenebreſcet in tabernaculo illius, & lucerna, quæ 7 ſuper eum eſt, extinguetur. Arctabuntur greſſus virtutis ejus, & præcipitabit eum conſilium 8 ſuum. Immiſit enim in rete pedes ſuos, & in maculis ejus am- 9 bulat. Tenebitur planta illius laqueo, & exardeſcet contra 10 eum ſitis. Abſcondita eſt in terra pedica ejus, & decipula 11 illius ſuper ſemitam. Undique terrebũt eum formidines, 12 & involvent pedes ejus. Attenuetur fame robur ejus, & inedia invadat coſtas illius. 13 Devoret pulchritudinem cutis ejus, conſumat brachia illius 14 primogenita mors. Avellatur de tabernaculo ſuo fiducia ejus, & calcet ſuper eum, quaſi 15 rex, interitus. Habitent in tabernaculo illius ſocii ejus, qui non eſt, aſpergatur in ta- 16 bernaculo ejus ſulphur. Deorſum radices ejus ſiccentur, ſurſum autem atteratur meſſis ejus.

ΚΕΦ. ιη'.

1 † Ὑπολαβὼν δὲ (α) Βαλδὰδ ὁ Σαυχίτης, 2 λέγει, † Μέχρι τίνος οὐ παύσῃ; † ἐπίσχες, 3 ἵνα καὶ αὐτοὶ λαλήσωμεν. † (β) Διατί δὲ ὥσπερ τετράποδα σεσιωπήκαμεν ἐναντίον 4 σου; † (γ) Κέχρηταί σοι ὀργῇ. † τί γάρ; ἐὰν (δ) σὺ ἀποθάνῃς, ἀοίκητος (ε) ἡ ὑπ᾽ οὐρανόν; † ἢ καταστραφήσεται (ζ) ὄρη ἐκ 5 θεμελίων; Καὶ φῶς ἀσεβῶν σβεσθήσεται, 6 † καὶ οὐκ (η) ἀποβήσεται αὐτῶν ἡ φλόξ. † Τὸ φῶς αὐτοῦ σκότος ἐν (θ) διαίτῃ, † ὁ δὲ 7 λύχνος ἐπ᾽ αὐτῷ σβεσθήσεται. † (ι) Θηρεύσαισαν ἐλάχιστοι τὰ ὑπάρχοντα αὐτοῦ· 8 σφάλαι δὲ αὐτοῦ ἡ βουλή. † Ἐμβέβληται δὲ ὁ ποὺς αὐτοῦ ἐν παγίδι, † (κ) ἐν δικτύῳ 9 ἑλιχθείη. † (λ) Ἔλθοισαν δὲ ἐπ᾽ αὐτὸν παγίδες (μ), κατισχύσει ἐπ᾽ αὐτὸν διψῶντας. 10 Κέκρυπται ἐν τῇ γῇ σχοινίον αὐτοῦ, † καὶ ἡ 11 σύλληψις αὐτοῦ (ν) ἐπὶ τρίβων. Κύκλῳ † ὀλέσαισαν αὐτὸν ὀδύναι· πολλοὶ δὲ 12 περὶ πόδα αὐτοῦ ἔλθοισαν Ἐν λιμῷ στενῷ· † πτῶμα δὲ αὐτῷ (ͷ) ἡτοίμασται ἐξαίσιον. 13 † Βρωθείησαν αὐτοῦ κλῶνες ποδῶν, † κατέδεται δὲ αὐτοῦ (ξ) τὰ ὡραῖα θάνατος. 14 † Ἐκραγείη δὲ ἐκ διαίτης αὐτοῦ ἴασις, † σχοίη δὲ αὐτὸν ἀνάγκη (ο) αἰτίᾳ βασιλικῇ. 15 † Κατασκηνώσει ἐν τῇ σκηνῇ αὐτοῦ (π) ἐν νυκτὶ αὐτοῦ, † κατασπαρήσονται τὰ εὐπρεπῆ αὐτοῦ θείῳ. 16 Ὑποκάτωθεν αἱ ῥίζαι αὐτοῦ ξηρανθήσονται, καὶ ἐπάνωθεν ἐπιπεσεῖται θερισμὸς αὐτοῦ.

CAP. XVIII.

Reſpondens autem Baldad 1 Sauchites, ait: Quouſque non 2 ceſſabis? cohibe te, ut et ipſi loquamur. Et cur tanquam quadru- 3 pedia tacuimus corã te? (a) Uſa 4 eſt te ira. Quid enim? ſi tu mortuus fueris, inhabitabilis erit ea quæ ſub cælo? aut ſubvertentur montes à fundamentis? Et lumen impiorum extin- 5 guetur, & non (b) procedet lumen eorum. Lux ejus tenebræ in 6 domo, & lucerna ſuper eum extinguetur: Venentur infirmi ſub- 7 ſtantiam ejus; (c) erret autem ejus conſilium. Et (d) immiſſus 8 eſt pes ejus in laqueum: in rete involvatur. Veniant autem ſuper 9 eum laquei: confortabit ſuper eum (e) ſitientes. Abſconditus 10 eſt in terra funiculus ejus, & (f) captio ejus in ſemita. Per 11 circuitum perdant eum dolores: & (g) multi circa pedes ejus veniant In anguſtia famis: 12 Ruina autem parata eſt ei inſignis: Comedantur rami pedum 13 ejus, & mors devoret ſpecioſa ejus. Rumpatur autem de habi- 14 taculo ejus ſanitas: (h) & teneat eum neceſſitas cauſâ regali: Habitet in tabernaculo ejus, in 15 (i) nocte ejus. Aſpergentur (k) ſpecioſa ejus ſulphure: De ſub- 16 tùs radices ejus ſiccabuntur, & de ſurſùm decidet meſſio ejus.

MS.A. (α) Βαλδὰς ὁ Αὐχίτης, (β) Ἱνατί δὲ (γ) Κέχρησαι δὲ ὀργῇ. (δ)* σοι (ε) ἔσται ἡ (ζ) ἡ γῆ ἐκ θεμελίων; (η) ἀναβήσεται αὐτοῦ (θ) διαίτῃ αὐτοῦ, ὁ δὲ λύχνος αὐτοῦ ἐπ᾽ αὐτῷ (ι) Θηρεύσαισαν τὰ ὑπάρχοντα αὐτοῦ ἐλάχιστοι· καὶ σφαλείη αὐτοῦ ἡ βουλή. Ἐμβληθείη δὲ (κ) καὶ ἐν δικτύῳ εἱλιχθείη. (λ)* Ἔλθοισαν δὲ ἐν δὲ (μ) κυκλόθεν, καὶ κατισχύσουσιν ἐπ᾽ αὐτὸν διψῶντες. Κέκρυπται δὲ ἐν (ν) ἐπὶ * τρίβων κυκλόθεν, καὶ ὀλέσαιαν αὐτὸν ὀδύναι πολλῶν δὲ περὶ πόδας ἔλθοι Λιμῷ στενῷ· καὶ πτῶμα αὐτῷ (ͷ) ἡτοίμασο (ξ) τὰ ὦμια. (ο) καὶ αἰτία βασιλική. (π) καὶ ἐν σώματι αὐτοῦ, κατασπαρήσεται

תרגום TARGUM.

7 8 9 וּכְהֵית מִן רְגִיז עֵינַי וּקְלַסְתּוֹרֵי הֵיךְ טוּלָא כּוּלְהוֹן : יִשְׁתְּקוּן תְּרִיצֵי עַל דָּא דַכֵּי עַל דִּילְטוֹר יִתְגַּבַּר : וְיֵיחוֹד צַדִּיקָא אוֹרְחֵיהּ וּדְכֵי אִידֵיהּ יוֹסֵיף
10 11 12 אַתְחֵילוּתָא : וּבְרַם כּוּלְהוֹן תְּתוּבוּן אֱתוֹ כְדוּן וְלָא אֶשְׁכַּח בְּכוֹן חַכִּים : יוֹמֵי עֲבַרוּ רַעְיוֹנַי אִתְבַּטִּילוּ לוּחֵי לִבְבִי : לֵילְיָא הֵיךְ יְמָמָא יְשַׁוּוּן נְהוֹרָא
13 14 קָרִיב מְסַלְּקִין מִן קֳדָם חֲשׁוֹכָא : אִין אֲנָא סָבַר דְּבֵי קְבוּרְתָּא בֵּיתִי בַּחֲשׁוֹכָא מַאֲכִית שְׁוִויֵי : לְשַׁחְתָּא קְרֵיתִי אַבָּא אַנְתְּ אִמִּי וַאֲחָתִי לְרַחֲשָׁא : וְהָאן
15 16 דֵּיכֵי סִבְרִי וּמְתִינוּתִי מַן יִסְכְּנֵהּ : טַנְרוּ לְבֵי קְבוּרְתָּא תֶּחֱתָן אִין כַּחֲדָא עַל עֲפַר שָׁרַן :

יח

1 2 3 וַאֲתִיב בִּלְדַּד דְּמִן שׁוּחַ וַאֲמַר : עַד אֵימַת תְּשַׁוּוּן הַרְפַּתְקֵי לְמִלַּיָּא תִּתְבִּינוּן וּמִבָּתַר כֵּן נְמַלֵּל : מָא דֵין אִתְחֲשַׁבְנָא הֵיךְ בְּעִירָא טְמַעְנָא בְּמֶחְמֵיכוֹן :
4 דִּמְצַעַר נַפְשֵׁיהּ בְּרוּגְזֵיהּ אֶפְשַׁר דְּאַמְטוּלָךְ תִּשְׁתְּבֵק אַרְעָא וְטִינָר יִסְתַּלֵּק מִן אַתְרֵיהּ : תָּא דְּטָרִיד נַפְשֵׁיהּ לְנַרְמֵיהּ אֶפְשַׁר דְּמְטוּלָתָךְ תִּתְנְשֵׁי אַרְעָא
5 6 7 מִן לְמִתַּב וְתַקִּיפָא יִסְתַּלֵּק מִן אַתְרֵיהּ : לְחוֹד נְהוֹר רַשִׁיעֵי יִטְפֵּי וְלָא יִנְהַר גִּיהַּ נוּרֵיהּ : נְהוֹר חֲשַׁךְ בְּמַשְׁכְּנֵיהּ וּשְׁרָגֵיהּ אַמְטוּלָתֵיהּ יִטְפֵּי : יִתְעַיְּקָן פְּסִיעַת
8 9 10 תּוּקְפֵיהּ וְתִטְלוֹקִנֵּיהּ מִלְּכָתֵיהּ : מְטוּל דְּאִשְׁתַּדַּר בִּמְצַדְתָּא בְּרַגְלוֹי וְעַלַוֵּי סְרִגְתָּא יְטַיֵּיל : יֵאחוֹד בְּתִקְלָא דְּפַחָא יִתְקוֹפוּ עֲלוֹי נִבְרַיָּא : טְמִיעַ בְּאַרְעָא
11 12 אַשְׁלֵיהּ וְאוּחֲדָתֵיהּ עֲלוֹי שְׁבִילָא : חֲזוֹר חֲזוֹר יְבַעֲתוּנֵיהּ אַתְרְגוּשִׁין וּמְבַדְּרִין יָתֵיהּ לְרַגְלוֹי : יְהֵי כַּפַּן בִּיר בּוּכְרֵיהּ וְצַעֲרָא מְכַוַּן לְאִנְתְּתֵיהּ : תָּא יְהֵי כַּפַּן
13 בְּאֶנְיוּנוּתֵיהּ וְצַעֲרָא מְזוּמָּן לִסְטְרֵיהּ : יֵיכוֹל בּוֹצְנִין דְּחַפְיָין לְמַשְׁכֵּיהּ יִנְסַר בְּנוֹי מַלְאַךְ מוֹתָא : תָּא יֵיכוֹל בִּסְרָא תְּקוֹף מַשְׁכֵּיהּ וְנַסַּר בְּנוֹהִי שֵׁירוּי מוֹתָא :
14 15 16 יִתְעַר מִמַּשְׁכְּנֵיהּ רוּחְצָנֵיהּ וְתוֹבְלִנֵּיהּ לְמֶלֶךְ רְגוּשְׁתָּא : תִּשְׁרֵי אִנְתְּתֵיהּ בְּמַשְׁכְּנֵיהּ מִדְּלֵית לֵיהּ וְיִבַּדַּר עַל מְדוֹרֵיהּ גּוּפְרִיתָא : מֵאַרְעָא בְנוֹי יִשְׁתֵּיצוּן וּמִשְׁמַיָּא
יִתְעַר אוּבְדָנֵיהּ : תָּא מִלְּרַע שָׁרְשׁוֹהִי יִתְיַבְּשׁוּן וּמִן לְעֵיל יִתְמוֹלֵל וַאֲוִירֵיהּ ;

Versio SYRIACA.

7 8 * ܚܫܟܬ ܡܢ ܪܘܓܙܐ ܥܝܢܝ. ܘܬܪܥܝܬܝ ܟܠܗܝܢ ܐܝܟ ܛܠܠܐ. * ܢܬܕܡܪܘܢ ܬܪܝܨܐ ܥܠ ܗܕܐ ܘܙܟܝܐ ܥܠ
9 ܥܘܠܐ ܢܬܬܦܨ. * ܢܐܚܘܕ ܙܕܝܩܐ ܐܘܪܚܗ. ܘܢܫܬܪܪ. ܘܕܟܐ ܒܐܝܕܘܗܝ ܢܬܘܣܦ ܚܝܠܐ * ܒܪܡ ܗܐ ܟܠܟܘܢ
10 11 ܐܬܦܢܝܬܘܢ. ܘܬܘ ܐܬܝܬܘܢ ܠܘܬܝ. ܘܠܐ ܐܫܟܚ ܒܟܘܢ ܚܟܝܡܐ. * ܥܒܪܝܢ ܝܘܡܬܐ. ܘܡܒܛܠܝܢ
12 ܡܚܫܒܬܐ. ܘܡܘܒܕܝܢ ܠܠܒܘܬܐ ܕܥܡܡܐ. * ܠܠܠܝܐ ܠܐܝܡܡܐ ܥܒܕܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܢܘܗܪܐ ܡܩܪܒܝܢ ܐܢܬܘܢ ܩܕܡ
13 14 ܚܫܘܟܐ. * ܐܢ ܐܣܟܐ ܠܫܝܘܠ. ܒܝܬܝ ܗܘ. ܘܒܚܫܘܟܐ ܫܘܝܬ ܥܪܣܝ. * ܠܚܒܠܐ ܩܪܝܬ ܐܒܝ ܐܢܬ. ܘܐܡܝ
15 ܘܚܬܝ ܠܥܦܪܐ. * ܘܐܝܟܐ ܗܘ ܗܫܐ ܣܒܪܝ. ܘܬܘܟܠܢܝ ܘܣܒܪܝ ܡܢܘ ܢܚܙܝܘܗܝ. * ܒܚܝܠܐ ܠܫܝܘܠ
16 1 ܢܚܬܘܢ. ܘܐܟܚܕܐ ܠܥܦܪܐ ܢܫܬܦܠܘܢ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܝܚ * ܘܥܢܐ ܒܠܕܕ ܫܘܚܝܐ ܘܐܡܪ.
2 * ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܣܝܡܝܢ ܐܢܬܘܢ ܣܘܓܦܐ ܠܡܠܐ. ܐܣܬܟܠܘ. ܘܒܬܪܟܢ ܢܡܠܠ. * ܠܡܢܐ ܐܬܚܫܒܢ ܐܝܟ
3 4 ܒܥܝܪܐ. ܘܐܬܛܢܦܢ ܒܥܝܢܝܟ. * ܩܛܠ ܢܦܫܗ ܒܪܘܓܙܗ. ܐܘ ܡܛܠܬܟ ܬܫܬܒܩ ܐܪܥܐ. ܘܢܫܢܐ ܛܘܪܐ ܡܢ
5 6 ܕܘܟܬܗ. * ܘܐܦ ܫܪܓܐ ܕܪܫܝܥܐ ܢܕܥܟ. ܘܐܦ ܠܐ ܢܢܗܪ ܫܠܗܒܝܬܐ ܕܢܘܪܗ. * ܢܘܗܪܐ ܢܚܫܟ ܒܡܫܟܢܗ.
7 8 ܘܫܪܓܗ ܢܕܥܟ ܥܠܘܗܝ. * ܢܬܥܨܪܘܢ ܗܠܟܬܗ ܒܟܐܒܘܗܝ. ܘܬܛܒܥܝܘܗܝ ܬܪܥܝܬܗ. * ܡܛܠ ܕܐܘܫܛ ܪܓܠܗ
9 10 ܠܡܨܝܕܬܐ. ܘܥܠ ܡܨܝܕܬܐ ܗܠܟ. * ܘܐܚܕ ܦܚܐ ܥܩܒܗ. ܢܬܥܫܢܘܢ ܥܠܘܗܝ ܨܗܝܐ. * ܛܡܝܪܝܢ
11 ܒܐܪܥܐ ܚܒܠܘܗܝ. ܘܡܨܝܕܬܗ ܥܠ ܫܒܝܠܐ ܡܚܕܪܐ. * ܢܚܕܪܘܢܝܗܝ ܙܘܥܐ ܒܗܬܬܐ. ܘܢܒܕܪܘܢ ܠܪܓܠܘܗܝ.
12 13 * ܘܢܗܘܐ ܟܦܢܐ ܟܐܒܗ. ܘܬܒܪܐ ܡܛܝܒ ܠܕܪܘܗܝ. * ܢܬܐܟܠܘܢ ܒܥܘܫܢܐ ܩܘܪܝܘܗܝ. ܘܬܐܟܘܠ
14 15 ܡܘܬܐ ܒܘܟܪܘܗܝ. * ܢܬܬܦܣܩ ܡܢ ܡܫܟܢܗ ܬܘܟܠܢܗ. ܘܢܫܪܗܒܘܢܗ ܒܗܬܬܗ ܕܡܠܟܐ. * ܘܢܥܡܪܘܢ
16 ܒܡܫܟܢܗ. ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܐܢܫ. ܢܬܒܕܪ ܥܠ ܐܬܪܗ ܟܒܪܝܬܐ. * ܡܢ ܠܬܚܬ ܢܝܒܫܘܢ ܥܩܪܘܗܝ.
ܘܡܢ ܠܥܠ ܢܬܩܛܦ ܩܛܦܗ.

Versio ARABICA.

7 8 * توجعت من الغضب عيني * وافكاري كلها مثل الظلال * يتعجب الصالحون على هذا * والزاكي علي
9 10 الاثيم يستفرغ * ياخذ الصديق طريقه ويبقى * والطاهر اليدين يزداد على القوة * ولكن الان كلكم
11 قد عدتم ورجعتم * جيتم الي ولم اجد فيكم حكيما * بل معبري الايام * ومبطلي الفكر * ومهلكي
12 13 قلوب الشعوب * الليل نهارا يجعلونه * والنور يقربونه من قبل الظلمة * ان انا انتظرت الهاوية فانها
14 15 بيتي * وفي الظلمة سويت فرشي * للفساد دعوت انت ابي * وامي واختي الدودة * فاين الان رجاي
16 واتكالي * ورجاي من الذي يجده * بالقوة الي الهاوية ينحدرون * وجميعا الي التراب يهبطون *
1 2 * الفصل الثامن عشر * * فاجاب بلداد الشوحاني فقال * حتى الي متى تضعون خلافا
3 4 للقول * افهموا واخيرا نتكلم * لماذا حسبنا مثل البهيمة * وتدنسنا في عينيك * ايها القاتل نفسه
5 بغضبه * فالان من اجلك تترك الارض * ويتباعد الجبل من مكانه * وايضا فان سراج المنافقين يطفا *
6 7 وايضا يخمد لهيب نار * والضوء يظلم في مسكنه * وسراجه ينطفي عليه * تضعف خطواته باوجاعه
8 9 ويغرقه فكره * من اجل انه بسط رجله في المصادة وعلي الشبكة سلك * فامسك الفخ عقبه * ويعظم
10 11 عليه المخانق * مطمورة في الارض حباله * ومصيدته علي السبل تستدير * ويغشاه اصناف الحيرة * فتبدد
12 13 حياته * ويكون الجوع داوه * والانكسار يثبت علي ذريته * فتوكل بالقدرة قراه * وبقوة الموت ابكاره *
14 15 * ينقطع من مسكنه رجاوه * وتستعجله دواهي الملك * فتحل في مسكنه * لانه ليس احد * يتبدد على
16 مكانه الكبريت * ومن تحت ييبس عروقه * ومن فوق يتبتر قطافه *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Doluit præ furore oculus meus, & cogitationes meæ 7
omnes velut umbra. Obstupescent recti super hoc, 8
& innocens (c) evomet super impium: Tenebit 9
justus viam suam; & (d) tutus erit, & mundus manibus augebitur
viribus. (e) At verò jam 10
omnes conversi rediistis, & venistis ad me, & non invenio inter vos sapientem: Sed transigentes 11
dies otiosis cogitationibus, perdentes corda populorum: Noctem facitis 12
diem, & lucem præponitis tenebris. Si expecto 13
infernum, ipse dom⁹ mea est, & in tenebris stravi lectũ meũ: Putredinẽ vocavi, 14
Tu es pater me⁹; et mater mea et soror mea, (f) pulverẽ. Ubi nunc est 15
spes mea, & fiducia mea? & spem meam quis inveniat? Cum potentia in infernum 16
descendent, & (g) omnes ad terram labentur.

CAP. XVIII.

RESpondit Beldad 1
Subites, & dixit, usque- 2
quò ponetis obstaculum sermoni? Intelligite, tum demùm loquemur. Cur 3
reputati sumus velut jumentum, & sordimus coram oculis tuis, O oc- 4
cidens animam suam in furore suo? (a) Et modò propter te relinquetur terra, & mons recedet à lo-
co suo? Imò etiam lucer- 5
na impiorũ extinguetur, & sedabitur ardor ignis ejus, Et lux obtenebre- 6
scet in habitaculo ipsius, et lucerna ejus extinguetur super eum: (b) Infir- 7
mabuntur passus ejus in doloribus ejus, & submerget eũ cogitatio ipsius: Eò quòd extendit 8
pedem suum ad rete, & super (c) decipulam ambulavit; Tenuitq; laqueus 9
calcaneum ejus, & invalescent adversùs eum (d) laquei: Humatæ sunt in 10
terra pedicæ ejus, & reticulum ejus viam circundat. Et (e) cooperient 11
eum genera stuporum, & dissipabunt (f) vitã ejus: Et erit fames morb⁹ ejus, 12
& fractio confirmabitur super generationes ejus: Comedentur magna cum 13
potentia oppida ej⁹, et vi mortis primogenita ejus: Abscindetur spes ejus de 14
habitaculo ejus, (g) & solicitabunt eum infortunia regis, Et habitabunt 15
in habitaculo ejus, eò quòd nullus sit: dissipabitur sulphur super (h)
locum ejus: Deorsum radices ejus siccabuntur, et sursum atterentur vindemiæ ejus: 16

INTERP. SYRIACA.

(*c*) excutiet se cum impio; (*d*) constans erit, (*e*) Verùm ecce (*f*) vermem. (*g*) et simul ad terrã descendunt. *Cap. xviii.* (*a*) Ecce propter (*b*) Desolabuntur (*c*) stoream (*d*) sitibundi: (*e*) circundabunt eum series (*f*) ad pedes ejus: (*g*) et festinabunt ad eum stupores regis, (*h*) terram ejus;

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et caligavit à furore oculus meus, & vultus meus quasi umbra totus est. Tacebunt recti super hoc, justus contra delatorem se confortabit. Et apprehendet rectus 7 8
viam suam, & mundus manibus addet robur. Veruntamen universi vos convertimini, venite nunc, & non inveniam in vobis sapientem. Dies mei transierunt, co- 9 10
gitationes meæ cessaverunt in tabulis cordis mei. Noctem ponent *sicut* diem, lucem propinquam auferunt à facie tenebrarum. Si ego sustinuero, domus sepulturæ domus 11 12
mea erit: in tenebris sternam *stratum meum*. Foveam vocavi, pater meus es tu: mater mea & soror mea vermi [*dixi.*] Et ubi est nunc spes mea, & expectationem 13 14
meam quis intuebitur? Duo corpora in domum sepulturæ descendent, si simul super pulverem commorabuntur. 15 16

CAP. XVIII.

ET respondit Baldad, qui erat de Suach, & ait: Usquequo ponetis vices verbis? intelligite, & post hæc loquamur. Quare reputati sumus sicut jumentum: abs- 1 3 2
conditi sumus in conspectu vestro? Qui tribulat animam suam in ira sua, nunquid propter te derelinquetur terra, & transferetur rupes de loco suo? *Tar-* 4
gum aliud: Qui *fatigat* animam suam *sibiipsi*, nunquid propter te *oblivioni dabitur* terra, ne habitetur, & *fortis* transferetur de loco suo. Attamen lux 5
impiorum extinguetur, & non splendebit *splendor* ignis ejus. Lux obtenebrescet in tabernaculo suo, & lucerna ejus propter eum extinguetur. Artabuntur gressus for- 6 7
titudinis ejus, & projiciet eum consilium suum. Quia immissus est in rete pedes ejus, & super retiaculum deambulabit. Tenebitur offendiculo laquei, prævalebunt 8 9
adversus eum confodientes. Absconditus est in terra funiculus ejus, & pedica ejus super semitam. Per circuitum terrebunt eum tumultus, & dispergent *eum ad* pedes 10 11
ejus. Sit famelicus *filius primogenitus* ejus, & afflictio parata *uxori* ejus. *Targum aliud*: Sit famelicus in inedia ejus, & afflictio parata lateri ipsius. Devoret lucer- 12
nam quæ operit cutem ejus: consumat filios ej⁹ angelus mortis. *Targum aliud:* Devoret *carnem robur cutis* ejus, & consumat filios ejus *principium* mortis. Succidatur 13 14
de tabernaculo suo spes ejus, & deferat eum ad regem terrorum. Habitet uxor ejus in tabernaculo non suo, & exspargatur super habitaculum ejus sulfur. *E terra* 15 16
filii ejus excindentur, & è cœlo decernatur exitium ejus. Targum aliud: Deorsum radices ejus siccabuntur, & sursum abscindetur ramus ejus.

faciebus ſuper ei nomen non & ; terra è peribit ejus Memoria
17 זִכְרוֹ־אָבַד מִנִּי־אֶרֶץ וְלֹא־שֵׁם לוֹ עַל־פְּנֵי־
.eum amovebunt orbe de & ; tenebras ad luce de eum Expellent .plateæ
18 חוּץ׃ יֶהְדְּפֻהוּ מֵאוֹר אֶל־חֹשֶׁךְ וּמִתֵּבֵל יְנִדֻּהוּ׃
ſuperſtes non & ; ejus populo in nepos non & , ei filius Non
19 לֹא נִין לוֹ וְלֹא־נֶכֶד בְּעַמּוֹ וְאֵין שָׂרִיד
; noviſſimi obſtupuerunt ejus diem Super .ejus habitationibus in
20 בִּמְגוּרָיו׃ עַל־יוֹמוֹ נָשַׁמּוּ אַחֲרֹנִים
; iniqui habitacula hæc Veruntamen .horrorem apprehenderunt priſci &
21 וְקַדְמֹנִים אָחֲזוּ שָׂעַר׃ אַךְ־אֵלֶּה מִשְׁכְּנוֹת עַוָּל
.Deum novit non locus iſte &
וְזֶה מְקוֹם לֹא־יָדַע אֵל׃

CAP. XIX. יט

afficietis dolore Uſquequo : dixit & , Ijob reſpondit Et
1 2 וַיַּעַן אִיּוֹב וַיֹּאמַר׃ עַד־אָנָה תּוֹגְיוּן
decem Jam ? ſermonibus in me atteretis & ; meam animam
3 נַפְשִׁי וּתְדַכְּאוּנַנִי בְמִלִּים׃ זֶה עֶשֶׂר
.mihi eritis indurati erubeſcetis non ; me affeciſtis pudore vicibus
פְּעָמִים תַּכְלִימוּנִי לֹא־תֵבֹשׁוּ תַּהְכְּרוּ־לִי׃
Si .meus error morabitur mecum ; erraverim verè etiam Et
4 5 וְאַף־אָמְנָם שָׁגִיתִי אִתִּי תָּלִין מְשׁוּגָתִי׃ אִם־
me ſuper argueritis & ; magnificaveritis me ſuper verò
אָמְנָם עָלַי תַּגְדִּילוּ וְתוֹכִיחוּ עָלַי
; me pervertit Deus quòd nunc Scitote .meum opprobrium
6 חֶרְפָּתִי׃ דְּעוּ־אֵפוֹ כִּי־אֱלוֹהַּ עִוְּתָנִי
non & , injuriam clamavero En .fecit circuire me ſuper ſuum rete &
7 וּמְצוּדוֹ עָלַי הִקִּיף׃ הֵן אֶצְעַק חָמָס וְלֹא
, ſepſit meam Semitam .judicium non & , vociferavero ; exaudiar
8 אֵעָנֶה אֲשַׁוַּע וְאֵין מִשְׁפָּט׃ אָרְחִי גָדַר
.ponet tenebras meis ſemitis ſuper & ; tranſibo non &
וְלֹא אֶעֱבוֹר וְעַל־נְתִיבוֹתַי חֹשֶׁךְ יָשִׂים׃
.mei capitis diadema removit & ,fecit ſpoliare me deſuper meam Gloriam
9 כְּבוֹדִי מֵעָלַי הִפְשִׁיט וַיָּסַר עֲטֶרֶת רֹאשִׁי׃
.meam ſpem lignum ſicut proficiſci fecit & ,ivi & , undiquaque me Deſtruet
10 יִתְּצֵנִי סָבִיב וָאֵלַךְ וַיַּסַּע כָּעֵץ תִּקְוָתִי׃
.ipſius anguſtiatores ſicut ſibi me reputavit &,ſuū naſum me ſuper fecit iraſci Et
11 וַיִּחַר עָלַי אַפּוֹ וַיַּחְשְׁבֵנִי לוֹ כְצָרָיו׃
, ſuam viam me ſuper ſtraverunt & , ejus exercitus venerunt Simul
12 יַחַד יָבֹאוּ גְדוּדָיו וַיָּסֹלּוּ עָלַי דַּרְכָּם
me deſuper meos Fratres .mei tabernaculi circuitu ſunt caſtrametati &
13 וַיַּחֲנוּ סָבִיב לְאָהֳלִי׃ אַחַי מֵעָלַי
Deſierunt .me à ſunt alienati veruntamen ,mei noti & :fecit elongare
14 הִרְחִיק וְיֹדְעַי אַךְ־זָרוּ מִמֶּנִּי׃ חָדְלוּ
, meæ domus Inquilini .mei ſunt obliti mei noti & : mei propinqui
15 קְרוֹבָי וּמְיֻדָּעַי שְׁכֵחוּנִי׃ גָּרֵי בֵיתִי
.eorum oculis in fui extraneus;me reputabant alienum in meæ ancillæ &
וְאַמְהֹתַי לְזָר תַּחְשְׁבֻנִי נָכְרִי הָיִיתִי בְעֵינֵיהֶם׃
deprecabar meo ore ipſo in : reſpondit non & , vocavi meum Servum
16 לְעַבְדִּי קָרָאתִי וְלֹא יַעֲנֶה בְּמוֹ־פִי אֶתְחַנֶּן־
filios ad deprecabar & : meæ uxori erat alienus meus Halitus .illum
17 לוֹ׃ רוּחִי זָרָה לְאִשְׁתִּי וְחַנֹּתִי לִבְנֵי
loquebantur & ,aſſurgebam:me in deſpexerunt iniqui Etiam .mei uteri
18 בִטְנִי׃ גַּם־עֲוִילִים מָאֲסוּ בִי אָקוּמָה וַיְדַבְּרוּ־
, amavi hi & : mei ſecreti viri omnes me ſunt Abominati .me in
19 בִי׃ תִּעֲבוּנִי כָּל־מְתֵי סוֹדִי וְזֶה־אָהַבְתִּי
evaſi & ; meum os adhæſit mea carne in &,mea pelle In .me in ſunt verſi
20 נֶהְפְּכוּ־בִי׃ בְּעוֹרִי וּבִבְשָׂרִי דָּבְקָה עַצְמִי וָאֶתְמַלְּטָה
; mei amici vos mei miſeremini,mei Miſeremini.meorum dentium pelle in
21 בְּעוֹר שִׁנָּי׃ חָנֻּנִי חָנֻּנִי אַתֶּם רֵעָי
: Deus ſicut ,me perſequimini quid Ut .me in tetigit Dei manus quia
22 כִּי יַד־אֱלוֹהַּ נָגְעָה בִּי׃ לָמָּה תִּרְדְּפֻנִי כְּמוֹ־אֵל
? ſaturabimini non mea carne de &
וּמִבְּשָׂרִי לֹא תִשְׂבָּעוּ׃

Verſio VULG. LAT.

17 Memoria illi' pereat de terrâ, & non celebretur nomen ejus 18 in plateis. Expellet eum de luce in tenebras, & de orbe 19 transferet eum. Non erit ſemen ejus neque progenies in populo ſuo, nec ullæ reliquiæ 20 in regionibus ejus. In die ejus ſtupebunt noviſſimi, et primos 21 invadet horror. Hæc ſunt ergò tabernacula iniqui, & iſte locus ejus qui ignorat Deum.

CAP. XIX.

1 RESpondens autem Job, di-2 xit; Uſquequò affligitis animam meam, & atteritis me ſer-3 monibus? En, decies confunditis me, & non erubeſcitis 4 opprimentes me. Nempè, etſi ignoravi, mecum erit ignoran-5 tia mea. At vos contra me erigimini, & arguitis me op-6 probriis meis. Saltem nunc intelligite, quia Deus non æquo judicio afflixerit me, & 7 flagellis ſuis me cinxerit. Ecce clamabo vim patiens, & nemo audiet: vociferabor, & non eſt 8 qui judicet. Semitam meam circumſepſit, & tranſire non poſſum, & in calle meo tene-9 bras poſuit. Spoliavit me gloriâ meâ, & abſtulit coronam 10 de capite meo. Deſtruxit me undique, & pereo, & quaſi evulſæ arbori abſtulit ſpem 11 meam. Iratus eſt contra me furor ej', & ſic me habuit quaſi 12 hoſtem ſuum. Simul venerunt latrones ejus, & fecerunt ſibi viam per me, & obſederunt in 13 gyro tabernaculū meum. Fratres meos longè fecit à me, & noti mei quaſi alieni receſſe-14 runt à me. Dereliquerunt me propinqui mei: & qui me no-15 verant, obliti ſunt meî. Inquilini domûs meæ, & ancillæ meæ, ſicut alienum habuerunt me, & quaſi peregrinus fui in 16 oculis eorum. Servum meum vocavi, & non reſpondit, ore proprio deprecabar illum. 17 Halitum meum exhorruit uxor mea, & orabā filios uteri mei. 18 Stulti quoque deſpiciebāt me, & cùm ab eis receſſiſſē, detra-19 hebant mihi. Abominati ſunt me quondā conſiliarii mei: & quem maximè diligebam, aver-20 ſatus eſt me. Pelli meæ, conſumptis carnibus, adhæſit os meum, & derelicta ſunt tantummodò labia circa dentes 21 meos. Miſeremini meî, miſeremini meî, ſaltem vos amici mei, quia manus Domini teti-22 git me. Quarè perſequimini me ſicut Deus, & carnib' meis ſaturamini?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

17 † Τὸ μνημόσυνον αὐτοῦ ἀπόλοιτο ἐκ γῆς, καὶ (ρ) ὑπάρξει ὄνομα αὐτῷ ἐπὶ πρόσωπον 18 ἐξωτέρω. † (σ) Ἀπώσειεν αὐτὸν ἐκ 19 φωτὸς εἰς σκότος. † Οὐκ ἔσται ἐπίγνωστος (τ) ἐν λαῷ αὐτοῦ, † οὐδὲ σεσωσμένος ἐν τῇ ὑπ᾽ οὐρανὸν ὁ οἶκος αὐτοῦ. 20 † Ἀλλ᾽ (υ) ἐν τοῖς αὐτοῦ ζήσονται ἕτεροι. † ἐπ᾽ αὐτῷ ἐστέναξαν ἔσχατοι, † πρώτους 21 δὲ ἔσχε θαῦμα. † Οὗτοί εἰσιν (φ) οἱ οἶκοι ἀδίκων, οὗτος δὲ ὁ τόπος τῶν μὴ εἰδότων τὸν κύριον.

17 Memoriale ejus pereat de terra, & erit nomen ei ſuper faciem 18 (l) extrá: (m) Expellat eum de luce in tenebras. 19 (n) Non erit cognominatus in populo ſuo, neque domus ejus ſalvata in ea quæ ſub cœlo. 20 Sed in rebus ejus vivent alii: ſuper eum (o) gemuerunt ultimi: primos autem tenuit admiratio. 21 Hæ ſunt domus impiorum: & hic eſt locus eorum, qui non noverunt Dominum.

MS.A. (ρ) ὑπάρχει (σ) Καὶ ἀπώσαιεν (τ) ἐν τῷ λαῷ αὐτοῦ, (υ) ἐντὸς αὐτοῦ (φ) οἶκοι ἀδίκων, οὗτος δὲ τόπος

ΚΕΦ. ιθ΄.

1 † ὙΠολαβὼν δὲ Ἰὼβ, λέγει, 2 † (α) Ἕως τίνος ἔγκοπον ποιήσετε (β) ψυχήν μου, καὶ καθαιρεῖτέ με λόγοις; † γνῶτε μόνον 3 ὅτι ὁ κύριος ἐποίησέ (γ) με οὕτως. Καταλαλεῖτέ μου, οὐκ αἰσχυνόμενοί με (δ) ἐπίκεισθέ 4 μοι. † Ναὶ δὴ (ε) ἐπ᾽ ἀληθείας ἐγὼ ἐπλανήθην, † (ζ) παρ᾽ ἐμοὶ δὲ αὐλίζεται πλάνος· λαλῆσαι (η) ῥήματα ἃ οὐκ ἔδει, τὰ δὲ ῥήματά μου πλανᾶται καὶ οὐκ ἐπὶ 5 καιροῦ. † Ἔα δὲ, ὅτι ἐπ᾽ ἐμοὶ μεγαλύνεσθε, 6 † ἐνάλλεσθε δέ μοι ὀνείδει. † (θ) Γνῶτε οὖν ὅτι κύριός ἐστιν ὁ (ι) ταράξας, † ὀχύρω-7 μα δὲ αὐτοῦ ἐπ᾽ ἐμὲ ὕψωσεν. † Ἰδοὺ (κ) γελῶ ὀνείδει, οὐ λαλήσω· † κεκράξομαι, καὶ 8 οὐδαμοῦ κρίμα. † Κύκλῳ περιῳκοδόμημαι, καὶ οὐ μὴ διαβῶ· † (λ) ἐπὶ πρόσωπόν μου 9 σκότος ἔθετο. † (μ) Τὴν δὲ δόξαν ἀπ᾽ ἐμοῦ ἐξέδυσεν, (ν) ἀφεῖλε δὲ στέφανον ἀπὸ 10 κεφαλῆς μου. Διέσπασέ (ξ) με κύκλῳ καὶ ᾠχόμην, † ἐξέκοψε δὲ ὥσπερ δένδρον τὴν 11 ἐλπίδα μου. † Δεινῶς (ο) δέ μοι ὀργῇ ἐχρήσατο, † ἡγήσατο δέ με ὥσπερ ἐχθρόν. 12 † Ὁμοθυμαδὸν (π) δὲ ἦλθον τὰ πειρατήρια αὐτοῦ ἐπ᾽ ἐμοὶ, ταῖς ὁδοῖς μου ἐκύκλωσαν 13 (ρ) ἐγκάθετοι. † Ἀπ᾽ ἐμοῦ ἀδελφοί μου ἀπέστησαν, † ἔγνωσαν ἀλλοτρίους ἢ ἐμέ· † (σ) φίλοι δέ μου ἀνελεήμονες γεγόνα-14 σιν· (τ) Οὐ προσεποιήσαντό με οἱ ἐγγύτατοί μου, † (υ) καὶ οἱ εἰδότες μου τὸ ὄνο-15 μα ἐπελάθοντό μου. Γείτονες (φ) οἰκίας, θεράπαιναί τε μου, † ἀλλογενὴς ἤμην ἐν-16 αντίον αὐτῶν. Θεράποντά μου ἐκάλεσα, καὶ (χ) οὐχ ὑπήκουσε· † στόμα δέ μου 17 (ψ) ἐδέετο· † Καὶ ἱκέτευον τὴν γυναῖκά μου, † (ω) προσεκαλούμην δὲ κολακεύων 18 υἱοὺς παλλακίδων μου· † Οἱ δὲ εἰς τὸν αἰῶνά με (α) ἀπεποιήσαντο, † ὅταν ἀναστῶ, 19 κατ᾽ ἐμοῦ λαλοῦσιν. † Ἐβδελύξαντό (β) με οἱ ἰδόντες με· † (γ) οὓς δὴ ἠγαπήκειν, 20 ἐπανέστησάν μοι. † Ἐν δέρματί μου ἐσάπησαν (*) αἱ σάρκες μου, † τὰ δὲ ὀστᾶ μου 21 (δ) ἐν ὀδοῦσιν ἔχεται. † (ε) Ἐλεήσατέ με, ἐλεήσατέ με, ὦ φίλοι, † χεὶρ γὰρ κυρίου (ζ) 22 ἡ ἁψαμένη μού ἐστιν. † Διατί με διώκετε ὥσπερ καὶ ὁ κύριος; † ἀπὸ δὲ σαρκῶν μου οὐκ ἐμπίπλασθε;

CAP. XIX.

*RESpondens autem Job, ait; 1 2 uſquequò moleſtiam facietis animæ meæ, & deſtruetis me verbis? ſcitote tantùm, quia Dominus fecit (a) me ſic: 3 (b) Loquimini contra me: non veriti me, infeſti eſtis mihi: 4 Eſto (c) utique in veritate ego erravi, & apud me moratur (d) error, loqui verba, quæ non oportebat, & verba mea errant, & non in tempore. 5 Sine verò, quoniam ſuper me magnificamini: 6 et (e) inſultatis mihi opprobrio. Scitote igitur quia Dominus eſt, qui (f) turbavit, & vallum ſuum ſuper me exaltavit. 7 Ecce rideo * opprobrio, non loquar: (g) clamabo, & nuſquam judicium: 8 In circuitu circumædificatus ſum, & non tranſibo: in (h) vultu meo tenebras poſuit. 9 Et gloriam à me exuit, & abſtulit coronam de capite meo. 10 Dirupit me undique, & abii: et excidit tanquam arborem ſpem meam. 11 Graviter autem mihi irâ uſus eſt: & arbitratus eſt me tanquam inimicum; 12 Unanimiter autem venerunt (i) tentationes ejus ſuper me: viis meis in circuitu inſederunt inſidiatores. 13 A me fratres mei receſſerunt, noverunt alienos, quàm me, & amici mei immiſericordes facti ſunt. 14 Non adhæſerunt mihi proximi mei: & ſcientes nomen meum obliti ſunt me. 15 Vicini domûs, & ancillæ meæ; alienigena fui coram eis. 16 Servum meum vocavi, & non obedivit: os autem meum deprecabatur. 17 Et rogabam uxorem meam: & invocabam blanditiis filios (k) concubinarum mearum. 18 Illi verò in (l) ſeculum me averſati ſunt: cùm exurrexero, contra me loquuntur. 19 Abominati ſunt me, qui me videbant: & quos dilexeram, conſurrexerunt in me. 20 (m) In cute mea computruerunt carnes meæ, et oſſa mea in (n) dentibus hærent. 21 Miſeremini meî, miſeremini meî, ô amici: man' enim Domini eſt, quæ tetigit me. 22 Quarè me perſequimini, ſicut & Dominus? & de carnibus meis non ſatiamini?*

MS.A. (α) Ἕως πότε (β) τὴν ψυχήν μου, καὶ καθαιρεῖταί με (γ) μοι οὕτως. Καὶ καταλαλεῖταί με, (δ) καὶ ἐπίκεισθαί μοι. (ε) ἐγὼ ἐπ᾽ ἀληθείας (ζ) καὶ ἐν ἐμοὶ αὐλίζεται (η) ῥῆμα ὃ οὐκ ἔδει, (θ) Γνῶτε ὅτι ὁ κύριος (ι) ταράξας με, (κ) λαλῶ ὀνείδη, καὶ οὐ (λ) ἐπὶ δὲ ἀτραπούς μου (μ) Τὴν δόξαν μου ἀπ᾽ ἐμοῦ (ν) καὶ ἀφεῖλεν (ξ) δέ με (ο) μοι (π) αὐτοῦ ἦλθεν τὰ πειρατήρια ἐπ᾽ ἐμὲ, (ρ) με ἐνκάθετοι. Ἀπ᾽ ἐμοῦ δὲ ἀπέστησαν ἀδελφοί, (σ) οἱ φίλοι (τ) Καὶ οὐ (υ) οἱ ἰδόντες (φ) οἰκεῖοι, θεράποντες, *θεράπενοι, ἀλλογενὴς ἐγενόμην ἐναντίον αὐτῶν. Θεράποντας δέ μου (χ) οὐκ ὑπήκουσάν μου· Στόμα (ψ) *ἐδέετο αὐτῶν· (ω) καὶ προσεκαλούμην κολακεύων (α) ἀπείπαντο, (β) δέ με οἱ ἰδόντες (γ) καὶ οὓς ἠγάπων, (*) σάρκες (δ) ἐν ὀδύναις (ε) Ἐγγίσατέ μοι, ἐλεήσατέ με, ὦ φίλοι, ἐλεήσατέ με, χεὶρ (ζ) ἐστιν ἡ ἁψαμένη μου. Διατί δέ με

תרגום TARGUM.

17 18 19 דִּכְרָנֵיהּ הוֹבַד מִנִּי אַרְעָא וְלָא שְׁמָא לֵיהּ עַל אַנְפֵּי אַשְׁקָקֵי׃ יְהַדְּפוּנֵיהּ מִנְּהוֹרָא לַחֲשׁוֹכָא וּמִתֵּבֵל יְגַלְוּנֵיהּ׃ לָא בִיר לֵיהּ וְלָא בִיר בְּרָא בְּעַמֵּיהּ וְלֵית מְשֵׁיזֵיב
20 21 בְּיַתּוּבֵיהּ׃ מְטוּל יוֹמֵיהּ אִצְטַדִּיאוּ בַּתְרָאֵי וְקַדְמוֹנָאֵי אֲחַדוּ עַלְעוֹלָא׃ וְיֵימְרוּן לְחוּד אִלֵּין מַשְׁרְיַת עַוְלָא וְדֵין אֲתַר דְּמַן דְּלָא יְדַע אֱלָהָא׃

יט

1 2 3 4 וַאֲתִיב אִיּוֹב וַאֲמַר׃ עַד אֵימַת תְּנַקְטוּן נַפְשִׁי וּתְשַׁפְּפוּנַנִי בְּמִלַּיָּא׃ דְּנַן עֲסַר זִמְנִין תְּכַסְּפוּנַנִי לָא תִבְהֲתוּן תִּשְׁתְּמוֹדְעוּן לִי׃ וּבְרַם בְּקוּשְׁטָא שְׁלֵיתִי גַּבִּי תְּבִית
5 6 7 8 שָׁלוּתִי׃ אִין בְּקוּשְׁטָא עֲלַי תִּתְרַבְרְבוּן וּתְכַסְנוּן עֲלַי חִסּוּדִי׃ יְדַעוּ הַשְׁתָּא אֲרוּם אֱלָהָא תַקְּפַנִי וּסְרִיגְיֵיהּ עֲלַי אַחְזַר׃ הָא אֲקַבֵּל מִן קֳדָם חֲטוּף וְלָא
9 10 אִתּוּתַב אֲצַלֵּי וְלֵית דִּינָא׃ אָסְרָטִי חֲטַר וְלָא אֶעְבַּר וְעַל שְׁבִילַי חֲשׁוֹךְ יְשַׁוֵּי׃ אִיקָרִי מֵעֲלַוַי אַשְׁלַח וְאַעְדֵּי כְּלִילֵי דְּרֵישִׁי׃ יְצַדְּנַנִי חֲזוֹר חֲזוֹר וְאֵיזֵיל וְאַטֵּל
11 12 13 הֵיךְ קִסָּא סְבָרִי׃ וּתְקֵף עֲלַי רוּגְזֵיהּ וְחַשְׁבַנִי לֵיהּ הֵיךְ מְעִיקוֹהִי׃ כַּחֲדָא יֵיתוּן אוּכְלוּסוֹהִי וּכְבַשׁוּ עֲלַי אָרְחָתְהוֹן וּשְׁרוֹן חֲזוֹר חֲזוֹר לְמַשְׁכְּנִי׃ אַחַי
14 15 מֵעֲלַוַי אַרְחִיק וְיָדְעַי אִתְעֲבִידוּ חִילוֹנָאֵי מִנִּי׃ פְּסַקוּ קָרִיבַי וּמְיַדְּעַי אַנְשְׁיוּנִי׃ דַּיְרֵי בֵיתִי וּלְחֵינָתִי לְחִילוֹנַי יַחְשְׁבוּנַנִי הֵיךְ בַּר עַמְמִין הֲוֵיתִי בְּמֶחְמֵיהוֹן׃
16 17 18 לְעַבְדִּי קְרֵיתִי וְלָא יָתִיב בְּפוּמִי אֲבְעָא מִנֵּיהּ׃ רוּחִי נוּכְרֵיתָא לְאִנְתְּתִי וְאִתְחַנְנֵית לְבַר מְעַי׃ לְחוּד יַנִּקַיָּא רָחֲקוּ מֵימְרִי אֲקוּם וּמְמַלְּלִין מִנִּי׃
19 20 21 רְחָקוּ יָתִי כָּל אֱנָשֵׁי רָזִי וְדֵין דִּי רְחֵימִית אִתְהַפְּכוּ בִי׃ בְּמַשְׁכִּי וּבִסְרִי דִּבְקַת גַּרְמִי וְאִשְׁתְּאֵרִית בְּמַשַׁךְ כַּכַּי׃ חוּסוּ עֲלַי חוּסוּ עֲלַי אַתּוּן חַבְרַי
22 אֲרוּם מַחְתָא דַּיְיָ קְרִיבַת בִּי׃ לְמָא תִרְדְּפוּנַנִי דִּכְמַת אֱלָהָא וּמִבִּסְרִי לָא תִסְבְּעוּן׃

Verſio *SYRIACA.*

17 * ܢܐܒܕ ܕܘܟܪܢܗ ܡܢ ܐܪܥܐ. ܘܠܝܬ ܠܗ ܫܡܐ ܥܠ ܐ̈ܦܝ ܒܪܝܬܐ. * ܢܗܦܟܘܢܝܗ ܡܢ ܢܘܗܪܐ ܠܚܫܘܟܐ. ܘܡܢ
18 ܬܐܒܝܠ ܢܫܒܩܘܢܝܗ. * ܠܐ ܫܡܐ ܠܗ. ܘܠܐ ܕܘܟܪܢܐ ܒܥܠܡܐ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗ ܫܪܟܐ ܒܡܥܡܪܗ. * ܥܠ ܝܘ̈ܡܘܗܝ
19 20 ܢܬܡܗܘܢ ܐ̈ܚܪܝܐ. ܘܩܕ̈ܡܝܐ ܐܚܕܬ ܫܥܪܬܗܘܢ. * ܗܟܢܐ ܐܢܘܢ ܡܫܟ̈ܢܘܗܝ ܕܥܘܠܐ. ܘܗܢܘ ܐܬܪܐ ܕܡܢ ܕܠܐ
21 ܝܕܥ ܠܐܠܗܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܛ *

1 * ܘܥܢܐ ܐܝܘܒ ܘܐܡܪ. * ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܡܥܝܩܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܢܦܫܝ:
2 ܘܡܬܒܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܝ ܒܡܠ̈ܐ. * ܗܐ ܥܣܪ ܙܒ̈ܢܝܢ ܡܚܣܕܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܝ. ܘܠܐ ܒܗܬܝܢ ܐܢܬܘܢ ܕܡܟܪܝܢ
3 ܐܢܬܘܢ ܠܝ. * ܘܐܢ ܫܪܝܪܐܝܬ ܛܥܝܬ. ܥܠܝ ܬܗܘܐ ܛܥܝܘܬܝ. * ܘܐܢ ܡܢ ܫܪܝܪܘܬܐ ܐܬܪܘܪܒܬܘܢ ܥܠܝ.
4 5 ܘܐܟܣܬܘܢܢܝ ܘܚܣܕܬܘܢܢܝ. * ܕܥܘ ܗܫܐ ܕܐܠܗܐ ܗܘ ܐܥܠܒܢܝ. ܘܡܨܝܕܬܗ ܗܘ ܦܪܣ ܥܠܝ. ܘܐܢ ܡܩܥܐ
6 7 ܐܢܐ. ܐܢܫ ܠܐ ܡܥܢܐ ܠܝ. * ܘܐܢ ܩܥܐ ܐܢܐ. ܠܝܬ ܕܡܦܪܩ ܠܝ. * ܘܐܘܪܚܬܝ ܣܝܓ ܕܠܐ ܐܥܒܪ. ܘܥܠ ܫܒ̈ܝܠܝ
8 ܚܫܘܟܐ ܣܡ. * ܘܐܫܠܚܢܝ ܐܝܩܪܝ. ܘܐܥܒܪ ܟܠܝܠܐ ܕܪܫܝ. * ܣܚܦܢܝ ܡܢ ܟܠ ܚܕܪܝ. ܘܐܙܠܬ. ܘܐܥܩܪ ܐܝܟ ܩܝܣܐ ܣܒܪܝ.
9 10 * ܘܐܬܩܦ ܥܠܝ ܪܘܓܙܗ. ܘܚܫܒܢܝ ܠܗ ܐܝܟ ܒܥܠܕܒܒܐ. * ܘܐܟܚܕܐ ܐܬܘ ܥܠܝ ܫܠܝ̈ܚܘܗܝ. ܘܕܫܘ ܥܠܝ
11 12 ܐܘܪ̈ܚܬܗܘܢ. ܘܫܪܘ ܚܕܪ ܡܫܟܢܝ. * ܘܐܚ̈ܝ ܐܬܪܚܩܘ ܡܢܝ. ܘܝܕ̈ܘܥܝ ܫܢܘ ܡܢܝ. * ܘܩܛܥܘ ܩܪ̈ܝܒܝ ܡܢ ܠܘܬܝ.
13 14 ܘܝܕ̈ܘܥܝ ܛܥܝܘܢܝ. * ܘܬܘܬܒ̈ܐ ܕܒܝܬܝ ܘܐܡܗܬܝ. ܐܝܟ ܢܘܟܪܝܐ ܚܫܒܘܢܝ. ܘܢܘܟܪܝܐ ܗܘܝܬ ܒܥܝܢܝܗܘܢ.
15 16 * ܠܥܒܕܝ ܩܪܝܬ. ܘܠܐ ܥܢܢܝ. ܘܐܬܚܢܢܬ ܠܗ ܒܡܠ̈ܠܐ ܕܦܘܡܝ. ܘܐܬܡܟܟܬ ܠܗ. * ܘܗܘܝܬ ܢܘܟܪܝܐ
17 18 ܠܐܢܬܬܝ. ܘܐܬܟܫܦܬ ܠܒܪ ܟܪܣܝ. * ܘܐܦ ܒܢܝ ܥܘܠܐ ܐܣܠܝܘܢܝ. ܩܡܬ ܘܡܠܠܘ ܒܝ. * ܐܣܠܝܘܢܝ ܟܠ
19 20 ܡܠܟ̈ܝ ܡܠܟܝ. ܘܐܦ ܪ̈ܚܡܝ ܐܬܗܦܟܘ ܥܠܝ. * ܡܫܟܝ ܘܒܣܪܝ ܢܩܦܘ ܠܓܪ̈ܡܝ. ܘܐܬܦܠܛܬ ܒܡܫܟܐ
21 ܕܫܢ̈ܝ. * ܚܘܣܘ ܚܘܣܘ ܥܠܝ ܐܢܬܘܢ ܪ̈ܚܡܝ. ܡܛܠ ܕܐܝܕܗ ܕܐܠܗܐ ܩܪܒܬ ܒܝ. * ܠܡܢܐ ܪܕܦܝܬܘܢܢܝ
22 ܐܦ ܐܢܬܘܢ ܐܝܟ ܐܠܗܐ. ܘܡܢ ܒܣܪܝ ܠܐ ܣܒܥܬܘܢ.

Verſio *ARABICA.*

17 18 * يبيد ذكره من الارض * ولا يكون له اسم على اوجه البرية * يطردونه من النور الى الظلام * ومن
19 الدنيا يبعدونه * فلا اسم يكون له * ولا ذكر في اليوم ولا يكون له باقي بمسكنه * وعلى ايامه يتعجب
20 21 الاولون والاخرون * ويقع شعرهم * ولكن هذه مساكن المنافقين * وهذا مكان الذي لا يعرف الله *

* الفصل التاسع عشر *

1 * فاجاب ايوب وقال * حتى متى تؤذون نفسي وتمرضوني
2 3 بالكلام * فان هذه عشر مرات تعيقوني * ولا تخزون من ان تحزنوني * فان كنت حقا هلكت فعلي
4 5 تكون ضلالتي * وان كان بالحق استكبرتم علي وبكتموني وعيرتموني * فاعلموا الان ان الله
6 7 دحضني * ومصيدته بسطها علي * فان انا صحت فلم يجبني احد * وان صرخت فليس من يعينني *
8 * طرقي سيجها لئلا اجوز * ووضع الظلمة على سبلي * وسلبني كرامتي * وابعد الاكليل من راسي *
9 10 * قلعني من كل جوانبي فذهبت * واخذ مثل العود رجاي * وشدد على غضبه * وعدني له مثل
11 12 العدو * وجميعا جاءت على رسله * وداسوا على طرقهم * وحلوا حوالي خبائي * واخوتي ابتعدوا مني *
13 14 ومعارفي جاروا * قطع قرابتي من عندي * ومعارفي نسوني * وسكان بيتي واماي مثل الغريب عدوني *
15 16 وغريبا كنت في اعينهم * لعبدي دعوت فلم يجبني * وضرعت اليه بقول فمي وخضعت له * كنت
17 18 غريبا لامراتي * وخضعت لابن امعاي * وايضا فان المنافقين ارذلوني * قمت فتكلموا في * ارذلني اهل
19 20 جميع مشورتي * وايضا فان احبائي انقلبوا علي * جلدي ولحمي لصقت بعظامي * وانفلتت لحم
21 22 اسناني * ارحموني ارحموني انتم يا احبائي * من اجل ان يد الله اقتربت الي * لماذا تطردونني انتم
ايضا مثل الله * ومن لحمي لا تشبعون *

VERS. SYR. & ARAB.
Interp. Lat.

Peribit de terra memoria ejus, & non erit ei nomen ſuper faciem creaturæ, 17 *Deſtruent eum à luce ad tenebras, & à mundo arcebunt eum:* 18 *Nec erit ei nomen nec memoria* (i) *in die, nec erit ei ſuperſtes in habitaculo ſuo:* 19 *Et ſuper dies ejus ſtupebunt* (k) *triores, et poſteriores et horrebunt pili eorũ.* 20 *Itaq; hujuſmodi ſunt habitacula impiorum, & hujuſmodi locus ejus qui Deum non cognoſcit.* 21

CAP. XIX.

RESpondit Job, ac dixit, 1 *uſquequò vexabitis animam meam, & affligetis me verbis?* 2 *Quoniam ecce decies me carpitis, et non pudet vos me contriſtare.* 3 (a) *Si meritò perii, ſit ſuper me perditio mea:* 4 *At ſi meritò vos elati eſtis contra me & arguiſtis me, & probris affeciſtis;* 5 *Scitote jam quòd Deus me cõdemnaverit, & rete ſuum extenderit ſuper me.* 6 *Si ego* (b) *clamo, nemo reſpondet mihi; & ſi vociferor, non eſt qui me* (c) *adjuvet.* 7 *Circumſepſit vias meas ne pertranſirem, & poſuit tenebras ſuper vias meas:* 8 *Et ſpoliavit me honore meo, & amovit coronam à capite meo:* 9 *Avulſit me ab omnibus lateribus meis, et abii: & abſtulit quaſi ligni ſpem meam:* 10 *Et corroboravit ſuper me indignationem ſuam, & reputavit me ſibi quaſi inimicum:* 11 *Et ſimul venerunt contra me Apoſtoli ejus, ſuper me triverunt vias ſuas, & habitaverunt circa tabernaculum meum.* 12 *Et fratres mei receſſerunt à me, & noti mei diſceſſerunt.* 13 *Conſanguineos meos amputavit à me; & noti mei obliti ſunt mei:* 14 *Et habitatores domûs meæ & ancillæ meæ quaſi peregrinum me reputaverunt; & extraneus factus ſum in oculis ipſorum.* 15 *Servum meum vocavi, & non reſpondit mihi; & eum deprecatus ſum ſermone oris mei, eiq; humiliatus ſum.* 16 *Et fui extraneus uxori meæ, & ſupplicavi filio viſcerum meorum.* 17 *Et impii quoq; me deſpexerunt: ſurrexi, & locuti ſunt contra me.* 18 *Aſpernati ſunt me omnes conſiliarii mei, & amici quoq; mei converſi ſunt contra me.* 19 *Pellis mea & caro mea adhæſit oſſibus meis, &* (d) *evaſit caro dentium meorum.* 20 *Miſeremini mei, miſeremini mei vos O amici mei; quoniam manus Dei tetigit me.* 21 *Quare perſequimini me vos quoq; ſicut Deus, & de carne mea non ſaturamini?* 22

INTERP. SYRIACA.
(i) in mundo, (k) poſteriores, & priores horruit pilus eorum. *Cap. xix.* (a) Et verè, ſi erravi erit ſuper me error meus: (b) loquor, (c) vindicabit. (d) evaſi cum cute dentium meorum.

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Memoria ejus pereat de terra, & non ſit ei nomen ſuper faciem platearum. Pellant eum de luce in tenebras, & de orbe transferant eum. Non ſit ei filius neque filius filii 17 18
in populo ſuo, neque qui ſalvetur in tabernaculo ſuo. Propter diem ejus deſolabuntur noviſſimi, & primos invadit *turbo*. *Et dicent*, Attamen hæc ſunt habitacula ini- 19 20
qui, & hic eſt locus ejus qui ignorat Deum. 21

CAP. XIX.

ET reſpondit Job & dixit: Uſq; quò moleſti eritis animæ meæ, & contereris me ſermonibus? Jam decies confudiſti me, & non erubeſcitis [*licet*] agnoſcatis me. 1 2 3
Attamen verè ſi ignoravi, mecum morabitur ignorantia mea. Si in veritate contra me magnificamini, & arguitis me opprobrio meo. *Sciant* nunc quoniam Deus ap- 4 5 6
prehendit me, & rete ejus *circundedit* me. Ecce clamabo vim patiens, & nemo eſt qui reſpondeat: orabo, nec erit judicium. Semitam meam ſepſit ut non tranſeam, 7 8
& ſuper itinera mea tenebras poſuit. Gloriâ meâ me exuit, & abſtulit coronam capitis mei. Deſtruxit me per circuitum, & abii: & abſtulit quaſi lignum ſpem meam. 9 10
Et invaluit contra me furore ſuo, & putavit me quaſi hoſtem ſuum. Simul venerunt contra me turmæ ejus, & ſtraverunt ſuper me viam ſuam, & caſtrametati ſunt in cir- 11 12
cuitu tabernaculi mei. Fratres meos longe fecit à me, & noti mei facti ſunt alieni à me. Ceſſaverunt propinqui mei, & noti mei obliti ſunt mei. Inquilini domus 13 14
meæ & concubinæ meæ ſicut alienum reputaverunt me: quaſi filius populorum fui in conſpectu eorum. Servum meum vocavi, & non reſpondit mihi, ore meo roga- 15 16
bam eum. Spiritus meus alienus factus eſt uxori meæ, & deprecabar filium uteri mei. Parvuli quoque deſpiciebant verba mea; conſurgebam & loquebantur de me. 17 18
Abominati ſunt me omnes viri ſecreti mei, & illi quos dilexi, verſi ſunt in me. Pelli meæ & carni meæ adhæſit os meum, & relictus ſum tantùm in pelle dentium me- 19 20
orum. Miſeremini mei, miſeremini mei vos amici mei, quia plaga *Domini* tetigit me. Quare perſequimini me ſicut Deus, & de carne mea non ſaturamini? 21 22

libro in dabit quis : mei sermones scriberentur & nunc dabit Quis
23 מי־יתן אפו ויכתבון מלי מי־יתן בספר
petra in perpetuum in plumbeo & , ferreo stylo In .imprimerentur &
24 ויחקו : בעט־ברזל ועפרת לעד בצור
novissimo & , vivum meum redemptorem novi ego Et .sculperentur
25 יחצבון : ואני ידעתי גאלי חי ואחרון
: hanc contriverint meam pellem postquam Et .staturum *pulverem* super
26 על־עפר יקום : ואחר עורי נקפו־זאת
, mihi sum visurus ego Quem .Deum videbo mea carne de &
27 ומבשרי אחזה אלוה : אשר אני אחזה־לי
.meo sinu in mei renes Defecerunt .alienus non & ,*viderunt* mei oculi &
ועיני ראו ולא־זר כלו כליתי בחקי :
est inventa *verbi* radix & : eum persequimur Cur : *dicetis* Quia
28 כי תאמרו מה־נרדף־לו ושרש דבר נמצא־
: *gladii iniquitates* ira quia , gladii *faciebus* à vobis Timete ? me in
29 בי : גורו לכם מפני־חרב כי־חמה עונות חרב
.judicium quod sciatis ut
למען תדעון שדון :

CAP. XX. כ

meæ cogitationes Idcirco : dixit & , Nahamathites Sophar respondit Et
1 2 ויען צופר הנעמתי ויאמר : לכן שעפי
Correctionem .me in *meum sensum propter* & , me *facient* respondere
3 ישיבוני ובעבור חושי בי : מוסר
: mihi respondebit meæ intelligentiæ spiritus & ? audiam meæ ignominiæ
כלמתי אשמע ורוח מבינתי יענני :
? terram super *hominem esse positum à* , seculo à nosti hoc Nonne
4 הזאת ידעת מני־עד מני שים אדם עלי־ארץ :
ad *hypocritæ* lætitia & : propinquo de impiorum laus Quòd
5 כי רננת רשעים מקרוב ושמחת חנף עדי־
ejus caput & ,ejus sublimitas cœlum in ascenderit Si .momentum
6 רגע : אם־יעלה לשמים שיאו וראשו
eum videntes : peribit *finem* in *ejus stercus* Velut .attigerit nubem ad
7 לעב יגיע : כגללו לנצח יאבד ראיו
: eum invenient non & , volabit somnium Sicut ? *ille* Ubi : dicent
8 יאמרו איו : כחלום יעוף ולא ימצאהו
non & , eum vidit Oculus .nocturna visio sicut vagabitur &
9 וידד כחזיון לילה : עין שזפתו ולא
placabunt ejus Filii .ejus locus eum intuebitur ultrà nec ; addet
10 תוסיף ולא־עוד תשורנו מקומו : בניו ירצו
ejus Ossa .*suam violentiam reddent* ejus manus & , *mendici*
11 דלים וידיו תשבנה אונו : עצמותיו
.*jacebit pulverem* super eo cum & : ejus *occultis* sunt repleta
מלאו עלומו ועמו על־עפר תשכב :
.sua lingua sub illud *celabit* , malum ejus ore in *dulcuerit Si*
12 אם־תמתיק בפיו רעה יכחידנה תחת לשונו :
medio in ,illud *prohibebit* & : illud *derelinquet* non & ,*eo super* Parcet
13 יחמל עליה ולא יעזבנה וימנענה בתוך
aspidum Fel .*est versus* ejus visceribus in ejus Panis .sui palati
14 חכו : לחמו במעיו נהפך מרורת פתנים
ejus ventre de : *eam* evomet & ,deglutivit *Facultatem* .ejus *interiori* in
15 בקרבו : חיל בלע ויקאנו מבטנו
lingua eum occidet : suget aspidum *Caput* .Deus eam expellet
16 ירשנו אל : ראש־פתנים יינק תהרגהו לשון
, mellis torrentes ,flumina : rivulos *in* videbit Non .viperæ
17 אפעה : אל־ירא בפלגות נהרי נחלי דבש
facultatem velut : deglutiet non & , laborem *Restituens* .butyri &
18 וחמאה : משיב יגע ולא יבלע כחיל
: pauperes dimisit , *allisit* Quia .exultabit non &,ejus permutationis
19 תמורתו ולא יעלס : כי־רצץ עזב דלים
.eam ædificabit non & , rapuit domum
בית גזל ולא יבנהו :

Verſio VULG. LAT.

23 Quis mihi tribuat ut ſcribantur ſermones mei? quis mihi 24 det ut exarentur in libro Stylo ferreo, & plumbi laminâ, vel celte ſculpantur in ſilice? 25 Scio enim ꝙ Redemptor meus vivit, et in noviſſimo die de ter- 26 ra ſurrecturus ſum: Et rurſùm circumdabor pelle mea, & in carne mea videbo Deũ meum. 27 Quem viſurus ſum ego ipſe, & oculi mei conſpecturi ſunt, & non alius: repoſita eſt hæc ſpes 28 mea in ſinu meo. Quare ergò nunc dicitis; Perſequamur eũ, & radicem verbi inveniamus 29 contra eum? Fugite ergò à facie gladii, quoniam ultor iniquitatum gladius eſt: & ſcitote eſſe judicium.

CAP. XX.

1 RESpondens autem Sophar 2 Naamathites, dixit; Idcircò cogitationes meæ variæ ſuccedunt ſibi, & mens in diverſa 3 rapitur. Doctrinam, quâ me arguis, audiam, & ſpiritus intelligentiæ meæ reſpondebit 4 mihi. Hoc ſcio à principio, ex quo poſitus eſt homo ſuper 5 terram, Quòd laus impiorum brevis ſit, & gaudium hy- 6 pocritæ ad inſtar puncti. Si aſcenderit uſque ad cœlum ſuperbia ejus, & caput ejus nu- 7 bes tetigerit: Quaſi ſterquilinium in fine perdetur: & qui eum viderant, dicent; Ubi eſt? 8 Velut ſomnium avolans non invenietur, tranſiet ſicut viſio 9 nocturna. Oculus, qui eum viderat, non videbit, neque ultrà intuebitur eum locus ſuus. 10 Filii ejꝰ atterentur egeſtate, & manus illius reddent ei dolo- 11 rem ſuum. Oſſa ejus implebuntur vitiis adoleſcentiæ ejꝰ, & cum eo in pulvere dormi- 12 ent. Cùm enim dulce fuerit in ore ejus malum, abſcondet 13 illud ſub lingua ſua. Parcet illi, & non derelinquet illud, 14 & celabit in gutture ſuo. Panis ejus in utero illius vertetur 15 in fel aſpidum intrinſecùs. Divitias, quas devoravit, evomet, & de ventre illius extrahet eas 16 Deus. Caput aſpidum ſuget, & occîdet eum lingua viperæ. 17 (Non videat rivulos fluminis, torrentes mellis, & butyri.) 18 Luet quæ fecit omnia, nec tamen conſumetur: juxta multitudinem adinventionum ſua- 19 rum, ſic & ſuſtinebit. Quoniam confringens nudavit pauperes: domum rapuit, & non ædificavit eam.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

23 Τίς γὰρ ἂν (ʺ) δῴη γραφῆναι τὰ ῥήματά μου, τεθῆναι δὲ αὐτὰ ἐν βιβλίῳ εἰς τὸν αἰῶνα; 24 † Ἐν γραφείῳ σιδηρῷ (η) καὶ μολίβῳ, † ἢ 25 ἐν πέτραις ἐγγλυφῆναι; † Οἶδα γὰρ ὅτι (*) ἀέννναός ἐστιν ὁ ἐκλύειν με μέλλων, ἐπὶ γῆς 26 † (θ) Ἀναστῆσαι τὸ δέρμα μου τὸ ἀναντλοῦν ταῦτα· † παρὰ γὰρ κυρίου (ι) ταῦτά μοι 27 συνετελέσθη, † Ἃ ἐγὼ ἐμαυτῷ συνεπίσταμαι, † ἃ (κ) ὁ ὀφθαλμός μου ἑώρακε, καὶ οὐκ ἄλλος, πάντα δέ μοι συντετέλεσται ἐν 28 κόλπῳ. † Εἰ δὲ καὶ ἐρεῖτε, Τί ἐροῦμεν (λ) ἔναντι αὐτοῦ, † καὶ ῥίζαν λόγου (μ) εὑρήσομεν 29 ἐν αὐτῷ; † Εὐλαβήθητε (ν) δὴ καὶ ὑμεῖς (ξ) ἀπὸ ἐπικαλύμματος, † θυμὸς γὰρ ἐπ' (∴) ἀνόμους ἐπελεύσεται· † καὶ τότε γνώσονται, (ο) ποῦ ἐστιν αὐτῶν ἡ ὕλη.

MS.A. (ʺ) δῴη (η) ἢ μολίβῳ, (*) ἀέναος (θ) Ἀναστήσει δέ μου τὸ σῶμα τὸ ἀναντλοῦν (ι) μοι ταῦτα συνετελέσθη, (κ) οἱ ὀφθαλμοί μου ἑοράκασιν, (λ) ἐναντίον (μ) εὕρησον (ν) δὲ (ξ) ἀπὸ κρίματος, (∴) ἀνόμοις (ο) ὅτι οὐδαμοῦ αὐτῶν ἡ ἰσχύς ἐστιν.

ΚΕΦ. κʹ.

1 † ὙΠολαβὼν δὲ Σωφὰρ ὁ Μιναῖος, λέγει, 2 † Οὐχ οὕτως ὑπελάμβανον (α) ἀντερεῖν σε ταῦτα, † καὶ οὐχὶ (α) συνίετε μᾶλλον 3 ἢ καὶ ἐγώ. † Παιδείαν ἐντροπῆς (ʺ) μου ἀκούσομαι, † καὶ πνεῦμα ἐκ τῆς (γ) συνέσεως ἀπο- 4 κρίνεταί μοι. † Μὴ ταῦτα ἔγνως ἀπὸ τοῦ ἔτι, ἀφ' οὗ ἐτέθη ἄνθρωπος ἐπὶ τῆς γῆς; 5 † Εὐφροσύνη (δ) δὲ ἀσεβῶν πτῶμα ἐξαίσιον, † χαρμονὴ δὲ (ε) παρανόμων ἀπώλεια· 6 † Ἐὰν ἀναβῇ εἰς οὐρανὸν (ζ) αὐτοῦ τὰ δῶρα, † ἡ δὲ θυσία αὐτοῦ νεφῶν ἅψηται. 7 † (η) Ὅταν γὰρ δοκῇ ἤδη κατεστηρίχθαι, τότε εἰς τέλος ἀπολεῖται· † οἱ δὲ εἰδότες 8 αὐτὸν ἐροῦσι, Ποῦ ἐστιν; † Ὥσπερ ἐνύπνιον ἐκπετασθὲν οὐ μὴ εὑρεθῇ, † ἔπτη δὲ 9 ὥσπερ (θ) φάσμα νυκτερινόν. † Ὀφθαλμὸς παρέβλεψε, καὶ οὐ προσθήσει, † (ι) καὶ οὐκ ἔτι 10 προσνοήσει αὐτὸν ὁ τόπος αὐτοῦ. † Τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ (κ) ὀλέσαισαν ἥττονες, † αἱ δὲ χεῖρες αὐτοῦ (λ) πυρσεύσαισαν ὀδύνας. 11 † Ὀστᾶ αὐτοῦ (μ) ἐνεπλήσθησαν νεότητος αὐτοῦ, † καὶ μετ' αὐτοῦ ἐπὶ χώματος κοιμη- 12 θήσεται. (ν) Ἐὰν γλυκανθῇ ἐν στόματι αὐτοῦ κακία, † κρύψει αὐτὴν ὑπὸ τὴν γλῶσσαν 13 αὐτοῦ, † Οὐ φείσεται αὐτῆς, καὶ οὐκ ἐγκαταλείψει αὐτήν· † καὶ συνάξει αὐτὴν ἐν μέσῳ τοῦ λάρυγγος αὐτοῦ, καὶ οὐ μὴ δυνη- 14 θῇ βοηθῆσαι ἑαυτῷ. † Χολὴ ἀσπίδος ἐν 15 γαστρὶ ([illegible]) αὐτοῦ. † Πλοῦτος ἀδίκως συναγόμενος ἐξεμεθήσεται, † (ξ) ἐξ οἰκίας αὐτοῦ 16 ἐξελκύσει αὐτὸν ἄγγελος. † Θυμὸν δὲ δρακόντων θηλάσειεν, † ἀνέλοι δὲ αὐτὸν γλῶσσα 17 ὄφεως. † Μὴ ἴδοι ἄμελξιν νομάδων, μηδὲ 18 νομὰς μέλιτος καὶ βουτύρου. † Εἰς κενὰ καὶ μάταια ἐκοπίασεν, † (ο) πλοῦτον ἐξ οὗ οὐ γεύσεται· ὥσπερ (π) στρίφνος ἀμάσητος, 19 ἀκατάποτος. † Πολλῶν γὰρ (ρ) δυνατῶν οἴκους (σ) ἔθλασεν· † δίαιταν δὲ (τ) ἥρπασε, καὶ οὐκ ἔστησεν.

Quis enim utique det, ut ſcripta ſint verba mea, & ipſa poſita in libro in ſeculum, Et in ſtylo ferreo, & plumbo, aut in petris inſculpta? Scio enim quia æternus eſt, qui me reſoluturus eſt ſuper terram, (o) Ad reſuſcitandam cutem meam, quæ perpetitur hæc. A Domino enim hæc mibi conſummata ſunt, Quorum ego mihi conſcius ſum, quæ oculus meus vidit, & non alius: & (p) omnia mihi conſummata ſunt in ſinu. Quòd ſi (q) & dixeritis, Quid dicemus contra eum, & (r) radicem ſermonis inveniemus in eo? Cavete (ſ) utique, & vos à tegmine. Ira enim ſuper iniquos veniet, & tunc (t) cognoſcent, ubi eſt eorũ materia. 23 24 25 26 27 28 29

CAP. XX.

*REſpondens autem Sophar Minæus, ait; Non ſic putabam contradicere te his: & non intelligitis magis, quàm & ego. Eruditionem confuſionis meæ audiam; & ſpiritus ex intelligentia reſpondet mibi. Nónne hæc nôſti (a) ab eo, quod olim, ex quo poſitus eſt homo ſuper terram? Lætitia (b) autem impiorum ruina inſignis: gaudium verò iniquorum eſt perditio; Si aſcenderint in cœlum dona ejus, & ſacrificium ejus tetigerit nubes. Nam cùm viſus fuerit jam firmatus eſſe, tunc in finem peribit: qui autem noverant eum, dicent; ubi eſt? Tanquam ſomnium quod avolavit, non invenietur: volavit autem, ſicut viſio nocturna: Oculus vidit, & non adjiciet: & non ultrà animadvertet eum locus ſuus. Filios ejus diſperdant minores: & ipſæ manus ejus (c) ſuccendant dolores. Oſſa ejus impleta ſunt juventute ejus, & cum eo ſuper pulverem dormient. Si dulcuerit in ore ejus malignitas, abſcondet eam ſub lingua ſua: (d) Non parcet ei, & non relinquet eam: & (e) colliget eam in medio gutture ſuo: & non poterit ſubvenire ſibi. (f) Fel aſpidis in ventre ejus: Divitiæ iniquè congregatæ evomentur de (g) domo ejus: * extrahet eum angelus. Et (h) furorem draconum ſugat: & interficiat illum lingua colubri. Non videat mulctram pecorum, neque (i) pabula mellis, & butyri. In vanum, & fruſtrà laboravit: divitias, ex quibus non guſtabit: (k) tanquam durum quid, quod mandi non poteſt, nec glutiri: Multorum enim (l) potentum domos fregit, & (m) habitaculum diripuit, & non ſtatuit.* 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19

MS.A. (α) σε εἶ, καὶ ἀντρεῖν σε ταῦτα, (β) συνιέναι μᾶλλον ἢ ἐγώ. (ʺ) σου (γ) συνέσεώς σου (δ) γὰρ (ε) ἀσεβῶν (ζ) τὰ δῶρα αὐτοῦ, (η) Ὅταν δοκῇ ἤδη ἐστηρίχθαι, (θ) φάντασμα (ι) καὶ οὐ προσνοήσει αὐτὸν ὁ τόπος αὐτοῦ οὐκέτι. (κ) θλάσειαν (λ) ψηλαφήσουσιν ὀδύνας. (μ) ἐνεπλήσθη (ν) Ἐγλυκάνθη ([illegible]) αὐτοῦ καὶ πόνος. Πλοῦτος (ξ) ἐκ κοιλίας αὐτοῦ· ἐξ οἰκίας δὲ αὐτοῦ ἐξελκύσει αὐτὸν ἄγγελος θανάτου. Θυμὸς δὲ δρακόντων θηλάσει, καὶ ἀνέλοι αὐτὸν (ο) χοίη δὲ πλοῦτον (π) στρύχνον ἀμάσητον, *ἀκαταπάτητον. (ρ) ἀδυνάτων (σ) ἔθρασεν· (τ) αὐτῶν ἥρπασεν,

תרגום TARGUM.

23 25 מן יהב יתי ויכתבון מלי מן יהב בפתקא ויתרשמון : בקולמוס דפרזלא וברכמישא לעלמא בטינרא יתפסלן : ואנא ידעית דפריקי קים ומן בתר
24 26 27 כדין פורקניה על עפרא יקום : ומן בתר דאתפח משכי תהי דא ומבסרי אחמי תוב אלהא : די אנא אחמי לי ועיני יחמון ולא חילוני שלימו כליתי
28 29 בעובי : ארום תימרון מה נרדף ליה ועקר מלתא נשכח ביה : דחולו לכון מן קדם חרבא ארום כדרגיז אלהא על סורחנותא מגרי קטולין דחרבא
מן בגלל דתנדעון דדין קשוט הוא מרי דינא :

כ

1 2 ואתיב צופר דמן נעמה ואמר : מטול דרעיוני מתיבן לי ומטול דרגישתי בי : מרדותא דכסופי אשמע והיך פוחא מן ביונתי יתיבנני : הדא ידעתא
3 4 5 6 מן אולא מן עדן דאשתוי בר נש עלוי ארעא : ארום בועת רשיעי שציית בעגל וחדות דילטור עד שעתא : אין יסק לצית שמיא זוקפיה ורישיה לעננא
7 8 9 ימטי : היך רעיה לעלמא יהובד חמוי יימרון האן הוא : היך חלמא יטוס ולא ישכחוניה יגלי היך חוותא דליליא : עינא סקרתיה ולא תוסיף
10 11 12 ולא תוב תסכניה אתריה : בנוי ירעון מסכנין וידוי משלמן תקוף צעריה : גרמוי אתמליאו חיליה ובהדיה על עפרא תשכוב : אין מתבסמא
13 14 בפומיה בישתא יכדבנה תחות לישניה : יחוס עלה ולא ישבקנה ויכסנה במצע מוריגיה : מיכליה במעוי אתהפיך ארסא דחורמנין בגויה :
15 16 17 נכסין דסלעם יפלט יתיה מכרסיה יתרכניה אלהא : רישי חורמניא יינק תקטלניה לשן חויא : לא יזכי למחמי בטיפי נהרות נחליא דמן
18 19 דובשא ולוי : מתיב לאות חורנא ולא יגמר כדעתריה מתיהב שלחופיה ולא ירוז : ארום רעע עסקא דמסכנין ביתא אנס ולא בנא
יתיה :

Verſio SYRIACA.

23 * ܡܢ ܢܬܠ ܠܟܬܒܐ ܕܢܬܟܬܒܢ ܗܘܝ ܡܠܝ ܘܢܬܪܫܡܢ ܗܘܝ ܒܣܦܪܐ. * ܘܒܩܢܝܐ ܕܦܪܙܠܐ ܘܒܓܠܦܐ ܕܐܒܪܐ.
24
25 ܠܥܠܡ. ܘܥܠ ܟܐܦܐ ܢܬܓܠܦܢ. * ܘܐܢܐ ܝܕܥ ܐܢܐ ܕܦܪܘܩܝ ܚܝ ܗܘ. ܘܒܫܘܠܡܐ ܥܠ ܐܪܥܐ ܢܬܓܠܐ. * ܘܥܠ
26
27 ܡܫܟܝ ܗܘ ܐܟܪܟܘ ܗܠܝܢ ܘܥܠ ܒܣܪܝ. * ܐܢ ܢܚܙܝܢ ܠܐܠܗܐ ܥܝܢܝ. ܢܚܙܝܢ ܢܘܗܪܐ. ܟܘܠܝ̈ܬܝ ܡܫܬܪܝܢ ܗܘ
28 ܡܢ ܫܩܩܐ ܡܢ ܕܘܟܬܝ. * ܘܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܡܢܐ ܢܪܕܦܝܘܗܝ. ܡܛܠ ܕܛܒܬܐ ܡܠܬܐ ܕܐܫܟܚܘ ܒܗ. * ܕܚܠܘ
29 ܠܟܘܢ ܡܢ ܩܕܡ ܚܪܒܐ. ܡܛܠ ܕܚܡܬܐ ܕܚܛܗܐ ܚܪܒܐ ܗܝ. ܡܛܠ ܕܬܕܥܘܢ ܕܐܝܬ ܕܝܢܐ.

1 * ܦܨܠܐ ܟ * * ܘܥܢܐ ܨܘܦܪ ܢܥܡܬܝܐ ܘܐܡܪ. * ܡܛܠ ܗܘܦܟܝ ܬܦܢܘܢ ܠܝ. ܘܡܛܠܬܝ
2
3 ܣܟܘ ܠܝ. * ܡܪܕܘܬܐ ܕܡܟܣܢܘܬܝ ܐܫܡܥܟܘܢ. ܘܪܘܚܐ ܕܦܘܡܝ ܬܦܢܝܢܝ. * ܗܕܐ ܝܕܥܬ ܡܢ ܥܠܡܐ. ܡܢ
4
5 ܕܐܬܒܪܝ ܐܕܡ ܥܠ ܐܪܥܐ. ܡܢ ܕܥܒܕ ܠܐܢܫܐ ܥܠ ܐܪܥܐ. * ܡܛܠ ܕܫܘܒܚܗܘܢ ܕܥܘܠܐ ܡܢ ܟܪܣܗܘܢ.
6 ܘܚܕܘܬܗ ܕܥܘܠܐ. ܠܙܒܢܐ ܗܘ ܩܠܝܠ. * ܐܢ ܢܣܩ ܠܫܡܝܐ ܒܪܘܡܗ. ܘܢܡܛܐ ܠܥܢܢܐ ܪܝܫܗ. * ܐܝܟ
7
8 ܥܠܥܠܐ ܠܥܠܡ ܢܐܒܕ. ܘܚܙܝܘܗܝ ܢܐܡܪܘܢ ܐܝܟܘ. * ܘܐܝܟ ܚܠܡܐ ܢܦܪܚ. ܘܠܐ ܢܫܬܟܚ. ܘܢܥܪܩ ܐܝܟ ܚܙܘܐ
9 ܕܠܠܝܐ. * ܥܝܢܐ ܕܚܙܬܗ ܬܘܒ ܠܐ ܬܚܙܝܘܗܝ. ܘܠܐ ܬܘܒ ܢܚܙܝܘܗܝ ܐܬܪܗ. * ܒܢܘܗܝ ܢܬܡܟܟܘܢ
10
11 ܒܡܣܟܢܘܬܐ. ܘܐܝܕܘܗܝ ܢܦܫܛܢ ܒܝܠܕܗ. * ܓܪܡܘܗܝ ܡܠܝܢ ܡܘܚܐ. ܘܥܡܗ ܥܠ ܐܪܥܐ ܢܫܟܒܘܢ. * ܐܢ
12
13 ܐܬܚܫܡ ܒܦܘܡܗ ܒܝܫܘܬܗ. ܘܢܛܫܝܗ ܬܚܝܬ ܠܫܢܗ. * ܢܚܘܣ ܥܠܘܗܝ ܘܠܐ ܢܫܒܩܝܘܗܝ.
14 ܘܢܟܠܝܘܗܝ ܒܓܘ ܚܢܟܗ. * ܠܚܡܗ ܒܡܥܘܗܝ ܢܬܗܦܟ. ܘܡܪܪܬܐ ܕܐܣܦܝܣ ܒܓܘܗ. * ܘܡܐܟܘܠܬܐ
15
16 ܕܒܠܥ ܢܬܘܒ ܡܢ ܟܪܣܗ. ܘܢܦܩܝܘܗܝ ܐܠܗܐ. * ܡܪܪܬܐ ܕܐܣܦܝܣ ܢܡܝܨ. ܘܠܫܢܐ ܕܐܦܥܐ ܬܩܛܠܝܘܗܝ.
17 * ܠܐ ܢܚܙܐ ܦܠܓܘܬܐ ܕܢܗܪܘܬܐ: ܘܢܒܥܐ ܕܕܒܫܐ ܘܕܚܠܒܐ. * ܢܗܦܘܟ ܠܥܡܠܐ. ܘܠܐ ܢܐܟܘܠ. ܒܚܝܠܐ
18
19 ܕܚܘܠܦܗ ܠܐ ܢܬܗܢܐ. * ܕܐܪܓܫ ܠܡܫܒܩܗ ܠܡܣܟܢܐ. ܘܒܝܬܐ ܕܐܢܘܣܐ ܠܐ ܢܬܒܢܐ.

Verſio ARABICA.

23 * ليت كان أحد يهتم أن يكتب كلامي فكانت ترسم في سفر * بقلم حديد * وبنقش الآنك للدهر *
24
25 وعلي الحجارة تنقش * وأنا فإني أعلم أن مخلصي حي * وعلي الفناء على الأرض يظهر * وعلي جلدي
26
27 صافت هذه وعلي بشري * فإن أبصرت الله عيناي فقد رأت النور * كلاي هلاكا هلكت من
28 موقفي * حين تقولون لماذا نطلبه * أحسنة هي الكلمة التي وجدوا * إن أبعد إليكم من قدام
29 الحرب * من أجل أن حمية الخطا حربا هي * حتى تعرفوا أن القضاء هناك * * الفصل العشرون *

1 * فأجاب صوفار النعماتي فقال * من أجل سعيي فأجيبوني ومن أجلي فارتقبوا علي * وتأديب موعظتي
2
3 أسمعكم * وروح فمي يجيبني * قد علمت هذا من العوالم من أن خلق آدم على الأرض * من الذي
4
5 صنع الناس على الأرض * لأن مجد المنافقين من أجوافهم * وفرح الحنفاء إنما هو لوقت قصير * إن
6
7 صعد إلي السماء برفعته * وإلي السحاب يبلغ رأسه * مثل العجاج للدهر يبيد * والناظرون يقولون أين هو *
8 * ومثل الحلم يطير فلا يوجد * ويسود مثل رؤيا الليل * والعين التي أبصرته أيضا لا تعود أن تراه * ولا
9
10 أيضا يتفقدون مكانه * بنوه ينكسرون بالمسكنة * ويداه يبسطن في ولده * عظامه ممتلئة مخا * ومعه على
11
12 الأرض يضطجعون * إن وقعت في فمه سوايته * والغش تحت لسانه يكتمه * فإنه يعجل عليه ولا يتركه *
13
14 ويحبسه في جوف ظلمته * طعامه في أمعائه يتردد * ومرار التنين في جوفه * والمأكل الذي يبتلع يقيئها
15
16 من بطنه ويبيدها الله * مرار الثعبان يسترضع * ولسان الأفعا يقتله * فلا ينظر أفراق الأنهار وعيون
17
18 العسل واللبن * يرجع إلي النصب ولا يأكل * بقوته عيوض يهنأ * حين تفكر أن يترك
19
المسكين * وبيت الغاصب لا يبنا *

VERS. SYR. & ARAB.
Interp. Lat.

23 *Utinam quis curaret ſcribere ſermones meos, et imprimerentur in libro.* 24 *Calamo ferreo, et in plumbea cælatura in æternum, & ſuper lapides ſculperentur.* 25 *Ego quidẽ ſcio quòd Salvator meus vivens ſit, & in conſummatione ſuper terrã apparitur.* 26 *Et pellem meam (e) anguſtârunt hæc, & carnem meam.* 27 *Si viderint oculi mei Deum, videbũt lumen. Renes mei penitùs perierunt de loco meo,* 28 *Dùm dicitis, Quare perſequimur eũ? (f) Num bonum eſt verbũ quod invenerunt,* 29 *(g) ut recedam ad vos à conſpectu belli, quoniam furor peccati eſt bellum; ut ſciatis (h) ibi eſſe judicium.*

CAP. XX.

1 *Reſpondit Sofar Naamathites, & dixit;* 2 *Propter vitæ meæ inſtitutum reſpondete mihi, & propter me (a) obſervate me,* 3 *Et diſciplinã correptionis meæ audire vos faciã, & ſpirit⁹ (b) oris mei reſpondebit mihi.* 4 *Jam ſcivi hæc à ſeculis, ex eo tempore quo creatus eſt Adam ſuper terra, ex quo fecit homines ſuper terra?* 5 *Quia gloria impiorum à ventribus eorum, & lætitia perverſorũ eſt ad breve momentũ.* 6 *Si aſcẽderit in cœlum (c) in ſua ſublimitate, et ad nubes perveniat caput ejus,* 7 *(d) Sicut fumus in æternum peribit, & videntes eũ dicent; ubi eſt?* 8 *Et velut inſomniũ evolabit, & non invenietur, & velut viſio noctis fugiet,* 9 *Et ocul⁹ qui eum viderat, non adjiciet ut eũ videat, nec (d) viſitabunt locum ejus:* 10 *Filii ejus frangentur paupertate, & manus ejus extendentur in prolẽ ſuã.* 11 *Oſſa ej⁹ ſunt plena medullâ, & cum eo ſuper terra jacebunt.* 12 *Etiamſi (f) poſita ſit ejus malitia in ore ipſius; & dolum ſub lingua ſua contegat:* 13 *(g) Tamen feſtinabit ad eum, & non dimittet eum, et concludet illũ (h) in ventre tenebrarum ſuarũ.* 14 *Cib⁹ ejus volvetur in viſceribus ipſius, & fel draconis in ventre illius:* 15 *Et eſcam quam deglutiit, evomet è ventre ſuo; & delebit eum Deus:* 16 *Fel (i) aſpidis ſuget, et lingua (k) viperæ occîdet eũ.* 17 *Non videbit diviſionem fluminum, & (l) fontium mellis, & (m) lactis.* 18 *Revertetur ad laborem, (n) et non manducabit: virtute ipſius alter fruetur,* 19 *Eò quòd cogitaverit dimittere pauperẽ: et domus prædonis non ædificabitur.*

INTERP. SYRIACA.

(*e*) circundederunt hæc, (*f*) Nam bonum eſt verbum quod poſt me invenero, (*g*) Timete vobis à (*h*) quòd ſit judicium. *CAP.* xx. (*a*) expectate me, (*b*) intellectûs mei (*c*) elatio ejus, (*d*) Procellæ inſtar (*e*) ampliùs (*f*) dulceſcat ejus (*g*) Parcet ei, (*h*) in medio palati ſui. (*i*) viperæ (*k*) aſpidis (*l*) torrentiũ (*m*) butyri (*n*) & non abſorbebit, ſecundùm facultatem permutationis ejus, non proderit, Eò quòd

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quis tribuat *mihi* ut ſcribantur ſermones mei: quis det ut ſignentur in libro? Stylo ferreo & plumbi lamina in æternum in petra ſculpantur. Et ego ſcio quia 23 24
redemptor meus vivit, & poſt hæc redẽmptio ejus conſurget ſuper *pulverem*. Et poſtquàm inflata fuerit pellis mea, erit hoc: & de carne mea videbo iterũm Deum. 25 26
Quem ego viſurus ſum mihi, & oculi mei videbunt, & non alius: conſumpti ſunt renes mei in ſinu meo. Quoniam dicitis: Quid perſequimur eum, & radicem verbi 27 28
invenimus contra eum? Timete vobis à facie gladii; quia cùm iraſcitur Deus ſuper iniquitates, immittit occidentes gladio: ut ſciatis quòd judex verus eſt dominus 29
judicii.

CAP. XX.

ET reſpondit Sophar qui erat de Naama, & ait: Idcircò cogitationes meæ reſpondent mihi, & quia ſenſus meus in me eſt. Doctrinam verecundiæ meæ audio, 1 2 3
& quaſi ſpiraculũ intelligentiæ meæ reſpondet mihi. Nonne hoc ſcis ab initio, à tempore quo poſit⁹ eſt homo ſuper terram? Quoniam gaudium impiorum fini- 4 5
tur citò, & lætitia delatoris uſque ad momentum. Si aſcenderit verſus cœlum erectio ejus, & caput ejus ad nubes pertigerit: Sicut ſtercus ejus in æternum peribit: 6 7
videntes eum, dicent, Ubi eſt? Sicut ſomnium avolabit, nec invenietur; & tranſmigrabit ſicut viſio noctis. Oculus qui eum intuebatur, non adjiciet [*eum videre*,] nec 8 9
aſpiciet eum ultrà locus ejus. Filii ejus *conterent* pauperes, & manus ejus reſtituent fortitudinem tribulationis ſuæ. Oſſa ejus impleta ſunt fortitudine ſua, & cum eo 10 11
in pulvere dormiet. Si dulce fuerit in ore ejus malum, *mentietur* illud ſub lingua ſua. Parcet illi, & non derelinquet illud, & operiet illud in medio gutturis ſui. 12 13
Cibus illius in utero ejus vertetur, venenum *aſpidum* in medio ejus. Subſtantias quas devoravit evomet, & de ventre ejus ejiciet eas Deus. Capita aſpidum ſuget: 14 15
occîdet eum lingua *ſerpentis*. Non erit dignus ut videat rivos fluminum, torrentes mellis & butyri. Reddet laborem *alienum*, & non perficiet: cùm *opulentia* ejus 16 17
datur immutat eam, & non exultabit. Quoniam confregit negocium pauperum; domum rapuit, & non ædificavit eam. 18 19

איוב : כא

.evadet non ejus deſiderio in ; ſuo ventre in tranquillus novit non Quia

20 כִּי לֹא־יָדַע שָׁלֵו בְּבִטְנוֹ בַּחֲמוּדוֹ לֹא יְמַלֵּט׃

parturiet non propterea : eum comedendum ad ſuperſtes Non

21 אֵין־שָׂרִיד לְאָכְלוֹ עַל־כֵּן לֹא־יָחִיל

omnis : ei erit anguſtia , ſuam ſufficientiam replendo In .ejus bonum

22 טוּבוֹ׃ בִּמְלֹאות סִפְקוֹ יֵצֶר לוֹ כָּל־

, ſuum ventrem replendum ad Fuerit .eum invadet laborantis manus

23 יַד עָמֵל תְּבֹאֶנּוּ׃ יְהִי לְמַלֵּא בִטְנוֹ

.ejus carne in eum ſuper pluere faciet & : ſui naſi iram eum in mittet

יְשַׁלַּח־בּוֹ חֲרוֹן אַפּוֹ וְיַמְטֵר עָלֵימוֹ בִּלְחוּמוֹ׃

.æris arcus eum pertranſibit : ferri armatura ab Fugiet

24 יִבְרַח מִנֵּשֶׁק בַּרְזֶל תַּחְלְפֵהוּ קֶשֶׁת נְחוּשָׁה׃

eum ſuper : exibit ejus felle de fulgur & , corpore de exivit & , Eduxit

25 שָׁלַף וַיֵּצֵא מִגֵּוָה וּבָרָק מִמְּרֹרָתוֹ יַהֲלֹךְ עָלָיו

ignis eum peredet : ejus occultis in abſcondita tenebræ Omnis .terrores

26 אֵמִים׃ כָּל־חֹשֶׁךְ טָמוּן לִצְפּוּנָיו תְּאָכְלֵהוּ אֵשׁ

Revelabunt .ejus tabernaculo in ſuperſtes affligetur : ſufflatus non

27 לֹא־נֻפָּח יֵרַע שָׂרִיד בְּאָהֳלוֹ׃ יְגַלּוּ

fructus Migrabit .eum in inſurgens terra & : ejus iniquitatem cœli

28 שָׁמַיִם עֲוֺנוֹ וְאֶרֶץ מִתְקוֹמָמָה לוֹ׃ יִגֶל יְבוּל

Impii hominis pars Hæc .ejus naſi die in fluentes : ejus domus

29 בֵּיתוֹ נִגָּרוֹת בְּיוֹם אַפּוֹ׃ זֶה חֵלֶק־אָדָם רָשָׁע

.Deo à ejus eloquii hæreditas & , Deo à

מֵאֱלֹהִים וְנַחֲלַת אִמְרוֹ מֵאֵל׃

CAP. XXI. כא

; meum ſermonem audiendo Audite : dixit & , Ijob reſpondit Et

1 2 וַיַּעַן אִיּוֹב וַיֹּאמַר׃ שִׁמְעוּ שָׁמוֹעַ מִלָּתִי

: loquar ego & , me Ferte veſtræ conſolationes hoc ſit &

3 וּתְהִי־זֹאת תַּנְחוּמֹתֵיכֶם׃ שָׂאוּנִי וְאָנֹכִי אֲדַבֵּר

? meum eloquium hominem ad ego Num .ſubſannes me loqui poſt &

4 וְאַחַר דַּבְּרִי תַלְעִיג׃ הֶאָנֹכִי לְאָדָם שִׂיחִי

, me ad Reſpicite ? meus ſpiritus abbreviabitur non cur ſi &

5 וְאִם־מַדּוּעַ לֹא־תִקְצַר רוּחִי׃ פְּנוּ־אֵלַי

, ſum recordatus ſi Et .os ſuper manum ponite & , obſtupeſcite &

6 וְהָשַׁמּוּ וְשִׂימוּ יָד עַל־פֶּה׃ וְאִם־זָכַרְתִּי

Cur .tremor meam carnem apprehendit & : ſum attonitus &

7 וְנִבְהָלְתִּי וְאָחַז בְּשָׂרִי פַּלָּצוּת׃ מַדּוּעַ

? robore ſunt roborati etiam , ſenuerunt , vixerunt impii

רְשָׁעִים יִחְיוּ עָתְקוּ גַּם־גָּבְרוּ חָיִל׃

eorum germina & : eis cum eorum facies ad ſtabile eorum Semen

8 זַרְעָם נָכוֹן לִפְנֵיהֶם עִמָּם וְצֶאֱצָאֵיהֶם

virga non & , pavore à pax eorum Domus .eorum oculis in

9 לְעֵינֵיהֶם׃ בָּתֵּיהֶם שָׁלוֹם מִפָּחַד וְלֹא שֵׁבֶט

: extra ſemen projecit non & , gravidavit ejus Bos .eos ſuper Dei

10 אֱלוֹהַּ עֲלֵיהֶם׃ שׁוֹרוֹ עִבַּר וְלֹא יַגְעִל

pecus velut Emittent .ſterileſcet non & , ejus vacca ſalvabit

11 תְּפַלֵּט פָּרָתוֹ וְלֹא תְשַׁכֵּל׃ יְשַׁלְּחוּ כַצֹּאן

, tympano in Elevabunt .ſubſilient eorum nati & : ſuos parvulos

12 עֲוִילֵיהֶם וְיַלְדֵיהֶם יְרַקֵּדוּן׃ יִשְׂאוּ בְּתֹף

bono in vetuſtate Terent .organi vocem ad lætabuntur & : cithara &

13 וְכִנּוֹר וְיִשְׂמְחוּ לְקוֹל עוּגָב׃ יְבַלּוּ בַטּוֹב

, Deo dixerunt Et .deſcendent ſepulchrum momento in & , ſuos dies

14 יְמֵיהֶם וּבְרֶגַע שְׁאוֹל יֵחָתּוּ׃ וַיֹּאמְרוּ לָאֵל

Quid .volumus non tuarum viarum ſcientiam & ; nobis à Recede

15 סוּר מִמֶּנּוּ וְדַעַת דְּרָכֶיךָ לֹא חָפָצְנוּ׃ מַה־

occurrerimus quod capiemus utilitatis quid & ? ei ſerviamus quòd Saddai

שַּׁדַּי כִּי־נַעַבְדֶנּוּ וּמַה־נּוֹעִיל כִּי נִפְגַּע־

impiorum conſilium : eorum bonum eorum manu in non En ? eo in

16 בוֹ׃ הֵן לֹא בְיָדָם טוּבָם עֲצַת רְשָׁעִים

.me à fuit longè

רָחֲקָה מֶנִּי׃

Verſio VULG. LAT.

20 Nec eſt ſatiatus venter ejus :
& cùm habuerit quæ cõcupie-
21 rat, poſſidere non poterit. Non
remanſit de cibo ejus , & pro-
pterea nihil permanebit de
22 bonis ejꝰ. Cùm ſatiatus fuerit,
arctabitur, æſtuabit, et omnis
23 dolor irruet ſuper eum. Uti-
nam impleatur venter ejus, ut
emittat in eũ iram furoris ſui,
& pluat ſuper illum bellũ ſuũ.
24 Fugiet arma ferrea, & irruet
25 in arcum æreum. Eductus, &
egrediens de vagina ſua, &
fulgurans in amaritudine ſua:
vadent & venient ſuper eum
26 horribiles. Omnes tenebræ
abſconditæ ſũt in occultis ejꝰ :
devorabit eum ignis, qui non
ſuccenditur, affligetur relictus
27 in tabernaculo ſuo. Revela-
bunt cœli iniquitatem ejus, &
terra conſurget adverſùs eum.
28 Apertum erit germen domûs
illius, detrahetur in die furo-
29 ris Dei. Hæc eſt pars hominis
impii à Deo, & hæreditas ver-
borum ejus à Domino.

CAP. XXI.

1 RЕſpondens autem Job, di-
2 xit ; Audite, quæſo, ſermones
meos, & agite pœnitentiam.
3 Suſtinete me, & ego loquar, &
pòſt mea, ſi videbitur, verba
4 ridete. Numquid contra ho-
minem diſputatio mea eſt, ut
meritò non debeam contri-
5 ſtari ? Attendite me, & ob-
ſtupeſcite, et ſuperponite di-
6 gitum ori veſtro: Et ego quan-
do recordatus fuero, perti-
meſco, et concutit carnem
7 meam tremor. Quarè ergò
impii vivunt, ſublevati ſunt,
8 confortatíque divitiis ? Se-
men eorum permanet coram
eis, propinquorum turba et
nepotum in conſpectu eorum.
9 Domus eorum ſecuræ ſunt et
pacatæ, et non eſt virga Dei
10 ſuper illos. Bos eorũ concepit,
et non abortivit : vacca pepe-
rit, et non eſt privata fœtu
11 ſuo. Egrediuntur quaſi greges
parvuli eorum, et infantes eo-
12 rum exultant luſibus. Tenent
tympanum, et citharam, et
gaudent ad ſonitum organi.
13 Ducunt in bonis dies ſuos, et
in puncto ad inferna deſcen-
14 dunt. Qui dixerunt Deo ; Re-
cede à nobis, et ſcientiam vi-
15 arum tuarum nolumus. Quis
eſt Omnipotens ut ſerviamus
ei ? et quid nobis prodeſt ſi
16 oraverimus illum ? Verunta-
men quia non ſunt in manu
eorum bona ſua, conſilium
impiorum longè ſit à me.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

20 † (υ) Οὐκ ἔϛιν αὐτοῦ σωτηρία τοῖς ὑπάρ-
χουσιν, † ἐν ἐπιθυμίᾳ αὐτοῦ οὐ σωθήσεται.
21 † Οὐκ ἔϛιν ὑπόλειμμα τοῖς βρώμασιν (φ)
αὐτοῦ, † διὰ τοῦτο οὐκ ἀνθήσει αὐτοῦ τὰ
22 ἀγαθά. † Ὅταν δὲ δοκῇ ἤδη πεπληρῶσθαι,
θλιβήσεται, † πᾶσα δὲ ἀνάγκη ἐπ᾽ αὐ-
23 τὸν ἐπελεύσεται. (χ) Εἴ πως πληρῶσαι
γαϛέρα αὐτοῦ, † ἐπαποϛείλαι ἐπ᾽ αὐτὸν
θυμὸν ὀργῆς, (ψ) νίψαι ἐπ᾽ αὐτὸν ὀ-
24 δύνας, † Καὶ οὐ μὴ σωθῇ ἐκ χειρὸς σι-
δήρου· † (ω) τρώσαι αὐτὸν τόξον (α) χάλκει-
25 ον. † Διεξέλθοι δὲ διὰ σώματος αὐτοῦ βέ-
λος, † (β) ἄϛρα δὲ ἐν διαίταις (γ) αὐτοῦ.
26 περιπατήσαισαν, † ἐπ᾽ αὐτῷ φόβοι, (δ) Πᾶν
δὲ σκότος αὐτῷ ὑπομείναι. † κατέδεται (ε)
αὐτὸν πῦρ ἄκαυϛον, † κακώσαι δὲ αὐτοῦ ἐπ-
27 ήλυτος τὸν οἶκον. † Ἀνακαλύψαι (ζ)
δὲ αὐτοῦ ὁ οὐρανὸς τὰς ἀνομίας, † γῆ δὲ
28 ἐπαναϛαίη αὐτῷ. † Ἑλκύσαι τὸν οἶκον
αὐτοῦ ἀπώλεια εἰς τέλος, † (η) ἡμέρα ὀρ-
29 γῆς ἐπέλθοι αὐτῷ. † Αὕτη ἡ μερὶς ἀν-
θρώπου ἀσεβοῦς παρὰ κυρίου, † καὶ κτῆμα
ὑπαρχόντων (θ) αὐτῷ παρὰ τοῦ ἐπισκόπου.

Non eſt ejus ſalus facultatibus : 20
(n) in deſiderio ſuo non ſalva-
bitur. Non ſunt reliquiæ cibis 21
ejus : propter hoc non florebunt
ejus bona. Et cùm putaverit 22
ſe jam repletum eſſe, coarctabi-
tur : omnis autem neceſſitas in
eum ſuperveniet, (o) Si quo 23
modo ſit implere ventrem ſuum:
immittat in eum furorem iræ, (p)
lavet ſuper eum dolores, Et non 24
ſalvetur de manu ferri : vulne-
ret eum ſagitta ærea: Et pertran- 25
ſeat per corpus ejus jaculum:
(q) ſydera autem in tabernaculis
ejus (r) obambulent : ſuper eum
timores, Omnes autem tenebræ 26
ei (ſ) permaneant : comedet eum
ignis, qui non (t) accenditur :
lædat (u) advena domum ejus,
Et detegat cœlum iniquitates e- 27
jus, & terra inſurgat adverſùs
eum. Trahit domum ejus perdi- 28
tio in finem : dies iræ ſuperve-
niat ei. Hæc eſt pars hominis im- 29
pii à Domino, & poſſeſſio bono-
rum ejus (x) à ſuperintendente.

MS.A. (υ) Διὰ τοῦτο οὐκ ἔϛι αὐτῷ σωτηρία ἐν τοῖς ὑπάρχουσιν αὐτοῦ, οὐδὲ ἀνθήσει αὐτοῦ τὰ ἀγαθά. Ἐν ἐπιθυμίᾳ αὐτοῦ (φ) αὐτοῦ. Ὅταν δοκῇ (χ) Καὶ πληρώσει γαϛέρα αὐτοῦ, (ψ) ῥίψαι δὲ ἐπ᾽ (ω) τρώσαι δὲ αὐτὸν (α) χάλκειον. Καὶ διεξέλθοι διὰ (β) ἄνδρα δὲ (γ) αὐτοῦ μὴ περιπατήσαι· (δ) Καὶ πᾶν σκότος αὐτὸν ὑπομείναι. (ε) δὲ αὐτὸν πῦρ ἄσβεϛον, καὶ κακώσαι αὐτοῦ (ζ) αὐτοῦ (η) καὶ *ἡμέραι (θ) αὐτοῦ

ΚΕΦ. κά.

1 † Ὑπολαβὼν δὲ Ἰὼβ, λέγει, † (α) Ἀκού-
2 σατε ἀκούσατέ μου τῶν λόγων, † ἵνα μὴ
(β) ᾖ μοι παρ᾽ ὑμῶν αὕτη ἡ παράκλησις.
3 † Ἄρατέ με, ἐγὼ δὲ λαλήσω, † (γ) εἶτ᾽
4 οὐ καταγελάσετέ μου. † Τί γάρ; (δ) μὴ
ἀνθρώπου μου ἡ ἔλεγξις; † ἢ διὰ τί οὐ θυ-
5 μωθήσομαι; † (ε) Εἰσβλέψαντες εἰς ἐμὲ
θαυμάσετε, χεῖρα θέντες (ζ) ἐπὶ σιαγόνι.
6 † Ἐάν τε γὰρ μνησθῶ, ἐσπούδακα· † ἔ-
7 χουσι δέ μου τὰς σάρκας ὀδύναι. † (η) Διὰ
τί ἀσεβεῖς ζῶσι, † πεπαλαίωνται δὲ (θ)
8 καὶ ἐν πλούτῳ; † Ὁ σπόρος αὐτῶν κατὰ
ψυχὴν, † τὰ δὲ τέκνα αὐτῶν ἐν ὀφθαλ-
9 μοῖς (ι). † Οἱ οἶκοι αὐτῶν εὐθηνοῦσι, φό-
βος δὲ οὐδαμοῦ, † μάϛιξ δὲ παρὰ κυρίου οὐκ
10 ἔϛιν ἐπ᾽ αὐτοῖς. † Ἡ βοῦς αὐτῶν οὐκ ὠμο-
τόκησε, † διεσώθη δὲ αὐτῶν (ɥ) ἐν γαϛρὶ
11 ἔχουσα καὶ οὐκ ἔσφαλεν. † Μένουσι δὲ (κ) ὡς
πρόβατα αἰώνια, † τὰ δὲ παιδία αὐτῶν
12 (λ) προσπαίζουσιν, † Ἀναλαβόντες ψαλτή-
ριον καὶ κιθάραν, † καὶ εὐφραίνονται φωνῇ
13 ψαλμοῦ. † Συνετέλεσαν (μ) δὲ ἐν ἀγαθοῖς
τὸν βίον αὐτῶν, † ἐν δὲ ἀναπαύσει ᾅδου
14 ἐκοιμήθησαν. † Λέγει δὲ (ν) κυρίῳ, Ἀ-
πόϛα ἀπ᾽ ἐμοῦ, † (ξ) ὁδούς σου εἰδέναι οὐ βούλο-
15 μαι. † Τί ἱκανὸς, ὅτι δουλεύσομεν αὐτῷ;
† καὶ τίς ὠφέλεια, ὅτι (∴) ἀπαντήσομεν αὐ-
16 τῷ; † Ἐν χερσὶ γὰρ (ο) ἦν αὐτῶν τὰ ἀγαθὰ,
ἔργα δὲ ἀσεβῶν (π) οὐκ ἐφορᾷ.

CAP. XXI.

RЕſpondens autem Job, ait ; 1
Audite, audite ſermones meos, 2
(a) ut non ſit mihi à vobis hæc
conſolatio. Suſtinete me, ego 3
autem loquar : deinde (b) non
irridebitis me. Quid enim? nun- 4
quid hominis eſt caſtigatio mea?
aut quarè non iraſcar? Inſpicien- 5
tes in me (c) admirabimini, manũ
ponentes ſuper (d) maxillam. Si 6
etenim recordatus fuero, (e)
ſolicitus fui : & tenentur carnes
meæ doloribus. Quarè impii 7
vivunt, ſenuerunt autem & in
divitiis? Semen eorum ſecun- 8
dùm animam, & filii eorum in
(f) oculis. Domus eorum abun- 9
dant : timor autem nuſquam, et
flagellum à Domino non eſt ſuper
eos. Bos eorum non (g) fœtum 10
immaturum peperit : & ſalva e-
vaſit (h) eorum prægnans, &
non fruſtrata eſt. Et permanent, 11
ſicut (i) oves æternæ, & parvu-
li eorum ludunt, Sumentes pſal- 12
terium, & citharam: & lætan-
tur voce pſalmi. Conſummave- 13
runt autem in bonis vitam ſuam,
& in requie inferni dormierunt.
Dicit autem Domino ; Recede à 14
me, vias tuas ſcire nolo. Quid 15
eſt omnipotens, quia ſerviemus
ei? Et quæ utilitas, quoniam ob-
viam ibimus ei? Erant enim in 16
manibus eorum bona : opera au-
tem impiorum non inſpicit.

MS.A. (α) Ἀκούσατέ μου, ἀκούσατέ μου (β) ἐπὶ μοι αὕτη παρ᾽ ὑμῶν παράκλησις. Βαϛάσατέ με, ἐγὼ (γ) εἶτα μή μου καταγελᾶσαι. (δ) μὴ ἐξ ἀνθρώπου ἡ ἔλεγξίς μου; καὶ διὰ τί (ε) Ἐμβλέψαντες εἰς ἐμὲ θαυμάσατε, (ζ) ἐπὶ ϛόμα. (η) Διὰ τί δὲ ἀσεβεῖς (θ) καὶ πλούτῳ; (ι) αὐτῶν. (ɥ) ἡ ἐν γαϛρὶ (κ) ὥσπερ (λ) προσπαίζει αὐτοῖς, Ἀναλαμβάνοντα (μ) ἐν ἀγαθοῖς (ν) ὁ ἀσεβὴς τῷ κυρίῳ, (ξ) τὰς ὁδούς (∴) ἀπαντήσωμεν (ο) αὐτῶν ἦν (π) οὐ καθαρά.

תרגום TARGUM.

20 21 22 ארום לא ידע דיהי שליו בכריסיה בנושמיה לא ישתזיב : לית משוב למכליה מטול היכנא לא יוריך טוביה : תתמלי סאתיה יתפרע מניה כל אידא
23 24 25 דלעי תיתניה : יהי לממלי כריסיה יגרי ביה תקוף רוגזיה ויחת עלוי מטרין בשלדיה : יערוק מן זייני פרזלא תשלחפניה קשתא דנחשא : שלף
26 27 ונפק מתיקה וברקא ממרירתיה יהלוך עלוי דחילייא : כל חשוכא טמיע לטשיותיה תגמרניה נור דגהנם דלא נפיח ישרי משוב במשכניה : יפרסמון
28 29 אנגלי מרומא סורחניה ודיירי ארעא יקומון למבאשא ליה : יטלטל עבור ביתיה משחיה וחמריה מזדלפן ביומא דרוגזיה : דין חולק בר נש רשיעא מן
קדם יי ואחסנת מימריה מן קדם אלהא :

כא

1 2 3 4 ואתיב איוב ואמר : שמעו וקבילו מלתי ותהי דא תנחמתכון : סבולו יתי ואנא אמלל ומן בתר דמלליית תחדך : אפשר דאנא לבר נש מלתי ואין
5 6 7 מדין לא תתעיק רוחי : אתפנו לותי ושתוקו ושוון אידא על פומא : ואין דכרית ואתבהלית ואחד בסרי רתיתא : מדין רשיעיא יחון אתקפו לחוד
8 9 10 קנו נכסין : בניהון מכוין קדמיהון עמהון ובני בניהון למחמיהון : בתיהון שלם דלית דלוחא ולית מחת אלהא עליהון : תוריה מבטין ולא יפלט
11 12 13 תשוב תורתהא ולא תתכל : ישדרון היך ענא טליהון ורוביהון יטפזון : יטלון בתופין וכנרין ויחדון לקל אבובא : ינפרון בטבא יומיהון ובמרגעא לבית
14 15 16 קבורתא נחתין : ואמרו לאלהא זור מננא ולמחכם אורחתך לא צבינא : מה שדי ארום נפלחניה ומה צרוך אית ביה ארום נצלי במימריה : הא לא
ישתכח בידיהון טוביהון מלכת רשיעי רחקת מני

Versio SYRIACA.

20 21 * ܡܛܠ ܕܠܐ ܝܕܥ ܕܝܢܗ ܒܟܪܣܗ. ܘܒܪܓܝܓܬܗ ܠܐ ܢܬܦܠܛ. * ܘܠܝܬ ܕܦܠܛ ܡܢ ܫܪܒܬܗ. ܡܛܠ ܗܢܐ
22 23 ܠܐ ܢܫܬܪܪ ܛܒܬܗ. * ܘܡܟܝܠܬܐ ܕܟܝܠ ܢܬܦܪܥ. ܘܟܠ ܐܝܕܐ ܕܥܘܠܐ ܬܐܬܐ ܥܠܘܗܝ. * ܘܢܗܘܐ ܠܐܒܕܢܐ
24 ܡܚܫܒܬܗ. ܘܬܕܪܟܝܘܗܝ ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ. ܘܢܡܛܪ ܥܠܘܗܝ ܒܩܪܒܬܢܘܬܗ. * ܕܥܪܩ ܡܢ ܣܝܦܐ ܕܦܪܙܠܐ.
25 ܢܥܒܪ ܥܠܘܗܝ ܩܫܬܐ ܕܢܚܫܐ. * ܢܦܩܘܢ ܘܢܬܦܫܩܘܢ ܡܥܘܗܝ. ܘܡܫܟܐ ܕܡܪܪܬܗ ܢܬܦܪܬ. ܥܠܘܗܝ ܢܩܘܡ
26 ܬܘܩܦܐ. * ܘܟܠܗ ܚܫܘܟܐ ܛܫܐ ܠܫܪܒܬܗ. ܘܬܐܟܠܝܘܗܝ ܢܘܪܐ ܕܠܐ ܡܬܢܦܚܐ. ܘܢܒܫ ܫܪܟܐ ܕܒܡܫܟܢܗ.
27 28 * ܢܓܠܘܢ ܫܡܝܐ ܚܛܗܘܗܝ. ܘܐܪܥܐ ܬܬܒܥ ܡܢܗ. * ܢܬܓܠܘܢ ܫܬܐܣܝ ܒܝܬܗ. ܘܢܬܚܛܦ ܒܝܘܡܐ
29 ܕܪܘܓܙܐ. * ܗܢܘ ܡܢܬܗ ܕܒܪܢܫܐ ܪܫܝܥܐ ܡܢ ܩܕܡ ܐܠܗܐ. ܘܝܪܬܘܬܐ ܕܡܠܘܗܝ ܡܢ ܡܪܘܡܐ.
1 2 * ܩܦܠܐܘܢ * ܟܐ * ܘܥܢܐ ܐܝܘܒ. ܘܐܡܪ. * ܫܡܥܘ ܡܫܡܥ ܡܠܝ .. ܘܢܗܘܐ ܠܟܘܢ
3 4 ܡܘܕܥܢܘܬܐ. * ܣܝܒܪܘܢܝ ܘܐܢܐ ܐܡܠܠ. ܘܡܢ ܒܬܪ ܡܠܝ ܓܚܟܘ ܒܝ. * ܐܡܪ ܠܒܪܢܫܐ ܡܠܝ. ܠܡܢܐ ܡܬܥܩܐ
5 6 ܪܘܚܝ. * ܐܬܦܢܘ ܠܘܬܝ ܘܐܬܕܡܪܘ. ܘܣܝܡܘ ܐܝܕܝܟܘܢ ܥܠ ܦܘܡܟܘܢ. * ܕܐܢ ܐܬܕܟܪܬ ܐܬܕܠܚܬ. ܘܐܚܕܗ
7 8 ܠܒܣܪܝ ܙܘܥܬܐ. * ܡܛܠ ܡܢܐ ܪܫܝܥܐ ܚܝܝܢ. ܘܡܬܥܬܩܝܢ ܓܢܒܪܐ ܚܝܠܐ. * ܙܪܥܗܘܢ ܩܕܡܝܗܘܢ ܡܬܩܝܡ.
9 10 ܘܒܢܝܗܘܢ ܠܥܝܢܝܗܘܢ. * ܒܬܝܗܘܢ ܫܠܡܝܢ ܡܢ ܕܚܠܬܐ. ܘܫܒܛܗ ܕܐܠܗܐ ܠܐ ܥܠܝܗܘܢ. * ܬܘܪܗ
11 ܒܥܐ ܘܠܐ ܓܥܐ. ܘܦܪܬܗ ܫܒܝܩܐ ܘܠܐ ܡܚܒܠܐ. * ܡܫܬܪܪܝܢ ܐܝܟ ܥܢܐ ܒܢܝܗܘܢ .. ܘܝܠܘܕܝܗܘܢ ܡܫܘܪܝܢ.
12 13 * ܢܣܒܝܢ ܦܠܓܐ ܘܟܢܪܐ. ܘܚܕܝܢ ܒܩܠܐ ܕܙܡܪܐ. * ܡܫܠܡܝܢ ܒܛܒܬܐ ܝܘܡܝܗܘܢ .. ܘܒܪܦܦ ܥܝܢܐ ܠܫܝܘܠ
14 15 ܢܚܬܝܢ. * ܘܐܡܪܝܢ ܠܐܠܗܐ. ܦܪܘܩ ܡܢܢ. ܘܐܘܪܚܬܟ ܕܢܕܥ ܠܐ ܨܒܝܢܢ. * ܘܐܡܪܝܢ. ܡܢܘ ܐܠܗܐ
16 ܕܢܦܠܚܝܘܗܝ .. ܘܡܢܐ ܡܘܬܪ ܠܢ ܕܢܨܠܐ ܩܕܡܘܗܝ. * ܗܐ ܠܐ ܗܘܐ ܒܐܝܕܝܗܘܢ ܛܒܬܗܘܢ. ܘܡܚܫܒܬܗܘܢ
ܕܪܫܝܥܐ ܐܬܪܚܩܬ ܡܢܝ.

Versio ARABICA.

20 21 * من أجل أنه لم يعرف قضاءه في بطنه * وبشهواته لا ينفلت * وليس أحد ينفلت من ذريته * من أجل
22 23 هذا لا يثبت خيره * وبالمكيال الذي كال يجازى * وكل يد من المنافقين تأتي عليه * وتكون
24 للهلاك فكرته * ويغري به حمية غضبه * ويمطر عليه بمحاربته * الذي يفر من سنان الحديد يجوز
25 26 عليه قوس من نحاس * تسل وتخرج أمعاؤه * وجلد مرارته ينشق * وعليه تدوم الشدة * وكل الشر
27 مطمورا لذريته * تأكله نار غير منفوخة * وييبس باقي جلده * تظهر السماء خطاياه * والأرض تنتقم منه *
28 29 * تظهر أواسي بيته ويجتذب في يوم الزجر * هذا نصيب الإنسان المنافق من قدام الله * ووراثة
1 كلامه من العلو * * الفصل الحادي والعشرون * * فأجاب أيوب وقال *
2 3 * اسمعوا استماعا قولي * ويكون فيكم فهما * اصبروا لي فأتكلم * وبعد كلامي فاهزأوا * أقول للناس
4 5 6 قولي * لماذا تضيق روحي * التفتوا إلي واعجبوا * وضعوا أيديكم على أفواهكم * فإني إذا ذكرت
7 8 ارتعدت * وأخذ بشري الطلق * من أجل ماذا المنافقون أحياء * ويعتق جبابرة القوة * ذريتهم واقفة
9 10 قدامهم * وبنوهم عيانهم * بيوتهم آمنة من المخافة * وليس سوط الله عليهم * وثورهم يجوز فلا يعج *
11 12 وتعلق بقرته ولا تفسد * مسددة مثل الغنم بنوهم * وأولادهم يقفزون * أخذوا البرابط والمزاهر
13 14 ويفرحون لصوت الزمير * يفنون بالنعيم أيامهم وبسرعة إلى الهاوية يهبطون * ويقولون لله أبعد عنا * وأن
15 نعرف طرائقك فإننا لا نشتهي * ويقولون من هو الله حتى نعبدك أو ماذا ننتفع حتى أن نطلب *
16 * فالآن ليس بأيديهم خلاصهم * ولكن المنافقين استبعدت مني *

VERS. SYR. & ARAB.
Interp. Lat.

Quia non cognovit judicium ſuum in ventre ſuo: & in concupiſcentiis ſuis non effugiet: 20 *Et nullus evadet de generatione ejus. Propterea non durabit bonum ipſius:* 21 *Et menſura quâ menſus eſt, retribuetur ei; & omnis manus ab impiis veniet ſuper eum:* 22 *Et erit ad interitum (o) cogitatio ipſius, & occupabit illum ira indignationis ejus, et pluet ſuper eũ in ſua pugna.* 23 *Qui fugit à cuſpide ferri, tranſibit ſuper eum arcus æneus:* 24 *Educentur & extrahentur inteſtina ejus, et cutis fellis ejus diſrumpetur: & ſuper ipſum perdurabit (p) tribulatio,* 25 *Et (q) omne malum eſt abſconditum pro generatione ejus: devorabit eum ignis non concitatus: & exareſcet reliqua ejus pellis:* 26 *Revelabunt cœli peccata ipſius, & terra vindictam ſumet ab ipſo:* 27 *Aperientur fundamenta domûs ipſius, raptabitur in die furoris.* 28 *Hæc eſt ſors hominis iniqui à conſpectu Dei, & hæreditas verborum ejus ab excelſo.* 29

CAP. XXI.

Reſpondit Job, ac dixit, 1 *Audientes audite ſermonẽ meũ, & ſit in vobis prudentia:* 2 *Suſtinete me, et loquar; et poſt verba mea irridete.* 3 *Dicã homini ſermonem meum, cur coangustatur ſpiritus meus?* 4 *Convertimini ad me, et obſtupeſcite, et apponite manus veſtras ori veſtro:* 5 *Quia cùm memini, horreo, & capit carnem meã (a) dolor partûs.* 6 *Quare vivi ſunt impii, & inveteraſcunt gigantes fortiſſimi?* 7 *Progenies eorum perſeverat coram ipſis, & filii ipſorum in conſpectu eorum?* 8 *Domus eorum ſunt ſecuræ à metu, et flagellum Dei non eſt ſuper eos?* 9 *Bos ejus incedit, & non mugit, & vacca ejus dimiſſa nil corrumpit?* 10 *Corroborati velut oves filii eorum, & nati eorum ſaltant?* 11 *Sumunt fides ac citharas, & congaudent ad vocem pſalmodiæ?* 12 *Conſumunt dies ſuos in deliciis, & citò in infernum deſcendunt;* 13 *Et dicunt Deo, Recede à nobis, & cognoſcere vias tuas non cupimus;* 14 *Et dicunt; Quis eſt Deus ut eum adoremus? & quid proderit nobis, (b) ſupplicare? (c)* 15 *Veruntamen nonne eſt in manibus eorum (d) ſalus eorum? & cogitatio impiorum procul abſceſſit à me.* 16

INTERP. SYRIACA.

(o) conceptio (p) robur, (q) omnes tenebræ abſconditæ ſunt CAP. xxi. (a) vertigo. (b) ut precemur eum? (c) Ecce non eſt (d) bonum eorum?

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quia non ſcivit quòd eſſet quietus in ventre ſuo, in corpore ſuo non liberabitur. Nihil eſt quod remaneat de cibo ejus: propterea non expectabit bonum ſuum. 20 21 Cùm impleta fuerit menſura ejus, vindictam ſumet ab eo: omnis manus laborantis veniet ei. Cùm fuerit ad implendũ ventrem ejus, mittet in eum furorem iracundiæ 22 23 ſuæ, & demittet ſuper eum *pluvias in toroſam carnem ejus.* Fugiet arma ferrea, confodiet eum arcus æreus. Evaginavit, & eductus eſt [*gladius*] de vagina *ſua*, & *fulgur* 24 25 *è felle* ejus, invadent ſuper eum terrores? Omnes tenebræ abſconditæ ſunt in occultis ejus: conſumet eum ignis gehennæ qui non eſt ſufflatus: habitabit qui evaſerit in 26 tabernaculo ejus. Manifeſtabunt angeli excelſi iniquitatem ejus, & habitatores terræ conſurgent ut malefaciant ei. Transferetur frumentum domus illius: oleum & 27 28 vinum ejus defluent in die furoris ejus. Hæc eſt pars filii hominis impii à facie Domini, & hæreditas verbi ejus à facie Dei. 29

CAP. XXI.

Et reſpondit Job, & dixit: Audite et ſuſcipite verbum meum, et ſit hoc conſolationes veſtræ. Suſtinete me, et ego loquar, et poſtquàm locutus fuero, ridebis. 1 2 3 *Nunquid* ego ad filium hominis ſermonem meum [*facio?*] et ſi ita eſt, quare non anguſtiabitur ſpiritus meus? Aſpicite ad me, et tacete, et ponite manum ſuper os. Et 4 5 ſi ego recordatus fuero, conturbatus ſum, et apprehendit carnem meam tremor. Quare impii vivunt, confortati ſunt, *etiam* poſſederunt divitias. Filii eorum præparati 6 7 ſunt coram eis, cum eis, et filii filiorum ſuorum, videntibus illis. In domibus eorum eſt pax abſq; timore, et non eſt plaga Dei ſuper eos. Taurus ejus ingravidat, nec 8 9 in irritum *jacit* ſemen; parit vacca ejus, nec facit arbortivum. Mittunt ſicut oves parvulos ſuos, et pueri ſui ſaliunt. Portant tympana et citharas, et lætantur ad 10 11 vocem organi. Conſumunt in bono dies ſuos, et in momento ad ſepulchrum deſcendunt. Et dicunt Deo: Recede à nobis, et ſcire vias tuas nolumus. 12 13 Quid eſt omnipotens ut ſerviamus ei, et quæ erit utilitas *in eo* ſi oraverimus verbum ejus? Ecce non miſſum eſt in manum eorum bonum ipſorum: conſilium impiorum longè eſt à me. 14 15

: eorum exitium eos ſuper veniet & ,extinguetur impiorum lucerna Quoties
17 כַּמָּה נֵר־רְשָׁעִים יִדְעָךְ וְיָבֹא עָלֵימוֹ אֵידָם
; venti facies ad palea ſicut Erunt .ſuo naſo in partietur dolores
18 חֲבָלִים יְחַלֵּק בְּאַפּוֹ : יִהְיוּ כְּתֶבֶן לִפְנֵי רוּחַ
: ejus robur ejus filiis abdet Deus .turbo eam eſt furatus gluma ſicut &
19 וּכְמֹץ גְּנָבַתּוּ סוּפָה : אֱלוֹהַּ יִצְפֹּן־לְבָנָיו אוֹנוֹ
: ſuum infortunium ejus oculi Videbunt .ſciet & ,eum ad reddet
20 יְשַׁלֵּם אֵלָיו וְיֵדָע : יִרְאוּ עֵינָו כִּידוֹ
ſua domo in ejus voluntas quæ Nam .bibet Sadai furore de &
21 וּמֵחֲמַת שַׁדַּי יִשְׁתֶּה : כִּי מַה־חֶפְצוֹ בְּבֵיתוֹ
Deum Nunquid .ſunt dimidiati ejus menſium numerus Et ? ſe poſt
22 אַחֲרָיו וּמִסְפַּר חֳדָשָׁיו חֻצָּצוּ : הַלְאֵל
morietur Iſte ? judicabit excelſos ipſe & ,ſcientiam docebit
23 יְלַמֶּד־דָּעַת וְהוּא רָמִים יִשְׁפּוֹט : זֶה יָמוּת
ejus Mulctralia .pacificus & ,quietus ipſe totus ,ſuæ integritatis fortitudine in
24 בְּעֶצֶם תֻּמּוֹ כֻּלּוֹ שַׁלְאֲנַן וְשָׁלֵיו : עֲטִינָיו
morietur iſte Et .irrigabitur ejus oſſa medulla & ; lacte ſunt plena
25 מָלְאוּ חָלָב וּמֹחַ עַצְמוֹתָיו יְשֻׁקֶּה : וְזֶה יָמוּת
ſuper Pariter .bono in comedit non & ; amaro animo in
26 בְּנֶפֶשׁ מָרָה וְלֹא אָכַל בַּטּוֹבָה : יַחַד עַל־
novi En .eos ſuper operiet vermis & ; jacebunt pulverem
27 עָפָר יִשְׁכָּבוּ וְרִמָּה תְּכַסֶּה עֲלֵיהֶם : הֵן יָדַעְתִּי
.excogitabitis iniquè me adverſum molimina & , veſtras cogitationes
מַחְשְׁבוֹתֵיכֶם וּמְזִמּוֹת עָלַי תַּחְמֹסוּ :
tabernaculum ubi & ? liberalis domus ubi , dicetis Nam
28 כִּי תֹאמְרוּ אַיֵּה בֵית־נָדִיב וְאַיֵּה אֹהֶל
tranſeuntes interrogâſtis non Nunquid ? impiorum habitaculorum
29 מִשְׁכְּנוֹת רְשָׁעִים : הֲלֹא שְׁאֶלְתֶּם עוֹבְרֵי
prohibebitur exitii die in Quia ? diſſimulabitis non eorum ſigna & ? viam
30 דָרֶךְ וְאֹתֹתָם לֹא תְנַכֵּרוּ : כִּי לְיוֹם אֵיד יֵחָשֶׂךְ
ejus facies ſuper nunciabit Quis .inducentur furorum die in ; malus
31 רָע לְיוֹם עֲבָרוֹת יוּבָלוּ : מִי־יַגִּיד עַל־פָּנָיו
ſepulchra ad ipſe Et .ei reddet quis fecit ipſe Et ? ejus viam
32 דַּרְכּוֹ וְהוּא־עָשָׂה מִי יְשַׁלֶּם־לוֹ : וְהוּא לִקְבָרוֹת
,torrentis ceſpites ei Dulcuerunt .vigilabit acervo ſuper & ,ducetur
33 יוּבָל וְעַל־גָּדִישׁ יִשְׁקוֹד : מָתְקוּ־לוֹ רִגְבֵי נָחַל
.numerus non ejus facies ad & , trahet hominem omnem ſe poſt &
וְאַחֲרָיו כָּל־אָדָם יִמְשׁוֹךְ וּלְפָנָיו אֵין מִסְפָּר :
remanſit veſtris reſponſionibus & : vanum me conſolabimini quomodo Et
34 וְאֵיךְ תְּנַחֲמוּנִי הָבֶל וּתְשׁוּבֹתֵיכֶם נִשְׁאַר־
? prævaricatio
מָעַל :

CAP. XXII. כב

proderit Deo Nunquid : dixit & ,Temanites Eliphaz reſpondit Et
1 2 וַיַּעַן אֱלִיפַז הַתֵּמָנִי וַיֹּאמַר : הַלְאֵל יִסְכָּן־
voluntas Nunquid .agens prudenter ſe ſuper proderit ſed ? vir
3 גָּבֶר כִּי־יִסְכֹּן עָלֵימוֹ מַשְׂכִּיל : הַחֵפֶץ
? tuas vias perficias quòd , lucrum ſi & ? juſtificeris quòd , Saddai
לְשַׁדַּי כִּי תִצְדָּק וְאִם־בֶּצַע כִּי־תַתֵּם דְּרָכֶיךָ :
? judicium in tecum veniet : te arguet tui timore præ Nunquid
4 הֲמִיִּרְאָתְךָ יֹכִיחֶךָ יָבוֹא עִמְּךָ בַּמִּשְׁפָּט :
Etenim ? tuis iniquitatibus finis non & , multa tua malitia Nónne
5 6 הֲלֹא רָעָתְךָ רַבָּה וְאֵין־קֵץ לַעֲוֺנֹתֶיךָ : כִּי־
.facies ſpoliare nudorum veſtes & , gratis tuos fratres pignus in capies
תַחְבֹּל אַחֶיךָ חִנָּם וּבִגְדֵי עֲרוּמִּים תַּפְשִׁיט :
.panem prohibebis famelico à & , propinabis laſſo aquam Non
7 לֹא־מַיִם עָיֵף תַּשְׁקֶה וּמֵרָעֵב תִּמְנַע לָחֶם :
ſedebit faciebus acceptus & ; terra ei brachii viro Et
8 וְאִישׁ זְרוֹעַ לוֹ הָאָרֶץ וּנְשׂוּא פָנִים יֵשֶׁב
pupillorum brachia & , vacuè dimiſiſti Viduas .ea in
9 בָּהּ : אַלְמָנוֹת שִׁלַּחְתָּ רֵיקָם וּזְרֹעוֹת יְתֹמִים
pavor te terruit & , laquei tui circuitus Propterea .contundetur
10 יְדֻכָּא : עַל־כֵּן סְבִיבוֹתֶיךָ פַחִים וִיבַהֶלְךָ פַּחַד
.ſubitò
פִּתְאֹם :

Verſio VULG. LAT.

17 Quoties lucerna impiorum ex-
ſtinguetur, & ſuperveniet eis
inundatio, & dolores dividet
18 furoris ſui? Erunt ſicut paleæ
ante faciem venti, & ſicut fa-
villa quam turbo diſpergit.
19 Deus ſervabit filiis illius dolo-
rem patris: & cùm reddide-
20 rit, tunc ſciet. Videbunt oculi
ejus interfectionem ſuam, &
de furore Omnipotentis bibet.
21 Quid enim ad eum pertinet
de domo ſua poſt ſe? & ſi
numerus menſium ejus dimi-
22 dietur? Numquid Deum do-
cebit quiſpiam ſcientiam, qui
23 excelſos judicat? Iſte mori-
tur robuſtus & ſanus, di-
24 ves & fœlix: Viſcera ejus
plena ſunt adipe, & medullis
25 oſſa illius irrigantur: Alius
verò moritur in amaritudine
animæ abſque ullis opibus:
26 Et tamen ſimul in pulvere
dormient, & vermes operient
27 eos. Certè novi cogitationes
veſtras, & ſententias contra
28 me iniquas. Dicitis enim,
Ubi eſt domus principis? &
ubi tabernacula impiorum?
29 Interrogate quemlibet de via-
toribus, & hæc eadem illũ in-
30 telligere cognoſcetis. Quia
in diem perditionis ſervatur
malus, & ad diem furoris dũ-
31 cetur. Quis arguet coram eo
viam ejus? & quæ fecit, quis
32 reddet illi? Ipſe ad ſepulchra
ducetur, & in congerie mor-
33 tuorum vigilabit. Dulcis fuit
glareis Cocyti, & poſt ſe
omnem hominem trahet, &
34 ante ſe innumerabiles. Quo-
modò igitur conſolamini me
fruſtrà, cùm reſponſio veſtra
repugnare oſtenſa ſit veritati?

CAP. XXII.

1 RESpondens autem Eliphaz
2 Themanites, dixit; Numquid
Deo poteſt comparari homo,
etiam cùm perfectæ fuerit
3 ſcientiæ? Quid prodeſt Deo, ſi
juſtus fueris? aut quid ei con-
fers, ſi immaculata fuerit via
4 tua? Numquid timens arguet
te, & veniet tecum in judici-
5 um, Et non propter malitiam
tuam plurimam, & infinitas
6 iniquitates tuas? Abſtuliſti
enim pignus fratrum tuorum
ſine cauſa, & nudos ſpoliâſti
7 veſtibus. Aquam laſſo non de-
diſti, & eſurienti ſubtraxiſti
8 panem. In fortitudine brachii
tui poſſidebas terram, & po-
9 tentiſſimus obtinebas eam. Vi-
duas dimiſiſti vacuas, & lacer-
tos pupillorum comminuiſti.
10 Propterea circumdatus es la-
queis, & conturbat te formi-
do ſubita.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

17 † Οὐ μὴν δὲ ἀλλὰ καὶ ἀσεβῶν λύχνος σβε-
σθήσεται, † ἐπελεύσεται δὲ αὐτοῖς ἡ κατα-
στροφὴ, † (ρ) ὠδῖνες δὲ αὐτοὺς ἕξουσιν ἀπὸ
18 ὀργῆς. † Ἔσονται δὲ ὥσπερ ἄχυρα (σ)
ὑπ' ἀνέμου, † ἢ ὥσπερ κονιορτὸς ὃν (ς) ὑφείλε-
19 το λαῖλαψ. † Ἐκλείποι (τ) υἱοὺς τὰ ὑπ-
άρχοντα αὐτοῦ, † ἀνταποδώσει πρὸς αὐτὸν
20 καὶ γνώσεται. † (υ) Ἴδοισαν οἱ ὀφθαλμοὶ αὐ-
τοῦ τὴν ἑαυτοῦ σφαγὴν, † (φ) ἀπὸ δὲ κυ-
21 ρίου μὴ διασωθείη. † Ὅτι τὸ θέλημα
αὐτοῦ ἐν οἴκῳ αὐτοῦ (χ) μετ' αὐτοῦ, † καὶ
22 ἀριθμοὶ μηνῶν αὐτοῦ διῃρέθησαν. † Πότε-
ρον οὐχὶ ὁ κύριός ἐστιν ὁ διδάσκων σύνεσιν
καὶ ἐπιστήμην; † αὐτὸς δὲ (ψ) φόνους δια-
23 κρινεῖ; † Οὗτος ἀποθανεῖται ἐν κρά-
τει (ω) ἁπλοσύνης αὐτοῦ, † ὅλος δὲ εὐ-
24 παθῶν καὶ εὐθηνῶν. † Τὰ δὲ ἔγκατα αὐ-
τοῦ πλήρη στέατος, † (α) μυελὸς δὲ αὐτοῦ δια-
25 κεχεῖται. † (β) Ὁ δὲ τελευτᾷ ὑπὸ πικρίας
26 ψυχῆς, οὐ φαγὼν (γ) οὐδὲν ἀγαθόν. † Ὁ-
μοθυμαδὸν (δ) δὲ ἐπὶ γῆς κοιμῶνται, † σα-
27 πρία δὲ αὐτοὺς ἐκάλυψεν (ε). † Ὥστε οἶδα
28 ὑμᾶς, ὅτι τόλμῃ ἐπίκεισθέ μοι. † Ὥστε
ἐρεῖτε, Ποῦ ἐστιν (ζ) οἶκος ἄρχοντος; † καὶ
ποῦ (η) ἐστιν ἡ σκέπη τῶν σκηνωμάτων τῶν
29 ἀσεβῶν; † Ἐρωτήσατε παραπορευομένους
ὁδὸν, † καὶ τὰ σημεῖα αὐτῶν οὐκ (θ) ἀπ-
30 αλλοτριώσετε. † Ὅτι εἰς ἡμέραν ἀπω-
λείας κουφίζεται ὁ πονηρὸς, † (ι) εἰς ἡμέραν
31 ὀργῆς αὐτοῦ (κ) ἀπαχθήσονται. † Τίς ἀπ-
αγγελεῖ (λ) ἐπὶ προσώπου αὐτοῦ τὴν ὁδὸν
αὐτοῦ, † (μ) καὶ αὐτὸς ἐποίησε; τίς ἀντα-
32 ποδώσει αὐτῷ; † Καὶ αὐτὸς εἰς τάφους
ἀπηνέχθη, † (ν) καὶ αὐτὸς ἐπὶ σωρῶν ἠγρύ-
33 πνησεν. † Ἐγλυκάνθησαν αὐτῷ χάλικες
χειμάρρου, † καὶ ὀπίσω αὐτοῦ πᾶς ἄνθρωπος
ἀπελεύσεται, † καὶ ἔμπροσθεν αὐτοῦ ἀναρίθ-
34 μητοι. † Πῶς δὲ παρακαλεῖτέ με κενά;
† (ξ) τὸ δὲ ἐμὲ καταπαύσασθαι ἀφ' ὑμῶν
οὐδέν.

ΚΕΦ. κβ'.

1 † ΥΠολαβὼν δὲ Ἐλιφὰζ ὁ Θαιμανίτης,
2 λέγει, † Πότερον οὐχὶ ὁ κύριός ἐστιν ὁ
3 διδάσκων σύνεσιν καὶ ἐπιστήμην; † Τί γὰρ
μέλει τῷ κυρίῳ, ἐὰν σὺ (α) ἦσθα τοῖς ἔρ-
γοις ἄμεμπτος; † ἢ ὠφέλεια (β), ὅτι ἁ-
4 πλώσῃς τὴν ὁδόν σου; † Ἦ λόγον σου
ποιούμενος (γ) ἐλέγξεις, καὶ συνεισελεύσε-
5 ταί σοι εἰς κρίσιν; † Πότερον (δ) οὐχ
ἡ κακία σου ἐστὶ πολλὴ, † ἀναρίθ-
μητοι δέ (ε) σου εἰσὶν αἱ ἁμαρτίαι;
6 † Ἠνεχύραζες (ζ) δὲ τοὺς ἀδελφούς σου
διακενῆς, † ἀμφίασιν δὲ γυμνῶν ἀφεί-
7 λου. † Οὐδὲ ὕδωρ διψῶντας ἐπότισας,
8 † ἀλλὰ πεινώντων ἐστέρησας ψωμόν. † Ἐ-
θαύμασας δέ τινων (η) πρόσωπον, † ᾤ-
9 κισας δὲ τοὺς ἐπὶ τῆς γῆς. † Χήρας δὲ ἐξ-
απέστειλας κενὰς, † (θ) ὀρφανοὺς δὲ ἐκά-
10 κωσας. † Τοιγαροῦν ἐκύκλωσάν σε παγί-
δες, † καὶ ἐσπούδασέ σε πόλεμος ἐξαί-
σιος.

Immò verò, & impiorum lucer- 17
na extinguetur, & ſuperveniet
eis ſubverſio: dolores autem ha-
bebunt eos ab ira: Erunt autem 18
tanquam paleæ ſub vento, aut
tanquàm pulvis, quem abſtulit
turbo. (k) Deficiant filios bo- 19
na ejus: retribuet ad eum, &
cognoſcet. Videant oculi ejus 20
(l) necem ſuam, & à Domino
non ſalvetur. (m) Quia volun- 21
tas ejus in domo ejus cum eo, &
numeri menſium ejus diviſi (n)
ſunt. Nunquid (o) non Domi- 22
nus eſt, qui docet intellectum, et
ſcientiam? ipſe autem (p) ho-
micidia dijudicat. Hic morietur 23
in robore (q) ſimplicitatis ſuæ,
totus autem benè affectus, &
proſperè agens. Et inteſtina ejus 24
plena ſunt adipe, & (r) medul-
la ejus diffunditur. Ille verò 25
moritur ab amaritudine animæ
ſuæ, cùm non comederit ullum
bonum. Simul autem ſuper ter- 26
ram dormiunt, & putredo eos
operuit. Itaque ſcio (ſ) vos 27
audacter mihi inſiſtere. Quia 28
dicetis, ubi eſt domus principis?
& ubi eſt velamen in taberna-
culis impiorum? Interrogate e- 29
os qui tranſeunt per viam, &
ſigna eorum non (t) alienabitis:
Quoniã in diem perditionis (u) 30
ſublimatur malignus: in diem
iræ ejus (x) abducentur. Quis 31
annuntiabit in faciem ejus vi-
am ejus, & ipſe fecit? quis re-
tribuet ei? Et ipſe in ſepulchra 32
deductus eſt, & ipſe ſuper acer-
vos vigilavit: Dulces fuerunt 33
ei lapides torrentis; & poſt eum
omnis homo abibit, & ante eum
innumerabiles: Quomodò autem 34
conſolamini me inaniter? & ut
ego ex vobis requieſcam, ni-
hil eſt.

CAP. XXII.

REſpondens autem Eliphaz 1
Themanites, ait; Nónne Domi- 2
nus eſt, qui docet intellectum,
& ſcientiam? Quid enim (a) 3
curæ eſt Domino, ſi tu fuiſti ope-
ribus ſine crimine? aut utilitas,
quod ſimplicem facies viam tu-
am: Aut rationem tui habens, 4
(b) argues, & veniet tecum in
judicium? Nónne malitia tua 5
eſt multa, & innumerabilia ſunt
peccata? In pignus autem acce- 6
piſti fratres tuos in (c) vanum:
& amictum nudorum abſtuliſti:
Neque aquâ ſitientes potâſti, ſed 7
eſurientium ſubtraxiſti panem:
Et admiratus es quorundam per- 8
ſonam: habitare autem feciſti (d)
eos, qui ſuper terram. Et vi- 9
duas dimiſiſti inanes, & pupil-
los afflixiſti: Igitur circundede- 10
runt te laquei, & ſolicitavit te
bellum inſigne:

MS. A. (ρ) καὶ ὠδῖνες αὐτοῖς (σ) πρὸ ἀνέμου, (ς) ὑφείλατο (τ) υἱοῖς (υ) Ἴδοιεν δὲ οἱ (φ) καὶ ὑπὸ κυρίου μὴ διασωθείη. (χ) μετ' αὐτὸν, (ψ) σοφοὺς (ω) ἀφροσύνης αὐτοῦ, (α) ὁ δὲ μυελὸς (β) Ὁ δέ γε τελευτᾷ (γ) ἀγαθὸν οὐδέν. (δ) δὲ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ ἐπὶ γῆς κοιμηθήσονται, (ε) ἐπὶ γῆς. Ὥστε (ζ) οἶκος ἀρχαῖος; (η) ἐστιν σκέπη (θ) *ἀπολλοτριωθήσεται. (ι) καὶ εἰς ἡμέραν (κ) ἀπαχθήσεται. (λ) ἐπὶ πρόσωπον αὐτοῦ (μ) καὶ ἃ αὐτὸς (ν) καὶ ἐπὶ σωρῷ ἠγρύπνησεν. (ξ) τὸ δὲ ἀφ' ὑμῶν καταπαῦσαί με οὐδέν ἐστιν. Κεφ. κβ'. MS.A. (α) ἦς ἄμεμπτος τοῖς ἔργοις; (β) αὐτῷ, ὅτι (γ) ἐλέγξει σε, καὶ (δ) οὐχὶ (ε) σου αἱ ἁμαρτίαι; (ζ) γὰρ (η) πρόσωπα, *ἐκόμισας δὲ πτωχοὺς ἐπὶ γῆς. (θ) καὶ ὀρφανοὺς

תרגום TARGUM.

כמה שרגא דרשיעי יטפי וייתי עלהון תבריהון עדבין יפלג ברוגזיה : יהון היך תבנא קדם זעפא וכמוצא דיטלטליה עלעולא : 17 18
אלהא יטשי לבנוי צעריה יפרע לותיה וידע : יחמון עינוי תבריה ומן רוגזיה דשדי ישתי : ארום מה רעותיה בביתיה בתרוי ומנין ירחוי 19 20 21
אתפלגו : האפשר דלאלהא ילף מנדעא והוא שמי מרומא דאין : דין ימות בתקוף שלימותיה כוליה שדיך ושליו : ביזוי אתמליאו חלבא ומוקרא 22 23 24
דגרמוי פטים : ודין ימות בנפשא מרירא ולא אכל בטבתא : כחדא על עפרא שכבין ורימשא תחפי עליהון : הן גלין קדמי מחשבתכון ומזמונין 25 26 27
דעלי תחשלון : ארום תימרון האן בית ארכונא והאן פרסא דמשכני דרשיעיא : הלא שילתון עדי אורחא וסמניהון לא תשתמודעון : 28 29
ארום ליום תבירא יתמנע ביש ליום רגזתא יתעלון : מן יחוי קדמוי אורחיה והוא עבד מן ישלם ליה : והוא לקבורין יתעל ועל גדישין יעיר : 30 31 32
בסימן ליה גרגשתא דנחלא ובתרוי כל בר נש יגנוד וקדמוי לית מנין : והיך תנחמונני למא ותיובתכון אשתאר בהון שקר : 33 34

כב

ואתיב אליפז דמן תימן ואמר : האפשר דלאלהא יאלף גבר וכד יליף אפשר דעליהון משגח : העסקא אית לשדי ארום תזכי ואין ממון ארום 1 2 3
תשלם אורחתך : המדחל מנך יכסנך ייתי עמך בדינא : הלא על בישתך דסגיעא ולית סוף לעויתך : ארום תמשכן אחוך מגן ולבושין דערטילאין 4 5 6
תשלח : לא מיא למשלהי תשקי ומן כפן תמנע לחמא : וגבר נצחן ליה ארעא וסביר אפין יתיב בה : ארמלתא שדרתא סריקתא ואדרעת יתומי תשפף : 7 8 9
מטול היכנא חזרנותך פוחין ויבהלנך דלוחא בתכף : 10

Verſio *SYRIACA.*

17 18 ܟܡܐ ܕܕܥܟ ܫܪܓܗܘܢ ܕܪ̈ܫܝܥܐ. ܘܐܬܐ ܥܠܝܗܘܢ ܬܒܪܐ ܘܚܒܠܐ. ܢܦܠܓ ܪܘܓܙܗ. * ܘܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܬܒܢܐ *
ܩܕܡ ܪܘܚܐ. ܘܐܝܟ ܥܘܪܐ ܕܫܩܠ ܠܗ ܥܠܥܠܐ. * ܐܠܗܐ ܢܛܪ ܠܒܢܘܗܝ ܥܘܠܗ. ܘܢܦܪܘܥ ܠܗ ܘܢܕܥ. 19
20 21 * ܘܢܚܙܝܢ ܥܝ̈ܢܘܗܝ ܬܒܪܗ. ܘܡܢ ܚܡܬܗ ܕܐܠܗܐ ܢܫܬܐ. * ܡܢܐ ܗܘ ܨܒܝܢܗ ܒܒܝܬܗ. ܡܢ ܒܬܪܗ.
22 ܘܡܢܝܢܐ ܕܝܪ̈ܚܘܗܝ ܢܬܢܛܪܘܢ ܠܒܢ̈ܘܗܝ. * ܠܐܠܗܐ ܡܠܦܝܢ ܐܢܬܘܢ ܝܕܥܬܐ: ܕܗܘ ܠܡܪ̈ܡܐ ܕܐܢ. * ܗܢܐ
23 24 ܢܡܘܬ ܒܥܘܫܢܐ ܕܫܠܝܘܬܗ. ܟܕ ܫܠܐ ܗܘܐ ܘܫܝܢ: * ܘܓܒ̈ܘܗܝ ܡܠܝܢ ܬܪܒܐ: ܘܓܪ̈ܡܘܗܝ ܡܠܝܢ
25 26 ܡܘܚܐ. * ܘܗܢܐ ܢܡܘܬ ܒܢܦܫܐ ܡܪܝܪܬܐ. ܘܠܐ ܐܟܠ ܒܛܒܬܐ. * ܐܟܚܕܐ ܥܠ ܥܦܪܐ ܫܟܝܒܝܢ. ܘܬܘܠܥܬܐ ܬܟܣܐ
27 28 ܐܢܘܢ. * ܗܐ ܝܕܥܬ ܡܚܫܒܬܟܘܢ. ܘܡܬܪ̈ܥܝܬܐ ܕܥܠܝ ܡܬܚܫܒܝܢ ܐܢܬܘܢ. * ܡܛܠ ܕܐܡܪܬܘܢ. ܐܝܟܘ ܒܝܬܗ
29 ܕܓܒܪܐ. ܘܐܝܟܘ ܡܫܟܢܐ ܕܡܫܟܢ̈ܝ ܪ̈ܫܝܥܐ. * ܠܐ ܫܐܠܬܘܢ ܠܥܒ̈ܪܝ ܐܘܪܚܐ. ܘܐܬ̈ܘܬܗܘܢ ܠܐ ܐܫܬܘܕܥܬܘܢ.
30 31 * ܡܛܠ ܕܠܝܘܡܐ ܕܬܒܪܐ ܢܬܢܛܪ ܪܫܝܥܐ. ܘܠܝܘܡܐ ܕܪܘܓܙܐ ܢܬܥܗܕ. * ܡܢܘ ܢܚܘܐ ܠܗ ܐܘܪܚܗ. ܘܗܘ
32 ܡܕܡ ܕܥܒܕ. ܡܢܘ ܢܦܪܘܥ ܠܗ. * ܘܗܘ ܠܒܝܬ ܩܒܪ̈ܐ ܢܐܙܠ. ܘܥܠ ܓܘܕܫܐ ܢܬܢܛܪ. * ܢܒܠܥܘܢܝܗܝ ܓܪ̈ܓܫܐ
33 34 ܕܢܚܠܐ. ܘܒܬܪܗ ܟܠ ܒܪܢܫܐ ܢܬܢܓܕ. ܘܩܕܡܘܗܝ ܠܝܬ ܡܢܝܢܐ. * ܘܐܝܟܢܐ ܡܒܝܐܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܝ ܣܪܝܩܐܝܬ. ܘܦܬܓ̈ܡܝܟܘܢ
1 ܫܒܝܩܝܢ ܩܕܡܝ. * ܫܠܡ ܦܬܓܡܐ ܕܐܝܘܒ. * ܟܒ * ܘܥܢܐ ܐܠܝܦܙ ܬܝܡܢܝܐ ܘܐܡܪ. * ܕܠܡܐ
2 3 ܥܡ ܐܠܗܐ ܐܡܪ ܐܢܬ ܓܢܒܪܐ. ܕܫܘܐ ܐܢܬ ܠܗ ܒܚܟܡܬܐ. * ܘܡܢܐ ܡܘܬܪܢܐ ܠܡܪܝܐ ܐܢ
4 5 ܙܕܩܬ ܡܢ ܕܚܠܬܟ. * ܚܢܢ ܡܟܣܝܢܢ ܠܟ. ܘܥܐܠܝܢܢ ܥܡܟ ܒܕܝܢܐ. * ܗܐ ܣܓܝܐܝܢ ܚܘܒ̈ܝܟ.
6 7 ܘܠܝܬ ܣܟܐ ܠܚܛܗ̈ܝܟ. * ܡܛܠ ܕܡܫܟܢܐ ܢܣܒܬ ܡܢ ܐܚ̈ܝܟ ܡܓܢ. ܘܠܒܘܫܐ ܕܥܪ̈ܛܠܝܐ ܫܠܚܬ. * ܠܐ ܡܝܐ ܐܫܩܝܬ ܠܕܠܝܐ.
8 9 ܘܡܢ ܟܦܢܐ ܟܠܝܬ ܠܚܡܐ. * ܗܐ ܓܒܪܐ ܕܙܪܥ ܠܗ ܐܪܥܐ. ܘܡܪܐ ܕܐܢܣܐ ܢܣܒܗ ܡܢܗ. * ܐܪ̈ܡܠܬܐ ܫܕܪܬ
10 ܣܪܝܩܐܝܬ. ܘܕܪ̈ܥܝ ܝܬ̈ܡܐ ܬܒܪܬ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܚܕܪܘܟ ܦܚ̈ܐ. ܘܐܬܕܠܚܬ ܡܢ ܙܘܥܐ ܡܫܠܝܐ.

Verſio *ARABICA.*

17 18 * كم ينطفي سراج المنافقين* وياتي عليهم التبار والفساد* يقسم رجزه* ويكونون مثل التبن قدام الريح
19 20 مثل الغبار التي تحمله الدبور* والله يحفظ نفاقه لذريته ويجازيه* فيعلم* وينظر عيناه بواده* من
21 22 حمية الله يشرب* وماذا يكون سروره في بيته من بعده* وعدد شهوره يحفظ لعقبه* افلله تحفظون
23 24 المعرفة* الذي هو للاعلين يدين* فان كان هذا يموت بقوة سلامته* وكان متوكلا ساكنا* وجوانبه مملوءة
25 26 شحما وعظامه مملية مخا* فهكذا يموت بنفس مريرة* ولم ينطلق بخير* جميعا على الارض يضطجعون
27 28 والدود يغطيهم* فالان علمت فكركم والراي الذي عليه فيه اعزمتم* لانكم قلتم اين بيت الصديق*
29 30 واين محل مسكن المنافق* افلا سالتم عابري السبيل* وعلاماتهم لم تعرفوها* من اجل ان ليوم التبار
31 يحفظ الفاجر* وليوم الرجز يذكر* من الذي يريه الطريق* وذلك الذي صنع فمن الذي يجازيه*
32 33 * فهو يذهب الى القبر* وللنقمة يحفظ* تبتلعه حوالج الوادي* وبعده كل احد يجتذب* وقدامه بلا
34 عدد* وان تسلدوني فان العدم وتقليب قوله قد كثر قدامي* * الفصل الثاني والعشرون*
1 2 * فاجاب النعار التيمي فقال* العلك مع الله تقول انت ايها الجبار انك استويت معه بالحكمة* وماذا
3 4 نفعا ان تبرر طرايقك من خشيتك* فاننا نبكتك وندخل بالقضاء معك* فان بلواك كثير وليس
5 6 منتهى لخطاياك* لانك اخذت رهاين اخوتك باطلا* ولبوس العريان سلبت* فلا ماء اسقيت لمكروب*
7 8 9 ومن الجيعان منعت خبزا* هاهنا رجلا يزرع له ارضا* وصاحب الغصب ياخذها منه* والارملة بعثتها
10 فارغة* وذراع اليتيم حطمت* من اجل هذا احتوتك الفخاخ* وزعزعتك المخافة بسرعة*

VERS. SYR. & ARAB.
Interp. Lat.

17 Cùm extinguetur lucerna impiorũ, & veniet ſuper eos fractura & corruptio, diſtribuet iram ſuam: 18 Et erunt velut paleæ ante ventum, & velut ſtipula quam aſportat (c) Boreas. 19 Et Deus ſervabit impietatẽ ejus progeniei ipſius, & retribuet ei, & cognoſcet: 20 Et videbunt oculi ej⁹ interitum ſuum: de furore Dei bibet. 21 Et (f) quodnã erit gaudium ej⁹ in domo ipſius poſt ipſum? & numerus menſium ejus aſſervabitur poſteris ejus. 22 (g) Nũ Deo aſſervabitis ſcientiam, qui (h) detractores judicat? 23 Quòd ſi hic moriatur in robore tranquillitatis ſuæ, dum ſecurus eſt et pacificus, 24 Et latera ejus plena adipe, & oſſa ejus referta medullã; 25 Si moritur animo amaro, & non (i) proficiſcitur in bono: 26 (k) Omnes ſuper terrã jacebunt, & (l) pulvis cooperiet eos. 27 (m) Modò cognovi cogitationem veſtrum, & conſilium quod contra me decreviſtis: 28 Quia dixiſtis, ubi eſt domus juſti? & ubi habitatio tabernaculi impii? 29 Nonne interrogâſtis viatores, et ſigna eorum nonne cognoviſtis? 30 Quia ad diem fracturæ reſervabitur ſceleſtus, & ad diem iræ (n) commemorabitur. 31 Quis oſtendet ei viam? et quod commiſit, quis reddet ei? 32 Ipſe in ſepulchrum abibit, & (o) ad vindictam ſervabitur: 33 Deglutient eum (p) brachia fluminis, & poſt eum quilibet trahetur, & ante ipſum abſq; numero. 34 (q) Etiamſi confortetis me, tamen vanitas & (r) variatio ſermonum ejus multiplicata eſt coram me.

CAP. XXII.

1 RESpondens autẽ Elifaz Temanites ait, 2 Númne cum Deo dicis tu, (a) O gigas, te eſſe parem in ſapientia? 3 Et prodeſt ſi (b) juſtificaveris vias tuas ex timore tuo? 4 Nam nos arguemus te, & intrabim⁹ in judicium tecum (c) 5 Etenim tribulationes tuæ multæ, neque eſt terminus peccatis tuis: 6 Quia accepiſti pignora fratrum tuorum (d) iniquè, & indumentum nudi (e) furatus es: 7 Et aquam non præbuiſti anxio, & à famelico panem contin[u]iſti. 8 Adeſt vir qui ſeminat ſibi terrã, et dominus violentiæ ſumit eam ab illo. 9 Viduam quoq; dimiſiſti vacuam, et brachium pupilli depreſſiſti. 10 Propter hoc circundederunt te laquei, et concuſſit te metus ſubitò,

INTERP. SYRIACA.

(e) turbo. (f) quænam voluntas ſua (g) Deúmne docetis ſapientiã, (h) ſuperbos (i) comedit cum lætitia: (k) Simul (l) vermis (m) Ecce (n) adducetur. (o) ad acervum (p) glebæ vallis, (q) Quomodo conſolamini me, (r) reſponſiones ſermonũ ejus relictæ ſunt coram me. Cap. xxii. (a) O vir, (b) integras feceris (c) Ecce (d) fruſtrà, (e) detraxiſti:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quoties lucerna impiorum extinguetur, & veniet ſuper eos interitus eorum: ſortes dividet in furore ſuo. Erunt ſicut palea ante ventum; & ſicut ſtipula quam tulit turbo. Deus abſcondet filiis ſuis tribulationẽ ejus, ultionem reddet ei, ut ſciat. Videbunt oculi ejus interitum ſuũ, & de ira omnipotentis bibet. Quæ eſt enim voluntas ej⁹ in domo ſua poſt ſe? & numerus menſiũ ejus diviſus eſt. Nunquid Deũ poteſt aliquis docere ſcientiam? & ipſe cœlos excelſos judicat. Iſte morietur in fortitudine integritatis ſuæ, totus quietus & pacificus. Mulctra ejus plena ſunt lacte, & medulla oſſiũ ej⁹ pinguis eſt. Et iſte morietur amaro animo, & non comedit in bonis. Simul in pulvere dormiunt, & vermis operit eos. Ecce manifeſtæ ſunt corã me cogitationes veſtræ, & machinationes quas ſuper me cogitatis. Dicitis enim: Ubi eſt domus principis, & ubi eſt tentoriũ tabernaculorũ impiorũ? Nónne interogâſtis tranſeuntes viã, & ſigna eorũ non cognoſcetis? Quoniam in diem interit⁹ reſervatur mal⁹, in diẽ quo furores inducentur. Quis annunciabit corã eo viã ſuam, & quod ipſe fecit quis reddet illi? Ipſe enim ad ſepulchra ducetur, & ſuper congeriẽ vigilabit. Dulces fuerunt ei glebæ torrentis, & poſt ſe omnes filios hominũ trahet, & ante ſe innumerabiles. Et quomodo conſolamini me fruſtrà, cùm reſponſio veſtra remaneat in *eis* falſa? 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34

CAP. XXII.

ET reſpondit Eliphaz qui erat de Theman, & ait: Nunquid Deũ poteſt docere *vir*? & ſi docuerit, nunquid ad ea providebit? Quid emolumenti eſt omnipotenti, ſi juſt⁹ fueris? & quid lucri, ſi perfectas reddideris vias tuas? Nunquid propter timorem tuũ arguet te, & veniet tecum in judiciũ? Nonne propter malitiã tuam quæ multa eſt, & non eſt finis iniquitatib⁹ tuis? Quoniam pignorabas fratres tuos ſine cauſa, & veſtibus nudos ſpoliâſti. Non propinâſti aquam laſſo, & à famelico prohibebas panem. Et viro vincenti ſua eſt terra, et aſpectabilis vultu habitabit in ea. Viduas dimiſiſti vacuas, et brachia pupillorũ contriviſti. Propterea in circuitu tuo ſunt laquei, et conturbat te timor repentinus? 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

איוב : כג

.te operiet aquarum redundantia & , videbis non , obscuritas Vel
11 אוֹ־חֹשֶׁךְ לֹא תִרְאֶה וְשִׁפְעַת־מַיִם תְּכַסֶּךָּ׃
, stellarum caput vide & ? cælorum sublimitate in Deus Nonne
12 הֲלֹא־אֱלוֹהַּ גֹּבַהּ שָׁמָיִם וּרְאֵה רֹאשׁ כּוֹכָבִים
per Nunquid ? Deus novit quid , dixisti Et .sunt excelsæ quia
13 כִּי־רָמּוּ׃ וְאָמַרְתָּ מַה־יָּדַע אֵל הַבְעַד
: videat non & , ei absconsio Nubes ? judicabit caliginem
14 עֲרָפֶל יִשְׁפּוֹט׃ עָבִים סֵתֶר־לוֹ וְלֹא יִרְאֶה
, observabis seculi semitam Nunquid ? perambulabit cælorum ambitum &
15 וְחוּג שָׁמַיִם יִתְהַלָּךְ׃ הַאֹרַח עוֹלָם תִּשְׁמֹר
non & , sunt succisi Qui ? iniquitatis viri calcaverunt quam
16 אֲשֶׁר דָּרְכוּ מְתֵי־אָוֶן׃ אֲשֶׁר־קֻמְּטוּ וְלֹא
, Deo Dicentes .eorum fundamento est diffusus Fluvius .tempus
17 עֵת נָהָר יוּצַק יְסוֹדָם׃ הָאֹמְרִים לָאֵל
implevit ipse Et ? eis Saddai operabitur quid & ,nobis à recede
18 סוּר מִמֶּנּוּ וּמַה־יִּפְעַל שַׁדַּי לָמוֹ׃ וְהוּא מִלֵּא
.me à est factum longè impiorum consilium & , bono eorum domos
בָתֵּיהֶם טוֹב וַעֲצַת רְשָׁעִים רָחֲקָה מֶנִּי׃
.eos subsannabit innocens & : lætabuntur & , justi Videbunt
19 יִרְאוּ צַדִּיקִים וְיִשְׂמָחוּ וְנָקִי יִלְעַג־לָמוֹ׃
devoravit eorum residuum & ,nostra subsistentia fuit succisa non Si
20 אִם־לֹא נִכְחַד קִימָנוּ וְיִתְרָם אָכְלָה
eis in : habeto pacem & , eo cum quæso Assuesce ? ignis
21 אֵשׁ׃ הַסְכֶּן־נָא עִמּוֹ וּשְׁלִם בָּהֶם
, legem ejus ore ex quæso Accipe .bonus tuus proventus
22 תְּבוֹאַתְךָ טוֹבָה׃ קַח־נָא מִפִּיו תּוֹרָה
ad fueris conversus Si .tuo corde in ejus eloquia pone &
23 וְשִׂים אֲמָרָיו בִּלְבָבֶךָ׃ אִם־תָּשׁוּב עַד־
pone Et .tuis tentoriis à iniquitatem elongabis : ædificaberis , Saddai
24 שַׁדַּי תִּבָּנֶה תַּרְחִיק עַוְלָה מֵאָהֳלֶךָ׃ וְשִׁית־
Eritque .Ophir torrentes petra in & ,munitionem pulverem super
25 עַל־עָפָר בָּצֶר וּבְצוּר נְחָלִים אוֹפִיר׃ וְהָיָה
Quia .tibi fortitudinum argentum & , tua munitio omnipotens
26 שַׁדַּי בְּצָרֶיךָ וְכֶסֶף תּוֹעָפוֹת לָךְ׃ כִּי־
.tuas facies Deum ad elevabis & ,delectaberis Saddai super tunc
אָז עַל־שַׁדַּי תִּתְעַנָּג וְתִשָּׂא אֶל־אֱלוֹהַּ פָּנֶיךָ׃
decernes Et .reddes tua vota & ,te exaudiet & , eum ad Orabis
27 28 תַּעְתִּיר אֵלָיו וְיִשְׁמָעֶךָּ וּנְדָרֶיךָ תְשַׁלֵּם׃ וְתִגְזַר
.lumen splenduit tuas vias super & , tibi erit firmus & ,sermonem
אֹמֶר וְיָקָם לָךְ וְעַל־דְּרָכֶיךָ נָגַהּ אוֹר׃
oculis demissum & : exaltatio , dices & , se humiliaverint Cùm
29 כִּי־הִשְׁפִּילוּ וַתֹּאמֶר גֵּוָה וְשַׁח עֵינַיִם
puritate in liberabitur & , innocens insulam Liberabit .salvabit
30 יוֹשִׁעַ׃ יְמַלֵּט אִי־נָקִי וְנִמְלַט בְּבֹר
.tuarum volarum
כַּפֶּיךָ׃

CAP. XXIII. כג

. meum eloquium exacerbatio hodie Etiam : dixit & , Ijob respondit Et
1 וַיַּעַן אִיּוֹב וַיֹּאמַר׃ גַּם־הַיּוֹם מְרִי שִׂחִי
2 , scirem dabit Quis .meum gemitum super est aggravata mea manus
3 יָדִי כָּבְדָה עַל־אַנְחָתִי׃ מִי־יִתֵּן יָדַעְתִּי
Disponerem .ejus locum ad usque venirem ; eum invenirem &
4 וְאֶמְצָאֵהוּ אָבוֹא עַד־תְּכוּנָתוֹ׃ אֶעֶרְכָה
Scirem .correptionibus replerem meum os & , judicium ejus facies ad
5 לְפָנָיו מִשְׁפָּט וּפִי אֲמַלֵּא תוֹכָחוֹת׃ אֵדְעָה
.mihi diceret quid intelligerem & : mihi responderet eloquia
מִלִּים יַעֲנֵנִי וְאָבִינָה מַה־יֹּאמַר לִי׃
ipse Veruntamen .Non ? mecum disceptabit potentia multa in Nunquid
6 הַבְּרָב־כֹּחַ יָרִיב עִמָּדִי לֹא אַךְ־הוּא
perpetuum in liberarer & : eo cum arguens rectus Ibi .me in ponet
7 יָשִׂם בִּי׃ שָׁם יָשָׁר נוֹכָח עִמּוֹ וַאֲפַלְּטָה לָנֶצַח
.me judicante à
מִשֹּׁפְטִי׃

Verſio VULG. LAT.

11 Et putabas te tenebras non
viſurum, & impetu aquarum
inundantium non oppreſſum
12 iri? An non cogitas quòd
Deus excelſior cœlo ſit, &
ſuper ſtellarum verticem ſub-
13 limetur? Et dicis, Quid enim
novit Deus? & quaſi per cali-
14 ginem judicat. Nubes latibu-
lum ejus, nec noſtra conſide-
rat, & circa cardines cœli per-
15 ambulat. Numquid ſemitam
ſeculorum cuſtodire cupis,
quam calcaverunt viri iniqui?
16 Qui ſublati ſunt ante tempus
ſuum, & fluvius ſubvertit fun-
17 damentum eorum: Qui dice-
bant Deo, Recede à nobis: &
quaſi nihil poſſet facere Om-
nipotens, æſtimabant eum:
18 Cùm ille impléſſet domos eo-
rum bonis: quorum ſententia
19 procul ſit à me. Videbunt ju-
ſti, & lætabuntur, & inno-
20 cens ſubſannabit eos. Nónne
ſucciſa eſt erectio eorum, &
reliquias eorum devoravit
21 ignis? Acquieſce igitur ei, &
habeto pacem, & per hæc
22 habebis fructus optimos. Suſ-
cipe ex ore illiꝰ legem, et pone
ſermones ejus in corde tuo.
23 Si reverſus fueris ad Omni-
potentem, ædificaberis, &
longè facies iniquitatem à ta-
24 bernaculo tuo. Dabit pro ter-
ra ſilicem, & pro ſilice tor-
25 rentes aureos. Eritque Omni-
potens contra hoſtes tuos, &
argentum coacervabitur tibi.
26 Tunc ſuper Omnipotentem
deliciis afflues, & elevabis ad
27 Deum faciem tuam. Rogabis
eum, & exaudiet te, & vota
28 tua reddes. Decernes rem, &
veniet tibi, & in viis tuis
29 ſplendebit lumen. Qui enim
humiliatus fuerit, erit in glo-
ria: & qui inclinaverit ocu-
30 los, ipſe ſalvabitur. Salvabi-
tur innocens, ſalvabitur autem
in munditia manuum ſuarum.

CAP. XXIII.

1 REſpondens autem Job, ait;
2 Nunc quoque in amaritudine
eſt ſermo meus, & manus pla-
gæ meæ aggravata eſt ſuper
3 gemitum meum. Quis mihi
tribuat ut cognoſcam & in-
veniam illum, & veniam uſ-
4 que ad ſolium ejus? Ponam
coram eo judicium, & os me-
um replebo increpationibus.
5 Ut ſciam verba quæ mihi re-
ſpondeat, & intelligam quid
6 loquatur mihi. Nolo multâ
fortitudine contendat mecum,
nec magnitudinis ſuæ mole me
7 premat. Proponat æquitatem
contra me, & perveniat ad vi-
ctoriam judicium meum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

11 † Τὸ φῶς σοι (ι) σκότος ἀπέβη, † κοι-
12 μηθέντα (ꞌꞌ) δὲ ὕδωρ σε ἐκάλυψε. † (κ) Μὴ
οὐχὶ ὁ τὰ ὑψηλὰ ναίων ἐφορᾷ; † τοὺς δὲ
13 ὕβρει φερομένους ἐταπείνωσε; † Καὶ εἶ-
πας, Τί ἔγνω ὁ ἰσχυρός; ἢ κατὰ τοῦ
14 γνόφου κρίνει; † Νεφέλη ἀποκρυφὴ αὐτοῦ
καὶ οὐχ ὁραθήσεται, † καὶ γῦρον οὐρανοῦ
15 (λ) διαπορεύεται. † Μὴ τρίβον αἰώνιον
φυλάξεις, ἣν (μ) ἐπάτησαν ἄνδρες δί-
16 καιοι, † Οἳ συνελήφθησαν ἄωροι; † πο-
17 ταμὸς ἐπιῤῥέων οἱ θεμέλιοι αὐτῶν, † Οἱ
λέγοντες, (ν) Κύριος τί ποιήσει ἡμῖν;
† ἢ τί (ξ) ἐπάξεται ἡμῖν ὁ παντοκρά-
18 τωρ; † (ο) Ὃς δὲ ἐνέπλησε τοὺς οἴκους
αὐτῶν ἀγαθῶν, † βουλὴ δὲ ἀσεβῶν πόῤῥω
19 ἀπ᾽ αὐτοῦ. † Ἰδόντες δίκαιοι ἐγέλασαν,
20 † ἄμεμπτος δὲ (π) ἐμυκτήρισεν. † Εἰ μὴ
ἠφανίσθη (ρ) ἡ ὑπόστασις αὐτῶν, † καὶ τὸ
κατάλειμμα αὐτῶν καταφάγεται πῦρ. †
21 Γενοῦ (σ) δὴ σκληρὸς, ἐὰν ὑπομείνῃς, †
(τ) εἶτα ὁ καρπός σου ἔσται ἐν ἀγαθοῖς. †
22 Ἔκλαβε δὲ ἐκ στόματος αὐτοῦ (υ) ἐξη-
γορίαν, † καὶ ἀνάλαβε τὰ ῥήματα αὐτοῦ
23 ἐν καρδίᾳ σου. † Ἐὰν δὲ ἐπιστραφῇς καὶ
ταπεινώσῃς σεαυτὸν ἔναντι Κυρίου, †
(φ) πόῤῥω ἐποίησας ἀπὸ διαίτης σου (χ)
24 ἄδικον. † Θήσῃ ἐπὶ χώματι ἐν πέτρᾳ, καὶ
25 (ψ) ὡς πέτρα χειμάῤῥου Σωφίρ. † Ἔσται οὖν
σου ὁ παντοκράτωρ βοηθὸς ἀπὸ ἐχθρῶν, †
καθαρὸν δὲ ἀποδώσει σε ὥσπερ ἀργύριον
26 πεπυρωμένον. † Εἶτα (ω) παῤῥησιασθήσῃ
ἐναντίον Κυρίου ἀναβλέψας εἰς τὸν οὐ-
27 ρανὸν ἱλαρῶς. † Εὐξαμένου δέ σου πρὸς
αὐτὸν εἰσακούσεταί σου· † δώσει δέ (α)
28 σοι ἀποδοῦναι τὰς εὐχάς. † Ἀποκαταστήσει
δέ σοι δίαιταν δικαιοσύνης, † ἐπὶ δὲ ὁδοῖς
29 (β) σου ἔσται φέγγος. † Ὅτι ἐταπείνωσας
σεαυτὸν, καὶ ἐρεῖς, (γ) Ὑπερηφανεύσατο, †
30 καὶ κύφοντα ὀφθαλμοῖς σώσει. (δ) Ῥύσε-
ται ἀθῷον, † καὶ (ε) διασώθητι ἐν καθαραῖς
χερσί σου.

ΚΕΦ. κγ΄.

1 2 † ὙΠολαβὼν δὲ Ἰὼβ, λέγει, † Καὶ δὴ
οἶδα ὅτι (α) ἐκ χειρός μου ἡ ἔλεγξίς
ἐστι, † (β) καὶ ἡ χεὶρ αὐτοῦ βαρεῖα γέγονεν
3 (γ) † ἐπ᾽ ἐμῷ στεναγμῷ. † Τίς δ᾽ ἄρα
γνοίη, ὅτι εὕροιμι αὐτὸν, (δ) καὶ ἔλθοιμι
4 εἰς τέλος; † Εἴποιμι δὲ (ε) ἐμαυτοῦ κρί-
μα, † τὸ δὲ στόμα μου (ζ) ἐμπλῆσαι ἐλέγ-
5 χων. † Γνοίην δὲ ἰάματα ἅ μοι ἐρεῖ, †
6 αἰσθοίμην δὲ τίνα μοι (η) ἀπαγγελεῖ. †
Καὶ ἐν πολλῇ ἰσχύϊ ἐπελεύσεταί μοι, †
7 (θ) εἶτα ἐν ἀπειλῇ μοι οὐ χρήσεται. † Ἀ-
λήθεια γὰρ καὶ ἔλεγχος (ι) παρ᾽ αὐτοῦ,
† ἐξαγάγοι δὲ εἰς τέλος τὸ κρίμα μου.

Lumen tibi in tenebras con- 11
verſum eſt; & (f) dormien-
tem te aqua operuit. Nonne 12
is qui excelſa habitat, aſpicit?
eos autem qui g) contumeliâ
efferuntur, humiliavit? Et di- 13
xiſti, Quid novit Fortis? An
per (h) caliginem dijudicat?
Nubes latibulum ejus, & non 14
videbitur, & ambitum cœli
perambulat. Nunquid (i) ſe- 15
mitam ſeculi obſervabis, quam
calcaverunt viri juſti, Qui 16
(k) capti ſunt immaturi? flu-
men decurrens, fundamenta
eorum, Qui dicunt; Dominus 17
quid faciet nobis? aut quid
(l) inducet nobis Omnipotens?
(m) Ille verò implevit domos 18
eorum bonis: & conſilium
impiorum longè eſt ab eo.
Videntes (n) juſti riſerunt, & 19
inculpabilis (o) ſubſannavit:
(p) Si non deleta eſt ſubſtantia 20
eorum, & reliquias eorum com-
edet ignis. Eſto utique durus: 21
Si ſuſtinueris, deindè fructus
tuus erit in bonis: Excipe au- 22
tem ex ore illius (q) enuntiatio-
nem, & aſſume verba ejus in
corde tuo: Sin autem con- 23
verſus fueris, & humiliaveris
teipſum coram Domino; procul
feciſti iniquitatem à taberna-
culo tuo. (r) Poneris ſuper 24
aggerem in petra, & tanquam
(ſ) petra torrentis Sophir. E- 25
rit igitur tuus Omnipotens ad-
jutor ab inimicis, & purum
reddet te, tanquam argentum
examinatum igni. Deindè fi- 26
ducialiter ages coram Domino
inſpiciens cœlum hilariter. Et 27
cùm deprecatus fueris ad eum;
exaudiet te, & dabit tibi (t)
reddere vota. Et reſtituet tibi 28
tabernaculum juſtitiæ, & ſu-
per vias tuas erit lumen.
Quoniam humiliâſti (u) te- 29
ipſum, & dices, Elatus eſt in
ſuperbiam, & demiſſum oculis
ſalvabit. Eruet innocentem, & ſalvaberis (x) munditiâ manuum tuarum. 30

CAP. XXIII.

REſpondens autem Job, ait; 1
Et quidem ſcio, quia de manu 2
mea eſt increpatio: & manus
(a) ejus gravis facta eſt ſuper
gemitum meum. Quis igitur 3
(b) noverit, quòd inveniam
eum, & dicam (c) in finem?
Et (d) dicam meum ipſius ju- 4
dicium, os autem meum
(e) replere increpationibus: Et
(f) cognoſcam ſanationes, quas 5
loquetur mihi, & ſentiam, quæ
annuntiabit mihi: Et in (g) 6
multa virtute (h) ſuperveniet
mihi: (i) deindè in minis me
non utetur: Veritas enim, & 7
increpatio eſt ab eo: educat
autem in (k) finem judicium
meum.

MS. A. (ι) εἰς σκότος (ꞌꞌ) δέ σε ὕδωρ (κ) Μὴ ὁ τὰ ὕψηλα νέων οὐκ ἐφορᾷ; (λ) διαπορεύσεται. (μ)* ἐπανέστησαν (ν) Τί ποιήσει ἡμῖν ὁ κύριος; (ξ) ἐπάξει (ο) Ὅτε γοῦν (π) ἐμυκτήρισεν αὐτούς. Εἰ μὴ (ρ) ὑπόστασις (σ) δὲ (τ) ἡ ὁ (υ) συνεξηγορίαν, (φ) καὶ πόῤῥω ποίησον (χ) τὸ ἄδικον. Θήσεις ἐπὶ χώματος (ψ) ὥσπερ χειμάῤῥους Ὠφείρ. Ἔσται δέ σοι (ω) ἐν παῤῥησίᾳ σῇ ἔναντι (α) τὰς εὐχάς σου ἀποδοῦναι. (β) σοι (γ) Εἰ ὑπερηφανευσάμην, (δ) Ῥύσεται δὲ (ε) διασωθήσῃ

Κεφ. κγ΄. MS. A. (α) ἐκ χειρῶν μου (β) ἡ χεὶρ (γ) ἐπ᾽ ἐμοὶ, στενάζω δὲ ἐπ᾽ ἐμαυτόν. Τίς γὰρ ἂν γνώῃ, (δ) καὶ ὅτι ἔλθοιμι (ε) ἐπ᾽ αὐτοῦ (ζ) ἐμπλήσει με ἐλέγχου. Γνοίην δὲ ῥήματα ἃ (η) ἀπαγγελεῖ. Καὶ εἰ πολλῇ (θ) καὶ εἰ ἐν ἀπειλῇ οὐ χρήσεταί μοι. (ι) παρ᾽ αὐτῷ,

תרגום TARGUM.

11 12 13 אוֹ בַחֲשׁוֹכָא תְשַׁוֵּי לָא תֶחֱמֵי וְסוּגְעַת מַיָא תַחְפְּנָךְ׃ הֲלָא אֱלָהָא בְּגוֹבְהֵי שְׁמַיָא וַחֲמֵי רֵישׁ כּוֹכְבַיָא אֲרוּם זְקִיפוּ׃ וְתֵימַר מָא יְדַע אֱלָהָא הַאֶפְשַׁר
14 15 דִלְהַלָּא לַאֲמִטְתָא יְדִין׃ עֲנָנַיָא טְמִיר לֵיהּ וְלָא יֶחֱמֵי וְתֶקֶף רוּמָא דִשְׁמַיָא יְטַיֵּל׃ הַאוֹרְחָא דַהֲוָה מִן עָלְמָא תִנְטוֹר דִי טַיִּלוּ אֱנָשֵׁי שִׁקְרָא׃
16 17 18 דְאִתְבַּטִּילוּ מִן אַרְעָא בְּלָא עִדָּנֵיהוֹן בְּאַרְעִית נַהֲרָא אַתִּיךְ גוּפְהוֹן׃ דְּאָמְרִין לֶאֱלָהָא זוּר מִנָּנָא וּמָה יַעְבֵּד שַׁדַּי לְהוֹן׃ וְהוּא מַלֵּי בָתֵּיהוֹן
19 20 טוּבָא וּמִלְכַּתְהוֹן דְּרַשִׁיעֵי רַחֲקַת מִנִּי׃ יֶחֱמוֹן צַדִּיקַיָא וְיֶחְדוּן וְזַכָּאָה יִרְחַךְ לְהוֹן׃ אִין לָא אִתְמְנִיעוּ מִלְמֵיקַם וּמוֹתַרְהוֹן גְּמַרַת אֶשָּׁתָא׃
21 22 23 אֲלֵף כְּדוֹן עִמֵּיהּ וְתִשְׁתְּלֵם בְּהוֹן עֲלַלְתָּךְ טוּבָא׃ גְּמַר כְּדוֹן מִפּוּמֵיהּ אוֹרַיְתָא וְשַׁוֵּי מֵימְרוֹי בְּלִבָּבָךְ׃ אִין תְּתוּב עַד שַׁדַּי תִּתְבְּנֵי תַּרְחֵק עֲוָלְתָא
24 25 26 מִמַּשְׁכְּנָךְ׃ וְשַׁוֵּי עַל עַפְרָא כְּרַךְ תַּקִּיף וְהֵיךְ טִינָרָא דְנַחֲלַיָא דַהֲבָא דְאוֹפִיר׃ וִיהֵי שַׁדַּי כְּרַךְ תּוּקְפָךְ וּמִן כְּסַף תְּקוֹף רוּמָא דִילָךְ׃ אֲרוּם הֵיכְדֵין עַל
27 28 29 שַׁדַּי תִתְפַּרְנַק וְתִזְקוֹף קֳדָם אֱלָהָא אַפָּךְ׃ תְּצַלֵּי קֳדָמוֹי וִיקַבֵּל מִנָּךְ וְנִדְרָךְ תְּשַׁלֵּם׃ וְתִגְזַר מֵימְרָא וִיקוּם לָךְ וְעַל אוֹרְחָתָךְ יִזְהַר נְהוֹרָא׃ אֲרוּם דְּרָא
30 דְאִמָּאךְ יִתְעֲבֵד גֵיוְתָן וְשָׁחֵי בְּסוֹרְחָנָא תִּפְרוֹק׃ יְשֵׁזֵב גְּבַר דְּלֵיתוֹי זַכַּאי בְּזַכְוָתָךְ וְאִשְׁתֵּיזֵב בְּבָרִירוּת יְדָךְ׃

כג

1 2 3 וַאֲתִיב אִיּוֹב וַאֲמַר׃ לְחוֹד יוֹמָנָא מְרִיר מֵימְרִי מַחְתִּי תְקִיפַת עַל תּוּנְחָתִי׃ מַן יִגְזוֹר אֶנְדַע וְאַשְׁכְּחִנֵּיהּ אֵיתֵי עַד מְדוֹר בֵּית מוּקְדְּשֵׁיהּ׃ אֲסַדַּר
4 5 6 7 קֳדָמוֹי דִין וּפוּמִי אֲמַלֵּי מַכְסְנוּתָא׃ אֶנְדַע מִלַּיָא דִיתִיבְנַנִי וְאֶתְבַּיַּן מַה יֵימַר לִי׃ הַבְּסוּגְעֵי חֵילָא יִנְצֵי עִמִּי לָא בְרַם הוּא יְשַׁוֵּי תִגְרָא בִי׃ תַּמָּן תְּרִיצָא וְתָקִין
עִמִּי וְאִשְׁתֵּיזֵב לְעָלְמָא מִדְּדָאֵן יָתִי׃

Verſio SYRIACA.

11 12 *ܐܬܪܐ ܗܘ ܕܚܫܘܟܐ ܠܐ ܚܙܝܬ .· ܘܡܒܘܠܐ ܕܡܝܐ ܢܚܦܝܟ. * ܗܐ ܐܠܗܐ ܐܪܝܡ ܫܡܝܐ. ܘܚܙܐ ܪܝܫ ܟܘܟܒܐ
13 ܕܐܬܬܪܝܡ. * ܘܐܡܪܬ ܐܢܬ .· ܡܢܐ ܝܕܥ ܐܠܗܐ. ܕܥܡܗ .· ܕܒܓܘ ܥܪܦܠܐ ܕܐܢ ܗܘ. * ܥܢܢܐ ܓܝܪ ܡܛܠܠܬܗ ܘܠܐ
14 15 ܚܙܘ. ܘܥܠ ܫܘܝܗ ܕܫܡܝܐ ܡܗܠܟ. * ܐܘܪܚܐ ܕܥܠܡܐ ܢܛܪܬ. ܕܕܫܘ ܥܡܐ ܥܘܠܐ ܕܠܐ ܒܙܒܢܗܘܢ.
16 *ܘܠܡܥܒܪ ܢܗܪܐ ܐܬܟܠܝܘ. ܘܠܐ ܥܗܕܘܗܝ ܠܡܢ ܕܐܣܝܣ ܫܬܐܣܝܗܘܢ. *ܘܐܡܪܝܢ ܠܐܠܗܐ ܦܪܘܩ ܡܢܢ. ܘܡܢܐ ܥܒܕ
17 18 ܠܢ ܐܠܗܐ. * ܘܗܘ ܡܠܐ ܒܝܬܘܬܗܘܢ ܛܒܬܐ. ܘܬܪܥܝܬܐ ܕܪܫܝܥܐ ܐܬܪܚܩܬ ܡܢܗܘܢ. * ܢܚܙܘܢ ܙܕܝܩܐ ܘܢܚܕܘܢ.
19 20 ܘܙܟܝܐ ܢܓܚܟ ܒܗܘܢ. * ܐܢ ܠܐ ܐܬܡܟܟܘ ܡܢ ܩܫܝܘܬܗܘܢ. ܘܫܪܟܢܗܘܢ ܬܐܟܘܠ ܢܘܪܐ. * ܐܫܬܘܐ ܗܟܝܠ ܥܡܗ.
21 22 ܘܡܥܠ ܐܝܬܝ ܡܢ ܥܠܠܬܟ ܛܒܬܐ. * ܩܒܠ ܡܢ ܦܘܡܗ ܢܡܘܣܐ. ܘܣܝܡ ܡܠܘܗܝ ܒܠܒܟ. * ܐܢ ܬܬܘܒ
23 24 ܠܘܬ ܐܠܗܐ. ܬܬܒܢܐ. ܘܐܢ ܬܪܚܩ ܥܘܠܐ ܡܢ ܡܫܟܢܟ: * ܘܬܟܢܫ ܣܐܡܐ ܐܝܟ ܥܦܪܐ: ܘܐܝܟ ܚܠܐ ܕܢܚܠܐ ܕܗܒܐ
25 26 ܐܘܦܝܪ .· * ܢܗܘܐ ܐܠܗܐ ܒܥܘܕܪܢܟ .· ܘܟܣܦ ܚܘܫܒܢܝܢ ܢܗܘܐ ܠܟ. * ܘܬܪܝܡ ܠܘܬ ܐܠܗܐ ܐܦܝܟ. * ܘܬܨܠܐ
27 28 ܩܕܡܘܗܝ. ܘܢܫܡܥܟ. ܘܢܕܪܝܟ ܬܫܠܡ. * ܘܬܓܙܘܪ ܡܠܬܐ. ܘܢܩܘܡ ܠܟ. ܘܥܠ ܐܘܪܚܬܟ ܢܢܗܪ ܢܘܗܪܐ.
29 30 * ܡܛܠ ܕܡܢ ܕܡܬܡܟܟ ܐܡܪ ܕܢܬܪܘܡ. ܘܕܡܟܝܟ ܥܝܢܘܗܝ ܢܬܦܪܩ. *ܢܬܦܨܐ ܙܟܝܐ ܐܝܟܐ ܕܐܝܬܘܗܝ.
ܘܢܬܦܨܐ ܒܕܟܝܘܬܐ ܕܐܝܕܘܗܝ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܓ *

1 2 * ܘܥܢܐ ܐܝܘܒ ܘܐܡܪ. * ܐܦ ܝܘܡܢܐ ܡܪܝܪܐ ܬܘܟܠܢܝ. ܘܐܝܕܗ ܝܩܝܪܐ ܥܠ ܬܢܚܬܝ. * ܡܢ ܢܬܠ ܠܝ.
3 ܘܐܫܟܚ ܗܘܝܬ ܠܡܩܪܒ ܠܡܫܪܝܬܗ. * ܘܐܣܕܪ ܩܕܡܘܗܝ ܕܝܢܐ. ܘܦܘܡܝ ܐܡܠܐ ܡܟܣܢܘܬܐ.
4 5 * ܘܐܕܥ ܐܢܐ ܡܢܐ ܥܢܐ ܗܘܐ ܠܝ. ܘܐܣܬܟܠ ܗܘܝܬ ܡܢܐ ܐܡܪ ܗܘܐ ܠܝ. * ܒܣܘܓܐܐ ܕܚܝܠܐ ܕܐܢ
6 7 ܠܝ. ܐܢ ܠܐ ܗܘܐ ܕܚܠܬܐ ܣܐܡ ܠܝ. * ܬܡܢ ܒܟܐܢܘܬܐ ܕܐܢ ܗܘܝܬ ܥܡܗ. ܘܙܟܐ ܗܘܝܬ. ܘܡܬܦܨܐ
ܗܘܝܬ ܒܕܝܢܐ.

Verſio ARABICA.

11 12 * ومكان الظلام لم تبصر * وفيوض الماء يغطيك * هوذا الله رفع السماء فابصر راس الكواكب
13 14 لما ارتفع * وانت تقول ماذا يعرف الله * العله في جوف الظلام يدين * فان السحاب ستره ولم يروا * وعلى
15 16 مستوى السماء يسلك * عسى طريق العالم حفظت الذي داسها شعب اثيم بغير حينهم * وفي معبر النهر
17 18 احتبسوا * ولم يذكروا من كون اساسهم * ويقولون لله ابتعد منا * وماذا يصنع بنا الله * وهو قد
19 ملا بيوتهم خيرا * وفكر المنافقين ابتعد منهم * يبصرون الصديقون * ويفرحون * والزاكي
20 21 يستهزى بهم * ان لم يتواضعوا من قسوتهم * وبقيتهم تاكلهم النار * فاستوي الان معه * وسلم من
22 23 غلاتك الطيبة * اقبل من فمه الناموس وضع كلامه في قلبك * فان تتوب الى الله فانك تبنى * وان
24 25 تبعد الاثم من مسكنك * وتجمع فضة مثل التراب * ومثل رمال الاودية ذهب اوفير * يكون الله بعونك *
26 27 وفضه بلا حساب تكون لك * وترفع الى الله وجهك * فتصلي قدامه ويسمعك * وتسلم نذورك * وتقول
28 29 قولا فيستقيم لك * وعلى طرقك يشرق الضوء * من اجل ان من قال انه يتواضع فانه يرتفع * والذي
30 يحفظ بصره يخلص * يفلت الزاكي حيث يكون * وينجوا بطهارة يديه *

1 2 * الفصل الثالث والعشرون * * فاجاب ايوب وقال * اليوم ايضا تمررت همي ويدك تثقلت
3 4 على اوجاعي * من الذي يقدر ان يجعلني استطيع البلوغ الى مجلسه * وانصب قدامه قضائي *
5 6 واملا فمي تحاورا * فاعلم ما الذي يجيبني * وافهم ماذا الذي يقول لي * بكثرة القوة يقضي علي *
7 لولا مخافة يضع علي * فهناك بالعدل كنت اقضي معه * وكنت اركوا وافلت من القضاء *

VERS. SYR. & ARAB.
Interp. Lat.

11 *(f) Et locum tenebrarum non vidiſti, & diluvium aquæ obruet te.* 12 *En Deus levavit cælum, vidique principem ſtellarum cùm ſeſe erexit:* 13 *Et tu dicis, Quid novit Deus? Anne ipſe in medio tenebrarum judicat?* 14 *Nubes enim velamen ejus, nec viderunt: & ſuper (g) planitiem cæli graditur.* 15 *Num fortè viam mundi obſervâſti, quam conculcârunt populus iniquus extra tempus ſuũ?* 16 *Et ad tranſitũ fluminis detenti ſunt, nec recordati ſunt ejus qui fecit fundamenta eorum:* 17 *Dicuntque Deo, Recede à nobis: & quid faciet nobis Deus?* 18 *Cùm ipſe jam impleverit domos eorũ bonis, & cogitatio impiorũ receſſit ab ipſis.* 19 *Videbunt juſti, & gaudebunt, & innocens illudet eis,* 20 *Si non humiliati fuerint à duritie ſua, & reliquias eorũ comedet ignis.* 21 *Coæqua te igitur illi & Largire de frugibus tuis optimis.* 22 *Suſcipe ab ore ejus legem, & ponet verba ſua in corde tuo.* 23 *Si converſus fueris ad Deum, certè ædificaberis; & ſi amoveris iniquitatem à domicilio tuo,* 24 *Etiam congregabis argentum ſicut pulverem, & quaſi arenas (h) torrentium aurum obrizum.* 25 *Erit Deus in adjutorium tuum, & argentũ (i) abſque numero erit tibi.* 26 *Et levabis ad Deum vultũ tuũ:* 27 *Orabiſque coram eo, & exaudiet te: implebiſque vota tua,* 28 *Diceſque ſermonem, & rectus erit tibi, & ſuper viis tuis orietur lumen.* 29 *Quoniam qui (k) dixerit ſe humiliaturum ſeſe, exaltabitur: & (l) qui cuſtodierit viſum ſuum, ſalvabitur.* 30 *Evadet innocens ubicunque fuerit, & liberabitur in puritate manuum ſuarum.*

CAP. XXIII.

1 *ET reſpondens Job ait,* 2 *Hodie quoque amaruit (a) ſolicitudo mea, & manus ejus aggravata eſt ſuper dolores meos.* 3 *Quis eſt qui poſſit facere ut valeam accedere ad habitaculum ejus,* 4 *Et (b) ſtatuere coram illo judiciũ meum, & implere os meum (c) lite?* 5 *Et ſciam quid mihi reſponderet, & intelligam quid diceret mihi;* 6 *In multitudine roboris judicat me: niſi timorem mihi imponeret.* 7 *Ibi in juſtitia judicarem cum illo, & juſtificarer atque (d) evaderem ſententiam.*

INTERP. SYRIACA.

(f) Undenam tenebræ non (g) ambitum (h) maris (i) computationum (k) humiliaverit ſe, dixit quod exaltabitur (l) depreſſi oculis ſervabuntur. *Cap. xxiii.* (a) narratio mea, (b) inſtruere (c) redargutione? (d) liberarer in judicio.

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Aut in tenebris habitabis & non videbis, et multitudo aquarum operiet te. Nonne Deus eſt in altitudine cœli? & vide verticem ſtellarum quoniam elevatæ ſunt. 11 12
Et dices: Quid ſcit Deus? nunquid poſſibile eſt quòd per caliginem judicet. Nubes latibulum ejus, et non videt, et in fortitudine altitudinis cœlorum deambulat. 13 14
Nunquid viam quæ *fuit* à ſeculo, cuſtodies, per quam ambulaverunt viri iniquitatis? Qui ſublati ſunt à *terra* ante tempus ſuum, in profundo fluminis effuſum eſt corpus 15 16
eorum. Qui dicebant Deo: Recede à nobis: et quid faciet eis omnipotens? Et ipſe implevit domos eorum bono: et conſilium impiorum procul eſt à me. 17 18
Videbunt juſti et lætabuntur, et innocens ſubſannabit eos. Nonne prohibiti ſunt ne conſurgerent, et reliquias eorum conſumpſit ignis? Diſce nunc ab eo et habebis pacem: 19 20
per hæc fructus bonos habebis. Perfice nunc ex ore ejus legem, et pone verba ejus in corde tuo. Si converſus fueris uſque ad omnipotentem, ædificaberis: et 21 22
longè facies iniquitatem à tabernaculo tuo. Et pones ſuper pulverem arcem munitam, et ſicut petram torrentium, aurum Ophir. Et erit omnipotens arx munitionis 23 24
tuæ, et magis quàm argentum erit fortitudo excelſa tibi. Quia tum ſuper omnipotentem delectaberis, et levabis coram Deo faciem tuam. Orabis coram eo, et exaudiet te, 25 26
et vota tua reddes. Et decernes verbum et ſtabile erit tibi: et ſuper vias tuas ſplendebit lumen. *Generatio* enim *quæ humiliaverit ſe*, fiet ſublimis; et illum qui inclinatus 27 28
fuerit in delicto ſalvabis. Liberabitur vir qui non eſt innocens propter juſtitiam tuam, et liberabitur in munditia manus tuæ. 29 30

CAP. XXIII.

ET reſpondit Job et dixit: Hodie quoque amarus eſt ſermo meus, plaga mea aggravata eſt ſuper gemitum meum. Quis mihi decernet ut cognoſcam et inveniam illũ; 1 2 3
veniam uſque ad habitaculũ domus ſanctuarii ejus! Ordinabo coram eo judicium, et os meũ implebo increpationibus. Sciam verba quæ mihi reſpondeat, et intelligam 4 5
quid dicat mihi. An in multitudine fortitudinis contendet mecum? non utique; ipſe ponet litem contra me. Ibi rectus *& paratus mecum*, et liberabor in ſeculum ab eo 6 7
qui judicat me.

איוב : כג

.eum intelligam non & , retro & : ipse non & , ibo ante En
8 הן קדם אהלך ואיננו ואחור ולא־אבין לו:
non & , dextram operiet : videbo non & , ipsum faciendo in Sinistram
9 שמאל בעשתו ולא־אחז יעטף ימין ולא
aurum sicut , me probavit : me apud viam novit Quia .videbo
10 אראה: כי־ידע דרך עמדי בחנני כזהב
, servavi ejus Viam .meus pes apprehendit ejus gressum In egrediar
11 אצא: באשרו אחזה רגלי דרכו שמרתי
meo statuto à : deseram non & ,ejus labiorum Præceptum .declinabo non &
12 ולא־אט: מצות שפתיו ולא אמיש מחקי
? eum avertet quis & , uno in ipse Et .ejus oris eloquia abscondi
13 צפנתי אמרי־פיו: והוא באחד ומי ישיבנו
: meum statutum reddet Quia .fecit & , desideravit ejus anima &
14 ונפשו אותה ויעש: כי ישלים חקי
,intelligam : terrebor ejus faciebus à Idcirco .eo cum multa hæc sicut &
15 וכהנה רבות עמו: על־כן מפניו אבהל אתבונן
.me terruit Sadai & : meum cor emollivit Deus Et .eo ab timebo &
16 ואפחד ממנו: ואל הרך לבי ושדי הבהילני:
mei faciebus à & : obscuritatis faciebus à sum excisus non Quoniam
17 כי־לא נצמתי מפני־חשך ומפני
.caliginem operuit
כסה־אפל:

CAP. XXIV. כד

videbunt non eum scientes & : tempora sunt occultata non Sadai à Cur
1 מדוע משדי לא־נצפנו עתים וידעו לא־חזו
.paverunt & , rapuerunt gregem , attingent Terminos ? ejus dies
2 ימיו: גבלות ישיגו עדר גזלו וירעו:
.viduæ bovem accipient pignus in : ducent pupillorum Asinum
3 חמור יתומים ינהגו יחבלו שור אלמנה:
.terræ humiles latuerunt pariter : via de egenos facient Divertere
4 יטו אבינים מדרך יחד חבאו עניי־ארץ:
mane surgentes , suum opus ad sunt egressi deserto in onagri Ecce
5 הן פראים במדבר יצאו בפעלם משחרי
ejus pabulum agro In .pueris panis ei solitudo : rapinam ad
6 לטרף ערבה לו לחם לנערים: בשדה בלילו
faciunt pernoctare Nudum .facient tardare impii vineam & : demetent
7 יקצירו וכרם רשע ילקשו: ערום ילינו
inundatione Ab .frigore in operimentum non & : vestimento absque
8 מבלי לבוש ואין כסות בקרה: מזרם
.petram sunt amplexati protectione absque & : madefient montium
הרים ירטבו ומבלי מחסה חבקו־צור:
.pignus accipient pauperem super & : pupillum ubere ab Rapient
9 יגזלו משד יתום ועל־עני יחבלו:
tulerunt famelicis & : vestimento absque fecerunt ambulare Nudum
10 ערום הלכו בלי לבוש ורעבים נשאו
,calcaverunt torcularia : oleum exprimunt suos muros Inter .manipulum
11 עמר: בין שורתם יצהירו יקבים דרכו
occisorum anima & , gement viri urbe De .sitiverunt &
12 ויצמאו: מעיר מתים ינאקו ונפש־חללים
fuerunt Ipsi .insulsum ponet non Deus & : vociferabitur
13 תשוע ואלוה לא־ישים תפלה: המה היו
sederunt nec : ejus vias cognoverunt non , luminis rebelles inter
במרדי־אור לא־הכירו דרכיו ולא ישבו
.ejus semitis in
בנתיבתיו:

Versio VULG. LAT.

8 Si ad Orientem iero, non apparet : si ad Occidentem, non 9 intelligam eum. Si ad sinistram, quid agam ? non apprehendam eum: si me vertam ad dexteram, non videbo il- 10 lum. Ipse verò scit viam meam, & probavit me quasi aurum, quod per ignem transit : 11 Vestigia ejus secutus est pes meus, viam ejus custodivi, & 12 non declinavi ex ea. A mandatis labiorum ejus non recessi, & in sinu meo abscondi ver- 13 ba oris ejus. Ipse enim solus est, & nemo avertere potest cogitationem ejus : & anima ejus quodcunque voluit, hoc 14 fecit. Cùm expleverit in me voluntatem suam, & alia mul- 15 ta similia præstò sunt ei. Et idcircò à facie ejus turbatus sum, & considerans eum, ti- 16 more solicitor. Deus mollivit cor meum, & Omnipotens 17 conturbavit me. Non enim perii propter imminentes tenebras, nec faciem meam operuit caligo.

CAP. XXIV.

1 AB Omnipotente non sunt abscondita tempora : qui autem noverunt eum, ignorant 2 dies illius. Alii terminos transtulerunt, diripuerunt greges, 3 & paverunt eos. Asinum pupillorum abegerunt, & abstulerunt pro pignore bovem vi- 4 duæ. Subverterunt pauperum viam, & oppresserunt pariter 5 mansuetos terræ. Alii quasi onagri in deserto egrediuntur ad opus suum : vigilantes ad prædam, præparant panem 6 liberis. Agrum non suum demetunt : & vineam ejus, quem vi oppresserint, vindemiant. 7 Nudos dimittunt homines, indumenta tollentes, quibus non est operimentum in frigore : 8 Quos imbres montium rigant: & non habentes velamen, am- 9 plexantur lapides. Vim fecerunt deprædantes pupillos, & vulgum pauperem spoliave- 10 runt. Nudis & incedentibus absque vestitu, et esurientibus 11 tulerunt spicas. Inter acervos eorum meridiati sunt, qui cal- 12 catis torcularibus sitiunt. De civitatibus fecerunt viros gemere, & anima vulneratorum clamavit, & Deus inultum 13 abire non patitur. Ipsi fuerunt rebelles lumini, nescierunt vias ejus, nec reversi sunt per semitas ejus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

8 † (κ) Εἰ γὰρ πρῶτος πορεύσομαι, καὶ οὐκ ἔτι εἰμί, † τὰ δὲ ἐπ᾽ ἐσχάτοις, τί οἶδα; † 9 Ἀριστερὰ ποιήσαντος αὐτοῦ καὶ οὐ κατέσχον, 10 † περιβαλεῖ δεξιὰ καὶ οὐκ ὄψομαι. † Οἶδε γὰρ ἤδη (λ) ὁδόν μου· † διέκρινε δέ με 11 ὥσπερ τὸ χρυσίον. † Ἐξελεύσομαι δὲ ἐν ἐντάλμασιν αὐτοῦ, † ὁδοὺς γὰρ αὐτοῦ ἐφύλαξα, καὶ οὐ μὴ ἐκκλίνω † (μ) ἀπὸ ἐν- 12 ταλμάτων αὐτοῦ, Καὶ οὐ μὴ παρέλθω, † (ν) ἐν δὲ κόλπῳ μου ἔκρυψα ῥήματα αὐτοῦ. 13 † Εἰ δὲ καὶ αὐτὸς ἔκρινεν οὕτως, † τίς ἐστιν ὁ (ξ) ἀντειπὼν αὐτῷ; † ὃ γὰρ αὐτὸς ἠθέλησε, καὶ ἐποίησεν. † Διὰ τοῦτο ἐπ᾽ 14 αὐτῷ (ο) ἐσπούδακα· † νουθετούμενος δὲ, 15 ἐφρόντισα αὐτοῦ. † Ἐπὶ τούτῳ ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ κατασπουδασθῶ· † κατανοήσω, 16 καὶ πτοηθήσομαι ἐξ αὐτοῦ. (π) Κύριος δὲ ἐμαλάκυνε τὴν καρδίαν μου· † ὁ δὲ παν- 17 τοκράτωρ (ρ) ἐσπούδασέν με. † Οὐ γὰρ ᾔδειν ὅτι (σ) ἐπελεύσεταί μοι σκότος, † (τ) πρὸ προσώπου δέ μου ἐκάλυψε γνόφος.

ΚΕΦ. κδ'.

1 † Διατί δὲ (α) κύριον ἔλαθον ὧραι, † 2 Ἀσεβεῖς δὲ ὅριον ὑπερέβησαν, ποίμνιον 3 σὺν ποιμένι ἁρπάσαντες; † Ὑποζύγιον (β) ὀρφανῶν ἀπήγαγον, † καὶ βοῦν χήρας ἠνε- 4 χύρασαν. (γ) Ἐξέκλιναν ἀδυνάτους ἐξ ὁδοῦ δικαίας, † ὁμοθυμαδὸν δὲ ἐκρύβησαν 5 πραεῖς γῆς. (δ) Ἀπέβησαν δὲ ὥσπερ ὄνοι ἐν ἀγρῷ, † ὑπὲρ ἐμοῦ ἐξελθόντες (ε) τὴν ἑαυτῶν τάξιν· (ζ) ἡδύνθη αὐτῷ 6 ἄρτος εἰς νεωτέρους. Ἀγρὸν πρὸ ὥρας οὐκ αὐτῶν ὄντα ἐθέρισαν. ἀδύνατοι ἀμπελῶνας ἀσεβῶν ἀμισθὶ καὶ ἀσιτὶ εἰργάσαντο. 7 † Γυμνοὺς πολλοὺς ἐκοίμισαν ἄνευ ἱματίων, † ἀμφίασιν δὲ ψυχῆς (ʹ) αὐτῶν ἀφείλαν- 8 το. † Ἀπὸ ψεκάδων ὀρέων ὑγραίνονται, † (η) παρὰ τὸ μὴ ἔχειν ἑαυτοὺς σκέπην, 9 πέτραν περιεβάλοντο. † (θ) Ἥρπασαν ὀρφανὸν ἀπὸ μαστοῦ, † ἐκπεπτωκότα δὲ ἐτα- 10 πείνωσαν· † (ι) Γυμνοὺς δὲ ἐκοίμισαν ἀδίκως, † πεινώντων δὲ (κ) τὸν ψωμὸν ἀφεί- 11 λαντο. † (λ) Ἐν στενοῖς ἀδίκως ἐνήδρευσαν, 12 † ὁδὸν δὲ (μ) δικαίαν οὐκ ᾔδεισαν. † (ν) Οἳ ἐκ πόλεως καὶ οἴκων ἰδίων ἐξεβάλλοντο, † ψυχὴ δὲ νηπίων ἐστέναξε (ξ) μέγα. † αὐτὸς δὲ διατί τούτων ἐπισκοπὴν οὐ πεποίηται; 13 † (ο) Ἐπὶ γῆς ὄντων αὐτῶν καὶ οὐκ ἐπέγνωσαν, † ὁδὸν δὲ δικαιοσύνης οὐκ ᾔδεισαν, (π) † οὐδὲ ἀτραποὺς αὐτῶν ἐπορεύθησαν.

Nam (l) si primus ambulavero, & (m) non ultrà sum; 8 quæ autem in novissimis, quid novi? (n) A læva si ipse 9 aget, & non apprehendi: circumteget dextra, & non videbo. Scit enim jam viam me- 10 am: probavit autem me, sicut aurum. (o) Egrediar autem 11 in præceptis ejus. Vias enim ejus custodivi, & non declino à præceptis ejus, Et non præ- 12 teream : in sinu autem meo abscondi verba ejus. Si autem 13 & ipse judicavit sic; quis est qui contradicat ei? ipse enim voluit & fecit. (p) Propter- 14 eà super ipso trepidavi, & commonitus solicitus fui de eo. Idcircò à facie ejus (q) 15 turbabor: (r) considerabo, & timebo ab eo. Et Dominus 16 mollivit cor meum: & Omnipotens (s) solicitavit me. Non 17 enim noveram quod supervenient mihi tenebræ: & ante faciem meam operuit caligo.

CAP. XXIV.

Quarè autem Dominum (a) 1 latuerunt horæ? Et (b) impii 2 terminum (c) transgressi sunt, gregem cum pastore rapientes? Subjugale pupillorum abduxe- 3 runt, & bovem viduæ pro pignore tulerunt: (d) Diverte- 4 re fecerunt impotentes à via justa: & simul (e) absconditi sunt mites terræ, Et evase- 5 runt tanquàm asini in agro, super (f) me, egressi suum ipsorum (g) ordinem: (h) suavis factus est ei panis in adolescentes. Agrum ante tem- 6 pus non suum demessuerunt. Impotentes vineas impiorum sine mercede & sine cibo operati sunt. Nudos multos dor- 7 mire fecerunt sine vestimentis, & indumentum animæ eorum abstulerunt. De stillicidiis mon- 8 tium madescunt: eò quòd ipsi (i) non habeant operimentum: petram sibi circumdederunt. Rapuerunt ab ubere pupillum, 9 & eum qui (k) ceciderat, humiliaverunt. Et nudos dor- 10 mire fecerunt injustè, & esurientiũ buccellã abstulerunt. In 11 angustiis insidiati sunt iniquè, & viam justam non noverunt. Hi de civitate et domibus pro- 12 priis ejiciebantur, anima verò parvulorum in gemitu valdè fuit. Ipse (l) autem cur horum visitationem non fecit? Cùm super 13 terram ipsi essent, Et non agnoverunt, & viam justitiæ non noverunt, neque semitas (m) eorum ambulaverunt.

MS.A. (κ) Ἐὰν γὰρ πορευθῶ εἰς τὰ πρῶτα, οὐκέτι εἰμί, (λ) ὁδόν με αὐτός· καὶ διέκρινέν με ὥσπερ χρυσίον. (μ) ἀπὸ ἐντολῶν αὐτοῦ Οὐ μὴ (ν) ἵνα μὴ ἀποθάνω, ἐν δὲ κόλπῳ (ξ) ἀντερῶν (ο) ἐσπούδακειν· (π) Κύριός μου ἐμαλάκυνεν (ρ) ἐσπούδακεν ἐπ᾽ ἐμέ. (σ) ἐπελεύσεταί μοι γνόφος, (τ) πρόσωπον δέ μου καλύψει σκότος. Κεφ. κδ'. MS.A. (α) κύριον, ἔλαθον ὧραι ἀσεβεῖς ἄνδρες; ὅριον δὲ ὑπερέβησαν, καὶ ποίμνιον σὺν ποιμένι ἥρπασαν; (β) δὲ ὀρφανῶν (γ) Ἐξέκλινον δὲ ἀδυνάτους (δ) Καὶ ἀπέβησαν (ε) τῇ ἑαυτῶν πράξει. Ἀγρὸν πρὸ ὥρας (ζ) * ἠδυνήθη δὲ αὐτῷ ἄρτος εἰς νεωτέρους· ἀδύνατοι δὲ ἀσεβῶν ἀμπελῶνας ἀσιτὶ καὶ ἀμισθὶ εἰργάσαντο. Γυμνοὺς δὲ πολλοὺς (ʹ) ἑαυτῶν (η) καὶ παρὰ τὸ (θ) Ἥρπασαν δὲ ὀρφανοὺς ἀπὸ μαστοῦ, καὶ ἐκπεπτωκότα ἐταπείνωσαν· (ι) Γυμνοὺς ἐκοίμισαν (κ) ψωμὸν (λ) Ἐν σκοτινοῖς ἐνήδρευσαν ἀδίκως (μ) δικαίων (ν) Ἐκ πόλεως, καὶ ἐξ οἰκιῶν ἰδίων ἐξέβαλον αὐτούς, (ξ) μεγάλως. (ο) ἔτι ὄντων αὐτῶν ἐπὶ γῆς, καὶ οὐκ * ἐπεγνώσαμαι, (π) οὐδὲ ἐπορεύθησαν ἀτραποὺς αὐτῆς.

תרגום TARGUM.

הא למדנחא אהלוך וליתוי ולמערבא ולא אתבין ליה : בצפונא במעבדיה ולא אחמי כד מכבן דרומא ולא אסכי : ארום גלי קדמוי אורחא 8 9 10
דעמי בחן יתי היך דהבא אפיק : באסתוריה אחדת רגלי אורחתיה נטרית ולא צלית : פוקדנא דספותוי ולא אעדי מגזרתי אטשית מימרי פומוי : ואין 11 12 13
הוא יחידאי ומן יתיבניה ונפשיה רגגת ועבדת : ארום ישלים היך בקדמיתא גזרתי ודכמתהון סגיעין עמיה : מטול דהיכנא מן קדמוי 14 15
אתבהל אתבין ואדחל מניה : ואלהא רכך לבבי ושדי בהלנני : ארום לא אתנטרת מן קדם חשוך ומן קדמי טמר קבלא : 16 17

כד

מדין משדי לא אתטישו עדניא ודחכימין יתי לא חמין יומוי : תחומיא ישנון עדרא אנסון ורעון : חמרא דיתמי ידברון ימשכנון תור 1 2 3
ארמלא : יצלון חשיכי מן אורחא כחדא אטמרו מסכני ארעא : היך דין כמרודיא במדברא נפקו לעובדיהון בישיא מקדמין לבזא במשרא אנס 4 5
ליה מזונא לטליה : בחקלא מדלא דלהון חצדין וכרמא דרשיעי יכסחון : ערטלי יביתו דלית כסותא ודלית להון חופאה בקורא : 6 7
מקלוחיא דטוריא מטמשין ומדלית משרוי נפפו טינרא : יאנסון מבזת יתם ועל עניא ממשכנין : ערטלי אוליכו מדלית כסו וכפנין נטלו מנהון עומרא : 8 9 10
ביני אשותהון יעצרון משח מעצרתא עצרו ומריהון אצחיאו : מקרתא בני נשא נהקין ונפשת קטולין בחרבא תצלי ואלהא לא ישוי חובא : הנון הון 11 12 13
במרדין באוריתא לא אשתמודעו אורחתיה ולא אתיתבו בשבילוי :

Verſio SYRIACA.

8 * ܐܢ ܩܕܡܝ ܐܙܠ. ܠܐ ܝܕܥ ܐܢܐ. ܘܐܢ ܒܣܬܪܝ. ܠܐ ܡܣܬܟܠ ܐܢܐ ܒܗ. * ܠܣܡܠܐ ܒܥܝܬܗ. ܘܠܐ ܐܬܚܙܝ ܠܝ.
9 10 ܘܗܦܟܬ ܠܝܡܝܢܝ. ܘܠܐ ܚܙܝܬܗ. * ܘܗܘ ܝܕܥ ܐܘܪܚܝ ܘܩܘܡܝ. ܘܒܚܢܢܝ ܐܝܟ ܕܗܒܐ ܢܦܩܬ.
11 * ܒܫܒܝ̈ܠܘܗܝ ܐܬܚܝܠܬ ܪܓܠܝ. ܘܐܘܪ̈ܚܬܗ ܢܛܪܬ. * ܘܠܐ ܫܛܬ ܦܘܩܕ̈ܢܘܗܝ ܣܦ̈ܘܬܝ. ܘܠܐ ܣܛܝܬ ܡܢ
12 13 ܨܒܝܢܗ. ܢܛܪܬ ܡ̈ܠܐ ܕܦܘܡܗ. * ܘܗܘ ܥܡ ܚܕ ܡܢ ܗܠܝܢ. ܡܢܐ ܢܦܢܐ ܠܝ. ܕܒܢܦܫܗ ܐܬܪܥܝܬ. ܘܥܒܕ.
14 * ܐܠܐ ܡܫܠܡ ܐܢܐ ܩܝܡܗ. ܘܐܝܟ ܗܠܝܢ ܣܓܝ̈ܐܬܐ ܐܝܬ ܠܗ. * ܡܛܠ ܗܢܐ. ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ ܐܙܕܗܠܬ.
15 16 ܘܐܣܬܟܠܬ ܘܕܚܠܬ ܡܢܗ. * ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܐܪܟܟ ܠܒܝ. ܘܪܫܝ ܐܬܬܙܝܥ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܫܬܬܩܬ ܡܢ ܩܕܡ
17 1 ܚܫܘܟܐ. ܘܡܢ ܩܕܡ ܐܣܟܡܐ ܕܥܪܦܠܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܟܕ * * ܡܛܠ ܡܢܐ ܡܢ ܐܠܗܐ.
2 ܠܐ ܐܬܟܣܝܘ ܪ̈ܫܝܥܐ. ܘܐܬܝܕܥܘ. ܘܠܐ ܚܙܘ ܝܘܡܬܗܘܢ. * ܘܥܒܪܘ ܬܚܘܡܐ. ܘܕܒܪܘ ܥܢܐ. * ܘܚܡܪܐ ܕܝܬܡܐ
3 4 ܕܒܪܘ. ܘܡܫܟܢܘ ܬܘܪܐ ܕܐܪܡܠܬܐ. * ܘܐܬܛܫܝܘ ܡܣ̈ܟܢܐ ܡܢ ܐܘܪܚܐ. ܘܐܬܛܫܝܘ ܟܚܕܐ ܡܟܝܟܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ. * ܐܝܟ
5 6 ܥܪ̈ܕܐ ܕܒܡܕܒܪܐ. ܕܡܩܕܡܝܢ ܠܡܬܪܣܝܘ ܠܛܠܝܗܘܢ ܒܠܚܡܐ. * ܘܒܚܩܠܐ ܥܡܝܪܐ ܕܠܐ ܕܝܠܗܘܢ ܚܨܕܝܢ.
7 8 ܘܟܪ̈ܡܐ ܕܪ̈ܫܝܥܐ ܒܨܪܘ. * ܥܪ̈ܛܠܝܐ ܒܬܘ ܕܠܐ ܠܒܘܫܐ. ܘܠܝܬ ܠܗܘܢ ܬܟܣܝܬܐ ܒܩܘܪܫܐ. * ܡܢ ܙܪܝܦܐ
9 ܕܛܘ̈ܪܐ ܬܪܝܢ. ܘܡܢ ܚܣܝܪ ܬܟܣܝܬܐ ܓܦܦܘ ܟܐ̈ܦܐ. * ܢܚܛܦܘܢ ܡܢ ܥܘܫܩܐ ܕܝܬ̈ܡܐ. ܘܥܠ ܡܣ̈ܟܢܐ
10 ܣܩܘ̈ܠܐ ܢܪܡܘܢ. * ܗܠܟܘ ܥܪ̈ܛܠܝܐ. ܡܢ ܕܠܐ ܠܒܘܫܐ. ܘܟܦܢܐ ܢܣܒܘ ܠܚܡܐ. ܘܒܕܘܟܬ ܦܬܘܪܐ ܡܣܬܡܟܝܢ
11 12 ܘܟܦܢܝܢ. ܟܕ ܥܒܕܝܢ ܡܫܘܚܬܐ ܘܟܝܠܬܐ. * ܘܙܒܢ ܕܟܦܢܝܢ ܥܠ ܦܬܘ̈ܪܝܗܘܢ. ܘܡܥܨܪ̈ܬܐ ܥܨܪܘ. ܘܨܗܘ. * ܘܡܢ
13 ܓܘ ܡܕܝܢܬܐ ܡܝ̈ܬܐ ܝܢܩܝܢ. ܘܢܦܫܐ ܕܩ̈ܛܝܠܐ ܓܥܝܐ. ܘܐܠܗܐ ܠܐ ܡܩܒܠ ܨܠܘܬܗܘܢ. * ܗܢܘܢ ܗܘܘ
ܒܥܠܝܬ ܢܘܗܪܐ. ܘܠܐ ܐܣܬܟܠܘ ܐܘܪ̈ܚܬܗ. ܘܠܐ ܗܠܟܘ ܒܫܒܝ̈ܠܘܗܝ.

Verſio ARABICA.

8 9 * فانه ان كان قدامي اين ينطلق فاني لا اعرفه * وان كان ورائي فاني * لا استبينه * من شمالي
10 طلبت * فلم يتراءى لي * وعطفت الى يميني فلم ابصره * وهو يعرف طريقي ومقامي * ويجربني مثل
11 12 الذهب * خرجت * وفي سبله تشددت رجلي * طرايقه حفظتها * ولم استخف بوصاياه شفتي * ولم ابتعد
13 من رضاه * حفظت كلام فمه * وهو بواحدة من هولاء * فماذا يجيبني اذا ارضيت نفسه * وصنع *
14 15 * لكني اوفي بعهده * ومثل هذا كثيرا لي عنده * فمن اجل هذا من قدامه حسبت وفهمت وفزعت
16 17 منه * من اجل ان الله افزع قلبي وراسي تزعزع * اني لم اصمت من بين يدي الظلمة * ومن غشيان
الظلام *

* الفصل الرابع والعشرون *

1 2 * من اجل ماذا من قدام الله لم تستخفي المنافقون * وعرفوا ولم يروا ايامهم * وتجاوزوا الحدود *
3 4 واستاقوا الاقراف * وحمار اليتيم استاقوا * وارهنوا ثوب الارملة * واختفا البايسون من الطريق * وجميعا
5 6 اختفا متواضعوا الارض * ومثل حمير الوحش في القفر الذين يسبقون لاطعام الخبز لشبانهم * وفي
7 الحقل سخينا لهم يحصدون * وكروم المنافقين تلقس * يبيت العريان بغير لبوس * وليس كسوة مع
8 9 البرد * من مجاري الجبال يترطبون * ومن قلة الغطاء يعتنقون الحجارة * يخطفون من غصب اليتامى *
10 وعلى المساكين انصبة يطرحون * مشوا عراة بغير لبوس * والجياع اخذوا خبزا * وموضع المائدة
11 يتكون * ويجوعون وهم يجعلون السنة والمكيال * وفي اوان يجوعون على موائدهم * ومعاصر يعصرون
12 13 فيعطشون * ومن جوف القرية الاموات يسترضعون * وانفس القتلى تعج * والله لا يقبل صلواتهم * هم
كانوا في اعالي النور فلم يفهموا طرايقه ولم يسلكوا سبله *

VERS. SYR. & ARAB.
Interp. Lat.

(e) Nam ſi fuerit ante me, 8
quò abeat ignoro; et ſi fuerit
poſt me, non percipio
illum. Ad lævam meam 9
quæſivi, nec apparuit mihi;
& (f) verti me ad dexteram
meam, nec vidi eum.
Ipſe verò novit iter meum, 10
et ſtationem meam: et
tentavit me, tanquam aurum
egreſſus ſum. Et in 11
ſemitis ejus (g) prævaluit
pes meus: vias ejus cuſtodivi,
neq; (h) deſpexerunt
mandata ejus labia mea,
Nec receſſi à voluntate 12
illius: ſervavi verba oris
ejus. Et ipſe ad unum ex 13
his quid reſpondebit mihi,
cùm placuerim animæ ejus,
& fecerit? At verò 14
complebo teſtamentū ipſius.
Et his ſimilia plura
habeo ad illum, Et propterea 15
à conſpectu ejus timui,
& intellexi, ac metui
eum, Quoniam Deus terruit 16
cor meum, caput meum
concuſſum eſt. Non 17
enim ſilui à conſpectu tenebrarum,
& ab obſcuritate
caliginis.

CAP. XXIV.

PRopter quid à (a) conſpectu 1
Dei non latuerunt
impii, & cogniti fuerunt,
ac non viderunt dies ſuos.
Et tranſgreſſi ſunt 2
limites, & abduxerunt
greges. Et aſinum pupilli 3
duxerunt, & pigneraverunt
(b) veſtem viduæ. Et 4
abſconderunt ſe inopes de
via, & ſimul delituerunt
humiles terræ, Et quaſi 5
onagri in deſerto, qui
præproperant ad cibandū
pane adoleſcentes ſuos,
Et in agro (c) fœnum pro 6
eis metunt, & vineas impiorum
vindemiant. Pernoctat 7
nudus abſq; indumentis,
nec eſt veſtimentum
cum frigore. De (d) 8
rivis montium humeſcent,
et præ defectu operimenti
amplectentur petras. Rapient 9
de violentia pupillorum,
et ſuper pauperes ſortes
projicient. Ambulaverunt 10
nudi abſque veſtimentis,
& famelici ſumpſerunt
panem: & in loco
(e) menſæ recumbent,
& eſurient: & ipſi (f)
conſtituunt modium &
menſuram, Et aliquando 11
eſuriunt ſuper (g) menſis
ſuis: & torcularia expriment,
& ſitient. Et 12
de medio civitatis mortui
hic ſugent, & animæ
interfectorum mugient,
et Deus non accipiet precationes
eorum. Ipſi erant 13
in ſuprema luce, &
non intellexerunt vias ejus,
neque ambulaverunt
in ſemitis illius.

INTERP. SYRIACA.

(e) Si ambulaverit ante me, ignoro; (f) operui ad (g) corroboratur pes (h) deſpexi mandata labiorum ejus. *CAP. xxiv.* (a) Deo (b) bovem (c) pabulū non ſuum metunt, (d) vehementioribus montiū imbribus (e) conviviorum (f) ſumunt (g) epulis ſuis:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Si ad Orientem iero, non comparet; & ſi ad Occidentem, non intelligam illum. *Ad* Aquilonem cum fecerit, non videbo; quando *texerit ſe* ad Auſtrum, non intuebor 8 9
illum. Quoniam manifeſta eſt coram eo via mea: probavit me; & quaſi aurum egrediar. Semitam ejus apprehendit pes meus; viam ejus cuſtodivi, nec declinavi. 10 11
A præcepto labiorum ejus non receſſi, à decreto meo abſcondi verba oris ejus. Et *ſi* ipſe eſt ſolus, & quis avertet eum? & anima ejus quod deſideravit hoc fecit. Quoniam 12 13
perficiet ſicut in principio ſtatutum meum, & multa ſimilia ſunt apud eum. Propterea à facie ejus turbabor: intelligam, & timebo ab eo. Deus autem emollivit 14 15
cor meum, & omnipotens conturbavit me. Quoniam non ſum conſumptus à facie tenebrarum, & à facie mea operuit caligo. 16 17

CAP. XXIV.

Quare ab omnipotente non ſunt abſcondita tempora, & qui ſciunt *me* non viderunt dies ejus? Terminos mutaverunt, diripuerunt gregem & paverunt. Aſinum pupillorum 1 2 3
abigunt, & pignorant bovem viduæ. Avertunt pauperes à via: ſimul abſconduntur inopes terræ. Ecce ſicut onagri in deſerto, egreſſi ſunt ad opera ſua 4 5
mala, manè conſurgentes ad prædam, *in planicie diripit ſibi cibum* & pueris *ſuis*. In agro non ſuo metunt, & vineam impiorum amputant. Nudos faciunt pernoctare 6 7
abſq; indumento, quibus non eſt operimentum in frigore. A *diffluxionibus* montium madefacti ſunt, & non habentes habitaculum amplexati ſunt petram. Rapiunt ab 8 9
ubere pupillum, & pignus pauperum accipiunt. Nudum fecerunt ambulare abſq; operimento, & à famelicis tulerunt manipulum. Inter ſepta ſua exprimunt oleum, torcularia 10 11
calcaverunt, & domini eorum ſitiebant. De civitate filii hominum gemunt, & anima eorum qui ſunt occiſi gladio, clamat: *Et* Deus non imponat eis peccatum? 12
Ipſi fuerunt rebelles Legi: non cognoverunt viam ejus, nec habitaverunt in ſemitis illius. 13

איוב : כד

.eum intelligam non & ,retro & : ipſe non & ,ibo ante En
הֵן קֶדֶם אֶהֱלֹךְ וְאֵינֶנּוּ וְאָחוֹר וְלֹא־אָבִין לוֹ׃ 8
non & ,dextram operiet : videbo non & ,ipſum faciendo in Siniſtram
שְׂמֹאל בַּעֲשֹׂתוֹ וְלֹא־אָחַז יַעְטֹף יָמִין וְלֹא 9
aurum ſicut ,me probavit : me apud viam novit Quia .videbo
אֶרְאֶה׃ כִּי־יָדַע דֶּרֶךְ עִמָּדִי בְּחָנַנִי כַּזָּהָב 10
,ſervavi ejus Viam .meus pes apprehendit ejus greſſum In .egrediar
אֵצֵא׃ בַּאֲשֻׁרוֹ אָחֲזָה רַגְלִי דַּרְכּוֹ שָׁמַרְתִּי 11
meo ſtatuto à : deſeram non & ,ejus labiorum Præceptum .declinabo non &
וְלֹא־אָט׃ מִצְוַת שְׂפָתָיו וְלֹא אָמִישׁ מֵחֻקִּי 12
? eum avertet quis & ,uno in ipſe Et .ejus oris eloquia abſcondi
צָפַנְתִּי אִמְרֵי־פִיו׃ וְהוּא בְאֶחָד וּמִי יְשִׁיבֶנּוּ 13
: meum ſtatutum reddet Quia .fecit & ,deſideravit ejus anima &
וְנַפְשׁוֹ אִוְּתָה וַיָּעַשׂ׃ כִּי יַשְׁלִים חֻקִּי 14
,intelligam : terrebor ejus faciebus à Idcirco .eo cum multa hæc ſicut &
וְכָהֵנָּה רַבּוֹת עִמּוֹ׃ עַל־כֵּן מִפָּנָיו אֶבָּהֵל אֶתְבּוֹנֵן 15
.me terruit Sadai & : meum cor emollivit Deus Et .eo ab timebo &
וְאֶפְחַד מִמֶּנּוּ׃ וְאֵל הֵרַךְ לִבִּי וְשַׁדַּי הִבְהִילָנִי׃ 16
meis faciebus à & : obſcuritatis faciebus à ſum exciſus non Quoniam
כִּי־לֹא נִצְמַתִּי מִפְּנֵי־חֹשֶׁךְ וּמִפָּנַי 17
.caliginem operuit
כִּסָּה־אֹפֶל׃

CAP. XXIV. כד

videbunt non eum ſcientes & : tempora ſunt occultata non Sadai à Cur
מַדּוּעַ מִשַּׁדַּי לֹא־נִצְפְּנוּ עִתִּים וְיֹדְעוֹ לֹא־חָזוּ 1
.paverunt & ,rapuerunt gregem ,attingent Terminos ? ejus dies
יָמָיו׃ גְּבֻלוֹת יַשִּׂיגוּ עֵדֶר גָּזְלוּ וַיִּרְעוּ׃ 2
.viduæ bovem accipient pignus in : ducent pupillorum Aſinum
חֲמוֹר יְתוֹמִים יִנְהָגוּ יַחְבְּלוּ שׁוֹר אַלְמָנָה׃ 3
.terræ humiles latuerunt pariter : via de egenos facient Divertere
יַטּוּ אֶבְיֹנִים מִדָּרֶךְ יַחַד חֻבְּאוּ עֲנִיֵּי־אָרֶץ׃ 4
mane ſurgentes ,ſuum opus ad ſunt egreſſi deſerto in onagri Ecce
הֵן פְּרָאִים בַּמִּדְבָּר יָצְאוּ בְּפָעֳלָם מְשַׁחֲרֵי 5
ejus pabulum agro In .pueris panis ei ſolitudo : rapinam ad
לַטָּרֶף עֲרָבָה לוֹ לֶחֶם לַנְּעָרִים׃ בַּשָּׂדֶה בְּלִילוֹ 6
facient pernoctare Nudum .facient tardare impii vineam & : demetent
יִקְצוֹרוּ וְכֶרֶם רָשָׁע יְלַקֵּשׁוּ׃ עָרוֹם יָלִינוּ 7
inundatione Ab .frigore in operimentum non & : veſtimento abſque
מִבְּלִי לְבוּשׁ וְאֵין כְּסוּת בַּקָּרָה׃ מִזֶּרֶם 8
.petram ſunt amplexati protectione abſque & : madefient montium
הָרִים יִרְטָבוּ וּמִבְּלִי מַחְסֶה חִבְּקוּ־צוּר׃
.pignus accipient pauperem ſuper & : pupillum ubere ab Rapient
יִגְזְלוּ מִשֹּׁד יָתוֹם וְעַל־עָנִי יַחְבֹּלוּ׃ 9
tulerunt famelicis & : veſtimento abſque fecerunt ambulare Nudum
עָרוֹם הִלְּכוּ בְּלִי לְבוּשׁ וּרְעֵבִים נָשְׂאוּ 10
,calcaverunt torcularia : oleum expriment ſuos muros Inter .manipulum
עֹמֶר׃ בֵּין שׁוּרֹתָם יַצְהִירוּ יְקָבִים דָּרְכוּ 11
occiſorum anima & ,gement viri urbe De .ſitiverunt &
וַיִּצְמָאוּ׃ מֵעִיר מְתִים יִנְאָקוּ וְנֶפֶשׁ־חֲלָלִים 12
fuerunt Ipſi .inſulſum ponet non Deus & : vociferabitur
תְּשַׁוֵּעַ וֶאֱלוֹהַּ לֹא־יָשִׂים תִּפְלָה׃ הֵמָּה הָיוּ 13
ſederunt nec : ejus vias cognoverunt non ,luminis rebelles inter
בְּמֹרְדֵי־אוֹר לֹא־הִכִּירוּ דְרָכָיו וְלֹא יָשְׁבוּ
.ejus ſemitis in
בִּנְתִיבֹתָיו׃

Verſio VULG. LAT.

8 Si ad Orientem iero, non apparet : ſi ad Occidentem, non
9 intelligam eum. Si ad ſiniſtram, quid agam ? non apprehendam eum: ſi me vertam
ad dexteram, non videbo illum.
10 Ipſe verò ſcit viam meam, & probavit me quaſi aurum,
quod per ignem tranſit :
11 Veſtigia ejus ſecutus eſt pes
meus, viam ejus cuſtodivi, &
12 non declinavi ex ea. A mandatis labiorum ejus non receſſi,& in ſinu meo abſcondi verba
13 oris ejus. Ipſe enim ſolus
eſt, & nemo avertere poteſt
cogitationem ejus : & anima
ejus quodcunque voluit, hoc
14 fecit. Cùm expleverit in me
voluntatem ſuam, & alia multa
15 ſimilia præſtò ſunt ei. Et
idcircò à facie ejus turbatus
ſum, & conſiderans eum, timore
16 ſolicitor. Deus mollivit cor meum, & Omnipotens
17 conturbavit me. Non enim
perii propter imminentes tenebras, nec faciem meam operuit caligo.

CAP. XXIV.

1 AB Omnipotente non ſunt
abſcondita tempora : qui autem noverunt eum, ignorant
2 dies illius. Alii terminos tranſtulerunt, diripuerunt greges,
3 & paverunt eos. Aſinum pupillorum abegerunt, & abſtulerunt pro pignore bovem viduæ.
4 Subverterunt pauperum
viam, & oppreſſerunt pariter
5 manſuetos terræ. Alii quaſi
onagri in deſerto egrediuntur
ad opus ſuum : vigilantes ad
prædam, præparant panem
6 liberis. Agrum non ſuum demetunt : & vineam ejus,quem
vi oppreſſerint, vindemiant.
7 Nudos dimittunt homines, indumenta tollentes, quibus non
eſt operimentum in frigore :
8 Quos imbres montium rigant:
& non habentes velamen,amplexantur
9 lapides. Vim fecerunt deprædantes pupillos, &
vulgum pauperem ſpoliaverunt.
10 Nudis & incedentibus
abſque veſtitu, et eſurientibus
11 tulerunt ſpicas. Inter acervos
eorum meridiati ſunt, qui calcatis
12 torcularibus ſitiunt. De
civitatibus fecerunt viros gemere, & anima vulneratorum
clamavit, & Deus inultum
13 abire non patitur. Ipſi fuerunt
rebelles lumini, neſcierunt
vias ejus, nec reverſi ſunt per
ſemitas ejus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

8 † (κ) Εἰ γὰρ πρῶτος πορεύσομαι, καὶ οὐκ ἔτι
εἰμὶ, † τὰ δὲ ἐπ᾽ ἐσχάτοις, τί οἶδα ; †
9 Ἀριστερὰ ποιήσαντος αὐτοῦ καὶ οὐ κατέσχον,
10 † περιβαλεῖ δεξιὰ καὶ οὐκ ὄψομαι. † Οἶδε
γὰρ ἤδη (λ) ὁδόν μου· † διέκρινε δέ με
11 ὥσπερ τὸ χρυσίον. † Ἐξελεύσομαι δὲ ἐν
ἐντάλμασιν αὐτοῦ, † ὁδοὺς γὰρ αὐτοῦ ἐφύλαξα,
καὶ οὐ μὴ ἐκκλίνω † (μ) ἀπὸ ἐνταλμάτων
12 αὐτοῦ, Καὶ οὐ μὴ παρέλθω, †(ν)
ἐν δὲ κόλπῳ μου ἔκρυψα ῥήματα αὐτοῦ.
13 † Εἰ δὲ καὶ αὐτὸς ἔκρινεν οὕτως, † τίς ἐστιν
ὁ (ξ) ἀντειπὼν αὐτῷ ; † ὃ γὰρ αὐτὸς ἠθέλησε,
14 καὶ ἐποίησεν. † Διὰ τοῦτο ἐπ᾽
αὐτῷ (ο) ἐσπούδακα· † νουθετούμενος δὲ,
15 ἐφρόντισα αὐτοῦ. † Ἐπὶ τούτῳ ἀπὸ προσώπου
αὐτοῦ κατασπουδασθῶ· † κατανοήσω,
16 καὶ πτοηθήσομαι ἐξ αὐτοῦ. (π) Κύριος δὲ
ἐμαλάκυνε τὴν καρδίαν μου· † ὁ δὲ παντοκράτωρ
17 (ρ) ἐσπούδασέν με. † Οὐ γὰρ ᾔδειν
ὅτι (σ) ἐπελεύσεταί μοι σκότος, †
(τ) πρὸ προσώπου δέ μου ἐκάλυψε γνόφος.

Nam (l) ſi primus ambulavero, & (m) non ultrà ſum ; 8
quæ autem in noviſſimis, quid
novi ? (n) A læva ſi ipſe 9
aget, & non apprehendi : circumteget dextra, & non videbo.
Scit enim jam viam meam : probavit autem me, ſicut 10
aurum. (o) Egrediar autem 11
in præceptis ejus. Vias enim
ejus cuſtodivi, & non declino
à præceptis ejus, Et non prætercam : 12
in ſinu autem meo
abſcondi verba ejus. Si autem 13
& ipſe judicavit ſic ; quis eſt
qui contradicat ei ? ipſe enim
voluit & fecit. (p) Propterea 14
ſuper ipſo trepidavi, &
commonitus ſolicitus fui de
eo. Idcircò à facie ejus (q) 15
turbabor : (r) conſiderabo, &
timebo ab eo. Et Dominus 16
mollivit cor meum : & Omnipotens (ſ) ſolicitavit me. Non 17
enim noveram quod ſupervenient mihi tenebræ : & ante
faciem meam operuit caligo.

ΚΕΦ. κδ΄.

1 † Διατί δὲ (α) κύριον ἔλαθον ὧραι, †
2 Ἀσεβεῖς δὲ ὅριον ὑπερέβησαν, ποίμνιον
3 σὺν ποιμένι ἁρπάσαντες ; † Ὑποζύγιον
(β) ὀρφανῶν ἀπήγαγον, † καὶ βοῦν χήρας ἠνεχύρασαν.
4 (γ) Ἐξέκλιναν ἀδυνάτους ἐξ
ὁδοῦ δικαίας, † ὁμοθυμαδὸν δὲ ἐκρύβησαν
5 πραεῖς γῆς. (δ) Ἀπέβησαν δὲ ὥσπερ ὄνοι
ἐν ἀγρῷ, † ὑπὲρ ἐμοῦ ἐξελθόντες (ε)
τὴν ἑαυτῶν τάξιν· (ζ) ἡδύνθη αὐτῷ
6 ἄρτος εἰς νεωτέρους. Ἀγρὸν πρὸ ὥρας οὐκ
αὐτῶν ὄντα ἐθέρισαν. ἀδύνατοι ἀμπελῶνας
ἀσεβῶν ἀμισθὶ καὶ ἀσιτὶ εἰργάσαντο.
7 † Γυμνοὺς πολλοὺς ἐκοίμισαν ἄνευ ἱματίων,
† ἀμφίασιν δὲ ψυχῆς ([illegible]) αὐτῶν ἀφείλαντο.
8 † Ἀπὸ ψεκάδων ὀρέων ὑγραίνονται, †
(η) παρὰ τὸ μὴ ἔχειν ἑαυτοὺς σκέπην,
9 πέτραν περιεβάλοντο. † (θ) Ἥρπασαν ὀρφανὸν
ἀπὸ μαστοῦ, † ἐκπεπτωκότα δὲ ἐταπείνωσαν·
10 † (ι) Γυμνοὺς δὲ ἐκοίμισαν ἀδίκως,
† πεινώντων δὲ (κ) τὸν ψωμὸν ἀφείλαντο.
11 † (λ) Ἐν στενοῖς ἀδίκως ἐνήδρευσαν,
12 † ὁδὸν δὲ (μ) δικαίαν οὐκ ᾔδεισαν. † (ν) Οἳ
ἐκ πόλεως καὶ οἴκων ἰδίων ἐξεβάλοντο,
† ψυχὴ δὲ νηπίων ἐστέναξε (ξ) μέγα. † αὐτὸς
δὲ διατί τούτων ἐπισκοπὴν οὐ πεποίηται;
13 † (ο) Ἐπὶ γῆς ὄντων αὐτῶν καὶ οὐκ ἐπέγνωσαν,
† ὁδὸν δὲ δικαιοσύνης οὐκ ᾔδεισαν,
(π) † οὐδὲ ἀτραποὺς αὐτῶν ἐπορεύθησαν.

CAP. XXIV.

Quarè autem Dominum (a) 1
latuerunt horæ ? Et (b) impii 2
terminum (c) tranſgreſſi ſunt,
gregem cum paſtore rapientes ?
Subjugale pupillorum abduxerunt, 3
& bovem viduæ pro pignore tulerunt :
(d) Divertere fecerunt impotentes à via 4
juſta : & ſimul (e) abſconditi
ſunt mites terræ. Et evaſerunt 5
tanquàm aſini in agro ,
ſuper (f) me, egreſſi ſuum ipſorum
(g) ordinem : (h) ſuavis factus eſt ei panis in adoleſcentes.
Agrum ante tempus 6
non ſuum demeſſuerunt.
Impotentes vineas impiorum
ſine mercede & ſine cibo operati
ſunt. Nudos multos dormire 7
fecerunt ſine veſtimentis,
& indumentum animæ eorum
abſtulerunt. De ſtillicidiis montium 8
madeſcunt : eò quòd ipſi
(i) non habeant operimentum:
petram ſibi circumdederunt.
Rapuerunt ab ubere pupillum, 9
& eum qui (k) ceciderat,
humiliaverunt. Et nudos dormire 10
fecerunt injuſtè, & eſurientiū
buccellā abſtulerunt. In 11
anguſtiis inſidiati ſunt iniquè,
& viam juſtam non noverunt.
Hi de civitate et domibus propriis 12
ejiciebantur, anima verò
parvulorum in gemitu valdè
fuit. Ipſe (l) autem cur horum viſitationem non fecit? Cùm ſuper 13
terram ipſi eſſent, Et non agnoverunt, & viam juſtitiæ non noverunt,neque ſemitas (m) eorum ambulaverunt.

MS.A. (κ) Ἐὰν γὰρ πορευθῶ εἰς τὰ πρῶτα, οὐκέτι εἰμὶ, (λ) ὁδόν με αὐτός· καὶ διέκρινέν με ὥσπερ χρυσίον. (μ) ἀπὸ ἐντολῶν αὐτοῦ Οὐ μὴ (ν) ἵνα μὴ ἀποθάνω, ἐν δὲ κόλπῳ (ξ) ἀντερῶν (ο) ἐσπουδάκειν· (π) Κύριός μου ἐμαλάκυνεν (ρ) ἐσπούδακεν ἐπ᾽ ἐμέ. (σ) ἐπελεύσετέ μοι γνόφος, (τ) πρόσωπον δέ μου καλύψει σκότος. Κεφ. κδ΄. MS.A. (α) κύριν ἔλαθον ὧραι ἀσεβεῖς ἄνδρες ; ὅριον δὲ ὑπερέβησαν, καὶ ποίμνιον σὺν ποιμαίνει ἥρπασαν ; (β) δὲ ὀρφανῶν (γ) Ἐξέκλινον δὲ ἀδυνάτους (δ) Καὶ ἀπέβησαν (ε) τῇ ἑαυτῶν πράξει. Ἀγρὸν πρὸ ὥρας (ζ) * ἡδυνήθη δὲ αὐτῷ ἄρτος εἰς νεωτέρους· ἀδύνατοι δὲ ἀσεβῶν ἀμπελῶνας ἀσιτὶ καὶ ἀμισθὶ εἰργάσαντο. Γυμνοὺς δὲ πολλοὺς ([illegible]) ἑαυτῶν (η) καὶ παρὰ τὸ (θ) Ἥρπασαν δὲ ὀρφανοὺς ἀπὸ μαστοῦ, καὶ ἐκπεπτωκότα ἐταπείνωσαν· (ι) Γυμνοὺς ἐκοίμισαν (κ) ψωμὸν (λ) Ἐν σκοπινοῖς ἐνήδρευσαν ἀδίκως (μ) δικαίαν (ν) Ἐκ πόλεως, καὶ ἐξ οἰκιῶν ἰδίων ἐξέβαλον αὐτοὺς, (ξ) μεγάλως. (ο) ἔτι ὄντων αὐτῶν ἐπὶ γῆς, καὶ οὐκ * ἐπεγνώσομαι, (π) οὐδὲ ἐπορεύθησαν ἀτραποὺς αὐτῆς.

תרגום TARGUM.

הָא לְמַדִּנְחָא אֶהֱלוֹךְ וְלֵיתוֹי וּלְמַעַרְבָא וְלָא אֶתְבְּיַן לֵיהּ : בִּצְפוּנָא בְּמֶעְבְּדֵיהּ וְלָא אֶחְמֵי כַּד מְכַבֵּן דָּרוֹמָא וְלָא אֶסְכֵּי : אֲרוּם גְּלֵי קֳדָמוֹי אוֹרְחָא 8 10
דְעִמִּי בְּחַן יָתִי הֵיךְ דַּהֲבָא אַפֵּיק : בְּאַסְתּוֹרֵיהּ אֲחַדַת רִגְלִי אוֹרְחָתֵיהּ נַטְרִית וְלָא צְלֵית : פּוּקְדָנָא דְסִפְוָתוֹי וְלָא אֶעְדֵּי מִגְּזֵרָתִי אֲטְשֵׁית מֵימְרֵי פוּמוֹי : וְאִין 11 12 13
הוּא יְחִידָאִי וּמַן יְתִיבִנֵּיהּ וְנַפְשֵׁיהּ רְגַנַת וַעֲבַדַת : אֲרוּם יַשְׁלִים הֵיךְ בְּקַדְמֵיתָא גְּזֵרָתִי וּדְכְמַתְהוֹן סַגִּיעִין עִמֵּיהּ : מְטוּל דְּהֵיכְנָא מִן קֳדָמוֹי 14 15
אֶתְבְּהֵל אֶתְבְּיַן וְאֶדְחַל מִנֵּיהּ : וֶאֱלָהָא רַכֵּךְ לִבְבִי וְשַׁדַּי בַּהֲלַנִּי : אֲרוּם לָא אִתְנְטֵרֵית מִן קֳדָם חֲשׁוֹךְ וּמִן קֳדָמַי טְמַר קִבְלָא : 16 17

כד

מַדִּין מִשַּׁדַּי לָא אִתְטִישׁוּ עִדָּנַיָּא וּדְחַכִּימִין יָתֵי לָא חָמַיִן יוֹמוֹי : תְּחוּמַיָּא יַשְׁנוּן עֶדְרָא אֲנַסוּן וּרְעוֹן : חֲמָרָא דְיַתְמֵי יְדַבְּרוּן יְמַשְׁכְּנוּן תּוֹר 1 2 3
אַרְמַלְתָא : יַצְלוּן חֲשִׁיכֵי מִן אוֹרְחָא כַּחֲדָא אִטְּמַרוּ מִסְכְּנֵי אַרְעָא : הֵיךְ דֵּין כִּמְרוֹדַיָּא בְּמַדְבְּרָא נְפַקוּ לְעוּבָדֵיהוֹן בִּישַׁיָּא מְקַדְּמִין לְבִזָּא בְמֵשְׁרָא אָנֵס 4 5
לֵיהּ מְזוֹנָא לְטַלְיֵיהּ : בְּחַקְלָא מִדְּלָא דִלְהוֹן חָצְדִין וְכַרְמָא דְרַשִּׁיעֵי יְכַסְּחוּן : עַרְטִלַּי יְבִיתוּ דְּלֵית כְּסוּתָא וּדְלֵית לְהוֹן חוֹפָאָה בְּקוֹרָא : 6 7
מִקְּלוּחַיָּא דְטוּרַיָּא מִטַּמְּשִׁין וּמִדְּלֵית מִשְׁרוֵי נַפְפוּ טִינָרָא : יְאַנְּסוּן מִבּוֹת יְתָם וְעַל עַנְיָא מְמַשְׁכְּנִין : עַרְטִלַּי אוֹלִיכוּ מִדְּלֵית כְּסוּ וּכְפַנִּין נְטַלוּ מִנְהוֹן עוֹמְרָא : 8 9 10
בֵּינֵי אֻשְׁוָתְהוֹן יַעְצְרוּן מְשַׁח מַעֲצַרְתָּא עֲצַרוּ וּמָרֵיהוֹן אִצְחִיאוּ : מִקִּרְתָּא בְּנֵי נָשָׁא נָהֲקִין וְנַפְשַׁת קְטוּלִין בְּחַרְבָּא תַּצְלֵי וֶאֱלָהָא לָא יְשַׁוֵּי חוֹבָא : הִנּוּן הֲווֹ 11 12 13
בְּמָרְדִין בְּאוֹרַיְתָא לָא אִשְׁתְּמוֹדָעוּ אוֹרְחָתֵיהּ וְלָא אִתְיְתִבוּ בִּשְׁבִילוֹי :

Versio SYRIACA.

8 * ܐܢ ܩܕܡܝ ܐܙܠ. ܠܐ ܝܕܥ ܐܢܐ. ܘܐܢ ܒܣܬܪܝ. ܠܐ ܡܣܬܟܠ ܐܢܐ ܒܗ. * ܠܣܡܠܐ ܒܥܝܬܗ. ܘܠܐ ܐܬܚܙܝ ܠܝ.
9 ܘܐܬܦܢܝܬ ܠܝܡܝܢܝ. ܘܠܐ ܚܙܝܬܗ. * ܗܘ ܕܝܢ ܝܕܥ ܐܘܪܚܝ ܘܡܩܡܝ. ܘܒܚܢܢܝ ܐܝܟ ܕܗܒܐ ܘܢܦܩܬ.
10 11 * ܘܒܫܒܝܠܘܗܝ ܐܬܚܝܠܬ ܪܓܠܝ. ܐܘܪܚܬܗ ܢܛܪܬ. * ܘܠܐ ܫܛܬ ܦܘܩܕܢܘܗܝ ܣܦܘܬܝ. ܘܠܐ ܥܢܕܬ ܡܢ
12 ܨܒܝܢܗ. ܢܛܪܬ ܡܠܐ ܕܦܘܡܗ. * ܘܗܘ ܒܚܕܐ ܡܢ ܗܠܝܢ. ܡܢܘ ܢܦܢܝܘܗܝ. ܘܢܦܫܗ ܨܒܝܬ. ܘܥܒܕ.
13 * ܡܛܠ ܕܫܠܡ ܦܘܩܕܢܗ. ܘܐܝܟ ܗܠܝܢ ܣܓܝܐܬܐ ܐܝܬ ܠܘܬܗ. * ܡܛܠ ܗܢܐ. ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ ܐܬܬܙܝܥܬ.
14 15 ܘܐܣܬܟܠܬ ܘܕܚܠܬ ܡܢܗ. * ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܐܪܟܟ ܠܒܝ. ܘܪܫܝ ܐܬܬܙܝܥ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܫܬܬܩܬ ܡܢ ܩܕܡ
16 17 ܚܫܘܟܐ ܘܡܢ ܩܕܡ ܐܦܠܐ ܕܥܡܛܢܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܕ *

1 * ܡܛܠ ܡܢܐ ܡܢ ܐܠܗܐ
ܠܐ ܐܬܛܫܝܘ ܥܘܠܐ. ܘܐܬܝܕܥܘ. ܘܠܐ ܚܙܘ ܝܘܡܬܗܘܢ. * ܘܥܒܪܘ ܬܚܘܡܐ. ܘܕܒܪܘ ܥܢܐ. * ܘܚܡܪܐ ܕܝܬܡܐ 2 3
ܕܒܪܘ. ܘܡܫܟܢܘ ܬܘܪܐ ܕܐܪܡܠܬܐ. * ܘܐܬܛܫܝܘ ܡܣܟܢܐ ܡܢ ܐܘܪܚܐ. ܘܐܟܚܕܐ ܐܬܛܫܝܘ ܡܟܝܟܐ ܕܐܪܥܐ. * ܐܝܟ 4
5 ܚܡܪܐ ܕܒܒܪܐ. ܘܡܩܕܡܝܢ ܠܡܐܟܘܠܬܐ ܠܚܡܐ ܠܛܠܝܗܘܢ. * ܘܒܚܩܠܐ ܚܫܝܫܐ ܕܠܐ ܕܝܠܗܘܢ ܚܨܕܝܢ. 6
ܘܟܪܡܐ ܕܪܫܝܥܐ ܢܩܛܦܘܢ. * ܥܪܛܠܝܐ ܡܒܝܬܝܢ ܡܢ ܕܠܐ ܠܒܘܫܐ. ܘܠܝܬ ܟܣܝܐ ܒܩܪܝܫܐ. * ܡܢ ܙܪܡܐ 7 8
ܕܛܘܪܐ ܢܬܪܛܒܘܢ. ܘܡܢ ܕܠܐ ܟܣܝܐ ܢܓܦܘܢ ܟܐܦܐ. * ܢܓܙܠܘܢ ܡܢ ܬܕܝܐ ܝܬܡܐ. ܘܥܠ ܡܣܟܢܐ 9
ܦܣܐ ܐܪܡܝܘ. * ܥܪܛܠܝܐ ܗܠܟܘ. ܡܢ ܕܠܐ ܠܒܘܫܐ. ܘܟܦܢܐ ܫܩܠܘ ܠܚܡܐ. ܘܒܕܘܟܬ ܡܫܬܘܝܐ ܡܣܬܡܟܝܢ. 10
11 ܘܟܦܢܝܢ. ܗܢܘܢ ܥܒܕܝܢ ܟܝܠܐ ܘܡܫܘܚܬܐ. * ܘܐܡܬܝ ܕܟܦܢܝܢ ܥܠ ܦܬܘܪܝܗܘܢ. ܘܡܥܨܪܝܢ ܡܥܨܪܬܐ. ܘܨܗܝܢ. * ܡܢ 12
ܓܘ ܡܕܝܢܬܐ ܡܝܬܐ ܢܬܐܢܚܘܢ. ܘܢܦܫܐ ܕܩܛܝܠܐ ܓܥܝܐ. ܘܐܠܗܐ. ܠܐ ܢܩܒܠ ܨܠܘܬܗܘܢ. * ܗܢܘܢ ܗܘܘ 13
ܡܪܝܕܝܢ ܠܢܘܗܪܐ. ܘܠܐ ܝܕܥܘ ܐܘܪܚܬܗ. ܘܠܐ ܗܠܟܘ ܒܫܒܝܠܘܗܝ.

Versio ARABICA.

8 * فانه ان كان قدامي اي ينطلق فاني لا اعرفه * وان كان ورائي فاني * لا استبينه * من شمالي 9
طلبت * فلم يتراي لي * وعطفت الي يميني فلم ابصره * وهو يعرف طريقي ومقامي * ويجربني مثل 10
الذهب * خرجت * وفي سبله تشددت رجلي * طرايقه حفظتها * ولم تستخف بوصاياه شفتي * ولم ابتعد 11 12
من رضاه * حفظت كلام فمه * وهو بواحد من هولاي * فماذا يثنيني اذا ارضيت نفسه * وصنع * 13
لكني اوفي بعهده * ومثل هذا كثيرا لي عنده * فمن اجل هذا من قدامه حسبت وفهمت وفزعت 14 15
منه * من اجل ان الله افزع قلبي وراسي ترعرع * اني لم اصمت من بين يدي الظلمة * ومن غشيان 16 17
الظلام * * الفصل الرابع والعشرون *

1 2 * من اجل ماذا من قدام الله لم تستخفي المنافقون * وعرفوا ولم يروا ايامهم * وتجاوزوا الحدود *
3 4 واستاقوا الاقراف * وحمار اليتيم استاقوا * وارهنوا ثوب الارملة * واختفا البايسون من الطريق * وجميعا
5 6 اختفا متواضعوا الارض * ومثل حمير الوحش في القفر الذين يسعون لاطعام الخبز لشبابهم * وفي
7 الحقل شجينا لهم يحصدون * وكروم المنافقين تلقس * يبيت العريان بغير لبوس * وليس كسوة مع
8 9 البرد * من مجاري الجبال يترطبون * ومن قلة الغطاء يعتنقون الحجارة * يخطفون من غصب اليتامى *
10 وعلي المساكين انصبة يطرحون * مشوا عراة بغير لبوس * والجياع اخذوا خبزا * وموضع الموايد
11 يتكون * ويجوعون وهم يجعلون السنة والمكيال * وفي اوان يجوعون على موايدهم * ومعاصر يعصرون
12 13 فيعطشون * ومن جوف القرية الاموات يستصرخون * وانفس القتلى تعج * والله لا يقبل صلواتهم * هم
كانوا في اعالي النور فلم يفهموا طرايقه ولم يسلكوا سبله *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

(c) Nam ſi fuerit ante me, quò abeat ignoro; et ſi fuerit poſt me, non percipio illum. 8 Ad lævam meam quæſivi, nec apparuit mihi; 9 & (f) verti me ad dexteram meam, nec vidi eum. Ipſe verò novit iter meum, et ſtationem meam: et tentavit me, tanquam aurum egreſſus ſum. 10 Et in ſemitis ejus (g) prævaluit pes meus: vias ejus cuſtodivi, neq; (h) deſpexerunt mandata ejus labia mea, 11 Nec receſſi à voluntate illius: ſervavi verba oris ejus. 12 Et ipſe ad unum ex his quid reſpondebit mihi, cùm placuerim animæ ejus, & fecerit? 13 At verò complebo teſtamentū ipſius. Et his ſimilia plura habeo ad illum, 14 Et proptereà à conſpectu ejus timui, & intellexi, ac metui eum, 15 Quoniam Deus terruit cor meum, caput meum concuſſum eſt. 16 Non enim ſilui à conſpectu tenebrarum, & ab obſcuritate caliginis. 17

CAP. XXIV.

PRopter quid à (a) conſpectu Dei non latuerunt impii, & cogniti fuerunt, ac non viderunt dies ſuos. 1 Et tranſgreſſi ſunt limites, & abduxerunt greges. 2 Et aſinum pupilli duxerunt, & pigneraverunt (b) veſtem viduæ. 3 Et abſconderunt ſe inopes de via, & ſimul delituerunt humiles terræ, 4 Et quaſi onagri in deſerto, qui præproperant ad cibandū pane adoleſcentes ſuos, 5 Et in agro (c) fœnum pro eis metunt, & vineas impiorum vindemiant. 6 Pernoctat nudus abſq; indumentis, nec eſt veſtimentum cum frigore. 7 De (d) rivis montium humeſient, et præ defectu operimenti amplectentur petras. 8 Rapient de violentia pupillorum, et ſuper pauperes ſortes projicient. 9 Ambulaverunt nudi abſque veſtimentis, & famelici ſumpſerunt panem: & in loco (e) menſæ recumbent, & eſurient: & ipſi (f) conſtituunt modium & menſuram, 10 Et aliquando eſuriunt ſuper (g) menſis ſuis: & torcularia exprimenț, & ſitient. 11 Et de medio civitatis mortui lic ſugent, & anima interfectorum mugient, et Deus non accipiet precationes eorum. 12 Ipſi erant in ſuprema luce, & non intellexerunt vias ejus, neque ambulaverunt in ſemitis illius. 13

INTERP. SYRIACA.

(e) Si ambulaverit ante me, ignoro; (f) operui ad (g) corroboratur pes (h) deſpexi mandata labiorum ejus. CAP. xxiv. (a) Deo (b) bovem (c) pabulū non ſuum metunt, (d) vehementioribus montiū imbribus (e) conviviorum (f) ſumunt (g) epulis ſuis:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Si ad Orientem iero, non comparet; & ſi ad Occidentem, non intelligam illum. *Ad* Aquilonem cum fecerit, non videbo; quando *texerit ſe* ad Auſtrum, non intuebor illum. 8 9 Quoniam manifeſta eſt coram eo via mea: probavit me; & quaſi aurum egrediar. 10 Semitam ejus apprehendit pes meus; viam ejus cuſtodivi, nec declinavi. 11 A præcepto labiorum ejus non receſſi, à decreto meo abſcondi verba oris ejus. 12 Et *ſi* ipſe eſt ſolus, & quis avertet eum? & anima ejus quod deſideravit hoc fecit. 13 Quoniam perficiet ſicut in principio ſtatutum meum, & multa ſimilia ſunt apud eum. 14 Propterea à facie ejus turbabor: intelligam, & timebo ab eo. 15 Deus autem emollivit cor meum, & omnipotens conturbavit me. 16 Quoniam non ſum conſumptus à facie tenebrarum, & à facie mea operuit caligo. 17

CAP. XXIV.

QUare ab omnipotente non ſunt abſcondita tempora, & qui ſciunt *me* non viderunt dies ejus? 1 Terminos mutaverunt, diripuerunt gregem & paverunt. 2 Aſinum pupillorum abigunt, & pignorant bovem viduæ. 3 Avertunt pauperes à via: ſimul abſconduntur inopes terræ. 4 Ecce ſicut onagri in deſerto, egreſſi ſunt ad opera ſua mala, manè conſurgentes ad prædam, *in planicie diripit ſibi cibum* & pueris *ſuis*. 5 In agro non ſuo metunt, & vineam impiorum amputant. 6 Nudos faciunt pernoctare abſq; indumento, quibus non eſt operimentum in frigore. 7 A *diffluxionibus* montium madefacti ſunt, & non habentes habitaculum amplexati ſunt petram. 8 Rapiunt ab ubere pupillum, & pignus pauperum accipiunt. 9 Nudum fecerunt ambulare abſq; operimento, & à famelicis tulerunt manipulum. 10 Inter ſepta ſua exprimunt oleum, torcularia calcaverunt, & domini eorum ſitiebant. 11 De civitate filii hominum gemunt, & anima eorum qui ſunt occiſi gladio, clamat: *Et* Deus non imponat eis peccatum? 12 Ipſi fuerunt rebelles Legi: non cognoverunt viam ejus, nec habitaverunt in ſemitis illius. 13

איוב : כה כו

noſte in & : egenum & ,pauperem interficiet ,homicida ſurget luce In
14 לָאוֹר יָקוּם רוֹצֵחַ יִקְטָל־עָנִי וְאֶבְיוֹן וּבַלַּיְלָה
, crepuſculum obſervavit adulteri oculus Et .fur tanquam erit
15 יְהִי כַגַּנָּב׃ וְעֵין נֹאֵף שָׁמְרָה נֶשֶׁף
.ponet facierum abſconſionem & : oculus me aſpiciet Non :dicendo
לֵאמֹר לֹא־תְשׁוּרֵנִי עָיִן וְסֵתֶר פָּנִים יָשִׂים׃
cognoverunt non ,ſibi ſignaverunt die , domos tenebra in Fodit
16 חָתַר בַּחֹשֶׁךְ בָּתִּים יוֹמָם חִתְּמוּ־לָמוֹ לֹא־יָדְעוּ
agnoverit cùm : mortis umbra eis mane pariter Quia .lucem
17 אוֹר׃ כִּי יַחְדָּו בֹּקֶר לָמוֹ צַלְמָוֶת כִּי־יַכִּיר
, aquarum facies ſuper ipſe Levis .mortis umbræ terrores
18 בַּלְהוֹת צַלְמָוֶת׃ קַל־הוּא עַל־פְּנֵי־מַיִם
.vinearum viam reſpiciet non : terra in eorum pars maledicetur
תְּקֻלַּל חֶלְקָתָם בָּאָרֶץ לֹא־יִפְנֶה דֶּרֶךְ כְּרָמִים׃
ſepulchrum , nivis aquas rapient calor etiam Siccitas
19 צִיָּה גַם־חֹם יִגְזְלוּ מֵימֵי־שֶׁלֶג שְׁאוֹל
.vermis ejus dulcore capietur , miſeratio ipſum Obliviſcetur .peccaverunt
20 חָטָאוּ׃ יִשְׁכָּחֵהוּ רֶחֶם מְתָקוֹ רִמָּה
Frangens .iniquitas lignum ut ,confringetur &:memorabitur non Adhuc
21 עוֹד לֹא־יִזָּכֵר וַתִּשָּׁבֵר כָּעֵץ עַוְלָה׃ רֹעֶה
traxit Et .benefaciet non viduæ & : pareret ne , ſterilem
22 עֲקָרָה לֹא תֵלֵד וְאַלְמָנָה לֹא יְיֵטִיב׃ וּמָשַׁךְ
ei Dabit .vitis in credidit non & , ſtetit :ſua potentia in fortes
23 אַבִּירִים בְּכֹחוֹ יָקוּם וְלֹא־יַאֲמִין בַּחַיִּין׃ יִתֶּן־לוֹ
ſe Suſtulerunt .eorum vias ſuper ejus oculi & :innitetur &,fiduciam ad
24 לָבֶטַח וְיִשָּׁעֵן וְעֵינֵיהוּ עַל־דַּרְכֵיהֶם׃ רוֹמּוּ
caput ſicut & :claudentur omnes ſicut,ſunt humiliati & ,ipſe non &,paululum
מְעַט וְאֵינֶנּוּ וְהֻמְּכוּ כַּכֹּל יִקָּפְצוּן וּכְרֹאשׁ
: me faciet mentiri quis ,ubinam non ſi Et .ſuccidentur ſpicæ
25 שִׁבֹּלֶת יִמָּלוּ׃ וְאִם־לֹא אֵפוֹ מִי יַכְזִיבֵנִי
? meum ſermonem nihilum ad ponet &
וְיָשֵׂם לְאַל מִלָּתִי׃

CAP. XXV. כה

timor & ,Dominium : dixit & , Suchites Bildad reſpondit Et
1 2 וַיַּעַן בִּלְדַּד הַשֻּׁחִי וַיֹּאמַר׃ הַמְשֵׁל וָפַחַד
numerus eſt Nunquid .ſuis excelſis in pacem faciens : eo cum
3 עִמּוֹ עֹשֶׂה שָׁלוֹם בִּמְרוֹמָיו׃ הֲיֵשׁ מִסְפָּר
quomodo Et ? ejus lux ſtabit non quem ſuper Et ? ejus agminibus
4 לִגְדוּדָיו וְעַל־מִי לֹא־יָקוּם אוֹרֵהוּ׃ וּמַה־
natus erit mundus quomodo & ? Deo cum homo juſtificabitur
יִּצְדַּק אֱנוֹשׁ עִם־אֵל וּמַה־יִּזְכֶּה יְלוּד
ſtellæ & : tabernaculum ponet non & ,lunam ad uſque Ecce ? muliere
5 אִשָּׁה׃ הֵן עַד־יָרֵחַ וְלֹא יַאֲהִיל וְכוֹכָבִים
filius & , vermis homo quia Etiam .ejus oculis in ſunt mundæ non
6 לֹא־זַכּוּ בְעֵינָיו׃ אַף כִּי־אֱנוֹשׁ רִמָּה וּבֶן־
? vermis hominis
אָדָם תּוֹלֵעָה׃

CAP. XXVI. כו

? potentia non cui ? es auxiliatus Cui : dixit & , Ijob reſpondit Et
1 2 וַיַּעַן אִיּוֹב וַיֹּאמַר׃ מֶה־עָזַרְתָּ לְלֹא־כֹחַ
: ſapientia non cui ?conſuluiſti Cui ? fortitudo non brachio Salvâſti
3 הוֹשַׁעְתָּ זְרוֹעַ לֹא־עֹז׃ מַה־יָּעַצְתָּ לְלֹא חָכְמָה
;ſermones annunciâſti Cui ? feciſti ſcire multitudinem in eſſentiam &
4 וְתֻשִׁיָּה לָרֹב הוֹדָעְתָּ׃ אֶת־מִי הִגַּדְתָּ מִלִּין
ſub de formabuntur Mortui ? te à exivit cujus anima &
5 וְנִשְׁמַת־מִי יָצְאָה מִמֶּךָּ׃ הָרְפָאִים יְחוֹלָלוּ מִתַּחַת
non & : eo coram infernus Nudus .eorum habitatores & , aquis
6 מַיִם וְשֹׁכְנֵיהֶם׃ עָרוֹם שְׁאוֹל נֶגְדּוֹ וְאֵין
: vacuum ſuper Aquilonem Extendens .perditioni operimentum
7 כְּסוּת לָאֲבַדּוֹן׃ נֹטֶה צָפוֹן עַל־תֹּהוּ
.nihilum ſuper terram ſuſpendens
תֹּלֶה אֶרֶץ עַל־בְּלִימָה׃

Verſio VUL. LAT.

14 Manè primo conſurgit homicîda, interficit egenum & pauperem: per noctem verò erit 15 quaſi fur. Oculus adulteri obſervat caliginem, dicens; Non me videbit oculus: & o-16 periet vultum ſuum. Perfodit in tenebris domos, ſicut in die condixerant ſibi, & igno-17 raverunt lucem. Si ſubitò apparuerit aurora, arbitrantur umbram mortis: & ſic in tenebris quaſi in luce ambulant. 18 Levis eſt ſuper faciem aquæ: maledicta ſit pars ejus in terra, nec ambulet per viam vi-19 nearum. Ad nimium calorem tranſeat ab aquis nivium, & uſque ad inferos peccatum 20 illius. Obliviſcatur ejus miſericordia: dulcedo illius vermes: non ſit in recordatione, ſed conteratur quaſi lignum 21 infructuoſum. Pavit enim ſterilem, quæ non parit, & vi-22 duæ benè non fecit. Detraxit fortes in fortitudine ſua: & cùm ſteterit, non credet vitæ 23 ſuæ. Dedit ei Deus locũ pœnitentiæ, & ille abutitur eo in ſuperbiam: oculi autem ejus 24 ſunt in viis illius. Elevati ſunt ad modicũ & non ſubſiſtent, et humiliabuntur ſicut omnia, & auferentur, & ſicut ſummitates 25 ſpicarũ contérentur. Quòd ſi non eſt ita, quis me poteſt arguere eſſe mentitum, et ponere ante Deum verba mea?

CAP. XXV.

1 Reſpondens autem Baldad 2 Suhites, dixit; Poteſtas & terror apud eum eſt, qui facit concordiam in ſublimibus ſuis. 3 Numquid eſt numerus militum ejus? & ſuper quem non ſurget 4 lumen illius? Numquid juſtificari poteſt homo comparatus Deo, aut apparere mundus na-5 tus de muliere? Ecce luna etiam non ſplendet: & ſtellæ non ſunt mundæ in conſpectu ejus: 6 Quantò magis homo putredo, & filius hominis vermis?

CAP. XXVI.

1 Reſpondens autem Job, di-2 xit; Cujus adjutor es? numquid imbecillis? & ſuſtentas brachium ejus, qui non eſt for-3 tis? Cui dediſti conſilium? forſitan illi, qui non habet ſapientiam, & prudentiam tuam 4 oſtendiſti plurimam. Quem docere voluiſti? nónne eum, 5 qui fecit ſpiramentum? Ecce gigantes gemunt ſub aquis, & 6 qui habitant cum eis. Nudus eſt infernus coram illo, & nullum eſt operimentum perditi-7 oni. Qui extendit Aquilonem ſuper vacuum, & appendit terram ſuper nihilum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

14 † Γνοὺς δὲ αὐτῶν τὰ ἔργα, παρέδωκεν αὐτοὺς εἰς σκότος, † καὶ νυκτὸς ἔσται ὡς 15 κλέπτης. † Καὶ ὀφθαλμὸς μοιχοῦ ἐφύλαξε σκότος, † λέγων, Οὐ (ρ) προνοήσει με ὀφθαλμὸς, † καὶ ἀποκρυβὴν (σ) προσώπου ἔθε-16 το. † Διώρυξεν ἐν σκότει οἰκίας, † (τ) ἡμέρας ἐσφράγισαν ἑαυτοὺς, † οὐκ ἐπέγνω-17 σαν φῶς. † Ὅτι ὁμοθυμαδὸν (υ) αὐτοῖς τὸ πρωῒ σκιὰ θανάτου, † ὅτι ἐπιγνώσεται 18 (φ) ταραχὰς σκιᾶς θανάτου. † Ἐλαφρός ἐστιν (χ) ἐπὶ πρόσωπον ὕδατος, † καταραθείη ἡ μερὶς αὐτῶν ἐπὶ γῆς, † ἀναφανείη δὲ τὰ φυτὰ αὐτῶν ἐπὶ γῆς ξηρά· † ἀγκαλίδα γὰρ (ψ) ὀρφανῶν ἥρπασαν. 19 † (ω) Εἶτ' ἀνεμνήσθη αὐτοῦ ἡ ἁμαρτία· † ὥσπερ δὲ ὁμίχλη δρόσου ἀφανὴς ἐγένετο. 20 † (α) Ἀποδοθείη δὲ αὐτῷ ἃ ἔπραξεν, † συντριβείη δὲ πᾶς ἄδικος ἴσα ξύλῳ ἀνιάτῳ. 21 † (β) Στεῖραν γὰρ οὐκ εὖ ἐποίησε, καὶ γύναιον 22 οὐκ ἠλέησε, † Θυμῷ δὲ (γ) κατέστρεψεν ἀδυνάτους· † ἀναστὰς τοιγαροῦν, οὐ μὴ πι-23 στεύσῃ (δ) κατὰ τῆς ἑαυτοῦ ζωῆς. † (ε) Μαλακισθεὶς, μὴ ἐλπιζέτω (ζ) ὑγιασθῆναι, ἀλλὰ πεσεῖται νόσῳ. † πολλοὺς γὰρ ἐκάκωσε τὸ 24 ὕψωμα αὐτοῦ, † Ἐμαράνθη δὲ (η) ὥσπερ μολόχη ἐν καύματι, † ἢ ὥσπερ στάχυς (θ) ἀπὸ κα-25 λάμης αὐτόματος ἀποπεσών. † Εἰ δὲ μή, τίς ἐστιν ὁ (ι) φάμενος ψευδῆ με λέγειν, † καὶ θήσει (κ) εἰς οὐδὲν τὰ ῥήματά μου;

ΚΕΦ. κε'.

1 † Ὑπολαβὼν δὲ Βαλδὰδ ὁ Σαυχίτης, λέ-2 γει, † Τί (α) γὰρ προοίμιον ἢ φόβος παρ' αὐτοῦ, † ὁ ποιῶν τὴν σύμπασαν ἐν ὑψί-3 στῳ (β); † Μὴ γάρ τις ὑπολάβοι ὅτι ἐστὶ παρέλκυσις πειραταῖς· † ἐπὶ τίνας δὲ (γ) 4 οὐκ ἐπελεύσεται ἔνεδρα παρ' αὐτοῦ; † Πῶς γὰρ ἔσται (δ) δίκαιος βροτὸς ἔναντι κυρίου; † ἢ τίς ἂν ἀποκαθαρίσαι (ε) αὐτὸν 5 γεννητὸς γυναικός; (ζ) Εἰ σελήνη συντάσσει, καὶ οὐκ ἐπιφαύσκει, † ἄστρα δὲ (η) οὐ 6 καθαρὰ ἐναντίον αὐτοῦ. † Ἔα δὲ, (θ) ἄνθρωπος σαπρία, καὶ υἱὸς ἀνθρώπου σκώληξ.

ΚΕΦ. κς'.

1 † Ὑπολαβὼν δὲ Ἰὼβ, λέγει, 2 † Τίνι πρόσκεισαι, ἢ τίνι μέλλεις βοηθεῖν; † πότερον οὐχ ᾧ πολλὴ (α) ἰσχὺς, καὶ ᾧ βραχίων κραταιός ἐστι; 3 † Τίνι συμβεβούλευσαι; † οὐχ ᾧ (β) πᾶσα σοφία; † (γ) τίνι (δ) ἐπακολουθήσεις; οὐχ ᾧ (ε) μεγίστη δύναμις; 4 † Τίνι ἀνήγγειλας ῥήματα; † πνοὴ δὲ τίνος 5 ἐστὶν ἡ ἐξελθοῦσα ἐκ σοῦ; † Μὴ γίγαντες μαιωθήσονται † ὑποκάτωθεν ὕδατος (ζ) 6 καὶ τῶν γειτόνων αὐτοῦ; † Γυμνὸς ὁ ᾅδης ἐνώπιον αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἔστι περιβόλαιον τῇ ἀπω-7 λείᾳ. † Ἐκτείνων βορέαν ἐπ' οὐδὲν, † (η) κρεμάζων γῆν ἐπὶ οὐδενός·

14 At qui novit eorum opera, tradidit eos in tenebras, & noctu erit ut fur. 15 Et oculus adulteri obſervabit tenebras, dicens; Non conſiderabit me oculus, & (o) operimentum faciei poſuit. 16 Suffodit in tenebris domos: per diem (p) obſignaverunt ſeipſos, non cognoverunt lucem. 17 Quia ſimul eis (q) manè umbra mortis, quia (r) cognoſcet tumultum umbræ mortis. 18 Levis eſt ſuper (ſ) faciem aquæ: maledicatur pars eorum ſuper terram; & (t) appareant plantæ eorum ſuper terram aridæ: faſciculum enim pupillorum rapuerunt. 19 Deindè rememoratum eſt peccatum ejus, et ſicut nebula roris, factus eſt non apparens. 20 Retribuantur autem ei, quæ fecit, & conteratur ſicut lignum inſanabile, omnis iniquus. 21 Sterili enim non fecit benè, & 22 mulieris miſertus non eſt. Furore autem evertit impotentes. Conſurgens ergò non (u) credat contra vitam ſuam. 23 Cùm infirmari cœperit, non ſperet ſanitatem, ſed cadet morbo: multis enim nocuit altitudo ejus. 24 Emarcuit autem, ſicut (x) malva in æſtu, aut ſicut de ſtipula ſpica decidens ſponte ſuâ. 25 Alioquin quis eſt, qui loquatur mendacium me dicere, & ponet in nihilum verba mea?

CAP. XXV.

Reſpondens autem Baldad 1 Sauchites, ait; 2 Quid enim exordium, quàm timor ab eo, qui facit univerſitatem in altiſſimo? 3 Nemo enim putet eſſe (a) moram piratis: in quos autem non veniet (b) inſidiæ ab eo? 4 Quomodò enim erit homo juſtus coram Deo? vel quiſnam (c) mundaverit ſe natus ex muliere? 5 Si lunæ præcipit, & non lucet, nec ſtellæ ſunt mundæ apud eum? 6 Sine verò, homo putredo, & filius hominis vermis.

CAP. XXVI.

Reſpondens autem Job, ait; 1 2 Cui ades, vel quem adjuturus es? nunquid non, cui multa eſt fortitudo, & cui brachium potens eſt? 3 Cui conſilium dediſti? nónne, cui omnis ſapientia? Quem inſequêris? nónne, cui maxima eſt virtus? 4 Cui annuntiâſti verba? ſpiramen autem cujus eſt, quod exit ex te? 5 (a) Nunquid gigantes formabuntur ſubter aquam, & vicinos ejus? 6 Nudus eſt infernus coram eo: & non eſt velamen perditioni. 7 Extendens Aquilonem ſuper (b) nihilum: ſuſpendens terram ſuper nihilum.

MS.A. (ρ) προσνοήσει με ὁ ὀφθαλμὸς, (σ)* πρὸς μὲν τοῦ ἔθετο. (τ) ἡμέραις δὲ (υ) *αὐτοῖς τὸ πρωῒ διεσκέδασεν, ὅτι (φ) ταραχὰς σκιὰ θανάτου. (χ) ἐπὶ προσώπου (ψ) ὀρφανοῦ (ω) Εἶτα ἐμνήσθη αὐτῶν ἡ ἁμαρτία· καὶ ὥσπερ ὁμίχλη (α) Ἀποδοθείη αὐτῷ καθὰ ἔπραξεν, (β) Στεῖραν γὰρ οὐκ ἐποίκτειραν, οὐδὲ *ἀγύναιον ἠλέασε, (γ) κατέστρεψαν (δ) ὑπὲρ τῆς (ε) Μαλακισθεὶς δὲ, μὴ (ζ) ὑγιάναι, (η) ὥσπερ χλόη (θ) αὐτόματος ἀποπεσὼν ἀπὸ καλάμης. (ι) φάμενός με ψευδῆ λέγειν, (κ) εἰς οὐθὲν Κεφ. κε'. MS.A. (α) γάρ ἐστιν προοίμιον ὁ φόβος παρ' αὐτοῦ; (β) ἐστιν. Μὴ γάρ (γ) αὐτῶν οὐκ (δ) βροτὸς δίκαιος (ε) ἑαυτὸν † (ζ) *Οὐρανὸς οὐ καθαρός. † Ὁ λέγων τῷ ἡλίῳ μὴ ἀνατέλλειν, καὶ οὐκ ἀνατέλλει, σελήνη δὲ συντάσσει, καὶ οὐκ ἐπιφαύσει, (η) οὐκ ἄμεμπτα (θ) πᾶς ἄνθρωπος Κεφ. κς'. MS.A. (α) ἡ ἰσχὺς, καὶ ὁ βραχίων (β) ἡ πᾶσα (γ) ἢ τίνι (δ) ἐπακολουθεῖς; (ε) ἡ μεγίστη. (ζ) καὶ γειτόνων (η) κρεμνῶν γῆν ἐπ' οὐδενός·

תרגום TARGUM.

14 15 לאורתא יקום קטולא יקטול עניא וחשיכא ובליליא יהי היך גנבא : ועינא דניפא נטרת נשף ליליא למימר לא תסכנני עינא וטמור אפיא ישוי כלפי לעיל :
16 17 חאק בחשוכא בתיא ביממא מחתמין להון בגנייא לא ידעו נהורא : ארום כחדא צפרא דמי להון היך טולא דמותא ארום אשתמודע פורענות טולא
18 19 דמותא : קליל הוא למשט על אפי מיא תהי ליט אורחא שעיתהון בארעא לא יסכי שביל כרמיא : צחיא ולחוד חומתא אנסין מימי תלגא וליתיהון
20 היכדין לשיול אתנשאו דאתחיבו : תא היך צהותא וחומא אנסין מימי תלגא וליתיהון הכדין לשיול אתנשיאו דאתחיבו : אכזראין דנשיאו לרחמא
מסכינין אתבסימו לרחשא תוב לא ידכר ותתבר היך קיסא עילתא : תא מטול דבטילו אפרשותא דמעשר דאתפקדו בעדן חומא דקיטא אתמנעו מנהון
21 22 23 מימי מטרא ותלגא לבית קבורתא אתחיבו : דמרע עקרא דלא תילד וארמלתא לא יוטיב : ונגיד גבריא בחיליה יקום ולא יהימין בחיי : יהיב ליה תיובתא
24 25 לרחיץ ויסתמיך ועינוי על אורחיהון : אוריכו כזעיר פון וליתוי רשיעא ואתמכיאו ככל מה יתקטעון וכריש שבולא יתקטפון : ואין לא קשוט דכי הן הוא
מן דיכדבנני וישוי כדלא הות עקר מלתי :

כה

1 2 ואתיב בלדד דמן שוח ואמר : שולטנא ודלוחא נביה עבד שלם בשמי מרומא : תא מיכאל מן ימינא והוא דאשא ונבריאל מסמאליה והוא דמיא ובריתא
3 4 קדישתא פתכין אשתא ומיא בשולטנותיה ובדחלתיה עבד שלמא בשמי שמיא דיליה : האית סכום לאוכלוסוי ועל מן לא יקום נהוריה : ומה יזכי בר
5 6 נש עם אלהא ומה יזכי יליד אנתתא : הא עד דפגמא סיהרא בסטר מדנחא לא ינהר שמשא וכוכביא לא אתברירו קדמוי : אף כל דכן בר נש דבחיוי ריחשא
ובר נש דבמותוי מורני :

כו

1 2 ואתיב איוב ואמר : מה סיעתא מדלית חילא פרקתא באדרע דלא עשין : מה מלכתא מדלית חוכמתא ודמי לך דחוכמתא לסוגעא אודעתא : ית מן חויתא
3 4 5 6 מליא ונשמתא דמן נפקת מנך : אפשר דגבריא דמתמזמזין יתברין ואנון מלרע למיא ומשריתהון : ערטילא מפרסם שיול לקובליה ולית חופאה לבית
7 אבדנא : דמתח צפונא על למא זקף ארעא עלוי מיא מדלית מדעם דסמיך ליה :

Verſio SYRIACA.

14 15 * ܒܢܘܗܪܐ ܩܐܡ ܩܛܘܠܐ. ܘܩܛܠ ܠܡܣܟܢܐ ܘܠܒܝܫܐ. ܘܒܠܠܝܐ ܢܗܘܐ ܐܝܟ ܓܢܒܐ. * ܘܥܝܢܐ ܕܓܝܪܐ ܢܛܪܝ
16 ܚܫܘܟܐ. ܘܐܡܪܝܢ. ܠܐ ܢܚܙܝܢܝ ܥܝܢܐ. ܘܡܟܣܐ ܐܦܘܗܝ ܒܚܫܘܟܐ. * ܚܦܪ ܒܚܫܘܟܐ ܒܬܐ. ܘܒܐܝܡܡܐ
17 ܚܬܡܝܢ ܠܗܘܢ. ܕܠܐ ܢܚܙܘܢ ܢܘܗܪܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܒܥܘ ܠܗܘܢ ܛܠܠܐ ܕܡܘܬܐ. ܘܐܫܟܚܘܗ ܘܫܓܫܘܢ ܐܢܘܢ
18 19 ܛܠܠܘܗܝ ܕܡܘܬܐ. * ܩܠܝܠܐ ܘܥܠ ܐܦܝ ܡܝܐ. ܬܬܠܝܛ ܡܢܬܗܘܢ ܒܐܪܥܐ. ܒܐܘܪܚ ܟܪܡܝܢ. * ܨܗܝܐ
20 ܘܫܘܒܐ. ܢܫܬܘܢ ܐܢܘܢ ܡܝܐ ܕܬܠܓܐ. ܘܒܓܘܡܐ ܕܚܛܘ. * ܘܐܬܛܥܝܘ ܡܢ ܡܪܒܥܐ. ܘܡܨܬܗ ܐܢܘܢ ܐܪܥܐ.
21 ܘܡܝܬܐ ܐܦ ܠܐ ܢܬܕܟܪܘܢ. ܘܢܬܬܒܪ ܐܝܟ ܩܝܣܐ ܥܘܠܐ. * ܘܥܩܪܬܐ ܒܝܫܬܐ ܠܐ ܐܝܠܕܬ. ܘܐܪܡܠܬܐ ܠܐ ܐܛܐܒܘ.
22 23 * ܘܩܢܝܢܐ ܕܪܘܪܒܐ ܒܚܝܠܗ ܢܩܘܡ. ܘܠܐ ܢܗܝܡܢ ܒܚܙܘܐ. * ܘܢܬܒ ܒܫܠܝܐ. ܘܢܬܬܟܠ. ܘܥܝܢܘܗܝ ܥܠ
24 ܐܘܪܚܬܗܘܢ ܢܬܬܪܝܡܢ. * ܩܠܝܠܐ. ܘܠܝܬ ܐܢܘܢ. ܘܢܬܡܟܟܘܢ ܘܢܐܒܕܘܢ. ܟܠܗܘܢ ܡܪܓܙܢܐ. ܘܐܝܟ ܪܝܫܐ
25 ܕܫܒܠܐ ܢܝܒܫܘܢ. ܘܢܬܦܪܟܘܢ. * ܘܐܢ ܠܐ ܗܘܐ. ܪܘܓܙܗ ܢܟܕܒܢܝ. ܘܢܬܚܫܒ ܩܕܡ ܐܠܗܐ ܡܠܬܝ.

* ܦܘܠܐܓܐ * ܟܗ *

1 2 * ܘܥܢܐ ܒܠܕܕ ܫܘܚܝܐ ܘܐܡܪ. * ܫܘܠܛܢܐ ܘܕܚܠܬܐ ܥܡܗ. ܥܒܕ ܫܝܢܐ
3 4 ܒܡܪܘܡܘܗܝ. * ܘܠܝܬ ܡܢܝܢܐ ܠܚܝܠܘܬܗ ܘܥܠ ܡܢܘ ܠܐ ܕܢܚ ܢܘܗܪܗ. * ܘܐܝܟܢܐ ܡܫܟܚ ܒܪܢܫܐ ܠܡܙܕܕܩܘ
5 ܥܡ ܐܠܗܐ. ܐܘ ܐܝܟܢܐ ܙܟܐ ܝܠܝܕ ܐܢܬܬܐ. * ܗܐ ܣܗܪܐ. ܠܐ ܡܫܟܚ ܠܡܙܟܐ. ܘܟܘܟܒܐ ܠܐ ܐܙܕܟܝܘ ܩܕܡܘܗܝ.
6 * ܡܟܝܠ ܐܝܟ ܒܪܢܫܐ ܪܡܬܐ ܗܘ. ܘܒܪܢܫܐ ܬܘܠܥܬܐ.

* ܦܘܠܐܓܐ * ܟܘ *

1 * ܘܥܢܐ ܐܝܘܒ
2 ܘܐܡܪ. * ܠܡܢܐ ܡܥܕܪ ܐܢܬ ܠܐ ܚܝܠܐ. ܘܦܪܩܬ ܐܝܟ ܕܪܥܐ ܕܠܐ ܚܝܠܐ. * ܡܢܐ ܐܬܡܠܟܬ ܕܠܐ ܚܟܡܬܐ.
3 4 ܘܝܕܥܬܐ ܣܓܝܐܬܐ ܐܘܕܥܬ. * ܠܡܢ ܚܘܝܬ ܡܠܬܐ. ܘܢܫܡܬܐ ܕܡܢܘ ܢܦܩܬ ܡܢܟ. * ܗܐ ܓܢܒܪܐ
5 6 ܢܬܩܛܠܘܢ. ܘܡܢ ܡܝܐ ܢܬܢܓܕܘܢ. * ܥܪܛܠܝܐ ܫܝܘܠ ܩܕܡܘܗܝ. ܘܠܝܬ ܬܟܣܝܬܐ ܠܐܒܕܢܐ. * ܘܡܬܚ
7 ܓܪܒܝܐ ܥܠ ܚܘܪܒܐ. ܘܬܠܐ ܐܪܥܐ ܥܠ ܠܐ ܡܕܡ.

Verſio ARABICA.

14 15 * وفي النور وقف القاتول * فقتل المساكين والبايسين * وفي الليل يكون السارق * واعين الزاني ترصد
16 الظلمة * ويقولون لا تبصرنا عين * ويستر وجهه بالظلمة * ينقب في الظلام البيوت * والنهار يختمها ليلا
17 18 يروا النور * من اجل هذا طلبوا لهم ظلال الموت * قليلا وعلي وجه الماء تلعن قسمهم في الارض * في
19 20 طريق الكروم * العطش والحرور تخطفهم امياه الثلوج * وفي الهاوية خطيوا * ونسوا من الرحم * امتصهم
21 التراب * والاموات ايضا لا يذكرون * وينكسر الاثيم مثل العود * والعاقر السوء لا تلد * والي الارملة لم
22 23 يحسنوا * وقنيان العظيم بقوته يقوم * ولا يصدق بالنظر * ويحل بالسكون ويتوكل * وعيناه على طرقهم
24 مرتفع * قليلا وليس هم * يتواضعون ويبيدون جميع المسخطين * ومثل راس السنبل ييبسون * ويفركون *
25 * فان لم يكن * فان رجزه يكذبني * ويحسب قدام الله كلمتي * * الفصل الخامس والعشرون *
1 2 * فاجاب بلداد السوحاني فقال * السلطان المخافة معه * صنع السلم في علاه * وليس عدد لقوته * وعلي
3 4 من ليس يشرق ضوءه * وكيف يستطيع الانسان ان يزكوا من الله * او كيف يغلب مولود الامراة *
5 6 * هوذا القمر لا يستطيع ان يغلب * والكواكب لا تزكوا بين يديه * حقا ان الانسان تربا وابن
1 2 الانسان دودا * * الفصل السادس والعشرون * * فاجاب ايوب وقال * لماذا انت تعين بلا
3 4 قوة * وتخلص ذراعا بلا عز * لماذا تفكرت بلا حكمة * وعلما كثيرا اظهرت * لماذا اخبرت القول * ونسمة
5 6 من خرجت منك * فان الجبابرة يقتلون ومن المياه يسلون * عريانة هي الهاوية بين يديه * وليس
7 ستر للهلاك * بسط الجربياء من القفر * وعلق الارض على لا شي *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

14 *Et in luce moratus eſt homicida, occiditque pauperes ac inopes: & in nocte erit fur.* 15 *Et oculi fornicarii obſervant tenebras, & dicunt; Non videbit nos oculus: veláq; faciem ſuam tenebris:* 16 *Inquirit in tenebris domos, & in die obſignat illas, ne videant lumen.* 17 *Idcircò quæſierunt umbram mortis* (b). 18 *Puſillum et ſuper facie aquæ maledicetur pars eorū in terra, in itinere vinearum.* 19 *Sitis & æſtus, rapient eos aquæ nivium, & in fovea peccaverunt,* 20 *Et oblivioni traditi ſunt à vulva:* (1) *exſuxit eos terra, & mortui etiā non memorabuntur. Et frangetur impius quaſi lignum:* 21 *Et ſterilis improba non pariet: et viduæ non benefecerunt.* 22 *Et poſſeſſio magni in virtute ſua conſurget, nec credet viſui.* 23 *Et habitabit cum quiete et confidet: et oculi ejus ſuper vias eorum elevabuntur.* 24 *Puſillum, & non erunt: humiliabuntur & peribunt omnes irritatores, et velut ſummitates ariſtarum areſcent, atque fricabuntur.* 25 *Quòd ſi ita non eſt, furor ejus mentiri me faciat, & expendatur coram Deo verbum meum.*

CAP. XXV.

1 *Et reſpondens Baldad Subues, ait:* 2 (a)*Penes Imperatorem timor adeſt, fecit tranquillitatem in* (b) *excelſo ſuo,* 3 *Nec eſt numerus potentiæ illius, et ſuper quem hominum non oritur lumen ejus?* 4 *Et quomodo poteſt homo juſtificari præ Deo? aut quomodo ſuperabit natus mulieris?* 5 *En luna nequit vincere, & ſtellæ non juſtificantur coram illo.* 6 *Verè homo* (c) *pulvis eſt, & filius hominis vermis.*

CAP. XXVI.

1 *Reſpondit Job, dicens;* 2 *Quarè tu auxiliaris abſque robore, et ſalvas brachium abſque fortitudine?* 3 *Quarè cogitâſti ſine ſapientia, & ſcientiam multam oſtendiſti?* 4 (a)*Cui indicâſti ſermonem, & ſpiritus cujuſnam exivit de te?* 5 (b) *Num gigantes interficientur, & ex aquis extrahentur.* 6 *Nuda eſt fovea coram illo, nec eſt velamen perditioni.* 7 *Extendit Aquilonem de ſolitudine, &* (c) *extendit terram ſuper nihilo.*

INTERP. SYRIACA.

(b) & inveniunt eam, & conſternant eos umbræ mortis. (1) dulcis eſt eis vermis, CAP. xxv. (a) Dominium & metus apud eum, (b) excelſis ſuis. (c) tinea CAP. xxvi. (a) Cui indicâſti ſermones, (b) Ecce (c) ſuſpendit

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

14 15 Ad lucem conſurget occiſor, occidet egenū & pauperem, & in nocte erit quaſi fur. Et ocul' adulteri obſervat crepuſculū *noctis*, dicens: Non me videbit oculus, & abſconſionē faciei ponet è regione ſurſū. 16 17 Perfodit in tenebris domos quas in die obſignaverunt ſibi, *in occultis* non cognoverunt lumē. Quoniam ſimul aurora reputatur eis ſicut umbra mortis: nota eſt enim ultio tenebrarū mortis. 18 Levis eſt ut diffundatur ſuper faciem aquarū: erit maledicta via lubricitatis eorum in terra: & non aſpiciet ſemitam vinearum. 19 Siccitas & etiam calor *rapiunt* aquas nivis *& non ſunt: ſic in inferno oblivioni erunt* qui peccaverunt. *Targum aliud*: *Sicut* ſiccitas & calor *rapiunt* aquas nivis, *& non ſunt: ſic in inferno oblivioni dabuntur* qui peccaverunt. 20 Crudeles ſunt qui obliti ſunt miſereri pauperibus, dulces erunt vermibus: deinceps non erit memoria eorū; & conterentur ſicut lignum iniquum. *Targum aliud*: *Propterea quòd aboleverunt oblationem decimarum, de quâ præceptum acceperant; in tempore caloris æſtivi cohibitæ erunt ab eis aquæ pluviales & nivales, in domum ſepulturæ condemnati erunt.* 21 Qui confringit ſterilem quæ non parit, & viduæ non benefacit. 22 Et attrahit fortes in fortitudine ſua: conſurget, & non credet vitæ ſuæ. 23 Dedit ei pœnitentiā ut confideret & ſuſtentaretur, & oculi ejus ſuper vias eorū. 24 *Expectant* paululum, & non eſt ſcelerat': & humiliantur, juxta omnia *quæq; ſuccidentur*, & ſicut ſummitas ſpicæ *demetentur*. 25 Et ſi non eſt *verum hoc*, ubi eſt qui mendacem me comprobet, & ponat quaſi nihilum radicem ſermonis mei?

CAP. XXV.

1 2 Et reſpondit Baldad qui erat de Sua, & dixit: Poteſtas & terror apud eum eſt, qui facit pacem in cœlis excelſis. *Targum aliud: Michael à dextra, cujus eſt ignis, & Gabriel à ſiniſtra ejus, qui aquæ præeſt, & creaturæ ſanctæ miſcent ignem & aquam; & in poteſtate ac terrore ſuo* facit pacem in cœlis *cœlorum ſuorum*. 3 Nunquid eſt numerus exercitibus ejus, & ſuper quem non ſurget lumen illius? 4 In quo juſtificabitur fili' hominis cum Deo, aut in quo innocens erit natus de muliere? 5 Ecce adhuc Luna maculata eſt in parte Orientali; non ſplendebit ſol: & ſtellæ non ſunt mundæ in conſpectu ejus. 6 Quantò magis homo qui in vita ſua eſt reptile, & filius hominis qui in morte ſua eſt vermis?

CAP. XXVI.

1 2 3 Et reſpondit Job & ait: Quid auxiliat' es abſq; fortitudine; ſalvâſti brachio invalido? Quare dediſti conſiliū abſq; ſapientia, & videtur tibi quòd ſapientiam plurimam oſtendiſti? 4 Cui annunciâſti ſermones, & cujus ſpiraculum exivit à te? 5 Nunquid poſſunt gigantes qui contremiſcunt regenerari; cum ipſi ſint ſub aquis & exercitus eorum? 6 *Nudus & publicus* eſt infernus coram eo, & non eſt operimentum domui perditionis. 7 Qui extendit Aquilonem ſuper nihilum, ſublevat terram ſuper aquas, nullo eam ſuſtinente.

איוב : כו

.eis ſub nubes eſt ſciſſa non & : ſuis nubibus in aquas Ligans
צרר־מים בעביו ולא־נבקע ענן תחתם : 8
Statuum .ſuam nubem illud ſuper expandit : ſolii *facies* Tenens
מאחז פני־כסה פרשז עליו עננו : חק 9 10
lucis perfectionem ad uſque : aquarum *facies ſuper deſcripſit circino*
חג על־פני־מים עד־תכלית אור
admirabuntur & : *conterentur* cœli Columnæ .*obſcuritate* cum
עם־חשך : עמודי שמים ירופפו ויתמהו 11
ſua intelligentia in & : mare *ſcidit* ejus potentia In .ejus increpatione ab
מגערתו : בכחו רגע הים ובתבונתו 12
formavit , *pulchritudo cœli* ejus ſpiritu *In* .*ſuperbiam* percuſſit
מחץ רהב : ברוחו שמים שפרה חללה 13
, ejus viarum partes , hæc Ecce .*fugacem* ſerpentem ejus manus
ידו נחש ברח : הן־אלה קצות דרכו 14
ejus fortitudinum tonitru & :eo *in* audivimus *verbum* puſillum quàm &
ומה־שמץ דבר נשמע־בו ורעם גבורתו
? intelligetur quo
מי יתבונן :

CAP. XXVII. כז

Vivens : dixit & , ſuam parabolam aſſumere Ijob addidit Et
ויסף איוב שאת משלו ויאמר : חי־ 1 2
affecit amaritudine *Saddai* & : meum judicium fecit removere Deus
אל הסיר משפטי ושדי המר
Dei ſpiritus & : me in mea *mens* ,tempore omni Quia.meam animam
נפשי : כי־כל־עוד נשמתי בי ורוח אלוה 3
mea lingua & :iniquitatem mea labia loquentur Si .*meo naſo* in
באפי : אם־תדברנה שפתי עולה ולשוני 4
vos juſtificem *ſi* mihi Abſit .dolum fuerit *molita* ſi
אם־יהגה רמיה : חלילה לי אם־אצדיק אתכם 5
mea juſtitia In .me à meam perfectionem removebo non :obiero quouſq;
עד־אגוע לא־אסיר תמתי ממני : בצדקתי 6
meum cor afficiet probris non : eam dimittam non & , tenui
החזקתי ולא ארפה לא־יחרף לבבי
, *me in inſurgens* & : meus inimicus impius ut Erit .meis diebus à
מימי : יהי כרשע איבי ומתקוממי 7
evellat ſi , *corraſerit cùm hypocritæ* ſpes quæ Nam .iniquus ut
כעול : כי מה־תקות חנף כי יבצע כי ישל 8
venerit cum :Deus audiet ejus clamorẽ Nunquid?ejus animam Deus
אלוה נפשו : הצעקתו ישמע אל כי־תבוא 9
invocabit ?delectabitur omnipotente ſuper *Si* ?tribulatio eum ſuper
עליו צרה : אם־על־שדי יתענג יקרא 10
quod : Dei *manu in* vos Docebo ? tempore omni in Deum
אלוה בכל־עת : אורה אתכם ביד־אל אשר 11
vos omnes vos Ecce .abſcondam non omnipotente cum
עם־שדי לא אכחד : הן־אתם כלכם 12
pars Hæc *? evaneſcetis* vanitate quid propter & , vidiſtis
חזיתם ולמה־זה הבל תהבלו : זה חלק־ 13
omnipotente ab fortium hæreditas & : Deo cum impii hominis
אדם רשע עם־אל ונחלת עריצים משדי
ejus *germina* &:gladium *ipſum* in,ejᵘ filii fuerint multiplicati Si .accipient
יקחו : אם־ירבו בניו למו־חרב וצאצאיו 14
: ſepelientur morte in ejus Superſtites .pane ſaturabuntur non
לא ישבעו־לחם : שרידיו במות יקברו 15
pulverem ut coacervaverit Si .flebunt non ejus viduæ &
ואלמנתיו לא תבכינה : אם־יצבר כעפר 16
juſtus & ,Præparabit .veſtimentum præparaverit lutũ ſicut &,argentum
כסף וכחמר יכין מלבוש : יכין וצדיק 17
:ſuam domũ tinea ſicut Ædificavit .*partietur* innocens argentũ & ꝛſe induet
ילבש וכסף נקי יחלק : בנה כעש ביתו 18
.cuſtos fecit *tugurium* ſicut &
וכסכה עשה נצר :

Verſio VULG. LAT.

8 Qui ligat aquas in nubibᵘ ſuis, ut non erumpant pariter deorſum. 9 Qui tenet vultum ſolii ſui, & expandit ſuper illud nebulam ſuam. 10 Terminum circumdedit aquis, uſque dum finiantur lux & tenebræ. 11 Columnæ cœli contremiſcunt, & pavent ad nutum ejus. 12 In fortitudine illius repentè maria congregata ſunt, & prudentia ejus percuſſit ſuperbum. 13 Spiritus ejus ornavit cœlos: & obſtetricante manu ejus, eductus eſt coluber tortuoſus. 14 Ecce, hæc ex parte dicta ſunt viarum ejus: & cùm vix parvam ſtillam ſermonis ejus audierimus, quis poterit tonitruum magnitudinis illius intueri?

CAP. XXVII.

1 ADdidit quoque Job, aſſumens parabolam ſuam, & dixit; 2 Vivit Deus, qui abſtulit judicium meum, & Omnipotens, qui ad amaritudinem adduxit animam meam. 3 Quia donec ſupereſt halitus in me, & ſpiritᵘ Dei in naribus meis, 4 Non loquentur labia mea iniquitatem, nec lingua mea meditabitur mendacium. 5 Abſit à me ut juſtos vos eſſe judicem: donec deficiam, non recedam ab innocentia mea. 6 Juſtificationem meam, quam cœpi tenere, non deſeram: neque enim reprehendit me cor meum in omni vita mea. 7 Sit ut impius, inimicus meus: & adverſarius meus quaſi iniquus. 8 Quæ eſt enim ſpes hypocritæ ſi avarè rapiat, & non liberet Deus animã ejus? 9 Numquid Deus audiet clamorem ejus, cùm venerit ſuper eum anguſtia? 10 Aut poterit in Omnipotente delectari, & invocare Deum omni tempore? 11 Docebo vos per manum Dei quæ Omnipotens habeat, nec abſcondam. 12 Ecce, vos omnes nôſtis, & quid ſine cauſa vana loquimini? 13 Hæc eſt pars hominis impii apud Deum, & hæreditas violentorum, quam ab Omnipotente ſuſcipient. 14 Si multiplicati fuerint filii ejus, in gladio erunt, & nepotes ejus non ſaturabuntur pane. 15 Qui reliqui fuerint ex eo, ſepelientur in interitu, & viduæ illiᵘ non plorabunt. 16 Si comportaverit quaſi terram argentum, & ſicut lutum præparaverit veſtimenta: 17 Præparabit quidem, ſed juſtus veſtietur illis: & argentum innocens dividet. 18 Ædificavit ſicut tinea domũ ſuam, & ſicut cuſtos fecit umbraculum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

8 † Δεσμεύων ὕδωρ ἐν νεφέλαις αὐτοῦ, † καὶ οὐκ
9 ἐρράγη νέφος (ϑ) ὑποκάτω αὐτοῦ. † Ὁ
κρατῶν πρόσωπον θρόνου, † (ι) ἐκπετάζων
10 ἐπ' αὐτὸν νέφος αὐτοῦ. † Πρόσταγμα ἐγύ-
ρωσεν ἐπὶ πρόσωπον ὕδατος, † μέχρι
11 συντελείας φωτὸς μετὰ σκότους. † Στῦλοι
οὐρανοῦ (κ) ἐπετάσθησαν, † καὶ ἐξέστησαν ἀπὸ
12 τῆς ἐπιτιμήσεως αὐτοῦ. † (λ) Ἰσχύϊ κατέ-
παυσε τὴν θάλασσαν, † ἐπιστήμῃ δὲ (μ) ἔ-
13 τρωσε τὸ κῆτος. † (ν) Κλεῖθρα δὲ οὐρανοῦ
δεδοίκασιν αὐτόν· † προστάγματι δὲ ἐθα-
14 νάτωσε δράκοντα ἀποστάτην. † Ἰδοὺ ταῦ-
τα μέρη ὁδοῦ αὐτοῦ, † καὶ ἐπὶ ἰκμάδα λόγου
ἀκουσόμεθα ἐν αὐτῷ· † σθένος δὲ βροντῆς
αὐτοῦ τίς οἶδεν, ὁπότε ποιήσει;

Ligans aquam in nubibus ejus: 8
& non eſt ſciſſa nubes ſub eo;
Qui tenet faciem (c) throni, ex- 9
tendens ſuper eum nubem ſuam.
(d) Præceptum circundedit ſuper 10
faciem aquæ, uſque ad conſum-
mationem lucis cum tenebris.
Columnæ cœli (e) expanſæ ſunt, 11
& obſtupuerunt (f) ab increpa-
tione ejus. Virtute ſedavit ma- 12
re; & ſcientiâ (g) ſtratus eſt
cetus. Et clauſtra cœli metuunt 13
eum: præcepto autem peremit
(h) draconem deſertorem. Ecce 14
hæ partes viæ ejus: & (i) ſu-
per ſtillam verbi audiemus in eo:
virtutem autem tonitrui ejus
quis ſcivit quando faciet?

MS.A. (ϑ ὑποκάτωθεν (ι) σκέπων (κ)* ἐπεστάθησαν, (λ) Ἰσχύϊ μὲν (μ) ἔτρωσεν (ν) Κλεῖθρά τε

ΚΕΦ. κζʹ.

1 † ἜΤι δὲ προσθεὶς Ἰὼβ (α) εἶπε τῷ προ-
2 οιμίῳ· † (β) Ζῇ ὁ θεὸς, ὃς (γ) οὕτω με κέ-
κρικε, † καὶ ὁ παντοκράτωρ (δ) ὁ πικράνας
3 μου τὴν ψυχήν· † Εἰ μὴν ἔτι τῆς πνοῆς
μου ἐνούσης (ε), † πνεῦμα δὲ θεῖον (ζ) τὸ περιόν
4 μοι ἐν ῥινὶ, † Μὴ λαλήσειν τὰ χείλη μου
ἄνομα, † οὐδὲ ἡ ψυχή μου μελετήσει (η)
5 ἄδικα. † Μή μοι εἴη δικαίους ὑμᾶς ἀπο-
φῆναι ἕως ἂν ἀποθάνω, † οὐ γὰρ ἀπαλλάξω
6 (ʹ) μου τὴν ἀκακίαν μου. † Δικαιοσύνῃ δὲ
(ϑ) προσέχων οὐ μὴν προῶμαι, † οὐ γὰρ
7 σύνοιδα ἐμαυτῷ (ι) ἄτοπα πράξας. † Οὐ
μὴν δὲ (ϖ) ἀλλὰ εἴησαν οἱ ἐχθροί μου ὥσπερ ἡ
καταστροφὴ τῶν ἀσεβῶν, † καὶ οἱ (κ) ἐπ' ἐμὲ
ἐπανιστάμενοι, ὥσπερ ἡ ἀπώλεια τῶν πα-
8 ρανόμων. † (λ) Καὶ τίς γάρ ἐστιν ἐλπὶς ἀ-
σεβεῖ, ὅτι ἐπέχει; † (μ) πεποιθὼς ἐπὶ
9 κύριον ἆρα σωθήσεται; † Ἢ τὴν δέησιν
αὐτοῦ (ν) εἰσακούσεται ὁ θεός; † ἢ ἐπελ-
10 θούσης αὐτῷ ἀνάγκης (ξ) Μὴ ἔχει τινὰ
παῤῥησίαν ἔναντι αὐτοῦ; † ἢ ὡς ἐπικα-
11 λεσαμένου αὐτοῦ εἰσακούσεται αὐτοῦ; † Ἀλλὰ
δὴ ἀναγγελῶ ὑμῖν τί ἐστιν ἐν χειρὶ κυ-
ρίου, † ἅ ἐστι (ο) παρὰ παντοκράτορι, οὐ
12 ψεύσομαι. † (π) Ἰδοὺ πάντες οἴδατε,
13 † ὅτι κενὰ κενοῖς ἐπιβάλλετε. † Αὕτη ἡ
μερὶς ἀνθρώπου ἀσεβοῦς παρὰ κυρίου, † (ρ) κτῆ-
μα δὲ δυναστῶν ἐλεύσεται παρὰ παντοκρά-
14 τορος ἐπ' αὐτούς. † (σ) Ἐὰν δὲ πολλοὶ γένων-
ται οἱ υἱοὶ (τ) αὐτῶν, εἰς σφαγὴν ἔσονται·
† ἐὰν δὲ καὶ ἀνδρωθῶσι, (ʹ) προσαιτήσουσιν.
15 † Οἱ δὲ περιόντες (υ) αὐτοῦ ἐν θανάτῳ τε-
λευτήσουσι, † (φ) χήρας δὲ αὐτῶν οὐδεὶς ἐ-
16 λεήσει. † Ἐὰν συναγάγῃ ὥσπερ γῆν
ἀργύριον, † ἴσα δὲ πηλῷ (χ) ἑτοιμάσῃ
17 χρυσίον, † Ταῦτα πάντα δίκαιοι περιποι-
ήσονται, † τὰ δὲ χρήματα αὐτοῦ ἀληθι-
18 νοὶ καθέξουσιν. † Ἀπέβη δὲ ὁ οἶκος αὐτοῦ
(ψ) ὥσπερ σῆτες, † καὶ ὥσπερ ἀράχνη.

CAP. XXVII.

ADhuc autem (a) adjiciens 1
Job dixit proœmio: Vivit Deus, 2
qui ſic (b) me judicavit, & O-
mnipotens, qui officit amaritu-
dine animam meam. Siquidem 3
adhuc halitu meo immanente, &
ſpiritus divinus, (c) qui circa
me eſt in naribus, Labia mea non 4
loquentur iniqua; neque anima
mea meditabitur injuſta. Abſit à 5
me juſtos vos pronuntiare, donec
moriar: non enim ſeparabo (d)
à me innocentiam meam. Juſti- 6
tiæ autem inhærens, non deſe-
ram: nec enim conſcius ſum
mihi commiſiſſe abſurda. Ve- 7
ruuntamen ſint inimici mei,
ſicut ſubverſio impiorum: *& qui*
ſuper me inſurgunt, ſicut perdi-
tio iniquorum. Etenim quæ ſpes 8
eſt impio, quia (e) expectat;
(f) confidenſne ſuper Dominum
ſalvabitur? Aut deprecationem 9
illius exaudiet Deus? (g) aut
ſi evenerit ei neceſſitas; Habet- 10
ne fiduciam coram eo? aut tan-
quam ſi invocaverit eum, exau-
diet eum? Quapropter annun- 11
tiabo vobis, quid ſit in manu Do-
mini, quæ ſint apud Omnipoten-
tem: non mentiar. Ecce omnes 12
nôſtis, quia vana (h) vanis ad-
jicitis. Hæc eſt pars hominis 13
impii à Domino: (i) poſſeſſio
vero potentium veniet ab Omni-
potente ſuper eos. Quòd ſi mul- 14
ti fuerint filii (k) eorum, in oc-
ciſionem erunt: ſi autem (l) &
viri facti fuerint, mendicabunt.
Et qui circa eum ſunt, in mor- 15
te morientur: & viduis eorum
nemo miſerebitur. Si collegerit, 16
ut terram, argentum, & æquè
ac lutum, paraverit aurum, Hæc 17
omnia juſti vendicabunt, & pe-
cunias ejus veraces obtinebunt.
Evadet autem domus ejus, ſicut 18
tinea, & ſicut aranea.

MS.A. (α) τῷ προοιμίῳ εἶπεν· (β) Ζῇ κύριος, ὃς (γ) οὕτως (δ) ὁ πικράσας (ε) ἐν ἐμοὶ, (ζ) ἔτι περιὸν ἐν *ῥήμασίν μου, Οὐ μὴ λαλήσει τὸ στόμα μου ἄδικα, οὐδὲ ἡ (η) ἄνομα. (ʹ) τὴν (ϑ) προσέχων οὐ μὴ (ι) ἄτοπον (ϖ) ἀλλ' (κ) ἐπανιστάμενοί μοι, (λ) Ναὶ μὴν τίς γάρ ἐστιν ἔτι ἐλπὶς (μ) Μὴ πεποιθὼς ἐπὶ κύριον εἰ ἄρα σωθήσεται; (ν) ἀκούσει ὁ κύριος; ἐπελθούσης δὲ αὐτῷ (ξ) Μὴ ἔχει παῤῥησίαν ἐναντίον αὐτοῦ; ἢ πῶς (ο) παρὰ τῷ παντοκράτορι, (π) Ἰδοὺ δὴ πάντες ὑμεῖς ἑοράκατε, διὰ τί δὲ κενὰ κενοῖς ἐπιβάλλετε; (ρ) ὀργὴ δὲ δυναστῶν ἐξελεύσεται (σ) Ἐὰν πολλοὶ (τ) αὐτοῦ, (ʹ) προσαιτήσωσιν. (υ) αὐτῶν κακῷ θανάτῳ τελευτήσωσιν, (φ) καὶ χήρας αὐτῶν (χ) χρυσίον ἑτοιμάσῃ, (ψ) ὥσπερ σητὸς, καὶ ὥσπερ ἀράχνη ὁ πλοῦτος αὐτοῦ. Πλούσιος κοιμηθεὶς οὐ προσθήσει,

תרגום TARGUM.

דצרר מי מטרא בעננוי ולא אתבזע עננא תחותוי : מאחד באמטתא דמן כורסיה מן בגלל דלא יחמוניה מלאכיא פרס היך פרגודא עלוי עננא 8 9
דיקריה : גזר למשרי רקיע על אנפי מיא עד סוף נהורא עם חשוכא : עמודין דשמיא מודעזעין ורתתין מן מזופיתיה : בחיליה גזר ימא ובסוכלתניה 10 11 12
מחא גבריא : ברוח פומיה אפי שמיא אשתבהרו ברת ידיה לויתן דמתיל לחויא טריק : הא אלין סיפי אורחתוי ומה די אתמצי מן קצת 13 14
מלתיה נשמענא מניה ורכפת גבורתוי מן יתבין :

כז

ואוסיף איוב למטל מתליה ואמר : קים אלהא אעדי הלכת דיני ושדי אמרר נפשי : ארום פסק תוב נשמתי במימרי ורוחא דאלהא בנחירי : 1 2 3
אין ממללן ספותי שקרא ולישני אין מרנן נכלא : חס לי אין אזכי יתכון עד דאתנגיד לא אעדי שלמותי מני : בזכותי תקיפית ולא אשבקנה לא 4 5 6
יחסד לבבי מן יומי : יהי היך חיבא בעל דבבי ודקאם עלי היך רשיעא : ארום מן סבר דילטור ארום יכנוש ממון דשקר ארום ינתר אלהא נפשיה : 7 8
אפשר דקבלתיה יקבל אלהא ארום תיתי עלוי עקא : אין על שדי יתפנק יהוי קרי אלהא בכל עדן : אליף יתכון בנבואת אלהא די עם שדי לא 9 10 11
אכסי : הא אתון כולכון חמיתון ולמא דין הבלא תהבלון : דין חולק בר נש חיבא מלות אלהא ועדב תקיפין משדי יקבלון פורענותהון : אין 12 13 14
יסגעון בנוי מטול דקטלין בחרבא ובני בנוי לא יסבעון לחמא : משיזבוי במותא יהון קבירין וארמלתוי לא תבכין : אין יכנוש היך עפרא סימא 15 16
והיך טינא יתקין לבושא : יתקין וצדיקא יהי לביש וסימא זכי יפלג : בנה היך רקבוביתא ביתיה ואיך מטללתא דעביד נטר פירי : 17 18

Verſio *SYRIACA.*

8 * ܨܪ ܡܝܐ ܒܥܢܢܘܗܝ. ܘܠܐ ܐܬܦܪܥܘ ܥܢܢܐ ܠܬܚܬܝܗܘܢ. * ܐܚܕ ܐܦܝ ܟܣܝܐ. ܘܦܪܣ ܥܠܘܗܝ ܡܢܗ
9 10 ܥܢܢܐ. * ܪܫܡ ܚܘܓܐ ܥܠ ܐܦܝ ܡܝܐ. ܥܕܡܐ ܕܢܫܠܡ ܢܘܗܪܐ ܥܡ ܚܫܘܟܐ. * ܥܡܘܕܝ ܫܡܝܐ ܢܬܬܙܝܥܘܢ.
11 12 ܘܢܬܡܗܘܢ ܡܢ ܟܐܬܗ. * ܒܚܝܠܗ ܓܥܪ ܒܝܡܐ. ܘܒܚܟܡܬܗ ܐܚܝ ܣܓܝܐܐ. * ܘܒܪܘܚܗ ܫܡܝܐ ܡܕܒܪ.
13 14 ܘܡܩܛܠܐ ܐܝܕܗ ܚܘܝܐ ܕܥܪܩ. * ܗܐ ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ ܡܢ ܦܠܓܘܬ ܐܘܪܚܬܗ. ܘܐܝܢܐ ܦܬܓܡܐ ܒܝܫܐ ܕܫܡܝܥ ܡܢܗ
1 ܚܝܠܘܗܝ. ܘܣܘܓܐܐ ܕܓܢܒܪܘܬܗ ܡܢܘ ܢܣܬܟܠ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܟܙ * ܘܐܘܣܦ ܐܝܘܒ
2 ܠܡܡܠܠܘ ܡܬܠܗ ܘܐܡܪ. * ܚܝ ܗܘ ܐܠܗܐ ܕܥܪܩܠ ܕܝܢܝ. ܘܚܣܝܢܐ ܕܐܡܪ ܢܦܫܝ. ܘܟܠܝܗ ܒܝ
3 4 * ܘܟܕ ܪܘܚܗ ܕܐܠܗܐ ܒܢܚܝܪܝ. * ܠܐ ܢܡܠܠܢ ܣܦܘܬܝ ܥܘܠܐ: ܘܠܫܢܝ ܠܐ ܢܪܢܐ ܢܟܠܐ. * ܚܣ ܠܝ. ܥܕܡܐ
5 6 ܕܐܡܘܬ. ܠܐ ܐܥܒܪ ܬܡܝܡܘܬܝ ܡܢܝ. * ܘܒܟܐܢܘܬܝ ܐܚܝܕ. ܘܠܐ ܐܫܒܩܝܗ. ܘܠܐ ܐܬܟܪܝ ܠܝ ܠܒܝ ܡܢ ܝܘܡܝ.
7 8 * ܘܢܗܘܐ ܐܝܟ ܪܫܝܥܐ ܒܥܠܕܒܒܝ. ܘܩܝܡܢܝ ܐܝܟ ܥܘܠܐ. * ܡܢܘ ܓܝܪ ܣܒܪܗ ܕܚܢܦܐ ܕܩܢܐ ܥܘܬܪܐ. ܒܥܕܢܐ
9 10 ܕܢܫܩܘܠ ܠܗ ܐܠܗܐ ܠܢܦܫܗ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܫܡܥ ܐܠܗܐ ܩܠܐ ܕܨܠܘܬܗ. ܟܕ ܐܬܝܢ ܥܠܘܗܝ ܐܘܠܨܢܐ. * ܐܢ
11 ܥܠ ܚܝܠܬܢܐ ܢܬܬܟܠ. ܘܢܩܪܐ ܠܐܠܗܐ. ܒܟܠ ܙܒܢ ܫܡܥ ܠܗ ܐܠܗܐ ܘܥܢܐ ܠܗ. * ܠܟܘܢ ܕܝܢ
12 ܡܫܠܡ ܐܢܐ ܠܟܘܢ ܒܐܝܕܐ ܕܐܠܗܐ. ܕܥܒܕܝܟܘܢ ܡܢܗ ܠܐ ܡܬܟܣܝܢ. * ܗܐ ܐܢܬܘܢ ܟܠܟܘܢ ܚܙܝܬܘܢ. ܘܠܡܢܐ
13 ܡܬܪܘܪܒܝܢ ܐܢܬܘܢ ܣܪܝܩܐܝܬ. * ܗܢܐ ܗܘ ܡܢܬܗ ܕܓܒܪܐ ܪܫܝܥܐ. ܡܢ ܠܘܬ ܐܠܗܐ. ܘܝܪܬܘܬܐ
14 ܕܥܘܠܐ. ܕܡܢ ܚܝܠܬܢܐ ܢܣܒܝܢ. * ܐܢ ܢܣܓܘܢ ܒܢܘܗܝ ܠܣܝܦܐ. ܘܝܠܕܘܗܝ ܠܐ ܢܣܒܥܘܢ
15 ܠܚܡܐ * ܫܪܟܢܗܘܢ. ܒܡܘܬܐ ܢܬܩܒܪܘܢ. ܘܐܪܡܠܬܗܘܢ ܠܐ ܢܒܟܝܢ. * ܐܢ ܢܟܢܫܘܢ ܟܣܦܐ ܐܝܟ ܥܦܪܐ.
16 17 ܘܐܝܟ ܛܝܢܐ ܢܛܝܒܘܢ ܠܒܘܫܐ * ܢܛܝܒܘܢ ܘܙܕܝܩܐ ܢܠܒܫ. ܘܟܣܦܗܘܢ ܢܦܠܓ. * ܒܢܐ
18 ܐܝܟ ܣܣܐ ܒܝܬܗ. ܘܐܝܟ ܡܛܠܬܐ ܥܒܕ ܡܛܠܠܗ.

Verſio *ARABICA.*

8 9 * ضم المياه في سحابه ولم تنخرق السحاب تحتها * أخذ بوجه الغطاء فبسط فوقه السحاب * رسم
10 11 البسيط على وجه الماء حتى كمل الدور مع الظلمة * أعمدة السماء ترعد ويتحيرون بزجره * من قوته
12 13 يبهر البحر وبحكمته يحيي كثيرين * وبروحه يدبر السماء ويده قتلت الحية التي هربت * أليس هذه
14 كلها من أقسام طرائقه * أيما القول السوء الذي سمع عليه * ويكثر جبروته من الذي يفهم *

* الفصل السابع والعشرون *

1 2 * وأعاد أيوب ليمثل مثله ويقول * حي هو الله الذي عوق قضائي والقوي الذي مرر نفسي
3 4 وحبسها في * وروح الله في منخري * إن تكلمت شفتاي إثما ولساني إن تكلم غشا * حاش لي حتى
5 6 أن أموت لا يذهب صلاحي مني * وفي بري أثبت ولا أرفضه ولم يفسد على قلبي من أيامي *
7 8 * ويكون مثل المنافق عدوي ومبغضي مثل الأثيم * ماذا رجاء الحنيف الذي اقتنى العروض
9 10 في أوان يأخذ الله نفسه * من أجل أن الله لا يسمع صوت صلاته إذا ما جاءت عليه البلوى * فإن
11 كان على العزيز يتكل ويدعو الله في كل حين فإن الله يسمعه ويجيبه * ولكم أنتم فإني أسلمكم
12 13 بيد الله فإن أعمالكم عنه لا تخفى * فإنكم كلكم قد رأيتم * ولماذا تستكبرون باطلا * فإن هذه
14 قسمة الإنسان المنافق من عند الله ووراثة المسيئين التي من العزيز يقبلونها * إن يكثر أبناؤهم
15 16 فإنهم يقتلون وذراريهم لا يشبعون خبزا * وبقيتهم بالموت يقبرون وأراملهم لم يبكون * وإن هم جمعوا
17 فضة مثل التراب * ومثل الطين يعدون لباسا * فهم يعدون والصديق يلبسها * وفضتهم يقسمها *
18 * إنه بنى مثل العنكبوت بيته * ومثل المظلة صنع ظلاله *

VERS. SYR. & ARAB.
Interp. Lat.

* *Collegit aquas in nubibus* 8
ſuis, nec diſruptæ ſunt
nubes ſub illis: Operuit 9
faciem tegminis, & extendit ſuper illud nubes:
Deſignavit (d) *æquor ſu-* 10
per faciè terræ, donec cōpleta eſſet lux cum tenebris. Columnæ cœli con- 11
turbantur, et obſtupeſcant
(e) *in furore ejus. Præ* 12
fortitudine ſua increpat
mare: & in ſapientia ſua
vivificat multos: Et ſpiri- 13
tu ſuo moderatur cœlum:
& manus ejus interfecit
ſerpentem qui fugit. (f) 14
Nonne hæc omnia ſunt ex
particulis viarum ejus?
Quinam eſt ſermo malus
qui auditus de ipſo eſt?
& multitudinem fortitudinis ejus quis eſt qui intelligat?

CAP. XXVII.

ET iteravit Job texere 1
proverbium ſuum, & di-
cere. Vivus eſt Deus qui 2
(a) *impedivit judicium*
meum, & fortis qui amaricavit animam meam,
concluſitque eam in me.
Dum ſpiritus Dei fuerit in 3
naribus meis, Non lo- 4
quentur labia mea impietatem, & lingua mea non
proferet dolum. Abſit à 5
me. Quouſque moriar,
non abſcedet probitas mea
à me: Et in juſtitia mea 6
manebo, nec dimittam
eam: & non (b) *cor-*
ruptum eſt ſuper me cor
meum à diebus meis. Sitq; 7
tanquam impius, inimi-
cus meus: & oſor meus
velut ſceleſtus. Quænam 8
eſt ſpes perverſi poſſiden-
tis divitias, in tempore
quo ſumet Deus animam
ejus? Nam Deus non au- 9
diet vocem orationis illi-
us, cùm venerint ſuper
ipſum tribulationes. Quòd 10
ſi in fortiſſimo confidat,
& invocabit Deum in
omni momento, certè Deus audiet, & reſpondebit
illi. Vos autem ipſos tra- 11
do in manum Dei, quoniam opera veſtra ipſum
non latent: (c) *Quoniam* 12
vos omnes jam vidiſtis;
et cur ſuperbitis fruſtrà?
(d) *Nam hæc eſt pars* 13
impii à Deo, & hæreditas nocentium, quam à
potentiſſimo accipient. Si 14
multiplicati fuerint filii
eorum (e) *interficientur;*
* *& progenies eorum non*
ſaturabuntur pane: Et re- 15
ſidui eorum in morte ſepelientur, & viduæ eorum non plorabunt. Et ſi 16
ipſi collegerint argentum
quaſi pulverem, & veluti
lutum præparaverint indumenta; Ipſi præpara- 17
bunt, et juſtus induetur illis, & argentum eorū di-
videt: Quia ipſe ædifi- 18
cavit uti aranea domum
ſuam, & velut umbraculum fecit tectum ſuum.

INTERP. SYRIACA.
(*d*) circulum ſuper faciem aquarum, (*e*) ab increpatione ipſius. (*f*) Ecce hæc
Cap. xxvii. (*a*) ſupplantavit (*b*) doluit mihi cor à (*c*) Ecce (*d*) Ecce (*e*) ad gladium;

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Qui ligat aquas pluviæ in nubibus ſuis, & non rumpitur nubes ſub ſe. Qui tenet caliginem ſolii ſui, ut non videant illum angeli: extendit illud ſicut velum ſuper 8 9
nubes gloriæ ſuæ. Decrevit, & dixit collocari firmamentum ſuper faciem aquarum, uſq; ad finem luminis cum tenebris: Columnæ cœli commoventur & contremiſcunt 10 11
ab increpatione ejus. In virtute ſua diviſit mare, & in prudentia ſua percuſſit *fortes.* In ſpiritu oris ejus facies cœli lucidæ ſunt: creavit manus ejus Leviathan, 12 13
qui comparatus eſt ſerpenti mordenti. Ecce hæ ſunt ſummitates viarum ejus, & quod expreſſum eſt ex parte ſermonis ejus audivimus ab eo, & tonitru fortitudinis 14
ejus quis intelliget?

CAP. XXVII.

ET addidit Job aſſumens parabolam ſuam & ait: Vivus eſt Deus qui abſtulit regulam judicii mei: & omnipotens ad amaritudinem adduxit animam meam. Quoni- 1 2
am *defecit iterum* halitus meus in me, & ſpiritus Dei in naribus meis. Num loquentur labia mea mendacium, & lingua mea meditabitur dolum? Abſit à me ut 3 4
juſtificem vos donec deficiam: non auferam perfectionem meam à me. Juſtificationem meam apprehendam, & non dimittam eam: non *probro afficiet* cor meum à die- 5 6
bus meis. Sit ſicut peccator inimicus meus, & qui conſurgit adverſus me, ſicut impius. Quid enim expectat delator, quia congregat mammonam iniquitatis, quando 7 8
eradicat Deus animam ejus? Nunquid clamorem ejus audiet Deus, cùm venerit ſuper eum anguſtia? Nunquid in omnipotente delectabitur, aut clamabit ad Deum in 9 10
omni tempore? Docebo vos per prophetiam Dei, quæ apud omnipotentem non abſcondam. Ecce vos omnes vidiſtis, & quare vana & inania loquimini? Hæc eſt 11 12
pars filii hominis peccatoris à Deo, & ſors fortium qui recipiunt ab omnipotente retributionem ſuam. Si multiplicati fuerint filii ejus, his qui occidunt gladio erunt; & 13 14
filii filiorum ſuorum non ſaturabuntur pane. Qui evaſerint ex eo, in peſte ſepelientur, & viduæ ejus non plorabunt. Si congregaverit quaſi pulverem argentum, & quaſi 15 16
lutum præparaverit veſtimenta: Præparavit enim, ſed juſtus veſtietur; & argentum innocens dividet. Ædificavit ſicut tinea domum ſuam, & ſicut umbraculum quod 17 18
fecit cuſtos pomorum.

איוב : כח

, aperuit ſuos oculos : congregabitur non & , dormiet Dives
19 עָשִׁיר יִשְׁכַּב וְלֹא יֵאָסֵף עֵינָיו פָּקַח
eum eſt furatus ,nox : terrores aquæ ſicut eum Apprehendent .*ipſe* non &
20 וְאֵינֶנּוּ : תַּשִּׂיגֵהוּ כַמַּיִם בַּלָּהוֹת לַיְלָה גְּנָבַתּוּ
eum commovebit turbine & : ibit & ,Eurus eum Tollet .turbo
21 סוּפָה : יִשָּׂאֵהוּ קָדִים וְיֵלַךְ וִישָׂעֲרֵהוּ
fugiendo ejus *manu* de ; parcet non & ,eũ ſuper projiciet Et .ſuo loco de
22 מִמְּקוֹמוֹ : וְיַשְׁלֵךְ עָלָיו וְלֹא יַחְמוֹל מִיָּדוֹ בָּרוֹחַ
eum ſuper ſibilabit & : ſuis *palmis* eum ſuper Plaudet .fugiet
23 יִבְרָח : יִשְׂפֹּק עָלֵימוֹ כַפֵּימוֹ וְיִשְׁרֹק עָלָיו
.ſuo loco de
מִמְּקוֹמוֹ :

CAP. XXVIII. כח

.fundent , auro locus & : exitus argento eſt Quoniam
1 כִּי יֵשׁ לַכֶּסֶף מוֹצָא וּמָקוֹם לַזָּהָב יָזֹקּוּ :
2 Finem .æs *fuſus* *lapis* & : tolletur *pulvere* è Ferrum
3 בַּרְזֶל מֵעָפָר יֻקָּח וְאֶבֶן יָצוּק נְחוּשָׁה : קֵץ
lapidem : *inquirens* ipſe , *fini* omni & , *tenebræ* poſuit
שָׂם לַחֹשֶׁךְ וּלְכָל־תַּכְלִית הוּא חוֹקֵר אֶבֶן
,*incola* *cum* *à* *torrens* *Erupit* .mortis umbram & , caliginis
4 אֹפֶל וְצַלְמָוֶת : פָּרַץ נַחַל מֵעִם־גָּר
.ſunt motæ , homine præ ſunt elevatæ : pede à *oblivioni traditæ*
הַנִּשְׁכָּחִים מִנִּי־רָגֶל דַּלּוּ מֵאֱנוֹשׁ נָעוּ :
ut eſt *verſus* *ea ſubter* & : panis egrediebatur *ea ex* Terra
5 אֶרֶץ מִמֶּנָּה יֵצֵא־לָחֶם וְתַחְתֶּיהָ נֶהְפַּךְ כְּמוֹ־
.ei auri *pulveres* & : ejus lapides ſapphiri Locus .ignis
6 אֵשׁ : מְקוֹם־סַפִּיר אֲבָנֶיהָ וְעַפְרֹת זָהָב לוֹ :
oculus eam vidit nec : avis *eam* cognovit non Semitam
7 נָתִיב לֹא־יְדָעוֹ עָיִט וְלֹא שְׁזָפַתּוּ עֵין
tranſiit non : *ſuperbiæ* *filii* eam calcaverunt Non .*vulturis*
8 אַיָּה : לֹא הִדְרִיכֻהוּ בְנֵי־שָׁחַץ לֹא עָדָה
ſubvertit : ſuam manum miſit ſilicem In .leo eam juxta
9 עָלָיו שָׁחַל : בַּחַלָּמִישׁ שָׁלַח יָדוֹ הָפַךְ
omne & : fecit erumpere rivos *rupibus In* .montes radice à
10 מִשֹּׁרֶשׁ הָרִים : בַּצּוּרוֹת יְאֹרִים בִּקֵּעַ וְכָל־
abſconditum & : *faſciavit* flumina *fletu* A .ejus oculus vidit precioſum
11 יְקָר רָאֲתָה עֵינוֹ : מִבְּכִי נְהָרוֹת חִבֵּשׁ וְתַעֲלֻמָהּ
hic ubi Et ? invenietur unde ſapientia Et .lucem *educet*
12 יֹצִא אוֹר : וְהַחָכְמָה מֵאַיִן תִּמָּצֵא וְאֵי זֶה
non & : ejus *ordinem* homo Neſcivit ? intelligentiæ locus
13 מְקוֹם בִּינָה : לֹא־יָדַע אֱנוֹשׁ עֶרְכָּהּ וְלֹא
: *ipſa* me in Non , dixit Vorago .viventium terra in invenietur
14 תִמָּצֵא בְּאֶרֶץ הַחַיִּים : תְּהוֹם אָמַר לֹא בִי־הִיא
purum aurum dabitur Non .*me apud* Non , dixit mare &
15 וְיָם אָמַר אֵין עִמָּדִי : לֹא־יֻתַּן סְגוֹר
Non .ejus precium argento ponderabitur non & : ea pro
16 תַּחְתֶּיהָ וְלֹא יִשָּׁקֵל כֶּסֶף מְחִירָהּ : לֹא
.ſapphiro & ,precioſo onyche cum : Ophir auro cum æſtimabitur
תְסֻלֶּה בְּכֶתֶם אוֹפִיר בְּשֹׁהַם יָקָר וְסַפִּיר :
vas ejus permutatio nec : *cryſtallus* & ,aurum eam adæquabit Non
17 לֹא־יַעַרְכֶנָּה זָהָב וּזְכוֹכִית וּתְמוּרָתָהּ כְּלִי־
ſapientiæ *attractio* & : commemorabitur non *unio* & , Coralia .*obrizi*
18 פָז : רָאמוֹת וְגָבִישׁ לֹא יִזָּכֵר וּמֶשֶׁךְ חָכְמָה
auro cum : Æthiopiæ ſmaragdus eam adæquabit Non .margaritis *præ*
19 מִפְּנִינִים : לֹא־יַעַרְכֶנָּה פִּטְדַת־כּוּשׁ בְּכֶתֶם
hic ubi & ? veniet unde ſapientia Et .æſtimabitur non mundo
20 טָהוֹר לֹא תְסֻלֶּה : וְהַחָכְמָה מֵאַיִן תָּבוֹא וְאֵי זֶה
: viventis omnis oculis ab ſe abſcondit Et ? intelligentiæ locus
21 מְקוֹם בִּינָה : וְנֶעֶלְמָה מֵעֵינֵי כָל־חָי
.eſt occultata cœli volucri à &
וּמֵעוֹף הַשָּׁמַיִם נִסְתָּרָה :

Verſio VULG. LAT.

19 Dives cùm dormierit, nihil ſecum auferet: aperiet oculos 20 ſuos, & nihil inveniet. Apprehendet eum quaſi aqua inopia, nocte opprimet eum tempe- 21 ſtas. Tollet eum ventus urens, & auferet, & velut turbo ra- 22 piet eum de loco ſuo. Et mittet ſuper eum, & non parcet: de manu ejus fugiens fugiet. 23 Stringet ſuper eum man' ſuas, & ſibilabit ſuper illum, intuens locum ejus.

CAP. XXVIII.

1 Habet argentum, venarum ſuarum principia: & auro locus 2 eſt, in quo conflatur. Ferrum de terra tollitur: & lapis ſolutus calore, in æs vertitur. 3 Tempus poſuit tenebris, & univerſorum finem ipſe conſiderat, lapidem quoque caliginis, 4 & umbram mortis. Dividit torrens à populo peregrinante, eos quos oblitus eſt pes e- 5 gentis hominis, & invios. Terra, de qua oriebatur panis in 6 loco ſuo, igni ſubverſa eſt. Locus ſapphiri lapides ejus, & 7 glebæ illius aurum. Semitam ignoravit avis, nec intuitus eſt 8 eam oculus vulturis. Non calcaverunt eam filii inſtitorum, nec pertranſivit per eam le- 9 æna. Ad ſilicem extendit manum ſuam, ſubvertit à radici- 10 bus montes. In petris rivos excîdit, & omne pretioſum 11 vidit oculus ejus. Profunda quoque fluviorum ſcrutat' eſt, & abſcondita in lucem produ- 12 xit. Sapientia verò ubi invenitur? & quis eſt locus intel- 13 ligentiæ? Neſcit homo pretium ejus, nec invenitur in ter- 14 ra ſuaviter viventium. Abyſſus dicit, Non eſt in me: & mare loquitur, Non eſt me- 15 cum. Non dabitur aurum obrizum pro ea, nec appendetur argentum in commutatio- 16 ne ejus. Non conferetur tinctis Indiæ coloribus, nec lapidi ſardonycho pretioſiſſimo, 17 vel ſapphiro. Non adæquabitur ei aurum vel vitrum, nec commutabuntur pro ea vaſa 18 auri: Excelſa & eminentia non memorabuntur comparatione ejus: trahitur autem ſa- 19 pientia de occultis. Non adæquabitur ei topazius de Æthiopia, nec tincturæ mundiſſimæ 20 componetur. Undè ergò ſapientia venit? & quis eſt lo- 21 cus intelligentiæ? Abſcondita eſt ab oculis omnium viventium, volucres quoque cœli latet.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

19 † Πλούσιος κοιμηθήσεται καὶ οὐ προσθήσει, † (*) ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ διήνοιξε καὶ οὐκ ἔστι. 20 † (ω) Συνήντησαν αὐτῷ ὥσπερ ὕδωρ αἱ ὀδύναι, † νυκτὶ δὲ (α) ὑφείλετο αὐτὸν γνό- 21 φος. † (β) Ἀναλήψεται δὲ αὐτὸν καύσων καὶ ἀπελεύσεται, † καὶ λικμήσει αὐτὸν ἐκ 22 τοῦ τόπου αὐτοῦ. (γ) Καὶ ἐπιρρίψει ἐπ' αὐτὸν καὶ οὐ φείσεται, † ἐκ χειρὸς αὐτοῦ φυ- 23 γῇ φεύξεται. † Κροτήσει (δ) ἐπ' αὐτοὺς χεῖρας αὐτῶν, † καὶ συριεῖ αὐτὸν ἐκ τοῦ τόπου αὐτοῦ.

Dives dormiet, & non adjiciet: 19 oculos ſuos aperiet, & non eſt. Occurrerunt ei, ſicut aqua, dolo- 20 res: nocte autem ſuſtulit eum caligo. Tollet autem eum æſtus, 21 & abibit, & ventilabit eum de loco ſuo: Et projiciet ſuper eum, 22 & non parcet: de manu ejus fugâ fugiet. Plaudet ſuper eos 23 manibus ſuis, & exſibilabit eum de loco ſuo.

MS. A. (*) ὀφθαλμὸς (ω) Κοιμηθέντι συναντήσονται αὐτῷ ὥσπερ ὕδωρ ὀδύναι, (α) ὑφείλατο (β) Ἀναλήμψεται αὐτὸν (γ) Καὶ ἀπορρίψει αὐτὸν (δ) ἐπ' αὐτὸν χεῖρας αὐτοῦ,

ΚΕΦ. κη'.

1 † Ἔστι γὰρ ἀργυρίῳ τόπος ὅθεν γίνεται, † τόπος δὲ (α) χρυσίου ὅθεν διηθεῖται. 2 † Σίδηρος μὲν γὰρ ἐκ γῆς γίνεται, † χαλ- 3 κὸς δὲ ἴσα λίθῳ λατομεῖται. † Τάξιν ἔθετο σκότει, † (β) καὶ πᾶν πέρας αὐτὸς ἐξακριβάζεται, † λίθος σκοτία, καὶ σκιὰ 4 θανάτου. Διακοπὴ χειμάρρου ἀπὸ κονίας, † οἱ δὲ ἐπιλανθανόμενοι (γ) ὁδὸν δικαίαν ἠ- 5 σθένησαν, ἐκ βροτῶν ἐσαλεύθησαν. † Γῆ, ἐξ αὐτῆς ἐξελεύσεται ἄρτος, † ὑποκά- 6 τω αὐτῆς ἐστράφη (δ) ὡσεὶ πῦρ. † Τόπος σαπφείρου (ε) οἱ λίθοι αὐτῆς, † καὶ 7 χῶμα χρυσίον αὐτῷ. † Τρίβος, οὐκ ἔγνω αὐτὴν (ζ) πετεινὸν, † καὶ οὐ παρέβλεψεν 8 αὐτὴν ὀφθαλμὸς γυπός. † (η) Καὶ οὐκ ἐπάτησαν αὐτὸν υἱοὶ ἀλαζόνων, † οὐ παρῆλ- 9 θεν ἐπ' αὐτῆς λέων. † Ἐν ἀκροτόμῳ ἐξέτεινε χεῖρα αὐτοῦ, † κατέστρεψε δὲ ἐκ 10 ῥιζῶν ὄρη. † Δίνας δὲ ποταμῶν (θ) διέρρηξε, † (ι) πᾶν δὲ ἔντιμον εἶδέ μου ὁ ὀφθαλμός. 11 † Βάθη δὲ ποταμῶν ἀνεκάλυψεν, † ἔδει- 12 ξε δὲ αὐτοῦ δύναμιν εἰς φῶς. † Ἡ δὲ σοφία πόθεν εὑρέθη; † ποῖος δὲ τόπος (κ) 13 ἐστὶ τῆς ἐπιστήμης; † Οὐκ οἶδε βροτὸς ὁδὸν αὐτῆς, † (λ) οὐδὲ μὴν εὑρέθη ἐν ἀνθρώποις. 14 † Ἄβυσσος εἶπεν, (μ) Οὐκ ἔνεστιν ἐν ἐμοί· † καὶ ἡ θάλασσα εἶπεν, Οὐκ ἔνεστι μετ' ἐ- 15 μοῦ. † Οὐ δώσει συγκλεισμὸν ἀντ' αὐτῆς, † καὶ οὐ σταθήσεται ἀργύριον ἀντάλλαγμα 16 αὐτῆς. † Καὶ οὐ (ν) συμβασταχθήσεται χρυσίῳ Σωφίρ, † ἐν ὄνυχι τιμίῳ καὶ σαπ- 17 φείρῳ. † (ξ) Οὐκ ἰσωθήσεται αὐτῇ χρυσίον καὶ ὕαλος, † καὶ τὸ ἄλλαγμα αὐτῆς 18 σκεύη χρυσᾶ. † Μετέωρα καὶ γαβὶς οὐ μνησθήσεται, † καὶ ἕλκυσον σοφίαν ὑπὲρ 19 τὰ (ο) ἐσώτατα. Οὐκ ἰσωθήσεται αὐτῇ τοπάζιον Αἰθιοπίας, † χρυσίῳ καθαρῷ οὐ συμ- 20 βασταχθήσεται. † (*) Ἡ δὲ σοφία πόθεν εὑρέθη; † ποῖος (π) δὲ τόπος ἐστὶ τῆς 21 συνέσεως; † Λέληθε πάντα ἄνθρωπον, † καὶ ἀπὸ πετεινῶν τοῦ οὐρανοῦ (ρ) ἐκρύβη.

CAP. XXVIII.

Est enim argento locus, un- 1 dè fit: locus autem auro, (a) undè percolatur. Etenim fer- 2 rum quidem de terra fit: æs autem ſimiliter ut lapis (b) cæditur. (c) Ordinem poſuit tenebris, & 3 omnem finem ipſe (d) perſcrutatur: lapis (e) tenebræ, & umbra mortis. (f) Deciſio torrentis 4 à pulvere: & qui obliviſcuntur viam juſtam, infirmati ſunt: ex (g) hominibus commoti ſunt. (h) Terra, ex ea egredietur panis: 5 de ſubtus ea verſatum eſt, ſicut ignis. Locus ſapphiri lapides e- 6 jus, & agger aurum ei. Semita, 7 quã non cognovit avis, nec vidit eam oculus vulturis. Et non cal- 8 caverunt (i) eum filii ſuperborum, non tranſiit ſuper eam leo. In 9 duriſſimo lapide extendit manum ſuam, & evertit à radicibus montes. Et (k) gurgites flumi- 10 num dirupit: omne verò pretioſum vidit oculus meus. Et alti- 11 tudines fluminum (l) revelavit: & oſtendit virtutem ſuam in lumine. Sapientia autem unde (m) 12 inventa eſt? & qualis locus eſt ſcientiæ? Non novit homo (n) 13 viam ejus: neque inventa eſt in hominibus. Abyſſus dixit, Non 14 eſt in me: & mare dixit, Non eſt mecum. Non dabit (o) con- 15 cluſuram pro ea, & non pendetur argentum commutatio ejus. Et non (p) conferetur auro (q) 16 Sophir, in (r) onyche pretioſo, & ſapphiro. Non æquabitur ei au- 17 rum, et (ſ) vitrum, & (t) commutatio ejus vaſa aurea. (u) Sub- 18 limia, & Gabis non erunt in memoria: & (x) attrahe ſapientiam ſuper intima. Non æquabitur 19 ei Topazium Æthiopiæ: auro puro non (y) conferetur. Sapien- 20 tia autem unde inventa eſt? & qualis locus eſt intelligentiæ? La- 21 tuit (z) omnem hominem, & à volucribus cœli abſcondita eſt.

MS. A. (α) χρυσίῳ (β) καὶ καιρῶν πέρας αὐτὸς ἐξακριβάζεται, (γ) ὁδοὺς δικαιοσύνης, ἠσθένησαν ἐκ βροτῶν. Γῆ, (δ) ὡς πῦρ. (ε) καὶ οἱ λίθοι (ζ) *πετεινῶν, (η) Οὐκ ἐπάτησαν αὐτὴν υἱοὶ *ἀλλαζόνων, οὐ γὰρ ἦλθεν (θ) ἔρρηξεν, (ι) πᾶν δὲ τίμιον ἴδεν αὐτοῦ ὁ ὀφθαλμός. Καὶ βάθη ποταμῶν (κ) ἐστὶν ἐπιστήμης; (λ) οὐδὲ μὴ (μ) Οὐκ ἔστιν ἐν ἐμοί· καὶ θάλασσα εἶπεν, Οὐκ ἔστιν (ν) συνβασταχθήσεται χρυσίῳ Ὠφείρ, (ξ) Καὶ οὐχ (ο) *ἔσωτα. (*) Ἡ δὴ (π) δέ ἐστιν τόπος συνέσεως; (ρ) *οὐκ ἐκρύβη.

תרגום TARGUM.

21 19 20 עתיר ידמוך ולא יתכנש עינוי פקח וליתוי : תדבקניה היך מיא רגשתא ליליא טלטלניה זיקא : יטלניה רוח קדומא וייזל ויעלעלניה מן אתריה :
23 22 ויטלוק עלוי ולא יחוס מן ידיה מערק יערוק : ישפוק עליהון ידיהון וישרוק עלוי מן אתריה :

כח

3 1 2 ארום אית לסימא מפקנא ואתר לדהבא מסננין : פרזלא מעפרא יתנסיב ואבנא יתיך כרכומא : סוף שוי לחשוכא ולכל סופא הוא מפשפש אבנין
5 4 מפולמן דמתמן נפק חשוך וטולי מותא : תקף נחלא מן אתרא די מודלח מרוביא דמתנשין מן למעבר רגלא אזדקפו מבני נשא אטלטלו : ארעא
6 דמנה נפק מזונא ולרע מנה גהנם דצנת תלגיה מתהפכא דכמת אשתא : ונגתא דעדן די אתר דשבזיזא אבניהא ועפרורין דדהבא ליה :
8 7 אורחא דלא חכמיה עופא ולא סקרתיה עין טרפיתא : תא שביל אילן חיי דלא חכמיה סמאל דפרח היך עופא ולא סקרתיה עינא דחוה : לא
9 טילו בה בני אריון לא זאר עלוי ליתא : תא לא הליכו בה בני אדם ולא סטא עלוהי חויא : בשמיר אושיט ידיה הפך מן עקריהון טוריא :
12 10 11 בשינרין נהרין בזע וכל איקרא חמת עיניה : מן קלילי נהריא זרו ומחרכא דתעלומא יפיק נהורא : וחוכמתא מאן האן תשתכח והאן דין אתר ביונתא :
15 13 14 לא ידע בר נש עלויה ולא תשכח בארעא דנין דמחטין בחייהון : תהומא אמר לא נבי היא וימא אמר לית בהדי : לא יתיהב דהב סנין חלופהא ולא יתקל
17 16 סימא פרונה : לא תשתלחף בפטלין דמן אופיר בבירולין יקר ושבזיזא : לא יעלנה דהבא אספקלרא ופרונה מאני אובריזין : תא לא יסדרנה
18 גבר עתיר בדהב וזכוכיתא לא יהב חלופה מאני דדהבא סנינא : סנדלכין ובירולין לא ידכר ונגדא דחוכמתא מן מרגלין : תא לית אפשר דתשתכח בקלותא
19 אלהין ביוקרא היך דהבא ומן דלא ינטרונה אזלא ומתברא היך זגוגיתא ופרוג אגרה לעלמא דאתי מני פזוזיא : לא יעלנה מרגלא ירקא דאתי מן כוש
21 20 בפטלין דכי לא תשתלחף : וחוכמתא מן האן תיתי והאן דין אתר ביונתא : וכסיא מטחמיהון דכל חי ומעופא דשמיא מטמרא :

Verſio SYRIACA.

19 * ܡܛܠ ܕܥܘܬܪܐ ܢܕܡܟ. ܘܠܐ ܢܘܣܦ ܠܡܩܡ. ܥܝܢܘܗܝ ܦܬܚ ܘܠܝܬܘܗܝ. * ܢܕܪܟܝܘܗܝ ܕܘܘܚܐ ܐܝܟ
20 21 ܡܝܐ. ܘܐܝܟ ܥܠܥܠܐ ܕܦܪܚܐ ܢܥܒܪܝܘܗܝ ܪܘܚܐ ܒܠܠܝܐ. * ܘܢܐܙܠ ܘܢܣܚܦܝܘܗܝ ܡܢ ܐܬܪܗ. * ܘܢܫܕܘܢܝܗܝ ܘܠܐ
22 ܢܚܘܣ. ܘܡܢ ܐܝܕܗ ܡܥܪܩ ܢܥܪܘܩ. * ܢܛܦܚ ܥܠܝܗܘܢ ܐܝܕܗ. ܘܢܫܪܘܩ ܥܠܝܗܘܢ ܡܢ
23 ܐܬܪܗ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܚ *

1 * ܡܛܠ ܕܐܝܬ ܠܟܣܦܐ ܡܦܩܢܐ. ܘܐܬܪܐ ܕܕܗܒܐ ܠܡܨܦܝܘ. * ܘܦܪܙܠܐ ܡܢ
2 ܥܦܪܐ ܡܬܢܣܟ. ܘܡܢ ܟܐܦܐ ܡܬܢܣܟ ܢܚܫܐ. * ܩܨܐ ܣܡ ܠܚܫܘܟܐ. ܘܟܠܗ ܫܘܠܡܐ ܗܘ ܒܨܐ. ܟܐܦܐ
3 4 ܕܒܪܝܐ. ܘܛܠܠܐ ܕܡܘܬܐ. * ܦܣܩܐ ܝܪܬܘ ܡܢ ܥܡܐ ܙܢܝܐ. ܕܐܬܛܥܝܘ ܡܢ ܪܓܠܐ. ܘܐܬܡܟܟܘ ܡܢ ܐܢܫܐ.
5 6 * ܓܠܘ ܐܪܥܐ ܕܢܦܩܐ ܡܢܗ ܡܐܟܘܠܬܐ. ܘܬܚܬܝܗ̇ ܡܬܗܦܟܐ ܐܝܟ ܢܘܪܐ. * ܘܐܬܪܗ ܕܣܦܝܠܐ ܟܐܦܝܗ̇ ܘܡܫܘܚܬܐ
7 8 ܕܕܗܒܐ ܒܫܒܝܠܝܗ̇. * ܠܐ ܝܕܥܘܗ̇ ܦܪܚܬܐ. ܘܠܐ ܚܙܬܗ̇ ܥܝܢܐ ܕܕܝܬܐ. * ܘܠܐ ܕܪܟܬܗ̇ ܚܝܘܬܐ. ܘܠܐ ܥܒܪ ܥܠܝܗ̇ ܐܪܝܐ.
9 10 * ܒܟܐܦ ܛܪܢܐ. ܐܘܫܛ ܐܝܕܗ. ܘܗܦܟ ܡܢ ܥܩܪܝܗܘܢ ܛܘܪܐ. * ܒܥܘܫܢܗ ܢܗܪܘܬܐ ܦܠܓ. ܘܟܠ ܝܩܝܪ ܚܙܬ
11 ܥܝܢܗ. * ܘܡܥܡܩܐ ܕܢܗܪܘܬܐ ܚܒܫ. ܘܡܢ ܟܣܝܬܐ ܢܦܩ ܢܘܗܪܐ. * ܘܚܟܡܬܐ ܐܝܟܐ ܡܫܬܟܚܐ. ܘܐܝܢܐ
12 13 ܐܬܪܐ ܕܣܘܟܠܗ̇. * ܠܐ ܝܕܥ ܐܢܫ ܣܝܡܬܗ̇. ܘܠܐ ܡܫܬܟܚܐ. ܐܠܐ ܒܐܪܥܐ ܕܚܝܐ. * ܬܗܘܡܐ ܐܡܪ. ܠܐ ܗܘܬ ܒܝ. ܘܝܡܐ
14 15 ܐܡܪ. ܠܝܬ ܥܡܝ. * ܠܐ ܡܬܝܗܒ ܕܗܒܐ ܚܠܦܝܗ̇. ܘܠܐ ܡܬܬܩܠ ܟܣܦܐ ܒܕܘܡܝܗ̇. * ܠܐ ܡܬܚܠܦܐ ܒܕܗܒܐ ܕܐܘܦܝܪ
16 17 ܘܒܒܪܘܠܐ ܘܣܦܝܠܐ. * ܠܐ ܦܚܡܝܢ ܠܗ̇ ܕܗܒܐ ܘܙܓܘܓܝܬܐ. ܘܡܢܐ ܕܕܗܒܐ ܠܐ ܢܬܝܗܒܘܢ ܚܠܦܝܗ̇.
18 ܠܐ ܦܚܡܝܢ ܠܗ̇. * ܛܒܐ ܚܟܡܬܐ ܡܢ ܟܐܦܐ ܛܒܬܐ. ܠܐ ܦܚܡܐ ܠܗ̇ ܫܐܪܐ ܝܩܝܪܐ. ܘܡܢ ܒܪܘܠܐ
19 ܘܡܪܓܢܝܬܐ: ܠܐ ܡܙܕܒܢܐ. * ܛܒܐ ܗܝ ܚܟܡܬܐ ܡܢ ܟܠܡܕܡ. ܘܡܕܡ ܠܐ ܦܚܡ ܠܗ̇. ܡܪܓܢܝܬܐ
20 21 ܕܟܘܫ. ܘܟܐܦܐ ܕܝܘܩܢܬܐ ܠܐ ܦܚܡܢ ܠܗ̇. * ܚܟܡܬܐ ܡܢ ܐܝܟܐ ܐܬܝܐ. ܘܐܝܢܐ ܐܬܪܐ ܕܣܘܟܠܗ̇. * ܕܟܣܝܐ ܡܢ
ܥܝܢܝ ܟܠ ܚܝ. ܘܡܢ ܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ ܡܛܫܝܐ.

Verſio ARABICA.

19 20 * من أجل الغنا يضجع ولا يعود أن يقوم * فتح عينا وليس هو * يدركه الاضطراب مثل الماء * ومثل
21 22 الفراش الطاير تحمله الريح بالليل ويذهب * ويبعدونه من مكانه * ويطرحه بغير رافة * ومن يدك هربا
23 يهرب * يصفق عليهم بيدك * ويصفر عليهم من مكانه * الفصل الثامن والعشرون *
1 2 * من أجل انه يكون للفضة صفوا * وللذهب موضعا للسبك * والحديد من التراب يسبك * ومن
3 4 الحجارة يستخرج النحاس * منها جعل للظلمة ولكل فناء * هو يعرف حجر القفر وظلال الموت * نعن
5 وربوا من الشعب الزاني * الذين نسوا من المصانع وتحققوا من الناس * كشفوا الارض الذي منها
6 7 خرج المعاش * وتحتها ينقلب مثل النار * ومكان الجوهر حجارتها * ومصب الذهب في سبلها * لم تعرفها
8 9 الطاير * ولم تراها عين الحداة * ولم يدوسها الحيوان * ولم يجور عليها اسد * في حجر الصوان بسط
10 11 يده * وقلب من اصولها الجبال * بعجلة الانهار يقسم * وكل فاخر رات عينه * وعظمة الانهار حبسها * ومن
12 13 الظلام خرج النور * والحكمة في اي مكان توجد * واي مكان فهمها * لا يعرف الانسان كنزها * ولا
14 15 توجد الا في ارض الحياة * القرار يقول لم يكون في * والبحر يقول ليست عندي * لا يعطي الذهب
16 17 بدلها * ولا تعد الفضة في ثمنها * ليس تبدل في ذهب اوفير وفي البلور والجوهر * ولا يشبهها الذهب
18 والياقوت والمرجان الجيد والحجارة الحمر لا يشبهوها * خير هي الحكمة من الحجارة الرفيعة * لا
19 يشبهها الحرير الفاخر * والزمرد والدر لا تباع * خير هي الحكمة من كل شي * وليس يشبهها شي * جواهر
20 21 كوش وحجارة الياقوت لا يشبهوها * الحكمة من اين تاتي * واي مكان فهمها * خفية هي من
اعين كل حي * ومن طاير السماء فانها مستترة *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Propter divitias dormiet, nec adjiciat ut reſurgat: aperuit oculum, & ipſe non ſunt. 19 Apprehendet eum pertubatio quaſi aquam, & quaſi (f) limum volantem: 20 Aſportabit eũ ventus noctu, & abibit; & expellent eum è loco ſuo, 21 Et projiciet illũ abſque miſericordia, & de manu ej⁹ fugiendo fugiet. 22 Plaudet ſuper eos manu ſuâ, et ſibilabit ſuper illos de loco ſuo. 23

CAP. XXVIII.

Etenim argento eſt (a) purgatio, & auro locus ad fundendum. 1 Et ferrum ex terra funditur, & de lapidib⁹ educitur æs. 2 Terminum poſuit tenebris, & omnẽ (b) interitũ ipſe novit, lapidem ſolitudinis, et umbrã mortis. 3 Sciſſuram hæreditate acquirent à populo fornicatio qui oblivioni traditi ſunt (c) è turbis, et (d) attenuantur ab hominibus. 4 Detexerunt terram è qua egreſſum eſt alimentũ, ſub qua volvitur quaſi ignis: 5 Et locus (e) gemmarũ lapides ejus, et (f) fluxus auri in ſemitis ejus. 6 Non noverunt eam volatilia, nec vidit eã oculus milvi, 7 Nec calcavit eam animal, neq; tranſivit ſuper illã (†) leo: 8 In ſaxũ ſilicis extendit manũ ſuã, & ſubvertit ab radicibus eorum montes: 9 Cum (g) feſtinatione fluvios dividit, et (h) omnes colles vidit oculus ejus: 10 Et ſuperbiam fluminum concluſit; et (i) de tenebris egreſſũ eſt lumen. 11 Et ſapientia in quonam loco reperictur? & quiſnam locus intelligentiæ ipſius? 12 Ignorat homo theſaurum ejus, nec invenitur niſi in terra vitæ. 13 Profundũ ait, Non fuit in me; et mare dicit, Non eſt apud me. 14 Non datur aurum pro illa, neq; numeratur argentum in pretium ejus: 15 Non cõmutatur cum auro obrizo, & cum (k) cryſtallo ac gemmis. 16 Non comparatur cum ea aurũ; et (l) jacynthus, & margaritæ optimæ, et (m) lapides rubri non ſunt ſimiles illi. 17 Melior eſt ſapientia lapidib⁹ eminentibus. Non æquat eam ſericum pretioſiſsimum: et ſmaragdo atq; (n) unionibus non venditur. 18 Melior eſt ſapientia omni re, nec aſſimulatur ei res ulla. Gemmæ Æthiopiæ & lapides (o) jacynthi non ſunt illi ſimiles. 19 Sapientia à quo loco venit? et quiſnam locus intelligentiæ ipſius? 20 Abſconſa eſt ab oculis omnis viventis, & à volatilibus cœli eſt quidem tecta. 21

INTERP. SYRIACA. (f) tempeſtatem volantem: Cap. xxviii. (a) exitus, (b) finẽ (c) à vadis, (d) detracti ſunt ex (e) Sapphiri (f) conflatoriũ (†) viator: (g) robore (h) omne pretioſum (i) de occulto (k) beryllo & ſapphiro. (l) vitrum, (m) gemmæ & margaritæ (n) amethyſtis (o) Ephodi

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Dives dormiet, & non colligetur: oculos ſuos aperiet, & non ſubſiſtet. Apprehendet eum quaſi aqua tumultus: nocte transferet eum tempeſtas. Tollet eum ventus 19 20 urens, & abibit: & ſicut turbo rapiet eum de loco ſuo. Et projiciet ſuper eum, & non parcet: de manu ejus fugiens fugiet. Plaudet ſuper eum manibus, & ſibilabit 21 22 ſuper eum de loco ſuo. 23

CAP. XXVIII.

Habet enim argentum venam ex qua producitur; & locus auro eſt in quo confletur. Ferrum de terra tollitur, & lapis fuſione vertitur in chalybem. Finem poſuit te- 1 2 3 nebris & omnium fines ipſe ſcrutatur: lapides fortes, unde exeunt tenebræ & umbræ mortis. Diviſit torrentem à loco *diffuſo* in rivulos qui oblivioni traditi ſunt, ne 4 per eos tranſeat pes: elevati ſunt, à filiis hominum tranſlati ſunt. Terra de qua egrediebatur cibus; & ſub ea eſt gehenna, cujus nix frigida convertitur in ſimilitudinem 5 ignis. Et paradiſus voluptatis *qui* loc⁹ eſt, cujus lapides ſunt ſaphiri, & pulveres aurei ſunt ei. Semitam *quæ* nulla ſcivit avis: nec intuit⁹ eſt eam ocul⁹ vulturis. *Targum* 6 7 *aliud*: Semitam arboris vitæ, *quam non novit Sammael, volans inſtar* avis: nec intuitus eſt eam oculus *Evæ*. Non ambulaverunt in ea filii leonum, nec declinavit ad eam 8 leæna. *Targum aliud*: Non ambulaverunt in ea filii *hominis*, nec declinavit ad eam *ſerpens*. Ad ſilicem extendit manum ſuam, ſubvertit à radice montes. In petris ex- 9 10 cidit flumina, & omne precioſum videt oculus ejus. De imbribus accingit flumina, & de feneſtra occulta producit lumen. Sapientia autem ubi invenietur? & ubi eſt 11 12 locus prudentiæ? Neſcit homo excellentiam ejus, & non invenitur in terra ſuperborum qui peccant in vita ſua. Abyſſus dixit: Non eſt apud me: & mare dixit, Non 13 14 eſt mecum. Non dabitur aurum conflatum pro ea, nec appendetur argentum in commutatione ejus. Non permutabitur pro tinctis colorib⁹ Ophir, nec lapidibus beryl- 15 16 lis precioſis & ſaphiro. Non adæquabitur ei aurum & ſpeculum, nec permutabuntur pro ea vaſa obrizi. *Targum aliud: Non comparabit eam vir dives cum auro & cry-* 17 *ſtallo, nec dabit pro ea vaſa auri conflati.* Smaragdi & gemmæ non commemorabuntur, & attractio ſapientiæ melior eſt margaritis. *Targum aliud: Fieri nequit ut invenia-* 18 *tur in vilitate, ſed in pretio eſt ſicut aurum: ſi quis autem non conſervet eam, abit & confringitur ut vitrum; & commutatio mercedis ejus in ſeculo venturo vaſa aurea.* Non adæquabitur ei margarita *viridis* quæ venit de Æthiopia: mundis coloribus non conferetur. Sapientia autem unde venit? & quis eſt locus intelligentiæ? Et celata 19 20 eſt ab *aſpectu* omnis viventis, & ab avibus cœli abſcondita eſt. 21

אִיּוֹב : כט

.ejus *auditum* audivimus noſtris auribus *In* :dixerunt mors & Perditio
22 אֲבַדּוֹן וָמָוֶת אָמְרוּ בְּאָזְנֵינוּ שָׁמַעְנוּ שִׁמְעָהּ׃
.ejus locum cognovit ipſe & : ejus viam intellexit Deus
23 אֱלֹהִים הֵבִין דַּרְכָּהּ וְהוּא יָדַע אֶת־מְקוֹמָהּ׃
cœlo omni ſub : aſpiciet terræ fines ad ipſe Quia
24 כִּי־הוּא לִקְצוֹת־הָאָרֶץ יַבִּיט תַּחַת כָּל־הַשָּׁמַיִם
appendat aquas & : pondus vento *faciendum Ad* .videbit
25 יִרְאֶה׃ לַעֲשׂוֹת לָרוּחַ מִשְׁקָל וּמַיִם תִּכֵּן
coruſcationi viam & : ſtatutum pluviæ *ipſum faciendo In* .menſura in
26 בְּמִדָּה׃ בַּעֲשֹׂתוֹ לַמָּטָר חֹק וְדֶרֶךְ לַחֲזִיז
etiam & , eam præparavit : eam *narravit* &,eam vidit Tunc .*tonitruorum*
27 קֹלוֹת׃ אָז רָאָהּ וַיְסַפְּרָהּ הֱכִינָהּ וְגַם־
ipſa Domini timor Ecce : homini dixit Et .eam inveſtigavit
28 חֲקָרָהּ׃ וַיֹּאמֶר לָאָדָם הֵן יִרְאַת אֲדֹנָי הִיא
.intelligentia malo à recedere & : ſapientia
חָכְמָה וְסוּר מֵרָע בִּינָה׃

CAP. XXIX. כט

Quis : dixit & , ſuam parabolam *aſſumere* Ijob *addidit* Et
1 2 וַיֹּסֶף אִיּוֹב שְׂאֵת מְשָׁלוֹ וַיֹּאמַר׃ מִי־
.me cuſtodiebat Deus dies juxta : *antiquitatis* menſes juxta *mihi dabit*
יִתְּנֵנִי כְיַרְחֵי־קֶדֶם כִּימֵי אֱלוֹהַּ יִשְׁמְרֵנִי׃
ejus lumen ad ; meum caput ſuper ſuam lucernā *ipſum ſplendere faciendo In*
3 בְּהִלּוֹ נֵרוֹ עֲלֵי רֹאשִׁי לְאוֹרוֹ
; *mei opprobrii* diebus in eram Sicut .*obſcuritatem per* ambulabam
4 אֵלֶךְ חֹשֶׁךְ׃ כַּאֲשֶׁר הָיִיתִי בִּימֵי חָרְפִּי
, *me apud Saddai adhuc In* .meo tabernaculo In , Dei *ſecreto in*
5 בְּסוֹד אֱלוֹהַּ עֲלֵי אָהֳלִי׃ בְּעוֹד שַׁדַּי עִמָּדִי
petra & , butyro in meas vias *lavando In* .mei pueri *mei circuitus*
6 סְבִיבוֹתַי נְעָרָי׃ בִּרְחֹץ הֲלִיכַי בְּחֵמָה וְצוּר
: civitatem ſuper portam *me exeundo In* .olei rivuli *mecum fuſa*
7 יָצוּק עִמָּדִי פַּלְגֵי־שָׁמֶן׃ בְּצֵאתִי שַׁעַר עֲלֵי־קָרֶת
, pueri me Videbant .meam cathedram faciebam parare platea in
8 בָּרְחוֹב אָכִין מוֹשָׁבִי׃ רָאוּנִי נְעָרִים
Principes .ſtabant ,ſurgebant decrepiti & : ſe abſcondebant &
9 וְנֶחְבָּאוּ וִישִׁישִׁים קָמוּ עָמָדוּ׃ שָׂרִים
Vox .ſuo ori ponebant manum & :ſermonibus in *cohibebant*
10 עָצְרוּ בְמִלִּים וְכַף יָשִׂימוּ לְפִיהֶם׃ קוֹל־
.adhærebat eorum palato eorum lingua & : ſe abſcondebant *ducum*
נְגִידִים נֶחְבָּאוּ וּלְשׁוֹנָם לְחִכָּם דָּבֵקָה׃
, videbat oculus & : me beatificabat & , audiebat auris Cùm
11 כִּי אֹזֶן שָׁמְעָה וַתְּאַשְּׁרֵנִי וְעַיִן רָאֲתָה
, vociferantem pauperem liberabam *Quoniam .mihi teſtimonium perhibebat* &
12 וַתְּעִידֵנִי׃ כִּי־אֲמַלֵּט עָנִי מְשַׁוֵּעַ
me ſuper *pereuntis* Benedictio .*ei* adjutor non & , pupillum &
13 וְיָתוֹם וְלֹא־עֹזֵר לוֹ׃ בִּרְכַּת אֹבֵד עָלַי
, induebam Juſtitiam .*faciebam canere* viduæ cor & : veniebat
14 תָּבֹא וְלֵב אַלְמָנָה אַרְנִן׃ צֶדֶק לָבַשְׁתִּי
.meum judicium cidarim & , pallium tanquam , me induebat &
וַיִּלְבָּשֵׁנִי כַמְּעִיל וְצָנִיף מִשְׁפָּטִי׃
Pater .*ego* claudo pedes & : cæco eram Oculi
15 16 עֵינַיִם הָיִיתִי לַעִוֵּר וְרַגְלַיִם לַפִּסֵּחַ אָנִי׃ אָב
.*eam* inveſtigabam , noveram non *litem &* : *egenis* *ego*
אָנֹכִי לָאֶבְיוֹנִים וְרִב לֹא־יָדַעְתִּי אֶחְקְרֵהוּ׃
faciebam projicere ejus dentibus è & :iniqui molas conterebam Et
17 וָאֲשַׁבְּרָה מְתַלְּעוֹת עַוָּל וּמִשִּׁנָּיו אַשְׁלִיךְ
arenam ſicut & : *expirabo* meo nido *cum* , dicebam Et .prædam
18 טָרֶף׃ וָאֹמַר עִם־קִנִּי אֶגְוָע וְכַחוֹל
ros & : aquas *ad* aperta mea Radix .dies multiplicabo
19 אַרְבֶּה יָמִים׃ שָׁרְשִׁי פָתוּחַ אֱלֵי־מָיִם וְטַל
.*mea meſſe* in morabitur
יָלִין בִּקְצִירִי׃

Verſio VULG. LAT.

22 Perditio & mors dixerunt, Auribus
noſtris audivimus famā
23 ejus. Deus intelligit viam ejus,
& ipſe novit locum illius.
24 Ipſe enim fines mundi intuetur
: & omnia, quæ ſub cœlo
25 ſunt, reſpicit. Qui fecit ventis
pondus, & aquas appendit
26 in menſura. Quando ponebat
pluviis legem, et viam pro-
27 cellis ſonantibus : Tunc vidit
illam, & enarravit, & præ-
28 paravit, & inveſtigavit. Et
dixit homini ; Ecce timor Domini,
ipſa eſt ſapientia : & recedere
à malo, intelligentia.

CAP. XXIX.

1 ADdidit quoque Job, aſſumens
parabolam ſuam, & di-
2 xit ; Quis mihi tribuat, ut ſim
juxta menſes priſtinos, ſecundùm
dies quibus Deus cuſto-
3 diebat me? Quando ſplendebat
lucerna ejus ſuper caput
meum, & ad lumen ejus ambu-
4 labam in tenebris. Sicut fui
in diebus adoleſcentiæ meæ,
quando ſecretò Deus erat in
5 tabernaculo meo. Quando
erat Omnipotens mecum, &
in circuitu meo pueri mei.
6 Quando lavabam pedes meos
butyro, & petra fundebat
7 mihi rivos olei. Quando
procedebam ad portam civitatis,
& in platea parabant ca-
8 thedram mihi. Videbant me
juvenes, & abſcondebantur :
& ſenes aſſurgentes ſtabant.
9 Principes ceſſabant loqui, &
digitum ſuperponebant ori
10 ſuo. Vocem ſuam cohibebant
duces, & lingua eorum
11 gutturi ſuo adhærebat. Auris
audiens beatificabat me, & oculus
videns teſtimonium red-
12 debat mihi. Eò quòd liberâſſem
pauperem vociferantem,
& pupillum, cui non eſ-
13 ſet adjutor. Benedictio pereuntis
ſuper me veniebat, & cor
14 viduæ conſolatus ſum. Juſtitiâ
indutus ſum : & veſtivi me,
ſicut veſtimento & diademate,
15 judicio meo. Oculus fui cæ-
16 co, & pes claudo. Pater eram
pauperum : & cauſam quam
neſciebam, diligentiſſimè in-
17 veſtigabam. Conterebam
molas iniqui, & de dentibus
18 illius auferebam prædam. Dicebámque
; In nidulo meo
moriar, & ſicut palma multi-
19 plicabo dies. Radix mea aperta
eſt ſecus aquas, & ros
morabitur in meſſione mea.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

21 †Ἡ ἀπώλεια καὶ ὁ θάνατος (σ) εἶπαν,
23 Ἀκηκόαμεν δὲ αὐτῆς τὸ κλέος. †(ʹ)Ὁ θεὸς
εὖ συνέστησεν αὐτῆς τὴν ὁδὸν, †αὐτὸς
24 (τ) δὲ οἶδε τὸν τόπον αὐτῆς. †Αὐτὸς γὰρ τὴν
ὑπ' οὐρανὸν πᾶσαν ἐφορᾷ, εἰδὼς τὰ ἐν τῇ
25 γῇ, πάντα ἃ (υ) ἐποίησεν, †Ἀνέμων
σταθμὸν, ὕδατος μέτρα †ὅτε ἐποίησεν.
26 Οὕτως ἰδὼν ἠρίθμησε, †καὶ ὁδὸν ἐν τινάγματι
27 φωνάς. †Τότε (φ) εἶδεν αὐτὴν, καὶ
ἐξηγήσατο αὐτὴν, †ἑτοιμάσας ἐξιχνίασεν.
28 †Εἶπε δὲ ἀνθρώπῳ, Ἰδοὺ ἡ θεοσέβειά,
ἐστι σοφία, †τὸ δὲ ἀπέχεσθαι ἀπὸ κακῶν
ἐστὶν, ἐπιστήμη.

Perditio, & mors dixerunt; Au- 22
divimus verò ejus gloriam. Do- 23
minus (aa) benè cognovit viam
ejus, & ipſe novit locum ejus.
Ipſe enim omne, quod eſt ſub cæ- 24
lo, perſpicit, nota habens quæ in
terra, omnia, quæ fecit, Ventorum 25
libramentū, (bb) aquarū menſu-
ras, (cc) quando fecit. Sic videns 26
numeravit, & viam in concuſ-
ſione, voces. Tunc vidit eam, 27
& expoſuit eam, (dd) cùm præ-
parâſſet, inveſtigavit. Dixit au- 28
tem homini; Ecce cultus Dei, eſt
ſapientia: & abſtinere à malis,
eſt ſcientia.

MS.A. (σ) εἶπεν, Ἀκηκόαμεν αὐτῆς (ʹ) Ὁ κύριος εὖ (τ) γὰρ οἶδεν (υ) ἐποίησεν. Ἐποίησεν δὲ ἀνέμων σταθμὸν, καὶ ὑδάτων μέτρα (φ) ἰδὼν

ΚΕΦ. κθʹ.

1 †(α) ἜΤι δὲ προσθεὶς Ἰὼβ εἶπε τῷ προ-
2 οιμίῳ, †Τίς ἄν με θείη (β) κατὰ μῆνα
ἔμπροσθεν ἡμερῶν, †ὧν με ὁ θεὸς ἐφύ-
3 λαξεν; †Ὡς ὅτε ηὔγει (ʹ) ὁ λύχνος αὐτοῦ
ὑπὲρ κεφαλῆς μου, †(γ) ὅτε τῷ φωτὶ αὐ-
4 τοῦ ἐπορευόμην ἐν σκότει. †Ὅτε ἤμην
ἐπιβρίθων (δ) ὁδοὺς, †ὅτε ὁ θεὸς ἐπι-
5 σκοπὴν ἐποιεῖτο τοῦ οἴκου μου. †Ὅτε ἤμην
ὑλώδης λίαν, κύκλῳ δέ μου οἱ παῖδες.
6 †Ὅτε (ε) ἐχέοντο αἱ ὁδοί μου βουτύρῳ, τὰ
7 δὲ ὄρη μου (ζ) ἐχέοντο γάλακτι. †Ὅτε ἐξεπορευόμην
ὄρθριος ἐν πόλει, †ἐν δὲ
8 πλατείαις ἐτίθετό μου ὁ δίφρος. †Ἰδόντες
με νεανίσκοι ἐκρύβησαν (η), †πρεσβῦ-
9 ται δὲ πάντες (θ) ἔστησαν. †Ἁδροὶ δὲ ἐπαύσαντο
λαλοῦντες, δάκτυλον (∴) ἐπιθέντες
10 ἐπὶ στόματι (ι). †Οἱ δὲ ἀκούσαντες ἐμακάρισάν
με, †καὶ γλῶσσα αὐτῶν τῷ λάρυγγι
11 αὐτῶν ἐκολλήθη. †Ὅτι οὖς ἤκουσε καὶ ἐμακάρισέ
με, †ὀφθαλμὸς (κ) δὲ ἰδών με ἐξέ-
12 κλινε. †Διέσωσα γὰρ πτωχὸν ἐκ χειρὸς δυνάστου,
†καὶ ὀρφανῷ ᾧ οὐκ (λ) ἦν βοηθὸς,
13 ἐβοήθησα. †Εὐλογία ἀπολλυμένου ἐπ'
ἐμὲ ἔλθοι, †στόμα δὲ χήρας (μ) με εὐλό-
14 γησε. †Δικαιοσύνην δὲ (ν) ἐνδεδύκειν,
†ἠμφιασάμην δὲ κρίμα ἴσα διπλοΐδι.
15 †Ὀφθαλμὸς ἤμην τυφλῶν, ποὺς δὲ χωλῶν.
16 †Ἐγὼ ἤμην πατὴρ ἀδυνάτων, †δίκην
17 δὲ ἣν οὐκ ᾔδειν ἐξιχνίασα. †Συνέτριψα
δὲ μύλας ἀδίκων, †(ξ) ἐκ μέσου τῶν ὀ-
18 δόντων αὐτῶν ἅρπαγμα ἐξήρπασα. †Εἶ-
πα δὲ, Ἡ ἡλικία μου γηράσει ὥσπερ στέλεχος
φοίνικος, †(ο) πολὺν χρόνον βιώσω.
19 †(π) Ἡ ῥίζα διήνοικται ἐπὶ ὕδατος,
†καὶ δρόσος αὐλισθήσεται (ϛ) ἐν τῷ θερισμῷ
μου.

CAP. XXIX.

ADhuc autem adjiciens Job 1
dixit proœmio; Quis utique (a) 2
me ponat juxta menſem priorum
dierum, quibus me Deus cuſto-
diebat? Sicut cùm lucebat lu- 3
cerna ejus ſuper caput meum:
cùm lumine ejus ambulabam in
tenebris. Cùm eram (b) grave- 4
ſcens viis: cùm Deus (c) viſitationem
faciebat domûs meæ.
Cùm eram (d) materiatus nimis, 5
& in circuitu meo pueri. Cùm 6
fluebant viæ meæ butyro; &
montes mei fluebant lacte. Cùm 7
exibam matutinus in civitate:
& in plateis ponebatur mihi ſel-
la. Videntes me adoleſcentes 8
abſcondebantur: ſenes autem
omnes ſteterunt. Et (e) poten- 9
tes ceſſaverunt loqui, digitum
imponentes ſuper os. Qui au- 10
tem audiverunt, beatificabant
me: & lingua eorum gutturi
eorum adhæſit; Quia auris au- 11
divit, & beatificavit me; &
oculus videns me (f) declinavit.
Salvavi enim mendicum de ma- 12
nu potentis; & pupillum, cui
non erat adjutor, adjuvi. Be- 13
nedictio pereuntis ſuper me (g)
veniat: & (h) os viduæ bene-
dixit me: Juſtitiam verò indu- 14
tus ſum, & veſtitus ſum judicio,
ſicut diploide. Oculus fui cæco- 15
rum, & pes claudorum. Ego 16
fui pater impotentium; & judicium,
quod non noveram, exquiſivi.
Confregi autem molas ini- 17
quorum: de medio dentium eo-
rum (i) rapinam eripui. Dixi 18
(k) autem, Ætas mea ſeneſcet;
ſicut truncus palmæ: multo vivam
tempore. Radix aperta eſt 19
ſuper aquam: & ros morabitur
in meſſe mea.

MS.A. (α) Προσθεὶς δὲ ἔτι τῷ προοιμίῳ Ἰὼβ, λέγει, Τίς (β) μῆνα κατὰ μῆνα ἡμερῶν τῶν ἔμπροσθεν, ἡμερῶν ὧν ὁ θεὸς ἐφύλαττέν με; (ʹ) λύχνος (γ) ὅτε ἐν τῷ φωτὶ (δ) ὁδοῖς, ὅτε ὁ κύριος (ε) ἐχέοντό μου αἱ ὁδοὶ (ζ) ἐχεῖτο (η) ἑαυτοῖς, πρεσβῦται (θ) ἐπανέστησαν. (∴) ἐπιτιθέντες (ι) αὐτῶν. Οἱ δὲ ἀκούσαντες περὶ ἐμοῦ ἐμακάρισάν με, (κ) δέ με ἰδὼν (λ) ὑπῆρχεν βοηθὸς, (μ) ηὐλόγησέν με. (ν) ἐνεδεδύκειν, (ξ) ἐκ δὲ μέσου ὀδόντων αὐτῶν ἅρπαγμα ἐξέσπασα. Εἶπον, Ἡλικία μου (ο) πολὺν δὲ χρόνον (π) Ἡ ῥίζα μου * διήνυκτε (ϛ) ἐπὶ τῷ θερισμῷ μου.

תרגום TARGUM.

24 22 בֵּי אַבְדָנָא וּמַלְאַךְ מוֹתָא אֲמַרוּ בְּאִתְיְהָבָא לְיִשְׂרָאֵל בְּמַשְׁמַעְנָא שְׁמַעְנָא שְׁמוּעְתַהּ : אֱלָהָא אִתְבַּיַּן אוֹרְחַהּ וְהוּא יְדַע יַת אַתְרַהּ : אֲרוּם הוּא לְסֵיפֵי אַרְעָא
26 23 25 יִסְתַּכֵּל תְּחוֹת כָּל שְׁמַיָּא יֶחֱמֵי : לְמֶעְבַּד לְרוּחָא מַתְקְלָא וּמַיָּא אַתְקֵן בִּמְשַׁחְתָּא : בְּמֶעְבְּדֵיהּ לְמִטְרָא קְיָמָא גְּזֵרְתָּא וּמַהֲלָךְ לַחֲזִיזֵי דִּרְהָטִין בְּקָלַיָּא : הֵידֵין
27 28 חֲמָיַהּ וְאִשְׁתַּעְיַהּ עִם מַלְאֲכֵי שֵׁירוּתָא אַתְקְנַהּ וּלְחוֹד פַּשְׁפֵּשׁ יָתַהּ : וַאֲמַר לְבַר נָשׁ הָא דַחַלְתָּא דַיְיָ הִיא חוּכְמְתָא וּלְמֶעְדֵּי מִן בִּישְׁתָּא הִיא בְּיוּנְתָא :

כט

1 2 3 וְאוֹסִיף אִיּוֹב לְמִטַּל מַתְלֵיהּ וַאֲמַר : מַן יְסַדְּרִנַּנִי הֵיךְ יַרְחִין דְּקַדְמִין יוֹמַיָּא דִּי אֱלָהָא יִטְרִנַּנִי : בְּאַנְהָרוּתֵיהּ שְׁרָגֵיהּ עֲלֵי רֵישִׁי לִנְהוֹרֵיהּ אֵיזֵיל חֲשׁוֹכָא :
5 6 4 הֵיכְמָא דַהֲוֵיתִי בְּיוֹמֵי חֲרִיפוּתִי בְּזִמַן דְּרָזָא אֱלָהָא עֲלֵי מַשְׁכְּנִי : בְּעוֹד כְּדוֹן דַּהֲוָה מֵימַר שַׁדַּי בְּסַעֲדִי חֲזוֹר חֲזוֹר דִּילִי עוּלֵימַי : בְּמִשְׁזוֹג אִסְתּוֹרַי בְּלֵוָאִי
7 9 8 וְטִינָר יִזְלַף עִמִּי טִיפֵי מְשַׁח : בְּמִפְּקִי תַּרְעָא עַל קַרְתָּא בְּפַתְאָה אַתְקֵין מוֹתְבִי : חֲמוֹ יָתִי עוּלֵימַיָּא וְאִטַּמְּרוּ וְקַשִּׁישַׁיָּא יְקוּמוּן וְקָפוּ : נְגִידַיָּא כְּנִישׁוּ
11 12 10 בְּמִלַּיָּא וְאִידָא יְשַׁוּוֹן לְפוּמְהוֹן : קָל אַרְכוֹנִין אִטַּמְּרוּ וְלִישָׁנְהוֹן לְמוֹרִיגֵיהוֹן אַדְבֵּקַת : אֲרוּם אוּדְנָא שָׁמְעָא אֲמַרַת טַב לִי וְעֵינָא דַחֲמַת וְאַסְהֲדַת עֲלַי : אֲרוּם
14 13 אֲשֵׁיזֵיב עַנְיָא דְּבָעֵי וְיַתְּם וְלָא סָעֵיד לֵיהּ : בִּרְכְּתָא דְאוֹבְדָא עֲלַי תֵּיתֵי וְלִבָּא דְאַרְמַלְתָּא אַמְלֵי תוּשְׁבַּחְתָּא : זְכוּתָא לְבִישִׁית וְאַלְבְּשַׁנִּי הֵיךְ מְעִילָא
15 וּמִצְנֶפְתָּא דִּינִי : נְהוֹר עֵינִין הֲוֵיתִי לְסַמְיָא וְטִיוֹל לְחַגִּירָא אֲנָא : תָּא תַּיָּר הֲוֵיתִי לְמִסְכְּנָא דְּדָמֵי לְסַמְיָא וְטַיֵּל לִקְצוֹר עַרְסָא דְּמַתִּיל לְחַגְרָא אֲנָא :
18 16 17 אַבָּא אֲנָא לַחֲשִׁיכַיָּא וְתִגְרָא דְּלָא יְדַעִית אֲפַשְׁפְּשִׁנֵּיהּ : וְתַבְּרִית נִיבֵי מְקַלְקֵל וּמִכַּכּוֹי רְמֵיתִי עֲדָאָה : וַאֲמָרִית עִם תּוּקְפֵי בְּשַׁרְכְּפֵי אֶתְנְגֵיד וְהֵיךְ חָלָא אַסְגֵּי יוֹמַיָּא :
19 עִקָּרִי פְּתִיחַ לְמַבּוּעֵי מַיָּא וְטַלָּא יְבִית בַּחֲצָדִי :

Verſio SYRIACA.

22 23 * ܐܒܕܢܐ ܘܡܘܬܐ ܐܡܪܘ. ܕܒܐܕܢܝܢ ܫܡܥܢ ܫܡܥܗ. * ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܗܘ ܚܘܝܢ ܐܘܪܚܬܗ. ܘܗܘ ܝܕܥ
23 24 ܕܘܟܬܗ. * ܡܛܠ ܕܗܘ ܚܙܐ ܠܣܘܦܝ ܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܘܚܙܐ ܟܠ ܕܬܚܝܬ ܫܡܝܐ. * ܕܥܒܕ ܡܬܩܠܐ ܠܪܘܚܐ.
25 26 ܘܡܝܐ ܐܬܩܢ ܒܡܟܝܠܬܐ. * ܟܕ ܥܒܕ ܬܚܘܡܐ ܠܡܛܪܐ. ܘܐܘܪܚܐ ܠܚܙܘܢܐ ܕܩܠܐ. * ܗܝܕܝܢ ܚܙܐ ܘܐܫܬܥܝܗ.
27 28 ܘܬܩܢܗ ܐܦ ܒܨܝܗ. * ܘܐܡܪ ܠܒܪܢܫܐ. ܕܚܠܬܗ ܕܐܠܗܐ ܗܝ ܚܟܡܬܐ. ܘܡܬܦܪܫܢܘܬܐ ܡܢ ܒܝܫܬܐ ܣܘܟܠܐ.

1 2 * ܦܘܠܓܐ. * ܟܛ * ܘܐܘܣܦ ܐܝܘܒ ܠܡܐܡܪ ܡܬܠܗ. ܘܐܡܪ. * ܡܢ ܢܬܠ ܠܝ
3 ܐܝܟ ܝܪ̈ܚܐ ܩܕܡܝ̈ܐ. ܘܐܝܟ ܝܘܡܬܗ ܕܐܠܗܐ ܢܛܪܢܝ. * ܘܢܣܝܡܝܘܗܝ ܠܕܚܠܬܗ ܥܠ ܪܝܫܝ. ܒܡܬܦܫܛܘܬ ܫܪܓܗ
4 ܥܠܝ. ܘܒܢܘܗܪܗ ܗܠܟܬ ܒܚܫܘܟܐ. * ܐܝܟ ܕܗܘܝܬ ܒܝܘܡ̈ܝ ܛܝܒܘܬܝ. ܟܕ ܡܛܠܠ ܗܘܐ ܐܠܗܐ ܥܠ
5 ܡܫܟܢܝ. * ܘܟܕ ܫܕܝܐ ܐܝܬܘܗܝ ܗܘܐ ܚܕܪܝ ܛܠܝ̈ܐ. * ܟܕ ܢܦܩܬ ܠܬܪܥܐ ܘܩܪܝܬ. ܘܒܫܘܩܐ. ܐܝܟ ܡܣܟܢܐ
7 8 ܝܬܒܬ. * ܚܙܐܘܢܝ ܛܠܝ̈ܐ ܘܐܬܛܫܝܘ. ܘܩܡܘ ܣܒ̈ܐ. ܘܐܬܕܡܪܘ ܒܝ. * ܘܪܘܪ̈ܒܢܐ ܐܬܟܠܝܘ ܡܢ ܡܡܠܠܐ. ܘܐܝܕܝܗܘܢ
9 10 ܣܡܘ ܥܠ ܦܘܡܗܘܢ. * ܩܠܐ ܕܫܠܝ̈ܛܢܐ ܕܡܛܫܝܢ. ܘܠܫܢܗܘܢ ܕܒܩ ܒܚܟܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܐܕܢܐ
11 12 ܕܫܡܥܬ ܫܒܚܬܢܝ. ܘܥܝܢܐ ܕܚܙܬ ܣܗܕܬ ܠܝ. * ܡܛܠ ܕܦܪܩܬ ܠܡܣܟܢܐ ܡܢ ܐܘܠܨܢܐ. ܘܠܝܬܡܐ
13 14 ܕܠܝܬ ܠܗ ܡܥܕܪܢܐ. * ܒܘܪܟܬܗ ܕܐܒܝܕܐ ܥܠܝ ܐܬܝܐ. ܘܠܒܐ ܕܐܪܡܠܬܐ ܒܣܡܬܗ. * ܘܟܐܢܘܬܐ ܠܒܫܬ
15 16 ܘܠܒܫܬܢܝ ܐܝܟ ܡܥܛܦܐ ܘܟܠܝܠܐ ܕܕܝܢܐ. * ܥܝܢܐ ܗܘܝܬ ܠܥܘܝܪ̈ܐ. ܘܪܓܠܐ ܠܚܓܝܪ̈ܐ. * ܐܒܐ ܗܘܝܬ
17 ܠܡܣܟܢ̈ܐ. ܘܕܝܢܐ ܕܠܐ ܝܕܥܬ ܗܘܝܬ ܒܥܐ. * ܘܬܒܪܬ ܟܐܦ̈ܐ ܕܥܘܠܐ. ܘܫܡܛܬ ܛܘܪܦܐ ܡܢ ܒܝܬ ܫܢ̈ܘܗܝ.
18 19 * ܘܐܡܪܬ. ܠܥܡܐ ܡܣܟܢܐ ܐܦܪܘܩ. ܘܐܝܟ ܩܢܝܐ ܐܫܬܘܫܛ. ܘܐܝܟ ܚܠܐ ܕܝܡܐ ܐܣܓܐ ܝܘܡܬܝ. * ܫܪ̈ܫܝ
ܢܨܝܒܝܢ ܥܠ ܡܝ̈ܐ. ܘܒܛܠܠܐ ܐܒܘܬ. ܘܒܚܨܕܐ ܐܬܩܪܐ.

Verſio ARABICA.

22 23 * البوار والموت يقولون انّا باذاننا سمعنا سماعا * من اجل ان الله بيّن لنا طرايقها. وهو يعرف مكانها *
24 25 * من اجل انه ينظر الي اقطار جميع الارض * وجميع ما تحت السماء هو يراه * الذي صنع ميزانا للريح *
26 27 والمثقال ساوي بالمكيال * جعل حدودا للمطر * وطريقا لمناظر الصوت * عند ذلك راها واظهرها ووزنها *
28 وايضا اعلنها * وقال للانسان * ان مخافة الله هي الحكمة * والنهي عن السية هو الفهم *

1 2 * الفصل التاسع والعشرون * * وعاد ايوب ان يمثل مثله * فقال * من الذي
3 صنعني مثل الشهور الاولي * ومثل ايام الله حفظني * وخشيته وضعها فوق راسي * بانبساط
4 سراجه فوقي * وفي ضوءه سلكت في الظلمة * كما كنت في ايام صلاحي * حين كان يحنوا الله فوق
5 7 مسكني * وحين كان العزيز محيطا بشبيبتي * * اذا خرجت الي الباب وناديت * وفي السوق مثل البايس
8 9 قعدت * فابصرني الشبان واختفوا * وقام المشايخ فتعجبوا مني * والكبراء امتنعوا من الكلام * وايديهم
10 وضعوها علي افواههم * صوت السلاطين الذين يسكتون * والسنتهم لصقت في اعلا احناكهم *
11 12 * لان الاذن التي سمعت مدحتني * والعين التي ابصرت شهدت لي * لاني نجيت المسكين من الضر
13 14 واليتيم الذي ليس له معين * بركة الهالك علي تدخل * وقلب الارملة فرحت * والحق لبست
15 16 ولبسني مثل الملتحف اكليل البر * كنت عينا للعميان * ورجلا للعرجان * كنت للبوس ابا *
17 والخير الي من لم اكن اعرف صنعت * كسرت انياب المنافق * واخرجت الغصب من بين اسنانه *
18 19 * وقلت اني اخلص شعبا مسكينا * ومثل القصبة استنم * ومثل رمال البحر اكثر ايامي * وعروقي
منصوبة علي الامياه * وفي الظل اهجع * وفي الحصاد ادعا *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Interit⁹ et mors inquiunt, Nos auribus noſtris audiendo audivimus: Quoniam Deus oſtendit nobis vias ejus, & ipſe novit locum ejus: Quoniam ipſe reſpicit in omnes fines terræ, & omne quod eſt ſub cœlo, ipſe videt. Qui poſuit ſtateram vento, & (†) pondus æquavit menſuræ. Conſtituit (p) terminos imbri, & viam ſpectaculis vocis. Tunc vidit eam, & (q) manifeſtavit illam, et ponderavit eam, atque (r) iterum indicavit illam: Et dixit homini, Timor Dei eſt ſapientia, & abſtinentia à malo eſt intellectus. 22 23 24 25 26 27 28

CAP. XXIX.

Et adjecit Job dicere proverbium ſuum, & ait, Quis faciat me ut menſibus antiquis, & ut diebus Dei ſervet me? Et timorem ejus collocet ſuper caput meum? in extenſione lucernæ ejus ſuper me, & in lumine illius ambulavi in tenebris, Quemadmodum fui in diebus (a) fœlicitatis meæ, quando (∴) inclinabatur Deus ſuper habitationem meam, Et quando erat Potentiſſimus circundans juventutem meam. Cùm exivi ad januam, & vocavi & in platea, velut inops ſedi, Viderunt me juvenes, & abſconderunt ſe; & ſteterunt ſenes, & mirati ſunt me; Et magnates continuerunt ſe (b) à loquela, et manus ſuas impoſuerunt oribus ſuis. Vox præſidum qui latitant, & linguæ eorum adhæſerunt ſupremis palatis eorum: Quia auris quæ audivit, laudavit me; & oculus qui vidit, teſtatus eſt mihi; Quòd liberaverim pauperem de miſeria, & pupillum qui non habet adjutorem. Benedictio pereuntis ſuper me ingrediatur: et cor viduæ exhilaravi: Et veritatem indui, & induit me ui (∴) indutu & coronâ juſtitiæ. Eram oculus cæcis, et pes claudis: Eram pauperibus pater, & (c) bonum in eos quos non noveram, egi. Fregi caninos impii, & eduxi rapinam è dentibus ejus. Et dixi, Salvabo populum pauperem, & velut arundo perſiciar, & ut arenas maris multiplicabo dies meos; Et radices meæ plantatæ ſuper aquas: (d) & in umbra dormiam, & in meſſe vocabor. 1 2 3 4 5 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19

INTERP. SYRIACA.

(†) aquas præparavit in menſura. (p) legē (q) enarravit (r) etiam inquiſivit illam: *Cap. xxix.* (a) beneficentiæ meæ, (∴) obtegebat (b) in ſermonibus, (∴) indumēto & coronâ judicii. (c) judicium quod non noveram, inveſtigabam. (d) & in umbra, pernoctat, & in

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Domus perditionis & angelus mortis dixerunt, quando data eſt Iſrael, auditu noſtro audivimus famam ejus. Deus intelligit viam ejus, & ipſe ſcivit locum ejus. Quoniam ipſe fines terræ intuetur, & ſub omnibus cœlis videt. Ut faciat vento pondus, & aquas præparet in menſura. Dum facit pluviæ legem, *ſtatutum* & iter fulguribus quæ currunt cum ſonitu. Tunc vidit illam, & narravit eam, cum angelis in principio præparavit eam, & etiam inveſtigavit eam. Et dixit filiis hominum: Ecce timor Domini eſt ſapientia; & recedere à malo, eſt intelligentia. 22 23 24 25 26 27 28

CAP. XXIX.

Et addidit Job aſſumens parabolam ſuam, & ait: Quis ordinaret me ſicut in menſibus antiquis, ſicut in diebus quibus De⁹ cuſtodiebat me. Quando ſplendere faciebat lucernam ſuam ſuper caput meum, ad lumen ejus ambulabam in tenebris. Sicut eram in diebus adoleſcentiæ meæ, tempore quo ſecretò erat Deus in tabernaculo meo. Dum erat verbum omnipotentis in auxilium meum, in circuitu *mei juvenes mei.* Quando lavabam greſſus meos butyro, & petra fluebat mihi rivis olei. Quando egrediebar ad portam civitatis, in platea parabam ſedem meam. Videbant me juvenes & abſcondebantur: & ſenes ſurgebant, erigebant ſe. Principes ceſſabant loqui, & manum ponebant ori ſuo. Vocem ſuam abſcondebant duces, & lingua eorum adhærebat palato ſuo. Quia auris audiens dicebat me beatum, & oculus videns teſtimonium reddebat mihi. Quia liberabam pauperem deprecantem, & pupillum cui non erat adjutor. Benedictio perituri ad me veniebat, & cor viduæ implebam laude. Juſtitiam indutus ſum, & veſtivit me, ſicut pallio & tiara judicio meo. *Lux oculorum* eram cæco, & deambulatio claudo eram. *Targum aliud: Conductor fui pauperi, qui ſimilis eſt cæco; & ambulator pro eo qui curtus erat lecto, eò ſimilis claudo, fui ego.* Pater fui pauperum, & litem quam neſciebam ſcrutabar. Et conterebam molas iniqui, & de dentibus ejus projiciebam prædam. Et dixi: Cum fortitudine mea in nido meo deficiam; & ſicut arena multiplicabo dies. Radix mea aperta erat ad fontes aquarum, & ros morabatur in meſſe mea. 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19

Hebrew

.innovabitur mea manu in meus arcus & : mecum *recens* mea Gloria
כבודי חדש עמדי וקשתי בידי תחליף : 20
.meum consilium ipsum ad tacebant & : expectabant & ,obediebant Mihi
לי־שמעו ויחלו וידמו למו עצתי : 21
.meus sermo stillabat eos super & :iterabant non meum verbum Post
אחרי דברי לא ישנו ועלימו תטף מלתי : 22
patefaciebant suum os & , me pluviam sicut expectabant Et
ויחלו כמטר לי ופיהם פערו 23
lucem & : credebant non , eos ad Ridebam .serotinum imbrem ad
למלקוש : אשחק אליהם לא יאמינו ואור 24
sedebam & ,eorum viam Eligebam .faciebant cadere non *mearum facierum*
פני לא יפילון : אבחר דרכם ואשב 25
lugentes quemadmodum ; *agmine in* rex sicut habitabam & , *caput*
ראש ואשכון כמלך בגדוד כאשר אבלים
.consolatur
ינחם :

CAP. XXX. ל

quorum : *diebus* me *præ* *minimi* me *super* derident nunc Et
ועתה שחקו עלי צעירים ממני לימים אשר־ 1
potentia Etiam .*mei pecoris* canibus cum ponere *eorum* patres renuissem
מאסתי אבותם לשית עם־כלבי צאני : גם־כח 2
, *penuria In* .senium periit ipsis Super ?mihi quid propter eorum manuum
ידיהם למה לי עלימו אבד כלח : בחסר 3
, *desolationem* ,*obscuritatem* ,*siccitatem* *fugientes* , *solitarius* *esurie in* &
ובכפן גלמוד הערקים ציה אמש שואה
juniperorum *radix* & : virgulto *super malvam* *Succidentes* .desertum &
ומשאה : הקטפים מלוח עלי־שיח ושרש רתמים 4
, eos contra clamabunt : expellebantur medio E *.eorum panis*
לחמם : מן־גו יגרשו יריעו עלימו 5
, *pulveris* foramina ;habitandum ad torrentium rimam In .furem sicut
כגנב : בערוץ נחלים לשכן חורי עפר 6
.congregabantur urticam subter : *rudebant* arbusta Inter .petras &
וכפים : בין־שיחים ינהקו תחת חרול יספחו : 7
præ erant *contriti* : nomine absque filii etiam ,*abjecti* Filii
בני נבל גם־בני בלי־שם נכאו מן־ 8
.sermonem in eis *fui* & ;*fui* eorum canticum nunc Et .terra
הארץ : ועתה נגינתם הייתי ואהי להם למלה : 9
non *meis faciebus* à & : me à se elongaverunt , me sunt Abominati
התעבוני רחקו מני ומפני לא־ 10
frenum & : me afflixit & ,solvit meum funem Quia .sputum prohibuerunt
חשכו רק : כי־יתרי פתח ויענני ורסן 11
meos pedes ,*insurgent* *parvulus* dexteram *Super* .dimiserunt *meis faciebus à*
מפני שלחו : על־ימין פרחח יקומו רגלי 12
Diruerunt .suæ contritionis vias me super *straverunt* & : impulerunt
שלחו ויסלו עלי ארחות אידם : נתסו 13
.eis adjutor non : profecerunt meam contritionem ad , meam semitam
נתיבתי להותי יעילו לא עזר למו :
sunt Conversi.se volverunt desolatione Pro .venerunt lata fractura Sicut
כפרץ רחב יאתיו תחת שאה התגלגלו : ההפך 14 15
;meam spontaneam ventus sicut *persequetur* , terrores me adversum
עלי בלהות תרדף כרוח נדבתי
:mea anima se *vertet* me contra nunc Et .mea salus transivit nubes sicut &
וכעב עברה ישעתי : ועתה עלי תשתפך נפשי 16
, me desuper perforavit mea ossa Nocte .afflictionis dies me *apprehendent*
יאחזוני ימי־עני : לילה עצמי נקר מעלי 17
mutabatur *potentiæ multitudine In* *.confident* non *meæ venæ* &
וערקי לא ישכבון : ברב־כח יתחפש 18
: lutum in me Projecit.me cinxit meæ tunicæ *os* Sicut .meum vestimentum
לבושי כפי כתנתי יאזרני : הרני לחמר 19
non & , te ad Clamavi *.cinis* & ,*pulvis sicut* sum assimilatus &
ואתמשל כעפר ואפר : אשוע אליך ולא 20
.mihi crudelem in te *Vertes* .me in *advertisti* & , steti : *mihi respondisti*
תענני עמדתי ותתבנן בי : תהפך לאכזר לי 21
.mihi minitaberis tuæ manus fortitudine In
בעצם ידך תשטמני :

Versio VUL. LAT.

20 Gloria mea semper innovabitur, & arc⁹ meus in manu mea instaurabitur. 21 Qui me audiebant, expectabant sententiã, & intenti tacebant ad consilium meum. 22 Verbis meis addere nihil audebant, et super illos stillabat eloquiũ meum. 23 Expectabant me sicut pluviã, & os suũ aperiebant quasi ad imbrẽ serotinum. 24 Si quando ridebã ad eos, non credebant, et lux vult⁹ mei non cadebat in terram. 25 Si voluissem ire ad eos, sedebam primus: cúmque sederem quasi rex, circumstante exercitu, erã tamen mœrentium consolator.

CAP. XXX.

1 Nunc autẽ derident me juniores tempore, quorũ non dignabar patres ponere cum canibus gregis mei: 2 Quorũ virt⁹ manuũ mihi erat pro nihilo, et vitâ ipsâ putabantur indigni. 3 Egestate & fame steriles, qui rodebant in solitudine, squallentes calamitate & miseriâ. 4 Et mandebant herbas, et arborum cortices, & radix juniperorũ erat cibus eorũ. 5 Qui de convallib⁹ ista rapientes, cùm singula reperissent, ad ea cum clamore 6 currebant. In desertis habitabant torrentiũ, & in cavernis 7 terræ, vel super glaream. Qui inter hujuscemodi lætabantur, et esse sub sentib⁹ delicias com- 8 putabât. Filii stultorũ & ignobilium, & in terra penitùs non 9 parentes. Nunc in eorũ canticum versus sum, et fact⁹ sum eis 10 in proverbiũ. Abominantur me, & longè fugiunt à me, & faciẽ meam conspuere non ve- 11 rentur. Pharetrã enim suam aperuit, & afflixit me, & frænũ 12 posuit in os meũ. Ad dexterã orientis calamitates meæ illicò surrexerũt: pedes meos subverterunt, & oppresserunt quasi 13 fluctibus semitis suis. Dissipaverunt itinera mea, insidiati sunt mihi, & prævaluerunt, & non fuit qui ferret auxilium. 14 Quasi rupto muro, et apertâ januâ, irruerunt super me, & ad meas miserias devoluti sunt. 15 Redact⁹ sum in nihilũ: abstulisti quasi vent⁹ desideriũ meũ: & velut nubes pertransiit salus 16 mea. Nunc autẽ in memetipso marcescit anima mea, & possi- 17 dent me dies afflictionis. Nocte os meum perforatur dolorib⁹: & qui me comedunt, non dor- 18 miunt. In multitudine eorum consumitur vestimentũ meũ, et quasi capitio tunicæ succinxe- 19 rũt me. Comparat⁹ sum luto, & assimilatus sum favillæ et cine- 20 ri. Clamo ad te, et non exaudis 21 me: sto, et non respicis me. Mutatus mihi in crudelẽ, & in duritia man⁹ tuæ adversaris mihi.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

20 † Ἡ δόξα μου καινὴ μετ' ἐμοῦ, καὶ τὸ τόξον 21 (σ) μου ἐν χειρὶ αὐτοῦ (τ) πορεύεται. † (υ) Ἐμοῦ ἀκούσαντες προσέσχον, † ἐσιώπησαν δὲ ἐπὶ τῇ ἐμῇ βουλῇ. 22 † (φ) Ἐπὶ τῷ ἐμῷ ῥήματι οὐ προσέθεντο, † (χ) περιχαρεῖς δὲ ἐγίνοντο ὁπόταν αὐτοῖς ἐλάλουν. 23 † Ὥσπερ γῆ διψῶσα (ψ) προσδεχομένη τὸν ὑετόν, 24 † οὕτως οὗτοι τὴν ἐμὴν (ω) λαλιάν. † Ἐὰν γελάσω πρὸς αὐτούς, οὐ μὴ πιστεύσωσι, † καὶ 25 φῶς τοῦ προσώπου μου οὐκ ἀπέπιπτεν. † Ἐξελεξάμην ὁδὸν αὐτῶν, καὶ ἐκάθισα ἄρχων, † καὶ κατεσκήνουν ὡσεὶ βασιλεὺς ἐν μονοζώνοις, † ὃν τρόπον (α) παθεινοὺς παρακαλῶν.

Gloria mea (l) vana mecum, & arcus meus in manu ejus (m) graditur. 21 Qui me audierunt, attenderunt: & siluerunt super consilio meo. 22 Et in sermone meo non adjecerunt: sed gavisi sunt, cùm loquerer eis. 23 Sicut terra sitiens suscipiens pluviam; sic isti meum sermonem. 24 Si (n) riderem ad eos, non credebant: & lumen faciei meæ non decidebat. 25 Elegi (o) viam eorum, & sedi princeps: & habitabam sicut rex (p) in accinctis, quasi (q) consolans tristes.

MS.A. (σ) αὐτοῦ ἐν (τ) πορεύεται. (υ) Πρεσβύτεροι ἀκούσαντές μου προσέσχον, (φ) Ἐπὶ δὲ τῷ (χ) καὶ περιχαρεῖς ἐγίνοντο ὁπότε (ψ) προσδεχομένη ὑετόν, (ω) λαλιὰν προσεδέχοντο. Εἰ ἐγέλων πρὸς αὐτούς, οὐκ ἐπίστευον, καὶ (α) Συμπαθεῖς

ΚΕΦ. λ'.

1 † Νυνὶ δὲ κατεγέλασάν μου ἐλάχιστοι, † νῦν νουθετοῦσί με ἐν μέρει, ὧν ἐξουδένουν τοὺς πατέρας αὐτῶν, † οὓς οὐχ ἡγησάμην (α) ἀξίους κυ- 2 νῶν τῶν ἐμῶν νομάδων. † Καί γε ἰσχὺς χειρῶν αὐτῶν ἵνα τί μοι; † ἐπ' αὐτοὺς ἀπώλετο συντέ- 3 λεια. † Ἐν ἐνδείᾳ καὶ λιμῷ ἄγονος, † οἱ φεύγοντες ἄνυδρον ἐχθὲς συνοχὴν καὶ ταλαιπω- 4 ρίαν· † Οἱ περικυκλοῦντες (β) ἅλιμα ἐπὶ ἠχοῦντι, † οἵτινες ἅλιμα ἦν αὐτῶν τὰ σῖτα, † ἄτιμοι δὲ καὶ πεφαυλισμένοι, (γ) ἐνδεεῖς παντὸς ἀγαθοῦ, † οἳ καὶ ῥίζας ξύλων (δ) ἐμασῶντο 5 ἀπὸ λιμοῦ μεγάλου. † Ἐπανέστησάν μοι κλέ- 6 πται, Ὧν οἱ οἶκοι αὐτῶν ἦσαν τρῶγλαι (ε) πετρῶν. 7 † Ἀναμέσον εὐήχων βοήσονται οἳ ὑπὸ φρύ- 8 γανα ἄγρια διῃτῶντο. † Ἀφρόνων υἱοὶ καὶ ἀτίμων, ὄνομα καὶ κλέος ἐσβεσμένον (∴) ἀπὸ 9 γῆς. † Νυνὶ δὲ (ε) κιθάρα ἐγώ εἰμι αὐτῶν, † καὶ 10 ἐμὲ (ζ) θρύλλημα ἔχουσιν. † Ἐβδελύξαντο δέ με ἀποστάντες μακράν, † ἀπὸ δὲ (η) τοῦ 11 προσώπου μου οὐκ ἐφείσαντο (θ) πτύελον. † Ἀνοίξας (ι) γὰρ φαρέτραν αὐτοῦ ἐκάκωσέ με, † καὶ χαλινὸν τοῦ προσώπου μου (κ) ἐξαπέστει- 12 λαν. † Ἐπὶ δεξιῶν (λ) βλαστοῦ ἐπανέστησαν, † πόδα αὐτῶν ἐξέτειναν, καὶ ὡδοποίη- 13 σαν ἐπ' ἐμὲ τρίβους ἀπωλείας αὐτῶν. † Ἐξετρίβησαν τρίβοι μου, † ἐξέδυσαν γάρ (μ) μου τὴν στολήν. † Βέλεσιν αὐτοῦ κατηκόντισέ με. 14 † (") κέχρηται δέ μοι ὡς (ν) βούλεται, † ἐν ὀδύναις πέφυρμαι. † (ξ) ἐπιστρέφονταί μου αἱ ὀδύ- 15 ναι, † Ὤχετό μου ἡ ἐλπὶς ὥσπερ πνεῦμα, † καὶ 16 ὥσπερ νέφος ἡ σωτηρία μου (ο). † Καὶ νῦν ἐπ' ἐμὲ ἐκχυθήσεται ἡ ψυχή μου, † ἔχουσιν 17 δέ με ἡμέραι ὀδυνῶν. † (π) Νυκτὶ δέ μου τὰ ὀστᾶ συγκέχυται, τὰ δὲ νεῦρά μου διαλέ- 18 λυται. † (ρ) Ἐν πολλῇ ἰσχύϊ ἐπελάβετό μου τῆς στολῆς, † ὥσπερ τὸ περιστόμιον τοῦ χιτῶνός 19 μου περιέσχε με. † (σ) Ἥγησαι δέ με ἴσα πηλῷ, † ἐν γῇ καὶ σποδῷ (τ) μου ἡ μερίς. 20 † Κέκραγα δὲ πρὸς σὲ καὶ οὐκ (υ) ἀκούεις μου, 21 † ἔστησαν δὲ καὶ κατενόησάν με. † Ἐπέβησαν δέ μοι ἀνελεημόνως, † χειρὶ κραταιᾷ με ἐμαστίγωσας.

CAP. XXX.

1 Nunc autem deriserunt me (a) minimi: nunc monent me in parte, quorum spernebam parentes eorum, quos non putavi (b) dignos canibus meorum gregum. 2 Et quidem virtus manuum eorum (c) ut quid mihi? super eos peribat (d) consummatio. 3 In egestate, & fame (e) sterilis: qui fugiebant (f) inaquosam heri pressuram, & miseriam. 4 Qui (g) circuibant (h) alima in (i) resonante, quorum (k) quidem alima erat eorum cibaria: inhonorati autem & abjecti, egentes omni bono: qui & (l) radices lignorum manducabant propter magnam famem. 5 Insurrexerunt 6 super me fures, Quorum domus erant cavernæ petrarum: 7 Inter (m) medium benè sonantium clamabunt, qui sub sarmentis agrestibus manebant, 8 Stultorum filii, & ignobilium: nomen & gloria extincta est de terra. 9 Nunc autem cithara eorum ego sum, 10 & me fabulam habent. Et abominati sunt me, discedentes procul: nec in faciem meam pepercerunt spuere. 11 Aperiens enim pharetram suam afflixit me: (n) et frænũ faciei meæ emiserunt. 12 Super (o) dextra germinis insurrexerunt: pedem (p) suum extenderunt, et straverunt super me semitas (q) perditionis ipsorum. 13 Contritæ sunt semitæ meæ: exuerunt enim me stolâ. 14 Jaculis suis vulneravit me: (r) judicavit autem mihi, sicut (s) vult: in doloribus maceratus sum: (t) convertuntur in me dolores. 15 Discessit (u) spes mea, sicut spiritus; & sicut nubes sal⁹ mea. 16 Et nunc super me (x) effundetur anima mea: habent autem me dies dolorum. 17 Nocte verò ossa mea (y) confusa sunt: & nervi mei dissoluti sunt. 18 In multa virtute apprehendit stolam meam: & quasi orâ vestimenti mei circundedit me. 19 Reputâsti autem me, sicut lutum: in terra, & cinere pars mea. 20 Clamavi autem ad te, & non audis me: steterunt autem, & consideraverunt me. 21 (z) Insultârunt autem mihi immisericorditer: manu potenti me flagellâsti.

MS.A. (α) ἀξίους εἶναι * κοινῶν τῶν (β) ἅλιμα ἐπὶ ἠχοῦντι, ὧν ἅλιμα ἦν αὐτῶν τὰ σῖτα, ἄτιμοί τε (γ) ἐνδεεῖς ἀγαθοῦ, (δ) ἐμασῶντο (ε) τῶν πετρῶν (∴) ἐπὶ γῆς. (ε) κιθάρα αὐτῶν ἐγώ εἰμι, καὶ (ζ) θρύλλημα ἔχουσιν. Ἐβδελύξαντό με (η) προσώπου (θ) πτύελου. (ι) γὰρ ὅδε φαρέτραν (κ) ἐξαπέστειλεν. (λ) τοῦ βλαστοῦ (μ) με τὴν στολήν μου. (ν) Κέχρηται (ν) ἐβούλετο, (ξ) ἐπιστρέφονται δέ μου (ο) παρῆλθεν. Καὶ νῦν (π) Νυκτὸς δέ μου τὰ ὀστᾶ συνέθλασε, καὶ τὰ νεῦρα (ρ) Πολλῇ ἰσχύϊ (σ) Ἥγηται δέ (τ) ἡ μερίς μου. (υ) εἰσακούεις μου, ἔστησαν καὶ κατενόησάν * μοι. Ἀπέβησαν δέ μοι ἀνελεήμονες, ὡς χει

תרגום TARGUM.

יקרי חדת גבי וקשתי בידי משתלחפא : מני קבילו ואוריכו ושתיקו למלכתי : בתר פתגמי לא יתנון ועליהון תשפר מלתי : ואוריכו היך מטרא לותי והיך 20 21 22 23
אריסיא דפומהון פתחו למלקושא : אגחך אמטולהון ולא יהמנון וקלסתור אפי לא אסתכלון : אבחר אורחהון ואתיב ברישיהון היך חתנא ואשרי כמלכא 24 25
בחילא היך כמן דאבלין מנחם :

ל

וכדון מגחכין עלי דזעירין מני ליומין די רחיקית אבהתהון לשואה עם כלבי נטרי עני : אוף חיל ידיהון למה לי עליהון הוביד כוך : תא לחוד חיל ידיהון 1 2
למה לי לקבלותיה שוחרא אין אתנער להון להובדא בכוך קבורתא : בחוסרנא ובאולצנא דלא ולד הון ערקין רשיעיא בארעא צהיא חשוכא היך רומשא 3
אתר שוחא ורגושתא : דתלשין הובי חולף עסבי מיכלא ועקרין רתימין מזוניהון : תא דשבקין פתגמי אוריתא מן לוח לבהון מטול מלי דעלמא עקרי 4
רותמיא מתוקדין ומתעבדין גומרין למזוניהון : מן שלהיא מתרכין מיבבין עליהון היך גנבא : בתקוף פצידי נחליא למשרי בנקירתא דעפרא ואבניא : 5 6
ביני אילניא נהקין תחות היני מתחברין : בניא דנבל עם בני הדיוטין ישתפפון מן ארעא : וכדון זמרהון הויתי והויתי להון לשותא : רחקונני רחיקו מני 7 8 9 10
ומן קדמי לא מנעו רוקא : ארום שושלתי ונימי אטוני שרא וסגפני וזממא מן קדמי פטרו : על ימינא בחוצפא בניהון קימין רגלי שדרו וכבשו עלי 11 12
אסרטי תברהון : צדיאו שבילי לפורענותי מהנין לית דסעיד להון : בתקוף פלטיות גללי ימא אתין תחות רגושא מתגלגלין : אתהפך עלי רגושתא 13 14 15
תרדוף כזעפא רבנותי והיך עבא עברת פורקני : וכדון עלי מצטערא נפשי ייחדונני יומי עניותא : לליא גרמי מתפקפקין מני ודמעסן יתי לא שכבין : 16 17
בסוגעי חילא יתחבלש לבושי אנב כתוני יזרזונני : אשוו יתי לטינא ואתמתיל כעפרא וקטם : תא אקשו יתי לאדם דאתברא מן טינא ואתמתיל לאברהם 18 19
דאדמי לעפר וקטם : אבעי מנך ולא תעני יתי קמית ותתבין במימרי : תתהפך לאכזראה לי באלימות אידך תנזמנני : 20 21

Verſio SYRIACA.

20 * ܐܠܐ ܥܡܝ ܐܬܬܚܕ. ܘܩܫܬܝ ܒܐܝܕܝ ܐܫܬܚܠܦܬ. * ܘܐܠܘ ܗܢܘܢ ܫܡܥܘܢܝ. ܘܣܟܝܘ ܘܩܒܠܘ ܡܠܟܝ.
21 22 * ܘܡܢ ܡܠܝ ܠܐ ܣܛܘ. ܘܫܦܪܐ ܗܘܬ ܠܗܘܢ ܡܠܬܝ. * ܣܟܝܘ ܠܝ ܐܝܟ ܕܠܡܛܪܐ. ܘܦܘܡܗܘܢ ܦܬܚܘ
23 24 ܐܝܟ ܕܠܡܠܩܘܫܐ. * ܐܓܚܟ ܥܠܝܗܘܢ. ܘܠܐ ܢܗܝܡܢܘܢ. ܘܒܢܘܗܪܐ ܕܐܦܝ ܠܐ ܢܗܠܟܘܢ. * ܐܒܨܐ ܐܘܪܚܬܗܘܢ.
25 ܘܐܗܦܘܟ ܘܐܥܡܪ ܐܝܟ ܡܠܟܐ ܒܚܝܠܗ. ܘܐܝܟ ܓܒܪܐ ܕܠܐܒܝܠܐ ܡܒܝܐ. * ܡܒܝܐܢܘ * ܠܐ
*
1 * ܘܗܫܐ ܗܐ ܓܚܟܘ ܥܠܝ. ܐܝܠܝܢ ܕܙܥܘܪܝܢ ܡܢܝ ܒܝܘܡܬܐ. ܐܝܠܝܢ ܕܐܢܐ ܐܣܠܝܬ ܠܐܒܗܝܗܘܢ. ܘܠܐ ܚܫܒܬ
2 ܐܢܘܢ ܥܡ ܟܠܒܐ ܕܥܢܝ. * ܘܚܝܠܐ ܕܐܝܕܝܗܘܢ ܠܡܢܐ ܗܘܐ ܠܝ. ܕܥܠܝܗܘܢ ܐܒܝܕ ܟܠܗ ܫܘܡܠܝܐ.
5 ** * ܘܥܡ ܛܠܘܡܝܐ ܢܦܩ ܥܠܝܗܘܢ ܐܝܟ ܓܢܒܐ ܒܥܠܥܠܐ ܕܪܘܚܐ. * ܠܡܥܡܪ ܒܫܩܝܩܐ ܒܥܦܪܐ ܘܒܟܐܦܐ.
6 7 * ܘܬܚܝܬ ܫܘܥܐ ܘܬܚܝܬ ܓܕܦܐ. * ܢܬܚܪܒܘܢ ܒܢܝ ܣܟܠܐ ܥܡ ܒܢܝ ܥܘܠܐ. ܬܡܢ ܢܬܡܟܟܘܢ ܡܢ
8 9 ܐܪܥܐ. * ܘܗܫܐ ܙܡܝܪܬܗܘܢ ܗܘܝܬ. ܘܗܘܝܬ ܠܗܘܢ ܠܬܡܗܐ. * ܐܣܠܝܘܢܝ ܘܐܬܪܚܩܘ ܡܢܝ. ܘܡܢ ܐܦܝ ܠܐ
10 11 ܚܣܟܘ ܪܘܩܐ. * ܡܛܠ ܕܒܣܬܪܝ ܐܟܦܘܢܝ ܘܡܟܟܘܢܝ. ܘܪܣܢܗ ܥܠ ܦܘܡܝ ܐܪܡܝܘ. * ܠܝܡܝܢܝ ܩܡܘ
12 13 ܘܟܠܝܘ ܪܓܠܝ. ܘܐܥܩܡܘܢܝ ܒܫܒܝܠ ܐܘܪܚܬܗܘܢ. * ܘܫܒܝܠܝ ܥܩܡܘ ܡܓܢ. ܘܥܠ ܕܓܕܫ ܠܝ
14 ܚܕܝܘ. ܘܠܗܘܢ ܠܐ ܢܗܘܐ ܥܘܕܪܢܐ. * ܐܝܟ ܬܪܥܐ ܪܒܐ ܢܐܬܘܢ. ܘܬܚܝܬ ܥܠܥܠܐ ܢܬܬܪܥܘܢ. * ܐܬܗܦܟܘ
15 16 ܥܠܝ ܫܓܘܫܝܐ. ܘܪܕܦܘ ܐܝܟ ܪܘܚܐ ܫܒܝܠܝ. ܘܐܝܟ ܥܢܢܐ ܕܥܒܪܐ. ܦܘܪܩܢܝ. * ܘܗܫܐ ܐܬܬܥܝܩܬ ܢܦܫܝ.
17 18 ܘܐܚܕܘܢܝ ܝܘܡܬܐ ܕܐܘܠܨܢܝ. * ܒܠܠܝܐ ܓܪܡܝ ܝܩܪܘ ܥܠܝ. ܘܦܓܪܝ ܠܐ ܫܪܐ ܒܣܘܓܐܐ ܕܚܝܠܐ. * ܐܬܟܣܝܬ
19 20 ܒܡܐܢܝ. ܘܐܣܪܬ ܒܬܘܬܒܝ. * ܐܪܡܝܘܢܝ ܒܛܝܢܐ. ܘܐܬܕܡܝܬ ܐܝܟ ܥܦܪܐ ܘܩܛܡܐ. * ܐܩܥܐ ܠܘܬܟ.
21 ܘܠܐ ܥܢܝܬܢܝ. ܩܡܬ ܘܐܬܒܩܝܬ ܒܝ. * ܘܥܒܕܬܢܝ ܠܟ ܒܥܠܕܒܒܐ. ܘܒܥܘܫܢܐ ܕܐܝܕܝܟ ܐܣܪܬܢܝ.

Verſio ARABICA.

20 21 * فقد اخذ سعيي وقوسي بيدي استبدلت * ولو انهم سمعوني وصبروا وقبلوا رايي * ومن قولي لم
22 23 يعدلوا وحسنت عندهم كلمتي * انتظروني مثل المطر وافواههم فغروها مثل الذي يطلب الربيع *
24 25 * فاضحك عليهم ولا يومنون * وفي ضياء وجهي لا يسلكون * وافتش طرايقهم * وارجع واحل مثل
الملك بجنده * ومثل الرجل الذي يعزي المحزونين *
* الفصل الثلثون *
1 * والان فقد سخروا علي الذين هم اصغر مني في الايام * الذين انا ارذلت اباهم * وما حسبتهم الا مع
2 5 كلاب غنمي * وقوة يديهم لم تكن عندي شيا نفدت جميع العظمة *** وبالقهر يخرج عليهم مثل
6 7 السارق بقوة المصانع * ليطرح في غبار الارض وحجارها * وتحت الكهوف وتحت السواقي * يهد البنون
8 9 السفهاء مع بني المنافقين * هنالك يتواضعون من الارض * والان فاني كنت اهمهم * وكنت لهم
10 11 عجبا * فصوني وابتعدوا عني * ولم يمسكوا البصاق عن وجهي * لانهم من ورايي ابتدوا
12 13 ووضعوني * ولجامه القوه في فمي * عن يميني قاموا * وعقلوا رجلي وعقلوني في سبيل طرقي * وطرايقي
14 عوجوها باطلا * وعلى الذي اصابني فرحوا * ولهم فلا يكون فرح * مثل الثغر العظيمة ياتون * وتحت
15 العجاج يتبددون * لانهم ردوا علي الاضطراب * وطردوا مثل الريح طرايقي * ومثل السحاب التي تعبر
16 17 خلاصي * والان فقد كربت نفسي واطافت بي ايام مذلتي * وفي الليل عظامي ثقلت علي * وجسدي
18 19 20 لم يحل بكثرة القوة * لبست لبوسي تسددت بثيابي * فالقوني في الطين وشبهت الرماد والتراب * فاعج
21 اليك ولا تجيبني * قمت فهمتني * وجعلتني لك عدوا وبعظمة يديك حكمتني *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Jam enim populus meus comprehenſus eſt, et arcus meus in manu mea immutatus eſt. 20 *Quòd ſi ipſi audiviſſent me, & præſtolati fuiſſent, ac ſuſcepiſſent conſilium meum,* 21 *Et à ſermone meo non declinâſſent, & placuiſſet eis verbū meum,* 22 *Expectâſſent me quaſi pluviam, & ora ſua aperuiſſent velut is qui petit ver.* 23 *Irridebo eos, nec credent: & in lumine vultûs mei non ambulabunt:* 24 *Et inveſtigabo vias eorum, & revertar, atque habitabo quaſi rex cum exercitu ſuo, et quaſi vir qui conſolatur afflictos.* 25

CAP. XXX.

ET nunc inſultant mihi qui ſunt minores me diebus, quorum ego patres vilipendi, nec reputavi eos niſi cum canibus ovium mearum, 1 *Quorum fortitudo manuum non fuit apud me ullius momenti.* 2 *(a) Conſumpta eſt omnis celſitudo, Et cum violentia (b) egredietur contra illos quaſi fur, cum impetu (c) turbarum,* 5 *(d) ut dejiciat in pulverem terræ, & lapides ejus;* 6 *Et ſub rupibus, & ſub pinnis* 7 *Deſtruentur filii (e) perverſi cùm filiis impiorum: Ibi humiliabuntur à terra.* 8 *Et nunc ſum illis ſolicitudini, & factus ſum illis (f) miraculum:* 9 *(g) Devitârunt me, et receſſerunt à me, nec cohibuerunt ſputum à facie mea:* 10 *Quoniam ipſi à tergo meo cœperunt et depreſſerunt me: et frænū ejus injecerunt in os meum.* 11 *A dextera mea ſteterunt, & impediverunt pedes meos, et implicaverunt me in ſemita viarum mearum,* 12 *Et vias meas diſtorſerunt gratìs, & de iis quæ acciderunt mihi, gaviſi ſunt: ipſis verò non erit (h) gaudium.* 13 *Veluti ruptio magna venient, & ſub turbine (i) diſpergentur:* 14 *Quia reduxerunt ſuper me perturbationem, & expulerunt quaſi ventum vias meas; & quaſi nubes tranſeuntes, ſalutem meam.* 15 *Et nunc jam contriſtata eſt anima mea, et circundederunt me dies afflictionis meæ:* 16 *Et in nocte oſſa mea gravata ſunt ſuper me, et corpus meū non habitavit in multitudine roboris.* 17 *Indutus ſum veſtibus meis, et cinxi me indumentis meis,* 18 *Et projecerunt me in lutum, & ſimilis factus ſum cineri & pulveri.* 19 *Et vociferabor ad te, nec exaudies me: ſtetiſti, et conſiderâſti me,* 20 *Et poſuiſti me adverſarium tibi, & in celſitudine manuum tuarum (k) cohibuiſti me.* 21

INTERP. SYRIACA.

(a) Super illos conſumpta (b) emanabit (c) torrentis; (d) Ad habitandum in ſciſſuris, in pulvere & petris; Et ſub (e) ſtulti (f) ſtupor: (g) Abominantur (h) auxilium. (i) confringentur: (k) ligâſti me.

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Gloria mea innovabatur apud me, & arcus meus in manu mea permutabatur. Audiebant me & expectabant, & tacebant ad conſilium meum. Poſt verbum meum non iterabant, & eis placebat eloquium meum. Et expectabant me ſicut pluviam, & ſicut hortulani qui os ſuum aperiunt ad imbrem ſerotinum. Ridebam ad eos & non credebant, & vultum faciei meæ non intuebantur. Eligebam viam eorum, & ſedebam in capite eorum ſicut ſponſus, & habitabam ſicut rex in exercitu, & ſicut ille qui lugentes conſolatur. 20 21 22 23 24 25

CAP. XXX.

NUnc autem derident me juniores me diebus, quorum patres abjeci ut ponerem eos cum canibus cuſtodientibus oves meas. *Etiam* virtus manuum ſuarum pro nihilo erat mihi: ſuper eos periit ſenium. *Targum aliud:* Veruntamen virtus manuum ſuarum pro nihilo erat mihi, *ut acciperem eam pro munere, cùm decretum eſſet de illis ut perirent in fovea ſepulchri.* In egeſtate & fame ſine filiis fuerunt fugientes impii, in terram *ſiticuloſam* & tenebroſam *ſicut veſpera,* in locum calamitatis & miſeriæ. Qui evellunt urticas pro herbis in cibum ſuum, & radices juniperorum cibus eorum. *Targum aliud: Qui dimittunt verba legis è tabula cordis ſui propter ſermones mundi, radices juniperorum comburentur & fient prunæ* cibus eorum. Ex improviſo ejiciebant, vociferabantur ſuper eos quaſi ſuper latronem. In præruptis rivorum torrentium ut habitarent in cavernis pulveris & petrarum. Inter arbores gemebant, & ſub ſentibus conjungebantur. Filii ſtulti cum filiis idiotarum conterentur de terra. Nunc autem canticum eorum ſum, & factus ſum eis in proverbium. Abominati ſunt me & longè receſſerunt à me, & à facie mea non prohibuerunt ſputum. Quoniam vinculum meum *& fila funis mei* diſſolvit, & *afflixit me,* & *camum* à facie mea ſolverunt. Ad dextram cum impudentia filii eorum ſurrexerunt, pedes meos ſubverterunt, & ſtraverunt ſuper me ſemitas interitus eorum. Deſolaverunt itinera mea, in ultionem mei profecerunt, non eſt qui auxiliaretur eis. Quaſi rapiditas dilatationis fluctuum maris veniunt, ſub tumultu devolvuntur. Verſus eſt contra me tumultus, perſequeris quaſi ventus dominationem meam, & ſicut nubes pertranſivit ſalus mea. Nunc autem in memetipſo tribulatur anima mea, comprehenderunt me dies afflictionis. In nocte oſſa mea perforantur in me, & qui adverſum me fremunt, non quieſcunt. In multitudine virtutis *perquiritur* veſtimentum meum: apud tunicam meam accingit me. Comparaverunt me luto, & aſſimilatus ſum pulveri & cineri. *Targum aliud:* Comparaverunt me *Adamæ, qui creatus fuit* è luto; & aſſimilatus ſum *Abrahamo, qui ſimilis fuit* pulveri & cineri. Deprecor te, & non exaudis me; ſto, & [*non*] intendis in me. Converſus es mihi in crudelem, in fortitudine manus tuæ comminatus es mihi. 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21

איוב : לא

me liqueſacies & : me *facies* equitare , ventum ſuper me *Elevabis*
22 תשאני אל־רוח תרכיבני ותמגגני
domum & : me facies converti mortem novi Nam .*ſubtilitate*
23 תשיה: כי־ידעתי מות תשיבני ובית
:manum mittet tumulum in non Veruntamen .viventis omnis *conventus*
24 מועד לכל־חי: אך לא־בעי ישלח יד
durum *ad* flevi non ſi ? clamor ,eis ejus contritione in ſi
25 אם־בפידו להן שוע: אם־לא בכיתי לקשה־
, expectavi bonum Quando .*egeno* mea anima *indoluit* ; *die*
26 יום עגמה נפשי לאביון: כי טוב קויתי
mea Viſcera .caligo venit & , lumen expectavi & :malum venit &
27 ויבא רע ואיחלה לאור ויבא אפל: מעי
.affictionis dies me prævenerunt : ſiluerunt non & , ferbuerunt
רתחו ולא־דמו קדמני ימי־עני:
.clamavi *eccleſia* in , ſurrexi : ſole abſque ambulavi Pullatus
28 קדר הלכתי בלא חמה קמתי בקהל אשוע:
mea Cutis .*ululæ* filiabus *ſocius* & , draconi fui Frater
29 30 אח הייתי לתנים ורע לבנות יענה: עורי
.æſtu ab eſt uſtulatum meum os & ; me deſuper eſt denigrata
שחר מעלי ועצמי־חרה מני־חרב:
.flentium vocem in meum organum & : mea cithara luctum in *fuit* Et
31 ויהי לאבל כנרי ועגבי לקול בכים:

CAP. XXXI. לא

? virgine in *conſiderabo* quid & : meis oculis *excidi* Fœdus
1 ברית כרתי לעיני ומה אתבונן על־בתולה:
? excelſis de *Sadai* hæreditas & : deſuper Dei pars quæ Et
2 ומה־י חלק אלוה ממעל ונחלת שדי ממרמים:
Nónne ? iniquitatis operariis alienatio & ,iniquo contritio Nónne
3 4 הלא־איד לעול ונכר לפעלי און: הלא־
Si ? *dinumerabit* meos greſſus omnes & ,meas vias *videbit* ipſe
5 הוא יראה דרכי וכל־צעדי יספור: אם־
.meus pes dolum ad feſtinavit & , mendacio cum ambulavi
הלכתי עם־שוא ותחש על־מרמה רגלי:
.meam perfectionem Deus ſciet & : juſtitiæ *bilancibus* in me Appendat
6 ישקלני במאזני־צדק וידע אלוה תמתי:
abiit meos oculos poſt Et .via de meus greſſus declinavit Si
7 אם תטה אשרי מני הדרך ואחר עיני הלך
alius & , Seram .quicquam adhæſit meis *volis in* & : meum cor
8 לבי ובכפי דבק מאום: אזרעה ואחר
meum cor eſt ſeductum Si .eradicentur *mea germina* & : comedat
9 יאכל וצאצאי ישרשו: אם־נפתה לבי
Molat .ſum inſidiatus mei *ſocii* oſtium juxta & : muliere ſuper
10 על־אשה ועל־פתח רעי ארבתי: תטחן
hoc *Nam* .alii incurventur eam ſuper & : mea uxor alteri
11 לאחר אשתי ועליה יכרעון אחרין: כי־הוא
ad uſque *ipſa* ignis Quia .*judicum* iniquitas *ipſum* & ,ſcelus
12 זמה והיא עון פלילים: כי אש היא עד־
Si .eradicet *meum proventum omnem* in & : devorat perditionem
13 אבדון תאכל ובכל־תבואתי תשרש: אם־
.mecum *ipſos litigando in* , meæ ancillæ & ,mei ſervi judicium abhorrui
אמאס משפט עבדי ואמתי בריבם עמדי:
quid , viſitaverit cùm & : Deus ſurrexerit cùm faciam quid Et
14 ומה אעשה כי־יקום אל וכי־יפקד מה
nos diſpoſuit & : eum fecit ,me *faciens* utero in Nónne ? illi reſpondebo
15 אשיבנו: הלא־בבטן עשני עשהו ויכוננו
oculos & : *tenuium* *voluntate* à prohibui Si ? *pariter* vulva in
16 ברחם אחד: אם־אמנע מחפץ דלים ועיני
.conſumpſi viduæ
אלמנה אכלה:

Verſio VULG. LAT.

22 Elevâſti me, & quaſi ſuper
ventum ponens eliſiſti me va-
23 lidé. Scio quia morti trades
me, ubi conſtituta eſt domus
24 omni viventi. Veruntamen
non ad conſumptionem eo-
rum emittis manum tuam : &
ſi corruerint , ipſe ſalvabis.
25 Flebam quondam ſuper eo qui
afflictus erat, & compatieba-
26 tur anima mea pauperi. Ex-
pectabam bona, & venerunt
mihi mala : præſtolabar lu-
cem, & eruperunt tenebræ.
27 Interiora mea efferbuerunt
abſque ulla requie, prævene-
28 runt me dies afflictionis. Mœ-
rens incedebam, ſine furore;
conſurgens, in turba clamabã.
29 Frater fui draconum, & ſocius
30 ſtruthionum. Cutis mea de-
nigrata eſt ſuper me, & oſſa
mea aruerunt præ caumate.
31 Verſa eſt in luctum cithara
mea, & organum meum in vo-
cem flentium.

CAP. XXXI.

1 PEpigi fœdus cum oculis
meis, ut ne cogitarem quidem
2 de virgine. Quam enim par-
tem haberet in me Deus deſu-
pèr, & hæreditatem Omnipo-
3 tens de excelſis ? Numquid
non perditio eſt iniquo, et alie-
natio operantibus injuſtitiam?
4 Nónne ipſe conſiderat vias
meas, & cunctos greſſus meos
5 dinumerat ? Si ambulavi in
vanitate, & feſtinavit in dolo
6 pes meus : Appendat me in
ſtatera juſta, & ſciat Deus ſim-
7 plicitatem meam. Si decli-
navit greſſus meus de via, & ſi
ſecutum eſt oculos meos cor
meum, & ſi manibus meis ad-
8 hæſit macula: Seram, & alius
comedat : & progenies mea
9 eradicetur. Si deceptum eſt
cor meum ſuper muliere, & ſi
ad oſtium amici mei inſidiatus
10 ſum: Scortum alterius ſit uxor
mea, & ſuper illam incurven-
11 tur alii. Hoc enim nefas eſt, et
12 iniquitas maxima. Ignis eſt
uſque ad perditionem devo-
rans, & omnia eradicans geni-
13 mina. Si contempſi ſubire
judicium cum ſervo meo, &
ancillâ meâ, cùm diſceptarent
14 adverſùm me. Quid enim fa-
ciam cùm ſurrexerit ad judi-
candum Deus ? & cùm quæ-
ſierit, quid reſpondebo illi ?
15 Numquid non in utero fecit
me qui & illum operatus eſt :
& formavit me in vulva unus?
16 Si negavi, quod volebant, pau-
peribus, & oculos viduæ ex-
pectare feci.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

22 †Ἔταξας δέ με ἐν ὀδύναις, ϗ (υ) ἀπέρρι-
23 ψάς με ἀπὸ σωτηρίας. †Οἶδα γὰρ ὅτι
θάνατός με ἐκτρίψει, †οἰκία γὰρ (φ) παν-
24 τὶ θνητῷ γῆ. †Εἰ γὰρ ὄφελον δυναίμην
ἐμαυτὸν χειρώσασθαι, †(χ) ἢ δεηθείς γε
25 ἑτέρου, ϗ ποιήσει μοι τοῦτο. †Ἐγὼ δὲ ἐπὶ
παντὶ ἀδυνάτῳ ἔκλαυσα, †(ψ) ἐστέναξα
26 ἰδὼν ἄνδρα (ω) ἐν ἀνάγκαις. †Ἐγὼ δὲ
ἐπέχων ἀγαθοῖς, ἰδοὺ συνήντησάν μοι
27 μᾶλλον ἡμέραι κακῶν. †Ἡ κοιλία μου
ἐξέζεσε ϗ οὐ σιωπήσεται, †προέφθασάν
28 (α) με ἡμέραι πτωχείας. †Στένων πε-
πόρευμαι ἄνευ φιμοῦ, †ἕστηκα δὲ ἐν ἐκκλη-
29 σίᾳ κεκραγώς. †Ἀδελφὸς γέγονα σει-
30 ρήνων, †ἑταῖρος δὲ στρουθῶν. †Τὸ δὲ δέρ-
μα μου (β) ἐσκότωται μεγάλως, †τὰ δὲ
31 ὀστᾶ μου ἀπὸ καύματος (γ). †Ἀπέβη δὲ
εἰς πένθος μου ἡ κιθάρα, †ὁ δὲ ψαλμός
μου εἰς κλαυθμὸν ἐμοί.

Statuiſti autem me in doloribus: 22
& projeciſti me à ſalute. Novi 23
enim, quòd mors me conteret:
domus enim eſt omni mortali ter-
ra. Atque utinam poſſem mihi 24
ipſe manus afferre, aut rogarem
alium, & faceret mihi hoc. Ego 25
autem ſuper omni impotente fle-
vi: gemui videns virum in ne-
ceſſitatibus. Ego autem (aa) in- 26
hærens bonis: ecce occurrerunt
mihi magis dies malorum. Ven- 27
ter meus efferbuit, & non (bb)
tacebit: prævenerunt me dies
mendicitatis. Gemens ivi (cc) 28
ſine fræno, & ſteti in cœtu cla-
mans. Frater factus ſum (dd) 29
ſyrenum, & ſocius ſtruthionum.
Et cutis mea (ee) obtenebrata 30
eſt valdè, & oſſa (ff) mea ab
æſtu. Verſa eſt autem in luctum 31
cithara mea; & pſalmus meus
in fletum mihi.

MS.A. (υ) ἀπέριψάς (φ) γῇ παντὶ θνητῷ. (χ) ἢ δεηθῆναι ἑτέρου, (ψ) ϗ ἐστέναξα (ω) ἐν ἀνάγκῃ. Καὶ* ἐπεῖχον ἐγὼ ἐν ἀγαθοῖς, ϗ ἰδοὺ *συνήντησέν (α) δέ με (β) μεμελάνωται μεγάλως, (γ) συνεφρύγη. Ἀπέβη εἰς πένθος ἡ κιθάρα μου,

ΚΕΦ. λα´.

1 †Διαθήκην ἐθέμην τοῖς ὀφθαλμοῖς μου,
2 †ϗ οὐ συνήσω (α) ἐπὶ παρθένον. †(β) Καὶ τί
ἐμέρισεν ὁ θεὸς ἄνωθεν, ϗ κληρονομία
3 ἱκανοῦ (γ) ἐξ ὑψίστων; †(δ) Οὐαί, ἀπώλεια
τῷ ἀδίκῳ, ϗ ἀπαλλοτρίωσις τοῖς ποιοῦ-
4 σιν ἀνομίαν. †Οὐχὶ αὐτὸς ὄψεται ὁδόν
μου, ϗ πάντα τὰ διαβήματά μου (ε) ἐξα-
5 ριθμήσεται; †Εἰ δὲ ἤμην πεπορευμένος
μετὰ γελοιαστῶν, †εἰ δὲ ϗ ἐσπούδασεν (ζ)
6 ὁ πούς μου εἰς δόλον· †Ἕσταμαι γὰρ ἐν ζυ-
γῷ δικαίῳ, (η) οἶδε δὲ ὁ κύριος τὴν ἀ-
7 κακίαν μου· †Εἰ ἐξέκλινεν ὁ πούς μου (θ)
ἐκ τῆς ὁδοῦ, †εἰ δὲ ϗ τῷ (ι) ὀφθαλμῷ ἐπ-
ηκολούθησεν ἡ καρδία μου, †(κ) εἰ δὲ ϗ
8 ταῖς χερσί μου ἡψάμην δώρων, Σπεί-
ραιμι ἄρα ϗ ἄλλοι φάγοισαν, †ἄρριζος
9 δὲ γενοίμην ἐπὶ γῆς. †Εἰ ἐξηκολούθησεν
ἡ καρδία μου γυναικὶ ἀνδρὸς ἑτέρου,
†(λ) εἰ ϗ ἐγκάθετος ἐγενόμην ἐπὶ θύ-
10 ραις αὐτῆς, †Ἀρέσαι ἄρα ϗ ἡ γυνή μου
(μ) ἑτέρῳ, τὰ δὲ νήπιά μου ταπεινωθείη.
11 †Θυμὸς γὰρ ὀργῆς (ν) ἀκατάσχετος, τὸ
12 μιᾶναι ἀνδρὸς γυναῖκα. †Πῦρ γάρ ἐστι
καιόμενον (ξ) ἐπὶ πάντων τῶν μερῶν,
†οὗ δ᾽ ἂν ἐπέλθῃ ἐκ ῥιζῶν ἀπώλεσεν.
13 †Εἰ δὲ ϗ ἐφαύλισα κρίμα θεράποντός
μου ἢ θεραπαίνης, κρινομένων αὐτῶν (ο)
14 πρὸς μέ, †Τί γὰρ ποιήσω ἐὰν ἔτασίν μου
(π) ποιῆται ὁ κύριος; †ἐὰν δὲ ϗ ἐπισκοπήν
15 τινα, ἀπόκρισιν ποιήσομαι; †Πότερον
(ρ) οὐχ ὡς ϗ ἐγὼ ἐγενόμην ἐν γαστρί, καὶ
ἐκεῖνοι γεγόνασι; †γεγόναμεν δὲ ἐν τῇ
16 αὐτῇ κοιλίᾳ. †Ἀδύνατοι (σ) δὲ χρείαν
ἥν ποτε εἶχον οὐκ ἀπέτυχον, †χήρας δὲ τὸν
ὀφθαλμὸν οὐκ ἐξέτηξα.

CAP. XXXI.

TEſtamentum (a) poſui ocu- 1
lis meis, & non (b) intelligam
ſuper virgine. Et quid (c) par- 2
titus eſt Deus deſuper; & hære-
ditas Omnipotentis ex altiſſimis?
Væ, perditio injuſto, & abalie- 3
natio facientibus iniquitatem.
Nónne ipſe videbit viam meam, 4
& omnes greſſus meos enumera-
bit ? Si verò inceſſi cum (d) ir- 5
riſoribus, vel ſi feſtinavit ad do-
lum pes meus: ((e) Steti enim in 6
ſtatera juſta, novit autem Domi-
nus (f) innocentiam meam:) Si 7
declinavit pes meus de via, vel
ſi oculo obſequutum eſt cor me-
um, vel ſi manibus meis tetigi
dona: Seram igitur, & alii e- 8
dant: & ſine (g) radice ſim ſu-
per terram. Si ſequutum eſt cor 9
meum mulierem viri alterius, aut
ſi (h) obſedi januas ejus; (i) Pla- 10
ceat quoque uxor mea alteri, &
filii mei humilientur. Furor e- 11
nim (k) iræ indomitus, comma-
culare viri uxorem. Ignis enim 12
eſt ardens ſuper omnes (l) partes:
quocunque ſupervenerit, à radi-
cibus perdidit. Quòd ſi & (m) 13
deſpexi judicium famuli mei, aut
ancillæ, cùm ipſi litigarent me-
cum: Quid enim faciam, ſi (n) 14
inquiſitionem mei faciat Domi-
nus ? quòd, ſi & viſitationem
aliquam, reſponſum dabo? Nón- 15
ne ſicut ego factus ſum in utero,
& illi facti ſunt? facti autem
ſumus in eodem (o) ventre. Im- 16
potentes autem, quacunque ali-
quando re opus habebant, non
ſunt fruſtrati; & viduæ oculum
non tabefeci.

MS.A. (α) ἐπὶ παρθένων. (β) Καὶ ἐπεμέρισεν (γ) ἐξ ὑψίστου; (δ) Οὐαί, ϗ ἀπώλια (ε) ἐξαριθμηθήσεται; Εἴγε ἤμην (ζ) εἰς δόλον ὁ πούς μου· Ἕσταμε (η) οἶδεν ὁ κύριος (θ) ἀπὸ τῆς ὁδοῦ αὐτοῦ, εἰ (ι) ὀφθαλμῷ μου (κ) καὶ εἰ ἐν ταῖς χερσίν μου ἡψάμην δώρων, Σπείροιμι ἄρα ϗ ἄλλοι φάγοιντο, ἄριζος (λ) εἰ δὲ ϗ (μ) ἄλλῳ, (ν) ἀκάθεκτος, (ξ) ἐκ πάντων (ο) πρὸς ἐμέ, (π) ποιήσῃ (ρ) οὐχ ὡς ἐγὼ (σ) δὲ ἣν ποτε εἶχον χρείαν οὐκ ἀπέτυχον, ϗ χήρας τὸν ὀφθαλμὸν οὐκ ἔτηξα.

תרגום TARGUM.

22 23 תטלנני לפוחא תרכבנני ותמסנני בתשיתא : ארום גלי קדמי דלמותא תתיב לי ובית קבורתא מזמן לכל דחי : לחוד לא ברתחא ישדר 24
מחתיה אין בעדן צעריה יקבל צלותהון : הא ברם לא לגרמיה יגרג מחתיה אין בחטטי ישוי להון אספלעיתא : אין לא בכית לקשי יומא עגמת 25
26 27 נפשי לחשיכא : ארום טב סברית ואתא ביש ואוריכית לנהורא ואתא קבלא : מעי חמרו ולית בהון חוו דמא אקדימו יתי יומי עניותא : אוכם 28
29 30 אולית מדלית שמשא קמת בקהלא אבעי : אחא הויתי לירודין וחברא לברת נעמיתא : משכי שחם מעלוי ותרמי חרך מן נונבא : והוא לאבלא 31
כנרי ואבובי אמתיל לקל בכין :

לא

1 2 קים גזרית לעיני ומה אסתכל על בתולתא : ומה חולק טב יהיב אלהא מלעלא ואחסנת שדי משמי מרומא : הלא צערא לזידונא ותבירא 3
4 7 לעבדי שקר : הלא הוא יחמי אורחתי וכל פסיעתי ימנה : אין הליכת עם שקרא וזריזת על נכילות רגלי : יתקלנני במשחתא דצדקא וידע אלהא 5 6
8 שלימותי : אין תצלי אסתורי מן אורחא ובתר עיני הלך לבי ובידי אדביק מדעם חבולא : אזרע וחורן ייכול ולבלבי נצרי יתלשון : אין אשתרגג 9
10 11 לבבי על אתת גבר ועל תרע חברי כמנית : תשמש עם חורן אנתתי ועלה יחמטון חורנין : ארום היא זנו והוא סורחן פריש : ארום אשא היא 12
13 עד בי אבדנא תגמר ובכל אנבי תלשא : אין רחקית דין עבדי ואמהתי כד אית להון תגרא בהדי : ומה אעבד כד יקום אלהא וארום יסער 14
15 מה אתיבניה : הלא בכריסא עבדני מן דעבדיה ואתקן יתנא במעיא חד : אין אתמנע מלשלמא צבאות מסכינא ועיני ארמלתא אשיצי : 16

Versio SYRIACA.

22 23 * ܘܫܩܠܬܢܝ ܘܐܪܟܒܬܢܝ ܥܠ ܪܘܚܐ. ܘܡܟܟܬܢܝ ܘܐܬܒܪܬܢܝ. * ܡܛܠ ܗܫܐ ܝܕܥ ܐܢܐ ܕܡܢ ܡܘܬܐ ܬܗܦܟܢܝ.
24 ܠܟܢܘܫܬܐ ܕܟܠܗܘܢ ܚܝܐ. * ܒܪܡ ܠܐ ܢܦܫܘܛ ܥܠܝ ܐܝܕܗ. ܘܡܐ ܕܩܥܝܬ ܠܗ ܢܦܪܩܢܝ. * ܒܟܝܬ ܥܠ
25 26 ܡܣܟܢܐ ܒܐܝܡܡܐ. ܘܐܬܟܪܝܬ ܢܦܫܝ ܥܠ ܒܨܝܪܐ. * ܣܟܝܬ ܠܛܒܬܐ ܘܐܬܐ ܠܝ ܒܝܫܬܐ. ܣܟܝܬ ܠܢܘܗܪܐ
27 28 ܘܐܬܐ ܠܝ ܚܫܘܟܐ. * ܓܘܫܝ ܐܬܬܪܝ ܘܠܐ ܫܠܝ. ܩܕܡܘܢܝ ܝܘܡܬܐ ܕܡܘܟܟܝ. * ܒܥܩܬܐ ܗܠܟܬ ܕܠܐ
29 30 ܚܡܬܐ. ܩܡܬ ܒܟܢܘܫܬܐ ܘܒܟܝܬ. * ܐܚܐ ܗܘܝܬ ܠܒܢܝ ܬܢܝܢܐ. ܘܚܒܪܐ ܠܒܢܬ ܝܥܢܐ. * ܡܫܟܝ ܐܘܟܡ ܥܠܝ.
31 ܘܓܪܡܝ ܝܒܫܘ ܐܝܟ ܕܒܫܪܒܐ. * ܘܗܘܐ ܠܐܒܠܐ ܟܢܪܝ. ܘܙܡܪܝ ܠܩܠܐ ܕܒܟܝܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܠܐ *
1 2 * ܩܝܡܐ ܓܙܪܬ ܠܥܝܢܝ. ܕܠܐ ܐܬܒܩܐ ܒܒܬܘܠܬܐ. * ܘܡܢܘ ܦܠܓܗ ܕܐܠܗܐ ܕܡܢ ܠܥܠ.
3 ܘܝܪܬܘܬܗ ܕܐܠܗܐ ܕܡܢ ܡܪܘܡܐ. * ܕܠܐ ܐܒܕܢܐ ܠܥܘܠܐ. ܘܡܘܬܪܐ ܠܥܒܕܝ ܥܘܠܐ. * ܘܗܘ ܚܙܐ ܐܘܪܚܬܝ
4 5 ܘܟܠܗܘܢ ܗܠܟܝ ܡܢܐ. * ܐܢ ܗܠܟܬ ܥܡ ܫܩܪܐ: ܘܐܢ ܪܗܛܘ ܠܢܟܠܐ ܪܓܠܝ.
6 7 * ܢܬܩܠܘܢܝ ܒܡܐܙܢܝܐ ܕܟܐܢܘܬܐ. ܘܢܕܥ ܐܠܗܐ ܬܡܝܡܘܬܝ. * ܐܢ ܐܣܛܝܘ ܗܠܟܝ ܡܢ ܐܘܪܚܐ. ܘܐܢ ܒܬܪ
8 ܥܝܢܝ ܐܙܠ ܠܒܝ. ܘܐܢ ܒܐܝܕܝ ܕܒܩ ܡܘܡܐ. * ܐܙܪܥ ܘܐܚܪܢܐ ܢܐܟܘܠ. ܘܢܨܒܬܝ ܢܬܥܩܪܘܢ.
9 10 * ܐܢ ܐܬܛܥܝ ܠܒܝ ܥܠ ܐܢܬܬܐ. ܘܥܠ ܬܪܥܐ ܕܚܒܪܝ ܐܢ ܟܡܢܬ. * ܬܛܚܘܢ ܠܐܚܪܢܐ
11 12 ܐܢܬܬܝ. ܘܥܠܝܗ ܢܬܟܦܘܢ ܐܚܪܢܐ. * ܡܛܠ ܕܗܝ ܛܘܠܫܐ ܗܝ. ܘܗܝ ܥܘܠܐ ܪܒܐ. * ܡܛܠ ܕܢܘܪܐ ܗܝ ܕܥܕܡܐ ܠܐܒܕܢܐ
13 ܐܟܠܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܥܠܠܬܝ ܢܥܩܪܘܢ. * ܐܢ ܐܡܣܝܬ ܕܝܢܐ ܕܥܒܕܝ ܘܕܐܡܬܝ. ܟܕ ܕܐܢܝܢ ܗܘܘ
14 15 ܥܡܝ. * ܡܢܐ ܐܥܒܕ ܐܡܬܝ ܕܩܐܡ ܐܠܗܐ. ܘܡܐ ܕܦܩܕ ܡܢܐ ܐܦܢܐ ܠܗ. * ܠܐ ܗܘܐ ܒܟܪܣܐ ܕܥܒܕܢܝ
16 ܥܒܕܗ. ܘܬܩܢܢ ܒܪܚܡܐ ܚܕ. * ܐܢ ܟܠܝܬ ܡܢ ܡܣܟܢܐ ܨܒܝܢܗ. ܘܥܝܢܝ ܕܐܪܡܠܬܐ ܐܚܫܟܬ.

Versio ARABICA.

22 23 * وحملتني فاربصني علي الريح * وحطيتني واسقيتني * والان اعلم انك من الموت تردني الي مجمع جميع
24 25 الاحياء * ولكن لا يبسط علي يدك * واذا عججت اليه يخلصني * بكيت علي المسكين في النهار *
26 27 وكربت نفسي علي البائس * انتظرت الرحمة فجاءت البلوا * انتظرت النور فجاء الظلام * تقلقلت
28 29 امعائي فما سكنت * عاجلتني ايام تواضعي * بالهم سلكت بلا حمية * قمت في الجماعة وبكيت * اخا
30 كنت لاولاد الوحوش * وصاحبا لبنات الانعام * جلدي تقبض علي * وعظامي يبست كالذي
31 في السموم * كان مزهري بالحزن * ومزماري لصوت البكاء * * الفصل الحادي والثلثون *
1 2 * عهدا اعاهد عيني ان لا انفطن في العذري * وماذا هي قسمة الله الذي من فوق * ووراثة الله
3 4 الذي من العلو * الا تبار المنافقين * والمكروه علي صانعي الشر * فانه قد ابصر طرايقي * وجميع
5 6 خطواتي قد احصاها * ان كنت خطوت مع الاشرار وان استعجلت رجلي ان تسعا بالغش * فميزني
7 بميزان الحق * ويعرف الله براتي * ان كنت عدلت خطواتي من الطريق وان كان ذهب قلبي وراء
8 عيني وان كان لصق بي شي * الا اذا زرعت عند ذلك اكلت * واذا ما نصبت عند ذلك ربيت
9 10 وحملت * وان استزل قلبي علي امراة غريبة * وعلي باب صاحبي ان كنت رصدت * ولكن طحنت
11 12 امراتي لاخرين * وخبزت مكانا اخر * من اجل انها خاطية * وهي عين المكر * والنار التي حتي الهلاك
13 14 تاكل * وجميع غلاتي تنقلع * ان كنت رفضت قضاء عبدي وامتي اذا تداينوا معي * بل اقول
15 ماذا اصنع اذا ما قام الله وماذا اذا ما سال ان اجيبه * فانه في البطن الذي صنعني صنعه * وفي رحم
16 واحد ساوانا * ان كنت منعت المسكين الذي طلب وان كنت اظلمت عيني الارملة *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

22 *Et portâſti me, tum cubare feciſti ſuper ventum, & (l) depoſuiſti me, ac tribulâſti me:* 23 *Et nunc ſcio quòd à morte reduces me ad congregationem omnium vivorũ.* 24 *Attamen non extendet ſuper me manum ſuam; & cùm clamavero ad eum, ſalvabit me.* 25 *Ploravi ſuper pauperem in die, & mœruit anima mea ſuper inopem.* 26 *Expectavi miſericordiam, & venit tribulatio. Expectavi lucem, & venerunt tenebræ.* 27 *Cõmota ſunt viſcera mea, nec quieverunt: Prævenerunt me dies humilitatis meæ:* 28 *(m) In anxietate ambulavi abſq; ira: ſteti in cõgregatione, et planxi.* 29 *Frater factus ſum (n) filiis belluarum, & ſocius filiabus ſtruthionum.* 30 *Cutis mea (o) contracta eſt ſuper me, & oſſa mea (p) aruerunt veluti ejus qui in vento calido eſt.* 31 *Verſa eſt cithara mea in mœrorem, & pſalmodia mea in vocem luctûs.*

CAP. XXXI.

1 *Fœdus paciſcor cum oculis meis quòd non conſiderabo virginem.* 2 *Et quænam eſt pars Dei, quæ deſuper eſt: & hæreditas Dei quæ ab excelſo eſt;* 3 *Niſi interitũs impiorum, et (a) abominatio ſuper operantes malum?* 4 *Nam ipſe vidit vias meas, & cunctos paſſus meos numeravit.* 5 *Si ambulavi cum improbis, & ſi acceleravi pedes meos (b) ut curarent dolum;* 6 *Appendat me in ſtatera veritatis, & cognoſcat Deus innocentiam meam.* 7 *Si diverti greſſus meos de via, & ſi abiit cor meum poſt oculos meos, & ſi adhæſit mihi quicquam.* 8 *Sed potiùs cùm ſeminavi, tunc comedi; & cùm plantavi, tunc nutrivi & congeſſi:* 9 *Et ſi (c) flexum eſt cor meũ ſuper muliere aliena, et ad januam proximi mei ſi inſidiatus ſum:* 10 *Imò verò moluit uxor mea aliis, & panem confecit alio in loco,* 11 *Quia ipſa peccatrix eſt, & oculus fraudis,* 12 *Et ignis uſque ad interitum comedens. Et omnes fruges meæ eradicentur,* 13 *Si recuſavi cauſam ſervi mei & ancillæ meæ, quando judicium inierunt mecum:* 14 *Sed dico, Quid faciam quando ſteterit Deus? & quid cùm poſtulaverit ut reſpondeam ei?* 15 *Nam in ventre in quo condidit me, condidit illum; & in vulva eadem (d) pares nos fecit.* 16 *Si denegavi pauperi quod petiit, & ſi obſcuravi oculos viduæ:*

INTERP. SYRIACA.
(l) humiliâſti me, (m) Mœſtè (n) cani ſylveſtri, (o) conſumpta eſt (p) aduſta ſunt *Cap. xxxi.* (a) abalienatio (b) current in dolo; (c) ſolicitum fuit (d) aptavit nos.

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

22 23 Elevâſti me ſuper ventum, & aſcendere me feciſti, & tabeſcere feciſti me in ſcientia. *Nam patefactum eſt mihi* quòd morti reduces me, & in domum ſepulturæ, quæ præparatur omni viventi. 24 *Verum non cum furore immittet* plagam ſuam, ſi *tempore anguſtiæ ejus ſuſceperit preces eorum. Targum aliud*: Veruntamen non in *os ejus* ſuſcitabit plagam ſuam, ſi in ſcabie poſuerit ſuper ea emplaſtrum. 25 Flebam utiq; ſuper eum qui mœrens erat in die, compatiebatur anima mea pauperi. 26 Speravi enim bonum, & venit malum; & expectavi lucem, & venerunt tenebræ. 27 Viſcera mea efferbuerunt, & non apparuit in eis ſanguis: prævenerunt me dies afflictionis. 28 Denigratus incedebam ſine ſole, conſurgens in turba deprecabar. 29 Frater fui draconibus, & ſocius filiis ſtruthionis. 30 Cutis mea denigrata eſt in me, & os meum combuſtum eſt ſiccitate. 31 Et verſa eſt in luctum cithara mea, & organum meum comparatum eſt voci flentium.

CAP. XXXI.

1 PEpigi fœdus cum oculis meis, & quid reſpicerem ſuper virginem? 2 Quam enim partem bonam daret Deus deſuper, & poſſeſſionem omnipotens de cœlis excelſis. 3 Nonne tribulatio erit ſuperbo: & interitus operantibus iniquitatem? 4 Nonne ipſe videbit vias meas, & omnes greſſus meos numerabit? 5 Si ambulavi cum falſitate, & feſtinavit in ſolicitudine pes meus. 6 Appendat me in ſtatera juſtitiæ, ut Deus ſciat perfectionem meam. 7 Si declinavit greſſus meus à via, & ſecutum eſt oculos meos cor meum, & manibus meis adhæſit aliqua macula: 8 Seram, & alius comedat, & germinationes propaginum mearum eradicentur. 9 Si concupivit cor meum uxorem viri, & ſi ad oſtium amici mei inſidiatus ſum. 10 Dormiat cum alio uxor mea, & ſuper eam incurvent ſe alii: 11 Quoniam hoc eſt fornicatio, & eſt iniquitas maxima. 12 Quia ignis eſt qui uſq; ad domum perditionis conſumet, & omnes fructus meos eradicabit. 13 Si abjeci judicium ſervi mei & ancillæ meæ, quando erat eis contentio mecum: 14 Quid enim faciam cùm ſurrexerit Deus; & quando viſitabit, quid reſpondebo ei? 15 Nonne in ventre fecit me, *qui* fecit illum, & præparavit nos in utero unus? 16 Si deſiii reddere quod *volebat pauper*, & oculos viduæ conſumere feci.

איוב : לא

pupillus comedit non & : solus meam buccellam comedi Et
17 וְאֹכַל פִּתִּי לְבַדִּי וְלֹא־אָכַל יָתוֹם
: patre tanquam , mecum crevit meis pueritiis à Quia .ea ex
18 מִמֶּנָּה : כִּי מִנְּעוּרַי גְּדֵלַנִי כְאָב
pereuntem videbam Si .illam deduxi meæ matris utero ab &
19 וּמִבֶּטֶן אִמִּי אַנְחֶנָּה : אִם־אֶרְאֶה אוֹבֵד
non Si .mendico operimentum non & ; veste absque
20 מִבְּלִי לְבוּשׁ וְאֵין כְּסוּת לָאֶבְיוֹן : אִם־לֹא
.se calefecit mearum ovium vellere de & ,ejus lumbi mihi benedixerunt
בֵרְכוּנִי חֲלָצָו וּמִגֵּז כְּבָשַׂי יִתְחַמָּם :
viderem quòd , meam manum pupillum contra elevavi Si
21 אִם־הֲנִיפוֹתִי עַל־יָתוֹם יָדִי כִּי־אֶרְאֶה
, cadat humero ab meum Latus .meum auxilium porta in
22 בַשַּׁעַר עֶזְרָתִי : כְּתֵפִי מִשִּׁכְמָה תִפּוֹל
, me ad pavor Quia .confringatur canna à meum brachium &
23 וְאֶזְרֹעִי מִקָּנָה תִשָּׁבֵר : כִּי־פַחַד אֵלַי
posui Si .potero non ejus celsitudine à & : Dei contritio
24 אֵיד אֵל וּמִשְּׂאֵתוֹ לֹא אוּכָל : אִם־שַׂמְתִּי
Si .mea fiducia , dixi auro & : meam spem aurum
25 זָהָב כִּסְלִי וְלַכֶּתֶם אָמַרְתִּי מִבְטַחִי : אִם־
invenit multum quia & : mea facultas multa quia , sum lætatus
אֶשְׂמַח כִּי־רַב חֵילִי וְכִי־כַבִּיר מָצְאָה
lunam & : resplendebat quando ,lucem videbam Si .mea manus
26 יָדִי : אִם־אֶרְאֶה אוֹר כִּי יָהֵל וְיָרֵחַ
: meum cor abscondito in se seduxit Et .incedentem honorificè
27 יָקָר הֹלֵךְ : וַיִּפְתְּ בַּסֵּתֶר לִבִּי
: judicata iniquitas hoc Etiam .meum os mea manus est osculata &
28 וַתִּשַּׁק יָדִי לְפִי : גַּם־הוּא עָוֺן פְּלִילִי
contritione in sum lætatus Si .desuper Deo sum mentitus si
29 כִּי־כִחַשְׁתִּי לָאֵל מִמָּעַל : אִם־אֶשְׂמַח בְּפִיד
.malum eum invenit quia , me excitavi & , me habentis odio
מְשַׂנְאִי וְהִתְעֹרַרְתִּי כִּי־מְצָאוֹ רָע :
execratione in petendum ad : meum palatum peccandum ad dedi non Et
30 וְלֹא־נָתַתִּי לַחֲטֹא חִכִּי לִשְׁאֹל בְּאָלָה
det Quis .mei tentorii viri dixerunt non Si .illius animam
31 נַפְשׁוֹ : אִם־לֹא אָמְרוּ מְתֵי אָהֳלִי מִי־יִתֵּן
: peregrinus pernoctabat non Foris ? saturemur non ejus carne de
32 מִבְּשָׂרוֹ לֹא נִשְׂבָּע : בַּחוּץ לֹא־יָלִין גֵּר
homo ut operui Si .aperiebam viatori mea ostia
33 דְּלָתַי לָאֹרַח אֶפְתָּח : אִם־כִּסִּיתִי כְאָדָם
Quia .meam iniquitatem meo abdito in abdendum ad , meas prævaricationes
34 פְּשָׁעָי לִטְמוֹן בְּחֻבִּי עֲוֺנִי : כִּי
, me consternavit familiarum contemptus & , multam turbam frangebam
אֶעֱרוֹץ הָמוֹן רַבָּה וּבוּז־מִשְׁפָּחוֹת יְחִתֵּנִי
, me audientem mihi dabit Quis .ostium sum egressus non , tacui &
35 וָאֶדֹּם לֹא־אֵצֵא פָתַח : מִי יִתֶּן־לִי שֹׁמֵעַ לִי
scripsit librum & : mihi respondebit , omnipotens meum signum Ecce
הֶן־תָּוִי שַׁדַּי יַעֲנֵנִי וְסֵפֶר כָּתַב
eum ligem ,illum portem meo humero super non Si .meæ litis vir
36 אִישׁ רִיבִי : אִם־לֹא עַל־שִׁכְמִי אֶשָּׂאֶנּוּ אֶעֶנְדֶנּוּ
velut : illi nunciabo meorum gressuum Numerum .mihi diademata
37 עֲטָרוֹת לִי : מִסְפַּר צְעָדַי אַגִּידֶנּוּ כְּמוֹ
mea humus me adversum Si .eum faciam appropinquare ducem
38 נָגִיד אֲקָרְבֶנּוּ : אִם־עָלַי אַדְמָתִי
ejus robur Si .defleant ejus sulci pariter & , clamet
39 תִזְעָק וְיַחַד תְּלָמֶיהָ יִבְכָּיוּן : אִם־כֹּחָהּ
.feci efflare ejus patronorum animam & : pecunia absque comedi
אָכַלְתִּי בְלִי־כָסֶף וְנֶפֶשׁ בְּעָלֶיהָ הִפָּחְתִּי :
.fœtens herba hordeo pro & , spina egrediatur tritico Pro
40 תַּחַת חִטָּה יֵצֵא חוֹחַ וְתַחַת־שְׂעֹרָה בָאְשָׁה
.Ijob verba sunt Perfecta
תַּמּוּ דִּבְרֵי אִיּוֹב :

Versio VULG. LAT

17 Si comedi buccellam meam
solus, & non comedit pupillus
18 ex ea: (Quia ab infantia
mea crevit mecum miseratio:
& de utero matris meæ egres-
19 sa est mecum:) Si despexi
pereuntem, eò quòd non ha-
buerit indumentum, & abs-
que operimento pauperem:
20 Si non benedixerunt mihi la-
tera ejus, & de velleribus o-
vium mearum calefactus est:
21 Si levavi super pupillum ma-
num meam, etiam cùm vide-
rem me in porta superiorem:
22 Humerus meus à junctura sua
cadat, & brachium meum cum
23 suis ossibus confringatur. Sem-
per enim quasi tumentes super
me fluctus timui Deum, &
pondus ejus ferre non potui.
24 Si putavi aurum robur meum,
& obrizo dixi; Fiducia mea.
25 Si lætatus sum super multis
divitiis meis, & quia plurima
26 reperit manus mea. Si vidi
Solem cùm fulgeret, & lunam
27 incedentem clarè: Et lætatū
est in abscondito cor meum,
& osculatus sum manum
28 meam ore meo. Quæ est ini-
quitas maxima, & negatio
29 contra Deum altissimum. Si
gavisus sum ad ruinam ejus
qui me oderat, & exultavi
quòd invenisset eum malum.
30 Non enim dedi ad peccan-
dum guttur meum, ut expete-
rem maledicens animam ejus.
31 Si non dixerunt viri taberna-
culi mei; Quis det de carni-
32 bus ejus ut saturemur? Fo-
rìs non mansit peregrinus, o-
stium meum viatori patuit.
33 Si abscondi quasi homo pecca-
tum meum, & celavi in sinu
34 meo iniquitatem meam. Si
expavi ad multitudinem ni-
miam, & despectio propin-
quorum terruit me: & non
magis tacui, nec egressus sum
35 ostium. Quis mihi tribu-
at auditorem, ut desiderium
meum audiat Omnipotens;
& librum scribat ipse qui ju-
36 dicat. Ut in humero meo
portem illum, & circumdem
illum quasi coronam mihi?
37 Per singulos gradus meos pro-
nuntiabo illum, & quasi prin-
38 cipi offeram eum. Si adver-
sum me terra mea clamat, &
cum ipsa sulci ejus deflent:
39 Si fructus ejus comedi absque
pecunia, & animam agrico-
40 larum ejus afflixi: Pro fru-
mento oriatur mihi tribulus,
& pro hordeo spina.

Finita sunt verba Job.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

17 † Εἰ δὲ καὶ τὸν ψωμόν μου ἔφαγον μόνος, καὶ
18 οὐχὶ (τ) ὀρφανῷ μετέδωκα· † Ὅτι ἐκ νε-
ότητός μου ἐξέτρεφον ὡς πατήρ, † καὶ ἐκ γα-
19 στρὸς μητρός μου ὡδήγησα· † Εἰ δὲ καὶ
ὑπερεῖδον γυμνὸν ἀπολλύμενον, καὶ οὐκ
20 (υ) ἠμφίασα αὐτόν. † Ἀδύνατοι δὲ εἰ
μὴ εὐλόγησάν με, † ἀπὸ δὲ κουρᾶς (φ)
ἀμνῶν μου ἐθερμάνθησαν οἱ ὦμοι αὐτῶν·
21 † (χ) Εἰ ἐπῆρα ὀρφανῷ χεῖρα, πεποιθὼς
22 ὅτι πολλή μοι βοήθεια (∴) περίεστιν· † Ἀπο-
σταίη ἄρα (ψ) ὁ ὦμός μου ἀπὸ τῆς κλειδός,
† ὁ δὲ βραχίων μου ἀπὸ τοῦ (ω) ἀγκῶνος
23 συντριβείη. † Φόβος γὰρ κυρίου (α) συνέ-
σχε με, † ἀπὸ τοῦ λήμματος αὐτοῦ οὐχ
24 ὑποίσω. † Εἰ ἔταξα χρυσίον εἰς χοῦν
μου, † εἰ δὲ καὶ λίθῳ πολυτελεῖ ἐπεποί-
25 θησα. † Εἰ δὲ καὶ εὐφράνθην πολλοῦ
πλούτου (β) μοι γενομένου, † (γ) εἰ δὲ καὶ ἐπ'
26 ἀναριθμήτοις ἐθέμην χεῖρά μου· † Ἢ οὐχ
ὁρῶμεν ἥλιον τὸν ἐπιφαύσκοντα (δ) ἐκ-
λείποντα, † σελήνην δὲ φθίνουσαν; οὐ
27 γὰρ ἐπ' αὐτοῖς ἐστί· † Καὶ εἰ ἠπατήθη
λάθρα ἡ καρδία μου, † (ε) εἰ δὲ χεῖρά μου
28 ἐπιθεὶς ἐπὶ στόματί μου ἐφίλησα· † Καὶ
τοῦτό μοι ἄρα ἀνομία (ζ) ἡ μεγίστη λο-
γισθείη, † ὅτι ἐψευσάμην (η) ἐναντίον κυ-
29 ρίου τοῦ ὑψίστου. Εἰ δὲ καὶ ἐπιχαρὴς ἐ-
γενόμην (θ) πτώμασιν ἐχθρῶν μου, † καὶ εἶ-
30 πεν ἡ καρδία μου, Εὖγε· † Ἀκούσαι ἄ-
ρα τὸ οὖς μου τὴν κατάραν μου, † θρυλ-
ληθείην δὲ (ι) ἄρα ὑπὸ λαοῦ μου κακού-
31 μενος. Εἰ δὲ καὶ πολλάκις εἶπον αἱ θε-
ράπαιναί μου, † Τίς ἂν δῴη ἡμῖν τῶν
σαρκῶν αὐτοῦ (κ) πλησθῆναι; † λίαν μου
32 χρηστοῦ ὄντος· † Ἔξω δὲ οὐκ (λ) ηὐλίζετο
ξένος, (μ) ἡ δὲ θύρα μου παντὶ ἐλθόντι
33 (*) ἀνέῳκτο· † Εἰ δὲ καὶ ἁμαρτὼν ἀκουσίως
34 ἔκρυψα τὴν ἁμαρτίαν μου· † Οὐ γὰρ
διετράπην πολυοχλίαν (ν) πλήθους,
† τοῦ μὴ ἐξαγορεῦσαι (ξ) ἐνώπιον αὐτῶν·
† εἰ δὲ καὶ εἴασα ἀδύνατον ἐξελθεῖν (ο) θύ-
35 ραν μου κόλπῳ κενῷ· † Τίς δῴη ἀκούοντά
μου; † χεῖρα δὲ κυρίου εἰ μὴ (″) ἐδεδοίκειν· † συγ-
36 γραφὴν δὲ ἣν εἶχον κατά τινος, † (π) Ἐπ'
ὤμοις ἂν περιθέμενος στέφανον ἀνεγίνω-
37 σκον, † Καὶ εἰ μὴ ῥήξας αὐτὴν ἀπέδω-
κα, † (ρ) οὐθὲν λαβὼν παρὰ (σ) χρεω-
38 φειλέτου· † Εἰ ἐπ' ἐμοί ποτε ἡ γῆ ἐστέ-
ναξεν, † εἰ δὲ καὶ οἱ αὔλακες αὐτῆς ἔκλαυ-
39 σαν ὁμοθυμαδόν. † (τ) Εἰ δὲ καὶ τὴν ἰσχὺν
αὐτῆς ἔφαγον (υ) μόνος ἄνευ τιμῆς, † εἰ
δὲ καὶ ψυχὴν κυρίου τῆς γῆς (*) ἐκβαλὼν
40 ἐλύπησα· † Ἀντὶ πυροῦ (φ) ἄρα ἐξέλθοι
μοι κνίδη, ἀντὶ δὲ κριθῆς βάτος.

ΚΕΦ. λβ'.

Καὶ ἐπαύσατο Ἰὼβ ῥήμασιν.

Quòd si & buccellam meam 17
comedi solus, & pupillo non
communicavi. Quoniam à ju- 18
ventute mea enutriebam ut pa-
ter; & de ventre matris meæ
dux eis fui. Aut si despexi nu- 19
dum pereuntem, & non operui
eum. Et si non benedixerunt me 20
(p) impotentes, & de tonsura
agnorum meorum calefacti sunt
humeri eorum. Si (q) levavi 21
super pupillum manum, confi-
dens, quia mihi est adjutorium
multum; (r) Discedat humerus 22
meus (s) à junctura, & brachi-
um meum à cubito confringatur.
Timor enim Domini continuit 23
me: à (t) prehensione ejus non
sustinebo. Si posui aurum (u) in 24
congium meum: quòd si & in
lapide pretioso fidebam. Si & 25
lætatus sum, cùm esset mihi cen-
sus multus; si & in (x) innume-
rabilibus posui manum meam.
An non videmus Solem, qui lu- 26
cebat, deficientem, lunam autem
decrescentem? non (y) enim in
eis est. Et si (z) deceptum est 27
clàm cor meum: quòd & si (aa)
osculatus sum manum meam,
ponens ad os meum; Et hoc igi- 28
tur mihi iniquitas maxima com-
putetur; quòd mentitus sum co-
ram Domino altissimo. Quòd 29
si & gavisus sum super ruina
inimicorum meorum, & dixit
cor meum, (bb) Euge; Au- 30
diat auris mea maledictionem
meam, & diffamer à populo
meo malè affectus. Quòd si & 31
sæpè (cc) dixerunt ancillæ meæ;
Quis utique det nobis, ut carni-
bus ejus satiemur? cùm val-
dè bonus essem. Et foris non 32
manebat hospes: & ostium me-
um omni venienti patuit. Quòd 33
si & cùm (dd) non spontè pec-
câssem, abscondi peccatum me-
um. Non enim expavi turbam 34
multitudinis; ut non enarra-
rem coram eis. Aut si dimisi in-
firmum sinu vacuo exire januam
meam; Quis mihi tribuat audi- 35
torem? & manum Domini si non
timui, (ee) syngrapham verò,
quam habui contra quempiam, In 36
humeris utique circumponens
coronam legebam, Et si non 37
scindens eam reddidi, nihil ac-
cipiens à debitore. Si super me 38
unquam terra gemuit, aut si sul-
ci ejus ploraverunt simul. Aut 39
si & (ff) virtutem ejus comedi
solus sine pretio: aut si animam
domini terræ recipiens (gg) con-
tristavi: Pro tritico germinet mihi 40
(hh) urtica, & pro hordeo spina.

CAP. XXXII.

Et cessavit Job à verbis.

MS. A. (τ) μετέδωκα ὀρφανῷ· Καὶ ἐκ (υ) ἠμφίασα. Ἀδύνατοί δὲ εἰ μὴ εὐλόγουν με, (φ) ἀρνῶν (χ) Εἰ δὲ καὶ (∴) πάρεστιν· (ψ) ἀπὸ τῆς κλειδὸς ὁ ὦμός μου, (ω) ἀγκῶνός μου (α) συνεῖχέν με, καὶ ἀπὸ (β) γενομένου μου, (γ) καὶ εἰ ἐπ' (δ) καὶ ἐκλείποντα, (ε) εἰ δὲ καὶ (ζ) λογισθείη μεγάλη, ὅτι (η) ἔναντι, (θ) ἐπὶ πτώμασι ἐχθροῦ μου, καὶ εἰ εἶπον τῇ καρδίᾳ μου, Εὖγε, εὖγε· (ι) ὑπὸ λαοῦ κακούμενος. (κ) ἐμπλησθῆναι; (λ) ηὐλίζετο (μ) καὶ ἡ θύρα (*) ἠνέῳκτο· (ν) λαοῦ, τοῦ μὴ (ξ) ἐναντίον αὐτῶν· (ο) τὴν θύραν (″) ἠδεδοίκειν· (π) Εἰ ἐπ' ὤμοις περιθέμενος ὡς στέφανον (ρ) οὐδὲν (σ) χρεοφειλέτου μου· (τ) Εἰ τὴν ἰσχὺν (υ) ἄνευ τιμῆς μόνος, (*) ἐκβαλὼν (φ) ἐξέλθῃ

תרגום TARGUM.

17 18 וַאֲכָלִית טוּלְמִי בִּלְחוּדַי וְלָא אֲכַל יַתִּם מִנַּהּ : מְטוּל דְּמִטַּלְיוּתִי אַסְגִּיעַנִי הֵיךְ כְּאַבָּא וּמִכְּרֵיסָא דְאִמִּי דַבַּרְנִי בְנִיחוּתָא : אִין אֶחֱמֵי עַרְטִילַי מִדְּלֵית 19
20 21 כְּסוּתָא וְלֵית חוֹפָאָה לַחֲשִׁיכָא : אִין לָא בָרִיכוּנִי חַרְצוֹי וּמִגִּזְּתָא דְאִמְּרַי יִשְׁתְּחַן : אִין אֲרֵימִית עַל יַתְמָם יְדַי אֲרוּם אֶחֱמֵי בִתְרַעָא סִיוּעִי : כַּתְפִּי 22
23 מִן שִׁכְמָהּ תִּפּוֹל וְאֶדְרָעִי מִן קַנְיָה תִּתְבַּר : אֲרוּם דְּלֵיחַ לְוָתִי תְּבַר אֱלָהָא וּמִן מִסְפְּיֵיהּ לָא אֶסוֹבַר : אִין שַׁוִּיתִי עַל דְּהַב סִכּוּיִי וּלְפִטְלְוָן אֲמָרִית רוּחְצָנִי : 24
25 26 אִין אֶחְדֵי אֲרוּם סְגָא עֻתְרִי וַאֲרוּם בְּסוּגְעָא אַשְׁכַּחַת יְדִי : אִין אֶחֱמֵי אִסְתַּהַר אֲרוּם יַנְהַר וְסִהֲרָא זִיוְתָן מְהַלֵּךְ : וְשָׂרַג בְּטוּמְרָא לִבִּי וּנְשַׁקַת יְדִי 27
28 29 לְפוּמִי : לְחוּד הוּא סוּרְחָן פְּרִישׁ אֲרוּם כַּדְּבִית אֱלָהָא מִלְּעֵלָּא : אִין אֶחְדֵי בְּצַעֲרָא דְסָנְאַי וְיַבְּבִית אֲרוּם אַרְעֵיהּ בִּישׁ : וְלָא שַׁבְקִית לְמֶחְטֵי מוֹרִינִי לְמִשְׁאַל 30
31 בְּמוֹמָתָא נַפְשֵׁיהּ : אִין לָא אֲמָרוּ אֱנָשֵׁי מַשְׁכְּנִי מַן יִגְזוֹר מִבִּסְרֵיהּ לָא נִסְבַּע : בְּשׁוּקָא לָא יְבִית גִּיּוֹרָא דָּשַׁי לְאַכְסְנָיָא פְתָחִית : אִין חֲפִית כְּאָדָם קַדְמוֹי 32 33
34 מְרָדַי לְמִטְמַע בְּעִטְפִּי סוּרְחָנִי : אֲרוּם אֶתְגַּבַּר רִכְפַּת גִּיוּתָנַיָא וּבְסִיר גְּנִיסָתָא יְתַבְּרַנַּנִי וּשְׁתָקִית לָא אֶפּוֹק מַעֲלָנָא : מַן יִגְזוֹר עֲלַי דִּיקַבֵּל מִנִּי הָא 35
36 רִגּוּגִי דְשַׁדַּי עָנֵי יָתִי וּפִטְקָא דִכְתַב אֱנָשׁ תִּגְרִי : אִין לָא עַל כַּתְפִּי אֲסוֹבְרִנֵּיהּ אַרְכְּבִנֵּיהּ כְּלִילָן לִי : מִנְיַן פְּסִיעָתִי אֲחַוִּנֵּיהּ דִּכְמַת אַרְכוֹנָא אֲקָרְבִנֵּיהּ : 37
38 39 אִין עֲלַי אַרְעָא תִקְבּוֹל וְכַחֲדָא תַּלְמֶיהָא בָּכְיָן : אִין חֵילָהּ גְּמִירִית בְּלָא כְסַף וּנְפַשׁ דְּמָרְהָא אַפְחֵית : חֲלַף חִנְטַיָא יִפְּקוּן סִלְוֵי וַחֲלַף סְעָרָתָא הוּמֵי 40
שְׁלִימוּ פִּתְגָּמֵי אִיּוֹב :

Verſio SYRIACA.

17 18 * ܐܢ ܐܟܠܬ ܠܚܡܝ ܒܠܚܘܕܝ : ܘܠܐ ܐܟܠ ܡܢܗ ܝܬܡܐ . * ܡܛܠ ܕܡܢ ܛܠܝܘܬܝ ܪܒܝܢܝ ܒܟܐܒܐ. ܘܡܢ
19 ܟܪܣܗ ܕܐܡܝ ܒܟܘܪܗܢܐ. * ܐܢ ܚܙܝܬ ܕܐܒܕ ܡܢ ܥܪܛܠܝܘܬܐ. ܘܠܝܬ ܬܟܣܝܬܐ ܠܡܣܟܢܐ. * ܐܠܐ ܥܠ
20 21 ܥܘܒܝ ܐܬܪܒܝ. ܘܡܢ ܓܙܬܐ ܕܥܢܝ ܐܫܬܚܢ. * ܐܢ ܐܪܝܡܬ ܥܠ ܝܬܡܐ ܐܝܕܝ. ܐܠܐ ܟܕ ܚܙܝܬܗ ܒܬܪܥܐ.
22 ܥܕܪܬܗ. * ܟܬܦܝ ܡܢ ܥܩܪܗ ܬܦܠ. ܘܕܪܥܝ ܡܢ ܩܢܝܗ ܬܬܬܒܪ. * ܡܛܠ ܕܕܚܠܬܗ ܕܐܠܗܐ ܐܪܗܒܬܢܝ.
23 24 ܘܬܒܪܗ ܐܬܐ ܥܠܝ. ܘܡܢ ܙܘܥܬܐ ܠܐ ܐܫܟܚܬ ܠܡܩܡ. * ܐܢ ܥܒܕܬ ܕܗܒܐ ܬܘܟܠܢܝ. ܐܘ ܐܡܪܬ ܠܟܐܦܐ
25 ܝܩܝܪܬܐ. ܕܐܝܬܝܗ̇ ܬܘܟܠܢܝ. ܘܐܢ ܐܡܪܬ ܠܐܘܒܪܝܙܐ ܕܐܢܬ ܗܘ ܣܒܪܝ. * ܐܢ ܚܕܝܬ ܟܕ ܣܓܝܘ ܩܢܝܢܝ.
26 27 ܘܟܕ ܣܓܝ ܐܫܟܚܬ ܐܝܕܝ. * ܐܢ ܚܙܝܬ ܢܘܗܪܐ ܟܕ ܕܢܚ. ܘܣܗܪܐ ܟܕ ܣܠܩ. * ܐܢ ܐܙܠ ܘܐܬܛܥܝ
28 29 ܒܛܘܫܝܐ ܠܒܝ. ܘܢܫܩܬ ܐܝܕܝ ܠܦܘܡܝ. * ܐܦ ܗܘ ܚܙܐ ܟܠܗܘܢ ܢܟܠܝ. ܐܢ ܟܕܒܬ ܩܕܡ ܐܠܗܐ. * ܘܐܢ
30 ܚܕܝܬ ܒܬܒܪܗ ܕܣܢܐܝ. ܘܐܢ ܪܘܙܬ ܡܐ ܕܗܘܬ ܠܗ ܒܝܫܬܐ. * ܘܐܢ ܝܗܒܬ ܦܘܡܝ ܠܚܛܗܐ. ܘܢܦܫܝ ܚܕܐ
31 32 ܡܢ ܗܠܝܢ ܠܐ ܫܐܠܬ. * ܐܠܐ ܐܡܪܘ ܪܚܡܝ. ܡܢ ܢܬܠ ܠܢ ܡܢ ܒܣܪܗ. ܘܠܐ ܢܣܒܥ. * ܒܫܘܩܐ ܠܐ ܐܒܝܬܬ
33 34 ܐܟܣܢܝܐ. ܘܬܪܥܝ ܠܐܘܪܚܐ ܦܬܚܬ. * ܐܢ ܟܣܝܬ ܐܝܟ ܐܢܫܐ ܚܛܗܝ. ܘܐܢ ܛܫܝܬ ܒܛܘܫܝܐ ܥܘܠܝ. * ܐܢ
ܕܫܬ ܚܝܠܐ ܕܣܓܝܐܐ. ܐܠܐ ܣܓܝܐܐ ܗܘ ܕܥܡܡܐ ܬܒܪܘܢܝ. ܘܡܢ ܬܪܥܝ ܠܐ ܐܦܩܬ ܠܐܢܫ. ܘܡܠܬܐ ܕܣܦܘܬܐ
35 ܠܐ ܒܚܢܬ. ܚܡܬܗ ܕܐܠܗܐ ܡܟܟܬܢܝ. * ܡܢ ܢܬܠ ܡܢ ܕܢܫܡܥܢܝ. ܐܢ ܗܟܢܐ ܐܢܘܢ. ܐܠܗܐ ܢܥܢܝܢܝ.
36 ܘܢܟܬܘܒ ܒܣܦܪܐ ܕܝܢܘܗܝ ܕܓܒܪܐ. ܐܠܗܐ ܥܠ ܟܬܦܝ ܐܫܩܠܝܘܗܝ. ܘܐܥܒܕܝܘܗܝ ܠܝ ܟܠܝܠܐ. * ܘܡܢܝܢܐ
37 38 ܕܗܠܟܬܝ ܐܚܘܝܘܗܝ. ܘܐܝܟ ܫܠܝܛܐ ܐܩܪܒܝܘܗܝ. * ܘܥܠܝ ܐܪܥܐ ܬܒܟܐ. ܘܐܟܚܕܐ ܦܕܢܝܗ̇ ܢܒܟܘܢ.
39 40 * ܐܢ ܐܟܠܬ ܚܝܠܗ ܕܠܐ ܟܣܦ. ܘܢܦܫܐ ܕܡܪܝܪܐ. ܐܢ ܐܟܪܝܬ. * ܚܠܦ ܚܛܐ ܢܦܩ ܙܒܠܐ. ܘܚܠܦ
ܣܥܪܐ ܢܦܩ ܟܘܒܐ. ܘܫܠܡܘ ܡܠܘܗܝ ܕܐܝܘܒ.

Verſio ARABICA.

17 18 *وان كنت اكلت خبزي وحدي ولم ياكل منه اليتيم *من اجل انه من صباي رباني في الاوجاع *
19 20 ومن بطن امي في الامراض *ان كنت رايت هالكا من العري *وليس كسوة للبائس *بل على
21 حجري تربا *ومن جزاز غنمي استدفا *ان كنت رفعت على اليتيم يدي *الا اذا ما رايته في الباب
22 23 اعنته *كتفي من اصلها تسقط *وذراعي من قصبته ينكسر *من اجل ان خشية الله افزعتني*
24 وتباره اي انكساره جاء علي *ومن الرهبة لم استطيع ان اقوم *ان كنت صنعت الذهب ثقتي
25 او قلت على الحجر الجيد اتكالي *وان قلت على الابريز انك انت رجائي *ان كنت فرحت اذا ما
26 كثر قنياني *واذا ما وجدت كثيرا يدي *ان كنت رايت النور اذا ما ظهر والقمر اذا ما اشرق *
27 28 *فان انطلق واستزل في الخفا قلبي *وقبلت يدي فمي *فانه قد ابصر جميع اسراري *ان كنت
29 30 كذبت قدام الله *وان كنت فرحت بتبار مبغضي *وان كنت سررت اذا ما كانت له البلوي *وان
31 كنت اسلمت فمي لخطاء *ونفسي لواحدة من هذا ما طلبت *ولكن قال احبائي من الذي يعطينا
32 33 من لحمه فلا نشبع *فاني في السوق لم ابيت الغريب *وبابي للضعيف فتحت *ان كنت سترت مثل
34 الناس خطاياي *وان كنت طمرت في الخفا احوالي اي ذنوبي *وان كنت وطيت قوة الكثيرين بل
كثيرا من الشعوب كسروني *لم ارد من بابي احدا *وفي كلام الشفتين *ما تفكرت *مساخط الله
35 وضعتني *من الذي يجعل الذي يسمعني *ان كان كذلك الله يجيبني *ويكتب في السفر قضايا الرجل *
36 37 *ولكن على كتفي احمله *وجعلته لي اكليلا *وعدد خطواتي اعلمه *ومثل السليط اظهره *وعلي
38 39 40 الارض تنوح *وحراثها جميعا يبكون *ان اكلت قوتها بلا فضة *ونفس الحزين ان كنت اذيت *فبدل
الحنطة يخرج الزبل *وبدل الشعير يخرج شوكه *فتمت اقوال ايوب *

VERS. SYR. & ARAB.
Interp. Lat.

Siquc comedi panem meum ſolus, nec comedit ex 17
eo pupillus; Quoniam à 18
pueritia mea educavit me in doloribus, & de ventre matris meæ (e) in morbis: Si vidi pereuntem 19
(f) nuditate, & non eſſe veſtimentum inopi: Quin potiùs ſuper ſinu 20
meo enutritus eſt, & de vellere ovium mearum calefactus eſt. Si levavi 21
in pupillum manū meam, ſed cùm vidi eum in oſtio, adjuvi illum; Humerus 22
meus è radice ſua decidat, & brachium meum à lacerto frangatur. Quo- 23
niam timor Dei terruit me, & fractio, id eſt, contritio ejus venit ſuper me, & præ terrore non potui ſurgere. Si feci aurum ſe- 24
curitatem meā; aut dixi, In lapide pretioſo fiducia mea: & ſi dixi de obrizo, Tu es ſpes mea: Si læ- 25
tatus ſum cùm multiplicatæ ſunt poſſeſſiones meæ, & cùm invenit multum manus mea: Si vidi lu- 26
cem cùm apparuit, & lunam cùm orta eſt: Si abi- 27
it & (g) prolapſum eſt in abſcondito cor meum, & oſculata eſt manus mea os meum: Ipſe quidem intui- 28
tus eſt (h) omnia ſecreta mea. Si mentitus ſum corā Deo, Et ſi gaviſus ſum 29
de fractione oſoris mei: & ſi lætatus ſum quando accidit ei tribulatio: Et ſi tradidi os meū pec- 30
cato. At anima mea unum ex his non appetiit. Atta- 31
men dixerunt amici mei, Quis det nobis de carnibus ejus, neque ſaturemur? Ego enim in platea 32
non permiſi dormire peregrinum, & oſtium meum (i) infirmo aperui. Si ce- 33
lavi ut homines, peccata mea; & ſi condidi in occulto delicta mea, hoc eſt, ſcelera mea: Et ſi con- 34
culcavi virtutem multorum: imò multi ex populis fregerunt me. Non rejeci è janua mea quenquam: & ſermonem labiorum non conſideravi. Iræ Dei humiliârunt me. Quis conſtituat qui me 35
audiat? ſi hæc ita ſunt, Deus exaudiat me, & ſcribat in libro judicia hominis. (k) Sed ſuper 36
humeros meos portabo illum, & feci eum mihi coronam. Et numerum greſ- 37
ſuum meorum nuntiabo ei, & tanquam præſidem manifeſtabo eum; Et 38
ſuper me terra planget, & arantes eam ſimul lugebunt. Si comedi virtu- 39
tem ejus abſque argento, & animam mœſti ſi afflixi; Pro frumento ex- 40
eat fimus, & pro hordeo exeat ſentis. Completi ſunt ſermones Job.

INTERP. SYRIACA.

(e) in gemitibus: (f) abſque indumento, (g) perſuaſum fuit (h) verſutias meas. (i) viatori (k) O Deus, ſuper

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et ſi comedi buccellam *meam* ſolus, & non comedit pupillus ex eo. Quoniam ab infantia mea creſcere me fecit ſicut pater, & de ventre matris duxit me in re- 17 18
quiem. Si viderim nudum eo quòd non habuiſſet indumentum, & pauperem abſq; operimento. Si non benedixerunt mihi renes ejus, & de vellere agnorum meorum 19 20
calefactus eſt. Si levavi ſuper pupillum manum meam, cùm viderem in porta auxilium meum. Humerus meus à ſcapula ſua cadat, & brachium meum à canna ſua 21 22
confringatur. Quoniam terribilis fuit apud me terror Dei, & à timore ejus non potero ſubſiſtere. Si poſui in auro ſpem meam, & obrizo dixi fiduciam meam. Si læta- 23 24
tus ſum quando multiplicatæ ſunt divitiæ meæ, & *quoniam copiam invenit manus mea*. Si circuitum ſolis contemplatus ſum cùm illuceſceret, & lunam cum ſplendore 25 26
incedentem. Et deceptum eſt in abſcondito cor meum, & oſculatum eſt manum meam os meum. Eſt etiam iniquitas maxima, quoniam negarem Deum deſuper. Si ga- 27 28
viſus ſum in *calamitate* ejus qui me oderat; & *exultavi* cùm *obveniſſet ei* malum. Et non dimiſi ut peccaret palatum meum, ut expeteret mortem animæ ſuæ. Si non 29 30
dixerunt viri tabernaculi mei, quis juberet ut de carnibus ejus non ſaturaremur? In platea non manebat peregrinus, oſtia mea hoſpitibus aperiebam. Si operui ſicut Adam 31 32
coram illo peccatum meum, ut abſconderem in ſinu meo ſcelus meum. Quando roboratus ſum in tumultu *elatorum*, & contemptibilis familiarum terrebat me, & tacui, 33 34
& non egrediebar oſtium. Quis decernit mihi ut exaudirer? ecce deſiderium meum eſt, ut Omnipotens reſpondeat mihi, & libellum ſcribat homo contentionis meæ. 35 36
Niſi in humero meo portarem illum, & *imponerem* illum quaſi coronam mihi. Numerum greſſuum meorum nunciabo illi, & quaſi ad principem munus offeram illi. Si 37 38
adverſum me terra mea clamabat, & ſimul ſulci ejus flebant. Si virtutem ejus comedi abſq; argento, & animam domini ſui dolore affeci. Pro tritico egrediantur tribuli, 39 40
& pro hordeo ſpinæ. Completa ſunt verba Job.

איוב׃ לב

CAP. XXXII. לב

,Ijob reſpondendo à iſti viri tres ceſſaverunt Et
1 וישבתו שלשת האנשים האלה מענות את־איוב
filii Elihu naſus eſt iratus Et .ſuis oculis in juſtus ipſe quia
2 כי הוא צדיק בעיניו׃ ויחר אף אליהוא בן־
ſuper ejus naſus eſt iratus Ijob in , Ram familia de Buzitæ Barachel
ברכאל הבוזי ממשפחת רם באיוב חרה אפו על־
ejus ſocios tres in Et .Deum quam magis ſuam animam ipſum juſtificare
3 צדקו נפשו מאלהים׃ ובשלשת רעיו
, reſponſionem inveniſſent non quod eò , ejus naſus eſt iratus
חרה אפו על אשר לא־מצאו מענה
Ijob ipſum expectavit Elihu Et .Ijob condemnaverant &
4 וירשיעו את־איוב׃ ואליהו חכה את־איוב
vidit Et .diebus eo præ ipſi ſenes quia , verbis in
5 בדברים כי זקנים־המה ממנו לימים׃ וירא
eſt iratus & , virorum trium ore in reſponſio non quòd Elihu
אליהוא כי אין מענה בפי שלשת האנשים ויחר
: dixit & , Buzites Barachel filius Elihu reſpondit Et .ejus naſus
6 אפו׃ ויען אליהוא בן־ברכאל הבוזי ויאמר
, expavi Idcirco .decrepiti vos & , diebus ego Minimus
צעיר אני לימים ואתם ישישים על־כן זחלתי
dies , Dixi : vobis meam ſcientiam indicando ab timui &
7 ואירא מחות דעי אתכם׃ אמרתי ימים
Profectò .ſapientiam faciet ſcire annorum multitudo & , loquentur
8 ידברו ורב שנים ידיעו חכמה׃ אכן
.eos intelligere faciet omnipotentis inſpiratio & ,homine in ipſe ſpiritus
רוח־היא באנוש ונשמת שדי תבינם׃
.judicium intelligent ſenes nec : erunt ſapientes magni Non
9 לא־רבים יחכמו וזקנים יבינו משפט׃
.ego etiam meam ſcientiam indicabo : me audi , dixi Ideo
10 לכן אמרתי שמעה־לי אחוה דעי אף־אני׃
,veſtras intelligentias ad uſque auſcultavi : veſtra verba expectavi Ecce
11 הן הוחלתי לדבריכם אזין עד־תבונתיכם
non ecce & : conſiderabam vos ad Et .ſermones inveſtigaretis donec
12 עד־תחקרון מלין׃ ועדיכם אתבונן והנה אין
fortè Ne .vobis ex ejus ſermonibus reſpondens : arguens Ijob contra
13 לאיוב מוכיח עונה אמריו מכם׃ פן־
.vir non ,eum propulſavit Deus : ſapientiam invenimus , diceretis
תאמרו מצאנו חכמה אל ידפנו לא־איש׃
non ,veſtris ſermonibus in & : ſermones me adverſum ordinavit non Et
14 ולא־ערך אלי מלין ובאמריכם לא
removerunt : ultrà reſponderunt non , ſunt Conſternati .illi reſpondebo
15 אשיבנו׃ חתו לא־ענו עוד העתיקו
ſed : ſunt locuti non ſed ,expectavi Et .eloquia ſe à
16 מהם מלים׃ והוחלתי כי־לא ידברו כי
ego etiam Reſpondebo .ultrà reſponderunt non ,ſteterunt
17 עמדו לא־ענו עוד׃ אענה אף־אני
ſum plenus Quia .ego etiam meam ſcientiam indicabo : meam partem
18 חלקי אחוה דעי אף־אני׃ כי מלתי
meus venter Ecce .mei uteri ſpiritus me coartavit , ſermonibus
19 מלים הציקתני רוח בטני׃ הנה בטני
.diſrumpetur novi utres ſicut ; aperietur non , vinum tanquam
כיין לא־יפתח כאבות חדשים יבקע׃
.reſpondebo & , mea labia Aperiam .mihi erit ſpacium & , Loquar
20 אדברה וירוח־לי אפתח שפתי ואענה׃
non hominem ad & , viri facies accipiam nunc Non
21 אל־נא אשא פני־איש ואל־אדם לא
me tollat parum ut : cognominabo novi non Nam .cognominabo
22 אכנה׃ כי לא ידעתי אכנה כמעט ישאני
.meus factor
עשני׃

Verſio VULG. LAT.

CAP. XXXII.

1 OMiſerunt autem tres viri
iſti reſpondere Job, eò quòd
2 juſtus ſibi videretur, Et iratus,
indignatúſque eſt Eliu filius
Barachel Buzites, de cognatione
Ram : iratus eſt autem
adverſùm Job, eò quòd
juſtum ſe eſſe diceret coram
3 Deo. Porrò adverſùm amicos
ejus indignatus eſt, eò quòd
non inveniſſent reſponſionem
rationabilem, ſed tantummodò
4 condemnâſſent Job. Igitur
Eliu expectavit Job loquentem
: eò quòd ſeniores
5 eſſent qui loquebantur. Cùm
autem vidiſſet quòd tres reſpondere
non potuiſſent, iratus
6 eſt vehementer. Reſpondénſque
Eliu filius Barachel
Buzites, dixit; Junior ſum tempore,
vos autem antiquiores,
idcircò demiſſo capite, veritus
ſum vobis indicare meam ſententiam.
7 Sperabam enim quòd
ætas prolixior loqueretur, &
annorum multitudo doceret
8 ſapientiam. Sed, ut video, Spiritus
eſt in hominibus, & inſpiratio
Omnipotentis dat intelligentiam.
9 Non ſunt longævi
ſapientes, nec ſenes intelligunt
10 judicium. Ideò dicam; Audite
me, oſtendam vobis etiam
11 ego meam ſapientiã. Expectavi
enim ſermones veſtros, audivi
prudentiam veſtram, donec
diſceptaremini ſermonibus:
12 Et donec putabam vos
aliquid dicere, conſiderabam:
ſed, ut video, non eſt qui poſſit
arguere Job, & reſpondere
13 ex vobis ſermonibus ejus. Ne
fortè dicatis; Invenimus ſapientiam,
De⁹ projecit eum, non
14 homo. Nihil locutus eſt mihi,
& ego non ſecundùm ſermones
veſtros reſpondebo illi.
15 Extimuerunt, nec reſponderunt
ultrà, abſtulerúntque à ſe
16 eloquia. Quoniam igitur expectavi,
& non ſunt locuti: ſteterunt,
nec ultrà reſponderũt:
17 Reſpondebo & ego partem
meam, & oſtendam ſcientiam
18 meam. Plenus ſum enim ſermonibus,
& coarctat me ſpiri-
19 tus uteri mei. En venter meus
quaſi muſtum abſque ſpiraculo,
quod lagunculas novas diſ-
20 rumpit. Loquar, & reſpirabo
paululùm: aperiam labia
21 mea, & reſpondebo. Non accipiam
perſonã viri, & Deum
22 homini non æquabo. Neſcio
enim quàm diu ſubſiſtam, & ſi
poſt modicum tollat me Factor
meus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

1 Ἡσύχασαν δὲ καὶ οἱ (α) τρεῖς φίλοι (β) αὐτοῦ
ἔτι ἀντειπεῖν Ἰὼβ, (γ) ἦν γὰρ Ἰὼβ δίκαιος
2 ἐναντίον αὐτῶν. † Ὠργίσθη δὲ Ἐλιοὺς ὁ
τοῦ Βαραχιὴλ (δ) ὁ Βουζίτης † ἐκ τῆς
συγγενείας (ε) Ῥὰμ, τῆς Αὐσίτιδος χώρας·
† (ζ) ὠργίσθη δὲ τῷ Ἰὼβ σφόδρα,
διότι ἀπέφηνεν ἑαυτὸν δίκαιον
3 (η) ἐναντίον κυρίου. † Καὶ κατὰ (θ) τῶν
τριῶν δὲ φίλων ὠργίσθη σφόδρα, † διότι
οὐκ ἠδυνήθησαν ἀποκριθῆναι ἀντίθετα (ι)
4 Ἰὼβ, † καὶ ἔθεντο αὐτὸν εἶναι ἀσεβῆ. † Ἐλιοὺς
δὲ ὑπέμεινε δοῦναι ἀπόκρισιν (ʺ) Ἰὼβ, † ὅτι
5 (κ) πρεσβύτεροι αὐτοῦ εἰσιν ἡμέραις. † Καὶ
εἶδεν Ἐλιοὺς, ὅτι οὐκ ἔστιν ἀπόκρισις ἐν
στόματι τῶν τριῶν ἀνδρῶν, καὶ ἐθυμώθη ὀρ-
6 γῇ αὐτοῦ. † Ὑπολαβὼν δὲ Ἐλιοὺς ὁ τοῦ
Βαραχιὴλ (λ) ὁ Βουζίτης, εἶπεν, † Νεώτερος
μέν εἰμι τῷ χρόνῳ, † ὑμεῖς δέ
ἐστε πρεσβύτεροι, † (μ) διὸ ἡσύχασα φοβηθεὶς
(ν) τοῦ ὑμῖν ἀναγγεῖλαι τὴν ἐμαυτοῦ
7 ἐπιστήμην. † Εἶπα δὲ, Ὅτι οὐχ ὁ χρόνος
ἐστὶν ὁ λαλῶν, † ἐν πολλοῖς δὲ ἔτεσιν οἴ-
8 δασι σοφίαν· † (ξ) Ἀλλὰ πνεῦμά ἐστιν
ἐν βροτοῖς· † πνοὴ δὲ παντοκράτορός (ο)
9 ἐστιν ἡ διδάσκουσα. † Οὐχ οἱ πολυχρόνιοί
εἰσιν σοφοὶ, † (ʺ) οὐδ' οἱ γέροντες οἴδασι κρί-
10 μα. † (π) Διὸ εἶπα, Ἀκούσατέ μου, καὶ
ἀναγγελῶ ὑμῖν ἃ οἶδα. † (ρ) Ἐνωτίζε-
11 σθέ μου τὰ ῥήματα. Ἐρῶ γὰρ ὑμῶν ἀκουόντων
12 † (σ) ἄχρις οὗ ἐτάσητε λόγους, Καὶ μέχρι
ὑμῶν συνήσω, † καὶ ἰδοὺ οὐκ ἦν τῷ Ἰὼβ
(τ) ἐλέγχων † ἀνταποκρινόμενος (υ) ῥή-
13 ματα αὐτοῦ ἐξ ὑμῶν· † (φ) Ἵνα μὴ εἴπη-
τε, Εὕρομεν σοφίαν (χ) κυρίῳ προσθέ-
14 μενοι. † Ἀνθρώπῳ δὲ ἐπετρέψατε λαλῆ-
15 σαι τοιαῦτα ῥήματα. † Ἐπτοήθησαν, οὐκ
ἀπεκρίθησαν ἔτι, † ἐπαλαίωσαν ἐξ αὐ-
16 τῶν λόγους. † Ὑπέμεινα, οὐ γὰρ ἐλάλησα,
17 ὅτι ἔστησαν, οὐκ ἀπεκρίθησαν. † Ὑπο-
λαβὼν δὲ Ἐλιοὺς, λέγει, † Πάλιν λαλήσω,
18 Πλήρης γάρ εἰμι ῥημάτων, † ὀλέκει
(ψ) γάρ με τὸ πνεῦμα τῆς γαστρός.
19 † (ω) Ἡ δὲ γαστήρ μου ὥσπερ ἀσκὸς γλεύ-
κους (α) ζέων δεδεμένος, † ἢ ὥσπερ φυ-
20 σητὴρ (β) χαλκέως ἐρρηγώς. † Λαλήσω,
ἵνα ἀναπαύσωμαι ἀνοίξας (γ) τὰ χείλη,
21 † Ἄνθρωπον γὰρ οὐ μὴ αἰσχυνθῶ, † ἀλλὰ
22 μὴν οὐδὲ βροτὸν οὐ μὴ ἐντραπῶ. Οὐ γὰρ
ἐπίσταμαι θαυμάσαι (δ) πρόσωπα. † εἰ
δὲ μὴ, καὶ ἐμὲ σῆτες ἔδονται.

Ceſſaverunt autem & tres amici 1
ejus ultrà contradicere Job: erat
enim Job juſtus (a) coram eis.
Iratus eſt autem Elius filius Ba- 2
rachiel Buzites de cognatione
Ram Auſitidis regionis. Iratus
eſt autem in Job valdè, eò quòd
pronuntiaverat ſeipſum juſtum
coram Domino. Et verò adver- 3
ſùs tres amicos iratus eſt valdè,
eò quòd non potuerant reſponde-
re oppoſita ipſi Job: & poſue-
rant ipſum eſſe impium. Elius 4
autem ſuſtinuerat dare reſponſio-
nem Job, quoniam ſeniores eo
erant diebus. Et vidit Elius, 5
quòd non eſt reſponſio in ore tri-
um virorum, & indignatus eſt
irâ ſuâ. Suſcipiens autem Elius 6
filius Barachiel Buzites, dixit;
Junior quidem ſum tempore, vos
autem eſtis ſeniores: quare ſilui
timens in vobis annuntiare me-
am ipſius (b) ſcientiam. Dixi 7
autē: Quòd non eſt tempus, quod
loquitur, et in multis annis nove-
runt ſapientiam. (c) Sed ſpiritus 8
eſt in hominibus: ſpiratio autem
Omnipotentis eſt, quæ docet. Non 9
longævi ſunt ſapientes, neque ſe-
nes noverunt judicium. Quarè 10
dixi, Audite me, & annuntiabo
vobis quæ novi: auribus perci-
pite mea verba. Dicam enim vo- 11
bis (d) audientibus, quoaduſque
exquiratis ſermones. Et uſque 12
ad vos intelligam, Et ecce non
erat ipſi Job qui argueret; qui
viciſſim reſponderet verbis ejus,
ex vobis: ut ne dicatis, Inveni- 13
mus ſapientiam (e) Domino ad-
jecti. Homini autem permiſiſtis 14
loqui talia verba: Exterriti ſunt, 15
non reſponderunt ultrà: (f) ve-
teres fecerunt ex ſe ſermones.
Suſtinui, (g) non enim locutus 16
ſum: quia ſteterunt, non reſpon-
derunt. (h) Suſcipiens autem 17
Elius ait, Rurſus loquar: Ple- 18
nus enim ſum verborum: per-
dit (i) enim me ſpiritus ventris.
Venter autem meus ſicut (k) u- 19
ter muſto fervens ligatus, aut
veluti follis ærarii diruptus. Lo- 20
quar ut requieſcam aperiens la-
bia: Hominem enim non vere- 21
bor: ſed neque erga mortalem
confundar. Non enim novi ad- 22
mirari facies: alioquin & me
tineæ edent.

MS.A. (α) τρεῖς (β) αὐτοῦ· ἔτι δὲ ἀντεῖπεν (γ) ἦν γὰρ δίκαιος ἐναντίον αὐτῶν Ἰώβ. (δ) ὁ τοῦ Βουζὶ (ε) *Ῥαμά, (ζ) καὶ ὠργίσθη τῷ Ἰὼβ (η) ἔναντι κυρίου. (θ) τῶν δὲ τριῶν φίλων αὐτοῦ ὠργίσθη (ι) τῷ Ἰὼβ, (ʺ) τῷ Ἰὼβ, (κ) πρεσβύτεροί εἰσιν αὐτοῦ ἡμερῶν. Καὶ (λ) ὁ τοῦ Βουζὶ, λέγει, (μ) διότι (ν) τοῦ ἀναγγεῖλαι ὑμῖν τὴν ἐμὴν ἐπιστήμην. Εἶπον δὲ, Ὅτι χρόνος (ξ) Καὶ οὐχ οὕτως, ἀλλὰ πνεῦμά (ο) ἐστιν ἡ διδάσκουσά με. Οὐ γὰρ οἱ (ʺ) οὐδὲ οἱ (π) Διὸ εἶπον, (ρ) Ἐνωτίζεσθε τὰ ῥήματά μου. † (σ) Ἰδοὺ ἤκουσα τοὺς λόγους ὑμῶν, ἐνωτισάμην μέχρι συνέσεως ὑμῶν· ἄχρις οὗ ἐτάσηται τοὺς λόγους ὑμῶν, καὶ ἕως ὑμῶν συνήσω, (τ) ὁ ἐλέγχων (υ) ῥήμασιν (φ) Ἵνα δὲ μὴ (χ) προσθέμενοι κυρίῳ. (ψ) δέ με (ω) Καὶ ἡ γαστήρ (α) γέμων (β) χαλκέως δεδεμένος καὶ κατερρηγώς. (γ) τὰ χείλη μου, (δ) πρόσωπον.

תרגום TARGUM.

בל

1 2 ופסקו תלתא גבריא האלין מלאתבא ית איוב מטול דהוא זכי בעינוי׃ ותקיף רוגזא דאליהוא בר ברכאל בוזאה מן גניסת אברהם באיוב תקיף
3 4 רוגזיה מטול דזכאותיה נפשיה מן אלהא׃ ובתלת חברוי תקיף רוגזיה מטול דלא אשכחו תיובתא וחייבו ית איוב׃ ואליהו מתן ית איוב במליא
5 6 ארום סבין הנון מניה ליומיא׃ וחמא אליהו ארום לית תיובתא בפום תלת גובריא ותקיף רוגזיה׃ ואתיב אליהוא בר ברכאל בוזאה ואמר
7 זוטר אנא ליומיא ואתון קשישין מטול היכנא אסתפיתי ודחילית מלחואה מנדעאיתכון׃ אמרית יומיא ימללון וסגיעי שניא יודיעון חוכמתא׃
8 9 10 בקושטא רוח נבואתא היא בבר נש ומימר שדי תבינגון׃ לא רברבני חכימין וסביא יבינון דינא׃ בנין כן אמרית קבל מני אחוי מנדעי ברם אנא׃
11 12 13 הא אוריכית לפתגמיכון אצית עד ביונתכון עד דפשפשון מליא׃ וגביכון אתבין והא לית לאיוב מכסן מתיב מימרוי מנכון׃ דלמא תימרון
14 15 אשכחנא חוכמתא אלהא ישקפניה לא גבר׃ ולא סדר לותי מלין ובמימריכון לא אתיבניה׃ אתברו לא אתיבו תוב אסתלקו מנהון מליא׃
16 17 18 19 ואוריכית ארום לא ימללון שתקו ולא אתיבו תוב׃ אתיב לחוד אנא חולקי אחוי מנדעי אוף אנא׃ ארום מליתי מליא עקתני רוח דכריסי׃ הא
20 21 כריסי היך חמר חדת דלא יתפתח לגינין חדתין יתבזע׃ אמלל וירוח לגרמי אפתח ספותי ואתיב׃ לא כדון אסב אפי גבר ולבר נש לא אשתמודע׃
22 ארום לא ידעית לאשתמודעא כזעיר פון יסבר לי אפין דעבד יתי׃

Verſio SYRIACA.

1 ܐܝܘܒ. ܡܛܠ ܕܗܘܐ ܘܫܠܝܘ ܬܠܬܐ ܓܒܪܝܢ ܗܢܘܢ ܕܒܥܝܢ ܗܘܘ ܠܡܚܝܒܘܬܗ ܠܐܝܘܒ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܠܒ *
2 ܗܘܐ ܙܕܝܩ ܒܥܝܢܝܗܘܢ. * ܘܐܬܚܡܬ ܚܡܬܗ ܕܐܠܝܗܘ ܒܪ ܒܪܟܐܝܠ ܒܘܙܝܐ. ܡܢ ܫܪܒܬܐ ܕܪܡ. ܘܐܬܚܡܬ ܚܡܬܗ
3 ܥܠ ܐܝܘܒ. ܡܛܠ ܕܙܕܩ ܢܦܫܗ ܝܬܝܪ ܡܢ ܐܠܗܐ. * ܘܐܬܚܡܬ ܥܠ ܬܠܬܐ ܪܚܡܘܗܝ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܫܟܚܘ
4 ܕܢܬܠܘܢ ܠܗ ܦܬܓܡܐ ܠܐܝܘܒ. ܘܢܚܝܒܘܢܝܗܝ. * ܘܐܠܝܗܘ ܡܟܣ ܗܘܐ ܠܗ ܠܐܝܘܒ ܒܡܠܐ. ܡܛܠ ܕܩܫܝܫܝܢ
5 ܗܘܘ ܡܢܗ ܒܝܘܡܬܐ. * ܘܚܙܐ ܐܠܝܗܘ ܕܠܐ ܡܫܟܚܝܢ ܕܢܬܠܘܢ ܠܗ ܦܬܓܡܐ. ܘܗܢܘܢ ܬܠܬܐ ܓܒܪܝܢ.
6 ܘܐܬܚܡܬ ܚܡܬܗ. * ܘܥܢܐ ܐܠܝܗܘ ܒܪ ܒܪܟܐܝܠ ܒܘܙܝܐ. ܘܐܡܪ. ܡܛܠ ܕܙܥܘܪ ܐܢܐ ܡܢܟܘܢ ܒܝܘܡܬܐ.
7 ܘܐܢܬܘܢ ܩܫܝܫܝܢ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܕܚܠܬ ܘܙܥܬ ܠܡܚܘܝܘ ܠܟܘܢ ܝܕܥܬܝ. * ܐܡܪܬ ܓܝܪ ܐܢܐ. ܕܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ
8 ܡܡܠܠܝܢ. ܘܣܘܓܐܐ ܕܫܢܝܐ ܡܠܦܝܢ ܚܟܡܬܐ. * ܫܪܝܪܐܝܬ ܪܘܚܐ ܐܝܬ ܒܒܪܢܫܐ. ܘܢܫܡܬܗ ܗܝ ܕܐܠܗܐ ܡܣܟܠܐ
9 ܠܗܘܢ. * ܠܐ ܗܘܐ ܣܘܓܐ ܕܝܘܡܬܐ ܡܚܟܡܝܢ. ܘܐܦܠܐ ܗܘܐ ܣܒܐ ܡܣܬܟܠܝܢ ܕܝܢܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܡܪ ܐܢܐ.
10 ܫܡܥܘܢܝ. ܘܐܦ ܐܢܐ ܐܚܘܐ ܝܕܥܬܝ. * ܗܐ ܫܬܩܬ ܠܟܘܢ. ܘܠܡܠܝܟܘܢ ܘܨܝܬ. ܥܕܡܐ ܕܫܠܡܬܘܢ.
11 ܘܒܨܝܬܘܢ ܡܠܐ. * ܘܒܣܗܕܘܬܟܘܢ ܐܣܬܟܠܬ. ܘܗܐ ܠܝܬ ܠܐܝܘܒ ܕܡܟܣ ܠܗ. ܘܕܝܗܒ ܠܗ ܡܢܟܘܢ ܦܬܓܡܐ.
12 * ܕܠܡܐ ܬܐܡܪܘܢ. ܕܐܫܟܚܢ ܚܟܡܬܐ. ܐܠܗܐ ܗܘ ܡܚܝܗܝ. ܘܠܐ ܒܪܢܫܐ. * ܠܐ ܐܪܡܐ ܢܦܫܝ ܒܡܠܝܗܘܢ. ܘܒܡܠܝܟܘܢ
13 ܠܐ ܐܬܕܡܐ ܐܢܐ ܠܗ. * ܫܬܩܘ. ܘܠܐ ܦܢܘ ܬܘܒ. ܐܥܒܪܘ ܡܢܗܘܢ ܡܠܐ ܘܫܬܩܘ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܡܡܠܠܝܢ.
14
15 ܡܛܠ ܕܩܡܘ. ܘܠܐ ܦܢܘ ܬܘܒ. * ܐܦܢܐ ܐܦ ܐܢܐ ܡܠܬܝ. ܘܐܚܘܐ ܐܦ ܐܢܐ ܝܕܥܬܝ. * ܡܛܠ ܕܐܬܡܠܝܬ ܡܠܐ.
16
17 ܘܐܬܥܩܬ ܪܘܚܐ ܒܟܪܣܝ. * ܗܐ ܟܪܣܝ ܐܝܟ ܚܡܪܐ. ܘܠܐ ܡܬܦܬܚܐ. ܘܐܝܟ ܦܐܪܐ ܒܥܕܢܗ ܡܬܦܩܥܐ. * ܐܡܠܠ
18
19 ܘܐܬܢܦܫ. ܐܦܬܚ ܣܦܘܬܝ. ܘܐܦܢܐ ܦܬܓܡܐ. * ܠܐ ܐܣܒ ܒܐܦܝ ܐܢܫ. ܘܡܢ ܐܦܝ ܐܢܫ ܠܐ ܐܒܗܬ.
20
21 * ܡܛܠ ܕܠܐ ܝܕܥ ܐܢܐ ܒܗܬܬܐ. ܘܡܢ ܩܠܝܠ ܢܣܒ ܗܘܐ ܠܝ ܚܝܠܝ.
22

Verſio ARABICA.

* الفصل الثاني والثلثون * وصمت هولاي الثلاثة رجال الذين كانوا يريدون يفحصون ايوب * 1
لانه كان صديقا في اعينهم * واحما اليهو ابن بركيل البوزي من قبيل رمون. احما غضبه على ايوب 2
حين برر نفسه اكثر من الله * واحما على الثلاثة اصحابه حين لم يستطيعوا يعطونه جوابا اعني لايوب 3
ويدحضونه * واليهو كان يبكت ايوب بالقول * لانهم كانوا اشيخ منه في الايام * فابصر اليهو انهم لا يستطيعوا 4 5
هولاي الثلاثة رجال ان يكلموه * فاحما غضبا * فاجاب اليهو ابن بركيال البوزي * وقال * من اجل اني اصغر 6
منكم في الايام وانتم مشايخ * من اجل هذا خشيت وفزعت ان اخبركم معرفتي * فاني قلت ان الايام 7
تتكلم * وكثرة السنين تعلم الحكمة * حقا ان روحا في الانسان ونسمة الله تفهمهم * وليس الان كثرة 8 9
الايام تحكم * وايضا وليس المشايخ يفهمون القضاء * من اجل هذا فاني اقول اسمعوني * وانا ايضا اخبركم 10
معرفتي * فاني قد سكتت لكم ولاقوالكم * ونصتت حتى فرغتم وفحصتم بالقول * وفي شهاداتكم تفهمت * 11 12
والان ليس لايوب مبكتا * والذي يعطيه منكم قولا * حين تقولون انا قد وجدنا الحكمة * فان الله ضربه 13
وليس انسان * ولا اقول مقابل الكلام * وبقولكم فاني لا اتشبه * سكتوا وايضا فلم يجيبوه * وابعدوا منهم 14 15
القول وسكتوا * من اجل انهم لم يتكلموا وقاموا ايضا ولم يجيبوه * فاستجيب انا ايضا بكلمتي * واخبر 16 17
انا ايضا معرفتي * لاني امتليت كلاما واستفرغت الروح ببطني * فهذا بطني وجعه لا ينفتح * ومثل 18 19
الفاكهة في الشهر تنشق * اتكلم فاستريح * وافتح شفتي وارد القول * ولا اخذ باوجه الناس * ومن 20 21
اوجه الناس لا اخزا * من اجل اني لا اعرف الخزي * والي قليل ياخذ مني قوتي * 22

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

CAP. XXXII.

Et conticuêre illi tres 1
viri qui volebant (a) ten-
tare Job, eò quòd eſſet
juſtus in oculis eorum, Et 2
iratus eſt Elihu filius Ba-
rachiel Buzites de cogna-
tione Remmon, accenſus
eſt furor ejus adverſus
Job, cùm juſtificavit ſe-
ipſum plus Deo: Et ira- 3
tus eſt tribus amicis ejus
quod nequiverint reddere
illi (nempe Jobo) reſpon-
ſum, & convincere illum.
Et Elihu arguebat Job in 4
ſermone: nam iſti erant
provectiores ipſo, ætate.
Viditque Elihu non po- 5
tuiſſe hos tres viros (b)
alloqui illum, & ſuccen-
ſus eſt furore: Et re- 6
ſpondit Elihu filius Bara-
chiel Buzites, ac dixit;
Quia ſum minor vobis
diebus, vos autem ſenio-
res; iccircò timui ac veri-
tus ſum indicare vobis
ſcientiam meam: Dixi 7
enim, quòd dies loquun-
tur, & multitudo anno-
rum docet ſapientiam. Ve- 8
rè ſpiritus eſt in homine,
& aura Dei dat illis in-
telligentiam. Non igi- 9
tur multitudo dierum ſa-
pientem facit, neque etiam
ſenes intelligunt judici-
um. Propereà ego dico; 10
Audite me, & ego quoque
indicabo vobis ſcientiam
meam: (c) Tacui enim 11
vobis & ſermonibus ve-
ſtris & auſcultavi donec
abſolviſtis, & indagâſtis
ſermocinatione: Et teſti- 12
monia veſtra intellexi: Et
tandem non eſt qui Job
redarguat, & qui tribuat
illi ex vobis (d) ſermo-
nem: Dum dicitis; Jam 13
invenimus ſapientiã. Deus
quidem percuſſit illum, &
non homo. Et non con- 14
tradicam verbis, (e) &
ſermonem veſtrum nequa-
quam imitabor. Silue- 15
runt, nec ampliùs reſpon-
derunt ei, & removerunt
à ſe ſermonem, & tacue-
runt. Quia non loquun- 16
tur, imò etiam ſubſtite-
runt, & (f) non reſpon-
derunt illi; Ideò adfe- 17
ram ego quoque verbum
meum, & ſignificabo et-
iam ſcientiam meã, Quia 18
impletus ſum verbis, &
evomuit ſpiritum venter
meus. En venter meus do- 19
lore vexa non aperitur,*
& quaſi fructus in men-
ſe, diſciſſus eſt. Loquar, et 20
reſpirabo, & aperiam la-
bia mea, & reddam ſer-
monem: Nec accipiam fa- 21
cies hominum, & à facie-
bus hominum non erube-
ſcam, Quia non novi eru- 22
beſcentiam, & ad modi-
cum ſumet à me virtutem
meam.

INTERP. SYRIACA.

CAP. xxxii. (*a*) reum peragere (*b*) reſponſum dare illi, (*c*) Ecce tacui vobis (*d*) reſponſum: (*e*) neq; ſermonibus veſtris in illam me conjiciam. (*f*) ampliùs non

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XXXII.

Et omiſerunt tres viri iſti reſpondere Job, eò quòd eſſet juſtus in oculis ſuis. Et iratus eſt furor Elihu filii Barachel Buzites, de cognatione Abraham, contra Job: 1 2
iratus eſt enim furor ejus eò quòd juſtificâſſet animam ſuam magis quàm Deum. Et adverſus tres amicos ejus iratus eſt furor ejus, eò ꝙ non inveniſſent reſponſionem, 3
& condemnâſſent Job. Elihu autẽ expectavit Job in ſermonibus, quoniam ipſi ſeniores diebus erant illo. Et vidit Elihu ꝙ non eſſet reſponſio in ore triũ virorũ, & iratus 4 5
eſt furor ejus. Et reſpondit Elihu filius Barachel Buzites, & ait: Junior ſum diebus, & vos eſtis longævi, propereà dubitabam & timebã annunciare ſcientiã meam *vobis*. 6
Dixi: Diebus loquentur, & multitudine annorum oſtendent ſcientiam, Veruntamen ſpiritus prophetiæ eſt in filio hominis, & verbum omnipotentis intelligere faci- 7 8
et eos. Non magnifici ſunt ſapientes, nec ſenes intelligunt judicium. Propereà dixi: Audi me, annunciabo ſcientiam meam etiam ego. Ecce expectavi ſermones 9 10
veſtros, audivi uſque ad intelligentiam veſtram donec ſcrutaremini ſermones. Et apud vos intelligebam, & ecce non eſt qui arguat Job, nec reſpondeat verbis ejus ex 11 12
vobis. Ne fortè dicatis: Invenimus ſapientiam, Deus percuſſit eum, & non homo. Et non direxit ad me ſermones, & juxta verba veſtra non reſpondebo illi. Con- 13 14
triti ſunt & non reſponderunt ultrà, & abſtulerunt à ſe ſermones. Et expectavi quoniam non loquebantur; tacuerunt, & non reſponderunt ultrà. Quoniam plenus 15 16
ſum ſermonibus, coarctavit me ſpiritus ventris mei. Ecce venter meus ſicut vinum novum quod non habet ſpiraculum; [*& ſicut*] lagenæ novæ, ſcinditur. Loquar & re- 17 18
frigerabor in meipſo, aperiam labia mea & reſpondebo. Non modò accipiam faciem viri, & filium hominis non cognoſcam. Quoniam neſcio cognoſcere, quaſi mo- 19 20
dicum tollet *mihi faciem* qui fecit me. 21 22

איוב : לג

CAP. XXXIII. לג

.auſculta mea verba omnia & : mea eloquia Ijob quæſo audi verò Et
ואולם שמע־נא איוב מלי וכל־דברי האזינה: 1
.meo palato in mea lingua *eſt locuta* : meũ os *aperui* nunc Ecce
הנה־נא פתחתי פי דברה לשוני בחכי: 2
puram mea labia ſcientiam & , mea eloquia mei cordis Rectitudo
ישר־לבי אמרי ודעת שפתי ברור 3
omnipotentis ſpiraculum & , me fecit Dei Spiritus .loquuntur
מללו: רוח־אל עשתני ונשמת שדי 4
meas facies ad , Diſpone : mihi reſponde , potueris Si .me *vivificabit*
תחיני: אם־תוכל השיבני ערכה לפני 5
luto ex ſ Deo tuum *os* ſecundùm ego Ecce .conſiſte
התיצבה: הן־אני כפיך לאל מחמר 6
, te terrebit non mea formido Ecce .ego etiam ſum *exciſus*
קרצתי גם־אני: הנה אימתי לא תבעתך 7
dixiſti Veruntamen .erit gravis non te ſuper mea *manus* &
ואכפי עליך לא־יכבד: אך אמרת 8
ego Mundus *.audiam* ſermonum vocem & , meis auribus in
באזני וקול מלין אשמע: זך אני 9
.mihi iniquitas non & : *ego tectus* , prævaricatione abſque
בלי־פשע חף אנכי ולא עון לי:
.ſibi inimicum in me reputavit : invenit me adverſum occaſiones Ecce
הן תנואות עלי ימצא יחשבני לאויב לו: 10
.meas ſemitas omnes *cuſtodiet* : meos pedes *cippo in Ponet*
ישם בסד רגלי ישמר כל־ארחתי: 11
magnificabitur quia : tibi reſpondebo , fuiſti juſtus non hoc Ecce
הן־זאת לא־צדקת אענך כי־ירבה 12
? contendiſti eum adverſum Cur *.homine præ* Deus
אלוה מאנוש: מדוע אליו ריבות 13
loquetur uno in Quia *? reſpondebit* non ſua verba omnia quòd
כי כל־דבריו לא יענה: כי־באחת ידבר־ 14
viſionis ſomnium Per .eum *intuebitur* non duobus *in* & , Deus
אל ובשתים לא ישורנה: בחלום חזיון 15
ſuper dormitationes per ,homines ſuper *ſoporem cadendo in* , *noctis*
לילה בנפל תרדמה על־אנשים בתנומות עלי
ſuo vinculo in & : hominum aurem revelabit Tunc .cubile
משכב: אז יגלה אזן אנשים ובמסרם 16
.tegat viro à ſuperbiam & : opere hominẽ *removendum Ad* *.obſignabit*
יחתם: להסיר אדם מעשה וגוה מגבר יכסה: 17
.miſſile per *tranſeundo* à ejus vitam & : *fovea* à ejus animam Prohibeat
יחשך נפשו מני־שחת וחיתו מעבר בשלח: 18
ejus oſſium *multitudo* & ,*ſuum* cubile ſuper dolore in *Corripiturque*
והוכח במכאוב על־משכבו ורוב עצמיו 19
cibum ejus anima & : panem ejus vita *eum abominari facit* Et .fortis
אתן: וזהמתו חיתו לחם ונפשו מאכל 20
confringentur & *: me vidente* à ej⁹ caro Conſumetur *.aviditatis*
תאוה: יכל בשרו מראי ושפו 21
: ejus anima *foveæ* appropinquavit Et .videbuntur non , ejus oſſa
עצמתיו לא ראו: ותקרב לשחת נפשו 22
angelus *cum ſuper* fuerit Si .mortificantibus ejus vita &
וחיתו לממתים: אם־יש עליו מלאך 23
.ej⁹ rectitudinem homini *indicandum ad* : mille ex unus eloquens
מליץ אחד מני־אלף להגיד לאדם ישרו:
, *foveam deſcendendo à* ,eum Redime : dixerit & ,ejus fuerit miſertus Et
ויחננו ויאמר פדעהו מרדת שחת 24
revertetur *: pueritia præ* ejus caro *erit Succulenta* .propitiationem inveni
מצאתי כפר: רטפש בשרו מנער ישוב 25
.ſuarum adoleſcentiarum dies ad
לימי עלומיו:

Verſio VULG. LAT.

CAP. XXXIII.

1 Audi igitur Job eloquia
mea, & omnes ſermones meos
2 auſculta. Ecce aperui os me-
um, loquatur lingua mea in
3 faucibus meis. Simplici corde
meo ſermones mei, & ſenten-
tiam puram labia mea loquen-
4 tur. Spiritus Dei fecit me, &
ſpiraculum Omnipotentis vi-
5 vificavit me. Si potes, reſpon-
de mihi, & adverſùs faciem
6 meam conſiſte. Ecce, & me
ſicut & te fecit Deus, & de
eodem luto ego quoque for-
7 matus ſum. Veruntamen mi-
raculum meum non te terreat,
& eloquentia mea non ſit tibi
8 gravis. Dixiſti ergò in auribus
meis, & vocẽ verborũ tuorũ
9 audivi; Mundus ſum ego, &
abſque delicto: immaculatus,
& non eſt iniquitas in me.
10 Quia querelas in me reperit,
ideò arbitratus eſt me inimi-
11 cum ſibi. Poſuit in nervo pe-
des meos, cuſtodivit omnes
12 ſemitas meas. Hoc eſt ergò,
in quo non es juſtificatus: re-
ſpondebo tibi, quia major ſit
13 Deus homine. Adverſùs eum
contendis, quòd non ad omnia
14 verba reſponderit tibi? Semel
loquitur Deus, & ſecundò
15 idipſum non repetit. Per
ſomnium in viſione nocturna,
quando irruit ſopor ſuper ho-
mines, et dormiunt in lectulo:
16 Tunc aperit aures virorum, &
erudiens eos inſtruit diſcipli-
17 nâ. Ut avertat hominem ab
his quæ facit, & liberet eum
18 de ſuperbia: Eruens animam
ejus à corruptione: & vitam
illius, ut non tranſeat in gla-
19 dium. Increpat quoque per
dolorem in lectulo, & omnia
oſſa ejus marceſcere facit.
20 Abominabilis ei fit in vita ſua
panis, & animæ illius cibus
21 antè deſiderabilis. Tabeſcet
caro ejus, & oſſa, quæ tecta
22 fuerant, nudabuntur. Appro-
pinquavit corruptioni anima
23 ejus, & vita illi⁹ mortiferis. Si
fuerit pro eo Angel⁹ loquens,
unus de millibus, ut annuntiet
24 hominis æquitatem: Miſerebi-
tur ejus, & dicet; Libera
eum, ut non deſcendat in cor-
ruptionem: inveni in quo ei
25 propitier. Conſumpta eſt ca-
ro ejus à ſuppliciis, reverta-
tur ad dies adoleſcentiæ ſuæ.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. λγʹ.

1 † Οὐ μὴν δὲ ἀλλὰ ἄκουσον Ἰὼβ τὰ
ῥήματά μου, † (α) καὶ λαλιάν ἐνωτίζου
2 μου. † Ἰδοὺ γὰρ ἤνοιξα τὸ στόμα μου,
3 καὶ ἐλάλησεν ἡ γλῶσσά μου. † Καθαρά
μου ἡ καρδία (β) ῥήμασιν, † σύνεσις δὲ
4 χειλέων μου καθαρὰ νοήσει. † Πνεῦμα
θεῖον τὸ ποιῆσάν με, † πνοὴ δὲ παντοκρά-
5 τορος ἡ διδάσκουσά με. † (γ) Ἐὰν δύ-
νῃ, δός μοι ἀπόκρισιν, πρὸς ταῦτα †
ὑπόμεινον, (δ) στῆθι κατ' ἐμὲ, καὶ ἐγὼ κατὰ
6 σέ. † Ἐκ πηλοῦ διήρτισαι σὺ ὡς καὶ ἐ-
7 γὼ, † ἐκ τοῦ αὐτοῦ διηρτίσμεθα (ε)· † Οὐχ
ὁ φόβος μου (ζ) σε στροβήσει, † οὐδὲ ἡ
8 χείρ μου βαρεῖα ἔσται ἐπὶ σοί. † Πλὴν
εἶπας ἐν ὠσί μου· (η) φωνὴν ῥημάτων
9 σου ἀκήκοα· † διότι λέγεις, Καθαρός
εἰμι (θ) οὐχ ἁμαρτών, † ἄμεμπτός εἰμι, οὐ γὰρ
10 ἠνόμησα· † Μέμψιν δὲ κατ' ἐμοῦ εὗρεν·
11 (ι) ἥγηται δέ με ὥσπερ ὑπεναντίον. † (κ)
Ἔθετο δὲ ἐν ξύλῳ τὸν πόδα μου, † ἐ-
φύλαξε δέ μου πάσας τὰς ὁδούς. † Πῶς
12 γὰρ λέγεις, Δίκαιός εἰμι, καὶ οὐκ ἐπακή-
κοέ μου; † αἰώνιος γάρ ἐστιν ὁ ἐπάνω
13 βροτῶν. † (λ) Λέγεις δὲ, Διατί τῆς δίκης
14 μου οὐκ ἐπακήκοέ μου πᾶν ῥῆμα; † Ἐν
γὰρ τῷ ἅπαξ λαλῆσαι ὁ κύριος, † ἐν
15 δὲ τῷ δευτέρῳ, Ἐνύπνιον † (μ) ἢ ἐν
μελέτῃ νυκτερινῇ, † ὡς ὅταν ἐπιπίπτῃ (ν)
δεινὸς φόβος ἐπ' ἀνθρώποις, ἐπὶ νυσταγ-
16 μάτων ἐπὶ κοίτης· † Τότε ἀνακαλύπτει
νοῦν ἀνθρώπων, † ἐν εἴδεσι φόβου τοιού-
17 τοις (ξ) αὐτοὺς ἐξεφόβησεν. † Ἀποστρέ-
ψαι ἄνθρωπον (ο) ἀπὸ ἀδικίας, † τὸ δὲ
σῶμα αὐτοῦ (π) ἀπὸ πτώματος ἐρρύσατο. †
18 (ρ) Ἐφείσατο δὲ τῆς ψυχῆς αὐτοῦ ἀπὸ θα-
νάτου, † (σ) καὶ μὴ πεσεῖν αὐτὸν ἐν πο-
19 λέμῳ. † Πάλιν δὲ ἤλεγξεν (τ) αὐτὸν ἐπὶ
μαλακίᾳ ἐπὶ κοίτης, † καὶ πλῆθος (υ) ὀ-
20 στῶν αὐτοῦ ἐνάρκησε. † Πᾶν δὲ βρωτὸν
σίτου οὐ μὴ δύνηται προσδέξασθαι, † καὶ
21 ἡ ψυχὴ αὐτοῦ βρῶσιν ἐπιθυμήσει. † Ἕως
ἂν σαπῶσιν αὐτοῦ αἱ σάρκες, † καὶ ἀπο-
22 δείξῃ τὰ ὀστᾶ αὐτοῦ κενά. † (φ) Ἤγγισε
δὲ εἰς θάνατον ἡ ψυχὴ αὐτοῦ, † ἡ δὲ ζωὴ
23 αὐτοῦ (χ) ἐν ᾅδῃ. † Ἐὰν ὦσι χίλιοι ἄγ-
γελοι θανατηφόροι, † εἷς (ψ) αὐτῶν οὐ μὴ
τρώσῃ αὐτόν. † ἐὰν νοήσῃ τῇ καρδίᾳ
ἐπιστραφῆναι (ω) πρὸς κύριον, † ἀναγ-
γείλῃ δὲ ἀνθρώπῳ τὴν ἑαυτοῦ μέμψιν,
† (α) τὴν δὲ ἄνοιαν αὐτοῦ δείξῃ, † (β)
24 Ἀνθέξεται τοῦ μὴ πεσεῖν εἰς θάνατον·
† ἀνανεώσει δὲ αὐτοῦ τὸ σῶμα ὥσπερ ἀλοι-
φὴν ἐπὶ τοίχου, † (γ) τὰ δὲ ὀστᾶ αὐτοῦ
25 ἐμπλήσει μυελοῦ. † Ἀπαλυνεῖ δὲ αὐτοῦ τὰς
σάρκας ὥσπερ νηπίου, † (δ) ἀποκαταστή-
σει δὲ αὐτὸν ἀνδρωθέντα ἐν ἀνθρώποις.

CAP. XXXIII.

Veruntamen audi Job ver- 1
ba mea, & auribus percipe lo-
quutionem meam. Ecce enim 2
aperui os meum, & locuta eſt
lingua mea. Mundum eſt cor 3
meum verbis; & intellectus la-
biorum meorum munda cogi-
tabit. Spiritus divinus eſt, qui 4
me fecit: ſpiratio autem Omni-
potentis eſt, quæ docet me. Si 5
poteris, da mihi reſponſionem:
ad hæc ſuſtine: ſta juxta me,
& ego juxta te. De luto for- 6
matus es tu, ſicut & ego: ex
eodẽ formati ſumus. Non ti- 7
mor meus te (a) turbabit: ne-
que manus mea gravis erit
ſuper te. Veruntamen dixiſti 8
in auribus meis: vocem ver-
borum tuorum audivi, quan-
doquidem dicis; Mundus ſum, 9
non peccans: ſine crimine ſum,
non enim iniquè egi. Accu- 10
ſationem autem contra me in-
venit: putavit autem me, ſicut
adverſarium. Poſuit autem 11
in ligno pedem meum, & ob-
ſervavit omnes vias meas.
Quomodò enim dicis; Juſtus 12
ſum, & non exaudivit me?
æternus enim eſt, qui eſt ſu-
per homines. Dicis autem; (b) 13
Cur judicium meum non exau-
divit, meum omne verbum?
Semel enim (c) loquatur Domi- 14
nus: ſecundò autem Somni- 15
um, aut in meditatione noctur-
na: ſicut (d) quando incidit
ſævus timor in homines in dor-
mitationibus ſuper cubili. Tunc 16
revelat mentem hominum: in
ſpeciebus timoris talibus eos
exterruit. Avertat hominem 17
ab injuſtitia: & corpus ejus à
ruina liberavit: Et pepercit a- 18
nimæ ejus à morte, & non ca-
dat ille in bello. Iterum au- 19
tem arguit eum in languore
ſuper cubile: & multitudo oſ-
ſium ejus obtorpuit. Et omnem 20
eſcam frumenti non poterit ſu-
mere; & anima ejus cibum
deſiderabit: Quoaduſque pu- 21
truerint ejus carnes, & oſten-
derit oſſa ſua inania. Ap- 22
propinquavit autem ad mortem
anima ejus, & vita ejus in in-
ferno. Si fuerint mille an- 23
geli mortiferi, unus eorum non
vulnerabit eum: ſi cogitaverit
corde reverti ad Dominum, an-
nuntiaverit autem homini ſu-
um ipſius crimen, & (e) ſuã
ſtultitiã oſtenderit: Retinebit nè 24
cadat in mortẽ. *Et renovabit cor-*
pus ejus, ſicut tectorium in
pariete, & oſſa ejus implebit
medullâ: Et molliet carnes e- 25
jus ſicut parvuli, & reſtituet
eum (f) virum factum inter
homines.

MS. A. καὶ τὴν λαλιάν μου ἐνωτίζου. Ἰδοὺ (β) ἐν ῥήμασιν, (γ) Ἐὰν δυνηθῇς, (δ) καὶ στῆθι σὺ κατ' ἐμὲ, (ε) πηλοῦ. Οὐχὶ ὁ (ζ) φοβήσει σε, (η) φωνὴν δὲ ῥημάτων (θ) οὐχ ἥμαρτον τοῖς ἔργοις, ἄμεμπτος δέ εἰμι (ι) καὶ ἥγηταί με, (κ) Ἔθετο δὲ τὸν πόδα μου ἐν κυκλώματι, καὶ ἐφύλαξέν μου (λ) Λέγεις γὰρ, Διατί τῆς δικαιοσύνης μου οὐκ ἐπακήκοεν ἐν παντὶ ῥήματι; Ἐν (μ) ὡς φάσμα ἐν μελέτῃ νυκτερινῇ, (ν) φόβος δεινὸς ἐπ' ἀνθρώποις, (ξ) ἐξεφόβησεν αὐτούς. (ο) ἐξ ἀδικίας αὐτοῦ, (π) ἀπὸ ἀδικίας πτώματος (ρ) Καὶ ἐφείσατο τῆς (σ) τοῦ μὴ πεσεῖν (τ) αὐτὸν μαλακίᾳ (υ) ὀστέων (φ) Ἐγγίζῃ δὲ ἡ ψυχὴ αὐτοῦ εἰς θάνατον, ἡ δὲ (χ) ἐν τῷ ᾅδῃ. (ψ) ἐξ αὐτῶν (ω) ἐπὶ τὸν κύριον, (α) καὶ τὴν ἄνοιαν (β) Ἀνθέξεται αὐτοῦ, τοῦ μὴ πεσεῖν αὐτὸν εἰς θάνατον. (γ) καὶ τὰ ὀστᾶ (δ) καὶ ἀποκαταστήσει αὐτὸν

תרגום TARGUM.

לג

וברם שמע כדון איוב מלי וכל פתגמי אצית : הא כדון פתחית פומי מלילת לישני במוריני : תריצות לבבי מימרי ומנדע ספותי בריר מלילו : רוח 1 2 3 4
דאלהא עבדת יתי ומימר שדי תקימנני : אין תוכל תתיבנני סדר קדמי אתעתד : הא אנא דכמתך לאלהא מן טינא אתלשית לחוד אנא : הא 5 6 7
אימתי לא תבעתנך וטוני עלך לא ייקר : ברם אמרת באודני וקל מליא אשמע : זכי אנא מדלית מרד שוין אנא ולא סורחנא לי : הא תרעומתא 8 9 10
עלי ישכח יחשבנני לבעל דבבא ליה : ישוי בשיע רגלי ינטר כל שבילי : הא דא לא זכיתא אתיבנך ארום יתרברב אלהא מן בר נש : מא דין לותיה 11 12 13
נציתא ארום כל פתגמוי לא יתיב : ארום בחדא שותא ימלל אלהא ובתניתא לא אצטריך למסכייה : בחלמא מן חזונא דליליא כד נפלת שינתא עמיקתא 14 15
על בני נשא בניומתא על בי מדמכא : היכדין יגלי אודנא בני נשא ובמרדותהון יחתום : לאעדאה בר נש מן עובדא בישא וגיותנותא מגברא יכסי : 16 17
ימנע נפשיה מן שוחתא וחיוי מן למעבר בשלחא : ומתמכסן בכיבא על בי מדמכיה וסוגעי איברוי תקיפין : ומתונבא דנקיט ליה מרחיקא נפשיה 18 19 20
מזונא ונפשיה מיכלא רגינא : ישתצי בסריה מן ריוו ושפין גרמוי לא אתחמו : וקריבת לשוחתא נפשיה ונשמתיה למיתותא : אין אית עלוי זכותא מזדמן 21 22 23
מלאכא חדא פרקליטא מן ביני אלף קטיגוריא לחואה לבני נש תריצותיה : וחס עלוי ואמר פרוק יתיה מלמחת בשוחתא אשכחית פורקנא : אתחליש 24 25
בסריה יתיר מן רבותא יתוב ליומי טליותיה :

Verſio SYRIACA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܓ * *ܒܪܡ ܐܢܬ ܫܡܥ ܐܝܘܒ ܡܠܝ. ܘܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܝ ܐܨܬ. 1
2 *ܗܐ ܦܬܚܬ ܦܘܡܝ. ܘܒܦܘܡܝ ܡܡܠܠ ܠܫܢܝ.* ܬܪܝܨܘ ܡܠܠܗ ܕܦܘܡܝ.· ܘܡܩܒܠ ܡܡܠܠܐ ܕܣܦܘܬܝ.
3 4 *ܘܪܘܚܗ ܕܐܠܗܐ ܐܥܝܪܬܢܝ. ܘܢܫܡܬܗ ܕܐܠܗܐ ܐܚܝܢܝ. *ܐܢ ܡܫܟܚ ܐܢܬ ܐܬܦܢܝܢܝ ܦܬܓܡܐ.
5 6 ܐܬܛܝܒ. ܘܩܘܡ ܩܕܡܝ. *ܘܗܐ ܐܢܐ ܐܝܟܘܬܟ ܐܢܐ ܠܘܬ ܐܠܗܐ. ܘܐܦ ܐܢܐ ܡܢ ܛܝܢܐ ܐܬܓܒܠܬ. *ܘܗܫܐ
7 8 ܕܚܠܬܝ ܠܐ ܬܒܥܬܟ. ܘܐܘܩܪܝ ܥܠܝܟ ܠܐ ܢܐܩܪ. *ܒܪܡ ܐܡܪܬ ܒܐܕܢܝ. ܘܩܠܐ ܡܠܝܟ ܫܡܥܬ. ܕܐܡܪܬ. *ܕܙܟܝ
9 10 ܐܢܐ ܕܠܐ ܚܛܗܝܢ. ܘܙܕܝܩ ܐܢܐ. ܘܠܝܬ ܒܝ ܣܟܠܘܬܐ. ܘܕܟܐ ܐܢܐ ܡܢ ܥܘܠܐ. *ܗܘ ܥܠܠܬܐ ܒܥܐ ܥܠܝ.·
11 ܘܚܫܒܢܝ ܠܗ ܐܝܟ ܒܥܠܕܒܒܐ. *ܘܣܡ ܒܩܝܪܐ ܪܓܠܝ.· ܘܢܛܪ ܟܠܗܘܢ ܐܘܪܚܬܝ. *ܒܗܕܐ ܠܐ ܡܙܕܩܬ
12 ܐܦܢܐ ܦܬܓܡܐ. ܐܠܐ ܠܘ ܦܬܓܡܐ.· ܕܪܒ ܗܘ ܐܠܗܐ ܡܢ ܐܢܫܐ. *ܡܛܠ ܡܢܐ ܕܝܢ ܥܡܗ.· ܘܒܟܠܗܘܢ
13 14 ܦܬܓܡܘܗܝ ܠܐ ܥܢܐ. *ܡܛܠ ܕܚܕܐ ܗܘ ܡܡܠܠ ܐܠܗܐ. ܘܕܬܪܬܝܢ ܠܐ ܡܬܢܐ. *ܘܒܣܦܘܬܐ ܠܐ
15 16 ܡܠܦ. ܒܚܠܡܐ ܘܒܚܙܘܐ ܕܠܠܝܐ. ܟܕ ܢܦܠ ܫܢܬܐ ܥܠ ܐܢܫܐ ܟܕ ܕܡܟ ܥܠ ܡܫܟܒܐ.· *ܗܝܕܝܢ ܓܠܐ
17 ܐܕܢܗ ܕܐܢܫܐ. ܘܡܛܠ ܡܪܘܕܘܬܗܘܢ ܢܟܐ ܐܢܘܢ.· *ܠܡܥܒܪܘ ܐܢܫܐ ܡܢ ܥܒܕܘܗܝ. ܘܡܟܣܐ ܦܓܪܗ ܕܓܒܪܐ ܡܚܒܠ.
18 *ܢܚܣܘܟ ܢܦܫܗ ܡܢ ܚܒܠܐ.· ܘܚܝܘܗܝ ܡܢ ܐܒܕܢܐ. *ܘܢܟܣܐ ܒܟܐܒܐ ܥܠ ܡܫܟܒܗ.· ܘܣܘܓܐܐ ܕܓܪܡܘܗܝ
19 20 ܢܚܣܢ. *ܘܡܬܟܬܫܗ ܡܬܒܣܪ ܡܢ ܕܚܠܬܗ.· ܘܢܦܫܗ ܠܐ ܣܒܥܐ ܠܚܡܐ. ܘܢܦܫܗ ܡܬܪܓܪܓܐ ܠܡܐܟܘܠܬܐ.
21 *ܢܐܟܘܠ ܒܣܪܗ ܡܢ ܕܚܠܬܗ.· ܘܟܠܗܘܢ ܓܪܡܘܗܝ ܠܐ ܢܚܙܐ. *ܘܬܬܩܪܒ ܠܚܒܠܐ ܢܦܫܗ.· ܘܚܝܘܗܝ ܠܡܘܬܐ.
22 23 *ܐܢ ܐܝܬ ܠܗ ܡܠܐܟܐ ܕܫܡܥ ܠܗ ܚܕ ܡܢ ܐܠܦ. ܢܚܘܐ ܠܒܪܢܫܐ ܬܪܝܨܘܬܗ. *ܘܢܪܚܡ ܥܠܘܗܝ.· ܘܢܐܡܪ
24 25 ܦܪܘܩܝܗܝ. ܕܠܐ ܢܚܘܬ ܠܚܒܠܐ. ܘܠܗ ܢܫܟܚ ܦܘܪܩܢܐ. *ܢܫܬܚܠܦ ܒܣܪܗ ܐܝܟ ܕܒܛܠܝܘܬܗ.· ܘܢܗܦܘܟ
ܠܝܘܡܝ ܥܠܝܡܘܬܗ.

Verſio ARABICA.

* الفصل الثالث والثلثون * *ولكن الآن اسمع يا ايوب قولي* وجميع كلامي فافهم 1
2 3 *فاني قد فتحت فمي* وفي فمي يتكلم لساني *مستقيما هو كلام فمي* ومرضيا هو قول شفتي * وروح
4 5 الله ايقظني* ونسمة الله احيتني * ان استطعت فرد علي قولا* واستعد وقف بين يدي *وانا مثلك عند
6 7 8 الله* وانا ايضا من الطين جبلت *فالآن مخافتي لا تقلقك* واثقالي عليك لا تثقلك *ولكن قلت
9 الآن وفي اذني صوت كلامك سمعته* لانك قلت *اني زكي بلا آثام* وصديق انا وليس لي خطايا* وبري
10 11 انا من الاثم *فانه يطلب علي العلل* وحسبني له مثل العدو *ووضع رجلي في الوثاق* وحفظ جميع
12 طرايقي *بهذا لا تستطيع ان تبرا* فاعطيك قولا ان الله اكبر من الناس *من اجل ماذا قضيت
13 14 معه* وفي جميع اقاويله لا يستجيب *من اجل ان بواحدة يتكلم الله* وفي اثنين لا يعود *بالشفتين
15 16 لا يفهم* بالحلم ورويا الليل اذا ما سقط النوم علي الانسان في الرقاد علي فراشه *عند ذلك يظهر اذن
17 18 الانسان وعرادهم يذللهم *ليبعد الانسان من اعماله* ويغطي جسد الرجل *ويمنع نفسه من الفساد*
19 20 وحياته من الهلاك *ويغطي بالوجع علي مضجعه* وكثرة عظامه يقوي *ينقد لحمه من مخافته*
21 وجميع عظامه لا يبصرها* ونفسه لا تشبع خبزا* ونفسه تشتهي الاكل *فياكل لحمه من مخافته*
22 23 وجميع عظامه لا يبصرها *ويدنوا الي الفساد نفسه* والي الموت حياته *ان كان له رسولا يسمعه* واحد
24 من الف يخبر الناس صلاحه *فيترحم عليه ويقول اخلصه لئلا يهبط الي الفساد* ولا يجد الخلاص
25 *يتبدل بشره كالذي كان بصبوته* ويعود الي ايام شبيبته *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

CAP. XXXIII.
AT jam audi, O Job, 1
ſermonem meũ, & omnia
verba mea intellige: Jam 2
enim aperui os meum, &
in ore meo loquetur lin-
gua mea. Recta ſunt ver- 3
ba oris mei, & (a) gratus
eſt ſermo labiorum meo-
rum. Et ſpiritus Dei ex- 4
citavit me, atque aura
Dei vivificavit me. Si 5
vales, reſponde mihi ſer-
monem, & præpara te, &
ſta coram me: Et ego ſum 6
ſicut tu apud Deum, &
ego quoque de cœno coa-
gulatus fui; Ideo timor 7
meus non te perturbet, &
(b) oppoſitio mei tibi, non
ſit tibi gravis. Itaque 8
dixiſti (c) modò, & au-
ribus meis vocem verbo-
rum tuorum audivi: nam
dixiſti, Innocens ſum, 9
abſque ſceleribus & ju-
ſtus ſum, nec habeo pec-
cata, & mundus ego ſum
ab iniquitate: (d) Ipſe 10
tamen quærit adverſum
me occaſiones, & reputa-
vit me ſibi tanquam inimi-
cum, Et poſuit pedes 11
meos in (e) ligamine, &
obſervavit omnes vias
meas. In hoc non potes 12
juſtificari; reſpondeo enim
tibi quòd Deus eſt major
hominibus: Quare cum 13
eo litigas, cùm ad omnia
eloquia ejus non reſpon-
deat? Quia unum loqui- 14
tur Deus, & ſecundò non
repetit: Labiis non do- 15
cet; per ſomnium & vi-
ſionem noctis, cùm ceciderit
rit ſomnus ſuper hominem
dum cubat in lecto, Tunc 16
aperit aurem hominum, &
ob rebellionem ipſorum (f)
affligit eos, Ut removeat 17
hominem ab operibus ejus.
Tegitque corpus viri, ut 18
avertat animã ejus à cor-
ruptione, & vitam ipſius
ab interitu. Tegit etiam 19
dolore ſuper lecto ipſius, et
multitudinem oſſium ejus
corroborat. (g) Conci- 20
detur caro ejus præ timo-
re ipſius, & cuncta oſſa
ſua non intuebitur, &
anima ejus non ſaturabi-
tur pane; & anima ejus
appetet cibum, Et man- 21
ducabit carnem ſuam ob
timorem ſuum, & omnia
oſſa ſua non videbit, Et 22
appropinquabit ad corru-
ptionem anima ejus, &
& ad mortem vita ipſius.
Si habuerit ſibi Apoſto- 23
lum qui audiat illum ſe-
mel è millibus, annuntia-
bit hominibus probitatem
ejus; Miſerebitur illius, 24
& dicet; Salvabo eum,
ne deſcendat in corruptio-
nem, & non (h) inveniat
ſalutem: Immutabitur 25
caro ejus ſicut erat in
pueritia ſua, & redibit
ad dies juventutis ſuæ.

INTERP. SYRIACA.
CAP. xxxiii. (a) ſelectus
(b) cura mea de te, (c) in
auribus meis, & vocem (d)
Quia ecce quærit (e) cippo,
(f) humiliat (g) Et deſtruit
carnem ejus præ timore i-
pſius, & anima ejus (h) ſibi
inveniat

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XXXIII.

VEruntamen audi nunc Job verba mea, & omnes ſermones meos auſculta. Ecce nunc aperui os meum: locuta eſt lingua mea in faucibus meis. Rectitudo cor- 1 2 3
dis mei verba mea, & labia mea ſcientiam puram loquuntur. Spiritus Dei fecit me, & verbum omnipotentis ſuſtentavit me. Si potes, reſponde mihi; ordinare co- 4 5
ram me & ſta. Ecce ego, ſicut tu es, Deo; de luto exciſus ſum etiam ego. Ecce timor meus non terreat te, & onus meum non ſit tibi grave. Veruntamen di- 6 7 8
xiſti in auribus meis, & vocem verborum audivi. [*dicentis*:] Juſtus ſum ego abſque delicto; mundus ego ſum, & non eſt in me iniquitas. Ecce querelas in me 9 10
reperit, arbitratus eſt me inimicum ſibi. Poſuit in nervo pedes meos, cuſtodit omnes ſemitas meas. Ecce non hoc juſtificatus es, reſpondeam tibi; quia major eſt 11 12
Deus homine. Quare adverſus eum contendis? quia omnia verba ſua non reſpondebit. Quoniam una vice loquitur Deus, & in ſecunda non indiget intueri il- 13 14
lud. In ſomnio per viſionem noctis, quando irruit ſomnus profundus ſuper filios hominum, in ſopore ſuper lectulo: Tunc aperit aurem filiorum hominis, & in eru- 15 16
ditione eorum ſignat. Ut auferat filium hominis ab opere malo, & ſuperbiam à viro operiat. Prohibet animam ejus à corruptione, & vitam ejus ne tranſeat per 17 18
gladium. Et increpabitur per dolorem in domo lectuli, & in multitudine membrorum ejus [*dolores*] validi. Et propter faſtidium quod moleſtum eſt ei, abomina- 19 20
tur *anima* ejus eſcam, & anima illius cibum deſiderabilem. Conſumetur caro ejus *ab aſpectu*, & contrita oſſa ejus ne appareant. Et appropinquavit corruptioni 21 22
anima ejus, & ſpiraculum ejus *morti*. Si eſt in eo meritum, præparatur angelus unus paracletus de millibus accuſatoribus, ut annunciet filio hominis rectitu- 23
dinem ſuam. Et parcet ei, & dicet: Redime eum, ne deſcendat in corruptionem, inveni redemptionem. *Infirmatur* caro ejus magis quàm caro puerilis, rever- 24 25
tetur ad dies adoleſcentiæ ſuæ.

איוב : לד

ejus facies videbit & , ei volet bene & , Deum ad Orabit
26 יעתר אל־אלוה ׀ וירצהו וירא פניו
super Proſpiciet .ejus juſtitiam homini reddet & : jubilo in
27 בתרועה וישב לאנוש צדקתו : ישר ׀ על־
.mihi fuit æquam non & ,perverti rectum & , peccavi , dicet & , homines
אנשים ויאמר חטאתי וישר העויתי ולא־שוה לי :
lucem in mea vita & : foveam in tranſeundo à ,meam animam Redemit
28 פדה נפשי מעבר בשחת וחיתי באור
tribus vicibus ; Deus operabitur iſta omnia Ecce .videbit
29 תראה : הן־כל־אלה יפעל־אל פעמים שלש
,fovea à ejus animam convertendum Ad .viro cum
30 עם־גבר : להשיב נפשו מני־שחת
: me audi , Ijob Attende .viventium luce in lucendum ad
31 לאור באור החיים : הקשב איוב שמע־לי
: mihi reſponde , ſermones ſunt Si .loquar ego & , tace
32 החרש ואנכי אדבר : אם־יש־מלין השיבני
: me audi tu , non Si .te juſtificare volui quia , loquere
33 דבר כי־חפצתי צדקך : אם־אין אתה שמע־לי
.ſapientiam te docebo & , tace
החרש ואאלפך חכמה :

CAP. XXXIV. לד

ſapientes Audite : dixit & , Elihu reſpondit Et
1 2 ויען אליהוא ויאמר : שמעו חכמים
ſermones auris Quia .me auſcultate ſcientes & ; meos ſermones
3 מלי וידעים האזינו לי : כי־אזן מלין
eligamus Judicium .veſcendum ad guſtabit palatum & : probabit
4 תבחן וחך יטעם לאכל : משפט נבחרה־
: Ijob dixit Quippe .bonum quid nos inter , ſciamus : nobis
5 לנו נדעה ביננו מה־טוב : כי־אמר איוב
meo judicio In .meum judicium fecit removere Deus & , ſum Juſtus
6 צדקתי ואל הסיר משפטי : על־משפטי
vir Quis .prævaricatione abſque mea ſagitta dolorata : mentiar
7 אכזב אנוש חצי בלי־פשע : מי־גבר
iter faceret Et ? aquam ut , ſubſannationem biberet , Ijob ſicut
8 כאיוב ישתה־לעג כמים : וארח
cum deambulandū ad & : iniquitatē operātibus cum ſocietatem ad
לחברה עם־פעלי און וללכת עם־
ipſo cōplacendo in , vir proficiet Non : dixit Quoniam .improbitatis hominib⁹
9 אנשי־רשע : כי־אמר לא יסכן־גבר ברצתו
Abſit .me audite cordis viri Ideo .Deo cum
10 עם־אלהים : לכן ׀ אנשי לבב שמעו לי חללה
opus Quia .iniquitate ab omnipotens & , improbitate ab Deo à
11 לאל מרשע ושדי מעול : כי פעל
.ei faciet invenire viri viam juxta & : ei reddet hominis
אדם ישלם־לו וכארח איש ימצאנו :
pervertet non omnipotens & : faciet impiè non Deus verè Inſuper
12 אף־אמנם אל לא־ירשיע ושדי לא־יעות
poſuit quis & : terram illo ſuper viſitavit Quis .judicium
13 משפט : מי־פקד עליו ארצה ומי שם
,ejus ſpiritum ; ſuum cor eum ſuper poneret Si ? univerſum orbem
14 תבל כלה : אם־ישים אליו לבו רוחו
,ſimul caro omnis Obiret .colligeret ſe ad ejus flatum &
15 ונשמתו אליו יאסף : יגוע כל־בשר יחד
audi , intelligentia ſi Et .reverteretur pulverem in homo &
16 ואדם על־עפר ישוב : ואם־בינה שמעה־
etiam Nunquid .meorum eloquiorum vocem auſculta : hoc
17 זאת האזינה לקול מלי : האף
?facies impium ,inſignem juſtum an Et ? obligabit judicium habens odio
שונא משפט יחבוש ואם־צדיק כביר תרשיע :
? principes ad ,impius : profectu abſque , regi dicendū Nunquid
18 האמר למלך בליעל רשע אל־נדיבים :

Verſio VULG. LAT.

26 Deprecabitur Deum, & placa-
bilis ei erit : & videbit fa-
ciem ejus in jubilo, & reddet
27 homini juſtitiam ſuam. Re-
ſpiciet homines, & dicet;
Peccavi, & verè deliqui, &,
ut eram dignus, non recepi.
28 Liberavit animam ſuam ne
pergeret in interitum, ſed vi-
29 vens lucem videret. Ecce, hæc
omnia operatur Deus tribus
30 vicibus per ſingulos. Ut revo-
cet animas eorum à corrupti-
one, & illuminet luce viven-
31 tium. Attende Job, & audi
me : & tace, dum ego loquor.
32 Si autem habes quod loquaris,
reſponde mihi, loquere : vo-
lo enim, te apparere juſtum.
33 Quòd ſi non habes, audi me :
tace, et docebo te ſapientiam.

CAP. XXXIV.

1 PRonuntians itaq; Eliu, eti-
2 am hæc locutus eſt ; Audite
ſapientes verba mea, et eru-
3 diti auſcultate me: Auris enim
verba probat, et guttur eſcas
4 guſtu dijudicat. Judicium eli-
gamus nobis, et inter nos vi-
5 deamus quid ſit melius. Quia
dixit Job; Juſtus ſum, et Deus
6 ſubvertit judicium meum. In
judicando enim me menda-
cium eſt : violenta ſagitta mea
7 abſque ullo peccato. Quis eſt
vir ut eſt Job, qui bibit ſub-
ſannationem quaſi aquam :
8 Qui graditur cum operanti-
bus iniquitatem, et ambulat
9 cum viris impiis ? Dixit enim ;
Non placebit vir Deo, etiam ſi
10 cucurrerit eum eo. Ideò viri
cordati audite me, abſit à Deo
impietas, et ab Omnipotente
11 iniquitas. Opus enim hominis
reddet ei, et juxta vias ſingu-
12 lorum reſtituet eis. Verè enim
Deus non condemnabit fru-
ſtrà, nec Omnipotens ſubver-
13 tet judicium. Quem conſtituit
alium ſuper terram? aut quem
poſuit ſuper orbem, quem fa-
14 bricatus eſt ? Si direxerit ad
eum cor ſuum, ſpiritum illius
15 et flatum ad ſe trahet. Deficiet
omnis caro ſimul, et homo in
16 cinerem revertetur. Si habes
ergò intellectum, audi quod
dicitur, et auſculta vocem
17 eloquii mei. Numquid qui
non amat judicium, ſanari
poteſt ?; et quomodò tu e-
um, qui juſtus eſt, in tan-
18 tum condemnas ? Qui dicit
regi, apoſtata : qui vocat du-
ces, impios :

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

26 †(ε)Εὐξάμενος δὲ πρὸς κύριον ϗ δεκτὰ αὐ-
τῷ ἔσται, † (ζ) εἰσελεύσεται προσώπῳ ἱ-
λαρῷ σὺν ἐξηγορίᾳ· † ἀποδώσει δὲ (η)
27 ἀνθρώποις δικαιοσύνην. † Εἶτα τότε (ʹ)
ἀπομέμψεται ἄνθρωπος αὐτὸς ἑαυτῷ, λέ-
γων, † Οἷα (ϑ) συνετέλουν; ϗ οὐκ ἄξια
28 ἤτασέ με ὧν ἥμαρτον. † Σῶσον (ι) ψυ-
χήν μου τοῦ μὴ (κ) ἐλθεῖν εἰς διαφθο-
ράν, † (λ) ϗ ἡ ζωή μου φῶς ὄψεται. †
29 † Ἰδοὺ ταῦτα πάντα ἐργᾶται ὁ ἰσχυρὸς
30 ὁδοὺς (μ) τρεῖς μετὰ ἀνδρός. † Καὶ ἐρρύσα-
το τὴν ψυχήν μου ἐκ θανάτου, † ἵνα (ν)
ἡ ζωή μου ἐν φωτὶ αἰνῇ (ξ) αὐτόν. †
31 Ἐνωτίζου Ἰὼβ ϗ ἄκουέ μου· † κώφευ-
32 σον, ϗ ἐγώ εἰμι λαλήσω. † Εἰ εἰσί σοι
λόγοι, ἀποκρίθητί μοι· † λάλησον, θέλω
33 γὰρ (ο) δικαιωθῆναί σε. † Εἰ μή, σὺ
ἄκουσόν μου, † κώφευσον ϗ διδάξω (π)
σε.

(g) Deprecatus autem ad Do- 26
minum, & accepta ei erunt:
intrabit facie (h) hilari cum
(i) profeſſione: reddet autem ho-
minibus juſtitiam. Deindè 27
tunc accuſabit homo ſe ipſe,
dicens; Qualia conſummabam?
& non dignè in me inquiſivit
pro iis, quæ peccavi. Salva 28
animam meam, ne veniat in
corruptionem : & vita mea
lucem videbit. Ecce hæc omnia 29
operatur fortis (k) vias tres
cum viro : Et eruit animam 30
meam de morte : ut vita mea
in lumine collaudet illum. Au- 31
ribus percipe Job, & audi me:
obmuteſce, & ego quidem lo-
quar : Si ſunt tibi ſermones ; 32
reſponde mihi : loquere, volo
enim juſtificari te : Sin minùs, 33
tu audi me: obmuteſce, & do-
cebo te.

ΚΕΦ. λδ'.

1 2 † ΥΠολαβὼν δὲ Ἐλιοὺς, λέγει, † Ἀκού-
σατέ μου σοφοί, ἐπιστάμενοι (α) ἐνωτί-
3 ζεσθε. † Ὅτι οὖς λόγους δοκιμάζει, † ϗ λά-
4 ρυγξ γεύεται βρῶσιν. † Κρίσιν ἑλώμεθα ἑ-
αυτοῖς, † γνῶμεν ἀναμέσον (β) ἑαυτῶν, ὅ, τι
5 καλόν. † Ὅτι εἴρηκεν Ἰώβ, Δίκαιός εἰμι·
† ὁ κύριος ἀπήλλαξέ μου τὸ κρίμα· †
6 (γ) Ἐψεύσατο δὲ τῷ κρίματί μου, † βί-
7 αιον τὸ βέλος μου ἄνευ ἀδικίας. † Τίς
ἀνὴρ ὥσπερ Ἰώβ, πίνων μυκτηρισμὸν ὥσ-
8 περ ὕδωρ; † Οὐχ ἁμαρτὼν οὐδὲ ἀσεβήσας,
† (δ) ἢ ὁδοῦ κοινωνήσας μετὰ ποιούντων
τὰ ἄνομα, † τοῦ πορευθῆναι μετὰ ἀσεβῶν.
9 † Μὴ γὰρ εἴπῃς, Ὅτι οὐκ (ε) ἔσται ἐπισκο-
πὴ ἀνδρός, † ϗ ἐπισκοπὴ (ζ) αὐτῷ παρὰ
10 κυρίου. † Διὸ συνετοὶ (η) καρδίας ἀκού-
σατέ μου, † μή μοι εἴη ἔναντι κυρίου ἀ-
σεβῆσαι, † (ϑ) ϗ ἔναντι παντοκράτορος τα-
11 ράξαι τὸ δίκαιον. † (ι) Ἀλλὰ (κ) ἀποδιδοῖ
ἀνθρώπῳ καθὰ ποιεῖ ἕκαστος αὐτῶν, †
καὶ ἐν τρίβῳ ἀνδρὸς εὑρήσει αὐτόν. †
12 (λ) Οἴει δὲ τὸν κύριον (μ) ἄτοπα ποιή-
σειν, † ἢ ὁ παντοκράτωρ ταράξει (ν) κρίσιν,
13 † ὃς ἐποίησε τὴν γῆν; † Τίς δέ ἐστιν (ξ) ὁ
ποιῶν τὴν ὑπ' οὐρανὸν, ϗ τὰ ἐνόντα
14 πάντα; † Εἰ γὰρ βούλοιτο συνέχειν, ϗ
15 τὸ πνεῦμα παρ' αὐτῷ κατασχεῖν, † Τελευ-
τήσει πᾶσα σὰρξ ὁμοθυμαδόν, † (ο) πᾶς
δὲ βροτὸς εἰς γῆν ἀπελεύσεται, ὅθεν καὶ
16 ἐπλάσθη. † Εἰ δὲ μὴ νουθετῇ, ἄκουε (π) ταῦτα,
17 † ἐνωτίζου φωνὴν ῥημάτων. † (ρ) Ἴδε σὺ
τὸν μισοῦντα (σ) ἄνομα, ϗ τὸν ὀλλύντα τοὺς
πονηροὺς, † ὄντα αἰώνιον (τ) δίκαιον. † Ἀσε-
18 βὴς ὁ λέγων βασιλεῖ, Παρανομεῖς, † (υ) ἀ-
σεβέστατε τοῖς ἄρχουσιν.

CAP. XXXIV.

REſpondens autem Elius, di- 1
xit; Audite me ſapientes, qui 2
habetis ſcientiam, auribus per-
cipite: Quia auris ſermones pro- 3
bat, & guttur guſtat eſcam.
(a) Judicium eligimus nobis, no- 4
ſcamus inter nos, quod bonum:
Quia dixit Job, Juſtus ſum: 5
Dominus removit judicium me-
um : Et mentitus eſt in judicio 6
meo : violentum jaculum me-
um ſine injuſtitia. Quis vir, 7
ut Job, bibens ſubſannationem
ſicut aquam? Qui neq; peccavit, 8
neque impiè egit, (b) aut neque
communicavit cum facientibus
iniqua: ut ambularet cum im-
piis. Ne(c) enim dixeris, Quia 9
non erit viſitatio viri : & vi-
ſitatio ei à Domino. Quarè in- 10
telligentes corde audite me. (d)
Abſit à me coram Domino im-
piè agere, & coram Omnipoten-
te turbare juſtitiam : Sed red- 11
dat homini, ſicut facit unuſ-
quiſque eorum : & in ſemita
viri inveniet eum. Putas autem 12
Dominum abſurda facturum ?
aut Omnipotens turbabit judici-
um, qui fecit terrā ? Quis autē 13
eſt, qui facit eam quæ ſub cœlo,
& quæ inſunt omnia? Nam ſi 14
velit cohibere, & ſpiritum apud
ſe detinere; Peribit omnis ca- 15
ro ſimul : & omnis mortalis in
terrā abibit; undè & formatus 16
eſt: Sin(e) autē non ſis monitus;
audi hæc, auribus percipe vocē
verborum. Vide tu eum, qui 17
odit iniqua, & perdit mali-
gnos, eſſe æternum juſtum. Im- 18
pius eſt, qui dicit regi, Injuſtè
agis, impiiſſime principibus;

MS.A. (ε) Εὔξεται πρὸς κύριον (ζ) εἰσελεύσεται δὲ προσώπῳ καθαρῷ σὺν (η) ἀνθρώπῳ τὴν δικαιοσύνην αὐτοῦ. (ʹ) ἀποπέμψεται (ϑ) συνετελούμην; (ι) τὴν ψυχήν (κ) ἐξελθεῖν (λ) ϗ ζωή (μ) τρεῖς (ν) ἡ ψυχή μου (ξ) αὐτόν. † Ὑπολαβὼν δὲ Ἐλιοὺς, λέγει, † Ἀκούσατέ μου σοφοί, ἐπιστάμενοι ἐνωτίσεσθε τὸ καλόν. † Ὅτι εἴρηκεν Ἰώβ, Ἰδοὺ ταῦτα πάντα ἐργᾶται ὁ ἰσχυρὸς † ὁδοὺς τρεῖς μετ' ἀνδρὸς, † τοῦ ἐπιστρέψαι ψυχὴν αὐτοῦ ἐκ διαφθορᾶς, † τοῦ φωτίσαι αὐτῷ ἐν φωτὶ ζώντων. † Πρόσεχε Ἰὼβ ϗ ἄκουσόν μου, † κώφευσον ἵνα λαλήσω. Εἰ εἰσίν (ο) σε δικαιωθῆναι. Εἰ δὲ μή, (π) διδάξω σε σοφίαν.

Κεφ. λδ'. MS. A. (α) ἐνωτίζεσθε τὸ καλόν. Ὅτι * οὖς δοκιμάζει λόγους, λάρυγξ δὲ γεύεται (β) αὐτῶν, τί καλόν. (γ) Καὶ ἐψεύσατο τῷ (δ) οὐδὲ κοινωνήσας ὁδοῦ μετὰ τῶν ποιούντων (ε) ἔστιν (ζ) αὐτοῦ (η) καρδίᾳ (ϑ) ἔναντι δὲ παντοκράτορος (ι) Ἀλλὰ γὰρ (κ) ἀποδίδωσιν (λ) Οἴῃ (μ) τὰ ἄτοπα (ν) τὸ δίκαιον, (ξ) ὁ ποιήσας (ο) βροτὸς δὲ εἰς γῆν (π) ταῦτα Ἰώβ, (ρ) Εἰ δὲ * σοι οὐκ οἴει τὸν (σ) τὰ ἄνομα, (τ) εἶναι δίκαιον. (υ) ἀσεβέστατοι

תרגום TARGUM.

28 26 27 יצלי קדם אלהא ורעניה וחמא אפוי ברעוא ויתיב לאנש צדקתיה : יתריץ לבני נשא ויימר חבירת ותריץ קלקילית ולא הוא שוי לי : פרוק נפשיה
30 29 מלמעבר בשוחתא ונשמתיה בנהורא מעליא תחמי : הא כל אלין יעבד אלהא תרי זמנין ותלת עם בר נש : מטול לאתבא נפש מן שוחא לאנהרא בנהור
33 31 32 חייא : אצית איוב קביל מני שתיק ואנא אמלל : אין אית מלין אתיב יתי מלל ארום צביתי לזכאותך : אין לא את קביל מני שתוק ואלפנך חוכמתא :

לד

4 3 2 1 ואתיב אליהוא ואמר : שמעו חכימיא מלי וידעיא אציתו למימרי : ארום אודנא מליא בחנא ומורינא טעמא למיכל : דין נתרעי לנא נידע בינגא
7 6 5 מה טב : ארום אמר איוב זכאית ואלהא אעדי דיני : על דיני אכדב בר נש דשדי גירי מדלית סורחנא : מן גברא היך איוב דשתי דוחכא היך מיא :
9 8 ואזל לאתחברא עם עבדי שקר ולהלכא עם אנשי רשעא : ארום אמר לא יאלף גברא במצביה עם אלהא : הא ארום אמר לא יסתכן בר נש
11 10 במרהטיה עם אלהא : בנין כן אנשי חכימי קבילו מני חס לאלהא מן רשעא ושדי מן שקרא : ארום עובדי בר נש ישלם ליה וכאורחא דגברא
14 12 13 יערעניה : ברם בקושטא אלהא לא יחיב ושדי לא יקלקל דינא : מן פקד עלוי למעבד ארעא ומן שוי תבל כולה : אין ישוי עלוי לביה רוחיה
17 15 16 ונשמתיה לגביה יכנוש : יתנגיד כל בסרא כחדא ובר נש על עפרא יתוב : ואין תתבין שמע דא אצית לקל מלי : הברם סני דינא יסתמר ואין צדיק
18 זכי יחיב : הבשר למימר למלכא רשיעא חיבא לארכונין :

Versio SYRIACA.

26 * ܢܨܠܐ ܩܕܡ ܐܠܗܐ ܘܢܫܡܥܝܘܗܝ. ܘܢܪܥܐ ܒܗ. ܘܢܬܚܙܐ ܩܕܡܘܗܝ ܒܫܘܒܚܐ. ܘܢܦܪܘܥ ܠܒܪܢܫܐ
27 ܙܕܝܩܘܬܗ. * ܘܛܒܬܐ ܕܒܢܝܢܫܐ ܢܐܡܪ. ܘܢܐܡܪ ܗܫܐ ܚܛܝܬ. ܘܫܪܝܪܐܝܬ ܗܫܐ ܣܟܠܬ. ܘܠܐ ܐܘܬܪܬ ܢܦܫܝ. * ܦܪܘܩ
28 ܢܦܫܝ ܡܢ ܐܒܕܢܐ ܕܚܒܠܐ. ܘܢܦܫܝ ܬܚܙܐ ܢܘܗܪܐ. * ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ ܥܒܕ ܐܠܗܐ ܠܬܠܬ ܙܒܢܝܢ ܥܡ
29 ܓܒܪܐ. * ܕܢܗܦܟ ܢܦܫܗ ܡܢ ܚܒܠܐ. ܠܡܚܙܐ ܢܘܗܪܐ ܕܚܝܐ. * ܨܘܬ ܐܝܘܒ ܘܫܡܥ. ܘܫܬܘܩ. ܘܐܢܐ ܐܡܠܠ.
30 31 32 * ܘܐܢ ܐܝܬ ܠܟ ܡܠܐ. ܐܦܢܝܢܝ. ܡܛܠ ܕܨܒܐ ܐܢܐ ܗܘ ܕܬܙܕܕܩ. * ܘܐܢ ܠܐ ܫܡܥܬ ܐܢܬ ܠܝ. ܫܬܘܩ. ܘܐܠܦܟ
33 ܚܟܡܬܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܠܕ * ܘܥܢܐ ܐܠܝܗܘ ܘܐܡܪ. * ܫܡܥܘ ܚܟܝܡܐ ܡܠܝ.
1 2 ܘܝܕܥܐ ܒܡܕܥܝܗܘܢ. ܨܘܬܘܢܝ. * ܡܛܠ ܕܐܕܢܐ ܒܚܪܐ ܡܠܐ. ܘܚܟܐ ܛܥܡ ܡܐܟܘܠܬܐ. * ܢܓܒܐ ܠܢ ܕܝܢܐ
3 4 ܘܢܕܥ ܡܢܐ ܫܦܝܪ ܒܝܢܬܢ. * ܐܡܪܬ ܐܝܘܒ ܘܙܕܝܩ ܐܢܬ. ܕܐܡܪܬ ܙܕܩܬ. ܘܐܠܗܐ ܗܘ ܥܩܡ ܕܝܢܝ ܥܠܝ.
5 6 * ܡܢܘ ܐܢܫܐ ܕܐܒܕ ܕܠܐ ܚܛܗܐ. * ܡܢܘ ܓܒܪܐ ܐܝܟ ܐܝܘܒ. ܕܫܬܐ ܡܘܝܩܐ ܐܝܟ ܡܝܐ. * ܘܗܘܐ ܫܘܬܦܐ
7 8 ܘܚܒܪܐ ܠܥܒܕܝ ܥܘܠܐ. ܥܡ ܐܢܫܐ ܚܛܝܐ ܘܠܐ ܠܡܗܠܟܘ. * ܕܐܡܪܬ ܕܠܐ ܙܕܩ ܓܒܪܐ ܡܐ ܕܕܚܠ ܡܢ ܐܠܗܐ.
9 10 * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܢܫܝ ܠܒܐ ܫܡܥܘܢܝ. ܚܣ ܠܐܠܗܐ ܕܢܥܒܕ ܥܘܠܐ. ܘܚܣ ܠܗ ܕܢܥܒܕ ܚܛܝܬܐ. * ܡܛܠ
11 ܕܐܝܟ ܥܒܕܘܗܝ ܕܒܪܢܫܐ ܦܪܥ ܠܗ. ܘܐܝܟ ܐܘܪܚܬܗ ܕܓܒܪܐ ܡܫܟܚ ܠܗ. * ܫܪܝܪܐܝܬ ܐܠܗܐ ܠܐ ܡܥܒܕ ܥܘܠܐ.
12 13 ܘܐܦܠܐ ܐܠܗܐ ܡܥܟܒ ܐܘܪܚܐ. * ܡܢܘ ܦܩܕ ܠܐܪܥܐ. ܘܡܢܘ ܥܒܕ ܬܒܝܠ ܟܠܗ. * ܐܢ ܡܗܦܟ ܠܒܗ
14 15 ܠܘܬܗ. ܪܘܚܗ ܘܢܫܡܬܗ ܠܘܬܗ ܢܬܟܢܫܢ. * ܢܐܒܕ ܟܠ ܒܣܪ ܐܟܚܕܐ. ܘܒܪܢܫܐ ܠܥܦܪܗ ܢܗܦܘܟ. * ܘܐܢ
16 17 ܡܣܬܟܠ ܐܢܬ. ܫܡܥ ܗܕܐ. ܘܨܘܬ ܠܩܠܐ ܕܡܠܝ. * ܡܢ ܕܣܢܐ ܕܝܢܐ ܠܐ ܙܕܩ. ܘܐܢ ܙܕܩ ܗܘ. ܠܐ ܒܟܐܢܐܝܬ
18 ܡܬܚܝܒ. * ܕܐܡܪ ܠܡܠܟܐ ܥܘܠܐ. ܡܠܟܐ ܪܘܪܒܢܐ. ܡܠܟܐ ܫܠܝܛܢܐ.

Versio ARABICA.

26 27 * فيصلي قدام الله فيسمعه * ويرتضي به فيتراي قدامه بالمجد * ويجازي الانسان برّ * والخير على الناس
28 يقول * ويقول قد اخطيت، وحقا قد اسات ولم انفع نفسي * خلّص نفسي من بوادِ الفساد * وتبصر نفسي
29 30 الضوء * هذه كلها يصنع الله مع الانسان ثلاثة مرات * الذي يرد نفسه من الفساد ليرى نور الحياة
31 32 33 * افهم يا ايوب واسمع واصمت وانا اتكلم * فان كان لك كلاما فاجبني * فاني احبّ ان تزكوا * وان لم
تسمع * فاسكت * واعلّمك الحكمة * * الفصل الرابع والثلثون * * فاجاب اليهو وقال 1
2 3 * اسمعوا ايها الحكماء قولي * والذين تعرفون انصتوا اليّ * من اجل ان الاذن تنخر الكلام * والحنك يطعم
4 5 الطعام * فنختار لنا ديانا فيعرف ما بيننا * ما الذي قلت حسنا يا ايوب فتبرّيت * حين قلت اني تبررت *
6 7 وان الله ردّ قضاي عليّ * من الذي هلك من الناس بلا ذنب * ومن ذا رجلا مثل ايوب * الذي يشرب
8 9 الهزو مثل الماء * وكان شريكا وصاحبا لصانعي الشر * مع الناس الخطاة ينبغي يسلك * حين قلت انه
10 لا يزكوا رجل اذا ما خاف الله * من اجل هذا يا اهل العقل اسمعوني حاشا الله ان يصنع اثما * وحاشا الله
11 12 ان يجعل خطية * من اجل ان مثل اعمال الانسان يجازيه الله * والرجل مثل طرايقه يجد * حقا ان الله لا
13 14 يصنع اثما * وان الله ايضا لا يعوق طريقا * من الذي خلق الارض * ومن الذي جعل كل الدنيا * ان
15 16 ردّ عليه قلبه * فان روحه ونسمه اليه يجتمعن * يبيد كل البشر جميعا * والانسان الى ترابه يعود * ان كنت
17 تفهم فاسمع هذا وانصت لصوت كلامي * ان من يبغض الحق لا يزكوا * وان زكي افليس بالحق
18 يدحض * اذا قال في الملك اثما * ملك الروساء * ملك السلاطين * ملك الملوك *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

26 * *Orabit coram Deo, & exaudiet illum, & acceptabit eum, & apparebit ante ipsum in gloria, & retribuet homini justitiam ej⁹;* 27 *Et bonum de hominibus dicet: & dicet, Jam peccavi, et verè jam deliqui, nec profui animæ meæ:* 28 *Libera animam meam ab interitu corruptionis, & videat anima mea lucem.* 29 *Hæc omnia faciet Deus tribus vicibus erga hominem,* 30 *Qui retrahit animã suam à corruptione, ut videat lumen vitæ.* 31 *Intellige O Job, & audi, & ſile dum ego loquor,* 32 *Et ſi habes verba, reſponde mihi; opto enim ut juſtificeris.* 33 *Quòd ſi non audieris (i), tace, et docebo te ſapientiam.*

CAP. XXXIV.

1 *ET reſpondens Elihu ait,* 2 *Audite O ſapientes, ſermonem meum; & qui ſcitis, auſcultate me:* 3 *Quoniam auris complet ſermonem, & palatus guſtat cibum:* 4 *Eligamus igitur nobis judicem, ut ſciat (a) quod eſt inter nos.* 5 *(b) Quidnam dixiſti rectè O Job, & juſtificatus es? Dum dixiſti, Equidem juſtificatus ſum, & Deus retorſit judicium meum contra me.* 6 *Quis periit ex hominibus abſque culpa?* 7 *Et quis eſt vir ſimilis Job, qui ebibit illuſionem quaſi aquam,* 8 *Eſſeque ſocius & amic⁹ operantium iniquitatem? cum hominibus peccatoribus oportet incedat;* 9 *Cùm dixeris; non juſtificari virum cùm timuerit Deum.* 10 *Propterea, O (c) præditi judicio, audite me. Abſit à Deo ut operetur iniquitatē: Abſit à Deo ut committat peccatũ,* 11 *Eò quòd juxta opera hominis retribuat ei De⁹, et vir ſecundùm vias ſuas reperiat.* 12 *Verè Deus non perpetrat iniquitatem, et De⁹ etiam non (d) impedit viam.* 13 *(e) Quis creavit terram? & quis condidit totum mundum?* 14 *Si retraheret ad ſe cor ſuũ, ſpiritus ejus & aura ejus ad illum ſeſe colligerent.* 15 *Periret omnis caro ſimul, & homo ad pulverem ſuum reverteretur.* 16 *Si intelligis, audi hoc, & attende voci verborum meorum.* 17 *Qui odit (f) veritatem, non juſtificabitur: & ſi ſe juſtificaverit, nonne (g) veritate convincetur?* 18 *Cùm dixerit de rege iniquitatem, rege principum, rege (h) præfectorum, rege regum,*

INTERP. SYR.

(*i*) me, *CAP. xxxiv.* (*a*) quid optimum ſit. (*b*) Dixiſti O Job quod juſtus es? Dum (*c*) viri cordati, (*d*) pervertit (*e*) Quis præpoſuit terram? (*f*) judicium, (*g*) meritò condemnabitur? (*h*) præfectorum, Qui non

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Orabit coram Deo & placebit ei, videbit faciem ejus in beneplacito, & reddet *homini* ſecundùm juſtitiam ſuam. Diriget ſe ad filios hominis, & dicet, Peccavi, & rectum 26 27
perverti, & non prodeſt mihi. Redemit animam ejus ne tranſeat *in foveam*, & anima ejus in luce excelſa videbit. Ecce omnia hæc operatur Deus duabus & 28 29
tribus vicibus cum filio hominis. Ut revocet animam à corruptione, ut luceat in luce viventium. Auſculta Job, intende mihi: tace, & ego loquar. Si habes verba, re- 30 31
ſponde mihi; loquere, quoniam volo juſtificare te. Si autem non habes, ſuſcipe à me: tace, & docebo te ſapientiam. 32 33

CAP. XXXIV.

ET reſpondit Elihu, & ait: Audite ſapientes verba mea, & ſcientes auſcultate ſermones meos. Auris enim verba probat, & palatum ſaporem comeden- 1 2 3
do. Judicium eligamus nobis, diſpiciamus inter nos quid ſit bonum. Quoniam dixit Job: Juſtus ſum, & Deus abſtulit judicium meum. Propter judicium me- 4 5 6
um mendacem faciam filium hominis, qui mittit ſagittas abſque peccato. Quis eſt vir ſicut Job qui bibit ſubſannationem ſicut aquam? Et vadit ut conſortium fa- 7 8
ciat cum operantibus iniquitatem, et ut ambulet cum viris impiis. Quoniam dixit: Non proficiet vir in velle ſuo cum Deo. *Targum aliud*: Quoniam dixit, 9
Non proficiet *filius hominis in curſu ſuo* cum Deo. Ideò viri ſapientes attendite ad me, abſit à Deo impietas, & ab omnipotente *mendacium*, Opera 10 11
enim filii hominis reddet ei, & juxta viam viri eveniet ei. Veruntamen Deus non condemnabit, & omnipotens non pervertet judicium. Quis mandavit ei ut face- 12 13
ret terram, aut quis poſuit orbem univerſum? Si poſuerit ad eum cor ſuum, ſpiritum & ſpiraculum ejus ad ſe collegerit: Deficiet omnis caro ſimul, & filius homi- 14 15
nis in pulvere dormiet. Si enim intelligis, audi hoc, auſculta vocem ſermonum meorum. Num verò odio habens judicium cuſtodietur, & num *purè* juſtum reum 16 17
peraget? Nunquid congruum eſt *dicere* regi, impius. [*es*?] Sceleratus, principibus? 18

facies ad clamor est agnitus non & ,principum *facies accepit* non Qui
19 אֲשֶׁר לֹא־נָשָׂא ׀ פְּנֵי שָׂרִים וְלֹא נִכַּר־שׁוֹעַ לִפְנֵי־
,morientur Subitò .ipsi omnes ejus manuum opus quia : *tenuis*
20 דָל כִּי־מַעֲשֵׂה יָדָיו כֻּלָּם׃ רֶגַע ׀ יָמֻתוּ
: transibunt & , *populus* commovebuntur *noctis* *medietatibus* &
וַחֲצוֹת לָיְלָה יְגֹעֲשׁוּ עָם וְיַעֲבֹרוּ
vias super ejus oculi Quia .*manu in* non fortem removebunt &
21 וְיָסִירוּ אַבִּיר לֹא בְיָד׃ כִּי־עֵינָיו עַל־דַּרְכֵי־ 21
, *obscuritas* Non .*videbit* ejus gressus omnes & : viri
22 אִישׁ וְכָל־צְעָדָיו יִרְאֶה׃ אֵין־חֹשֶׁךְ
.iniquitatem operantes ibi *latitandum ad* , mortis umbra nec
וְאֵין צַלְמָוֶת לְהִסָּתֶר שָׁם פֹּעֲלֵי אָוֶן׃
Deum ad *cundum ad* , amplius imponet virum super non Quia
23 כִּי לֹא עַל־אִישׁ יָשִׂים עוֹד לַהֲלֹךְ אֶל־אֵל
faciet stare & : investigatio non *insignes* Conteret .judicium in
24 בַּמִּשְׁפָּט׃ יָרֹעַ כַּבִּירִים לֹא־חֵקֶר וַיַּעֲמֵד
convertet & :eorum opera faciet cognoscere Ideo .eis pro alios
25 אֲחֵרִים תַּחְתָּם׃ לָכֵן יַכִּיר מַעְבָּדֵיהֶם וְהָפַךְ
loco in *eos* percussit *improbis Pro* .conterentur & , noctem
26 לַיְלָה וְיִדַּכָּאוּ׃ תַּחַת־רְשָׁעִים סְפָקָם בִּמְקוֹם
ejus vias omnes & ; *eum post à* recesserunt *ideo* Quòd .videntium
27 רֹאִים׃ אֲשֶׁר עַל־כֵּן סָרוּ מֵאַחֲרָיו וְכָל־דְּרָכָיו
: *egeni* clamorem eum *super adducendum Ad* .intellexerunt non
28 לֹא הִשְׂכִּילוּ׃ לְהָבִיא עָלָיו צַעֲקַת־דָּל
,faciet requiescere ipse Et .audiret *afflictorum* *exclamationem* &
29 וְצַעֲקַת עֲנִיִּים יִשְׁמָע׃ וְהוּא יַשְׁקִט ׀
super Et ? eũ intuebitur quis & , *facies* abscondet Et ? *condemnabit* quis &
וּמִי יַרְשִׁעַ וְיַסְתֵּר פָּנִים וּמִי יְשׁוּרֶנּוּ וְעַל־
,*hypocritam hominem regnando A* .pariter hominem super & ,gentem
30 גּוֹי וְעַל־אָדָם יָחַד׃ מִמְּלֹךְ אָדָם חָנֵף
non , peperci , *dicit qui* Deum *ad* Quia .populi *offendiculis ab*
31 מִמֹּקְשֵׁי עָם׃ כִּי אֶל־אֵל הֶאָמַר נָשָׂאתִי לֹא
iniquitatem Si .me doce tu , video Præter .*corrumpam*
32 אֶחְבֹּל׃ בִּלְעֲדֵי אֶחֱזֶה אַתָּה הֹרֵנִי אִם־עָוֶל
quia , *illam retribuet te cum à An* .addam non , sum operatus
33 פָּעַלְתִּי לֹא אֹסִיף׃ הֲמֵעִמְּךָ יְשַׁלְּמֶנָּה ׀ כִּי־
.loquere nôsti quòd Et ? ego non & , *eliges* tu quia , renuisti
מָאַסְתָּ כִּי־אַתָּה תִבְחַר וְלֹא־אָנִי וּמַה־יָּדַעְתָּ דַבֵּר׃
.me *audiens* sapiens vir & : mihi dicant cordati Viri
34 אַנְשֵׁי לֵבָב יֹאמְרוּ לִי וְגֶבֶר חָכָם שֹׁמֵעַ לִי׃
.intellectu cum non ejus verba & , loquitur scientia cum non Ijob
35 אִיּוֹב לֹא־בְדַעַת יְדַבֵּר וּדְבָרָיו לֹא בְהַשְׂכֵּיל׃
viros ad responsiones propter ,seculũ in usque Ijob probetur mi Pater
36 אָבִי יִבָּחֵן אִיּוֹב עַד־נֶצַח עַל־תְּשֻׁבֹת בְּאַנְשֵׁי־
nos inter ,prævaricationem suo peccato super *addet* Quia .*iniquitatis*
37 אָוֶן׃ כִּי יֹסִיף עַל־חַטָּאתוֹ פֶשַׁע בֵּינֵינוּ
.Deum ad suos sermones *multiplicabit & ,plaudet*
יִסְפּוֹק וְיִרֶב אֲמָרָיו לָאֵל׃

CAP. XXXV. לה

? judiciũ *in* putâsti hoc Nunquid : dixit & , Elihu respondit Et
1 וַיַּעַן אֱלִיהוּ וַיֹּאמַר׃ הֲזֹאת חָשַׁבְתָּ לְמִשְׁפָּט
2 ,tib proderit Quid : *dicis Ut* .Deo *præ mea justitia* , Dixisti
3 אָמַרְתָּ צִדְקִי מֵאֵל׃ כִּי־תֹאמַר מַה־יִּסְכָּן־לָךְ
tibi respondebo Ego ? meo peccato de utilitatis accipiam quid
4 מָה אֹעִיל מֵחַטָּאתִי׃ אֲנִי אֲשִׁיבְךָ
,*æthera* intuere & : vide & ,cœlum Suspice .tecum tuis *sociis* & ,sermones
5 מִלִּין וְאֶת־רֵעֶיךָ עִמָּךְ׃ הַבֵּט שָׁמַיִם וּרְאֵה וְשׁוּר שְׁחָקִים
? eũ cõtra operaberis quid , peccaveris Si .*te præ* *sunt excelsa*
6 גָּבְהוּ מִמֶּךָּ׃ אִם־חָטָאתָ מַה־תִּפְעָל־בּוֹ
? ei facies quid ,tuæ prævaricationes fuerint multiplicatæ Et
וְרַבּוּ פְשָׁעֶיךָ מַה־תַּעֲשֶׂה־לּוֹ׃

Versio VULG. LAT.

19 Qui non accipit pſonas principũ: nec cognovit tyrannum, cùm diſceptaret contra pauperem: opus enim manuum ejus 20 ſunt univerſi. Subitò morientur, & in media nocte turbabuntur populi, & pertranſibunt, & auferent violentũ abſ- 21 que manu. Oculi enim ejus ſuper vias hominum, & omnes 22 greſſus eorum conſiderat. Non ſunt tenebræ, & non eſt umbra mortis, ut abſcondantur ibi qui 23 operantur iniquitatem. Neque enim ultrà in hominis poteſtate eſt, ut veniat ad Deum in ju- 24 dicium. Conteret multos, & innumerabiles, & ſtare faciet 25 alios pro eis. Novit enim opera eorum: & idcircò inducet noctem, & conterentur. 26 Quaſi impios percuſſit eos in 27 loco videntium. Qui quaſi de induſtria receſſerunt ab eo, & omnes vias ejus intelligere 28 noluerunt: Ut pervenire facerent ad eum clamorem egeni, & audiret vocem pauperũ. 29 Ipſo enim concedente pacem, quis eſt qui condemnet? ex quo abſconderit vultũ, quis eſt qui contempletur eum, & ſuꝑ gentes & ſuper omnes homines? 30 Qui regnare facit hominẽ hypocritam propter peccata po- 31 puli. Quia ergò ego locutus ſum ad Deum, te quoque non 32 prohibebo. Si erravi, tu doce me: ſi iniquitatem locutus ſum, 33 ultrà non addam. Numquid à te Deus expetit eam, quia diſplicuit tibi? tu enim cœpiſti loqui, & non ego: quòd ſi quid 34 nôſti melius, loquere. Viri intelligentes loquantur mihi, & 35 vir ſapiens audiat me. Job autem ſtultè locutus eſt, & verba illius non ſonant diſciplinam. 36 Pater mi, probetur Job uſque ad finem: ne deſinas ab homi- 37 ne iniquitatis. Quia addit ſuper peccata ſua blaſphemiam, inter nos interim conſtringatur: & tunc ad judicium provocet ſermonibus ſuis Deum.

CAP. XXXV.

1 IGitur Eliu hæc rurſùm locu- 2 tus eſt; Numquid æqua tibi videtur tua cogitatio, ut dice- 3 res; Juſtior ſum Deo? Dixiſti enim; Non tibi placet quod rectum eſt: vel quid tibi pro- 4 derit, ſi ego peccavero? Itaque ego reſpondebo ſermonibus tuis, & amicis tuis tecum. 5 Suſpice cœlum & intuere, & contemplare æthera quòd alti- 6 or te ſit. Si peccaveris, quid ei nocebis? & ſi multiplicatæ fuerint iniquitates tuæ, quid facies contra eum?

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

19 † Ὃς οὐκ (φ) ἐπαισχυνθῇ πρόσωπον ἐντίμου, † (χ) οὐδὲ οἶδε τιμὴν θέσθαι ἁδροῖς, † θαυμασθῆναι πρόσωπα αὐτῶν. 20 † Κενὰ δὲ αὐτοῖς ἀποβήσεται, τὸ κεκραγέναι καὶ δεῖσθαι ἀνδρός· † ἐχρήσαντο γὰρ (ψ) παρανόμως, ἐκκλινομένων ἀδυνάτων. 21 † Αὐτὸς γὰρ ὁρατής ἐστι ἔργων ἀνθρώπων, † λέληθε δὲ αὐτὸν οὐδὲν ὧν 22 πράσσουσιν. † Οὐδὲ ἔσται τόπος τοῦ κρυ- 23 βῆναι τοὺς ποιοῦντας τὰ ἄνομα· † Ὅτι 24 οὐκ ἐπ᾽ ἄνδρα θήσει ἔτι. † Ὁ γὰρ κύριος (ω) πάντας ἐφορᾷ· † ὁ καταλαμβάνων ἀνεξιχνίαστα, † ἔνδοξά τε καὶ ἐξαί- 25 σια, ὧν οὐκ ἔστιν ἀριθμός. † (α) Ὁ γνωρίζων αὐτῶν τὰ ἔργα, † καὶ στρέψει νύκτα 26 καὶ ταπεινωθήσονται. † Ἔσβεσε δὲ ἀσε- 27 βεῖς, (β) ὁρατοὶ δὲ ἐναντίον αὐτοῦ. † Ὅτι ἐξέκλιναν ἐκ νόμου θεοῦ, † δικαιώματα 28 δὲ αὐτοῦ οὐκ ἐπέγνωσαν, † Τοῦ ἐπαγαγεῖν ἐπ᾽ αὐτὸν κραυγὴν (γ) πενήτων, † καὶ κραυγὴν πτωχῶν εἰσακούσεται. 29 † Καὶ αὐτὸς ἡσυχίαν παρέξει, καὶ τίς καταδικάσεται; † καὶ κρύψει πρόσωπον, καὶ τίς ὄψεται αὐτόν; † καὶ κατὰ ἔθνους, καὶ 30 κατὰ ἀνθρώπου ὁμοῦ. † Βασιλεύων ἄνθρωπον ὑποκριτὴν ἀπὸ δυσκολίας λαοῦ. 31 † Ὅτι πρὸς τὸν ἰσχυρὸν ὁ λέγων, Εἴληφα, οὐκ (δ) ἐνεχυράσω· ἄνευ ἐμαυτοῦ † 32 ὄψομαι· (ε) Σὺ δεῖξόν μοι, † εἰ ἀδικίαν (ζ) εἰργασάμην, οὐ μὴ προσθήσω. † 33 Μὴ ἀπὸ σοῦ ἀποτίσει αὐτήν, (η) ὅτι σὺ ἀπώσῃ; † ὅτι σὺ (θ) ἐκλέξῃ καὶ οὐκ ἐγώ; 34 καὶ τί ἔγνως, λάλησον. † Διὸ συνετοὶ (ι) καρδίας ἐροῦσι ταῦτα, † ἀνὴρ δὲ (κ) σο- 35 φὸς ἀκήκοέ μου τὸ ῥῆμα. † (λ) Ἰὼβ δὲ οὐκ ἐν συνέσει ἐλάλησεν, † τὰ ῥήματα 36 αὐτοῦ οὐκ ἐν ἐπιστήμῃ. † Οὐ μὴν δὲ ἀλλὰ μάθε Ἰώβ, † μὴ δῷς ἔτι (μ) ἀντ- 37 απόκρισιν ὥσπερ οἱ ἄφρονες· † Ἵνα μὴ προσθῶμεν ἐφ᾽ ἁμαρτίαις ἡμῶν, † ἀνομία δὲ ἐφ᾽ ἡμῖν (ν) λογισθήσεται, πολλὰ λαλούντων ῥήματα ἐναντίον τοῦ κυρίου.

19 Qui non eſt veritus faciem (g) honorati, neque novit honorem ponere potentibus, admirari facies eorum. 20 Vana autem eis evadent, clamâſſe, & orare virum. Abuſi ſunt enim iniquè (h) exhonoratis infirmis. 21 Ipſe enim inſpector eſt operum hominum: latuit autem eum nihil eorum, quæ agunt: 22 (i) Neque erit locus ut lateant, qui faciunt iniqua: 23 Quoniam (k) non ſuper virum ponet ultrà. 24 Dominus enim omnes inſpicit, qui comprehendit non veſtigabilia, & glorioſa, & magnifica, quorum non eſt numerus: 25 Qui cognoſcit eorum opera, & evertet noctem, & humiliabuntur. 26 Et extinxit impios: conſpicui autem coram eo. 27 Quoniam declinaverunt de lege Dei, & juſtificationes ejus non cognoverunt; 28 ut perferatur ad eum clamor pauperum: & clamorem mendicorum exaudiet. 29 Et ipſe (l) quietem dabit; & quis condemnabit? & abſcondet faciem, & quis videbit eum? & contra gentes, & contra hominem ſimul. 30 Qui regnare facit hominem hypocritam propter perverſitatem populi. 31 Quoniam (m) erga fortẽ qui dicit, Suſcepi, non auferam loco pignoris, abſque me 32 videbo: Tu oſtende mihi, ſi injuſtitiam operatus ſum: non adjiciam. 33 Nunquid à te reddet eam, quia tu (n) expelles, quoniam tu eliges, & non ego? & quid nôſti, loquere: 34 Quarè intelligentes corde dicent hæc, & vir ſapiens audivit verbum meum. 35 Job autem non in intellectu locutus eſt: verba ejus non in ſcientia. 36 Veruntamen diſce Job, nè dederis ultrà reſponſionem, ſicut inſipientes: 37 ut nè adjiciamus ſuper peccata noſtra; & iniquitas ſuper nos computabitur, multa loquentibus verba contra Dominum.

ΚΕΦ. λε΄.

1 2 † ὙΠολαβὼν δὲ Ἐλιοῦς, λέγει, † Τί τοῦτο ἡγήσω ἐν κρίσει; † Σὺ τίς εἶ, ὅτι εἶπας, 3 Δίκαιός εἰμι ἔναντι κυρίου; † (α) Ἐγὼ 4 σοι δώσω ἀπόκρισιν, καὶ τοῖς τρισὶ (β) φί- 5 λοις σου. † Ἀνάβλεψον εἰς τὸν οὐρανόν, καὶ ἴδε· † κατάμαθε (γ) δὲ νέφη, ὡς ὑ- 6 ψηλὰ ἀπὸ σοῦ. † Εἰ ἥμαρτες, τί πράξεις; † εἰ δὲ καὶ (δ) πολλὰ ἠνόμησας, τί δύνασαι ποιῆσαι;

CAP. XXXV.

1 REſpondens autem Elius, ait; 2 Quarè hoc exiſtimâſti in judicio? tu quis es, quia dixiſti; Juſtus ſum, ante conſpectum Domini? 4 Ego tibi dabo reſponſionem, & iſtis tribus amicis tuis. 5 Aſpice in cœlum, & vide: reſpice autem in nubes quàm altæ ſint à te: 6 Si peccâſti, quid ages? quòd ſi & multa iniquè egiſti, quid potes facere?

MS. A. (φ) αἰσχυνθῇ (χ) οὐκ ἔδωκεν δὲ τιμὴν θέσθαι ἀνδρῶν, τοῦ θαυμασθῆναι τὰ πρόσωπα αὐτῶν. (ψ) ἀνόμοις ἐκκλινομένοις καὶ ἀδυνάτοις. (ω) τὰ πάντα (α) Γνωρίζων (β) καὶ ὁρατοὶ ἐγένοντο ἐναντίον τῶν ἐχθρῶν. Ὅτι (γ) πένητος, (δ) ἐνεχύρασα· (ε) Σὺ δίδαξόν με, (ζ) ἠργασάμην, οὐ μὴ προσθῶ. Μὴ παρὰ σοῦ (η) ὅτι ἀπώσω; (θ) ἐκλέξω καὶ * ἐγώ· (ι) καρδίᾳ (κ) φρόνιμος (λ) Ἰώβ, οὐκ ἐν συνέσει ἐλάλησας, τὰ δὲ ῥήματά σου οὐκ ἐν ἐπιστήμῃ. (μ) ἀπόκρισιν (ν) ἔστε πολλὰ λαλοῦσιν ῥήματα ἔναντι κυρίου. Κεφ. λε΄. MS. A. (α) Ἢ ἐρεῖς, τί ποιήσω ἁμαρτών; Ἐγώ σοι (β) σου φίλοις. (γ) τὰ νέφη, καὶ ἴδε ὡς (δ) ἠνόμησας πολλά,

תרגום TARGUM.

דלא נסיב אפין לרברבנן ולא אשתמודע שועא קדם מסכנא ארום עובדי אידוי כולהון : בשעתא ימותון סרומאי ופלגות ליליא מתרגפין מצראי 19 20
ויעברון ויעדון דורבני לא בחיל ידא : מטול דעינוי על אורחי בני נשא וכולהון פסעתוי יחמי : לית חשוך ולית טולא דמותא לאטמרא תמן עבדי 21 22
שקר : ארום לא על גבר ישוי עוד למיזל לות אלהא בדינא : יתבר גללי ימא דסגיעין בנו מיא ואקים חורונין בתריהון : בגין כן הודע מעבדיהון 23 24 25
והפך ליליא ומדכין : חלף רשיעי ספקנון באתר דחמין : תא באתר רשיעיא פורענותהון בתר דיחמון צדיקיא ויזכון בדינא : דמטול היכנא זרו 26 27
מבתרוהי וכל אורחתיה לא אשכילו : לאיתאה עלוי קבלתא דמסכנא וצעקתהון דעניי ישמע : והוא ישדיך ומן יחיב ויסלק שכנתא ומן יסכניה ומסער 28 29
חובא על עמא ועל בר נש כחדא : ממני מלכא בר נש דילטור מטול תקליא די בעמא : ארום לאלהא אפשר דאתאמר סוברית לא אחבול : בר ממה 30 31 32
דאחמי אנת אלפנני אין שקרא עבדית לא אוסיף : אפשר די מעמך ישלמנה ארום רחקתא ארום אנת תתרעי ולא אנא ומה דידעתא מלל : אנשי חכימי 33 34
לבא יימרון לי וגברא חכימא יקבל מני : איוב לא במנדעא ימלל ופתגמוי לא בשכלא : צבינא דיתבחר איוב עד עלמין מטול תיובתא באנשי שקרא : 35 36
ארום יוסיף על סורחניה מרד בינגא מספק ומסגי מימרוי קדם אלהא : 37

לה

ואתיב אליהוא ואמר : הדא חשלתא לדינא מללתא דכיית מן אלהא : ארום תימר מה יהני לך מה צרוך אית מן סורחני : אנא אתיבנך מליא וית חבריך 1 2 3 4
עמך : אסתכל לשמיא וחמי ואסתכי שחקיא דאתגבהו מנך : אין חבתא מה תעבד ביה וסגיעי מרודך מה תעבד ליה : 5 6

Verſio SYRIACA.

19 20 * ܕܠܐ ܢܣܒ ܒܐܦܝ̈ ܪܘܪ̈ܒܢܐ. ܘܠܐ ܢܣܒ ܒܐܦܝ̈ ܡܣܟ̈ܢܐ. ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ ܥܒܕܐ ܕܐܝ̈ܕܘܗܝ ܐܢܘܢ. * ܡܢ ܫܠܝܐ
21 ܢܡܘܬܘܢ. ܘܒܦܠܓܗ ܕܠܠܝܐ ܫܦܝܫܝܢ. ܘܢܥܒܪܘܢ. ܘܢܕܥܘܢ ܠܚܣܝܢܐ. ܠܐ ܒܚܝܠܐ. * ܡܛܠ
22 ܕܥܝ̈ܢܘܗܝ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܐܘܪ̈ܚܬܗ ܕܒܪܢܫܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܗܠܟܬܗ ܚܙܐ. * ܕܠܐ ܚܫܘܟܐ. ܘܕܠܐ ܛܠܠܐ ܕܡܘܬܐ.
23 ܠܡܛܫܝܘ ܬܡܢ ܥܒܕܝ̈ ܥܘܠܐ. * ܡܛܠ ܕܐܦ ܠܐ ܗܘܐ ܥܠ ܓܒܪܐ ܣܝܡ ܠܡܗܠܟܘ ܥܡ ܐܠܗܐ ܒܕܝܢܐ.
24 25 * ܕܢܒܪܘܟ ܠܣܓܝ̈ܐܐ ܕܠܐ ܡܢܝܢ. ܘܢܩܝܡ ܐܚܪ̈ܢܐ ܚܠܦܝܗܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܡܫܬܘܕܥ ܐܢܘܢ ܡܢ ܥܒ̈ܕܝܗܘܢ.
26 ܘܡܗܦܟ ܐܢܘܢ ܠܠܠܝܐ. * ܘܡܬܡܟܟܝܢ ܒܥܘܠܐ ܕܥܒ̈ܕܝܗܘܢ. ܒܐܬܪܐ ܕܕܚܠܬܐ. * ܕܠܐ ܕܣܛܘ ܡܢ ܒܬܪܗ.
27 28 ܘܟܠܗܘܢ ܐܘܪ̈ܚܬܗ. ܠܐ ܐܣܬܟܠܘ. * ܕܥܠ ܩܕܡܘܗܝ ܩܠܗ ܕܡܣ̈ܟܢܐ. ܘܩܥܬܗ ܕܚܣܝܐ ܢܫܡܥ.
29 * ܘܐܢ ܗܘ ܫܒܩ. ܡܢܘ ܡܚܝܒ. ܘܐܢ ܗܘ ܡܗܦܟ ܐܦܘܗܝ. ܡܢܘ ܫܒܩ ܠܥܡܐ ܐܘ ܠܒܢܝ̈ܢܫܐ ܐܟܚܕܐ.
30 * ܕܠܐ ܐܡܠܟ ܐܢܫܐ ܕܡܣܪܗܒ ܘܚܛܝܐ ܠܥܡܐ. * ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܐܡܪ. ܕܟܕ ܫܒܩܬ. ܠܐ ܡܚܒܠ ܐܢܐ ܕܠܐ ܣܟܠܘ.
31 32 * ܚܘܝܢܝ ܐܢܬ. ܐܢ ܥܘܠܐ ܥܒܕܬ. * ܘܬܘܒ ܠܐ ܐܘܣܦ ܥܡܟ ܠܡܡܠܠ ܦܬܓܡܐ. ܟܕ ܣܟܠܬ. ܐܢܬ ܥܒܕ
33 34 ܘܠܐ ܐܢܐ. ܘܡܕܡ ܕܝܕܥ ܐܢܬ ܡܠܠ. * ܐܢܫܐ ܕܠܒܐ ܢܐܡܪܘܢ ܠܝ. ܘܓܒܪܐ ܚܟܝܡܐ ܢܫܡܥܢܝ.
35 36 * ܐܝܘܒ ܠܐ ܗܘܐ ܒܝܕܥܬܐ ܡܡܠܠ. ܘܡܠܘܗܝ ܠܐ ܗܘܘ ܒܣܘܟܠܐ. * ܫܪܝܪܐܝܬ ܐܬܒܚܪ ܐܝܘܒ. ܡܢ ܙܒܢܐ. ܘܠܐ
37 ܐܬܚܫܒ ܥܡ ܓܒܪ̈ܐ ܥܘܠܐ. * ܘܐܢ ܢܘܣܦ ܥܠ ܚܛܗ̈ܘܗܝ. ܣܟܠܘܬܗ ܒܝܢܬܢ ܬܬܝܕܥ. ܘܢܩܪܒ ܡܠܬܗ
ܠܐܠܗܐ ܒܡܠܘܗܝ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܠܗ *
1 2 * ܘܥܢܐ ܐܠܝܗܘ ܘܐܡܪ. * ܒܗܕܐ ܐܬܚܫܒܬ ܒܕܝܢܐ.
3 ܕܐܡܪܬ. ܕܙܕܝܩ ܐܢܐ ܡܢ ܐܠܗܐ. * ܐܢ ܐܡܪܬ. ܡܢܐ ܡܘܬܪܐ ܐܝܬ ܠܐ ܢܦܫܟ. ܘܡܢܐ ܡܘܬܪܢܐ ܕܐܣܟܠܬ. * ܐܢܐ
4 5 ܐܦܢܐ ܠܟ ܡܠܐ. ܘܠܚܒܪ̈ܝܟ ܥܡܟ. * ܚܘܪ ܒܫܡܝܐ. ܘܚܙܝ. ܘܐܬܒܩܐ ܒܥܢܢܐ ܕܪ̈ܡܝܢ ܡܢܟ. * ܐܢ ܚܛܝܬ ܐܢܬ.
6 ܡܢܐ ܥܒܕ ܐܢܬ ܠܗ. ܘܐܢ ܣܓܝ ܣܟܠܘܬܟ. ܡܢܐ ܬܥܒܕ ܠܗ.

Verſio ARABICA.

19 20 * الذي لا ياخذ بالوجوه اعني باوجه الكبراء* ولا ياخذ باوجه المساكين* لان كلهم اعمال يديه* وبسرعة
21 يموتون* وفي نصف الليل يهلكون* ويبيدون* ويعرفون القوي بلا قوة* من اجل ان عينيه على جميع
22 23 طرايق الرجل* وجميع خطواته ينظر* بلا ظلمة وبلا ظلال الموت* يستخفي هناك اصحاب الاثم* من اجل
24 انه ايضا ليس على رجل جعله ليسلك مع الله بالبر* ان يسبي بالكثير الذي لا يحصوا* ويقيم ايضا سواهم
25 26 * من اجل هذا عرفهم من اعمالهم* ويردهم الي الليل* ويتواضعون تحت اثام اعمالهم* في موضع الخوف* حين
27 28 اعتدلوا وراه* وطرايقه لم يفهموها* تدخل بين يديه صلاة المساكين* وعجاجة الطاهر يسمعها* فاذا
29 30 هو ترك* فمن يدحض* وان هو رد وجهه فمن الذي يترك* القوم او الانسان جميعا* فلا يملك انسان
31 32 مخالف وخاطي على القوم* من اجل ان الله قال* اني اذا تركت فليس افسد الذي لم يخطوا* فاخبرني
33 ان كنت صنعت اثما* حتي لا اعود ايضا ان اعطيك قولا* حين خطيت فانت الذي فعلت وليس انا*
34 35 والذي تعرف تتكلم* اناس العقل يقولون لي* والرجل الحكيم يسمعني* فان ايوب ليس بالمعرفة يتكلم*
36 37 وكلامه ليس بالعقل* حقا ان ايوب قد امتحن بعد زمان* فلم يحسب مع القوم المنافقين* وان زاد على
خطاياه* فان السيئة بيننا تعرف* فيقرب قدام الله قوله* * الفصل الخامس والثلثون *
1 2 * اجاب اليهو وقال* بهذا حسبت بالقضاء* لانك قلت اني ابر من الله* فان قلت فماذا تنفع نفسك
3 4 وماذا ربحا بدحضك* فانا اجيبك بالقول وايضا لاحبايك معك* انظر الي السماء* وتفطن في السحاب
5 6 التي هي ارفع منك* فاذا ما اخطيت ماذا تصنع به* وان كثر اثمك ماذا تصنع به*

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Qui non ſumit (†) perſonas, divitũ aut perſonas magnatũ, nec ſumit perſonas pauperum, quoniã omnes ſunt opera manũ ej,* 19
Et ſubitò morientur, & mediâ nocte peribunt, atque interibunt, & agnoſcent Fortem ſine fortitudine: 20
Quoniam oculi ſuper omnes vias hominis, & cunctos greſſus ejus videt. 21
Abſque tenebris, et ſine umbra mortis, ubi abſcondant ſe iniqui; 22
Quia nondùm erga hominem factum eſt ut incedat cum Deo in æquitate. 23
Etiamſi lædat multos qui non numerantur, (i) condet et totidem. 24
Propterea novit eos ab operibus eorum, reducetque illos ad noctem, 25
Et humiliabuntur ſub iniquitatibus operum ſuorum in loco timoris, 26
Quòd declinaverint poſt eum, & (k) vias ejus non intellexerint. 27
Ingredietur antè illum oratio pauperum, & vociferationem immaculati audiet. 28
Cùm ipſe dimiſerit, quis condemnabit? & ſi ipſe averterit vultum ſuum, quis eſt qui dimittat? num populus an homines ſimul? 29
Non regnabit homo inobediens, & peccator ſuper populum: 30
Quia Deus dixit, Cùm ego dimiſero, non corrumpam eos qui non deliquerunt. 31
Indica ergò mihi utrùm commiſeris iniquitatem, 32
(l) ut non adjiciam amplius, & dem tibi reſponſum. Quando peccâſti, tu egiſti, & non ego: & quod nôſti loquaris. 33
(m) Homines prudentes dicant mihi, & vir ſapiens audiat me: 34
Certè Job abſque ſcientia loquitur, & verba ejus abſque judicio. 35
Verè Job tentatus jam eſt (n) longo tempore, nec computatus eſt cum hominibus impiis. 36
Quòd ſi addiderit ad peccata ſua, delictum inter nos (o) cognoſcetur, & offeretur coram Deo ſermo ipſius. 37

CAP. XXXV.

Reſponditque Elihu, ac dixit; 1
In hoc concluſus es in judicio, quia dixiſti quòd ego ſum juſtior Deo. 2
Et ſi dixeris, quid prodes animæ tuæ? & quinam quæſtus in confutando te? 3
Ego reſpondebo tibi ſermone, & quoque amicis tuis tecum. 4
Reſpice cœlum, & conſidera nubes quæ ſunt eminentiores te. 5
Cùm igitur peccaveris, quid facies ei? & ſi ſcelus tuum multiplicatum fuerit, quid facies ei? 6

INTERP. SYRIACA.

(†) perſonas magnatum, (i) et ſimul conſtituat pro illis. (k) omnes vias (l) Non adjiciam ampliùs ut dem tibi reſponſum de quo peccâſti. Tu enim probaberis, et non (m) Viri cordati (n) uſque in finem, (o) requiretur,

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Qui non accipit faciem principum, nec agnoſcitur magnificus coram paupere: quoniam opera manuum ſuarum ſunt omnes. In momento mortui ſunt Sodomitæ, & media nocte commoti ſunt Ægyptii: & pertranſibunt & auferentur præfecti abſque fortitudine manus. Quoniam oculi ejus ſuper vias filiorum hominum, & omnes greſſus eorum videbit. Non ſunt tenebræ nec umbra mortis, ut abſcondantur ibi qui operantur iniquitatem. Quoniam non ponet ultrà ſuper hominem ut vadat ad Deum in judicium. *Frangit fluctus maris qui multi* ſunt in *medio aquarum*; & ſtare facit alias ſequentes. Propterea nota faciet opera eorum, & converſa nocte tum conterentur. Pro impiis percuſſit eos in loco in quo videbunt. *Targum aliud: In loco impiorum eſt vindicta eorum, poſtquam viderint juſti & juſtificati fuerint in judicio.* Eò quòd receſſerunt ab eo, & omnes vias ejus non intellexerunt. Ut adducerent ad eum clamorem pauperis, & vociferationem afflictorum exaudiet. Et ipſe requieſcere faciet, & quis condemnabit? & auferet majeſtatem ſuam, & quis contemplabitur eam? & viſitaturus eſt ſcelus ſuper populum & ſuper filium hominis ſimul. Qui conſtituit regem filium hominis delatorem propter offendicula quæ ſunt in populo. Num enim poteſt fieri ut *dicatur* de Deo, Suſtinui, non diſperdam? Præter illud quod ego vidi doce me: ſi iniquitatem feci, non adjiciam. Num quod tecum eſt reſtituet ei, quia aſpernatus es? eliges enim tu, & non ego: & ſi quid ſcis, eloquere. Viri ſapientes corde dicant mihi, & vir ſapiens audiat me. Job non in ſcientia loquitur, & verba illius non ſunt cum intellectu. *Cupio ut* probetur Job uſque in ævum propter converſionem in viris iniquitatis. Quoniam addet ſuper peccatum ſuum prævaricationem, inter nos complodit, & multiplicat verba ſua coram Deo. 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37

CAP. XXXV.

ET reſpondit Elihu & ait: Nunquid hoc cogitâſti ad judicium, locutus es, Juſtior Deo ſum? Dixiſti enim: Quid proderit tibi, & quid utilitatis erit à peccato meo? Ego reſpondebo tibi verba & ſociis tuis tecum. Aſpice cœlos & vide, & contemplare æthera, quoniam celſiora te ſunt. Si peccâſti, quid facies contra eum? & ſi multiplicatæ ſunt prævaricationes tuæ, quid facies ei? 1 2 3 4 5

איוב : לו

? accipiet tua manu de quid vel : ei dabis quid , es justificatus Si
אִם־צָדַקְתָּ מַה־תִּתֶּן־לוֹ אוֹ מַה־מִיָּדְךָ יִקָּח׃ 7
multitudine Præ .tua justitia hominis filio & ,tua impietas tu sicut Viro
לְאִישׁ־כָּמוֹךָ רִשְׁעֶךָ וּלְבֶן־אָדָם צִדְקָתֶךָ׃ מֵרוֹב 8 9
.multorum brachium propter clamabunt ,facient clamare affectorum vi
עֲשׁוּקִים יַזְעִיקוּ יְשַׁוְּעוּ מִזְּרוֹעַ רַבִּים׃
? nocte in cantica dans , meus factor Deus ubi , dixit non Et
וְלֹא־אָמַר אַיֵּה אֱלוֹהַּ עֹשָׂי נֹתֵן זְמִרוֹת בַּלָּיְלָה׃ 10
.nos sapientes faciet cœli volatili præ &,terræ jumentis præ nos Docens
מַלְּפֵנוּ מִבַּהֲמוֹת אֶרֶץ וּמֵעוֹף הַשָּׁמַיִם יְחַכְּמֵנוּ׃ 11
.malorum superbiæ faciebus à : exaudiet non & , clamabunt Ibi
שָׁם יִצְעֲקוּ וְלֹא יַעֲנֶה מִפְּנֵי גְּאוֹן רָעִים׃ 12
non omnipotens & : Deus audiat non mendacium Veruntamen
אַךְ־שָׁוְא לֹא־יִשְׁמַע אֵל וְשַׁדַּי לֹא 13
judicium fac : eum videbis non ,dixeris quòd Etiam .illud intueatur
יְשׁוּרֶנָּה׃ אַף כִּי־תֹאמַר לֹא תְשׁוּרֶנּוּ דִּין 14
,ejus nasus visitavit nihil quia nunc Et .eum expectabis & ,ejus facies ad
לְפָנָיו וּתְחוֹלֵל לוֹ׃ וְעַתָּה כִּי־אַיִן פָּקַד אַפּוֹ 15
; suum os patefaciet vanè Ijob Et .valde copia in cognovit non &
וְלֹא־יָדַע בַּפַּשׁ מְאֹד׃ וְאִיּוֹב הֶבֶל יִפְצֶה־פִּיהוּ 16
.profundet crebrò sermones scientia absque
בִּבְלִי־דַעַת מִלִּין יַכְבִּר׃

CAP. XXXVI. לו

,tibi indicabo &,paululum me circa Sta : dixit & , Elihu addidit Et
וַיֹּסֶף אֱלִיהוּא וַיֹּאמַר׃ כַּתַּר־לִי זְעֵיר וַאֲחַוֶּךָּ 1
2 meam scientiam Tollam .sermones Deo adhuc quia
כִּי־עוֹד לֶאֱלוֹהַּ מִלִּים׃ אֶשָּׂא דֵעִי 3
non verè Nam .justitiam dabo meo operatori & ; longinquo à
לְמֵרָחוֹק וּלְפֹעֲלִי אֶתֵּן־צֶדֶק׃ כִּי־אָמְנָם לֹא־ 4
Deus Ecce .tecum scientiis perfectus ; mei sermones mendacium
שֶׁקֶר מִלָּי תְּמִים דֵּעוֹת עִמָּךְ׃ הֶן־אֵל 5
vivificabit Non .cordis potentia fortem abjiciet non & ; fortis
כַּבִּיר וְלֹא יִמְאָס כַּבִּיר כֹּחַ לֵב׃ לֹא־יְחַיֶּה 6
justo à prohibebit Non .tribuet afflictorum judicium & ; impium
רָשָׁע וּמִשְׁפַּט עֲנִיִּים יִתֵּן׃ לֹא־יִגְרַע מִצַּדִּיק 7
,perpetuum in eos collocabit & : solio in regibus cum & , suos oculos
עֵינָיו וְאֶת־מְלָכִים לַכִּסֵּא וַיֹּשִׁיבֵם לָנֶצַח
capientur , compedibus in vincti si Et .exaltabuntur &
וַיִּגְבָּהוּ׃ וְאִם־אֲסוּרִים בַּזִּקִּים יִלָּכְדוּן 8
, eorum opus eis indicabit Et .afflictionis funibus in
בְּחַבְלֵי־עֹנִי׃ וַיַּגֵּד לָהֶם פָּעֳלָם 9
eorū aurem revelabit Et .prævalebunt quia ; eorū prævaricationes &
וּפִשְׁעֵיהֶם כִּי יִתְגַּבָּרוּ׃ וַיִּגֶל אָזְנָם 10
,audierint Si .iniquitate ab revertantur quòd ,dicet & : correptionem ad
לַמּוּסָר וַיֹּאמֶר כִּי־יְשֻׁבוּן מֵאָוֶן׃ אִם־יִשְׁמְעוּ 11
.delectationibꝰ in suos annos & ; bono in suos dies finient ,servierint &
וְיַעֲבֹדוּ יְכַלּוּ יְמֵיהֶם בַּטּוֹב וּשְׁנֵיהֶם בַּנְּעִימִים׃
absque ebibunt & , transibunt missile per , audierint non si Et
וְאִם־לֹא יִשְׁמְעוּ בְּשֶׁלַח יַעֲבֹרוּ וְיִגְוְעוּ בִּבְלִי 12
, clamabunt non : nasum ponent corde hypocritæ Et .cognitione
דָעַת׃ וְחַנְפֵי־לֵב יָשִׂימוּ אָף לֹא יְשַׁוְּעוּ 13
: eorum anima adolescentia in Morietur .eos alligaverit cùm
כִּי אֲסָרָם׃ תָּמֹת בַּנֹּעַר נַפְשָׁם 14
: sua afflictione in afflictum Eruet .condictos inter eorum vita &
וְחַיָּתָם בַּקְּדֵשִׁים׃ יְחַלֵּץ עָנִי בְעָנְיוֹ 15
te removit si etiam Et .eorum aurem oppressione in revelabit &
וַיִּגֶל בַּלַּחַץ אָזְנָם׃ וְאַף הֲסִיתְךָ 16
requies & : eo pro angustam non latitudinem angustiæ ore ab
מִפִּי־צָר רַחַב לֹא־מוּצָק תַּחְתֶּיהָ וְנַחַת
: implevisti impii judicium Et .pinguedine plena tuæ mensæ
שֻׁלְחָנְךָ מָלֵא דָשֶׁן׃ וְדִין־רָשָׁע מָלֵאתָ 17
.sustentabunt judicium &,causam
דִּין וּמִשְׁפָּט יִתְמֹכוּ׃

Verſio VULG. LAT.

7 Porrò ſi juſtè egeris, quid donabis ei, aut quid de manu tua 8 accipiet? Homini, qui ſimilis tuî eſt, nocebit impietas tua: & filium hominis adjuvabit 9 juſtitia tua. Propter multitudinem calumniatorum clamabunt: & ejulabunt propter 10 vim brachii tyrannorum. Et non dixit; Ubi eſt Deus, qui fecit me: qui dedit carmina 11 in nocte? Qui docet nos ſuper jumenta terræ, & ſuper 12 volucres cœli erudit nos. Ibi clamabunt, & non exaudiet, propter ſuperbiam malorum. 13 Non ergò fruſtrà audiet Deus, & Omnipotens cauſas ſingu- 14 lorum intuebitur. Etiam cùm dixeris; Non conſiderat: judicare coram illo, & expecta 15 eum. Nunc enim non infert furorem ſuum, nec ulciſcitur 16 ſcelus valdé. Ergò Iob fruſtrà aperit os ſuum, & abſque ſcientia verba multiplicat.

CAP. XXXVI.

1 ADdens quoque Eliu, hæc 2 locutus eſt; Suſtine me paululùm, & indicabo tibi: adhuc enim habeo quod pro Deo lo- 3 quar. Repetam ſcientiam meam à principio, & operatorem meum probabo juſtum. 4 Verè enim abſque mendacio ſermones mei, & perfecta ſci- 5 entia probabitur tibi. Deus potentes non abjicit, cùm & 6 ipſe ſit potens. Sed non ſalvat impios, & judicium pau- 7 peribus tribuit. Non auferet à juſto oculos ſuos, & reges in ſolio collocat in perpetuum, 8 & illi eriguntur. Et ſi fuerint in catenis, & vinciantur funi- 9 bus paupertatis: Indicabit eis opera eorum, & ſcelera eorum, quia violenti fuerunt. 10 Revelabit quoque aurem eorū ut corripiat: & loquetur, ut 11 revertantur ab iniquitate. Si audierint & obſervaverint, complebunt dies ſuos in bono, 12 & annos ſuos in gloria: Si autē non audierint, tranſibunt per gladium, & conſumentur 13 in ſtultitia. Simulatores & callidi provocant iram Dei, neque clamabunt cùm vincti fue- 14 rint. Morietur in tempeſtate anima eorum, & vita eorum 15 inter effœminatos. Eripiet de anguſtia ſua pauperem, & revelabit in tribulatione aurem 16 ejus. Igitur ſalvabit te de ore anguſto latiſſimè, & non habente fundamentum ſubter ſe: requies autem menſæ tuæ erit 17 plena pinguedine. Cauſa tua quaſi impii judicata eſt, cauſam judiciúmque recipies.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

7 † (ε) Ἐπεὶ δὲ εἰ δίκαιος εἶ, τί δώσεις αὐτῷ; † ἢ τί ἐκ χειρός σου λήψεται; † 8 Ἀνδρὶ τῷ ὁμοίῳ σου ἡ ἀσέβειά σου, † καὶ υἱῷ ἀνθρώπου ἡ δικαιοσύνη σου. 9 † Ἀπὸ πλήθους συκοφαντούμενοι κεκράξονται, † βοήσονται ἀπὸ βραχίονος πολλῶν. 10 † Καὶ οὐκ εἶπε, Ποῦ ἐστιν ὁ θεὸς ὁ ποιήσας με, ὁ κατατάσσων φυλακὰς νυκτερινάς, 11 † Ὁ διορίζων με ἀπὸ τετραπόδων γῆς, (ζ) ἀπὸ δὲ πετεινῶν οὐρανοῦ; 12 † Ἐκεῖ (η) κεκράξονται, καὶ οὐ μὴ εἰσακούσῃ, (θ) καὶ ἀπὸ ὕβρεως πονηρῶν. 13 † Ἄτοπα γὰρ (ι) οὐ βούλεται ἰδεῖν ὁ κύριος, † αὐτὸς γὰρ ὁ παντοκράτωρ 14 ὁρατής ἐστι Τῶν συντελούντων τὰ ἄνομα, (κ) καὶ σώσει με· † κρίθητι δὲ ἐναντίον αὐτοῦ, εἰ δύνασαι αὐτὸν αἰνέσαι, 15 ὡς ἔστι † Καὶ νῦν. ὅτι οὐκ ἔστιν ἐπισκεπτόμενος ὀργὴν αὐτοῦ, † καὶ οὐκ ἔγνω 16 παράπτωμά τι σφόδρα, † Καὶ Ἰὼβ ματαίως ἀνοίγει τὸ στόμα αὐτοῦ, † ἐν ἀγνωσίᾳ ῥήματα βαρύνει.

Quoniam igitur juſtus es; 7 quid dabis ei? aut quid de manu tua accipiet? Viro ſi- 8 mili tuî impietas tua, & filio hominis juſtitia tua. A mul- 9 titudine calumniis appetiti vociferabuntur: clamabunt à brachio multorum. Et non 10 dixit; ubi eſt Deus qui fecit me, qui diſtribuit cuſtodias nocturnas, Qui (b) ſeparat me 11 à quadrupedibus terræ, & à volatilibus cœli? * Ibi voci- 12 ferabuntur; & non exaudies, & ab injuria malorum. Ab- 13 ſurda enim non vult Dominus videre: ipſe enim Omnipotens (c) perſpector eſt eorum, Qui 14 conſummant iniqua, & ſalvabit me: judicare autem coram eo, ſi potes collaudare eum; ſicuti eſt, (d) Et nunc, 15 quia non eſt viſitans iram ſuam, neque cognovit delictum aliquod vehementer. Et Job vanè aperit os ſuum: 16 in ignorantia verba (e) aggravat.

ΚΕΦ. λϛ'.

1 † ΠΡοσθεὶς δὲ (α) ἔτι Ἐλιοῦς, λέγει, 2 † Μεῖνόν με μικρὸν ἔτι, ἵνα διδάξω σε· 3 ἔτι (β) γὰρ ἐν ἐμοί ἐστι λέξις. † Ἀναλαβὼν τὴν ἐπιστήμην μου μακρὰν, † ἔργοις δέ μου Δίκαια ἐρῶ ἐπ' ἀληθείας, 4 † καὶ οὐκ ἄδικα ῥήματα ἀδίκως συνήσεις. 5 † (γ) Γίνωσκε δὲ, ὅτι ὁ κύριος οὐ μὴ ἀποποιήσηται τὸν ἄκακον, † δυνατὸς ἰσχύϊ καρδίας 6 (δ) Ἀσεβῆ οὐ μὴ ζωοποιήσῃ, 7 † καὶ κρίμα πτωχῶν δώσει. † Οὐκ ἀφελεῖ ἀπὸ δικαίου (ε) ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ, † καὶ μετὰ βασιλέων εἰς θρόνον, (ζ) καὶ καθιεῖ αὐτοὺς (η) εἰς νῖκος, καὶ ὑψωθήσονται. 8 † Καὶ οἱ πεπεδημένοι ἐν χειροπέδαις, (θ) συσχεθήσονται ἐν σχοινίοις πενίας. † 9 Καὶ ἀναγγελεῖ αὐτοῖς τὰ ἔργα αὐτῶν, † καὶ τὰ παραπτώματα αὐτῶν, (ι) ὅτι ἰσχύσουσιν. 10 † Ἀλλὰ τοῦ δικαίου εἰσακούσεται· † καὶ εἶπεν ὅτι ἐπιστραφήσονται ἐξ ἀδικίας. 11 † Ἐὰν ἀκούσωσι, καὶ δουλεύσωσι, † συντελέσουσι τὰς ἡμέρας αὐτῶν ἐν ἀγαθοῖς, † καὶ τὰ ἔτη αὐτῶν ἐν εὐπρεπείαις. 12 † Ἀσεβεῖς δὲ οὐ διασώζει, παρὰ τὸ μὴ βούλεσθαι αὐτοὺς εἰδέναι τὸν κύριον, † καὶ 13 διότι νουθετούμενοι ἀνήκοοι ἦσαν. † Καὶ ὑποκριταὶ καρδίᾳ τάξουσι θυμόν, † οὐ 14 βοήσονται, ὅτι ἔδησεν αὐτούς. † (κ) Ἀποθάνοι τοίνυν ἐν νεότητι ἡ ψυχὴ αὐτῶν, † ἡ δὲ ζωὴ αὐτῶν τιτρωσκομένη (λ) ὑπὸ 15 ἀγγέλων, † Ἀνθ' ὧν ἔθλιψαν ἀσθενῆ καὶ ἀδύνατον, † κρίμα δὲ πραέων ἐκθήσει. 16 † Καὶ προσεπηπάτησέν σε ἐκ στόματος ἐχθροῦ, † ἄβυσσος κατάχυσις ὑποκάτω 17 αὐτῆς, † καὶ κατέβη τράπεζά σου πλήρης πιότητος. † (μ) Οὐχ ὑστερήσει δὲ ἀπὸ δικαίων κρίμα,

CAP. XXXVI.

ADjiciens autem adbuc Eli- 1 us, ait; Suſtine me puſillùm 2 adhuc, ut te doceam; adhuc enim eſt in me ſermo. Suſci- 3 piens ſcientiam meam de longè: (a) operibus autem meis, Quæ juſta ſunt loquar, in 4 veritate, & non injuſta verba injuſtè (b) intelliges. Cognoſce autem, quia Dominus 5 non abjiciet innocentem: fortis (c) robore cordis Non vi- 6 vificabit impium: & judicium pauperum dabit: Non auferet 7 à juſto oculos ſuos: & cum regibus in ſolio: & (d) ſedere eos faciet in (e) victoria, & exaltabuntur. Et qui 8 compediti ſunt in compedibus, capientur in funibus paupertatis; Et annuntiabit eis opera 9 eorum, & delicta eorum, (f) quoniam valebunt; Sed 10 juſtum exaudiet: & dixit, quia convertentur ab iniquitate. Si audierint, & ſer- 11 vierint; complebunt dies ſuos in bonis, & annos ſuos (g) in decoribus: Impios verò non 12 facit ſalvos, eò quòd noluerunt ſcire Dominum; & quòd, cùm monerentur, inobedientes erant: Et hypocritæ corde 13 (h) ordinabunt furorem: non clamabunt, quia ligavit eos. Moriatur ergò in juventute 14 anima eorum: & vita eorum vulnerata ab angelis, Eò quòd 15 tribulaverunt infirmum, & invalidum: judicium verò manſuetorum (i) exponet; (k) Et 16 ſuperdecepit te ab ore (l) inimici; (m) abyſſus, effuſio ſub ea, & deſcendit menſa tua plena pinguedine; Non deficiet 17 autem à juſtis judicium,

MS. A. (ε) Καὶ εἰ δίκαιος εἶ, (ζ) καὶ ἀπὸ πετεινῶν (η) κέκραξον, (θ) ἀπὸ ὕβρεως (ι) ἰδεῖν οὐ βούλεται ὁ κύριος, (κ) ὃς σώσει με·

Κεφ. λϛ'. MS. A. (α) Ἐλιοῦς ἔτι, λέγει, Μεικρόν με μεῖνον ἔτι, (β) γάρ μοι ἔνεστιν λέξις. (γ) Γινώσκω δὲ ἐγώ, ὅτι (δ) Ἀσεβῶν οὐ μὴ ζωοποιήσει, (ε) ὀφθαλμὸν αὐτοῦ, (ζ) καθιεῖ (η) καὶ εἰς νῖκος ὑψωθήσεται, (θ) συσχεθήσονται (ι) ὅταν ἰσχύσωσιν. (κ) Ἀποθάνῃ (λ) εἴη ὑπὸ ἀγγέλων, (μ) Καὶ οὐχ ὑστερήσει ἀπὸ

תרגום TARGUM.

אין זכית מה תיהב ליה או מה מן אידך יקבל : לגבר דרשיעא דכמך חיובך ולבר נש דכיא צדקתך : מסוגעי טלומין מקבלין יבעון מתקוף אדרע דורבניא : 7 8 9
ולא אמר האן אלהא דעבדני דמסדרין אנגלי מרומא קדמוי תושבחן בליליא : דמאלף יתנא מבעירי ארעא ומעופא דשמיא יחכמננא : תמן יקבלון ולא 10 11 12
אעני מן קדם גיותנותא דבישיא : ברם שקרא לא ישמע אלהא ושדי לא יסכנה : לחוד ארום תימר לא יסכנה אדין קדמוי ותוריך ליה : וכדון ארום כאלו 13 14 15
לא הוה אסער רוגזיה ולא ידע לאפושי לחדא : ואיוב למא פצי פומיה מדלית מנדעא מליא יסגי : 16

לו

ואוסיף אליהוא ואמר : אמתין לי צבחר ואחוינך ארום תוב לאלהא מליא : אטול מנדעי מן רחיק ולעבד יתי אתן צדקתא : ארום בקושטא לא שקרא 1 2 3 4
מלי שלים מנדעתא עמך : הא אלהא רבא לא ירחק צדיקא מטול דהוא רב חילא וחכים לבא : לא יחיי חייבא ודין ענייי יהב : לא ימנע מצדיקיא עיניה ועם 5 6 7
מלכיא תקניא למיתב על כורסי מלכותא ויותיבנון לעלמא ומתגבהין : ואין אסירין רשיעיא בשושלון מתאחדין באשלי סגופא : ויחוי להון עובדיהון 8 9
ומרדיהון ארום אתגברו : וגלי משמעהון למרדותא ואמר דיתובון מן עובדיהון : אין ישמעון ויפלחין ליה ישלמון יומיהון בטב 10 11
ושניהון במזמוטין : ואין לא שמעין בזיני קרבא יעברון ויתנגדון מדלית מנדעא : ודהוהי לבא ישוון רוגזא לא יבעון רחמיה ארום כפתינון : תמות בטליות 12 13 14
נפשהון וחיתהון היך מרי זנו : יפצי עניא בסגופיה ומפרסם ברוחקא משמעהון : ואף פצאנך מפום מעיקא אפתי דלא יתעק באתרה ובניח פתורך מליא 15 16
דיהנא : ודין דחייבא אשלמתא דין והלכתא סעדין : 17

Versio SYRIACA.

7 * ܘܐܢ ܗܘܝܬ ܙܕܝܩ ܡܢܐ ܡܘܬܪ ܠܗ܂ ܐܘ ܡܢܐ ܢܣܒ ܡܢܟ܂ * ܠܒܪܢܫܐ ܗܘ ܥܘܠܟ܂ ܘܠܒܪܢܫܐ ܗܘ
8 ܙܕܝܩܘܬܟ܂ * ܡܢ ܣܘܓܐܐ ܕܛܠܘܡܝܐ ܢܩܥܘܢ܂ ܘܢܓܥܘܢ ܡܢ ܕܪܥܐ ܕܣܓܝܐܐ܂ * ܘܠܐ ܐܡܪܘ ܐܝܟܘ ܐܠܗܐ ܕܥܒܕܢ܂
9 10 ܕܝܗܒ ܡܫܒܚܬܐ ܒܠܠܝܐ܂ * ܡܢ ܚܝܘܬܐ ܕܐܪܥܐ ܘܡܢ ܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ ܚܟܡܢ܂ * ܬܡܢ ܢܩܥܘܢ܂ ܘܠܐ ܥܢܐ
11 12 ܠܗܘܢ܂ * ܡܛܠ ܫܘܒܗܪܐ ܕܒܝܫܐ ܗܘ ܚܘܣܪܢܐ܂ ܠܐ ܢܫܡܥ ܐܠܗܐ܂ ܘܐܦܠܐ ܐܠܗܐ ܢܫܒܚܝܘܗܝ܂ * ܘܐܦ ܐܡܪܬ ܠܐ
13 14 ܐܫܒܚܝܘܗܝ܂ ܕܝܢܐ ܐܡܪ ܩܕܡܘܗܝ܂ ܘܨܠܝ ܠܗ܂ * ܡܛܠ ܕܥܕܡܐ ܠܗܫܐ ܠܐ ܦܩܕ ܠܪܘܓܙܗ܂ ܘܠܐ ܐܒܐܫ ܠܚܕ܂ * ܐܝܘܒ ܕܝܢ
15 16 ܣܪܝܩܐܝܬ ܦܬܚ ܦܘܡܗ܂ ܘܕܠܐ ܝܕܥܬܐ ܡܣܓܐ ܡܠܐ܂
* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܘ *
1 * ܘܐܘܣܦ ܐܠܝܗܘ ܘܐܡܪ܂ * ܟܬܪ ܠܝ ܩܠܝܠ ܘܐܚܘܝܟ܂ ܕܥܕ ܐܝܬ ܠܐܠܗܐ ܡܠܐ܂ * ܐܫܩܘܠ ܝܕܥܬܝ ܡܢ ܪܘܚܩܐ܂
2 3 ܘܠܥܒܘܕܝ ܐܬܠ ܙܕܩܐ܂ * ܫܪܝܪܐ ܓܝܪ ܕܓܠܐ ܗܘܘ ܡܠܝ܂ ܘܕܠܐ ܡܘܡ ܗܘܐ ܝܕܥܬܝ ܥܡܟ܂ * ܗܐ ܐܠܗܐ ܥܫܝܢܐ܂
4 5 ܠܐ ܡܣܠܐ ܠܕܟܝܐ ܐܝܟ ܚܠܒܐ܂ * ܠܐ ܡܚܐ ܠܪܫܝܥܐ܂ ܘܕܝܢܐ ܠܡܣܟܢܐ ܥܒܕ܂ * ܠܐ ܢܦܪܘܫ ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ
6 ܠܙܕܝܩܐ܂ ܘܥܡ ܡܠܟܐ ܥܠ ܟܘܪܣܝܐ܂ ܘܢܘܬܒ ܐܢܘܢ ܠܥܠܡ܂ ܘܢܬܥܫܢܘܢ܂ * ܘܐܢ ܐܣܝܪܝܢ ܒܫܫܠܬܐ
7 ܒܡܘܬܐ ܢܚܬܘܢ ܠܡܣܟܢܘܬܐ܂
8 * ܘܢܚܘܐ ܐܢܘܢ ܥܒܕܝܗܘܢ ܘܣܟܠܘܬܗܘܢ܂ ܟܕ ܐܬܥܫܢܘ܂ * ܘܢܓܠܐ ܐܕܢܝܗܘܢ ܠܡܪܕܘܬܐ܂ ܘܢܐܡܪ ܕܢܬܦܢܘܢ
9 10 ܡܢ ܥܘܠܐ܂ * ܐܢ ܢܫܡܥܘܢ ܘܢܥܒܕܘܢ܂ ܘܢܫܠܡܘܢ ܝܘܡܝܗܘܢ ܒܛܒܬܐ܂ ܘܫܢܝܗܘܢ ܒܒܣܝܡܘܬܐ܂ * ܘܐܢ
11 12 ܠܐ ܢܫܡܥܘܢ܂ ܒܡܘܬܐ ܢܥܒܪܘܢ܂ ܘܢܐܒܕܘܢ ܕܠܐ ܝܕܥܬܐ܂ * ܘܡܥܩܡܝ ܠܒܐ ܢܐܒܕܘܢ܂ ܘܠܐ ܢܩܥܘܢ܂
13 ܒܪܘܓܙܐ ܢܓܥܘܢ܂ ܟܕ ܢܐܣܘܪ ܐܢܘܢ܂ * ܬܡܘܬ ܒܛܠܝܘܬܐ ܢܦܫܗܘܢ܂ ܘܚܝܝܗܘܢ ܒܟܦܢܐ܂ * ܢܦܨܐ
14 15 ܡܣܟܢܐ ܒܡܘܟܟܗ܂ ܘܢܓܠܐ ܒܐܘܠܨܢܐ ܐܘܪܚܗܘܢ܂ * ܘܐܦ ܢܦܨܝܟ ܡܢ ܦܘܡܐ ܕܡܚܒܠܢܐ܂ ܘܪܘܝܚܐ ܚܠܦ
16 ܐܘܠܨܢܐ܂ ܘܬܩܘܡ ܦܬܘܪܟ ܡܠܝܐ ܕܘܫܢܐ܂ * ܘܕܝܢܐ ܕܪܫܝܥܐ ܬܕܘܢ ܡܠܝܐ܂ ܘܒܕܝܢܐ ܢܬܐܚܕܘܢ܂
17

Versio ARABICA.

* وان كنت صديقا * فماذا ينفعه * او ماذا يوخذ منك * لنفسك اثمك * ولنفسك صلاحك * من كثرة الاثم 7 8
يصرخون * ومن الظلم الكثير يضجون * ولم يقولوا اين الله الذي صنعنا * الذي اعطا الفكر بالليل 9 10
* من قدام حيوانة الارض ومن طاير السماء حكمنا * هنالك يعجون فلا يجيبهم * من اجل ان عظمة 11 12
المنافقين نقصا * ليس يسمع الله * وايضا ليس الله يحمدها * وان انت قلت اني لا احمدك * فاقض قدامه 13 14
واضرع له * فانه حتي الان لم يامر رجزه * ولا يسي الي احد * وايوب باطلا فتح فاه * وبغير معرفة يكثر 15 16
القول *

* الفصل السادس والثلثون *

* فاعاد اليهو وقال * امسك لي قليلا فاخبرك * من اجل ان لله كلاما ايضا * فاني احمل معرفتي من بعيد * 1 2
ولصانعي اجعل البر * ولكن بالحق كان قولي بغير كذب * وبلا عيب معرفتي عندك * فان الله العظيم 3 4
لا يرفض الذي هو نقيا مثل اللبن * والمنافق ليس يحيا * والقضاء للبوس جعله * فانه ليس يفارق 5 6
الصديق من قدام عينيه * يقعد الملوك على الكرسي ويرفعون للدهر * وان كانوا ماسورين في السلاسل 7 8
يهبطون بالبواد الي المسكنة * ويوريهم اعمالهم واساتهم حين تجبروا * ويظهر اذانهم للموعظة * فيقول ان 9 10
يتوبوا من الاثم * ويسمعون ويعملون ويتمون ايامهم بالخير * وسنيهم بالسرور * وان لم يسمعوا بالهلاك 11 12
يذهبون * ويبادون بلا معرفة * وحلوف القلوب يبيدون * ولا يصرخون بالرجز * يعجون اذا ما ربطهم * ويموت 13 14
انفسهم بشبابهم * وحياتهم بالجوع * ينجوا المتواضع بتواضعه * ويظهر طريقهم بالضري * وايضا ينجيك من فم 15 16
المودي * والسعة بدل الضيقة * ويثبت مايدتك مملوة خيرا * ويدين المنافقين بتمام القضاء وبالقضاء يوخذون * 17

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Et si justus fueris, quid proderit illi? aut quid accipietur à te? 7 *Animæ tuæ scelus tuum, et animæ tuæ probitas tua.* 8 *Ob nimiam iniquitatem clamabunt, & propter oppressionem vociferabuntur.* 9 *Et non dicent, ubi est De⁹ qui fecit nos; qui dedit cogitationem in nocte?* 10 *Præ bestia terræ, & volucribus cœli sapientiores nos fecit.* 11 *Ibi ejulabunt, et non exaudies eos;* 12 *Quia superbia impiorum est (a) defectus: non exaudiet Deus, nec etiam Deus eam laudabit:* 13 *Si tu dixeris, Non laudabo eum, judicium dic coram ipso; & supplica ei,* 14 *Quoniam usque adhuc non præcepit furori suo, & (b) non malefacit cuiquã.* 15 *Job autem temerè aperuit os suum, & absque scientia multiplicat sermones.* 16

CAP XXXVI.

Subdens autē Elihu dixit, 1 *Sustine me parùm, et indicabo tibi. Deo superest adhuc sermo,* 2 *Quoniam sumam scientiã meam de longè, & Factori meo faciam justitiam;* 3 *At verè (a) fuit sermo meus absq; mendacio, & absque vitio scientia mea apud te;* 4 *(b) Quia Deus excelsus non respuit eum qui est purus sicut lac,* 5 *Et impius non vivit: & judicium pauperibus facit,* 6 *Quia non (c) separatur justus à conspectu ejus: sedere facit reges super solium, & extollentur in æternum.* 7 *Etiamsi fuerint vincti catenis, cum interitu descendent ad paupertatem:* 8 *Et ostendet eis opera corũ ac scelera eorum, cùm fuerint insolentes:* 9 *Et revelabit aures eorum ad correptionem, & dicet ut ut convertantur à scelere suo,* 10 *Et audiant ac faciant, & compleant dies suos in bono, & annos suos cum lætitia.* 11 *Quòd si non audierint, in interitum abibunt, & peribunt absque scientia.* 12 *Perversi autem cordibus peribunt, & non clamabunt: in furore mugient cùm vincet eos,* 13 *Et morientur animæ ipsorum in juventute sua, & vita illorum in fame.* 14 *Liberabitur humilis ob suam humilitatem, & revelabit viam eorum in tribulatione:* 15 *Et quoque liberabit te ab ore nocentis, & latitudinem pro angustia, & permanebit mensa tua plena (d) bonis,* 16 *Judicabit impios pleno judicio, & in judicio deprehendentur.* 17

INTERP. SYRIACA.

(a) in vanum: (b) non nocet animæ. CAP. xxxvi. (a) fuerunt sermones mei mendaces, (b) Ecce Deus (c) recedet (d) pinguedine,

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Si justus es, quid dabis ei, aut quid de manu tua accipiet? Viro *impio* qui similis est tui iniquitas tua est, & filio hominis justo justitia tua. Propter multitudinem ca- 7 8 9
lumniatorum clamant: deprecabuntur propter fortitudinem brachii principum. Et non dixit: Ubi est Deus qui fecit me, ante cujus conspectum angeli excelsi ordi- 10
nant laudem in nocte? Qui docet nos præ jumentis terræ, & præ avibus cœli sapientes nos efficit. Ibi clamant, & non respondet propter superbiam malignantium. 11 12
Attamen iniquitatem non audiet Deus, & omnipotens non intuebitur eam. Utique enim dices: Non intuebitur eum: judica coram illo, & spera in eo. Et nunc per- 13 14
inde ac si non fuisset, visitabit furore suo, & nescivit multiplicare nimis. Job enim in vanum aperit os suum, absque scientia verba multiplicat. 15 16

CAP. XXXVI.

Et addidit Elihu, & ait: Expecta me paulisper, & annunciabo tibi, quoniam adhuc sunt sermones pro Deo. Levabo scientiam meam à longè, & ei qui fecit me 1 2 3
tribuam justitiam. Quoniam reverà non sunt mendacium verba mea, perfectus scientiarum est apud te. Ecce Deus maximus non aspernabitur justum, eo quòd ipse 4 5
est magnus virtute & sapiens corde. Non vivificabit sceleratum, sed judicium pauperum tribuet. Non auferet à *justis* oculos suos; & cum regibus rectis sedebit super 6 7
solium regni, & sedere faciet eos in æternum & exaltabuntur. Et si vincti fuerint impii catenis, comprehensi funibus afflictionis; Tunc indicabit eis opera eorum & 8 9
prævaricationes eorum quoniam invaluerunt. Et revelat auditum eorum ad correctionem, & dicit ut convertantur ab operibus suis malis quæ similia sunt vanitati. 10
Si obedierint & servierint *ei*, consument dies suos in bono, & annos suos in deliciis. Quòd si non audierint, per *arma belli* transibunt, & deficient absque scientia. Et 11 12
superbi corde ponent iram, non deprecabuntur miserationem ejus, quoniam ligavit eos. Morietur in infantia anima eorum, & vita eorum sicut scortationis mancipia. 13 14
Liberabit pauperem in afflictione ejus, & manifestabit in tribulatione auditum eorum. Veruntamen liberavit te de ore angustiæ; dilatavit ne esset angustia in loco 15 16
ejus, & in requie mensam tuam replevit pinguedine. Et judicium impii consummâsti, jus et consuetudo auxiliantur. 17

propitiationis multitudo & : sufficientia in te incitet fortè ne , ira Quia
18 כִּי־חֵמָה פֶּן־יְסִיתְךָ בְשָׂפֶק וְרָב־כֹּפֶר
,aurum non ? tuum clamorem æstimabit Nunquid .te faciet declinare non
18 אַל־יַטֶּךָּ׃ הֲיַעֲרֹךְ שׁוּעֲךָ לֹא בְצָר 19
ascendendum ad nocte anheles Ne ? potentiæ fortitudines omnes nec
19 וְכֹל מַאֲמַצֵּי־כֹחַ׃ אַל־תִּשְׁאַף הַלָּיְלָה לַעֲלוֹת 20
hoc super quia ,iniquitatem ad aspicias ne Cave .se sub populos
20 עַמִּים תַּחְתָּם׃ הִשָּׁמֶר אַל־תֵּפֶן אֶל־אָוֶן כִּי עַל־זֶה 21
quis ; sua potentia in extollet Deus Ecce .afflictionem propter elegisti
21 בָּחַרְתָּ מֵעֹנִי׃ הֶן־אֵל יַשְׂגִּיב בְּכֹחוֹ מִי 22
, dixit quis Et ? ejus viam ,illum super visitavit Quis ? docens ipse sicut
22 כָמֹהוּ מוֹרֶה׃ מִי־פָקַד עָלָיו דַּרְכּוֹ וּמִי־אָמַר 23
: ejus opus magnifices ut Memento ? iniquitatem es operatus
23 פָּעַלְתָּ עַוְלָה׃ זְכֹר כִּי־תַשְׂגִּיא פָעֳלוֹ 24
: illud viderunt homines Omnes .homines sunt intuiti quod
24 אֲשֶׁר שֹׁרְרוּ אֲנָשִׁים׃ כָּל־אָדָם חָזוּ־בוֹ 25
.sciemus non & ,magnus Deus Ecce .longè à intuebitur homo
25 אֱנוֹשׁ יַבִּיט מֵרָחוֹק׃ הֶן־אֵל שַׂגִּיא וְלֹא נֵדָע 26
stillas minuet Quia .inquisitio non & ejus annorum Numeri
26 מִסְפַּר שָׁנָיו וְלֹא־חֵקֶר׃ כִּי יְגָרַע נִטְפֵי־ 27
, nubes stillabunt Quam .ej⁹ vaporē ad pluviam stillabunt : aquarum
27 מָיִם יָזֹקּוּ מָטָר לְאֵדוֹ׃ אֲשֶׁר־יִזְּלוּ שְׁחָקִים 28
expansiones intelliget si Insuper .multum hominem super stillabunt
28 יִרְעֲפוּ עֲלֵי אָדָם רָב׃ אַף אִם־יָבִין מִפְרְשֵׂי־ 29
,suū lumē ipsum super extendit Ecce ? sui tabernaculi fremitus ; nubis
29 עָב תְּשֻׁאוֹת סֻכָּתוֹ׃ הֵן־פָּרַשׂ עָלָיו אוֹרוֹ 30
escam dabit ,populos judicabit ipsas per Quia .operuit maris radices &
30 וְשָׁרְשֵׁי הַיָּם כִּסָּה׃ כִּי־בָם יָדִין עַמִּים יִתֶּן־אֹכֶל 31
.occurrente in ipsam super præcepit & ,lucem operuit devexa Super .copiam ad
31 לְמַכְבִּיר׃ עַל־כַּפַּיִם כִּסָּה־אוֹר וַיְצַו עָלֶיהָ בְמַפְגִּיעַ׃ 32
.ascendente super furoris Acquisitio .ej⁹ amicus eum super Annunciabit
32 יַגִּיד עָלָיו רֵעוֹ מִקְנֶה אַף עַל־עוֹלֶה׃ 33

CAP. XXXVII. לז

Audite .suo loco è luxatur & ,mei cor expavescit hoc ad Etiam
1 אַף־לְזֹאת יֶחֱרַד לִבִּי וְיִתַּר מִמְּקוֹמוֹ׃ שִׁמְעוּ 2
.egredietur ejus ore ex eloquium & , ejus sonitum tremore cum audiendo
שָׁמוֹעַ בְּרֹגֶז קֹלוֹ וְהֶגֶה מִפִּיו יֵצֵא׃
.terræ alas super ejus lux & ,ejus directio - cœlum omne Subter
תַּחַת־כָּל־הַשָּׁמַיִם יִשְׁרֵהוּ וְאוֹרוֹ עַל־כַּנְפוֹת הָאָרֶץ׃ 3
non Et .suæ altitudinis voce in Tonabit .voce rugiet ipsum Post
אַחֲרָיו יִשְׁאַג־קוֹל יַרְעֵם בְּקוֹל גְּאוֹנוֹ וְלֹא 4
sua voce in Deus Tonabit .ej⁹ sonitus fuerit auditus cùm ,ea tardabit
יְעַקְּבֵם כִּי־יִשָּׁמַע קוֹלוֹ׃ יַרְעֵם אֵל בְּקוֹלוֹ 5
, dicet nivi Quia .nesciemus & , magnalia faciens ; mirabilia
נִפְלָאוֹת עֹשֶׂה גְדֹלוֹת וְלֹא נֵדָע׃ כִּי לַשֶּׁלֶג יֹאמַר 6
.suæ fortitudinis pluviarum imbri & : pluviæ imbri & , terram esto
הֱוֵא־אָרֶץ וְגֶשֶׁם מָטָר וְגֶשֶׁם מִטְרוֹת עֻזּוֹ׃
.ipsius opus homines omnes sciendum ad : obsignabit homines omnes manu In
בְּיַד־כָּל־אָדָם יַחְתּוֹם לָדַעַת כָּל־אַנְשֵׁי מַעֲשֵׂהוּ׃ 7
.habitabit suis habitaculis in & ,latibulum ipsum in bestia ingredietur Et
וַתָּבוֹא חַיָּה בְמוֹ־אָרֶב וּבִמְעוֹנֹתֶיהָ תִשְׁכֹּן׃ 8
Dei flatu A .frigus dispergentibus à & ,turbo veniet penetrali De
מִן־הַחֶדֶר תָּבוֹא סוּפָה וּמִמְּזָרִים קָרָה׃ מִנִּשְׁמַת־אֵל 9 10
defatigabit serenitas Etiam .angusto in aquarū latitudo & : gelu dabit
יִתֶּן־קָרַח וְרֹחַב מַיִם בְּמוּצָק׃ אַף־בְּרִי יַטְרִיחַ 11
se volvens circuitibus ipsa Et .sui luminis nubem faciet spargere : nubē
עָב יָפִיץ עֲנַן אוֹרוֹ׃ וְהוּא מְסִבּוֹת מִתְהַפֵּךְ 12
facies super eis præcipiet quæ omnia eos operandum ad ,ejus consiliis in
בְּתַחְבּוּלֹתָו לְפָעֳלָם כֹּל אֲשֶׁר יְצַוֵּם עַל־פְּנֵי
.terra in orbis
תֵבֵל אָרְצָה׃

Versio VULG. LAT.

18 Non te ergò superet ira, ut aliquem opprimas: nec multitudo
19 do donorum inclinet te. Depone magnitudinem tuā absque tribulatione, & omnes
20 robustos fortitudine. Ne protrahas noctem, ut ascendant
21 populi pro eis. Cave ne declines ad iniquitatem: hanc enim cœpisti sequi post miseriam,
22 riam, Ecce, Deus excelsus in fortitudine sua, & nullus ei
23 similis in legislatoribus. Quis poterit scrutari vias ejus? aut quis potest ei dicere, Operatus
24 peratus es iniquitatem? Memento quòd ignores opus ej⁹,
25 de quo cecinerunt viri. Omnes homines vident eum, unusquisque
26 que intuetur procul. Ecce, Deus magnus vincens scientiam nostram: numerus annorum
27 ejus inæstimabilis. Qui aufert stillas pluviæ, & effundit imbres
28 bres ad instar gurgitum. Qui de nubibus fluunt, quæ prætexunt
29 texunt cuncta desuper. Si voluerit extendere nubes quasi
30 tentorium suum, Et fulgurare lumine suo desuper, cardines
31 quoque maris operiet. Per hæc enim judicat populos, & dat
32 escas multis mortalibus. In manibus abscondit lucem, & præcipit ei ut rursus adveniat.
33 Annuntiat de ea amico suo, quòd possessio ejus sit, & ad eam possit ascendere.

CAP. XXXVII.

1 Super hoc expavit cor meum, & emotum est de loco suo.
2 Audite auditionem in terrore vocis ejus, & sonum de ore
3 illius procedentem. Subter omnes cœlos ipse considerat, & lumen illius super terminos
4 nos terræ. Post eum rugiet sonitus, tonabit voce magnitudinis suæ; & non investigabitur, cùm audita fuerit vox
5 ejus. Tonabit Deus in voce sua mirabiliter, qui facit magna
6 gna & inscrutabilia. Qui præcipit nivi ut descendat in terram, & hyemis pluviis, &
7 imbri fortitudinis suæ. Qui in manu omnium hominum signat, ut noverint singuli opera
8 ra sua. Ingredietur bestia latibulum, & in antro suo morabitur.
9 bitur. Ab interioribus egredietur tempestas, & ab Arcturo
10 frigus. Flante Deo concrescit gelu, & rursum latissimæ funduntur
11 duntur aquæ. Frumentum desiderat nubes, & nubes spargūt
12 lumen suum. Quæ lustrant per circuitum, quocumq; eas voluntas gubernantis duxerit, ad omne quod præceperit illis super faciem orbis terrarum:

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

18 Θυμὸς δὲ ἐπ᾽ ἀσεβεῖς (ν) ἔσται, † δι᾽ ἀσέβειαν
δώρων ὧν ἐδέχοντο (ξ) ἐπ᾽ ἀδικίαις.
19 † Μή σε (ο) ἐκκλινάτω ἑκὼν ὁ νοῦς † δεήσεως
(π) ἐν ἀνάγκῃ ὄντων ἀδυνάτων, †
20 καὶ πάντας τοὺς κραταιοῦντας ἰσχύν Μὴ ἐξελκύσῃς
τὴν νύκτα, † τοῦ ἀναβῆναι λαοὺς
21 ἀντ᾽ αὐτῶν· † Ἀλλὰ φύλαξαι μὴ πράξῃς
ἄτοπα· † ἐπὶ τούτων γὰρ ἐξείλω ἀπὸ
22 πτωχείας. † Ἰδοὺ ὁ ἰσχυρὸς κραταιώσει (ρ) ἐν
ἰσχύϊ αὐτοῦ· † τίς γάρ ἐστι κατ᾽ αὐτὸν δυνάστης;
23 † Τίς δέ ἐστιν ὁ ἐτάζων αὐτοῦ τὰ ἔργα; † ἢ τίς ὁ εἰπών, Ἔπραξεν ἄδικα; †
24 Μνήσθητι (σ), † ὅτι μεγάλα (τ) ἐστὶν αὐτοῦ
25 τὰ ἔργα, ὧν ἦρξαν ἄνδρες. † Πᾶς ἄνθρωπος εἶδεν ἐν ἑαυτῷ, ὅσοι τιτρωσκόμενοί
26 εἰσι βροτοί. † Ἰδοὺ ὁ ἰσχυρὸς πολύς, καὶ οὐ γνωσόμεθα· † ἀριθμὸς ἐτῶν αὐτοῦ καὶ
27 ἀπέραντος. † Ἀριθμηταὶ δὲ αὐτῷ (υ) σταγόνες ὑετοῦ, † καὶ ἐπιχυθήσονται ὑετῷ εἰς
28 νεφέλην. † Ῥυήσονται παλαιώματα, † ἐσκίασε δὲ νέφη ἐπὶ (φ) ἀμυθήτῳ βροτῷ.
† ὥραν ἔθετο κτήνεσιν, (χ) οἴδασι δὲ κοίτης τάξιν. ἐπὶ τούτοις πᾶσιν οὐκ (ψ) ἐξίσταταί
σου ἡ διάνοια, † οὐδὲ διαλλάσσεταί σου ἡ
29 καρδία ἀπὸ (ω) σώματος. † Καὶ ἐὰν (α) συνῇ ἀπέκτασιν νεφέλης, ἰσότητα σκηνῆς
30 αὐτοῦ † Ἰδοὺ ἐκτενεῖ (β) ἐπ᾽ αὐτὸν ἠδώ, † καὶ ῥιζώματα τῆς θαλάσσης ἐκάλυψεν. †
31 Ἐν γὰρ αὐτοῖς κρινεῖ λαούς, † δώσει τροφὴν
32 τῷ ἰσχύοντι. † Ἐπὶ χειρῶν ἐκάλυψε φῶς, † καὶ ἐνετείλατο περὶ αὐτῆς ἐν ἀπαντῶντι,
33 Ἀναγγελεῖ περὶ αὐτοῦ φίλον (γ) αὐτοῦ κύριος, κτῆσις καὶ περὶ ἀδικίας.

Et ira super impios erit propter impietatem munerum, quæ accipiebant super iniquitatibus. 18
Non te avertat voluntaria (n) mens à prece infirmorum, cùm in necessitate fuerint: & (o) omnes qui tenent fortitudinem, 19
Noli extrahere per noctem, ut ascendant populi pro eis: 20
Sed cura, ne facias indecentia: super (p) his enim elegisti ab inopia. 21
Ecce fortis (q) roborabit in fortitudine sua: quis enim est, sicut ille, potens? 22
Et quis est, qui discutiat opera ejus? aut quis est qui (r) dicat, Fecit injusta? 23
Memento, quia magna sunt opera ejus, quorum (s) dominati sunt viri. 24
Omnis homo vidit (t) in ipso, (u) quicunque vulnerati sunt mortales. 25
Ecce fortis (x) multus, & nescimus: Numerus annorum (y) ejus & infinitus: 26
Numerabiles autem ei stillæ pluviæ: & (z) effundentur ad pluviam in nube: 27
Fluent (aa) antiquitates: obumbraverunt autem nubes super (bb) innumerabili homine: (cc) horam constituit jumentis: & sciunt cubilis ordinem. In his omnibus non obstupescit animus tuus, nec mutatur cor tuum à corpore: 28
Et (dd) si constiteris extensio nubis, æqualitatē tabernaculi ejus, 29
Ecce extendit super eum (ee) Edo, & radices maris contexit. 30
(ff) In eis enim judicabit populos: dabit escam (gg) valido: 31
In manibus contexit lumen, et (hh) mandavit de ea in occurrenti: 32
Annuntiabit (ii) de eo amicum suum (kk) Dominus: possessio, & de injustitia. 33

ΚΕΦ. λζ΄.

1 † Καὶ (α) ἀπὸ ταύτης ἐταράχθη ἡ καρδία μου, † καὶ ἀπερρύη ἐκ τοῦ τόπου αὐ-
2 τῆς. † (β) Ἄκουε ἀκοὴν ἐν ὀργῇ θυμοῦ κυρίου, † καὶ μελέτη ἐκ στόματος αὐτοῦ (γ)
3 ἐξελεύσεται. † Ὑποκάτω παντὸς τοῦ οὐρανοῦ ἡ ἀρχὴ αὐτοῦ, † καὶ τὸ φῶς αὐτοῦ ἐπὶ
4 πτερύγων (δ) τῆς γῆς. † Ὀπίσω αὐτοῦ βοήσεται φωνῇ, † βροντήσει ἐν φωνῇ ὕβρεως αὐτοῦ· † καὶ οὐκ ἀνταλλάξει αὐτούς, ὅτι
5 (ε) ἀκούσει φωνὴν αὐτοῦ. † Βροντήσει ὁ ἰσχυρὸς ἐν φωνῇ αὐτοῦ θαυμάσια· † ἐποίησε
6 γὰρ μεγάλα ἃ οὐκ ᾔδειμεν, † Συντάσσων χιόνι, (ζ) Γίνου ἐπὶ γῆς, καὶ (η) χειμὼν ὑετός, καὶ
7 χειμὼν ὑετῶν (ϛ) δυναστείας αὐτοῦ. † Ἐν χειρὶ παντὸς ἀνθρώπου κατασφραγίζει, † ἵνα γνῷ πᾶς ἄνθρωπος τὴν ἑαυτοῦ ἀσθένειαν. † (θ)
8 Εἰσῆλθε δὲ θηρία ὑπὸ τὴν σκέπην, ἡσύχασε
9 δὲ ἐπὶ κοίτης. † Ἐκ ταμιείων ἐπέρχονται ὀ-
10 δύναι, † ἀπὸ δὲ ἀκρωτηρίων ψῦχος. † Καὶ ἀπὸ πνοῆς ἰσχυροῦ δώσει πάγος. † (ι) οἰακίζει δὲ
11 τὸ ὕδωρ ὡς ἐὰν βούληται, † Καὶ ἐκλεκτὸν (ι) καταπλάσσει νεφέλη. † (κ) διασκορπιεῖ νέ-
12 φος φῶς αὐτοῦ, † Καὶ αὐτὸς κυκλώματα διαστρέψει † (λ) ἐν θεεβουλαθωθ, εἰς ἔργα αὐτῶν. † πάντα ὅσα ἂν (μ) ἐντείληται αὐτοῖς, † ταῦτα συντέτακται παρ᾽ αὐτοῦ ἐπὶ τῆς γῆς,

CAP. XXXVII.

Et ab hac (a) turbatum est cor meum, & (b) effluxit de loco suo: 1
Audi auditionem in ira furoris Domini: & (c) meditatio de ore ejus egredietur: 2
Subter universum cœlū principium ejus, & lumen ejus super alas terræ. 3
Post (d) eum clamabit voce, tonabit in (e) voce superbiæ suæ: & non (f) commutabit eos, quoniam audiet vocem ejus. 4
Tonabit fortis in voce sua (g) mirabiliter. Fecit enim magna quæ (h) nesciebamus: 5
Præcipiens nivi, Esto super terram: & (i) tempestas pluviæ, & tempestas pluviarum potestatis ejus: 6
In (k) manu omnis hominis signat: ut sciat omnis homo infirmitatem suam. 7
Introierunt autē bestiæ sub tegmen, & quieverunt super cubile. 8
De promptuariis superveniunt (l) dolores, & (m) ab extrancis partibus frigus: 9
Et à (n) spiratione fortis dabit gelu: gubernat autem aquam, qualiter illi placuerit; 10
Et electum (o) format nubes: disperget nubilum lucem ejus, 11
Et ipse (p) circuitus transvertet, [pervertet] in (q) Thecbulathoth: in opera eorū omnia quæ mandaverit eis. Hæc constituta sunt ab eo super terram, 12

MS.A. (ν) ἥξει, διὰ (ξ) ἐπ᾽ ἀδικείας. (ο) ἐκκλίνῃ ὁ νοῦς ἑκὼν (π) ἀδυνάτων ἐν ἀνάγκῃ ὄντων, Ἀλλὰ φύλαξαι μὴ πράξῃς ἄνομα, καὶ πάντας τοὺς κραταιοῦντας ἰσχὺν μὴ ἐξελκύσῃς τὴν νύκτα, τοῦ ἀναβῆναι * λαοὺς ἀντ᾽ αὐτῶν ἐπὶ * τοῦτον γὰρ (ρ) σε ἐν ἰσχύϊ αὐτοῦ· (σ) οὖν Ἰώβ, ὅτι (τ) αὐτοῦ ἐστιν τὰ ἔργα, (υ) ὑετοῦ σταγόνες, (φ) ἀμυθήτων βροτῶν. (χ) καὶ οἴδασιν κοίτης (ψ) ἐξίσταται (ω) τοῦ σώματος. (α) σκηνῆς ἐπέκτασιν (β) ἐπ᾽ αὐτὴν τὸ τόξον, καὶ ῥίζωμα (γ) αὐτοῦ, κυρίου κτῆσις Κεφ. λζ΄. MS.A. (α) ὑπὲρ ταύτης (β) Ἄκουε Ἰὼβ ἀκοὴν (γ) ἐξηχεύσεται. * καὶ τὸ φῶς αὐτοῦ ἐπὶ (δ) γῆς. (ε) ἀκούσῃ (ζ) Ἐπὶ γῆς γίνου, (η) χειμῶνι, ἵνα ᾖ ὑετός, (ϛ) δυναστείας (θ) Εἰσῆλθον δὲ θηρία ὑπὸ σκέπης, καὶ ἡσύχασεν ἐπὶ κοίτης. Ἐκ ταμιείων ἐξέρχονται ὀδύναι, (ι)* Οἰκεία δὲ ὕδωρ (ι) καταπλήσει (κ) διασκορπίσει (λ) ἐν τοῖς κατωτάτω θεὶς ἔργα αὐτῶν. (μ) ἐντείλῃ

תרגום TARGUM.

18 ארום ירגז דלמא אטעינך במסת מולא וסגי פורקנא דעתרא לא יצלנך : האפשר דמסתדר בעותך וכל דמתאלמין משבחין חילא : תא האפשר דמסדר 19
20 צלותך לא בעקתא וכל מה דמתקפין כח מדבקין חילא : לא תדחוק בליליא לאסקא עממיא באתריהון : תא לא תניר אתת חברך בליליא לסלקא עמיא
21 22 חלופיהון : אסתמר לא תתפני לשקרא ארום על דא בחרתא מסגופא : הא בלחודוי אלהא תקיף בחיליה מן דכמיה מליף תריצותא : מן יסער עלוי 23
24 אורחיה ומן יימר עבדתא עילותא : אדכר ארום תפיש עובדיה די שבחו גוברין צדיקין : כל בני נשא חמון ביה אנש אסתכל מרחיק : הא אלהא סגיא 25 26
27 28 ולא נדע סכום שנוי ולית סוף : ארום ימנע טיופי מיא זלפון מטרא לעננייה : דזלחין שחקיא דאסי מטול צלותא דבר נש רב : לחוד אין אתבין פרישתא 29
30 דעיבא רכפת עננייה טלליה : הא פרס עלוי מטרא ועקרי ימא חפא : ארום בהון דאין עממיא יהב מיכלא לסוגעא : מטול חטוף ידא מנע מטרא ופקד 32
31 33 עלוי למחת מטול מצלי : דיחוי לישן תליתי בחבריה קנאתא ורוגזא עלוי יסק : תא יחוון באוריתא חד עם חבריה מטננין ברוגזא ומסלקין ליה לעילא :
תא יחוי עלוהי זכותא דחבריה קנאתא ורוגזא מעלוהי יסלק :

לז

1 ברם לדא יתוהא לבי ויטפז מן אתריה : תא על בנוי דאהרן אתנבי ואמר לחוד לחדא לבי תוה ושור מן אתריה : שמעו משמע ברוגזא קליה והגא היך 2
3 אשא מפומיה נפק : תחות כל שמיא תריצותיה ונהוריה יקום על סיפי ארעא : בתרוי מכלי קל אכליותיה בקל גותנותיה ולא יעכבנון ארום ישמע קליה : 4
5 כד אכלי אלהא בקליה על פרישן דעתיד למעבד עבד רברבן ולא נדע : ארום לתלגא יימר הוי בארעא ומטרא בתר מטרא בקיטא למבשלא פירי ומטרא 6
7 8 בתר מטרא למצמח עסבא בסתוא בעושניה : בידא דכל אנשא ירשום למידע כל בני נשא עובדוי : ותיתי חיתא בכמנא ובמדורהא תשרי : מן אדרון עילא 9
10 11 תיתי זיעא ומכות מורים קורא : מטי מר אלהא יתיהב קרחא ופלטיות מיא באתכותא : ברם בברירותא מטרח עיבא מבדר ענן מטריה : והוא תוסקפתא 12
מהפך בחכמתיה לאצלחא פלחי בארעא בעובדיהון ונחתין בכל אתר די פקדנון על אפי ארעא : תא והוא ברחמוהי מיא טמעתא מהפך באפותיה
לעובדיהון דבני נשא מנלי יתהון ומשדר יתהון לכל דפקדנון על אפי תבל ארעא :

Verſio SYRIACA.

18 [illegible]
19 20 [illegible]
21 [illegible]
22 [illegible]
23 [illegible]
24 25 [illegible]
26 [illegible]
27 [illegible]
28 [illegible]
29 30 [illegible]
31 32 [illegible]
33 1 [illegible]
2 3 [illegible]
4 [illegible]
5 6 [illegible]
7 8 [illegible]
9 [illegible]
10 11 [illegible]
12 [illegible]

Verſio ARABICA.

18 19 * بحمية القتال لا يحرضك ولا يحوجك الي كثر الخلاص *يتعزر عليك ليخلصك لئلا يضيق عليك
20 21 من جميع اشداء القوه *ومن الدفع الذي في الليل *ويجعل الشعوب فداءك والامم فداء نفسك *فاحذر
22 الا تلتفت الي الاثم *فمن اجل هذا امتحنت بالمسكنه *فان الله يعظم القوه *من الذي يكون مثله عارفا *
23 24 *من الذي اشرف علي الطريق *ومن الذي قال له صنعت اثما * فاحذر انها كثيرة اعماله *وقد حمدوه
25 26 الناس كلهم *والناس ابصروه فتطلعوا من بعيد *فان الله عظيم هو ولا يعرف *ولعدد سنيه ليس منتها
27 28 *ان نحن احصينا اعماق السماء *ونضم قطرات المطر وحدك *الذي تنزل السماء في الوقت *وتنضح السحاب
29 30 علي الناس فيفرحون كثيرا *فمن الذي يفهم *ويبسط السحاب من كثرة ظلاله *بسط فوقها ضوءه *
31 32 واسفل البحر غطاه *من اجل ان يدين الشعوب *ويعطي ماكله للكثيرين *وعلي يدي يجللها نورا ويخرج
33 عليهم يلتجون به *فيري احباه قنيانه * والمنافقين ايضا * الفصل السابع والثلثون *
1 2 *وعلي هذا ايضا يتزعزع قلبه ويزول من مكانه *اسمعوا سماعا صوته يزجر *فان القضاء الذي يخرج من
3 4 فمه * تحت جميع السماء يسبحونه *ونوره علي اقطار الارض *في مكانه يصدع بصوت جلالته ولا يناظرهم
5 6 *لكي يسمعوا صوته *ويصدع الله بصوته عجايب يصنع وكباير *ولا يعرف *من اجل انه للثلج يقول كن
7 8 ارضا والمطر والربيع الكثير بيد كل انسان حتم *ليخبر كل انسان اعماله *وتدخل الحيوانه في المرصد وتحل في
9 10 مربضها *من المخدع ياتي الدبور *ومن الهطل ياتي البرد *ومن نسمة الله يعطي الجليد *وكثر المياه ينزل
11 12 *وباليبس يبسط السحاب * ويمد سحاب نوره *وهو يطوف ويعود ليصنع الفكر *كل شي يامرهم علي وجه الدنيا ارضه *

VERS. SYR. & ARAB.
Interp. Lat.

Vehementia pugnæ non ſti- 18
mulabit te, neq; te faciet in-
digere abundanti ſalute: vi
utitur adverſùm te ad li-
berandum te, Ne incom- 19
modo afficiaris à quibuſ-
vis robuſtis fortitudine, Et 20
ab impulſu qui eſt in no-
cte; & ſubſtituet populos
pro te, & gentes pro ani-
ma tua. Cave igitur ne 21
convertaris ad ſcelera:
nam propterea tentatus es
paupertate. (e) Etenim ſi 22
Deus augeat vim, quis eſt
qui cum eo comparetur
ſcientiâ? Quis eſt qui pro- 23
ſpectet vias ejus? & quis
eſt qui dicat illi, Tu com-
miſiſti ſcelus? Adverte 24
multa eſſe opera ejus, &
tamen laudari cum ab o-
mnibus hominibus. Et ho- 25
mines vidiſſe illum, et in-
tuitos eum eſſe à longè;
(f) Quoniam Deus magnus 26
eſt, & non cognoſcitur; et
numero annorum ejus non
eſt terminus. Si nos nume- 27
raverimus cardines cœli,
et collegerimus guttas plu-
viæ ſolius, Quas emittit 28
cœlum in tempore, et ſtil-
lant nubes ſuper homines;
quibus lætantur valdè: Sed 29
quis eſt qui intelligat? et
extendit nubes ex multi-
plici umbraculo ſuo, Ex- 30
tendit ſuper eas lumen
ſuum, & profundum ma-
ris texit: (g) Judicat 31
enim populos, & dat eſcā
multis. Et per manus meas 32
operit eos lumine, & ori-
tur ſuper eos ut occurrant
ei. (h) Et videbunt amici 33
ejus poſſeſſionem ejus, &
impii quoque.

CAP. XXXVII.

Super hæc quoque con- 1
turbabitur cor ejus, & re-
cedet à loco ſuo. Audi- 2
entes audite vocem ejus
(a) increpantem; quo-
niam judicium quod egre-
ditur de ore ejus, Sub 3
ter omnes cœlos laudant
illud, & lumen ejus ſuper
terminos terræ: In lo- 4
co ſuo tonat voce gloriæ
ſuæ, & non opponit ſe eis,
ut audiant vocē ejus. Et 5
tonat Deus voce ſuâ: mi-
racula facit & magnalia,
& non cognoſcitur. Quia 6
nivi dicit; Eſto terra, &
pluviam, & herbam plu-
rimam in manu omnium
hominum concluſit, ut 7
patefeceret (b) omnibus
opera ſua. Et ingreditur 8
beſtia latibulum; & com-
moratur in cubili ſuo:
Et de thalamo venit (c) 9
Boreas, & ab imbre venit
frigus Et ab aura Dei 10
datur gelu, & copiam a-
quarum emittit, Et leni- 11
ter extenduntur nubes,
& protendit nubes lucis
ſuæ, Et ipſæ vagantur, 12
& revertuntur ad exe-
quendam cogitationem,
quidquid præcepit eis ſu-
per faciem orbis terræ ſuæ.

INTERP. SYRIACA.

(e) Deus auget vim, quis eſt qui ſimilis ei docet? (f) Ecce (g) His enim judicat populos, (h) Amicis ejus indicat poſſeſſionē ejus, & impiis *Cap. xxxvii.* (a) in ira; (b) mundo (c) tempeſtas,

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Cùm iratus fuerit ne fortè ſeducat te in abundantia ſubſtantiæ, & multitudo redemptionis divitiarum ne inclinet te. Nunquid ordinari poteſt deprecatio tua, & omnes 18
qui robuſti ſunt *inveniunt virtutem? Targum aliud: Nunquid ordinare potes orationem tuam non in anguſtia,* & omnes qui *valent viribus aſſequuntur virtutem.* Ne 20
urgeas in nocte ut aſcendant populi in loca ſua. *Targum aliud: Ne adulteres uxorem proximi tui nocte,* ut aſcendant populi *pro eis.* Cave ne te convertas ad menda- 21
cium, hoc enim elegiſti præ afflictione. Ecce ſolus Deus potens eſt in virtute ſua, quis ſimilis ei docens recta? Quis viſitabit ſuper eum viam ſuam, aut quis dicet ei, 22 23
Operatus es iniquitatem? Recordare ut magnifices opera ejus quæ laudaverunt viri juſti. Omnes homines vident eum, unuſquiſque intuetur à longè. Ecce Deus ma- 24 25
gnus eſt, & neſcimus; & numero annorum ejus non eſt finis. Quia cohibet guttas aquarum: ſtillabunt pluviam nubes ejus. Quæ ab æthere fluunt *ejus qui ſanat,* propter 26 27
orationem filii hominis magni. Veruntamen ſi intellexerit extenſiones nubis; tonitruum nubis ejus umbraculum ipſius. Ecce expandit ſuper eam pluviam, & radices 28 29
maris operit. Quoniam per hæc judicat populos, dat eſcam in multitudinem. Propter rapinam manuum prohibet pluviam, & præcipit ei ut deſcendat propter oran- 30 31
tem. *Qui narrat lingua tertia de proximo ſuo, zelus et indignatio in eum aſcendet. Targum aliud: Cum enarraverint legem quiſquam cum proximo ſuo, æmulantur cum* 32 33
iracundia, et efferunt eam ſurſum. Targum aliud: Annunciat ſuper eum juſtitiam amici ſui, zelum & indignationem aufert ab eo.

CAP. XXXVII.

Veruntamen propter hoc expavit cor meum, & exiliit de loco ſuo. *Targum aliud: De filiis Aharon vaticinatus eſt, ac dixit: Utique valde* expavit cor meum, & ex- 1
iliit de loco ſuo. Audite auditu cum tremore vocem ejus, & ſonum qui quaſi ignis de ore illius egreditur. Sub omnibus cœlis directio ejus, & lumen illius *ſtabit* ſuper 2 3
fines terræ. Poſt eum intonat ſonus *vociferationis ejus, cum* voce altitudinis ſuæ, & non remorabitur cùm audita fuerit vox ejus. Quando tonabit Deus voce ſua ſuper 4 5
mirabilia quæ facturus eſt, *fecit* magna quæ ignoramus. Quoniam nivi dicet, Eſto in terra: & pluviæ poſt pluviam in vere ad maturandum fructus, & pluviæ poſt plu- 6
viam ut germinet herbam in hieme in fortitudine ſua. In manu omnium hominum ſignat, ut ſciant omnes filii hominum opus ſuum. Ingredietur autem beſtia latibulum 7 8
ſuum, & in habitaculo ſuo commorabitur. A cœnaculo ſupremo veniet commotio, & à cataractis Arcturi frigus. A verbo Dei dabitur gelu, & dilatatio aquarum in 9 10
infuſionem. Veruntamen in *ſerenitate* defatigat nubem: diſpergit nubes pluviam ſuam. Et ipſe occaſiones vertit in ſapientia ſua, ut proficere faciat colentes terram in 11 12
operibus ſuis, & deſcendunt in *quemcunque locum* præceperit eis ſuper faciem terræ. *Targum aliud: Et ipſe in miſericordiis ſuis aquas reconditas vertit in apothecis ſu-*
is, ad opera filiorum hominis revelat ac mittit eas, quocumque præceperit eis ſuper faciem orbis terræ.

איוב : לח

misericordiam *ad sive* , suam terram *ad sive* , *virgam ad* Sive
13 אִם־לְשֵׁבֶט אִם־לְאַרְצוֹ אִם־לְחֶסֶד
intellige & , sta : Ijob hoc Ausculta .*eam* faciet invenire
14 יַמְצִאֵהוּ׃ הַאֲזִינָה זֹּאת אִיּוֹב עֲמֹד וְהִתְבּוֹנֵן
, his super *Deum ponendo in scies* Nunquid .Dei mirabilia
15 נִפְלְאוֹת אֵל׃ הֲתֵדַע בְּשׂוּם־אֱלוֹהַּ עֲלֵיהֶם
libramenta super scies Nunquid ? ejus nubis *lucem irradiare* &
16 וְהוֹפִיעַ אוֹר עֲנָנוֹ׃ הֲתֵדַע עַל־מִפְלְשֵׂי
tua vestimenta *Quòd* ? scientiis perfecti mirabilia , nubis
17 עָב מִפְלְאוֹת תְּמִים דֵּעִים׃ אֲשֶׁר־בְּגָדֶיךָ
eo cum *Expandes* ? meridie à terram *quietando in* , calida
18 חַמִּים בְּהַשְׁקִט אֶרֶץ מִדָּרוֹם׃ תַּרְקִיעַ עִמּוֹ
quid nobis Ostende ? fusum speculum sicut *fortis* , *ethera*
19 לִשְׁחָקִים חֲזָקִים כִּרְאִי מוּצָק׃ הוֹדִיעֵנוּ מַה־
? *obscuritatis faciebus à ordinabimus* Non : ei dicamus
נֹּאמַר לוֹ לֹא־נַעֲרֹךְ מִפְּנֵי־חֹשֶׁךְ׃
cùm quispiam dixit *Si* ? fuero locutus cùm , ei narrabitur Nunquid
20 הַיְסֻפַּר־לוֹ כִּי אֲדַבֵּר אִם־אָמַר אִישׁ כִּי
: cœlis in ipsum lucidum lumen viderunt non nunc Et ? est *absorptus*
21 יְבֻלָּע׃ וְעַתָּה לֹא־רָאוּ אוֹר בָּהִיר הוּא בַּשְּׁחָקִים
: veniet aurum Aquilone Ab .eos purificavit & , transivit ventus &
22 וְרוּחַ עָבְרָה וַתְּטַהֲרֵם׃ מִצָּפוֹן זָהָב יֶאֱתֶה
, *ex* invenimus non Omnipotens .*decoris* terribilem Deum *super*
23 עַל־אֱלוֹהַּ נוֹרָא הוֹד׃ שַׁדַּי לֹא־מְצָאנֻהוּ
.affliget non justitiæ *multitudine* & , judicio & ; potentia magnus
שַׂגִּיא כֹחַ וּמִשְׁפָּט וְרֹב צְדָקָה לֹא יְעַנֶּה׃
.corde sapientes omnes *videbit* non : homines eum timebunt Ideo
24 לָכֵן יְרֵאוּהוּ אֲנָשִׁים לֹא־יִרְאֶה כָּל־חַכְמֵי־לֵב׃

CAP. XXXVIII. לח

iste Quis : dixit & , turbine de Ijob ipsi Dominus respondit Et
1 2 וַיַּעַן־יְהוָה אֶת־אִיּוֹב מִן־הַסְּעָרָה וַיֹּאמַר׃ מִי זֶה ׀
nunc Accinge ? scientia absque sermonib' *in* consilium tenebrefaciens
3 מַחְשִׁיךְ עֵצָה בְמִלִּין בְּלִי־דָעַת׃ אֱזָר־נָא
Ubi .me scire facies & , te interrogabo & : tuos lumbos vir sicut
4 כְגֶבֶר חֲלָצֶיךָ וְאֶשְׁאָלְךָ וְהוֹדִיעֵנִי׃ אֵיפֹה
Quis .intelligentiam nôsti si Annuncia ? terram *me fundare in* fuisti
5 הָיִיתָ בְּיָסְדִי־אָרֶץ הַגֵּד אִם־יָדַעְתָּ בִינָה׃ מִי־
? lineam eam super extenderit quis vel : *scias quòd ejus mensuras* posuerit
שָׂם מְמַדֶּיהָ כִּי תֵדָע אוֹ מִי־נָטָה עָלֶיהָ קָּו׃
.ej' angularē lapidē jecerit quis aut : sunt submersæ ejus bases quo Super
6 עַל־מָה אֲדָנֶיהָ הָטְבָּעוּ אוֹ מִי־יָרָה אֶבֶן פִּנָּתָהּ׃
.Dei filii omnes jubilarent & , matutinæ stellæ pariter *cantando In*
7 בְּרָן־יַחַד כּוֹכְבֵי בֹקֶר וַיָּרִיעוּ כָּל־בְּנֵי אֱלֹהִים׃
me *ponendo In* .*egredietur* vulva è *ipso emergendo in* ? mare ostiis in *texit* Et
8 9 וַיָּסֶךְ בִּדְלָתַיִם יָם בְּגִיחוֹ מֵרֶחֶם יֵצֵא׃ בְּשׂוּמִי
eo super *fregi* Et .ejus fasciam caliginem & : ejus vestem nubem
10 עָנָן לְבֻשׁוֹ וַעֲרָפֶל חֲתֻלָּתוֹ׃ וָאֶשְׁבֹּר עָלָיו
usque Huc ; dixi Et .ostia & , vectem posui & , meum decretum
11 חֻקִּי וָאָשִׂים בְּרִיחַ וּדְלָתָיִם׃ וָאֹמַר עַד־פֹּה
.*tuos fluctus elatione in ponet* hic Et : addes non & , venies
תָבוֹא וְלֹא תֹסִיף וּפֹא־יָשִׁית בִּגְאוֹן גַּלֶּיךָ׃
? suū locum aurorā fecisti scire : diluculo præcepisti tuis dieb' à Nunquid
12 הֲמִיָּמֶיךָ צִוִּיתָ בֹּקֶר יִדַּעְתָּה שַׁחַר מְקֹמוֹ׃
.ea ex impii excutiantur & , terræ *alas in apprehendendum Ad*
13 לֶאֱחֹז בְּכַנְפוֹת הָאָרֶץ וְיִנָּעֲרוּ רְשָׁעִים מִמֶּנָּה׃
prohibebitur Et .vestimentū sicut stabunt & ; sigilli lutum sicut se Vertet
14 15 תִּתְהַפֵּךְ כְּחֹמֶר חוֹתָם וְיִתְיַצְּבוּ כְּמוֹ לְבוּשׁ׃ וְיִמָּנַע
.confringetur excelsum brachium & , eorum lux impiis ab
מֵרְשָׁעִים אוֹרָם וּזְרוֹעַ רָמָה תִּשָּׁבֵר׃

Versio VULG. LAT.

13 Sive in una tribu, sive in terra sua, sive in quocunq; loco misericordiæ suæ eas jusserit 14 inveniri. Ausculta hæc Job : sta, & considera mirabilia Dei. 15 Numquid scis quando præcepit Deus pluviis, ut 16 ostenderent lucē nubiū ejus? Numquid nôsti semitas nubium magnas, & perfectas scientias? 17 Nonne vestimenta tua calida sunt, cùm perflata fuerit terra 18 Austro? Tu forsitan cum eo fabricatus es cœlos, qui solidissimi quasi ære fusi sunt. 19 Ostende nobis quid dicamus illi? nos quippè 20 involvimur tenebris. Quis narrabit ei quæ loquor? etiam si locutus fuerit homo, 21 devorabitur. At nunc non vident lucem : subitò aër cogetur in nubes, & ventus transiens 22 fugabit eas. Ab Aquilone aurū venit, & ad Deū formidolosa 23 laudatio. Dignè eum invenire non possumus: magn' fortitudine, & judicio, & justitiâ, et 24 enarrari non potest. Ideò timebunt eum viri, & non audebunt cōtemplari omnes qui sibi videntur esse sapientes.

CAP. XXXVIII.

1 RESpondens autem Domin' 2 Job de turbine, dixit; Quis est iste involvens sententias 3 sermonibus imperitis? Accinge sicut vir lumbos tuos: 4 interrogabo te, & responde mihi. Ubi eras quando ponebam fundamenta terræ? indica mihi si 5 habes intelligentiam. Quis posuit mensuras ejus, si nôsti? vel quis tetendit super eam 6 lineam? Super quo bases illius solidatæ sunt? aut quis demisit 7 lapidem angularem ejus, Cùm me laudarent simul astra matutina, & jubilarent omnes 8 filii Dei? Quis conclusit ostiis mare, quando erumpebat quasi 9 de vulva procedens: Cū ponerem nubem vestimentū ejus, et caligine illud quasi pannis 10 infantiæ obvolverem? Circumdedi illud terminis meis, et 11 posui vectem, et ostia: Et dixi; Usque huc venies, et non procedes ampliùs, et hîc confringes tumentes fluctus tuos. 12 Numquid post ortū tuū præcepisti diluculo, et ostendisti 13 auroræ locum suum? Et tenuisti concutiens extrema terræ, et excussisti impios ex ea? 14 Restituetur ut lutum signaculum, et stabit sicut 15 vestimentum: Auferetur ab impiis lux sua, et brachium excelsum confringetur.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

13 † Ἐάν τε εἰς παιδείαν, (ν) ἐὰν εἰς τὴν γῆν αὐτοῦ, (ξ) ἐὰν εἰς ἔλεος εὑρήσει 14 αὐτόν. † Ἐνωτίζου (ο) ταῦτα, Ἰώβ· † στῆθι (π) νουθετούμενος δύναμιν κυρίου. † 15 (ρ) Οἴδαμεν ὅτι ὁ θεὸς ἔθετο ἔργα αὐτοῦ, 16 (σ) φῶς ποιήσας ἐκ σκότους. † (τ) Ἐπίσταται δὲ διάκρισιν νεφῶν, † ἐξαίσια δὲ πτώματα 17 πονηρῶν. † Σοῦ δὲ ἡ στολὴ θερμή, ἡσυχάζεται 18 δὲ ἐπὶ τῆς γῆς. † (υ) Στερεώσεις μετ' αὐτοῦ εἰς παλαιώματα, † ἰσχυραὶ ὡς ὅρασις (φ) 19 ἐπιχύσεως. † Διατί, δίδαξόν με, τί ἐροῦμεν 20 αὐτῷ; † καὶ παυσώμεθα πολλὰ λέγοντες. † Μὴ βίβλος ἢ γραμματεύς μοι παρέστηκεν, ἵνα ἄνθρωπον (χ) ἑστηκὼς κατασιωπήσω; † (ψ) 21 Πᾶσι δὲ οὐχ ὁρατὸν τὸ φῶς, † τηλαυγές ἐστιν ἐν τοῖς παλαιώμασιν, † ὥσπερ τὸ παρ' αὐτοῦ 22 ἐπὶ (ω) νεφῶν. Ἀπὸ Βορρᾶ νέφη χρυσαυγοῦντα, † ἐπὶ τούτοις μεγάλη ἡ δόξα καὶ τιμὴ (α) 23 παντοκράτορος, † Καὶ οὐχ εὑρίσκομεν ἄλλον ὅμοιον (β) τῇ ἰσχύϊ αὐτοῦ. † ὁ τὰ δίκαια κρίνων, 24 (γ) οὐκ οἴει ἐπακούειν αὐτόν; † Διὸ φοβηθήσονται αὐτὸν (δ) οἱ ἄνθρωποι, † φοβηθήσονται δὲ αὐτὸν καὶ οἱ σοφοὶ (ε) καρδίᾳ.

ΚΕΦ. λη'.

1 † ΜΕτὰ δὲ τὸ παύσασθαι Ἐλιοῦν τῆς λέξεως, εἶπεν ὁ κύριος τῷ Ἰὼβ διὰ λαίλαπος 2 καὶ (α) νεφῶν, Τίς οὗτος ὁ κρύπτων με βουλήν, συνέχων δὲ ῥήματα ἐν καρδίᾳ, ἐμὲ δὲ οἴεται 3 κρύπτειν; † Ζῶσαι ὥσπερ ἀνὴρ τὴν ὀσφύν σου· † ἐρωτήσω δέ σε, σὺ δέ μοι ἀποκρίθητι. † 4 (β) Ποῦ ἦς ἐν τῷ θεμελιοῦν με τὴν γῆν; † 5 ἀπάγγειλον δέ μοι εἰ ἐπίστῃ σύνεσιν. † Τίς ἔθετο τὰ μέτρα αὐτῆς, εἰ οἶδας; † ἢ τίς ὁ 6 ἐπαγαγὼν σπαρτίον ἐπ' αὐτῆς; † Ἐπὶ τίνος (γ) οἱ κρίκοι αὐτῆς πεπήγασι; † τίς δέ ἐστιν ὁ βαλὼν λίθον γωνιαῖον ἐπ' αὐτῆς; † 7 Ὅτε (δ) ἐγενήθησαν ἄστρα, ᾔνεσάν με (ε) 8 φωνῇ μεγάλῃ πάντες ἄγγελοί (ᵛ) μου. † Ἔφραξα δὲ θάλασσαν πύλαις, ὅτε (ζ) ἐμαίμασσεν † ἐκ κοιλίας μητρὸς αὐτῆς (η) ἐκπορευομένη. 9 † Ἐθέμην δὲ αὐτῇ νέφος ἀμφίασιν, † ὁμίχλῃ 10 δὲ αὐτὴν ἐσπαργάνωσα. † Ἐθέμην δὲ αὐτῇ ὅρια, περιθεὶς κλεῖθρα καὶ πύλας. † (θ) 11 Εἶπα δὲ αὐτῇ, Μέχρι τούτου ἐλεύσῃ, καὶ (*) οὐχ ὑπερβήσῃ, † ἀλλ' ἐν σεαυτῇ συντριβήσεταί 12 σου τὰ κύματα. † Ἦ ἐπὶ σοῦ συντέταχα φέγγος πρωϊνόν; † Ἑωσφόρος δὲ (ι) εἶδεν 13 τὴν ἑαυτοῦ τάξιν, Ἐπιλαβέσθαι πτερύγων 14 γῆς, (κ) ἐκτινάξαι ἀσεβεῖς ἐξ αὐτῆς; † Ἦ σὺ λαβὼν γῆν πηλόν, ἔπλασας ζῷον, † καὶ 15 λαλητὸν (λ) αὐτὸ ἔθου ἐπὶ γῆς; (μ) † Ἀφεῖλες δὲ ἀπὸ ἀσεβῶν τὸ φῶς, † (ν) βραχίονα δὲ ὑπερηφάνων συνέτριψας;

Sive (r) in disciplinam, sive in terram suam; si in misericordia inveniet eum. 14 *Auribus percipe hæc Job: Sta (s) commonitus virtutem Domini.* 15 *(t) Scimus, quia posuit Deus opera sua, cùm faceret lumen de tenebris.* 16 *Scit autem differentiam nubium: & ingentes lapsus malorum.* 17 *Tua verò stola est (u) calida: quiescit verò super (x) terram:* 18 *(y) Firmationes cum eo in antiquitates, validæ, ut visio effusionis. Quarè doce me, quid dicemus* 19 *ei, & requiescamus multa dicentes. Nunquid liber, & scriba (z) astitit mihi, ut stans faciam* 20 *hominem tacere? Omnibus autem non est visibile lumen, splendidum est in (aa) antiquitatibus, sicut quod ab eo super nubes.* 21 *Ab Aquilone nubes coloris aurei: In his (bb) magna est gloria, & honor Omnipotentis:* 22 *(cc) Et non invenimus alium similem virtuti ejus.* 23 *Qui (dd) justa judicat, non putas exaudire eum? Propterea timebunt eum homines: timebunt quoque eum & sapientes corde.* 24

CAP. XXXVIII.

ET postquàm quievit Elius loqui, dixit Dominus ad Job per (a) turbinem, & nubes; 1 *Quis est hic, qui celat me (b) consilium, continens autem sermones in corde, & me putat celare?* 2 *Accingere tanquàm vir lumbum tuum. Interrogabo autem te: tu autem responde mihi.* 3 *Ubi eras, cum fundarem terram? indica autem mihi, si nôsti scientiam.* 4 *Quis posuit mensuras ejus, si nôsti? aut quis est, qui induxit super eam (c) funiculum?* 5 *Super quo (d) circuli ejus fixi sunt? Quis est autem, qui misit lapidem angularem super eam?* 6 *Quando facta sunt sydera, laudaverunt me voce magnâ omnes (e) angeli mei.* 7 *Conclusi autem portis mare, cùm (f) fremeret ex utero matris suæ egrediens.* 8 *(g) Posui autē ei nubē operimentum; & (h) nebulâ, quasi fasciâ, obvolui illud:* 9 *Et posui illi terminos, circumponens claustra & portas.* 10 *Et dixi ei; Huc usq; venies, & non transibis; sed in (i) te ipso comminuentur fluctus tui.* 11 *Aut nunquid tecum lucem constitui matutinam? & (k) cognovit lucifer ordinem suū,* 12 *Apprehendere pennas terræ, excutere impios ex ea?* 13 *Aut tu sumens terram lutum plasmâsti animal, & idoneū ad loquendū eum posuisti super terram?* 14 *Et abstulisti ab impiis lucem, & brachium superborum comminuisti?* 15

MS. A. (ν) ἐὰν τε εἰς τὴν γῆν (ξ) ἐάν τε εἰς ἔλεος αὐτοῦ. Ἐνωτίζου (ο) Ἰώβ, ταῦτα· (π) νουθετοῦ (ρ) Οἶδας ὡς ἔθετο ὁ θεὸς ἔργα (σ) ποιήσας φῶς (τ) Ἐπίσταται (υ) Στερεωθεὶς (φ) * ἐπιχύσεως. (χ) ἑστὼς (ψ) Πᾶσιν γὰρ οὐχ ὁρατὸν φῶς, (ω) νεφῶν, ἐξῆλθεν. Ἀπὸ Βορρᾶ (α) τοῦ παντοκράτορος, (β) αὐτῷ, καὶ τῇ ἰσχύϊ αὐτοῦ. (γ) οἴει ὅτι οὐκ εἰσακούει αὐτός; (δ) ἄνθρωποι, (ε) τῇ καρδίᾳ.

Κεφ. λη'. MS. A. (α) νέφους, (β) Ποῦ ἦσθα ὅτε ἐθεμελίωσα τὴν γῆν; ἀνάγγειλόν μοι εἰ ἐπίστασαι σύνεσιν. (γ) δὲ οἱ στύλοι αὐτῆς (δ) ἐγενήθη (ε) ἐν φωνῇ (ᵛ) μου, καὶ ὕμνησαν. (ζ) ἐμεῦτο, καὶ ἐκ κοιλίας (η) ἐξεπορεύετο. (θ) Εἶπον (*) οὐκ (ι) ἐπεῖδεν (κ) καὶ ἐκτινάξαι (λ) αὐτὸ (μ) Ἀφεῖλω (ν) καὶ βραχίονα ὑπερηφάνων

תרגום Targum.

13 14 אין מטרא דפורענותא ביממיא ובמדבריא אין מטרא רזיא לאילני טוריא ולמתא אין מטרא ניחא דחסדא לחקלי דפרי וכרמי יספקניה : אצית דא איוב
15 16 קום ואתבין פרישותא דאלהא : הידעתא כד ישוי אלהא נזירתא עליהון ואופע ענני מטריה : הידעתא על מבשקרני עבא פרישותא דשלים מנדעא :
17 18 19 די לבושיך משחנין כד משדיך ארעא מן דרומא : תרקע עמיה לשחקיא תקיפין דחזותהון כאספקלריא סנינא : אודע יתנא מה נימר ליה לא נסדר למחמי
20 21 קדם חשוכא : אפשר דישתעי ליה ארום אמלל אין ימלל בר נש ארום יקטרג : וכדון לא חמון מטרא בוטט הוא בשחקי ורוחא עברת ודכית יתהון : תנא
22 והשתא לא אסתכלו באוריתא אתעבידו שמיא בהירי מן לאחתא טלא ומטרא ורוח עברת ודכאנון : מצפונא דהבא ייתי קדם אלהא דחיל שבהורא : תנא
23 מן צפונא אסתניא יתי וינהר עלמא קדם אלהא דחיל יודון עללי עלמא : שדי לא אשכחונך דאנת מדבר עם עללי עלמא בסוגי חילא ודינא וסוגי צדקתא
24 לא יסגף : תנא שדי לא ספקנא למשתעי סוגעי חילא ודינא וסוגעי צדקתא לא יסגף : בנין כן דחילו מניה גובריא לא ידחל כל חכימי לבא : תנא מטול
דדחילו מניה גובריא לא יחמי מבנוהי היך כל חכימי לבא :

לח

1 2 3 4 ואתיב יי ית איוב מן עלעולא דצערא ואמר : מן הוא דין כמחשיך מלכא במליא מדלית מנדעא : זרז כדון היך גברא חרציך ואבענך ותהודעני : האן הויתא
5 6 7 במשתסי ארעא חוי אין ידעתא ביונתא : מן שוי משחתהא ארום תנדע או מן מתח עלה מתקולתא : על מה סמכיהא טמיען או מן שדא אבן זויתה : במן
8 9 דמשבחין כחדא כוכבי צפר ומיבבין כל כתי מלאכיא : ואגיף בדשיא ימא במגחיה מן תהומא דמן רחמא יפוק : כד שויתי ענניא כסותיה ואמטתא לפופיה :
10 11 12 ופסקית עלוי גזרתי ושויתי פריריא היך נגרין ודשין : ואמרית עד כא תיתי ולא תוסיף וכא תשוי בגיותנות גלליך : המן יומך פקדתא צפר ידעתא לקרצתא
13 אתריה : תנא הביומי בראשית הויתא ופקדתא למהוי צפר ידעת קריץ הן אתריה : למיחד בגדפי ארעא ויטלטלון חייביא מנה : תנא למיחד בסטרא
14 דארעא דישראל ואטלטלו דרא דרשיעיא מנה : מתהפכא היך טינא חותמא דילהון ואתעתדון היך כסו והים : תנא אתהפכת היך טינא חותמא דלהון
15 ולא אתברייאו כמו נושמהון בלא נשמתהון היך כסו סריק : ואתכסי מן רשיעיא נהורהון ואדרע מרממא תתבר :

Verſio SYRIACA.

13 *ܐܢ ܠܫܘܠܛܢܐ ܐܘ ܠܐܪܥܐ. ܐܘ ܠܫܘܒܚܐ ܕܡܫܬܟܚ ܒܗ.* ܨܘܬ ܗܕܐ ܐܝܘܒ. ܘܫܡܥ ܘܐܣܬܟܠ ܒܬܕܡܪܬܗ ܕܐܠܗܐ.
14
15 * ܗܐ ܝܕܥ ܐܢܬ ܡܢܐ ܣܡ ܐܠܗܐ ܥܠܝܗܘܢ. ܘܓܠܐ ܢܘܗܪܐ ܕܥܝܢܘܗܝ.* ܝܕܥ ܐܢܬ. ܡܦܩܢܐ ܕܥܢܢܐ. ܘܬܕܡܪܬܐ
16
17 ܕܠܐ ܡܘܡ ܥܡ ܝܕܥܬܐ. * ܠܒܘܫܟ ܢܫܚܢ. ܘܬܥܒܪ ܐܪܥܐ ܡܢ ܬܝܡܢܐ. * ܘܬܪܩܥ ܥܡܗ ܪܩܝܥܐ ܬܩܝܦܐ.
18
19 ܠܡܫܬܡܟܘ ܐܟܚܕܐ. * ܐܘܕܥܢܝ ܡܢܐ ܐܡܪ ܠܗ. ܘܠܐ ܢܬܟܣܐ ܡܢ ܩܕܡ ܚܫܘܟܐ. *ܘܐܫܬܥܐ ܠܗ ܡܢܐ ܕܐܡܪ.
20
21 ܐܢ ܢܐܡܪ ܓܒܪܐ ܢܬܪܕܐ. * ܘܗܫܐ ܠܐ ܚܙܘ ܢܘܗܪܐ. ܢܗܝܪ ܗܘ ܒܓܠܕܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܪܘܚܐ ܥܒܪܐ ܡܕܟܝܐ ܐܢܘܢ.
22 *ܡܢ ܓܪܒܝܐ ܕܗܒܐ ܐܬܐ. ܘܡܢ ܐܠܗܐ ܢܘܗܪܐ.* ܚܣܝܢܐ. ܣܓܝ ܚܝܠܐ ܘܕܝܢܐ. ܘܪܒ ܙܕܝܩܐ ܠܐ ܥܢܐ.* ܡܛܠ ܗܢܐ
23
24 ܢܕܚܠܘܢ ܒܢܝܢܫܐ. ܘܢܙܘܥܘܢ ܡܢܗ ܟܠ ܚܟܝܡܝ ܠܒܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܠܚ * ܘܥܢܐ ܡܪܝܐ ܠܐܝܘܒ
1
2 ܡܢ ܥܠܥܠܐ. * ܡܢܘ ܗܢܐ ܕܡܚܫܒ ܡܚܫܒܬܐ ܒܡܠܐ ܕܠܐ ܝܕܥܬܐ. * ܐܣܘܪ ܗܫܐ ܐܝܟ ܓܢܒܪܐ ܚܨܝܟ. ܐܫܐܠܟ. ܘܐܘܕܥܢܝ.
3
4 * ܐܝܟܐ ܗܘܝܬ ܟܕ ܡܫܪܪ ܗܘܝܬ ܫܬܐܣܬܗ ܕܐܪܥܐ. ܚܘܝܢܝ ܐܢ ܝܕܥ ܐܢܬ ܣܘܟܠܐ. * ܡܢܘ ܣܡ ܡܫܘܚܬܗ
5
6 ܐܢ ܝܕܥ ܐܢܬ. ܘܡܢܘ ܡܬܚ ܥܠܝܗ ܚܘܛܐ. ܐܘ ܥܠ ܡܢܐ ܩܡ ܬܚܘܡܝܗ. * ܐܘ ܡܢܘ ܫܕܐ ܟܐܦܐ ܒܙܘܝܬܗ. * ܒܪܐ
7
8 ܐܟܚܕܐ ܟܘܟܒܝ ܨܦܪܐ. ܘܫܒܚܘ ܟܠܗܘܢ ܡܠܐܟܐ ܒܚܕܘܐ. * ܘܐܚܕ ܬܪܥܐ ܝܡܐ. ܘܐܪܚܝܣ ܡܢ ܡܪܒܥܐ. ܘܢܦܩ
9
10 ܟܕ ܣܡ. * ܥܒܕ ܥܢܢܐ ܠܒܘܫܗ. ܘܥܪܦܠܐ ܥܛܦܘܗܝ. * ܘܣܡ ܠܗ ܩܝܡܐ ܘܥܒܕ ܬܪܥܐ ܘܡܘܟܠܐ. * ܘܐܡܪܬ.
11
12 ܥܕܡܐ ܠܗܪܟܐ ܬܐܬܐ. ܘܠܐ ܬܗܦܘܟ. ܘܗܪܟܐ ܬܩܘܐ ܒܪܒܘܬܐ ܕܓܠܠܝܟܝ. * ܡܢ ܝܘܡܝܟ ܦܩܕܬ ܨܦܪܐ. ܐܝܟܐ
13
14 ܐܝܬ ܗܝ ܕܘܟܬܗ ܕܫܦܪܐ. * ܠܡܐܚܕ ܒܟܢܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܘܢܬܢܦܨܘܢ ܡܢܗ ܪܫܝܥܐ. * ܘܢܬܗܦܟܘܢ ܐܝܟ
15 ܛܝܢܐ ܦܓܪܝܗܘܢ. ܘܢܩܘܡܘܢ ܐܝܟ ܠܒܘܫܐ. * ܢܬܟܠܐ ܡܢ ܚܛܝܐ ܢܘܗܪܗܘܢ. ܘܕܪܥܐ ܪܡܐ ܢܬܬܒܪ.

Verſio ARABICA.

13 * إن كان للسلاطين * أي الأرض * وإن كان للعار الذي يوجد فيها * أنصت هذه يا أيوب واسمع * وتفهم
14
15 عجائب الله * والآن تعرف الذي وضع الله عليهم * وأظهر نور عينيه * أتعرف مخرج السحاب والعجائب
16
17 التي بلا عيب بالمعرفة * لبوسك سخن * وتجاوز الأرض من التيمن * وتمد معه البسيط الشديد *
18
19 ليستمسك معا * أخبرني ماذا أقول له * ولا نستتر من قدام الظلمة * وأخبره الذي قال * إن قال الرجل
20
21 يؤدب * والآن لم يروا النور * مستنيرا هو في أديم السماء * والروح تجوز فتطهرهم * من الجربيا يأتي الذهب *
22
23 ومن الله نورا * قوي كثير القوة والقضاء وكثير الزاكيين لا يجيب * من أجل هذا يفزعون الناس *
24 ويرهبون منه كل حكماء القلب *

* الفصل الثامن والثلثون *

1 * وأجاب الرب وقال لأيوب من الغمام * من هذا الذي يتفكر فكره بكلام بلا معرفة * اربط الآن مثل
2
3 الجبار وسطك * فإني أسألك فأخبرني * أين كنت حين كنت أثبت أواسي الأرض * أريني إن كنت تفهم
4
5 البيان * من الذي ألقى مقدارها إن كنت تعلم * ومن الذي مد عليه خيطا * وعلى ماذا أقام أقطارها *
6
7 أو من الذي ألقى حجرا في زواياها * برأ جميع كواكب الصبح * وجميع بني الملائكة طربوا * وفغر
8
9 أبواب البحر * وأطلق من الرحم وأخرج حين وضع * صنع السحاب لبوسه * والغمام ملحفه * وجعل له
10
11 عهدا * وصنع له الأبواب والأغلاق * وقلت حتى هاهنا تبلغ ولا تعود * وهاهنا تلبث بعظمة أمواجك * من
12
13 أيامك أمرت الصباح * أينما موضع الصباح * ليوجد بأقطار الدنيا * ويلقى منها المنافقون * ويرجع مثل
14
15 الطين أجسامهم * ويقومون مثل لبوس * يمنع من الخطاة نورهم * والذراع الرفيع ينكسر *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Sive fuerit principibus 13
ſive terræ, ſive fuerit decori quod reperitur in
ipſa. Auſculta O Job, hæc, 14
& audi, & conſidera miracula Dei (d) jam verò 15
ſcis quid impoſuerit Deus
iſtis, ut revelaret lumen
oculorum ejus? Sciſne 16
egreſſum nubium, & miracula ſine vitio cum ſcientia?
Veſtimentum tuũ 17
caleſiet, & transferes terram ex Aquilone? Et ex- 18
tendes cum eo (e) æquor
ſolidiſſimum, ut ſimul cohæreat? Expone mihi 19
quid dicam ei, et ne lateamus à conſpectu tenebrarum,
Et nuntiabo ei quæ 20
(f) dicat; quæ ſi quis dicat
caſtigabitur. Et nunc non 21
viderunt lucē: ſplendens
eſt ipſa in (g) pelle cœli;
& ventus tranſiens purgabit eos. Ab Aquilone au- 22
rum venit, & à Deo lumen. Qui fortis eſt & 23
copioſus robore, & judicio, & maximus innocentium,
non reſpondebit?
Proptereà timeant homi- 24
nes, & formident eum
omnes ſapientes corde.

CAP. XXXVIII.

Reſpondenſque Domi- 1
nus ait Job de (a) nubibus,
Quis eſt iſte qui 2
cogitat cogitationem ſuam
verbis abſq; ſcientia? Ac- 3
cinge modò ſicut gigas
lumbos tuos, & ego interrogabo te.
Nuntia mihi,
ubi eras quando erã con- 4
firmans fundamenta terræ?
Oſtende mihi, ſi percipis intelligentiam. Quis 5
poſuit menſuram ejus, ſi
ſcis? & quis tetendit
ſuper eam lineam, Et ſu- 6
per quo erexit fines ejus,
aut quis jecit lapidem in
angulis ejus? Creavit (b) 7
omnes ſtellas matutinas, et
omnes filii angelorum lætati ſunt?
Et (c) aperuit 8
portas maris? & ſolvit
de vulva, & eduxit cùm
poſuit? Fecit nubes veſti- 9
mentum ejus, & nebulam
(d) indumentum illius: Et 10
ſtatuit ei pactum, et fe-
cit ei portas ac ſeras: Et 11
dixi, Hùc pervenies, &
non reverteris, & hîc
manebis in magnitudine
fluctuum tuorum. A die- 12
buſne tuis præcepiſti diluculo?
(e) quinã eſt auroræ
locus? ut (f) inveniatur 13
in finibus terræ, & ejiciantur ex ea impii, Et red- 14
igantur corpora eorum
ſicut lutum, & ſtent ſicut
veſtimentum: Cohibebi- 15
tur lumen peccatorum,
& brachium excelſum
conteretur.

INTERP. SYRIACA.

(*d*) Ecce ſcis (*e*) firmamentum (*f*) dixi; (*g*) firmamento CAP. *xxxviii.* (*a*) turbine, (*b*) ſimul ſtellas (*c*) clauſit (*d*) faſciam (*e*) nôſti tu quinam (*f*) retineret in alis terræ,

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Sive pluviam ultionis in mare & in deſerta, ſive imbrem vehementem arboribus montium & collium, ſive pluviam quietam miſericordiæ agris *frugiferis* & vineis 13 14
ſuppeditaverit. Auſculta hoc Job, ſta & intellige mirabilia Dei. Nunquid ſcis cùm poneret Deus eis ſtatutum, & quando illuxit *nubes pluviæ* ejus? Nunquid nôſti 15 16
inquiſitiones nubium, & mirabilia perfecti ſcientia? Quia veſtimenta tua ſunt calida quando quieſcit terra ab Auſtro. Extendiſti cum eo æthera valida, quorum aſpe- 17 18
ctus ſicut ſpeculum fuſile. Oſtende nobis quid dicamus illi: non poſſumus nos componere ad eum videndum propter tenebras. Nunquid narrabitur ei quando loquar, 19 20
ſi locutus fuerit homo quando accuſabit? Nunc autem non viderunt pluviam lucidam in nubibus, & ſpiritus pertranſivit & emundavit eas. *Targum aliud:* Nunc au- 21
tem non *attendunt ad legem, facti ſunt cœli ſplendidi ne demittant rorem &* pluviam, & ſpiritus pertranſivit & emundavit *eos.* Ab Aquilone aurum veniet coram Deo 22
terribili majeſtate. *Targum aliud:* Ab Aquilone *Boreas* veniet *& ſplendebit mundus;* coram Deo terribili *gratias agent excelſi ſeculi. Omnipotens,* non *inve-* 23
nerunt te, quòd tu loquereris cum excelſis ſeculi in multitudine virtutis & judicii, & multa *juſtitia* non affliget. *Targum aliud: Omnipotens, non ſufficimus enarrandæ*
multitudini virtutis & judicii, & multa *juſtitia* non affliget. Ideò timuerunt ab eo viri: non *timebit* [*ſicut*] omnes ſapientes corde. *Targum aliud: Quia* timuerunt ab 24
eo viri, non videbit de *filiis ejus* ſicut omnes ſapientes corde.

CAP. XXXVIII.

Et reſpondit Dominus ad Job de turbine doloris, & ait: Quis eſt iſte *quaſi obſcurans* conſilium ſermonibus abſque ſcientia? Accinge nunc ſicut potens lumbos 1 2 3
tuos; & interrogabo te, tu autem oſtendes mihi. Ubi eras quando jeci terræ fundamenta? indica ſi cognoviſti intelligentiam. Quis poſuit dimenſiones ejus ſi nô- 4 5
ſti, aut quis extendit ſuper eam perpendiculum? Super quo baſes ejus defixæ ſunt, aut quis jecit lapidem angularem ejus? In tempore quo laudant ſimul aſtra matuti- 6 7
na, & jubilant omnes turmæ angelorum. Et concluſit valvis mare; quando erumpit de abyſſo, quaſi de vulva egreditur. Quando poſui nubem operimentum ejus, & ca- 8 9
liginem faſciam ejus. Et concluſi ſuper eo decretum meum, & poſui littora quaſi peſſulos & *januas.* Et dixi: Huc uſque venies, & non procedes amplius; & hîc *ſi-* 10 11
ſtes cum tumore *fluctus tuos.* Nunquid à diebus tuis præcepiſti *diluculo,* aut oſtendiſti auroræ locum ſuum? *Targum aliud: Nunquid in diebus primæ creationis fui-* 12
ſti, & præcepiſti ut eſſet diluculum, *cognoviſti auroram ubi eſſet locus ejus?* Ut apprehenderet *alas* terræ, & transferantur impii ab ea. *Targum aliud:* Ut apprehen- 13
deret extrema terræ *Iſrael,* & transferantur *generatio impiorum* ab ea. Convertitur ut lutum ſignaculum eorum, & ſtabunt ſicut veſtimentum ſordidum. *Targum* 14
aliud: Convertitur ut lutum ſignaculum eorum, *& non creati ſunt quaſi corpus illorum abſque anima ſua,* ſicut veſtimentum *inane.* Et operietur ab impiis lux juſto- 15
rum, & brachium *elatum* confringetur.

איוב : לט

abyſſi inveſtigatione in & , maris fletus ad uſque es ingreſſus Nunquid
16 הֲבָאתָ עַד־נִבְכֵי־יָם וּבְחֵקֶר תְּהוֹם
portas & , mortis portæ tibi ſunt deteſtæ Nunquid ? ambulâſti
17 הִתְהַלָּכְתָּ׃ הֲנִגְלוּ לְךָ שַׁעֲרֵי־מָוֶת וְשַׁעֲרֵי
? terræ latitudines ad uſque intellexiſti Nunquid ? videbis mortis umbræ
18 צַלְמָוֶת תִּרְאֶה׃ הִתְבֹּנַנְתָּ עַד־רַחֲבֵי־אָרֶץ
: lux habitabit via Ubi .ipſam totam nôſti ſi Indica
19 הַגֵּד אִם־יָדַעְתָּ כֻלָּהּ׃ אֵי־זֶה הַדֶּרֶךְ יִשְׁכָּן־אוֹר
: ſuum terminum ad eam capias Quòd ? ejus locus ubi tenebræ &
20 וְחֹשֶׁךְ אֵי־זֶה מְקֹמוֹ׃ כִּי תִקָּחֶנּוּ אֶל־גְּבוּלוֹ
,eſſes naſciturus tunc quòd Nôſti ? ejus domus ſemitas intelliges quia &
21 וְכִי תָבִין נְתִיבוֹת בֵּיתוֹ׃ יָדַעְתָּ כִּי־אָז תִּוָּלֵד
in es ingreſſus Nunquid ? multorum tuorum dierum numerum &
22 וּמִסְפַּר יָמֶיךָ רַבִּים׃ הֲבָאתָ אֶל־
retinui Quas ? videbis grandinis theſauros & ,nivis theſauros
23 אֹצְרוֹת שָׁלֶג וְאֹצְרוֹת בָּרָד תִּרְאֶה׃ אֲשֶׁר חָשַׂכְתִּי
, via Qua .prœlii & conflictus diem ad ,anguſtiæ tempus ad
24 לְעֶת צָר לְיוֹם קְרָב וּמִלְחָמָה׃ אֵי־זֶה הַדֶּרֶךְ
diviſit Quis .terram ſuper Eurus ſe ſparget , lux dividitur
25 יֵחָלֶק אוֹר יָפֵץ קָדִים עֲלֵי־אָרֶץ׃ מִי־פִלַּג
? tonitruorum coruſcationem ad viam & ; aquæductum inundationem ad
לַשֶּׁטֶף תְּעָלָה וְדֶרֶךְ לַחֲזִיז קֹלוֹת׃
.eo in homo non deſertum : vir non terram ſuper faciendum pluere Ad
26 לְהַמְטִיר עַל־אֶרֶץ לֹא־אִישׁ מִדְבָּר לֹא־אָדָם בּוֹ׃
egreſſum faciendum germinare & ; eremum & ſolitudinem ſatiandum Ad
27 לְהַשְׂבִּיעַ שֹׁאָה וּמְשֹׁאָה וּלְהַצְמִיחַ מֹצָא
ſtillas genuit quis vel ? pater pluviæ eſt Nunquid .germinis
28 דֶשֶׁא׃ הֲיֵשׁ לַמָּטָר אָב אוֹ מִי־הוֹלִיד אֶגְלֵי־
quis cœli pruinam & , gelu eſt egreſſum cujus utero Ab ? roris
29 טָל׃ מִבֶּטֶן מִי יָצָא הַקָּרַח וּכְפֹר שָׁמַיִם מִי
voraginis facies & : ſeipſas abſcondent aquæ lapis Sicut ? eam genuit
30 יְלָדוֹ׃ כָּאֶבֶן מַיִם יִתְחַבָּאוּ וּפְנֵי תְהוֹם
Cheſil contractiones aut : Chimah delicias ligabis Nunquid .capientur
31 יִתְלַכָּדוּ׃ הַתְקַשֵּׁר מַעֲדַנּוֹת כִּימָה אוֹ־מֹשְׁכוֹת כְּסִיל
,ſuo tempore in cœleſtia ſigna facies exire Nunquid ? aperire facies
32 תְּפַתֵּחַ׃ הֲתֹצִיא מַזָּרוֹת בְּעִתּוֹ
cœli ſtatuta nôſti Nunquid ? eas duces ſuis filiis ſuper Arcturum &
33 וְעַיִשׁ עַל־בָּנֶיהָ תַנְחֵם׃ הֲיָדַעְתָּ חֻקּוֹת שָׁמָיִם
nubem ad elevabis Nunquid ? terra in ejus dominium pones An
34 אִם־תָּשִׂים מִשְׁטָרוֹ בָאָרֶץ׃ הֲתָרִים לָעָב
emittes Nunquid ? te operiat aquarum redundantia & : tuam vocem
35 קוֹלֶךָ וְשִׁפְעַת־מַיִם תְּכַסֶּךָּ׃ הַתְשַׁלַּח
renibus in poſuit Quis .nos Ecce ,tibi dicent & ,ibunt & , fulgura
36 בְּרָקִים וְיֵלֵכוּ וְיֹאמְרוּ לְךָ הִנֵּנוּ׃ מִי־שָׁת בַּטֻּחוֹת
numerabit Quis ? intelligentiam contemplationi dedit quis aut ,ſapientiam
37 חָכְמָה אוֹ מִי־נָתַן לַשֶּׂכְוִי בִינָה׃ מִי־יְסַפֵּר
fundendo In ? faciet quieſcere quis cœlorum defluxus & ,ſapientia in æthera
38 שְׁחָקִים בְּחָכְמָה וְנִבְלֵי שָׁמַיִם מִי יַשְׁכִּיב׃ בְּצֶקֶת
leoni venaberis Nunquid ? cohærerent glebæ & ,concretionem in pulverem
39 עָפָר לַמּוּצָק וּרְגָבִים יְדֻבָּקוּ׃ הֲתָצוּד לְלָבִיא
,habitaculis in ſe incurvant Cùm ? explebis leunculorum vitam & ,prædam
40 טֶרֶף וְחַיַּת כְּפִירִים תְּמַלֵּא׃ כִּי־יָשֹׁחוּ בַמְּעוֹנוֹת
,ejus venationem corvo parabit Quis .latibulum ipſum ad umbraculo in manent
41 יֵשְׁבוּ בַסֻּכָּה לְמוֹ־אָרֶב׃ מִי יָכִין לָעֹרֵב צֵידוֹ
? eſcam non ad errant ,vociferant Deum ad ejus nati quando
כִּי־יְלָדָו אֶל־אֵל יְשַׁוֵּעוּ יִתְעוּ לִבְלִי־אֹכֶל׃

CAP. XXXIX. לט

cervas parturire , petræ caprarum parere tempus nôſti Nunquid
1 הֲיָדַעְתָּ עֵת לֶדֶת יַעֲלֵי־סָלַע חֹלֵל אַיָּלוֹת
.earum parere tempus nôſti & , implebunt menſes Numerabis ? obſervabis
2 תִּשְׁמֹר׃ תִּסְפֹּר יְרָחִים תְּמַלֶּאנָה וְיָדַעְתָּ עֵת לִדְתָּנָה׃

Verſio VUL. LAT.

16 Numquid ingreſſus es profun-
da maris, & in noviſſimis abyſ-
17 ſi deambulâſti? Numquid a-
pertæ ſunt tibi portæ mortis, et
18 oſtia tenebroſa vidiſti? Num-
quid conſiderâſti latitudinem
terræ? indica mihi, ſi nôſti, o-
19 mnia. In qua via lux habitet,
& tenebrarum quis locus ſit:
20 Ut ducas unumquodque ad ter-
minos ſuos, & intelligas ſemi-
21 tas domûs ejus. Sciebas tunc
quòd naſciturus eſſes, & nu-
merum dierum tuorum nove-
22 ras? Numquid ingreſſus es
theſauros nivis, aut theſauros
23 grandinis aſpexiſti? Quæ
præparavi in tempus hoſtis, in
24 diem pugnæ & belli? Per
quam viam ſpargitur lux, di-
viditur æſtus ſuper terram?
25 Quis dedit vehementiſſimo
imbri curſum, & viam ſonan-
26 tis tonitrui, Ut plueret ſuper
terram abſque homine in de-
ſerto, ubi nullus mortalium
27 commoratur, Ut impleret in-
viam & deſolatam, & produ-
28 ceret herbas virentes? Quis
eſt pluviæ pater? vel quis ge-
29 nuit ſtillas roris? De cujus
utero egreſſa eſt glacies? &
30 gelu de cœlo quis genuit? In
ſimilitudinem lapidis aquæ du-
rantur, & ſuperficies abyſſi
31 conſtringitur. Numquid con-
jungere valebis micantes ſtel-
las Pleiadas, aut gyrum Ar-
32 cturi poteris diſſipare? Num-
quid producis Luciferum in
tempore ſuo, & Veſperum ſu-
p filios terræ conſurgere facis?
33 Numquid nôſti ordinem cœli,
& pones rationem ejus in ter-
34 ra? Numquid elevabis in ne-
bula vocem tuam, & impetus
35 aquarum operiet te? Num-
quid mittes fulgura, & ibunt,
& revertentia dicent tibi; Ad-
36 ſumus? Quis poſuit in viſce-
ribus hominis ſapientiam? vel
quis dedit gallo intelligenti-
37 am? Quis enarrabit cœlo-
rum rationem, & concentum
cœli quis dormire faciet?
38 Quando fundebatur pulvis in
terra, & glebæ compingeban-
39 tur? Numquid capies leænæ
prædam, & animam catulo-
40 rum ejus implebis, Quando
cubant in antris, & in ſpecu-
41 bus inſidiantur? Quis præpa-
rat corvo eſcam ſuam, quando
pulli ejus clamant ad Deum,
vagantes, eò quòd non habe-
ant cibos?

CAP. XXXIX.

1 NUmquid nôſti tempus par-
tûs ibicum in petris, vel partu-
2 rientes cervas obſervâſti? Di-
numerâſti menſes conceptûs
earum, & ſciſti tempus partûs
earum?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

16 † Ἦλθες δὲ ἐπὶ (ν) πηγὴν θαλάσσης, ἐν
17 δὲ ἴχνεσιν ἀβύσσου περιεπάτησας; † Ἀνοί-
γονται δέ σοι φόβῳ πύλαι θανάτου, †
πυλωροὶ δὲ ᾅδου ἰδόντες σε ἔπτηξαν; †
18 Νενουθέτησαι δὲ τὸ εὖρος τῆς ὑπ' οὐρα-
νόν; † ἀνάγγειλον δή μοι, πόση (ξ) τίς
19 ἐστι; † Ποίᾳ δὲ γῇ αὐλίζεται (ο) τὸ φῶς;
20 † Σκότους δὲ (π) ποῖος ὁ τόπος; † Εἰ ἀ-
γάγοις με εἰς ὅρια αὐτῶν, † εἰ δὲ καὶ ἐπί-
21 στασαι τρίβους αὐτῶν· † Οἶδα ἄρα ὅτι (ρ)
τότε γεγέννησαι, † ἀριθμὸς δὲ ἐτῶν σου
22 πολύς. † Ἦλθες δὲ ἐπὶ θησαυροὺς χιό-
νος, † θησαυροὺς δὲ χαλάζης (σ) ἑώρακας;
23 † Ἀπόκειται δέ σοι εἰς ὥραν ἐχθρῶν, †
24 εἰς ἡμέραν (τ) πολέμων καὶ μάχης; † Πό-
θεν δὲ ἐκπορεύεται πάχνη, † ἢ διασκεδάν-
25 νυται Νότος εἰς τὴν ὑπ' οὐρανόν; † Τίς
δὲ ἡτοίμασεν ὑετῷ λάβρῳ ῥύσιν, ὁδὸν δὲ
26 κυδοιμῶν, † Τοῦ ὑετίσαι (υ) ἐπὶ γῆν οὗ οὐκ
ἀνήρ, † ἔρημον οὗ (ς) οὐχ ὑπάρχει ἄνθρωπος
27 ἐν αὐτῇ, † Τοῦ χορτάσαι ἄβατον καὶ ἀοί-
κητον, † καὶ τοῦ ἐκβλαστῆσαι ἔξοδον χλό-
28 ης; † Τίς ἐστιν ὑετοῦ πατήρ; Τίς δέ ἐστιν
29 ὁ τετοκὼς (φ) βώλους δρόσου; † Ἐκ γα-
στρὸς δὲ τίνος ἐκπορεύεται (χ) ὁ κρύσταλ-
λος; † πάχνην δὲ ἐν οὐρανῷ τίς τέτοκεν,
30 † Ἡ καταβαίνει (ψ) ὥσπερ ὕδωρ ῥέον; †
31 πρόσωπον (ω) ἀσεβοῦς τίς ἔπτηξεν; Συν-
ῆκας (α) δὲ δεσμὸν Πλειάδος (β), † καὶ
32 φραγμὸν Ὠρίωνος ἤνοιξας; † Ἢ διανοί-
ξεις μαζουρὼθ ἐν καιρῷ αὐτοῦ, † καὶ ἕσπε-
33 ρον ἐπὶ κόμης αὐτοῦ (γ) ἄξεις αὐτά; † Ἐ-
πίστασαι δὲ τροπὰς οὐρανοῦ, † ἢ τὰ ὑπ' οὐ-
34 ρανὸν ὁμοθυμαδὸν γινόμενα; † Καλέσεις
δὲ νέφος φωνῇ, καὶ (δ) τρόμῳ ὕδατος λά-
35 βρου ὑπακούσεταί σου; † Ἀποστελεῖς δὲ κε-
ραυνοὺς καὶ πορεύσονται; ἐροῦσι δέ σοι,
36 Τί ἐστι; † (ε) Τίς δὲ ἔδωκε γυναιξὶν ὑφά-
σματος σοφίαν, † (ζ) ἢ ποικιλτικὴν ἐπιστή-
37 μην; † Τίς δὲ ὁ ἀριθμῶν νέφη σοφίᾳ,
† οὐρανὸν δὲ εἰς γῆν ἔκλινε; † (η)
38 Κέχυται δὲ ὥσπερ γῆ κονία, † κεκόλλη-
39 κα δὲ αὐτὸν ὥσπερ λίθῳ κύβον. † Θηρεύ-
σεις δὲ λέουσι βοράν, † ψυχὰς δὲ δρακόν-
40 των ἐμπλήσεις; † Δεδοίκασι γὰρ ἐν κοί-
ταις αὐτῶν, † κάθηνται δὲ ἐν ὕλαις ἐνεδρεύ-
41 οντες. † Τίς δὲ ἡτοίμασε κόρακι βοράν;
† (θ) νεοσσοὶ γὰρ αὐτοῦ πρὸς κύριον κεκρά-
γασι πλανώμενοι, τὰ σῖτα ζητοῦντες.

Aut veniſti ad fontem maris, 16
aut in veſtigiis abyſſi ambulâ-
ſti? Aut tibi aperiuntur me- 17
tu portæ mortis, aut janitores
inferni videntes te timuerunt?
Aut (l) cognoviſti latitudinem 18
ejus quæ ſub cœlo? Narra ergò
mihi, quantánam ſit: Aut in qua 19
terra (m) habitet lux, aut quis
tenebrarum locus. Si duces me 20
in fines eorum? quòd ſi &
nôſti (n) ſemitas eorum? (o)
Novi igitur, quia tunc natus 21
es, & numerus annorum tuo-
rum multus. Aut veniſti in 22
theſauros nivis, aut theſauros
(p) grandinis vidiſti? Et repo- 23
ſita ſunt tibi in tempus inimi-
corum, in diem bellorum, & pu-
gnæ? Undè autem procedit (q) 24
pruina, aut diſpergitur Auſter
in eam quæ ſub cœlo? Quis 25
autem (r) præparavit fluxum
validæ pluviæ, & viam (ſ)
tempeſtatum, ut pluat ſuper ter- 26
ram, ubi non eſt vir, deſertum,
ubi non eſt homo in eo, ut ſati- 27
et inviam, & inhabitabilem, &
ut germinet exitus herbæ viren-
tis? Quis (t) eſt pluviæ pater? 28
Et quis eſt, qui peperit glebas
roris, Et de cujus utero proce- 29
dit glacies, aut pruinam in cœ-
lo quis peperit, Quæ deſcendit 30
ſicut aqua fluens? Faciem (u)
impii quis exterruit? Aut in- 31
tellexiſti (x) nexum Pleiadis, &
ſeptum Orionis aperuiſti? An a- 32
peries (y) Mazuroth in tempo-
re ſuo, & veſperum ſuper (z)
comam ejus duces ea? Scis au- 33
tem (aa) commutationes cœli,
aut quæ ſub cœlo, ſimul facta?
Vocabis autem nubem voce, & 34
tremore aquæ validæ obediet ti-
bi? Mittes (bb) autem fulmina, 35
& ibunt: aut dicent tibi, Quid
(cc) eſt? Quis autem dedit 36
mulieribus texturæ ſapientiam,
aut variegandi ſcientiam? Aut 37
quis eſt (dd) qui numeret nubes
ſapientiâ, (ee) & cœlum in ter-
ram inclinavit? (ff) Diffuſus 38
eſt autem, ſicut terra, cinis: &
agglutinavi eum, ſicut lapide
cubum. Aut venaberis leonibus 39
eſcã, aut animas draconũ reple-
bis? Timuerũt enim in cubilibꝰ 40
eorum, & ſedent in (gg) ſylvis
inſidiantes. Quis autem præpa- 41
ravit corvo eſcam? pulli enim ejus ad Dominum
clamaverunt errantes, cibaria quærentes.

ΚΕΦ. λθ'.

1 (α) ΕἸ ἔγνως καιρὸν τοκετοῦ τραγελά-
φων πέτρας, ἐφύλαξας δὲ ὠδῖνας ἐλάφων,
2 † Ἠρίθμησας δὲ μῆνας αὐτῶν πλήρεις το-
κετοῦ αὐτῶν, † ὠδῖνας δὲ αὐτῶν ἔλυσας,

CAP. XXXIX.

SI cognoviſti tempus pariendi 1
tragelaphorum (a) petræ, aut
partus cervarum cuſtodiſti, Et 2
(b) numerâſti menſes earum
plenos partûs earum, & dolo-
res earum ſolviſti,

MS. A. (ν)* γῆν (ξ) ἢ τίς ἐστιν; Ἐν ποίᾳ δὲ (ο) φῶς; (π) ποῖός ἐστιν τόπος; Εἰ ἄρα ἀγάγοις (ρ) εἰς τοῦτο γεγέννησαι, (σ) ἑόρακας; Ἀπόκινται (τ) πολέμου (υ) ἐπὶ γῆς (ς) οὐκ (φ) συνοχὰς καὶ βώλους δρόσου; (χ) κρύσταλλος; (ψ) ὡς (ω) δὲ ἀσεβοῦς τίς ἔπηξεν; (α) δεσμὸν δὲ (β) ἔγνως, ἢ φραγμὸν (γ) καὶ ἄξεις (δ) δρόμῳ (ε) Τίς ἔδωκεν γυναικὶ (ζ) καὶ ποικιλτικὴν σοφίας ἐπιστήμην; (η) Κέχυται γὰρ ὥσπερ γῆς κονία, κεκόλληκεν δὲ αὐτὸν ὥσπερ κύβον λίθοις. (θ) νεοσσοὶ δὲ πρὸς κύριον αὐτοῦ κεκράγασιν

Κεφ. λθ'. MS. A. (α)* ἐφύλαξας δὲ ὠδῖνας ἐλάφων, Ἠρίθμησας δὲ αὐτῶν μῆνας πλήρεις τοκετοῦ, ὠδῖνας

תרגום TARGUM.

16 17 18 אֶפְשַׁר דְּעַלְתָּא עַד מְעַרְבְּלֵי סְנוֹר יַמָּא וּבְפִשְׁפּוּשׁ תְּהוֹמָא הַלֵּכְתָּא ׃ אֶפְשַׁר דְּאִתְגְּלִיאוּ לָךְ מַעֲלָנֵי מוֹתָא וּמַעֲלָנֵי טוּלֵי מוֹתָא דִגְהִנָּם תֶּחֱמֵי ׃ אִתְבַּיַּנְתָּ עַד פִּתְיֵי
19 20 אַרְעָא דִגְנַתָּא דְעֵדֶן חֲוֵי אִין יְדַעְתָּא כּוּלְּהָא ׃ אֵידֵין אוֹרְחָא יִשְׁרֵי נְהוֹרָא וַחֲשׁוֹכָא הֵידֵין אַתְרֵיהּ ׃ אֲרוּם תְּדַבְּרִנֵּיהּ לִתְחוּמֵיהּ וַאֲרוּם תִּתְבַּיַּן שְׁבִילֵי בֵּיתֵיהּ ׃
21 22 23 הֲיָדַעְתָּא אֲרוּם בְּכֵן תִּתְיְלִיד וּמִנְיַן יוֹמָךְ סַגִּיעִין ׃ אֶפְשַׁר דְּעַלְתָּא לְקוּרְטוּרֵי תַלְגָּא וְאַפּוֹתִיקֵי דְבַרְדָּא תֶּחֱמֵי ׃ דִּי נְגוּיִת תַּלְגָּא לְעִדָּן עָקְתָא בְּגֵהִנָּם וּבַרְדָּא לְיוֹם
24 25 קְרָבָא דְפַרְעֹה וְאֻנְחוּתָא דְמִצְרָאֵי ׃ הֵידֵין אוֹרְחָא יִתְפְּלֵיג נְהוֹרָא יְבַדַּר רוּחַ קִדּוּמָא עַל אַרְעָא ׃ מַן טַיֵּיף לְשִׁטְפָא קוּבְתָא וְאִסְרָטָא לַעֲנָנֵי קָלַיָּא ׃ תָּא מַן טָאֵף
לְשִׁטְפָא דִתְהוֹמָא חֲרִיצֵי מַיָּא וּקְצַתְהוֹן דִּלְאַלְעֵילָא וְאוֹרְחָא לַעֲנָנֵי דְמַחֲתִין מִתַּמָּן מַיָּא בְקָלַיָּא ׃ תָּא מַן עֲבַד שִׁטְפָא לְמַרְזְבָא דְמַיָּא וּלְעֵילָא אָרְחָא דַעֲנָנָא
26 27 28 דְּמָחֵת מִטְרָא בְקָלִין ׃ לְאַחְתָא מִטְרָא עַל אַרְעָא דְלֵית בָּהּ גְּבַר מַדְבְּרָא דְלָא בַר נָשׁ בֵּיהּ ׃ לְמִסְבַּע רְנוֹשָׁא וְאַתְרֵי נוֹשְׁתָּא וּלְמַרְבְּיָא מַפְּקָנוּת דִּתְאָה ׃ הַאִית
29 30 לְמִטְרָא אַבָּא אוֹ מַן אוֹלִיד רְסִיסֵי טַלָּא ׃ מִכְּרֵיסָא דְמַן נְפַק קַרְחָא וּגְלִידָא דִשְׁמַיָּא מַן יְלִיד יָתֵיהּ ׃ הֵיךְ אַבְנָא מוֹי קְרִישִׁין וּמִטַּמְּרִין וְאַפֵּי תְּהוֹמָא מִן קוֹרָא
31 32 33 מִתְאַחֲדִין ׃ הֲתִקְטוֹר שֵׁירֵי כִימְתָא אוֹ אַשְׁלֵי דְנַגְדִּין נִפְלָא תְשָׁרֵי ׃ הֲתַפֵּק שִׁטְרֵי מַזָּלַיָּא בְזִמְנֵיהּ וְזִנְתָּא עַל אֶפְרָחָהָא תְּדַבְּרִנּוּן ׃ הֲיָדַעְתָּא גְזֵירָתָא דִשְׁמַיָּא
34 35 36 אִין תְּשַׁוֵּי שִׁטְרֵי נִגְלְיֵיהּ בְּאַרְעָא ׃ אֶפְשַׁר דִּתְרִים לְעִיבָא קָלָךְ וְרִכְפַּת מַיָּא תְּחַפִּנָּךְ ׃ אֶפְשַׁר דִּתְשַׁדַּר בַּרְקִין וְיֵהָכוּן וְיֵימְרוּן לָךְ הָא אֲנַן ׃ מַן שַׁוֵּי בְּכֻלְיָין חוּכְמְתָא
37 אוֹ יְהַב לְלִבָּא בִינְתָא ׃ תָּא לְתַרְנְגוֹל בָּרָא בִּיוּנְתָא לְמִקְלָסָא לְמָרֵיהּ ׃ מַן יִמְנֵי שִׁבְעָתֵי שְׁמַיָּא בְּחוּכְמְתָא וּכְילָוַת שְׁמַיָּא מַן יַשְׁרֵי ׃ תָּא מַן יִמְנֵי כּוֹכְבֵי שְׁמַיָּא
38 39 בְּחוּכְמְתָא וַעֲנָנֵי דְמִתִּילִין לְזִיקַיָּא דִשְׁמַיָּא מַן יַשְׁכִּיב ׃ כַּד אִשְׁתְּאַס עַפְרָא לְשִׁתְאָסָה וְגַרְגִּשְׁתָא אִדַּבְקוּ ׃ הֲתָצוּד לְלֵיתָא מְזוֹנָא וּפַרְנָסוּתָא דְאַרְיָוָתָא תְּסַפֵּק ׃
40 41 אֲרוּם שָׁחְיָין בִּמְדוֹרָתְהוֹן יָתְבוּן בְּמַטַּלַּלְתָּא מִטּוּל לִכְמָנָא ׃ מַן יַתְקֵן לְעוּרְבָא מְזוֹנֵיהּ אֲרוּם בְּנוֹי לֶאֱלָהָא יִבְעוּן תָּעֲיִן מִדְּלֵית מֵיכְלָא ׃

לט

1 2 אֶפְשַׁר דִּידַעְתָּא עִדָּן מֵילְדֵיהוֹן דְּיַעֲלֵי טִינָרָא כַּד מִצְטַעֲרִין אַיַּלְתָּא תִּנְטוֹר ׃ תִּמְנֵי יַרְחַיָּא דְשַׁלְמָן וְתִנְדַּע עִדָּנֵי מֵלְדֵיהוֹן ׃

Verſio SYRIACA.

16 17 *ܥܠܠܬ ܠܥܘܡܩܘܗܝ ܕܝܡܐ .• ܘܒܫܬܐܣܘܗܝ ܕܬܗܘܡܐ ܗܠܟܬ. * ܐܬܓܠܝܘ ܠܟ ܬܪ̈ܥܐ ܕܡܘܬܐ : ܘܬܪ̈ܥܐ
18 19 ܕܛܠܠܝ ܡܘܬܐ .• ܚܙܝܬ .• ܟܠܗ ܦܬܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ. * ܚܘܝܢܝ ܐܢ ܝܕܥ ܐܢܬ ܒܐܝܢܐ ܐܘܪܚܐ ܥܡܪ ܢܘܗܪܐ. ܘܐܬܪܗ
20 21 ܕܚܫܘܟܐ ܐܝܟܘ. * ܐܢ ܝܕܥ ܐܢܬ ܠܬܚܘܡܗ ܘܡܫܟܚ ܫܒܝܠܐ ܕܒܝܬܗ. * ܐܘ ܝܕܥ ܐܢܬ ܕܡܟܝܠ ܐܬܝܠܕܬ. ܘܡܢܝܬ
22 ܝܘܡܝܟ ܐܢ ܣܓܝܐܝܢ. * ܥܠܠܬ ܠܐܘܨܪ̈ܐ ܕܬܠܓܐ .• ܘܐܘܨܪ̈ܐ ܕܒܪܕܐ ܚܙܝܬ ܠܟ. * ܕܡܬܢܛܪܝܢ ܠܥܕܢܐ ܕܐܘܠܨܢܐ.
23 24 ܘܠܝܘܡܐ ܕܟܢܘܫܝܐ ܕܩܪܒܐ. * ܐܘ ܒܐܝܢܐ ܐܘܪܚܐ ܡܬܦܠܓ ܢܘܗܪܐ .• ܘܢܦܩܐ ܪܘܚܐ ܥܠ ܐܪܥܐ. * ܘܗܘܐ ܡܛܪܐ
25 26 ܘܡܛܠ .• * ܠܡܢܚܬܗ ܡܛܪܐ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܠܐ ܐܢܫ. ܘܡܕܒܪܐ ܕܠܝܬ ܒܗ ܐܢܫ. * ܠܡܣܒܥܘ ܟܠ ܟܘ̈ܒܐ. ܘܠܡܦܩܘ
27 28 ܡܦܩܢܐ ܕܬܕܐܐ. * ܐܝܬ ܐܒܐ ܠܡܛܪܐ. ܐܘ ܡܢܘ ܐܘܠܕ ܢܛܘ̈ܦܐ. * ܘܓܠܝܕܐ ܡܢ ܟܪܣܐ ܕܡܢ ܢܦܩ.
29 30 ܘܦܗܪܐ ܕܫܡܝܐ ܡܢܘ ܐܘܠܕ. * ܐܝܟ ܟܐ̈ܦܐ ܡܬܩܪ̈ܫܝܢ ܡܝ̈ܐ. ܘܐܦ̈ܝ ܠܬܗܘ̈ܡܐ ܐܚܝܕܝܢ. * ܐܢܝܢ ܐܢܬ ܟܪ̈ܟܐ
31 32 ܟܝܡܐ .• ܐܘ ܫܒܝܠܐ ܕܓܢܒܪܐ ܚܙܝܬ. * ܗܘ ܐܦܩ ܥܓܠܬܐ ܒܙܒܢܗ. ܐܘ ܩܐܡ ܐܢܬ ܠܘܩܒܠ ܥܝܘܬܐ. * ܝܕܥ ܐܢܬ
33 ܢܡܘܣܐ ܕܫܡܝܐ .• ܐܘ ܣܐܡ ܐܢܬ ܢܡܘܣܐ ܒܐܪܥܐ. * ܡܪܝܡ ܐܢܬ ܥܠ ܥܢ̈ܢܐ ܩܠܟ .• ܘܡܟܣܐ ܐܢܬ ܠܗܘܢ
34 35 ܒܣܘܓܐܐ ܕܡܝ̈ܐ .• * ܡܫܕܪ ܐܢܬ ܒܪ̈ܩܐ ܘܐܙܠܝܢ .• ܘܐܡܪܝܢ ܠܟ ܗܐ ܩܝܡܝܢܢ .• * ܡܢܘ ܣܡ ܚܟܡܬܐ ܒܟܘ̈ܠܝܬܐ.
36 37 ܐܘ ܡܢܘ ܝܗܒ ܚܘܪܐ ܠܒܠܒܘܬܐ. * ܡܢܘ ܡܢܐ ܥܢ̈ܢܐ ܒܚܟܡܬܗ .• ܘܣܡ̈ܟܐ ܕܫܡܝܐ ܡܢܘ ܐܩܝܡ. * ܡܢܘ
38 39 ܢܫܘܐ ܥܦܪܐ ܥܠ ܐܪܥܐ .• ܘܫܘ̈ܥܐ ܡܢܘ ܐܩܝܡ. * ܡܢܘ ܝܗܒ ܠܐܪܝܐ ܡܐܟܘܠܬܐ .• ܘܢܦܫܐ ܕܚܝ̈ܘܬܐ ܣܒܥܬ.
40 41 * ܡܢܘ ܐܣܓܝ ܚܝ̈ܘܬܐ ܒܡܕܒܪܐ. * ܘܡܢܘ ܝܗܒ ܠܥܘܪܒܐ ܡܐܟܘܠܬܗ. ܡܛܠ ܕܒܢ̈ܘܗܝ ܠܘܬ ܐܠܗܐ
ܓܥܝܢ ܘܡܬܒܨܪܝܢ ܡܢ ܕܠܝܬ ܡܐܟܘܠܬܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܠܛ *
1 * ܝܕܥ ܐܢܬ ܙܒܢܐ ܕܝܠܕܝ
2 ܝܥܠ̈ܐ ܕܒܫܘ̈ܥܐ .• ܘܕܡܚܒ̈ܠܢ ܐܝ̈ܠܬܐ. * ܬܡܢܐ ܐܢܬ ܝܪ̈ܚܐ ܕܡܫܠܡܢ. ܘܝܕܥ ܐܢܬ ܙܒܢ ܡܘܠܕܗܝܢ .•

Verſio ARABICA.

16 17 * هل دخلت الي اعماق البحر * وفي اواسي الغرار سلكت * ظهرت لك ابواب الموت وابواب ظلال الموت * رايت
18 19 كل عرض الارض * خبرني ان كنت تعلم في اي طريق يحل النور * وموضع الظلمة اين هي * ان كنت
20 21 تعلم حدها وسبيل بيتها * وان كنت تعلم متي ولدت * وعددت ايامك ان كانت كثيرة * هل دخلت
22 23 الي خزاين الثلج وخزاين البرد تراات لك * التي هي محفوظة لزمان الضر * وليوم اجتماع القتال * او في
24 25 اي طريق ينقسم النور * ويخرج الريح علي الارض * فيكون مطرا وصوبا * لينزل مطرا علي الارض بلا انسان
26 27 وفي القفر حين ليس احد * ليشبع كل شوك * وليثبت مخارج العشب * هل يكون ابا للمطر * ومن الذي يلد
28 29 30 القطر * والطل والجليد من بطن من خرجوا * وصلابة السماء من الذي ولدها * مثل الحجارة تقسوا
31 32 المياه * ووجوه الغوار تاخذ * هل بوجه الثريا او سبيل الجبار ابصرت * هل تخرج العجلة لوقتها * وتقوم
33 34 في وجه العيوق * هل تعرف ناموس السماء * او تصنع ناموسا في الارض * هل ترفع على السحاب صوتك *
35 36 فتغطيها بكثرة الماء * هل ترسل البروق فتنطلق * ويقولون لك هوذا نحن قيام * من صنع الحكمة في
37 الخفي * او من الذي اعطا النظر للبيان * من الذي احصا السحاب بحكمته * واعمدة السماء من الذي
38 39 اقامها * من الذي افرغ ترابا على الارض * والكهوف من الذي اوقفها * من الذي وهب للاسد ماكلة *
40 41 وانفس السباع اشبع * من الذي كثر الحيوان في القفر * ومن الذي اعطا الغراب ماكلته * من اجل
ان بنيه الي الله يعجون * ويضعفون اذ ليس ياكلون * * الفصل التاسع والثلثون *
1 2 * هل تعرف وقتا تلد الروايي في الكهوف * وتحمل الايايل * اتعرف عدد للشهور * وتعرف ميقات ولادها *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Numquid ingreſſus es profunda maris, & per fundamenta abyſſi ambulâſti? 16 *Apparuerúntne tibi portæ mortis, & portæ umbræ mortis?* 17 *Vidiſtine omnem terræ latitudinem?* 18 *Indica mihi ſi ſcis, in qua via habitat lux, & locus tenebrarum ubi eſt?* 19 *Si ſcis terminum ejus, & viam domûs ejus?* 20 *Et ſi ſcis quando natus es, & numerâſti dies tuos an ſint multi?* 21 *Numquid ingreſſus es theſauros nivis, & theſauri grandinis apparuerúntne tibi;* 22 *Qui ſunt aſſervati ad tempus tribulationis, & ad diem congregationis belli?* 23 *Aut in qua via ſeparatur lux? & egreditur ventus ſuper terram,* 24 *Et fit (g) pluvia & imber?* 25 *ut cadat pluvia ſuper terram abſque homine, & in deſerto ubi nullus eſt?* 26 *ut ſatientur omnes ſpinæ, & producat germina herbæ?* 27 *Numquid eſt pater pluviæ? & quis gignit ſtillas? Et ros,* 28 *& gelu ex cujuſnam ventre egreſſa ſunt? & (h) ſoliditatem cœli quis genuavit?* 29 *Quaſi lapides dureſcunt aquæ, & facies abyſſorum occupant.* 30 *Nunquid (i) faciem Pleiadis, & ſemitam gigantis intuitus es?* 31 *Numquid educes Plauſtrum tempore ſuo, an temet ipſum oppones Arcturo?* 32 *Numquid ſcis legem cœli, aut ponis legem ſuper terram?* 33 *Numquid extolles ſuper nubes vocem tuam, & eas cooperies aquarum copiâ?* 34 *Numquid mittes fulgura & abibunt, & dicent tibi, Ecce nos ſum adſtantes?* 35 *Quis fecit ſapientiam in abſcondito, aut quis dedit (k) conſideratione intellectui?* 36 *Quis numeravit nubes in ſua ſapientia, & quis erexit columnas cœli?* 37 *Quis fudit pulverem ſuper terram, & rupes quis firmavit?* 38 *Quis dedit leoni eſcam, te ferarum animas ſaturavit?* 39 *Quis multiplicavit animalia in deſerto?* 40 *Et quis dedit corvo cibum ſuum? quia filii ejus ad Deum ejulant, & infirmantur cùm non edunt.* 41

CAP. XXXIX.

Numquid ſcis quando parturiunt ibices in rupibus, & concipiunt cervæ? 1 *Sciſne numerum menſium, & ſcis tempora partûs earum?* 2

INTERP. SYRIACA.

(g) fulgur & tonitruum? (h) cœruleum cœli colorem quis (i) conjunges faciem (k) perſpicacitatem

PARAPH. CHALD. Verſio Latina,

Nunquid ingreſſus es ad *perplexa clauſuræ maris*, & in ſcrutatione abyſſi deambulâſti? Nunquid poſſunt aperiri tibi portæ mortis, & introitus umbræ mortis gehennæ 16 17
conſpicies? Nunquid intellexiſti uſque ad latitudinem terræ paradiſi voluptatis? indica ſi nôſti hæc univerſa. Qua via lux habitat, & caliginis quis eſt locus? Ut 18 19
ducas eum ad terminum ſuum, & ut intelligas ſemitas domus ejus. *Num* ſciebas quòd tunc naſciturus eſſes, & numerum dierum tuorum multorum? Nunquid introiſti 20 21
in cellaria nivis, & apothecas grandinis aſpexiſti? Quam nivem reſervavi in tempora tribulationis in gehenna, & grandinem in diem belli *Pharaonis* & pugnæ 22 23
Ægyptiorũ. Per quã viam *diſpertitur* lux, diſpergit ſe ventus Orientalis ſuper terrã? Quis *fluere fecit inundationem in ciſternam &* viam nubibus *ſonoris? Targũ aliud:* 24 25
Quis *fecit ut flueret inundatio* abyſſi [*in*] ciſternas aquarũ, *et partẽ earũ qua non eſt ſuprà*; & viam nubibus quæ dejiciunt *inde* aquas cum tonitruis? *Targum aliud:* Quis
fecit inundationem in canalem aquarum, ac deſuper viã *nubis, quæ dejicit pluviam* cum tonitruis. Ut diſtillent pluviã ſuper terrã in qua non eſt vir, [*& in*] deſertum in quo 26
non eſt filius hominis? Ut ſatiet tumultu & ſtrepitu, & ut germinare faciat productionem graminis. Nunquid eſt pluviæ pater, aut quis genuit ſtillas roris? De cujus 27 28
ventre egreſſa eſt glacies, & gelu cœli quis genuit illud? Sicut lapis, aquæ congelantur & oceultantur: & facies abyſſi propter frigus conſtringuntur. Nunquid ligabis 29 30
catenis Oriona, & funes qui trahunt Arcturum ſolves? Nunquid produces conſtellationes planetarum in tempore ſuo, & *gallinam* ſuper *pullos* ſuos duces? Nunquid 31 32
nôſti ſtatuta cœlorum, aut pones rationem revolutionis ejus ſuper terram? Nunquid elevabis ad nubem vocem tuam, & multitudo aquarum operiet te? Nunquid mittes 33 34
fulgura, & ibunt, & dicent tibi, Ecce adſumus? Quis poſuit in renibus ſapientiam, aut quis dedit *cordi* intelligentiam? *Targum aliud:* Gallo *ſylveſtri* intelligentiam, 35 36
ut laudaret dominum ſuum? Quis numerabit *ſeptem cœlos* in ſapientia, & *menſuras cœlorum* quis *conſtituet*? *Targum aliud*: Quis numerabit ſtellas cœli 37
in ſapientia, & nubes cœli quæ comparantur *utribus*, quis collocavit? Quando poſita eſt terra in fundamento, & glebæ compactæ ſunt. Nunquid venaberis leænæ cibum, 38 39
& eſcam leonibus ſuppeditabis? Quando inclinant ſe in habitaculis, habitant in umbraculis ut inſidientur. Quis præparavit corvo eſcam ſuam, quando filii ejus 40 41
ad Deum vociferantur, errantes eò quòd non habeant cibum?

CAP. XXXIX.

Nunquid nôſti tempus partus ibicum rupium; aut quando parturiunt cervæ obſervabis? Numerabis menſes quos perficiunt, & ſcies tempus partus earum? 1 2

איוב : לט

Convaleſcunt .emittent ſuos dolores : *effringent* ſuos fœtus ,ſe *Incurvabunt*
תִּכְרַעְנָה יַלְדֵיהֶן תְּפַלַּחְנָה חֶבְלֵיהֶם תְּשַׁלַּחְנָה׃ יַחְלְמוּ 3 4
.eas ad revertuntur nõ & egrediũtur : *frumento in* ſe multiplicant ,earũ filii
בְנֵיהֶם יִרְבּוּ בַבָּר יָצְאוּ וְלֹא־שָׁבוּ לָמוֹ׃
? ſolvit quis onagri vincula & , liberum onagrum dimiſit Quis
מִי־שִׁלַּח פֶּרֶא חָפְשִׁי וּמֹסְרוֹת עָרוֹד מִי פִתֵּחַ׃ 5
.*ſalſuginem* ejus habitacula & , *ejus* domum *ſolitudinem* poſui Cujus
אֲשֶׁר־שַׂמְתִּי עֲרָבָה בֵיתוֹ וּמִשְׁכְּנוֹתָיו מְלֵחָה׃ 6
Exploratio .audiet non exactoris *fremitus* : civitatis *turbam* Deridebit
יִשְׂחַק לַהֲמוֹן קִרְיָה תְּשֻׁאוֹת נוֹגֵשׂ לֹא יִשְׁמָע׃ יְתוּר 7 8
volet Nunquid .perquiret virens omne poſtea &,ejus *paſcuum* montium
הָרִים מִרְעֵהוּ וְאַחַר כָּל־יָרוֹק יִדְרוֹשׁ׃ הֲיֹאבֶה 9
? *tuum præſepe ſuper pernoctabit An* ? tibi ſervire rhinoceros
רֵים עָבְדֶךָ אִם־יָלִין עַל־אֲבוּסֶךָ׃
.valles agricolabit *An* ? ſuo fune ,ſulco in rhinocerotẽ ligabis Nunquid
הֲתִקְשָׁר־רֵים בְּתֶלֶם עֲבֹתוֹ אִם־יְשַׂדֵּד עֲמָקִים 10
: ejus *robur multum* quia , eo in confides Nunquid ? te poſt
אַחֲרֶיךָ׃ הֲתִבְטַח־בּוֹ כִּי־רַב כֹּחוֹ 11
quòd *eo in* credes Nunquid ? tuum laborem *eum ad* derelinquas &
וְתַעֲזֹב אֵלָיו יְגִיעֶךָ׃ הֲתַאֲמִין בּוֹ כִּי־ 12
exultantium Ala ? congreget tuam aream & , tuum ſemen reddat
יָשִׁיב זַרְעֶךָ וְגָרְנְךָ יֶאֱסֹף׃ כְּנַף־רְנָנִים 13
derelinquet Quia ? *pluma & ciconia penna An .læta*
נֶעֱלָסָה אִם־אֶבְרָה חֲסִידָה וְנֹצָה׃ כִּי־תַעֲזֹב 14
obliviſcitur Et .ea *calefaciet pulverem* ſuper & , ſua ova terra in
לָאָרֶץ בֵּצֶיהָ וְעַל־עָפָר תְּחַמֵּם׃ וַתִּשְׁכַּח 15
tractat Duriter .ea *conculcet* agri beſtia & : ea diſpergat pes quòd
כִּי־רֶגֶל תְּזוּרֶהָ וְחַיַּת הַשָּׂדֶה תְּדוּשֶׁהָ׃ הִקְשִׁיחַ 16
Quoniam .pavore abſque ejus labor vanum in : *ſibi non ,ſuos filios*
בָּנֶיהָ לְּלֹא־לָהּ לְרִיק יְגִיעָהּ בְּלִי־פָחַד׃ כִּי־ 17
.intelligentiã ei eſt impartitus non & ,ſapientiam Deus *eũ fecit obliviſci*
הִשָּׁהּ אֱלוֹהַּ חָכְמָה וְלֹא־חָלַק לָהּ בַּבִּינָה׃
.ejꝰ aſcenſorẽ & ,equum deridebit ,ſe elevaverit altum in *tempus Juxta*
כָּעֵת בַּמָּרוֹם תַּמְרִיא תִּשְׂחַק לַסּוּס וּלְרֹכְבוֹ׃ 18
ejꝰ collum indues Nunquid ? fortitudinẽ equo præbebis Nunquid
הֲתִתֵּן לַסּוּס גְּבוּרָה הֲתַלְבִּישׁ צַוָּארוֹ 19
ejus *naſi Decor* ? locuſtam ſicut eum terrebis Nunquid ? *tonitru*
רַעְמָה׃ הֲתַרְעִישֶׁנּוּ כָּאַרְבֶּה הוֹד נַחְרוֹ 20
egredietur : fortitudine in gaudebit & , valle in *Effodient* .terror
אֵימָה׃ יַחְפְּרוּ בָעֵמֶק וְיָשִׂישׂ בְּכֹחַ יֵצֵא 21
revertetur nec ,*conſternabitur* nõ &,pavorẽ Deridebit .*armaturæ* occurſum in
לִקְרַאת־נָשֶׁק׃ יִשְׂחַק לְפַחַד וְלֹא יֵחָת וְלֹא יָשׁוּב 22
.haſtæ & ,lanceæ *lamina* : pharetra *ſtridebit* eum Super .gladii *faciebus* à
מִפְּנֵי־חָרֶב׃ עָלָיו תִּרְנֶה אַשְׁפָּה לַהַב חֲנִית וְכִידוֹן׃ 23
.buccinæ *vox* quòd credet non & ; terram effodiet ira & , impetu Cum
בְּרַעַשׁ וְרֹגֶז יְגַמֶּא־אֶרֶץ וְלֹא־יַאֲמִין כִּי־קוֹל שׁוֹפָר׃ 24
,bellum odorabitur longe à & , euge dicet *buccinæ ſufficientia In*
בְּדֵי שֹׁפָר יֹאמַר הֶאָח וּמֵרָחוֹק יָרִיחַ מִלְחָמָה 25
tuã intelligentiã propter Nunquid .clamorem & ,principum *ſtrepitum*
רַעַם שָׂרִים וּתְרוּעָה׃ הֲמִבִּינָתְךָ 26
tuum *os* ad *An* ?Auſtrum ad ſuas alas extendet ; *niſus* volabit
יַאֲבֶר־נֵץ יִפְרֹשׂ כְּנָפָיו לְתֵימָן׃ אִם־עַל־פִּיךָ 27
,habitabit *Petram* ? ſuum nidum elevabit quòd & : aquila elevabitur
יַגְבִּיהַּ נָשֶׁר וְכִי יָרִים קִנּוֹ׃ סֶלַע יִשְׁכֹּן 28
,eſcam *fodit* Indè .*munitionem* & , petræ dentẽ ſuper morabitur &
וְיִתְלֹנָן עַל־שֶׁן־סֶלַע וּמְצוּדָה׃ מִשָּׁם חָפַר אֹכֶל 29
abſorbebunt ejus pulli Et .aſpicient ejus oculi longinquum in
לְמֵרָחוֹק עֵינָיו יַבִּיטוּ׃ וְאֶפְרֹחָו יְעַלְעוּ־ 30
Dominus reſpondit Et .*ipſe* ibi , occiſi *quo in* & , ſanguinem
דָם וּבַאֲשֶׁר חֲלָלִים שָׁם הוּא׃ וַיַּעַן יְהוָה 31
? eruditio omnipotente cum contendere Nunquid : dixit & , Ijob
אֶת־אִיּוֹב וַיֹּאמַר׃ הֲרֹב עִם־שַׁדַּי יִסּוֹר 32
.ei reſpondeat , *Deum Arguens*
מוֹכִיחַ אֱלוֹהַּ יַעֲנֶנָּה׃

Verſio VUL. LAT.

3 Incurvantur ad fœtum, & pariunt,
4 & rugitus emittunt. Separantur
filii earum, & pergunt
ad paſtum: egrediuntur, et
5 non revertuntur ad eas. Quis
dimiſit onagrum liberum, &
6 vincula ejus quis ſolvit ? Cui
dedi in ſolitudine domum, &
tabernacula ejus in terra ſalſuginis.
7 Contemnit multitudinem
civitatis, clamorem exactoris
8 non audit. Circumſpicit
montes paſcuæ ſuæ, &
virentia quæque perquirit.
9 Numquid volet rhinoceros
ſervire tibi, aut morabitur ad
10 præſepe tuum ? Numquid alligabis
rhinocerota ad arandum
loro tuo ? aut confringet
11 glebas vallium poſt te ? Numquid
fiduciam habebis in magna
fortitudine ejus, & derelinques
12 ei labores tuos? Numquid
credes illi quòd ſementem
reddat tibi, & aream tuam
13 congreget ? Penna ſtruthionis
ſimilis eſt pennis herodii,
14 & accipitris. Quando dereliquit
ova ſua in terra, tu forſitan
in pulvere calefacies ea ?
15 Obliviſcitur quòd pes conculcet
ea, aut beſtia agri conterat.
16 Duratur ad filios ſuos
quaſi non ſint ſui, fruſtrà laboravit
nullo timore cogente.
17 Privavit enim eam Deus ſapientiâ,
nec dedit illi intelligentiam.
18 Cùm tempus fuerit, in
altum alas erigit : deridet equum
19 & aſcenſorẽ ejus. Numquid
præbebis equo fortitudinem,
aut circumdabis collo ejus
20 hinnitum? Numquid ſuſcitabis
eum quaſi locuſtas ? gloria
21 narium ejus terror. Terrã
ungulâ fodit, exultat audacter:
in occurſum pergit armatis.
22 Contemnit pavorem, nec cedit
23 gladio. Super ipſum ſonabit
pharetra, vibrabit haſta & clypeus.
24 Fervens & fremens ſorbet
terram, nec reputat tubæ
25 ſonare clangorem. Ubi audierit
buccinam, dicit ; Vah, procul
odoratur bellũ, exhortationem
ducum, & ululatum exercitûs.
26 Numquid per ſapientiam
tuam plumeſcit accipiter,
expandens alas ſuas ad Auſtrũ?
27 Numquid ad præceptum tuum
elevabitur aquila, & in arduis
28 ponet nidum ſuum ? In petris
manet, & in præruptis ſilicibus
commoratur, atque inacceſſis
29 rupibus. Indè contemplatur
eſcam, & de longè oculi ejus
30 proſpiciunt. Pulli ejus lambent
ſanguinem : & ubicumq;
cadaver fuerit, ſtatim adeſt.
31 Et adjecit Dominus, & locutus
32 eſt ad Job; Numquid qui
contendit cum Deo, tam facilè
conquieſcit ? utique qui arguit
Deum, debet reſpondere ei.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

3 † Ἐξέθρεψας δὲ αὐτῶν τὰ παιδία (β) ἔξω φόβου, † ὠδῖνας δὲ αὐτῶν ἐξαποστελεῖς,
4 † Ἀπορρήξουσι τὰ τέκνα αὐτῶν, † πληθυνθήσονται ἐν γεννήματι· † ἐξελεύσονται, καὶ
5 οὐ μὴ ἀνακάμψουσιν (..) αὐτοῖς. † Τίς δέ ἐστιν ὁ ἀφεὶς ὄνον ἄγριον ἐλεύθερον; † δεσμοὺς
6 δὲ αὐτοῦ τίς ἔλυσεν; † Ἐθέμην δὲ (γ) τὴν δίαιταν αὐτοῦ ἔρημον, † καὶ τὰ σκηνώματα
7 αὐτοῦ ἁλμυρίδα. † Καταγελῶν πολυοχλίας πόλεως, † μέμψιν δὲ φορολόγου οὐκ
8 ἀκούων, † Κατασκέψεται ὄρη νομὴν αὐτοῦ, †
9 καὶ ὀπίσω παντὸς χλωροῦ (δ) ζητεῖ. † Βουλήσεται δέ σοι (ε) μονόκερως δουλεῦσαι, †
10 ἢ κοιμηθῆναι ἐπὶ φάτνης σου; † Δήσεις δὲ (ζ) ἐν ἱμᾶσι ζυγὸν αὐτοῦ, † ἢ ἑλκύσει (..) σου
11 αὔλακας ἐν πεδίῳ; † Πέποιθας δὲ ἐπ' αὐτῷ, ὅτι πολλὴ ἡ ἰσχὺς αὐτοῦ, † (η) ἐπαφήσεις
12 δὲ αὐτῷ τὰ ἔργα σου; † Πιστεύσεις δὲ (θ), ὅτι ἀποδώσει σοι τὸν σπόρον, † (ι) εἰσοίσει δέ σου τὸν ἅλωνα;
13 † Πτέρυξ τερπομένων (κ) νεέλασσα, † ἐὰν συλλάβῃ ἀσίδα
14 καὶ (λ) νέσσα· † Ὅτι ἀφήσει εἰς γῆν τὰ (..) ᾠὰ
15 αὐτῆς, † καὶ ἐπὶ χοῦν θάλψει, † Καὶ ἐπελάθετο, ὅτι ποὺς σκορπιεῖ, † καὶ θηρία ἀγροῦ καταπατήσει.
16 † Ἀπεσκλήρυνε τὰ τέκνα (μ) ἑαυτῆς, ὥστε μὴ ἑαυτήν· † εἰς κενὸν ἐκοπίασεν ἄνευ φόβου.
17 † Ὅτι κατεσιώπησεν αὐτῇ ὁ θεὸς σοφίαν, † καὶ οὐκ (ν) ἐπεμέρισεν αὐτῇ ἐν τῇ συνέσει.
18 † (ξ) Κατὰ καιρὸν ἐν ὕψει ὑψώσει, † καταγελάσεται ἵππου, καὶ τοῦ ἐπιβάτου αὐτοῦ.
19 † Ἦ σὺ περιέθηκας ἵππῳ δύναμιν, † (ο) ἐνέδυσας δὲ τραχήλῳ αὐτοῦ φόβον;
20 † Περιέθηκας δὲ αὐτῷ πανοπλίαν; † (π) δόξαν δὲ στηθέων αὐτοῦ τόλμῃ;
21 † Ἀνορύσσων ἐν πεδίῳ γαυριᾷ, ἐκπορεύεται δὲ εἰς πεδίον ἐν ἰσχύϊ.
22 † Συναντῶν (ρ) βασιλεῖ καταγελᾷ, † καὶ (..) οὐ μὴ ἀποστραφῇ (σ) ἀπὸ σιδήρου.
23 † Ἐπ' αὐτῷ γαυριᾷ τόξον καὶ (τ) μάχαιρα,
24 † Καὶ ὀργῇ ἀφανιεῖ τὴν γῆν, † καὶ οὐ μὴ (..) πιστεύσει, ἕως
25 ἂν (υ) σημάνῃ σάλπιγξ. † Σάλπιγγος δὲ σημαινούσης, (φ) λέγει, Εὖγε· † πόρρωθεν δὲ ὀσφραίνεται πολέμου † (χ) σὺν ἅλματι καὶ κραυγῇ.
26 † Ἐκ δὲ τῆς σῆς ἐπιστήμης ἕστηκεν ἱέραξ, † ἀναπετάσας τὰς πτέρυγας, ἀκίνητος, καθορῶν τὰ πρὸς Νότον; †
27 (ψ) Ἐπὶ δὲ σῷ προστάγματι ὑψοῦται ἀετός, † γὺψ δὲ ἐπὶ νοσσιᾶς αὐτοῦ καθ-
28 εσθεὶς αὐλίζεται, † Ἐπ' ἐξοχῇ πέτρας, καὶ
29 ἀποκρύφῳ; † Ἐκεῖσε ὢν ζητεῖ τὰ σῖτα, (ω) πόρρωθεν οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ σκοπεύουσι.
30 † Νεοσσοὶ δὲ αὐτοῦ φύρονται ἐν αἵματι, † (α) οὗ δ' ἂν ὦσι τεθνεῶτες, παραχρῆμα
31 εὑρίσκονται. † Καὶ ἀπεκρίθη κύριος ὁ θεὸς
32 τῷ Ἰώβ, καὶ εἶπε, Μὴ κρίσιν μετὰ ἱκανοῦ ἐκκλινεῖ; (β) ἐλέγχων δὲ θεόν, ἀποκριθήσεται αὐτήν.

Et (c) nutriſti hinnulos earum 3
ſine metu, & partus earum
(d) emittes, (e) Abrumpent 4
filios ſuos, multiplicabuntur in
(f) genimine: exibunt & non
revertentur (g) eis. Quis 5
autem eſt, qui dimiſit onagrum
liberum, & vincula
ejus quis reſolvit ? Poſui 6
enim habitationem ejus (h) deſertum,
& tabernacula ejus
ſalſuginem : Irridens multas 7
turbas civitatis, & querelam
(i) exactoris non audiens.
Conſiderabit montes paſcuam 8
ſuam, & poſt omne viride
quærit. Volet autem (k) Monoceros 9
ſervire tibi ? aut dormire
ſuper præſepe tuum ? Et 10
alligabis in loris jugum ejus,
aut ducet ſulcos tuos in
(l) campo ? Confidis autem in 11
eo, quia multa eſt virtus ejus,
& dimittis ei opera tua ?
Et credes, quia reddet tibi 12
ſementem, & in aream tuam
inferet ? Penna (m) lætantium 13
Neelaſſa, ſi conceperit
(n) Aſida, & Neſſa, Quòd 14
relinquet in terra ova ſua, &
in pulvere calefaciet : Et oblita 15
eſt, quia pes diſperdet, &
beſtiæ agri conculcabunt :
(o) Obduravit filios ſuos, ut 16
non ſeipſam : fruſtrà laboravit
ſine timore : Quia tacere fecit 17
ei Deus ſapientiam, & non
(p) partitus eſt ei in intellectu.
Cùm fuerit tempus, in altum 18
exaltabit : irridebit equum, &
aſcenſorem ejus. An tu circumdediſti 19
equo virtutem, &
induiſti collum ejus (q) timore?
Et circumpoſuiſti ei armaturam, 20
& (r) gloriam pectorum ejus
audaciæ ? Fodiens in campo 21
luxuriat, & procedit in
(ſ) campum in virtute. Occurrens 22
(t) regi deridet, nec
ſe avertet à ferro : Super 23
ipſum gaudet arcus, & gladius;
Et (u) iracundia evertet terram 24
: nec credet, donec ſignificaverit
tuba : Cùm autem tuba 25
ſignificaverit, dicit ; Euge.
Et procul odoratur pugnam
(x) cum ſaltu, & clamore.
Ex tua (y) verò ſcientia ſtetit 26
accipiter, expanſis pennis, immobilis,
reſpiciens quæ ad
Auſtrum ? Atque tuo præcepto 27
exaltatur aquila ? aut
vultur ſuper nidum ſuum
ſedens moratur, In ſummitate 28
petræ, & (z) abſcondito? Cùm 29
ibi fuerit, quærit eſcas : longè
oculi ejus ſpeculantur, Et 30
pulli ejus (aa) conſperguntur
in ſanguine : ubicunque autem
fuerint cadavera, confeſtim reperiuntur.
Et reſpondit Do- 31
minus Deus ad Job, & dixit ; Nunquid judicium cum Omni- 32
potente (bb) declinat ? & arguens Deum reſpondebit.

MS.A. (β) ἄνευ φόβου, ἢ ἔγνως καιρὸν τοκετοῦ τραγελάφων πέτρας, ὠδῖνας (..) ἑαυτοῖς. (γ) αὐτοῦ τὴν δίαιταν (δ) ζητήσει. (ε) [illegible] μονόκερως (ζ) αὐτοῦ ἐν ἱμᾶσιν ζυγόν, (..) σοι (η) καὶ ἐπαφήσεις αὐτῷ (θ) αὐτῷ, ὅτι (ι) καὶ εἰσοίσει σου τὴν ἅλωνα; (κ) νεέλασσα, (λ) νέσσα ἐλάλησε, Ὅτι (..) *ᾠὰ (μ) αὐτ, (ν) ἐμέρισεν αὐτῇ ὁ θεὸς ἐν τῇ συνέσει. (ξ) καταχαίρων (ο) καὶ ἐνέδυσας (π) καὶ δόξῃ στηθέων αὐτοῦ τόλμῃ; (ρ) βέλει (..) οὐ μὴ (σ) σίδηρον. Ἐπ' αὐτῷ (τ) ὀξυθηγὴς μάχαιρα, (..) πιστεύσῃ (υ) *σημανεῖ σάλπιγξ. (φ) ἐρεῖ, (χ) καὶ σὺν ἅλματι καὶ κραυγῇ ἐκπορεύεται. (ψ) Ἢ ἐπὶ τῷ σῷ (ω) πόρρωθεν δὲ εἰ (α) οὐδὲ ἐὰν ὦσιν (β) ἐλέγχων θεόν,

תרגום Targum.

חמטן בניהון מתפלחן צעריהון משדרין : מתחילן בניהון יסנון בעבורא יפקון ולא תיבין להון : מן פטר מרודא בר חורי ושושלי ערודא מן שרי : די 3 4 5 6
שויתי מישרא ביתיה ומשכנוי ארעא צדיא : יגחך לרגוש קריתא אתרגושתא דרדי לא ישמע : יאלל טוריא מרעיה ובתר כל ירוקא יבעי : אפשר דיצבי 7 8 9
רימנא למפלחך אין יבית על ארותך : אפשר דתקטור רימנא בתלמא באשליה אין ישדד גלמתא בתרך : אפשר דתתרחיץ ביה ארום סגי חיליה ותשבוק 10 11
לותיה לעותך : אפשר דתימן ביה ארום יתיב דרעך ואדרך יכנוש : גדפא רתרנגול ברא דמשבחא ומקלסא אין אברא דחוריתא ונוציתא : ארום 12 13 14
תשבוק לארעא ביעהא ועל ארעא תדגר : ושליא ארום רגלא תבדרנה וחיות ברא תדוששנה : שחנא על בניא דלא דילה לסריקותא לעותה מדלית 15 16
דלוחא : ארום אנשיה אלהא חוכמתא ולא פלג לה בביונתא : כעדן במרומא טיסא מנחכא לסוסא ולרכביה : האפשר דתתן לסוסא גבורתא אפשר 17 18 19
דתלביש צוריה תוקפא : התרגשניה היך גובי שבהור לשלושתא דנחיריה אימתא : מחפרין בגלימא ויחדי בחילא יפוק לקדמות קרבא : יחדי לדלוחא 20 21 22
ולא יתבר ולא יתוב מן קדם סיפא : עלוי תשדי זינא חרבא שננא מורניתא ורומחא : ברגיז ורוגזא יעבד גומתא בארעא ולא יהימין ארום קל שופרא : 23 24
במסת שופרא יימר חדוא ומן רחיק יריח קרבא אכליותא דרברבי ויבבא : אפשר דמבייונתך יתאבר בר נצא פרש גדפא לדרומא : אין על מימרך יתגבה 25 26 27
נשרא וארום ירים שרכפיה : כיפא ישרי ויבית על כרך טינר ומצדתא : מתמן חפר מיכלא למרחיק עינוי מסתכלן : ואפרוחוי גמען אדמא ובאתר דתמן 28 29 30
קטיליא תמן הוא : ואתיב ייי ית איוב ואמר : אפשר דנצי עם שדי יתרדי מכסן אלהא יתיבניה : 31 32

Verſio SYRIACA.

3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 [illegible]

Verſio ARABICA.

3 4 * وهي يبركن ويلدن * ويربون اولادهن ويفطمونها * من الذي ترك حمار الوحش احرارا وافلت منه النير *
5 6 * الذي جعل في الصحراء بيته * وفي المكان المالح محلة * يضحك على كثرة القرى * ولا يخاف
7 8 من صوت السلاطين * في كثرة الجبال مرعاه * وعلى كل حصن يدوس * العل يطيعك اليحمور ان
9 10 يفلحك * او لعله على آريك يبيت * العلك تربط نيرا على عنق اليحمور * او تسوق فدانا مكانا صعبا *
11 12 * وتتكل عليه انه كثير القوة * وتترك عليه تعبك * وتثق به انه يبقي اندرك ويحمل زرعك * كنفي
13 14 15 السبح ترتفع وتطير * وتاتي وتعشش * وتترك على الارض بناتها وعلى الارض تسخنهم * وتنسيت من اجل
16 ان ارجل الطير لها * وحيوانه الارض تدوسها * اكثر بنين مما ليس لها * وباطلا تصبت بلا مخافة *
17 18 * من اجل ان الله اكثر الحكمة * ولم يقسم لها فهما * في العلو ترتفع مثل النخلة * فتضحك على الفرس
19 وعلى راكبه * هل تعطي الفرس جبروت وتلبس عنقه سلاحا * هل تحركه مثل الجراد او تخوفه بالمخافة *
20 21 22 * يحفر بالعمق * ويفرح بالوادي * يخرج الى الطريق بالسلاح * يضحك على الغور ولا يخاف ولا يرجع من
23 24 وجه السيف * يحمل الترس ولهيب الرمح والنيزك * بالرهبة والزجر يعدوا على الارض * ولا يخاف صوت البوق *
25 26 * بصوت يقول احيني * ومن بعيد يستروح القتال * ويفزع الكثير بصهيله * امن حكمتك كان النصر
27 28 فبسط جناحيه الى التيمن * على كلمة فمك يرتفع النسر ويرفع وكره في الكهف * ويسكن ويبيت على
29 30 حرف الكهف * ومن صيده ينتعش * وعلى البعد تنظر عيناه * وفراخه يلعق الدماء * وحيث ما قتل
31 32 قتيلا هنالك هو * اجاب الرب وقال لايوب * كثير هي فكر الله والذي يبكت الله يعطي الجواب *

VERS. SYR. & ARAB.
Interp. Lat.

Et quando incurvantur, et pariunt, 3 *Et educant filios ſuos, & ablactant eos?* 4 *Quis dimiſit onagrum liberum, & ſolvit eum jugo?* 5 *Qui ſtatuit in ſolitudine domum ſuam, & in loco ſalſo habitaculum ſuum:* 6 *Subſannat multitudinem oppidorum, nec timet vocem principum.* 7 *In multitudine montium paſcua ejus, & ſuper virentia quæque calcat.* 8 *An fortè ſubdit ſe tibi (a) rhinoceros, ut colat te? an fortè ad præſepe tuũ cubat?* 9 *Num fortè ligabis jugum ſuper colliũ (b) rhinocerotiũ? an duces jugũ boũ in loco aſpero,* 10 *Et fiduciam habebis in eo? quia eſt multæ fortitudinis, & relinques ſuper illud laborem tuum?* 11 *Illique confides ut purget aream tuam, & congreget ſemina tua?* 12 *Struthio extollitur et volat, & veniens nidificat,* 13 *Et relinquit ſuper terram filias ſuas, & ſuper terra calefacit eas,* 14 *Et oblivioni tradit, quia pedes volucris habet; & beſtiæ terræ conculcant eas:* 15 *Multiplicat filios non ſuos, & fruſtrà laborat ſine metu:* 16 *Quoniam Deus multiplicavit ſapientiam, & non impertivit ei prudentiam,* 17 *Ad excelſa erigitur ſicut palma, & deridet equum & aſcenſorem.* 18 *Numquid das equo fortitudinem, et induis collum ejus armis?* 19 *Numquid moves eũ velut locuſtas, aut terres eum metu?* 20 *Fodit in profundo, & lætatur in valle: egreditur ad viam cum armis:* 21 *Et deridet abyſſum, nec timet, nec recedit à facie gladii:* 22 *(c) Portat clypeum, & flammam ſariſſæ & ſpiculi.* 23 *Cum terrore & furore currit ſuper terram, nec formidat vocem tubæ.* 24 *Voce dicit, Serva mea: et procul odorat bellum, & terret (d) multitudinem hinnitu ſuo.* 25 *Numquid per ſapientiam tuam factum eſt ut accipiter extenderet alas ſuas ad Auſtrum?* 26 *Numquid ob oris tui verbum elevatur aquila, & extollit nidum ſuum in rupibus?* 27 *Et habitat & moratur ſuper (e) extremitates rupis,* 28 *Et de ſuo venatu nutritur, & ad longinquum intuentur oculi ejus,* 29 *Et pulli ejus lambunt ſanguinem, & ubicunque committitur cædes, ibi adeſt?* 30 *Reſpondit Dominus, & dixit ad Job,* 31 *Multa (f) eſt cogitatio Dei; & qui arguit Deum, det reſponſum.* 32

INTERP. SYRIACA.

(a) unicornis, (b) unicornis? (c) Super eũ laudatur pharetra, et lamina haſtæ (d) principes hinnitu (e) promontorium rupis, (f) ſunt concilia Dei;

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Incurvant ſe filii earum, dilacerantur, dolores ſuos emittunt. Confortantur filii earum, creſcunt frumento, egrediuntur & non revertuntur ad eas. Quis dimiſit feram 3 4 5
liberam, & catenas onagri quis diſſolvit? Cujus domum poſui in planitie, & tabernacula ejus in terra deſerta. Ridebit ad tumultum civitatis, & clamorem exactoris 6 7 8
non audiet. Explorabit montes pro paſtu ſuo, & poſt omne viride perquiret. Nunquid volet rhinoceros ſervire tibi; aut manebit ad præſepe tuum? Nunquid alligabis 9 10
rhinocerotem in ſulco fune ſuo, aut proſcindet colles poſt te? Nunquid confidis in eo quoniam magna eſt fortitudo ejus, & relinques ei laborem tuum? Nunquid con- 11 12
credes ei ut reddat ſementem tuam, & aream tuam congreget? Ala galli *ſylveſtris* qui cantat & exultat, ſic eſt ala ciconiæ & accipitris. Quoniam relinquit in terra ova 13 14
ſua, & ſuper terram fovet [*ea.*] Et obliviſcitur quod pes diſpergat ea, & beſtia agri conculcet ea. Calefit ſuper filios qui non ſunt ſui; in vanum laborat abſque timore. 15 16
Quia fecit Deus ut oblivi ſceretur ſapientiæ, & non dedit illi partem intelligentiæ. In tempore quo in altum volat, deridet equum & aſcenſorem ejus. Nunquid da- 17 18
bis equo fortitudinem, aut indues collum ejus furore? Nunquid commovebis eum ſicut locuſtam: ſplendor freni naris ejus terror. Fodit in valle & exultat in fortitu- 19 20
dine, egreditur ad occurſum *belli.* Gaudet ad pavorem & non conteritur, & non revertitur à facie gladii. Super eum mittuntur arma, gladius acutus, & haſta & lan- 21 22
cea. In fremitu & in furore facit foveam in terra, & non credit quòd ſit vox tubæ. In abundantia tubæ dicit Euge, & à longè odoratur bellum, clamorem principum 23 23
& ululationem. Nunquid propter intelligentiam tuam filius accipitris plumeſcet, expandet alas ſuas ad Auſtrum? Nunquid propter verbum *tuum* elevabitur aquila, 25 26
aut exaltabit nidum ſuum? In rupibus habitabit, & morabitur in munitione ſilicis & arcis. Indè explorat eſcam: de longè oculi ejus aſpiciunt. Et pulli ejus ab- 27 28
ſorbent ſanguinem, & in loco ubi occiſi ſunt, ibi eſt. Et reſpondit Dominus Job & ait: Nunquid qui contendit cum omnipotente, erudietur: qui arguit Deum, 29 30
reſpondeat ei. 31 32

,ſum contemptibilis Ecce : dixit & ,Domino Ijob reſpondit Et
ויען איוב את־יהוה ויאמר : הן קלתי 33 34
Semel ,meo ori *ipſi* poſui meam Manum ? tibi reſpondebo quid
מה אשיבך ידי שמתי למו־פי : אחת 35
.addam non & , *bis* Et .reſpondebo non & ,ſum locutus
דברתי ולא אענה ושתים ולא אוסיף :

CAP. XL. מ

nunc Accinge : dixit & , turbine de Ijob Dominus reſpondit Et
ויען יהוה את־איוב מן סערה ויאמר : אזר־נא 1 2
etiam Nunquid .me fac ſcire & ,te interrogabo : tuos lumbos vir ſicut
כגבר חלציך אשאלך והודיעני : האף 3
ſi Et ? juſtificeris ut ,me facies impium ,meum judicium diſſipabis
תפר משפטי תרשיעני למען תצדק : ואם־ 4
nunc te Orna ? tonabis ipſe ſicut *voce in* & ? tibi Deo ſicut brachium
זרוע כאל לך ובקול כמהו תרעם : עדה־נא 5
Diſperge .te *indues* decorem & ,gloriam & : ſublimitate & ,celſitudine
גאון וגבה והוד והדר תלבש : הפץ 6
Vide .eum humilia & ,ſuperbum omnem vide & ,tui *naſi* iras
עברות אפך וראה כל־גאה והשפילהו : ראה 7
.*ſe ſub* impios contere & ; eum fac incurvare ,ſuperbum omnem
כל־גאה הכניעהו והדך רשעים תחתם :
.abſcondito in alliga eorum facies : ſimul pulvere in eos Abſconde
טמנם בעפר יחד פניהם חבש בטמון : 8
.tua dextera te ſervet quòd , tibi confitebor ego etiam Et
וגם־אני אודך כי־תושע לך ימינך : 9
bos veluti herbam , tecum feci . quem Behemoth nunc Ecce
הנה־נא בהמות אשר־עשיתי עמך חציר כבקר 10
ejus fortitudo & ,ejus lumbis in ejus potentia nunc Ecce .comedet
יאכל : הנה־נא כחו במתניו ואונו 11
nervi : cedrus ſicut ,ſuam caudam *Volet* .ejus ventris umbilico in
בשרירי בטנו : יחפץ זנבו כמו־ארז גידי 12
virga ſicut ejus oſſa : *æris fiſtulæ* ejus *Oſſa* .*erunt ramificati ejus verendorũ*
פחדו ישרגו : עצמיו אפיקי נחשה גרמיו כמטיל 13
applicabit ,eum *facientis* Dei viarum principium Ipſe .ferrea
ברזל : הוא ראשית דרכי־אל העשו יגש 14
beſtia omnis & , ei afferent montes germen Quia .ſuum gladium
חרבו : כי־בול הרים ישאו־לו וכל־חית 15
latibulo in ,*jacebit* arboribus umbriferis Sub .ibi ludent agri
השדה ישחקו־שם : תחת־צאלים ישכב בסתר 16
.ejus umbra , umbriferæ arbores eum Tegent .*cæno* & calami
קנה ובצה : יסכהו צאלים צללו 17
: feſtinabit non ; *flumen comprimet* Ecce .torrentis ſalices eũ Circundabunt
יסבהו ערבי־נחל : הן יעשק נהר לא יחפוז 18
: eum tollet ſuis oculis In .ſuum os ad Jarden educet quòd *confidet*
יבטח כי־יגיח ירדן אל־פיהו : בעיניו יקחנו 19
,hamo in Leviathan Extrahes .*naſum* perforabit laqueis in
במוקשים ינקב־אף : תמשך לויתן בחכה 20
,ejus *naſo in uncum* pones Nunquid ? ejus linguam *demerges* fune in &
ובחבל תשקיע לשנו : התשים אגמן באפו 21
te ad multiplicabit Nunquid ? ejus maxillam perforabis ſpina in &
ובחוח תקב לחיו : הירבה אליך 22
fœdus *excidet* Nunquid ? mollia te ad loquetur *An* ? preces
תחנונים אם־ידבר אליך רכות : היכרת ברית 23
eo cum ludes Nunquid ? *ſeculi* ſervum in eum accipies , tecum
עמך תקחנו לעבד עולם : התשחק־בו 24
: ſocii eum ſuper Cœnabunt ? tuis puellis eum ligabis & ,ave ſicut
כצפור ותקשרנו לנערותיך : יכרו עליו חברים 25
umbraculis in replebis Nunquid ? negotiatores inter *eum dimidiabunt*
יחצוהו בין כנענים : התמלא בשכות 26
.*tuam volam* eum ſuper Pone ? ejus caput *piſcium naſcella in* & ,ejus pellem
עורו ובצלצל דגים ראשו : שים־עליו כפך 27
.eſt mentita *ejus* ſpes Ecce .addas ne ,belli Memento
זכר מלחמה אל־תוסף : הן־תחלתו נכזבה 28
? *deturbabitur* ejus *aſpectus* ad etiam ,Nonne
הגם אל־מראיו יטל :

Verſio VULG. LAT.

33 Reſpondens autem Job Dño,
34 dixit; Qui leviter locutus ſum,
reſpondere quid poſſum? ma-
num meam ponam ſuper os
35 meum? Unum locutus ſum,
quod utinam non dixiſſem; &
alterum, quib' ultrà non addã.

CAP. XL.

1 Reſpondens autẽ Dñs Job
2 de turbine, dixit; Accinge ſic-
ut vir lumbos tuos: interro-
3 gabo te, & indica mihi. Num-
quid irritũ facies judiciũ meũ:
& condemnabis me, ut tu ju-
4 ſtificeris? Et ſi habes brachiũ
ſicut Deus, & ſi voce ſimili to-
5 nas? Circumda tibi decorem,
& in ſublime erigere, & eſto
glorioſus, & ſpecioſis induere
6 veſtibus. Diſperge ſuperbos
in furore tuo, & reſpiciens
omnem arrogantem humilia.
7 Reſpice cunctos ſuperbos, &
confunde eos, & contere im-
8 pios in loco ſuo. Abſconde
eos in pulvere ſimul, & facies
9 eorum demerge in foveam. Et
ego confitebor quòd ſalvare
10 te poſſit dextera tua. Ecce, Be-
hemoth, quem feci tecũ, fœnũ
11 quaſi bos comedet: Fortitudo
ejus in lumbis ej', & virtus il-
lius in umbilico ventris ejus.
12 Stringit caudam ſuã quaſi ce-
drum, nervi teſticulorum ejus
13 perplexi ſunt. Oſſa ejus velut
fiſtulæ æris, cartilago illi' quaſi
14 laminæ ferreæ. Ipſe eſt princi-
pium viarum Dei, qui fecit eũ,
15 applicabit gladiũ ejus. Huic
montes herbas ferunt: omnes
16 beſtiæ agri ludent ibi. Sub um-
bra dormit in ſecreto calami, et
17 in locis humentib'. Protegunt
umbræ umbrã ejus, circumda-
18 bunt eũ ſalices torrentis. Ecce,
abſorbebit fluviũ, & non mi-
rabitur: & habet fiduciã quòd
19 influat Jordanis in os ejus. In
oculis ejus quaſi hamo capiet
eum, & in ſudibus perforabit
20 nares ejus. An extrahere po-
teris Leviathan hamo, & fune
21 ligabis linguã ejus? Numquid
pones circulũ in naribus ejus,
aut armillâ perforabis maxil-
22 lam ejus? Numquid multipli-
cabit ad te preces, aut loque-
23 tur tibi mollia? Numquid fe-
riet tecũ pactũ, & accipies eũ
24 ſervum ſempiternum? Num-
quid illudes ei quaſi avi, aut
ligabis eum ancillis tuis?
25 Concîdent eum amici, divi-
26 dent illũ negotiatores? Num-
quid implebis ſagenas pelle
ejus, & gurguſtium piſcium ca-
27 pite illius? Pone ſuper eum
manum tuam: memento bel-
li, nec ultrà addas loqui.
28 Ecce, ſpes ejus fruſtrabitur
eum, & videntibus cunctis
præcipitabitur.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

33 † Ὑπολαβὼν δὲ Ἰὼβ (γ) λέγει τῷ κυρίῳ,
34 † Τί ἔτι ἐγὼ κρίνομαι, νουθετούμενος καὶ (δ)
ἐλέγχων κύριον, † ἀκούων τοιαῦτα (ε) οὐθὲν
ὤν; † ἐγὼ δὲ τίνα ἀπόκρισιν δῶ πρὸς ταῦ-
35 τα; † χεῖρα θήσω ἐπὶ στόματί μου. † Ἅπαξ
(ζ) λελάληκα, ἐπὶ δὲ τῷ δευτέρῳ οὐ προσ-
θήσω.

Reſpondens autem Job dicit Do- 33
mino; Quid adhuc (cc) ego ju- 34
dicor, commonitus, & arguens
Dominum, audiens talia, cùm
nihil ſim? Ego verò quod reſpon-
ſum dabo ad hæc? manum ponam
ad os meum. Semel locutus ſum: 35
& iterum non adjiciam.

MS.A. (γ) εἶπεν τῷ (δ) ἐλεγχόμενος ὑπὸ κυρίου, (ε) μηδὲν ὢν ἐγώ; ἀπόκρισιν δὲ τίνα δῶ πρὸς ταῦτα; (ζ) ἐλάλησα,

ΚΕΦ. μʹ.

1 † Ἔτι δὲ ὑπολαβὼν ὁ κύριος, εἶπε τῷ
2 Ἰὼβ (α) ἐκ τοῦ νέφους, † Μή, ἀλλὰ ζῶσαι
ὥσπερ ἀνὴρ τὴν ὀσφύν σου, † ἐρωτήσω δέ σε,
3 σὺ δέ μοι (β) ἀπόκριναι. † Μὴ ἀποποιοῦ
μου τὸ κρίμα, † (γ) οἴει δέ με ἄλλως σοι
κεχρηματικέναι, (δ) ἢ ἵνα ἀναφανῇς δί-
4 καιος; † Ἦ βραχίων σοί ἐστι (ε) κατὰ τοῦ
κυρίου, † ἢ φωνῇ (ζ) κατ' αὐτοῦ βροντᾷς;
5 † Ἀνάλαβε (η) δὴ ὕψος καὶ δύναμιν, † δό-
6 ξαν δὲ καὶ τιμὴν ἀμφίασαι. † Ἀπόστειλον
δὲ ἀγγέλους (θ) ὀργῇ, † πάντα δὲ ὑβριστὴν
7 ταπείνωσον. † Ὑπερήφανον δὲ σβέσον, † σῆ-
8 ψον δὲ ἀσεβεῖς παραχρῆμα. † Κρύψον (ι)
δὲ εἰς γῆν ὁμοθυμαδόν, τὰ δὲ πρόσωπα αὐ-
9 τῶν ἀτιμίας ἔμπλησον. † Ὁμολογήσω (κ)
10 ὅτι δύναται ἡ δεξιά σου σῶσαι. † (λ) Ἀλ-
λὰ δὴ ἰδοὺ θηρία παρὰ σοί, χόρτον ἴσα
11 βουσὶν ἐσθίουσιν. † Ἰδοὺ δὴ ἡ ἰσχὺς αὐτοῦ
(μ) ἐπ' ὀσφύϊ, † ἡ δὲ δύναμις αὐτοῦ ἐπ'
12 ὀμφαλοῦ (ν) γαστρός. Ἔστησεν (ξ) οὐρὰν ὡς
κυπάρισσον, † τὰ δὲ νεῦρα (ο) αὐτοῦ συμπέ-
13 πλεκται. † Αἱ πλευραὶ αὐτοῦ, (π) πλευραὶ
χάλκειαι, † ἡ δὲ ῥάχις αὐτοῦ (ρ) σίδηρος
14 χυτός. † Τοῦτ' ἔστιν ἀρχὴ πλάσματος κυ-
ρίου· † πεποιημένον (σ) ἐγκαταπαίζεσθαι
15 ὑπὸ τῶν ἀγγέλων αὐτοῦ. † Ἐπελθὼν δὲ ἐπ'
ὄρος ἀκρότομον, † ἐποίησε χαρμονὴν τε-
16 τράποσιν ἐν τῷ ταρτάρῳ. † Ὑπὸ παντο-
δαπὰ δένδρα κοιμᾶται, † (τ) παρὰ πά-
17 πυρον καὶ κάλαμον καὶ βούτομον. † Σκιά-
ζονται (υ) δὲ ἐν αὐτῷ δένδρα μεγάλα † σὺν
18 (*) ῥαδάμνοις, καὶ κλῶνες (φ) ἄγρου. † Ἐὰν
γένηται πλημμύρα, οὐ μὴ (χ) αἰσθηθῇ· † πέ-
ποιθεν, ὅτι προσκρούσει ὁ Ἰορδάνης εἰς τὸ
19 στόμα αὐτοῦ. † Ἐν τῷ ὀφθαλμῷ αὐτοῦ δέξε-
ται αὐτόν, † ἐνσκολιευόμενος τρήσει
20 ῥῖνα (ψ). † Ἄξεις δὲ δράκοντα ἐν ἀγκίστρῳ,
† περιθήσεις δὲ φορβαίαν περὶ ῥῖνα αὐτοῦ;
21 (ω) Ἢ δήσεις κρίκον ἐν τῷ μυκτῆρι αὐτοῦ,
† ψελλίῳ δὲ τρυπήσεις τὸ χεῖλος αὐτοῦ;
22 † Λαλήσει δέ σοι (α) δεήσει, ἱκετηρίᾳ μα-
23 λακῶς; † Θήσεται δὲ μετὰ σοῦ διαθήκην;
24 † λήψῃ δὲ αὐτὸν δοῦλον αἰώνιον; † (β) Παί-
ξῃ δὲ ἐν αὐτῷ ὥσπερ ὀρνέῳ; † (γ) ἢ δή-
25 σεις αὐτὸν ὥσπερ στρουθίον παιδίῳ; † Ἐν-
σιτοῦνται (δ) δὲ ἐν αὐτῷ ἔθνη, † (ε) μερι-
26 τεύονται δὲ αὐτὸν Φοινίκων ἔθνη; † Πᾶν
δὲ πλωτὸν συνελθὸν οὐ μὴ (ζ) ἐνέγκωσι βύρ-
σαν μίαν οὐρᾶς αὐτοῦ, † καὶ ἐν πλοίοις ἁλιέων
27 κεφαλὴν αὐτοῦ. † Ἐπιθήσεις (*) δὲ αὐτῷ χεῖρα,
μνησθεὶς (η) πόλεμον τὸν γινόμενον ἐν σώματι
αὐτοῦ· † καὶ μηκέτι γινέσθω.

CAP. XL.

Adhuc autem reſpondens Do- 1
minus, dixit ad Job de nube; Ne- 2
quaquàm: ſed accinge, ſicut vir,
lumbum tuum: interrogabo au-
tem te, & tu mihi reſponde:
(a) Ne repellas judicium meum. 3
Putas autẽ me aliter tibi reſpon-
diſſe, quàm ut (b) appareas ju-
ſtus? Nunquid brachium tibi eſt 4
contra Dominum, aut voce (c)
contra eum tonas? Aſſume nunc 5
altitudinem, & virtutem; glo-
riam verò & honorem induere.
Mitte autem angelos irâ, & o- 6
mnem contumelioſum humilia.
Et ſuperbum extingue, & (d) 7
corrumpe impios ſtatim. Abſcon- 8
de autem in terra ſimul, & fa-
cies eorum imple ignominiâ; Con- 9
fitebor quòd poteſt dextera tua
ſalvare. Verùm utique ecce be- 10
ſtiæ apud te: fœnum ſicut boves
comedunt. Ecce utique (e) forti- 11
tudo ejus in lumbo, & virtus e-
jus ſuper umbilico ventris. Ere- 12
xit caudam ſicut (f) cupreſſum;
& nervi ejus complicati ſunt.
Coſtæ ejus, coſtæ æneæ, & ſpina 13
ejus (g) ferrum fuſile. Hoc eſt 14
(h) principium formationis Do-
mini, factum, ut (i) illuderetur
ab angelis ejus. Adveniens au- 15
tem ad montem præruptum, fecit
lætitiam quadrupedibus in tar-
taro. Sub omnigenis arboribus 16
dormit juxta papyrum, & cala-
mum, & carectum. Obumbrant 17
autem in eo arbores magnæ cum
(k) ramis, et ſarmenta (l) agri.
Si fuerit innundatio, non (m) 18
ſentiet: confidit, quia ſubibit
Jordanis in os ejus. In oculo 19
ſuo capiet eum: (n) intortus fo-
rabit naſum. Duces autem (o) 20
draconem in hamo, & circumpo-
nes capiſtrum circa naſum ejus?
Aut ligabis circulum in naribus 21
ejus, & (p) armillâ terebrabis
labium ejus? Loquetur autem tibi 22
(q) prece, ſupplicatione molliter.
Ponet autem tecum teſtamentũ? 23
accipies autem eum ſervum ſem-
piternum? Ludes autem in eo, 24
ſicut avi? aut ligabis eum, ſicut
paſſerem puero? Paſcuntur autem 25
in eo gentes. (r) Partiuntur au-
tem eum gentes Phœnicum? O- 26
mne (ſ) navigans conveniens
non ferent pellem unam caudæ e-
jus: & (t) in navigiis piſcato-
rum caput ejus. Impones autem 27
ei manum, (u) recordatus belli,
quod fit in corpore ejus: & non
(x) ultrà fiat.

MS.A. (α) διὰ τοῦ νέφους, (β) ἀποκρίθητι. (γ) μηδὲ οἴου με (δ) ἀλλ' ἵνα δίκαιος ἀναφανῇς; Εἰ βραχείων (ε) κατὰ κύριον, (ζ) βροντῆς κατ' αὐτοῦ * βροντᾷ ἴσα, (η) δὲ εἰς ὕψος δύναμιν, δόξαν καὶ (θ) ἐν ὀργῇ σου, (ι) δὲ αὐτοὺς εἰς γῆν ἔξω ὁμοθυμαδόν, (κ) ἄρα ὅτι δύναταί σου ἡ δεξιὰ σῶσαι. (λ) Ἀλλ' ἰδοὺ παρὰ σοὶ θηρία, ἴσα βουσὶν χόρτον ἐσθίει. (μ) ἐπὶ ὀσφύος αὐτοῦ, (ν) γαστρὸς αὐτοῦ. (ξ) οὐρὰν αὐτοῦ ὥσπερ (ο) αὐτοῦ ὥσπερ σχοινία συμπέπλεκται. (π) ὡς πέτραι χαλκαῖ, (ρ) ὡς σίδηρος χυτός. Τοῦτό ἐστιν (σ) εἰς τὸ ἐγκαταπαίζεσθαι (τ) παρὰ κάλαμον καὶ πάπυρον καὶ (υ) δὲ αὐτῷ (*) * δαράμνοις, (φ) ἄγρου. (χ) ἔσθηται· (ψ) αὐτοῦ. (ω) Καὶ εἰλήσεις κλοιὸν ἐν τῷ μυκτῆρι αὐτοῦ, ψελλίῳ (α) δεήσεις καὶ ἱκετηρίας (β) Καὶ ἐμπέξεις αὐτῷ (γ) δήσεις δὲ (δ) δὲ αὐτὸν ἔθνη, (ε) καὶ μεριτεύονται αὐτὸν Φοινίκων γένη; Πᾶν (ζ) ἐνέγκῃ μίαν βύρσαν (*) δὲ ἐπ' αὐτῷ (η) πολέμου τοῦ γινομένου ἐν τῷ σώματι αὐτοῦ·

תרגום TARGUM.

ואתיב איוב ית יי ואמר : הא אודלולית מה אתיבנך אידי שוית לפומי : חדא זמנא מלילית ולא אתיב ותניניתא ולא אוסיף : 33 34 35

מ

ואתיב יי ית איוב מן עלעוליתא דצערא ואמר : זרז כדון היך גברא חרציך אשאלנך ותהודענני : הברם תשני דיני תחיבנני מן בגלל דתזכי : ואין 1 2 3
אדרע היך אלהא לך ובקל דכמתיה תכלי : אתקין כדון גיותנותא ונובהא וזיוא ושבהורא תלבש : בדר רוגזתא דנחיריך וחמי כל גיותן 4 5 6
ומככניה : חמי כל גיותן ותברניה ודעדק חיביא באתריהון : טמעונון בעפרא כחדא אפיהון כבוש בטומעא : ולחוד אנא אודינך ארום תפרוק 7 8 9
לך ימינך : הא כדון בעיריא די עבדית עמך עסבא היך תורי ייכול : הא כדון לויתן דחיליה בחרצוי ותוקפיה בפרת דכרסיה : כפף 10 11 12
דונביה היך כארזא ותניא דפחדוי משבשין : אברוי תקיפין היך פצידי נחשא גרמוי היך מטלנא דפרזלא : הוא שרויא אורחתיה דאלהא 13 14
דעבדיה יקרב סיפיה : ארום עלל טוריא יסוברון ליה וכל חיות ברא ינחכון תמן : תחות טלליא יגני בטמור קניא ועדקא : יטללוניה 15 16 17
טלליא גנוניה יחזרוניה ערבין דנחל : האיטלום נהרא ולא אתבהל יתרחץ ארום נגיד ירדנא לפומיה : בעינוי יסבניה בתוקליא ינקוב נחיריה : תגגיד 18 19 20
לויתן בחכתא ובאשלא תקדח לישניה : אפשר דתשוי אונקלא בנחיריה ובסליוא תנקוב ליסתיה : אפשר דיסגי לותך בעותין אין ימלל לותך רכיכן : 21 22
אפשר דיגזור קים עמך תסבניה לעבד פלח לעלם : אפשר דתנחך ביה היך צפרא ותקטורניה לטליתך : יעבדון עלוי חכימיא שירותא יפלגוניה 23 24 25
בין תגריא : אפשר דתמלא במטללתא משכיה ובננונא דנוניא רישיה : שוי עלוי אידך אדכר קרבא לא תוסיף : הא אוריכותיה מכדבא הברם 26 27 28
למחמי יטלו :

Versio SYRIACA.

33 34 * ܘܥܢܐ ܐܝܘܒ ܘܐܡܪ ܠܡܪܝܐ. * ܙܥܪܬ ܡܢ ܡܢܐ ܐܦܢܝܟ. ܐܝܕܝ ܣܡܬ ܥܠ ܦܘܡܝ. * ܚܕܐ ܡܠܠܬ ܘܠܐ ܐܬܢܐ
35 1 ܦܬܓܡܐ. ܘܬܪܬܝܢ. ܠܐ ܡܘܣܦ ܐܢܐ ܠܡܡܠܠܘ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܡ * * ܘܥܢܐ ܡܪܝܐ. ܘܐܡܪ ܠܐܝܘܒ
2 3 ܡܢ ܥܢܢܐ. * ܐܣܘܪ ܐܝܟ ܓܢܒܪܐ ܚܨܝܟ. ܐܫܐܠܟ ܘܐܘܕܥܢܝ. * ܠܐ ܗܘ ܕܡܒܛܠ ܐܢܬ ܠܝ ܘܡܚܝܒ
4 5 ܐܢܬ ܠܝ ܕܬܙܕܕܩ. * ܐܢ ܐܝܬ ܠܟ ܕܪܥܐ ܐܝܟ ܕܐܠܗܐ. ܘܒܩܠܐ ܐܝܟ ܕܝܠܗ ܬܪܥܡ. * ܠܒܫ ܓܐܝܘܬܐ ܘܥܫܝܢܘܬܐ. ܘܐܬܥܛܦ
6 7 ܢܘܗܪܐ ܘܗܕܪܐ. * ܘܐܥܒܪ ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܟ. ܘܚܙܝ ܟܠ ܪܡܐ ܘܡܟܟܝܗܝ. * ܘܐܪܡܐ ܚܛܝܐ ܒܕܘܟܝܬܗܘܢ.
9 8 * ܘܛܡܘܪ ܒܥܦܪܐ ܐܟܚܕܐ. ܘܦܪܨܘܦܝܗܘܢ ܣܟܘܪ ܒܛܘܫܝܐ. * ܘܐܦ ܐܢܐ ܐܫܒܚܟ. ܡܐ ܕܦܪܩܬܟ ܝܡܝܢܟ.
10 11 * ܗܐ ܒܗܡܘܬ ܕܥܒܕܬ ܥܡܟ. ܥܣܒܐ ܐܝܟ ܬܘܪܐ ܐܟܠ. * ܘܚܝܠܗ ܒܚܨܘܗܝ. * ܙܩܦ ܕܘܢܒܗ ܐܝܟ ܐܪܙܐ.
12 13 ܘܙܩܝܦܝܢ ܓܝܕܐ ܕܦܚܕܘܗܝ. * ܓܪܡܘܗܝ ܥܫܝܢܝܢ ܐܝܟ ܢܚܫܐ. ܘܐܝܟ ܦܪܙܠܐ. * ܗܘܝܘ ܪܫ ܥܒܕܘܗܝ
14 15 ܕܐܠܗܐ. ܕܥܒܕܗ ܕܢܥܒܕ ܩܪܒܐ. * ܘܛܘܪܐ ܣܓܝܐܐ ܡܫܩܠܝܢ ܠܗ. ܘܟܠܗ ܚܝܘܬܐ ܕܕܒܪܐ: ܪܒܝܥܢ ܒܛܠܠܗ.
16 17 * ܘܒܛܠܠܐ ܕܩܢܝܐ ܪܒܥ. * ܡܛܠܠܝܢ ܠܗ ܛܠܠܐ. ܘܡܚܕܪܝܢ ܠܗ ܥܘܪܒܐ ܕܢܚܠܐ. * ܐܢ ܢܥܫܢ ܢܗܪܐ ܠܐ ܙܐܥ. ܘܬܘܟܠܢܗ
18 19 ܕܢܦܩ ܠܗ ܝܘܪܕܢܢ ܠܦܘܡܗ. * ܒܥܢܢܘܗܝ ܢܐܚܕܝܘܗܝ ܘܒܡܨܝܕܬܗ ܢܬܬܚܕ. * ܬܓܪܘܓ ܬܢܝܢܐ ܒܚܟܬܐ.
20 21 ܘܒܚܒܠܐ ܬܐܣܘܪ ܠܫܢܗ. * ܘܬܣܝܡ ܐܝܟ ܦܓܕܐ ܒܦܘܡܗ. ܘܬܢܩܘܒ ܐܝܟ ܦܟܗ ܒܡܪܗܛܗ. * ܘܐܢ ܡܣܓܐ
22 ܒܥܐ ܡܢܟ. ܘܐܡܪ ܠܟ ܪܟܝܟܬܐ. * ܡܩܝܡ ܥܡܟ ܩܝܡܐ. ܐܘ ܟܬܒ ܐܢܬ ܠܗ ܥܒܕܐ ܠܥܠܡ. * ܬܓܚܟ ܐܢܬ ܒܗ
23 24 ܐܝܟ ܦܪܚܬܐ. ܘܬܛܪܝܘܗܝ ܠܝܘܡܝ ܛܠܝܘܬܟ. * ܢܬܟܢܫܘܢ ܥܠܘܗܝ ܚܒܪܐ. ܘܢܦܠܓܘܢܝܗܝ ܒܝܬ
25 26 ܣܓܝܐܐ. * ܡܠܐ ܐܢܬ ܡܫܟܗ ܒܣܪܐ: ܘܪܫܗ ܒܛܠܠܐ ܕܢܘܪܐ. ܣܝܡ ܐܝܕܟ ܥܠܘܗܝ. ܘܐܬܕܟܪ
27 28 ܩܪܒܐ ܠܐ ܬܘܣܦ. * ܗܐ ܫܒܝܩܐ ܪܓܠܟ. ܘܐܦ ܐܠܗܐ ܡܪܪܬܗ ܢܫܩܘܠ.

Versio ARABICA.

33 34 * فاجاب ايوب وقال للرب * ضعفت انا ماذا اجيبك * وضعت يدي علي فمي * واحدة تكلمت * ولا اردّ
35 1 ولا * والثانية لا اعود ايضا ان اتكلم * الفصل الاربعون * اجاب الرب وقال
2 3 لايوب من الغمام * شدّ الان مثل الجبار وسطك * اسالك فاخبرني * ان كنت ترد علي وتدحضني وتزكوا *
4 5 * هل لك ذراع كالذي لله * او تصدع بالصوت مثله * البس الجلال والجبروت * وتعطف البهاء والضياء *
6 7 * والقي حمية غضبك وانظر كل مستكبر فاهدمه * واطرح الخطاة في مواضعهم * وجميعا في التراب
8 9 10 تطمرهم * وفي الغبار تحبس وجوههم * وانا ايضا احمدك اذا ما خلصتك يمينك * هذا بهموت الذي
11 12 صنعت معك * الحشيش مثل الثور ياكل * وعظمته في جوانبه * يرفع ذنبه مثل الارز * ومنتصبة
13 14 عروق افخاذه * عظامه عظيمة مثل النحاس * ومثل الحديد * هو راس جميع خلايق الله الذي يجعله
15 16 يصنع القتال * وكثير الجبال يحمل * وجميع حيوانة القفر تحت ظلاله تنام * وفي استار القصب يربض *
17 18 * يطوف به الظلال * ويطوف حواليه غربان الوادي * ان طغا النهر لا يخاف * ويتكل ان يفرغ الاردن
19 20 في فمه * في سحابته ياخذه * وفي المصاده يمسكه * هل تاخذ التنين بالمصاده * وفي الحبل تاخذ بلسانه *
21 22 * او تلقي اللجام في فمه * وتاخذ لحيته في مسيره * وان كثيرا يطلب منك ويقول لك بالرفق * هل
23 24 يصدق معك بالعهد * او تعده عبدا للدهر * هل تضحك عليه مثل العصفور * وتحفظ لايام
25 26 شبيبتك * الاشراك يجتمعون عليه * ويقسمونه بين الكثير * تملا انت جلده لحما * وراسه في ظلال النار *
27 28 * اصنع عليه يدك * وذكر القتال لا تعيد * فهناك مطلقة رجلك * والله ايضا مرارته يرفع *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Reſpondens autem Job di- 33
xit Domino, Ego (g) in- 34
firmatus ſum, quid re-
ſpondebo tibi? appoſui ma-
num meam ori meo. Se- 35
mel locutus ſum & non
repetam ſermonem, & ſe-
cundò etiam non adjiciā
ut loquar.

CAP. XL.

Reſpondens Dominus 1
dixit Job de (a) nubibus,
(b) Corrobora ſicut gigas 2
lumbos tuos, interrogabo
te, enarra mihi. (c)
utrùm reſpondeas mihi, et 3
condemnes me, & te ju-
ſtifices? Numquid ha- 4
bes brachiū ſicut id quod
habet Deus? aut fragore
tonabis ſicut ipſe? In- 5
duere gloriā & fortitudi-
ne, & amicire luce & (d)
lumine, Et depone furo- 6
rem iræ tuæ, & reſpice
omnem ſuperbum, & e-
verte eum. Et dejice pec- 7
catores in locis eorum;
Et (e) omnes in pulvere 8
humes, & facies eorum
concludas in pulvere;
Et ego etiam laudabo te, 9
cùm ſalvabit te dextera
tua. (f) Hic Behemot, 10
quem feci tecum, herbam
velut bos manducat, Et 11
magnitudo ejus in lateri-
bus ipſius: Extollit cau- 12
dam ſuam quaſi cedrum,
& erecti ſunt nervi coxa-
rum ejus: Oſſa ipſius 13
magna, velut æs, & quaſi
ferrum. Ipſe eſt caput 14
creaturarum Dei, qui fa-
cit eum gerere bellum, Et 15
(g) multos montes portat,
& omnes beſtiæ deſerti
jacent ſub umbra ejus. Et 16
ſub tegumento arundinū
cubat, Circumvalla eum 17
umbra, & circundant eū
corvi vallis: Si prorupe- 18
rit flumen, non timet, &
habet fiduciam quòd poſ-
ſit evacuare Jordanē ore
ſuo. (h) In hamo capies 19
eum aut reti tenebis eum?
Numquid capies draconē 20
reti, aut fune capies ejus
linguam? Aut pones fræ- 21
num in ore ejus, & (i) ca-
pies maxillam ejus in cur-
ſu ipſius? Et ſi multum 22
petat à te, & dicat tibi
cum lenitate; An fortè 23
obſervabit tecum pactum,
an aſcribes eum ſervum in
æternum? An forte ei il- 24
ludes quaſi avi, & ſerva-
bis ad dies juventutis
tuæ? Sodales congrega- 25
buntur ſuper eum, & di-
vident eum inter multos.
Implebiſne pellem ejus 26
carne, & caput ejus in
umbra ignis? Pone ſu- 27
per eum manum tuam, &
memoriam belli ne repe-
tas. Ecce dimiſſus eſt 28
pes tuus, & Deus quoque
auferet fel ſuum.

INTERP. SYRIACA.
(g) imminutus ſum mihi, CAP. xl. (a) turbine, (b) Accinge nunc (c) An irritū me facies, (d) majeſtate, (e) ſimul eos in (f) Ecce (g) multi montes proferent ei, (h) In nubib' ej' capiet eū, & reti ſuo apprehendetur? (i) perforabis maxillā ejus in ſaltu ipſius?

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et reſpondit Job Domino & ait: Ecce vilis factus ſum, quid reſpondebo tibi? manum meam pono ori meo. Semel locutus ſum & non reſpondebo, et ſecundò et ultrà 33 34
non addam. 35

CAP. XL.

ET reſpondit *Dominus* Job de turbine tribulationis, et ait: Accinge nunc ſicut vir lumbos tuos: interrogabo te, et indica mihi. Nunquid irritum facies judicium me- 1 2 3
um, condemnabis me ut juſtificeris? Et ſi habes brachium ſicut Deus, et voce ſimili ejus clamabis? Dirige nunc elevationem et altitudinem: ſplendore et pulchritudine 4 5
induere. Diſperge furorem naris tuæ, et vide omnem ſuperbū et humilia eum. Vide omnem elatum et contere eum, et comminue peccatores in locis ſuis. Abſconde 6 7 8
eos in pulvere ſimul, facies eorum ſubjice in abſcondito. Ego quoq; confitebor tibi quòd ſalvabit te dextera tua. Ecce nunc animal quod feci, tecum herbam ſicut boves 9 10
comedet. Ecce nunc *Leviathan cujus* virt' in lumbis ej', et fortitudo illi' in umbilico ventris ej'. Contorquet caudā ſuā ſicut cedrus, *nervi teſticulorū* ej' perplexi. Membra 11 12
ejus fortia ſunt ſicut fiſtulæ æreæ, oſſa ejus ſicut virga ferrea. Ipſe eſt principiū viarum Dei, qui fecit eū, applicavit gladiū ſuum. Quoniā fructū montes ferent ei, et omnes 13 14
beſtiæ agri ludent ibi. Sub umbris dormiet: in ſecreto calami et cœni. Tegunt umbræ operimentum ejus, circundant eum ſalices torrentium. Ecce vim facit flumini, 15 16
et non feſtinabit: confidet quòd influet Jordanis in os ejus. Oculis ſuis capiet eum, laqueis *perforabit narem* ejus. Trahéſne Leviathan hamo, et fune hauries 17 18
linguam ejus? Nunquid pones *uncum* in naribus ejus, aut tribulo perforabis maxillam ejus? Nunquid multiplicabit ad te preces, aut loquetur ad te mollia? 19 20
Nunquid inibit tecum pactum; aut emes eum in ſervum perpetuum? Nunquid ludes cum eo quaſi cum ave, et ligabis eum puellis tuis? Facientne ſuper eum 21 22
ſapientes prandium: divident eum inter mercatores? Nunquid implebis umbracula pelle ejus, aut ſagenam piſcium capite illius? Pone ſuper eum manum tuam: me- 23 24
mento belli, et non addas. Ecce ſpes ejus fruſtrabitur, et in conſpectu utique ejus ejicietur. 25 26
27 28

איוב : מא מב

CAP. XLI. מא

Quis ? ſtet meas facies ad ipſe quis & : eum ſuſcitet quòd crudelis Non
1 2 לֹא־אַכְזָר כִּי יְעוּרֶנּוּ וּמִי הוּא לְפָנַי יִתְיַצָּב׃ מִי
Non ,ipſum mihi ,cœlo omni ſub : perficiam & ,me præceſſit
3 הִקְדִּימַנִי וַאֲשַׁלֵּם תַּחַת כָּל־הַשָּׁמַיִם לִי־הוּא׃ לֹא־
.ejus diſpoſitionis gratiam & ,fortitudinum verbum & ,ejus veſtes ſilebo
אַחֲרִישׁ בַּדָּיו וּדְבַר גְּבוּרוֹת וְחִין עֶרְכּוֹ׃
? veniet quis ejus freni duplicitate cum ? ejus indumenti facies detexit Quis
4 מִי־גִלָּה פְּנֵי לְבוּשׁוֹ בְּכֶפֶל רִסְנוֹ מִי יָבוֹא׃
.formido ejus dentium circuitus ? aperuit quis ejus faciei Portas
5 דַּלְתֵי פָנָיו מִי פִתֵּחַ סְבִיבוֹת שִׁנָּיו אֵימָה׃
unam in Una ,arcto ſigillo clauſa ,ſcutorum fortitudines Superbia
6 7 גַּאֲוָה אֲפִיקֵי מָגִנִּים סָגוּר חוֹתָם צָר׃ אֶחָד בְּאֶחָד
ſuo fratre in Vir ,eas inter ingredietur non ventus & ,admoventur
8 יִגַּשׁוּ וְרוּחַ לֹא־יָבוֹא בֵינֵיהֶם׃ אִישׁ־בְּאָחִיהוּ
clarebit ejus Sternutationibus .ſeparabuntur non & ,ſe capient : adhærebunt
9 יְדֻבָּקוּ יִתְלַכְּדוּ וְלֹא יִתְפָּרָדוּ׃ עֲטִישֹׁתָיו תָּהֶל
, ibunt lampades ejus ore De .auroræ palpebræ ut ejus oculi & : lux
10 אוֹר וְעֵינָיו כְּעַפְעַפֵּי־שָׁחַר׃ מִפִּיו לַפִּידִים יַהֲלֹכוּ
olla ſicut ,fumus egredietur ejus naribus E .ſe eruent ignis ſcintillæ
11 כִּידוֹדֵי אֵשׁ יִתְמַלָּטוּ׃ מִנְּחִירָיו יֵצֵא עָשָׁן כְּדוּד
ejus ore de fulgor & : faciet ardere prunas ejus Anima .aheno & ,fervente
12 נָפוּחַ וְאַגְמֹן׃ נַפְשׁוֹ גֶּחָלִים תְּלַהֵט וְלַהַב מִפִּיו
exultabit eum ante & ,fortitudo morabitur ejus collo In .egredietur
13 יֵצֵא׃ בְּצַוָּארוֹ יָלִין עֹז וּלְפָנָיו תָּדוּץ
non ,eo in concreta : cohærent ejus carnis Decidentiæ .dolor
14 דְּאָבָה׃ מַפְּלֵי בְשָׂרוֹ דָבֵקוּ יָצוּק עָלָיו בַּל־
.inferior mola ſicut durum & ,lapis ſicut durum ejus Cor .movebitur
15 יִמּוֹט׃ לִבּוֹ יָצוּק כְּמוֹ־אָבֶן וְיָצוּק כְּפֶלַח תַּחְתִּית׃
.ſe purgabunt contritionibus à : fortes timebunt ejus altitudine Ab
16 מִשֵּׂתוֹ יָגוּרוּ אֵלִים מִשְּׁבָרִים יִתְחַטָּאוּ׃
.lorica & ,profectionis lancea : ſtabit non gladius eum Attingentis
17 מַשִּׂיגֵהוּ חֶרֶב בְּלִי תָקוּם חֲנִית מַסָּע וְשִׁרְיָה׃
18 Non .æs putredinis lignum in : ferrum paleam in Reputabit
19 יַחְשֹׁב לְתֶבֶן בַּרְזֶל לְעֵץ רִקָּבוֹן נְחוּשָׁה׃ לֹא־
.fundæ lapides ei ſunt verſi ſtipulam in : arcus filius eum fugabit
יַבְרִיחֶנּוּ בֶן־קָשֶׁת לְקַשׁ נֶהְפְּכוּ־לוֹ אַבְנֵי־קָלַע׃
.haſtæ vibrationem deridebit & : catapulta ſunt reputata ſtipula Sicut
20 כְּקַשׁ נֶחְשְׁבוּ תוֹתָח וְיִשְׂחַק לְרַעַשׁ כִּידוֹן׃
faciet Fervere .lutum ſuper acutum ſternet : teſtæ acumina eo Sub
21 22 תַּחְתָּיו חַדּוּדֵי חָרֶשׂ יִרְפַּד חָרוּץ עֲלֵי־טִיט׃ יַרְתִּיחַ
eum Poſt .pigmenti ollam ut ponet mare : profundum ollam veluti
23 כַּסִּיר מְצוּלָה יָם יָשִׂים כַּמֶּרְקָחָה׃ אַחֲרָיו
ſuper Non .canitiem in voraginem reputabit : ſemitam faciet lucere
24 יָאִיר נָתִיב יַחְשֹׁב תְּהוֹם לְשֵׂיבָה׃ אֵין־עַל־
Omne .conterendum non ad ,eſt factus qui ,ejus comparatio pulverem
25 עָפָר מָשְׁלוֹ הֶעָשׂוּ לִבְלִי־חָת׃ אֶת כָּל־
.ſuperbiæ filios omnes ſuper rex ipſe : videbit ſublime
גָּבֹהַּ יִרְאֶה הוּא מֶלֶךְ עַל־כָּל־בְּנֵי־שָׁחַץ׃

CAP. XLII. מב

omnia quòd Novi : dixit & ,Domino Ijob reſpondit Et
1 2 וַיַּעַן אִיּוֹב אֶת־יְהוָה וַיֹּאמַר׃ יָדַעְתָּ כִּי־כֹל
occultans iſte Quis .cogitatio te à prohibebitur non & ,poteris
3 תּוּכָל וְלֹא־יִבָּצֵר מִמְּךָ מְזִמָּה׃ מִי זֶה מַעְלִים
: intelligam non & ,annunciavi Ideo ? ſcientia abſque conſilium
עֵצָה בְּלִי דָעַת לָכֵן הִגַּדְתִּי וְלֹא אָבִין
: loquar ego & ,nunc Audi .ſciam non & ,me præ mirabilia
4 נִפְלָאוֹת מִמֶּנִּי וְלֹא אֵדָע׃ שְׁמַע־נָא וְאָנֹכִי אֲדַבֵּר
nunc & : te audivi auris auditum Ad .me ſcire fac & ,te interrogabo
5 אֶשְׁאָלְךָ וְהוֹדִיעֵנִי׃ לְשֵׁמַע־אֹזֶן שְׁמַעְתִּיךָ וְעַתָּה
pulvere in ,reſipiſcam & ,reprobabo Idcirco .te vidit meus oculus
6 עֵינִי רָאָתְךָ׃ עַל־כֵּן אֶמְאַס וְנִחַמְתִּי עַל־עָפָר
.cinere &
וָאֵפֶר׃

Verſio VUL. LAT.

CAP. XLI.

1 NOn quaſi crudelis ſuſcita-
bo eum : quis enim reſiſtere
2 poteſt vultui meo? Quis antè
dedit mihi, ut reddam ei?
omnia quæ ſub cœlo ſunt, mea
3 ſunt. Non parcam ei, & ver-
bis potentibus, & ad depre-
4 candum compoſitis. Quis
revelabit faciem indumenti
ejus? & in medium oris ejus
5 quis intrabit? Portas vultûs
ejus quis aperiet? per gyrum
6 dentium ejus formido. Cor-
pus illius quaſi ſcuta fuſilia,
compactum ſquamis ſe pre-
7 mentibus. Una uni conjun-
gitur, & ne ſpiraculum qui-
8 dem incedit per eas : Una al-
teri adhærebit, & tenentes
ſe nequaquàm ſeparabuntur.
9 Sternutatio ejꝰ ſplendor ignis,
& oculi ejus, ut palpebræ
10 diluculi. De ore ejus lampades
procedunt, ſicut tedæ ignis ac-
11 cenſæ. De naribus ejus pro-
cedit fumus, ſicut ollæ ſuccen-
12 ſæ atque ferventis. Halitus
ejus prunas ardere facit, &
flamma de ore ejus egreditur.
13 In collo ejus morabitur forti-
tudo, & faciem ejus præcedit
14 egeſtas. Membra carniū ejus
cohærentia ſibi: mittet contra
eum fulmina, & ad locum ali-
15 um non ferentur. Cor ejꝰ indu-
rabitur tanquā lapis, & ſtrin-
getur quaſi malleatoris incus.
16 Cùm ſublatꝰ fuerit, timebunt
angeli, & territi purgabun-
17 tur. Cùm apprehenderit eum
gladius, ſubſiſtere non poterit
18 neq; haſta, neque thorax: Re-
putabit enim quaſi paleas fer-
rum, & quaſi lignū putridū, æs.
19 Non fugabit eū vir ſagittarius,
in ſtipulam verſi ſunt ei lapides
20 fundæ. Quaſi ſtipulā æſtimabit
malleū, & deridebit vibrantē
21 haſtā. Sub ipſo erunt radii ſo-
lis, & ſternet ſibi aurū quaſi lu-
22 tū. Ferveſcere faciet quaſi ollā
profundū mare, & ponet quaſi
23 cùm unguenta bulliunt. Poſt
eum lucebit ſemita, æſtimabit
24 abyſſū quaſi ſeneſcentē. Non
eſt ſuper terram poteſtas, quæ
cōparetur ei, qui factꝰ eſt ut
25 nullū timeret. Omne ſublime
videt, ipſe eſt rex ſuper univer-
ſos filios ſuperbiæ.

CAP. XLII.

1 REſpondens autē Job Dño,
2 dixit; Scio quia omnia potes,
& nulla te latet cogitatio.
3 Quis eſt iſte, qui celat conſiliū
abſq; ſcientia? ideò inſipien-
ter locutꝰ ſū, & quæ ultra mo-
dū excederent ſcientiā meam.
4 Audi, & ego loquar : interro-
5 gabo te, & reſponde mihi. Au-
ditu auris audivi te, nunc au-
6 tē oculus meus videt te. Idcir-
cò ipſe me reprehendo, & ago
pœnitentiā in favilla et cinere.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. μα΄.

† Οὐχ (α) ἑώρακας αὐτὸν; οὐδὲ ἐπὶ
τοῖς λεγομένοις τεθαύμακας; † οὐ δέδοι-
1 κας (β), ὅτι ἡτοίμασταί (γ) μοι; † Τίς γὰρ
ἐστιν ὁ ἐμοὶ (δ) ἀντιστάς; † ἢ τίς (ε) ἀντι-
2 στήσεταί μοι, καὶ ὑπομενεῖ; † (ζ) Εἰ πᾶσα ἡ
3 ὑπ᾽ οὐρανὸν ἐμή ἐστιν, † Οὐ σιωπήσομαι δι᾽
αὐτόν. † (η) καὶ λόγον δυνάμεως ἐλεήσει τὸν
4 ἴσον (θ) αὐτοῦ. † (ι) Τίς ἀποκαλύψει πρόσ-
ωπον ἐνδύσεως αὐτοῦ, εἰς δὲ πτύξιν θώρα-
5 κος αὐτοῦ τίς ἂν εἰσέλθοι; † (κ) Πύλας
προσώπου αὐτοῦ τίς ἀνοίξει; † κύκλῳ ὀδόν-
6 των αὐτοῦ φόβος. † (λ) Τὰ ἔγκατα αὐτοῦ
ἀσπίδες (μ) χάλκεαι· † σύνδεσμος δὲ αὐ-
7 τοῦ, ὥσπερ (ν) σμιρίτης λίθος. (ξ) Εἷς τοῦ
ἑνὸς κολλῶνται, † πνεῦμα δὲ οὐ μὴ διέλθῃ
8 αὐτόν. † Ἀνὴρ τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ προσκολ-
ληθήσεται· (ο) συνέχονται καὶ οὐ μὴ ἀπο-
9 σπασθῶσιν. † Ἐν πταρμῷ αὐτοῦ (π) ἐπι-
φαύσκεται φέγγος, † οἱ δὲ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ
10 εἶδος Ἑωσφόρου. † Ἐκ στόματος αὐτοῦ
ἐκπορεύονται (ρ) ὡς λαμπάδες καιόμεναι,
† καὶ (σ) διαρριπτοῦνται ὡς ἐσχάραι πυρός.
11 † Ἐκ μυκτήρων αὐτοῦ ἐκπορεύεται καπνὸς
12 καμίνου καιομένης (τ) πυρὶ ἀνθράκων. † Ἡ
ψυχὴ αὐτοῦ ἄνθρακες, † φλὸξ δὲ ἐκ στόμα-
13 τος αὐτοῦ ἐκπορεύεται. Ἐν δὲ τραχήλῳ αὐ-
τοῦ αὐλίζεται δύναμις, † ἔμπροσθεν αὐτοῦ
14 (υ) τρέχει ἀπώλεια. † Σάρκες δὲ σώματος
αὐτοῦ κεκόλληνται· † καταχέει ἐπ᾽ αὐτόν, οὐ
15 σαλευθήσεται. † Ἡ καρδία αὐτοῦ πέπηγεν
(φ) ὡς λίθος, ἕστηκε δὲ ὥσπερ ἄκμων ἀνήλα-
16 τος. † Στραφέντος (χ) δὲ αὐτοῦ, φόβος
θηρίοις τετράποσιν (ψ) ἐπὶ γῆς ἀλλομέ-
17 νοις. † Ἐὰν συναντήσωσιν (ω) αὐτῷ λόγ-
χαι, (a) οὐδὲν μὴ ποιήσωσι, δόρυ, καὶ θώρα-
18 κα. † Ἥγηται μὲν γὰρ σίδηρον (β) ἄχυρα,
19 † χαλκὸν δὲ ὥσπερ ξύλον σαθρόν. † Οὐ μὴ
τρώσῃ (γ) αὐτὸν τόξον χάλκειον· † ἥγηται
20 μὲν πετροβόλον (δ) χόρτον. † Ὡς καλάμη (ε)
ἐλογίσθησαν σφῦραι, † καταγελᾷ δὲ σεισμοῦ πυρ-
21 φόρου. † Ἡ στρωμνὴ αὐτοῦ ὀβελίσκοι ὀξεῖς, † πᾶς
δὲ χρυσὸς θαλάσσης ὑπ᾽ αὐτὸν ὥσπερ πηλὸς
22 ἀμύθητος. † Ἀναζεῖ τὴν ἄβυσσον ὥσπερ
χαλκεῖον· † ἥγηται δὲ τὴν θάλασσαν ὥσπερ
23 ἐξάλειπτρον, † Τὸν δὲ τάρταρον τῆς ἀβύσσου
ὥσπερ αἰχμάλωτον· † ἐλογίσατο ἄβυσσον
24 εἰς περίπατον. † Οὐκ ἔστιν οὐδὲν (ζ) ἐπὶ τῆς
γῆς ὅμοιον αὐτῷ, † πεποιημένον ἐγκατα-
25 παίζεσθαι ὑπὸ τῶν ἀγγέλων μου. † Πᾶν ὑ-
ψηλὸν ὁρᾷ· αὐτὸς δὲ βασιλεὺς πάντων τῶν
ἐν τοῖς ὕδασιν.

ΚΕΦ. μβ΄.

1 † Ὑπολαβὼν δὲ Ἰὼβ, λέγει τῷ κυρίῳ,
2 † Οἶδα ὅτι (α) πάντα δύνασαι, ἀδυνατεῖ
3 δέ σοι οὐδέν. † Τίς γάρ ἐστιν ὁ κρύπτων σε
βουλήν; † φειδόμενος δὲ ῥημάτων, καὶ σὲ οἴε-
ται κρύπτειν; † (β) τίς δὲ ἀναγγελεῖ μοι
ἃ οὐκ ᾔδειν, † μεγάλα καὶ θαυμαστὰ ἃ οὐκ (*)
4 ἐπιστάμην; † Ἄκουσον δέ μου κύριε, ἵνα
κἀγὼ λαλήσω· † ἐρωτήσω δέ σε, σὺ δέ
5 με δίδαξον. † (γ) Ἀκοὴν μὲν ὠτὸς ἤκουόν
σου τὸ πρότερον, † νυνὶ δὲ ὁ ὀφθαλμός μου (δ)
6 ἑώρακέ σε. † Διὸ ἐφαύλισα ἐμαυτὸν, καὶ ἐτά-
κην· † (π̄) ἥγημαι δὲ ἐμαυτὸν γῆν καὶ σποδόν.

CAP. XLI.

*NOnne (a) vidiſti eum?
nonne ſuper iis, quæ dicuntur,
miratus es? Non timuiſti, quia
paratus eſt mihi? Quis eſt enim, 1
qui mihi ex adverſo ſteterit? vel
quis (b) reſiſtet mihi, & ſuſti-
nebit? Si univerſa quæ ſub cœ- 2
lo, mea eſt, Non tacebo propter 3
eum: & (c) rationem virtutis
miſerebitur æqualem ſibi. Quis 4
revelabit faciem indumenti ejus?
& (d) in rugam pectoris ejus
quis utique ingrediatur? Portas 5
faciei ejus quis aperiet? (e) in
circuitu dentium ejus timor.
(f) Interiora ejus, ſcuta ænea, 6
(g) & colligatio ejus, ſicut lapis
ſmyrites. Unus uni conglutinan- 7
tur: ſpiritus autem non tranſibit
eum. (h) Vir fratri ſuo aggluti- 8
nabitur: cohærent, &, non di-
vellentur. In (i) ſternutamento 9
ejus effulget lumen: & oculi e-
jus ſpecies Luciferi. De ore ejus 10
egrediuntur quaſi lampades ac-
cenſæ, & projiciuntur, ſicut (k)
ſcintillæ ignis. De naribus ejus 11
egreditur fumus camini accenſi
igne carbonum. Anima ejus car- 12
bones; & flamma de ore ejus
procedit. In collo autem ejus 13
habitat potentia; ante eum cur-
rit (l) perditio. Carnes autem 14
corporis ejus ſunt agglutinatæ:
(m) effundis ſuper eum, non com-
movebitur. Cor ejus induratum 15
eſt, ut lapis: ſtetit autem, ſicut
incus immota. Cùm (n) ſe au- 16
tem verterit, timor beſtiis qua-
drupedibus ſuper terram ſaltan-
tibus. Si (o) occurrerint ei lan- 17
ceæ, nihil facient; haſtam, &
thoracem. Nam ferrum quidem 18
putat paleas, æs autem ſicut li-
gnum putridum. Non vulnera- 19
bit eum arcus æneus: putat au-
tem (p) machinam petras jacien-
tem fœnum. Sicut calamus, re- 20
putati ſunt mallei: & deridet
(q) concuſſionem igniferam. Le- 21
ctus ejus, obeliſci (r) acuti: &
omne aurum maris ſub eo, ſicut
lutum inenarrabile. (ſ) Fervere 22
facit abyſſum, tanquàm officinam
ærariam: putat autem mare, tan-
quàm vas (t) unguentarium, Et 23
tartarum abyſſi tanquàm capti-
vum: reputavit abyſſum in de-
ambulatorium. Nihil (u) eſt ſu- 24
per terram ſimile ei factu, ut illu-
datur ab angelis meis: Omne 25
(x) ſublime videt: ipſe autem
rex (y) omnium quæ in aquis.*

CAP. XLII.

*REſpondens autem Job dicit 1
Domino; Novi quòd omnia potes: 2
& nihil (a) tibi eſt impoſſibile.
Quis enim eſt, qui celat te con- 3
ſilium? (b) parcens autem ver-
bis, & te putat celare? quis au-
tem annuntiabit mihi, quæ non
novi, magna, & mirabilia, quæ
neſcivi? Verùm audi me, Do- 4
mine, ut & ego loquar: inter-
rogabo autem te, & tu doce
me. Auditu enim (c) auris au- 5
divi te anteà; nunc autem ocu-
lus meus vidit te. Quamobrèm 6
ſprevi me ipſum, & extabui:
putavi autem (d) me terram, & cinerem.*

MS.A. (α) ἑόρακας (β) αὐτὸν, ὅτι (γ) σοι; (δ) ἀνθιστάμενος; (ε) ἐστιν ὃς ἀντιστήσεταί μοι, (ζ) Ἢ οὐχὶ πᾶσα (η) καὶ λόγος (θ) αὐτοῦ. (ι) Τίς δὲ ἀνακαλύψει (κ) Πύλας δὲ (λ) Ἔγκατα δὲ αὐτοῦ (μ) χαλκαῖ καὶ σύνδεσμοι αὐτοῦ, (ν) *σμιρίτης λίθος. (ξ) Εἷς ἐκ τοῦ ἑνὸς (ο) συνέχωνται (π) ἐπιφώσκεται (ρ) λαμπάδες καιόμεναι, (σ) διαρριπτοῦνται ἐσχάραι πυρός. (τ) φλογὶ (υ) τρέχει (φ) ὥσπερ (χ) αὐτοῦ, (ψ) ἀλλομένοις ἐπὶ γῆς. (ω) αὐτῷ (α) οὐδὲν οὐ μὴ ποιήσωσιν αὐτῷ δόρυ καὶ θώραξ. (β) ὥσπερ ἄχυρα, (γ) αὐτὸν· ἥγηται γὰρ (δ) ὡς χόρτον. (ε) ἐλογίσθη αὐτῷ σφυρά, (ζ) ἐπὶ γῆς Κεφ. μβ΄. MS.A. (α) δύνασαι πάντα, (β) ἀναγγελεῖ δέ μοι (*) ἠπιστάμην; Ἄκουσον δή (γ) Ἕως μὲν ὠτὸς ἀκοῆς, ἤκουον (δ) ἑόρακέν σε. (π̄) *ἥγη

תרגום TARGUM.

מא

לא אכזראה ארום יעירניה ומן הוא קדמוי יתעתד : מן אקדימני בעובדי בראשית ואשלם הלא כל תחותי שמיא דילי הוא : לא אשתוק כדבוביה 3 2 1
ומימר גבורתא ובעותא דעלוויה : מן גלי אפי לבושיה בכפלא דפרומביה מן יעול : דשי אפוי מן שרי חזורנות ככוי אימתא : גיותנות 6 5 4
פצידיא תריסין ליה אחיד בחותם ציר : חד עם חד מקרבין ניבוי ורוחא לא יעול במציעהון : חד עם חבריה מתאדקין מתאחדין ולא מתפרדין : 8 7
זרירוי תנהר נהורא ועינוי כתמרי קרצתא : מפומיה בעוריא יהלכון נוצין דנור משתובין : מאפותיה יפוק קטרא היך דודא נפיח דעבד כיפא : 11 10 9
נפשיה גומרין תצלהב ושלהוביתא מפומיה נפק : בצוריה יבית עושנא ולקדמוי תריץ דאבונא : שלדי בסריה מתאדקין יתסד עלוי דלא 14 13 12
תזוע : לביה מתיסד היך אבנא ואתיך היך פלחא ארעיתא : מספייה ידחלון תקיפיא מן תבריא ידון עליהון : ידבקניה חרבא ולא תקום מורניתא 17 16 15
וקלעא דמטלא אבנא ושרינא : יחשיב לתבנא פרזלא לקיסא בולטיתא כרכומא : לא יערקניה גררא קשתא לגלי אתחשיבו ליה אבני קלעא : 19 18
היך גלי אתחשיבו ליה גרגיא יגחך לרגוש רומחא : תחותוי פרירין דחדדין היך חספא ישיך דהבא סניא עלוי סאן : מרתח היך דודא מצולתא ימא 22 21 20
ישוי היך מתכלא : בתרוי ינהר שבילא יחשוב תהומא לשיבותא : אין על עפרא שולטניה דעבדיה דלא יתבר : ית כל גובהא יחמי הוא מליך על כל 25 24 23
בני כורי :

מב

ואתיב איוב ית יי ואמר : ידעית ארום כולא תסובר ולא יתמנע מנך מחשבתא : מן דין דמכסי מלכתא בלא מנדעא מטול דהיכנא חויתי ולא אתביין פרישן 3 2 1
מני ולא אנדע : שמע כדון ואנא אמלל אשאלנך ותהודענני : למשמע אודנא שמעית יתך וכדון עיני חמית יתך : מטול דהיכנא מאסית עתרי 6 5 4
ואתנחמית מבני דהנון עפרא וקטמא :

Verſio SYRIACA.

1 * ܩܦܠܐܘܢ * ܡܐ * ܠܐ ܢܬܪܚܩ ܟܕ ܢܬܬܥܝܪ. ܘܡܢܘ ܩܕܡܝ ܢܩܘܡ. * ܘܡܢܘ ܩܕܡܢܝ ܕܐܦܪܘܥ ܐܝܟ ܕܟܠ
2 3 ܫܡܝܐ ܕܬܚܝܬ ܗܘ. * ܘܠܐ ܐܫܬܘܩ ܚܝܠܘܬܗ. ܘܓܝ̈ܕܐ ܕܓܢܒܪܘܬܗ. * ܡܢ ܓܠܐ ܐܦ̈ܝ ܠܒܘܫܗ. ܘܡܬܝ
4 5 ܕܢܦܠ ܡܨܝܕܬܐ. * ܡܢܘ ܢܥܘܠ ܠܬܪܥܐ ܕܦܘܡܗ. ܡܢܘ ܢܦܬܚ ܓܘܪ̈ܐ ܕܫܢ̈ܘܗܝ. ܕܚܠܬܐ ܕܒܢܚܠܐ. * ܦܘܡܗ
6 7 ܚܢܝܩ ܘܐܣܝܪ ܘܚܬܝܡ. * ܚܕ ܠܘܬ ܚܕ ܩܪܝܒܝܢ. ܘܪܘܚܐ ܠܐ ܥܐܠܐ ܒܝܢܬܗܘܢ. * ܚܕ ܒܚܕ ܢܩܝܦܝܢ ܘܐܚܝܕܝܢ: ܘܠܐ
8 9 ܡܬܦܪܫܝܢ. * ܘܚܙܬܗ ܡܠܝܐ ܢܘܗܪܐ. ܘܥܝ̈ܢܘܗܝ ܐܝܟ ܙܠܝܩܐ ܕܨܦܪܐ. * ܘܢܦܩܝܢ ܡܢ ܦܘܡܗ ܠܡܦܐܕ̈ܐ.
10 11 ܐܝܟ ܓܘܡܪ̈ܐ ܕܢܘܪܐ. ܘܐܝܟ ܫܠܗܒܝܬܐ ܕܢܘܪܐ ܕܡܫܬܠܗܒܢ. * ܡܢ ܢܚܝܪ̈ܘܗܝ ܢܦܩ ܬܢܢܐ. ܐܝܟ ܪܬܚܐ ܕܩܕܪܐ
12 ܕܡܫܓܪ. * ܢܦܫܗ ܓܘܡܪ̈ܐ ܡܫܠܗܒܐ. ܘܫܠܗܒܝܬܐ ܢܦܩܐ ܡܢ ܦܘܡܗ. * ܒܨܘܪܗ ܒܐܬ ܚܝܠܐ.
13 14 ܘܩܕܡܘܗܝ ܪܕܐ ܕܚܠܬܐ. * ܫܦܝܪ ܦܓܪܗ ܘܫܡܝܢ ܘܡܣܬܡܟ. * ܘܠܐ ܙܐܥ. ܠܒܗ ܐܝܟ ܟܐܦܐ.
15 16 ܘܡܬܩܫܐ ܐܝܟ ܫܘܥܐ. * ܡܢ ܕܚܠܬܗ ܢܙܘܥܘܢ ܓܢܒܪ̈ܐ. ܘܡܬܡܟܟܝܢ ܥܫܝܢ̈ܐ. * ܣܝܦܐ ܠܐ ܡܫܟܚ
17 18 ܠܡܩܡ. ܘܡܘܪ̈ܢܝܬܐ ܕܪ̈ܘܪܒܢܐ ܣܝܒܠ. * ܦܪܙܠܐ ܐܝܟ ܬܒܢܐ ܚܫܝܒ ܠܗ. ܘܢܚܫܐ ܐܝܟ ܩܝܣܐ ܕܢܦܠ ܒܗ
19 20 ܪܩܒܘܬܐ. * ܠܐ ܥܪܩ ܡܢ ܩܫܬܐ. ܘܐܝܟ ܩܫܐ ܚܫܝܒܢ ܠܗ ܟܐ̈ܦܐ ܕܩܠܥܐ. * ܓܚܟ ܥܠ ܪܘܡܚܐ. ܘܐܝܟ ܝܒܝܫܐ
24 25 ܚܫܝܒܢ ܠܗ ܬܗܘ̈ܡܐ. ** ܘܚܝܠܗ ܥܠ ܐܪܥܐ ܪܗܛ. * ܣܡ ܠܚܘܒܠܐ ܟܠ ܪܡܐ ܕܚܙܐ. ܘܗܘܐ ܡܠܟܐ
ܥܠ ܟܠܗ ܚܝܘܬܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܡܒ *

1 2 * ܘܥܢܐ ܐܝܘܒ ܘܐܡܪ ܠܡܪܝܐ. * ܝܕܥ ܐܢܐ ܕܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ ܡܫܟܚ ܐܢܬ ܠܡܥܒܕ ܒܚܝܠܟ. ܘܠܐ ܡܛܫܝܐ ܡܢܟ
3 ܡܚܫܒܬܐ. * ܡܢܘ ܗܢܐ ܕܡܚܫܒ ܡܚܫܒܬܐ ܒܡܠܐ ܕܠܐ ܝܕܥܬܐ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܚܘܝܬܢܝ ܕܠܐ ܐܣܬܟܠ ܘܠܐ ܐܕܥ
4 5 ܕܪ̈ܘܪܒܢ ܡܢܝ. * ܫܡܥܢܝ ܘܐܡܠܠ. ܐܫܐܠܟ ܘܚܘܝܢܝ. * ܠܫܡܥܐ ܕܐܕܢܐ ܫܡܥܬܟ: ܗܫܐ
6 ܚܙܬܟ ܥܝܢܝ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܫܬܠܝ. ܘܐܬܒܝܐ ܥܠ ܥܦܪܐ ܘܩܛܡܐ.

Verſio ARABICA.

1 * الفصل الحادي والاربعون * لا يبعد اذا ينبعث * ومن الذي قدامي يقف *
2 3 * من الذي سبقني فاعلم * فان الذي تحت كل سماء هو لي * ولا اصمت بعزته * وبعروق جبروته *
4 5 * من كشف اوجه لبوسه * واذا وقعت المصادة * من الذي ياتي باب فمه * من الذي يفتح دور اسنانه *
6 7 المخافة التي في الوادي * فمه مصرور ومربوط ومختوم ** واحد الى واحد متقاربة ومستمسكة ولا تفترق *
8 9 10 * وبواطنه مملوة نارا وعيناه مثل كواكب الصبح * ويخرج من فمه مصابيح مثل جمر النار * ومثل
11 12 شبيب النار تلتهب * ومن مناخره يخرج الدخان مثل رغوة المرجل الذي يسجر * نفسه جمرات تلتهب *
13 14 والشعل يخرج من فمه * في عنقه يبيت العظمة * وقدامه تفرح المخافة * حسن جسمه وسمين * ويتكي * ولا يفزع *
15 16 * قلبه مسبوكا مثل الحجر * ومثل الصنام مسدد * من رهبته تفزع الاقوياء والمسددون يتواضعون * باب
17 18 السيف لا يستطيع ان يقوم * ومرانات الكبراء يحمل * والحديد مثل التبن يعد * والنحاس مثل الخشب
19 20 التي تقع فيه الدودة * لا يهرب من القوس * ومثل القش يعد الحجارة بالمقلاع * يضحك على
24 25 البيرك * ومثل اليبس تحسب له اللجج *** وقوته على التراب تجري * صنع للهلاك كل رفيع يراه * وكان ملكا
1 2 على جميع الدواب * * الفصل الثاني والاربعون * * فاجاب ايوب فقال للرب * ان هذه كلها انا اعلم
3 انك قادر ان تصنعها بالقوة * ولا يخفا عليك فكر * من هذا الذي يتفكر فكرا بكلام بلا معرفة * من
4 5 اجل هذا اخبرتني حتى افهم ولم اعرف الذي هو اكبر مني * اسمعني فاقول * اسالك فاخبرني * بسماع
6 الاذن سمعتك فالان عيني قد ابصرتك * من اجل هذا اسكت واقوم على التراب وعلى الرماد *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

CAP. XLI.

Non elongabitur cùm expergiſcetur, & quis 1
ante me ſtabit? Et quis 2
me prævenit (a) ut ſciã? (nam quicquid ſub quocunque cœlo eſt, meum
eſt) Et non tacebo potentiam ejus, & nervos for- 3
titudinis ejus. Quis revelavit facies indumenti 4
ejus? & quando ceciderit rete, Quis accedat ad 5
oſtia oris ejus? quis aperiat gyrum dentium ejus, terrorem qui eſt in
valle? Os ejus eſt ſtri- 6
ctum, et ligatum, & obſignatum: Unus alte- 7 8
ri proximus; & (b) cohærens eſt, nec ſeparantur:
Et pupillæ ejus ſunt igne 9
plenæ: et oculi ejus ſicut, (c) ſtellæ matutini: Et 10
egrediuntur ex ore ejus faces, quaſi carbones ignis; & ſicut ardor ignis
ardent: Et de naribus ejus 11
procedit fumus quaſi ſpuma caldarii quod fervet:
Halitus ejus prunas ac- 12
cendit, & flamma egreditur ex ore ipſius. In col- 13
lo ejus (d) commoratur ſuperbia, & ante eum ge-
ſtit timor. Pulchrum eſt 14
ejus corpus & pingue, & recumbit, nec timet (e).
Cor ejus eſt ſolidũ quaſi 15
lapis, & quaſi durities eſt firmũ. Præ ejus timore 16
formidant potentes, & fortes humiliantur. Por- 17
ta gladii non valet conſiſtere, & haſtas duras
magnatum ſuffert: Et 18
ferrum reputat (f) quaſi paleas, & æs quaſi lignum in quod cadit (g)
vermis: Non fugit ab ar- 19
cu, & velut (h) culmos reputat lapides in funda.
Deridet haſtam, & velut 20
arida reputantur apud eum voragines, Et 24
fortitudo ejus ſuper terram currit. Poſuit in in- 25
teritu omne ſublime quod videt: & factus eſt rex ſuper omnia animalia.

CAP. XLII.

Reſpondens autē Job 1
Domino dixit, Certè 2
ego hæc omnia novi te poſſe facere cum potentia, & nulla te latet cogitatio. Quis eſt iſte, 3
qui cogitat cogitationem in ſermone abſque ſcientia? propterea indicâſti mibi ut (a) intelligerem, & non cognoſcerem quæ
majora me ſunt. Audi 4
me, & dicam: interrogabo te, nuntia mihi: Auditu 5
auris audiveram te, jam verò oculus meus (b) vidit te: Propterea ſileho, 6
& (c) morabor ſuper pulverem ac cinerem.

INTERP. SYRIACA.

CAP. xli. (a) ut retribuã? (b) ventus non penetrat inter eos. viii. Unʾ cohæret, & conjungitur alteri, nec ſeparãtur, ix. Et aſpectʾ ejʾ lumine pleni: (c) ſplendor (d) diverſatur fortitudo, (e) cor ejʾ: xv. Conflatũ eſt inſtar lapidis, & quaſi ſilex (f) ſibi quaſi (g) caries: (h) ſtipulam CAP. xlii. (a) non intelligerem, (b) ecce vidit (c) conſolabor

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XLI.

Nullus eſt crudelis qui ſuſcitet eum: & quis eſt qui ſtabit coram *eo*? Quis prævenit me in operibʾ ab initio ut reddam: nonne omnia quæ ſub cœlo ſunt, mea ſunt? 1 2
Non tacebo mendacia ejus & verbum fortitudinis & deprecationis quæ juxta eum. Quis revelavit faciem indumenti ejus: in duplicationem fræni ejus quis introibit? 3 4
Portas vultus ejʾ quis diſſolvit? in circuitu dentium ejʾ terror. Tumores rivorũ *ſcuta ſunt ei, clauſus eſt* ſignaculo ſtricto. Unʾ uni conjunguntur dentes ejus, & aer 5 6 7
non ingreditur in mediũ eorum. Unus alteri adhæret & tenent ſe, & non ſeparantur. Sternutatio ejʾ ſplendet luce, & oculi ejʾ quaſi palpebræ auroræ. Ab ore ejʾ 8 9 10
lampades procedunt, & ſcintillæ ignis evadunt. De naribʾ ejʾ egreditur fumus, ſicut lebes fervens qui facit fumũ. Halitus ejʾ prunas inflammat, & flamma ex ore ejus pro- 11 12
cedit. In collo ejus manebit fortitudo, & coram eo exultabit dolor. Coſtæ carnis ejus cohærent, fundata eſt in eo unaquæque ut non moveatur, Cor ejus fundatur 13 14
ſicut petra, & funditur ſicut mola inferior. A conſumptione ejus timebunt fortes, de contritionibus judicat in eos. Aprehendet eum gladius & non *con-* 15 16
ſiſtet; lancea & funda quæ projicit lapidem, & lorica. Reputabit in paleas ferrum, & quaſi lignum putridum æs. Non fugabit eum ſagitta arcus, in ſtipulam 17 18
reputati ſunt *ei* lapides fundæ. Quaſi ſtipula reputata ſunt *ei* tormenta, & deridebit ſtrepitum lancearum. Sub eo ſunt lapilli acuti quaſi teſta, 19 20
ſternet aurum probatum ſuper cœnum. Fervere facit ſicut lebetem profundum, mare ponet quaſi unguentum. Poſt eum lucebit ſemita, æſtimabit 21 22
abyſſum in caniciem. Non eſt ſuper terra poteſtas ejus, quia factus eſt ut à nullo terreatur. Omne ſublime videt, ipſe eſt rex ſuper omnes filios 23 24
piſcium. 25

CAP. XLII.

Et reſpondit Job ad *Dominum*, & ait: Scio quòd omnia ſuſtines, & non prohibetur à te cogitatio. Quis eſt iſte qui celat conſilium abſque ſcientia? ideò annun- 1 2 3
ciavi, & non intellexi mirabilia quæ excedunt me, & neſcio. Audi nunc, & ego loquar: interrogabo te, et oſtende mihi. In auditu auris audivi te, et nunc oculus 4 5
meus videt te. Idcircò abieci divitias meas, et conſolatus ſum de filiis meis, qui ſunt ſicut pulvis & cinis. 6

איוב : מב

hæc verba Dominus eſt locutus poſtquam fuit Et
7 וַיְהִי אַחַר דִּבֶּר יְהוָה אֶת־הַדְּבָרִים הָאֵלֶּה

eſt iratus : Themanitem Eliphaz ad Dominus dixit & , Ijob ad
אֶל־אִיּוֹב וַיֹּאמֶר יְהוָה אֶל־אֱלִיפַז הַתֵּימָנִי חָרָה

me ad eſtis locuti non quia , tuos *ſocios* duos in & , te in meus *naſus*
אַפִּי בְךָ וּבִשְׁנֵי רֵעֶיךָ כִּי לֹא דִבַּרְתֶּם אֵלַי

, vitulos ſeptem vobis ſumite nunc Et . Ijob meus ſervus ſicut , rectum
8 נְכוֹנָה כְּעַבְדִּי אִיּוֹב׃ וְעַתָּה קְחוּ־לָכֶם שִׁבְעָה־פָרִים

aſcendere facite & , Ijob meum ſervum ad ite & , arietes ſeptem &
וְשִׁבְעָה אֵילִים וּלְכוּ אֶל־עַבְדִּי אִיּוֹב וְהַעֲלִיתֶם

nam *: vos ſuper* orabit meus ſervus Ijob & ; vobis pro *aſcenſionem*
עוֹלָה בַּעַדְכֶם וְאִיּוֹב עַבְדִּי יִתְפַּלֵּל עֲלֵיכֶם כִּי

, *abjectionem* vobiſcum *faciendum non ad* , ſuſcipiam ejus *facies utique*
אִם־פָּנָיו אֶשָּׂא לְבִלְתִּי עֲשׂוֹת עִמָּכֶם נְבָלָה

abierunt Et . Ijob meus ſervus ſicut , rectum me *ad* eſtis locuti non quia
9 כִּי לֹא דִבַּרְתֶּם אֵלַי נְכוֹנָה כְּעַבְדִּי אִיּוֹב׃ וַיֵּלְכוּ

, Nahamathites Sophar , Suchites Bildad & , Themanites Eliphaz
אֱלִיפַז הַתֵּימָנִי וּבִלְדַּד הַשּׁוּחִי צֹפַר הַנַּעֲמָתִי

Dominus ſuſcepit & , Dominus eos ad eſt locutus ſicut fecerunt &
וַיַּעֲשׂוּ כַּאֲשֶׁר דִּבֶּר אֲלֵיהֶם יְהוָה וַיִּשָּׂא יְהוָה

Ijob converſionem eſt converſus Dominus Et . Ijob *facies*
10 אֶת־פְּנֵי אִיּוֹב׃ וַיהוָה שָׁב אֶת־שְׁבוּת אִיּוֹב

quæ omnia Dominus auxit & : ſuis *ſociis* pro *ipſum orando in*
בְּהִתְפַּלְלוֹ בְּעַד רֵעֵהוּ וַיֹּסֶף יְהוָה אֶת־כָּל־אֲשֶׁר

omnes & , ejus fratres omnes eum ad venerunt Et . duplum in Ijob ipſi
11 לְאִיּוֹב לְמִשְׁנֶה׃ וַיָּבֹאוּ אֵלָיו כָּל־אֶחָיו וְכָל־

eo cum comederunt & , priùs eum *cognoſcentes* omnes & , ejus ſorores
אַחְיֹתָיו וְכָל־יֹדְעָיו לְפָנִים וַיֹּאכְלוּ עִמּוֹ

omne ſuper eum ſunt conſolati & , *ei* ſunt commoti & , ejus domo in panem
לֶחֶם בְּבֵיתוֹ וַיָּנֻדוּ לוֹ וַיְנַחֲמוּ אֹתוֹ עַל כָּל־

unuſquiſque ei dederunt Et . cum ſuper Dominus adduxerat quod malum
הָרָעָה אֲשֶׁר־הֵבִיא יְהוָה עָלָיו וַיִּתְּנוּ־לוֹ אִישׁ

benedixit Dominus Et . unam auream inaurẽ unuſquiſq; & , *unum nummum*
12 קְשִׂיטָה אֶחָת וְאִישׁ נֶזֶם זָהָב אֶחָד׃ וַיהוָה בֵּרַךְ

decim--quatuor ei fuerunt & , ejus principio *præ* Ijob noviſſimo
אֶת־אַחֲרִית אִיּוֹב מֵרֵאשִׁתוֹ וַיְהִי־לוֹ אַרְבָּעָה עָשָׂר

mille & , *bovis* juga mille & , camelorum millia ſex & , *pecoris* millia
אֶלֶף צֹאן וְשֵׁשֶׁת אֲלָפִים גְּמַלִּים וְאֶלֶף צֶמֶד בָּקָר וְאֶלֶף

vocavit Et . filiæ tres & , filii ſeptem ei fuerunt Et . aſinæ
13 14 אֲתוֹנוֹת׃ וַיְהִי־לוֹ שִׁבְעָנָה בָנִים וְשָׁלוֹשׁ בָּנוֹת׃ וַיִּקְרָא

tertiæ nomen & , Cheſihah ſecundæ nomen & , Jemimah unius nomen
שֵׁם־הָאַחַת יְמִימָה וְשֵׁם הַשֵּׁנִית קְצִיעָה וְשֵׁם הַשְּׁלִישִׁית

Ijob filiæ ſicut ſpecioſæ mulieres *eſt inventa* non Et . haphuc-Cheren
15 קֶרֶן הַפּוּךְ׃ וְלֹא נִמְצָא נָשִׁים יָפוֹת כִּבְנוֹת אִיּוֹב

medio in hæreditatem earum pater eis dedit & : terra omni in
בְּכָל־הָאָרֶץ וַיִּתֵּן לָהֶם אֲבִיהֶם נַחֲלָה בְּתוֹךְ

quadraginta & centum hoc poſt Ijob vixit Et . ſuorum fratrum
16 אֲחֵיהֶם׃ וַיְחִי אִיּוֹב אַחֲרֵי־זֹאת מֵאָה וְאַרְבָּעִים

quatuor ſuorum filiorum filios & , ſuos filios vidit & : annos
שָׁנָה וַיִּרְאֶה אֶת־בָּנָיו וְאֶת־בְּנֵי בָנָיו אַרְבָּעָה

. dierum ſaturus & , ſenex Ijob eſt mortuus Et . generationes
17 דֹּרוֹת׃ וַיָּמָת אִיּוֹב זָקֵן וּשְׂבַע יָמִים׃

Verſio VUL. LAT.

7 Poſtquàm autem locutus eſt Dominus verba hæc ad Job, dixit ad Eliphaz Themanitem; Iratus eſt furor meus in te, & in duos amicos tuos, quoniam non eſtis locuti coram me rectum, ſicut ſervus meus Job. 8 Sumite ergò vobis ſeptem tauros, & ſeptem arietes, & ite ad ſervum meum Job, & offerte holocauſtum pro vobis : Job autem ſervus meus orabit pro vobis : faciem ejus ſuſcipiam ut non vobis imputetur ſtultitia : neque enim locuti eſtis ad me recta, ſicut ſervus 9 meus Job. Abierunt ergò, Eliphaz Themanites, & Baldad Suhites, & Sophar Naamathites, & fecerunt ſicut locutus fuerat Dominus ad eos, & ſuſcepit Dominus faciem Job. 10 Dominus quoque converſus eſt ad pœnitentiam Job, cùm oraret ille pro amicis ſuis. Et addidit Dominus omnia quæcunque fuerant Job, duplicia. 11 Venerunt autẽ ad eum omnes fratres ſui, & univerſæ ſorores ſuæ, & cuncti qui noverant eum priùs, & comederunt cum eo panem in domo ejus: et moverunt ſuper eum caput, & conſolati ſunt eũ ſup omni malo quod intulerat Dominus ſuper eũ: & dederunt ei unuſquiſque ovem unam, et inau- 12 rem auream unam. Dñs autem benedixit noviſſimis Job magis quàm principio ejus. Et facta ſunt ei quatuordecim millia ovium, et ſex millia camelorum, et mille juga bo- 13 um, et mille aſinæ. Et fuerunt ei ſeptem filii & tres 14 filiæ. Et vocavit nomen unius Diem, et nomen ſecundæ Caſſiam, et nomen 15 tertiæ Cornuſtibii. Non ſunt autem inventæ mulieres ſpecioſæ ſicut filiæ Job in univerſa terra : dedítque eis pater ſuus hæreditatem inter fra- 16 tres earum. Vixit autem Job poſt hæc, centum quadraginta annis, et vidit filios ſuos, et filios filiorum ſuorum uſque ad quartam generationem, et mortuus eſt ſenex et plenus dierum.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp.

7 † Ἐγένετο δὲ μετὰ τὸ λαλῆσαι τὸν κύριον πάντα τὰ (ε) ῥήματα ταῦτα τῷ Ἰὼβ, † εἶπεν ὁ κύριος Ἐλιφὰζ τῷ Θαιμανίτῃ, † Ἥμαρτες σὺ, καὶ οἱ δύο φίλοι σου· οὐ γὰρ ἐλαλήσατε ἐνώπιόν μου ἀληθὲς οὐδὲν, ὥσπερ ὁ θεράπων μου Ἰώβ. 8 † (ζ) Νῦν δὲ λάβετε ἑπτὰ μόσχους, καὶ ἑπτὰ κριοὺς, καὶ πορεύθητε πρὸς τὸν (η) θεράποντά μου Ἰὼβ, † καὶ ποιήσει κάρπωσιν ὑπὲρ ὑμῶν. † Ἰὼβ δὲ ὁ θεράπων μου εὔξεται περὶ ὑμῶν, † ὅτι εἰ μὴ πρόσωπον αὐτοῦ λήψομαι· † (θ) εἰ μὴ γὰρ δι᾽ αὐτὸν, ἀπώλεσα ἂν ὑμᾶς· † οὐ γὰρ ἐλαλήσατε (ι) 9 ἀληθὲς κατὰ τοῦ θεράποντός μου Ἰώβ. † (κ) Ἐπορεύθη δὲ Ἐλιφὰζ ὁ Θαιμανίτης, † καὶ Βαλδὰδ ὁ Σαυχίτης, καὶ Σωφὰρ ὁ Μιναῖος, † καὶ ἐποίησε (λ) καθὼς συνέταξεν αὐτοῖς ὁ κύριος. † 10 καὶ ἔλυσε τὴν ἁμαρτίαν (μ) αὐτοῖς διὰ Ἰώβ. † Ὁ δὲ κύριος ηὔξησε τὸν Ἰώβ· εὐξαμένου δὲ (ν) αὐτοῦ καὶ περὶ τῶν φίλων αὐτοῦ, † ἀφῆκεν αὐτοῖς τὴν ἁμαρτίαν. † (ξ) Ἔδωκεν δὲ ὁ κύριος διπλᾶ, ὅσα 11 ἦν ἔμπροσθεν Ἰὼβ εἰς διπλασιασμόν. † Ἤκουσαν δὲ πάντες οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ καὶ αἱ ἀδελφαὶ αὐτοῦ, πάντα τὰ συμβεβηκότα αὐτῷ, καὶ ἦλθον πρὸς αὐτὸν, (ο) καὶ πάντες ὅσοι ᾔδεισαν αὐτὸν (π) ἐκ πρώτου· † φαγόντες δὲ καὶ πιόντες (ρ) παρ᾽ αὐτῷ παρεκάλεσαν αὐτὸν, † καὶ ἐθαύμασαν ἐπὶ πᾶσιν οἷς ἐπήγαγεν (σ) ἐπ᾽ αὐτῷ ὁ κύριος· † ἔδωκεν δὲ αὐτῷ ἕκαστος ἀμνάδα μίαν, καὶ τε- 12 τράδραχμον (τ) χρυσοῦ καὶ ἀσήμου. † Ὁ δὲ κύριος (υ) εὐλόγησε τὰ ἔσχατα Ἰὼβ, ἢ τὰ ἔμπροσθεν. † Ἦν δὲ τὰ κτήνη αὐτοῦ, πρόβατα μύρια τετρακισχίλια, † κάμηλοι ἑξακισχίλιαι, † ζεύγη βοῶν χίλια, † ὄνοι θήλειαι νομά- 13 δες χίλιαι. † Γεννῶνται δὲ αὐτῷ υἱοὶ ἑπτὰ, καὶ 14 θυγατέρες (φ) τρεῖς. † Καὶ ἐκάλεσε τὴν μὲν πρώτην, Ἡμέραν· † τὴν δὲ δευτέραν, (*) Κασίαν· † τὴν 15 δὲ τρίτην, (χ) Ἀμαλθαίας κέρας. † Καὶ οὐχ εὑρέθησαν κατὰ (ψ) τὰς θυγατέρας Ἰὼβ, † βελτίους αὐτῶν (ω) ἐν τῇ ὑπ᾽ οὐρανόν. † Ἔδωκε δὲ αὐταῖς ὁ 16 πατὴρ κληρονομίαν ἐν τοῖς ἀδελφοῖς. † Ἔζησε δὲ Ἰὼβ μετὰ τὴν πληγὴν ἔτη ἑκατὸν ἑβδομήκοντα· † τὰ δὲ πάντα (α) ἔτη ἔζησεν, διακόσια (β) τεσσαράκοντα· † καὶ εἶδεν Ἰὼβ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ καὶ τοὺς υἱοὺς τῶν υἱῶν αὐτοῦ, τετάρτην γενεάν. † Καὶ ἐτελεύτησεν Ἰὼβ πρεσβύτερος, καὶ πλήρης ἡμερῶν· † Γέγραπται (γ) δὲ, αὐτὸν πάλιν ἀναστήσεσθαι μεθ᾽ ὧν ὁ κύριος ἀνίστησιν. Οὗτος ἑρμηνεύεται ἐκ τῆς Συριακῆς βίβλου, † ἐν μὲν γῇ κατοικῶν τῇ Αὐσίτιδι, ἐπὶ τοῖς ὁρίοις τῆς Ἰδουμαίας καὶ Ἀραβίας· † προϋπῆρχε δὲ αὐτῷ ὄνομα Ἰωβάβ. † λαβὼν δὲ γυναῖκα Ἀράβισσαν, γεννᾷ υἱὸν, ᾧ ὄνομα Ἐννών. † ἦν δὲ αὐτὸς πατρὸς μὲν (δ) Ζαρὲθ ἐκ τῶν Ἡσαῦ υἱῶν υἱὸς, † μητρὸς δὲ (ε) Βοσόρρας, ὥστε εἶναι αὐτὸν πέμπτον ἀπὸ Ἀβραάμ. † καὶ οὗτοι οἱ βασιλεῖς οἱ βασιλεύσαντες ἐν Ἐδὼμ, ἧς καὶ αὐτὸς ἦρξε χώρας· † πρῶτος Βαλὰκ ὁ τοῦ (ζ) Βεὼρ, καὶ ὄνομα τῇ πόλει αὐτοῦ Δενναβά. † μετὰ δὲ Βαλὰκ, Ἰωβὰβ ὁ καλούμενος Ἰώβ. † μετὰ δὲ τοῦτον, (η) Ἀσὼμ ὁ ὑπάρχων ἡγεμὼν ἐκ τῆς Θαιμανίτιδος χώρας. † μετὰ δὲ τοῦτον, Ἀδὰδ υἱὸς Βαράδ, ὁ ἐκκόψας Μαδιὰμ ἐν τῷ πεδίῳ Μωάβ, † καὶ ὄνομα τῇ πόλει αὐτοῦ (θ) Γεθαίμ. † οἱ δὲ ἐλθόντες πρὸς αὐτὸν φίλοι, † (ι) Ἐλιφὰζ τῶν Ἡσαῦ υἱῶν, Θαιμανῶν βασιλεὺς, † (κ) Βαλδὰδ ὁ Σαυχαίων τύραννος, Σωφὰρ ὁ Μιναίων (λ) βασιλεύς.

Cum Tranſ. LAT.

7 Factũ eſt autẽ, poſtquã Dominꝰ locutus eſt omnia verba hæc ad Job, dixit Dominus ad Eliphaz Themanitem; (e) Peccaſti tu, & duo amici tui: nõ enim locuti eſtis corã me verũ quippiã, ſicut famulꝰ meꝰ Job. 8 Nunc autẽ ſumite ſeptẽ vitulos, & ſeptẽ arietes, & ite ad famulũ meũ Job, & (f) faciet holocauſtũ pro vobis: & Job famulꝰ meꝰ precabitur pro vobis; quoniam non niſi faciẽ ejus (g) accipiam: nã niſi propter ipſũ, perdidiſſẽ utiq; vos: nõ enim locuti eſtis verũ (h) contrà famulũ meũ Job. 9 Ivit autẽ Eliphaz Themanites, & Baldad Sauchites, & Sophar Minæus, & fecerunt, ſicut præcepit eis Dominus: & (i) ſolvit peccatum eis propter Job. 10 Dominus autem auxit Job: & cùm ille precatus etiam eſſet pro amicis ſuis; dimiſit eis peccatũ. Dedit autẽ Dominus (k) dupla, quæcunq; erant anteà Job, in duplicationẽ. 11 Audierunt autẽ omnes fratres ejus, & ſorores ejus, quæcunq; acciderant ei: & venerunt ad eum, & omnes quicunq; noverant eum à principio : comedentes autem & bibentes apud eum conſolati ſunt eum, & mirati ſunt ſuper omnibus, quæ (l) induxit ſuper eum Dominus. Dedit autẽ ei unuſquiſq; agnũ unũ, & (m) tetradrachmũ auri, et nõ ſignati. 12 Et benedixit Dominus noviſſima Job præ iis quæ anteà : & fuerunt pecora ejus, oves decies & quater mille, cameli ſexies mille, juga boum mille, aſinæ fœminæ paſcuales mille. 13 Et naſcuntur ei filii ſeptẽ, & filiæ tres: 14 Et primam quidẽ vocavit (n) Diẽ, & ſecundam (o) Caſiam, & tertiam Cornu (p) Amaltheæ. 15 Et nõ ſunt inventæ juxta filias Job meliores eis in ea quæ ſub cœlo. Dedit autẽ eis pater hæreditatẽ inter fratres. 16 Et vixit Job poſt plagã annos centũ ſeptuaginta: omnes autẽ annos vixit ducentos (q) quadraginta. Et vidit Job filios ſuos, & filios filiorum ſuorũ, quartã generationẽ: et mortuꝰ eſt Job ſenior, & (r) plenꝰ dierũ. Scriptũ eſt autẽ ipſũ rurſꝰ reſurrecturũ, cũ quibꝰ reſuſcitat Dominꝰ. Hic interpretatione redditur ex libro (ſ) Syriaco, in terra quidẽ Auſitide habitans, in finibꝰ Idumææ, & Arabiæ: et erat ei nomẽ Jobab. Cũ autẽ accepiſſet uxorẽ Arabiſſã, generat filiũ, cui nomẽ Ennon. Erat autẽ ipſe ex patre quidem Zare, de filiis Eſau filius, matris autẽ Boſorræ: ita ut ipſe ſit quintꝰ ab Abraham. Et hi ſunt reges, qui regnaverunt in Edom: cujus regionis etiã ipſe dominatꝰ eſt: primꝰ Balac filiꝰ Beor: & nomẽ civitatis ejꝰ Dennaba: poſt Balac autẽ Jobab, qui vocatur Job: poſt hunc autẽ Aſom, qui erat dux ex regione Themanitide: poſt hunc autẽ Adad filiꝰ Barad, qui excidit Mediã in campo Moab: & nomen civitatis ejꝰ Gethæm. Amici autẽ, qui ad eũ venerunt, (t) Eliphaz de filiis Eſau Themanorũ rex, (u) Baldad tyrannꝰ Sauchæorũ, Sophar rex Minæorũ.

MS. A. (ε) ῥήματα τῷ Ἰώβ, (ζ) Καὶ νῦν (η) παῖδά μου Ἰὼβ, καὶ ποιήσεις κάρπωμα περὶ ὑμῶν. (θ) καὶ εἰ μὴ δι᾽ (ι) κατὰ τοῦ θεράποντός μου Ἰὼβ οὐδὲν ἀγαθόν. (κ) Ἐπορεύθησαν (λ) ἑαυτοῖς καθὼς (μ) αὐτὸν (ν) αὐτοῦ περὶ τῶν φίλων (ξ) προσέθηκεν δὲ ὁ κύριος τῷ Ἰὼβ τὰ διπλᾶ, ὧν εἶχεν ἔμπροσθεν εἰς διπλασιασμόν. (ο) καὶ πάντες δὲ ὅσοι (π) πρὸ τούτου (ρ) αὐτῷ (σ) αὐτῷ ὁ κύριος· καὶ ἔδωκαν αὐτῷ (τ) χρυσοῦν ἄσημον. (υ) ηὐλόγησεν τὸν Ἰὼβ τὰ ἔσχατα μᾶλλον, ἢ τὰ ἔμπροσθεν. (φ) τρεῖς. (*) Κασίαν (χ) Μηλθέας (ψ) τὰς Ἰὼβ θυγατέρας, καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ, βελτίους (ω) ὑπὸ τὴν ὑπ᾽ οὐρανόν. Ἔδωκεν δὲ Ἰὼβ ταῖς θυγατράσιν αὐτοῦ κληρονομίαν ἐν τοῖς ἀδελφοῖς αὐτοῦ. (α) ζῇ ἔτη, (β) τεσσαράκοντα ὀκτώ. (γ) πάλιν ἀναστήσεσθαι αὐτὸν μεθ᾽ ὧν ἀνίστησιν ὁ κύριος. (δ) Ζαρὲθ τῶν υἱῶν Ἡσαῦ υἱός, (ε) Βοσόρας, (ζ) Σεπφώρ, (η) Ἀσώμ (θ) Γεθθαίμ. (ι) Ἐλιφὰς υἱὸς Σωφὰν τῶν υἱῶν Ἡσαῦ, (κ) Βαλδὰς υἱὸς Ἀμνὼν τοῦ Χόβαρ τοῦ Αὐχείτου τυράννου, (λ) βασιλεύς. † Θαιμὰν υἱὸς Ἐλιφάζ, ἡγεμὼν τῆς Ἰδουμαίας. οὗτος ἑρμηνεύεται ἐκ τῆς Συριακῆς βίβλου. † Ἐν μὲν γῇ κατοικῶν τῇ Αὐσίτιδι, ἐπὶ τῶν ὁρίων τοῦ Εὐφράτου. † Προϋπῆρχεν δὲ τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ἰωβάβ. ἦν δὲ ὁ πατὴρ αὐτοῦ Ζαρὲθ ἐξ ἀνατολῶν ἡλίου. Ἰώβ.

תרגום TARGUM.

7 וַהֲוָה בָּתַר דְּמַלֵּיל יְיָ יַת פִּתְגָּמַיָּא הָאִלֵּין עִם אִיּוֹב וַאֲמַר יְיָ לֶאֱלִיפַז דְּמִן תֵּימָן תְּקִיף רוּגְזִי
8 בָּךְ וּבִתְרֵין חַבְרָךְ אֲרוּם לָא מַלֵּלְתּוּן לְוָתִי כֵּוָנְתָא כְּעַבְדִּי אִיּוֹב׃ וּכְדוּן סִיבוּ לְכוֹן
שִׁבְעָא תוֹרִין וְשִׁבְעָא דִּכְרִין וְאֱזִילוּ לְוַת עַבְדִּי אִיּוֹב וְתַסְּקוּן עֲלָתָא אַמְטוּלְכוֹן וְעַבְדִּי
אִיּוֹב יְצַלֵּי עֲלֵיכוֹן אֲרוּם אֱלָהֵן אַפּוֹי אֶסַּב מִן בְּגִלַל דְּלָא לְמֶעְבַּד עִמְּכוֹן קְלָנָא אֲרוּם
9 לָא מַלֵּלְתּוּן לְוָתִי כֵּוָנָא כְּעַבְדִּי אִיּוֹב׃ וַאֲזַלוּ אֱלִיפַז דְּמִן תֵּימָן וּבִלְדַּד דְּמִן שׁוּחַ
צוֹפַר דְּמִן נַעֲמָה וַעֲבַדוּ הֵיךְ דְּמַלֵּיל לְהוֹם מֵימְרָא דַּיְיָ וּנְסֵיב מֵימְרָא דַּיְיָ יַת אַפֵּי אִיּוֹב׃
10 וּמֵימְרָא דַּיְיָ אֲתִיב יַת גָּלְוַת אִיּוֹב בְּצַלָּאוּתֵיהּ מְטוּל דְּחַבְרוֹי וְאוֹסֵיף מֵימְרָא דַּיְיָ יַת כָּל דִּי
11 לְאִיּוֹב בְּכוּפְלָא׃ וַאֲתוֹ לְוָתֵיהּ כָּל אֲחוֹי וְכָל אַחְוָתֵיהּ וְכָל חַכִּימוֹי מִן קַדְמַת דְּנָא
וַאֲכַלוּ עִמֵּיהּ לַחְמָא בְּבֵיתֵיהּ וְנַדוּ לֵיהּ וְנַחֲמוּ יָתֵיהּ עַל כָּל בִּישְׁתָא דְּאַיְתֵי יְיָ עֲלוֹי
12 וִיהַבוּ לֵיהּ גְּבַר חוּרְפָא חֲדָא וֶאֱנָשׁ קְדָשָׁא דְּדַהֲבָא חַד׃ וּמֵימְרָא דַּיְיָ בָּרֵךְ יַת סוֹפָא
דְּאִיּוֹב מִן קַדְמוּתֵיהּ וַהֲווֹ לֵיהּ אַרְבְּסַר אַלְפִּין דְּעָן וְשִׁית אַלְפִּין דְּגַמְלִין וְאֶלֶף פַּדְנִין
13 14 דְּתוֹרִין וְאֶלֶף אַתְנָן׃ וַהֲווֹ לֵיהּ אַרְבְּסַר בְּנִין וּתְלָת בְּנָן׃ וּקְרָא שְׁמָהּ דַּחֲדָא
יְמִימָא וְשׁוּם תִּנְיֵתָא קְצִיעָא וְשׁוּם תְּלִיתֵתָא קֶרֶן הַפּוּךְ׃ יְמִימָא הֲוָה קָרֵי
לָהּ דַּהֲוָה שׁוּפְרָהָא כִּימָמָא קְצִיעָה הֲוָה קָרֵי לָהּ דַּהֲוַת יַקִּירָא כְּעֵין קְצִיעֲתָא קֶרֶן הַפּוּךְ
15 הֲוָה קָרֵי לָהּ דַּהֲוַת סַנִּי זִיו יְקַר אַפָּהָא הֵיךְ אִזְמַרְגְּדָא׃ וְלָא אִשְׁתְּכַח נְשַׁיָּא שַׁפִּירָתָא הֵיךְ
16 בְּנָתָא דְּאִיּוֹב בְּכָל אַרְעָא וִיהַב לְהוֹם אֲבוּהוֹם אַחְסָנָא בִּמְצַע אֲחוּהוֹן׃ וַחֲיָא אִיּוֹב בָּתַר
17 דְּנָא מְאָה וְאַרְבְּעִין שְׁנִין וַחֲמָא יַת בְּנוֹי וְיַת בְּנֵי בְנוֹי אַרְבְּעָה דָּרִין׃ וּמִית אִיּוֹב
סִיב וּסְבַע יוֹמַיָּא

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et factum eſt poſtquàm locutus eſt Dominus ad Job verba hæc, dixit Dominus ad Eliphaz qui erat de Theman : Iratus eſt furor meus in te et in duos ſocios tuos, quoniam non eſtis locuti ad me recta ſicut ſervus meus Job. 7 Et nunc tollite vobis ſeptem boves et ſeptem arietes, et ite 8 ad ſervũ meum Job, et offeretis *holocauſtum* pro vobis et Job ſervus meus orabit pro vobis; faciem enim ejus ſuſcipiam, ut non faciam vobis ignominiam, quia non eſtis locuti ad me rectum ſicut ſervus meus Job. Et abierunt Eliphaz qui erat de Theman, et Baldad qui erat de Sua, et 9 Sophar qui erat de Naama, et fecerunt ſicut locutum fuerat eis verbum Domini : & acceptavit *verbum* Domini faciem Job. Et verbum Do- 10 mini convertit captivitatem Job cùm oraret pro amicis ſuis : et addidit *verbum* Domini omnia quæ fuerant Job, duplicia. Et venerunt ad 11 eum omnes fratres ejus & omnes ſorores ejus, et omnes qui cognoverant eum antehac, et comederunt cum eo panem in domo ejus: et commoti ſunt ſuper eum, et conſolati ſunt eum ſuper omne malum quod induxerat Dominus ſuper eum : et dederunt ei unũſquiſque ovem unam, et unuſquiſque inaurem auream unam. Verbum autem Domini benedixit 12 noviſſimis Job magis quàm principio : et fuerunt ei quatuordecim millia ovium, et ſex millia camelorum, et mille juga boum, et mille aſinæ. Et 13 fuerunt ei quatuordecim filii & tres filiæ. Et vocavit nomen uni- 14 us Jamima, & nomen ſecundæ Caſia, & nomen tertiæ Cheren-Hapuch. *Indidit illi nomen Jamima, quod eſſet pulchritudo ejus ſicut diei : Caſiam vocavit alteram, quòd eſſet pretioſa inſtar caſiæ : Cheren-Hapuch appellavit aliam, quòd multus eſſet ſplendor faciei ejꝰ ut ſmaragdi.* Et non ſũt inventæ mulieres pulchræ ſicut filiæ Job in univerſa ter- 15 ra: & dedit eis pater earũ hæreditatẽ in medio fratrũ ſuorũ. Et vixit Job 16 poſt hæc centũ et quadraginta annis: & vidit filios ſuos et filiorum ſuorũ filios, quatuor generationes. Et mortuus eſt Job ſenex, et ſatiatus diebus. 17

Verſio SYRIACA.

* ܘܗܘܐ ܡܢ ܒܬܪ ܕܡܠܠ ܡܪܝܐ ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ ܥܡ ܐܝܘܒ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܐܠܝܦܙ ܬܝܡܢܝܐ. ܕܐܬܚܡܬ 7
ܪܘܓܙܝ ܥܠܝܟ ܘܥܠ ܬܪܝܢ ܚܒܪܝܟ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܡܠܠܬܘܢ ܩܕܡܝ ܬܪܝܨܬܐ ܐܝܟ ܥܒܕܝ ܐܝܘܒ. *ܘܗܫܐ ܣܒܘ ܠܟܘܢ 8
ܫܒܥܐ ܬܘܪܝܢ. ܘܫܒܥܐ ܕܟܪܝܢ. ܘܙܠܘ ܠܘܬ ܥܒܕܝ ܐܝܘܒ. ܘܢܣܩ ܩܘܪܒܢܐ ܚܠܦܝܟܘܢ. ܘܥܒܕܝ ܐܝܘܒ
ܢܨܠܐ ܥܠܝܟܘܢ. ܘܐܣܒ ܒܐܦܘܗܝ. ܕܠܐ ܐܥܒܕ ܥܡܟܘܢ ܣܟܠܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܡܠܠܬܘܢ ܩܕܡܝ ܬܪܝܨܬܐ ܐܝܟ ܥܒܕܝ
ܐܝܘܒ. *ܘܐܙܠܘ ܐܠܝܦܙ ܬܝܡܢܝܐ. ܘܒܠܕܕ ܫܘܚܝܐ. ܘܨܘܦܪ ܢܥܡܬܝܐ. ܘܥܒܕܘ ܐܝܟ ܕܐܡܪ ܠܗܘܢ ܡܪܝܐ. ܘܢܣܒ 9
ܡܪܝܐ ܒܐܦܘܗܝ ܕܐܝܘܒ. *ܘܡܪܝܐ ܐܗܦܟ ܫܒܝܬܗ ܕܐܝܘܒ. ܟܕ ܡܨܠܐ ܗܘܐ ܥܠ ܚܒܪܘܗܝ. ܘܐܘܣܦ ܡܪܝܐ ܥܠ 10
ܟܠ ܡܕܡ ܕܐܝܬ ܗܘܐ ܠܗ ܠܐܝܘܒ ܐܥܦܐ. *ܘܐܬܘ ܠܘܬܗ ܟܠܗܘܢ ܐܚܘܗܝ ܘܐܚܘܬܗ. ܘܟܠ ܕܝܕܥܝܢ ܗܘܘ ܠܗ 11
ܡܢ ܩܕܝܡ. ܘܐܟܠܘ ܠܚܡܐ ܥܡܗ ܒܒܝܬܗ. ܘܐܬܘܝܘ ܗܘܘ ܠܗ. ܘܒܝܐܘܗܝ ܥܠ ܟܠܗܝܢ ܒܝܫܬܐ ܕܐܝܬܝ
ܡܪܝܐ ܥܠܘܗܝ. ܘܝܗܒܘ ܠܗ ܟܠ ܚܕ ܢܩܝܐ ܚܕܐ. ܘܚܕ ܚܕ ܩܕܫܐ ܕܕܗܒܐ. *ܘܡܪܝܐ ܒܪܟ ܚܪܬܗ ܕܐܝܘܒ. 12
ܝܬܝܪ ܡܢ ܩܕܡܝܬܗ. ܘܗܘܘ ܠܗ ܐܪܒܥܣܪ ܐܠܦܝܢ ܥܢܐ. ܘܫܬܐ ܐܠܦܝܢ ܓܡܠܐ. ܘܐܠܦ ܦܕܢܝܢ ܕܬܘܪܐ.
ܘܐܠܦ ܐܬܢܢ. *ܘܗܘܘ ܠܗ ܫܒܥܐ ܒܢܝܢ. ܘܬܠܬ ܒܢܢ. *ܘܩܪܐ ܫܡܐ ܕܚܕܐ ܡܢܗܝܢ ܝܘܡܐ. ܘܫܡܐ 13 14
ܕܬܪܬܝܢ. ܩܨܝܥܐ. ܘܫܡܐ ܕܬܠܬ. ܩܪܢܦܘܟ. *ܘܠܐ ܐܫܬܟܚܝ ܢܫܐ ܫܦܝܪܢ ܐܝܟ ܒܢܬܗ ܕܐܝܘܒ ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ. 15
ܘܝܗܒ ܠܗܝܢ ܐܒܘܗܝܢ ܝܪܬܘܬܐ ܥܡ ܐܚܝܗܝܢ. *ܘܚܝܐ ܐܝܘܒ ܡܢ ܒܬܪ ܡܚܘܬܗ. ܡܐܐ ܘܐܪܒܥܝܢ ܫܢܝܢ. 16
ܘܚܙܐ ܒܢܘܗܝ. ܘܒܢܝ ܒܢܘܗܝ. ܠܐܪܒܥܐ ܕܪܝܢ. *ܘܡܝܬ ܐܝܘܒ ܘܣܒܥ ܝܘܡܬܗ. ܘܫܠܡ. 17

*ܫܠܡ ܟܬܒܐ ܕܐܝܘܒ ܙܕܝܩܐ ܢܨܝܚܐ. ܐܝܬ ܒܗ: ܦܬܓܡܐ ܒ ܬܢܓ *

Verſio ARABICA.

* وكان من بعد ما تكلم الرب مع ايوب * قال الرب لالنفار التيمني احما رجزي عليك وعلي كلي 7
صاحبيك * حين لم تقولوا قدامي البر علي عبدي ايوب * فالآن خذوا لكم سبعة ثيران * وسبعة 8
كباش * واذهبوا الي عبدي ايوب * فيصعد قربانا بدلكم * وعبدي ايوب يصلي عليكم * واصنع
بوجهه فلا اجعلكم للهوان * انكم لم تقولوا قدامي البر مثل عبدي ايوب * وانطلق النفار التيمني 9
وبلداد السوحاني * وصوفار النعماتي فصنعوا كالذي قال لهم الرب * فصنع الرب بوجه ايوب * والرب 10
رد سبيه حين كان يصلي علي احبابه * وزاد الرب علي كل شي كان لايوب ضعفا * فاتا اليه جميع 11
اخوته واخواته * وكل الذين كانوا يعرفونه * واكلوا معه خبزا * في بيته الذي كانوا حزنوا عليه * وعزوه
من جميع البلوي الذي اتا الرب عليه * فوهب له كل رجل من واحد واحد شاة * واحد وواحد قرطا
من ذهب * والرب بارك اخرة ايوب اكثر من اوليته * فكان له اربعة عشر الفا من الغنم * وستة الاف 12
من الجمال * والف فدان من البقر * والف اتانة * وكان له سبع بنين وثلاثة بنات * ودعا اسم الواحدة 13 14
نهارا * واسم الثانية قصوعة * واسم الثالثة قرن نافوخ * ولم يوجد نساء احسن من بنات ايوب في جميع 15
الارض * واعطاهن ايوب ميراثا مع اخوتهن * وعاش ايوب من بعد ذلك مائة واربعين وستة سنين * 16
وابصر بنيه وبني بنيه علي اربعة دور * وشاخ ايوب وشبع من ايامه ومات * 17

VERS. SYR. & ARAB.
Interp. Lat.

Et factum eſt, poſtquam 7 *Domin⁹ locutus eſſet* (d) *cũ Job, dixit Dominus ad Elifaz Temanitem, Accenſus eſt furor meus contra te, & contra utrumq; amicũ tuũ, dum non locuti eſtis coram me de ſervo meo Job rectum.* 8 *Modò ſumite vobis ſeptem tauros & ſeptem arietes, & ite ad ſervum meũ Job, & elevabit oblationẽ pro vobis: & ſervus meus Job orabit pro vobis, & faciam propter eũ, & non faciam vos in deſpectionem, eò quòd non dixiſtis coram me juſtum ſicut ſervus meus Job.* 9 *Et abiit Elifaz Temanites, & Beldad Subites, & Sofar Naamatites, & fecerunt ſicut dixit eis Dominus: & fecit Dominus propter Job.* 10 *Et Dominus revocavit captivitatem* (e) *ej⁹, cùm oraret pro amicis ſuis: Et auxit Deus omnia quæcunq; fuerant Job, dupliciter:* 11 *Veneruntq; ad eũ omnes fratres ejus, & ſorores ejus, & omnes qui* (f) *eũ cognoſcebãt & comederunt cũ eo panem in domo ejus, qui contriſtati erant de ipſo: & conſolati ſunt eum pro omnibus tribulationibus quas Dominus intulerat ei. Et dederunt ei unuſquiſque vir ovem unam, & unam inaurem auri.* 12 *Et Dominus benedixit noviſſimis Job magis quàm principio ejus. Et facta ſunt ei quatuordecim millia ovium, & ſex millia camelorum, & mille juga boum, & mille aſinæ.* 13 *Fueruntque ei ſeptem filii, & tres filiæ:* 14 *Et vocavit nomen unius Diem, & nomen ſecundæ Caſua, & nomen tertiæ Carnafuch:* 15 *Et non inventæ ſunt mulieres pulchriores filiabus Job, in univerſa terra. Deditque eis Job hæreditatem inter fratres earũ.* 16 *Et vixit Job poſt hæc* (g) *centum quadraginta ſex annis, & vidit filios ſuos, & filios filiorum ſuorum, uſque ad quartam generationem.* 17 *Et ſenuit Job, & ſaturatus eſt diebus ſuis, & mortuus eſt.*

INTERP. SYRIACA.

(d) hoſce ſermones cũ (e) Job, cùm (f) jam olim eum (g) centum & quadraginta annis, Abſolutus eſt Liber Job Juſti *et* illuſtris; in quo continentur verſus 2553.

* وايوب كان ساكنا في ارض عوص في تخم ادوم وعربيا * ومن قبل كان اسمه يوباب * اخذا هذا
امراة عربية * وولد له غلام كان اسمه انون * وايوب كان ابن زارا ابن بني عيسو * وامه كانت
من بصري * وهو كان السادس من ابراهيم * والملوك الذي ملكوا في ادوم * الذي كان ملك
علي تلك الارض من قبل * بالع ابن باعور * واسم مدينته دنابا * ومن بعد يوباب هذا الذي
يسمي ايوب * وبعد ايوب ايضا اسم هذا الذي كان رييسا من الارض التيمانية * ومن بعد
ابن باراق هذا الذي قتل وهزم مديام في سهلة ماب * واسم مدينته جاتم * واصدقاء ايوب
الذي جاوه النفار من بني عيسو ملك التيمانيين *

Job verò habitabat in terra us, inter terminos Edom & Arabiæ, & antea vocabatur Jobab. Hic duxit uxorem alienigenam, ipſique natus eſt filius dictus Anun. Job verò erat filius Zaræ, filii filiorum Eſau; & mater ejus erat de Baſra: & ipſe erat ſextus ab Abrahamo. Ex regibus verò qui regnârunt in Edom, regnavit ſuper illam terram primò Balac filius Beor: & nomen urbis iſtius viri, *Danaba. Et poſt hunc Jobab, iſte qui vocatur Job: Et poſt Job quoque nomen ejus, qui erat princeps te terra Temaniæ: Et poſt eum filius Barac, hic eſt qui occîdit & fugavit Madiam in planitie Moab: & nomen urbis ejus Gjatem. Et ex amicis Job qui eum convenerunt, erat Elifaz de filius Eſau, rex Temanitarum.*

* تم بعون الله تعالي * وقد ذكر صاحب النسخة الذي نقلت منها هذه النسخة انه فسر
من السريانية الي العربية * والحمد لواهب العقول *

Completum eſt, excelſo Deo favente. Commemoravit autem Author exemplaris, è quo hoc deſcriptum eſt, hunc librum à Syriaco ſermone in Arabicum verſum fuiſſe.

Gloria intellectuum datori.

* انقضي سفر ايوب الصديق * وكانت جميع ايام حياة ايوب * مائتين واربعين سنة *

Perfectus eſt Liber Job. Et fuit ætas ducentorum quadraginta annorum.

* الحمد لله ابدا *

Laus Deo ſemper.

ספר תהלים : א ב

PSALMUS I. א

peccatorum via in & ,impiorum consilium in ambulavit non qui *viri* Beatitudines
אשרי האיש אשר לא הלך בעצת רשעים ובדרך חטאים 1
Domini lege in *Quinimo* .sedit non derisorum *consessu* in & , stetit non
לא עמד ובמושב לצים לא ישב: כי אם בתורת יהוה 2
plantatum lignum sicut erit Et .nocte ac die meditabitur ejus lege in & ,ejus voluntas
חפצו ובתורתו יהגה יומם ולילה: והיה כעץ שתול 3
non ejus folium & ,suo tempore in dabit suum fructum *quod* ,aquarum rivos *super*
על־פלגי־מים אשר פריו יתן בעתו ועלהו לא־
quinimo ; impii sic Non .faciet prosperare ,faciet quod omne & : decidet
יבול וכל אשר־יעשה יצליח: לא־כן הרשעים כי אם־ 4
, judicio in impii stabunt non Ideo .ventus *eam dispellet* quam gluma sicut
כמץ אשר־תדפנו רוח: על־כן לא־יקמו רשעים במשפט 5
via & : justorum viam Dominus *sciens* Quoniam .justorum *cœtu* in *peccatores &*
וחטאים בעדת צדיקים: כי־יודע יהוה דרך צדיקים ודרך 6
.peribit impiorum
רשעים תאבד:

PSAL. II. ב

reges Astabunt ? inane meditabuntur populi & ,gentes *sunt tumultuatæ* quid Ut
למה רגשו גוים ולאמים יהגו־ריק: יתיצבו מלכי־ 1
.ejus *Unctum* adversus & ,Dominum adversus ,pariter *consultant* principes & , terræ 2
ארץ ורוזנים נוסדו־יחד על־יהוה ועל־משיחו:
Habitans .eorum funes nobis à projiciamus & ; eorum vincula Dirumpamus
ננתקה את־מוסרותימו ונשליכה ממנו עבתימו: יושב 3
,suo *naso* in eos ad loquetur Tunc .eos subsannabit Dominus , ridebit cœlis in 4
בשמים ישחק אדני ילעג־למו: אז ידבר אלימו באפו 5
montem , Sijon super ,meum regem constitui ego Et .eos terrebit sua ira in &
ובחרונו יבהלמו: ואני נסכתי מלכי על־ציון הר־ 6
, tu meus filius ,me ad dixit Dominus ,*statutum* ipsum Narrabo .*meæ sanctitatis*
קדשי: אספרה אל־חק יהוה אמר אלי בני אתה 7
; tuam hæreditatem gentes dabo & , me à Postula .te genui hodie ego
אני היום ילדתיך: שאל ממני ואתנה גוים נחלתך 8
figuli vas sicut : ferrea virga in eas Conteres .terræ *fines* tuam possessionem &
ואחזתך אפסי־ארץ: תרעם בשבט ברזל ככלי יוצר 9
Servite .terræ judices vos *castigate* ,intelligite reges nunc Et .eos *disperges confractos* 10
תנפצם: ועתה מלכים השכילו הוסרו שפטי ארץ: עבדו 11
fortè ne filium Osculamini .tremore in exultate & ,timore in Domino
את־יהוה ביראה וגילו ברעדה: נשקו־בר פן־ 12
omnes beati : ejus *nasus* paululum vel exarserit cùm , via pereatis & ,irascatur
יאנף ותאבדו דרך כי־יבער כמעט אפו אשרי כל־
.eo in *confidentes*
חוסי בו:

תרגום TARGUM.

א

טוביה דגבר דלא הליך במלכת רשיעין 1
ובאורחת חיבין לא קם ובסיעת ממקני לא
אסתחר: אלהן בנימוסא דיי רעותיה 2
ובאורייתיה מרגן יימם ולילי: ויהי כאילן חיי 3
דנציב על טופי מוי די אנביה מבשל בעדניה
ואטרפוי לא נתרין וכל לבלבוי דמלבלב
מנרגר ומצלח: לא מטול היכנא רשיעי אלהן 4
כמוזא די תשקפניה עלעולא: מטול היכנא 5
לא יזכון רשיעי ביומא רבא וחיבין בסיעת
צדיקיא: מטול דגלי קדם יי אורח צדיקיא 6
ואורחתהון דרשיעי תהובד:

ב

למה מתרגשן עממיא ואומיא מרננין סריקותא: 1
קימין מלכי ארעא ושלטוניא יתחברון כחדא 2
למרדא קדם יי ולמנצי על משיחיה: נתרע ית 3
אסרתיהון ונטלוק מננא שלשלותהון: דיתיב 4
בשמיא יגחך מימרא דיי ידהך להון: הידין 5
ימלל להון בתוקפיה וברוגזיה יבהל אנון:
ואני רביתי מלכי ומניתיה על טור מקדשי: 6
אשתעי קימא דיי אמר חביב כבר לאבא לי 7
אנת זכאה כאלו יומא דין בריתך: בעי מני 8
ואתן נכסי עממיא אחסנתך ואחודתך שלטוני
סיפי ארעא: תתברנון היך בחוטרא דפרזלא 9
היך מן דפחר תתרענון: וכדין מלכיא 10
אשכילו קבילו מרדותא נגידי ארעא: פלחו 11
קדם יי בדחלא וצלו ברתיתא: קבילו אולפנא 12
דלמא ירגיז ותהובדון אורחא מטול
דייחור כזעיר רוגזיה טוביה לכל דסברין
במימריה:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

LIBER PSALMORUM.

PSAL. I.

BEatitudo viro qui non ivit in conſilium impiorum, & in via peccatorum non ſtetit, & cum ſocietate deriſorum non ſedit. 1 Sed in inſtitutione Domini voluntas ejus, & in Lege ejus meditatur die ac nocte. 2 Et erit tanquam arbor *vitæ* quæ plantata eſt ſuper rivos aquarum, cujus fructus matureſcit in tempore ſuo, & folia ejus non defluunt, & omne germen ejus quod germinat, graneſcit & proficit. 3 Non ſic impii, ſed ſicut ſtipula quam projicit *turbo*. 4 Propterea non *juſtificabuntur* impii in die *magno*, neque peccatores in ſocietate juſtorum. 5 Quoniam manifeſta eſt ante Dominum via juſtorum, & via impiorum perdetur. 6

PSAL. II.

QUare fremunt populi, & nationes meditantur vanitatem? 1 Conſurgunt reges terræ, & potentes convenerunt in unum, ut deficiant à Domino, & certent *contra Meſſiam* ejus. 2 Diſſolvamus vincula eorum, & projiciamus à nobis funes eorum. 3 Qui ſedet in cœlis, ridebit: 4 Verbum Domini ſubſannabit eos. 5 Tunc loquetur ad eos in fortitudine ſua, & in ira ſua interturbabit eos. Et ego unxi regem meum, & conſtitui ipſũ ſuper montem *ſanctuarii mei*. 6 Recitabo pactum, *quod* Dominus dixit: Dilecte ſicut filius eſt patri, tu mihi purus es, ac ſi die iſta creaviſſem te. 7 Poſtula à me, & dabo divitias populorum hæreditatem tuam, & poſſeſſionem tuam *dominia finium* terræ. 8 Confringes ipſos velut in virga ferrea, tanquam vas fictile conteres eos. 9 Et nunc reges intelligite, recipite eruditionem duces terræ. 10 Servite coram Domino in timore, & orate in tremore. 11 Recipite doctrinam, ne forte iraſcatur, & amittatis viam. 12 Cùm exarſerit paululum furor ejus: bonum omnibus qui ſperant in verbo ejus.

Verſio *SYRIACA*. cum Interpretatione *LATINA*.

* ܟܬܒܐ ܕܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ ܡܠܟܐ ܘܢܒܝܐ *
* ܡܙܡܘܪܐ ܩܕܡܝܐ *
* ܬܫܥܝܬܐ ܕܡܟܢܫܢܘܬܐ ܕܥܠ ܢܡܘ̈ܣܐ ܫܦܝܪ̈ܐ ܕܐܝܬ ܒܩܢܘܢܐ ܕܬܫܥܐ ܛܘ̈ܒܝܢ ܕܠܘܬ ܡܬܝ. ܦܬܓܡ̈ܐ ܝܕ. 1
ܛܘܒܘܗܝ ܠܓܒܪܐ ܕܒܐܘܪܚܐ ܕܥܘ̈ܠܐ ܠܐ ܗܠܟ. ܘܒܪܥܝܢܐ ܕܚ̈ܛܝܐ ܠܐ ܩܡ : ܘܥܠ ܡܘܬܒܐ
ܕܡܡ̈ܝܩܢܐ ܠܐ ܝܬܒ. * ܐܠܐ ܒܢܡܘܣܗ ܕܡܪܝܐ ܨܒܝܢܗ : ܘܒܢܡܘܣܗ ܢܬܪܢܐ ܐܝܡܡܐ 2
ܘܠܠܝܐ. * ܢܗܘܐ ܐܝܟ ܐܝܠܢܐ ܕܢܨܝܒ ܥܠ ܬܦܩܐ ܕܡ̈ܝܐ : ܕܦܐܪ̈ܘܗܝ ܝܗܒ ܒܙܒܢܗ ܘܛܪ̈ܦܘܗܝ 3
ܠܐ ܢܬܪܘܢ. ܘܟܠ ܕܥܒܕ ܡܨܠܚ :* ܠܐ ܗܟܢܐ ܪ̈ܫܝܥܐ. ܐܠܐ ܐܝܟ ܥܘܪܐ ܕܕܪܝܐ ܪܘܚܐ :* ܡܛܠ ܗܢܐ 4 5
ܠܐ ܢܩܘܡܘܢ ܪ̈ܫܝܥܐ ܒܕܝܢܐ. ܘܐܦܠܐ ܚ̈ܛܝܐ ܒܟܢܘܫܬܐ ܕܙܕ̈ܝܩܐ : * ܡܛܠ ܕܝܕܥ ܗܘ ܡܪܝܐ 6
ܐܘܪܚܐ ܕܙܕ̈ܝܩܐ. ܘܐܘܪܚܐ ܕܪ̈ܫܝܥܐ ܬܐܒܕ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܬܪܝܢ *
* ܡܛܠ ܩܪܝܢܐ ܕܥܡ̈ܡܐ. ܪܡܙ ܢܒܝܘܬܐ ܡܛܠ ܚܫܗ ܕܡܫܝܚܐ. ܦܬܓܡ̈ܐ ܟܚ. 1
ܠܡܢܐ ܪܓܫܘ ܥܡ̈ܡܐ. ܘܐܡ̈ܘܢܐ ܪܢܝܘ ܣܪܝܩܘܬܐ : * ܩܡܘ ܡܠܟ̈ܐ ܕܐܪܥܐ ܘܫܠܝܛܢܝܗ. 2
ܘܐܬܡܠܟܘ ܐܟܚܕܐ : ܥܠ ܡܪܝܐ ܘܥܠ ܡܫܝܚܗ. * ܢܦܣܘܩ ܫܘܫܠܬܗܘܢ : ܘܢܫܕܐ ܡܢܢ ܢܝܪܗܘܢ. 3
* ܕܝܬܒ ܒܫܡܝܐ ܢܓܚܟ : ܘܡܪܝܐ ܢܡܝܩ ܒܗܘܢ. * ܗܝܕܝܢ ܢܡܠܠ ܥܡܗܘܢ ܒܪܘܓܙܗ : 4 5
ܘܒܚܡܬܗ ܢܕܠܚ ܐܢܘܢ. * ܐܢܐ ܐܩܝܡܬ ܡܠܟܝ ܥܠ ܨܗܝܘܢ ܛܘܪܐ ܕܩܘܕܫܝ : ܕܐܫܬܥܐ 6
ܩܝܡܝ. * ܡܪܝܐ ܐܡܪ ܠܝ ܕܒܪܝ ܐܢܬ : ܘܐܢܐ ܝܘܡܢܐ ܝܠܕܬܟ. * ܫܐܠ ܡܢܝ ܘܐܬܠ ܠܟ : 7
ܥܡ̈ܡܐ ܠܝܪܬܘܬܟ. ܘܐܚܝܕܘܬܟ ܥܕܡܐ ܠܣܘ̈ܦܝ ܐܪܥܐ : * ܬܪܥܐ ܐܢܘܢ ܒܫܒܛܐ ܕܦܪܙܠܐ. ܘܐܝܟ ܡܐܢܐ 8
ܕܦܚܪܐ ܬܦܪܟ ܐܢܘܢ : * ܗܫܐ ܡܠܟ̈ܐ ܐܣܬܟܠܘ. ܘܐܬܪܕܘ ܕܝܢ̈ܐ ܕܐܪܥܐ : * ܦܠܘܚܘ ܠܡܪܝܐ 9 10
ܒܕܚܠܬܐ. ܘܐܚܘܕܘܗܝ ܒܪܬܝܬܐ : * ܢܫܩܘ ܒܪܐ ܕܠܐ ܢܪܓܙ. ܘܬܐܒܕܘܢ ܡܢ ܐܘܪܚܗ : * ܡܛܠ 11 12
ܕܩܠܝܠ ܢܬܚܡܐ ܪܘܓܙܗ. ܛܘܒܝܗܘܢ ܠܟܠܗܘܢ ܕܬܟܝܠܝܢ ܥܠܘܗܝ. 13

LIBER PSALMORUM DAVIDIS
Regis & Prophetæ.

PSALMUS PRIMUS.

Narratio concionis, quæ de bonis moribus (habetur) in canone novem Beatitudinum apud Matthæum, continens verſ. 14. 1

BEatus vir qui in via iniquorum non ambulavit, & in opinione peccatorum non ſtetit, & ſuper ſede irriſorum non ſedit: 2 Sed in lege Domini voluntas ejus, & in lege ejus meditabitur die ac nocte. 3 Erit veluti arbor quæ eſt plantata ſecus rivum aquarum, quæ fructus ſuos reddit ſuo tempore, & cujus folia non defluunt, & quodcunque facit, perficit. 4 Non ſic impii, ſed tanquam feſtuca quam diſpellit ventus. 5 Idcirco non ſurgent impii in judicio, neque peccatores in cœtu juſtorum. 6 Quoniam novit Dominus viam juſtorũ, via autẽ impiorum peribit.

PSAL. II.

De vocatione Gentium. Innuit prophetiam de paſſione Chriſti. Verſ. 28. 1

QUare tumultuârunt gentes, & populi excogitârunt vanitatem? 2 Surrexerunt reges terræ & principes ejus, & conſultârunt ſimul adverſùs Dñm & adverſùs Chriſtũ ej⁹; 3 (Dicentes,) Rumpamus vincula eorũ, & ſolvamus à nobis jugum ipſorum. 4 Qui ſedet in cœlo ridebit, et Domin⁹ ſubſannabit eos. 5 Tunc loquetur de illis in ira ſua, et in furore ſuo conturbabit eos. 6 Ego conſtitui Regem meum ſuper Sion montem ſanctitatis meæ, 7 Ut ennarraret decretum meum. Dñs dixit mihi; Filius meus es, et ego hodie genui te. 8 Poſtula à me, daboque tibi gentes in hæreditatem tuam, et poſſeſſiones tuas terminos terræ. 9 Paſces eos virgis ferri, et ſicut vaſa figuli comminues eos. 10 Nunc ergò, Reges, ſapite; 11 et erudimini judices terræ. Servite Domino 12 in timore, et tenete eum in tremore: Oſculamini filium, ne iraſcatur et pereatis à via 13 ejus: Nam brevi exardeſcet ira ejus. Beati omnes qui confidunt in eo.

Advertendum, Præter literas Parenthesi( ) insertas in Versionis Græcæ Interpretatione Latina, quæ ad Nobilii Notas in ultimo Tomo hujus operis Lectorẽ remittunt; adjici insuper alias hisce notis [ ] inclusas, quæ differentias Æthiopicæ Versionis à Græca, ad finem cujuslibet columnæ appositas, ostendunt: Notas verò numerales, quæ in ipsa Translatione Latina inseruntur, versuum distinctionem juxta Versionem Æthiopicam, cùm à Latina differt, indicare.

Versio VULG. LAT.

LIBER PSALMORUM.

PSALM. I.

1 BEatus vir, qui non abiit in consilio
impiorum, & in via peccatorum non ste-
tit, & in cathedra pestilentiæ non sedit:
2 Sed in lege Dñi voluntas ejus, & in lege
3 ejus meditabitur die ac nocte. Et erit
tanquam lignum, quod plantatum est se-
cus decursus aquarum, quod fructum suũ
dabit in tempore suo: Et folium ejus
non defluet: & omnia quæcumq; faciet
4 prosperabuntur. Non sic impii, non sic:
sed tanquam pulvis, quem projicit ven-
5 tus à facie terræ. Ideò non resurgent
impii in judicio: neque peccatores in
6 concilio justorum. Quoniam novit Do-
minus viam justorum: & iter impio-
rum peribit.

PSALM. II.

1 QUarè fremuerunt gentes, & populi
2 meditati sunt inania? Astiterunt reges
terræ, & principes convenerunt in unũ,
adversùs Dominum, & adversùs Chri-
3 stum ejus. Dirumpamus vincula eorum:
& projiciamus à nobis jugum ipsorum.
4 Qui habitat in cœlis irridebit eos: &
5 Dominus subsannabit eos. Tunc lo-
quetur ad eos in ira sua, & in furore suo
6 conturbabit eos. Ego autem constitutus
sum rex ab eo super Sion montem san-
ctum ejus, prædicans præceptum ejus.
7 Dominus dixit ad me; Filius meus es
8 tu, ego hodiè genui te. Postula à me, &
dabo tibi gentes hæreditatem tuam, &
9 possessionem tuã terminos terræ. Reges
eos in virga ferrea, & tanquam vas fi-
10 guli confringes eos. Et nunc reges intel-
ligite: erudimini qui judicatis terram.
11 Servite Domino in timore: & exul-
12 tate ei cum tremore. Apprehendite
disciplinam, nequando irascatur Do-
13 minus, & pereatis de via justa. Cùm
exarserit in brevi ira ejus, beati omnes,
qui confidunt in eo.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

(α) ΨΑΛΜΟΙ.

Α΄.

1 †ΜΑκάριος ἀνήρ, ὃς οὐκ ἐπορεύθη ἐν βουλῇ ἀ-
σεβῶν, † καὶ ἐν ὁδῷ ἁμαρτωλῶν οὐκ ἔστη, † καὶ ἐπὶ
2 καθέδρᾳ λοιμῶν οὐκ ἐκάθισεν. † Ἀλλ' ἢ ἐν τῷ νό-
μῳ κυρίου τὸ θέλημα αὐτοῦ, † καὶ ἐν τῷ νόμῳ αὐτοῦ
3 μελετήσει ἡμέρας καὶ νυκτός. † Καὶ ἔσται ὡς τὸ
ξύλον τὸ πεφυτευμένον παρὰ τὰς διεξόδους τῶν ὑ-
δάτων, † ὃ τὸν καρπὸν αὐτοῦ δώσει ἐν καιρῷ αὐτοῦ.
† καὶ τὸ φύλλον αὐτοῦ οὐκ ἀποῤῥυήσεται, † καὶ πάντα ὅ-
4 σα ἂν (β) ποιῇ, κατευοδωθήσεται. † Οὐχ οὕτως οἱ ἀσεβεῖς,
οὐχ οὕτως, † ἀλλ' ἢ ὡς ὁ χνοῦς ὃν ἐκρίπτει ὁ ἄνεμος
5 ἀπὸ προσώπου τῆς γῆς. † Διὰ τοῦτο οὐκ ἀναστήσονται (γ) οἱ
ἀσεβεῖς ἐν κρίσει, † οὐδὲ (δ) ἁμαρτωλοὶ ἐν βουλῇ δι-
6 καίων. † Ὅτι γινώσκει κύριος ὁδὸν δικαίων, † καὶ
ὁδὸς ἀσεβῶν ἀπολεῖται.

MS.A. (α) ΨΑΛΤΗΡΙΟΝ. (β) ποιήσῃ, (γ) ἀσεβεῖς (δ) οἱ ἁμαρτωλοὶ

β΄.

1 † ἹΝατί ἐφρύαξαν ἔθνη, καὶ λαοὶ ἐμελέτησαν κενά; 3
2 † Παρέστησαν οἱ βασιλεῖς τῆς γῆς, † καὶ οἱ ἄρχοντες
συνήχθησαν ἐπὶ τὸ αὐτὸ † κατὰ τοῦ κυρίου, καὶ κατὰ τοῦ χρι-
3 στοῦ αὐτοῦ. (α) † Διαῤῥήξωμεν τοὺς δεσμοὺς αὐτῶν,
4 † καὶ ἀποῤῥίψωμεν ἀφ' ἡμῶν τὸν ζυγὸν αὐτῶν. † Ὁ
κατοικῶν ἐν οὐρανοῖς (β) ἐκγελάσεται αὐτούς, † καὶ ὁ
5 κύριος ἐκμυκτηριεῖ αὐτούς. † Τότε λαλήσει πρὸς
αὐτοὺς ἐν ὀργῇ αὐτοῦ, † καὶ ἐν τῷ θυμῷ αὐτοῦ ταράξει
6 αὐτούς. † Ἐγὼ δὲ κατεστάθην βασιλεὺς ὑπ' αὐτοῦ †
ἐπὶ Σιὼν ὄρος τὸ ἅγιον αὐτοῦ, † (γ) διαγγέλλων
7 τὸ πρόσταγμα κυρίου. † Κύριος εἶπε πρὸς μέ, Υἱ-
ός μου εἶ σύ, † ἐγὼ σήμερον γεγέννηκά σε. †
8 Αἴτησαι παρ' ἐμοῦ, καὶ δώσω σοι ἔθνη τὴν κληρο-
νομίαν σου, † καὶ τὴν κατάσχεσίν σου (δ) τὰ πέρατα
9 τῆς γῆς. † Ποιμανεῖς αὐτοὺς ἐν ῥάβδῳ σιδηρᾷ, †
10 (ε) ὡς σκεῦος κεραμέως συντρίψεις αὐτούς. † Καὶ
νῦν βασιλεῖς σύνετε, † παιδεύθητε πάντες οἱ κρί-
11 νοντες τὴν γῆν. † Δουλεύσατε τῷ κυρίῳ ἐν φόβῳ, †
12 καὶ ἀγαλλιᾶσθε αὐτῷ ἐν τρόμῳ. † Δράξασθε παιδείας,
μήποτε ὀργισθῇ κύριος, † καὶ ἀπολεῖσθε ἐξ ὁδοῦ δι-
13 καίας. † Ὅταν ἐκκαυθῇ ἐν τάχει ὁ θυμὸς αὐτοῦ, †
μακάριοι πάντες οἱ πεποιθότες ἐπ' αὐτῷ.

MS.A. (α) ΔΙΑΨΑΛΜΑ. (β) ἐγγελάσεται (γ) διαγγελλων (δ) τὰ πέρα (ε) καὶ ὡς σκεύη

Ver. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiop. Transl. LAT.

PSALMI.

[a] I.

1 Beatus (a) vir, qui non 1
abiit in consilio impi-
orum: & in via peccatorũ non
stetit: & in cathedra (b) [b]
pestilentiæ non sedit. 2 Sed [c] 2
in lege Domini voluntas ejus:
et in lege ejus meditabitur die
(c) ac nocte. 3 Et erit tanquam 3
lignum, quod (d) plantatum est
secus decursus aquarum: quod
fructum suum dabit in tempo-
re suo. 4 Et folium ejus non de-
fluet: & omnia quæcunque fa-
ciet, (e) [d] prosperabuntur.
5 Non sic [e] impii, non (f) sic: 4
sed tanquam pulvis, quem pro-
jicit ventꝰ à facie terræ. 6 Ideò 5
non resurgẽt impii in judicio,
neque peccatores in (g) consilio
justorũ. 7 Quoniam novit Do- 6
minus viam justorum; [f] et (h)
iter impiorum peribit.

1 (a) [a] II.

Quarè (b) [b] fremue- 1
runt gentes, & populi [c] medi-
tati sunt inania? 2 (c) Astite- 2
runt reges terræ: & principes
convenerũt [d] in unum adver-
sùs Dominum, & adversùs
Christum ejus: 3* Dirumpamus 3
[e] vincula eorum: et projicia-
mꝰ à nobis jugũ ipsorũ. 4 Qui 4
habitat in cælis, irridebit eos:
& Dominus subsannabit eos.
5 [f] Tunc loquetur ad eos in 5
ira sua: & in furore suo (d)
conturbabit eos. 6 Ego autẽ (e) 6
constitutꝰ sum rex ab eo, super
Sion montem sanctum ejus, (f)
prædicans præceptum Domini.
7 Dominꝰ dixit ad me; Filius 7
meus es tu: ego hodiè genui te.
8 Postula à me, & dabo tibi 8
gentes hæreditatẽ tuã, & [g]
possessionẽ tuam terminos ter-
ræ. 9 Reges eos in virga ferrea: 9
tanquam vas (g) figuli (h) con-
fringes eos. 10 Et nunc reges (i) 10
intelligite: erudimini omnes
qui judicatis terram. 11 Servite Domino in timore: & exultate ei cum tremore. 12 (k) Apprehendite disciplinam, nequando irascatur Dominus, & pereatis de via justa. 13 Cùm exarserit in brevi 11 12 13
ira ejus; beati omnes qui confidunt in eo.

Versio ÆTHIOPICA.

መዝሙር፡ፍርሀተ፡እግዚአብሔር፡ወአር
ሐቀ፡እመጸራዊ።

፩ ብፁዕ፡ ብእሲ፡ ዘኢሖረ፡ በምክረ፡ ረሲዓ 1
ን።ወዘኢቆመ፡ ውስተ፡ ፍኖተ፡ኃጥኣን።ወዘ
ኢነበረ፡ውስተ፡መንበረ፡መስተሳልቃን።=÷ ዘ 2
ዳእሙ፡ሕገ፡እግዚአብሔር ሥምረቱ።ወዘ
ሕጎ፡የነብብ፡መዓልተ፡ወሌሊተ።=÷ ወይከው 3
ን፡ከመ፡ዕፀ፡እንተ፡ ትክልት፡ ኀበ፡ሙኀዘ፡ማ
ይ።እንተ፡ትሁብ፡ፍሬሃ፡በጊዜሃ።=÷ ወቈ 4
ጽላኒ፡ ኢይትነገፍ።ወኵሉ፡ ዘገብረ፡ ይፌጽ
ም።=÷ አኮ፡ከመዝ፡ኃጥኣንሰ፡አኮ፡ከመ 5
ዝ።ዳእሙ፡ከመ፡መሬት፡ ዘይግሕፋ፡ነፋስ፡
እምገጸ፡ምድር።=÷ ወበእንተዝ፡ ኢይትነ 6
ሥኡ፡ ረሲዓን፡ እምደይን።ወኢኃጥኣን፡ው
ስተ፡ምክረ፡ጻድቃን።=÷ እስመ ፡ የአምር ፡ 7
እግዚአብሔር ፡ ፍኖቶሙ፡ ለጻድቃን ። ወፍ
ኖቶሙሰ ፡ ለኃጥኣን ፡ ትጠፍእ።=÷

ትንቢት፡ዘደዊት፡ላዕለ፡እግዚአብሔር፡ወ
ላዕለ፡መሲሁ፡እስመ፡ሐለዩ፡አሕዛብ፡
ይዕርግዋ፡ለጽዮን፡ወይፄውውዋ።

፪ ለምንት፡አንገለጉ፡አሕዛብ።ወሕዝብኒ፡ 1
ነበቡ፡ከንቶ።=÷ ወተንሥኡ፡ነገሥተ፡ምድ 2
ር።ወመላእክትኒ፡ ተጋብኡ፡ ምስሌሆሙ፡ ኅ
ብረ።ላዕለ፡ እግዚአብሔር ፡ ወላዕለ ፡ መሲ
ሑ።=÷ ንበትክ፡እሞኤኑ፡መአስሪሆሙ።ወ 3
ንገድፍ፡እምላዕሌነ፡አርዑቶሙ።=÷ ዘይነ 4
ብር፡ ውስተ፡ ሰማይ ፡ ይሥሕቆሙ።ወእግዚ
አብሔር፡ይሳለቅ፡ላዕሌሆሙ።=÷ ሶበ፡ይነ 5
ብቦሙ፡ በመዓቱ።ወበመዓቱ ፡ የኀውኮሙ።=÷
ወአንሰ፡ተሠየምኩ፡ንጉሠ፡ላዕሌሆሙ።በጽ 6
ዮን፡ በደብረ፡ መቅደሱ።ከመ ፡ እንግር፡ ትእ
ዛዞ፡ለእግዚአብሔር።=÷ እግዚአብሔር፡ 7
ይቤለኒ፡ወልድየ፡አንተ።ወአነ፡ዮም፡ወለድ
ኩከ።=÷ ሰአል፡ እምኔየ፡ እሁበከ ፡ አሕዛ 8
ብ፡ ለርስትከ።ወምኵናኒከኒ፡ እስከ ፡ አጽና
ፈ፡ምድር።=÷ ወትርዕዮሙ፡በበትረ፡ኀጺን። 9
ወከመ፡ ንዋየ፡ ለብሐት፡ ተቀጠቅጦሙ።=÷
ወይእዜኒ ፡ ነገሥት ፡ ለብዉ። ወተገሠጹ፡ 10
ኵልክሙ፡እለ፡ትኴንንዋ፡ለምድር።=÷ ተ 11
ቀነዩ ፡ ለእግዚአብሔር ፡ በፍርሃት። ወተሐ
ሠዩ ፡ ሎቱ ፡ በረዓድ።=÷ አጽንዕዋ፡ ለጥ 12
በብ ፡ ከመ፡ ኢይትመዓዕ ፡ እግዚአብሔር።
ወኢትትሐጐሉ ፡ እምፍኖተ ፡ ጽድቅ።=÷
10 ሶበ፡ነደት፡ፍጡነ፡መዐቱ። ብፁዓን፡ኵሎ 13
ሙ፡እለ፡ትወከሉ፡ቦቱ።

INTERP. ÆTH. [a] Præmium timoris Domini, & quòd auferet illud ab adversario. [b] derisorum [c] lex Domini [d] ad exitum perducet. [e] autem [f] sed & PSAL. II. [a] Prophetia Davidis de Deo, & de Messiah ejus, eò quòd conjurarent gentes ascendere in Zionem, eamque captivam ducere. [b] convenerunt [c] etiam [d] simul cum illis adversùs [e] à nobis [f] Cùm [g] ditionem tuam etiam usque ad

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* السفر الاول من مزامير داوود النبي ملك بني اسرائيل * المزمور الاول *

* حسن عبادة ورجاء الاخرة * وعدة استيخوناته يه *

1 * طوبا للرجل الذي لم يتبع راي المنافقين * ولم يقف في طريق الخاطيين * ولم يجلس مع
2 3 المستهزيين * لكن في ناموس الرب ارادته * وفي سننه يتلوا ليلا ونهارا * فيكون كمثل الشجرة
4 المغروسة علي مجاري المياه * التي تعطي ثمرها في حينها * وورقها لا يتناثر * وكل ما تعمل يتم * ليس
5 كذلك المنافقون ليس كذلك * لكن كالهباء الذي تذريه الرياح عن وجه الارض * فلهذا
6 لا يقوم المنافقون في القضاء * ولا الخطاة في مجمع الصديقين * لان الرب عارف بطريق
الابرار * وطريق الاثمة تبيد *

* المزمور الثاني لداوود *

* نبوة علي السيد المسيح ودعوة الامم * كز * استيخوناته *

1 * لماذا ارتجت الشعوب * وهذت الامم بالباطل * قامت ملوك الارض ورؤساوها * وتشاوروا جميعا
2 3 علي الرب وعلي مسيحه * فلنقطع اغلالهم * ونلق عنا نيرهم * الساكن في السموات يهزا بهم *
4 5 6 والرب يمقتهم * حينئذ يكلمهم بغضبه * وبسخطه يذهلهم * انا اقامني الرب ملكا منه * علي
7 8 صهيون جبل قدسه * لاخبر امر الرب * الرب قال لي انت ابني * وانا اليوم ولدتك * سلني
9 فاعطيك الشعوب ميراثك * وسلطانك علي اقطار الارض * ترعاهم بقضيب من حديد * ومثل
10 11 انية الفخار تسحقهم * منذ الان تفهموا ايها الملوك * وتادبوا يا جميع قضاة الارض * تعبدوا
12 للرب بخشية * وسبحوه برعدة * الزموا الادب * لئلا يغضب الرب عليكم * فتضلوا عن سبيل
العدل * اذا توقد غضبه سريعا * طوبي للمتوكلين عليه *

Liber primus PSALMORUM Davidis Prophetæ, Regis filiorum Israel.

PSAL. I.

Decus pietatis & spes alterius seculi. Et numerus vers. 15.

BEatitudo viro, qui non sectatus est 1
sententiam scelestorũ, & non stetit in
via peccatorũ, et non sedit cum illudenti-
bus; Sed in lege Domini voluntas ejus, 2
et in juribus ejus meditatur noctu diuque.
Erit sanè veluti arbor plantata ad decur- 3
sus aquarũ, quæ dat fructũ suum in tem-
pore suo. Et folia ejus non labentur, &
quicquid operatur, explet: Non sic impii, 4
non sic: sed tanquã pulvis, quem disper-
gunt venti de facie terræ. Et propterea 5
non stabunt impii in judicio, neque pecca-
tores in concilio justorum: Quoniam Do- 6
minus sciens est viam justorum, et via ini-
quorum peribit.

PSAL. II.

Davidis. Prophetia de Christo Domino, et vocatione gentium. 1

Vers. 17.

QUa è conturbati sunt populi, et de-
liràrunt gentes vanitatem? Insur- 2
rexerunt reges terræ, & principes ejus, &
consilium inierunt simul adversùs Domi-
nũ, & adversùs Christum ejus. Dirum- 3
pamus vincula eorum, & projiciamus à
nobis jugum ipsorum. Habitans in cælis 4
illudet eos: & Dominus odio habebit eos.
Tunc alloquetur eos in furore suo, & in 5
ira sua contemnet eos. Constituit me 6
Dominus Regem pro se super Sion, mon-
tem sanctitatis suæ, ut annuntiarem
præceptum Domini. Dominus dixit mi- 7
bi; Tu es filius meus, & ego hodiè
genui te. Postula à me, & dabo tib. 8
populos hæreditatem tuam, & imperium
tuum super terminos terræ; Pasces eos 9
in virga ex ferro, & veluti vasa ar-
gillæ conteres eos. Ex nunc intelligite, 10
O reges, & erudimini, O omnes judices
terræ. Servite Domino cum timore, et lau- 11
date eum cum tremore. Adhærete disci- 12
plinæ, ut ne indignetur Dominus vobis,
et erretis à semita justitiæ, Cùm exarse-
rit furor ejus citò: Beati confidentes in eo.

תהלים : ג ד ה

PSAL. III. ג

quam Domine .sui filii Absalom *faciebus à ipsum fugiendo in* ,Davidis Canticum
1 2 מִזְמוֹר לְדָוִד בְּבָרְחוֹ מִפְּנֵי אַבְשָׁלוֹם בְּנוֹ׃ יְהוָה מָה־
dicentes Multi .me adversum *insurgentes* multi:mei *angustiatores* sunt multiplicati
3 רַבּוּ צָרָי רַבִּים קָמִים עָלָי׃ רַבִּים אֹמְרִים
: me pro clypeus Domine tu Et .Selah ,Deo in ei salus non ,meæ animæ
4 לְנַפְשִׁי אֵין יְשׁוּעָתָה לּוֹ בֵאלֹהִים סֶלָה׃ וְאַתָּה יְהוָה מָגֵן בַּעֲדִי
me exaudivit &:*clamabam* Dominum ad mea Voce.meum caput *exaltans* & ,mea gloria
5 כְּבוֹדִי וּמֵרִים רֹאשִׁי׃ קוֹלִי אֶל־יְהוָה אֶקְרָא וַיַּעֲנֵנִי
Dominus quia : evigilavi ,dormivi & , accubui . Ego :Selah,suæ sanctitatis monte de
6 מֵהַר קָדְשׁוֹ סֶלָה׃ אֲנִי שָׁכַבְתִּי וָאִישָׁנָה הֱקִיצוֹתִי כִּי יְהוָה
se posuerunt circumquaquo qui : *populi* millibus decem à timebo Non .me *fulciet*
7 יִסְמְכֵנִי׃ לֹא־אִירָא מֵרִבְבוֹת עָם אֲשֶׁר סָבִיב שָׁתוּ
meos inimicos omnes percussisti quia,mi Deus me serva ,Domine Surge .me *contra*
8 עָלָי׃ קוּמָה יְהוָה הוֹשִׁיעֵנִי אֱלֹהַי כִּי־הִכִּיתָ אֶת־כָּל־אֹיְבַי
tuum populum super : salus Domini .confregisti impiorum dentes : maxilla
9 לֶחִי שִׁנֵּי רְשָׁעִים שִׁבַּרְתָּ׃ לַיהוָה הַיְשׁוּעָה עַל־עַמְּךָ
.Selah .tua benedictio
בִרְכָתֶךָ סֶּלָה׃

PSAL. IV. ד

,meæ justitiæ Deus me exaudi *me invocando In*.Davidi canticum *Neghinoth* in Victori
1 2 לַמְנַצֵּחַ בִּנְגִינוֹת מִזְמוֹר לְדָוִד׃ בְּקָרְאִי עֲנֵנִי אֱלֹהֵי צִדְקִי
viri Filii.meam orationem audi & ,mei miserere:mihi fecisti dilatationẽ angustia in
3 בַּצָּר הִרְחַבְתָּ לִּי חָנֵּנִי וּשְׁמַע תְּפִלָּתִי׃ בְּנֵי־אִישׁ
? mendacium quæretis , inane diligetis ? ignominiam in meam gloriam usquequo
עַד־מֶה כְבוֹדִי לִכְלִמָּה תֶּאֱהָבוּן רִיק תְּבַקְשׁוּ כָזָב
, exaudiet Dominus : sibi pium Dominus segregavit quòd scitote Et .Selah
4 סֶלָה׃ וּדְעוּ כִּי־הִפְלָה יְהוָה חָסִיד לוֹ יְהוָה יִשְׁמַע
super ,vestro corde in *dicite* : peccetis ne & ,*Contremiscite* .eum ad *me clamando in*
5 בְּקָרְאִי אֵלָיו׃ רִגְזוּ וְאַל־תֶּחֱטָאוּ אִמְרוּ בִלְבַבְכֶם עַל־
.Dominum *in sperate* & ;justitiæ sacrificia Sacrificate .Selah ,tacete & ,vestro cubili
6 מִשְׁכַּבְכֶם וְדֹמּוּ סֶלָה׃ זִבְחוּ זִבְחֵי־צֶדֶק וּבִטְחוּ אֶל־יְהוָה׃
tuarum facierum lucem nos super Eleva?bonum nos faciet videre quis *: dicentes* Multi
7 רַבִּים אֹמְרִים מִי־יַרְאֵנוּ טוֹב נְסָה־עָלֵינוּ אוֹר פָּנֶיךָ
eorum novũ vinũ & eorũ frumentũ tempore à,meo corde in lætitiam Dedisti .Domine
8 יְהוָה׃ נָתַתָּה שִׂמְחָה בְלִבִּי מֵעֵת דְּגָנָם וְתִירוֹשָׁם
, solus Dominus tu quia,dormiam &,accubabo pariter pace In .sunt multiplicata
9 רָבּוּ׃ בְּשָׁלוֹם יַחְדָּו אֶשְׁכְּבָה וְאִישָׁן כִּי־אַתָּה יְהוָה לְבָדָד
.me habitare facies *fiducia in*
לָבֶטַח תּוֹשִׁיבֵנִי׃

PSAL. V. ה

:Domine auribus percipe mea Eloquia.David canticum Hannechiloth super Victori
1 2 לַמְנַצֵּחַ אֶל־הַנְּחִילוֹת מִזְמוֹר לְדָוִד׃ אֲמָרַי הַאֲזִינָה יְהוָה
: mi Deus & , mi rex mei clamoris voci Attende .meam *meditationem* intellige
3 בִּינָה הֲגִיגִי׃ הַקְשִׁיבָה לְקוֹל שַׁוְעִי מַלְכִּי וֵאלֹהָי
disponam mane ,meam vocem ,audies mane Domine .orabo te ad quoniam
4 כִּי־אֵלֶיךָ אֶתְפַּלָּל׃ יְהוָה בֹּקֶר תִּשְׁמַע קוֹלִי בֹּקֶר אֶעֱרָךְ־
.malus te habitabit non *: tu* impietatem volens Deus non Quia .speculabor &,tibi
5 לְךָ וַאֲצַפֶּה׃ כִּי לֹא אֵל־חָפֵץ רֶשַׁע אָתָּה לֹא יְגֻרְךָ רָע׃

תרגום TARGUM.

ג

1 תֻּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד בְּמֵעֲרְקֵיהּ מִן קֳדָם אַבְשָׁלוֹם
2 בְּרֵיהּ׃ יְיָ כַּמָּה סַגִּיאִין מְעִיקַי סַגִּיאִין דְּקַיְמִין עֲלָי׃
3 סַגִּיאִין אָמְרִין לְנַפְשִׁי לֵית פּוּרְקָנָא לֵיהּ בֶּאֱלָהָא
4 לְעָלְמִין׃ וְאַנְתְּ יְיָ תְּרִיס עֲלַי יְקָרִי וּמְרִים רֵישִׁי׃
5 קָלִי קֳדָם יְיָ אֲצַלֵּי יְקַבֵּל צְלוֹתִי מִן טוּר בֵּית
6 מַקְדְּשֵׁיהּ לְעָלְמִין׃ אֲנָא שְׁכִיבֵית וּדְמַכֵית
7 אִתְּעָרִית מְטוּל דַּיְיָ סָמֵיךְ יָתִי׃ לָא תִּדְחַל מִמַּצּוּתָא
8 דְּעַם דַּחֲזוֹר חֲזוֹר אִתְכַּנְּשׁוּ עֲלָי׃ קוּם יְיָ פְּרוֹק יָתִי
אֱלָהִי אֲרוּם מְחִיתָ כָּל בַּעֲלֵי דְּבָבִי עַל לִיסְתְּהוֹן
9 כַּכֵּי רַשִּׁיעֵי תַּבַּרְתָּא׃ מִן קֳדָם יְיָ פּוּרְקָנָא עַל עַמָּךְ
בִּרְכְתָךְ לְעָלְמִין׃

ד

1 2 לְשַׁבָּחָא עַל חִנְגִּיתָא תּוּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד׃ בְּעִדָּן
צְלוֹתִי קַבֵּל מִנִּי אֱלוֹהַּ צִדְקוּתִי בְּעִדָּן עָקְתָא
3 אַפְתֵּיתָא לִי חוּס עֲלַי וְקַבֵּל צְלוֹתִי׃ בְּנֵי נָשָׁא מְטוּל
מָה אִיקָרִי לְאִתְכְּנָעוּתָא תִּרְחֲמוּן סְרִיקוּתָא
4 תִּבְעוּן כְּדִיבוּתָא לְעָלְמִין׃ וִידַעוּן אֲרוּם פְּרִישׁ יְיָ
זַכָּאָה לֵיהּ יְיָ יְקַבֵּל צְלוֹתֵיהּ דְּדָוִד בְּמִקְרֵי לְוָתֵיהּ׃
5 זוּעוּ מִנֵּיהּ וְלָא תֶּחֶטְאוּן אֶמְרוּ בָעוּתְכוֹן בְּפוּמְכוֹן
וְשֵׁילַתְכוֹן בִּלְבַבְכוֹן וְצַלּוֹ עַל שִׁוּוּיְכוֹן וְאִדְכָּרוּ יוֹם
6 מִיתוּתָא לְעָלְמִין׃ כְּבֻשׁוּ יִצְרְכוֹן וְיִתְחֲשֵׁיב לְכוֹן
7 בְּנִכְסַת צִדְקָא וְסַבָּרוּ עַל יְיָ׃ סַגִּיאִין דְּאָמְרִין מַן
יַחְמִנָנָא טָבָא נְשָׂא עֲלָנָא נְהוֹר סְבַר אַפָּךְ יְיָ׃
8 יְהַבְתָּא חֶדְוָתָא בְּלִבִּי מִן עִדָּן דְּעִבּוּרְהוֹן
9 וְחַמְרְהוֹן סְגִיאוּ׃ בִּשְׁלָמָא כַּחֲדָא אֶשְׁכּוּב וְאֶדְמוּךְ
מִן בְּגַלַל דְּאַנְתְּ הוּא יְיָ בִּלְחוֹדוֹי בִּסְבָרָא
תּוֹתְבִנַנִי׃

ה

1 2 לְשַׁבָּחָא עַל חִנְגִּין תּוּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד׃ מֵימְרִי
3 אֲצִית יְיָ אִתְבַּיַּן רִנּוּנִי׃ צִית לְקָל בָּעוּתִי מַלְכִּי
4 וֵאלָהַי אֲרוּם קֳדָמָךְ אֲצַלֵּי׃ יְיָ בְּצַפְרָא שְׁמַע קָלִי
5 בְּצַפְרָא אֲסַדַּר קֳדָמָךְ וְאֶסְתַּכֵּי׃ מְטוּל דְּלָא אֱלָהָא
רָעֵי רִשְׁעָא אַנְתְּ לָא אִתּוֹתַב עִמָּךְ בִּישָׁא׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Canticum David cùm fugeret à facie Abſalom filii ſui. 1

PSAL. III.

DOmine quã multi ſunt infeſtores mei ! 2 multi ſurgunt adverſum me. Multi dicunt 3 animæ meæ: Non eſt redemptio ei in Deo in æternum. Et tu, Domine, ſcutum ſuper 4 me, honor meus, & exaltator capitis mei. Voce mea ad Dominum orabo: & recepit 5 orationem meam de monte domus ſanctuarii ſui in æternum. Ego quievi & dormivi; 6 evigilavi, quoniam Deus ſuſtentavit me. Non *timebis à contentione populi*, 7 qui circumcirca coadunati ſunt adverſum me. Surge Domine, redime me Deus meꝰ, 8 quoniam tu percuſſiſti omnes auctores inimicitiæ meæ ſuper genas eorum, dentes impiorum confregiſti. A facie Domini re- 9 demptio, ſuper populum tuum benedictio tua in æternum.

Ad canendum ſuper *chorum*, canticum 1 David.

PSAL. IV.

IN tempore orationis meæ recipe à me 2 Deus juſtitiæ meæ, in tempore anguſtiæ dilatâſti mihi: miſerere mei, & accipe orationem meam. Filii hominis uſquequo 3 honor meꝰ ad vituperium ? amabitis inania, quæretis mendacium in æternum ? Et ſcitote quoniã ſeparavit Dñs *juſtũ* ſibi: 4 Dñs accipiet orationem Davidis cùm invocaverit eum. Contremiſcite ab illo, & 5 ne peccetis: dicite orationem veſtram in ore veſtro, & petitionem veſtrã in corde veſtro, & orate ſuper cubile veſtrum: & mementote diei mortis ſemper. Domate 6 concupiſcentias veſtras, & reputabitur vobis *in* ſacrificium juſtitiæ: & ſperate in Dño. Plures ſunt qui dicunt: Quis oſten- 7 det nobis bonum ? leva ſuper nos lumen aſpectꝰ faciei tuæ Dñe. Dediſti lætitiam in 8 corde meo à tempore quo frumentũ eorũ & vinum eorũ multiplicata ſunt. In pace 9 ſimul accubabo ac dormiam, quoniã tu *ipſe* Dñe ſingulariter *in ſpe* ſedere facies me.

Ad canendum ſuper choros, canticum 1 David.

PSAL. V.

VErbum meum auſculta Dñe, intellige 2 *meditationem meam*. Auſculta vocem 3 petitionis meæ, rex meꝰ & Deꝰ meus, quoniam coram te orabo. Dñe manè audi vo- 4 cem meam; manè ordinabo coram te, & reſpiciam. Quoniam non Deꝰ volens improbitatem tu es; & non commorabitur tecum malꝰ. 5

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

1 * ܡܙܡܘܪܐ ܕܬܠܬܐ * ܟܬܝܒ ܠܕܘܝܕ ܥܠ ܛܒܬܐ ܕܥܬܝܕܢ. ܦܬܓܡܐ ܝܙ.
2 * ܡܪܝܐ ܡܐ ܣܓܝܘ ܐܠܘܨܝ. ܣܓܝܐܐ ܕܩܡܘ ܥܠܝ: * ܣܓܝܐܐ ܕܐܡܪܝܢ ܠܢܦܫܝ. ܕܠܝܬ
3 ܠܟ ܦܘܪܩܢܐ ܒܐܠܗܟ: * ܘܐܢܬ ܡܪܝܐ ܡܥܕܪܢܝ ܐܢܬ. ܘܫܘܒܚܝ ܘܡܪܝܡ ܪܫܝ: * ܒܩܠܝ
4 ܠܡܪܝܐ ܩܪܝܬ. ܘܥܢܢܝ ܡܢ ܛܘܪܗ ܩܕܝܫܐ: * ܐܢܐ ܫܟܒܬ ܘܕܡܟܬ ܘܐܬܬܥܝܪܬ. ܡܛܠ
5 6 ܕܡܪܝܐ ܣܡܟܢܝ: * ܠܐ ܐܕܚܠ ܡܢ ܪܒܘܬܐ ܕܥܡܐ. ܕܚܕܪܘܢܝ ܘܣܡܘ ܥܠܝ: * ܩܘܡ ܡܪܝܐ
7 8 ܐܠܗܝ ܘܦܪܘܩܝܢܝ: ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܡܚܝܬ ܠܟܠܗܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝ ܥܠ ܦܟܝܗܘܢ: ܘܫܢܐ
9 ܕܚܛܝܐ ܬܒܪܬ. * ܕܡܪܝܐ ܗܘ ܦܘܪܩܢܐ: ܘܥܠ ܥܡܟ ܒܘܪܟܬܟ ܠܥܠܡ.

1 * ܡܙܡܘܪܐ ܕܐܪܒܥܐ * ܠܕܘܝܕ. ܡܛܠ ܗܠܝܢ ܕܚܫ. ܦܬܓܡܐ ܝ.
2 * ܟܕ ܩܪܝܬܟ ܥܢܝܬܢܝ: ܐܠܗܝ ܘܦܪܘܥܐ ܕܙܕܝܩܘܬܝ. ܒܐܘܠܨܢܝ ܐܪܘܚܬ ܠܝ: ܪܚܡ ܥܠܝ
3 ܘܫܡܥ ܨܠܘܬܝ. * ܒܢܝܢܫܐ ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܛܫܝܢ ܐܢܬܘܢ ܐܝܩܪܝ: ܘܪܚܡܝܢ ܐܢܬܘܢ
4 ܣܪܝܩܘܬܐ: ܘܒܥܝܢ ܐܢܬܘܢ ܕܓܠܘܬܐ ܠܥܠܡܝܢ. * ܕܥܘ ܕܦܪܫ ܠܗ ܡܪܝܐ ܠܓܒܝܐ
5 ܒܬܕܡܘܪܬܐ: ܡܪܝܐ ܢܫܡܥ ܟܕ ܐܩܪܝܘܗܝ. * ܪܓܙܘ ܘܠܐ ܬܚܛܘܢ: ܐܡܪܘ ܒܠܒܘܬܟܘܢ. ܘܥܠ
6 ܡܫܟܒܝܟܘܢ ܪܢܘ. * ܕܒܚܘ ܕܒܚܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ ܘܣܒܪܘ ܒܡܪܝܐ: * ܣܓܝܐܐ ܕܐܡܪܝܢ ܡܢܘ
7 8 ܢܚܘܝܢ ܛܒܬܐ: ܢܕܢܚ ܥܠܝܢ ܢܘܗܪܐ ܕܦܪܨܘܦܗ: * ܡܪܝܐ ܝܗܒܬ ܚܕܘܬܐ ܒܠܒܝ. ܡܢ
9 ܙܒܢܐ ܕܥܒܘܪܗܘܢ ܘܚܡܪܗܘܢ ܘܡܫܚܗܘܢ: ܣܓܝܘ * ܒܫܠܡܐ ܐܟܚܕܐ. ܐܦ ܐܢܐ ܐܫܟܘܒ
ܘܐܕܡܟ: ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܡܪܝܐ ܠܒܠܚܘܕܝ ܒܫܝܢܐ ܐܘܬܒܬܢܝ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܚܡܫܐ *

1 * ܠܕܘܝܕ. ܨܠܘܬܐ ܡܢ ܦܪܨܘܦܐ ܕܥܕܬܐ: ܟܕ ܡܩܕܡܐ ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܙ.
2 3 * ܡܠܝ ܨܘܬ ܡܪܝܐ ܘܐܣܬܟܠ ܒܗܓܝܓܝ: * ܘܨܘܬ ܠܩܠܐ ܕܩܥܬܝ ܡܠܟܝ ܘܐܠܗܝ: * ܡܛܠ
4 5 ܕܠܘܬܟ ܗܘ ܡܨܠܐ ܐܢܐ. ܡܪܝܐ ܒܨܦܪܐ ܬܫܡܥ ܩܠܝ: ܘܒܨܦܪܐ ܐܬܛܝܒ ܘܐܬܚܙܐ ܠܟ. * ܡܛܠ
ܕܐܠܗܐ ܐܢܬ ܘܠܐ ܨܒܐ ܐܢܬ ܒܥܘܠܐ: ܠܐ ܢܥܡܪ ܥܡܟ ܒܝܫܐ.

PSALMUS. III.

Scriptus à Davide, de bonis futuris. Verſ. 17. 1

DOmine, quàm multiplicati ſunt oppreſſo- 2 res mei ? multi ſunt qui inſurrexerunt adverſùs me: Multi qui dicunt animæ meæ, Non 3 eſt tibi ſalus in Deo tuo. At tu, Domine, ad- 4 jutor meus es, & decus meum, atq; elator capitis mei. Voce meâ Dominum vocavi, & 5 reſpondit mihi de monte ſuo ſancto. Ego cu- 6 bavi, & dormivi, atq; evigilavi, quoniam Dominus me ſuffulſit. Non metuam à decem mil- 7 libus populi, qui obſederunt me & poſuerunt contra me. Exurge, Domine Deus meus, & 8 ſalva me: Quoniam tu percuſſiſti omnes hoſtes meos in maxillas eorum, & dentes impiorum confregiſti. Domini eſt ſalus, & ſu- 9 per populũ tuum benedictio tua in ſæculum.

PSALMUS. IV. Davidis.

De iis quæ perpeſſus eſt. Verſ. 10. 1

QUando invocavi te, exaudîſti me, Deus 2 meus, & vindex juſtitiæ meæ: in tribulationibus meis dilatâſti mihi. Miſerere mei, & exaudi orationem meam. Filii hominum quo- 3 uſque gloriam meam celatis, & diligitis vanitatem, & quæritis mendacium in ſæcula ? Sci- 4 tote quòd ſegregavit ſibi Dominus electũ cum admiratione: Dominus exaudiet, quum invocavero eum. Iraſcimini & ne peccetis. Di- 5 cite in cordibus veſtris, & ſuper cubilibus veſtris meditamini. Sacrificate ſacrificia ju- 6 ſtitiæ, & ſperate in Domino. Multi ſunt qui 7 dicunt, Quis oſtendet nobis Probum ? Protendet ſuper nos lumen vultûs ſui. Domine, 8 dediſti lætitiam tuam in corde meo, à tempore quo frumentum eorum, & vinum eorum, & oleũ eorũ multiplicata ſunt In pace ſimul. 9 Ego quoque jacebo & dormiam, quoniam tu, Domine, me ſolum in quiete habitare facies.

PSAL. V. Davidis.

Oratio ex perſona Eccleſiæ, quum manè adiret domum Domini. Verſ. 27. 1

VErba mea auſculta, Domine, & intellige 2 meditationem meam: Et auſculta vocem 3 clamoris mei, rex meus & Deus meus: Quo- 4 niam ad te oro, Domine, in matutino audies vocem meam. Et in matutino parabo me, & apparebo tibi. Quoniam Deus es, & non vis 5 impietatem, neq; habitabit tecum improbus,

Verſio VULG. LAT.

1 Pſalmus David, cùm fugeret à facie Ab-
ſalom filii ſui. (2 Reg. 15.14.) III.
2 DOmine, quid multiplicati ſunt qui
tribulāt me? multi inſurgunt adverſū
3 me. Multi dicunt animæ meæ, Non eſt
4 ſalus ipſi in Deo ejus. Tu autē, Domine,
ſuſceptor meus es, gloria mea, & exal-
5 tans caput meum. Voce meâ ad Dominū
clamavi: & exaudivit me de monte ſan-
6 cto ſuo. Ego dormivi, & ſoporatus ſum:
7 & exurrexi, quia Dn̄s ſuſcepit me. Non
timebo millia populi circumdantis me:
exurge, Domine, ſalvū me fac, Deus meus.
8 Quoniam tu percuſſiſti omnes adverſan-
tes mihi ſine cauſa: dentes peccatorum
9 contriviſti. Domini eſt ſalus: & ſuper
populum tuum benedictio tua.
1 In finem in carminibus, Pſalmus
David. IV.
2 CUm invocarem, exaudivit me Deus
juſtitiæ meæ: in tribulatione dilatâ-
ſti mihi. Miſerere meî, & exaudi oratio-
3 nem meam. Filii hominū uſquequò gra-
vi corde? ut quid diligitis vanitatem, &
4 quæritis mendacium? Et ſcitote quoniā
mirificavit Dominus ſanctū ſuum: Dn̄s
5 exaudiet me cū clamavero ad eū. Iraſci-
mini, & nolite peccare: quæ dicitis in
cordibus veſtris, in cubilib⁹ veſtris com-
6 pungimini. Sacrificate ſacrificiū juſtitiæ,
& ſperate in Dn̄o. Multi dicunt, Quis
7 oſtendit nobis bona? Signatum eſt ſuper
nos lumen vultûs tui, Domine: dediſti læ-
8 titiam in corde meo. A fructu frumenti,
9 vini, & olei ſui, multiplicati ſunt. In
pace in idipſum dormiā, & requieſcam;
10 Quoniam tu, Domine, ſingulariter in ſpe
conſtituiſti me.
1 In finem pro ea, quæ hæreditatē con-
ſequitur, Pſalmus David. V.
2 VErba mea auribus percipe, Domine,
3 intellige clamorē meum. Intende vo-
ci orationis meæ, rex meus & De⁹ meus.
4 Quoniā ad te orabo: Domine, manè ex-
5 audies vocem meam. Manè aſtabo tibi
& videbo: quoniā non Deus volens ini-
6 quitatem tu es. Neque habitabit juxta
te malignus:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

1 (α) Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ, ὁπότε ἀπεδίδρασκεν ἀπὸ
† προσώπου Ἀβεσσαλὼμ τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ. γ΄.
2 ΚΥριε τί ἐπληθύνθησαν οἱ θλίβοντές με; † πολλοὶ
3 (β) ἐπανέστησαν ἐπ' ἐμέ. † Πολλοὶ λέγουσι τῇ ψυχῇ
μου, Οὐκ ἔστι σωτηρία αὐτῷ ἐν τῷ θεῷ αὐτοῦ. ΔΙΑ-
4 ΨΑΛΜΑ. † (ϛ) Σὺ δὲ κύριε ἀντιλήπτωρ μου εἶ, † δόξα μου, καὶ
5 ὑψῶν τὴν κεφαλήν μου. † Φωνῇ μου πρὸς κύριον ἐκέκραξα,
† καὶ (δ) ἐπήκουσέ μου ἐξ ὄρους ἁγίου αὐτοῦ. ΔΙΑΨΑΛΜΑ.
6 † (ε) Ἐγὼ ἐκοιμήθην καὶ ὕπνωσα, † ἐξηγέρθην, ὅτι κύ-
7 ριος ἀντιλήψεταί μου. † Οὐ φοβηθήσομαι ἀπὸ μυριάδων
λαοῦ, † (ζ) τῶν κύκλῳ ἐπιτιθεμένων μοι. † ἀνάστα κύριε,
8 σῶσόν με ὁ θεός μου· † Ὅτι σὺ ἐπάταξας πάντας τοὺς
ἐχθραίνοντάς μοι ματαίως, † ὀδόντας ἁμαρτωλῶν
9 συνέτριψας. † Τοῦ κυρίου ἡ σωτηρία, καὶ ἐπὶ τὸν λαόν
σου ἡ εὐλογία σου.
1 Εἰς τὸ τέλος, (α) ἐν ψαλμοῖς ᾠδὴ τῷ Δαυίδ. δ΄.
2 † ΕΝ τῷ ἐπικαλεῖσθαί με, εἰσήκουσέ μου ὁ θεὸς τῆς
δικαιοσύνης μου· † ἐν θλίψει ἐπλάτυνάς μοι.
3 † οἰκτείρησόν με, καὶ εἰσάκουσον τῆς προσευχῆς μου. † Υἱοὶ
ἀνθρώπων, ἕως πότε βαρυκάρδιοι; † ἵνα τί ἀγαπᾶτε (β)
4 ματαιότητα, καὶ ζητεῖτε ψεῦδος; ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Καὶ
γνῶτε ὅτι ἐθαυμάστωσε κύριος τὸν ὅσιον αὐτοῦ, † κύριος
εἰσακούσεταί μου ἐν τῷ κεκραγέναι με πρὸς αὐτόν.
5 † Ὀργίζεσθε καὶ μὴ ἁμαρτάνετε, † ἃ λέγετε ἐν ταῖς
καρδίαις ὑμῶν, ἐπὶ ταῖς κοίταις ὑμῶν (γ) κατανύγητε.
6 ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Θύσατε θυσίαν δικαιοσύνης, καὶ
ἐλπίσατε ἐπὶ κύριον. † πολλοὶ λέγουσι, Τίς δείξει ἡ-
7 μῖν τὰ ἀγαθά; † Ἐσημειώθη ἐφ' ἡμᾶς τὸ φῶς τοῦ προσ-
ώπου σου κύριε. † ἔδωκας εὐφροσύνην εἰς τὴν καρδίαν
8 μου. † Ἀπὸ καρποῦ σίτου καὶ οἴνου καὶ ἐλαίου αὐτῶν ἐπληθύν-
9 θησαν. † Ἐν εἰρήνῃ ἐπὶ τὸ αὐτὸ κοιμηθήσομαι, καὶ ὑπνώ-
10 σω· † Ὅτι σὺ κύριε κατὰ μόνας ἐπ' ἐλπίδι κατῴκισάς με.
1 Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῆς κληρονομούσης, ψαλμὸς
τῷ Δαυίδ. ε΄.
2 † ΤΑ ῥήματά μου ἐνώτισαι κύριε, † σύνες (α) τῆς κραυ-
3 γῆς μου, Πρόσχες τῇ φωνῇ τῆς δεήσεώς μου, † ὁ
4 βασιλεύς μου καὶ ὁ θεός μου. † Ὅτι πρὸς σὲ προσεύ-
5 ξομαι κύριε, † τοπρωῒ εἰσακούσῃ τῆς φωνῆς μου. † Τοπρωῒ
παραστήσομαί σοι, καὶ (β) ἐπόψομαι. † ὅτι οὐχὶ θεὸς θέλων
6 ἀνομίαν σὺ εἶ. † Οὐδὲ παροικήσει σοι πονηρευόμενος,
MS. A. (α) Τῷ Δαυίδ, ὁπότε (β) ἐπανέστησαν (ϛ) Σὺ δὲ ἀν-
τιλήπτωρ μου εἶ, (δ) εἰσήκουσεν (ε) Ἐγὼ δὲ (ζ) τῶν * κύκλῳ
συνεπιτιθεμένων Ψαλμ. δ΄. MS. A. (α) ψαλμὸς τῷ (β)
ματαιότητας, (γ) κατανοίγητε. Ψαλμ. ε΄. MS. A. (α) τῇ κραυγῇ (β) ἐπόψῃ με.

Ver. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiop. Tranſl. LAT.

Pſalmus (a) ipſi David, cùm fu- 1
geret à facie Abſalom filii ſui.
III.
1 DOmine, quid multiplicati 2
ſūt, qui tribulāt me? multi in-
ſurgūt adverſùs me: 2 Multi 3
dicunt animæ meæ, [a] Non
eſt ſalus ipſi in Deo ejus. (b)
DIAPSALMA. 3 Tu autē, Do- 4
mine, ſuſceptor meus es, gloria
mea & exaltans caput meum.
4 Voce meâ ad Dominū clama- 5
vi; et exaudivit me de (c) mon-
te ſancto ſuo. DIAPSALMA.
5 Ego dormivi, et (d) ſomnū ce- 6
pi; exſurrexi, quoniā Dominus
(e) [b] ſuſcipiet me. 6 Non time- 7
bo millia populi (f) [c] circun-
dantis me: exurge, Domine, ſal-
vum me fac, De⁹ meus. 7 Quo- 8
niā tu percuſſiſti omnes adver-
ſantes mihi ſine cauſa: dentes
peccatorū contriviſti. 8 Domini 9
eſt ſalus; & ſuper populum
tuum benedictio tua.
In (a) finem, [*] in Pſalmis, can- 1
ticum ipſi David. IV.
CUm invocarē [a], (b) ex- 2
audivit me [b] De⁹ juſti-
tiæ meæ: in tribulatione dila-
tâſti mihi. 2 Miſerere meî, et
exaudi orationē meā. 3 Filii 3
hominum uſquequò (c) graves
corde [c]? ut quid diligitis va-
nitatē, & [d] quæritis menda-
ciū? DIAPSALMA. 4 Et ſci- 4
tote, quoniā [e] mirificavit Do-
minus ſanctū ſuum: Dominus
exaudiet me, cùm clamavero
ad eum. 5 (d) Iraſcimini, & 5
nolite peccare: Quæ dicitis in
cordib⁹ veſtris; in cubilibus ve-
ſtris (e) compungimini. DIA-
PSALMA. 6 Sacrificate ſacri- 6
ficiū juſtitiæ, & (f) ſperate in
Domino: multi dicunt, Quis o-
ſtendet nobis bona? 7 (g) Signa- 7
tum eſt ſuper nos lumen vult⁹
tui, Domine: [f] dediſti lætitiā
in cor meū. 8 A (h) fructu fru- 8
menti, et vini, et olei ſui, multi-
plicati ſunt. 9 In pace in idipſū 9
dormiā, et ſomnū capiam: Quoniā tu, Domine, ſingulariter in ſpe (i) habitare feciſti me. 10

Verſio ÆTHIOPICA.

መዝሙር፡ዘደዊት፡ዘአመ፡ጕየ፡እምገጸ፡፡
አቤሴሎም፡፡
እግዚኦ፡ሚ፡በዝኁ፡እለ፡ይሣቅዩኒ፡፡ብዙኃ 1
ን፡ቆሙ፡ላዕሌየ፡፡=፡ ብዙኃን፡ይቤልዋ፡ለነፍ 2
ስየ፡፡ሊያድኅነከ፡አምላክከ፡፡=፡ አንተሰ፡እ 3
ግዚኦ፡ምስካይየ፡ አንተ፡፡ክብርየ፡ ወመልዕል
ተ፡ርእስየ፡፡=፡ ቃልየ፡ኀበ፡እግዚአብሔር፡ጸ 4
ራኅኩ፡፡ወሰምዓኒ፡እምደብረ፡መቅደሱ፡፡=፡
አንሰ፡ ሰከብኩ፡ ወኖምኩ፡፡ወተንሣእኩ፡ እስ 5
መ፡እግዚአብሔር፡አንሥአኒ፡፡=፡ ሊይፈር 6
ሀ፡እምአእላፍ፡ አሕዛብ ፡፡ እለ፡ አገቱኒ፡ወ
ቆሙ፡ ላዕሌየ፡፡ ተንሥእ ፡ እግዚኦ ፡ አምላ
ኪየ፡ወአድኅነኒ፡፡=፡ እስመ፡አንተ፡ቀሠፍ 7
ኮሙ፡ ለኵሎሙ ፡ እለ፡ ይፃረሩኒ፡ በከንቱ፡፡
ሰነኒሆሙ፡ለኃጥአን፡ሰበርከ፡፡=፡ዘእግዚአብ 8
ሔር፡አድኅኖ፡ላዕለ፡ሕዝብከ፡በረከትከ፡፡=፡
ፍጻሜ፡ዘእሸቴት፡መዝሙር፡ዘደዊት፡፡
ሶበ፡ጸዋዕክዎ፡ ለእግዚአብሔር ፡ ሰምዓ 1
ኒ ፡ ጽድቅየ ፡፡ ወእምንዳቤየ ፡ አርኃበ፡ ሊ
ተ፡፡=፡ ተሣሀለኒ፡ወስምዓኒ፡ጸሎትየ፡፡=፡ ደ 2
ቂቀ፡እጓለ፡ እምሕያው፡ እስከ ፡ ማእዜኑ፡ታ 3
ከብዱ፡ልህክሙ፡ ለምንት ፡ ታፈቅሩ፡ ከንቶ፡
ወተሐስወ፡ ሐሰተ፡፡=፡ አእምሩ፡ ከመ፡ተሰ 4
ብሐ፡ እግዚአብሔር፡ በጻድቁ ፡፡ እግዚአብ
ሔር፡ ይሰምዓኒ፡ ሶበ፡ ጸራኅኩ፡ ኀቤሁ፡፡=፡
ተምዑ፡ወኢተአብሱ፡፡ወዘትሔልዩ፡ በልብክ 5
ሙ፡ውስተ፡ምስካቢክሙ፡ይትዐወቀክሙ፡፡=፡
ሡዑ፡ መሥዋዕተ ፡ ጽድቅ ፡ ወተወከሉ፡በእ 6
ግዚአብሔር፡፡ ብዙኃን ፡ እለ ፡ ይቤሉ፡መኑ፡
ያርእየነ፡ሠናይቶ፡፡=፡ተዐውቀ፡በላዕሌነ፡ብር 7
ሃነ፡ገጽከ፡እግዚኦ፡፡ወወደይከ፡ተፍሥሕተ፡
ውስተ፡ልብነ፡፡=፡እምፍሬ፡ስርናይ፡ወወይን፡ 8
ወቅብእ፡በዝኃ፡፡=፡በሰላም፡ቦቱ፡እሰክብ፡ወ 9
እነውም፡፡=፡ እስመ፡አንተ፡እግዚኦ፡በተስ 10
ፋ፡በሕቲትከ፡አኅደርከኒ፡፡=፡
ፍጻሜ፡በእንተ፡ተወርሶ፡መዝሙር፡ዘደዊት፡፡
ቃልየ፡ አጽምእ ፡ እግዚኦ፡፡ወለቡ ፡ ጽራ 1
ኅየ፡፡=፡ ወአጽምእኒ፡ቃለ፡ስእለትየ፡፡ንጉ 2
ሥየኒ፡ወአምላኪየ፡፡=፡ እስመ፡ኀቤከ፡እ 3
ጼሊ፡እግዚኦ፡፡በጽባሕ፡ሰምዓኒ፡ቃልየ፡፡=፡
በጽባሕ፡ እቀውም፡ቅድሜከ ፡ ወአስተርኢ፡ 4
ለከ፡፡እስመ ፡ኢኮንከ፡አምላክ፡ዘዐመፃ፡ ያፈ
ቅር፡፡=፡ ወኢይኀድሩ፡እኩያን፡ምስሌከ፡፡ 5

In finem, pro ea quæ hæreditatem conſequitur, pſalmus ipſi David. V. 1
1 VErba mea auribus percipe, Domine, [a] intellige clamorem meum. 2 [b] Intende voci orationis meæ, rex meus, & Deus meus. 3 Quoniam ad te (a) orabo, Domine, manè exaudies vocem meam. 2 3 4
4 Manè aſtabo [c] tibi, & (b) videbo: quoniam non [d] Deus volens iniquitatem tu es. 5 Neque (c) [e] habitabit juxta te malignus: 5 6

INTERP. ÆTHIOP. [a] Non ſalvabit te Deus tuus. [b] ſuſcitavit me. [c] qui circundant me & inſurgunt adverſus me: PSAL. IV [*] laudis, Pſalmus David: [a] Dominum, [b] juſtitia mea [c] veſtro? [d] fallitis mendacio? [e] glorificatur Deus in ſancto ſuo: [f] injeciſti lætitiam in cor noſtrum. PSAL. V. [a] & [b] Et auſculta etiam [c] coram te, & innoteſcam tibi [d] es tu Deus qui diligit iniquitatem. [e] habitabunt juxta te maligni:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

1 * المزمور الثالث لداوود * * قاله لما هرب من ابسالوم ابنه * يه * اسيكوبانه *
2 3 * يا رب لماذا كثر الذين يحزنوني * كثيرون قاموا علي * كثيرون يقولون لنفسي * ليس له خلاصا
4 5 بالهه * وانت يا رب ناصري * مجدي ورافع راسي * بصوتي دعوت الرب * فاستجاب لي من جبل
6 7 قدسه * انا اضطجعت ونمت واستيقظت * لان الرب ناصري * فلا اخاف من ربوات الامم *
8 المحيطين بي القايمين علي * قم يا رب وخلصني * لانك اهلكت كل من يعاديني باطلا * اسنان
9 الخطاة سحقتها * للرب الخلاص * وعلي شعبه بركته *

1 * المزمور الرابع * * لداوود * يه * اسيكوبانه *
2 3 * اذ دعوت استجاب لي اله بري * وفي الشدة فرجت لي * تراءف علي واسمع صلاتي * يا بني البشر
4 حتي متي ثقل قلوبكم * لماذا تهوون الباطل وتتبعون الكذب * اعلموا ان الرب قد انتخب
5 صفيه بالعجب * الرب يستجيب لي اذا دعوت اليه * اغضبوا ولا تاثموا * وعلي ما تهمون
6 7 بقلوبكم اندموا عليه * وفي مضاجعكم * اذبحوا لله ذبيحة البر وتوكلوا علي الرب * كثيرون
8 يقولون من يرينا الخيرات * قد اضاء علينا نور وجهك * يا رب اعطيت قلبي فرحا من كثرة
9 ثمرات القمح * والخمر والزيت * وبالسلامة جميعهم * اضطجع وانام لانك انت وحدك يا رب *
اسكنتني بالرجاء مطمينا * * المزمور الخامس لداوود *

1 2 * قاله علي الوراثة وهو كح * اسيكوبانه * * اسمع يا رب قولي داعيا وكن لدعاي مجيبا *
3 4 * وانصت الي صوت تضرعي * فانك ملكي والهي * ولاني اليك اصلي يا رب * في غدواتي اسمع
5 يا رب طلبتي * اقف امامك بالغداة وتراني * لانك اله لا ترضي الاثم * ولا يحل في مساكنك شرير *

PSAL. III. Davidis.
Dictus eſt ab eo quum fugit ab 1
Abſalom filio ſuo. Verſ. 15.
ODomine mi, quare multiplicati ſunt 2
qui me contriſtant? Multi inſurrexe-
runt adverſùm me: Multi dicunt animæ 3
meæ, Non eſt ei ſalus in Deo ipſius. Et tu, 4
O Domine mi, adjutor me⁹ es, gloria mea,
& exaltans caput meum. Voce meâ in- 5
vocavi Dominum, & exaudivit me de
monte ſanctitatis ſuæ. Ego cubui et dor- 6
mivi, & experrectus ſum: Quoniam Do-
minus adjutor meus eſt, Non timebo my- 7
riadas gentium circundantium me, inſur-
gentium in me. Exurge, Domine mi, et ſal- 8
va me: Quoniam perdidiſti omnes, qui
inimicantur mihi fruſtrà, dentes pecca-
torum contriviſti. Domini eſt ſalus, & 9
ſuper populum ejus benedictio ipſius.
PSAL. IV. Davidis. 1
Verſ. 15.
CUm invocâſſem, exaudivit me Deus 2
juſtitiæ meæ: & in tribulatione dilatâſti
mihi. Propitiare mihi, & exaudi oratio-
nem meam. O filii hominum, quouſque 3
graveſcent corda veſtra? Ad quid ambi-
tis vanitatem, & ſequimini mendacium?
Scitote quòd Dominus jam elegit electum 4
ſuum cum admiratione. Dominus exaudi-
et me, cùm invocavero eum. Iraſcimini, 5
& ne delinquatis; & ejus, quod cogitatis
in cordibus veſtris, pœniteat vos: & in
cubilibus veſtris. Sacrificate Deo ſacrifi- 6
cium juſtitiæ, & confidite in Domino.
Multi dicunt, Quis oſtendat nobis bona? 7
Jam illuxit nobis lumen vultûs tui. O 8
Domine mi, dediſti cordi meo lætitiam ob
multitudinem frugum, frumenti, et vini,
& olei: Et in pacem ipſorum omnium cu- 9
babo, & dormiam; quia tu ſolus, O Do-
mine, habitare me feciſti in ſpe tutum.
PSAL. V. Davidis.
Dictus eſt ab eo de hæreditate. 1
Verſ. 13.
AUdi, O Domine mi, ſermonem mei 2
invocantis, et eſto invocationis meæ
exauditor: Et auſculta vocem ſupplica- 3
tionis meæ, quia tu es rex meus, & Deus
meus: Et quia ego ad te oro, O Domine, 4
in matutinis meis, audi, O Domine mi, pe-
titionem meam, Adſtabo coram te in ma-
tutino, & reſpicies me. Quoniam tu es 6
Deus, cui non placet iniquitas, & non de-
get in habitationibus tuis malus.

תהלים : ו ז

Perdes .iniquitaté operantes omnes odisti:tuis oculis coram vesani consistent Non
6 לא־יתיצבו הוללים לנגד עיניך שנאת כל־פעלי און : תאבד
7 ego Et .Dominus abominabitur doli & sanguinum virum ,mendacium loquentes
8 דברי כזב איש־דמים ומרמה יתעב יהוה : ואני
templo in me incurvabo ,tuam domum introibo,tuæ misericordiæ multitudine in
ברב חסדך אבוא ביתך אשתחוה אל־היכל־
:meos inimicos propter ,tua justitia in me duc Domine .tuo timore in tuæ sanctitatis
9 קדשך ביראתך : יהוה נחני בצדקתך למען שוררי
eorum intimum , rectum ejus ore in non Quoniam .tuam viam meas facies ad dirige
10 הושר לפני דרכך : כי אין בפיהו נכונה קרבם
eos Desola .blandiuntur sua lingua ,eorum guttur patens sepulchrum ,pravitates
11 הוות קבר־פתוח גרנם לשונם יחליקון : האשימם
, eos expelle eorum prævaricationum multitudine in suis consiliis à cadant , Deus
אלהים יפלו ממעצותיהם ברב פשעיהם הדיחמו
seculum in ,te in confidentes omnes lætabûtur Et .te contra rebellaverunt quoniam
12 כי־מרו בך : וישמחו כל־חוסי בך לעולם
.tuum nomen diligentes te in exultabunt & : eos super facies operire & ,canent præconia
ירננו ותסך עלימו ויעלצו בך אהבי שמך :
.eum coronabis voluntate scuto ut : Domine justo benedices tu Quia
13 כי־אתה תברך צדיק יהוה כצנה רצון תעטרנו :

PSAL. VI. ו

tuo naso in ne Domine .Davidis canticum octavam super Neghinoth in Victori
1 למנצח בנגינות על־השמינית מזמור לדוד : יהוה אל־באפך
2 quoniam ,Domine mei Miserere .me corripias tua excandescentia in neque ,me arguas
תוכיחני ואל־בחמתך תיסרני : חנני יהוה כי 3
est territa mea anima Et .mea ossa sunt territa quoniam ,Domine me sana : ego debilis
אמלל אני רפאני יהוה כי נבהלו עצמי : ונפשי נבהלה 4
, meam animam eripe , Domine Revertere ? usquequo , Domine tu & ; valde
מאד ואתה יהוה עד־מתי : שובה יהוה חלצה נפשי 5
sepulchro in:tui memoria morte in non Quoniam.tuâ misericordiâ propter me serva
הושיעני למען חסדך : כי אין במות זכרך בשאול 6
: meû lectû nocte omni in faciam natare ,meo gemitu in Laboravi?tibi confitebitur quis
מי יודה־לך : יגעתי באנחתי אשחה בכל־לילה מטתי 7
: meus oculus indignatione præ est Erosus liquefaciam meum stratum mea lachryma in
בדמעתי ערשי אמסה : עששה מכעס עיני 8
, iniquitatem operantes omnes me à Recedite .meos angustiatores omnes in inveteravit
עתקה בכל־צוררי : סורו ממני כל־פעלי און 9
Dñs :meam deprecationem Dñs Audivit.mei fletus vocem Dominus audivit quoniam
כי־שמע יהוה קול בכיי : שמע יהוה תחנתי יהוה 10
:mei inimici omnes valde terrebuntur & ,afficientur Pudore .accipiet meam orationem
תפלתי יקח : יבשו ויבהלו מאד כל־איבי 11
.subitò afficientur pudore,convertentur
ישבו יבשו רגע :

PSAL. VII. ז

Domine .Jemini filii Chus verba super Domino cecinit quod David Sighajon
1 שגיון לדוד אשר־שר ליהוה על־דברי־כוש בן־ימיני : יהוה
2 .me eripe & , me persequentibus omnibus ab me serva : speravi te in meus Deus
אלהי בך חסיתי הושיעני מכל־רדפי והצילני :
.liberans non & ,lacerans :meam animam leo ut rapiat forte Ne
3 פן־יטרף כאריה נפשי פרק ואין מציל :

תרגום TARGUM

לא יתעתדון מחלעבין קבל עינך סניתא כל 6
עובדי שקר : תאבד ממללי כדבותא אנש שדי 7
דם זכי ונכלא ירחק יי : ואנא בסגיאי טובך איעול 8
לביתך אסגוד להיכלא דקודשך בדחלתך : יי דבר 9
יתי בצדקתך מן בגלל תושבחי תקין קדמי
אורחתך : מטול דלית בפומהון דרשיעי כיונתא 10
גופיהון מלין אתרגושתא היך שיול פתיח
גרונהון לישנהון משעין : חייב להון אלהא 11
יתבטלון ממלכתהון בסגעא מרדהון אתקל להון
ארום מרדו במימרך : ויחדון כל מסברין במימרך 12
לעלם ישבחון ותטל עלויהון ויבדחון בך רחמי
שמך : מטול די אנת תברך לצדיקיא יי היך תריטא 13
רעוא טבא תכללניה : ו
לשבחא בנגינתא על כנרא דתמניא נימיא 1
תושבחתא לדוד : יי לא ברוגזך תכניעני ולא 2
ברתתך תרדי יתי : חוס עלי יי מטול דחלש אנא 3
אסי יתי יי מטול דאתבהילו גרמי : ונפשי 4
אתבהילת לחדא ואנת יי עד אימתי רוח לי : תוב 5
יי פצי נפשי פרק לי בגלל טובך : מטול דלית 6
במותא דכרנך בשאול מן יודי לך : אשתלהית 7
בתנחתי אמלל בצערי בכל ליליא על שוויי
בדמעתי דרגשי אטמש : חשכת מן רוגזי עיני 8
אתבליאת בכל מעיקי : זורו מני כל עבדי שקר 9
ארום שמיע קדם יי קל בכותי : שמיע קדם יי 10
בעותי יי צלותי יקבל : יבהתון ויתבהלון לחדא 11
כולהון בעלי דבבי יתובון יבהתון כשעא : ז
תרגומא דאוריתא לדוד די שבח קדם יי מטול די 1
אמר שירתא על תבירא דשאול בר קיש דמן
שבט בנימן : יי אלהי במימרך סברית פרוק יתי 2
מכל רדפי ופצא יתי : דלמא יתבר היך אריותא 3
נפשי יפשח ולית דיפצי :

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Non permanebunt irriſores corá oculis tuis : odiſti omnes operarios falſitatis. 6 Perdes loquentes mendaciũ : hominẽ 7 effuſoré ſanguinis mundi, et doloſũ longè propellet Dñs. Et ego in multitudine 8 bonitatis tuæ ingrediar in domũ tuam, adorabo ad templũ ſanctũ tuũ in timore tui. Dñe deduc me in juſtitia tua, pro- 9 pter laudẽ meã; dirige corá me viam tuã. Quoniam non eſt in ore impiorũ 10 rectũ: corpora eorũ plena ſunt tumultu: ſicut infern⁹ patens guttur eorũ: linguã ſuã lenificant. Condemna illos De⁹: 11 deficiant à conſiliis ſuis; in multitudine rebellationum eorũ, fac impingere eos, quoniam rebelles fuerunt Verbo tuo. Et lætabuntur oẽs qui ſperant in Verbo 12 tuo, in æternũ laudabunt; & obumbrabis eos, & lætabuntur in *te* amatores nominis tui. Quoniam tu benedices ju- 13 ſtis, Dñe: veluti clypeo voluntate bona coronabis eum.

Ad canendum ſup *neginath ad* citharã 1 octo chordarum, Hymnus Davidi.

PSAL. VI.

DOmine ne in furore tuo *humilies* 2 me, neq; in ira tua caſtiges me. Miſere- 3 re mei Dñe, quoniã debilis ſum ego : ſana me Dñe, quoniã obſtupuerunt oſſa mea. Et anima mea conturbata eſt ve- 4 hementer; et tu Dñe uſquequo refrigeriũ mihi? Revertere Dñe, libera animã 5 meã, redime me propter benignitatem tuã. Quoniã non eſt in morte memoria 6 tui: in inferno quis laudabit te? Laſſat⁹ 7 ſum ſuſpirio meo, loquar in dolore meo tota nocte ſup lectũ meũ : lachrymis meis cubile meum rigabo. Caligavit præ 8 indignatione ocul⁹ me⁹, conſumptus eſt propter omnes oppreſſores meos. Re- 9 cedite à me omnes operarii falſitatis, quoniam *exaudita eſt coram Domino vox* plorat⁹ mei. Exaudita eſt in con- 10 ſpectu Dñi deprecatio mea: Dñs orationem meam accepit. Confundantur & 11 interturbentur valde omnes auctores inimicitiæ meæ: revertantur et confundantur in momento.

Interpretatio *Odæ* Davidis quam cecinit corã Dño, *quum effatus eſſet carmen* ſup interitu 1 Saulis filii Cis qui erat de tribu Benjamin.

PSAL. VII.

DOmine De⁹ me⁹ in verbo tuo ſperavi : redime me ab omnib⁹ perſequẽtibus me, et libera 2 me. Ne fortè dilaceret ſicut leo animam meam ; diſcindat, et non ſit qui eruat. 3

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

6 * ܘܠܐ ܢܩܘܡܘܢ ܫܒܗܪܐ ܩܕܡ ܥܝܢܝܟ: ܣܢܝܬ ܠܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝ ܥܘܠܐ. * ܘܬܘܒܕ ܠܡܡܠܠܝ
7
8 ܕܓܠܘܬܐ: ܠܓܒܪܐ ܐܫܘܕ ܕܡܐ ܘܢܟܘܠܬܢܐ ܢܣܠܝܘܗܝ ܡܪܝܐ. * ܘܐܢܐ ܒܣܘܓܐ ܕܛܝܒܘܬܟ
9 ܐܥܘܠ ܠܒܝܬܟ: ܘܐܣܓܘܕ ܒܗܝܟܠܐ ܕܩܘܕܫܟ ܒܕܚܠܬܟ. * ܡܪܝܐ ܕܒܪܝܢܝ ܒܟܐܢܘܬܟ:
10 ܡܛܠ ܒܥܠܕܒܒܝ: ܬܪܘܨ ܩܕܡܝ ܐܘܪܚܟ. * ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܒܦܘܡܗܘܢ ܟܐܢܘܬܐ: ܐܠܐ ܥܘܠܐ
11 ܒܓܘܗܘܢ. ܘܐܝܟ ܩܒܪܐ ܦܬܝܚܐ ܓܓܪܬܗܘܢ: ܘܠܫܢܝܗܘܢ ܡܥܩܡܢ. * ܚܝܒ ܐܢܘܢ
ܐܠܗܐ: ܘܢܦܠܘܢ ܡܢ ܡܬܪܥܝܢܝܗܘܢ. ܘܒܣܘܓܐ ܕܥܘܠܗܘܢ ܕܚܘܦ ܐܢܘܢ: ܡܛܠ
12 ܕܐܡܪܘܟ. * ܢܚܕܘܢ ܒܟ ܟܠ ܕܡܣܒܪܝܢ ܒܟ: ܠܥܠܡ ܢܫܒܚܘܢܟ. ܘܬܥܡܪ ܒܗܘܢ.
13 ܢܬܥܫܢܘܢ ܒܟ ܟܠ ܪܚܡܝ ܫܡܟ: * ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܬܒܪܟ ܠܙܕܝܩܐ. ܡܪܝܐ ܐܝܟ ܣܟܪܐ
ܡܨܛܒܝܢܐ ܐܚܕܬܢܝ.

ܡܙܡܘܪܐ ܕܫܬܐ

1
2 * ܕܕܘܝܕ. ܡܠܦܢܘܬܐ ܘܡܙܗܪܢܘܬܐ. ܘܥܠ ܛܝܒܘܬܐ. ܦܣܘܩܐ ܟܙ. * ܡܪܝܐ ܠܐ ܒܪܘܓܙܟ
3 ܬܟܣܢܝ. ܘܠܐ ܒܚܡܬܟ ܬܪܕܝܢܝ: * ܪܚܡ ܥܠܝ ܡܪܝܐ ܡܛܠ ܕܟܪܝܗ ܐܢܐ. ܐܣܝܢܝ ܡܪܝܐ
4 ܡܛܠ ܕܙܥܘ ܓܪܡܝ: * ܘܢܦܫܝ ܐܙܕܘܥܬ ܛܒ. ܘܐܢܬ ܡܪܝܐ ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ: * ܐܬܦܢܐ ܡܪܝܐ
5
6 ܘܦܨܐ ܢܦܫܝ. ܘܦܪܘܩܝܢܝ ܡܛܠ ܛܝܒܘܬܟ: * ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܒܡܘܬܐ ܥܘܗܕܢܟ. ܘܒܫܝܘܠ
7 ܡܢܘ ܡܘܕܐ ܠܟ: * ܠܐܝܬ ܒܬܢܚܬܝ ܘܨܒܥܬ ܒܟܠ ܠܠܝܐ ܥܪܣܝ. ܘܒܕܡܥܝ ܬܫܘܝܬܝ
8
9 ܐܡܣܝܬ: * ܐܬܕܠܚܬ ܡܢ ܪܘܓܙܐ ܥܝܢܝ. ܘܥܬܩܬ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝ: * ܦܪܘܩܘ ܡܢܝ
10 ܟܠܟܘܢ ܥܒܕܝ ܥܘܠܐ. ܡܛܠ ܕܫܡܥ ܡܪܝܐ ܩܠܐ ܕܒܟܝܬܝ: * ܫܡܥ ܡܪܝܐ ܒܥܘܬܝ. ܡܪܝܐ ܨܠܘܬܝ
11 ܩܒܠ [illegible]. * ܢܒܗܬܘܢ ܘܢܬܬܒܪܘܢ ܛܒ ܟܠܗܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝ: ܢܬܗܦܟܘܢ ܘܢܐܒܕܘܢ
1 ܡܢ ܫܠܝ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܫܒܥܐ * ܕܕܘܝܕ ܦܘܢܝܐ ܕܥܡܡܐ ܠܗܝܡܢܘܬܐ ܘܡܘܕܝܢܘܬܐ ܕ
2 ܬܠܝܬܝܘܬܐ. ܦܣܘܩܐ ܟܙ. * ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ ܒܟ ܣܒܪܬ ܦܪܘܩܝܢܝ: ܘܡܢ
3 ܟܠ ܪܕܘܦܝ ܦܨܢܝ. * ܕܠܡܐ ܐܝܟ ܐܪܝܐ ܢܚܛܘܦ ܢܦܫܝ: ܘܠܝܬ ܕܦܪܩ ܘܡܦܨܐ.

Neque ſtabunt ſuperbi coram oculis tuis. 6 Odiſti omnes operantes falſitatem, Et per- 7 des loquentes mendacium; virum effuſorem ſanguinis & fraudulentum aſpernabitur Dominus. At ego in multitudine bonitatis tuæ 8 ingrediar domum tuam, & adorabo in templo ſanctitatis tuæ. In timore tuo. Domine, 9 dirige me, & in juſtitia tua: propter inimicos meos dirige coram me viam tuam. Quoniam 10 non eſt in ore eorum æquitas, ſed iniquitas in intimo eorum, ſuntque velut ſepulchra aperta eorum guttura, & linguæ eorum perverſæ. Damna eos, Deus, & cadant à conſili- 11 is ſuis : & in multitudine iniquitatis eorum propelle eos, quoniam exacerbaverunt te. Læ- 12 tentur in te omnes qui ſperant in te : in æternum laudabunt te, & habitabis inter eos. Corroborentur in te omnes diligentes nomen tuum, Quoniam tu benedices juſtis. Do- 13 mine, ut clypeus opportunus cinges me.

PSAL. VI. Davidis.

Documentum & commonitio; ſimúlque de gratia. Verſ. 27. 1

DOmine, ne in ira tua arguas me, neque in 2 furore tuo me caſtiges. Miſerere mei, Do- 3 mine, quoniã infirmus ſum : ſana me, Domine, quoniam tremefacta ſunt oſſa mea. Et ani- 4 ma mea territa eſt valdé: et tu Dñe, quouſque? Convertere, Dñe, & libera animã meã, & ſal- 5 va me propter bonitaté tuã: Quoniam non eſt 6 in morte memoria tui, & in inferno quis confitetur tibi? Defatigatus ſum in gemitib⁹ meis, 7 tinxíq; ſingulis noctib⁹ lectum meũ, & meis lachyrmis ſtratũ meũ tabefeci. Doluit præ ira 8 oeul⁹ me⁹, & turbatus eſt propter omnes inimicos meos. Recedite à me omnes operantes 9 falſitatem, quoniam audivit Dñs vocem fletûs mei: Audivit Dñs petitionẽ meã, Dñs oratio- 10 nẽ meã ſuſcepit. Pudefiant, et frangãtur valdè 11 cuncti hoſtes mei: vertãtur et pereant ſubitò.

PSAL. VII. Davidis.

Converſio gentium ad fidem & confeſſionem Trinitatis. Verſ. 27. 1

DOmine Deus me⁹, in te ſperavi, ſerva me: 2 & à cunctis perſequutoribus meis eripe me. Ne fortè ſicut leo ad deprædandam ani- 3 mam meam, nemine ſalvante atque eripiente.

Versio VULG. LAT.

neque permanebunt injusti ante oculos
7 tuos. Odisti omnes, qui operantur ini-
quitatem: perdes omnes, qui loquuntur
mendacium. Virum sanguinum & dolo-
8 sum abominabitur Dominus: Ego au-
tem in multitudine misericordiæ tuæ;
Introibo in domum tuam: adorabo ad
templum sanctum tuum in timore tuo.
9 Domine, deduc me in justitia tua: pro-
pter inimicos meos dirige in conspectu
10 tuo viam meam. Quoniam non est in
ore eorum veritas: cor eorum vanum
11 est. Sepulchrum patens est guttur eo-
rum, linguis suis dolosè agebant, judi-
ca illos Deus. Decidant à cogitationi-
bus suis, secundùm multitudinem impie-
tatum eorum expelle eos, quoniam ir-
12 ritaverunt te, Domine. Et lætentur o-
mnes, qui sperant in te, in æternum ex-
ultabunt: & habitabis in eis. Et gloria-
būtur in te omnes, qui diligūt nomē tuū,
13 Quoniā tu benedices justo. Dñe, ut scuto
bonæ voluntatis tuæ coronâsti nos.

1 In finem in carminibus, Psalmus
David, pro octava. VI.

2 DOmine, ne in furore tuo arguas me,
3 neque in ira tua corripias me. Mi-
serere meî, Domine, quoniam infirmus
sum: sana me, Domine, quoniam con-
4 turbata sunt ossa mea. Et anima mea
turbata est valdé: sed tu, Domine, us-
5 quequo? Convertere, Domine, & e-
ripe animam meam: salvum me fac
6 propter misericordiam tuam. Quoni-
am non est in morte qui memor sit tuî:
in inferno autem quis confitebitur tibi?
7 Laboravi in gemitu meo, lavabo per sin-
gulas noctes lectum meum: lachrymis
8 meis stratum meum rigabo. Turbatus
est à furore oculus meus: inveteravi in-
9 ter omnes inimicos meos. Discedite à me
omnes qui operamini iniquitatē: quoniā
exaudivit Dñs vocē fletûs mei. Exaudi-
10 vit Dñs deprecationē meā, Dñs oratio-
nē meā suscepit. Erubescāt, et conturben-
11 tur vehementer omnes inimici mei: con-
vertantur & erubescant valdè velociter.

1 Psalmus David, quem cantavit Do-
mino pro verbis Chusi filii Jemini.
(2 *Reg.* 16.) VII.

2 DOmine Deus meus, in te speravi:
salvum me fac ex omnibus perse-
3 quentibus me, & libera me. Nequando
rapiat ut leo animam meam, dum non est qui redimat, neque qui salvum faciat.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

† οὐδὲ διαμενοῦσι παράνομοι κατέναντι τῶν ὀφθαλμῶν
7 σου. † Ἐμίσησας κύριε πάντας τοὺς ἐργαζομένους τὴν ἀ-
νομίαν, † ἀπολεῖς πάντας τοὺς λαλοῦντας τὸ ψεῦδος.
8 † ἄνδρα αἱμάτων καὶ δόλιον βδελύσσεται κύριος. † Ἐγὼ
δὲ ἐν τῷ πλήθει τοῦ ἐλέους σου εἰσελεύσομαι εἰς τὸν οἶκόν σου,
9 † προσκυνήσω πρὸς ναὸν ἅγιόν σου ἐν φόβῳ σου. † Κύ-
ριε ὁδήγησόν με ἐν τῇ δικαιοσύνῃ σου † ἕνεκα τῶν ἐ-
10 χθρῶν μου, † κατεύθυνον ἐνώπιόν σου τὴν ὁδόν μου. † Ὅτι
οὐκ ἔστιν ἐν τῷ στόματι αὐτῶν ἀλήθεια· † ἡ καρδία αὐ-
11 τῶν ματαία· † Τάφος ἀνεῳγμένος ὁ λάρυγξ αὐτῶν·
† ταῖς γλώσσαις αὐτῶν ἐδολιοῦσαν. † κρῖνον αὐτοὺς ὁ θεός·
† ἀποπεσάτωσαν ἀπὸ τῶν διαβουλιῶν αὐτῶν· † κατὰ τὸ
πλῆθος τῶν ἀσεβειῶν αὐτῶν † ἔξωσον αὐτούς, ὅτι παρε-
12 πίκρανάν σε κύριε. † Καὶ εὐφρανθήτωσαν ἐπὶ σοὶ
πάντες οἱ ἐλπίζοντες ἐπὶ σέ, † εἰς αἰῶνα ἀγαλλιά-
σονται, καὶ κατασκηνώσεις ἐν αὐτοῖς· † καὶ καυχήσονται
13 (γ) ἐπὶ σοὶ πάντες οἱ ἀγαπῶντες τὸ ὄνομά σου, † Ὅτι
σὺ (δ) εὐλογήσεις δίκαιον. † κύριε, ὡς ὅπλῳ εὐδοκίας
ἐστεφάνωσας ἡμᾶς.

MS.A. (γ) ἐν σοὶ (δ) εὐλογεῖς

1 (α) Εἰς τὸ τέλος, ἐν ὕμνοις ὑπὲρ τῆς ὀγδόης,
ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. ϛʹ.

2 † Κύριε μὴ τῷ θυμῷ σου ἐλέγξῃς με, † μηδὲ τῇ ὀρ-
3 γῇ σου παιδεύσῃς με. † Ἐλέησόν με κύριε, ὅτι
ἀσθενής εἰμι. † ἴασαί με κύριε, ὅτι ἐταράχθη τὰ ὀστᾶ
4 μου. † Καὶ ἡ ψυχή μου ἐταράχθη σφόδρα· † καὶ σὺ κύ-
5 ριε ἕως πότε; † Ἐπίστρεψον κύριε, ῥῦσαι τὴν ψυχήν μου·
6 † σῶσόν με ἕνεκεν τοῦ ἐλέους σου, † Ὅτι οὐκ ἔστιν ἐν τῷ
θανάτῳ ὁ μνημονεύων σου, † ἐν δὲ τῷ ᾅδῃ τίς ἐξομο-
7 λογήσεταί σοι; † Ἐκοπίασα (β) ἐν στεναγμῷ μου,
† λούσω καθ᾽ ἑκάστην νύκτα τὴν κλίνην μου, † ἐν δάκρυσί
8 μου τὴν στρωμνήν μου βρέξω. † Ἐταράχθη ἀπὸ θυμοῦ ὁ
ὀφθαλμός μου, † ἐπαλαιώθην ἐν πᾶσι τοῖς ἐχθροῖς μου.
9 † Ἀπόστητε ἀπ᾽ ἐμοῦ πάντες οἱ ἐργαζόμενοι τὴν ἀνομίαν,
† ὅτι εἰσήκουσε κύριος τῆς φωνῆς τοῦ κλαυθμοῦ μου. † (γ)
10 Εἰσήκουσε κύριος τῆς δεήσεώς μου, † κύριος τὴν προσευ-
11 χήν μου προσεδέξατο. † Αἰσχυνθείησαν καὶ ταραχθείησαν
σφόδρα πάντες οἱ ἐχθροί μου, † (δ) ἐπιστραφείησαν καὶ
αἰσχυνθείησαν σφόδρα διὰ τάχους.

MS.A. (α) Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῆς ὀγδόης, (β) ἐν
τῷ στεναγμῷ μου, (γ) Ἤκουσεν (δ) ἀποστραφείησαν
εἰς τὰ ὀπίσω, καὶ καταισχυνθείησαν

1 Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ, ὃν ᾖσε τῷ κυρίῳ ὑπὲρ τῶν λό-
γων Χουσὶ υἱοῦ Ἰεμενεί. ζʹ.

2 † Κύριε ὁ θεός μου ἐπὶ σοὶ ἤλπισα, † σῶσόν με ἐκ
3 πάντων τῶν διωκόντων με, καὶ ῥῦσαί με, † Μή πο-
τε ἁρπάσῃ ὡς λέων τὴν ψυχήν μου, † μὴ ὄντος λυτρου-
μένου, μηδὲ σώζοντος.

Vers. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Transl. LAT.

neque permanebunt injusti ante oculos tuos. 6 *Odisti, (d) Domine, omnes qui operantur iniquitatem: perdes omnes qui loquuntur mendacium.* 7 *Virũ sanguinum, et dolosum abominabitur Domin⁹.* 8 *Ego autem in multitudine misericordiæ tuæ introibo in domum tuam: adorabo [f] ad templum sanctũ tuum in timore tuo.* 9 *Dñe, deduc me in tua justitia propter inimicos meos: dirige in conspectu (e) tuo viã meã.* 10 *Quoniam non est in ore eorũ veritas: [g] cor eorum vanũ est.* 11 *[h] Sepulchrũ patens est guttur eorum; linguis suis dolosè agebant: judica illos, Deus.* 12 *Decidant [i] à cogitationib⁹ suis: secundũ multitudinē [k] impietatũ eorũ expelle eos; quoniã irritaverunt te, Domine.* 13 *Et lætentur (f) in te omnes, qui sperant in te: in æternum exultabunt; & habitabis in eis.* 14 *Et (g) gloriabuntur in te omnes, qui diligunt nomen tuum: Quoniã tu benedices justo.* 15 *Domine, ut scuto bonæ (b) voluntatis coronâsti nos.*

1 In finẽ, in hymnis * pro octava,
psalmus ipsi David. VI.

1 DOmine, ne in furore tuo [a] arguas me: neque in irâ tuâ corripias me.* 2 *Miserere meî, Domine, quoniã infirm⁹ sum: sana [b] me, Domine, quoniam conturbata sunt ossa mea.* 3 *Et anima mea turbata est valdé: sed tu, Domine, usquequo?* 4 *Convertere, Domine, eripe animam meam: salvũ me fac propter misericordiã tuã.* 5 *Quoniam non est in morte, qui (a) memor sit tuî: in inferno autē quis confitebitur tibi?* 6 *Laboravi in gemitu meo: lavabo per singulas noctes lectũ meũ: in lachrymis meis stratũ meum rigabo.* 7 *Turbatus (b) est à furore oculus meus: (c) inveteravi inter omnes inimicos meos.* 8 *Discedite à me [c] omnes qui operamini (d) iniquitatē: quoniam exaudivit Domin⁹ vocē flet⁹ mei.* 9 *Exaudivit Dñs deprecationem meã: Dñs orationē meã suscepit.* 10 *Erubescant, & (e) conturbentur vehementer omnes inimici mei: convertantur, & erubescant valdè (f) velociter.*

Psalmus (*a*) ipsi David, quem cantavit Domino pro verbis (*b*) Chusi filii [∴] Jemeni. VII.

1 DOmine Deus meus, in te speravi: [a] salvum me fac ex omnibus persequentibus me, & libera me.* 2 *Nequando rapiat, ut leo, animam meam: dum non est qui redimat, neque qui salvum faciat.*

Versio ÆTHIOPICA.

ወኢይነብሩ፡ዐማፅያን፡ቅድመ፡አዕይንቲከ፡፡= 7
ጸለእከ፡እግዚኦ፡ኵሎሙ፡ገባርተ፡ዓመፃ፡፡ 6
ወትገድፎሙ፡ለኵሎሙ፡እለ፡ይነቡ፡ሐሰተ፡፡
ብእሴ፡ደም፡ወጕሕሉዌ፡ያስቆርር፡እግዚአ 7
ብሔር፡፡ወአንሰ፡በብዝኃ፡ምሕረትከ፡8 ፡እበ
ውእ፡ቤተከ፡፡ወእሰግድ፡ውስተ፡ጽርሐ፡መቅ
ደስከ፡በፈሪሆትከ፡፡=፡እግዚኦ፡መርሐኒ፡በጽ 9
ድቅከ፡፡ወበእንተ፡ጸላእትየ፡አርትዕ፡ፍኖትየ፡
ቅድሜከ፡፡=፡ እስመ፡አልቦ፡ጽድቀ፡ውስተ፡ 10
አፉሆሙ፡፡ወልቦሙኒ፡ከንቶ፡፡=፡ከመ፡መቃብ 11
ር፡ክሡት፡ጕረዒቶሙ፡፡ወጸልሐው፡በልሳናቲ
ሆሙ፡፡ኰንኖሙ፡እግዚኦ፡ 12 ወይደቁ፡በው
ዲቶሙ፡፡ወበከመ፡ብዝኃ፡ሐብሎሙ፡ስድዶ
ሙ፡፡እስመ፡አምረሩከ፡እግዚኦ፡፡=፡ወይትፌ 13
ሥሑ፡ብከ፡ኵሎሙ፡እለ፡ይትዌከሉከ፡፡ለዓ
ለም፡ ይትሐሠዩ፡ወተኀድር፡ላዕሌሆሙ፡፡=፡
ወይትሜከሑ፡ብከ፡ኵሎሙ፡እለ፡ያፈቅሩ፡ስ 14
መከ፡፡እስመ፡አንተ፡ትባርኮ፡ለጻድቅ፡፡=፡
እግዚኦ፡ከመ፡ወልታ፡ሥምር፡ከለልከነ፡፡=፡ 15

ፍጻሜ፡ዘሕብሐት፡በእንተ፡ሳምንት፡
መዝሙር፡ዘደዊት፡፡

፪ እግዝኦ፡በመዐትከ፡ኢትቅሥፈኒ፡፡ወበመቅ 1
ሠፈትከ፡ኢትገሥጸኒ፡፡=፡ ተሣሀለኒ፡እግዚ 2
ኦ፡ እስመ፡ ድውይ፡ አነ፡፡ወፈውሰኒ፡ እስመ፡
ተሀውከ፡አዕጽምትየ፡፡=፡ ወነፍስየኒ፡ተሀው 3
ከት፡ ፈድፋደ፡፡ወአንተኒ፡ እግዚኦ፡ እስከ፡
ማእዜኑ፡፡=፡ ተመየጥ፡እግዚኦ፡ወባልሐ፡ለነ 4
ፍስየ፡፡ወአድኅነኒ፡በእንተ፡ምሕረትከ፡፡=እስ 5
መ፡አልቦ፡በውስተ፡ሞት፡ዘይዜከረከ፡፡ወበሲኦ
ል፡መኑ፡የአምነከ፡፡=ሰራሕኩ፡በምንደቤ፡፡ 6
ወአኀፅብ፡ ኵሎ፡ ሌሊተ፡ዐራትየ፡፡ወበአንብ
ዕየ፡አርሐስኩ፡ምስካብየ፡፡=ወተሀውከት፡አ 7
መዐተ፡ ዐይንየ ፡፡ ወበለይኩ፡በኀበ፡ኵሎሙ፡
ጸላእትየ፡፡=፡ ርሐቁ፡እምኔየ፡ ኵልክሙ፡ 8
ገባርተ ፡ ዐመፃ፡፡እስመ ፡ ሰምዓኒ፡ እግዚአብ
ሔር፡ቃለ፡ብካይየ፡፡=፡ ወሰምዓኒ፡እግዚአብ 9
ሔር፡ ስእለትየ፡፡ወተወክፈ፡ እግዚአብሔር፡
ጸሎትየ፡፡=ለይትኀፈሩ፡ወይኀሰሩ፡ኵሎሙ፡ 10
ጸላእትየ፡፡ለይግብኡ ፡ ድኅሬሆሙ፡ ወይትኀ
ፈሩ፡ፈድፋደ፡ወፍጡነ፡፡=፡

መዝሙር፡ዘደዊት፡ዘዘመረ፡ለእግዚአብሔር፡
በእንተ፡ነገረ፡ኩዝ፡ወልደ፡አሚናዳብ፡፡

፪ እግዚኦ፡አምላክየ፡ብከ፡ተወከልኩ፡ወኢት 1
ግድፈኒ፡፡ወአድኅነኒ፡እምኵሎሙ፡ እለ፡ ሮ
ዱኒ፡ወባልሐኒ፡፡=፡ ከመ፡ኢይምስጥዋ፡ከመ፡ 2
አንበሳ ፡ ለነፍስየ፡፡እንዘ፡ አልቦ ፡ ዘደድኅን፡
ወዘይባልሕ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [*f*] in templo sancto tuo [*g*] & quidem cor [*h*] Tanquã sepulchrũ [*i*] in consiliis suis malis: [*k*] fraudum eorũ *PSAL. VI.* [*a*] percutias me: [*b*] me, quoniã [*c*] vos omnes *PSAL. VII.* [∴] Aminadab [*a*] & ne abjicias me, sed salvum

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

6 * ولا يثبت مخالفوا وصاياك بين يديك * يا رب ابغضت جميع فاعلي الاثم * وابدت كل الناطقين 7
8 بالكذب * الرجل السافك الدماء * الغاش الرب يرذله * وانا بكثرة رحمتك ادخل بيتك * واسجد
9 في هيكل قدسك * مستشعرا خشيتك * اهدني يا رب بعدلك * ومن اجل اعداي سهل طريقي
10 امامك * فانه ليس في افواههم صدق * بل الاثم في قلوبهم * حناجرهم قبور مفتحة * والسنتهم
11 غاشة * دنهم يا الله * وليسقطوا من افكارهم * ومثل كثرة نفاقهم استاصلهم لانهم اسخطوك
12 يا رب * وليفرح بك جميع المتوكلين عليك * يسرون الى الابد * وفيهم تحل بركتك * ويفتخر بك
13 كل محبي اسمك * لانك باركت الصديق * وكمثل سلاح المسرة كللتنا *

1 * المزمور السادس لداود * تضرعا من اجل خطيته وهو * كا * اسيكوانه *

2 3 * يا رب لا تبكتني بغضبك * ولا تؤدبني بسخطك * ارحمني يا رب فاني ضعيف * اشفني يا رب
4 5 فان عظامي وهنت * ونفسي جزعت جدا * وانت يا رب حتى متى * تعطف علي ونج نفسي *
6 وخلصني من اجل رحمتك * فليس في الموتى من يذكرك * ولا في الجحيم من يشكرك *
7 8 * وتعبت في تنهدي * احم في كل ليلة سريري * وبدموعي ابل فراشي * ذبلت من السخط
9 عيناي * وتعتقت في جميع اعداي * ابعدوا عني يا جميع فاعلي الاثم * لان الرب قد سمع
10 11 صوت بكاي * الرب سمع تضرعي * الرب قبل صلاتي * يخزى ويقلق جدا جميع اعداي *
1 ويرتدون الى ورايهم * ويخزون جدا عاجلا * * المزمور السابع لداود
2 له * اسيكوانه * * توكلت عليك يا ربي والاهي خلصني * ومن ايدي
3 جميع الطاردين لي نجني * لئلا يخطفوا نفسي مثل الاسد * حيث لا منج ولا مخلص *

Et non consistent contradicentes præceptis tuis ante te. O Domine, odisti omnes operãtes iniquitatē. 6 *Et perdidisti omnes proferentes mendaciũ:* 7 *Virũ effundentem sanguinē, dolosum, Domin⁹ contemnit.* 8 *Et ego cum multitudine misericordiæ tuæ ingrediar domũ tuã, et adorabo in templo sanctitatis tuæ, sentiens timorem tuum.* 9 *Dirige me, O Domine mi, æquitate tuâ, & propter inimicos meos complana viã meã in conspectu tuo.* 10 *Quia non est in oribus eorum veritas, sed iniquitas in cordibus eorum. Guttura eorum sepulchra aperta, et linguæ eorum dolosæ: Judica eos, O Deus,* 11 *Et decidant à cogitationibus suis, & secundùm multitudinem impietatis eorum eradica eos: quoniam ad indignationem concitârunt te, O Domine.* 12 *Et lætentur in te omnes confidentes in te: exultabunt in æternũ, & in eis habitabit benedictio tua, & gloriabuntur in te omnes amantes nomen tuum;* 13 *Quia tu benedixisti justo, Et veluti arma lætitiæ coronâsti nos.*

1 *PSAL. VI.* *Davidis.*
In supplicationem pro peccato
suo. Vers. 21.

O Domine mi, ne reprehendas me in ira tua, neque erudias me in furore tuo. 2 *Miserere mei, O Domine mi, quia infirmus sum: sana me, O Domine mi, quoniam ossa mea elanguerunt.* 3 *Et anima mea contristata est valdé: & tu, O Domine mi, usquequó?* 4 *Propitiare mihi & libera animam meam, & salva me ob misericordiam tuam.* 5 *Non enim est in morte qui recordetur tui, neque in inferis qui tibi gratias agat.* 6 *Et laboravi in suspirio meo: lavo singulis noctibus stratum me, & lachrymis meis madefacio lectũ meum.* 7 *Languerunt propter indignationem oculi mei, & inveteratus sum inter omnes inimicos meos.* 8 *Recedite à me omnes operantes iniquitatem, quia Dominus jam audivit vocem fletûs mei:* 9 *Dominus audivit supplicationem meã: Dominus acceptavit orationem meã.* 10 *Confundantur, et conturbentur vehementer omnes inimici mei, et convertantur retrò, et erubescant valdè velociter.* 11

1 *PSAL. VII.* *Vers. 35.*

COnfisus sum in te, O Domine mi & Deus meus: libera me, & è manibus omnium persequentium me, redime me. 2 *Ne rapiant animam meam veluti leo, dum non est redemptor, neque salvator.* 3

תהלים : ח

retribui Si .meis volis in iniquitas est si ,istud feci si meus Deus Domine
4 יְהוָה אֱלֹהַי אִם עָשִׂיתִי זֹאת אִם־יֶשׁ־עָוֶל בְּכַפָּי׃ אִם־גָּמַלְתִּי 5
,meâ animam inimicus Persequatur .inaniter meũ angustiatorẽ erui & ,malum meo pacifico
6 שֹׁלְמִי רָע וָאֲחַלְּצָה צוֹרְרִי רֵיקָם׃ יִרַדֹּף אוֹיֵב נַפְשִׁי
,habitare faciat pulverem in meâ gloriã &,meas vitas terra in conculcet &,comprehẽdat &
וְיַשֵּׂג וְיִרְמֹס לָאָרֶץ חַיָּי וּכְבוֹדִי לֶעָפָר יַשְׁכֵּן
: meorũ hostiũ indignationes propter te eleva , tuo naso in Domine Surge .Selah
7 סֶלָה׃ קוּמָה יְהוָה בְּאַפֶּךָ הִנָּשֵׂא בְּעַבְרוֹת צוֹרְרָי
eum super & : te circundabit populorum cœtus Et .præcepisti judicium ,me ad te suscita &
8 וְעוּרָה אֵלַי מִשְׁפָּט צִוִּיתָ׃ וַעֲדַת לְאֻמִּים תְּסוֹבְבֶךָּ וְעָלֶיהָ
,meã justitiã scdm Dñe me judica :populos judicabit Dominꝰ .revertere altitudinẽ in
9 לַמָּרוֹם שׁוּבָה׃ יְהוָה יָדִין עַמִּים שָׁפְטֵנִי יְהוָה כְּצִדְקִי
justus ,stabilies & ,impios malum nunc Consumet .me super meam perfectionẽ scdm &
10 וּכְתֻמִּי עָלָי׃ יִגְמָר־נָא רַע רְשָׁעִים וּתְכוֹנֵן צַדִּיק
servantem , Deum super meus Clypeus .justus Deus renes & , corda probans &
11 וּבֹחֵן לִבּוֹת וּכְלָיוֹת אֱלֹהִים צַדִּיק׃ מָגִנִּי עַל־אֱלֹהִים מוֹשִׁיעַ
non Si .die omni in indignans Deus & ,justus judex Deus .corde rectos
12 13 יִשְׁרֵי־לֵב׃ אֱלֹהִים שׁוֹפֵט צַדִּיק וְאֵל זֹעֵם בְּכָל־יוֹם׃ אִם־לֹא
fecit parare ei Et .illã paravit & ,tetendit suum arcum:acuet suũ gladiũ,fuerit conversus
14 יָשׁוּב חַרְבּוֹ יִלְטוֹשׁ קַשְׁתּוֹ דָרַךְ וַיְכוֹנְנֶהָ׃ וְלוֹ הֵכִין
,laborem cõcepit &,iniquitatẽ parturiet Ecce .operabitur ardentes in,suas sagittas:mortis vasa
15 כְּלֵי־מָוֶת חִצָּיו לְדֹלְקִים יִפְעָל׃ הִנֵּה יְחַבֶּל־אָוֶן וְהָרָה עָמָל
.operabitur foveam in cadet &:eam effodit & ,excidit Cisternam .mendacium peperit &
16 וְיָלַד שָׁקֶר׃ בּוֹר כָּרָה וַיַּחְפְּרֵהוּ וַיִּפֹּל בְּשַׁחַת יִפְעָל׃
Confitebor.descendet ejꝰ violentia,ejꝰ verticẽ super &:ejꝰ caput in ejꝰ labor Convertetur
17 18 יָשׁוּב עֲמָלוֹ בְרֹאשׁוֹ וְעַל קָדְקֳדוֹ חֲמָסוֹ יֵרֵד׃ אוֹדֶה
.altissimi Domini nomini psallam & : ejus justitiam secundùm Domino
יְהוָה כְּצִדְקוֹ וַאֲזַמְּרָה שֵׁם־יְהוָה עֶלְיוֹן׃

PSAL. VIII. ח

illustre quàm ,noster Domine Domine .David canticum Hagithith super Vincenti
1 2 לַמְנַצֵּחַ עַל־הַגִּתִּית מִזְמוֹר לְדָוִד׃ יְהוָה אֲדֹנֵינוּ מָה־אַדִּיר
ore Ex .cœlos super tuam laudem des quòd ; terra universa in tuum nomen
3 שִׁמְךָ בְּכָל־הָאָרֶץ אֲשֶׁר תְּנָה הוֹדְךָ עַל־הַשָּׁמָיִם׃ מִפִּי
faciendũ cessare ad:tuos angustiatores propter fortitudinẽ fundâsti sugentium &,parvulorum
עוֹלְלִים וְיֹנְקִים יִסַּדְתָּ עֹז לְמַעַן צוֹרְרֶיךָ לְהַשְׁבִּית
: tuorum digitorum opus ,tuos cœlos videbo Quoniam .se ulciscentem & , inimicum
4 אוֹיֵב וּמִתְנַקֵּם׃ כִּי־אֶרְאֶה שָׁמֶיךָ מַעֲשֵׂה אֶצְבְּעֹתֶיךָ
filius & : ejus recorderis quòd ,homo Quid .præparasti quas stellas & , lunam
5 יָרֵחַ וְכוֹכָבִים אֲשֶׁר כּוֹנָנְתָּה׃ מָה־אֱנוֹשׁ כִּי־תִזְכְּרֶנּוּ וּבֶן־
,gloria & : Deo à paululum eum facies deficere Et ? eum visites quòd , hominis
6 אָדָם כִּי תִפְקְדֶנּוּ׃ וַתְּחַסְּרֵהוּ מְּעַט מֵאֱלֹהִים וְכָבוֹד
omnia:tuarum manuum operibus in eum facies Dominari .eum redimiturus es decore &
7 וְהָדָר תְּעַטְּרֵהוּ׃ תַּמְשִׁילֵהוּ בְּמַעֲשֵׂי יָדֶיךָ כֹּל
animalia etiam & : ipsa universa armenta & , Pecus .ejus pedibus sub posuisti
8 שַׁתָּה תַחַת־רַגְלָיו׃ צֹנֶה וַאֲלָפִים כֻּלָּם וְגַם בַּהֲמוֹת
Domine .marium semitas transeuntem : maris pisces & ,cœlorum Volatile .campi
9 10 שָׂדָי׃ צִפּוֹר שָׁמַיִם וּדְגֵי הַיָּם עֹבֵר אָרְחוֹת יַמִּים׃ יְהוָה
! terra universa in tuum nomen illustre quàm ,noster Domine
אֲדֹנֵינוּ מָה־אַדִּיר שִׁמְךָ בְּכָל־הָאָרֶץ׃

תרגום TARGUM.

4 יי אלהי אין עבדית שירתא הדא בכונתא בישא
5 אין אית טלומא בידי׃ אין פרעית לבעל שלמי
6 ביש ודחקית מעיקי מגן׃ יהי רדיף בעל דבבא
נפשי וידבק ויכבוש לארעא חיי ויקרי לעפרא
7 ישרי לעלמין׃ קום יי בתוקפך אתנטל ברוגזא
8 על מעיקי וסרהיב לי דינא די פקדתא׃ וכנישת
אמיא תחזרנך ואמטלתהא לבי שכנתך תוב׃
9 מימרא דיי ידין עממיא דון יתי יי כזכותי
10 וכשלמותי פרע עלי׃ ישתיצי כען בישא דרשיעי
וישתכללון צדיקי ובחן לבבי וכלין אלהא
11 12 זכאה׃ תריסי על אלהא פריק תריצי לבא׃ אלהא
דינא זכאה ובתקוף רגיז על רשיעי כל יומא׃
13 אם לא יתוב לדחלתיה סיפיה שחיז קשתיה
14 מתיחא וסדירא׃ ומטולתיה תקין זיני מותא
15 גירוי לדלקי צדיקיא יעביד׃ הא יצטער לשקר
16 ויעדי עמלא ויליד שקרא׃ שוח חפר וגמציה
17 ונפל בשוחתא די עבד׃ יתוב לעותיה ברישיה
18 ועל מוקדיה חטופיה יחות׃ אשבח יי כצדקתיה
ואשבח שום אלהא עלאה׃

ח

1 לשבחא על כנורא דאיתי מגת תושבחתא
2 לדוד׃ יי אלהא רבוננא כמה תליל שמך ומשבח
3 בכולא ארעא דיהבתא זיוך עיל מן שמיא׃ מפום
עולמיא ויונקיא אשתתסתא עושנא מן בגלל
4 מעיקך לבטלא בעיל דבבא וגוומא׃ מטול
דאחמי שמיך עובדי אצבעתך סיהרא
5 וכוכביא די אתקינתא׃ מה בר נשא
מטול תדכר עובדוי ובר נשא מטול
6 תסער עלוי׃ וחסרתא יתיה קליל
ממלאכיא ואיקרא ושבהורא תכללניה׃
7 אשלטתיה בעובדי ידך כולא שויתא
8 תחות רגלוי׃ ען ותורי כולהון ולחוד
9 בעירי חקלא׃ צפרי שמיא ונוני ימא ולויתן
10 דחליף אסרטיימא׃ יי אלהא רבוננא כמה
תליל ומשבח שמך בכולא ארעא׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Domine Deus meus ſi feci *carmen* iſtud 4
cum intentione mala, ſi eſt iniquitas in
manibus meis : Si reddidi auctori pacis 5
meæ malum, & afflixi eos qui me ange-
bant fruſtrà : Perſequatur auctor inimi- 6
citiæ animam meam & apprehendat, &
proſternat ad terram vitam meam, &
gloriam meam in pulverem ponat in
perpetuum. Surge Domine in fortitudi- 7
ne tua, elevare in furore ſuper oppreſ-
ſores meos, & accelera mihi judicium
quod mandâſti. Et congregatio genti- 8
um circundabit te, & propter eam ad
domum majeſtatis tuæ revertere. Ver- 9
bum Domini judicabit populos : judi-
ca me Domine ſecundùm meritum me-
um, & ſecundùm perfectionem meam
perſolve mihi. Deſtruatur nunc mali- 10
tia impiorum, & confirmentur juſti :
ſcrutatur verò corda & renes Deus
juſtus. Clypeus meus in Deo qui redi- 11
mit rectos corde. Deus judex juſtus, & 12
in fortitudine iraſcitur adverſus impios
tota die. Si non revertatur ad timorem 13
ejus, gladium ſuum acuit : arcus ejus
extentus & paratus. Et propter ipſum 14
paravit arma mortis : ſagittis ſuis in
perſecutores juſtorum operabitur. Ecce 15
enitetur falſitatem, & concipiet pravi-
tatem, & pariet mendacium. Foveam 16
fodit & effodit eam ; & cecidit in fo-
veam quam fecit. Recidet pravitas ejus 17
in caput ejus, & ſuper verticem ejus in-
quitas ejus deſcendet. Laudabo Domi- 18
num ſecundùm juſtitiam ejus, & lauda-
bo nomen Dei altiſſimi.

Ad canendum ſuper citharam, *quam* 1
attulit de Gath, canticum David.

PSAL. VIII.

DOmine *Deus* præceptor noſter, quàm 2
excelſum eſt nomen tuum, & laudabile
in univerſa terrra, qui conſtituiſti ſplen-
dorem tuum ſupra cœlos. Ex ore infan- 3
tium & lactentium fundâſti fortitudinẽ
propter adverſarios tuos, ut deſtruas au-
ctorẽ inimicitiarũ & *minitantẽ*. Quo- 4
niã ſuſpiciã cœlos tuos, opera digitorũ
tuorum, lunam, & ſtellas quæ præparâſti.
Quid eſt filiꝰ hominis quoniã recordaris 5
operationũ ejꝰ ; & filiꝰ hominis, quoniã
viſitas eũ? Minuiſti autẽ eum minimo ab 6
angelis : gloria & ſplendore coronâſti
eũ. Dediſti ei poteſtatẽ in opera manuũ 7
tuarũ: omnia poſuiſti ſub pedibus ejus: 8
Oves & boves omnes, & inſuper beſtias
agri : Aves cœli, & piſces maris, *& Leviathan qui tranſit* vias maris. Domine *Deus* præ- 9
ceptor noſter, quàm excelſum & laudabile eſt nomen tuum in univerſa terra ! 10

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

4 5 * ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ ܐܢ ܥܒܕܬ ܗܕܐ: ܘܐܢ ܐܝܬ ܥܘܠܐ ܒܐܝܕܝ. * ܘܐܢ ܦܪܥܬ ܠܡܢ ܕܥܒܕ ܠܝ
6 ܒܝܫܬܐ: ܘܐܢ ܐܠܨܬ ܠܒܥܠܕܒܒܝ ܣܪܝܩܐܝܬ. * ܢܪܕܘܦ ܒܥܠܕܒܒܐ ܠܢܦܫܝ ܘܢܕܪܟܝܗ: ܘܢܕܘܫ
7 ܚܝܝ ܒܐܪܥܐ. ܘܐܝܩܪܝ ܒܥܦܪܐ ܢܫܪܐ: * ܩܘܡ ܡܪܝܐ ܒܪܘܓܙܟ. ܘܐܬܬܪܝܡ ܥܠ ܩܕܠ
8 ܕܒܥܠܕܒܒܝ: ܘܐܬܬܥܝܪ ܠܝ ܒܕܝܢܐ ܕܦܩܕܬ. * ܘܟܢܘܫܬܐ ܕܥܡܡܐ ܬܚܕܪܟ: ܘܡܛܠܬܗ ܠܪܘܡܐ
9 10 ܬܬܗܦܟ. * ܡܪܝܐ ܕܐܢ ܥܡܡܐ: ܕܘܢܝܢܝ ܡܪܝܐ ܐܝܟ ܙܕܝܩܘܬܝ ܘܐܝܟ ܬܡܝܡܘܬܝ. * ܢܫܬܡܠܐ
11 ܒܝܫܬܐ ܥܠ ܪܫܝܥܐ: ܘܬܬܪܘܨ ܠܙܕܝܩܐ. ܒܚܪ ܠܒܐ ܘܟܘܠܝܬܐ: ܐܠܗܐ ܙܕܝܩܐ * ܘܡܥܕܪܢܝ
12 ܐܠܗܐ ܕܦܪܩ ܠܬܪܝܨܝ ܠܒܐ: * ܐܠܗܐ ܕܝܢܐ ܕܩܘܫܬܐ. ܠܐ ܪܓܙ ܒܟܠ ܝܘܡ ܐܠܐ ܗܦܟ:
13 14 * ܣܦܣܪܗ ܚܠܦ ܩܫܬܗ ܡܬܚ. ܐܬܩܢ * ܘܛܝܒ ܠܗ ܡܐܢܐ ܕܪܘܓܙܐ: ܓܐܪܘܗܝ ܠܕܠܩܝܢ
15 16 ܥܒܕ. * ܡܛܠ ܕܚܒܠ ܥܘܠܐ ܘܒܛܢ ܥܡܠܐ ܘܝܠܕ ܫܘܩܪܐ: * ܓܘܒܐ ܚܦܪ ܘܥܡܩܗ ܘܢܦܠ
17 18 ܒܓܘܡܨܐ ܕܥܒܕ. * ܢܗܦܘܟ ܥܡܠܗ ܒܪܫܗ: ܘܥܠ ܩܕܩܕܗ ܥܘܠܗ ܢܚܘܬ. * ܐܘܕܐ
ܠܡܪܝܐ ܐܝܟ ܙܕܝܩܘܬܝ. ܘܐܙܡܪ ܠܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܡܪܝܡܐ. * ܫܠܡ ܡܙܡܘܪܐ ܕܫܒܥܐ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܢܒܝܘܬܐ ܕܫܘܒܚܐ ܕܐܘܫܥܢܐ ܕܥܬܝܕܝܢ ܛܠܝܐ ܘܥܠܝܡܐ ܠܡܪܝܐ. ܦܬܓܡܐ ܝܚ.
2 3 * ܡܪܝܐ ܡܪܢ. ܡܐ ܡܫܒܚ ܫܡܟ ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܕܝܗܒܬ ܬܫܒܘܚܬܟ ܥܠ ܫܡܝܐ: * ܡܢ
ܦܘܡܐ ܕܝܠܘܕܐ ܘܕܝܢܩܐ. ܐܬܩܢܬ ܬܫܒܘܚܬܐ: ܡܛܠ ܒܥܠܕܒܒܝܟ. ܕܢܒܛܠ ܒܥܠܕܒܒܐ
4 5 ܘܡܬܒܩܐܢܐ: * ܡܛܠ ܕܚܙܝܢ ܫܡܝܟ ܥܒܕܐ ܕܨܒܥܬܟ. ܣܗܪܐ ܘܟܘܟܒܐ ܕܐܬܩܢܬ: * ܡܢܘ
6 ܒܪܢܫܐ ܕܐܬܕܟܪܬܝܗܝ. ܘܒܪܗ ܕܓܒܪܐ ܕܣܥܪܬܝܗܝ: * ܒܨܪܬܝܗܝ ܩܠܝܠ ܡܢ ܡܠܐܟܐ. ܒܐܝܩܪܐ
7 ܘܒܫܘܒܚܐ ܟܠܠܬܝܗܝ: * ܘܐܫܠܛܬܝܗܝ ܒܥܒܕܐ ܕܐܝܕܝܟ. ܘܟܠ ܫܥܒܕܬ ܬܚܝܬ
8 9 ܪܓܠܘܗܝ: * ܥܢܐ ܘܬܘܪܐ ܟܠܗܘܢ. ܐܦ ܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ * ܘܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ: ܘܢܘܢܐ ܕܝܡܐ
10 ܕܥܒܪܝܢ ܒܫܒܝܠܐ ܕܝܡܡܐ. * ܡܪܝܐ ܡܪܢ. ܡܐ ܡܫܒܚ ܫܡܟ ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ.

Domine Deus meus, ſi perpetravi hoc, et ſi eſt 4
iniquitas in manibꝰ meis. Et ſi rependi ei qui 5
intulit mihi malum, ſiq; oppreſſi adverſarios
meos abſque cauſa: Perſequatur hoſtis animã 6
meam, & aſſequatur illam, & conculcet vitam
meã in terrã, & gloriã meam in pulvere ha-
bitare faciat. Exurge, Dñe, in ira tua, & ex- 7
altare ſuper cervicem hoſtium meorum. In-
vigila mihi in judicio quod præcepiſti. Et 8
cœtus populorum circundabit te, & propter
ipſum in altum revertêris. Dominus judica- 9
bit gentes : judica me, Dñe ſecundùm juſtitiã
meam, & ſecundùm innocentiã meam. Com- 10
pleatur malitia adverſùs impios, & diriges
juſtos, ſcrutans cor & renes, Deus juſte, Auxi- 11
liator meus Deus qui ſalvas rectos corde. De- 12
us judex juſtitiæ, non iraſcitur ſingulis diebꝰ,
ſed convertitur. Gladiũ ſuum expolit, & ar- 13
cum ſuum tendit: inſtruxit, Et paravit ſibi va- 14
ſa furoris, ſagittas ſuas fecit iis qui ardent.
Quoniam parturiit iniquus & concepit ſce- 15
lus, ac genuit dolum : Puteum effodit & ex- 16
cavavit eum, & incidit in foveam quam fecit.
Recidet iniquitas ejus in caput ipſius, & ſu-
per verticem ejus iniquitas recumbet. Con- 17
fitebor Domino ſecundùm juſtitiam meam,
& pſallam nomini Domini altiſſimi.

PSAL. VIII. *Davidis. Prophetia* 1
quòd laudẽ Oſannis dicturi eſſent infantes, &
pueri, atque adoleſcentes Domino. Verſ. 18.

O Domine Dñs noſter, quàm glorioſum eſt 2
nomen tuum in univerſa terra, ut dede-
ris laudem tuam ſuper cœlum ? Ex ore juve- 3
num, & puerorum confirmâſti gloriam tuam
propter inimicos tuos, ut aboleatur hoſtis
vindictã ſumens. Quoniam viderunt cœlos 4
tuos opus digitorũ tuorũ, lunã & ſtellas quas
tu parâſti ? Quis eſt vir, ut memoriã ejꝰ habu- 5
eris, & filiꝰ hominis ut eum inviſeris ? Minu- 6
iſti eum paulò minꝰ ab angelis, honore & glo-
riã cinxiſti eum, Et præfeciſti eum operi ma- 7
nuũ tuarũ, & omnia poſuiſti ſub pedibꝰ ejus:
Oves & armenta univerſa, etiã beſtiã deſerti, 8
Et volucres cœli, & piſces maris qui tranſeũt 9
per ſemitam marium. Dñe Dñs noſter, quàm 10
glorioſum eſt nomen tuum in univerſa terra ?

Verſio VULG. LAT.

4 Domine Deus meus,ſi feci iſtud,ſi eſt iniquitas
5 in manibꝰ meis : Si reddidi retribuentibꝰ
mihi mala, decidam meritò ab
6 inimicis meis inanis: Perſequatur inimicus
animã meã,& comprehendat,et conculcet
in terra vitam meã,& gloriã meã
7 in pulverem deducat. Exurge, Domine,
in irâ tuâ: & exaltare in finibus inimicorum
meorũ. Et exurge,Domine Deꝰ meꝰ,
8 in præcepto quod mandâſti : Et ſynagoga
populorũ circundabit te. Et propter
9 hanc in altũ regredere: Dñs judicat populos.
Judica me, Domine, ſecundùm
juſtitiã meam,& ſecundùm innocentiam
10 meam ſuper me. Conſumetur nequitia
peccatorũ, & diriges juſtũ, ſcrutans corda
11 & renes Deus. Juſtum adjutoriũ meũ
à Domino, qui ſalvos facit rectos corde.
12 Deus judex juſtꝰ, fortis,& patiens,numquid
13 iraſcitur per ſingulos dies? Niſi
converſi fueritis, gladium ſuum vibrabit
: arcum ſuum tetendit, & paravit
14 illum. Et in eo paravit vaſa mortis, ſagittas
15 ſuas ardentibus effecit. Ecce
parturiit injuſtitiam: concepit dolorem,
16 & peperit iniquitatem. Lacum aperuit,
& effodit eum: & incidit in foveam,quã
17 fecit. Convertetur dolor ejus in caput ejus:
& in verticem ipſius iniquitas ejus
18 deſcendet.Confitebor Dño ſecundùm juſtitiã
ejꝰ: & pſallã nomini Dñi altiſſimi.

1 In finem pro torcularibus, Pſalmus
David. VIII.

2 DOmine Dominus noſter, quàm admirabile
eſt nomen tuum in univerſa
terra! Quoniam elevata eſt magnificentia
3 tua ſuper cœlos. Ex ore infantiũ
& lactentium perfeciſti laudem propter
inimicos tuos, ut deſtruas inimicum &
4 ultorem. Quoniam videbo cœlos tuos,
opera digitorum tuorum: lunam & ſtellas,
5 quæ tu fundâſti. Quid eſt homo,quòd
memor es ejus?aut filius hominis,quoniã
6 viſitas eum? Minuiſti eum paulò minùs
ab angelis, gloriâ & honore coronâſti
7 eum:Et conſtituiſti eum ſuper opera manuum
8 tuarum. Omnia ſubjeciſti ſub pedibus
ejus, oves & boves univerſas, inſuper
9 & pecora campi; Volucres cœli,&
piſces maris, qui perambulant ſemitas
10 maris. Domine Dñs noſter, quàm admirabile
eſt nomen tuum in univerſa terra!

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

4 † Κύριε ὁ θεός μου εἰ ἐποίησα τοῦτο, † εἰ ἔστιν ἀδικία
5 ἐν χερσί μου, † Εἰ ἀνταπέδωκα τοῖς
ἀνταποδιδοῦσί μοι κακά, † ἀποπέσοιμι ἄρα ἀπὸ
6 τῶν ἐχθρῶν μου κενός· † Καταδιώξαι ἄρα ὁ ἐχθρὸς τὴν
ψυχήν μου καὶ καταλάβοι, † καὶ καταπατήσαι εἰς γῆν
τὴν ζωήν μου, † καὶ τὴν δόξαν μου εἰς χοῦν κατασκηνώσαι.
7 ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Ἀνάστηθι κύριε ἐν ὀργῇ
σου, † ὑψώθητι ἐν τοῖς πέρασι τῶν ἐχθρῶν μου· † (α)
ἐξεγέρθητι κύριε ὁ θεός μου ἐν προστάγματι ᾧ ἐνετείλω,
8 † Καὶ συναγωγὴ λαῶν κυκλώσει σε. † καὶ
9 ὑπὲρ ταύτης εἰς ὕψος ἐπίστρεψον. † Κύριος κρινεῖ
λαούς. † (β) κρῖνόν με κύριε κατὰ τὴν δικαιοσύνην μου,
10 † καὶ κατὰ τὴν ἀκακίαν μου ἐπ' ἐμοί. † Συντελεσθήτω
δὴ πονηρία ἁμαρτωλῶν, † καὶ κατευθυνεῖς δίκαιον,
11 † ἐτάζων καρδίας καὶ νεφροὺς ὁ θεός. † Δικαία ἡ
βοήθειά μου παρὰ τοῦ θεοῦ † τοῦ σώζοντος τοὺς εὐ-
12 θεῖς τῇ καρδίᾳ. † Ὁ θεὸς κριτὴς δίκαιος, καὶ
ἰσχυρὸς, καὶ μακρόθυμος, † μὴ ὀργὴν ἐπάγων καθ'
13 ἑκάστην ἡμέραν. † Ἐὰν μὴ ἐπιστραφῆτε, τὴν ῥομφαίαν
αὐτοῦ στιλβώσει, † τὸ τόξον αὐτοῦ ἐνέτεινε, καὶ
14 ἡτοίμασεν αὐτό. † Καὶ ἐν αὐτῷ ἡτοίμασε σκεύη
θανάτου, † τὰ βέλη αὐτοῦ τοῖς καιομένοις ἐξειργάσατο.
15 † Ἰδοὺ ὠδίνησεν ἀδικίαν, συνέλαβε πόνον,
16 καὶ ἔτεκεν ἀνομίαν. † Λάκκον ὤρυξε καὶ ἀνέσκαψεν
αὐτὸν, † καὶ ἐμπεσεῖται εἰς βόθρον ὃν εἰργάσατο.
17 † Ἐπιστρέψει ὁ πόνος αὐτοῦ εἰς κεφαλὴν αὐτοῦ,
† καὶ ἐπὶ κορυφὴν αὐτοῦ ἡ ἀδικία αὐτοῦ καταβήσεται.
18 † Ἐξομολογήσομαι (γ) κυρίῳ κατὰ τὴν δικαιοσύνην
αὐτοῦ, † (δ) ψαλῶ τῷ ὀνόματι κυρίου τοῦ ὑψίστου.

MS.A. (α) καὶ ἐξεγέρθητι (β) κρῖνόν μοι (γ) τῷ κυρίῳ (δ) καὶ ψαλῶ

1 Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῶν ληνῶν, ψαλμὸς τῷ
Δαυίδ. η'.

2 † Κύριε ὁ κύριος ἡμῶν, ὡς θαυμαστὸν τὸ ὄνομά
σου ἐν πάσῃ τῇ γῇ; † ὅτι ἐπήρθη ἡ μεγαλοπρέπειά
3 σου ὑπεράνω τῶν οὐρανῶν. † Ἐκ στόματος
νηπίων καὶ θηλαζόντων κατηρτίσω αἶνον· † ἕνεκα
τῶν ἐχθρῶν σου, † τοῦ καταλῦσαι ἐχθρὸν καὶ ἐκδικητήν.
4 † Ὅτι ὄψομαι τοὺς οὐρανοὺς ἔργα τῶν δακτύλων
σου, † σελήνην καὶ ἀστέρας, ἃ σὺ ἐθεμελίωσας·
5 † (α) Τί ἐστιν ἄνθρωπος, ὅτι μιμνήσκῃ αὐτοῦ;
6 † ἢ υἱὸς ἀνθρώπου, ὅτι ἐπισκέπτῃ αὐτόν; † Ἠλάττωσας
αὐτὸν βραχύ τι παρ' ἀγγέλους, † δόξῃ καὶ
7 τιμῇ ἐστεφάνωσας αὐτόν, † Καὶ κατέστησας αὐτὸν ἐπὶ
8 τὰ ἔργα τῶν χειρῶν σου. † Πάντα ὑπέταξας ὑποκάτω
τῶν ποδῶν αὐτοῦ, † πρόβατα καὶ βόας (β) πάσας,
9 † ἔτι δὲ καὶ τὰ κτήνη τοῦ πεδίου, † Τὰ πετεινὰ τοῦ οὐ-
10 ρανοῦ, καὶ τοὺς ἰχθύας τῆς θαλάσσης, † τὰ διαπορευόμενα τρίβους θαλασσῶν. † Κύριε ὁ κύριος
ἡμῶν, ὡς θαυμαστὸν (γ) ὄνομά σου ἐν πάσῃ τῇ γῇ; MS.A. (α) Τίς ἐστιν (β) ἁπάσας (γ) τὸ ὄνομα

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

3 Domine Deus meus, [b] ſi feci 4
iſtud, ſi eſt iniquitas in manibus
meis: 4 Si reddidi retribuentibus 5
mihi mala; [c] decidã (c) ergò ab
inimicis meis inanis: 5 Perſequatur 6
ergò inimicus animam meam,
& comprehendat: et conculcet in
terra vitam meam: & gloriam
meam in pulverem [d] deducat.
(d) DIAPSALMA. 6 Exurge, Domine, 7
in (e) ira tua: exaltare [e] in
finibus inimicorum (f) meorum.
7 Exurge, Domine Deꝰ meꝰ, in ( )
præcepto [f] quod mandâſti: Et 8
ſynagoga populorũ (h) circundabit
te. 8 Et propter (i) hanc in altum
regredere. Dominus (k) judicabit 9
populos. 9 Judica me, Domine,
ſecundùm juſtitiã [*] meã,
et ſecundũ (l) innocentiam meam
ſuper me. 10 Conſummetur (m) 10
nunc nequitia peccatorum: et (n)
diriges [g] juſtũ, (o) ſcrutans corda,
& renes, Deus. 11 [h] Juſtũ 11
adjutorium meum à Domino; qui
ſalvos facit rectos corde. 12 Deus 12
judex juſtus, & fortis, & longanimis,
(p) non [i] iram adducens
per ſingulos dies. 13 Niſi 13
converſi fueritis, gladium ſuum
(q) vibrabit: arcum [k] ſuum (r)
tetendit, & paravit illum. 14 Et 14
in eo paravit [l] vaſa mortis: ſagittas
ſuas (ſ) ardentibus operatus
eſt. 15 Ecce (t) parturivit injuſtitiam, 15
(u) concepit laborem, et
peperit (x) iniquitatem. 16 Lacum 16
[m] aperuit, & effodit eũ:
& (y) incidet in foveam, quam
fecit. 17 Convertetur labor ejus 17
in caput ejus: & in verticem ipſiꝰ
iniquitas ejus deſcendet. 18 Confitebor 18
Dño ſecundũ juſtitiã ejus:
& pſallam nomini Dñi altiſſimi.

In finem pro torcularibus, pſalmus 1
ipſi David. VIII.

DOmine Dominꝰ noſter, quã 2
(a) [a] admirabile eſt nomẽ
tuũ in univerſa terra! (b) Quoniam
elevata eſt magnificentia
[b] tua ſuper cœlos. 3 Ex (c) ore 3
infantium & lactentium [c] perfeciſti
laudem (d) propter inimicos
tuos; ut (e) deſtruas inimicum,
et ultorem. Quoniam [d] videbo 4
(f) cœlos; opera digitorum tuorũ,
lunam, & ſtellas, quæ (g [e] tu
fundâſti. 5 Quid eſt (h) homo, 5
quòd memor es ejus? aut [f] filius
hominis, quoniam viſitas eum?
Minuiſti eum (i) paulò minùs ab 6
angelis: gloriâ et honore coronâſti
eum. Et (k) conſtituiſti eum ſuper [g] opera manuum tuarum. 8 Omnia ſubjeciſti [h] ſub pedibus ejus: oves, & boves univerſas, inſuper & pecora (l) campi: Volucres [i] cœli, & piſces 7 8 9
mari, qui perambulant ſemitas maris. 10 Domine Dominus noſter, quàm [k] admirabile eſt nomen tuum in univerſa terra! 10

Verſio ÆTHIOPICA.

እግዚኦ ፡ አምላክየ ፡ እመሰ ፡ ከመዝ ፡ ገበር 3
ኩ፡፡ወእመኒቦ፡ ዐመፃ ፡ ውስተ፡ እደዊየ፡፡=፥
ወእመ፡ፈደይክዎሙ፡ለእለ፡ይፈድዩኒ፡እኩ 4
የ፡፡ለያውድቁኒ፡ጸላእትየ፡ዕሩቅየ፡፡=፥ ወይ 5
ደግና፡ ጸሩዊ፡ ለነፍስየ፡ ወይርከባ፡፡ወይኪደ፡
ውስተ፡ ምድር፡ለሕይወትየ፡፡ወያኅስር፡ውስ
ተ፡መሬት፡ለክብርየ፡፡=፥ ተንሥእ፡እግዚኦ፡ 6
በመዐትከ፡፡ ወተለዐለ ፡ መልዕልቶሙ ፡ ለጸላ
እትየ፡፡=፥ ተንሥእ፡ እግዚኦ፡ አምላክየ፡ 7
በሠርዓትከ ፡ ዘአዘዝከ፡፡ወማኅበረ፡ አሕዛ
ብኒ፡የአውደከ፡፡=፥ ወበእንተዝ፡ተመየጥ፡ 8
ውስተ ፡ አርያም፡፡እግዚአብሔር ፡ ይኴንኖ
ሙ፡ለአሕዛብ፡፡=፥ ፍታሕ፡ሊተ፡እግዚኦ፡ 9
በከመ፡ ጽድቅየ፡፡ወይኩንኒ፡ በከመ ፡ የዋሀት
የ፡፡=፥የኃልቅ፡እከዮሙ፡ለኃጥኣን፡፡ወታረትዕ 10
ዎሙ፡ ለጻድቃን፡፡ይፈትን ፡ ልበ፡ወኵልያተ፡
እግዚአብሔር፡፡=፥ አማን፡ይረድአኒ፡እግዚ 11
አብሔር፡፡ዘያድኅኖሙ፡ለርቱዓነ፡ልብ፡፡=፥
እግዚአብሔር፡መኰንን፡ጽድቅ፡ኃያል፡ ወመ 12
ስተዐግስ፡ወኢያመጽእ፡ መንሱተ፡ ኵሎ፡ አ
ሚረ፡፡=፥ወእመሰ፡ኢተመየጥክሙ፡ሰይፎ፡ይ 13
መልስሕ፡፡ቀስቶኒ፡ ወተረ፡ ወአስተያለዎ፡፡=፥
ወአስተደለወ፡ቦቱ፡ ሕምዘ፡ ዘይቀትል፡፡ወአ 14
ሕጻሁኒ፡አለ፡ይነዱ፡ገብረ፡፡=፥ ናሁ፡ሐመ፡ 15
በዐመፃ፡፡ወፀንሰ ፡ በጻዕር ፡ ወወለደ ፡ ኃጢአ
ተ፡፡=፥ ግበ፡ከረየ፡ወደሐየ፡፡ወይወድቅ፡ው 16
ስተ፡ግብ፡ዘገብረ፡፡=፥ ወይገብእ፡ጻማሁ፡ 17
ዲበ፡ ርእሱ፡፡ወትወርድ፡ዐመፃሁ፡ዲበ፡ድማ
ሁ፡፡=፥ እገኒ፡ ለእግዚአብሔር፡ በከመ፡ጽ 18
ድቁ፡፡ወእዜምር ፡ ለስመ ፡ እግዚአብሔር፡
ልዑል፡፡=፥

ፍጻሜ፡በእንተ፡መክብብት፡መዝሙር፡
ዘዳዊት፡፡

፰ እግዚኦ፡ እግዚእነ፡ ጥቀ ፡ ተሰብሐ፡ስም 1
ከ፡፡በኵሉ፡ምድር፡፡=፥ እስመ፡ተለዐለ፡ 2
ዕበየ፡ስብሐቲከ፡መልዕልተ፡ሰማያት፡፡=፥ እ 3
ምአፈ፡ ደቂቅ፡ ወሕፃናት፡ አስተደሎከ፡ ስብ
ሐተ፡፡በእንተ፡ ጸላኢ፡፡ከመ፡ ትንሥቶ፡ ለጸ
ላኢ፡ወለገፋኢ፡፡=፥ እስመ፡ንሬኢ፡ሰማያተ፡ 4
ግብረ፡ አጻብዒከ፡፡ወርኀ፡ ወከዋክብተ ፡ ዘለ
ሊከ፡ሣረርከ፡፡=፥ ምንትኑ፡ውእቱ፡ሰብእ፡ 5
ከመ፡ ትዝክሮ፡፡ወምንትኑ፡ እጓለ ፡ እምሕ
ያው፡ከመ፡ተሐውጾ፡፡=፥ ሕቀ፡አሕጸጽኮ፡እ 6
መላእክቲከ፡፡ክብረ፡ወሰብሐተ፡ ከለልኮ፡፡ወ
ሤምኮ፡ደበ፡ኵሉ፡ግብረ፡እደዊከ፡፡=፥ወኵ 7
ሎ፡አግረርከ፡ሎቱ፡ታሕተ፡እገሪሁ፡፡አባግዐ
ኒ፡ወኵሎ፡አልህምተ፡፡ወዓደ፡እንስሳ፡ ዘገደ
ም፡፡=፥ አዕዋፈ ፡ ሰማይኒ ፡ ወዓሣተ ፡ ባሕ 8
ር፡፡ወዘኒ ፡ የሐውር፡ ውስተ፡ ፡ ፍኖተ ፡ ባሕ 9
ር፡፡=፥ እግዚኦ፡እግዚእነ፡ ጥቀ ፡ ተሰብሐ፡
ስምከ፡በኵሉ፡ምድር፡፡=፥

INTERP. ÆTH. [b] ſi quidem ita feci, [c] decidam ab [d] deturpet. [e] ſupra inimicos meos. [f] tuo quod [*] tuam [g] juſtos, [h] Certè adjuvabit me Deus, qui [i] adducet tentationem quotidiè. [k] ſuum etiam [l] venenum lethale: [m] effodit & excavavit: & PSAL. VIII. [a] illuſtre [b] gloriæ tuæ [c] præparâſti laudem [d] videbimus cœlos, [e] tibimet ipſi fundâſti. [f] quid filius [g] omnia opera [h] ei ſub [i] etiam cœl. [k] celebre

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

4 5 * يا ربي والهي ان كنت فعلت رب هذا * ولابست يدي ظلما * وجازيت الذين صنعوا بي سرا *
6 اسقط اذن من اعداي خاويا * ويطلب عدوي نفسي فيدركها * ويطا في الارض حياتي * ويحل في
7 التراب مجدي * قم يا رب بغضبك وارتفع علي رقاب اعداي * قم يا رب والاهي للامر الذي
8 9 امرت به * وجميع الشعوب تجمع اليك * ولاجل هذا ترجع الي العلي * يا رب وتدين الشعوب *
10 احكم لي يا رب كمثل بري * وعلي كمثل دعتي * وليفن شر الخطاة ويقوم الصديق * الله العادل
11 12 فاحص القلوب والكلي * معونتي من عند الله حقا * وهو مخلص مستقيمي القلوب * الله
13 حاكم عدل * قوي طويل الاناة * لا يرسل غضبه في كل يوم * ان لم ترجعوا صقل سيفه * واوتر
14 15 قوسه واتقنها * واعد فيها الة الموت * وصنع سهامه للمحترقين * ان الاثم طلق وحبل وجعا *
16 17 وولد ظلما * وحفر بيرا واعمقها يسقط في الحفرة التي صنعها * ويرجع تعبه علي راسه * وعلي
18 هامته ينزل ظلمه * اشكر الرب علي عدله * وارتل اسم الرب العلي *

1 * المزمور الثامن لداود * بير * اسيكوبانه *

2 * ايها الرب ربنا ما اعجب اسمك في الارض كلها * لانه قد ارتفع عظيم بهايك علي السموات *
3 4 * من افواه الاطفال والرضعان هيات سبحا من اجل اعدايك * يضمحل العدو والمنتقم * لاني
5 رايت السموات صنع اناملك * والقمر والنجوم انت اتقنتها * من هو الانسان الذي ذكرته * وابن
6 7 الانسان الذي اصطفيته * نقصته يسيرا من الملايكة * بالمجد والكرامة حبيته * وعلي اعمال
8 9 يديك اقمته * وكلا اخضعت تحت قدميه * جميع الغنم والبقر وبهايم السهل * وطير السماء
10 وسمك البحر * السالكة في عمق البحر * ايها الرب ربنا ما اعجب اسمك في الارض كلها *

O Domine mi et Deus meus, ſi feci unquã 4
hoc, aut indui manus meas iniquitate, Et 5
retribui iis, qui fecerunt in me malum:
decidam quidem ab inimicis meis inanis.
Et quæret inimicus meus animam meam, 6
& comprehendet eam, & conculcabit in
terra vitam meam, atque habitabit in terra
gloria mea. Surge, O Domine, in ira 7
tua, eleva te ſuper colla inimicorum meorum.
Surge, O Domine mi & Deus meus,
ad mandatum, quod præcepiſti: Et 8
omnes populi congregabuntur ad te. Proptereà
redibis in altum, O Domine, & 9
judicabis populos. Adjudica mihi O Domine
mi, ſecundum innocentiam meam,
& adverſum me ſecundùm manſuetudinem
meam. Et finem aſſequatur malitia 10
peccatorum, & ſubſiſtat juſtus. Deus
æquus, ſcrutans corda & renes. Adjutorium 11
meum à conſpectu Dei certè, quum
ipſe ſit liberator rectorum cordibus. Deus 12
judex juſtiſſimus, fortis, longanimis:
haud mittens furorem ſuum ſingulis diebus.
Niſi converſi fueritis, levigavit 13
gladium ſuum, & tetendit arcum ſuum,
& firmavit eum, Et paravit in eo inſtrumentum 14
mortis, & fecit ſagittas ſuas
exuſtis. Sanè ſcelus parturiit, & concepit 15
dolorem, & peperit ſcelus: Et fodit 16
puteum, & profundum fecit eum: cadet
in foveam, quam fecit. Et recidet labor 17
ejus in caput ejus, et ſuper verticem ipſius
deſcendet ſcelus ejus. Gratias ago Domino 18
de ejus æquitate, & pſallo nomini Domini
altiſſimi.

PSAL. VIII. Davidis. 1
Verſ. 17.

O Domine, Dominus noſter, quàm admirabile 2
eſt nomen tuum in terra univerſa?
quoniam jam elevata eſt magnificentia
ſplendoris tui ſuper cœlos: Ab oribus 3
puerorum, & lactentium præparâſti laudẽ
propter inimicos tuos. Diſſolvatur inimicus,
& ultor; Quoniam vidi cœlos opus 4
digitorum tuorum, & lunam, atque
ſtellas tu firmâſti. Ecquis eſt homo, cujus 5
recordatus es? & filius hominis, quem
elegiſti? Minorâſti eum paululùm ab angelis, 6
gloriâ & honore decorâſti eum: Et 7
ſuper opera manuum tuarum conſtituiſti
eum, & omnia ſubjeciſti ſub pedibus ejus:
Omnes oves, & boves, & beſtias 8
planitiei, Et volucres cœli, et piſces maris 9
ambulantes in profundo maris. O Domine, 10
Dominus noſter, quàm admirabile eſt
nomen tuum in terra univerſa?

תהלים : ט י

PSAL. IX. ט

: meo corde toto in Dominum *Celebrabo* .David canticum Labben muth-Hal Victori
1 2 לַמְנַצֵּחַ עַל־מוּת לַבֵּן מִזְמוֹר לְדָוִד׃ אוֹדֶה יְהוָה בְּכָל־לִבִּי
tuum nomen canam : te in exultabo & . Lætabor .tua mirabilia omnia narrabo
3 אֲסַפְּרָה כָּל־נִפְלְאוֹתֶיךָ׃ אֶשְׂמְחָה וְאֶעֶלְצָה בָךְ אֲזַמְּרָה שִׁמְךָ
.*tuis faciebus à* peribunt & impingent : retrorſum *meos inimicos revertendo In* .altiſſime
4 עֶלְיוֹן׃ בְּשׁוּב־אוֹיְבַי אָחוֹר יִכָּשְׁלוּ וְיֹאבְדוּ מִפָּנֶיךָ׃
.juſtitiam *judicans* ſolio in ſediſti : meam cauſam &,meum judicium feciſti Quoniam
5 כִּי־עָשִׂיתָ מִשְׁפָּטִי וְדִינִי יָשַׁבְתָּ לְכִסֵּא שׁוֹפֵט צֶדֶק׃
.ſempiternum & ,ſeculum in deleſti eorum nomen :impium perdidiſti;gentes *Increpâſti*
6 גָּעַרְתָּ גוֹיִם אִבַּדְתָּ רָשָׁע שְׁמָם מָחִיתָ לְעוֹלָם וָעֶד׃
eorũ memoria periit:deſtruxiſti *civitates* &,*finem* in ſolitudines ſunt *conſummatæ* inimice O
7 הָאוֹיֵב תַּמּוּ חֳרָבוֹת לָנֶצַח וְעָרִים נָתַשְׁתָּ אָבַד זִכְרָם
Ipſe Et .ſuum ſolium judicium ad paravit :.*ſedebit* ſeculum in Dominus Et .ipſis
8 9 הֵמָּה׃ וַיהוָה לְעוֹלָם יֵשֵׁב כּוֹנֵן לַמִּשְׁפָּט כִּסְאוֹ׃ וְהוּא
exaltatio Dominꝰ erit Et .*rectitudinibus in populis dicet jus* :juſtitia in orbem judicabit
10 יִשְׁפֹּט־תֵּבֵל בְּצֶדֶק יָדִין לְאֻמִּים בְּמֵישָׁרִים׃ וִיהִי יְהוָה מִשְׂגָּב
quia :tuum nomen ſcientes te in ſperabunt Et .anguſtia in temporibus exaltatio : *tenui*
11 לַדָּךְ מִשְׂגָּב לְעִתּוֹת בַּצָּרָה׃ וְיִבְטְחוּ בְךָ יוֹדְעֵי שְׁמֶךָ כִּי
annunciate : Sijon *habitanti* Domino Cantate .Domine te quærentes dereliquiſti non
12 לֹא־עָזַבְתָּ דֹרְשֶׁיךָ יְהוָה׃ זַמְּרוּ לַיהוָה יֹשֵׁב צִיּוֹן הַגִּידוּ
eſt oblitus non:eſt recordatꝰ *eorũ ſanguines* quærens Quoniam .ejus *ſtudia* populis in
13 בָעַמִּים עֲלִילוֹתָיו׃ כִּי־דֹרֵשׁ דָּמִים אוֹתָם זָכָר לֹא־שָׁכַח
me *exaltans,me odientibus ab* meã afflictionẽ vide,Domine mei Miſerere.*afflictorum* clamoris
14 צַעֲקַת עֲנָיִים׃ חָנְנֵנִי יְהוָה רְאֵה עָנְיִי מִשֹּׂנְאָי מְרוֹמְמִי
:Sijon filiæ portis in tuas laudes omnes narrem Ut .mortis portis de
15 מִשַּׁעֲרֵי מָוֶת׃ לְמַעַן אֲסַפְּרָה כָּל־תְּהִלָּתֶיךָ בְּשַׁעֲרֵי בַת־צִיּוֹן
quod reti in : fecerunt foveam in gentes ſunt Demerſæ .tua ſalute in exultabo
16 אָגִילָה בִּישׁוּעָתֶךָ׃ טָבְעוּ גוֹיִם בְּשַׁחַת עָשׂוּ בְּרֶשֶׁת זוּ
opere in ,fecit judicium , Dominus eſt Notus .eorum pes eſt captus,abſconderunt
17 טָמָנוּ נִלְכְּדָה רַגְלָם׃ נוֹדַע יְהוָה מִשְׁפָּט עָשָׂה בְּפֹעַל
:ſepulchrum ad impii Revertantur .*Sela* meditatio:impius eſt illaqueatꝰ ſuarũ *volarũ*
18 כַּפָּיו נוֹקֵשׁ רָשָׁע הִגָּיוֹן סֶלָה׃ יָשׁוּבוּ רְשָׁעִים לִשְׁאוֹלָה
expectatio:*egenus erit oblivioni æternũ* in non Quoniam .Dei *immemores* gentes omnes
19 כָּל־גּוֹיִם שְׁכֵחֵי אֱלֹהִים׃ כִּי לֹא לָנֶצַח יִשָּׁכַח אֶבְיוֹן תִּקְוַת
judicentur : homo roboretur non Domine Surge .*perpetuum* in peribit pauperum
20 עֲנִיִּים תֹּאבַד לָעַד׃ קוּמָה יְהוָה אַל־יָעֹז אֱנוֹשׁ יִשָּׁפְטוּ
homines gentes ſciant ,eis timorem Domine Pone .*tuæ facies ſuper* gentes
21 גוֹיִם עַל־פָּנֶיךָ׃ שִׁיתָה יְהוָה מוֹרָה לָהֶם יֵדְעוּ גוֹיִם אֱנוֹשׁ
.Selah , *ipſi*
הֵמָּה סֶּלָה׃

PSAL. X. י

ſuperbia In ?anguſtia in *tempora ad* te abſcondes : longinquo in *ſtabis* Domine quid Ut
1 2 לָמָה יְהוָה תַּעֲמֹד בְּרָחוֹק תַּעְלִים לְעִתּוֹת בַּצָּרָה׃ בְּגַאֲוַת
.cogitaverunt quas cogitationibus in capiantur:*afflictum inſequetur impius*
רָשָׁע יִדְלַק עָנִי יִתָּפְשׂוּ בִּמְזִמּוֹת־זוּ חָשָׁבוּ׃

תרגום TARGUM.

ט
1 לְשַׁבָּחָא עַל מִיתוּתָא דְגַבְרָא דִי נְפַק מִבֵּינֵי
2 מַשְׁרְיָתָא תּוּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד׃ אֲשַׁבַּח קֳדָם יְיָ בְּכָל
3 לִבִּי אֶשְׁתָּעֵי כּוּלְהוֹן פְּרִישׁוָתָךְ׃ אֶחְדֵי וְאֶבְדַח
4 בְּמֵימְרָךְ אֲשַׁבַּח שְׁמָךְ עִלָּאָה׃ כַּד יְתוּב בְּעֵל דְבָבִי
5 לַאֲחוֹרָא יִתְקְלוּן וִיהוֹבְדוּן מִן קֳדָמָךְ׃ מְטוּל
דַעֲבַדְתָּא פּוּרְעָנוּתִי וְדִינִי יְתַבְתָּא עַל כּוּרְסֵי דַיָּנָא
6 זַכָּאָה׃ נְזַפְתָּא עַמְמֵי דִפְלִשְׁתָּאֵי הוֹבַדְתָּא גָלְיַת
7 רַשִׁיעָא שׁוּמְהוֹן מְחִיתָא לְעָלְמֵי עָלְמִין׃ וְכַד נְפַל
בְּעֵל דְבָבָא אִשְׁתֵּיצִיו חֵילְוָתֵיהּ וּכְרַכֵּיהוֹן אִצְתַּדִיו
לְעָלְמָא וְקִרְוֵיהוֹן צְדִיתָא הוֹבַדְתָּא דָכְרָנְהוֹן
8 מִנְהוֹן׃ וּמֵימְרָא דַיְיָ לְעָלְמִין מוֹתְבֵיהּ בִּשְׁמֵיָּה
9 מְרוֹמָא תַּקִּין לְדִינָא כּוּרְסֵיהּ׃ וְהוּא יְדִין עַמָּא
10 דְאַרְעָא בִּזְכוּתָא יְדִין עַמְמַיָּא בִּתְרִיצוּתָא׃ וִיהֵי
מֵימְרָא דַיְיָ תְּקוֹף לְמִסְכְּנָא תְּקוֹף בְּעִדָּנֵי עָקְתָא׃
11 וְיִסְתַּכְּלוּן בִּסְבָרוּתָךְ יָדְעֵי שְׁמָךְ מְטוּל דְלָא
12 שְׁבַקְתָּא תָבְעָיךְ יְיָ׃ שַׁבַּחוּ קֳדָם יְיָ דְאַשְׁרֵי
13 שְׁכִנְתֵּיהּ בְּצִיּוֹן תַּנִּיאוּ בְעַמְמַיָּא עוּבָדוֹי׃ מְטוּל
דְתָבֵיעַ דְמָא דְזַכָּאָה יַת צַדִּיקַיָּא דְכִיר וְלָא שְׁלֵי
14 קְבֵלַת עִנְוְתָנִין׃ חוּס עֲלַי יְיָ חֲמִי סִגּוּפִי מִבַּעֲלֵי
15 דְבָבִי מְרוֹמֵם לִי מִמַּעֲלָנֵי מוֹתָא׃ מִן בִּגְלַל
דְאֶשְׁתָּעֵי לְכוּלְהוֹן שִׁבְחָתָךְ בְּמַעֲלָנֵי תַרְעֵי
16 כְּנִישַׁת צִיּוֹן אֲרוּץ בְּפוּרְקָנָךְ׃ טְבַעוּ עַמְמַיָּא
בְּשׁוּחֲתָא דַעֲבַדוּ בִּמְצַדְתָּא דְנָא כְּמַנוּ אִתְאֲחַדַת
17 רִגְלֵיהוֹן׃ גְּלֵי קֳדָם יְיָ דִין דַעֲבַד בְּעוֹבָדֵי אִידוֹי
18 אִתְּקַל רַשִׁיעָא יְרַנְּנוּן צַדִּיקַיָּא לְעָלְמִין׃ יְתוּבוּן
רַשִׁיעֵי לִשְׁיוֹל כּוּלְהוֹן עַמְמַיָּא דְאַשְׁלִיו דַחַלְתָּא
19 דַיְיָ׃ מְטוּל דְלָא לְעָלְמַיָּא מִשְׁתְּלֵי חֲשׁוֹכָא סוֹבְרָא
20 דְעִנְוְתָנֵי לָא תְהוֹבֵד לְעָלְמָא׃ קוּם יְיָ לָא יִתְעַשַּׁן
21 בַּר נָשָׁא רַשִׁיעָא יִתְדָּנוּן עַמְמַיָּא קֳדָמָךְ׃ שַׁוִּי יְיָ
דַחַלְתָּא לְהוֹן יִנְדְּעוּן עַמְמַיָּא דְבַר נָשׁ הִנּוּן
לְעָלְמִין׃

י
1 לְמָה יְיָ תְּקוּם בְּרָחִיק תִּטַּמַּר בִּמְדוֹר קַדִּישִׁין
2 לְעִדָּנֵי עָקְתָא׃ בְּגַסּוּת רַשִׁיעָא יִדְלַק עַנְיָא
יִתְאַחְדוּן בְּנִכְלוּתָא דְנָא דִי חֲשַׁבוּ לְמֶעְבַּד׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Ad canendum ſuper mortem *viri qui exiirat de-inter caſtra*, canticum Davidis. 1

PSAL. IX.

LAudabo coram Domino in toto corde meo: narrabo omnia mirabilia tua. 2 Gaudebo & lætabor in verbo tuo: laudabo nomen tuũ altiſſimum. 3 Quando revertetur auctor inimicitiæ meæ retrorſum, ceſpitabunt & peribunt à conſpectu tuo. 4 Quoniã feciſti ultionem mei & judicium meũ: ſediſti ſuper ſedẽ judex juſtꝰ. 5 Increpâſti populos *Paleſtinorũ*, perdidiſti *Goliath* impiũ: *nomen* eorum deleviſti in ſecula ſeculorũ. 6 Dum caderet auctor inimicitiæ, deſtructi ſunt *exercitus ejus*, & arces eorum ſunt dirutæ in ſempiternum, & civitates eorũ *devaſtâſti*: deleviſti memoriã eorum ab illis. 7 Verbum autem Dñi in ſecula; habitatio ejus in cœlis altiſſimis; 8 direxit ad judiciũ ſedem ſuam. Et ipſe judicabit *populum terræ* in juſtitia: judicabit populos in æquitate. 9 Et erit verbum Dñi fortitudo miſero, fortitudo in temporibꝰ anguſtiæ. 10 Et *reſpicient* in *fiduciam tuam* ſcientes nomen tuũ, quoniam non dereliquiſti quærentes te Dñe. 11 Laudate coram Dño qui poſuit majeſtatẽ ſuã in Sion, annunciate in populis opera ejꝰ. 12 Quoniam requirens ſanguinem *mundi*, juſtorum recordatꝰ eſt: nec oblitꝰ eſt clamoris humilium. 13 Miſerere mei Dñe: vide afflictionem meam ex hoſtibꝰ meis: attolle me ab introitibus mortis. 14 Hujus gratia narrabo *omnes laudes tuas* in ingreſſibꝰ portarum eccleſiæ Sion: lætabor in redemptione tua. 15 Demerſi ſunt populi in foveã quam fecerunt: in rete hoc quo inſidiabantur captus eſt pes eorum. 16 Manifeſtum eſt coram Dño judicium quod fecit; in operibꝰ manuum ſuarum impegit improbꝰ: gaudebunt juſti in æternum. 17 Convertentur impii in infernum; omnes populi qui obliti ſunt timoris *Domini*. 18 Quoniam non ſemper oblivioni tradetur pauper: ſpes humiliũ non peribit in æternum. 19 Surge Dñe, ne confortetur homo *impius*: judicentur populi coram te. 20 Incute Dñe timorem eis; ſciant populi ſe eſſe homines in æternum. 21

PSAL. X.

QUare Dñe ſtabis à longè? abſconderis in habitaculo ſanctorum in temporibus anguſtiæ? 1 *In elatione* impii perſecutionem patietur afflictus; capiantur in verſutia quam moliti ſunt patrare. 2

Verſio *SIRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܬܫܥܐ *
1 ܠܕܘܝܕ. ܡܛܠ ܡܫܝܚܐ ܕܢܣܒ ܡܘܬܒܐ ܘܡܠܟܘܬܐ ܘܡܒܛܠ ܕܒܥܠܕܒܒܐ
ܦܬܓܡܐ ܡܒ.
2 * ܐܘܕܐ ܠܡܪܝܐ ܡܢ ܟܠܗ ܠܒܝ. ܘܐܫܬܥܐ
3 ܟܠܗܝܢ ܬܕܡܪ̈ܬܟ: * ܐܚܕܐ ܘܐܪܘܙ ܒܟ. ܘܐܙܡܪ ܠܫܡܟ ܡܪܝܡܐ: * ܟܕ ܢܗܦܟܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝ
4 ܠܒܣܬܪܗܘܢ. ܢܬܬܩܠܘܢ ܘܢܐܒܕܘܢ ܡܢ ܩܕܡܝܟ: * ܡܛܠ ܕܥܒܕܬ ܦܘܪܥܢܝ ܘܕܝܢܝ.
5 ܘܝܬܒܬ ܥܠ ܟܘܪܣܝܐ ܕܝܢܐ ܟܐܢܐ: * ܟܐܐܬ ܒܥܡ̈ܡܐ ܘܐܘܒܕܬ ܠܪ̈ܫܝܥܐ. ܘܫܡܗܝܗܘܢ
6 ܥܛܝܬ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ: * ܒܥܠܕܒܒ̈ܝ ܫܠܡܘ ܒܣܝܦܐ ܠܥܠܡ. ܘܩܘܪ̈ܝܐ ܥܩܪܬ ܘܐܘܒܕܬ
7 ܕܘܟܪܢܗܘܢ: * ܘܡܪܝܐ ܠܥܠܡ ܩܐܡ. ܘܡܛܝܒ ܟܘܪܣܝܗ ܠܕܝܢܐ: * ܕܢܕܘܢ ܬܐܒܝܠ
8 9 ܒܟܐܢܘܬܐ. ܘܥܡ̈ܡܐ ܒܬܪܝܨܘܬܐ: * ܘܢܗܘܐ ܡܪܝܐ ܓܘܣܐ ܠܡܣ̈ܟܢܐ. ܘܡܥܕܪܢܐ ܠܗܘܢ
10 ܒܙܒܢ̈ܐ ܕܐܘܠܨܢܐ: * ܘܢܬܬܟܠܘܢ ܥܠܝܟ ܟܠ ܝܕ̈ܥܝ ܫܡܟ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܫܒܩܬ ܠܗܘܢ ܠܒܥ̈ܝܟ
11 ܡܪܝܐ: * ܙܡܪܘ ܠܡܪܝܐ ܕܥܡܪ ܒܨܗܝܘܢ. ܘܚܘܘ ܒܥܡ̈ܡܐ ܨܢܝܥܘܬܗ: * ܡܛܠ ܕܐܬܕܟܪ
12 13 ܠܡܬܒܥ ܕܡܗܘܢ. ܘܠܐ ܛܥܐ ܩܥܬܗ ܕܡܣ̈ܟܢܐ: * ܪܚܡ ܥܠܝ ܡܪܝܐ. ܘܚܙܝ ܫܥܒܕܘܬܝ
14 ܕܡܢ ܣܢ̈ܐܝ. ܡܪܝܡܢܝ ܡܢ ܬܪ̈ܥܝ ܡܘܬܐ: * ܡܛܠ ܕܐܫܬܥܐ ܟܠܗܝܢ ܬܕܡܪ̈ܬܟ: ܒܬܪ̈ܥܐ 15
ܕܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. ܐܪܘܙ ܒܦܘܪܩܢܟ: * ܛܒܥܘ ܥܡ̈ܡܐ ܒܓܘܡܨܐ ܕܥܒܕܘ. ܘܒܦܚܐ ܕܛܫܘ 16
ܐܬܐܚܕܬ ܪܓܠܗܘܢ: * ܡܘܕܥ ܡܪܝܐ ܕܝܢܐ ܕܥܒܕ. ܘܒܥܒ̈ܕܐ ܕܐܝ̈ܕܘܗܝ ܡܬܬܚܕ ܪܫܝܥܐ: 17
* ܢܗܦܟܘܢ ܪ̈ܫܝܥܐ ܠܫܝܘܠ. ܘܟܠܗܘܢ ܥܡ̈ܡܐ ܕܛܥܝܢ ܠܐܠܗܐ: * ܡܛܠ ܕܠܐ ܠܥܠܡ 18 19
ܡܬܛܥܐ ܡܣܟܢܐ. ܘܣܒܪܐ ܕܡܣ̈ܟܢܐ ܠܐ ܬܐܒܕ ܠܥܠܡ. * ܩܘܡ ܡܪܝܐ ܘܠܐ ܢܬܥܫܢ ܒܪܢܫܐ. 20
ܘܢܬܕܝܢܘܢ ܥܡ̈ܡܐ ܩܕܡ ܐܦܝܟ: * ܐܩܝܡ ܠܗܘܢ ܣܝܡ ܢܡܘܣܐ. ܢܕܥܘܢ ܥܡ̈ܡܐ 21
ܕܒܢ̈ܝܢܫܐ ܐܢܘܢ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܥܣܪܐ *
1 * ܠܕܘܝܕ. ܥܠ ܡܥܠܬܗ ܕܒܥܠܕܒܒܐ ܥܠ ܐܕܡ
ܘܥܠ ܫܪܒܬܗ. ܘܐܝܟܢܐ ܡܟܟܗ ܡܫܝܚܐ ܠܫܘܒܗܪܗ. ܦܬܓܡܐ ܠܚ.
2 * ܠܡܢܐ ܡܪܝܐ ܩܡܬ ܒܪܘܚܩܐ. ܘܐܗܦܟܬ ܐܦܝܟ ܒܙܒܢ̈ܐ ܕܐܘܠܨܢܐ: * ܒܫܘܒܗܪܗ ܕܪܫܝܥܐ
ܝܩܕ ܡܣܟܢܐ. ܢܬܐܚܕܘܢ ܒܡܚܫܒܬܐ ܗܝ ܕܐܬܚܫܒܘ:

PSAL. IX.

Davidis. De Chriſto ſolium ac regnum ſuſcipiente, hoſtémq; profligante. Verſ. 42. 1

COnfitebor Domino ex toto corde meo, & narrabo omnia mirabilia tua: 2 Lætabor & exultabo in te, & pſallam nomini tuo, Altiſſime. 3 Cùm convertentur hoſtes mei retrorſum, impingent & peribunt à conſpectu tuo. 4 Quoniam feciſti retributionem meam & judicium meũ, & ſediſti ſuper tribunal, Judex juſte. 5 Increpâſti gentes, & perdidiſti impios, nomina eorum delêſti in ſecula ſeculorum. 6 Hoſtes mei defecerunt gladio in ſempiternũ: Civitates evulſiſti, & abolêſti memoriã earũ. 7 At Dñs in æternum manet, & paratum eſt tribunal ejus ad judicium: 8 Ad judicandum orbem in veritate, & populos in æquitate. 9 Erit Dñs refugium pauperibus, & adjutor eorum temporibus anguſtiæ. 10 Et ſperabunt in te omnes agnoſcentes nomen tuũ, quoniam non derelinquis eos qui quærunt te, Dñe. 11 Canite Dño qui habitat in Sion, & oſtendite inter gentes artes ejꝰ. 12 Quoniam recordatꝰ eſt vindicare ſanguinem eorũ, & non obliviſcitur clamorẽ pauperis. 13 Miſerere mei, Dñe, & reſpice ſervitutem meã quæ ab hoſtibꝰ meis, exaltans me è portis mortis: 14 Ut enarrem cuncta mirabilia tua: in portis filiæ Sion exultem in ſalute tua. 15 Immerſæ ſunt gentes in foveam quam fecerunt, & in laqueo quem abſconderunt, captus eſt pes eorum. 16 Notum facit Dñs judiciũ quod operatur; & in opere manuum ſuarum comprehenditur impius. 17 Revertentur impii ad inferos, & omnes gentes quæ obliviſcuntur Deum. 18 Non enim in perpetuũ oblivioni datur pauper, & ſpem pauperum non perdes in ſeculum. 19 Exurge, Domine, & ne prævaleat homo, & judicentur gentes coram facie tua. 20 Conſtitue illis latorem legis, ut ſciant gentes ſe homines eſſe. 21

PSAL. X.

Davidis. De incurſu hoſtis in Adam ejuſq; generationem: & quomodo depreſſerit Chriſtus ejus arrogantiam. Verſ. 38. 1

QUare, Domine, ſtetiſti procul, & avertiſti aſpectum tuum temporibꝰ tribulationis? In ſuperbia impii ardet inops. 2 Comprehendantur in conſilio quod excogitârunt:

Versio VULG. LAT.

1 In finem pro occultis filii, Psalmus
David. IX.

2 Confitebor tibi, Domine, in toto cor-
de meo: narrabo omnia mirabilia tua.
3 Lætabor & exultabo in te: psallam no-
4 mini tuo, Altissime, In convertendo ini-
micũ meum retrorsũ: infirmabuntur, &
5 peribunt à facie tua. Quoniã fecisti ju-
dicium meum & causam meã: sedisti su-
6 per thronum qui judicas justitiã. Incre-
pâsti gentes, & periit impius: nomen eo-
rum delêsti in æternum, & in seculũ se-
7 culi. Inimici defecerunt frameæ in finem:
& civitates eorum destruxisti. Periit me-
8 moria eorũ cum sonitu: Et Dominꝰ in æ-
ternũ permanet. Paravit in judicio thro-
9 num suũ: Et ipse judicabit orbẽ terræ in
10 æquitate, judicabit populos in justitia. Et
factus est Dominus refugiũ pauperi: ad-
jutor in opportunitatibus, in tribulatio-
11 ne. Et sperent in te qui noverunt nomen
tuum: quoniam non dereliquisti quæren-
12 tes te, Domine. Psallite Domino, qui ha-
bitat in Sion: annuntiate inter gentes
13 studia ejus: Quoniam requirens sangui-
nem eorũ recordatus est: non est oblitus
14 clamorem pauperum. Miserere mei, Do-
mine: vide humilitatem meam de inimi-
15 cis meis. Qui exaltas me de portis mor-
tis, ut annuntiem omnes laudationes tuas
16 in portis filiæ Sion. Exultabo in salutari
tuo; infixæ sunt gentes in interitu, quem
fecerunt. In laqueo isto, quem abscon-
17 derunt, comprehensus est pes eorũ. Cog-
noscetur Dominꝰ judicia faciens, in ope-
ribus manuũ suarum comprehensus est
18 peccator. Convertantur peccatores in
infernũ, omnes gentes quæ obliviscun-
19 tur Deũ. Quoniam non in finẽ oblivio e-
rit pauperis, patientia pauperũ non peri-
20 bit in finẽ. Exurge, Domine, non confor-
tetur homo, judicentur gentes in con-
21 spectu tuo. Constitue, Domine, legislato-
rem super eos, ut sciant gentes quoniam
homines sunt.

Psalm. x. secundùm Hebr.

1 Ut quid, Domine, recessisti longè, despicis
2 in opportunitatibꝰ, in tribulatione? Dum
superbit impius, incenditur pauper: com-
prehenduntur in consiliis quibꝰ cogitãt.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

1 Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῶν κρυφίων τοῦ υἱοῦ, ψαλμὸς
τῷ Δαυίδ. θʹ.

2 † Ἐξομολογήσομαί σοι κύριε ἐν ὅλῃ καρδίᾳ μου,
3 † διηγήσομαι πάντα τὰ θαυμάσιά σου. † Εὐφρανθή-
σομαι καὶ ἀγαλλιάσομαι ἐν σοί, † ψαλῶ τῷ [illegible]ματί
4 σου ὕψιστε. † Ἐν τῷ ἀποστραφῆναι τὸν ἐχθρόν μου εἰς τὰ
ὀπίσω, † ἀσθενήσουσι καὶ ἀπολοῦνται ἀπὸ προσώπου σου.
5 † Ὅτι ἐποίησας τὴν κρίσιν μου καὶ τὴν δίκην μου, † ἐκάθι-
6 σας ἐπὶ θρόνου ὁ κρίνων δικαιοσύνην. † Ἐπετίμησας
ἔθνεσι, καὶ ἀπώλετο ὁ ἀσεβής, † (α) τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐξή-
7 λειψας εἰς τὸν αἰῶνα, καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος. † Τοῦ ἐ-
χθροῦ ἐξέλιπον αἱ ῥομφαῖαι εἰς τέλος, καὶ πόλεις κα-
θεῖλες. † ἀπώλετο τὸ μνημόσυνον αὐτῶν (β) μετ' ἤχου, †
8 Καὶ ὁ κύριος εἰς τὸν αἰῶνα μένει. † ἡτοίμασεν ἐν κρί-
9 σει τὸν θρόνον αὐτοῦ, † Καὶ αὐτὸς κρινεῖ τὴν οἰκουμέ-
10 νην ἐν δικαιοσύνῃ, † κρινεῖ λαοὺς ἐν εὐθύτητι. † Καὶ
ἐγένετο κύριος καταφυγὴ τῷ πένητι, † βοηθὸς ἐν
11 εὐκαιρίαις, ἐν θλίψει. † Καὶ ἐλπισάτωσαν (γ) ἐπὶ
σὲ οἱ γινώσκοντες τὸ ὄνομά σου, † ὅτι οὐκ ἐγκατέλι-
12 πες τοὺς ἐκζητοῦντάς σε κύριε. † Ψάλατε τῷ κυρίῳ τῷ
κατοικοῦντι ἐν Σιών, † ἀναγγείλατε ἐν τοῖς ἔθνεσι
13 τὰ ἐπιτηδεύματα αὐτοῦ. † Ὅτι ἐκζητῶν τὰ αἵμα-
τα αὐτῶν ἐμνήσθη, † οὐκ ἐπελάθετο (δ) τῆς δεήσεως τῶν
14 πενήτων. † Ἐλέησόν με κύριε, ἴδε τὴν ταπείνωσίν
15 μου † ἐκ τῶν ἐχθρῶν μου, † Ὁ ὑψῶν με ἐκ τῶν πυλῶν τοῦ
θανάτου † ὅπως ἂν ἐξαγγείλω πάσας τὰς αἰνέσεις σου
16 † ἐν ταῖς πύλαις τῆς θυγατρὸς Σιών. † Ἀγαλλιά-
σομαι (ε) ἐπὶ τῷ σωτηρίῳ σου. ἐνεπάγησαν ἔθνη † ἐν
διαφθορᾷ ᾗ ἐποίησαν· † ἐν παγίδι ταύτῃ ᾗ ἔκρυ-
17 ψαν συνελήφθη ὁ ποὺς αὐτῶν. † Γινώσκεται κύριος κρί-
ματα ποιῶν, † ἐν τοῖς ἔργοις τῶν χειρῶν αὐτοῦ συνελή-
φθη ὁ ἁμαρτωλός. ᾨΔΗ ΔΙΑΨΑΛΜΑ-
18 ΤΟΣ. † Ἀποστραφήτωσαν οἱ ἁμαρτωλοὶ εἰς τὸν ᾅδην,
19 † πάντα τὰ ἔθνη τὰ ἐπιλανθανόμενα τοῦ θεοῦ. Ὅτι
οὐκ εἰς τέλος ἐπιλησθήσεται ὁ πτωχός, † ἡ ὑπομονὴ
20 τῶν πενήτων οὐκ ἀπολεῖται (ζ) εἰς τὸν αἰῶνα. Ἀνάστηθι κύριε,
μὴ κραταιούσθω ἄνθρωπος, † κριθήτωσαν ἔθνη ἐνώ-
21 πιόν σου. † Κατάστησον κύριε νομοθέτην ἐπ' αὐτούς, †
γνώτωσαν ἔθνη ὅτι ἄνθρωποί εἰσιν. ΔΙΑΨΑΛΜΑ.
1 † Ἱνατί κύριε ἀφέστηκας μακρόθεν, † ὑπερορᾷς
2 ἐν εὐκαιρίαις, ἐν θλίψει; † Ἐν τῷ ὑπερηφανεύεσθαι τὸν
ἀσεβῆ, (η) ἐμπυρίζεται ὁ πτωχός, † συλλαμβάνονται
ἐν διαβουλίοις οἷς διαλογίζονται.

MS. A. (α) τὸ ὄνομα * σου (β) μετ' ἤχους, (γ)
ἐπὶ σοὶ πάντες οἱ (δ) τῆς φωνῆς (ε) ἐν τῷ (ζ) εἰς
τέλος. (η) ἐμπυρίζεται

Vers. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Transf. LAT.

In finem (a) pro occultis filii, 1
Psalmus ipsi David. IX.

1 CONFITEBOR tibi, 2
Domine, in toto corde
meo: [a] narrabo omnia mirabi-
lia tua. 2 Lætabor, & (b) exulta- 3
bo in te: (c) psallã nomini tuo,
Altissime. 3 In convertendo ini- 4
micum meũ retrorsum, infirma-
buntur, & peribunt à facie tua.
4 Quoniam (d) fecisti [b] judi- 5
ciũ meũ, & [c] causã meã: se-
disti super thronũ, qui judicas
justitiam: 5 Increpâsti gentes, & 6
(e) periit impius: nomen eorum
delêsti in seculum, & in seculũ
seculi. 6 Inimici defecerunt (f) 7
frameæ in finem; & [d] civitates
destruxisti. 7 Periit memoria eo- 8
rum [e] cum (g) sonitu: & Do-
minus in (h) æternũ permanet.
8 (i) Paravit in judicio thronũ
suum, Et ipse judicabit orbem 9
terrarũ in justitia, judicabit po-
pulos in rectitudine. 9 Et fa- 10
ctus est Dominus refugium (k)
pauperi, [f] adjutor in (l) oppor-
tunitatibus, in tribulatione. 10
Et (m) sperent in te, qui cogno- 11
scunt nomen tuum: quoniã non
dereliquisti quærentes te, Domi-
ne. 11 Psallite Domino, qui (n) 12
habitat in Sion: annuntiate inter
gentes (o) studia ejus. 12 Quo- 13
niã requirens sanguinẽ eorum
recordatus est; nõ est oblitus (p)
orationis pauperũ. 13 Miserere 14
mei Domine: [g] vide humilita-
tem meam de inimicis meis. 14
Qui exaltas me de portis mor- 15
tis: ut annuntiẽ omnes laudes
tuas in portis filiæ Sion. 15 (q)
[h] Exultabo in salutari tuo: (r) 16
infixæ sunt gentes [i] in interitu,
quẽ fecerunt. 16 In laqueo isto,
quem absconderunt, comprehen-
sus est pes eorũ: (s) Cognoscitur 17
Dominus judicia faciens: in o-
peribus (t) manuũ suarum com-
prehensus est peccator. (u) ODA
DIAPSALMATIS. Con- 18
vertantur peccatores in infer-
num, omnes gentes quæ oblivi-
scuntur Deum. Quia non in (x) 19
finem oblivio erit pauperis: pa-
tientia pauperum non peribit in
æternum. Exurge, Domine, non 20
(y) confortetur homo, judicentur gentes in conspectu tuo. (z) Constitue, Domine, legislatorẽ super eos: (a) sciant gentes quoniã homines sunt. DIAPSALMA. 22 Ut quid, Domine, recessisti longe, a] de- 21 1
spicis in opportunitatibus, (aa) in tribulatione? 23 Dum superbit impius, (bb) incenditur pauper: comprehenduntur in (cc) consiliis, quibus cogitant. 2

Versio ÆTHIOPICA.

ፍጻሜ፡በእንተ፡ኅብአት፡ወልድ፡መዝሙር፡
ዘዳዊት ፡፡
ህ እገኒ፡ለከ ፡ እግዚኦ ፡ በኵሉ ፡ ልብየ፡፡ 1
ወእነግር ፡ ኵሉ፡ ስብሐቲከ፡፡=፡ እትፌሣ 2
ሐ ፡ ወእትሐሠይ ፡ ብከ፡፡ ወእዜምር ፡ ለ
ስምከ ፡ ልዑል፡፡=፡ ሶበ ፡ ገብኡ ጸላእት 3
የ፡ ድኅሬሆሙ፡፡ ይደውዩ ፡ ወይትሐጐ
ሉ፡ እምቅድመ ፡ ገጽከ፡፡=፡ እስመ፡ 4
ገበርከ ፡ ሊተ ፡ ፍትሕየ ፡ ወበቀልየ፡፡ ወነበር
ከ፡ዲበ፡መንበርከ፡መኰንነ፡ጽድቅ፡፡=፡ ገሠ 5
ጽኮሙ ፡ ለአሕዛብ ፡ ወተሐጕሉ፡ ረሲዓን፡፡
ወደመስስከ፡ስሞሙ፡ለዓለም፡ዓለም፡፡=፡ፀር 6
ሰ፡ተገመሩ፡በኵናት፡ ለጽሉፋ፡፡ወአህጕሪሆ
ሙ፡ነሠትከ፡፡=፡ ወትስዕር፡ ዝክሮሙ፡ኃቡ 7
ረ፡፡ ወእግዚአብሔር፡ይነብር፡ ለዓለም፡፡=፡
ወአስተደለወ፡ መንበሮ፡ ለኰንኖ፡፡ ወውእቱ፡ 8
ይኴንና፡ ለዓለም፡ በጽድቅ፡፡ ወይኴንኖሙ፡
ለአሕዛብ፡በርትዕ፡፡=፡ ወኮኖሙ፡እግዚአብ 9
ሔር፡ መስከዮሙ፡ ለነዳያን፡፡ ወረዳኢሆሙ፡
ውእቱ፡በጊዜ፡ ምንዳቤሆሙ፡፡=፡ ወይትዌከ 10
ሉ፡ብከ፡ ኵሎሙ፡አለ፡ ያፈቅሩ፡ስምከ፡፡ እ
ስመ፡ኢተኀድጎሙ፡ ለእለ ፡ የኀሡከ ፡ እግዚ
እ፡፡=፡ዘምሩ፡ለእግዚአብሔር፡ ዘየኀድር፡ 11
ውስተ፡ጽዮን፡፡ወንግሩ፡ለአሕዛብ፡ምግ
ባሮ፡፡=፡ እስመ፡ተዘከረ፡ዘይትኃሠሠ፡ደሞ 12
ሙ፡፡ ወኢረስዐ፡እውያቶሙ፡ ለነዳያን፡፡=፡
ተሣሀለኒ፡እግዚኦ፡ ወርኢ፡ዘከመ፡የሐምሙኒ፡ጸ 13
ላእትየ፡፡=፡ዘያሌዕለኒ፡እምአናቅጸ፡ሞት፡፡ 14
ከመ፡እንግር፡ ኵሉ፡ ስብሐቲከ፡፡ በአናቅጺ
ሃ፡ለወለተ፡ጽዮን፡፡=፡ወንትፌሣሕ፡በአድኅና 15
ትከ፡፡ ጠግዑ፡ አሕዛብ፡ በጌጋዮሙ፡ ዘገብ
ሩ፡፡=፡ወበይእቲ፡መሠግርት፡እንተ፡ኀብኡ፡ 16
ተሰግሩ፡ እገሪሆሙ፡፡=፡ ያእምር፡ እግዚአብ 17
ሔር፡ገቢረ፡ፍትሕ፡፡ ወበግብረ፡እደዊሁ፡ተሰ
ግረ፡ኃጥእ፡፡=፡ ይግብኡ፡ኃጥአን፡ውስተ፡ሲ 18
ኦል፡፡ወኵሎሙ፡አሕዛብ፡እለ፡ይረስዕዎ፡ለ
እግዚአብሔር፡፡=፡ እስመ፡[illegible]፡ለዝሉፉ፡ 19
ዘይትረሳዕ፡ ነዳይ፡፡ ወኢይትሐጐሉ፡ ትዕግሥ
ቶሙ፡ነዳያን፡ ለዓለም፡፡=፡ ተንሥእ፡ እግ 20
ዚኦ ፡ ወኢይጽናዕ፡ እጓለ ፡ እመሕያው፡፡
ወይትኴነኑ ፡ አሕዛብ ፡ በቅድሜከ፡፡=፡
ሢም፡እግዚኦ፡መምህረ፡ ሕግ፡ላዕሌሆሙ፡፡ 21
ወያእምሩ፡አሕዛብ ፡ከመ፡እጓለ ፡ እመሕያ
ው፡እሙንቱ፡፡=፡ለምንት፡እግዚኦ፡ቆምከ፡ 22
እምርሑቅ፡፡ ወትትሄየር ፡ በጊዜ፡ምን
ደቤ፡፡=፡ በትዕቢቱ፡ለኃጥእ፡ይውዒ፡ነዳይ፡፡ 23
ወይሰገሩ፡በውዴቶሙ፡እንተ፡ሐለዩ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [a] Et narrabo omnes laudes tuas. [b] mihi judicium, [c] ultionem meam: & sedisti super thronum tuum, [d] civitates eorum [e] simul: & Dominus [f] et adiutor eorum est tempore tentationis. Et sperent in te omnes qui diligunt [g] et vide quatenus affligunt me inimici mei. [h] Et exultabimus [i] in facinore quod patrârunt, [a] cœcatis tempore afflictionis

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

1 * المزمور التاسع لداود * في اسرار الابن من اجل مجد المسيح وقيامته
وملكوته وهلاك جميع المخالفين * فب * اسيكوابه *
2 3 * اشكرك يا رب من كل قلبي * واقص جميع عجائبك * افرح واسر بك * وارتل اسمك العالي *
4 5 * حين تولي اعداي علي ادبارهم * ويضعفون ويبيدون من بين يديك * لانك قضيت لي
6 وانتقمت * استويت علي العرش يا ديان الحق * زجرت الشعوب * وابدت المنافق * تمحو اسمهم الي
7 8 الابد * والي ابد الابد * سلاح العدو افنيت الي الابد * ابدت مداينه * وازلت ذكرها بصراخ * والرب
9 10 دايم الي الابد * اعد كرسيه للقضاء * ليقضي المسكونة بالعدل * ويدين الشعوب بالاستقامة * الرب
11 كان ملجا للفقير * وعونه في زمن احزانه * فليتوكل عليك جميع العارفين لاسمك * لانك لم
12 13 تضيع من يبتغيك يا رب * رتلوا للرب الساكن في صهيون * واخبروا في الامم عجائبه * فانه
14 ذكر الطالب دماهم * ولم ينس دعوة المسكين * ارحمني يا رب وانظر الي ذلي من اعداي *
15 يا رافعي من ابواب الموت * لكي اقص جميع تسابيحك * في ابواب ابنة صهيون * اتهلل
16 17 بخلاصك * وحلت الامم في الفساد الذي صنعوا * والفخ الذي اخفوا علق ارجلهم * يعرف
18 الرب بانه صانع الاحكام * يجازي الخاطي بما صنعت يداه * يرد الخطاة الي الجحيم * وكل الامم
19 الذين نسوا الله * الفقير لا ينساه الرب الي الدهر * صبر ذوي المسكنة * لا يضيع الي الابد
20 21 * قم يا رب لئلا يتقوي الانسان * ولتحز الامم امامك * اقم عليهم يا رب معلم ناموس * ولتعلم
1 2 الشعوب انهم بشر * لماذا يا رب بعدت عنا بعيدا * تغافلت في زمن الشدايد * عند تكبر
المنافق يحترق المسكين * يوخذون بالمشورات التي تشاوروا بها *

PSAL. IX. Davidis.

De mysteriis filii quoad gloriam 1
Christi, ejusque resurrectionem
ac regnum, atque interitum o-
mnium inobedientium. Ver. 82.

*Gratias agam tibi, O Domine, ex toto 2
corde meo, & narrabo omnia mirabi-
lia tua. Gaudebo, & exultabo in te, & 3
psallam nomini tuo altissimo. Quando 4
convertentur inimici mei super terga sua,
infirmabuntur & peribunt à conspectu
tuo. Quoniam tu judicâsti mihi, & vin- 5
dicâsti: ascendisti super thronũ, O Judex
veritatis. Increpâsti populos, & perdidisti 6
impium: delêsti nomen eorũ in seculũ, et
in seculum seculi. Arma inimici consum- 7
psisti in æternum: perdidisti civitates ejus,
& abolêsti memoriam earum clamore: Et 8
Dominus perpetuus est in æternum. Præ-
paravit sedem suam ad judicium, ut ju- 9
dicaret habitatam cum æquitate, & de-
cerneret in populos cum rectitudine. Do- 10
minus fuit refugium pauperi, & adjutori-
um ejus in tempore tristitiarum ejus. Con- 11
fidant in te omnes cognoscentes nomen tu-
um: quia tu non perdidisti eum, qui quæ-
rit te, O Domine. Psallite Domino habi- 12
tanti in Sion: Et annuntiate in gentibus
miracula ejus; Quia ipse recordatus est 13
quærentis sanguines eorum, & non est ob-
litus petitionem pauperis. Miserere mei, O 14
Domine mi, & aspice contemptum meum
ab inimicis meis. O qui exaltas me de por-
tis mortis, ut commemorem omnes lauda- 15
tiones tuas in portis filiæ Sion, exultem in
salute tua. Lutatæ sunt gentes in cor- 16
ruptione quam fecerunt: & laqueus quem
absconderunt, detinuit pedes eorum. Cog- 17
noscetur Dominus quod sit actor judicio-
rũ, rependat peccatori quod operatæ sunt
manꝰ ejus. Repellet peccatores in infernũ, 18
& omnes gentes, quæ oblitæ sunt Deum.
Pauperem non obliviscetur Dominus in 19
æternũ: patientiã pauperũ non deperdet in
æternũ. Exurge, O Domine mi, ne corrobo- 20
retur homo: et cõfundãtur gentes corã te.
Constitue, Domine, super eas Doctorem le- 21
gis, & sciant populi se homines esse.*

*Quare, O Domine, recessisti à nobis 1
longè? neglexisti in tempore tribula-
tionum? Ad superbiam impii incenditur 2
pauper: comprehendentur consiliis, quæ
inierunt.*

תְּהִלִּים : יא

,benedixit avaro & : suæ animæ *aviditate* ſuper *improbum* laudavit Quoniam
3 כִּי־הִלֵּל רָשָׁע עַל־תַּאֲוַת נַפְשׁוֹ וּבֹצֵעַ בֵּרֵךְ
Deus *non* , quæret non *sui naſi faſtum ſecundùm* Impius .Dominum fecit iraſci
4 נִאֵץ ׀ יְהוָה: רָשָׁע כְּגֹבַהּ אַפּוֹ בַּל־יִדְרֹשׁ אֵין אֱלֹהִים
tua judicia *altitudo*,tempore omni in ejus viæ *afficient Dolore* .ejus *cogitationes omnes*
5 כָּל־מְזִמּוֹתָיו: יָחִילוּ דְרָכָו ׀ בְּכָל־עֵת מָרוֹם מִשְׁפָּטֶיךָ
movebor non ,ſuo corde in Dixit *.eos in* ſufflabit ſuos hoſtes omnes *: ejus regione è*
6 מִנֶּגְדּוֹ כָּל־צוֹרְרָיו יָפִיחַ בָּהֶם: אָמַר בְּלִבּוֹ בַּל־אֶמּוֹט
, dolis & ,eſt plenum ejꝰ os *Execratione .malo in non quod*,generationē *& generationē in*
7 לְדֹר וָדֹר אֲשֶׁר לֹא־בְרָע: אָלָה ׀ פִּיהוּ מָלֵא וּמִרְמוֹת
, villarum inſidiis in *Sedebit* .iniquitas & , *labor* ejus lingua *ſub* : fraude &
8 וָתֹךְ תַּחַת לְשׁוֹנוֹ עָמָל וָאָוֶן: יֵשֵׁב ׀ בְּמַאְרַב חֲצֵרִים
Inſidiabitur *.ſe abſcondent pauperem ad* ejus oculi : innocentem occidet latibulis in
9 בַּמִּסְתָּרִים יַהֲרֹג נָקִי עֵינָיו לְחֵלְכָה יִצְפֹּנוּ: יֶאֱרֹב
afflictum rapiet *: afflictum* rapiendū ad inſidiabitur ſuo *tugurio* in leo ſicut ,latibulo in
בַּמִּסְתָּר ׀ כְּאַרְיֵה בְסֻכֹּה יֶאֱרֹב לַחֲטוֹף עָנִי יַחְטֹף עָנִי
ejus *robuſta in* cadet & , *humiliabitur* ,*ſe Atteret* .ſuum rete in eum *trahendo in*
10 בְּמָשְׁכוֹ בְרִשְׁתּוֹ: וְדָכָה יָשֹׁחַ וְנָפַל בַּעֲצוּמָיו
,*ſuas facies* occultavit : Deus eſt oblitus : ſuo corde in Dixit *.attritorum* cōgregatio
11 חֵלְכָּאִים: אָמַר בְּלִבּוֹ שָׁכַח אֵל הִסְתִּיר פָּנָיו
obliviſcaris ne ,tuam manum eleva , Deus Domine Surge *.æternum in vidit non*
12 בַּל־רָאָה לָנֶצַח: קוּמָה יְהוָה אֵל נְשָׂא יָדֶךָ אַל־תִּשְׁכַּח
ſuo corde in dixit ? Deum impius fecit iraſci quid Propter *.afflictorum*
13 עֲנִיִּים: עַל־מֶה ׀ נִאֵץ רָשָׁע אֱלֹהִים אָמַר בְּלִבּוֹ
,tua manu in dandum ad , *reſpicies iram &* ,*laborem tu quippe Vidiſti* .requires non
14 לֹא תִדְרֹשׁ: רָאִתָה כִּי־אַתָּה עָמָל וָכַעַס ׀ תַּבִּיט לָתֵת בְּיָדֶךָ
brachium Contere .adjutor fuiſti tu pupillo : pauper *relinquet te ſuper*
15 עָלֶיךָ יַעֲזֹב חֵלֶכָה יָתוֹם אַתָּה ׀ הָיִיתָ עוֹזֵר: שְׁבֹר זְרוֹעַ
rex Dominus .invenies non ejus impietatem quæres , mali & , impii
16 רָשָׁע וָרָע תִּדְרוֹשׁ־רִשְׁעוֹ בַל־תִּמְצָא: יְהוָה מֶלֶךְ
manſuetorum Deſiderium .ejus terra de gentes perierunt *: æternitatis &* , *ſeculi*
17 עוֹלָם וָעֶד אָבְדוּ גוֹיִם מֵאַרְצוֹ: תַּאֲוַת עֲנָוִים
.tuam aurem facies intendere , eorum cor facies parare : Domine audies
שָׁמַעְתָּ יְהוָה תָּכִין לִבָּם תַּקְשִׁיב אָזְנֶךָ:
.terra de hominē *conterendū ad* ultrà addat ne ,*tenuem &,pupillum judicandum Ad*
18 לִשְׁפֹּט יָתוֹם וָדָךְ בַּל־יוֹסִיף עוֹד לַעֲרֹץ אֱנוֹשׁ מִן־הָאָרֶץ:

PSAL. XI. יא

, meæ animæ *dicetis* quomodo , ſperavi DOMINO In .Davidi Victori
1 לַמְנַצֵּחַ לְדָוִד בַּיהוָה ׀ חָסִיתִי אֵיךְ תֹּאמְרוּ לְנַפְשִׁי
, arcum *tendent* impii ecce Quoniam *? paſſer veſtrum montem Tranſvola*
2 נוּדוּ הַרְכֶם צִפּוֹר: כִּי הִנֵּה הָרְשָׁעִים יִדְרְכוּן קֶשֶׁת
.corde rectos in caligine *ipſa in jaciendum ad,nervum* ſuper ſuam ſagittam paraverunt
כּוֹנְנוּ חִצָּם עַל־יֶתֶר לִירוֹת בְּמוֹ־אֹפֶל לְיִשְׁרֵי־לֵב:
templo in Dominus ? eſt operatus quid juſtus : deſtruentur *fundamenta* Quoniam
3 4 כִּי הַשָּׁתוֹת יֵהָרֵסוּן צַדִּיק מַה־פָּעָל: יְהוָה בְּהֵיכַל
ejꝰ palpebræ ,videbunt ejus oculi ,*ejus* ſolium cœlis in Domini , ſuæ ſanctitatis
קָדְשׁוֹ יְהוָה בַּשָּׁמַיִם כִּסְאוֹ עֵינָיו יֶחֱזוּ עַפְעַפָּיו
.hominum filios probabunt
יִבְחֲנוּ בְּנֵי אָדָם:

תרגום TARGUM.

מְטוּל דְּאִשְׁתַּבַּח רַשִׁיעָא עַל רְגַרוֹג נַפְשֵׁיהּ 3
דִּמְבָרֵךְ גַּבְרָא טְלוּמָא מַרְחֵק מֵימְרָא דַיְיָ:
רַשִׁיעָא בְּגַסּוּת רוּחֵיהּ לָא יִתְבַּע אֱלָהָא יֵימַר 4
בְּלִבֵּיהּ דְּלָא גַלְיָן קֳדָם יְיָ כּוּלְהוֹן מַחְשְׁבָתוֹי:
מַצְלְחִין אוֹרְחָתֵיהּ בְּכָל עִדָּן רְחִיקִין דִּינָךְ מִן 5
קִבְלֵיהּ בְּכָל מְעִיקוֹי יְזוּעוּף בְּהוֹן: יֵימַר בְּלִבְבֵיהּ 6
לָא אֱזוּעַ מִדָּר לְדָר מִלְּמֶעְבַּד בִּישׁ: לוּטִין 7
פּוּמֵיהּ מְלֵי נִכְלֵי וְרַמְיוּתָא תְּחוֹת לִישָׁנֵיהּ
לֵאוּת וּשְׁקַר: יָתֵיב בִּכְמַנֵּי דְּדַרְתָּא בְּטוּמָרַיָּא 8
יִקְטוֹל זַכָּאָה עֵינוֹי לְמִסְכְּנַיָּא יִטְּשׁוּן: יִכְמוֹן 9
בְּטוּמָרַיָּא הֵיךְ אַרְיָא בִּמְטַלַּלְיֵיהּ יִכְמוֹן לְמִחְטַף
עַנְיָא יִתְפּוֹשׂ עַנְיָא בְּמִגְרֵיהּ בִּמְצַדְתֵּיהּ: יִדַּכְדַּךְ 10
וִישׁוֹחַ וְיִפּוֹל בְּתוּקֵיף כְּמָנוֹי עַנְיָא: יֵימַר בְּלִבֵּיהּ 11
אִתְנְשֵׁי אֱלָהָא טְמַר אַפּוֹי לָא חָמֵי לְעָלְמִין:
קוּם יְיָ קַיֵּם שְׁבוּעַת יְדָךְ לָא תִנְשֵׁי עִנְוְתָנֵי: 12
מְטוּל מָה רַחֵיק רַשִׁיעָא אֱלָהָא יֵימַר בְּלִבֵּיהּ 13
לָא תִתְבְּעֵי: גְּלֵי קֳדָמָךְ מְטוּל דְּאַנְתְּ לֵאוּת וְרוּגְז 14
עַל רַשִׁיעָא תְּסַעַר אִסְתַּכַּל לְמִשְׁלַם אַגְרָא טָב
לְצַדִּיקַיָּא בִּידָךְ עֲלָךְ יְסוֹבְרוּן עַנְיָךְ יַתְּמִם אַנְתְּ
הֲוֵית סָעִיד: תְּבַר אֶדְרָעֵיהוֹן דְּרַשִׁיעֵי וּבִישֵׁי 15
יִתְבְּעוּן רִשְׁעַתְהוֹן לָא יִשְׁתַּכְּחוּ: יְיָ מְלֵיךְ לְעָלְמֵי 16
עָלְמַיָּא אֲבַדוּ עַמְמֵי מֵאַרְעֵיהּ: רְעוּתָא דְעִנְוְתָנֵי 17
שְׁמִיעַ קֳדָמָךְ יְיָ תַּתְקִין לִבְּהוֹן תַּצְלֵי אוּדְנָךְ:
לְמִדַּן יַתְּמִם וְעַנְיָא לָא יוֹסִיף עוֹד תּוּב בְּנֵי נָשָׁא 18
לְאִתְבָּרָא מִן קֳדָם רַשִׁיעֵי אַרְעָא:

יא

תּוּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד בְּמֵימְרָא דַיְיָ סַבְרֵית הֵיכְדֵין 1
אַתּוּן אָמְרִין לְנַפְשִׁי אִטַּלְטְלִי לְטוּרָא הֵיךְ
צִפְּרָא: אֲרוּם הָא רַשִׁיעֵי נָגְדִין קַשְׁתָּא מְתַקְּנִין 2
גִּירֵיהוֹן עַל נִימָא לְמִרְמֵי בִּקְבָלָא עֲלֵוֵי תְּקִינֵי
לִבָּא: מְטוּל דְּאִין אֶשְׁתָּא יִתְרְעוּן זַכָּאָה 3
מְטוּל עֲבַד טוּבָא: יְיָ בְּהֵיכְלָא דְקוּדְשֵׁיהּ אֱלָהָא 4
בִּשְׁמֵי מְרוֹמָא כּוּרְסֵיהּ עֵינוֹי חָמְיָן תְּמוּרוֹי
מְבַחֲנָן בְּנֵי נָשָׁא:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Quoniam jactat ſe improbus ob concupiſcentiam 3
animæ ſuæ : qui autem bene precatur
homini perverſo, abominatur verbum
Domini. Impius in faſtu ſpiritus ſui 4
non requiret Deum :et dicet in corde ſuo,
quòd non ſint manifeſti ante Dominum
omnes cogitatus ſui. Proſperantur viæ 5
ejus in omni tempore : longè ſunt judicia
tua ex adverſo ejus : omnes oppreſſores
ejus iraſcetur in illos. Dicet in corde ſuo: 6
Non movebor de generatione in generationem
à malè agendo. Execrationibus 7
os ejus plenum eſt,dolóque & fraude: ſub
lingua ejus iniquitas & falſitas. Sedet in 8
inſidiis atriorum : in occultis occidet innocentem
: oculi ejus miſerum clàm obſervant.
Inſidiabitur in abſconditis quaſi 9
leo in luſtro ſuo : inſidiabitur, ut *pervestiget*
pauperem ; rapiet pauperem cùm
traxerit eum in rete ſuum. Conteret & 10
deprimet ſeipſum , ut cadat in fortitudinem
inſidiarum ejus pauper. Dicet in corde 11
ſuo: Oblitus eſt Deus, abſcondit faciem
ſuam, non videt in perpetuum. Surge 12
Domine Deus, confirma jusjurandum manus
tuæ: ne obliviſcaris humilium. Quare 13
execratur impius Deum ? dixit in corde
ſuo, te non requiſiturum. Notum eſt 14
apud te quòd tu dolorem & iracundiam
ſuper impium immittes : reſpicias ut reddas
præmium bonum juſtis manu tua : in
te ſperabunt pauperes tui; orphanum tu
ſuſtinebis. Contere brachia impiorum & 15
malorum: requirantur impietates eorum,
& non inveniantur. Dominus regnat in ſecula 16
ſeculorum : peribunt populi de terra
ejus. Deſiderium pauperum auditum eſt 17
coram te Domine:aptabis cor eorum,arrigeſque
aurem tuam. Ut judices orphano & 18
pauperi, nec opponant filii hominum ut
conterantur à conſpectu impiorum terræ.

Hymnus Davidi. 1

PSAL. XI.

IN verbo Domini ſperavi: quomodo vos
dicitis animæ meæ, Migra ad montem veſtrum
ſicut avis ? Quoniam ecce improbi 2
tendunt arcum, dirigunt ſagittas ſuas ſup
nervum, ut feriant in obſcuro rectos corde.
Quoniam ſi fundamenta deſtruantur, 3
cur operatur juſtus *bonum? Dominus* in 4
templo ſanctuarii ſui; *Dei* in cœlis altiſſimis
ſedes eſt : oculi ejus reſpiciunt, &
palpebræ ejus probant filios hominum.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

3 ܡܛܠ ܕܡܫܬܒܗܪ ܪܫܝܥܐ ܒܪܓܝܓܬܐ ܕܢܦܫܗ. ܥܘܠܐ ܡܬܒܪܟ ܘܪܓܙ ܡܪܝܐ: * ܘܪܫܝܥܐ
4 ܒܪܡܘܬܗ ܠܐ ܡܬܒܩܐ. ܘܠܝܬ ܐܠܗܐ ܒܟܠܗܘܢ ܬܪܥܝܬܗ: * ܘܫܪܝܢ ܐܘܪܚܬܗ ܒܟܠܙܒܢ. 5
6 ܘܡܫܬܩܠ ܕܝܢܟ ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ: ܘܡܫܬܥܒܕ ܒܟܠܗܘܢ ܒܥܠܕܒܒܘܗܝ. * ܐܡܪ ܒܠܒܗ ܕܠܐ
7 ܐܙܘܥ ܠܕܪ ܕܪܝܢ: ܪܢܐ ܒܝܫܬܐ. * ܘܡܘܛܬܐ ܡܠܐ ܦܘܡܗ. ܘܚܒܠܐ ܘܢܟܠܐ ܬܚܝܬ ܠܫܢܗ ܘܥܘܠܐ
8 ܘܢܟܠܐ: * ܝܬܒ ܒܟܡܝܢܐ ܒܕܪܬܐ. ܘܒܛܘܫܝܐ ܩܛܠ ܠܙܕܝܩܐ: * ܥܝܢܘܗܝ ܠܡܣܟܢܐ ܕܩܝܩܢ. 9
10 ܘܟܡܢ ܠܡܚܛܦ ܠܡܣܟܢܐ ܒܡܫܟܗ ܕܡܨܝܕܬܗ: * ܗܘ ܢܬܡܟܟ ܘܢܦܠ. ܘܒܓܪܡܘܗܝ
11 ܟܐܒܐ ܘܟܘܪܗܢܐ: * ܐܡܪ ܒܠܒܗ ܕܛܥܐ ܐܠܗܐ. ܘܐܗܦܟ ܐܦܘܗܝ ܘܠܐ ܚܙܐ ܠܥܠܡ: * ܩܘܡ
12 ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ ܘܐܪܝܡ ܐܝܕܟ. ܘܠܐ ܬܛܥܝܘܗܝ ܠܡܣܟܢܐ: * ܠܡܢܐ ܐܪܓܙ ܚܛܝܐ ܠܐܠܗܐ. ܐܡܪ 13
14 ܒܠܒܗ ܕܠܐ ܬܬܒܥ: * ܚܙܐ ܐܢܬ ܕܐܝܬ ܥܘܠܐ ܘܪܘܓܙܐ. ܘܚܐܪ ܐܢܬ ܕܢܫܬܠܡܘܢ ܒܐܝܕܝܟ: ܠܟ ܗܘ
15 ܢܫܬܠܡ ܡܣܟܢܐ. ܘܠܝܬܡܐ ܐܢܬ ܗܘܝܬ ܡܥܕܪܢܐ: * ܬܒܘܪ ܕܪܥܗ ܕܚܛܝܐ. ܘܕܒܝܫܐ ܠܚܛܗܗ
16 ܢܬܒܥܝܘܗܝ ܘܠܐ ܢܫܬܟܚ: * ܡܪܝܐ ܡܠܟܐ ܗܘ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ. ܐܒܕܘ ܥܡܡܐ ܡܢ ܐܪܥܗ:
17 * ܣܒܪܐ ܕܡܣܟܢܐ ܫܡܥ ܐܢܬ ܡܪܝܐ. ܘܠܛܘܝܒܐ ܕܠܒܗܘܢ ܬܨܬ ܐܕܢܟ: ܠܡܕܢ ܕܝܢܐ ܠܝܬܡܐ
ܘܠܡܣܟܢܐ. ܘܠܐ ܢܘܣܦ ܬܘܒ ܠܡܘܒܕܘ ܒܢܝܢܫܐ ܡܢ ܐܪܥܐ. * ܫܠܡ ܡܙܡܘܪܐ ܕܝ̄ *
1 * ܕܕܘܝܕ. ܟܕ ܐܬܬܥܝܩ ܥܡܐ ܥܠ ܕܐܫܬܒܝ ܗܘ ܘܒܢܘܗܝ. ܘܠܢ ܗܫܐ ܙܟܘܬܐ ܥܠ ܒܥܠܕܒܒܢ.
ܦܬܓܡܐ ܝܚ. ܒܡܪܝܐ ܣܒܪܬ ܐܝܟܢܐ ܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܢܦܫܝ. ܢܘܕܝ ܘܫܪܝ ܥܠ ܛܘܪܐ
2 ܐܝܟ ܨܦܪܐ: * ܡܛܠ ܕܗܐ ܚܛܝܐ ܡܠܘ ܩܫܬܐ. ܘܛܝܒܘ ܓܐܪܝܗܘܢ ܥܠ ܡܝܬܪܐ: ܠܡܫܕܝܘ ܒܥܡܛܢܐ
3 4 ܠܬܪܝܨܝ ܠܒܐ. * ܡܛܠ ܕܡܕܡ ܕܬܩܢܬ ܣܚܦܘܗܝ: ܘܙܕܝܩܐ ܡܢܐ ܥܒܕ. * ܡܪܝܐ ܒܗܝܟܠܐ
ܕܩܘܕܫܗ: ܡܪܝܐ ܟܘܪܣܝܗ ܒܫܡܝܐ. ܥܝܢܘܗܝ ܚܙܝܢ ܘܥܦܥܦܘܗܝ ܒܚܢܝܢ ܠܒܢܝܢܫܐ:

Quia gloriatur impius in libidinibus animæ 3
ſuæ : iniquus benedicitur,atque iraſcitur Dominus.
Et impius in ſuperbia ſua non perpendit, 4
neque eſt Deus in cunctis cogitationibus
ſuis. At ſolutæ viæ ejus omni tempore, 5
& ſublatum eſt judicium tuum è conſpectu
ejus, omneſque inimicos ſuos deſpicit.
Dicit in corde ſuo, Non movebor in generationem 6
generationum: meditatur nequitiam,
Et maledictione plenum eſt os ejus : nocumentum 7
ac fraus ſub lingua ejus, & ſcelus
atque dolus : Sedet in inſidiis in atrio, & in 8
abſcondito trucîdat juſtum : Oculi ejus ad 9
inopem intenti ſunt, & inſidiatur ad rapiendum
pauperē tractu retis ſui. Ipſe humiliabitur 10
& cadet, & in oſſibus ejus morbi doloreſque.
Dicit in corde ſuo, Oblitus eſt Deus 11
& avertit faciem ſuam, nec videbit in ſeculum.
Exurge, Domine Deus meus, & attolle 12
manum tuam,& ne obliviſcaris inopem.
Quare irritavit peccator Deum? dicit in corde 13
ſuo te non retributurū ? Vides adeſſe 14
crimen & indignationem: & expectas ut tradatur
in manus tuas?tibi ſe committet inops,
& pupilli tu es adiutor. Contere brachium 15
peccatoris: & maligni peccatum quæret eū,
nec invenietur. Dñs rex eſt in ſeculum ſeculorū 16
: interierunt gentes de terra ejus.
Spem pauperum audis tu, Domine,& præparationem 17
cordis eorum attendet auris tua :
Ut judices pupillis & inopibꝰ, & ut non adjiciat 18
ultrà perdere homines de terra.

PSAL. XI.

Davidis. Quum contriſtatus eſſet populus 1
quòd captivus ductus eſſet ipſe cum filiis
ſuis. Nobis autem modò triumphus de adverſario noſtro. Verſus 18.

IN Domino ſperavi; quomodo dicitis animæ meæ, Tranſmigra & habita ſuper montes
ſicut volucris ? Quoniam ecce peccatores 2
impleverunt arcum, et aptârunt ſagittas
ſuas ad nervū,ut jaculentur in caligine rectos
cordo: Quoniā quod parâſti deſtruxerunt; Juſtus autem quid facit? Dñs in templo ſanctitatis ſuæ, Dñi ſoliū in cœlo; oculi ejꝰ vident,et palpebræ ejus explorant filios hominū. 3 4

Verſio VULG. LAT.

3 Quoniam laudatur peccator in deſide-
riis animæ ſuæ : & iniquus benedici-
4 tur. Excerbavit Dominū peccator, ſecun-
dùm multitudinem iræ ſuæ non quæret.
5 Non eſt Deus in conſpectu ejus : inqui-
natæ ſunt viæ illius in omni tempore.
Auferuntur judicia tua à facie ejꝰ : omni-
um inimicorum ſuorum dominabitur.
6 Dixit enim in corde ſuo ; Non movebor
à generatione in generationem, ſine
7 malo. Cujus maledictione os plenum
eſt, & amaritudine, & dolo : ſub lingua
8 ejus labor & dolor. Sedet in inſidiis
cum divitibus in occultis, ut interficiat
9 innocentem. Oculi ejus in pauperem
reſpiciunt : inſidiatur in abſcondito,
quaſi leo in ſpelunca ſua. Inſidiatur ut
rapiat pauperem : rapere pauperem
10 dum attrahit eum. In laqueo ſuo humi-
liabit eum, inclinabit ſe, & cadet cùm
11 dominatus fuerit pauperum. Dixit enim
in corde ſuo ; Oblitus eſt Deus, avertit
12 faciem ſuam ne videat in finem. Exurge,
Dñe Deꝰ, exaltetur manꝰ tua : ne oblivi-
13 ſcaris pauperū. Propter quid irritavit
impius Deū ? dixit enim in corde ſuo,
14 Non requiret. Vides, quoniā tu laborē
& dolorem conſideras : ut tradas eos in
manꝰ tuas. Tibi derelictꝰ eſt pauper : or-
15 phano tu eris adjutor. Contere brachiū
peccatoris & maligni : quæretur pecca-
16 tū illiꝰ, & non invenietur. Dñs regnabit
in æternū, & in ſeculū ſeculi : peribitis
17 gentes de terra illiꝰ. Deſideriū pauperū
exaudivit Dñs : præparationē cordis eo-
18 rū audivit auris tua. Judicare pupillo
& humili, ut non apponat ultrà magni-
ficare ſe homo ſuper terram.

1 In finem, Pſalmus David. X.

2 IN Domino confido : quomodò dicitis
animæ meæ, Tranſmigra in montē ſicut
3 paſſer ? Quoniā ecce peccatores inten-
derunt arcum, paraverunt ſagitas ſuas in
pharetra, ut ſagittent in obſcuro rectos
4 corde. Quoniā quæ perfeciſti, deſtruxe-
5 runt : juſtus autē quid fecit ? Dñs in
templo ſancto ſuo : Dñs, in cœlo ſedes
ejus. Oculi ejus in pauperem reſpiciunt :
palpebræ ejꝰ interrogant filios hominū.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

3 †Ὅτι ἐπαινεῖται ὁ ἁμαρτωλὸς ἐν ταῖς ἐπιθυμίαις τῆς
4 ψυχῆς αὐτοῦ, †καὶ ὁ ἀδικῶν ἐνευλογεῖται. †Παρώξυνε τὸν
κύριον ὁ ἁμαρτωλὸς, †κατὰ τὸ πλῆθος τῆς ὀργῆς
5 αὐτοῦ οὐκ ἐκζητήσει. †Οὐκ ἔστιν ὁ θεὸς ἐνώπιον αὐτοῦ.
†βεβηλοῦνται αἱ ὁδοὶ αὐτοῦ ἐν παντὶ καιρῷ. †ἀνταναι-
ρεῖται τὰ κρίματά σου ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ, †πάν-
6 των τῶν ἐχθρῶν αὐτοῦ κατακυριεύσει. †Εἶπε γὰρ ἐν καρ-
δίᾳ αὐτοῦ, Οὐ μὴ σαλευθῶ ἀπὸ γενεᾶς εἰς γενεὰν ἄνευ
7 κακοῦ. †Οὗ ἀρᾶς τὸ στόμα αὐτοῦ γέμει καὶ πικρίας καὶ δό-
8 λου, †ὑπὸ τὴν γλῶσσαν αὐτοῦ κόπος καὶ πόνος. †Ἐγκάθη-
ται ἐνέδρᾳ μετὰ πλουσίων †ἐν ἀποκρύφοις, (θ) τοῦ ἀπο-
9 κτεῖναι ἀθῷον. †Οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ εἰς τὸν πένητα ἀπο-
βλέπουσιν. †(ι) ἐνεδρεύει ἐν ἀποκρύφῳ ὡς λέων ἐν
τῇ μάνδρᾳ αὐτοῦ· †ἐνεδρεύει τοῦ ἁρπάσαι πτωχὸν, †
10 ἁρπάσαι πτωχὸν ἐν τῷ ἑλκύσαι αὐτόν. †Ἐν τῇ παγί-
δι αὐτοῦ ταπεινώσει αὐτὸν, †κύψει καὶ πεσεῖται ἐν τῷ
11 αὐτὸν κατακυριεῦσαι τῶν πενήτων. †Εἶπε γὰρ (κ) ἐν τῇ
καρδίᾳ αὐτοῦ, Ἐπιλέλησται ὁ θεὸς, †ἀπέστρεψε τὸ πρόσ-
12 ωπον αὐτοῦ τοῦ μὴ βλέπειν εἰς τέλος. Ἀνάστηθι κύριε
ὁ (λ') θεὸς, ὑψωθήτω ἡ χείρ σου, †(λ) μὴ ἐπιλάθῃ τῶν πε-
13 νήτων. †Ἕνεκεν τίνος παρώξυνεν ὁ ἀσεβὴς τὸν θεόν;
14 †εἶπε γὰρ ἐν καρδίᾳ αὐτοῦ, (μ) Οὐ ζητήσει. †Βλέπεις,
ὅτι σὺ (ν) πόνον καὶ θυμὸν κατανοεῖς, †τοῦ παραδοῦναι
αὐτοὺς εἰς χεῖράς σου. †(ξ) Σοὶ ἐγκαταλέλειπται ὁ πτω-
15 χὸς, †ὀρφανῷ σὺ ἦσθα (ο) βοηθός. †Σύντριψον τὸν
βραχίονα τοῦ ἁμαρτωλοῦ καὶ πονηροῦ, †ζητηθήσεται ἡ ἁμαρ-
16 τία αὐτοῦ καὶ οὐ μὴ εὑρεθῇ (π). †Βασιλεύσει κύριος εἰς
τὸν αἰῶνα, καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος, †ἀπολεῖσθε ἔθνη
17 ἐκ τῆς γῆς αὐτοῦ. †Τὴν ἐπιθυμίαν τῶν πενήτων εἰσή-
κουσε κύριος, †τὴν ἑτοιμασίαν τῆς καρδίας αὐτῶν προσ-
18 έσχε τὸ οὖς (ρ) σου· †Κρῖναι ὀρφανῷ καὶ ταπεινῷ, †ἵνα μὴ
προσθῇ ἔτι (σ) μεγαλαυχεῖν ἄνθρωπος ἐπὶ τῆς γῆς.

MS.A. (θ) ἀποκτεῖναι (ι) ἐνεδρεύει * τοῦ ἁρπάσαι πτω-
χὸν, (κ) ἐν καρδίᾳ (λ') θεός μου, (λ) μὴ ἐπιλάθῃς (μ)
Οὐκ ἐκζητήσει. (ν) κόπον (ξ)* σὺ οὖν (ο) βοηθῶν.
(π) δι' αὐτήν. Βασιλεύσει (ρ) αὐτοῦ· (σ) τοῦ μεγαλαυχεῖν

1 Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. ι'.

2 †ἘΠὶ τῷ κυρίῳ πέποιθα, πῶς ἐρεῖτε (α) τῇ ψυ-
3 χῇ μου, †Μεταναστεύου ἐπὶ τὰ ὄρη ὡς στρουθίον; †Ὅτι
ἰδοὺ οἱ ἁμαρτωλοὶ ἐνέτειναν τόξον, †ἡτοίμασαν βέλη
εἰς φαρέτραν, †τοῦ κατατοξεῦσαι ἐν σκοτομήνῃ τοὺς εὐ-
4 θεῖς τῇ καρδίᾳ. †Ὅτι ἃ (β) κατηρτίσω καθεῖλον, †
5 ὁ δὲ δίκαιος τί ἐποίησε; †Κύριος ἐν ναῷ ἁγίῳ αὐτοῦ,
†κύριος, ἐν οὐρανῷ ὁ θρόνος αὐτοῦ· †οἱ ὀφθαλμοὶ
αὐτοῦ εἰς τὸν πένητα ἀποβλέπουσι, †τὰ βλέφαρα αὐτοῦ ἐξετάζει τοὺς υἱοὺς τῶν ἀνθρώπων.

MS.A. (α) τὴν ψυχήν μου, (β) σὺ κατηρτίσω αὐτοὶ καθεῖλον,

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

24 Quoniā (dd) laudatur peccator 3
in deſideriis animæ ſuæ: et qui in-
iqua gerit, benedicitur. 25 Irrita- 4
vit Dominū peccator: ſecundùm
multitudinem iræ ſuæ non exqui-
ret: 26 Non eſt Deꝰ in conſpectu 5
ejꝰ :[b]contaminantur viæ illius*
in omni tempore. 27 (ee)[c] Au-
feruntur judicia tua à facie ejus ;
omniū inimicorū ſuorū domina-
bitur. 28 Dixit enim in corde ſuo, 6
Non (ff) movebor à generatione in
generationē, [d] ſine malo. 29 Cujꝰ 7
maledictione os ejꝰ plenū eſt, et a-
maritudine, & dolo ; ſub cujꝰ lin-
gua (gg) labor, & dolor: 30 Sedet 8
[e] in (hh) inſidiis cū divitibus in
occultis, ut interficiat innocentē.
31 Oculi ejus in pauperē reſpici- 9
unt : inſidiatur in occulto, velut
leo in (ii) ſpelunca ſua. 32 Inſidi-
atur, ut rapiat pauperem, rapere
pauperem, dum (kk) attrahit eum.
33 In (ll) laqueo ſuo humiliabit 10
eum: (mm) inclinabit ſe, & cadet
cum dominaꝰ fuerit pauperū. 34
Dixit enim in corde ſuo, [f] Obli- 11
tus eſt Deꝰ: avertit faciem ſuam,
ne videat in finem. 35 Exurge, 12
Domine Deus; (nn) exaltetur ma-
nus tua ; ne obliviſcaris pauperū.
36 Propter quid (oo) irritavit im- 13
pius Deū ? dixit enim in corde
ſuo, Non requiret. 37 Vides, (pp) 14
quoniā tu laborem & iram con-
ſideras, ut tradas eos in manꝰ tu-
as. 38 [g] Tibi derelictꝰ eſt pau-
per: orphano tu fuiſti (qq) adjutor.
39 Contere brachium peccatoris, 15
& maligni: (rr) quæretur pecca-
tū illius [h], & non invenietur. 16
40 Dominus regnabit in æternū,
& in ſeculum ſeculi: [i] peribitis
gentes de terra illius. 41 Deſide- 17
rium pauperum exaudivit Domi-
nus: (ſſ) [k] præparationē cordis
eorum attendit [l] auris tua. 42
Judicare (tt) pupillo, & humili: 18
ut non apponat ultrà magnificare
ſe homo ſuper terram.

In finem (a) Pſalmus ipſi David. X. 1

I*N Domino confido : quomodò* 2
dicetis animæ meæ, (a) Tranſmi-
gra in montes ſicut paſſer? 2 Quo- 3
niam ecce peccatores intenderunt
arcum: (b) paraverunt ſagitas in
pharetra, ut ſagittent in (c) obſcura luna rectos corde. 3 Quoniā, [b] quæ (d) perfeciſti deſtruxerūt: juſtus autem (e) quid fecit ? 4 Dominꝰ in templo ſancto ſuo: Dominus, in cœlo ſedes e- 4 5
jus. 5 [c] Oculi ejus in (f) pauperem (g) reſpiciunt: palpebræ ejus interrogant filios hominum :

Verſio ÆTHIOPICA.

እስመ፡ይትዌደስ፡ ኃጥእ፡ በፍትወተ፡ ነፍሱ፡፡ 24
ወዐማፂ፡ይትባረክ፡፡=፡ ወሐኮ፡ ኃጥእ፡በእ 25
ግዚአብሔር፡፡ ወኢይትኃሠሥ፡ በከመ፡
ብዝኃ፡መዐቱ፡፡=፡ ወአልቦ፡ እግዚአብሔር፡ 26
በቅድሜሁ፡፡ ወርኩስ፡ ኵሉ፡ ፍናዊሁ፡፡=፡ 27
ወንሡት፡ ኵነኔከ፡ በቅድሜሁ፡፡ ወይቀንዮ
ሙ፡ለኵሎሙ፡ጸላእቱ፡፡=፡ ወይብል፡በልቡ፡ 28
ኢይትሀወክ፡ለትውልደ፡ትውልድ፡ ወኢይረክ
በኒ፡እኩይ፡፡=፡ ወምሉእ፡ አፉሁ፡መርገመ፡ 29
ወጽልሑት፡፡ ወታሕተ፡ ልሳኑ፡ ጻማ፡ ወሕማ
ም፡፡=፡ወይጸንሕ፡ወይነዓ፡ምስለ፡ብዑላን፡፡ 30
ከመ፡ይቅትሎ፡ለንጹሕ፡በጽሚት፡፡=፡ወአ 31
ዕይንቲሁኒ፡ ኀበ፡ነዳይ፡ ያስተሐይጻ፡፡ ወይጸ 32
ንሕ፡ ወይትኀባእ፡ ከመ፡ አንበሳ፡ ውስተ፡ግ
ብ፡፡=፡ ወይጸንሕ፡ከመ፡ይምስጥ፡ ለነዳይ፡፡
ወይመስጥ፡ ለነዳይ፡ ወይስሕቦ፡፡ ወያኀስሮ፡ 33
በመስገርቱ፡፡ ወይትቀጻዕ፡ ወይወድቅ፡ ሶበ፡
ቀነዮ፡ ለነዳይ፡፡= ወይብል፡ በልቡ፡ ኢይረስ 34
ዓኒ፡እግዚአብሔር፡፡ ወሜጠ፡ ገጾ፡ ከመ፡
ኢይርአይ፡ለግሙራ፡፡=፡ ተንሥእ፡እግዚኦ፡ 35
አምላኪየ፡ወትትሌዐል፡ እዴከ፡፡ ወኢትርስ
ዖሙ፡ለነዳያን፡፡=፡በእንተ፡ምንት፡አምዖ፡ 36
ኃጥእ፡ ለእግዚአብሔር፡፡ እስመ፡ ይብል፡
በልቡ፡ ኢይትኃሠሠኒ፡፡=፡ ትሬኢኑ፡ ከመ፡ 37
ለሊከ፡ ትኔጽር፡ ጻማ፡ ወመዐተ፡፡ ወከመ፡ ት
መጥዎ፡ውስተ፡እዴከ፡፡=፡ላዕሌከኑ፡ እንከ፡ 38
ተገድፈ፡ ነዳይ፡፡ ወአንተኑ፡ ረዳኢሁ፡
ለእጓለ፡ ማውታ፡፡ ቀጥቅጥ፡ መዝራዕቶ፡ 39
ለኃጥእ፡ ወለእኩይ፡፡ ወትትኃሠሥ፡ ኃ
ጢአቱ፡ በእንቲአሁ፡ወኢትትረከብ፡፡=፡ ይነ 40
ግሥ፡ እግዚአብሔር፡ ለዓለም፡ ወለዓለመ፡
ዓለም፡፡ ወይትሐጐሉ፡ አሕዛብ፡ እምድ
ሩ፡፡=፡ ፍትወቶሙ፡ለነዳያን፡ሰምዓ፡እግዚአ 41
ብሔር፡፡ ወሕሊና፡ ልቦሙ፡ አጽምአት፡ እ
ዝኑ፡፡=፡ ፍትሑ፡ለነዳይ፡ ወለእጓለ፡ ማው 42
ታ፡፡ ከመ፡ ኢይድግሙ፡እንከ፡እጓለ፡እመሕ
ያው፡አዕበዮ፡አፉሆሙ፡በድበ፡ ምድር፡፡=፡

ፍጻሜ፡ሰብሖት፡መዝሙር፡ዘደዊት፡
በእንተ፡ሰማዕት፡፡

1 በእግዚአብሔር፡ ተወከልኩ፡ እፎ፡ 1
ትብልዋ፡ ለነፍስየ፡፡ አዕይል፡ ውስተ፡አ
ድባር፡ከመ፡ ዖፍ፡፡=፡እስመ፡ነዋ፡ኃጥአን፡ 2
ወሰቁ፡ ቀስቶሙ፡፡ ወአስተዳለዉ፡ አሕጻቲሆ
ሙ፡ውስተ፡ ምጕንጺሆሙ፡ ከመ፡ ይንድፍ
ዎ፡ ለርቱዐ፡ ልብ፡ በጽሚት፡፡=፡ እስመ፡ 3
ናሁ፡ ዘአንተ፡ ሠራዕከ፡ እሙንቱ፡ ነሠቱ፡፡
ወጻድቅሰ፡ምንተ፡ገብረ፡፡=፡እግዚአብሔር፡ 4
ውስተ፡ ጽርሐ፡ መቅደሱ፡፡ እግዚአብሔር፡
ውስተ፡ሰማይ፡መንበሩ፡፡=፡ ወአዕይንቲሁኒ፡ 5
ኀበ፡ ነዳይ፡ ይኔጽራ፡፡ ወቀራንብቲሁኒ፡
የሀትቶ፡ለእጓለ፡ እመሕያው፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [b]et inquinatæ ſunt omnes viæ illiꝰ[c]Dimiſſū eſt judiciū tuū[d]neq; me apprehendet malū. Et maledictione plenū eſt os ejus, & dolo; ſub[e]ut captet cum divitibꝰ & interficiat innocentē in abſconditis.[f]Non, oblitus[g]Nonne ſuper te igitur derelictꝰ[h]per illud, & non[i]et peribunt[k]cogitationē[l]auris ejus. PSA. X.[a]laudis, Pſalmus David pro Octava.[b]ecce, quæ tu ordinâſti, iſti deſtruxerunt,[c]Et oculi etiam ejus

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

3 4 يفتخر المنافق بشهوات نفسه * والظالم يباركه * أسخط الرب الخاطي * ككثرة سخطه لا
5 يفحص * ليس الله أمامه * يدنس طرقه في كل حين * رفع أحكامك عن وجهه * يتسلط على
6 7 جميع أعدائه * لأنه قال في قلبه لا أزول جيلا بعد جيل بغير سوء * فمه ممتلئ لعنة ومرارة
8 وغشا * تحت لسانه تعب وألم * جلس كامنا مع الأغنياء * ليقتل الزكي في خفية * وعيناه
9 تنظران إلى الفقير * كامنا في خفية * كأسد في مكمنه * يكمن ليخطف الفقير * يخطف الفقير إذا ما
10 11 جذبه * وفي فخه يذله * يتطاطي ويسقط إذا ما تسلط على الفقير * لأنه قال في قلبه * إن الله قد
12 نسي * صد وجهه فلا ينظر إلى الأبد * قم يا رب وإلهي * ولترتفع يدك ولا تنس الفقير إلى
13 14 الأبد * حتى متى يسخط المنافق الله * قال في قلبه إنك لا تنتقم * وأنت يا رب ترى إثمه وسوء
15 عمله * ليسلم في يديك * بك يعتصم الفقير * أنت عون اليتيم * احطم ذراع الخاطي والشرير *
16 ستطلب خطيته فلا يوجد من أجلها * والرب يملك إلى الأبد وإلى أبد الأبد * تبيد الشعوب
17 18 من أرضه * سمع الرب شهوة الفقراء * وأصغى لتهيئة قلوبهم * يحكم لليتيم والبائس * حتى
لا يعود الإنسان يفتخر على الأرض بالعظائم *

1 * المزمور العاشر لداود * في الغلبة لمن يجاهد في الله * تير * استيخن *

2 توكلت على الرب فكيف يقولون لنفسي * انتقلي على الجبال مثل العصفور * لأن الخطاة
3 أوتروا قسيهم * وأعدوا سهاما في جعابهم * ليرموا خفيا مستقيمي القلوب * هم هدموا ما أصلحت *
4 والبار فماذا صنع * إن الرب في هيكل قدسه * الرب في السماء كرسيه * عيناه تنظران إلى
الفقير * لحظاته تفحص بني البشر *

Gloriatur impius in concupiſcentiis ani- 3
mæ ſuæ, & ſceleratus benedicit eum. Ad 4
iram provocavit Dominum peccator, ſe-
cundùm multitudinem indignationis ejus.
Non ſcrutatur : non eſt Deus ante eum :
Maculat vias ſuas omni tempore: Abſtulit 5
judicia tua à facie ſua, dominatur omni-
bus inimicis ſuis. Nam dixit in corde ſuo, 6
Non præteribo generationem poſt genera-
tionem abſque malitia. Os ejus plenum eſt 7
maledictione, & amaritudine, & dolo :
ſub lingua ejus labor, & paſſio. Sedit in- 8
ſidians cum divitibus, ut occidat inno-
centem in abſcondito ; & oculi ejus re-
ſpiciunt in pauperem, dum inſidiatur in
latibulo. Tanquam leo in inſidiis ſuis, inſi- 9
diatur ut rapiat pauperem ; rapit paupe-
rem, quum traxerit eum, & laqueo ſuo,
humiliaverit eum ; Incurvabitur, & ca- 10
det cùm dominatus fuerit pauperi. Nam 11
dixit in corde ſuo, Certè Deus jam obli-
tus eſt : avertit faciem ſuam, nec videbit
in æternum. Surge, O Domine mi, & 12
Deus meus, & exaltetur manus tua : &
ne obliviſcaris pauperis in perpetuum.
Uſquequò irritabit impius Deum ? Dixit 13
in corde ſuo, te non ſumpturum vin-
dictam. Et tu, O Domine, vides iniqui- 14
tatem ejus, & obſcœnitatem operis ejus, ut
tradatur in manus tuas. In te confortа-
tur pauper: tu es adjutorium pupilli. Con- 15
fringe brachium peccatoris, & maligni :
Requiretur peccatum ejus, & non inve-
nietur ob illud. Et Dominus regnabit in 16
æternum, & in ſæculum ſæculi: Peribunt
populi de terra ejus. Audivit Dominꝰ de- 17
ſiderium pauperum, & intendit quòd pa-
rârunt corda eorum. Judicabit orphano, 18
& inopi : ut non apponat homo gloriari
ſuper terram in magnificentiis.

PSAL. X. *Davidis.*

1 De victoria ejus qui pugnat 1
σὺν θεῷ. *Verſ.* 17.

C*Onfiſus ſum in Domino: quomodo di-*
cunt animæ meæ, Tranſmigra ad mon-
tes veluti paſſer ? Quia peccatores inten- 2
derunt arcus ſuos, & parârunt ſagittas in
pharetris ſuis, ut jacularentur clàm in
rectos cordibus ? Ipſi deſtruxerunt quod 3
aptâſti: Innocens autem quid fecit ? Eſt 4
quidem Dominus in templo ſanctitatis
ſuæ, Dominus, in cœlo ſedes ejus : oculi
ejus reſpiciunt in pauperem, ictus oculi
ipſius inveſtigant filios hominum.

תהלים : יב יג

habuit odio , *rapinam* diligentem & , impium & ; probabit justum DOMINUS
יְהוָה צַדִּיק יִבְחָן וְרָשָׁע וְאֹהֵב חָמָס שָׂנְאָה 5
ſpiritum & , ſulphur & , ignem , laqueos impios ſuper Pluet .ejus anima
נַפְשׁוֹ: יַמְטֵר עַל־רְשָׁעִים פַּחִים אֵשׁ וְגָפְרִית וְרוּחַ 6
: dilexit juſtitias Dominus juſtus Quoniam .eorum calicis partem *terrorum*
זִלְעָפוֹת מְנָת כּוֹסָם: כִּי־צַדִּיק יְהוָה צְדָקוֹת אָהֵב 7
.ejus facies videbunt rectum
יָשָׁר יֶחֱזוּ פָנֵימוֹ:

PSAL. XII. יב

defecit quia Domine Serva .Davidi canticum octavam ſuper Victori
1 לַמְנַצֵּחַ עַל־הַשְּׁמִינִית מִזְמוֹר לְדָוִד: הוֹשִׁיעָה יְהוָה כִּי־גָמַר
2 *loquentur* Mendacium .hominum filiis à fideles *deſierunt* quoniam , *pius*
חָסִיד כִּי־פַסּוּ אֱמוּנִים מִבְּנֵי אָדָם: שָׁוְא יְדַבְּרוּ 3
.loquentur corde & corde in , blanditiarum labium , ſuo *ſocio* unuſquiſque
אִישׁ אֶת־רֵעֵהוּ שְׂפַת חֲלָקוֹת בְּלֵב וָלֵב יְדַבֵּרוּ:
.magna loquentem linguam ; *blanditiarum* labia univerſa Dominus Succidet
יַכְרֵת יְהוָה כָּל־שִׂפְתֵי חֲלָקוֹת לָשׁוֹן מְדַבֶּרֶת גְּדֹלוֹת: 4
dominus quis , nobiſcum noſtra labia , roboremus *noſtra lingua In* ; dixerunt Qui
אֲשֶׁר אָמְרוּ לִלְשֹׁנֵנוּ נַגְבִּיר שְׂפָתֵינוּ אִתָּנוּ מִי אָדוֹן 5
nunc , inopum clamorem propter , *afflictorum* vaſtitatem Propter ? nobis
לָנוּ: מִשֹּׁד עֲנִיִּים מֵאַנְקַת אֶבְיוֹנִים עַתָּה 6
Eloquia .*eum illaqueabit* , ſalute in ponam , Dominus *dicet* , ſurgam
אָקוּם יֹאמַר יְהוָה אָשִׁית בְּיֵשַׁע יָפִיחַ לוֹ: אִמֲרוֹת 7
.*ſepties fuſum* , *terram in clibano in* conflatum argentũ, munda eloquia , Domini
יְהוָה אֲמָרוֹת טְהֹרוֹת כֶּסֶף צָרוּף בַּעֲלִיל לָאָרֶץ מְזֻקָּק שִׁבְעָתָיִם:
.ſeculum in hac generatione à eum cuſtodies : eos ſervabis Domine Tu
אַתָּה־יְהוָה תִּשְׁמְרֵם תִּצְּרֶנּוּ מִן־הַדּוֹר זוּ לְעוֹלָם: 8
.hominum filiis vilitas , *exaltare ſecundum* ; *ambulabunt* impii *Circumquaque*
סָבִיב רְשָׁעִים יִתְהַלָּכוּן כְּרֻם זֻלּוּת לִבְנֵי אָדָם: 9

PSAL. XIII. יג

uſquequo : *æternum* mei obliviſceris Domine Uſquequo .Davidi canticum Victori
לַמְנַצֵּחַ מִזְמוֹר לְדָוִד: עַד־אָנָה יְהוָה תִּשְׁכָּחֵנִי נֶצַח עַד־אָנָה 1
2 , mea anima in conſilia ponam Uſquequo ? me à *tuas facies* abſcondes
תַּסְתִּיר אֶת־פָּנֶיךָ מִמֶּנִּי: עַד־אָנָה אָשִׁית עֵצוֹת בְּנַפְשִׁי 3
? me ſuper meus inimicus exaltabitur Uſquequo ? die in meo corde in dolorem
יָגוֹן בִּלְבָבִי יוֹמָם עַד־אָנָה יָרוּם אֹיְבִי עָלָי:
fortè ne , meos oculos illumina , meus Deus Domine me exaudi , Aſpice
הַבִּיטָה עֲנֵנִי יְהוָה אֱלֹהָי הָאִירָה עֵינַי פֶּן־ 4
exultabunt mei hoſtes : ei prævalui , meus inimicus dicat fortè Ne .*mortem* dormiam
אִישַׁן הַמָּוֶת: פֶּן־יֹאמַר אֹיְבִי יְכָלְתִּיו צָרַי יָגִילוּ 5
, tua ſalute in meum cor *exultabit* , ſperavi tua miſericordia in ego Et .nutavero cùm
כִּי אֶמּוֹט: וַאֲנִי בְּחַסְדְּךָ בָטַחְתִּי יָגֵל לִבִּי בִּישׁוּעָתֶךָ 6
.*me ſuper* retribuit quoniam : Domino cantabo
אָשִׁירָה לַיהוָה כִּי גָמַל עָלָי:

תרגום TARGUM.

5 אלהא צדיקיא בחין ורשיעיא ורחמי חטופין
6 סנאת נפשיה: יחית מטרין דפורענו על רשיעי
מפחין דאשתא וכבריתא וזעפא עלעולא
7 יהבת כלידהון: מטול דצדיקא יי צדקותא
רחים תקניא יחמון סבר אפוי:

יב

1 לשבחא על כנרא דתמניא נימי תושבחתא
2 לדויד: פרוק יי מטול דגמירו טביא ספו ארום
3 מהימניא מן בני נשא: שקרא ממללין אנש
עם חבריה ספותא שעיען בלבבהון מנכלין
4 ובלבא שקרא ממללין: ישיצי יי מן עלמא
כל ספון שעיען לישנא דמללא רברבנותא:
5 מן דכפרין בעקרא דאמרין בלישננא נתגבר
6 ספותנא עמנא מן רבון דילנא: מאונסא דעניי
מן צוחת חשיכי השתא אקום אמר יי אשוי
פורקן לעמי ולרשיעי אסהיד בישותא להון:
7 מלין דיי מליא דכין סימא סנינא בכורא על
8 ארעא זקיק שבעתי זמנין: אנת יי תנטרנון
לצדיקיא תנצרנון מן דרא בישא הדין
9 לעלמין: חזור חזור רשיעיא מהלכין כעלוקא
דמצצא דמיהון דבני נשא:

יג

1 לשבחא תושבחתא לדויד: עד אן יי תשליני
2 לעלמין עד אן תטמור זיו אפך מני: עד אן 3
אשוי מלכא בנפשי דונא בלבבי יומם עד אן
4 יתרם בעל דבבי עלי: אסתכל וקביל צלותי
יי אלהא אנהר עיני באורייתך דלמא אחוב
5 ואדמוך עם חייבי מותא: דלמא יימר יצרא
בישא אשלטתיה מעיקי ירננון מטול אסטי
6 מארחתך: ואנא בטובך אתרחצית ירנן לבבי
בפורקנך אשבח קדם יי מטול דפריע עלי
טבתא:

PARAPH. CHALD. VerſLat.

Deus juſtũ probat : & *improbos* & *diligentes* rapinas odivit anima ejus. De- 5 6
ſcendere faciet pluvias vindictæ ſup impios, ſpirantes ignẽ ; ſulphur autẽ & turbo & tempeſtas pars calicis eorũ. Quoniã juſtus Dominus juſtitiam diligit : juſti 7
videbunt aſpectum faciei ejus.

Ad laudandum ſuper citharã octo chordarum, Hymnus Davidi. 1

PSAL. XII.

REdime Dñe, quoniã conſumpti ſunt 2
juſti, quoniam defecerunt fideles à filiis hominũ. Mendaciũ loquuntur unuſquiſque cum proximo ſuo, labiis adulationum in corde ſuo machinantur, & corde 3
mendacium loquuntur. Diſperdat Dñs 4
de mundo omnia labia blanditiarũ, linguã
loquentẽ magnifica. Qui *abnegantes fundamentũ* dicunt : Linguâ noſtrâ robore- 5
mur: labia noſtra nobiſcum; quis Dñs noſter eſt ? Propter violentiam pauperum, 6
& propter clamorẽ miſerorum, nunc exurgam, dicit Dñs: ſtatuámq; redemptionẽ
populo meo; in impios verò teſtificabor
malum. Eloquia Domini eloquia munda; 7
argentũ repurgatum in fuſorio ſuper terra, perpurgatum ſepties. Tu Dñe con- 8
ſervabis juſtos, cuſtodies eos à generatione *mala* hac in æternũ. In circuitu impro- 9
bi ambulant tanquam ſanguiſuga, quæ ſugit ſanguinem filiorum hominum.

Ad laudandum, Hymnus Davidi. 1

PSAL. XIII.

USquequo Dñe obliviſceris mei ſemper ? uſquequò abſcondes ſplendo- 2
rem vultus tui à me ? Uſquequò ponam 3
conſilia in anima mea, dolorẽ in corde
meo p̃ diem ? uſquequo exaltabitur adverſari⁹ me⁹ ſup̃ me ? Reſpice & accipe 4
orationẽ meã Dñe De⁹ me⁹: illumina oculos meos in lege tua, ne fortè peccem &
dormiam cum eis qui rei ſunt mortis. Ne 5
dicat *concupiſcentia mala* ; Dominatus
ſum ei : oppreſſores mei exultabunt, ſi
declinavero à ſemitis tuis. Et ego in 6
bonitate tua confiſus ſum ; exultabit cor
meum in redemptione tua : laudes dicam
coram Domino, quoniam retribuit mihi
bonum.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

*ܡܪܝܐ ܒܚܪ ܠܙܕܝܩܐ. ܠܥܘܠܐ ܘܠܪܚܡܝ ܥܘܠܐ ܣܢܝܐ ܢܦܫܗ : *ܢܦܠܘ ܥܠ ܪܫܝܥܐ ܦܚܐ 5 6
ܐܝܟ ܡܛܪܐ. ܢܘܪܐ ܘܟܒܪܝܬܐ : ܘܪܘܚܐ ܕܡܚܘܬܐ ܡܢܬܐ ܕܟܣܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܙܕܝܩ ܗܘ 7
ܡܪܝܐ ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܪܚܡ : ܘܬܪܝܨܘܬܐ ܚܙܝܢ ܐܦܘܗܝ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܝܒ *

* ܕܕܘܝܕ. ܡܟܬܫܢܘܬܐ ܕܒܝܫܐ. ܘܡܬܢܒܝܢܘܬܐ ܥܠ ܡܐܬܝܬܗ ܕܡܫܝܚܐ. ܦܬܓܡܐ ܝܛ * 1
* ܦܪܘܩ ܡܪܝܐ ܡܛܠ ܕܫܠܡ ܛܒܐ : ܘܡܛܠ ܕܫܠܡܬ ܗܝܡܢܘܬܐ ܡܢ ܐܪܥܐ. * ܒܢܝܢܫܐ 2 3
ܣܪܝܩܘܬܐ ܡܡܠܠܝܢ : ܘܓܒܪܐ ܥܡ ܚܒܪܗ ܒܣܦܘܬܐ ܡܫܚܠܦܬܐ. ܒܠܒܐ ܘܒܠܒܐ
ܡܡܠܠܝܢ : * ܢܘܒܕ ܡܪܝܐ ܟܠܗܝܢ ܣܦܘܬܐ ܡܫܚܠܦܬܐ. ܘܠܫܢܐ ܕܡܡܠܠܝܢ 4
ܪܘܪܒܬܐ : * ܕܐܡܪܘ ܠܫܢܢ ܢܘܪܒ. ܣܦܘܬܐ ܕܝܠܢ ܐܢܝܢ ܡܢܘ ܡܪܢ : * ܡܛܠ ܒܙܬܐ 5 6
ܕܡܣܟܢܐ ܘܬܢܚܬܐ ܕܒܨܝܪܐ. ܗܫܐ ܐܩܘܡ ܐܡܪ ܡܪܝܐ : ܘܐܥܒܕ ܦܘܪܩܢܐ ܒܓܠܝܐ.
* ܡܐܡܪܗ ܕܡܪܝܐ ܡܐܡܪܐ ܗܘ ܕܟܝܐ : ܣܐܡܐ ܓܒܝܐ ܕܒܚܝܪ ܒܐܪܥܐ. ܘܡܨܠܠ ܫܒܥ 7
ܙܒܢܝܢ : * ܘܐܢܬ ܡܪܝܐ ܬܛܪ ܐܢܘܢ. ܦܨܝܢܝ ܘܦܪܘܩܝܢܝ ܡܢ ܫܪܒܬܐ ܗܕܐ ܠܥܠܡ : * ܕܚܕܪܝܢ 8 9
ܪܫܝܥܐ ܘܡܬܗܠܟܝܢ. ܐܝܟ ܪܘܡܐ ܕܨܐܐ ܕܒܢܝ ܐܕܡ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܝܓ *

* ܡܘܡܐ ܕܒܥܠܕܒܒܐ ܘܣܘܟܝܐ ܕܡܪܝܐ ܘܡܥܕܪܢܘܬܗ. ܦܬܓܡܐ ܝܒ. 1
* ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܬܛܥܝܢܝ ܡܪܝܐ ܠܥܠܡ. ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܬܗܦܘܟ ܐܦܝܟ ܡܢܝ : * ܥܕܡܐ 2 3
ܠܐܡܬܝ ܬܣܝܡ ܟܪܝܘܬܐ ܒܢܦܫܝ. ܘܫܘܢܩܐ ܒܠܒܝ ܟܠܝܘܡ : ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܢܬܥܫܢ 4
ܒܥܠܕܒܒܝ ܥܠܝ. * ܚܘܪ ܘܥܢܝܢܝ ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ : ܘܐܢܗܪ ܥܝܢܝ ܕܠܐ ܐܕܡܘܟ ܠܡܘܬܐ.
* ܘܠܐ ܢܐܡܪ ܒܥܠܕܒܒܝ ܕܙܟܝܬܗ : ܐܠܘܨܝ ܢܚܕܘܢ ܒܝ ܟܕ ܐܙܘܥ. * ܐܢܐ ܕܝܢ ܠܛܝܒܘܬܟ 5 6
ܐܬܬܟܠܬ : ܢܚܕܐ ܠܒܝ ܒܦܘܪܩܢܟ. ܘܐܫܒܚ ܠܡܪܝܐ ܕܦܪܩܢܝ.

Dominus probat juſtos : iniquos & amantes 5
iniquitatis odit anima ejus. Ceciderunt ſu- 6
per impios laquei ſicut pluvia : ignis, &
ſulphur, & ſpiritus plagæ pars calicis eorum : Quoniam juſtus eſt Dominus, & ju- 7
ſtitiam diligit, & rectitudinem intuetur vultus ejus.

PSAL. XII.

Davidis. Pugna maligni : & Prophetia de adventu Christi. Verſ. 19. 1

SAlva, Domine , quoniam defecit probus, 2
& deſiit fidelitas de terra : Homines va- 3
nitatem loquuntur, & vir cum proximo ſuo
labiis diverſis, corde & corde loquuntur. 4
Perdat Dominus cuncta labia diverſa, &
linguas quæ loquuntur grandia. Qui dixe- 5
runt, Linguam noſtram magnificemus : labia, noſtra ſunt : quis Dominus noſter ? Pro- 6
pter vaſtitatem pauperum & gemitum inopum, nunc exurgam, dicit Dominus, & faciam ſalutem palàm. Eloquium Domini elo- 7
quium eſt purum, argentum ſelectum probatum terrâ, & expurgatum ſepties : Et tu, 8
Domine, ſervabis eos. Libera me & redime me à generatione hac in æternum. Quia 9
circumeunt impii, & ambulant quaſi altitudo obſcœna filiorum Adum.

PSAL. XIII.

Inſultatio adverſarii ; & Domini, ejuſque ſubſidii expectatio. Verſ. 12. 1

USquequò obliviſcêris mei, Domine, in 2
ſeculum ? uſquequò avertes faciem tuam
à me ? Uſquequò pones mœrorem in ani- 3
ma mea & ſolicitudinem in corde meo quotidie ? Uſquequò exaltabitur inimicus meus ſuper me ? Reſpice & exaudi me, Do- 4
mine Deus, & illumina oculos meos, ne dormiam ad mortem. Et ne dicat hoſtis meus, 5
Devici eum. Oppreſſores mei geſtient mihi,
cùm nutavero. At ego bonitati tuæ confi- 6
ſus ſum : exultabit cor meum in ſalute tua,
& laudabo Dominum qui me ſalvavit.

Verſio VULG. LAT.

6 Dominus interrogat juſtum & impium:
qui autem diligit iniquitatem, odit ani-
7 mam ſuam. Pluet ſuper peccatores la-
queos: ignis, & ſulphur, & ſpiritus pro-
8 cellarum, pars calicis eorum. Quoniam
juſtus Dominus & juſtitias dilexit: æ-
quitatem vidit vultus ejus.

1 In finem pro octava, Pſalmus David. XI.

2 SAlvum me fac, Domine, quoniam de-
fecit ſanctus: quoniam diminutæ ſunt
3 veritates à filiis hominum. Vana locuti
ſunt unuſquiſq; ad proximum ſuũ: labia
doloſa, in corde & corde locuti ſunt.
4 Diſperdat Dominus univerſa labia do-
5 loſa, & linguam magniloquam. Qui
dixerunt; Linguam noſtram magnifica-
bimus, labia noſtra à nobis ſunt, quis
6 noſter Dñs eſt? Propter miſeriam ino-
pum, & gemitũ pauperũ, nunc exurgã,
dicit Dominus. Ponam in ſalutari: fi-
7 ducialiter agam in eo. Eloquia Domi-
ni, eloquia caſta: argentum igne exa-
minatum, probatum terræ, purgatum
8 ſeptuplũm. Tu, Domine, ſervabis nos: &
cuſtodies nos à generatione hac in æter-
9 num. In circuitu impii ambulant: ſe-
cundùm altitudinem tuam multiplicâſti
filios hominum.

1 In finem, Pſalmus David. XII.

USquequò, Domine, obliviſceris me
in finem? Uſquequò avertis faciem tu-
2 am à me? Quamdiu ponam conſilia in
anima mea, dolorem in corde meo per
3 diem? Uſquequò exaltabitur inimicus
4 meus ſuper me? Reſpice, & exaudi me,
Domine Deus meus. Illumina oculos
meos, ne unquam obdormiam in morte:
5 Nequando dicat inimicus meus, Præ-
valui adverſùs eum. Qui tribulant me,
6 exultabunt ſi motus fuero: Ego autem
in miſericordia tua ſperavi. Exultabit
cor meum in ſalutari tuo: cantabo Do-
mino qui bona tribuit mihi: & pſallam
nomini Domini altiſſimi.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

6 † Κύριος ἐξετάζει τὸν δίκαιον ϗ τὸν ἀσεβῆ, † ὁ
δὲ ἀγαπῶν (γ) ἀδικίαν μισεῖ τὴν ἑαυτοῦ ψυχήν. †
7 Ἐπιβρέξει ἐπὶ ἁμαρτωλοὺς (δ) παγίδας, † πῦρ ϗ
θεῖον ϗ πνεῦμα καταιγίδος ἡ μερὶς τοῦ ποτηρίου
8 αὐτῶν. † Ὅτι δίκαιος κύριος ϗ δικαιοσύνας ἠ-
γάπησεν, † (ε) εὐθύτητα εἶδε τὸ πρόσωπον αὐτοῦ.

MS. A. (γ) τὴν ἀδικίαν (δ) παγίδα, (ε) εὐθύ-
τητας

1 Εἰς τὸ τέλος (α) ὑπὲρ τῆς ὀγδόης, ψαλμὸς
τῷ Δαυίδ. ιά.

2 † Σῶσόν με κύριε, ὅτι ἐκλέλοιπεν ὅσιος, † ὅτι
ὠλιγώθησαν αἱ ἀλήθειαι ἀπὸ τῶν υἱῶν τῶν ἀνθρώπων.
3 † Μάταια ἐλάλησεν ἕκαστος πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ,
† χείλη δόλια, ἐν καρδίᾳ ϗ ἐν καρδίᾳ (β) ἐλάλησε. †
4 Ἐξολοθρεύσαι κύριος πάντα τὰ χείλη τὰ δό-
5 λια, † ϗ γλῶσσαν (γ) μεγαλορρήμονα· † Τοὺς εἰ-
πόντας, Τὴν γλῶσσαν ἡμῶν μεγαλυνοῦμεν, † τὰ χεί-
λη ἡμῶν παρ' ἡμῶν ἐστι· † τίς ἡμῶν κύριός ἐστιν;
6 Ἀπὸ τῆς ταλαιπωρίας τῶν πτωχῶν, † ϗ ἀπὸ τοῦ
στεναγμοῦ τῶν πενήτων, † νῦν ἀναστήσομαι, λέγει κύ-
ριος· † θήσομαι ἐν σωτηρίῳ, παρρησιάσομαι ἐν
7 αὐτῷ. † Τὰ λόγια κυρίου, λόγια ἁγνά· † ἀργύρι-
ον πεπυρωμένον, δοκίμιον τῇ γῇ, † κεκαθαρισμέ-
8 νον ἑπταπλασίως. † Σὺ κύριε φυλάξεις ἡμᾶς· ϗ
(δ) διατηρήσεις ἡμᾶς † ἀπὸ τῆς γενεᾶς ταύτης, ϗ εἰς
9 τὸν αἰῶνα. † Κύκλῳ οἱ ἀσεβεῖς περιπατοῦσι, † κα-
τὰ τὸ ὕψος σου ἐπολυώρησας (ε) τοὺς υἱοὺς τῶν
ἀνθρώπων.

MS. A. (α) ψαλμὸς τῷ Δαυίδ, ὑπὲρ τῆς ὀγδό-
ης. (β) ἐλάλησε κακά. Ἐξολοθρεύσει (γ) μεγαλορή-
μονα· (δ) διατηρήσῃς (ε) πάντας τοὺς υἱοὺς

1 Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. ιβ'.

† ἝΩς πότε κύριε ἐπιλήσῃ μου εἰς τέλος; ἕως
πότε (α) ἀποστρέψεις τὸ πρόσωπόν σου ἀπ' ἐμοῦ; †
2 Ἕως τίνος θήσομαι βουλὰς ἐν ψυχῇ μου, † ὀδύνας
3 ἐν καρδίᾳ μου ἡμέρας (β); Ἕως πότε ὑψωθήσεται ὁ
4 ἐχθρός μου ἐπ' ἐμέ; † Ἐπίβλεψον, εἰσάκουσόν μου
κύριε ὁ θεός μου. † φώτισον τοὺς ὀφθαλμούς μου, †
5 μή ποτε ὑπνώσω εἰς θάνατον· † Μή ποτε (γ) εἴ-
πῃ ὁ ἐχθρός μου, Ἴσχυσα πρὸς αὐτόν. † οἱ θλί-
6 βοντές με ἀγαλλιάσονται ἐὰν σαλευθῶ· † Ἐγὼ δὲ
ἐπὶ τῷ ἐλέει σου ἤλπισα. † ἀγαλλιάσεται ἡ καρδία
μου (δ) ἐν τῷ σωτηρίῳ σου. † Ἄσω τῷ κυρίῳ τῷ
εὐεργετήσαντί με, † ϗ ψαλῶ τῷ ὀνόματι κυρίου
τοῦ ὑψίστου.

MS. A. (α) ἀποστρέψεις (β) ϗ νυκτός; (γ) εἴπῃ (δ) ἐπὶ τῷ

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

6 (b) Dominus interrogat juſtũ, & impiũ: qui autem diligit iniquitatem, odit animã ſuã. 7 (i) Pluet ſuper peccatores laqueos: ignis, & ſulphur, & ſpiritus procellarũ, pars calicis eorũ. 8 Quoniã juſtus Domin⁹, & juſtitias dilexit: (k) [d] æquitatem vidit facies ejus.

1 In finem [a] pro octava, pſalmus ipſi David. XI.

2 SAlvum me fac, Domine, quoniã defecit (a) ſanct⁹: quoniã (b) diminutæ ſunt veritates à filiis hominũ. 3 2 Vana locuti ſunt unuſquiſq; ad proximum ſuum: labia doloſa, in corde & corde (c) locuti ſunt. 4 3 [b] Diſperdat Dominus univerſa labia doloſa, & [c] linguam magniloquam. 5 4 Qui dixerunt, Linguam noſtram (d) magnificabimus: labia noſtra (e) à nobis ſunt: quis noſter Dominus eſt? 6 5 Propter (f) miſeriam inopum, & [d] gemitum pauperum, nunc exurgã, dicit Domin⁹. 6 (g) [e] Ponã in ſalutari, fiducialiter agã in eo. 7 Eloquia Domini, eloquia caſta: [f] argentum igne examinatũ, (h) probatũ terrâ, purgatũ ſeptuplũ. 8 Tu, Domine, (i) ſervabis nos, & cuſtodies nos à generatione (k) hac, & in æternum. 9 In circuitu impii (l) ambulant: ſecundũ (m) altitudinem tuam [g] multiplicâſti filios hominum.

1 In finem, Pſalmus ipſi (a) David. XII.

1 USquequò, Domine, (b) obliviſcêris me in finem? uſquequò (c) avertes faciem tuam à me? 2 2 Quamdiu ponam (d) [a] conſilia in anima mea, (e) [b] dolores in corde meo per diem? 3 3 uſquequò exaltabitur inimicus meus ſuper me? 4 Reſpice, exaudi me, Domine Deus meus. 4 Illumina oculos meos, ne unquam obdormiã in mortẽ: 5 Nequando dicat inimic⁹ me⁹, Prævalui adverſùs eũ. 5 Qui tribulant me, exultabunt, ſi mot⁹ fuero: 6 Ego autẽ in miſericordia tua ſperavi. 6 Exultabit cor meũ in ſalutari tuo: (f) cantabo Domino, qui [c] bona tribuit mihi, & pſallam nomini Domini altiſſimi.

Verſio ÆTHIOPICA.

እግዚአብሔር ፡ የሀትቶ ፡ ለጻድቅ ፡ ወለኃጥ 6
አ፡፡ ወዘሰ፡ አፍቀረ፡ ለዓመፃ፡ ጸልአ፡ ነፍሶ፡፡=፡
ይዘንም፡ መሣግር፡ ከዕበ ፡ ኃጥአን፡፡ እሳት፡ 7
ወተይ፡ መንፈስ ፡ ዐውሎ ፡ መክፈልተ ፡ ጽዋዓ
ሙ፡፡=፡ እስመ፡ ጻድቅ፡ እግዚአብሔር፡ ወጽ 8
ድቀ፡ አፍቀረ፡፡ ወርትዕሰ፡ ትሬእዮ፡ ገጾ፡፡=፡

ፍጻሜ፡ ሰብሐት፡ መዝሙር፡ ዘደዊት፡
በእንተ፡ ስሚእት፡፡

፲፩ አድኅነኒ፡ እግዚኦ፡ እስመ፡ ኀልቀ፡ ኄር፡፡ 1
ወውሕደ ፡ ሃይማኖት ፡ እምእጓለ ፡ እምሕ
ያው፡፡=፡ ከንቶ፡ ይትናገሩ፡ አሐዱ ፡ ምስለ፡ 2
ካልኡ፡፡ በከናፍረ፡ ጕሕሉት ፡ በልብ ፡ ወበ
ልብ፡ ይትናገሩ፡፡=፡ ይሠርወን ፡ እግዚአብ 3
ሔር፡ ለከናፍረ፡ ጕሕሉት፡፡ ወለልሳን፡ እንተ፡
ተዐቢ፡ ነቢበ፡፡=፡ እለ፡ ይብሉ፡ ናዐቢ፡ ልሳና 4
ቲነ፡፡ ወከናፍሪነኒ ፡ ኀቤነ፡ እሙንቱ፡፡ መኑ፡
ውእቱ፡ እግዚእነ፡፡=፡ 5 በእንተ፡ ሕማሞሙ፡
ለነዳይን፡፡ ወበእንተ ፡ ገዓሮሙ ፡ ለሙቁ
ሓን፡፡ ይእዜ ፡ እትነሣእ ፡ ይቤ ፡ እግዚአብ
ሔር፡፡=፡ ወእሬሲ፡ መድኀኒተ ፡ ወእግሕድ፡ 6
ቦቱ፡፡=፡ ቃለ፡ እግዚአብሔር ፡ ቃል፡ ንጹሕ፡፡ 7
ከመ፡ ብሩር፡ ጽሩይ፡ ወንጡፍ፡ ወፍቱን፡ እም
ድር፡፡ ዘአጽረይዎ፡ ምስብዒተ፡፡=፡ አንተ፡ 8
እግዚኦ ፡ ዕቀበነ ፡ ወተማኅፀነነ፡፡ እምዝቲ ፡
ትውልድ፡ ወለዓለም፡፡=፡ ዓውደ፡ የሐውሩ፡ ረ 9
ሲዓን፡፡ ወበከመ፡ ልዕልናከ፡ ሠራዕኮሙ፡ ለደ
ቂቀ፡ እጓለ፡ እምሕያው፡፡=፡

ፍጻሜ፡ መዝሙር፡ ዘደዊት፡፡

፲፪ እስከ፡ ማእዜኑ፡ እግዚኦ፡ ትረስዓኒ፡ ለግሙ 1
ራ፡፡ እስከ፡ ማእዜኑ፡ ትሜይጥ፡ ገጸከ፡ እምኔ
የ፡፡=፡ እስከ፡ ማእዜኑ፡ እኔብር፡ ሐዘነ፡ ውስተ፡
ነፍስየ፡፡ ወትጼዕረኒ፡ ልብየ፡ ኵሎ፡ እሚረ፡=፡ 2
እስከ፡ ማዕዜኑ ፡ ይትዔበዩ፡ ጸላእትየ ፡ ላዕሌ 3
የ፡፡=፡ ነጽረኒ ፡ ወስምዓኒ ፡ እግዚኦ ፡ አምላ
ኪየ፡፡=፡ አብርሆን፡ ለአዕይንትየ፡ ከመ፡ ኢይ 4
ኑም፡ ለሞዊት፡፡ ወከመ፡ ኢይበሉኒ፡ ጸላእትየ፡
ሞእናሁ፡፡=፡ ወእለሰ፡ ይሣቅዩኒ፡ ይትፌሥሑ፡ 5
ለእመ፡ ተሀወኩ፡፡ ወአንሰ ፡ በምሕረትከ ፡ ተወ
ከልኩ፡፡=፡ ይትፌሥሐኒ፡ ልብየ፡ በአድኅኖት 6
ከ፡፡ እሴብሖ ፡ ለእግዚአብሔር ፡ ዘረድአ
ኒ፡፡ ወእዜምር ፡ ለስመ ፡ እግዚአብሔር ፡ ል
ዑል፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [d] & æquitatem etiam PSA. xi. [a] laudis pro [b] Diſperdet autem Dominus labia [c] linguam etiam [d] gemitũ vinctorũ, [e] Et ponam ſalutare, [f] ſicut argentũ repurgatum, [g] terminũ ſtatuiſti filiis PSA. xii. [a] triſtitiam in [b] dolore etiam afficies cor meum quotidie? [c] mihi auxiliatur, &

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الرب يبلو الصديق والمنافق * والذي يهوي الظلم فنفسه ابغض * يمطر على الخطاة 5 6
فخاخا نارا وكبريتا وريحا عاصفا * هذه نصيب كاسهم * لان الرب عادل والعدل احب * وذووا 7
الاستقامة ينظرون وجهه * المزمور الحادي عشر لداود * عن الاخر في 1
اليوم الثامن ونبوه علي قدوم المسيح * ير * استيخن *
* خلصني يا رب فقد فني البار وقل الحق من بني البشر * وتكلم كل احد بالباطل في قريبه * 2 3
بشفة غاشة بقلب * وفي القلب تكلموا سوا * الرب يبيد كل الشفاه الغاشة * والالسن المعظمة 4
* القايلين * نعظم السنتنا وشفاهنا معنا * من هو ربنا * من اجل بوس الفقراء * وتنهد 5 6
المساكين قال الرب * الان اقوم واصنع الخلاص علانية * اقوال الرب اقوال زاكية * كفضة 7
محماة مسبوكة في الارض * قد صفيت الواحد سبعة اضعاف * وانت يا رب تحفظنا وتنجينا من 8
هذا الجيل * والي الابد * لان المنافقين حولنا يمشون * وكمثل ارتفاعك يا رب * اوسعت 9
اعمال بني البشر * المزمور الثاني عشر لداود * في الاخر وفيه ذكر 1
مقاومة الاعداء ونبوه على حضور المسيح * يج * استيخن *
* حتي متي تنساني يا رب الي الابد * حتي متي تصرف وجهك عني * حتي متي اضع هذه الافكار 2 3
في نفسي * والاوجاع في قلبي النهار اجمع * حتي متي يعلوا عدوي علي * انظر لي واستجب 4
لي يا ربي والاهي * انر عيني ليلا انام ميتا * وليلا يقول عدوي اني عليه قد قدرت * 5
والمضطهدون لي يفرحون اذا انا زللت * وانا على رحمتك توكلت * قلبي بخلاصك يفرح * ارتل 6
الرب الذي صنع لي حسنا * واسبح اسم الرب العالي *

5 *Dominus tentat juſtum, & impium; qui autem oblectatur ſcelere, animam ſuam odio habet.* 6 *Pluet ſuper peccatores laqueos, ignem, & ſulphur, & ventum vehementem. Hæc eſt pars calicis eorum.* 7 *Quoniam Dominus æquus & æquitatem dilexit, & recti videbunt faciem ejus.*

PSAL. XI. Davidis.

1 De fine mundi (qui continget) in die octava. Et prophetia de adventu Chriſti. Verſ. 17.

2 *SAlva me, O Domine mi, quia jam defecit juſtus, & diminuta eſt veritas à filiis hominum:* 3 *Et locutus eſt unuſquiſque falſitatem in proximum ſuum, labio doloſo, corde vario: & in corde loquuti ſunt malum.* 4 *Dominus perdet omnia labia doloſa, & linguas ſuperbas* 5 *Dicentium; Magnificemus linguas noſtras: &, Labia noſtra nobiſcum ſunt: quis eſt Dominus noſter?* 6 *Propter inopiam pauperum, & gemitum inopum, dixit Dominus; Nunc exurgam, & faciam ſalutem palàm.* 7 *Sermones Domini ſermones puri ſunt, veluti argentum electum liquatum in terra, quod jam expurgatum eſt pro uno ſeptuplùm.* 8 *Et tu, O Domine mi, ſervabis nos, & redimes nos ab hac generatione, & uſq; in æternum;* 9 *Quoniam impii circa nos ambulant, & ſecundùm altitudinem tuam, O Domine, ampliâſti negotia filiorum hominum.*

PSAL. XII. Davidis.

1 De fine. Et in eo fit mentio de inſultatione inimicorum. Et prophetia de præſentia Chriſti. Verſ. 13.

2 *USquequò obliviſceris mei, O Domine mi uſque in æternum? uſquequò avertes faciem tuam à me?* 3 *uſquequò reponam has cogitationes in anima mea, & dolores in corde meo die totâ? uſquequò exaltabitur inimicus meus ſuper me?* 4 *Reſpice in me & exaudi me, O Domine mi, & Deus meus. Illumina oculos meos ne dormiam mortuus:* 5 *Et ne dicat inimicus meus, quòd prævalui adversùs eum: & perſequentes me gaudeant, cùm ego lapſus fuero.* 6 *Et ego in miſericordia tua confiſus ſum: cor meum in ſalute tua lætabitur. Pſallam Domino meo, qui fecit mihi beneficium, & laudabo nomen Domini altiſſimi.*

תהלים׃ יד טו יו

PSAL. XIV. יד

,corruperunt : Deus non ,ſuo corde in *rudis* Dixit .Davidi Victori
לַמְנַצֵּחַ לְדָוִד אָמַר נָבָל בְּלִבּוֹ אֵין אֱלֹהִים הִשְׁחִיתוּ 1
proſpexit cœlis è Dominus .bonum *faciens* non ,*facinus* fecerunt abominabile
הִתְעִיבוּ עֲלִילָה אֵין עֹשֵׂה־טוֹב׃ יְהוָה מִשָּׁמַיִם הִשְׁקִיף 2
.Deum quærens ,intelligens ſit an *videndum ad* ,hominum filios ſuper
עַל־בְּנֵי־אָדָם לִרְאוֹת הֲיֵשׁ מַשְׂכִּיל דֹּרֵשׁ אֶת־אֱלֹהִים׃
.unus etiam non ,bonum faciens non ;*ſunt facti rancidi* pariter ,*receſſit Omnis*
הַכֹּל סָר יַחְדָּו נֶאֱלָחוּ אֵין עֹשֵׂה־טוֹב אֵין גַּם־אֶחָד׃ 3
,meum populum comedentes ? iniquitatem operantes omnes cognoverunt Nónne
הֲלֹא יָדְעוּ כָּל־פֹּעֲלֵי אָוֶן אֹכְלֵי עַמִּי 4
,timore timuerunt Ibi .invocaverunt non Dominum : panem comederent
אָכְלוּ לֶחֶם יְהוָה לֹא קָרָאוּ׃ שָׁם פָּחֲדוּ פָחַד 5
: afficietis pudore *afflicti* Conſilium .juſti generatione in Deus quoniam
כִּי־אֱלֹהִים בְּדוֹר צַדִּיק׃ עֲצַת־עָנִי תָבִישׁוּ 6
convertendo in ? Iſrael ſalutem Sijon ex dabit Quis .ejus ſpes Dominus quoniam
כִּי יְהוָה מַחְסֵהוּ׃ מִי יִתֵּן מִצִּיּוֹן יְשׁוּעַת יִשְׂרָאֵל בְּשׁוּב 7
.Iſrael lætabitur ,Jahacob exultabit ? ſui populi captivitatem Dominus
יְהוָה שְׁבוּת עַמּוֹ יָגֵל יַעֲקֹב יִשְׂמַח יִשְׂרָאֵל׃

PSAL. XV. טו

quis ? tuo tabernaculo in peregrinabitur quis Domine .Davidi Canticum
מִזְמוֹר לְדָוִד יְהוָה מִי־יָגוּר בְּאָהֳלֶךָ מִי־ 1
, juſtitiam *operans* & ,*perfectus Ambulans* ? tuæ ſanctitatis monte in habitabit
יִשְׁכֹּן בְּהַר קָדְשֶׁךָ׃ הוֹלֵךְ תָּמִים וּפֹעֵל צֶדֶק 2
non ,ſua lingua *ſuper eſt oblocutus* Non .ſuo corde in veritatem *loquens* &
וְדֹבֵר אֱמֶת בִּלְבָבוֹ׃ לֹא־רָגַל עַל־לְשֹׁנוֹ לֹא־ 3
.ſuum propinquum *ſuper detulit* non opprobrium & ,malum ſuo *ſocio* fecit
עָשָׂה לְרֵעֵהוּ רָעָה וְחֶרְפָּה לֹא־נָשָׂא עַל־קְרֹבוֹ׃
juravit : *glorificabit* Dominum timentes & ,*rejectus* ,*ejus oculis in Contemptus*
נִבְזֶה בְּעֵינָיו נִמְאָס וְאֶת־יִרְאֵי יְהוָה יְכַבֵּד נִשְׁבַּע 4
munus & ,uſuram ad dedit non ſuam Pecuniam .*mutabit* non & ,ſe affligere
לְהָרַע וְלֹא יָמִר׃ כַּסְפּוֹ לֹא־נָתַן בְּנֶשֶׁךְ וְשֹׁחַד 5
.ſeculum in *mutabit* non , hæc *faciens* : accepit non innocentem *ſuper*
עַל־נָקִי לֹא לָקָח עֹשֵׂה־אֵלֶּה לֹא יִמּוֹט לְעוֹלָם׃

PSAL. XVI. יו

Dixiſti .te in ſperavi quoniam ,Deus me Cuſtodi : Davidi Michtam
מִכְתָּם לְדָוִד שָׁמְרֵנִי אֵל כִּי־חָסִיתִי בָךְ׃ אָמַרְתְּ 1
2 qui ſanctis In .te *ſuper* non meum bonum : tu meus *Dominus* : Domino
לַיהוָה אֲדֹנָי אָתָּה טוֹבָתִי בַּל־עָלֶיךָ׃ לִקְדוֹשִׁים אֲשֶׁר־ 3
.*eis in* mea voluntas omnis *inclytis &* : *ipſi* terra in
בָּאָרֶץ הֵמָּה וְאַדִּירֵי כָּל־חֶפְצִי־בָם׃

תרגום TARGUM.

יד

לְשַׁבָּחָא בְּרוּחַ נְבוּאָה עַל דָּוִד אָמַר שַׁטְיָא 1
בְּלִבֵּיהּ לֵית שׁוּלְטָנָא דֶאֱלָהָא בְּאַרְעָא חַבִּילוּ
עוֹבָדֵיהוֹן רָחִקוּ טַבְתָא וְאַשְׁכַּחוּ עַוְלָא לֵית
דְּעָבֵד טָב׃ יְיָ מִשְּׁמַיָּא אוֹדִיק עַל בְּנֵי נָשָׁא 2
לְמֶחֱמֵי אִין אִית מַשְׂכִּיל תָּבַע אוּלְפָן מִן קֳדָם
יְיָ׃ כּוּלְהוֹן זָרוּ לַאֲחוֹרָא כַּחֲדָא אִתְרַשַּׁלוּ לֵית 3
דְּעָבֵד טָב אֲפִילוּ לֵית חַד׃ הֲלָא יָדְעוּ כָּל עָבְדֵי 4
שְׁקַר סָעֲדֵי עַמִּי סְעַדוּ לַחְמָא שְׁמָא דַיְיָ לָא
בָרִיכוּ׃ תַּמָּן דְּחִלוּ דַחֲלָא מְטוּל דְמֵימְרָא דַיְיָ 5
בְּדָרָא דְצַדִּיקֵי׃ מִלְּכַּת עַנְיָא תְּבַהֲתוּן מְטוּל 6
דְּשַׁוֵּי בַיְיָ סְבַרֵיהּ׃ מַן יִרְחִישׁ מִצִּיּוֹן פּוּרְקָנָא 7
דְיִשְׂרָאֵל כַּד יְתִיב יְיָ גָּלוּת עַמֵּיהּ יְרַנֵּן יַעֲקֹב
יֶחֱדֵי יִשְׂרָאֵל׃

טו

תּוּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד יְיָ מַן חָמֵי לְמֵדָּר בְּמַשְׁכְּנָךְ מַן 1
חָמֵי לְמִשְׁרֵי בְּטוּר בֵּית מַקְדְּשָׁךְ׃ דִּמְהַלֵּךְ 2
בִּשְׁלֵימוּתָא וְעָבֵד צִדְקְתָא וּמְמַלֵּל קוּשְׁטָא
בְּלִבְבֵיהּ׃ לָא אָכַל קוּרְצִין בְּלִישָׁנֵיהּ לָא עָבַד 3
לְחַבְרֵיהּ בִּישׁוּתָא וּכְסוּפָא לָא סוֹבַר עַל
קְרִיבֵיהּ׃ דְּשָׁט בְּאַנְפּוֹי וּבְסִיר וְיַת דְּחַלַיָּא דַיְיָ 4
מוֹקִיר דְּיוֹמֵי לְאַבְאָשָׁא לְגַרְמֵיהּ וְלָא מְשַׁלְחַף׃
סִימֵידֵיהּ לָא יְהַב בְּחִבּוּלְיָא וְשׁוּחֲדָא עַל זַכָּאָה 5
לָא קַבֵּיל דְּעָבַד אִלֵּין לָא יְזוּעַ לְעָלְמָא׃

יו

גְּלִיפָא תְרִיצָא לְדָוִד נְטַר יָתִי אֱלָהָא מְטוּל 1
דְּסַבְרֵית בְּמֵימְרָךְ׃ מַלֵּילְתְּ אַנְתְּ נַפְשִׁי קֳדָם 2
יְיָ אֱלָהִי אַנְתְּ בְּרַם טִיבְתִי לָא מִתְיְהִיבָא
בַּר מִנָּךְ׃ לְקַדִּישַׁיָּא דִּי בְאַרְעָא הִנּוּן הוֹדַעוּ 3
כֹּחַ גְּבוּרְתִי מִן שֵׁרוּיָא וְגוּתְנִין בְּעוֹבָדֵיהוֹן טָבַיָּא
כָּל רְעוּתִי טָבָא בְּהוֹן׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Ad laudandum *in ſpiritu prophetiæ* 1
per Davidem.

PSAL. XIV.

DIxit inſipiens in corde ſuo : Non eſt
poteſtas Dei in terra : coruperunt opera
ſua ; execrati ſunt bonum, & adinvenerunt
occaſionem : non eſt qui operetur
bonum. Dominus de cœlo aſpicit ſuper 2
filios hominum, ut videat num ſit intelligens,
qui quærat doctrinam à conſpectu
Domini. Omnes converſi ſunt retrò, ſimul 3
obtorpuerunt : non eſt qui operetur
bonum, non eſt ne unus quidem. Numquid 4
ſciunt omnes operatores mendacii,
devorantes populum meum [*quaſi*] devorarent
panem? nomen Domini non benedixerunt.
Ibi timuerunt timore, quoniam 5
verbum Domini in generatione juſtorum.
Conſilium pauperis confundetis, 6
quoniam poſuit *in Domino* ſpem ſuam.
Quis depromet è Sion redemptionem Iſraelis? 7
cùm converterit Dominus captivitatem
populi ſui, exultabit Jacob, lætabitur
Iſrael.

Hymnus Davidi. 1

PSAL. XV.

DOmine, quis dignus eſt ut habitet in
tabernaculo tuo? *cui conveniet* hoſpitari
in monte domus ſanctitatis tuæ?
Qui ambulat in perfectione, & operatur 2
juſtitiam, & loquitur veritatem in corde
ſuo : Non detrahit lingua ſua, nec infert 3
proximo ſuo malum: & opprobrium
non ſuſtinet ſuper propinquo ſuo. Qui 4
deſpectus eſt in conſpectu ſuo, & contemptus;
atque timentes Dominum glorificat
: jurat ut affligat ſeipſum, & non
mutabit. Pecuniam ſuam non dedit ad 5
uſuram, & munus ſuper innocentem non
accepit. Qui facit hæc, non movebitur in
æternum.

Sculptura recta Davidi. 1

PSAL. XVI.

CUſtodi me *Deus*, quoniam confiſus
ſum in verbo tuo. Locuta es tu anima 2
mea coram Domino : Deus meus es tu:
veruntamen bonum meum non datum eſt
niſi à te. Sanctis qui ſunt in terra, *ipſi* notam 3
fecerunt virtutem potentiæ meæ ab initio: & magnificis
in operibus bonis, omnis mea voluntas bona in ipſis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܝܕ *

* ܕܕܘܝܕ. ܣܘܟܝܐ ܕܡܫܝܚܐ ܦܬܓ̈ܡ ܝܕ. 1
ܐܡܪ ܣܟܠܐ ܒܠܒܗ ܕܠܝܬ ܐܠܗܐ. ܐܬܚܒܠܘ ܘܐܣܬܪܝܘ ܒܨܒܝܢܝܗܘܢ: ܘܠܝܬ ܕܥܒܕ ܛܒܬܐ.
* ܡܪܝܐ ܐܕܝܩ ܡܢ ܫܡܝܐ ܥܠ ܒܢܝ̈ ܐܢܫܐ : ܕܢܚܙܐ ܐܢ ܐܝܬ ܕܡܣܬܟܠ ܘܒܥܐ ܠܐܠܗܐ. 2
* ܟܠܗܘܢ ܣܛܘ ܐܟܚܕܐ ܘܐܣܬܪܝܘ : ܘܠܝܬ ܕܥܒܕ ܛܒܬܐ ܐܦܠܐ ܚܕ. * ܘܠܐ ܝܕܥܘ ܟܠܗܘܢ 3 4
ܥܒܕ̈ܝ ܥܘܠܐ : ܐܟ̈ܠܝ ܥܡܝ ܡܐܟܘܠܬ ܠܚܡܐ. ܘܠܡܪܝܐ ܠܐ ܩܪܘ : * ܬܡܢ ܕܚܠܘ ܕܚܠܬܐ. 5
ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܒܕܪܐ ܗܘ ܕܙܕܝܩܐ : * ܬܪܥܝܬܗ ܕܡܣܟܢܐ ܒܗܬܬܘܢ. ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܗܘ ܬܘܟܠܢܗ : 6
* ܡܢ ܢܬܠ ܡܢ ܨܗܝܘܢ ܦܘܪܩܢܐ ܠܐܝܣܪܝܠ. ܡܐ ܕܐܗܦܟ ܡܪܝܐ ܫܒܝܬܐ ܕܥܡܗ : ܢܪܘܙ 7
ܝܥܩܘܒ ܘܢܚܕܐ ܐܝܣܪܝܠ.
* ܫܘܒܚܐ ܘܫܘܪܝ ܡܣܩܬܐ *

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܝܗ *

* ܕܕܘܝܕ. ܦܘܢܝܐ ܡܫܡܠܝܐ ܕܠܘܬ ܐܠܗܐ ܦܬܓ̈ܡ ܝܓ. 1
ܡܪܝܐ ܡܢܘ ܢܥܡܪ ܒܡܫܟܢܟ. ܘܡܢܘ ܢܫܪܐ ܒܛܘܪܐ ܩܕܝܫܐ : * ܐܝܢܐ ܕܡܗܠܟ ܕܠܐ ܡܘܡ 2
ܘܥܒܕ ܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܡܡܠܠ ܫܪܪܐ ܒܠܒܗ. * ܘܠܐ ܢܟܠ ܒܠܫܢܗ : ܘܠܐ ܥܒܕ 3
ܠܚܒܪܗ ܒܝܫܬܐ. ܘܚܣܕܐ ܥܠ ܩܪܝܒܗ ܠܐ ܡܩܒܠ : * ܘܡܫܝܛ ܒܥܝܢܘܗܝ ܡܪܓܙܢܐ. 4
ܘܠܕܚܠܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܡܝܩܪ : ܝܡܐ ܠܚܒܪܗ ܘܠܐ ܡܕܓܠ. * ܘܟܣܦܗ ܒܪܒܝܬܐ ܠܐ ܝܗܒ : 5
ܘܫܘܚܕܐ ܥܠ ܙܟܝܐ ܠܐ ܢܣܒ. ܡܢ ܕܥܒܕ ܗܠܝܢ ܙܕܝܩ ܗܘ : ܘܠܐ ܡܬܬܙܝܥ ܠܥܠܡ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܝܘ *

* ܕܕܘܝܕ. ܓܒܝܬܐ ܕܥܕܬܐ : ܘܩܝܡܬܐ ܕܡܫܝܚܐ. ܦܬܓ̈ܡ ܟܓ. 1
ܛܪܢܝ ܐܠܗܐ ܡܛܠ ܕܥܠܝܟ ܐܬܬܟܠܬ : * ܐܡܪܬ ܠܡܪܝܐ ܕܡܪܝ ܐܢܬ. ܘܛܒܬܝ ܡܢܟ 2
ܗܘܝܐ ܗܝ : * ܠܩܕܝܫܐ ܕܒܐܪܥܐ ܘܠܡܫܒܚܐ. ܕܟܠܗ ܨܒܝܢܝ ܒܗܘܢ : 3

PSAL. XIV.

Davidis. Expectatio Chriſti. Verſ. 14. 1
DIcit iniquus in corde ſuo, Non eſt Deus.
Corrupti ſunt et contaminati ſunt in verſutiis
ſuis, & non eſt qui faciat bonum. Dominus 2
proſpexit de cœlo ſuper filios hominum,
ut videret num reperiretur qui ſapiens
eſſet, & quærens Deum. Omnes aberrârunt 3
ſimul & abjecti ſunt, & non eſt qui faciat
bonum, ne unus quidem. Et non cognoverunt 4
omnes operantes iniquitatem, comedentes
populum meum comeſtione panis, &
Dominum non invocaverunt. Illic expaverunt 5
pavore, quoniam Deus eſt in generatione
juſtorum. Conſilium pauperis confuderunt, 6
quoniam Domin⁹ eſt fiducia illius.
Quis dabit ex Sion ſalutem Iſraeli? quando 7
avertet Dominus captivitatem populi ſui,
exultabit Iacob, & lætabitur Iſrael.
Laus, & initium gradus.

PSAL. XV.

Davidis. Converſio perfecta ad Deum. 1
Verſ. 13.
DOmine, quis habitabit in tabernaculo
tuo? & quis requieſcet in monte tuo
ſancto? Qui ambulat ſine macula, & operatur 2
juſtitiam, & loquitur veritatem in corde
ſuo. Neque fraudulentus eſt in lingua ſua, 3
neque facit proximo ſuo malum, & munus
adverſus vicinum ſuum non accepit. Et 4
contemptus eſt in oculis ejus irritator, & timentes
Dominum honorat : jurat proximo
ſuo, & non mentitur, Pecuniamque ſuam 5
fœnori non tribuit, & munus adverſus innocentem
non accipit. Qui facit hæc, juſtus
eſt, & non movebitur in æternum.

PSAL. XVI.

Davidis. Electio Eccleſiæ, & Reſurrectio 1
Chriſti. Verſ. 23.
COnſerva me, Deus, quoniam in te confiſus
ſum. Dixi Domino, Dominus meus 2
es tu, & bonum meum à te eſt : Etiam ſanctorum 3
qui in terra ſunt, & glorioſorum, in
quibus tota delectatio mea eſt.

Verſio VULG. LAT.

1 In finem, Pſalmus David.
XIII.

DIxit inſipiens in corde ſuo, Non eſt Deus. Corrupti ſunt, & abominabiles facti ſunt in ſtudiis ſuis: non eſt qui faciat
2 bonũ, non eſt uſque ad unum. Dominus de cœlo proſpexit ſuper filios hominũ, ut videat ſi eſt intelligens, aut requirens
3 Deum. Omnes declinaverunt, ſimul inutiles facti ſunt: non eſt qui faciat bonum, non eſt uſque ad unum. Sepulchrũ patens eſt guttur eorum: linguis ſuis doloſè agebant, venenum aſpidum ſub labiis eorum. Quorum os maledictione & amaritudine plenum eſt: veloces pedes eorum ad effundendum ſanguinem. Contritio & infœlicitas in viis eorum, & viã pacis non cognoverunt: non eſt timor
4 Dei ante oculos eorum. Nónne cognoſcent omnes qui operantur iniquitatẽ, qui devorant plebem meam ſicut eſcam
5 panis? Dominum non invocaverunt, illîc trepidaverunt timore, ubi non erat
6 timor. Quoniam Dominus in generatione juſta eſt, conſilium inopis confudiſtis:
7 quoniam Dominus ſpes ejus eſt. Quis dabit ex Sion ſalutare Iſrael? cùm averterit Dominus captivitatem plebis ſuæ, exultabit Jacob, & lætabitur Iſrael.

1 Pſalmus David. XIV.

DOmine, quis habitabit in tabernaculo tuo? aut quis requieſcet in monte ſan-
2 cto tuo? Qui ingreditur ſine macula, &
3 operatur juſtitiam: Qui loquitur veritatem in corde ſuo, qui non egit dolum in lingua ſua: Nec fecit proximo ſuo malum, & opprobrium non accepit adver-
4 ſùs proximos ſuos. Ad nihilum deductus eſt in conſpectu ejus malignus: timentes autem Dominum glorificat: Qui ju-
5 rat proximo ſuo, & non decipit. Qui pecuniam ſuam non dedit ad uſuram, & munera ſuper innocentem non accepit. Qui facit hæc, non movebitur in æternũ.

1 Tituli inſcriptio ipſi David.
XV.

COnſerva me, Domine, quoniam ſpe-
2 ravi in te. Dixi Domino; Deus meus es tu, quoniam bonorum meorũ non eges.
3 Sanctis, qui ſunt in terra ejus, mirificavit omnes voluntates meas in eis.

Verſio GRÆCA. LXX. Interp.

1 Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. ιγʹ.

†Εἶπεν ἄφρων ἐν καρδίᾳ αὐτοῦ, Οὐκ ἔστι Θεός. †(α) Διεφθάρησαν καὶ ἐβδελύχθησαν ἐν ἐπιτηδεύμασιν, †οὐκ ἔστι
2 ποιῶν χρηστότητα, οὐκ ἔστιν ἕως ἑνός. †Κύριος ἐκ τοῦ οὐρανοῦ διέκυψεν ἐπὶ τοὺς υἱοὺς τῶν ἀνθρώπων, †τοῦ
3 ἰδεῖν εἰ ἔστι συνιῶν ἢ ἐκζητῶν τὸν Θεόν. †Πάντες ἐξέκλιναν, ἅμα ἠχρειώθησαν, †οὐκ ἔστι ποιῶν χρηστότητα, οὐκ ἔστιν ἕως (β) ἑνός. τάφος ἀνεῳγμένος ὁ λάρυγξ αὐτῶν, ταῖς γλώσσαις αὐτῶν ἐδολιοῦσαν, ἰὸς ἀσπίδων τὰ χείλη αὐτῶν· ὧν τὸ στόμα ἀρᾶς καὶ πικρίας γέμει, ὀξεῖς οἱ πόδες αὐτῶν ἐκχέαι αἷμα. Σύντριμμα καὶ ταλαιπωρία ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν. καὶ ὁδὸν εἰρήνης οὐκ ἔγνωσαν· οὐκ ἔστι φόβος Θεοῦ ἀπέναντι
4 τῶν ὀφθαλμῶν αὐτῶν. †Οὐχὶ γνώσονται πάντες οἱ ἐργαζόμενοι τὴν ἀνομίαν, †οἱ (γ) κατέσθοντες τὸν λαόν
5 μου (δ) βρώσει ἄρτου; †Τὸν κύριον οὐκ ἐπεκαλέσαντο.
6 †ἐκεῖ ἐδειλίασαν φόβῳ, (ε) οὗ οὐκ ἦν φόβος. †Ὅτι ὁ Θεὸς ἐν γενεᾷ (ζ) δικαίᾳ. †βουλὴν πτωχοῦ κατῃσχύ-
7 νατε, †ὅτι κύριος ἐλπὶς αὐτοῦ ἐστι. †Τίς δώσει ἐκ Σιὼν τὸ σωτήριον τοῦ Ἰσραήλ; †ἐν τῷ ἐπιστρέψαι κύριον τὴν αἰχμαλωσίαν τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, †(η) ἀγαλλιάσθω Ἰακὼβ, καὶ εὐφρανθήτω Ἰσραήλ.

MS. A. (α) διεφθάρησαν (β) αἰνός. ***** Οὐχὶ γνώσονται (γ) κατεσθίοντες (δ) ἐν βρώσει ἄρτου; (ε) ὧ οὐκ ἦν (ζ) δικαίων. (η) ἀγαλλιάσεται Ἰακὼβ, καὶ εὐφρανθήσεται Ἰσραήλ.

1 Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. ιδʹ.

†Κύριε, τίς παροικήσει ἐν τῷ σκηνώματί σου; †(α) καὶ τίς κατασκηνώσει (β) ἐν τῷ ὄρει τῷ ἁγίῳ
2 σου; †Πορευόμενος ἄμωμος, καὶ ἐργαζόμενος δι-
3 καιοσύνην· †Λαλῶν ἀλήθειαν ἐν καρδίᾳ αὐτοῦ. †ὃς οὐκ ἐδόλωσεν ἐν γλώσσῃ αὐτοῦ, †οὐδὲ ἐποίησε τῷ πλησίον αὐτοῦ κακὸν, †καὶ ὀνειδισμὸν οὐκ ἔλαβεν
4 ἐπὶ τοὺς ἔγγιστα αὐτοῦ· †Ἐξουδένωται ἐνώπιον αὐτοῦ (γ) πονηρευόμενος, †τοὺς δὲ φοβουμένους κύριον δοξάζει· †ὁ ὀμνύων τῷ πλησίον αὐτοῦ καὶ οὐκ ἀθετῶν·
5 †Τὸ ἀργύριον αὐτοῦ οὐκ ἔδωκεν ἐπὶ τόκῳ, †καὶ δῶρα ἐπ᾽ ἀθῴοις οὐκ ἔλαβεν. †ὁ ποιῶν ταῦτα, οὐ σαλευθήσεται εἰς τὸν αἰῶνα.

MS A. (α) ἢ τίς (β) ἐν ὄρει (γ) πᾶς πονηρευόμενος,

1 Στηλογραφία τῷ Δαυίδ. ιεʹ.

2 †Φύλαξόν με κύριε, ὅτι ἐπὶ σοὶ ἤλπισα. †Εἶπα τῷ κυρίῳ, Κύριός μου εἶ σύ, †ὅτι τῶν ἀγαθῶν μου
3 οὐ χρείαν ἔχεις. †Τοῖς ἁγίοις τοῖς ἐν τῇ γῇ αὐτοῦ, ἐθαυμάστωσε πάντα τὰ θελήματα αὐτοῦ ἐν αὐτοῖς.

[a] Tituli (a) inſcriptio ipſi (b) David. XV.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

1 In finem, Pſalmus ipſi David. XIII.

1 *DIxit imprudens in corde ſuo, Nõ eſt De⁹. (a) 2 corruperũt, & abominabiles facti ſunt in (b) ſtudiis: non eſt qui faciat (c) bonitatẽ, non eſt uſque ad unũ. 3 Domin⁹ de cœlo proſpexit ſuper filios hominũ, ut videat, ſi eſt intelligens [a] aut requirens Deũ. 4 Omnes declinaverũt, ſimul inutiles facti ſunt: non eſt qui faciat bonũ, non eſt uſq; ad unum. 5 (d) [b] Sepulchrum patens eſt guttur eorum, linguis ſuis doloſè agebant: venenũ aſpidum labia eorũ: 6 quorũ os [c] maledictione, & amaritudine plenum eſt: veloces pedes eorum ad effundendũ ſanguinẽ. 7 [d] Contritio & infœlicitas in viis eorum: & viã pacis non cognoverunt: non eſt timor Dei ante oculos eorũ. 8 (e) Nónne cognoſcent omnes, qui operantur iniquitatẽ, qui devorant populum meũ cibo (f) panis? 9 Dominũ non invocaverunt: illîc trepidaverunt timore, (g) ubi non erat timor. 10 Quoniã De⁹ in generatione juſta eſt: conſilium inopis confudiſtis, quoniam Domin⁹ [e] ſpes ejus eſt. 11 Quis dabit ex Sion ſalutare Iſrael? cùm (h) converterit Dominus captivitatem plebis ſuæ, (i) exultet Jacob, & lætetur Iſrael.*

Pſalmus ipſi David. XIV. 1

1 *DOmine, quis (a) habitabit in tabernaculo tuo? & quis requieſcet in monte ſancto tuo? 2 Qui ingreditur [a] ſine macula, & operatur juſtitiã. 3 Qui loquitur veritatẽ in corde ſuo, qui non egit dolũ in lingua ſua. 4 Nec fecit proximo ſuo malum: et opprobrium non accepit adverſus proximos ſuos. 5 Ad nihilũ deduct⁹ eſt in cõſpectu ej⁹ malign⁹: timentes autẽ Dominũ glorificat. 6 Qui (b) jurat proximo ſuo, & non decipit: [b] Pecuniã ſuã non dedit ad uſurã: & munera ſuper (c) innocentes non accepit. 7 Qui [c] facit hæc, non commovebitur in æternum.*

1 *COnſerva me, (c) Domine, quoniã in te ſperavi. Dixi Domino; Deus meus es tu, quoniã (d) bonorum meorũ non eges. 2 Sanctis, qui ſunt in terra ejus, (e) [b] mirificavit omnes voluntates ſuas in eis.* 1 2 3

Verſio ÆTHIOPICA.

1 ፍጻሜ፡መዝሙር፡ዘደዊት፡፡
፲፫ ይብል፡አብድ፡በልቡ፡አልቦ፡እግዚአብ 1
ሔር፡፡=፡ ኃሰሩ፡ወረኰሱ፡በምግባሪሆሙ፡፡ 2
አልቦ፡ዘይገብራ፡ለሠናይት፡አልቦ፡ወሊአሐ
ዱ፡፡=፡ እግዚአብሔር፡ኆወጸ፡እምሰማይ፡ላ 3
ዕለ፡እጓለ፡እምሕያው፡፡ከመ፡ይርአይ፡እመ
ቦ፡ጠቢብ፡ዘያኀሥሥ፡ለእግዚአብሔር፡፡=፡
ኵሉ፡ዐረዩ፡ወኅቡረ፡ዓለዉ፡፡ አልቦ፡ዘይገ 4
ብራ፡ለሠናይት፡አልቦ፡ወሊእሐዱ፡፡=፡ከመ፡ 5
መቃብር፡ክሡት፡ጕረዒቶሙ፡፡ ወጸልሐዉ፡
በልሳናቲሆሙ፡፡ ሐምዘ፡አርዌ፡ምድር፡ታሕ
ተ፡ከናፍሪሆሙ፡፡=፡ መሪር፡አፉሆሙ፡ወመ 6
ሉእ፡መርገም፡፡በሊሕ፡እገሪሆሙ፡ለክዒወ፡
ደም፡፡=፡ ኃሳር፡ወቅጥቃጤ፡ውስተ፡ፍኖቶ 7
ሙ፡፡ ወኢያእምርዋ፡ለፍኖተ፡ሰላም፡፡ወአል
ቦ፡ፍርሀተ፡እግዚአብሔር፡ቅድመ፡አዕይን
ቲሆሙ፡፡=፡ወኢያአምሩ፡ኵሎሙ፡ገበርተ፡ 8
ዓመፃ፡፡ እለ፡ይውኅጥዎሙ፡ለሕዝብየ፡
ከመ፡በሊዐ፡እክል፡፡=፡ ወለእግዚአብሔ 9
ርሰ፡ሊጸውዕዎ፡፡ ወበህየ፡ፈርሁ፡ወገረምሙ፡
ዘኢኮነ፡ግሩም፡፡=፡ እስመ፡እግዚአብሔር፡ 10
ውስተ፡ትውልደ፡ጻድቃን፡፡ ወአስተኃፈርክ
ሙ፡ምክረ፡ነዳይ፡፡ እስመ፡እግዚአብሔር፡
ተስፋሆሙ፡ውእቱ፡፡=፡ መኑ፡ይሁብ፡መድኃ 11
ኒተ፡እምጽዮን፡ለእስራኤል፡፡ አመ፡ሜጠ፡
እግዚአብሔር፡ፄዋ፡ሕዝቡ፡፡ ይትፌሣሕ፡
ያዕቆብ፡ወይትሐሠይ፡እስራኤል፡፡

መዝሙር፡ዘደዊት፡፡
፲፬ እግዚኦ፡መኑ፡የኀድር፡ውስተ፡ጽላሎት 1
ከ፡፡ ወመኑ፡ያጸልል፡ውስተ፡ደብረ፡መቅደስ
ከ፡፡=፡ ዘየሐውር፡በንጹሕ፡ወይገብር፡ጽድ 2
ቀ፡፡=፡ ወይነብብ፡ጽድቀ፡በልቡ፡፡ወዘኢ 3
ጕሕለወ፡በልሳኑ፡፡=፡ ወዘኢገብረ፡እኩየ፡ 4
ዲበ፡ቢጹ፡፡ወዘኢያጽአለ፡አዝማዲሁ፡፡=፡
ወዘመኑን፡በቅድሜሁ፡እኩይ፡፡ ወዘያከብ 5
ሮሙ፡ለፈራህያነ፡እግዚአብሔር፡፡=፡ ዘይ 6
ምሕል፡ለቢጹ፡ወኢይኄሱ፡፡ ወዘኢለቅሐ፡
ወርቆ፡በርዴ፡፡ ወዘኢነሥአ፡ሕልያነ፡በላዕ
ለ፡ንጹሕ፡፡=፡ ዘይገብር፡ከመዝ፡ወኢይት 7
ሀወክ፡ለዓለም፡፡=፡

ሥርዐተ፡አርአያ፡መጽሐፍ፡ዘደዊት፡፡
፲፭ ዕቀበኒ፡እግዚኦ፡እስመ፡ኪያከ፡ተወከል 1
ኩ፡፡ እቤሎ፡ለእግዚአብሔር፡እግዚእየ፡
አንተ፡፡ እስመ፡ኢትፈቅደ፡ለሠናይትየ፡፡=፡ 2
ለቅዱሳን፡እለ፡ውስተ፡ምድር፡፡ ተሰብሐ፡ 3
ኵሉ፡ስምረትከ፡በላዕሌሆሙ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. *PSAL. xiii.* [a] qui requirit [b] Tanquàm ſepulchrum [c] amaritudine, & maledictione plenum eſt: [d] Contemptus & contritio [e] ſpes eorum *PSAL. xiv.* [a] in puritate, [b] & qui pecuniam [c] ita facit, non *PSAL. xv.* [a] Fœdus Davidis quod ut maximè peculiare ſibi propoſuit. [b] glorificabis omnes voluntates tuas in eis.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 * المزمور الثالث عشر لداود * في الاسرار وفيه توبيخ للاشرار * كد * استيخن *
2 * قال الجاهل في قلبه ليس اله * فسدوا وتنجسوا باعمالهم * وليس من يعمل صالحا ولا واحد
3 4 * الرب اطلع من السماء علي بني البشر لينظر هل فيهم فهم طالب لله * زاغ جميعهم وفسدوا
5 في معا * وليس من يعمل صالحا ولا واحد * حناجرهم قبور مفتحة * مكروا بالسنتهم * سم الافاعي
6 7 في شفاههم * وهولاء افواههم مملوة لعنة ومرارة * وارجلهم الي سفك الدماء سريعة * والبوس
8 والتعبيس في سبلهم * وطريق السلامة ما عرفوها * وليس خوف الله امام عيونهم * الا يعلم
9 جميع عاملي الاثم * الذين ياكلون شعبي اكل الخبز * والرب لم يدعوا * انهم خافوا هنالك خوفا
10 11 حيث لا خوف * وان الرب في جيل الابرار سفهوا راي المسكين * وان الرب لرجاوه * من يعطي
من صهيون خلاصا لاسرايل * اذا رد الرب سبي شعبه * فليهلل يعقوب ويفرح اسراييل *

1 * المزمور الرابع عشر لداود * في الاخر ولمن لم يكن بالله تاما * مجد لداود * يج * استيخن *
2 يا رب من يسكن مسكنك * او من يحل في جبل قدسك * الا الذي يمشي بلا عيب ويعمل البر *
3 ويتكلم في قلبه بالحق * ولا يغش بلسانه احدا * ولا يصنع بقريبه سوا * ولا يلتمس لجيرانه عارا *
4 5 * فاعل الشر مرذول امامه * ويمجد اتقياء الرب * يحلف لصاحبه ولا يكذب * ولا يعطي فضته
بالربا * ولا يقبل الرشوة علي الازكياء * الذي يفعل هذا لا يزول الي الابد *

1 * المزمور الخامس عشر لداود * فيه اختيار البيعة وقيامة المسيح * كتابة علي العهد *
2 * كج * استيخن * احفظني يا رب فاني عليك توكلت * قلت للرب انت هو ربي * وانك
3 غير محتاج الي حسناتي * اظهر بقديسيه عجايبه في ارضه * وصنع فيهم جميع ارادته *

PSAL. XIII. Davidis.

De Myſteriis. Item continetur in eo interminatio adversùs improbos. *Verſ.* 24. 1

DIxit inſipiens in corde ſuo, Non eſt Deus. Corrupti ſunt & contaminati ſunt in operibus: & non eſt qui faciat bonum, ne unus quidem. 2 *Dominus proſpexit de cœlo ſuper filios hominum, ut videret utrùm eſſet in eis intelligens, requirens Deum.* 3 *Declinaverunt omnes, & corrupti ſunt penitùs: & non eſt qui faciat bonum, ne ullus quidem.* 4 *Sepulchra aperta guttura eorum, machinati ſunt linguis: venenum aſpidum in labiis eorum.* 5 *Et iſtorum ora plena ſunt maledictione, & amaritudine: & pedes eorum ad effuſionem ſanguinum veloces.* 6 *Et inopia & fraus in ſemitis eorum, & viam pacis non cognoverunt: & non eſt timor Dei ante oculos eorum.* 7 *Nonne cognoſcunt omnes operantes iniquitatem, qui comedunt populum meum comeſtione panis,* 8 *Et Dominum non invocaverunt: quòd timuerint ibi timore ubi nullus timor,* 9 *Et quòd Dominus in generatione innocentium eſt? Stultam fecerunt ſententiam pauperis: & verò Dominus ſpes ejus eſt.* 10 *Quis dabit ex Sion ſalutem Iſraeli? Cùm revocaverit Domin⁹ captivitatẽ populi ſui, exultet Jacob, & lætetur Iſrael.* 11

PSAL. XIV. Davidis.

De fine. Et in eũ qui nõ eſt in Deo perfect⁹. Davidis gloria. *Ver.* 13. 1

O Domine, quis inhabitabit habitaculum tuum? aut quis cõmorabitur in monte ſanctitatis tuæ? Niſi ille qui ambulat ſine macula, & operatur juſtitiam, & loquitur in corde ſuo veritatem. 2 *Et non decipit linguâ ſuâ ullum, et non facit adversùs proximum ſuum malum, & non quærit vicinis ſuis opprobrium;* 3 *Operans malum eſt apud eum vilis, honorat autem timentes Dominum: Jurat proximo ſuo, et non mentitur,* 4 *Et non dat argentum ſuum ad uſuram, & non acceptat munus adversùs innocentes. Qui fecerit hoc, non nutabit in æternum.* 5

PSAL. XV. Davidis.

Agitur in eo de electione Eccleſiæ, & Reſurrectione Chriſti. Scriptura de fœdere. *Ver.* 23. 1

COnſerva me, O Domine mi, quoniam ego in te confiſus ſum. Dixi Domino, 2 *Tu es Dominus meus, & quidem haud indigens es operum bonorum meorum. Manifeſtavit in Sanctis ſuis miracula ſua in terra ſua: & operatus eſt in eis omnem voluntatem ſuam.* 3

תהלים : יז .

,ſanguine de eorũ libamina libabo non , feſtinârunt alienum ,eorũ idola Multiplicentut
יִרְבּוּ עַצְּבוֹתָם אַחֵר מָהָרוּ בַּל־אַסִּיךְ נִסְכֵּיהֶם מִדָּם 4
,meæ hæreditatis pars Dominus .meis labiis ſuper eorũ nomina aſſumam nec
וּבַל־אֶשָּׂא אֶת־שְׁמוֹתָם עַל־שְׂפָתָי׃ יְהֹוָה מְנָת־חֶלְקִי 5
mihi ceciderunt Funes .meam ſortem ſuſtentas tu : mei calicis &
וְכוֹסִי אַתָּה תּוֹמִיךְ גּוֹרָלִי׃ חֲבָלִים נָפְלוּ־לִי 6
Domino Benedicam .me ſuper ſpecioſa hæreditas etiam : jocundis in
בַּנְּעִמִים אַף־נַחֲלָת שָׁפְרָה עָלָי׃ אֲבָרֵךְ אֶת־יְהֹוָה 7
Poſui .mei renes me erudierunt noctibus etiam : mihi conſuluit qui
אֲשֶׁר יְעָצָנִי אַף־לֵילוֹת יִסְּרוּנִי כִלְיוֹתָי׃ שִׁוִּיתִי 8
Propterea .nutabo non mea dextera à quoniam ; ſemper me coram Dominum
יְהֹוָה לְנֶגְדִּי תָמִיד כִּי מִימִינִי בַּל־אֶמּוֹט׃ לָכֵן 9
.fiducia in habitabit mea caro etiam : mea gloria exultavit & ,meum cor eſt lætatum
שָׂמַח לִבִּי וַיָּגֶל כְּבוֹדִי אַף־בְּשָׂרִי יִשְׁכֹּן לָבֶטַח׃
tuum miſericordem dabis non : ſepulchro in meã animam relinques non Quoniam
10 כִּי לֹא־תַעֲזֹב נַפְשִׁי לִשְׁאוֹל לֹא־תִתֵּן חֲסִידֶיךָ
cum lætitiarum ſaturitas ; vitarum ſemitam me facies Scire .foveam videre
לִרְאוֹת שָׁחַת׃ תּוֹדִיעֵנִי אֹרַח חַיִּים שֹׂבַע שְׂמָחוֹת אֶת־ 11
.perpetuò tua dextera in jocunditates : tuis faciebus
פָּנֶיךָ נְעִמוֹת בִּימִינְךָ נֶצַח׃

PSAL. XVII. יז

,meo clamori intende , juſtitiam Domine Audi .Davidi Oratio
תְּפִלָּה לְדָוִד שִׁמְעָה יְהֹוָה צֶדֶק הַקְשִׁיבָה רִנָּתִי 1
meũ judicium tuis faciebus A .doli labiis non in , meam orationem auſculta
הַאֲזִינָה תְפִלָּתִי בְּלֹא שִׂפְתֵי מִרְמָה׃ מִלְּפָנֶיךָ מִשְׁפָּטִי 2
viſitâſti ,meum cor Probâſti .rectitudines videant tui oculi : egrediatur
יֵצֵא עֵינֶיךָ תֶּחֱזֶינָה מֵישָׁרִים׃ בָּחַנְתָּ לִבִּי פָּקַדְתָּ 3
opera Ad .meum os tranſibit non cogitavi : invenies non ,me conflâſti , nocte
לַּיְלָה צְרַפְתַּנִי בַל־תִּמְצָא זַמֹּתִי בַּל־יַעֲבָר־פִּי׃ לִפְעֻלּוֹת 4
Suſtentando .effractoris ſemitas cuſtodivi ego ,tuorum labiorum verbo in hominum
אָדָם בִּדְבַר שְׂפָתֶיךָ אֲנִי שָׁמַרְתִּי אָרְחוֹת פָּרִיץ׃ תָּמֹךְ 5
quoniam ,te invocavi Ego .mei pedes nutârunt non ,tuis orbitis in meos greſſus
אֲשֻׁרַי בְּמַעְגְּלוֹתֶיךָ בַּל־נָמוֹטּוּ פְעָמָי׃ אֲנִי־קְרָאתִיךָ כִי־ 6
Segrega .meum eloquium audi ,mihi tuam aurem inclina : Deus me exaudies
תַעֲנֵנִי אֵל הַט־אָזְנְךָ לִי שְׁמַע אִמְרָתִי׃ הַפְלֵה 7
.tuam dexteram in inſurgentibus ab : ſperantium ſervator tuas miſericordias
חֲסָדֶיךָ מוֹשִׁיעַ חוֹסִים מִמִּתְקוֹמְמִים בִּימִינֶךָ׃
faciebus A .me abſcondes tuarum alarum umbra in ,oculi filiæ nigredinem ut me Cuſtodi
שָׁמְרֵנִי כְּאִישׁוֹן בַּת־עָיִן בְּצֵל כְּנָפֶיךָ תַּסְתִּירֵנִי׃ מִפְּנֵי 8
9 .me ſuper circumdabunt anima in meorũ inimicorum : me vaſtaverunt qui , impiorum
רְשָׁעִים זוּ שַׁדּוּנִי אֹיְבַי בְּנֶפֶשׁ יַקִּיפוּ עָלָי׃
nunc noſtro Greſſu .ſuperbia in ſunt locuti ſuo ore : clauſerunt ſuo Adipe
10 חֶלְבָּמוֹ סָּגְרוּ פִּימוֹ דִּבְּרוּ בְגֵאוּת׃ אַשֻּׁרֵנוּ עַתָּה
11 ,ej' Similitudo .terram in declinandum ad ponent ſuos oculos nos circundederunt
12 סְבָבוּנִי עֵינֵיהֶם יָשִׁיתוּ לִנְטוֹת בָּאָרֶץ׃ דִּמְיֹנוֹ
.abditis in manentis leunculi ut & , rapere appetet , leonis ut
כְּאַרְיֵה יִכְסוֹף לִטְרֹף וְכִכְפִיר יֹשֵׁב בְּמִסְתָּרִים׃

תרגום TARGUM.

מַסְגַן צַלְמָנֵיהוֹן מִן בָּתַר כֵּן מוֹחָן לְקָרְבָא 4
קוּרְבָּנֵיהוֹן לָא אֲקַבֵּל בְּרַעֲוָא נִסּוּכֵיהוֹן וְדַם
קוּרְבָּנֵיהוֹן וְלָא אֶדְכַּר שׁוּמְהוֹן עַל סִפְוָתָי׃
יְיָ מוֹהֲבִית כַּלִידִי וְחוּלָקִי אַנְתְּ תְּסוֹבַר עַדְבִי׃ 5
עַדְבִין נְפַלוּ לִי בְּבַסִּימָתָא אוּף אַחְסַנְתָּא 6
שַׁפִּירָא עֲלַי׃ אֲבָרֵיךְ יְיָ יַת דְּמַלְכַנִּי אוּף 7
בְּלֵילְיָא דְּדָאֲנָן לִי כוּלְיָתָי׃ שַׁוִּיתִי יְיָ לְקוּבְלִי 8
תְּדִירָא מְטוּל דִּשְׁכִנְתֵּיהּ שַׁרְיָא עֲלַי לָא אֱזוּעַ׃
בְּגִין חֲדָא לִבִּי וְרַנֵּן אִיקָרִי אוּף בִּסְרִי יִשְׁרֵי 9
לְרוּחְצָן׃ מְטוּל דְּלָא תִשְׁבּוֹק נַפְשִׁי לִשְׁיוֹל 10
לָא תִמְסוֹר זַכָּאָךְ לְמֶחֱמֵי בְּשַׁחֲוּוּתָא׃ תְּהוֹדַע 11
לִי אוֹרְחָא דְחַיֵּי סוּבְעָא דְחֶדְוָתָא קֳדָם אַפָּךְ
בְּסִימָתָא בִּימִינָךְ לְעָלְמִין׃

יז

צְלוֹתָא לְדָוִד קַבֵּל יְיָ פְּגִיעָתִי בִּצְדָקָה אֲצִית 1
שְׁבוּחִי תַצְלֵי אוּדְנָךְ לִצְלוֹתִי בִּדְלָא סִפְוָתֵי נִכְלָ׃
מִן קֳדָמָךְ דִּינִי יִפּוּק עֵינָךְ תֶּהֶוְיָן חָמְיָן תְּרִיצוּתָא׃ 2
בְּחַנְתָּא לִבְּבִי אַסְעַרְתָּא עֲלַי בְּלֵילְיָא סְנַנְתָּא 3
לִי לָא אַשְׁכַּחְתָּא שְׁחִיתָא חַשְׁבֵית בִּישׁוּתָא
לָא עֲבַר פּוּמִי׃ בְּרַם אַכְסַנְתָּא עַל עוּבָדֵיהוֹן 4
דִּבְנֵי נָשָׁא בְּמֵימַר סִפְוָתָךְ אֲנָא נְטַרִית אָרְחוֹת
חֲצִיפָא׃ סְעַד אִסְתּוֹרֵי בְּהִלִּיכָתָךְ דְּלָא יְזוּעוּן 5
רִגְלַי׃ אֲנָא קְרֵיתִי יָתָךְ מְטוּל תְּקַבֵּל צְלוֹתִי 6
אֱלָהָא צַלֵי אוּדְנָךְ קַבֵּל צְלוֹתִי׃ פְּרִישׁ 7
טַבְוָתָךְ פָּרִיקְהוֹן דִּסְבָרֵי מִן מַן דְּקָיְמִין עֲלֵיהוֹן
בְּאִידָא דִימִינָךְ׃ נְטַר יָתִי כְּגַלְגּוּל דִּי בִּמְצִיעוּת 8
עֵינָא בְּטוּלָא דִשְׁכִנְתָּךְ תִּטְמוֹר יָתִי׃ מִן קֳדָם 9
רַשִׁיעַיָּא אִלֵּין דִּמְחַבְּלִין יָתִי בַּעֲלֵי דְבָבִי בִּרְעוּת
נַפְשְׁהוֹן מְחַזְּרִן עֲלַי׃ עֻתְרְהוֹן סְנָא שׁוּמְנְהוֹן 10
כַּסָּאוּ פּוּמְהוֹן מַלִּילוּ בְּרַבְרְבוּתָא׃ אִסְתּוֹרָנָא 11
הַשְׁתָּא חֲזוֹרוּ לָנָא עֵינֵיהוֹן מְשַׁוָן לְמִפְשַׁט
בְּאַרְעָא׃ דְּמוּתֵיהּ הֵיךְ אַרְיָא דִמְרַגַּג לְמִתְבַּר 12
וּכְשַׁחְלָא דְיָתֵיב בְּטוּמְרַיָּא׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

4 Multiplicant idola ſua, & poſtmodùm feſtinant, ut offerant munera ſua: non recipiam cum beneplacito libamina eorum, nec ſanguinem oblationum eorum : neque memorabo nomina eorum in labiis meis. 5 Domine pars calicis mei & hæreditatis meæ: tu ſuſtentabis ſortem meam. 6 Sortes ceciderunt mihi in dulcedine : etiam hæreditas præclara ſuper me. 7 Benedicam Domino qui conſuluit mihi ; inſuper in nocte caſtigant me renes mei. 8 Poſui *Dominum* in conſpectu meo ſemper, quoniam quieſcit majeſtas ejus *ſuper me*, non movebor. 9 Propterea lætatum eſt cor meum, & exultavit gloria mea : quin & caro mea habitabit in ſecuritate. 10 Quoniam non derelinques animam meam in inferno : non trades juſtum tuum ut videat corruptionem. 11 Docebis me viam vitæ : plenitudo lætitiarum ante faciem tuam, *dulcedines* in dextera tua in æternum.

1 Oratio Davidis.

PSAL. XVII.

Suſcipe Domine deprecationem meam in juſtitia ; attende laudationi meæ ; inclina aurem tuam ad orationem meam abſque labiis doli. 2 A conſpectu tuo judicium meum prodibit, oculi tui *videbunt* æquitatem. 3 Probâſti cor meum, viſitâſti ſuper me in nocte, examinâſti me, non inveniſti corruptionem : cogitavi malum, non tranſivit os meum. 4 Verè *arguiſti* opera filiorum hominum in verbo labiorum tuorum, ego obſervavi viam impudentis. 5 Suſtenta greſſus meos in ſemitis tuis, ut non moveantur pedes mei. 6 Ego invocavi te quoniam accipies orationem meam: Deus inclina aurem tuam, audi eloquium meum. 7 Mirandam exhibe puritatem tuam redemptor ſperantium : [*ulciſcere illos*] ab iis qui inſurgunt in ipſos manu dextera tua. 8 Cuſtodi me ſicut pupillam orbicularem quæ eſt in medio oculi : in umbra majeſtatis tuæ abſconde me. 9 A conſpectu impiorum horum qui me perdunt : auctores inimicitiæ meæ deſiderio animarum ſuarum circundederunt me. 10 Opulentia eorum multiplicata eſt ; adipe ſuo operti ſunt ; ore ſuo locuti ſunt magnifica. 11 Greſſus noſtros nunc circundederunt *nobis* : oculos ſuos ponunt ut ſe diffundant in terram. 12 Similitudo ejus ſicut leonis deſiderantis prædam ; & ſicut catuli leonis degentis in luſtris.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܢܣܓܘܢ ܟܘܪܗܢܝܗܘܢ ܕܐܚܪܢܐ ܥܓܠ. ܘܠܐ ܐܢܣܘܟ ܢܣܘܟܝܗܘܢ ܡܢ ܕܡܐ: ܘܠܐ ܐܥܗܕ ܫܡܗܝܗܘܢ 4
ܒܣܦܘܬܝ. * ܡܪܝܐ ܡܢܬܐ ܕܝܪܬܘܬܝ ܘܕܟܣܝ: ܐܢܬ ܗܘ ܡܦܢܐ ܠܝ ܝܪܬܘܬܝ. * ܚܒܠܐ ܢܦܠܘ 5 6
ܠܝ ܒܒܣܝܡܬܐ: ܐܦ ܝܪܬܘܬܝ ܫܦܪܬ ܠܝ. * ܐܒܪܟ ܠܡܪܝܐ ܕܡܠܟܢܝ: ܐܦ ܒܠܠܝܘܬܐ ܪܕܝܢܝ 7
ܟܘܠܝܬܝ. * ܫܘܝܬ ܠܡܪܝܐ ܩܕܡܝ ܒܟܠܙܒܢ: ܘܗܘܐ ܡܢ ܝܡܝܢܝ ܕܠܐ ܐܙܘܥ. * ܡܛܠ 8 9
ܗܢܐ ܚܕܝ ܠܒܝ ܘܪܘܙ ܐܝܩܪܝ: ܘܐܦ ܒܣܪܝ ܢܫܪܐ ܒܫܠܝܐ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܫܒܩܬ ܢܦܫܝ 10
ܒܫܝܘܠ: ܘܠܐ ܝܗܒܬ ܠܚܣܝܐ ܕܝܠܟ ܕܢܚܙܐ ܚܒܠܐ. * ܬܘܕܥܢܝ ܐܘܪܚܐ ܕܚܝܐ: ܘܐܣܒܥ ܡܢ 11
ܚܕܘܬܐ ܕܦܪܨܘܦܟ. ܘܡܢ ܒܣܝܡܘܬܐ ܕܙܟܘܬܐ ܕܝܡܝܢܟ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܝܘ *

* ܟܬܝܒ ܠܕܘܝܕ ܨܠܘܬܐ. ܦܢܝ ܠܕ. 1
ܫܡܥ ܡܪܝܐ ܩܕܝܫܐ ܘܐܨܬ ܠܒܥܘܬܝ. ܘܨܘܬ ܠܨܠܘܬܝ ܕܠܐ ܡܢ ܣܦܘܬܐ ܢܟܝܠܬܐ: * ܡܢ 2
ܩܕܡܝܟ ܕܝܢܝ ܢܦܘܩ. ܘܥܝܢܝܟ ܢܚܙܝܢ ܬܪܝܨܘܬܐ: * ܒܚܪܬ ܠܒܝ ܘܣܥܪܬܢܝ ܒܠܠܝܐ. 3
ܘܒܚܪܬܢܝ ܘܠܐ ܐܫܟܚܬ ܒܝ ܥܘܠܐ: ܘܠܐ ܥܒܪܘ ܠܦܘܡܝ. * ܥܒܕܐ ܕܒܢܝܢܫܐ. ܒܡܠܬܐ 4
ܕܣܦܘܬܟ: ܐܢܬ ܢܛܪܬܢܝ ܡܢ ܐܘܪܚܬܐ ܒܝܫܬܐ. * ܘܣܡܟܬ ܗܠܟܬܝ ܒܫܒܝܠܝܟ ܕܠܐ ܢܬܙܝܥܘܢ 5
ܦܣܥܬܝ: * ܐܢܐ ܩܪܝܬܟ ܡܛܠ ܕܥܢܝܬܢܝ. ܐܠܗܐ ܐܪܟܢ ܠܘܬܝ ܐܕܢܟ ܘܫܡܥ ܡܠܝ: 6
* ܘܐܩܝܡ ܚܣܝܐ ܕܝܠܟ ܒܬܕܡܘܪܬܐ. ܘܦܪܘܩܐ ܠܐܝܠܝܢ ܕܡܣܒܪܝܢ ܒܟ: ܡܢ ܐܝܠܝܢ ܕܩܝܡܝܢ 7
ܠܘܩܒܠ ܝܡܝܢܟ. * ܛܪܢܝ ܐܝܟ ܒܒܬܐ ܕܥܝܢܐ: ܘܒܛܠܠܐ ܕܟܢܦܝܟ ܛܫܝܢܝ. * ܡܢ 8
ܩܕܡ ܪܫܝܥܐ ܗܠܝܢ ܕܒܙܘܢܝ: ܒܥܠܕܒܒܐ ܕܢܦܫܝ ܕܚܕܪܘܢܝ. * ܣܟܘܪ ܦܘܡܗܘܢ 9 10
ܕܡܠܠ ܫܘܒܗܪܐ: * ܫܒܚܘܢܝ ܘܗܫܐ ܚܕܪܘܢܝ. ܘܣܡܘ ܥܝܢܝܗܘܢ ܕܢܪܡܘܢܢܝ 11
ܒܐܪܥܐ: * ܕܕܡܝܢ ܠܐܪܝܐ ܕܒܥܐ ܠܡܛܪܦ. ܘܐܝܟ ܓܘܪܝܐ ܕܐܪܝܐ ܕܝܬܒ ܒܛܘܫܝܐ: 12

4 Multiplicentur dolores eorum poſtremi citò, nè libem libamina eorum de ſanguine, neque mentionem faciam nominum eorum labiis meis. 5 Domine, portio hæreditatis meæ & calicis mei, tu reſtituis mihi hæreditatem meam. 6 Funes ceciderunt mihi in proſperitatibus, 7 etiam hæreditas mea placuit mihi. Benedicam Dominum, qui conſilium mihi dedit; etiam noctibus caſtigârunt me renes mei. 8 Propoſui Dominum in conſpectu meo omni tempore, & conſtituit ſe ad dexteram meam ne commovear. 9 Propter hoc gaviſum eſt cor meum, & exultavit decus meum; atque etiam caro mea habitabit in quiete : 10 Quoniam non deſtituiſti animam meam in inferno, neque permiſiſti ſancto tuo ut videret corruptionem. 11 Oſtendes mihi viam tuam vitæ, & ſatiabor jucunditate vultûs tui, & ſuavitate victoriæ dexteræ tuæ.

PSAL. XVII.

1 *Scriptus à Davide. Oratio. Verſ. 34.*

Audi, Domine ſancte, & conſidera deprecationem meam: auſculta orationem meã, quæ nõ ex labiis doloſis. 2 E conſpectu tuo judicium meum prodeat, & oculi tui videant rectitudinem. 3 Exploráſti cor meum, & viſitâſti me noctu, & examinâſti me, nec inveniſti in me iniquitatem, neque tranſierunt per os meum 4 Opera hominum in ſermone labiorum: ſed me ſervâſti à viis malignis : 5 Et fulſiſti greſſus meos in ſemitis tuis, ne nutarent paſſus mei. 6 Ego vocavi te, quoniam exaudîſti me: Deus, inclina ad me aurẽ tuã, & audi verba mea, 7 Et ſtatue Sanctũ tuũ in prodigiũ, & ſalvatorẽ iis qui ſperant in te, ab inſurgentibus adverſùs dexterã tuã. 8 Cuſtodi me ut pupillam oculi, & umbrâ alarum tuarum protege me. 9 A conſpectu ſceleratorũ horum, qui diripuerunt me: hoſtium animæ meæ, qui me obſederunt. 10 Claude os illorum, quod locutum eſt jactantiam. 11 Laudârunt me, & modò circumvallârunt me: & poſuerunt oculos ſuos ut proſternerent me in terram : 12 Similes ſunt leoni quærenti ad prædandum, & ſicut catulus leonis qui ſedet in latibulo.

Verſio VULG. LAT.

4 Multiplicatæ ſunt infirmitates eorum :
poſteà acceleraverunt. Non congre-
gabo conventicula eorum de ſanguini-
bus : nec memor ero nominum eorum
5 per labia mea. Dominus pars hæredi-
tatis meæ, & calicis mei : tu es, qui re-
6 ſtitues hæreditatem meam mihi. Funes
ceciderunt mihi in præclaris : etenim
7 hæreditas mea præclara eſt mihi. Be-
nedicam Dominum, qui tribuit mihi
intellectũ : inſuper & uſque ad noctem
8 increpuerunt me renes mei. Provi-
debam Dominum in conſpectu meo
ſemper : quoniam à dextris eſt mihi, ne
9 commovear. Propter hoc lætatũ eſt cor
meũ, & exultavit lingua mea : inſuper &
10 caro mea requieſcet in ſpe. Quoniam
non derelinques animã meã in inferno:
nec dabis ſanctũ tuũ videre corruptio-
nem. Notas mihi feciſti vias vitæ, adim-
plebis me lætitiâ cũ vultu tuo : delecta-
tiones in dextera tua uſque in finem.

Oratio David. XVI.

1 Exaudi, Domine, juſtitiã meã : inten-
de deprecationem meã. Auribus per-
cipe orationẽ meã, non in labiis doloſis.
2 De vultu tuo judiciũ meũ prodeat : ocu-
3 li tui videant æquitates. Probâſti cor
meũ, & viſitâſti nocte : igne me exami-
nâſti, & non eſt inventa in me iniquitas.
4 Ut non loquatur os meũ opera hominũ :
propter verba labiorũ tuorũ ego cuſto-
5 divi vias duras. Perfice greſſus meos in
ſemitis tuis : ut non moveantur veſtigia
6 mea. Ego clamavi, quoniã exaudîſti me,
Deus : inclina aurẽ tuã mihi, & exaudi
7 verba mea. Mirifica miſericordias tuas,
8 qui ſalvos facis ſperantes in te. A reſi-
ſtentibꝰ dexteræ tuæ cuſtodi me, ut pupil-
lam oculi. Sub umbra alarũ tuarũ pro-
9 tege me : A facie impiorũ qui me af-
flixerunt. Inimici mei animam meam
10 circumdederunt, Adipem ſuum con-
cluſerunt : os eorum locutum eſt ſu-
11 perbiam. Projicientes me nunc cir-
cumdederunt me : oculos ſuos ſtatuerunt
12 declinare in terram. Suſceperunt me
ſicut leo paratus ad prædam : & ſicut
catulus leonis habitans in abditis.

Verſ. GRÆCA. LXX. Interp.

4 † Ἐπληθύνθησαν αἱ ἀσθένειαι αὐτῶν, † μετὰ ταῦτα
ἐτάχυναν. † οὐ μὴ συναγάγω τὰς συναγωγὰς
αὐτῶν ἐξ αἱμάτων, † (ˣ) οὐδὲ μὴ μνησθῶ τῶν ὀνο-
5 μάτων αὐτῶν διὰ χειλέων μου. † Κύριος (α) μερὶς τῆς
κληρονομίας μου καὶ τοῦ ποτηρίου μου, † σὺ εἶ ὁ ἀπο-
6 καθιστῶν τὴν κληρονομίαν μου ἐμοί. † Σχοινία ἐπ-
έπεσάν μοι ἐν τοῖς κρατίστοις, † καὶ γὰρ ἡ κληρονο-
7 μία μου κρατίστη μοι ἐστίν. † Εὐλογήσω τὸν κύριον τὸν
συνετίσαντά με, † ἔτι δὲ καὶ ἕως νυκτὸς ἐπαίδευ-
8 σάν με οἱ νεφροί μου. † (β) Προωρώμην τὸν κύρι-
ον ἐνώπιόν μου διαπαντός, † ὅτι ἐκ δεξιῶν μου ἐστὶν
9 ἵνα μὴ σαλευθῶ. † Διὰ τοῦτο ηὐφράνθη ἡ καρδία
μου, καὶ ἠγαλλιάσατο ἡ γλῶσσά μου, † ἔτι δὲ καὶ ἡ σάρξ
10 μου κατασκηνώσει ἐπ᾽ ἐλπίδι. † Ὅτι οὐκ ἐγκατα-
λείψεις τὴν ψυχήν μου (γ) εἰς ᾅδην, † οὐδὲ δώ-
σεις τὸν ὅσιόν σου ἰδεῖν διαφθοράν. † Ἐγνώρισάς
μοι ὁδοὺς ζωῆς, † πληρώσεις με (δ) εὐφροσύνης
μετὰ τοῦ προσώπου σου, † (ε) τερπνότητες ἐν τῇ δε-
ξιᾷ σου εἰς τέλος.

MS. A. (ˣ) οὐδ᾽ οὐ μὴ (α) ἡ μερὶς (β) προορώμην
(γ) εἰς ᾅδου, (δ) εὐφροσύνην (ε) τερπνότης

Προσευχὴ τοῦ Δαυίδ. ιϛʹ.

1 † Εἰσάκουσον (α) κύριε τῆς δικαιοσύνης μου, †
πρόσχες τῇ δεήσει μου· † ἐνώτισαι τὴν προσευχήν
2 μου οὐκ ἐν χείλεσι δολίοις· † Ἐκ προσώπου σου
τὸ κρίμα μου ἐξέλθοι, † οἱ ὀφθαλμοί μου ἰδέ-
3 τωσαν εὐθύτητας. † Ἐδοκίμασας τὴν καρδίαν
μου, ἐπεσκέψω νυκτός, † ἐπύρωσάς με, καὶ οὐχ
4 εὑρέθη ἐν ἐμοὶ ἀδικία. † Ὅπως ἂν μὴ λαλήσῃ τὸ
στόμα μου τὰ ἔργα τῶν ἀνθρώπων, † διὰ τοὺς
λόγους τῶν χειλέων σου ἐγὼ ἐφύλαξα ὁδοὺς σκληράς. †
5 Κατάρτισαι τὰ διαβήματά μου ἐν ταῖς τρίβοις σου, † ἵνα
6 μὴ (β) σαλευθῇ τὰ διαβήματά μου. † Ἐγὼ ἐκέκρα-
ξα, ὅτι (γ) ἐπήκουσάς μου ὁ θεός· † κλῖνον τὸ οὖς σου
7 ἐμοί, καὶ εἰσάκουσον τῶν ῥημάτων μου. † Θαυμάστωσον
8 τὰ ἐλέη σου, ὁ σῴζων τοὺς ἐλπίζοντας ἐπὶ σέ. † Ἐκ
τῶν ἀνθεστηκότων τῇ δεξιᾷ σου, † φύλαξόν με ὡς κό-
ρην ὀφθαλμοῦ· † ἐν σκέπῃ τῶν πτερύγων σου σκεπάσεις
9 με, † Ἀπὸ προσώπου (δ) ἀσεβῶν τῶν ταλαιπωρησάν-
10 των με. † οἱ ἐχθροί μου τὴν ψυχήν μου περιέσχον. † Τὸ
στέαρ αὐτῶν συνέκλεισαν, † τὸ στόμα αὐτῶν ἐλάλησεν
11 ὑπερηφανίαν. † (ˣ) Ἐκβαλόντες με νυνὶ περιεκύκλωσάν
με, † τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτῶν ἔθεντο ἐκκλῖναι ἐν τῇ γῇ.
12 † Ὑπέλαβόν με ὡσεὶ λέων ἕτοιμος εἰς θήραν, † καὶ
ὡσεὶ σκύμνος οἰκῶν ἐν ἀποκρύφοις.

MS. A. (α) κύριε δικαιοσύνης μου, (β) σαλευθῶσιν (γ) εἰσήκουσίν (δ) ἀσεβοῦς, (ˣ) Ἐκβάλλοντες

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

3 (f) Multiplicatæ ſunt infirmi- 4
tates eorũ: poſteà acceleraverũt.
4 Non (g) congregabo [c] conven-
ticula eorum de ſanguinibus: nec
memor ero nominũ eorum per la-
bia mea. 5 Dominus pars hæredi- 5
tatis meæ, & calicis mei : tu es,
qui reſtitues hæreditatem meam
mihi. 6 Funes ceciderunt mihi in 6
præclaris : etenim hæreditas mea
præclara eſt mihi. 7 Benedicã Do- 7
minum, qui tribuit mihi intelle-
ctum: inſuper autem, & uſque ad
noctem erudierunt me renes mei.
8 [d] Providebam Dominum in 8
conſpectu meo [e] ſemper: quoniã
à dextris eſt mihi, ne commove-
ar. 9 Propter hoc lætatum eſt cor 9
meum, & exultavit lingua mea :
inſuper autẽ et caro mea requie-
ſcet in ſpe. 10 Quoniã non dere- 10
linques animã meam in inferno:
neque dabis ſanctũ tuum videre
corruptionem. 11 [f] Notas mihi
feciſti vias vitæ : adimplebis (h)
me lætitiâ (i) cum vultu tuo: (k)
delectationes in dextera tua in
finem.

Oratio ipſius David. XVI. 1

1 Exaudi, Domine, (a) juſtitiã
meã: intende (b) deprecatio-
ni meæ. 2 Auribus percipe oratio-
nem meam; (c) non in labiis dolo-
ſis. 3 A vultu tuo judicium meũ 2
(d) prodeat: (e) oculi mei [a] vide-
ant (f) æquitates. 4 [b] Probâſti 3
cor meũ, viſitâſti nocte: igne me
examinâſti, et non eſt inventa in
me iniquitas. 5 Ut non loquatur 4
os meum opera hominum; propter
verba labiorũ tuorum 6 ego (g)
cuſtodivi vias duras. (h) Perfice 5
greſſꝰ meos in ſemitis tuis: ut non
moveantur veſtigia mea. 7 Ego 6
clamavi, quoniam exaudîſti me,
Deus: inclina aurẽ tuam mihi, &
exaudi verba mea. 8 Mirifica mi- 7
ſericordias tuas, qui ſalvos facis
ſperantes in te, A reſiſtentibus de- 8
xteræ tuæ, 9 cuſtodi me, ut pupil-
lam oculi. [c] (i) In tegmine ala-
rum tuarũ protege me, A facie impiorũ, qui me [d] afflixerunt. 10 Inimici mei animã meã 9
circumdederunt: Adipem (k) ſuum concluſerunt: os eorum loquutũ eſt ſuperbiã. 11 (l) Pro- 10 11
jicientes me nunc circumdederunt me : oculos ſuos ſtatuerunt (m) declinare in terram.
12 (n) Suſceperũt me, ſicut leo paratꝰ ad prædã, & ſicut catulꝰ leonis habitans in occultis. 12

Verſio ÆTHIOPICA.

በዝኁ፡ደዌሆሙ፡ወእምዝ፡እስተፋጠኑ፡፡=፡ 3
ወኢይትጋበር፡ውስተ፡ማኅበሮሙ፡ዘደም፡፡ 4
ወኢይዜክር፡አስማቲሆሙ፡በአፉየ፡፡=፡ እ 5
ግዚአብሔር፡መክፈልተ፡ርስትየ፡ወጽዋዕየ፡፡
አንተ፡ውእቱ፡ዘታገብእ፡ሊተ፡ርስትየ፡፡=፡
አሕባለ፡ ወረዉ፡ ሊተ፡ የአኀዙኒ፡፡ወርስትየ 6
ሰ፡እኁዝ፡ውእቱ፡ሊተ፡፡=፡ እባርኮ፡ለእ 7
ግዚአብሔር፡ዘአለበወኒ፡፡ወዓዲ፡ ሌሊተኒ፡
ገሠጹኒ፡ኵልያትየ፡፡=፡ ዘልፈ፡እሬእዮ፡ለእ 8
ግዚአብሔር፡ በቅድሜየ፡ በኵሉ፡ ጊዜ፡፡
እስመ፡ በየማንየ፡ ውእቱ፡ከመ፡ ኢይትሀወ
ክ፡፡=፡ በእንተዝ፡ተፈሥሐ፡ልብየ፡ወተሐ 9
ሠየ፡ልሳንየ፡፡ወዓዲ፡በተስፋሁ፡ኃደረ፡ ሥጋ
የ፡፡=፡ እስመ፡ኢተኀድጋ፡ውስተ፡ሲኦል፡ለነ 10
ፍስየ፡፡ወኢትሁቦ፡ ለጻድቅከ፡ ይርአይ፡ሙ
ስና፡፡=፡ ወአርአይከኒ፡ ፍኖተ፡ ሕይወት፡፡ 11
ወአጽገብከኒ፡ ሐሤተ፡ ምስለ፡ ገጽከ፡፡ወት
ፍሥሕት፡ውስተ፡የማንከ፡ለዝሉፉ፡፡=፡

መዝሙር፡ዘዳዊት፡፡

12 እግዚኦ፡ስምዐኒ፡ጽድቅየ፡፡ወአጽምአኒ፡ 1
ስእለትየ፡፡=፡ወአጽምአኒ፡ጸሎትየ፡ዘኢኮነ፡ 2
በከናፍረ፡ጕሕሉት፡፡=፡እምቅድመ፡ገጽከ፡ 3
ይወፅእ፡ ፍትሕየ፡፡ለአዕይንትየኒ፡ ርእየ፡ጽድ
ቀከ፡፡=፡ ኃወጽከኒ፡ሌሊተ፡ወፈተንኮ፡ለልብ 4
የ፡፡ወአመከርከኒ፡ ወኢተረክበ፡ ዓመፃ፡በላዕ
ሌየ፡፡=፡ ከመ፡ኢይንብብ፡አፉየ፡ግብረ፡እጓ 5
ለ፡እመሕያው፡፡በእንተ፡ቃለ፡ከናፍሪከ፡፡=፡
አነ፡ዐቀብኩ፡ፍናወ፡ዕፁባተ፡፡አጽንዖን፡ለመ 6
ከይድየ፡ውስተ፡ ፍናቲከ፡፡ከመ፡ ኢይድኃፅ፡
ሰኰናየ፡፡=፡ አነሰ፡ጸራኅኩ፡እስመ፡ሰማዕ 7
ከኒ፡እግዚአብሔር፡፡አጽምእ፡ እዝነከ፡ ኀቤ
የ፡ወስምዐኒ፡ ቃልየ፡፡=፡ አሰብሐ፡ለምሕረ 8
ትከ፡፡ዘያድኅኖሙ፡ለእለ፡ ይትዌከሉከ፡፡እ
ምእለ፡ይትቃወምዋ፡ለየማንከ፡፡=፡ ዕቀበ 9
ኒ፡ከመ፡ብንተ፡ዓይን፡፡ወበጽላሎተ፡ክነፊከ፡
ክድንኒ፡፡ እምገጸ፡ ኃጥአን፡ እለ፡ የኃሥሩ
ኒ፡፡=፡ ጸላእትየሰ፡ እስተሐየጽዋ፡ ለነፍስ 10
የ፡፡ወቆጸሩ፡ እማዑቆሙ፡፡ወነበበ፡ ትዕቢ
ተ፡ አፉሆሙ፡፡=፡ ሰደዱኒ፡ ይእዜኒ፡ ዓገቱ 11
ኒ፡፡ወአትሐቱ፡ አዕይንቲሆሙ፡ ውስተ፡ምድ
ር፡፡=፡ ወተመጠዉኒ፡ከመ፡አንበሳ፡ ዘጽኑ 12
ሕ፡ለመሲጥ፡፡ወከመ፡እጓለ፡አንበሳ፡ ዘይነብ
ር፡ተኀቢኦ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [c] in conventiculis eorum [d] Semper providebam [e] omni tempore: [f] Et notas etiam *PSAL.* [a] videant æquitatem. [b] Viſitâſti me nocte, & probâſti cor meum: [c] Sub umbra [d] contemnunt:

Verſio *ARABICA*. cum Interpretatione *LATINA*.

* كثرت اوجاعهم وبعد ذلك اسرعوا * انا لا اجمع مع الجموع على الدماء ولا اذكر بشفتي اسماءهم * 4
* الرب نصيب ميراثي وكاسي * انت ترد الي ميراثي * حبال المساحة وقعت علي من الاعزا وان ميراثي 5 6
لثابت لي * ابارك الرب الذي افهمني * وفي الليالي اوعظتني كليتاي * سبقت الي ربي * الرب امامي 7 8
في كل حين * لانه عن يميني لكيلا ازل * لاجل هذا فرح قلبي وهلل لساني * وحل جسدي 9
مطمينا علي الرجا * لانك لم تخل نفسي في الجحيم * ولم تدع صفيك يري الفساد * عرفتني 10 11
سبل الحياة * تملاني فرحا بوجهك * ومن نعيم يمينك الي الابد *

* المزمور السادس عشر لداود *

* صلاة عن الرجل التام وعن المسيح نفسه ومن يتخلص على يديه * صلاة لداود * استيخا * لج * 1
* اسمع يا الله بري * وانظر الي تواضعي * وانصت لصلاتي * بشفتين غير غاشتين * من قدامك 2 3
فليخرج قضاي * ولينظر عيناي الاستقامة * جربت قلبي وتعاهدتني ليلا * جربتني فلم تجد في 4
ظلما * ولم يتكلم فمي باعمال البشر * من اجل كلام شفتيك حفظت طرقا صعبة * لكيما يشتد 5 6
في سبلك نهوضي * ولا تزل خطاي * واذا دعوتك استجب لي * اللهم انصت لي بسمعك وتقبل 7
دعاي * وليتعجب من رحمتك يا مخلص المتوكلين عليك * خلصني بيمينك من المضادين 8
لي * احفظني يا رب مثل حدقة العين * وبظل جناحيك ظللني * من وجه المنافقين الذين 9 10
اجهدوني * اعداي الذين اكتنفوا نفسي * تعقدت شحومهم * وتكلمت افواههم بالكبريا * 11
* عندما اخرجوني احاطوا بي * ونصبوا عيونهم ليصرعوا بي الارض * استقبلوني مثل الاسد 12 13
المستعد للفريسة * ومثل الشبل الذي ياوي في خفية *

Multiplicati ſunt dolores eorum, ac pro- 4
inde feſtinaverunt. Ego non conveniam
cum turbis ad ſanguines, nec recordabor
labiis meis nominum eorum. Dominus 5
pars hæreditatis meæ, & calix meus : tu
reſtitues mihi hæreditatem meã. Funes 6
menſorii ceciderunt ſuper me ex potentio-
ribus, & hæreditas mea perpetua qui-
dem eſt mihi. Benedicam Dominum 7
qui intelligere fecit me : & in noctibus
commonuerunt me renes mei. Anteverti 8
Dominum : Dominus in conſpectu meo
eſt in omni tempore, quoniam ipſe eſt ad
dexteram meam, ne labar. Propterea læ- 9
tatũ eſt cor meum, & exultavit lingua
mea, & habitavit corpus meum tutum in
ſpe. Quoniam tu degere non feciſti ani- 10
mam meã in inferno, neque permiſiſti
electũ tuũ videre corruptionem. Notifi- 11
câſti mihi ſemitas vitæ. Adimplebis me
lætitiâ vultu tuo, & ſuavitate dexteræ
tuæ in æternum.

PSAL. XVI. Davidis.

Oratio ex perſona viri perfecti, & 1
Chriſtimet ipſius, & cujuſlibet
ab eo redempti : Oratio Davi-
dis. Verſ. 33.

Audi, O Deus, juſtitiã meã, & vide 2
humilitatẽ meã, et auſculta oratio-
ne meã cũ labiis non doloſis. E conſpectu 3
tuo prodeat judiciũ meũ, & videant ocu-
li mei æquitatẽ. Probâſti cor meũ, & vi- 4
ſitâſti me noctu : tentâſti me, & non inve-
niſti in me ſcelus : nec locutũ eſt os meũ
opera hominũ. Propter verba labiorũ tuo- 5
rum cuſtodivi vias difficiles : Ut robora- 6
retur in ſemitis tuis ſurrectio mea, & ne
laberentur greſſꝰ mei. Et cùm invocavero 7
te, exaudi me : Deus, præbe mihi auditũ
tuũ, & accepta deprecationem meam, Et 8
mirabilis reddatur miſericordia tua. O
Salvator confidentiũ in te, ſalva me dex-
terâ tuâ ab adverſantibus mihi. Cuſtodi 9
me, O Domine, ut pupillã oculi, & um-
brâ alarũ tuarũ obumbra me, A facie im- 10
piorum qui me vexaverunt. Inimicorum
meorum, qui circumdederunt animã meã,
Condenſatæ ſunt adipes eorum, & locuta 11
ſunt ora eorũ ſuperbiã. Poſtquã ejecerunt 12
me circumdederunt me: & fixerunt oculos
ſuos, ut percuterent me ipſo terrã. Occur- 13
rerũt mihi tãquã leo paratꝰ ad prædã, et
ſicut catulꝰ leonis qui habitat in latibulo.

תהלים : יז .

,ſanguine de eorũ libamina libabo non , *feſtinârunt alienum* ,eorũ *idola* Multiplicentur
4 יִרְבּוּ עַצְּבוֹתָם אַחֵר מָהָרוּ בַּל־אַסִּיךְ נִסְכֵּיהֶם מִדָּם
,meæ hæreditatis pars Dominus .meis labiis *ſuper* eorũ nomina aſſumam nec
5 וּבַל־אֶשָּׂא אֶת־שְׁמוֹתָם עַל־שְׂפָתָי׃ יְהוָה מְנָת־חֶלְקִי
mihi ceciderunt *Funes* .meam ſortem *ſuſtentans* tu : mei calicis &
6 וְכוֹסִי אַתָּה תּוֹמִיךְ גּוֹרָלִי׃ חֲבָלִים נָפְלוּ־לִי
Domino Benedicam *;me ſuper* ſpecioſa hæreditas etiam : jocundis in
7 בַּנְּעִמִים אַף־נַחֲלָת שָׁפְרָה עָלָי׃ אֲבָרֵךְ אֶת־יְהוָה
Poſui .mei renes me erudierunt noctibus etiam : mihi conſuluit qui
8 אֲשֶׁר יְעָצָנִי אַף־לֵילוֹת יִסְּרוּנִי כִלְיוֹתָי׃ שִׁוִּיתִי
Propterea .*nutabo non* mea dextera à quoniam ; ſemper me coram Dominum
9 יְהוָה לְנֶגְדִּי תָמִיד כִּי מִימִינִי בַּל־אֶמּוֹט׃ לָכֵן
.*fiducia in* habitabit mea caro *etiam* : mea gloria exultavit & ,meum cor eſt lætatum
שָׂמַח לִבִּי וַיָּגֶל כְּבוֹדִי אַף־בְּשָׂרִי יִשְׁכֹּן לָבֶטַח׃
tuum miſericordem *dabis non* : ſepulchro in meã animam relinques non Quoniam
10 כִּי לֹא־תַעֲזֹב נַפְשִׁי לִשְׁאוֹל לֹא־תִתֵּן חֲסִידְךָ
cum lætitiarum ſaturitas ; *vitarum* ſemitam me facies Scire .*foveam videre*
11 לִרְאוֹת שָׁחַת׃ תּוֹדִיעֵנִי אֹרַח חַיִּים שֹׂבַע שְׂמָחוֹת אֶת־
.perpetuò tua dextera in jocunditates : *tuis faciebus*
פָּנֶיךָ נְעִמוֹת בִּימִינְךָ נֶצַח׃

PSAL. XVII. יז

,meo clamori intende , juſtitiam Domine Audi .Davidi Oratio
1 תְּפִלָּה לְדָוִד שִׁמְעָה יְהוָה צֶדֶק הַקְשִׁיבָה רִנָּתִי
meũ judicium *tuis faciebus A* .doli labiis *non in* , meam orationem auſculta
2 הַאֲזִינָה תְפִלָּתִי בְּלֹא שִׂפְתֵי מִרְמָה׃ מִלְּפָנֶיךָ מִשְׁפָּטִי
viſitâſti ,meum cor Probâſti .*rectitudines* videant tui oculi : egrediatur
3 יֵצֵא עֵינֶיךָ תֶּחֱזֶינָה מֵישָׁרִים׃ בָּחַנְתָּ לִבִּי פָּקַדְתָּ
opera *Ad* .meum os *tranſibit* non cogitavi : *invenies* non ,me conflâſti , nocte
4 לַּיְלָה צְרַפְתַּנִי בַל־תִּמְצָא זַמֹּתִי בַּל־יַעֲבָר־פִּי׃ לִפְעֻלּוֹת
Suſtentando .*effractoris* ſemitas cuſtodivi ego ,tuorum labiorum *verbo in* hominum
5 אָדָם בִּדְבַר שְׂפָתֶיךָ אֲנִי שָׁמַרְתִּי אָרְחוֹת פָּרִיץ׃ תָּמֹךְ
quoniam ,te invocavi Ego .mei pedes *nutârunt non* , tuis *orbitis* in meos greſſus
6 אֲשֻׁרַי בְּמַעְגְּלוֹתֶיךָ בַּל־נָמוֹטּוּ פְעָמָי׃ אֲנִי־קְרָאתִיךָ כִי־
Segrega .meum eloquium audi ,mihi tuam aurem inclina : Deus me exaudies
7 תַעֲנֵנִי אֵל הַט־אָזְנְךָ לִי שְׁמַע אִמְרָתִי׃ הַפְלֵה
.tuam dexteram in inſurgentibus ab : ſperantium ſervator tuas *miſericordias*
חֲסָדֶיךָ מוֹשִׁיעַ חוֹסִים מִמִּתְקוֹמְמִים בִּימִינֶךָ׃
faciebus A .me *abſcondes* tuarum alarum umbra in ,oculi *filiæ nigredinem* ut me Cuſtodi
8 שָׁמְרֵנִי כְּאִישׁוֹן בַּת־עָיִן בְּצֵל כְּנָפֶיךָ תַּסְתִּירֵנִי׃ מִפְּנֵי
9 .me *ſuper circundabunt anima in* meorũ inimicorum : me vaſtaverunt qui , impiorum
רְשָׁעִים זוּ שַׁדּוּנִי אֹיְבַי בְּנֶפֶשׁ יַקִּיפוּ עָלָי׃
nunc *noſtro Greſſu* .*ſuperbia in* ſunt locuti ſuo ore : clauſerunt ſuo Adipe
10 חֶלְבָּמוֹ סָּגְרוּ פִּימוֹ דִּבְּרוּ בְגֵאוּת׃ אַשֻּׁרֵנוּ עַתָּה
11 ,ej⁹ Similitudo .terram in declinandum ad *ponent* ſuos oculos *nos* circundederunt
12 סְבָבוּנִי עֵינֵיהֶם יָשִׁיתוּ לִנְטוֹת בָּאָרֶץ׃ דִּמְיֹנוֹ
.abditis in manentis leunculi ut & , rapere *appetet* , leonis ut
כְּאַרְיֵה יִכְסוֹף לִטְרֹף וְכִכְפִיר יֹשֵׁב בְּמִסְתָּרִים׃

תרגום TARGUM.

4 מַסְגַן צַלְמָנֵיהוֹן מִן בָּתַר כֵּן מוֹחֲן לְקָרְבָא
קוּרְבָּנֵיהוֹן לָא אֲקַבֵּל בְּרַעֲוָא נְסוּכֵיהוֹן וְדַם
קוּרְבָּנֵיהוֹן וְלָא אַדְכַּר שׁוּמְהוֹן עַל סִפְוָתִי׃
5 יְיָ מוֹהֲבִית כַּלִּידִי וְחוּלָקִי אַנְתְּ תְּסוֹבַר עַדְבִי׃
6 עַדְבִין נְפַלוּ לִי בְּבַסִּימְתָא אוּף אַחְסַנְתָּא
7 שַׁפִּירָא עֲלָי׃ אֲבָרֵיךְ יְיָ יַת דְּמַלְכַנִי אוּף
8 בְּלֵילְוָתָא דְּדָאֲנָן לִי כוּלְיָתִי׃ שַׁוִּיתִי יְיָ לְקוּבְלִי
תְּדִירָא מְטוּל דִּשְׁכִנְתֵּיהּ שַׁרְיָא עֲלַי לָא אֱזוּעַ׃
9 בְּגִין הֲדָא חֲדָא לִבִּי וְרַנֵּן אִיקָרִי אוּף בִּסְרִי יִשְׁרֵי
10 לְרוֹחְצָן׃ מְטוּל דְּלָא תִשְׁבּוֹק נַפְשִׁי לִשְׁיוֹל
11 לָא תִמְסוֹר זַכָּאָךְ לְמֶחֱמֵי בְּשַׁחֲיוּתָא׃ תְּהוֹדַע
לִי אוֹרְחָא דְחַיֵּי סוֹבְעָא דְחֶדְוָתָא קֳדָם אַפָּךְ
בְּסִימְתָא בִּימִינָךְ לַעֲלְמִין׃

יז

1 צְלוֹתָא לְדָוִד קַבֵּל יְיָ פְּגִיעָתִי בִּצְדָקָה אֲצֵית
שְׁבוּחִי אַצְלֵי אוּדְנָךְ לִצְלוֹתִי בִּדְלָא סִפְוָתֵי נִכְלָ׃
2 מִן קֳדָמָךְ דִּינִי יִפּוֹק עֵינָךְ תֶּהֱוְיָן חָמְיָן תְּרִיצוּתָא׃
3 בְּחַנְתָּא לִבִּי אַסְעַרְתָּא עֲלַי בְּלֵילְיָא סַנֶנְתָּא
לִי לָא אַשְׁכַּחְתָּא שְׁחִיתָא חַשְׁבֵית בִּישׁוּתָא
4 לָא עֲבַר פּוּמִי׃ בְּרַם אַכְסַנְתָּא עַל עוֹבָדֵיהוֹן
דִּבְנֵי נָשָׁא בְּמֵימַר סִפְוָתָךְ אֲנָא נְטָרִית אָרְחוֹת
5 חֲצִיפָא׃ סְעַד אִסְתְּוָרֵי בְּהִלִּיכָתָךְ דְּלָא יְזוּעוּן
6 רִגְלָי׃ אֲנָא קְרֵיתִי יָתָךְ מְטוּל תְּקַבֵּל צְלוֹתִי
7 אֱלָהָא צַלֵּי אוּדְנָךְ קַבֵּל צְלוֹתִי׃ פְּרִישׁ
טַבְוָתָךְ פָּרִיקְהוֹן דִּסְבָרֵי מִן מַן דְּקָיְמִין עֲלֵיהוֹן
8 בְּאֵידָא דִימִינָךְ׃ נְטַר יָתִי כְּגַלְגּוּל דִּי בִמְצִיעוּת
9 עֵינָא בְּטוּלָא דִשְׁכִנְתָּךְ תִּטְמוֹר יָתִי׃ מִן קֳדָם
רַשִׁיעַיָּא אִלֵּין דִּמְחַבְּלִין יָתִי בַּעֲלֵי דְבָבִי בִּרְעוּת
10 נַפְשְׁהוֹן מַחֲזְרִין עֲלָי׃ עֻתְרְהוֹן סְנָא שׁוּמְנֵהוֹן
11 כַּסָּאוּ פּוּמְהוֹן מַלִּלוּ בְרַבְרְבוּתָא׃ אִסְתְּוָרְנָא
הַשְׁתָּא חֲזוֹרוּ לָנָא עֵינֵיהוֹן מְשַׁוִּן לְמִפְשַׁט
12 בְּאַרְעָא׃ דְּמוּתֵיהּ הֵיךְ אַרְיָא דִּמְרַגַּג לְמִתְבַּר
וּכְשַׁחֲלָא דְיָתֵיב בְּטוּמְרַיָּא׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Multiplicant idola ſua, & poſtmodùm feſtinant, ut offerant munera ſua: non recipiam cum beneplacito libamina eorum, nec ſanguinem oblationum eorum: neque memorabo nomina eorum in labiis meis. 4
Domine pars calicis mei & hæreditatis meæ: tu ſuſtentabis ſortem meam. 5
Sortes ceciderunt mihi in dulcedine: etiam hæreditas præclara ſuper me. 6
Benedicam Domino qui conſuluit mihi; inſuper in nocte caſtigant me renes mei. 7
Poſui *Dominum* in conſpectu meo ſemper, quoniam quieſcit majeſtas ejus *ſuper me*, non movebor. 8
Propterea lætatum eſt cor meum, & exultavit gloria mea: quin & caro mea habitabit in ſecuritate. 9
Quoniam non derelinques animam meam in inferno: non trades juſtum tuum ut videat corruptionem. 10
Docebis me viam vitæ: plenitudo lætitiarum ante faciem tuam, *dulcedines* in dextera tua in æternum. 11

Oratio Davidis. 1
PSAL. XVII.

Suſcipe Domine deprecationem meam in juſtitia; attende laudationi meæ; inclina aurem tuam ad orationem meam abſque labiis doli.
A conſpectu tuo judicium meum prodibit, oculi tui *videbunt* æquitatem. 2
Probâſti cor meum, viſitâſti ſuper me in nocte, examinâſti me, non inveniſti corruptionem: cogitavi malum, non tranſivit os meum. 3
Verè *arguiſti* opera filiorum hominum in verbo labiorum tuorum, ego obſervavi viam impudentis. 4
Suſtenta greſſus meos in ſemitis tuis, ut non moveantur pedes mei. 5
Ego invocavi te quoniam accipies orationem meam: Deus inclina aurem tuam, audi eloquium meum. 6
Mirandam exhibe puritatem tuam redemptor ſperantium: [*ulciſcere illos*] ab iis qui inſurgunt in ipſos manu dextera tua. 7
Cuſtodi me ſicut pupillam orbicularem quæ eſt in medio oculi: in umbra majeſtatis tuæ abſconde me. 8
A conſpectu impiorum horum qui me perdunt: auctores inimicitiæ meæ deſiderio animarum ſuarum circundederunt me. 9
Opulentia eorum multiplicata eſt; adipe ſuo operti ſunt; ore ſuo locuti ſunt magnifica. 10
Greſſus noſtros nunc circundederunt *nobis*: oculos ſuos ponunt ut ſe diffundant in terram. 11
Similitudo ejus ſicut leonis deſiderantis prædam; & ſicut catuli leonis degentis in luſtris. 12

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

4 * ܢܣܓܘܢ ܟܐܒܝܗܘܢ ܐܚܪܝܐ ܥܓܠ. ܘܠܐ ܐܢܣܘܟ ܢܣܟܝܗܘܢ ܡܢ ܕܡܐ: ܘܠܐ ܐܥܗܕ ܫܡܗܝܗܘܢ
5 ܒܣܦܘܬܝ. * ܡܪܝܐ ܡܢܬܐ ܕܝܪܬܘܬܝ ܘܕܟܣܝ: ܐܢܬ ܗܘ ܡܦܢܐ ܠܝ ܝܪܬܘܬܝ. * ܚܒܠܐ ܢܦܠܘ
6 ܠܝ ܒܒܣܝܡܘܬܐ: ܐܦ ܝܪܬܘܬܝ ܫܦܪܬ ܠܝ. * ܐܒܪܟ ܠܡܪܝܐ ܕܡܠܟܢܝ: ܐܦ ܒܠܠܝܘܬܐ ܪܕܝܢܝ 7
8 ܟܘܠܝܬܝ. * ܫܘܝܬ ܠܡܪܝܐ ܠܘܩܒܠܝ ܒܟܠܙܒܢ: ܘܗܘܐ ܡܢ ܝܡܝܢܝ ܕܠܐ ܐܙܘܥ. * ܡܛܠ
9 ܗܢܐ ܚܕܝ ܠܒܝ ܘܪܘܙ ܐܝܩܪܝ: ܘܐܦ ܒܣܪܝ ܢܫܪܐ ܒܫܠܝܐ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܫܒܩܬ ܢܦܫܝ 10
ܒܫܝܘܠ: ܘܠܐ ܝܗܒܬ ܠܚܣܝܕܟ ܕܢܚܙܐ ܚܒܠܐ. * ܬܘܕܥܢܝ ܐܘܪܚܐ ܕܚܝܐ: ܘܐܣܒܥ ܡܢ 11
ܚܕܘܬܐ ܕܐܦܝܟ. ܘܡܢ ܒܣܝܡܘܬܐ ܕܙܟܘܬܐ ܕܝܡܝܢܟ.
* ܡܙܡܘܪܐ ܕܝܘ *

1 * ܟܬܝܒ ܠܕܘܝܕ. ܨܠܘܬܐ. ܦܣܘܩܐ ܠܕ.
ܫܡܥ ܡܪܝܐ ܩܕܝܫܐ ܘܚܘܪ ܒܒܥܘܬܝ. ܘܨܘܬ ܠܨܠܘܬܝ ܕܠܐ ܡܢ ܣܦܘܬܐ ܢܟܘܠܬܢܝܬܐ: * ܡܢ 2
ܩܕܡܝܟ ܕܝܢܝ ܢܦܘܩ. ܘܥܝܢܝܟ ܢܚܙܝܢ ܬܪܝܨܘܬܐ: * ܒܩܝܬ ܠܒܝ ܘܣܥܪܬܢܝ ܒܠܠܝܐ. 3
ܘܒܚܪܬܢܝ ܘܠܐ ܐܫܟܚܬ ܒܝ ܥܘܠܐ: ܘܠܐ ܥܒܪܘ ܥܠ ܦܘܡܝ. * ܥܒܕܐ ܕܒܢܝܢܫܐ ܒܡܠܬܐ 4
ܕܣܦܘܬܟ: ܐܠܐ ܢܛܪܬܢܝ ܡܢ ܐܘܪܚܬܐ ܒܝܫܬܐ. * ܘܣܡܟܬ ܗܠܟܬܝ ܒܫܒܝܠܝܟ ܕܠܐ ܢܬܪܦܢ 5
ܦܣܥܬܝ: * ܐܢܐ ܩܪܝܬܟ ܡܛܠ ܕܥܢܝܬܢܝ. ܐܠܗܐ ܨܠܝ ܐܕܢܟ ܠܘܬܝ ܘܫܡܥ ܡܠܝ: 6
* ܘܐܩܝܡ ܚܣܝܕܟ ܠܬܕܡܘܪܬܐ ܒܢܨܚܢܘ. ܘܦܪܘܩܐ ܠܐܝܠܝܢ ܕܡܣܒܪܝܢ ܒܟ: ܡܢ ܐܝܠܝܢ ܕܩܝܡܝܢ 7
ܠܘܩܒܠ ܝܡܝܢܟ. * ܢܛܪܝܢܝ ܐܝܟ ܒܒܬܐ ܕܥܝܢܐ: ܘܒܛܠܠܐ ܕܟܢܦܝܟ ܛܫܝܢܝ. * ܡܢ 8
ܩܕܡ ܚܛܝܐ ܗܠܝܢ ܕܒܙܘܢܝ: ܒܥܠܕܒܒܝ ܕܢܦܫܝ ܕܚܕܪܘ ܠܝ. * ܣܟܘܪ ܦܘܡܗܘܢ 9 10
ܕܡܠܠ ܫܘܒܗܪܐ: * ܫܒܚܘܢܝ ܘܗܫܐ ܚܕܪܘܢܝ. ܘܣܡܘ ܥܝܢܝܗܘܢ ܕܢܪܡܘܢܢܝ 11
ܒܐܪܥܐ: * ܕܡܝܢ ܠܐܪܝܐ ܕܒܥܐ ܠܡܛܪܦ. ܘܐܝܟ ܓܘܪܝܐ ܕܐܪܝܐ ܕܝܬܒ ܒܡܛܫܝܐ: 12

Multiplicentur dolores eorum poſtremi citò, nè libem libamina eorum de ſanguine, neque mentionem faciam nominum eorum labiis meis. 4
Domine, portio hæreditatis meæ & calicis mei, tu reſtituis mihi hæreditatem meam. 5
Funes ceciderunt mihi in proſperitatibus, etiam hæreditas mea placuit mihi. 6
Benedicam Dominum, qui conſilium mihi dedit; etiam noctibus caſtigârunt me renes mei. 7
Propoſui Dominum in conſpectu meo omni tempore, & conſtituit ſe ad dexteram meam ne commovear. 8
Propter hoc gaviſum eſt cor meum, & exultavit decus meum; atque etiam caro mea habitabit in quiete: 9
Quoniam non deſtituiſti animam meam in inferno, neque permiſiſti ſancto tuo ut videret corruptionem. 10
Oſtendes mihi viam tuam vitæ, & ſatiabor jucunditate vultûs tui, & ſuavitate victoriæ dexteræ tuæ. 11

PSAL. XVII.

Scriptus à Davide. Oratio. Verſ. 34. 1

Audi, Domine ſancte, & conſidera deprecationem meam: auſculta orationem meã, quæ nõ ex labiis doloſis.
E conſpectu tuo judicium meum prodeat, & oculi tui videant rectitudinem. 2
Explorâſti cor meum, & viſitâſti me noctu, & examinâſti me, nec inveniſti in me iniquitatem, neque tranſierunt per os meum 3
Opera hominum in ſermone labiorum: ſed me ſervâſti à viis malignis: 4
Et fulſiſti greſſus meos in ſemitis tuis, ne nutarent paſſus mei. 5
Ego vocavi te, quoniam exaudîſti me: Deus, inclina ad me aurẽ tuã, & audi verba mea, 6
Et ſtatue Sanctũ tuũ in prodigiũ, & ſalvatorẽ iis qui ſperant in te, ab inſurgentibus adverſùs dexterã tuã. 7
Cuſtodi me ut pupillam oculi, & umbrâ alarum tuarum protege me. 8
A conſpectu ſceleratorũ horum, qui diripuerunt me: hoſtium animæ meæ, qui me obſederunt. 9
Claude os illorum, quod locutum eſt jactantiam. 10
Laudârunt me, & modò circumvallârunt me: & poſuerunt oculos ſuos ut proſternerent me in terram: 11
Similes ſunt leoni quærenti ad prædandum, & ſicut catulus leonis qui ſedet in latibulo. 12

Verſio VULG. LAT.

4 Multiplicatæ ſunt infirmitates eorum:
poſteà acceleraverunt. Non congregabo
conventicula eorum de ſanguinibus:
nec memor ero nominum eorum
5 per labia mea. Dominus pars hæreditatis
meæ, & calicis mei: tu es, qui re-
6 ſtitues hæreditatem meam mihi. Funes
ceciderunt mihi in præclaris: etenim
7 hæreditas mea præclara eſt mihi. Benedicam
Dominum, qui tribuit mihi
intellectũ: inſuper & uſque ad noctem
8 increpuerunt me renes mei. Providebam
Dominum in conſpectu meo
ſemper: quoniam à dextris eſt mihi, ne
9 commovear. Propter hoc lætatũ eſt cor
meũ, & exultavit lingua mea: inſuper &
10 caro mea requieſcet in ſpe. Quoniam
non derelinques animã meã in inferno:
nec dabis ſanctũ tuũ videre corruptionem.
Notas mihi feciſti vias vitæ, adimplebis
me lætitiã cũ vultu tuo: delectationes
in dextera tua uſque in finem.

Oratio David. XVI.

1 EXaudi, Domine, juſtitiã meã: intende
deprecationem meã. Auribus percipe
orationẽ meã, non in labiis doloſis.
2 De vultu tuo judiciũ meũ prodeat: ocu-
3 li tui videant æquitates. Probâſti cor
meũ, & viſitâſti nocte: igne me examinâſti,
& non eſt inventa in me iniquitas.
4 Ut non loquatur os meũ opera hominũ:
propter verba labiorũ tuorũ ego cuſto-
5 divi vias duras. Perfice greſſus meos in
ſemitis tuis: ut non moveantur veſtigia
6 mea. Ego clamavi, quoniã exaudîſti me,
Deus: inclina aurẽ tuã mihi, & exaudi
7 verba mea. Mirifica miſericordias tuas,
8 qui ſalvos facis ſperantes in te. A reſi-
ſtentib⁹ dexteræ tuæ cuſtodi me, ut pupillam
oculi. Sub umbra alarũ tuarũ pro-
9 tege me: A facie impiorũ qui me afflixerunt.
Inimici mei animam meam
10 circumdederunt, Adipem ſuum concluſerunt:
os eorum locutum eſt ſu-
11 perbiam. Projicientes me nunc circumdederunt
me: oculos ſuos ſtatuerunt
12 declinare in terram. Susceperunt me
ſicut leo paratus ad prædam: & ſicut
catulus leonis habitans in abditis.

Verſ. GRÆCA. LXX. Interp.

4 † Ἐπληθύνθησαν αἱ ἀσθένειαι αὐτῶν, † μετὰ ταῦτα
ἐτάχυναν. † οὐ μὴ συναγάγω τὰς συναγωγὰς
αὐτῶν ἐξ αἱμάτων, † (*) οὐδὲ μὴ μνησθῶ τῶν ὀνο-
5 μάτων αὐτῶν διὰ χειλέων μου. † Κύριος (α) μερεὶς τῆς
κληρονομίας μου καὶ τοῦ ποτηρίου μου, † σὺ εἶ ὁ ἀπο-
6 καθιστῶν τὴν κληρονομίαν μου ἐμοί. † Σχοινία ἐπ-
έπεσάν μοι ἐν τοῖς κρατίστοις, † καὶ γὰρ ἡ κληρονο-
7 μία μου κρατίστη μοί ἐστιν. † Εὐλογήσω τὸν κύριον τὸν
συνετίσαντά με, † ἔτι δὲ καὶ ἕως νυκτὸς ἐπαίδευ-
8 σάν με οἱ νεφροί μου. † (β) Προωρώμην τὸν κύρι-
ον ἐνώπιόν μου διαπαντός, † ὅτι ἐκ δεξιῶν μού ἐστιν
9 ἵνα μὴ σαλευθῶ. † Διὰ τοῦτο ηὐφράνθη ἡ καρδία
μου, καὶ ἠγαλλιάσατο ἡ γλῶσσά μου, † ἔτι δὲ καὶ ἡ σάρξ
10 μου κατασκηνώσει ἐπ' ἐλπίδι. † Ὅτι οὐκ ἐγκατα-
λείψεις τὴν ψυχήν μου (γ) εἰς ᾅδην, † οὐδὲ δώ-
σεις τὸν ὅσιόν σου ἰδεῖν διαφθοράν. † Ἐγνώρισάς
μοι ὁδοὺς ζωῆς, † πληρώσεις με (δ) εὐφροσύνης
μετὰ τοῦ προσώπου σου, † (ε) τερπνότητες ἐν τῇ δε-
ξιᾷ σου εἰς τέλος.

MS. A. (*) οὐδ' οὐ μὴ (α) ἡ μερὶς (β) προορώμην
(γ) εἰς ᾅδου, (δ) εὐφροσύνην (ε) τερπνότης

Προσευχὴ τοῦ Δαυίδ. ιϛʹ.

1 † Εἰσάκουσον (α) κύριε τῆς δικαιοσύνης μου, †
πρόσχες τῇ δεήσει μου· † ἐνώτισαι τὴν προσευχήν
2 μου οὐκ ἐν χείλεσι δολίοις· † Ἐκ προσώπου σου
τὸ κρίμα μου ἐξέλθοι, † οἱ ὀφθαλμοί μου ἰδέ-
3 τωσαν εὐθύτητας. † Ἐδοκίμασας τὴν καρδίαν
μου, ἐπεσκέψω νυκτός, † ἐπύρωσάς με, καὶ οὐχ
4 εὑρέθη ἐν ἐμοὶ ἀδικία. † Ὅπως ἂν μὴ λαλήσῃ τὸ
στόμα μου τὰ ἔργα τῶν ἀνθρώπων, † διὰ τοὺς
λόγους τῶν χειλέων σου ἐγὼ ἐφύλαξα ὁδοὺς σκληράς. †
5 Κατάρτισαι τὰ διαβήματά μου ἐν ταῖς τρίβοις σου, † ἵνα
6 μὴ (β) σαλευθῇ τὰ διαβήματά μου. † Ἐγὼ ἐκέκρα-
ξα, ὅτι (γ) ἐπήκουσάς μου ὁ θεός· † κλῖνον τὸ οὖς σου
7 ἐμοί, καὶ εἰσάκουσον τῶν ῥημάτων μου. † Θαυμάστωσον
8 τὰ ἐλέη σου, ὁ σώζων τοὺς ἐλπίζοντας ἐπὶ σέ. † Ἐκ
τῶν ἀνθεστηκότων τῇ δεξιᾷ σου, † φύλαξόν με ὡς κό-
ρην ὀφθαλμοῦ· † ἐν σκέπῃ τῶν πτερύγων σου σκεπάσεις
9 με, † Ἀπὸ προσώπου (δ) ἀσεβῶν τῶν ταλαιπωρησάν-
10 των με. † οἱ ἐχθροί μου τὴν ψυχήν μου περιέσχον. † Τὸ
στέαρ αὐτῶν συνέκλεισαν, † τὸ στόμα αὐτῶν ἐλάλησεν
11 ὑπερηφανίαν. † (*) Ἐκβαλόντες με νυνὶ περιεκύκλωσάν
με, † τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτῶν ἔθεντο ἐκκλῖναι ἐν τῇ γῇ.
12 † Ὑπέλαβόν με ὡσεὶ λέων ἕτοιμος εἰς θήραν, † καὶ
ὡσεὶ σκύμνος οἰκῶν ἐν ἀποκρύφοις.

MS. A. (α) κύριε δικαιοσύνης μου, (β) σαλευθῶσιν (γ) εἰσήκουσέν (δ) ἀσεβοῦς, (*) Ἐκβάλλοντες

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

3 (f) Multiplicatæ ſunt infirmi- 4
tates eorũ: poſteà acceleraverũt.
4 Non (g) congregabo [c] conven-
ticula eorum de ſanguinibus: nec
memor ero nominũ eorum per la-
bia mea. 5 Dominus pars hæredi- 5
tatis meæ, & calicis mei: tu es,
qui reſtitues hæreditatem meam
mihi. 6 Funes ceciderunt mihi in 6
præclaris: etenim hæreditas mea
præclara eſt mihi. 7 Benedicã Do- 7
minum, qui tribuit mihi intelle-
ctum: inſuper autem, & uſque ad
noctem erudierunt me renes mei.
8 [d] Providebam Dominum in 8
conſpectu meo [e] ſemper: quoniã
à dextris eſt mihi, ne commove-
ar. 9 Propter hoc lætatum eſt cor 9
meum, & exultavit lingua mea:
inſuper autẽ et caro mea requie-
ſcet in ſpe. 10 Quoniã non dere- 10
linques animã meam in inferno:
neque dabis ſanctũ tuum videre
corruptionem. 11 [f] Notas mihi
feciſti vias vitæ: adimplebis (h)
me lætitiâ (i) cum vultu tuo: (k)
delectationes in dextera tua in
finem.

Oratio ipſius David. XVI. 1

1 EXaudi, Domine, (a) juſtitiã
meã: intende (b) deprecatio-
ni meæ. 2 Auribus percipe oratio-
nem meam; (c) non in labiis dolo-
ſis. 3 A vultu tuo judicium meũ 2
(d) prodeat: (e) oculi mei [a] vide-
ant (f) æquitates. 4 [b] Probâſti 3
cor meũ, viſitâſti nocte: igne me
examinâſti, et non eſt inventa in
me iniquitas. 5 ut non loquatur 4
os meum opera hominum; propter
verba labiorũ tuorum 6 ego (g)
cuſtodivi vias duras. (h) Perfice 5
greſſ⁹ meos in ſemitis tuis: ut non
moveantur veſtigia mea. 7 Ego 6
clamavi, quoniam exaudîſti me,
Deus: inclina aurẽ tuam mihi, &
exaudi verba mea. 8 Mirifica mi- 7
ſericordias tuas, qui ſalvos facis
ſperantes in te, A reſiſtentibus de- 8
xteræ tuæ, 9 cuſtodi me, ut pupil-
lam oculi. [c] (i) In tegmine ala-
rum tuarũ protege me, A facie impiorũ, qui me [d] afflixerunt. 10 Inimici mei animã meã 9
circumdederunt: Adipem (k) ſuum concluſerunt: os eorum loquutũ eſt ſuperbiã. 11 (l) Pro- 10 11
jicientes me nunc circumdederunt me: oculos ſuos ſtatuerunt (m) declinare in terram.
12 (n) Suſceperũt me, ſicut leo parat⁹ ad prædã, & ſicut catul⁹ leonis habitans in occultis. 12

Verſio ÆTHIOPICA.

በዝኁ፡ደዌሆሙ፡ወእምዝ፡እስተፋጠኑ፡፡=፡ 3
ወኢይትኃበር፡ውስተ፡ማኅበሮሙ፡ዘደም፡፡ 4
ወኢይዜክር፡አስማቲሆሙ፡በአፉየ፡፡=፡ እ 5
ግዚአብሔር፡መክፈልተ፡ርስትየ፡ወጽዋዕየ፡፡
አንተ፡ውእቱ፡ዘታገብእ፡ ሊተ፡ርስትየ፡፡=፡
አሕባለ፡ ወረዉ፡ ሊተ፡ የአኀዙኒ፡፡ወርስትየ 6
ሰ፡እኁዝ፡ውእቱ፡ሊተ፡፡=፡ እባርኮ፡ለእ 7
ግዚአብሔር፡ዘአለበወኒ፡፡ወዓዲ ፡ ሌሊተኒ፡
ገሠጹኒ፡ኵልይትየ፡፡=፡ ዘልፈ፡እሬእዮ፡ለእ 8
ግዚአብሔር ፡ በቅድሜየ ፡ በኵሉ ፡ ጊዜ፡፡
እስመ ፡ በየማንየ ፡ ውእቱ፡ከመ፡ ኢይትሀወ
ክ፡፡=፡ በእንተዝ፡ታፈሥሐ፡ልብየ፡ወተሐ 9
ሠየ፡ልሳንየ፡፡ወዓዲ፡በተስፋሁ፡ኃደረ፡ ሥጋ
የ፡፡=፡ እስመ፡ኢተኃድጋ፡ውስተ፡ሲኦል፡ለነ 10
ፍስየ፡፡ወኢትሁቦ፡ ለጻድቅከ ፡ ይርአይ፡ሙ
ስና፡፡=፡ ወአርአይከኒ፡ ፍኖተ፡ ሕይወት፡፡ 11
ወአጽገብከኒ፡ ሐሤተ፡ ምስለ ፡ ገጽከ፡፡ወት
ፍሥሕት፡ውስተ፡የማንከ፡ለዝሉፉ፡፡=፡

መዝሙር፡ዘዳዊት፡፡

12 እግዚኦ፡ስምዓኒ፡ጽድቅየ፡፡ወአጽምአኒ፡ 1
ስእለትየ፡፡=፡ወአጽምአኒ፡ጸሎትየ፡ዘኢኮነ፡ 2
በከናፍረ፡ ጕሕሉት፡፡=፡እምቅድሜ፡ገጽከ፡ 3
ይወፅእ፡ ፍትሕየ፡፡አዕይንትየኒ፡ ርእየ፡ጽድ
ቀ፡፡=፡ ኃወጽከኒ፡ሌሊተ፡ወፈተንከ፡ለልብ 4
የ፡፡ወአመከርከኒ፡ ወኢተረክበ፡ ዓመፃ፡በላዕ
ሌየ፡፡=፡ ከመ፡ኢይንብብ፡አፉየ፡ግብረ፡እጓ 5
ለ፡እመሕያው፡፡በእንተ፡ቃለ፡ከናፍሪከ፡፡=፡
አነ፡ዐቀብኩ፡ፍናወ፡ዕፁባተ፡፡አጽንዖን፡ለመ 6
ከይድየ፡ውስተ፡ ፍኖትከ፡፡ከመ፡ ኢይድኀፃ፡
ሰኰናየ፡፡=፡ አንሰ፡ጸራኅኩ፡እስመ፡ሰማዕ 7
ከኒ፡እግዚአብሔር፡፡አጽምእ፡ እዝነከ፡ ኀቤ
የ፡ወስምዓኒ፡ ቃልየ፡፡=፡ አሰብሐ፡ለምሕረ 8
ትከ፡፡ዘያድኅኖሙ፡ለእለ፡ ይትዌከሉከ፡፡እ
ምእለ፡ይትቃወምዋ፡ለየማንከ፡፡=፡ ዕቀበ 9
ኒ፡ከመ፡ብንተ፡ዓይን፡፡ወበጽላሎተ፡ ክነፊከ፡
ክድነኒ ፡፡ እምገጸ፡ ኃጥኣን፡ እለ ፡ የኀስሩ
ኒ፡፡=፡ ጸላእትየሰ፡ እስተሐየጽዋ ፡ ለነፍስ 10
የ፡፡ወቆጸሩ፡ እማዑቶሙ፡፡ወነበበ ፡ ትዕቢ
ተ፡ አፉሆሙ፡፡=፡ ሰደዱኒ፡ ይእዜኒ፡ ዓገቱ 11
ኒ፡፡ወአትሐቱ፡ አዕይንቲሆሙ፡ ውስተ፡ምድ
ር፡፡=፡ ወተመጠዉኒ፡ከመ፡አንበሳ፡ ዘጽኑ 12
ሕ፡ለመሲጥ፡፡ወከመ፡እጓለ፡አንበሳ፡ ዘይነብ
ር፡ተኀቢኦ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [c] in conventiculis eorum [d] Semper providebam [e] omni tempore: [f] Et notas etiam PSAL. [a] videant æquitatem. [b] Viſitâſti me nocte, & probâſti cor meum: [c] Sub umbra [d] contemnunt:

Verſio ARABICA. cum Interpretatione LATINA.

4 * كثرت اوجاعهم وبعد ذلك اسرعوا * انا لا اجتمع مع الجموع على الدماء ولا اذكر بشفتي اسماءهم *
5 6 * الرب نصيب ميراثي وكاسي * انت ترد الي ميراثي * حبال المساحة وقعت علي من الاعزا وان ميراثي
7 8 لثابت لي * ابارك الرب الذي افهمني * وفي الليالي اوعظتني كليتاي * سبقت الي ربي * الرب امامي
9 في كل حين * لانه عن يميني لكيلا ازل * لاجل هذا فرح قلبي وهلل لساني * وحل جسدي
10 11 مطمينا على الرجا * لانك لم تخل نفسي في الجحيم * ولم تدع صفيك يرى الفساد * عرفتني
سبل الحياة * تملاني فرحا بوجهك * ومن نعيم يمينك الي الابد *

* المزمور السادس عشر لداود *

1 * صلاة عن الرجل التام وعن المسيح نفسه ومن يتخلص على يده * صلاة لداود * استيخا * لج *
2 3 * اسمع يا الله بري * وانظر الي تواضعي * وانصت لصلاتي * بشفتين غير غاشين * من قدامك
4 فليخرج قضاي * ولتنظر عيناي الاستقامة * جربت قلبي وتعاهدتني ليلا * جربتني فلم تجد في
5 6 ظلما * ولم يتكلم فمي باعمال البشر * من اجل كلام شفتيك حفظت طرقا صعبة * لكيما يسند
7 في سبلك نهوضي * ولا تزل خطاي * واذا دعوتك استجب لي * اللهم انصت لي بسمعك وتقبل
8 دعاي * وليتعجب من رحمتك يا مخلص المتوكلين عليك * خلصني بيمينك من المضادين
9 10 لي * احفظني يا رب مثل حدقة العين * وبظل جناحيك ظللني * من وجه المنافقين الذين
11 اجهدوني * اعداي الذين اكتنفوا نفسي * تعقدت شحومهم * وتكلمت افواههم بالكبريا *
12 13 * عند ما اخرجوني احاطوا بي * ونصبوا عيونهم ليصرعوا بي الارض * استقبلوني مثل الاسد
المستعد للفريسة * ومثل الشبل الذي ياوي في خفية *

Multiplicati ſunt dolores eorum, ac pro- 4
inde feſtinaverunt. Ego non conveniam
cum turbis ad ſanguines, nec recordabor
labiis meis nominum eorum. Dominus 5
pars hæreditatis meæ, & calix meus: tu
reſtitues mihi hæreditatem meã. Funes 6
menſorii ceciderunt ſuper me ex potentio-
ribus, & hæreditas mea perpetua qui-
dem eſt mihi. Benedicam Dominum 7
qui intelligere fecit me: & in noctibus
commonuerunt me renes mei. Anteverti 8
Dominum: Dominus in conſpectu meo
eſt in omni tempore, quoniam ipſe eſt ad
dexteram meam, ne labar. Propterea læ- 9
tatũ eſt cor meum, & exultavit lingua
mea, & habitavit corpus meum tutum in
ſpe. Quoniam tu degere non feciſti ani- 10
mam meã in inferno, neque permiſiſti
electũ tuũ videre corruptionem. Notifi- 11
câſti mihi ſemitas vitæ. Adimplebis me
lætitiâ vultu tuo, & ſuavitate dexteræ
tuæ in æternum.

PSAL. XVI. *Davidis.*

Oratio ex perſona viri perfecti, & Chriſtimet ipſius, & cujuſlibet ab eo redempti: Oratio Davidis. Verſ. 33. 1

AUdi, O Deus, juſtitiã meã, & vide 2
humilitatẽ meã, et auſculta oratio-
ne meã cũ labiis non doloſis. E conſpectu 3
tuo prodeat judiciũ meũ, & videant ocu-
li mei æquitatẽ. Probâſti cor meũ, & vi- 4
ſitâſti me noctu: tentâſti me, & non inve-
niſti in me ſcelus: nec locutũ eſt os meũ
opera hominũ. Propter verba labiorũ tuo- 5
rum cuſtodivi vias difficiles: ut robora- 6
retur in ſemitis tuis ſurrectio mea, & ne
laberentur greſſ⁹ mei. Et cùm invocavero 7
te, exaudi me: Deus, præbe mihi auditũ
tuũ, & accepta deprecationem meam, Et 8
mirabilis reddatur miſericordia tua. O
Salvator confidentiũ in te, ſalva me dex-
terâ tuâ ab adverſantibus mihi. Cuſtodi 9
me, O Domine, ut pupillã oculi, & um-
brâ alarũ tuarũ obumbra me, A facie im- 10
piorum qui me vexaverunt. Inimicorum
meorum, qui circumdederunt animã meã,
Condenſatæ ſunt adipes eorum, & locuta 11
ſunt ora eorũ ſuperbiã. Poſtquã ejecerunt 12
me circumdederunt me: & fixerunt oculos
ſuos, ut percuterent me ipſo terrã. Occur- 13
rerũt mihi tãquã leo parat⁹ ad prædã, et
ſicut catul⁹ leonis qui habitat in latibulo.

תהלים : יח

meam animam erue : eum incurva ,ejus *facies* præveni , Domine Surge
קוּמָה יְהוָה קַדְּמָה פָּנָיו הַכְרִיעֵהוּ פַּלְּטָה נַפְשִׁי 13
,*tempore* de viris à , Domine *tua manu* viris A .*tuo gladio* impio ab
מֵרָשָׁע חַרְבֶּךָ׃ מִמְתִים יָדְךָ ׀ יְהוָה מִמְתִים מֵחֶלֶד 14
ſaturabuntur ,eorum ventrem implebis tuo abſcondito & : vita in *eorum pars*
חֶלְקָם בַּחַיִּים וּצְפִינְךָ תְּמַלֵּא בִטְנָם יִשְׂבְּעוּ
; *tuas facies* videbo juſtitia in Ego .ſuis parvulis ſuum reſiduum *reponent* & : filii
בָנִים וְהִנִּיחוּ יִתְרָם לְעוֹלְלֵיהֶם׃ אֲנִי בְּצֶדֶק אֶחֱזֶה פָנֶיךָ 15
.*tuam imaginem evigilando in* ſatiabor
אֶשְׂבְּעָה בְהָקִיץ תְּמוּנָתֶךָ׃

PSAL. XVIII. יח

verba Domino eſt locutus qui David Domini ſervo Victori
לַמְנַצֵּחַ לְעֶבֶד יְהוָה לְדָוִד אֲשֶׁר דִּבֶּר ׀ לַיהוָה אֶת־דִּבְרֵי 1
omnium *vola* de eum Dominus eripuit die in : hujus cantici
הַשִּׁירָה הַזֹּאת בְּיוֹם הִצִּיל־יְהוָה אוֹתוֹ מִכַּף כָּל־
.mea fortitudo Domine te Diligam : dixit Et .Saul manu de & ,ſuorũ inimicorũ
אֹיְבָיו וּמִיַּד שָׁאוּל׃ וַיֹּאמַר אֶרְחָמְךָ יְהוָה חִזְקִי׃ 2
mea petra , meus Deus , meus erutor & , mea arx & , mea petra Dominus
יְהוָה סַלְעִי וּמְצוּדָתִי וּמְפַלְטִי אֵלִי צוּרִי 3
Laudatum .mea elevatio ,meæ ſalutis cornu & ,meum ſcutum : eo in ſperabo
אֶחֱסֶה־בּוֹ מָגִנִּי וְקֶרֶן יִשְׁעִי מִשְׂגַּבִּי׃ מְהֻלָּל 4
funes me Circundederunt .ſervabor meis inimicis ab & ,Dominum invocabo
אֶקְרָא יְהוָה וּמִן־אֹיְבַי אִוָּשֵׁעַ׃ אֲפָפוּנִי חֶבְלֵי־ 5
; me circundederunt inferni *Funes* .me terrebant *belijahal* torrentes & , mortis
מָוֶת וְנַחֲלֵי בְלִיַּעַל יְבַעֲתוּנִי׃ חֶבְלֵי שְׁאוֹל סְבָבוּנִי 6
ad & ,Dominum invocabo *mihi* anguſtia In .mortis laquei me prævenerunt
קִדְּמוּנִי מוֹקְשֵׁי מָוֶת׃ בַּצַּר־לִי ׀ אֶקְרָא יְהוָה וְאֶל־ 7
meus clamor & : meam vocem ſuo templo de audiet ; clamabo meum Deum
אֱלֹהַי אֲשַׁוֵּעַ יִשְׁמַע מֵהֵיכָלוֹ קוֹלִי וְשַׁוְעָתִי
fundamenta & ,terra contremuit &,ſe movit Et .ejus aures in introibit *ejus facies ad*
לְפָנָיו ׀ תָּבוֹא בְאָזְנָיו׃ וַתִּגְעַשׁ וַתִּרְעַשׁ ׀ הָאָרֶץ וּמוֹסְדֵי 8
fumus Aſcendit .*ei fuit furor* quoniam ,*ſunt commota* & : ſe moverunt montium
הָרִים יִרְגָּזוּ וַיִּתְגָּעֲשׁוּ כִּי־חָרָה לוֹ׃ עָלָה עָשָׁן ׀ 9
inclinavit Et .eo ab ſunt ſuccenſi carbones : *peredet* ejus ore ex ignis & ,ejus *naſo* in
בְּאַפּוֹ וְאֵשׁ־מִפִּיו תֹּאכֵל גֶּחָלִים בָּעֲרוּ מִמֶּנּוּ׃ וַיֵּט 10
,Cherub ſuper equitavit Et .ejus pedibus ſub caligo & : deſcendit & , cœlos
שָׁמַיִם וַיֵּרַד וַעֲרָפֶל תַּחַת רַגְלָיו׃ וַיִּרְכַּב עַל־כְּרוּב 11
,ſuum latibulum *obſcuritatem Ponet* .*venti* pennas ſuper volavitque ,volavit &
וַיָּעֹף וַיֵּדֶא עַל־כַּנְפֵי־רוּחַ׃ יָשֶׁת חֹשֶׁךְ ׀ סִתְרוֹ 12
.*ætherum* nubibus aquarum tenebroſitas , ejus tegmen ejus circuitibus in
סְבִיבוֹתָיו סֻכָּתוֹ חֶשְׁכַת־מַיִם עָבֵי שְׁחָקִים׃
.ignis carbones & ,grando ; tranſierunt ejus nubes eo coram fulgorem Propter
מִנֹּגַהּ נֶגְדּוֹ עָבָיו עָבְרוּ בָּרָד וְגַחֲלֵי־אֵשׁ׃ 13
, grando : ſuam vocem *dabit* altiſſimus & , Dominus cœlis in tonavit Et
וַיַּרְעֵם בַּשָּׁמַיִם ׀ יְהוָה וְעֶלְיוֹן יִתֵּן קֹלוֹ בָּרָד 14
fulgura & : eos *diſperſit contritos* & , ſuas ſagittas miſit Et .ignis carbones &
וְגַחֲלֵי־אֵשׁ׃ וַיִּשְׁלַח חִצָּיו וַיְפִיצֵם וּבְרָקִים 15
.eos *conturbavit* & , *multiplicavit*
רָב וַיְהֻמֵּם׃

תרגום TARGUM.

13 קוּם יְיָ אַקְדֵּם אַפּוֹי חֲמָתֵיהּ פְּצָא נַפְשִׁי מִן רַשִׁיעָא
14 דְאִתְחַיַּב קְטוֹל בְּסַיְפָּךְ׃ וְצַדִּיקַיָּא דְמָסְרִין
נַפְשֵׁיהוֹן מְטוּלְתָךְ יְיָ לְמִיתוּתָא בְּאַרְעָא חוּלָקְהוֹן
בְּחַיֵּי עַלְמָא וְטַשְׁיוּתָךְ טָבָא יִתְמַלְיָן כְּרֵיסֵיהוֹן
יִסְבְּעוּן בְּנִין וְיִשְׁבְּקוּן שְׁיוּרְהוֹן לְטַלְיֵיהוֹן׃ אֲנָא 15
בְּקוּשְׁטָא אֶחֱמֵי סְבַר אַפָּךְ אֶשְׂבַּע בְּעִדָּן דְּאִתְּעַר
מִן אִיקַר פַּרְצוּפָךְ׃

יח

1 לְשַׁבָּחָא עַל נִסַּיָּא דְּאִתְרְחִישׁוּ לְעַבְדָּא דַיְיָ לְדָוִד
דְּשַׁבַּח בִּנְבוּאָה קֳדָם יְיָ יַת פִּתְגָמֵי שִׁירְתָא הָדָא
עַל כָּל יוֹמַיָּא דְּשֵׁזְבֵיהּ יְיָ מִן יְדָא דְּכָל בַּעֲלֵי דְבָבוֹי
2 וּמֵחַרְבָּא דְשָׁאוּל׃ וַאֲמַר אֲחַבְּבִנָּךְ יְיָ תּוּקְפִּי׃ יְיָ 3
תּוּקְפִּי וְרַחְצָנִי וּמְשֵׁיזְבִי יָתִי אֱלָהָא דְּאִתְרְעִי בִי
קָרְבַנִי לְדַחֲלְתֵיהּ תְּרֵיסִי דְּמִן קֳדָמוֹי אִתְיְהַב לִי
4 תְּקוֹף וּפוּרְקָן עַל בַּעֲלֵי דְבָבִי רְחַצְנִי׃ אֲמַר דָּוִד
בְּתוּשְׁבַּחְתָּא אֲנָא מְצַלֵּי קֳדָם יְיָ וּמִן בַּעֲלֵי דְבָבִי
5 פָּרִיק יָתִי׃ אַקְפַתְנִי עָקָא כְּאִתְּתָא דְּיָתְבָא עַל
מַתְבְּרָא וְחֵיל לֵית לַהּ לְמֵילַד וְהִיא מְסַכְּנָא
6 לְמֵמַת וְסִיעַת טְלוּמַיָּא בַּעֲתַת יָתִי׃ מַשְׁרְיַת חַיָּבִין
7 אַקְפוּנִי אַקְדִּימוּ יָתִי דִּמְזַיְנִין בִּמְנֵי קְטוֹל׃ בִּדְעָקָא
לִי אֲנָא מְצַלֵּי קֳדָם יְיָ וְקֳדָם אֱלָהִי אֲנָא מִתְחַנַּן
וּמְקַבֵּל צְלוֹתִי מִן הֵיכְלֵיהּ וּבָעוּתִי קֳדָמוֹי
8 מִתְקַבְּלָא בְּאוּדְנוֹי וּמִתְעַבְדָא׃ וְאִתְרְגִיפַת
וְאִתְרְגִישַׁת אַרְעָא וְאֻשְׁיַת טוּרַיָּא זָעוּ וְאִתְרְטִישׁוּ
9 מְטוּל דִּתְקִיף לֵיהּ׃ סְלִיק זְדוֹנֵיהּ דְּפַרְעֹה הֵיךְ
קוּטְרָא דִּבְכֵן שְׁלַח רוּגְזֵיהּ כְּאֶשָּׁא בְעָרָא דְּמִן
קֳדָמוֹי מִשְׁתֵּיצְיָא מְזוֹפִיתֵיהּ כְּגוּמְרִין דִּי נוּר דָּלְקָא
10 מִמֵּימְרֵיהּ׃ וְאַרְכֵּן שְׁמַיָּא וְאִתְגְּלֵי יְקָרֵיהּ וַעֲנָן
11 אַמְטְתָא כְּבֵשׁ קֳדָמוֹי׃ וְאִתְגְּלֵי בִּגְבוּרְתֵּיהּ עַל
כְּרוּבִין קְלִילִין וּדְבַר בִּתְקוֹף עַל גַּדְפֵּי וַעְפָּא׃
12 וְאַשְׁרֵי שְׁכִנְתֵּיהּ בַּעֲרַפְלָא וְאִתְחֲזַר בַּעֲנָנֵי יְקָרֵיהּ
הֵיךְ מְטַלַּלְתָּא וְאַחֵית מִטְרִין דְּרַעֲוָא עַל עַמֵּיהּ
וּמַיִן תַּקִּיפִין מִן רִכְפַּת עֲנָנִין דְּקִבְלָא עַל רַשִׁיעַיָּא
13 מִן רוּמֵיהּ דְּעָלְמָא׃ מִן זְהוֹר יְקָרֵיהּ עֲנָנֵי שְׁמַיָּא
עֲבָרוּ בִּמְזוֹפִיתָא כְּגוּמְרִין דְּנוּר וּבַרְדָּא דָּלְקָא
14 מִן מֵימְרֵיהּ׃ וְאַכְלֵי מִן שְׁמַיָּא יְיָ וְעִלָּאָה
אֲרֵים מֵימְרֵיהּ רְמָא בַרְדָּא וְגוּמְרִין דִּי נוּר׃
15 וְשַׁדַּר מֵימְרֵיהּ הֵיךְ גִּירִין וּבַדְּרִין וּבַרְקִין
סַגִּיאִין וְשַׁגְשֵׁנוּן׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Surge Domine,præveni faciem ejus,incurva 13
eum : erue animam meam ab impio, qui
meretur interfici gladio tuo. Et juſtorum, 14
qui tradiderunt animas ſuas propter te Domine
morti *in* terra, eorum pars eſt in vita
æterna ; & abſconſione boni tui *implebuntur
ventres* eorũ : ſaturabuntur filii, & relinquent
reliquias ſuas puerulis ſuis. Ego in 15
veritate videbo aſpectũ faciei tuæ : ſatiabor
in tempore quo *evigilavero, de gloria* vultus
tui.

PSAL. XVIII.

Ad canendũ ſuper mirabilibꝰ quæ abundè 1
contigerunt ſervo Domini Davidi, qui cecinit
in prophetia coram Dño verba cantici
hujus, pro omnibꝰ diebus quibꝰ liberaverat
eum Dñs de manu *omniũ* inimicorũ ſuorũ,
& de gladio Saulis. Ait itaque : 2

Diligam te Domine fortitudo mea.
Dominus fortitudo mea & fiducia 3
mea, & liberans me, Deus qui complacuit
ſibi in me ; adjunxit me timori ſuo :
ſcutũ meũ, quoniã à præſentia ejus data eſt
mihi fortitudo & ſalus ſuper auctores inimicitiæ
meæ, ſpes mea. *Dixit David* ; In 4
hymno ego preces fundo coram Dño, & ab
inimicis meis redimit me. Circundedit me 5
anguſtia ſicut mulieris quæ ſedet in partu,
nec vis eſt ei pariendi; ipſaq; periclitatur ad
mortẽ ; *&* caterva perverſorũ conturbavit
me. Cohors ſceleratorũ obſederũt me, præ- 6
venerunt me armati armis occiſionis. Quan- 7
do anguſtia eſt mihi, ego oro coram Dño, &
coram Deo meo ego deprecor : & accipit
orationẽ meã de templo *ſuo* ; & deprecatio
mea coram ipſo recipitur in auribus ejus, &
effectui demandatur. Et contremuit & com- 8
mota eſt terra, & fundamenta montiũ commota
ſunt & concuſſa ſunt, quoniã iraſcebatur
ei. Aſcendit *inſolentia Pharaonis velut* 9
fumus , *ideò* immiſit furorem ſuum ſicut
ignem ardentẽ, *ita ut à præſentia ejꝰ conſumeret
increpatio ejus velut* carbones ignis
incenſi à verbo ejus. Et inclinavit cœlos & 10
apparuit gloria ejus, & nubẽ tenebroſã ſuppoſuit
coram ſe. Et viſus eſt in robore ſuo 11
ſuper Cherubin leviſſimos, & adduxit potentiã
ſuper alas turbinis : *Et* collocavit 12
majeſtatẽ ſuã in caligine, & circundata eſt
nubibus gloria ejus ſicut tabernaculũ : &
deſcendere fecit *pluvias benevolentiæ* ſuper
populũ ſuũ, & aquas validas à commotione
nubiũ tenebroſarũ ſuper impios ab altitudine
mundi. A ſplendore gloriæ ejus nu- 13
bes cœli tranſierunt, in increpatione ſicut
carbones ignis, & grando ardens à verbo
ejus. Et intonuit *è* cœlis Dñs, & Altiſſimus 14
exaltavit verbũ ſuũ ; projecit grandinem &
carbones ignis. Et miſit verbum ſuũ tanquã 15
ſagittas, *& grandines* & fulgura plurima, &
interturbavit eos.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܩܘܡ ܡܪܝܐ ܩܕܡ ܐܦ̈ܝܗܘܢ ܘܐܪܟܢ ܐܢܘܢ. ܘܦܨܝ ܢܦܫܝ ܡܢ ܥ̈ܘܠܐ ܘܡܢ ܣܝܦܐ : 13
* ܘܡܢ ܡܝ̈ܬܐ ܕܡܝܬܝܢ ܡܢ ܐܝܕܝܟ ܡܪܝܐ. ܘܡܢ ܡܝ̈ܬܐ ܕܫܘܚܬܐ : ܦܠܓ ܐܢܘܢ ܒܚܝ̈ܐ. 14
ܘܡܢ ܣܝ̈ܡܬܟ ܡܠܝ ܟܪܣܗܘܢ : ܢܣܒܥܘܢ ܒܢܝ̈ܐ ܘܢܫܒܩܘܢ ܫܪܟܐ ܠܒܢܝ̈ܗܘܢ. * ܐܢܐ ܕܝܢ 15
ܒܙܕܝܩܘܬܐ ܐܚܙܐ ܐܦܝܟ : ܘܐܣܒܥ ܡܐ ܕܐܬܬܥܝܪ ܗܝܡܢܘܬܟ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܝܚ *

* ܕܕܘܝܕ. ܡܘܕܝܢܘܬܐ. ܘܥܠ ܣܘܠܩܗ ܕܡܫܝܚܐ. ܦܬ̈ܓܡܐ ܩܘ. 1
* ܐܪܚܡܟ ܡܪܝܐ ܚܝܠܝ. * ܘܣܒܪܝ. ܘܓܘܣܝ ܘܡܦܨܝܢܝ : ܐܠܗܐ ܥܫܝܢܐ 2 3
ܕܥܠܘܗܝ ܬܟܝܠ ܐܢܐ. ܡܥܕܪܢܝ ܘܩܪܢܐ ܕܦܘܪܩܢܝ : ܘܓܘܣܝ ܡܫܒܚܐ. * ܐܩܪܐ 4
ܠܡܪܝܐ ܘܡܢ ܒܥܠܕܒܒ̈ܝ ܐܬܦܪܩ. * ܡܛܠ ܕܚܕܪܘܢܝ ܚܒ̈ܠܐ ܕܡܘܬܐ. ܘܢܚ̈ܠܐ ܕܥܘܠܐ 5
ܫܓܫܘܢܝ : * ܚܒ̈ܠܐ ܕܫܝܘܠ ܟܪܟܘܢܝ. ܩܕܡܘܢܝ ܦܚ̈ܐ ܕܡܘܬܐ : * ܒܐܘܠܨܢܝ ܩܪܝܬ 6 7
ܠܡܪܝܐ ܘܠܐܠܗܝ ܩܥܝܬ. ܘܫܡܥ ܡܢ ܗܝܟܠܗ ܩܠܝ : ܘܩܥܬܝ ܩܕܡܘܗܝ ܥܠܬ ܠܐܕܢܘܗܝ.
* ܐܬܬܙܝܥܬ ܘܐܬܪܥܠܬ ܐܪܥܐ : ܘܫܬܐܣ̈ܐ ܕܛܘ̈ܪܐ ܙܥܘ ܘܐܬܬܪܥܘ. ܡܛܠ ܕܐܬܚܡܬ ܥܠܝܗܘܢ : * ܣܠܩ 8 9
ܬܢܢܐ ܒܪܘܓܙܗ. ܘܢܘܪܐ ܡܢ ܦܪܨܘܦܗ ܐܬܝܩܕܬ : ܘܓܘܡܪ̈ܐ ܝܩܕܘ ܡܢܗ. * ܘܐܪܟܢ ܫܡܝܐ 10
ܘܢܚܬ. ܘܥܪܦܠܐ ܬܚܝܬ ܪ̈ܓܠܘܗܝ : * ܪܟܒ ܥܠ ܟܪܘܒܐ ܘܦܪܚ : ܘܦܪܚ ܥܠ ܟܢܦ̈ܝ ܪܘܚܐ. 11
* ܣܡ ܚܫܘܟܐ ܠܡܛܫܝܬܗ ܘܟܪܟܗ ܡܛܠܬܗ : ܚܫܘܟܐ ܕܡܝ̈ܐ ܒܥܢ̈ܢܝ ܐܐܪ. * ܡܢ ܙܗܪܐ 12 13
ܕܡܛܠܬܗ : ܥܢܢܘ̈ܗܝ ܥܒܕ ܒܪܕܐ ܘܓܘܡܪ̈ܐ ܕܢܘܪܐ. * ܘܐܪܥܡ ܒܫܡܝܐ ܡܪܝܐ : ܘܥܠܝܐ ܝܗܒ 14
ܩܠܗ. ܒܪܕܐ ܘܓܘܡܪ̈ܐ ܕܢܘܪܐ : * ܫܕܪ ܓܐܪ̈ܘܗܝ ܘܒܕܪ ܐܢܘܢ. ܘܒܪ̈ܩܘܗܝ ܐܣܓܝ ܘܫܓܫ ܐܢܘܢ : 15

Surge, Domine, ante facies eorum, & pro- 13
ſterne illos, & libera animã meam ab impiis,
& à gladio, Et à mortuis qui moriuntur de 14
manibus tuis, Dñe, & à mortuis foveæ. Divides
eos in vita, & theſauris tuis imple ventrẽ
eorum. Saturabuntur filii, & relinquent reſiduũ
filiis ſuis. Ego autem in juſtitia vide- 15
bo vultum tuum, & ſatiabor cùm expergiſcetur
fides tua.

PSAL. XVIII.

Davidis. Gratiarum actio : & de Aſcenſione Chriſti. Verſ. 106. 1

Diligam te, Domine, fortitudo mea, Et 2
ſpes mea, & refugiũ meũ, & liberator 3
meus : Deus fortiſſime, cui confido, adjutor
meus, & cornu ſalutis meæ, & aſylum meũ
glorioſum. Invocabo Dñm, & ab inimicis 4
meis ſalvabor. Quoniã circundederunt me 5
dolores mortis, & torrentes iniquorum conturbaverunt
me : Funes inferni obſederunt 6
me, præceſſerunt me laquei mortis. In tri- 7
bulatione mea vocavi Dñm, & ad Deum meũ
clamavi, & audivit de templo ſuo vocẽ meã,
& clamor meus ad eum ingreſſus eſt in aures
ejus. Commota eſt & contremuit terra, & 8
fundamenta montiũ concuſſa ſunt, & ſciſſa
quoniã ſuccenſuit eis, Aſcendit fumus in ira 9
ejus, & ignis à facie ejus exarſit, & carbones
incẽſi ſunt ab ea. Et inclinavit cœlũ atq; de- 10
ſcẽdit, & caligines ſub pedibꝰ ejus. Equitavit 11
ſuper Cherubim & volavit, volavitque ſuper
alas venti. Poſuit tenebras pro latibulo ſuo, 12
& vallavit eũ tabernaculũ ejus : tenebræ aquarũ
in nubibus aëris. Præ fulgore taber- 13
naculi ſui, nubes ſuas fecit grandinẽ & carbones
ignis: Et intonuit in cœlo Dñs, & Al- 14
tiſſimus dedit vocem ſuã, grandinẽ atq; carbones
ignis. Miſit ſagittas ſuas, & diſſipavit eos : & fulgura ſua multiplicavit, conturbavitque illos. 15

Versio VULG. LAT.

13 Exurge, Domine, præveni eum, & sup-
planta eum : eripe animam meam ab
14 impio, frameam tuam Ab inimicis
manûs tuæ. Domine, à paucis de terra
divide eos in vita eorum: de absconditis
tuis adimpletus est venter eorum.
Saturati sunt filiis : & dimiserunt reli-
15 quias suas parvulis suis. Ego autem in
justitia apparebo conspectui tuo : satia-
bor cùm apparuerit gloria tua.

1 In finem puero Domini David, qui locutus est Domino verba cantici hujus, in die, quâ eripuit eum Dominus de manu omnium inimicorum ejus, & de manu Saul, & dixit; (2 *Reg.* 22. 2.)

XVII.

2 Diligam te, Domine, fortitudo mea :
3 Dominus firmamentum meum, & refu-
gium meum, & liberator meus. Deus
meus adjutor meus, & sperabo in eum.
Protector meus, & cornu salutis meæ,
4 & susceptor meus. Laudans invocabo
Dominum, & ab inimicis meis salvus
5 ero. Circumdederunt me dolores mor-
tis : & torrentes iniquitatis conturba-
6 verunt me. Dolores inferni circumde-
derunt me : præoccupaverunt me laquei
7 mortis. In tribulatione mea invocavi
Dominum, & ad Deum meũ clamavi :
Et exaudivit de templo sancto suo vo-
cem meam : et clamor meus in con-
spectu ejus, introivit in aures ejus.
8 Commota est, & contremuit terra :
fundamenta montium conturbata sunt,
& commota sunt, quoniam iratus est
9 eis. Ascendit fumus in ira ejus : &
ignis à facie ejus exarsit : carbones suc-
10 censi sunt ab eo. Inclinavit cœlos, &
11 descendit: & caligo sub pedibus ejus. Et
ascendit super Cherubim, & volavit :
12 volavit super pennas ventorum. Et
posuit tenebras latibulum suum, in cir-
cuitu ejus tabernaculum ejus : tenebro-
13 sa aqua in nubibus aëris. Præ fulgore
in conspectu ejus nubes transierunt,
14 grando, & carbones ignis. Et into-
nuit de cœlo Dominus, & Altissimus de-
dit vocem suam : grando et carbones
15 ignis. Et misit sagittas suas, et dissi-
pavit eos : fulgura multiplicavit, et con-
turbavit eos.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

13 † Ἀνάστηθι κύριε, πρόφθασον αὐτοὺς, καὶ ὑποσκέλι-
σον αὐτούς, † ῥῦσαι τὴν ψυχήν μου ἀπὸ ἀσεβοῦς, †
14 ῥομφαίαν σου Ἀπὸ ἐχθρῶν τῆς χειρός σου. † κύριε (ε)
ἀπολύων ἀπὸ γῆς, † διαμέρισον αὐτοὺς ἐν τῇ ζωῇ
αὐτῶν, † καὶ τῶν κεκρυμμένων σου ἐπλήσθη ἡ γαστὴρ
αὐτῶν. † ἐχορτάσθησαν (ζ) ὑείων, καὶ ἀφῆκαν τὰ κα-
15 τάλοιπα τοῖς νηπίοις αὐτῶν. † Ἐγὼ δὲ ἐν δικαιοσύ-
νῃ ὀφθήσομαι τῷ προσώπῳ σου, † χορτασθήσομαι
ἐν τῷ (η) ὀφθῆναι τὴν δόξαν σου.

MS. A. (ε) ἀπὸ ὀλίγων (ζ) υἱῶν, (η) ὀφθῆναί μοι τὴν

1 Εἰς τὸ τέλος τῷ παιδὶ κυρίου τῷ Δαυίδ, ἃ ἐλάλησε τῷ κυρίῳ, τοὺς λόγους τῆς ᾠδῆς ταύτης, ἐν ἡμέρᾳ ᾗ (α) ἐῤῥύσατο αὐτὸν κύριος ἐκ χειρὸς πάντων τῶν ἐχθρῶν αὐτοῦ, καὶ ἐκ χειρὸς Σαοὺλ, καὶ εἶπεν, ιζʹ.

2 3 † Ἀγαπήσω σε κύριε (β) ἰσχύς μου. † Κύριος
στερέωμά μου, καὶ καταφυγή μου, καὶ ῥύστης μου·
† ὁ θεός μου βοηθός μου, (γ) ἐλπιῶ ἐπ' αὐτόν· † ὑπερ-
ασπιστής μου, καὶ κέρας σωτηρίας μου, (δ) καὶ ἀντιλή-
4 πτωρ μου. † Αἰνῶν ἐπικαλέσομαι κύριον, † καὶ ἐκ τῶν
5 ἐχθρῶν μου σωθήσομαι. † Περιέσχον με ὠδῖνες θα-
νάτου, † καὶ χείμαῤῥοι ἀνομίας ἐξετάραξάν με. †
6 Ὠδῖνες ᾅδου περιεκύκλωσάν με, † προέφθασάν με
7 παγίδες θανάτου. † Καὶ ἐν τῷ θλίβεσθαί με ἐπ-
εκαλεσάμην τὸν κύριον, † καὶ πρὸς τὸν θεόν μου ἐκέ-
κραξα· † ἤκουσεν ἐκ ναοῦ ἁγίου αὐτοῦ φωνῆς μου, † καὶ ἡ
κραυγή μου ἐνώπιον αὐτοῦ εἰσελεύσεται εἰς τὰ ὦτα αὐ-
8 τοῦ. † Καὶ ἐσαλεύθη, καὶ ἔντρομος ἐγενήθη ἡ γῆ, † καὶ
τὰ θεμέλια τῶν ὀρέων ἐταράχθησαν, † καὶ ἐσαλεύθη-
9 σαν, ὅτι ὠργίσθη αὐτοῖς ὁ θεός. † Ἀνέβη καπνὸς
ἐν ὀργῇ αὐτοῦ, † καὶ πῦρ ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ κατ-
10 εφλόγισεν, † ἄνθρακες ἀνήφθησαν ἀπ' αὐτοῦ. † Καὶ
ἔκλινεν οὐρανὸν καὶ κατέβη, † καὶ γνόφος ὑπὸ τοὺς
11 πόδας αὐτοῦ. † Καὶ ἐπέβη ἐπὶ (λ) χερουβὶμ καὶ ἐπετάσθη,
12 † ἐπετάσθη ἐπὶ πτερύγων ἀνέμων. † Καὶ ἔθετο σκό-
τος ἀποκρυφὴν αὐτοῦ, κύκλῳ αὐτοῦ ἡ σκηνὴ αὐτοῦ,
13 † σκοτεινὸν ὕδωρ ἐν νεφέλαις ἀέρων. † Ἀπὸ τῆς τη-
λαυγήσεως ἐνώπιον αὐτοῦ αἱ νεφέλαι διῆλθον, †
14 χάλαζα καὶ ἄνθρακες πυρός. † Καὶ ἐβρόντησεν ἐξ
οὐρανοῦ (ε) κύριος, † καὶ ὁ ὕψιστος ἔδωκε φωνὴν αὐ-
15 τοῦ. † (ζ) Καὶ ἐξαπέστειλε βέλη καὶ ἐσκόρπισεν αὐ-
τούς, † καὶ ἀστραπὰς ἐπλήθυνε καὶ συνετάραξεν
αὐτούς.

MS. A. (α) ἐρύσατο (β) ἡ ἰσχύς μου. (γ) καὶ ἐλπιῶ (δ) ἀντιλήμπτωρ. (λ) χερουβεὶν (ε) ὁ κύριος, (ζ) Ἐξαπέστειλε

Vers. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Transl. LAT.

13 Exurge, Domine, (o) præveni 13
eos, & supplanta eos : [f] *Erue*
animã meam ab impio, (p) frame-
am tuã Ab inimicis manûs tuæ. 14
14 Domine, (q) [g] *perdens de*
terra, dispertire eos in vita eo-
rum, et (r) de absconditis tuis ad-
impletus est venter eorũ. 15 [h]
Saturati sunt (s) porcinâ, & di-
miserunt reliquias parvulis su-
is. 16 Ego autem in [i] *justitia* 15
apparebo conspectui tuo: satiabor,
(t) cùm apparuerit gloria tua.

In finem puero Domini ipsi Da- 1
vid, quæ locutus est Domino,
verba cantici hujus, in die, quâ
eripuit eum Dominus de manu
omnium inimicorum ejus, & de
mãnu Saul, & dixit; *XVII.*

Diligã te, Domine, [a] *for-* 2
1 *titudo mea: Dominus fir-* 3
mamentum meum, & refugium
meũ, & liberator meus. 2 Deus
meus adjutor meus: sperabo in e-
um. 3 Protector meus, & cornu
salutis meæ, & susceptor meus.
4 [b] *Laudans invocabo Dñm,* 4
& ab inimicis meis salvus ero.
5 Circumdederunt me dolores 5
mortis : & torrentes iniquitatis
conturbaverunt me. 6 Dolores in- 6
ferni circumdederunt me : [c]
prævenerunt me laquei mortis.
7 Et in tribulatione mea invocavi 7
Dominũ, & ad Deũ meum cla-
mavi. 8 Audivit [d] *de templo*
sancto suo vocẽ meã : & clamor
meus in conspectu ejus, introibit in
aures ejus. 9 Et (a) commota est, 8
& contremuit terra : & fun-
damenta montium conturbata
sunt, & (b) commota sunt, quo-
niã iratus est eis Deus. 10 A- 9
scendit fumus in ira ejus: & ignis
à facie ejus (c) exarsit: carbones
succensi sunt ab eo. 11 Et incli- 10
navit cœlũ, & descendit: & ca-
ligo sub pedibus ejus. 12 Et ascen- 11
dit super Cherubim, & volavit:
volavit super pennas ventorum.
13 Et posuit tenebras latibulũ su- 12
um: in circuitu ejus tabernaculũ
ejus : tenebrosa aqua in nubibus
aëris. 14. [e] *Præ fulgore in con-* 13
spectu ejus nubes transierunt :
grando, & carbones ignis. 15 Et 14
intonuit de cœlo Dominus, & Al-
tissimus dedit vocẽ (d) suã. 16 Et 15
emisit sagittas, & dissipavit eos:
& fulgura multiplicavit, & conturbavit eos.

Versio ÆTHIOPICA.

ተንሥእ፡ እግዚኦ፡ ብጽሖሙ፡ ወዐቅጾሙ፡፡ 13
ወባልሖ፡ እምኩናት፡ ለነፍስየ፡፡ ሰይፍከ፡ ሰ
ዐሉ፡ ፀር፡ እዴከ፡፡=፡ እግዚኦ፡ እምውሑዳን፡ 14
ምድር፡፡ ናፍቆሙ፡ በሕይወቶሙ፡፡ እምኅቡ
አቲከ፡ ጸግበት፡ ከርሦሙ፡፡=፡ ጸግቡ፡ ደቂ 15
ቆሙ፡ ወኀደጉ፡ ትርፈቲሆሙ፡ ለሕፃናቲሆ
ሙ፡፡=፡ ወአንሰ፡ በጽድቅከ፡ እሬኢ፡ ገጸከ፡፡ 16
ወእጸግብ፡ በርእየ፡ ስብሐቲከ፡፡=፡

ፍጻሜ፡ዘገብረ፡እግዚአብሔር፡ ዘዳዊት፡
ዘተናገረ፡ለእግዚአብሔር፡በቃለ፡ማ
ኅሌት፡በዕለተ፡አድኀኖ፡እግዚአብ
ሔር፡እምእደ፡ኵሎሙ፡ጸላእ
ቱ፡ወእምእደ፡ሳኦል፡ወይቤ፡፡

፲፯ አፈቅረከ፡ እግዚኦ፡ በኀይልየ፡፡ እግዚአ 1
ብሔር፡ ኀይልየ፡ ወጸወንየ፡ ወመድኀኒየ፡፡=፡
አምላኪየ፡ ወረዳኢየ፡ ወእትዌከል፡ ቦቱ፡፡=፡ 2
መአምንየ፡ ወቀርነ፡ ሕይወትየ፡ ወምስካይ 3
የ፡፡=፡ እንተ፡ ሶበ፡ ጸዋዕክዎ፡ ለእግዚአብሔር፡ 4
እድኅን፡ እምፀርየ፡፡=፡ አኀዙኒ፡ ፃዕረ፡ ሞ 5
ት፡፡ ወውኂዘ፡ ዐመፃ፡ ሆከኒ፡፡=፡ ወዓገቱኒ፡ 6
ጻዕረ፡ ሲኦል፡፡ ወበዝሑኒ፡ መሠግረ፡ ሞት፡፡=፡
ወሶበ፡ ተመንደብኩ፡ ጸዋዕክዎ፡ ለእግዚአብሔ 7
ር፡፡ ወጸራኅኩ፡ ኀበ፡ አምላኪየ፡፡=፡ ወሰም 8
ዐኒ፡ በጽርሐ፡ መቅደሱ፡ ቃልየ፡፡ ወጽራኅየኒ፡
በአ፡ ቅድሜሁ፡ ውስተ፡ እዘኒሁ፡፡=፡ ርዕደት፡ 9
ወአድለቅለቀት፡ ምድር፡፡ ወአንቀልቀሉ፡ መሰ
ረታተ፡ አድባር፡፡ ተሀውኩ፡ እስመ፡ ተምዖ
ሙ፡ እግዚአብሔር፡፡=፡ ወዐርገ፡ ጢስ፡ እመ 10
ዓቱ፡፡ ወነደደ፡ እሳት፡ እምቅድመ፡ ገጹ፡፡ ኀ
ተወ፡ አፍሐመ፡ እምኔሁ፡፡=፡ አጽነነ፡ ሰማ 11
ያተ፡ ወወረደ፡፡ ወቆባር፡ ታሕተ፡ እገሪሁ፡፡=፡
ተጽዕነ፡ ላዕለ፡ ኪሩቤል፡ ወሰረረ፡፡ ወሰረረ፡ 12
በክንፈ፡ ነፋስ፡፡=፡ ወረሰየ፡ ጽልመተ፡ ምስ 13
ዋሮ፡፡ ወአውደ፡ ጽላሎቱ፡፡ ወጸልመ፡ ማያ
ት፡ በውስተ፡ ደመናት፡፡=፡ ወእምብርሃነ፡ ገጹ፡ 14
ኀለፉ፡ ደመናት፡ ቅድሜሁ፡፡ ወበረድ፡ አፍሐ
መ፡ እሳት፡፡=፡ ወአንጐድጐደ፡ እግዚ 15
አብሔር፡ በሰማያት፡፡ ወልዑል፡ ወሀበ፡ ቃ
ሎ፡፡=፡ ፈነወ፡ አሕፃሁ፡ ወዘረዎሙ፡፡ አብ 16
ዝኃ፡ መባርቅቲሁ፡ ወሆኮሙ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [f] Eripe animam meam à lancea, gladius tuus super inimicos manûs tuæ. [g] à paucis de terra, [h] Saturati sunt filii eorum, & [i] justitia tua *PSAL. xvii.* [a] omnibus viribus meis: Dominus fortitudo mea & refugium [b] Cùm invocavero Dominum, ab [c] multiplicati sunt mihi laquei [d] in templo [e] Et præ fulgore vultus ejus, nubes transierunt ante eũ.

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

14 15 * قم يا رب ادركهم وعرقلهم * ونج نفسي من المنافقين * ومن سيفك من اعدايك * يا رب
عن قريب سيهم في الارض * اقسمهم في حياتهم من ذخايرك * امتلت بطونهم من لحم الخنازير *
16 شبع بنوهم * وتركوا الفضلات لاطفالهم * وانا بالبر اترايا لوجهك * واشبع عند ظهور مجدك
1 * المزمور السابع عشر لداود * في الاخر لفتي الرب داوود وهو ما ذكر للرب على
التسبحة في اليوم الذي خلصه من ايدي اعدايه ومن يد شاول * استيخن قيا *
2 3 * احبك يا رب قوتي * الرب ثباتي وملجاي ومخلصي * الهي عوني وعليه توكلي * ساتري
4 5 وقرن خلاصي * اسبح الرب وادعوه * وانجو من اعداي * لان غمرات الموت اكتنفتني *
6 7 واودية الاثمة اقلقتني * احاطت بي اهوال الجحيم * فخاخ الموت ادركتني * وعند شدتي دعوت
الرب * والي الهي صرخت * سمع من هيكل قدسه صوتي * ودعاي امامه يدخل الي مسامعه *
8 9 * تزلزلت الارض وارتعدت * وتحركت اساسات الجبال وترعرعت * لان الرب غضب عليها * صعد
10 الدخان من غضبه * والتهبت النار امامه * اشتعل منه جمر النار * طاطا السماء ونزل *
11 12 والضباب تحت رجليه * ركب علي الكروبيم وطار * طار علي اجنحة الرياح * جعل الظلمة له
13 حجابا * تحيط مظلته * ماء مظلم في سحب الهواء * من بريق وجهه جازت السحب قدامه *
14 15 بردا وجمر نار * ارعد الرب من السماء * وابدي العلي صوته * ارسل سهاما وفرقهم *
اكثر البرق واقلقهم *

Exurge, O Domine, apprehende eos, & 14
illaquea eos : Et libera animam meam
ab impiis, & à gladio tuo, nempè ab ini-
micis tuis. O Domine, mox disperde illos 15
in terra : separa eos in vita eorum à
thesauris tuis. Expleti sunt ventres eorũ
carne porcorum : saturati sunt filii eorũ,
& reliquerunt reliquias parvulis suis. E- 16
go autem in justitia apparebo vultui tuo,
& satiabor in apparitione gloriæ tuæ.

PSAL. XVII. Davidis.

De fine : Puero Domini, Davidi. 1
Et est *carmen*, quod cecinit Domino, in die quâ eripuit eum de manibus inimicorum ejus, & de manu Saulis, Vers. III.

Diligo te, O Domine mi, fortitudo mea. 2
Dominus firmitas mea, & refugium 3
meũ, & Salvator meus: Deus meus, adju-
toriũ meũ, & in ipso fiducia mea: Prote-
ctor meus, & cornu salutis meæ. Laudabo 4
Dominũ, & invocabo eũ, & redimar ab
inimicis meis. Quoniam angustiæ mortis 5
circundederunt me : & torrentes iniquo-
rum conturbaverunt me. Circundederunt 6
me tempestates inferni : laquei mortis
comprehenderunt me. Et in mea tribula- 7
tione invocavi Dominum, & ad Deum
meum clamavi. Audivit de templo san-
ctitatis suæ vocem meam, & deprecatio
mea ante ipsum ingredietur ad aures ejus.
Tremuit terra, & trepidavit : & mota 8
sunt fundamenta montium, & tremefacta
sunt, eò quòd Dominus iratus est eis.
Ascendit fumus ex furore ejus, & in- 9
flammatus est ignis ante eum, accensi sunt
ex eo carbones ignis. Inclinavit cœlum, & 10
descendit, & caligo sub pedibus ejus. E- 11
quitavit supra Cherubim, & volavit, vo-
lavit super alas ventorum. Fecit tenebras 12
sibi latibulum, circundantes tabernaculum
ejus : aqua tenebrosa in nubibus aëris. Ex 13
fulgore vultûs ejus transierunt nubes corã
eo, in grandines, & carbones ignis. Into- 14
nuit Dominus de cœlo, & edidit Altissimus
vocem suã. Misit sagittas, & dissipavit 15
eos : multiplicavit fulgura, & contur-
bavit eos.

תהלים : יח

orbis fundamenta ſunt diſcooperta & , aquarum *alvei* apparuerunt Et
וַיֵּרָאוּ ׀ אֲפִיקֵי מַיִם וַיִּגָּלוּ מוֹסְדוֹת תֵּבֵל 16
Mittet *.tui naſi* venti flatum propter : Domine tuam increpationem propter
מִגַּעֲרָתְךָ יְהוָה מִנִּשְׁמַת רוּחַ אַפֶּךָ׃ יִשְׁלַח 17
meo inimico ab me Eruet .multis aquis de me extrahet ,me capiet ,altitudine de
מִמָּרוֹם יִקָּחֵנִי יַמְשֵׁנִי מִמַּיִם רַבִּים׃ יַצִּילֵנִי מֵאֹיְבִי 18
.me *pre* robuſtiores fuerunt quoniam ; me habentibus odio ab & ,forti
עָז וּמִשֹּׂנְאַי כִּי־אָמְצוּ מִמֶּנִּי׃
.mihi *fulcrum in* Dominus fuit & : meæ contritionis die in me Prævenient
יְקַדְּמוּנִי בְיוֹם־אֵידִי וַיְהִי־יְהוָה לְמִשְׁעָן לִי׃ 19
.me in complacuit quoniam ,me eruet : latitudinem in me eduxit Et
וַיּוֹצִיאֵנִי לַמֶּרְחָב יְחַלְּצֵנִי כִּי חָפֵץ בִּי׃ 20
puritatem ſecundùm ,meam juſtitiam ſecundùm Dominus mihi Retribuet
יִגְמְלֵנִי יְהוָה כְּצִדְקִי כְּבֹר 21
non & ,Domini vias cuſtodivi Quia .mihi reddet mearum manuum
יָדַי יָשִׁיב לִי׃ כִּי־שָׁמַרְתִּי דַּרְכֵי יְהוָה וְלֹא־ 22
ejus ſtatuta & ,me coram ejus judicia omnia Quoniam .meo Deo à egi impiè
רָשַׁעְתִּי מֵאֱלֹהָי׃ כִּי כָל־מִשְׁפָּטָיו לְנֶגְדִּי וְחֻקֹּתָיו 23
.mea iniquitate ab me cuſtodivi & ,eo cum perfectus fui Et .me à *amovebo* non
לֹא־אָסִיר מֶנִּי׃ וָאֱהִי תָמִים עִמּוֹ וָאֶשְׁתַּמֵּר מֵעֲוֺנִי׃ 24
puritatem ſecundùm ,meam juſtitiam ſecundùm mihi Dominus reddidit Et
וַיָּשֶׁב־יְהוָה לִי כְצִדְקִי כְּבֹר 25
cum ,eris miſericors miſericorde Cum .ſuis oculis coram mearum manuum
יָדַי לְנֶגֶד עֵינָיו׃ עִם־חָסִיד תִּתְחַסָּד עִם־ 26
perverſo cum & ,eris mundus mundo Cum .eris perfectus perfecto viro
גְּבַר תָּמִים תִּתַּמָּם׃ עִם־נָבָר תִּתְבָּרָר וְעִם־עִקֵּשׁ 27
oculos & ; ſervabis *afflictum* populum tu Quoniam *.te reddes perverſum*
תִּתְפַּתָּל׃ כִּי־אַתָּה עַם־עָנִי תוֹשִׁיעַ וְעֵינַיִם 28
,Domine meam lucernam illuminabis tu Quoniam .humiliabis excelſos
רָמוֹת תַּשְׁפִּיל׃ כִּי־אַתָּה תָּאִיר נֵרִי יְהוָה 29
,exercitum *percurram* te in Quoniam *.meam tenebroſitatem* illuminabit meus Deus
אֱלֹהַי יַגִּיהַּ חָשְׁכִּי׃ כִּי־בְךָ אָרֻץ גְּדוּד 30
eloquium ,*ejus* via perfecta Dei .murum tranſiliam meo Deo in &
וּבֵאלֹהַי אֲדַלֶּג־שׁוּר׃ הָאֵל תָּמִים דַּרְכּוֹ אִמְרַת־ 31
Quoniam .eo in ſperantibus omnibus *ipſe* clypeus ;conflatum Domini
יְהוָה צְרוּפָה מָגֵן הוּא לְכֹל ׀ הַחֹסִים בּוֹ׃ כִּי 32
? noſtrum Deum præter *petra* quis & ? Dominum præter Deus quis
מִי אֱלוֹהַּ מִבַּלְעֲדֵי יְהוָה וּמִי צוּר זוּלָתִי אֱלֹהֵינוּ׃
Adæquans .meam viam perfectam *dedit* & ,fortitudine me *accingens* Deus
הָאֵל הַמְאַזְּרֵנִי חָיִל וַיִּתֵּן תָּמִים דַּרְכִּי׃ מְשַׁוֶּה 33 34
Docens .me ſtare faciet mea excelſa ſuper & ,cervarum ſicut meos pedes
רַגְלַי כָּאַיָּלוֹת וְעַל בָּמֹתַי יַעֲמִידֵנִי׃ מְלַמֵּד 35
dediſti Et .meis brachiis æreus arcus *conteritur* & ,bellum ad meas manus
יָדַי לַמִּלְחָמָה וְנִחֲתָה קֶשֶׁת־נְחוּשָׁה זְרוֹעֹתָי׃ וַתִּתֶּן־ 36
tua manſuetudo & ;me fulciet tua dextera & ,tuæ ſalutis ſcutum mihi
לִי מָגֵן יִשְׁעֶךָ וִימִינְךָ תִסְעָדֵנִי וְעַנְוַתְךָ
nutârunt non & : me ſubtus meum greſſum Dilatabis .me multiplicabit
תַרְבֵּנִי׃ תַּרְחִיב צַעֲדִי תַחְתָּי וְלֹא מָעֲדוּ 37
.mea crura
קַרְסֻלָּי׃

תרגום TARGUM.

וְאִתְחֲמִיאוּ עֻמְקֵי מַיָּא וְאִתְגְּלִיאוּ שִׁתְאֲסַיָּא דְתֵבֵל 16
מִמְּזוֹפִיתָא מִן קֳדָם יְיָ מִמֵּימַר תְּקוֹף רוּגְזָךְ׃ שְׁלַח 17
נְבִיּוֹהִי מֶלֶךְ תַּקִּיף דְּיָתִיב בִּתְקוֹף רוּמָא דַּבְּרַנִי
שֵׁיזְבַנִי מֵעַמְמִין סַגִּיאִין׃ שֵׁיזְבַנִי מִן סָנְאַי אֲרוּם 18
עַשִּׁינִין הִנּוּן וּמִן בַּעֲלֵי דְבָבִי אֲרוּם אִתְגַּבַּרוּ עֲלַי׃
אַקְדִּמוּ לִי בְּיוֹם טִלְטוּלִי וַהֲוָה מֵימְרָא דַיְיָ סְמִיךְ 19
לִי׃ וְאַפֵּיק יָתִי לִרְוָחָא שֵׁיזְבַנִי מְטוּל דְּאִתְרְעֵי בִי׃ 20
יִגְמְלִנַּנִי יְיָ כִּזְכוּתִי כִּבְרִירוּת יְדַי יָתִיב לִי׃ מְטוּל 21 22
דִּנְטָרֵית אוֹרְחָן דְּתַקְּנָן קֳדָם יְיָ וְלָא הֲלָכֵית
בִּרְשַׁע קֳדָם יְיָ׃ מְטוּל דְּכָל דִּינוֹי גְּלוֹ לְקִבְלִי 23
לְמֶעְבַּדְהוֹן וּקְיָמוֹי לָא אַעְדִּי מִנִּי׃ וַהֲוֵיתִי שְׁלִים 24
בִּדְחַלְתֵּיהּ וַהֲוֵיתִי נָטֵיר נַפְשִׁי מֵחוֹבִין׃ וּפְרַע יְיָ 25
לִי הֵיךְ זְכוּתִי כִּבְרִירוּת אִידַי קֳדָם מֵימְרֵיהּ׃ עִם 26
אַבְרָהָם דְּאִשְׁתְּכַח חֲסִיד קֳדָמָךְ אַסְגֵּיתָא לְמֶעְבַּד
חִסְדָּא עִם זַרְעֵיהּ דְּיִצְחָק דַּהֲוָה שְׁלִים בִּדְחַלְתָּךְ
אַשְׁלֵמְתָּא מֵימַר רְעוּתָךְ עִמֵּיהּ׃ עִם יַעֲקֹב דַּהֲוָה 27
בְּרִיר קֳדָמָךְ בְּחַרְתָּא בְּנוֹי מִן כָּל עַמְמַיָּא
וְאַפְרֵשְׁתָּא זַרְעֵיהּ מִן כָּל פְּסִילָא וְעִם פַּרְעֹה
וְזַרְעֵיהּ וּמִצְרָאֵי דַּחֲשִׁיבוּ מַחְשְׁבָן בִּישָׁן עַל עַמָּךְ
בַּלְבֵּלְתִּנּוּן בְּמַחְשְׁבָתְהוֹן׃ מְטוּל דְּאַנְתְּ יָת עַמָּא 28
בֵּית יִשְׂרָאֵל דַּחֲשִׁיכִין בֵּינֵי עַמְמַיָּא בְּגָלוּתָא אַנְתְּ
עָתִיד לְמִפְרַק וּבְמֵימְרָךְ אוּמַיָּא תַּקִּיפַיָּא
דְּמִתְגַּבְּרִין עֲלֵיהוֹן תְּמָאִיךְ׃ מְטוּל דְּאַנְתְּ תַּנְהַר 29
שְׁרָגָא דְיִשְׂרָאֵל דִּמְטַפְיָא בְּגָלוּתָא דְּאַנְתְּ הוּא
מָרֵיהּ דִּנְהוֹרָא דְיִשְׂרָאֵל יְיָ אֱלָהִי יַפְּקִנַּנִי מֵחֶשְׁכָא
לִנְהוֹר יַחְמִנַּנִי בְּנִיחָמוּתֵיהּ דְּעָלְמָא דַּעֲתִיד
לְמֵיתֵי לְצַדִּיקַיָּא׃ מְטוּל דִּבְמֵימְרָךְ אַסְגֵּי מַשְׁרְיָן 30
וּבְמֵימַר אֱלָהִי אֶכְבּוֹשׁ כְּרַכִּין תַּקִּיפִין׃ אֱלָהָא 31
דְּכֵוְנָן אָרְחָתֵיהּ אוֹרַיְתָא דַיְיָ בְּחִירָא תְּרֵיס הוּא
לְכָל דְּמִתְרַחֲצִין עֲלוֹי׃ אֲרוּם עַל נִסָּא וּפוּרְקָנָא 32
דְּתַעְבֵּיד לִמְשִׁיחָךְ וּלְשֵׁיזָרֵי עַמָּךְ דְּיִשְׁתַּאֲרוּן יוֹדוּן
כָּל עַמְמַיָּא אוּמַיָּא וְלִשָּׁנַיָּא וְיֵימְרוּן לֵית אֱלָהָא
אֶלָּא יְיָ אֲרוּם לֵית בַּר מִנָּךְ וְעַמָּךְ יֵימְרוּן לֵית
דְּתַקִּיף אֶלָּא אֱלָהָנָא׃ אֱלָהָא דִּמְזָרֵז לִי קְמוּר 33
בְּחֵילָא וּמְתַקֵּן שְׁלִים אָרְחִי׃ דִּמְשַׁוֵּי רִגְלַי קַלִּילִין 34
הֵיךְ אַיְלָתָא וְעַל בֵּית תּוּקְפִּי יְקִימִנַּנִי׃ מַלֵּיף אִידַי 35
לְמֶעְבַּד קְרָבָא וּמַתְקֵיף הֵיךְ קֶשֶׁת בַּרְכוּמָא
דְּרָעַי׃ וִיהַבְתְּ לִי תְּקוֹף וּפוּרְקָן וִימִינָךְ תְּסַיְּעַנִי 36
וּבְמֵימְרָךְ אַסְגַּעְתַּנִי׃ אַפְּתִּיתְ פְּסִיעָתִי בְּאַתְרִי 37
וְלָא אִזְדַּעְזְעוּ רְכוּבָתִי׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Et apparuerunt profunditates aquarum, & 16
diſcooperta ſunt fundamenta orbis ab increpatione *corã Domino*, à verbo vehementi
iræ tuæ. Miſit *prophetas ſuos rex fortis qui* 17
ſedet in robore excelſo, accepit me, eripuit
me de populis plurimis. Eripuit me ab 18
oſoribus meis, quoniam potentes erant;
ab inimicis meis, quoniam invaluerant ſupra me. Prævenerunt me in die migrati- 19
tionis meæ, & fuit verbum Domini fulcrum mihi. Et eduxit me in latitudinem: 20
liberavit me, quoniam ſibi complacuit in
me. Retribuet mihi Dominus ſecundùm 21
juſtitiam meam, ſecundùm munditiam manuum mearum reddet mihi. Quia cuſtodivi 22
vias rectas ante Dominum, & non ambulavi
in improbitate coram *Domino*. Quoniam 23
omnia judicia ejus manifeſta ſunt coram me
ut faciam ea: & pacta ejus non removebo
à me. Et fui perfectus in timore ejus: & 24
fuit ſervator animæ meæ à peccatis. Et re- 25
tribuit Dominus mihi ſecundùm meritum
meum, ſecundùm munditiam manuũ mearũ
coram verbo ſuo. Cùm Abraham qui re- 26
pertus eſt pius ante te multiplicâſti facere
pietatem, cum ſemine Iſaac, qui fuit
perfectus in timore tuo, perfeciſti verbum
voluntatis tuæ cum eo. Cùm Jaacob qui *fuit* 27
purus coram te, elegiſti filios ejus de cunctis
populis, ſegregaſtíque ſtirpem ejus ab omni
falſitate; & cum Pharaone *& ſemine ejus*,
& Ægyptiis qui cogitaverant cogitationes
malas adverſus populum tuum, conturbatos
reddidiſti eos in cogitationibus ſuis. Quo- 28
niam tu populum *domus Iſrael* egenorum
inter populos in captivitate, tu, [*inquam*,]
ſalvaturus es; & in verbo tuo gentes fortes,
quæ roborantur adverſum eos, deprimes.
Quoniam tu illuminabis lucernã *Iſrael qua* 29
extincta eſt in captivitate, tu enim auctor es
lucis Iſrael: Dominꝰ Deus meus *educet me*
è tenebris in lucem, videre faciet me conſo-
lationem ſeculi venturi juſtis. Quoniam 30
in verbo tuo multiplicabo exercitus, & in
verbo Dei mei ſubjugabo arces munitas.
Deus cujus rectæ ſunt viæ, lex Domini electa, 31
clypeus ipſe eſt omnibꝰ qui confidunt in *eo*.
Quoniã propter miraculũ & redemptionẽ 32
quæ edes Chriſto tuo & reliquiis populi tui,
quæ remanebũt, laudes dicẽt omnes populi,
nationes & linguæ: dicentq; Non eſt Deꝰ niſi
DOMINUS; *quoniã* non eſt niſi tu: populꝰ
autẽ tuꝰ dicet, Non eſt fortis niſi Deꝰ noſter.
Deus qui accingit me cingulo in virtute, & 33
dirigit perfectũ iter meũ. *Qui* ponit pedes 34
meos agiles ſicut cervarũ, & in domo fortitudinis meæ ſtare me faciet. Docet manus 35
meas ad belligerandũ, & corroborat veluti
arcũ chalybeũ brachia mea. Et dediſti mihi 36
fortitudinẽ *& ſalutẽ*, & dextera tua auxiliabitur mihi: & verbo tuo adauxiſti me.
Dilatâſti greſſus meos in loca mea, & non 37
ſunt commoti tali mei.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

16 * ܘܐܬܚܙܝܘ ܡܒܘܥܐ ܕܡܝܐ. ܘܐܬܓܠܝܘ ܫܬܐܣܝ ܬܒܝܠ: ܡܢ ܟܐܬܟ ܡܪܝܐ. ܘܡܢ ܢܫܡܬܐ
17 ܕܪܘܚܐ ܕܪܘܓܙܟ: * ܫܕܪ ܡܢ ܡܪܘܡܐ ܘܢܣܒܢܝ. ܘܩܒܠܢܝ ܡܢ ܡܝܐ ܣܓܝܐܐ: * ܦܪܩܢܝ ܡܢ
18 ܒܥܠܕܒܒܝ ܥܫܝܢܐ. ܘܡܢ ܣܢܐܝ ܕܥܫܝܢܘ ܡܢܝ: * ܩܕܡܘܢܝ ܒܝܘܡܐ ܕܬܘܚܬܝ. ܘܗܘܐ
19 ܠܝ ܡܪܝܐ ܦܪܘܩܐ: * ܘܐܦܩܢܝ ܠܪܘܝܚܐ. ܘܦܪܩܢܝ ܡܛܠ ܕܨܒܐ ܒܝ: * ܘܦܪܥܢܝ ܡܪܝܐ
20 ܐܝܟ ܙܕܝܩܘܬܝ. ܘܐܝܟ ܕܟܝܘܬܐ ܕܐܝܕܝ ܡܠܢܝ: * ܡܛܠ ܕܢܛܪܬ ܐܘܪܚܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܐܫܬܪܚܬ
21 ܡܢ ܐܠܗܝ: * ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ ܕܝܢܘܗܝ ܩܕܡܝ. ܘܢܡܘܣܘܗܝ ܠܐ ܐܥܒܪܬ ܡܢܝ:
22 * ܘܗܘܝܬ ܕܠܐ ܡܘܡ ܥܡܗ. ܘܐܙܕܗܪܬ ܡܢ ܚܛܗܐ: * ܘܦܪܥܢܝ ܡܪܝܐ ܐܝܟ ܙܕܝܩܘܬܝ. ܘܐܝܟ
23 ܕܟܝܘܬܐ ܕܐܝܕܝ ܩܕܡ ܥܝܢܘܗܝ: * ܥܡ ܕܟܝܐ ܕܟܝܐ ܬܗܘܐ. ܘܥܡ ܬܡܝܡܐ ܬܬܡܡ:
24 * ܘܥܡ ܓܒܝܐ ܓܒܝܐ ܬܗܘܐ. ܘܥܡ ܥܩܡܐ ܬܬܥܩܡ: * ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܠܥܡܐ ܡܣܟܢܐ ܬܦܪܘܩ.
25
26 ܘܥܝܢܐ ܪܡܬܐ ܬܡܟܟ: * ܐܢܬ ܬܢܗܪ ܫܪܓܝ. ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ ܢܢܗܪ ܚܫܘܟܝ: * ܡܛܠ ܕܒܟ
27 ܐܪܗܛ ܥܠ ܓܝܣܐ. ܘܒܐܠܗܝ ܐܫܘܪ ܫܘܪܐ: * ܐܠܗܐ ܕܠܐ ܡܘܡ ܐܘܪܚܗ. ܡܐܡܪܗ ܕܡܪܝܐ
28
29 ܒܚܝܪ: ܘܡܥܕܪ ܠܟܠ ܕܬܟܝܠܝܢ ܥܠܘܗܝ: * ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܐܠܗܐ ܠܒܪ ܡܢ ܡܪܝܐ: ܘܠܝܬ
30
31 ܕܥܫܝܢ ܐܝܟ ܐܠܗܢ: * ܐܠܗܐ ܕܐܚܕܢܝ ܚܝܠܐ: ܘܝܗܒ ܕܠܐ ܡܘܡ ܐܘܪܚܝ: * ܥܒܕ ܪܓܠܝ
32 ܐܝܟ ܕܐܝܠܐ ܘܥܠ ܪܘܡܐ ܐܩܝܡܢܝ: * ܐܠܦ ܐܝܕܝ ܠܩܪܒܐ. ܘܥܒܕ ܐܝܟ ܩܫܬܐ ܕܢܚܫܐ ܕܪܥܝ:
33
34
35 * ܘܝܗܒܬ ܠܝ ܬܪܣܐ ܕܦܘܪܩܢܐ. ܘܝܡܝܢܟ ܣܥܕܬܢܝ. ܘܡܪܕܘܬܟ ܐܪܒܝܬܢܝ: * ܘܐܪܘܚܬ ܗܠܟܬܝ
36
37 ܬܚܬܝ ܕܠܐ ܢܙܘܥܘܢ ܩܘܪܣܠܝ.

Et apparuerunt fontes aquarum, & detecta 16
ſunt fundamenta orbis ab increpatione tua,
Dñe, & à flatu venti iræ tuæ. Miſit ab alto, 17
& extraxit me, atq; excepit me ex aquis multis. Meque liberavit ab hoſtibꝰ meis validis, 18
& ab oſoribꝰ meis qui fortiores me erant:
Qui prævenerant me in die mœroris mei. 19
Fuitque mihi Dñs Salvator: Et eduxit me in 20
latitudinem, méque ſalvavit, quoniam placui
ei. Et retribuit mihi Dñs ſecundùm juſtitiam meam: & ſecundùm puritatem manuum 21
mearum explevit me. Quoniam cuſtodivi vias Dñi, neque defeci à Deo meo. Quoniam 22 23
omnia judicia ejus coram me ſunt, & leges ejꝰ
non averti à me. Et fui ſine macula cum eo, 24
& cavi mihi à peccatis. Et rependit mihi 25
Dñs juſtitiam meam, & juxta puritatem manuum mearum coram oculis ejus. Cum puro 26
purus eris, & cum ſimplici ſimpliciter ages.
Et cum electo electus eris, & cum obliquo 27
obliquè te geres: Quoniam tu populum mi- 28
ſerum ſervabis, & oculos ſublimes deprimes.
Tu illuminabis lucernam meam, Dñs Deus 29
meus illuſtrabit tenebras meas. Quoniam per 30
te curram adverſùs phalangem, & per Deum
meum tranſiliam murum. Dei via ſine macu- 31
la eſt, eloquium Domini probatum, & adjuvans omnes qui confidunt in illo. Quoniam 32
non eſt Deus præter Dominum, neque eſt qui
ſit potens ut Deꝰ noſter. Deus eſt qui munivit 33
me robore, & dedit immaculatam viam meam. Fecit pedes meos tanquam cervi, & in 34
alto ſtatuit me: Inſtruxit manus meas ad prælium, & corroboravit quaſi arcum æreum 35
brachia mea. Dediſti mihi clypeum ſalutis: 36
dextera tua fulciet me, & correptio tua erudiet me. Dilatâſti paſſus meos ſubtus me, 37
ne vacillarent vertebræ meæ.

Versio VULG. LAT.

16 Et apparuerunt fontes aquarum, & revelata sunt fundamenta orbis terrarum;
Ab increpatione tua, Domine, ab inspi-
17 ratione spiritûs iræ tuæ. Misit de summo, & accepit me: & assumpsit me de
18 aquis multis. Eripuit me de inimicis
meis fortissimis, & ab his qui oderunt
me: quoniam confortati sunt super me.
19 Prævenerunt me in die afflictionis meæ:
& factus est Dominus protector meus.
20 Et eduxit me in latitudinem: salvum me
21 fecit, quoniam voluit me. Et retribuet mihi Dominus secundùm justitiam
meam, & secundùm puritatem ma-
22 nuum mearum retribuet mihi: Quia
custodivi vias Domini, nec impiè gessi à
23 Deo meo. Quoniam omnia judicia ejus
in conspectu meo: & justitias ejus non
24 repuli à me. Et ero immaculatus cum
eo: & observabo me ab iniquitate mea.
25 Et retribuet mihi Dominus secundùm
justitiam meam: & secundùm puritatem
manuum mearum in conspectu oculorũ
26 ejus. Cum sancto sanctus eris, & cum vi-
27 ro innocente innocens eris: Et cum electo electus eris, & cum perverso per-
28 vertêris. Quoniam tu populum humilem salvum facies: & oculos superborũ
29 humiliabis. Quoniam tu illuminas lucernam meam, Domine: Deus meus, illu-
30 mina tenebras meas. Quoniam in te eripiar à tentatione, & in Deo meo
31 transgrediar murum. Deus meus, impolluta via ejus: eloquia Domini igne
examinata: protector est omnium spe-
32 rantium in se. Quoniam quis Deus præter Dominum? aut quis Deus præter
33 Deum nostrum? Deus qui præcinxit me
virtute: & posuit immaculatam viam
34 meam. Qui perfecit pedes meos tanquam cervorum, & super excelsa sta-
35 tuens me. Qui docet manus meas ad
prælium: & posuisti ut arcum æreum,
36 brachia mea. Et dedisti mihi protectionem salutis tuæ: & dextera tua
suscepit me: Et disciplina tua correxit
me in finem: & disciplina tua ipsa me
37 docebit. Dilatâsti gressus meos subtus
me: & non sunt infirmata vestigia
mea.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

16 † Καὶ ὤφθησαν αἱ πηγαὶ τῶν ὑδάτων, † καὶ (η) ἀνεκαλύφθη
τὰ θεμέλια τῆς οἰκουμένης· † ἀπὸ ἐπιτιμήσεώς
σου κύριε, † ἀπὸ ἐμπνεύσεως πνεύματος ὀργῆς σου.
17 † Ἐξαπέστειλεν ἐξ ὕψους καὶ ἔλαβέ με, † προσελάβετό
18 με ἐξ ὑδάτων πολλῶν. † Ῥύσεταί με ἐξ ἐχθρῶν μου
δυνατῶν, καὶ ἐκ τῶν μισούντων με, † ὅτι ἐστερεώθησαν
19 ὑπὲρ ἐμέ. † Προέφθασάν με ἐν ἡμέρᾳ κακώσεώς μου,
20 † καὶ ἐγένετο κύριος ἀντιστήριγμά μου. † Καὶ ἐξήγαγέ με
εἰς πλατυσμόν, † ῥύσεταί με, ὅτι ἠθέλησέ (θ) με.
21 † Καὶ ἀνταποδώσει μοι κύριος κατὰ τὴν δικαιοσύνην
μου, † καὶ κατὰ τὴν καθαριότητα τῶν χειρῶν μου ἀνταποδώσει
22 μοι. † Ὅτι ἐφύλαξα τὰς ὁδοὺς κυρίου,
23 † καὶ οὐκ ἠσέβησα ἀπὸ τοῦ θεοῦ μου. † Ὅτι πάντα τὰ
κρίματα αὐτοῦ ἐνώπιόν μου, † καὶ τὰ δικαιώματα αὐτοῦ
24 οὐκ ἀπέστησαν ἀπ' ἐμοῦ. † Καὶ ἔσομαι ἄμωμος μετ' αὐτοῦ,
25 † καὶ φυλάξομαι ἀπὸ τῆς ἀνομίας μου. † Καὶ ἀνταποδώσει
μοι κύριος κατὰ τὴν δικαιοσύνην μου, † καὶ κατὰ τὴν
καθαριότητα τῶν χειρῶν μου † (ι) ἐνώπιον τῶν ὀφθαλμῶν
26 αὐτοῦ. † Μετὰ ὁσίου ὁσιωθήσῃ, † καὶ μετὰ
27 ἀνδρὸς ἀθώου ἀθῶος ἔσῃ· † Καὶ μετὰ ἐκλεκτοῦ ἐκλεκτὸς
28 ἔσῃ, † καὶ μετὰ στρεβλοῦ διαστρέψεις. † Ὅτι
σὺ λαὸν ταπεινὸν σώσεις, † καὶ ὀφθαλμοὺς ὑπερηφάνων
29 ταπεινώσεις. † Ὅτι σὺ φωτιεῖς λύχνον
μου κύριε, † ὁ θεός μου φωτιεῖς τὸ σκότος
30 μου. Ὅτι ἐν σοὶ ῥυσθήσομαι ἀπὸ πειρατηρίου,
31 † καὶ ἐν τῷ θεῷ μου ὑπερβήσομαι τεῖχος. † Ὁ
θεός μου, ἄμωμος ἡ ὁδὸς αὐτοῦ, † τὰ λόγια
κυρίου πεπυρωμένα, † ὑπερασπιστής ἐστι πάντων † τῶν
32 ἐλπιζόντων ἐπ' αὐτόν. † Ὅτι τίς θεὸς πλὴν τοῦ κυρίου;
33 † καὶ τίς θεὸς πλὴν τοῦ θεοῦ ἡμῶν; † Ὁ θεὸς
ὁ περιζωννύων με δύναμιν, † καὶ ἔθετο ἄμωμον τὴν
34 ὁδόν μου· † Ὁ (κ) καταρτιζόμενος τοὺς πόδας μου
35 ὡσεὶ (λ) ἐλάφου, † καὶ ἐπὶ τὰ ὑψηλὰ ἱστῶν με· † Διδάσκων
χεῖράς μου εἰς πόλεμον. † καὶ ἔθου τόξον
36 χαλκοῦν τοὺς βραχίονάς μου, † Καὶ ἔδωκάς μοι
ὑπερασπισμὸν σωτηρίας μου· † καὶ ἡ δεξιά σου ἀντελάβετό
μου, † καὶ ἡ παιδεία σου ἀνώρθωσέ με εἰς
37 τέλος, † καὶ ἡ παιδεία σου αὐτή με διδάξει. † Ἐπλάτυνας
τὰ διαβήματά μου ὑποκάτω μου, † καὶ
οὐκ ἠσθένησαν τὰ ἴχνη μου.

MS.A. (η) ἀνεκαλύφθησαν (θ) με. ῥύσεταί με ἐξ ἐχθρῶν μου δυνατῶν, καὶ ἐκ τῶν μισούντων με. Καὶ ἀνταποδώσει (ι) ἀνταποδώσει μοι ἐνώπιον (κ) καταρτίζων (λ) ἐλάφους,

Vers. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Transl. LAT.

15 Et apparuerunt fontes aquarum: & revelata sunt fundamenta orbis terrarum. 18 Ab increpatione tua, Domine, ab inspiratione spirit' iræ tuæ. 19 Misit de summo, et accepit me: assumpsit me de aquis multis. 20 Eruet me de inimicis meis potentibus, & ab his, qui oderunt me: quoniã confortati sunt super me. 21 Prævenerũt me in die (e) afflictionis meæ: & factus est Dominus [e] firmamentum meum. 22 Et eduxit me in latitudinem: (f) eruet me, quoniã voluit me. 23 Et retribuet mihi Dominus secundũ justitiam meam: & secundùm puritatem manuum mearum retribuet mihi. 24 Quia custodivi vias Domini: nec impiè gessi à Deo meo. 25 Quoniam omnia judicia ejus in conspectu (g) meo: & justitiæ ejus non recesserunt à me. 26 Et ero immaculatus cum eo: & observabo me ab iniquitate mea. 27 Et retribuet mihi Dominus secundùm justitiam meam, & [|] secundùm puritatem manuum mearum in conspectu oculorum ejus. 28 Cum sancto (b) [f] sanctificaberis, & cum viro innocente innocens eris. 29 Et cum electo electus eris, & cum perverso (i) pervertêris. 30 Quoniam [g] tu populum (k) humilem salvum facies; & oculos superborum humiliabis. 31 Quoniam tu illuminabis lucernam meam, Domine: Deus meus, [h] illuminabis tenebras meas. 32 Quoniam in te eripiar à tentatione, & in Deo meo transgrediar murum. [i] Deus meus, immacultata via ejus: (l) eloquia Domini igne examinata: protector est omnium sperantium in se. 34 Quoniam quis Deus præter Dominum? & quis Deus præter Deum nostrum? 35 Deus qui præcinxit me virtute, & posuit immaculatam viam meam. 36 Qui perficit pedes meos tanquam (m) cervi: & super excelsa (n) statuit me. 37 Qui docet manus meas ad prælium: [k] & posuisti arcum æreum brachia mea. [l] Et dedisti mihi (o) protectionem (p) salutis meæ: & dextera tua suscepit me, 39 [m] Et disciplina tua correxit me in finem: (q) & disciplina tua ipsa me docebit. 40 Dilatâsti gressus meos subter me: & non sunt infirmata vestigia mea.

Versio ÆTHIOPICA.

16
ኢስተርአየ፡አንቅዕተ፡ማያት፡፡ ወተከሥ 17
ተ፡መሰረታተ፡ዓለም፡፡=፡ ወእምተግሣጽ 18
17 ከ፡ እግዚኦ፡፡ ወእምእስትንፋሰ፡መዐት
ከ፡፡=፡ ፈነወ፡እምአርያም፡ወነሥአኒ፡፡ 19
18 ወተመጠወኒ፡እማይ፡ ብዙኅ፡፡=፡ወአድኅ 20
ነኒ፡ እምፀርየ ፡ ጽኑዓን፡፡ ወእምጸላእ
19 ትየ፡እስመ፡ ይኄይሉኒ፡፡=፡ወበጽሑኒ፡በ 21
ዕለተ፡ምንደቤየ፡፡ ወኮነኒ፡እግዚአብሔ
ር፡ምስካይየ፡፡=፡ ወአውፅአኒ፡ ውስተ፡መ 22
20 ርኅብ፡፡ ወአድኃነኒ ፡ እስመ ፡ ይፈቅደ
ኒ፡፡=፡የአስየኒ፡እግዚአብሔር፡በከመ፡ጽ 23
21 ድቅየ፡፡ ወይፈድየኒ፡ በከመ፡ ንጹሐ፡ እደ
ዊየ፡፡=፡ እስመ፡ ዐቀብኩ፡ ፍናዊሁ፡ለእግ 24
ዚአብሔር፡፡ ወኢአበስኩ ፡ ለአምላኪ
22 የ፡፡=፡ እስመ፡ኵሉ፡ ኵነኔሁ፡ቅድሜየ፡ 25
ውእቱ፡፡ ወጽድቁኒ ፡ ኢርሕቀ፡ እምኔ
23 የ፡፡=፡ወእከውን፡ንጹሐ፡ምስሌሁ፡፡ ወእ 26
ትዓቀብ፡እምኃጢአትየ፡፡=፡የዓስየኒ፡እግ 27
24 ዚአብሔር ፡ በከመ ፡ ጽድቅየ፡፡ ወፈድ
የኒ፡በከመ፡ ንጹሐ፡ እደዊየ፡፡ በቅድመ፡
25 አዕይንቲሁ፡፡=፡ ምስለ ፡ጻድቅ ፡ ትጻድ 28
ቅ፡፡ ወምስለ፡ ብእሲ፡ ንጹሕ ፡ ንጹሐ ፡
ትከውን፡፡=፡ ወምስለ፡ኅሩይ፡ኅሩየ፡ትከ 29
26 ውን፡፡ ወምስለ፡ጠዋይ፡ ትጠዊ፡፡=፡እስ 30
መ፡አንተ፡እግዚኦ ፡ ታድኅና ፡ ለሕዝብ፡
27 ትሑት፡፡ወተኅስሮሙ፡ለአዕይንተ፡ ዕቡያ
ን፡፡=፡ እስመ፡ አንተ፡ታበርህ፡ማኅቶትየ፡ 31
28 እግዚኦ፡፡ አምላኪየ፡ ያበርህ ፡ ጽልመ
ትየ፡፡=፡ እስመ፡ብከ፡እድኅን፡እመንሱ 32
ት፡፡ ወበአምላኪየ ፡ እትአደዋ፡ ለዐረ
29 ፍት፡፡=፡ ለአምላኪየሰ ፡ ንጹሕ ፡ ፍኖ 33
ቱ፡፡ ቃለ ፡ እግዚአብሔር ፡ ርሱን፡፡ ወ
30 ምእመኖሙ ፡ ውእቱ ፡ ለኵሎሙ ፡ እለ፡
ይትዌከሉ ፡ ቦቱ፡፡=፡ መኑ ፡ ውእቱ ፡ 34
31 አምላክ ፡ ዘእንበለ ፡ እግዚአብሔር፡፡
ወመኑ ፡ እግዚአብሔር፡ ዘእንበለ ፡ አም
ላክነ፡፡=፡እግዚአብሔር፡ ዘያቀንተኒ ፡ ኃ 35
32 ይለ፡፡ ወረሰየ፡ ንጹሐ ፡ ለፍኖትየ፡፡=፡
ዘያረትዖን ፡ ከመ ፡ ኃየል ፡ ለእገርየ፡፡ 36
ወያቀውመኒ፡ ውስተ ፡ መልዕልት፡=፡
33 ዘይሜህረኒ ፡ ፀብአ ፡ ለእደዊየ ፡፡ 37
34 ወረሰየ፡ቀስተ፡ብርት፡ ለመዝራዕትየ፡፡=፡
ወወሀበኒ ፡ መእመነ ፡ ለመድኃኒትየ፡፡ 38
ወየማንከ፡ ተወክፈኒ፡፡=፡ወትምህርትከ፡ 39
35 ዘያጸንዓኒ ፡ ለዝሉፉ፡፡ ወተግሣጽከ፡
36 ውእቱ፡ ዘይሜህረኒ፡፡=፡ ወአርኃብከ፡መ 40
ከይደየ ፡ በመትሕቴየ፡፡ ወኢደክማ፡
37 ሰኰናየ ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [e] protector meus. [|] rependet mihi [f] sanctus eris, [g] tu, Domine, [h] illuminabit [i] Dei autem mei (∴) dirigit [k] et posuit [l] Et dedit [m] Et misericordia tua quæ me fortior est in

Versio *ARABICA.* cum Interpretatione *LATINA.*

16 * ظهرت عيون المياه * وانكشفت اساسات المسكونة * من انتهارك يا رب ومن هبوب ريح غضبك *
17 18 * ارسل من العلي واخذني * نشلني من المياه الغزيرة * وخلصني من اعداي الاشداء * ومن
19 هبوب يد المبغضين لي * لانهم تقووا اكثر مني * ادركوني في يوم ضري * والرب صار لي سندا *
20 * اخرجني الى السعة وانقذني لانه احبني * تخلصني من اعداي الاشداء * ومن المبغضين
21 22 لي * جازاني الرب مثل بري * ومثل طهر يدي يعطيني * لاني حفظت سبل الرب * ولم انافق على
23 24 الهي * لان كل احكامه قدامي * وحقوقه لم ابعدها عني * واكون معه بلا عيب * واتحفظ من
25 26 اثمي * يجازيني الرب مثل بري * ومثل طهر يدي امام عينيه * مع البار بارا تكون * ومع العفيف
27 28 عفيفا تكون * ومع المختار مختارا تكون * ومع الملتوي ملتويا تكون * لانك انت يا رب تنجي
29 الشعب المتواضع * وتذل اعين المتعظمين * وانت يا رب تضي سراجي * الهي انار ظلمتي *
30 31 * لاني بك انجو من المحن وبالاهي اعبر السور * الهي لا ريب في سبله * كلام الرب مختبر * هو ناصر
32 33 جميع المتوكلين عليه * لا اله الا الرب * ولا عزيز مثل الاهنا * الله الذي عضدني بقوة * وجعل
34 35 سبلي بلا عيب * الذي ثبت رجلي مثل الايل * وعلى الاعالي يقيم قدمي * الذي يعلم يدي
36 37 القتال * وشدد ذراعي مثل قوس النحاس * اعطيتني نصرة خلاصي * يمينك نصرتني * وادبك
38 قومني الى الانقضاء * وحكمتك تعلمني * اوسعت خطاي تحتي ولم تضعف قوايمي *

Apparuerunt fontes aquarum, & detecta 16
sunt fundamenta habitatæ, ab increpatione tua, O Domine, & à flatibus venti
indignationis tuæ. Misit ab alto, & acce- 17
pit me: extraxit me ex aquis multis. Et 18
liberavit me ab inimicis meis fortissimis,
& à flatu man' osorũ meorũ, quoniã invaluerunt magis quàm ego: Compreben- 19
derunt me in die penuriæ meæ: at Dominus fact' est mihi adminiculũ. Eduxit me 20
in latitudinē, & liberavit me, quia amavit me. Liberes me ab inimicis meis for-
tissimis, & ab osoribus meis: Retribuit 21
mihi Domin' secundùm innocentiã meã,
& secundùm puritatem manuũ mearum
dabit mihi; Quoniã servavi semitas Do- 22
mini, & non cõmisi scelus contra Deum
meũ. Nam omnia judicia ejus coram me 23
sunt, & decreta ejus non elongavi à me.
Et ero cum eo sine macula, & cavebo mi- 24
hi ab iniquitate mea. Retribuet mihi Do- 25
min' secundùm innocentiam meã, & secundùm munditiam manuũ mearum ob
oculos ejus. Cum innocente innocens eris, 26
cum & honesto honestus eris: Et cum 27
electo electus eris, & cum perverso perversus eris. Quoniam tu, O Domine, 28
redimes populum humilem, & humiliabis oculos magnificantium se. Et tu, 29
O Domine, illuminas lucernam meam:
Deus meus illuminavit tenebras meas.
Quia per te salvabor à tentatione, & per 30
Deũ meũ penetrabo murũ. In Dei semitis 31
non est hæsitatio: Eloquiũ Domini probatũ, ipsũq; adjuvans omnes confidentes in
eo. Non est Deus nisi Dominus, neque est 32
fortis sicut De' noster: Deus, qui accinxit 33
me virtute, & reddidit semitas meas sine
macula. Qui stabilivit pedes meos tanquã 34
cervorũ, et super excelsa erigit vestigia
mea. Qui docet man' meas pugnã, et cor- 35
roboravit brachia mea veluti arcũ æris.
Præbuisti mihi subsidiũ salutis meæ: dex- 3
tera tua adjuvit me. Et disciplina tua 3
dirixit me usq; ad extremũ, et sapientia tua doces me. Dilatâsti gressus meos subtus me, et non sunt debilitata crura mea. 3

תהלים : יט

donec , revertar non & : eos comprehendam & , meos inimicos Perſequar
38 אֶרְדּוֹף אוֹיְבַי וְאַשִּׂיגֵם וְלֹא־אָשׁוּב עַד־ 38
ſubtus cadent : ſurgere poterunt non & , eos Transfigam .eos *conſumere*
39 כַּלּוֹתָם׃ אֶמְחָצֵם וְלֹא־יֻכְלוּ קוּם יִפְּלוּ תַּחַת 39
mihi obſiſtentes incurvabis : bellum ad fortitudine me accinxiſti Et .meos pedes
40 רַגְלָי׃ וַתְּאַזְּרֵנִי חַיִל לַמִּלְחָמָה תַּכְרִיעַ קָמַי 40
me habentes odio & ,cervicem mihi dediſti meorum inimicorum Et .me ſubtus
41 תַּחְתָּי׃ וְאֹיְבַי נָתַתָּה לִּי עֹרֶף וּמְשַׂנְאַי 41
non & , Dominum *ſuper* ; *ſalvans* non & Clamabunt .*eos* ſuccidam
42 אַצְמִיתֵם׃ יְשַׁוְּעוּ וְאֵין מוֹשִׁיעַ עַל־יְהוָה וְלֹא 42
lutum ſicut : *venti facies ſuper* pulverem ut eos *comminuam* Et .eos exaudivit
43 עָנָם׃ וְאֶשְׁחָקֵם כְּעָפָר עַל־פְּנֵי־רוּחַ כְּטִיט 43
me pones , populi contentionibus à me Erues .eos evacuabo platearum
44 חוּצוֹת אֲרִיקֵם׃ תְּפַלְּטֵנִי מֵרִיבֵי עָם תְּשִׂימֵנִי 44
auris auditum Ad .mihi *ſervient* cognovi non populus : gentium caput in
45 לְרֹאשׁ גּוֹיִם עַם לֹא־יָדַעְתִּי יַעַבְדוּנִי׃ לְשֵׁמַע אֹזֶן 45
,decident extranei Filii .mihi mentientur extranei filii : mihi *obtemperabunt*
46 יִשָּׁמְעוּ לִי בְּנֵי־נֵכָר יְכַחֲשׁוּ־לִי׃ בְּנֵי־נֵכָר יִבֹּלוּ 46
,*mea petra* benedictus & Dominus Vivit .ſuis carceribus à expaveſcent &
47 וְיַחְרְגוּ מִמִּסְגְּרוֹתֵיהֶם׃ חַי־יְהוָה וּבָרוּךְ צוּרִי 47
duxit & ; mihi ultiones *dans* Deus .meæ ſalutis Deus ſe exaltet &
48 וְיָרוּם אֱלוֹהֵי יִשְׁעִי׃ הָאֵל הַנּוֹתֵן נְקָמוֹת לִי וַיַּדְבֵּר 48
mihi obſiſtentibus ab etiam , meis inimicis ab meus Erutor .me ſub populos
49 עַמִּים תַּחְתָּי׃ מְפַלְּטִי מֵאֹיְבָי אַף מִן־קָמַי 49
gentibus in tibi confitebor Propterea .me erues *rapinæ* viro à ; me exaltabis
50 תְּרוֹמְמֵנִי מֵאִישׁ חָמָס תַּצִּילֵנִי׃ עַל־כֵּן ׀ אוֹדְךָ בַגּוֹיִם 50
faciens & , ſui regis ſalutes Magnificans .cantabo tuo nomini & ; Domine
51 יְהוָה וּלְשִׁמְךָ אֲזַמֵּרָה׃ מַגְדִּל יְשׁוּעוֹת מַלְכּוֹ וְעֹשֶׂה 51
.ſeculum in uſque ejus ſemini & ,David ſuo *uncto* miſericordiam
חֶסֶד ׀ לִמְשִׁיחוֹ לְדָוִד וּלְזַרְעוֹ עַד־עוֹלָם׃

תרגום TARGUM.

38 אֱרְדּוֹף סָנְאַי וְשֵׁיצִיתִנּוּן וְלָא תְבוּת עַד
39 דְגַמַּרְתִּנּוּן׃ אֲגַמַּרְנוּן וְלָא יְכִילוּ לְמֵקָם וְנַפְּלוּ
40 קְטִילִין תְּחוֹת פַּרְסַת רִגְלָי׃ וְזָרֵזְתָּא לִי חֵילָא
הֵיךְ קָמוּר לְמֶעְבַּד קְרָבָא תַּבַּרְתָּא עַמְמִין דְקָיְמִין
41 לְאַבְאָשָׁא לִי תְחוֹתַי׃ וּבַעֲלֵי דְבָבִי תַּבַּרְתָּא
42 קֳדָמַי יְהַבְתִּנּוּן מְחַזְרֵי קְדַל וְסָנְאַי אֲשֵׁיצִנּוּן׃ בָּעַן
סָעִיד וְלֵית לְהוֹן פָּרִיק מְצַלָּן קֳדָם יְיָ וְלָא מְקַבֵּל
43 צְלוֹתְהוֹן׃ וְדוֹשַׁשְׁתִּנּוּן הֵיךְ גַּרְגִּשְׁתָּא דְאַרְעָא
עַל אַנְפֵּי זַעֲפָא וְהֵיךְ סְיַן אַשְׁקָקֵי בַעֲשִׁית אִנּוּן׃
44 תְּשֵׁיזְבִנַּנִי מִפְּלֻגַּת עַמְמַיָּא תְּנַטְרִינַּנִי בְּמֵיזְלֵי מַזָּיַן
בְּרֵישׁ עַמְמַיָּא עַמָּא דְלָא חַכִּימֵת יִפְלְחוּנַּנִי׃
45 לְשֵׁמַע אוּדֶן יִשְׁתַּמְעוּן לִי בְּנֵי עַמְמַיָּא יְכַדְּבוּן
46 קֳדָמַי׃ בְּנֵי עַמְמַיָּא יְסוּפוּן וִיטַּלְטְלוּן
47 מִבִּרְנְיָתְהוֹן׃ קַיָּם הוּא יְיָ וּבְרִיךְ תַּקִּיפָא דְמִן
קֳדָמוֹהִי מִתְיְהֵב לִי תְקוֹף וּפוּרְקָן וּמְרוֹמַם
48 אֱלָהָא תְקוֹף פּוּרְקָנִי׃ אֱלָהָא דַעֲבַד פּוּרְעֲנוּתָא
לִי וּמְתַבַּר עַמְמַיָּא דְקָיְמִין לְאַבְאָשָׁא לִי תְחוֹתָי׃
49 מְשֵׁיזְבִי מִבַּעֲלֵי דְבָבִי לְחוֹד עַל דְקָיְמִין
לְאַבְאָשָׁא לִי תַּגְבְּרַנַּנִי מִן גּוֹג וּמַשְׁרְיַת עַמְמִין
50 דַּהֲטוֹפִין עִמְּהוֹן תְּשֵׁיזְבִנַּנִי׃ מְטוּל הֵיכְנָא אוֹדֶה
קֳדָמָךְ בֵּינֵי עַמְמַיָּא יְיָ וְלִשְׁמָךְ אֲזַמֵּר תּוּשְׁבַּחְתָּא׃
51 מַסְגֵּי לְמֶעְבַּד פֻּרְקָן עִם מַלְכֵּיהּ וְעָבֵד טֵיבוּ
לִמְשִׁיחֵהּ לְדָוִד וּלְזַרְעֵיהּ עַד עָלְמָא׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Perſequar inimicos meos et *diſperdam* illos: 38
& non convertar donec delevero eos. Delebo 39
eos & non poterunt ſurgere: & cadent occiſi ſubtus plantas pedum meorum. Præcinxiſti 40
me virtute *veluti cingulo* ad belligerandũ, confregiſti populos qui inſurgunt ad malefaciendum mihi ſub me. Et inimicos 41
meos confregiſti coram me: effeciſti ut ipſi terga verterent; oſores autem meos diſperdam. Quærent adjutorẽ, & non erit eis 42
redemptor: deprecabuntur à Dño, & non recipiet orationem eorũ. Et attrivi eos ut 43
glebam *terræ* ante faciem venti,& ſicut lutum platearum conculcavi eos. Salvabis me 44
à diſſidio populorum: *ſervabis me cùm inceſſero armatus* in *capite* gentium; populus quem non novi, ſerviet mihi. Ad auditum 45
auris obedient mihi: filii *populorum* mentientur in præſentia mea. Filii *populorum* 46
conſumentur,et migrabunt de prætoriis ſuis. Vivit Dominus ipſe & benedictus fortis, à 47
cujus conſpectu datur mihi fortitudo & redemptio: & exaltetur Deus fortitudo redemptionis meæ. Deus qui facit ultionem 48
meam, & conſternit ſub me populos qui inſurgunt ad malefaciendum mihi. Ereptor 49
meus de auctoribus inimicitiæ meæ, atque iis qui inſurgunt ut noceant mihi, valentiorem me facies: à *Gog & caſtris populorũ* cum *quibus* rapina eſt,erues me. Propterea 50
laudabo te inter gentes Domine, & nomini tuo dicam laudes. Magnificans ut faciat 51
redemptionem cum rege ſuo, & beneficentiam præſtans Meſſiæ ſuo Davidi, & ſemini ejus uſque in æternum.

PSALM. XIX. יט

opus & ; Dei gloriam *enarrantes* Cœli .Davidi canticum Victori
1 לַמְנַצֵּחַ מִזְמוֹר לְדָוִד׃ הַשָּׁמַיִם מְסַפְּרִים כְּבוֹד־אֵל וּמַעֲשֵׂה
2 nocti nox & ; ſermonem *eructabit* diei Dies .*expanſio indicans* ejus manuum
3 יָדָיו מַגִּיד הָרָקִיעַ׃ יוֹם לְיוֹם יַבִּיעַ אֹמֶר וְלַיְלָה לְּלַיְלָה
.eorum vox *ſit audita* non *ut* , verba non & ,ſermo Non .ſcientiam indicabit
4 יְחַוֶּה־דָּעַת׃ אֵין אֹמֶר וְאֵין דְּבָרִים בְּלִי נִשְׁמָע קוֹלָם׃
: eorum eloquia orbis extremum in & ,eorum linea exivit terram omnem In
5 בְּכָל־הָאָרֶץ ׀ יָצָא קַוָּם וּבִקְצֵה תֵבֵל מִלֵּיהֶם
egrediens ſponſus tanquam ipſe Et .eis in tabernaculum poſuit Soli
6 לַשֶּׁמֶשׁ שָׂם־אֹהֶל בָּהֶם׃ וְהוּא כְּחָתָן יֹצֵא
.viam currendum ad potens ut gaudebit ; ſuo thalamo de
מֵחֻפָּתוֹ יָשִׂישׂ כְּגִבּוֹר לָרוּץ אֹרַח׃

יט

1 לְשַׁבָּחָא תּוּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד׃ דִמְסְתַּכְּלִין בִּשְׁמַיָּא
2 מִשְׁתָּעִין יְקָרָא דַייָ וְעוֹבָדֵי יְדוֹי מְחַוַּיִן דִמְדִיקִין
3 בַּאֲוִירָא׃ יוֹמָא לְיוֹמָא מוֹסִיף וּמַבִּיעַ מֵימְרָא
4 וְלֵילְיָא לְלֵילְיָא פָּתֵית וּמְחַוֵּי מַנְדְּעָא׃ לֵית
מֵימַר דְתוּרְעַמְתָּא וְלֵית מִלֵּי דְשִׁגּוּשָׁא דְלָא
5 מִשְׁתְּמַע קָלְהוֹן׃ בְּכוּלָא אַרְעָא נְפַק מְתַח
עִנְיָנְהוֹן וּבְסָיְפֵי תֵבֵל מִלֵּיהוֹן לְשִׁמְשָׁא שַׁוֵּי
6 מַשְׁרְיֵי וִיהָרָא בְהוֹן׃ וְהוּא בְּצַפְרָא בְּמִפְּקֵיהּ
יִפּוֹק הֵיךְ חַתְנָא דְנָפֵק מִגְּנוּנֵיהּ וּבְטִיהֲרָא יֶחְדֵּי
הֵיךְ גַּבְרָא לְמִרְהַט בְּאָרְחָא׃

Ad laudandum Hymnus Davidi. 1

PSAL. XIX.

Qui ſuſpiciunt cœlos, enarrant gloriam 2
Domini, & opera manuum ejus annunciant qui ſpeculantur in aëra. Dies diei *pergit &* 3
eructat verbum, & nox nocti *dilatat &* nunciat ſcientiam. Non eſt verbum mur- 4
murationis,& non ſunt ſermones tumultus, *quò* non *auditur vox* eorũ. In omnem ter- 5
ram exivit extenſio *ſignificationis* eorum, & in fines orbis verba eorum: Soli poſuit tabernaculum ſplendorem in ipſis. Et 6
ipſe manè *in exortu ſuo prodit* ſicut ſponſus qui egreditur de thalamo ſuo: & in *meridie* lætabitur ut gigas, ut currat in *via*.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

38 * ܐܪܕܘܦ ܒܒܥܠܕܒ̈ܒܝ ܘܐܕܪܟ ܐܢܘܢ : ܘܠܐ ܐܗܦܘܟ ܥܕܡܐ ܕܐܓܡܪ ܐܢܘܢ . * ܐܡܚܐ ܐܢܘܢ ܘܠܐ
39 ܢܫܟܚܘܢ ܠܡܩܡ : ܘܢܦܠܘܢ ܬܚܝܬ ܪ̈ܓܠܝ . * ܐܣܪܬܢܝ ܚܝܠܐ ܠܩܪܒܐ : ܘܬܟܪܥ ܠܕܩܝܡܝܢ
40 ܥܠܝ ܬܚܬܝ . * ܘܒܥܠܕܒ̈ܒܝ ܬܟܒܘܫ ܩܕܡܝ : ܘܣ̈ܢܐܝ ܐܫܬܩ ܐܢܘܢ . * ܢܩܥܘܢ ܘܠܐ
41 ܢܗܘܐ ܠܗܘܢ ܦܪܘܩܐ : ܢܒܥܘܢ ܡܢ ܡܪܝܐ ܘܠܐ ܢܥܢܐ ܐܢܘܢ . * ܐܫܚܘܩ ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܥܦܪܐ
42 ܥܠ ܐܦܝ ܪܘܚܐ : ܘܐܝܟ ܛܝܢܐ ܕܫܘܩܐ ܐܕܘܫ ܐܢܘܢ . * ܬܦܨܝܢܝ ܡܢ ܕܝܢܘܗܝ ܕܥܡܐ :
43 ܘܬܩܝܡܢܝ ܪܫܐ ܠܥܡ̈ܡܐ . ܥܡܐ ܕܠܐ ܝܕܥܬ ܢܦܠܚܘܢܢܝ : * ܘܒܡܫܡܥ ܐܕܢܐ ܢܫܡܥܘܢܢܝ .
44 ܒܢ̈ܝ ܢܘܟܪܝܐ ܢܫܬܥܒܕܘܢ ܠܝ : * ܒܢ̈ܝ ܢܘܟܪܝܐ ܢܬܡܣܘܢ ܘܢܬܚܓܪܘܢ ܡܢ
45 ܫܒܝ̈ܠܝܗܘܢ . * ܚܝ ܗܘ ܡܪܝܐ ܘܒܪܝܟ ܗܘ ܡܚܝܠܢܝ : ܐܬܬܪܝܡ ܐܠܗܐ ܦܪܘܩܝ . * ܐܠܗܐ
46 ܕܝܗܒ ܠܝ ܬܒܥܬܐ ܘܫܥܒܕ ܥܡ̈ܡܐ ܬܚܝܬܝ . * ܘܦܨܝܢܝ ܡܢ ܒܥܠܕܒ̈ܒܝ : ܘܡܢ ܕܩܝܡܝܢ
47 ܥܠܝ ܬܪܝܡܢܝ . ܘܡܢ ܓܒܪܐ ܥܘܠܐ ܬܦܨܝܢܝ : * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܘܕܐ ܠܟ ܡܪܝ ܒܥܡ̈ܡܐ
48 ܡܪܝ . ܘܠܫܡܟ ܐܙܡܪ . * ܡܪܘܡ ܦܘܪܩܢܐ ܕܡܠܟܗ : ܘܥܒܕ ܛܝܒܘܬܐ ܠܡܫܝܚܗ . ܠܕܘܝܕ
49 ܘܠܙܪܥܗ ܥܕܡܐ ܠܥܠܡ .
50 * ܫܠܡ ܡܙܡܘܪܐ ܕܝܚ *
51

Perſequar inimicos meos,& aſſequar eos,nec 38
revertar donec abſumam illos. Percutiam e- 39
os & non poterunt ſurgere, cadéntq; ſubtus pedes meos. Præcinges me virtute in bello, & 40
proſternes eos qui inſurgunt adverſum me: Et hoſtes meos debellabis coram me, oſoréſ- 41
que meos ſilere faciam. Clamabunt, & non 42
erit ipſis ſalvator, petent à Domino, & non exaudiet eos, Comminuam illos ut pulverem 43
contra faciem venti, & ſicut lutum platearũ conculcabo eos. Liberabis me à jurgiis po- 44
puli, & conſtitues me caput gentium. Populus quem non cognovi, ſervient mihi. Et 45
auditu auris audient me. Filii alieni 46
ſubdent ſe mihi. Filii alieni marceſcent, & claudicabunt à ſemitis ſuis. Vivens 47
eſt Dominus,& benedictus eſt roborator meus. Exaltare, Deus Salvator meus, Deus qui 48
conceſſit mihi vindictam, & ſubdidit gentes ſub me. Et ſalvavit me ab hoſtibus meis; & 49
ab iis qui inſurgunt in me, eripe me, & à viris iniquis liberabis me. Propter hoc confi- 50
tebor tibi inter gentes, Domine mi, & nomini tuo canam. O exaltans ſalutem Regis ſui, & faciens beneficium chriſto ſuo Davidi, et 51
ſemini ejus uſque in ſeculum.

1 * ܠܕܘܝܕ . ܦܘܪܩܢܐ ܕܥܡܐ ܡܢ ܡܨܪܝܢ . ܘܠܢ ܬܐܘܠܘ
ܓܝܐ . ܦܣܘ̈ܩܐ ܠܒ .

2 * ܫܡܝܐ ܡܫܬܥܝܢ ܫܘܒܚܗ ܕܐܠܗܐ . ܘܥܒܕ ܐܝ̈ܕܘܗܝ ܡܚܘܐ ܪܩܝܥܐ : * ܝܘܡܐ
3 ܠܝܘܡܐ ܡܒܥ ܡܐܡܪܐ . ܘܠܠܝܐ ܠܠܠܝܐ ܡܚܘܐ ܡܕܥܐ : * ܠܝܬ ܡܐܡܪܐ ܘܠܐ ܡ̈ܠܐ . ܕܠܐ 4
5 ܡܫܬܡܥ ܩܠܗܘܢ : * ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ ܢܦܩ ܣܒܪܗܘܢ . ܘܠܣܘܦܝ ܬܐܒܝܠ ܡ̈ܠܝܗܘܢ :
6 ܘܠܫܡܫܐ ܣܡ ܡܫܟܢܗ ܒܗܘܢ . * ܘܗܘ ܐܝܟ ܚܬܢܐ ܕܢܦܩ ܡܢ ܓܢܘܗ : ܚܕܐ
ܐܝܟ ܓܢܒܪܐ ܠܡܪܗܛ ܠܗ ܐܘܪܚܗ :

PSAL. XIX.

Davidis. Liberatio populi ex Ægypto. Nobis autem Theologia. Verſ. 32. 1

COeli enarrant gloriam Dei,& opus ma- 2
nuum ejus declarat firmamentum. Dies diei emittit ſermonem, & nox nocti jndicat ſcien- 3
tiam. Non eſt ſermo neque verba, quorum 4
non audiatur vox; Nam in omnem terram 5
exivit annuntiatio eorum, et in fines orbis verba eorum. Et ſuper ſolem fixit tabernaculum ſuum in eis. Atque is velut ſponſus qui e- 6
greditur è thalamo, exultabit ut gigas ad currendam viam ſuam.

Verſio VULG. LAT.

38 Perſequar inimicos meos, & comprehendam illos : & non convertar do-
39 nec deficiant. Confringam illos, nec poterunt ſtare : cadent ſubtus pedes
40 meos. Et præcinxiſti me virtute ad bellum : & ſupplantâſti inſurgentes in
41 me ſubtus me. Et inimicos meos dediſti mihi dorſum, & odientes me diſperdi-
42 diſti. Clamaverunt, nec erat qui ſalvos faceret ; ad Dñm, nec exaudivit eos.
43 Et comminuam eos, ut pulverem ante faciem venti : ut lutum platearum de-
44 lebo eos. Eripies me de contradictionibus populi : conſtitues me in caput
45 gentium. Populus, quem non cognovi, ſervivit mihi : in auditu auris obe-
46 divit mihi. Filii alieni mentiti ſunt mihi, filii alieni inveterati ſunt, &
47 claudicaverunt à ſemitis ſuis. Vivit Dñs, & benedictus Deus meus, & exal-
48 tetur Deus ſalutis meæ. Deus qui das vindictas mihi, & ſubdis populos ſub me, liberator meus de inimicis meis ira-
49 cundis. Et ab inſurgentibus in me exaltabis me : à viro iniquo eripies me.
50 Propterea confitebor tibi in nationib⁹, Domine : & nomini tuo pſalmum di-
51 cam. Magnificans ſalutes regis ejus, & faciens miſericordiam chriſto ſuo David, & ſemini ejus uſque in ſeculum.

1 In finem, Pſalmus David.

XVIII.

2 COeli enarrant gloriam Dei, & opera manuum ejus annuntiat firmamen-
3 tum. Dies diei eructat verbum, & nox
4 nocti indicat ſcientiam. Non ſunt loquelæ, neque ſermones, quorum non
5 audiantur voces eorum. In omnem terram exivit ſonus eorum : & in fines
6 orbis terræ verba eorum. In Sole poſuit tabernaculum ſuum : et ipſe tanquam ſponſus procedens de thalamo ſuo : Exultavit ut gigas ad currendam viam,

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

38 † Καταδιώξω τοὺς ἐχθρούς μου, καὶ καταλήψομαι αὐτούς, † καὶ οὐκ ἀποστραφήσομαι, ἕως ἂν ἐκλείπω-
39 σιν. † Ἐκθλίψω αὐτούς, καὶ οὐ μὴ δύνωνται στῆναι,
40 † πεσοῦνται ὑπὸ τοὺς πόδας μου. † Καὶ περιέζωσάς με δύναμιν εἰς πόλεμον, † συνεπόδισας πάντας
41 τοὺς (") ἐπανισταμένους ἐπ᾽ ἐμὲ ὑποκάτω μου. † Καὶ τοὺς ἐχθρούς μου ἔδωκάς μοι νῶτον, † καὶ τοὺς μισοῦν-
42 τάς με (μ) ἐξωλόθρευσας. † Ἐκέκραξαν, καὶ οὐκ ἦν ὁ σώζων· † πρὸς κύριον, καὶ οὐκ (ν) εἰσήκουσεν αὐ-
43 τῶν. † Καὶ λεπτυνῶ αὐτοὺς (ξ) ὡς χοῦν κατὰ πρόσωπον ἀνέμου, † ὡς πηλὸν πλατειῶν λεανῶ αὐτούς.
44 † (ο) Ῥῦσαί με ἐξ ἀντιλογιῶν λαοῦ, † καταστήσεις
45 με εἰς κεφαλὴν ἐθνῶν· † Λαὸς ὃν οὐκ ἔγνων, ἐδούλευσέ μοι, † εἰς ἀκοὴν ὠτίου (π) ὑπήκουσέ μοι.
46 † Υἱοὶ ἀλλότριοι ἐψεύσαντό μοι. † υἱοὶ ἀλλότριοι ἐπαλαιώθησαν, † καὶ ἐχώλαναν (ρ) ἀπὸ τῶν τρί-
47 βων αὐτῶν. † Ζῇ κύριος, καὶ εὐλογητὸς ὁ Θεός
48 μου, † καὶ ὑψωθήτω ὁ Θεὸς τῆς σωτηρίας μου. † Ὁ Θεὸς ὁ διδοὺς ἐκδικήσεις ἐμοί, † καὶ ὑποτάξας λαοὺς ὑπ᾽ ἐμέ, † ὁ ῥύστης μου ἐξ ἐχθρῶν (σ) ὀργί-
49 λων. † Ἀπὸ τῶν ἐπανισταμένων ἐπ᾽ ἐμὲ ὑψώσεις με,
50 † ἀπὸ ἀνδρὸς ἀδίκου (τ) ῥύσῃ με. † Διὰ τοῦτο ἐξομολογήσομαί σοι ἐν ἔθνεσι κύριε, † καὶ τῷ
51 ὀνόματί σου ψαλῶ. † Μεγαλύνων τὰς σωτηρίας τοῦ βασιλέως αὐτοῦ, † καὶ ποιῶν ἔλεος τῷ χριστῷ αὐτοῦ † τῷ Δαυίδ, καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ, ἕως αἰῶνος.

MS.A. (") ἐπανισταμένους (μ) ἐξωλέθρευσας. (ν) εἰσήκουσεν (ξ) ὡσεὶ χνοῦν (ο) Ῥῦσαί με ἀπὸ ἀντιλογιῶν λαῶν, (π) ἐπήκουσάς μοι. Οἱ υἱοὶ (ρ) ἐκ τῶν (σ) μου ὀργίλων. (τ) ῥῦσαί με.

1 Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. ιη΄.

2 † ΟΙ οὐρανοὶ διηγοῦνται δόξαν Θεοῦ, † ποίησιν δὲ
3 χειρῶν αὐτοῦ (") ἀναγγέλλει τὸ στερέωμα. † (α) Ἡμέρα τῇ ἡμέρᾳ ἐρεύγεται ῥῆμα, † καὶ νὺξ νυκτὶ (β)
4 ἀναγγέλλει γνῶσιν. † Οὐκ εἰσὶ λαλιαὶ οὐδὲ λόγοι, ὧν
5 οὐχὶ ἀκούονται αἱ φωναὶ αὐτῶν. † Εἰς πᾶσαν τὴν γῆν ἐξῆλθεν ὁ φθόγγος αὐτῶν, † καὶ εἰς τὰ πέρατα τῆς
6 οἰκουμένης τὰ ῥήματα αὐτῶν. † Ἐν τῷ ἡλίῳ ἔθετο τὸ σκήνωμα αὐτοῦ, † καὶ αὐτὸς ὡς νυμφίος ἐκπορευόμενος ἐκ παστοῦ αὐτοῦ. † ἀγαλλιάσεται ὡς γίγας δραμεῖν ὁδὸν αὐτοῦ.

MS.A. (") ἀναγγελεῖ (α) Ἡ ἡμέρα (β) ἀναγγελεῖ

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopica, Tranſl. LAT.

41 *Perſequar inimicos meos, & comprehendam illos: & non re-* 38
vertar, [n] donec deficiã. 42 Confringam illos, nec poterunt ſtare: 39
cadent ſubtus pedes meos. 43 Et præcinxiſti me virtute ad bellum: 40
ſupplantâſti (r) omnes inſurgentes in me ſubter me: 44 Et inimicos meos dediſti mihi dorſum: 41
et odio habentes me diſperdidiſti.
45 Clamaverunt, nec erat qui ſalvos faceret : ad Dominum, nec 42
exaudivit eos. 46 Et comminuã eos, ut pulverem ante faciẽ venti: 43
ut lutum plateatũ, [o] delebo eos.
47 (ſ) Erue me [p] de contradictionibus populi: conſtitues me in 44
caput gentium. 48 Populus, quem non cognovi, ſervivit mihi: in auditu auris obedivit mihi. 45
49 Filii alieni mentiti ſunt mihi: filii alieni (t) inveterati ſunt, & clau- 46
dicaverunt à ſemitis ſuis. 50 Vivit Dominus, & benedictus Deus 47
meus : & exaltetur Deus ſalutis meæ.
51 [q] Deus qui das vindictas mihi, & ſubdis populos ſub 48
me: [r] liberator meus de (u) inimicis iracundis.
52 Ab inſurgentibus in me exaltabis me : à viro 49
iniquo eripies me. 53 Propterea 50
confitebor tibi in gentibus, Domine: et nomini tuo pſallam.
54 Magnificans ſalutes regis ejus ; & 51
faciens miſericordiam chriſto ſuo David, et ſemini ejus in ſeculum.

In finem, Pſalmus ipſi David. 1
XVIII.

1 *COEli enarrant gloriã Dei,* 2
& opus manuum ejus annuntiat firmamentũ. 2 Dies diei 3
eructat verbum, & nox nocti annuntiat ſcientiam. 3 Non (a) ſunt 4
loquelæ, neque ſermones, quorum non audiantur voces eorum. 4 In 5
omnem terrã exivit ſonus eorum, & in fines orbis terræ [a] verba
eorum. 5 In (b) Sole poſuit tabernaculum ſuum: & [b] ipſe tan- 6
quam ſponſus procedens de thalamo ſuo. 6 Exultabit ut gigas ad currendam viam (c) ſuam:

Verſio ÆTHIOPICA.

38 እደግኖሙ : ለፀርየ : ወእኅዞሙ :: ወኢይት 41
39 ሞየጥ : እስከ : እጠፍኦሙ ::=፡ እመንድ 42
ቦሙ : ወኢይክሉ : ቀዊመ :: ወይወድቁ : ታ
40 ሕተ : እገርየ ::=፡ ወታቀንተኒ : ኃይለ : በጸ 43
ብእ :: ወአዕቀጽኮሙ : ለኵሎሙ : እለ :
41 ቆሙ : ላዕሌየ : በመትሕቴየ ::=፡ ወመጠ 44
ውከኒ : ዘባናሙ : ለፀርየ :: ወሰረውኮሙ :
ለጸላእትየ ::=፡ ወአውየዉ : ወኃጥኡ : 45
42 ዘይረድኦሙ :: ወሀበ : እግዚአብሔር :
ወኢሰምዖሙ ::=፡ እኅረጽሞ : ከመ : 46
43 ጸበል : ዘቅድመ : ገጸ : ነፋስ :: ወእከይደሙ :
ከመ : ጽንጕነ : መርኅብ ::=፡ አድኅነኒ : እመ 47
44 ነቢብ : እሕዛብ :: ወትሠይመኒ : ውስተ : ርእ
ሰ : ሕዝብ ::=፡ ሕዝብ : ዘኢየአምር : ተቀን 48
45 የ : ሊተ :: ውስተ : ምስማዐ : እዝን : ተሰጥዉ
46 ኒ ::=፡ ውሉደ : ነኪር : ሐሰዉኒ :: ውሉደ : 49
ነኪር : በልዩ :: ወሐንከሱ : በፍኖቶሙ ::=፡
ሕያው : እግዚአብሔር : ወቡሩክ : አምላኪ 50
47 የ :: ወተለዓለ : አምላከ : መድኃኒትየ ::=፡
አምላኪየ : ያገብእ : በቀልየ :: ወአግረረ : 51
48 ሊተ : እሕዛብ : በመትሕቴየ :: ዘይባል
ሐኒ : እምጸላእትየ : መንስዋን ::=፡ ወዘ 52
ያሌዕለኒ : እምእለ : ቆሙ : ላዕሌየ :: እም
49 ብእሲ : ገፋዒ : ባልሐኒ ::=፡ በእንተዝ : 53
50 እገኒ : ለከ : በውስተ : አሕዛብ : እግዚኦ ::
ወእዜምር : ለስምከ ::=፡ ዘያዐቢ : 54
51 ለመድኃኒተ : ንጉሠ :: ወይገብር : ምሕ
ረቶ : ለመሲሁ :: ለደዊት :: ወለዘርኡ : እስ
ከ : ለዓለም ::

ፍጻሜ : መዝሙር : ዘደዊት ::

፲፰ ሰማያት : ይነግሩ : ስብሐተ : እግዚአብሔ 1
ር :: ወግብረ : እደዊሁ : ያየድእ : ሰማያት ::=፡
ዕለት : ለዕለት : ትጐሥዕ : ነቢበ :: ወሌሊት : 2
ለሌሊት : ታየድዕ : ጥበበ ::=፡ አልቦ : ነገረ : 3
ወአልቦ : ነቢበ : ዘኢተሰምዐ : ቃሎሙ ::=፡
ውስተ : ኵሉ : ምድር : ወፅአ : ነገሮሙ :: 4
ወእስከ : አጽናፈ : ዓለም : በጽሐ : ነቢቦ
ሙ ::=፡ ወውስተ : ፀሐይ : ሣመ : ጽላሎቶ :: 5
ወውእቱሰ : ከመ : መርዓዊ : ዘይወፅእ : እም
ጽርሑ ::=፡ ይትፌሣሕ : ከመ : ደርባሕ : 6
ዘይሜርድ : ፍኖቶ ::

INTERP. ÆTHIOP. [n] donec conſumam eos. [o] conculcabo eos. [p] de ſermone [q] Deus meus [r] & qui liberat me de inimicis meis caſtigatis. *PSAL. XVIII.* [a] pervenit ſermo eorum. [b] ipſe quidem

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

39 * اطلب اعداي فادركهم * ولا ارجع حتي يفنوا * اريهم فلا يستطيعون القيام * يسقطون
40 41 تحت قدمي * اعضدتني بقوة في الحرب * جعلت كل الذين قاموا علي تحتي * ابدت اعداي *
42 43 واستاصلت الذين شنوني * صرخوا وليس مخلص * والي الرب فلم يستجب لهم * اسحقهم
44 مثل الهباء امام الريح * ومثل طين الطرق اطاوهم * نجني يا رب من مقاومة الشعب * صيرني
45 راسا للشعوب * الشعب الذي لا اعرفه تعبد لي * بسماع الاذن اطاعني * ابناء الغرباء
46 47 كذبوني * وبنوا الغرباء عتقوا وصاروا عرجا في سبلهم * حي هو الرب * ومبارك هو الهي *
48 49 يتعالي اله خلاصي * الله الذي وهب لي الانتقام * اخضع الشعوب تحتي * ونجاني من يد
50 اعداي المبغضين * ورفعني من الذين قاموا علي * خلصني من انسان دغل * ومن اجل
51 هذا اعترف لك يا رب في الامم * وارتل لاسمك * يا معظم خلاص الملك * وصانع الرحمة
لمسيحه * داود وزرعه الي الابد *

1 * المزمور الثامن عشر لداود * قاله في الاخر يوم السبت الستيخن * لا *
2 3 * السموات تنطق بمجد الله * والفلك يخبر بصنعة يديه * يوم يبدي كلامة ليوم * وليل
4 5 يبدي علما لليل * ليس بقول ولا بكلمات * الذين لم تكن تسمع اصواتهم * خرجت
6 اصواتهم في الارض كلها * وبلغ كلامهم اقطار المسكونة * جعل مسكنه في الشمس * وهي
مثل العروس اذا خرج من خدره * تفرح مثل الجبار الذي يسرع في سبله *

Quærã inimicos meos, & comprehendam illos, & non revertar donec abſumantur. Proſternam eos, nec poterunt ſurgere : cadent ſubtus pedes meos. 39
Accinxiſti me fortitudine in bello : poſuiſti omnes, qui inſurrexerunt adverſùm me, ſubtus me. 40
Perdidiſti inimicos meos, & 41
eradicâſti qui me oderunt. Clamaverunt, 42
nec fuit Salvator : & ad Dominum, & non exaudivit eos.
Comminuã eos veluti glumam ante ventũ, & veluti lutum viarum conculcabo eos. 43
Libera me, O Domine, à contradictione populi : conſtitue me Principem populorum. Populus, quem 44
non novi, ſervivit mihi. Obedivit mihi 45
per auditum aurium. Filii alienigenarum abnegaverunt me : Et filii alienorum in- 46
veterati ſunt, & facti ſunt claudi in ſemitis ſuis.
Vivus eſt Dominus, & bene- 47
dictus eſt Deus meus : exaltetur Deus ſalutis meæ :
Deus qui dedit mihi vindi- 48
ctam, ſubjecit populos mihi.
Et libera- 49
vit me de manu inimicorum meorum odientium : & eripuit me ab iis, qui inſurrexerunt in me, & ſalvavit me ab homine doloſo.
Propterea confitebor tibi, O 50
Domine, inter populos, & pſallam nomini tuo,
O magnificans ſalutem regis, & 51
faciens miſericordiam erga chriſtum ſuum David, & ſemen ejus in æternum.

PSAL. XVIII. Davidis.
Dictus eſt ab eo de fine, die 1
Sabbathi. Verſ. 31.

COeli proferunt gloriam Dei, & fir- 2
mamentum narrat artem manuum
ejus. Dies manifeſtat eloquium ejus diei, 3
& nox indicat ſcientiam nocti. Non ſer- 4
mone, neque verbis, quorum non audiantur voces.
Imò exierunt voces eorum in 5
terram univerſam, & pervenit eloquium eorum ad terminos habitatæ.
Poſuit habitaculum ſuum in ſole : Et hic velut 6
ſponſus cùm exit è thalamo ſuo, gaudet tanquam gigas, qui feſtinat in ſemitis ſuis.

תהלים : כ כא

non & ; eorum extrema ſuper ejus revolutio & ,ejus egreſſio cœlorum extremo Ab
7 מִקְצֵה הַשָּׁמַיִם מוֹצָאוֹ וּתְקוּפָתוֹ עַל־קְצוֹתָם וְאֵין
teſtimoniū ; animam convertens , perfecta Domini Lex .ejus calore à *latens*
8 נִסְתָּר מֵחַמָּתוֹ׃ תּוֹרַת יְהוָה תְּמִימָה מְשִׁיבַת נָפֶשׁ עֵדוּת
l, recta Domini Præcepta .*ſimplicem* efficiens ſapientem , fidele Domini
9 יְהוָה נֶאֱמָנָה מַחְכִּימַת פֶּתִי׃ פִּקּוּדֵי יְהוָה יְשָׁרִים
Domini Timor .oculos illuminans ,purum Domini præceptum : cor lætificantia
10 מְשַׂמְּחֵי־לֵב מִצְוַת יְהוָה בָּרָה מְאִירַת עֵינָיִם׃ יִרְאַת יְהוָה
ſunt juſtificata ; veritas Domini judicia , *perpetuum* in permanens , mundus
טְהוֹרָה עוֹמֶדֶת לָעַד מִשְׁפְּטֵי־יְהוָה אֱמֶת צָדְקוּ
liquore & ,melle *præ* *dulcia* & ; *multo* *obrizo* *præ* & ,*auro* *præ* Deſiderabilia .pariter
11 יַחְדָּו׃ הַנֶּחֱמָדִים מִזָּהָב וּמִפַּז רָב וּמְתוּקִים מִדְּבַשׁ וְנֹפֶת
.multa merces ea cuſtodiendo in : eis in illuſtratur tuus ſervus Etiam .*favorum*
12 צוּפִים׃ גַּם־עַבְדְּךָ נִזְהָר בָּהֶם בְּשָׁמְרָם עֵקֶב רָב׃
prohibe *inſolentibus* *ab* Etiam .me munda occultis ab ? intelliget quis Errores
13 14 שְׁגִיאוֹת מִי־יָבִין מִנִּסְתָּרוֹת נַקֵּנִי׃ גַּם מִזֵּדִים חֲשֹׂךְ
prævaricatione à ero mundus & : ero perfectus tunc ,*me* *in* dominentur ne,tuū ſervū
עַבְדֶּךָ אַל־יִמְשְׁלוּ־בִי אָז אֵיתָם וְנִקֵּיתִי מִפֶּשַׁע
; *tuas* *facies* *ad* mei cordis meditatio & ,mei oris eloquia voluntatē ad Erunt .*multa*
15 רָב׃ יִהְיוּ לְרָצוֹן אִמְרֵי־פִי וְהֶגְיוֹן לִבִּי לְפָנֶיךָ
.mi redemptor & ,mea petra Domine
יְהוָה צוּרִי וְגֹאֲלִי׃

PSAL. XX. כ

te elevet : anguſtiæ die in Dominus te Exaudiat .David canticum Victori
1 2 לַמְנַצֵּחַ מִזְמוֹר לְדָוִד׃ יַעַנְךָ יְהוָה בְּיוֹם צָרָה יְשַׂגֶּבְךָ
.te fulciat Sijon de & ; ſanctitate de *tuum* auxiliū Mittat .Jahacob Dei nomen
3 שֵׁם אֱלֹהֵי יַעֲקֹב׃ יִשְׁלַח־עֶזְרְךָ מִקֹּדֶשׁ וּמִצִּיּוֹן יִסְעָדֶךָּ׃
tibi Det .Selah ,incineret *tua* *aſcenſio* & ; tuorum *munerum* omnium Recordetur
4 5 יִזְכֹּר כָּל־מִנְחֹתֶךָ וְעוֹלָתְךָ יְדַשְּׁנֶה סֶלָה׃ יִתֶּן־לְךָ
, tua ſalute in *Ovabimus* .impleat tuum conſilium omne & ; tuum cor ſecundùm
6 כִלְבָבֶךָ וְכָל־עֲצָתְךָ יְמַלֵּא׃ נְרַנְּנָה בִּישׁוּעָתֶךָ
omnes Dominus impleat : elevabimus vexillum noſtri Dei nomine in &
וּבְשֵׁם אֱלֹהֵינוּ נִדְגֹּל יְמַלֵּא יְהוָה כָּל־
ei reſpondebit ;ſuum *unctum* Dominus fecit ſalvū quòd ſcivi Nunc .tuas petitiones
7 מִשְׁאֲלוֹתֶיךָ׃ עַתָּה יָדַעְתִּי כִּי הוֹשִׁיעַ יְהוָה מְשִׁיחוֹ יַעֲנֵהוּ
hi & ,curru in Hi .ſuæ dexteræ ſalus fortitudinibus in :ſuæ ſanctitatis cœlis de
8 מִשְּׁמֵי קָדְשׁוֹ בִּגְבֻרוֹת יֵשַׁע יְמִינוֹ׃ אֵלֶּה בָרֶכֶב וְאֵלֶּה
,ſe incurvaverunt Hi .memorabimus noſtri Dei Domini *nomine in* nos & ; equis in
9 בַסּוּסִים וַאֲנַחְנוּ בְּשֵׁם־יְהוָה אֱלֹהֵינוּ נַזְכִּיר׃ הֵמָּה כָּרְעוּ
rex , ſerva Domine .nos ereximus & ,ſurreximus nos & ; ceciderunt &
10 וְנָפָלוּ וַאֲנַחְנוּ קַּמְנוּ וַנִּתְעוֹדָד׃ יְהוָה הוֹשִׁיעָה הַמֶּלֶךְ
.*nos clamare* die in nos exaudiet
יַעֲנֵנוּ בְיוֹם־קָרְאֵנוּ׃

PSAL. XXI. כא

: rex lætabitur tua fortitudine in Domine .David canticum Victori
1 2 לַמְנַצֵּחַ מִזְמוֹר לְדָוִד׃ יְהוָה בְּעָזְּךָ יִשְׂמַח־מֶלֶךְ
! vehementer exultabit quàm tua ſalute in &
וּבִישׁוּעָתְךָ מַה־יָּגֶיל מְאֹד׃

תרגום TARGUM.

7 מִסְּיָפֵי שְׁמַיָּא מַפְקָנֵיהּ וְתוּקְפֵיהּ עַל סִטְרֵיהוֹן
8 וְלֵית דְּמִטְּמַר מִן רְתָחֵיהּ׃ אוֹרַיְתָא דַּיְיָ שְׁלֵימְתָא
מְתִיבָא נַפְשׁ סַהֲדוּתָא דַּיְיָ מְהֵימְנָא מְחַכְּמָא
9 שַׁבְרָא׃ פִּקּוּדַיָּא דַּיְיָ תְּרִיצִין מַחְדִין לִבָּא פִּקּוּדָא
10 דַּיְיָ בְּרִירָא מְנַהֲרָא עַיְנִין׃ דַּחַלְתָּא דַּיְיָ דַּכְיָא
קַיָּמָא לְעָלְמִין דִּינַיָּא דַּיְיָ הֵימָנוּתָא זַכְּיָאוּ כַּחֲדָא׃
11 דִּרְגִינִין מִדַּהֲבָא וּמִן אוּבְרִיזִין סַגִּי וּבְסִימִין
12 יַתִּיר מִן דִּבְשָׁא וְכַבְרִיתָא חֲלֵיאַתָא׃ בְּרַם
עַבְדָּךְ אִזְדְּהַר בְּהוֹן כִּדְנַטְּרִין חִלּוּפֵי הֵיכְנָא
13 אִתְעֲבִיד טָבְהוֹן דְּיִשְׂרָאֵל׃ שַׁלְוְיָתָא מַן יְחַכֵּם
14 וּמִטְּמִירָתָא זַכֵּי יָתִי׃ בְּרַם מִן זֵידָנַיָּא פְּצָא
עַבְדָּךְ דְּלָא יִשְׁלְטוּן בִּי הֵהֵדֵין אֶהֱוֵי בְּלָא
15 מוּם וְאֶהֱוֵי זַכַּי מֵחוֹבָא רַבָּא׃ יְהוֹן לְרַעֲוָא
מֵימְרֵי פוּמִי וְרִנְנַת רַעְיוֹנַי קֳדָמָךְ יְיָ תּוּקְפִּי
וּפָרִיקִי׃

כ

1 לְשַׁבָּחָא תּוּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד׃ יְקַבֵּל צְלוֹתָךְ
2 יְיָ בְּיוֹמָא דְעָקָא יְשַׁגְּבִנָּךְ שְׁמָא דֶאֱלָהָא
3 דְּיַעֲקֹב׃ יְשַׁדַּר סַעֲדָךְ מִן בֵּית מוּקְדְשֵׁיהּ
4 וּמִצִּיּוֹן יְסַיְעִנָּךְ׃ יִדְכַּר כּוּלְהוֹן דּוּרוֹנְיָתָךְ
5 וַעֲלָוָתָךְ יְדַהֵן לְעָלְמִין׃ יִתֵּן לָךְ כְּרַעֲיוֹנָךְ וְכָל
6 מִלְּכָנָךְ יַשְׁלֵם׃ יֵימְרוּן עַמָּךְ נְשַׁבַּח בְּפוּרְקָנָךְ
וּבְשׁוּם אֱלָהָנָא נְטַקֵּס יַשְׁלֵים יְיָ כּוּלְהוֹן
7 שְׁאִילָתָךְ׃ הַשְׁתָּא יְדַעִית אֲרוּם פְּרִיק יְיָ
מְשִׁיחֵיהּ קַבֵּיל צְלוֹתֵיהּ מִמּוֹתְבֵי דִשְׁמַיָּא
8 קַדִּישֵׁיהּ בִּגְבוּרָן פּוּרְקָן יְמִינֵיהּ׃ אִלֵּין
בִּרְתִיכִין וְאִלֵּין בְּסוּסָוָן וַאֲנַחְנָא בְּשׁוּם יְיָ
9 אֱלָהָנָא נִדְכַּר׃ אִנּוּן גְּחַנוּ וּנְפַלוּ וַאֲנַחְנָא
10 אִזְדַּקַּפְנָא וְאִתְחַיֵּלְנָא׃ יְיָ פְּרוֹק לָן מַלֵּךְ תַּקִּיף
קַבֵּיל צְלוֹתָן בְּיוֹם מִקְרֵינָא׃

כא

1 לְשַׁבָּחָא תּוּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד׃ יְיָ בְּעֻשְׁנָךְ יֶחְדֵי
2 מַלֵּךְ מְשִׁיחָא וּבְפוּרְקָנָךְ כְּמָא יְרַנֵּן לַחֲדָא׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Ab extremitatibus cœlorum egreſſus ejus, 7 & revolutio ejus uſque ad latera eorū; & non eſt qui ſe abſcondat à fervore ejus. Lex 8 Domini perfecta convertens animam, teſtimonium Domini fidele, præbens ſapientiam inſipienti. Præcepta Domini recta, lætifi- 9 cantia cor: præceptum Domini purum, illuminans oculos. Timor Domini mundus 10 permanet in perpetuum: judicia Domini fidelia pura ſunt ſimul. Deſiderabilia magis 11 quàm aurum & quàm obrizum multum; & ſuavia magis quàm mel & favis dulcis. 12 Sanè ſervus tuus circumſpectus fuit in eis: *prout ſervata fuerint, ſic bene ſit Iſraeli.* Errores quis noſcat? ſed ab oc- 13 cultis meis munda me. Verùm à ſuperbis 14 libera ſervum tuum, ne dominentur in me: tunc fiam ſine macula, & ero purus à peccato magno. Sint grata verba oris mei, 15 & meditationes mentis meæ apud te Domine fortitudo mea & redemptor meus.

Ad laudandum Hymnus Davidi. 1

PSAL. XX.

ACcipiat orationem tuam Dominus in 2 die tribulationis: protegat te nomen Dei Jacob. Mittat auxilium tuum de domo 3 ſanctuarii ſui, & de Sion auxilietur tibi. Recordetur omnium munerum tuorum, & 4 holocauſta tua adoleat ſemper. Tribuat ti- 5 bi ſecundùm cogitationem tuam, & omne conſilium tuum perficiat. *Dicant populus* 6 *tuus,* Laudes dicemus in redemptione tua, & in nomine Dei noſtri explicabimus vexillum: impleat Dominus omnes petitiones tuas. Nunc cognovi quòd redemit 7 Dominus Chriſtum ſuum; exaudivit orationem ejus de habitatione cœlorum ejus ſanctorum, virtutibus redemptionis dexteræ ipſius. Illi in curribus & illi in equis, nos 8 autem nomen Domini Dei noſtri in memoriam revocemus. Ipſi incurvati ſunt & 9 ceciderunt: nos autem erecti ſumus, & viribus valuimus. *Domine* redime nos; 10 rex fortis ſuſcipe orationem noſtram quo die nos invocamus.

Ad laudandum Hymnus Davidi. 1

PSAL. XXI.

DOmine in virtute tua *lætabitur* rex 2 Chriſtus, & in redemptione tua quàm vehementer exultaturus eſt!

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

7 *ܘܡܢ ܣܘܦܝ ܫܡܝܐ ܡܦܩܗ: ܘܡܫܟܢܗ ܥܠ ܣܘܦܝ ܫܡܝܐ. ܘܠܝܬ ܕܛܫܐ ܡܢ ܚܘܡܗ:
8 * ܢܡܘܣܗ ܕܡܪܝܐ ܕܠܐ ܡܘܡ ܘܡܦܢܐ ܢܦܫܐ. ܣܗܕܘܬܗ ܕܡܪܝܐ ܡܗܝܡܢܐ ܘܡܚܟܡܐ
9 ܠܫܒܪܐ: *ܦܘܩܕܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܬܪܝܨܝܢ ܘܡܚܕܝܢ ܠܒܐ. ܦܘܩܕܢܗ ܕܡܪܝܐ ܓܒܐ ܘܡܢܗܪ ܥܝܢܐ:
10 * ܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܕܟܝܐ ܘܡܩܘܝܐ ܠܥܠܡ. ܕܝܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܒܩܘܫܬܐ ܘܙܕܝܩܝܢ ܒܟܠܡܕܡ:
11 12 * ܘܪܓܝܓܝܢ ܡܢ ܕܗܒܐ ܘܡܢ ܟܐܦܐ ܝܩܝܪܬܐ. ܘܚܠܝܢ ܡܢ ܕܒܫܐ ܘܡܢ ܟܘܪܝܬܐ: * ܐܦ ܥܒܕܟ
13 ܢܛܪ ܐܢܘܢ. ܘܐܢ ܢܛܪ ܐܢܘܢ ܢܬܦܪܥ ܣܓܝ: * ܣܘܪܚܢܐ ܡܢܘ ܡܣܬܟܠ. ܘܡܢ ܛܫܝܬܐ
14 ܕܟܢܝ: *ܐܦ ܡܢ ܥܘܠ ܚܣܘܟܝܗܝ ܠܥܒܕܟ. ܕܠܐ ܢܫܬܠܛܘܢ ܒܝ ܒܝܫܐ: ܘܐܙܕܟܐ ܡܢ ܚܛܗܐ.
15 * ܢܗܘܘܢ ܠܨܒܝܢܟ ܡܠܘܗܝ ܕܦܘܡܝ: ܘܪܢܝܗ ܕܠܒܝ ܩܕܡܝܟ ܡܪܝܐ ܡܥܕܪܢܝ ܘܦܪܘܩܝ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܝܛ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܟܕ ܒܥܐ ܕܢܬܦܨܐ ܡܢ ܩܪܒܐ ܕܥܡܘܢܝܐ. ܘܠܢ ܗܫܐ ܨܠܘܬܐ ܕܡܥܕܪܐ ܠܢ. ܦܬܓܡܐ ܟ.
2 3 * ܢܥܢܝܟ ܡܪܝܐ ܒܝܘܡܐ ܕܐܘܠܨܢܐ: ܘܢܥܕܪܟ ܫܡܗ ܕܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ. * ܢܫܕܪ ܠܟ ܥܘܕܪܢܐ
4 ܡܢ ܡܩܕܫܗ: ܘܡܢ ܨܗܝܘܢ ܢܣܡܟܟ. * ܢܬܕܟܪ ܠܟ ܡܪܝܐ ܟܠܗܘܢ ܩܘܪܒܢܝܟ: ܘܥܠܘܬܟ
5 6 ܗܘ ܢܕܗܢ. * ܢܬܠ ܠܟ ܡܪܝܐ ܐܝܟ ܠܒܟ: ܘܐܝܟ ܟܠܗ ܬܪܥܝܬܟ ܢܫܡܠܐ. * ܘܢܫܒܚ
7 ܒܦܘܪܩܢܟ: ܘܒܫܡܗ ܕܐܠܗܢ ܢܬܪܘܪܒ. ܢܫܡܠܐ ܡܪܝܐ ܟܠܗ ܨܒܝܢܟ: * ܗܫܐ
ܝܕܝܥܐ ܗܝ ܕܦܪܩ ܐܠܗܐ ܠܡܫܝܚܗ. ܘܥܢܝܗܝ ܡܢ ܫܡܝܐ ܕܩܘܕܫܗ: ܒܚܝܠܐ ܘܦܘܪܩܢܐ
8 ܕܝܡܝܢܗ. * ܗܠܝܢ ܒܡܪܟܒܬܐ ܘܗܠܝܢ ܒܪܟܫܐ: ܘܚܢܢ ܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܢܬܥܫܢ.
9 10 * ܗܢܘܢ ܬܒܪܘ ܘܢܦܠܘ: ܘܚܢܢ ܩܡܢ ܘܐܬܥܫܢܢ. * ܡܪܝܐ ܢܦܪܘܩ ܘܡܠܟܢ ܢܥܢܝܢ ܒܝܘܡܐ
ܕܢܩܪܝܘܗܝ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܟ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܒܥܘܬܐ ܕܗܢܘܢ ܕܡܥܕܪܝܢ ܠܓܒܪܐ ܙܕܝܩܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܙ.
2 * ܡܪܝܐ ܒܚܝܠܟ ܢܚܕܐ ܡܠܟܐ. ܘܒܦܘܪܩܢܟ ܢܪܘܙ ܛܒ:

Et ab extremitatibus cœli exitus ejus, & 7 cubile ejus ſuper extrema cœlorum, nec eſt quod lateat ſplendorem ipſius. Lex Domini 8 ſine macula eſt, & convertens animam. Teſtimonium Domini fidele, & ſapientiā præſtans parvulis. Præcepta Domini recta, & 9 exhilarantia cor: mandatum Domini electū, & illuminans oculos. Timor Domini mun- 10 dus & permanens in ſeculum; Judicia Domini cum æquitate, & juſta ſunt in omni re, Atque expetibilia magis quàm aurum, & 11 quā lapides optimi, atque dulciora melle & favo. Etiam ſervus tuus cautè ſervavit ea, 12 ſique obſervaverit illa, retributionem conſequetur multam. Lapſus quis intelligat? & ab 13 oculsis munda me; Etiam ab iniquitate cohibe ſervum tuum, nè dominentur mihi mali- 14 gni, & expurgabor à peccatis. Sint in bene- 15 placitum tuum verba oris mei, meditatio cordis mei in conſpectu tuo, Domine, adjutor meus, & liberator meus.

PSAL. XX.

Davidis: quum rogaret ut ſalvaretur à bello Ammonitarum. Nobis autem modò precatio utilis. Verſ. 20. 1

EXaudiat te Dn̄s in die tribulationis, & au- 2 xilietur tibi nomen Dei Jacob: Mittat tibi auxiliū è ſanctuario ſuo, atq; è Sion te ſuf- 3 fulciat: Memor ſit tibi Dn̄s omniū oblationū 4 tuarū, & holocauſta tua ipſe pinguefaciat. Tribuat tibi Dn̄s ſecundū cor tuū, & juxta 5 omne conſiliū tuū perficiat; Laudéſq; dice- 6 mus in ſalute tua, & in nomine Dei noſtri extollemur: peragat Dn̄s omnē voluntatē tuā. Nunc notū eſt quòd ſalvârit De⁹ unctum ſuū, 7 & exaudierit eū de cœlo ſanctitatis ſuæ, virtute ac ſalute dexteræ ſuæ. Hi in curribus, et 8 hi in equis, nos autem in nomine Dn̄i Dei noſtri magnificabimur. Ipſi ſuccubuerunt et 9 corruerunt, nos autē ſurrexim⁹, et accinxim⁹ nos. Dominus liberabit nos, et rex noſter ex- 10 audiet nos die quâ invocaverimus eum.

PSAL. XXI.

Davidis. Petitio eorum quæ adjumento ſunt viro juſto. Verſ. 27. 1

DOmine, in virtute tua lætabitur rex, et 2 in tua ſalute exultabit vehementér.

Versio VULG. LAT.

7 A summo cœlo egressio ejus: Et occur-
sus ejus uſque ad ſummum ejus: nec eſt
8 qui ſe abſcondat à calore ejus. Lex Dñi
immaculata, convertens animas: teſti-
monium Domini fidele, ſapientiam præ-
9 ſtans parvulis. Juſtitiæ Domini rectæ, læ-
tificantes corda: præceptum Domini lu-
10 cidum, illuminans oculos. Timor Domi-
ni ſanctus, permanens in ſeculum ſeculi:
judicia Domini vera, juſtificata in ſemet-
11 ipſa. Deſiderabilia ſuper aurum & lapi-
dem pretioſum multum: & dulciora ſu-
12 per mel & favum. Etenim ſervus tuus
cuſtodit ea, in cuſtodiendis illis retribu-
13 tio multa. Delicta quis intelligit? ab oc-
14 cultis meis munda me: Et ab alienis par-
ce ſervo tuo. Si meî non fuerint domina-
ti, tunc immaculatus ero: & emundabor
15 à delicto maximo. Et erunt ut compla-
ceant eloquia oris mei: & meditatio cor-
dis mei in conſpectu tuo ſemper. Domi-
ne adjutor meus, & redemptor meus.

1 In finem, Pſalmus David. XIX.

2 EXaudiat te Dominus in die tribulati-
onis: protegat te nomen Dei Jacob.
3 Mittat tibi auxilium de ſancto: & de Si-
4 on tueatur te. Memor ſit omnis ſacrificii
5 tui: & holocauſtum tuũ pingue fiat. Tri-
buat tibi ſecundùm cor tuum: & omne
6 conſilium tuum confirmet. Lætabimur in
ſalutari tuo: & in nomine Dei noſtri
7 magnificabimur. Impleat Dñs omnes pe-
titiones tuas: nunc cognovi quoniã ſal-
vum fecit Dominus CHRISTUM ſuum.
Exaudiet illum de cœlo ſancto ſuo: in
8 potentatibus ſalus dexteræ ejus. Hi in
currib⁹, & hi in equis: nos autem in no-
mine Domini Dei noſtri invocabimus.
9 Ipſi obligati ſunt, & ceciderunt: nos au-
10 tem ſurreximus & erecti ſumus. Domine,
ſalvum fac regem: & exaudi nos in die,
quâ invocaverimus te.

1 In finem, Pſalmus David. XX.

2 DOmine, in virtute tua lætabitur rex:
& ſuper ſalutare tuum exultabit ve-
hementer.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

7 Ἀπ᾽ ἄκρου τοῦ οὐρανοῦ ἡ ἔξοδος αὐτοῦ· † καὶ τὸ κατάν-
τημα αὐτοῦ ἕως ἄκρου τοῦ οὐρανοῦ· † καὶ οὐκ ἔστιν ὃς ἀ-
8 ποκρυβήσεται τὴν θέρμην αὐτοῦ. † Ὁ νόμος (γ) τοῦ
κυρίου ἄμωμος ἐπιστρέφων ψυχάς, † ἡ μαρτυρία
9 κυρίου πιστὴ σοφίζουσα νήπια. † Τὰ δικαιώματα κυρίου
(ᵈ) εὐθέα εὐφραίνοντα καρδίαν, † ἡ ἐντολὴ κυρίου
10 τηλαυγὴς φωτίζουσα ὀφθαλμούς. † Ὁ φόβος κυ-
ρίου ἁγνὸς διαμένων εἰς αἰῶνα αἰῶνος, † τὰ κρίμα-
τα κυρίου ἀληθινὰ δεδικαιωμένα ἐπὶ τὸ αὐτό.
11 † Ἐπιθυμητὰ ὑπὲρ χρυσίον καὶ λίθον τίμιον πο-
12 λύν, † καὶ γλυκύτερα ὑπὲρ μέλι καὶ κηρίον. † Καὶ
γὰρ ὁ δοῦλός σου φυλάσσει αὐτά, † ἐν τῷ φυλάσσειν
13 αὐτὰ ἀνταπόδοσις πολλή. † Παραπτώματα τίς
14 συνήσει; † ἐκ τῶν κρυφίων μου καθάρισόν με, † Καὶ
ἀπὸ ἀλλοτρίων φεῖσαι τοῦ δούλου σου. † ἐὰν μή μου
(δ) κατακυριεύσωσι, τότε ἄμωμος ἔσομαι, † καὶ
15 καθαρισθήσομαι ἀπὸ ἁμαρτίας μεγάλης. † Καὶ ἔ-
σονται εἰς εὐδοκίαν τὰ λόγια τοῦ στόματός μου, † καὶ
ἡ μελέτη τῆς καρδίας μου ἐνώπιόν σου (ε) διαπαντός·
† κύριε βοηθέ μου, καὶ λυτρωτά μου.

1 Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. ιθʹ.

2 † ἘΠακούσαι σου κύριος ἐν ἡμέρᾳ θλίψεως,
† ὑπερασπίσαι σου τὸ ὄνομα τοῦ θεοῦ Ἰακώβ.
3 † Ἐξαποστείλαι σοι βοήθειαν ἐξ ἁγίου, † καὶ ἐκ
4 Σιὼν ἀντιλάβοιτό σου. † Μνησθείη πάσης θυσίας
σου, † καὶ τὸ ὁλοκαύτωμά σου πιανάτω. ΔΙΑ-
5 ΨΑΛΜΑ. † Δῴη (α) σοι κατὰ τὴν καρδίαν σου, † καὶ
6 πᾶσαν τὴν βουλήν σου (ᵈ) πληρώσαι. † Ἀγαλλιασόμεθα
(β) ἐν τῷ σωτηρίῳ σου, † καὶ ἐν ὀνόματι θεοῦ ἡμῶν
7 μεγαλυνθησόμεθα. † Πληρώσαι κύριος πάντα τὰ
αἰτήματά σου. † νῦν ἔγνων ὅτι ἔσωσε κύριος τὸν
χριστὸν αὐτοῦ· † ἐπακούσεται αὐτοῦ ἐξ οὐρανοῦ ἁγίου αὐ-
τοῦ, † ἐν δυναστείαις ἡ σωτηρία τῆς δεξιᾶς αὐτοῦ.
8 † Οὗτοι ἐν ἅρμασι καὶ οὗτοι ἐν ἵπποις, † ἡμεῖς δὲ ἐν
ὀνόματι (γ) κυρίου θεοῦ ἡμῶν μεγαλυνθησόμεθα.
9 † Αὐτοὶ συνεποδίσθησαν καὶ ἔπεσαν, † ἡμεῖς δὲ ἀνέστη-
10 μεν καὶ ἀνορθώθημεν. † Κύριε σῶσον τὸν βασιλέα, † καὶ
ἐπάκουσον ἡμῶν, ἐν ᾗ ἂν ἡμέρᾳ ἐπικαλεσώμεθά σε.

1 Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. κʹ.

2 † ΚΎριε ἐν τῇ δυνάμει σου εὐφρανθήσεται ὁ βασι-
λεύς, † καὶ ἐπὶ τῷ σωτηρίῳ σου ἀγαλλιά-
σεται σφόδρα.

MS.A. (γ) κυρίου (ᵈ) εὐθεῖα (δ) κατακυριεύσουσιν, (ε) διαπαντός.
Ψαλμ. ιθʹ. MS. A. (α) σοι κύριος κατὰ (ᵈ) πληρώσει. (β) ἐπὶ τῷ (γ) θεοῦ ἡμῶν

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

A ſummo cœlo egreſſio ejus. 7 Et 7
occurſ⁹ ej⁹ uſque ad ſummũ cœ-
li: nec eſt qui ſe abſcondat à calo-
re ej⁹. 8 Lex Domini immaculata, 8
convertens animas: teſtimonium
Domini fidele, ſapientiã præſtans
parvulis. 9 Juſtitiæ Domini rectæ, 9
lætificantes cor: præceptũ Domini
lucidum, illuminans oculos. 10 Ti- 10
mor Domini caſtus, permanens in
[c] ſeculũ ſeculi: judicia Domini
vera, [d] juſtificata in idipſum:
11 Deſiderabilia ſuper aurũ et la- 11
pidẽ pretioſũ multũ: et dulciora
ſuper [e] mel et favum. [f] 12 Et- 12
enim ſerv⁹ tu⁹ cuſtodit ea; in cu-
ſtodiendis illis retributio multa.
13 (d) Delicta quis intelliget? ab 13
occultis meis munda me: Et ab (e) 14
alienis parce ſervo tuo. 14 Si meî
non fuerint dominati, tunc imma-
culatus ero, & mundabor à deli-
cto magno. 15 Et erunt (f) in bene- 15
placitum eloquia oris mei, et medi-
tatio cordis mei in conſpectu tuo
ſemper. 16 Domine adjutor meus,
& redemptor meus.

In finem, Pſalmus ipſi David. 1
XIX.

1 E*Xaudiat tẽ Domin⁹ in di* [a] 2
tribulationis: protegat te nomen
Dei Jacob. 2 Mittat tibi auxilium 3
de [b] *ſancto: & de Sion tueatur*
te. 3 Memor ſit omnis ſacrificii 4
tui, & holocauſtũ tuum (a) pin-
guefaciat. DIAPSALMA. 4
(b) Tribuat [c] *tibi ſecundùm cor* 5
tuum: & omne conſiliũ tuum [d]
compleat. 5 Exultabimus in ſalu- 6
tari tuo: & in nomine [e] *Dei no-*
ſtri magnificabimur. 6 Impleat [f] 7
Dominus omnes petitiones tuas:
nunc cognovi, quoniã ſalvũ fecit
Dominus Chriſtũ ſuum. 7 Exau-
diet illum de cœlo ſancto ſuo: in
potentatibus ſalus dexteræ ejus.
8 [g] *Hi in currib⁹, et hi in equis:* 8
nos autem in nomine Domini Dei
noſtri (c) magnificabimur. 9 Ipſi 9
(†) obligati ſunt, et deciderũt: nos
autẽ ſurreximus, & erecti ſum⁹.
10 Domine, ſalvũ fac regem: & 10
exaudi nos, in (d) [h] *quacunque die invocaverimus te.*

In finem, Pſalmus ipſi David. XX. 1

D*omine, in virtute tua Letabitur rex; & ſuper ſalutare tuum exultabit vehementer.* 2

Verſio ÆTHIOPICA.

እምአጽናፈ፡ሰማይ፡ሙፃኡ፡፡=፡ወእስከ፡አ 7
ጽናፈ፡ ሰማይ፡ ምእታዊ፡፡እልቦ፡ ዘይትኀባ
እ፡እምሰሐቡ፡፡=፡ሕግ፡ለእግዚአብሔር፡ 8
ንጹሕ፡ወይሜይጥ፡ለነፍስ፡፡ስምዑ፡ለእግዚ
አብሔር፡እሙን፡ ወያጠብብ፡ ሕፃናተ፡፡=፡
ኵነኔሁ፡ለእግዚአብሔር፡ርቱዕ፡ ወያስተፌ 9
ሥሕ፡ ልበ፡፡ትእዛዙ፡ ለእግዚአብሔር፡ብ
ሩህ፡ወያበርህ፡አዕይንተ፡፡=፡ፈሪሀ፡እግዚአ 10
ብሔር፡ንጹሕ፡ወየሐዩ፡ ለዓለም፡፡ፍትሑ፡
ለእግዚአብሔር ፡ ጽድቅ ፡ ወርትዕ ፡ ኅቡ
ረ፡፡=፡ ወይትፈተው፡እምወርቅ፡ወእምዕን 11
ቍ ፡ ክቡር፡፡ወይጥዕም ፡ እመዓር ፡ ወሶከ
ር፡፡=፡ወገብርከሰ፡ያዐቅቦ፡፡ወበዓቂቦቱ፡ይ 12
ትዓሰይ፡ብዙኀ፡፡=፡ ስሕተት፡መኑ፡ይሌብ 13
ዋ፡፡እምኅቡአትየ፡አንጽሐኒ፡ወእምነኪር፡
መሐኮ፡ለገብርከ፡፡=፡ ወእመሰ፡ሊቀነዩኒ፡ 14
ውእተ፡ጊዜ፡ንጹሐ፡እከውን፡፡ወእነጽሕ፡እ
ምዐባይ፡ኀጢአትየ፡፡=፡ወይከውን፡ስሙረ፡ 15
ቃለ፡አፉየ፡፡ወሕሊና፡ልብየኒ፡ ቅድሜየ፡ው
እቱ፡በኵሉ፡ጊዜ፡፡=፡ እግዚእየ፡ረዳኢየ፡ 16
ወመድኀንየ፡፡=፡

ፍጻሜ፡መዝሙር፡ዘደዊት፡፡

፲፱ ይስማዕከ፡ እግዚአብሔር፡ በዕለተ፡ም 1
ንደቤከ፡፡ወይቁም፡ለከ፡ስሙ፡ለአምላከ፡ያ
ዕቆብ፡፡=፡ ወይፈኑ፡ለከ፡ረድኤተ፡እምቅደ 2
ሱ፡፡ወእምጽዮን፡ይትወከፍከ፡፡=፡ ወይዝ 3
ክር፡ለከ፡ኵሎ፡ መሥዋዕተከ፡፡ወያጥልል፡
ለከ፡ቍርባነከ፡፡=፡ የሀብከ፡እግዚአብሔ 4
ር፡ዘከመ፡ ልብከ፡፡ወይፈጽም፡ ለከ፡ኵሎ፡
ሥምረተከ፡፡=፡ ወንትፌሣሕ፡በአድኅኖት 5
ከ፡፡ወነዐቢ፡ በስመ፡ እግዚአብሔር፡ አምላ
ክነ፡፡=፡ ወይፈጽም፡ለከ፡እግዚአብሔር፡ 6
ኵሎ፡ስእለትከ፡፡ይእዜ፡አእመርኩ፡ከመ፡
አድኀኖ፡እግዚአብሔር፡ለመሲሑ፡፡=፡ ወ 7
ይሰጠዎ፡እምሰማይ፡ መቅደሱ፡፡በኀይለ፡አ
ድኅኖተ፡የማኑ፡፡=፡ እሙንቱሰ፡በአፍራስ፡ 8
ወበሰረገላት፡፡ወንሕነሰ፡ነዐቢ፡በስመ፡እግዚ
አብሔር፡አምላክነ፡፡=፡ እሙንቱሰ፡ታዐቅ 9
ጹ፡ወወድቁ፡፡ወንሕነሰ ፡ ተንሣእነ ፡ ወረታዕ
ነ፡፡=፡ እግዚኦ ፡ አድኅኖ፡ ለንጉሥ፡፡ወሰ 10
ምዓነ፡በዕለተ፡ንጼውዓከ፡፡=፡

ፍጻሜ፡መዝሙር፡ዘደዊት፡፡

፳ እግዚኦ፡በኀይልከ፡ይትፌሣሕ፡ንጉሥ፡፡ 1
ወብዙኀ፡ይትሐሠይ፡በአድኅኖትከ፡፡=፡ 2

INTERP. ÆTHIOP. [c] ſeculum: judicia [d] & recta ſimul: [e] mel & ſaccharum. [f] Et ſervus etiam tuus *PSAL.* XIX. [a] tribulationis tuæ: & erigat te [b] ſancto ſuo: [c] tibi Deus quicquid eſt ſecundùm [d] tibi compleat. [e] Domini Dei noſtri [f] tibi Dominus [g] Hi quidem in equis, & hi in curribus: [†] irretiti [h] die quâ

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

7 8 * من أطراف السماء خروجها * والى أطراف السماء منتهاها. وليس من يختفي من حرارتها * ناموس
9 الرب مطهر يرد النفوس * شهادة الرب صادقة تعلم الأطفال * حقوق الرب مستقيمة تفرح
10 القلوب * وصية الرب مضيئة تضيء الأبصار من البعد * خشية الرب طاهرة دائمة الى الأبد *
11 أحكام الرب أحكام حق عادلة جميعا * ارادة قلبه مختارة أفضل من الذهب والجوهر الثمين *
12 13 وحلوة أفضل من العسل والشهد * وان عبدك يحفظها * اذ في حفظها مجازاة كثيرة * من
14 يقدر أن يفهم الآثام * طهرني يا رب * من خفياتي الذين ليسوا مني * أشفق على عبدك * فاذا
15 لم يتسلطوا علي حينئذ أكون طاهرا * وأطهر من عظم خطيئتي * تكون جميع أقوال فمي
كمسرتك * وتلاوة قلبي أمامك في كل حين * الرب معيني ومخلصي *

1 * المزمور التاسع عشر لداود * ك * استيخن *

2 3 * يستجيب لك الرب في يوم شدتك * ينصرك اسم اله يعقوب * يبعث لك بعون من القدس *
4 5 ومن صهيون يعضدك * يذكر جميع ذبائحك * ومحرقاتك يستدسمها * يعطيك الرب مثل
6 قلبك * وكل أمانيك يتمم * نعترف لك يا رب بخلاصك * وباسم الرب الهنا نسمي * يكمل لك
7 الرب جميع سؤالك * الآن علمت أن الرب خلص مسيحه * وهو يستجيب له من سماء قدسه
8 9 بقوة خلاص يمينه * هؤلاء بالمراكب وهؤلاء بالخيل * ونحن باسم الهنا نسمي * هم استبكوا
10 وسقطوا * ونحن قمنا ونهضنا * يا رب خلص الملك * واستجب لنا يوم ندعوك *

1 * المزمور العشرون لداود * استيخن * كز *

2 * يا رب بقوتك يفرح الملك * وبخلاصك يستبشر جدا *

A finibus cœli exitus ejus, et ad fines cœli 7
terminus ejus: nec eſt qui ſe abſcondat à
calore ejus. Lex Domini pura, reparans 8
animos: Teſtimonium Domini verax, eru-
diens pueros. Statuta Domini recta, exhi- 9
larantia corda; mandatum Domini luci-
dum, illuminans oculos à longè. Timor 10
Domini caſtus, perſeverans in æternum:
Judicia Domini judicia vera, æqua cun-
cta; Voluntas cordis ejus ſelecta, præ- 11
ſtantior auro & gemmis pretioſis: et dul-
cia pluſquam mel, & favus: Et quidem 12
ſervus tuus cuſtodit ea: quandoquidem
in obſervatione eorum retributio eſt mul-
ta. Quis poteſt percipere delicta? Mun- 13
da me, O Domine mi Ab occultis meis, 14
quæ non ſunt à me: & propitiare ſervo
tuo. Quum enim minimè dominata fue-
rint mihi, tunc ero mundus: & munda-
bor à magnitudine peccati mei. Erunt o- 15
mnes ſermones oris mei ſecundùm volun-
tatem tuam: & meditatio cordis mei an-
te te omni tempore. Dominus eſt adjutor
meus, & ſalvator meus.

PSAL. XIX. Davidis. 1
Verſ. 20.

E*Xaudiat te Dominus in die tribulati-* 2
onis tuæ: adjuvet te nomen Dei Jacob.
Mittat tibi auxilium è ſanctuario, & ex 3
Sion te fulciat. Recordetur omnium ſa- 4
crificiorum tuorum, & holocauſtis tuis
oblectetur. Tribuat tibi Dominus ſecun- 5
dum cor tuum, & omnia optata tua per-
ficiat. Confitebimur tibi, O Domine, pro 6
ſalute tua: & in nomine Domini Dei no-
ſtri multiplicabimur. Compleat tibi Do-
minus omnem petitionem tuam. Nunc ſci- 7
vi quòd Dominus liberavit chriſtum ſu-
um, & ipſe exauditurus eſt eum de cœlo
ſanctitatis ſuæ, potentiâ ſalutis dexteræ
ſuæ. Hi in curribus, & hi in equis: & 8
nos in nomine Dei noſtri multiplicabimur.
Ipſi irretiti ſunt, & ceciderunt: & nos 9
ſurreximus, & erecti ſumus. O Domi- 10
ne, ſalva regem, & exaudi nos in die
quâ invocaverimus te.

PSAL. XX. Davidis. 1
Verſ. 27.

O*Domine, in virtute tua lætatur rex,* 2
& ſalute tuâ gaudet valdè.

תהלים : כב

non ejus labiorum prolationem & ; ei dedisti ejus cordis Desiderium
3 תַּאֲוַת לִבּוֹ נָתַתָּה לּוֹ וַאֲרֶשֶׁת שְׂפָתָיו בַּל־
appones ; bonitatis benedictionibus eum prævenies Quoniam .Selah , prohibuisti
4 מָנַעְתָּ סֶּלָה: כִּי־תְקַדְּמֶנּוּ בִּרְכוֹת טוֹב תָּשִׁית
longitudinem ei dedisti : te à petiit Vitam .obrizi diadema ejus capiti
5 לְרֹאשׁוֹ עֲטֶרֶת פָּז: חַיִּים שָׁאַל מִמְּךָ נָתַתָּה לּוֹ אֹרֶךְ
decorem & ,gloriam : tua salute in ejus gloria Magna .perpetuum & ,seculum dierum
6 יָמִים עוֹלָם וָעֶד: גָּדוֹל כְּבוֹדוֹ בִּישׁוּעָתֶךָ הוֹד וְהָדָר
eum lætificabis ;perpetuum in benedictiones eum pones Quoniam .eum super adæquabis
7 תְּשַׁוֶּה עָלָיו: כִּי־תְשִׁיתֵהוּ בְרָכוֹת לָעַד תְּחַדֵּהוּ
misericordia in & ; Domino in sperans rex Quoniam .tuis faciebus cum lætitia in
8 בְשִׂמְחָה אֶת־פָּנֶיךָ: כִּי־הַמֶּלֶךְ בֹּטֵחַ בַּיהוָה וּבְחֶסֶד
inveniet tua dextera : tuos inimicos omnes tua manus Inveniet .nutabit non altissimi
9 עֶלְיוֹן בַּל־יִמּוֹט: תִּמְצָא יָדְךָ לְכָל־אֹיְבֶיךָ יְמִינְךָ תִּמְצָא
Dominus :tuarum facierum tempore in ignis clibanum ut eos Pones .te odio habentes
10 שֹׂנְאֶיךָ: תְּשִׁיתֵמוֹ כְּתַנּוּר אֵשׁ לְעֵת פָּנֶיךָ יְהוָה
; perdes terra è eorum Fructum .ignis eos perdet & ; eos deglutiet suo naso in
11 בְּאַפּוֹ יְבַלְּעֵם וְתֹאכְלֵם אֵשׁ: פִּרְיָמוֹ מֵאֶרֶץ תְּאַבֵּד
: malum te super declinaverunt Quoniam .hominis filiis à eorum semen &
12 וְזַרְעָם מִבְּנֵי אָדָם: כִּי־נָטוּ עָלֶיךָ רָעָה
tuis funibus in;humerum eos pones Quoniam.poterunt non,cogitationem cogitaverunt
13 חָשְׁבוּ מְזִמָּה בַּל־יוּכָלוּ: כִּי תְּשִׁיתֵמוֹ שֶׁכֶם בְּמֵיתָרֶיךָ
, cantabimus : tua fortitudine in Domine te Exalta .eorum facies super præparabis
14 תְּכוֹנֵן עַל־פְּנֵיהֶם: רוּמָה יְהוָה בְעֻזֶּךָ נָשִׁירָה
.tuam fortitudinem psallemus &
וּנְזַמְּרָה גְּבוּרָתֶךָ:

PSAL. XXII. כב

quid ut,meus Deus,meus Deus .David canticum auroræ cervam super Victori
1 לַמְנַצֵּחַ עַל־אַיֶּלֶת הַשַּׁחַר מִזְמוֹר לְדָוִד: אֵלִי אֵלִי לָמָה
2 clamabo meus Deus .mei rugitus verbis , mea salute à longinquus,? me dereliquisti
3 עֲזַבְתָּנִי רָחוֹק מִישׁוּעָתִי דִּבְרֵי שַׁאֲגָתִי: אֱלֹהַי אֶקְרָא
sanctus tu Et .mihi silentium non & , nocte & : respondebis non & , interdiu
4 יוֹמָם וְלֹא תַעֲנֶה וְלַיְלָה וְלֹא־דוּמִיָּה לִי: וְאַתָּה קָדוֹשׁ
.eos eruisti &,speraverũt:nostri patres speraverũt te In .Israel laudes inhabitans
5 יוֹשֵׁב תְּהִלּוֹת יִשְׂרָאֵל: בְּךָ בָּטְחוּ אֲבֹתֵינוּ בָּטְחוּ וַתְּפַלְּטֵמוֹ:
.affecti pudore fuerunt non & , speraverunt te in : evaserunt & ,clamaverunt te Ad
6 אֵלֶיךָ זָעֲקוּ וְנִמְלָטוּ בְּךָ בָטְחוּ וְלֹא־בוֹשׁוּ:
Omnes .populi contemptus &,hominum opprobrium : vir non & , vermis ego Et
7 8 וְאָנֹכִי תוֹלַעַת וְלֹא־אִישׁ חֶרְפַּת אָדָם וּבְזוּי עָם: כָּל־
ad Volve : caput movebunt , labio in emittent : me subsannabunt me videntes
9 רֹאַי יַלְעִגוּ לִי יַפְטִירוּ בְשָׂפָה יָנִיעוּ רֹאשׁ: גֹּל אֶל־
meus eductor tu Quoniam .eo in complacuit quoniã,eum eripiat:eum eruat,Dominũ
10 יְהוָה יְפַלְּטֵהוּ יַצִּילֵהוּ כִּי חָפֵץ בּוֹ: כִּי־אַתָּה גֹחִי
.meæ matris ubera super me faciens confidere ; utero ab
מִבֶּטֶן מַבְטִיחִי עַל־שְׁדֵי אִמִּי:

תרגום TARGUM.

3 רְגַגַת נַפְשֵׁיהּ יְהַבְתָּ לֵיהּ וּפֵירוּשׁ סִפְוָתֵיהּ
4 לָא כְלֵיתָא לְעָלְמִין: אֲרוּם תַּקְדְּמִנֵּיהּ בִּרְכָן
5 טָבָן תְּשַׁוֵּי עַל רֵישֵׁיהּ כְּלִיל דְּהַב סְנִינָא: חַיֵּי
עָלְמָא שְׁאַל מִנָּךְ יְהַבְתָּ לֵיהּ נִגְדָא דְיוֹמַיָּא
6 לְעָלְמֵי עָלְמִין: סַגֵּי יְקָרֵיהּ בְּפוּרְקָנָךְ תּוּשְׁבַּחְתָּא
7 וְשִׁבְהוֹרָא תְּשַׁוֵּי עֲלוֹי: מְטוּל דִּי תְשַׁוְּנֵיהּ
בִּרְכָן לְעָלְמִין תַּחְדְּנֵיהּ בְּחֶדְוְתָא דִּי מִן קֳדָמָךְ:
8 מְטוּל דְּמַלְכָּא מְשִׁיחָא סְבִיר בַּיָי וּבְחִסְדָּא
9 דְעִלָּאָה לָא יִזּוּעַ: תַּדְבֵּק מְחַת אִידָךְ לְכָל
בַּעֲלֵי דְבָבָךְ פּוּרְעָנוּת יְמִינָךְ תִּשְׁכַּח לְכָל סָנְאָךְ:
10 תְּשַׁוִּינוּן הֵיךְ אַתּוּן נוּרָא לְעִדָּנֵי רוּגְזָךְ יְיָ
בְּרוּגְזֵיהּ יְסַלְעֲמִנּוּן וְתֵיכְלִנּוּן בְּעוּר גֵּיהִנָּם:
11 בְּנֵיהוֹן מֵאַרְעָא תְּהוֹבֵד וְזַרְעִיתְהוֹן מִבְּנֵי נָשָׁא:
12 מְטוּל דְּחַשִׁילוּ עֲלָךְ בִּישְׁתָא חֲשִׁיבוּ מַחְשְׁבָן
13 בִּישָׁן וְלָא יְכִילוּנָךְ: מְטוּל דְּשַׁוִּיתְנוּן לְעַמָּךְ
כְּתַף חַד בְּאֵטוּנֵי מַשְׁכְּנָךְ תְּתַקֵּן אוֹרְחָתְהוֹן
14 קֳדָמֵיהוֹן: אִזְדְּקַף יְיָ בְּעוּשְׁנָךְ נְשַׁבְּחָא וּנְדוּץ
בִּגְבוּרְתָךְ:

כב

1 לְשַׁבָּחָא עַל תְּקוֹף קוּרְבָּן תְּדִירָא דְקַרְצְתָא
2 תּוּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד: אֵלִי אֵלִי מְטוּל מָה
שְׁבַקְתָּנִי רְחִיק מִן פּוּרְקָנִי מִלֵּי אַכְלְיוּתִי:
3 אֱלָהִי אֲנָא קָרֵי בִּימָמָא וְלָא תְקַבֵּל וּבְלֵילְיָא
4 לָא שְׁתִיקוּתָא לִי: וְאַנְתְּ קַדִּישׁ דִּמְיַתֵּב
5 עָלְמָא עַל תּוּשְׁבְּחָן יִשְׂרָאֵל: עֲלָךְ סַבַּרוּ
6 אֲבָהָתָנָא סַבַּרוּ בְּמֵימְרָךְ וְשֵׁיזֵבְתִּנּוּן: קֳדָמָךְ צַלּוּ
7 וְאִשְׁתֵּיזְבוּ וַעֲלָךְ אִתְרְחִיצוּ וְלָא בְהִיתוּ: וַאֲנָא
וְחִיל חַלָּשׁ וְלָא גְבַר סְבַל חִסּוּדֵי בְּנֵי נָשָׁא
8 וּמִתְרַמְרְמוּתָא דְעַמְמֵי: כָּל דְּחָמַן לִי יַרְהֲבוּן
עֲלַי מִתְגָרְדִין בְּסִפְוָתְהוֹן יְטַלְטְלוּן בְּרֵישֵׁיהוֹן:
9 שַׁבַּח קֳדָם יְיָ וְשֵׁיזְבֵיהּ פְּצָא יָתֵיהּ מְטוּל דְּאִתְרְעֵי
10 בֵיהּ: מְטוּל דְּאַתְּ אַפַּקְתַּנִי מִכְּרֵיסָא אַסְבַּרְתַּנִי
עַל תַּדְיֵי אִמִּי:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Deſiderium animæ ejus tribuiſti ei, & prolationem 3
labiorum ejus non prohibuiſti
in æternum. Quoniam prævenies eum benedictionibus 4
bonis, pones ſuper caput
ejus coronam auri puri. Vitam æternam 5
petiit à te, dediſti ei longitudinem dierum
in ſecula ſeculorum. Multa eſt gloria ejus 6
in redemptione tua : laudem & decorem
pones ſuper eum. Quoniam pones eum 7
benedictiones per ſecula, lætitia perfundes
eum ab aſpectu tuo. Propterea quòd 8
rex *Chriſtus* confidit in *Domino*, & in miſericordia
altiſſimi, non commovebitur.
Invadet percuſſio manus tuæ cunctos hoſtes 9
tuos, ultio dexteræ tuæ inveniet
omnes odio te habentes. Pones eos ut 10
fornacem ignis in temporib⁹ iræ tuæ. Dñs
in furore ſuo diſperdet eos & conſumet eos
incendium gehennæ. Filios eorum de terra 11
perdes, & ſemen eorum à filiis hominum. 12
Quoniam machinati ſunt contra te
malum, cogitaverunt cogitationes pravas,
nec adverſum te potuerunt. Quoniam poſuiſti 13
eos populo tuo humerum unum : in
funibus tabernaculi tui ordinabis *vias eorum*
coram eis. Exaltare Domine in fortitudine 14
tua : laudabimus & *lætabimur* ſuper
virtute tua.

Ad laudandum ſuper potenti oblatione 1
perpetua auroræ, Hymnus Davidi.

PSAL.. XXII.

DEus mi, Deus mi, quare dereliquiſti 2
me? longè à redemptione mea verba clamoris
mei. Deus mi, ego clamo interdiu, 3
nec *ſuſcipis*; & noctu, nec eſt ſilentium
mihi. Tu verò ſanctus, qui 4
ſtabilis orbem propter laudes Iſrael. In 5
te confiſi ſunt patres noſtri: confiſi ſunt in
verbo tuo & liberâſti eos. Coram te preces 6
fuderunt & liberati ſunt, *&* in *te*
confiſi ſunt, & non ſunt confuſi. At ego 7
vermis debilis & non homo, portans vituperia
hominum, & deſpectio populorum. 8
Omnes qui vident me derident me,
proſcindunt labiis ſuis, movent capita
ſua. Laudes *dixit* apud Dominum, & eripuit 9
eum; eruit *eum*, quoniam complacuit
ſibi in *eo*. Quoniam tu extraxiſti me ab 10
utero, *fiduciam feciſti mihi* ſuper ubera
matris meæ.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

3 * ܪܓܬܐ ܕܠܒܗ ܝܗܒܬ ܠܗ. ܘܛܘܝܒܐ ܕܣܦܘܬܗ ܠܐ ܟܠܝܬ ܡܢܗ : * ܡܛܠ ܕܩܕܡܬܝܗܝ
4 5 ܒܒܘܪܟܬܐ ܛܒܬܐ. ܘܣܡܬ ܒܪܫܗ ܟܠܝܠܐ ܡܫܒܚܐ : * ܚܝܐ ܫܐܠܟ ܘܝܗܒܬ ܠܗ. ܐܘܪܟܐ
6 ܕܝܘܡܬܐ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ : * ܪܒ ܫܘܒܚܗ ܒܦܘܪܩܢܟ. ܐܝܩܪܐ ܘܗܕܪܐ ܣܡܬ
7 ܥܠܘܗܝ : * ܡܛܠ ܕܝܗܒܬܝܗܝ ܒܘܪܟܬܐ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ. ܘܚܕܝܬܝܗܝ ܒܚܕܘܬܐ
8 ܕܦܪܨܘܦܟ : * ܡܛܠ ܕܡܠܟܐ ܡܣܒܪ ܒܡܪܝܐ. ܘܒܛܝܒܘܬܗ ܕܡܪܝܡܐ ܠܐ ܢܙܘܥ :
9 10 * ܬܫܟܚ ܐܝܕܟ ܠܟܠܗܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝܟ. ܘܝܡܝܢܟ ܬܫܟܚ ܠܣܢܐܝܟ : * ܬܣܝܡ ܐܢܘܢ
ܐܝܟ ܬܢܘܪܐ ܕܢܘܪܐ ܠܥܕܢܐ ܕܪܘܓܙܟ. ܡܪܝܐ ܒܪܘܓܙܗ ܢܘܩܕ ܐܢܘܢ : ܘܬܐܟܘܠ ܐܢܘܢ ܢܘܪܐ.
11 12 * ܘܦܐܪܝܗܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܬܘܒܕ : ܘܙܪܥܗܘܢ ܡܢ ܒܢܝܢܫܐ. * ܡܛܠ ܕܐܨܠܝܘ ܥܠܝܟ
13 ܒܝܫܬܐ. ܘܐܬܪܥܝܘ ܬܪܥܝܬܐ ܘܠܐ ܐܬܟܫܪܘ ܚܝܠܐ. * ܬܣܝܡ ܐܢܘܢ ܒܒܗܬܬܐ : ܘܛܘܝܒܟ ܬܛܝܒ
14 ܠܘܩܒܠ ܦܪܨܘܦܗܘܢ. * ܐܬܪܝܡ ܡܪܝܐ ܒܥܘܫܢܟ : ܢܙܡܪ ܘܢܫܒܚ ܠܓܢܒܪܘܬܟ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܟܐ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܟܕ ܡܒܙܚܝܢ ܒܗ ܪܕܘܦܘܗܝ. ܘܥܠ ܚܫܐ ܕܡܫܝܚܐ
ܘܩܪܝܢܐ ܕܥܡܡܐ. ܦܬܓܡ ܣܙ.

2 * ܐܠܗܝ ܐܠܗܝ ܠܡܢܐ ܫܒܩܬܢܝ. ܘܐܪܚܩܬ ܡܢܝ ܦܘܪܩܢܝ ܒܡܠܐ ܕܣܟܠܘܬܝ :
3 4 * ܐܠܗܝ ܐܩܪܝܟ ܒܐܝܡܡܐ ܘܠܐ ܥܢܝܬܢܝ. ܘܒܠܠܝܐ ܘܠܐ ܐܨܬܬ ܠܝ : * ܘܐܢܬ ܩܕܝܫ ܘܝܬܒ
5 6 ܒܫܘܒܚܟ ܐܝܣܪܐܝܠ. * ܒܟ ܣܒܪܘ ܐܒܗܝ : ܣܒܪܘ ܒܟ ܘܦܨܝܬ ܐܢܘܢ. * ܠܘܬܟ ܩܥܘ
7 ܘܐܬܦܨܝܘ : ܒܟ ܣܒܪܘ ܘܠܐ ܒܗܬܘ. * ܐܢܐ ܕܝܢ ܬܘܠܥܐ ܐܢܐ ܘܠܐ ܒܪܢܫܐ : ܚܣܕܐ ܕܒܢܝܢܫܐ
8 ܘܫܘܝܛܐ ܕܥܡܐ. * ܟܠ ܕܚܙܐܘܢܝ ܡܒܙܚܝܢ ܒܝ : ܐܦܬܝܘ ܒܣܦܘܬܗܘܢ ܘܢܝܕܘ
9 10 ܪܫܝܗܘܢ. * ܐܬܬܟܠ ܥܠ ܡܪܝܐ ܢܦܨܝܘܗܝ : ܘܢܫܘܙܒܝܘܗܝ ܐܢ ܨܒܐ ܒܗ. * ܡܛܠ
ܕܐܢܬ ܗܘ ܬܘܟܠܢܝ ܡܢ ܡܪܒܥܐ : ܘܣܒܪܝ ܡܢ ܬܕܝ ܐܡܝ.

Deſiderium cordis ejus conceſſiſti ei, & præparationem 3
labiorum ejus non denegâſti illi.
Nam prævenisti eum benedictione optimâ, & 4
poſuiſti in capite ejus coronam glorioſam.
Vitam petiit à te, & tribuiſti ei longitudinem 5
dierum in ſeculum ſeculorum. Magnificata eſt 6
gloria ejus per ſalutem tuam: honorem ac nitorem
poſuiſti ſuper eum. Quoniam ſtatuiſti 7
eum benedictionem in ſeculum ſeculorum,
& exhilarâſti eum in gaudio vultûs tui. Quoniam 8
rex ſperat in Domino, & ex gratia Altiſſimi
non commovebitur. Inveniet manus tua 9
cunctos hoſtes tuos, & dextera tua inveniet
oſores tuos. Reddes eos quaſi clibanum ignis 10
ad tempus iræ: Dominus in ira ſua exuret eos,
& devorabit eos ignis. Fructúſq; ipſorum è 11
terra perdet, & ſemen eorum ex hominibus;
Quoniam converterunt in te malum, cogitaverunt 12
conſilium, & non polluerunt viribus.
Pones in eis turpitudinem, & præparationem 13
tuam diſpones contra facies eorum. Exaltare, 14
Domine, tuâ virtute : canemus, atque laudabimus
potentiam tuam.

PSAL. XXII.

Davidis, quum illuderetur à perſecutoribus 1
ſuis. Et de paſſione Chriſti : & vocatione
gentium. Verſ. 67.

DEus meus, Deus meus, quare dereliquiſti 2
me, & longè feciſti à me ſalutem meam
ob verba inſipientiarum mearum? Deus, invocabo 3
te per diem, & non exaudies me : &
per noctem, nec attendes me. Tu, Sancte, & 4
ſedens in gloria tua Iſraele, In te ſperaverunt 5
patres mei; ſperaverunt in te, & liberâſti
eos. Ad te clamaverunt, & liberati ſunt: 6
in te ſperaverunt, & non ſunt confuſi. Ego 7
vermis ſum, & non homo : opprobrium hominum,
& abjectio plebis. Omnes qui vident 8
me, deriſerunt me; dimoverunt labia
ſua, & moverunt capita ſua : Confiſus eſt in 9
Domino, liberet eum; & dimittat eum ſi diligit
illum. Quoniam tu es fiducia mea à 10
vulva, & ſpes mea ab uberibus matris meæ.

Verſio VULG. LAT.

3 Deſiderium cordis ejus tribuiſti ei; & voluntate labiorum ejus non fraudâſti e-
4 um. Quoniam prævenisti eum in bene-
dictionibus dulcedinis: poſuiſti in capite
5 ejus coronam de lapide pretioſo. Vitam
petiit à te: & tribuiſti ei longitudinem
dierum in ſeculum, & in ſeculum ſeculi.
6 Magna eſt gloria ejus in ſalutari tuo:
gloriam et magnũ decorẽ impones ſuper
7 eum. Quoniam dabis eum in benedicti-
onem in ſeculũ ſeculi: lætificabis eum in
8 gaudio cum vultu tuo. Quoniam rex ſpe-
rat in Domino: & in miſericordia Altiſ-
9 ſimi non commovebitur. Inveniatur ma-
nus tua omnib' inimicis tuis: dextera tua
10 inveniat omnes, qui te oderunt. Pones e-
os ut clibanũ ignis in tempore vultûs tui:
Dñs in ira ſua conturbabit eos, & devo-
11 rabit eos ignis. Fructum eorum de terra
perdes: & ſemen eorum à filiis hominũ.
12 Quoniam declinaverunt in te mala; cogi-
taverunt conſilia, quæ non potuerunt
13 ſtabilire. Quoniam pones eos dorſum: in
reliquiis tuis præparabis vultum eorum.
14 Exaltare, Domine, in virtute tua: cantabimus & pſallemus virtutes tuas.

1 In finem pro ſuſceptione matutina,
Pſalmus David. XXI.

2 DEus Deus meus, reſpice in me: quarè
me dereliquiſti? longè à ſalute mea
3 verba delictorũ meorũ. Deus me', clama-
bo per diem, & non exaudies: & nocte,
4 & non ad inſipientiam mihi. Tu autem
5 in ſancto habitas, Laus Iſrael. In te ſpe-
raverunt patres noſtri: ſperaverunt, &
6 liberâſti eos. Ad te clamaverunt, & ſal-
vi facti ſunt: in te ſperaverunt, & non
7 ſunt confuſi; Ego autem ſum vermis, &
non homo: opprobrium hominũ, & ab-
8 jectio plebis. Omnes videntes me, deri-
ſerunt me: locuti ſunt labiis, & moverũt
9 caput; Speravit in Domino, eripiat e-
um: ſalvum faciat eum, quoniam vult
10 eum. Quoniam tu es, qui extraxiſti me
de ventre: ſpes mea ab uberibus matris
meæ.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

3 † Τὴν ἐπιθυμίαν τῆς ψυχῆς αὐτοῦ ἔδωκας αὐτῷ,
† καὶ τὴν δέησιν τῶν χειλέων αὐτοῦ οὐκ ἐστέρησας αὐ-
4 τόν. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Ὅτι προέφθασας αὐ-
τὸν ἐν εὐλογίαις χρηστότητος, † ἔθηκας ἐπὶ τὴν κε-
5 φαλὴν αὐτοῦ στέφανον ἐκ λίθου τιμίου. † Ζωὴν ᾐτήσα-
τό σε, καὶ ἔδωκας αὐτῷ † μακρότητα ἡμερῶν εἰς
6 αἰῶνα αἰῶνος. † Μεγάλη ἡ δόξα αὐτοῦ ἐν τῷ σω-
τηρίῳ σου, † δόξαν καὶ μεγαλοπρέπειαν ἐπιθήσεις
7 ἐπ' αὐτόν. † Ὅτι δώσεις αὐτῷ εὐλογίαν εἰς αἰῶνα
αἰῶνος, † εὐφρανεῖς αὐτὸν ἐν χαρᾷ μετὰ τοῦ προσώ-
8 που σου. † Ὅτι ὁ βασιλεὺς ἐλπίζει ἐπὶ κύριον, † καὶ
9 ἐν τῷ ἐλέει τοῦ ὑψίστου οὐ μὴ σαλευθῇ. † Εὑρεθείη ἡ
χείρ σου πᾶσι τοῖς ἐχθροῖς σου, † ἡ δεξιά σου εὕ-
10 ροι πάντας τοὺς μισοῦντάς σε. † Θήσεις αὐτοὺς ὡς
κλίβανον πυρὸς εἰς καιρὸν τοῦ προσώπου σου, † (α)
κύριος ἐν ὀργῇ αὐτοῦ συνταράξει αὐτούς, καὶ κατα-
11 φάγεται αὐτοὺς πῦρ. † Τὸν καρπὸν αὐτῶν ἀπὸ
γῆς ἀπολεῖς, † καὶ τὸ σπέρμα αὐτῶν ἀπὸ υἱῶν ἀν-
12 θρώπων. Ὅτι ἔκλιναν εἰς σὲ κακά, † διελογί-
13 σαντο (β) βουλὴν ἣν οὐ μὴ δύνωνται στῆσαι. † Ὅτι
θήσεις αὐτοὺς νῶτον † ἐν τοῖς περιλοίποις σου,
14 ἑτοιμάσεις τὸ πρόσωπον αὐτῶν. † Ὑψώθητι κύριε
ἐν τῇ δυνάμει σου. † ᾄσομεν καὶ ψαλοῦμεν τὰς δυ-
ναστείας σου.

MS.A. (α) κύριε ἐν ὀργῇ σου συνταράξεις αὐτούς, (β) βουλὰς ἃς οὐ μὴ δύνωνται στῆναι.

1 Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῆς ἀντιλήψεως τῆς (*) ἑω-
θινῆς, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. κα'.

2 † Ὁ Θεὸς ὁ θεός μου πρόσχες μοι, ἵνα τί ἐγκα-
τέλιπές με; † μακρὰν ἀπὸ τῆς σωτηρίας μου
3 οἱ λόγοι τῶν παραπτωμάτων μου. † Ὁ θεός μου
κεκράξομαι ἡμέρας πρὸς σὲ καὶ οὐκ εἰσακούσῃ, † καὶ
4 νυκτὸς καὶ οὐκ εἰς ἄνοιαν ἐμοί. † Σὺ δὲ (α) ἐν ἁγίῳ
5 κατοικεῖς, ὁ ἔπαινος τοῦ Ἰσραήλ. † Ἐπὶ σοὶ ἤλ-
πισαν οἱ πατέρες ἡμῶν, † ἤλπισαν καὶ (β) ἐρρύσω αὐ-
6 τούς. † Πρὸς σὲ ἐκέκραξαν καὶ ἐσώθησαν, † ἐπὶ
7 σοὶ ἤλπισαν καὶ οὐ κατῃσχύνθησαν. † Ἐγὼ δέ εἰμι
σκώληξ καὶ (γ) οὐκ ἄνθρωπος, † ὄνειδος (δ) ἀν-
8 θρώπων καὶ ἐξουθένημα λαοῦ. † Πάντες οἱ θεωροῦν-
τές με ἐξεμυκτήρισάν με, † ἐλάλησαν ἐν χείλε-
9 σιν, ἐκίνησαν κεφαλήν, † Ἤλπισεν ἐπὶ κύριον,
ῥυσάσθω αὐτόν, † σωσάτω αὐτόν, ὅτι θέλει
10 αὐτόν. † Ὅτι σὺ εἶ ὁ ἐκσπάσας με ἐκ γαστρός,
† ἡ ἐλπίς μου ἀπὸ μαστῶν τῆς μητρός μου,

MS.A. (*) ἑωθινῆς. κα'. Ὁ θεὸς (α) ἐν ἁγίοις κατοικεῖς, ὁ ἔπαινος Ἰσραήλ. (β) ἐρύσω (γ) οὐχὶ (δ) ἀνθρώπου

Ver. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiop. Tranſl. LAT.

Deſiderium (a) animæ ejus de- 3
diſti ei: & (b) petitione labiorũ
ejus non fraudâſti eum. DIA-
PSALMA. 3 Quoniam præ- 4
veniſti eum in benedictionibus
dulcedinis: poſuiſti ſuper caput
ejus coronã de lapide pretioſo.
4 Vitã petiit à te, & dediſti ei 5
longitudinẽ dierum in (c) ſecu-
lum ſeculi. 5 Magna eſt gloria 6
ejus in ſalutari tuo: gloriã &
magnũ decorem impones ſuper
eum. 6 Quoniã dabis ei bene- 7
dictionem in ſeculũ (d) ſeculi:
lætificabis eum in gaudio cum
vultu tuo. 7 Quoniam rex ſpe- 8
rat [a] ſuper Dominũ, et in mi-
ſericordia Altiſſimi non com-
movebitur. 8 (e) [b] Invenia- 9
tur manus tua omnib' inimicis
tuis: dextera tua inveniat o-
mnes, qui te oderunt. 9 Pones 10
eos ut clibanũ ignis, in tempore
vultûs tui: Dominus in ira ſua
conturbabit eos, & devorabit
eos ignis. 10 Fructũ illorũ de 11
terra [c] perdes, & ſemen eorũ
à filiis hominum. 11 Quoniam 12
(f) [d] declinaverunt in te ma-
la: cogitaverunt (g) conſilium,
quod non poterunt ſtabilire.
12 Quoniam (h) pones eos [e] 13
dorſum in (i) reliquiis tuis, [f]
præparabis vultũ eorũ. 13 Ex- 14
altare, Domine, in virtute tua:
cantabimus, & pſallemus vir-
tutes tuas.

[g] MS. Æthiop. Pocock. Gloria Patri, & Filio, & Spiritui ſancto: Eſt modò, ſemper erit, & in ſecula ſeculorũ, Amen.

In finem, pro ſuſceptione [†] 1
matutina, Pſalmus ipſi David.
XXI.

[a] 1 DEus De' me', reſpice in 2
(a) me: quarè me dereliquiſti?
longè à ſalute mea verba (b)
delictorum meorum. 2 Deus 3
meus, clamabo ad te per diem,
& non exaudies; & [b] nocte,
& non ad (c) inſipientiã mihi.
3 Tu autẽ in (d) [c] ſancto ha- 4
bitas, (e) Laus Iſrael. 4 In te ſperaverunt patres noſtri: ſperaverunt, & eruiſti eos. 5
5 Ad te clamaverunt, & ſalvi facti ſunt: in te ſperaverunt, & non ſunt confuſi. 6
6 Ego autem ſum vermis & non homo: opprobrium hominum, & abjectio plebis. 7
7 Omnes qui conſpiciebant me, ſubſannaverũt me: locuti ſunt labiis, moverũt caput: 8
8 Speravit in Dominum, eruat eum: ſalvum faciat eum; quoniam vult eum. 9
9 Quoniam tu es, qui extraxiſti me de ventre, [d] ſpes mea ab uberibus matris meæ: 10

Verſio ÆTHIOPICA.

ፍትወተ፡ ነፍሱ፡ ወሀብኮ፡፡ወሰእለተ፡ ከናፍ 2
ሪሁ፡ ኢከልአኮ፡፡= እስመ፡በጸሐኮ፡በበረ 3
ከት፡ሠናይ፡፡ወአንበርከ፡ አክሊለ፡ ደበ፡ ርእ
ሱ፡ ዘእምዕንቍ፡ክቡር፡፡= ሐይወ፡ሰአለ 4
ከ፡ወሀብኮ፡፡ለነዋሕ፡ መዋዕል፡ ለዓለም፡ዓለ
ም፡፡= ዐቢይ፡ክብሩ፡በአድኅኖትከ፡፡ክ 5
ብረ፡ወስብሐተ፡ወሰኮ፡፡= እስመ፡ወሀብኮ፡ 6
በረከተ፡ ለዓለም፡ ዓለም፡፡ወታስተፌሥሖ፡
በሐሤተ፡ ገጽከ፡፡= እስመ፡ ተወከለ፡ንጉ 7
ሥ፡ በእግዚአብሔር፡፡ወኢይትሀወክ፡ በም
ሕረቱ፡ለልዑል፡፡=ትርከቦሙ፡እዴከ፡ለኵ 8
ሎሙ፡ ፀርከ፡፡ወትረክቦሙ፡ እዴከ፡ለኵሎ
ሙ፡ ጸላእትከ፡፡= ወትረሲዮሙ፡ ከመ፡ 9
እቶነ፡እሳት፡ለጊዜ፡ገጽከ፡፡እግዚእ፡ በመዓ
ትከ፡ሁኮሙ፡ወትብልዖሙ፡እሳት፡፡= ወፍ 10
ሬሆሙ፡ ሰዐር፡ እምድር፡፡ወዘርኦሙ፡ እ
ምእጓለ፡እመሕያው፡፡= እስመ፡ሜጥዋ፡ 11
ለዐምፃ፡ ሳዕሌከ፡፡ወሐለዩ፡ ምክረ፡ እንተ፡
ኢይክሉ፡ዐቅሞ፡፡= ወታገብኦሙ፡ድኅሬ 12
ሆሙ፡፡ወታስተደሉ፡ ገጸከ፡ ለጊዜ፡ መዐት
ከ፡፡= ተለዐልከ፡እግዚእ፡በኀይልከ፡፡ንሴ 13
ብሕ፡ ወንዜምር፡ ለጽንዕከ፡፡=
ስብሐት፡ ለአብ፡ ወወልድ፡ ወመንፈስ፡ ቅዱ
ስ፡፡ይእዜኒ፡ ወዘልፈኒ፡ ወለዓለመ፡ ዓለም፡
አሜን፡፡= ፍጻሜ፡በእንተ፡ተወክፎ፡እን
ተ፡ስብሐት፡መዝሙር፡ዘዳዊት፡፡
ኳል[አምላኪየ፡ አምላኪየ፡ ነጽረኒ፡ወለም 1
ንት፡ ኀደገኒ፡፡ርሑቅ፡ እምአድኅኖትየ፡ ቃ
ለ፡ ኃጢአትየ፡፡= አምላኪየ፡ ጸራኅኩ፡ 2
ኀቤከ፡ዕለትየ፡ ወኢሰማዕከኒ፡፡ወሌሊትየኒ፡
ቅድሜከ፡ወኢኀለይከኒ፡፡= ወአንተሰ፡ው 3
ስተ፡ ቅዱሳኒከ፡ ተኀድር፡ ስቡሐ፡ እስራኤ
ል፡፡= ኪያከ፡ተወከሉ፡አበዊነ፡፡ተወከሉ 4
ከኒ፡ወአድኀንኮሙ፡፡= ኀቤከ፡ጸርኁ፡ወ 5
ድኅኑ፡፡ ኪያከ፡ ተወከሉ፡ ወኢይትኀፈ
ሩ፡፡= አንሰ፡ዕፄ፡ወአኮ፡ሰብእ፡፡ምኑን፡በ 6
ኀበ፡ሰብእ፡ውጉዙት፡በውስተ፡ሕዝብ፡፡=
ኵሎሙ፡እለ፡ ይሬእዩኒ፡ ይትቃጸቡኒ፡፡ይብ 7
ሉ፡በከናፍሪሆሙ፡ወየሐውሱ፡ርእሶሙ፡፡=
ተወከለ ፡ በእግዚአብሔር ፡ ለያድኅኖ ፡ ወ 8
ያድኅኖ፡አመ፡ይፈቅዶ፡፡= እስመ፡ አንተ፡ 9
አውፃእከኒ፡ እምከርሥ፡፡ ወተወከልኩከ፡
እንዘ፡ሀለውኩ፡ውስተ፡አጥባተ፡እምየ፡፡=

INTERP. ÆTHIOP. [a] in Domino, [b] Comprehendat manus tua omnes inimicos tuos: & manus tua inveniat [c] abſtulit, [d] iniquitatem in te conjecerunt: [e] retrorſum [f] & præparabis vultum tuum in tempus iræ tuæ. [g] Doxologia hæc habetur poſt decimum quemque Pſalmum in MS. Æthiop. D. Pocockii, quæ per inadvertentiam poſt decimum Pſalmum omiſſa fuit. PSAL. XXI. [†] laudis, [a] Deus meus, Deus [b] nocte etiam coram te adſto, & non attendis mihi. [c] ſancto tuo [d] & in te ſperavi, dum fui ſuper ubera.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

3 * لانك اعطيته سهوة قلبه * ولم تحرمه سوال شفتيه * ابتدأته ببركات صالحة * وضعت على راسه
4
5 اكليلا من جوهر * سالك حياه فاعطيته طول الايام * الى ابد الابد * مجده عظيم بخلاصك
6 المجد وعظيم البهاء جعلت عليه * لانك تعطيه بركة الى ابد الابد * ابهجته بفرح وجهك *
7
8 * لان الملك توكل على الرب * وبرحمة العلي لا يزول * تظفر يدك بجميع اعدائك * ويمينك
9
10 بجميع مبغضيك * تجعلهم مثل نار التنور لوقت السخط * الرب بسخطه يحرقهم * والنار
11 تاكلهم * وتبيد من الارض ثمارهم * وذريتهم من بني البشر * لانهم اما لوا عليك الشرور
12
13 وفكروا في امور لم يستطيعوا اقامتها * تركتهم يولون على ادبارهم * جعلت ذلا على وجوههم *
14 * ارتفع يا رب بقوتك * نسبح ونرتل بجبروتك * الليلويا * المزمور الحادي والعشرون *
1 * قاله وقت نصرته على اعدائه * ونبوة عن الصليب * وهو سد استيخن *
2 * الاهي الاهي انظر الي * لماذا يا الهي تركتني * تباعدت عن خلاصي لقول جهلي *
3 الهي اصرخ اليك النهار كله فلم تستجب لي * وفي الليل لم تصغ لي * وانت تحل في
4
5 القديسين * يا فخر اسراييل * بك امن اباونا * توكلوا عليك فنجيتهم * صرخوا اليك فخلصوا *
6
7 رجوك فلم يخزوا * واني انا دودة ولست انسانا * عارا في الناس مرذولا في الشعوب * كل من راني
8
9 مقتني * تكلموا بشفاههم * وحركوا رووسهم * وقالوا * ان كان امن او توكل على الرب
10 فليخلصه * ولينجه ان كان يريده * وانت من البطن اخرجتني * ورجاي منذ كنت
ارضع من ثدي امي *

Quia tu dediſti eum deſiderium cordis 3
ſui, & non privâſti eum petitione labiorũ
ſuorum. Præveniſti eum benedictionibus 4
optimis: poſuiſti ſuper caput ejus coronam
gemmeam. Petiit à te vitam, & dediſti ei 5
longitudinem dierum in ſeculum ſeculi.
Gloria ejus magna eſt in ſalute tua: glo- 6
riam et magnitudinem ſplendoris poſuiſti
ſuper eum. Quia concedes ei benedictio- 7
nem in ſeculum ſeculi: exhilarâſti eum
gaudio vultûs tui. Quoniam rex con- 8
fiſus eſt in Domino, & per miſericordiam
Altiſſimi non movebitur. Fauſta ſit ma- 9
nus tua in cunctos inimicos tuos: et dex-
tera tua in omnes oſores tuos. Efficies e- 10
os veluti ignem clibani ad tempus indi-
gnationis: Dominus indignatione ſuâ
comburet eos, & ignis comedet eos. Et 11
perdet de terra fructus eorum, & proge-
niem eorum à filiis hominum. Quia ipſi 12
inflexerunt in te mala, & excogitârunt
res quas non potuerunt ſuſtinere. Reli- 13
quiſti eos retroverti ſuper dorſa ſua: po-
ſuiſti contemptum ſuper vultus eorum.
Exaltare, O Domine, in fortitudine tua. 14
Laudabimus & pſallemus potentiæ tuæ.
Alleluja.

PSAL. XXI.

Dictus ab eo, quando ſuperavit 1
inimicos ſuos. Et prophetia de
Crucifixione. Verſ. 64.

DEus meus, Deus meus, reſpice in me; 2
quarè, O Deus meus, dereliquiſti me?
elongatus es à ſalute mea ob ſermonem
ſtultitiæ meæ? Deus meus, clamo ad te 3
die totâ, et non exaudîſti me: & in nocte
non auſcultâſti me. Et tamen tu habitas 4
in ſanctis, O gloria Iſraelis. In te credide- 5
runt patres noſtri, confiſi ſunt in te, &
liberâſti eos: Clamaverunt ad te, et ſalvi 6
facti ſunt: ſperaverunt in te, et non ſunt
confuſi. Et verò ego ſum vermis, & non 7
homo, opprobrium inter homines, contem-
ptus inter populum. Omnis, qui vidit me, 8
odio habuit me; locuti ſunt labiis ſuis, &
moverunt capita ſua; et dixerunt; Si cre- 9
didit, aut confiſus eſt in Domino, liberet
eum et ſalvet eum, ſi diligit eum. Et tu de 10
ventre eduxiſti me, & ſpes mea es à quo
lac ſugebam ex uberibus matris meæ.

תהלים ׃ כב

Ne .tu meus Deus meæ matris ventre de ; vulva ex ſum projectus te Super
11 12 עָלֶיךָ הָשְׁלַכְתִּי מֵרָחֶם מִבֶּטֶן אִמִּי אֵלִי אָתָּה׃ אַל־
me Circũdederũt.auxiliator non quia:propinqua anguſtia quoniam , me à te elonges
13 תִּרְחַק מִמֶּנִּי כִּי־צָרָה קְרוֹבָה כִּי־אֵין עוֹזֵר׃ סְבָבוּנִי
me ſuper *Patefecerunt* .me circundederunt *corona* Baſan *robuſti* : multi vituli
14 פָּרִים רַבִּים אַבִּירֵי בָשָׁן כִּתְּרוּנִי׃ פָּצוּ עָלַי
omnia ſe ſeparaverunt & ;ſum effuſus aqua Sicut .rugiens &,rapiens leo : ſuum os
15 פִּיהֶם אַרְיֵה טֹרֵף וְשֹׁאֵג׃ כַּמַּיִם נִשְׁפַּכְתִּי וְהִתְפָּרְדוּ כָּל־
Aruit .meorum viſcerum medio in ſe liquefecit : cera ſicut meum cor fuit : mea oſſa
16 עַצְמוֹתָי הָיָה לִבִּי כַּדּוֹנָג נָמֵס בְּתוֹךְ מֵעָי׃ יָבֵשׁ
pulverem in & ; meis faucibus *adhærens* mea lingua & , mea fortitudo teſta tanquam
כַּחֶרֶשׂ כֹּחִי וּלְשׁוֹנִי מֻדְבָּק מַלְקוֹחָי וְלַעֲפַר־
malignantium *cœtus* , canes me circundederunt Quoniam .me pones mortis
17 מָוֶת תִּשְׁפְּתֵנִי׃ כִּי סְבָבוּנִי כְּלָבִים עֲדַת מְרֵעִים
: mea oſſa omnia Numerabo *.meos pedes &* , *meas manus leo quaſi* : me circundederunt
18 הִקִּיפוּנִי כָּאֲרִי יָדַי וְרַגְלָי׃ אֲסַפֵּר כָּל־עַצְמוֹתָי
ſuper & , ſibiipſis mea veſtimenta Divident .me in inſpicient ,aſpicient ipſi
19 הֵמָּה יַבִּיטוּ יִרְאוּ־בִי׃ יְחַלְּקוּ בְגָדַי לָהֶם וְעַל־
, mea fortitudo : te elonges ne Domine tu Et .ſortem projicient meam veſtem
20 לְבוּשִׁי יַפִּילוּ גוֹרָל׃ וְאַתָּה יְהוָה אַל־תִּרְחָק אֱיָלוּתִי
canis manu è ; meam animam gladio à Erue .feſtina meum auxilium ad
21 לְעֶזְרָתִי חוּשָׁה׃ הַצִּילָה מֵחֶרֶב נַפְשִׁי מִיַּד־כֶּלֶב
.mihi reſpondiſti unicornium cornibus à & ; leonis ore ab me Serva .meam unicam
22 יְחִידָתִי׃ הוֹשִׁיעֵנִי מִפִּי אַרְיֵה וּמִקַּרְנֵי רֵמִים עֲנִיתָנִי׃
Timentes .te laudabo *concionis* medio in ; meis fratribus tuum nomen Narrabo
23 אֲסַפְּרָה שִׁמְךָ לְאֶחָי בְּתוֹךְ קָהָל אֲהַלְלֶךָּ׃ יִרְאֵי
24 eo ab timete &:eum glorificate Jahacob ſemen univerſum , eum laudate Dominum
יְהוָה הַלְלוּהוּ כָּל־זֶרַע יַעֲקֹב כַּבְּדוּהוּ וְגוּרוּ מִמֶּנּוּ
,afflicti manſuetudinem eſt abominatus nec , ſprevit non Quia .Iſrael ſemen omne
25 כָּל־זֶרַע יִשְׂרָאֵל׃ כִּי לֹא־בָזָה וְלֹא שִׁקַּץ עֱנוּת עָנִי
te A .audivit , eum ad *ipſum clamando in &* ; *illo ab ſuas facies* abſcondit neque
26 וְלֹא־הִסְתִּיר פָּנָיו מִמֶּנּוּ וּבְשַׁוְּעוֹ אֵלָיו שָׁמֵעַ׃ מֵאִתְּךָ
Edent *.eum* timentibus coram reddam mea vota : multa *concione* in mea laus
27 תְּהִלָּתִי בְּקָהָל רָב נְדָרַי אֲשַׁלֵּם נֶגֶד יְרֵאָיו׃ יֹאכְלוּ
veſtrum cor vivet : eum quærentes Dominum laudabunt ; ſaturabuntur &,pauperes
עֲנָוִים וְיִשְׂבָּעוּ יְהַלְלוּ יְהוָה דֹּרְשָׁיו יְחִי לְבַבְכֶם
: terræ fines omnes Dominum ad convertentur &,Reminiſcentur .ſeculum in
28 לָעַד׃ יִזְכְּרוּ וְיָשֻׁבוּ אֶל־יְהוָה כָּל־אַפְסֵי־אָרֶץ
Domini Quoniam .gentium familiæ univerſæ *tuas facies ad* ſe inclinabunt &
29 וְיִשְׁתַּחֲווּ לְפָנֶיךָ כָּל־מִשְׁפְּחוֹת גּוֹיִם׃ כִּי לַיהוָה
pingues omnes *ſe incurvaverunt* & , Comederunt *.gentes in dominans &* ; regnum
30 הַמְּלוּכָה וּמֹשֵׁל בַּגּוֹיִם׃ אָכְלוּ וַיִּשְׁתַּחֲווּ כָּל־דִּשְׁנֵי־
non ſuam animam &;pulverem deſcendentes omnes ſe incurvabunt *ejus facies ad* :terræ
אֶרֶץ לְפָנָיו יִכְרְעוּ כָּל־יוֹרְדֵי עָפָר וְנַפְשׁוֹ לֹא
nunciabũt &,Venient.generationem in Domino narrabitur:ei ſerviet Semen .vivificabit
31 32 חִיָּה׃ זֶרַע יַעַבְדֶנּוּ יְסֻפַּר לַאדֹנָי לַדּוֹר׃ יָבֹאוּ וְיַגִּידוּ
.fecit quia ,genito populo ; ejus juſtitiam
צִדְקָתוֹ לְעַם נוֹלָד כִּי עָשָׂה׃

תרגום TARGUM.

11 בסעדך אטלקית ממעינא מכרסת אמי אלי את׃
12 לא תתרחיק מני מטול דעקתא קריבא ארום
13 לית פריק׃ אחזרו עלי עממיא דמתילין לתורין
14 סגיאין רברבני מתנן אקפוני׃ פתחו עלי פומהון
15 היך כאריא מכלי ותביר׃ היך כמיא אשתדת
ואתפרפרן כולהון גרמי הוה לבי מתמסי היך
16 שעוא בנו מעי׃ יבש היך פחר חילי ולישני
אדביק למוריני ולבית קבורתא אמטיתני׃
17 מטול דאחזרו עלי רשיעי דמתילין לכלביא
סגיעין כנישת מבאישין אקפוני נכתין היך
18 כאריא אידי ורגלי׃ אחוי כל הלבשושי גרמי
19 אנון מסתכלין מבזן לי׃ מפלגין לבושי להון
20 ועלוי פתגי ירמון עדבין׃ ואנת יי לא תתרחיק
21 תוקפי לסיועי אוחי׃ פצי מקטלין בחרבא נפשי
22 מן אידא דכלבא רוחא דגושמי׃ פרוקני מפום
אריא ומסלכין דתקיפין ורמין כרימנא קבלתא
23 צלותי׃ אחוי גבורת שמך לאחי במצע כנשתא
24 אשבחנך׃ דחליא דיי שבחו קדמוי כל זרעא
דיעקב הבו ליה יקר ואזדעזעו מניה כל זרעא
25 דישראל׃ מטול דלא בסר ולא שאט צלותהון
דעניי ולא סליק שכנתיה מביניהון ובצלאיהון
26 קדמוהי מקבל׃ מנך תושבחתי בכנישת סגיעת
27 עמא נדרי אשלם קביל דחלוי׃ ייכלון ענותני
וישבעון ישבחון קדם יי דתבעין ליה ישרי רוח
28 נבואה ברעיוני לבכון לעלמין׃ ידכרון נסוי
ויתובון קדם יי כל סיפי ארעא ויסגדון קדמך
29 כל גניסת עממיא׃ מטול דמן קדם יי מלכותא
30 ושליט בעממיא׃ סעודו וסגידו כל דהיני
ארעא קדמוי יגחנון כל נחתין בית קבורתא
31 ונפש רשיעא לא יחיי׃ זרעיה דאברהם
יפלחון קדמוי ויחוון כח גבורתא דיי לדרא
32 בתראה׃ יתובון בניהון ויתנון צדקתיה לעמיה
דעתיד למלד פרישן דעבד׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

11 *Ope tua* project⁹ ſum *è viſcerib⁹*; à *ventre* matris meæ Deus meus es tu. 12 Ne elongeris à me, quoniã anguſtia prope eſt, quoniam non eſt qui *liberet*. 13 Circundederunt me populi ſimiles tauris multis: 14 principes Baſſan vallaverunt me. Aperuerunt ſuper me os ſuum, ſicut leo rugiens & rapiens. 15 Veluti aqua effuſus ſum, & diſperſa ſunt omnia oſſa mea: fuit cor meũ liquefactũ ſicut cera in medio viſcerum meorum. 16 Aruit veluti teſta *virtus mea*, & lingua mea adhæſit palato meo; & in domum ſepulchri concluſiſti me. 17 Quoniam vallaverunt me *impii*, qui ſimiles ſunt canibus plurimis: congregatio malignorum circundedit me, mordentes *ſicut leo* manus meas & pedes meos. 18 Dinumerabo omnes cicatrices membrorũ meorũ: ipſi aſpiciunt & contemnunt me. 19 Dividunt veſtimenta mea ſibi, & ſuper veſtem meã mittent *ſortes*. 20 Et tu Dñe ne elongeris, fortitudo *mea*, ad auxilium meum feſtina. 21 Libera ab his qui occidunt gladio, animã meam; de manu *canis*, ſpiritum corporis mei. 22 Serva me ab ore leonis, & à regib⁹ potentib⁹ & *elatis unicornis* inſtar, accepiſti orationẽ meã. 23 Narrabo virtutem nominis tui fratrib⁹ meis, in medio eccleſiæ laudabo te. 24 Qui timetis Dñm laudate coram eo: omne ſemen Jaacob afferte honorem ei; contremiſcite ab illo omne ſemen Iſrael. 25 Quoniã non deſpexit neq; contempſit orationẽ *pauperũ*, & non amovit majeſtatem ſuã *ab-inter eos*: & dum *precantur* coram eo, acceptat. 26 A te laus mea in congregatione *referta populo*: vota mea reddã in conſpectu timentiũ eum. 27 Edent mites & ſaturabuntur: laudabunt Dñm qui quærunt eum; requieſcet ſpirit⁹ prophetiæ in cogitationib⁹ cordis eorum in æternum. 28 Recordabuntur miraculorũ ejus, & convertentur coram Dño omnia extrema terræ: & adorabunt coram te omnes familiæ populorũ. 29 Quia *à Domino* eſt regnum & 30 poteſtatem habet in populis. Comedite & adorate omnes pingues terræ: coram eo curvabuntur omnes qui deſcendunt in domum ſepulchri: & animam impii nõn vivificabit. 31 Semen Abraham ſerviet coram eo: *&* annunciabit virtutem fortitudinis Dei generationi venturæ. 32 *Convertentur* filii eorum, & annunciabunt juſtitiam ejus populo *ejus* in futurum naſcituro, miracula quæ edidit.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

11 12 * ܥܠܝܟ ܐܫܬܕܝܬ ܡܢ ܡܪܒܥܐ܆ ܘܡܢ ܟܪܣܗ ܕܐܡܝ ܐܠܗܝ ܐܢܬ * ܠܐ ܬܪܚܩ ܡܢܝ. ܡܛܠ
13 14 ܕܐܘܠܨܢܐ ܩܪܒ ܘܠܝܬ ܕܡܥܕܪ: * ܐܚܕܘܢܝ ܬܘܪܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܥܓܠܐ ܕܒܝܫܢ ܚܒܫܘܢܝ: * ܦܬܚܘ
15 ܥܠܝ ܦܘܡܗܘܢ. ܐܝܟ ܐܪܝܐ ܕܛܪܦ ܘܢܗܡ: * ܘܐܝܟ ܡܝܐ ܐܬܐܫܕܬ. ܘܐܬܒܕܪܘ ܟܠܗܘܢ
16 ܓܪܡܝ: ܘܗܘܐ ܠܒܝ ܐܝܟ ܫܥܘܐ. ܘܐܬܡܣܝ ܓܘ ܡܥܝ: * ܘܝܒܫ ܐܝܟ ܚܨܦܐ ܕܦܚܪܐ
17 ܚܝܠܝ. ܘܠܫܢܝ ܕܒܩ ܒܫܡܝܐ ܕܚܟܝ: ܘܠܥܦܪܐ ܕܡܘܬܐ ܫܕܝܬܢܝ * ܡܛܠ ܕܐܚܕܪܘܢܝ
18 ܟܠܒܐ: ܘܟܢܘܫܬܐ ܕܒܝܫܐ ܚܕܪܘܢܝ. ܚܦܪܘ ܐܝܕܝ ܘܪܓܠܝ: * ܘܐܠܠܘ ܟܠܗܘܢ ܓܪܡܝ.
19 ܗܢܘܢ ܚܪܘ ܘܚܙܘ ܒܝ: * ܘܦܠܓܘ ܢܚܬܝ ܒܝܢܬܗܘܢ. ܘܥܠ ܠܒܘܫܝ ܐܪܡܝܘ ܦܣܐ:
20 21 * ܘܐܢܬ ܡܪܝܐ ܠܐ ܬܪܚܩ ܡܢܝ. ܦܣܘܩܐ. ܐܠܗܝ ܐܠܗܝ ܠܥܘܕܪܢܝ ܚܘܪ: * ܘܦܨܝܗ ܡܢ
22 ܣܝܦܐ ܠܢܦܫܝ. ܘܡܢ ܐܝܕܐ ܕܟܠܒܐ ܝܚܝܕܝܘܬܝ: * ܦܪܘܩܝܢܝ ܡܢ ܦܘܡܗ ܕܐܪܝܐ. ܘܡܢ
23 24 ܩܪܢܐ ܪܡܬܐ ܡܘܟܟܝ: * ܕܐܫܬܥܐ ܫܡܟ ܠܐܚܝ. ܘܒܓܘ ܟܢܘܫܬܐ ܐܫܒܚܟ: * ܕܕܚܠܝܢ
ܠܡܪܝܐ ܫܒܚܘܗܝ. ܘܟܠܗ ܙܪܥܗ ܕܝܥܩܘܒ ܐܝܩܪܘܗܝ: ܘܕܚܠܘ ܡܢܗ ܟܠܗ ܙܪܥܗ
25 ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܫܛ ܘܠܐ ܐܡܣܝ ܠܩܠܗ ܕܡܣܟܢܐ: ܘܠܐ ܐܗܦܟ ܐܦܘܗܝ ܡܢܗ.
26 ܘܟܕ ܩܥܐ ܠܘܬܗ ܫܡܥܗ: * ܡܢ ܩܕܡܝܟ ܗܝ ܬܫܒܘܚܬܝ ܒܥܕܬܐ ܪܒܬܐ. ܢܕܪܝ ܐܫܠܡ
27 ܩܕܡ ܕܕܚܠܝܢ ܠܗ: * ܢܐܟܠܘܢ ܡܣܟܢܐ ܘܢܣܒܥܘܢ. ܘܢܫܒܚܘܢ ܠܡܪܝܐ ܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ
28 ܠܗ: ܢܚܐ ܠܒܗܘܢ ܠܥܠܡܝܢ. * ܢܬܕܟܪܘܢ ܘܢܬܦܢܘܢ ܠܘܬ ܡܪܝܐ ܟܠܗܘܢ ܥܒܪܝܗ
29 ܕܐܪܥܐ: ܘܢܣܓܕܘܢ ܩܕܡܘܗܝ ܟܠܗܝܢ ܫܪܒܬܐ ܕܥܡܡܐ. * ܡܛܠ ܕܕܡܪܝܐ ܗܝ ܡܠܟܘܬܐ:
30 ܘܗܘ ܫܠܝܛ ܒܥܡܡܐ. * ܢܐܟܠܘܢ ܘܢܣܓܕܘܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܟܠܗܘܢ ܟܦܢܘܗܝ ܕܐܪܥܐ:
31 ܘܩܕܡܘܗܝ ܢܒܪܟܘܢ ܟܠ ܢܚܬܝ ܥܦܪܐ. ܢܦܫܝ ܠܗ ܗܝ ܚܝܐ: * ܙܪܥܐ ܕܢܦܠܚܝܘܗܝ
32 ܢܫܬܥܐ ܕܪܐ ܠܡܪܝܐ. * ܢܐܬܘܢ ܘܢܚܘܘܢ ܙܕܝܩܘܬܗ: ܠܥܡܐ ܕܡܬܝܠܕ ܕܥܒܕ ܡܪܝܐ.

11 In te conjectus ſum à ventre, & ab utero matris meæ Deus meus es. 12 Ne abſceſſeris à me: quoniam tribulatio appropinquavit, nec eſt qui adjuvet. 13 Circundederunt me tauri multi, & juvenci Baiſan obſederunt me. 14 Aperuerunt contra me os ſuum, ſicut leo rugiens & rapiens. 15 Et ſicut aqua effuſus ſum, & diſperſa ſunt omnia oſſa mea, & factum eſt cor meum tanquam cera, & emarcuerunt intra me viſcera mea. 16 Et aruit ut teſta figuli virtus mea, & lingua mea adhæſit cœlo palati mei, ſuper pulverem mortis projeciſti me. 17 Quoniam circundederunt me canes, & cœtus malorum cinxerunt me. Foderunt manus meas & pedes meos. 18 Et ululaverunt omnia oſſa mea. 19 Ipſi conſideraverunt & inſpexerunt me. Et diviſerunt veſtimenta mea inter ſe, & ſuper veſtem meam projecerunt ſortes. 20 At tu, Dñe, ne ſis procul à me, *Sectio* Deus me⁹; Deus me⁹, ad auxilium meũ attende. 21 Et ſerva à gladio animã meã, & de manu canum unitatem meã. 22 Libera me de ore leonis, & à cornu excelſo humilitatẽ meã: 23 Ut annuntiem nomen tuũ fratribus meis, & in medio congregationis te laudem. 24 Timentes Dñm, laudate eum: & omne ſemen Jacob honorate eum, & timete eum omne ſemen Iſraelis. 25 Quoniam non ſprevit neq; deſpexit clamorem pauperis, nec avertit faciem ſuam ab eo: quum clamavit ad eum, audivit illum. 26 E conſpectu tuo eſt laus mea in Eccleſia magna: vota mea perſolvam corã timentib⁹ eum. 27 Edent pauperes & ſaturabuntur, & laudabunt Dñm qui requirunt eum, vivet cor eorum in ſecula. 28 Reminiſcentur, & convertentur ad Dñm univerſi fines terræ, & corã eo proſternent ſe omnes familiæ gentium. 29 Quoniam Dñi eſt regnum, & ipſe dominatur gentibus. 30 Comedent & proſternent ſe corã Dño omnes famelici terræ, & coram eo genua flectent omnes deſcendentes in pulverem. 31 Anima mea ipſi vivit. Seminis quod illi ſerviet, generatio annuntiabit Dominum: 32 Venient atque indicabunt juſtitiam ejus populo qui naſcetur, quem faciet Dominus.

Verſio VULG. LAT.

11 In te projectus ſum ex utero: de ventre
12 matris meæ Deus meus es tu. Ne diſceſ-
ſeris à me: Quoniam tribulatio proxima
13 eſt: quoniã non eſt qui adjuvet. Circum-
dederunt me vituli multi: tauri pingues
14 obſederunt me: Aperuerunt ſuper me os
15 ſuum, ſicut leo rapiens & rugiens. Sicut
aqua effuſus ſum: & diſperſa ſunt omnia
oſſa mea. Factũ eſt cor meũ tanquã cera
16 liqueſcens in medio ventris mei. Aruit
tanquam teſta virtus mea, & lingua mea
adhæſit faucib' meis: & in pulverẽ mor-
17 tis deduxiſti me. Quoniã circumdederũt
me canes multi: conſilium malignantium
obſedit me. Foderunt man' meas & pe-
18 des meos: Dinumeraverunt omnia oſſa
mea. Ipſi verò conſideraverunt & inſpe-
19 xerunt me: Diviſerunt ſibi veſtimenta
mea, & ſuper veſtem meam miſerunt ſor-
20 tem. Tu autem, Domine, ne elongaveris
auxiliũ tuum à me: ad defenſionẽ meam
21 conſpice. Erue à framea, Deus, animam
meam: & de manu canis unicam meam.
22 Salva me ex ore leonis: & à cornib' u-
23 nicornium humilitatem meam. Narrabo
nomen tuum fratribus meis: in medio
24 eccleſiæ laudabo te. Qui timetis Do-
minum, laudate eum: univerſum ſemen
25 Jacob glorificate eum: Timeat eũ omne
ſemen Iſrael: quoniam non ſprevit, ne-
que deſpexit deprecationem pauperis:
Nec avertit faciem ſuam à me: & cùm
26 clamarem ad eum exaudivit me. Apud
te laus mea in eccleſia magna: vota mea
reddam in conſpectu timentium eum.
27 Edent pauperes, & ſaturabuntur: & lau-
dabunt Dominum qui requirunt eum: vi-
28 vent corda eorum in ſeculum ſeculi. Re-
miniſcentur et convertentur ad Dominũ
univerſi fines terræ: Et adorabunt in con-
ſpectu ejus univerſæ familiæ gentium.
29 Quoniam Domini eſt regnum: & ipſe
30 dominabitur gentium. Manducaverunt
& adoraverunt omnes pingues terræ: in
conſpectu ejus cadent omnes qui deſcen-
31 dunt in terram. Et anima mea illi vivet:
32 & ſemen meum ſerviet ipſi. Annuntia-
bitur Domino generatio ventura: & an-
nuntiabunt cœli juſtitiam ejus populo
qui naſcetur, quem fecit Dominus.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

11 † Ἐπὶ σὲ (ε) ἀπεῤῥίφην ἐκ μήτρας. † ἐκ κοιλίας
12 μητρός μου Θεός μου εἶ σύ, † Μὴ ἀποστῇς ἀπ' ἐμοῦ·
13 ὅτι θλῖψις ἐγγύς, † ὅτι οὐκ ἔστιν ὁ βοηθῶν. † Πε-
ριεκύκλωσάν με μόσχοι πολλοί, † ταῦροι πίονες πε-
14 ριέσχον με. † Ἤνοιξαν ἐπ' ἐμὲ τὸ στόμα αὐτῶν, † ὡς
15 λέων ὁ ἁρπάζων καὶ ὠρυόμενος. † Ὡσεὶ ὕδωρ ἐξ-
εχύθην, καὶ διεσκορπίσθη πάντα τὰ ὀστᾶ μου, † ἐγενή-
θη ἡ καρδία μου ὡσεὶ κηρὸς τηκόμενος ἐν μέσῳ τῆς
16 κοιλίας μου. † Ἐξηράνθη (ζ) ὡσεὶ ὄστρακον ἡ ἰσχύς
μου, † καὶ ἡ γλῶσσά μου κεκόλληται τῷ λάρυγγί μου,
17 † καὶ εἰς χοῦν θανάτου κατήγαγές με. † Ὅτι ἐκύ-
κλωσάν με κύνες πολλοί, † συναγωγὴ πονηρευομέ-
νων περιέσχον με. † ὤρυξαν χεῖράς μου καὶ (η) πόδας.
18 † Ἐξηρίθμησαν πάντα τὰ ὀστᾶ μου· † αὐτοὶ δὲ κατε-
19 νόησαν καὶ ἐπεῖδόν με. † Διεμερίσαντο τὰ ἱμάτιά μου
ἑαυτοῖς, † καὶ ἐπὶ τὸν ἱματισμόν μου ἔβαλον κλῆρον.
20 † Σὺ δὲ κύριε μὴ μακρύνῃς τὴν βοήθειάν μου, † εἰς τὴν
21 ἀντίληψίν μου πρόσχες. † Ῥῦσαι ἀπὸ ῥομφαίας τὴν
ψυχήν μου, † καὶ ἐκ χειρὸς κυνὸς (θ) τὴν μονογενῆ μου.
22 † Σῶσόν με ἐκ στόματος λέοντος, † καὶ ἀπὸ κερά-
23 των μονοκερώτων τὴν ταπείνωσίν μου. † Διηγήσο-
μαι τὸ ὄνομά σου τοῖς ἀδελφοῖς μου, † ἐν μέσῳ
24 ἐκκλησίας ὑμνήσω σε. † Οἱ φοβούμενοι κύριον αἰνέ-
σατε αὐτόν, † ἅπαν τὸ σπέρμα Ἰακὼβ δοξάσατε
25 αὐτόν, † φοβηθήτωσαν αὐτὸν ἅπαν τὸ σπέρμα Ἰσ-
ραήλ. † ὅτι οὐκ ἐξουδένωσεν οὐδὲ προσώχθισε τῇ
δεήσει τοῦ πτωχοῦ, † οὐδὲ ἀπέστρεψε τὸ πρόσωπον
αὐτοῦ ἀπ' ἐμοῦ· † καὶ ἐν τῷ κεκραγέναι με πρὸς αὐ-
26 τὸν (ι) εἰσήκουσέ μου. † Παρὰ σοῦ ὁ ἔπαινός μου
ἐν ἐκκλησίᾳ μεγάλῃ, † τὰς εὐχάς μου ἀποδώσω
27 ἐνώπιον (κ) τῶν φοβουμένων αὐτόν. † Φάγονται πέ-
νητες καὶ ἐμπλησθήσονται, † καὶ αἰνέσουσι κύριον οἱ
ἐκζητοῦντες αὐτόν, † ζήσονται αἱ καρδίαι αὐτῶν
28 εἰς αἰῶνα αἰῶνος. † Μνησθήσονται καὶ ἐπιστραφή-
σονται πρὸς κύριον πάντα (λ) τὰ πέρατα τῆς γῆς,
† καὶ προσκυνήσουσιν ἐνώπιον αὐτοῦ πᾶσαι αἱ πατριαὶ
29 τῶν ἐθνῶν. † Ὅτι τοῦ κυρίου ἡ βασιλεία, καὶ αὐτὸς
30 δεσπόζει τῶν ἐθνῶν. † Ἔφαγον καὶ προσεκύνησαν πάν-
τες οἱ πίονες τῆς γῆς· † ἐνώπιον αὐτοῦ προπεσοῦνται
31 πάντες οἱ καταβαίνοντες εἰς τὴν γῆν. † Καὶ ἡ ψυχή
μου αὐτῷ ζῇ, † καὶ τὸ σπέρμα μου δουλεύσει
32 αὐτῷ. † Ἀναγγελήσεται τῷ κυρίῳ γενεὰ ἡ ἐρχο-
μένη· † καὶ ἀναγγελοῦσι τὴν δικαιοσύνην αὐτοῦ
† λαῷ τῷ τεχθησομένῳ, ὃν ἐποίησεν (μ) ὁ κύριος.

MS.A. (ε) ἐπερίφην (ζ) ὡς (η) πόδας μου, (θ) τὴν μονογενῆν μου. (ι) ἐπήκουσέν (κ) πάντων τῶν (λ) τὰ πέρα (μ) κύριος.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

In te projectus ſum ex utero:
10 De ventre matris meæ Deus
meus es tu: Ne diſcedas à me.
11 Quoniã [e] tribulatio proxi-
ma eſt: quoniam non eſt qui adju-
vet. 12 Circundederunt me vi-
tuli multi: (f) tauri pingues ob-
ſederunt me. 13 Aperuerunt ſuper
me os ſuum, ſicut leo [f] rapiens,
& rugiens. 14 Sicut aqua (g) ef-
fuſus ſum, et diſperſa ſunt omnia
oſſa mea. 15 Factum eſt cor meũ,
ſicut cera liqueſcens, de medio
ventris mei. 16 Exaruit velut te-
ſta, virtus mea: & lingua mea
adhæſit faucibus meis, et in pul-
verem mortis deduxiſti me.
17 Quoniam circundederunt me
canes multi: conſiliũ malignantiũ
obſedit me. 18 Foderũt man' me-
as, & (h) pedes: Dinumeraverunt
omnia oſſa mea: 19 Ipſi verò con-
ſideraverunt, & inſpexerunt: Di-
viſerunt ſibi veſtimenta mea, &
ſuper veſtẽ mea miſerunt ſortẽ.
20 Tu autem, Domine, ne elonga-
veris (i) auxilium meũ: in defen-
ſionem meam reſpice. 21 Erue à
framea animam meã: et de manu
canis (k) unicam meam. 22 Salvũ
me fac de ore leonis: & à corni-
bus unicornium [g] humilitatem
meam. 23 Narrabo nomen tuum
fratribus meis: in medio Eccleſiæ
cantabo te. 24 Qui timetis Domi-
nũ, laudate eum: [h] univerſum
ſemen Jacob (l) magnificate eũ.
25 [i] Timeat eum omne ſemẽ Iſ-
rael; quoniam non ſprevit, neque
deſpexit deprecationem pauperis:
26 Neque avertit faciem ſuam à
me: & cùm clamarẽ ad eũ, ex-
audivit me. 27 (m)[k] A te laus
mea (n) in Eccleſia magna: vota
mea reddam in conſpectu timen-
tium eũ. 28 Edent pauperes, &
ſaturabuntur, & laudabunt Do-
minum, qui requirunt eũ: vivent
corda eorum in ſeculum ſeculi.
29 Reminiſcentur, & converten-
tur ad Dominũ univerſi fines ter-
ræ: 30 Et adorabunt in conſpectu
ejus univerſæ (o) familiæ gentiũ.
31 Quoniam Domini eſt regnũ:
& ipſe dominabitur gentium.
32 Manducaverunt, & adora-
verunt omnes (p) pingues terræ: in conſpectu ejus (q) procident omnes qui deſcendunt in (r) terram. 33 Et anima (ſ)[l] mea ipſi vivet, & ſemen meum ſerviet illi. 34 Annuntiabitur 31 32
(t) Domino generatio ventura: & (u) annuntiabunt iuſtitiam ejus, populo qui naſcetur, (x) quem fecit Dominus.

Verſio ÆTHIOPICA.

11 ሳዕሌከ፡ተገደፍኩ፡ውስተ፡እማኅፀን፡፡=፡ እ 10
ምከርሠ፡ እምየ፡ አንተ፡ አምላኪየ፡፡ሊትር
12 ሐቅ፡ እምኔየ፡ 11. እስመ፡አልጸቁ፡ እትመ
ንድብ፡፡እስመ፡አልቦ፡ዘይረድአኒ፡፡=፡ ዓገ 12
13 ቱኒ፡ አልህምት፡ ብዙኃን፡፡ወአኃዙኒ፡ አስዋ
ር፡ስቡሐን፡፡=፡ ወአብቀው፡አፈሆሙ፡ ላዕ 13
14 ሌየ፡፡ከመ፡ አንበሳ፡ ዘጽኑኅ፡ ለመሲጥ፡፡=፡
ተከዕውኩ፡ከመ፡ማይ፡ ወተዘርወ፡ኵሉ፡አ 14
15 ዕጽምትየ፡፡=፡ ወኮነ፡ልብየ፡ከመ፡ሰምዕ፡ዘ 15
ይትመሰው፡በማእከለ፡ከርሥየ፡፡=፡ ወየብ 16
ሰ፡ከመ፡ ገልዕ፡ ኃይልየ፡፡ወጠግዓ፡ ልሳንየ፡ በ
16 ጕርዔየ፡፡ወአውረድከኒ፡ ውስተ፡ መሬተ፡ ሞ
ት፡፡=፡ ዓገቱኒ፡ከለባት፡ብዙኃን፡፡ወአኃዙ 17
ኒ፡ማኅበርሙ፡ለእኩያን፡፡=፡ ቀነውኒ፡እደ 18
17 ዊየ፡ ወእገርየ፡፡ወኈለቁ፡ ኵሉ፡ አዕጽምት
የ፡፡=፡ እሙንቱሰ፡ጠየቁሙ፡ተዐወሩኒ፡፡ወ 19
ተካፈሉ፡አልባስየ፡ለርእሶሙ፡፡ወተዐጸው፡ደ
18 በ፡አረዝየ፡፡=፡ አንተ፡እግዚኦ፡ሊትርሐቅ፡ 20
እምኔየ፡፡ወነጽር፡ውስተ፡ረዲኦትየ፡፡=፡ አ 21
19 ድኅና፡ እምኵናት፡ ለነፍስየ፡፡ወእምእደ፡ከ
ለባት፡ ለብሕቱትየ፡፡=፡ አድኅነኒ፡ እምአ 22
20 ፉ፡ አንበሳ፡፡ወእምአቅርንት ፡ ዘአሐዱ፡ ቀር
ኑ ፡ ለብሕቱትየ፡፡=፡ እነግሮሙ ፡ ስመከ፡ 23
21 ለአኃዊየ፡፡ወበማእከለ ፡ ማኅበር ፡ እሴብሐ
ከ፡፡=፡ እለ፡ ትፈርህዎ፡ ለእግዚአብሔር፡ 24
22 ሰብሕዎ፡፡ኵልክሙ፡ዘርአ፡ያዕቆብ፡አክብር
ዎ፡፡=፡ ወፍርህዎ፡ኵልክሙ፡ዘርአ፡እስራ 25
23 ኤል፡፡እስመ፡ሊመነነ፡ወሊተቈጥዓ፡ስእለተ፡
ነደይ፡፡=፡ ወሊሜጠ፡ገጾ፡እምኔየ፡፡ሶበ፡ጸ 26
24 ራኅኩ፡ኃቤሁ፡ይሰምዓኒ፡፡=፡ እምኃቤከ፡ 27
ክብርየ፡በማኅበረ፡ዐቢይ፡፡ወአሁብ፡ ብፅዓት
25 የ፡በቅድመ፡እለ፡ይፈርህዎ፡፡=፡ ይብልዑ፡ነ 28
ደያን፡ወይጸግቡ፡፡ወይሴብሕዎ፡ ለእግዚአብ
ሔር፡ ኵሎሙ፡ እለ፡የኃሥሥዎ፡፡ወየሐዩ፡ልቦ
ሙ፡ለዓለም፡ዓለም፡፡=፡ ወይዜከሩ፡ወይት 29
26 መየጡ፡ ኀበ፡ እግዚአብሔር፡ ኵሎሙ፡አጽ
ናፈ፡ምድር፡፡=፡ወይሰግዱ፡ቅድሜሁ፡ኵሎ 30
ሙ፡በሐውርተ፡ አሕዛብ፡፡=፡ እስመ፡ለእ 31
27 ግዚአብሔር፡ መንግሥት፡፡ወውእቱ፡ይኴንኖ
ሙ፡ለአሕዛብ፡፡=፡ ብልዑ፡ወሰገዱ፡ኵልክ 32
ሙ፡ ጥሉላነ፡ ምድር፡፡ቅድሜሁ፡ ይወድቁ፡
28 ኵሎሙ፡እለ፡ይወርዱ፡ውስተ፡ ምድር፡፡=፡
ወነፍስየኒ፡ ሎቱ፡ ተሐዩ፡፡ወዘርእየኒ፡ ሎቱ፡
ይትቀነይ፡፡=፡ ትዜንዎ፡ለእግዚአብሔር፡ 33
ትውልድ፡እንተ፡ ትመጽእ፡፡ወይዜንው፡ጽድ 34
29 ቀ፡ ዚአሁ፡፡ሕዝብ ፡ ዘይትወለድ ፡ ዘገብረ፡
30 እግዚአብሔር፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [e] proximus ſum tribulationi: & non eſt [f] paratus ad prædam. Sicut [g] unicam meam. [h] vos omnes univerſum [i] Timete eum vos omnes ſemen [k] Apud te laus [l] quidem mea

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

11 12 * ألقيت إليك من الأحشاء ومن بطن أمي أنت إلهي * فلا تبعد عني * فإن الشدة قد قربت
13 14 مني * وليس من معين * أحاطت بي عجول كثيرة * واكتنفتني ثيران سمان * فتحت علي
15 أفواهها * مثل الأسد الزائر المفترس * أهرقت مثل الماء * وتحللت جميع عظامي * وصار قلبي
16 مثل الشمع الذائب في بطني * يبست قوتي مثل الفخار * والتصق لساني بحنكي * وإلى أبواب
17 الموت أقربتني * أحاطت بي كلاب كثيرة * اكتنفتني جماعة الأشرار * ثقبوا يدي ورجلي *
18 19 * وأحصوا جميع عظامي * هم تأملوا فأبصروني * واقتسموا بينهم ثيابي * وعلى لباسي اقترعوا *
20 21 * وأنت يا رب لا تبعد من معونتي * أنظر في نصرتي * خلص من السيف نفسي * ومن يدي
22 الكلبة التي احتوشتني * خلصني من فم الأسد * وتواضعي من قرن ذي القرن الواحد *
23 24 * سأخبر باسمك إخوتي * وبين الجماعة أسبحك * أيها الخائفون من الرب سبحوه * يا جميع ذرية
25 يعقوب مجدوه * وليخشه كل زرع إسرائيل * لأنه لم يرذل ولم يكن دعوة المساكين * ولا صرف وجهه
26 عني * وعند صراخي إليه أجابني * من عندك مدحي في الجمع العظيم * أشكرك وأوفي نذوري
27 قدام خائفيه * يأكل المساكين ويشبعون * ويسبح الرب الذين يطلبونه * تحيا قلوبهم إلى أبد
28 الأبد * يتفكرون ويرجعون إلى الرب جميع أقطار الأرض * ويسجد قدامه كل قبائل الأمم *
29 30 * لأن الملك للرب وسلطانه على الأمم * يأكل ويسجد قدام الرب كل ملوك الأرض * ويخر
31 قدامه جميع الهابطين إلى التراب * له تحيى نفسي * وذريتي له تتعبد * تخبر بالرب الجيل
32 الآتي * ويحدثون ببره * لشعب الذي يولد صنع الرب * الليلويا *

Projectus ſum ad te, à viſceribus & ab 11
utero matris meæ tu es Deus meus. Ne 12
igitur elongêris à me, quoniam tribulatio
jam obumbravit me, & non eſt adjutor.
Circundederunt me vituli multi: & obſe- 13
derunt me tauri pingues. Aperuerunt ad- 14
verſùs me ora ſua veluti leo rugiens de-
prædans. Effuſus ſum veluti aqua, & 15
diſſoluta ſunt omnia oſſa mea: & factum
eſt cor meum tanquam cera liqueſcens in
ventre meo. Aruit virtus mea veluti te- 16
ſta, & adhæſit lingua mea palato meo, et
ad portas mortis admoviſti me. Circun- 17
dederunt me canes multi: obſedit me tur-
ba malorum; foderunt manus meas, &
pedes meos. Et numeraverunt omnia oſſa 18
mea; Ipſi conſideraverunt et inſpexerunt
me. Et diviſerunt inter ſe veſtes meas, 19
& ſuper veſtem meam ſortiti ſunt. Et 20
tu, O Domine mi, ne elongêris ab auxilio
meo: reſpice in adjutorium meum. Libe- 21
ra à gladio animam meam, & à manibus
canis quæ complexa eſt me: Salva me de 22
ore leonis, & humilitatem meam à cornu
unicornis. Annuntiabo nomen tuum fra- 23
tribus meis, & inter congregationem te ce-
lebrabo. O timentes Dominum, laudate 24
eum: O omnis progenies Jacob, glorificate
eum. Timeatque eum omne ſemen Iſrael:
Quoniam ipſe non deſpexit, neque abhor- 25
ruit deprecationem pauperis, neque avertit
faciem ſuam à me; & cùm clamâſſem ad
ipſũ, exaudivit me. A conſpectu tuo lau- 26
datio mea in Eccleſia magna. Gratias agã
tibi, et reddam vota mea coram timentibus
eum. Comedent pauperes, & ſaturabun- 27
tur, & laudabunt Dominum, qui quærunt
eum. Vivent corda eorum in ſeculum ſe-
culi. Conſiderabunt et revertentur ad Do- 28
minum univerſi fines terræ: & adorabunt
coram ipſo omnes tribus gentium. Quo- 29
niam regnum eſt Domino, & imperium e-
jus ſuper gentes. Manducabunt, & ado- 30
rabunt coram Domino omnes reges terræ,
& incurvabuntur ante eum omnes deci-
dentes in pulverem. Ipſi vivet anima mea,
Et progenies mea ei ſerviet. Annuntiabit 31
de Domino generatio ventura, Et loquen- 32
tur juſtitiam ejus: ut videat populus qui
naſcetur beneficia Domini. Alleluia.

תהלים : כג כד כה

PSAL. XXIII. כג

germinis tuguriis In .deficiam non ,me *pascens* Dominus .Davidi Canticum
1 מִזְמוֹר לְדָוִד יְהוָה רֹעִי לֹא אֶחְסָר׃ בִּנְאוֹת דֶּשֶׁא 2
: convertet meam Animam .me ducet requietum aquas *super* : me accubare faciet
3 יַרְבִּיצֵנִי עַל־מֵי מְנֻחוֹת יְנַהֲלֵנִי׃ נַפְשִׁי יְשׁוֹבֵב
vallem *in* ambulavero cùm Etiam.ſuum nomen propter juſtitiæ *orbitas in* me ducet
4 יַנְחֵנִי בְמַעְגְּלֵי־צֶדֶק לְמַעַן שְׁמוֹ׃ גַּם כִּי־אֵלֵךְ בְּגֵיא
, *tuum fulcrum* & ,tua virga :mecum tu quoniam,malum timebo non ,mortis umbræ
צַלְמָוֶת לֹא־אִירָא רָע כִּי־אַתָּה עִמָּדִי שִׁבְטְךָ וּמִשְׁעַנְתֶּךָ
Impinguâſti:meos hoſtes contra menſam *meas facies ad Diſpones* .me conſolabuntur ipſa
5 הֵמָּה יְנַחֲמֻנִי׃ תַּעֲרֹךְ לְפָנַי שֻׁלְחָן נֶגֶד צֹרְרָי דִּשַּׁנְתָּ
miſericordia & bonum Veruntamen .*exuberans* meus calix ,meum caput oleo in
6 בַשֶּׁמֶן רֹאשִׁי כּוֹסִי רְוָיָה׃ אַךְ טוֹב וָחֶסֶד
longitudinem in Domini *domum in revertar* &:meæ vitæ diebus omnibus me ſequentur
יִרְדְּפוּנִי כָּל־יְמֵי חַיָּי וְשַׁבְתִּי בְּבֵית־יְהוָה לְאֹרֶךְ
.dierum
יָמִים׃

PSAL. XXIV. כד

habitantes & , orbis : ejus plenitudo & ,terra Domini .canticum Davidi
1 לְדָוִד מִזְמוֹר לַיהוָה הָאָרֶץ וּמְלוֹאָהּ תֵּבֵל וְיֹשְׁבֵי
.eam firmavit flumina ſuper & ; eam fundavit maria ſuper ipſe Quia .eo in
2 בָהּ׃ כִּי־הוּא עַל־יַמִּים יְסָדָהּ וְעַל־נְהָרוֹת יְכוֹנְנֶהָ׃
Mundus ? ejus ſanctitatis loco in ſtabit quis & ? Domini montem in aſcendet Quis
3 מִי־יַעֲלֶה בְהַר־יְהוָה וּמִי יָקוּם בִּמְקוֹם קָדְשׁוֹ׃ נְקִי
4 juravit nec ; *meam* animam vanum in accepit non qui , corde *purus* & ,*volis*
כַפַּיִם וּבַר־לֵבָב אֲשֶׁר לֹא־נָשָׂא לַשָּׁוְא נַפְשִׁי וְלֹא נִשְׁבַּע
.ſuæ ſalutis Deo à juſtitiam & ; Domino à benedictionem Accipiet .*dolo in*
5 לְמִרְמָה׃ יִשָּׂא בְרָכָה מֵאֵת יְהוָה וּצְדָקָה מֵאֱלֹהֵי יִשְׁעוֹ׃
Elevate .Selah , Jahacob *tuas facies* quærentium ; eum quærentiũ generatio Hæc
6 7 זֶה דּוֹר דֹּרְשָׁו מְבַקְשֵׁי פָנֶיךָ יַעֲקֹב סֶלָה׃ שְׂאוּ
.gloriæ rex introibit & ; *ſeculi fores* vos elevate & , veſtra capita portæ
שְׁעָרִים רָאשֵׁיכֶם וְהִנָּשְׂאוּ פִּתְחֵי עוֹלָם וְיָבוֹא מֶלֶךְ הַכָּבוֹד׃
.*belli* potens Dominus :potens &,fortis Dominus ? gloriæ rex iſte Quis
8 מִי זֶה מֶלֶךְ הַכָּבוֹד יְהוָה עִזּוּז וְגִבּוֹר יְהוָה גִּבּוֹר מִלְחָמָה׃
.gloriæ rex introibit & ; *ſeculi fores* vos elevate &,veſtra capita portæ Elevate
9 שְׂאוּ שְׁעָרִים רָאשֵׁיכֶם וּשְׂאוּ פִּתְחֵי עוֹלָם וְיָבֹא מֶלֶךְ הַכָּבוֹד׃
.Selah , gloriæ rex ipſe ,exercituum Dominus ? gloriæ rex iſte *ipſe* Quis
10 מִי הוּא זֶה מֶלֶךְ הַכָּבוֹד יְהוָה צְבָאוֹת הוּא מֶלֶךְ הַכָּבוֹד סֶלָה׃

PSAL. XXV. כה

.levabo meam animam DOMINE te Ad .Davidi
1 לְדָוִד אֵלֶיךָ יְהוָה נַפְשִׁי אֶשָּׂא׃

תרגום TARGUM.

כג

1 תּוּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד יְיָ זָן יַת עַמֵּיהּ בְּמַדְבְּרָא לָא
2 חֲסַרוּ כוּלָּא׃ בַּאֲתַר צְיָחֲתָא בַּהֲנָיַת דִּתְאִין
3 יַשְׁרְנַנִי עַל מֵי נְיָחָא דַבְּרַנִי׃ נַפְשִׁי יְתִיב
4 דַּבְּרַנִי בְהִלְכַת צִדְקָא מְטוּל שְׁמֵיהּ׃ בְּרַם כַּד
אֵיזֵיל בְּגָלוּתָא בְּמֵישַׁר טוּלָא דְמוֹתָא לָא אֶדְחַל
מִבִּישְׁתָּא מְטוּל דְּמֵימְרָךְ בְּסַעְדִי תְּנָרָךְ תְּרִיצָא
5 וְאוֹרַיְתָךְ הִנּוּן יְנַחֲמוּנַנִי׃ סַדַּרְתְּ קֳדָמַי פְּתוֹר
קֳבֵיל מְעִיקֵי דַהֲנַתָּא בִּמְשַׁח רְבוּתָא רֵישׁ כַּהֲנַי
6 כְּלִידִי רְוִיחָא׃ בְּרַם טָבְתָא וְחִסְדָּא יִרְדְּפוּנַנִי
כָּל יוֹמֵי חַיַּי כַּד אֵתֵיב בְּבֵית מַקְדְּשָׁא דַיְיָ לְנַגְרָא
דְיוֹמָנָא׃

כד

1 לְדָוִד תּוּשְׁבַּחְתָּא לַיְיָ הָא אַרְעָא וּבְרִיָּתְהָא
2 תֵּבֵל וְדְיָתְבִין בַּהּ׃ מְטֻל דִּי הוּא עַל יַמַּיָּא
3 שַׁוֵּי שִׁתְסָהָא וְעַל נַהֲרָוָתָא אַתְקְנָהָא׃ מַן יִסַּק
לְטוּר בֵּית מַקְדְּשָׁא דַיְיָ וּמַן יְקוּם בַּאֲתַר
4 קוּדְשַׁיָּא׃ דְּכֵי אַיְדַיָּא וּבְרִיר רַעְיוֹנָא דְּלָא אוֹמֵי
עַל שִׁקְרָא לְחַיָּבָא נַפְשֵׁיהּ וְלָא קָאֵם לִנְכִלָא׃
5 יְקַבֵּל בִּרְכְתָא מִן קֳדָם יְיָ וְצִדְקְתָא מֵאֱלָהָא
6 דְפוּרְקָנֵיהּ׃ דֵּנָן דָּרָא דְתָבְעִין לֵיהּ דְּבָעֵין סְבַר
7 אַפּוֹי יַעֲקֹב לְעָלְמִין׃ זְקֻפוּ תַּרְעֵי בֵית מַקְדְּשָׁא
רֵישֵׁיכוֹן וְאִזְדַּקְפוּ מַעֲלָנֵי עָלְמָא וְיֵעוֹל מֶלֶךְ
8 יַקִּירָא׃ מַן הוּא דְכֵי מֶלֶךְ יַקִּירָא יְיָ עָשִׁין וְגִבָּר
9 יְיָ מָרֵי גְבוּרְתָא וְעָבֵיד קְרָבָא׃ זְקוֹפוּ תַּרְעֵי
נִגְנְתָא דְעֵדֶן רֵישֵׁיכוֹן וְאִזְדַּקְפוּ מַעֲלָנֵי עָלְמָא
10 וְיֵעוֹל מַלְכָּא יַקִּירָא׃ מַן הוּא דֵיכִי מַלְכָּא
יַקִּירָא יְיָ צְבָאוֹת הוּא מֶלֶךְ יַקִּירָא לְעָלְמִין׃

כה

1 לְדָוִד קֳדָמָךְ יְיָ נַפְשִׁי אַטּוֹל בִּצְלוֹ׃

PARAPH CHALD. Verſ. Lat.

Hymnus Davidi. 1

PSAL. XXIII.

DOminus pavit populum ſuum in deſerto : non defuit quicquam eis. 2 In loco arido in amœnitate herbarum fecit quieſcere me, ſuper aquas quietis deduxit me. 3 Animam meam reſtituet : ducit me per ſemitas *juſtitiæ* propter *nomen ſuum*. 4 Etiam cum ambulavero *in captivitatem* per planitiem umbræ mortis, non timebo malum ; quoniam verbum tuum in auxilio meo : virga tua *recta* & lex tua ipſa me conſolabuntur. 5 Paráſti in conſpectu meo menſam adverſus moleſtatores meos; impinguâſti oleo unctionis *caput* Sacerdotum *meorum* : calix verò meus amplus. 6 Sed & benignitas & miſericordia ſubſequentur me omnibus diebus vitæ meæ, cùm habitavero in domo ſanctuarii Domini in longitudinem dierum.

Davidi Hymnus. 1

PSAL. XXIV.

DOmini eſt terra, & creaturæ ejus ; orbis, & qui habitant in eo. 2 Quoniam ſuper maria poſuit fundamenta ejus, & ſuper flumina confirmavit eum. 3 Quis *aſcendet* in montem domus ſanctuarii Domini, & quis ſtabit in loco *ſanctitatum* ? 4 Innocens manibus & mundus voluntate, qui non juravit in *falſum* ad damnationem animæ ſuæ, neq; pepigit in fraudem. 5 Accipiet benedictionem à conſpectu Domini, & juſtitiam à Deo redemptionis ſuæ. 6 Hæc eſt generatio quærentium eum, inquirentium aſpectum faciei ejus *Jaacob*, in æternum. 7 Levate portæ domus ſanctuarii capita veſtra, & erigimini valvæ æternæ, ut introeat rex gloriæ. 8 Quis eſt iſte rex glorioſus ? Dominus fortis & potens, Dominus auctor virtutis *&* faciens bellum. 9 Levate portæ horti deliciarum capita veſtra, & erigimini valvæ æternæ, ut introeat rex glorioſus. 10 Quis eſt iſte rex gloriæ ? Dominus exercituum ipſe eſt rex glorioſus in æternum.

Davidi. 1

PSAL. XXV.

COram te Domine animam meam levabo in oratione.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܟܓ *

1 * ܕܘܝܕ. ܥܠ ܦܬܘܪܐ ܕܡܠܟܘܬܗ. ܠܢ ܕܝܢ ܗܫܐ ܪܘܚܢܐܝܬ
ܡܥܠܬܐ ܕܥܡܐ ܕܟܪܝܣܛܝܢܐ ܚܕܬܐ. ܦܬܓܡܐ ܝܙ. ܡܪܝܐ ܢܪܥܝܢܝ ܘܡܕܡ ܠܐ ܢܚܣܪܢܝ:
2 * ܘܥܠ ܡܪܓܐ ܕܥܘܫܢܐ ܢܫܪܝܢܝ. ܘܥܠ ܡܝܐ ܢܝܚܐ ܢܕܒܪܢܝ: * ܢܦܫܝ ܐܦܢܝ ܘܕܒܪܢܝ
3 4 ܒܫܒܝܠܐ ܕܬܪܝܨܘܬܐ. ܡܛܠ ܫܡܟ * ܐܦܢ ܐܗܠܟ: ܒܢܚܠܐ ܕܛܠܠܝ ܡܘܬܐ. ܠܐ ܐܕܚܠ ܡܢ
5 ܒܝܫܬܐ ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܥܡܝ: ܫܒܛܟ ܘܚܘܛܪܟ ܗܢܘܢ ܒܝܐܘܢܝ. * ܛܝܒܬ ܩܕܡܝ ܦܬܘܪܐ
6 ܠܘܩܒܠ ܒܥܠܕܒܒܝ: ܘܐܫܚܬ ܒܡܫܚܐ ܪܫܝ ܘܟܣܝ ܪܘܐ ܐܝܟ ܚܡܪܐ. * ܛܝܒܘܬܟ ܘܚܢܢܟ
ܢܪܕܦܘܢܢܝ: ܟܠܗܘܢ ܝܘܡܬܐ ܕܚܝܝ. ܘܐܥܡܪ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܠܐܘܪܟܐ ܕܝܘܡܬܐ:

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܟܕ *

1 * ܕܘܝܕ. ܥܠ ܝܘܡܐ ܩܕܡܝܐ ܕܫܪܝ ܐܠܗܐ ܠܡܒܪܐ ܒܪܝܬܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܕ.
2 ܕܡܪܝܐ ܗܝ ܐܪܥܐ ܒܡܘܠܝܗ. ܬܒܝܠ ܘܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ: * ܡܛܠ ܕܗܘ ܒܝܡܡܐ ܫܬܣ
3 ܫܬܐܣܝܗ. ܘܒܢܗܪܘܬܐ ܐܬܩܢܗ: * ܡܢܘ ܢܣܩ ܠܛܘܪܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܡܢܘ ܢܩܘܡ
4 ܒܛܘܪܗ ܩܕܝܫܐ: * ܐܝܢܐ ܕܕܟܝܢ ܐܝܕܘܗܝ ܘܓܒܐ ܒܠܒܗ. ܘܠܐ ܝܡܐ ܒܢܦܫܗ ܒܕܓܠܘܬܐ ܘܠܐ
5 6 ܝܡܐ ܒܢܟܠܐ: * ܗܢܐ ܢܩܒܠ ܒܘܪܟܬܐ ܡܢ ܡܪܝܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܡܢ ܐܠܗܐ ܦܪܘܩܢ: * ܗܢܐ
7 ܕܪܐ ܕܒܥܐ ܘܡܣܟܐ. ܠܚܙܘܐ ܕܐܦܝܟ ܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ: * ܐܪܝܡܘ ܬܪܥܐ ܪܫܝܟܘܢ.
8 ܐܬܬܪܝܡܘ ܬܪܥܐ ܕܡܢ ܥܠܡ: ܢܥܘܠ ܡܠܟܐ ܕܐܝܩܪܐ. * ܡܢܘ ܗܢܘ ܡܠܟܐ
9 ܕܐܝܩܪܐ: ܡܪܝܐ ܥܫܝܢܐ ܘܓܢܒܪܐ. ܡܪܝܐ ܓܢܒܪܐ ܘܩܪܒܬܢܐ: * ܐܪܝܡܘ ܬܪܥܐ
10 ܪܫܝܟܘܢ. ܐܬܬܪܝܡܘ ܬܪܥܐ ܕܡܢ ܥܠܡ: ܢܥܘܠ ܡܠܟܐ ܕܐܝܩܪܐ. * ܡܢܘ ܗܢܘ ܡܠܟܐ
ܕܐܝܩܪܐ: ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܗܘܝܘ ܡܠܟܐ ܡܝܩܪܐ ܠܥܠܡ.

* ܫܘܒܚܐ ܘܪܫܝܬ ܕܪܓܐ *

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܟܗ *

1 * ܕܘܝܕ. ܡܟܬܒܢܘܬܐ ܕܡܘܕܝܢܘܬܐ. ܦܬܓܡܐ ܡܗ. ܠܘܬܟ ܡܪܝܐ ܢܦܫܝ ܐܪܝܡܬ.

PSAL. XXIII.

Davidis, de ſua menſa regia. Nobis autem nunc ſpiritualiter, ingreſſus populi Chriſtianorum recens. Verſ. 17. 1

DOminus paſcet me, & quicquam non patietur deeſſe mihi. 2 Et ſuper prata fortitudinis habitare me faciet, & ſuper aquas tranquillas ducet me. 3 Animam meam convertit, & duxit me per ſemitas æquitatis. Ob nomen tuum, 4 Etiamſi ambulavero per valles umbrarum mortis, non timebo malum, nam tu mecum es. Virga tua & baculus tuus, ipſa me conſolata ſunt. 5 Straviſti coram me menſam è regione hoſtium meorum. Impinguâſti caput meum unguento, & calix meus inebriat ut merum. 6 Gratia tua & miſericordiæ tuæ proſecutæ ſunt me omnibus diebus vitæ meæ, ut habitem in domo Domini longitudine dierum.

PSAL. XXIV.

Davidis. De prima die quà cœpit Deus condere creaturas. Verſ. 24. 1

DOmini eſt terra cum plenitudine ſua : orbis, & omnes habitatores ejus. 2 Quoniam ipſe in mari poſuit fundamenta ejus, & in fluminibus firmavit eam. 3 Quis aſcendet in montem Domini, & quis manebit in monte ejus ſancto ? 4 Is cujus puræ ſunt manus, & electus eſt in corde ſuo : nec jurat in anima ſua cum mendacio, neq; jurat cum dolo. 5 Hic accipiet benedictionem à Domino, & juſtitiam à Deo ſalvatore noſtro. 6 Hæc eſt generatio quærens & expectans ſpeciem vultûs tui, Deus Jacob. 7 Tollite portæ capita veſtra, attollimini portæ quæ à ſeculo eſtis, ingrediatur rex honorum. 8 Quis eſt iſte rex honorum? Dominus potens & gigas, Dominus gigas & bellator. 9 Tollite portæ capita veſtra, attollimini portæ quæ à ſeculo eſtis, ingrediatur rex honorum. 10 Quis eſt iſte rex honorum ? Dominus fortis, ipſe eſt rex honorandus in æternum.

Gloria, & initium gradûs.

PSAL. XXV. Davidis.

Documentum gratiarum actionis. Verſ. 45. 1

AD te Domine, animam meam levavi ;

Verſio VULG. LAT.

1 Pſalmus David. XXII.

DOminus regit me, & nihil mihi deerit:
2 In loco paſcuæ ibi me collocavit.
Super aquam refectionis educavit
3 me: Animam meam convertit. Deduxit
me ſuper ſemitas juſtitiæ, propter nomen
4 ſuum. Nam, & ſi ambulavero in medio
umbræ mortis, non timebo mala: quoniam
tu mecum es. Virga tua, & baculꝰ
5 tuus, ipſa me conſolata ſunt. Paráſti in
conſpectu meo menſam adverſùs eos, qui
tribulant me. Impinguáſti in oleo caput
meũ: & calix meus inebrians quàm præ-
6 clarus eſt! Et miſericordia tua ſubſequetur
me omnibus diebus vitæ meæ: Et ut
inhabitem in domo Domini, in longitudinem dierum.

1 Primâ ſabbati, Pſalmus David. XXIII.

DOmini eſt terra, & plenitudo ejus:
orbis terrarum, & univerſi qui habi-
2 tant in eo. Quia ipſe ſuper maria fun-
davit eũ: & ſuper flumina præparavit eũ.
3 Quis aſcendet in montẽ Dñi? aut quis ſta-
4 bit in loco ſancto ejus? Innocens manibus,
& mundo corde, qui non accepit in
vano animã ſuã, nec juravit in dolo pro-
5 ximo ſuo. Hic accipiet benedictionem à
Domino: & miſericordiam à Deo ſalu-
6 tari ſuo. Hæc eſt generatio quærentium
7 eũ, quærentiũ faciẽ Dei Jacob. Attollite
portas principes veſtras, & elevamini
portæ æternales: & introibit rex gloriæ.
8 Quis eſt iſte rex gloriæ? Dominus fortis
& potens: Dominus potens in prælio.
9 Attollite portas principes veſtras, et elevamini
portæ æternales: & introibit rex
10 gloriæ. Quis eſt iſte rex gloriæ? Dominꝰ
virtutum, ipſe eſt rex gloriæ.

1 In finem, Pſalmus David. XXIV.

AD te, Domine, levavi animam meam:

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

1 Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. κβʹ.

† Κύριος (α) ποιμαίνει με, καὶ οὐδέν με ὑστερήσει.
2 † Εἰς τόπον χλόης ἐκεῖ με κατεσκήνωσεν·
3 † ἐπὶ ὕδατος ἀναπαύσεως ἐξέθρεψέ με. † Τὴν
ψυχήν μου ἐπέστρεψεν· † ὡδήγησέν με ἐπὶ τρίβους
4 δικαιοσύνης, † ἕνεκεν τοῦ ὀνόματος αὐτοῦ. † Ἐὰν
γὰρ καὶ πορευθῶ ἐν μέσῳ σκιᾶς θανάτου † οὐ φοβηθήσομαι
κακά, ὅτι σὺ μετ' ἐμοῦ εἶ· † ἡ ῥάβδος σου
5 καὶ ἡ βακτηρία σου, (β) αὐταί με παρεκάλεσαν. † Ἡτοίμασας
ἐνώπιόν μου τράπεζαν, † ἐξεναντίας τῶν
θλιβόντων με· † ἐλίπανας ἐν ἐλαίῳ τὴν κεφαλήν μου,
6 † καὶ τὸ ποτήριόν σου μεθύσκον ὡς κράτιστον. † Καὶ
τὸ ἔλεός σου καταδιώξεταί με πάσας τὰς ἡμέρας
τῆς ζωῆς μου, † καὶ τὸ κατοικεῖν με ἐν οἴκῳ κυρίου εἰς
μακρότητα ἡμερῶν. MS. A. (α) ποιμανεῖ (β) αὐτά.

1 Ψαλμὸς τῷ Δαυὶδ τῆς μιᾶς σαββάτου. κγʹ.

† ΤΟῦ κυρίου ἡ γῆ καὶ τὸ πλήρωμα αὐτῆς, † ἡ
οἰκουμένη καὶ πάντες οἱ κατοικοῦντες ἐν αὐτῇ.
2 † Αὐτὸς ἐπὶ θαλασσῶν ἐθεμελίωσεν αὐτήν, † καὶ
3 ἐπὶ ποταμῶν ἡτοίμασεν αὐτήν. † Τίς ἀναβήσεται
εἰς τὸ ὄρος τοῦ κυρίου, † καὶ τίς στήσεται ἐν τόπῳ ἁγίῳ
4 αὐτοῦ; † Ἀθῷος χερσὶ καὶ καθαρὸς τῇ καρδίᾳ,
† ὃς οὐκ ἔλαβεν ἐπὶ ματαίῳ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ,
† καὶ οὐκ ὤμοσεν ἐπὶ δόλῳ τῷ (α) πλησίον αὐτοῦ.
5 † Οὗτος λήψεται εὐλογίαν παρὰ κυρίου, † καὶ
6 ἐλεημοσύνην παρὰ θεοῦ σωτῆρος αὐτοῦ. † Αὕτη
ἡ γενεὰ ζητούντων αὐτόν, † ζητούντων τὸ πρόσωπον
7 τοῦ θεοῦ (β) Ἰακώβ. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Ἄρατε
πύλας οἱ ἄρχοντες ὑμῶν, † καὶ ἐπάρθητε πύλαι αἰώνιοι,
8 † καὶ εἰσελεύσεται ὁ βασιλεὺς τῆς δόξης.
† Τίς ἐστιν οὗτος ὁ βασιλεὺς τῆς δόξης; † κύριος
9 κραταιὸς καὶ δυνατός, † κύριος δυνατὸς ἐν πολέμῳ. † Ἄρατε πύλας οἱ ἄρχοντες ὑμῶν, † καὶ ἐπάρθητε
πύλαι αἰώνιοι, † καὶ εἰσελεύσεται ὁ βασιλεὺς
10 τῆς δόξης. † Τίς ἐστιν οὗτος ὁ βασιλεὺς τῆς δόξης;
† κύριος τῶν δυνάμεων, αὐτός (γ) ἐστιν οὗτος ὁ βασιλεὺς τῆς δόξης.

MS. A. (α) πλησίον. Οὗτος (β) Ἰακώβ. Ἄρατε (γ) ἐστιν ὁ βασιλεύς

1 Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. κδʹ.

† ΠΡὸς σὲ κύριε ἦρα τὴν ψυχήν μου.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

Pſalmus ipſi David. XXII. 1

1 DOminus paſcit me, & nihil mihi deerit: In loco (a) 2
paſcuæ ibi me collocavit. 2 Super aquam refectionis educavit
me: (b) Animam meam convertit. 3
3 Deduxit me ſuper (c) ſemitas
juſtitiæ, propter nomẽ ſuum. 4 Nã 4
et ſi ambulavero in medio umbræ
mortis; non timebo mala: quoniam
tu mecum es. 5 Virga tua, & baculus tuus, ipſa [a] me conſolata
ſunt. 6 Paráſti in conſpectu meo 5
menſam adverſùs eos qui tribulant me. 7 Impinguáſti in oleo
caput meũ, [b] & calix (d) tuus
inebrians quàm præclarꝰ eſt! 8 Et 6
miſericordia tua ſubſequetur me,
omnibꝰ diebꝰ vitæ meæ. Et ut inhabitem in domo Domini, in longitudinem dierum.

Pſalmus ipſi David (a) unâ ſabbati. XXIII. 1

1 DOmini eſt terra, et plenitudo ejus: orbis terrarum, &
univerſi qui habitant in eo. 2 (b)
Ipſe ſuper maria fundavit eũ, et 2
ſuper flumina [a] præparavit eũ.
3 Quis aſcendet in montem Domini? aut quis ſtabit in loco (c) 3
ſancto ejꝰ? 4 [b] Innocens manibꝰ, 4
& mundus corde: qui non accepit
in vano animam ſuam: et non juravit in dolo proximo ſuo. 5 Hic 5
accipiet benedictionẽ à Domino,
et miſericordiam à [c] Deo (d) ſalutari ſuo. 6 Hæc eſt generatio 6
quærentium eum, (e) quærentium
faciem (f) Dei Jacob. DIAPSALMA. 7 (g) Tollite portas 7
principes veſtras, & elevamini
portæ [d] æternales: & introibit
rex gloriæ. 8 Quis eſt (h) iſte rex 8
gloriæ? Dominus fortis, et potens,
Dominus potens in prælio. 9 Tollite portas principes veſtras, & 9
elevamini portæ [e] æternales: et
introibit rex gloriæ. 10 Quis eſt 10
iſte rex gloriæ? Dominus [f] virtutum, ipſe eſt iſte rex gloriæ.

(a) Pſalmus ipſi David. XXIV. 1

AD te, Domine, levavi animam meam:

Verſio ÆTHIOPICA.

1 መዝሙር፡ዘደዊት፡፡

፳፪ እግዚአብሔር፡ ይሬእየኒ፡ወአልቦ፡ዘየ 1
ኀጥአኒ፡፡ውስተ፡ብሔረ፡ ሣዕር፡ ህየ፡የኀ
ድረኒ፡፡=፡ ወኀበ፡ ማየ፡ ዕረፍት፡ ሐፀነኒ፡፡ 2
ወሜጠ፡ለነፍስየ፡ 3 ወመርሐኒ፡ፍኖተ፡ጽ
ድቅ፡፡በእንተ፡ስሙ፡ዚአሁ፡፡=፡ እመኒ፡ሐ 4
ርኩ፡ማእከለ፡ ጽላሎተ፡ ሞት፡፡ኢይፈርሆ፡
ለእኩይ፡እስመ፡አንተ፡ምስሌየ፡፡=፡ በት 5
ርከ፡ወከሰታምከ፡እማንቱ፡ገሠጻኒ፡፡=፡ ወ 6
ሠራዕከ ፡ ማእደ ፡ በቅድሜየ ፡፡ በአንጻሪሆ
ሙ፡ለእለ፡ይሣቅዩኒ፡፡=፡ ወአጽሐድከ፡በ 7
ቅብእ ፡ ርእስየ ፡፡ ጽዋዕከኒ ፡ ጽኑዕ፡ወያረ
ዊ፡፡=፡ ምሕረትከ፡ይትልወኒ፡በኵሉ፡መ 8
ዋዕለ፡ሕይወትየ፡፡=፡ ከመ፡ታንብረኒ፡ቤቶ፡ 9
ለእግዝአብሔር፡ለነዋኅ፡መዋዕል፡፡=፡

መዝሙር፡ዘደዊት፡ዘቀደሚት፡ሰንበት፡፡

1 ፳፫ ለእግዚአብሔር፡ ምድር፡ በምልአ፡፡ 1
ወዓለምኒ፡ ወኵሎሙ፡እለ፡ይነብሩ፡ውስቴ
ታ፡፡=፡ ወውእቱ፡በባሕር፡ሣረራ፡፡ወበአፍ 2
ላግኒ፡ውእቱ፡አጽንዓ፡፡=፡ መኑ፡ይዐርግ፡ 3
ውስተ፡ደብረ፡ እግዚእቡሔር፡፡ወመኑ፡ ይቀ
ውም፡ ውስተ፡ መካነ፡መቅደሱ፡፡=፡ ዘንጹ 4
ሕ፡ ልቡ፡ ወንጹሕ፡እደዊሁ፡፡ወዘኢነሥአ፡
ከንቶ፡ሳዕለ፡ነፍሱ፡፡ወዘኢመሐለ፡በጕሕሉ
ት፡ለቢጹ፡፡=፡ ውእቱ፡ይነሥእ፡በረከተ፡ 5
እምኀበ፡እግዚአብሔር፡፡ወሣህሉኒ፡ እም
ኀበ፡እግዚአብሔር፡አምላኩ፡፡=፡ ዛቲ፡ 6
ትውልድ፡ተኀሥሦቱ፡፡ወታኀሥሥ፡ገጾ፡ለ
አምላከ፡ያዕቆብ፡፡=፡ አርኅው፡፡ኆኀተ፡ 7
መኳንንት፡፡ወይትረኃዋ፡ኆኀት፡እለ፡ እምፍ
ጥረት፡፡ወይበእ፡ንጉሠ፡ስብሐት፡፡=፡መኑ፡ 8
ውእቱ ፡ ዝንቱ፡ ንጉሠ፡ ስብሐት፡፡እግዚአ
ብሔር፡ ኃያል፡ ወጽኑዕ፡፡እግዚአብሔር፡ኃ
ያል፡በውስተ፡ፀብዕ፡፡=፡ አርኅው፡ኆኀተ፡ 9
መኳንንት፡፡ወይትረኃዋ፡ኆኀት፡እለ፡እምፍ
ጥረት፡፡ወይበእ፡ ንጉሠ ፡ ሰብሐት፡፡=፡ መ 10
ኑ፡ውእቱ፡ዝንቱ፡ ንጉሠ ፡ ስብሐት፡፡እግዚ
አብሔር፡አምላከ፡ኃያላን፡ ውእቱ፡ ዝንቱ፡
ንጉሠ፡ስብሐት፡፡=፡

1 መዝሙር፡ዘደዊት፡፡

፳፬ ኀቤከ፡ እግዚኦ፡ አንቃዕደውኩ፡ነፍስ 1
የ፡አምላኪየ፡፡

INTERP. ÆTHIOP. [a] me inſtruunt. Et paráſti [b] calix autem tuus durus etiam inebriat. PSAL. XXIII. [a] firmavit eum. [b] Qui mundus eſt corde & innocens manibus & qui non accepit vanum ſuper animam ſuam: [c] Domino Deo ſuo [d] quæ ab ipſa creatione fuiſtis: [e] quæ ab ipſa creatione fuiſtis: [f] Deus virtutum,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

1 * المزمور الثاني والعشرون * صلاة وتعليم * وهو يب * استيخن *

2 3 الرب يرعاني فلا شي يعوزني * وعلي المرج الخصيب احلني * وعلي ماء الراحة انساني * والي سبل
4 البر رد نفسي * وهداني لاجل اسمه * ان سلكت وسط ظلال الموت * فلا اخشي من الاسواء * لانك
5 انت معي * عصاك وقضيبك هما عزياني * هيات قدامي مايدة امام اعداي * دهنت بالدهن
6 راسي * وكاسك اسكرني كالصرف * رحمتك وطيبتك يدركني * كل ايام حياتي * واسكن في
بيت الرب طول الايام * الليلويا * المزمور الثالث والعشرون *

1 * نبوة علي دعوة الامم والجسد * وهو كد * استيخن *

2 للرب الارض بكمالها * المسكونة وجميع سكانها * لانه جعل اساسها علي البحار * وعلي الانهار
3 4 اتقنها * من ذا الذي يصعد الي جبل الرب * او من يقف في موضع قدسه * الا الطاهر
5 اليدين * النقي القلب * الذي لم ياخذ نفسه بالباطل * ولا حلف لصاحبه بغش * هذا ينال
6 البركة من قبل الرب * والرحمة من الله مخلصه * هذا الجيل الذي يطلب الرب * ويبتغي وجه
7 اله يعقوب * ارفعوا ايها الرؤساء ابوابكم * وارتفعي ايتها الابواب الدهرية فيدخل ملك المجد *
8 9 * من هو هذا ملك المجد * الرب العزيز القوي * الرب القوي في الحروب * ارفعوا ايها الرؤساء
10 ابوابكم * وارتفعي ايتها الابواب الدهرية فيدخل ملك المجد * من هو ذا ملك المجد * رب
القوات هو ملك المجد * الليلويا * المزمور الرابع والعشرون *

1 * تعليم واعتراف * وعدده مب * استيخن *

اليك يا رب رفعت نفسي *

PSAL. XXII.

Oratio & documentum. Verſ. 12. 1

DOminus paſcit me, & nullius rei indigere me ſinet. Et ſuper pratũ fer- 2
tile requieſcere me fecit: et ſuper aquam
requiei educavit me. Et ad ſemitas juſti- 3
tiæ reduxit animam meam, & direxit me
propter nomen ſuum. Si ambulavero per 4
medias umbras mortis, non timebo mala:
quia tu mecum es. Baculus tuus & virga
tua, ipſa conſolata ſunt me. Paráſti ante 5
me menſam è regione inimicorum meorũ.
Unxiſti unguento caput meum, & calix
tuus inebriavit me tanquam merum. Mi- 6
ſericordia tua et bonitas tua aſſequentur
me omnibus diebus vitæ meæ, et inhabitabo in domo Domini longitudine dierum.
Alleluja.

PSAL. XXIII.

Prophetia de vocatione gentium, et incarnatione. Verſ. 24. 1

DOmini eſt terra in integritate ſua,
(integra) Habitata, & omnes habi-
tatores ejus: Quia ipſe collocavit fun- 2
damentum ejus ſuper maria, et ſuper flu-
mina ſtabilivit eam. Quis eſt iſte, qui 3
aſcendet in montem Domini? aut quis
ſtabit in loco ſanctitatis ejus? Niſi purus 4
manibus, mundus corde, qui non adbibuit
animam ſuam in vanitate, neque juravit
proximo ſuó cum dolo? Hic aſſequetur 5
benedictionem à conſpectu Domini, &
miſericordiam à Deo Salvatore ſuo. Hæc 6
eſt generatio; quæ quærit Dominum, &
expetit faciem Dei Jacob. Elevate, O 7
principes, portas veſtras: & elevamini,
O portæ æternæ, ut ingrediatur rex glo-
riæ. Quis eſt iſte rex gloriæ? Dominus 8
fortis & potens, Dominus robuſtus in bel-
lis. Elevate, O Principes, portas veſtras: 9
& elevamini, O portæ æternæ, ut ingre-
diatur rex gloriæ. Quis eſt iſte rex 10
gloriæ? Dominus virtutum ipſe eſt rex
gloriæ. Alleluja.

PSAL. XXIV.

Documentum et Confeſſio. 1
Et numerus verſ. 42.

AD te, O Domine, levavi animam meam:

תהלים: כו

Etiam .me *in* mei inimici exultent ne ; afficiar pudore ne , ſperavi te in meus De⁹

2 3 אלהי בך בטחתי אל־אבושה אל־יעלצו איבי לי: גם

.inaniter prævaricantes pudore afficientur:pudore afficientur non ,te *expectantes* omnes

כל־קויך לא יבשו יבשו הבוגדים ריקם:

me *facere iter* Fac .me doce tuas ſemitas ; me ſcire fac Domine tuas Vias

4 דרכיך יהוה הודיעני ארחותיך למדני: הדריכני

5 omni expectavi te ; meæ ſalutis Deus tu quia , me doce & , *tua veritate in*

באמתך ולמדני כי־אתה אלהי ישעי אותך קויתי כל־

; tuarum miſericordiarum & , Domine tuarum miſerationum Reminiſcere .die

6 היום: זכר־רחמיך יהוה וחסדיך

mea:um prævaricationum & ,*mearum pueritiarum* Peccatorum .*ipſa* ſeculo à quia

7 כי מעולם המה: חטאות נעורי ופשעי

tuam bonitatem propter ; tu mei memento tuam miſericordiã ſcd̃m,memineris ne

אל־תזכר כחסדך זכר־לי־אתה למען טובך

Deducet .via in peccatores docebit ideo ; Dominus rectus & Bonus .Domine

8 9 יהוה: טוב־וישר יהוה על־כן יורה חטאים בדרך: ידרך

Domini ſemitæ Omnes .ſuam viam humiles docebit & ; judicio in *manſuetos*

10 ענוים במשפט וילמד ענוים דרכו: כל־ארחות יהוה

tuum nomen Propter.ej⁹ teſtimonia &,ej⁹ pactum cuſtodientib⁹,veritas &,miſericordia

11 חסד ואמת לנצרי בריתו ועדתיו: למען־שמך

timens vir *hic* Quis .*ipſa* multa quoniam,meæ iniquitati parces & ; Domine

12 יהוה וסלחת לעוני כי רב־הוא: מי־זה האיש ירא

ejus ſemen & ; morabitur bono in ejus Anima .eligat , *via in* eum docebit ? Dominum

13 יהוה יורנו בדרך יבחר: נפשו בטוב תלין וזרעו

.*eis notificandũ ad* ſuũ pactũ &;eũ timentibus Domini Secretum.terrã hæreditate accipiet

14 יירש ארץ: סוד יהוה ליראיו ובריתו להודיעם:

Reſpice .meos pedes reti è educet ipſe quoniam ; Dominum ad ſemper mei Oculi

15 16 עיני תמיד אל־יהוה כי הוא־יוציא מרשת רגלי: פנה

:ſunt dilatatæ mei cordis Anguſtiæ .ego *afflictus* & ,unicus quia:mei miſerere &,me *ad*

17 אלי וחנני כי־יחיד ועני אני: צרות לבבי הרחיבו

omnib⁹ parce & :meũ laborẽ & ,meã afflictionẽ Vide .me educ meis *coarctationibus à*

18 ממצוקותי הוציאני: ראה עניי ועמלי ושא לכל־

iniquitatis odio & : ſunt multiplicati quoniam ,meos inimicos Vide .meis peccatis

19 חטאותי: ראה־איבי כי־רבו ושנאת חמס

.te in ſperavi quoniam,confundar ne ;me erue &,meam animam Cuſtodi .me oderunt

20 שנאוני: שמרה נפשי והצילני אל־אבוש כי־חסיתי בך:

, Iſraelem Deus Redime.te expectavi quoniã;me cuſtodiet rectitudo &,*Integritas*

21 22 תם־וישר יצרוני כי קויתיך: פדה אלהים את־ישראל

.ejus anguſtiis omnibus ex

מכל צרותיו:

PSAL. XXVI. כו

Domino in & ambulavi mea perfectione in ego quoniam,Domine me Judica .Davidi

1 לדוד׀ שפטני יהוה כי אני בתמי הלכתי וביהוה

, meos renes *examina* : me tenta & ,Domine me Proba .*vacillabo* non , ſum fiſus

2 בטחתי לא אמעד: בחנני יהוה ונסני צרופה כליותי

.meum cor &

ולבי:

תרגום TARGUM.

2 אלהי בך אתרחצית לא אבהת לא יחדון בעלי
3 דבבי עלי: ברם כל דסברין לך לא יבהתון
4 יבהתון בזוזין וסריקיא: אורחתך יי אודע יתי
5 הלכתך אליף יתי: דברני בזכותך ואלפנני
ארום את הוא אלהא דפורקני יתך סברית
6 כל יומא: אדכר רחמך יי וטבותך ארום מן
7 עלמא הנון: חובי טליותי ומרדי לא תדכר
8 כטובך אדכר לי אנת מטול טיבותך יי: טב
ותריץ יי בגין כן מליף חייביא באורחא:
9 מדריך ענותני בדינא ומליף ענותני אורחיה:
10 כל הלכתיה דיי טיבו וקשוט לנטרי קימיה
11 וסהדותיה: מן בגלל שמך יי ותשבוק לחובי
12 ארום סגי הוא: מן הוא דין גברא דדחיל
13 מן קדם יי ילפניה באורחא דאתרעי: נפשיה
14 בטיבותא תבית ובנוי יחסנון ארעא: רזא דיי
15 גליא לדחלוי וקימיה לאודעותהון: עיני
מסתכלין תדירא קדם יי ארום הוא יפיק
16 ממצדתא רגלי: אסתכי לותי וחוס עלי מטול
17 דיחידי ועניא אנא: עקתין דלבבי פתין
18 משנוקי אפיק יתי: חמי סגופי וטרחי ושבוק
19 לכולהון חובי: חמי בעלי דבבי ארום סגיעו
20 וסנאתא דחטופין סנו יתי: טור נפשי ושיזיב
21 יתי לא אבהת מטול דסברית לך: שלימותא
ותריצותא יטרונני ארום סבירית במימרך:
22 פרוק יי ית ישראל מכל עקתוי:

כו

1 לדוד דון יתי יי ארום בשלמותי אנא הלכית
2 ובי יי סבירית לא אזדעזע: בחון יתי יי ונסי
יתי סנין כליתי ורעיוני:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Deus meus in *te* confiſus ſum, ne confundar ; ne lætentur hoſtes mei de me. 2 Etiam univerſi qui ſperant in *te*, non erubeſcent : erubeſcent prædatores & vani. 3 Vias tuas Domine notas fac mihi : ſemitas tuas inſtrue me. 4 Deduc me in *juſtitia* tua & doce me ; quoniam tu es Deus ſalutis meæ : te expectavi *tota die*. 5 Recordare miſericordiarum tuarum Domine & beneficiorum tuorum, quoniam ab æterno ſunt. 6 Delictorum adoleſcentiæ meæ & ſcelerum meorum ne memineris : ſecundùm benignitatem tuam recordare mei tu, propter bonitatem tuam Domine. 7 Bonus & rectus eſt Dominus : propterea docet peccatores in via. 8 Dirigit manſuetos in judicio, & docet mites viam ſuam. 9 Omnes viæ Domini bonitas & veritas, cuſtodientibus pactum ejus & teſtimonia ejus. 10 Propter nomen tuum Domine etiam remitte peccatum meum, quoniam multiplex eſt. 11 Quis eſt iſte homo qui timet à conſpectu Domini, docebit eum in via quam elegerit? 12 Anima ejus in beatitudine *pernoctabit*, & filii ejus hæreditario jure inibunt poſſeſſionem *terræ*. 13 Secretum Domini manifeſtum eſt his qui timent eum, & pactum ejus ut doceat eos. 14 Oculi mei reſpiciunt ſemper coram Domino, quoniam ipſe educet de laqueo pedes meos. 15 Aſpice me & miſerere mei, quoniam ſolus & pauper ſum ego. 16 Anguſtiæ cordis mei dilatatæ ſunt : 17 de anguſtiis meis libera me. 18 Vide afflictionem meam & laborem meum, & remitte omnia peccata mea. 19 Vide auctores inimicitiæ meæ, quoniam multiplicati ſunt, & odio rapinæ oderunt me. 20 Cuſtodi animam meam & libera me; non confundar, quoniam ſperavi in *te*. 21 Perfectio & rectitudo ſervabunt me, quia confiſus ſum in *verbo tuo*. 22 Libera Domine Iſrael de omnibus angoribus ejus.

Davidi.

PSAL. XXVI.

1 Iudica me Domine, quoniam in perfectione mea ego ambulavi, & in *Domino* confiſus ſum, nequaquam labar. 2 Proba me Domine & tenta me; perpurga renes meos, & *animum* meum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

2 3 * ܐܠܗܝ ܒܟ ܣܒܪܬ ܠܐ ܐܒܗܬ: ܠܐ ܢܫܬܒܗܪܘܢ ܒܝ ܒܥܠܕܒܒܝ. * ܘܐܦ ܟܠܗܘܢ ܕܡܣܟܝܢ
4 ܠܟ ܠܐ ܢܒܗܬܘܢ: ܢܒܗܬܘܢ ܥܘܠܐ ܒܣܪܝܩܘܬܗܘܢ. * ܐܘܪܚܬܟ ܡܪܝܐ ܚܘܝܢܝ: ܘܫܒܝܠܝܟ
5 ܐܘܕܥܝܢܝ. * ܕܒܪܝܢܝ ܒܩܘܫܬܟ ܘܐܠܦܝܢܝ: ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܗܘ ܐܠܗܝ ܘܦܪܘܩܝ. ܘܠܟ
6 ܣܟܝܬ ܒܟܠܝܘܡ: * ܐܬܕܟܪ ܡܪܝܐ ܪܚܡܝܟ ܕܡܢ ܥܠܡ ܘܛܝܒܘܬܟ. * ܘܣܟܠܘܬܐ ܕܛܠܝܘܬܝ
7 8 ܠܐ ܬܕܟܪ ܠܝ: ܐܠܐ ܐܝܟ ܣܘܓܐܐ ܕܪܚܡܝܟ ܐܬܕܟܪܢܝ. ܡܛܠ ܛܝܒܘܬܟ ܐܠܗܐ: * ܛܒ ܗܘ
9 ܘܬܪܝܨ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܡܬܪܨ ܠܚܛܝܐ ܒܐܘܪܚܐ: * ܘܡܕܒܪ ܠܡܟܝܟܐ ܒܕܝܢܐ. ܘܡܠܦ
10 ܠܡܣܟܢܐ ܐܘܪܚܗ: * ܟܠܗܝܢ ܐܘܪܚܬܗ ܕܡܪܝܐ ܛܝܒܘܬܐ ܘܩܘܫܬܐ. ܠܐܝܠܝܢ ܕܢܛܪܝܢ
11 12 ܩܝܡܗ ܘܣܗܕܘܬܗ: * ܡܛܠ ܫܡܟ ܡܪܝܐ ܚܣܝܢܝ ܡܢ ܚܛܗܝ ܕܪܒ ܗܘ. * ܡܢܘ ܓܒܪܐ
13 ܕܕܚܠ ܡܢ ܡܪܝܐ: ܢܚܘܝܘܗܝ ܐܘܪܚܐ ܕܓܒܐ. * ܘܢܦܫܗ ܠܛܒܬܐ ܬܒܘܬ: ܘܙܪܥܗ
14 15 ܢܐܪܬ ܐܪܥܐ. * ܬܪܥܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܠܕܚܠܘܗܝ: ܘܩܝܡܗ ܐܘܕܥ ܐܢܘܢ. * ܥܝܢܝ ܒܟܠܙܒܢ
16 ܠܘܬ ܡܪܝܐ: ܡܛܠ ܕܗܘ ܡܦܩ ܡܢ ܡܨܝܕܬܐ ܪܓܠܝ. * ܐܬܦܢܐ ܠܘܬܝ ܘܐܬܪܚܡ ܥܠܝ: ܡܛܠ
17 18 ܕܝܚܝܕܝܐ ܐܢܐ ܘܡܣܟܢܐ. * ܥܩܬܗ ܕܠܒܝ ܣܓܝ: ܘܡܢ ܐܘܠܨܢܝ ܦܨܐܢܝ. * ܚܙܝ ܡܘܟܟܝ
19 ܘܥܡܠܝ: ܘܫܒܘܩ ܠܝ ܟܠܗܘܢ ܚܛܗܝ. * ܘܚܙܝ ܕܣܓܝܘ ܒܥܠܕܒܒܝ: ܘܣܢܐܬܐ ܕܥܘܠܐ
20 21 ܣܢܘܢܝ. * ܛܪ ܢܦܫܝ ܘܦܨܢܝ: ܡܛܠ ܕܥܠܝܟ ܣܒܪܬ. * ܬܡܝܡܐ ܘܬܪܝܨܐ ܢܩܦܘܢܝ: ܡܛܠ
22 ܕܠܟ ܣܟܝܬ. * ܦܪܘܩ ܐܠܗܐ ܠܐܝܣܪܝܠ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܐܠܘܨܘܗܝ:

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܟܘ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܟܕ ܦܪܫܘ ܡܢܗ ܒܢܝ ܒܝܬܗ. ܟܕ ܥܪܝܩ ܗܘܐ. ܠܢ ܕܝܢ ܨܠܘܬܐ ܕܗܘ ܓܒܪܐ ܕܪܕܐ ܒܐܠܗܐ ܒܚܝܠܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܕ.
2 * ܕܘܢܝ ܡܪܝܐ ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܒܬܡܝܡܘܬܝ ܗܠܟܬ. ܘܥܠ ܡܪܝܐ ܣܒܪܬ ܠܐ ܐܙܘܥ. * ܒܚܘܢܝ
ܡܪܝܐ ܘܢܣܝܢܝ: ܘܒܩܝ ܟܘܠܝܬܝ ܘܠܒܝ:

Deus meus in te ſperavi,non confundar; non glorientur de me inimici mei. 2 Quin etiã oẽs qui ſperant in te,non confundentur ; confundentur autẽ iniqui in vanitate ſua. 3 Vias tuas, Dñe,demonſtra mihi; et ſemitas tuas fac mihi notas. 4 Rege me in veritate tua, et doce me; quoniam tu es Deus meus, & ſalvator meus, teq; expectavi ſingulis diebus. 5 Reminiſcere, Domine, miſericordiarum tuarũ quæ à ſeculo,& beneficiorum tuorum. 6 Et ſtultitias adoleſcentiæ meæ ne memineris mihi;ſed ſecundùm multitudinem miſerationum tuarũ memor ſis mei propter bonitatem tuam, Deus. 7 Bonus eſt ac rectus Dñs : propter hoc dirigit peccatores in viam. 8 Et regit humiles in judicio,docétque pauperes viam ſuam. 9 Cunctæ viæ Domini benignitas ſunt & veritas,iis qui ſervant decretum ejus & teſtimonia ipſius. 10 Propter nomen tuum,Dñe, purga me ſcelere meo : quia magnum eſt. 11 Quis eſt vir, qui timet Dominum ? Docebit eum viam quam elegit : 12 Et anima ejus demorabitur in bono, & ſemen ejus hæreditariò poſſidebit terram. 13 Cogitatio Domini de timentibus ſe,& fœdus ſuum notum fecit illis. 14 Oculi mei omni tempore ad Dñm, quoniam ipſe educit è reti pedes meos : 15 Convertere ad me, & miſerere mei:quoniã unicus ego ſum,& inops. 16 Triſtitiæ cordis mei multiplicatæ ſunt, & è mœroribus meis educito me. 17 Vide ſubjectionem meam & laborem meũ,& dimitte mihi omne peccatũ meum. 18 Et vide ut multiplicati ſunt inimici mei, & odio iniquitatis oderunt me. 19 Cuſtodi animam meam,& libera me : quandoquidem in te ſperavi. 20 Integri & recti adhæſerunt mihi, quia te expectavi. 21 Liberavit Deus Iſraelem ex omnib⁹ oppreſſoribus ejus. 22

PSAL. XXVI.

Davidis. Quum receſſerũt ab eo familiares illius,dum eſſet profugus. Nobis autem preces ej⁹ viri qui proficit apud Deũ virtute. Ver. 24. 1

Iudica me Domine,quoniã ego in integritate mea ambulavi; in Domino ſperavi, non movebor. Explora me, Domine,et tenta me, 2 et proba renes meos et cor meum.

Verſio VULG. LAT.

2 Deus meus, in te confido, non erubeſcam:
3 Neque irrideant me inimici mei: etenim
univerſi, qui ſuſtinent te, non confunden-
4 tur. Confundantur omnes iniqua agentes
ſupervacuè. Vias tuas, Domine, demon-
5 ſtra mihi: & ſemitas tuas edoce me. Di-
rige me in veritate tua, & doce me: quia
tu es Deus ſalvator meus, & te ſuſtinui
6 totâ die. Reminiſcere miſerationum tu-
arum, Domine, & miſericordiarum tu-
7 arum, quæ à ſeculo ſunt. Delicta juven-
tutis meæ, & ignorantias meas ne memi-
neris. Secundùm miſericordiam tuam
memento meî tu: propter bonitatem tu-
8 am, Domine. Dulcis & rectus Dominus:
propter hoc legem dabit delinquentibus
9 in via. Diriget manſuetos in judicio: do-
10 cebit mites vias ſuas. Univerſæ viæ Do-
mini, miſericordia & veritas, requiren-
tibus teſtamentum ejus & teſtimonia e-
11 jus. Propter nomen tuum, Domine, pro-
pitiaberis peccato meo: multũ eſt enim.
12 Quis eſt homo qui timet Dominũ? legem
13 ſtatuit ei in via, quam elegit. Anima e-
jus in bonis demorabitur: & ſemen ejus
14 hæreditabit terram. Firmamentum eſt
Dominus timentibus eum: & teſtamen-
15 tum ipſius ut manifeſtetur illis. Oculi
mei ſemper ad Dominum: quoniam ipſe
16 evellet de laqueo pedes meos. Reſpice in
me, & miſerere meî: quia unicus & pau-
17 per ſum ego. Tribulationes cordis mei
multiplicatæ ſunt: de neceſſitatibus meis
18 erue me. Vide humilitatem meam, & la-
borem meum: & dimitte univerſa delicta
19 mea. Reſpice inimicos meos quoniam
multiplicati ſunt, & odio iniquo oderunt
20 me. Cuſtodi animam meam, & erue me:
non erubeſcam quoniam ſperavi in te.
21 Innocentes & recti adhæſerunt mihi:
22 quia ſuſtinui te. Libera, Deus, Iſrael, ex
omnibus tribulationibus ſuis.

1 In finem, Pſalmus David. XXV.

Judica me, Domine, quoniam ego in in-
nocentia mea ingreſſus ſum: & in Do-
2 mino ſperans non infirmabor. Proba me,
Domine, & tenta me: ure renes meos &
cor meum.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

2 Ὁ θεός μου † ἐπὶ σοὶ πέποιθα, μὴ καταισχυνθείην·
3 † Μηδὲ καταγελασάτωσάν μου οἱ ἐχθροί μου, † καὶ
γὰρ πάντες οἱ ὑπομένοντές σε οὐ μὴ καταισχυνθῶσιν.
4 † Αἰσχυνθήτωσαν (α) οἱ ἀνομοῦντες διακενῆς. † τὰς ὁ-
δούς σου κύριε γνώρισόν μοι, † καὶ τὰς τρίβους σου δί-
5 δαξόν με. † Ὁδήγησόν με (β) ἐπὶ τὴν ἀλήθειάν
σου, † καὶ δίδαξόν με, ὅτι σὺ εἶ ὁ θεὸς ὁ σωτήρ
6 μου, † καὶ σὲ ὑπέμεινα ὅλην τὴν ἡμέραν. † Μνήσθητι
τῶν οἰκτιρμῶν σου κύριε, † καὶ τὰ ἐλέη σου ὅτι ἀπὸ τοῦ
7 αἰῶνός εἰσιν. † Ἁμαρτίας νεότητός μου, καὶ ἀγνοίας μου
μὴ μνησθῇς. † κατὰ τὸ ἔλεός σου μνήσθητί μου, † (γ)
8 ἕνεκεν τῆς χρηστότητός σου κύριε. † Χρηστὸς καὶ εὐ-
θὴς ὁ κύριος, † διὰ τοῦτο νομοθετήσει ἁμαρτάνον-
9 τας ἐν ὁδῷ. † Ὁδηγήσει πραεῖς ἐν κρίσει, † διδάξει
10 πραεῖς ὁδοὺς αὐτοῦ. † Πᾶσαι αἱ ὁδοὶ κυρίου ἔλεος καὶ
ἀλήθεια, † τοῖς ἐκζητοῦσι τὴν διαθήκην αὐτοῦ καὶ τὰ
11 μαρτύρια αὐτοῦ. † Ἕνεκα τοῦ ὀνόματός σου κύριε,
12 † καὶ ἱλάσῃ τῇ ἁμαρτίᾳ μου, πολλὴ γάρ ἐστι. † Τίς ἐστιν
ἄνθρωπος ὁ φοβούμενος τὸν κύριον; † νομοθετήσει
13 αὐτῷ ἐν ὁδῷ, ᾗ ᾑρετίσατο. † Ἡ ψυχὴ αὐτοῦ ἐν ἀ-
γαθοῖς αὐλισθήσεται, † καὶ τὸ σπέρμα αὐτοῦ κληρο-
14 νομήσει γῆν. † Κραταίωμα κύριος τῶν φοβουμένων
αὐτόν, † (δ) καὶ ἡ διαθήκη αὐτοῦ τοῦ δηλῶσαι αὐτοῖς.
15 † Οἱ ὀφθαλμοί μου διαπαντὸς πρὸς τὸν κύριον, † ὅτι
αὐτὸς ἐκσπάσει ἐκ παγίδος τοὺς πόδας μου.
16 † Ἐπίβλεψον ἐπ' ἐμὲ καὶ ἐλέησόν με, † ὅτι μονο-
17 γενὴς καὶ πτωχός εἰμι ἐγώ. † Αἱ θλίψεις τῆς καρδίας
μου ἐπληθύνθησαν, † ἐκ τῶν ἀναγκῶν μου ἐξάγαγέ με.
18 † Ἴδε τὴν ταπείνωσίν μου καὶ τὸν κόπον μου, † καὶ ἄφες
19 πάσας τὰς ἁμαρτίας μου. † Ἴδε τοὺς ἐχθρούς μου, ὅτι
20 ἐπληθύνθησαν, † καὶ μῖσος ἄδικον ἐμίσησάν με. † Φύ-
λαξον τὴν ψυχήν μου καὶ ῥῦσαί με, † μὴ καταισχυν-
21 θείην, ὅτι ἤλπισα ἐπὶ σέ. † Ἄκακοι καὶ εὐθεῖς ἐκολ-
22 λῶντό μοι, ὅτι ὑπέμεινά σε κύριε. † Λύτρωσαι ὁ
θεὸς τὸν Ἰσραὴλ ἐκ πασῶν τῶν θλίψεων αὐτοῦ.

MS. A. (α) πάντες οἱ (β) ἐν τῇ * ἀλήθειαν, (γ) ἕνεκα (δ) † καὶ τὸ ὄνομα κυρίου τῶν ἐπικαλουμένων αὐτόν, καὶ ἡ διαθήκη

1 Τοῦ Δαυίδ. κε'.

† Κρῖνόν με κύριε, ὅτι ἐγὼ ἐν ἀκακίᾳ μου ἐπο-
ρεύθην, † καὶ ἐπὶ τῷ κυρίῳ ἐλπίζων οὐ μὴ (α)
2 σαλευθῶ. † Δοκίμασόν με κύριε καὶ πείρασόν με,
† πύρωσον τοὺς νεφρούς μου † καὶ τὴν καρδίαν μου.

MS. A. (α) ἀσθενήσω.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

Deus meus, in te confidi, non [a] erubeſcam. 2 Neque irrideant me inimici mei: etenim univerſi qui ſuſtinent te, non confundentur. 3 Confundantur iniquè (b) [b] agentes ſupervacuè. 4 Vias tuas, Domine, notas fac mihi, & ſemitas tuas edoce me. 5 (c) Deduc me in veritatem tuam, & doce me: quia tu es Deus ſalvator meus, & te ſuſtinui totâ die. 6 Reminiſcere miſerationũ tuarum, Domine: [c] & (d) quia miſericordiæ tuæ à ſeculo ſunt. 7 Delicta juventutis meæ, & (e) [d] ignorantias meas ne memineris. 8 Secundùm miſericordiã tuam (f) memor eſto meî, propter bonitatem tuam, Domine. 9 [e] Dulcis, & rectus Dominus: propter hoc [f] legem (g) dabit delinquentibus in via. 10 Deducet manſuetos in judicio, [g] docebit mites vias ſuas. 11 Univerſæ viæ Domini miſericordia & veritas, requirentibus teſtamentum ejus, et teſtimonia ejus. 12 Propter nomen tuum, Domine, (b) & [h] propitiaberis peccato meo: multũ eſt enim. 13 Quis eſt homo, qui timet Dominũ? [i] legẽ (i) ſtatuet ei in via, quam elegit. 14 Anima ejus in bonis demorabitur: & ſemen ejꝰ hæreditabit terram. 15 (k) [k] Firmamentum eſt Dominus timentiũ eum: & (l) teſtamentum ipſius ad manifeſtandum eis. 16 Oculi mei ſemper ad Dominum: quoniam ipſe evellet de laqueo pedes meos. 17 Reſpice in me, et miſerere meî: quoniam (m) unicus, et pauper (n) ſum ego. 18 Tribulationes cordis mei (o) multiplicatæ ſunt: de neceſſitatibꝰ (p) meis erue me. 19 Vide humilitatem meam, & laborẽ meum: & dimitte omnia peccata mea. 20 Vide [l] inimicos meos, quoniã multiplicati ſunt, & odio iniquo oderunt me. 21 Cuſtodi animam meam, & erue me: non confundar, quoniam ſperavi in te. 22 Innocentes & recti adhæſerunt mihi: quoniã ſuſtinui te, Domine. 23 Redime, Deus, Iſrael ex omnibus tribulationibus ejus.*

(a) Ipſius David. XXV. 1

Judica (o) me, Domine, quoniam ego in (c) innocentia mea ambulavi: & in Domino ſperans [a] non (d) movebor. 2 Proba me, Domine, & tenta me: [b] ure renes meos, & cor meum. 2

Verſio ÆTHIOPICA:

ወኪያከ፡ ተወከልኩ፡ ኢይትኃፈር፡ ለዓለ
ም፡፡=፡ ወኢይስሐቁኒ፡ ጸላእትየ፡፡ እስ 2
ሙ፡ ኵሎሙ፡ እለ፡ ይሴፈወከ፡ ወኢይትኃፈ
ሩ፡፡=፡ ለይትኃፈሩ፡ ኵሎሙ፡ እለ፡ ይሔብ 3
ሉ፡ ዘልፈ፡፡=፡ ፍኖተከ፡ እግዚኦ፡ አምረኒ፡፡ 4
ወአሰረ፡ ዚአከ፡ መሀረኒ፡፡=፡ ወምርሐኒ፡ 5
በጽድቅከ፡፡ ወምሀረኒ፡ እስመ፡ አንተ፡ አም
ላኪየ፡ ወመድኃኒየ፡፡ ወኪያከ፡ እሴፎ፡ ኵሎ፡
እሚረ፡፡=፡ ተዘከር፡ ሣህለከ፡ እግዚኦ፡፡ ወ 6
መሕረትከኒ፡ እስመ፡ ለዓለሙ፡ ውእቱ፡፡=፡
ኃጢአትየ፡ ዘበንእስየ፡ ወእበድየ፡ ኢትዝከ 7
ር፡ ሊተ፡፡=፡ ወበከመ፡ ሣህልከ፡ ተዘከረኒ፡፡ 8
በእንተ፡ ምሕረትከ፡ እግዚኦ፡፡=፡ ኄርኒ፡ 9
ወጻድቅኒ፡ እግዚአብሔር፡፡ በእንተዝ፡ ይ
መርሖሙ፡ ፍኖተ፡ ለእለ፡ ይስሕቱ፡፡=፡ ወይ 10
ሜህሮሙ፡ ፍትሐ፡ ለየዋሀን፡፡ ወይሌምሮ
ሙ፡ ፍኖቶ፡ ለልቡባን፡፡=፡ ኵሉ፡ ፍኖቱ፡ ለ 11
እግዚአብሔር፡ ሣህል፡ ወጽድቅ፡፡ ለእለ፡ የኃ
ሡ፡ ሕጎ፡ ወስምዖ፡፡=፡ በእንተ፡ ስምከ፡ እ 12
ግዚኦ፡፡ ወስረይ፡ ሊተ፡ ኵሎ፡ ኃጢአትየ፡ እ
ስመ፡ ብዙኃ፡ ውእቱ፡፡=፡ መኑ፡ ውእቱ፡ 13
ብእሲ፡ ዘይፈርሆ፡ ለእግዚአብሔር፡፡ ወይ
መርሖ፡ ፍኖተ፡ እንተ፡ ኃረየ፡፡=፡ ወነፍሱኒ፡ 14
ውስተ፡ ሠናይ፡ ተኀድር፡፡ ወዘርኡኒ፡ ይወር
ስዋ፡ ለምድር፡፡=፡ ኃይሎሙ፡ ውእቱ፡ እ 15
ግዚአብሔር፡ ለእለ፡ ይፈርህዎ፡ ወስሞኒ፡ ለ
እግዚአብሔር፡ ለእለ፡ ይጼውዕዎ፡፡ ወሕጎ
ኒ፡ ይሜህሮሙ፡፡=፡ አዕይንትየሰ፡ ዘልፈ፡ ኀ 16
በ፡ እግዚአብሔር፡፡ እስመ፡ ውእቱ፡ ይባልሖ
ን፡ እመሥገርት፡ ለእገርየ፡፡=፡ ነጽር፡ ሳዕሌየ፡ 17
ወተሣሀለኒ፡፡ እስመ፡ ባሕታዊ፡ ወነደይ፡ አ
ነ፡፡=፡ ወብዙኃ፡ ሐዘኑ፡ ለልብየ፡፡ አድኅነ 18
ኒ፡ እምንደቤየ፡፡=፡ ርኢ፡ ሕማምየ፡ ወስራ 19
ህየ፡፡ ወኅድግ፡ ሊተ፡ ኵሎ፡ ኃጢአትየ፡፡=፡
ወርኢ፡ ከመ፡ በዝኁ፡ ጸላእትየ፡፡ ጸልአ፡ በዐ 20
መፃ፡ ይጸልኡኒ፡፡=፡ ዕቀብ፡ ለነፍስየ፡ ወአድ 21
ኅነኒ፡፡ ወኢይትኃፈር፡ እስመ፡ ኪያከ፡ ተወከ
ልኩ፡፡=፡ የዋሃን፡ ወራትዓን፡ ተለውኒ፡፡ እ 22
ስመ፡ ተሰፈውኩከ፡ እግዚኦ፡፡=፡ ያድኅን፡ 23
እግዚአብሔር፡ ለእስራኤል፡ እምኵሉ፡
ምንደቤሁ፡፡=፡

መዝሙር፡ ዘዳዊት፡፡

፳፭ ፍትሕ፡ ሊተ፡ እግዚኦ፡ እስመ፡ አንሰ፡ 1
በየዋሃትየ፡ አሐውር፡፡ ወተወከልኩ፡ በእ
ግዚአብሔር፡ ከመ፡ ኢይደክም፡፡=፡ ፍት 2
ኖኒ፡ እግዚኦ፡ ወአመክረኒ፡፡ ፍትን፡ ልብየ፡ ወ
ኵልያትየ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [a] erubeſcam in perpetuum. [b] agentes indeſinenter. [c] & miſericordiæ etiam tuæ, quoniam à ſeculo [d] ſtultitiam meam [e] Bonus quidem, & juſtus [f] viam demonſtrabit aberrantibus. [g] & cordatos docebit [h] dimitte mihi omne peccatum meum: [i] viam oſtendet ei quam [k] Virtus eorum eſt Dominus, qui timent eum, & nomen Domini invocantibus eum, & lex ejus erudiet illos. Oculi autem [l] quantum multiplicati ſunt inimici mei, *PSAL.* XXV. [a] non infirmabor. [b] inveſtiga cor meum & renes meos.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

2 3 *الاهي عليك توكلت فلا اخزا الى الابد. ولا تضحك اعداي بي* لان جميع المتوكلين عليك
4 5 لا يخزون* وليخز الاثمة بالباطل* اظهر لي يا رب طرقك* وعلمني سبلك* اهدني الى عدلك*
6 وعلمني لانك اله خلاصي* واياك املت كل ايامي* اذكر يا رب رافتك ورحمتك. لانها ثابتة
7 منذ الابد* لا تذكر خطايا صباي وجهلي* مثل رحمتك اذكرني* من اجل صلاحك يا رب*
8 9 * الرب صالح ومستقيم* من اجل هذا جعل ناموسا للخطاة في السبيل* يهدي اهل الدعة
10 بالحكم* يعلم الودعاء طرقه* جميع سبل الرب رحمة* وعدل للذين يطلبون عهده وشهاداته.
11 12 *من اجل اسمك يا رب. اغفر خطاياي فانها كثيرة* من هو الرجل الخايف من الرب يثبت له
13 14 ناموسا يهديه طريقا يرضاها* تكون نفسه في الخيرات* وذريته ترث الارض* الرب عز لخايفيه*
15 واسم الرب لمتقيه* وهو يفهمهم ميثاقه* عيناي تنظران الى الرب في كل حين* لانه من الفخ
16 17 اطلق رجلي* انظر الي وارحمني* فاني ابن وحيد فقير* كثرت احزان قلبي* اللهم اخرجني من
18 19 شدايدي* انظر الى خضوعي وتعبي* واغفر لي جميع خطاياي* وانظر فان اعداي قد
20 21 كثروا* وشنوني ظلما* احفظ نفسي وخلصني لا تدعني اخزا* لاني عليك توكلت* الابرار
22 والمستقيمون لاحقوني* لاني رجوتك يا رب* اللهم خلص اسراييل من جميع شدايده* الليلويا*

1 *المزمور الخامس والعشرون* صلاة* وعدده ك* استيخن*

2 احكم لي يا رب. فاني بالتواضع مشيت* وعلى الرب توكلت* ولا اجزع* جربني يا رب وامتحني*
احم قلبي وكليي*

Deus meus, in te confiſus ſum, non confundar in æternum: & ne irrideant me inimici mei. Quia omnes confidentes in te 2
non confundentur, at confundantur iniqui in vanitate. Indica mihi, Domine, vias 3 4
tuas: & doce me ſemitas tuas. Dirige me ad æquitatem tuam: & doce me, quia tu es Deus ſalutis meæ, téque ſperavi omnibus diebus meis. Memento, O Domine mi, pietatum tuarum, & miſericordiæ tuæ: quoniam conſtantes ſunt ab æterno. 5 6
Ne recorderis peccata juventutis meæ, et ſtultitiæ meæ. Secundùm miſericordiam tuam recordare mei propter bonitatem tuam, O Domine. Dominus bonus eſt et rectus: propter hoc ſtatuit legem peccatoribus de ſemita. Regit prœditos manſuetudine cum judicio: docet mites vias ſuas. 7 8 9
Univerſæ ſemitæ Domini miſericordia et æquitas, iis qui quærunt pactum ejus, & teſtimonia ejus. Per nomen tuum, O Domine, condona peccata mea, quia multa ſunt. Quis eſt vir timens Dominum? ſtabiliet huic legem, diriget eum per viam ſibi gratam. Erit anima ejus in bonis, & progenies ejus hæreditabit terram. Dominus eſt fortitudo timentium eum: & nomen Domini, colentium eum: & ipſe intelligere facit eos teſtamentum ſuum. 10 11 12 13 14
Oculi mei aſpiciunt ad Dominum in omni momento, quoniam ipſe de laqueo dimiſit pedes meos. Intuere me, & miſerere mei, quia filius ſum unicus, & pauper. Multiplicatæ ſunt triſtitiæ cordis mei: Deus, educ me de tribulationibus meis. Reſpice in ſubjectionem meam, & laborem meum: & condona mihi univerſa peccata mea. Et conſidera quòd inimici mei jam multiplicati ſunt, & oderunt me injuſtè. Conſerva animam meam, & libera me: ne me ſinas erubeſcere, quoniam in te confiſus ſum. Innocentes, & recti ſecuti ſunt me, eò quòd ſperaverim in te, O Domine. Deus libera Iſraelem ex omnibus tribulationibus ejus. Alleluja. 15 16 17 18 19 20 21 22

PSAL. XXV.

Oratio. Et num. Verſ. 10. 1

Adjudica mihi, O Domine, quoniam in humilitate ambulavi, & in Domino confiſus ſum, & non timebo. Tenta me, O Domine, & proba me: ardere fac cor meum, & renes meos. 2

תהלים : כז

ſedi Non .tua veritate in ambulabo & : meis oculis corã tua miſericordia Quoniã
3 כִּי־חַסְדְּךָ לְנֶגֶד עֵינָי וְהִתְהַלַּכְתִּי בַּאֲמִתֶּךָ׃ לֹא־יָשַׁבְתִּי 4
: malignantiũ *concionem* Odivi .introibo non *latentibus* cum & *: mendacii* viris cum
עִם־מְתֵי־שָׁוְא וְעִם נַעֲלָמִים לֹא אָבוֹא׃ שָׂנֵאתִי קְהַל מְרֵעִים 5
tuum altare circuibo &,meas *volas munditia* in Lavabo .ſedebo non impiis cum &
וְעִם־רְשָׁעִים לֹא אֵשֵׁב׃ אֶרְחַץ בְּנִקָּיוֹן כַּפָּי וַאֲסֹבְבָה אֶת־מִזְבַּחֲךָ 6
.tua mirabilia omnia *narrandum ad* & ,confeſſionis *voce in faciendum audire Ad* .Domine
יְהוָה׃ לַשְׁמִעַ בְּקוֹל תּוֹדָה וּלְסַפֵּר כָּל־נִפְלְאוֹתֶיךָ׃ 7
colligas Ne .tuæ gloriæ tabernaculi locum &,tuæ domus habitaculũ dilexi Domine
8 יְהוָה אָהַבְתִּי מְעוֹן בֵּיתֶךָ וּמְקוֹם מִשְׁכַּן כְּבוֹדֶךָ׃ אַל־תֶּאֱסֹף 9
eorũ manib⁹ in Quorum *meas vitas ſanguinum* viris cum & ;meam animã peccatorib⁹ cum
עִם־חַטָּאִים נַפְשִׁי וְעִם־אַנְשֵׁי דָמִים חַיָּי׃ אֲשֶׁר־בִּידֵיהֶם 10
,me redime:ambulabo mea perfectione in ego Et *munere* plena eorũ dextera &*:ſcelus*
זִמָּה וִימִינָם מָלְאָה שֹּׁחַד׃ וַאֲנִי בְּתֻמִּי אֵלֵךְ פְּדֵנִי 11
.Domino benedicam *concionibus* in ; rectitudine in ſtetit meus Pes . mei miſerere &
וְחָנֵּנִי׃ רַגְלִי עָמְדָה בְמִישׁוֹר בְּמַקְהֵלִים אֲבָרֵךְ יְהוָה׃ 12

PSAL. XXVII. כז

Fortitudo Dominus ? timebo quo à , mea ſalus & , mea lux Dominus .Davidi
לְדָוִד יְהוָה אוֹרִי וְיִשְׁעִי מִמִּי אִירָא יְהוָה מָעוֹז־ 1
,meam carnem *edendum ad* maligni me *ſuper appropinquando In ?* pavebo quo à,*mearũ vitarũ*
חַיַּי מִמִּי אֶפְחָד׃ בִּקְרֹב עָלַי מְרֵעִים לֶאֱכֹל אֶת־בְּשָׂרִי 2
fuerit caſtrametata Si .ceciderunt & , impegerunt ipſi,mihi mei inimici & mei hoſtes
צָרַי וְאֹיְבַי לִי הֵמָּה כָשְׁלוּ וְנָפָלוּ׃ אִם־תַּחֲנֶה 3
ego *hoc* in , bellum me *ſuper* ſurgat ſi : meum cor timebit non , *turma me ſuper*
עָלַי מַחֲנֶה לֹא־יִירָא לִבִּי אִם־תָּקוּם עָלַי מִלְחָמָה בְּזֹאת אֲנִי
domo in *me ſedere* , quæram *hanc* ;Domino à petii *Unam* .*confidens*
בוֹטֵחַ׃ אַחַת שָׁאַלְתִּי מֵאֵת־יְהוָה אוֹתָהּ אֲבַקֵּשׁ שִׁבְתִּי בְּבֵית־ 4
viſitandum ad & ,Domini *amœnitate in videndum ad* ,*mearum vitarũ* diebus omnibus Domini
יְהוָה כָּל־יְמֵי חַיַּי לַחֲזוֹת בְּנֹעַם־יְהוָה וּלְבַקֵּר
me abſcondet : mala die in ſuo tabernaculo in me abſcondet Quia .ejus templo in
בְּהֵיכָלוֹ׃ כִּי יִצְפְּנֵנִי בְּסֻכֹּה בְּיוֹם רָעָה יַסְתִּרֵנִי 5
ſuper meum caput exaltabit nunc Et .me exaltabit petra in ,ſui *tentorii* abſcondito in
בְּסֵתֶר אָהֳלוֹ בְּצוּר יְרוֹמְמֵנִי׃ וְעַתָּה יָרוּם רֹאשִׁי עַל 6
: vociferationis ſacrificia ejus *tentorio* in ſacrificabo & ,meis circuitibus meos inimicos
אֹיְבַי סְבִיבוֹתַי וְאֶזְבְּחָה בְאָהֳלוֹ זִבְחֵי תְרוּעָה
, clamabo , meam vocem Domine Audi .Domino canam & , cantabo
אָשִׁירָה וַאֲזַמְּרָה לַיהוָה׃ שְׁמַע־יְהוָה קוֹלִי אֶקְרָא 7
Domine *tuas facies* ;*meas facies* quærite:meũ cor dixit Tibi .me exaudi &,mei miſerere &
וְחָנֵּנִי וַעֲנֵנִי׃ לְךָ אָמַר לִבִּי בַּקְּשׁוּ פָנָי אֶת־פָּנֶיךָ יְהוָה 8
, tuum ſervum iram in declines ne , me à *tuas facies* abſcondas Ne .quæram
אֲבַקֵּשׁ׃ אַל־תַּסְתֵּר פָּנֶיךָ מִמֶּנִּי אַל תַּט־בְּאַף עַבְדֶּךָ 9
Quoniã .meæ ſalutis Deus me dimittas ne &,me derelinquas ne :fuiſti meum auxiliũ
עֶזְרָתִי הָיִיתָ אַל־תִּטְּשֵׁנִי וְאַל־תַּעַזְבֵנִי אֱלֹהֵי יִשְׁעִי׃ כִּי־ 10
.me colliget Dominus & ; me dereliquerunt mea mater &,meus pater
אָבִי וְאִמִּי עֲזָבוּנִי וַיהוָה יַאַסְפֵנִי׃

תרגום TARGUM.

3 מְטוּל דְטוּבָךְ קֳבֵיל עֵינַי וְהַלְכֵית בְּקוּשְׁטָךְ׃
4 לָא אִסְתַּחֲרֵית עִם גַּבְרֵי שִׁקְרָא וְעִם מְטַמְרִין
5 לְאַבְאָשָׁא לָא אֵיעוֹל׃ סְנֵיתִי כְּנִישַׁת מַבְאֲשִׁין
6 וְעִם רַשִׁיעַיָּא לָא אֶסְתְּחַר׃ אַקְדִּישׁ בְּזָכוּתָא אִידַי
7 וַאֲחַזְרֵית יַת מַדְבְּחָךְ יְיָ׃ לְאַשְׁמָעָא בְּקָל שְׁבָחָא
8 וּלְאִשְׁתָּעָא כָּל פְּרִישׁוּתָךְ׃ יְיָ רְחִימֵית מְדוֹר
9 בֵּית מַקְדְּשָׁךְ וַאֲתַר מִשְׁכַּן יְקָרָךְ׃ לָא תִכְנוֹשׁ
עִם חַיָּבַיָּא נַפְשִׁי וְעִם אֱנָשֵׁי שָׁדְיָן דְמָא חַיָּי׃
10 דִּי בִידֵיהוֹן עֵצַת חֶטְאִין וִימִינֵהוֹן מַלְיָן שׁוֹחֲדָא׃
11 וַאֲנָא בִּשְׁלֵמוּתִי אֵיזֵיל פְּרוֹק יָתִי וְחוּס עֲלָי׃
12 רִגְלִי קָם בִּתְרִיצָא בִּכְנִישַׁת צַדִּיקִין אֲבָרֵךְ יְיָ׃

כז

1 לְדָוִד יְיָ נְהוֹרִי וּפוּרְקָנִי מִמַּן אֶדְחַל יְיָ עוּשְׁנָא
2 דְחַיַּי מִמַּן אֶרְהַל׃ כַּד יִתְקָרְבוּן עֲלַי מַבְאֲשִׁין
לְגַרְמָא יַת בִּסְרִי מְעִיקַי וּבַעֲלֵי דְבָבַי הִנּוּן
3 אִתְקְלוּ וּנְפַלוּ׃ אִין תִּשְׁרֵי עֲלַי מַשְׁרִיַּת רַשִׁיעֵי
לָא אֶדְחַל לִבִּי אִין תְּקוּם עֲלַי קְרָבָא בְּדָא
4 אֲנָא סְבִיר׃ חֲדָא בְּעֵיתִי מִן קֳדָם יְיָ יָתָהּ אֶתְבַּע
דְּאֵתֵיב בְּבֵית מַקְדְּשָׁא דַיְיָ כָּל יוֹמֵי חַיַּי לְמֶחֱמֵי
5 בְּבַסִּימוּתָא דַיְיָ וּלְבַקְרָא בְהֵיכְלֵיהּ׃ אֲרוּם
יְטַשְׁנַנִי בִּטְלָלֵיהּ בְּיוֹם בִּישְׁתָּא יְטַמְרַנַנִי בְּטַמּוֹר
6 מַשְׁכְּנֵיהּ בִּכְרַךְ תַּקִּיף יְרוֹמֵם יָתִי׃ וְהַשְׁתָּא
יִתְרוֹמַם רֵישִׁי עַל בַּעֲלֵי דְבָבַי חֲזוֹר חֲזוֹר וְאֶכּוֹס
בְּמַשְׁכְּנֵיהּ נִכְסֵי רַעֲוָא אֲשַׁבַּח וַאֲבִיעַ קֳדָם יְיָ׃
7 קַבֵּל יְיָ צְלוֹתִי בְּמִקְרָאִי וְחוּס עֲלַי וּרְחֵם יָתִי׃
8 לָךְ אָמַר לִבִּי בְּעוֹ אַפַּי יַת סְבַר אַפָּךְ יְיָ אֶתְבַּע׃
9 לָא תְסַלֵּק שְׁכִנְתָּךְ מִנִּי אַל תַּצְלֵי בְּרוּגְזָא
לְעַבְדָּךְ סִיוּעִי הֲוֵיתָא לָא תְטַלְטֵל יָתִי וְלָא
10 תִשְׁבְּקִנַּנִי אֱלָהָא דְפוּרְקָנִי׃ מְטוּל דְאַבָּא וְאִמָּא
יְשַׁבְקוּ יָתִי יְיָ יִכְנוֹשׁ לִי׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Quoniam bonitas tua ante oculos meos 3
eſt,& ambulavi in veritate tua. Non ver- 4
ſatus ſum cum viris mendacibus, & cum
occultantibus ſe ut malè agant non intro-
ibo. Odi congregationem pravorum, & 5
cum impiis non verſabor. Sanctificabo 6
in munditia manus meas, & circundabo
altare tuum Domine: Ut audire faciam in 7
voce laudis, & ut enarrem omnia mira-
bilia tua. Domine dilexi habitaculum 8
domus ſanctitatis tuæ, & locum *taberna-*
culi gloriæ tuæ. Ne colligas cum pecca- 9
toribus animam meam, & cum homini-
bus effundentibus ſanguinem, vitam me-
am. In quorum manibus eſt conſilium 10
peccati, & *dexteræ* eorum *plenæ ſunt* mu-
nere. Et ego in integritate mea ambula- 11
bo: redime me, & miſerere mei. Pes 12
meus ſtetit in rectitudine, in congregati-
one juſtorum benedicam Domino.

Davidi. 1

PSAL. XXVII.

D*ominus* illuminatio mea & redem-
ptio mea, à quo timebo ? Dominus forti-
tudo vitæ meæ, à quo formidabo ? Dum 2
propinqui fient contra me maligni ad ex-
terminandam carnem meam, oppreſſores
mei & inimici mei ipſi impegerunt &
ceciderunt. Si caſtrametabitur adverſùs 3
me exercitus impiorum, non pavebit cor
meum : ſi ſurrexerit contra me bellum,
in hoc ego confido. Unam petivi à con- 4
ſpectu Domini, hanc requiram, ut ha-
bitem in domo ſanctuarii Domini omni-
bus diebus vitæ meæ, ad contemplandum
in dulcedine Domini, & ad inquirendum
in templo ejus. Quoniam abſcondet me in 5
umbraculo ſuo, in die mala abſcondet me
in occulto tabernaculi ſui : in arce forti
exaltabit me. Et nunc exaltabitur caput 6
meum ſuper adverſarios meos undequa-
que : & ſacrificabo in *tabernaculo* ejus
ſacrificia acceptabilia; laudes dicam &
exultabo coram Domino. Exaudi Do- 7
mine *orationem* meam cùm *vocavero*, &
miſerere mei, & me amore complectere.
Tibi dixit cor meum : *Exquirito* faciem 8
meam, aſpectum faciei tuæ Domine requiram. Ne amoveas majeſtatem tuam à me, ne incli- 9
nes indignatione ſervum tuum : auxilium meum fuiſti, ne moveas me, & ne deſeras me De-
us redemptionis meæ. Quoniam pater meus & mater mea dereliquerunt me : *Dominus* au- 10
tem colliget me.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

3 * ܡܛܠ ܕܚܣܕܝܟ ܠܘܩܒܠ ܥܝܢ̈ܝ. ܘܗܠܟܬ ܒܗܝܡܢܘܬܐ: * ܠܐ ܝܬܒܬ ܥܡ ܒܝ̈ܫܐ.
4
5 ܘܥܡ ܣܟ̈ܠܐ ܠܐ ܥܠܬ: * ܣܢܝܬ ܟܢܘܫܬܐ ܕܒܝ̈ܫܐ. ܘܥܡ ܪ̈ܫܝܥܐ ܠܐ ܝܬܒܬ:
6 * ܐܫܝܓܬ ܒܕܟܝܘܬܐ ܐܝܕ̈ܝ. ܘܐܬܟܪܟܬ ܠܡܕܒܚܟ ܡܪܝܐ: * ܕܐܫܡܥ ܩܠܐ ܕܬܫܒܘܚܬܟ.
7
8 ܘܐܫܬܥܐ ܟܠܗܝܢ ܬܕܡܪ̈ܬܟ: * ܡܪܝܐ ܪܚܡܬ ܬܫܡܫܬܐ ܕܒܝܬܟ. ܘܐܬܪܐ ܕܡܫܪܝܐ ܕܫܘܒܚܟ:
9 * ܠܐ ܬܘܒܕܝܢܝ ܥܡ ܚ̈ܛܝܐ. ܘܥܡ ܓܒܪ̈ܐ ܕܕܡܐ ܚܝ̈ܝ: * ܕܒܐܝܕܝܗܘܢ ܢܟܠܐ ܘܝܡܝܢܗܘܢ
10
11 ܡܠܝܐ ܫܘܚܕܐ. * ܐܢܐ ܕܝܢ ܒܬܡܝܡܘܬܝ ܗܠܟܬ: ܦܪܘܩܝܢܝ ܘܐܬܪܚܡ ܥܠܝ. * ܪܓܠܝ
12
ܩܡܬ ܒܬܪܝܨܘܬܐ: ܘܒܥܕܬܐ ܐܒܪܟ ܠܡܪܝܐ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ *

* ܕܘܝܕ. ܥܠ ܟܘܪܗܢܐ ܕܢܦܠ ܒܗ. ܦܬ̈ܓܡܐ ܠܚ.

1
ܡܪܝܐ ܢܘܗܪܝ ܘܦܪܘܩܝ ܡܢ ܡܢ ܐܕܚܠ: ܡܪܝܐ ܚܘܣܢܐ ܕܚܝ̈ܝ ܡܢ ܡܢܗ ܐܙܝܥ ܐܢܐ.
2 * ܟܕ ܩܪܒܘ ܠܝ ܒܝ̈ܫܐ ܠܡܐܟܠ ܒܣܪܝ: ܒܥܠܕܒ̈ܒܝ ܘܣܢ̈ܐܝ. ܐܬܬܚܝܘ ܐܟܚܕܐ
3 ܘܢܦܠܘ: * ܐܢ ܬܣܕܪ ܥܠܝ ܡܫܪܝܬܐ ܠܐ ܢܕܚܠ ܠܒܝ. ܘܐܢ ܬܩܘܡ ܥܠܝ ܩܪܒܐ ܒܗܕܐ
4 ܬܟܝܠ ܐܢܐ: * ܚܕܐ ܫܐܠܬ ܡܢ ܡܪܝܐ ܘܠܗ ܗܝ ܒܥܐ ܐܢܐ. ܕܐܬܒ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ
5 ܟܠܗܘܢ ܝܘܡ̈ܬܐ ܕܚܝ̈ܝ: ܘܐܚܙܐ ܒܒܣܝܡܘܬܗ ܕܡܪܝܐ ܘܐܣܥܘܪ ܗܝܟܠܗ. * ܡܛܠ
ܕܢܛܫܝܢܝ ܒܡܛܠܬܗ ܒܝܘܡܐ ܒܝܫܐ: ܘܢܛܫܝܢܝ ܒܛܠܠܐ ܕܡܫܟܢܗ ܘܥܠ ܫܘܥܐ ܢܪܝܡܢܝ.
6 * ܡܢ ܗܫܐ ܢܬܬܪܝܡ ܪܝܫܝ ܥܠ ܒܥܠܕܒ̈ܒܝ ܕܚܕܪܘܢܝ: ܐܕܒܚ ܒܡܫܟܢܗ ܕܒ̈ܚܐ
7 ܕܬܫܒܘܚܬܐ. ܐܫܒܚ ܘܐܙܡܪ ܠܡܪܝܐ: * ܫܡܥ ܡܪܝܐ ܩܠܝ ܡܐ ܕܩܪܝܬܟ. ܘܐܬܪܚܡ ܥܠܝ
8 ܘܥܢܝܢܝ: * ܠܟ ܐܡܪ ܠܒܝ ܘܒܥܝܢ ܐܦ̈ܝ ܠܐܦ̈ܝܟ. * ܡܪܝܐ ܠܐ ܬܗܦܘܟ ܐܦ̈ܝܟ ܡܢܝ: ܘܠܐ
9 ܬܡܟܟܝܘܗܝ ܒܪܘܓܙܐ ܠܥܒܕܟ. ܥܕܘܪܐ ܗܘܝ ܠܝ ܐܢܬ ܡܪܝܐ: ܠܐ ܬܪܡܝܢܝ ܘܠܐ ܬܫܒܩܝܢܝ
10 ܐܠܗܝ ܘܦܪܘܩܝ. * ܡܛܠ ܕܐܒܝ ܘܐܡܝ ܫܒܩܘܢܝ ܘܡܪܝܐ ܢܣܒܢܝ:

Quoniam miſericordiæ tuæ ſunt ob oculos 3
meos, & ambulavi in fide. Non ſedi cum 4
malignis, et cum ſtultis non ſum ingreſſus : 5
Odi congregationem malorum, & cum 6
impiis non ſedi : Lavi purè manus me-
as, & circundedi altare tuum Domine. Ut 7
audire facerem vocem laudis tuæ, & nar-
rarem cuncta miracula tua. Domine, di- 8
lexi miniſterium domûs tuæ, & locum ha-
bitationis gloriæ tuæ. Ne perdas me cum 9
peccatoribus, & cum viris ſanguinis vitam
meam : In quorum manibus fraus eſt, & dex- 10
tera eorum plena munere. Ego autem in in- 11
nocentia mea ambulavi, redime me, & miſe-
rere mei. Pes meus ſtetit in rectitudine, & 12
in Eccleſia benedicam Domino.

PSAL. XXVII.

Davidis. Ob infirmitatem quæ ceciderat 1
in ipſum. Verſ. 38.

DOminus lux mea eſt, & ſalus mea, quem
timebo ? Dominus robur vitæ meæ, à
quo trepidabo ? Dum acciderent ad me ma- 2
li, ut ederent carnem meam inimici mei &
oſores mei, ſimul dejecti ſunt & corruerunt.
Si caſtrametetur adverſùm me exercit⁹, non 3
timebit cor meum : & ſi exurgat in me prælium,
um, huic rei fiſus ſum. Quòd unum quiddam 4
poſtulavi à Dño, idq; requiro : ut habitem in
domo Dñi omnibus diebus vitæ meæ, & in-
ſpiciam ſuavitatem Domini, viſitémque tem-
plum ejus. Quoniam abſcondet me in pro- 5
tectione ſua, die malo : méque occultabit in
umbra habitaculi ſui : & ſuper rupem extol-
let me. Ex nunc attolletur caput meum ſuper 6
inimicos meos qui circundederunt me : ſa-
crificabo in tabernaculo ejus ſacrificia lau-
dis : laudabo & pſallam Domino. Audi Do- 7
mine, vocem meam cùm clamavero ad te :
miſerere mei, & exaudi me. Tibi dicit cor 8
meum, & requirit facies mea vultum tuum.
Domine, ne avertas faciem tuam à me, & ne 9
affligas in ira ſervum tuum. Adjutor ſis tu
mihi Domine : ne projicias me, neque me
deſtituas, Deus meus, & ſalvator meus : Quo- 10
niam pater meus, & mater mea dereliquerunt
runt me, & Dominus collegit me.

Versio VULG. LAT.

3 Quoniam misericordia tua ante oculos
meos est: & complacui in veritate tua.
4 Non sedi cum concilio vanitatis: & cum
5 iniqua gerentibus non introibo. Odivi
ecclesiam malignantium: & cum impiis
6 non sedebo. Lavabo inter innocentes
manꝰ meas: & circumdabo altare tuum,
7 Domine: Ut audiam vocem laudis, & e-
8 narrem universa mirabilia tua. Domine,
dilexi decorem domûs tuæ, & locum ha-
9 bitationis gloriæ tuæ. Ne perdas cũ im-
piis, Deus, animam meam, & cum viris
10 sanguinum vitã meã: In quorũ manibus
iniquitates sunt: dextera eorum repleta
11 est muneribus. Ego autem in innocentia
mea ingressus sum: redime me, & mise-
12 rere meî. Pes meus stetit in directo: in
ecclesiis benedicam te, Domine.

1 Psalmus David priusquàm liniretur.

XXVI.

Dominus illuminatio mea, & salus
mea, quem timebo? Dominus pro-
2 tector vitæ meæ, à quo trepidabo? Dum
appropiant super me nocentes, ut edant
carnes meas: Qui tribulant me inimici
3 mei, ipsi infirmati sunt & ceciderunt. Si
consistant adversùm me castra, non time-
bit cor meum. Si exurgat adversùm me
4 prælium, in hoc ego sperabo. Unam petii
à Domino, hanc requiram, ut inhabitem
in domo Dñi omnibꝰ diebꝰ vitæ meæ: Ut
videam voluptatẽ Domini, & visitem tẽ-
5 plum ejus. Quoniam abscondit me in ta-
bernaculo suo: in die malorum protexit
6 me in abscondito tabernaculi sui. In pe-
tra exaltavit me: & nunc exaltavit caput
meũ super inimicos meos. Circuivi, &
immolavi in tabernaculo ejus hostiam
vociferationis: cantabo, & psalmũ dicã
7 Domino. Exaudi, Domine, vocem meam,
quâ clamavi ad te: miserere meî, & exau-
8 di me. Tibi dixit cor meũ, Exquisivit te
facies mea: faciẽ tuam, Domine, requi-
9 ram. Ne avertas faciem tuam à me: ne
declines in ira à servo tuo. Adjutor meus
esto: ne derelinquas me, neque despicias
10 me, Deus salutaris meus. Quoniam pater
meus, & mater mea dereliquerunt me:
Dominus autem assumpsit me.

Versio GRÆC. LXX. Interp.

3 † Ὅτι τὸ ἔλεός σου κατέναντι τῶν ὀφθαλμῶν (β) μου
4 ἐστί, † καὶ εὐηρέστησα ἐν τῇ ἀληθείᾳ σου. † Οὐκ ἐκά-
θισα μετὰ συνεδρίου ματαιότητος, † καὶ μετὰ παρανο-
5 μούντων οὐ μὴ εἰσέλθω. † Ἐμίσησα ἐκκλησίαν πο-
6 νηρευομένων, † καὶ μετὰ ἀσεβῶν οὐ μὴ καθίσω. † Νί-
ψομαι ἐν ἀθῴοις τὰς χεῖράς μου, † καὶ κυκλώσω τὸ
7 θυσιαστήριόν σου κύριε· † Τοῦ ἀκοῦσαι (γ) φωνῆς αἰ-
νέσεως, † καὶ διηγήσασθαι πάντα τὰ θαυμάσιά σου.
8 † Κύριε ἠγάπησα εὐπρέπειαν οἴκου σου, † καὶ τόπον
9 σκηνώματος δόξης σου. † Μὴ συναπολέσῃς μετὰ ἀ-
σεβῶν τὴν ψυχήν μου, † καὶ μετὰ ἀνδρῶν αἱμάτων τὴν
10 ζωήν μου, † Ὧν ἐν χερσὶν (ᵈ) ἀνομίαι, † ἡ δεξιὰ
11 αὐτῶν ἐπλήσθη δώρων. † Ἐγὼ δὲ ἐν ἀκακίᾳ μου ἐπο-
12 ρεύθην, † λύτρωσαί (δ) με καὶ ἐλέησόν με. † (ε)
Ὁ πούς μου ἔστη ἐν εὐθύτητι, † ἐν ἐκκλησίαις εὐλο-
γήσω σε κύριε.

1 (α) Τοῦ Δαυίδ, πρὸ τοῦ (β) χρισθῆναι. κϛʹ.

† Κύριος φωτισμός μου καὶ σωτήρ μου, τίνα φοβη-
θήσομαι; † κύριος ὑπερασπιστὴς τῆς ζωῆς μου,
2 ἀπὸ τίνος δειλιάσω; † Ἐν τῷ ἐγγίζειν ἐπ᾽ ἐμὲ
κακοῦντας, τοῦ φαγεῖν τὰς σάρκας μου, † οἱ θλίβον-
τές με καὶ οἱ ἐχθροί μου, αὐτοὶ ἠσθένησαν καὶ ἔπεσαν.
3 † Ἐὰν παρατάξηται ἐπ᾽ ἐμὲ παρεμβολή, οὐ φο-
βηθήσεται ἡ καρδία μου· † ἐὰν ἐπαναστῇ ἐπ᾽ ἐμὲ
4 πόλεμος, ἐν ταύτῃ ἐγὼ ἐλπίζω. Μίαν ᾐτησά-
μην παρὰ κυρίου, ταύτην ἐκζητήσω· † (γ) τοῦ
κατοικεῖν με ἐν οἴκῳ κυρίου πάσας τὰς ἡμέρας τῆς
ζωῆς μου, † τοῦ θεωρεῖν με τὴν τερπνότητα κυρίου, † καὶ
5 ἐπισκέπτεσθαι (δ) τὸν ναὸν αὐτοῦ. † Ὅτι ἔκρυψέ με ἐν
σκηνῇ αὐτοῦ ἐν ἡμέρᾳ κακῶν μου, † ἐσκέπασέ με ἐν
6 ἀποκρύφῳ τῆς σκηνῆς αὐτοῦ. Ἐν πέτρᾳ ὕψωσέ με, † καὶ
νῦν ἰδοὺ (ε) ὕψωσε τὴν κεφαλήν μου ἐπ᾽ ἐχθρούς μου.
† ἐκύκλωσα καὶ ἔθυσα ἐν τῇ σκηνῇ αὐτοῦ θυσίαν
7 ἀλαλαγμοῦ, † ᾄσομαι καὶ ψαλῶ τῷ κυρίῳ. † Εἰσά-
κουσον κύριε τῆς φωνῆς μου ἧς ἐκέκραξα (ζ), † ἐλέη-
8 σόν με, καὶ εἰσάκουσόν μου. † Σοὶ εἶπεν ἡ καρδία μου,
† Ἐξεζήτησα τὸ πρόσωπόν σου, † τὸ πρόσωπόν σου
9 κύριε ζητήσω. † Μὴ ἀποστρέψῃς τὸ πρόσωπόν σου
ἀπ᾽ ἐμοῦ, † μὴ ἐκκλίνῃς ἐν ὀργῇ ἀπὸ τοῦ δούλου σου.
βοηθός μου γενοῦ, μὴ ἐγκαταλείπῃς με, † καὶ μὴ
10 ὑπερίδῃς με ὁ θεὸς ὁ σωτήρ μου. † Ὅτι ὁ πατήρ μου
καὶ ἡ μήτηρ μου ἐγκατέλιπόν με, † ὁ δὲ κύριος
προσελάβετό με.

MS. A. (β) σου (γ) φωνὴν (ᵈ) αἱ ἀνομίαι, (δ) με κύριε
καὶ (ε) Ὁ γὰρ πούς μου Ψαλμ. κϛʹ. MS. A. (α) Τῷ
Δαυίδ, (β) χρισθῆ. (γ) τὸ κατοικεῖν (δ) τὸν ναὸν τὸν ἅγιον αὐτοῦ. (ε) ὕψωσεν
κύριος τὴν κεφαλήν (ζ) πρὸς σέ, ἐλέησόν

Versio GRÆ. LXX Interp. & Æthiop. Transl. LAT.

3 Quoniã misericordia tua ante 3
oculos meos est: & [c] complacui
in veritate tua. 4 Non sedi cum 4
consilio vanitatis: et cum iniqua
gerentibꝰ non introibo. 5 Odio ha- 5
bui ecclesiã malignantium: et cum
[d] impiis non sedebo. 6 Lavabo (e) 6
inter innocentes manus meas: &
circundabo altare tuũ, Domine.
7 Ut audiã vocem (f) [e] laudis, 7
et enarrẽ universa mirabilia tua.
8 Domine, dilexi (g) decorẽ domûs 8
tuæ, & locum habitationis gloriæ
tuæ. 9 [f] Ne simul perdas cum im- 9
piis animã meã, et cum viris san-
guinum vitã meam. 10 In quorũ 10
manibus iniquitates sunt: dextera
eorũ repleta est muneribꝰ. 11 Ego 11
autẽ in innocentia mea ambulavi:
redime [g] me, et miserere meî.
12 Pes meꝰ stetit in (h) rectitudine: 12
in ecclesiis benedicã te, Domine.

(a) Ipsius (b) David, priusquàm 1
liniretur.

XXVI.

1 Dominꝰ [a] illuminatio mea,
et salus mea, quem timebo?
2 Dominus protector vitæ meæ, à
quo trepidabo? 3 Dum appropin- 2
quant super me nocentes, ut edant
carnes meas. 4 [b] Qui tribulant
me, & inimici mei, ipsi infirmati
sunt, & ceciderunt. 5 Si consistãt 3
adversùm me castra; non timebit
cor meum. 6 Si insurgat in me bel-
lum; in (c) hac ego spero. 7 Unam 4
petii à Domino, hanc requiram: ut
inhabitem in domo Domini omnes
dies vitæ meæ: 8 (d) [c] Ut con-
templer delectationem Domini, et
(e) visitẽ templũ ejus. 9 Quoniã 5
abscondit me in tabernaculo suo
in die malorum meorum: protexit
me in abscondito tabernaculi sui.
10 In petra exaltavit me: et nunc 6
(f) ecce exaltavit [d] caput meum
super inimicos meos. 11 (g) Cir-
cuivi, & immolavi in tabernacu-
lo ejus [e] hostiam (h) vociferatio-
nis: cantabo, & psallam Domino.
12 Exaudi, Domine, vocem meam, 7
quâ clamavi ad te: miserere meî,
& exaudi me. 13 (i) Tibi dixit 8
cor meũ, (k) Quæsivit vultũ tuũ:
vultum tuum, Domine, requiram.
14 Ne avertas vultum tuum à 9
me: ne declines in ira [†] à servo tuo. 15 Adjutor meus esto, (l) ne derelinquas me: neque despicias me, Deus [f] Salvator meus. 16 Quoniam pater meus, & mater mea dereliquerunt me: Dominus 10
autem assumpsit me.

Versio ÆTHIOPICA.

3 ከመ፡ምሕረትከ፡ ቅድመ፡ አዕይንቲየ፡ውእ 3
ቱ።ወተፈሣሕኩ፡በአድኅኖትከ።=፡ ወኢ 4
ነበርኩ፡ ውስተ፡ ውደ፡ ከንቶ።ወኢቦእኩ፡
ምስለ፡ዐማፂያን።=፡ ጸላእኩ፡ማኅበረ፡እ 5
ኩያን።ወኢይነብር፡ምስለ፡ጽልሕዋን።=፡
ወአሐጽብ፡ በንጹሕ፡ እደዊየ።ወእዐውድ፡ 6
ምሥዋዒከ፡እግዚኦ።=፡ ከመ፡እስማዕ፡ 7
ቃለ፡ስብሐቲከ።ወከመ፡ እንግር፡ ኵሎ፡መ
ንክረከ።=፡ እግዚኦ፡ አፍቀርኩ፡ ሥነ፡ቤ 8
ትከ።ወመካነ፡ማኅደረ፡ስብሐቲከ።=፡ ኢ 9
ትግድፋ፡ ምስለ፡ ኃጥኣን፡ ለነፍስየ።ወኢ
ምስለ፡ዕድው፡ደም፡ለሕይወትየ።=፡ እለ፡ 10
ዐመፃ፡ውስተ፡እደዊሆሙ።ወምልእት፡ ኅል
ያን፡የማኖሙ።=፡ ወአንሰ፡በየዋሃትየ፡አሐ 11
ውር።አድኅነኒ፡ እግዚኦ፡ ተሣሀለኒ።=፡
እስመ፡ በርቱዕ፡ ቆመ፡ እገሪየ። በማኅበ 12
ር፡እባርከከ፡እግዚኦ።=፡

ዘዳዊት፡ዘእንበለ፡ይትቀባእ።

፳፮ እግዚአብሔር፡ያበርህ፡ሊተ፡ወያድኅ 1
ነኒ፡ መንትኑ፡ ያፈርሀኒ።=፡ እግዚአብሔ 2
ር፡ምእመና፡ ለሕይወትየ፡ ወመንትኑ፡ ያደነ
ግፀኒ።=፡ ሶበ፡ይቀርቡኒ፡እኩያን፡ይብልዑ 3
ኒ፡ሥጋየ።=፡ ጸላእትየሰ፡እለ፡ይሰቅዩኒ፡እ 4
ሙንቱ፡ደክሙ፡ወወድቁ።=፡ እመኒ፡ጸብአ 5
ኒ፡ተዓየን፡ኢይፈርሀኒ፡ልብየ።=፡ ወእመኒ፡ 6
ሮዱኒ፡ጸባኢት፡ እንሰ፡ቦቱ፡ተወከልኩ።=፡
አሐተ፡ ሰአልክዎ፡ ለእግዚአብሔር፡ ወኪያ 7
ሃ፡አኀሥሥ።ከመ፡እኅድር፡ቤቶ፡ለእግዚ
አብሔር፡በኵሉ፡መዋዕለ፡ ሕይወትየ።=፡
ወከመ፡ያርእየኒ፡ዘየሠምሮ፡ለእግዚአብሔ 8
ር።ወከመ፡ እጸመድ፡ ውስተ፡ ቤተ፡ መቅደ
ሱ።=፡ እስመ፡ኃብአኒ፡ውስተ፡ጽላሎቱ፡ 9
በዕለተ፡ መንደቤየ።ወሰወረኒ፡ በመኃብአ፡
ጽላሎቱ።=፡ ወደበ፡ኰኵሕ፡አልዓለኒ። 10
ናሁ፡ይእዜ፡ አልዓለ፡ እግዚአብሔር፡ ደበ፡
ጸላእትየ።=፡ ዖድኩ፡ ወሦዕኩ፡ውስተ፡ደ 11
ብተራሁ።መሥዋዕተ፡ወየበብኩ፡ ሎቱ።እ
ሴብሕ፡ ወእሴምር ፡ ለእግዚአብሔር።=፡
ስምዓኒ፡እግዚኦ፡ቃልየ፡ዘሰአልኩ፡ኃቤከ። 12
ተሣሀለኒ፡ ወሰምዓኒ፡ 13 ለከ፡ ይብለከ፡ል
ብየ።ወኀሠሥኩ፡ ገጸከ።ገጸ፡ዚአከ፡እኅ
ሥሥ፡እግዚኦ።=፡ ወኢትሚጥ፡ገጸከ፡ 14
እምኔየ።ወኢትትገኃስ፡እመገብርከ፡ተመ
ዓዕከ።=፡ ረድኤ፡ ኩንኒ፡ ወኢትግድፈኒ። 15
ወኢትትሀየየኒ ፡ አምላኪየ ፡ ወመድኃኒ
የ።=፡ እስመ፡ አቡየ፡ ወእምየ፡ገደፉኒ። 16
ወእግዚአብሔር፡ተወከፈኒ።=፡

INTERP. ÆTHIOP. [c] lætatus sum in salutari tuo. [d] dolosis [e] laudis tuæ; [f] Ne perdas [g] me, Domine, *PSAL. XXVI.* [a] illucet mihi, & liberabit me, [b] Inimici autem mei, qui tribulant me, ipsi [c] Et ut ostendat mihi quod Deo gratum est, & ut sedulò vacem in domo sanctitatis ejus. [ ] me Dominus super [e] hostiam, & vociferabor ipsi: cantabo [ ] tua [f] meus, & Liberator

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

3 *لان رحمتك قباله عيني* وقد ارتضيت بحقك* لم اجلس في محكم باطل ومع مخالفي الناموس
4
5 لم ادخل* ابغضت مجمع الاشرار* ولم اجالس المنافقين* اغسل بالطهارة يدي* واطوف
6
7 مذبحك يا رب* لاسمع صوت تسبحتك* وانطق بجميع عجائبك* يا رب احببت حسن بهاء
8
9 بيتك* وشبه موضع محل قدسك* لا تهلك مع المنافقين نفسي* ومع رجال الدماء حياتي*
10
11 *الذين في ايديهم السيئات* يمينهم امتلات رشوة* وانا بدعتي مشيت* انقذني يا رب وارحمني*
12 *لان رجلي قامتا بالاستقامة* اباركك يا رب في بيعتك* المزمور السادس والعشرون لداوود*
1 *قاله وفيه شكر على الخيرات واستزادة منها وتوكل بلا تضجيع* استحسن* له* قبل ان يمسح*
2 الرب نوري مخلصي ممن اخاف* الرب ناصر حياتي ممن اجزع* اذا اقترب مني الاشرار لياكلوا
3 لحمي* الذين احزنوني مع اعدائي* هم ضعفوا وسقطوا* فان حل جميعهم بي لم يخف قلبي*
4 وان قام علي القتال فبهذا متكل* واحدة سالت الرب وانا لها طالب* ان اسكن في بيت الرب
5 جميع ايام حياتي لانظر فرح الرب* واتعهد هيكله المقدس* لانه اخفاني في يوم شري* سترني
6 في خفية مظلته* وعلى الصفاة رفعني* وهاهوذا الان رفع راسي على اعدائي* طفت وذبحت في
7 مظلته* ذبيحة التهليل والتعظيم* اسبح الرب وارتل له* اسمع يا رب صوتي* الذي به دعوتك*
8 ويرحم علي واستجب لي* فلك يقول قلبي يقول للرب اطلب* واياك طلب وجهي ووجهك يا
9 رب اطلب* لا تصرف وجهك عني* ولا تمل عن عبدك بغضب* كن لي معينا لا تقصني*
10 ولا ترفضني يا الله مخلصي* فان ابي وامي تركاني والرب قبلني*

Quoniam misericordia tua est ante oculos 3
meos: et jam mihi complacita est veritas
tua. Non sedi in senatu vano, & cum re- 4
fractariis legis non sum ingressus. Odivi 5
concilium malorũ, neque consedi cum im-
piis. Lavo cum puritate manus meas, & 6
perlustro altare tuum, O Domine mi. Ut 7
audiam vocem laudis tuæ, et proferam u-
niversa miracula tua. O Domine mi, di- 8
lexi pulchritudinẽ splendoris domûs tuæ,
et speciẽ loci habitationis sanctitatis tuæ.
Ne perdas cum facinorosis animã meam, 9
& cum viris sanguinum vitam meam. In 10
quorum manibus sunt læsiones, dextera
eorum impleta est munere; Et ego cum 11
mansuetudine mea ambulavi. Redime me,
O Domine, & miserere meî: Nam pedes 12
mei persisterunt in rectitudine. Benedicam
te, O Domine, in ecclesia tua.

PSAL. XXVI.

Quem David dixit. Et continetur 1
in eo gratiarum actio ob benefi-
cia, atque ut augeantur petitio, &
fiducia absque intermissione. Ver.
35. Antequam unctus esset.

Dominus lux mea, & Salvator meus;
quem timebo? Dominus adjutor vitæ
meæ; à quo trepidabo? Cùm appropin- 2
quaverint ad me mali, ut comedant carnes
meas: qui contristârunt me cum inimicis
meis, ipsi infirmati sunt et corruerunt. Et- 3
iamsi castrametati fuerint ipsi omnes in
me, non timebit cor meum. Et si insurrexe-
rit adversùm me prælium, in hoc sum fre-
tus. Unum petii à Domino, & ego ipsum 4
requiro: ut habitarem in domo Domini o-
mnibus diebus vitæ meæ: ut videam hila-
ritatem Domini, & visitem templum ejus
sacrosanctum. Quoniam abscondit me in 5
die calamitatis meæ: protexit me in abdito
tabernaculi sui, et supra petram exaltavit
me. Et ecce nunc exaltavit caput meum 6
super inimicos meos. Lustravi, & mactavi
in tabernaculo ejus sacrificiis jubilationis
et magnificationis. Laudabo Dominum, &
psallam ei. Audi, O Domine, vocem me- 7
am, quâ vocavi te. Et miserere mei, et ex-
audi me. Tibi dicit cor meum, Dominum 8
requiro, téque expetivit facies mea: et fa-
ciem tuam, O Domine, disquiro. Ne aver-
tas faciem tuam à me, & ne declines 9
servo tuo cum furore. Esto mihi adjutor, ne extermines me: & ne respuas me, O Deus, Salvator meus. Quoniam pater meus, & mater mea dereliquerunt me, & Dominus suscepit me. 10

תהלים : כח כט

.meos hoſtes propter ,rectitudinis ſemitam *in* me duc & ,tuam viam Domine me Doce
11 הוֹרֵנִי יְהוָה דַּרְכֶּךָ וּנְחֵנִי בְּאֹרַח מִישׁוֹר לְמַעַן שׁוֹרְרָי׃
, *falſitatis* teſtes me in ſurrexerunt quoniam ,meorum hoſtium *voluntate in* me tradas Ne
12 אַל־תִּתְּנֵנִי בְּנֶפֶשׁ צָרָי כִּי קָמוּ־בִי עֵדֵי־שֶׁקֶר
terra in Domini bonitatem in videre crederem Niſi *.rapinam loquens &*
13 וִיפֵחַ חָמָס׃ לוּלֵא הֶאֱמַנְתִּי לִרְאוֹת בְּטוּב־יְהוָה בְּאֶרֶץ
expecta & ; tuum cor roborabit & , te robora : Dominum *ad* Expecta .viventium
14 חַיִּים׃ קַוֵּה אֶל־יְהוָה חֲזַק וְיַאֲמֵץ לִבֶּךָ וְקַוֵּה
.Dominum *ad*
אֶל־יְהוָה׃

PSAL. XXVIII. כח

fortè ne ,me à taceas ne , mea petra clamabo Domine te Ad .Davidi
1 לְדָוִד אֵלֶיךָ יְהוָה אֶקְרָא צוּרִי אַל־תֶּחֱרַשׁ מִמֶּנִּי פֶּן־
vocem Audi *.lacum* deſcendentibus *cum* aſſimiler & ; me à ſileas
2 תֶּחֱשֶׁה מִמֶּנִּי וְנִמְשַׁלְתִּי עִם־יוֹרְדֵי בוֹר׃ שְׁמַע קוֹל
adytum ad meas manus *me elevando in* , te ad *me clamando in* mearum deprecationum
תַּחֲנוּנַי בְּשַׁוְּעִי אֵלֶיךָ בְּנָשְׂאִי יָדַי אֶל־דְּבִיר
, iniquitatē operantibus cum & , impiis cum me trahas Ne .tuæ ſanctitatis
3 קָדְשֶׁךָ׃ אַל־תִּמְשְׁכֵנִי עִם־רְשָׁעִים וְעִם־פֹּעֲלֵי אָוֶן
eis Da .eorum corde in malum & ; ſuis *sociis* cum pacem loquentibus
4 דֹּבְרֵי שָׁלוֹם עִם־רֵעֵיהֶם וְרָעָה בִּלְבָבָם׃ תֶּן־לָהֶם
eorum manuū opus ſecundùm ,eorum *ſtudiorum* malum ſecundū & ,eorū opus ſecundùm
כְּפָעֳלָם וּכְרֹעַ מַעַלְלֵיהֶם כְּמַעֲשֵׂה יְדֵיהֶם
opera *ad intelligent* non Quoniam .eis eorum retributionem redde : eis da
5 תֵּן לָהֶם הָשֵׁב גְּמוּלָם לָהֶם׃ כִּי לֹא יָבִינוּ אֶל־פְּעֻלֹּת
Benedictus .eos ædificabit non & ,eos deſtruet ; ejus manuum opus *ad* & ,Domini
6 יְהוָה וְאֶל־מַעֲשֵׂה יָדָיו יֶהֶרְסֵם וְלֹא יִבְנֵם׃ בָּרוּךְ
, mea fortitudo Dominus .mearum deprecationum vocem audivit quoniam;Dominꝰ
7 יְהוָה כִּי־שָׁמַע קוֹל תַּחֲנוּנָי׃ יְהוָה עֻזִּי
: meum cor exultavit & , ſum adjutus & ,meum cor ſperavit ipſo in ,meum ſcutum &
וּמָגִנִּי בוֹ בָטַח לִבִּי וְנֶעֱזָרְתִּי וַיַּעֲלֹז לִבִּי
ſalutum fortitudo & *: eis* fortitudo Dominus .ei confitebor meo cantico *de* &
8 וּמִשִּׁירִי אֲהוֹדֶנּוּ׃ יְהוָה עֹז־לָמוֹ וּמָעוֹז יְשׁוּעוֹת
: tuæ hæreditati benedic & , tuum populum Serva *.ipſe* ſui *uncti*
9 מְשִׁיחוֹ הוּא׃ הוֹשִׁיעָה אֶת־עַמֶּךָ וּבָרֵךְ אֶת־נַחֲלָתֶךָ
.ſeculum in uſque eos extolle & , eos paſce &
וּרְעֵם וְנַשְּׂאֵם עַד־הָעוֹלָם׃

PSAL. XXIX. כט

, gloriam Domino *date* : arietum filios Domino Date .Davidi Canticum
1 מִזְמוֹר לְדָוִד הָבוּ לַיהוָה בְּנֵי אֵלִים הָבוּ לַיהוָה כָּבוֹד
Domino vos incurvate :ejus nominis gloriam Domino Date .fortitudinem &
2 וָעֹז׃ הָבוּ לַיהוָה כְּבוֹד שְׁמוֹ הִשְׁתַּחֲווּ לַיהוָה
Dominus ;fecit tonare gloriæ Deus ,aquas ſuper Domini Vox .ſanctitatis *decore* in
3 בְּהַדְרַת־קֹדֶשׁ׃ קוֹל יְהוָה עַל־הַמָּיִם אֵל־הַכָּבוֹד הִרְעִים יְהוָה
.decore in Domini vox : potentia in Domini Vox .multas aquas ſuper
4 עַל־מַיִם רַבִּים׃ קוֹל־יְהוָה בַּכֹּחַ קוֹל יְהוָה בֶּהָדָר׃

תרגום TARGUM.

11 אַלֵּפְנִי יְיָ אוֹרְחָתָךְ וְדַבְּרְנִי בְּהִלְכְתָא תְּרִיצְתָא
12 מְטוּל תּוּשְׁבְּחָתִי׃ לָא תִמְסְרִנַּנִי בִּרְעוּת מְעִיקַי
אֲרוּם קָמוּ עֲלַי סָהֲדֵי שִׁקְרָא וּמְמַלְּלֵי חֲטוּפָא׃
13 אִלּוּלֵי דִּי הֵימְנֵית לְמֶחְמֵי בְּטוּבָא דַּיְיָ בְּאַרְעָא
14 דְּחַיֵּי עַלְמָא׃ סְבוֹר עַל יְיָ תְּקוֹף וְעַלֵּם לִבָּךְ
וּסְבוֹר עַל יְיָ׃

כח

1 לְדָוִד לְוָתָךְ יְיָ אֲנָא קָרֵי תַּקִּיפִי לָא תִשְׁתּוֹק
מִנִּי דִּלְמָא תִשְׁתּוֹק מִנִּי וְאִתְמַתְלֵית עִם נָחֲתֵי
2 גוּבָא׃ קַבֵּל בְּקָל בָּעוּתִי בִּמְצַלְּיֵי לְוָתָךְ כַּד
3 אֶפְרוֹשׂ יְדַי בִּצְלוֹ קֳדָם הֵיכַל קֻדְשָׁךְ׃ לָא
תְנַגְּדִנַּנִי עִם רַשִׁיעַיָּא וְעִם עָבְדֵי עַוְלָא דִּי
מְמַלְּלִין שְׁלָמָא עִם חַבְרֵיהוֹן וּבִישְׁתָא בְּלִבְּהוֹן׃
4 הַב לְהוֹן כְּעוֹבָדֵיהוֹן וּכְבִישׁוּת עוֹבָדֵיהוֹן
כְּעוֹבָדֵי יְדֵיהוֹן פְּרַע לְהוֹן אֲתִיב פּוּרְעָנוּתְהוֹן
5 לְהוֹן׃ מְטוּל דְּלָא מִתְבַּיְנִין לְאוֹרַיְתָא דַּיְיָ
6 וּלְעוֹבָדֵי אִידוֹי יִפַגְּרִנּוּן וְלָא יִבְנִנּוּן׃ בְּרִיךְ
7 יְיָ אֲרוּם קַבֵּיל קָל צְלוֹתִי׃ יְיָ עוּשְׁנִי וְתְרֵיסִי
בֵּיהּ סַבַּר לִבִּי וְסַעֲדַנִי וַדְאֵץ לִבִּי וּמִתּוּשְׁבַּחְתִּי
8 אוֹדֶה קֳדָמוֹי׃ יְיָ תְּקוֹף לְהוֹן וְעוּשְׁנָא פּוּרְקָנוּת
9 מְשִׁיחֵיהּ הוּא׃ פְּרוֹק יַת עַמָּךְ וּבָרֵךְ יַת אַחְסַנְתָּךְ
זוּן לְהוֹן וְסוֹבַר יַתְהוֹן עַד עָלְמָא׃

כט

1 תּוּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד הַבוּ קֳדָם יְיָ תּוּשְׁבַּחְתָּא
כִּתֵּי מַלְאֲכַיָּא בְּנֵי אֵלִים הַבוּן קֳדָם יְיָ אִיקָר
2 וְעֻשְׁנָא׃ הַבוּן קֳדָם יְיָ אִיקַר שְׁמֵיהּ סְגִידוּ
3 קֳדָם יְיָ בְּשִׁבְהוֹרַת קוּדְשָׁא׃ קָלָא דַּיְיָ שְׁמִיעַ
עַל מַיָּא בִּתְקוֹף אִיקְרֵיהּ אַכְלֵי יְיָ עַל מַיִין
4 סַגִּיאִין׃ קָלָא דַּיְיָ שְׁמִיעַ בְּחֵילָא קָלָא דַּיְיָ
שְׁמִיעַ בְּשִׁבְהוֹרָא׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Doce me Domine viam tuam, & deduc 11
me in ſemitā rectam propter *laudes meas.*
Ne tradas me voluntati oppreſſorum me- 12
orum, quoniam ſurrexerunt contra me
teſtes mendaces & loquentes calumniam.
Niſi crediddiſſem videre bonitatem Do- 13
mini in terra vitæ perennis ; [*deſpondiſ-*
ſem animum.] Confide in Domino, ob- 14
firma & robora cor tuum, & ſpera in
Domino.

Davidi. 1

PSAL. XXVIII.

AD te Domine clamo, fortitudo mea,
ne ſileas à me : ne fortè ſi taceas à me,
tunc ſimilis fiam his qui deſcendunt in
puteum. Accipe vocem deprecationis 2
meæ, dùm oro ad te, cùm extendero ma-
nus meas in oratione coram templo ſan-
cto tuo. Ne traxeris me cum improbis & 3
cum operantibus iniquitatem, qui lo-
quuntur pacem cum proximis ſuis, cùm
malum ſit in cordibus eorum. Tribue 4
eis ſecundùm opera ipſorum, & ſecun-
dùm malitiam *operum* eorum, juxta ope-
ra manuum eorum repende illis, redde
eis retributionem ipſorum. Quoniam 5
non intelligent legem Domini, nec ope-
ra manuum ejus : deſtruet eos, & non
ædificabit eos. *Benedictus Dominus*, quo- 6
niam exaudivit vocem *orationum mea-*
rum. Dominus fortitudo mea & clypeus 7
meus : in *eo* confiſum eſt cor meum , &
adjuvit me, & gaviſum eſt cor meum :
proinde hymno meo gratias agam coram
eo. Dominus fortitudo illis & robur, 8
redemptio Chriſti ſui ipſe eſt. Redime 9
populum tuum & benedic hæreditati tuæ;
ciba eos, & ſuſtenta eos uſque in æter-
num.

Hymnus Davidi. 1

PSAL. XXIX.

TRibuite coram Domino laudem, cœtus
angelorum *filii Dei*, tribuite coram Do-
mino gloriam & fortitudinem. Tribuite 2
coram Domino gloriam nomini ipſius :
adorate coram Domino in decore ſancti-
tatis. Vox Domini audita eſt ſuper aquas 3
cum potentia gloriæ *ſuæ* : intonuit Do-
minus ſuper aquas multas. Vox Domini audita eſt in virtute : vox 4
Domini audita eſt in decore.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

11 ܐܠܦܝܢܝ ܡܪܝܐ ܐܘܪܚܟ. ܘܕܒܪܝܢܝ ܒܫܒܝܠܝܟ ܬܪܝܨܐ: * ܘܠܐ ܬܫܠܡܢܝ ܠܒܥܠܕܒܒܝ.
12
13 ܡܛܠ ܕܩܡܘ ܥܠܝ ܣܗܕܐ ܕܫܘܩܪܐ ܘܡܠܠܘ ܥܘܠܐ: * ܐܢܐ ܕܝܢ ܗܝܡܢܬ ܕܐܚܙܐ
14 ܛܒܬܗ ܕܡܪܝܐ ܒܐܪܥܐ ܕܚܝܐ. * ܣܒܪܘ ܒܡܪܝܐ ܘܢܬܚܝܠ ܠܒܟܘܢ:
ܣܒܪܘ ܒܡܪܝܐ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܟܚ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܐܬܟܫܦܬܐ ܘܨܠܘܬܐ. ܘܒܥܝܐ ܠܥܘܕܪܢܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܚ.
ܠܟ ܡܪܝܐ ܩܪܝܬ ܐܠܗܝ ܠܐ ܬܫܬܘܩ ܡܢܝ: ܕܠܡܐ ܬܫܬܘܩ ܡܢܝ ܘܐܬܕܡܐ ܠܗܘܢ
2 ܠܢܚܬܝ ܓܘܒܐ. * ܫܡܥ ܩܠܐ ܕܒܥܘܬܝ ܟܕ ܐܩܥܐ ܠܘܬܟ: ܘܟܕ ܐܪܝܡ ܐܝܕܝ ܠܗܝܟܠܟ
3 ܩܕܝܫܐ. * ܠܐ ܬܚܫܒܢܝ ܥܡ ܪܫܝܥܐ ܘܥܡ ܥܒܕܝ ܥܘܠܐ: ܕܡܡܠܠܝܢ ܫܠܡܐ ܥܡ
4 ܚܒܪܝܗܘܢ ܘܒܝܫܬܐ ܒܠܒܘܬܗܘܢ. * ܦܪܘܥ ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܥܒܕܝܗܘܢ ܘܐܝܟ ܒܝܫܘܬܗܘܢ:
5 * ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܣܬܟܠܘ ܒܥܒܕܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܘܒܥܒܕ ܐܝܕܘܗܝ. ܢܣܚܘܦ ܐܢܘܢ ܘܠܐ
6 ܢܒܢܐ ܐܢܘܢ: * ܒܪܝܟ ܗܘ ܡܪܝܐ ܕܫܡܥ ܩܠܐ ܕܒܥܘܬܝ. * ܡܪܝܐ ܥܘܕܪܢܝ
7 ܘܡܣܡܟܢܝ: ܕܥܠܘܗܝ ܐܬܬܟܠ ܠܒܝ ܘܦܪܥ ܒܣܪܝ. ܘܒܬܫܒܘܚܬܐ ܐܘܕܐ ܠܗ:
8 * ܡܪܝܐ ܚܝܠܐ ܗܘ ܕܥܡܗ. ܘܡܣܝܒܪܢܐ ܘܦܪܘܩܐ ܕܡܫܝܚܗ: * ܦܪܘܩ ܠܥܡܟ ܘܒܪܟ
9 ܠܝܪܬܘܬܟ. ܪܥܝ ܐܢܘܢ ܘܕܒܪ ܐܢܘܢ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܟܛ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܥܠ ܩܘܪܒܢܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܕ.
2 ܐܝܬܘ ܠܡܪܝܐ ܒܢܝ ܕܟܪܐ. ܐܝܬܘ ܠܡܪܝܐ ܫܘܒܚܐ ܘܐܝܩܪܐ: * ܐܝܬܘ ܠܡܪܝܐ ܐܝܩܪܐ ܠܫܡܗ.
3 ܣܓܘܕܘ ܠܡܪܝܐ ܒܕܪܬܐ ܕܩܘܕܫܗ: * ܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܡܝܐ. ܐܠܗܐ ܡܫܒܚܐ ܪܥܡ:
4 ܡܪܝܐ ܥܠ ܡܝܐ ܣܓܝܐܐ. * ܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܒܚܝܠܐ ܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܒܫܘܒܚܐ:

* Doce me,Domine,viam tuam, & duc me per 11
ſemitas tuas rectas. Et ne tradas me hoſti- 12
bus meis; Quoniam inſurrexerunt adverſùm
me teſtes falſitatis, & locuti ſunt flagitium.
Ego autem credidi me viſurum bona Dñi in 13
terra viventium. Sperate in Domino & ro- 14
boretur cor veſtrum, ſperate in Domino.

PSAL. XXVIII.

Davidis. Supplicatio, & oratio; atque ut 1
imploremus auxilium. Verſ. 28.

AD te Domine, clamavi : Deus meus, ne
ſileas à me; ne fortè obmuteſcas à me,
& ſimilis reddar deſcendentibus in foveam.
Audi vocem deprecationis meæ quum cla- 2
mavero ad te, & quum extulero manus meas
ad templum tuum ſanctum. Ne me numeres 3
cum impiis,& cum operantibus iniquitatem:
qui loquuntur pacem cum proximis ſuis, at
malum in cordibus ſuis. Retribue illis ſe- 4
cundùm opera ſua, & juxta malitiam ſuam :
Quia non animadverterunt opera Domini, 5
& facturam manuum ejus; deſtruet eos, &
non ædificabit eos. Benedictus Dominus, 6
qui audivit vocem petitionis meæ. Dominus 7
adjutor meus, & ſuffultor meus, cui fiſum
eſt cor meum, & germinavit caro mea , &
cum gloria confitebor ei. Dominus robur eſt 8
populi ſui,& protector atq; ſalvator Chriſti
ſui. Salva populum tuum, & benedic hæ- 9
reditati tuæ : paſce eos & rege illos uſque
in æternum.

PSAL. XXIX.

Davidis. De oblatione. Verſus 24. 1

AFferte Domino filios arietum, afferte
Domino gloriam & honorem. Afferte 2
Domino decus nomini ejus, adorate Domi-
num in atrio ſanctitatis ejus. Vox Domini 3
ſuper aquas, Deus glorioſus tonuit, Dominus
ſuper aquas multas. Vox Domini cum po- 4
tentia, Vox Domini cum gloria.

Verſio VULG. LAT.

11 Legem pone mihi, Domine, in via tua: &
dirige me in ſemitam rectam propter in-
12 imicos meos. Ne tradideris me in animas
tribulantium me: quoniam inſurrexerunt
in me teſtes iniqui, & mentita eſt iniqui-
13 tas ſibi. Credo videre bona Domini in
14 terra viventium. Expecta Dominum, vi-
riliter age: & confortetur cor tuum, &
ſuſtine Dominum.

Pſalmus ipſi David. XXVII.

1 AD te, Domine, clamabo; Deꝰ meus, ne
ſileas à me; ne quando taceas à me, et
2 aſſimilabor deſcendētibꝰ in lacū. Exaudi,
Domine, vocē deprecationis meæ dum o-
ro ad te: dum extollo manꝰ meas ad tem-
3 plū ſanctū tuum. Ne ſimul trahas me cum
peccatoribus: & cum operantibꝰ iniqui-
tatem ne perdas me: Qui loquuntur pa-
cem cum proximo ſuo, mala autem in
4 cordibus eorum. Da illis ſecundū opera
eorum, & ſecundùm nequitiam adinven-
tionū ipſorum. Secundùm opera manuū
eorum tribue illis: redde retributionem
5 eorum ipſis. Quoniā non intellexerunt o-
pera Domini, & in opera manuū ejꝰ: de-
6 ſtrues illos, & non ædificabis eos. Bene-
dictus Dñs: quoniā exaudivit vocem de-
7 precationis meæ. Dñs adjutor meꝰ, &
protector meꝰ: in ipſo ſperavit cor meū,
& adjutus ſum. Et refloruit caro mea:
8 & ex voluntate mea confitebor ei. Dñs
fortitudo plebis ſuæ: & protector ſalva-
9 tionū Chriſti ſui eſt. Salvum fac populū
tuū, Domine, & benedic hæreditati tuæ:
& rege eos, & extolle illos uſq; in æter-
num.

1 Pſalmus David, In conſummatione tabernaculi. XXVIII.

AFferte Domino, filii Dei: afferte Do-
2 mino filios arietū. Afferte Domino
gloriam & honorem, afferte Domino
gloriam nomini ejus: adorate Dominū
3 in atrio ſancto ejus. Vox Domini ſuper a-
quas, Deus majeſtatis intonuit: Domi-
4 nus ſuper aquas multas. Vox Domini
in virtute: vox Domini in magnifi-
centia.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

11 † Νομοθέτησόν με (η) κύριε ἐν τῇ ὁδῷ σου, † καὶ ὁ-
δήγησόν με ἐν τρίβῳ εὐθείᾳ ἕνεκα τῶν ἐχθρῶν μου.
12 † Μὴ παραδῷς με εἰς ψυχὰς θλιβόντων με, † ὅτι
ἐπανέστησάν μοι μάρτυρες ἄδικοι, † καὶ ἐψεύσατο
13 ἡ ἀδικία ἑαυτῇ. † Πιστεύω τοῦ ἰδεῖν τὰ ἀγαθὰ
14 κυρίου ἐν γῇ ζώντων. † Ὑπόμεινον τὸν κύριον,
† ἀνδρίζου, καὶ κραταιούσθω ἡ καρδία (θ) σου, καὶ
ὑπόμεινον τὸν κύριον. MS.A. (η) κύριε τῇ (θ) μου,

Τοῦ Δαυίδ. κζʹ.

1 † ΠΡὸς σὲ κύριε (α) ἐκέκραξα, ὁ θεός μου μὴ
παρασιωπήσῃς (β) ἐπ' ἐμοί, † μή ποτε πα-
ρασιωπήσῃς (γ) ἐπ' ἐμοί, † καὶ ὁμοιωθήσομαι
2 τοῖς καταβαίνουσιν εἰς λάκκον. † Εἰσάκουσον τῆς
φωνῆς τῆς δεήσεώς (δ) μου, ἐν τῷ δέεσθαί με πρὸς
σέ, † ἐν τῷ αἴρειν με χεῖράς μου (ε) εἰς ναὸν ἅγιόν
3 σου. † Μὴ συνελκύσῃς μετὰ ἁμαρτωλῶν τὴν ψυχήν
μου, † καὶ μετὰ (ζ) ἐργαζομένων ἀδικίαν μὴ συναπο-
λέσῃς με, † τῶν λαλούντων εἰρήνην μετὰ τῶν πλησίον
4 αὐτῶν, † κακὰ δὲ ἐν ταῖς καρδίαις αὐτῶν. † Δὸς
αὐτοῖς κατὰ τὰ ἔργα αὐτῶν, † καὶ κατὰ τὴν πονηρίαν
τῶν ἐπιτηδευμάτων αὐτῶν. † κατὰ τὰ ἔργα
τῶν (η) χειρῶν αὐτῶν δὸς αὐτοῖς, † ἀπόδος τὸ
5 ἀνταπόδομα αὐτῶν αὐτοῖς. † Ὅτι οὐ συνῆ-
καν εἰς τὰ ἔργα κυρίου † καὶ εἰς τὰ ἔργα τῶν χει-
ρῶν αὐτοῦ, † καθελεῖς αὐτοὺς καὶ οὐ μὴ οἰκοδο-
6 μήσεις αὐτούς. † Εὐλογητὸς κύριος, ὅτι εἰσήκουσε
7 τῆς φωνῆς τῆς δεήσεώς μου. † Κύριος βοηθός
μου καὶ ὑπερασπιστής μου· † ἐπ' αὐτῷ ἤλπισεν ἡ καρ-
δία μου, καὶ ἐβοηθήθην, † καὶ ἀνέθαλεν ἡ σάρξ μου·
† καὶ ἐκ θελήματός μου ἐξομολογήσομαι αὐτῷ.
8 † Κύριος κραταίωμα τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, † καὶ ὑπερασπι-
9 στὴς τῶν σωτηρίων τοῦ χριστοῦ αὐτοῦ ἐστι. † Σῶσον τὸν
λαόν σου, καὶ εὐλόγησον τὴν κληρονομίαν σου, † καὶ
ποίμανον αὐτούς, καὶ ἔπαρον αὐτοὺς ἕως τοῦ αἰῶνος.
MS.A. (α) κεκράξομαι, (β) ἀπ' ἐμοῦ, (γ) ἀπ' ἐμοῦ,
(δ) μου, ἧς ἐκέκραξα πρὸς σέ, ἐν τῷ αἴρειν με (ε)
πρὸς ναὸν (ζ) ἐργαζομένων τὴν * μὴ συναπολέσῃς
(η) χειρῶν δὸς αὐτοῖς,

1 Ψαλμὸς τῷ Δαυὶδ ἐξοδίου σκηνῆς. κηʹ.

† ἘΝέγκατε τῷ κυρίῳ υἱοὶ θεοῦ, † ἐνέγκατε
2 τῷ κυρίῳ υἱοὺς κριῶν. † Ἐνέγκατε τῷ κυρίῳ
δόξαν καὶ τιμήν, † ἐνέγκατε τῷ κυρίῳ δόξαν ὀνό-
ματι αὐτοῦ· † προσκυνήσατε τῷ κυρίῳ ἐν αὐλῇ
3 ἁγίᾳ αὐτοῦ. † Φωνὴ κυρίου ἐπὶ τῶν ὑδάτων, ὁ θεὸς
τῆς δόξης ἐβρόντησε, † κύριος ἐπὶ ὑδάτων πολ-
4 λῶν. † Φωνὴ κυρίου ἐν ἰσχύϊ, † φωνὴ κυρίου ἐν
μεγαλοπρεπείᾳ.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

17 (m) [g] Legem pone mihi, Do- 11
mine, in via tua, & dirige me in
ſemita juſta propter inimicos me-
os. 18 Ne tradideris me in ani- 12
mas tribulantium me: quoniam
inſurrexerunt mihi teſtes (n) ini-
qui: & mentita eſt iniquitas ſibi.
19 Credo (o) videre bona Domi- 13
ni in terra viventiū. 20 Suſtine 14
Dñm, viriliter age: et confortetur
cor tuum. & ſuſtine Dominum.

(a) Ipſius David. XXVII.

ADte, Domine, (b) clamavi: 1
Deus meꝰ, ne ſileas (c) ſu-
per me: ne (d) quando ſileas ſu-
per me, & aſſimilabor deſcenden-
tibus in lacum. 2 (e) Exaudi vo- 2
cē deprecationis meæ, [a] dum oro
ad te: dum extollo manꝰ meas ad
(f) templū ſanctū tuū. 3 [b] Ne 3
ſimul trahas cum peccatoribꝰ (g)
animam meam, & cum operan-
tibus iniquitatem ne comperdas
me: 4 qui loquuntur pacem
cum proximis ſuis: mala au-
tem in cordibus eorum. 5 Da il- 4
lis ſecundum opera eorū, & ſe-
cundū malignitatem adinventio-
num ipſorū: 6 ſecundùm opera
manuum illorum da eis: red-
de retributionem eorum ipſis.
7 Quoniam non intellexerunt 5
in operibus Domini, & in ope-
ribus manuum ejus: deſtrues il-
los, & non ædificabis eos. 8 Be- 6
nedictus Dominus, quoniā exau-
divit vocem deprecationis meæ:
9 Dominus adjutor meus, et pro- 7
tector meus. In ipſo ſperavit cor
meū, et adjutꝰ ſum. 10 (h) Et re-
floruit caro mea: et (i) ex volun-
tate mea cōfitebor ei. 11 Dns for- 8
titudo plebis ſuæ, & protector ſa-
lutarium Chriſti ſui eſt. 12 Sal- 9
vū fac populum tuum, & benedic
hæreditatē tuam: & paſce illos,
et extolle illos uſque in ſeculum.

Pſalmus ipſi David [a] exodii (a) tabernaculi. XXVIII.

1 *AFferte Domino, filii Dei: af-*
ferte Domino filios arietū.
2 (b) Afferte Dño (c) gloriā, & 2
honorem: afferte (d) [b] gloriam
*nomini ejus: adorate Dominū *in*
aula ſancta ejus. 3 Vox Domini 3
ſuper aquas: Deus majeſtatis intonuit: Dominus ſuper aquas multas. 4 Vox Domini in 4
virtute: vox Domini in magnificentia.

Verſio ÆTHIOPICA.

ምርሐኒ፡ እግዚኦ፡ ፍኖተከ፡፡ ወምርሐኒ፡ ፍ 17
ኖተ፡ ርትዕከ፡ በእንተ፡ ጸላእትየ፡፡=፡ ወኢ 18
ትመጥወኒ፡ ለነፍስ፡ ለእለ፡ ይሣቅዩኒ፡፡ እስ
መ፡ ቆሙ፡ ላዕሌየ፡ ሰማዕተ፡ ዓመፃ፡፡ ወሐሰ
ት፡ ርእሳ፡ ዓመፃ፡፡=፡ እትአመን፡ ከመ፡ እር 19
ኢይ፡ ሠናይቶ፡ ለእግዚአብሔር፡ በብሔረ፡ ሕ
ያዋን፡፡=፡ ወተሰፈዎ፡ ለእግዚአብሔር፡፡ 20
ተዐገሥ፡ ወአጽንዕ፡ ልበከ፡፡ ወተሰፈዎ፡ ለእ
ግዚአብሔር፡፡=፡

መዝሙር፡ ዘደዊት፡፡

፳፯ ኀቤከ፡ እግዚኦ፡ ጸራኅኩ፡ አምላኪየ፡ 1
ወኢትጸመመኒ፡፡ ወእመሰ፡ ተጸመምከኒ፡ እከ
ውን፡ ከመ፡ እለ፡ ይወርዱ፡ ውስተ፡ ግብ፡፡=፡
ስምዓኒ፡ እግዚኦ፡ ቃለ፡ ስእለትየ፡ ዘጸራኅኩ፡ 2
ኀቤከ፡፡ ሶበ፡ አነሥእ፡ እደዊየ፡ በጽርሐ፡ መ
ቅደስከ፡፡=፡ ኢትስሐበኒ፡ ምስለ፡ ኃጥኣን፡ ለ 3
ነፍስየ፡፡ ወኢትገድፈኒ፡ ምስለ፡ ገበርተ፡ ዐመ
ፃ፡፡=፡ እለ፡ ይትናገሩ፡ ሰላመ፡ ምስለ፡ ቢጾ 4
ሙ፡፡ ወእኩይ፡ ውስተ፡ ልቦሙ፡፡=፡ ሀቦሙ፡ 5
በከመ፡ ምግባሮሙ፡፡ ወበከመ፡ እከየ፡ ሕሊና
ሆሙ፡፡=፡ ፍድዮሙ፡ በከመ፡ ግብረ፡ እደዊ 6
ሆሙ፡፡ ፍድዮሙ፡ ፍደሆሙ፡ ላዕለ፡ ርዕሶ
ሙ፡፡=፡ እስመ፡ ኢሐለዩ፡ ውስተ፡ ግብረ፡ 7
እግዚአብሔር፡፡ ወኢ፡ ውስተ፡ ግብረ፡ እደዊ
ሁ፡፡ ንስቶሙ፡ ወኢትሕንጾሙ፡፡=፡ ይትባ 8
ርክ፡ እግዚአብሔር፡ እስመ፡ ሰምዐኒ፡ ቃለ፡ ስ
እለትየ፡፡=፡ እግዚአብሔር፡ ረዳኢየ፡ ወመ 9
እመንየ፡፡ ወቦቱ፡ ተወከለ፡ ልብየ፡ ወይረድ
አኒ፡፡=፡ ወሠረጸ፡ ጽጋየ፡፡ ዘእምፈቃድየ፡ 10
አአምኖ፡፡=፡ እግዚአብሔር፡ ኃይሎሙ፡ 11
ውእቱ፡ ለሕዝብ፡፡ ወምእመነ፡ መድኀኒተ፡
መሲሁ፡ ውእቱ፡፡=፡ አድኅን፡ ሕዝበከ፡ ወ 12
ባርክ፡ ርስተከ፡፡ ረአዮሙ፡ ወአልዕሎሙ፡ እ
ስከ፡ ለዓለም፡፡=፡

መዝሙር፡ ዘደዊት፡ ዘበፃዓተ፡ ትዕይንት፡፡

፳፰ አምጽኡ፡ ለእግዚአብሔር፡ ውሉደ፡ 1
አማልክት፡፡ አምጽኡ፡ ለእግዚአብሔር፡ እ
ጕለ፡ ሐራጊት፡፡=፡ አምጽኡ፡ ለእግዚአብ 2
ሔር፡ ክብረ፡ ወስብሐተ፡፡ አምጽኡ፡ ለእግዚ
አብሔር፡ ስብሐተ፡ ለስሙ፡፡ ስግዱ፡ ለእግዚ
አብሔር፡ በዐጸደ፡ መቅደሱ፡፡=፡ ቃለ፡ እግዚ 3
አብሔር፡ ላዕለ፡ ማያት፡፡ አምላከ፡ ስብ
ሐት፡ አንጐድጐደ፡፡ እግዚአብሔር፡ ላዕ
ለ፡ ማያት፡ ብዙኃን፡፡=፡ ቃለ፡ እግዚአብሔ 4
ር፡ በኃይል፡፡ ቃለ፡ እግዚአብሔር፡ በዐቢይ፡
ስብሐት፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [g] Oſtende mihi, Domine, viam tuam, *PSAL. XXVII.* [a] qui clamo [b] Ne trahas *PSAL. XXVIII.* [a] in exitu [b] Domino gloriam nomini

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ثبت لي يا رب في سبلك ناموسا * واهدني الي طريق مستقيمة * من اجل اعداي * لا تسلمني 11 12
الي انفس الذين احزنوني * فان شهادات الظلم قامت علي * والظالم اكذب نفسه * وانا مصدق 13
ان اعاين * خيرات الرب في ارض الحياة * وارجوا الرب * يقوي ويعز قلبي * اذا امّلت الرب * الليلويا * 14

* المزمور السابع والعشرون * تضرع ونبوة * وعدده كه استيخن * 1

اليك يا رب صرخت . الاهي لا تغفل عني * ليلا تغفل عني فاصير كالهابطين في الجب * اسمع 2
يا رب صوت دعاي عندما ادعوك * وعند رفع يدي الي هيكل قدسك * لا تخطف نفسي 3
مع الخطاة * ولا تهلكني مع فاعلي الاثم * المتكلمين بالسلامة مع اصحابهم * والشرور في قلوبهم *
* اجزهم كاعمالهم * ومثل شرور صنعهم * واعمال ايديهم اعطهم * اعطهم عوض ما عملوا * 4
* لانهم لم يفهموا اعمال الرب * ولا صنع يديه * تهدمهم ولا تبنيهم * تبارك الرب الله لانه سمع 5 6
صوت تضرعي * الرب عوني وناصري * عليه توكل قلبي * وهو اغاثني * وانمى لحمي * وبارادتي 7
اشكر له * الرب قوة شعبه * وناصر خلاص مسيحه * خلص شعبك وبارك ميراثك * ارعهم 8 9
وارفعهم الي الابد * الليلويا *

* المزمور الثامن والعشرون *

* نبوة علي التجسد وعن القبة والمظلة * وعدده * كب * استيخن * 1

قربوا للرب ابناء الله * قربوا للرب اولاد الكباش * قربوا للرب مجدا وكرامة * قربوا للرب مجدا 2
لاسمه * اسجدوا للرب في ديار المقدسة * صوت الرب على المياه * اله المجد ارعد * الرب على 3
مياه غزيرة * صوت الرب بقوة * صوت الرب بعظيم البهاء * 4

Stabilito mihi, O Domine, in ſemitis tuis 11
legem: & dirige me in viam rectam. Pro- 12
pter inimicos meos ne tradas me animis
eorum, qui me afflixerunt: Quoniam teſti-
monia iniquitatis inſurrexerunt in me, &
iniquus mentiri fecit ſeipſum. Et ego cre- 13
dens ſum quòd videbo bona Domini in
terra vitæ: Et ſpero Dominum. Corrobo- 14
rabitur & confortabitur cor meum, cùm
expectavero Dominum. Alleluja.

PSAL. XXVII.

Oratio & Prophetia. Num. ver. 25. 1

AD te, O Domine mi, clamavi; Deus
meus, ne negligas me: ut ne negli-
gas me, & fiam veluti deſcendentes in
lacum. Audi, O Domine mi, vocem cla- 2
moris mei, cùm invocavero te, cúmque
levavero manus meas ad templum ſancti-
tatis tuæ. Ne rapias animam meam cum 3
peccatoribus, & ne perdas me cum ope-
rantibus iniquitatem: loquentibus pacem
cum proximis ſuis, quum inſint mala in
cordibus eorum. Retribue eis ſecundùm 4
opera eorum: & ſecundùm nequitiam fa-
cinoris eorum, & opera manuum eorum
tribue eis: tribue illis compenſationem e-
jus quod fecerunt. Quia ipſi non intel- 5
lexerunt opera Domini, neque præclara
geſta manuum ejus. Evertat eos, & non
ædificet illos. Benedicatur Dominus De- 6
us, quoniam audivit vocem ſupplicationis
meæ. Dominus auxilium meum, & ad- 7
jutor meus: in ipſo confiſum eſt cor me-
um, ipſéque eſt auxilium meum, & nu-
trivit carnem meam, & ſponte meâ gra-
tias agam illi. Dominus virtus populi 8
ſui, & adjutor ſalutis chriſti ſui. Salva 9
populum tuum, et benedic hæreditati tuæ:
paſce eos, & exalta eos in æternum. Alle-
luja.

PSAL. XXVIII.

Prophetia de Incarnatione. Et 1
de Arca, atq; Tentorio. Num. v. 22.

OFferte Domino, filii Dei, offerte Do-
mino filios arietum. Præbete Domino 2
gloriam, & venerationem, præbete Domi-
no laudem nomini ejus: adorate Dominū
in habitatione ſancta ejus. Vox Domini 3
ſuper aquas: Deus gloriæ intonuit: Do-
minus ſuper aquas multas. Vox Domini 4
cum virtute, vox Domini cum magnitu-
dine fulgoris.

תהלים : ל לא

.Libani cedros Dominus confregit & ,cedros confringens Domini Vox
5 קוֹל יְהוָה שֹׁבֵר אֲרָזִים וַיְשַׁבֵּר יְהוָה אֶת־אַרְזֵי הַלְּבָנוֹן׃
Vox .unicornium filium ſicut ,Sirion &,Lebanon:vitulum ſicut eas faciet exilire Et
6 7 וַיַּרְקִידֵם כְּמוֹ־עֵגֶל לְבָנוֹן וְשִׂרְיֹן כְּמוֹ בֶן־רְאֵמִים׃ קוֹל־
faciet parturire : *deſertum tremefaciet* Domini Vox .ignis flammas ſuccidens Domini
8 יְהוָה חֹצֵב לַהֲבוֹת אֵשׁ׃ קוֹל יְהוָה יָחִיל מִדְבָּר יָחִיל
: ſylvas detexit & , cervas faciet parturire Domini Vox .Cades deſertum Dominus
9 יְהוָה מִדְבַּר קָדֵשׁ׃ קוֹל יְהוָה יְחוֹלֵל אַיָּלוֹת וַיֶּחֱשֹׂף יְעָרוֹת
ſedit & : ſedit diluvio in Dominus .gloriam *dicens* ipſe totus , ejus templo in &
10 וּבְהֵיכָלוֹ כֻּלּוֹ אֹמֵר כָּבוֹד׃ יְהוָה לַמַּבּוּל יָשָׁב וַיֵּשֶׁב
Dominus : dabit ſuo populo fortitudinem Dominus .ſeculum in rex Dominus
11 יְהוָה מֶלֶךְ לְעוֹלָם׃ יְהוָה עֹז לְעַמּוֹ יִתֵּן יְהוָה
.pace in ſuo populo benedicet
יְבָרֵךְ אֶת־עַמּוֹ בַשָּׁלוֹם׃

PSAL. XXX. ל

quoniam ,Domine te Exaltabo .David domus dedicationis cantici Pſalmus
1 2 מִזְמוֹר שִׁיר־חֲנֻכַּת הַבַּיִת לְדָוִד׃ אֲרוֹמִמְךָ יְהוָה כִּי
clamavi ,meus Deus Domine .*mihi* meos inimicos lætificâſti non & : me exaltâſti
3 דִלִּיתָנִי וְלֹא־שִׂמַּחְתָּ אֹיְבַי לִי׃ יְהוָה אֱלֹהָי שִׁוַּעְתִּי
me vivificâſti:meam animã inferno ab feciſti aſcendere,Domine .me ſanâſti &, te ad
4 אֵלֶיךָ וַתִּרְפָּאֵנִי׃ יְהוָה הֶעֱלִיתָ מִן־שְׁאוֹל נַפְשִׁי חִיִּיתַנִי
memoriæ confitemini & ,ejus miſericordes Domino Canite *lacum me deſcendendo* à
5 מִיּוֹרְדִי־בוֹר׃ זַמְּרוּ לַיהוָה חֲסִידָיו וְהוֹדוּ לְזֵכֶר
veſpera in : ejus voluntate in *vitæ* , ejus *naſo* in momentum Quoniam .ejus ſanctitatis
6 קָדְשׁוֹ׃ כִּי רֶגַע בְּאַפּוֹ חַיִּים בִּרְצוֹנוֹ בָּעֶרֶב
nutabo non : mea *quiete* in dixi ego Et .*jubilatio* mane *in* & ,fletus pernoctabit
7 יָלִין בֶּכִי וְלַבֹּקֶר רִנָּה׃ וַאֲנִי אָמַרְתִּי בְשַׁלְוִי בַּל־אֶמּוֹט
: fortitudinem meo monte in feciſti ſtare tua voluntate in Domine .ſeculum in
8 לְעוֹלָם׃ יְהוָה בִּרְצוֹנְךָ הֶעֱמַדְתָּה לְהַרְרִי עֹז
Dominum ad & ,clamabo Domine te Ad .territus fui : *tuas facies* abſcondiſti
9 הִסְתַּרְתָּ פָנֶיךָ הָיִיתִי נִבְהָל׃ אֵלֶיךָ יְהוָה אֶקְרָא וְאֶל־יְהוָה
? foveam *ad me deſcendendo in* ; meo ſanguine in *lucri* *Quid* .orabo
10 אֶתְחַנָּן׃ מַה־בֶּצַע בְּדָמִי בְּרִדְתִּי אֶל־שָׁחַת
,Domine Audi ? tuã veritatẽ annunciabit nunquid : pulvis tibi confitebitur Nunquid
11 הֲיוֹדְךָ עָפָר הֲיַגִּיד אֲמִתֶּךָ׃ שְׁמַע־יְהוָה
,mihi chorum in meum planctum Vertiſti .mihi adjutor eſto Domine :mihi miſerere &
12 וְחָנֵּנִי יְהוָה הֱיֵה־עֹזֵר לִי׃ הָפַכְתָּ מִסְפְּדִי לְמָחוֹל לִי
non & , gloria tibi canat Ut .lætitia me accinxiſti & , meum ſaccum ſolviſti
13 פִּתַּחְתָּ שַׂקִּי וַתְּאַזְּרֵנִי שִׂמְחָה׃ לְמַעַן יְזַמֶּרְךָ כָבוֹד וְלֹא
.tibi confitebor ſeculum in mi Deus Domine : taceat
יִדֹּם יְהוָה אֱלֹהַי לְעוֹלָם אוֹדֶךָּ׃

PSAL. XXXI. לא

pudore afficiar non , ſperavi Domine te In .Davidi canticum Vincenti
1 2 לַמְנַצֵּחַ מִזְמוֹר לְדָוִד׃ בְּךָ־יְהוָה חָסִיתִי אַל־אֵבוֹשָׁה
.me eripe tua juſtitia in : ſeculum in
לְעוֹלָם בְּצִדְקָתְךָ פַלְּטֵנִי׃

תרגום TARGUM.

5 קָלָא דַיְיָ מְתַבַּר אַרְזַיָּא וְתַבַּר מֵימְרָא דַיְיָ
6 יַת אַרְזֵי לִבְנָן : וְשַׁוְרְנוּן הֵיךְ עֵגַל לִבְנָן וְטוּר
7 מַסְרֵי פֵּירֵי הֵיךְ בַּר רֵימָא : קָלָא דַיְיָ מְנַסַּר
8 שַׁלְהוֹבִין דִּי נוּר : קָלָא דַיְיָ מַרְטֵשׁ מַדְבְּרָא
9 מַרְטֵשׁ מֵימְרָא יְיָ מַדְבְּרָא דְרָקַם : קָלָא דַיְיָ
מַבְטִין אַיְלָתָא וּמַוְלִיחַ חֵיוַת חוּרְשָׁא וּבְמוּקְדְּשֵׁיהּ
10 דִּלְעֵיל כּוּלְהוֹן שַׁמָּשׁוֹי אָמְרִין אִיקָר קֳדָמוֹי : יְיָ
בְּדָר טוּפָנָא יְתִיב עַל כּוּרְסֵי דְדִינָא לְמִתְפְּרַע
מִנְּהוֹן וִיתִיב יְיָ עַל כּוּרְסֵיהּ רַחֲמוּתָא וְשֵׁיזִיב
11 יַת נֹחַ וּמְלַךְ עַל בְּנוֹי לְעָלְמֵי עָלְמִין : יְיָ
אוֹרַיְתָא לְעַמֵּיהּ יְהַב יְיָ יְבָרֵךְ יַת עַמֵּיהּ
בִּשְׁלָם :

ל

1 תּוּשְׁבַּחַת שִׁירְתָא עַל חֲנוּכַּת בֵּית מַקְדְּשָׁא
2 לְדָוִד : אֲשַׁבַּחְנָךְ יְיָ אֲרוּם אַוְקַפְתַּנִי וְלָא
3 אַחְדֵּיתָא בְּעֲלֵי דְבָבַי עֲלַי : יְיָ אֱלָהִי צַלֵּיתִי
4 קֳדָמָךְ וְאַסֵּיתַנִי : יְיָ אַסֵּקְתָּא מִן שְׁיוֹל נַפְשִׁי
5 קַיֵּמְתַּנִי מִן לְמֵחַת לְגוּבָּא : שַׁבַּחוּ קֳדָם יְיָ
6 חֲסִידוֹי וְאוֹדוּ אַדְכָּרוּת קֻדְשֵׁיהּ : מְטוּל דְּשַׁעְתָּא
רוּגְזֵיהּ חַיֵּי עָלְמָא בִּרְעוּתֵיהּ טָבָא בְּרַמְשָׁא
מְבִית בִּבְכוּתָא וּלְצַפְרָא מְקִים בְּתֻשְׁבַּחְתָּא :
7 וַאֲנָא אֲמֵרִית בְּמֵתְבִי בְּרוּחְצָנֵיהּ דְּלָא אֲזוּעַ
8 לְעָלְמָא : יְיָ בִּרְעוּתָךְ אַתְעַתַּדְתָּא לְטוּרַיָּא
עֲשִׁינַיָּא סַלֵּיקְתָּא שְׁכִנְתָּךְ הֲוֵיתִי מִתְבְּהֵל :
9 10 קֳדָמָךְ יְיָ אֶקְרֵי וּלְוָתָךְ אֱלָהִי אֲצַלֵּי : מַה מָמוֹן
אִית בִּדְמִי בְּמֵחֲתִי לְבֵי קְבוּרְתָּא אֶפְשַׁר
דִּישַׁבְּחוּנָךְ נָחְתֵי עַפְרָא הַחֲוֵיתוּן הֵימְנוּתָךְ :
11 קַבֵּל יְיָ צְלוֹתִי וְחוּס עֲלַי יְיָ הֲוֵי סָעִיד לִי :
12 אַפַּכְתָּא אֲלָיִי לְחִנְגִּין לִי שְׁרֵיתָא סַקִּי וְזָרְזְתַּנִי
13 חֶדְוָא : מִן בְּגְלַל דִּישַׁבְּחוּן יַקִּירֵי עָלְמָא וְלָא
יִשְׁתְּקוּן יְיָ אֱלָהִי לְעָלְמָא אֲשַׁבְּחִנָּךְ :

לא

1 2 לְשַׁבָּחָא תּוּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד : בְּמֵימְרָךְ יְיָ סְבָרִית
לָא אֶבְהַת לְעָלְמָא בְּצִדְקָתָךְ שֵׁיזִבְיָתִי :

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Vox Domini confringit cedros : & perfregit verbum Domini cedros Libani. Et ſubſaltare fecit eas ſicut vitulum : Libanum & montem producentem fructus tanquam pullum naricornium. Vox Domini ſcindit flammas ignis. Vox Domini *concutit deſertum* , *concutit* verbum Domini *deſertum* Recham. Vox Domini parturire facit cervas,& confluere animalia ſylvæ : ac in *ſanctuario* ejus quod furſum eſt, omnes miniſtri ipſius dicunt gloriam *coram eo*. Dominus in generatione diluvii ſedit ſuper ſedem judicii , ut ultionem ſumeret ab eis, ſeditque *Dominus* ſuper ſedem *miſerationis*, & liberavit Noah , & regnavit ſuper filios ejus in ſecula ſeculorum. Dominus legem populo ſuo dedit : Dominus benedicet populo ſuo in pace. 5 6 7 8 9 10 11

Laus cantici pro dedicatione domus ſanctuarii, Davidi. 1

PSAL. XXX.

COllaudabo te Domine , quoniam erexiſti me , & non lætificâſti inimicos meos de me. Domine Deus meus oravi coram te, & ſanâſti me. Domine eduxiſti de inferno animam meam : confirmâſti me, ne deſcenderem in *foveam*. Laudate coram Domino pii ejus, & *celebrate* memoriam *ſanctitatis* ipſius. Quoniam momentanea eſt ira ejus : vita æterna in bona voluntate ejus : ad veſperum *demorari facit cum fletu*, manè verò excitat cum cantico. Et ego dixi cùm ſederem in *fiducia* , Non movebor in æternum. Domine in voluntate tua aſtitiſti montibus validis : ſubduxiſti majeſtatem tuam , & conturbatus ſum. Coram te Domine clamabo , & ad *te* Deum meum orabo. Quod lucrum in ſanguine meo, ſi deſcendero in locum ſepulchri ? nunquid poſſunt *laudare* te *deſcendentes in pulverem* ? nunquid *annunciabunt fidem* tuam ? Accipe orationem meam Domine, & miſerere mei Domine; ſis adjutor mihi. Convertiſti luctum meum in choros mihi : ſolviſti ſaccum meum, & cinxiſti me lætitia. Ut laudent honorabiles mundi, & non taceant ; Domine Deus meus in æternum *celebrabo te*. 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13

Ad canendum Hymnus Davidi. 1

PSAL. XXXI.

IN verbum tuum Domine ſperavi ; non confundar in æternum ; in juſtitia tua libera me. 2

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

5 * ܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܕܡܬܒܪ ܐܪܙܐ. ܘܬܒܪ ܡܪܝܐ ܐܪܙܐ ܕܠܒܢܢ: * ܘܕܩܩ ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܥܓܠܐ. 6
ܠܠܒܢܢ ܘܠܣܢܝܪ ܐܝܟ ܒܢܝ ܪܐܡܐ: * ܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܕܦܣܩ ܫܠܗܒܝܬܐ ܕܢܘܪܐ. 7
8 * ܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܕܡܙܝܥ ܡܕܒܪܐ: ܘܡܙܝܥ ܡܪܝܐ ܡܕܒܪܐ ܕܪܩܡ. * ܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܕܡܙܝܥ 9
ܐܝܠܢܐ ܘܡܥܩܪ ܥܒܐ: ܘܒܗܝܟܠܗ ܟܠ ܐܢܫ ܐܡܪ ܫܘܒܚܐ. * ܡܪܝܐ ܡܒܘܠܐ 10
ܐܗܦܟ: ܝܬܒ ܡܪܝܐ ܡܠܟܐ ܠܥܠܡ. * ܡܪܝܐ ܥܘܫܢܐ ܢܬܠ ܠܥܡܗ: ܡܪܝܐ ܢܒܪܟ 11
ܠܥܡܗ ܒܫܠܡܐ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܠ *

* ܕܕܘܝܕ. ܢܒܝܘܬܐ ܘܬܘܕܝܬܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܗ. 1
* ܐܪܘܡܡܟ ܡܪܝܐ ܕܐܪܝܡܬܢܝ: ܘܠܐ ܚܕܝܘ ܒܝ ܒܥܠܕܒܒܝ. * ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ ܒܥܝܬ 2
ܡܢܟ ܘܐܣܝܬܢܝ: * ܘܐܣܩܬ ܡܢ ܫܝܘܠ ܢܦܫܝ. ܘܐܚܝܬܢܝ ܡܢ ܢܚܬܝ ܓܘܒܐ: 3 4
* ܙܡܪܘ ܠܡܪܝܐ ܓܒܝܘܗܝ. ܘܐܘܕܘ ܠܕܘܟܪܢܐ ܕܩܘܕܫܗ: * ܡܛܠ ܕܟܐܐ ܒܪܘܓܙܗ ܘܚܝܐ 5 6
ܒܨܒܝܢܗ. ܒܪܡܫܐ ܢܒܘܬ ܒܟܝܐ ܘܒܨܦܪܐ ܚܕܘܬܐ: * ܐܢܐ ܐܡܪܬ ܒܫܠܝܘܬܝ ܕܠܐ ܐܙܘܥ 7
ܠܥܠܡ. * ܐܠܗܐ ܒܨܒܝܢܟ ܐܩܝܡܬ ܠܝܩܪܝ ܚܝܠܐ: ܐܗܦܟܬ ܐܦܝܟ ܘܐܬܬܙܝܥܬ. 8
* ܩܪܝܬܟ ܡܪܝܐ ܘܠܡܪܝ ܐܬܟܫܦܬ: * ܡܢܐ ܝܘܬܪܢܐ ܐܝܬ ܒܕܡܝ ܕܐܚܘܬ 9 10
ܠܚܒܠܐ. ܠܐ ܡܘܕܐ ܠܟ ܥܦܪܐ ܘܠܐ ܡܚܘܐ ܗܝܡܢܘܬܟ: * ܫܡܥ ܐܠܗܐ ܘܐܪܚܡ 11
ܥܠܝ. ܡܪܝܐ ܗܘܝ ܠܝ ܡܥܕܪܢܐ: * ܕܐܗܦܟܬ ܐܒܠܝ ܠܚܕܘܬܐ. ܫܪܝܬ ܣܩܝ 12
ܘܐܙܪܬܢܝ ܚܕܘܬܐ: * ܡܛܠܗܢܐ ܐܙܡܪ ܠܟ ܫܘܒܚܐ ܘܠܐ ܐܫܬܘܩ. ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ 13
ܠܥܠܡ ܐܘܕܐ ܠܟ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܠܐ *

* ܕܕܘܝܕ. ܬܘܕܝܬܐ ܘܒܥܘܬܐ ܐܡܝܢܬܐ ܕܠܘܬ ܐܠܗܐ. ܦܬܓܡܐ ܡܛ. 1
* ܒܟ ܡܪܝܐ ܣܒܪܬ ܠܐ ܐܒܗܬ ܠܥܠܡ. ܘܒܙܕܝܩܘܬܟ ܦܨܝܢܝ: 2

Vox Domini quæ diſrumpit cedros : & confregit Dominus cedros Libani. Et comminuit eas tanquam vitulum, Libanum & Sonir tanquam filios monocerotis : Vox Domini quæ diſſecat flammam ignis. Vox Domini quæ concutit deſertum, commovétque Dominus deſertum Cades : Vox Domini quæ agitat ramos & evellit ſylvas : & in templo ejus omnis homo dicit laudem. Dominus diluvium revocavit : ſedet Dominus rex in æternum. Dominus dabit fortitudinem populo ſuo : Dominus benedicet populo ſuo in pace. 5 6 7 8 9 10 11

PSAL. XXX.

Davidis. Prophetia, & gratiarum actio. Verſus 25. 1

EXaltabo te, Domine, quoniam extuliſti me, nec lætificâſti de me inimicos meos. Domine Deus meus, poſtulavi à te, & ſanâſti me. Et extraxiſti ex inferis animam meam, & vivificâſti me ex deſcendentib' in foveã. Canite Domino electi ejus, & confitemini memoriæ ſanctitatis ejus : Quoniam increpatio in ira ejus, & vita in voluntate ipſius. Veſperè pernoctabit fletus, & manè *redit* lætitia. Ego dixi in tranquillitate mea, Non movebor in æternum. Deus in beneplacito tuo erexiſti ſuper gloriam meam robur : avertiſti faciem tuam, & nutavi. Invocavi te, Dñe ; téque, Domine mi, deprecatus ſum. Quæ utilitas eſt in ſanguine meo, ut deſcendam in corruptionem ? Non confitetur tibi pulvis, neq; patefacit fidem tuam. Audi Deus, & miſerere mei : Domine, ſis mihi adjutor. Quia vertiſti mœrores meos in gaudium, ſolviſti cilicium meũ, & amiciviſti me lætitiã : Propterea canam tibi gloriam, nec ſilebo : Domine Deus meus, in æternum confitebor tibi. 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13

PSAL. XXXI.

Davidis. Gratiarum actio, & ſupplicatio perpetua ad Deum. Verſ. 49. 1

IN te Domine, ſperavi, non confundar in æternum, & in juſtitia tua libera me. 2

Verſio VULG. LAT.

5 Vox Dñi confringentis cedros: & confringet
6 Dominus cedros Libani: Et comminuet eas tanquam vitulum Libani: &
dilectus quemadmodùm filius unicornium.
7 Vox Domini intercidentis flammam
8 ignis: Vox Domini concutientis deſertū:
& commovebit Dominus deſertum Cades.
9 Vox Domini præparantis cervos,
& revelabit condenſa: & in templo ejus
10 omnes dicent gloriam. Dominus diluvium inhabitare facit: & ſedebit Dominus
11 rex in æternum. Dominus virtutem
populo ſuo dabit: Dominus benedicet
populo ſuo in pace.

1 Pſalmus Cantici
In dedicatione domûs David. XXIX.

2 Exaltabo te, Domine, quoniam ſuſcepiſti me: nec delectâſti inimicos me-
3 os ſuper me: Domine Deus meus, clama-
4 vi ad te, & ſanâſti me. Domine, eduxiſti
ab inferno animam meam: ſalvâſti me à
5 deſcendentib° in lacum. Pſallite Domino, ſancti ejus: & confitemini memoriæ
6 ſanctitatis ejus. Quoniam ira in indignatione ejus: & vita in voluntate ejus. Ad
veſperum demorabitur fletus, & ad ma-
7 tutinum lætitia. Ego autem dixi in abundantia mea, Non movebor in æternum.
8 Domine, in voluntate tua, præſtitiſti decori meo virtutem. Avertiſti faciem tuam
9 à me, & factus ſum conturbatus. Ad te,
Domine, clamabo: & ad Deum meum
10 deprecabor. Quæ utilitas in ſanguine
meo, dum deſcendo in corruptionem?
Numquid confitebitur tibi pulvis, aut
11 annuntiabit veritatem tuam? Audivit
Dominus, & miſertus eſt meì: Dominus
12 factus eſt adjutor me°. Convertiſti planctum meum in gaudium mihi: conſcidiſti ſaccum meum, & circumdediſti me
13 lætitiâ: Ut cantet tibi gloria mea, &
non compungar: Domine Deus meus,
in æternum confitebor tibi.

1 In finem, Pſalmus David, pro extaſi.
XXX.

2 In te, Domine, ſperavi, non confundar
in æternum: in juſtitia tua libera me.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

5 †Φωνὴ κυρίου συντρίβοντος κέδρους, †Συντρίψει
6 κύριος τὰς κέδρους τοῦ Λιβάνου. †Καὶ λεπτυνεῖ αὐτὰς
ὡς τὸν μόσχον τὸν Λίβανον, †καὶ ὁ ἠγαπημένος ὡς
7 υἱὸς μονοκερώτων. †Φωνὴ κυρίου διακόπτοντος φλόγα
8 πυρός. †Φωνὴ κυρίου συσσείοντος ἔρημον, †Συσσείσει
κύριος τὴν ἔρημον Κάδης. †Φωνὴ κυρίου
9 καταρτιζομένου ἐλάφους, †καὶ ἀποκαλύψει δρυμούς,
10 †καὶ ἐν τῷ ναῷ αὐτοῦ πᾶς τις λέγει δόξαν. †Κύριος
τὸν κατακλυσμὸν κατοικιεῖ· †καὶ καθιεῖται κύριος
11 βασιλεὺς εἰς τὸν αἰῶνα. †Κύριος ἰσχὺν τῷ
λαῷ αὐτοῦ δώσει, †κύριος εὐλογήσει τὸν λαὸν
αὐτοῦ ἐν εἰρήνῃ.

1 (α) Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς ᾠδῆς τοῦ ἐγκαινισμοῦ
τοῦ οἴκου (β) τοῦ Δαυίδ. κθʹ.

2 †Ὑψώσω σε, κύριε, ὅτι ὑπέλαβές με, †καὶ οὐκ (γ)
3 εὔφρανας τοὺς ἐχθρούς μου (δ) ἐπ' ἐμέ. †Κύριε
4 ὁ Θεός μου ἐκέκραξα πρὸς σέ, καὶ ἰάσω με. †Κύριε
ἀνήγαγες ἐξ ᾅδου τὴν ψυχήν μου, †ἔσωσάς με ἀπὸ
5 τῶν καταβαινόντων εἰς λάκκον. †Ψάλατε τῷ κυρίῳ
οἱ ὅσιοι αὐτοῦ, †καὶ ἐξομολογεῖσθε τῇ μνήμῃ τῆς
6 ἁγιωσύνης αὐτοῦ. †Ὅτι ὀργὴ ἐν τῷ θυμῷ αὐτοῦ,
καὶ ζωὴ ἐν τῷ θελήματι αὐτοῦ. †Τὸ ἑσπέρας αὐλισθήσεται
κλαυθμός, †καὶ εἰς τὸ πρωῒ ἀγαλλίασις.
7 †Ἐγὼ δὲ εἶπα ἐν τῇ εὐθηνίᾳ μου, Οὐ μὴ σαλευθῶ
8 εἰς τὸν αἰῶνα. †Κύριε ἐν τῷ θελήματί (ε)
σου παρέσχου τῷ κάλλει μου δύναμιν· †ἀπέστρεψας
δὲ τὸ πρόσωπόν σου, καὶ ἐγενήθην τεταραγμένος.
9 †Πρὸς σὲ κύριε κεκράξομαι, καὶ πρὸς τὸν Θεόν
10 μου δεηθήσομαι. †Τίς ὠφέλεια ἐν τῷ αἵματί
μου, ἐν τῷ καταβῆναί με εἰς διαφθοράν; †μὴ
ἐξομολογήσεταί σοι χοῦς; †ἢ ἀναγγελεῖ τὴν ἀλήθειάν
11 σου; †Ἤκουσε κύριος, καὶ ἠλέησέ με,
12 †κύριος ἐγενήθη βοηθός μου. †Ἔστρεψας τὸν
κοπετόν μου εἰς χαρὰν ἐμοί, †διέρρηξας τὸν
13 σάκκον μου, καὶ περιέζωσάς με εὐφροσύνην· †Ὅπως
ἂν ψάλῃ σοὶ ἡ δόξα μου, καὶ οὐ μὴ κατανυγῶ.
†κύριε ὁ Θεός μου εἰς τὸν αἰῶνα ἐξομολογήσομαί
σοι.

MS. A. Κεφ. κθʹ. (α) ψαλμὸς ᾠδῆς (β) τῷ Δαυίδ. (γ) ηὔφρανας (δ) ἐπ' ἐμοί. (ε) μου παράσχου

1 Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ, ἐκστάσεως. λʹ.
2 †Ἐπὶ σοὶ κύριε ἤλπισα, μὴ καταισχυνθείην εἰς
τὸν αἰῶνα, †ἐν τῇ δικαιοσύνῃ σου ῥῦσαί
με καὶ ἐξελοῦ με.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

5 Vox Domini confringentis cedros: 5
confringet Dominus cedros Libani: 6 Et (e)comminuet 6
eos tanquam (f)[d]vitulū, Libanū:
& dilect°, ſicut filius unicornium.
7 Vox Domini (g)intercidentis 7
flammam ignis: Vox Domini(h)concutientis deſertum:(i) 8
commovebit Domin° deſertum
Cades. 8 Vox Domini (k)[e]perficientis 9
cervos: & revelabit[f]
ſylvas: & in templo ejus(l)unuſquiſq;
dicet gloriam. 9 Dominus 10
[g]diluviū (m) inhabitare facit:
et ſedebit Domin° rex in æternū.
10 Domin° virtutem populo ſuo 11
dabit: Dominus benedicet populum ſuum in pace.

In (a) finem, Pſalmus cantici dedicationis domûs ipſius David. 1
XXIX.

1 [a] Exaltabo te, Domine, 2
quoniam (b) ſuſcepiſti
me: [b] nec delectâſti inimicos
meos ſuper me. 2 Domine De° me°, 3
clamavi ad te, & [c] ſanâſti me.
3 Domine, reduxiſti ab inferno animã 4
meam: (c) Salvũ feciſti me
à deſcendentib° in lacum. 4 Pſallite 5
Domino, ſancti ejus: & confitemini
(d) memoriæ ſanctitatis
ejus. 5 Quoniam (e) [d] ira in 6
indignatione ejus: & vita in voluntate
ej°. 6 Veſperè [†] demorabitur
fletus: et in matutinum exultatio
7 Ego autem dixi (f) in [*] 7
abundantia mea, Non movebor in
æternũ. 8 Domine, in voluntate tua 8
(g) præſtitiſti (h) [e] decori meo
virtutem: 9 (i) Avertiſti autẽ faciem
tuam, et factus ſum conturbatus.
10 * Ad te, Domine, clamabo, 9
& ad Deum meum deprecabor.
11 Quæ utilitas in ſanguine 10
meo, dum deſcendo in corruptionem?
12 Nunquid (k) confitebitur
tibi pulvis, aut annuntiabit
veritatẽ tuam? 13 Audivit 11
Dominus, & miſertus eſt meî:
Dominus factus eſt adjutor me°.
14 Convertiſti planctũ meum [f] 12
in gaudiũ mihi: conſcidiſti ſaccũ
meum: & accinxiſti me lætitiâ:
15 ut (l) pſallat tibi gloria mea, 13
& non compungar. Domine Deus
meus, in æternum confitebor tibi.

In finem, Pſalmus ipſi David, (a) ecſtaſis. XXX. 1

In te, Domine, ſperavi, non confundar in æternum: * in juſtitia tua [a] erue me, & exime me. 2

Verſio ÆTHIOPICA.

ቃለ፡ እግዚአብሔር፡ ይቀጠቅጥ፡ አርዘ። 5
ወይቀጠቅጦ፡እግዚአብሔር፡ ለአርዘ፡ ሊባ
ኖስ።=፡ ወያደገድጎ፡ ከመ፡ ላህመ፡ ሊባና 6
ስ።ወፍቁርሰ፡ ከመ፡ ወልድ፡ ዘአሐዱ፡ ቀር
ኑ።=፡ ቃለ፡እግዚአብሔር፡ይመትር፡ነደ፡ 7
እሳት።ቃለ፡ እግዚአብሔር፡ ያድለቀልቃ፡
ለገዳም። ወያድለቀልቃ፡ እግዚአብሔር፡
ለሐቅለ፡ቃዴስ።=፡ ቃለ፡እግዚአብሔር፡ 8
ያጸንዖሙ፡ ለኃየላት። ወይከሥት፡ አዕዋ
ም። ወበጽርሑ፡ ኵሉ፡ ይብል፡ ስብሐ
ት።=፡ እግዚአብሔር፡ያስተጋብእ፡ለማ 9
የ፡አይኅ።ይነብር፡ እግዚአብሔር፡ ወይነግ
ሥ፡ለዓለም።=፡ ወይሁቦሙ፡እግዚአብ 10
ሔር፡ኃይለ፡ ለሕዝቡ።እግዚአብሔር፡ይባ
ርኮሙ፡ለሕዝቡ፡በሰላም።=፡

ፍጻሜ፡መዝሙር፡ማኅሌት፡ለተ
ሐድሶ፡ቤቱ፡ለደዊት።

ኼሀ አእኵተከ፡ እግዚኦ፡ እስመ፡ ተወከፍ 1
ከኒ።ወስእለተ፡ጸላኢ፡ ኢረሰይከኒ።=፡ እ 2
ግዚኦ፡አምላኪየ፡ ጸራኅኩ፡ኀቤከ፡ወተሣህ
ልከኒ።=፡ እግዚኦ፡ አውፃእካ፡ እምሲኦ 3
ል፡ ለነፍስየ።ወአድኅንከኒ፡ እምእለ፡ ይወ
ርዱ፡ውስተ፡ግብ።=፡ ዘምሩ፡ ለእግዚአ 4
ብሔር፡ ጻድቃኑ።ወግነዩ፡ ለዝክረ፡ ቅድሳ
ቱ።=፡ እስመ፡መቅሠፍት፡እምዓቱ፡ሐይ 5
ወ፡እምፈቃዱ።=፡ በምሴት፡ይደምፅ፡ብ 6
ከይ፡ወበጽባሕ፡ፍሥሐ።=፡ አንሰ፡እቤ፡ 7
በተድላየ፡ ኢይትሀወክ፡ ለዓለም።=፡ እ 8
ግዚኦ፡በሥምረትከ፡ ሀባ፡ ኃይለ፡ ለሕይወት
የ።=፡ ሜጥከሰ፡ ገጸከ፡ ወኮንኩ፡ ድንጉ 9
ፀ።=፡ ኀቤከ፡ እግዚኦ፡ ጸራኅኩ፡ ኀበ፡ አ 10
ምላኪየ፡እስእል።=፡ ምንተ፡ ያሰልጥ፡ደ 11
ምየ፡ለእመ፡ ወረድኩ፡ ውስተ፡ ሙስና።=፡
መሬትኑ፡ የአምነከ፡ ወይነግር፡ ጽድቀ 12
ከ።=፡ ሰምዓ፡ እግዚአብሔር፡ ወተሣህለ 13
ኒ።ወኮነኒ፡እግዚአብሔር፡ረዳኢየ።=፡ ሜ 14
ጥከ፡ ላሕየ፡ ወአስተፈሥሐከኒ።ሰጠጥከ፡
ሠቅየ፡ወሐሤተ፡አቅነትከኒ።=፡ ከመ፡ዝ 15
እዜምር፡ ለከ፡ ክብርየ፡ ወኢይደንግፅ።እ
ግዚኦ፡አምላኪየ፡እገኒ፡ለከ፡ለዓለም።=፡

መዝሙር፡ዘደዊት፡ዘበተደሞ፡ከመ
ዘ፡ውእቱ፡በክልእ።

ሀ ኪያከ፡ ተወከልኩ፡ እግዚኦ፡ ወኢይትኀ 1
ፈር፡ ለዓለም።ወበጽድቅከ፡ አንግፈኒ፡ ወባ
ልሐኒ።=፡

INTERP. ÆTHIOP. [d] vitulum Libani: [e] fortes reddentis [f] condenſa: [g] aquas diluvii congregabit: *PSAL. XXIX.* [a] Tibi gratias agam, Domine, [b] & poſtulationem inimicorum meorum non conceſſiſti. [c] miſertus es mei. [d] flagellum in [†] ſonet [*] præparatione mea; [e] vitæ meæ virtutem: [f] & exhilarâſti me: *PSAL. XXX.* [a] dimitte me, &

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* صوت الرب يحطم الارز * الرب يكسر ارز لبنان * ويسحقه مثل عجل لبنان * والمحبوب 5 6
مثل ابن وحيد القرن * صوت الرب يقطع لهيب النار * صوت الرب يزلزل القفر * الرب يزلزل 7 8
برية قادس * صوت الرب يثبت الايل * ويكشف الغاب * وفي هيكله المقدس كل احد ينطق 9
بالمجد * الرب يمسك الطوفان * الرب يجلس ملكا الى الابد * الرب يعطي شعبه قوة * الرب يبارك 10 11
شعبه بالسلامة * الليلويا *   * المزمور التاسع والعشرون *

* قاله على تجديد الهيكل وفيه شكر وتسبيح * وعدده كز * استيخن * 1

* اعظمك يا رب لانك قبلتني * ولم تسر بي اعدائي * ايها الرب الاهي صرخت اليك فشفيتني * 2 3
* ومن الجحيم اصعدت نفسي يا رب ومن الهابطين في الجب خلصتني * رتلوا للرب يا جميع 4 5
قديسيه * واعترفوا لذكر قدسه * لان السخط في غضبه * والحياة في مسرته * عشية يكون البكاء * 6
وباكرا يكون الفرح * انا قلت عند غناي * اني لا احول الى الابد * يا رب بمشيتك وهبت 7 8
لبهائي قوة * صرفت وجهك عني فصرت مرتعجا * اليك يا رب اصرخ * والى الاهي اتضرع * 9
* اي منفعة في دمي اذا هبطت الى الجحيم * هل يشكرك التراب او يخبر بحقك * سمع الرب 10 11
فرحمني * الرب صار لي عونا * قلبت نوحي فرحا * مزقت مسحي * البستني سرورا * لكيما يرتل لك 12 13
مجدي * ولا يحزن قلبي * ايها الرب الاهي اشكرك الى الابد * الليلويا *   * المزمور الثلثون * 14

* قاله * شوق وطلبة وشكر * وعدده * يه * استيخن * 1

* عليك يا رب توكلت * فلا اخزى ابدا * خلصني ونجني بعدلك * 2

Vox Domini confringit cedros. Dominus 5
frangit cedros Libani. Et conteret eas ve- 6
luti vitulum Libani, & dilectus tanquam
filius unicornis; Vox Domini diſſecat 7
flammam ignis. Vox Domini tremefacit 8
deſertum: Dominus tremefacit deſertum
Cades. Vox Domini ſiſtit cervos, & de- 9
tegit ſylvam, & in templo ejus ſancto u-
nuſquiſque promit laudem. Dominus co-
hibet diluvium. Dominus ſedebit rex in 10
æternum. Dominus dabit populo ſuo vir- 11
tutem. Dominus benedicet populum ſuum
in pace. Alleluja.

PSAL. XXIX.

Dixit eum de renovatione Templi. Et continetur in eo gratiarum actio atque laudatio. Num. ver. 27. 1

Magnifico te, O Domine mi, eò quòd 2
ſuſceperis me, & non gaviſi ſint in
me inimici mei. O Domine, Deus meus, cla- 3
mavi ad te, & ſanâſti me: Et ab inferis 4
extraxiſti animam meam, O Domine: et à
deſcendentibus in lacum liberâſti me.
Pſallite Domino, O omnes ſancti ejus, & 5
confitemini memoriæ ſanctitatis ejus;
Quia furor in ira ejus, & vita in volun- 6
tate ejus. Veſperè erit fletus, & manè erit
gaudium. Ego dixi tempore divitiarum 7
mearum, quòd non commovebor in æter-
num. O Domine, in voluntate tua conceſ- 8
ſiſti decori meo virtutem: avertiſti faciem
tuam à me, & factus ſum anxius. Ad te, 9
O Domine mi, clamo, et Deum meum ſup-
plico. Quæ utilitas in ſanguine meo, cùm 10
ceciderim in infernum? An fortè gratias
aget tibi pulvis? aut annuntiabit veritatẽ
tuam? Audivit Dominus, et miſertus eſt 11
mei: Dominus factus eſt mihi adjutorium.
Vertit gemitum meum in gaudium: lace- 12
râſti cilicium meum, induiſti me lætitiâ.
ut pſallat tibi gloria mea, & non contri- 13
ſtetur cor meum. O Domine Deus meus, 14
gratias agam tibi in æternum. Alleluja.

PSAL. XXX.

Dixit eum. *Continétque* fervens deſiderium, orationem, & gratiarum actionem. Et num. ver. 25. 1

In te, O Domine, confiſus ſum, non e- 2
rubeſcam unquam. Salva me, & redi-
me me juſtitiâ tuâ:

תהלים: לא

domum in fortitudinis petram in mihi esto , me erue celeriter ,tuam aurē me ad Inclina
הַטֵּה אֵלַי אׇזְנְךָ מְהֵרָה הַצִּילֵנִי הֱיֵה לִי לְצוּר מָעוֹז לְבֵית 3
tuū nomē propter & , tu mea munitio &,mea petra Quoniā .me servandum ad ,munitionum
מְצוּדוֹת לְהוֹשִׁיעֵנִי׃ כִּי־סַלְעִי וּמְצוּדָתִי אָתָּה וּלְמַעַן שִׁמְךָ 4
tu quoniam;mihi absconderūt quod , reti ē me Educes .me deduces &,me duces
תַּנְחֵנִי וּתְנַהֲלֵנִי׃ תּוֹצִיאֵנִי מֵרֶשֶׁת זוּ טָמְנוּ לִי כִּי אַתָּה 5
Deus Domine me redemisti,meum spiritum commendabo tua manu In .mea fortitudo
מָעוּזִּי׃ בְּיָדְךָ אַפְקִיד רוּחִי פָּדִיתָה אוֹתִי יְהֹוָה אֵל 6
.speravi Dominum ad ego & ; frustra vanitates observantes Odivi .veritatis
אֱמֶת׃ שָׂנֵאתִי הַשֹּׁמְרִים הַבְלֵי־שָׁוְא וַאֲנִי אֶל־יְהֹוָה בָּטָחְתִּי׃ 7
cognovisti ,meam afflictionem vidisti quia ,tua misericordia in lætabor & ,Exultabo
אָגִילָה וְאֶשְׂמְחָה בְּחַסְדֶּךָ אֲשֶׁר רָאִיתָ אֶת־עׇנְיִי יָדַעְתָּ 8
fecisti stare : inimici manum in me conclusisti non Et .meam animam angustiis in
בְּצָרוֹת נַפְשִׁי׃ וְלֹא הִסְגַּרְתַּנִי בְּיַד אוֹיֵב הֶעֱמַדְתָּ 9
contabuit : mihi angustia quoniam ,Domine mei Miserere .meos pedes latitudine in
בַמֶּרְחָב רַגְלָי׃ חׇנֵּנִי יְהֹוָה כִּי צַר לִי עָשְׁשָׁה 10
,meæ vitæ molestia in defecerūt Quoniā .meus venter &,mea anima,meꝰ oculꝰ indignatione in
בְכַעַס עֵינִי נַפְשִׁי וּבִטְנִי׃ כִּי כָלוּ בְיָגוֹן חַיַּי 11
.sunt corrosa mea ossa & ; mea fortitudo mea iniquitate in corruit : gemitu in mei anni &
וּשְׁנוֹתַי בַּאֲנָחָה כָּשַׁל בַּעֲוֺנִי כֹחִי וַעֲצָמַי עָשֵׁשׁוּ׃
meis notis pavor &,valde meis vicinis &,opprobrium fui meis hostibus cunctis De
מִכׇּל־צֹרְרַי הָיִיתִי חֶרְפָּה וְלִשְׁכֵנַי מְאֹד וּפַחַד לִמְיֻדָּעָי 12
fui , corde à mortuus sicut fui Oblivioni .me à migraverunt ,foris me videntes
רֹאַי בַּחוּץ נָדְדוּ מִמֶּנִּי׃ נִשְׁכַּחְתִּי כְּמֵת מִלֵּב הָיִיתִי 13
undique pavorem ,multorum vituperationem audivi Quoniam .periens vas sicut
כִּכְלִי אֹבֵד׃ כִּי שָׁמַעְתִּי דִּבַּת רַבִּים מָגוֹר מִסָּבִיב 14
ego Et .sunt machinati meam animam capiendum ad : me super pariter eos consultando in
בְּהִוָּסְדָם יַחַד עָלַי לָקַחַת נַפְשִׁי זָמָמוּ׃ וַאֲנִי 15
; mea tempora tua manu In .tu meus Deus , dixi : Domine speravi te super
עָלֶיךָ בָטַחְתִּי יְהֹוָה אָמַרְתִּי אֱלֹהַי אָתָּה׃ בְּיָדְךָ עִתֹּתָי 16
super tua facies fac Lucere .me persequentibus à &,meorum inimicorū manu de me erue
הַצִּילֵנִי מִיַּד־אוֹיְבַי וּמֵרֹדְפָי׃ הָאִירָה פָנֶיךָ עַל־ 17
: te invocavi quoniā,afficiar pudore non Dn̄e .tua misericordia in me serva :tuum servum
עַבְדֶּךָ הוֹשִׁיעֵנִי בְחַסְדֶּךָ׃ יְהֹוָה אַל־אֵבוֹשָׁה כִּי קְרָאתִיךָ 18
,falsitatis labia Obmutescent .sepulchro in silebunt ; impii afficientur pudore
יֵבֹשׁוּ רְשָׁעִים יִדְּמוּ לִשְׁאוֹל׃ תֵּאָלַמְנָה שִׂפְתֵי שָׁקֶר 19
,tuum bonum multum Quàm .contemptu & ,superbia in durum justum super loquentia
הַדֹּבְרוֹת עַל־צַדִּיק עָתָק בְּגַאֲוָה וָבוּז׃ מָה רַב טוּבְךָ 20
! hominum filiis coram :te in sperantibus es operatus ,te timentibus abscondisti quod
אֲשֶׁר־צָפַנְתָּ לִּירֵאֶיךָ פָּעַלְתָּ לַחוֹסִים בָּךְ נֶגֶד בְּנֵי אָדָם׃
,tugurio in eos abscondes ,viri elationibus ab tuarum facierū abscondito in eos Abscondes
תַּסְתִּירֵם בְּסֵתֶר פָּנֶיךָ מֵרֻכְסֵי אִישׁ תִּצְפְּנֵם בְּסֻכָּה 21
suā misericordiā fecit mirificare quoniā:Dominus Benedictus .linguarū contentione à
מֵרִיב לְשֹׁנוֹת׃ בָּרוּךְ יְהֹוָה כִּי הִפְלִיא חַסְדּוֹ 22
.munitionis civitate in mihi
לִי בְּעִיר מָצוֹר׃

תרגום TARGUM.

אַצְלֵי לְוָתִי אוּדְנָךְ בִּסְרְהוֹבִיָא פְּצֵי יָתִי הֲוֵי לִי 3
לִכְרַךְ עָשִׁין לְחוּסְנָא כְּרִיכָא לְמִפְרַק יָתִי׃
מְטוּל דְּתוּקְפִּי וְרוּחְצָנִי אַתְּ וּבְגְלַל שְׁמָךְ דַּבַּר 4
יָתִי וְזוּן יָתִי׃ אַפֵּק יָתִי מִמְּצַדְתָּא דְנָן דְּפַרְסִין 5
לִי אֲרוּם אַנְתְּ עוּשְׁנִי׃ בְּאִידָךְ אֲמַנֵי רוּחִי 6
פְּרַקְתָּא יָתִי יְיָ אֱלָהָא קְשִׁיטָא׃ שְׂנֵאתִי דְנָטְרִין 7
עוּבְדִין דְּדָמִין לִלְמָא וּלְשִׁקְרָא וַאֲנָא עַל יְיָ
כְּלִיתִי׃ אֲבוּעַ וְאֶחְדֵי בְּטֵיבוּתָךְ דִּי חֲמֵיתָ יַת 8
סִגּוּפִי יְדַעְתָּא בְּעָקְתִין דְּנַפְשִׁי׃ וְלָא מְסַרְתַּנִי 9
בְּאִידָא דִבְעֵיל דְּבָבָא אֲקֵימְתָּא לִרְוָחָא רַגְלָי׃
חוּס עֲלַי יְיָ אֲרוּם עִיק לִי בְּלָאַת מְרוֹנְוָא עֵינִי 10
אִתְעַק נַפְשִׁי וּכְרֵיסִי׃ אֲרוּם שֵׁיצִיאוּ בִּדְוָנָא 11
חַיַּי וּשְׁנַי בְּתַנְחֲתָא תְּקַל בְּחוֹבַי חֵילִי וְאֵבָרַי
חֲשַׁכוּ׃ מִן כָּל מְעִיקַי הֲוֵיתִי כְּסוּפָא וּלְשֵׁבָבַי 12
לַחֲדָא וּדְלוּחָא לְיָדְעִין לִי דְּחָמַיִן לִי בְּשׁוּקָא
עָרְקִין מִן קֳדָמַי׃ אִתְנְשֵׁיתִי הֵיךְ שְׁכִיבָא מִן 13
רַעְיוֹנָא הֲוֵיתִי כְּמָן דִּפְחַר תְּבִיר׃ מְטוּל דִּי 14
שְׁמַעִית טִיב בִּישׁ דְּאָמְרִין עֲלַי עַמְמִין סַגִּיאִין
רְתִיתָא מַחֲזוֹר חֲזוֹר בְּאִתְכַּנְּשֵׁיהוֹן כַּחֲדָא עֲלַי
לְמִסַּב נַפְשִׁי חֲשִׁיבוּ׃ וַאֲנָא עֲלָךְ רְחִיצִית יְיָ 15
אֲמָרִית אֱלָהִי אַנְתְּ׃ בְּאִידָךְ זִמְנֵי פּוּרְקָנִי פְּצֵי 16
יָתִי מִן יַד בַּעֲלֵי דְבָבִי וּמֵרָדְפַי׃ אַנְהַר סְבַר 17
אַפָּךְ עַל עַבְדָּךְ פְּרוֹקְנִי בְּטוּבָךְ׃ יְיָ לָא אֶבְהֵת 18
אֲרוּם קְרִיתָךְ יִבְהֲתוּן רַשִׁיעֵי יִשְׁתְּקוּן וְיֵחֲתוּן
לִשְׁיוֹל׃ תִּתְפַּקְּקָן סִפְוָת שִׁקְרָא דְּמַלְּלָן עַל 19
צַדִּיקַיָּא גְּדוּפִין בְּגֵיוְתָנוּתָא וּבְסַרְנוּתָא׃ כְּמָה 20
סַגִּי טוּבָךְ דְּאַטְשֵׁיתָא לְדָחֲלִין מִנָּךְ עֲבַדְתְּ
לִסְבָרִין עֲלָךְ לְמִפְרַע לְהוֹן אֲגַר טָב קֳבֵיל בְּנֵי
נָשָׁא׃ תִּטְמְרִנּוּן בְּטוּמְרָא בְּעִדָּן רוּגְזָךְ מִגְּדוּדֵי 21
גַּבְרַיָּא תְּטַשִּׁנּוּן כַּד בִּמְטַלַּלְתָּא מִתִּגְרַת
לִישָׁנַיָּא׃ בְּרִיךְ יְיָ אֲרוּם פְּרַשׁ מֵיבוּתֵיהּ לִי 22
בְּקִרְתָּא כְּרִיכְתָּא׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

3 Inclina ad me aurem tuam; velociter libera me: eſto mihi in *munitionem* fortem, in robur arcis; ut redimas me. 4 Quoniam fortitudo mea & fiducia mea tu es: *&* propter nomen tuum duc me, & enutri me. 5 *Educ* me de laqueo iſto quem *tetenderunt mihi*, quia tu es fortitudo mea. 6 In manu tua commendabo ſpiritum meum: redemiſti me Domine Deus verax. 7 Odi conſervantes opera vanitati & mendacio ſimilia: ego autem in Domino confiſus ſum. 8 Gaudebo & exultabo in bonitate tua, quòd reſpexeris afflictionem meam: noviſti anguſtias animæ meæ. 9 Nec tradidiſti me in manu inimicorum meorum; obfirmâſti in latitudine pedes meos. 10 Miſerere mei Domine, quoniam infeſtatio adeſt mihi; *inveteravit* præ ira oculus meus, conſtricta eſt anima mea & venter meus. 11 Quoniam *conſumptæ* ſunt in mœrore *vitæ meæ*, & anni mei in ſuſpirio: corruit in *peccatis* virtus mea, & membra mea denigrata ſunt. 12 Præ omnibus qui angunt me, factꝰ ſum opprobrium, & vicinis meis valdè, & terror iis qui me nôrunt: qui videbant me in platea, fugerunt à conſpectu meo. 13 Oblivioni traditus ſum ſicut jacens *ex animo* [*dimiſſus*:] factus ſum *ut* vas teſtaceum quod frangitur. 14 Quoniam audivi famam malam quam dicunt contra me populi multi; tremor circumquaque: cum convenirent ſimul contra me, de capienda anima mea cogitaverunt. 15 Et ego in *te* confiſus ſum Domine: dixi, Deus meus es tu. 16 In manu tua ſunt tempora redemptionis *meæ*: libera me de manu inimicorum meorum & à perſecutoribus meis. 17 Lucere fac aſpectum facici tuæ ſuper ſervū tuū; redime me bonitate tua. 18 Domine non confundar, quoniam invocavi te: confundantur impii, obmuteſcant & deſcendant in *infernum*. 19 Muta fiant labia *mendacii*, quæ proferunt adverſùs juſtos opprobria in ſuperbia & contemptu. 20 Quàm magna eſt bonitas tua quam abſcondiſti timentibus te! operatus es ſperantibꝰ in *te*, ut reddas eis præmium bonum coram filiis hominum. 21 Abſcondes eos in occulto in tempore iræ tuæ; *à turmis potentium* occultabis eos veluti in umbraculo à contradictione linguarum. 22 Benedictus Dominus, quoniam mirandam exhibuit bonitatem ſuam mihi in civitate munita.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܪܟܢ ܠܘܬܝ ܐܕܢܟ ܘܥܓܠ ܥܢܝܢܝ. ܗܘܝ ܠܝ ܐܠܗܐ ܡܥܕܪܢܐ ܘܒܝܬ ܓܘܣܐ 3
ܘܦܪܘܩܝܢܝ : * ܡܛܠ ܕܬܘܩܦܝ ܘܒܝܬ ܓܘܣܝ ܐܢܬ ܗܘ. ܡܛܠ ܫܡܟ ܡܪܝܐ ܒܝܐܢܝ : 4
* ܘܦܨܝܢܝ ܡܢ ܦܚܐ ܗܢܐ ܕܛܫܘ ܠܝ. ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܗܘ ܡܣܡܟܢܝ * ܘܠܟ ܐܓܥܠܬ ܪܘܚܝ : 5 6
ܘܦܪܩܬܢܝ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܩܘܫܬܐ. * ܣܢܝܬ ܠܐܝܠܝܢ ܕܢܛܪܝܢ ܣܓܕܬܐ ܣܪܝܩܬܐ : ܘܐܢܐ ܥܠܝܟ 7
ܡܪܝܐ ܣܒܪܬ. * ܐܪܘܙ ܘܐܚܕܐ ܒܛܝܒܘܬܟ : ܕܚܙܝܬ ܡܘܟܟܝ ܘܝܕܥܬ ܐܘܠܨܢܗ ܕܢܦܫܝ. 8
* ܘܠܐ ܐܫܠܡܬܢܝ ܒܐܝܕܐ ܕܒܥܠܕܒܒܝ : ܐܩܝܡܬ ܒܪܘܘܚܐ ܪܓܠܝ. * ܐܬܪܚܡ ܥܠܝ 9 10
ܡܪܝܐ ܡܛܠ ܕܥܩܬ ܠܝ : ܐܬܕܠܚܬ ܒܪܘܓܙܐ ܥܝܢܝ ܘܢܦܫܝ ܘܟܪܣܝ. * ܡܛܠ 11
ܕܫܠܡܘ ܚܝܝ ܒܕܘܘܢܐ : ܘܫܢܝ ܒܬܢܚܬܐ. ܐܬܟܪܗ ܚܝܠܝ ܒܡܣܟܢܘܬܐ : ܘܐܬܕܠܚܘ
ܓܪܡܝ * ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝ. ܘܗܘܝܬ ܚܣܕܐ ܠܫܒܒܝ : ܘܕܚܠܬܐ ܠܐܝܠܝܢ 12
ܕܝܕܥܝܢ ܠܝ. ܘܐܝܠܝܢ ܕܚܙܝܢ ܗܘܘ ܠܝ ܒܫܘܩܐ ܥܪܩܝܢ ܗܘܘ ܡܢܝ : * ܐܬܛܥܝܬ 13
ܐܝܟ ܡܝܬܐ ܡܢ ܠܒܐ. ܘܗܘܝܬ ܐܝܟ ܡܐܢܐ ܐܒܝܕܐ : * ܡܛܠ ܕܫܡܥܬ 14
ܪܢܝܐ ܕܣܓܝܐܐ. ܟܕ ܐܬܡܠܟܘ ܥܠܝ ܐܟܚܕܐ : ܘܐܬܚܫܒܘ ܕܢܣܒܘܢ ܠܢܦܫܝ.
* ܐܢܐ ܕܝܢ ܥܠܝܟ ܡܪܝܐ ܐܬܬܟܠܬ : ܐܡܪܬ ܕܐܠܗܝ ܐܢܬ ܡܪܝܐ * ܘܒܐܝܕܝܟ ܐܢܘܢ 15 16
ܙܒܢܝ. ܦܪܘܩܝܢܝ ܡܢ ܒܥܠܕܒܒܝ ܘܡܢ ܐܝܠܝܢ ܕܪܕܦܝܢ ܠܝ : * ܐܢܗܪ ܐܦܝܟ ܥܠ 17
ܥܒܕܟ ܘܦܪܘܩܝܢܝ ܒܛܝܒܘܬܟ. * ܡܪܝܐ ܠܐ ܐܒܗܬ ܕܩܪܝܬܟ : ܢܒܗܬܘܢ ܪܫܝܥܐ ܘܢܚܬܘܢ 18
ܠܫܝܘܠ. * ܘܢܬܚܬܡܢ ܣܦܘܬܗܘܢ ܕܥܘܠܐ : ܕܡܡܠܠܝܢ ܥܠ ܙܕܝܩܐ ܥܘܠܐ ܘܫܛܝܘܬܐ. 19
* ܡܐ ܣܓܝܐܝܢ ܛܝܒܘܬܟ ܕܢܛܪܬ ܐܢܬ ܠܕܚܠܝܟ : ܠܡܣܒܪܝܢ ܒܟ ܩܕܡ ܒܢܝܢܫܐ. 20
* ܬܛܫܐ ܐܢܘܢ ܒܡܛܠܬܐ ܕܦܪܨܘܦܟ : ܡܢ ܒܘܠܒܠܐ ܕܒܢܝܢܫܐ. ܬܛܠܠ ܐܢܘܢ ܒܛܠܠܟ ܡܢ 21
ܚܪܝܢܐ. * ܒܪܝܟ ܗܘ ܡܪܝܐ ܕܓܒܐ ܠܗ ܓܒܝܐ ܒܡܕܝܢܬܐ ܚܣܝܢܬܐ. 22

Inclina ad me aurem tuā, & citò exaudi me. 3
Eſto mihi Deus auxiliator atque refugium, & redime me. 4 Quoniam fortitudo mea, & refugium meum tu es. Propter nomen tuum, Domine, conſolare me. 5 Et erue me è laqueo iſto, quem abſconderunt mihi: quoniam tu es ſuffultor meus. 6 Et cuſtodiæ tuæ commiſi ſpiritum meum, & ſalvâſti me, Domine Deus veritatis. 7 Odiſti eos qui obſervant cultus inanes: at ego in te, Domine ſperavi. 8 Exultabo & lætabor de beneficio tuo, quoniam vidiſti humilitatem meam, & cognoviſti anguſtiam animæ meæ. 9 Nec tradidiſti me in manum inimicorum meorum: ſtatuiſti in amœnitate pedes meos. 10 Miſerere mei, Domine, quia mœrore conficior: conturbatus eſt oculus meus in ira, & anima mea, & venter meus: 11 Quia defecit vita mea in angore, & anni mei in gemitibus: infirmata eſt virtus mea in paupertate, & conturbata ſunt oſſa mea 12 Ab omnibus inimicis meis: & factus ſum opprobrium vicinis meis, & timor iis qui me nôrunt: & hi qui videbant me in platea, recedebant à me. 13 Oblivioni traditus ſum ut mortuus è corde, & factus ſum ſicut veſtimentum perditum: 14 Quoniam audivi cogitationem multorū, dum conſiliū inirent adverſùm me ſimul, & contemplarentur ut caperent animá meam. 15 Ego verò in te, Domine, ſum confiſus: dixi, Deus meus es tu, Domine. 16 Et in manibus tuis ſunt tempora. Libera me ab inimicis meis, & ab iis qui perſequuntur me. 17 Lucere fac vultum tuum ſuper ſervum tuum, & ſalva me ob bonitatem tuam. 18 Domine, ne confundar, quoniam invocavi te; confundantur impii, & deſcendant in infernum. 19 Et obturentur labia ſceleſtorum, qui loquuntur adverſùs juſtum falſitatem & delirium. 20 Quàm copioſa ſunt bona tua quæ ſervas timentibus te, iis qui ſperant in te, coram hominibus! 21 Ocultabis eos tegumento vultûs tui à conturbatione hominum: teges eos umbrâ tuâ à contentione. 22 Benedictus Dominus qui elegit ſibi electos in civitate munita.

Versio VULG. LAT.

3 Inclina ad me aurẽ tuam, accelera ut eruas
me. Esto mihi in Deum protectorẽ;
& in domum refugii, ut salvum me facias.
4 Quoniã fortitudo mea, & refugiũ
meum es tu: & propter nomen tuum deduces
5 me, & enutries me. Educes me
de laqueo hoc, quem absconderunt mihi:
6 quoniam tu es protector meus. In
manus tuas commendo spiritum meum:
7 redemisti me, Domine Deus veritatis. Odisti
observantes vanitates, supervacuè.
8 Ego autem in Domino speravi: Exultabo,
& lætabor in misericordia tua. Quoniam
respexisti humilitatẽ meã, salvâsti
9 de necessitatibus animam meã. Nec conclusisti
me in manibus inimici: statuisti
10 in loco spatioso pedes meos. Miserere
meî, Domine, quoniam tribulor: conturbatus
est in ira oculus meus, anima mea,
11 & venter meus: Quoniam defecit in dolore
vita mea, & anni mei in gemitibus.
Infirmata est in paupertate virtus mea:
12 & ossa mea conturbata sunt. Super omnes
inimicos meos factus sum opprobriũ,
& vicinis meis valdè, & timor notis
meis. Qui videbant me, foràs fugerunt
13 à me: Oblivioni datus sum, tanquàm
mortuus à corde. Factus sum
14 tanquàm vas perditum: Quoniam audivi
vituperationem multorum commorantium
in circuitu. In eo dum convenirent
simul adversùm me, accipere animã meam
15 consiliati sunt. Ego autem in te speravi,
16 Domine: dixi, Deus meus es tu: In
manibus tuis sortes meæ. Eripe me de
manu inimicorũ meorũ, & à persequentibus
17 me. Illustra faciem tuã super servũ
tuum, salvũ me fac in misericordia tua:
18 Domine, non confundar, quoniam invocavi
te. Erubescant impii, & deducantur
19 in infernum: Muta fiant labia dolosa.
Quæ loquuntur advers⁹ justũ iniquitatẽ
20 in superbia, & in abusione. Quã magna
multitudo dulcedinis tuæ, Dñe, quã abscondisti
timentib⁹ te! Perfecisti eis, qui
sperãt in te, in conspectu filiorũ hominũ.
21 Abscondes eos in abscondito faciei tuæ à
conturbatione hominũ. Proteges eos in
tabernaculo tuo à contradictione linguarũ.
22 Benedict⁹ Dñs: quoniam mirificavit
misericordiã suã mihi in civitate munita.

Vers. GRÆCA LXX. Interp.

3 †Κλῖνον πρός με τὸ οὖς σου, τάχυνον τοῦ ἐξελέσθαι
με· †γενοῦ μοι εἰς Θεὸν ὑπερασπιστὴν, †καὶ εἰς οἶκον
4 καταφυγῆς τοῦ σῶσαί με. †Ὅτι (α) κραταίωμά
μου καὶ καταφυγή μου εἶ σὺ, †καὶ ἕνεκεν τοῦ ὀνόματός
5 σου ὁδηγήσεις με, καὶ διαθρέψεις με. †Ἐξάξεις
με ἐκ παγίδος ταύτης ἧς ἔκρυψάν μοι, †ὅτι σὺ
6 εἶ ὁ ὑπερασπιστής μου κύριε. †Εἰς χεῖράς σου παραθήσομαι
τὸ πνεῦμά μου, †ἐλυτρώσω με κύριε ὁ Θεὸς
7 τῆς ἀληθείας. †Ἐμίσησας τοὺς διαφυλάσσοντας
ματαιότητας διακενῆς. †ἐγὼ δὲ ἐπὶ τῷ κυρίῳ ἤλπισα.
8 †Ἀγαλλιάσομαι καὶ εὐφρανθήσομαι ἐπὶ τῷ
ἐλέει σου· †ὅτι (β) ἐπεῖδες τὴν ταπείνωσίν μου, †ἔσωσας
9 ἐκ τῶν ἀναγκῶν τὴν ψυχήν μου. †Καὶ οὐ συνέκλεισάς
με εἰς χεῖρας ἐχθροῦ, †ἔστησας ἐν εὐρυχώρῳ
10 τοὺς πόδας μου. †Ἐλέησόν με κύριε, ὅτι θλίβομαι·
†ἐταράχθη ἐν θυμῷ ὁ ὀφθαλμός μου, †ἡ
11 ψυχή μου, καὶ ἡ γαστήρ μου. †Ὅτι ἐξέλιπεν ἐν ὀδύνῃ
ἡ ζωή μου, †καὶ τὰ ἔτη μου ἐν στεναγμοῖς· †ἠσθένησεν
ἐν πτωχείᾳ ἡ ἰσχύς μου, †καὶ τὰ ὀστᾶ μου ἐταράχθησαν. †
12 Παρὰ πάντας τοὺς ἐχθρούς μου ἐγενήθην ὄνειδος, †καὶ
τοῖς γείτοσί μου σφόδρα, †καὶ φόβος τοῖς γνωστοῖς
13 μου. †οἱ θεωροῦντές με ἔξω ἔφυγον ἀπ' ἐμοῦ. †Ἐπελήσθην
ὡσεὶ νεκρὸς ἀπὸ καρδίας· †ἐγενήθην ὡσεὶ
14 σκεῦος ἀπολωλός, †Ὅτι ἤκουσα ψόγον πολλῶν
παροικούντων κυκλόθεν. †ἐν τῷ (") συναχθῆναι αὐτοὺς
ἅμα ἐπ' ἐμὲ, †τοῦ λαβεῖν τὴν ψυχήν μου ἐβουλεύσαντο.
15 †Ἐγὼ δὲ ἐπὶ σοὶ (γ) ἤλπισα κύριε· εἶπα,
16 Σὺ εἶ ὁ Θεός μου, †Ἐν ταῖς χερσί σου οἱ κλῆροί
μου. †ῥῦσαί με ἐκ χειρὸς ἐχθρῶν μου, †καὶ ἐκ τῶν
17 καταδιωκόντων με. †Ἐπίφανον τὸ πρόσωπόν σου
ἐπὶ τὸν δοῦλόν σου, †σῶσόν με ἐν τῷ ἐλέει σου. †
18 Κύριε μὴ καταισχυνθείην, ὅτι ἐπεκαλεσάμην σε. †
αἰσχυνθείησαν (δ) οἱ ἀσεβεῖς, καὶ καταχθείησαν εἰς ᾅδου.
19 †Ἄλαλα γενηθήτω τὰ χείλη τὰ δόλια, †τὰ
λαλοῦντα κατὰ τοῦ δικαίου ἀνομίαν †ἐν ὑπερηφανίᾳ
20 καὶ ἐξουδενώσει. †Ὡς πολὺ τὸ πλῆθος τῆς χρηστότητός
σου κύριε, †ἧς ἔκρυψας τοῖς φοβουμένοις
σε; †ἐξειργάσω τοῖς ἐλπίζουσιν (ε) ἐπὶ σὲ, †ἐναντίον
21 τῶν υἱῶν τῶν ἀνθρώπων. †(ζ) Κατακρύψεις
αὐτοὺς ἐν ἀποκρύφῳ τοῦ προσώπου σου †ἀπὸ ταραχῆς
ἀνθρώπων, σκεπάσεις αὐτοὺς †ἐν σκηνῇ
22 ἀπὸ ἀντιλογίας γλωσσῶν. †Εὐλογητὸς κύριος,
ὅτι ἐθαυμάστωσε τὸ ἔλεος αὐτοῦ ἐν πόλει περιοχῆς.

MS. A. (α) κραταίωσίς (β) ἐφεῖδες (") ἐπισυναχθῆναι (γ) κύριε ἤλπισα· (δ) ἀσεβεῖς, (ε) ἐπὶ σοὶ, (ζ) Καὶ κατακρύψεις

Vers. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Transl. LAT.

2 Inclina ad me aurem tuam, accelera 3
ut eximas me. [b] 3 Esto
mihi in Deum protectorem, & in
domum refugii, ut salvum me facias.
4 Quoniã (b) fortitudo mea, 4
& refugium meum es tu: et propter
nomen tuum deduces me, &
(c) enutries me. 5 Educes me de 5
laqueo hoc quem absconderunt
mihi: quoniã tu es protector meus,
(d) Domine. 6 In manus tuas 6
(e) commendabo spiritum meum:
redemisti me, Domine Deus veritatis.
7 [c] Odisti observãtes vanitates 7
supervacuè. 8 Ego autem
in Domino speravi: Exultabo, & 8
lætabor in misericordia tua.
9 Quoniam respexisti humilitatẽ
meam: salvã fecisti de necessitatibus
animã meam. 10 Nec con- 9
clusisti me in manus inimici: statuisti
in loco spatioso pedes meos.
11 Miserere meî, Domine, quoniam 10
(f) tribulor: (g) conturbatus
est in ira oculus me⁹, anima mea,
& venter meus. 12 Quoniam 11
(h) defecit in dolore vita mea: et
anni mei in gemitibus. 13 Infirmata
est in (i) paupertate virtus
mea: & [d] ossa mea conturbata
sunt. 14 Super (k) omnes inimicos 12
meos factus sum opprobrium, &
[e] vicinis meis valdè, & timor
notis meis. 15 Qui videbant me,
foràs fugerunt à me: [f] Oblivioni 13
datus sum, tanquam mortuus à
corde. 16 Fact⁹ sum tanquã vas
perditũ: Quoniã [g] audivi vituperationem 14
multorũ (l) accolentium
in circuitu, 17 Dum congregarentur
ipsi simul adversũ me;
ut [h] acciperent animam meam,
consiliati sunt. 18 Ego autem in 15
te speravi, Domine: dixi, Tu es
De⁹ me⁹: In manibus tuis (m) [i] 16
fortes meæ. 19 Erue me de manu
inimicorum meorum, & à persequentibus
me. 20 Illustra faciem 17
tuam super servum tuum: salvum
me fac in misericordia tua. Domine, 18
non confundar, quoniam invocavi
te. 21 Erubescant impii, &
(n) deducantur in infernum: Muta 19
fiant labia dolosa, 22 quæ loquuntur
adversùs justum iniquitatem
in superbia, & (o) contemptu.
23 (p) Quã magna mul 20
titudo [k] dulcedinis tuæ, Domine,
quam abscondisti timentibus te! 24 [l] Perfecisti (q) sperantibus in te, in conspectu filiorum hominũ. 25 Abscondes eos in [m] abscondito faciei tuæ à conturbatione hominum: 26 proteges eos in (r) 21 22
(†) tabernaculo à contradictione linguarum. 27 Benedictus Dominus, [n] quoniam mirificavit misericordiam suam, in civitate circumstantiæ.

Versio ÆTHIOPICA.

አጽምእ፡እዝነከ፡ኀቤየ፡ወፍጡነ፡ አድኅነ 2
ኒ፡፡=፡ ኩነኒ ፡ አምላክየ ፡ ወምድኀንየ፡፡ 3
ወቤተ፡ጸወንየ፡ከመ፡ታድኅነኒ፡፡=፡ እስመ ፡
ኀይልየ ፡ ወጸወንየ ፡ አንተ፡፡ በእንተ፡ 4
ስምከ ፡ ምርሐኒ ፡ ወሴስየኒ፡፡=፡ ወአውፅ 5
አኒ፡እምዝቲ፡ መሥገርት፡ እንተ፡ ኀብኡ፡ሊ
ተ፡፡ እስመ ፡ አንተ ፡ ረዳኢየ፡እግዚኦ፡፡=፡
ውስተ፡ እዴከ፡አማኅፀን፡ ነፍስየ፡፡ ቤዝወኒ፡ 6
እግዚአብሔር፡አምላከ፡ጽድቅ፡፡=፡ ጸላ 7
እከ፡ እግዚኦ፡ ኵሎ፡ዘየዐቅብ፡ ከንቶ፡ለዝ
ሉፉ፡፡=፡ ወአንሰ፡በእግዚአብሔር፡ተወከል 8
ኩ፡፡ እትፌሣሕ፡ ወእትሐሠይ ፡ በአድኅኖ
ትከ፡፡=፡ እስመ፡ርኢከኒ፡ በሕማምየ፡፡ ወአ 9
ድኀንከ፡እምንደቤሃ፡ለነፍስየ፡፡=፡ ወኢዘ 10
ጋኀከኒ፡ ውስተ፡እደ ፡ ፀርየ፡፡ ወአቀምከኒ፡
ውስተ፡መርኅብ፡ ለእገሪየ፡፡=፡ ተሣሀለኒ፡ 11
እግዚኦ፡ እስመ ፡ ሐመምኩ፡፡ ወተሀውከት፡
እምዐተ ፡ ዓይንየ፡፡ ነፍስየኒ ፡ ወከርሥየ
ኒ፡፡=፡ እስመ፡ ኀልቀ፡ በሕማም፡ ሐይወት 12
የ፡፡ ወዓመትየኒ ፡ በገዓር፡፡=፡ ወደክመ፡ 13
በተፅናስ ፡ ኀይልየ፡፡ ወአንቀልቀለ፡ ኵሉ፡አ
ዕጽምትየ፡፡=፡ ወተጸአልኩ፡ በኀበ ፡ ኵሎ 14
ሙ ፡ ጸላእትየ፡፡ወፈድፋደሰ ፡ በኀበ፡ጎርየ፡፡
ግሩም፡ኮንክዎሙ፡ ለአዝማድየ፡፡=፡ ወእ 15
ለኒ ፡ ይሬእዩኒ ፡ አፍአ፡ይጕዩ ፡ እምኔየ፡፡
ቀበጹኒ፡ እምልብ፡ከመ፡ ዘሞተ፡፡=፡ ወኮ 16
ንኩ፡ ከመ፡ ንዋይ፡ዘተሐጕለ፡፡ እስመ፡ሰማ
ዕኩ ፡ ድምፀ ፡ ብዙኃን፡ እለ፡ዓገቱኒ፡ አው
ድየ፡፡=፡ ሶበ፡ ተጋብኡ፡ ኅቡረ፡ላዕሌየ፡፡ 17
ወተማከሩ፡ይምስጥዋ፡ለነፍስየ፡፡=፡ ወአ 18
ንሰ፡ ብከ፡ ተወከልኩ ፡ እግዚኦ፡፡ ወእቤ
ለከ ፡ አምላኪየ ፡ አንተ፡፡ ውስተ፡እዴከ፡
ርስትየ፡፡=፡ አድኅነኒ፡እምእደ፡ፀርየ፡፡ 19
ወእምእለ ፡ ሮዱኒ፡፡=፡ አብርህ ፡ ገጸከ፡ 20
ላዕለ ፡ ገብርከ ፡ ወአድኅነኒ፡ በእንተ፡ ምሕ
ረትከ፡፡ ወኢይትኀፈር ፡ እግዚኦ ፡ እስመ፡
ጸዋዕኩከ፡፡=፡ ለይትኀፈሩ ፡ ጽልሐዋን ፡ 21
ወይረዱ፡ውስተ ፡ሲኦል፡፡ አሌሎን ፡ ለከና
ፍረ ፡ ጕሕሉት፡፡=፡ እለ ፡ ይነብቡ፡ዐመፃ፡ 22
ላዕለ፡ጻድቅ፡፡ በትዕቢት፡ወበመንኖ፡፡=፡ወ 23
በከመ፡ ብዙኅ፡ ምሕረትከ፡ እግዚኦ፡ ፡ ሰወ
ርኮሙ ፡ ለእለ ፡ ይፈርሁከ፡፡=፡ ወአድኀ 24
ንኮሙ፡ለእለ፡ይትዌከሉ፡ ብከ፡፡ በቅድመ፡
ደቂቀ፡ሰብእ ፡ እምሕያው፡፡=፡ ወተኀብኦ 25
ሙ፡ በጽላሎትከ ፡ እምሐከከ ፡ ሰብእ፡፡=፡
ወትከድኖሙ ፡ በመንጦላዕትከ፡ እምበሕለ፡ 26
ልሳን፡፡=፡ ይትባረክ ፡ እግዚአብሔር፡ 27
ዘተሰብሐ ፡ ምሕረቱ ፡ ላዕሌየ ፡
በብዝኀ፡ ምንደቤየ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [b] Esto etiã mihi Deus & protector meus & domus refugii, [c] Odisti, Domine, omnes qui observant vanitates in perpetuũ. [d] omnia ossa [e] valdè quidẽ vicinis, [f] oblivioni dederunt me à corde, ut qui mortuus est. [g] audivi rumorẽ multorũ, qui castra mea circundederunt. [h] rapiant animã [i] hæreditas mea. [k] misericordiæ tuæ, [l] Et reservâsti eis qui sperant [m] umbraculo tuo, [†] tabernaculo tuo [n] qui celebravit misericordiam suam erga me, in multitudine afflictionis meæ.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

3 4 *أنصت إلي بسمعك عاجلا * كن لي الها ناصرا وملجأ لكي تخلصني *لأنك أنت عزي وملجاي *
5 ومن أجل اسمك يا رب تهديني وتعولني * وتخرجني من هذا الفخ الذي أخفي لي * لأنك أنت
6 7 ناصري يا رب * وفي يديك أضع روحي * أنقذني يا رب اله الحق * أبغضت الذين يحفظون الباطل
8 مجانا * وأنا عليك توكلت * أهلل وأفرح برحمتك * لأنك نظرت إلي تواضعي * وخلصت نفسي من
9 10 الشدائد * ولم تسلمني في أيدي الأعداء * أقمت رجلي في السعة * ارحمني يا رب فإني حزين * تعكرت
11 عيناي من الغضب ونفسي وقواي * فنيت حياتي بوجع القلب * وسني بالتنهد * ضعفت بالمسكنة
12 قوتي * وقلقت عظامي * صرت عارا في جميع أعدائي وجيرتي جدا * ورهبة لمن عرفني * من عاينني
13 14 هرب مني خارجا * نسوني في قلوبهم مثل الميت * صرت مثل اناء مكسور * لأني سمعت تعيير
15 أكثر من حولي عند اجتماعهم جميعا علي * تشاوروا علي أخذ نفسي * وأنا عليك يا رب
16 توكلت * قلت أنت الاهي * وفي يديك نصيبي * خلصني من أيدي أعدائي * والطاردين
17 18 لي * ليضي وجهك علي عبدك * وخلصني برحمتك * يا رب لا تخزني * لأني صرخت اليك * تخزي
19 المنافقون ويهبطون إلي الجحيم * ولتبكم الشفاه الغاشة * المقولة علي الصديق بالاثم
20 والكبريا والعار * ما أكثر كثرة صلاحك يا رب * التي أعددتها لجميع خايفيك * وعملتها
21 للذين يرجونك أمام بني البشر * تخفيهم في ستر وجهك من تجس الناس * تظللهم في
22 ستر من مقاومة الألسن * تبارك الرب لأنه صير رحمته عجبا * في مدينة حصينة *

Præbe mihi auditum tuum velociter. Esto 3
mihi Deus adjutor & refugium, ut salves
me; Quia tu es fortitudo mea & refugium 4
meum: & propter nomen tuum,
O Domine, diriges me, & enutries me.
Et educes me ex hoc laqueo, qui abscon- 5
sus est mihi, quia tu es adjutor meus, O
Domine: Et in manibus tuis pono spiritum 6
meum. Libera me, O Domine mi, Deus veritatis.
Odio habuisti eos, qui observant 7
vanitatem gratis. Et ego in Domino confisus
sum: Jubilabo & gaudebo in mise- 8
ricordia tua, quoniam respexisti ad humilitatem
meam, & salvâsti animam meam
de calamitatibus. Et non tradidisti me 9
in manus inimicorum, statuisti pedes meos
in latitudine. Miserere mei, O Domine mi, 10
quia tristis sum: turbati sunt oculi mei ob
indignationem, & anima mea, & virtus
mea. Consumpta est vita mea in dolore 11
cordis, & anni mei in gemitu: infirmata
est in paupertate virtus mea, & turbata
sunt ossa mea. Factus sum opprobrium in- 12
ter omnes inimicos meos, & viciniã meã
valdè, & horror iis qui me noverunt: qui
me intuitus est, fugit à me foràs. Obliti 13
sunt in me cordibus suis tanquã mortuũ,
factus sum tanquam vas fractum. Quia 14
audivi contumelias complurium, qui circa
me erant; convenientes simul adversùs
me, consultaverunt de capienda anima
mea. Ego autem in te, O Domine, confisus 15
sum: dixi, Tu es Deus meus, Et in mani- 16
bus tuis sors mea. Libera me de manibus
inimicorum meorum, & persequentium
me. Splendescat facies tua super servum 17
tuum, & salva me per misericordiam tuam.
O Domine mi, ne confundas me, 18
quoniam clamavi ad te. Confundantur
impii, & cadant in infernum. Et ob- 19
mutescant labia dolosa obloquentia adversùs
justũ cum iniquitate, et superbiã,
& improperia. Quàm copiosa est multi- 20
tudo bonitatis tuæ, O Domine mi, quam
parâsti omnibus timentibus te: quamq; fecisti
iis qui sperant in te, coram filiis hominum!
Occultas eos intra velum faciei 21
tuæ à seditione hominum: obumbras eos
operculo à contradictione linguarum. Benedicatur Dominus, quia fecit misericordiam suam miraculum in civitate munita. 22

תהלים: לב לג

vere : tuorum oculorum opposito ex sum excisus , me festinando in , dixi ego Et

23 וַאֲנִי אָמַרְתִּי בְחָפְזִי נִגְרַזְתִּי מִנֶּגֶד עֵינֶיךָ אָכֵן 23

Dominum Diligite .te ad me clamando in ,mearũ deprecationũ vocem audisti

שָׁמַעְתָּ קוֹל תַּחֲנוּנַי בְּשַׁוְּעִי אֵלֶיךָ׃ אֶהֱבוּ אֶת־יְהוָה 24

facienti residuum super reddens & ,Dominus custodiens fideles ,ej⁹ misericordes omnes

24 כָּל־חֲסִידָיו אֱמוּנִים נֹצֵר יְהוָה וּמְשַׁלֵּם עַל־יֶתֶר עֹשֵׂה

.DOMINO in sperantes omnes ; vestrũ cor roborabit &,vos Roborate .superbiam

25 גַאֲוָה׃ חִזְקוּ וְיַאֲמֵץ לְבַבְכֶם כָּל־הַמְיַחֲלִים לַיהוָה׃ 25

PSAL. XXXII. לב

Felicitates .peccati tecti , prævaricationis condonati Beatitudines .erudiens Davidi

1 לְדָוִד מַשְׂכִּיל אַשְׁרֵי נְשׂוּי־פֶּשַׁע כְּסוּי חֲטָאָה׃ אַשְׁרֵי־ 1 2

.dolus ejus spiritu in nec ; iniquitatem ei Dominus imputabit non hominis

2 אָדָם לֹא יַחְשֹׁב יְהוָה לוֹ עָוֺן וְאֵין בְּרוּחוֹ רְמִיָּה׃

.die omni meo rugitu in : mea ossa inveteraverunt , tacui Quoniam

3 כִּי־הֶחֱרַשְׁתִּי בָּלוּ עֲצָמָי בְּשַׁאֲגָתִי כָּל־הַיּוֹם׃ 3

meus humor est versus : tua manus me super aggravabitur nocte ac die Quoniam

4 כִּי יוֹמָם וָלַיְלָה תִּכְבַּד עָלַי יָדֶךָ נֶהְפַּךְ לְשַׁדִּי 4

meã iniquitatem & ,te feci cognoscere meum Peccatum .Selah , æstatis siccitates in

5 בְּחַרְבֹנֵי קַיִץ סֶלָה׃ חַטָּאתִי אוֹדִיעֲךָ וַעֲוֺנִי 5

tu & : Domino meas prævaricationes super confitebor , Dixi .operui non

לֹא־כִסִּיתִי אָמַרְתִּי אוֹדֶה עֲלֵי פְשָׁעַי לַיהוָה וְאַתָּה

misericors omnis orabit hoc Super .Selah ,mei peccati iniquitatem abstulisti

6 נָשָׂאתָ עֲוֺן חַטָּאתִי סֶלָה׃ עַל־זֹאת יִתְפַּלֵּל כָּל־חָסִיד 6

non eum ad ,multarũ aquarum inundatione in veruntamen : inveniendi tempore ,te ad

אֵלֶיךָ לְעֵת מְצֹא רַק לְשֵׁטֶף מַיִם רַבִּים אֵלָיו לֹא

liberandi clamoribus : me custodies angustia ab ,mihi absconsio Tu .pertingent

7 יַגִּיעוּ׃ אַתָּה סֵתֶר לִי מִצַּר תִּצְּרֵנִי רָנֵּי פַלֵּט 7

: ambules qua via in te docebo &,te faciam Intelligere .Selah ,me circundabis

8 תְּסוֹבְבֵנִי סֶלָה׃ אַשְׂכִּילְךָ וְאוֹרְךָ בְּדֶרֶךְ־זוּ תֵלֵךְ 8

non : mulus sicut , equus sicut sitis Ne .meo oculo te super consulam

9 אִיעֲצָה עָלֶיךָ עֵינִי׃ אַל־תִּהְיוּ כְּסוּס כְּפֶרֶד אֵין 9

.te ad propinquare ne ,stringendũ epistomio ad ejus maxillam freno & ,lupato In .intelligere

הָבִין בְּמֶתֶג־וָרֶסֶן עֶדְיוֹ לִבְלוֹם בַּל קְרֹב אֵלֶיךָ׃

.eum circundabit misericordia ,Domino in sperantẽ & , impio dolores Multi

10 רַבִּים מַכְאוֹבִים לָרָשָׁע וְהַבּוֹטֵחַ בַּיהוָה חֶסֶד יְסוֹבְבֶנּוּ׃ 10

.corde recti omnes jubilate & ; justi exultate & , Domino in Lætamini

11 שִׂמְחוּ בַיהוָה וְגִילוּ צַדִּיקִים וְהַרְנִינוּ כָּל־יִשְׁרֵי־לֵב׃ 11

PSAL. XXXIII. לג

Domino Confitemini .laus decora rectis ; Domino in justi dicite Præconia

1 רַנְּנוּ צַדִּיקִים בַּיהוָה לַיְשָׁרִים נָאוָה תְהִלָּה׃ הוֹדוּ לַיהוָה 1 2

; novum canticum ei Cantate .ei canite decachordo , nabel in ; cithara in

2 בְּכִנּוֹר בְּנֵבֶל עָשׂוֹר זַמְּרוּ־לוֹ׃ שִׁירוּ־לוֹ שִׁיר חָדָשׁ 3

.jubilatione in modulando benefacite

3 הֵיטִיבוּ נַגֵּן בִּתְרוּעָה׃

תרגום TARGUM.

23 ואנא אמרית באתבעותי למערוק אשתציתי

מקביל יקרך בקושטא שמעת קל צלותי

24 באתחננותי לותך : רחומו ית יי כל חסידוי

מהימניא נטיר מן ביש יי ופריע על דורבני

25 דעבדין גיותנותא : תקופו ויתעלם רעיונכון

כל דכלין למימרא דיי :

לב

1 לדויד שכלא טבא אמר דויד טובוי דמן

דשבקין ליה מרודוי חפין על חטאוי :

2 טובוי דבר נשא דלא חשיב יי ליה עוין ודלא

3 ברוחיה נכלא : מטול דשתקית מן פתגמי

אוריתא בלין גרמי בנהמותי כולא יומא :

4 ארום יימם ולילי תקיפת עלי מחתך אתהפך

5 רוטביה היך שרבא דקיטא לעלמא : חובתי

אודענך ועויתי לא חפית אמרית אודי על

מרודי קדם יי ואנת שבקתא עוית חובי

6 לעלמין : מטול דא יצלי כל חסידא קדמך

לעדן רעותיה לחוד דייתון עממין סגיאין

7 היך מיא לותיה לא ימטון למבאשא : את הוא

יי טמור לי מעקא תנטרנני ביעת שיזבותא

8 תחוררנני לעלמא : אשכלנך ואלפנך באורחא

דנן תהך אמלכנך ואשוי עלך לטבא עיני :

9 לא תהוון כסוסיא והיך כודנא דלית להון

ביונא בזממא ובפרומביא תקוניה לאתחסמא

10 כחדא לא יתקרב לותך : סגיאין כיבין

11 לרשיעא ודכלי ביי טיבותא יחזרניה : חדו

במימרא דיי ובועו צדיקיא ושבחו כל תריצי

לבא :

לג

1 שבחו צדיקיא קדם יי לתריציא יאי שבחתא :

2 אודיאו קדם יי בכנרא בנבלא דעסרתי נימין

3 שבחו ליה : שבחו קדם יי שירתא חדתא

אוטיבו לשבחא ביבבא :

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Ego autem dixi cùm quærebam aufugere, Succiſus ſum à præſentia gloriæ tuæ: in veritate audiſti vocem orationis meæ cùm deprecarer ad te. 23 Diligite Dominum omnes pii ejus: fideles cuſtodit à malo Dominus, & retribuit elatis qui operantur ſuperbiam. 24 Confortamini, & roboretur *animus veſter*, omnes qui confiditis in verbo Domini. 25

Davidi intellectus *bonus*.

PSAL. XXXII.

D*Ixit David*, beatus cui remiſſa ſunt ſcelera ſua, & cujus obtectum eſt peccatum. 1 Beatus filius hominis cui non imputabit Dominus iniquitatem, & non eſt in ſpiritu ejus dolus. 2 Quoniam tacui à verbis Legis: inveteraſcunt oſſa mea ob rugitum meum tota die. 3 Quoniam die ac nocte invaluit ſuper me percuſſio tua: converſus eſt viror meus in ſiccitatem æſtatis ſemper. 4 Delictum meum notum faciam tibi, & iniquitatem meam non abſcondi: dixi, Confitebor ſcelera mea *coram* Domino, & tu *remiſiſti* impietatem delicti mei in æternum. 5 Propterea orabit omnis pius *coram* te in tempore acceptabili: verùm *cùm* venient populi multi veluti aquæ, ad eum non appropinquabunt ut malum inferant. 6 Tu *ipſe Domine* abſconſio es mihi; *à tribulatione* cuſtodies me; canticis redemptionis circundabis me in æternum. 7 Intellectum dabo tibi & docebo te: in via hac incedes; conſulam tibi, & ponam ſuper te in bonum oculum meum. 8 Ne fueritis ſicut equus & ſicut mulus, quibus non eſt intellectus: in camo & freno erit ornatus eorum, ut conſtringantur ſimul, ne accedant ad te. 9 Multi dolores ſunt impio; qui verò confidit in *Domino*, benignitas circundabit eum. 10 Lætamini in Verbo Domini & exultate juſti, & laudes dicite omnes *recti corde*. 11

PSAL. XXXIII.

LAudes dicite juſti coram Domino: rectos decet laudatio. 1 Confitemini coram Domino in cithara, in nablo decem chordarum laudate eum. 2 Cantate coram *Domino* canticum novum: pulchrè agite *laudando* in jubilo. 3

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

23 * ܐܢܐ ܐܡܪܬ ܒܬܗܝܪܘܬܝ ܐܒܕܬ ܡܢ ܩܕܡ ܥܝܢܝܟ܂ ܘܫܡܥܬ ܩܠܐ ܕܒܥܘܬܝ ܟܕ ܩܪܝܬܟ܂

24 * ܐܚܒܘ ܠܡܪܝܐ ܙܕܝܩܘܗܝ : ܠܡܗܝܡܢܐ ܢܛܪ ܡܪܝܐ܂ ܘܦܪܥ ܠܥܘܠܐ ܥܒܕܝܗܘܢ :

25 * ܐܬܚܝܠܘ ܘܢܬܥܫܢ ܠܒܟܘܢ܂ ܟܠ ܕܡܣܒܪܝܢ ܒܡܪܝܐ :

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܠܒ *

1 * ܕܕܘܝܕ܂ ܥܠ ܣܟܠܘܬܗ ܕܐܕܡ ܕܐܡܪܚ ܘܚܛܐ܂ ܘܢܒܝܘܬܐ ܥܠ ܡܫܝܚܐ ܕܒܗ ܗܘܝܢ ܠܡܬܦܪܩܘ
ܡܢ ܓܗܢܐ܂ ܦܬܓܡܐ ܟܕ܂ ܛܘܒܘܗܝ ܠܡܢ ܕܐܫܬܒܩ ܠܗ ܚܛܗܘ܂ ܘܐܬܟܣܝܘ ܠܗ
2 ܚܛܗܘܗܝ : * ܛܘܒܘܗܝ ܠܓܒܪܐ ܕܠܐ ܢܚܫܘܒ ܠܗ ܡܪܝܐ ܚܛܝܬܗ܂ ܘܠܝܬ ܢܟܠܐ
3 ܒܠܒܗ : * ܡܛܠ ܕܫܬܩܬ ܒܠܝܘ ܓܪܡܝ ܟܕ ܢܗܡ ܗܘܝܬ ܝܘܡܐ ܟܠܗ : * ܡܛܠ
4
5 ܕܒܠܠܝܐ ܘܒܐܝܡܡܐ ܝܩܪܬ ܥܠܝ ܐܝܕܟ܂ ܘܐܬܗܦܟ ܒܚܕܝ ܟܐܒܐ ܠܡܩܛܠܢܝ : * ܚܛܗܝ
ܐܘܕܥܬܟ ܘܣܟܠܘܬܝ ܠܐ ܟܣܝܬ ܡܢܟ܂ ܐܡܪܬ ܕܐܘܕܐ ܠܡܪܝܐ ܥܠ ܣܟܠܘܬܝ : ܘܐܢܬ ܫܒܘܩ
6 ܐܢܬ ܠܝ ܟܠܗܘܢ ܚܛܗܝ܂ * ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܨܠܐ ܠܟ : ܟܠ ܡܢ ܕܓܒܐ ܠܟ ܒܙܒܢܐ ܡܩܒܠܐ܂
7 ܫܘܦܥܐ ܕܝܢ ܕܡܝܐ ܣܓܝܐܐ : ܠܘܬܗ ܠܐ ܢܬܩܪܒܘܢ܂ * ܐܢܬ ܥܛܘܪܝܢܝ ܘܡܢ ܒܥܠܕܒܒܝ
8 ܦܨܢܝ : ܫܘܒܚܐ ܘܦܘܪܩܢܐ ܐܚܕܢܝ ܕܐܣܬܟܠܟ܂ * ܘܐܘܕܥܟ ܐܘܪܚܐ ܕܬܐܙܠ ܒܗ ܘܐܣܝܡ
9 ܥܝܢܝ ܥܠܝܟ : * ܠܐ ܬܗܘܘܢ ܐܝܟ ܣܘܣܝܐ ܘܐܝܟ ܟܘܕܢܐ ܕܠܐ ܣܟܠܝܢ܂ ܕܒܦܓܘܕܐ ܡܟܒܫܝܢ
10 ܠܗܘܢ ܡܢ ܛܠܝܘܬܗܘܢ ܘܠܐ ܩܪܒܝܢ ܠܘܬܗ܂ * ܣܓܝܐܝܢ ܟܐܒܘܗܝ ܕܚܛܝܐ : ܘܡܢ ܕܡܣܒܪ
11 ܒܡܪܝܐ ܛܝܒܘܬܐ ܬܚܕܪܝܘܗܝ܂ * ܚܕܘ ܙܕܝܩܐ ܘܐܬܒܣܡܘ ܒܡܪܝܐ : ܘܫܒܚܘܗܝ ܟܠܟܘܢ ܬܪܝܨܝ
ܠܒܐ܂

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܠܓ *

1 * ܕܕܘܝܕ܂ ܡܫܪܝܢܘܬܐ܂ ܥܠ ܗܢܘܢ ܕܐܩܝܡ ܐܢܘܢ ܠܬܫܡܫܬܐ ܕܡܪܝܐ܂ ܠܢ ܕܝܢ ܪܘܚܢܐܝܬ
ܡܬܐܡܪܐ ܡܡܠܠܐ ܥܠ ܫܘܒܚܐ ܕܐܠܗܘܬܐ܂ ܦܬܓܡܐ ܡܗ܂
2 ܫܒܚܘ ܙܕܝܩܐ ܠܡܪܝܐ : ܘܠܬܪܝܨܐ ܝܐܐ ܬܫܒܘܚܬܐ܂ * ܐܘܕܘ ܠܗ ܒܟܢܪܐ : ܘܒܩܝܬܪܐ ܕܥܣܪ
3 ܢܩܫܝܢ ܙܡܪܘ ܠܗ܂ * ܫܒܚܘ ܠܗ ܬܫܒܘܚܬܐ ܚܕܬܐ : ܙܡܪܘ ܫܦܝܪ ܒܩܠܐ܂

Ego dixi in celeritate mea, Perii à conſpectu oculorũ tuorũ; & audîſti vocẽ deprecationis meæ, quũ clamavi ad te. 23 Diligite Dñm juſti ejus; fideles tuetur Dñs, & reddit iniquis opera ipſorũ. 24 Roboramini & confortetur cor veſtrũ, omnes qui ſperatis in Dño. 25

PSAL. XXXII.

Davidis. De culpa Adæ, qui auſus eſt & peccavit. Et prophetia de Chriſto, quòd per eum liberandi eſſemus à gehenna. Verſ. 24. 1

BEatus ille cui remiſſa eſt iniquitas ſua, cuique tecta ſunt peccata ſua. 2 Beatus homo cui Dominus non annumerabit peccatum ejus, & cujus in corde non eſt dolus. 3 Quoniam tacui, tabuerunt oſſa mea, dum rugirem die totâ. 4 Nam nocte dieque gravata eſt ſuper me manus tua, & volutatus eſt in pectore meo dolor ad occidendum me. 5 Peccata mea nota feci tibi, & inſipientias meas non abſcondi à te. Dixi, Confitebor Domino pro deliriis meis, & tu remittis mihi omnia peccata mea. 6 Propterea orabit ad te omnis qui electus eſt tibi, tempore accepto: impetus autem aquarum multarum ad eum non accedent. 7 Tu, protege me, & ab inimicis meis libera me: Gloriâ & ſalute complectere me, ut intelligam te: 8 Notam faciam tibi viam per quam abeas, & ponam oculos meos ſuper te. 9 Ne ſitis ut equus & ut mulus qui non ſapiunt, quos fræno domant ab adoleſcentia eorum, & non accedunt ad eum. 10 Multi ſunt dolores ſceleſti; at qui ſperat in Domino, gratia circundabit eum. 11 Lætamini juſti, & oblectamini in Domino: & glorificate eum omnes recti corde.

PSAL. XXXIII.

Davidis. Ad literam, de his quos præfecit miniſterio Domini. Nobis autem ſpiritualiter dicitur, ſermo de gloria Deitatis. Verſus. 45. 1

LAudate, juſti, Dominum, & (quidem) rectos decet laudatio; 2 Confitemini illi cum fide, & cum cithara decem chordarum pſallite ei. 3 Dicite illi gloriam novam, canite decenter voce.

Versio VULG. LAT.

23 Ego autem dixi in exceſſu mentis meæ, Projectus ſum à facie oculorum tuorum. Ideò exaudiſti vocē orationis meæ: dum clamarem ad te. 24 Diligite Dominū omnes ſancti ejus: quoniam veritatem requiret Domin⁹, & retribuet abundanter facientibus ſuperbiam. 25 Viriliter agite, & confortetur cor veſtrum, omnes qui ſperatis in Domino.

Ipſi David intellectus. XXXI.

1 BEati, quorum remiſſæ ſunt iniquitates: & quorum tecta ſunt peccata. 2 Beatus vir, cui non imputavit Domin⁹ peccatum, nec eſt in ſpiritu ejus dolus. 3 Quoniam tacui, inveteraverunt oſſa mea, dum clamarem totâ die. 4 Quoniam die ac nocte gravata eſt ſuper me man⁹ tua: converſus ſum in ærumna mea, dum configitur ſpina. 5 Delictum meū cognitum tibi feci: & injuſtitiam meam non abſcondi. Dixi; Confitebor adverſùm me injuſtitiam meā Domino: & tu remiſiſti impietatem peccati mei. 6 Pro hac orabit ad te omnis ſanctus, in tempore opportuno. Veruntamen in diluvio aquarum multarum, ad eum non approximabunt. 7 Tu es refugium meum à tribulatione, quæ circumdedit me: exultatio mea erue me à circumdantibus me. 8 Intellectum tibi dabo, & inſtruam te in via hac, quâ gradiêris: firmabo ſuper te oculos meos. 9 Nolite fieri ſicut equus & mulus, quib⁹ non eſt intellect⁹. In camo, & fræno, maxillas eorū conſtringe, qui non approximāt ad te. 10 Multa flagella peccatoris, ſperantē autē in Domino miſericordia circumdabit. 11 Lætamini in Domino et exultate juſti, et gloriamini omnes recti corde.

Pſalmus David. XXXII.

1 EXultate juſti in Domino, rectos decet collaudatio. 2 Confitemini Domino in cithara: in pſalterio decē chordarū pſallite illi. 3 Cantate ei canticū novū: benè pſallite ei in vociferatione.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

23 † Ἐγὼ δὲ εἶπα ἐν τῇ ἐκστάσει μου, † (η) Ἀπέῤῥιμμαι ἀπὸ προσώπου τῶν ὀφθαλμῶν σου· † διὰ τοῦτο (θ) εἰσήκουσας κύριε τῆς φωνῆς τῆς δεήσεώς μου † ἐν τῷ κεκραγέναι με πρὸς σέ. 24 † Ἀγαπήσατε τὸν κύριον πάντες οἱ ὅσιοι αὐτοῦ, † ὅτι ἀληθείας ἐκζητεῖ (ι) κύριος, † καὶ ἀνταποδίδωσι τοῖς περισσῶς ποιοῦσιν ὑπερηφανίαν. 25 † Ἀνδρίζεσθε, καὶ κραταιούσθω ἡ καρδία ὑμῶν, † πάντες οἱ ἐλπίζοντες ἐπὶ κύριον.

MS. A. (η) Ἀπέριμμαι (θ) εἰσήκουσεν τῆς φωνῆς (ι) ὁ κύριος,

(α) Συνέσεως τῷ Δαυίδ. λα΄.

1 † ΜΑκάριοι ὧν ἀφέθησαν αἱ ἀνομίαι, † καὶ ὧν ἐπεκαλύφθησαν αἱ ἁμαρτίαι. 2 † Μακάριος ἀνὴρ (β) ᾧ οὐ μὴ λογίσηται κύριος ἁμαρτίαν, † οὐδέ ἐστιν ἐν τῷ στόματι αὐτοῦ δόλος. 3 † Ὅτι ἐσίγησα, ἐπαλαιώθη τὰ ὀστᾶ μου, † ἀπὸ τοῦ κράζειν με ὅλην τὴν ἡμέραν. 4 † Ὅτι ἡμέρας καὶ νυκτὸς ἐβαρύνθη ἐπ᾽ ἐμὲ ἡ χείρ σου, † ἐστράφην εἰς ταλαιπωρίαν ἐν τῷ (γ) ἐμπαγῆναι ἄκανθαν. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. 5 † Τὴν ἁμαρτίαν μου ἐγνώρισα, † καὶ τὴν ἀνομίαν μου οὐκ ἐκάλυψα. † εἶπα, Ἐξαγορεύσω κατ᾽ ἐμοῦ τὴν ἀνομίαν μου τῷ κυρίῳ, † καὶ σὺ ἀφῆκας τὴν ἀσέβειαν τῆς καρδίας μου. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. 6 † Ὑπὲρ ταύτης προσεύξεται πρὸς σὲ † πᾶς ὅσιος ἐν καιρῷ εὐθέτῳ· † πλὴν ἐν κατακλυσμῷ ὑδάτων πολλῶν πρὸς αὐτὸν οὐκ ἐγγιοῦσι. 7 † Σύ μου εἶ καταφυγὴ ἀπὸ θλίψεως τῆς περιεχούσης με, † τὸ ἀγαλλίαμά μου λύτρωσαί με ἀπὸ τῶν κυκλωσάντων (δ) με. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. 8 † Συνετιῶ σε καὶ συμβιβῶ σε ἐν ὁδῷ ταύτῃ ᾗ πορεύσῃ, † ἐπιστηριῶ ἐπὶ σὲ τοὺς ὀφθαλμούς μου. 9 † Μὴ γίνεσθε ὡς ἵππος καὶ ἡμίονος, οἷς οὐκ ἔστι σύνεσις· † (ε) ἐν χαλινῷ καὶ κημῷ τὰς σιαγόνας αὐτῶν (ζ) ἄγξαι † τῶν μὴ ἐγγιζόντων πρὸς σέ. 10 † Πολλαὶ αἱ μάστιγες τοῦ ἁμαρτωλοῦ, † τὸν δὲ ἐλπίζοντα ἐπὶ κύριον ἔλεος κυκλώσει. 11 † Εὐφράνθητε ἐπὶ κύριον καὶ ἀγαλλιᾶσθε δίκαιοι, † καὶ καυχᾶσθε πάντες οἱ εὐθεῖς τῇ καρδίᾳ.

MS. A. (α) Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. (β) οὗ οὐ μὴ (γ) παγῆναί μοι ἄκανθαν. Τὴν ἀνομίαν μου ἐγνώρισα, καὶ τὴν ἁμαρτίαν (δ) με. Συνετιῶ (ε) ἐν κημῷ καὶ χαλινῷ (ζ) ἄγξις

(α) Τῷ Δαυίδ. λβ΄.

1 † ΑΓαλλιᾶσθε δίκαιοι ἐν τῷ κυρίῳ, † τοῖς εὐθέσι πρέπει (β) αἴνεσις. 2 † Ἐξομολογεῖσθε τῷ κυρίῳ ἐν κιθάρᾳ, † ἐν ψαλτηρίῳ δεκαχόρδῳ ψάλατε αὐτῷ. 3 † Ἄσατε αὐτῷ ᾆσμα καινόν, † καλῶς ψάλατε ἐν ἀλαλαγμῷ.

MS. A. (α) Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. (β) ἡ αἴνεσις.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

28 *Ego autē* [k] *dixi in* (*ſ*) *ecſtaſi mea, Projectus ſū à facie oculorum tuorum.* 29 *Ideò exaudîſti, Domine, vocē orationis meæ,* [l] *dū clamarem ad te.* 30 *Diligite Dominū omnes ſancti ej⁹, quoniā* (*t*)[m] *veritates requirit Dominus: & retribuet* (*u*) [n] *iis qui abundanter facient ſuperbiam.* 31 *Viriliter agite, et confortetur cor veſtrum, omnes qui ſperatis in Domino.*

MS. Æthiop. Pocock. Gloria patri, & Filio, & Spiritui ſancto: Eſt modò, ſemper erit, & in ſecula ſeculorum.

Intelligentiæ (a) ipſi David. XXXI.

1 B*EATI, quorum remiſſæ ſunt iniquitates, et* [a] *quorum tecta ſunt peccata.* 2 *Beatus vir,* [b] *cui non* (*b*) *imputabit Dominus peccatum, nec eſt* [c] *in* (*c*) *ore ejus dolus.* 3 (*d*) *Quoniā tacui, inveteraverunt oſſa mea,* à clamando me totâ die.* 4 *Quoniam die ac nocte gravata eſt ſuper me manus tua: converſus ſum* (*e*) *in ærumna, dū configeretur mihi ſpina. DIAPSALMA.* 5 *Peccatum meum* (*f*) *cognoui, & injuſtitiā meam non operui.* [d] *Dixi; Pronuntiabo adverſùm me injuſtitiam meam Domino, & tu remiſiſti impietatē* (*g*) *cordis mei. DIAPSALMA.* 7 *Pro* (*h*) *hac orabit ad te omnis ſanctus, in tempore opportuno.* 8 *Veruntamē* [e] *in diluvio aquarum multarū ad eum non appropinquabunt.* 9 *Tu es* [f] *refugium meum à tribulatione, quæ circundedit me: exultatio mea redime me à circundantibus me. DIAPSALMA.* 10 (*i*) *Intellectum dabo tibi, & inſtruam te in via hac, quâ gradiêris; obfirmabo ſuper te oculos meos.* 11 *Nolite fieri ſicut equus, & mulus, quibus non eſt intellectus;* 12 *In fræno et camo maxillas eorū conſtringe, qui nō appropinquant ad te.* 13 *Multa flagella peccatoris: ſperantem autē in Domino miſericordia* [g] *circundabit.* 14 *Lætamini in Domino, & exultate juſti:* (*k*) *& gloriamini* [h] *omnes recti cordē.*

(a) Ipſi David. XXXII.

1 E*XULTATE* (*b*) *juſti in Domino, rectos* (*c*) *decet laudatio.* 2 *Confitemini Domino in cithara, in pſalterio decachordo pſallite ei.* 3 *Cantate ei canticum novum; bene pſallite* [a] *in* (*d*) *vociferatione.* 1 2 3

Verſio ÆTHIOPICA.

23 አንሰ፡እቤ፡ተገደፍኩኑ፡እንጋ፡እምቅድመ፡ 28
አዕይንቲከ።፦በእንተዝ፡ሰማዕከ፡እግዚአብ 29
ሔር፡ቃለ፡ስእለትየ፡ዘጸራኅኩ፡ኀቤሁ።፦
24 አፍቅርዎ፡ለእግዚአብሔር፡ኵልክሙ፡ጻ 30
ድቃኑ።እስመ፡ጽድቀ፡የኀሥሥ፡እግዚአብሔ
ር።ወይትቤቀል፡ሎሙ፡ለእለ፡የኀሥሡ፡ተ
ዕቢተ፡ፈድፋደ።፦ ተዐገሡ፡ወአጽንዑ፡ል 31
25 በክሙ። ኵልክሙ፡እለ፡ተወከልክሙ፡በእግ
ዚአብሔር።፦
ስብሐት፡ለአብ፡ወወልድ፡ወመንፈስ፡ቅዱስ፡
ይእዜኒ፡ወዘልፈኒ፡ወለዓለመ፡ዓለም፡አሜን።
መዝሙር፡ዘደዊት፡ዘበአእምሮ።
ሀለ ብፁዓን፡ለእለ፡ተኅድገ፡ሎሙ፡ኃጢአ 1
ቶሙ።ወለእለ፡ሊኀሰበ፡ሎሙ፡ኾሎ፡ጌጋዮ
ሙ።፦ ብፁዕ፡ብእሲ፡ዘሊኍለቍ፡ሎቱ፡ 2
እግዚአብሔር፡ኃጢአቱ።ወዘአልቦ፡ጽልሑ
ት፡ውስተ፡ልቡ።፦ እስመ፡አርመምኩ፡ 3
በልየ፡አዕጽምትየ። እምኀበ፡እጸርኅ፡
ኵሎ፡እሚረ።፦ እስመ፡መዐልተ፡ወሌሊ 4
ት፡ክብደት፡እዴከ፡ላዕሌየ። ወተመየጥኩ፡
ለሕርትምና፡ሶበ፡ወግዓየ፡ሦክ።፦ ኃጢ 5
አትየ፡ነገርኩ፡ወአበሳየ፡ሊኀባእኩ።፦
ወእቤ፡እስተዋዴ፡ርእስየ፡ኀበ፡እግዚአ 6
ብሔር፡በእንተ፡ኃጢአትየ።
ወአንተ፡ኀደግ፡ጽልሑቶ፡ለልብየ።፦ በእ 7
ንተዝ፡ይጼሊ፡ኀቤከ፡ኵሉ፡ጻድቅ፡በጊዜ፡
ረቱዕ።፦ ወባሕቱ፡ማየ፡አይኅ፡ብዙኅ፡ 8
ሊይቀርብ፡ኀቤከ።፦ አንተ፡ምስካይየ፡ 9
እምዘቲ፡ምንደቤየ፡እንተ፡ረከበተኒ።
ወትፍሥሕትየኒ፡ከመ፡ታድኅነኒ፡እምእለ፡
ሮዱኒ።፦ አሌብወከ፡ወአጸንዐከ፡በዛቲ፡ 10
ፍኖት፡እንተ፡ሖርከ።ወአጸንዕ፡አዕይንትየ፡
ላዕሌከ።፦ ኢትኩኑ፡ከመ፡ፈረስ፡ወበቅል፡ 11
እለ፡አልቦሙ፡ልብ።፦ እለ፡በሕሳል፡ወበል 12
ጓም፡ይመይጥዎሙ፡መላትሒሆሙ። ከመ
ሊይቅረቡ፡ኀቤከ።፦ ብዙኅ፡መቅሠፍቶ 13
ሙ፡ለኃጥአን። ወእለሰ፡ይትዌከሉ፡በእግዚ
አብሔር፡ሣህል፡ይሜግቦሙ።፦ ተፈሥ 14
ሑ፡በእግዚአብሔር፡ወተሠሐዩ፡ጻድቃን።
ወተመክሑ፡ኵልክሙ፡ርቱዓነ፡ልብ።፦
መዝሙር፡ዘደዊት።
ሀለ ተፈሥሑ፡ጻድቃን፡በእግዚአብሔር። 1
ወለረትዓን፡ይደልዎሙ፡ክብር።፦ ግነዩ፡ 2
ለእግዚአብሔር፡በመሰንቆ። ወበመዝሙር፡
ዘዐሠርቱ፡አውታሪሁ፡ዘምሩ፡ሎቱ።፦
ወሰብሕዎ፡ስብሐተ፡ሐዲስ። ሠናየ፡ዘምሩ፡ 3
ወየብቡ፡ሎቱ።፦

INTERP. ÆTHIOP. [k] Dixi, Projectus ſum igitur à [l] eò quòd ad eum clamabam. [m] veritatē [n] iis qui abundantur quærunt *PSAL. xxxi.* [a] quorum iniquitates omnes eis non imputat Deus. [b] cujus peccatū ei non adnumerat De⁹, [c] in corde ej⁹, [d] Et dixi, Accuſabo meipſū apud Dominū propter peccata mea, & ipſe remiſit dolum cordis mei. [e] aquæ crebri diluvii [f] ſuſceptor meus ab iſta tribulatione mea, quæ contigit mihi: & exultatio etiā mea, ut me eripias ab inſectantibus me. [g] iis providebit, [h] vos omnes, *PSAL. xxxii.* [a] et jubilate ei.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

23 * انا قلت في تحيري * اتري سقطت من امام عينيك * فلهذا سمعت يا رب صوت تضرعي لما
24 صرخت اليك * احبوا الرب يا جميع قديسيه * فان الرب يبتغي الحق * وسيكافي الذين يتكبرون
25 بفعلهم * تعززوا ولتشتد قلوبكم * يا جميع المتوكلين على الرب * اللليلويا *
1 * المزمور الحادي والثلثون * قاله نبوة لاجل الخلاص * وعدده كج * استيخن *
2 طوبا للذين تركت لهم سيئاتهم * والذين سترت خطاياهم * طوبي للرجل الذي لم يحسب عليه
3 الرب خطية * وليس في فيه غش * انا سكت لان عظامي هرمت من صراخي اليك النهار كله
4 5 * لان في النهار والليل ثقلت يدك على * ورددت الي الهموم * المقاتلة في قلبي * اعترف بخطيتي
6 ولم اخف اثمي * قلت اعترف باثمي امام الرب * وانت غفرت لي نفاق قلبي * لهذا يصلي لك كل
7 بار في حين اجابة * لا يدنوا اليهم سيل المياه الغزيرة * انت ملجاي من الاحزان المحيطة بي *
8 انت مجدي * انقذني من المحيطين بي * سافهمك واعلمك الطريق التي تسلكها * واثبت نظري
9 اليك * يا بني البشر لا تكونوا مثل الخيل * والبغال التي لا فهم لها * ولا تجذب باللجم في افواهها *
10 كذلك اجذب احناك الذين لا يدنون اليك * كثيرة هي ضربات الخطاة * ومن يتوكل على
11 الرب فالرحمة تحيط به * افرحوا بالرب وهللوا * ايها الصديقون وافتخروا * يا جميع مستقيمي
1 القلوب * اللليلويا * * المزمور الثاني والثلثون * وعدده مد * استيخن *
2 ابتهجوا بالرب ايها الصديقون * وللمستقيمين يليق التسبيح * اشكروا الرب بالقيثارة * وبمزمار
3 ذي عشرة اوتار رتلوا له * سبحوه تسبيحا جديدا * رتلوا له حسنا بتهليل *

Ego dixi in ſtupore meo, Anne decidi è conſpectu oculorum tuorum? Propterea exaudîſti, O Domine, vocem ſupplicationis meæ, quando clamavi ad te. 23 *Diligite Dominum, O omnes ſancti ejus: quia Dominus quærit veritatem, & retribuit iis qui ſuperbiunt, pro opere eorum.* 24 *Corroboramini & confirmentur corda veſtra, O omnes confidentes in Domino. Alleluja.* 25

PSAL. XXXI.

Dixit eum propheticè de Redemptione. Et numerus verſ. 23. 1

B*Eatitudo iis, quibus dimiſſæ ſunt malitiæ ſuæ, & quorum tecta ſunt peccata ſua.* 2 *Beatus vir, cui non reputavit Dominus peccatum, & non eſt in ore ejus dolus.* 3 *Ego tacui, quoniam oſſa mea tabuerunt præ clamore meo ad te totâ die.* 4 *Nam diu noctuque gravata eſt manus tua ſuper me, & reflexiſti in me curas bellantes in corde meo.* 5 *Confiteor peccatum meum, & non abſcondi crimen meum. Dixi, Confiteor culpam meam coram Domino, & tu remiſiſti mihi iniquitatem cordis mei.* 6 *Propterea orabit ad te omnis innocens, in tempore exauditionis. Non accedet ad eos eluvies aquarum multarum.* 7 *Tu es refugium meum à triſtitiis circundantibus me. Tu es gloria mea, redime me à circundantib⁹ me;* 8 *Intellectū dabo tibi, & docebo te viā per quā ambules, & figam aſpectum meum in te.* 9 *O filii hominum, ne ſitis veluti equi & muli, qui non habent intellectum, & minimè trahuntur frænis quæ ſunt in oribus eorum.* 10 *Sic reprime maxillas eorum qui non accedunt ad te. Multa ſunt flagella delinquentium; at qui confidit in Domino, miſericordia circundabit eum.* 11 *Gaudete in Domino & exultate, O juſti: & gloriamini, O omnes recti cordibus. Alleluja.*

PSAL. XXXII.

Et numerus verſ. 44. 1

E*xhilaramini, in Domino, juſti: rectos enim decet laudatio.* 2 *Gratias agite Domino, cum cithara & cum pſalterio habente decem chordas pſallite ei:* 3 *Laudate eū laude novā, pſallite ei bene cū jubilo;*

תהלים : לד

justitiam Diligens .fide in ejus opus omne & ; Domini verbum rectum Quia
4 כי־ישר דבר־יהוה וכל־מעשהו באמונה : אהב צדקה
5 cœli Domini verbo In .terra eſt plena Domini miſericordia ; judicium &
6 ומשפט חסד יהוה מלאה הארץ : בדבר יהוה שמים
acervum ſicut Congregans .eorum exercitus omnis ejus oris ſpiritu in & ; ſunt facti
7 נעשו וברוח פיו כל־צבאם : כנס כנד
; terra omnis Domino à Timeant .voragines theſauris in *dans* ; maris aquas
8 מי הים נתן באוצרות תהומות : ייראו מיהוה כל־הארץ
ipſe ; fuit & ,dixit ipſe Quoniam .orbis habitatores omnes paveant eo ab
9 ממנו יגורו כל־ישבי תבל : כי הוא אמר ויהי הוא
annihilavit ; gentium conſilium fecit irritum DOMINUS .ſtetit & ,præcepit
10 צוה ויעמד : יהוה הפיר עצת־גוים הניא
cogitationes ; ſtabit ſeculum in Domini Conſilium .populorum cogitationes
11 מחשבות עמים : עצת יהוה לעולם תעמד מחשבות
Dominus cujus , *gentis* *Beatitudines* .generationem & generatione in ejus cordis
12 לבו לדר ודר : אשרי הגוי אשר־יהוה
; Dominus reſpexit cœlis E .ſibi hæreditatem in elegit *populum* ; ejus Deus
13 אלהיו העם בחר לנחלה לו : משמים הביט יהוה
ad ; proſpexit *ejus* *ſedere* habitaculo De .hominum filios omnes vidit
14 ראה את־כל־בני האדם : ממכון־שבתו השגיח אל
omnia *ad* conſiderans ; eorum cor pariter Formans .terræ habitatores omnes
15 כל־ישבי הארץ : היצר יחד לבם המבין אל־כל־
eruetur non potens ; *roboris* multitudine in ſalvatur rex Non .eorum opera
16 מעשיהם : אין־המלך נושע ברב־חיל גבור לא־ינצל
multitudine in & ; ſalutem ad equus Mendacium .potentiæ multitudine in
17 ברב־כח : שקר הסוס לתשועה וברב
ſperantes ; eum timentes *ad* Domini oculus Ecce .eruet non ſui roboris
18 חילו לא ימלט : הנה עין יהוה אל־יראיו למיחלים
eos *vivificandum ad* & ; eorum *animam* morte à *eruendum Ad* .ejus miſericordia in
19 לחסדו : להציל ממות נפשם ולחיותם
noſter clypeus &,noſtrum auxilium ;Dominum expectavit noſtra Anima .fame in
20 ברעב : נפשנו חכתה ליהוה עזרנו ומגננו
.ſperavimus ejus ſanctitatis nomine in quia ; noſtrum cor lætabitur eo in Quia .*ipſe*
21 הוא : כי־בו ישמח לבנו כי בשם קדשו בטחנו :
.te *expectavimus* quemadmodum ; nos ſuper Domine tua miſericordia Sit
22 יהי־חסדך יהוה עלינו כאשר יחלנו לך :

PSAL. XXXIV. לד

.abiit & ,eum expulit & ; Abimelech *facies ad* ſuũ *ſenſum* *ipſum mutando in* ,Davidi
1 לדוד בשנותו את־טעמו לפני אבימלך ויגרשהו וילך :
Domino In .meo ore in ejus laus ſemper ; tempore omni in Domino Benedicam
2 אברכה את־יהוה בכל־עת תמיד תהלתו בפי : ביהוה
3 Dominum Magnificate .lætabuntur & ,*manſueti* audient ; mea anima ſe laudabit
4 תתהלל נפשי ישמעו ענוים וישמחו : גדלו ליהוה
; me exaudivit & ,Dominum Quæſivi .pariter ejus nomen exaltemus & ; mecum
5 אתי ונרוממה שמו יחדו : דרשתי את־יהוה ויענני
;ſunt illuminati & ,eum ad Aſpexerunt .me eripuit meis timoribus omnibus ex &
6 ומכל־מגורותי הצילני : הביטו אליו ונהרו
.ſunt affectæ pudore non eorum facies &
ופניהם אל־יחפרו :

תרגום TARGUM.

4 מטול דתקין פתגמא דיי וכל עובדוי
5 בהימנותא : רחם צדקתא ודינא טובא דיי
6 מליא ארעא : במלא דיי שמיא אתעבידו
7 וברוחא דפומיה כל חילהון : דמכנים היך
זיקא מוי דימא יהבנון באפותיקי תהומיא :
8 וידחלון מן קדם יי כל יתבי ארעא מניה
9 ירתתון כל דיירי תבל : מטול דהוא אמר והוי
10 הוא פקד ואתקיים : יי תבר מלכת עממיא
11 בטל מחשבת אומיא : מלכתא דיי לעלמא
12 קימא מחשבת לביה לדרי דריא : טובוי
דגברא דיי אלהיה עמא די בחר לאחסנא
13 ליה : מן שמיא אסתכל יי חמא ית כל בני
14 נשא : ממדור בית מותביה אודיק לות כל
15 יתבי ארעא : די ברא יתהון מכוין כחדא
16 לבהון ומתבונן לכל עובדיהון : לית מלכא
מתפרק בסגעי חילוותיה גברא לא מתפצי
17 בסגעי חיליה : שקרא סוסא לפורקנא ובסגעי
18 תוקפיה לא משתזיב : הא עינא דיי מסתכל
19 לדחלין מניה לסברין לטיבותיה : למפצי
20 ממותא נפשהון ולקימותהון באולצנא : נפשנא
מסתכיא לפורקנא דיי סעודנא ותריסנא
21 הוא : ארום במימריה יחדי לבנא מטול
22 דבשום קודשיה אתרחצנא : יהי טובך יי עלנא
היכמה דסברינן עלך :

לד

1 לדוד כד שני ית מדעיה קדם אבימלך ופטריה
2 ואזל : אברך ית יי בכל עדן תדירא תושבחתיה
3 בפומי : במימרא דיי תושבחת נפשי ישמעון
4 ענותניא ויחדון : הבו רבותא קדם יי עמי
5 ונרומם שמיה כחדא : תבעית אולפן מן קדם
6 יי ועני ומכל דחלתי פצי יתי : אסתכלו לותיה
ואתנהרו ואפיהון לא עצבו :

PARAPH. CHALD. VerſLat.

Quoniam rectum eſt Verbum Domini, & 4
omnia opera ejus in fide. Amat juſtitiam 5
& judicium : bonitate Domini plena eſt
terra. Verbo Domini cœli facti ſunt, & 6
ſpiritu oris ejus omnis exercitus eorum.
Congregans ſicut uter aquas maris, poſuit 7
eas in apothecis abyſſorum. *Timeant ita-* 8
que ab aſpectu Domini omnes habitatores
terræ : ab eo contremiſcant omnes orbis
incolæ. Quoniam ipſe dixit & fuit : ipſe 9
mandavit & ſubſtitit. Dominus diſſipat 10
conſilium populorum : irritas facit cogi-
tationes nationum. Conſilium Domini in 11
æternum permanet : cogitationes cordis
ejus in generationes generationum. Bea- 12
tus eſt *vir*, cujus DOMINUS eſt Deus
ejus : populus quem elegit, in hæredita-
tem ſibi. De cœlo reſpexit Dominus, vi- 13
dit omnes filios hominum. De habitatio- 14
ne domus hoſpitii ſui reſpexit ſuper
omnes qui habitant terram. Qui creavit 15
eos, unit ſimul corda eorum, & intelligit
omnia opera eorum. Non eſt rex qui ſal- 16
vetur multitudine exercit' *ſui* : gigas quoq;
non evadit multa fortitudine *ſua*. Fallax 17
eſt equus ad ſalutem, & propter ingentem
fortitudinem ſuam non ſalvatur. Ecce 18
oculus Domini *intentus* eſt ſup timentes
eum, ſperantes in benignitate ejus. Ut eri- 19
piat à morte animas eorum, & paſcat eos
in fame. Anima noſtra expectat redem- 20
ptionem Domini : auxilium enim noſtrum
& ſcutum noſtrum ipſe eſt. Quoniam in 21
verbo ejus lætabitur cor noſtrum, eo quòd
in nomine ſancto ejus ſperavimus. Sit mi- 22
ſericordia tua Domine ſuper nos, quem-
admodum ſperamus in te.

Davidis quando mutavit ſenſum ſuum 1
coram Abimelech, & reliquit eum, et abiit.

PSAL. XXXIV.

BEnedicam Domino in omni tempore : 2
ſemper laus ejus in ore meo. In verbo 3
Domini laudabitur anima mea : audient
manſueti & lætabuntur. Afferte magnifi- 4
centiam coram Domino mecum, & exal-
temus nomen ejus ſimul. Quæſivi doctri- 5
nam à conſpectu Domini & reſpondit mi-
hi : & de omnibus timoribus meis libera-
vit me. Reſpexerunt ad eum & illu- 6
minati ſunt : & facies eorum non ſunt
confuſæ.

Verſio SYRIACA. cum Interpretatione LATINA.

4 5 * ܡܛܠ ܕܬܪܝܨܐ ܗܝ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ: ܘܟܠܗܘܢ ܥܒܕܘܗܝ ܒܗܝܡܢܘܬܐ. * ܪܚܡ ܙܕܝܩܘܬܐ
6 ܘܕܝܢܐ : ܡܢ ܛܝܒܘܬܗ ܕܡܪܝܐ ܡܠܝܐ ܐܪܥܐ. * ܒܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܫܡܝܐ ܐܬܥܒܕܘ : ܘܒܪܘܚܐ
7 ܕܦܘܡܗ ܟܠܗܘܢ ܚܝܠܘܬܗܘܢ. * ܟܢܫ ܐܝܟ ܕܒܙܩܐ ܡܝܐ ܕܝܡܡܐ : ܘܣܡ ܐܢܘܢ ܒܓܙܐ ܠܬܗܘܡܐ.
8 * ܢܕܚܠ ܡܢ ܡܪܝܐ ܟܠܗ ܐܪܥܐ : ܘܢܙܘܥܘܢ ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ. ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܘܗ̇ ܕܬܒܝܠ :
9 10 * ܡܛܠ ܕܗܘ ܐܡܪ ܘܗܘܘ. ܘܗܘ ܦܩܕ ܘܐܬܒܪܝܘ : * ܡܪܝܐ ܡܒܛܠ ܡܠܟܐ ܕܥܡܡܐ. ܘܡܒܛܠ
11 ܡܪܝܐ ܡܚܫܒܬܗܘܢ ܕܥܡܡܐ : * ܬܪܥܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܠܥܠܡ ܩܝܡܐ. ܘܡܚܫܒܬܐ ܕܠܒܗ
12 13 ܠܕܪ ܕܪܝܢ : * ܛܘܒܘܗܝ ܠܥܡܐ ܕܡܪܝܐ ܗܘ ܐܠܗܗ. ܥܡܐ ܕܓܒܐ ܠܗ ܠܝܪܬܘܬܐ : * ܡܢ ܫܡܝܐ
14 ܚܪ ܡܪܝܐ. ܘܚܙܐ ܠܟܠܗܘܢ ܒܢܝ ܐܢܫܐ : * ܘܡܢ ܡܬܩܢܘܬܗ ܚܙܐ. ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܘܗ̇
15 16 ܕܐܪܥܐ : * ܕܓܒܠ ܐܟܚܕܐ ܠܒܗܘܢ. ܘܡܣܬܟܠ ܒܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝܗܘܢ : * ܡܠܟܐ ܠܐ
17 ܡܬܦܪܩ ܒܣܘܓܐܐ ܕܚܝܠܐ. ܘܠܐ ܓܢܒܪܐ ܡܫܬܘܙܒ ܒܣܘܓܐܐ ܕܚܝܠܗ : * ܕܓܠ ܗܘ
18 ܦܘܪܩܢܗ ܕܣܘܣܝܐ. ܘܒܣܘܓܐܐ ܕܚܝܠܗ ܠܐ ܡܦܠܛ ܠܪܟܒܗ : * ܥܝܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܥܠ
19 ܙܕܝܩܐ. ܕܡܣܟܝܢ ܠܛܝܒܘܬܗ : * ܕܢܦܨܐ ܢܦܫܬܗܘܢ ܡܢ ܡܘܬܐ. ܘܢܚܐ ܐܢܘܢ ܒܟܦܢܐ :
20 21 * ܢܦܫܢ ܕܝܢ ܣܟܝܬ ܠܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܗܘܝܘ ܡܥܕܪܢܢ ܘܡܫܘܙܒܢܢ : * ܘܒܗ ܗܘ ܢܚܕܐ
22 ܠܒܢ. ܕܒܫܡܗ ܩܕܝܫܐ ܣܒܪܢ : * ܬܗܘܐ ܛܝܒܘܬܟ ܥܠܝܢ ܡܪܝܐ. ܐܝܟܢܐ ܕܣܟܝܢ ܠܟ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܠܕ *

1 2 * ܕܕܘܝܕ. ܟܕ ܐܙܠ ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܘܡܩܪܒ ܗܘܐ ܒܘܟܪܐ ܠܟܗܢܐ. ܦܘܫܩ ܡܓ. * ܐܒܪܟ
3 ܠܡܪܝܐ ܒܟܠܙܒܢ. ܘܒܟܠܙܒܢ ܬܫܒܘܚܬܗ ܒܦܘܡܝ : * ܒܡܪܝܐ ܬܫܬܒܗܪ ܢܦܫܝ.
4 5 ܢܫܡܥܘܢ ܡܣܟܢܐ ܘܢܚܕܘܢ : * ܐܘܪܒܘ ܠܡܪܝܐ ܥܡܝ. ܘܢܪܝܡ ܫܡܗ ܐܟܚܕܐ : * ܒܥܝܬ
6 ܡܢ ܡܪܝܐ ܘܥܢܢܝ. ܘܡܢ ܟܠܗܘܢ ܐܘܠܨܢܝ ܦܪܩܢܝ : * ܚܘܪܘ ܠܘܬܗ ܘܣܒܪܘ ܒܗ.
ܘܐܦܝܟܘܢ ܠܐ ܢܒܗܬܘܢ :

Quoniam rectus eſt ſermo Domini, & omnia 4
opera ejus in fide : Diligit juſtitiam & ju- 5
dicium : bonitate Domini plena eſt terra.
Verbo Dñi factum eſt cœlum, & ſpiritu 6
oris ejus omnes exercitus ejus. Congrega- 7
vit quaſi in utribus aquas marium, & poſuit
in ærariis abyſſos. Timeat Dñm univerſa 8
terra, & tremefiant à conſpectu ejus omnes
habitatores orbis. Quoniam ipſe dixit, & 9
fuerunt : ipſeque præcepit, atque condidit.
Dominus irritum facit conſilium gentium, & 10
abrogat Dominus cogitationes populorum :
Mens autem Domini in ſeculum permanet, 11
& meditatio cordis ejus in generationem ge-
nerationum. Beatus populus cujus Domi- 12
nus eſt Deus : populus, quem elegit ſibi in
hæreditatem. De cœlo proſpexit Dominus, 13
& vidit omnes filios hominum. Et de ſede 14
ſua vidit omnes incolas terræ : Qui compe- 15
git ſimul cor ipſorum ; & conſiderat cuncta
opera eorum. Rex non ſalvatur multitudine 16
roboris, neque gigas liberatur copiâ virtutis
ſuæ. Fallax eſt ſalus equi, nã abundãtiâ viri- 17
um ſuarum non eripit equitem ſuum. Oculi 18
Dñi ſuper juſtos, qui expectant gratiam ejus.
Ut liberet animas eorũ à morte, & vivificet 19
illos in fame. Anima autem noſtra expectavit 20
Dominum, quia ipſe eſt adjutor noſter & tu-
tor noſter. Et in eo lætabitur cor noſtrum: 21
quia in nomine ejus ſancto ſperavimus. Sit 22
gratia tua ſuper nos, Domine, quemadmo-
dum expectavimus te.

PSAL. XXXIV.

Davidis. Quum pergeret ad domum Domini, 1
daretque primitias Sacerdotibus. Verſ. 43.

BEnedicam Dñm omni tempore, & jugi- 2
ter laudes ejus in ore meo. In Dño glo- 3
riabitur anima mea. Audiant pauperes & læ-
tentur : Magnificate mecum Dñm, & exal- 4
temus nomen ejus ſimul. Poſtulavi à Dño, 5
& exaudivit me, & ex omnibus anguſtiis
meis liberavit me. Reſpicite ad eum, & ſpe- 6
rate in illo, & facies veſtræ non confunden-
tur.

Verſio VULG. LAT.

4 Quia rectū eſt verbū Dn̄i, et omnia ope-
5 ra ej⁹ in fide. Diligit miſericordiā & ju-
diciū: miſericordiâ Dn̄i plena eſt terra.
6 Verbo Dn̄i cœli firmati ſunt: & ſpiri-
7 tu oris ejus omnis virt⁹ eorū. Congre-
gans ſicut in utre aquas maris: ponens
8 in theſauris abyſſos. Timeat Dominum
omnis terra: ab eo autē commovean-
9 tur omnes inhabitantes orbē. Quoniā
ipſe dixit, & facta ſunt: ipſe mandavit,
10 & creata ſunt. Dn̄s diſſipat conſilia gen-
tium: reprobat autē cogitationes po-
pulorū, & reprobat conſilia principū.
11 Conſiliū autem Dn̄i in æternū manet:
cogitationes cordis ejus in generatione
12 & generationē. Beata gens, cuj⁹ eſt Dn̄s,
Deus ejus; populus, quem elegit in hæ-
13 reditatē ſibi. De cœlo reſpexit Dn̄s:
14 vidit omnes filios hominū. De præpa-
rato habitaculo ſuo reſpexit ſup omnes,
15 qui habitant terrā. Qui finxit ſigillatim
corda eorū: qui intelligit omnia opera
16 eorum. Non ſalvatur rex per multam
virtutem: & gigas non ſalvabitur in
17 multitudine virtutis ſuæ. Fallax equus
ad ſalutem: in abundantia autē virtutis
18 ſuæ non ſalvabitur. Ecce oculi Dn̄i ſup
metuentes eū: & in eis, qui ſperant ſu-
19 per miſericordia ejus. Ut eruat à mor-
20 te animas eorū: & alat eos in fame. A-
nima noſtra ſuſtinet Dominum: quoniā
21 adjutor & protector noſter eſt. Quia
in eo lætabitur cor noſtrum: & in no-
22 mine ſancto ej⁹ ſperavimus. Fiat miſe-
ricordia tua, Domine, ſup nos: quemad-
modùm ſperavimus in te.

1 Davidi, cùm immutavit vultum ſuum
coram Achimelech, & dimiſit eū
& abiit. (1 *Reg.* 21.)

XXXIII.

2 BEnedicam Dn̄m in omni tempore:
3 ſemper laus ejus in ore meo. In Dn̄o
laudabitur anima mea: audiant manſue-
4 ti, & lætentur. Magnificate Dn̄m mecū:
5 & exaltemus nomen ejus in idipſū. Ex-
quiſivi Dominum, & exaudivit me: &
ex omnibus tribulationibus meis eripuit
6 me. Accedite ad eum, & illuminamini:
& facies veſtræ non confundentur.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

4 †Ὅτι εὐθὴς ὁ λόγος τοῦ κυρίου, † καὶ πάντα τὰ ἔρ-
5 γα αὐτοῦ ἐν πίστει. † Ἀγαπᾷ ἐλεημοσύνην καὶ κρί-
6 σιν(γ), †τοῦ ἐλέους κυρίου πλήρης ἡ γῆ. †Τῷ λόγῳ(δ)
τοῦ κυρίου οἱ οὐρανοὶ ἐστερεώθησαν, † καὶ τῷ πνεύματι τοῦ
7 στόματος αὐτοῦ πᾶσα ἡ δύναμις αὐτῶν. †Συνάγων
ὡσεὶ ἀσκὸν ὕδατα θαλάσσης, †τιθεὶς ἐν θησαυροῖς
8 ἀβύσσους. † Φοβηθήτω τὸν κύριον πᾶσα ἡ γῆ, † ἀπ'
αὐτοῦ δὲ σαλευθήτωσαν πάντες οἱ κατοικοῦντες τὴν οἰ-
9 κουμένην. † Ὅτι αὐτὸς εἶπε καὶ ἐγενήθησαν, † αὐτὸς
10 ἐνετείλατο καὶ ἐκτίσθησαν. †Κύριος διασκεδάζει βου-
λὰς ἐθνῶν, † ἀθετεῖ δὲ λογισμοὺς λαῶν, † καὶ ἀθετεῖ
11 βουλὰς ἀρχόντων. †Ἡ δὲ βουλὴ τοῦ κυρίου εἰς τὸν αἰῶνα
μένει, † λογισμοὶ τῆς καρδίας αὐτοῦ (ε) ἀπὸ γενεῶν
12 εἰς γενεάς. † Μακάριον τὸ ἔθνος οὗ ἐστι κύριος ὁ
θεὸς αὐτοῦ, † λαὸς ὃν ἐξελέξατο εἰς κληρονομίαν
13 ἑαυτῷ. † Ἐξ οὐρανοῦ ἐπέβλεψεν ὁ κύριος, † εἶδε
14 πάντας τοὺς υἱοὺς τῶν ἀνθρώπων, † Ἐξ ἑτοίμου
κατοικητηρίου αὐτοῦ † ἐπέβλεψεν ἐπὶ πάντας τοὺς
15 κατοικοῦντας τὴν γῆν· † Ὁ πλάσας κατὰ μόνας τὰς
καρδίας αὐτῶν, † ὁ συνιεὶς πάντα τὰ ἔργα αὐτῶν.
16 † Οὐ σώζεται βασιλεὺς διὰ πολλὴν δύναμιν, † καὶ
17 γίγας οὐ σωθήσεται ἐν πλήθει ἰσχύος αὐτοῦ. † Ψευ-
δὴς ἵππος εἰς σωτηρίαν, † ἐν δὲ πλήθει δυνάμεως
18 αὐτοῦ οὐ σωθήσεται. †Ἰδοὺ οἱ ὀφθαλμοὶ κυρίου ἐπὶ τοὺς
φοβουμένους αὐτὸν, † τοὺς ἐλπίζοντας ἐπὶ τὸ ἔλεος
19 αὐτοῦ, †Ῥύσασθαι ἐκ θανάτου τὰς ψυχὰς αὐτῶν, † καὶ
20 διαθρέψαι αὐτοὺς ἐν λιμῷ. † Ἡ ψυχὴ ἡμῶν ὑπο-
μένει τῷ κυρίῳ, † ὅτι βοηθὸς καὶ ὑπερασπιστὴς ἡμῶν
21 ἐστι. †Ὅτι ἐν αὐτῷ εὐφρανθήσεται ἡ καρδία ἡμῶν, †
22 καὶ ἐν τῷ ὀνόματι τῷ ἁγίῳ αὐτοῦ ἠλπίσαμεν. † Γέ-
νοιτο (ζ) τὸ ἔλεός σου κύριε ἐφ' ἡμᾶς, καθάπερ ἠλ-
πίσαμεν (η) ἐπὶ σέ.

MS. A. (γ) ὁ κύριος, τοῦ (δ) κυρίου (ε) εἰς γενεὰν καὶ γενεάν. (ζ) κύριε τὸ ἔλαιός σου ἐφ' ἡμᾶς, (η) ἐπὶ σοί.

1 Τῷ Δαυὶδ, ὁπότε ἠλλοίωσε τὸ πρόσωπον αὐτοῦ
ἐναντίον Ἀβιμέλεχ, καὶ ἀπέλυσεν αὐ-
τὸν, καὶ ἀπῆλθεν. λγ'.

2 † Εὐλογήσω τὸν κύριον ἐν παντὶ καιρῷ, †διαπαν-
3 τὸς ἡ αἴνεσις αὐτοῦ ἐν τῷ στόματί μου. †Ἐν τῷ κυρίῳ
(a)ἐπαινεθήσεται ἡ ψυχή μου· †ἀκουσάτωσαν πραεῖς καὶ
4 εὐφρανθήτωσαν. †Μεγαλύνατε τὸν κύριον σὺν ἐμοὶ,
5 † καὶ (α) ὑψώσωμεν τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐπὶ τὸ αὐτό. †Ἐξ-
εζήτησα τὸν κύριον, καὶ ἐπήκουσέ μου, † καὶ ἐκ πασῶν
6 τῶν (β) παροικιῶν μου ἐῤῥύσατό με. †Προσέλθατε πρὸς
αὐτὸν καὶ φωτίσθητε, † καὶ τὰ πρόσωπα ὑμῶν οὐ μὴ
καταισχυνθῇ.

MS. A. (a) ἐπαινεσθήσεται (α) ὑψώσομεν (β) θλίψεων

Verſ. GRÆ: LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

4 *Quia rectū eſt verbū Domi-* 4
ni, & omnia opera ejus in fide.
5 [b] *Diligit miſericordiā, & ju-* 5
diciū: miſericordiâ Domini ple-
na eſt terra. 6 Verbo Domini cœ- 6
li (e) firmati ſunt: & ſpiritu oris
ej⁹ omniū (f) virt⁹ eorū. 7 (g) Con- 7
gregans, ſicut utrē, aquas maris:
ponens in theſauris abyſſos. 8 Ti- 8
meat Dominū omnis terra: ab eo
autem (h) commoveantur omnes
inhabitantes orbē. 9 Quoniā ipſe 9
dixit, & facta ſunt: ipſe manda-
vit, & creata ſunt. 10 Dominus 10
diſſipat conſilia gentiū: reprobat
autē cogitationes populorum, &
reprobat conſilia principū. 11 Cō- 11
ſiliū verò Domini manet in æ-
ternū: cogitationes cordis ej⁹ (i)
à generationibus in generationes.
12 Beata gens, cuj⁹ eſt Domin⁹ 12
De⁹ ej⁹: popul⁹, quē elegit in hæ-
reditatē ſibi. 13 De cœlo reſpexit 13
Domin⁹: vidit omnes filios homi-
nū. 14 [c] De (k) præparato habi- 14
culo ſuo, reſpexit ſuper omnes,
qui inhabitant terrā. 15 Qui fin- 15
xit (l) ſigillatim corda eorū: qui
intelligit omnia opera eorū. 16
Non ſalvatur rex per [d] multā 16
virtutē: & gigas non (m) ſalva-
bitur in multitudine fortitudinis
ſuæ. 17 [e] Fallax equ⁹ ad ſalu- 17
tē: in abundantia autem virtutis
ſuæ non ſalvabitur. 18 Ecce ocu- 18
li Domini ſuper metuentes eum,
(n) ſperantes ſuper miſericordia
ej⁹. 19 Ut eruat à morte animas 19
eorū, & alat eos in fame. 20 A- 20
nima [f] noſtra patiens (o) eſt Do-
mino, quoniā adjutor & prote-
ctor noſter eſt. 21 Quia in eo læ- 21
tabitur cor noſtrū, & in nomine
ſancto ejus ſperavimus. 22 Fiat 22
miſericordia tua, Domine, ſuper
nos, quēadmodū ſperavim⁹ in te.

(a`Ipſi David, cū mutavit vultū 1
ſuum coram Abimelech, & di-
miſit eum, & abiit. XXXIII.

BEnedicā Dominum in omni 2
tempore: ſemper laus ejus in
ore meo. 2 In Domino laudabitur 3
anima mea: audiant manſueti, et
lætentur. 3 Magnificate Domi- 4
num mecum, & exaltemus nomē
ejus in (b) idipſum. 4 Exquiſivi 5
Dominum, & [a] exaudivit me:
& ex omnibus (c) [b] paræciis
meis eripuit me. 5 Accedite ad eum, & illuminamini: & facies veſtræ non confundentur. 6

Verſio ÆTHIOPICA.

እስመ:ጽድቅ:ቃሉ:ለእግዚአብሔር::ወኵ 4
ሉ:ግብሩ:በሃይማኖት::=፦ ያፈቅር:እግዚአ 5
ብሔር: ጽድቀ: ወምጽዋዕተ:: ሣህሉ:ለእ
ግዚአብሔር:መልአ:ምድረ::=፦ ወበቃለ: 6
እግዚአብሔር:ጸንዓ:ሰማያት:: ወበእስትን
ፋሱ:ኣፈሁ:ኵሉ: ኃይሎሙ::=፦ ዘያስተጋ 7
ብኦ:ከመ:ዝቅ:ለማየ: ባሕር:: ወይሠይሞ
ሙ:ውስተ:መዛግብተ:ቀላያት::=፦ትፍርሆ: 8
ለእግዚአብሔር : ኵላ: ምድር:: ወእምኔ
ሁ:ይደንግፁ:ኵሎሙ:እለ:ይነብሩ:ውስተ:
ዓለም::=፦እስመ:ውእቱ:ይቤ:ወኮኑ::ወው 9
እቱ:ኣዘዘ:ወተፈጥሩ::=፦ እግዚአብሔር: 10
ይመይጥ: ምክሮሙ: ለአሕዛብ:: ወይመይ
ጥ:ሕሊናሆሙ:ለሕዝብ::ወያረስዮሙ:ምክ
ሮሙ:ለመላእክት::=፦ ወምክሩሰ:ለእግዚ 11
አብሔር:ይሄሉ:ለዓለም::ወሕሊና:ልቡ፤:
ለትውልደ:ትውልድ::=፦ ብፁዕ:ሕዝብ:ዘ 12
እግዚአብሔር:አምላኩ:: ሕዝብ: ዘኀረየ:
ሎቱ:ለርስቱ::=፦ እምሰማይ: ኃወጸ:እግ 13
ዚአብሔር:: ወርእየ: ኵሎ: ደቂቀ: እጓለ:
እምሕያው::=፦ ወእምድልው:ጽርሐ:መቅ 14
ደሱ::ወርእየ:ሳዕለ:ኵሎሙ:እለ:ኀደሩን:
ዲበ:ምድር::=፦ ዘውእቱ:ባሕቲቱ:ፈጠረ: 15
ልበሙ::ዘያእምር:ኵሎ፤ ምግባሮሙ::=፦
ኢይድኀን:ንጉሥ: በብዝኃ:ሰራዊቱ:: ወያር 16
ብኀ፤:ኢድኀን:በብዝኃ:ኃይሉ::=፦ ወፈረ 17
ስ፤:ሐሰተ:ኢያድኀን:: ወኢያምስጥ: በብዙ
ኀ:ጽንዓ::=፦ ናሁ:አዕይንቲሁ: ለእግዚአ 18
ብሔር: ኀበ:እለ: ይፈርህዎ:: ወእለሰ: ይት
ዌከሉ:በምሕረቱ::=፦ ያድኅና:እሞት:ለነ 19
ፍሶሙ::ወይሴስዮሙ:አመ: ረኃብ::=፦ ነፍ 20
ስነሰ: ትሴፈዎ: ለእግዚአብሔር:: እስመ: ረ
ደኢነ:ወምስካይነ:ውእቱ::=፦ እስመ:ቦቱ: 21
ይትፌሣሕ: ልብነ:: ወተከልነ: በስሙ: ቅዱ
ስ::=፦ ለትኩን: እግዚኦ: ምሕረትከ: ላዕ 22
ሌነ::ወበከመ:ሳዕሌከ:ተወከልነ::=፦

ዘዳዊት:ዘአመ:በዐደ:ገጾ: እምቅድሜሁ:
ለአቢሜሌክ::

ሀረ እባርኮ: ለእግዚአብሔር: በኵሉ:ጊ 1
ዜ::ወዘልፈ: ስብሐቲሁ: ውስተ፡አፉየ::=፦
በእግዚአብሔር:ትከብር: ነፍስየ::=፦ ይስ 2
ምዑ:የዋሃን:ወይትፈሥሑ::=፦ አዕብይዎ: 3
ለእግዚአብሔር:ምስሌየ: : ወናልዕል:ስሞ:
ኅቡረ::=፦ ኃሠሥክዎ: ለእግዚአብሔር: 4
ወተሰጥወኒ:: ወእምኵሉ: ምንደቤየ: አድ
ኀነኒ::=፦ ቅረቡ:ኀቤሁ:ወያበርህ:ለክሙ:: 5
ወኢይትኀፈር:ገጽክሙ::=፦

INTERP. ÆTHIOP. [b] Diligit Dominus juſtitiam & eleemoſynam: [c] Et de præparato templo ſanctitatis ſuæ, [d] multitudinē exercitûs ſui: [e] Et equus quidē fallax, non ſalvabit: & in multitudine fortitudinis ſuæ non effugiet. [f] autem noſtra *PSAL. xxxiii.* [a] reſpondit mihi: [b] tribulationibus

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* لان كلمة الرب مستقيمة * وجميع اعماله بالامانة * يحب الرب الرحمة والعدل * الارض كلها مملوءة 4 5
من رحمة الرب * بكلمة الرب ثبتت السموات * وبروح فيه جميع جنودها * جامع مياه البحر مثل 6 7
الزق * ترك الاعماق في خزاين * فليخف من الرب جميع الارض * وليتزعزع منه كل سكان المسكونة 8
* لانه قال فكانوا * وامر فخلقوا * الرب يبطل اراء الامم * ويعذر افكار الشعوب * ويرذل مشورات 9 10
الروساء * ومشورة الرب داۤيمة الي الابد * وافكار قلبه من جيل الي جيل * طوبي للامة التي الرب 11 12
الاهها * والشعب الذي احتاره الرب ميراثا * نظر الرب من السماء * وراي جميع بني البشر * من 13 14
مسكن قدسه * نظر الي كل سكان الارض * الذي خلق وحده قلوبهم * ويفهم جميع اعمالهم 15
* لا يخلص ملك بكثرة قوته * ولا ينجوا جبار بكثرة جبروته * كذب هو ان ينجوا الفرس * 16 17
ولا يخلص بكثرة قوته * ها عينا الرب علي خايفيه * المتوكلين علي رحمته * يخلص نفوسهم من 18 19
الموت * ويعولهم من الغلاء * انفسنا تنظر الرب في كل حين * لانه معيننا وناصرنا * وبه تفرح 20 21
قلوبنا * وعلي اسمه القدوس توكلنا * ولتكن رحمتك يا رب علينا * كمثل توكلنا عليك * 22
اللیلويا * المزمور الثالث والثلثون * قاله عندما غير 1
وجهه قدام ابيمالخ واطلقه ومضي * وعدده م استيخن *
* ابارك الرب في كل حين * وفي كل اوان تسبحته في فاي * بالرب تفتخر نفسي * فليسمع اهل 2 3
الدعة ويفرحون * عظموا الرب معي * ولنرفع اسمه اجمعون * انا طلبت الرب فاجابني * ومن 4 5
جميع شدايدي خلصني * اقبلوا اليه واستنيروا به * فان وجوهكم لا تخزي * 6

Quoniam verbum Domini rectum, & o- 4
mnia opera ejus cum fide. Diligit Dominus 5
miſericordiā, & æquitatē. Terra univer-
ſa plena eſt miſericordiâ Domini: Verbo 6
Domini ſtabiliti ſunt cœli, & ſpiritu oris
ejus univerſæ cohortes eorum. Congregans 7
aquas maris quaſi utrem, poſuit abyſſos in
horreis: Timeat ergò Dominū omnis terra: 8
trepidentq; ab eo omnes habitatores orbis.
Quia ipſe dixit, & facti ſunt, & præcepit, 9
& creati ſunt. Domin⁹ annullat ſententias 10
gentiū, & deſtruit cogitationes populorū,
& deſpicit conſilia principū. At conſilium 11
Domini perpetuū eſt in æternū, & cogita-
tiones cordis ejus à generatione in genera-
tionem. Beata gens cujus Dominus eſt De- 12
us ejus, & populus quem elegit Dominus
in hæreditatem. Proſpexit Dominus de 13
cœlo, & vidit omnes filios hominum: De 14
habitaculo ſanctitatis ſuæ reſpexit ad o-
mnes habitatores terræ. Qui creavit ſo- 15
lus corda eorum, & intelligit omnia opera
eorum. Non ſalvabitur rex ullus per mul- 16
titudinem roboris ſui, neque liberabitur
gigas per multitudinem fortitudinis ſuæ.
Mendax eſt ut evadat equus, neque enim 17
ſalvabitur copiâ virium ſuarum. Ecce 18
oculi Domini ſuper timentes eum: confi-
dentium in miſericordia ejus. Salvabit a- 19
nimas eorum à morte, & alet eos à penu-
ria. Animæ noſtræ intuitæ ſunt Dominum 20
in omni tempore: nam ipſe eſt auxiliator
noſter, & adjutor noſter. Et in eo læta- 21
buntur corda noſtra, & in nomine ejus
ſancto fiducia noſtra. Sitque miſericordia 22
tua, O Domine, ſuper nos, ſecundùm fi-
duciam noſtram in te. Alleluja.

PSAL. XXXIII. Davidis.

Dixit eū quando immutavit vultū 1
ſuū corā Abimelech, & dimiſ-
ſus ab eo abiit. Numer⁹ ver. 40.

BEnedicā Dominum in omni momen- 2
to: & in omni tempore laus ejus in
ore meo. In Domino gloriabitur anima 3
mea; audiat gens manſuetudinis, et læten-
tur. Magnificate Dominū mecum: et ex- 4
altemus nomen ejus omnes. Ego quæſivi 5
Dominum, & exaudivit me, & ex omni-
bus tribulationibus meis liberavit me. Ve- 6
nite ad eum, & illuminamini per eum:
facies enim veſtræ non confundentur.

תהלים : לה

.eum ſervavit ejꝰ anguſtiis omnibꝰ ex & ;audivit Dominus & ,clamavit *afflictus* Iſte
7 זֶה עָנִי קָרָא וַיהוָה שָׁמֵעַ וּמִכָּל־צָרוֹתָיו הוֹשִׁיעוֹ׃
,Guſtate .eos eripit & ,eum timentes circum Domini angelus *Caſtrametans*
8 חֹנֶה מַלְאַךְ־יְהוָה סָבִיב לִירֵאָיו וַיְחַלְּצֵם׃ טַעֲמוּ 9
Timete .eo in ſperabit *viri beatitudines* : Dominus bonus quoniam ,videte &
10 וּרְאוּ כִּי־טוֹב יְהוָה אַשְׁרֵי הַגֶּבֶר יֶחֱסֶה־בּוֹ׃ יְראוּ
Leunculi .eum timentibus defectus non quoniam ;ejus ſancti Dominum
11 אֶת־יְהוָה קְדֹשָׁיו כִּי־אֵין מַחְסוֹר לִירֵאָיו׃ כְּפִירִים
.bono omni deficient non Dominum quærentes *&* ;*eſurierunt* & ,ſunt depauperati
רָשׁוּ וְרָעֵבוּ וְדֹרְשֵׁי יְהוָה לֹא־יַחְסְרוּ כָל־טוֹב׃
vir Quis .vos docebo Domini timorem ;mihi obedite ,filii *Agite*
12 לְכוּ־בָנִים שִׁמְעוּ־לִי יִרְאַת יְהוָה אֲלַמֶּדְכֶם׃ מִי־הָאִישׁ 13
tuã linguam Cuſtodi ? bonum *videndum ad* dies *diligens* ;*vitas volens*
14 הֶחָפֵץ חַיִּים אֹהֵב יָמִים לִרְאוֹת טוֹב׃ נְצֹר לְשׁוֹנְךָ
;bonum fac & ,malo à Declina .dolum loquendo à tua labia & ;malo à
15 מֵרָע וּשְׂפָתֶיךָ מִדַּבֵּר מִרְמָה׃ סוּר מֵרָע וַעֲשֵׂה־טוֹב
ejus aures & ;juſtos *ad* Domini Oculi .eam ſequere & ,pacem quære
16 בַּקֵּשׁ שָׁלוֹם וְרָדְפֵהוּ׃ עֵינֵי יְהוָה אֶל־צַדִּיקִים וְאָזְנָיו
terra è *ſuccidendum ad* ;malum facientes *in* Domini *Facies* .eorum clamorem ad
17 אֶל־שַׁוְעָתָם׃ פְּנֵי יְהוָה בְּעֹשֵׂי רָע לְהַכְרִית מֵאֶרֶץ
omnibus ex & ;audivit Dominus & ,Clamaverunt .eorum memoriam
18 זִכְרָם׃ צָעֲקוּ וַיהוָה שָׁמֵעַ וּמִכָּל־
;corde contritis Dominus Propinquus .eos eruit eorum anguſtiis
19 צָרוֹתָם הִצִּילָם׃ קָרוֹב יְהוָה לְנִשְׁבְּרֵי־לֵב
ipſis cunctis à & ;juſti mala Multa .ſervabit ſpiritu attritos &
20 וְאֶת־דַּכְּאֵי־רוּחַ יוֹשִׁיעַ׃ רַבּוֹת רָעוֹת צַדִּיק וּמִכֻּלָּם
eis ex unum ;ejus oſſa omnia Cuſtodiens .Dominus eum eruet
21 יַצִּילֶנּוּ יְהוָה׃ שֹׁמֵר כָּל־עַצְמוֹתָיו אַחַת מֵהֵנָּה
juſtum odio habentes & ;malitia impium Interimet .eſt contritum non
22 לֹא נִשְׁבָּרָה׃ תְּמוֹתֵת רָשָׁע רָעָה וְשֹׂנְאֵי צַדִּיק
non & ;ſuorum ſervorum animam Dominus *Redimens* .deſolabuntur
23 יֶאְשָׁמוּ׃ פּוֹדֶה יְהוָה נֶפֶשׁ עֲבָדָיו וְלֹא
.eo in ſperantes omnes deſolabuntur
יֶאְשְׁמוּ כָּל־הַחוֹסִים בּוֹ׃

PSAL. XXXV. לה

.mecum *pugnantibus cum pugna* ;*mecum litigantibus cum* Domine *Litiga* .Davidi
1 לְדָוִד רִיבָה יְהוָה אֶת־יְרִיבַי לְחַם אֶת־לֹחֲמָי׃
.meum adjutorium in ſurge & ;ſcutum & ,clypeum Apprehende
2 הַחֲזֵק מָגֵן וְצִנָּה וְקוּמָה בְּעֶזְרָתִי׃
dic ;me perſequentium occurſum in claude & ;lanceam *evacua* Et
3 וְהָרֵק חֲנִית וּסְגֹר לִקְרַאת רֹדְפָי אֱמֹר
erubeſcent & ,afficientur Pudore .*ego* tua Salus :meæ animæ
4 לְנַפְשִׁי יְשֻׁעָתֵךְ אָנִי׃ יֵבֹשׁוּ וְיִכָּלְמוּ
cogitantes *ignominia* afficientur & ,retrorſum vertentur :meam animam quærentes
מְבַקְשֵׁי נַפְשִׁי יִסֹּגוּ אָחוֹר וְיַחְפְּרוּ חֹשְׁבֵי
.meum malum
רָעָתִי׃

תרגום TARGUM.

7 דֵּין עַנְיָא צַלֵּי קֳדָם יְיָ שְׁמִיעַ וּמִכָּל עָקְתוֹי
8 פַּרְקֵיהּ׃ שְׁרֵי מַלְאֲכָא דַּייָ חֲזוֹר חֲזוֹר לְדָחֲלִין
9 מִנֵּיהּ וְשֵׁיזֵב הִנּוּן׃ אִשְׁתְּמוֹדְעוּן וַחֲמוֹן אֲרוּם
טָב יְיָ טוּבוֹי לְגֶבֶר דְּאִתְרְחֵיץ בְּמֵימְרֵיהּ׃
10 דְּחִילוּ מִן קֳדָם יְיָ קַדִּישׁוֹי אֲרוּם לֵית חוּסְרָנָא
11 לְדָחֲלוֹי׃ בְּנֵי אַרְיְוָן אִתְמַסְכָּנוּ וּכְפָנוּ וְתָבְעֵי
12 אוּלְפָנָא דַּייָ לָא חָסְרִין כָּל טוּבָא׃ אֱזִילוּ
בְּנַיָּא קַבִּילוּ מִנִּי דַּחַלְתָּא דַּייָ אַלֵּיף יַתְכוֹן׃
13 מַן גַּבְרָא דְּבָעֵי חַיֵּי רָחֵם יוֹמַיָּא לְמֶחֱמֵי טָבָא׃
14 טוּר לִישָׁנָךְ מִבִּישׁ וְסִפְוָתָךְ מִלְּמַלָּלָא נִכְלָא׃
15 זוּר מִבִּישׁ וַעֲבֵד טָב בְּעֵי שְׁלָמָא וּרְדַף בַּתְרוֹהִי׃
16 עֵינוֹי דַּייָ לְוָת צַדִּיקַיָּא וְאוּדְנוֹי לְקַבָּלָא
17 צְלוֹתְהוֹן׃ פַּרְצוּפָא דַּייָ רְגִיז בְּעָבְדֵי בִישָׁא
18 לְשֵׁיצָאָה מִן אַרְעָא דָּכְרָנְהוֹן׃ צַלִּין צַדִּיקַיָּא
19 וּקֳדָם יְיָ שְׁמִיעַ וּמִכָּל עָקָתְהוֹן פַּצְנוּן׃ קָרִיב
יְיָ לִתְבִירֵי לִבָּא וְיַת מַכִּיכֵי רוּחָא יִפְרוֹק׃
20 סַגִּיאִין בִּישָׁן מִתְרְעָן לְצַדִּיקָא וּמִן כּוּלְּהוֹן פָּצֵא
21 לֵיהּ יְיָ׃ נָטֵר לְכוּלְּהוֹן אֵבְרוֹי חֲדָא מִנְּהוֹן לָא
22 מִתַּבְרָא׃ מִיתוּתָא דְּרַשִּׁיעָא בִּישָׁא וְסָנְאֵי
23 צַדִּיקָא יִתְחַיְּבוּן׃ פָּרוֹק יְיָ נַפְשָׁא דְּעַבְדוֹי
וְלָא מִתְחַיְּבִין כָּל דִּסְבְרִין בְּמֵימְרֵיהּ׃

לה

1 לְדָוִד אַתְגַּר יְיָ בְּמָרֵי תִּגְרְתִי סַדַּר קְרָב קֳבֵל
2 בַּעֲלֵי קְרָבְתִי׃ אַתְקִיף תְּרֵיס וַעֲגִיל וְקוּם
3 בְּסַעֲדִי׃ וּשְׁלוֹף מוּרְנִיתָא וּטְרוֹק לְאוּרְעוּת
4 רָדְפַי אֱמַר לְנַפְשִׁי פָּרִיקֵךְ אֲנָא׃ יִבְהֲתוּן
וְיִכְסְפוּן תָּבְעֵי נַפְשִׁי יִרְתְּעוּן לַאֲחוֹרָא וְיִתְכַּנְעוּן
חָשְׁלֵי בִישׁוּתִי׃

PARAPH. CHALD. Verſ Lat.

7 Hic pauper *oravit, à conſpectu Domini exauditus eſt*: & de omnibus tribulationibus ejus liberavit eum. 8 Immoratur angelus Domini in circuitu timentium eum, & liberavit eos. 9 Percipite & videte, quoniam bonus eſt Dominus; beatus homo qui confiſus eſt in verbo ejus. 10 Timete à præſentia Domini ſancti ejus, quoniam non eſt egeſtas timentibus eum. 11 Filii leonum eguerunt & eſurierunt: inquirentes autem doctrinam Domini non carent ullo bono. 12 Ambulate filii, accipite à me: timorem Domini docebo vos. 13 Quis eſt vir qui velit vitam, amans dies quò videat bonum? 14 Cuſtodi linguam tuam à malo, & labia tua ne loquantur dolum. 15 Recede à malo & fac bonum: inquire pacem & ſequere eam. 16 Oculi Domini ſuper juſtos, & aures ejus ad ſuſcipiendam deprecationem eorum. 17 Vultus autem Domini iraſcitur contra facientes malum, ad abolendam de terra memoriam eorum. 18 Orant juſti & à conſpectu Domini exauditi ſunt: & de omnibus tribulationibus eorum liberavit eos. 19 Propè eſt Dominus contritis corde, & humiles ſpiritu ſalvabit. 20 Multa mala eveniunt juſto: & ex omnibus illis liberavit eum Dominus. 21 Cuſtodit omnia membra ejus: unum ex eis non eſt confractum. 22 Mors impii mala; & odio habentes juſtum, damnabuntur. 23 Redimet Dominus animam ſervorum ſuorum; & non condemnantur omnes qui ſperant in verbo ejus.

1 Davidis.

PSAL. XXXV.

Concerta Domine contra auctores concertationis meæ; inſtrue bellum adverſus auctores belli mei. 2 Apprehende clypeum & parmulam, & ſurge in adjutorium meum. 3 Evagina lanceam & claude in occurſum perſecutorum meorum: dic animæ meæ; Redemptor tuus ſum ego. 4 Confundantur & erubeſcant, quærentes animam meam: convertantur retrorſum & ignominia afficiantur, qui cogitant malum meum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܢܐ ܡܣܟܢܐ ܕܩܪܝܗܝ ܘܐܫܬܡܥ. ܘܡܢ ܟܠܗܘܢ ܐܘܠܨܢܘܗܝ ܦܪܩܗ : * ܡܫܪܝܬܐ 7 8
ܕܡܠܐܟܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܚܕܪܐ ܠܕܚܠܘܗܝ ܘܡܦܨܐ ܠܗܘܢ : * ܛܥܡܘ ܘܚܙܘ ܕܛܒ ܗܘ ܡܪܝܐ. 9
ܘܛܘܒܝܗܘܢ ܠܟܠ ܕܬܟܝܠܝܢ ܥܠܘܗܝ : **
* ܥܬܝܪܐ ܐܬܡܣܟܢܘ ܘܟܦܢܘ. ܘܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܠܡܪܝܐ ܠܐ ܢܚܣܪ ܠܗܘܢ ܛܒܬܐ : 11
* ܕܡܫܠܡܢܘܬܐ. * ܬܘ ܒܢܝܐ ܫܡܥܘܢܝ. ܘܐܠܦܟܘܢ ܕܚܠܬܗ ܕܐܠܗܐ : * ܡܢܘ ܓܒܪܐ 12 13
ܕܨܒܐ ܚܝܐ. ܘܪܚܡ ܝܘܡܬܐ ܛܒܐ ܠܡܚܙܐ : * ܛܪ ܠܫܢܟ ܡܢ ܒܝܫܬܐ. ܘܣܦܘܬܟ ܠܐ ܢܡܠܠܢ 14
ܢܟܠܐ : * ܣܛܝ ܡܢ ܒܝܫܬܐ ܘܥܒܕ ܛܒܬܐ. ܒܥܝ ܫܠܡܐ ܘܗܪܛ ܒܬܪܗ : * ܥܝܢܘܗܝ 15 16
ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܙܕܝܩܐ. ܘܐܕܢܘܗܝ ܠܡܫܡܥܗܘܢ ܐܢܘܢ : * ܐܦܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܒܝܫܐ. ܕܢܘܒܕ ܡܢ 17
ܐܪܥܐ ܕܘܟܪܢܗܘܢ : * ܩܥܘ ܙܕܝܩܐ ܘܡܪܝܐ ܫܡܥ ܐܢܘܢ. ܘܦܨܝ ܐܢܘܢ. * ܩܪܝܒ ܗܘ ܡܪܝܐ 18 19
ܠܬܒܝܪܝ ܠܒܐ : ܘܠܡܟܝܟܝ ܪܘܚܐ ܦܪܩ. * ܣܓܝܐܢ ܒܝܫܬܗ ܕܙܕܝܩܐ : ܘܡܢ ܟܠܗܝܢ 20
ܡܦܨܐ ܠܗ ܡܪܝܐ. * ܘܢܛܪ ܠܟܠܗܘܢ ܓܪܡܘܗܝ : ܕܚܕ ܡܢܗܘܢ ܠܐ ܢܬܬܒܪ. * ܬܩܛܘܠ 21 22
ܠܚܛܝܐ ܒܝܫܬܐ : ܘܣܢܐܘܗܝ ܕܙܕܝܩܐ ܢܣܘܦܘܢ. * ܢܦܪܘܩ ܡܪܝܐ ܢܦܫܬܐ ܕܥܒܕܘܗܝ : 23
ܘܠܐ ܢܬܚܝܒܘܢ ܟܠ ܕܡܣܒܪܝܢ ܒܗ.

7 Iſte eſt pauper qui invocavit eum, & auditus eſt, & ex omnibus tribulationibus ſuis ereptus eſt. 8 Cohors Angelorum Domini circunſepit timentes eum, liberatque illos. 9 Guſtate & videte quòd bonus ſit Dñs, & beati quicunque confidunt in eo. * 10

Hoc verſiculo Syri carere videntur, quum tribus in codicibus noſtris deſideretur.

11 * Divites depauperati ſunt & eſurierunt; at iis qui Dominum quærunt, non deerit bonum. * *Diapſalma* * 12 Venite filii, audite me, & docebo vos timorem Dei. 13 Quis eſt vir qui vult vitam, & diligit dies bonos videre? 14 Cuſtodi linguam tuam à malitia, & labia tua ne loquantur dolum; 15 Devita malum, & fac bonum; quære pacem, & curre poſt eam. 16 Oculi Domini ſuper juſtos, & aures ejus ad audiendum illos. 17 Vultus Domini ſuper malos, ut deleat de terra memoriam eorum. 18 Clamaverunt juſti, & Dñs audivit eos, & eripuit illos. 19 Proximus eſt Dñs contritis corde, & humiles ſpiritu ſalvat. 20 Multæ ſunt calamitates juſti, & ex omnibus liberat eum Dominus: 21 Servatque omnia ejus oſſa, ut unum ex iis non frangatur. 22 Interficit impios malignitas, & oſores juſti deficient. 23 Servabit Dominus animas ſervorum ſuorum, nec damnabuntur omnes qui ſperant in eum.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ *

* ܕܘܝܕ. ܟܕ ܡܪܕܦ ܗܘܐ ܠܐܕܘܡܝܐ. ܘܬܟܫܦܬܐ ܕܙܕܝܩܐ. ܦܬܓ̈ܡܐ ܣܐ. 1
ܕܘܢ ܡܪܝܐ ܕܝܢܝ ܘܐܬܟܬܫ ܥܡ ܐܝܠܝܢ ܕܡܬܟܬܫܝܢ ܥܡܝ : * ܐܚܘܕ ܙܝܢܐ ܘܬܪܣܐ ܘܩܘܡ 2
ܠܡܥܕܪܢܝ. * ܫܡܛ ܣܝܦܐ ܘܐܒܪܩ ܠܘܩܒܠ ܪܕܘܦܝ : ܘܐܡܪ ܠܢܦܫܝ ܕܐܢܐ ܗܘ 3
ܦܘܪܩܢܟܝ. * ܢܒܗܬܘܢ ܘܢܚܦܪܘܢ ܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܠܢܦܫܝ : ܢܗܦܟܘܢ ܠܒܣܬܪܗܘܢ 4
ܘܢܚܦܪܘܢ. ܐܝܠܝܢ ܕܐܬܚܫܒܘ ܥܠܝ ܒܝܫܬܐ :

PSAL. XXXV.

1 *Davidis. Ad literam, Quum inſectaretur Idumæos. Et ſupplicatio juſtorum. Verſ. 61.*

Judica, Domine, judicium meum, & pugna adverſùs eos qui me impugnant. 2 Arripe arma & ſcutum, & ſta in auxilium meum. 3 Evagina gladiū et fulgere fac eum adverſum perſequutores meos: dic animæ meæ, Ego ſum ſalvator tuus. 4 Pudefiant & confundantur ii qui quærunt animam meam. Agantur retrorſum & afficiantur ignominiâ, qui cogitaverunt in me malum.

Verſio VULG. LAT.

7 Iſte pauper clamavit, & Dominus exaudivit eum: & de omnibus tribulationibus
8 ejus ſalvavit eum. Immittet angelus
Domini in circuitu timentium
9 eum: & eripiet eos. Guſtate, & videte,
quoniam ſuavis eſt Dominus: beatus
10 vir, qui ſperat in eo. Timete Dominum
omnes Sancti ejus: quoniam
11 non eſt inopia timentibus eum. Divites
eguerunt & eſurierunt: inquirentes
autem Dominum non minuentur omni
12 bono. Venite filii, audite me: timorem
13 Domini docebo vos. Quis eſt
homo qui vult vitam: diligit dies
14 videre bonos? Prohibe linguam tuam
à malo: & labia tua ne loquantur dolum.
15 Diverte à malo, & fac bonum:
16 inquire pacem, & perſequere eam. Oculi
Domini ſuper juſtos: & aures
17 ejus in preces eorum. Vultus autem
Domini ſuper facientes mala: ut perdat
18 de terra memoriam eorum. Clamaverunt
juſti, & Dominus exaudivit
eos: & ex omnibus tribulationibus
19 eorum liberavit eos. Juxtà eſt Dominus
iis, qui tribulato ſunt corde: &
20 humiles ſpiritu ſalvabit. Multæ tribulationes
juſtorum: & de omnibus his
21 liberabit eos Dominus. Cuſtodit Dominus
omnia oſſa eorum: unum ex his
22 non conteretur. Mors peccatorum peſſima:
& qui oderunt juſtum, delinquent.
23 Redimet Dominus animas ſervorum
ſuorum: & non delinquent
omnes qui ſperant in eo.

1 Ipſi David. XXXIV.

Judica, Domine, nocentes me, expugna
2 impugnantes me. Apprehende arma
& ſcutum: & exurge in adjutorium
3 mihi. Effunde frameam, & conclude
adverſùs eos, qui perſequuntur me:
dic animæ meæ, Salus tua ego ſum.
4 Confundantur & revereantur, quærentes
animam meam. Avertantur retrorſùm
& confundantur, cogitantes
mihi mala.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

7 †Οὗτος ὁ πτωχὸς ἐκέκραξε, καὶ ὁ κύριος εἰσήκουσεν
αὐτοῦ, † καὶ ἐκ πασῶν τῶν θλίψεων αὐτοῦ ἔσωσεν
8 αὐτόν. † Παρεμβαλεῖ ἄγγελος κυρίου κύκλῳ
9 τῶν φοβουμένων αὐτὸν, καὶ ῥύσεται αὐτούς. † Γεύσασθε
καὶ ἴδετε ὅτι χρηστὸς ὁ κύριος, † μακάριος
10 ἀνὴρ ὃς ἐλπίζει ἐπ' αὐτόν. † Φοβήθητε τὸν κύριον
πάντες οἱ ἅγιοι αὐτοῦ, † ὅτι οὐκ ἔστιν ὑστέρημα
11 τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. † Πλούσιοι ἐπτώχευσαν καὶ
ἐπείνασαν, † οἱ δὲ ἐκζητοῦντες τὸν κύριον οὐκ ἐλαττωθήσονται
12 παντὸς ἀγαθοῦ. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. †Δεῦτε
τέκνα, ἀκούσατέ μου, φόβον κυρίου διδάξω ὑμᾶς. †
13 Τίς ἐστιν ἄνθρωπος ὁ θέλων ζωήν, † ἀγαπῶν ἡμέρας
14 ἰδεῖν ἀγαθάς; † Παῦσον τὴν γλῶσσάν σου
ἀπὸ κακοῦ, † καὶ χείλη σου τοῦ μὴ λαλῆσαι δόλον. †
15 Ἔκκλινον ἀπὸ κακοῦ, καὶ ποίησον ἀγαθόν, † ζήτησον
16 εἰρήνην, καὶ δίωξον αὐτήν. † Ὀφθαλμοὶ κυρίου
17 ἐπὶ δικαίους, † καὶ ὦτα αὐτοῦ εἰς δέησιν αὐτῶν. † Πρόσωπον
δὲ κυρίου ἐπὶ ποιοῦντας κακά, † τοῦ ἐξολοθρεῦσαι
18 ἐκ γῆς τὸ μνημόσυνον αὐτῶν. † Ἐκέκραξαν οἱ
δίκαιοι, καὶ ὁ κύριος εἰσήκουσεν αὐτῶν, † καὶ ἐκ πασῶν
19 τῶν θλίψεων αὐτῶν ἐρρύσατο αὐτούς. † Ἐγγὺς
κύριος τοῖς συντετριμμένοις τὴν καρδίαν, † καὶ
20 τοὺς ταπεινοὺς τῷ πνεύματι σώσει. † Πολλαὶ αἱ
θλίψεις τῶν δικαίων, † καὶ ἐκ πασῶν αὐτῶν ῥύσεται
21 αὐτοὺς ὁ κύριος. † (γ) Φυλάσσει πάντα τὰ ὀστᾶ
22 αὐτῶν, † ἓν ἐξ αὐτῶν οὐ συντριβήσεται. † Θάνατος
ἁμαρτωλῶν πονηρός, † καὶ οἱ μισοῦντες τὸν δίκαιον
23 πλημμελήσουσι. † Λυτρώσεται κύριος ψυχὰς δούλων
αὐτοῦ, † καὶ οὐ μὴ πλημμελήσουσι πάντες οἱ ἐλπίζοντες
ἐπ' αὐτόν.

MS. A. (γ) Φυλάσσει κύριος πάντα

1 (α) Τῷ Δαυίδ. λδ'.

†Δίκασον κύριε τοὺς ἀδικοῦντάς με, † πολέμησον
2 τοὺς πολεμοῦντάς με. † Ἐπιλαβοῦ ὅπλου καὶ
3 θυρεοῦ, καὶ ἀνάστηθι εἰς βοήθειάν (β) μοι. † Ἔκχεον
(γ) ῥομφαίαν, καὶ σύγκλεισον ἐξεναντίας τῶν καταδιωκόντων
με, † εἰπὸν τῇ ψυχῇ μου, Σωτηρία σου (δ)
4 ἐγώ εἰμι. † Αἰσχυνθείησαν καὶ ἐντραπείησαν οἱ ζητοῦντες
τὴν ψυχήν μου, † (ε) ἀποστραφείησαν εἰς τὰ
ὀπίσω καὶ (ζ) καταισχυνθείησαν † οἱ λογιζόμενοί μοι
κακά.

MS. A. (α) Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. (β) μου. (γ) ῥομφαίαν σου, (δ) εἰμὶ ἐγώ. Αἰσχυνθήτωσαν καὶ ἐντραπήτωσαν (ε) ἀποστραφήτωσαν (ζ) καταισχυνθήτωσαν

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopica, Tranſ. LAT.

7 Iſte pauper clamavit: & Dominus exaudivit eum: & de omnibus tribulationib⁹ ejus ſalvavit eum. 8 [c]Immittet angelus Domini in circuitu timentium eum, & eripiet eos. 9 Guſtate, [d] & videte, quoniã ſuavis eſt Domin⁹. Beat⁹ vir, qui ſperat in eũ. 10 Timete Dominum omnes Sancti ejus: quoniã non eſt inopia timentibus eum. 11 [e]Divites eguerunt, & eſurierunt; inquirentes autẽ Dominum, non minuentur omni bono. DIAPSALMA. 12 Venite filii, (d)audite me; timorem Domini docebo vos. 13 Quis eſt homo, qui vult vitã, diligit dies videre bonos? 14 Contine linguã tuã à malo, & labia tua ne loquantur dolum. 15 Declina à malo, & fac bonũ: quære pacẽ, & [f]perſequere eã. 16 [g]Oculi Domini ſuper juſtos, et aures ej⁹ in preces eorũ. 17 Vultus autẽ Domini ſuper facientes mala; ut perdat de terra memoriã eorum. 18 Clamaverunt juſti, & Dominus exaudivit eos: et ex omnibus tribulationibus eorũ liberavit eos. 19 Juxtà eſt Dominus iis qui (e)[h]contrito ſunt corde: & humiles ſpiritu ſalvabit. 20 Multæ tribulationes juſtorum; & de omnibus his liberabit eos Domin⁹. 21 Cuſtodit [i]omnia oſſa eorum: unum ex eis non conteretur. 22 Mors [k]peccatorum peſſima: [l]& qui oderunt juſtum, [m]delinquent. 23 Redimet Dominus animas ſervorum ſuorum: & non [n] delinquent omnes qui (f) ſperant in eum.

1 *(a)Ipſi David. XXXIV.*

[a] Judica, Domine, (b)nocẽtes me: impugna (c)impugnantes me. 2 Apprehende arma [b]& ſcutum: & exurge in adjutorium mihi. 3 (d)[c]Effunde frameã, & conclude adverſ⁹ eos qui perſequuntur me. Dic animæ meæ, Sal⁹ tua ego ſũ. 4 Confundantur et revereantur, [d]quærentes animã meã: avertãtur retrorſùm et confundantur, cogitantes mihi mala.

Verſio ÆTHIOPICA.

ዝንቱ፡ነዳይ፡ ጸርኀ፡ ወእግዚአብሔር፡ ሰም 7
ዖ፡፡ ወእምኵሉ፡ምንደቤሁ፡አድኀኖ፡፡፨
ይትዓየን ፡ መልአከ ፡ እግዚአብሔር፡፡ 8
አዕውደ፡ ለእለ፡ ይፈርህዎ፡ ወያድኅኖ
ሙ፡፡፨ ጠዐሙ፡ወታእምሩ፡ከመ፡ኄር፡እ
ግዚአብሔር፡፡ ብፁዕ፡ ብእሲ፡ ዘተወከለ፡በ 9
ቱ፡፡፨ፍርህዎ፡ለእግዚአብሔር፡ኵልክሙ፡ 10
ቅዱሳኑ፡፡ እስመ፡ አልቦሙ፡ ተፅናስ፡ለእለ፡
ይፈርህዎ፡፡፨ ብዑላንሰ፡ነድዩ፡ወርኅቡ፡፡ 11
ወእለሰ፡ የኀሥሥዎ፡ ለእግዚአብሔር፡ ሊተጸ
ነሱ፡እምኵሉ፡ ሠናይ፡፡፨ ንዑ፡ደቂቅየ፡ 12
ወስምዑኒ፡፡ፈሪሃ፡ እግዚአብሔር፡ እምህርክ
ሙ፡፡፨ መኑ፡ውእቱ፡ብእሲ፡ዘይፈቅድ፡ 13
ሐይወ፡፡ወያፈቅር፡ ይርአይ፡ መዋዕለ፡ ሠናያ
ት፡፡፨ ክላእ፡ልሳነከ፡እምእኩይ፡፡ወከናፍ 14
ሪከኒ፡ከመ፡ኢይንብባ፡ጕሕሉተ፡፡፨ ተገሐ 15
ሥ፡ እምእኩይ፡ ወግበር፡ ሠናየ፡፡ኅሥሥ፡
ለሰላም፡ ወዴግና፡፡፨ እስመ፡ አዕይንቲሁ፡ 16
ለእግዚአብሔር፡ኀበ፡ ጻድቃኑ፡፡ ወእዘ
ኒሁ፡ኀበ፡ስእለቶሙ፡፡፨ ገጹ፡ለእግዚአብ 17
ሔር፡ ኀበ፡እለ፡ ይገብሩ፡ እኩየ፡፡ ከመ፡
ይሠርዎ፡ እምድር፡ ዝክሮሙ፡፡፨ ጸር 18
ኁ፡ ጻድቃን፡ ወእግዚአብሔር፡ ሰምዖሙ፡፡
ወእምኵሉ፡ምንደቤሆሙ፡አድኀኖሙ፡፡፨
ቅሩብ፡ እግዚአብሔር፡ ለየዋሃን፡ ልብ፡፡ወ 19
ያድኅኖሙ፡ለትሑታን፡መንፈስ፡፡፨ ብዙኅ፡ 20
ሕማሞሙ፡ ለጻድቃን፡፡ ወእምኵሉ፡ ያድ
ኅኖሙ፡እግዚአብሔር፡፡፨ እግዚአብሔ 21
ር፡ ያዓቅብ፡ ኵሎ፡ አዕጽምቲሆሙ፡፡
ወኢይትቀጠቀጥ፡ ላሐዱ፡ እምውስቴቶ
ሙ፡፡፨ ሞቱ፡ለኃጥእ፡ጸዋግ፡፡ ወእለሰ፡ይ 22
ጸልእዎ፡ለጻድቅ፡ይኔስሑ፡፡፨ ይቤዙ፡ 23
እግዚአብሔር፡ ነፍሰ፡ አግብርቲሁ፡፡ ወኢ
ይኔስሑ፡ኵሎሙ፡ እለ፡ ይትዌከሉ፡ቦቱ፡፡

ዘደዊት፡፡

ሁዐ ግፍዖሙ፡ እግዚኦ፡ ለእለ፡ይገፍዑኒ፡፡ 1
ፅብዖሙ፡እግዚኦ፡ለእለ፡ይጸብኡኒ፡፡፨ንሣ 2
እ፡ ወልታ፡ወኵናተ፡ወተንሥእ፡ ውስተ፡ ረዲኦ
ትየ፡፡፨ መላኅ፡ሰይፈከ፡ወዕግቶሙ፡ለእለ፡ 3
ሮዱኒ፡፡ በል፡ ለነፍስየ፡ አነ፡ ውእቱ፡ ረደኢ
ኪ፡፡፨ ለይትኃፈሩ፡ወይኅሰሩ፡ኵሎሙ፡እ 4
ለ፡የኀሥዋ፡ለነፍስየ፡፡፨ወይገብኡ፡ድኅሬሆ 5
ሙ ፡ ወይትኃፈሩ ፡ እለ ፡ መከሩ ፡ እኩየ፡
ላዕሌየ፡፡

INTERP. ÆTHIOP. [c] Vallabit angelus [d] intelligite quàm bonus [e] Divites quidem [f] ſubmitte ei. [g] Quoniam oculi [h] manſueto ſunt [i] Dominus omnia [k] peccatoris [l] & quidẽ qui [m] pigebit eos. [n] pœnitebit omnes *PSAL. xxxiv.* [a] Opprime eos, Domine, qui me opprimunt: impugna, Domine, [b] et gladium: [c] Evagina frameam, & circumvalla eos qui [d] omnes quærentes

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

7 8 * هذا المسكين صرخ فاستجاب له الرب * ومن جميع احزانه خلصه * ملاك الرب يعسكر حول
9 10 كل خائفيه ويخلصهم * ذوقوا وتيقنوا ان الرب طيب هو * طوبي للانسان المتوكل عليه * اتقوا
11 الرب يا جميع قديسيه * فانه لا منقصة لاتقيائه * الاغنياء افتقروا وجاعوا * والذين يطلبون
12 13 الرب لا يعدمون الخيرات * هلموا ايها الابناء واسمعوا مني * لاعلمكم مخافة الرب * من هو الرجل
14 الذي يهوي الحياة * ويحب ان يري اياما صالحة * كف لسانك من الشر * وشفتيك * لكيلا
15 16 تتكلما بالغدر * حد عن الشر واصنع الخير * اطلب السلامة واتبعها * فان عيني الرب علي
17 الصديقين * واذنيه مصغيتان الي طلبتهم * وجه الرب علي صانعي الشر * يمحي ذكرهم من علي
18 19 الارض * الصديقون صرخوا فاستجاب لهم الرب * ومن جميع شدائدهم خلصهم * الرب قريب
20 من المنكسرة قلوبهم * يخلص المتواضعين بروحهم * كثيرة هي احزان الصديقين * ومن
21 22 جميعها يخلصهم الرب * الرب يحفظ جميع عظامهم وواحدة منها لا تنكسر * موت الخطاة شرير *
23 ومبغضوا الصديق يهلكون * الرب يخلص انفس عبيده * ولا يخيب جميع المتوكلين عليه *
الليلويا * * المزمور الرابع والثلثون *
1 * نبوة علي التجسد وما فعله الشعب بارمياء * * وعدده * نط * استيخن *
2 3 حاكم يا رب الذين يظلمونني * قاتل الذين يقاتلونني * خذ سلاحا وترسا وقم لمعونتي * استل
4 سيفا رد الذين يطردونني * وقل لنفسي انا مخلصك * وليخزوا ويبهت جميع طالبي نفسي *
وليرجع علي عقبه ويخزي المتفكرون علي بالشر *

Iſte pauper clamavit, & exaudivit eum 7
Dominus, & ex omnibus mœſtitiis ejus
ſalvavit eum. Angelus Domini caſtrametatur 8
circa omnes timentes eum, & liberat eos. Guſtate, & certi eſtote quòd 9
Dominus ſuavis eſt. Beatus homo qui confidit in eo. Colite Dominum, omnes 10
Sancti ejus, quia non eſt defectus cultoribus ejus. Divites depauperati ſunt, & 11
eſurierunt: & ii qui quærunt Dominum,
non privabuntur bonis. Venite, filii, & 12
audite ex me, ut doceam vos timorem Domini. Quis eſt homo, qui vult vitam, & 13
diligit videre dies bonos? Cohibe linguam 14
tuam à malo, & labia tua, ut ne loquantur dolum: Declina à malo, & fac bonum, 15
quære pacem, & ſequere eam. Nam oculi 16
Domini ſuper juſtos, & aures ejus intentæ ad preces eorum; Facies Domini 17
contra operantes malum, delebit memoriam eorum de terra. Juſti clamaverunt, 18
& exaudivit eos Dominus, & ex omnibus tribulationibus eorum liberavit eos.
Dominus proximus eſt confractis cordibus, 19
ſalvabit humiles ſpiritu. Multæ ſunt 20
calamitates juſtorũ, & ex omnib⁹ liberabit eos Dominus. Dominus cuſtodit omnia 21
oſſa eorũ, et unũ ex ipſis non cõfringetur.
Mors peccatorum improba, & oſores juſti
peribunt. Dominus redimet animas ſervorum 22
ſuorum, & non fraudabit omnes
confidentes in ſe. Alleluja.

PSAL. XXXIV.

Prophetia de Incarnatione, et de iis quæ perpetravit populus in Jeremiam. Et numerus ver. 59. 1

Iudica, Domine, eos qui opprimunt me: pugna cum eis qui impugnant me. Sume 2
arma et ſcutum, & ſurge in adjutorium meum. Evagina gladium, pelle eos qui 3
perſequuntur me: & dic animæ meæ, Ego ſum Salvator tuus. Et confundantur & 4
obſtupeſcant omnes petentes animam meam: revertantur ſuper calcaneos ſuos,
& erubeſcant cogitantes mihi malum.

תהלים : לה

eorum via Erit .*impellens* Domini angelus & ; *venti facies ad* gluma ſicut Erunt
5 6 יִהְיוּ כְּמֹץ לִפְנֵי־רוּחַ וּמַלְאַךְ יְהוָה דּוֹחֶה׃ יְהִי־דַרְכָּם
Quoniam .eos perſequens Domini angelus & ; lubricitates & , *tenebroſitas*
7 חֹשֶׁךְ וַחֲלַקְלַקּוֹת וּמַלְאַךְ יְהוָה רֹדְפָם׃ כִּי־
eum Invadet .meæ animæ foderunt gratis : *ſui retis* foveam mihi abſconderunt gratis
8 חִנָּם טָמְנוּ־לִי שַׁחַת רִשְׁתָּם חִנָּם חָפְרוּ לְנַפְשִׁי׃ תְּבוֹאֵהוּ
deſolationem in ; eum capiet ,abſcondit quod ipſius rete & ,cognoſcet non , *deſolatio*
שׁוֹאָה לֹא־יֵדָע וְרִשְׁתּוֹ אֲשֶׁר־טָמַן תִּלְכְּדוֹ בְּשׁוֹאָה
.ejus ſalute in gaudebit : Domino in exultabit mea anima Et *eam in* cadet
9 יִפָּל־בָּהּ׃ וְנַפְשִׁי תָּגִיל בַּיהוָה תָּשִׂישׂ בִּישׁוּעָתוֹ׃
forti à *afflictum* eripiens ? tu ſicut quis Domine : dicent mea oſſa Omnia
10 כָּל עַצְמוֹתַי תֹּאמַרְנָה יְהוָה מִי כָמוֹךָ מַצִּיל עָנִי מֵחָזָק
: *iniquitatis* teſtes Surgent ? eum rapiente à egenum & ,pauperem & ; *eo præ*
11 מִמֶּנּוּ וְעָנִי וְאֶבְיוֹן מִגֹּזְלוֹ׃ יְקוּמוּן עֵדֵי חָמָס
, bono pro malum mihi Reddent .me interrogabunt cognovi non quæ
12 אֲשֶׁר לֹא־יָדַעְתִּי יִשְׁאָלוּנִי׃ יְשַׁלְּמוּנִי רָעָה תַּחַת טוֹבָה
affligebam , *ſaccus mea veſtis* ,*ipſos ægrotando in* ego Et .meæ animæ *orbitatem*
13 שְׁכוֹל לְנַפְשִׁי׃ וַאֲנִי בַּחֲלוֹתָם לְבוּשִׁי שָׂק עִנֵּיתִי
,*ſocius ſi Ac* .revertebatur meum ſinum *ſuper* mea oratio & : meam animam jejunio in
14 בַצּוֹם נַפְשִׁי וּתְפִלָּתִי עַל־חֵיקִי תָשׁוּב׃ כְּרֵעַ־
.me *incurvabam atratus* , matrem lugens tanquam , ambulabam , *mihi frater ſi ac*
כְּאָח לִי הִתְהַלָּכְתִּי כַּאֲבֶל־אֵם קֹדֵר שַׁחוֹתִי׃
me *ſuper* ſe congregaverunt ,ſe congregaverunt & ,ſunt læti mea claudicatione in Et
15 וּבְצַלְעִי שָׂמְחוּ וְנֶאֱסָפוּ נֶאֶסְפוּ עָלַי
ſubſannatoribus *hypocritis In* .ſiluerunt non & ,*proſciderunt* : cognovi non & ,percuſſi
16 נֵכִים וְלֹא יָדַעְתִּי קָרְעוּ וְלֹא־דָמּוּ׃ בְּחַנְפֵי לַעֲגֵי
? videbis quandiu Domine .ſuis dentibus me *ſuper* fremendo ; *ſubſannatione*
17 מָעוֹג חָרֹק עָלַי שִׁנֵּימוֹ׃ אֲדֹנָי כַּמָּה תִּרְאֶה
.meam unicam *leunculis* à ; eorum deſolationibus à meam animam *reduc*
הָשִׁיבָה נַפְשִׁי מִשֹּׁאֵיהֶם מִכְּפִירִים יְחִידָתִי׃
mihi lætentur Ne .te laudabo forti populo in : magno cœtu in tibi Confitebor
18 אוֹדְךָ בְּקָהָל רָב בְּעַם עָצוּם אֲהַלְלֶךָּ׃ אַל־יִשְׂמְחוּ־לִי
19 ,loquentur pacem non Quia .oculo annuant gratis me *odientes* : *falſo* mei inimici
20 אֹיְבַי שֶׁקֶר שֹׂנְאַי חִנָּם יִקְרְצוּ־עָיִן׃ כִּי לֹא שָׁלוֹם יְדַבֵּרוּ
fecerunt dilatare Et .cogitabunt *fraudum* verba ; terræ *tranquillos ſuper* &
21 וְעַל רִגְעֵי־אֶרֶץ דִּבְרֵי מִרְמוֹת יַחֲשֹׁבוּן׃ וַיַּרְחִיבוּ
,Domine Vidiſti .noſter oculus vidit ; euge , Euge : *dixerunt* ,ſuum os me *ſuper*
22 עָלַי פִּיהֶם אָמְרוּ הֶאָח הֶאָח רָאֲתָה עֵינֵנוּ׃ רָאִיתָה יְהוָה
evigila & , te Suſcita .me à te elonges ne Domine : taceas ne
23 אַל־תֶּחֱרַשׁ אֲדֹנָי אַל־תִּרְחַק מִמֶּנִּי׃ הָעִירָה וְהָקִיצָה
me Judica .meam *litem* ad , mi Domine & , mi Deus : meum judicium ad
24 לְמִשְׁפָּטִי אֱלֹהַי וַאדֹנָי לְרִיבִי׃ שָׁפְטֵנִי
dicant Ne .*mihi* lætentur ne & ,mi Deus Domine tuā juſtitiam ſecundùm
25 כְצִדְקְךָ יְהוָה אֱלֹהָי וְאַל־יִשְׂמְחוּ־לִי׃ אַל־יֹאמְרוּ
,afficiantur Pudore .eum *Abſorpſimus* : dicant ne ; noſtræ animæ Euge :ſuo corde in
26 בְלִבָּם הֶאָח נַפְשֵׁנוּ אַל־יֹאמְרוּ בִּלַּעֲנוּהוּ׃ יֵבֹשׁוּ
, erubeſcentia & , pudore induantur : meo malo læti pariter erubeſcant &
וְיַחְפְּרוּ יַחְדָּו שְׂמֵחֵי רָעָתִי יִלְבְּשׁוּ־בֹשֶׁת וּכְלִמָּה
.me *ſuper* ſe magnificantes
הַמַּגְדִּילִים עָלָי׃

תרגום TARGUM.

5 יְהוֹן הֵיךְ מוֹצָא קֳדָם זַעְפָּא וּמַלְאֲכָא דַיְיָ דָּחֵי׃
6 יְהֵי אוֹרְחַתְהוֹן חֲשׁוֹכָא וַחֲכִירָא וּמַלְאֲכָא
7 דַיְיָ רָדֵיף לְהוֹן׃ אֲרוּם מַגָּן פְּרַסוּ לְוָתִי
8 שַׁיח מְצָדְהוֹן מַגָּן כְּמַנוּ לְנַפְשִׁי׃ תֵּיתֵיהּ שַׁלְיָא
לָא יִתְחַכַּם וּמְצָדְתֵּיהּ דִּי פְּרַס תְּצַיְּדֵיהּ בְּשַׁלְיָא
9 יִפּוֹל בַּהּ׃ וְנַפְשִׁי תֶּחְדֵי בְמֵימְרָא דַיְיָ תְּדוּץ
10 בְּפוּרְקָנֵיהּ׃ כּוּלְהוֹן אֵבָרַי תֶּהֶוְיָן אָמְרִין
יְיָ מַן כְּוָתָךְ פָּצֵי עַנְיָא מִן תַּקִּיף מִנֵּיהּ וְעַנְיָא
11 וַחֲשִׁיכָא מִן אַנְסֵיהּ׃ קָיְמִין סָהֲדֵי חֲטוֹפִין
12 מַן דְּלָא חַכִּימֵית שָׁיְלִין לִי׃ פָּרְעִין לִי בִּישְׁתָא
13 חֲלַף טָבְתָא בָּעַן לְמִתְכַּל לְנַפְשִׁי׃ וַאֲנָא
בְּעִדָּן מַרְעוּתְהוֹן לְבִישַׁת סַקָּא סַגְּפֵית בְּצוֹמָא
14 נַפְשִׁי וּצְלוֹתִי עַל עוּבִי תְתוּב׃ הֵיךְ חַבְרָא
וְהֵיךְ אַחָא דִילִי הַלְכֵית הֵיךְ אֲבֵילָא דְמִתְאַבַּל
15 עַל אִמֵּיהּ חַכִּיר שַׁחֵית׃ וּבְתַבְרִי חֲדוּ
וְאִתְכַּנָּשׁוּ מִתְכַּנְשִׁין עֲלַי רַשִׁיעַיָּא דְמַכְּכִין לִי
בְּמִלֵּיהוֹן וְלָא חַכִּימֵית אִלּוּ מְבַזְעִין מַשְׁכִּי
16 וְלָא מַפְקִין דְּמָא׃ בְּמִלֵּי שְׁעִיעוּתָא וּמַרְהֲבַיָּא
17 וּמְמַקְנַיָּא מְעַסְּן עֲלַי כַּכֵּיהוֹן׃ יְיָ כְּמָה אַתְּ
חָמֵי אֲתִיב נַפְשִׁי מִשְּׁלְיָתְהוֹן מִבְּנֵי אַרְיְוָיָא
18 גוּשְׁמִי׃ אוֹדֵי קֳדָמָךְ בִּכְנִשְׁתָּא רַבָּא בְּעַמָּא
19 תַקִּיפָא אֲשַׁבְּחִנָּךְ׃ לָא יֶחְדּוֹן עֲלַי בַּעֲלֵי
20 דְבָבִי שִׁקְרָא סָנְאַי מַגָּן רָמְזִין בְּעֵינֵיהוֹן׃ אֲרוּם
לָא שְׁלָמָא מְמַלְּלִין וְעַל צַדִּיקֵי אַרְעָא דְּנָיְחִין
21 בְּעָלְמָא הַהוּא מִלֵּי נִכְלִין מְחַשְּׁלִין׃ וְאַפְתִּיאוּ
עֲלַי פֻּמְּהוֹן אֲמַרוּ חֶדְוָא חֶדְוָא חֲמָת עֵינָנָא׃
22 חֲמִיתָא יְיָ לָא תִשְׁתּוֹק יְיָ לָא תִתְרָחֵיק מִנִּי׃
23 אִתְּעַר וְתָקִיץ לְדִינִי אֱלָהִי וּמָרֵי נִצְחָנִי יְיָ
24 לְתִגְרְתִי׃ דּוּן יָתִי כְּצִדְקָתָךְ יְיָ אֱלָהִי וְלָא יֶחְדּוֹן
25 עֲלָי׃ לָא יֵימְרוּן בְּלִבְּהוֹן חֲדִיאַת נַפְשָׁנָא
26 דִּלְמָא יֵימְרוּן גַּמַּרְנָא יָתֵיהּ׃ יִבְהֲתוּן וְיִתְכַּנְעוּן
כַּחֲדָא דְּחָדַיִן עַל בִּישְׁתִי יִלְבְּשׁוּן בַּהֲתָא
וְכִסּוּפָא דְּמִתְרַבְרְבִין עֲלָי׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Sint ſicut palea coram vento, & angelus 5
Domini impellat. Sit via illorum tenebræ 6
& caligo ; & angelus Domini perſequatur
eos. Quoniam ſine cauſa tetenderunt mihi 7
foveam retis ſui : ſine cauſa inſidiati ſunt
animæ meæ. Veniat ei deſolatio & non advertat : 8
& rete ejus quod abſcondit, capiat
eum ; in deſolationem ipſam cadat. Et anima 9
mea gaudebit in verbo Domini : exultabit
in redemptione ejus. Omnia membra 10
mea dicent, Domine quis ſimilis tibi,
eripiens afflictum à fortiori ſe, & pauperem
& mendicum à raptore ſuo ? Surgentes 11
teſtes iniqui, quæ neſciebam, interrogabant
me. Reddebant mihi malum pro 12
bono, quærentes orbare animam meam.
Ego verò in tempore infirmitatis eorum 13
induebar ſacco ; affligebam jejunio animam
meam : oratio autem mea ad ſinum
meum revertetur. Ac ſi ſocius & frater meus 14
fuiſſet, ita cum eo ambulabam : ſicut
lugens, qui luget matrem ſuam, obſcurus
humiliabar. Et in tribulatione mea læti 15
& congregati ſunt : convenerunt adverſum
me impii, qui conterunt me verbis ſuis, &
neſcivi; etiamſi lacerarent pellem meam ,
non tamen eliciebant ſanguinem. Verbis
autem blanditiarum,ſubſannatoriis, & deriſoriis 16
frendent contra me dentibus ſuis.
Domine uſquequo reſpicies ? converte animam 17
meam à deſolationibus eorum, à filiis
leonum corpus meum. Confitebor coram 18
te in congregatione magna : in populo validolaudabo te. Non lætentur de me auctores 19
inimicitiæ meæ falſo ; odientes me ſine
cauſa, annuentes oculis ſuis. Quoniam 20
non pacem loquuntur : & contra juſtos terræ
quieſcentes in ſeculo illo, verba doloſa
cogitant. Et dilataverunt ſuper me os ſuum, 21
& dixerunt, Evax evax; vidit oculus
noſter. Vidiſti Domine, ne ſileas Domine, 22
ne elongeris à me. Evigila & expergiſcere 23
ad judiciū meū,Deus meus,& auctor victoriæ
meæ *Domine* ad litem meam.Judica me 24
ſecundum juſtitiam tuam Domine, Deus
meus, & ne lætentur de me. Non dicant 25
in cordibus ſuis, Lætata eſt anima noſtra :
ne fortè dicant, Devoravimus eum. Erubeſcant 26
& confundantur pariter, qui lætantur
malo meo : induantur pudore, &
confuſione,qui magnificantur ſuper me.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

5 6 * ܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܐܒܩܐ ܩܕܡ ܪܘܚܐ. ܘܡܠܐܟܗ ܕܡܪܝܐ ܢܪܕܘܦ ܐܢܘܢ : * ܢܚܫܟ ܐܘܪܚܗܘܢ
7 ܘܢܗܘܘܢ ܒܗ ܡܫܪܥܬܐ. ܘܡܠܐܟܗ ܕܐܠܗܐ ܢܪܕܘܦ ܐܢܘܢ : * ܡܛܠ ܕܛܫܘ ܠܝ ܦܚܐ.
8 ܘܡܨܝܕܬܐ ܦܪܣܘ ܠܢܦܫܝ : * ܬܐܬܐ ܥܠܝܗܘܢ ܒܝܫܬܐ ܡܢ ܫܠܝܐ. ܘܡܨܝܕܬܐ ܕܦܪܣܘ ܬܐܚܘܕ
9 ܐܢܘܢ: ܘܒܓܘܡܬܐ ܕܚܦܪܘ ܢܦܠܘܢ ܒܗ. * ܢܦܫܝ ܕܝܢ ܬܕܘܨ ܒܐܠܗܐ: ܘܬܬܒܣܡ ܒܦܘܪܩܢܗ.
10 * ܘܟܠܗܘܢ ܓܪܡܝ ܢܐܡܪܘܢ: ܡܪܝܐ ܡܢܘ ܐܟܘܬܟ. ܕܡܦܨܐ ܐܢܬ ܠܡܣܟܢܐ ܡܢ ܒܥܠܕܒܒܗ:
11 ܘܠܡܣܟܢܐ ܘܠܒܨܝܪܐ ܡܢ ܡܢ ܕܢܐܢܣ ܠܗ ܒܩܛܝܪܐ. * ܩܡܘ ܣܗܕܐ ܕܥܘܠܐ : ܘܡܕܡ
12 ܕܠܐ ܝܕܥ ܗܘܝܬ ܫܐܠܘܢܝ. * ܦܪܥܘܢܝ ܒܝܫܬܐ ܚܠܦ ܛܒܬܐ: ܘܐܘܒܕܘ ܢܦܫܝ ܡܢ ܒܢܝܢܫܐ.
13 * ܘܐܢܐ ܒܟܘܪܗܢܗܘܢ ܠܒܫܬ ܣܩܐ : ܘܡܟܟܬ ܢܦܫܝ ܒܨܘܡܐ. ܘܨܠܘܬܝ ܠܥܘܒܝ
14 15 ܬܗܦܟ : * ܐܝܟ ܕܠܚܒܪܐ ܘܐܝܟ ܐܚܐ ܡܗܠܟ ܗܘܝܬ. ܘܐܝܟ ܗܘ ܕܝܬܒ ܒܐܒܠܐ ܐܬܟܪܝܬ : * ܒܫܘܢܩܝ
16 ܐܬܟܢܫܘ ܘܚܕܝܘ ܒܝ. ܐܬܟܢܫܘ ܥܠܝ ܡܚܘܬܐ ܘܠܐ ܝܕܥܬ : * ܒܫܘܒܚܗܘܢ ܘܒܡܘܝܩܗܘܢ
17 ܚܪܩܘ ܥܠܝ ܫܢܝܗܘܢ. * ܡܪܝ ܟܕܘ ܚܙܝܬ : ܐܦܢܐ ܢܦܫܝ ܡܢ ܫܓܘܫܝܗܘܢ. ܘܡܢ
18 19 ܐܪܝܘܬܐ ܝܚܝܕܝܘܬܝ : * ܐܘܕܐ ܠܟ ܒܥܕܬܐ ܪܒܬܐ. ܘܒܝܢܬ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ ܐܫܒܚܟ : * ܠܐ ܢܚܕܘܢ ܒܝ
20 ܒܥܠܕܒܒܝ ܕܓܠܐ ܕܣܢܝܢ ܠܝ ܡܓܢ. ܕܡܪܡܙܝܢ ܒܥܝܢܝܗܘܢ : * ܘܫܠܡܐ ܠܐ ܐܡܪܝܢ.
21 ܘܥܠ ܡܟܝܟܐ ܕܐܪܥܐ ܢܟܠܐ ܡܬܚܫܒܝܢ : * ܦܬܚܘ ܥܠܝ ܦܘܡܗܘܢ ܘܐܡܪܘ. ܐܗ ܐܗ ܚܙܬ ܒܗ
22 23 ܥܝܢܢ : * ܚܙܝܬ ܐܠܗܐ ܠܐ ܬܫܬܘܩ. ܡܪܝ ܠܐ ܬܬܪܚܩ ܡܢܝ : * ܐܬܬܥܝܪ ܠܕܝܢܝ ܐܠܗܝ ܘܡܪܝ
24 25 ܘܚܙܝ ܒܫܘܚܩܝ : * ܕܘܢܝܢܝ ܐܝܟ ܙܕܝܩܘܬܟ ܡܪܝܐ : ܕܠܐ ܢܚܕܘܢ ܒܝ. * ܘܠܐ ܢܐܡܪܘܢ ܒܠܒܗܘܢ.
26 ܐܬܬܢܝܚܬ ܢܦܫܢ ܘܐܛܒܥܢܝܗܝ : * ܢܒܗܬܘܢ ܘܢܚܦܪܘܢ ܐܟܚܕܐ. ܐܝܠܝܢ ܕܨܒܝܢ ܒܒܝܫܬܝ:
ܘܐܝܠܝܢ ܕܡܬܪܘܪܒܝܢ ܥܠܝ ܢܠܒܫܘܢ ܒܗܬܬܐ.

Fiant ſicut pulvis corā vento, & angelus Domini 5
impellat eos. Obſcuretur via illorum, 6
ſintq; in ea lubricitates, & angelus Dei perſequatur
illos. Quoniā abſconderunt mihi 7
laqueos, & rete tetenderunt animæ meæ. Veniat 8
ſuper eos malum ex improviſo, & rete
quod tetenderunt, capiat illos: & in foveam
quam foderunt, cadant. Anima autem mea 9
exultabit in Deo, & delectabitur in ſalute ejus:
Et omnia oſſa mea dicent ; Domine,quis 10
eſt ut tu, qui eripis inopem ab inimico ſuo,
& pauperem atque inopē ab eo qui rapit eū
violentèr? Surrexerunt teſtes iniquitatis, & 11
quod minimè ſciebam, rogaverunt me. Retribuerunt 12
mihi malum pro bono, & perdiderunt
animam meam ex hominibus. At ego 13
in infirmitate eorum indutus ſum cilicio, &
humiliavi animam meam jejunio, & oratio
mea in ſinū meum reverſa eſt. Ut amicus 14
& ut frater ambulabam, & velut is qui ſedet
in mœrore, afflictus ſum. In paſſione mea convenerunt 15
& gratulati ſunt mihi. Congregati
ſunt adverſum me diu, & ignoravi. Cum gloria 16
eorum, & ludibrio ipſorum frenduerunt
contra me dentibus ſuis. Domine mi, ſat vidiſti: 17
reduc animam meam à tumultu eorum,
& à leonibus unitatem meam. Confitebor 18
tibi in Eccleſia magna, & inter populos multos 19
laudabo te. Ne quæſo gaudeant mihi hoſtes
mei falſidici, qui odio habent me gratis:
qui nictant oculis ſuis. Et pacem minimè dicunt; 20
& adverſus humilem terræ dolum machinantur.
Aperuerunt contra me os ſuum,atque 21
dixerunt; Ehe,ehe,vidit in eo oculus noſter. 22
Vidiſti Deus, nè ſileas:Domine mi, &
ne recedas à me. Expergiſcere ad judicium 23
meum,Deus meus & Dominus meus, & vide
oppreſſionem meam. Judica me ſecundùm juſtitiam 24
tuam, Domine : ut ne gaudiant mihi,
Nec dicant in corde ſuo, Quievit anima noſtra, 25
& ſubmerſim' eū. Confundantur & pudefiāt 26
ſimul qui volunt malū meū:et qui ſeſe
attollunt contra me,induantur ignominiâ.

Verſio VULG. LAT.

5 Fiant tanquā pulvis ante faciē venti: &
6 angelus Dn̄i coarctans eos. Fiat via illorum tenebræ & lubricum: & angelus
7 Dn̄i perſequens eos. Quoniā gratìs abſconderunt mihi interitū laquei ſui: ſupervacuè exprobraverunt animā meā.
8 Veniat illi laqueus, quem ignorat: & captio, quā abſcondit, apprehendat eum:
9 & in laqueū cadat in ipſum. Anima autē mea exultabit in Dn̄o: & delectabitur
10 ſuper ſalutari ſuo. Omnia oſſa mea dicēt; Dn̄e, quis ſimilis tibi? Eripiens inopē de manu fortiorū ejus: egenum & pau-
11 perē à diripientib⁹ eum. Surgentes teſtes iniqui, quæ ignorabā interrogabant
12 me. Retribuebant mihi mala pro bonis:
13 ſterilitatē animæ meæ. Ego autē cū mihi moleſti eſſent, induebar cilicio. Humiliabam in jejunio animā meā: & ora-
14 tio mea in ſinu meo convertetur. Quaſi proximū, & quaſi fratrē noſtrū, ſic complacebā: quaſi lugens & contriſtatus ſic
15 humiliabar. Et adverſū me lætati ſunt, & convenerunt: cōgregata ſunt ſup me fla-
16 gella, & ignoravi. Diſſipati ſunt, nec cōpuncti, tentaverūt me, ſubſānaverunt me ſubſannatione: frēduerūt ſup me dentib⁹
17 ſuis. Dn̄e, quādo reſpicies? reſtitue animā meam à malignitatē eorum, à leonib⁹ u-
18 nicam meā. Confitebor tibi in eccleſia
19 magna, in populo gravi laudabo te. Non ſupergaudeant mihi qui adverſantur mihi iniquè: qui oderunt me gratìs & an-
20 nuunt oculis. Quoniā mihi quidē pacificè loquebantur: & in iracundia terræ lo-
21 quentes, dolos cogitabant. Et dilataverūt ſup me os ſuū: dixerūt; Eugè, eugè,
22 viderunt oculi noſtri. Vidiſti, Dn̄e, ne ſi-
23 leas: Dn̄e, ne diſcedas à me. Exurge et intende judicio meo: De⁹ me⁹, & Dn̄s me-
24 us, in cauſā meā. Judica me ſecundū juſtitiā tuam, Dn̄e Deus me⁹, & non ſuper-
25 gaudeant mihi. Non dicant in cordibus ſuis; Eugè, eugè, animæ noſtræ: nec dicāt;
26 Devoravim⁹ eū. Erubeſcant & revereantur ſimul, qui gratulantur malis meis. Induantur confuſione & reverentiâ qui magna loquuntur ſuper me.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

5 Γενηθήτωσαν ὡσεὶ (ζ)χνοῦς κατὰ πρόσωπον ἀνέμου, † ϗ
6 ἄγγελος κυρίου ἐκθλίβων αὐτούς. † Γενηθήτω ἡ ὁδὸς αὐτῶν σκότος ϗ ὀλίσθημα, † ϗ ἄγγελος κυρίου
7 καταδιώκων αὐτούς. † Ὅτι δωρεὰν ἔκρυψάν μοι διαφθορὰν παγίδος αὐτῶν, † μάτην ὠνείδισαν τὴν
8 ψυχήν μου. † (η)Ἐλθέτω αὐτοῖς παγὶς ἣν οὐ γινώσκουσι, † ϗ ἡ θήρα ἣν ἔκρυψαν, (θ) Συλλαβέτω αὐτούς, † ϗ ἐν τῇ παγίδι (ι) πεσοῦνται ἐν αὐτῇ.
9 † Ἡ δὲ ψυχή μου ἀγαλλιάσεται ἐπὶ τῷ κυρίῳ, † τερ-
10 φθήσεται ἐπὶ τῷ σωτηρίῳ αὐτοῦ. † Πάντα τὰ ὀστᾶ μου ἐροῦσι, (κ) Κύριε τίς ὅμοιός σοι; † ῥυόμενος (λ) πτωχὸν ἐκ χειρὸς στερεωτέρων αὐτοῦ, † ϗ πτωχὸν ϗ
11 πένητα ἀπὸ τῶν διαρπαζόντων αὐτόν. † Ἀναστάντες μάρτυρες ἄδικοι, ἃ οὐκ ἐγίνωσκον, (μ) ἐπηρώτων
12 με. † (ν) Ἀνταπεδίδοσάν μοι πονηρὰ (ξ) ἀντὶ κα-
13 λῶν, † ϗ ἀτεκνίαν τῇ ψυχῇ μου. † Ἐγὼ δὲ ἐν τῷ αὐτοὺς παρενοχλεῖν μοι, ἐνεδυόμην σάκκον· † ϗ ἐταπείνουν ἐν νηστείᾳ τὴν ψυχήν μου, † ϗ ἡ προσευ-
14 χή μου εἰς κόλπον μου (ο) ἀποστραφήσεται. † Ὡς πλησίον ὡς ἀδελφὸν ἡμέτερον οὕτως εὐηρέστουν, † ὡς
15 πενθῶν ϗ σκυθρωπάζων οὕτως ἐταπεινούμην. † Καὶ κατ' ἐμοῦ (π) εὐφράνθησαν ϗ συνήχθησαν, † συνήχθησαν
16 ἐπ' ἐμὲ μάστιγες ϗ οὐκ ἔγνων· † Διεσχίσθησαν καὶ οὐ κατενύγησαν. † ἐπείρασάν με, ἐξεμυκτήρισάν με μυκτηρισμόν, † ἔβρυξαν ἐπ' ἐμὲ τοὺς ὀδόντας αὐ-
17 τῶν. Κύριε πότε ἐπόψῃ, † ἀποκατάστησον τὴν ψυχήν μου ἀπὸ τῆς κακουργίας αὐτῶν, † ἀπὸ λεόντων
18 τὴν (ρ) μονογενῆ μου. † Ἐξομολογήσομαί (σ) σοι ϗ ἐν ἐκκλησίᾳ πολλῇ, † ἐν λαῷ βαρεῖ αἰνέσω σε.
19 † Μὴ ἐπιχαρείησάν μοι οἱ ἐχθραίνοντές μοι (τ) ματαίως, † οἱ (υ) μισοῦντές με δωρεάν, ϗ διανεύον-
20 τες ὀφθαλμοῖς. † Ὅτι ἐμοὶ μὲν εἰρηνικὰ ἐλάλουν,
21 † ϗ (φ) ἐπ' ὀργῇ δόλους διελογίζοντο. † Καὶ ἐπλάτυναν ἐπ' ἐμὲ τὸ στόμα αὐτῶν, † (χ) εἶπαν, Εὖγε,
22 εὖγε, εἶδον οἱ ὀφθαλμοὶ ἡμῶν. † Εἶδες κύριε, μὴ
23 παρασιωπήσῃς, † κύριε μὴ ἀποστῇς ἀπ' ἐμοῦ. † Ἐξεγέρθητι κύριε, ϗ πρόσχες τῇ κρίσει μου, † ὁ θεός
24 μου, ϗ ὁ κύριός μου εἰς τὴν δίκην μου. † Κρῖνόν (ψ) με κύριε κατὰ τὴν δικαιοσύνην σου † κύριε ὁ θεός μου,
25 ϗ μὴ ἐπιχαρείησάν μοι. † Μὴ εἴποισαν ἐν καρδίαις αὐτῶν, Εὖγε, εὖγε τῇ ψυχῇ ἡμῶν· † μηδὲ (ω)
26 εἴποιεν, Κατεπίομεν αὐτόν. † Αἰσχυνθείησαν ϗ ἐντραπείησαν ἅμα οἱ ἐπιχαίροντες τοῖς κακοῖς μου· † ἐνδυσάσθωσαν αἰσχύνην ϗ ἐντροπὴν † οἱ (ϡ) μεγαλορρημονοῦντες ἐπ' ἐμέ.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

6 Fiant tanquā pulvis ante fa- 5
ciem venti: et angelus Domini[e]
tribulans eos. 7 Fiat via eorum 6
tenebræ, & lubricum: & ange-
lus Domini perſequens eos. 8
Quoniam (e) gratìs abſconde- 7
runt [f] mihi interitum laquei
ſui: (f) ſupervacuè exprobrave-
runt animam meam. 9 Veniat il- 8
lis (g) laqueus, quem ignorant: &
[g] captio, quam occultaverunt,
comprehendat illos: & in la-
queum cadant in ipſum. 10 Ani- 9
ma autem mea exultabit in Do-
mino, delectabitur ſuper (h) ſalu-
tare ejus: 11 Omnia oſſa mea[h] 10
dicent; Domine, quis ſimilis tibi?
12 Eripiens inopem de manu[i]
fortiorum ejus, & egenum, &
pauperem à diripientibus eum. 13
[k]Inſurgentes teſtes iniqui, quæ 11
ignorabam, interrogabant me. 14
Retribuebant mihi mala (i) pro 12
bonis, et (k)[l] ſterilitatem animæ
meæ. 15 Ego autem, cùm mihi mo- 13
leſti (l) eſſent, induebar cilicio, 16
et humiliabā in jejunio animam
meam: & oratio mea in ſinum
meū (m) convertetur. 17 Quaſi 14
(n) proximū, quaſi fratrē noſtrū,
ita complacebā: (o) quaſi lugens,
et contriſtatus, ſic[m]humiliabar.
18 Et[n]adverſùs (p) me lætati 15
ſunt, & convenerunt. [o]Congre-
gata ſunt ſuper me (q) flagella, et
ignoravi. 19[p] Diſſipati (r) ſunt, 16
nec compuncti: (ſ) tentaverunt
me, ſubſannaverūt me ſubſanna-
tione: frenduerūt ſuper me denti-
bus ſuis. 20 Domine, quando[q] 17
reſpicies? reſtitue animam meam
à (t) malignitate[r]eorum, à leo-
nib⁹ (u) unicā meā. 21 Confitebor 18
[ſ] tibi, et (x) in eccleſia magna,
in populo (y) gravi laudabo te. 22
Non ſupergaudeant mihi, qui ad- 19
verſantur mihi (z) vanè, qui ode-
runt me gratìs, & annuūt oculis.
23 Quoniā mihi quidē (ω) paci- 20
ficè loquebantur, et in[t]iracun-
dia (aa) dolos cogitabant. 24 Et 21
dilataverunt ſuper me os ſuum:
dixerūt, Eugè, eugè, [v]viderunt
oculi noſtri. 25[x] Vidiſti, Domi- 22
ne, ne (bb) ſileas: Domine, ne diſce-
das à me. 26 Exurge, Domine, & 23
intende judicio meo, Deus meus,
& Dominus meus, in cauſam
(cc) meam. 27 Judica me ſecundùm (dd) juſtitiā tuam[y], Dominus Deus meus: & non ſuper- 24
gaudeant mihi. 28 Non dicant in cordibus ſuis, Eugè, eugè, animæ noſtræ: nec dicant, 25
Devoravimus eum. 29 Erubeſcant, & [z] revereantur ſimul, qui gratulantur malis meis. 30 Induantur confuſione, & verecundiâ, qui (ee) [aa]magna loquuntur ſuper me. 26

Verſio ÆTHIOPICA.

ለይኩኑ፡ከመ፡ጸበል፡ዘቅድመ፡ገጸ፡ነፋስ፡፡ወ 6
መልአከ፡እግዚአብሔር፡ለይሣቅዮሙ፡፡፨
ለትኩን፡ፍኖቶሙ፡ ድኅፀ፡ወጽልመተ፡፡ ወመ 7
ልአከ፡እግዚአብሔር፡ለይስድዶሙ፡፡፨እስ 8
መ፡በከንቱ፡ ኀብኡ፡ሊተ፡መሥገርተ፡ ያጥፍ
ኡኒ፡፡ወበከንቱ፡ አመንዘዝዋ፡ ለነፍስየ፡፡፨
ለትምጽኦሙ፡ መሥገርት፡ እንተ፡ ኢያእም 9
ሩ፡፡ ወተእኅዞሙ፡ መሥገርት፡ እንተ፡ኀብ
ኡ፡፡ወይደቁ፡ውስተ፡ይእቲ፡መሥገርት፨፡፡
ወነፍስየሰ፡ትትፌሣሕ፡በእግዚአብሔር፡፡ ወ 10
ትትሐሰይ፡በአድኅኖቱ፡፡፨ ኵሎ፡አዕጽም 11
ትየ፡ይብሉከ፡፡ እግዚኦ፡ መኑ፡ከማከ፡፡፨
ታድኅኖ፡ለነዳይ፡እምእደ፡ዘይትዔገሎ፡፡ ለ 12
ነዳይ፡ወለምስኪን፡እምእደ፡ዘይመስጦ፡፡፨
ተንሥኡ፡ላዕሌየ፡ሰማዕተ፡ዐመፃ፡፡ ወዘኢየአ 13
ምር፡ነበቡ፡ላዕሌየ፡፡፨ ፈደዩኒ፡እኪተ፡ህየ 14
ንተ፡ሠናይት፡፡ ወአኅጥዕዋ፡ ውሉደ፡ለነፍስ
የ፡፡፨ ወአንሰ፡ሶበ፡ አስርሑኒ፡ለበስኩ፡ ሠ 15
ቀ፡፡፨ ወአሕመምክዋ፡በጾም፡ለነፍስየ፡፡ 16
ወጸሎትየኒ፡ይገብእ፡ውስተ፡ሕፅንየ፡፡፨ ከመ 17
ዘ፡ለአኅዊየ፡ወለቢጽየ፡ ከማሁ፡አድሎኩ፡፡
ወከመ፡ ዘይላሑ፡ ወይቴክዝ፡ ከማሁ፡አትሐ
ትኩ፡ ርእስየ፡፡፨ ተጋብኡ፡ላዕሌየ፡ ወተፈ 18
ሥሑ፡፡ ተማከሩ ፡ ይቅስፉኒ ፡ ወኢያእምር
ኩ፡፡፨ ተሰብሩኒ ፡ ወኢደንገፁ፡፡ ፈተኑኒ፡ 19
ወተሳለቁ፡ላዕሌየ፡ወሠሐቁኒ፡፡ ወሐቀዩ፡ስነኒ
ሆሙ፡ላዕሌየ፡፡፨ እግዚኦ፡ማእዜኑ፡ትፌት 20
ሕ፡ሊተ፡፡አድኅና፡ለነፍስየ፡እምእከየ፡ምግ
ባሮሙ፡፡ወእምአናብስት፡ ለብሕቱትየ፡፡፨
እገኒ፡ለከ፡ እግዚኦ፡በውስተ፡ ማሕበር፡ ዐቢ 21
ይ፡፡ ወእሴብሐከ፡በውስተ፡ሕዝብ፡ክቡድ፡፡
ወኢይትፌሥሑ፡ላዕሌየ፡እለ፡ ይጸልኡኒ፡ በ 22
ዐመፃ፡፡ እለ፡ይፀርፉኒ፡ በከንቱ፡ወይትቃጸቡ
ኒ፡በአዕይንቲሆሙ፡፡፨እስመ፡ሊተሰ፡ሰላመ፡ 23
ይትናገሩኒ፡፡ወይመክሩ፡በቍጽር ፡ያመንስው
ኒ፡፡፨ወአብቀዉ፡አፈሆሙ፡ላዕሌየ፡፡ወይቤ 24
ሉ ፡ እኑቋዕ ፡ እንቋዕ ፡ ርኢናሁ፡ በአዕይንቲ
ነ፡፡፨ርኢ፡እግዚኦ፡ወኢታርምም፡፡እግዚ 25
ኦ፡ኢትርሐቅ፡እምኔየ፡፡፨ ተንሥእ፡እግ 26
ዚኦ፡አጽምእ፡ ፍትሕየ፡፡አምላኪየ፡እግዚ
እየ፡ውስተ፡ቅሥትየ፡፡፨ ፍታሕ፡ሊተ፡ እ 27
ግዚኦ፡አምላኪየ፡ በከመ፡ጽድቅከ፡፡ ወኢይ
ትፈሥሑ፡ላዕሌየ፡፡፨ ወኢይበሉ፡ በልቦ 28
ሙ፡ እንቋዕ፡ እንቋዕ፡ላዕለ፡ ነፍስየ፡፡ወኢይ
በሉ፡ውሕጥናሁ፡፡፨ ወይትኀፈሩ፡ወይኅሰ 29
ሩ፡እለ፡ ይትፌሥሑ፡በሕማምየ፡፡፨ለይል 30
በሱ፡ኀፍረተ፡ወኀሳረ፡ እለ ፡ የዐቢዩ ፡ አፈሆ
ሙ ፡ ላዕሌየ፡፡

MS.A. (ζ) χνοῦς (η) Ἐλθάτω (θ) Συλλαβέτω αὐτὸν, (ι) πεσεῖται (κ) Κύριε, κύριε τίς (λ) πτωχὸν ἐκ στερεωτέρων αὐτοῦ, (μ) ἠρώτων με. (ν) Ἀνταποδίδοσαν (ξ) ἀντὶ ἀγαθῶν, (ο) ἀποστραφέτω. (π) ηὐφράνθησαν (ρ) μονογενήν μου. (σ) σοὶ ἐν ἐκκλησίᾳ (τ) ἀδίκως, (υ) μισοῦντες δωρεάν, (φ) ἐπ' ὀργὴν (χ) εἶπον, (ψ) μοι (ω) εἴποισαν, (ϡ) μεγαλορημονοῦντες

INTERP. ÆTHIOP. [e] excrucians eos. [f] mihi laqueum *ut* perdant me: [g] laqueus, quē [h] dicent tibi; [i] eorum qui opprimunt eum, [k] Inſurgunt adverſus me teſtes, [l] et partu animā meam orbant. [m] humiliabam meipſum. [n] convenerunt adverſus [o] Conſultârunt ut me flagellent, & [p] Confracti ſunt, [q] reddes mihi judiciū? [r] operum eorū, [ſ] tibi Domine, [t] doloſè cogitabant & pertentabant me. [u] vidimus eum oculis noſtris: [x] Vide Domine, [y] Domine [z] revereantur qui [aa] magnificant ora ipſorum ſuper

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وليكونوا مثل الغبار امام الريح* وملك الرب يحرجهم * لتكن طريقهم زلقة ظلمة* وملك الرب 5 6
يطردهم * لانهم اخفوا لي هلاك فخهم مجانا* وعيروا نفسي باطلا* فليات عليهم الفخ الذي لا 7 8
يعرفونه* والمصيدة التي اخفوها فلتصدهم* وفي الفخ يقعون* نفسي تبتهج بالرب وتسر بخلاصه 9
* عظامي كلها تقول يا رب من يشبهك* تخلص المسكين من يدي من هو اقوى منه* والفقير 10
والبايس من يد الذين يخطفونهما* قام علي شهود الزور* وعما لم اعلم سايلوني* جاروني بدل 11 12
الخير شرا* وابادوا نفسي* وانا عند ما قاوموني لبست مسحا* وبالصيام اذللت نفسي* وصلاتي عادت 13
الى حضني* مثل صاحب واخ لي* كذلك كنت ارضيه* وكمن ينوح ويقطب كذلك تواضعت* اجتمعوا 14 15
علي وفرحوا* اجتمع على الاشرار ولم اعلم* تفرقوا ولم يندموا* جربوني وهزوا بي هزا* صروا علي اسنانهم 16
* يا رب متى تنظر* رد نفسي عن شرهم* ومن الاسد نج وحدتي* اشكرك يا رب في جماعة كثير* 17 18
وفي شعب صالح اسبحك* لا تسر بي المعادين لي ظلما* الذين شنوني مجانا* ويتغامزون بعيونهم 19
* لانهم تكلموا معي بالسلامة* وبالغضب فكروا بالدغل وعلى المتواضعين في الارض يقولون 20
الكذب* وسعوا على افواههم وقالوا نعما نعما رايت عيوننا* قد رايت يا رب فلا تغفل* يا رب لا تبعد 21 22
عني* قم يا رب وانظر سريعا في قضايي* الهي وربي احكم في ظلامتي* احكم لي مثل برك* ربي 23 24
والاهي لا تسرهم بي* ولا يقولون في قلوبهم نعما هنيا لنفوسنا* ولا يقولون قد ابتلعناه* ليخز 25 26
ويخجل جميعا الذين يفرحون بشروري* وليلبس الخزي والعار الذين يعظمون علي القول*

Et ſint veluti pulvis ante ventū, & Ange- 5
lus Domini affligat eos. Sit via eorum la- 6
pſans, tenebroſa, & Angelus Domini inſe-
ctetur eos. Eò quòd abſconderunt mihi ex- 7
itium laquei ſui gratìs, & improperârunt
animæ meæ injuſtè. Adveniat eis laqueus 8
quem ignorant: et rete, quod abſconderunt
mihi, capiat eos: & in laqueum cadant.
Anima mea exhilarabitur in Domino, & 9
exultabit in ſalute ejus. Oſſa mea cuncta 10
dicent; O Domine, quis eſt ſimilis tibi? li-
berator miſeri de manibus ejus qui poten-
tior eſt ipſo, & pauperis atque inopis de
manu eorū qui rapiunt eos. Inſurrexerunt 11
in me teſtes falſitatis, & de eo quod ne-
ſcivi, interrogârunt me. Retribuerunt mihi 12
pro bono malū, et perdiderunt animā meā.
Et ego, quum mihi reſtitiſſent, indutus ſum 13
cilicio, & jejunio humiliavi animam meā,
& oratio mea reverſa eſt in ſinum meum.
Tanquam proximo & fratri meo, ſic obſe- 14
quebar ei: & velut is qui gemit & a-
tratus eſt, ſic me humiliavi. Congregati 15
ſunt adverſùm me, & lætati ſunt: con-
gregati ſunt adverſùs me mali, & igno-
ravi. Diſſipati ſunt, & non pœnituit eos.
Tentaverunt me, & illuſerunt mihi illuſi- 16
one: frenduerunt in me dentibus ſuis. O 17
Domine, quando reſpicies? Revoca animā
meam à malignitate eorum, & à leone li-
bera ſingularitatem meam. Gratias agam 18
tibi, Domine, inter cœtum copioſum, & in
populo bono te celebrabo. Ne lætifices in 19
me adverſantes mihi iniquè, qui oderunt
me gratìs, & invicem innuunt oculis ſuis.
Nam ipſi locuti ſunt mecum pacem, et cum 20
iracundia cogitârunt dolum, & de humi-
lib⁹ in terra dicūt mendaciū. Dilataverunt 21
adverſū me ora ſua, & dixerunt; Euge,
euge, viderunt oculi noſtri. Jam vidiſti, O 22
Domine, ne negligas: O Domine, ne recedas
à me. Surge, O Domine, et vide citò judiciū 23
meum: Deus meus, & Domine mi, judica
de oppreſſione mea. Judica mihi ſecun- 24
dùm juſtitiam tuam: Domine mi & Deus
me⁹, ne lætifices eos in me. Neve dicant in 25
cordibus ſuis, Euge animabus noſtris, et ne
dicant, Jam deglutivimus eum. Confun- 26
dantur, et pudefiant ſimul qui gaudent de
malis meis: et induantur confuſione et opprobrio, qui magnificant in me ſermonem.

תהלים: לו לז

Magnificetur : ſemper dicent & ,meam juſtitiam *volentes* exultabunt & , Laudabunt
27 יָרֹנּוּ וְיִשְׂמְחוּ חֲפֵצֵי צִדְקִי וְיֹאמְרוּ תָמִיד יִגְדַּל
;tuam juſtitiam loquetur mea lingua Et .ſui ſervi pacem *volens* Dominus
28 יְהֹוָה הֶחָפֵץ שְׁלוֹם עַבְדּוֹ׃ וּלְשׁוֹנִי תֶּהְגֶּה צִדְקֶךָ
.tuam laudem die omni
כָּל־הַיּוֹם תְּהִלָּתֶךָ׃

PSAL. XXXVI. לו

interiori in impio prævaricationis Dictum .Davidi Domini ſervo Victori
1 2 לַמְנַצֵּחַ לְעֶבֶד־יְהֹוָה לְדָוִד׃ נְאֻם־פֶּשַׁע לָרָשָׁע בְּקֶרֶב
ſe ad lenivit Quoniam .ejus *oculorum oppoſito ex* Dei pavor non : mei cordis
3 לִבִּי אֵין־פַּחַד אֱלֹהִים לְנֶגֶד עֵינָיו׃ כִּי־הֶחֱלִיק אֵלָיו
,iniquitas ejꝰ oris Verba .*odiendum ad* ſuam iniquitatē *inveniendum ad* ,ipſius oculis in
4 בְּעֵינָיו לִמְצֹא עֲוֺנוֹ לִשְׂנֹא׃ דִּבְרֵי־פִיו אָוֶן
: ſuo cubili *ſuper cogitabit* Iniquitatem .*benefaciendum ad* intelligere deſiit : dolus &
5 וּמִרְמָה חָדַל לְהַשְׂכִּיל לְהֵיטִיב׃ אָוֶן יַחְשֹׁב עַל־מִשְׁכָּבוֹ
cœlis in Domine .*reprobabit* non malum ;bonam non viam *ſuper ſe ſtatuet*
6 יִתְיַצֵּב עַל־דֶּרֶךְ לֹא־טוֹב רָע לֹא יִמְאָס׃ יְהֹוָה בְּהַשָּׁמַיִם
, *Dei* montes ſicut tua Juſtitia .*æthera* ad uſque tua veritas ; tua miſericordia
7 חַסְדֶּךָ אֱמוּנָתְךָ עַד־שְׁחָקִים׃ צִדְקָתְךָ כְּהַרְרֵי־אֵל
precioſa Quàm .Domine ſervabis animal & hominē : multa abyſſus tua judicia
8 מִשְׁפָּטֶךָ תְּהוֹם רַבָּה אָדָם וּבְהֵמָה תוֹשִׁיעַ יְהֹוָה׃ מַה־יָּקָר
.ſperabunt tuarum alarum umbra in hominum filii & ! Deus tua miſericordia
חַסְדְּךָ אֱלֹהִים וּבְנֵי אָדָם בְּצֵל כְּנָפֶיךָ יֶחֱסָיוּן׃
.eis dabis potum tuarũ deliciarũ torrente & ; tuæ domus pinguedine è Inebriabuntur
9 יִרְוְיֻן מִדֶּשֶׁן בֵּיתֶךָ וְנַחַל עֲדָנֶיךָ תַשְׁקֵם׃
.lumen videbimus tuo lumine in : *vitarum* vena tecum Quoniam
10 כִּי עִמְּךָ מְקוֹר חַיִּים בְּאוֹרְךָ נִרְאֶה־אוֹר׃
.corde rectos ad tuam juſtitiam & ; te ſcientes ad tuam miſericordiam Trahe
11 מְשֹׁךְ חַסְדְּךָ לְיֹדְעֶיךָ וְצִדְקָתְךָ לְיִשְׁרֵי־לֵב׃
ceciderunt Ibi .me faciat *movere* ne impiorũ manus & ; ſuperbiæ pes *me invadat* Ne
12 13 אַל־תְּבוֹאֵנִי רֶגֶל גַּאֲוָה וְיַד־רְשָׁעִים אַל־תְּנִדֵנִי׃ שָׁם נָפְלוּ
.ſurgere potuerunt non & ,ſunt expulſi : iniquitatis operarii
פֹּעֲלֵי אָוֶן דֹּחוּ וְלֹא־יָכְלוּ קוּם׃

PSAL. XXXVII. לז

.iniquitatem facientes *in* zelaveris ne ; *malignos in ſuccenſeas* Ne .Davidi
1 לְדָוִד אַל־תִּתְחַר בַּמְּרֵעִים אַל־תְּקַנֵּא בְּעֹשֵׂי עוֹלָה׃
.decident germinis olus ſicut & ; ſuccidentur velociter herba tanquam Quoniam
2 כִּי כֶחָצִיר מְהֵרָה יִמָּלוּ וּכְיֶרֶק דֶּשֶׁא יִבּוֹלוּן׃
.veritatem paſce & , terram habita : bonum fac & , Domino in Spera
3 בְּטַח בַּיהֹוָה וַעֲשֵׂה־טוֹב שְׁכָן־אֶרֶץ וּרְעֵה אֱמוּנָה׃
ſuper Devolve .tui cordis petitiones tibi dabit & ; Domino *ſuper* te delecta Et
4 5 וְהִתְעַנַּג עַל־יְהֹוָה וְיִתֶּן־לְךָ מִשְׁאֲלֹת לִבֶּךָ׃ גּוֹל עַל־
.faciet ipſe & , eo *ſuper* ſpera & ; tuam viam Dominum
יְהֹוָה דַּרְכֶּךָ וּבְטַח עָלָיו וְהוּא יַעֲשֶׂה׃

תרגום TARGUM.

27 יְבוּעוּן וְיֶחְדוּן תָּבְעֵי צִדְקִי וְיֵימְרוּן תְּדִירָא
יִסְנֵי יְקָרָא דַיְיָ דִּצְבֵי שְׁלָמָא דְעַבְדֵיהּ׃
28 וְלִישָׁנִי תְּרַנֵּן צִדְקָתָךְ כּוּלֵּי יוֹמָא תּוּשְׁבַּחְתָּךְ׃

לו

1 2 לְשַׁבָּחָא לְעַבְדָּא דַיְיָ לְדָוִד׃ אָמַר מְרָדָא
לְחַיָּבָא בִּמְצִיעוּת לִבְבִי לֵית דְּחַלְתָּא דַיְיָ
3 לָקֳבֵל עֵינוֹי׃ אֲרוּם שְׁעִיעַ לֵיהּ בְּעֵינוֹי לְמִשְׁכַּח
4 חוֹבִין לְמִסְנֵי אוּלְפָנָא׃ מִלֵּי פוּמֵיהּ רִשְׁעָא
5 וּנְכִילוּ פְּסַק לְמִשְׂכַּל לְאוֹטָבָא׃ רִשְׁעָא
חָשִׁיל עַל שִׁוְיֵהּ יִתְעַתַּד עַל אוֹרַח דְּלָא טָב
6 בִּישׁ לָא יְרַחֵק׃ יְיָ בִּשְׁמֵי שְׁמַיָּא טוּבָךְ הֵימְנוּתָךְ
7 עַד שְׁחָקֵי׃ צִדְקוּתָךְ רָמָא הֵיךְ טוּרַיָּא תַּקִּיפַיָּא
דִּינָךְ עֲמִיקִין הֵיךְ תְּהוֹמָא רַבָּא בְּנֵי נָשָׁא
8 וּבְעִירָא תִּפְרוֹק יְיָ׃ כְּמָה יַקִּיר טוּבָךְ יְיָ וּבְנֵי
9 נָשָׁא בִּטְלַל שְׁכִינְתָּךְ יְשׁוּרוּן לְרוּחְצָן׃ יִתְרַוְּיוּן
כִּדְהֵין בִּרְכְּתָא דְבֵיתָךְ וּמַבּוּעַ בְּסִימוּתָךְ
10 תַּשְׁקִנּוּן׃ אֲרוּם עִמָּךְ טְיָפֵי מַיִן חַיִּין בִּזְיו
11 יְקָרָךְ נֶחֱמֵי נְהוֹרָא׃ נְגוֹד טוּבָךְ עַל יָדְעָךְ
12 וְצִדְקָתָךְ עַל תְּרִיצֵי לִבָּא׃ לָא תְּאַרְעִנַּנִי
רִגְלָא דְגֵיוְתָנָא וִידֵיהוֹן דְּרַשִּׁיעַיָּא לָא
13 תְטַלְטְלִנַּנִי׃ תַּמָּן נְפַלוּ עָבְדֵי שְׁקַר יִדְחֲיוּן וְלָא
יוֹסִיפוּן לְמֵיקָם׃

לז

1 לְדָוִד לָא תִתְגָּרֵג בִּמְבָאֲשִׁין לְמֶהֱוֵי דִּכְוָתְהוֹן
וְלָא תַטְנֵין בְּעָבְדֵי טְלוֹמָא לְמִזְדַוְּגָא עִמְּהוֹן׃
2 מְטוּל דְּסוֹפֵיהוֹן הֵיךְ עִסְבָּא כִּסְרְהוֹבְיָא
3 יִתְמוֹלְלוּן וְהֵיךְ יְרוֹק דִּתְאָה יִנַּתְרוּן׃ רְחֵץ
בְּמֵימְרָא דַיְיָ וַעֲבֵד טָב שְׁרֵי אַרְעָא וַחֲסֵן
4 בְּהֵימָנוּתָא׃ וְתִתְפַּנַּק עַל יְיָ וְיִתֶּן לָךְ מִשְׁאֲלֵי
5 לִבָּךְ׃ גַּלֵּי עַל יְיָ אָרְחָתָךְ וּסְבוֹר עַל מֵימְרֵיהּ
וְהוּא יַעְבֵּד׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Gaudeant & lætentur qui quærunt juſtitiam 27
meam : & dicant jugiter, Magnificetur
gloria Domini, qui vult pacem ſervi ſui. Et 28
lingua mea meditabitur juſtitiam tuam ; tota
die laudem tuam.

Ad canendum ſervo Domini Davidi. 1

PSAL. XXXVI.

Dicit ſcelus impio in medio cordis *mei*, 2
Non eſt timor Domini coram oculis ejus.
Quia blanditur ſibi in oculis ſuis ut inveniat 3
peccata, & odio proſequatur doctrinam.
Verba oris ejus impietas & dolus : 4
deſtitit intelligere, ut benefaceret.
Impietatem cogitat in cubili ſuo : manet in 5
via non bona ; malitiam non execratur.
Domine in cœlis cœlorum bonitas tua : fides 6
tua uſque ad æthera. Juſtitia tua excelſa, 7
ſicut montes fortes ; judicia tua profunda
ſicut abyſſus magna : homines & jumenta
ſalvabis Domine. Quàm precioſa 8
eſt miſericordia tua Dñe! homines autem in
umbra majeſtatis tuæ morabuntur cum fiducia.
Inebriabuntur *quaſi* pinguedine benedictionis 9
domus tuæ ; & de ſcaturigine
dulcedinis tuæ potabis eos. Quoniam apud 10
te ſunt ſtillicidia aquæ viventis: *in ſplendore*
gloriæ tuæ videbimus lumen. Protrahe bonitatem 11
tuam ad cognoſcentes te : & juſtitiam
tuam ad eos qui recti ſunt corde. Ne 12
occurrat in me pes ſuperbi ; & manus impiorum
non *commoveant* me. Ibi ceciderunt 13
operarii falſitatis; impulſi ſunt, nec addunt
ut ſurgant.

Davidi. 1

PSAL. XXXVII.

Ne *exciteris* in malignos ut fias illis ſimilis ;
nec zelaveris in operarios iniquitatis
ut *conjungaris* cum eis. Quoniã finis eorum 2
ſicut herba ; citò ſuccidentur, & tanquam
viriditas herbæ defluent. Confide in 3
verbo Domini, & fac bonum : inhabita
terram, & *fortis eſto* in fide. Et delectare 4
in Domino ; & dabit tibi petitiones cordis
tui. Manifeſta Domino viam tuam : & ſpera 5
in verbo ejus, & ipſe operabitur.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

27 * ܢܫܒܚܘܢ ܘܢܚܕܘܢ ܐܝܠܝܢ ܕܨܒܝܢ ܒܙܟܘܬܝ : ܘܢܐܡܪܘܢ ܒܟܠܙܒܢ ܕܪܒ ܗܘ ܡܪܝܐ. ܕܨܒܐ
28 ܒܫܠܡܐ ܕܥܒܕܗ : * ܘܠܫܢܝ ܢܪܢܐ ܙܕܝܩܘܬܟ. ܘܟܠܗ ܝܘܡܐ ܬܫܒܘܚܬܟ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܠܘ *

1 * ܠܕܘܝܕ ܟܕ ܪܕܦ ܗܘܐ ܠܗ ܫܐܘܠ. ܘܠܢ ܡܟܣܢܘܬܐ
2 ܕܒܥܠܕܒܒܝܢ. ܘܬܘܒ ܡܡܠܠܘܬܐ ܥܠ ܐܠܗܘܬܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܕ. * ܡܬܚܫܒ ܥܘܠܐ ܪܘܫܥܐ
3 ܒܠܒܗ. ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܕܚܠܬܗ ܕܐܠܗܐ ܠܘܩܒܠ ܥܝܢܘܗܝ : * ܡܛܠ ܕܣܢܝܘܗܝ
4 ܒܥܝܢܘܗܝ ܕܢܫܒܘܩ ܚܛܗܘܗܝ ܘܢܣܢܐ ܐܢܝܢ. * ܡܠܐ ܕܦܘܡܗ ܟܐܒܐ ܘܢܟܠܐ : ܘܠܐ ܨܒܐ
5 ܠܡܣܬܟܠܘ ܠܡܛܒܘ. * ܟܐܒܐ ܡܬܚܫܒ ܥܠ ܡܫܟܒܗ : ܘܡܬܢܩܦ ܒܐܘܪܚܐ ܕܠܐ ܫܦܝܪܐ
6 7 ܕܢܣܟܠ. * ܡܪܝܐ ܒܫܡܝܐ ܛܝܒܘܬܟ : ܘܗܝܡܢܘܬܟ ܥܕܡܐ ܠܥܢܢܐ ܕܫܡܝܐ. * ܙܕܝܩܘܬܟ ܐܝܟ ܛܘܪܐ
8 ܕܐܠܗܐ : ܘܕܝܢܝܟ ܐܝܟ ܬܗܘܡܐ ܪܒܐ. ܒܢܝܢܫܐ ܘܒܥܝܪܐ ܦܪܘܩ ܐܢܬ ܡܪܝܐ : * ܡܐ ܣܓܝܐܝܢ
9 ܚܣܕܝܟ ܐܠܗܐ. ܘܒܢܝܢܫܐ ܒܛܠܠܐ ܕܟܢܦܝܟ ܢܬܛܫܘܢ : * ܢܪܘܘܢ ܡܢ ܫܘܡܢܗ ܕܒܝܬܟ.
10 ܘܡܢ ܢܚܠܐ ܕܒܘܣܡܐ ܬܫܩܐ ܐܢܘܢ : * ܡܛܠ ܕܠܘܬܟ ܐܝܬܘܗܝ ܡܒܘܥܐ ܕܚܝܐ ܗܘ. ܘܒܢܘܗܪܟ ܗܘ
11 12 ܚܙܝܢ ܢܘܗܪܐ : * ܢܛܪ ܚܣܕܝܟ ܠܩܪܝܒܝܟ. ܘܙܕܝܩܘܬܟ ܠܬܪܝܨܝ ܠܒܐ : * ܠܐ ܬܐܬܐ ܥܠܝܢ ܪܓܠܐ
13 ܕܥܫܝܢܐ : ܘܐܝܕܝܗܘܢ ܕܪܫܝܥܐ ܠܐ ܢܙܝܥܘܢ : * ܡܛܠ ܕܬܡܢ ܢܦܠܘ ܟܠ ܦܠܚܝ ܫܘܩܪܐ.
ܐܬܬܪܝܘ ܘܠܐ ܡܫܟܚܝܢ ܠܡܩܡ. * ܫܘܒܚܐ ܘܫܘܪܝܐ ܕܡܣܩܬܐ *

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܠܙ *

1 * ܠܕܘܝܕ. ܡܛܠ ܐܝܠܝܢ ܕܐܡܪܝܢ ܕܠܐ ܡܢܐ ܠܐ ܬܒܥ ܐܠܗܐ ܡܢ ܡܪܚܢܐ. ܦܬܓܡܐ ܡܛ.
2 ܠܐ ܬܛܢ ܒܒܝܫܐ. ܘܠܐ ܬܗܪ ܒܥܒܕܝ ܥܘܠܐ : * ܡܛܠ ܕܐܝܟ ܥܡܝܪܐ ܥܓܠ ܢܝܒܫܘܢ.
3 ܘܐܝܟ ܝܘܪܩܐ ܕܬܕܐܐ ܢܬܝܒܫܘܢ : * ܣܒܪ ܒܐܠܗܐ ܘܥܒܕ ܛܒܬܐ. ܥܡܪ ܒܐܪܥܐ ܘܒܥܝ
4 5 ܗܝܡܢܘܬܐ : * ܣܒܪ ܒܡܪܝܐ ܘܢܬܠ ܠܟ ܫܐܠܬܗ ܕܠܒܟ. * ܐܪܬܨ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܐܘܪܚܟ
ܘܣܒܪ ܒܗ : ܘܗܘ ܢܥܒܕ.

Laudes canant & gaudeant qui volunt victoriam 27
meam, dicantque omni tempore quòd
magnus eſt Dñs, qui gratam habuit pacem 28
ſervi ſui. Et lingua mea fatebitur juſtitiam
tuam, totâque die laudes tuas.

PSAL. XXXVI.

Davidis: Quum ſectaretur eum Saul. Nobis 1
autem objurgatio inimicorum noſtrorum.
Ac præterea ſermo de Deitate. Verſus 24.

Contemplatur iniquus flagitium in corde 2
ſuo, quia non eſt timor Dei ante oculos
ejus : Quia exoſum eſt in oculis ejus relinquere 3
peccata ſua, & odiſſe illa. Sermo oris 4
ejus dolor eſt atque fraus, nec vult agere
bonum. Dolorem cogitat ſuper cubile ſuum, 5
& incedit per viam quæ nequaquam bona
eſt, ut delinquat. Domine, in cœlo miſericordiæ 6
tuæ, & fides tua uſque ad cœlos
cœli. Juſtitia tua ſicut montes, O Deus, & 7
judicia tua ſicut abyſſus magna : homines &
jumenta ſalvas tu, Domine. Quàm multæ 8
miſericordiæ tuæ, Deus. Et filii hominum
umbrâ alarum tuarum protegentur. Inebriabuntur 9
pinguedine domûs tuæ, & de
torrente tuo ſuavi potabis eos : Quoniam 10
fons vitæ tecum eſt, & per lumen tuum videmus
lumen. Cuſtodi miſericordiam tuam 11
vicinis tuis, & juſtitiam tuam rectis corde.
Ne adducas ſuper nos pedem fortem, & manus 12
ſceleratorum ne moveat nos. Quoniam 13
ibi cadunt omnes operantes falſitatem : corruunt,
nec valent ſurgere.

Laus, & initium gradûs.

PSAL. XXXVII.

Davidis. De iis qui dicunt, Qua de re non 1
ſumit Deus vindictam de inſolentibus.
Verſ. 49.

Ne invideas ſceleſtis, neque zeleris facientes 2
iniquitatem. Quoniam ſicut feſtucæ
confeſtim areſcunt, & ſicut olus viride
exiccantur. Spera in Deo & fac bonum : 3
habita in terra, & quære fidem : Spera in 4
Domino, & dabit tibi petitionem cordis tui:
Dirige coram Domino viam tuam, & ſpera 5
in eo, & ipſe faciet :

Verſio VULG. LAT.

27 Exultent & lætentur qui volunt juſtitiā
meam: & dicant ſemper; Magnificetur
28 Dominus, qui volunt pacē ſervi ejus. Et
lingua mea meditabitur juſtitiam tuā, to-
tâ die laudem tuam.

1 In finem, ſervo Domini ipſi David. XXXV.

2 DIxit injuſtus ut delinquat in ſemet-
ipſo : non eſt timor Dei ante ocu-
3 los ejus. Quoniā doloſè egit in conſpe-
ctu ejus : ut inveniatur iniquitas ejus ad
4 odium. Verba oris ejus iniquitas, & do-
5 lus: noluit intelligere ut benè ageret. In-
iquitatē meditatꝰ eſt in cubili ſuo: aſti-
tit omni viæ non bonæ, malitiā autē non
6 odivit. Domine, in cœlo miſericordia
7 tua: & veritas tua uſque ad nubes. Ju-
ſtitia tua ſicut montes Dei : judicia tua
abyſſus multa. Homines & jumenta ſal-
8 vabis, Domine: Quemadmodū multipli-
câſti miſericordiā tuā, Deus. Filii autē
hominū, in tegmine alarū tuarū ſpera-
9 bunt. Inebriabuntur ab ubertate do-
mûs tuæ: & torrente voluptatis tuæ po-
10 tabis eos. Quoniā apud te eſt fons vi-
tæ: & in lumine tuo videbimus lumen.
11 Prætende miſericordiā tuā ſcientibus te,
& juſtitiā tuā his, qui recto ſunt corde.
12 Non veniat mihi pes ſuperbiæ: & ma-
13 nus peccatoris non moveat me. Ibi ce-
ciderunt qui operantur iniquitatē : ex-
pulſi ſunt, nec potuerunt ſtare.

1 Pſalmus ipſi David. XXXVI.

NOli æmulari in malignantibus: neq;
2 zelaveris facientes iniquitatē. Quoniam
tanquàm fœnum velociter areſcent : &
quemadmodùm olera herbarum citò de-
3 cident. Spera in Domino, & fac bonita-
tem: & inhabita terram, & paſcêris in
4 divitiis ejus. Delectare in Domino: &
5 dabit tibi petitiones cordis tui. Revela
Domino viam tuam, & ſpera in eo: &
ipſe faciet.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

27 †(α)Ἀγαλλιάσαιντο καὶ εὐφρανθείησαν †(β) οἱ θέλοντες τὴν δικαιοσύνην μου, †καὶ εἰπάτωσαν διαπαντός, (γ)Μεγαλυνθείη ὁ κύριος, †οἱ θέλοντες
28 τὴν εἰρήνην τοῦ δούλου αὐτοῦ. † Καὶ ἡ γλῶσσά μου μελετήσει τὴν δικαιοσύνην σου, † ὅλην τὴν ἡμέραν τὸν ἔπαινόν σου.

MS. A. (α)Ἀγαλλιάσοιντο, (β)ἐπὶ σοὶ οἱ θέλοντες (γ) Μεγαλυνθήτω

1 Εἰς τὸ τέλος, τῷ (α) δούλῳ κυρίου τῷ Δαυίδ. λϛ΄.

2 †ΦΗσὶν ὁ παράνομος τοῦ ἁμαρτάνειν ἐν ἑαυτῷ, †οὐκ ἔστι φόβος θεοῦ ἀπέναντι τῶν ὀφθαλμῶν αὐ-
3 τοῦ. †Ὅτι ἐδόλωσεν ἐνώπιον αὐτοῦ, † τοῦ εὑρεῖν
4 τὴν ἀνομίαν αὐτοῦ καὶ μισῆσαι. †Τὰ ῥήματα τοῦ στόματος αὐτοῦ ἀνομία καὶ δόλος, † οὐκ ἠβου-
5 λήθη συνιέναι τοῦ ἀγαθῦναι. †Ἀνομίαν (β)ἐλογίσατο ἐπὶ τῆς κοίτης αὐτοῦ, † παρέστη πάσῃ ὁδῷ
6 οὐκ ἀγαθῇ, †(γ)τῇ δὲ κακίᾳ οὐ προσώχθισε. † Κύριε ἐν τῷ οὐρανῷ τὸ ἔλεός σου, † καὶ ἡ ἀλήθειά
7 σου ἕως τῶν νεφελῶν. † Ἡ δικαιοσύνη σου ὡς ὄρη θεοῦ, † τὰ κρίματά σου (δ) ὡσεὶ ἄβυσσος πολ-
8 λή. † ἀνθρώπους καὶ κτήνη σώσεις κύριε, † Ὡς ἐπλήθυνας τὸ ἔλεός σου ὁ θεός· †(ε)οἱ δὲ υἱοὶ τῶν ἀνθρώπων ἐν σκέπῃ τῶν πτερύγων σου ἐλπιοῦσι.
9 † Μεθυσθήσονται ἀπὸ πιότητος οἴκου σου, †καὶ τὸν
10 χειμάρρουν τῆς τρυφῆς σου ποτιεῖς αὐτούς. †Ὅτι παρὰ σοὶ πηγὴ ζωῆς, † ἐν τῷ φωτί σου ὀψόμεθα
11 φῶς. † Παράτεινον τὸ ἔλεός σου τοῖς γινώσκουσί σε, † καὶ τὴν δικαιοσύνην σου τοῖς εὐθέσι τῇ
12 καρδίᾳ. † Μὴ (ζ) ἐλθέτω μοι ποὺς ὑπερηφανίας,
13 † καὶ χεὶρ (η) ἁμαρτωλῶν μὴ σαλεύσαι με. † Ἐκεῖ (θ) ἔπεσον πάντες οἱ ἐργαζόμενοι τὴν ἀνομίαν, † ἐξώσθησαν καὶ οὐ μὴ δύνωνται στῆναι.

MS. A. (α) Δαυίδ ψαλμός. (β) διελογίσατο (γ) κακίᾳ δὲ οὐ (δ) ἄβυσσος πολλή. (ε) οἱ δὲ οἱ (ζ) ἐλθέτω (η) ἁμαρτωλοῦ μὴ σαλεύσει με. (θ) ἔπεσαν

1 (α) Τῷ Δαυίδ. λϛ΄.

†ΜΗ' παραζήλου ἐν πονηρευομένοις, † μη-
2 δὲ ζήλου τοὺς ποιοῦντας τὴν ἀνομίαν. †Ὅτι ὡσεὶ χόρτος ταχὺ ἀποξηρανθήσονται, † καὶ ὡσεὶ λά-
3 χανα χλόης ταχὺ ἀποπεσοῦνται. † Ἔλπισον ἐπὶ κύριον, καὶ ποίει χρηστότητα, † καὶ κατασκήνου τὴν
4 γῆν, καὶ (β)ποιμανθήσῃ ἐπὶ τῷ πλούτῳ αὐτῆς. †Κατατρύφησον τοῦ κυρίου, καὶ (γ) δώσει σοι τὰ αἰτή-
5 ματα τῆς καρδίας σου. † Ἀποκάλυψον πρὸς κύριον τὴν ὁδόν σου, † καὶ ἔλπισον ἐπ' αὐτόν, καὶ αὐτὸς ποιήσει.

MS. A. (α) Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. (β) ποιμανθήσει (γ) δώη

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

31 Exultent, & lætentur, qui volunt juſtitiam meam : & dicant ſemper, Magnificetur Dominus, qui volunt pacem ſervi ejus. 27
32 Et lingua mea meditabitur juſtitiam tuam, totâ (ff) die laudem (gg) tuam. 28

(a) In finem, ſervo Domini Davidi. XXXV. 1

1 DIXIT (b) injuſtus, ut delinquat in ſemetipſo : non eſt timor Dei ante oculos ejus. 2 2 Quoniam doloſe egit [a] in conſpectu ejus ; ut (c) inveniret iniquitatem ſuam, & odiſſet. 3 3 Verba oris ejus iniquitas, & dolus : noluit intelligere, ut benè ageret. 4 4 Iniquitatem meditatus eſt in cubili ſuo : aſtitit omni viæ non bonæ : (d) [b] malitiam autem non odivit. 5 5 Domine, in cœlo miſericordia tua : & veritas [c] tua (e) uſque ad nubes. 6 6 Juſtitia (f) tua, ſicut montes Dei ; judicia tua (g) ſicut abyſſus multa. 7 7 Homines & jumenta ſalvabis, Domine : (h) Quemadmodū multiplicâſti miſericordiam tuam, Deus. 8 8 Filii autem hominum (i) in tegmine alarum tuarum ſperabunt ; 9 9 Inebriabuntur ab ubertate domûs tuæ : & (k) torrentem voluptatis tuæ potabis eos. 10 10 Quoniam apud te eſt fons vitæ : in lumine tuo videbimꝰ lumen. 11 11 [d] Prætende miſericordiam tuam ſcientibus te, & juſtitiam (l) tuam iis qui recto ſunt corde. 12 12 Non veniat mihi pes ſuperbiæ : & manus peccatorum non moveat me. 13 13 Ibi ceciderunt (m) omnes, qui operantur iniquitatem : expulſi ſunt, & non potuerunt ſtare.

Ipſi David. XXXVI. 1

NOLI (a) æmulari in malignantibus : neque zelaveris facientes iniquitatem. 2 2 Quoniam, tanquam fœnum, velociter areſcent : & quemadmodùm [a] olera (b) herbarum, citò decident. 3 Spera in Domino, & fac bonitatem, & [b] inhabita terram : & paſcêris in divitiis ejus. 3 4 Delectare in Domino : & dabit tibi petitiones cordis tui. 4 5 Revela ad (d) Dominum viam tuam : & ſpera in eo, & ipſe faciet. 5

Verſio ÆTHIOPICA.

ለይትፈሥሑ ፡ ወይትሐሠዩ ፡ እለ ፡ ይፈቅድ 31
ዋ ፡ ለጽድቅየ ፡፡ ወይበሉ ፡ በኵሉ ፡ ጊዜ ፡ ለዐቢ
ይ ፡ እግዚአብሔር ፡፡ እለ ፡ ይፈቅዱ ፡ ሰላመ ፡
ገብርከ ፡፡ ልሳንየ ፡ ያነብብ ፡ ጽድቀከ ፡ 32
ወኵሎ ፡ አሚረ ፡ ስብሐቲከ ፡፡

ፍጻሜ ፡ ዘገብረ ፡ እግዚአብሔር ፡
ዘደዊት ፡፡

ሀኬ ይነብብ ፡ ኃጥእ ፡ በዘ ፡ ያስሕት ፡ ርእሶ ፡፡ 1
ወአልቦ ፡ ፍርሀተ ፡ እግዚአብሔር ፡ ቅድመ ፡
አዕይንቲሁ ፡፡ እስመ ፡ ፀልሐወ ፡ በልሳኑ ፡፡ 2
ሶበ ፡ ትረክቦ ፡ ኃጢአቱ ፡ ይጸልእ ፡፡
ቃለ ፡ አፈሁ ፡ ዐመፃ ፡ ወጕሕሉት ፡፡ ወኢፈ 3
ቀደ ፡ ይለቡ ፡ ከመ ፡ ያሠኒ ፡፡ ወሐለየ ፡ 4
ዐመፃ ፡ በውስተ ፡ ምስካቡ ፡፡ ወቆመ ፡ በፍ
ኖተ ፡ እንተ ፡ በኵሉ ፡ ኢኮነት ፡ ሠናይተ ፡፡
ወኢተሀከያ ፡ ለእኪት ፡፡ እግዚኦ ፡ 5
በሰማይ ፡ ሣህልከ ፡፡ ወጽድቅከኒ ፡ እስከ ፡
ደመናት ፡፡ ወርትዕከኒ ፡ ከመ ፡ አድባረ ፡ 6
እግዚአብሔር ፡፡ ኵነኔከ ፡ ዕሙቅ ፡ ጥ
ቀ ፡፡ ሰብአ ፡ ወእንስሳ ፡ ታድኅን ፡ እግ 7
ዚኦ ፡፡ በከመ ፡ አብዛኅከ ፡ ምሕረተከ ፡
እግዚኦ ፡፡ ደቂቀ ፡ እጓለ ፡ እመሕያ 8
ው ፡ ወይትዌከሉ ፡ በታሕተ ፡ ክነፊከ ፡፡
ወይረውዩ ፡ እምጠለ ፡ ቤትከ ፡፡ ወትሰቂዮ 9
ሙ ፡ እምፈለገ ፡ ትፍሥሕትከ ፡፡ እ 10
ስመ ፡ እምኀቤከ ፡ ነቅዐ ፡ ሕይወት ፡፡ በብ
ርሃንከ ፡ ንሬኢ ፡ ብርሃነ ፡፡ ስፋሕ ፡ ምሕ 11
ረተከ ፡ እግዚኦ ፡ ላዕለ ፡ እለ ፡ ያአምሩከ ፡፡
ወጽድቅከኒ ፡ ለርቱዓነ ፡ ልብ ፡፡ ኢይም 12
ጽአኒ ፡ እግረ ፡ ትዕቢት ፡፡ ወእደ ፡ ኃጥእ ፡ ኢ
ይሁከኒ ፡፡ ህየ ፡ ወድቁ ፡ ኵሎሙ ፡ ገበር 13
ተ ፡ ዐመፃ ፡፡ ይሰደዱ ፡ ወኢይክሉ ፡ ቀዊመ ፡፡

ዘደዊት ፡፡

ሀኬ ኢትቅናዕ ፡ ላዕለ ፡ እኩያን ፡፡ ወኢት 1
ቅናዕ ፡ ላዕለ ፡ ገበርተ ፡ ዐመፃ ፡፡ እስ 2
መ ፡ ከመ ፡ ሣዕር ፡ ፍጡነ ፡ ይየብሱ ፡፡ ወከመ ፡
ኀመልማለ ፡ ሐምል ፡ ፍጡነ ፡ ይወድቁ ፡፡
ተወከል ፡ በእግዚአብሔር ፡ ወግበር ፡ ሠና 3
የ ፡፡ ወየኀድረከ ፡ ደበ ፡ ምድር ፡፡ ወይሬ
እየከ ፡ ደበ ፡ ብዕሉ ፡፡ ተፈሣሕ ፡ በእግ 4
ዚአብሔር ፡ ወይሁበከ ፡ ስእለተ ፡ ልብከ ፡፡
ክሥት ፡ ለእግዚአብሔር ፡ ፍኖተከ ፡፡ ወ 5
ተወከል ፡ ቦቱ ፡ ውእቱ ፡ ይገብር ፡ ለከ ፡፡

INTERP. ÆTHIOP. PSAL. xxxv. [a] linguâ ſuâ; cùm invenitur iniquitas ejus, odit. [b] neque tædet eum malitiæ. [c] etiam tua [d] Extende miſericordiam tuam, Domine, PSAL. xxxvi. [a] Olus viride, citò [b] inhabitare te faciet ſuper terram, & paſcet te divitiis

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

27 * يبتهج ويسر الذين يهوون بري * وليقولوا في كل حين ليعظم الرب * الذين يريدون سلامة
28 عبدك * لساني يتلوا عدلك وتمجيدك النهار كله * الليلويا *

1 * المزمور الخامس والثلثون * مسالة طالوت اياه وكيف اعطاه
العهود وفيه تبكيت المنافقين وذكر الاهوت * وعدده * كو * استيخن *

2 3 * يقول مخالف الناموس انه يخطي في ذاته * وليس خوف الله امام عينيه * لانه صنع الغش
4 5 قدامه * لما وجد خطيته وابغضها * كلام فيه اثم ودغل * لم يرد ان يفهم ليعمل الخير * فكر في
6 الاثم على مضجعه * ووقف في كل طريق غير صالحة * ولم يثقل عليه الشر * يا رب في السماء
7 رحمتك * وبرك ينتهي الى السحاب * عدلك مثل جبال الله * احكامك مثل اللجج العميقة * الناس
8 والبهايم انت تخلصهم * يا رب * مثلما اكثرت رحمتك * يا الله وبنو البشر بظلال كنفك
9 10 يستترون * ومن دسم بيتك يشبعون * ومن وادي نعيمك يشربون * لان ينبوع الحياة عندك *
11 12 بنورك نعاين النور * ابسط رحمتك على الذين يعرفونك * وعدلك لمستقيمي القلوب * لا
13 تطاني ارجل المتعظمين * ولا تزعزعني ايدي الخاطيين * لان هناك سقط عاملوا الاثم ابعدوا
فلم يستطيعوا القيام * الليلويا * * المزمور السادس والثلثون *

1 * موعظة وتعليم * وعدده كز استيخن * لا تغاير فاعلي الشر * ولا تغاير صانعي
2 3 الاثم * لانهم مثل العشب سريعا يجفون * ومثل البقل الاخضر عاجلا يذبلون * توكل على الرب
4 واصنع الخير * واسكن على الارض وارع على غناها * افرح بالرب فيعطيك مطلوبات قلبك
5 * اكشف سبلك للرب وتوكل عليه * وهو يصنع لك *

Exultent et lætentur qui volunt juſtitiam meā: & dicant in omni momento, Magnificetur Dominꝰ, qui cupiunt ſalutē ſervi tui. 27
Lingua mea meditatur æquitatem tuā, & glorificationem tuam die totâ. Alleluja. 28

PSAL. XXXV.

Petente eum Saule. Et quomodo inierit cum eo fœdera. Præterea continetur in eo objurgatio in ſceleſtos, & mentio Divinitatis. Et numerus ver. 26. 1

DIcit refractarius legis peccatum ſe intra ſemetipſum, & non eſt timor 2 Dei ante oculos ejus ; Quia dolum egit in 3 conſpectu ejus, quando invenit peccatum ſuum & odivit illud. Sermo oris ejus ini- 4 quitas & dolus ; noluit intelligere, ut faceret bonum. Architectatus eſt iniquita- 5 tem ſuper cubili ſuo. Stetit in omni via non bona, & non fuit oneroſum ei flagitium. O Domine, in cœlo miſericordia tua, 6 & juſtitia tua pervenit ad nubes ; Æqui- 7 tas tua veluti montes Dei: judicia tua veluti abyſſi profundæ. Hominum & jumentorum tu es Salvator, O Domine ; Quo 8 pacto multiplicâſti miſericordiam tuam, O Deus ! Quinetiam filii hominum ſub umbra alæ tuæ protegentur, Et deliciis 9 domûs tuæ ſaturabuntur, & de torrente voluptatis tuæ bibent. Quoniam fons 10 vitæ apud te eſt, per lumen tuum videbimus lumen. Extende miſericordiam tuam 11 in eos, qui te cognoſcunt : & juſtitiam tuam in rectos cordibus. Non terrebunt 12 me pedes ſuperborum, neque tremefacient me manus peccatorum. Quoniam ibi ceci- 13 derunt operantes iniquitatem: amoti ſunt, & non potuerunt ſurgere. Alleluja.

PSAL. XXXVI.

Admonitio, & documentum. Et numerus ver. 27. 1

NE æmuleris operantes malum, & ne invideas facientibus iniquitatem : Quoniam ipſi veluti herba velociter a- 2 reſcent, & tanquam olus viride citò marceſcent. Confide in Domino, & fac bonū: 3 & habita in terra, & paſcere divitiis ejus. Letare in Domino, & largietur ti- 4 bi optata cordis tui. Detege ſemitas tuas 5 Domino, et confide in eo, et ipſe faciet tibi.

תהלים ׃ לז

Tace .meridiem ſicut *tuum judicium* & ; tuam juſtitiam lumen ſicut educet Et

6 והוציא כאור צדקך ומשפטך כצהרים ׃ דום 7

facientem virum in ; ſuam viam ſecundantem in ſuccenſeas ne ,*eum expecta* & , Domino

ליהוה והתחולל לו אל־תתחר במצליח דרכו באיש עשה

,*ſuccenſeas* ne ; *excandeſcentiam* relinque & , *naſo à* Remitte .*verſutias*

8 מזמות ׃ הרף מאף ועזב חמה אל־תתחר

expectantes & ; excidentur maligni Quoniam .malefaciendum ad veruntamen

9 אך־להרע ׃ כי מרעים יכרתון וקוי

;impius non &,paululum adhuc Et .terram accipient hæreditate ipſi Dominum

10 יהוה המה יירשו־ארץ ׃ ועוד מעט ואין רשע

,terram capient hæreditate humiles Et .*ipſe* non & ,ejus locum *ſuper adverte* &

11 והתבוננת על־מקומו ואיננו ׃ וענוים יירשו־ארץ

; juſtum contra impius *Machinans* .pacis multitudine *ſuper* delectabuntur &

12 והתענגו על־רב שלום ׃ זמם רשע לצדיק

quòd vidit quia ; ei ridebit Dominus .ſuis dentibus eum *ſuper frendens* &

13 וחרק עליו שניו ׃ אדני ישחק־לו כי ראה כי־

projiciendum ad,ſuum arcum tetenderunt & ,impii *ſolverunt* Gladium .ejus dies veniet

14 יבא יומו ׃ חרב פתחו רשעים ודרכו קשתם להפיל

ingredietur eorum Gladius .via rectos *mactandum ad* ; *egenum &* , *afflictum*

15 עני ואביון לטבוח ישרי־דרך ׃ חרבם תבוא

copia præ juſto paululum *Bonum* .confringentur eorum arcus & ; eorū cor *in*

16 בלבם וקשתותם תשברנה ׃ טוב מעט לצדיק מהמון

ſuſtentans & ; confringentur impiorum brachia Quia .*magnorum* impiorum

17 רשעים רבים ׃ כי זרועות רשעים תשברנה וסומך

eorū hæreditas & ; perfectorū dies Dominus *Sciens* .Dominus juſtos

18 צדיקים יהוה ׃ יודע יהוה ימי תמימם ונחלתם

famis diebus in & ; malo tempore in afficientur pudore Non .erit ſeculum in

19 לעולם תהיה ׃ לא יבשו בעת רעה ובימי רעבון

; *agnorum precioſitas* ſicut Domini inimici &,peribunt impii Quia .ſaturabuntur

20 ישבעו ׃ כי רשעים יאבדו ואיבי יהוה כיקר כרים

; *reddet* non & , impius *accipiens* Mutuum .defecerunt *fumo in* ,defecerunt

21 כלו בעשן כלו ׃ לוה רשע ולא ישלם

; terram accipient hæreditate *ejus* benedicti Quia .*dans &* ,*miſereſcens* juſtus *&*

22 וצדיק חונן ונותן ׃ כי־מברכיו יירשו ארץ

ejꝰ viam & , *firmantur* hominis greſſus Domino A .excidentur *ejus* maledicti &

23 ומקלליו יכרתו ׃ מיהוה מצעדי־גבר כוננו ודרכו

.ejus manum *ſuſtentans* Dominus quia ; *protelabitur* non , ceciderit Cùm .volet

24 יחפץ ׃ כי־יפל לא־יוטל כי יהוה סומך ידו ׃

ejus ſemen *&* ; derelictum juſtum vidi non & , ſenui etiam , fui Puer

25 נער היתי גם־זקנתי ולא־ראיתי צדיק נעזב וזרעו

.benedictionē in ejus ſemē & ; *mutuans & miſerans* die Omni .panem quærens

26 מבקש־לחם ׃ כל־היום חונן ומלוה וזרעו לברכה ׃

;judicium *diligens* Dominus Quia .ſeculum in *habita* & ; bonum fac & ,malo à Recede

27 28 סור מרע ועשה־טוב ושכן לעולם ׃ כי יהוה אהב משפט

impiorum ſemen & ; cuſtodientur ſeculū in : ſuos miſericordes derelinquet non &

ולא־יעזב את־חסידיו לעולם נשמרו וזרע רשעים

.eam ſuper ſeculum in habitabunt & ; terram accipiēt hæreditate Juſti .ſuccidetur

29 נכרת ׃ צדיקים יירשו־ארץ וישכנו לעד עליה ׃

תרגום TARGUM.

ויפוק היך נהורא צדקך ודינך היך טיהרא ׃ 6

שתוק קדם יי ואוריך ליה לא תתגרג 7

ברשיעא דמצלח אורחיה בגברא דעבד עיצת

חטאין ׃ אוריך מרגיז ושבוק רתחא לא 8

תתגרג ברם לאבאשא ׃ מטול דמבאשין 9

ישתיצון ודסברין במימרא דיי הנון ירתון

ארעא ׃ ותוב כזעיר וליתרשיעא ותתבין על 10

אתריה וליתוי ׃ וענותנין ירתון ארעא 11

ויתפנקון על סגיעות שלמא ׃ חשב רשיעא 12

ביש על צדיקא ומעסי עלוי ככוי ׃ יי יגחך 13

עלוי ארום חמא ארום על יומא דתבירה ׃

חרבא שליפו רשיעיא ומתחו קשתהון 14

למקטול עניי וחשיכי למכוס תריצי אורחא ׃

סיפהון תיעול בלבהון וקשתתהון יתברון ׃ טב 15 16

קדם יי זעירות צדיקיא מרכפת רשיעין

סגיעין ׃ ארום דרועי דרשיעיא יתברון 17

ותמיך צדיקיא מימרא דיי ׃ ידיעין קדם 18

יי יומיהון דשלמין ואחסנתהון לעלם תהי ׃

לא יבהתון בעדן בישתא וביומי אולצנא 19

סבעין ׃ ארום רשיעיא ייבדון ובעלי דבביא 20

דיי היך יקר פלגיסין דמן אולא מתפטמין

וסופיהון מתנכסין היכנא רשיעי יסופון

ובתנן גהנם יגמרון ׃ מוזיף רשיעא ולא 21

פרע וצדיק מחיס ויהב ׃ מטול דמתברכין 22

במימרא ירתון ארעא ודמתלטטין במותא

ישתיצון ׃ מן קדם יי פסיעתוי דגברא 23

מתקנן ואורחתיה יתרעי ׃ ארום יפול 24

מרע לא ימות מטול דיי סעד בידיה ׃ טלי 25

הוית ברם סיבית לא חמית צדיקא שביקא

ובנוי תבעין לחמא מחוסרנא ׃ מן בגלל 26

דכל יומא חיס ומוזיף ודרעיה לברכתא ׃ סטי 27

מביש ועבד טיבו ושרי לחיי עלמא ׃ ארום 28

יי רחם דינא ולא ישבוק ית חסידוי לעלם

מנטרין ובניהון דרשיעיא ישתצון ׃ צדיקיא 29

יחסנון ארעא וישרון לעלמין עלה ׃

PARAPH. CHALD. Verſ Lat.

Et *exibit* ſicut *lux juſtitia tua* ; & judicia 6 tua ſicut *meridies*. Tace coram Domino, 7 & expecta eum : ne *excites* [*teipſum*] *in* impium proſperam viam ſuam reddentem ; hominem exequentem conſilium peccatorum. Procul ſis ab iracundia, & miſſum 8 fac furorem : ne *incitatus* fueris ut nequiter facias. Quoniam qui nequiter agunt, 9 exterminabuntur : & qui confidunt in verbo Domini, ipſi hæreditabunt terram. Et 10 adhuc modicum, & non erit impius : & intendes ad locum ejus, & non erit. Et 11 mites hæreditabunt terram, & delectabuntur in multitudine pacis. Cogitat impius 12 malum adverſus juſtum : & frendet ſuper eum dentibus ſuis. Dominus ſubſannabit 13 eum ; quoniam proſpicit, quòd adventet dies contritionis ipſius. Gladium evaginaverunt impii, & tetenderunt arcum ſuum 14 ut interficiant egenos & obſcuros, ut mactent rectos via. Gladius eorum penetret 15 in cor eorum : & arcus eorum confringantur. Melius eſt coram Domino modicum 16 juſti, quàm divitiæ peccatorum multæ. Quoniam brachia impiorum confringentur : 17 ſuſtentat autem juſtos *Verbum Domini*. 18 *Cogniti ſunt coram Domino* dies perfectorū; & hæreditas eorum in æternum erit. Non 19 confundentur in tempore malo ; & in diebus famis ſaturabuntur. Quoniam impii 20 peribunt & auctores inimicitiæ Domini, ſicut gloria vervecum, *qui primùm impinguantur, ac* tandem jugulantur ; ſic impii deficient, & in fumo gehennæ conſumentur. Mutuat impius & non reddit ; juſtus 21 verò miſeretur, & donat. Propterea qui 22 benedicuntur in verbo [*ejus*,] hæreditabunt terram: & qui maledicuntur in *morte* excidentur. A præſentia Domini greſſus 23 hominis diriguntur : & via ejus grata erit. Et ſi ceciderit in infirmitatē, non morietur: 24 quoniam Dominus ſuſtinet eum manu. Puer fui, nunc autem ſenui, & non vi- 25 di juſtum derelictum : nec filios ejus quærentes panem præ inopia. Propterea quod 26 tota die miſeretur, & commodat : et ſemen ejus in benedictione. Recede à *ma-* 27 *lo*, et operare bonum : ut habites in *vita ſempiterna*. Quoniam Dominus amat ju- 28 dicium ; et non deſeret *miſericordes* ſuos; in æternum cuſtodientur : et filii impiorum exterminabuntur. Juſti hæredita- 29 bunt terram, et habitabunt in ſecula ſuper eam.

Verſio SYRIACA. cum Interpretatione LATINA.

6 * ܘܢܦܩ ܐܝܟ ܢܘܗܪܐ ܙܕܝܩܘܬܟ܂ ܘܕܝܢܟ ܐܝܟ ܛܗܪܐ ܀ * ܒܥܝ ܡܢ ܡܪܝܐ ܘܨܠܝ ܩܕܡܘܗܝ܂

7 ܘܠܐ ܬܛܢ ܒܓܒܪܐ ܕܥܒܕ ܥܘܠܐ ܕܡܨܠܚܐ ܐܘܪܚܗ ܀ * ܫܠܝ ܡܢ ܚܡܬܐ ܘܐܬܬܢܝܚ 8

9 ܡܢ ܪܘܓܙܐ܂ ܘܠܐ ܬܛܢ ܠܡܥܒܕ ܒܝܫܬܐ ܀ * ܡܛܠ ܕܒܝܫܐ ܢܣܬܝܦܘܢ܂ ܘܐܝܠܝܢ ܕܡܣܒܪܝܢ

10 ܒܡܪܝܐ ܢܐܪܬܘܢ ܐܪܥܐ ܀ * ܒܙܒܢܐ ܕܙܥܘܪ ܬܒܥܐ ܠܗ ܠܒܝܫܐ ܘܠܐ ܗܘܐ܂ ܘܬܚܪ ܐܬܪܗ

11 ܘܠܐ ܡܫܬܟܚ ܀ * ܘܡܣܟܢܐ ܢܐܪܬܘܢ ܐܪܥܐ܂ ܘܢܬܒܣܡܘܢ ܒܣܓܝܐܘܬ ܫܝܢܐ ܀

12 * ܡܬܚܡܬ ܥܘܠܐ ܥܠ ܙܕܝܩܐ܂ ܘܡܚܪܩ ܫܢܘܗܝ ܥܠܘܗܝ ܀ * ܘܡܪܝܐ ܢܓܚܟ ܒܗ܂ 13

14 ܡܛܠ ܕܚܙܐ ܕܐܬܐ ܝܘܡܗ ܀ * ܣܝܦܐ ܫܡܛܘ ܥܘܠܐ ܘܡܬܚܘ ܩܫܬܐ܂ ܕܢܩܛܠܘܢ

15 ܠܡܣܟܢܐ ܘܠܒܝܫܐ ܀ ܘܠܐܝܠܝܢ ܕܬܪܝܨܢ ܐܘܪܚܬܗܘܢ܂ * ܣܝܦܗܘܢ ܬܥܘܠ ܒܠܒܗܘܢ ܀

16 ܘܩܫܬܬܗܘܢ ܢܬܬܒܪܢ܂ * ܛܒ ܩܠܝܠ ܠܙܕܝܩܐ ܀ ܡܢ ܩܢܝܢܐ ܣܓܝܐܐ ܕܥܘܠܐ܂ * ܡܛܠ 17

18 ܕܕܪܥܝܗܘܢ ܕܪܫܝܥܐ ܢܬܬܒܪܘܢ ܀ ܘܣܡܟ ܠܙܕܝܩܐ ܡܪܝܐ܂ * ܘܝܕܥ ܡܪܝܐ ܝܘܡܬܗܘܢ ܕܬܡܝܡܐ ܀

19 ܘܝܪܬܘܬܗܘܢ ܠܥܠܡ ܬܗܘܐ܂ * ܠܐ ܢܒܗܬܘܢ ܒܫܥܬܐ ܒܝܫܬܐ ܀ ܘܒܝܘܡܬܐ ܕܟܦܢܐ ܢܣܒܥܘܢ܂

20 * ܡܛܠ ܕܪܫܝܥܐ ܐܒܕܝܢ ܀ ܘܒܥܠܕܒܒܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܡܦܛܡܐ ܐܟܠܝܢ܂ ܘܐܝܟ ܬܢܢܐ ܫܠܡܝܢ ܀

21 * ܡܘܙܦ ܪܫܝܥܐ ܘܠܐ ܦܪܥ܂ ܘܙܕܝܩܐ ܡܪܚܡ ܘܝܗܒ ܀ * ܦܘܣܩܐ * * ܡܛܠ ܕܡܒܪܟܘܗܝ 22

23 ܕܡܪܝܐ ܢܐܪܬܘܢ ܐܪܥܐ܂ ܘܡܠܝܛܘܗܝ ܢܣܬܦܘܢ ܀ * ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܡܬܬܩܢܝܢ ܗܠܟܬܗ ܕܓܒܪܐ܂

24 ܘܐܘܪܚܗ ܗܘ ܡܬܩܢ ܀ * ܡܛܠ ܕܐܢ ܢܦܠ ܠܐ ܡܬܚܒܠ܂ ܕܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܒܐܝܕܗ ܀ * ܛܠܝܐ ܗܘܝܬ ܘܣܒܬ܂ 25

26 ܘܠܐ ܚܙܝܬ ܙܕܝܩܐ ܕܐܫܬܒܩ ܀ ܘܠܐ ܙܪܥܗ ܕܒܥܐ ܠܚܡܐ܂ * ܐܠܐ ܟܠܗ ܝܘܡܐ ܡܪܚܡ

27 ܘܡܘܙܦ ܀ ܘܙܪܥܗ ܡܬܒܪܟ܂ * ܥܒܪ ܡܢ ܒܝܫܬܐ ܘܥܒܕ ܛܒܬܐ ܀ ܘܐܬܬܢܝܚ ܠܥܠܡ܂

28 * ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܕܝܢܐ ܪܚܡ܂ ܘܠܐ ܫܒܩ ܠܙܕܝܩܘܗܝ ܀ ܐܠܐ ܠܥܠܡ ܢܛܪ ܠܗܘܢ܂ ܘܙܪܥܗܘܢ

29 ܕܪܫܝܥܐ ܐܒܕ ܀ * ܘܙܕܝܩܐ ܢܐܪܬܘܢ ܐܪܥܐ܂ ܘܢܥܡܪܘܢ ܒܗ ܠܥܠܡ ܀

Prodétq; ut lumen juſtitiā tuam, & judicia 6 tua ceu meridiem. Pete à Domino, & ora in 7 conſpectu illius, & ne invideas viro facienti iniquitatē, cujus proſpera eſt via. Sile à fu- 8 rore, & quieſce ab ira, neque æmuleris ad perpetrandā iniquitatem. Quia maligni de- 9 ficiunt; at qui ſperant in Domino, hæreditate poſſidebunt terram. Poſt tempus breve 10 quæres ſceleſtum, & non erit : & intueberis locū ejus, nec invenietur. Pauperes autē hæ- 11 reditariò poſſidebunt terrā, & oblectabuntur pace multâ, Succenſet iniquus juſto, ſtri- 12 détque dentibus ſuis in eum: At Dominus ir- 13 ridebit eum, quia novit adveniſſe diem ejus. Gladium evaginaverunt ſcelerati, ac teten- 14 derunt arcum ad interficiendos pauperes atque inopes, & eos quorum rectæ ſunt viæ. Gladius eorum intret in cor ipſorum, & ar- 15 cus eorum confringantur. Præſtantiꝰ eſt mo- 16 dicum juſto, quàm poſſeſſio multa iniquorū. Quoniam brachia impiorum confringentur ; 17 fulcit juſtos Dominus. Et novit Dominus di- 18 ès innocentium, & hæreditas eorum in æternum erit. Non confundentur in hora mala, 19 & in diebus famis ſaturabuntur. Quoniam 20 impii pereunt, & inimici Domini ſaginati abſumuntur, & velut fumus deficiunt. Mu- 21 tuatur impius, & non ſolvit : at juſtus miſeretur, & tribuit.

* *Sectio*. *

Quoniam benedicti à Domino, hæreditate 22 poſſidebunt terram: & maledicti ab eo, conſumentur. A conſpectu Domini diriguntur 23 greſſus viri, & viam ejus ipſe dirigit. Quo- 24 niam ſi cadat, non læditur: nam Dominus tenet manum ejus. Puer eram & ſenui, nec vi- 25 di juſtum deſtitutum fuiſſe, neque ſemen ejus petiiſſe panē: Imò totâ die miſeretur & cō- 26 modat, et ſemen ejꝰ benedicitur. Devita malū 27 et fac bonum; quieſce in æternum: Quia 28 Dominus judicium diligit, et non deſtituit juſtos ſuos, ſed in perpetuum ſervat eos ; ſemen verò impiorum deperdit. At juſti hæ- 29 reditariò terram acquirunt, et habitant ſuper eam in ſeculum.

Verſio VULG. LAT.

6 Et educet quaſi lumen juſtitiam tuam,
& judicium tuum tanquàm meridiem:
7 Subditus eſto Domino, & ora eum.
Noli æmulari in eo, qui proſperatur
in via ſua; in homine faciente inju-
8 ſtitias. Deſine ab ira, & derelinque
furorem: noli æmulari ut maligneris.
9 Quoniam qui malignantur, extermina-
buntur: ſuſtinentes autem Dominum,
10 ipſi hæreditabunt terram. Et adhuc
puſillum, & non erit peccator: &
quæres locum ejus, & non invenies.
11 Manſueti autem hæreditabunt terram,
& delectabuntur in multitudine pacis.
12 Obſervabit peccator juſtum: & ſtri-
13 debit ſuper eum dentibus ſuis. Domi-
nus autem irridebit eum: quoniam
14 proſpicit quòd veniet dies ejus. Gla-
dium evaginaverunt peccatores: in-
tenderunt arcum ſuum, Ut dejiciant
pauperem & inopem: ut trucîdent re-
15 ctos corde. Gladius eorum intret in
corda ipſorum: & arcus eorum con-
16 fringatur. Melius eſt modicum juſto,
17 ſuper divitias peccatorum multas. Quo-
niam brachia peccatorum conteren-
tur: confirmat autem juſtos Dominus.
18 Novit Dominus dies immaculatorum:
& hæreditas eorum in æternum erit.
19 Non confundentur in tempore ma-
lo, & in diebus famis ſaturabuntur:
20 Quia peccatores peribunt. Inimici
verò Domini mox ut honorificati fu-
erint & exaltati: deficientes, quemad-
21 modùm fumus deficient. Mutuabitur
peccator, & non ſolvet: juſtus autem mi-
22 ſeretur et tribuet. Quia benedicentes
ei hæreditabunt terram: maledicentes
23 autem ei diſperibunt. Apud Dominum
greſſus hominis dirigentur: et viam ejus
24 volet. Cùm ceciderit, non collidetur:
25 quia Dominus ſupponit manũ ſuam. Ju-
nior fui, etenim ſenui: et non vidi ju-
ſtum derelictũ, nec ſemen ejus quærens
26 panem. Totâ die miſeretur et commo-
dat: et ſemen illius in benedictione
27 erit. Declina à malo, et fac bonũ: et in-
28 habita in ſeculũ ſeculi. Quia Dñs amat
judiciũ, et non derelinquet ſanctos ſuos:
in æternum conſervabuntur. Injuſti pu-
29 nientur: et ſemen impiorũ peribit. Ju-
ſti autem hæreditabunt terram: et in-
habitabunt in ſeculum ſeculi ſuper eã.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

6 † Καὶ ἐξοίσει ὡς φῶς τὴν δικαιοσύνην σου, † καὶ τὸ
7 κρίμα σου ὡς μεσημβρίαν. † Ὑποτάγηθι τῷ κυ-
ρίῳ, καὶ ἱκέτευσον αὐτόν. † μὴ παραζήλου ἐν τῷ
κατευοδουμένῳ ἐν τῇ ὁδῷ αὐτοῦ, † ἐν ἀνθρώπῳ ποι-
8 οῦντι (δ) παρανομίας. † Παῦσαι ἀπὸ ὀργῆς καὶ ἐγ-
κατάλιπε θυμόν, † μὴ παραζήλου ὥστε πονηρεύεσθαι.
9 † Ὅτι οἱ πονηρευόμενοι (´) ἐξολοθρευθήσονται, † οἱ
δὲ ὑπομένοντες τὸν κύριον, αὐτοὶ κληρονομήσουσι (ε)
10 τὴν γῆν. † Καὶ ἔτι ὀλίγον καὶ οὐ μὴ (¨) ὑπάρξῃ ἁμαρ-
τωλός, † καὶ ζητήσεις τὸν τόπον αὐτοῦ, † καὶ οὐ μὴ εὕ-
11 ρῃς. † Οἱ δὲ πραεῖς κληρονομήσουσι γῆν, † καὶ κα-
12 τατρυφήσουσιν ἐπὶ πλήθει (ζ) εἰρήνης. † Παρατη-
ρήσεται ὁ ἁμαρτωλὸς τὸν δίκαιον, † καὶ βρύξει ἐπ' αὐ-
13 τὸν τοὺς ὀδόντας αὐτοῦ. † Ὁ δὲ κύριος ἐκγελάσε-
ται αὐτόν, † ὅτι προβλέπει ὅτι ἥξει ἡ ἡμέρα αὐτοῦ.
14 † Ῥομφαίαν ἐσπάσαντο οἱ ἁμαρτωλοί, † ἐνέτει-
ναν τόξον αὐτῶν, τοῦ καταβαλεῖν πτωχὸν καὶ πένη-
15 τα, † τοῦ σφάξαι τοὺς εὐθεῖς τῇ καρδίᾳ. † Ἡ ῥομ-
φαία αὐτῶν εἰσέλθοι εἰς τὴν καρδίαν αὐτῶν, † καὶ
16 τὰ τόξα αὐτῶν συντριβείη. † Κρεῖσσον ὀλίγον τῷ δι-
17 καίῳ † ὑπὲρ πλοῦτον ἁμαρτωλῶν πολύν. † Ὅτι βρα-
χίονες ἁμαρτωλῶν συντριβήσονται, † ὑποστηρίζει δὲ
18 τοὺς δικαίους ὁ κύριος. † Γινώσκει κύριος τὰς ὁ-
δοὺς τῶν ἀμώμων, † καὶ ἡ κληρονομία αὐτῶν εἰς (η) τὸν
19 αἰῶνα ἔσται. † Οὐ καταισχυνθήσονται ἐν καιρῷ πονη-
20 ρῷ, † καὶ ἐν ἡμέραις λιμοῦ χορτασθήσονται. † Ὅτι οἱ
ἁμαρτωλοὶ ἀπολοῦνται, † οἱ δὲ ἐχθροὶ τοῦ κυρίου ἅμα
τῷ δοξασθῆναι αὐτοὺς καὶ ὑψωθῆναι, † ἐκλείποντες
21 ὡσεὶ καπνὸς ἐξέλιπον. † Δανείζεται ὁ ἁμαρτωλός,
καὶ οὐκ ἀποτίσει, † ὁ δὲ δίκαιος οἰκτείρει καὶ (θ) δι-
22 δοῖ. † Ὅτι οἱ εὐλογοῦντες αὐτὸν κληρονομήσουσι γῆν,
23 † οἱ δὲ καταρώμενοι αὐτὸν (ᶜ) ἐξολοθρευθήσονται. † Πα-
ρὰ κυρίου τὰ διαβήματα ἀνθρώπου κατευθύνεται,
24 † καὶ τὴν ὁδὸν αὐτοῦ (ι) θελήσει. † Ὅταν πέσῃ οὐ κα-
ταραχθήσεται, † ὅτι κύριος ἀντιστηρίζει χεῖρα αὐτοῦ.
25 † Νεώτερος ἐγενόμην, καὶ γὰρ ἐγήρασα, † καὶ οὐκ εἶ-
δον δίκαιον ἐγκαταλελειμμένον, † οὐδὲ τὸ σπέρμα
26 αὐτοῦ ζητοῦν ἄρτους. † Ὅλην τὴν ἡμέραν ἐλεεῖ καὶ (κ)
δανείζει, † καὶ τὸ σπέρμα αὐτοῦ εἰς εὐλογίαν ἔσται. †
27 Ἔκκλινον ἀπὸ κακοῦ, καὶ ποίησον ἀγαθόν, † καὶ κα-
28 τασκήνου εἰς αἰῶνα αἰῶνος. † Ὅτι κύριος ἀγαπᾷ
κρίσιν, † καὶ οὐκ ἐγκαταλείψει τοὺς ὁσίους αὐτοῦ, † εἰς
τὸν αἰῶνα φυλαχθήσονται· † (λ) ἄμωμοι ἐκδικηθή-
σονται, † καὶ σπέρμα ἀσεβῶν (μ) ἐξολοθρευθήσεται.
29 † Δίκαιοι δὲ κληρονομήσουσι γῆν, † καὶ κατασκη-
νώσουσιν εἰς αἰῶνα αἰῶνος ἐπ' αὐτῆς.

MS. A. (δ) παρανομίαν. (´) ἐξολεθρευθήσονται, (ε) γῆν. (¨) ὑπάρξει ὁ ἁμαρτωλός, (ζ) εἰρήνης ἐπ' αὐτῆς. (η) αἰῶνα (θ) δίδωσιν. (ᶜ) ἐξολεθρευθήσονται. (ι) θελήσει σφόδρα. (κ) δανείζει ὁ δίκαιος, καὶ (λ) ἄνομοι δὲ ἐκδιωχθήσονται, (μ) ἐξολεθρευθήσεται.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

6 Et educet quaſi lumen juſtitiã 6
tuã, et judicium tuũ tanquã [c]
meridiẽ. (e) Subdit° eſto Domino, 7
& [d] ora eum. 7 Noli æmulari
in eo, qui proſperatur [e] in via
ſua, in homine faciente injuſtiti-
as. 8 Deſine ab ira, & [f] de- 8
relinque furorem. Noli æmulari
ut maligneris: 9 Quoniã qui ma- 9
lignantur, exterminabuntur: ſuſ-
tinentes autem Dominũ, ipſi hæ-
reditabunt terram. 10 Et adhuc 10
puſillum, & non erit peccator: et
quæres locum ejus, & non inve-
nies. 11 Manſueti autem hære- 11
ditabũt terrã, & delectabuntur
in multitudine pacis. 12 Obſer- 12
vabit peccator juſtũ: & ſtridebit
ſuper eum dentibus ſuis. 13 Do- 13
minus autem irridebit eum: quo-
niam proſpicit, quòd veniet di-
es ejus. 14 Gladium evaginave- 14
runt peccatores: intenderunt ar-
cum ſuum: 15 ut [g] dejiciant
inopem, et pauperem, ut trucîdent
rectos corde. 16 Gladius eorum 15
intret in cor eorum: & arcus eo-
rum conterantur. 17 Melius eſt 16
modicum juſto, ſuper divitias
peccatorum multas. 18 Quoni- 17
am [h] brachia peccatorum con-
terentur: (f) confirmat autem
juſtos (g) Dominus. 19 (h) No- 18
vit Dominus vias immaculato-
rum: & hæreditas eorum in æ-
ternum erit. 20 Non confunden- 19
tur in [i] tempore morbi: & in
diebus famis ſaturabuntur. [k]
Quia peccatores peribunt: 21 in- 20
imici (i) verò Domini ſtatim,
ut honorificati fuerint, & exal-
tati, deficientes quemadmodùm
fumus, (k) defecerunt. 22 Mu- 21
tuatur peccator, & non ſolvet:
juſtus autem miſeretur, & [l]
commodat. 23 Quia (l) bene- 22
dicentes eũ hæreditabunt terrã:
maledicentes autẽ (m) eũ, diſper-
ibunt. 24 [m] A Domino greſſus 23
minis diriguntur: & viam ejus
(n) volet: 25 Cùm ceciderit, non 24
collidetur: quia Dominus (o) [n]
confirmat manum ejus. 26 (p)
Junior fui, etenim ſenui: & nõ 25
vidi juſtum derelictum, nec ſe-
men ejus [o] quærens panes. 27
Totâ die miſeretur, & (q) com- 26
modat: & ſemen illius in bene-
dictione erit. 28 Declina à 27
malo, & fac bonum: & inhabi-
ta in ſeculum (r) ſeculi. 29 Quia Dominus amat judicium, & non derelinquet ſanctos ſuos: 28
in æternum conſervabuntur: 30 (ſ) [p] immaculati vindicabuntur, & ſemen impiorum peribit. 31 Juſti autem hæreditabunt terram: & inhabitabunt in ſeculum ſeculi ſuper eam. 29

Verſio ÆTHIOPICA.

ወያመጽእ፡ከመ፡ብርሃን፡ለጽድቅከ፡፡ ወፍት 6
ሕከኒ፡ከመ፡መዐልተ፡፡ ግነይ፡ለእግዚአብሔ
ር፡ወተጸመድ፡፡=፡ ወኢትቅናዕ፡ላዕለ፡ዘይደ 7
ሉ፡በሕይወቱ፡፡ ወላዕለ፡ሰብእ፡ዘይገብር፡
ዐመፃ፡፡=፡ ኅድጋ፡ለመዐት፡ወግድፋ፡ለቍጥ 8
ዓ፡፡ወኢትቅናዕ፡ከመ፡ታሕሥም፡፡=፡ እስ 9
መ፡እለ፡ያኅሥሙ፡ይሤረዉ፡፡ ወእለሰ፡ይት
ዔገሥዎ፡ለእግዚአብሔር፡እሙንቱ፡ይወርስ
ዋ፡ለምድር፡፡=፡ ወዓዲ፡ኅዳጥ፡ኢይሄሉ፡ 10
ኃጥእ፡፡ተኀሥሥ፡ወኢትረክብ፡መካኖ፡፡=፡
ወየዋሃንሰ፡ይወርስዋ፡ለምድር፡፡ ወይትፌሣ 11
ሑ፡በብዙኅ፡ሰላም፡፡=፡ ያስተሐይጾ፡ኃጥ 12
እ፡ለጻድቅ፡፡ ወየሐቅ፡ስነኒሁ፡ላዕሌሁ፡፡=፡
ወእግዚአብሔርሰ፡ይሥሕቆ፡፡ እስመ፡ያቀድ 13
ሞ፡አእምሮ፡ከመ፡በጽሐ፡ዕለቱ፡፡=፡ሰይፎ 14
ሙ፡መልሑ፡ኃጥአን፡፡ወወሰቁ፡ቀስቶሙ፡፡=፡
ከመ፡ይቅትልዎ፡ለነዳይ፡ወለምስኪን፡፡ ወከ 15
መ፡ይርግዝዎሙ፡ለርቱዓነ፡ልብ፡፡=፡ ሰይፎ 16
ሙ፡ይባእ፡ውስተ፡ልቦሙ፡፡ ወይትቀጥቀጥ፡አ
ቅስቲሆሙ፡፡=፡ ይኄይስ፡ኅዳጥ፡ዘበጻድቅ፡፡ 17
እምብዙኅ፡ብዕለ፡ኃጥአን፡፡=፡ እስመ፡ይ 18
ትቀጠቀጥ፡ኀይሎሙ፡ለኃጥአን፡፡ ያጸንዖ
ሙ፡ እግዚአብሔር፡ ለጻድቃን፡፡ወያአምር፡ 19
እግዚአብሔር፡ፍኖተ፡ንጹሓን፡፡ ወለዓለም፡
ውእቱ፡ርስቶሙ፡፡=፡ ወኢይትኃፈሩ፡በመዋ 20
ዕለ፡ እኩያት፡፡ ወይጸግቡ፡ በመዋዕለ፡ረኃ
ብ፡፡ወኃጥአንሰ፡ይትሐጐሉ፡፡=፡ ወጸላእቱ 21
ሰ፡ለእግዚአብሔር፡ሶበ፡ከብሩ፡ወተለዓሉ፡፡
የኃልቁ፡ወይጠፍኡ፡ከመ፡ጢስ፡፡=፡ ይትሌ 22
ቃሕ፡ኃጥእ፡ወኢይፈዲ፡፡ ወጻድቅሰ፡ይምሕ
ር፡ወይሁብ፡፡=፡ እስመ፡እለ፡ይባርክዎ፡ይ 23
ወርስዋ፡ለምድር፡፡ወእለሰ፡ይረግምዎ፡ይሤ
ረዉ፡፡=፡ እምኀበ፡እግዚአብሔር፡ይጸንዕ፡ 24
ሑረቱ፡ ለሰብእ፡፡ ለዘ፡ይፈቅድ፡ ፍኖተ፡ፈድ
ፋደ፡፡=፡ እመኒ፡ወድቀ፡ኢይደነግፅ፡፡እስመ፡ 25
እግዚአብሔር፡ይሰውቆ፡እዴሁ፡፡=፡ ወራዘ 26
ውኩ፡ወረሳእኩ፡፡ ወጻድቅሰ፡ዘይትገደፍ፡
ኢርኢኩ፡፡ ወዘርኡኒ፡ኢይፄነስ፡እክለ፡፡=፡
ወኵሎ፡አሚረ፡ይምሕር፡ወይሌቅሕ፡፡ ወዘ 27
ርኡሂ፡ውስተ፡በረከት፡ይሄሉ፡፡=፡ ተገሐስ፡ 28
እምእኩይ፡ ወግበር፡ ሠናየ፡፡ወትነብር፡ ለዓ
ለመ፡ዓለም፡፡=፡ እስመ፡ጽድቀ፡ያፈቅር፡ 29
እግዚአብሔር፡፡ ወኢይገድፎሙ፡ለጻድቃ
ን፡፡ ወለዓለም፡ የዐቅቦሙ፡፡=፡ ወይትቀበ 30
ሎሙ፡ ለንጹሓን፡፡ ወይሤሩ፡ ዘርኦሙ፡ ለኃ
ጥአን፡፡=፡ወጻድቃንሰ፡ይወርስዋ፡ለምድር፡፡ 31
ወይነብሩ፡ውስቴታ፡ለዓለመ፡ዓለም፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [c] diem. [d] adhære illi. [e] in vita ſua, [f] amanda faſtidium. [g] occidant pauperem & inopem, & ut confodiant [h] robur peccatorum conteretur: [i] tempore malo: [k] Et peccatores quidẽ [l] donat. [m] A parte Dñi firmantur greſſ° hominis, ut volet viam ej° ſemper: [n] ſupponit [o] pane carens. [p] & ſuſcipiet immaculatos, & ſemen

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

6 7 * ويخرج مثل النور عدلك * ومثل الظهيرة احكامك * اخضع للرب وتضرع اليه * لا تغاير
8 المنجح في طريقه في حياته بانسان يصنع الاثم * اكفف من السخط ودع الغضب * لا تراي
9 10 السرير * فان فاعلي الشر يبيدون * والذين يصبرون للرب يرثون الارض * عن قليل لا يوجد
11 الخاطي * تطلب مكانه فلا تجده * واما اهل الدعة فيرثون الارض * ويتنعمون بكثرة السلامة
12 13 * الخاطي يرصد الصديق ويصر عليه اسنانه * والرب يهزا به * لانه سبق فراي ان يومه ياتي
14 * استل الخطاة سيوفهم واوتروا قسيهم * ليصرعوا المسكين والبائس * ويذبحوا المستقيم قلبه
15 16 * سيفهم يدخل في قلبهم * وقسيهم تنكسر * الخير اليسير للصديق افضل من كثير غناء الخطاة
17 18 * لان سواعد الخطاة تنكسر * والرب يثبت الصديق * الرب يعرف طريق الذين بلا عيب * وميراثهم
19 20 يكون الى الابد * لا يخزون في زمان السوء * وفي ايام الغلاء يشبعون * لان الخطاة يهلكون واعداء
21 الرب حين يتمجدون ويرتفعون * يفنون فناء مثل الدخان اذا فني * الخاطي يقترض ولا يوفي *
22 واما البار يتراءف ويعطي * لان الذين يباركونه يرثون الارض والذين يلعنونه يستاصلون
23 24 25 * الرب يقوم خطوات الانسان ويهوى طريقه * فاذا سقط لا يتزعزع * لان الرب ممسك بيده * كنت
26 صبيا وشخت * ولم ار صديقا تخلى الرب عنه * ولا ذريته تطلب خبزا * النهار كله يرحم ويقرض *
27 28 ونسله يكون مباركا * ابعد عن الشر واصنع الخير * واسكن الى ابد الابد * لان الرب يحب
29 العدل * ولا يضيع اصفياءه * يحفظهم الى ابد الابد * والذين بلا عيب ياخذون انتقامهم *
30 ونسل المنافقين يبيد * واما الصديقون يرثون الارض ويسكنون فيها الى الابد *

Et educet ut lumen juſtitiam tuam, & ut 6
meridiem judicia tua. Subjice te Domino, 7
& ſupplica ei. Ne æmuleris proſperum in
via ſua, dum vivit: hominem qui perpe-
trat ſcelus: Cohibe te ab ira, & omitte fu- 8
rorem; ne imiteris malignum. Nam ope- 9
rantes malum, peribunt: & qui expectant
Dominum, hæreditabunt terram. Paulò 10
poſt non invenietur peccator: quæres lo-
cum ejus, & non invenies illum. At verò 11
manſueti hæreditabunt terram, & ob-
lectabuntur in multitudine pacis. Pecca- 12
tor inſidiatur juſto, & frendet contra
eum dentibus ſuis. At Dominus illudit ei: 13
quoniam prævidit diem ejus eſſe ventu-
rum. Evaginaverunt peccatores gladium 14
ſuum, & intenderunt arcus ſuos: ut pro-
ſternerent pauperem, & inopem, & ju-
gularent rectum corde. Gladius eorum in- 15
tret in cor eorum, & arcus eorum confrin-
gantur. Facultates modicæ juſto, præſtant 16
multitudini divitiarum peccatorum. Quo- 17
niam brachia peccatorum confringentur:
& Dominus confirmat juſtum. Dominus 18
ſcit viam eorum qui ſine labe ſunt, & hæ-
reditas eorum erit in ſeculum. Non con- 19
fundentur in tempore calamitatis, & in
diebus caritatis ſaturabuntur: Quoniam 20
peccatores peribunt, & inimici Domini,
dum gloriantur & extolluntur, deficiunt
penitùs ut fumus quum evaneſcit. Pecca- 21
tor mutuatur, & non ſolvit: verùm juſtus
miſeretur, & tribuit. Nam qui benedi- 22
cunt ei, hæreditabunt terram; et qui male-
dicunt ei, eradicabuntur. Dominus dirigit 23
greſſus hominis: & grata illi erit via e-
jus; Quumque ceciderit, non perturbabi- 24
tur, quia Dominus tenens eſt manum ejus.
Fui puer & ſenui, & non vidi juſtum 25
derelictum à Domino, neque progeniem
ejus petere panem. Die totâ miſeretur & 26
mutuò dat, & generatio ejus erit bene-
dicta. Recede à malo, & fac bonum, & 27
habita in ſeculum ſeculi. Nam Domi- 28
nus diligit æquitatem, neque perdet e-
lectos ſuos: conſervabit eos in ſeculum
ſeculi. Et qui ſine macula ſunt, ſument 29
vindictam ſuam. Et progenies iniquorum
peribit: At verò juſti hæreditabunt ter- 30
ram, et habitabunt in ea in æternum.

תהלים : לח

Lex .judicium loquetur ejus lingua & ; sapientiam loquetur justi Os

30 פִּֽי־צַדִּיק יֶהְגֶּה חָכְמָה וּלְשׁוֹנוֹ תְּדַבֵּר מִשְׁפָּט׃ תּוֹרַת 31

: justum impius *Speculans* .ejus *gressus nutabit* non : ej° corde in ejus Dei

32 אֱלֹהָיו בְּלִבּוֹ לֹא תִמְעַד אֲשֻׁרָיו׃ צוֹפֶה רָשָׁע לַצַּדִּיק

nec : ejus manu in eum derelinquet non Dominus .eum interimere *quærens* &

33 וּמְבַקֵּשׁ לַהֲמִיתוֹ׃ יְהוָה לֹא־יַעַזְבֶנּוּ בְיָדוֹ וְלֹא

; ejus viam custodi & ,Dominum *ad* Expecta .*eum judicari in* eum condemnabit

34 יַרְשִׁיעֶנּוּ בְּהִשָּׁפְטוֹ׃ קַוֵּה אֶל־יְהוָה וּשְׁמֹר דַּרְכּוֹ

Vidi .videbis ,*impios succidi in* : terram *hæreditandum ad* ,te exaltabit &

35 וִירוֹמִמְךָ לָרֶשֶׁת אָרֶץ בְּהִכָּרֵת רְשָׁעִים תִּרְאֶה׃ רָאִיתִי

: *ipse* non ecce & ,transivit Et .viridis laurus sicut *se diffundentem* & ; *terrificum* impium

36 רָשָׁע עָרִיץ וּמִתְעָרֶה כְּאֶזְרָח רַעֲנָן׃ וַיַּעֲבֹר וְהִנֵּה אֵינֶנּוּ

quia ; rectum vide & ,*integrum* Custodi .inventus est non & ,eum quæsivi &

37 וָאֲבַקְשֵׁהוּ וְלֹא נִמְצָא׃ שְׁמָר־תָּם וּרְאֵה יָשָׁר כִּי־

novissimum ; pariter delebuntur prævaricantes Et .pax *viro novissimum*

38 אַחֲרִית לְאִישׁ שָׁלוֹם׃ וּפֹשְׁעִים נִשְׁמְדוּ יַחְדָּו אַחֲרִית

eorum fortitudo ; Domino à justorum salus Et .*exciditur* impiorum

39 רְשָׁעִים נִכְרָתָה׃ וּתְשׁוּעַת צַדִּיקִים מֵיְהוָה מָעוּזָּם

eos eruet , eos eruet & , Dominus eos adjuvabit Et .angustiæ tempore in

40 בְּעֵת צָרָה׃ וַיַּעְזְרֵם יְהוָה וַיְפַלְּטֵם יְפַלְּטֵם

.eo in speraverunt quia ; eos servabit & , impiis ab

מֵרְשָׁעִים וְיוֹשִׁיעֵם כִּי־חָסוּ בוֹ׃

PSAL. XXXVIII. לח

tuo *fervore* in ne Domine .commemorandum ad David *Canticum*

1 מִזְמוֹר לְדָוִד לְהַזְכִּיר׃ 2 יְהוָה אַל־בְּקֶצְפְּךָ

tuæ sagittæ Quoniam .me corripias tua *excandescentia* in & ; me arguas

3 תוֹכִיחֵנִי וּבַחֲמָתְךָ תְיַסְּרֵנִי׃ כִּי־חִצֶּיךָ

mea carne in *integritas* Non .tua manus me super descendit & ; me in *sunt defixæ*

4 נִחֲתוּ־בִי וַתִּנְחַת עָלַי יָדֶךָ׃ אֵין־מְתֹם בִּבְשָׂרִי

Quoniam .*mei peccati faciebus* à meis ossibus in pax non : tuam iram propter

5 מִפְּנֵי זַעְמֶךָ אֵין־שָׁלוֹם בַּעֲצָמַי מִפְּנֵי חַטָּאתִי׃ כִּי

.me *præ* fuerunt *graves* grave onus sicut ; meum caput pertransierunt meæ iniquitates

עֲוֺנֹתַי עָבְרוּ רֹאשִׁי כְּמַשָּׂא כָבֵד יִכְבְּדוּ מִמֶּנִּי׃

, sum *Contortus* .*meæ stultitiæ faciebus* à ; mei livores tabuerunt , *Fœtuerunt*

6 הִבְאִישׁוּ נָמַקּוּ חַבּוּרֹתָי מִפְּנֵי אִוַּלְתִּי׃ 7 נַעֲוֵיתִי

mea ilia Quoniam .ambulavi *atratus* die omni : *valde usque* sum *depressus*

8 שַׁחֹתִי עַד־מְאֹד כָּל־הַיּוֹם קֹדֵר הִלָּכְתִּי׃ כִּי־כְסָלַי

sum attritus & , sum Debilitatus .mea carne in *integritas* non & ; *fœdo* fuerunt plena

9 מָלְאוּ נִקְלֶה וְאֵין מְתֹם בִּבְשָׂרִי׃ נְפוּגוֹתִי וְנִדְכֵּיתִי

; meũ desideriũ omne te coram Domine .mei cordis *palpitatione præ* rugii : *valde usque*

10 עַד־מְאֹד שָׁאַגְתִּי מִנַּהֲמַת לִבִּי׃ אֲדֹנָי נֶגְדְּךָ כָל־תַּאֲוָתִי

me dereliquit , circuivit meum Cor .absconditum est non te à meũ suspiriũ &

11 וְאַנְחָתִי מִמְּךָ לֹא־נִסְתָּרָה׃ לִבִּי סְחַרְחַר עֲזָבַנִי

, me *Diligentes* .mecum non ipsi etiam , meorũ oculorum lumen & : mea fortitudo

12 כֹחִי וְאוֹר־עֵינַי גַּם־הֵם אֵין אִתִּי׃ אֹהֲבַי

.steterunt longinquo à mei propinqui & ; steterunt meæ plagæ regione è mei *socii* &

וְרֵעַי מִנֶּגֶד נִגְעִי יַעֲמֹדוּ וּקְרוֹבַי מֵרָחֹק עָמָדוּ׃

תרגום TARGUM.

30 פּוּמָא דְצַדִּיקָא רָנִין חוּכְמְתָא וְלִישָׁנֵיהּ
31 מְמַלְּלָא דִינָא׃ נִימוֹסָא דֶאֱלָהֵיהּ בְּלִבֵּיהּ לָא
32 מִזְדַּעְזְעִין אַסְתְּוָרוֹי׃ מְסַתְּכֵי רַשִּׁיעָא לְצַדִּיקָא
33 וּבָעֵי לְמִקְטְלֵיהּ׃ יְיָ לָא יִשְׁבְּקִנֵּיהּ בִּידֵיהּ וְלָא
34 יְחַיְּבִנֵּיהּ בְּמִדַּיְנֵיהּ׃ סְבַר בְּמֵימְרֵיהּ דַיְיָ וְטַר
אָרְחֵיהּ וִירוֹמְמִנָּךְ לְמַחְסַן אַרְעָא בְּאִשְׁתֵּיצָיוּת
35 רַשִּׁיעַיָּא תֶחֱמֵי׃ חֲמֵיתִי רַשִּׁיעָא תַקִּיפָא וְחָסִין
36 הֵיךְ אִילָן יַצִּיב וְעַבּוּף׃ וּפְסַק מִן עָלְמָא וְהָא
37 לֵיתוֹי וּבְעֵית יָתֵיהּ וְלָא אִשְׁתְּכַח׃ נְטַר
שְׁלִימוּתָא וַחֲמֵי תְרִיצוּתָא אֲרוּם דְּסוֹף בַּר
38 נָשָׁא שְׁלָמָא׃ וּמָרוֹדִין יִשְׁתֵּיצוּן כַּחֲדָא
39 סוֹפֵיהוֹן דְּרַשִּׁיעַיָּא שֵׁיצָאָה׃ וּפוּרְקָנָא דְצַדִּיקַיָּא
40 מִן קֳדָם יְיָ עוּשְׁנְהוֹן בְּעִדָּן עָקְתָא׃ וְסַיְּעִנּוּן
יְיָ וְשֵׁזִיב יַתְהוֹן שֵׁזִיב יַתְהוֹן מִן חַיָּבַיָּא וִיפַרְקִנּוּן
מְטוּל דְּאִתְרְחִיצוּ בְּמֵימְרֵיהּ׃

לח

1 תֻּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד דִּכְרָנָא טָבָא עַל יִשְׂרָאֵל׃
2 יְיָ לָא בְּרוּגְזָךְ תְּכַסֵּן יָתִי וְלָא בִּרְתְחָךְ
3 תִּרְדֵי יָתִי׃ מְטוּל דְּגִירָךְ אִתְחַתָּן עֲלַי וּשְׁרַת
4 עֲלַי מְחַת יְדָךְ׃ לֵית אָסוּ בְּגוּשְׁמִי מִן קֳדָם
רוּגְזָךְ לֵית שְׁלָם בְּאֵבָרַי מִן קֳדָם חוֹבַי׃
5 אֲרוּם חוֹבַי עֲבָרוּ רֵישִׁי הֵיךְ מְטוּל יַקִּיר
6 יַקְרוּ מִנִּי׃ סְרִיאוּ מְאִיסוּ הַלְבִּישׁוּשַׁי מִן קֳדָם
7 טַפְשׁוּתִי׃ עֲקִימֵית שַׁחֵית עַד לַחֲדָא כָּל יוֹמָא
8 חֲבִיר הַלֵּכִית׃ אֲרוּם כַּסְלַי אִתְמַלְיָין
9 קְרִיחֲתָא וְלֵית אָסוּ בְּגוּשְׁמִי׃ פָּגֵית וְאִתְמַכִּיכֵית
10 עַד לַחֲדָא רְגִישֵׁית מִנְּהָמוּתָא דְלִבִּי׃ יְיָ
לָקֳבְלָךְ כָּל רַגִּינְתִּי וְתֵינַחְתִּי מִנָּךְ לָא מִטַּמְּרָא׃
11 לִבְבִי צְמַרְמַר שְׁבַקְנִי חֵילִי וּנְהוֹר עֵינַי בְּרַם
12 הִנּוּן לֵיתֵיהוֹן עִמִּי׃ רְחִימַי וְחַבְרַי מִקֳּבֵל
מַכְתְּשִׁי קָמוּ וְקָרִיבַי מֵרָחִיק קָיְמִין׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Os juſti eloquitur ſapientiam : & lingua 30
ejus profatur judicium. Lex Dei ipſius in 31
corde ejus ; non nutabunt greſſus ejus. In- 32
ſidiatur impius juſto, & quærit interficere
eum. Dñs non derelinquet eum in manu 33
ejus : & non damnabit eum cum judicium
de eo aget. Confide in verbo Domini, & 34
cuſtodi viam ejus : & exaltabit te ut poſſi-
deas terram : cùm exterminati fuerint im-
pii, conſpicies. Vidi impium fortem & va- 35
lidum, ſicut arborem indigenam & fronde-
ſcentem. Et defecit à ſeculo, & ecce non 36
erat : & quæſivi eum, & non eſt inventus.
Serva integritatem & reſpice rectum: quo- 37
niam finis hominis eſt pax. Prævaricatores 38
autem excindentur ſimul : finis impiorum
exitium. Redemptio autem juſtorum à con- 39
ſpectu Domini : fortitudo eorum in tem-
pore anguſtiæ. Et auxiliatus eſt eis Do- 40
minus & liberavit eos: eruit eos à ſceleratis,
& redemit eos, quoniam ſperaverunt in
verbo ejus.

Canticum Davidis in memoriam *bo-
nam ſuper Iſrael.*

PSAL. XXXVIII.

DOmine ne in furore tuo arguas me, ne- 2
que in ira tua caſtiges me. Quoniam ſa- 3
gittæ tuæ irruerunt in me, & manſit ſuper
me vulnus manus tuæ. Non eſt ſanitas in 4
corpore meo propter iram tuã: non eſt pax
in membris meis propter peccatum meum.
Quoniam iniquitates meæ tranſierunt ſuper 5
caput meum : quaſi onus grave graviores
fuerunt meipſo. Computruerunt et tabu- 6
erunt cicatrices meæ propter ſtultitiam me-
am. Recurvus factus ſum, et inclinatus ma- 7
jorem in modum : tota die atratus ince-
ſſi. Quoniam lumbi mei impleti ſunt 8
combuſtione : et non eſt ſanitas in corpore
meo. *Debilitatus* ſum et humiliatus ſum 9
vehementer : ſtrepitum edidi præ tumultu
cordis mei. Domine coram te omne deſi- 10
derium meum ; et ſuſpirium meum à te non
eſt abſconditum. Cor meum horruit ; dere- 11
liquit me virtus mea, et lumen oculorum
meorum : atque iidem ipſi non ſunt me-
cum. Amici mei et proximi mei è regione 12
vulneris mei ſteterunt : propinqui verò mei
procul conſtiterunt.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

30 * ܚܟܡܬܐ ܪܢܐ ܦܘܡܗ ܕܙܕܝܩܐ. ܘܠܫܢܗ ܡܡܠܠ ܕܝܢܐ: * ܢܡܘܣܗ ܕܐܠܗܐ ܒܠܒܗ ܘܠܐ
31
32 ܢܬܬܟܣܣܘܢ ܗܠܟܬܗ. * ܡܣܟܐ ܪܫܝܥܐ ܠܙܕܝܩܐ ܘܒܥܐ ܠܡܩܛܠܗ: * ܘܡܪܝܐ ܠܐ ܢܫܒܩܝܘܗܝ
33
34 ܒܐܝܕܘܗܝ. ܘܠܐ ܢܚܝܒܝܘܗܝ ܒܕܝܢܐ: * ܣܟܝ ܠܡܪܝܐ ܘܛܪ ܐܘܪܚܗ. ܘܢܪܝܡܟ ܠܡܐܪܬ ܐܪܥܐ:
35 ܡܐ ܕܢܦܩܘܢ ܪܫܝܥܐ ܬܚܙܐ. * ܡܛܠ ܕܚܙܝܬ ܪܫܝܥܐ ܕܡܫܬܒܗܪܝܢ: ܘܡܬܥܠܝܢ ܐܝܟ ܐܪܙܐ
36 ܕܥܒܐ. * ܘܟܕ ܥܒܪܬ ܠܝܬܘܗܝ ܗܘܐ ܘܒܥܝܬܗ ܘܠܐ ܐܫܟܚܬܗ: * ܕܢܩܫ *
37 * ܛܪ ܬܡܝܡܘܬܐ ܘܓܒܝ ܬܪܝܨܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܐܝܬ ܚܪܬܐ ܛܒܬܐ ܠܓܒܪܐ ܕܫܠܡܐ: * ܘܚܛܝܐ
38
39 ܢܐܒܕܘܢ ܐܟܚܕܐ: ܘܚܪܬܐ ܕܪܫܝܥܐ ܠܐܒܕܢܐ. * ܦܪܘܩܐ ܕܙܕܝܩܐ ܡܪܝܐ. ܘܡܥܕܪ ܠܗܘܢ ܒܥܕܢܐ
40 ܕܥܩܬܐ: * ܡܥܕܪ ܠܗܘܢ ܡܪܝܐ ܘܡܦܨܐ ܠܗܘܢ. ܘܡܦܨܐ ܠܗܘܢ ܡܢ ܪܫܝܥܐ: ܘܦܪܩ
ܠܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܣܒܪܘ ܒܗ.

* ܡܫܠܡܢܘܬܐ ܕܚܢܝ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܟܕ ܐܡܪܘ ܦܠܫܬܝܐ ܠܐܟܝܫ ܡܠܟܐ ܕܗܢܘ ܕܘܝܕ ܕܩܛܠ ܠܓܘܠܝܕ. ܠܐ ܨܒܝܢܢ
2 ܕܢܐܙܠ ܥܡܢ ܠܘܩܒܠ ܫܐܘܠ. ܘܬܘܒ ܠܢ ܗܫܐ ܡܬܩܢܢܘܬܐ ܕܬܘܕܝܬܐ. ܦܬܓܡܐ ܡܒ.
3 * ܡܪܝܐ ܠܐ ܒܪܘܓܙܟ ܬܟܣܝܢܝ. ܘܠܐ ܒܚܡܬܟ ܬܪܕܝܢܝ: * ܡܛܠ ܕܓܐܪܝܟ ܐܬܢܥܨܘ ܒܝ.
4 ܘܐܬܬܢܝܚܬ ܐܝܕܟ ܥܠܝ: * ܠܝܬ ܫܠܝܐ ܠܒܣܪܝ ܡܢ ܩܕܡ ܪܘܓܙܟ. ܘܠܝܬ ܫܠܡܐ
5 ܠܓܪܡܝ ܡܢ ܩܕܡ ܚܛܗܝ: * ܡܛܠ ܕܣܟܠܘܬܝ ܥܒܪܝ ܪܫܝ. ܘܐܝܟ ܡܘܒܠܐ ܝܩܝܪܐ
6 ܝܩܪܝ ܥܠܝ: * ܣܪܝܘ ܘܐܬܡܣܝ ܫܘܚܢܝ. ܡܢ ܩܕܡ ܣܟܠܘܬܝ * ܕܚܠܬ ܛܒ: ܟܠܗ ܝܘܡܐ
7
8 ܒܟܡܝܪܘܬܐ ܗܠܟܬ. * ܡܛܠ ܕܥܩܒܝ ܐܬܡܠܝܘ ܪܬܝܬܐ: ܘܠܝܬ ܢܝܚܐ ܠܒܣܪܝ. * ܐܙܝܥܬ
9
10 ܘܐܬܟܪܝܬ ܛܒ: ܘܢܗܡܬ ܗܘܝܬ ܡܢ ܢܘܗܡܗ ܕܠܒܝ. * ܡܪܝܐ ܩܕܡܝܟ ܗܘ ܟܠܗ ܪܓܝܓܬܝ:
11 ܘܬܢܚܬܝ ܡܢܟ ܠܐ ܡܛܫܝܢ. * ܠܒܝ ܐܬܗܦܟ ܘܫܒܩܢܝ ܚܝܠܝ: ܘܢܘܗܪܐ ܕܥܝܢܝ ܠܐ ܗܘܐ
12 ܠܘܬܝ. * ܪܚܡܝ ܘܚܒܪܝ ܠܘܩܒܠ ܟܐܒܝ ܩܡܘ: ܘܩܪܝܒܝ ܒܪܘܚܩܐ ܩܝܡܝܢ ܗܘܘ.

Sapientiam cogitat os juſti, & lingua ejus lo- 30
quitur judicium. Jus Dei in corde ipſius, & 31
non nutabunt greſſus ejus. Expectat impius 32
juſtum, & quærit occidere eum : At Domi- 33
nus non relinquet eum in manibus illius, ſed
damnabit eum in judicio. Spera in Domino, 34
& cuſtodi viam ejus, teque exaltabit ad poſ-
ſidendum hæreditariò terram : cùm defece-
rint impii, videbis. Nam vidi impios gloria- 35
ri, ſeſéq; attollere ut arbores ſylvæ ; Quando 36
autem tranſivi, non erat : & quæſivi eum, nec
inveni illum. * *Diapſalma* * Obſerva 37
ſimplicitatem, & elige rectitudinem : Quo-
niam eſt finis bonus viris pacis. At peccato- 38
res peribunt ſimul, & finis impiorum in in-
teritum. Salvator eſt juſtorum Dñs, & adju- 39
vat eos temporibus mœroris. Auxiliatur illis 40
Dominus, & eripit eos, liberátq; eos ab impi-
is, & ſervat illos, quia ſperaverunt in eum.

PSAL. XXXVIII.

Davidis. Quum dixerunt Philiſtæi Regi 1
*Achis, Iſte eſt David qui interfecit Goliad:
noluimus eat nobiſcum contra Saul. Prætereà
nobis modò inſtitutio confeſſionis. Verſ. 42.*

DOmine, ne in ira tua me arguas, neve in 2
furore tuo me caſtiges : Quoniam ſagit- 3
tæ tuæ infixæ ſunt in me, & quievit manus tua
ſuper me. Non eſt tranquillitas carni meæ à 4
conſpectu furoris tui, nec eſt pax oſſibus meis
à conſpectu peccatorum meorũ ; Nam inſipi- 5
entiæ meæ exceſſerunt caput meum, & ſicut
onus grave graves mihi redditæ ſunt. Putue- 6
runt ac putruerunt ulcera mea, & à conſpectu
inſipientiarũ mearum Timui valde. Toto die 7
cum triſtitia ambulavi, Quia calcanei mei im- 8
pleti ſunt tremore, nec eſt requies carni meæ.
Concuſſus ſum & contriſtat' ſum valde, & ru- 9
giebam præ fremitu cordis mei. Domine corã 10
te eſt totũ deſideriũ meum, & ſuſpiria mea te
miminè latent. Cor meum ſubverſum eſt, & 11
robur meũ deſtituit me, et lumẽ oculorũ me-
orum non eſt apud me. Amici mei & ſodales 12
mei ex adverſo doloris mei ſteterunt : Et
proximi mei à longinquo verſabantur.

Verſio VULG. LAT.

30 Os juſti meditabitur ſapientiam, & lin-
31 gua ejus loquetur judicium. Lex Dei
ejus in corde ipſius : & non ſupplan-
32 tabuntur greſſus ejus. Conſiderat pec-
cator juſtum: & quærit mortificare eum.
33 Dominus autem non derelinquet eum
in manibus ejus : nec damnabit eum
34 cùm judicabitur illi. Expecta Domi-
num, & cuſtodi viam ejus : & exaltabit
te ut hæreditate capias terrã : cùm per-
35 ierint peccatores, videbis. Vidi impiũ
ſuperexaltatum, & elevatũ ſicut cedros
36 Libani. Et tranſivi, & ecce non erat :
& quæſivi eum, & non eſt inventus lo-
37 cus ejus. Cuſtodi innocentiam, & vide
æquitatem : quoniam ſunt reliquiæ ho-
38 mini pacifico. Injuſti autem diſperi-
bunt ſimul : reliquiæ impiorum interi-
39 bunt. Salus autem juſtorum à Domi-
no : & protector eorum in tempore tri-
40 bulationis. Et adjuvabit eos Dominus,
& liberabit eos : & eruet eos à pecca-
toribus, & ſalvabit eos : quia ſperave-
runt in eo.

1 Pſalmus David, in rememorationem de ſabbato. XXXVII.

2 Domine, ne in furore tuo arguas me,
3 neque in ira tua corripias me. Quo-
niam ſagittæ tuæ infixæ ſunt mihi : &
4 confirmâſti ſuper me manum tuam. Non
eſt ſanitas in carne mea à facie iræ tuæ :
non eſt pax oſſibus meis à facie pecca-
5 torũ meorũ. Quoniã iniquitates meæ ſu-
pergreſſæ ſunt caput meũ : & ſicut onus
6 grave gravatæ ſunt ſup me. Putruerunt
& corruptæ ſunt cicatrices meæ, à facie
7 inſipientiæ meæ. Miſer factus ſum &
curvatus ſum uſq; in finem : totâ die con-
8 triſtatus ingrediebar. Quoniã lumbi mei
impleti ſunt illuſionib⁹ : & non eſt ſani-
9 tas in carne mea. Afflictus ſum, & humi-
liatus ſum nimis : rugiebã à gemitu cor-
10 dis mei. Dñe, ante te omne deſiderium
meũ : & gemitus meus à te non eſt abſ-
11 conditus. Cor meum conturbatum eſt,
dereliquit me virtus mea : & lumen o-
culorum meorum, & ipſũ non eſt mecũ.
12 Amici mei, & proximi mei adverſũ me
appropinquaverunt, & ſteterunt. Et qui
juxta me erant, de longè ſteterunt :

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

30 †Στόμα δικαίου μελετήσει σοφίαν, †καὶ ἡ γλῶσσα
31 αὐτοῦ λαλήσει κρίσιν. †Ὁ νόμος τοῦ Θεοῦ αὐτοῦ ἐν
καρδίᾳ αὐτοῦ, †καὶ οὐχ ὑποσκελισθήσεται τὰ δια-
32 βήματα αὐτοῦ. †Κατανοεῖ ὁ ἁμαρτωλὸς τὸν δίκαι-
33 ον, †καὶ ζητεῖ τοῦ θανατῶσαι αὐτόν. †Ὁ δὲ κύριος οὐ
μὴ ἐγκαταλίπῃ αὐτὸν εἰς τὰς χεῖρας αὐτοῦ, †(υ)
οὐδὲ μὴ καταδικάσαι αὐτὸν, ὅταν κρίνηται αὐτῷ. †
34 Ὑπόμεινον τὸν κύριον, καὶ φύλαξον τὴν ὁδὸν αὐτοῦ,
†καὶ ὑψώσει σε τοῦ κατακληρονομῆσαι (ξ) τὴν γῆν·
†ἐν τῷ (ο) ἐξολοθρεύεσθαι ἁμαρτωλοὺς, (π) ὄψει. †
35 Εἶδον τὸν ἀσεβῆ ὑπερυψούμενον, καὶ ἐπαιρόμενον ὡς
36 τὰς κέδρους τοῦ Λιβάνου· †Καὶ παρῆλθον, καὶ ἰδοὺ οὐκ
ἦν, †καὶ ἐζήτησα αὐτὸν, καὶ οὐχ εὑρέθη ὁ τόπος αὐτοῦ.
37 †Φύλασσε ἀκακίαν καὶ ἴδε εὐθύτητα, †ὅτι ἔστιν ἐγκα-
38 τάλειμμα ἀνθρώπῳ εἰρηνικῷ. †Οἱ δὲ παράνομοι (ρ)
ἐξολοθρευθήσονται ἐπὶ τὸ αὐτό, †τὰ ἐγκαταλείμμα-
39 τα τῶν ἀσεβῶν (σ) ἐξολοθρευθήσονται. †Σωτηρία
δὲ τῶν δικαίων παρὰ κυρίου, †καὶ ὑπερασπιστὴς αὐτῶν
40 ἐστιν ἐν καιρῷ θλίψεως. †Καὶ βοηθήσει αὐτοῖς κύ-
ριος, καὶ ῥύσεται αὐτοὺς, †καὶ ἐξελεῖται αὐτοὺς ἐξ ἁμαρ-
τωλῶν, †καὶ σώσει αὐτοὺς, ὅτι ἤλπισαν ἐπ᾽ αὐτόν.

MS. A. (υ) οὐδ᾽ οὐ μὴ καταδικάσηται αὐτὸν, κρίνεται αὐτῷ. (ξ) γῆν· (ο) ἐξολεθρεύεσθαι (π) ὄψῃ. (ρ) ἐξολεθρευθήσονται (σ) ἐξολεθρευθήσονται.

1 Ψαλμὸς τῷ Δαυὶδ (α) εἰς ἀνάμνησιν περὶ σαββάτου. λζʹ.

2 †Κύριε μὴ τῷ θυμῷ σου ἐλέγξῃς με, †μηδὲ τῇ
3 ὀργῇ σου παιδεύσῃς με. †Ὅτι τὰ βέλη σου ἐνεπά-
γησάν μοι, †καὶ (β) ἐπεστήριξας ἐπ᾽ ἐμὲ τὴν χεῖρά σου.
4 †Οὐκ ἔστιν ἴασις ἐν τῇ σαρκί μου ἀπὸ προσώπου τῆς
ὀργῆς σου, †οὐκ ἔστιν εἰρήνη (γ) τοῖς ὀστέοις μου ἀπὸ
5 προσώπου τῶν ἁμαρτιῶν μου, †Ὅτι αἱ ἀνομίαι μου
ὑπερῆραν τὴν κεφαλήν μου, †ὡσεὶ (δ) φορτίον βαρὺ ἐ-
6 βαρύνθησαν ἐπ᾽ ἐμέ. †Προσώζεσαν καὶ ἐσάπησαν οἱ μώ-
7 λωπές μου, †ἀπὸ προσώπου τῆς ἀφροσύνης μου. †Ἐ-
ταλαιπώρησα καὶ κατεκάμφθην ἕως τέλους, †ὅλην
8 τὴν ἡμέραν σκυθρωπάζων ἐπορευόμην. †Ὅτι (ε)
ἡ ψυχή μου ἐπλήσθη ἐμπαιγμῶν, †καὶ οὐκ ἔστιν ἴασις ἐν
9 τῇ σαρκί μου. †Ἐκακώθην καὶ ἐταπεινώθην ἕως σφό-
10 δρα, †ὠρυόμην ἀπὸ στεναγμοῦ τῆς καρδίας μου. †(ζ) Καὶ
ἐναντίον σου πᾶσα ἡ ἐπιθυμία μου, †καὶ ὁ στεναγμός μου
11 (η) οὐκ ἀπεκρύβη ἀπὸ σοῦ. †Ἡ καρδία μου ἐταράχθη,
ἐγκατέλιπέ με ἡ ἰσχύς μου, †καὶ τὸ φῶς τῶν ὀφθαλμῶν
12 (θ) μου οὐκ ἔστι μετ᾽ ἐμοῦ. †Οἱ φίλοι μου καὶ οἱ πλησίον
μου †ἐξ ἐναντίας μου ἤγγισαν καὶ ἔστησαν, †καὶ οἱ ἔγγιστά
μου (ι) μακρόθεν ἔστησαν,

MS. A. (α) εἰς *ἀμνησιν περὶ τοῦ σαββάτου. (β) ἐπεστήρισας (γ) ἐν τοῖς ὀστέοις (δ) φορτίον ἐβαρύνθησαν (ε) αἱ ψύαι μου ἐπλήσθησαν ἐμπαιγμάτων, καὶ (ζ) Κύριε, ἐναντίον σου (η) ἀπὸ σοῦ οὐκ ἐκρύβη. (θ) μου, καὶ αὐτὸ οὐκ ἔστιν (ι) ἀπὸ μακρόθεν

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

32 Os juſti [q] meditabitur ſa- 30
pientiam : et lingua ejus loque-
tur judicium. 33 Lex Dei ejus 31
in corde ipſius: et non ſupplanta-
buntur greſſus ejus. 34 (t) Con- 32
ſiderat peccator juſtum, et quæ-
rit mortificare eum. 35 Domi- 33
nus autem non derelinquet eum
in manibus ejus: nec [r] damna-
bit eum, (v) cùm judicabitur
illi. 36 Expecta Dominum, et 34
cuſtodi viam ejus : et exaltabit
te, ut hæreditate capias terram :
cùm pereunt peccatores, videbis.
37 Vidi (x) impium ſuperexal- 35
tatum, et elevatum ſicut cedros
Libani : 38 Et tranſivi et ecce 36
non erat: et quæſivi eum, et non
[ſ] eſt inventus locus ej⁹. 39 (y)
Cuſtodi innocentiam, et vide æ- 37
quitatem: quoniam ſunt reliquiæ
homini pacifico. 40 Injuſti au- 38
tem diſperibunt (z) in idipſum,
reliquiæ impiorum interibunt.
41 Salus autem juſtorum à Do- 39
mino, et protector eorum eſt in
tempore tribulationis. 42 Et ad- 40
juvabit eos Dominus, et libera-
bit eos: et eruet eos à [t] pec-
catoribus, et ſalvabit eos: quia
ſperaverunt in eum.

Pſalmus ipſi David *(a)* in rememorationem pro ſabbato. 1
XXXVII.

1 Domine, ne (b) in furore tuo 2
arguas me: neque in ira tua cor-
ripias me. 2 Quoniam ſagittæ 3
tuæ (c) [a] infixæ ſunt mihi: &
confirmâſti ſuper me manum tu-
am. 3 Non eſt ſanitas in car- 4
ne mea à (d) facie iræ tuæ: non
eſt pax oſſibus meis à (e) facie
peccatorum meorum. 4 Quoni- 5
am iniquitates meæ (f) ſuper-
greſſæ ſunt [b] caput meum: ſic-
ut onus grave, gravatæ ſunt ſu-
per me. 5 (g) Putruerunt & [c] 6
corruptæ ſunt cicatrices meæ, à
facie inſipientiæ meæ. 6 Miſer 7
fact⁹ ſum, & curvat⁹ ſum (h) uſ-
que in finem : totâ die contri-
ſtatus (i) ingrediebar. 7 Quoni- 8
am (k) anima mea [d] impleta
eſt illuſionibus : & non eſt ſani-
tas in carne mea. 8 [e] Afflictus 9
ſum, & humiliatus ſum uſque
nimis : (l) rugiebam à gemitu
cordis mei. 9 Et ante te omne 10
deſiderium meum: & [f] gemitus
meus à te non eſt abſconditus.
10 Cor meum conturbatum eſt ; dereliquit me virtus mea: & lumen oculorum meorum non 11
eſt mecum. 11 (m) Amici mei, & [g] proximi mei adverſum me appropinquaverunt, et ſte- 12
terunt: 12 et qui juxta me erant, de longè ſteterunt :

Verſio ÆTHIOPICA.

አፈሁ:ለጻድቅ: ይትሜሀር: ጥበበ:: ወልሳ 32
ኑ:ይነብብ: ጽድቀ::=፦ ወሕገ:አምላኩ: 33
ውስተ:ልቡ:: ወኢይደኀፅ:ዘኰናሁ::=፦
ያስተኀይጽ : ኃጥእ : ለጻድቅ:: ወይፈ 34
ቅድ:: ይቅትሎ::=፦ ወኢይኅድጎ : እ 35
ግዚአብሔር : ውስተ : እዴሁ:: ወኢይመ
ውኦ : ሶበ: ይትዋቀሡ::=፦ ተዓገሦ : ለእ 36
ግዚአብሔር : ወዕቀብ : ፍናተ:: ወያዐቢ
የከ : ከመ : ትረሳ : ለምድር:: ወትሬኢ:
ከመ : ይሠረዉ : ኃጥኣን::=፦ ርኢክዎ: 37
ለኃጥእ : ዐብየ : ወተለዐለ : ከመ : አርዝ:
ሊባኖስ::=፦ ወሶበ: እገብእ:ኀጠእክዎ:: 38
ኀሠሥኩ : ወኢረከብኩ : መካኖ::=፦ ዕቀ 39
ብ : የዋሃተ : ወትሬኢ : ጽድቀ:: እስመ:
ቦቱ: ተረፈ: ብእሴ: ሰላም::=፦ ወዐማፂያ 40
ንሰ : ይሤረዉ:: ወይሤረዉ : ትረፈቲሆሙ:
ለኃጥኣን::=፦ መድኀኒቶሙ : ለጻድቃን: 41
እምኀበ : እግዚአብሔር:: ወቀዋሚሆሙ:
ውእቱ : በጊዜ : ምንዳቤሆሙ::=፦ ይረድ 42
ኦሙ : እግዚአብሔር : ወያድኅኖሙ::
ወያንግፎሙ: እምእደ : ኃጥኣን:: ወያድኅ
ኖሙ:እስመ:ተወከሉ:ቦቱ::

መዝሙር : ዘደዊት : ለተዝካረ:
ሰንበት::

ሀጊ እግዚኦ : በመዐትከ : ኢትቅሥፈኒ:: 1
ወበመቅሠፍትከ : ኢትገሥጸኒ::=፦ እስ 2
መ: አኀጽከ : ደጐጸኒ:: ወአጽናዕከ : እደ
ከ:ላዕሌየ::=፦ ወአልቦ: ፈውስ:ለሥጋየ: 3
እምገጸ: መዐትከ:: ወአልቦ:ሰላም: ለአዕ
ጽምትየ : እምገጸ : ኃጢአትየ::=፦ እስ 4
መ:ኖኀ:እምሥእርተ:ርእስየ:: ከመ : ጾር:
ክቡድ: ከብደ: ላዕሌየ::=፦ ጼአ: ወበንኰ 5
በኒ: አዕጽምትየ : እምገጸ : እበድየ::=፦
ሐርተምኩ: ወተቀጻዕኩ:ለዝሉፉ:: ወኵ 6
ሎ:አሚረ: ትኩዝየ: አንሶሱ::=፦ እስመ: 7
ጸግበት : ፀዐለተ : ነፍስየ:: ወኀጣእኩ:
ፈውስ: ለሥጋየ::=፦ ደወይኩ : ወሐምም 8
ኩ : ፈድፋደ:: ወእጉሥዕ : እምሐዘነ:
ልብየ::=፦ በቅድሜከ:ኵሉ:ፍትወትየ:: 9
ወገዓርየኒ : ኢይትኀባእ : እምኔከ::=፦
ልብየኒ: ደንገፀኒ : ወኀደገኒ : ኀይልየኒ:: 10
ወብርሃነ:አዕይንትየኒ:ለከዋኒ::=፦ አዕርክ 11
ትየኒ:ወቢጽየኒ: እድወ:ኮኑኒ:ሮዱኒ: ወደበ
ዩኒ::=፦ ወአዝማድየኒ:ቀብፁኒ:ወተናከ 12
ሩኒ::

INTERP. ÆTHIOP. [q] docebit ſapientiã: [r] condemnabit eum, cùm arguerit illum. [ſ] inveni locum ejus. [t] manu peccatorũ, *PSAL. xxxvii.* [a] pupugerunt me: [b] præ capillis meis: [c] debilitata ſunt oſſa mea, à [d] impleta eſt ignominiâ : [e] Infirmatus ſum, & [f] gemitus etiam [g] proximi etiã mei homines erant qui inſecuti ſunt me, & me peſſimè tractârunt : & familiares etiam mei oblivioni me dederunt, & alieni facti ſunt mihi:

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

31 32 * فم الصديق يتلو الحكمة ولسانه ينطق بالحكم * ناموس الله في قلبه * فلن تزل قدماه
33 34 * الخاطي ينظر الى الصديق ويريد ان يقتله * والرب لا يسلمه في يديه * ولا يطرحه في الحكم
35 اذا تحاكم معه * تمسك بالرب واحفظ طريقه * فسيرفعك لترث الارض * وترى الخطاة عندما
36 37 يستأصلون * رايت المنافق قد زاد علوا وارتفع متطاولا مثل ارز لبنان * ثم عبرت فاذا
38 هو لم يكن * طلبته فلم اجد مكانه * احفظ الدعة فترى الاستقامة * فان العاقبة تكون لرجل
39 السلامة * واصل بقايا الاشرار يمحقون * خلاص الصديقين من عند الرب وهو ناصرهم في زمان
40 الضيق * الرب يعينهم ويخلصهم * وينجيهم من الخطاة * وينقذهم لانهم توكلوا عليه * اللليلويا *

* المزمور السابع والثلثون *

1 * ذكر فيه السبت * وشكر ونبوة * وعدده مد * استيحن *
2 3 * يا رب لا تبكتني بغضبك * ولا تؤدبني بسخطك * فان سهامك نشبت في * واسندت يدك علي
4 5 * ليس لجسدي شفا امام غضبك * ولا لعظامي سلامة لاجل خطاياي * لان آثامي علت راسي *
6 7 ومثل الحمل الثقيل ثقلت علي * نتنت ودودت جراحاتي من اجل جهلي * شقيت واكتأبت الى
8 9 الدهر * مشيت يومي كله كئيبا * لان نفسي مملوءة هزوا * وليس لجسدي شفا * شقيت
10 وتضعضعت جدا * صرخت من تنهد قلبي * شهواتي كلها امامك يا رب * وتنهدي عنك لم يخف
11 12 * قلق قلبي وتخلت قوتي * ولم اجد لعيني ضوءا * اصحابي واقاربي * اقتربوا مني * ووقفوا مقابلي *

Os juſti meditatur ſapientiam, & lingua 31
ejus profert judicium. Jus Dei in corde 32
ipſius : quapropter non prolabentur pedes
ejus. Peccator intuetur juſtum, & vult 33
interficere eũ. At Domin⁹ non tradet eum 34
in manũ ejus, neq; objiciet eum in judicio,
quando judiciũ inſtituet cum eo. Inhære 35
Domino, & obſerva viã ejus, et exaltabit
te ut hæredites terrã: & videas peccato-
res quũ extirpabuntur. Vidi impiũ creſce- 36
re in altum, et evehi in longũ ſicuti cedros
Libani. Deinde tranſivi, & ecce ipſe non 37
erat: quæſivi eum, et non inveni locum e-
jus. Cuſtodi manſuetudinem & videbis 38
rectitudinem; Nam finis erit viro pacifico:
& radices reliquiarũ flagitioſorum inter-
ibunt. Salus juſtorum à conſpectu Domini, 39
& ipſe adjutor eſt eorum in tempore tri-
bulationis. Dominus auxiliabitur eis, et li- 40
berabit eos, et redimet illos à peccatorib⁹, et
ſalvabit eos, quia cõfiſi ſunt in eo. Alleluja.

PSAL. XXXVII.

Mentio fit in eo Sabbathi. Præ- 1
terea eſt gratiarum actio atque
prophetia. Et numerus ver. 44.

O Domine, ne reprehendas me in ira tua, 2
neq; erudias me in indignatione tua.
Quoniam ſagittæ tuæ jam infixæ ſunt in 3
me, et dura facta eſt manus tua ſuper me.
Non eſt corpori meo ſanitas ante indigna- 4
tionem tuam, neq; oſſibus meis requies pro-
pter peccata mea; Quoniã culpæ meæ ſu- 5
peraverunt caput meum, & veluti pondus
grave aggravatæ ſunt ſuper me. Putrue- 6
runt et vermes genuerunt vulnera mea ob
ignorantiam meam. Afflictus ſum, & in- 7
curvatus ſum in ſeculum, ambulavi totâ
die meâ mœrens. Quia anima mea plena 8
eſt ludibrio, & non eſt corpori meo ſani-
tas. Afflictus ſum & humiliatus ſum val- 9
de, clamavi præ gemitu cordis mei. Deſi- 10
deria mea cuncta corã te ſunt, O Domine,
et ſuſpirium meum te non latuit. Contur- 11
batum eſt cor meum, et abſceſſit robur me-
um, & non reperi oculis meis lucem. Ami- 12
ci mei, & proximi me acceſſerunt ad me,
& ſteterunt procul à me.

תהלים : לט

meum malum quærentes & , meam animam quærentes tetenderunt laqueos Et
13 וַיְנַקְשׁוּ מְבַקְשֵׁי נַפְשִׁי וְדֹרְשֵׁי רָעָתִי
ſurdus tanquã ego Et .meditabantur die omni dolos & ; pravitates ſunt locuti
14 דִּבְּרוּ הַוּוֹת וּמִרְמוֹת כָּל־הַיּוֹם יֶהְגּוּ׃ וַאֲנִי כְחֵרֵשׁ
qui vir ſicut fui Et .ſuum os *aperiret* non mutus ſicut & ; audiebam non
15 לֹא אֶשְׁמָע וּכְאִלֵּם לֹא יִפְתַּח־פִּיו׃ וָאֱהִי כְּאִישׁ אֲשֶׁר
; expectavi Domine te Quia .redargutiones ejꝰ ore in non & ; *audiens* non
16 לֹא־שֹׁמֵעַ וְאֵין בְּפִיו תּוֹכָחוֹת׃ כִּי־לְךָ יְהוָה הוֹחָלְתִּי
; *mihi* lætentur fortè Ne : dixi Quia .mi Deus Domine *reſpondebis* tu
17 אַתָּה תַעֲנֶה אֲדֹנָי אֱלֹהָי׃ כִּי־אָמַרְתִּי פֶּן־יִשְׂמְחוּ־לִי
claudicationem ad ego Quoniam .egerunt magnificè me *ſuper* ,meo pede *nutando in*
18 בְּמוֹט רַגְלִי עָלַי הִגְדִּילוּ׃ כִּי־אֲנִי לְצֶלַע
; *indicabo* meam iniquitatem Quoniam .ſemper me coram meus dolor & ; paratus
19 נָכוֹן וּמַכְאוֹבִי נֶגְדִּי תָמִיד׃ כִּי־עֲוֺנִי אַגִּיד
ſunt multiplicati & : ſunt roborati viventes mei inimici Et *.meo peccato à ero ſollicitus*
20 אֶדְאַג מֵחַטָּאתִי׃ וְאֹיְבַי חַיִּים עָצֵמוּ וְרַבּוּ
,mihi adverſabantur bono pro malum reddentes Et *.falſò* me habentes odio
21 שֹׂנְאַי שָׁקֶר׃ וּמְשַׁלְּמֵי רָעָה תַּחַת טוֹבָה יִשְׂטְנוּנִי
.me à te elonges ne mi Deus ; Domine me derelinquas Ne .bonum *me ſequi pro*
22 תַּחַת רָדְופִי־טוֹב׃ אַל־תַּעַזְבֵנִי יְהוָה אֱלֹהַי אַל־תִּרְחַק מִמֶּנִּי׃
.mea ſalus Domine ; meum auxilium ad Feſtina
23 חוּשָׁה לְעֶזְרָתִי אֲדֹנָי תְּשׁוּעָתִי׃

PSAL. XXXIX. לט

peccando à meas vias Cuſtodiam : Dixi .David canticum Jeduthun ipſi Victori
1 לַמְנַצֵּחַ לִידִיתוּן מִזְמוֹר לְדָוִד׃ 2 אָמַרְתִּי אֶשְׁמְרָה דְרָכַי מֵחֲטוֹא
2 Obmutui .me juxta *impium adhuc in* , *epiſtomidem* meo ori cuſtodiam ,mea lingua *in*
בִלְשׁוֹנִי אֶשְׁמְרָה לְפִי מַחְסוֹם בְּעֹד רָשָׁע לְנֶגְדִּי׃ 3 נֶאֱלַמְתִּי
meum cor Caluit .eſt turbatus meus dolor & ; bono à tacui , ſilentio
דוּמִיָּה הֶחֱשֵׁיתִי מִטּוֹב וּכְאֵבִי נֶעְכָּר׃ 4 חַם־לִבִּי
.mea lingua *in* ſum locutus : ignis exarſit mea meditatione in ,meo *interiori* in
בְּקִרְבִּי בַּהֲגִיגִי תִבְעַר־אֵשׁ דִּבַּרְתִּי בִּלְשׁוֹנִי׃
; *ipſa* quæ meorum dierum menſurã & , meum finem Domine me ſcire Fac
5 הוֹדִיעֵנִי יְהוָה קִצִּי וּמִדַּת יָמַי מַה־הִיא
meum tempus & ,meos dies *dediſti palmos* Ecce *.ego ævi quanti noſcam*
6 אֵדְעָה מֶה־חָדֵל אָנִי׃ הִנֵּה טְפָחוֹת נָתַתָּה יָמַי וְחֶלְדִּי
.Selah , ſtans homo omnis vanitas univerſa utique : te coram nihil tanquam
כְאַיִן נֶגְדֶּךָ אַךְ כָּל־הֶבֶל כָּל־אָדָם נִצָּב סֶלָה׃
,coacervabit :tumultuabãtur *vanè* veruntamẽ ,vir ambulabit imagine in Veruntamen
7 אַךְ־בְּצֶלֶם יִתְהַלֶּךְ־אִישׁ אַךְ־הֶבֶל יֶהֱמָיוּן יִצְבֹּר
.ipſa te in mea *expectatio* ?Domine expectavi quid nunc Et.ea *colligens quis* neſciet &
8 וְלֹא־יֵדַע מִי־אֹסְפָם׃ וְעַתָּה מַה־קִּוִּיתִי אֲדֹנָי תּוֹחַלְתִּי לְךָ הִיא׃
.me ponas ne ſtulti opprobrium ; me erue meis prævaricationibus omnibus Ex
9 מִכָּל־פְּשָׁעַי הַצִּילֵנִי חֶרְפַּת נָבָל אַל־תְּשִׂימֵנִי׃
me *deſuper* Remove .feciſti tu quia ; meum os aperiam non , Obmutui
10 נֶאֱלַמְתִּי לֹא אֶפְתַּח־פִּי כִּי אַתָּה עָשִׂיתָ׃ 11 הָסֵר מֵעָלַי
.defeci ego tuæ manus *conflictu* à ; tuam plagam
נִגְעֶךָ מִתִּגְרַת יָדְךָ אֲנִי כָלִיתִי׃

תרגום TARGUM.

13 וְעַבְדוּ פַּחִין תָּבְעֵי נַפְשִׁי וּבָעֵי בִּישׁוּתִי מַלִּילוּ שִׁקְרָא וּנְכִלָא כָּל יוֹמָא מְרַנְנִין׃ 14 וַאֲנָא הֵיךְ חָרְשָׁא לָא אֶשְׁמַע וְהֵיךְ אִלְמָנָא דְלָא פְתַח פּוּמֵיהּ׃ 15 וַהֲוֵיתִי כִּגְבַר דְּלָא שְׁמַע מֵעָלְמָא וְלָא אִית בְּפוּמֵיהּ מַכְסְנִיתָא׃ 16 אֲרוּם קֳדָמָךְ יְיָ צַלֵּיתִי אַנְתְּ תְּקַבֵּל יְיָ אֱלָהָי׃ 17 אֲרוּם אֲמָרִית דִּלְמָא יֶחְדוּן עֲלַי בְּאוּדְעֲזָעוּת רִגְלַי עֲלַי אִתְרַבְרַבוּ׃ 18 אֲרוּם אֲנָא לִתְבִירָא מְעַתַּד וְכֵיבִי לְקִבְלִי תְּדִירָא׃ 19 אֲרוּם חוֹבִי אַחְוֵי אֶתְיְצִיף מִן חֶטְאִי׃ 20 וּבַעֲלֵי דְבָבִי חַיֵּי עֲלִימוּ וְסַגִּיאִין סָנְאַי עַל שִׁקְרָא׃ 21 וּפָרְעִין בִּישְׁתָּא חֲלַף טָבְתָא מַסְטְנָן לִי חֲלוּפֵי דְרָדְפֵית טָב׃ 22 לָא תִשְׁבְּקִנַּנִי יְיָ אֱלָהַי לָא תִרְחֵיק מִנִּי׃ 23 זְרִיז לְסִיּוּעִי יְיָ פּוּרְקָנִי׃

לט

1 לְשַׁבָּחָא עַל מַטְּרַת בֵּית מַקְדְּשָׁא עַל פּוּמֵיהּ דִּידוּתוּן תֻּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד׃ 2 אֲמָרִית אֶנְטוֹר אוֹרְחַי מִלְּמֶחֱטֵי בְּלִישָּׁנִי אֶנְטוֹר לְפוּמִי זְמָמָא בְּדְאִית רַשִּׁיעָא לְקִבְלִי׃ 3 אִתְאַלְּמֵית שְׁתִיקִית בַּטְלֵית מִן פִּתְגָּמֵי אוֹרַיְתָא מְטוּל הֵיכְנָא כֵּיבִי מְמַרְטֵיט׃ 4 רָתַח לִבִּי בְּגוּשְׁמִי בִּרְנָנִי תִּדְלַק אֶשָּׁתָא מַלֵּית בְּלִישָּׁנִי׃ 5 אוֹדַע לִי אוֹרַח סוֹפִי וּמַשְׁחַת יוֹמַי מְנָא אִנּוּן אֵידַע אֵימָתַי אֶפְסוֹק מִן עָלְמָא׃ 6 קְלִילִין סַדַּרְתָּא יוֹמַי וְגוּשְׁמִי כִּלְמָא לְקִבְלָךְ בְּרַם כּוּלָּא לִלְמָא חֲשִׁיבִין בְּרַם כּוּלְהוֹן צַדִּיקַיָּא קַיְמִין לְחַיֵּי עָלְמָא׃ 7 בְּרַם בִּדְיוּקְנָא דַיְיָ יִתְהַלֵּךְ גַּבְרָא בְּרַם לִלְמָא מִשְׁתַּגְשִׁין כָּנֵישׁ וְלָא חַכִּים מְטוּל מְנָא מַן כַּנְשִׁנּוּן׃ 8 וּכְדוּן מְנָא סְבָרִית יְיָ אוֹרִיכוּתִי לְוָתָךְ הִיא׃ 9 מִן כּוּלְהוֹן מְרָדֵי פְּצֵי יָתִי חִסּוּדֵי סַכְלָא לָא תְשַׁוֵּי עֲלַי׃ 10 אִתְאַלְּמֵית וְלָא אֶפְתַּח פּוּמִי מְטוּל דִּי אַנְתְּ עֲבַדְתָּא׃ 11 אַעְדֵּי מֵעֲלַי מַכְתָּשָׁךְ מִמְּחַת גְּבוּרַת יְדָךְ אֲנָא שֵׁיצִיתִי׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Et fecerunt laqueos quærentes animam me- 13
am : & quærentes malum meum locuti ſunt
mendacium; & dolum quotidie *meditantur*.
Ego verò quaſi *ſurdus*, non audiebam : & 14
ſicut mutus qui non aperuit os ſuum. Et fui 15
ſicut vir qui non audivit à ſeculo ; & non
habens in ore ſuo redargutiones. Quoni- 16
am coram te Domine oravi : tu exaudies
Domine Deus meus. Quia dixi, Ne fortè 17
lætentur de me: in commotione pedum me-
orum ſuper me magnificati ſunt. Quoni- 18
am ego ad exitium paratus ſum : & dolor
meus coram me jugiter. Quoniam ſcelus 19
meum narrabo: ſolicitus ero propter pecca-
tum meum. Et auctores inimicitiæ meæ 20
vivi confortati ſunt: & multiplicati ſunt qui
oderunt me falſó. Et qui reddunt malum 21
pro bono, odio me proſequuntur ; eò quòd
ſequutus ſum bonitatem. Ne derelinquas 22
me Domine Deus meus: ne elongeris à me.
Accinge te ad auxilium meum, Domine re- 23
demptio mea.

Ad laudandum pro cuſtodia domus ſanctuarii ore Idutun, Hymnus Davidi. 1

PSAL. XXXIX.

DIxi, Obſervabo vias meas ; ne peccem 2
lingua mea : cuſtodiam os meum freno ,
quamdiu improbus eſt contra me. Obmu- 3
tui, tacui, & ceſſavi à verbis Legis; propter-
ea dolor meus conturbatus eſt. Ebulliit 4
cor meum in corpore meo ; ob meditatio-
nem meam exardeſcet ignis : locutus ſum
lingua mea. Notum fac mihi *iter fi-* 5
nis mei, & menſuram dierum meorum
quanta erit, ut ſciam quando deficiam à
ſeculo. Leves ordinâſti dies meos, & cor- 6
pus meum tanquam nihil coram te : pro-
pterea omnia nihil reputãtur, verùm omnes
juſti vivent in *vita æterna*. Tantùm in ima- 7
gine Domini ambulat homo : verùm per-
peram conturbantur : congregat, & neſcit
cui *quis* collegerit ea. Nunc autem quid 8
expectavi Domine ? ſpes mea in te eſt.
Ab omnibus ſceleribus meis libera me ; 9
opprobria ſtulti ne poſueris ſuper me. Ob- 10
mutui, nec aperiam os meum ; quoniam
tu feciſti. Amove à me plagam tuam: à per- 11
cuſſione potentiæ manus tuæ ego conſum-
ptus ſum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

13 * ܘܐܚܕܘܢܝ ܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܠܢܦܫܝ ܘܪܓܝܢ ܒܒܝܫܬܝ : ܘܡܠܠܘ ܫܘܩܪܐ ܘܢܟܠܐ. ܘܟܘܠܗ
14 ܝܘܡܐ ܪܢܝܢ ܗܘܘ : * ܘܐܢܐ ܐܝܟ ܐܝܢܐ ܕܠܐ ܫܡܥ ܗܘܝܬ. ܘܐܝܟ ܚܪܫܐ ܕܠܐ ܦܬܚ ܦܘܡܗ :
15 * ܘܗܘܝܬ ܐܝܟ ܓܒܪܐ ܕܠܐ ܫܡܥ. ܘܠܝܬ ܡܟܣܢܘܬܐ ܒܦܘܡܗ : * ܡܛܠ ܕܠܟ ܣܟܝܬ
16 ܡܪܝܐ. ܘܥܢܝܬܢܝ ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ : * ܡܛܠ ܕܐܡܪܬ ܕܠܐ ܢܚܕܘܢ ܒܝ. ܘܠܐ ܢܬܪܘܪܒܘܢ ܥܠܝ
17 ܒܙܘܥܐ ܕܪܓܠܝ : * ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܠܚܫܐ ܡܛܝܒ ܐܢܐ. ܘܟܐܒܝ ܩܕܡܝ ܗܘ ܒܟܠܙܒܢ :
18 * ܡܛܠ ܕܐܓܠܐ ܣܟܠܘܬܝ. ܘܐܬܕܟܐ ܡܢ ܚܛܗܝ : * ܕܝܦܣܠܡܐ * * ܒܥܠܕܒܒܝ ܐܬܚܝܠܘ
19
20
21 ܘܚܙܘ. ܘܣܓܝܘ ܣܢܐܝ ܕܫܘܩܪܐ : * ܦܪܥܘܢܝ ܒܝܫܬܐ ܚܠܦ ܛܒܬܐ. ܘܣܛܪܘܢܝ ܥܠ
22 ܕܒܥܝܬ ܛܒܬܐ : * ܠܐ ܬܫܒܩܝܢܝ ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ ܘܠܐ ܬܪܚܩ ܡܢܝ. * ܐܠܐ ܩܘܡ ܒܥܘܕܪܢܝ
ܘܦܪܘܩܝܢܝ :
* ܡܙܡܘܪܐ ܕܠܚ *

1 * ܠܝܕܝܬܘܢ. ܨܠܘܬܐ ܘܡܦܝܣܢܘܬܐ ܕܢܛܪܬܐ ܕܠܫܢܐ ܡܢ ܡܡܠܠܐ ܣܢܝܐ
ܘܚܙܬܐ ܘܫܪܟܗܘܢ ܕܪܓܫܐ. ܦܬܓܡܐ ܠܒ.

2 * ܐܡܪܬ ܕܐܛܪ ܐܘܪܚܝ ܘܠܐ ܐܚܛܐ ܒܠܫܢܝ. ܐܛܪ ܦܘܡܝ ܡܢ ܥܘܠܐ ܡܛܠ ܪܫܝܥܐ ܕܠܘܩܒܠܝ :
3 * ܫܬܩܬ ܘܐܬܟܪܝܬ ܘܐܬܐܒܠܬ ܡܢ ܛܒܬܐ ܘܟܐܒܝ ܐܬܕܠܚ. * ܫܚܢ ܠܒܝ ܒܓܘܝ
4
5 ܘܒܓܘܫܡܝ ܐܬܝܩܕܬ ܢܘܪܐ : ܡܠܠܬ ܒܠܫܢܝ. * ܚܘܢܝ ܡܪܝܐ ܚܪܬܝ : ܘܡܫܘܚܬܐ ܕܝܘܡܝ
6 ܡܢܐ ܐܝܢܘܢ. ܕܐܕܥ ܠܡܢܐ ܦܫܬ ܐܢܐ. * ܕܗܐ ܒܡܫܘܚܬܐ ܝܗܒܬ ܝܘܡܝ : ܘܫܘܚܠܦܝ ܐܝܟ ܠܐ
7 ܡܕܡ ܗܘ ܩܕܡܝܟ. ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ ܒܢܝܢܫܐ ܐܝܟ ܗܠܐ ܩܝܡܝܢ : * * ܕܝܦܣܠܡܐ *
ܡܛܠ ܕܒܨܠܡܐ ܡܗܠܟ ܒܪܢܫܐ ܘܐܝܟ ܗܠܐ ܝܒܫ. ܣܐܡ ܣܝܡܬܐ ܘܠܐ ܝܕܥ ܠܡܢܘ
8 ܟܢܫ ܠܗܘܢ : * ܘܗܫܐ ܡܢܘ ܣܒܪܝ ܐܠܐ ܐܢܬ ܡܪܝܐ. * ܘܡܢ ܟܠܗܘܢ ܣܟܠܘܬܝ
9
10 ܦܪܘܩܝܢܝ : ܘܚܣܕܐ ܠܥܘܠܐ ܠܐ ܬܥܒܕܝܢܝ. * ܫܬܩܬ ܘܠܐ ܦܬܚܬ ܦܘܡܝ ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܥܒܕܬ :
11 * ܐܥܒܪ ܡܢܝ ܡܚܘܬܟ ܘܡܢܝ ܡܚܘܬܐ ܕܐܝܕܝܟ.

Tenueruntque me hi qui quærunt animam 13
meam, & exoptant malũ meũ : & locuti ſunt
falſitatem ac dolum, dieque totâ meditaban-
tur. Ego verò tanquam ſurdus non audiebã, 14
& ſicut mutus non aperui os meum : Et eram 15
velut vir qui non audit, & cujus in ore non
eſt argutio. Quoniam te expectavi, Domi- 16
ne, & exaudîſti me, Dñe Deus meus : Quo- 17
niã dixi quòd non gaudebunt de me, nec ſeſe
attollent ſuper me in vacillatione pedum me-
orum : Quoniam ego ad paſſionem paratus 18
ſum, & dolor meus ante me eſt omni tempo-
re. Quoniam aperiã tibi ſtultitias meas, & 19
mundabor à peccatis meis. * *Diapſalma.* *
Hoſtes mei confortati ſunt & viderunt : & 20
multiplicati ſunt oſores mei falſidici. Repen- 21
derũt mihi malũ pro bono, & adverſati ſunt
mihi, quia quæſivi bonũ. Ne derelinquas me, 22
Dñe Deus meus, & ne recedas à me ; Sed 23
perſiſte ad auxilium meum, & libera me.

PSAL. XXXIX.

Idithum. Oratio, & adhortatio ad cohibendam linguam à ſermone turpi, & viſum, cæteroſq; ſenſus. Verſ. 32. 1

DIxi, cuſtodiam viam meam, & non pec- 2
cabo linguâ meâ; continebo os meum ab
iniquitate propter impios qui adverſùm me
ſunt. Obmutui & contriſtatꝰ ſum ac mœrui 3
ob bonũ, & dolor meus agitatus eſt : Inca- 4
luit cor meum intra me, & in corpore meo
accenſus eſt ignis. Locutus ſum linguâ meâ:
Oſtende mihi, Dñe, finẽ meũ, & menſuram 5
dierum meorũ quænã ſit, ut ſciã ad quid ſu-
perſum. Nam cũ menſura dediſti dies meos, 6
& ſuperſtes vita mea tanquã nihil eſt ante te;
quoniã omnes homines ut vapor conſiſtunt.
* *Diapſalma.* * Quoniã in imagine incedit 7
homo, & velut exhalatio areſcit ; Reponit 8
theſauros, & ignorat cui congregat eos. Nunc 9
quis eſt ſpes mea niſi tu, Dñe ? Et ab omni-
bus inſipientiis meis libera me, & opprobri- 10
um iniquis ne conſtituas me. Obmutui & 11
non aperui os meũ, quoniã tu feciſti. Trans-
fer à me flagellũ tuũ, & à me plagam manu-
um tuarum.

Verſio VULG. LAT.

13 Et vim faciebant qui quærebant animã
meã. Et qui inquirebant mala mihi, locuti
ſunt vanitates : & dolos totâ die
14 meditabantur. Ego autem tanquàm ſurdus
non audiebã : & ſicut mutus non aperiens
15 os ſuum. Et factus ſum ſicut homo
non audiens : & non habens in ore
16 ſuo redargutiones. Quoniã in te, Dñe,
ſperavi : tu exaudies me, Dñe Deus meꝰ.
17 Quia dixi, Nequando ſupergaudeant
mihi inimici mei : & dũ commoventur
pedes mei, ſuper me magna locuti ſunt.
18 Quoniã ego in flagella paratus ſum : &
dolor meus in conſpectu meo ſemper.
19 Quoniã iniquitatem meã annuntiabo :
20 & cogitabo pro peccato meo. Inimici
autem mei vivunt, & confirmati ſunt
ſuper me : & multiplicati ſunt qui oderunt
21 me iniquè. Qui retribuunt mala pro
bonis, detrahebant mihi : quoniã ſequebar
22 bonitatẽ. Ne derelinquas me, Dñe
23 Deus meus: ne diſceſſeris à me. Intende
in adjutoriũ meũ, Dñe Deus ſalutis meæ.

1 In finem, ipſi Idithun, Canticum
David. XXXVIII.

2 DIxi, Cuſtodiã vias meas : ut non
delinquã in lingua mea. Poſui ori
meo cuſtodiã, cùm conſiſteret peccator
3 adverſũ me. Obmutui, & humiliatus ſũ,
& ſilui à bonis : & dolor meus renovatꝰ
4 eſt. Concaluit cor [illegible] intra me : & in
5 meditatione mea exardeſcet ignis. Locutus
ſũ in lingua mea; Notũ fac mihi, Dñe,
finem meũ, Et numerũ dierũ meorum
6 quis eſt : ut ſciã quid deſit mihi. Ecce
menſurabiles poſuiſti dies meos: & ſubſtantia
mea tanquã nihilũ ante te. Veruntamen
univerſa vanitas, omnis homo
7 vivens. Veruntamẽ in imagine pertranſit
homo : ſed & fruſtrà conturbatur. Theſaurizat
: & ignorat cui congregabit ea.
8 Et nunc quæ eſt expectatio mea ? nónne
9 Dñs ? & ſubſtantia mea apud te eſt. Ab
omnibus iniquitatibus meis erue me :
10 opprobrium inſipienti dediſti me. Obmutui
& non aperui os meum, quoniam
11 tu feciſti : Amove à me plagas tuas.
12 A fortitudine manûs tuæ ego defeci,

Verſ. GRÆCA. LXX. Interp.

13 † Καὶ (*) ἐξεβιάζοντο οἱ ζητοῦντες τὴν ψυχήν μου· † καὶ
οἱ ζητοῦντες τὰ κακά μοι ἐλάλησαν ματαιότητας, †
14 καὶ δολιότητας ὅλην τὴν ἡμέραν ἐμελέτησαν. † Ἐγὼ δὲ
ὡσεὶ κωφὸς οὐκ ἤκουον, † καὶ ὡσεὶ ἄλαλος οὐκ ἀνοίγων
15 τὸ στόμα αὐτοῦ. † Καὶ ἐγενόμην ὡσεὶ ἄνθρωπος
οὐκ ἀκούων, † καὶ οὐκ ἔχων ἐν τῷ στόματι αὐτοῦ ἐλεγμούς.
16 † Ὅτι ἐπὶ σοὶ κύριε ἤλπισα, † σὺ εἰσακούσῃ κύριε
17 ὁ Θεός μου. † Ὅτι εἶπα, Μή ποτε ἐπιχαρῶσί
μοι οἱ ἐχθροί μου, † καὶ ἐν τῷ σαλευθῆναι πόδας
18 μου, ἐπ' ἐμὲ (κ) ἐμεγαλορρημόνησαν. † Ὅτι ἐγὼ εἰς
μάστιγας ἕτοιμος, † καὶ ἡ ἀλγηδών μου ἐνώπιόν (λ)
19 μου διαπαντός. † Ὅτι τὴν ἀνομίαν μου (μ) ἀναγγελῶ,
20 † καὶ μεριμνήσω ὑπὲρ τῆς ἁμαρτίας μου. † Οἱ δὲ
ἐχθροί μου ζῶσι, καὶ κεκραταίωνται ὑπὲρ ἐμέ, † καὶ ἐπληθύνθησαν
21 (ν) οἱ μισοῦντές με ἀδίκως. † Οἱ ἀνταποδιδόντες
(ξ) κακὰ ἀντὶ ἀγαθῶν, † ἐνδιέβαλλόν
22 με, ἐπεὶ κατεδίωκον δικαιοσύνην. † Μὴ ἐγκαταλίπῃς
με κύριε ὁ Θεός μου, μὴ ἀποστῇς ἀπ' ἐμοῦ. †
23 Πρόσχες εἰς τὴν βοήθειάν μου κύριε τῆς σωτηρίας μου.

MS, A. (*) ἐξεβιάσαντο (κ) ἐμεγαλορημόνησαν. (λ) μου ἐστὶν (μ) ἐγὼ ἀναγγελῶ, (ν) οἱ μισοῦντες ἀδίκως. (ξ) μοι κακά

1 Εἰς τὸ τέλος, τῷ (α) Ἰδιθοὺν ᾠδὴ τῷ
Δαυίδ. λη´.

2 † ΕἸπα, Φυλάξω τὰς ὁδούς μου, τοῦ μὴ ἁμαρτάνειν
(*) ἐν γλώσσῃ μου. † ἐθέμην τῷ στόματί μου φυλακήν,
† ἐν τῷ συστῆναι τὸν ἁμαρτωλὸν ἐναντίον μου.
3 † Ἐκωφώθην καὶ ἐταπεινώθην καὶ ἐσίγησα ἐξ ἀγαθῶν,
4 † καὶ τὸ ἄλγημά μου ἀνεκαινίσθη. † Ἐθερμάνθη
ἡ καρδία μου ἐντός μου, † καὶ ἐν τῇ μελέτῃ
5 μου ἐκκαυθήσεται πῦρ. † Ἐλάλησα ἐν γλώσσῃ μου,
† Γνώρισόν μοι κύριε τὸ πέρας μου, † καὶ τὸν ἀριθμὸν
τῶν (β) ἡμερῶν μου τίς ἐστιν, † ἵνα γνῶ τί ὑστερῶ
6 ἐγώ. † Ἰδοὺ (γ) παλαιὰς ἔθου τὰς ἡμέρας μου, †
(δ) καὶ ἡ ὑπόστασίς μου ὡσεὶ οὐθὲν ἐνώπιόν σου· † πλὴν
τὰ (ε) σύμπαντα ματαιότης, † πᾶς ἄνθρωπος
7 ζῶν. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Μέντοιγε ἐν εἰκόνι διαπορεύεται
ἄνθρωπος, † πλὴν μάτην ταράσσεται· † θησαυρίζει,
καὶ οὐ γινώσκει τίνι (ζ) συνάξει αὐτά. †
8 Καὶ νῦν τίς ἡ ὑπομονή μου; οὐχὶ ὁ κύριος; † καὶ ἡ
ὑπόστασίς μου (η) παρὰ σοί ἐστιν. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. †
9 Ἀπὸ πασῶν τῶν ἀνομιῶν μου ῥῦσαί με, † ὄνειδος
10 ἄφρονι ἔδωκάς με. † Ἐκωφώθην καὶ οὐκ ἤνοιξα τὸ
11 στόμα μου, (θ) ὅτι σὺ εἶ ὁ ποιήσας με. † Ἀπόστησον
12 ἀπ' ἐμοῦ τὰς μάστιγάς σου· † (ι) Ἀπὸ τῆς ἰσχύος
τῆς χειρός σου ἐγὼ ἐξέλιπον.

MS. A. (α) Ἰδιθοὺμ (*) μου ἐν (β) ἡμερῶν τίς ἐστιν, (γ) παλαιὰς (δ) καὶ ἡ ὑπόστασίς (ε) σύμπαντα (ζ) συνάγει (η) παρὰ σοῦ ἐστιν. Ἀπὸ πασῶν (θ) ὅτι σὺ ἐποίησάς με. (ι) Ἀπὸ γὰρ τῆς

Verſ. GRÆ. LXX Interp. & Æthiop. Tranſl. LAT.

Et vim faciebant, qui quærebant 13
animã meam. 13 *E*[h] *qui* (n) *inquirebant
mala mihi, locuti ſunt
vanitates: et dolos totâ die* [i] *meditabantur.*
14 *Ego autem tanquã* 14
*ſurdus non audiebã; & ſicut mutus
non aperiens os ſuum.* 15 *Et* 15
*factus ſum, ſicut homo non audiens,
et* [k] *non habens in ore ſuo redarguitiones.*
16 *Quoniã in te, Do-* 16
*mine, ſperavi: tu exaudies, Domine
Deꝰ meꝰ.* 17 *Quia dixi, Nequando* 17
*ſuper gaudeant mihi inimici mei:
& dum commoventur pedes mei,
in me* (o) *magna locuti ſunt.*
18 *Quoniã* [†] *ego in* (p) *flagella* 18
paratꝰ ſum: et [l] *dolor meꝰ in conſpectu
meo ſemper.* 19 *Quoniam* 19
iniquitatẽ meam annuntiabo : &
[m] *curam gerã pro peccato meo.*
20 *Inimici autẽ mei* (q) *vivunt: et* 20
[n] *confirmati ſunt ſuper me: &
multiplicati ſunt qui oderunt me
iniquè.* 21 *Qui retribuunt mala* 21
pro bonis, (r) *detrahebant mihi :
quoniã* (ſ) *perſequutus ſum juſtitiam.*
[o] 22 *Ne dereliquas me,* 22
*Domine Deꝰ meus, ne diſceſſeris à
me.* (t) *Intende in adjutorium* 23
meum, Domine ſalutis meæ.

In finem (a) ipſi [a] Idithum, Canticum 1
ipſi David. XXXVIII.

1 D*ixi,* (b) *Cuſtodiam* [b] *vias* 2
*meas ; ut non delinquam in
lingua mea.* 2 *Poſui ori meo cuſtodiam,
cùm conſiſteret peccator adverſum
me.* 3 *Obmutui, & humiliatus* 3
ſum, & ſilui à bonis: & [c]
dolor meus (c) *renovatus eſt.*
4 (d) [d] *Concaluit cor meũ intra* 4
*me, & in meditatione mea exardeſcet
ignis.* 5 *Locutus ſum in lingua* 5
*mea; Notũ fac mihi, Domine,
finem meũ:* 6 *Et numerũ dierum
meorũ, qui eſt; ut ſciã* [e] *quid deſit
mihi.* 7 *Ecce* (e) *veteres poſuiſti* 6
dies meos: & (f) *ſubſtantia mea,
tanquam nihil ante te.* 8 *Veruntamen*
(g) *univerſa vanitas, omnis
homo* (h) *vivens. DIAPSALMA.*
(i) 9 *Veruntamen* [†] *in imagine* 7
pertranſit homo: ſed fruſtrà conturbatur.
10 *Theſaurizat, et ignorat*
(k) *cui congregabit ea.* 11 *Et* (l) 8
*nunc, quæ eſt expectatio mea? nonne
Dominꝰ, et* [†] *ſubſtantia mea* (m) *apud te eſt? DIAPSALMA.* 12 *Ab omnibus iniquitatibus* 9
meis erue me: opprobriũ inſipienti dediſti me: 13 *Obmutui, et non aperui os meũ:* 10
quoniam tu es, qui (n) *feciſti me: Amove à me plagas tuas.* 14 [g] *A fortitudine manûs* 11 12
tuæ ego defeci :

Verſio ÆTHIOPICA.

13 ወተኃየሉኒ:እለ:የኃሥሥዋ:ለነፍስየ::=፡
ወእለኒ:ይፈቅዱ:ሕማምየ:ነበቡ:ከንቶ:: 13
ወኵሉ:አሚረ:ይመክሩ:በቍጽር:ያመንስ
ዉኒ::=፡ ወአንሰ:ከመ:ጽሙም:ዘኢይሰ 14
ምዕ::ወከመ:በሃም:ዘኢይከሥት:አፈ
ሁ::=፡ ወኮንኩ:ከመ:ብእሲ:ዘኢይሰም 15
ዕ::ወከመ:ዘኢይክል:ተናግሮ:በአፈ
ሁ::=፡ እስመ:ኪያከ:ተወከልኩ:እግዚ 16
እ:አንተ:ስምዓኒ:እግዚእ:አምላኪየ::=፡
እስመ:እቤ:ኢትረስየኒ:ስላት:ጸላኢየ::ወ 17
እመኒ:ድኅጸ:ሰኰናየ:የዐቢዩ:አፈሆሙ:ሰ
ዕሌየ::=፡ እስመ:ሲተሰ:ያጽንሑኒ:ይቅስፉ 18
ኒ::ወቍስልየኒ:ቅድሜየ:ውእቱ:በኵሉ:
ጊዜ::=፡ ወእነግር:ጌጋይየ::ወእቴክዝ:በ 19
እንተ:ኃጢአትየ::=፡ ፀላእትየሰ:ሕያዋን: 20
ወይኄይሉኒ::ወበዝኁ:እለ:በዐመፃ:ይጸል
ሉኒ::=፡ እለ:ይፈድዩኒ:እኪተ:ህየንተ: 21
ሠናይት::ወያስተዋድዩኒ:በተሊወ:ጽድቅ::
ወገደፉ:እኀዊሆሙ:ከመ:በድን:ርኩስ::=፡
አንተ:ኢትግድፈኒ:እግዚኦ:አምላኪየ:ወ 22
ኢትርሐቅ:እምኔየ::ወነጽር:ውስተ:ረድ
ኤትየ:እግዚኦ:አምላክ:መድኃኒትየ::=፡
ፍጻሜ:ዘኤደቅም:ማኅሌብ:ዘደዊት::
ሀፓ ዕቤ:አዐቅብ:አፈየ:ከመ:ኢይስሐት: 1
በልሳንየ::=፡ ወአንበርኩ:ዐቃቤ:ለአፈየ:: 2
ሶበ:ይትቃወሙኒ:ኃጥአን:ቅድሜየ::=፡ ተ 3
ጸመምኩ:ወአትሐትኩ:ርእስየ::ወአፎመ
ምኩ:ለሠናይ::ወተሐደሰኒ:ቍስልየ::=፡
ወሞቀኒ:ልብየ:በውስጤየ::ወነደደ:እሳት: 4
እምእንብቦትየ::=፡ ወእቤ:በልሳንየ:ንግረ 5
ኒ:እግዚኦ:ደኃሪትየ::=፡ መንት:እማን 6
ቱ:ኍልቆን:ለመዋዕልየ::ከመ:አእምር:ለ
መንት:እዴሀር:አነ::=፡ ናሁ:ብሉያተ:ረ 7
ሰይኮን:ለመዋዕልየ::ወአካልየኒ:ወኢከመ:
መንት:በቅድሜከ::=፡ ወባሕቱ:ከንቱ: 8
ኵሉ:ደቂቀ:እጓለ:እመሕያው::=፡ ወከ 9
መ:ጽላሎት:ያንሶሱ:ኵሉ:ሰብእ::ወባሕ
ቱ:ከንቶ:ይትሌወኩ::=፡ ይዘግቡ:ወኢያእ 10
መሩ:ለዘ:ያስተጋብኡ::=፡ ወይእዜኒ:መ 11
ኑ:ተስፋየ:አኮኑ:እግዚአብሔር::ወትዕግ
ስትየኒ:እምኀቤከ:ውእቱ::=፡ ወእምኵ 12
ሉ:ኃጢአትየ:አድኅነኒ::ወረሰይከኒ:ፅዕለ
ተ:ለአብደን::=፡ ተፀመምኩ:ወኢከሠት 13
ኩ:አፈየ::እስመ:አንተ:ፈጠርከኒ::አር
ሕቅ:እምኔየ:መቅሠፍተከ::=፡ እስመ: 14
እምጽንዓ:እዴከ:ኃለቁ:አነ::

INTERP. ÆTHIOP. [h] qui cupiebant etiam afflictionem meam, [i] meditabantur, & pertentabant me. [k] ſicut ille qui loqui nequit ore ſuo. [†] expectate me fecerunt me vapulandum: [l] vulnus meum in [m] anxius ero pro [n] fortiores me ſunt: [o] Et repulerunt fratres ſuos, tanquam cadaver immundum. Ne *PSAL. XXXVIII.* [a] Edakem, [b] os meum ; ut non aberrem [c] vulnus meum renovatum eſt. [d] Et dilatatum eſt cor meum [e] quare ipſe deficiam. [f] tanquam umbra pertranſit omnis [†] patientia mea [g] Quoniam à fortitudine

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

13 والقريبون الي وقفوا بعيدا مني * ملتمسوا نفسي ظلموا * والطالبون لي الشر تكلموا بالباطل *
14 النهار كله يدرسون الدغل * وانا مثل الاصم لا اسمع * ومثل الاخرس الذي لا يفتح فاه *
15 16 صرت مثل انسان لا يسمع * ولا تبكيت في فمه * لاني توكلت عليك يا ربي * وانت تستجيب لي
17 18 يا ربي والهي * لاني قلت لكيلا تسر بي اعداي * وعند زلل رجلي عظموا علي القول * وانا
19 استعددت للضرب * ووجعي امامي في كل حين * لاني اعترف باثمي * واهتم لاجل خطيتي *
20 21 اعداي احياء * واعز مني * كثر من يبغضني ظلما * الذين جاروني علي الخيرات شرا * مكروا
22 بي لاني طلبت البر * رفضوني انا الحبيب مثل ميت مرذول * وسمروا جسدي * لا تخلا عني
23 يا ربي والاهي * ولا تبعد عني * انظر في معونتي يا اله خلاصي * الليلويا *
1 * المزمور الثامن والثلثون * تعليم وشكر لاجل ايديثون * وعدده * كط استيخن *
2 * انا قلت احفظ طرقي ليلا اخطي بلساني * تركت حافظا على فمي * عند قيام الخاطي امامي
3 4 * خرست وتواضعت * وامسكت عن الخير * فتجدد وجعي * حمي قلبي في باطني * وفي تلاوتي
5 اضطرمت النار مني * تكلمت بلساني وقلت * عرفني يا رب منتهاي * وما هي عدة ايامي لاعلم
6 ماذا اعدمها * قد تركت ايامي قصر * وقوامي كلا شي امامك * بل كل شي لانسان حي فهو
7 8 باطل * الا ان الانسان يمشي بصورة وكالفي يزول * ويكنز ولا يعلم لمن يجمع * والان من رجاي
9 10 اليس هو الرب * وقوامي هو من عنده * طهرني من جميع اثامي جعلتني عارا للجاهل * صممت
11 ولم افتح فمي * لانك انت خلقتني * ارفع عني تاديبك * لاني قد فنيت من قوة يديك *

Et qui prope me erant, ſteterunt procul à 13
*me. Qui quærunt animã meã, oppreſſerunt
: & qui exoptant mihi malũ, locuti
ſunt vanitatem, die totâ meditantur dolũ.
Ego verò tanquã ſurdus non audiebã, &* 14
tanquã mutꝰ qui non aperit os ſuũ. Factꝰ 15
*ſum velut homo non audiens, & carens
redargutione in ore ſuo. Quandoquidem* 16
*confiſus ſum in te, O Domine mi, etiã tu
exaudies me, O Domine mi, & Deus meus.
Nã ego dixi, ut non gaudeant in me inimici* 17
mei; & ad lapſũ pedũ meorũ grandem 18
*fecerunt de me ſermonem. Et ego paravi
me verberibus, & dolor meus coram
me in omni tempore. Quoniã ego confiteor* 19
*delictũ meũ, angor propter peccatũ meũ.
Inimici mei vivi ſunt, & fortiores me :* 20
*multiplicati ſunt qui oderunt me iniquè.
Qui retribuerunt mihi pro beneficiis malum,* 21
*doloſè egerunt in me quia quæſivi
juſtitiam. Reſpuerunt me dilectum quaſi
mortuũ abominandũ, & clavis confixerunt
corpus meũ. Ne derelinquas me, O* 22
*Domine mi, & Deus meus, & ne elongeris
à me. Reſpice in adjutoriũ meũ, O* 23
Deus ſalutis meæ. Alleluja.

PSAL. XXXVIII.

Documentum, & gratiarum actio 1
pro Idithun. Et numerus ver. 19.

E*Go dixi, Cuſtodiã vias meas, ut ne* 2
*peccem linguâ meâ : Poſui cuſtodem
ori meo, aſtante peccatore corã me. Obmutui,* 3
*& humiliatus ſũ; & retraxi me à
bono : proinde renovatus eſt dolor meus.
Æſtuavit cor meũ in interaneis meis, &* 4
*in meditatione mea accenſus eſt ignis ex
me. Locutus ſum linguâ meâ, & dixi; Notifica* 5
*mihi, O Domine finem meum, &
quinã ſit numerus dierũ meorũ, ut ſciam
quantũ diſtem ab eis. Jam poſuiſti dies* 6
*meos breves, & conſiſtentia mea tanquam
nihilũ corã te. Imò quicquid pertinet ad
hominẽ viventẽ, eſt vanũ: Niſi quòd homo* 7
*incedit in imagine, & velut umbra
præterit: et theſaurizat, et ignorat cui cogat.
Nunc ergò quæ eſt ſpes mea ? nonne* 8
eſt Dominus ? Et conſiſtentia mea ab ipſo 9
*eſt. Munda me omnibus ſceleribus meis.
Feciſti me opprobriũ ſtulto : Obmutui, &* 10
*non aperui os meum, quia tu creâſti me.
Tolle à me caſtigationem tuã : jam enim* 11
conſumptus ſũ à duritie manuũ tuarũ.

תהלים : מ

tineam ut feciſti liqueſcere &,virum corripuiſti iniquitatem *ſuper* increpationibus In
11 בְּתוֹכָחוֹת עַל־עָוֹן ׀ יִסַּרְתָּ אִישׁ וַתֶּמֶס כָּעָשׁ
meā orationem Audi .Selah ,homo omnis vanitas veruntamen ; ejus deſideriū
12 חֲמוּדוֹ אַךְ הֶבֶל כָּל־אָדָם סֶלָה׃ שִׁמְעָה תְפִלָּתִי ׀ 13
quia ,*taceas* ne meam lachrymam ad : percipe auribus meū clamorem & ,Domine
יְהוָה וְשַׁוְעָתִי ׀ הַאֲזִינָה אֶל־דִּמְעָתִי אַל־תֶּחֱרַשׁ כִּי
; robotabor & ,me à *Claude* .mei patres omnes ut incola ; *tecum ego* peregrinus
14 גֵּר אָנֹכִי עִמָּךְ תּוֹשָׁב כְּכָל־אֲבוֹתָי׃ הָשַׁע מִמֶּנִּי וְאַבְלִיגָה 14
.*ego* non & ,vadam antequam
בְּטֶרֶם אֵלֵךְ וְאֵינֶנִּי׃

PSAL. XL. מ

declinavit & ; Dominum expectavi Expectando .canticum ,David ipſi Victori
1 לַמְנַצֵּחַ לְדָוִד מִזְמוֹר׃ קַוֹּה קִוִּיתִי יְהוָה וַיֵּט 2
luto è ,ſonitus ciſterna è me fecit aſcendere Et .meum clamorem audivit & ,*me ad*
3 אֵלַי וַיִּשְׁמַע שַׁוְעָתִי׃ וַיַּעֲלֵנִי ׀ מִבּוֹר שָׁאוֹן מִטִּיט
meo ore in *dedit* Et .meos greſſus *parans* ,meos pedes petram ſuper ſtatuit & : cœni
4 הַיָּוֵן וַיָּקֶם עַל־סֶלַע רַגְלַי כּוֹנֵן אֲשֻׁרָי׃ וַיִּתֵּן בְּפִי ׀
ſperabunt & ; timebunt & ,multi videbunt : noſtro Deo laudem ,novum canticum
שִׁיר חָדָשׁ תְּהִלָּה לֵאלֹהֵינוּ יִרְאוּ רַבִּים וְיִירָאוּ וְיִבְטְחוּ
reſpexit non & ;ſuam ſpem Dominum poſuit qui *viri Felicitates* .Domino in
5 בַּיהוָה׃ אַשְׁרֵי הַגֶּבֶר אֲשֶׁר־שָׂם יְהוָה מִבְטַחוֹ וְלֹא־פָנָה
Domine tu feciſti Multa .mendacium declinantes & ,ſuperbos ad
6 אֶל־רְהָבִים וְשָׂטֵי כָזָב׃ רַבּוֹת עָשִׂיתָ ׀ אַתָּה ׀ יְהוָה
: te apud *ordinare* non nos erga tuas cogitationes & ,tua mirabilia meus Deus
אֱלֹהַי נִפְלְאֹתֶיךָ וּמַחְשְׁבֹתֶיךָ אֵלֵינוּ אֵין ׀ עֲרֹךְ אֵלֶיךָ
, noluiſti *munus* & Sacrificiū .*narrare præ fuêre fortia* ; loquar & ,annunciabo
7 אַגִּידָה וַאֲדַבֵּרָה עָצְמוּ מִסַּפֵּר׃ זֶבַח וּמִנְחָה ׀ לֹא חָפַצְתָּ
Tunc .poſtulâſti non peccato pro ſacrificiū & ,holocauſtū : mihi fodiſti aures
8 אָזְנַיִם כָּרִיתָ לִּי עוֹלָה וַחֲטָאָה לֹא שָׁאָלְתָּ׃ אָז
faciendum Ad .me ſuper eſt ſcriptum libri volumine in ; veni Ecce : dixi
9 אָמַרְתִּי הִנֵּה־בָאתִי בִּמְגִלַּת־סֵפֶר כָּתוּב עָלָי׃ לַעֲשׂוֹת
Annunciavi .meorū viſcerum medio in tua lex & : volui mi Deus tuā voluntatē
10 רְצוֹנְךָ אֱלֹהַי חָפָצְתִּי וְתוֹרָתְךָ בְּתוֹךְ מֵעָי׃ בִּשַּׂרְתִּי
.ſciviſti tu Domine ; *prohibebo* non mea labia ecce ,multo cœtu in juſtitiam
צֶדֶק ׀ בְּקָהָל רָב הִנֵּה שְׂפָתַי לֹא אֶכְלָא יְהוָה אַתָּה יָדָעְתָּ׃
tuam ſalutem & ,tuam veritatem ; mei cordis medio in operui non tuā Juſtitiam
11 צִדְקָתְךָ לֹא־כִסִּיתִי ׀ בְּתוֹךְ לִבִּי אֱמוּנָתְךָ וּתְשׁוּעָתְךָ
.multo cœtu in tuam veritatem & ,tuam miſericordiam *celavi* non : dixi
אָמַרְתִּי לֹא־כִחַדְתִּי חַסְדְּךָ וַאֲמִתְּךָ לְקָהָל רָב׃
tua veritas & tua miſericordia : me à tuas miſericordias *occludas* ne Domine Tu
12 אַתָּה יְהוָה לֹא־תִכְלָא רַחֲמֶיךָ מִמֶּנִּי חַסְדְּךָ וַאֲמִתְּךָ
non ad uſque mala me *ſuper* circundederunt Quoniam .me cuſtodiant ſemper
13 תָּמִיד יִצְּרוּנִי׃ כִּי אָפְפוּ־עָלַי ׀ רָעוֹת עַד־אֵין
ſunt *fortificatæ* : videre potui non & ,meæ iniquitates me comprehenderūt : *numerum*
מִסְפָּר הִשִּׂיגוּנִי עֲוֹנֹתַי וְלֹא־יָכֹלְתִּי לִרְאוֹת עָצְמוּ
.me dereliquit meum cor & ,mei capitis capillis præ
מִשַּׂעֲרוֹת רֹאשִׁי וְלִבִּי עֲזָבָנִי׃

תרגום TARGUM.

בְּמַסְכְּנוּתָא עַל חוֹבָא יִתְרְדֵי בַּר נָשָׁא וּמַסְיַת 12
הֵיךְ עֲמַר דְּאִתְנַרְדֵּים גּוּשְׁמֵיהּ בְּרַם לְמָא כָל
בַּר נָשָׁא לְעַלְמָא׃ קַבֵּיל צְלוֹתִי יְיָ וּבָעוּתִי 13
אֲצֵית וּלְדִמְעָתִי לָא תִשְׁתּוֹק אֲרוּם הֵיךְ גִּיּוֹרָא
אֲנָא גַּבָּךְ תּוֹתָבָא הֵיךְ כּוּלְהוֹן אֲבָהָתִי׃
אַשְׁלֵי מִנִּי וְאֵיזֵיל עַד לָא אֵהָךְ וְלָא 14
אִיתָי׃

מ

לְשַׁבָּחָא לְדָוִד תֻּשְׁבַּחְתָּא׃ מְסַבְּרָא סַבְּרִית יְיָ 1 2
וּצְלָא לְוָתִי וְקַבֵּיל בָּעוּתִי׃ וְאַסְקַנִי מִגּוֹב 3
אִתְרְגוּשְׁתָּא מִסְּכַן טִשְׁטוּשָׁא וַאֲקִים עַל
כֵּיפָא רִגְלַי תַּקִּין אֲתוּרָי׃ וְסַדַּר בְּפוּמִי שְׁבַח 4
חֲדַתָּא תְּהֵי תוּשְׁבַּחְתָּא קֳדָם יְיָ אֱלָהָנָא
יֶחֱמוּן סַגִּיאִין וְיִדְחֲלוּן וְיִסְבְּרוּן בְּמֵימְרָא דַיְיָ׃
טוּבוֹי דְּגַבְרָא דְשַׁוִּי יְיָ רוּחְצָנֵיהּ וְלָא אִסְתְּכֵי 5
לְוָת סוּרְבָנַיָּא וּמְמַלְּלֵי כַדִּיבוּתָא׃ סַגִּיעֵי 6
נִסַּיָּא דַעֲבַדְתָּא אַתְּ יְיָ אֱלָהַי פְּרִישׁוּתָךְ
וּרְעוּתָךְ לְוָתָנָא לֵית אֶפְשַׁר לְסַדְּרָא לְוָתָךְ
תּוּשְׁבַּחְתָּךְ אַתְנֵי וַאֲמַלֵּל תַּקִּיפוּ מִן לְחַוָּאָה׃
נִכְסָא וְדוּרוֹנָא לָא צְבִיתָא אוּדְנִין לְאַצָּתָא 7
פּוּרְקָנָךְ כְּרִיתָא לִי עֲלָתָא וְקוּרְבַּן חַטָּתָא
לָא שְׁאֵילְתָּא׃ הֵידֵין אֲמֵרִית הָא עֲלֵית 8
לְחַיֵּי עָלְמָא כַּד אֶעֱסוֹק בִּמְגִלַּת סִפְרָא
דְּאוֹרָיְתָא דְּאִכְתִּיב אַמְטֻלְתִּי׃ לְמֶעְבַּד רְעוּתָךְ 9
אֱלָהַי רְעֵיתִי וְאוֹרָיְתָךְ כְּלִילָא בִּמְצַע מְעַיָּי׃
בַּשֵּׂרִית צִדְקָא בִּכְנִשְׁתָּא רַבָּא הָא סִפְוָתַי לָא 10
אֶמְנַע יְיָ אֱלָהַי אַתְּ חַכִּימְתְּ׃ צִדְקָתָךְ לָא טַמְרִית 11
בְּגוֹ לִבִּי קוּשְׁטָךְ וּפוּרְקָנָךְ אֲמֵרִית לָא כַסֵּיתִי
טִיבוּתָךְ וְהֵימָנוּתָךְ בִּקְהָלָא רַבָּא׃ בְּגִלַל 12
כֵּן אַתְּ יְיָ לָא תִמְנַע רַחֲמָךְ מִנִּי טוּבָךְ וְקוּשְׁטָךְ
תְּדִירָא יִנְטְרוּנַנִי׃ אֲרוּם תַּקִּיפִין עֲלַי בִּישִׁין 13
עַד דְּלֵית מִנְיָן אַדְבִּיקוּ יָתִי חוֹבַי וְלָא יְכֵילִית
לְמֶחֱמֵי תַּקִּיפוּ מִן בִּינָתֵי רֵישִׁי וְרַעְיוֹנַי
שַׁבְקוּנִי׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Correptione ob ſcelus *caſtigatur homo* : & 12 liquefactum eſt inſtar *tineæ diſrupta* corpus ejus : profectò nihil eſt omnis homo ſemper. Suſcipe orationem meam Domine, 13 & petitionem meam auſculta : & ad lachrymas meas ne ſileas ; quoniam veluti peregrinus ego ſum apud te, & advena ſicut omnes patres mei. Dimitte me, & 14 abibo, antequam vadam, & non ſubſiſtam.

Ad laudandum Davidi Hymnus. 1

PSAL. XL.

EXpectando expectavi Dominum ; & in- 2 clinavit ad me, & ſuſcepit deprecationem meam. Et eduxit me de lacu ſtrepitus, & 3 luto cœni : & ſtatuit ſupra petram pedes meos, ſtabilivit greſſus meos. Et ordinavit 4 in ore meo canticum novum, *erit hymnus* coram *Domino* Deo noſtro : videbunt multi & timebunt, & ſperabunt in verbo Domini. Beatus homo qui poſuit Dominum ſpem 5 ſuam : & non reſpexit ad elatos, & loquentes mendacia. Multa ſigna edidiſti tu Do- 6 mine Deus meus : mirabilia tua & *voluntas tua* nobiſcum : impoſſibile eſt ordinare ad te laudem tuam : [*ſi*] narrem & loquar, plures ſunt quàm ut indicari poſſint. Immolationem & oblationem nolu- 7 iſti ; aures ad *auſcultandam ſalutem tuam* perforâſti mihi ; holocauſtum & oblationem peccati non poſtulâſti. Tunc dixi, 8 Ecce ingrediar ad vitam æternam, quando ſtuduero in volumine libri legis quod ſcriptum eſt propter me. Facere volun- 9 tatem tuam Deus meus volui ; & lex tua *integra eſt* in medio viſcerum meorum. Annunciavi juſtitiam in congregatione 10 magna : ecce labia mea non prohibebo ; Domine *Deus meus* tu nôſti. Juſtitiam 11 tuam non abſcondi in medio cordis mei ; veritatem tuam & redemptionem tuam dixi : non occului bonitatem tuam, & fidem tuam in eccleſia magna. Propterea 12 tu Domine ne prohibeas miſericordiam tuam à me : benignitas tua & veritas tua continuè cuſtodient me. Quoniam *in-* 13 *valuerunt in* me mala quæ numerari non poſſunt : comprehenderunt me ſcelera mea, & non potui videre : multiplicata ſunt pluſquàm capilli capitis mei, & *cogitationes meæ deſeruerunt* me.

Verſio SYRIACA, cum Interpretatione LATINA.

* ܣܦܝܬ ܡܢ ܡܟܬܫܢܘܬܐ ܕܥܠ ܚܛܗ̈ܝ: ܪܕܝܬ ܓܒܪܐ ܘܐܫܚܠܬ ܐܝܟ ܫܒܠܬܐ ܪܓܬܗ. 12
ܘܐܝܟ ܥܛܪܐ ܐܢܘܢ ܟܠܗܘܢ ܒܢܝ̈ܢܫܐ: * ܫܡܥ ܡܪܝܐ ܨܠܘܬܝ ܘܒܥܘܬܝ ܘܨܘܬ ܠܕܡܥܬܝ. 13
ܘܠܐ ܬܫܬܘܩ ܡܛܠ ܕܬܘܬܒܐ ܐܢܐ ܥܡܟ: ܘܬܘܬܒܐ ܐܝܟ ܟܠܗܘܢ ܐܒܗ̈ܝ. * ܦܪܘܩܝܢܝ: 14
ܘܐܬܬܢܝܚ: ܥܕܠܐ ܐܙܠ ܘܠܐ ܐܗܘܐ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ *

* ܕܕܘܝܕ. ܫܘܡܥܢܐ ܟܕ ܐܝܬܝ ܠܗ ܫܡܥܝ ܫܡܗ̈ܐ ܕܗܢܘܢ ܕܡܫܡܫܝܢ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. 1
ܘܪܘܚܢܐ: ܬܘܕܝܬܐ ܠܐܠܗܐ ܡܢ ܦܠܚܐ ܘܥܕܬܐ. ܦܬܓ̈ܡܐ ܡܗ.
* ܡܣܟܪܘ ܣܟܪܬ ܠܡܪܝܐ. ܕܐܬܦܢܝ ܠܘܬܝ ܘܫܡܥ ܒܥܘܬܝ: * ܘܐܣܩܢܝ ܡܢ ܓܘܒܐ 2 3
ܕܘܘܢܐ. ܘܡܢ ܛܝܢܐ ܕܚܒܠܐ: ܐܩܝܡ ܥܠ ܫܘܥܐ ܪܓܠܝ ܘܐܬܩܢ ܗܠܟܬܝ. * ܝܗܒ ܒܦܘܡܝ 4
ܬܫܒܘܚܬܐ ܚܕܬܐ ܬܫܒܘܚܬܐ ܠܐܠܗܐ: ܕܢܚܙܘܢ ܣܓܝܐܐ ܘܢܚܕܘܢ. ܘܢܣܒܪܘܢ ܒܡܪܝܐ:
* ܛܘܒܘܗܝ ܠܓܒܪܐ ܕܥܠ ܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܬܟܠ. ܘܠܐ ܦܢܐ ܠܣܪܝܩܘܬܐ: ܘܐܦܠܐ ܠܡܡܠܠܐ 5
ܕܓܠܐ. * ܣܓܝܐܢ ܐܢܝܢ ܕܥܒܕܬ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ: ܬܕܡܪ̈ܬܟ ܘܡܬܚܫܒ̈ܬܟ ܠܘܬܢ ܘܠܝܬ ܐܢܫ ܕܕܡܐ ܠܟ. 6
ܚܘܝܬ ܘܐܡܪܬ ܘܣܓܝܐܢ ܐܢܝܢ ܡܢ ܡܢܝܢܐ: * ܕܒ̈ܚܐ ܘܩܘܪ̈ܒܢܐ ܠܐ ܨܒܝܬ. ܐܕܢ̈ܐ ܕܝܢ 7
ܢܩܒܬ ܠܝ: ܘܝܩ̈ܕܐ ܡܫܡܠܝܐ ܕܥܠ ܚܛܗ̈ܐ ܠܐ ܫܐܠܬ. * ܗܝܕܝܢ ܐܡܪܬ ܕܗܐ ܐܬܝܬ: ܕܒܪܝܫ 8
ܟܬܒ̈ܐ ܟܬܝܒ ܥܠܝ. * ܠܡܥܒܕ ܨܒܝܢܟ ܐܠܗܝ ܨܒܝܬ: ܘܢܡܘܣܟ ܒܓܘ ܟܪܣܝ. 9
* ܣܒܪܬ ܙܕܝܩܘܬܟ ܒܥܕܬܐ ܪܒܬܐ: ܘܣܦܘܬܝ ܠܐ ܟܠܝܬ. ܡܪܝܐ ܐܢܬ ܝܕܥ ܐܢܬ: * ܕܠܐ ܟܣܝܬ 10 11
ܙܕܝܩܘܬܟ ܒܓܘ ܠܒܝ: ܐܠܐ ܦܘܪܩܢܟ ܘܗܝܡܢܘܬܟ ܐܡܪܬ. ܘܠܐ ܟܣܝܬ ܛܝܒܘܬܟ ܘܗܝܡܢܘܬܟ
ܡܢ ܟܢܘܫܬܐ ܪܒܬܐ: * ܘܐܦ ܐܢܬ ܡܪܝܐ ܠܐ ܬܟܠܐ ܪ̈ܚܡܝܟ ܡܢܝ: ܐܠܐ ܪ̈ܚܡܝܟ ܘܗܝܡܢܘܬܟ 12
ܒܟܠܙܒܢ ܢܛܪܘܢܢܝ: * ܡܛܠ ܕܐܚܕܘܢܝ ܒܝ̈ܫܬܐ ܕܠܐ ܡܢܝܢܐ. ܘܐܕܪܟܘܢܝ ܚܛܗ̈ܝ ܘܠܐ 13
ܐܫܟܚܬ ܠܡܚܙܐ: ܘܣܓܝܘ ܡܢ ܣܥܪܐ ܕܪܝܫܝ ܘܠܒܝ ܫܒܩܢܝ.

Conſumptus ſum objurgatione quæ pro pec- 12 catis meis. Caſtigâſti virum, & fluere feciſti ſicut feſtucam deſideria ejus : & veluti vapor ſunt omnes homines. Audi, Domine, ora- 13 tionem meam & petitionem meam, & auſculta lachrymam meam : & ne ſileas, quoniam hoſpes ego ſum tecum, & peregrinus ſicut omnes patres mei. Libera me, & qui- 14 eſcam, antequam vadam & ampliùs non ſim futurus.

PSAL. XL.

Davidis. Ad literam : quum attulit ei Samei nomina eorum qui miniſtrabant in domo Domini. Spirituali verò ſenſu, gratiarum actio Deo à cultoribus & Eccleſia. Verſ. 45. 1

SPerans ſperavi in Domino qui converſus 2 eſt ad me, audivitque deprecationem meam. Et eduxit me de fovea mœroris, & de 3 luto corruptionis : erexit ſupra petram pedes meos, atque firmavit greſſus meos. Dedit in 4 ore meo laudem novam, laudem Deo : ut videant multi ac lætentur, ſperentque in Domino. Beatus homo qui nomini Domini fi- 5 ſus eſt, nec vertit ſe ad vanitatem, neque ad ſermonem mendacem. Multa ſunt quæ feciſti, Domine Deus noſter, 6 miracula tua & conſilia tua erga nos, & non eſt quiſquam ſimilis tibi. Oſtendiſti, atque dixiſti, ac plurima ſunt præter numerum. Sacrificia & oblationes noluiſti, aures au- 7 tem perfodiſti mihi : & holocauſta perfecta quæ pro peccatis, non poſtulâſti. Tunc dixi, 8 Ecce veni : quia in principio librorum ſcriptum eſt de me. Facere voluntatem tuam, 9 Deus, mihi libuit : & lex tua in præcordiis meis. Annuntiavi juſtitiam tuam in Eccleſia 10 magna, & labia mea non cohibui. Domine, tu nôſti Non abſcondiſſe me juſtitiam tuam 11 intra cor meum, ſed ſalutem tuam & fidem tuam me dixiſſe : neque occultâſſe me beneficium tuum & fidem tuam à cœtu magno. Et tu quoque, Domine, ne contineas à me 12 miſericordiam tuam : ſed miſerationes tuæ & fides tua omni tempore me cuſtodiant. Quoniam circunderunt me mala abſque nu- 13 mero, & apprehenderunt me peccata mea, nec videre potui : & multiplicata ſunt pluſquam pili capitis mei, & cor meum dereliquit me.

Versio VULG. LAT.

in increpationibus : propter iniquitatē
corripuisti hominē. Et tabescere fe-
cisti sicut araneam animā ejus : verun-
tamen vanè conturbatur omnis homo.
13 Exaudi orationē meā, Dñe, & depreca-
tionē meam : auribus percipe lachrymas
meas. Ne sileas : quoniā advena ego
sum apud te, & peregrinus, sicut omnes
14 patres mei. Remitte mihi, ut refrigerer
priùs quàm abeā, & ampliùs non ero.

1 In finem, Psalmus ipsi David.
XXXIX.

2 EXpectans expectavi Dñm, & inten-
3 dit mihi. Et exaudivit preces meas : et e-
duxit me de lacu miseriæ, et de luto fæcis.
Et statuit sup petrā pedes meos : & di-
4 rexit gressus meos. Et immisit in os
meū canticū novū, carmen Deo nostro.
Videbunt multi & timebunt : & spera-
5 bunt in Domino. Beatus vir, cujꝰ est
nomen Dñi spes ejꝰ : & non respexit in
6 vanitates & insanias falsas. Multa fe-
cisti tu, Dñe Deꝰ meꝰ, mirabilia tua : &
cogitationibꝰ tuis non est qui similis sit
tibi. Annuntiavi & locutꝰ sum : mul-
7 tiplicati sunt sup numerū. Sacrificiū &
oblationē noluisti : aures autē perfecisti
mihi. Holocaustū & pro peccato non
8 postulâsti : Tunc dixi, Ecce venio.
9 In capite libri scriptū est de me, Ut
facerē voluntatē tuā : Deꝰ meꝰ, volui, &
10 legē tuā in medio cordis mei. Annun-
tiavi justitiā tuā in ecclesia magna, ecce
labia mea non prohibebo : Domine, tu
11 scîsti. Justitiam tuam non abscondi
in corde meo : veritatem tuam & sa-
lutare tuum dixi. Non abscondi mi-
sericordiam tuam, & veritatem tuam,
12 à concilio multo. Tu autem, Domine,
ne longè facias miserationes tuas à me :
misericordia tua & veritas tua semper
13 susceperunt me. Quoniam circumde-
derunt me mala, quorum non est nume-
rus : comprehenderunt me iniquitates
meæ, & non potui ut viderem. Mul-
tiplicatæ sunt super capillos capitis
mei : & cor meum dereliquit me.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

† ἐν ἐλεγμοῖς ὑπὲρ ἀνομίας ἐπαίδευσας ἄνθρω-
πον· † ϗ ἐξέτηξας ὡς ἀράχνην τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, †
(κ) πλὴν μάτην ταράσσεται πᾶς ἄνθρωπος. ΔΙΑ-
13 ΨΑΛΜΑ. † Εἰσάκουσον τῆς προσευχῆς μου κύριε
† ϗ τῆς δεήσεώς μου, ἐνώπιον † τῶν δακρύων μου·
μὴ παρασιωπήσῃς, † ὅτι πάροικος ἐγώ εἰμι (λ) ἐν
τῇ γῇ † ϗ παρεπίδημος, καθὼς πάντες οἱ πατέ-
14 ρες μου. † Ἄνες μοι ἵνα ἀναψύξω πρὸ τοῦ με ἀπ-
ελθεῖν, ϗ (μ) οὐκέτι μὴ ὑπάρξω.

MS. A. (κ) πλὴν μάτην πᾶς ἄνθρωπος. Εἰσ-
άκουσον (λ) παρὰ σοὶ ϗ παρεπίδημος, (μ) οὐκέτι οὐ
μὴ ὑπάρξω.

1 Εἰς τὸ τέλος, (α) τῷ Δαυὶδ ψαλ-
μός. λθ'.

2 † ΥΠομένων ὑπέμεινα τὸν κύριον, ϗ προσ-
3 έσχε μοι, † Καὶ εἰσήκουσε τῆς δεήσεώς μου. † ϗ ἀν-
ήγαγέ με ἐκ λάκκου ταλαιπωρίας, † (β) ϗ ἀπὸ πη-
λοῦ ἰλύος· † ϗ ἔστησεν ἐπὶ πέτραν τοὺς πόδας μου, †
4 ϗ (γ) κατεύθυνε τὰ διαβήματά μου. † Καὶ ἐνέβα-
λεν εἰς τὸ στόμα μου ᾆσμα καινὸν, ὕμνον τῷ θεῷ ἡ-
μῶν. † ὄψονται πολλοὶ ϗ φοβηθήσονται, † ϗ ἐλπιοῦσιν
5 ἐπὶ κύριον. † Μακάριος ἀνὴρ, οὗ ἐστι τὸ ὄνομα κυ-
ρίου ἐλπὶς αὐτοῦ, † ϗ οὐκ (δ) ἐπέβλεψεν εἰς ματαιό-
τητας ϗ μανίας ψευδεῖς. † Πολλὰ ἐποίησας σὺ κύ-
6 ριε ὁ θεός μου τὰ θαυμάσιά σου, † ϗ τοῖς διαλογι-
σμοῖς σου οὐκ ἔστι τις (ε) ὁμοιωθήσεταί σοι. † ἀπ-
ήγγειλα ϗ ἐλάλησα, ἐπληθύνθησαν ὑπὲρ ἀριθμόν.
7 † Θυσίαν ϗ προσφορὰν οὐκ ἠθέλησας, † σῶμα
δὲ κατηρτίσω μοι· † (ζ) ὁλοκαύτωμα ϗ περὶ ἁμαρτί-
8 ας οὐκ (η) ᾔτησας. † Τότε εἶπον, Ἰδοὺ ἥκω· † ἐν κε-
9 φαλίδι βιβλίου γέγραπται περὶ ἐμοῦ, † Τοῦ ποιῆσαι τὸ
θέλημά σου ὁ θεός μου ἠβουλήθην, † ϗ τὸν νόμον σου
10 ἐν μέσῳ (θ) τῆς καρδίας μου. † Εὐηγγελισάμην δι-
καιοσύνην ἐν ἐκκλησίᾳ μεγάλῃ, † ἰδοὺ τὰ χείλη
11 μου οὐ μὴ κωλύσω. † κύριε σὺ ἔγνως † Τὴν δικαιο-
σύνην (ι) μου, οὐκ ἔκρυψα ἐν τῇ καρδίᾳ μου † τὴν ἀλή-
θειάν σου, ϗ τὸ σωτήριόν σου εἶπα· † οὐκ ἔκρυψα τὸ
ἔλεός σου ϗ τὴν ἀλήθειάν σου † ἀπὸ συναγωγῆς πολ-
12 λῆς. † Σὺ δὲ κύριε μὴ μακρύνῃς τοὺς οἰκτιρμούς σου
ἀπ' ἐμοῦ, † τὸ ἔλεός σου ϗ ἡ ἀλήθειά σου διαπαν-
13 τὸς ἀντελάβοντό μου. † Ὅτι περιέσχον με κακὰ,
ὧν οὐκ ἔστιν ἀριθμὸς, † κατέλαβόν με αἱ ἀνομίαι
μου, ϗ οὐκ (ι) ἠδυνάσθην τοῦ βλέπειν· † ἐπληθύνθη-
σαν ὑπὲρ τὰς τρίχας τῆς κεφαλῆς μου, † ϗ ἡ καρ-
δία μου ἐγκατέλιπέ με.

MS. A. (α) Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. (β) ϗ ἀπὸ πηλοῦ ὕλεως· (γ) κατηύθυνεν (δ) ἐνέβλεψεν (ε) ὁμοιωθήσεται. ἀπήγγειλα (ζ) ὁλοκαυτώματα (η) ἐζήτησας (θ) τῆς κοιλίας μου. (ι) σου οὐκ (ι) ἠδυνήθην

Vers. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopica, Transl. LAT.

*In increpationibus propter (o) in-
iquitatem corripuisti hominem:
14 (p) et tabescere fecisti sicut a-
raneā, animā ejus. Veruntamen
vanè (q) conturbatur omnis ho-
mo. DIAPSALMA. 15 Exau* 13
*di orationem meam, Domine, &
deprecationem meā: (r) auribus
percipe lachrymas meas. 16 Nè si-
leas, quoniam advena ego sum
(s) in terra, & peregrinus, sicut
omnes patres mei. 17 (t) Remit-* 14
*te mihi, ut refrigerer, priusquàm
[h] abeam: & ampliùs jam non
ero.*

In finem, ipsi David, Psal- 1
mus. XXXIX.

1 EXpectans expectavi Domi- 2
*num, [a] & attendit mihi:
2 Et exaudivit [b] deprecatio-* 3
*nem meam: & eduxit me de la-
cu miseriæ, & de luto fæcis. 3 Et
statuit super petram pedes meos,
et [c] direxit gressus meos. 4 Et* 4
*immisit in os meum canticū no-
vum, carmen Deo nostro. 5 Vi-
debunt (a) multi, & timebunt,
& sperabant in Domino. 6 Bea-* 5
*tus vir, cujus est nomen Domini
spes ejꝰ, et nō respexit [d] in va-
nitates, & insanias falsas. 7 (b)
Multa fecisti tu, Domine Deus* 6
*meus, mirabilia tua: & cogitatio-
nibus tuis non est, qui similis sit
tibi. 8 (c) Annuntiavi, & locu-
tus sum: multiplicati sunt super
numerum. 9 Sacrificium, et ob-* 7
*lationem noluisti: (d) [c] cor-
pus autem perfecisti mihi. 10 Ho-
locaustum, et pro peccato non po-
stulâsti: (e) Tunc dixi, Ecce ve-* 8
*nio. 11 In (f) capite libri scri-
ptum est de me: ut (g) (†) face-* 9
*rem voluntatem tuam, Deus me-
us, volui, et legem tuam in me-
dio (h) cordis mei. 12 (i) Be-* 10
*nè nuntiavi justitiam in Ec-
clesia magna: ecce labia mea
nō prohibebo. (k) Domine, tu co-
gnovisti: 13 Justitiam meam non* 11
*abscondi in corde meo veritatē
tuam: et salutare tuum dixi.
14 Non abscondi (l) misericor-
diam tuam, et veritatem tuam à (m) congregatione multa. 15 Tu autem, Domine, ne* 12
*longè facias miserationes tuas à me : misericordia tua, et veritas tua semper (n) sus-
ceperunt me. 16 Quoniam circumdederunt me mala, quorum non est numerus: com-* 13
*prehenderunt me iniquitates meæ, & non potui, ut viderem. 17 Multiplicatæ sunt su-
per capillos capitis mei: & cor meum dereliquit me.*

Versio ÆTHIOPICA.

በተግሣጽከ፡ በእንተ፡ ኃጢአቱ፡ ተዘለፍኮ፡
ለሰብእ፡፡=፡ ወመሰውኮ፡ከመ፡ሳሬት፡ ለነፍ 14
ሱ፡፡ወባሕቱ፡ከንቶ፡ ይትሀወኩ፡ ኵሉ፡ ሰብ
እ፡፡=፡ ስምዓኒ፡እግዚኦ፡ጸሎትየ፡ወስእ 15
13 ለትየ፡፡ወአጽምዓኒ፡ አንብዕየ፡ 16 ወኢት
ጸመመኒ፡፡እስመ፡ፈላሲ፡ አነ፡ ውስተ፡ ምድ
ር፡፡ወነግድ፡ከመ፡ኵሉ፡አበዊየ፡፡=፡ ስሕ 17
ተኒ፡ከመ፡ አዕርፍ፡፡ዘእንበለ፡ እሑር፡ ኀበ፡
ኢይገብእ፡፡=፡

14 ፍጻሜ፡መዝሙር፡ዘደዊት፡፡

ሀሀ ፡ፀኒሖ፡ፀናሕክዎ፡ለእግዚአብሔር፡፡ 1
ሰምዓኒ፡ወተመየጠኒ፡፡=፡ ወሰምዓኒ፡ቃለ፡ 2
ስእለትየ፡፡ወአውፅአኒ፡ እምዐዘቅተ፡ ሕር
ትምና፡፡ወእምጽቡር፡ እምዓም፡፡=፡ ወ 3
አቀምኒ፡ውስተ፡ ኰኵሕ፡ ለእገሪየ፡፡ወአጽ
ንዖኒ፡ለመካይድየ፡፡=፡ ወወደየ፡ውስተ፡አ 4
ፉየ፡ስብሐተ፡ ሐዲስ፡፡ስብሐቲሁ፡ ለአምላ
ክነ፡፡=፡ ይርአዩ፡ ብዙኃን፡ ወይፈርሁ፡፡ወ 5
ይትዌከሉ፡በእግዚአብሔር፡፡=፡ ብፁዕ፡ብ 6
እሲ፡ዘስመ፡እግዚአብሔር፡ ትውክልቱ፡፡ወ
ዘኢነጸረ፡ውስተ፡ ከንቱ፡ ውስተ፡ መዓት፡ወ
ሐሰት፡፡=፡ ብዙኃ፡ገበርከ፡እግዚኦ፡አም 7
ላኪየ፡መንክረከ፡፡ወአልቦ፡ ዘይመስሎ፡ ለሕ
ሊናከ፡፡=፡ አይደአኩ፡ወነገርኩ፡ወበዝኃ፡ 8
እምኍልቍ፡፡=፡ መሥዋዕተ፡ ወቍርባነ፡ 9
ኢፈቀድከ፡፡ሥጋከ፡ አንጽሕ፡ ሊተ፡፡=፡
መሥዋዕተ፡ ዘበእንተ፡ ኃጢአት፡ ኢሠመር 10
ከ፡፡ውእቱ፡ጊዜ፡ አቤ፡ ነየ፡ መጽአኩ፡፡=፡
ውስተ፡ርእሰ፡መጽሐፍ፡ተጽሕፈ፡ በእንቲአ 11
የ፡፡ከመ፡እንግር፡ ፈቃደከ፡ መከርኩ፡አምላ
ኪየ፡፡ወሕግከኒ፡ በማእከለ፡ ከርሥየ፡፡=፡
ዜነውኩ፡ጽድቅከ፡ ለማኅበረ፡ ዐቢይ፡፡ወና 12
ሁ፡ኢከላእኩ፡ከናፍርየ፡፡እግዚኦ፡ ለሊከ፡
ታአምር፡ 13 ጽድቅየ፡፡ወኢኃባእኩ ፡ ው
ስተ፡ ልብየ፡ ርትዓይከ፡፡ወነገርኩ፡ አድኅኖ
ተከ፡፡=፡ ወኢሰወርኩ፡ሣህለከ፡ወምሕረተ 14
ከ፡እማሕበር፡ዐቢይ፡፡=፡ አንተ፡እግዚኦ፡ 15
ኢታርሕቅ፡ ሣህለከ፡እምኔየ፡፡ምሕረትከ፡
ወጽድቅከ፡ዘልፈ፡ይርከበኒ፡፡=፡ እስመ፡ረ 16
ከበተኒ፡ እኪት፡ እንተ፡ አልቦቱ፡ኍልቍ፡፡ወ
ተረክበኒ፡ኃጣውኢየ፡ወስእንኩ፡ነጽሮ፡፡=፡
ወበዝኃ ፡ እምስእርተ ፡ ርእስየ፡፡ ልብየኒ፡ 17
ኀደገኒ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [h] abeam, unde non revertar. *PSAL. xxxix.* [a] & auscultavit me : [b] etiam vocem supplicationis meæ: [c] firmat gressus [d] in furorem, & falsitatem. [c] carnem *autem* tuam purificavit mihi. (l) annuntiarē voluntatē tuā, Deꝰ meꝰ intentꝰ sū ei : & lex tua etiā

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

12 * ادبت الانسان بالتوبيخ من اجل الاثم * ومثل العنكبوت جعلت نفسه تنحل * ومثل المنام
13 تذهب شهواته * ومثل الفي جميع البشر * اسمع صلاتي ودعاي يا رب * ولا تغفل عن دموعي *
14 فاني غريب في الارض * وذاهب مثل اباي * اغفر لي ولا تغفل عن دموعي * لكي استريح قبل
ان اذهب * فلا اعود اكون * اللليلويا * المزمور التاسع والثلثون *

1 * في الانقضا وذكر الكنيسة * وعدده * لز * استيخن *
2 * بالصبر رجوت الرب فنظر الي وسمع تضرعي * واصعدني من جب الهلاك * وطين الفساد * 3
4 اقام على الصخرة قدمي وقوم خطواتي * وجعل في فمي تسبيحا جديدا * وبركة لالهنا *
5 يري كثيرون فيخافون * ويتوكلون على الرب * طوبي للرجل الذي اسم الرب رجاوه * ولم
6 ينظر الي الباطل والاقاويل الكاذبة * وانت قد اكثرت عجايبك يا ربي والاهي * اللهم اني
افكر في اعمالك * وليس كمثلك * وليس من يشبهك في افكارك * اخبرت وقلت انها اكثر
7 من العدد * لم تشا ذبيحة وقربانا * واعددت لي جسدا * وفتحت مسامعي * وبحرقات لاجل
8 الخطية لم تسر بها * حينيذ قلت هانذا قد جيت * مكتوب في راس الكتاب * ان اعمل 9
10 مسرتك يا الله * ناموسك داخل قلبي * بشرت بعدلك في بيعة عظيمة * وها انا لم امنع شفتي
11 بعد * وانت يا رب علمت * تري لم اخف برك في قلبي * تكلمت بخلاصك وحقك * ولم اخف
12 رحمتك وعدلك عن جماعة عظيمة * وانت يا ربي والهي لا تبعد عني رافتك * ورحمتك وبرك
13 هما اللذان تلقاني في كل حين * قد احاطت بي شرور لا عدد لها ادركتني اثامي فلم استطع
النظر * كثرت اكثر من شعر راسي * ورفضني قلبي *

Castigâsti hominem correptione propter 12
*delictum : & velut araneam fecisti ut
anima ejus dissolveretur, ac veluti so-
mnium præterirent desideria ejus, & sicut
umbra omnes homines. Audi orationem* 13
*meā, & clamorem meū, O Domine: & ne
negligas lachrymas meas. Quia ego per-
egrinus sum in terra, & abiens veluti
patres mei. Parce mihi, & ne negligas* 14
*lachrymas meas : ut quiescā antequā va-
dam, & non sim futurꝰ ampliùs. Alleluja.*

PSAL. XXXIX.

De fine. Et agitur de Ecclesia. 1
Et numerus vers. 37.

CUm patientia speravi Dominum; & 2
*respexit in me, & audivit supplica-
tionem meam : Et extraxit me de fovea* 3
*perditionis, & luto corruptionis; statuit
super petrā pedes meos, & direxit gressus
meos : Et posuit in ore meo laudē novā,* 4
*& benedictionem Deo nostro. Videbunt
multi, & timebunt, & confident in Do-* 5
*mino. Beatus vir, cujus spes est nomen
Domini, & non respexit ad vanitatem
& fabulas mendaces. Et tu jam multi-* 6
*plicâsti miracula tua, O Domine mi, &
Deus meus. Deus, equidē meditor opera
tua, & non est similis tibi : nec est qui
comparetur tecum in cogitationibus tuis.
Narravi & dixi, plura esse quàm ut nu-
merentur. Noluisti sacrificiū & oblatio-* 7
*nem : & præparâsti mihi corpus : aperu-
isti aures meas, & holocaustis pro pecca-
to non es oblectatus. Tunc dixi, Ecce* 8
*me, jam veni; scriptū est in capite libri,
ut faciā voluntatem tuā, O Deus : lex* 9
tua intra cor meum. Annuntiavi æquita- 10
*tem tuā in Ecclesia magna, & ecce ego
non cohibui labia mea adhuc : & tu, O
Domine, nôsti. Vides me non abscondisse* 11
*justitiam tuam in corde meo. Protuli
salutem tuā & veritatem tuā. Et non
abscondi misericordiā tuā, & æquitatem
tuā à cœtu multo. Et tu, O Domine mi,* 12
*& Deus meus, ne elonges à me clementiā
tuā : Et quidem misericordia tua & ju-
stitia tua ambæ sunt, quæ me exceperunt
omni tempore. Jam circumdederunt me* 13
*mala quibus non est numerus; comprehen-
derunt me scelera mea, & non potui vi-
dere : multiplicata sunt magis quàm ca-
pilli capitis mei, et respuit me cor meum.*

תהלים : מא

14 ,afficietur Pudore .feſtina mei auxiliũ ad Domine ;me eruendũ ad Domine Complace 14
15 רְצֵה יְהוָה לְהַצִּילֵנִי יְהוָה לְעֶזְרָתִי חוּשָׁה׃ יֵבֹשׁוּ
,retrorſum revertentur : eã abſumendum ad,meã animã quærentes pariter erubeſcent &
וְיַחְפְּרוּ יַחַד מְבַקְשֵׁי נַפְשִׁי לִסְפּוֹתָהּ יִסֹּגוּ אָחוֹר
,ſui pudoris mercedem ſuper Deſolabuntur .meum malum volentes , pudeſient &
16 וְיִכָּלְמוּ חֲפֵצֵי רָעָתִי׃ יָשֹׁמּוּ עַל־עֵקֶב בָּשְׁתָּם 16
,te quærentes omnes te in lætabuntur & ,Gaudebunt .euge ,Euge : mihi dicentes
17 הָאֹמְרִים לִי הֶאָח הֶאָח׃ יָשִׂישׂוּ וְיִשְׂמְחוּ בְּךָ כָּל־מְבַקְשֶׁיךָ
,afflictus ego Et .tuam ſalutem diligentes ,Dominus Magnificetur ,ſemper dicent
18 יֹאמְרוּ תָמִיד יִגְדַּל יְהוָה אֹהֲבֵי תְּשׁוּעָתֶךָ׃ וַאֲנִי עָנִי 18
mi Deus : tu meus liberator & ,meũ auxilium : mihi cogitabit Dominus ,egenus &
וְאֶבְיוֹן אֲדֹנָי יַחֲשָׁב לִי עֶזְרָתִי וּמְפַלְטִי אַתָּה אֱלֹהַי
.tardaveris ne
אַל־תְּאַחַר׃

PSAL. XLI. מא

1 mala die in : tenuem ad intelligentis Beatitudines .David cantus Victori
2 לַמְנַצֵּחַ מִזְמוֹר לְדָוִד׃ אַשְׁרֵי מַשְׂכִּיל אֶל־דָּל בְּיוֹם רָעָה
beatificetur ,eum vivificet & ,eum cuſtodiat Dominus .Dominus eum liberabit
3 יְמַלְּטֵהוּ יְהוָה׃ יְהוָה יִשְׁמְרֵהוּ וִיחַיֵּהוּ יְאֻשַּׁר
ſuper eum fulciat Dominus .ejus inimicorum anima in eum tradas ne & : terra in
4 בָּאָרֶץ וְאַל־תִּתְּנֵהוּ בְּנֶפֶשׁ אֹיְבָיו׃ יְהוָה יִסְעָדֶנּוּ עַל־
: dixi Ego .ejus infirmitate in verſaſti ejus cubile omne : languoris lectum
5 עֶרֶשׂ דְּוָי כָּל־מִשְׁכָּבוֹ הָפַכְתָּ בְחָלְיוֹ׃ אֲנִי־אָמַרְתִּי
dicent mei Inimici .tibi peccavi quia ,meam animam ſana ; mei miſerere Domine
6 יְהוָה חָנֵּנִי רְפָאָה נַפְשִׁי כִּי־חָטָאתִי לָךְ׃ אוֹיְבַי יֹאמְרוּ
venerit ſi Et ? ejus nomen peribit & , morietur quando : mihi malum
7 רַע לִי מָתַי יָמוּת וְאָבַד שְׁמוֹ׃ וְאִם־בָּא
egredietur : ſibi iniquitatem congregabit ,ejus cor loquetur mendacium ,videndũ ad
לִרְאוֹת שָׁוְא יְדַבֵּר לִבּוֹ יִקְבָּץ־אָוֶן לוֹ יֵצֵא
me ſuper ; me habentes odio omnes muſſitabunt me ſuper Simul .loquetur , foras
8 לַחוּץ יְדַבֵּר׃ יַחַד עָלַי יִתְלַחֲשׁוּ כָּל־שֹׂנְאָי עָלַי
accubuit qui & ,ipſum in effuſum Belijahal Verbum .mihi malum cogitabunt
9 יַחְשְׁבוּ רָעָה לִי׃ דְּבַר־בְּלִיַּעַל יָצוּק בּוֹ וַאֲשֶׁר שָׁכַב
comedens ,eo in fidebam cui , meæ pacis vir Etiam .ſurgere addet non
10 לֹא־יוֹסִיף לָקוּם׃ גַּם־אִישׁ שְׁלוֹמִי אֲשֶׁר־בָּטַחְתִּי בוֹ אוֹכֵל
,mei miſerere Domine tu Et .calcaneum me ſuper magnificavit ,meum panem
11 לַחְמִי הִגְדִּיל עָלַי עָקֵב׃ וְאַתָּה יְהוָה חָנֵּנִי
complacuiſti quoniam ,cognovi hoc In .eis reddam & ,fac me reſuſcitare &
12 וַהֲקִימֵנִי וַאֲשַׁלְּמָה לָהֶם׃ בְּזֹאת יָדַעְתִּי כִּי־חָפַצְתָּ
: mea integritate in ego Et .me ſuper meus inimicus jubilabit non quia ,me in
13 בִּי כִּי לֹא־יָרִיעַ אֹיְבִי עָלָי׃ וַאֲנִי בְּתֻמִּי
Deus Dominus Benedictus .ſeculum in tuas facies ad me ſtatuiſti & ,me in ſuſtentâſti
14 תָּמַכְתָּ בִּי וַתַּצִּיבֵנִי לְפָנֶיךָ לְעוֹלָם׃ בָּרוּךְ יְהוָה אֱלֹהֵי
.Amen & ,Amen : ſeculum in uſque & , ſeculo à Iſrael
יִשְׂרָאֵל מֵהָעוֹלָם וְעַד הָעוֹלָם אָמֵן וְאָמֵן׃

תרגום TARGUM.

14 אִתְרְעֵי יְיָ לְשֵׁיזָבוּתַנִי יְיָ לְסִיוּעִי זְרִיז׃ יִבְהֲתוּן
15 וְיִתְחַסְּרוּן כַּחְדָא תָּבְעֵי נַפְשִׁי לְמִגְמְרַהּ יְזוּרוּן
לַאֲחוֹרָא וְיִכְסְפוּן דִּצְבַיִן בִּישְׁתִי׃ יִתְבַּיְרוּן 16
מְטוּל בַּהֲתֵיהוֹן דְּאָמְרִין לִי חֲדֵינָא עַל תַּבְרֵיהּ
חֶדְוָא עַל סִגּוּפֵיהּ׃ יֶחְדוּן וְיִדוּצוּן בְּמֵימְרָךְ 17
כָּל בָּעְיָךְ וְיֵימְרוּן תְּדִירָא יִסְגֵּי חֵילָא דַיְיָ דִּי
רָחֲמִין פּוּרְקָנָךְ׃ וַאֲנָא עַנְיָא וְחַשּׁוּכָא יְיָ יַחְשַׁב 18
טָב לִי עֲלַי סִיוּעִי וְשֵׁיזָבוּתִי אַתְּ אֱלָהִי לָא
תּוֹחַר׃

מא

1 לְשַׁבָּחָא תּוּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד׃ טוּבוֹי דְּמַשְׂכִּיל
2 לְעַנְיֵי מִסְכְּנָא לְרַחֲמוּתֵיהּ בְּיוֹם בִּישׁוּתָא
יְשֵׁיזְבִנֵּיהּ יְיָ׃ יְיָ יִנְטְרִנֵּיהּ וִיחַיְּנֵיהּ וְיוֹטְבִנֵּיהּ 3
בְּאַרְעָא וְלָא תִּמְסְרִנֵּיהּ בִּרְעוּת בַּעֲלֵי דְבָבוֹי׃
מֵימְרָא דַיְיָ יְסַיְּעִנֵּיהּ בְּחַיּוֹהִי וְיִתְגְּלֵי לֵיהּ עַל 4
שְׁוֵי מַרְעֵיהּ לְאַחֲיוּתֵיהּ כָּל מִשְׁכְּבֵיהּ אַפַּכְתְּ
בְּעִדָּן מַרְעֵיהּ וְאַכְסַנְתֵּיהּ׃ אֲנָא אֲמָרִית יְיָ חוּס 5
עֲלַי אַסֵּי נַפְשִׁי מְטוּל דְּחָבֵית קֳדָמָךְ׃ בַּעֲלֵי 6
דְבָבַי יֵימְרוּן בִּישׁ עֲלַי אֵימָתַי יְמוּת וְיוֹבַד שְׁמֵיהּ׃
וְאִין אֲתָא לְמִקְבַּל אַפֵּי שִׁקְרָא יְמַלֵּל בְּרַעְיוֹנֵיהּ 7
יְכַנּוֹף עַוְלָא לֵיהּ יִפּוֹק לְשׁוּקָא יְמַלֵּל׃ כַּחְדָא 8
עֲלַי מְמַלְּלִין בַּחֲשַׁי כָּל סָנְאַי עֲלַי חָשְׁלִין בִּישְׁתָא
לִי׃ מְמַלַּל טְלוּמָא יַתִּיךְ בֵּיהּ וְיֵימַר דֵּין דִּמְרַע 9
לָא יוֹסִיף לְמֵיקַם׃ אוּף גְּבַר דְּתָבַע שְׁלוֹמִי 10
דְּאִתְרְחֵיצִית עֲלוֹי מֵבְרֵי סְעוּדָתִי אִתְרַבְרַב עֲלַי
לְחַכְמָא׃ וְאַנְתְּ יְיָ חוּס עֲלַי וַאֲקִימְנִי מִמַּרְעַ 11
וְאֶפְרַע לְהוֹן׃ בְּהָדָא יְדַעִית אֲרוּם אִתְרְעִיתָ בִּי 12
אֲרוּם לָא אִתְגַּבַּר עֲלַי בַּעֲלֵי דְבָבִי לְאַבְאָשָׁא׃
וַאֲנָא בִּשְׁלֵמוּתִי סְעַדְתָּא בִי וְאוֹקְמְתַּנִי קֳדָמָךְ 13
לְעָלְמָא׃ בְּרִיךְ שְׁמֵיהּ דַּיְיָ אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל 14
מִן עָלְמָא הָדֵין וְעַד עָלְמָא דְּאָתֵי יֵימְרוּן
צַדִּיקַיָּא אָמֵן וְאָמֵן׃

PARAPH. CHALD. Verſ.Lat.

Placeat tibi Dñe ut liberes me: Domine ad 14
auxiliũ meũ feſtina. Erubeſcant & oppro- 15
brio afficiantur ſimul quærentes animã meã,
ut perdant eam: convertantur retrorſum &
pudore offundantur qui deſiderant malum
meũ. Confundantur propter pudorẽ ſuum, 16
qui dicunt de me: Gaviſi ſumus deſtructione
ejus: *lætitia* ſuper afflictionem ejus. Gau- 17
debunt & lætabuntur in verbo tuo omnes
qui quærunt te, & dicent ſemper, Magnifice-
tur potentia Dñi, qui diligunt ſalutẽ tuã. Et 18
ego egenus ſum, & pauper: Dñs cogitabit
bonum mihi; *ſuper me* auxilium meum &
liberatio mea tu es: Deus meus ne moreris.

Ad laudandum Hymnus Davidi. 1

PSAL. XLI.

BEat⁹ qui cogitat de [*reb⁹*] *afflictis* paupe- 2
ris quò miſereatur ej⁹: in die mala liberabit
eum Dñs. Dñs cuſtodiet eũ & vitã præſta- 3
bit ei, & dabit ei beatitudinem in terra: nec
trades illũ voluntati auctorũ inimicitiæ ej⁹.
Verbũ Dñi adjuvabit eũ in vita ejus; & ap- 4
parebit illi ſuper lectũ infirmitatis ejus, *ut
vivum conſervet eũ*: totũ ſtratũ ej⁹ inver-
tiſti in tempore ægritudinis ej⁹, & corripu-
iſti eum. Ego dixi, Dñe miſerere mei; ſana 5
animã meã quia peccavi corã te. Et adver- 6
ſarii mei dicent malum contra me, Quando
morietur, & peribit nomen ej⁹? Et *ſi* vene- 7
rit ut accipiat faciẽ, mendaciũ loquetur in
cogitatione ſua: congregabit iniquitatem
ſibi; egredietur in plateam; loquetur. Simul 8
contra me loquuntur clam omnes oſores mei
contra me, cogitantes malum mihi. Verbum 9
perverſum effundet in ſeipſum; & dicet,
Hic qui infirmatur, non addet ut reſurgat.
Sed & homo qui quærere [*deberet*] pacem 10
meã, in quo confidebã, qui comedebat panẽ
meum, magnificavit ſe ſuper me aſtutè. Et 11
tu Domine miſerere mei, & ſuſcita me ab
infirmitate; & reddam eis. In hoc novi 12
quòd gratus tibi fuerim, quoniam non in-
valeſcet ſuper me auctor inimicitiæ meæ,
ut malè agat. Me verò in integritate mea 13
adjuviſti; & ſtatuiſti me coram te in per-
petuum. Benedictum nomen Domini Dei 14
Iſrael ex hoc ſeculo uſque ad ſeculum
venturum; dicant juſti, Amen &
Amen.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA

14 * ܨܒܝ ܡܪܝܐ ܠܡܦܪܩܘܬܝ: ܡܪܝܐ ܠܥܘܕܪܢܝ ܩܘܡ. * ܢܒܗܬܘܢ ܘܢܚܦܪܘܢ ܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ
15 ܠܡܩܛܠ ܠܢܦܫܝ: ܢܗܦܟܘܢ ܠܒܣܬܪܗܘܢ ܘܢܚܦܪܘܢ. ܐܝܠܝܢ ܕܨܒܝܢ ܒܒܝܫܬܝ:
17 * ܢܬܒܗܬܘܢ ܒܗܬܬܐ ܕܬܪܬܝܢ. ܐܝܠܝܢ ܕܐܡܪܝܢ ܠܝ ܐܘܗ ܐܘܗ: * ܢܚܕܘܢ ܒܟ ܟܠܗܘܢ ܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ
18 ܠܟ. ܘܢܐܡܪܘܢ ܒܟܠܙܒܢ ܕܪܒ ܗܘ ܡܪܝܐ: ܐܝܠܝܢ ܕܪܚܡܝܢ ܦܘܪܩܢܟ. * ܘܐܢܐ ܡܣܟܢܐ
19 ܐܢܐ ܘܒܨܝܪܐ: ܡܪܝ ܐܬܚܫܒܘ ܥܠܝ. ܡܥܕܪܢܝ ܐܢܬ ܘܡܦܪܩܢܝ ܠܐ ܬܘܚܪ:

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܡܐ *

1 * ܠܕܘܝܕ. ܟܕ ܐܩܝܡ ܡܦܪܢܣܢܐ ܕܢܦܩܘܢ ܠܡܣܟܢܐ. ܘܢܒܝܘܬܐ ܡܛܠ ܡܫܝܚܐ. ܘܥܠ
2 ܐܣܟܪܝܘܛܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܚ. * ܛܘܒܘܗܝ ܠܡܢ ܕܚܐܪ ܒܡܣܟܢܐ. ܕܒܝܘܡܐ ܕܒܝܫܬܐ
3 ܢܫܒܩܝܘܗܝ ܡܪܝܐ: * ܡܪܝܐ ܢܛܪܝܘܗܝ ܘܢܚܝܘܗܝ ܘܢܛܐܒ ܠܗ ܒܐܪܥܐ. ܘܠܐ ܢܫܠܡܝܘܗܝ
4 ܠܒܥܠܕܒܒܘܗܝ: * ܡܪܝܐ ܢܣܡܟܝܘܗܝ ܥܠ ܥܪܣܐ ܕܟܐܒܘܗܝ. ܘܟܠܗ
5 ܡܫܟܒܗ ܗܦܟ ܒܟܘܪܗܢܗ: * ܐܢܐ ܐܡܪܬ ܕܐܢܬ ܗܘ ܡܪܝ ܪܚܡ ܥܠܝ. ܘܐܣܝܗ
6 ܠܢܦܫܝ ܡܛܠ ܕܚܛܝܬ ܠܟ: * ܒܥܠܕܒܒܝ ܐܡܪܘ ܥܠܝ ܒܝܫܬܐ. ܐܡܬܝ ܢܡܘܬ ܘܢܐܒܕ
7 ܫܡܗ: * ܘܐܢ ܐܬܝܢ ܗܘܘ ܠܡܣܥܪܢܝ. ܕܓܠܐ ܡܡܠܠܝܢ ܗܘܘ: ܘܒܠܒܗܘܢ ܟܢܫܝܢ
8 ܗܘܘ ܒܝܫܬܐ. ܢܦܩܝܢ ܗܘܘ ܠܫܘܩܐ ܘܡܡܠܠܝܢ: * ܐܬܚܫܫܘ ܥܠܝ ܐܟܚܕܐ ܟܠܗܘܢ ܣܢܐܝ.
9 ܘܐܬܚܫܒܘ ܥܠܝ ܒܝܫܬܐ: * ܡܠܬܐ ܕܥܘܠܐ ܚܫܒܝܢ ܗܘܘ. ܡܛܠ ܕܫܟܒ ܠܐ ܢܘܣܦ
10 ܠܡܩܡ: * ܐܦ ܓܒܪܐ ܫܐܠ ܫܠܡܝ ܕܬܟܝܠ ܐܢܐ ܥܠܘܗܝ. ܐܟܠ ܠܚܡܝ ܕܬܟܝܠ ܐܢܐ
11 ܥܠܘܗܝ: ܣܓܝ ܐܬܢܟܠ ܠܝ. * ܘܐܢܬ ܡܪܝܐ ܪܚܡ ܥܠܝ: ܐܩܝܡܢܝ ܘܐܦܪܘܥ ܐܢܘܢ.
12 * ܒܗܕܐ ܝܕܥܬ ܕܐܬܪܥܝܬ ܒܝ: ܡܛܠ ܕܠܐ ܡܬܚܪܐ ܒܝ ܒܥܠܕܒܒܝ. * ܠܝ ܕܝܢ
13
14 ܒܬܡܝܡܘܬܝ ܣܡܟܬܢܝ ܘܐܩܝܡܬܢܝ ܩܕܡܝܟ ܠܥܠܡ. * ܒܪܝܟ ܗܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ
ܕܐܝܣܪܝܠ: ܡܢ ܥܠܡ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ ܐܡܝܢ ܐܡܝܢ.

* ܫܠܡ ܣܦܪܐ ܩܕܡܝܐ *

Placeat tibi, Domine, ut liberes me: Domi- 14
ne ad auxilium meum expecta. Confundan- 15
tur & pudefiant ii qui cupiunt occidere ani-
mam meam: convertantur retrorſùm & e-
rubeſcant qui volunt malum meum. Obſtu- 16
peſcant duplici confuſione qui dixerunt de
me, Ehe, ehe. Lætentur in te omnes qui quæ- 17
runt te: & dicant omni tempore, Magnus eſt
Dominus, ii qui diligunt ſalutem tuam. At 18
ego pauper ſum & inops: Domine mi, cogi-
tàrunt adverſùm me; auxiliator meus tu es,
& liberator meus, ne tardaveris.

PSAL. XLI.

Davidis, quando ſtatuit proviſores ad cu- 1
*randos pauperes. Et prophetia de Chriſto,
deq; Iſcariote. Verſ.* 28.

BEatus qui intuetur miſerum: quoniam in 2
die calamitatis dimittet eum Dominus,
Domin⁹ tuebitur eum, & vivificabit eum, be- 3
nefaciétque illi in terra, nec tradet eum ho-
ſtibus ejus. Dominus fulciet illum ſuper le- 4
ctum dolorum ejus, & totum decubitum e-
jus evolvit in infirmitate illius, Ego dixi; 5
Tu es Dominus meus, miſerere mei, & ſana
animam meam: nam peccavi in te. Inimici 6
mei dixerunt adverſùm me malum, Quando
morietur & peribit nomen ejus? Quum 7
venirent me inviſuri, mendacium loqueban-
tur, & in corde ſuo congerebant malum:
egrediebantur in plateam & loquebantur.
Suſurrârunt contra me pariter omnes oſores 8
mei, & meditati ſunt in me malum, Ver- 9
bum iniquitatis cogitabant, *dicentes*; Quan-
doquidem cubavit, nequaquàm iterum ſur-
get. Etiam vir deprecans mihi ſalutem, cui 10
confidebam, comedens panem meum, cui
confidebam, vehementur fraudavit me. At 11
tu, Domine, miſerere mei: reſuſcita me ut
retribuam eis. In hoc agnovi gratum me eſ- 12
ſe tibi, quòd minimè noceat mihi hoſtis me-
us. Me autem innocentiâ meâ fulſiſti, & ſta- 13
tuiſti me coram te in ſempiternum. Benedi- 14
ctus ſit Dominus Deus Iſrael à ſeculo & uſ-
que in ſeculum. Amen, amen.

Finis libri primi.

Versio VULG. LAT.

14 Complaceat tibi, Domine, ut eruas me :
15 Domine, ad adjuvandũ me respice. Confundantur & revereantur simul, qui quærunt animam meã, ut auferant eam. Convertantur retrorsùm, & revereantur, qui
16 volunt mihi mala. Ferant confestim confusionem suam, qui dicunt mihi; Eugè,
17 eugè. Exultent & lætentur super te omnes quærentes te : & dicant semper, Magnificetur Dominus ; qui diligunt sa-
18 lutare tuum. Ego autem mendicus sum, & pauper: Dominus solicitus est meî. Adjutor meus, & protector meus tu es: Deus meus, ne tardaveris.

1 In finem, Psalmus ipsi David. XL.

2 BEatus qui intelligit super egenum, & pauperem: in die mala liberabit eum
3 Dominus. Dominus conservet eum, & vivificet eum, & beatum faciat eum in terra: & non tradat eum in animam ini-
4 micorum ejus. Dominus opem ferat illi super lectũ doloris ejus: universum stra-
5 tum ejus versâsti in infirmitate ejus. Ego dixi; Domine, miserere meî: sana ani-
6 mam meam, quia peccavi tibi. Inimici mei dixerunt mala mihi; Quando morie-
7 tur, & peribit nomen ejus? Et si ingrediebatur ut videret, vana loquebatur, cor ejus congregavit iniquitatem sibi. Egre-
8 diebatur foràs, & loquebatur In idipsũ. Adversũ me susurrabãt oẽs inimici mei:
9 adversũ me cogitabãt mala mihi. Verbũ iniquum constituerũt adversũ me; Numquid qui dormit non adjiciet ut resurgat?
10 Etenim homo pacis meæ, in quo speravi: qui edebat panes meos, magnificavit
11 super me supplantationẽ. Tu autem, Domine, miserere meî, & resuscita me : &
12 retribuam eis. In hoc cognovi quoniam voluisti me : quoniam non gaudebit
13 inimicus meus super me. Me autem propter innocentiam suscepisti: & confirmâsti me in conspectu tuo in æternũ.
14 Benedictus Dominus Deus Israel à seculo, & usque in seculum : fiat, fiat.

Versio GRÆC. LXX. Interp.

14 † Εὐδόκησον κύριε τοῦ ῥύσασθαί με, † κύριε εἰς τὸ
15 βοηθῆσαί μοι (κ) πρόσχες. † Καταισχυνθείησαν καὶ
ἐντραπείησαν ἅμα οἱ ζητοῦντες τὴν ψυχήν μου, τοῦ ἐξ-
ᾶραι αὐτήν· † ἀποστραφείησαν εἰς τὰ ὀπίσω, καὶ (λ)
16 ἐντραπείησαν οἱ θέλοντές μοι κακά. † Κομισάσθωσαν
παραχρῆμα αἰσχύνην αὐτῶν, † οἱ λέγοντές μοι, Εὖ-
17 γε, εὖγε. (μ) Ἀγαλλιάσαιντο καὶ εὐφρανθείησαν † ἐπὶ
σοὶ πάντες οἱ ζητοῦντές σε κύριε, † καὶ εἰπάτωσαν
διὰ παντός, Μεγαλυνθήτω ὁ κύριος, † οἱ ἀγαπῶν-
18 τες τὸ σωτήριόν σου. † Ἐγὼ δὲ (ν) πτωχὸς καὶ πέ-
νης εἰμί, κύριος φροντιεῖ μου. † βοηθός μου καὶ ὑπερ-
ασπιστής μου εἶ σὺ † ὁ θεός μου, μὴ χρονίσῃς.

MS.A. (κ) σπεῦσον. (λ) καταισχυνθείησαν οἱ (μ) Ἀγαλλιάσαιντο (ν) πτωχός εἰμι καὶ πένης, ὁ κύριος

1 Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. μ΄.

2 † ΜΑκάριος ὁ συνιῶν ἐπὶ πτωχὸν καὶ πένητα,
† ἐν ἡμέρᾳ πονηρᾷ ῥύσεται αὐτὸν ὁ κύριος.
3 † Κύριος (α) φυλάξαι αὐτὸν καὶ ζήσαι αὐτόν, καὶ
μακαρίσαι αὐτὸν ἐν τῇ γῇ, † καὶ μὴ (β) παραδῴη
4 αὐτὸν εἰς χεῖρας (γ) ἐχθροῦ αὐτοῦ. † Κύριος (δ)
βοηθήσαι αὐτῷ ἐπὶ κλίνης ὀδύνης αὐτοῦ, † ὅλην τὴν
5 κοίτην αὐτοῦ ἔστρεψας ἐν τῇ ἀρρωστίᾳ αὐτοῦ. † Ἐγὼ
εἶπα, Κύριε ἐλέησόν με, † ἴασαι τὴν ψυχήν μου,
6 ὅτι ἥμαρτόν σοι. † Οἱ ἐχθροί μου εἶπαν κακά
μοι, † Πότε ἀποθανεῖται καὶ ἀπολεῖται τὸ ὄνομα αὐτοῦ;
7 † (ε) Καὶ εἰ εἰσεπορεύετο τοῦ ἰδεῖν, μάτην ἐλάλει
† ἡ καρδία αὐτοῦ, συνήγαγεν ἀνομίαν ἑαυτῷ, † ἐξ-
8 επορεύετο ἔξω, καὶ ἐλάλει † Ἐπὶ τὸ αὐτό. κατ'
ἐμοῦ ἐψιθύριζον πάντες οἱ ἐχθροί μου, † κατ' ἐμοῦ
9 ἐλογίζοντο κακά μοι. † Λόγον παράνομον κατέ-
θεντο κατ' ἐμοῦ, † Μὴ ὁ κοιμώμενος οὐχὶ προσθή-
10 σει τοῦ ἀναστῆναι; † Καὶ γὰρ ὁ ἄνθρωπος τῆς εἰ-
ρήνης μου ἐφ' ὃν ἤλπισα, † ὁ ἐσθίων ἄρτους μου ἐ-
11 μεγάλυνεν ἐπ' ἐμὲ πτερνισμόν. † Σὺ δὲ κύριε ἐ-
λέησόν με, καὶ ἀνάστησόν με, † καὶ ἀνταποδώσω αὐ-
12 τοῖς. † Ἐν τούτῳ ἔγνων, ὅτι τεθέληκάς με,
13 † ὅτι οὐ μὴ ἐπιχαρῇ ὁ ἐχθρός μου ἐπ' ἐμέ. † Ἐμοῦ
δὲ διὰ τὴν ἀκακίαν ἀντελάβου, † καὶ ἐβεβαίωσάς με
14 ἐνώπιόν σου εἰς τὸν αἰῶνα. † Εὐλογητὸς κύριος ὁ
θεὸς Ἰσραὴλ ἀπὸ τοῦ αἰῶνος καὶ εἰς τὸν αἰῶνα.
γένοιτο, γένοιτο.

MS.A. (α) διαφυλάξαι (β) παραδώῃ (γ) ἐχθρῶν (δ) βοηθήσει (ε) Καὶ εἰσεπορεύετο

Vers. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Transf. LAT.

18 Complaceat tibi, Domine, ut 14
eruas me : Domine, ad adjuvan-
dũ me (o) respice. 19 Confundan- 15
tur, & revereantur simul, qui [f]
quærunt animam meã, ut aufe-
rant eam. 20 Convertantur re-
trorsùm, & revereantur, qui vo-
lunt mihi (p) mala. 21 Ferant (q) 16
confestim confusionẽ suã, qui di-
cunt mihi; (r) Eugè, eugè. 22 Ex- 17
ultent, & lætentur super te omnes
quærentes te, Domine : & dicant
semper, Magnificetur Dominus,
qui diligunt salutare tuũ [g]. 23
Ego autem mendic⁹ sum, & pau- 18
per: Dominus curam habebit meî.
24 Adjutor meus, & protector
[h] meus es tu : Deus meus, ne
tardaveris.

In finem, Psalmus ipsi David. XL. 1

1 BEATUS qui intelligit su- 2
per egenum, & (a) pauperẽ:
in die (b) mala liberabit eum Do-
min⁹. 2 Domin⁹ conservet eũ, & 3
(c) vivificet eum: & beatum fa-
ciat eum in terra, & non tradat
eum in (d) manus inimici ejus.
3 Dominus opem ferat illi su- 4
per (e) lectũ doloris ejus: univer-
sum stratum ejus versâsti in infir-
mitate ej⁹. 4 (f) Ego dixi; Domine, 5
miserere meî : sana animã meã,
(g) quia peccavi tibi. 5 [a] Ini- 6
mici mei (h) dixerunt mala mihi;
Quando morietur, & peribit no-
men ejus? 6 Et [b] si (i) ingredie- 7
batur, ut videret ; vana loqueba-
tur cor ejus : congregavit iniqui-
tatẽ sibi. 7 Egrediebatur foràs, &
[c] loquebatur In (k) idipsum : 8
8 Adversùs me susurrabant omnes
inimici mei, 8 adversùm me co-
gitabant mala mihi. 9 Verbum 9
iniquum constituerunt adversùm
me; [d] Nunquid (l) qui dormit,
non adjiciet ut resurgat? 10 Ete- 10
nim (m) homo pacis meæ, in quo
speravi, qui edebat panes meos,
[e] magnificavit (n) super me
supplantationem. 11 Tu autem, 11
Domine, miserere meî, & resusci-
ta me, & retribuã illis. 12 In hoc 12
(o) cognovi, quoniam voluisti
me: [f] quoniam non (p) gaudebit
inimicus meus super me. 13 Me 13
autem propter (q) innocentiã sus-
cepisti : & (r) confirmâsti me in conspectu tuo in æternum. 14 Benedictus Dominus Deus Israel à (s) seculo, et in seculum : fiat, fiat. 14

Versio ÆTHIOPICA.

14 ስምር፡ እግዚኦ፡ ከመ፡ ታድኅነኒ፡፡ እግዚኦ፡ 18
ነጽር፡ ውስተ፡ ረድኦትየ፡፡=፡ ይትኃፈሩ፡ ወይ 19
15 ኅሰሩ ፡ ኅቡረ፡ እለ ፡ ያስተዋድድዋ ፡ ለነፍስ
የ፡፡=፡ ለይግብኡ፡ ድኅሬሆሙ፡ ወይትኃፈ 20
ሩ፡ እለ፡ ይፈቅዱ፡ ሊተ፡ እኩየ፡፡
ወይትፈደዩ ፡ በጊዜሃ፡ ኃሳሮሙ፡ እለ፡ ይብሉ 21
16 ኒ ፡ እንቋዕ ፡ እንቋዕ፡፡=፡ ወይትፌሥሑ፡ 22
ወይትሐሠዩ፡ ብከ፡ ኵሎሙ፡ እለ፡ የኃሥሡከ፡
17 እግዚኦ፡፡ ወይበሉ፡ ዘልፈ ፡ ዐቢይ ፡ እግዚአ
ብሔር፡፡ እለ፡ ይፈቅዱ፡ አድኅኖተከ፡ በኵ
ሉ፡ ጊዜ፡፡=፡ አንሰ፡ ነዳይ፡ ወምስኪን፡ አነ፡፡ 23
ወእግዚአብሔር፡ ይኄሊ፡ ሊተ፡፡=፡ ረዳኢየ፡ 24
18 ወመድኅንየ ፡ አንተ ፡ እግዚኦ ፡ አምላኪየ፡
ወኢትጕንዲ፡፡=፡

ፍጻሜ፡ መዝሙር፡ ዘደዊት፡፡

ሀ ብፁዕ፡ ዘይሌቡ፡ ላዕለ፡ ነዳይ፡ ወምስኪ 1
ን፡፡ አመ፡ ዕለተ፡ እኪት፡ ያድኅኖ፡ እግዚአብሔ
ር፡፡=፡ እግዚአብሔር፡ የዐቅቦ፡ ወያሐይዎ፡ 2
ወያበጽዖ ፡ ደበ ፡ ምድር፡፡ ወኢያገብኦ፡
ውስተ፡ እደ፡ ጸላኢሁ፡፡=፡ እግዚአብሔር፡ 3
ይረድኦ፡ ውስተ፡ ዓራተ፡ ሕማሙ፡፡ ወይመይ
ጥ ፡ ሎቱ ፡ ኵሎ ፡ ምስኪቤሁ ፡ እምደዌ
ሁ፡፡=፡ አንሰ ፡ እቤ፡ እግዚኦ ፡ ተሣሀለኒ፡፡ 4
ወስረይ ፡ ላቲ ፡ ለነፍስየ፡ እስመ፡ አበስኩ፡ ለ
ከ፡፡=፡ ጸላእትየሰ፡ እኩየ፡ ይቤሉ፡ ላዕሌየ፡፡ 5
ማእዜ ፡ ይመውት ፡ ወይሤዓር ፡ ስሙ፡፡=፡
ወይበአ፡ ወይርአይ፡ ዘከንቶ ፡ ይነብብ ፡፡ ል 6
ቡ፡ አስተጋብአ፡ ኃጢአተ፡ ላዕሌሁ፡፡=፡ ይ 7
ወፅእ፡ አፍአ፡ ወይትናገር፡ ወያኃብር፡ 8 ላዕ
ሌየ ፡ ወይትቃጸቡኒ፡ ኵሎሙ ፡ ጸላእትየ፡፡
ወይመክሩ ፡ እኩየ፡ ላዕሌየ፡፡=፡ ነገረ፡ ጊጋ 9
ይ ፡ አውፅኡ ፡ ላዕሌየ ፡፡ ዘኖመሰ ፡ ኢይነቅ
ህኑ፡ አንከ፡፡=፡ ብእሲ፡ ሰላምየ፡ ዘኪያሁ፡ 10
እትአመን፡፡ ዘይሴሰይ ፡ እክልየ ፡ አንስአ፡
ሰኰናሁ ፡ ላዕሌየ፡፡=፡ አንተ፡ እግዚኦ፡ ተ 11
ሣሀለኒ ፡ ወአንሥአኒ ፡ እፈድዮሙ፡፡=፡
ወበእንተዝ፡ አእመርኩ፡ ከመ፡ ሠመርከኒ፡፡ 12
ወኢተፈሥሑ፡ ጸላእትየ፡ ላዕሌየ፡፡=፡ ወሊ 13
ተሰ፡ በእንተ፡ የዋህትየ፡ ተወከፍከኒ፡፡ ወአጽ
ናዕከኒ፡ ቅድሜከ፡ ለዓለም፡፡=፡ ይትባረክ፡ 14
እግዚአብሔር ፡ አምላከ ፡ እስራኤል፡፡ እ
ምይእዜ ፡ ወእስከ ፡ ለዓለም ፡ ለይኩን፡
ለይኩን፡፡=፡

ስብሐት፡ ለአብ፡ ወወልድ፡ ወመንፈስ፡ ቅዱስ፡
ይእዜኒ፡ ወዘልፈኒ፡ ወለዓለመ፡ ዓለም፡
አሜን፡፡

MS. Æthiop. Pocock. Gloria patri, & Filio et Spiritui Sancto: Est modò, semper erit, in secula seculorum, Amen.

INTERP. ÆTHIOP. [f] obtrectant animæ meæ. Convertantur [g] omni tempore. [h] tu es Domine Deus meus: & ne *PSAL. X L.* [a] Inimici quidem [b] ingreditur, & vidit, quod vanum est loquitur: cor ejus congregavit [c] loquebatur & consociabat : Adversùs [d] Qui dormit quidem, non igitur resurget ? [e] extulit adversùs me calcaneum suum. [f] et non gavisi sunt inimici mei super

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

14 * سر يا رب بأن تخلصني يا رب انظر في معونتي * يخز ويعثر طالبوا نفسي جميعا * ليبيدوها *
15
16 يرتدون على أعقابهم ويخزون * الذين يطلبون لي الشر * وليتل الخزي سريعا * القائلون لي نعما
17 نعما * وليتهلل ويسر بك جميع طالبيك يا رب * وليقولوا في كل حين فليعظم الرب الذين
18
19 يحبون خلاصك في كل حين * وأنا فقير ومسكين والرب يهتم بي * أنت معيني وناصري
يا إلهي لا تبطئ * الليلويا *

1 * المزمور الاربعون * نبوة عن التجسد وسلام يهودا * وعدده * كو * استيخن *
2
3 * طوبى لمن يتعطف على المسكين * الرب يخلصه في اليوم السو * الرب يحفظه ويحييه * ويجعله
4 في الأرض مغبوطا * ولا يسلمه في أيدي أعدائه * الرب يعينه على سرير وجعه * صرفت كل
5
6 أوجاعه وهو على مضجعه * أنا قلت يا رب ارحمني * ونج نفسي فاني أخطأت إليك * أعدائي
7 قالوا في شرا * أن متى ما يموت فيبيد اسمه * كان يدخل فينظر ويتكلم بالباطل * وقلبه
8 جمع له إثما * وكان يخرج ويتكلمون علي جميعا * تكلم علي جميع أعدائي * واستوروا علي
9
10 بالأسواء * وقرروا علي كلاما مخالفا للناموس * وقالوا منذ الآن إذا مات لا يعود أن يقوم * إن
11 الرجل المسالم لي الذي إياه ترجيت * الذي أكل خبزي رفع عقبه علي * وأنت يا رب ارحمني
12
13 وأقمني * فأجازيهم * فبهذا علمت أنك أردتني * إذ لم يسر بي عدوي * وأنا بعدمي الشر
14 قبلتني * وثبتني أمامك إلى الأبد * تبارك الرب إله إسرائيل * من الأبد وإلى الأبد *
يكون يكون * الليلويا *

Placeat tibi, O Domine, ut salves me, 14
O Domine, respice in adjutorium meum.
Confundantur, & præterfluant quærен- 15
tes animã meã simul ad perdendã eam :
retrogantur super calcaneos suos, & pu-
defiant qui cupiunt mihi malũ. Et adi- 16
piscantur confusionem citò dicentes mihi;
Euge, euge. At jubilent & exultent in te 17
omnes quærentes te, O Domine : & di-
cant omni momento, Magnificetur Do-
minus, qui amant salutem tuam omni
tempore. Et ego quidem pauper sum & 18
miser, & Dominus curã habet mei. Tu es 19
adjutor meus & suffultor meus, O Deus,
meus, ne moreris. Alleluja.

PSAL. XL.

Prophetia de Incarnatione, et sa- 1
lutatione Judæ. Numerus ver. 26.

BEatus vir, qui benignus est erga pau- 2
perem : Dominus liberabit eum in die 3
malo. Dominus conservabit eũ, & vivi-
ficabit eũ, eumq; reddet in terra fælicem,
& non tradet eũ in manus inimicorum
ipsius. Dominus opem feret illi super le- 4
ctum doloris ejus: abegisti omnes dolores
ejus, dum esset super cubile suum. Ego 5
dixi, O Domine, miserere mei & libera
animam meam, quia peccavi tibi. Inimici 6
mei dixerunt de me malum, O quando
morietur & peribit nomen ejus! Ingre- 7
diebatur & videbat, loquebaturque fal-
sitatem, & cor ejus congessit sibi flagi-
tium : & egrediebantur ac loquebantur
de me simul. Loquuti sunt de me cuncti 8
inimici mei, & consilium ceperunt con-
tra me, malo animo : Et asseruerunt de 9
me verba contraria legi ; & dixerunt ;
Ex nunc cùm mortuus fuerit, non re-
surget ampliùs. Sanè vir pacificus mi- 10
hi, in quem sperabam, cujus panem com-
edebam, elevavit adversùm me plantam
suam. Et tu, O Domine, miserere mei, & 11
erige me, ac retribuam eis. Per hoc novi 12
me tibi gratum esse ; quòd non gestierit
mihi inimicus meus. Me verò, quia 13
sum expers nequitiæ, suscepisti : & con-
firmâsti me in conspectu tuo in æternum.
Benedictus sit Dominus Deus Israel ab 14
æterno & in seculum, sit, sit. Alleluja.

תהלים : מב מג

ספר שני

PSAL. XLII. מב

decursus super anhelabit cervus Quemadmodum .Corach filiis erudiens , Victori
1 לַמְנַצֵּחַ מַשְׂכִּיל לִבְנֵי־קֹרַח׃ כְּאַיָּל תַּעֲרֹג עַל־אֲפִיקֵי־ 2
, Deum ad mea anima Sitivit .Deus te ad anhelabit mea anima ita ,aquarū
מַיִם כֵּן נַפְשִׁי תַעֲרֹג אֵלֶיךָ אֱלֹהִים׃ צָמְאָה נַפְשִׁי לֵאלֹהִים 3
mea lachryma mihi Fuit ? Dei faciebus videbor & ,veniā quando :vivū Deū ad
לְאֵל חָי מָתַי אָבוֹא וְאֵרָאֶה פְּנֵי אֱלֹהִים׃ הָיְתָה־לִּי דִמְעָתִי 4
Horum ? tuus Deus Ubi : die omni me ad dicendo in ,nocte ac die panis
לֶחֶם יוֹמָם וָלָיְלָה בֶּאֱמֹר אֵלַי כָּל־הַיּוֹם אַיֵּה אֱלֹהֶיךָ׃ אֵלֶּה 5
,numerum in transibo quoniam ,meam animam me super effundam & , recordabor
אֶזְכְּרָה ׀ וְאֶשְׁפְּכָה עָלַי ׀ נַפְשִׁי כִּי אֶעֱבֹר ׀ בַּסָּךְ
turba ,confessionis & ,ovationis voce in Dei domum ad usque eis cum me movebo
אֶדַּדֵּם עַד־בֵּית אֱלֹהִים בְּקוֹל־רִנָּה וְתוֹדָה הָמוֹן
expecta ? me super tumultuaberis & , mea anima te deprimes Cur .tripudians
חוֹגֵג׃ מַה־תִּשְׁתּוֹחֲחִי ׀ נַפְשִׁי וַתֶּהֱמִי עָלָי הוֹחִלִי 6
me super ,mi Deus .ejus facierum salutes : ei confitebor adhuc quia , Deum
לֵאלֹהִים כִּי־עוֹד אוֹדֶנּוּ יְשׁוּעוֹת פָּנָיו׃ אֱלֹהַי עָלַי 7
Chermonim & ,Jarden terra de tui recordabor idcirco :se deprimet mea anima
נַפְשִׁי תִשְׁתּוֹחָח עַל־כֵּן אֶזְכָּרְךָ מֵאֶרֶץ יַרְדֵּן וְחֶרְמוֹנִים
: tuarum fistularum vocem ad clamans voraginem ad Vorago .pusillo monte de
מֵהַר מִצְעָר׃ תְּהוֹם־אֶל־תְּהוֹם קוֹרֵא לְקוֹל צִנּוֹרֶיךָ 8
Dominus præcipiet Interdiu .transierunt me super tui fluctus & ,tuæ illisiones omnes
כָּל־מִשְׁבָּרֶיךָ וְגַלֶּיךָ עָלַי עָבָרוּ׃ יוֹמָם ׀ יְצַוֶּה יְהוָה ׀ 9
.mearum vitarum Deo oratio : mecum ejus canticum nocte in &,suam misericordiam
חַסְדּוֹ וּבַלַּיְלָה שִׁירֹה עִמִּי תְּפִלָּה לְאֵל חַיָּי׃
ambulabo atratus quid ut ? mei es oblitus quid Ut : meæ petræ Deo Dicam
אוֹמְרָה ׀ לְאֵל סַלְעִי לָמָה שְׁכַחְתָּנִי לָמָּה־קֹדֵר אֵלֵךְ 10
,mei hostes me probro affecerunt ,meis ossibus in occisione In ? inimici oppressionem in
בְּלַחַץ אוֹיֵב׃ בְּרֶצַח ׀ בְּעַצְמוֹתַי חֵרְפוּנִי צוֹרְרָי 11
,mea anima te deprimes Cur ? tuus Deus Ubi : die omni me ad ipsos dicendo in
בְּאָמְרָם אֵלַי כָּל־הַיּוֹם אַיֵּה אֱלֹהֶיךָ׃ מַה־תִּשְׁתּוֹחֲחִי ׀ נַפְשִׁי 12
; ei confitebor adhuc quia , Deum expecta ? me super tumultuaberis cur &
וּמַה־תֶּהֱמִי עָלָי הוֹחִילִי לֵאלֹהִים כִּי־עוֹד אוֹדֶנּוּ
.meus Deus & , mearum facierum salutes
יְשׁוּעֹת פָּנַי וֵאלֹהָי׃

PSAL. XLIII. מג

viro à : misericorde non gente de meam litem litiga & Deus me Judica
שָׁפְטֵנִי אֱלֹהִים ׀ וְרִיבָה רִיבִי מִגּוֹי לֹא־חָסִיד מֵאִישׁ 1
quid ut ,meæ fortitudinis Deus tu Quia .me eripies iniquitatis & doli
מִרְמָה וְעַוְלָה תְפַלְּטֵנִי׃ כִּי־אַתָּה ׀ אֱלֹהֵי מָעוּזִּי לָמָה 2
,tuam lucem Mitte ? inimici oppressionē in ambulabo atratus quid ut ? me elongāsti
זְנַחְתָּנִי לָמָּה־קֹדֵר אֶתְהַלֵּךְ בְּלַחַץ אוֹיֵב׃ שְׁלַח־אוֹרְךָ 3
,tuæ sanctitatis montem ad me introducent : me ducent ipsæ : tuam veritatem &
וַאֲמִתְּךָ הֵמָּה יַנְחוּנִי יְבִיאוּנִי אֶל־הַר־קָדְשְׁךָ
.tua tabernacula ad &
וְאֶל־מִשְׁכְּנוֹתֶיךָ׃

תרגום TARGUM.

מב

1 לְשַׁבָּחָא בְּשִׂכְלָא טָבָא עַל יְדֵיהוֹן דִּבְנֵי קֹרַח׃
2 הֵיךְ אַיְלָא דִּי מְרַגַּג עַל פַּצִּידֵי מַיָּא הֵיכְנָא נַפְשִׁי
3 מְרַגְּגָא לְוָתָךְ יְיָ׃ צְחַת לָךְ נַפְשִׁי לֵאלָהָא תַּקִּיפָא
חַיָּא וְקַיָּמָא אֵימָתַי אֵעוֹל וְאֶחְמֵי זִיו שְׁכִנְתָּא דַּיְיָ׃
4 הֲוָת לִי דִּמְעָתִי לִמְבָרֵי יֵימָם וְלֵילֵי בְּדֵיימַר לִי
5 סָנְאָה כָּל יוֹמָא אָן הוּא אֱלָהָךְ׃ אִלֵּין נִסַּיָּא אֲנָא
דְּכִיר וְאֵשׁוֹד עֲלַי רַעְיוֹנֵי נַפְשִׁי כַּד אַעְבַּר טְלָלָא
בִּלְחוֹדִי אֶתְחַיֵּל בְּמַשְׁרְיָין דְּצַדִּיקֵי עַד בֵּית
מוּקְדְּשָׁא דַּיְיָ בְּקָל בָּעוּתָא וְתוּשְׁבַּחְתָּא
אִתְרְגוּשַׁת עַמְמִין דְּאָתְיָין לְמֵחַג לִירוּשְׁלֶם׃ 6 מָה
תִּתְמַכְּכִין נַפְשִׁי וְתִרְגְּשִׁי עֲלַי אוֹרִיכִי לֵאלָהָא
אֲרוּם תּוּב אֲשַׁבְּחִנֵּיהּ בְּפוּרְקָנָא דְּמִן קֳדָמוֹי׃
7 אֱלָהִי עֲלַי נַפְשִׁי תִּתְמַכַּךְ בְּגִין כֵּן יִדְכְּרוּנָךְ יָתְבֵי
לְהַלְאָה בְּאַרַע יַרְדְּנָא וְיָתְבֵי טוּרֵי חֶרְמוֹנֵי
וְעַמָּא דְּקַבִּילוּ אוֹרַיְתָא בְּטוּרָא דְּסִינַי דְּמַכִּיךְ
8 וּזְעִיר׃ תְּהוֹמָא עִלָּאָה לִתְהוֹמָא אַרְעָאָה קָרֵי
לְקָל וּלְחֵי מַרְזְבָךְ הֵיכְנָא כּוּלְהוֹן מִתְבָּרָךְ
9 וְגַלָּלָךְ עֲלַי עֲבַרוּ׃ יֵימָם יִפְקוֹד יְיָ טוּבֵיהּ
וּבְלֵילְיָא תּוּשְׁבַּחְתֵּיהּ עִמִּי צְלוֹתָא לְאֵל דִּי נָטִיר
10 חַיַּי׃ אֵימַר לֵאלָהָא רוּחְצָנִי לְמָה אַשְׁלִיתַנִי לְמָה
11 בְּקַבְלָא אֵיזִיל בִּדְחוֹק בְּעֵל דְּבָבָא׃ בִּדְקַטְלִין
גַּרְמַי בִּזְמַן דִּמְחָרְפִין יָתִי מְעִיקַי כַּד אָמְרִין לִי כָּל
12 יוֹמָא אָן הוּא אֱלָהָךְ׃ מָה תִּתְמַכְּכִין נַפְשִׁי וּמָה
תִּרְגְּשִׁי עֲלַי אוֹרִיכִי לֵאלָהָא אֲרוּם תּוּב
אֲשַׁבְּחִנֵּיהּ בְּפוּרְקָנֵיהּ דְּמִן קֳדָמוֹי דִּי הוּא
אֱלָהִי׃

מג

1 דּוּן יָתִי יְיָ בְּדִין קְשׁוֹט וְעָלָךְ לְמִנְצֵי מַצּוּתִי מִן
עַמָּא דְּלָא זַכַּי מִן גְּבַר נְכִיל וּטְלוּמָא תְּשֵׁיזְבִנַּנִי׃
2 אֲרוּם אַנְתְּ הוּא אֱלָהָא עוּשְׁנִי לְמָה שְׁבַקְתַּנִי
3 לְמָה חֲבִיר אֵיזִיל בִּדְחוֹק בְּעֵיל דְּבָבָא׃ שְׁדַר
נְהוֹרָךְ וְהֵימָנוּתָךְ הִנּוּן יְדַבְּרוּנַּנִי יַעֲלוּן יָתִי לְטוּר
בֵּית מוּקְדְּשָׁא וּמִדְרְשֵׁי בֵּית שְׁכִנְתָּךְ׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

1 Ad laudandum in intelligentia bona per manus filiorum Korahh.

PSAL. XLII.

2 SIcut cervus deſiderat ad decurſus aquarum; ſic anima mea deſiderat ad te *Domine*. 3 Sitivit anima mea ad *te* Deū fortem vivū & permanentē: quando ingrediar & reſpiciam ſplendorē majeſtatis Dñi? 4 Fuit mihi lachryma mea in cibū diu noctúque, dum diceret mihi inimicus tota die, Ubi Deus tu⁹? 5 Signorum illorū memor ſum, & effundā ſuper me *cogitationes* animæ meæ, quando tranſibo *umbraculū*, ſolus roborabor in caſtris juſtorum uſque ad domū ſanctuarii Dñi in voce exultationis & *laudis*, tumultus populorum venientium, ut feſta celebrent in Jeruſalem. 6 Quare conſternêris anima mea & tumultuêris adverſum me? ſpera in Deo, quoniā adhuc *laudabo eum* propter redemptionē quæ eſt à conſpectu ejus. 7 Deus meus, ſuprà me anima mea deprimetur: propterea recordabūtur tui, qui habitant ad ulteriorē ripā terræ Jordanis, & habitatores *montiū Hermoniorū*, & popul⁹ qui acceperūt legē in monte Sinai, humili & parvo. 8 Abyſſus ſuperior abyſſum inferiorē invocat in voce ſtillationum canalium tuorū; ſic omnes gurgites tui & fluctus tui ſuper me tranſierunt. 9 Per diem mandabit Dominus benignitatē ſuam, & per noctē canticū ejus erit mecū: oratio ad Deum qui cuſtodit vitam meam. 10 Dicam Deo, *Fiducia* mea quare oblitus es mei? quare in tenebris incedam, cùm affligit inimicus? 11 Dum occidunt membra mea, in tempore quo exprobrant mihi oppreſſores mei, quando dicunt mihi tota die, Ubi eſt ille Deus tuus? 12 Quare conſternêris anima mea, & tumultuêris adverſum me? ſpera in Deo, quoniam adhuc *laudabo eum* propter redemptionem quæ eſt à præſentia ejus, quoniam ipſe eſt Deus meus.

PSAL. XLIII.

1 Judica me Deus judicio veritatis: tuum eſt enim agere cauſam meam à gente non *juſta*; ab homine doloſo, & iniquo libera me. 2 Quoniam tu *es* Deus fortitudo mea, quare *dereliquiſti me*? quare *atratus* incedam dum affligit auctor inimicitiæ? 3 Emitte lucem tuam & veritatem tuam; ipſæ deducent me & introducent me in montem domus ſanctuarii, & in ſcholas domus majeſtatis tuæ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܬܘܒ ܣܦܪܐ ܕܬܪܝܢ * ܡܙܡܘܪܐ * ܕܡܒ *

* ܕܒܢܝ̈ ܩܘܪܚ. ܬܟܫܦܬܐ ܕܢܒܝ̈ܐ. ܘܗܘ ܕܗܘܐ ܡܙܡܪ ܕܘܝܕ ܒܓܠܘܬܗ. ܘܪܓܐ ܕܢܦܢܐ 1
ܠܐܘܪܫܠܡ. ܦܬ̈ܓܡܝܢ ܟܚ. * ܐܝܟ ܐܝܠܐ ܕܓܥܐ ܥܠ ܡܒܘܥܐ ܕܡܝܐ. ܗܟܢܐ ܐܦ ܢܦܫܝ ܩܥܝܐ 2
ܠܘܬܟ ܡܪܝܐ : * ܨܗܝܐ ܠܟ ܢܦܫܝ ܐܠܗܐ ܚܝܐ : ܐܡܬܝ ܐܬܐ ܘܐܚܙܐ ܐܦܝ̈ܟ : ܐܠܗܐ. * ܗܘܬ 3
ܠܝ ܕܡܥܬܝ ܡܐܟܘܠܬܐ. ܒܐܝܡܡܐ ܘܒܠܠܝܐ : ܟܕ ܐܡܪܝܢ ܗܘܘ ܠܝ ܟܠܝܘܡ ܐܝܟܘ 4
ܐܠܗܟ. * ܗܠܝܢ ܐܬܕܟܪܬ ܘܐܬܬܦܟܬ ܢܦܫܝ : ܡܛܠ ܕܥܒܪ ܐܢܐ ܒܛܠܠܟ ܥܫܝܢܐ. ܥܕܡܐ 5
ܠܒܝܬܗ ܕܐܠܗܐ : ܒܩܠܐ ܕܬܫܒܘܚܬܐ ܘܕܬܘܕܝܬܐ ܣܓܝܐܐ ܚܕܝܢ. * ܠܡܢܐ ܡܬܬܦܟܝܢ 6
ܢܦܫܝ ܘܠܡܢܐ ܬܡܝܗܬܝ : ܣܟܝ ܠܐܠܗܐ ܡܛܠ ܕܬܘܒ ܐܘܕܐ ܠܗ. ܠܦܪܘܩܐ ܕܐܦܝ̈
ܘܠܐܠܗܝ : * ܥܠܝ ܢܦܫܝ ܐܬܬܦܟܬ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܬܕܟܪܬܟ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܝܘܪܕܢܢ : ܡܢ ܚܪܡܘܢ 7
ܘܡܢ ܛܘܪܐ ܙܥܘܪܐ. * ܬܗܘܡܐ ܠܬܗܘܡܐ ܩܪܐ : ܘܩܠܐ ܠܩܠܐ ܕܡܝܐ ܕܨܢܪ̈ܝܟ. ܟܠܗܘܢ 8
ܡܚܫܘ̈ܠܝܟ ܘܓܠ̈ܠܝܟ ܥܠܝ ܥܒܪܘ : * ܒܐܝܡܡܐ ܢܦܩܘܕ ܡܪܝܐ ܚܣܕܘܗܝ. ܘܒܠܠܝܐ 9
ܬܫܒܘܚܬܗ : ܥܡܝ ܨܠܘܬܐ ܠܐܠܗܐ ܚܝܐ. * ܐܡܪܬ ܠܐܠܗܐ ܕܠܡܢܐ ܛܥܝܬܢܝ : ܘܠܡܢܐ 10
ܟܡܝܪܐ ܐܢܐ ܡܗܠܟ ܒܐܘܠܨܢܐ ܕܒܥܠܕܒܒܐ.* ܒܬܒܪܐ ܕܓܪܡܝ ܚܣܕܘܢܝ ܒܥܠܕܒܒܝ. 11
ܟܕ ܐܡܪܝܢ ܗܘܘ ܠܝ ܟܠܝܘܡ ܐܝܟܘ ܐܠܗܟ : * ܠܡܢܐ ܡܬܬܦܟܝܢ ܢܦܫܝ ܘܠܡܢܐ 12
ܬܡܝܗܬܝ. ܣܟܝ ܠܐܠܗܐ ܡܛܠ ܕܬܘܒ ܐܘܕܐ ܠܗ : ܠܦܪܘܩܐ ܕܐܦܝ̈ ܘܠܐܠܗܝ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ * ܟܕ ܚܘܝ ܠܗ ܝܘܢܬܢ ܕܒܥܐ ܫܐܘܠ ܠܡܩܛܠܗ. 1
ܘܬܟܫܦܬܐ ܕܢܒܝ̈ܐ. ܘܡܫܝܛ ܠܝܗܘܕܝ̈ܐ. ܦܬ̈ܓܡܝܢ ܝܕ. ܕܘܢ ܐܠܗܐ ܕܝܢܝ ܘܬܒܘܥ ܢܩܡܬܝ :
ܡܢ ܥܡܐ ܕܠܐ ܡܪܚܡ. ܘܡܢ ܓܒܪܐ ܥܘܠܐ ܘܢܟܘܠܐ ܦܨܝܢܝ : * ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܗܘ ܐܠܗܐ 2
ܕܥܘܫܢܝ. ܘܠܡܢܐ ܛܥܝܬܢܝ. ܘܠܡܢܐ ܟܡܝܪܐ ܐܢܐ ܡܗܠܟ : ܒܐܘܠܨܢܐ ܕܒܥܠܕܒܒܐ.
* ܫܕܪ ܢܘܗܪܟ ܘܗܝܡܢܘܬܟ ܘܢܒܐܘܢܢܝ : ܘܢܕܒܪܘܢܢܝ ܠܛܘܪܐ ܕܩܘܕܫܟ ܘܠܡܫܟܢܝ̈ܟ. 3

Sequitur Liber ſecundus.

PSAL. XLII.

1 *Filiorum Corah. Supplicatio Prophetarum. Eſtq; pſalmus quem David canebat dum exularet, cupiens redire Jeroſolymā. Ver. 28.*

2 UT cervus mugiens ad fontem aquarum, ita etiam anima mea clamat ad te, Dñe. 3 Sitiens eſt tui anima mea, Deus vive: quando veniam & videbo faciem tuam? Deus, 4 Facta eſt mihi lachryma mea cib⁹ diu noctuque, dum dicerent mihi quotidie, Ubi eſt Deus tuus? 5 Hæc recordatus ſum, & conturbata eſt anima mea. Quia tranſibo ſub protectione tua forti uſque ad domum Dei, in voce laudis & confeſſionis multi lætantur. 6 Quare conturbaris anima mea, & quare ſtupida es? Expecta Deum, quoniam adhuc gratias agam Salvatori vultûs mei, Et Deo meo. 7 Adverſùm me anima mea conturbata eſt; propterea memor fui tui de terra Jordanis, ab Hermon & à monte exiguo. 8 Abyſſus abyſſum advocat, & vox vocem aquarum canalium tuorum; omnes fluctus tui & procellæ tuæ ſuper me tranſierunt. 9 Interdiu præcipiet Dominus miſericordiæ ſuæ: & noctu laudationes ejus, mecum eſt oratio mea Deo viventi. 10 Dixi Deo, Quare oblitus es mei, & quare incedo triſtè in oppreſſione inimicorum meorum? 11 Cum fractione oſſium meorum exprobraverunt mihi hoſtes mei, dum dicerent mihi quotidie, Ubi eſt Deus tuus? 12 Quare conturbaris, anima mea, & quare ſtupida es? Expecta Deum, quoniam adhuc confitebor Salvatori vultûs mei & Deo meo.

PSAL. XLIII.

1 *Davidis. Quum indicavit illi Jonathan, velle Saulem occidere eum. Et ſupplicatio Prophetarum. Contemnit etiam Judæos. Verſ. 14*

JUdica, Deus, judiciū meū, & ſume vindictā meā à populo haud miſericordi: & à viris impiis atq; fraudulentis eripe me. 2 Quandoquidē tu es Deus roboris mei, quare ergò oblitus es mei, & quare incedo triſtè affligentibus inimicis meis? 3 Mitte lucē tuā ac fidē tuā, & conſolabuntur me, deducentq; me ad montem ſanctum, & ad habitaculum tuum.

Verſio VULG. LAT.

In finem,
1 Intellectûs filiis Core. XLI.

2 Quemadmodùm deſiderat cervus ad
fontes aquarũ : ita deſiderat anima mea
3 ad te, Deus. Sitivit anima mea ad Deum
fortem vivum : quando veniam & ap-
4 parebo ante faciẽ Dei? Fuerunt mihi
lachrymæ meæ panes die ac nocte : dum
dicitur mihi quotidiè, Ubi eſt Deus
5 tuus? Hæc recordatus ſum, & effudi in
me animam meã : quoniã tranſibo in
locũ tabernaculi admirabilis, uſque ad
domũ Dei : In voce exultationis, &
6 confeſſionis : ſonus epulantis. Quarè
triſtis es anima mea? & quarè con-
turbas me? Spera in Deo, quoniam ad-
huc confitebor illi : ſalutare vultûs mei,
7 Et Deus meus. Ad meipſum anima
mea conturbata eſt : propterea memor
ero tuî de terra Jordanis, & Hermoniim
8 à monte modico. Abyſſus abyſſum in-
vocat, in voce cataractarũ tuarũ. Omnia
excelſa tua, & fluctus tui ſuper me tranſ-
9 ierunt. In die mandavit Dominus mi-
ſericordiã ſuam, et nocte canticũ ejus.
10 Apud me oratio Deo vitæ meæ, Dicam
Deo; Suſceptor meus es, Quarè oblitus
ei meî? et quarè contriſtatus incedo, dũ
11 affligit me inimicus? Dum confringun-
tur oſſa mea, exprobraverunt mihi qui
tribulant me inimici mei : Dum dicunt
mihi per ſingulos dies, Ubi eſt Deus
12 tu'? Quarè triſtis es anima mea? & quarè
conturbas me? Spera in Deo, quoniam
adhuc confitebor illi : ſalutare vultûs
mei, & Deus meus.

1 Pſalmus David. XLII.

Judica me, Deus, et diſcerne cauſam
meam de gente non ſancta, ab homine
2 iniquo et doloſo erue me. Quia tu es
Deus fortitudo mea : quarè me repuliſti?
& quarè triſtis incedo, dum affligit me
3 inimicus? Emitte lucem tuam et veri-
tatem tuam : ipſa me deduxerunt, et ad-
duxerunt in montem ſanctum tuum, et
in tabernacula tua.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

1 Εἰς τὸ τέλος, εἰς σύνεσιν τοῖς υἱοῖς Κορὲ(α). μα′.
2 †Ὃν τρόπον ἐπιποθεῖ ἡ ἔλαφος ἐπὶ τὰς πη-
γὰς τῶν ὑδάτων, †οὕτως ἐπιποθεῖ ἡ ψυχή μου
3 πρὸς σὲ ὁ θεός. †Ἐδίψησεν ἡ ψυχή μου
πρὸς τὸν θεὸν (β) τὸν ζῶντα· †πότε ἥξω καὶ ὀφθή-
4 σομαι τῷ προσώπῳ τοῦ θεοῦ; †Ἐγενήθη τὰ δά-
κρυά μου ἐμοὶ ἄρτος ἡμέρας καὶ νυκτὸς, †ἐν τῷ λέ-
γεσθαί μοι καθ᾽ ἑκάστην ἡμέραν, Ποῦ ἐστιν ὁ θεός
5 σου; †Ταῦτα ἐμνήσθην, καὶ ἐξέχεα ἐπ᾽ ἐμὲ τὴν
ψυχήν μου, †ὅτι διελεύσομαι ἐν τόπῳ σκηνῆς θαυ-
μαστῆς ἕως τοῦ οἴκου τοῦ θεοῦ· †ἐν φωνῇ ἀγαλλιάσεως
6 καὶ ἐξομολογήσεως (γ) ἤχου ἑορταζόντων. †Ἱνατί
περίλυπος εἶ ἡ ψυχή μου, †καὶ ἱνατί συνταράσσεις
με; †ἔλπισον ἐπὶ τὸν θεὸν, ὅτι ἐξομολογήσομαι
7 αὐτῷ, †σωτήριον τοῦ προσώπου μου, (δ) Ὁ θεός μου.
†πρὸς ἐμαυτὸν ἡ ψυχή μου ἐταράχθη, †διὰ τοῦ-
το μνησθήσομαί (ε) σου ἐκ γῆς Ἰορδάνου, †καὶ Ἑρ-
8 μωνιεὶμ ἀπὸ ὄρους μικροῦ. †Ἄβυσσος ἄβυσσον ἐπι-
καλεῖται εἰς φωνὴν τῶν (ϛ) καταῤῥακτῶν σου· †πάντες
οἱ μετεωρισμοί σου, καὶ τὰ κύματά σου ἐπ᾽ ἐμὲ δι-
9 ῆλθον. †Ἡμέρας ἐντελεῖται κύριος τὸ ἔλεος αὐτοῦ,
†καὶ νυκτὸς (ζ) δηλώσει. παρ᾽ ἐμοὶ †προσευχὴ
10 τῷ θεῷ τῆς ζωῆς μου, †Ἐρῶ τῷ θεῷ, Ἀντιλήπτωρ
(η) μου εἶ, διατί μου ἐπελάθου; †(θ) ἱνατί σκυθρω-
πάζων πορεύομαι †ἐν τῷ ἐκθλίβειν τὸν ἐχθρόν μου;
11 †Ἐν τῷ (ι) καταθλᾶσθαι τὰ ὀστᾶ μου, (κ) ὠνείδισάν
με οἱ θλίβοντές με· †ἐν τῷ λέγειν αὐτούς μοι καθ᾽
12 ἑκάστην ἡμέραν, Ποῦ ἐστιν ὁ θεός σου; †Ἱνατί περί-
λυπος εἶ ἡ ψυχή μου, †καὶ ἱνατί συνταράσσεις με;
†ἔλπισον ἐπὶ τὸν θεὸν, ὅτι ἐξομολογήσομαι
αὐτῷ, †(λ) ἡ σωτηρία τοῦ προσώπου μου, καὶ ὁ θεός μου.

MS.A. (α) ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. (β) τὸν ἰσχυρὸν τὸν ζῶντα· (γ) ἤχοις ἑορτάζοντος. (δ) Καὶ ὁ θεός (ε) σου κύριε ἐκ (ϛ) καταρακτῶν (ζ) ᾠδὴ αὐτοῦ. παρ᾽ ἐμοὶ (η) μου, διατί (θ) καὶ ἱνατί (ι) καταθλᾶσαι (κ) ὠνείδιζόν με οἱ ἐχθροί μου (λ) σωτήριον

1 (α) Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. μβ′.

†Κρῖνόν (β) με ὁ θεὸς, καὶ δίκασον τὴν δίκην μου,
ἐξ ἔθνους οὐχ ὁσίου, †ἀπὸ ἀνθρώπου ἀδίκου καὶ
2 δολίου ῥῦσαί με. †Ὅτι (γ) σὺ εἶ ὁ θεὸς κραταί-
ωμά μου, ἱνατί ἀπώσω με; †καὶ ἱνατί σκυθρωπά-
ζων πορεύομαι †ἐν τῷ ἐκθλίβειν τὸν ἐχθρόν μου;
3 †Ἐξαπόστειλον τὸ φῶς σου καὶ τὴν ἀλήθειάν σου,
†αὐτά με ὡδήγησαν καὶ ἤγαγόν με εἰς ὄρος ἅγιόν
σου, †καὶ εἰς τὰ σκηνώματά σου.

MS.A. (α) Εἰς τὸ τέλος συνέσεως τοῖς υἱοῖς Κορὲ, ψαλμὸς (β) μοι (γ) σὺ ὁ θεὸς

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

In finem, (a) in intellectum filiis Core. XLI. 1

1 Quemadmodum (b) deſiderat cervus ad fontes aquarum, ita deſiderat anima mea [a] ad te, Deus. 2 Sitivit anima mea ad (c) [b] Deum vivũ: quando veniam, & apparebo ante faciem [c] Dei? 3 Fuerunt mihi lachrymæ meæ (d) panis die ac nocte: dum dicitur mihi per ſingulos dies, ubi eſt Deus tuus? 4 Hæc (e) recordatus ſum, & [d] effudi ſuper me animam meam: Quoniam tranſibo in (f) locum tabernaculi [e] admirabilis uſque ad domum Dei: 5 In voce [†] exultationis, & confeſſionis ſoni (g) feſtum celebrantium. 6 Quarè (h) triſtis es anima mea? & quarè conturbas me? 7 Spera in Deo: (i) quoniam confitebor illi, ſalutare vultûs mei, Deus meus. 8 Ad me ipſum (k) anima mea turbata eſt: propterea memor ero [f] tuî de terra Jordanis, & Hermoniim à monte parvo. 9 (l) Abyſſus abyſſum invocat in voce cataractarũ tuarum. 10 (m) [g] Omnes ſuſpenſiones tuæ, & fluctus tuî ſuper me tranſierunt. 11 In die mandabit Dominus miſericordiã ſuam, & (n) nocte declarabit. 12 Apud me [*] oratio Deo vitæ meæ: Dicã Deo, (o) [h] Suſceptor meus es: quarè oblitus es meî? 13 [i] Quarè contriſtat' incedo; dum affligit (p) inimicus meus, 14 Dum confringit oſſa mea? Exprobraverunt mihi, [k] qui (q) tribulant me: 15 dum dicunt mihi per ſingulos dies, ubi eſt Deus tuus? Quarè triſtis es anima mea, & quarè conturbas me? 16 Spera in Deo: quoniam confitebor illi; (r) ſalus vultûs mei, & (ſ) Deus meus.

(a) Pſalmus ipſi (b) David. XLII.

1 Judica (c) me, Deus, & [a] diſcerne cauſam meam : de gente [b] non ſancta, ab (d) homine iniquo & doloſo erue me. 2 Quia tu es De' fortitudo mea; quarè me repuliſti? & quarè triſtis incedo, dum affligit (e) inimicus meus? 3 Emitte lucem tuam, & veritatem tuam, (f) ipſa me deduxerunt, & adduxerunt in montem ſanctum tuum, & in [c] tabernacula tua.

Verſio ÆTHIOPICA.

መዝሙር፡ዘበአእምሮ፡ዘደቂቀ፡ቆሬ፡፡

፵፩ ከመ፡ ያፈቅር፡ ኀየል፡ ኀበ፡አንቅዕተ፡ 1
ማያት፡፡ከማሁ፡ታፈቅር፡ነፍስየ፡ኀበ፡ እግዚ
አብሔር፡፡=፡ ጸምአት፡ነፍስየ፡ኀበ፡አምላ 2
ኪየ፡ሕያው፡፡ ማእዜ፡ እበጽሕ ፡ ወእሬኢ፡
ገጾ፡ለአምላኪየ፡፡=፡ሲሳየ፡ኮነኒ፡አንብዕየ፡ 3
መዓልተ፡ወሌሊተ፡፡ እስመ፡ይብሉኒ፡ኵሉ፡
አሚረ፡አይቴ፡ውእቱ፡አምላክከ፡፡=፡ ዘንተ፡ 4
ተዘከርየ ፡ ተክዕወት ፡ ነፍስየ ፡ በላዕሌየ፡፡
እስመ፡እበውእ፡ውስተ፡መካነ፡ማኅደረ፡ ስብ
ሐት፡ቤተ፡እግዚአብሔር፡፡
በቃለ፡አሚን፡ወትፍሥሕት፡ድምፁ፡ እለ፡ይ 5
ገብሩ፡በዓለ፡፡=፡ ለምንት፡ትቴክዚ፡ ነፍስ 6
የ፡ወለምንት፡ተሀውከኒ፡፡=፡ እመኒ፡በእግ 7
ዚአብሔር፡ ከመ፡እገኒ ፡ ሎቱ፡፡ መድኀኒ፡
ገጽየ፡አምላኪየ፡፡=፡ ተሀውከት፡ ነፍስየ፡ 8
በላዕሌየ፡፡ በእንተዝ፡እዜከረከ፡እግዚኦ፡፡
በምድረ፡ ዮርዳኖስ፡በአርሞንኤም፡በደብር፡
ንኡስ፡፡ ቀላይ፡ለቀላይ፡ትጼውዓ፡ በቃለ፡አስ 9
ራቂከ፡፡=፡ ኵሉ፡ ማዕበልከ፡ ወሞገድከ፡ 10
እንተ፡ላዕሌየ፡ኀለፈ፡፡=፡ መዓልተ፡ይኤዝ 11
ዝ ፡ እግዚአብሔር ፡ ሣህሎ ፡ ወሌሊተ፡
ይነግር፡፡
እምኀቤየ፡ ብፅዓት፡ ሕይወትየ፡ለእግዚአብ 12
ሔር፡፡እብሎ፡ለእግዚአብሔር ፡አምላኪየ፡
አንተ፡ ለምንት፡ ትረስዓኒ፡፡=፡ ለምንት፡ተ 13
ኀድገኒ፡ወለምንት፡ትኩዝየ፡ እንሶሱ፡፡ ሶበ፡
ያመነድቡኒ፡ፀርየ፡፡=፡ ወያጸንጽዉኒ ፡ አዕ 14
ጽምትየ፡፡ ወይጼእሉኒ፡ ኵሎሙ፡ ጸላእት
የ፡፡=፡ እስመ፡ ይብሉኒ፡ ኵሉ ፡ አሚረ፡አ 15
ይቴ፡ ውእቱ፡ አምላክከ፡፡ ለምንት፡ትቴክ
ዚ፡ነፍስየ፡ወለምንት፡ተሀውከኒ፡፡=፡ እመኒ፡ 16
በእግዚአብሔር ፡ ከመ ፡ እገኒ ፡ ሎቱ፡፡
መድኀኒ ፡ ገጽየ ፡ አምላኪየ፡፡

መዝሙር ፡ ዘዳዊት፡፡

፵፪ ፍታሕ፡ሊተ፡እግዚኦ፡ወተበቀል፡ በቀል 1
የ፡፡ እምሕዝብ ፡ ውፁዓን ፡ እምጽድቅ፡፡
እምብእሲ፡ዓማፂ፡ወጽልሕው፡ባልሐኒ፡፡=፡
እስመ ፡ አንተ ፡ አምላኪየ ፡ ወኀይልየ፡፡ 2
ለምንት ፡ ተኀድገኒ፡ ወለምንት ፡ ትኩዝየ፡
እንሶሱ፡፡ ሶበ ፡ ያመነድቡኒ ፡ ፀርየ፡፡=፡
ፈኑ ፡ ብርሃነከ ፡ ወጽድቀከ፡፡ እማንቱ፡ 3
ይምርሐኒ፡ ወይስደኒ፡ ደብረ ፡ መቅደስከ፡፡
ወውስተ፡ዐብያቲከ ፡ እግዚኦ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [a] ad Dominum. [b] Deum meum vivum: [c] Dei mei? [d] effuſa eſt anima mea in me: [e] gloriæ uſq; [†] confeſſionis & exultationis ſonuerunt qui feſtum celebrant. [f] tui Domine de [g] Omnes undæ tuæ, & fluctus [*] votum vitæ meæ Domino: [h] Dominus meus es: [i] Quarè repuliſti me? quarè [k] omnes inimici mei: dum *PSAL. XLII.* [a] ſume vindictam meam : [b] diſcedente à juſtitia, [c] palatia tua, Domine.

Verſio *ARABICA.* cum Interpretatione *LATINA.*

1 * المزمور الحادي والاربعون * لاجل اليهود الذين سقطوا * وعدده كب استيخن *
2 * مثل ما يتوق الايل الى ان يكون على ينابيع المياه * كذلك تاقت نفسي اليك يا الله * ظمئت
3
4 نفسي الى الله الحي * متى اجي فاظهر امام وجه الله * صارت دموعي خبزا لي في النهار والليل *
5 اذ يقولون لي في كل يوم اين الهك * هذه ذكرتها فافضت نفسي * اني ساجوز في موضع مظلة
6 عجيبة الى بيت الله * بصوت التهليل * وشكر صوت المعيد * ماذا تحزنيني يا نفس ولماذا
7 تقلقيني * توكلي على الله فاني اشكر الاهي مخلص وجهي * قلقت نفسي في ذاتي * من
8 اجل هذا اذكرك يا رب من ارض الاردن * وحرمون من الجبل الصغير * العمق نادى
9 العمق * بصوت ميازيبك جميع اهوالك * وامواجك اتت علي * في النهار يضي الرب برحمته *
10 وفي الليل اسبحه * اصلي لاله حياتي * قلت للاله انت هو ناصري لماذا نسيتني * ثم لماذا
11 تركتني * ولماذا امشي حزينا عندما اضطهدني عدوي * وعندما وهن عظامي عيرني
12 الذين اضطهدوني * اذ يقولون لي في كل يوم اين الهك * لماذا تحزنيني يا نفس ولماذا تقلقيني *
توكلي على الله فاني اعترف له مخلص وجهي هو الهي * المزمور الثاني والاربعون *

1 * طلبة لاجل اليهود الذين سقطوا * وعدده يب * استيخن *
احكم لي يا الله وانتقم لظلامتي من امة غير طاهرة * ومن انسان ظالم ودغل نجني *
2 * لانك انت الهي وقوتي * لماذا اقصيتني ولماذا امشي عابسا * عندما اضطهدني عدوي * ارسل
3 نورك * وعدلك فانهما اللذان هدياني * واصعداني الى جبلك المقدس * والى مسكنك *

PSAL. XLI.

Pro Judæis qui lapſi ſunt. Et numerus verſ. 22. 1

Quemadmodũ avidè petit cervus eſſe 2 *ad fontes aquarũ, ſic expetivit anima mea te, O Deus. Sitivit anima mea* 3 *Deum vivũ: quando veniã & apparebo ante faciem Dei? Factæ ſunt lachrymæ* 4 *mea panis mihi die ac nocte, dum dicerent mihi quotidie, ubi eſt Deus tuus? Hujus rei memini, & effudi animam* 5 *meã: quòd ſim tranſiturus per locũ tabernaculi admirabilis ad domum Dei cum voce jubilationis, & confeſſione vocis feſta celebrantis. Quarè affligis me, O anima,* 6 *& quarè conturbas me? Confide in Deo, quia gratias agam illi, Deo meo Salvatori vultûs mei. Turbata eſt anima* 7 *mea in me, propterea memor ero tui, O Domine, de terra Jordanis & Hermon, de monte exiguo. Profundũ advocavit* 8 *profundũ in voce diſſecationum tuarum. Omnes tempeſtates tuæ & fluctus tui venerunt ſuper me. In die illuminat* 9 *Deus per miſericordiã ſuã, & in nocte laudo eũ: Oro ad Deũ vitæ meæ. Dixi* 10 *Deo, Tu es adjutor meus, quarè oblitus es mei? etiam cur me deſeruiſti, & quarè incedo triſtis? Quando perſecutus eſt me inimicus meus, Quumque debilia* 11 *eſſent oſſa mea, improperârunt mihi qui perſequnti ſunt me, dicentes mihi ſingulis diebus; ubi eſt Deus tuus? Quarè contriſtas me, O anima, & quarè* 12 *conturbas me? Confide in Deo, quoniam confitebor ei, Salvatori vultûs mei: ipſe eſt Deus meus.*

PSAL. XLII.

Precatio pro Judæis qui lapſi ſunt. Et numerus verſ. 12. 1

Adjudica mihi, O Deus, & vindica oppreſſionem meam à gente impura: & ab homine ſcelerato & doloſo libera me. Quia tu es Deus meus & fortitudo 2 *mea. Quarè me propulſâſti, & quarè incedo mæſtus dum perſequitur me inimicus meus? Mitte lucem tuam & æ-* 3 *quitatem tuam: quoniam ipſa ſunt quæ me duxerunt, & evexerunt ad montem tuum ſanctum & ad habitaculum tuum.*

תהלים : מד

: meæ exultationis lætitiæ Deum ad , Dei altare ad introibo Et
ואבואה אל־מזבח אלהים אל־אל שמחת גילי 4
,mea anima te *deprimes* Cur ,mi Deus , Deus ,cithara in tibi confitebor &
ואודך בכנור אלהים אלהי : מה־תשתוחחי נפשי 5
: ei confitebor adhuc quoniam , Deo in ſpera ? me *ſuper tumultuaberis* cur &
ומה־תהמי עלי הוחילי לאלהים כי־עוד אודנו
.meus Deus & ,*mearum facierum* ſalutes
ישועת פני ואלהי :

PSAL. XLIV. מד

noſtri patres,audivimꝰ noſtris auribꝰ *in* Deus .*erudiens* Corach filiis Victori
1 למנצח לבני־קרח משכיל : אלהים באזנינו שמענו אבותינו 2
Tu .*quondam* diebus in ,eorũ diebus in es operatus opus : nobis narraverunt
ספרו־לנו פעל פעלת בימיהם בימי קדם : אתה 3
.eos emiſiſti & , populis malefeciſti : eos plantaveras & , *expuliſti* gentes tua manu
ידך גוים הורשת ותטעם תרע לאמים ותשלחם :
: eos ſervavit non eorũ brachiũ & ,terram poſſederunt ſuo gladio in non Quia
כי לא בחרבם ירשו ארץ וזרועם לא־הושיעה למו 4
ipſe Tu .*eos voluiſti* quia ,*tuarũ facierum* lux & ,tuũ brachiũ & ,tua dextera ſed
כי־ימינך וזרועך ואור פניך כי רציתם : אתה־הוא 5
:cornupetemus noſtros hoſtes te In .Jahacob ſalutes præcipe , Deus meus rex
מלכי אלהים צוה ישועות יעקב : בך צרינו ננגח 6
; ſperabo meo arcu in non Quia .*nobis obſiſtentes* conculcabimus tuo nomine in
בשמך נבוס קמינו : כי לא בקשתי אבטח 7
: noſtris hoſtibus ab nos feciſti ſervare Quoniam .me ſervabit non meus gladius &
וחרבי לא תושיעני : כי הושעתנו מצרינו 8
tuo nomini & ; die omni *laudavimus* Deo In .pudore affeciſti nos odio habentes &
ומשנאינו הבישות : באלהים הללנו כל־היום ושמך 9
non & : nos feciſti erubeſcere & ,elongâſti Etiam .Selah ,confitebimur ſeculum in
לעולם נודה סלה : אף־זנחת ותכלימנו ולא־ 10
nos habẽtes odio &:hoſte ab retrorſũ nos redire *Facies* .noſtris exercitibꝰ *in* egrederis
תצא בצבאותינו : תשיבנו אחור מני־צר ומשנאינו 11
Vendes .nos diſperſiſti gentes in & ; cibi *pecus* ut nos *Dabis* .ſibiipſis diripuerunt
12 שסו למו : תתננו כצאן מאכל ובגוים זריתנו : תמכר־ 13
opprobriũ nos *Pones* .eorum *preciis in* multiplicâſti non & ,*lucro* ſine tuũ populũ
עמך בלא־הון ולא־רבית במחיריהם : תשימנו חרפה 14
nos *Pones* .noſtris circuitibus deriſionem & ,ſubſannationem ; noſtris vicinis
לשכנינו לעג וקלס לסביבותינו : תשימנו 15
die Omni .populis in capitis commotionem ; gentibus in proverbium
משל בגוים מנוד־ראש בלאמים : כל־היום 16
voce A .me operuit *mearum facierum* pudor & ; me coram mea verecundia
כלמתי נגדי ובשת פני כסתני : מקול 17
Totum .*ulciſcentis ſe &* ,*inimici faciebus à* :afficientis contumeliis &,probris afficientis
מחרף ומגדף מפני אויב ומתנקם : כל־ 18
Non .tuo pacto in ſumus mentiti nec : tui ſumus obliti nec ,nobis venit hoc
זאת באתנו ולא שכחנוך ולא־שקרנו בבריתך : לא־ 19
Quoniam .tua ſemita de noſter pes declinavit *&* ;noſtrum cor retrorſum ſe vertit
נסוג אחור לבנו ותט אשרינו מני ארחך : כי 20
.mortis umbra in nos *ſuper* operuiſti & ; draconis loco in nos contriviſti
דכיתנו במקום תנים ותכס עלינו בצלמות :

תרגום TARGUM.

4 ואעול לקרבא קורבניה למדבח דיי אלהי די
מניה חדות בעותי ואודי קדמך בכנרא יי
5 אלהי : מה תתמככין נפשי ומה תרגשי עלי
אוריכי לאלהא ארום תוב אשבחניה בפורקניה
דמן קדמוי די הוא אלהי :

מד

1 לשבחא לדויד על ידיהון דבני קרח שכלא טבא :
2 יי באודננא שמענא אבהתנא אשתעיו לנא
עובדא דעבדתא ביומיהון ביומיא די מלקדמין :
3 אנת בידא דגבורתך עמיא כנענאי תרכתא
ונצבתנון לבית ישראל בארעהון תברת עממיא
4 ופסרתנון : ארום לא בגבורת סיפיהון ירתו
ארעא ותקוף אדרעיהון לא פרקת להון ארום
ימינך ואדרע גבורתך ונהור זיו יקרך ארום כל
5 ומן דעסיקו באוריתא אתרעיתא בהון : אנת
הוא מלכי אלהא בעדנא הדא פקד פורקנות
6 דבית יעקב : במימרא מעיקנא ננגח בשמך
7 נכבוש כל דקימין עלנא : ארום לא בקשתי
8 אנא רחיץ וסיפי לא תפרוק יתי : ארום פרקתנא
ממעיקנא ומשנאנא איתיתא עלויהון בהתא :
9 במימרא דיי אנן משבחין כל יומא ושמך נודי
10 לעלמי עלמין : לחוד אשליתא ואכספתנא ולא
11 תשרי שכנתך בחילונא : אחזרתנא קדל קדם
12 מעיקא ומשנאנא כבשו לנא : מסרתנא היך ענא
13 למיכלא וביני עממיא בדרתא יתנא : זבנתא
עמך מגן דלא ממונא ולא אסגיתא קנינא
14 בפרוניהון : שויתנא קלנא לשיבבנא ממקנותא
15 ותורפיתא לחזרנותנא : שויתנא למתלא
16 בעממיא טלטול רישא באומיא : כל יומא כסופי
17 לקבלי ובהתת אפי חפתני : מן קלא דמחסד
18 ומגדף מן קדם בעל דבבא ונקים נקמתא : כל דא
ערעת יתנא ולא אשלנך ולא שקרנא בקימך :
19 לא זר פלין וזחוחית לבנא וארח אסטיתא
20 אסתורנא מן תריצת ארחתך : ארום אמכתנא
באתר ירודין וחפיתא עלנא בטולא דמותא :

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Et introibo ut offerã ablationẽ ejꝰ ſup altare 4
Dñi *Dei mei*, à quo eſt gaudiũ exultationis
meæ : cõfitebórq; corã te in cithara Dñe
Deꝰ meꝰ. Quare cõſternêris anima mea,& 5
cur tumultuêris contra me ? ſpera in Deo,
quoniã adhuc *laudabo eum* propter redemptionẽ
ipſius quæ eſt à conſpectu ejus,quoniam
ipſe eſt Deus meus.

Ad laudandum *Davidi* per manum filiorum 1
Korahh intelligentia bona.

PSAL. XLIV.

D*Omine*,auribus noſtris audivimꝰ : patres 2
noſtri nunciaverunt nobis opus quòd operatus
es in diebꝰ eorũ,in diebꝰ antiquis.Tu in 3
manu fortitudinis tuæ populos Chananæos
ejeciſti, & plantâſti eos in domũ Iſrael in
terra eorũ ; confregiſti gentes & conſumpſiſti
eas.Quoniã nõ p robur gladiorũ ſuorũ 4
hæreditaverũt terrã; & fortitudo brachii ſui
non ſalvavit eos; ſed dextera tua & brachiũ
fortitudinis tuæ et lumẽ ſplẽdoris gloriæ tuæ,
quoniã *toto tẽpore quo exercuerũt ſe in lege*
complacuiſti tibi in eis.Tu es ipſe rex meus: 5
Deꝰ *tẽpore hoc* præcipe redemptiones domꝰ
Jaacob. In verbo [*tuo*] oppreſſores noſtros 6
cornu petemus : in nomine tuo ſubjiciemus
omnes inſurgentes in nos. Quoniã non in 7
arcu meo ego confido,& gladiꝰ meꝰ nõ ſalvabit
me.Quoniã redemiſti nos ab affligentibꝰ 8
et ab odientibꝰ nos ;induxiſti in eos confuſionem.
In verbo *Domini* nos laudabimꝰ tota 9
die : & nomen tuũ confitebimur in ſecula
ſeculorum. Verùm oblitus es noſtri, & con- 10
fudiſti nos : & non collocabis majeſtatẽ tuã
in exercitibꝰ noſtris. Feciſti ut verteremus 11
cervicẽ corã hoſte: & qui oderunt nos,ſubjecerunt
nos. Tradidiſti nos ſicut oves ad 12
devorationẽ;et inter populos diſperſiſti nos.
Vendidiſti populũ tuũ gratis abſq; divitiis; 13
& non multiplicâſti lucrũ in commutatione
eorũ. Poſuiſti nos in opprobiũ vicinis noſtris; 14
ſubſannationẽ & irriſũ his qui circum
nos ſunt.Poſuiſti nos in proverbiũ populis; 15
motionem capitis inter nationes. Tota die 16
ignominia mea contra me eſt, & confuſio
vultꝰ mei operuit me. A voce exprobrantis 17
& calumniantis: ab aſpectu auctoris inimicitiæ
& ulciſcentis ultionẽ. Hoc omne eve- 18
nit nobis ; & non obliti ſumꝰ te :& non ſumus
mentiti in pactũ tuũ. Non eſt averſũ, 19
diviſũ *nec elatum*, cor noſtrũ ; & tu inclinâſti
greſſus noſtros à rectitudine viæ tuæ.
Quoniam humiliâſti nos in loco draconum: 20
& cooperuiſti nos umbra mortis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

*ܘܐܥܘܠ ܠܡܕܒܚܗ ܕܐܠܗܐ : ܘܠܐܠܗܐ ܕܡܚܕܐ ܛܠܝܘܬܝ. ܐܘܕܐ ܠܟ ܒܟܢܪܐ ܐܠܗܐ 4
ܐܠܗܝ : * ܠܡܢܐ ܡܬܬܥܝܩܐ ܢܦܫܝ ܘܡܬܡܟܟܐ ܒܝ. ܣܟܝ ܠܐܠܗܐ ܡܛܠ ܕܬܘܒ 5
ܐܘܕܐ ܠܗ : ܠܦܪܘܩܐ ܕܐܦܝ ܘܠܐܠܗܝ.
* ܡܙܡܘܪܐ ܕܡܕ *
* ܕܒܢܝ ܩܘܪܚ ܕܙܡܪ ܗܘܐ ܥܡܐ ܒܚܘܪܝܒ ܥܡ ܡܘܫܐ. ܘܬܘܒ ܨܠܘܬܐ ܕܢܒܝܐ 1
ܕܕܘܝܕ ܘܕܫܪܟܐ. ܠܢ ܕܝܢ ܬܪܘܦܐ ܘܙܟܘܬܐ ܥܠ ܡܩܪܒܢܐ. ܦܣܘܩܐ ܠܗ. * ܐܠܗܐ ܒܐܕܢܝܢ :
ܫܡܥܢܢ : ܘܐܦ ܐܒܗܝܢ ܐܫܬܥܝܘ ܠܢ. ܥܒܕܐ ܕܥܒܕܬ ܒܝܘܡܝܗܘܢ : ܒܝܘܡܬܐ ܩܕܡܝܐ.
* ܐܝܕܟ ܐܘܒܕܬ ܥܡܡܐ ܘܠܗܘܢ ܢܨܒܬ : ܐܒܐܫܬ ܠܡܠܟܘܬܐ ܘܫܪܪܬ ܐܢܘܢ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܐ 3 4
ܒܚܪܒܗܘܢ ܝܪܬܘ ܐܪܥܐ : ܘܕܪܥܗܘܢ ܦܪܩ ܐܢܘܢ. ܐܠܐ ܝܡܝܢܟ ܘܕܪܥܟ : ܘܢܘܗܪܐ ܕܐܦܝܟ
ܕܐܬܪܥܝܬ ܒܗܘܢ. * ܐܢܬ ܗܘ ܐܠܗܐ ܡܠܟܝ : ܕܦܩܕܬ ܠܦܘܪܩܢܗ ܕܝܥܩܘܒ. * ܒܟ ܢܕܩܪ 5 6
ܒܥܠܕܒܒܝܢ : ܘܒܫܡܟ ܢܕܘܫ ܠܣܢܐܝܢ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܐ ܥܠ ܩܫܬܝ ܐܬܬܟܠܬ : 7
ܘܠܐ ܥܠ ܙܝܢܝ ܕܢܦܪܩܢܝ. * ܐܢܬ ܗܘ ܦܪܩܬܢ ܡܢ ܣܢܐܝܢ : ܘܒܗܬܬ ܒܥܠܕܒܒܝܢ. 8
* ܫܒܚܢܟ ܐܠܗܐ ܟܠܗ ܝܘܡܐ : ܘܠܫܡܟ ܠܥܠܡ ܢܘܕܐ. * ܘܗܫܐ ܛܥܝܬܢ ܘܒܗܬܬܢ : ܘܠܐ 9 10
ܢܦܩܬ ܒܚܝܠܢ. * ܘܐܗܦܟܬܢ ܠܒܣܬܪܐ ܘܒܙܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝܢ : * ܝܗܒܬܢ ܐܝܟ ܥܢܐ 11 12
ܠܡܐܟܘܠܬܐ. ܘܒܕܪܬܢ ܒܝܬ ܥܡܡܐ. * ܙܒܢܬ ܠܥܡܟ ܕܠܐ ܕܡܝܐ. ܘܠܐ ܐܣܓܝܬ ܚܘܠܦܝܗܘܢ : 13
* ܣܡܬܢ ܚܣܕܐ ܠܫܒܒܝܢ. ܘܡܡܝܩܢܘܬܐ ܘܒܘܙܚܐ ܠܐܝܠܝܢ ܕܚܕܪܝܢ ܠܢ : * ܣܡܬܢ ܡܬܠܐ 14 15
ܒܝܬ ܥܡܡܐ. ܘܢܝܕܐ ܕܪܝܫܐ ܒܝܬ ܐܘܡܘܬܐ : * ܟܠܗ ܝܘܡܐ ܒܗܬܬܝ ܩܕܡܝ ܗܝ. ܘܒܗܬܬܐ ܕܐܦܝ 16
ܟܣܬܢܝ : * ܡܢ ܩܠܐ ܕܡܨܚܝܢܐ ܘܡܓܕܦܢܐ. ܘܡܢ ܩܕܡ ܒܥܠܕܒܒܐ ܘܡܬܒܥܢܐ : * ܗܠܝܢ 17 18
ܟܠܗܝܢ ܐܬܝ ܥܠܝܢ ܘܠܐ ܛܥܝܢܟ. ܘܠܐ ܕܓܠܢ ܒܩܝܡܟ : * ܘܠܐ ܗܦܟܢ ܠܒܣܬܪܐ. ܘܠܐ ܐܗܦܟܢ 19
ܫܒܝܠܝܢ ܡܢ ܐܘܪܚܟ : * ܡܛܠ ܕܡܟܟܬܢ ܒܐܬܪܐ ܐܒܝܕܐ. ܘܟܣܝܬܢ ܒܛܠܠܝ ܡܘܬܐ : 20

Et veniam ad altare Dei,& ad Deum qui læ- 4
tificat juventutẽ meam : confitebor tibi cum
cithara, Deus Deus meus. Quare conturba- 5
ris,anima mea,& cur mœres ? Expecta Deũ,
quoniã adhuc confitebor Salvatori vultꝰ mei
& Deo meo. PSAL. XLIV.
Filiorum Corah ; quem canebat populus in 1
*Hurib unà cum Moſe. Præterea ſupplicatio
Prophetarum Davidis & reliquorum.
Nobis verò trophæum & victoria adverſùs
bellum inferentes. Verſ.35.*

DEus, audivimus auribus noſtris, atq; etiã 2
patres noſtri narraverunt nobis q̃ operatus
es diebus eorum,diebus priſtinis. Ma- 3
nus tua perdidit populos, illos autem plantâſti:
læſiſti regna,& confirmâſti eos. Non 4
enim gladio ſuo poſſederunt terrã,neque brachiũ
ipſorum ſalvavit illos : ſed dextera tua
& brachiũ tuũ & lumen vultûs tui,quia placuerũt
tibi. Tu es,Deꝰ,rex meꝰ,qui mandâſti 5
ſalutem Jacobi ; Per te impellamus inimicos 6
noſtros, et propter nomẽ tuum conculcemus
oſores noſtros. Non enim arcubus noſtris 7
fidimꝰ,neq; armis noſtris,ut liberent nos. Tu 8
liberâſti nos ab oſoribus noſtris, & confudiſti
hoſtes noſtros. Laudavimus te, Deus,to- 9
tâ die, & nomini tuo in æternum confitebimur.
Nunc autem oblitus es noſtrî, & con- 10
fudiſti nos,& non egrederis in robur noſtrũ.
Sed convertiſti nos retrorſum, & diripuerũt 11
nos inimici noſtri. Tradidiſti nos ut pecudes 12
in cibum,& diſperſiſti nos inter gentes. Ven- 13
didiſti populũ tuũ ſine pretio,& non multiplicâſti
commutationem eorum. Feciſti nos 14
opprobrium vicinis noſtris, & illuſionẽ atq;
ludibriũ iis qui circũ nos ſunt : Feciſti nos 15
fabulã inter gentes, & commotionẽ capitis
inter populos, Totâ die confuſio mea corã me 16
eſt, & erubeſcentia vultꝰ mei cooperuit me.
Præ voce illudente atq; blaſphemãte,et pro- 17
pter hoſtem ulciſcentẽ. Hæc omnia evene- 18
runt nobis, & non obliti ſumus tui, neque
mentiti ſumus in fœdus tuum. Neque retro- 19
greſſi ſumus, neq; deflexims ſemitas noſtras
à via tua. Nam humiliâſti nos in loco cala- 20
mitoſo, & contexiſti nos umbris mortis.

Verſio VULG. LAT.

4 Et introibo ad altare Dei: ad Deum qui
lætificat juventutem meam. Confitebor
5 tibi in cithara, Deus, Deus meus: Quarè
triſtis es anima mea? & quarè conturbas
me? Spera in Deo, quoniam adhuc confitebor
illi: ſalutare vultûs mei, & Deus meus.

1 In finem, Filiis Core ad intellectum.
XLIII.

2 DEus, auribus noſtris audivimus, patres
noſtri annuntiaverunt nobis,
Opus, quod operatus es in diebus eorum,
3 & in diebus antiquis. Manus tua
gentes diſperdidit, & plantâſti eos: af-
4 flixiſti populos, & expuliſti eos: Nec
enim in gladio ſuo poſſederunt terram,
& brachium eorum non ſalvavit eos: Sed
dextera tua, & brachium tuum, & illuminatio
vultûs tui: quoniam complacuiſti
5 in eis. Tu es ipſe rex meus & Deus
6 meus: qui mandas ſalutes Jacob. In te
inimicos noſtros ventilabimus cornu, &
in nomine tuo ſpernemus inſurgentes in
7 nobis. Non enim in arcu meo ſperabo:
8 & gladius meus non ſalvabit me. Salvâſti
enim nos de affligentibus nos: & odientes
9 nos confudiſti. In Deo laudabimur
totâ die: & in nomine tuo confitebimur
10 in ſeculum. Nunc autem repuliſti
& confudiſti nos: et nō egredieris, De^9, in
11 virtutibus noſtris. Avertiſti nos retrorſum
poſt inimicos noſtros: & qui oderunt
12 nos, diripiebant ſibi. Dediſti nos
tanquam oves eſcarum: & in gentibus
13 diſperſiſti nos. Vendidiſti populum tuū
ſine pretio: & non fuit multitudo in
14 commutationibus eorum. Poſuiſti nos
opprobrium vicinis noſtris, ſubſannationem
& deriſum his, qui ſunt in circuitu
15 noſtro. Poſuiſti nos in ſimilitudinem
gentibus; commotionem capitis in
16 populis. Totâ die verecundia mea contra
me eſt, & confuſio faciei meæ cooperuit
17 me, A voce exprobrantis & obloquentis,
à facie inimici & perſequentis.
18 Hæc omnia venerunt ſuper nos, nec obliti
ſumus te: & iniquè non egimus in
19 teſtamento tuo. Et non receſſit retrò cor
noſtrum: & declinâſti ſemitas noſtras à
20 via tua: Quoniam humiliâſti nos in loco
afflictionis, & cooperuit nos umbra
mortis.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

4 † Καὶ εἰσελεύσομαι πρὸς τὸ θυσιαστήριον τοῦ Θεοῦ, †
πρὸς τὸν Θεὸν τὸν εὐφραίνοντα τὴν νεότητά μου, † ἐξομολογήσομαί
5 σοι ἐν κιθάρᾳ (δ) ὁ Θεὸς ὁ Θεός μου. † Ἱνατί
περίλυπος εἶ ἡ ψυχή μου, καὶ ἱνατί συνταράσσεις
με; † ἔλπισον ἐπὶ τὸν Θεὸν, ὅτι ἐξομολογήσομαι αὐτῷ,
† σωτήριον τοῦ προσώπου μου, (ε) ὁ Θεός μου.

MS. A. (δ) ὁ Θεός μου. (ε) καὶ ὁ Θεός μου.

1 Εἰς τὸ τέλος, τοῖς υἱοῖς Κορὲ (α) εἰς σύνεσιν
ψαλμός. μγ΄.

2 † Ὁ Θεὸς ἐν τοῖς ὠσὶν ἡμῶν ἠκούσαμεν, † οἱ
πατέρες ἡμῶν ἀνήγγειλαν ἡμῖν, † ἔργον ὃ
εἰργάσω ἐν ταῖς ἡμέραις αὐτῶν, † ἐν ἡμέραις ἀρχαίαις.
3 † Ἡ χείρ σου ἔθνη (β) ἐξωλόθρευσε, † καὶ κατεφύτευσας
αὐτούς, † ἐκάκωσας λαοὺς καὶ (γ) ἐξέβαλες αὐτούς.
4 † Οὐ γὰρ ἐν τῇ ῥομφαίᾳ αὐτῶν ἐκληρονόμησαν
γῆν, † καὶ ὁ βραχίων αὐτῶν οὐκ ἔσωσεν αὐτούς, † ἀλλ'
ἡ δεξιά σου καὶ ὁ βραχίων σου, † καὶ ὁ φωτισμὸς
5 τοῦ προσώπου σου, ὅτι εὐδόκησας ἐν αὐτοῖς. † Σὺ εἶ
αὐτὸς ὁ βασιλεύς μου καὶ ὁ Θεός μου, † ὁ ἐντελλόμενος
6 τὰς σωτηρίας Ἰακώβ. † Ἐν σοὶ τοὺς ἐχθροὺς ἡμῶν
κερατιοῦμεν, † καὶ ἐν τῷ ὀνόματί σου (δ) ἐξουδενώσομεν
7 τοὺς ἐπανισταμένους ἡμῖν. † Οὐ γὰρ ἐπὶ τῷ
8 τόξῳ μου ἐλπιῶ, † καὶ ἡ ῥομφαία μου οὐ σώσει με. † Ἔσωσας
γὰρ ἡμᾶς ἐκ τῶν θλιβόντων ἡμᾶς, † καὶ τοὺς μισοῦντας
9 ἡμᾶς κατῄσχυνας. † Ἐν τῷ Θεῷ ἐπαινεθησόμεθα
ὅλην τὴν ἡμέραν, † καὶ ἐν τῷ ὀνόματί σου ἐξομολογησόμεθα
εἰς τὸν αἰῶνα. (ε) ΔΙΑΨΑΛΜΑ.
10 † Νυνὶ δὲ ἀπώσω καὶ κατῄσχυνας ἡμᾶς, † καὶ οὐκ ἐξελεύσῃ
11 (ζ) ἐν ταῖς δυνάμεσιν ἡμῶν. † Ἀπέστρεψας ἡμᾶς
εἰς τὰ ὀπίσω παρὰ τοὺς ἐχθροὺς ἡμῶν, † καὶ οἱ
12 μισοῦντες ἡμᾶς διήρπαζον ἑαυτοῖς. † Ἔδωκας
ἡμᾶς ὡς πρόβατα βρώσεως, † καὶ ἐν τοῖς ἔθνεσι
13 διέσπειρας ἡμᾶς. † Ἀπέδου τὸν λαόν σου ἄνευ τιμῆς,
† καὶ οὐκ ἦν πλῆθος ἐν τοῖς ἀλαλάγμασιν (η) αὐτῶν.
14 † Ἔθου ἡμᾶς (θ) ὄνειδος τοῖς γείτοσιν ἡμῶν, † μυκτηρισμὸν
καὶ (ι) καταγέλωτα τοῖς κύκλῳ ἡμῶν. † (κ)
15 Ἔθου ἡμᾶς εἰς παραβολὴν ἐν τοῖς ἔθνεσι, † κίνησιν
16 κεφαλῆς ἐν τοῖς λαοῖς. † Ὅλην τὴν ἡμέραν ἡ ἐντροπή
μου (μ) κατεναντίον μου ἐστὶ, † καὶ ἡ αἰσχύνη τοῦ προσώπου
17 μου ἐκάλυψέ με, † Ἀπὸ φωνῆς ὀνειδίζοντος
καὶ (λ) παραλαλοῦντος, † ἀπὸ προσώπου ἐχθροῦ καὶ
18 ἐκδιώκοντος. † Ταῦτα πάντα ἦλθεν ἐφ' ἡμᾶς, καὶ
οὐκ ἐπελαθόμεθά σου, † καὶ οὐκ ἠδικήσαμεν ἐν διαθήκῃ
19 σου. † Καὶ οὐκ ἀπέστη εἰς τὰ ὀπίσω ἡ καρδία ἡμῶν,
† καὶ ἐξέκλινας τὰς τρίβους ἡμῶν ἀπὸ τῆς ὁδοῦ
20 σου. † Ὅτι ἐταπείνωσας ἡμᾶς ἐν τόπῳ κακώσεως,
† καὶ ἐπεκάλυψεν ἡμᾶς σκιὰ θανάτου.

MS. A. (α) ψαλμός. (β) ἐξολέθρευσεν, (γ) ἐξέβαλες (δ) ἐξουδενώσομεν τοὺς ἐπανισταμένους (ε) Νυνὶ δὲ (ζ) ὁ Θεὸς ἐν ταῖς (η) ἡμῶν. (θ) εἰς ὄνειδος (ι) χλευασμὸν (κ) † καὶ οἱ ἐχθροὶ ἡμῶν ἐμυκτήρισαν ἡμᾶς. Ἔθου (μ) καὶ ἐνώπιόν μου (λ) καταλαλοῦντος,

Verſ. GRÆC. LXX. Interp & Æthiopica, Tranſl. LAT.

4 Et (g) introibo ad altare Dei, ad 4
Deum, qui lætificat juventutem
meam. 5 Confitebor tibi in cithara,
[d] Deus, Deus meus: Quarè 5
(h) triſtis es anima mea, & quarè
conturbas me? 6 Spera in Deo;
quoniam confitebor illi: ſalutare
vultûs mei, (i) Deus meus.
In finem, filiis [a] Core (a) ad 1
intellectum Pſalmus. XLIII.
1 DEus, (b) in auribus noſtris 2
audivimus: patres noſtri
annuntiaverunt nobis, 2 opus quod
operatus es in diebus eorum, (c)
in diebus antiquis. 3 Manus tua 3
[b] gentes diſperdidit, et plantâſti
eos: afflixiſti populos, & (d) expuliſti
eos. 4 Non enim in gladio 4
ſuo poſſederunt terram; & brachium
eorum non ſalvavit eos:
5 Sed dextera tua, & brachium
tuum, & (e) illuminatio vultûs
tui, quoniam complacuiſti in eis.
6 Tu es ipſe (f) rex meus, & Deus 5
meus, qui mandas ſalutes Jacob.
7 In te (g) [c] inimicos noſtros 6
ventilabimus cornu: & in nomine
tuo (h) ſpernemus inſurgentes in
nos. 8 Non enim in arcu meo ſperabo, 7
& gladius meus non ſalvabit
me. 9 Salvâſti enim nos de 8
[d] affligentibus nos; & eos qui
oderunt nos, confudiſti. 10 In Deo 9
(i) laudabimur totâ die, & in nomine
tuo confitebimur in ſeculū.
DIAPSALMA. 11 Nunc (k) autem 10
repuliſti, & confudiſti nos:
& non (l) egredieris [e] in virtutibus
noſtris. 12 Avertiſti (m) 11
nos retrorſum præ inimicis noſtris:
& qui oderunt nos, [f] diripiebant
ſibi. 13 [g] Dediſti nos 12
tanquam oves eſcarum; et in gentibus
diſperſiſti nos. 14 [†] Vendidiſti 13
populum tuum ſine pretio;
& non fuit multitudo in (n) jubilationibus
[h] eorum. 15 Poſuiſti 14
nos opprobrium vicinis noſtris:
ſubſannationem, (o) & deriſum
his qui ſunt in circuitu noſtro.
16 Poſuiſti nos in ſimilitudinem 15
gentibus, (p) commotionem capitis
in populis. 17 Totâ die (q) verecundia 16
mea contra me eſt; & confuſio faciei meæ operuit me. 18 A voce exprobrantis, 17
& (r) obloquentis, à facie inimici, & perſequentis. 19 Hæc omnia venerunt ſuper 18
nos: nec obliti ſumus te, & iniquè (ſ) non egimus in teſtamento tuo. 20 Et non (t) 19
receſſit retrò cor noſtrum, [†] & (u) declinâſti ſemitas noſtras à via tua. 21 Quoniam 20
(x) humiliâſti nos in loco afflictionis: & cooperuit nos umbra mortis.

INTERP. ÆTHIOP. [d] Deus meus. Quarè PSAL. XLIII. [a] Core. Deus [b] inimicos diſperdidit, [c] confodiemus omnes inimicos noſtros: & [d] perſequentibus nos; & omnes oſores noſtros, [e] Deus noſter in [f] ſpoliabant nos. [g] Et dediſti nos ut nos devorent tanquam oves; [†] Tradidiſti populum [h] noſtris. [†] neque declinavit ſemita noſtra à

Verſio ÆTHIOPICA.

ወእበውእ፡ ኀበ፡ ምሥዋዒሁ፡ ለእግዚአብ 4
ሔር፡፡ኀበ፡ እምላኪየ፡ ዘአስተፌሥሖ፡ለ
ውርዙትየ፡፡=፦ እገኒ፡ለከ፡ኢምላኪየ፡በ 5
መሰንቆ፡፡ለምንት፡ ትቴክዚ፡ ነፍስየ፡ወለም
ንት፡ ተሀውከኒ፡፡=፦ እመኒ፡ በእግዚአብ 6
ሔር፡ ከመ፡ እገኒ፡ ሎቱ፡፡መድኃኔ፡ ገጽየ፡
እምላኪየ፡፡=፦
ፍጻሜ፡ዘደቂቀ፡ቆሬ፡፡
ሠር እግዚኦ፡ ሰማዕነ፡ በእዘኒነ፡፡ወአበዊነ 1
ሂ፡ዜነውነ፡፡=፦ ግብረ፡ዘገበርከ፡በመዋዕሊ 2
ሆሙ፡በመዋዕለ፡ ትካት፡፡=፦ እዴከ፡ ሰረወ 3
ቶሙ፡ለፀር፡ ወተከልከ፡ ኪያሆሙ፡፡ሣቀይኮ
ሙ፡ለአሕዛብ፡ ወሰደድኮሙ፡፡=፦ ዘእኮ፡ 4
በኵናቶሙ፡ ወረስዋ፡ ለምድር፡፡ወመዝራዕ
ቶሙ፡ ኢያድኀኖሙ፡፡=፦ ዘአንበለ፡ የማን 5
ከ፡ወመዝራዕትከ፡ወብርሃነ፡ገጽከ፡፡ለሰመ፡
ተሣሀልኮሙ፡፡=፦ አንተ፡ውእቱ፡ንጉሥየ፡ 6
ወአምላኪየ፡፡ዘአዘዝከ፡ መድኃኒቶ፡ ለያ
ዕቆብ፡፡=፦ ብከ፡ንወግኦሙ፡ለኵሎሙ፡ፀር 7
ነ፡፡ወበስምከ፡ ናኀስሮሙ፡ ለእለ፡ቆሙ፡ላዕ
ሌነ፡፡=፦ ዘእኮ፡በቀስትየ፡እትአመን፡፡ወኵ 8
ናትየኒ፡ ኢያድኅነኒ፡፡=፦ ወአድኀንከነ፡እ 9
ምእለ፡ ሮዱነ፡፡ወአስተኀፈርኮሙ፡ ለኵሎ
ሙ፡ጸላእትነ፡፡=፦ በእግዚአብሔር፡ንከብ 10
ር፡ ኵሎ፡ አሚረ፡፡ወለስምከ፡ ንገኒ፡ለዓለ
ም፡፡=፦ ይእዜሰ፡ገደፍከነ፡ወአስተኀፈርከ 11
ነ፡፡ወኢትወፅእ፡ አምላክነ፡ ምስለ፡ ኀይል
ነ፡፡=፦ ወአግባእከነ፡ድኅሬነ፡ኀበ፡ፀርነ፡፡ወ 12
ተማሰጡነ፡ ጸላእትነ፡፡=፦ወወሀብከነ፡ይብ 13
ልዑነ፡ከመ፡አባግዕ፡፡ወዘረውከነ፡ውስተ፡አ
ሕዛብ፡፡=፦ ወመጦከ፡ ሕዝበከ፡ ዘእንበ 14
ለ፡ሤጥ፡፡ወአልቦ፡ብዙኀ፡ለደበቤነ፡፡=፦ ወ 15
ረሰይከነ፡ ጽዕለተ፡ ለጎርነ፡፡ሣሐቀ፡ ወሠሓ
ቀ፡ለእድያሚነ፡፡=፦ወረሰይከነ፡አምሳለ፡ለ 16
አሕዛብ፡፡ወድሶተ፡ ርእስ፡ ለሕዝብ፡፡=፦
ኵሎ፡አሚረ፡ቅድሜየ፡ውእቱ፡ኀፍረትየ፡፡ 17
ወከደነኒ፡ኀፍረተ፡ገጽየ፡፡=፦ እምቃል፡ዘደ 18
ጽእል፡ወይዘረኪ፡፡እምገጸ፡ፀራዊ፡ ዘይረው
ድ፡፡=፦ ዝንቱ፡ኵሉ፡በጽሐ፡ላዕሌነ፡ወኢ 19
ረሳዕናከ ፡፡ ወኢዐመፅነ፡ኪደነከ፡፡=፦ ወኢ 20
ገብአ፡ ድኅሬሁ፡ልብነ ፡፡ ወኢተግሕሠ፡ አ
ሰርነ፡እምፍኖትከ፡፡=፦ እስመ፡አሕመምከ 21
ነ ፡ በብሔረ፡ እኩይ ፡፡ ወደፈንከ ፡ ጽላሎ
ተ ፡ ሞት፡፡=፦

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

4 5 * ادخل الي مذبح الله امام وجه الله المنعم شبابي * اذكرك بقيثارتي يا الله الاهي * لماذا تحزنين يا
6 نفس ولماذا تقلقيني * توكلي على الله فاني اعترف له * خلاص وجهي هو الاهي * الليلويا *

1 * المزمور الثالث والاربعون * لبني قورح فهم * وهو * ن * استيخن *

2 3 * اللهم انا قد سمعنا باذانينا واخبرنا اباونا * بالعمل الذي عملته في ايامهم الايام الاولى * التي
4 ابادت يدك فيها الامم وغرستهم * احزنت شعوبا واخرجتهم * لانهم لم يرثوا الارض بسيفهم * ولا
5 خلصوا بذراعهم * بل يمينك وذراعك ونور وجهك * لانك سررت بهم * انت ملكي والاهي
6 7 الذي امرت بخلاص يعقوب * بك نذل اعداءنا وباسمك نعير الذين يقومون علينا * لاني
8 لم اتكل على قوسي وسيفي ان يخلصاني * بل انت خلصتنا من الذين يضطهدونا * واخزيت
9 10 شانئينا * النهار كله نفتخر بالاهنا ونشكر اسمك الى الابد * الان تخليت عنا واخزيتنا * ولم
11 12 تصحب جيوشنا * رددتنا على اعقابنا اكثر من اعدائنا * واختطفنا مبغضونا * جعلتنا ماكلة
13 14 كالغنم * وبين الامم فرقتنا * بعت شعبك بلا ثمن * واقللت كثرة عددهم * تركتنا عارا في
15 16 جيرتنا * وهزوا وضحكا لمن حولنا * تركتنا مثلا في الشعوب * وهزوا للرووس في الامم * عاري بين
17 يدي النهار كله * والخزي ستر وجهي * من صوت المعير لي والمتكلم علي * ومن وجه عدو
18 19 طارد * اللهم ان هذا كله نالنا * ولم ننساك ولا نكثنا عهدك * ولا صرفنا قلوبنا عنك *
20 ميلت خطانا عن سبلك * لانك اذللتنا في محل العذاب * وغشيتنا بظلال الموت *

Introibo ad altare Dei ante faciem Dei 4
jucundantis juventutem meam. Recordabor
tui cum cithara, O Deus, Deus meus.
Quarè contriſtaris, O anima, & quarè 5
conturbas me? Confide in Deo, quia confitebor 6
ei, ſaluti faciei meæ: ipſe eſt Deus
meus. Allelujā.

PSAL. XLIII.

Filiis Chore, intellectus. Ver. 50. 1

DEus, jam audivimus auribus noſtris, 2
& narraverunt nobis patres noſtri, opus
quod feciſti in diebus eorum, diebus
prioribus: In quibus perdidit manus tua 3
gentes, & plantâſti eos, afflixiſti populos,
eoſdémque ejeciſti. Neque verò hereditârunt 4
terram gladio ſuo, neque ſunt
liberati brachio ſuo, ſed dexterâ tuâ &
brachio tuo, & lumine faciei tuæ, quoniam
oblectatus es eis. Tu es rex meus et 5
Deus meus, qui mandâſti ſalutem Jacobi.
Per te humiliabimus inimicos noſtros, 6
& in nomine tuo convitiabimur in
eos qui inſurgent in nos. Non enim confiſus 7
ſum arcui meo & gladio meo ut me
ſalvarent; Sed tu ſalvâſti nos ab iis qui 8
nos perſequuntur, & confudiſti oſores noſtros.
Die totâ gloriabimur in Deo noſtro, 9
et gratias agemus nomini tuo in æternum.
Nunc dereliquiſti nos, et confudiſti 10
nos, & non es comitatus exercitus noſtros.
Retroegiſti nos ſuper calcaneos noſtros 11
pluſquam inimicos noſtros, & diripuerunt
nos oſores noſtri. Feciſti nos 12
eſcam tanquam oves, & inter gentes diſſipâſti
nos. Vendidiſti populum tuum ſine 13
pretio, & diminuiſti multitudinem numeri
eorum. Reliquiſti nos opprobrium 14
inter vicinos noſtros, & ludibrium ac riſum
iis qui circa nos ſunt. Poſuiſti nos 15
proverbium inter populos, & illuſionem
principibus inter gentes. Infamia mea coram 16
me eſt die totâ, confuſio veſtivit faciem
meam: Ob vocem vituperantis me 17
& obloquentis in me, & à conſpectu inimici
perſequentis. Deus, hoc quidem totum 18
evenit nobis, & non obliti ſumus te,
neque diſſolvimus pactum tuum, Et non 19
avertimus corda noſtra à te: divertiſti
greſſus noſtros de ſemitis tuis. Quoniam depreſſiſti nos in loco cruciatûs, & cooperuiſti nos umbrâ mortis. 20

תהלים : מה

.alienum deum ad noſtras palmas expandimus &;noſtri Dei nominis ſumus obliti Si
21 אִם־שָׁכַחְנוּ שֵׁם אֱלֹהֵינוּ וַנִּפְרֹשׂ כַּפֵּינוּ לְאֵל זָר׃
.cordis abſcondita ſciens ipſe quia ? hoc inveſtigabit Deus Nónne
22 הֲלֹוא אֱלֹהִים יַחֲקָר־זֹאת כִּי־הוּא יֹדֵעַ תַּעֲלֻמוֹת לֵב׃
.mactationis pecus ut fuimus æſtimati : die tota occidimur te ſuper Quoniam
23 כִּי־עָלֶיךָ הֹרַגְנוּ כָל־הַיּוֹם נֶחְשַׁבְנוּ כְּצֹאן טִבְחָה׃
.perpetuum in te elonges ne , expergiſcere ? Domine dormies quid ut , te Suſcita
24 עוּרָה ׀ לָמָּה תִישַׁן ׀ אֲדֹנָי הָקִיצָה אַל־תִּזְנַח לָנֶצַח׃
? noſtræ oppreſſionis & , noſtræ afflictionis obliviſceris ? abſcondes tuas faciès quid Ut
25 לָמָּה־פָנֶיךָ תַסְתִּיר תִּשְׁכַּח עָנְיֵנוּ וְלַחֲצֵנוּ׃
Surge .noſter venter terræ adhæſit : noſtra anima pulverem ad eſt depreſſa Quia
26 27 כִּי שָׁחָה לֶעָפָר נַפְשֵׁנוּ דָּבְקָה לָאָרֶץ בִּטְנֵנוּ׃ קוּמָה
.tuam miſericordiam propter nos redime & ; nobis auxilium
עֶזְרָתָה לָּנוּ וּפְדֵנוּ לְמַעַן חַסְדֶּךָ׃

PSAL. XLV. מה

.amorum canticum , erudiens Corach filiis Soſannim ſuper Victori
1 לַמְנַצֵּחַ עַל־שֹׁשַׁנִּים לִבְנֵי־קֹרַח מַשְׂכִּיל שִׁיר יְדִידֹת׃
mea lingua : regi mea opera ego dicens , bonum verbum meum cor Eructavit
2 רָחַשׁ לִבִּי ׀ דָּבָר טוֹב אֹמֵר אָנִי מַעֲשַׂי לְמֶלֶךְ לְשׁוֹנִי
gratia eſt diffuſa ; hominum filiis præ Pulchruiſti .velocis ſcribæ ſtylus
3 עֵט ׀ סוֹפֵר מָהִיר׃ יָפְיָפִיתָ מִבְּנֵי אָדָם הוּצַק חֵן
te Accinge .ſeculum in Deus tibi benedixit propterea : tuis labiis in
4 בְּשְׂפְתוֹתֶיךָ עַל־כֵּן בֵּרַכְךָ אֱלֹהִים לְעוֹלָם׃ חֲגוֹר
tuo decore Et .tuo decore & , tua gloria : potens , femur ſuper tuo gladio
5 חַרְבְּךָ עַל־יָרֵךְ גִּבּוֹר הוֹדְךָ וַהֲדָרֶךָ׃ וַהֲדָרְךָ ׀
te docebit & : juſtitiæ manſuetudinis &,veritatis verbum ſuper equita , proſperare
צְלַח רְכַב עַל־דְּבַר־אֱמֶת וְעַנְוָה־צֶדֶק וְתוֹרְךָ
cor in : cadent te ſub populi , acutæ tuæ Sagittæ .tua dextera terribilia
6 נוֹרָאוֹת יְמִינֶךָ׃ חִצֶּיךָ שְׁנוּנִים עַמִּים תַּחְתֶּיךָ יִפְּלוּ בְּלֵב
rectitudinis virga :perpetuum &,æternum Deus tuum Solium .regis inimicorum
7 אוֹיְבֵי הַמֶּלֶךְ׃ כִּסְאֲךָ אֱלֹהִים עוֹלָם וָעֶד שֵׁבֶט מִישֹׁר
propterea , impietatem odiſti & , juſtitiam Dilexiſti .tui regni virga
8 שֵׁבֶט מַלְכוּתֶךָ׃ אָהַבְתָּ צֶּדֶק וַתִּשְׂנָא רֶשַׁע עַל־כֵּן ׀
, aloe & ,Myrrha .tuis ſodalibus præ lætitiæ oleo tuus Deus Dominus te unxit
9 מְשָׁחֲךָ אֱלֹהִים אֱלֹהֶיךָ שֶׁמֶן שָׂשׂוֹן מֵחֲבֵרֶךָ׃ מֹר־וַאֲהָלוֹת
.te lætificaverunt unde , dentis palatiis ex : tua veſtimenta omnia , caſſiæ
קְצִיעוֹת כָּל־בִּגְדֹתֶיךָ מִן־הֵיכְלֵי שֵׁן מִנִּי שִׂמְּחוּךָ׃
maſſe in , tuam dexteram ad conjunx adſtitit : tuis precioſitatibus in regum Filiæ
10 בְּנוֹת מְלָכִים בְּיִקְּרוֹתֶיךָ נִצְּבָה שֵׁגַל לִימִינְךָ בְּכֶתֶם
, tui populi obliviſcere &:tuam aurem inclina &,vide & , filia Audi .Ophir auri
11 אוֹפִיר׃ שִׁמְעִי־בַת וּרְאִי וְהַטִּי אָזְנֵךְ וְשִׁכְחִי עַמֵּךְ
,tuus Dominus ipſe quoniam : tuum decorem rex concupiſcet Et.tui patris domus &
12 וּבֵית אָבִיךְ׃ וְיִתְאָו הַמֶּלֶךְ יָפְיֵךְ כִּי־הוּא אֲדֹנַיִךְ
.ei te incurva &
וְהִשְׁתַּחֲוִי־לוֹ׃

תרגום TARGUM.

21 אִין אַשְׁלֵינָא שׁוּם אֱלָהָנָא וּפְרִישְׁנָא בִּצְלוֹ יְדָנָא
22 לְטָעוּתָא דַעֲמְמִין נוּכְרָאִין׃ הֲלָא אֱלָהָא יִבְשַׁקַר
23 דָּא אֲרוּם הוּא חַכִּים טְמִירֵי לִבָּא׃ אֲרוּם מְטוּלְתָךְ
אִתְקְטַלְנָא כָּל יוֹמָא אִתְחֲשַׁבְנָא כְּעָנָא דִמְסִירָא
24 לִנְכְסָא׃ אִתְגַּבַּר לְמָה תְהֵי כִּגְבַר דָּמִיךְ יְיָ אִתְּעַר
25 אֱלָהָנָא לָא תִתְנְשֵׁי לְעָלְמָא׃ לְמָה שְׁכִינַת יְקָרָךְ
26 תְּסַלֵּק תַּשְׁלֵי סִגּוּפָנָא וְדוּחֲקָנָא׃ אֲרוּם שְׁחָא
לְעַפְרָא נַפְשָׁנָא דִּבְקַת לְאַרְעִית גּוּבָא מְעַיְנָנָא׃
27 קוּם סַיֵּעַ לָנָא וּפְרוּק יָתָנָא מְטוּל טוּבָךְ׃

מה

1 לְשַׁבָּחָא עַל יָתְבֵי סַנְהֶדְרִין דְּמֹשֶׁה דְּאִתְאֲמַר
בִּנְבוּאָה עַל יְדֵיהוֹן דִּבְנֵי קֹרַח שִׂכְלָא טָבָא
2 וְתֻשְׁבַּחְתָּא וְאוֹדָאָתָא׃ בָּעָא לִבִּי מְמַלַּל טָב אֵימַר
אֲנִי עוֹבָדַי לְמַלְכָּא מְמַלַּל לִישָׁנִי מוּחֵי הֵיךְ
3 קוּלְמוֹס סָפְרָא רְגִיל׃ שׁוּפְרָךְ מַלְכָּא מְשִׁיחָא
עָדִיף מִבְּנֵי נָשָׁא אִתְיְהִיב רוּחַ נְבוּאָה בְּסִפְוָתָךְ
4 מְטוּל כֵּן בָּרְכָנָךְ יְיָ לְעָלְמָא׃ זְרוֹז סַיְפָךְ עַל יַרְכָּךְ
גִּבָּרָא לְמִקְטַל מַלְכִּין עִם שִׁלְטוֹנִין הוֹדָךְ
5 וְשִׁיבְהוֹרָךְ׃ וְשִׁבְהוֹרָךְ סַגֵּי בְּנִין כֵּן תַּצְלַח לְמִרְכַּב
עַל סוּסֵי מַלְכוּתָא עַל עֵסַק הֵימָנוּתָא וְקוּשְׁטָא
וְעִנְוְתָנוּתָא וְצִדְקָתָא וְיַלְפִּנָךְ יְיָ לְמֶעְבַּד דְּחִילָן
6 בְּיַד יְמִינָךְ׃ גִּרָרָךְ שְׁלִיפִין לְמִקְטַל אוּכְלוּסִין
עַמְמִין תְּחוֹתָךְ יִפְּלוּן וּבְנֵי קַשְׁתָּךְ יִשְׁתַּלְחוּן בְּלֵב
7 סָנְאֵי מַלְכָּא׃ כּוּרְסֵי יְקָרָךְ יְיָ קַיָּם לְעָלְמֵי עָלְמִין
8 חֻטְרָא תְרִיצָא חוּטְרָא דְמַלְכוּתָךְ׃ מְטוּל דִּי
רְחִמְתָּא צִדְקָתָא וּסְנֵיתָא רִשְׁעָא מְטוּל הֵיכְנָא
רַבְּיָךְ יְיָ אֱלָהָךְ מִשְׁחָא דְּחֶדְוָא יַתִּיר מִן חַבְרָךְ׃
9 מֵירָא דַכְיָא וְאַקְסִיל אֲלוּאִין וּקְצִיעֲתָא מִתְנַמְּרִין
כָּל לְבוּשָׁךְ מִן הֵיכְלַיָּא דִּמְכַבְּשִׁין בְּשִׁין דְּפִיל
10 מֵאַרְעַ מִנִּי יַחְדוּנָךְ׃ פָּלְכֵי מַלְכְוָתָא אָתְיָן לְמִקְבַּל
אַפָּךְ וְלִיקָּרוּתָךְ בִּזְמַן דִּמְעַתַּד סְפַר אוֹרַיְתָא
בִּסְטַר יְמִינָךְ וּמִתְכַּתְבָא בְּאוּבְרִיזִין דְּמִן אוֹפִיר׃
11 שִׁמְעִי כְּנִשְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל אוֹרַיְתָא פּוּמֵּיהּ וַחֲמִי
פְּרִישָׁת עוֹבָדוֹי וְתַצְלֵי אוּדְנִךְ לְפִתְגָמֵי אוֹרַיְתָא
וְתִתְנְשֵׁי עוֹבָדִין בִּישִׁין דְּרַשִּׁיעֵי עַמִּיךְ וּבֵית טַעֲוַת
12 דִּפְלַחַתְּ בֵּית אֲבוּיִךְ׃ וּבְכֵן יַרְגֵג מַלְכָּא שׁוּפְרִיךְ
אֲרוּם הוּא רִבּוֹנִיךְ וְתִסְגְּדִין לֵיהּ׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Si obliti ſumus nomen Dei noſtri; & ob- 21
tendimus in oratione manus noſtras ido-
lis populorum alienorum : Nunquid non 22
Deus inquiret iſta ? quoniam *ipſe novit*
abſcondita cordis. Quoniam propter te 23
occiſi ſumus tota die: exiſtimati ſumus ſic-
ut oves quæ tradūtur occiſioni. Invaleſce, 24
quare eris ſicut homo qui dormit Dn̄e ?
expergiſcere Deꝰ *noſter*, ne obliviſcaris in
ſempiternū. Quare majeſtatē tuā *glorio-* 25
ſam auferes ? obliviſceris anguſtiæ noſtræ
& oppreſſionis noſtræ ? Quoniam humi- 25
liata eſt in pulvere anima noſtra : adhæſit
fundo foveæ venter noſter. Exurge, auxi- 27
liare nobis ; & ſalva nos propter bonita-
tem tuam.

Ad laudem pro aſſeſſoribus Sanhedrin 1
ipſiꝰ Moſis: quæ dicta eſt in prophetia per
filios Korahh intellectꝰ bonus, *&* hymnus
& confeſſio. PSAL. XLV.

ERuctavit cor meum eloquium bonum: 2
dicam ego opera mea regi : *loquela*
linguæ meæ feſtinat, tanquam calamꝰ ſcri-
bæ exercitati. Pulchritudo tua ô rex 3
Chriſte, præſtantior eſt filiorū hominum;
datus eſt ſpiritꝰ prophetiæ in labiis tuis ;
propterea benedixit te Deus in æternum.
Accinge enſem tuum ſuper femur tuum, 4
fortis : quò interficias reges cum potenti-
bus ſplendore tuo & gloria tua. Gloria 5
autem tua magna eſt : propterea proſpe-
rabis, ut equites ſuper *equos* regni, propter
negotium fidei *&* veritatis & manſuetu-
dinis *&* juſtitiæ : & docebit te Dn̄s ope-
rari timenda manu dextera tua. Sagittæ 6
tuæ eductæ ad interficiendas acies: populi
ſubter te cadent : & *filii arcus tui* immit-
tentur in cor inimicorū regis. Sedes *gloriæ* 7
tuæ Domine permanet in ſecula ſeculorum:
ſceptrū rectū, ſceptrū regni tui. Propter- 8
ea ꝙ dilexiſti juſtitiam & odiſti improbi-
tatem; ideò unxit te Dominꝰ Deus tuꝰ oleo
lætitiæ abundantiùs quàm conſortes tuos.
Myrrha tenui & ligno aloes, & caſia per- 9
ficiuntur omnia indumenta tua: à palatiis,
quæ ſternuntur dente elephantino *de Ar-*
menia, lætificabunt te. Regiones regnorum 10
venient ut ſuſcipiant faciem tuam *& ho-*
nore te afficiant quo tempore ſtabit liber
legis in latere dexteræ tuæ ; & exarabitur
obrizo ex Ophir. Audi congregatio Iſrael 11
legem oris ejus, & intuere miranda opera
ejꝰ; inclineſq; aurem tuā ad verba legis, &
obliviſcaris operationes malas impiorum
populi tui, & domus idolorum quibus ſer-
viviſti in domo patris tui. Sic enim expe- 12
tet rex pulchritudinem tuam, quoniam
ipſe eſt Dominus tuus ; & adorabis eum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

21 * ܘܠܐ ܛܥܝܢ ܫܡܗ ܕܐܠܗܢ. ܘܠܐ ܦܫܛܢ ܐܝܕܝܢ ܠܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ: * ܐܠܗܐ ܗܘ ܒܨܐ ܠܗܕܐ.
22 ܡܛܠ ܕܗܘ ܝܕܥ ܡܚܫܒܬܗ ܕܠܒܐ: * ܡܛܠܬܟ ܐܬܩܛܠܢ ܟܠܝܘܡ. ܘܐܬܚܫܒܢ
23 24 ܐܝܟ ܐܡܪܐ ܠܢܟܣܬܐ: * ܐܬܬܥܝܪ ܘܠܐ ܬܕܡܟ ܡܪܝܐ. ܐܬܕܟܪ ܘܠܐ ܬܛܥܝܢ: * ܘܠܐ ܬܗܦܘܟ ܐܦܝܟ
25 26 ܡܢܢ. ܘܠܐ ܬܛܥܐ ܡܘܟܟܢ ܘܐܘܠܨܢ: * ܡܛܠ ܕܡܟܬ ܠܥܦܪܐ ܢܦܫܢ. ܘܕܒܩܬ ܟܪܣܢ
27 ܠܐܪܥܐ: * ܩܘܡ ܥܕܪܝܢ ܘܦܪܘܩܝܢ ܡܛܠ ܚܢܢܟ.

At non obliti ſumus nominis Dei noſtri, neq; 21
extendimus manus noſtras ad deos alienos.
Deus ſcrutatur hoc, quoniam ipſe novit co- 22
gitationes cordis. Propter te interfecti ſumus 23
quotidie, & reputati velut agni ad mactatio-
nem. Evigila, & ne dormias, Domine : re- 24
cordare noſtrî, & ne obliviſcaris nos. Ne 25
avertas faciem tuam à nobis, neque obliviſca-
ris humilitatis noſtræ & anguſtiæ noſtræ.
Nam dejecta eſt ſuper pulverē anima, noſtra, 26
& adhæſit venter noſter terræ. Exurge, adju- 27
va nos, & libera nos ob miſericordiam tuam.

* ܬܫܒܘܚܬܐ ܘܫܘܪܝ ܡܘܫܚܬܐ *   * ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܘܪܚ *

Laus, & initium gradûs.

1 * ܐܬܟܬܒ ܠܒܢܝ ܩܘܪܚ ܒܙܒܢ ܡܘܫܐ. ܓܠܝܢܐ ܕܡܫܝܚܐ. ܘܥܠ ܥܕܬܐ ܘܥܠ
ܚܝܠܗ ܡܫܒܚܐ ܕܡܪܝܐ. ܦܬܓܡܐ ܡܐ.
2 * ܐܪܬܚ ܠܒܝ ܡܠܐ ܛܒܬܐ. ܘܐܡܪ ܐܢܐ ܥܒܕܝ ܠܡܠܟܐ: ܠܫܢܝ ܩܢܝܐ ܕܣܦܪܐ ܡܗܝܪܐ.
3 * ܫܦܝܪ ܒܚܙܘܗ ܡܢ ܒܢܝ ܐܢܫܐ: ܐܬܐܫܕܬ ܛܝܒܘܬܐ ܥܠ ܣܦܘܬܟ. ܡܛܠܗܢܐ ܒܪܟܟ ܐܠܗܐ
4 ܠܥܠܡ: * ܐܣܘܪ ܣܝܦܐ ܥܠ ܚܨܝܟ ܓܢܒܪܐ. * ܗܕܪܟ ܘܫܘܒܚܟ ܙܟܐ: ܪܟܘܒ ܥܠ ܡܠܬܐ
5 6 ܕܩܘܫܬܐ ܘܡܟܝܟܘܬܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ. ܢܡܘܣܟ ܒܕܚܠܬܐ ܕܝܡܝܢܟ: * ܓܐܪܝܟ ܚܪܝܦܝܢ ܘܥܡܡܐ
7 ܬܚܬܝܟ ܢܦܠܘܢ. ܒܠܒܐ ܕܒܥܠܕܒܒܘܗܝ ܕܡܠܟܐ: * ܟܘܪܣܝܟ ܐܠܗܐ ܠܥܠܡ
8 ܥܠܡܝܢ. ܫܒܛܐ ܦܫܝܛܐ ܫܒܛܐ ܕܡܠܟܘܬܟ: * ܪܚܡܬ ܙܕܝܩܘܬܐ ܘܣܢܝܬ ܥܘܠܐ.
9 ܡܛܠܗܢܐ ܡܫܚܟ ܐܠܗܐ ܐܠܗܟ: ܡܫܚܐ ܕܚܕܘܬܐ ܝܬܝܪ ܡܢ ܚܒܪܝܟ. * ܡܘܪܐ ܘܩܨܝܥܬܐ
ܘܐܛܛܐ: ܡܛܥܢܝܢ ܡܐܢܝܟ. ܡܢ ܗܝܟܠܐ ܪܫܝܐ ܘܡܢ ܒܝܬܝ ܚܕܝܘܟ:
10 * ܩܡܬ ܒܪܬ ܡܠܟܐ ܒܫܘܒܚܐ. ܘܡܠܟܬܐ ܡܢ ܝܡܝܢܟ: ܒܠܒܘܫܐ ܕܕܗܒܐ ܕܐܘܦܝܪ.
11 12 * ܫܡܥܝ ܒܪܬܝ ܘܚܙܝ ܘܐܪܟܢܝ ܐܕܢܟܝ: ܘܛܥܝ ܠܥܡܟܝ ܘܠܒܝܬ ܐܒܘܟܝ. * ܕܢܪܓܝ
ܡܠܟܐ ܠܫܘܦܪܟܝ: ܡܛܠ ܕܗܘܝܘ ܡܪܟܝ ܣܓܘܕܝ ܠܗ.

PSAL. XLV.

Scriptus à filiis Corah tempore Moſis. 1
Apparitio Chriſti. Et de Eccleſia, deq; vir-
tute glorioſa Domini. Verſ. 41.

PRoducito cor meum ſermones bonos, & 2
dicam opera mea regi : lingua mea cala-
mus eſt ſcribæ periti. O pulcher aſpectu, præ 3
filiis hominum effuſæ ſunt miſericordiæ ſu-
per labia tua : propterea benedixit tibi Deus
in æternum. Cinge gladio femora tua, gigas: 4
Decor tuus & gloria tua vincit. Equita ſuper 5
verbum veritatis, & humilitatem juſtitiæ; lex
tua in terrore dexteræ tuæ. Sagittæ tuæ acu- 6
tæ ſunt, & populi cadent ſub te, in cor inimi-
corum regis. Solium tuum, Deus, in ſeculum 7
ſeculorum : ſceptrum protenſum ſceptrum
regni tui. Dilexiſti juſtitiam, & odiſti ini- 8
quitatem ; propterea unxit te Deus, Deus tu-
us unguento lætitiæ pluſquam ſodales tuos.
Myrrham, & caſiam, atque ſtacten redolent 9
omnia veſtimenta tua, ex æde præcipua de-
prompta, & è domo mea, te lætificaverunt.
Filia regis cum ſplendore ſtetit, & regina à 10
dextera tua cum indumento auri Ophir. Au- 11
di, filia mea, & vide, ac porrige aurem tu-
am, atque obliviſcere populum tuum, & do-
mum patris tui. Ut concupiſcat rex pulchri- 12
tudinem tuam. Quia ipſe eſt Dominus tuus,
adora illum :

Verſio VULG. LAT.

21 Si obliti ſumus nomen Dei noſtri, & ſi
expandimus manus noſtras ad deum ali-
22 enum: Nonne Deus requiret iſta? ipſe e-
nim novit abſcondita cordis. Quoniam
propter te mortificamur totâ die: æſti-
23 mati ſumus ſicut oves occiſionis. Exurge,
quarè obdormis, Domine? exurge, & ne
24 repellas in finem. Quarè faciem tuam
avertis, obliviſceris inopiæ noſtræ & tri-
25 bulationis noſtræ? Quoniam humiliata
eſt in pulvere anima noſtra: conglutina-
26 tus eſt in terra venter noſter. Exurge,
Domine, adjuva nos: & redime nos pro-
pter nomen tuum.

1 In finem, pro iis qui commutabuntur,
filiis Core, ad intellectum, Canticum pro dilecto. XLIV.

2 ERuctavit cor meum verbum bonum:
dico ego opera mea regi. Lingua
mea calamus ſcribæ, velociter ſcriben-
3 tis. Specioſus formâ præ filiis hominũ,
diffuſa eſt gratia in labiis tuis: propter-
4 eà benedixit te Deus in æternum. Ac-
cingere gladio tuo ſuper femur tuum,
5 potentiſſime. Specie tuâ & pulchritu-
dine tuâ intende, proſperè procede &
regna, Propter veritatem & manſuetudi-
nem, & juſtitiam: & deducet te mirabi-
6 liter dextera tua. Sagittæ tuæ acutæ, po-
puli ſub te cadent, in corda inimicorum
7 regis. Sedes tua, Deus, in ſeculum
ſeculi: virga directionis, virga re-
8 gni tui. Dilexiſti juſtitiam, & odiſti
iniquitatem: proptereà unxit te Deus,
Deus tuus, oleo lætitiæ præ conſortibus
9 tuis. Myrrha, & gutta, & caſia, à veſti-
mentis tuis, à domibus eburneis: ex
10 quibus delectaverunt te Filiæ regum in
honore tuo. Aſtitit regina à dextris tuis
in veſtitu deaurato: circumdata varieta-
11 te. Audi filia, & vide, & inclina aurem
tuam: & obliviſcere populum tuum, et
12 domum patris tui. Et concupiſcet rex
decorem tuum: quoniam ipſe eſt Dominus Deus tuus, & adorabunt eum.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

21 † Εἰ ἐπελαθόμεθα (μ) τοῦ ὀνόματος τοῦ θεοῦ ἡμῶν, † καὶ
εἰ διεπετάσαμεν χεῖρας ἡμῶν πρὸς θεὸν ἀλλότρι-
22 ον, † Οὐχὶ ὁ θεὸς ἐκζητήσει ταῦτα; † αὐτὸς γὰρ
γινώσκει τὰ κρύφια τῆς καρδίας. † Ὅτι (ν) ἕνεκά σου
θανατούμεθα ὅλην τὴν ἡμέραν, † ἐλογίσθημεν ὡς
23 πρόβατα σφαγῆς. † Ἐξεγέρθητι, ἱνατί ὑπνοῖς
24 κύριε; † ἀνάστηθι, καὶ μὴ ἀπώσῃ εἰς τέλος. † Ἱνατί
(ξ) τὸ πρόσωπόν σου ἀποστρέφεις; † ἐπιλανθάνῃ τῆς
25 πτωχείας ἡμῶν καὶ τῆς θλίψεως ἡμῶν; † Ὅτι ἐτα-
πεινώθη εἰς χοῦν ἡ ψυχὴ ἡμῶν, † ἐκολλήθη εἰς
26 γῆν ἡ γαστὴρ ἡμῶν. † Ἀνάστα κύριε, βοήθησον ἡ-
μῖν, † καὶ λύτρωσαι ἡμᾶς ἕνεκαν τοῦ ὀνόματός σου.
MS.A. (μ) τοῦ θεοῦ ἡμῶν, (ν) ἕνεκεν (ξ) πρόσωπόν

1 (α) Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῶν ἀλλοιωθησομένων
τοῖς υἱοῖς Κορὲ εἰς σύνεσιν, ᾠδὴ ὑπὲρ τοῦ
ἀγαπητοῦ. μδʹ.

2 † Ἐξηρεύξατο ἡ καρδία μου λόγον ἀγαθόν, † λέ-
γω ἐγὼ τὰ ἔργα μου τῷ βασιλεῖ· † ἡ γλῶσ-
3 σά μου κάλαμος γραμματέως ὀξυγράφου. † Ὡραῖος
κάλλει παρὰ τοὺς υἱοὺς τῶν ἀνθρώπων, † ἐξεχύθη
χάρις ἐν χείλεσί σου, † διὰ τοῦτο εὐλόγησέ σε
4 ὁ θεὸς εἰς τὸν αἰῶνα. † Περίζωσαι τὴν ῥομφαίαν σου
5 ἐπὶ τὸν μηρόν σου δυνατέ. † Τῇ ὡραιότητί σου, καὶ
τῷ κάλλει σου, † καὶ ἔντεινον, καὶ κατευοδοῦ, καὶ βα-
σίλευε· † ἕνεκεν ἀληθείας καὶ πραΰτητος καὶ δικαιο-
σύνης, † καὶ ὁδηγήσει σε θαυμαστῶς ἡ δεξιά σου.
6 † Τὰ βέλη σου ἠκονημένα δυνατέ, † λαοὶ ὑποκά-
τω σου πεσοῦνται, † ἐν καρδίᾳ τῶν ἐχθρῶν τοῦ βα-
7 σιλέως. † Ὁ θρόνος σου ὁ θεὸς (β) εἰς αἰῶνα
(γ) αἰῶνος, † ῥάβδος εὐθύτητος ἡ ῥάβδος τῆς
8 βασιλείας σου. † Ἠγάπησας δικαιοσύνην, καὶ ἐ-
μίσησας (δ) ἀνομίαν, † διὰ τοῦτο ἔχρισέ σε ὁ
θεὸς ὁ θεός σου † ἔλαιον ἀγαλλιάσεως παρὰ τοὺς
9 μετόχους σου. † Σμύρνα καὶ στακτὴ καὶ κασία ἀπὸ τῶν
ἱματίων σου, † ἀπὸ βάρεων ἐλεφαντίνων, ἐξ ὧν
10 ηὔφρανάν σε † Θυγατέρες (ε) βασιλέων ἐν τῇ
τιμῇ σου. † παρέστη ἡ βασίλισσα ἐκ δεξιῶν σου, † ἐν
ἱματισμῷ διαχρύσῳ περιβεβλημένη, πεποικιλ-
11 μένη. † Ἄκουσον θύγατερ καὶ ἴδε καὶ κλῖνον τὸ οὖς
σου, † καὶ ἐπιλάθου τοῦ λαοῦ σου, καὶ τοῦ οἴκου τοῦ
12 πατρός σου. † (ζ) Ὅτι ἐπεθύμησεν ὁ βασιλεὺς
τοῦ κάλλους σου, † ὅτι αὐτός ἐστιν ὁ κύριός σου.
MS.A. (α) Τοῦ Δαυὶδ ὑπὲρ τοῦ ἀγαπητοῦ. (β) εἰς τὸν
αἰῶνα (γ) τοῦ αἰῶνος, (δ) ἀδικίαν, (ε) βασιλέως
(ζ) Καὶ ἐπιθυμήσει

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

21 Si obliti ſumus nomen Dei no-
ſtri; & ſi expandimus manus no-
ſtras ad Deum alienum: 23 Non-
ne De⁹ (y) requiret iſta? ipſe enim
novit occulta cordis. 24 Quoniã
propter [i] te mortificamur totâ
die: æſtimati ſumus, ſicut oves oc-
ciſionis. 25 (z) Exurge, quarè
(&) obdormis, Domine? exurge, et
ne repellas in finem. 26 Quarè
faciem tuam (aa) avertis? oblivi-
ſceris inopiæ noſtræ, et tribulatio-
nis noſtræ? 27 Quoniam (bb) hu-
miliata eſt in pulvere anima no-
ſtra: conglutinatus eſt in terra
venter noſter. 28 Exurge, (cc) Do-
mine, adjuva nos: & redime nos
propter nomen tuum.

1 In (a) finem, pro iis qui commu-
tabuntur, filiis Core, [a] ad intel-
lectum, Canticum pro dilecto.

XLIV.

2 ERuctavit (b) cor meum ver-
bum bonũ: dico ego (c) opera mea
regi. 2 Lingua mea (d) cala-
mus ſcribæ velociter ſcribentis.
3 (e) Specioſ⁹ formâ præ filiis ho-
minum: (f) diffuſa eſt gratia in la-
biis tuis: (g) propterea benedixit
te Deus in æternum. 4 Accingere
(h) gladio tuo ſuper femur tuum
potentiſſime. 5 (i) Specie tuâ, &
pulchritudine tuâ, (k) & inten-
de, & (l) proſperè procede, et (m)
regna. 6 Propter veritatem, &
manſuetudinem, & juſtitiam: &
(n) deducet [b] te mirabiliter
dextera tua. 7 Sagittæ tuæ acutæ
(o) potentiſſime, populi ſub te ca-
dent, in (p) corde inimicorum re-
gis. 8 (q) Sedes tua, De⁹, in ſecu-
lũ ſeculi: virga directionis, virga
regni tui. 9 Dilexiſti juſtitiã, et o-
diſti (r) iniquitatem: propterea un-
xit te De⁹, Deus tu⁹, oleo (ſ) exul-
tationis (t) præ participibus tuis.
10 Myrrha, & gutta, & caſia, à
(u) veſtimentis tuis: à [c] domi-
bus (x) eburneis, ex quibus dele-
ctaverunt te Filiæ regum in ho-
nore tuo. (y) 11 Aſtitit regina
à dextris tuis, in veſtitu (z) de-
aurato, [d] (&) circumamicta,
variegata. 12 Audi filia, & vi-
de, & inclina aurem tuam: &
obliviſcere populum tuum, &
domum patris tui. 13 Quoniam (aa) concupivit rex decorem tuum: quia ipſe eſt (bb) Dominus tuus.

Verſio ÆTHIOPICA.

ሶቤሁ፡ረሳዕነ፡ስሞ፡ለአምላክነ፡፡ወሶቤሁ፡ 22
ሰፋሕነ፡እደዊነ፡ኀበ፡አምላክ፡ነኪር፡፡=፦
አኮኑ፡እግዚአብሔር፡እምተኀሠሠ፡ለ 23
ዝንቱ፡፡እስመ፡ውእቱ፡ያአምር፡ኅቡአተ፡
ልብ፡፡=፦ እስመ፡በእንቲአሁ፡ይቀትሉነ፡ 24
ኩሎ፡አሚረ፡፡ወኮነ፡ከመ፡አባግዐ፡ዘይ
ጠብሑ፡፡=፦ ንቃሕ፡እግዚኦ፡ለምንት፡ት 25
ነውም፡፡ተንሥእ፡ወኢትግድፈነ፡ለዝሉ
ፉ፡፡=፦ ወለምንት፡ትመይጥ፡ገጸከ፡እም 26
ኔየ፡፡ወተረስዐነ፡ሕማመነ፡ወተፅናስነ፡፡=፦
እስመ፡ኀስረት፡ውስተ፡ምድር፡ነፍስነ፡፡ 27
ወጠግዓት፡በምድር፡ከርሥነ፡፡=፦ ተን 28
ሥእ፡እግዚኦ፡ርድአነ፡፡ወአድኅነነ፡በእ
ንተ፡ስምከ፡፡=፦

ፍጻሜ፡በእንተ፡እለ፡ተበዐዱ፡ዘውሉ
ደ፡ቆሬ፡መዝሙር፡ዘበአእምሮ፡፡

ሠዐ ጎሥዐ፡ልብየ፡ቃለ፡ሠናየ፡፡እነ፡እየ 1
ድእ፡ግብርየ፡ለንጉሥ፡፡=፦ ከመ፡ቀለመ፡ 2
ጸሐፊ፡ዘጠበጠበ፡ይጽሕፍ፡ልሳንየ፡፡=፦
ይሤኒ፡ላሕዩ፡እምውሉደ፡እጓለ፡እምሕያ 3
ው፡፡ተክዕወ፡ሞገስ፡እምከናፍሪከ፡፡በእን
ተዝ፡ባረከከ፡እግዚአብሔር፡ለዓለም፡፡=፦
ቅንት፡ሰይፈከ፡ኃያል፡ውስተ፡ሐቌከ፡፡=፦ 4
በስንከ፡ወበላሕይከ፡፡አርትዕ፡ታሠራኅ፡ወ 5
ንግሥ፡፡=፦ በእንተ፡ጽድቅ፡ወርትዕ፡ወየ 6
ዋሃት፡፡ወይመርሐከ፡ስብሐተ፡የማንከ፡፡=፦
አኅጻከ፡ስሑል፡ኃያል፡፡አሕዛብ፡ይወድቁ፡ 7
ታሕቴከ፡፡ውስተ፡ልቦሙ፡ለጸላእተ፡ንጉ
ሥ፡፡=፦ መንበርከ፡እግዚኦ፡ለዓለም፡ዓለ 8
ም፡፡በትረ፡ጽድቅ፡ወበትረ፡መንግሥት
ከ፡፡=፦ አፍቀርከ፡ጽድቀ፡ወዐመፃ፡ጸላእ 9
ከ፡፡በእንተዝ፡ቀብአከ፡እግዚአብሔር፡አ
ምላክከ፡፡ቅብአ፡ትፍሥሕት፡እምእለ፡
ከማከ፡፡=፦ ከርቤ፡ወቅንአት፡ወሰሊኆት፡ 10
እምነ፡አልባሲከ፡፡እምነቡደነ፡አቅርንት፡
ዘእምኔሆሙ፡አስተፈሥሐከ፡፡አዋልደ፡ንግ
ሥት፡ለክብርከ፡፡=፦ ወትቀውም፡ንግሥ 11
ት፡በየማንከ፡፡በአልባሰ፡ወርቅ፡ዑጽፍት፡ወ
ሑብርት፡፡=፦ ስምዒ፡ወለትየ፡ወርእይ፡ወ 12
አጽምዒ፡እዝነኪ፡፡ወርስዒ፡ሕዝበኪ፡ወቤ
ተ፡አቡኪ፡፡=፦ እስመ፡ፈተወ፡ንጉሥ፡ሰነ 13
ኪ፡፡እስመ፡ውእቱ፡እግዚእኪ፡፡ወይሰግደ፡
ሉቱ፡፡

INTERP. ÆTHIOP. [i] illum PSAL. XLIIII. [a] Canticum ad intellectum. [b] te glorioſè [c] palatiis eburneis, ex quibus [d] amicta, & conſociata. Audi filia mea,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

21 * ان كنا نسينا اسم الاهنا * او بسطنا ايدينا الي اله غريب * افليس الله المطالب بهذا *
22 لانه عارف خفايا القلوب * اننا من اجلك نقتل النهار كله * عددنا مثل الغنم للذبح * قم يا
23 رب لماذا تنام * قم ولا تطرحنا عنك الي الانقضاء * لماذا تصرف وجهك عنا * وتنسي مسكنتنا
24 وضيقنا فان نفوسنا قد اتضعت الي التراب * والتصقت بطوننا بالارض * قم يا رب واعنا *
25 وانقذنا لاجل اسمك القدوس * الليلويا *
26

1 * المزمور الرابع والاربعون * لبني قورح * وعدده * مز * استيخن *

2 * فاض قلبي قولا حسنا * انا اخبر الملك بافعالي * لساني قلم الكاتب الماهر * بهي في الحسن
3 افضل من بني البشر * فاضت النعمة من شفتيك * لاجل هذا باركك الله الي الابد * تقلد
4 سيفك علي فخذك * ايها الجبار * ببهائك وجمالك * اوتر وسر واملك * من اجل الصدق
5 والدعة والبر * بالعجب تهديك يمينك * سهامك مسنونة ايها الجبار * الشعوب تحتك يسقطون
6 في قلب اعداء الملك * كرسيك يا الله الي ابد الابد * قضيب الاستقامة * قضيب ملكك *
7 * لانك احببت البر وابغضت الاثم * لهذا مسحك الله الهك بدهن الفرح * افضل من
8 اصحابك * المر والميعة والسليخة * من لباسك * من منازل شريف العاج الات بهجتك * بنات
9 الملوك في كرامتك * وقفت الملكة عن يمينك بثياب مذهبة مشتملة بها * مزينة باشكال كثيرة *
10 * اسمعي يا بنت وانظري * واصغي بسمعك وانسي شعبك وبيت ابيك * فان الملك قد
11 اشتهي حسنك * فانه هو ربك وله تسجدين * تسجد له بنات صور *
12

Si obliti eſſemus nomen Dei noſtri, aut extendiſſemus manus noſtras ad Deum alienum, 21
Nonne Deus exigeret hoc, quum 22
ſciat abſcondita cordium? Nos quidem 23
propter te trucidamur die totâ, reputati
ſumus tanquam oves ad jugulationem.
Exurge, O Domine: quare dormis? ex- 24
urge, & ne repellas nos à te uſque in fi-
nem. Quarè avertis faciem tuam à no- 25
bis, & obliviſceris paupertatis noſtræ &
anguſtiæ noſtræ? Nam animæ noſtræ jam
humiliatæ ſunt uſque ad pulverem, &
adhæſerunt ventres noſtri humo. Surge, 26
O Domine, & adjuva nos, & redime nos
propter nomen tuum ſanctum. Alleluja.

PSAL. XLIV.
1 Filiis Choræ. Et num. Ver. 47.

EFfudit cor meum ſermonem optimũ; 2
Ego ſignifico regi opera mea. Lingua
mea calamus ſcriptoris periti. Decorus 3
in pulchritudine magis quàm filii homi-
num, emanavit gratia è labiis tuis, propter-
ea benedixit tibi Deus in æternum. Ac- 4
cinge te gladio tuo ſuper femur tuum, O
Gigas: In nitore tuo, & decore tuo ab- 5
unda, & fruere, & regna. Propter veri-
tatem & manſuetudinem & juſtitiam,
cum admiratione diriget te dextera tua.
Sagittæ tuæ acuminatæ ſunt O Gigas (po- 6
puli ſub te cadent) in cor inimicorum re-
gis. Sedes tua O Deus, in ſeculum ſe- 7
culi: ſceptrum æquitatis ſceptrum regni
tui. Quia dilexiſti juſtitiam, & odiſti 8
iniquitatem, propterea unxit te Deus, Deus
tuus unguento lætitiæ præclariùs quàm
ſocios tuos. Myrrha & ſtacte & caſia 9
è veſtimento tuo: à domibus nobiliſſimi
eboris inſtrumenta ſplendoris tui. Filiæ 10
regum, in honorem tuum: ſtetit regina
ad dexteram tuam in veſtibus auratis, ipſis
amicta, exornata generibus multis. Audi, 11
O filia, & vide, & præbe auditum tuum
& obliviſcere populi tui: & domûs pa-
tris tui. Quoniam rex jam concupivit 12
pulchritudinem tuam. Quoniam ipſe eſt
Dominus tuus, eúmque adorabis. Ado-
rabunt eum filiæ Tyri;

תהלים : מו מז

Tota .populi divites deprecabuntur *tuas facies* , munere *in* Sor filia Et
13 וּבַת־צֹר בְּמִנְחָה פָּנַיִךְ יְחַלּוּ עֲשִׁירֵי עָם׃ כָּל־ 13
14 *. ejus vestimentum auri ocellaturis ex* : intrinsecus regis filia inclyta
כְּבוּדָּה בַת־מֶלֶךְ פְּנִימָה מִמִּשְׁבְּצוֹת זָהָב לְבוּשָׁהּ׃ 14
adductæ , ejus sociæ eam post virgines : regi adducetur *recamatis In*
15 לִרְקָמוֹת תּוּבַל לַמֶּלֶךְ בְּתוּלוֹת אַחֲרֶיהָ רֵעוֹתֶיהָ מוּבָאוֹת 15
palatium *in* ingredientur ; exultatione & , lætitiis *in* Ducentur .*tibi*
16 לָךְ׃ תּוּבַלְנָה בִּשְׂמָחֹת וָגִיל תְּבֹאֶינָה בְּהֵיכַל 16
universa in principes *in* eos pones : tui filii erunt tuis patribus Pro .regis
17 מֶלֶךְ׃ תַּחַת אֲבֹתֶיךָ יִהְיוּ בָנֶיךָ תְּשִׁיתֵמוֹ לְשָׂרִים בְּכָל־ 17
:generatione & , generatione omni in tuum nomen faciam Memorare .terra
18 הָאָרֶץ׃ אַזְכִּירָה שִׁמְךָ בְּכָל־דֹּר וָדֹר 18
.perpetuum & ,seculum in tibi confitebuntur populi propterea
עַל־כֵּן עַמִּים יְהוֹדֻךָ לְעֹלָם וָעֶד׃

PSAL. XLVI. מו

, spes nobis Deus .canticum Halamoth super ; Corach filiis Victori
1 לַמְנַצֵּחַ לִבְנֵי־קֹרַח עַל־עֲלָמוֹת שִׁיר׃ אֱלֹהִים לָנוּ מַחֲסֶה 2 1
timebimus non Propterea *.valde inventum* angustiis in auxilium : fortitudo & 2
3 וָעֹז עֶזְרָה בְצָרוֹת נִמְצָא מְאֹד׃ עַל־כֵּן לֹא־נִירָא 3
turbabuntur ,Sonabunt *.marium* cor in montes *motando in* & ; terram *mutando in*
4 בְּהָמִיר אָרֶץ וּבְמוֹט הָרִים בְּלֵב יַמִּים׃ יֶהֱמוּ יֶחְמְרוּ
ejus rivi Fluminis .Selah , ejus *sublimitate in* montes contremiscent : ejus aquæ 4
5 מֵימָיו יִרְעֲשׁוּ־הָרִים בְּגַאֲוָתוֹ סֶלָה׃ נָהָר פְּלָגָיו
Deus .altissimi habitaculorum sanctum : Dei civitatem lætificabunt
6 יְשַׂמְּחוּ עִיר־אֱלֹהִים קְדֹשׁ מִשְׁכְּנֵי עֶלְיוֹן׃ אֱלֹהִים 5
.manè *respiciendo* , Deus eam adjuvabit :commovebitur non , ejus *interiori* in
בְּקִרְבָּהּ בַּל־תִּמּוֹט יַעְזְרֶהָ אֱלֹהִים לִפְנוֹת בֹּקֶר׃
.terra *est liquefacta* , *sua voce in* dedit : regna sunt mota , gentes Sonuerunt 6
7 הָמוּ גוֹיִם מָטוּ מַמְלָכוֹת נָתַן בְּקוֹלוֹ תָּמוּג אָרֶץ׃
.Selah , Jahacob Deus nobis elevatio : nobiscum exercituum Dominus 7
8 יְהוָה צְבָאוֹת עִמָּנוּ מִשְׂגָּב לָנוּ אֱלֹהֵי יַעֲקֹב סֶלָה׃
.terra in solitudines , posuit quæ ; Domini opera videte , Ite
9 לְכוּ חֲזוּ מִפְעֲלוֹת יְהוָה אֲשֶׁר־שָׂם שַׁמּוֹת בָּאָרֶץ׃ 8
concidet & ,conteret arcum , terræ extremum ad usque bella cessare *Faciens*
10 מַשְׁבִּית מִלְחָמוֹת עַד־קְצֵה הָאָרֶץ קֶשֶׁת יְשַׁבֵּר וְקִצֵּץ
; Deus ego quia,scitote &,*Remittite* .Igni *in* comburet plaustra : hastam 9
11 חֲנִית עֲגָלוֹת יִשְׂרֹף בָּאֵשׁ׃ הַרְפּוּ וּדְעוּ כִּי־אָנֹכִי אֱלֹהִים 10
: nobiscum exercituum Dominus .terra in exaltabor ; gentibus in exaltabor
12 אָרוּם בַּגּוֹיִם אָרוּם בָּאָרֶץ׃ יְהוָה צְבָאוֹת עִמָּנוּ
.Selah , Jahacob Deus nobis elevatio 11
מִשְׂגָּב לָנוּ אֱלֹהֵי יַעֲקֹב סֶלָה׃ 12

PSAL. XLVII. מו

.cantus Corach filiis Victori
1 לַמְנַצֵּחַ לִבְנֵי־קֹרַח מִזְמוֹר׃ 1

תרגום TARGUM.

13 ויתבי כרכא דצור בתקרובתא ייתון ואפיך
14 ישחרון לבית מקדשיך עתירי עממיא: כל שפר
ארג נכסי פלכי אוצרי מלכיא דמטמרן מלגיו
יקרבון לכהניא דמרמצין בדהבא סנינא
15 לבושיהון: בלבושי ציורין יקרבון קורבניהון
קדם מלכא דעלמא ושאר חבריהון די מתבדרין
ביני עממיא יתיתין בחדוא לותיך לירושלם:
16 יתיתין בחדוון ותושבחתא ויעלון בהיכלא דמלך
17 עלמין: באתר אבהתך יהוין צדיקיא בנך תמנינון
18 לרברביא בכל ארעא: בעדנא ההיא תימרון
נדכר שמך בכל דר ודר מטול היכנא עממיא
דמתגיירין ויהודון שמך לעלם ולעלמי עלמין:

מו

1 לשבחא על ידיהון דבני קרח ברוח נבואה בזמן
דאתכסי אבוהון מנהון והנון אשתזבו ואמרו
2 שירתא: אלהא לנא רוחצנא ועושנא סיעתא
3 בעקתא נשתכח לחדא: מטול היכנא לא
נדחל בעדן דאשתלחיפו אבהן מן ארעא כד
4 מתמוטטין טוריא בפילגוס דימא רבא: מתרגשין
מטשטשין מוהי מן עפרהון מתרגפין טוריא
5 בגיותנותך לעלמין: עממין היך נהרין ומבועיהון
אתין ומחדין קרתא דיי ומצלין בבית מקדשיה
6 דיי משכניה דעלאה: שכינתא דיי בגוה לא תזוע
יסיעינה יי בזכותיה דאברהם דצלי עלה לעדני
7 צפרא: במתן אוריתא לעמיה אתרגשו עממיא
אודעזעו מלכותא כד ארים קליה וכד יהב
8 אוריתא לעמיה אתמוגגו יתבי ארעא: מימרא
דיי צבאות בסעדנא תקוף לנא אלהא דיעקב
9 לעלמין: איתון חמון עובדיא דיי דשוי צדין
10 ברשעי ארעא: מבטל קרבא עד סיפי ארעא
קשתא יתבר ויתרע מורניתא תריסיא עגילין
11 יוקיד בנורא: פסקו מן קרבא וידעון ארום אנא
12 יי רמא בעממיא רמא על יתבי ארעא: מימרא דיי
צבאות בסעדנא תקוף לנא אלהא דיעקב
לעלמין:

מו

1 לשבחא על ידיהון דבני קרח תושבחתא:

PARAPH. CHALD. Vers. Lat.

Habitatores autem arcis Tyri cum munere venturi sunt : & faciem tuam manè quærent ad domum sanctuarii tui divites populorum. 13 Omne pulchrum, & desiderabile; facultates regionum, & thesauros regum, qui repositi sunt interiùs, offerent sacerdotib⁹ quorum vestes intertextæ sunt auro optimo. 14 In vestibus acupictis offerent oblationes suas corã rege orbis; & reliqui socii *eorum* qui dispersi sunt inter gentes, ducentur in lætitia ad te in Jerusalem. 15 Adducentur cum gaudio & *hymnis*; & ingredientur in templũ regis *seculorum*. 16 In loco patrum tuorũ erunt *justi* filii tui : constitues eos principes in universam terram. 17 *In tempore illo dicetis, Memorabimus* nomen tuum in omni generatione et generatione : propterea populi qui peregrinantur, confitebuntur *nomen tuum* in æternũ & in secula seculorũ. 18

Ad laudandum per manus *filiorum* Korahh : in *spiritu prophetiæ* quo tempore absconditus est ab eis pater eorum; ipsi autẽ liberati sunt, & dixerunt canticũ, 1

PSAL. XLVI.

DEus nostrum refugium & virtus : auxilium in afflictione *inventus erit* valdè. 2 Propterea non timebim⁹ cum immutati fuerint patres nostri de terra : quando concutientur montes in pelago maris magni. 3 Sonabunt & turbabuntur aquæ *de fundo suo* : commovebuntur montes in magnificentia tua in secula. 4 Populi tanquam flumina & rivi eorum, venient; & lætificabunt civitatem Dei; & orabunt in domo sanctuarii Dñi, in tabernaculis Altissimi. 5 Majestas *Domini* in medio ej⁹; non commovebitur: adjuvabit eã Dñs *justitiâ Abraham qui oravit pro ea* in tempore matutino. 6 Quando dabat legem populo suo, conturbatæ sunt gentes; tremuerunt regna : quando exaltavit vocem suam, *& quando dedit legem populo suo*, dissoluti sunt habitatores terræ. 7 Verbum Dñi exercituum in adjutorium nostrum : fortitudo nostra Deus Jaacob in secula. 8 Ambulate, videte opera Dei, qui posuit vastationes in impios terræ. 9 Dissipat *bellum* usque ad extrema terræ : arcum confringet & comminuet hastam, scuta rotunda comburet igni. 10 Discedite *à bello, & advertant* quoniam ego sum Deus altus inter gentes; altus supra incolas terræ. 11 Verbum Domini exercituum in auxilio nostro; fortitudo nostra Deus Jacob in æternum. 12

Ad laudandum per manus filiorum Korahh. Hymnus. PSAL. XLVII. 1

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܒܪܬ ܨܘܪ ܬܣܓܘܕ ܠܗ : ܒܩܘܪܒܢܐ ܐܦܝܟܝ ܢܒܥܘܢ ܥܬܝܪܝ ܥܡܐ. * ܟܠܗ 13
14
ܫܘܒܚܗ ܕܒܪܬ ܡܠܟܐ ܡܢ ܠܓܘ : ܘܡܨܒܬ ܠܒܘܫܗ ܒܕܗܒܐ ܛܒܐ. * ܒܩܘܪܒܢܐ ܐܬܝܐ 15
ܠܡܠܟܐ : ܘܢܝܬܘܢ ܒܬܘܠܬܐ ܚܒܪܬܗ ܒܬܪܗ : * ܘܢܐܙܠܢ ܒܚܕܘܬܐ ܘܒܥܫܘܫܘܬܐ. ܘܢܥܠܢ 16
ܠܗܝܟܠܗ ܕܡܠܟܐ. * ܚܠܦ ܐܒܗܝܟ ܢܗܘܘܢ ܒܢܝܟ : ܬܥܒܕ ܐܢܘܢ ܫܠܝܛܢܐ ܒܟܠܗ 17
ܐܪܥܐ. * ܢܥܗܕ ܫܡܟ ܒܟܠ ܕܪ ܘܕܪ : ܡܛܠܗܢܐ ܥܡܡܐ ܢܘܕܘܢ ܠܟ ܠܥܠܡܐ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ. 18

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܡܘ *

1 : ܠܒܢܝ ܩܘܪܚ. ܟܕ ܕܘܝܕ ܡܙܡܪ ܗܘܐ ܥܠ ܐܘܠܨܢܐ ܕܗܘܐ ܠܥܡܐ ܕܢܒܝܘܬܐ *
ܡܬܐܡܪ ܐܪܙܢܐܝܬ ܟܪܘܙܘܬܐ ܕܫܠܝܚܐ. ܦܬܓ ܟܓ.

* ܐܠܗܢ ܒܝܬ ܓܘܣܢ ܥܫܝܢܐ : ܘܡܥܕܪܢ ܒܐܘܠܨܢܐ ܕܐܘܠܨܢܐ. ܐܫܬܟܚܬ ܠܢ ܒܟܠܙܒܢ : 2
* ܡܛܠܗܢܐ ܠܐ ܢܕܚܠ ܡܐ ܕܙܥܐ ܐܪܥܐ. ܘܢܙܘܥܘܢ ܛܘܪܐ ܒܠܒܐ ܕܝܡܡܐ : * ܢܬܕܠܚܘܢ 3
4
ܡܝܗܘܢ ܘܢܬܟܪܟܘܢ ܘܢܬܕܠܚܘܢ ܛܘܪܐ ܒܥܘܫܢܗ : *ܫܘܒܚܐ* *ܐܦܩܝ ܕܢܗܪܘܬܐ ܢܚܕܘܢ 5
ܒܡܕܝܢܬܗ ܕܐܠܗܢ. ܩܕܝܫ ܗܘ ܡܫܟܢܗ ܕܡܪܝܡܐ : * ܐܠܗܐ ܒܓܘܗ ܠܐ ܬܙܘܥ. 6
ܢܥܕܪܝܗ ܐܠܗܐ ܥܡ ܨܦܪܐ : * ܐܬܕܠܚܘ ܥܡܡܐ ܘܙܥܘ ܡܠܟܘܬܐ. ܐܪܝܡ ܩܠܗ ܘܙܥܬ 7
ܐܪܥܐ : * ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܥܡܢ. ܘܡܥܕܪܢܢ ܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ : * ܬܘ ܚܙܘ ܥܒܕܘܗܝ 8
9
ܕܐܠܗܐ. ܕܥܒܕ ܬܕܡܪܬܐ ܒܐܪܥܐ : * ܘܡܒܛܠ ܩܪܒܐ ܡܢ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܩܫܬܐ ܡܬܒܪ 10
ܘܡܬܒܪ ܢܝܙܟܐ : ܘܡܘܩܕ ܥܓܠܬܐ ܒܢܘܪܐ. * ܐܬܦܢܘ ܘܕܥܘ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܐܠܗܐ. ܐܬܬܪܝܡܬ 11
ܒܥܡܡܐ ܘܐܬܬܪܝܡܬ ܒܐܪܥܐ : * ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܥܡܢ. ܘܡܥܕܪܢܢ ܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ. 12

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܡܙ *

* ܠܒܢܝ ܩܘܪܚ. ܥܠ ܫܘܒܚܗ ܕܐܠܗܐ ܕܒܛܘܪ ܣܝܢܝ. ܘܡܬܐܡܪ ܥܠ ܩܪܝܬܐ ܕܥܡܡܐ. ܦܬܓ ܝ. 1

Et filia Tyri adorabit eum. 13 Cum oblationibus vultum tuũ petent divites populi. 14 Omnis gloria filiæ regis intus est, & exornatus est vestitus ejus auro optimo. 15 Cum muneribus adibit regem. Et adducent virgines socias ejus post ipsam. 16 Ibúntque cum lætitia atque delectatione, & ingredientur templum regis. 17 Pro patribus tuis erunt filii tui. Fac eos dominos in omnem terram. 18 Ut memores simus nominis tui in omni generatione & generatione. Propter hoc confitebuntur tibi gentes in seculum seculorum.

PSAL. XLVI.

Filiorum Corah; quem David canebat de afflictione qua evenerat populo. Quòd ad prophetiam, dicitur mysticè prædicatio Apostolorum. Vers. 23. 1

DEus noster, refugium nostrum munitissimum, & adjutor noster temporibus tribulationis, extitisti nobis omni tempore. 2 Propterea non timebimus quum mota fuerit terra, & contremuerint montes in corde marium: 3 Agitaverint se aquæ eorum séque convolverint, & conturbati fuerint montes in fortitudine ipsius. 4 * *Diapsalma* * At rivi fluviorum exhilarabunt in civitate Dei nostri. 5 Sanctum est habitaculum Altissimi. Deus est in medio ejus, *ipsa* non movebitur : 6 adjuvabit eam Deus tempore matutino. 7 Tumultuârunt gentes, & nutârunt regna : extulit vocem suam, & contremuit terra. 8 Dominus fortis nobiscũ, & auxiliator noster Deus Jacob. 9 Venite, videte opera Dei facientis mirabilia in terra, 10 Et auferentis bella de finibus terræ, arcus frangentis, & comminuentis hastas, & currus exurentis igne. 11 Convertimini & agnoscite quòd ego sum Deus, exaltatus sum in populis, & exaltatus sum in terra. 12 Dominus fortis nobiscũ est, & adjutor noster Deus Jacob.

PSAL. XLVII.

Filiorum Corah. De gloria Dei in monte Sinai. Refertur etiam ad vocationem gentium. Vers. 10. 1

Verſio VULG. LAT.

13 Et filiæ Tyri in muneribus vultum tuum
deprecabuntur, omnes divites plebis.
14 Omnis gloria ejus filiæ regis ab intùs, in
15 fimbriis aureis Circumamicta varietati-
bus. Adducentur regi virgines poſt eam:
16 proximæ ejus afferentur tibi. Afferentur
in lætitia & exultatione: adducentur in
17 templum regis. Pro patribus tuis nati
ſunt tibi filii: conſtitues eos principes
18 ſuper omnem terram. Memores erunt
nominis tui in omni generatione & ge-
nerationem. Propterea populi confite-
buntur tibi in æternum, & in ſeculum
ſeculi.

In finem,
1 Filiis Core, pro arcanis, Pſalmus. XLV.

2 Deus noſter refugium, & virtus: adju-
tor in tribulationibus, quæ invene-
3 runt nos nimis. Propterea non timebi-
mus dum turbabitur terra: & transfe-
4 rentur montes in cor maris. Sonuerunt
& turbatæ ſunt aquæ eorum: conturbati
5 ſunt montes in fortitudine ejus. Flumi-
nis impetus lætificat civitatem Dei: ſan-
ctificavit tabernaculum ſuum Altiſſimus.
6 Deus, in medio ejus, non commovebi-
tur: adjuvabit eam Deus manè diluculò.
7 Conturbatæ ſunt gentes, & inclinata
ſunt regna: dedit vocem ſuam, mota eſt
8 terra. Dominus virtutum nobiſcum:
9 ſuſceptor noſter Deus Jacob. Venite, &
videte opera Domini, quæ poſuit prodi-
10 gia ſuper terram: Auferens bella uſque
ad finem terræ. Arcum conteret, & con-
fringet arma, & ſcuta comburet igni.
11 Vacate, & videte quoniam ego ſum De-
us: exaltabor in gentibus, & exaltabor
12 in terra. Dominus virtutum nobiſcum:
ſuſceptor noſter Deus Jacob.

1 In finem, pro filiis Core Pſalmus.
XLVI.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

13 † Καὶ προσκυνήσουσιν αὐτῷ θυγατέρες Τύρου ἐν
δώροις, † τὸ πρόσωπόν σου λιτανεύσουσιν οἱ πλού-
14 σιοι (η) τοῦ λαοῦ τῆς γῆς. † Πᾶσα ἡ δόξα αὐτῆς θυ-
γατρὸς τοῦ βασιλέως (θ) Ἐσεβών, † ἐν κροσσω-
15 τοῖς χρυσοῖς περιβεβλημένη, πεποικιλμένη.
† ἀπενεχθήσονται τῷ βασιλεῖ παρθένοι ὀπίσω (ι)
αὐτῆς, † αἱ πλησίον αὐτῆς ἀπενεχθήσονταί σοι.
16 † Ἀπενεχθήσονται ἐν εὐφροσύνῃ καὶ ἀγαλλιάσει,
17 † ἀχθήσονται εἰς ναὸν βασιλέως. † Ἀντὶ τῶν πα-
τέρων σου (κ) ἐγεννήθησάν σοι υἱοί, † καταστήσεις αὐ-
18 τοὺς ἄρχοντας ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν. † (λ) Μνησθήσον-
ται τοῦ ὀνόματός σου ἐν πάσῃ γενεᾷ καὶ γενεᾷ.
† διὰ τοῦτο λαοὶ ἐξομολογήσονταί σοι εἰς τὸν αἰῶ-
να, † καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος.
MS.A. (η) τοῦ λαοῦ. Πᾶσα ἡ δόξα τῆς θυγατρὸς
(θ) ἔσωθεν, ἐν κροσσωτοῖς. (ι) αὐτοῦ, οἱ πλησίον
αὐτῆς (κ) ἐγενήθησαν (λ) Καὶ μνησθήσονται
1 (α) Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῶν υἱῶν Κορέ, ὑπὲρ τῶν
κρυφίων ψαλμός. με΄.
2 † Ὁ θεὸς ἡμῶν καταφυγὴ καὶ δύναμις, † βοη-
θὸς ἐν θλίψεσι ταῖς εὑρούσαις ἡμᾶς σφό-
3 δρα. † Διὰ τοῦτο οὐ φοβηθησόμεθα ἐν τῷ ταράσ-
σεσθαι τὴν γῆν, † καὶ μετατίθεσθαι ὄρη ἐν καρδίαις
4 θαλασσῶν. † Ἤχησαν καὶ ἐταράχθησαν τὰ ὕδατα
αὐτῶν, † (β) ἐταράχθησαν τὰ ὄρη ἐν τῇ κραται-
5 ότητι αὐτοῦ. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Τοῦ ποταμοῦ τὰ ὁρ-
μήματα εὐφραίνουσι τὴν πόλιν τοῦ θεοῦ, † ἡγίασε
6 τὸ σκήνωμα αὐτοῦ ὁ ὕψιστος. † Ὁ θεὸς ἐν μέσῳ
αὐτῆς οὐ σαλευθήσεται, † βοηθήσει αὐτῇ ὁ θεὸς
7 (γ) τῷ προσώπῳ. † Ἐταράχθησαν ἔθνη, ἔκλι-
ναν βασιλεῖαι, † ἔδωκε φωνὴν αὐτοῦ (δ), ἐσαλεύ-
8 θη ἡ γῆ. † Κύριος τῶν δυνάμεων μεθ' ἡμῶν, † ἀν-
τιλήπτωρ ἡμῶν ὁ θεὸς Ἰακώβ. ΔΙΑΨΑΛΜΑ.
9 † Δεῦτε καὶ (ε) ἴδετε τὰ ἔργα τοῦ κυρίου, † ἃ ἔθετο
10 τέρατα ἐπὶ τῆς γῆς, (ζ) † Ἀνταναιρῶν πολέμους
μέχρι τῶν περάτων τῆς γῆς, † τόξον συντρίψει,
καὶ συγκλάσει ὅπλον, † καὶ θυρεοὺς κατακαύσει ἐν
11 πυρί. † Σχολάσατε καὶ γνῶτε, ὅτι ἐγώ εἰμι ὁ
θεός, † ὑψωθήσομαι ἐν τοῖς ἔθνεσιν, ὑψωθήσο-
12 μαι ἐν τῇ γῇ. † Κύριος τῶν δυνάμεων μεθ' ἡμῶν,
† ἀντιλήπτωρ ἡμῶν ὁ θεὸς Ἰακώβ.
MS.A. (α) Τοῦ Δαυὶδ ψαλμός. (β) ἐταράχθη
(γ) τὸ πρὸς πρωΐ, πρωΐ. (δ) ὁ ὕψιστος, ἐσαλεύθη
(ε) ἴδετε τὰ ἔργα τοῦ θεοῦ, (ζ) Ἀνταναιρῶν

1 Εἰς τὸ τέλος, (α) ὑπὲρ τῶν υἱῶν Κορὲ ψαλμός. μϛ΄.
MS.A. (α) ψαλμὸς τῷ Δαυίδ.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopica, Tranſl. LAT.

Et (cc) adorabunt eum 14 filiæ 13
(dd) Tyri in muneribus: vultum
tuum deprecabuntur [e] *divites*
(ee) plebis terræ. 15 Omnis glo- 14
ria (ff) ejus filiæ regis Eſebon,
in fimbriis (gg) aureis, Circuma- 15
micta, [†] *variegata. 16 (hh) Affe-*
rentur regi virgines poſt eam: (ii)
proximæ ejus afferentur tibi.
17 Afferentur in lætitia, & ex- 16
ultatione: adducentur in templum
regis. 18 Pro (kk) patribus tuis 17
nati ſunt tibi filii: conſtitues eos
principes ſuper omnem terram.
19 Memores (ll) erunt nominis 18
tui in omni generatione, & gene-
ratione: 20 Propterea populi con-
fitebuntur [f] *tibi in æternum,*
& in ſeculum ſeculi.
In finem, pro (a) filiis Core, pro 1
(b) arcanis [a] Pſalmus. *XLV.*
1 *Deus noſter refugiū, et vir-* 2
tus, adjutor in tribulatio-
nibus, quæ (c) invenerunt nos ni-
mis. 2 Propterea non timebimus, 3
dum (d) turbatur terra, [b] *& (e)*
transferuntur montes in (f) corda
marium. 3 (g) Sonuerunt, et [c] 4
turbatæ ſunt aquæ eorum: contur-
bati ſūt mōtes in fortitudine ej⁹.
4 (h) DIAPSALMA. [d] *Flumi-* 5
nis impet⁹ (i) lætificant civitatē
Dei: (k) ſanctificavit tabernacu-
lum ſuum Altiſſimus. 5 Deus in 6
medio ejus (l) non commovebitur:
[e] *adjuvabit eam Deus (m)*
vultu. 6 (n) Conturbata ſunt 7
gentes, (o) inclinata ſunt regna:
dedit vocē (p) ſuam [f] *mota eſt*
terra. 7 Dominus virtutum no- 8
biſcum: ſuſceptor noſter Deus (q)
Jacob. 8 DIAPSALMA. Venite, 9
& videte opera Domini, quæ po-
ſuit prodigia ſuper terrā, (r) Au- 10
ferens bella uſque ad fines terræ.
9 Arcum conteret, & (ſ) con-
fringet arma: & (t) ſcuta com-
buret in igne. 10 (u) Vacate, [g] 11
& videte, quoniam ego ſum De⁹:
exaltabor in gentibus, exaltabor
in terra. 11 Dominus virtutum 12
nobiſcum: ſuſceptor noſter Deus
Jacob.

In finem, (a) pro filiis Core 1
Pſalmus. *XLVI.*

Verſio ÆTHIOPICA.

14 ኦዋልደ፡ጢሮስ፡በአምኃ፡፡=፥
ወለገጽኪ፡ይትመሀለሉ፡ኵሎሙ፡አሕዛብ፡
ብዑላነ፡ምድር፡፡=፥ ኵሉ፡ክብራ፡ለወለ 15
ተ፡ንጉሥ፡ሐሴቦን፡፡በዘ፡ አዝፋረ፡ ወርቅ፡
ዑፅፍት፡ ወኅብርት፡፡=፥ ወይወስዱ ፡ ለን 16
ጉሥ ፡ ደናግለ ፡ ድኅሬሃ፡፡ወቢጻሂ ፡ ይወስ
ዱ ፡ ለከ፡፡=፥ ወይወስድዎን ፡ በትፍሥሕ 17
ት ፡ ወበሐሤት፡፡ወያበውእዎን ፡ ውስተ፡ ጽ
ርሐ፡ ንጉሥ፡፡=፥ ህየንተ፡ አበዊኪ ፡ ተወ 18
ልዱ ፡ ለኪ ፡ ደቂቅ፡፡ወትሠይሚዮሙ፡ መላ
እክተ፡ ለኵሉ፡ ምድር፡፡=፥ ወይዘክሩ፡ 19
ስምኪ ፡ በኵሉ ፡ ትውልደ፡ ትውልድ፡፡=፥
በእንተዝ፡ይገንዩ፡ለከ፡አሕዛብ፡ እግዚኦ፡፡ 20
ለዓለም፡ወለዓለም፡ዓለም፡፡=፥

ፍጻሜ፡ዘደቂቀ፡ቆሬ፡በእንተ፡ኅብኢ
ት፡መዝሙር፡ዘደዊት፡፡

ሀሮ አምላክነሰ፡ ኃይልነ፡ ወጸወንነ፡፡ወረደ 1
ኢነ፡ ውእቱ፡ ለምንደቤነ፡ ዘረከበነ፡ ፈድፋ
ደ፡፡=፥ በእንተዝ፡ኢንፈርህ፡ ለእመ፡ አድ 2
ለቅለቀት ፡ ምድር፡፡ወእመኒ ፡ ፈለሱ፡ አድ
ባር፡ውስተ፡ልበ፡ባሕር፡፡=፥ ደምፁ፡ ወተ 3
ሐምጉ፡ ማያቲሆሙ፡፡ወአድለቅለቁ ፡ አድ
ባር፡እምኃይሉ፡፡=፥ ፈለግ፡ ዘይውሕዝ፡ 4
ያስተፌሥሕ ፡ ሀገረ ፡ እግዚአብሔር፡፡ቀደ
ሰ፡ ማኅደሮ፡ ልዑል፡፡=፥ እግዚአብሔር፡ 5
ውስተ፡ማእከላ ፡ ኢትትሀወክ፡፡ወይረድኣ፡
እግዚአብሔር ፡ ፍጽመ፡፡=፥ ደንገፁ ፡ አ 6
ሕዛብ ፡ ወተመይጡ ፡ ነገሥት፡፡ወሀበ፡ ቃ
ሎ፡ ልዑል፡ ወአድለቅለቀት ፡ ምድር፡፡=፥
እግዚኦ፡ ኃያላን ፡ ምስሌነ ፡፡ ወምስካይነ፡ 7
አምላኩ፡ለያዕቆብ፡፡=፥ ንዑ፡ወትርአዩ፡ 8
ግብሮ፡ ለእግዚአብሔር፡፡ዘገብረ፡መንክረ፡
በደበ፡ምድር፡፡ይስዕር፡ፀብአ፡ እስከ፡ አጽ
ናፈ፡ምድር፡፡=፥ ይሰብር፡ቀስተ፡ወይቀጠ 9
ቅጥ፡ ወልታ፡፡ወያውዒ፡ በእሳት፡ ንዋየ፡ሐቅ
ል፡፡=፥ አስተርክቡ፡ ወአእምሩ፡ ከመ፡አ 10
ነ ፡ ውእቱ ፡ እግዚአብሔር፡፡ተለዐልኩ፡ እ
ምአሕዛብ ፡ ወተለዐልኩ ፡ እምድር፡፡=፥
እግዚኦ፡ ኃያላን ፡ ምስሌነ ፡፡ ወምስካይነ፡ 11
አምላኩ፡ለያዕቆብ፡፡=፥
ፍጻሜ፡ዘበእንተ፡ውሉደ፡ቆሬ፡
መዝሙር፡፡

INTERP. ÆTHIOP. [e] omnes divites [†] & conſociata [f] tibi Domine *PSAL. XLV.* [a] Pſalmus Davidis. [b] & ſi transferentur montes in cor maris. [c] æſtuârunt aquæ [d] Flumen quod rapidè fluit lætificat [e] & adjuvabit eam Deus in finem. [f] Altiſſimus: & mota [g] & intelligite,

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

13 14 * بالهدايا يتلقون وجهك اغنياء شعب الارض * جميع مجد ابنة الملك من داخل ملبسة
15 باذيال مذهبة مزينة باشكال كثيرة * يدخلون الي الملك عذاري خلفها * يدخل اليه جميع
16 17 صواحبها * يدخلونهن بفرح وتهليل * يدخلونهن الي هيكل الملك * عوض ابايك يكونوا
18 لك ابناء * يقيمهم رؤساء علي جميع الارض ويذكرون اسمك في كل جيل جيل * فلهذا
يشكرك الشعوب يا الله الي الابد والي ابد الابد * اللليلويا *

1 * المزمور الخامس والاربعون * لبني قورح * نبوة علي سراير الابن وعلي اهل
بيت حزقيا لما خلصوا من اهل دمشق * وعدده ك استيخن *

2 3 * الهنا هو ملجانا وقوتنا ومعيننا في شدايدنا التي اصابتنا جدا * من اجل هذا فلسنا
4 نخاف اذا اضطربت الارض وانقلبت الجبال في قلب البحار * عجت المياه وقلقت الجبال من
5 6 عزته ترعرعت * مجاري الانهار تفرح مدينة الهنا قدس العلي مسكنه * والله في وسطها لا
7 يزول * الله معيننا في اوان الصباح * قلقت الشعوب واضطربت الممالك * ابدي صوته
8 9 فتزلزلت الارض * الرب اله القوات معنا * ناصرنا هو اله يعقوب * تعالوا لتنظروا اعمال الرب *
10 العجايب التي صنعها علي الارض * مزيل الحروب من اقاصي الارض * يكسر قسيهم ويرض
11 رماحهم * ويحرق تراسهم بالنار * تيقنوا واعلموا اني انا هو الله * اتعالي في الامم * واتعالي علي
12 الارض * الرب اله القوات معنا * ناصرنا هو اله يعقوب * اللليلويا *

1 * المزمور السادس والاربعون * لبني قورح * وعدده * كز * استيخن *

Cum muneribus occurrent faciei tuæ divi- 13
tes populi terræ. Omnis gloria filiæ re- 14
gis intrinſecùs eſt, induta fimbriis aura-
tis, decorata ſpeciebus variis. Ingredi- 15
entur ad regem virgines poſt eam: ingre-
dientur ad eum cuncti comites ejus. In- 16
troducent eas cum gaudio & exultatione:
introducent eas in templum regis. Pro pa- 17
tribus tuis erunt tibi filii: conſtituet eos
principes ſuper univerſam terram, & me-
mores erunt nominis tui in omnem gene-
rationem generationis. Propterea gratias 18
agent tibi populi, O Deus, in æternum, &
in ſeculum ſeculi. Alleluja.

PSAL. XLV.
Filiis Choræ Prophetia de ſecre- 1
tis Filii : & de gente Ezechiæ,
quando erepti fuerunt à Damaſce-
nis. Et num. Ver. 20.

Deus noſter eſt refugium noſtrum & 2
virtus noſtra, & adjutor noſter in
tribulationibus noſtris quæ acciderunt no-
bis vehementer; Propterea nequaquam 3
timebimus quum turbabitur terra, & ſub-
vertentur montes in corde marium. Mu- 4
gierunt aquæ, & commotæ ſunt: montes
ob majeſtatem ejus contremuerunt. Alvei 5
fluminū lætificant in civitate Dei noſtri:
Sanctificavit Altiſſimus habitaculū ſuū.
Et Deus in medio ejus, non recedet: Deus 6
adjutor noſter temporibus matutinis. Con- 7
turbati ſunt populi, & commota ſunt re-
gna: Edidit vocem ſuam, & tremefacta
eſt terra. Dominus Deus virtutum nobiſ- 8
cum eſt: adjutor noſter eſt Deus Jacobi.
Venite ad videnda opera Domini, miracu- 9
la quæ poſuit ſuper terram: Auferentis 10
bella de finibus terræ. Franget arcus eo-
rum, & contundet haſtas eorum, & com-
buret ſcuta eorum igne. Certi eſtote & 11
ſcitote, quòd ego ſum Deus, exaltabor in
gentibus & exaltabor ſuper terram. Do- 12
minus Deus fortitudinum nobiſcum: ad-
jutor noſter eſt Deus Jacobi. Alleluja.

PSAL. XLVI.
Filiis Choræ. Et num. Ver. 27. 1

תהלים : מח

[illegible] voce in Deo jubilate : *palma* plaudite populi Omnes
2 כָּל־הָעַמִּים תִּקְעוּ־כָף הָרִיעוּ לֵאלֹהִים בְּקוֹל רִנָּה׃
.terram omnem super magnus rex ; terribilis altissimus Dominus Quoniam
3 כִּי־יְהוָה עֶלְיוֹן נוֹרָא מֶלֶךְ גָּדוֹל עַל־כָּל־הָאָרֶץ׃
nobis Eliget .nostros pedes subter *nationes* & ; nos subter populos Ducet
4 5 יַדְבֵּר עַמִּים תַּחְתֵּינוּ וּלְאֻמִּים תַּחַת רַגְלֵינוּ׃ יִבְחַר־לָנוּ
Ascendit .Selah , dilexit quem Jahacob *excellentiam* : nostram hæreditatē
6 אֶת־נַחֲלָתֵנוּ אֶת־גְּאוֹן יַעֲקֹב אֲשֶׁר־אָהֵב סֶלָה׃ עָלָה
: cantate Deo Cantate .tubæ voce in Dominus ; jubilo in Deus
7 אֱלֹהִים בִּתְרוּעָה יְהוָה בְּקוֹל שׁוֹפָר׃ זַמְּרוּ אֱלֹהִים זַמֵּרוּ
canite , Deus terrræ omnis rex Quoniam .cantate nostro regi , cantate
8 זַמְּרוּ לְמַלְכֵּנוּ זַמֵּרוּ׃ כִּי מֶלֶךְ כָּל־הָאָרֶץ אֱלֹהִים זַמְּרוּ
thronum super sedit Deus : gentes super Deus Regnavit .*intelligens*
9 מַשְׂכִּיל׃ מָלַךְ אֱלֹהִים עַל־גּוֹיִם אֱלֹהִים יָשַׁב עַל־כִּסֵּא
, Abraham Dei populo sunt aggregati populorum *Magnifici* .suæ sanctitatis
10 קָדְשׁוֹ׃ נְדִיבֵי עַמִּים נֶאֱסָפוּ עַם אֱלֹהֵי אַבְרָהָם
.est elevatus vehementer ,terræ *scuta* Dei ipsius quoniam
כִּי לֵאלֹהִים מָגִנֵּי־אֶרֶץ מְאֹד נַעֲלָה׃

PSAL. XLVIII. מח

: valde laudabilis & , Dominus Magnus .Corach filiis cantus Canticum
1 שִׁיר מִזְמוֹר לִבְנֵי־קֹרַח׃ גָּדוֹל יְהוָה וּמְהֻלָּל מְאֹד
2 , terræ universæ gaudium,*climate* Pulcher .ejus sanctitatis monte ,nostri Dei civitate in
3 בְּעִיר אֱלֹהֵינוּ הַר־קָדְשׁוֹ׃ יְפֵה נוֹף מְשׂוֹשׂ כָּל־הָאָרֶץ
ejus *palatiis* in Deus .magni regis civitas : Aquilonis latera Sijon mons
4 הַר־צִיּוֹן יַרְכְּתֵי צָפוֹן קִרְיַת מֶלֶךְ רָב׃ אֱלֹהִים בְּאַרְמְנוֹתֶיהָ
.pariter transierunt ;*convenerunt* reges ecce Quoniam .elevationem ad est notus
5 נוֹדַע לְמִשְׂגָּב׃ כִּי־הִנֵּה הַמְּלָכִים נוֹעֲדוּ עָבְרוּ יַחְדָּו׃
eos apprehendit Tremor .festinaverunt ,sunt territi :sunt admirati sic ,viderunt Ipsi
6 הֵמָּה רָאוּ כֵּן תָּמָהוּ נִבְהֲלוּ נֶחְפָּזוּ׃ רְעָדָה אֲחָזָתַם
7 .*Tharsis* naves conteres Orientali vento In .parturientis tanquam dolor ; ibi
8 שָׁם חִיל כַּיּוֹלֵדָה׃ בְּרוּחַ קָדִים תְּשַׁבֵּר אֳנִיּוֹת תַּרְשִׁישׁ׃
civitate in , exercituum Domini civitate in vidimus sic ,audivimus Sicut
9 כַּאֲשֶׁר שָׁמַעְנוּ כֵּן רָאִינוּ בְּעִיר־יְהוָה צְבָאוֹת בְּעִיר
Cogitavimus .Selah , seculum in usque eam *firmabit* Deus ; nostri Dei
10 אֱלֹהֵינוּ אֱלֹהִים יְכוֹנְנֶהָ עַד־עוֹלָם סֶלָה׃ דִּמִּינוּ
tuum nomen Secundùm .tui templi *interiori* in , tuam misericordiam Deus
11 אֱלֹהִים חַסְדֶּךָ בְּקֶרֶב הֵיכָלֶךָ׃ כְּשִׁמְךָ
.tua dextera est plena justitia : terræ fines *super* tua laus sic , Deus
אֱלֹהִים כֵּן תְּהִלָּתְךָ עַל־קַצְוֵי־אֶרֶץ צֶדֶק מָלְאָה יְמִינֶךָ׃
.tua judicia propter Jehudah filiæ exultent , Sijon mons Lætetur
12 יִשְׂמַח הַר־צִיּוֹן תָּגֵלְנָה בְּנוֹת יְהוּדָה לְמַעַן מִשְׁפָּטֶיךָ׃
vestrum cor Ponite .ejus turres numerate : eam circuite & ,Sijon Circundate
13 סֹבּוּ צִיּוֹן וְהַקִּיפוּהָ סִפְרוּ מִגְדָּלֶיהָ׃ שִׁיתוּ לִבְּכֶם
14 Quoniã.novissima progenie in enarretis ut : ejus palatia roborate:ej⁹ antemurale ad
15 לַחֵילָה פַּסְּגוּ אַרְמְנוֹתֶיהָ לְמַעַן תְּסַפְּרוּ לְדוֹר אַחֲרוֹן׃ כִּי
.mortem *super* nos ducet ipse : *perpetuum* & ,seculum noster Deus Deus iste
זֶה אֱלֹהִים אֱלֹהֵינוּ עוֹלָם וָעֶד הוּא יְנַהֲגֵנוּ עַל־מוּת׃

תרגום TARGUM.

2 כל עממיא תקעו ידא בחדוא יבבו קדם יי בקל
3 תושבחתא: ארום יי עלאה דחילא מלך רב על
4 כל ארעא: יקטל עממיא במותנא חלופנא ואומיא
5 יכבוש תחות רגלנא: ירעי לנא למירת ית
אחסנתנא ית בית מקדשא דיעקב דרחים
6 לעלמין: יתעלי יי ביבבא יי בקל שופרא: שבחו
7 קדם יי שבחו שבחו למלכנא שבחו: ארום
8 מלך כל יתבי ארעא יי שבחו קדמוי בשכלא
9 טבא: מלך יי על עממיא יי יתב על כורסיה
10 דקודשיה: רבני עממיא אתכנשו עממיא די
מהימנין לאלהא דאברהם ארום קדם יי תריסי
ארעא לחדא אתעלא:

מח

1 2 שירתא ותושבחתא על ידהון דבני קרח: רב יי
ומשבא לחדא בירושלם קרתא דאלהנא ובטור
3 בית מקדשיה: שפיר היך חתנא חדות כל יתבי
ארעא טורא דציון שדא דצפונא קריתא דמלכא
4 5 רבא: יי בברניתהא אתידע לתקוף: ארום הא
6 מלכיא אתחברו עברו כחדא: הנון חמון היכנא
תמהו על נסיא ופרישתא אתבהילו אוף ערקו:
7 זיעא אחדתנון תמן רתיתא היך אתא ילדא:
8 בקדום תקיף כאשא דמן קדם יי תתבר אלפיא
9 דטרסים: ימרון בני ישראל היך מה די שמענא
היכנא חמינא בקרתא דיי צבאות בקרתא
10 דאלהנא יי ישכללנה עד עלמי עלמין: אשוינו
11 יי טובך במציעות היכלך: היך כשמך יי היכדין
תושבחתך על סיפי ארעא צדקתא מליא ימינך:
12 יחדי טור ציון יבועון בתושבחן כנישתא דבית
13 יהודה מטול דינך: אקיפו ציון יבועון וחזרו עלה
14 מנו מגדלהא: שוו לבכון לאוכלוסהא דמן
לעיל ברניתהא מטול דתשתעון לדר אוחרן:
15 ארום דין יי הוא אלהנא שכנתיה בגוה ומדוריה
בשמיא לעלמי עלמין הוא ידברננא ביומי
טליותנא:

in secula seculorum :

PARAPH. CHALD. Vers. Lat.

Omnes populi plaudite manibus cum gaudio; jubilate coram *Domino* in voce laudis. 3 Quoniam Deus altiſſimus terribilis eſt, rex magnus ſuper *omnem terram*. 4 Occidet populos internecione propter nos, & gentes ſubjiciet pedibus noſtris. 5 Complacebit ſibi in nobis, ut jure hæreditario poſſideamus hæreditatem noſtram, domum ſanctuarii Jaacob, quam amabit ſemper. 6 Exaltabitur *Dominus* in jubilo, Dominus in voce tubæ. 7 Laudate coram Domino laudate, laudate regem noſtrum laudate. 8 Quoniam rex eſt *omnium habitatorum* terræ *Dominus* : laudes dicite coram eo cum intellectu bono. 9 Regnat *Dominus* ſuper populos : *Dominus* ſedet ſuper thronum *ſanctitatis* ſuæ. 10 Principes populorum congregati ſunt, *populorum* fidelium Deo ipſius Abraham: quia *coram Domino* ſunt clypei terræ, vehementer exaltatus eſt. 2

1 Canticum *&* *laus* per manus filiorum Korahh.

PSAL. XLVIII.

2 Magnus eſt Dominus & laudabilis valdè in Jeruſalem, civitate Dei noſtri, *& in* monte domus ſanctuarii ipſius. 3 Pulcher ut ſponſus, gaudium omnium habitatorum terræ, mons Sion *à latere* Aquilonis, civitas regis illi⁹ magni. 4 *Domin⁹* in palatiis ſuis notus eſt potentia. 5 Quoniam ecce reges conſociati ſunt, tranſierunt ſimul. 6 Ipſi viderunt, ſic admirati ſunt, propter ſigna & miracula conturbati ſunt, atque fugerunt. 7 Tremor apprehendit eos ibi; tremor ſicut mulieris parturientis. 8 Vento Orientali valido velut ignis à conſpectu Domini confringes naves Tharſis. 9 Dicent *filii Iſrael*, Sicut audivimus, ſic vidimus in civitate Domini exercituum, in civitate Dei noſtri, *Dominus* fundabit eam in ſecula ſeculorum. 10 *Æſtimavimus Domine, benignitatem tuam* in medio templi tui. 11 Ecce ſicut nomen tuum Domine, ſic ecce laus tua uſque ad fines terræ; 12 juſtitiâ plena eſt dextera tua. Lætetur mons Sion, *exultent* laudibus *congregationes* domus Jehudæ propter judicia tua. 13 Circundate Sion, *exultent* & circuite eam, numerate turres ejus. 14 Ponite cor veſtrum ad *cœt⁹ ejus* qui *ſunt* ſupra palatia ejus ut enarretis in generatione noviſſima. 15 Quoniam hic *Dominus* eſt De⁹ noſter; majeſtas ejus intra eam, & habitatio ejus in cœlis ipſe ducet nos in diebus pueritiæ noſtræ.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

2 * ܟܠܟܘܢ ܥܡܡܐ ܩܫܘ ܟܦܐ܂ ܘܫܒܚܘ ܠܐܠܗܐ ܒܩܠܐ ܕܫܘܒܚܐ܃ * ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ
3 4 ܡܪܝܡܐ ܘܕܚܝܠܐ܂ ܗܘܝܘ ܡܠܟܐ ܪܒܐ ܥܠ ܟܠܗ ܐܪܥܐ܃ * ܕܫܥܒܕ ܠܢ ܥܡܡܐ ܬܚܝܬܢ܂
5 6 ܘܐܘܡܘܬܐ ܬܚܝܬ ܪܓܠܝܢ܃ * ܓܒܐ ܠܢ ܝܪܬܘܬܗ܂ ܘܐܝܩܪܗ ܕܝܥܩܘܒ ܕܐܚܒ܂ * ܣܠܩ ܐܠܗܐ
7 8 ܒܫܘܒܚܐ ܘܡܪܝܐ ܒܩܠܐ ܕܩܪܢܐ܃ * ܙܡܪܘ ܠܐܠܗܐ ܒܫܘܒܚܐ ܙܡܪܘ ܠܡܠܟܢ܂ * ܡܛܠ
9 ܕܡܠܟܐ ܕܟܠܗ ܐܪܥܐ ܐܠܗܐ ܗܘ ܙܡܪܘ ܠܗ ܫܘܒܚܐ܃ * ܐܡܠܟ ܐܠܗܐ ܥܠ ܥܡܡܐ܂
10 ܐܠܗܐ ܝܬܒ ܥܠ ܟܘܪܣܝܗ ܩܕܝܫܐ܃ * ܪܫܢܐ ܕܥܡܡܐ ܐܬܦܢܘ ܠܘܬ ܐܠܗܗ ܕܐܒܪܗܡ܂
11 ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܐܢܘܢ ܐܘܚܕܢܘܗܝ ܕܐܪܥܐ ܘܛܒ ܐܬܬܪܝܡ܂

1 * ܡܙܡܘܪܐ ܕܒܢܝ * * ܟܬܒܝ ܩܘܪܚ ܐܬܡܠܠ ܥܠ ܫܘܒܗܪܐ ܕܥܡܡܐ܂
2 ܘܬܫܒܘܚܬܐ ܕܥܕܬܐ ܠܐܠܗܐ܂ ܘܫܪܝܘܬܐ ܕܪܕܘܦܐ܂ ܦܬܓܡܐ ܟܚ܂ * ܪܒ ܗܘ ܡܪܢ
3 ܘܡܫܒܚ ܛܒ ܒܡܕܝܢܬܗ ܕܐܠܗܢ܃ ܘܒܛܘܪܗ ܩܕܝܫܐ ܘܡܫܒܚܐ܂ * ܚܕܘܬܐ ܕܟܠܗ
4 ܐܪܥܐ܃ ܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ ܕܒܣܛܪܝ ܓܪܒܝܐ܂ ܩܪܝܬܗ ܗܝ ܕܡܠܟܐ ܪܒܐ܃ * ܐܠܗܐ ܒܒܝܪܬܗ
5 6 ܡܬܝܕܥ ܒܥܘܫܢܗ܂ * ܡܛܠ ܕܗܐ ܡܠܟܐ ܐܬܛܝܒܘ ܘܥܒܪܘ ܐܟܚܕܐ܃ * ܗܢܘܢ ܚܙܘ ܘܐܬܕܡܪܘ
7 8 ܘܙܥܘ * ܘܪܬܝܬܐ ܐܚܕܬ ܐܢܘܢ܂ ܚܒܠܐ ܐܝܟ ܕܝܠܕܬܐ܃ * ܒܪܘܚܐ ܚܣܝܢܬܐ ܬܬܒܪܢ ܐܠܦܐ
9 ܕܬܪܫܝܫ܂ * ܐܝܟ ܕܫܡܥܢ ܗܟܢ ܚܙܝܢ܃ ܒܡܕܝܢܬܗ ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ܂ ܒܡܕܝܢܬܗ ܕܐܠܗܢ܃ 9
10 ܐܠܗܐ ܢܫܪܪܝܗ ܥܕܡܐ ܠܥܠܡ܂ * ܫܠܐ * * ܣܟܝܢ ܐܠܗܐ ܠܛܝܒܘܬܟ ܒܓܘ
11 ܗܝܟܠܟ܃ * ܐܝܟ ܫܡܟ ܐܠܗܐ ܗܟܢܐ ܬܫܒܘܚܬܟ܂ ܥܕܡܐ ܠܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ ܙܕܝܩܘܬܐ ܡܠܝܐ
12 13 ܝܡܝܢܟ܃ * ܢܚܕܐ ܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ ܘܢܪܘܙܢ ܒܢܬܗ ܕܝܗܘܕܐ܂ ܡܛܠ ܕܝܢܝܟ ܡܪܝܐ܃ * ܐܬܟܪܟܘ ܨܗܝܘܢ
14 ܘܚܕܪܘܗ܂ ܘܡܢܘ ܡܓܕܠܝܗ܂ * ܣܝܡܘ ܠܒܟܘܢ ܥܠ ܚܝܠܗ܂ ܘܥܩܪܘ
15 ܒܢܝܢܗ܃ ܕܬܫܬܥܘܢ ܠܕܪܐ ܐܚܪܢܐ܂ * ܫܠܐ * * ܕܗܢܘ ܐܠܗܐ ܐܠܗܢ܃ ܠܥܠܡ
ܘܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ܂ ܘܗܘ ܢܕܒܪܢ ܥܠ ܡܘܬܐ܂

Omnes gentes, plaudite manibus, & glorificate Deum voce laudis. 3 Quoniam Dominus excelſus atque formidabilis, ipſe eſt rex magnus ſuper omnem terram. 4 Qui ſubjecit nobis gentes, & nationes ſub pedibus noſtris. 5 Seligere fecit nos hæreditatem ſuam, & honoré Jacob quem dilexit. 6 Aſcendit Deus cum gloria, & Dominus cum voce cornu. 7 Pſallite Deo cum laude, canite Regi noſtro. 8 Quoniam rex totius terræ Deus eſt, canite ei laudem. 9 Regnavit Deus ſuper gentes, Deus ſedit ſuper ſolio ſuo ſancto. 10 Principes populorum, revertimini ad Deum Abrahæ : quoniam Dei ſunt territoria terræ, & ſummoperè elevatus eſt. 2

PSAL. XLVIII.

1 *A filiis Corah compoſitus, contra ſuperbiam gentium. Tum laus Eccleſiæ ad Deum, & deſtructio perſecutorum. Verſ.* 28.

2 Magnus eſt Dominus noſter, & laudatus plurimùm in civitate Dei noſtri & in monte ejus ſancto atque glorioſo. 3 Gaudium eſt in univerſa terra mons Sion qui eſt in lateribus Aquilonis, civitas eſt regis magni. 4 Deus in turribus ejus notum facit robur ſuum. 5 Quoniam ecce reges parârunt ſe, & tranſierunt ſimul. 6 Ipſi conſiderârunt & obſtupuerunt atque trepidârunt, 7 Et terror apprehendit eos, dolores ſicut parturientis : 8 Vento vehementi conterentur naves Tharſis. 9 Sicut audivimus, ita vidimus in civitate Domini fortiſſimi, in urbe Dei noſtri : Deus firmabit illam uſq; in ſempiternũ. * *Diapſalma* * 10 Speravimus Deus, gratiam tuam intra templum tuum. 11 Sicut nomen tuum, Deus, ita laudes tuæ, uſque ad extremitates terræ : juſtitiæ plena eſt dextera tua. 12 Gaudeat mons Sion, & exultent filiæ Juda propter judicia tua Domine. 13 Circuite Sion, & perluſtrate eam, atq; numerate turres ejus. 14 Intendite cor veſtrum in fortitudinem ejus & eradicate ædes ejus, ut enarretis generationi alteri, * *Diapſalma.* * 15 Hunc eſſe Deum, Deum noſtrum in æternum & in ſeculum ſeculorum ; Ipſe ducet nos ſupra mortem.

Verſio VULG. LAT.

2 OMnes gentes plaudite manibus: jubilate Deo in voce exultationis.
3 Quoniam Dominus excelſus, terribilis:
4 Rex magnus ſuper omnem terram. Subjecit populos nobis, & gentes ſub pedib⁹
5 noſtris. Elegit nobis hæreditatem ſuam,
6 ſpeciem Jacob, quam dilexit. Aſcendit Deus in jubilo, & Dominus in voce tu-
7 bæ. Pſallite Deo noſtro, pſallite: pſalli-
8 te Regi noſtro, pſallite. Quoniam Rex
9 omni terræ Deus: pſallite ſapienter. Regnabit Deus ſuper gentes: Deus ſedet ſu-
10 per ſedem ſanctam ſuam. Principes populorum congregati ſunt cum Deo Abraham: quoniam dii fortes terræ, vehementer elevati ſunt.

1 Pſalmus Cantici filiis Core ſecundâ Sabbati. XLVII.

2 MAgnus Dominus, & laudabilis nimis in civitate Dei noſtri, in monte
3 ſancto ejus. Fundatur exultatione univerſæ terræ mons Sion, latera Aquilonis, ci-
4 vitas Regis magni. Deus in domib⁹ ejus
5 cognoſcetur, cùm ſuſcipiet eam. Quoniã ecce reges terræ congregati ſunt: conve-
6 nerunt in unũ. Ipſi videntes ſic admirati
7 ſunt, conturbati ſunt, commoti ſunt: Tremor apprehendit eos. Ibi dolores ut par-
8 turientis, In ſpiritu vehementi conteres
9 naves Tharſis. Sicut audivim⁹, ſic vidim⁹ in civitate Domini virtutum, in civitate Dei noſtri: Deus fundavit eam in æter-
10 num. Suſcepimus, Deus, miſericordiam
11 tuam, in medio templi tui. Secundùm nomen tuum, Deus, ſic & laus tua in fines
12 terræ: juſtitiâ plena eſt dextera tua. Lætetur mons Sion, & exultent filiæ Judæ,
13 propter judicia tua, Domine. Circumdate Sion, & complectimini eam: narrate
14 in turribus ejus. Ponite corda veſtra in virtute ejus: & diſtribuite domos ejus,
15 ut enarretis in progenie altera. Quoniam hic eſt Deus, Deus noſter in æternum, & in ſeculum ſeculi: ipſe reget nos in ſecula.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

2 † Πάντα τὰ ἔθνη κροτήσατε χεῖρας, † ἀλαλάξατε
3 τῷ θεῷ ἐν φωνῇ ἀγαλλιάσεως. † Ὅτι κύριος ὕψιστος, φοβερὸς, † βασιλεὺς μέγας ἐπὶ πᾶσαν τὴν
4 γῆν. † Ὑπέταξε λαοὺς ἡμῖν, καὶ ἔθνη ὑπὸ τοὺς πό-
5 δας ἡμῶν. † Ἐξελέξατο ἡμῖν τὴν κληρονομίαν (β) αὐτοῦ, † τὴν καλλονὴν Ἰακὼβ, ἣν (γ) ἠγάπησεν. ΔΙ-
6 ΑΨΑΛΜΑ. † Ἀνέβη ὁ θεὸς ἐν ἀλαλαγμῷ, † κύ-
7 ριος ἐν φωνῇ σάλπιγγος. † Ψάλατε τῷ θεῷ ἡμῶν, ψάλατε, † ψάλατε τῷ βασιλεῖ ἡμῶν, ψάλατε.
8 † Ὅτι βασιλεὺς πάσης τῆς γῆς ὁ θεὸς, † ψάλατε
9 συνετῶς. Ἐβασίλευσεν ὁ θεὸς (δ) ἐπὶ τὰ ἔθνη,
10 † ὁ θεὸς κάθηται ἐπὶ θρόνου ἁγίου αὐτοῦ. † Ἄρχοντες λαῶν συνήχθησαν μετὰ τοῦ θεοῦ Ἀβραάμ, † ὅτι τοῦ θεοῦ οἱ κραταιοὶ τῆς γῆς σφόδρα ἐπήρθησαν.

1 (α) Ψαλμὸς ᾠδῆς τοῖς υἱοῖς Κορὲ δευτέρᾳ σαββάτου. μζ΄.

2 † Μέγας κύριος, καὶ αἰνετὸς σφόδρα † ἐν πόλει
3 τοῦ θεοῦ ἡμῶν, ἐν ὄρει ἁγίῳ αὐτοῦ † Εὐρίζων ἀγαλλιάματι (β) πάσης τῆς γῆς, † ὄρη Σιὼν τὰ πλευρὰ τοῦ Βοῤῥᾶ, † ἡ πόλις τοῦ βασιλέως τοῦ μεγάλου.
4 † Ὁ θεὸς ἐν ταῖς βάρεσιν αὐτῆς γινώσκεται, ὅταν (ᵃ)
5 ἀντιλαμβάνηται αὐτῆς. † Ὅτι ἰδοὺ οἱ βασιλεῖς τῆς γῆς
6 συνήχθησαν, (γ) ἤλθοσαν ἐπὶ τὸ αὐτό. † Αὐτοὶ (") ἰδόντες οὕτως ἐθαύμασαν, † ἐταράχθησαν, ἐσαλεύθησαν,
7 τρόμος (δ) ἐπελάβετο αὐτῶν· † ἐκεῖ ὠδῖνες ὡς
8 τικτούσης. † Ἐν πνεύματι βιαίῳ (ε) συντρίψεις
9 πλοῖα Θαρσίς. † Καθάπερ ἠκούσαμεν, (ζ) οὕτως καὶ εἴδομεν, † ἐν πόλει κυρίου τῶν δυνάμεων, † ἐν πόλει τοῦ θεοῦ ἡμῶν, † ὁ θεὸς ἐθεμελίωσεν αὐτὴν εἰς τὸν (η)
10 αἰῶνα. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Ὑπελάβομεν ὁ θεὸς τὸ
11 ἔλεός σου ἐν μέσῳ τοῦ λαοῦ σου. † Κατὰ τὸ ὄνομά σου ὁ θεὸς, οὕτως καὶ ἡ αἴνεσίς σου ἐπὶ τὰ πέρατα
12 τῆς γῆς, † δικαιοσύνης πλήρης ἡ δεξιά σου. † Εὐφρανθήτω τὸ ὄρος Σιὼν, † (θ) ἀγαλλιάσθωσαν αἱ θυγατέρες τῆς Ἰουδαίας † (ι) ἕνεκα τῶν κριμάτων σου κύριε.
13 † Κυκλώσατε Σιὼν, καὶ περιλάβετε αὐτὴν, † διηγή-
14 σασθε ἐν τοῖς πύργοις αὐτῆς. † Θέσθε τὰς καρδίας ὑμῶν εἰς τὴν δύναμιν αὐτῆς, † καὶ καταδιέλεσθε τὰς βάρεις αὐτῆς, † ὅπως ἂν διηγήσησθε εἰς γενεὰν ἑ-
15 τέραν. † Ὅτι οὗτός ἐστιν ὁ θεὸς ἡμῶν εἰς τὸν αἰῶνα καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος, † αὐτὸς ποιμανεῖ ἡμᾶς εἰς τοὺς αἰῶνας.

MS.A. (β) ἑαυτοῦ, (γ) ἠγάπησεν. Ἀνέβη (δ) ἐπὶ πάντα τὰ Ψαλμ. μζ΄. MS.A. (α) Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. (β) *πᾶσα τῇ γῇ, (ᵃ) ἀντιλαμβάνεται (γ) διῆλθοσαν (") ἰδόντες (δ) ὑπελάβετο (ε) συντρίψει (ζ) οὕτως ἴδομεν, (η) αἰῶνα. Ὑπελάβομεν (θ) καὶ ἀγαλλιάσθωσαν (ι) ἕνεκεν

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

1 OMnes gentes plaudite (b) [a] manibus: jubilate (c) Deo in voce exultationis. 2 Quoniam Dominus excelſus, terribilis, rex magnus ſuper omnem terram. 3 Subjecit (d) populos nobis, & gentes ſub pedibus noſtris. 4 Elegit nobis (e) hæreditatem ſuam: (f) ſpeciem Jacob, quam dilexit. DIAPSALMA. 5 Aſcendit De⁹ in jubilo, Dominus in voce [b] tubæ. 6 Pſallite Deo noſtro, pſallite: pſallite regi noſtro, pſallite. 7 Quoniam rex omnis terræ De⁹: pſallite intelligenter. 8 Regnavit Deus (g) ſuper [c] gentes: Deus ſedet ſuper ſedem ſanctam ſuam. 9 (h) Principes populorum congregati ſunt cum Deo Abraham. 10 Quoniam (i) [d] Dei fortes terræ valdè elevati ſunt.

Pſalmus (a) Cantici filiis Core ſecundâ Sabbati. XLVII.

1 MAgnus Dominus, & [a] laudabilis (b) nimis: in civitate Dei noſtri, in monte ſancto ejus. 2 (c) [b] Benè radicans exultatione univerſæ terræ montes (d) Sion, (e) latera Aquilonis, civitas regis magni. 3 [c] Deus in (f) domibus ejus cognoſcitur, cũ ſuſcipiet eam. 4 Quoniam ecce (g) reges terræ congregati ſunt, (h) venerunt in unum. 5 [d] Ipſi videntes ſic (i) admirati ſunt, conturbati ſunt, [e] commoti ſunt; Tremor apprehẽdit eos. 6 Ibi dolores, ut parturientis: In ſpiritu (k) vehemẽti conteres naves Tharſis. 7 Sicut audivimus, ita (l) & vidimus in civitate Domini virtutum; in civitate Dei noſtri: Deus fundavit eam in æternum. DIAPSALMA. 8 (m) Suſcepimus, Deus, miſericordiam tuam (n) in medio populi tui. 9 Secundùm nomen tuum, Deus; ſic & laus tua in [f] fines terræ: juſtitiâ plena eſt dextera tua. 10 (o) Lætetur mons Sion, exultent filiæ Judææ, (p) propter judicia tua, Domine. 11 Circumdate Sion, (q) & complectimini eam; (r) narrate in turribus ejus. 12 (ſ) Ponite corda veſtra in virtute ejus: & diſtribuite domus ejus, ut enarretis in (t) progenie altera. 13 Quoniam hic eſt Deus noſter in æternum, & in ſeculum ſeculi: ipſe reget nos in (u) ſecula.

Verſio ÆTHIOPICA.

ሀገ ኵልክሙ፡ አሕዛብ ፡ ጥፍሑ፡ እደዊክ 1
ሙ፡፡ወየብቡ፡ ለእግዚአብሔር፡በቃለ፡ትፍ
ሥሕት፡፡=፡ እስመ፡ ለዑል፡ ወግሩም፡ እ 2
ግዚአብሔር፡፡ወንጉሥ፡ ዐቢይ፡ ውእቱ፡ ዲ
በ፡ኵሉ፡ምድር፡፡=፡ አግረረ፡ ለነ፡አሕዛ 3
ብ፡ወሕዝብ፡ታሕተ፡እገሪነ፡፡=፡ ወኀረየነ፡ 4
ሎቱ፡ ለርስቱ፡፡ሥና፡ ለያዕቆብ፡ ዘአፍቀ
ረ፡፡=፡ ዐርገ፡ እግዚአብሔር ፡ በይባቤ፡፡ 5
ወእግዚእነ፡በቃለ፡ቀርን፡፡=፡ ዘምሩ፡ለአ 6
ምላክነ፡ዘምሩ፡፡ዘምሩ፡ ለንጉሥነ፡ ዘም
ሩ፡፡=፡ እስመ፡ንጉሥ፡እግዚአብሔር፡ለ 7
ኵሉ፡ምድር፡፡ዘምሩ፡ ልብወ፡ 8 ነግሠ፡
እግዚአብሔር፡ላዕለ፡ ኵሉ፡ አሕዛብ፡፡እ
ግዚአብሔርሰ፡ይነብር፡ ዲበ፡ መንበረ፡ቅዱ
ስ፡፡=፡ መሳፍንተ፡አሕዛብ፡ተጋብኡ፡ም 9
ስለ፡አምላከ፡አብርሃም፡፡=፡ እስመ፡ለእ 10
ግዚአብሔር ፡ ጽኑዓን፡ ምድር፡ ፈድፋደ፡
ተለዓሉ፡፡=፡

ማኅሌት፡መዝሙር፡ዘደቂቀ፡ቆሬ፡በሰ
ኒታ፡ሰንበት፡፡

ዐቢይ፡እግዚአብሔር፡ወብዙኅ፡ እኩ 1
ቴቱ፡፡በሀገረ፡ አምላክነ፡ በደብረ፡ መቅደ
ሱ፡፡=፡ ዘይሴዝዝ፡ትፍሥሕተ፡ለኵሉ፡ 2
ምድር፡፡አድባረ፡ጽዮን፡ በገቦ፡ መስዕ፡፡ሀገ
ረ፡ለንጉሥ፡ዐቢይ፡፡=፡ እግዚአብሔር፡ 3
ያአምር፡ክበዲሃ፡ሶበ፡ ተመጠዋ፡፡=፡ እ 4
ስመ፡ናሁ፡ ነገሥት፡ ምድር፡ ተጋብኡ፡ወመ
ጽኡ፡ኅቡረ፡፡=፡ እሙንቱሰ፡ዘንተ፡ርእዮ 5
ሙ ፡ አንከሩ፡፡ደንገፁ ፡ ወፈርሁ ፡ ወአኀዞ
ሙ፡ረዐድ፡፡=፡ ወሐሙ፡በህየ፡ከመ፡እንተ፡ 6
ትወልድ፡፡በነፋስ፡ ኀያል፡ ትቀጠቅጦን፡ ለአ
ሕማረ፡ተርሴስ፡፡=፡ በከመ፡ሰማዕነ፡ከማ 7
ሁ፡ርኢነ፡፡በሀገረ፡እግዚኦ፡ኀያላን፡በሀገረ፡
አምላክነ ፡፡ እግዚአብሔር ፡ ሳረራ ፡ ለዓለ
ም፡፡=፡ ተወከፍነ፡ እግዚኦ፡ ሣህለከ፡በማ 8
እከለ፡ ሕዝብከ፡፡=፡ ወበከመ፡ ስምከ፡ከ 9
ማሁ፡ስብሐቲከ፡በኵሉ፡አጽናፈ፡ምድር፡፡
ጽድቅ፡ ምሉእ፡ የማንከ፡፡=፡ ይትፈሣሕ፡ 10
አድባረ ፡ ጽዮን፡፡ወይትሐሠያ፡ አዋልደ፡ይ
ሁዳ፡፡በእንተ፡ፍትሕከ፡እግዚኦ፡፡=፡ አግ 11
ትዋ፡ለጽዮን፡ ወሕቀፍዋ፡፡ወተናገሩ፡ በውስ
ተ፡ማኅፈዲሃ፡፡=፡ ደዩ፡ ልበክሙ፡ ውስተ፡ 12
ኀይላ ፡፡ ወትትካፈልዋ፡ ለክበዲሃ ፡፡ ከመ፡
ትንግሩ፡ለካልእ፡ትውልድ፡፡=፡ ከመ፡ዝን 13
ቱ፡ ውእቱ ፡ አምላክነ፡፡ለዓለም ፡ ወለዓለ
ም፡ዓለም ፡፡ ወውእቱ ፡ ይሬእየነ፡ እስከ፡
ለዓለም፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [a] manibus veſtris: [b] cornu. [c] omnes gentes: [d] ipſius Dei fortes terræ valdè PSAL. XLVII. [a] ampliſſima eſt gloria ejus: [b] Qui mandavit lætitiam univerſæ terræ [c] Deus in palatiis ejus [d] Hi quidem ipſi videntes eos [e] timuerunt, & tremor [f] omnes fines

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

2 * صفقوا يا جميع الامم بايديكم هللوا لله بصوت الفرح * فان الرب عال مخوف * هو الملك 3
4 العظيم على جميع الارض * اخضع الشعوب لنا * والامم تحت ارجلنا * اختارنا ميراثا له * جمال 5
6 يعقوب الذي احب * صعد الله بالتهليل والرب بصوت البوق * رتلوا لالهنا رتلوا * رتلوا 7
8 لملكنا رتلوا * فان الرب ملك الارض كلها * رتلوه بفهم * فان الرب قد صار ملكا على جميع 9
10 الامم * الله جالس على كرسيه المقدس * رؤساء الشعوب اقبلوا الى اله ابرهيم * لان اعزاء الله
ارتفعوا جدا على الارض * اللليلويا * المزمور السابع والاربعون *

1 * تسبحة لبني قورح في السبت الثاني * وعدده * كط * استيخن *

2 * عظيم هو الرب ومبارك جدا * في مدينة الهنا على جبله المقدس * يكون الفرح في الارض 3
4 كلها * جبال صهيون الشامخة * في جانب الشمال مدينة الملك العظيم * الله يعرف في قصورها
5 اذا قبلها * لان ملوكها قد اجتمعوا واتوا جميعا * هم نظروا وهكذا تعجبوا وقلقوا واضطربوا * 6
7 واخذهم الرعدة والطلقات * هناك مثل التي تلد * بريح شديدة تحطم سفن ترسيس * كما 8 9
10 سمعنا كذلك راينا في مدينة الهنا * الله اسسها الى الابد * اللهم بسرنا برحمتك في وسط شعبك *
11 كمثل اسمك يا الله * هكذا تسبحتك من اقصى الارض * يمينك مملوءة عدلا * لتفرح جبال 12
13 صهيون ولتهلل بنات يهوذا لاجل احكامك يا رب * احيطوا بصهيون واكتنفوها * حدثوا
14 في ابراجها * اعدلوا بقلوبكم الى قوتها * واقسموا عليكم قصورها * لكيما تخبروا بهن جيلا
15 اخر * ان هذا هو الهنا الى الابد * وهو الذي يرعانا الى الابد * والى ابد الابد * اللليلويا *

PLaudite, O omnes gentes, manibus veſtris: jubilate Deo voce lætitiæ. Quia Dominus altiſſimus eſt, terribilis. Ipſe eſt rex magnus ſuper univerſam terram. Subjecit populos nobis, & gentes ſub pedibus noſtris. Elegit nos hæreditatem ſibi, decorem Jacob quem dilexit. Aſcendit Deus cum jubilatione, et Dominus cum voce buccinæ. Pſallite Deo noſtro, pſallite: pſallite regi noſtro, pſallite: Quoniam Dominus rex eſt univerſæ terræ. Pſallite ei cum intellectu: Quia Dominus jam factus eſt rex ſuper omnes gentes, Deus ſedet ſuper thronum ſuum ſanctum. Principes populorum venerunt ad Deum Abrahæ, quoniam potentes Dei elevati ſunt admodum ſuper terram. Alleluja. 2 3 4 5 6 7 8 9 10

PSAL. XLVII.

Canticum filiorum Choræ de Sabbatho ſecundò. Et num. ver. 29. 1

MAgnus eſt Dominus & benedictus valdè in civitate Dei noſtri, ſuper montem ejus ſanctum. Erit gaudium in terra tota: montes Sion excelſi, in latere Aquilonis civitas regis magni. Deus notus fiet in palatiis ejus cùm ſuſceperit eam. Quoniam reges ejus jam congregati ſunt, & venerunt ſimul. Ipſi viderunt atque ita admirati ſunt, conturbati ſunt & commoti. Et invaſit eos tremor & dolores ibi, ut ejus quæ parturit. Vento vehementi confringes naves Tharſis. Prout audivimus, ſic vidimus in civitate Dei noſtri, Deus fundavit eam in æternum. Deus, narravimus miſericordiam tuam in medio populi tui. Sicut nomen tuum, O Deus, ita laus tua ab extrema terra: dextera tua plena eſt æquitate. Lætentur montes Sion, & exultent filiæ Judæ propter judicia tua, O Domine. Circumdate Sion, et circumvallate eam, loquimini de turribus ejus. Admovete corda veſtra ad virtutem ejus; & diſtribuite inter vos palatia ejus, ut referatis de iis generationi alteri. Nam iſte eſt Deus noſter in ſeculum, & ipſe eſt qui paſcet nos in æternum, & in ſeculum ſeculi. Alleluja. 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15

תהלים: מט

PSAL. XLIX. מט

auſcultate : populi omnes hoc Audite .cantus Corach filiis Victori
1 2 לַמְנַצֵּחַ לִבְנֵי־קֹרַח מִזְמוֹר׃ שִׁמְעוּ־זֹאת כָּל־הָעַמִּים הַאֲזִינוּ
pariter : viri filii etiam , hominis filii Etiam .orbis habitatores omnes
3 כָּל־יֹשְׁבֵי חָלֶד׃ גַּם־בְּנֵי אָדָם גַּם־בְּנֵי־אִישׁ יַחַד
mei cordis meditatio & : ſapientias loquetur meum Os .*indigus* & , dives
4 עָשִׁיר וְאֶבְיוֹן׃ פִּי יְדַבֵּר חָכְמוֹת וְהָגוּת לִבִּי
cithara *in* aperiam : meam aurem parabolam ad Inclinabo .intelligentias
5 תְבוּנוֹת׃ אַטֶּה לְמָשָׁל אָזְנִי אֶפְתַּח בְּכִנּוֹר
meorum calcaneorum iniquitas ?mali diebus in timebo quid Ut .meum ænigma
6 חִידָתִי׃ לָמָּה אִירָא בִּימֵי רָע עֲוֹן עֲקֵבַי
ſuæ opulentiæ multitudine in & ;*ſua facultate ſuper* *Fidentes* ? me circundabit
7 יְסֻבֵּנִי׃ הַבֹּטְחִים עַל־חֵילָם וּבְרֹב עָשְׁרָם
Deo dabit nec ; *vir* redimet redimendo non Fratrem .*gloriabuntur*
8 יִתְהַלָּלוּ׃ אָח לֹא־פָדֹה יִפְדֶּה אִישׁ לֹא־יִתֵּן לֵאלֹהִים
.ſeculum in *deſinet &* ,eorum animæ redemptio erit precioſa Et .ſuam propitiationē
9 כָּפְרוֹ׃ וְיֵקַר פִּדְיוֹן נַפְשָׁם וְחָדַל לְעוֹלָם׃
ſapientes , videbit *Nam* .*foveam* videbit non : *æternum* in adhuc vivat Et
10 11 וִיחִי־עוֹד לָנֶצַח לֹא יִרְאֶה הַשָּׁחַת׃ כִּי יִרְאֶה חֲכָמִים
.*ſuam facultatem* alienis relinquent & ;peribunt inſipiens & ,ſtultus ſimul , *morientur*
יָמוּתוּ יַחַד כְּסִיל וָבַעַר יֹאבֵדוּ וְעָזְבוּ לַאֲחֵרִים חֵילָם׃
generatione in eorum tabernacula , ſeculum in eorum domus eorum *Intimum*
12 קִרְבָּם בָּתֵּימוֹ לְעוֹלָם מִשְׁכְּנֹתָם לְדֹר
honore in homo Et .terras *ſuper* ſuis nominibus in vocaverunt:generationē &
13 וָדֹר קָרְאוּ בִשְׁמוֹתָם עֲלֵי אֲדָמוֹת׃ וְאָדָם בִּיקָר
ſtultitia eorum via Hæc .*ſunt exciſi* *jumenta ſicut* aſſimilatus ;*pernoctabit* non
14 בַּל־יָלִין נִמְשַׁל כַּבְּהֵמוֹת נִדְמוּ׃ זֶה דַרְכָּם כֵּסֶל
inferno in *pecus* Sicut .Selah , *volent ipſorum ore in* eorum poſteri & , ipſis
15 לָמוֹ וְאַחֲרֵיהֶם בְּפִיהֶם יִרְצוּ סֶלָה׃ כַּצֹּאן לִשְׁאוֹל
eorum figura & :mane *in* recti *eos in* dominabuntur &,eos depaſcet mors ,ponentur
שַׁתּוּ מָוֶת יִרְעֵם וַיִּרְדּוּ בָם יְשָׁרִים לַבֹּקֶר וְצוּרָם
redimet Deus Veruntamen .ſibi habitaculo ab *ſepulchrum veterandum ad*
16 לְבַלּוֹת שְׁאוֹל מִזְּבֻל לוֹ׃ אַךְ־אֱלֹהִים יִפְדֶּה
, timueris Ne .Selah ,me ſuſceperit cùm : inferi *manu* de meam animam
17 נַפְשִׁי מִיַּד־שְׁאוֹל כִּי יִקָּחֵנִי סֶלָה׃ אַל־תִּירָא
non Quoniam .ejus domus gloria *fuerit multiplicata* cùm ; vir fuerit ditatus cùm
18 כִּי־יַעֲשִׁר אִישׁ כִּי־יִרְבֶּה כְּבוֹד בֵּיתוֹ׃ כִּי לֹא
Quoniam .ejus gloria eum poſt deſcendet neque ; omnia accipiet *ipſum moriendo in*
19 בְמוֹתוֹ יִקַּח הַכֹּל לֹא־יֵרֵד אַחֲרָיו כְּבוֹדוֹ׃ כִּי־
Introibit .tibi benefeceris ſi ,te laudabunt & ; *benedicet vitis ſuis* in ſuæ animæ
20 נַפְשׁוֹ בְּחַיָּיו יְבָרֵךְ וְיוֹדֻךָ כִּי־תֵיטִיב לָךְ׃ תָּבוֹא
.lumen videbunt non *æternum* in uſque ; ſuorum patrum progeniem in uſque
עַד־דּוֹר אֲבוֹתָיו עַד־נֵצַח לֹא יִרְאוּ־אוֹר׃
, *jumenta ſicut* , eſt aſſimilatus : intelliget non & , honore in Homo
21 אָדָם בִּיקָר וְלֹא יָבִין נִמְשַׁל כַּבְּהֵמוֹת
.*ſunt exciſi*
נִדְמוּ׃

תרגום TARGUM.

מט

1 2 לְשַׁבָּחָא עַל יְדֵיהוֹן דִּבְנֵי קֹרַח תּוּשְׁבַּחְתָּא׃ שְׁמַעוּ
אַחְוָיְתָא דָא כָּל עַמְמַיָּא אֲצִיתוּ כָּל דָּיְרֵי אַרְעָא׃
3 אוּף בְּנֵי אָדָם קַדְמָאָה אוּף בְּנוֹי דְּיַעֲקֹב כַּחֲדָא
4 זַכָּאָה וְחַיָּבָא׃ פּוּמִי יְמַלֵּל חוּכְמְתָא וְרִנְנַת לִבָּא
5 בִּינְתָא׃ אַצְלֵי לְמַתְלָא אוּדְנִי אַשְׁרֵי לְמִפְתַּח
6 בְּכִנָּרָא אוּחַדְתִּי׃ מְטוּל אֶדְחַל בְּיוֹם אַסְעָרוּת
בִּישָׁא אֱלָהֵן דְּחוֹבַת סוּרְחָנִי בְּסוֹפֵי יְחַזְרָנַנִי׃
7 וַי לְחַיָּבַיָּא דִּי מִתְרַחֲצִין עַל נִכְסֵיהוֹן וּבִסְגִיאוּת
8 עֻתְרֵיהוֹן מִשְׁתַּבְּחִין׃ אֲחוּהִי דְּאִשְׁתְּבָא לָא מִפְרַק
יִפְרוֹק גְּבַר מִנִּכְסוֹי וְלָא יְהַב לֵאלָהָא פּוּרְקָנֵיהּ׃
9 וִיהֵי יַקִּיר פּוּרְקָנֵיהּ וְיִפְסוֹק בִּישׁוּתֵיהּ וּפוּרְעָנוּתָא
10 לַעֲלָם׃ וְיֵחֵי תּוּב לְחַיֵּי עַלְמָא לָא יֶחֱמֵי דִּין גֵּהִנָּם׃
11 אֲרוּם יֶחֱמוּן חַכִּימַיָּא רַשִּׁיעַיָּא בְּגֵהִנָּם יִתְדָנוּן
כַּחֲדָא כְּסִילַיָּא וְשַׁטְיָא יֵיבְדוּן וְיִשְׁבְּקוּן לְצַדִּיקַיָּא
12 מָמוֹנְהוֹן׃ בְּבֵית קְבוּרַתְהוֹן יִשְׁרוֹן לַעֲלָם וְלָא
יְקוּמוּן מִמַּשְׁכְּנֵיהוֹן לְדָרֵי דָרַיָּא מְטוּל
13 דְּאִתְרַבְרַבוּ וּקְנוּ שׁוּם בִּישׁ עִלָּוֵי אַרְעָא׃ וְגַבְרָא
חַיָּבָא בִּיקָרָא לָא יְבִית עִם צַדִּיקַיָּא אִמְּתִיל הֵיךְ
14 בְּעִירָא אִשְׁתְּוָא לִלְמָא׃ דֵּין אָרְחַתְהוֹן גְּרַם
שְׁטוּתָא לְהוֹן וּבְסוֹפְהוֹן בְּפוּמְהוֹן יִתְנוּן
15 סוּרְחָנוּתְהוֹן לְעָלְמָא דְאָתֵי׃ הֵיךְ עָנָא צַדִּיקַיָּא
שַׁוּוּ לְמוֹתָא וְקַטְלוּן וְתַבַּרוּ צַדִּיקַיָּא וּפָלְחֵי
אוֹרַיְתָא וְתְרִיצַיָּא אַלְקוּ מְטוּל הָכֵי גוּפֵיהוֹן יְהוֹן
בָּלְיָן בְּגֵהִנָּם מִן בִּגְלַל דְּאוֹשִׁיטוּ יְדֵיהוֹן וְחַבִּילוּ
16 בֵּירַת מְדוֹר שְׁכִנְתֵּיהּ דִּילֵיהּ׃ אֲמַר דָּוִד בְּרוּחַ
נְבוּאָה בְּרַם אֱלָהָא יִפְרוֹק נַפְשִׁי מִן דִּין גֵּהִנָּם
17 אֲרוּם יַלְּפִנַּנִי אוֹרַיְתֵיהּ לַעָלְמִין׃ [עַל קֹרַח
וְסִיעָתֵיהּ אִתְנַבֵּי וַאֲמַר] לָא תִדְחַל [מֹשֶׁה] אֲרוּם
אִתְעַתַּר [קֹרַח] גַּבְרָא [דְמַצּוּתָא] אֲרוּם יִסְגֵּי אִיקָר
18 בֵּיתֵיהּ׃ אֲרוּם לָא בְמוֹתֵיהּ יִסַּב כּוֹלָא לָא יֵחוֹת
19 בַּתְרוֹי אִיקָרֵיהּ׃ אֲרוּם נַפְשֵׁיהּ [דְמֹשֶׁה] בְּחַיּוֹהִי
יְבָרֵךְ לָךְ וְיוֹדוּנָךְ צַדִּיקַיָּא אֲרוּם תֵּיטִיב לְפָלְחִין
20 קֳדָמָךְ׃ תֵּיעוֹל דּוּכְרַנְהוֹן דְּצַדִּיקַיָּא עַד דָּר
אַבְהָתְהוֹן וְרַשִּׁיעַיָּא לְעָלְמֵי עַלְמַיָּא לָא יֶחֱמוּן
21 נְהוֹרָא׃ גַּבְרָא חַיָּבָא בִּזְמַן דְּאִיתוֹהִי בִּיקָרָא לָא
יִתְבִּין וּבְאִסְתַּלָּקוּת יְקָרֵיהּ מִנֵּיהּ אִמְּתִיל לִבְעִירָא וְאִשְׁתְּוֵי לִלְמָא׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Ad laudandū per manꝰ filiorum Korahh, 1
Hymnus. PSAL. XLIX.
Audite nuncium iſtud omnes populi, 2
auſcultate omnes habitatores terræ.
Tam filii Adam antiqui quàm filii Jaacob, 3
ſimul mundus & prophanus. Os meū lo- 4
quetur ſapientiam; & meditatio cordis
mei *intellectū*. Inclinabo ad parabolā aurē 5
meam : incipiā aperire in cithara ænigma
meum. Quare timebo in die tempeſtatis 6
malæ, niſi quando reatus peccati mei *in*
fine mea circundabit mei ? *Væ peccatori-* 7
bus qui confidunt in divitiis ſuis, & in
multitudine opulentiarū ſuarū jactant ſe-
ſe. Fratrem ſuū captivū nequaquā redem- 8
ptione redimet vir *opibꝰ ſuis*, & non dabit
Deo [*pretium*] redemptionis ejus. *Eritq;* 9
precioſa redemptio *ejus*, & abolebit malū
ejus *&* punitionem in ſeculū. Et vivet ad- 10
huc vitâ æternâ, non videbit judicium
gehennæ. Quoniam *videbunt* ſapientes 11
improbos, gehennæ *adjudicabuntur*, unà
inſipientes & ſtultus peribūt, & relinquent
juſtis divitias ſuas. In domo ſepulturæ ſuæ 12
habitabunt in æternum; & non reſurgent
de tabernaculis ſuis in generationes ge-
nerationū : quoniā ſuperbi facti ſunt, &
comparârunt ſibi nomen pravū ſuper ter-
ram. Et *homo* peccator in honore non 13
commorabitur *cum juſtis*: aſſimilatus eſt
beſtiæ, *æquiparatur nihilo*. Hanc viā illo- 14
rum accerſit ſtultitia ipſis, & in fine eorū,
ore ſuo palàm facient *peccatum ſuum* ſe-
culo venturo. Sicut oves, juſtos addicunt 15
morti, & interficiūt eos; & conterūt *juſtos*
& colentes legem, & rectos *percuſſerunt*.
Propterea corpora eorū veteraſcent in ge-
henna; quoniā extēderūt manū ſuā, & de-
ſtruxerūt *domū habitationis* majeſtatis ejꝰ.
Dixit David in ſpiritu prophetico, Utique 16
Deꝰ redimet animā meā à *judicio gehennæ*,
quoniam docebit me legem ſuam *in æter-*
num. De Korahh & aſſeclis ejus vatici- 17
natꝰ eſt & dixit: Ne timeas *Moſes*, licet
ditetur Korahh homo *contentioſus*; licet
creſcat gloria domꝰ ejꝰ. Quoniā nequaquā 18
in morte ſua portabit omnia, nec deſcen-
det poſt eū gloria ejꝰ. Quoniā anima *Moſis* 19
in vita ipſiꝰ *benedicet tibi*, & cōfitebuntur
tibi juſti; quia benefacies colentibꝰ corā te.
Ingredietur memoria juſtorū uſq; ad gene- 20
rationē patrū eorū: improbi verò in ſecu-
la ſeculorū non videbūt lumen. Homo ſce- 21
leratus, in tempore quo ſubſiſtit *in honore*,
non intelligit: cùm removetur gloria ejꝰ *ab*
eo, cōparatur beſtiæ, et redigitur in nihilū.

Verſio SIRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܡܛ *

1 * ܕܒܢܝ̈ ܩܘܪܚ. ܢܒܝܘܬܐ ܥܠ ܚܣܝܢܘܬܐ ܕܥܡܡ̈ܐ. ܘܡܠܦܢܘܬܐ ܕܕܝܢܐ ܕܐܠܗܐ ܦܬܓ̈ܡܐ ܡܘ.
2 3 * ܫܡܥܘ ܗܕܐ ܟܠܟܘܢ ܥܡܡ̈ܐ. ܘܨܘܬܘ ܟܠ ܥܡܘܪ̈ܝ ܐܪܥܐ : * ܒܢܝ̈ ܐܪܥܐ ܘܒܢܝ̈ ܐܢܫܐ ܐܟܚܕܐ
4 5 ܥܬܝܪ̈ܐ ܘܡܣܟܢ̈ܐ : * ܦܘܡܝ ܢܡܠܠ ܚܟܡܬܐ. ܘܪܢܝܐ ܕܠܒܝ ܣܘܟܠܐ : * ܐܪܟܢ ܐܕܢܝ
6 ܒܡܬ̈ܠܐ. ܘܐܡܠܠ ܒܗܝܡܢܘܬܐ ܐܘܚܕ̈ܬܝ : * ܠܐ ܕܚܠ ܐܢܐ ܒܝܘܡ̈ܬܐ ܒܝ̈ܫܬܐ. ܥܘܠܐ ܕܒܥܠܕܒܒ̈ܝ
7 8 ܢܟܪܟܢܢܝ : * ܟܠ ܕܬܟܝܠܝܢ ܥܠ ܚܝܠܗܘܢ. ܘܡܫܬܒܗܪܝܢ ܒܣܘܓܐܐ ܕܥܘܬܪܗܘܢ. * ܐܚܐ ܠܐ
9 ܦܪܩ : ܘܓܒܪܐ ܠܐ ܢܬܠ ܠܐܠܗܐ ܦܘܪܩܢܗ : * ܝܩܝܪ ܗܘ ܦܘܪܩܢܐ ܕܢܦܫܗܘܢ : ܠܐܝ ܠܥܠܡ
10 11 * ܕܬܚܐ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ : ܘܠܐ ܬܚܙܐ ܚܒܠܐ. * ܟܕ ܬܚܙܐ ܚܟܝܡ̈ܐ ܕܡܝܬܝܢ : ܐܟܚܕܐ ܣܟܠ̈ܐ
12 ܘܚܣܝܪ̈ܝ ܕܝܢܐ ܢܐܒܕܘܢ. ܘܢܫܒܩܘܢ ܩܢܝܢܗܘܢ ܠܐܚܪ̈ܢܐ : * ܩܒܪܝܗܘܢ ܒܬܝܗܘܢ ܠܥܠܡ.
13 ܘܡܫܪܝܗܘܢ ܠܕܪܕܪܝܢ : ܘܩܪܝܢ ܫܡܗ̈ܐ ܒܐܪܥܐ. * ܒܪܢܫܐ ܒܐܝܩܪܗ ܠܐ ܐܣܬܟܠ : ܐܠܐ ܐܫܬܘܝ
14 ܠܒܥܝܪܐ ܘܐܬܕܡܝ ܠܗ. * ܗܢܐ ܫܒܝܠܗܘܢ ܬܘܩܠܬܐ ܠܢܦܫܗܘܢ. ܘܒܚܪܬܐ ܒܦܘܡܗܘܢ
15 ܢܪܥܘܢ. * ܐܝܟ ܥܢܐ. * ܕܡܫܚ * ܠܫܝܘܠ ܢܫܬܠܡܘܢ. ܘܡܘܬܐ ܢܪܥܐ ܐܢܘܢ : ܘܢܫܬܠܛܘܢ
16 ܒܗܘܢ ܬܪܝܨ̈ܐ ܒܨܦܪܐ. ܘܨܘܪܬܗܘܢ ܬܒܠܐ ܫܝܘܠ : ܘܡܢ ܫܘܒܚܗܘܢ ܢܬܕܚܩܘܢ. * ܐܠܗܐ
17 ܢܦܪܘܩ ܢܦܫܝ : ܘܡܢ ܐܝܕܐ ܕܫܝܘܠ ܢܕܒܪܢܝ : * ܠܐ ܬܕܚܠ ܡܐ ܕܥܬܪ ܓܒܪܐ : ܘܣܓܝ
18 ܐܝܩܪܐ ܕܒܝܬܗ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܢܣܒ ܡܕܡ ܒܡܘܬܗ : ܘܠܐ ܢܚܘܬ ܒܬܪܗ ܫܘܒܚܗ.
19 20 * ܡܛܠ ܕܢܦܫܗ ܗܘ ܡܒܪܟ ܒܚܝܘܗܝ : ܘܢܘܕܐ ܠܟ ܟܕ ܬܛܐܒ ܠܗ. * ܘܬܥܠܝܘܗܝ
21 ܥܕܡܐ ܠܕܪܐ ܕܐܒܗܘܗܝ : ܥܕܡܐ ܠܥܠܡ ܠܐ ܢܚܙܐ ܢܘܗܪܐ. * ܒܪܢܫܐ ܒܐܝܩܪܗ ܠܐ ܐܣܬܟܠ :
ܐܠܐ ܐܫܬܘܝ ܠܚܝܘܬܐ ܘܐܬܕܡܝ ܠܗ.

PSAL. XLIX.

Filiorum Corah. Prophetia de fortitudi- 1
ne gentium; & documentum judicii Di-
vini. Verſ. 46.

Audite hoc omnes populi, & auſcultate 2
omnes incolæ terræ. Filii terræ, & filii 3
hominum ſimul divites, ac pauperes. Os me- 4
um loquetur ſapientiam, & meditatio cordis
mei intelligentiam. Intendam aures meas pa- 5
rabolis : & loquar, adhibitâ fide, ænigmata
mea. Non timeo in diebus malis : iniquitas 6
hoſtium meorum circundedit me : Omnes ii 7
qui fidunt robori ſuo, & gloriantur in copia
divitiarum ſuarum. Frater non redimet, & 8
vir non perſolvet Deo redemptionem ſuam.
Cara enim eſt redemptio animæ illorum. La- 9
bora in æternum, Ut vivas in ſeculū ſeculo- 10
rum, & non videas corruptionem, Viſurus 11
tamen ſapientes mori, ſimul ſtultos & exper-
tes judicio interire, & relinquere opes ſuas
aliis. Sepulchra eorum ſunt domus illorum 12
in æternum, atque habitaculū ipſorum in ge-
nerationem generationum, & tamen vocant
nomina in terra. Homo gloriam ſuam non 13
intellexit, ſed æquavit ſe jumento, & ſimilem
ſe fecit illi. Hæc eſt ſemita eorum, ſcanda- 14
lum animæ ipſorum : & demum ore ſuo pa-
ſcentur Ut pecudes: * *Diapſalma* * in- 15
feris tradentur, & mors paſcet eos : & domi-
nabuntur in illos recti mané : & formam eo-
rum corrumpet fovea : & de faſtibus ſuis de-
pellentur. Deus redimet animā meam, & de 16
manibus inferi accipiet me. Ne timeas quum 17
ditatur vir, & multiplicatur gloria domûs
ejus; Non enim ſumet quicquam in morte 18
ſua, neque deſcendet poſt illū magnificentia
ipſius. Quoniam animam ſuā ipſe benedicit 19
in vita ſua, & gratias tibi aget cùm benefe-
ris ei. Perducéſque illū uſque ad generationē 20
patrum ejus: uſque in æternū non videbit lu-
men. Homo gloriam ſuā non intellexit, ſed æ- 21
quavit ſe animanti, & ſimilis factus eſt ei.

Verſio VULG. LAT.

1 In finem, filiis Core Pſalmus. XLVIII.

2 Audite hæc omnes gentes: aurib'
percipite omnes, qui habitatis
3 orbem. Quique terrigenæ, & filii hominum:
ſimul in unũ dives & pauper.
4 Os meum loquetur ſapientiã: & meditatio
5 cordis mei prudentiam. Inclinabo
in parabolã aurem meam: aperiam
in pſalterio propoſitionem meã.
6 Cur timebo in die mala? iniquitas
7 calcanei mei circũdabit me. Qui confidunt
in virtute ſua: & in multitudine
8 divitiarum ſuarum gloriantur. Frater
non redimit, redimet homo: non dabit
9 Deo placationem ſuam. Et pretiũ redemptionis
animæ ſuæ: & laborabit
10 in æternum, Et vivet adhuc in finem.
11 Non videbit interitum, cùm viderit ſapientes
morientes: ſimul inſipiens, &
ſtultus peribunt. Et relinquent alienis
12 divitias ſuas: Et ſepulchra eorum domus
illorum in æternum. Tabernacula
eorum in progenie, & progenie: vocaverunt
13 nomina ſua in terris ſuis. Et
homo, cùm in honore eſſet, non intellexit:
comparatus eſt jumentis inſipientibus,
14 & ſimilis factus eſt illis. Hæc
via illorũ ſcandalum ipſis: & poſteà in
15 ore ſuo complacebunt. Sicut oves in
inferno poſiti ſunt: mors depaſcet eos.
Et dominabuntur eorum juſti in matutino:
& auxilium eorum veteraſcet in
16 inferno à gloria eorum. Veruntamen
Deus redimet animam meam de manu
17 inferi, cùm acceperit me. Ne timueris
cùm dives factus fuerit homo: & cùm
multiplicata fuerit gloria domûs ejus.
18 Quoniã cum interierit, non ſumet omnia:
neq; deſcendet cum eo gloria ejus.
19 Quia anima ejus in vita ipſius benedicetur:
confitebitur tibi cùm benefeceris
20 ei. Introibit uſq; in progenies
patrum ſuorum: & uſque in æternum
21 non videbit lumen. Homo, cùm
in honore eſſet, non intellexit: comparatus
eſt jumentis inſipientibus, &
ſimilis factus eſt illis.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

1 (α) Εἰς τὸ τέλος, τοῖς υἱοῖς Κορὲ ψαλμός. μη΄.

2 † Ἀκούσατε ταῦτα πάντα τὰ ἔθνη, † ἐνωτίσασθε
πάντες οἱ κατοικοῦντες τὴν οἰκουμένην,
3 † Οἵ τε γηγενεῖς καὶ οἱ υἱοὶ τῶν ἀνθρώπων, † ἐπὶ
4 τὸ αὐτὸ πλούσιος καὶ πένης. † Τὸ στόμα μου λαλήσει
σοφίαν, † καὶ ἡ μελέτη τῆς καρδίας μου σύνεσιν.
5 † Κλινῶ εἰς παραβολὴν τὸ οὖς μου, † ἀνοίξω ἐν
6 ψαλτηρίῳ τὸ πρόβλημά μου. † Ἱνατί φοβοῦμαι
ἐν ἡμέρᾳ πονηρᾷ; † ἡ ἀνομία τῆς πτέρνης μου κυκλώσει
7 με. † Οἱ πεποιθότες ἐπὶ τῇ δυνάμει αὐτῶν,
† καὶ ἐπὶ τῷ πλήθει τοῦ πλούτου αὐτῶν καυχώμενοι.
8 † Ἀδελφὸς οὐ (β) λυτροῦται, λυτρώσεται ἄνθρωπος;
† οὐ δώσει τῷ θεῷ ἐξίλασμα (γ) ἑαυτοῦ,
9 † Καὶ τὴν τιμὴν τῆς λυτρώσεως τῆς ψυχῆς
10 αὐτοῦ. † καὶ ἐκοπίασεν εἰς τὸν αἰῶνα, Καὶ ζήσεται
11 εἰς τέλος. † Ὅτι οὐκ ὄψεται καταφθορὰν,
ὅταν ἴδῃ σοφοὺς ἀποθνήσκοντας, † ἐπὶ τὸ αὐτὸ ἄφρων
καὶ ἄνους ἀπολοῦνται, † καὶ καταλείψουσιν ἀλλοτρίοις
12 τὸν πλοῦτον αὐτῶν. † Καὶ οἱ τάφοι αὐτῶν
οἰκίαι αὐτῶν εἰς τὸν αἰῶνα, † σκηνώματα αὐτῶν
εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν, † ἐπεκαλέσαντο τὰ ὀνόματα
13 αὐτῶν ἐπὶ τῶν γαιῶν αὐτῶν. † Καὶ ἄνθρωπος
ἐν τιμῇ ὢν, οὐ συνῆκε, † παρασυνεβλήθη
τοῖς κτήνεσι τοῖς ἀνοήτοις, καὶ ὡμοιώθη αὐτοῖς.
14 † Αὕτη ἡ ὁδὸς αὐτῶν σκάνδαλον αὐτοῖς,
† καὶ μετὰ ταῦτα ἐν τῷ στόματι αὐτῶν (δ) εὐλογήσουσιν.
15 ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Ὡς πρόβατα ἐν ᾅδῃ
ἔθεντο, † θάνατος ποιμανεῖ αὐτούς· † καὶ (ε) κατακυριεύσουσιν
αὐτῶν οἱ εὐθεῖς τὸ πρωΐ, † καὶ ἡ βοήθεια
αὐτῶν παλαιωθήσεται ἐν τῷ ᾅδῃ † ἐκ τῆς
16 δόξης αὐτῶν (ζ). † Πλὴν ὁ θεὸς λυτρώσεται
τὴν ψυχήν μου ἐκ χειρὸς ᾅδου, ὅταν λαμβάνῃ
17 (ι) με. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Μὴ φοβοῦ ὅταν πλουτήσῃ
ἄνθρωπος, † (η) καὶ ὅταν πληθυνθῇ ἡ δόξα τοῦ οἴκου
18 αὐτοῦ. † Ὅτι οὐκ ἐν τῷ ἀποθνήσκειν αὐτὸν λήψεται
τὰ πάντα, † οὐδὲ συγκαταβήσεται αὐτῷ ἡ δόξα
19 αὐτοῦ. † Ὅτι ἡ ψυχὴ αὐτοῦ ἐν τῇ ζωῇ αὐτοῦ εὐλογηθήσεται,
† ἐξομολογήσεταί σοι ὅταν ἀγαθύνῃς
20 αὐτῷ. † Εἰσελεύσεται ἕως γενεᾶς πατέρων αὐτοῦ,
21 † ἕως αἰῶνος οὐκ ὄψεται φῶς. † (θ) Ἄνθρωπος
ἐν τιμῇ ὢν, οὐ συνῆκε, † παρασυνεβλήθη τοῖς
κτήνεσι τοῖς ἀνοήτοις, καὶ ὡμοιώθη αὐτοῖς.

MS.A. (α) Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. μη΄. (β) λυτρῶται, (γ) αὐτοῦ, (δ) εὐδοκήσουσιν. (ε) κατακυριεύουσιν (ζ) ἐξώσθησαν. Πλὴν (ι) με. Μὴ φοβοῦ ὅταν πλουτήσει (η) ἢ ὅταν (θ) Καὶ ἄνθρωπος

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopica, Tranſl. LAT.

In finem, filiis Core [a] Pſalmus. XLVIII. 1

1 *Audite (a) hæc omnes gentes:* 2
auribus percipite [b] omnes
qui habitatis (b) orbem. 2 Quique 3
(c) terrigenæ, & filii hominum; in
(d) unum dives, & pauper. 3 Os 4
meum loquetur ſapientiam, & meditatio
cordis mei (e) intelligentiam.
4 Inclinabo in (f) parabolam aurem 5
meam; aperiam in pſalterio (g) propoſitionem
meam. 5 Cur (h) timebo in 6
die (i) mala? iniquitas (k) calcanei
mei circumdabit me. 6 Qui confidunt 7
in virtute ſua, & in multitudine divitiarum
ſuarũ (l) gloriantur. 7 Frater 8
non redimit [c]; redimet homo?
non dabit Deo propitiationem ſuam,
8 [d] Et pretium redemptionis animæ 9
ſuæ: (m) & laboravit in æternum, Et 10
vivet in finem. 9 Quoniam non videbit 11
interitum; cùm viderit ſapientes
*morientes: 10 *Simul [e] inſipiens,*
et ſtultus peribunt. Et relinquent
alienis divitias ſuas: 11 Et (n) ſepulchra 12
eorum, domus eorum in æternum,
(o) tabernacula eorum in progeniem,
& progeniem, invocaverunt
nomina ſua [f] in terris ſuis. 12 Et 13
homo cùm in honore eſſet, non intellexit:
comparatus eſt jumentis [g] inſipientibus,
& ſimilis factus eſt illis.
13 [h] Hæc via illorum (p) ſcandalum 14
ipſis, & poſteà in ore ſuo (q) [i]
benedicet. DIAPSALMA. 14 (r) Sicut 15
oves [k] in inferno poſiti ſũt: mors
paſcet eos. 15 Et (ſ) dominabuntur
eis recti mané: & (t) auxilium eorum
veteraſcet in inferno à (u) gloria
eorum. 16 Veruntamen Deus redimet 16
animam meam de manu inferni,
cùm acceperit (x) me. DIAPSALMA.
17 Ne timueris, cùm dives 17
factus fuerit homo, & cùm (y)
multiplicata fuerit gloria domûs ejus.
18 (z) Quoniam non cùm morietur, 18
[l] ſumet omnia: neque deſcendet
cum eo [m] gloria ejus. 19 Quoniam 19
anima ejus in vita ipſius [n] benedicetur:
(aa) confitebitur tibi, [o]
cùm benefeceris ei. 20 Introibit (aa) 20
uſque in progenies patrum ſuorum:
[p] uſque in æternum non (bb) videbit
lumen. 21 Homo, cùm in honore 21
eſſet, non intellexit: comparatus eſt
jumentis inſipientibus: & ſimilis factus
eſt illis.

Verſio ÆTHIOPICA.

ፍጻሜ፡ዘደቂቀ፡ቆሬ፡መዝሙር፡
ዘዳዊት፡፡

ሠጀ ስምዑ፡ ዘንተ፡ ኵልክሙ፡ አሕዛብ፡፡ 1
ወአጽምኡ፡ ኵልክሙ፡ እለ፡ ትነብሩ፡ውስ
ተ፡ ዓለም፡፡=፡ በበ፡ በሐውርቲክሙ፡ደ 2
ቂቀ፡ እጓለ፡ እመሕያው፡፡ አብዕልትኒ፡ወነ
ደይኒ፡፡=፡ አፉየ፡ ይነግር፡ ጥበበ፡፡ወሕሊ 3
ና፡ልብየ፡ ምክረ፡፡=፡ አጸምእ፡ ምሳሌ፡ 4
በእዝንየ፡፡ ወእከሥት፡ በመዝሙር፡ ነገር
የ፡፡=፡ ለምንት፡ እፈርህ፡ እምዕለት፡እ 5
ኪት፡፡ኃጢአት፡ሰኰናየ፡አገተኒ፡፡=፡ እለ፡ 6
ይትአመኑ፡ በኃይሎሙ፡፡ወይዜሀሩ፡ በብዝ
ኃ፡ብዕሎሙ፡፡=፡ እኁኒ፡ ኢያድኅን፡ እኁ 7
ሁ፡ ወኢያድኅን፡ ሰብእ፡፡ወኢይሁብ፡ ለ
እግዚአብሔር፡ቤዛሁ፡፡=፡ ወኢይተውለ 8
ጠ፡ ሤጠ፡ ነፍሱ፡፡ዘጻመወ፡ በዓለም፡ የሐ
ዩ፡ለዝሉፉ፡፡=፡ እስመ፡ኢይሬኢ፡ሙስና፡፡ 9
ሶበ፡ትሬእዮሙ፡ ለጠቢባን፡ ይመውቱ፡፡=፡ 10
ወክማሁ፡ ይትሐጐሉ፡ አብደን፡ እለ፡ አል
ቦሙ፡ ልበ፡፡ ወየኀድጉ፡ ለባዕድ፡ ብዕሎ
ሙ፡፡=፡ ወመቃብሪሆሙ፡ ወአብያቲሆሙ፡ 11
ለዓለም፡፡ወማኅደሪሆሙ፡ለትውልደ፡ትው
ልድ፡፡ወይሰመዩ፡ አስማቲሆሙ፡ በበ፡ በሐ
ውርቲሆሙ፡፡=፡ ወሰብእሰ፡እንዘ፡ክቡር፡ 12
ውእቱ፡ ኢያእመረ፡፡ወኮነ፡ ከመ፡ እንስሳ፡ዘ
አልቦ፡ ልበ፡ ወተመሰሎሙ፡፡=፡ ወለሊሃ፡ፍ 13
ኖቶሙ፡ ወዕቅፍቶሙ፡፡ወእንዘ፡ ይሠምሩ፡
በአፉሆሙ፡፡=፡ ከመ፡ አባግዕ፡ ሞት፡ይሬ 14
እዮሙ፡ በሲኦል፡፡=፡ ወይቀንዮሙ፡ ራት 15
ዓን፡ በጽባሕ፡፡ወትበሊ፡ ረድኤቶሙ፡ በሲኦ
ል፡ እምክብሮሙ፡፡=፡ ወባሕቱ፡ እግዚአ 16
ብሔር፡ ያድኅና፡ ለነፍስየ፡ እምእደ፡ ሲኦ
ል፡ሶበ፡ ይነሥኤኒ፡፡=፡ ኢትፍርሆ፡ ለሰብ 17
እ፡ሶበ፡ ይብዕል፡፡ወሶበ፡ ይበዝኅ፡ ክብረ፡ቤ
ቱ፡፡=፡ እስመ፡ ኢይነሥእ፡ምስሌሁ፡ኵ 18
ሎ፡አመ፡ ይመውት፡፡ወኢይወርድ፡ ምስሌ
ሁ፡ክብረ፡ ቤቱ፡፡=፡ እስመ፡ ፈግዐት፡ነፍ 19
ሱ፡ በሕይወቱ፡፡የአምነከ፡ ሰብእ፡ ሶበ፡ታ
ሤኒ፡ሎቱ፡፡=፡ ወይወርድ፡ውስተ፡ዓለም፡ 20
አበዊሁ፡፡ወኢይሬኢ፡ እንከ፡ብርሃነ፡እስከ፡
ለዓለም፡፡=፡ ወእጓለ፡ እመሕያውሰ፡እን 21
ዘ፡ክቡር፡ውእቱ፡ ኢያእመረ፡፡ወኮነ፡ከመ፡
እንስሳ፡ዘአልቦ፡ልበ፡ ወተመሰሎሙ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. *PSAL. XLVIII.* [a] Pſalmus Davidis. [b] vos omnes qui habitatis in orbe. [c] fratrem ejus ; nec redimet [d] Nec commutabitur pretium redemptionis animæ ſuæ: qui laboravit [e] ſtulti, & excordes [f] ſinguli in terris [g] quibus non eſt cor, [h] Iſta ipſa via [i] complacebunt. [k] mors depaſcet eos in inferno. [l] ſecum ſumet [m] gloria domûs ejus. [n] delitiis affluet: [o] tantiſper dum benefeceris [p] ac proinde uſque

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 *المزمور الثامن والاربعون * لبني قورح * وعدده * م * استيكن *

2 3 *اسمعوا هذا يا جميع الامم * انصتوا يا جميع سكان الارض * اولاد الارض وابناء البشر * الاغنياء
4 5 والفقراء جميعا * فمي ينطق بحكمة * وتلاوة قلبي بفهم * انصت الي المثل بسمعي * واستفتح
6 7 فاتحة كلامي بالمزمار * لماذا اخاف في اليوم السوء * اذا احاط بي اعداءي * الواثقون بقوتهم
8 9 المفتخرون بكثرة غناهم * اخ لن يفتدي * ايفتدي انسان * ولا يعطي الله له خلاصا * ولا
10 11 ثمن خلاص نفسه * تعب الي الابد * ويحيا الي الانقضاء * لانه لا يري الهلاك * اذا يري حكماء
12 يموتون * جاهل وغبي فهم يهلكان معا * يتركون غناهم لاخرين * وقبورهم تصير لهم بيوتا الي
13 الابد * ومساكنهم من جيل الي جيل * دعوا باسمائهم على ارضيهم * انسان في كرامة ولا يعرفها *
14 اشبه البهايم التي لا تعلم وماثلها * هذه صارت عثرة لهم * وبعد هذا بافواههم يباركون *
15 * تركوا مثل غنم في الجحيم * والموت هو الذي يرعاهم * ويتسلط عليهم المستقيمون غدوه *
16 معونتهم تبلي في الجحيم * ومن مجدهم يسقطون * بل الله يخلص نفسي من ايدي
17 18 الجحيم * اذا اخذها * لا تخف اذا كان الرجل مستغنيا * ولا اذا كثر مجد بيته * فانه لا ينال
19 عند موته شيا * ولا ينزل معه الي الجحيم ما اقتني * لان نفسه في حياته تبارك * يشكرك اذا
20 21 صنعت له الخير * ويبلغ من اعمار اباية الي الغاية * ولا يعاين النور الي الابد * انسان في
كرامة ولا يفهمها * اشبه البهايم التي لا تعلم وماثلها * اللليلويا *

PSAL. XLVIII.
Filiis Choræ. Et num. verſ. 40. 1

Audite hoc, O omnes gentes: auſcultate, 2
O omnes habitatores terræ: Nati 3
terræ & filii hominum, divites ac pauperes
ſimul. Os meum loquetur ſapienter, 4
& meditatio cordis mei prudenter. Ad- 5
movebo proverbio auditum meum, & aggrediar
exordium ſermonis mei cum pſalterio.
Cur timebo in die malo cùm cir- 6
cumdederint me inimici mei? Confiden- 7
tes in virtute ſua, gloriantes in copia divitiarũ
ſuarũ? Frater haudquaquã redimet, 8
num redimet homo? neque dabit Deus illi
ſalutem. Neque pretium ſalutis animæ e- 9
jus. Laboravit in ſeculum, Et vivet in 10
finem: quia non videbit exitium. Quando 11
videbit ſapientes mori. Stultus & expers
mentis peribunt ſimul. Relinquent divitias
ſuas aliis, Et ſepulchra eorum fient ipſis 12
domicilia in æternum, & habitationes eorum
à progenie in progeniem. Vocaverunt
nominibus ſuis terras ſuas. Homo qui in 13
honore eſt nec percipit eum, ſimilis eſt jumentis
irrationabilibus, & par illis. Hoc 14
factum eſt ſcandalum ipſis, & poſt hoc
oribus ſuis benedicunt. Poſiti ſunt velut 15
oves in inferno, & mors eſt quæ paſcetur
eis; & dominabuntur eis recti in matutino:
auxilium eorum emarcuit in inferis,
& è gloria ſua decident. Verùm Deus 16
liberabit animam meam de manibus inferni
quum ſuſceperit eam. Ne timeas quan- 17
do homo fuerit dives, neque quando aucta
fuerit gloria domûs ejus. Non enim obti- 18
nebit in morte ſua rerũ ullam, neque deſcendet
cum eo ad inferos quod poſſedit.
Quia anima ejus in vita ejus benedicit, 19
gratias agit tibi quando confers illi beneficium.
Et attinget ætates patrum ſuorum 20
ad ſummum: at non videbit lumen in
æternum. Homo qui in honore eſt nec 21
percipit eum, ſimilis factus eſt jumentis
quæ non ſapiunt, & exæquatus eſt eis.
Allelujah.

;terram advocavit &,est locutꝰ Dominꝰ *Deus* *Fortis* ·Asaph ipsi Cantus
1 מִזְמוֹר לְאָסָף אֵל ׀ אֱלֹהִים יְהוָה דִּבֶּר וַיִּקְרָא־אָרֶץ
Deus decoris *universitate* Sijon Ex.ejꝰ *ingressum* ad usq; Solis ortu ab
2 מִמִּזְרַח־שֶׁמֶשׁ עַד־מְבֹאוֹ׃ מִצִּיּוֹן מִכְלַל־יֹפִי אֱלֹהִים
: *peredet ejus facies ad* ignis,silebit non & , noster Deus Veniet .effulsit
3 הוֹפִיעַ׃ יָבֹא אֱלֹהֵינוּ וְאַל־יֶחֱרַשׁ אֵשׁ־לְפָנָיו תֹּאכֵל
cœlos ad Advocabit.vehementer est excitata tempestas ejꝰ circuitu &
4 וּסְבִיבָיו נִשְׂעֲרָה מְאֹד׃ יִקְרָא אֶל־הַשָּׁמַיִם
:meos *pios* mihi Congregate.suũ populũ *judicandũ ad*,terram ad & : desuper
5 מֵעָל וְאֶל־הָאָרֶץ לָדִין עַמּוֹ׃ אִסְפוּ־לִי חֲסִידָי
: ejus justitiam cœli *indicabunt* Et .sacrificium super meum pactum *ferientes*
6 כֹּרְתֵי בְרִיתִי עֲלֵי־זָבַח׃ וַיַּגִּידוּ שָׁמַיִם צִדְקוֹ
; loquar & ,mi populus Audi .Selah , *ipse* judex Deus quod
7 כִּי־אֱלֹהִים ׀ שֹׁפֵט הוּא סֶלָה׃ שִׁמְעָה עַמִּי וַאֲדַבֵּרָה
super Non .ego tuus Deus Deus : te *in* faciam testificari & , Israel
8 יִשְׂרָאֵל וְאָעִידָה בָּךְ אֱלֹהִים אֱלֹהֶיךָ אָנֹכִי׃ לֹא עַל־
accipiam Non .semper me coram *tuæ ascensiones &* :te arguam tua sacrificia
9 זְבָחֶיךָ אוֹכִיחֶךָ וְעוֹלֹתֶיךָ לְנֶגְדִּי תָמִיד׃ לֹא־אֶקַּח
omnis mihi Quoniam .hircos tuis septis de :juvencum tua domo è
10 מִבֵּיתְךָ פָר מִמִּכְלְאֹתֶיךָ עַתּוּדִים׃ כִּי־לִי כָל־
volatile omne Cognovi .mille montibus in animalia : sylvæ bestia
11 חַיְתוֹ־יָעַר בְּהֵמוֹת בְּהַרְרֵי־אָלֶף׃ יָדַעְתִּי כָּל־עוֹף
quia ; tibi dicam non ,esuriero Si .*me apud* agri fera & ; montium
12 הָרִים וְזִיז שָׂדַי עִמָּדִי׃ אִם־אֶרְעַב לֹא־אֹמַר לָךְ כִּי־
; *fortium* carnem comedam Nunquid .ejus plenitudo & , orbis *mihi*
13 לִי תֵבֵל וּמְלֹאָהּ׃ הַאוֹכַל בְּשַׂר אַבִּירִים
redde & : *confessionem* Deo Immola ?bibam hircorum sanguinem &
14 וְדַם עַתּוּדִים אֶשְׁתֶּה׃ זְבַח לֵאלֹהִים תּוֹדָה וְשַׁלֵּם
, te eruam : angustiæ die in me invoca Et .tua vota altissimo
15 לְעֶלְיוֹן נְדָרֶיךָ׃ וּקְרָאֵנִי בְּיוֹם צָרָה אֲחַלֶּצְךָ
narrandum ad ,tibi Quid : Deus dixit impio Et .me honorificabis &
16 וּתְכַבְּדֵנִי׃ וְלָרָשָׁע ׀ אָמַר אֱלֹהִים מַה־לְּךָ לְסַפֵּר
odisti tu Et ? tuo ore *super* meum pactum assumas & : mea statuta
17 חֻקָּי וַתִּשָּׂא בְרִיתִי עֲלֵי־פִיךָ׃ וְאַתָּה שָׂנֵאתָ
, furem videbas Si .te post mea verba projecisti & , disciplinam
18 מוּסָר וַתַּשְׁלֵךְ דְּבָרַי אַחֲרֶיךָ׃ אִם־רָאִיתָ גַנָּב
mittebas tuum Os .tua portio adulteris cum & ;eo cum *complacebas &*
19 וַתִּרֶץ עִמּוֹ וְעִם מְנָאֲפִים חֶלְקֶךָ׃ פִּיךָ שָׁלַחְתָּ
tuum fratrem *in* ,Sedebas .dolum concinnabat tua lingua & ; malum in
20 בְרָעָה וּלְשׁוֹנְךָ תַּצְמִיד מִרְמָה׃ תֵּשֵׁב בְּאָחִיךָ
, fecisti Hæc .probrum dabas tuæ matris filium *in* : loquebaris
21 תְדַבֵּר בְּבֶן־אִמְּךָ תִּתֶּן־דֹּפִי׃ אֵלֶּה עָשִׂיתָ ׀
ordinabo & , te arguam : tu sicut essem essendo existimâsti , tacui &
וְהֶחֱרַשְׁתִּי דִּמִּיתָ הֱיוֹת־אֶהְיֶה כָמוֹךָ אוֹכִיחֲךָ וְאֶעֶרְכָה
, rapiam fortè ne ; Dei *obliviosi* hoc *nunc* Intelligite .tuis oculis in
22 לְעֵינֶיךָ׃ בִּינוּ־נָא זֹאת שֹׁכְחֵי אֱלוֹהַּ פֶּן־אֶטְרֹף
ponenti & ,me honorificabit ,confessionem *Sacrificans* .*eruens* non &
23 וְאֵין מַצִּיל׃ זֹבֵחַ תּוֹדָה יְכַבְּדָנְנִי וְשָׂם
.Dei salutem *in* *eum faciam videre* ,viam
דֶּרֶךְ אַרְאֶנּוּ בְּיֵשַׁע אֱלֹהִים׃

תרגום TARGUM.

1 תושבחתא על ידוי דאסף תקיפא אלהא יי מלל מן
בראשית שירתא וגזר למעבד ארעא ממדנח שמשא
2 עד מעלניה: ושרוי בריית עלמא מציון ומן תמן גמיר
3 שופריה אלהא יתגלי: יימרון צדיקיא ביום דינא רבא
ייתי אלהנא ולא ישתוק למעבד פורענות עמיה אשתא
קדמוי תצלהב וחזור חזור ליה תעוף עלעולא לחדא:
4 יקרא לאנגלי מרומא מלעיל ולצדיקי ארעא מלרע
5 למפתח דין על עמיה: כנושו לותי חסידי די גזרו קימי
וקימו אורייתי ואתעסקו בצלותא דאמתילא לקורבנא:
6 ויתנון אנגלי מרומא זכותיה ארום אלהא דיינא הוא
7 לעלמא: שמע עמי ואמלל ישראל ואסהד בך אלהא
8 אלהך אנא: לא מטול דבחך דלא קרבתא קדמי
בגלותא אנא מוכח לך ארום עלותך דקריבו אבהתך
9 לקבלי תדירא: לא קבלית מן אידך תורא מן עדרך
10 ברחי: ארום דילי כל חיות חורשא [ועתדת לצדיקיא
בגן עדן] בעיריא דכין [ותור בר דרעי בכל יומא]
11 בטורין אלפא: גלין קדמי כל מיני עופא דפרחין באויר
שמיא ותרנגול ברא [דקרצולי שרין בארעא ורישיה
12 מטי בשמיא] מרנן קדמי: אין ימטי זמן קרבנא תדירא
דקריצתא לא אימר לך ארום דילי ארעא ומליתה:
13 לא קבלית בשר נכסת פטמיא ודמא דברחי לא זריקו
14 כהניא קדמי: כבוש יצרא בישא ויתחשב קדם יי
15 כנכסת תודתא ושלם לעלאה נדריך: וצלי קדמי ביומא
16 דעקתא אשזבנך ארום תיקרנני: ולרשיעא דלא עבד
תתובא ומצלי במרודא אמר יי מה לך למשתעי קימי
17 ותימי בשמי ותדכר קימי עלי פומך: ואנת סניתא
18 מכסנותא דחכימיא וטלקתא פתגמי בתרך: אין
חמיתא גנבא ורהטתא בתרוי ועם גיופי שויתא
19 חולקך: פומך שלחתא למשתעי לישנא בישא ולישנך
20 מרבקא למללא נכלא: תתיב באחוך תמלל כדבותא
21 בבר אמך תשוי דפיא: אלין עובדין בישין עבדתא
ואורכית דתתוב חשבתא למהוי עד עלמין שלים
אמרת בלבבך אהוי תקיף הי כמך אוכחנך בעלמא
22 הדין ואסדר דין גהנם בעלמא דאתי קדמך: אתבוננו
כדון דא רשיעיא דשלין אלהא דלמא אתבר תוקפכון
ולית משיב:
23 דדבח יצרא בישא היך קורבן תודתא יתחשב ליה ומוקיר לי ודי יעדי אורחא בישא אחמי ליה בפורקנא דיי:

PARAPH. CHALD. Vers. Lat.

PSAL. L. Hymnus per manum Asaph. 1
FOrtis Deus Dñs locutꝰ est à principio *canticũ: & decrevit*, ut faceret terram, ab Ori-
ente Solis, usq; ad Occasum ejus. Et initium 2
creationis seculi de Sion: & inde perfecta est
pulchritudo ejus; Deus apparuit. Dicent justi 3
in die judicii magni : Veniet Deus noster, &
non silebit ut faciat ultionem populi sui: ignis
coram eo inflammabit, & in circuitu ejus suf-
flabit turbo vehementer. Advocabit angelos 4
excelsos supernè, & justos terræ infernè, ut
diffundat judicium super populũ suum. Con- 5
gregate mihi sanctos meos, qui pepigerunt
pactum *meum*, & firmaverunt legem *meam*, &
operam navarunt orationi, quæ similis est *oblationi*.
Narrabunt autem angeli excelsi puri- 6
tatem ejus; quia Deus judex est in seculum.
Audi populé mi, & loquar; Israel, & testifi- 7
cabor tibi; Deus Deꝰ tuus ego sum. Non pro- 8
pter sacrificia tua, quæ non sacrificâsti mihi
in captivitate, *ego* corripiam te; quia holo-
caustomata *tua*, quæ obtulerunt patres tui, co-
ram me sunt jugiter. Non accepi de manu tua 9
boves, nec de gregibꝰ tuis hircos. Quoniam 10
mea est omnis fera sylvæ, & præparavi justis
in horto delitiarũ animalia munda & bovem
sylvestrem pascentem quotidie in montibus
mille. Notæ sunt in conspectu meo cunctæ spe- 11
cies avium, quæ volant in aëre cœlorum, &
gallꝰ sylvestris *cujꝰ pedes stant in terra, & caput ejus attingit cœlum*,
cantat coram me. Si 12
venerit tempꝰ oblationis perpetuæ *matutinæ*,
non dicam tibi; quoniã mea est terra & ple-
nitudo ejꝰ. Non accepi carnem immolationis 13
pinguium, & sanguinem hircorum non fude-
runt sacerdotes coram me. Reprime concu- 14
piscentiã pravam, & reputabitur coram Dño,
sicut sacrificium confessionis: & redde Altis-
simo vota tua. Et ora corã me; in die afflictio- 15
nis liberabo te, ut honoré exhibeas mihi. Im- 16
pio auté qui non agit pœnitentiam, & orat in
prævaricatione, dixit Deꝰ, Quid tibi ut enarres
præcepta mea, & jures in nomine meo, assu-
masq; fœdꝰ meum in ore tuo? Cùm tu oderis 17
castigationem sapientium, & projeceris verba
mea post te. Si quando vidisti furẽ, tum cucur- 18
risti post eũ, & cum scortatoribꝰ posuisti par-
tem tuã. Os tuum disposuisti ut loquatur lin- 19
gua *mala*: & lingua tua sese applicat ad lo-
quendũ dolum. *Sedebis* contra fratré tuum; lo- 20
quêris mendaciũ: in filium matris tuæ pones
opprobriũ. Has operationes malas operatꝰ es: 21
ego verò expectavi quò te converteres: existi-
mâsti permãsurũ te in æternũ *incolumẽ*: dixisti
in corde tuo, Ero *fortis sicut tu*; arguam te in
hoc mundo, & ordinabo judi-
cium gehennæ in mundo futuro
coram te. Intelligite quæso hæc impii qui obliviscimini Dei, ne fortè conteram fortitudinem vestram, & non sit qui eripiat. Qui mactaverit fomitem pravum, velut 22
oblatio confessionis imputabitur ei : & honoranti me, & ei qui dissipaverit viam pravam, ostendam redemptionem *Domini*. 23

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 * ܡܙܡܘܪܐ ܕܢ̄ * ܡܐܡܪܐ ܕܐܣܦ ܢܒܝܐ. ܡܛܠ ܕܒܚܐ ܢܡܘܣܝܐ ܕܕܝܬܩܐ ܕܡܘܫܐ
ܘܡܛܠ ܫܘܠܡܐ ܕܝܠܗܘܢ. ܘܠܢ ܡܙܗܪ ܠܢ ܕܐܢܗܘ ܠܐ ܢܥܒܕ ܦܘܩܕܢܘܗܝ:
ܢܗܘܐ ܠܗ ܡܣܠܝܐ ܡܛܠ ܕܡܒܣܪܝܢ ܚܢܢ ܠܟܬܒܐ ܪܘܚܢܝܐ. ܦܬܓܡܐ ܡ.
ܐܠܗܐ ܕܐܠܗܐ ܡܪܝܐ ܡܠܠ. ܘܩܪܐ ܠܐܪܥܐ ܡܢ ܡܕܢܚܝ ܫܡܫܐ ܥܕܡܐ ܠܡܥܪܒܝܗ:
2 3 * ܡܢ ܨܗܝܘܢ ܟܠܝܠܐ ܡܫܒܚܐ ܐܠܗܐ ܐܬܚܙܝ. * ܢܐܬܐ ܐܠܗܐ ܘܠܐ ܢܫܬܘܩ: ܘܢܘܪܐ ܬܐܟܘܠ
4 ܩܕܡܘܗܝ. ܘܚܕܪܘܗܝ ܬܬܝܩܕ ܛܒ. * ܢܩܪܐ ܠܫܡܝܐ ܡܢ ܠܥܠ. ܘܠܐܪܥܐ ܠܡܕܢ ܥܡܗ:
5 6 * ܟܢܫܘ ܠܗ ܓܒܝܘܗܝ ܕܩܝܡܝܢ ܩܝܡܗ ܥܠ ܕܒܚܐ: * ܢܚܘܘܢ ܫܡܝܐ ܙܕܝܩܘܬܗ.
7 ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܗܘ ܕܝܢܐ: * ܘܢܩܫ * ܫܡܥ ܥܡܝ ܘܐܡܠܠ ܠܟ. ܘܐܣܗܕ ܒܟ ܐܝܣܪܝܠ:
8 ܐܢܐ ܐܢܐ ܐܠܗܐ ܐܠܗܟ. * ܠܐ ܗܘܐ ܥܠ ܕܒܚܝܟ ܐܟܣܟ: ܘܥܠܘܬܟ ܩܕܡܝ ܐܢܝܢ ܒܟܠܙܒܢ.
9 10 * ܠܐ ܐܣܒ ܡܢ ܒܝܬܟ ܬܘܪܐ: ܘܠܐ ܡܢ ܓܙܪܝܟ ܬܝܫܐ. * ܡܛܠ ܕܕܝܠܝ ܗܝ ܟܠܗ ܚܝܘܬܐ ܕܕܒܪܐ:
11 12 ܘܒܥܝܪܐ ܕܒܛܘܪܐ ܘܬܘܪܐ. * ܝܕܥ ܐܢܐ ܟܠܗ ܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ: ܘܚܝܘܬܐ ܕܚܩܠܐ ܕܝܠܝ ܗܝ. * ܐܢ ܐܟܦܢ
13 ܐܢܐ ܠܐ ܐܡܪ ܠܟ: ܡܛܠ ܕܕܝܠܝ ܗܝ ܬܒܝܠ ܒܡܠܝܗ. * ܠܐ ܐܟܠ ܐܢܐ ܒܣܪܐ ܕܬܘܪܐ: ܘܕܡܐ ܕܬܝܫܐ ܠܐ
14 15 ܐܫܬܐ ܐܢܐ. * ܕܒܚ ܠܐܠܗܐ ܬܘܕܝܬܐ: ܘܫܠܡ ܠܡܪܝܡܐ ܢܕܪܝܟ. * ܘܩܪܝܢܝ ܒܝܘܡܐ ܕܐܘܠܨܢܐ:
16 ܐܚܠܨܟ ܘܬܫܒܚܢܢܝ. * ܘܢܩܫ * ܠܚܛܝܐ ܐܡܪ ܠܗ ܐܠܗܐ: ܡܢܐ ܠܟ ܘܠܟܬܒܐ ܕܦܘܩܕܢܝ.
17 18 ܕܬܡܠܠ ܩܝܡܝ ܒܦܘܡܟ: * ܐܢܬ ܕܝܢ ܣܢܝܬ ܡܪܕܘܬܝ. ܘܫܕܝܬ ܡܠܝ ܠܒܣܬܪܟ: * ܐܢ ܚܙܝܬ
19 ܓܢܒܐ ܪܗܛ ܗܘܝܬ ܥܡܗ. ܘܥܡ ܓܝܪܐ ܡܢܬܟ ܣܐܡ ܗܘܝܬ: * ܦܘܡܟ ܡܡܠܠ
20 ܗܘܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܠܫܢܟ ܡܡܠܠ ܗܘܐ ܢܟܠܐ: * ܝܬܒ ܗܘܝܬ ܘܪܢܐ ܗܘܝܬ ܒܐܚܘܟ. ܘܒܒܪ ܐܡܟ ܡܡܝܩ
21 ܗܘܝܬ: * ܗܠܝܢ ܥܒܕܬ ܘܫܬܩܬ ܠܟ. ܣܒܪܬ ܥܘܠܐ ܕܐܗܘܐ ܐܝܟ ܕܠܟ: ܐܟܣܟ ܕܝܢ
22 ܘܐܣܕܪ ܩܕܡ ܥܝܢܝܟ. * ܐܣܬܟܠܘ ܗܕܐ ܛܥܝܝ ܐܠܗܐ: ܕܠܡܐ ܢܬܒܪܟܘܢ. ܘܠܝܬ
23 ܕܡܦܨܐ. * ܐܝܢܐ ܕܕܒܚ ܬܘܕܝܬܐ ܗܘ ܢܫܒܚܢܢܝ: ܘܬܡܢ ܐܚܘܝܘܗܝ ܐܘܪܚܐ ܕܦܘܪܩܢܗ.

PSAL. L.

Dictus ab Asaph propheta de sacrificiis le- 1
galibus testamenti Mosis, deque cessatione eo-
rum. Nos verò commonet, quòd nisi exequa-
mur ejus mandata, erimus ei abominandi, eò
quòd negligamus libros spirituales. Vers.40.

DEus deorũ Dominus locutus est, & vo-
cavit terram ab ortũ solis usque ad oc-
casum ejus. De Sion coronâ gloriosâ, Deus 2
ostendit. Veniet Deus & non silebit, & ignis 3
devorabit ante illũ, & circa ipsum inflamma-
bitur valdé. Vocabit cœlum desuper, & ter- 4
ram, ad judicandũ populum suum. Congre- 5
gamini ad eum electi ejus, qui initis fœdus ejꝰ
de sacrificio. Patefacient cœli justitiam ejus, 6
quoniam Deus est judex. * *Diapsalma*. *
Audi popule mi, & dicam tibi, & Israel te 7
contestabor. Ego sum Deus, Deus tuus : Non 8
de sacrificis tuis reprehendã te, & hostiæ tuæ
in conspectu meo sunt omni tempore. Non 9
accipiam de domo tua tauros, neque de grege
tuo hœdos. Siquidem meum est omne animal 10
deserti, & bellua quæ est in montibus, ac bo-
ves. Agnosco omne volatile cœli, & bestia 11
campi mea est. Si esuriã, non dicam tibi: nam 12
meus est orbis cum plenitudine ejus. Non 13
comedo carnem juvencorum, & sanguinem
hœdorum nequaquam bibo. Sacrifica Deo 14
gratiarũ actionem, & persolve Altissimo vo-
ta tua. Et invoca me in die tribulationis, & 15
corroborabo te, & laudabis me.
* *Diapsal*. * Peccatori dicit Deus, Quid 16
tibi & libris mandatorum meorum? Gestas
enim pactum meum ore tuo : Attamen tu 17
odisti disciplinam meam, & abjecisti verba
mea post te. Si videbas furem, currebas cum 18
eo: & cum adultero partem tuã ponebas. Os 19
tuum loquebatur malignitates, & lingua tua
effabatur dolum. Sedebas & meditabaris in 20
fratrem tuum, & filium matris tuæ irridebas.
Hæc omnia fecisti, & tacui tibi. Existimâsti ô 21
inique me similem tibi fore; Arguam te verò,
atq; disponã ista corã te. Intelligite hoc qui 22
obliviscimini Deum, ne fortè frangat vos, &
non sit qui eripiat. Qui sacrificat laudem, 23
ipse glorificabit me, & illic ostendam ei viam
salutis ejus.

Verſio VULG. LAT.

1 Pſalmus Aſaph. XLIX.

DEus deorum Dominus locutus eſt: &
vocavit terram, A Solis ortu uſq; ad
2 occaſum: Ex Sion ſpecies decoris ejus.
3 Deus manifeſtè veniet: Deus noſter, &
non ſilebit. Ignis in conſpectu ejus ex-
ardeſcet: & in circuitu ejus tempeſtas va-
4 lida. Advocabit cœlum deſurſum, & ter-
5 ram diſcernere populum ſuum. Congre-
gate illi ſanctos ejus: qui ordinant
6 teſtamentum ejus ſuper ſacrificia. Et an-
nuntiabunt cœli juſtitiam ejus: quoniam
7 Deus judex eſt. Audi populus meus, &
loquar; Iſrael, & teſtificabor tibi: Deus,
8 Deus tuus ego ſum. Non in ſacrificiis tuis
arguam te: holocauſta autem tua in con-
9 ſpectu meo ſunt ſemper. Non accipiam
de domo tua vitulos, neque de gregibus
10 tuis hircos. Quoniam meæ ſunt omnes
feræ ſylvarum, jumenta in montibus &
11 boves. Cognovi omnia volatilia cœli: &
12 pulchritudo agri mecum eſt. Si eſuriero,
non dicam tibi: meus eſt enim orbis ter-
13 ræ, & plenitudo ejus. Numquid manduca-
bo carnes taurorum? aut ſanguinem hir-
14 corum potabo? Immola Deo ſacrificium
15 laudis: & redde Altiſſimo vota tua. Et in-
voca me in die tribulationis: eruam te,
16 & honorificabis me. Peccatori autem
dixit Deus; Quarè tu enarras juſtitias
meas, & aſſumis teſtamentum meum per
17 os tuum? Tu verò odiſti diſciplinam: &
18 projeciſti ſermones meos retrorſúm. Si
videbas furem, currebas cum eo: & cum
19 adulteris portionem tuam ponebas. Os
tuum abundavit malitiâ: & lingua tua
20 concinnabat dolos. Sedens adverſùs fra-
trem tuum loquebaris, & adverſùs fili-
21 um matris tuæ ponebas ſcandalum: Hæc
feciſti, & tacui. Exiſtimâſti iniquè quòd
ero tuî ſimilis: arguam te, & ſtatuam con-
22 tra faciem tuam. Intelligite hæc qui ob-
liviſcimini Deum: nequando rapiat, &
23 non ſit qui eripiat. Sacrificium laudis ho-
norificabit me, & illic iter, quo oſtendam
illi ſalutare Dei.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

1 (α) Ψαλμὸς τῷ Ἀσάφ. μθʹ.
† ΘΕὸς θεῶν κύριος ἐλάλησε, καὶ ἐκάλεσε τὴν
γῆν. † ἀπὸ ἀνατολῶν ἡλίου (β) μέχρι δυ-
2 σμῶν, † Ἐκ Σιὼν ἡ εὐπρέπεια τῆς ὡραιότητος αὐ-
3 τοῦ. † Ὁ θεὸς ἐμφανῶς ἥξει, † ὁ θεὸς ἡμῶν, καὶ οὐ
παρασιωπήσεται· † πῦρ ἐναντίον αὐτοῦ καυθήσεται,
4 † καὶ κύκλῳ αὐτοῦ καταιγὶς σφόδρα. † Προσκαλέ-
σεται τὸν οὐρανὸν ἄνω, † καὶ τὴν γῆν (γ) διακρῖναι
5 τὸν λαὸν αὐτοῦ. † Συναγάγετε αὐτῷ τοὺς ὁσίους αὐτοῦ,
† τοὺς διατιθεμένους τὴν διαθήκην αὐτοῦ ἐπὶ θυσίαις.
6 † Καὶ ἀναγγελοῦσιν οἱ οὐρανοὶ τὴν δικαιοσύνην αὐτοῦ,
7 † ὅτι θεὸς κριτής (δ) ἐστιν. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Ἄκουσον
λαός μου καὶ λαλήσω σοι, † Ἰσραήλ, καὶ διαμαρ-
8 τύρομαί σοι, † ὁ θεὸς ὁ θεός σου εἰμὶ ἐγώ. † Οὐκ
ἐπὶ ταῖς θυσίαις σου ἐλέγξω σε, † τὰ δὲ ὁλοκαυτώ-
9 ματά σου ἐνώπιόν μου ἐστὶ διαπαντός. † Οὐ δέξο-
μαι ἐκ τοῦ οἴκου σου μόσχους, † οὐδὲ ἐκ τῶν ποιμνίων σου
10 (ε) χιμάρους. † Ὅτι ἐμά ἐστι πάντα τὰ θηρία τοῦ
11 (ζ) δρυμοῦ, † κτήνη ἐν τοῖς ὄρεσι, καὶ βόες. † Ἔγνω-
κα πάντα τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ, † καὶ ὡραιότης ἀ-
12 γροῦ μετ' ἐμοῦ ἐστιν. † Ἐὰν πεινάσω, οὐ μή σοι εἴ-
πω, † ἐμὴ γάρ ἐστιν ἡ οἰκουμένη καὶ τὸ πλήρωμα αὐ-
13 τῆς. † Μὴ φάγομαι κρέα ταύρων, † ἢ αἷμα τράγων
14 πίομαι; † Θῦσον τῷ θεῷ θυσίαν αἰνέσεως, † καὶ
15 ἀπόδος τῷ ὑψίστῳ τὰς εὐχάς σου. † Καὶ ἐπικάλε-
σαί με ἐν ἡμέρᾳ (η) θλίψεως, † καὶ ἐξελοῦμαί σε,
16 καὶ δοξάσεις με. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Τῷ δὲ ἁμαρτω-
λῷ εἶπεν ὁ θεός, † Ἵνα τί σὺ (θ) διηγῇ τὰ δικαι-
ώματά μου, † καὶ ἀναλαμβάνεις τὴν διαθήκην μου διὰ
17 στόματός σου; † Σὺ δὲ ἐμίσησας παιδείαν, † καὶ (ι)
18 ἐξέβαλες τοὺς λόγους μου εἰς τὰ ὀπίσω. † Εἰ ἐθε-
ώρεις κλέπτην, συνέτρεχες αὐτῷ, † καὶ μετὰ μοιχῶν
19 τὴν μερίδα σου ἐτίθεις. † Τὸ στόμα σου ἐπλεόνασε
κακίαν, † καὶ ἡ γλῶσσά σου περιέπλεκε δολιότητα.
20 Καθήμενος κατὰ τοῦ ἀδελφοῦ σου κατελάλεις, καὶ κατὰ τοῦ
21 υἱοῦ τῆς μητρός σου ἐτίθεις σκάνδαλον. Ταῦτα ἐποίη-
σας, καὶ ἐσίγησα, ὑπέλαβες ἀνομίαν, ὅτι ἔσομαί
σοι ὅμοιος· ἐλέγξω σε, καὶ παραστήσω κατὰ πρόσω-
22 πόν σου. Σύνετε δὴ ταῦτα οἱ ἐπιλανθανόμενοι τοῦ
23 θεοῦ, μήποτε ἁρπάσῃ, καὶ μὴ ᾖ ὁ ῥυόμενος. Θυσία
αἰνέσεως δοξάσει με, καὶ ἐκεῖ ὁδὸς ᾗ δείξω αὐτῷ
τὸ σωτήριον θεοῦ.

MS.A. (α) Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. (β) καὶ μέχρι (γ) τοῦ διακρῖναι (δ) ἐστιν. Ἄκουσον (ε) χειμάρρους. (ζ) ἀγροῦ, (η) θλίψεώς σου, καὶ (θ) ἐκδιηγῇ (ι) ἐξέβαλας Deſunt in MS. A. à verſ. 19. hujus 49. Pſalmi, uſq; ad partem verſ. 12. Pſal. 79. intermedia omnia.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

[a] Pſalmus ipſi Aſaph. XLIX. 1
1 DEus (a) deorum Dominus
locutus eſt: et vocavit ter-
ram. 2 A Solis ortu, uſque ad oc-
caſum: Ex Sion ſpecies decoris e- 2
jus. 3 Deus manifeſtè veniet, De' 3
noſter, & non ſilebit. 4 Ignis in
conſpectu ejus ardebit, & in cir-
cuitu ejus (b) tempeſtas valida.
5 Advocabit cœlum ſurſum, & 4
terram diſcernere populum ſuum.
6 Congregate illi (c) ſanctos ejus, 5
qui [b] diſponunt teſtamentum e-
jus ſuper ſacrificia: 7 Et annun- 6
tiabunt cœli juſtitiam ejus, quo-
niam Deus judex eſt. DIAPSAL-
MA. 8 Audi populus meus, & 7
loquar tibi: Iſrael, et teſtificabor
tibi. Deus, Deus tuus ego ſum.
9 Non in ſacrificiis tuis arguã te: 8
holocauſta autem tua in conſpectu
meo ſunt ſemper. 10 Non acci- 9
piam de domo tua vitulos, neque
de gregib' tuis (d) hircos. 11 Quo- 10
niam meæ ſunt omnes beſtiæ (e)
ſylvæ, pecora in montibus, & bo-
ves. 12 Cognovi omnia volatilia 11
cœli: & ſpecies agri mecum eſt.
13 Si eſuriero, non [c] dicam tibi: 12
meus eſt enim [d] orbis terræ, &
plenitudo ejus. 14 Nunquid man- 13
ducabo carnes taurorum? aut ſan-
guinem hircorum potabo? 15 Im- 14
mola Deo ſacrificium laudis: &
redde Altiſſimo (f) vota tua. 26 Et 15
invoca me in die (g) [e] tribula-
tionis: & eruam te; & honori-
ficabis me. (h) DIAPSALMA.
17 Peccatori autem dixit Deus; 16
Quarè tu enarras juſtitias meas,
et aſſumis teſtamentum meum per
os tuum? 18 Tu verò odiſti [f] 17
diſciplinam, & projeciſti ſermo-
nes meos retrorſum. 19 Si vide- 18
bas furem; currebas cum eo: &
cum (i) adulteris portionem tuam
ponebas. 20 Os tuum abundavit 19
malitiâ: & lingua tua (k) con-
cinnabat doloſitatem. 21 Sedens 20
adverſùs fratrem tuum (l) loque-
baris: & adverſùs filium matris
tuæ ponebas ſcandalum. Hæc fe- 21
ciſti, & [g] tacui: 22 (m) [h]
ſuſpicatus es iniquitatem, quòd
ero tibi ſimilis. Arguam te, & (n)
ſtatuam contra faciem tuam.
23 Intelligite utique hæc [i] qui obliviſcimini Deum: ne quando (o) rapiat, & non 22
ſit, qui eripiat. 24 (p) Sacrificium laudis honorificabit me: & illîc iter, quo oſtendam 23
illi ſalutare (q) Dei.

Verſio ÆTHIOPICA.

ፍጻሜ:ዘደቂቀ:ቆሬ:መዝሙር:ዘአሳፍ::
ሠዘ አምላክ: አማልክት: እግዚአብሔር: 1
ነበበ: ወጸውዓ: ለምድር::=፥ እመሥራ 2
ቀ:ፀሐይ:እስከ:ነዐረብ::ወእምጽዮን:ስነ:
ስብሐቲሁ::=፥ እግዚአብሔርሰ:ገሃደ:ይ 3
መጽእ :: ወአምላክነሂ : ኢያረምም::=፥
እሳት : ይነድድ : ቅድሜሁ::ወአውደሂ:ዓ 4
ውሎ:ብዙኅ::=፥ ይጼውዓ: ለሰማይ:በላ 5
ዕሉ::ወለምድርኒ : ከመ : ይኰንን : ሕዝ
ቦ::=፥ አስተጋብኡ:ሎቱ:ጻድቃኑ::እለ: 6
ይገብሩ: መሥዋዕተ: ዘበሕጉ::=፥ ይነግ 7
ሩ:ሰማያት: ጽድቀ:ዚአሁ::እስመ: እግዚ
አብሔር : መኰንን: ውእቱ::=፥ ስምዓኒ: 8
ሕዝብየ: ወእነግርከ::ወእስራኤል: አስም
ዕ:ለከ::እምሰክከሰ: አምላክ: አነ : ውእ
ቱ::=፥ አኮ:በእንተ: መሥዋዕትከ: ዘእዘ 9
ለፈከ::ወቍርባንክኒ: ቅድሜየ : ውእቱ:በ
ኵሉ:ጊዜ::=፥ ኢይነሥእ:እልህምተ:እ 10
ምቤትከ::ወኢሐራጊተ: እምርዔትከ::=፥
እስመ:ዚአየ : ውእቱ: ኵሉ: አራዊት:ዘገ 11
ደም::እንስሳ:ገደም:ወአልህምት::=፥ ወ 12
አእምር :ኵሎ: አዕዋፈ : ሰማይ::ወሥነ:
ገደምኒ:ህቤየ:ሀሎ::=፥ እመኒ:ርኅብኩ: 13
ወኢይብለከ::እስመ : ዚአየ : ውእቱ: ኵ
ሉ:ዓለም: በምልኡ::=፥ ኢይበልዕ: ሥ 14
ጋ:ላህም: ወኢይሰቲ: ደም:ጠሊ::=፥ ሡ 15
ዕ:ለእግዚአብሔር:መሥዋዕተ:ስብሐት::
ወሀቦ: ለልዑል: ጸሎተከ::=፥ ትጼውዐኒ: 16
በዕለተ: ምንደቤከ: አድኅነከ : ወተአኵተ
ኒ::=፥ወለኃጥእሰ:ይቤሎ:እግዚአብሔር:: 17
ለምንት: ለከ: ትነግር:ሕግየ::ወትነሥእ:
በአፈከ:ሥርዐትየ::=፥ ወአንተሰ : ጸላእ 18
ከ: ተግሣጽየ::ወአግባእከ : ድኅሬከ : ቃል
የ::=፥ ወእመኒ: ርኢከ: ሰራቄ: ትረውጽ: 19
ምስሌሁ::ወረሰይከ: መክፈልተከ: ምስለ:
ዘማውያን::=፥ አፈከ:አብዝኃ:ለእኪት:: 20
ወልሳንከ: ጸፈረ: ለኅብል::=፥ ትነብር:ወ 21
ተሐምዮ: ለእኁከ::ወአንበርከ : ዕቅፍተ:
ለወልደ:እምከ::ዘንተ: ገቢረከ : አርመም
ኩ:ለከኒ::=፥ አደመተከኑ: ኃጢአት : ሐዘ 22
ብከኑ:እኩን: ከማከ::እዛለፍከኑ : ወአቁ
ም:ቅድመ:ገጽከ::=፥ ለብዉ:ዘንተ:ኵ 23
ልክሙ: እለ:ትረስዕዎ: ለእግዚአብሔር::
ወእመአኮሰ : ይመስጥ : ወአልቦ : ዘያድኅ
ን::=፥ መሥዋዕተ:ክብርት: ትሴብሐኒ:: 24
ህየ:ፍኖተ:እንተ:ባቲ: አርእየ: አድኅኖቶ:
ለእግዚአብሔር::=፥

INTERP. ÆTHIOP. *PSAL. XLIX.* [a] In finem filiis Core, Pſalmus [b] faciunt ſacrificia quæ in lege ejus: [c] te expoſcam: [d] totus orbis: [e] tribulationis tuæ: [f] diſciplinam meam, [g] tacui tibi: [h] Invitaſtine peccatum? an putas, quod ero [i] vos omnes qui

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 * المزمور التاسع والاربعون * لاصاف * وهو مز * استيكن *
2 اله الالهة الرب يتكلم * ودعا الارض من مشارق الشمس الي مغاربها * في صهيون جمال بهايه *
3 4 * الله ياتي ظاهرا * والهنا لا يغفل * النار تتقد امامه * وحولها عاصف جدا * يدعو السماء من
5 فوق * والارض الي محاكمة شعبه * اجمعوا اليه يا قديسيه * الواضعين عهده علي الذبايح *
6 7 * والسموات تخبر بعدله * لان الله هو الديان * اسمع يا شعبي لاتكلم معك * ويا اسرايل لاشهد
8 9 عليك * انا هو الله الهك * لست اوبخك علي ذبايحك * محرقاتك امامي في كل حين * لا اقبل
10 عجولا من بيتك * ولا جداء من قطعانك * لان لي جميع وحوش البرية * بهايم الجبال والبقر *
11 12 * وجميع طيور السماء اعرفها * ومعي بهاء الحقول * ان جعت فلا اقول لك لان لي المسكونة
13 14 عليها * هل اكل لحم الثيران واشرب دم المعز * اذبح لله ذبيحة التسبيح واوف للعلي نذورك *
15 16 * اصرخ الي في يوم شدتك فانقذك وتمجدني * قال الله للخاطي لماذا انت تخبر بعدلي وتاخذ
17 18 بفيك عهدي * وانت ابغضت ادبي واطرحت وراءك كلامي * ان رايت سارقا سعيت معه ومع
19 20 الفاسقين جعلت نصيبك * فمك اكثر في الشر لسانك ينطق بالغش * انت جالس تتكلم
21 في اخيك * وابن امك تركت له معثر * صنعت هذه فكففت عنك * اظننت ايها الاثيم اني
22 اكون مثلك * كلا وساوبخك واقيمهن امام وجهك * افهموا هذه ايها الناسيون الله ليلا
23 تخطفوا وليس من يخلص * ذبيحة التسبيح تمجدني * وهناك اريك سبيل خلاص الله * الليلويا *

PSAL. XLIX.
Aſaphi. Verſ. 47. 1
DEus deorum Dominus loquetur, &
advocavit terram ab ortibus ſolis ad
occaſus ejus. In Sion pulchritudo decoris 2
ejus. Deus veniet apertè, & Deus noſter 3
non negliget: ignis exardeſcet ante eum,
circundatus tempeſtate validâ. Vocabit 4
cœlum deſuper, et terram ad judicandum
populum ſuum. Congregamini ad eum, O 5
Sancti ejus, ponentes teſtamentum ejus ſu-
per ſacrificia. Et cœli narrabunt juſtiti- 6
am ejus, quoniam Deus eſt judex. Audi, 7
O popule mi, ut alloquar te, & O Iſrael,
ut obteſter contra te. Ego ſum Deus, De-
us tuus. Non reprehendam te de ſacrifi- 8
ciis tuis, holocauſta tua in conſpectu meo
ſunt in omni tempore. Non accipiabo vi- 9
tulos de domo tua, neque hœdos de gregi-
bus tuis. Quoniam meæ ſunt omnes bel- 10
luæ deſerti, animalia montium, et boves:
Omnéſque volucres cœli cognoſco, & me- 11
cum eſt decus agrorum. Si eſuriero, non 12
dicam tibi: quoniam mihi eſt orbis cum
plenitudine ejus. Num manduco carnem 13
taurorum, & bibo ſanguinem caprarum?
Sacrifica Deo ſacrificium laudis, & per- 14
ſolve Altiſſimo vota tua. Clama ad me in 15
die tribulationis tuæ, & redimam te, &
glorificabis me. Dixit Deus peccatori, 16
Quarè tu enarras æquitatem meam, &
accipis ore tuo pactum meum: Et tu odi- 17
ſti diſciplinam meam, & projeciſti retro
te verba mea? Si vidiſti furem, negotia- 18
tus es cum eo, & cum ſceleſtis conſtituiſti
partem tuam: Os tuum profudit malum, 19
lingua tuâ profert dolum: Tu ſedens ob- 20
loqueris in fratrem tuum, & filio matris
tuæ poſuiſti offendiculum. Feciſti hoc, 21
& contraxi me à te: exiſtimâſti, O ini-
que, fore me tui ſimilem. Haudquaquam,
ſed arguam te, & ſtatuam ea ante faci-
em tuam. Intelligite hæc, O obliviſcentes 22
Deum, ut ne rapiamini & non ſit qui ſal-
vet. Sacrificium laudis glorificabit me, 23
& illic oſtendam tibi viam ſalutis Dei.
Alleluja.

תהלים : נא נב

PSAL. LI. נא

quando : prophetam Nathan eum ad veni. da In .David ipſi cantus Victori
1 2 לַמְנַצֵּחַ מִזְמוֹר לְדָוִד׃ בְּבוֹא־אֵלָיו נָתָן הַנָּבִיא כַּאֲשֶׁר־
: tuam miſericordiam ſecundùm Deus mei Miſerere .ſebah---Bath ad intravit
3 בָּא אֶל־בַּת־שָׁבַע׃ חָנֵּנִי אֱלֹהִים כְּחַסְדֶּךָ
Multiplica .meas prævaricationes dele tuarum miſerationum multitudinem ſecundū
4 כְּרֹב רַחֲמֶיךָ מְחֵה פְשָׁעָי׃ הֶרֶבה
meas prævaricationes Quoniam .me munda meo peccato à &;mea iniquitate ab me lava
5 כַּבְּסֵנִי מֵעֲוֺנִי וּמֵחַטָּאתִי טַהֲרֵנִי׃ כִּי־פְשָׁעַי
, peccavi tibi ſoli , Tibi .ſemper me coram meum peccatum &;cognoſcam ego
6 אֲנִי אֵדָע וְחַטָּאתִי נֶגְדִּי תָמִיד׃ לְךָ לְבַדְּךָ חָטָאתִי
.te judicando in ſis mundus ,te loquendo in ſis juſtus ut , feci tuis oculis in malum &
וְהָרַע בְּעֵינֶיךָ עָשִׂיתִי לְמַעַן תִּצְדַּק בְּדָבְרֶךָ תִּזְכֶּה בְשָׁפְטֶךָ׃
veritatem Ecce .mea mater me calefecit peccato in & ; ſum formatus iniquitate in Ecce
7 8 הֵן־בְּעָווֹן חוֹלָלְתִּי וּבְחֵטְא יֶחֱמַתְנִי אִמִּי׃ הֵן־אֱמֶת
me peccato à Purificabis .me facies ſcire ſapientiam abſtruſo in & : renibus in voluiſti
9 חָפַצְתָּ בַטֻּחוֹת וּבְסָתֻם חָכְמָה תוֹדִיעֵנִי׃ תְּחַטְּאֵנִי
me facies Audire .dealbabor nive præ & , me lavabis : mundabor & , hyſſopo in
10 בְאֵזוֹב וְאֶטְהָר תְּכַבְּסֵנִי וּמִשֶּׁלֶג אַלְבִּין׃ תַּשְׁמִיעֵנִי
tuas facies Abſconde .contriviſti , oſſa exultabunt : lætitiam & ,gaudium
11 שָׂשׂוֹן וְשִׂמְחָה תָּגֵלְנָה עֲצָמוֹת דִּכִּיתָ׃ הַסְתֵּר פָּנֶיךָ
; Deus mihi crea mundum Cor .dele meas iniquitates omnes &;meis peccatis à
12 מֵחֲטָאָי וְכָל־עֲוֺנֹתַי מְחֵה׃ לֵב טָהוֹר בְּרָא־לִי אֱלֹהִים
ſpiritum &:tuis faciebus à me projicias Ne .meo interiori in innova rectum ſpiritum &
13 וְרוּחַ נָכוֹן חַדֵּשׁ בְּקִרְבִּי׃ אַל־תַּשְׁלִיכֵנִי מִלְּפָנֶיךָ וְרוּחַ
ſpiritu & ; tuæ ſalutis gaudium mihi Redde .me à capias ne tuæ ſanctitatis
14 קָדְשְׁךָ אַל־תִּקַּח מִמֶּנִּי׃ הָשִׁיבָה לִּי שְׂשׂוֹן יִשְׁעֶךָ וְרוּחַ
te ad peccatores & : tuas vias prævaricatores Docebo .me fulcies voluntario
15 נְדִיבָה תִסְמְכֵנִי׃ אֲלַמְּדָה פֹשְׁעִים דְּרָכֶיךָ וְחַטָּאִים אֵלֶיךָ
laudabit : meæ ſalutis Deus , Deus ſanguinibus de me Erue .convertentur
16 יָשׁוּבוּ׃ הַצִּילֵנִי מִדָּמִים אֱלֹהִים אֱלֹהֵי תְּשׁוּעָתִי תְּרַנֵּן
annunciabit meum os & ; aperies mea labia Domine .tuam juſtitiam mea lingua
17 לְשׁוֹנִי צִדְקָתֶךָ׃ אֲדֹנָי שְׂפָתַי תִּפְתָּח וּפִי יַגִּיד
non aſcenſionem : darem & ,ſacrificium voles non Quoniam .tuam laudem
18 תְּהִלָּתֶךָ׃ כִּי לֹא־תַחְפֹּץ זֶבַח וְאֶתֵּנָה עוֹלָה לֹא
confractum & , contritum cor : contritus ſpiritus Dei Sacrificia .acceptabis
19 תִרְצֶה׃ זִבְחֵי אֱלֹהִים רוּחַ נִשְׁבָּרָה לֵב־נִשְׁבָּר וְנִדְכֶּה
muros ædificabis : Sion ipſi tua voluntate in fac Bene .deſpicies non Deus
20 אֱלֹהִים לֹא תִבְזֶה׃ הֵיטִיבָה בִרְצוֹנְךָ אֶת־צִיּוֹן תִּבְנֶה חוֹמוֹת
tunc : holocauſtum & , aſcenſionem , juſtitiæ ſacrificia voles Tunc .Jeruſalaim
21 יְרוּשָׁלָםִ׃ אָז תַּחְפֹּץ זִבְחֵי־צֶדֶק עוֹלָה וְכָלִיל אָז
.juvencos tuum altare ſuper facient aſcendere
יַעֲלוּ עַל־מִזְבַּחֲךָ פָרִים׃

PSAL. LII. נב

, Saul ipſi nunciavit & ,Edomeum Doegh veniendo In .David ipſi Maſchil Victori
1 2 לַמְנַצֵּחַ מַשְׂכִּיל לְדָוִד׃ בְּבוֹא דּוֹאֵג הָאֲדֹמִי וַיַּגֵּד לְשָׁאוּל
.Achimelech domum in David Venit : ei dixit &
וַיֹּאמֶר לוֹ בָּא דָוִד אֶל־בֵּית אֲחִימֶלֶךְ׃

תרגום TARGUM.

נא

1 2 לְשַׁבָּחָא תֻּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד׃ כַּד אֲתָא לְוָתֵיהּ נָתָן
3 נְבִיָּא כַּד שַׁמֵּשׁ עִם בַּת שֶׁבַע׃ חוּס עֲלַי יְיָ הֵיךְ
טֵיבוּתָךְ הֵיךְ סְגִיעוּת רַחֲמָךְ שְׁבוֹק מְרוֹדָי׃
4 סוּגְעָא תְּחַוְּרַנַּנִי מִן עֲוָיָתִי וּמִן חוֹבִי תְּדַכֵּי יָתִי׃
5 אֲרוּם מְרוֹדַי קֳדָמַי גַּלְיָן וְחוֹבִי לְקִבְלִי תְּדִירָא׃
6 קֳדָמָךְ בִּלְחוֹדָךְ חָבֵית וּדְבִישׁ קֳדָמָךְ עֲבַדִית מִן
בְּגַלַל דִּתְזַכֵּי יָתִי בְּמַלָּלוּתָךְ תְּבָרוֹר יָתִי כַּד תְּדִין׃
7 הָא בְעַוְיָא אִתְיְלִידִית וּבְחוֹבָא עַבְּרַת מִנִּי אִמִּי׃
8 הָא קוּשְׁטָא רְעִיתָא בְּכוּלְיָן וּבְטָמוּר לִבָּא
9 חוּכְמְתָא תְּהוֹדְעִנַּנִי׃ תַּדֵּי עֲלַי הֵיךְ כַּהֲנָא דְמַדֵּי
בְּאֵזוֹבָא עַל מְסָאֲבָא מוֹי אַדְּיוּתָא מִן קְטַם תּוֹרְתָא
10 וְאֶדַּכֵּי תַּסְחֲנַנִי וּמִן תַּלְגָא אֶתְחַוַּר׃ תְּבַשְּׂרַנַּנִי
חֶדְוָא וְאַדִּיצוּתָא תַּבִּיעָן תּוּשְׁבַּחְתָּא אֵיבְרַיָּא
11 דְשַׁפִּיתָא׃ סַלֵּיק אַפָּךְ מִן חוֹבַי וְכָל עֲוָיָתַי מְחֵי׃
12 לֵב בְּרִיר בְּרֵי לִי אֱלָהָא וְרוּחַ מְכַוַּן בִּדְחַלְתָּךְ
13 חַדֵּית בְּגַוִּי׃ לָא תִטְלוֹק יָתִי מִן קֳדָמָךְ וְרוּחַ
14 נְבוּאַת קוּדְשָׁךְ לָא תְסַלֵּק מִנִּי׃ אֲתֵיב לִי אוֹרַיְתָךְ
לְמֵדוּץ בְּפוּרְקָנָךְ וְרוּחַ נְבוּאָה תִּסְמְכִנַּנִי׃
15 אַאַלֵּיף לִמְרוֹדַיָּא אָרְחָתָךְ וְחַיָּבַיָּא קֳדָמָךְ יְתוּבוּן׃
16 פְּצֵי יָתִי מִדִּין קְטוֹל יְיָ אֱלָהִי פוּרְקָנִי תַּבִּיעַ לִישָׁנִי
17 צִדְקְתָךְ׃ יְיָ סִפְוָתַי פְּתַח בְּאוֹרַיְתָא וּפוּמִי יְתַנֵּי
18 תּוּשְׁבַּחְתָּךְ׃ אֲרוּם לָא תִצְבֵי נִכְסַת קוּדְשָׁא וְאֶתֵּן
19 עֲלָתָא לָא תִתְרְעֵי׃ נִכְסַת קוּדְשָׁא דֶאֱלָהָא נַפְשָׁא
מִתַּבְּרָא לֵב תְּבִיר וְשָׁפֵי אֱלָהָא לָא תִבְסוֹר׃
20 אוֹטֵיב בִּרְעוּתָךְ יָת צִיּוֹן תְּשַׁכְלֵל שׁוּרֵי יְרוּשְׁלֶם׃
21 בְּכֵן תִּצְבֵי דִבְחִין דְּצִדְקְתָא עֲלָתָא וּגְמִיר הַבְּכֵן
יַסְקוּן כַּהֲנַיָּא עַל מַדְבְּחָךְ תּוֹרִין׃

נב

1 2 לְשַׁבָּחָא עַל שִׂכְלָא טָבָא עַל יְדוֹי דְּדָוִד׃ כַּד
אֲתָא דוֹאֵג אֱדוֹמָאָה וְתַנֵּי לְשָׁאוּל וַאֲמַר לֵיהּ
אֲתָא דָוִד לְבֵית אֲחִימֶלֶךְ׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

PSAL. LI.

1 2 Ad laudandum hymnus Davidi. Quando venit ad eum Nathan propheta quando miſcuit ſe cum Bathſabah.

3 Miſerere mei Deus ſecundùm benignitatem tuam: ſecundùm multitudinem miſerationum tuarum, remitte prævaricationes meas. 4 Admodum lavabis me ab iniquitatibus meis, & à culpa mea mundabis me. 5 Quoniam ſcelera mea coram me manifeſta ſunt: & peccatum meum in conſpectu meo ſemper. 6 Coram te ſolo peccavi, & malum hoc coram te feci, propterea mundabis me cùm locutus fueris; purum reddes me cùm judicaveris. 7 Ecce in *iniquitate genitus ſum*, & in peccato *impragnata eſt* de me mater mea. 8 Ecce veritatem voluiſti in renibus: & in abſcondito cordis ſapientiam docebis me. 9 Infundes ſuper me ſicut ſacerdos, qui profundit cum hyſſopo ſuper immundum aquas aſperſionis de cinere vaccæ, & mundus ero: lavabis me, & pluſquam nix candidus fiam. 10 *Annunciabis mihi* gaudium & lætitiam, & perſonabunt laudem oſſa quæ confregiſti. 11 Amove faciem tuam à peccatis meis, & cunctas iniquitates meas expunge. 12 Cor mundum crea mihi Deus, & ſpiritum rectum in timore tuo renova in *intimo* meo. 13 Ne projicias me à præſentia tua, & ſpiritum ꝓpheticum ſanctitatis tuæ ne auferas à me. 14 Converte ad me legem tuam ut gaudeam in redemptione tua, & ſpiritu *prophetico* confortabis me. 15 Docebo ſceleſtos vias tuas, & impii coram te convertentur. 16 Libera me de judicio interfectionis Domine Deus meus *redemptio mea*: ſtillabit lingua mea *juſtitiam tuam*. 17 Domine labia mea aperi in lege: & os meum annunciabit laudem tuam. 18 Quoniam non optabis ſacrificia ſancta: holocauſtum quoque ſi dedero, non voles. 19 Sacrificia ſancta Dei anima contrita, cor contritum & concuſſum Deus non deſpicies. 20 Fac benignè in voluntate tua cum Sion: ædificabis muros Jeruſalem. 21 Tunc acceptabis *ſacrificia* juſtitiæ, oblationem *& holocauſtum*; tunc ponent ſacerdotes ſuper altare tuum vitulos.

PSAL. LII.

1 Ad laudandum in intellectu bono per manus Davidis: Quando acceſſit Doeg Idumæus & nunciavit Sauli, & dixit ei: 2 Venit David in domum Achimelech.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܢܐ *

1 ܕܕܘܝܕ. ܟܕ ܚܛܐ ܘܩܛܠܗ ܠܐܘܪܝܐ. * ܘܠܢ ܕܝܢ
2 ܡܬܚܘܝܐ ܡܠܦܢܘܬܐ ܘܬܘܕܝܬܐ. ܦܬܓܡܐ ܡܐ. * ܪܚܡ ܥܠܝ ܐܠܗܐ ܐܝܟ
3 ܛܝܒܘܬܟ: ܘܐܝܟ ܣܘܓܐܐ ܕܪ̈ܚܡܝܟ ܥܛܝ ܚܛܗ̈ܝ. * ܐܣܓܝ ܐܚܠܠܢܝ ܡܢ ܥܘܠܝ: ܘܡܢ
4 ܚܛܗ̈ܝ ܕܟܝܢܝ. * ܡܛܠ ܕܣܟܠܘܬܝ ܐܢܐ ܝܕܥ ܐܢܐ: ܘܚܛܗ̈ܝ ܠܘܩܒܠܝ ܐܢܘܢ ܒܟܠܙܒܢ. * ܠܟ
5 6 ܒܠܚܘܕܝܟ ܚܛܝܬ: ܘܒܝܫܬܐ ܩܕܡܝܟ ܥܒܕܬ. ܡܛܠ ܕܬܙܕܕܩ ܒܡܠܬܟ ܘܬܙܟܐ ܒܕܝ̈ܢܝܟ:
7 8 * ܡܛܠ ܕܒܥܘܠܐ ܐܬܒܛܢܬ ܘܒܚܛܗ̈ܐ ܒܛܢܬܢܝ ܐܡܝ: * ܐܢܬ ܕܝܢ ܩܘܫܬܐ ܨܒܝܬ.
9 ܘܟܣܝܬܐ ܕܚܟܡܬܟ ܐܘܕܥܬܢܝ: * ܪܣ ܥܠܝ ܒܙܘܦܐ ܘܐܬܕܟܐ. ܬܚܠܠܢܝ ܒܗ ܘܡܢ ܬܠܓܐ
10 11 ܐܚܘܪ: * ܐܣܒܥܢܝ ܒܒܘܣܡܟ ܘܒܚܕܘܬܟ. ܘܢܕܘܨܘܢ ܓܪ̈ܡܝ ܡܟܝ̈ܟܐ: * ܐܗܦܟ ܐܦܝܟ
12 ܡܢ ܚܛܗ̈ܝ. ܘܟܠܗܘܢ ܣܟܠܘܬܝ ܥܛܝ: * ܠܒܐ ܕܟܝܐ ܒܪܝ ܒܝ ܐܠܗܐ. ܘܪܘܚܐ ܬܪܝܨܬܐ
13 ܚܕܬ ܒܓܘܝ: * ܠܐ ܬܫܕܝܢܝ ܡܢ ܩܕܡ ܐܦܝܟ. ܘܪܘܚܟ ܩܕܝܫܬܐ ܠܐ ܬܣܒ ܡܢܝ: * ܐܠܐ ܐܗܦܟ ܠܝ
14 15 ܒܣܝܡܘܬܟ ܘܦܘܪܩܢܟ. ܘܪܘܚܟ ܡܫܒܚܬܐ ܬܣܡܟܢܝ: * ܕܐܠܦ ܠܥܘ̈ܠܐ ܐܘܪܚܟ. ܘܚܛܝ̈ܐ
16 ܠܘܬܟ ܢܬܦܢܘܢ: * ܦܨܢܝ ܡܢ ܕܡܐ ܐܠܗܐ ܐܠܗܐ ܕܦܘܪܩܢܝ. ܘܢܫܒܚ ܠܫܢܝ
17 18 ܙܕܝܩܘܬܟ: * ܡܪܝܐ ܦܬܚ ܠܝ ܣܦܘ̈ܬܝ. ܘܦܘܡܝ ܢܙܡܪ ܬܫܒܘܚܬܟ: * ܡܛܠ ܕܠܐ ܨܒܝܬ
19 ܒܕܒ̈ܚܐ. ܘܠܐ ܒܝܥܠܬܐ ܓܡܝܪܬܐ ܡܬܪܥܐ ܐܢܬ: * ܕܒ̈ܚܐ ܠܐܠܗܐ ܪܘܚܐ ܡܟܝܟܬܐ. ܠܒܐ
20 ܬܒܝܪܐ ܐܠܗܐ ܠܐ ܫܐܛ: * ܐܛܐܒ ܒܨܒܝܢܟ ܠܨܗܝܘܢ. ܘܒܢܝ ܫܘ̈ܪܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ:
21 * ܗܝܕܝܢ ܬܨܒܐ ܒܕܒ̈ܚܐ ܕܟܐܢܘܬܐ ܘܒܝܥܠܬܐ ܓܡܝܪܬܐ. ܗܝܕܝܢ ܢܣܩܘܢ ܬܘ̈ܪܐ ܥܠ ܡܕܒܚܟ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܢܒ *

1 2 ܕܕܘܝܕ. ܡܟܣ ܒܗ ܠܟܠ ܥܝ̈ܕܐ ܒܝ̈ܫܐ: * ܘܡܠܦ ܥܘܩܪܗܘܢ. ܦܬܓܡܐ ܟܐ.

PSAL. LI.

1 *Davidis. Quum peccavit & occîdit Uriam.* 2 *Nobis autem ſignificatur documentum, & confeſſio. Verſ. 41.*

3 Miſerere mei Deus ſecundùm bonitatem tuam, & ſecundùm multitudinem miſerationum tuarū dele peccata mea. 4 Multiplica lavare me ab iniquitate mea, & à peccatis meis munda me. 5 Quoniam deliria mea ego novi, & peccata mea ex adverſo mihi ſunt omni tempore. 6 In te ſolum peccavi, & mala coram te feci; quoniam juſtificaberis in verbo tuo, & vinces in judiciis tuis. 7 Quoniam in iniquitate conceptus ſum, & in peccatis concepit me mater mea. 8 Tu autem æquitatem dilexiſti, & abſcondita ſapientiæ tuæ nota feciſti mihi. 9 Aſperge me hyſſopo & mundabor: lava me eâdem, & nive candidior ero. 10 Satia me voluptate tuâ & lætitiâ tuâ, & gaudebunt oſſa mea humilia. 11 Averte faciem tuā à peccatis meis, & omnes ſtultitias meas dele. 12 Cor mundū crea in me Deus, & ſpiritū rectum innova intra me. 13 Ne projicias me à conſpectu tuo, & ſpiritum tuum ſanctum ne ſumas à me. 14 Sed reſtitue mihi ſuavitatem tuā & ſalutem tuā, & ſpiritus tuꝰ glorioſus fulciat me. 15 Ut doceam iniquos viam tuā, & peccatores ad te convertantur. 16 Libera me à ſanguine Deus meus, Deus ſalutis meæ: & laudabit lingua mea juſtitiam tuam. 17 Domine aperi mihi labia mea, & os meū canet laudes tuas. 18 Quoniam non delectaris ſacrificiis, neque holocauſtis perfectis placaris. 19 Sacrificia Deo, ſpiritus eſt humilis: cor contritum Deus non deſpicit. 20 Benefac ex beneplacito tuo Sioni, & 21 ædifica muros Jeruſalem. Tum oblectaberis ſacrificiis juſtitiæ, holocauſtis perfectis: tunc aſcendent boves ſuper aram tuam.

PSAL. LII.

1 *Davidis. Arguit in eo omnes mores pravos;* 2 *Et docet extirpationem eorum. Verſ. 21.*

Verſio VULG. LAT.

1 In finem, Pſalmus David,
2 Cùm venit ad eum Nathan Propheta,
quando intravit ad Bethſabee.
(2. Reg. 12.) L.

3 MIſerere meî, Deus, ſecundùm magnam miſericordiam tuam: Et ſe-
cundùm multitudinem miſerationum tu-
4 arum, dele iniquitatem meam. Ampliùs
lava me ab iniquitate mea: & à peccato
5 meo munda me. Quoniam iniquitatem
meam ego cognoſco: & peccatum meum
6 contra me eſt ſemper. Tibi ſoli peccavi,
& malum coram te feci: ut juſtificeris in
ſermonibus tuis, & vincas cùm judicaris.
7 Ecce enim in iniquitatibus conceptus
ſum: & in peccatis concepit me mater
8 mea. Ecce enim veritatem dilexiſti: in-
certa & occulta ſapientiæ tuæ manife-
9 ſtâſti mihi. Aſperges me hyſſopo, & mun-
dabor: lavabis me, & ſuper nivem de-
10 albabor. Auditui meo dabis gaudium &
lætitiam: & exultabunt oſſa humiliata.
11 Averte faciem tuam à peccatis meis: &
12 omnes iniquitates meas dele. Cor mun-
dum crea in me, Deus: & ſpiritum re-
13 ctum innova in viſceribus meis. Ne pro-
jicias me à facie tua: & ſpiritum ſanctum
14 tuum ne auferas à me. Redde mihi læti-
tiam ſalutaris tui: & ſpiritu principali
15 confirma me. Docebo iniquos vias tu-
16 as: & impii ad te convertentur. Libera
me de ſanguinibus, Deus, Deus ſalutis
meæ: & exultabit lingua mea juſtitiam
17 tuam. Domine, labia mea aperies: &
os meum annuntiabit laudem tuam.
18 Quoniam ſi voluiſſes ſacrificium, dediſ-
ſem utique: holocauſtis non delectabe-
19 ris. Sacrificium Deo ſpiritus contribu-
latus: cor contritum & humiliatum, De-
20 us, non deſpicies. Benignè fac, Domine,
in bonâ voluntate tua Sion, ut ædificen-
21 tur muri Jeruſalem. Tunc acceptabis
ſacrificium juſtitiæ, oblationes, & holo-
cauſta: tunc imponent ſuper altare tu-
um vitulos.

1 In finem, intellectûs David,
2 Cùm venit Döeg Idumæus, & nuntiavit
Sauli; Venit David in domum Achi-
melech. (1. Reg. 21. 9.) LI.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

1 Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυΐδ, Ἐν τῷ ἐλ-
2 θεῖν πρὸς αὐτὸν Νάθαν τὸν προφήτην,
ἡνίκα εἰσῆλθε πρὸς Βηρσαβεέ. ν'.

3 ἘΛέησόν με ὁ Θεὸς κατὰ τὸ μέγα ἔλεός σου, καὶ κατὰ
τὸ πλῆθος τῶν οἰκτιρμῶν σου ἐξάλειψον τὸ ἀ-
4 νόμημά μου. Ἐπιπλεῖον πλῦνόν με ἀπὸ τῆς ἀνομίας
5 μου, καὶ ἀπὸ τῆς ἁμαρτίας μου καθάρισόν με. Ὅτι
τὴν ἀνομίαν μου ἐγὼ γινώσκω, καὶ ἡ ἁμαρτία μου ἐν-
6 ώπιόν μου ἐστὶ διαπαντός. Σοὶ μόνῳ ἥμαρτον, καὶ
τὸ πονηρὸν ἐνώπιόν σου ἐποίησα· ὅπως ἂν δικαι-
ωθῇς ἐν τοῖς λόγοις σου, καὶ νικήσῃς ἐν τῷ κρίνε-
7 σθαί σε. Ἰδοὺ γὰρ ἐν ἀνομίαις συνελήφθην, καὶ ἐν
8 ἁμαρτίαις ἐκίσσησέ με ἡ μήτηρ μου. Ἰδοὺ γὰρ ἀλή-
θειαν ἠγάπησας, τὰ ἄδηλα καὶ τὰ κρύφια τῆς σο-
9 φίας σου ἐδήλωσάς μοι. Ῥαντιεῖς με ὑσσώπῳ καὶ
καθαρισθήσομαι, πλυνεῖς με καὶ ὑπὲρ χιόνα λευ-
10 κανθήσομαι. Ἀκουτιεῖς με ἀγαλλίασιν καὶ εὐφρο-
11 σύνην, ἀγαλλιάσονται ὀστᾶ τεταπεινωμένα. Ἀπό-
στρεψον τὸ πρόσωπόν σου ἀπὸ τῶν ἁμαρτιῶν μου, καὶ πά-
12 σας τὰς ἀνομίας μου ἐξάλειψον. Καρδίαν καθα-
ρὰν κτίσον ἐν ἐμοὶ ὁ Θεὸς, καὶ πνεῦμα εὐθὲς ἐγ-
13 καίνισον ἐν τοῖς ἐγκάτοις μου. Μὴ ἀποῤῥίψῃς με
ἀπὸ τοῦ προσώπου σου, καὶ τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιόν σου μὴ
14 ἀντανέλῃς ἀπ' ἐμοῦ. Ἀπόδος μοι τὴν ἀγαλλία-
σιν τοῦ σωτηρίου σου, καὶ πνεύματι ἡγεμονικῷ στή-
15 ριξόν με. Διδάξω ἀνόμους τὰς ὁδούς σου, καὶ ἀσε-
16 βεῖς ἐπὶ σὲ ἐπιστρέψουσι. Ῥῦσαί με ἐξ αἱμάτων
ὁ Θεὸς, ὁ Θεὸς τῆς σωτηρίας μου, ἀγαλλιάσεται ἡ
17 γλῶσσά μου τὴν δικαιοσύνην σου. Κύριε τὰ χείλη
μου ἀνοίξεις, καὶ τὸ στόμα μου ἀναγγελεῖ τὴν αἴνεσίν
18 σου. Ὅτι εἰ ἠθέλησας θυσίαν, ἔδωκα ἄν, ὁλο-
19 καυτώματα οὐκ εὐδοκήσεις. Θυσία τῷ Θεῷ
πνεῦμα συντετριμμένον, καρδίαν συντετριμμέ-
νην καὶ τεταπεινωμένην ὁ Θεὸς οὐκ ἐξουδενώσει.
20 Ἀγάθυνον Κύριε ἐν τῇ εὐδοκίᾳ σου τὴν Σιὼν, καὶ οἰ-
21 κοδομηθήτω τὰ τείχη Ἱερουσαλήμ. Τότε εὐδοκήσεις
θυσίαν δικαιοσύνης ἀναφορὰν, καὶ ὁλοκαυτώμα-
τα, τότε ἀνοίσουσιν ἐπὶ τὸ θυσιαστήριόν σου μόσχους.

1
2 Εἰς τὸ τέλος συνέσεως τῷ Δαυΐδ, Ἐν τῷ ἐλθεῖν
Δωὴκ τὸν Ἰδουμαῖον, καὶ ἀναγγεῖλαι τῷ Σαοὺλ, καὶ εἰ-
πεῖν αὐτῷ, Ἦλθε Δαυῒδ εἰς τὸν οἶκον Ἀβιμέλεχ. να'.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

In finem, Pſalmus ipſi David, Cùm 1
venit ad eum Nathan Propheta, 2
quando intravit [a] ad (a) [b]
Berſabee. L.

1 MIſerere (b) meî, Deus, ſe- 3
cundùm magnam miſeri-
cordiam tuam: 2 Et ſecundùm
multitudinem miſerationum tua-
rũ, dele iniquitatẽ meã. 3 [c] Am- 4
pliùs lava me ab iniquitate mea;
& à peccato meo munda me.
4 Quoniam iniquitatẽ meam ego 5
cognoſco: & peccatum meum co-
ram me eſt ſemper. 5 Tibi ſoli pec- 6
cavi, & malum coram te feci: ut
juſtificeris in ſermonibus tuis, &
(c) vincas, cum judicaris. 6 Ecce 7
enim in iniquitatibus conceptus
ſum: & in peccatis (d) concepit
me mater mea. 7 Ecce enim veri- 8
tatem (e) dilexiſti: [d] incerta
& occulta ſapientiæ tuæ mani-
feſtâſti mihi: 8 Aſperges me hyſ- 9
ſopo, & mundabor. : lavabis
me, & ſuper nivem dealbabor.
9 (f) Audire me faces exulta- 10
tionem & lætitiam: exultabunt
oſſa [e] humiliata. 10 Averte fa- 11
ciem tuam à peccatis meis, & o-
mnes iniquitates meas [f] dele.
11 Cor mundũ crea in me, Deus, et 12
ſpiritum rectum innova in viſce-
ribus meis. 12 Ne projicias me 13
à facie tua: & ſpiritum ſanctum
tuum ne (g) auferas à me. 13
Redde mihi exultationem [g] ſa- 14
lutaris tui: & ſpiritu principali
confirma me. 14 [h] Docebo ini- 15
quos vias tuas: & impii ad te
convertentur. 15 Libera me de 16
ſanguinibus, [i] Deus, Deus ſalu-
tis meæ: (h) exultabit lingua mea
[k] juſtitiam tuam. 16 Domine, 17
labia mea aperies; et os meum an-
nuntiabit laudem tuam. 17 Quo- 18
niam, ſi voluiſſes ſacrificium, de-
diſſem utique: holocauſtis non
delectaberis. 18 Sacrificium Deo 19
ſpiritus [l] contribulatus: cor (i)
contritum, et humiliatũ Deus non
deſpiciet. 19 (k) Benignè fac, Do- 20
mine, in bona voluntate tua Sion:
ut ædificentur muri Hieruſalem. 20 Tunc acceptabis ſacrificiũ juſtitiæ oblationẽ, 21
et holocauſta: tunc imponent ſuper altare tuum vitulos.

MS. Æthiop. Pocock. Gloria Patri, & Filio, & Spiritui ſancto: Amen.

In finem, intellectûs ipſi David, Cùm venit Doec Idumæus, & annuntiavit Sauli, 1 2
& dixit ei; Venit David in domum (a) Abimelech. LI.

Verſio ÆTHIOPICA.

1 ፍጻሜ፡መዝሙር፡ዘዳዊት፡አመ፡መጽ
2 አ፡ኀቤሁ፡ናታን፡ነቢይ፡ዘአመ፡ቦ
አ፡ኀቤሁ፡ለአበሰቢ፡፡

ሣ ተሣሀለኒ፡ እግዚኦ፡ በከመ፡ ዕበየ፡ ሣህል 1
ክ፡፡=፡ ወበከመ፡ብዝኀ፡ምሕረትከ፡ደም 2
ስስ፡ኃጢአትየ፡፡=፡ ሕፅበኒ፡ወአንጽሐኒ፡ 3
እምኃጢአትየ ፡፡ ወእምአበሳየኒ፡ አንጽሐ
ኒ፡፡=፡ እስመ፡ለልየ፡ አአምር፡ ጌጋይየ፡፡ 4
ወኃጢአትየኒ፡ ቅድሜየ፡ ውእቱ፡ በኵሉ፡
ጊዜ፡፡=፡ ለከ፡ለባሕቲትከ፡አበስኩ፡ወእኩ 5
የኒ፡ ባቅድሜከ፡ገበርኩ፡፡ከመ፡ ትጸደቅ፡በ
ነቢብከ፡ ወትማዕ፡ በኵነኔከ፡፡=፡ እስመ፡ 6
ናሁ ፡ በኃጢአት፡ ተፀነስኩ፡፡ወበዓመፃ፡ወለ
ደተኒ፡እምየ፡፡=፡ እስመ፡ ናሁ፡ ጽድቀ፡አ 7
ፍቀርከ፡፡ዘኢይትነበብ፡ ኅቡአ ፡ ጥበብከ፡
አይደዕከኒ፡፡=፡ ትነዝኀኒ፡ በአዛብ፡ወእነ 8
ጽሕ፡፡ተኅፅበኒ ፡ እምበረድ፡ እጻዐዱ፡፡=፡
ቲሰምዐኒ፡ትፍሥሕተ፡ ወሐሤተ፡፡ወይትፌ 9
ሥሑ፡አዕጽምተ፡ጸድቃን፡፡=፡ ሚጥ፡ገጽ 10
ከ፡ እምኃጢአትየ፡፡ወደምስስ፡ ሊተ፡ ኵ
ሎ፡አበሳየ፡፡=፡ ልበ፡ንጹሐ፡ፍጥር፡ሊተ፡ 11
እግዚኦ፡፡መንፈሰ፡ርቱዐ፡ ሐድስ፡ ውስተ፡ከ
ርሥየ፡፡=፡ ኢትግድፈኒ፡ እምቅድመ፡ ገ 12
ጽከ፡፡ወመንፈሰከ፡ቅዱስ፡ ኢታውፅእ፡ እም
ላዕሌየ፡፡=፡ ዕስየኒ፡ ፍሥሐ፡ወአድኅኖት 13
ከ፡፡ወበመንፈስ፡አዚዝ፡ አጽንዐኒ፡፡=፡ ከ 14
መ፡እምህሮሙ፡ ለኃጥአን፡ ፍኖተከ፡፡ወረሲ
ዓን፡ይትመየጡ፡ ኀቤከ፡፡=፡ አድኅነኒ፡እ 15
ምደም፡እግዚአብሔር፡ አምላከ፡ መድኃኒ
ትየ፡፡ ይትፌሣሕ ፡ ልሳንየ ፡ በጽድቀ ፡ ዚአ
ከ፡16 እግዚኦ፡፡ትከሥት፡ከናፍርየ፡ወአፉየ፡ 16
ያየድዕ፡ስብሐቲከ፡፡=፡ ሶበሰ፡ፈቀድከ፡መ 17
ሥዋዕተኒ፡እምወሀብኩ፡፡ወጽንሐሐኒ፡ኢት
ሠምር፡፡=፡ መሥዋዕቱ ፡ ለእግዚአብሔ 18
ር፡መንፈስ፡ የዋህ፡፡ልበ፡ ትሑተ፡ ወየዋሃ፡ኢ
ይሜንን፡እግዚአብሔር፡፡=፡አሠኒ፡እግዚ 19
ኦ፡በሥምረትከ፡ለጽዮን፡፡ወይትሐነጻ፡አረ
ፋቲሃ፡ ለኢየሩሳሌም፡፡=፡ አመ፡ ትሠም 20
ር ፡ መሥዋዕተ ፡ ጽድቅ፡፡ መባእኒ ፡ ቍርባ
ንኒ፡፡አሚሃ፡ የዐርጉ፡ ውስተ፡ ምሥዋዒከ፡
አልህምተ፡፡=፡
ስብሐት ፡ ለአብ ፡ ወወልድ ፡ ወመንፈስ ፡ ቅ
ዱስ፡አሜን፡፡=፡

ፍጻሜ፡ዘበ፡አእምሮ፡ዘዳዊት፡ዘአመ፡
መጽአ፡ደይቅ፡ኤዶማዊ፡ወነገሮ፡ለሳኦል፡ወ
ይቤሎ፡ማጽአ፡ዳዊት፡ቤተ፡ለአቤሜሌክ፡፡

INTERP. ÆTHIOP. PSAL. L. [a] ad eum de [b] Abſabi. [c] Lavans purga me [d] inenarrabilia & occulta [e] rectificata. [f] dele mihi. [g] & ſalutare tuum: & ſpiritu morigero [h] Ut doceam peccatores [i] Domine, [k] in juſtitia tua. [l] ſimplex: cor

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* المزمور الخمسون *

1 * لداود قاله لما قتل اوريا * واتاه ناثان النبي وبكته على ذلك * كب استيخن *
2
3 * ارحمني يا الله كعظيم رحمتك * ومثل كثرة رافتك امح ذنوبي * وغسلني كثيرا من اثمي *
4
5 وطهرني من خطيتي * لاني عارف اثمي وخطيتي امامي في كل حين * لك وحدك اخطات *
6
7 والشر قدامك صنعت * لكي تصدق في اقوالك وتغلب اذا حوكمت * لاني هاانذا بالاثم حبل
8 بي * وبالخطايا ولدتني امي * لانك ها انت هويت العدل * اعلمتني خفايا وبواطن حكمتك *
9
10 * تنضح على زوفك فانقا * وتغسلني فابيض مثل الثلج * تسمعني سرورا وفرحا * وتبتهج عظامي
11
12 المتواضعة * اصرف وجهك عن خطاياي * وجميع اثامي امحوها يا الله * قلبا طاهرا تخلق
13 في يا الله * وروحا مستقيما جدده في باطني * لا تطرحني من بين يديك * ولا تنزع عني روح
14
15 قدسك * اعطني بهجة خلاصك * وبروح قادر ثبتني * لاعلم المخالفين طرقك * واليك ترجع
16
17 المنافقون * خلصني من الدماء يا الله اله خلاصي * ليسبح بعدلك لساني * يا رب تفتح شفتي
18 فينطق فمي تسبحتك * لانك لو شئت الذبائح لكنت اعطيتها * وايضا محرقات السواء لم تسر
19
20 بها * ذبائح الله ارواح متواضعة قلب منسحق متواضع هذا يا الله لا ترذله * انعم يا رب على
21 صهيون بمسرتك * وابن حصون يروشليم * حينئذ تسر بذبائح العدل والوقود الكاملة * حينئذ
يرفع العجول على مذابحك * اللليلويا *

1 * المزمور الحادي والخمسون *
2 * فهم لداود حين جاء دويق الادومي واخبر شاوول ان داود قد جاء الى
بيت ابيملخ * استيخن يط *

PSAL. L.

Davidi, quem dixit quum inter- 1
fecit Uriam, Et venit ad eum Na- 2
than propheta, eúmque ob id cor-
ripuit. Verſ. 21.

MIſerere mei O Deus, ſecundùm 3
magnitudinem miſericordiæ tuæ,
& ſecundùm multitudinem pietatis tuæ
deleas culpam meam. Et laves me mul- 4
tùm ab iniquitate mea, & mundes me à
peccato meo. Quia ego gnarus ſum ini- 5
quitatis meæ, & peccatum meum coram
me eſt omni momento. Tibi ſoli peccavi, 6
& malum coram te commiſi: ut verax ſis
in ſermonibus tuis, & vincas cùm judi-
catus fueris. Nam ecce ego in iniquitate 7
conceptus ſum, & in peccatis genuit me
mater mea. Quoniam ecce tu voluiſti æ- 8
quitatem, docuiſti me ſecreta & interna
ſapientiæ tuæ. Aſpergas me hyſſopo tuâ, 9
& mundabor: laváſque me, & albeſcam
ut nix. Audire fac me exultationem & 10
gaudium, & exhilarabuntur oſſa mea hu-
miliata. Averte faciem tuam à peccatis 11
meis, & univerſa ſcelera mea deleas, O
Deus. Cor mundum crees in me, O Deus, 12
& ſpiritum rectum innova in præcordiis
meis. Ne abjicias me à conſpectu tuo, & 13
ne ſpolies me Spiritu ſanctitatis tuæ. Da 14
mihi hilaritatem ſalutis tuæ, & ſpiritu
potenti confirma me. Ut doceam inobe- 15
dientes vias tuas, & ad te convertantur
impii. Libera me de ſanguinibus, O Deus, 16
Deus ſalutis meæ: ut celebret æquitatem
tuam lingua mea. O Domine, aperias la- 17
bia mea, & pronuntiabit os meum laudem
tuam. Quoniam ſi velles ſacrificia, ſanè 18
offerrẽ ea: at ne quidẽ holocauſtis aſſatio-
nis oblectaris. Sacrificia Dei, ſpiritus hu- 19
miliati: cor contritũ, humiliatum, hoc Deus
non deſpicies. Benefac, O Domine, Sioni 20
voluntate tuâ, & ædifica arces Jeruſa-
lem. Tunc oblectaberis ſacrificiis æquita- 21
tis, & holocauſtis perfectis: tunc attol-
lentur vituli ſuper altaria tua. Alleluja.

PSAL. LI. 1

Intellectus Davidi. Quum venit 2
Doec Idumæus et retulit Sauli Da-
videm veniſſe in domum Abime-
lech. Verſ. 19.

תהלים : נג

Pravitates .die omni Dei miſericordia ? potens ô malitia *in gloriaberis* Cur

3 מַה־תִּתְהַלֵּל בְּרָעָה הַגִּבּוֹר חֶסֶד אֵל כָּל־הַיּוֹם: הַוּוֹת 4

malum Dilexiſti .dolum faciens acuta novacula ſicut : tua lingua *cogitabit*

תַּחְשֹׁב לְשׁוֹנֶךָ כְּתַעַר מְלֻטָּשׁ עֹשֵׂה רְמִיָּה: אָהַבְתָּ רָּע 5

verba *omnia* Dilexiſti .Selah , juſtitiam loqui quàm mendacium : *bono præ*

מִטּוֹב שֶׁקֶר ׀ מִדַּבֵּר צֶדֶק סֶלָה: אָהַבְתָּ כָל־דִּבְרֵי־ 6

, te *conteret æternum* in : te deſtruet Deus Etiam .doloſa lingua devorationis

בָלַע לְשׁוֹן מִרְמָה: גַּם־אֵל יִתָּצְךָ לָנֶצַח יַחְתְּךָ 7

videbunt Et .Selah , viventium terra è te eradicabit & : tabernaculo è te *abradet* &

וְיִסָּחֲךָ מֵאֹהֶל וְשֵׁרֶשְׁךָ מֵאֶרֶץ חַיִּים סֶלָה: וְיִרְאוּ 8

non vir Ecce .ridebunt eum ſuper & ; timebunt & , juſti

צַדִּיקִים וְיִירָאוּ וְעָלָיו יִשְׂחָקוּ: הִנֵּה הַגֶּבֶר לֹא 9

eſt roboratus ; *ſuæ opulentiæ multitudine in* fidit & , ſuam fortitudinem Deum poſuit

יָשִׂים אֱלֹהִים מָעוּזּוֹ וַיִּבְטַח בְּרֹב עָשְׁרוֹ יָעֹז

miſericordia in ſperavi : Dei domo in *frondoſa* olea ſicut ego Et.ſua pravitate in

בְּהַוָּתוֹ: וַאֲנִי כְּזַיִת רַעֲנָן בְּבֵית אֱלֹהִים בָּטַחְתִּי בְחֶסֶד־ 10

: feciſti quoniam , ſeculum in tibi Confitebor .*perpetuum* & ,ſeculum Dei

אֱלֹהִים עוֹלָם וָעֶד: אוֹדְךָ לְעוֹלָם כִּי עָשִׂיתָ 11

.tuis miſericordibus coram bonum quoniam ,tuum nomen expectabo &

וַאֲקַוֶּה שִׁמְךָ כִּי־טוֹב נֶגֶד חֲסִידֶיךָ:

PSAL. LIII. נג

: ſuo corde in ſtultus Dixit .David ipſi *Maſchil* ,Machalath ſuper Victori

1 לַמְנַצֵּחַ עַל־מָחֲלַת מַשְׂכִּיל לְדָוִד: אָמַר נָבָל בְּלִבּוֹ 2

non , iniquitatem fecerunt abominabilem & ,corruperunt : Deus Non

אֵין אֱלֹהִים הִשְׁחִיתוּ וְהִתְעִיבוּ עָוֶל אֵין

,hominum filios ſuper proſpexit cœlis è Deus .bonum *faciens*

עֹשֵׂה־טוֹב: אֱלֹהִים מִשָּׁמַיִם הִשְׁקִיף עַל־בְּנֵי־אָדָם 3

, retroceſſit ille *Omnis* .Deum requirens ; intelligens ſit an *videndum ad*

לִרְאוֹת הֲיֵשׁ מַשְׂכִּיל דֹּרֵשׁ אֶת־אֱלֹהִים: כֻּלּוֹ סָג 4

cognoverunt Nonne .unus etiam non ; bonum *faciens* non , *fœtuerunt* pariter

יַחְדָּו נֶאֱלָחוּ אֵין עֹשֵׂה־טוֹב אֵין גַּם־אֶחָד: הֲלֹא יָדְעוּ 5

Deum : panem *comederunt* , meum populum *edentes* , iniquitatem operantes

פֹּעֲלֵי אָוֶן אֹכְלֵי עַמִּי אָכְלוּ לֶחֶם אֱלֹהִים

Deus quoniam ,timor fuit non , timore timuerunt Ibi .invocaverunt non

לֹא קָרָאוּ: שָׁם פָּחֲדוּ־פַחַד לֹא־הָיָה פָחַד כִּי־אֱלֹהִים 6

Quis .eos ſprevit Deus quoniam,affeciſti pudore:te *obſidentis* oſſa diſperſit

פִּזַּר עַצְמוֹת חֹנָךְ הֱבִשֹׁתָה כִּי־אֱלֹהִים מְאָסָם: מִי 7

? ſui populi captivitatem *Deum convertendo in* , Iſrael ſalutes Sijon ex dabit

יִתֵּן מִצִּיּוֹן יְשֻׁעוֹת יִשְׂרָאֵל בְּשׁוּב אֱלֹהִים שְׁבוּת עַמּוֹ

.Iſrael lætabitur ,Jahacob exultabit

יָגֵל יַעֲקֹב יִשְׂמַח יִשְׂרָאֵל:

תרגום TARGUM.

מַה תִּשְׁתַּבַּח בְּלִישָׁנָא בִּישָׁא גְּבַר לְמִשְׁדֵּי אֲדַם 3
זַכָּאָה חִסְדָּא דֶאֱלָהָא כָּל יוֹמָא: אִתְרְגוּשְׁתָּא 4
תְּחַשֵּׁב בְּלִבְבָךְ לִישָׁנָךְ הֵיךְ אִזְמֵל חָרִיף עָבֵיד
מִלֵּי מַלְשִׁינוּתָא: רְחֵמְתָּא בִּישׁ מִן טָב שִׁקְרָא 5
מִלְמַלָּלָא צִדְקָתָא לְעָלְמִין: רְחֵמְתָּא כָּל מִלֵּי 6
סַלְעֲמִיתָא לִישָׁנָא דְנִכְלוּ: לְחוּד אֱלָהָא 7
יִתְרְעֲנָךְ לַעֲלְמִין יִתְבְּרָנָךְ וִיטַלְטְלִנָּךְ מִלְמִתַּב
בְּמַשְׁכְּנָא וְיִתְלְשִׁנָּךְ מִן אֲרַע חַיַּיָּא לְעָלְמִין:
וְיֶחֱמוּן צַדִּיקַיָּא בְּפוּרְעֲנוּתָא דְרַשִּׁיעַיָּא וְיִדְחֲלוּן 8
מִן קֳדָם יְיָ וְאַמְטוּלְתֵיהּ יְגַחֲכוּן: וְיֵימְרוּן הָא 9
גַּבְרָא דְּלָא שַׁוִּי מֵימְרָא דַיְיָ עוּשְׁנֵיהּ סְבַר
בְּעַתְרֵיהּ עֲשִׁין בְּמָמוֹנֵיהּ: וַאֲנָא הֵיךְ אִילָן זֵיתָא 10
עֲבוּף בְּבֵית מַקְדַּשׁ אֱלָהָא סַבְרֵית בְּחִסְדָּא
דֶאֱלָהָא לְעָלְמֵי עָלְמִין: אוֹדֶה קֳדָמָךְ לַעֲלָם 11
אֲרוּם עֲבַדְתְּ פּוּרְעֲנוּת דִּינִי וְאַמְתִּין שְׁמָךְ אֲרוּם
טָב קֳבֵל חֲסִידָךְ:

נג

לְשַׁבָּחָא עַל פּוּרְעֲנוּת דְּרַשִּׁיעַיָּא דִּי מַפְּסִין שְׁמָא 1
דְּקִירִים שִׂכְלָא טָבָא עַל יַד דָּוִד: אֲמַר נָבָל 2
בְּלִבֵּיהּ לֵית אֱלָהָא פְּרַע מִנֵּיהּ מְטוּל הֵיכְנָא
חַבִּילוּ רַשִּׁיעַיָּא אוֹרְחַתְהוֹן רְחִיקוּ מִן טָבָא
דְּאִשְׁתְּכַח בְּהוֹן עָלָא לֵית דְּעָבֵד טָב: בְּרַם 3
אֱלָהָא מִשְּׁמַיָּא אוֹדִיק עַל בְּנֵי אֱנָשָׁא לְמֶחֱמֵי
הַאִית דִּי יַשְׂכִּיל בְּאוֹרַיְתָא תָּבַע אוּלְפָּן מִן קֳדָם
יְיָ: כּוּלְהוֹן זָרוּ כַּחֲדָא אִטַּנְּפוּ לֵית דְּעָבֵד טָב 4
לֵית אֲפִילוּ חַד: הֲלָא יָדְעוּן כָּל עָבְדֵי שִׁקְרָא 5
דְּמִן קֳדָמוֹי מִתְיְהֵיב מְזוֹנָא וּמַה דֵּין אָכְלֵי עַמִּי
סָעֲדִין לַחְמָא שְׁמָא דַיְיָ לָא בָרְכוּ: תַּמָּן דְּחַלוּ 6
דְּלוּחָא מִן פְּסִילֵיהוֹן דְּלֵית בְּהוֹן צְרוֹךְ לְמִדְחַל
אֲרוּם אֱלָהָא מְבַדַּר תְּקוֹף מַשְׁרְיַת חַיָּבַיָּא
בְּהַתְּתָא אֲרוּם מֵימְרָא דַיְיָ רְחֲקִנּוּן: מַן הוּא 7
דִּיהֵב מִן צִיּוֹן פּוּרְקָנַיָּא דְיִשְׂרָאֵל אֱלָהֵן יְיָ כַּד
יַחֲזַר מֵימְרָא דַיְיָ גָּלוּת דְּעַמֵּיהּ יְרַנֵּן דְּבֵית יַעֲקֹב
יֶחְדֵּי דְּבֵית יִשְׂרָאֵל:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

QUid glorians in lingua iniqua potens 3
ad effundendum ſanguinem juſtum ?
miſericordia Dei adeſt tota die. Obmurmurationem 4
cogitabis in corde tuo : lingua
tua, ſicut novacula acuta, verba facit
detractionis. Dilexiſti malum, magis quàm 5
bonum : mendacium magis, quàm loqui
puritatem in perpetuum. Dilexiſti omnia 6
verba voracitatis, lingua doloſa. Ideò 7
Deus deſtruet te in æternum : diſſipabit
te, & migrare te faciet, ne habites in tabernaculo ;
& eradicabit te de terra vitæ
in æternum. Et inſpicient juſti punitionem 8
improborum, & timebunt ab aſpectu
Dñi, & propter eum ridebunt. Et dicent: 9
Hic eſt homo, qui non poſuit verbum Dñi
fortitudinem ſuam; ſperavit verò in divitiis
ſuis, fortis factus eſt in opulentia ſua.
At ego ſicut arbor olivæ frondoſæ in domo 10
ſancta Dei, confiſus ſum in miſericordia
Dei in ſecula ſeculorum. Confitebor 11
tibi in ſeculum, quoniam execut⁹ es ultionem
judicii mei, & expectabo nomen tuum,
quoniam bonum eſt coram piis tuis.

Ad laudandum, ob retributionem impiorum 1
blaſphemantium nomen Domini,
intellectus bonus per manum Davidis.

PSAL. LIII.

DIxit nequam in corde ſuo, Non eſt 2
Deus; ulciſcere de illo, quandoquidem
corruperunt impii vias ſuas, elongati
ſunt à bono, inventa eſt in eis inquitas :
non eſt qui operetur bonum. Veruntamen 3
De⁹ de cœlis proſpexit ſuper filios hominum,
ut videret an eſſet intelligens in lege,
quærens eruditionem à conſpectu Dei.
Omnes retroceſſerunt, ſimul inquinati 4
ſunt; non eſt qui faciat bonum, ne unus quidem.
Nunquid non cognoſcent qui operantur 5
iniquitatem, quod à conſpectu ejus
datur nutrimentum ? ecquid hoc eſt ? devorantes
populum meum pane manducato,
nomen Domini non benedixerunt.
Ibi timuerunt timore inter idola ſua, in 6
quibus non eſt cauſa cur timeantur ; quoniam
Deus qui diſſipas robur exercituum
flagitioſorum ; confudiſti [*eos*:] verbum
enim Dñi eos execrationi habuit. Quis 7
ille eſt qui dabit de Sion *redemptiones* Iſrael,
niſi Dominus? quando reduxerit *verbum
Domini* captivitatem populi ſui, exultabit
dom⁹ Jaacob, lætabitur dom⁹ Iſrael.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܠܡܢܐ ܡܫܬܒܗܪ ܐܢܬ ܒܒܝܫܘܬܐ ܓܢܒܪܐ. ܘܥܠ ܙܟܝܐ ܟܠܗ ܝܘܡܐ * ܥܘܠܐ ܡܬܚܫܒ 3
4 ܠܫܢܟ: ܘܐܝܟ ܡܣܦܪܐ ܕܡܫܚܠ ܥܒܕܬ ܢܟܠܐ. * ܪܚܡܬ ܒܝܫܬܐ ܡܢ ܛܒܬܐ: * ܕܝܦܣ * 5
ܘܕܓܠܘܬܐ ܡܢ ܡܡܠܠܐ ܕܟܐܢܘܬܐ. * ܕܝܦܣ * ܪܚܡܬ ܟܠ ܕܡܡܠܠܝܢ ܥܘܠܐ: 6
ܘܠܫܢܐ ܢܟܠܬܢܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܥܩܪܟ ܐܠܗܐ: ܘܢܣܚܦܟ ܠܥܠܡ ܡܢ ܡܫܟܢܟ: 7
ܘܢܥܩܪܟ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܚܝܐ: * ܕܝܦܣ * ܢܚܙܘܢ ܙܕܝܩܐ ܘܢܚܕܘܢ. ܘܢܣܒܪܘܢ ܒܡܪܝܐ: 8
ܘܢܐܡܪܘܢ * ܕܗܢܘ ܓܒܪܐ ܕܠܐ ܣܡ ܠܐܠܗܐ ܬܘܟܠܢܗ. ܐܠܐ ܐܬܬܟܠ ܥܠ ܣܘܓܐܐ ܕܥܘܬܪܗ 9
ܘܐܬܬܪܝܡ ܒܩܢܝܢܗ: * ܘܐܢܐ ܐܝܟ ܙܝܬܐ ܡܫܒܚܬܐ ܒܒܝܬܗ ܕܐܠܗܐ. ܣܒܪܬ ܒܛܝܒܘܬܗ 10
ܕܐܠܗܐ: ܠܥܠܡ ܘܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ. * ܐܘܕܐ ܠܟ ܠܥܠܡ ܕܥܒܕܬ: ܘܐܣܒܪ ܫܡܟ ܠܕܪ 11
ܕܪܝܢ ܩܕܡ ܙܕܝܩܝܟ.

AD quid gloriaris in malitia gigas, & adverſùs 3
innocentem quotidie Iniquitatem 4
meditatur lingua tua, & perinde ac novacula
exacuata feciſti dolum ? Dilexiſti mala 5
præ bonis, * *Diapſalma* * & mendacium
præ ſermone veritatis. * *Diapſalma.* *
Amâſti omnes qui loquuntur iniquitatem & 6
linguas doloſas. Propter hoc eradicabit te 7
Deus, téque dejiciet in æternum de taberculo
tuo, & radicem tuã de terra viventium;
* *Diapſalma.* * Ut videant juſti, & lætentur, 8
ac ſperent in Domino, dicántque; Iſte 9
eſt homo qui non conſtituit Deum ſpem ſuã,
ſed confiſus eſt in multitudine divitiarum,
& ſuperbivit propter opes ſuas. At ego 10
ſicut oliva laudabilis in domo Dei ſperavi in
bonitate Dei in æternum & in ſeculum ſeculorum.
Confitebor tibi in ſempiternum, quoniam 11
feciſti: & prædicabo nomen tuum in generationem
generationum coram juſtis tuis.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ *

* ܥܠ ܐܚܝܬܘܦܠ ܕܝܗܒ ܡܠܟܐ ܠܐܒܫܠܘܡ ܕܢܪܕܘܦ ܒܬܪ ܕܘܝܕ ܐܒܘܗܝ ܘܢܩܛܠܝܘܗܝ. ܘܗܦܟ 1
ܥܘܠܗ ܒܪܝܫܗ ܘܡܝܬ. ܠܢ ܕܝܢ ܪܡܙ ܠܢ ܓܠܝܢܐ ܕܦܪܘܩܐ ܘܚܐܪܘܬܐ ܕܡܢ ܥܡܡܐ ܕܠܐ
ܐܠܗܐ. ܦܬܓ ܝܘ. * ܐܡܪ ܥܘܠܐ ܒܠܒܗ ܕܠܝܬ ܐܠܗܐ: ܐܬܚܒܠܘ ܘܐܬܛܢܦܘ 2
ܒܥܘܠܗܘܢ. ܘܠܝܬ ܕܥܒܕ ܛܒܬܐ: * ܐܠܗܐ ܐܕܝܩ ܡܢ ܫܡܝܐ ܥܠ ܒܢܝܢܫܐ. ܕܢܚܙܐ 3
ܐܢ ܐܝܬ ܕܡܣܬܟܠ ܘܒܥܐ ܠܐܠܗܐ: * ܟܠܗܘܢ ܣܛܘ ܐܟܚܕܐ ܘܐܬܛܢܦܘ. ܘܠܝܬ ܕܥܒܕ 4
ܛܒܬܐ ܐܦܠܐ ܚܕ: * ܘܠܐ ܝܕܥܘ ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝ ܥܘܠܐ. ܕܐܟܠܝܢ ܗܘܘ ܠܥܡܝ 5
ܡܐܟܘܠܬܐ ܕܠܚܡܐ: ܘܠܐܠܗܐ ܠܐ ܩܪܘ. * ܬܡܢ ܕܚܠܘ ܕܚܠܬܐ: ܐܝܟܐ ܕܠܐ ܗܘܬ 6
ܕܚܠܬܐ. ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܒܕܪ ܓܪܡܝܗܘܢ: ܕܐܝܠܝܢ ܕܫܦܪܝܢ ܠܒܢܝܢܫܐ ܒܗܬܘ. ܡܛܠ
ܕܐܠܗܐ ܐܣܠܝ ܐܢܘܢ: * ܡܢ ܢܬܠ ܡܢ ܨܗܝܘܢ ܦܘܪܩܢܐ ܠܐܝܣܪܝܠ. ܡܐ ܕܡܗܦܟ ܡܪܝܐ 7
ܫܒܝܬܐ ܕܥܡܗ: ܢܕܘܨ ܝܥܩܘܒ ܘܢܚܕܐ ܐܝܣܪܝܠ.

PSAL. LIII.

De Abitophil, qui conſilium dedit Abſalomi 1
*ut inſequeretur Davidem patrem ſuum,
eúmque interficeret, at recidit ſcelus ejus in
caput ſuum ac mortuus eſt. Quòd autem ad
nos, innuit nobis revelationem Salvatoris, &
libertatem à populis atheis. Verſ.* 16.

DIcit iniquus in corde ſuo, non eſt Deus. 2
Corrupti ſunt & contaminati ſunt in
iniquitate ſua, & non eſt qui faciat bonum.
Deus proſpexit è cœlo ſup filios hominis, ut 3
videret num eſſet quis intelligens & requirens
Deum. Omnes aberrârunt ſimul ac polluti 4
ſunt, & non eſt qui operatur bonum, ne
unus quidem. Et non cognoverunt omnes 5
operantes iniquitatem, qui comedebant populum
meum comeſtione panis, & Deum non
invocaverunt. Ibi timuerunt timore ubi non 6
erat timor, quia Deus diſſipavit oſſa eorum ;
Nam ii qui placent hominibus, confuſi ſunt :
quoniam Deus aſpernatus eſt eos. O quis dabit 7
de Sion ſalutem Iſraeli ? Cum averteret
Dominus captivitatem populi ſui, exultabit
Jacob, & lætabitur Iſrael.

Verſio VULG. LAT.

3 Quid gloriaris in malitia, qui potens
4 es in iniquitate? Totâ die injuſtitiam
cogitavit lingua tua: ſicut novacula
5 acuta, feciſti dolum. Dilexiſti malitiam
ſuper benignitatem; iniquitatem magis
6 quàm loqui æquitatem. Dilexiſti omnia
verba præcipitationis, lingua doloſa.
7 Proptereà Deus deſtruet te in finem: evellet
te, & emigrabit te de tabernaculo
tuo; & radicem tuam de terra viventium.
8 Videbunt juſti, & timebunt, &
9 ſuper eum ridebunt, & dicent; Ecce homo,
qui non poſuit Deum adjutorem ſuum:
Sed ſperavit in multitudine divitiarum
ſuarũ: & prævaluit in vanitate ſua.
10 Ego autẽ, ſicut oliva fructifera in domo
Dei, ſperavi in miſericordia Dei in æternum,
11 & in ſeculum ſeculi. Confitebor
tibi in ſeculum quia feciſti: & expectabo
nomen tuum, quoniam bonum eſt in conſpectu
ſanctorum tuorum.

1 In finem, Pro Maeleth intelligentiæ David. LII.

Dixit inſipiens in corde ſuo, Non eſt
2 Deus. Corrupti ſunt, & abominabiles
facti ſunt in iniquitatibus: non eſt qui
3 faciat bonum. Deus de cœlo proſpexit
ſuper filios hominum: ut videat ſi eſt intelligens,
4 aut requirens Deum. Omnes
declinaverunt, ſimul inutiles facti ſunt:
non eſt qui faciat bonum, non eſt uſque
5 ad unum. Nónne ſcient omnes qui operantur
iniquitatem, qui devorant plebem
6 meam ut cibum panis? Deum non invocaverunt:
illîc trepidaverunt timore, ubi
non erat timor. Quoniam Deus diſſipavit
oſſa eorum qui hominibus placent:
confuſi ſunt, quoniam Deus ſprevit eos:
7 Quis dabit ex Sion ſalutare Iſrael? cùm
converterit Deus captivitatem plebis
ſuæ, exultabit Jacob, & lætabitur
Iſrael.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

3 Τί ἐγκαυχᾷ ἐν κακίᾳ ὁ δυνατὸς ἀνομίαν;
4 Ὅλην τὴν ἡμέραν ἀδικίαν ἐλογίσατο ἡ
γλῶσσά σου· ὡσεὶ ξυρὸν ἠκονημένον ἐποίησας δόλον.
5 Ἠγάπησας κακίαν ὑπὲρ ἀγαθωσύνην, ἀδικίαν
ὑπὲρ τὸ λαλῆσαι δικαιοσύνην. ΔΙΑΨΑΛΜΑ.
6 Ἠγάπησας πάντα τὰ ῥήματα καταποντισμοῦ,
7 γλῶσσαν δολίαν. Διὰ τοῦτο ὁ θεὸς καθέλοι
σε εἰς τέλος, ἐκτίλαι σε καὶ μεταναστεύσαι
σε ἀπὸ σκηνώματος, καὶ τὸ ῥίζωμά σου ἐκ
8 γῆς ζώντων. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. Καὶ ὄψονται δίκαιοι
καὶ φοβηθήσονται, καὶ ἐπ' αὐτὸν γελάσονται, καὶ
9 ἐροῦσιν, Ἰδοὺ ἄνθρωπος, ὃς οὐκ ἔθετο τὸν θεὸν
βοηθὸν αὐτοῦ, ἀλλ' ἐπήλπισεν ἐπὶ τὸ πλῆθος τοῦ
πλούτου αὐτοῦ, καὶ ἐνεδυναμώθη ἐπὶ τῇ ματαιότητι
10 αὐτοῦ. Ἐγὼ δὲ ὡσεὶ ἐλαία κατάκαρπος ἐν τῷ
οἴκῳ τοῦ θεοῦ, ἤλπισα ἐπὶ τὸ ἔλεος τοῦ θεοῦ εἰς τὸν
11 αἰῶνα καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος. Ἐξομολογήσομαί
σοι εἰς τὸν αἰῶνα, ὅτι ἐποίησας, καὶ ὑπομενῶ τὸ
ὄνομά σου, ὅτι χρηστὸν ἐναντίον τῶν ὁσίων σου.

1 Εἰς τὸ τέλος, Ὑπὲρ μαελὲθ συνέσεως τῷ Δαυίδ. νβʹ.

Εἶπεν ἄφρων ἐν καρδίᾳ αὐτοῦ, Οὐκ ἔστι θεός.
2 Διέφθειραν, καὶ ἐβδελύχθησαν ἐν ἀνομίαις·
3 οὐκ ἔστι ποιῶν ἀγαθόν. Ὁ θεὸς ἐκ τοῦ οὐρανοῦ διέκυψεν
ἐπὶ τοὺς υἱοὺς τῶν ἀνθρώπων, τοῦ ἰδεῖν εἰ ἔστι
4 συνιῶν, ἢ ἐκζητῶν τὸν θεόν. Πάντες ἐξέκλιναν,
ἅμα ἠχρειώθησαν, οὐκ ἔστι ποιῶν ἀγαθὸν,
5 οὐκ ἔστιν ἕως ἑνός. Οὐχὶ γνώσονται πάντες οἱ ἐργαζόμενοι
τὴν ἀνομίαν, οἱ κατεσθίοντες τὸν λαόν
6 μου βρώσει ἄρτου; Τὸν θεὸν οὐκ ἐπεκαλέσαντο.
ἐκεῖ ἐφοβήθησαν φόβον, οὗ οὐκ ἦν φόβος.
ὅτι ὁ θεὸς διεσκόρπισεν ὀστᾶ ἀνθρωπαρέσκων,
κατῃσχύνθησαν, ὅτι ὁ θεὸς ἐξουδένωσεν αὐτούς.
7 Τίς δώσει ἐκ Σιὼν τὸ σωτήριον τοῦ
Ἰσραήλ; ἐν τῷ ἀποστρέψαι κύριον τὴν αἰχμαλωσίαν
τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, ἀγαλλιάσεται Ἰακὼβ, καὶ εὐφρανθήσεται Ἰσραήλ.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

1 [a] Quid (b) gloriaris in 3
malitia, potens iniquitate?
2 Totâ die (b) injuſtitiam 4
cogitavit lingua tua: ſicut novacula
acuta, feciſti dolum. 3 Dilexiſti 5
malitiã ſuper benignitatẽ;
iniquitatẽ magis, quã loqui æquitatem.
DIAPSALMA. 4 Dilexiſti 6
[c] omnia verba (c) præcipitationis,
linguam doloſam. 5 Proptereà 7
Deus (d) deſtruat te in finem,
evellat te, & emigret te de
(e) tabernaculo, & radicem tuam
de terra viventium. DIAPSALMA.
6 Et videbunt juſti, & timebunt: 8
& ſuper eum ridebunt,
& dicent; Ecce homo qui non poſuit 9
Deum adjutorem ſuum: 7 ſed
ſperavit in multitudine divitiarum
ſuarum: (f) & prævaluit in
vanitate ſua. 8 Ego autem, ſicut 10
[d] oliva fructifera in domo Dei,
ſperavi in miſericordia Dei in æternum,
& in ſeculum ſeculi.
9 Confitebor tibi in ſeculum, quia 11
[e] feciſti: & expectabo [f] nomen
tuum, quoniam bonum eſt in
conſpectu ſanctorum tuorum.

In finem, Pro (a) Maeleth intellectûs ipſi David. LII. 1

Dixit inſipiens in corde ſuo,
Non eſt Deus. 2 (b) Corruperunt, 2
& abominabiles facti
ſunt in iniquitatibus: non eſt qui
faciat bonum. 3 Deus de cœlo 3
proſpexit ſuper filios hominum:
ut videat, ſi eſt intelligens, aut
requirens Deum. 4 Omnes [a] declinaverunt, 4
ſimul inutiles facti
ſunt: non eſt qui faciat bonum, non
eſt uſque ad unum. 5 Nónne ſcient 5
omnes, qui operantur iniquitatem,
qui devorant plebem
meam (c) cibo panis? 6 Deum non 6
invocaverunt: ibi (d) timuerunt
timore, ubi non erat timor. 7 Quoniam
Deꝰ diſſipavit oſſa (e) eorũ,
qui hominibus placent: confuſi
ſunt, quoniam Deus ſprevit eos.
8 Quis dabit ex Sion ſalutare 7
Iſrael? In (f) avertendo Dominus
captivitatem populi ſui, exultabit
Jacob, & lætabitur Iſrael.

Verſio ÆTHIOPICA.

፶፩ ለምንት ፡ ይዜሀር ፡ ኃያል ፡ በእከዩ ፡፡ 1
ወደዔመፅ ፡ ፪ ኵሎ ፡ አሚረ ፡፡ ኃጢአተ ፡
ሐለየ ፡ ልብከ ፡፡ ከመ ፡ መላጼ ፡ በሊሕ ፡ ገበር
ከ ፡ ሕብለ ፡፡=፡ አብደርከ ፡ እኪተ ፡ እምሠ 3
ናይት ፡፡ ወትዔመፅ ፡ እምትንብብ ፡ ጽድ
ቀ ፡፡=፡ ወአፍቀርከ ፡ ኵሎ ፡ ነገረ ፡ ልሳነ ፡ መ 4
ስጥም ፡፡=፡ በእንተዝ ፡ ይነሥተከ ፡ እግዚ 5
አብሔር ፡ ለገሥፈ ፡፡ ወይመልሐከ ፡ ወያፈል
ሰከ ፡ እምቤትከ ፡፡ ወሠረወከኒ ፡ እምድረ ፡
ሕያዋን ፡፡=፡ ይርአዩ ፡ ጻድቃን ፡ ወይፈር 6
ሁ ፡፡ ወይስሐቁ ፡ ላዕሌሁ ፡ ወይቤሉ ፡፡ ነዋ ፡ ብ
እሲ ፡ ዘኢረሰዮ ፡ ለእግዚአብሔር ፡ ረደኢ
ሁ ፡፡=፡ ወተአመነ ፡ በብዝኃ ፡ ብዕሉ ፡፡ ወተ 7
ኃየለ ፡ በከንቱ ፡፡=፡ አንሰ ፡ ከመ ፡ ዕፀ ፡ ዘይ 8
ት ፡ ሠሙር ፡ ውስተ ፡ ቤተ ፡ እግዚአብሔር ፡፡
ወተወከልኩ ፡ በምሕረቱ ፡ ለእግዚአብሔ
ር ፡፡ ለዓለም ፡ ወለዓለመ ፡ ዓለም ፡፡=፡ እገ 9
ኒ ፡ ለከ ፡ ለዓለም ፡ እስመ ፡ ገበርከ ፡ ሊተ ፡፡ እ
ሴፈው ፡ ለምሕረትከ ፡ እስመ ፡ ሠናይቲ ፡ ኀ
ቤ ፡ ጻድቃኒከ ፡፡=፡

ፍጻሜ ፡ ዘአመ ፡ መጽአ ፡ ዘበ ፡
አእምሮ ፡ ዘደዊት ፡፡

፶፪ ይብል ፡ አብድ ፡ በልቡ ፡ አልቦ ፡ እግዚአ 1
ብሔር ፡፡=፡ ኃሰሩ ፡ ወረኵሱ ፡ በጌጋዮ 2
ሙ ፡፡ አልቦ ፡ ዘይገብራ ፡ ለሠናይት ፡፡=፡ እ 3
ግዚአብሔር ፡ ኆወጸ ፡ እምሰማይ ፡ ዲበ ፡ እጓ
ለ ፡ እምሕያው ፡፡ ከመ ፡ ይርአይ ፡ እመቦ ፡ ጠ
ቢበ ፡ ዘየኃሥ ፡ ለእግዚአብሔር ፡፡=፡ ኵሎ ፡ 4
አረዩ ፡ ወኅቡረ ፡ ዐለዉ ፡፡ አልቦ ፡ ዘይገብራ ፡ ለ
ሠናይት ፡ አልቦ ፡ ወኢአሐዱ ፡፡=፡ ወኢያእ 5
ምሩ ፡ ኵሎሙ ፡ ገበርተ ፡ ዐመፃ ፡፡ እለ ፡ ይው
ኅጥዎሙ ፡ ለሕዝብየ ፡ ከመ ፡ በሊዐ ፡ እክ
ል ፡፡=፡ ወለእግዚአብሔር ፡ ኢጸውዕዎ ፡፡ 6
ወበህየ ፡ ፈርሁ ፡ ወገረሞሙ ፡ ዘኢኮነ ፡ ግሩ
ም ፡፡=፡ እስመ ፡ እግዚአብሔር ፡ ዘረወ ፡ አ 7
ዕጽምቲሆሙ ፡ ለመደልዋን ፡፡ ወተኃፍሩ ፡ እ
ስመ ፡ እግዚአብሔር ፡ አኃሰሮሙ ፡፡=፡ መ 8
ኑ ፡ ይሁብ ፡ እምጽዮን ፡ መድኃኒተ ፡ ለእስ
ራኤል ፡፡ አመ ፡ ሜጠ ፡ እግዚአብሔር ፡ ፄዋ ፡
ሕዝቡ ፡፡ ይትፌሣሕ ፡ ያዕቆብ ፡ ወይትሐሠ
ይ ፡ እስራኤል ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [a] Quare gloriatur potens in malitia, & iniquè agit? [b] peccatum meditatur cor tuum: [c] omne verbum linguæ ſubmergentis. Proptereà [d] oliva perplacens [e] feciſti mihi: [f] miſericordiam tuam, quoniam bona *PSAL. LII.* [a] ſimiles facti ſunt, & ſimul prævaricati ſunt: non

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

3 4 * لماذا تفتخر ايها القوي بالشر والاثم * جميع النهار لسانك يفكر بالظلم مثل الموسى
5 المسنونة * صنعت الغش * احببت الشر اكثر من الخير * والكذب اكثر من كلام
6 7 الحق * احببت كل كلام التغريق * ولسان الغش * فلذلك يطرحك الله الى الانقضاء *
8 ويقلعك وينفيك من مسكنك واصلك من ارض الحياة * يرى الصديقون فيخافون
9 ويضحكون عليه ويقولون * ان هذا هو رجل لم يجعل الله له معينا بل توكل على
10 وفور غناه وتقوى بباطله * وانا مثل شجرة الزيتون المثمر في بيت الله توكلت على
11 رحمة الله الى الابد والى ابد الابد * اشكرك يا رب لانك صنعت لي * وانتظر باسمك
لانه صالح امام قديسيك * الليلويا *

* المزمور الثاني والخمسون *

1 * لداود نبوة على بابل ولاجل سنحاريب * استيخن * يه *
2 * قال الجاهل في قلبه انه ليس اله * فسدوا وتنجسوا بالاثام وليس من يعمل صالحا *
3 4 * اطلع الله من السماء على بني البشر ليرى ان كان ثم فهيم او طالب لله * زاغوا
5 جميعا كلهم واضطربوا * وليس من يعمل صالحا ولا واحد * الم يعلم كل عاملي الاثم *
6 الآكلين شعبي * وفي اكل الخبز لله لم يسموا * هناك خافوا خوفا حيث لا خوف * لان
7 الله يفرق عظام المرائين للناس * خزوا لان الله رذلهم * من يعطي من صهيون الخلاص
لاسرائيل * اذا رد الرب سبي شعبه فليتهلل يعقوب وليفرح اسرائيل *

Quarè gloriaris, O potens, in malitia 3
& iniquitate Totâ die? Lingua 4
tua cogitat flagitium tanquam novacula
acuta: feciſti dolum: Dilexiſti malignitatem 5
potiùs quàm bonitatem, & mendacium
potiùs quàm ſermonem veritatis:
Dilexiſti omnem ſermonem ſubmergentem 6
et linguam fraudulentam. Proptereà 7
abjiciet te Deus in exterminium, & evellet
te, & extorrem te faciet ex habitaculo
tuo, et ſtirpem tuam è terra vitæ. Videbunt 8
juſti et timebunt, et ridebunt eum,
ac dicent; Nimirum hic eſt vir qui non 9
propoſuit Deum ſibi adjutorem, ſed confiſus
eſt in abundantia divitiarum ſuarum,
& vires ſuas collocavit in vanitate ſua.
Et ego tanquam arbor olivæ fructiferæ in 10
domo Dei, fretus ſum miſericordiâ Dei
in æternum, & uſque in ſeculum ſeculi.
Gratias agam tibi, O Domine, quia feciſti 11
pro me: & inhærebo nomini tuo,
quoniam bonum eſt in conſpectu Sanctorum
tuorum. Alleluja.

PSAL. LII.

Davidis. Prophetia de Babel, 1
et de Sennacherib. Verſ. 15.

Dixit ſtultus in corde ſuo, non eſſe 2
Deum. Corrupti ſunt & contaminati
ſunt in ſceleribus ſuis, & non eſt qui
faciat bonum. Proſpexit Deus de cœlo 3
ſuper filios hominum, ut videret utrùm
eſſet ibi mentis compos aut requirens Deum.
Erraverunt ſimul omnes & turbati 4
ſunt, nec eſt qui faciat bonum, ne unus
quidem. Nónne noverunt omnes operantes 5
iniquitatem, comedentes populum meum,
& in comeſtione panis Deum non nominaverunt?
Ibi timuerunt timore, ubi 6
ne propè quidem timor erat: quia Deus
diſſipat oſſa hypocritarum apud homines:
Confuſi ſunt, quia Dominus contempſit eos.
Quis dabit de Sion ſalutem Iſraeli? 7
cùm revocaverit Deus captivitatem populi
ſui, exultet Jacob et lætetur Iſrael.

PSAL. LIV. נד

dixiſſent & , Ziphim veniendo In .David ipſi *Maſchil* , Neghinoth in Victori
למנצח בנגינות משכיל לדוד: בבוא הזיפים ויאמרו 1
2 ;fac me ſalvũ tuo nomine in Deus *? nobiſcum ſe abſcondit* David Nónne : Saul ad
לשאול הלוא דוד מסתתר עמנו: אלהים בשמך הושיעני 3
dicta auſculta;meam orationẽ audi Deus .me *judicabis* tua fortitudine in &
ובגבורתך תדינני: אלהים שמע תפלתי האזינה לאמרי 4
:meam animã quæſierant *terribiles* & , me *ſuper* inſurrexerũt alieni Quoniam .mei oris
פי: כי זרים קמו עלי ועריצים בקשו נפשי 5
Domin⁹:mihi *auxilians* Deus Ecce .Selah , *ſui regione è* Deum poſuerunt non
לא שמו אלהים לנגדם סלה: הנה אלהים עזר לי אדני 6
tua veritate in : meis inimicis malum Reddet .meæ animæ ſuſtentatores inter
בסמכי נפשי: ישוב הרע לשררי באמתך 7
quoniã,Domine tuo nomini confitebor : tibi ſacrificabo *devotione In* .illos ſuccide
הצמיתם: בנדבה אזבחה־לך אודה שמך יהוה כי־ 8
.meus oculus vidit meis *inimicis* in & : me eripuit anguſtia omni ex Quoniam.bonum
טוב: כי מכל־צרה הצילני ובאיבי ראתה עיני: 9

PSAL. LV. נה

;meam orationem Deus percipe Auribus .Davidi ipſi *Maſchil* , *modulis* in Victori
למנצח בנגינות משכיל לדוד: האזינה אלהים תפלתי 1
2 *conquerar* :me exaudi & ,mihi Intende .mea deprecatione à te abſcondas ne &
ואל־תתעלם מתחנתי: הקשיבה לי וענני אריד 3
; impii *coarctationis faciebus* à , inimici voce A .tumultuabor & ,*mea meditatione in*
בשיחי ואהימה: מקול אויב מפני עקת רשע 4
meum Cor .mihi *adverſabuntur naſo* in & , mendacium me *ſuper facient labi* quoniam
כי־ימיטו עלי און ובאף ישטמוני: לבי 5
tremor & ,Timor .me ſuper ceciderunt mortis terrores & :*meo interiori in cruciabitur*
יחיל בקרבי ואימות מות נפלו עלי: יראה ורעד 6
? columba ſicut *pennam mihi dabit Quis* :dixi Et .*horror* me operuit & :me *in veniet*
יבא בי ותכסני פלצות: ואמר מי־יתן־לי אבר כיונה 7
.Selah , deſerto in *pernoctabo* ; *vagando* me *elongabo* Ecce .*inhabitabo* & , *volabo*
אעופה ואשכנה: הנה ארחיק נדד אלין במדבר סלה: 8
, Domine *Degluti* .*turbine à excitato* . vento à ; *mihi evaſionem Accelerabo*
אחישה מפלט לי מרוח סעה מסער: בלע אדני 9 10
nocte ac Die .civitate in *rixam* &,*rapinam* vidi quoniam ; eorum linguam divide
פלג לשונם כי־ראיתי חמס וריב בעיר: יומם ולילה 11
Pravitates .ejus *interiori in labor* &,iniquitas & ;ejus muros ſuper eam circundederunt
יסובבה על־חומתיה ואון ועמל בקרבה: הוות 12
inimicus non Quia .dolus & , fraus ejus platea è *recedet* non & ;ejus *interiori in*
בקרבה ולא־ימיש מרחבה תך ומרמה: כי לא־אויב 13
me abſcondã & ,magnificavit me *ſuper* me habens odio non ; *feram* & , me *afficiet* probris
יחרפני ואשא לא־משנאי עלי הגדיל ואסתר
.meus notus & ,meus *præceptor* ; *meam comparationem* ſecundùm homo tu *Et* .eo ab
ממנו: ואתה אנוש כערכי אלופי ומידעי: 14

נד

לשבחא על תושבחתא שכלא טבא על יד 1
דויד: כד אתו אנשי זיף ואמרו לשאול הלא דויד 2
מטמר גבן: אלהא בשמך פרוק יתי ובכח 3
גבורתך דון יתי: יי קביל צלותי אצית למימר 4
פומי: ארום זדונין קמו עלי ועלימין תבעו 5
נפשי לא שוו אלהא לקבליהון לעלמין: הא 6
יי סעיד לי יי בסמכי נפשי: יתוב בישא למעיקי 7
בהמנותך אמאך יתהון: בנכסתא ארבח קדמך 8
אודי שמך יי ארום טב: ארום מכל עקא 9
פצי יתי ובבעלי דבבי חמת עיני נקמתא:

נה

לשבחא על מלי תושבחתא שכלא טבא 1
על יד דויד: אצית אלהא לצלותי ולא תתכסי 2
מן צלותי: אצית למימרי וקבל מני אתרעם 3
במלי וארגוש: מקל בעל דבבא מן קדם עקת 4
רשיעא ארום יגרון עלי שקרא וברוגזא
ינטרון לי לדבבו: לבי ירתית בגווי ודחלתא 5
דמותא נפלו עלי: דחלתא ורתיתא אתין 6
לי וחפי יתי תבירא: ואמרית מן יתן לי כנפא 7
היך יונתא אטוס ואשרי: הא ארחיק אתר 8
למנדד אבית במדברא לעלמין: ארהיט 9
שיזבותא לי מן זעפא נטלא מעלעולא: סלעם 10
יי עצתהון פלג לישנהון ארום חמית חטוף
ומצו בקרתא: יימם ולילי יחזרונה עלוי 11
שורהא ולאות ושקר במצעה: אתרגושיא 12
במצעה ולא עדי מן פלטיותה שקר ונכילו:
ארום לא בעיל דבבא יקל יתי ואסובר לא 13
מסנאי עלי אתרברב ואטמר מן קדמוי: ואנת 14
אחיתופל גברא דדמי לי רב דאליפת לי
ומהודע חוכמתא לי:

Ad laudandum in cantico, intellectus 1
bonus per manum Davidis: Quando vene- 2
runt viri Ziphæi,& dixerunt Sauli:Nónne
David latitat apud nos ?

PSAL. LIV.

DEus in nomine tuo redime me, & in 3
virtute fortitudinis tuæ judica me. *Domi-* 4
nus accipiet orationem meam,auſculta *ver-*
bum oris mei. Quoniam ſuperbi inſurrexe- 5
runt adverſùm me ; & fortes quærentes
animam meam,non ponunt Deum in con-
ſpectu ſuo in æternum. Ecce Deus adjuvat 6
me : Dominus inter fulcientes animam
meam. *Convertatur* malum in eos qui an- 7
gunt me : in veritate tua proſterna illos.
Sacrificium ſacrificabo coram te : laudabo 8
nomen tuum Domine, quoniam bonum.
Quoniam ex omni tribulatione liberavit 9
me, & in hoſtibus meis vidit oculus meus
ultionem.

Ad laudandũ ſecundùm eloquia Hymni, 1
intellectus bonus per manum Davidis.

PSAL. LV.

AUſculta Deus orationem meam, & ne 2
abſcondaris à precatione mea. Attende 3
ſermoni meo & accipe à me : inquietus
ero in ſermonibus meis , & ſtrepitum
edam; A voce auctoris inimicitiæ propter 4
infeſtationem improbi : quoniam *incli-*
nabunt contra me mendacium,& in furore
recondent mihi odium. Cor meum contre- 5
miſcit intra me, & timores mortis ceci-
derunt ſuper me. Timor & tremor vene- 6
runt in me ; & cooperuit me formido. Et 7
dixi, Quis dabit mihi alam ſicut columbæ :
volarem, & hoſpitio me reciperem. Ecce 8
proriperer *loco* in fugam, habitarem in de-
ſerto ſemper. Accelerarem ſalvationem 9
mihi à vento tempeſtatis ſublatæ, *à turbi-*
ne. Diſſipa Domine conſilium eorum, di- 10
vide linguas eorum; quoniam vidi rapi-
nam & rixam in civitate. Die ac nocte 11
circundabunt eam ſuper muros ejus : &
iniquitas & falſitas in medio ejus. Tu- 12
multus in medio ejus *ſunt* : non diſcedit
de platea ejus mendacium & fraus. Quo- 13
niam adverſarius meus ignominia non af-
ficiet me, ut ſuſtineam ; nec oſor meus ſu-
per me magnificabit ſeſe, ut abſcondar *à*
conſpectu ejus. Et tu Achitophel homo ſimilis mihi, præceptor qui 14
docuiſti me, ac notam reddis mihi ſapientiam.

Verſio SIRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܙܡܘܪܐ ܢܕ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܟܕ ܫܕܪ ܗܘܐ ܝܘܐܒ ܠܚܝܠܗ ܕܢܩܪܘܒ ܥܡ ܐܒܫܠܘܡ. * ܠܢ
2 ܕܝܢ ܗܘܐ ܢܨܚܢܐ ܘܨܠܘܬܐ ܗܘ ܕܡܢ ܐܠܗܐ ܡܬܢܛܪ. ܦܬܓܡܐ ܝܓ.
3 * ܐܠܗܐ ܒܫܡܟ ܦܪܘܩܝܢܝ : ܘܒܚܝܠܟ ܕܘܢܝܢܝ. * ܐܠܗܐ ܫܡܥ ܨܠܘܬܝ. ܘܨܘܬ
4 ܠܡܠܐ ܕܦܘܡܝ. * ܡܛܠ ܕܢܘܟܪܝܐ ܩܡܘ ܥܠܝ : ܘܥܫܝܢܐ ܒܥܘܗ ܠܢܦܫܝ. ܘܠܐ 5
6 ܣܡܘܟ ܐܠܗܐ : * [illegible] * * ܐܠܗܐ ܡܥܕܪܢܝ ܡܪܝܐ ܡܣܡܟܢܗ ܕܢܦܫܝ. * ܐܝܬܐ
7 ܒܝܫܬܐ ܥܠ ܒܥܠܕܒܒܝ : ܘܒܩܘܫܬܟ ܫܬܩ ܐܢܘܢ. * ܘܐܢܐ ܒܩܘܫܬܐ ܐܕܒܚ ܠܟ : ܘܐܘܕܐ 8
9 ܠܫܡܟ ܡܪܝܐ ܕܛܒ ܗܘ. * ܕܡܢ ܟܠ ܐܘܠܨܢܝ ܦܪܩܬܢܝ : ܘܒܒܥܠܕܒܒܝ ܚܙܬ ܥܝܢܝ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܢܗ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܟܕ ܐܬܐܒܠ ܗܘܐ ܥܠ ܐܒܫܠܘܡ ܒܪܗ ܕܐܬܩܛܠ. ܘܢܒܝܘܬܐ
ܥܠ ܗܢܘܢ ܕܐܬܡܪܕܘ ܥܠ ܡܫܝܚܐ. ܦܬܓܡܐ ܡܛ.
2 * ܨܘܬ ܐܠܗܐ ܠܨܠܘܬܝ ܘܠܐ ܬܬܛܫܐ ܡܢ ܒܥܘܬܝ : * ܫܡܥܝܢܝ ܘܥܢܝܢܝ ܘܐܬܦܢܐ ܠܩܥܬܝ
3 4 ܘܫܡܥܝܢܝ. * ܡܛܠ ܒܥܠܕܒܒܝ ܘܡܛܠ ܐܘܠܨܢܗ ܕܚܛܝܐ : ܡܛܠ ܕܨܠܘ ܥܠܝ ܥܘܠܐ 4
5 6 ܘܐܬܚܪܝܘ ܥܡܝ. * ܘܢܦܠܬ ܒܝ ܙܘܥܬܐ : * ܘܚܦܘܢܝ ܛܠܠܝ ܡܘܬܐ. ܐܡܪܬ ܡܢ ܢܬܠ ܠܝ
7 8 ܓܦܐ ܐܝܟ ܕܝܘܢܐ : ܘܐܦܪܚ ܘܐܬܢܝܚ. * ܘܐܬܪܚܩ ܘܐܦܪܚ ܘܐܥܡܪ ܒܡܕܒܪܐ :
9 10 * [illegible] * * ܘܐܣܟܐ ܠܡܢ ܕܡܦܨܐ ܠܝ ܡܢ ܪܘܚܐ ܕܥܠܥܠܐ. * ܚܒܠ ܡܪܝܐ ܘܦܠܓ
11 ܠܫܢܝܗܘܢ : ܡܛܠ ܕܚܙܝܬ ܚܪܝܢܐ ܘܕܝܢܐ ܒܡܕܝܢܬܐ. * ܒܐܝܡܡܐ ܘܒܠܠܝܐ ܢܚܕܪܘܢ
12 13 ܫܘܪܝܗ : ܥܘܠܐ ܘܡܫܩܪܘܬܐ ܒܓܘܗ * ܘܢܟܠܐ. ܘܠܐ ܥܒܪ ܡܢ ܫܘܩܝܗ ܢܟܠܐ ܘܢܟܠܐ : * ܠܐ
ܗܘܐ ܒܥܠܕܒܒܐ ܚܣܕܢܝ ܕܐܣܝܒܪ. ܘܐܦܠܐ ܣܢܐܝ ܐܬܪܘܪܒ ܥܠܝ ܕܐܬܛܫܐ ܡܢܗ :
14 * ܐܢܬ ܗܘ ܒܪܢܫܐ ܕܐܟܘܬܝ. ܡܝܕܥܢܝ ܘܪܚܡܝ :

PSAL. LIV.

Davidis. Quum miſiſſet Joab & exerci- 1
tum ſuum ad pugnandum contra Abſalom.
Nobis verò eſt trophæum, & oratio ejus qui 2
à Deo cuſtoditur. Verſ. 13.

DEus, per nomen tuum ſalva me,& po- 3
tentiâ tuâ judica me.Deus audi oratio- 4
nem meam,& auſculta verba oris mei. Nam 5
alieni ſurrexerunt contra me, & fortes quæ-
ſiverunt animam meam,& non æſtimârunt te
Deus. * *Diapſalma* * Deus adjutor mi 6
Domine ſuffultor animæ meæ. Adduc malum 7
ſuper inimicos meos, & in veritate tua ſilere
fac eos. Et ego maturo cum judicio ſacrifi- 8
cabo tibi,& confitebor nomini tuo Domine,
quoniam bonum eſt : Quia ex omnibus mœ- 9
roribus liberâſti me,& in hoſtibus meis vidit
oculus meus.

PSAL. LV.

Davidis. Quum deploraret Abſalom filium 1
ſuum qui interfectus fuerat. Et Prophetia
de iis qui ſævierunt in Chriſtum. Verſ. 49.

AUſculta Deus orationi meæ,& ne negli- 2
gas deprecationem meam : Audi me, &
reſponde mihi : & convertere ad clamorem 3
meum, & exaudi me. Propter inimicos meos 4
& propter oppreſſionem ſceleſti. Nam inſi-
dias tetenderunt mihi ſceleſti, & adverſati 5
ſunt mihi,Cecidítque in me pavor,Et operu- 6
erunt me umbræ mortis. Dixi, Quis ô mihi 7
det alas velut columbæ ? equidem volarem &
quieſcerem, Secederémque & avolarem atq; 8
habitarem in deſerto, * *Diapſalma* *
Expectarémque eum qui eripit me de vento 9
turbinis. Obrue Domine converſationem 10
linguarum illorum, quoniam vidi jurgium &
litem in civitate : Diu noctúque circumeunt 11
muros ejus : ſcelus atque falſitas intra eam,
Ac dolus : neque recedit de plateis ejus fraus 12
& fallacia. Non enim hoſtis meus probro me 13
affecit,ut patienter ferrem : neque oſor meus
ſuperbivit in me, ut me abſconderem ab eo.
Tu homo æqualis mihi, proximus meus, & 14
amicus meus.

Verſio VULG. LAT.

In finem,
1 2 In Carminibus intellectûs David, Cùm veniſſent Ziphæi, & dixiſſent ad Saul; Nónne David abſconditus eſt apud nos? (1. *Reg.* 23. 19. & 26. 1.)

LIII.

3 DEus, in nomine tuo ſalvum me fac:
4 & in virtute tua judica me. Deus, exaudi orationem meã: auribus percipe ver-
5 ba oris mei. Quoniã alieni inſurrexerũt adverſùm me, & fortes quæſierunt animam meam: & non propoſuerunt Deum
6 ante conſpectum ſuum. Ecce enim Deus adjuvat me: & Dominus ſuſceptor eſt a-
7 nimæ meæ. Averte mala inimicis meis:
8 & in veritate tua diſperde illos. Voluntariè ſacrificabo tibi, & confitebor nomini tuo, Domine: quoniam bonum
9 eſt. Quoniã ex omni tribulatione eripuiſti me: & ſuper inimicos meos deſpexit oculus meus.

In finem,
1 In Carminibus intellectûs David.

LIV.

2 EXaudi, Deus, orationẽ meã, & ne de-
3 ſpexeris deprecationẽ meã: Intende mihi, & exaudi me. Contriſtatus ſum in ex-
4 ercitatione mea: & conturbatus ſum A voce inimici, & à tribulatione peccatoris. Quoniã declinaverunt in me iniqui-
5 tates: et in ira moleſti erãt mihi. Cor meum cõturbatũ eſt in me: et formido mor-
6 tis cecidit ſup me. Timor & tremor venerunt ſuper me: & contexerunt me te-
7 nebræ. Et dixi; Quis dabit mihi pennas ſicut columbæ, & volabo, & requieſcã?
8 Ecce elongavi fugiens: & manſi in soli-
9 tudine. Expectabã eũ, qui ſalvũ me fecit à puſillanimitate ſpiritûs, & tempe-
10 ſtate. Præcipita, Dñe, divide linguas eorũ: quoniã vidi iniquitatẽ, & contradi-
11 ctionẽ in civitate. Die ac nocte circumdabit eã ſuper muros ejus iniquitas: &
12 labor in medio ejus, Et injuſtitia. Et nõ defecit de plateis ejus uſura, & dolus.
13 Quoniam ſi inimicus meus maledixiſſet mihi, ſuſtinuiſſem utiq;. Et ſi is, qui oderat me, ſuper me magna locutus fuiſ-
14 ſet: abſcondiſſem me forſitan ab eo. Tu verò homo unanimis, dux meus, & notus meus:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

1 2 Εἰς τὸ τέλος, ἐν ὕμνοις συνέσεως τῷ Δαυίδ, Ἐν τῷ ἐλθεῖν τοὺς Ζιφαίους, καὶ εἰπεῖν τῷ Σαοὺλ, Οὐκ ἰδοὺ Δαυὶδ κέκρυπται παρ' ἡμῖν; νγʹ.

3 Ὁ Θεὸς ἐν τῷ ὀνόματί σου σῶσόν με, καὶ ἐν
4 τῇ δυνάμει σου κρῖνόν με. Ὁ Θεὸς εἰσάκουσον τῆς προσευχῆς μου, ἐνώτισαι τὰ ῥήματα τοῦ
5 στόματός μου. Ὅτι ἀλλότριοι ἐπανέστησαν ἐπ' ἐμὲ, καὶ κραταιοὶ ἐζήτησαν τὴν ψυχήν μου, οὐ προέθεντο τὸν Θεὸν ἐνώπιον αὐτῶν. ΔΙΑΨΑΛ-
6 ΜΑ. Ἰδοὺ γὰρ ὁ Θεὸς βοηθεῖ μοι, καὶ ὁ κύριος
7 ἀντιλήπτωρ τῆς ψυχῆς μου. Ἀποστρέψει τὰ κακὰ τοῖς ἐχθροῖς μου, ἐν τῇ ἀληθείᾳ σου ἐξολό-
8 θρευσον αὐτούς. Ἑκουσίως θύσω σοι, ἐξομολο-
9 γήσομαι τῷ ὀνόματί σου κύριε, ὅτι ἀγαθόν. Ὅτι ἐκ πάσης θλίψεως ἐρρύσω με, καὶ ἐν τοῖς ἐχθροῖς μου ἐπεῖδεν ὁ ὀφθαλμός μου.

1 Εἰς τὸ τέλος, ἐν ὕμνοις συνέσεως τῷ Δαυίδ. νδʹ.

2 Ἐνώτισαι ὁ Θεὸς τὴν προσευχήν μου, καὶ μὴ
3 ὑπερίδῃς τὴν δέησίν μου· Πρόσχες μοι, καὶ εἰσάκουσόν μου. ἐλυπήθην ἐν τῇ ἀδολεσχίᾳ μου, καὶ ἐταρά-
4 χθην Ἀπὸ φωνῆς ἐχθροῦ, καὶ ἀπὸ θλίψεως ἁμαρτωλοῦ· ὅτι ἐξέκλιναν ἐπ' ἐμὲ ἀνομίαν, καὶ ἐν ὀργῇ ἐνε-
5 κότουν μοι. Ἡ καρδία μου ἐταράχθη ἐν ἐμοὶ, καὶ δει-
6 λία θανάτου ἐπέπεσεν ἐπ' ἐμέ. Φόβος καὶ τρόμος
7 ἦλθεν ἐπ' ἐμὲ, καὶ ἐκάλυψέ με σκότος. Καὶ εἶπα, Τίς δώσει μοι πτέρυγας ὡσεὶ περιστερᾶς; καὶ
8 πετασθήσομαι καὶ καταπαύσω. Ἰδοὺ ἐμάκρυνα φυγαδεύων, καὶ ηὐλίσθην ἐν τῇ ἐρήμῳ. ΔΙΑΨΑΛ-
9 ΜΑ. Προσεδεχόμην τὸν σώζοντά με ἀπὸ ὀλι-
10 γοψυχίας καὶ καταιγίδος. Καταπόντισον κύριε καὶ καταδίελε τὰς γλώσσας αὐτῶν, ὅτι εἶδον ἀνο-
11 μίαν καὶ ἀντιλογίαν ἐν τῇ πόλει. Ἡμέρας καὶ νυκτὸς κυκλώσει αὐτὴν ἐπὶ τὰ τείχη αὐτῆς, ἀνο-
12 μία καὶ πόνος ἐν μέσῳ αὐτῆς Καὶ ἀδικία, καὶ οὐκ ἐξέλιπεν ἐκ τῶν πλατειῶν αὐτῆς τόκος καὶ δό-
13 λος. Ὅτι εἰ ἐχθρὸς ὠνείδισέ με, ὑπήνεγκα ἄν, καὶ εἰ ὁ μισῶν ἐπ' ἐμὲ ἐμεγαλορρημόνησεν, ἐ-
14 κρύβην ἂν ἀπ' αὐτοῦ. Σὺ δὲ ἄνθρωπε ἰσόψυχε, ἡγεμών μου καὶ γνωστέ μου,

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT. 1
In finem, [a] in hymnis intellectûs David, Cùm veniſſent Ziphæi, & 2
dixiſſent ad Saul, Nonne ecce David abſconditus eſt apud nos? LIII.

1 *DEUS, in nomine tuo ſalvum me fac; & in virtute* 3
tua (a) judica me. 2 *Deus, exaudi orationem meam: auribus percipe* 4
verba oris mei. 3 *Quoniam alieni inſurrexerunt adverſùm me:* 5
& fortes quæſiverunt animam meam; non propoſuerunt Deum in conſpectu ſuo. DIAPSALMA.
4 *Ecce enim Deus adjuvat me, et Dominus ſuſceptor eſt animæ* 6
meæ. 5 *(b) Avertet mala inimicis* 7
meis: in veritate tua diſperde illos. 6 *[b] Voluntariè ſacrificabo* 8
tibi: confitebor nomini tuo, Domine, quoniam bonum eſt. 7 *Quoni-* 9
am ex omni tribulatione eripuiſti me: & ſuper inimicos meos [c] deſpexit oculus meus.

In finem, (a) in hymnis [a] intellectûs ipſi David. LIV. 1

1 *EXAUDI, (b) Deus, orationem meam: & ne deſpexe-* 2
ris deprecationem meam: Intende 3
mihi, & exaudi me. 2 *Contriſtatus ſum [b] in (c) exercitatione*
mea: & conturbatus ſum, A voce 4
inimici, & à tribulatione peccatoris. 3 *Quoniam declinaverunt*
in me (d) iniquitatem: & [c] in ira (e) moleſti erant mihi. 4 *Cor* 5
meum conturbatum eſt in me: et formido mortis cecidit ſuper me.
5 *Timor & tremor venerunt ſuper me: & contexerunt me tene-* 6
bræ. 6 *Et dixi, Quis dabit mihi pennas ſicut columbæ? & vola-* 7
bo, & requieſcã: 7 *Ecce elonga-* 8
vi fugiens, & manſi in ſolitudine. DIAPSALMA. 8 *Expectabã* 9
eum, qui me ſalvum faceret à (f) puſillanimitate, [d] et tempeſtate.
9 *(g) [e] Præcipita, Domine, &* 10
divide linguas eorum: quoniam vidi iniquitatem & contradicti-
onem in civitate. 10 *[f] Die* 11
ac nocte circundabit eam ſuper muros ejus: (h) iniquitas & labor in medio ejus, Et injuſtitia: 12
11 *& [g] non defecit de plateis ejus uſura, & dolus.* 12 *Quoniã* 13
(i) ſi inimicus [h] exprobrâſſet mihi; ſuſtinuiſſem utique: 13 *&, ſi is, qui (k) oderat, ſuper me magna locutus fuiſſet; abſcondiſſem me utique ab eo.* 14 *Tu verò (l) homo [i] unanimis, dux meus, & notus meus:* 14

Verſio ÆTHIOPICA.

ፍጻሜ፡ ዘበአእምሮ፡ ዘደዊት፡ ዘአመ፡ መጽ
ኡ፡ዜፋዊያን፡ወይቤልዎ፡ለሰኦል፡ናሁ፡
ደዊት፡ ይትኀባእ፡ኀቤነ፡፡

ሣር እግዚኦ፡ በስምከ ፡ አድኅነኒ፡፡ ወበኀ 1
ይልከ፡ፍታሕ፡ሊተ፡፡=፡ እግዚኦ፡ስማዓኒ፡ 2
ጸሎትየ፡፡ ወአጽምእ ፡ ቃለ ፡ አፉየ፡፡=፡
እስመ፡ነኪራን ፡ ቆሙ ፡ ላዕሌየ፡፡ ወኀያላን፡ 3
ኃሠሠዋ ፡ ለነፍስየ፡፡ ወኢረሰይዎ ፡ ለእግ
ዚአብሔር፡ቅድሜሆሙ፡፡=፡ ናሁ፡እግዚ 4
አብሔር፡ይረድአኒ፡፡ ወእግዚእየ፡ያድኅና፡
ለነፍስየ፡፡=፡ ወይሚይጦ፡ ለእኪት፡ደበ፡ 5
ጸላእትየ፡፡ ወበጽድቅከ ፡ ሠርዎሙ፡፡=፡
ዘእምፈቃድየ፡ እሠውዕ፡ለከ፡፡ እገኒ ፡ ለስ 6
ምከ፡እግዚኦ፡ እስመ፡ሠናይ፡፡=፡ እስመ፡ 7
እምኵሉ፡ ምንደቤየ፡ አድኀንከኒ፡፡ ወርእ
የት፡ዐይንየ፡በጸላእትየ፡፡=፡

ፍጻሜ፡ስብሐት፡ ዘበአእምሮ፡፡

ሣዐ አጽምአኒ ፡ እግዚኦ ፡ ጸሎትየ፡፡ ወኢ 1
ትትሃየየኒ ፡ ስእለትየ፡፡ ነጽረኒ ፡ ወስማዓ
ኒ፡፡=፡ ተከዝኩ ፡ ወደንገፅኩ ፡ ወተዘዋዕ 2
ኩ፡፡ እምቃለ፡ ጸላኢ፡ ወእምሥቃየ፡ ኃጥ
እ፡፡=፡ እስመ፡ሜጥዋ፡ለዐመፃ ፡ ላዕሌየ፡፡ 3
ወቆሙ ፡ ላዕሌየ፡ ያመንስዉኒ፡፡ ወደንገፀኒ፡ 4
ልብየ ፡ በላዕሌየ፡፡ ወመጽአኒ ፡ ድንጋፄ፡ ሞ
ት፡፡=፡ ፍርሀት፡ወረዓድ፡፡ አኃዘኒ፡ ወደፈ 5
ነኒ ፡ ጽልመት፡፡=፡ ወእቤ ፡ መኑ ፡ ይሁበኒ፡ 6
ክንፈ ፡ ከመ ፡ ርግብ፡፡ እሠርር ፡ ወአዕር
ፍ፡፡=፡ ናሁ፡ አርሐቁ፡ ተኀጕእ፡ ወቤትኩ፡ 7
ውስተ ፡ በድው፡፡=፡ እሴፎ፡ለዘ ፡ ያድኅ 8
ነኒ፡፡እምእንባዜ፡ነፍስየ፡ከመ፡ ዐውሎ፡፡=፡
አስጥሞሙ ፡ እግዚኦ ፡ ወምትር ፡ ልሳናቲሆ 9
ሙ፡፡ እስመ፡ርኢኩ ፡ ዐመፃ፡ወቅሥት፡ውስ
ተ፡ሀገር፡፡=፡ እስመ፡መዐልተ፡ወሌሊት፡ዐገ 10
ት፡ ውስተ ፡ አረፋቲሃ፡፡ ዐመፃ ፡ ወሥራኅ፡
ወኀጢአት ፡ ማእከላ፡፡=፡ ወኢየርሕቅ፡ 11
እመርኅባ ፡ ጕሕሉት፡፡=፡ ሶበሰ ፡ ጸላኢ፡ 12
ጸአለኒ፡እምተዐገሥኩ፡፡=፡ ወሶበሂ፡ጸላኢ፡ 13
አዕበየ፡አፉሁ፡ላዕሌየ፡እምተኀባእኩዎ፡፡=፡
ወአንተሰ፡ ብእሲ፡ዘከመ፡ነፍስየ፡ማእምርየ፡ 14
ወአውቅየ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. *PSAL. LIII.* [a] Qui in intellectu David, [b] ſponte meâ [c] vidit oculus meus. *PSAL. LIV.* [a] intellectûs. Exaudi [b] et conturbatus ſum & exercitatus ſum, A [c] inſurgentes contra me pertentârunt me. [d] tanquam procellâ ejus. [e] Submerge eos, Domine, [f] Quoniam die [g] non longè abeſt à plateis ejus dolus, & [h] infenſus fuiſſet [i] qui tanquam anima mea,

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* المزمور الثالث والخمسون *
1 * كمال تسابيح فهم لداود حين جاء الزيفيون وقالوا لشاول ان
2 * داود عندنا مختفي * يد * استيخن *
3 4 * خلصني باسمك يا الاهي * وبقوتك احكم لي * اللهم استجب صلاتي * وانصت الي كلام فمي * فان
5 6 الغرباء قاموا علي * والاقوياء طلبوا نفسي * لم يجعلوا الله امامهم * هاهوذا الله اعانني والرب
7 ناصر نفسي * يرد الشر علي اعداي * استاصلهم بعدلك * اذبح لك بارادتي * واشكر اسمك يا رب *
8 لانه صالح * ولانك خلصتني من كل حزن * وعيني رات اعداي *
1 * المزمور الرابع والخمسون * لداود الكمال في تسابيح الفهمين * مج * استيخن *
2 3 * اسمع يا الله صلاتي ولا تغفل عن طلبتي * انصت الي واستجب لي فاني حزنت في كلامي
4 5 * وقلقت من صوت العدو وضيق الخاطي لانهم مالوا علي بالغضب وبالاثم حقدوا علي * جزع
6 7 قلبي في باطني وخوف الموت اتى علي * خوف ورعدة اكتنفاني وظلمة غشيتني * فقلت من ذا
8 9 يعطيني اجنحة مثل حمامة لكي اطير واستريح * هاانذا قد بعدت هاربا واويت البرية * منتظرا
10 الاله الذي يخلصني من صغر القلب والريح العاصف * غرقهم يا رب وفرق السنتهم فاني رايت
11 12 اثما وشقاقا في هذه المدينة * النهار كله والليل يحيطان بحصونها الاثم والتعب * والظلم في وسطها
13 لم يذهب من اسواقها الربا والغش * فلو كان الذي عيرني عدوا لكنت احتمل ولو كان
14 مبغضي عظم علي القول لتواريت عنه * وانت ايها الانسان عديل نفسي ورئيسي الذي اعرفه *

PSAL. LIII.

Perfectio laudum mentalium. Davidis, quum veniſſent Ziphæi & dixiſſent Sauli, David apud nos latet. Ver. 14. 1 2

3 *LIbera me in nomine tuo, O Deus meus, & in potentia tua adjudica mihi.*
4 *Deus, exaudi orationem meam, & auſculta verba oris mei.*
5 *Nam alienigenæ inſurrexerunt adversùm me, & fortes quæſierunt animam meam: non conſtituerunt Deum ante ſe.*
6 *Ecce Deus adjutorium meum eſt, & Dominus adjutor animæ meæ:*
7 *Reflectet malum in hoſtes meos.*
8 *Eradica eos æquitate tuâ. Sacrificabo tibi ſponte meâ, & gratias agam nomini tuo, O Domine, quia bonum eſt;*
9 *Et quia tu liberâſti me de omni mœſtitia, & oculos meus vidit inimicos meos.*

PSAL. LIV.

Davidis. Perfectio in laudibus ſenſatorum. Verſ. 43. 1

2 *AUdi, O Deus, orationem meam, & ne negligas ſupplicationem meam.*
3 *Auſculta me & exaudi me, quoniam contriſtatus ſum in ſermone meo,*
4 *Et conturbatus ſum à voce inimici, & depreſſione peccatoris; Nam deflexerunt ad me cum furore, & cum ſcelere ſervaverunt in me odium.*
5 *Expavit cor meum in interaneis meis, & timor mortis venit ſuper me.*
6 *Timor & tremor occupaverunt me, & tenebræ me contexerunt.*
7 *Et dixi, O quis det mihi alas veluti columbæ, ut volem & requieſcam!*
8 *Ecce jam receſſi fugiens, & inhabitavi deſertum:*
9 *Expectans Deum qui liberavit me à puſillanimitate & vento vehementi.*
10 *Submerge eos, O Domine, & divide linguas eorum, quia iniquitatem & diſſidia in iſta civitate.*
11 *Die totâ ac nocte circundant arces ejus iniquitas & labor:*
12 *Et oppreſſio in medio ejus eſt: non receſſit à vicis ejus uſura & fraus.*
13 *Si eſſet qui improperavit mihi, inimicus, certè tolerarem: & ſi oſor meus magnificâſſet adversùm me ſermonem, ſanè me abdidiſſem ab eo.*
14 *At tu, O homo, æqualis animæ meæ & princeps meus, quem cognoſco.*

תהלים: נו

ſtrepitu in ambulabamus Dei domo in ; ſecretum *edulcorabamus* ſimul Qui
אשר יחדו נמתיק סוד בבית אלהים נהלך ברגש : 15
,eorũ *habitatione* in mala quia : viventes *ſepulchrum* deſcendant ,eis *ſuper mors Mulſiet*
ישימות עלימו ירדו שאול חיים כי־רעות במגורם 16
.me ſervabit Dominus & ; clamabo Deum ad Ego .eorum *interiori* in
בקרבם : אני אל־אלהים אקרא ויהוה יושיעני : 17
.meam vocem exaudiet & ; tumultuabor & ,*meditabor* meridie & ,manè &,Veſperè
ערב ובקר וצהרים אשיחה ואהמה וישמע קולי : 18
.mecum *fuerunt multis in* quoniam :me *in conflictu* à meam animam pace in Redimet
פדה בשלום נפשי מקרב־לי כי־ברבים היו עמדי : 19
non quibus .Selah ,*quondam ſedens* & ,eos humiliabit & ,Deus Audiet
ישמע אל ויענם וישב קדם סלה אשר אין 20
,*ejus pacificos in ſuas manus* Miſit .Deum timuerunt non & *: eis* mutationes
חליפות למו ולא יראו אלהים : שלח ידיו בשלמיו 21
fuerunt *mollia*,ejus cor *conflictus* &,ſuũ os *butyris præ* Lenierunt .ejus pactum polluit
חלל בריתו : חלקו מחמאת פיו וקרב לבו 22
,tuũ *donum* Dominum ſuper Projice *ſtricti* gladii ipſa & ,*oleo præ* ejus verba
דבריו משמן והמה פתחות : השלך על־יהוה יהבך 23
tu Et .juſto nutationem ſeculum in dabit non ,te *educabit* ipſe &
והוא יכלכלך לא־יתן לעולם מוט לצדיק : ואתה 24
non *doli* & ,*ſanguinum* viri : foveæ puteum in eos facies deſcendere Deus
אלהים תורדם לבאר שחת אנשי דמים ומרמה לא־
.te in confidam ego & : ſuos dies dimidiabunt
יחצו ימיהם ואני אבטח־בך :

PSAL. LVI. נו

eum *tenendo in* : Mictam David ipſi ,remotis mutam columbam ſuper Victori
למנצח על־יונת אלם רחקים לדוד מכתם באחז אותו 1
omni : homo me *abſorbuit* quoniam ,Deus mei Miſerere .Gath in Peliſtim
פלשתים בגת : חנני אלהים כי־שאפני אנוש כל־ 2
quoniam : die omni mei *invidi* me *Abſorbuerunt* .me *opprimet* bellans die
היום לחם ילחצני : שאפו שוררי כל־היום כי־ 3
.fidam *te in* ego : timebo *Interdiu* .*excelſe ô mihi* bellantes multi
רבים לחמים לי מרום : יום אירא אני אליך אבטח : 4
faciat quid ; timebo non ,fidi Deo *in* ,ejus verbum laudabo Deo In
באלהים אהלל דברו באלהים בטחתי לא אירא מה־יעשה 5
omnes me *ſuper* ; *afficient* dolore mea verba die Tota .mihi caro
בשר לי : כל־היום דברי יעצבו עלי כל־ 6
mea veſtigia ipſi ,*ſe abſcondent* ,*Commorabuntur* .malum in eorum cogitationes
מחשבתם לרע : יגורו יצפינו המה עקבי 7
? eis evaſio iniquitatem *Super* .meã animã *expectaverunt ut* : *obſervabunt*
ישמרו כאשר קוו נפשי : על־און פלט־למו 8
tu ,numerâſti *meam Motionem* .Deus deſcendere fac populos *naſo* in
באף עמים הורד אלהים : נדי ספרתה אתה 9
? tuo libro in nonne : tuo utre in *meam lachrymam* pone
שימה דמעתי בנאדך הלא בספרתך :

תרגום TARGUM.

די כחדא נתרץ רזא בבית מקדשא דאלהא 15
נהלך בסרהוביא : יחיבנון דין קטול ויגזור 16
עליהון בישן לדואג ואחיתופל יחתון לשיול
כד הינון חיין ארום בישן במדוריהון בגופיהון :
אנא קדם אלהא אצלי ומימרא דיי יפרוק יתי : 17
ברמשא ובצפרא ובטיהרא אצלי וארגיש 18
ושמע קלי : פרק בשלם נפשי דלא למקרב 19
ביש לי ארום בסגיען עקן הוה מימריה בסעדי :
ישמע אל ויקבל מנהון ויתיב שמיא מלקדמין 20
לעלמין ורשיעי דלא מלקדמין דלא מהשנין
אורחתהון בישיא ולא דחלו מן קדם אלהא :
אושיט ידוי באנשי שלמיה אפס קימיה : שעיען 21 22
יתיר מן שמן דנובנין מלי פומיה והיך זיני
קרבא לביה רכיכן מלוי יתיר מן משח ואנון
מורנין דקטול : טלוק על יי סברך והוא יזון 23
יתך לא יתן לעלמא חוסרנא לצדיקיא : ואנת 24
אלהא במימרך תוחית יתהון לגהנם עמיקא
גברי מרי קטול ונכילו לא יחמון פלגות
יומיהון ואנא אתרחץ במימרך : נו
לשבחא על כנשתא דישראל דמתילא ליונה 1
שתוקא בעדן די מתרחקין מן קרויהון וחזרין
ומשבחין למרי עלמא היך דויד מכיך ושלים כד
אחדו יתיה פלשתאי בגת : חוס עלי יי אלהא 2
ארום שפיני תחותוי ישבי גבר חיב כל יומא
מגיחא ידחקנני : שפין גרמי מעיקי כל יומא 3
ארום סגיעין מעיקין מגיחין לי אלהא עלאה
די כורסיה במרומא : יומא דאדחל אנא עלך 4
אתרחץ : במדת דינא דאלהא אשבח במימריה 5
באלהא אתרחץ לא אדחל מה יעבד בסרא לי :
כל יומא מטולתי טרחן עלי כל מחשבתהון 6
לביש : יכנשון ויטשון בכמנא הנון אסתורי 7
ישמרון היכמה דמתינו עבדו לנפשי : על 8
שקרא די בידיהון רוקן יתהון ברגיז עמיא
תמסכן אלהא : יומי טלטולי מניתא אנת שוי 9
דמעתי בזיקך יי הלא בחושבנך :

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Simul enim inibimus *rectum* ſecretum : in 15
domo ſanctuarii Domini ambulabimus
cum feſtinatione. Reos paraget eos judici- 16
um mortis, & ſententiam feret *malorum*
adverſum ipſos Doeg & Achitophel : de-
ſcendent in infernum viventes , quoniam
mala [*ſunt*] in tabernaculis eorum, in cor-
poribus eorum. Ego coram Deo orabo ; 17
& verbum Domini redimet me. Veſperè 18
& manè, & in meridie orabo , & ſtre-
pitum edam, & exaudiet vocem meam. Re- 19
demit in pace animam meam ne accederet
ad me malum, quoniam in multis afflictio-
nibus fuit Verbum ejus in adjutorium me-
um. *Audiet Deus*, & accipiet ab eis : ac ſe- 20
debit in cœlis à principio in ſecula:pecca-
tores autem *qui non ſunt à principio*,qui non
mutãt viã ſuã peſſimã, nec reverentur con-
ſpectum Dei, [*peribunt.*] Extendit manus 21
ſuas in homines pacis ſuæ : prophanavit
pactum ſuum. Leniora quàm pinguedo ca- 22
ſeorum ſunt verba oris ejus, & ſicut arma
bellica cor ejus : teneriora verba ejus ſunt
unctione ; at ipſa ſunt ſpicula occiſionis.
Projice ſuper Dominum ſpem tuam,& ipſe 23
nutriet te, nec dabit in perpetuum egeſta-
tem *juſtis*. Et tu Deus in verbo tuo detur- 24
babis eos in gehennam profundam : homi-
nes auctores interfectionis & doli , non
videbunt dimidium dierum ſuorum : ego
verò ſperabo in verbo tuo.

Ad laudandũ pro Eccleſia *Iſrael*,quæ ſimi- 1
latur columbæ ſilentii, in tẽpore quo elon-
gati ſunt à civitatibus ſuis : ſed reverſi lau-
dant auctorem mundi,ſicut David contritus
et perfectus;quando tenuerunt eum Paleſti-
ni in Gath.

PSAL. LVI.

MIſerere mei *Domine* Deus , quoniam 2
conculcavit me *Iſbi* homo ſceleratus: tota
die bellator opprimet me. Conculcant oſſa 3
mea moleſtatores mei tota die,quoniã multi
oppreſſores pugnãt contra me, Deꝰ altiſſime,
cujus ſedes eſt in excelſo. Die qua timuero, 4
ego in te confidam. In menſura judicii Dei 5
laudabo in verbo ejus : in Deo ſperavi ;
non timebo quid faciat caro mihi. Tota die 6
mei cauſa laborant, contra me omnes eo-
rum cogitationes in malum. Congregabun- 7
tur & abſcondentur *in inſidiis*; ipſi plantas
meas obſervabunt ; ſicut expectaverunt, ſic
fecerunt animæ meæ. Propter falſitatem 8
quæ eſt in manibus eorum, evacua eos : in
furore ad paupertatem adiges populos De-
us. Dies vagationis meæ numerâſti tu,pone 9
lachrymam meam in utre tuo: *Domine*,nónne in rationibus tuis ?

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܕܐܟܚܕܐ ܒܣܝܡܐ ܡܐܟܘܠܬܐ ܒܒܝܬܗ ܕܐܠܗܐ. ܟܕ ܡܗܠܟܝܢ ܗܘܝܢ ܒܫܝܢܐ: * ܬܐܬܐ 15 16
ܥܠܝܗܘܢ ܡܘܬܢܐ. ܘܢܚܬܘܢ ܟܕ ܚܝܝܢ ܠܫܝܘܠ: ܡܛܠ ܕܒܝܫܬܐ ܐܝܬ ܒܝܢܬܗܘܢ. * ܐܢܐ 17
ܕܝܢ ܠܐܠܗܐ ܩܪܝܬ: ܘܐܠܗܐ ܢܦܪܩܢܝ. * ܒܪܡܫܐ ܘܒܨܦܪܐ ܘܒܛܗܪܐ: ܐܪܢܐ ܘܐܡܪ ܘܐܫܡܥ 18
ܩܠܝ. * ܦܪܘܩ ܠܢܦܫܝ ܡܢ ܐܝܠܝܢ ܕܩܪܝܒܝܢ ܠܝ: ܡܛܠ ܕܒܦܠܓܘܬܐ ܗܘܘ ܥܡܝ. * ܢܫܡܥ 19 20
ܐܠܗܐ ܘܢܡܟܟ ܐܢܘܢ: ܗܘ ܕܐܝܬܘܗܝ ܡܢ ܩܕܡ ܥܠܡܐ. ܠܝܬ ܠܗܘܢ ܫܘܚܠܦܐ ܘܠܐ ܕܚܠܘ 21
ܡܢ ܐܠܗܐ: * ܘܐܘܫܛܘ ܐܝܕܐ ܥܠ ܩܪܝܒܗܘܢ. ܘܛܢܦܘ ܩܝܡܗ. * ܐܬܕܠܚܘ ܡܢ ܪܘܓܙܐ 22
ܕܐܦܘܗܝ ܘܡܢ ܚܡܬܐ ܕܠܒܗ: ܘܪܟܝܟܝܢ ܡܠܘܗܝ ܡܢ ܡܫܚܐ ܘܗܢܘܢ ܐܢܘܢ ܫܢܢܐ. * ܫܕܝ 23
ܝܨܦܟ ܥܠ ܡܪܝܐ ܘܗܘ ܢܬܪܣܝܟ: ܘܠܐ ܢܬܠ ܠܥܠܡ ܙܘܥܐ ܠܙܕܝܩܘܗܝ. * ܐܢܬ ܕܝܢ 24
ܐܠܗܐ ܐܚܘܬ ܐܢܘܢ ܠܓܘܒܐ ܕܚܒܠܐ: ܓܒܪܐ ܐܫܕܝ ܕܡܐ ܘܥܒܕܝ ܢܟܠܐ. ܘܠܐ ܢܫܠܡܘܢ
ܝܘܡܝܗܘܢ: ܘܐܢܐ ܐܣܒܪ ܒܟ. * ܫܘܒܚܐ ܘܫܘܪܝ ܡܥܠܝܬܐ *

* ܡܙܡܘܪܐ * ܢܘ *

* ܠܕܘܝܕ. ܬܘܕܝܬܐ ܕܙܕܝܩܐ ܕܐܬܦܨܝ ܡܢ ܒܥܠܕܒܒܐ ܘܡܢ ܐܝܕܐ ܕܫܐܘܠ. ܘܥܠ 1
ܝܗܘܕܝܐ. ܘܥܠ ܡܫܝܚܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܕ. * ܐܬܪܚܡ ܥܠܝ ܐܠܗܐ ܡܛܠ ܕܕܫܢܝ ܒܪܢܫܐ. 2
ܟܠܗ ܝܘܡܐ ܩܪܒܐ ܐܠܨܢܝ: * ܕܫܘ ܒܥܠܕܒܒܝ ܟܠܗ ܝܘܡܐ. ܡܛܠ ܕܣܓܝܐܐ 3
ܕܡܬܟܬܫܝܢ ܐܬܪܝܡܘ ܥܠܝ: * ܒܝܘܡܐ ܠܐ ܐܕܚܠ ܡܛܠ ܕܥܠܝܟ ܗܘ ܬܘܟܠܢܝ. * ܒܐܠܗܐ 4 5
ܐܫܬܒܗܪ ܒܐܠܗܐ ܣܒܪܬ ܠܐ ܐܕܚܠ: ܡܢܐ ܥܒܕ ܒܝ ܒܪܢܫܐ. * ܟܠܗ ܝܘܡܐ ܡܠܟܐ ܡܡܠܟܝܢ 6
ܗܘܘ ܥܠܝ: ܘܡܬܚܫܒܝܢ ܗܘܘ ܥܠܝ ܒܝܫܬܐ. * ܢܛܫܘܢ ܘܢܥܡܪܘܢ. ܘܗܢܘܢ ܥܩܒܝ 7
ܢܛܪܘܢ: ܐܝܟ ܕܣܟܝܘ ܠܢܦܫܝ. * ܘܐܡܪܘ. ܕܠܝܬ ܠܗ ܡܦܪܩܢܐ: ܒܪܘܓܙܐ ܕܥܡܡܐ ܕܘܢ 8
ܐܢܘܢ. ܐܠܗܐ * ܬܫܒܘܚܬܝ ܚܘܝܬܟ: ܣܝܡ ܕܡܥܝ ܩܕܡܝܟ ܘܒܟܬܒܟ. 9

Qui ſimul comedimus paſtum in domo Dei, 15
ambulantes cum concordia. Adduc ſuper 16
eos mortalitatem, & deſcendant viventes in
infernum : quoniam malum eſt intra eos.
Ego verò Deum invocabo, & Deus ſalvabit 17
me. Veſpere & mane ac meridie cogitabo, 18
& dicam atque audire faciam vocem meam.
Libera animam meam ab iis qui nôrunt me, 19
quoniam in diſſidium facti ſunt mecum. Au- 20
diet Deus, & humiliabit illos qui eſt ante
ſecula. Non eſt illis mutatio, neque timue-
runt Deum. Extenderunt manum contra 21
proximum ſuum, & prophanaverunt fœdus
illius. Conturbati ſunt præ ira vultûs ejus,
& præ furore cordis illius. Leniora ſunt ver- 22
ba ejus oleo, at ipſa ſunt cuſpides. Rejice 23
curam tuam in Dominum,& ipſe te enutriet,
nec ſinet perpetuò agitari juſtos ſuos. Tu 24
verò Deus,detrude illos in foveam perditio-
nis, viros effundentes ſanguinem & machi-
nantes dolum : & non compleant dies ſuos.
Ego autem ſperabo in te.

Laus, & initium gradûs.

PSAL. LVI.

Davidis. Gratiarum actio juſti, quòd libera- 1
tus ſit ab hoſte & de manu Saulis. Tum
de Judæis, & de Chriſto. Verſ. 24.

MIſerere mei Deus, quoniam conculcavit 2
me homo: totâ die bellator vexavit me.
Conculcaverunt me hoſtes mei totâ die,quia 3
multitudo pugnantiũ exaltati ſunt ſuper me.
In die non timebo, quia tibi confiſus ſum. 4
In Deo gloriabor, in Deo ſperavi, non me- 5
tuam ; quid faciet in me homo ? Totâ die 6
conſilium inibant adverſum me, & medita-
bantur contra me malũ. Deliteſcent atque 7
habitabunt, & ipſi calcaneos meos ob-
ſervabunt. Quemadmodum præſtolati ſunt 8
animæ meæ, Atque dixerunt, Non eſt ei Sal-
vator: ſic in furore gentium judica illos: De- 9
us Laus mea, ſignificavi tibi. Pone lachry-
mas meas coram te, & in libro tuo.

Verſio VULG. LAT.

15 Qui ſimul mecū dulces capiebas cibos :
in domo Dei ambulavimus cum conſen-
16 ſu. Veniat mors ſuper illos : & deſcen-
dant in infernum viventes : Quoniam
nequitiæ in habitaculis eorū , in medio
17 eorum. Ego autem ad Deum clamavi:&
18 Dominꝰ ſalvabit me. Veſperè,& manè,
& meridiè narrabo & annuntiabo : &
19 exaudiet vocem meā. Redimet in pace a-
nimam meā ab his, qui appropinquant
mihi : quoniam inter multos erant me-
20 cū. Exaudiet Deus, & humiliabit illos,
qui eſt ante ſæcula. Non enim eſt illis cō-
21 mutatio, & non timuerunt Deum: Exten-
dit manum ſuam in retribuendo. Conta-
22 minaverunt teſtamentum ejꝰ. Diviſi ſunt
ab ira vultûs ejus : & appropinquavit
cor illius. Molliti ſunt ſermones ejus ſu-
23 per oleum: & ipſi ſunt jacula. Jacta ſu-
per Dominū curam tuam, & ipſe te enu-
triet: non dabit in æternū fluctuationem
24 juſto. Tu verò, Deus, deduces eos, in pu-
teum interitûs. Viri ſanguinum, & doloſi
non dimidiabunt dies ſuos: ego autem
ſperabo in te, Domine.

In finem,
1 Pro populo, qui à Sanctis longè factus
eſt, David in tituli inſcriptionem ,
cùm tenuerunt eū Allophyli in Geth.
(1. *Reg.* 21. 12.) L V.

2 Miſerere meì, Deus, quoniam concul-
cavit me homo: totâ die impugnans
3 tribulavit me. Conculcaverunt me inimi-
ci mei totâ die: quoniam multi bellantes
4 adverſùm me. Ab altitudine diei time-
5 bo: ego verò in te ſperabo. In Deo lau-
dabo ſermones meos, in Deo ſperavi :
6 non timebo quid faciat mihi caro. Totâ
die verba mea execrabantur : adverſùm
me omnes cogitationes eorum, in malū.
7 Inhabitabunt & abſcondent: ipſi calca-
neum meum obſervabunt. Sicut ſuſtinu-
8 erunt animam meam, Pro nihilo ſalvos
facies illos: in ira populos confringes.
9 Deus, Vitam meam annuntiavi tibi: po-
ſuiſti lacrhymas meas in conſpectu tuo,
Sicut & in promiſſione tua :

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

15 Ὃς ἐπιτοαυτὸ ἐγλύκανας ἐδέσματα, ἐν τῷ οἴ-
16 κῳ τοῦ θεοῦ ἐπορεύθημεν ἐν ὁμονοίᾳ. Ἐλθέτω
θάνατος ἐπ' αὐτοὺς, καὶ καταβήτωσαν εἰς ᾅδου
ζῶντες· ὅτι πονηρία ἐν ταῖς παροικίαις αὐτῶν
17 ἐν μέσῳ αὐτῶν. Ἐγὼ πρὸς τὸν θεὸν ἐκέκραξα,
18 καὶ ὁ κύριος εἰσήκουσέ μου. Ἑσπέρας καὶ πρωῒ καὶ
μεσημβρίας διηγήσομαι, καὶ ἀπαγγελῶ, καὶ εἰσακού-
19 σεται τῆς φωνῆς μου. Λυτρώσεται ἐν εἰρήνῃ τὴν
ψυχήν μου ἀπὸ τῶν ἐγγιζόντων μοι, ὅτι ἐν πολ-
20 λοῖς ἦσαν σὺν ἐμοί. Εἰσακούσεται ὁ θεὸς καὶ τα-
πεινώσει αὐτοὺς, ὁ ὑπάρχων πρὸ τῶν αἰώνων. ΔΙ-
ΑΨΑΛΜΑ. οὐ γάρ ἐστιν αὐτοῖς ἀντάλλαγμα, καὶ
21 οὐκ ἐφοβήθησαν τὸν θεόν. Ἐξέτεινε τὴν χεῖρα
αὐτοῦ ἐν τῷ ἀποδιδόναι· ἐβεβήλωσαν τὴν διαθή-
22 κην αὐτοῦ. Διεμερίσθησαν ἀπὸ ὀργῆς τοῦ προσ-
ώπου αὐτοῦ, καὶ ἤγγισεν ἡ καρδία αὐτοῦ. ἡπαλύνθη-
σαν οἱ λόγοι αὐτοῦ ὑπὲρ ἔλαιον, καὶ αὐτοί εἰσι βολί-
23 δες. Ἐπίρριψον ἐπὶ κύριον τὴν μέριμνάν σου, καὶ
αὐτός σε διαθρέψει, οὐ δώσει εἰς τὸν αἰῶνα σάλον
24 τῷ δικαίῳ. Σὺ δὲ ὁ θεὸς κατάξεις αὐτοὺς εἰς φρέ-
αρ διαφθορᾶς. ἄνδρες αἱμάτων καὶ δολιότητος οὐ
μὴ ἡμισεύσωσι τὰς ἡμέρας αὐτῶν. ἐγὼ δὲ ἐλπιῶ
ἐπὶ σὲ κύριε.

1 Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τοῦ λαοῦ τοῦ ἀπὸ τῶν ἁγίων
μεμακρυμμένου, τῷ Δαυὶδ εἰς στηλογραφίαν,
ὁπότε ἐκράτησαν αὐτὸν οἱ ἀλλόφυλοι ἐν
Γέθ. νε΄.

2 Ἐλέησόν με ὁ θεὸς, ὅτι κατεπάτησέ με ἄν-
θρωπος, ὅλην τὴν ἡμέραν πολεμῶν ἔθλιψέ με.
3 Κατεπάτησάν με οἱ ἐχθροί μου ὅλην τὴν ἡμέ-
ραν ἀπὸ ὕψους ἡμέρας· ὅτι πολλοὶ οἱ πολεμοῦν-
4 τές με φοβηθήσονται, ἐγὼ δὲ ἐλπιῶ ἐπὶ σοί.
5 Ἐν τῷ θεῷ ἐπαινέσω τοὺς λόγους μου, ὅλην τὴν ἡμέ-
ραν ἐν τῷ θεῷ ἤλπισα, οὐ φοβηθήσομαι τί ποιήσει
6 μοι σάρξ. Ὅλην τὴν ἡμέραν τοὺς λόγους μου ἐβδε-
λύσσοντο, κατ' ἐμοῦ πάντες οἱ διαλογισμοὶ αὐτῶν
7 εἰς κακόν. Παροικήσουσι καὶ κατακρύψουσιν αὐτοὶ,
τὴν πτέρναν μου φυλάξουσι καθάπερ ὑπέμεινα τῇ
8 ψυχῇ μου. Ὑπὲρ τοῦ μηθενὸς σώσεις αὐτοὺς, ἐν
9 ὀργῇ λαοὺς κατάξεις. ὁ θεὸς Τὴν ζωήν μου ἐξ-
ήγγειλά σοι, ἔθου τὰ δάκρυά μου ἐνώπιόν σου, ὡς
καὶ ἐν τῇ ἐπαγγελίᾳ σου.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

15 Qui (m) ſimul dulces capiebas 15
cibos: in domo Dei ambulavimus
cum [k] conſenſu. 16 Veniat mors 16
ſuper illos : & deſcendant in in-
fernum viventes ? 17 Quoniam
nequitia [l] in (n) hoſpitiis eorum,
in medio eorum. 18 Ego [m] ad 17
Deum clamavi, & Dominus [n]
exaudivit me. 19 Veſperè, & 18
manè, & meridiè narrabo, & an-
nuntiabo : [o] & exaudivit vo-
cem meam. 20 Redimet in pace 19
animam meam ab his, qui appro-
pinquant mihi: quoniam [p] in (o)
multis erant mecum. 21 Exau- 20
diet Deus, & humiliabit illos, qui
eſt [q] ante ſecula. DIAPSAL-
MA. 22 Non enim eſt illis (p) [†]
commutatio, & non timuerunt
Deum: Extendit (q) manū ſuam in 21
retribuendo. 23 (r) Contaminave-
runt teſtamentum ejus: Diviſi ſunt 22
ab (ſ) ira vultûs ejus, & appro-
pinquavit cor illius. 24 Molliti
ſunt ſermones ejus ſuper oleum :
& ipſi ſunt [r] jacula. 25 (t)
Jacta ſuper Dominum curam 23
tuā, et ipſe enutriet te: non dabit
in æternū fluctuationem juſto. 26
Tu verò, Deus, deduces eos in pu- 24
teum interitûs. 27 Viri ſangui-
num & doloſitatis non dimidia-
bunt dies ſuos: ego autem ſpera-
bo in te, Domine.

In finem, (*a*) pro populo, qui à 1
Sanctis longè factus eſt, ipſi David
in tituli inſcriptionem, cùm
tenuerunt eum Allo-
phyli in Geth. *LV.*

1 *MISERERE meì, Deus,* 2
quoniam conculcavit me
homo: totâ (b) die pugnans tribu-
lavit me. 2 Conculcaverunt me 3
inimici mei, totâ die [a] ab (c) al-
titudine diei : quoniam multi qui
debellant me, 3 [b] Timebunt : ego 4 5
verò in te ſperabo. 4 In Deo lau-
dabo ſermones meos : totâ die in
Deo ſperavi: non timebo, quid fa-
ciat mihi caro. 5 Totâ die (d) [c] 6
verba mea aſpernabantur: adver-
ſùm me omnes cogitationes eo-
rum in malum. 6 (e) [d] Inca- 7
lent, & abſcondent, ipſi calca-
neum meum obſervabunt, 7 ſicut

Verſio ÆTHIOPICA.

ዘኅቡረ : ለእተጠዐምከ : ሲተ : መባል 15
ዕተ:: ወኅሐውር : ቤተ : እግዚአብሔ 16
ር : በአሐዱ : ልብ::=፡ ይምጽኦሙ: 16
ሞት : ወይረዱ : ውስተ : ሲኦል : ሕያዋ
ኒሆሙ::=፡
እስመ:እኩይ: ማእከሎሙ: ወውስተ:ዐብያ 17
ቲሆሙ::=፡ወአንሰ:ጸራኅኩ:ኀበ:እግዚአብ 18
ሔር : ወአምላኪየ : ሰምዓኒ::=፡ ሰርከ : 19
ወነግሀ : ወመዐልተ: እነግር:: አየድእ:ወሊ,
ሰምዑኒ : ቃልየ::=፡ አድኅና: በሰላም:ለነ 20
ፍስየ : እምእለ : ይትቃረቡኒ:: እስመ:
ደበዝኅኑ:እምእለ:ምስሌየ::=፡ ይሰማዕ: 21
እግዚአብሔር : ወያኅስሮሙ:: ዘሀሉ:
እምቅድመ:ይትፈጠር:ዓለም::=፡እስመ: 22
አልቦሙ : ቤዛ:: ወኢፈርህዎ : ለእግዚአ
ብሔር:: ወሰፍሐ : እዴሁ : ለፈዲይ::=፡
ወአርኰሱ : ሥርዓቶ:: ወተናፈቁ : እመዐ 23
ተ : ገጹ:: ወቀርበ : ልቡ::=፡ ወፀሕደ: 24
እምቅብዕ : ነገሩ:: እሙንቱሰ : ማዕበል:
ያስጥሙ::=፡ ግድፍ: ሳዕለ : እግዚአብሔ 25
ር:ሕሊናከ:ወውእቱ:ይሴስየከ::ወኢይሁቦ:
ሁከተ:ለጻድቅ:ለዓለም::=፡ አንተ:እግዚ 26
ኦ:አጽድፎሙ: ውስተ:ዐዘቅተ: ሞት::=፡
እደው:ደም:ወጽልሕዋን:ኢይናፍቁ:በመዋዕሊ 27
ሆሙ::ወአንሰ: ተወከልኩከ:እግዚኦ::

ፍጻሜ: ዘበእንተ: ሕዝብ:ለእለ : እምቅዱ
ሳን : ርሕቁ : ዘዳዊት : አርአያ:
መጽሐፍ : ዘአመ : አኃዝዎ:
ኢሎፍሊ:በጌት::

ሣህ ተሣሀለኒ:እግዚኦ:እስመ:ኬደኒ:ሰብእ:: 1
ወኵሎ:አሚረ:አስረሐኒ:ቀተል::=፡ ወኬ 2
ደኒ: ፀርየ: ኵሎ:አሚረ:በኑኃ:ዕላት::እስ
መ:ብዙኃን : እለ:ፀብኡኒ: 3 ወፈራኩ::
ወአንሰ : ኪያከ : ተወከልኩ : እግዚኦ::=፡
በእግዚአብሔር:እሴብሕ:ቃልየ::ወበእግዚ 4
አብሔር: ተወከልኩ: ኢይፈርህ: ምንተ : ይሬ
ስየኒ፡ዘሥጋ::=፡ወኵሎ:አሚረ:ያስቆርሩኒ: 5
ዘነበብኩ:: ወላዕሌየ : ይመክሩ : ኵሎ:እ
ኩየ::=፡ ወይፀንሑኒ:ወይትኀብኡኒ:: ወእ 6
ሙንቱሰ:ሰኰናየ: ያስተኃይጹኒ::=፡ወዘለፈ: 7
ይፀንሕዋ : ለነፍስየ:: ወኢታድኅኖሙ:ወኢ
በምንትኒ:: ወታጸድፎሙ : ለሕዝብ : በመ
ዐትከ::=፡ አምላኪየ : እነግረከ:በሕይ 8
ወትየ:: ወአንበርኩ: አንብዕየ: ቅድሜከ:
9 በከመ : አዘዝከ::

(f) ſuſtinui animā meā. Pro nihil (g) ſalvos facies illos: in ira populo (h) deduces: 8 (i) [e] Deus, Vitam meā annuntiavi tibi: (k) [f] poſuiſti lachrymas meas in conſpectu tuo: 9 ſicut et [g] in promiſſione tua. 8 9

INTERP. ÆTHIOP. [k] uno corde [l] in medio eorū & in palatiis eorū. [m] autem ad [n] meus exaudiet me. [o] nec tamen exaudient vocē meam. [p] multiplicati ſunt præ illis qui mecū. [q] antequam conditus erat mundus. [†] placatio, [r] ſubmergentes fluctus. *PSAL. LV.* [a] in longitudine ejus : [b] Et timui : & ipſe etiā in te ſperavi Domine. [c] Execrabantur me eò quòd locutus ſum; & adverſùs me conſultabant omne malum. [d] Clanculū me præſtolabantur, & mihi abſconditi erant : & ipſi veſtigia mea obſervabant. 7 Et aſſiduè ſuſtinebant animam meam : & non ſalvabis illos ob nil quicquam : & in ira populos dejicies ; [e] Deus meus, [f] et poſui lachrymas [g] præcepiſti.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

15 * الذي ياكل معي ملاذ الاطعمة وسينا الي بيت الله بقلب واحد * ليات الموت عليهم * 16
17 ويهبطوا الي الجحيم احياء * لان الشر في وسط مساكنهم * وانا صرخت الي الله والرب اجابني
18 * اتكلم وقت المساء وبالغداة ووسط النهار * واقول ويسمع صوتي * ويخلص نفسي سالمة من 19
20 المقربين لي لانهم كانوا معي في اشياء كثيرة * سمع الله ويذلهم الكاين قبل الدهور * لانه ليس
21 لهم مجازاة الا النار * ولن يخافوا الله * بسط يده ليجازي * عند ما دنسوا عهده * تفرقوا من 22
23 غضب وجهه واقتربت قلوبهم * اقوالهم الين من الدهن وهي سهام * الق همك الي الرب
24 وهو يعولك لا يترك الصديق يزول الي الابد * وانت اللهم فاهبطهم الي جب الهلاك * رجال
الدماء والغش لا يكملوا ايامهم * وانا يا رب عليك توكلت * الليلويا *

* المزمور الخامس والخمسون *

1 * لداود قاله على الامة التي بعدت من القدس * وهو * كذ * استيخن *
2 * ارحمني يا الله فقد وطيني الانسان * احربني مقاتلا النهار كله * اعداي داسوني جميع نهاري 3
4 لان المقاتلين لي من العلو كثيرون * لا اخشي في ساير الايام لاني عليك توكلت يا ربي * بالله 5
6 افتخر باقوالي النهار كله * الله رجوت فلا اخاف ماذا يصنع بي ذو جسد * رذلوا كلامي النهار
7 كله تشاوروا كلهم علي بالشر * يتوارون ويكمنون وهم مترصدون عقبي * كمثل ما احاطوا 8
9 نفسي لاي شي تخلصهم تخذل الشعوب بالغضب * اللهم اني شكرت حياتي لك جعلت دموعي
امامك * كمثل مواعيدك *

Qui manducat mecum ſuavitatem cibo- 15
rum, & perreximus in domum Dei corde
eodem. Veniat mors ſuper eos, et deſcen- 16
dant ad inferos vivi : quia ſcelus eſt in
medio habitationum eorum. At ego cla- 17
mavi ad Deū, & Dominus exaudivit me.
Loquar tempore veſpertino, & mane, ac 18
meridie, & dicā, audietq; clamorem meū :
Et redimet animam meam incolumem ab 19
iis qui propè me ſunt; nam erant mecum in
rebus multis. Audivit Deus, & deprimet 20
eos exiſtens ante ſecula: quia non eſt eis re-
tributio præter ignem, & tamen non ti-
ment Deum. Extendit manum ſuam ad re- 21
tribuendum quando contaminaverunt fœ-
dus ejus. Diſſipati ſunt ob iram vultûs e- 22
jus, & appropinquaverunt corda eorum.
Sermones eorum molliores ſunt oleo, at ipſi
ſunt ſagittæ. Jacta curam tuam in Do- 23
minum, & ipſe te enutriet : non permittet
juſtum fluctuare in æternum. Et tu Deus, 24
præcipita eos in foveam perditionis : viri
ſanguinum et fraudis ne expleant dies ſu-
os ; & ego in te O Domine, confiſus ſum.
Alleluja.

PSAL. LV.

Davidis. Dictus ab eò de gente 1
quæ receſſerat à Sanctitate.
Verſ. 24.

Miſerere mei, O Deus, quoniam 2
jam me conculcavit homo : afflixit
me, impugnans die totâ : Inimici mei 3
conculcârunt me totâ die meâ, quoniam
bellantes mecum ab alto, multi ſunt. Non 4
timebo omnibus diebus, quia in te confiſus
ſum O Domine mi. In Deo gloriabor ſer- 5
monibus meis die totâ. Deum ſperavi, ic-
circo non timeo ; quid faciat mihi prædi-
ditus corpore? Contempſerunt verba mea 6
die totâ, conſultaverunt omnes adversùm
me in malum. Abſcondent ſe & inſidia- 7
buntur, obſervantes calcaneum meum.
Quo pacto obſederunt animam meam! qua 8
de re ſalvabis eos? Commoveto populos
cum furore. Deus equidem profeſſus ſum 9
vitam meam tibi deberi, propoſui lachry-
mas meas coram te. Juxta promiſſa tua

תהלים : נז נח

quòd , novi hoc : clamabo die in , retrorſum mei inimici convertentur Tunc
אָז ׀ יָשׁוּבוּ אוֹיְבַי אָחוֹר בְּיוֹם אֶקְרָא זֶה־יָדַעְתִּי כִּי־ 10
.*negotium* laudabo Domino in : *rem* laudabo Deo In .*mibi* Deus
אֱלֹהִים לִי׃ בֵּאלֹהִים אֲהַלֵּל דָּבָר בַּיהוָה אֲהַלֵּל דָּבָר׃ 11
Deus me Super .mihi homo faciat quid ,timebo non , fidi Deo In
בֵּאלֹהִים בָּטַחְתִּי לֹא אִירָא מַה־יַּעֲשֶׂה אָדָם לִי׃ עָלַי אֱלֹהִים 12 13
,morte à meam animam eripuiſti Quoniam .tibi laudes reddam ; tua vota
נְדָרֶיךָ אֲשַׁלֵּם תּוֹדוֹת לָךְ׃ כִּי הִצַּלְתָּ נַפְשִׁי מִמָּוֶת 14
? viventium lumine in ; *Dei facies ad deambulandum ad* , *lapſu* à meos pedes nonne
הֲלֹא רַגְלַי מִדֶּחִי לְהִתְהַלֵּךְ לִפְנֵי אֱלֹהִים בְּאוֹר הַחַיִּים׃

PSAL. LVII. נז

.ſpeluncā in Saul facie à *ipſum fugiendo in*,Mictam David ipſi,diſperdas Ne Victori
לַמְנַצֵּחַ אַל־תַּשְׁחֵת לְדָוִד מִכְתָּם בְּבָרְחוֹ מִפְּנֵי־שָׁאוּל בַּמְּעָרָה׃ 1
umbra in & ,mea anima ſperavit te in quoniā ,mei miſerere , Deus mei Miſerere
חָנֵּנִי אֱלֹהִים ׀ חָנֵּנִי כִּי בְךָ חָסָיָה נַפְשִׁי וּבְצֵל־ 2
Deum ad Clamabo .contritiones *tranſeat* donec : ſperabo tuarum alarum
כְּנָפֶיךָ אֶחְסֶה עַד־יַעֲבֹר הַוּוֹת׃ אֶקְרָא לֵאלֹהִים 3
me ſervabit & , cœlis è Mittet .*me ſuper perficientem* Deum ad ; altiſſimum
עֶלְיוֹן לָאֵל גֹּמֵר עָלָי׃ יִשְׁלַח מִשָּׁמַיִם ׀ וְיוֹשִׁיעֵנִי 4
.ſuā veritatem & ,ſuā miſericordiam Deus mittet .Selah ,me *ſorbentis* probro
חֵרֵף שֹׁאֲפִי סֶלָה יִשְׁלַח אֱלֹהִים חַסְדּוֹ וַאֲמִתּוֹ׃
eorum dentes ,hominum filios , ardentes *jacebo* , *leonum* *medio in* mea Anima
נַפְשִׁי ׀ בְּתוֹךְ לְבָאִם אֶשְׁכְּבָה לֹהֲטִים בְּנֵי־אָדָם שִׁנֵּיהֶם 5
ſuper te Exalta .acutus gladius eorum lingua & ; ſagittæ & , lancea
חֲנִית וְחִצִּים וּלְשׁוֹנָם חֶרֶב חַדָּה׃ רוּמָה עַל־ 6
paraverunt Rete .tuam gloriam terram omnem ſuper ; Deus cœlos
הַשָּׁמַיִם אֱלֹהִים עַל כָּל־הָאָרֶץ כְּבוֹדֶךָ׃ רֶשֶׁת ׀ הֵכִינוּ 7
ceciderunt ; foveam *meas facies ad* foderunt ,mea anima ſe *flexit* , meis greſſibus
לִפְעָמַי כָּפַף נַפְשִׁי כָּרוּ לְפָנַי שִׁיחָה נָפְלוּ
: meum cor paratum , Deus meum cor Paratum .Selah , ejus medium in
בְתוֹכָהּ סֶלָה׃ נָכוֹן לִבִּי אֱלֹהִים נָכוֹן לִבִּי 8
exurgam , cithara & , nebel exurge ,mea gloria Exurge .canam & ,cantabo
אָשִׁירָה וַאֲזַמֵּרָה׃ עוּרָה כְבוֹדִי עוּרָה הַנֵּבֶל וְכִנּוֹר אָעִירָה 9
Quoniam .gentibus in *te* canam ; Domine populis in tibi Confitebor .diluculo
שָּׁחַר׃ אוֹדְךָ בָעַמִּים ׀ אֲדֹנָי אֲזַמֶּרְךָ בַּלְאֻמִּים׃ כִּי־ 10 11
.tua veritas *æthera* ad uſque & ; tua miſericordia cœlos ad uſque magna
גָדֹל עַד־שָׁמַיִם חַסְדֶּךָ וְעַד־שְׁחָקִים אֲמִתֶּךָ׃
.tuam gloriam terram omnem ſuper ; Deus cœlos ſuper te Exalta
רוּמָה עַל־שָׁמַיִם אֱלֹהִים עַל כָּל־הָאָרֶץ כְּבוֹדֶךָ׃ 12

PSAL. LVIII. נח

juſtitiam congregatio verè Num .Mictam David ipſi , diſperdas ne , Victori
לַמְנַצֵּחַ אַל־תַּשְׁחֵת לְדָוִד מִכְתָּם׃ הַאֻמְנָם אֵלֶם צֶדֶק 1 2
.hominum filii judicabitis *rectitudines* ? loquemini
תְּדַבֵּרוּן מֵישָׁרִים תִּשְׁפְּטוּ בְּנֵי אָדָם׃

תרגום TARGUM.

הַבְּכֵן יְתוּבוּן בַּעֲלֵי דְבָבִי מְחַזְּרֵי קְדַל יוֹמָא 10
דַּאֲצַלֵּי דֵּין יְדַעִית אֲרוּם אֱלָהָא בְּסַעְדִּי : בְּמִדַּת 11
דִּינָא דֶּאֱלָהָא אֲשַׁבַּח בְּמֵימְרֵיהּ בְּמִדַּת רַחֲמִין
דַּיְיָ אֲשַׁבַּח בְּמֵימְרֵיהּ: בְּמֵימְרָא דֶּאֱלָהָא סַבְּרִית 12
לָא אֶרְחַל מַה יַעְבֵּיד בַּר נָשָׁא לִי : עֲלַי קַבְּלֵית 13
אֱלָהָא נִדְרָךְ אֲשַׁלֵּם קוּרְבָּנֵי תוֹדָן קֳדָמָךְ: אֲרוּם 14
פְּצֵיתָא נַפְשִׁי מִקְטוֹל הֲלָא רַגְלַי מִן נְקוּפָא
לְמֶהֱלָכָא קֳדָם יְיָ בִּנְהוֹר חַיָּיא : נז
לְשַׁבָּחָא עַל עָקְתָא בִּזְמַן דִּי אֲמַר דָּוִד לָא תְחַבֵּל 1
אִתְאֲמַר עַל יַד דָּוִד מַכִּיךְ וּשְׁלִים בְּמֶעֱרָקֵיהּ
מִן קֳדָם שָׁאוּל בְּאִסְפְּלֵידָא : חוּס עֲלַי אֱלָהָא 2
חוּס עֲלַי אֲרוּם בְּמֵימְרָךְ אִתְרְחַצַת נַפְשִׁי
וּבִטְלַל שְׁכִנְתָּךְ אֱהֵי רָחִיץ עַד דְּיֶעְבַּר
אִתְרְגוּשָׁא: אֲצַלֵּי קֳדָם אֱלָהָא עִלָּאָה תַּקִּיפָא דִּי 3
פַּקֵּד לְעַכּוּבִיתָא דְּיִגְמַר בְּאִסְפְּלֵידָא [אֲרוּם
פְּצֵיתָא נַפְשִׁי מִמּוֹתָא דְּמַיְתִין בִּי חַיָּבַיָּא הֲלָא
רַגְלִי מִלְּתַקָּלָא בְּחוֹבָא מְטוּל דְּאַטַּיֵל קֳדָם יְיָ
בְּגִנְּתָא דְעֵדֶן לְמֶחֱמֵי בִּנְהוֹר צַדִּיקַיָּא] עוּלָא
אַמְטוּלְתִי : יְשַׁדַּר מַלְאֲכֵיהּ מִשְּׁמֵי מְרוֹמָא 4
וְיִפְרְקִנַּנִי חַסֵּד שָׁיְפִי לְעָלְמִין יְשַׁדַּר אֱלָהָא
טוּבֵיהּ וְקוּשְׁטֵיהּ : נַפְשִׁי חַיְרָא כַּד בִּמְצַע 5
שַׁלְהוֹבִין אֶדְמוּךְ בֵּינֵי גוּמְרִין דִּי מְלַהֲטִין בְּנֵי
נָשָׁא דְּכַכֵּיהוֹן הֵיךְ מוּרְנִיתָא וְגִרְרִין וְלִישָּׁנְהוֹן
הֵיךְ סַיְפָא חֲרִיפָא : אִתְרוֹרַם עַל מַלְאֲכֵי שְׁמַיָּא 6
אֱלָהָא עַל כָּל יָתְבֵי אַרְעָא אִיקָרָךְ : מְצַדְּתָא 7
אַתְקִינוּ לְאִסְתַּוְרֵי כְּיִף נַפְשִׁי כְּרוּ קֳדָמַי שִׁיחָא
נְפַלוּ בְּמִצְעָהּ לְעָלְמִין : מְכַוַּן לִבִּי לְאוֹרַיְתָךְ יְיָ 8
מְכַוַּן לִבִּי לְדַחַלְתָּךְ אֲשַׁבַּח וַאֲזַמֵּר : אִתְּעַר יְקָרִי 9
אִתְּעַר לְשַׁבָּחָא עַל פּוּם נִבְלָא וְכִנָּרָא אִתְּעַר
לִצְלוֹתָא דִקְרִיץ : אוֹדֵי קֳדָמָךְ בְּעַמַּיָּא יְיָ 10
אֲשַׁבְּחִנָּךְ בְּאוּמַּיָּא : אֲרוּם רַב עַד צֵית שְׁמַיָּא 11
טוּבָךְ וְעַד שְׁחָקִים קוּשְׁטָךְ : אִתְרוֹרַם יְיָ עַל 12
מַלְאֲכֵי שְׁמַיָּא אֱלָהָא עַל כָּל יָתְבֵי אַרְעָא
אִיקָרָךְ : נח
לְשַׁבָּחָא עַל עָקְתָא בִּזְמַן דִּי אֲמַר דָּוִד לָא תְחַבֵּל עַל יַד דָּוִד מַכִּיךְ וּשְׁלִים : הַבְּרַם 1
בְּקוּשְׁטָא שָׁתְקִין צַדִּיקֵי בְּעִדַּן מַצּוּ חָמֵי לְכוֹן דְּצִדְקְתָא מִתְמַלְּלִין תְּרִיצוּת תְּדִינוּן בְּנֵי נָשָׁ: 2

PARAPH. CHALD. Verſ.Lat.

Tunc revertētur hoſtes mihi infenſi,verten- 10
tes cervicem qua die invocavero:hoc novi,
nempe Deum mihi auxilio futurū. In men- 11
ſura judicii Dei laudabo in verbo ejus , in
metro miſerationum Dñi laudabo in verbo
ejus.In verbo Dei ſperavi;non timebo quid 12
faciat filiꝰ hominis mihi. In me recepi Deꝰ 13
vota tua,reddā ſacrificia confeſſionū coram
te.Quoniā liberâſti animā meam de morte; 14
ſed & pedes meos à lapſu, ut incedam co-
ram Domino in lumine vivorum.

Ad laudandū pro moleſtia,tempore quo 1
dixit David, ne deſtruas, dictū eſt ꝑ manū
Davidis humilis & perfecti,dum fugeret ab
aſpectu Saulis in ſpeluncā. PSAL. LVII.

MIſerere mei Deus,miſerere mei,quia in 2
verbotuo ſperavit anima mea,et in um-
bra majeſtatis tuæ confidā , donec tranſeat
tumultꝰ.Orabo corā Deo altiſſimo et forti, 3
qui *juſſit aranea,* ut perficeret in *ſpelunca*
[quia liberâſti animā meā à morte,quā in-
ferebant mihi peccatores;nonne pedē meū à
lapſu in peccatū,ut ambulē corā Domino in
horto deliciarū, ad videndū lucē juſtorū?]
telā propter me.*Mittet* angelū ſuū de cœ- 4
lis altiſſimis, et ſalvū me faciet, opprobrio
afficiens conculcantē me in æternum:mittet
Deus bonitatē ſuā et veritatē ſuā. Anima 5
mea *ardet* tanquā in medio flammarū, dor-
miam inter carbones, quos ſuccendunt filii
hominis, quorū dentes ſunt ſicut lancea &
ſagittæ,et linguæ eorū ſicut enſis acutꝰ. Ex- 6
altare ſuper angelos cœlorū Deꝰ;ſuꝑ omnes
habitatores terræ gloria tua.Laqueum para- 7
verunt greſſibꝰ meis;incurvavit animā meā;
foderunt ante me foveā;ceciderūt in medio
ejus in æternū.Paratū cor meū ad legē tuā, 8
Dñe,paratū cor meū in *timorē* tui;laudes di-
cam et pſallā. Expergiſcere gloria mea, ex- 9
pergiſcere ut laudes ore pſalterii et cytha-
ræ:expergiſcar ad orationē matutinā.Con- 10
fitebor corā te in populis Dñe,laudabo te in
nationibꝰ.Quoniā magna uſq; ad ſummitatē 11
cœlorū benignitas tua,et uſq; ad æthera ve-
ritas tua. Exaltare *Domine* , ſuper angelos 12
cœlorum Deus ; ſuper omnes qui habitant
terram, gloria tua .

Ad laudandū pro anguſtia in tēpore quo 1
dixit David,Ne deſtruas, ꝑ manum Davidis
humilis & perfecti. PSAL. LVIII.

NUm revera quia ſiletis juſti in tēpore cō- 2
tēti onis,videtur vobis ꝙ juſtitiā loqua-
mini? in rectitudine judicate filios hominū.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܢܗܦܟܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝ ܠܒܣܬܪܗܘܢ : ܘܐܕܥ ܕܐܠܗܐ ܐܝܬ ܠܝ . * ܒܡܠܬܗ 10
ܕܐܠܗܐ ܐܫܒܚ : * ܒܐܠܗܐ ܬܟܝܠ ܐܢܐ ܠܐ ܐܕܚܠ . ܡܢܐ ܢܥܒܕ ܒܝ ܒܪܢܫܐ : * ܠܟ ܐܠܗܐ 11 12
ܐܫܠܡ ܢܕܪܝ . ܘܒܬܘܕܝܬܐ ܐܕܒܚ ܠܟ : * ܡܛܠ ܕܦܪܩܬ ܢܦܫܝ ܡܢ ܡܘܬܐ . ܘܪܓܠܝ 13 14
ܡܢ ܬܘܩܠܬܐ : ܕܐܫܦܪ ܩܕܡܝܟ ܐܠܗܐ ܒܐܪܥܐ ܕܚܝܐ .
* ܡܙܡܘܪܐ ܕܢܙ̄ *
* ܕܕܘܝܕ ܟܕ ܗܦܟ ܫܐܘܠ ܠܡܪܕܦܗ . ܘܬܘܕܝܬܐ . ܘܩܪܝܬܐ ܕܥܡܡܐ ܠܗܝܡܢܘܬܐ . 1
ܦܬܓܡ̈ܐ ܟܛ̄ . * ܐܬܪܚܡ ܥܠܝ ܐܠܗܐ ܕܒܟ ܗܘ ܡܣܒܪܐ ܢܦܫܝ : ܘܒܛܠܠܐ ܕܟܢܦܝܟ 2
ܐܬܛܫܐ . ܥܕܡܐ ܕܢܥܒܪ ܫܓܘܫܝܐ . * ܐܩܪܐ ܠܐܠܗܐ ܡܪܝܡܐ ܘܠܐܠܗܐ ܦܪܘܩܝ : * ܕܝܦܣ̄ * ܫܕܪ 3
ܡܢ ܫܡܝܐ ܘܦܪܩܢܝ : ܘܒܙܚ ܠܒܥܠܕܒܒ̈ܝ * ܕܝܦܣ̄ * ܫܕܪ ܐܠܗܐ ܛܝܒܘܬܗ ܘܩܘܫܬܗ : 4
* ܘܦܪܩܗ ܢܦܫܝ ܡܢ ܟܠܒܐ . ܕܕܡܟܬ ܟܕ ܕܘܝܚ ܐܢܐ : ܒܢܝ̈ܢܫܐ ܫܢ̈ܝܗܘܢ ܪܘܡܚܐ ܘܓܐܪ̈ܐ . 5
ܘܠܫܢܗܘܢ ܐܝܟ ܣܦܣܪܐ ܚܪܝܦܐ : * ܐܬܬܪܝܡ ܥܠ ܫܡܝܐ ܐܠܗܐ . ܘܥܠ ܟܠܗ ܐܪܥܐ ܐܝܩܪܟ : 6
* ܡܨܝܕܬܐ ܛܝܒܘ ܠܪ̈ܓܠܝ . ܘܚܦܪܘ ܓܘܡܨܐ ܠܢܦܫܝ ܘܢܦܠܘ ܒܗ : * ܕܝܦܣ̄ * 7
* ܡܛܝܒ ܗܘ ܠܒܝ ܐܠܗܐ ܡܛܝܒ ܗܘ ܠܒܝ . ܐܫܒܚ ܘܐܙܡܪ ܒܐܝܩܪܝ : * ܐܬܬܥܝܪ ܟܢܪܝ 8
ܐܬܬܥܝܪܘ ܩܝܬܪܐ ܘܟܢܪܐ . ܘܐܢܐ ܐܬܬܥܝܪܬ ܒܨܦܪܐ : * ܐܘܕܐ ܠܟ ܒܥܡ̈ܡܐ ܐܠܗܐ . ܘܐܙܡܪ 9 10
ܠܫܡܟ ܒܐܘܡܘܬܐ : * ܡܛܠ ܕܐܬܪܘܪܒܬ ܥܕ ܠܫܡܝܐ ܛܝܒܘܬܟ . ܘܥܕ ܠܫܡܝ ܫܡܝܐ 11
ܗܝܡܢܘܬܟ : * ܐܬܬܪܝܡ ܥܠ ܫܡܝܐ ܐܠܗܐ . ܘܥܠ ܟܠܗ ܐܪܥܐ ܐܝܩܪܟ . 12
* ܡܙܡܘܪܐ ܕܢܚ̄ * * ܕܕܘܝܕ . ܟܕ ܐܬܚܡܬ ܫܐܘܠ ܥܠ ܟܗ̈ܢܐ ܕܠܐ ܓܠܘ ܠܗ ܥܠ ܕܘܝܕ 1
ܕܝܕܥܝܢ ܗܘܘ ܐܝܟܐ ܗܘ . ܠܢ ܕܝܢ ܡܚܘܐ ܡܚܘܝܢܘܬܐ ܕܕܝܢܐ ܟܐܢܐ ܕܐܠܗܐ . ܦܬܓܡ̈ܐ ܟܒ̄ . 2
* ܐܢ ܫܪܝܪܐܝܬ ܙܕܝܩܘܬܐ ܡܡܠܠܝܢ ܐܢܬܘܢ . ܘܬܪܝܨܘܬܐ ܕܝܢܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܢܝ̈ ܐܢܫܐ :

Tunc retrocedent hoſtes mei, & agnoſcā eſſe 10
mihi Deum. Verbum Dei laudabo. In Deo 11
confido, non metuam; quid faciet in me ho- 12
mo ? Tibi Deus perſolvam vota mea, & cum 13
gratiarum actione ſacrificabo tibi. Quoniā 14
eripuiſti animam meam à morte, & pedes
meos à lapſibus: ut placeam coram te Deus,
in terra vivorum.

PSAL. LVII.

Davidis. Quum reverſus eſt Saul ad eum 1
perſequendum. Et gratiarum actio. At-
que vocatio Gentium ad fidem. Verſ. 29.

MIſerere me Deus, quoniam in te ſperat 2
anima mea : & umbrâ alarum tuarum
me tegam. Quoad tranſeat tumultus. Invo- 3
cabo Deum excelſum, & Deum ſalvatorem
meum. * *Diapſal.* * Qui miſit è cœlo & li- 4
beravit me , ac deluſit inimicos meos.
* *Diapſalma* * Miſit Deus gratiam ſuam, &
veritatem ſuam. Et ſalvavit animam meam à 5
canibus : quia dormivi conturbatus. Homi-
num dentes lanceæ & ſagittæ, & lingua eo-
rum velut gladius acutus. Exaltare ſuper 6
cœlos Deus, & ſuper omnem terram gloria
tua. Rete parârunt pedibus meis, foveam- 7
que foderunt animæ meæ , & inciderunt in
eam. * *Diapſalma* * Paratum eſt cor meum 8
Deus, paratum eſt cor meum, laudabo &
pſallam in gloria mea. Expergiſcere lyra 9
mea, expergiſcimini cithara & lyra, etiam
ego experrectus ſum diluculó. Confitebor 10
tibi inter gentes Deus, & nomini tuo ca-
nam inter populos. Quoniam exaltata eſt 11
uſque ad cœlum bonitas tua, & uſque ad
cœlos cœlorum fides tua. Extolle te ſuper 12
cœlos Deus, & ſuper univerſam terram glo-
ria tua.

PSAL. LVIII.

Davidis. Quum minitatus eſt Saul Sacerdo- 1
tes eò quòd non revelârint ei Davidem
quem noverant ubi eſſet. Nobis autem ex-
ponit documentū juſti judicii Dei. Verſ. 22.

ITa certè, juſtitiam loquimini, & æquita- 2
tem judicatis filii hominum.

Verſio VULG. LAT.

10 Tunc convertentur inimici mei retror-
ſùm : In quacunque die invocavero
te : ecce cognovi quoniã Deus meus
11 es. In Deo laudabo verbũ, in Do-
mino laudabo ſermonem : in Deo
ſperavi, non timebo quid faciat mihi
12 homo. In me ſunt, Deus, vota tua,
13 quæ reddã, laudationes tibi. Quoniã
eripuiſti animã meã de morte, & pedes
meos de lapſu : ut placeã corã Deo in
lumine viventium.

In finem,
1 Ne diſperdas, David in tituli inſcri-
ptionem, cùm fugeret à facie Saul
in ſpeluncam. (2 *Reg.* 22. 1. & 24. 4.)
LVI.
2 MIſerere meî, Deꝰ, miſerere meî: quo-
niã in te confidit anima mea. Et
in umbra alarũ tuarũ ſperabo, donec
3 tranſeat iniquitas. Clamabo ad Deũ al-
4 tiſſimũ : Deũ qui benefecit mihi. Miſit
de cœlo, & liberavit me: dedit in oppro-
briũ conculcantes me. Miſit Deus miſeri-
5 cordiã ſuã, & veritatẽ ſuã, Et eripuit
animã meã de medio catulorũ leonũ :
dormivi conturbatus. Filii hominũ, den-
tes eorũ arma & ſagittæ: & lingua eorũ
6 gladius acutus. Exaltare ſuper cœlos,
7 Deus : et in omnẽ terrã gloria tua. La-
queũ paraverunt pedibus meis : & in-
curvaverunt animã meã. Foderunt ante
faciẽ meã foveã : et inciderunt in eam.
8 Paratum cor meum, Deus, paratum
cor meum : cantabo, & pſalmum di-
9 cam. Exurge gloria mea, exurge pſal-
10 teriũ & cithara : exurgã diluculò. Con-
fitebor tibi in populis, Dñe : & pſal-
11 mum dicã tibi in gentibus : Quoniã
magnificata eſt uſque ad cœlos miſe-
ricordia tua, & uſque ad nubes veritas
12 tua. Exaltare ſuper cœlos, Deus : &
ſuper omnẽ terram gloria tua.

In finem,
1 Ne diſperdas, David in tituli in-
ſcriptionem. LVII.
2 SI verè utique juſtitiam loquimini :
recta judicate filii hominum.

Verſ. GRÆCA LXX. Interp.

10 Ἐπιστρέψουσιν οἱ ἐχθροί μου εἰς τὰ ὀπίσω, ἐν ᾗ ἂν
ἡμέρᾳ ἐπικαλέσωμαί σε, ἰδοὺ ἔγνων ὅτι θεός μου
11 εἶ σύ. Ἐπὶ τῷ θεῷ αἰνέσω ῥῆμα, ἐπὶ τῷ κυρίῳ
αἰνέσω λόγον. ἐπὶ τῷ θεῷ ἤλπισα, οὐ φοβηθήσο-
12 μαι τί ποιήσει μοι ἄνθρωπος. Ἐν ἐμοὶ ὁ θεὸς
13 αἱ εὐχαί, ἃς ἀποδώσω αἰνέσεώς σου. Ὅτι ἐῤῥύ-
σω τὴν ψυχήν μου ἐκ θανάτου, καὶ τοὺς πόδας μου
ἐξ ὀλισθήματος, τοῦ εὐαρεστῆσαι ἐνώπιον τοῦ θεοῦ
ἐν φωτὶ ζώντων.

1 Εἰς τὸ τέλος, μὴ διαφθείρῃς, τῷ Δαυὶδ εἰς στη-
λογραφίαν, ἐν τῷ αὐτὸν ἀποδιδράσκειν ἀπὸ
προσώπου Σαοὺλ εἰς τὸ σπήλαιον. νϛʹ.

2 Ἐλέησόν με ὁ θεός, ἐλέησόν με, ὅτι ἐπὶ σοὶ
πέποιθεν ἡ ψυχή μου· καὶ ἐν τῇ σκιᾷ τῶν πτερύ-
3 γων σου ἐλπιῶ, ἕως οὗ παρέλθῃ ἡ ἀνομία. Κε-
κράξομαι πρὸς τὸν θεὸν τὸν ὕψιστον, τὸν θεὸν τὸν
4 εὐεργετήσαντά με. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. Ἐξαπέστει-
λεν ἐξ οὐρανοῦ καὶ ἔσωσέ με, ἔδωκεν εἰς ὄνειδος
τοὺς καταπατοῦντάς με. Ἐξαπέστειλεν ὁ θεὸς τὸ
5 ἔλεος αὐτοῦ καὶ τὴν ἀλήθειαν αὐτοῦ, Καὶ ἐῤῥύσατο
τὴν ψυχήν μου ἐκ μέσου σκύμνων· ἐκοιμήθην
τεταραγμένος. υἱοὶ ἀνθρώπων, οἱ ὀδόντες αὐ-
τῶν, ὅπλον καὶ βέλη, καὶ ἡ γλῶσσα αὐτῶν, μάχαιρα
6 ὀξεῖα. Ὑψώθητι ἐπὶ τοὺς οὐρανοὺς ὁ θεός, καὶ ἐπὶ
7 πᾶσαν τὴν γῆν ἡ δόξα σου. Παγίδας ἡτοί-
μασαν τοῖς ποσί μου, καὶ κατέκαμψαν τὴν ψυ-
χήν μου. ὤρυξαν πρὸ προσώπου μου βόθρον,
8 καὶ ἐνέπεσαν εἰς αὐτόν. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. Ἑτοίμη
ἡ καρδία μου ὁ θεός, ἑτοίμη ἡ καρδία μου, ᾄσο-
9 μαι καὶ ψαλῶ. Ἐξεγέρθητι ἡ δόξα μου, ἐξεγέρ-
θητι ψαλτήριον καὶ κιθάρα, ἐξεγερθήσομαι ὄρ-
10 θρου. Ἐξομολογήσομαί σοι ἐν λαοῖς κύριε,
11 ψαλῶ σοι ἐν ἔθνεσιν. Ὅτι ἐμεγαλύνθη ἕως τῶν
οὐρανῶν τὸ ἔλεός σου, καὶ ἕως τῶν νεφελῶν ἡ ἀλή-
12 θειά σου. Ὑψώθητι ἐπὶ τοὺς οὐρανοὺς ὁ θεός, καὶ
ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν ἡ δόξα σου.

1 Εἰς τὸ τέλος, μὴ διαφθείρῃς, τῷ Δαυὶδ εἰς
στηλογραφίαν. νζʹ.
2 Εἰ ἀληθῶς ἄρα δικαιοσύνην λαλεῖτε, εὐθεῖα
κρίνετε οἱ υἱοὶ τῶν ἀνθρώπων.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

*(l) [h] Convertentur inimici
mei retrorſùm : 10 in quacun-
que die invocavero te; ecce cog-
novi, quoniam Deus meus es tu.
11 In Deo laudabo [i] verbum,
in Domino [k] laudabo ſermonem.
In Deo ſperavi : non timebo,
quid faciat homo. 12 [l] In me
ſunt, Deus, vota, quæ reddã lau-
dationis tibi. 13 Quoniam eri-
puiſti animam meam de morte,
[m] & pedes meos de lapſu : ut
placeam coram Deo in [n] lu-
mine viventium.*

In finem, ne diſperdas, ipſi David 1
in tituli inſcriptionem, cùm fu-
geret à facie Saul in ſpelun-
cam. *LVI.*

*1 MIſerere meî, Deus, miſe- 2
rere meî : quoniam in te confi-
dit anima mea. 2 Et in umbra
alarum tuarum ſperabo : donec
tranſeat (a) iniquitas. 3 Cla- 3
mabo ad Deum altiſſimum,
Deum qui benefecit mihi.
DIAPSALMA. 4 Mi- 4
ſit de cœlo, & ſalvum fecit
me : dedit in opprobrium con-
culcantes me. 5 Miſit Deus mi-
ſericordiam ſuam, & veritatem
ſuam : Et eripuit animam me- 5
am de medio catulorum leonum:
(b) dormivi conturbatus. 6 Fi-
lii hominum, dentes eorum (c)
[a] arma, & ſagittæ : & lin-
gua eorum, gladius acutus. 7 Ex- 6
altare ſuper cœlos, Deus, & ſuper
omnem terram gloria tua. 8 (d)
Laqueos paraverunt pedibus me- 7
is, & incurvaverunt animam
meam. 9 Foderunt ante faciem
meam, foveam, & inciderunt in
eã. DIAPSALMA. 10 (e) 8
Paratum cor meum, Deus, para-
tum cor meum : Cantabo, (f) &
pſalmum dicam. 11 Exurge 9
gloria mea, exurge pſalterium
& cithara : exurgam diluculò.
12 Confitebor tibi in populis, Do- 10
mine ; pſalmum dicam tibi in gentibus. 13 Quoniam magnificata eſt uſque 11
ad cœlos miſericordia tua : & uſque ad nubes veritas tua. 14 Exaltare ſuper 12
cœlos, Deus, & ſuper omnem terram gloria tua.*

In finem, ne diſperdas, ipſi David 1
in tituli inſcriptionem. *LVII.*

*1 SI verè utiq; juſtitiam loqui- 2
mini : recta judicate filii
hominum.*

Verſio ÆTHIOPICA.

10 ለይግብኡ፡ፀርየ፡ድኅሬሆሙ፡፡=፡ አመ፡ዕለ 10
ተ፡ አፄውዐከ፡፡ ናሁ፡ አእመርኩ፡ ከመ፡
አምላኪየ፡ አንተ፡፡=፡ በእግዚአብሔር፡ 11
እሴብሕ፡ቃልየ፡፡ በእግዚአብሔር፡ይከብር፡
ዘነብብኩ፡፡ ወበእግዚአብሔር፡ተወከልኩ፡
ኢይፈርህ፡ ምንተ፡ ይሬስየኒ፡ሰብእ፡፡=፡
12 እምኀቤየ፡ እኁብ፡ ብፅአትየ፡ ለስብሐቲ 12
ከ፡፡=፡ እስመ፡አድኀንከ፡እሞት፡ለነፍስየ፡፡ 13
13 ወለአዕይንትየኒ፡እምአንብዕ፡፡ ወለእገርየኒ፡
እምደኀፅ፡፡ ከመ፡ አሥምሮ፡ ለእግዚአብ
ሔር፡በብሔረ፡ሕያዋን፡፡

1 ፍጻሜ፡ ሊታማስን፡ዘደዊት፡ አርአያ፡ መጽ
ሐፍ፡ ዘአመ፡ ጕየ፡ እምቅድመ፡ ገጸ፡
ሳኦል፡ውስተ፡በአት፡፡

ሣ፤ ተሣሀለኒ፡እግዚኦ፡ተሣሀለኒ፡፡እስመ፡ ኪ 1
ያከ፡ተወከለት፡ነፍስየ፡፡=፡ ወተወከልኩ፡በ 2
ጽላሎተ፡ክነፊከ፡፡ እስከ፡ ተኃልፍ፡ኃጢአ
ት፡፡=፡ እጸርኅ፡ ኀበ፡ እግዚአብሔር፡ልዑ 3
ል፡፡ኀበ፡ እግዚአብሔር፡ ዘረድአኒ፡፡=፡
ፈነወ፡ እምሰማይ፡ወአድኀነኒ፡፡ ወወሀቦሙ፡ 4
ኀሳረ፡ለእለ፡ኬዱኒ፡፡=፡ ፈነወ፡እግዚአብሔ 5
ር፡ሣህሎ፡ወጽድቆ፡፡ ወአድኀና፡ ለነፍስየ፡
እማእከለ፡ አናብስት፡፡ ወኖምኩ፡ ድንጉፀ
የ፡፡=፡ ደቂቀ፡እጓለ፡እመሕያው፡ስነኒሆሙ፡ 6
ሐጽ፡ወኲናት፡፡ ወልሳናቲሆሙ፤፡በሊሕ፡መጥባ
ሕት፡፡=፡ ተለዐለ፡ እግዚአብሔር፡ መልዕል 7
ተ፡ ሰማያት፡፡ ወበኵሉ፡ ምድር፡ ስብሐቲ
ሁ፡፡=፡መሥገርተ፡አስተደለዉ፡ለእገሪየ፡፡ 8
ወቀጽዐዋ፡ለነፍስየ፡፡=፡ ከረዩ፡ግበ፡ ቅድሜ 9
የ፡ወወድቁ፡ ውስቴቱ፡፡=፡ ጥቡዕ፡ልብየ፡ 10
እግዚኦ፡፡ ጥቡዕ፡ልብየ፡ እሴብሕ፡ ወእዜ
ምር፡፡=፡ ወይትነሣእ፡ ክብርየ፡፡ወይትነሣ 11
እ፡ በመዝሙር፡ ወበመሰንቆ፡፡ ወእትነሣእ፡
በጽባሕ፡፡=፡ እገኒ፡ለከ፡በውስተ፡አሕዛብ፡ 12
እግዚኦ፡፡ ወእዜምር፡ ለከ፡በውስተ፡ ሕዝ
ብ፡፡=፡ እስመ፡ዐቢየት፡እስከ፡ ሰማያት፡ም 13
ሕረትከ፡፡ ወእስከ፡ደመናት፡ ጽድቅከ፡፡=፡
ተለዐለ፡ እግዚአብሔር፡ መልዕልተ፡ ሰማያ 14
ት፡፡ ወበኵሉ፡ ምድር፡ ስብሐቲሁ፡፡=፡

ፍጻሜ፡ ሊታማስን፡ ዘደዊት፡ አርአያ፡
መጽሐፍ፡፡

ሣጊ እመሰ፡ አማን፡ ጽድቀ፡ ትነቡ፡፡ 1
ወርትዐ፡ ትኰንኑ፡ ደቂቀ፡ እጓለ፡ እመሕ
ያው፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [h] Convertantur [i] verbum meum, [k] honori erit quod locutus ſum. [l] A meipſo perſolvam vota laudationibus tuis. [m] & oculos meos à lachrymis: [n] regione viventium. *PSAL. lvi.* [a] ſagitta, & enſis :

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

10 11 * يرتدون اعداي علي اعقابهم يوم اصرخ اليك * هانذا قد علمت انك الاهي * اسبح الله بالقول *
12 13 وابارك الرب بالكلام * توكلت علي الله فلا اخشي ماذا يفعل بي الانسان * اللهم علي نذورا اوفيها
14 لتسبحتك * لانك خلصت نفسي من الموت * وعيني من الدموع * ورجلي من الزلل * لاعمل
برضي الرب * امامه في نور الاحياء * الليلويا * المزمور السادس والخمسون *
1 * لداود حين هرب من قدامه شاوول الي المغارة * وهو * كه * استيخن *
2 * ارحمني يا الله ثم ارحمني * فان نفسي توكلت عليك * وبظلال كنفك استتر * الي ان يعبر الاثم
3 4 * اصرخ الي الله العلي * الاله المحسن الي * ارسل من السماء خلصني * وجعل الذين يطؤونني عارا *
5 بعث الله برحمته وعدله * وخلص نفسي من وسط الاشبال لاني نمت قلقا * اسنان بني البشر سلاح
6 7 وسهام * والسنتهم سيوف حاده * اللهم ارتفع علي السموات * ومجدك علي الارض كلها * اعدوا فخاخا
8 لرجلي واحنوا نفسي * حفروا حفرة امام وجهي * فسقطوا فيها * قلبي مستعد بالله * قلبي مستعد *
9 10 اسبح وارتل في تمجيدي * قم يا مجدي * قم ايها المزمار والقيثار * ساقوم بالغدوات * واشكرك
11 يا رب في الشعوب * وارتل لك في الامم * لان رحمتك قد عظمت الي السموات والي السحاب عدلك
12 * ارتفع اللهم علي السموات وعلي كل الارض مجدك * الليلويا *
1 * المزمور السابع والخمسون * * لداود وعدده * كب * استيخن *
2 * ان كنتم اذن بالصدق تتكلمون حقا * فاحكموا بالاستقامة يا بني البشر *

Revertantur inimici mei ſuper calcaneos 10
ſuos, die quâ clamabo ad te. Ecce jam novi
te eſſe Deum meum. Laudabo Deum ſer- 11
mone, & benedicam Dominum verbis.
Confiſus ſum in Deo, iccirco non timebo : 12
quid faciat mihi homo? Deus, ſunt mihi 13
vota reddenda in glorificationem tuam.
Quia tu liberâſti animã meam de morte, 14
& oculos meos de lachrymis, & pedes
meos de lapſibus : ut peragam voluntatem
Domini in conſpectu ejus, in lumine vi-
ventium. Alleluja.

PSAL. LVI.

Davidis, quando fugit à conſpectu 1
Saulis in ſpeluncam. Ver. 25.

MIſerere mei, O Deus, iterum miſerere 2
mei, quoniam anima mea confiſa eſt
in te, et ſub umbra alarum tuarum pro-
tegar quoad tranſeat iniquitas. Clamabo 3
ad Deum altiſſimum, Deum benefacientem
mihi. Miſit de cœlo & liberavit me: & 4
fecit eos qui conculcant me, opprobrium.
Miſit Deus ex miſericordia ſua & æqui-
tate ſua, Et eripuit animam meam è me- 5
dio catulorum leonum, quia dormivi con-
turbatus. Dentes filiorum hominum arma
& ſagittæ, & linguæ eorum gladii acuti.
Deus eleva te ſuper cœlos, & gloria tua 6
ſuper terram univerſam. Præparârunt la- 7
queos pedibus meis, & incurvaverunt a-
nimam meam. Foderunt foveam ante fa-
ciem meam, & inciderunt in eam. Cor me- 8
um paratum eſt in Deo, cor meũ paratum :
laudes canam & pſallam in glorificatione
mea. Surge O gloria mea, ſurge O pſal- 9
terium & cithara : ſurgam in matutinis,
Et gratias agam tibi, O Domine, inter po- 10
pulos, & pſallam tibi inter gentes : Quo- 11
niam miſericordia tua jam magnificata eſt
uſque ad cœlos, & ad nubes juſtitia tua.
Exaltare Deus, ſuper cœlos, & ſuper u- 12
niverſam terram gloria tua. Alleluja.

PSAL. LVII.

Davidis. Et numerus verſ. 22. 1

SI ergò veraciter loquimini veritatem, 2
judicate æquè, O filii hominum.

תהלים : נט

vestrarum manuum iniquitatem terra in , operabimini iniquitates corde in Etiam
3 אַף־בְּלֵב עוֹלֹת תִּפְעָלוּן בָּאָרֶץ חֲמַס יְדֵיכֶם
loquentes , utero ab erraverunt : vulva à impii ſunt Alienati ? librabitis
4 תְּפַלֵּסוּן׃ זֹרוּ רְשָׁעִים מֵרָחֶם תָּעוּ מִבֶּטֶן דֹּבְרֵי
ſicut : ſerpentis *veneni ſimilitudinem ſecundùm* illis Venenum .mendacium
5 כָזָב׃ חֲמַת־לָמוֹ כִּדְמוּת חֲמַת־נָחָשׁ כְּמוֹ־
: *muſſitantium vocem ad audiet* non Quæ .ſuam aurem *obturabit* ſurdæ aſpidis
6 פֶתֶן חֵרֵשׁ יַאְטֵם אָזְנוֹ׃ אֲשֶׁר לֹא־יִשְׁמַע לְקוֹל מְלַחֲשִׁים
: ipſorũ ore in eorũ dentes contere Deus .*docti conjunctiones jungentis*
7 חוֹבֵר חֲבָרִים מְחֻכָּם׃ אֱלֹהִים הֲרָס־שִׁנֵּימוֹ בְּפִימוֹ
ambulabunt , aquæ ſicut *Liqueſcent* .Domine *deſtrue leunculorum* molas
8 מַלְתְּעוֹת כְּפִירִים נְתֹץ יְהוָה׃ יִמָּאֲסוּ כְמוֹ־מַיִם יִתְהַלְּכוּ־
: *ibit liquefactionis* limax Sicut .*exciderentur* ſi ac ſuas ſagittas *tendet* :ſibiipſis
9 לָמוֹ יִדְרֹךְ חִצָּו כְּמוֹ יִתְמֹלָלוּ׃ כְּמוֹ שַׁבְּלוּל תֶּמֶס יַהֲלֹךְ
veſtræ ſpinæ intelligant Antequam .Solem videant ne , mulieris abortivus
10 נֵפֶל אֵשֶׁת בַּל־חָזוּ שָׁמֶשׁ׃ בְּטֶרֶם יָבִינוּ סִּירֹתֵיכֶם
viderit cùm , juſtus Lætabitur .eũ *rapiet turbine* ira ſic , *viventem ſic* ; *rhamnum*
11 אָטָד כְּמוֹ־חַי כְּמוֹ־חָרוֹן יִשְׂעָרֶנּוּ׃ יִשְׂמַח צַדִּיק כִּי־חָזָה
Verè , homo dicet Et .impii ſanguine in lavabit ſuos pedes : vindictam
12 נָקָם פְּעָמָיו יִרְחַץ בְּדַם הָרָשָׁע׃ וְיֹאמַר אָדָם אַךְ־
.terra in judicans Deus eſt utique : juſto fructus
פְּרִי לַצַּדִּיק אַךְ יֵשׁ־אֱלֹהִים שֹׁפְטִים בָּאָרֶץ׃

PSAL. LIX. נט

cuſtodierunt & , Saul *mittendo in* , Mictam David ipſi , *corrumpas* ne , Victori
1 לַמְנַצֵּחַ אַל־תַּשְׁחֵת לְדָוִד מִכְתָּם בִּשְׁלֹחַ שָׁאוּל וַיִּשְׁמְרוּ
mihi obſiſtentibus ab ; mi Deus meis inimicis ab me Eripe .eũ *interficiendũ ad* ,domum
2 אֶת־הַבַּיִת לַהֲמִיתוֹ׃ הַצִּילֵנִי מֵאֹיְבַי אֱלֹהָי מִמִּתְקוֹמְמַי
.me ſerva *ſanguinum* viris à & ; *iniquitatis* operariis ab me Eripe .me eleva
3 תְּשַׂגְּבֵנִי׃ הַצִּילֵנִי מִפֹּעֲלֵי אָוֶן וּמֵאַנְשֵׁי דָמִים הוֹשִׁיעֵנִי׃
: fortes me *ſuper* ſunt congregati , meæ animæ ſunt inſidiati ecce Quia
4 כִּי הִנֵּה אָרְבוּ לְנַפְשִׁי יָגוּרוּ עָלַי עַזִּים
, *current* iniquitate Abſque .Domine *meum peccatum non* & ,mea *prævaricatio non*
5 לֹא־פִשְׁעִי וְלֹא־חַטָּאתִי יְהוָה׃ בְּלִי־עָוֺן יְרוּצוּן
Domine tu Et .vide & , meũ occurſum in te ſuſcita : ſe *parabunt* &
6 וְיִכּוֹנָנוּ עוּרָה לִקְרָאתִי וּרְאֵה׃ וְאַתָּה יְהוָה־
: gentes omnes viſitandum ad evigila , Iſrael Deus , exercituum Deus
אֱלֹהִים צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל הָקִיצָה לִפְקֹד כָּל־הַגּוֹיִם
,veſperam ad Convertentur .Selah ,*iniquitatis* prævaricatorum omniũ miſerearis ne
7 אַל־תָּחֹן כָּל־בֹּגְדֵי אָוֶן סֶלָה׃ יָשׁוּבוּ לָעֶרֶב
,ſuo ore in *ſcaturient* Ecce .civitatem circuibunt & ,canis ſicut tumultuabuntur
8 יֶהֱמוּ כַכָּלֶב וִיסוֹבְבוּ עִיר׃ הִנֵּה יַבִּיעוּן בְּפִיהֶם
DOMINE tu Et ? *audiens* quis quoniam : eorum labiis in gladii
9 חֲרָבוֹת בְּשִׂפְתוֹתֵיהֶם כִּי־מִי שֹׁמֵעַ׃ וְאַתָּה יְהוָה
.gentes omnes ſubſannabis : eos deridebis
תִּשְׂחַק־לָמוֹ תִּלְעַג לְכָל־גּוֹיִם׃

תרגום TARGUM.

בְּרַם רַשִׁיעֵי מַה דֵין בְּלִבָּא עִילָא תַעְבְּדוּן 3
בְּאַרְעָא חֲטוּף אִידֵיכוֹן יְתַקְנוּן׃ אִתְעֲבִידוּ 4
נוּכְרָאִין רַשִׁיעַיָא מִן מְעָן תְּעָן מִן כְּרֵיסָא מְמַלְלֵי
כַדְבוּתָא׃ אֶרְסָא לְהוֹן בְּגַוָן אֶרְסָא דְחִוְיָא הֵיךְ 5
חוּרְמָנָא חֵרְשָׁא דִמְטַמְטֵם אֶדְנֵיהּ׃ דִי לָא יְקַבֵּל 6
מַלֵי חַרְשַׁיָא אַסְרֵי נַחְשַׁיָא וּמִן רָטְנֵי רֶטֶן הוּא
חַכִּים׃ אֱלָהָא תְּרַע כַּכֵּיהוֹן בְּפוּמְהוֹן וְנִיבֵי בְּנֵי 7
אַרְיָוָן תְּתַרַע יְיָ׃ יִתְמַסוּן בְּחוֹבֵיהוֹן הֵיךְ מַיָא 8
יְזִלוּן לְהוֹן וְנָגֵיד גִרְרוֹי אַמְטוּלְהוֹן וִיהוֹן
מִתְגוֹרְרִין׃ הֵיךְ זְחִיל תְּבַלְלָא דִי מָאֵס אוֹרְחֵיהּ 9
הֵיךְ נְפוּלָא וְאָשׁוּתָא דִי סַמְיָן וְלָא חֲמוֹן שִׁמְשָׁא׃
עַד לָא יִתְעַבְדוּן רַשִׁיעַיָא רַכִּיכֵי אַקְשׁוּן הֵיךְ 10
אַטְדָא עַד דְהִנוּן רַטִיבִין כְּבוּסְרָא בְּעַלְעוֹלָא
יְשֵׁיצִנוּן׃ יֶחְדֵי צַדִּיקָא אֲרוּם חֲמָא פּוּרְעָנוּתָא 11
מִנְהוֹן אַסְתַּוְרִין יַשְׁווֹג בְּאַדַם רַשִׁיעָא׃ וְיֵימְרוּן 12
בְּנֵי נָשָׁא בְּרַם אִית אֲגַר טָב לְצַדִּיקַיָא בְּרַם אִית
אֱלָהָא דְדִינוֹי מִתִיחָן בְּאַרְעָא׃

נט

לְשַׁבָּחָא עַל עָקְתָא בִזְמַן דִי אֲמַר דָוִד לָא 1
תְּחַבֵּל עַל יַד דָוִד מַכִּיךְ וּשְׁלִים כַּד שַׁדַר שָׁאוּל
וְנַטְרוּ יַת בֵּיתָא לְמִקְטְלֵיהּ׃ פְּצֵי יָתִי מִבַּעֲלֵי 2
דְבָבִי אֱלָהִי מִן קָיְמִין עֲלַי תְּשֵׁיזְבִנַנִי׃ פְּצֵי יָתִי 3
מֵעָבְדֵי שְׁקַר וּמִן גוּבְרִין קָטוֹלִין פְּרוּק יָתִי׃
אֲרוּם הָא כְמַנוּ לְנַפְשִׁי מִתְכַּנְשִׁין עֲלַי עֲשִׁינִין 4
לָא עַל סוּרְחָנִי וְלָא עַל חוֹבִי יְיָ׃ עַד לָא עֲוַיָן 5
רְהָטִין וּמְסַדְרִין קְרָבָא אִתְגַּבַּר לִקְדָמוּתִי
וַחֲמֵי׃ וְאַנְתְּ יְיָ אֱלֹהִים צְבָאוֹת אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל 6
אִתְּעַר לְמִסְעַר עַל כָּל עַמְמַיָא לָא תְחוּס כָּל
שַׁלִיטֵי שְׁקַר לְעַלְמִין׃ יְתוּבוּן לְרַמְשָׁא 7
מִתְרַגְשִׁין הֵיךְ כְּכַלְבָּא וִיחַזְרוּן קַרְתָּא׃ הָא 8
יַבִּיעוּן בְּפוּמְהוֹן מִלַיָא דִשְׁנִינָן הֵיךְ סַיְפָא
בְּסִפְוָתֵיהוֹן אָמְרִין נִתְגַּבַּר אֲרוּם מַן הוּא דִי
שָׁמַע וְיִתְפְּרַע׃ וְאַנְתְּ יְיָ תְּגַחֵךְ לְהוֹן תִּתְלַעַב 9
לְכָל עַמְמַיָא׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Etiam impii quare in corde iniquitates operabimini in terra ? iniquum manus veſtræ *concinnabunt?* Alieni facti ſunt ab utero peccatores ; erraverunt à ventre loquentes mendacium. Venenum *eſt ipſis in interiore* eorum [*ſicut*] venenum ſerpentis, ſicut aſpidis ſurdæ quæ obturat aurem ſuam. Quæ non admittit vocem verborum maleficorum ſerpentes conſtringentium ; ſed *incantantibus incantationem* ipſa eſt prudentior. Deus, contere dentes eorum in ore ipſorum, et molares filiorum leonum confringas Domine. Liquefiant in peccatis ſuis ſicut aqua, defluant à ſe : intendit ſagittas ſuas propter eos, et ipſi abſcindentur. Sicut reptile limax qui madefacit viam ſuam, ſicut abortivum et talpa cæca, quæ non vident Solem. Priuſquàm impii fiant teneri, dureſcunt ſicut rhamnus, quamdiu ſunt virides, ſicut immaturum turbine deſtruet illos. Lætabitur juſtus quando viderit ultionem de illis ; plantas ſuas lavabit in ſanguine impii. Et dicent filii hominis, Profectò eſt præmium bonum juſtis : profectò eſt Deus, cujus judicia extenduntur in *terra*. 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12

Ad laudandum pro anguſtia in tempore quo dixit David, Ne deſtruas, per manum Davidis humilis, et perfecti, quando miſit Saul, & cuſtodierunt domum ut eum interficerent. 1

PSAL. LIX.

ERipe me de inimicis meis Deus meus, ab inſurgentibus adverſùm me libera me. Libera me ab operariis falſitatis, & à viris homicidis ſalva me. Quoniam ecce inſidiati ſunt animæ meæ : congregantur adverſùs me fortes non propter iniquitatem meam ; nec propter peccatum meum Domine. Non ob iniquitates noſtras currunt & *ordinant bellum* : roborare in occurſum meum, & vide. Et tu Domine Deus exercituum Deus Iſrael, expergiſcere ut animadvertas in cunctas gentes, ne parcas omnibus principibus mendacii in æternum. Revertentur ad veſperam, tumultum edituri ſunt in morem canis, obſidebúntque civitatem. Ecce effutient ore ſuo verba acuta ſicut gladius ; labiis ſuis dicentes, Fortificabimur : quis enim ille eſt qui audiat & puniat ? Tu autem Domine deridebis eos ; ſubſannabis omnes populos. 2 3 4 5 6 7 8 9

Verſio SYRIACA. cum Interpretatione LATINA.

3 * ܗܐ ܟܠܟܘܢ ܥܘܠܐ ܡܡܠܠܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܐܪܥܐ. ܘܒܥܘܠܐ ܡܣܬܪܟܢ ܐܝܕܝܟܘܢ: * ܐܬܦܪܫܘ ܥܘܠܐ
4 ܡܢ ܟܪܣܐ. ܘܛܥܘ ܡܢ ܡܪܒܥܐ ܘܡܡܠܠܝܢ ܕܓܠܐ: * ܚܡܬܗܘܢ ܐܝܟ ܚܘܝܐ ܚܪܡܢܐ. ܘܐܝܟ 5
6 ܐܣܦܣ ܚܪܫܬܐ: ܕܡܣܟܪܐ ܐܕܢܝܗ. * ܕܠܐ ܬܫܡܥ. ܩܠܐ ܕܡܚܪܫܢܐ ܘܕܚܪܫܐ ܘܚܟܝܡܐ.
7 * ܐܠܗܐ ܢܬܒܪ ܫܢܝܗܘܢ ܒܦܘܡܗܘܢ. ܘܟܟܐ ܕܐܪܝܘܬܐ ܥܩܪ ܡܪܝܐ: * ܢܬܒܣܪܘܢ 8
9 ܐܝܟ ܡܝܐ ܕܡܬܐܫܕܝܢ. ܘܢܫܕܐ ܓܐܪܘܗܝ ܥܕܡܐ ܕܢܣܬܝܦܘܢ: * ܐܝܟ ܫܥܘܬܐ ܕܡܬܦܫܪܐ
ܘܢܦܠܐ. ܡܢ ܩܕܡ ܢܘܪܐ ܢܬܚܪܒܘܢ: ܢܦܠܬ ܢܘܪܐ ܘܠܐ ܚܙܘ. ܘܫܡܫܐ ܠܐ ܐܪܓܫܘ:
10 * ܢܗܘܘܢ ܟܘܒܝܗܘܢ ܐܛܕܐ. ܘܪܘܓܙܐ ܢܫܓܫ ܐܢܘܢ: * ܢܚܕܐ ܙܕܝܩܐ ܕܢܚܙܐ ܦܘܪܥܢܐ.
11
12 ܘܐܝܕܘܗܝ ܢܫܝܓ ܒܕܡܗ ܕܪܫܝܥܐ: * ܘܢܐܡܪ ܒܪܢܫܐ ܐܝܬ ܦܐܪܐ ܠܙܕܝܩܐ. ܘܐܝܬ
ܐܠܗܐ ܕܕܐܢ ܐܢܘܢ ܒܐܪܥܐ:

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܢܛ *

1 * ܐܡܪܗ ܕܘܝܕ ܟܕ ܫܡܥ ܕܩܛܠ ܫܐܘܠ ܠܟܗܢܐ. ܠܢ ܕܝܢ ܡܚܘܐ ܦܘܢܝܐ ܕܥܡܡܐ
2 ܠܗܝܡܢܘܬܐ ܘܡܣܠܝܢܘܬܐ ܕܝܗܘܕܝܐ. ܦܬܓܡܐ ܡܐ. * ܦܨܢܝ ܡܢ ܒܥܠܕܒܒܝ ܐܠܗܐ.
3 ܘܡܢ ܐܝܠܝܢ ܕܩܝܡܝܢ ܥܠܝ ܦܪܘܩܝܢܝ: * ܦܨܢܝ ܡܢ ܥܒܕܝ ܫܩܪܐ. ܘܡܢ ܓܒܪܐ ܐܫܕܝ
4 ܕܡܐ ܦܪܘܩܝܢܝ: * ܡܛܠ ܕܗܐ ܟܡܢܘ ܠܢܦܫܝ. ܘܐܬܪܘܪܒܘ ܥܠܝ ܒܒܝܫܘܬܗܘܢ: * ܠܐ
5 ܒܣܟܠܘܬܝ ܘܠܐ ܒܚܛܗܝ ܡܪܝ. ܕܠܐ ܚܛܝܬܐ ܪܗܛܘ ܘܐܬܛܝܒܘ ܥܠܝ: ܐܬܬܥܝܪ
6 ܘܚܙܝ * ܐܢܬ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܐܝܠ ܐܬܬܥܝܪ: ܘܦܩܘܕ ܠܟܠܗܘܢ
7 ܥܡܡܐ. ܘܠܐ ܬܚܘܣ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝ ܥܘܠܐ: * ܕܝܦܣܠܡܐ * ܢܗܦܟܘܢ ܠܪܡܫܐ ܘܢܢܒܚܘܢ ܐܝܟ
8 ܟܠܒܐ. ܘܢܚܕܪܘܢ ܠܡܕܝܢܬܐ: * ܡܠܬܐ ܕܦܘܡܗܘܢ ܣܦܣܪܐ ܒܣܦܘܬܗܘܢ. ܘܐܡܪܝܢ
9 ܡܢܘ ܫܡܥ: * ܘܐܢܬ ܡܪܝܐ ܓܚܟ ܒܗܘܢ. ܘܡܝܩ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ:

En om~~nes ini~~quitatem loquimini in terra, & ſcelere ſunt implicatæ manus veſtræ. Segregati ſunt nefarii ab utero, & erraverunt à vulva qui loquuntur mendacium. Furor eorum ſicut baſiliſci, & ſicut aſpidis ſurdæ obturantis aures ſuas, Ne audiat vocem incantantis & venefici ac ſapientis. Deus conteret dentes eorum in ore ipſorum : & caninos leonum evulſit Dominus. Contemnentur ut aqua effuſa : & jaculabitur ſagittas ſuas donec abſumantur. Sicut cera quæ liqueſcit ac decidit à conſpectu ignis, deſtruentur. Cecidit ignis, & non viderunt, & ſolem non perceperunt. Fiant ſpinæ illorum, rhamni, & ira conturbet eos. Lætabitur juſtus quòd videat retributionem, & manus ſuas lavabit ſanguine impii. Et dicet homo, Eſt quidem fructus juſto : eſtque Deus ut judicet eos in terra. 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12

PSAL. LIX.

Edidit hunc David quum audivit interfectos à Saule ſacerdotes. Nobis verò declarat converſionem Gentium ad fidem, & reprobationem Judæorum. Verſus 41. 1

LIbera me ab inimicis meis Deus, & ab his qui inſurgunt in me tolle me. Serva me ab operantibus falſitatem, & à viris effundentibus ſanguinem libera me. Quoniam ipſi inſidiati ſunt animæ meæ. & magnificârunt adverſùm me malitiam ſuam. Non ob ſcelera mea, neque ob peccata mea Domine mi : abſque culpa cucurrerunt adverſùm me, atque inſtruxerunt ſeſe contra me. Expergiſcere & reſpice Tu Domine Deus fortis : Deus Iſraelis evigila, & impera cunctis gentibus, nevè parcas omnibus iniquis. * *Diapſalma* * Revertentur veſpere, latrabuntque ut canes atque circumibunt urbem. Sermo oris eorum gladius in labiis eorum : & aiunt, Quis audiat ? At Tu Domine ride illos, & ſubſanna cunctas gentes. 2 3 4 5 6 7 8 9

Verſio VULG. LAT.

3 Etenim in corde iniquitates operamini:
in terra injuſtitias manus veſtræ concin-
4 nant. Alienati ſunt peccatores à vulva,
erraverunt ab utero : locuti ſunt falſa.
5 Furor illis ſecundùm ſimilitudinem ſer-
pentis : ſicut aſpidis ſurdæ, & obturan-
6 tis aures ſuas, Quæ non exaudiet vocem
incantantium, & venefici incantantis ſa-
7 pienter. Deus conteret dentes eorum in
ore ipſorum : molas leonum confringet
8 Dñs. Ad nihilũ devenient tanquã aqua
decurrens : intendit arcũ ſuũ donec in-
9 firmentur. Sicut cera, quæ fluit, auferen-
tur : ſupercecidit ignis, & non viderunt
10 Solem. Priuſquã intelligerent ſpinæ ve-
ſtræ rhamnũ : ſicut viventes, ſic in ira
11 abſorbet eos. Lætabitur juſtus cùm vi-
derit vindictã: manꝰ ſuas lavabit in ſan-
12 guine peccatoris. Et dicet homo, Si utiq;
eſt fructus juſto : utique eſt Deus judi-
cans eos in terra.

In finem,

1 Ne diſperdas, David in tituli inſcriptionem, quando miſit Saul, & cuſtodivit domum ejus, ut eum interficeret. (*1 Reg.* 19.11.)

LVIII.

2 ERipe me de inimicis meis, Deꝰ meus:
& ab inſurgentibus in me libera me.
3 Eripe me de operantibus iniquitatem: &
4 de viris ſanguinum ſalva me. Quia ecce
ceperunt animã meã : irruerunt in me
5 fortes. Neque iniquitas mea, neq; pec-
catũ meũ, Dñe : ſine iniquitate cucurri,
6 et direxi. Exurge in occurſũ meũ, et vide:
& tu, Dñe Deus virtutũ, Deꝰ Iſrael, In-
tende ad viſitandas omnes gentes : non
miſerearis omnibus, qui operantur ini-
7 quitatem. Convertentur ad veſperam :
& famem patientur ut canes, & circui-
8 bunt civitatem. Ecce loquentur in ore
ſuo, & gladius in labiis eorum : quoni-
9 am quis audivit? Et tu, Dñe, deridebis
eos : ad nihilũ deduces omnes gentes.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

3 Καὶ γὰρ ἐν καρδίᾳ ἀνομίας ἐργάζεσθε ἐν τῇ γῇ, ἀ-
4 δικίαν αἱ χεῖρες ὑμῶν συμπλέκουσιν. Ἀπηλλοτρι-
ώθησαν οἱ ἁμαρτωλοὶ ἀπὸ μήτρας, ἐπλανήθησαν ἀ-
5 πὸ γαστρὸς, ἐλάλησαν ψευδῆ. Θυμὸς αὐτοῖς κατὰ
τὴν ὁμοίωσιν τοῦ ὄφεως, ὡσεὶ ἀσπίδος κωφῆς, καὶ
6 βυούσης τὰ ὦτα αὐτῆς, Ἥτις οὐκ εἰσακούσεται φω-
νὴν ἐπαδόντων, φαρμάκου τε φαρμακευομένου πα-
7 ρὰ σοφοῦ. Ὁ θεὸς συντρίψει τοὺς ὀδόντας αὐτῶν
ἐν τῷ στόματι αὐτῶν, τὰς μύλας τῶν λεόντων
8 συνέθλασεν ὁ κύριος. Ἐξουδενωθήσονται ὡς ὕδωρ
διαπορευόμενον, ἐντενεῖ τὸ τόξον αὐτοῦ ἕως οὗ ἀ-
9 σθενήσουσιν. Ὡσεὶ κηρὸς ὁ τακεὶς ἀνταναιρεθήσον-
10 ται, ἔπεσε πῦρ, καὶ οὐκ εἶδον τὸν ἥλιον. Πρὸ τοῦ
συνιέναι τὰς ἀκάνθας ὑμῶν τὴν ῥάμνον, ὡσεὶ ζῶν-
11 τας ὡσεὶ ἐν ὀργῇ καταπίεται ὑμᾶς. Εὐφρανθή-
σεται δίκαιος, ὅταν ἴδῃ ἐκδίκησιν ἀσεβῶν, τὰς
χεῖρας αὐτοῦ νίψεται ἐν τῷ αἵματι τοῦ ἁμαρτωλοῦ.
12 Καὶ ἐρεῖ ἄνθρωπος, Εἰ ἄρα ἐστὶ καρπὸς τῷ δι-
καίῳ, ἄρα ἐστὶν ὁ θεὸς κρίνων αὐτοὺς ἐν τῇ γῇ.

1 Εἰς τὸ τέλος, μὴ διαφθείρῃς, τῷ Δαυὶδ εἰς στηλογραφίαν, ὁπότε ἀπέστειλε Σαοὺλ, καὶ ἐφύλαξε τὸν οἶκον αὐτοῦ τοῦ θανατῶσαι αὐτόν. νη'.

2 Ἐξελοῦ με ἐκ τῶν ἐχθρῶν μου ὁ θεὸς, καὶ ἐκ τῶν
3 ἐπανισταμένων ἐπ' ἐμὲ λύτρωσαί με. Ῥῦσαί με
ἐκ τῶν ἐργαζομένων τὴν ἀνομίαν, καὶ ἐξ ἀν-
4 δρῶν αἱμάτων σῶσόν με. Ὅτι ἰδοὺ ἐθήρευσαν
τὴν ψυχήν μου, ἐπέθεντο ἐπ' ἐμὲ κραται-
5 οί. Οὔτε ἡ ἀνομία μου, οὔτε ἡ ἁμαρτία μου
κύριε, ἄνευ ἀνομίας ἔδραμον καὶ κατεύ-
6 θυνα. Ἐξεγέρθητι εἰς συνάντησίν μου, καὶ ἴδε.
καὶ σὺ κύριε ὁ θεὸς τῶν δυνάμεων ὁ θεὸς τοῦ Ἰσ-
ραὴλ, πρόσχες τοῦ ἐπισκέψασθαι πάντα τὰ ἔθνη, μὴ
οἰκτειρήσῃς πάντας τοὺς ἐργαζομένους τὴν ἀνομί-
7 αν. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. Ἐπιστρέψουσιν εἰς ἑσπέραν, καὶ
8 λιμώξουσιν ὡς κύων, καὶ κυκλώσουσι πόλιν. Ἰδοὺ
ἀποφθέγξονται ἐν τῷ στόματι αὐτῶν, καὶ ῥομφαία
9 ἐν τοῖς χείλεσιν αὐτῶν, ὅτι τίς ἤκουσε; Καὶ σὺ
κύριε ἐκγελάσῃ αὐτοὺς, ἐξουδενώσεις πάντα τὰ
ἔθνη.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopica, Tranſ. LAT.

2 Etenim in [a] corde iniquitates 3
operamini in terra: (a) injuſtitiã
manus veſtra concinnant. 3 A- 4
lienati ſunt peccatores à vulva:
erraverunt ab utero, (b) locuti
ſunt falſa. 4 Furor illis ſecun- 5
dùm ſimilitudinem ſerpentis, ſic-
ut aſpidis ſurdæ, & obturan-
tis aures ſuas. 5 Quæ non ex- 6
audiet vocem (c) incantantium,
[b] & (d) medicamenti medi-
cati à ſapiente : 6 Deus (e) con- 7
trivit dentes eorum in ore ipſo-
rum : molas leonum confregit
Dominus. 7 [c] Ad (f) nihilum 8
devenient, velut aqua decur-
rens : intendit arcum ſuũ, donec
infirmentur. 8 [d] Sicut cera (g) 9
liquefacta, auferentur: (h) ceci-
dit ignis, & [e] non viderunt
Solem. 9 (i) Priuſquàm [f] in- 10
telligant ſpinæ veſtræ rhamnum,
ſicut (k) viventes, ſicut in ira
abſorbebit vos. 10 Lætabitur ju- 11
ſtus, cùm viderit vindictam (l) impiorum: manus ſuas lavabit in ſanguine pecca-
toris. 11 Et dicet homo, Si utique eſt fructus juſto: utique eſt Deus judicans eos in 12
terra.

In finem, ne diſperdas, ipſi David in tituli inſcriptionem, quando miſit Saul, & cuſtodivit domum ejus, ut interficeret eum. 1

LVIII.

ERipe me de inimicis meis, [a] 2
Deus, & ab inſurgentibus in me
libera me. 2 Eripe me de operan- 3
tibus iniquitatem : & de viris
ſanguinum ſalva me. 3 Quia 4
ecce venati ſunt animam meam:
irruerunt in me fortes. 4 Neque 5
[b] iniquitas mea, neque pecca-
tum meum, Domine: ſine (a) in-
iquitate cucurri, & direxi. 5 Ex- 6
urge [c] in (b) occurſum meum,
& vide : & tu, Domine Deus
virtutum, Deus Iſrael, 6 [d] in-
tende ad viſitandas omnes gen-
tes: ne miſerearis omnibus, qui
operantur iniquitatem. DIA-
PSALMA. 7 Convertentur ad 7
veſperam, & famem patientur,
ut (c) canis, & circuibunt civi-
tatẽ. 8 Ecce loquentur in ore 8
ſuo, & gladius in labiis eorum: quoniam quis audivit? 9 Et tu, Domine, deridebis eos : pro (d) nihilo habebis 9
omnes gentes.

Verſio ÆTHIOPICA.

እስመ፡በልብክሙ፡ኃጢአተ፡ትገብሩ፡በደብ፡ 2
ምድር፡፡ ወጽልሑተ ፡ ይፀፍሩ ፡ እደዊክ
ሙ፡፡=፡ ተነክሩ፡ ኃጥአን ፡ እማኅፀን፡፡ 3
ወእምከርሥ፡ ስሕቱ፡ ወነበቡ፡ ሐሰተ፡፡=፡
ወመዐቶሙ፤፡ከመ፡ሕምዘ፡አርዌ፡ ምድር፡፡ 4
ወከመ ፡ አርዌ ፡ ምድር ፡ ጽምምት ፡ እዘኒ
ሃ፡፡=፡ እንተ፡ኢትሰምዕ፡ቃለ፡ዘይሬቅያ፡፡ 5
እንዘ ፡ ይሠርያ ፡ መሠርይ ፡ ጠቢብ፡፡=፡
እግዚአብሔር፡ይሰብር፡ስነኒሆሙ፡ በውስተ፡ 6
አፈሆሙ፡፡ ወይሰብር፡ እግዚአብሔር፡ ጥረ
ሲሆሙ፡ ለአናብስት፡፡=፡ ወየኃስሩ፡ ከመ፡ 7
ማይ፡ ዘይትከዐው፡፡ ወይዌስቁ ፡ ቀስቶ፡ እ
ስከ ፡ ያደክሞሙ፡፡=፡ ወየኃልቁ ፡ ከመ፡ 8
ሰምዕ ፡ ዘይትመሰው፡፡ ወድቀት ፡ እሳት፡
ወኢረአይክዋ፡ለፀሐይ፡፡=፡ ዘእንበለ ፡ ይት 9
ዐወቅ፡ሦክክሙ ፡ ሕለተ ፡ ኮነ፡፡ ከመ ፡ ሕ
ያዋን፡በመዐቱ፡ይውኅጠክሙ፡፡=፡ ይትፌ 10
ሣሕ፡ጻድቅ ፡ ሶበ፡ ይሬኢ፡ በቀለ፡፡ ወይትኃ
ፀብ፡ እደዊሁ፡በደመ፡ ኃጥእ፡፡=፡ ወይብል፡ 11
ሰብእ፡ቦኑ፡እንጋ፡ፍሬ፡ለጻድቅ፡፡ወቦኑ ፡ እ
ንጋ ፡ እግዚአብሔር ፡ ይፈትሖ፡ሎሙ፡በዲ
በ፡ ምድር፡፡=፡

ፍጻሜ፡ ሊታማስን፡ ዘደዊት፡ አርእያ፡ መዝ
ሐፍ፡ አመ፡ፈነወ፡ ሳኦል ፡ ይዕቀቡ፡
ቤቶ፡ከመ፡ ይቅትሉ፡፡

፶፰ አድኅነኒ ፡ እግዚኦ ፡ እምፀርየ፡፡ ወ 1
እንግፈኒ ፡ እምእለ ፡ ቆሙ ፡ ላዕሌየ፡፡=፡
ወባልሀኒ ፡ እመገብርተ ፡ ዐመፃ፡፡ ወአድኅ 2
ነኒ፡ እምእደወ ፡ ደም፡፡=፡ እስመ፡ ናሁ፡ 3
ነዐውዋ፡ ለነፍስየ፡፡ ወቆሙ ፡ ላዕሌየ፡ኃያ
ላን፡፡=፡ አኮ፡ በአበሳየ ፡ ወአኮ ፡ በጌጋይ 4
የ፡ እግዚኦ፡፡ ዘእንበለ ፡ ዐመፃ ፡ ሮጽኩ፡
ወአርታዕኩ፡፡=፡ ተንሥእ ፡ ተቀበለኒ፡ 5
ወርኢ፡፡ አንተ፡እግዚኦ፡ አምላከ፡ ኃያላን፡
ንጉሠ ፡ እስራኤል፡፡=፡ ኀውጾሙ ፡ ለኵ 6
ሎሙ ፡ አሕዛብ ፡ ወተሣሀሎሙ፡፡ ወኢትሣ
ሀሎሙ ፡ ገበርተ፡ዐመፃ፡፡=፡ ይትመየጡ፡ 7
ሰርከ፡ ወይርኅቡ ፡ ከመ፡ ከልብ ፡ ወይዑዱ፡
ሀገረ፡፡ ወናሁ ፡ ይነቡ ፡ በአፈሆሙ፡፡=፡
ወሰይፍ፡ ውስተ፡ከናፍሪሆሙ፡፡ወዘኒ፡ሰምዖ 8
ሙ፡ 9 ወአንተ ፡ እግዚኦ ፡ ትስሕቆሙ፡፡
ወመነንኮሙ፡ለኵሎሙ፡አሕዛብ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [a] corde veſtro [b] & venefici incantantis ſapienter : [c] Et contemnentur tanquam aqua effuſa: [d] Et deficient ſicut cera liqueſcens : [e] non vidiſti [f] innoteſcet ſpinas veſtras auctas ut fiant rhamnus, ſicut viventes in ira *PSAL. lviii.* [a] Deus meus, [b] propter delictum meum, neque propter peccatum [c] ſuſcipe me, & [d] Reſpice omnes gentes, & miſerere earum : & ne miſerearis

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

3 4 * فانكم بقلب تعملون الاثم على الارض * وايديكم تصنع الظلم * الخطاة جعلوا غرباء
5 من الرحم * وضلوا منذ كانوا في البطن * وتكلموا بالكذب * لان غضبهم كمثل الحية الجرداء *
6 ومثل الافعي الصماء * التي تسد اذنيها * لئلا تسمع صوت الراقي * تسحر سحرا افضل من الحكيم
7 8 * الله يرض اسنانهم في افواههم * انياب الاسد حطمها الرب * يرذلون كالماء المهراق * يوتر قوسه
9 10 حتى يضعفوا * ومثل الشمع الذايب يهلكون * سقطت عليهم نار فلم يروا الشمس * قبل ان
11 يبيدوا فتفهموا * صار شوككم عوسجا * يبتلعهم بغضبه مثل الاحياء * يفرح البار اذا راي
الانتقام * ويغسل يديه بدم الخاطي * فيقول الانسان اتري يكون للصديق ثمر * وهل يدينهم
الله على الارض * الليلويا *

* المزمور الثامن والخمسون *

1 * لداود قاله لما ارسل شاول وحفظ بيته ليقتله * * وعدده * لز * استيخن *
2 3 * اللهم خلصني من اعداي * ومن القايمين علي انقذني * ومن عاملي الاثم نجني * ومن رجال
4 5 الدماء خلصني * فها هم قد اقتنصوا نفسي * وطغي علي الاقوام الاعزا * لا باثمي ولا بخطيتي
6 يا رب * لاني سعيت بغير اثم فاستقمت * انهض الي التلقي وانظر * فانت يا رب اله القوات * اله
7 اسراييل التفت * وتعهد جميع الامم * لا تتراءف علي كل فاعلي الاثم * فانهم ينقلبون اذ امسوا *
8 يعوون مثل الكلاب * ويطوفون بالمدينة * وها هم ينطقون بافواههم * وسيوف في شفاههم * قايلين
9 من هو ذا الذي يسمع * وانت يا رب تضحك بهم * وترذل وتشهرهم لجميع الشعوب *

Nam vos in corde committitis ſcelus ſu- 3
per terram, & manus veſtræ operantur
flagitium. Peccatores facti ſunt alieni à 4
vulva, & erraverunt ex quo erant in ute-
ro, & locuti ſunt mendacium. Nam furor 5
eorum eſt veluti ſerpentis degentis in ari-
dis, & tanquàm aſpidis ſurdæ, quæ obtu-
rat aures ſuas. Ne audiat vocem incan- 6
tantis, imò ipſa faſcinat faſcinatione meli-
ùs quàm ſapiens. Deus contundet dentes 7
eorum in oribus ipſorum: caninos leonum
confregit Dominus. Contemnentur tanquã 8
aqua effuſa: tendet arcum ſuum quoad in-
firmentur. Et tanquàm cera liqueſcens 9
peribunt; cecidit ſuper eos ignis, & non
viderunt ſolem. Antequã pereatis, ſapi- 10
te: factæ ſunt ſpinæ veſtræ rhamnus: Ab-
ſorbebit eos in ira ſua quaſi vivos. Læta- 11
bitur juſtus quum viderit vindictam, &
lavabit manus ſuas ſanguine peccatoris.
Et dicet homo, Num erit juſto fructus, &
num judicabit eos Deus ſuper terram? Al-
leluja.

PSAL. LVIII.

Davidis. Dixit eum quando miſit Saul, & cuſtodivit domum ejus, ut interficeret eum. Et numerus verſ. 37. 1

DEus, libera me ab inimicis meis, & 2
ab inſultantibus mihi redime me: Et 3
à operantibus iniquitatem erue me, & à
viris ſanguinum ſalva me. Nam ecce ipſi 4
jam prædati ſunt animam meam, & impiè
tractârunt me cœtus potentiſſimi. Non ob 5
culpam meã, neque propter peccatum me-
um, O Domine: quia geſſi me ſine crimine,
& fui rectus. Exurge in occurſum meũ 6
& vide; nam tu O Domine, Deus es ex-
ercituum. Deus Iſraelis, convertere, &
viſita cunctas gentes, ne propitieris omni-
bus operantibus iniquitatẽ. Hi enim ſub- 7
vertentur quum ad veſperam devenerint:
latrabunt ut canes, & vagabuntur per ur-
bẽ. Et ecce ipſi loquuntur oribus ſuis, & 8
gladii in labiis eorum, dicentes; Quis eſt
qui audit? At tu O Domine, ridebis eos & 9
contemnes illos, eóſq; divulgabis inter
omnes populos.

תהלים : ס

Deus .mea elevatio Deus quoniā : custodiam *te ad* ejꝰ Fortitudinem
10 עֻזּוֹ אֵלֶיךָ אֶשְׁמֹרָה כִּי־אֱלֹהִים מִשְׂגַּבִּי׃ אֱלֹהֵי 11
Ne *.meis invidis in* me faciet videre Deus : me præveniet meæ misericordiæ
חַסְדּוֹ יְקַדְּמֵנִי אֱלֹהִים יַרְאֵנִי בְשֹׁרְרָי׃ אַל־ 12
,tua fortitudine in eos commove : meus populus obliviscantur fortè ne , eos occidas
תַּהַרְגֵם פֶּן־יִשְׁכְּחוּ עַמִּי הֲנִיעֵמוֹ בְחֵילְךָ
,eorū labiorum verbum ,eorū oris Peccatum .Domine noster clypeus ; eos *demitte* &
13 וְהוֹרִידֵמוֹ מָגִנֵּנוּ אֲדֹנָי׃ חַטַּאת־פִּימוֹ דְּבַר־שְׂפָתֵימוֹ
,furore in Consume *.narrabunt macie* de & ,*perjurio* de & : *sua elevatione in* capiantur &
14 וְיִלָּכְדוּ בִגְאוֹנָם וּמֵאָלָה וּמִכַּחַשׁ יְסַפֵּרוּ׃ כַּלֵּה בְחֵמָה
fines ad usque ,Jahacob in *dominans* Deus quia ,sciant & , *ipsi* non & ,consume
כַּלֵּה וְאֵינֵמוֹ וְיֵדְעוּ כִּי־אֱלֹהִים מֹשֵׁל בְּיַעֲקֹב לְאַפְסֵי
circuibunt & ,canis sicut tumultuabuntur ,vesperā ad convertentur Et .Selah , terræ
15 הָאָרֶץ סֶלָה׃ וְיָשֻׁבוּ לָעֶרֶב יֶהֱמוּ כַכָּלֶב וִיסוֹבְבוּ
.murmurabunt & ,fuerint saturati non si *: vescendum ad* vagabuntur Ipsi .civitatem
16 עִיר׃ הֵמָּה יְנוּעוּן לֶאֱכֹל אִם־לֹא יִשְׂבְּעוּ וַיָּלִינוּ׃
,tuam misericordiam manè *in prædicabo* & , tuam fortitudinem cantabo ego Et
17 וַאֲנִי אָשִׁיר עֻזֶּךָ וַאֲרַנֵּן לַבֹּקֶר חַסְדֶּךָ
,mea Fortitudo *.mihi* angustiæ die in refugium & ; mihi elevatio fuisti quia
18 כִּי־הָיִיתָ מִשְׂגָּב לִי וּמָנוֹס בְּיוֹם צַר־לִי׃ עֻזִּי
.meæ misericordiæ Deus , mea elevatio Deus quia ; cantabo *te ad*
אֵלֶיךָ אֲזַמֵּרָה כִּי־אֱלֹהִים מִשְׂגַּבִּי אֱלֹהֵי חַסְדִּי׃

PSAL. LX. ס

.docendum ad David ipsi Mictam , testimonii Susan super Victori
1 לַמְנַצֵּחַ עַל־שׁוּשַׁן עֵדוּת מִכְתָּם לְדָוִד לְלַמֵּד׃
est reversus & , Sobah Aram cum & , Naharaim Aram cum *ipsum rixando In*
2 בְּהַצּוֹתוֹ אֶת אֲרַם נַהֲרַיִם וְאֶת־אֲרַם צוֹבָה וַיָּשָׁב
.millia duodecim , Salis valle in Edom percussit & , Joab
יוֹאָב וַיַּךְ אֶת־אֱדוֹם בְּגֵיא־מֶלַח שְׁנֵים עָשָׂר אָלֶף׃
.nos ad reverteris , es *exacerbatus* : nos *rupisti* ,nos elongâsti Deus
3 אֱלֹהִים זְנַחְתָּנוּ פְרַצְתָּנוּ אָנַפְתָּ תְּשׁוֹבֵב לָנוּ׃
.nutat quia ,ejus contritiones sana : eam scidisti , terram tremere Fecisti
4 הִרְעַשְׁתָּה אֶרֶץ פְּצַמְתָּהּ רְפָה שְׁבָרֶיהָ כִי־מָטָה׃
.perturbationis vinum nobis fecisti propinare *: durum* tuum populum fecisti Videre
5 הִרְאִיתָ עַמְּךָ קָשָׁה הִשְׁקִיתָנוּ יַיִן תַּרְעֵלָה׃
.Selah , *veritatis facie à* , *se elevandum ad* ,*vexillum* te metuentibus Dedisti
6 נָתַתָּה לִּירֵאֶיךָ נֵּס לְהִתְנוֹסֵס מִפְּנֵי קֹשֶׁט סֶלָה׃
Deus .me exaudi & ,tua dextera fac salvum : tui dilecti liberentur Ut
7 לְמַעַן יֵחָלְצוּן יְדִידֶיךָ הוֹשִׁיעָה יְמִינְךָ וַעֲנֵנוּ׃ אֱלֹהִים 8
.metiar Succoth vallem & : Sechem dividam , lætabor , *sua sanctitate in* est locutus
דִּבֶּר בְּקָדְשׁוֹ אֶעְלֹזָה אֲחַלְּקָה שְׁכֶם וְעֵמֶק סֻכּוֹת אֲמַדֵּד׃
Jehudah : mei capitis fortitudo Ephraim & ,Menasseh *mibi* & ,Ghilhad *Mihi*
9 לִי גִלְעָד וְלִי מְנַשֶּׁה וְאֶפְרַיִם מָעוֹז רֹאשִׁי יְהוּדָה
.meus legifer
מְחֹקְקִי׃

PSALMI. תרגום TARGUM.

10 עושני לך אנטור ארום אלהא שזבותי : אלהא 11
טובי יקדמנני אלהנא יחמנני נקמתא במעיקי:
12 לא תקטלנון מן יד דלמא יתנשון עמי טלטל
יתהון מן בתיהון בתוקפך ותמסכן יתהון מן
ממוניהון תריסנא יי : מטול חובת פומהון 13
וממלל ספותהון יתאחדן בגיותנותהון ארום
מן מומתא ומן שקרא ישתעין : שצי יתהון 14
בכלו שצי יתהון עד די ליתנון וינדעון ארום
אלהא שליט ביעקב לסיפי ארעא לעלמין :
ויתובון לרמשא יתרגשון היך ככלב ויחזרון 15
קרתא : הנון יטלטלון למבז בותא למיכל ולא 16
יניחון עד די יסבעון ויביתון : ואנא אשבח 17
עושנך ואבוע לעדן צפרא טובך ארום הויתא
משזיב לי ורוחצני ביומא דעיק לי: עושני לוותך 18
אשבח ארום אלהא שזבותי אלהא טובי :

ס

לשבחא על עתיק סהדותא די בני יעקב ולבן 1
פרשגן על יד דוד לאלפא : כד כנש דוד משרין 2
ועבר על איגר סהדותא ואגיח עם ארם די על
פרת ועם ארם די עם צובה ומן בתר כן תב
יואב ומחא ית אדומאי במישור מלחא נפלו מן
חיליהון דדויד ויואב תריסר אלפין : אמר דוד 3
אלהא שבקתנא תקפתא עלנא תקוף רוגזא
תוב ביקרך לנא : ארגשתא ארעא דישראל 4
ועעתא וסדקתא יתה אסי תבריה ארום
אתמוטטת : אחמיתא עמך קשיא אשקיתא 5
לנא חמר דלוט : יהבתא לדחליך נסא 6
לאתנסאה ביה מן בגלל קושטיה דאברהם
לעלמין : מן בגלל זכותיה דיצחק יתפצין 7
רחימיך פרוק מטול חסידותא דיעקב וקבל
צלותי : אלהא ממלל בבית מקדשיה אבוע 8
ארום יתגברון דבית ישראל אפלג בותא עם
בני יוסף דיתבין בשכם ובמישר סוכות אמשח
משחתא ואפלג עדאה : עמי הוון דבית גלעד 9
ועמי הוון דבית מנשה וגברין דבית אפרים
עושנא דרישי ומדבית יהודה ספריא דבית אולפני:

PARAPH. CHALD Vers. Lat.

Fortitudinem meam apud te custodiam, 10
quoniam Deus refugium meum est. Deꝰ bonitatis meæ præveniet me; Deꝰ *noster* ostendet mihi ultionē in oppressores meos. 11
Ne occidas eos subitò, ne fortè obliviscatur populus meꝰ: expelle eos à domibꝰ eorū in virtute tua, & ad paupertatem redigas eos à facultatibus ipsorum, clypeus noster Dominus. 12
Propter delictum oris eorum, & sermonem labiorū suorum comprehendentur in superbia sua, quoniam perjuriū & mendacium narrant. 13
Dele eos internecione, destrue illos, adeò ut non sint: ut sciant quoniam Deus dominatur in Jaacob in finibus terræ in seculum. 14
Et revertentur ad vesperam; frement sicut canis, & circuibunt civitatem. 15
Ipsi vagabuntur ut diripiant prædā ad comedendum: & non quiescent, donec saturentur ac pernoctent. 16
Ego verò laudabo fortitudinem tuam, & celebrabo tempore matutino bonitatē tuā, quoniam fuisti liberator meꝰ, & spes mea in die quo me afflixit. 17
Fortitudo mea, apud te laudabo, quoniā Deus liberatio mea, Deus beneficentia mea est. 18

Ad laudandū pro veteri testimonio *filiorum Jaacob et Laban*, exemplar per manum Davidis ad docendum. 1
Quando congregavit David exercitus, transivitque per *tumulum* testimonii, & instruxit [*bellum*] adversus Aram, quæ est super Euphraten; & adversus Aram *quæ est apud* Soba: & post hæc reversus est Joab, & percussit Idumæos in planitie Salis, & ceciderunt de exercitibus David & Joab, duodecim millia. 2

PSAL. LX.

D*Ixit David*, Deus dereliquisti nos, iratꝰ es nobis vehementi furore: convertere in gloria tua ad nos. 3
Commovisti terrā Israel, conturbâsti & destruxisti eam: sana ruptiones ejꝰ, quoniam commota est. 4
Ostendisti populo tuo dura, potâsti nos *vino* maledictionis. 5
Dedisti metuentibus te vexillum, ut exaltentur in illo; propter veritatē Abraham in æternum. 6
Propter meritum Isaac, redimentur dilecti tui; redime propter misericordiam Jaacob; & suscipe orationem meam. 7
Deus locutus est in domo sanctuarii sui: lætabor, quia prævalebit domꝰ Israel: dividā prædam cum filiis Joseph, habitantibus in Sichem, & in valle tabernaculorum, metiar mensura, & dividam prædam. 8
Mecum erat domus Gilgad, & mecum domus Menasseh & fortes domus Ephraim, fortitudo capitis mei: à domo autem Jehudæ scribæ domus doctrinæ meæ. 9

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

10 * ܐܠܗܐ ܠܟ ܐܫܒܚܟ. ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܗܘ ܒܝܬ ܓܘܣܝ : * ܐܠܗܐ ܛܝܒܘܬܟ ܬܩܕܡܢܝ.
11
12 ܐܠܗܐ ܚܘܢܝ ܒܒܥܠܕܒܒܝ : ܠܐ ܬܩܛܘܠ ܐܢܘܢ. ܕܠܐ ܢܛܥܘܢ ܠܥܡܝ. ܐܠܐ ܙܝܥ ܐܢܘܢ
13 ܒܚܝܠܟ ܘܐܚܬ ܐܢܘܢ. ܡܪܝܐ ܬܘܟܠܢܝ : * ܚܛܗܐ ܕܦܘܡܗܘܢ ܡܠܠ ܣܦܘܬܗܘܢ.
14 ܢܬܐܚܕܘܢ ܒܫܘܒܗܪܗܘܢ : ܡܛܠ ܕܠܘܛܬܐ ܘܕܓܠܘܬܐ ܡܫܬܥܝܢ. * ܐܘܒܕ ܐܢܘܢ
ܒܚܡܬܟ ܐܘܒܕ ܐܢܘܢ ܘܠܐ ܢܫܬܟܚܘܢ : ܕܢܕܥܘܢ ܕܐܠܗܐ ܫܠܝܛ ܠܗ ܒܝܥܩܘܒ ܘ
15 ܒܣܝܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. * ܕܩܕܡ * ܢܗܦܟܘܢ ܒܪܡܫܐ ܘܢܢܒܚܘܢ ܐܝܟ ܟܠܒܐ : ܘܢܚܕܪܘܢ
16 ܡܕܝܢܬܐ. * ܢܒܥܘܢ ܠܡܐܟܠ ܘܠܐ ܢܣܒܥܘܢ ܘܠܐ ܢܒܘܬܘܢ : * ܘܐܢܐ ܐܫܒܚ ܚܝܠܟ.
17 ܘܐܫܒܚ ܒܨܦܪܐ ܠܛܝܒܘܬܟ : ܡܛܠ ܕܗܘܝܬ ܠܝ ܒܝܬ ܓܘܣܐ. ܘܡܦܪܩܢܐ ܒܝܘܡܐ
18 ܕܐܘܠܨܢܝ : * ܐܠܗܐ ܠܟ ܐܙܡܪ. ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܗܘ ܐܠܗܐ ܕܒܟ ܓܘܣܝ ܘܐܠܗܐ ܕܛܝܒܘܬܝ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܣ *

1 * ܐܡܪܗ ܕܘܝܕ ܕܐܢ ܢܦܠܬ ܒܐܝܕܝ ܫܐܘܠ ܡܐܬ ܐܢܐ. ܘܝܗܒ ܐܬܪܐ ܠܡܥܪܩ ܗܘ ܘܕܥܡܗ. ܘܠܢ
ܡܫܘܕܥ ܠܗ ܦܘܢܝܐ ܕܥܡܡܐ ܘܒܘܛܠܐ ܕܝܗܘܕܝܐ. ܦܬܓ ܟܘ.

3 * ܐܠܗܐ ܛܥܝܬܢ ܘܕܚܝܬܢ ܘܪܓܙܬ ܥܠܝܢ. * ܙܝܥܬܗ ܠܐܪܥܐ ܘܦܬܚܬܗ : ܚܒܘܫ ܬܒܪܗ
4
5 ܡܛܠ ܕܐܬܬܪܥܬ. * ܚܘܝܬ ܠܥܡܟ ܩܫܝܬܐ : ܘܐܫܩܝܬ ܐܢܘܢ ܚܡܪܐ ܕܬܘܪܥܬܐ.
6 * ܝܗܒܬ ܠܕܚܠܝܟ ܐܬܐ : ܕܠܐ ܢܥܪܩܘܢ ܡܢ ܩܕܡ ܩܫܬܐ. * ܡܛܠ ܕܢܬܦܨܘܢ ܚܒܝܒܝܟ :
7
8 ܦܪܘܩ ܒܝܡܝܢܟ ܘܥܢܝܢܝ. * ܐܠܗܐ ܡܠܠ ܒܩܘܕܫܗ : ܐܬܚܝܠ ܘܐܦܠܓ
9 ܫܟܝܡ. ܘܡܫܘܚܬܐ ܕܣܟܘܬ ܐܡܫܘܚ : * ܕܝܠܝ ܗܘ ܓܠܥܕ ܘܕܝܠܝ ܗܘ ܡܢܫܐ.
ܘܐܦܪܝܡ ܡܥܫܢܢܗ ܕܪܝܫܝ : ܝܗܘܕܐ ܡܠܟܝ.

Deus, te glorificabo, quia tu es refugium meum. 10
Deus, gratia tua præveniat me. 11
Deus, ostende mihi in hostibus meis. Ne occidas eos, ut ne obliviscantur populum meum; sed concute eos potentiâ tuâ, & dimove illos Domine fiducia mea. Peccatum oris eorum locuta sunt labia ipsorum. 12
Capientur in superbia sua, quoniam maledictionem & mendacium confabulantur. 13
Perde eos in furore tuo, perde eos & non inveniantur: ut sciant Deum præesse Jacobo & finibus terræ. * *Diapsalma*. * 14
Revertentur vespere, & latrabunt ut canes, urbemque circumibunt: 15
Quærent ad manducandum, & non saturabuntur, neq; pernoctabunt. 16
Ego verò laudabo fortitudinē tuam, & glorificabo manè bonitatem tuam: quia factus es mihi refugiū & salvator in die afflictionis. 17
Deus tibi canam, quia tu es Deus confugii mei, & Deus beneficii mei. 18

PSAL. LX.

Quem edidit David, dicens; Si devenero in manus Saulis, interibo; deditque locum fugæ ipse & qui cum eo erant. 1
Nobis autem exprimit conversionem Gentium, & abolitionem Judaismi. Vers. 26. 2

D*Eus, oblitus es nostrî, & repulisti nos, atque iratus es nobis.* 3
Concussisti terrā, & aperuisti eam, Alliga fracturam ejus, nam infirmata est. 4
Ostendisti populo tuo dura, & potâsti eos vino fœcoso. 5
Dedisti metuentibus te signum, ut ne fugiant à conspectu arcûs. 6
Ad hoc ut arment sese dilecti tui, salva me dexterâ tuâ, & exaudi me. 7
Deus locutus est per sanctitatem suam, Corroborabor ego, & dividam Sechim, & profundum Sochuth dimetiar. 8
Meus est Galaad, & meꝰ est Manasses, & Aphrem roborator capitis mei: Juda rex meus. 9

Verſio VULG. LAT.

10 Fortitudinē meā ad te cuſtodiā, quia,
11 Deus, ſuſceptor meus es: Deus meus,
12 miſericordia ejus præveniet me. Deus
oſtendet mihi ſuper inimicos meos, ne
occîdas eos: nequando obliviſcantur
populi mei. Diſperge illos in virtute
tua: & depone eos, protector me' Do-
13 mine: Delictum oris eorum, ſermonē
labiorum ipſorū: & comprehendantur
in ſuperbia ſua. Et de execratione &
14 mendacio annuntiabuntur In conſum-
matione: in ira conſummationis, & nō
erunt. Et ſcient quia Deus dominabi-
15 tur Jacob, & finiū terræ. Convertentur
ad veſperā, & famem patientur ut ca-
16 nes: & circuibunt civitatem. Ipſi diſ-
pergentur ad manducandum: ſi verò
non fuerint ſaturati, & murmurabunt.
17 Ego autē cantabo fortitudinē tuam:
& exultabo manè miſericordiam tuā.
Quia factus es ſuſceptor meus, & re-
fugium meū, in die tribulationis meæ.
18 Adjutor meus, tibi pſallam, quia Deus
ſuſceptor meus es: Deus meus, miſeri-
cordia mea.

In finem,

1 Pro his qui immutabuntur, in tituli
inſcriptionem ipſi David in doctri-
2 nam, Cùm ſuccendit Meſopotami-
am Syriæ, & Sobal, & convertit
Joab, & percuſſit Idumæam in val-
le Salinarum duodecim millia.
(2. *Reg.* 8.1. & 10.7. & 1. *Par.* 18.1.

LIX.

3 DEus, repuliſti nos, & deſtruxiſti
nos: iratus es, & miſertus es nobis.
4 Commoviſti terram, & conturbâſti e-
am: ſana contritiones ejus, quia com-
5 mota eſt. Oſtendiſti populo tuo dura:
6 potâſti nos vino compunctionis. Dedi-
ſti metuentibus te ſignificationē: ut fu-
giant à facie arcûs: Ut liberentur dile-
7 cti tui: Salvū fac dexterâ tuâ, & exau-
8 di me. Deus locut' eſt in ſancto ſuo;
Lætabor, & partibor Sichimam: & cō-
9 vallē tabernaculorū metibor. Meus eſt
Galaad, & meus eſt Manaſſes: & E-
phraim fortitudo capitis mei. Juda
rex meus:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

10 Τὸ κράτος μου πρὸς σὲ φυλάξω, ὅτι σὺ ὁ Θεὸς
11 ἀντιλήπτωρ μου εἶ. Ὁ Θεός μου, τὸ ἔλεος αὐτοῦ
12 προφθάσει με, Ὁ Θεός μου δείξει μοι ἐν τοῖς ἐ-
χθροῖς μου. μὴ ἀποκτείνῃς αὐτοὺς, μή ποτε ἐπι-
λάθωνται τοῦ νόμου σου. διασκόρπισον αὐτοὺς ἐν
τῇ δυνάμει σου, καὶ κατάγαγε αὐτοὺς ὁ ὑπερασπιστής
13 μου κύριε. Ἁμαρτίαν στόματος αὐτῶν, λόγον χει-
λέων αὐτῶν, καὶ συλληφθήτωσαν ἐν τῇ ὑπερηφανίᾳ
14 αὐτῶν. καὶ ἐξ ἀρᾶς καὶ ψεύδους διαγγελήσονται συν-
τέλειαι, ἐν ὀργῇ συντελείας, καὶ οὐ μὴ ὑπάρξου-
σι· καὶ γνώσονται ὅτι ὁ Θεὸς τοῦ Ἰακὼβ δεσπόζει
15 τῶν περάτων τῆς γῆς. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. Ἐπιστρέ-
ψουσιν εἰς ἑσπέραν, καὶ λιμώξουσιν ὡς κύων, καὶ κυ-
16 κλώσουσι πόλιν. Αὐτοὶ διασκορπισθήσονται τοῦ φα-
17 γεῖν, ἐὰν δὲ μὴ χορτασθῶσι, καὶ γογγύσουσιν. Ἐγὼ
δὲ ᾄσομαι τῇ δυνάμει σου, καὶ ἀγαλλιάσομαι τὸ
πρωῒ τὸ ἔλεός σου, ὅτι ἐγενήθης ἀντιλήπτωρ μου
18 καὶ καταφυγή μου ἐν ἡμέρᾳ θλίψεώς μου. Βοηθός
μου, σοὶ ψαλῶ ὁ Θεός μου, ἀντιλήπτωρ μου εἶ ὁ
Θεός μου, τὸ ἔλεός μου.

1 Εἰς τὸ τέλος, τοῖς ἀλλοιωθησομένοις ἔτι, εἰς στη-
2 λογραφίαν τῷ Δαυὶδ εἰς διδαχὴν, Ὁπότε ἐν-
επύρισε τὴν Μεσοποταμίαν Συρίας, καὶ τὴν Συ-
ρίαν Σωβὰλ, καὶ ἐπέστρεψεν Ἰωὰβ, καὶ ἐπάταξε
τὴν φάραγγα τῶν ἁλῶν, δώδεκα χιλιάδας.

νθʹ.

3 Ὁ Θεὸς ἀπώσω ἡμᾶς καὶ καθεῖλες ἡμᾶς, ὠρ-
4 γίσθης καὶ ᾠκτείρησας ἡμᾶς. Συνέσεισας τὴν γῆν
καὶ συνετάραξας αὐτὴν, ἴασαι τὰ συντρίμματα
5 αὐτῆς, ὅτι ἐσαλεύθη. Ἔδειξας τῷ λαῷ σου σκλη-
6 ρὰ, ἐπότισας ἡμᾶς οἶνον κατανύξεως. Ἔδωκας
τοῖς φοβουμένοις σε σημείωσιν, τοῦ φυγεῖν ἀπὸ
προσώπου τόξου. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. ὅπως ἂν ῥυ-
7 σθῶσιν οἱ ἀγαπητοί σου, Σῶσον τῇ δεξιᾷ σου καὶ
8 ἐπάκουσόν μου. Ὁ Θεὸς ἐλάλησεν ἐν τῷ ἁγίῳ
αὐτοῦ, Ἀγαλλιάσομαι καὶ διαμεριῶ Σίκιμα, καὶ τὴν
9 κοιλάδα τῶν σκηνῶν διαμετρήσω. Ἐμός ἐστι Γα-
λαὰδ, καὶ ἐμός ἐστι Μανασσῆ, καὶ Ἐφραὶμ κραταίω-
σις τῆς κεφαλῆς μου· Ἰούδας βασιλεύς μου,

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

10 Fortitudinem meam ad te
[e] cuſtodiam: quia (e) tu, De-
us, ſuſceptor meus es. Deus me-
us, miſericordia ejus præveniet
me: 11 Deus meus (f) oſten-
det mihi in inimicis meis. Ne oc-
cîdas eos; ne quando oblivi-
ſcantur (g) legis tuæ. 12 (h) Di-
ſperge illos in virtute tua: &
(i) depone eos, protector me-
us [f] Domine. 13 (k) De-
lictum oris eorum, ſermonem la-
biorum ipſorum: & (l) com-
prehendantur in ſuperbia ſua. 14
Et de execratione, & mendacio
(m) [g] annuntiabuntur Conſum-
mationes, in ira conſummationis,
& non erunt: 15 & ſcient, quia
(n) Deus Jacob dominatur (o) [h]
finium terræ. 16 DIAPSALMA.
(p) Convertentur ad veſperam, et fa-
mem patientur ut canis, & circui-
bunt civitatem. 17 Ipſi diſpergentur
ad manducandum: ſi verò [i] non
fuerint ſaturati; & murmurabunt.
18 Ego autem cantabo (q) virtuti
tuæ, & exultabo manè [k] miſericor-
diam tuam. 19 Quia factus es ſuſ-
ceptor meus, & refugium meum
in die tribulationis meæ. 20 Adju-
tor meus, tibi pſallam, [l] Deus
meus: ſuſceptor meus es, Deus meus,
miſericordia mea.

In finē, *(a)* iis qui immutabuntur, [†] 1
in tituli inſcriptionem ipſi David
in doctrinā, Cùm ſuccendit Meſo- 2
potamiam Syriæ, & Syriam Sobal,
& convertit [a] Joab, & *(b)* percuſſit
vallem Salinarum, duodecim
millia. *LIX.*

1 DEus, repuliſti nos, & deſtru- 3
xiſti nos, (c) iratus es, &
miſertus es nobis. 2 Commoviſti 4
terram, & conturbâſti eam: ſana
contritiones ejus, quia commota eſt.
3 Oſtendiſti populo tuo dura, potâ- 5
ſti nos [b] vino (d) compunctionis.
4 Dediſti metuentibus te ſignificati- 6
onem, ut fugiant à facie arcûs.
DIAPSALMA. 5 Ut liberen-
tur dilecti tui, Salvum fac dex- 7
terâ tuâ, & exaudi me. 6 Deus lo- 8
quutus eſt in ſancto ſuo, Exultabo,
& [c] partibor Sicimam; & con-
vallem tabernaculorum dimetiar. 7 Meus eſt Galaad, & meus eſt Manaſſe, & Ephræm (e) [d] fortitudo capitis mei. (f) 8 Judas rex meus: 9

Verſio ÆTHIOPICA.

እሙሐፀኒ፡ ኀቤከ፡ ኀይልየ፡፡ እስመ፡ አም 10
ላኪየ፡ ወምስካየ፡ አንተ፡፡ ይበጽሐኒ፡ ሣህ
ሉ፡ለአምላኪየ፡፡=፡ አምላኪየ፡አርአየኒ፡ 11
በጸላእትየ፡፡ ኢትቅትሎሙ፡ ከመ፡ ኢይረ
ስዑ፡ ሕገከ፡፡=፡ ዝርዎሙ፡ በኀይልከ፡፡ 12
ወአጽድፎሙ፡ አምላኪየ፡ ወረዳኢየ፡፡=፡
ኃጢአት፡ አፈሆሙ፡ ቃለ፡ ከናፍሪሆሙ፡፡ 13
ወይሰገሩ፡በትዕቢቶሙ፡፡=፡ወበመርገሞሙ፡ 14
ወእምሐሰቶሙ፡ ይትዐወቅ፡ ደኃሪቶሙ፡፡
ወየኀልቁ፡በደኃሪ፡መቅሠፍት፡፡=፡ ወያእም 15
ሩ፡ከመ፡አምላከ፡ያዕቆብ፡፡ ይኴንን፡እስከ፡
አጽናፈ፡ምድር፡፡=፡ይትመየጡ፡ሰርከ፡ወይ 16
ርኅቡ፡ከመ፡ ከልብ፡ ወይዑዱ፡ ሀገረ፡፡=፡
እሙንቱሰ፡ ይዘረዉ፡ ለበሊዕ፡፡ ወእመሰ፡ አ 17
ጽገቡ፡ ያንጐረጕሩ፡፡=፡ ወአንሰ፡ አሴብሐከ፡ 18
ለኀይልከ፡፡ ወትፌሥሕ፡ በጽባሕ፡ በምሕ
ረትከ፡፡=፡ እስመ፡ ኮንከኒ፡ ምስካይየ፡፡ 19
ወጸወንየ፡በዕለተ፡ምንዳቤየ፡፡=፡ ረዳኢየ፡ 20
አንተ፡ ወለከ፡ እዜምር፡ አምላኪየ፡፡ እስ
መ፡ አምላኪየ፡ ወምስካይየ፡ አንተ፡፡ አም
ላኪየ፡ውእቱ፡ሣህልየ፡፡

ፍጻሜ፡ ዘእለ፡ ተበዓዱ፡ ዓዲ፡ አርአያ፡መጽ
ሐፍ፡ዘዳዊት፡ለትምህርት፡ ዘአመ፡አውዐየ፡
መስጴጦምያ፡ዘሶርያ፡ዘሰበል፡ወተመየ
ጠ፡ያዕቆብ፡ወቀተለ፡በቈላቲሆሙ፡
ክልአኑ፡ዐሠርተ፡ወቦየ፡፡

ሂሀ እግዚኦ፡ ገደፍከነ፡ ወነሠትከነ፡፡ ቀሠፍ 1
ከነሂ፡ወተሣሀልከነ፡፡=፡ አድለቅለቃ፡ለም 2
ድር፡ ወሆካ፡፡ ወፈወስካ፡ ቍስለ፡ ለስም፡
እንቀልቀለት፡፡=፡ወአርአይኮሙ፡ ዕፁበ፡ 3
ለሕዝብከ፡፡ ወአስተይከነ፡ ወይነ፡ መደንግ
ፅ፡፡=፡ ወወሀብኮሙ፡ ትእምርተ፡ ለእለ፡ 4
ይፈርሁከ፡፡ ከመ፡ ያምስጡ፡ እምገጸ፡ ቀስ
ት፡፡=፡ ወይድኀኑ፡ ፍቁራኒከ፡፡ አድኅነኒ፡ 5
በየማንከ፡ ወስምዐኒ፡፡=፡ እግዚአብሔር፡ 6
ነበበ፡በመቅደሱ፡፡ እትፌሣሕ፡ ወእትከፈል፡
ምህርከ፡፡ ወእሳፈር፡ለዕጻደተ፡ቈላት፡፡=፡
ዚአየ፡ ውእቱ፡ ገለአድ፡ ወዚአየ፡ ምናሴ፡፡ 7
ወኤፍሬም፡ምስማከ፡ርእስየ፡፡=፡ ወይሁ 8
ደ፡ንጉሥየ፡፡

INTERP. ÆTHIOP. [e] enutriam: quia tu Deus meus, & ſuſceptor meus. [f] Domine mi. [g] innoteſcet noviſſimum eorum, & deſtruentur in conſummatione plagæ: & ſcient [h] uſque ad fines terræ. [i] fuerint ſaturati, etiam [k] in miſericordia tua. [l] quia Deus meus & ſuſceptor meus es tu: Deus *PSAL. LIX.* [†] inſuper in [a] Jaacob, [b] vino ſtuporis. [c] partibor ſpolia, & dimetiar caſtra vallis, [d] firmamentum

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

10 * ويحفظني لتسبحتي * لانك يا الله ناصري والهي * رحمته تسبق فتدركني * الله يريني في
11 اعداي * لا تقتلهم لئلا ينسوا ناموسك * لكن فرقهم بقوتك واهبطهم * ايها الرب ناصري
12 * لاجل خطية افواههم * وكلام شفاههم * فليوخذوا بكبريايهم * ومن العيب والكذب يتكلمون
13 دايما * اللهم اهلكهم برجزك التام ولا يكونوا * ليعلموا ان السلطان لله * على يعقوب وعلى
14 اقطار الارض * هم يرجعون عند المساء جياعا مثل الكلاب * ويطوفون بالمدينة * ثم يتفرقون
15 16 لياكلوا * فاذا لم يشبعوا يتمتمون * وانا اسبح قوتك * وابتهج بالغداة رحمتك * لانك
17 صرت لي ناصرا * وملجا في يوم شدتي * انت معيني ولك ارتل * لانك يا الهي ناصري *
18 واله رحمتي * اللليلويا *

Me autem ſervabis propter laudationem 10
meam, quia tu O Deus adjutor meus es,
& Deus meus. Miſericordia ejus præve- 11
niet & aſſequetur me: Deus oſtendet mihi
in inimicis meis. Ne occîdas eos, ne ob- 12
liviſcantur legem tuam; ſed diſperde eos
virtute tuâ, & præcipita eos, O Domine
auxiliator mi. Propter peccatum orium 13
eorum, & ſermonem labiorum ipſorum,
capiantur in ſuperbia ſua: & ex turpi-
tudine atque mendacio loquentur ſemper.
Deus, perde eos in furore tuo perfecto, & 14
ne ſint: ut ſciant quòd poteſtas eſt Deo
ſuper Jacob, & ſuper terminos terræ.
Ipſi revertentur propè veſperam famelici 15
ut canes, & luſtrabunt civitatem. Tum 16
diſpergentur ad manducandum: quumq;
non fuerint ſaturati, murmurabunt. At 17
ego laudabo fortitudinem tuam, & ex-
ultabo in matutino miſericordiam tuam:
quia factus es mihi adjutor & refugium
in die tribulationis meæ. Tu es auxilia- 18
tor meus, & tibi pſallam: quia tu O
Deus meus, es adjutor meus, & Deus mi-
ſericordiæ meæ. Alleluja.

* المزمور التاسع والخمسون *

1 * لداود حين احرق ما بين نهري سوريا والشام * ورجع يواب فضرب وادي
2 الملح وعدتهم اثنا عشر الفا * وهو كذا استيخن *
3 4 * اللهم انك اقصيتنا واحططتنا * غضبت ثم ترافت علينا * زلزلت الارض وزعزعتها * اجبر
5 6 كسرها * فانها قد اضطربت * ريت شعبك شدايدا * سقيتنا خمرا عكرا * جعلت لاتقياك
7 8 علامة * لكي يهربوا من وجه القوس * ليخلص احباوك * خلصني بيمينك واستجب لي * تكلم
9 الله في قدسه * وقال ابتهج واقسم ساحيم * واقيس وادي المظال * لي جلعاد ولي منسا *
افرايم هو عز راسي * يهودا ملكي *

PSAL. LIX.

Davidis, quum ſuccendit Meſopo- 1
tamiam Syriæ & Damaſcum:
Reverſuſque eſt Joab & per- 2
cuſſit Vallem Salis, & erat nu-
merus eorum duodecim millia.
Verſ. 24.

DEus, tu quidem extermināſti nos 3
& repuliſti nos: indignatus es, ac
tum propitiatus es nobis. Tremefeciſti 4
terram, & concuſſiſti eam; reſarci fra-
ctionem ejus, quia commota eſt. Vidiſti 5
populum tuum durum, potâſti nos vino
turbido. Poſuiſti colentibus te ſignum, ut 6
fugerent à facie arcûs. Ut ſalvarentur 7
amici tui. Salva me dexterâ tuâ, et ex-
audi me. Locutus eſt Deus per Sanctos 8
ſuos, & dixit; Exultabo, & dividam
Sichimam, & dimetiar vallem taberna-
culorum. Mihi eſt Galaad, & mihi eſt 9
Manaſſes, Ephraim eſt magnificentia ca-
pitis mei, Juda Rex meus,

תהלים: סא סב

10 me ſuper ; meũ calceamentũ projiciam Edom ſuper ,meæ lotionis olla Moab

מוֹאָב ׀ סִיר רַחְצִי עַל־אֱדוֹם אַשְׁלִיךְ נַעֲלִי עָלַי 10

me deducet quis ? *munitionis* civitatem me deducet Quis .jubila Peleſeth

פְּלֶשֶׁת הִתְרוֹעָעִי׃ מִי יֹבִלֵנִי עִיר מָצוֹר מִי נָחַנִי 11

11 egredieris non & ? nos *elongâſti* Deus tu Nonne ? Edom ad uſque

עַד־אֱדוֹם׃ הֲלֹא־אַתָּה אֱלֹהִים זְנַחְתָּנוּ וְלֹא־תֵצֵא 12

12 ſalus mendaciũ & :anguſtia ab auxiliũ nobis Da ? noſtris exercitib⁹ *in* Deus

אֱלֹהִים בְּצִבְאוֹתֵינוּ׃ הָבָה־לָּנוּ עֶזְרָת מִצָּר וְשָׁוְא תְּשׁוּעַת 13

13 .noſtros *anguſtiatores* conculcabit ipſe & : fortitudinẽ faciemus Deo In .hominis

14 אָדָם׃ בֵּאלֹהִים נַעֲשֶׂה־חָיִל וְהוּא יָבוּס צָרֵינוּ׃ 14

PSAL. LXI. סא

; meum clamorem Deus Audi .David ipſi Neghinoth ſuper Victori

לַמְנַצֵּחַ ׀ עַל־נְגִינַת לְדָוִד׃ שִׁמְעָה אֱלֹהִים רִנָּתִי 1

2 :meũ cor *deficiendo in* ,clamabo te ad terræ extremo Ab .meæ orationi intende

הַקְשִׁיבָה תְּפִלָּתִי׃ מִקְצֵה הָאָרֶץ ׀ אֵלֶיךָ אֶקְרָא בַּעֲטֹף לִבִּי 3

turris : mihi ſpes fuiſti Quia .me deduces ,me à *exaltabitur* petram *in*

בְּצוּר־יָרוּם מִמֶּנִּי תַנְחֵנִי׃ כִּי־הָיִיתָ מַחְסֶה לִי מִגְדַּל־ 4

ſperabo : ſecula tuo tabernaculo in Habitabo .inimici *faciebus* à fortitudinis

עֹז מִפְּנֵי אוֹיֵב׃ אָגוּרָה בְאָהָלְךָ עוֹלָמִים אֶחֱסֶה 5

: mea vota audiſti Deus tu Quoniam .Selah , tuarum alarum abſcondito in

בְסֵתֶר כְּנָפֶיךָ סֶּלָה׃ כִּי־אַתָּה אֱלֹהִים שָׁמַעְתָּ לִנְדָרָי 6

: adjicies regis dies ſuper Dies .tuũ nomen timentibus hæreditatem dediſti

נָתַתָּ יְרֻשַּׁת יִרְאֵי שְׁמֶךָ׃ יָמִים עַל־יְמֵי־מֶלֶךְ תּוֹסִיף 7

: *Dei facies ad* ſeculum Manebit .generatio& generatio ſicut ejus anni

שְׁנוֹתָיו כְּמוֹ־דֹר וָדֹר׃ יֵשֵׁב עוֹלָם לִפְנֵי אֱלֹהִים 8

tuo nomini canam Sic .eum *cuſtodient* , præpara veritatem & miſericordiam

חֶסֶד וֶאֱמֶת מַן יִנְצְרֻהוּ׃ כֵּן ׀ אֲזַמְּרָה שִׁמְךָ 9

.*die die* mea vota *me reddendum ad* : *perpetuum* in

לָעַד לְשַׁלְּמִי נְדָרַי יוֹם ׀ יוֹם׃

PSAL. LXII. סב

ſilens Deum ad Tantùm .David ipſi cantus Jeduthun *ſuper* Victori

לַמְנַצֵּחַ עַל־יְדוּתוּן מִזְמוֹר לְדָוִד׃ אַךְ אֶל־אֱלֹהִים דּוּמִיָּה 1

2 : mea ſalus & ,*mea petra* ipſe Tantùm .mea ſalus ipſo ab : mea anima

נַפְשִׁי מִמֶּנּוּ יְשׁוּעָתִי׃ אַךְ־הוּא צוּרִי וִישׁוּעָתִי 3

; interficiemini ? *virum ſuper detrahetis* Uſquequo .*multùm labaſcam* non,mea elevatio

מִשְׂגַּבִּי לֹא־אֶמּוֹט רַבָּה׃ עַד־אָנָה ׀ תְּהוֹתְתוּ עַל־אִישׁ תְּרָצְּחוּ 4

ej⁹ celſitudine à Veruntamen .impulſa maceria ,inclinatus paries tanquã vos univerſi

כֻּלְּכֶם כְּקִיר נָטוּי גָּדֵר הַדְּחוּיָה׃ אַךְ מִשְּׂאֵתוֹ ׀ 5

ſuo intimo in & ;benedicebãt ſuo ore in ,mendacium voluerunt,expellere conſuluerunt

יָעֲצוּ לְהַדִּיחַ יִרְצוּ כָזָב בְּפִיו יְבָרֵכוּ וּבְקִרְבָּם

eo ab quoniam : mea anima tace Deo Tantùm .Selah ,maledicebant

יְקַלְלוּ־סֶלָה׃ אַךְ לֵאלֹהִים דּוֹמִּי נַפְשִׁי כִּי־מִמֶּנּוּ 6

.*nutabo* non ,mea elevatio : mea ſalus & ,mea *petra* ipſe Tantùm .*mea expectatio*

תִּקְוָתִי׃ אַךְ־הוּא צוּרִי וִישׁוּעָתִי מִשְׂגַּבִּי לֹא אֶמּוֹט׃ 7

תרגום TARGUM.

בְּעֵטַת מוֹאֲבָאֵי אִטַּמַּשׁוּ רִגְלַי בֶּאֱדוֹם גִּבָּרֵיהוֹן 10
הֵיךְ דוּד שָׁווּנִי עַל פִּרְקַת קְדַל גִּבָּרֵי אֱדוֹם
טַלְקִית מְסָנִי עֲלַוֵי פְּלִשְׁתָּאֵי יַבִּיבִי כְּנִשְׁתָּא
דְיִשְׂרָאֵל ׃ מַן הוּא דְיוֹבִיל יָתִי לְקַרְתָּא חֲרוּבָא 11
דְצוֹר מַן הוּא דְדַבְּרַנִי עַד אֱדוֹם ׃ הֲלָא אַתְּ הוּא 12
יְיָ שְׁבַקְתָּנָא וְלָא תִפּוֹק אֱלָהָא עִם חֵילְוָתָנָא ׃
הַב לָן סַעֲדָא מִמְּעִיקָא וּמַגָּן הוּא פּוּרְקָנָא דְבַר 13
נָשָׁא ׃ בְּמֵימְרָא דַיְיָ נַעֲבֵד חֵילָא וְהוּא יִכְבּוֹשׁ 14
מְעִיקָנָא ׃

סא

לְשַׁבָּחָא עַל תּוּשְׁבְּחָן לְדָוִד ׃ קַבֵּל יְיָ בָּעוּתִי 1 2
אֲצֵית צְלוֹתִי ׃ מִן סִיפֵי אַרְעָא קֳדָמָךְ אֲצַלֵּי 3
בְּאִשְׁתַּלְהֲיוּת לִבִּי בְּבִרְךְ תַּקִּיף דְּמִתְבְּנֵי עַל
טִינָר רָם מִנִּי דַבַּר יָתִי ׃ אֲרוּם הֲוֵיתָא רְחִיץ לִי 4
קוּשְׁטָא דְעֻשְׁנָא מִן קֳדָם בְּעֵל דְבָבָא ׃ אֲדוּר 5
בְּמַשְׁכְּנָךְ לְעַלְמַיָּא אֶתְרְחֵץ בִּטְלַל שְׁכִנְתָּךְ
לְעָלְמִין ׃ אֲרוּם אַנְתְּ יְיָ שְׁמַעְתָּא נִדְרַי יְהַבְתָּא 6
יְרוּתָא לְדָחֲלֵי שְׁמָךְ ׃ יוֹמִין עַל יוֹמֵי מַלְכָּא 7
מְשִׁיחָא תּוֹסִיף שְׁנוֹי הֵיךְ דָּרֵי עַלְמָא הָדֵין וְדָרֵי
עַלְמָא דְאָתֵי ׃ יָתֵיב לְעָלְמִין קֳדָם יְיָ טֵיבוּ וּקְשׁוֹט 8
מִן מָרֵי עַלְמָא יִנְטְרוּן לֵיהּ ׃ בְּכֵן אֲשַׁבַּח שְׁמָךְ 9
לְעַלְמַיָּא כַּד אַשְׁלֵים נִדְרַי בְּיוֹם פּוּרְקָנָא
דְיִשְׂרָאֵל וּבְיוֹם דְּיִתְרַבֵּי מַלְכָּא מְשִׁיחָא לְמֶהֱוֵי
מְלִיךְ ׃

סב

לְשַׁבָּחָא עַל יְדוֹי דִּידוּתוּן תֻּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד ׃ 1
בְּרַם לֵאלָהָא שְׁתָקָא נַפְשִׁי מִנֵּיהּ פּוּרְקָנִי ׃ בְּרַם 2
הוּא תּוּקְפִּי וּפוּרְקָנִי מְשֵׁיזְבִי לָא אֱזוּעַ בְּיוֹם עָקָא 3
רַבָּא ׃ עַד אֵן אַתּוּן מִתְרַגְּשִׁין עַל גְּבַר חָסִיד 4
תִּתְעַבְדוּן קְטוֹלִין כּוּלְהוֹן הֵיךְ שׁוּר דִּסְטֵי הֵיךְ
גּוּדָא רְעִיעָתָא ׃ בְּרַם כַּד יוֹמוֹן לְאוֹטָבָא 5
מִתְמַלְּכִין לְמִגְרַח יְחַוּוֹן כַּדְבוּבָא בְּפוּמְהוֹן
יְבָרְכוּן וּבְלִבְּהוֹן יְלַטְטוּן לְעָלְמִין ׃ בְּרַם לֵאלָהָא 6
שְׁתוֹקִי נַפְשִׁי אֲרוּם מִנֵּיהּ סִבְרִי ׃ בְּרַם הוּא 7
תּוּקְפִּי וּפוּרְקָנִי מְשֵׁיזְבִי לָא אֶזְדַּעְזַע ׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Conſilio Moabitarum intincti ſunt pedes 10 mei in Edom; fortes ejus ſicut olla lotionis meæ, ſuper juncturam cervicis fortium Idumæorum projeci calceum meum: ob Paleſtinos jubila congregatio Iſrael. Quis deducet 11 me ad civitatem deſtructam Tyri ? quis deducet me uſque ad Idumæam ? Nonne tu 12 Domine dereliquiſti nos ? et non egredieris Deus cum exercitibus noſtris ? Tribue no- 13 bis auxilium propter hoſtem : fruſtratoria enim eſt ſalus hominis. In verbo *Domini* 14 edemus virtutem : et ipſe conculcabit oppreſſores noſtros.

Ad laudandum pro hymnis, *Davidi*. 1

PSAL. LXI.

ACcipe Domine deprecationem meam; 2 intende orationi meæ. Ab extremis terræ in 3 conſpectu tuo orabo in anxietate cordis mei; ſuper arcem munitam quæ conſtructa eſt ſuper *rupem* altiorem me ipſo, deduc me. Quoniam factus es ſpes mea; veritas 4 fortitudinis à facie auctoris inimicitiæ. Ha- 5 bitabo in tabernaculo tuo in ſecula, confidam in umbra majeſtatis tuæ in æternum. Quoniam tu Domine exaudîſti vota mea, 6 dediſti hæreditatem timentibus nomen tuum. Dies ſuper dies regi Chriſto addes: an- 7 ni ejus ſicut generationes mundi hujus & generationes mundi venturi. Sedebit in ſe- 8 culo coram *Domino* : bonitas & veritas à Domino mundi ſervabunt eum. Sic lauda- 9 bo nomen tuum in æternum, cum perſolvero vota mea in die redemptionis Iſrael; & in die quo ungetur rex Chriſtus ut regnet.

Ad laudandum per *manus* Idutun,
hymnus Davidi. 1

PSAL. LXII.

CErtè ſiluiſti Deo anima mea, ab eo 2 redemptio mea. Profectò ipſe eſt fortitu- 3 do mea & redemptio mea, redemptor meus, non movebor in die ærumnæ magnæ. Uſ- 4 quequò fremitis in virum miſericordem ? cuncti evadetis homicidæ ſicut murus declinans, ſicut maceries rupta. Utique cùm jura- 5 mentum ſe bene facturos interpoſuerunt, conſultant ut impellant : nuntiabunt mendacium, ore ſuo benedicent, at corde maledicent in æternum. Veruntamen Deo taceas 6 anima mea, quoniam ab ipſo patientia mea. Profectò ipſe eſt fortitudo méa, et redem- 7 ptio mea, liberator meus, non commovebor.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

10 * ܘܡܘܐܒ ܡܫܝܓܐ ܕܪ̈ܓܠܝ. ܥܠ ܐܕܘܡ ܐܫܪܐ ܡܣܐܢܝ. ܘܥܠ ܦܠܫܬ ܐܟܪܙ: *ܡܢܘ ܢܕܒܪܢܝ
11 ܥܕܡܐ ܠܐܕܘܡ. ܘܡܢܘ ܢܕܒܪܢܝ ܠܡܕܝܢܬܐ ܥܫܝܢܬܐ : * ܗܐ ܐܢܬ ܐܠܗܐ ܛܥܝܬܢ ܘܠܐ
12 ܢܦܩܬ ܥܡ ܚܝܠܢ. * ܗܒ ܠܢ ܥܘܕܪܢܐ ܡܢ ܒܥܠܕܒܒܝܢ : ܕܕܓܠ ܗܘ ܦܘܪܩܢܗ
13 ܕܒܢܝܢܫܐ. * ܒܐܠܗܐ ܢܥܒܕ ܚܝܠܐ. ܘܗܘ ܢܕܘܫ ܠܒܥܠܕܒܒܝܢ :
1 ܕܕܘܝܕ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܣܐ * ܟܕ ܓܠܐ ܠܗ ܝܘܢܬܢ ܡܠܟܗ ܕܫܐܘܠ
2 ܕܡܟܪܟ ܒܡܘܬܗ. ܘܪܘܚܢܐܝܬ ܪܡܙ ܨܠܘܬܐ ܥܡ ܬܘܕܝܬܐ. ܦܘ̈ܫܩܐ ܝܘ. * ܫܡܥ
3 ܐܠܗܐ ܒܥܘܬܝ ܘܨܘܬ ܠܨܠܘܬܝ : * ܡܢ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ ܠܘܬܟ ܩܪܐ ܐܢܐ ܒܐܘܠܨܢܗ ܕܠܒܝ.
4 ܕܥܠ ܫܘܥܐ ܐܪܝܡܬܢܝ ܘܒܝܐܬܢܝ : * ܡܛܠ ܕܗܘܝܬ ܠܝ ܒܝܬ ܓܘܣܐ. ܘܡܓܕܠܐ ܪܡܐ ܡܢ ܩܕܡ
5 ܒܥܠܕܒܒܝ : * ܕܐܥܡܪ ܒܡܫܟܢܟ ܠܥܠܡܝܢ. * ܕܩܦ * ܘܐܬܛܫܐ ܒܛܠܠܐ ܕܓܦܝܟ :
6 * ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܐܠܗܐ ܫܡܥܬ ܢܕܪ̈ܝ. ܘܝܗܒܬ ܝܪܬܘܬܐ ܠܕܚ̈ܠܝ ܫܡܟ : * ܐܘܣܦܬ ܝܘ̈ܡܬܐ
7
8 ܥܠ ܝܘ̈ܡܘܗܝ ܕܡܠܟܐ. ܘܫ̈ܢܘܗܝ ܠܕܪܕܪܝܢ : * ܕܢܩܘܡ ܠܥܠܡܝܢ ܩܕܡ ܐܠܗܐ. ܛܝܒܘܬܐ
9 ܘܩܘܫܬܐ ܡܢܘ ܢܛܪܝܘܗܝ : * ܗܟܢ ܐܙܡܪ ܠܫܡܟ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ. ܟܕ ܐܫܠܡ ܢܕܪ̈ܝ. ܝܘܡ
1 ܒܝܘܡ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܣܒ * ܐܡܝܪ ܠܐܝܕܝܬܘܢ ܡܙܡܪܢܐ. ܡܬܐܡܪ ܦܫܝܛܬܐ:
ܟܕ ܡܫܬܥܝܢ ܗܘܘ ܛܠܝ̈ܐ ܕܐܒܢܝܪ ܘܛܠܝ̈ܐ ܕܕܘܝܕ ܘܩܛܠܘ ܚܕ ܠܚܕܕܐ. ܩܛܠ ܚܕ ܡܢ ܗܠܝܢ
ܕܐܒܢܝܪ ܠܐܚܐ ܙܥܘܪܐ ܡܢ ܒܢܝ ܨܪܘܝܐ ܐܚܘܗܝ ܕܝܘܐܒ. ܘܢܛܪܗ ܝܘܐܒ ܠܙܒܢܐ ܣܓܝܐܐ ܘܩܛܠܗ
ܠܐܒܢܝܪ ܓܢܒܪܐ ܒܝܘܡܝ ܫܐܘܠ. ܘܪܘܚܢܐܝܬ ܡܚܘܐ ܠܢ ܗܫܐ ܡܠܦܢܘܬܐ ܡܐܣܝܢܝܬܐ ܕܚܛܝܬܐ
2 ܒܬܝܒܘܬܐ ܘܒܬܘܕܝܬܐ. ܦܘ̈ܫܩܐ ܟܐ. * ܠܐܠܗܐ ܡܣܟܝܐ ܢܦܫܝ ܕܡܢܗ ܗܘ
3 ܦܘܪܩܢܝ. * ܘܗܘ ܐܠܗܝ ܘܦܪܘܩܝ : ܘܡܥܫܢܢܝ ܪܒܐ ܕܠܐ ܐܙܘܥ. * ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ
4 ܡܬܚܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܥܠ ܓܒܪܐ ܕܬܩܛܠܘܢܝܗܝ : ܐܝܟ ܫܘܪܐ ܕܨܠܐ ܘܐܝܟ ܣܝܓܐ ܕܕܚܝܐ.
5 ܐܦ ܡܢ ܐܝܩܪܗ ܐܬܚܫܒܘ ܠܡܛܪܦܘܬܗ : ܘܪܗܛܘ ܒܕܓܠܘܬܐ. ܒܦܘܡܗܘܢ ܡܒܪܟܝܢ
6 ܘܒܠܒܗܘܢ ܠܝܛܝܢ : * ܕܩܦ * ܠܐܠܗܐ ܣܟܝ ܢܦܫܝ ܕܡܢܗ ܗܘ ܦܘܪܩܢܝ : * ܘܗܘ ܐܠܗܝ
7 ܘܦܪܘܩܝ : ܘܡܥܫܢܢܝ ܕܠܐ ܐܙܘܥ.

Et Moab lotio pedum meorum. Super Adum 10 ſolvã calceamenta mea, & ſuper Paleſthinã vociferabo. Quis ducet me uſque in Adum? 11 & quis deducet me ad urbem munitam? Nam 12 ecce tu Deus oblitus es noſtrî, & non egrederis inter exercitum noſtrum. Præbe nobis 13 auxilium contra hoſtes noſtros : quoniã fallax eſt ſalus hominus.

PSAL. LXI.

Davidis. Quum revelavit ei Jonathan con- 1 *ſilium Saulis machinantis interitum illius. Spiritualiter autem innuit orationem cum gratiarum actione. Verſ.16.*

AUdi Deus, orationẽ meã, & auſculta pre- 2 ci meæ. A finibus terræ ad te clamo cum 3 anxietate cordis mei: quia ſuper rupem evexîſti me, & conſolatus es me. Quia factus es 4 mihi aſylum, & turris ſublimis à conſpectu 5 inimicorum meorũ : Ut habitẽ in domicilio tuo in ſecula. * *Diapſalma* * Et protegar 6 umbrâ alarũ tuarũ: Quia tu Deus audîſti vota mea, & dediſti hæreditatẽ timentibus nomen tuũ. Adjeciſti dies diebus regis, & annos 7 ejus in generationẽ generationũ, Ut perſiſtat 8 in æternum coram Deo. Bonitatem & veritatem quis ſervabit ? Sic pſallam nomini tuo 9 in ſeculũ ſeculorũ, perſoluturus vota mea per ſingulos dies.

PSAL. LXII.

Dictus ab Idithum pſalte. Fertur ſenſus 1 *literalis eſſe quum luderent pueri Abnir & pueri David, ſeque trucidâſſent invicem; occîdit enim quidam ex his qui ad Abnir pertinebant, fratrem minimum inter natos Suriæ, fratrem* ſcilicet *Joab. Atque hoc ſervavit Joab ad longum tempus, & interfecit Abnir gigantem tempore Saulis. Spiritualis verò* ſenſus *indicat nobis nunc documentum medens peccato, ſi pœnitentiâ & confeſſione utamur. Verſus 21.*

DEum expectat anima mea : nam ab ipſo 2 ſalus mea, Ipſeque eſt Deus meus & ſal- 3 vator meus, & refugiũ meũ magnũ ut ne timeam. Quouſque concitamini adverſùs vi- 4 rum, ut interficiatis velut paries inclinatus & ſicut maceria depulſa ? Imò etiam de ho- 5 nore ejus cogitaverunt eum deturbare : & cucurrerunt cum mendacio : ore ſuo benedicunt, corde autẽ ſuo maledicunt. * *Diapſal.* * 6 Deum expecta anima mea, quoniam ab ipſo eſt ſalus mea. Ipſeque eſt Deus meus ac ſer- 7 vator meus, & refugium meum ne timeam.

Verſio VULG. LAT.

10 Moab olla ſpei meæ. In Idumæam extendam
calceamentum meum : mihi alienigenæ
11 ſubditi ſunt. Quis deducet me in
civitatem munitam ? quis deducet me
12 uſque in Idumæam ? Nónne tu, Deus,
qui repuliſti nos : & non egredieris, De⁹,
13 in virtutibus noſtris ? Da nobis auxiliũ
de tribulatione : quia vana ſalus homi-
14 nis. In Deo faciemus virtutem : & ipſe
ad nihilum deducet tribulantes nos.

1 In finem,
In Hymnis David. LX.

2 EXaudi, Deus, deprecationem meã : in-
3 tende orationi meæ. A finibus terræ ad
te clamavi : dum anxiaretur cor meum, in
4 petra exaltâſti me. Deduxiſti me, Quia
factus es ſpes mea : turris fortitudinis à
5 facie inimici. Inhabitabo in tabernacu-
lo tuo in ſecula : protegar in velamento
6 alarum tuarum. Quoniam tu, Deus meus,
exaudîſti orationem meam : dediſti hære-
7 ditatẽ timentibus nomen tuũ. Dies ſu-
per dies regis adjicies : annos ejus uſq; in
8 diem generationis & generationis. Per-
manet in æternum in conſpectu Dei : mi-
ſericordiam & veritatem ejus quis re-
9 quiret ? Sic pſalmum dicam nomini tuo
in ſeculum ſeculi : ut reddam vota mea de
die in diem.

1 In finem,
Pro Idithun, Pſalmus David,
LXI.

2 NOnne Deo ſubjecta erit anima mea?
3 ab ipſo enim ſalutare meum. Nam & i-
pſe Deus meus, & ſalutaris meus : ſuſce-
4 ptor meus, non movebor ampliús. Quo-
uſque irruitis in hominẽ ? interficitis uni-
verſi vos : tanquã parieti inclinato et ma-
5 ceriæ depulſæ? Veruntamen pretium me-
um cogitaverunt repellere, cucurri in ſi-
ti : ore ſuo benedicebant, & corde ſuo
6 maledicebant. Veruntamen Deo ſubje-
cta eſto anima mea : quoniam ab ipſo
7 patientia mea. Quia ipſe Deus meus,
& Salvator meus : adjutor meus, non e-
migrabo.

Verſ. GRÆCA LXX. Interp.

10 Μωὰβ λέβης τῆς ἐλπίδος μου, ἐπὶ τὴν Ἰδουμαίαν ἐκ-
τενῶ τὸ ὑπόδημά μου, ἐμοὶ ἀλλόφυλοι ὑπετάγη-
11 σαν. Τίς ἀπάξει με εἰς πόλιν περιοχῆς ; τίς ὁδη-
12 γήσει με ἕως τῆς Ἰδουμαίας ; Οὐχὶ σὺ ὁ Θεὸς ὁ
ἀπωσάμενος ἡμᾶς ; καὶ οὐκ ἐξελεύσῃ ὁ Θεὸς ἐν ταῖς
13 δυνάμεσιν ἡμῶν ; Δὸς ἡμῖν βοήθειαν ἐκ θλίψε-
14 ως, καὶ ματαία σωτηρία ἀνθρώπου. Ἐν τῷ Θεῷ
ποιήσομεν δύναμιν, καὶ αὐτὸς ἐξουδενώσει τοὺς θλί-
βοντας ἡμᾶς.

1 Εἰς τὸ τέλος, Ἐν ὕμνοις τῷ Δαυίδ.
ξ΄.

2 ἘΙσάκουσον ὁ Θεὸς τῆς δεήσεώς μου, πρόσχες
3 τῇ προσευχῇ μου. Ἀπὸ τῶν περάτων τῆς γῆς
πρὸς σὲ ἐκέκραξα, ἐν τῷ ἀκηδιάσαι τὴν καρδίαν
4 μου, ἐν πέτρᾳ ὕψωσάς με. ὁδήγησάς με, Ὅτι ἐ-
γενήθης ἐλπίς μου, πύργος ἰσχύος ἀπὸ προσώπου
5 ἐχθροῦ. Παροικήσω ἐν τῷ σκηνώματί σου εἰς τοὺς
αἰῶνας, σκεπασθήσομαι ἐν σκέπῃ τῶν πτερύγων
6 σου. ΔΙΆΨΑΛΜΑ. Ὅτι σὺ ὁ Θεὸς εἰσήκουσας τῶν
προσευχῶν μου, ἔδωκας κληρονομίαν τοῖς φοβου-
7 μένοις τὸ ὄνομά σου. Ἡμέρας ἐφ᾽ ἡμέρας βασιλέ-
ως προσθήσεις, τὰ ἔτη αὐτοῦ ἕως ἡμέρας γενεᾶς καὶ
8 γενεᾶς. Διαμενεῖ εἰς τὸν αἰῶνα ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ,
9 ἔλεος καὶ ἀλήθειαν αὐτοῦ τίς ἐκζητήσει αὐτῶν; Οὕ-
τως ψαλῶ τῷ ὀνόματί σου εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶ-
νος, τοῦ ἀποδοῦναί με τὰς εὐχάς μου ἡμέραν ἐξ
ἡμέρας.

1 Εἰς τὸ τέλος, Ὑπὲρ Ἰδιθοὺν ψαλμὸς τῷ Δαυ-
ίδ. ξα΄.

2 ΟΥχὶ τῷ Θεῷ ὑποταγήσεται ἡ ψυχή μου;
3 παρ᾽ αὐτοῦ γὰρ τὸ σωτήριόν μου. Καὶ γὰρ αὐτὸς Θε-
ός μου καὶ σωτήρ μου, ἀντιλήπτωρ μου, οὐ μὴ σα-
4 λευθῶ ἐπὶ πλεῖον. Ἕως πότε ἐπιτίθεσθε ἐπ᾽ ἄν-
θρωπον; φονεύετε πάντες ὡς τοίχῳ κεκλιμένῳ
5 καὶ φραγμῷ ὠσμένῳ. Πλὴν τὴν τιμήν μου ἐβου-
λεύσαντο ἀπώσασθαι. ἔδραμον ἐν δίψει. τῷ στό-
ματι αὐτῶν εὐλόγουν, καὶ τῇ καρδίᾳ αὐτῶν κατη-
6 ρῶντο. ΔΙΆΨΑΛΜΑ. Πλὴν τῷ Θεῷ ὑποτάγη-
7 θι ἡ ψυχή μου, ὅτι παρ᾽ αὐτοῦ ἡ ὑπομονή μου. Ὅτι
αὐτὸς Θεός μου καὶ σωτήρ μου, ἀντιλήπτωρ μου, οὐ
μὴ μεταναστεύσω.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

Moab[e] *olla ſpei meæ. 9 In* 10
Idumæam extendam calceamentum meum : mihi alienigenæ ſub-
diti ſunt. 10 Quis deducet me 11
in civitatem (g) circumſtantiæ?
quis deducet me uſq; in Idumæ-
am? 11 Nónne tu, Deus, qui re- 12
puliſti nos, & non ingredieris,[f]
Deus, in virtutibus noſtris ? 12
Da nobis auxilium de tribulati- 13
one[g]*: & (h) vana ſalus homi-*
nis. 13 In Deo faciemus virtu- 14
tem : & ipſe[h] *ad nihilum de-*
ducet tribulantes nos.

In finem, In hymnis ipſi 1
David. *LX.*

1 *EXaudi,*[a]*Deus, deprecati-* 2
onem meam : intende orati-
oni meæ. 2 A finibus terræ ad 3
te clamavi : dum anxiaretur cor
meum ; in petra exaltâſti me : 3
Deduxiſti me, Quia factus es ſpes 4
mea ; turris fortitudinis à facie
inimici. 4 Inhabitabo in taber- 5
naculo tuo in ſecula : protegar in
velamine alarum tuarum. DIA-
PSALMA. 5 Quoniã tu, (a)[b] 6
Di⁹ exaudiſti (b) orationes meas :
dediſti hæreditatem [c] *timen-*
tibus nomen tuum. 6 Dies ſuper 7
dies regis adjicias, annos ej⁹ uſq;
in diem generationis, & genera-
tionis. 7 Permanebit in æternum 8
in conſpectu Dei : miſericordiam
& veritatem ejus quis requi-
ret eorũ? *Sic 8 pſallã nomini tuo* 9
in ſeculum ſeculi, ut [d] *reddam*
vota mea de die in diem. [e]

In(a)finem Pro Idithum, Pſalmus 1
ipſi David. *LXI.*

1 *NOnne Deo ſubjecta erit a-* 2
nima mea ? ab ipſo enim
ſalutare meum. 2 Nam & ipſe 3
Deus meus, & (b) Salvator meus :
ſuſceptor meus, non movebor am-
pliús. 3 Quouſq; (c) apponitis ſu- 4
per homine (d) (interficitis uni-
verſi :) tanquam parieti inclinato,
& maceriæ impulſæ ? 4 Verun- 5
tamen (e) honorem meum cogita-
verunt repellere. (f) Cucurri in
ſiti : ore ſuo benedicebant, &
corde ſuo maledicebant. DIA-
PSALMA. 5 Veruntamen Deo 6
ſubjecta eſto anima mea : quoniam
ab ipſo[a]*patientia mea. 6 Quia ipſe Deus meus, & Salvator meus :* [b] *ſuſceptor meus, non emigrabo.* 7

Verſio ÆTHIOPICA.

10 ወሞአብ: ካህን: ተስፈየ::=፡ ደበ: ኢዶም 9
ያስ: እሰፍሕ ፡ መካይድየ:: ሊተ: ይገንዩ:
11 ኢሎፍሊ::=፡ መኑ ፡ ይወስደኒ ፡ ሀገረ: ጥ 10
ቅም:: ወመኑ ፡ ይመርሐኒ: እስከ ፡ ኢዶም
12 ያስ::=፡ አኮኑ ፡ አንተ ፡ እግዚኦ: ዘገደፍ 11
ከነ::ወኢትወፅእ:አምላክነ ፡ ምስለ: ኃይል 12
ነ::=፡ ሀበነ ፡ ረድኤተ ፡ ለምንደቤነ::
13 ወከንቱ ፡ ተአምኖ ፡ በሰብእ::=፡ በእግዚ 13
14 አብሔር ፡ ንገብር ፡ ኃይለ:: ወውእቱ:ያኀስ
ሮሙ:ለእለ: ይሣቅዩነ::

ፍጻሜ:ማኅሌት:ዘደዊት::

1 ፗ ስምዓኒ ፡ አምላኪየ ፡ ስእለትየ:: ወአ 1
2 ጽምአኒ ፡ ጸሎትየ::=፡ እምአጽናፈ ፡ ም 2
ድር:ጸራኅኩ: ኀቤከ: ሶበ:ቀብጸኒ: ልብየ::
3 ወእምእብን ፡ አልዐልከኒ::=፡ ወመራሕከ 3
ኒ:እስመ: ተስፋየ: ኮንከኒ:: ማኅፈድ:ጽኑ
4 ዕ:ቅድመ:ገጸ:ጸላኢ::=፡ እነብር:ቤተከ: 4
ለዓለም:: ወእትከደን ፡ በጽላሎተ ፡ ክነፊ
5 ከ::=፡ እስመ:አንተ ፡ አምላኪየ: ሰማዕከ 5
ኒ ፡ ጸሎትየ:: ወወሀብኮሙ ፡ ርስተ: ለእለ:
ይፈርሁከ::=፡ እምዕለት:ዕለት: ይወስክ: 6
6 ንጉሠ ፡ ዐመቲሁ:: እስከ:መዋዕለ ፡ ትው
ልደ ፡ ትውልድ::=፡ ወይነብር ፡ ለዓለም: 7
7 ቅድመ:እግዚአብሔር:: መኑ:ያኀሥሥ:
ሣኅሎ ፡ ወጽድቆ::=፡ ከመዝ ፡ እዜምር: 8
ለስምከ:ለዓለም::ከመ:ተሀበኒ:ተምኔትየ፡
8 ኵሎ:አሚረ::
ስብሐት: ለአብ: ወወልድ: ወመንፈስ:ቅዱስ:
9 ይእዜኒ:ወዘልፈኒ:ወለዓለም:ዓለም:
አሜን::

ፍጻሜ ፡ ዘበእንተ ፡ ኢደትም ፡ መዝሙር:
1 ዘደዊት::=፡

2 ፗ፩ አኮኑ:ለእግዚአብሔር:ትገኒ:ነፍስየ:: 1
እስመ ፡ ኀቤሁ ፡ መድኃኒትየ::=፡ እስመ: 2
3 ውእቱ ፡ አምላኪየ ፡ ወመድኃኒየ:: ወውእ
ቱ:ረዳኢየ:ወኢይትሀወክ:ለዝሉፉ::=፡ እ 3
ስከ: ማእዜኑ:ትሠውሙ ፡ ላዕለ ፡ ብእሲ::
4 ወትቀትልዎ ፡ ኵልክሙ:: ከመ:አረፍት:
ጽንፅንት:ወከመ:ጥቅም ፡ ንሑል::=፡ ወባ 4
5 ሕቱ: መክሩ:ይስዐሩ:ክብርየ:: ወሮጽኩ:በ
ጽምእየ:: በአፉሆሙ:ይድኅሩ:ወበልቦሙ:
ይረግሙ::=፡ ወባሕቱ:ለእግዚአብሔር ፡ 5
ትገኒ:ነፍስየ:: እስመ:ኀቤሁ:ተስፋየ::=፡
6 እስመ ፡ ውእቱ ፡ አምላኪየ ፡ ወመድኃኒየ:: 6
ወረዳኢየ:ውእቱ:ኢይትሀወክ::=፡

INTERP. ÆTHIOP. [e] Sacerdos ſpei [f] Deus noſter, [g] noſtra: & vana eſt fiducia in homine. [h] confundet tribulantes nos. *PSAL. LX.* [a] Deus mi, [b] Deus meus, [c] timentibus te. [d] reddas mihi mercedem meam. [e] MS. Æthiop. Po. Gloria Patri & Filio & Spiritui Sancto: Eſt modò, ſemper erit, & in ſecula ſeculorum, Amen. *PSAL. LXI.* [a] expectatio mea. [b] et adjutor meus, non commovebor.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

10 11 * موآب قوة رجائي * على ادوم امدّ حذائي * لي خضعت القبائل الغريبة * من الذي يبلغني
12 الي مدينة حصينة * او من يرشدني الي ادوم * الست انت هو الله الذي اقصيتنا ولم تصحب
13 14 يا الله جيوشنا * اعطنا عونا في شدائدنا * فان باطلا هو خلاص الانسان * بالهنا نصنع القوة *
وهو يهين كل من يضايقنا * الليلويا *

1 * المزمور الستون * * لداود في التسابيح عن الانقضاء * وهو * كو * استيخن *
2 3 * اللهم استجب طلبتي * وانصت الي صلاتي * فاني من اقاصي الارض صرخت اليك * عند ما
4 5 حزن قلبي * رفعتني على الصخرة * هديتني * وصرت لي رجاء * وبرجا قويا في وجه العدو * فاسكن
6 في مسكنك الي الابد * واستتر في ظلال كنفك * لانك انت اللهم استمعت صلاتي * اعطيت
7 8 خائفي اسمك ميراثا * زدت الملك على ايامه اياما * وسنيه الي ايام جيل وجيل * وتدوم امام
9 الله الي الابد * ورحمته وحقه من يتبعهما * هكذا ارتل اسمك الي الابد * لكي اوفيك
نذوري يوما فيوما * الليلويا * * المزمور الحادي والستون *

1 * لداود على ايداثون * * وهو * كذ * استيخن *
2 3 * ان لله تخضع نفسي لان من عنده خلاصي * هو الهي ومخلصي وناصري * فلا احول ابدا
4 5 * الي متى تريدون وتميلون على الانسان لتقتلوه كلكم مثل جدار مايل وسياج واقع * لانكم
6 تحبون ان تقصوه من نعمته * يباركون بافواههم * ويلعنون بقلوبهم * بل لله تخضع نفسي * لان
7 من عنده صبري * لانه الاهي ومخلصي وناصري فلا ازل *

Moab virtus ſpei meæ : ſuper Idumeam 10
extendam calceamentum meum, mihi ſub-
jecerunt ſe nationes alienigenæ. Quis eſt 11
qui me perducat in civitatem munitam ?
aut quis me dirigit ad Idumæam? Nonne 12
tu es Deus qui extermináſti nos, & non
comitatus es, O Deus, exercitus noſtros.
Da nobis auxilium in afflictionibus no- 13
ſtris, quia vana eſt ſalus hominis. In Deo 14
noſtro faciemus virtutem, & ipſe depri-
met omnes qui vexant nos. Alleluja.

PSAL. LX.
Davidis. In laudationibus, de ul- 1
timo fine. Verſ. 26.

DEus, exaudi precem meam, & au- 2
ſculta orationem meam : Quoniam 3
à finibus terræ clamavi ad te quum mœ-
reret cor meum, exaltâſti me ſupra pe-
tram. Direxiſti me, Et factus es mihi 4
ſpes & turris munita in facie inimici.
Quapropter habitabo in habitaculo tuo in 5
æternum, & protegar ſub umbra tutelæ
tuæ. Quia tu Deus, audîſti orationem 6
meam : Dediſti timentibus nomen tuum
hæreditatem. Addidiſti regi ſuper dies e- 7
jus dies, & annos ejus in dies generatio-
nis & generationis, Et durabunt in con- 8
ſpectu Dei in æternum. Et miſericordiam
ejus, atque veritatem ipſius quis ſectetur?
Ita pſallam nomini tuo in æternum, ut 9
perſolvam tibi vota mea indies. Alleluja.

PSAL. LXI.
Davidis de Idithun. Verſ. 24. 1

PRofectò Deo ſubjicietur anima mea, eò 2
quòd à conſpectu ejus ſalus mea. Ipſe 3
eſt Deus meus, & Salvator meus, & ad-
jutor meus, ideo non movebor unquam.
Quouſque tandem addetis, & irruetis in 4
hominem, ut occidatis eum vos omnes, tan-
quam in parietem inclinatum, & ſepem
labentem? Quoniam vos vultis exter- 5
minare eum à gratia ſua. Benedicunt ori-
bus ſuis, et maledicunt cordibus ſuis; Ve- 6
rùm Deo ſubjicetur anima mea, quia ab
ipſo patientia mea. Quia ipſe eſt Deus 7
meus & Salvator meus & adjutor me-
us, icciрco non nutabo.

תהלים : סג סד

mea spes ,meæ fortitudinis *rupes* : mea gloria & , mea salus Deo *Super*
עַל־אֱלֹהִים יִשְׁעִי וּכְבוֹדִי צוּר־עֻזִּי מַחְסִי 8
: vestrū cor *ejus facies ad* effundite ,*populus* tempore omni in eo in Sperate .Deo in
בֵּאלֹהִים׃ בִּטְחוּ בוֹ בְכָל־עֵת ׀ עָם שִׁפְכוּ־לְפָנָיו לְבַבְכֶם 9
mendacium ,hominum filii vanitas Tantùm .Selah ,*nobis* spes Deus
אֱלֹהִים מַחֲסֶה־לָּנוּ סֶלָה׃ אַךְ ׀ הֶבֶל בְּנֵי־אָדָם כָּזָב 10
fidatis Ne .pariter vanitate à *ipsi : ascendendo bilances in* ,viri filii
בְּנֵי אִישׁ בְּמֹאזְנַיִם לַעֲלוֹת הֵמָּה מֵהֶבֶל יָחַד׃ אַל־תִּבְטְחוּ 11
.cor ponatis ne ,*pullulaverit cùm facultas* :evanescatis ne *rapina in* & ,*extorsione in*
בְעֹשֶׁק וּבְגָזֵל אַל־תֶּהְבָּלוּ חַיִל ׀ כִּי־יָנוּב אַל־תָּשִׁיתוּ לֵב׃
.Deo fortitudo quia ; audivi hoc bis ,Deus est locutus Semel
אַחַת ׀ דִּבֶּר אֱלֹהִים שְׁתַּיִם־זוּ שָׁמָעְתִּי כִּי עֹז לֵאלֹהִים׃ 12
.suū opus secundùm *viro* reddes tu quia ; misericordia Domine tibi Et
וּלְךָ־אֲדֹנָי חָסֶד כִּי־אַתָּה תְשַׁלֵּם לְאִישׁ כְּמַעֲשֵׂהוּ׃ 13

PSAL. LXIII. סג

meus Deus Dēus .Jehudah deserto in *ipsum existendo in* ,David ipsi Cantus
מִזְמוֹר לְדָוִד בִּהְיוֹתוֹ בְּמִדְבַּר יְהוּדָה׃ אֱלֹהִים ׀ אֵלִי 1 2
terra in : mea caro te *ad appetiit* ,mea anima te sitivit ,te quærā diluculò , *tu*
אַתָּה אֲשַׁחֲרֶךָּ צָמְאָה לְךָ ׀ נַפְשִׁי כָּמַהּ לְךָ בְשָׂרִי בְּאֶרֶץ־
videndum ad ; te vidi sanctitate in Sic .*aquis* absque *anhelante* & ,*siccitatis*
צִיָּה וְעָיֵף בְּלִי־מָיִם׃ כֵּן בַּקֹּדֶשׁ חֲזִיתִךָ לִרְאוֹת 3
; *vitis præ* tua misericordia *bona* Quoniam .tuā gloriā & , tuam fortitudinē
עֻזְּךָ וּכְבוֹדֶךָ׃ כִּי־טוֹב חַסְדְּךָ מֵחַיִּים 4
levabo tuo nomine in *: meis vitis* in tibi benedicam Sic .te *celebrabunt* mea labia
שְׂפָתַי יְשַׁבְּחוּנְךָ׃ כֵּן אֲבָרֶכְךָ בְחַיָּי בְּשִׁמְךָ אֶשָּׂא 5
labiis & : mea anima *saturabitur* pinguedine & , adipe Sicut .meas *palmas*
כַפָּי׃ כְּמוֹ חֵלֶב וָדֶשֶׁן תִּשְׂבַּע נַפְשִׁי וְשִׂפְתֵי 6
custodiis in : meis stratis *super* tui sum recordatus Si .meum os *laudabit præconiorum*
רְנָנוֹת יְהַלֶּל־פִּי׃ אִם־זְכַרְתִּיךָ עַל־יְצוּעָי בְּאַשְׁמֻרוֹת 7
.*dicam præconia* tuarū alarū umbra in & ; mihi auxilium fuisti Quia .te *in* meditabor
אֶהְגֶּה־בָּךְ׃ כִּי־הָיִיתָ עֶזְרָתָה לִּי וּבְצֵל כְּנָפֶיךָ אֲרַנֵּן׃ 8
desolationem ad ipsi Et .tua dextera *suffulcit* me *in* : *te post* mea anima Adhæsit
דָּבְקָה נַפְשִׁי אַחֲרֶיךָ בִּי תָּמְכָה יְמִינֶךָ׃ וְהֵמָּה לְשׁוֹאָה 9 10
cum facient Fundere .terræ inferiora *in* introibūnt : meam animam quærent
יְבַקְשׁוּ נַפְשִׁי יָבֹאוּ בְּתַחְתִּיּוֹת הָאָרֶץ׃ יַגִּירֻהוּ 11
,Deo in lætabitur rex Et .erunt vulpium pars *: gladii manus super*
עַל־יְדֵי־חָרֶב מְנָת שֻׁעָלִים יִהְיוּ׃ וְהַמֶּלֶךְ יִשְׂמַח בֵּאלֹהִים 12
.mendacium loquentium os obstruetur quia *: eo in jurans* omnis laudabitur
יִתְהַלֵּל כָּל־הַנִּשְׁבָּע בּוֹ כִּי יִסָּכֵר פִּי דוֹבְרֵי־שָׁקֶר׃

PSAL. LXIV. סד

: mea loquela in meam vocem Deus Audi .David ipsi cantus Victori
לַמְנַצֵּחַ מִזְמוֹר לְדָוִד׃ שְׁמַע־אֱלֹהִים קוֹלִי בְשִׂיחִי 1 2
.*meas vitas custodies* inimici *pavore* à
מִפַּחַד אוֹיֵב תִּצֹּר חַיָּי׃

תרגום Targum.

עַל אֱלָהָא פּוּרְקָנִי וִיקָרִי תְּקוֹף עוּשְׁנִי סִבְרִי 8
בֵּאלָהָא׃ סְבַרוּ בְּמֵימְרֵיהּ בְּכָל עִדָּן עַמָּא דְבֵית 9
יִשְׂרָאֵל שְׁדוּ קֳדָמוֹי זָחוּחֵי לִבְּכוֹן אֱמַרוּ אֱלָהָא
סְבַר לָנָא לַעֲלְמִין׃ בְּרַם לְמָא בְּנֵי נָשָׁא כַּדִּיבָא 10
בְּנֵי גְּבַר כַּד יִסְּבוּן בְּנֵי נָשִׁין בְּמַסְחֲתָא יִתְקְלוּן
מַזָּלְהוֹן הִנּוּן נַרְמֵיהוֹן מִן לְמָא הֲוַן כַּחֲדָא׃
לָא תִתְכְּלוּן בִּטְלוּמָא וּבְאוֹנְסָא לָא תְקַבְּלוּן 11
מָמוֹנָא אֲרוּם יִשְׁבַּח לָא תְשַׁוּוֹן לִבָּא׃ אוֹרַיְתָא 12
חֲדָא מְמַלֵּל אֱלָהָא וְתַרְתֵּין זִמְנִין דְּנָן שְׁמַעִית
מִן פּוּם מֹשֶׁה סָפְרָא רַבָּא אֲרוּם עוּשְׁנָא קֳדָם
אֱלָהָא׃ וְלָךְ אֱלָהָא לְמֶעְבַּד טֵיבוּ לְצַדִּיקַיָּא 13
אֲרוּם אַתְּ מְשַׁלֵּם לֶאֱנָשׁ הֵיךְ עוֹבָדוֹי׃

סג

תּוּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד בְּעִדָּן מֶהֱוֵי בְּמַדְבְּרָא דִּי 1
בִּתְחוּם שֵׁבֶט יְהוּדָה׃ אֱלָהָא תּוּקְפִּי אַנְתְּ אֲקוּם 2
בְּצַפְרָא קֳדָמָךְ צַחֲיַת לָךְ נַפְשִׁי רְגִיג לָךְ בִּסְרִי
בְּאַרְעָא צַדְיָא וּמְשַׁלְהֵי מִדְּלֵית מוֹי׃ הֵיכְנָא 3
בְּאַתַר קוּדְשָׁא חֲמִיתָךְ זַכֵּי יָתִי לְמֶחֱמֵי עוּשְׁנָךְ
וִיקָרָךְ׃ אֲרוּם טָב הוּא חַסְדָּךְ דְּתַעְבֵּד לְצַדִּיקַיָּא 4
לְעָלְמָא דְּאָתֵי מִן חַיֵּי דִּיהַבְתָּא לְרַשִּׁיעַיָּא
בְּעָלְמָא הָדֵין בְּגִין כֵּן סִפְוָתִי יְשַׁבְּחוּנָךְ׃ הֵיכְנָא 5
אֲבָרְכִנָּךְ בְּחַיַּי בְּעָלְמָא הָדֵין בְּשׁוּם מֵימְרָךְ
אֶפְרוֹס יְדַי בִּצְלוֹ לְעָלְמָא דְּאָתֵי׃ הֵיךְ תְּרַב וּדְהַן 6
תִּסְבַּע נַפְשִׁי וְסִפְוָן דְּתוּשְׁבְּחָן יְשַׁבַּח פּוּמִי׃ אִין 7
אַדְכַּרְתִּיךְ עַל דַּרְגְּשִׁי בְּמַטַּרְתָּא אֲרַנֵּן בְּמֵימְרָךְ׃
אֲרוּם הֲוֵיתָא סָעִיד לִי וּבִטְלַל שְׁכִנְתָּךְ אַבּוּעַ׃ 8
אִדְבְּקַת נַפְשִׁי בָּתַר אוֹרַיְתָךְ בִּי סַעֲדַת יְמִינָךְ׃ 9
וְהִנּוּן לִקְבוּרְתָּא יִתְבְּעוּן נַפְשִׁי יֵעֲלוּן בְּאַרְעִית 10
אַרְעָא׃ יִדְחֲלוּנֵיהּ מִטּוּל מְחַת סַיְפָא מוֹהֲבִית 11
תַּעֲלַיָּא יֶהֱווֹן׃ וּמַלְכָּא יֶחְדֵי בְּמֵימַר אֱלָהָא 12
יִשְׁבַּח כָּל דִּי מְקַיֵּם בְּמֵימְרֵיהּ אֲרוּם יִסְתַּנֵּק
פּוּמְהוֹן כָּל דְּמַלְּלֵי שִׁקְרָא׃ סד
לְשַׁבָּחָא תּוּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד׃ שְׁמַע אֱלָהָא קָלִי 1
בְּעִדָּן צְלוֹתִי מִדְּלוּחָא דִּבְעֵל דְּבָבִי תִּנְטוֹר חַיַּי׃ 2

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

In Deo redemptio mea, et gloria mea: ro- 8
bur fortitudinis meæ, ſpes mea in Deo. Spe- 9
rate in verbo ejus omni tempore popule do-
mus Iſrael: abjicite coram eo elationes cor-
dis veſtri, dicite, Deus eſt ſpes noſtra in æter-
num. Quippe nihil hominum filii, mendaci- 10
um filii viri, ſi acceperint *filii hominum*
ſtateram, *ponderaverint* fata ſua, illi quidem
ipſamet vanitate erunt [*leviores.*] Ne con- 11
fidatis in rapina, et violentia nolite *divi-
tias accipere*: cùm laudaverit vos [*aliquis,*]
ne apponatis cor. Legem unam locutus eſt 12
Deus, et *bis* iſtam audivimus *de ore Moſis
ſcribæ magni,* quia virtus coram Deo eſt. Et 13
te Deus decet miſericordiam facere juſtis,
quoniam tu reddes homini ſecundùm opera
ipſius.

Canticum Davidi quo tempore erat in 1
deſerto in finibus tribus Jehudæ.

PSAL. LXIII.

DEus fortitudo mea tu es, ſummo manè 2
conſurgam coram te: ſitivit te anima mea:
deſiderat te caro mea in terra arida, & de-
feſſa ubi nullæ ſunt aquæ. Sic in loco ſancti- 3
tatis vidi te: purga me ut videam virtutem
tuam & gloriam tuam. Quoniam melior eſt 4
miſericordia tua quam facies juſtis in mun-
do venturo, vita quam dediſti impiis in
mundo iſto: propterea labia mea laudabunt
te. Sic benedicam te in vita mea in mundo 5
iſto, in nomine Verbi tui extendam manus
meas in oratione in mundo venturo. Quaſi 6
adipe et pinguedine ſaturabis animam me-
am: & labiis laudatoriis laudabit os meum.
Si recordatus fuero tui ſuper cubili meo, in- 7
ter cuſtodias meditabor in verbo tuo. Quo- 8
niam fuiſti auxilium mihi, et in umbra ma-
jeſtatis tuæ exultabo. Adhæſit anima mea 9
poſt *legē tuam*: *me* ſuſtentavit dextera tua.
Ipſi verò in *ſepulchrum* inquirent animam 10
meam: intrabunt in interiora terræ. Ti- 11
mebunt eum propter percuſſionem gladii:
pars vulpium erunt. Et rex lætabitur in 12
Verbo Dei: laudabit omnis qui juraverit
in Verbo ejus, quoniam præfocabit os
eorum *omnium* qui loquuntur mendacium.

Ad laudandum hymnus Davidi. 1

PSAL. LXIV.

AUdi Deus vocem meam in tempore ora- 2
tionis meæ: à terrore inimici mei cuſtodi vi-
tam meam.

Verſio SYRIACA. cum Interpretatione LATINA.

* ܒܐܠܗܐ ܗܘ ܦܘܪܩܢܝ ܘܫܘܒܚܝ : ܥܘܫܢܝ ܘܡܥܕܪܢܝ ܘܣܒܪܝ ܐܠܗܐ ܗܘ. * ܣܒܪܘ ܒܗ 8
ܒܟܠ ܥܕܢ ܥܡܐ : ܘܐܫܘܕܘ ܩܕܡܘܗܝ ܠܒܘܬܟܘܢ. ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܗܘ ܡܥܕܪܢ ܕܝܠܢ : 9
* [illegible] * ܘܐܝܟ ܗܠܐ ܐܢܘܢ ܟܠܗܘܢ ܒܢܝܢܫܐ ܕܓܠܐ. ܕܒܡܣܐܬܐ ܥܠܘܒܝܢ ܘܣܪܝܩܝܢ 10
ܐܟܚܕܐ : * ܠܐ ܬܬܬܟܠܘܢ ܥܠ ܛܠܘܡܝܐ. ܘܥܠ ܚܛܘܦܝܐ ܠܐ ܬܪܚܡܘܢ : ܩܢܝܢܐ ܡܐ ܕܣܓܝ ܠܐ ܢܚܕܐ 11
ܠܒܟܘܢ. * ܚܕܐ ܗܝ ܕܡܠܠ ܐܠܗܐ : ܘܬܪܬܝܢ ܗܠܝܢ ܫܡܥܬ. ܡܛܠ ܕܥܘܫܢܐ 12
ܕܐܠܗܐ ܗܘ : * ܘܠܟ ܡܪܝܐ ܛܝܒܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܦܪܥ ܐܢܬ ܠܓܒܪܐ ܐܝܟ ܥܒܕܘܗܝ. 13
* ܡܙܡܘܪܐ ܕܣܓ * ܕܕܘܝܕ. ܦܫܝܩܐܝܬ. ܟܕ ܐܡܪ ܠܡܠܟܐ ܕܡܘܐܒ ܕܝܬܒܘ ܐܒܝ 1
ܘܐܡܝ ܠܘܬܟܘܢ. ܟܕ ܥܪܩܘ ܡܢ ܩܕܡ ܫܐܘܠ. ܘܐܦ ܐܢܐ ܗܟܘܬ ܥܪܩܬ ܠܘܬܟ. ܠܢ ܕܝܢ ܗܫܐ ܡܬܩܒܠܐ
ܬܘܕܝܬܐ ܕܓܒܪܐ ܓܡܝܪܐ ܕܠܘܬ ܐܠܗܐ ܒܪܘܚ. ܛܘܒܝܗܘܢ ܠܕܟܦܢܝܢ ܠܟܐܢܘܬܐ
ܘܫܪܟܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܗ. * ܐܠܗܐ ܐܠܗܝ ܐܢܬ ܐܩܕܡ ܠܟ. ܨܗܝܐ ܠܟ ܢܦܫܝ ܘܡܣܟܝܐ 2
ܠܟ ܒܣܪܝ : * ܐܝܟ ܐܪܥܐ ܨܗܝܬܐ ܘܡܫܬܓܫܬܐ ܕܡܣܟܝܐ ܠܡܝܐ. ܗܟܢ ܚܝܪܬ ܒܩܘܫܬܐ : ܕܐܚܙܐ 3
ܪܒܘܬܟ ܘܫܘܒܚܟ. * ܡܛܠ ܕܛܒܝܢ ܛܝܒܘܬܟ ܡܢ ܚܝܐ : ܘܣܦܘܬܝ ܢܫܒܚܢܟ. * ܘܗܟܢ 4 5
ܐܒܪܟܟ ܒܚܝܝ : ܘܒܫܡܟ ܐܪܝܡ ܐܝܕܝ. * ܐܝܟ ܬܪܒܐ ܘܐܝܟ ܕܘܫܢܐ ܬܣܒܥ ܢܦܫܝ : ܘܒܣܦܘܬܐ 6
ܕܬܫܒܘܚܬܐ ܢܫܒܚܟ ܦܘܡܝ. * ܐܬܕܟܪܬܟ ܥܠ ܡܫܟܒܝ : ܘܒܠܠܝܐ ܪܢܝܬ ܒܟ. * ܡܛܠ 7 8
ܕܗܘܝܬ ܠܝ ܡܥܕܪܢܐ : ܘܒܛܠܠܐ ܕܟܢܦܝܟ ܐܬܛܫܝ. * ܢܦܩܬ ܢܦܫܝ ܒܬܪܟ : ܘܠܝ ܣܡܟܬ 9
ܝܡܝܢܟ. * ܗܢܘܢ ܒܥܘ ܕܢܘܒܕܘܢ ܢܦܫܝ : ܘܢܥܠܘܢ ܒܬܚܬܝܬܗ ܕܐܪܥܐ. * ܢܫܬܠܡܘܢ 10 11
ܠܚܪܒܐ ܘܡܢܬܐ ܠܬܥܠܐ ܢܗܘܘܢ : * ܘܡܠܟܐ ܢܚܕܐ ܒܐܠܗܐ. ܘܢܫܬܒܗܪ ܟܠ ܕܝܡܐ 12
ܒܗ : ܡܛܠ ܕܢܣܬܟܪ ܦܘܡܗܘܢ ܕܕܓܠܐ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܣܕ * ܐܬܟܬܒ ܠܕܘܝܕ 1
ܟܕ ܙܗܪܗ ܓܕ ܢܒܝܐ ܕܠܐ ܬܬܒ ܒܡܨܪܘܬ : ܕܫܐܘܠ ܒܥܐ ܠܡܩܛܠܟ. ܠܢ ܕܝܢ ܪܘܚܢܐܝܬ ܢܨܚܢܐ
ܕܐܬܠܝܛܐ. ܘܡܠܦܢܘܬܐ ܕܕܚܠܝ ܡܢ ܐܠܗܐ ܘܙܟܘܬܐ ܒܡܪܕܘܬܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܕ.
* ܫܡܥ ܐܠܗܐ ܩܠܝ ܟܕ ܐܬܟܫܦ ܠܟ : ܘܡܢ ܕܚܠܬܐ ܕܒܥܠܕܒܒܝ ܢܛܪܝܢܝ. 2

In Deo eſt ſalus mea & gloria mea; fortitudo 8
mea, & auxiliator meus atque ſpes mea Deus
eſt. Sperate in illum omni horâ popule, & 9
effundite corā eo cor veſtrū: quia Deus eſt
protectio noſtra: * *Diapſal.* * Et quaſi va- 10
por ſunt omnes filii hominū, mendaces, qui
in bilance opprimunt, & vani ſunt ſimul. Ne 11
fidatis oppreſſioni, & rapinā ne diligatis:
opibus, quum abundaverint, ne gaudeat cor
veſtrum. Semel dixit De⁹, & bis hæc audivi, 12
Quia robur Dei eſt, Et tibi Dñe gratia: quia 13
tu rependis viro juxta opera ſua.

PSAL. LXIII.

Davidis. Ad literam, Quum dixit regi 1
*Moab; Moratus eſt pater meus & mater
mea apud vos quando fugerunt à conſpectu
Saulis: & ego pariter confugi ad te. Nobis
autem modò præſumitur gratiarum actio vi-
ri perfecti apud Deum in ſpiritu. Beati ſiti-
entes juſtitiam, &c. Verſ. 25.*

DEus mi, De⁹ meus es tu, præſtolabor tibi: 2
ſitiens eſt tui anima mea, teque expectat
caro mea. Sicut terra ſitibunda & concita-
ta expetens aquam, Ita expectavi te cum ve- 3
ritate; ut viderē magnificentiā tuā, & maje-
ſtatē tuā. Quoniā meliores ſunt miſericor- 4
diæ tuæ vitâ: & labia mea laudabunt te; Pa- 5
riter benedicā te in vita mea, & in nomine
tuo levabo man⁹ meas. Sicut adeps & ſicut 6
pinguedo pingueſcat anima mea, & labiis
laudis glorificabit te os meum. Memor fui 7
tui ſuper ſtratum meū: & in noctib⁹ medita-
tus ſum de te. Quoniā fuiſti mihi adjutor, 8
& umbrâ alarum tuarū protegar. Egreſſa eſt 9
anima mea poſt te, & mihi innixa eſt dextera
tua. Ipſi voluerunt perdere animā meā: at 10
ingrediantur in infima terræ: Tradantur 11
gladio, & eſca vulpibus fiant. Rex lætabitur 12
in Deo, & gloriabitur omnis qui jurat per
ipſum: nam obſtruetur os mendacium.

PSAL. LXIV.

Editus à Davide, quum admonuit eum 1
Gad propheta dicens, *Ne maneas in Maſrot,
quoniam Saul quærit necem tuam. Nobis ve-
rò ſpiritualiter, triumphus agoniſtarum;
& inſtructio timentium Deum, atque victo-
ria in certamine. Verſ. 24.*

AUdi Deus vocem meā quum ſupplicavero 2
tibi, & à metu hoſtiū meorum ſerva me.

Verſio VULG. LAT.

8 In Deo ſalutare meum, & gloria mea : Deus auxilii mei, & ſpes mea in Deo eſt.
9 Sperate in eo omnis congregatio populi, effundite coram illo corda veſtra : Deus adjutor noſter in æternum.
10 Veruntamen vani filii hominum, mendaces filii hominum in ſtateris : ut de-
11 cipiant ipſi de vanitate in idipſum. Nolite ſperare in iniquitate, & rapinas nolite concupiſcere : divitiæ ſi affluant,
12 nolite cor apponere. Semel locutus eſt Deus, duo hæc audivi, Quia poteſtas
13 Dei eſt, Et tibi, Domine, miſericordia : quia tu reddes unicuique juxta opera ſua.

Pſalmus David,
1 Cùm eſſet in deſerto Idumææ.
(1 *Reg*. 22. 5.) LXII.

2 DEus Deus meus, ad te de luce vigilo. Sitivit in te anima mea, quàm multi-
3 pliciter tibi caro mea. In terra deſerta, & invia, & inaquoſa : ſic in Sancto apparui tibi, ut viderem virtutem tu-
4 am, & gloriam tuam. Quoniam melior eſt miſericordia tua ſuper vi-
5 tas : labia mea laudabunt te. Sic benedicam te in vita mea : & in nomine
6 tuo levabo manus meas. Sicut adipe & pinguedine repleatur anima mea : & labiis exultationis laudabit os meum.
7 Si memor fui tuî ſuper ſtratum meum,
8 in matutinis meditabor in te : Quia fuiſti adjutor meus. Et in velamento alarum
9 tuarum exultabo, Adhæſit anima mea
10 poſt te : me ſuſcepit dextera tua. Ipſi verò in vanum quæſierunt animã meam,
11 introibunt in inferiora terræ : Tradentur in manus gladii, partes vulpiũ erunt.
12 Rex verò lætabitur in Deo, laudabuntur omnes qui jurant in eo : quia obſtructum eſt os loquentium iniqua.

1 In finem,
Pſalmus David. LXIII.

2 EXaudi, Deus, orationem meam cùm deprecor : à timore inimici eripe animam meam.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

8 Ἐπὶ τῷ Θεῷ τὸ σωτήριόν μου, καὶ ἡ δόξα μου. ὁ Θεὸς τῆς βοηθείας μου, καὶ ἡ ἐλπίς μου ἐπὶ τῷ Θεῷ.
9 Ἐλπίσατε ἐπ' αὐτὸν πᾶσα συναγωγὴ λαοῦ· ἐκχέετε ἐνώπιον αὐτοῦ τὰς καρδίας ὑμῶν, ὅτι ὁ Θεὸς
10 βοηθὸς ἡμῶν. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. Πλὴν μάταιοι οἱ υἱοὶ τῶν ἀνθρώπων, ψευδεῖς οἱ υἱοὶ τῶν ἀνθρώπων ἐν ζυγοῖς τοῦ ἀδικῆσαι, αὐτοὶ ἐκ ματαιότητος ἐπὶ τὸ
11 αὐτό. Μὴ ἐλπίζετε ἐπ' ἀδικίαν, καὶ ἐπὶ ἁρπάγματα μὴ ἐπιποθεῖτε· πλοῦτος ἐὰν ῥέῃ, μὴ προσ-
12 τίθεσθε καρδίαν. Ἅπαξ ἐλάλησεν ὁ Θεὸς, δύο ταῦ-
13 τα ἤκουσα, Ὅτι τὸ κράτος τοῦ Θεοῦ, Καὶ σοῦ κύριε τὸ ἔλεος, ὅτι σὺ ἀποδώσεις ἑκάστῳ κατὰ τὰ ἔργα αὐτοῦ.

1 Ψαλμὸς τῷ Δαυΐδ, ἐν τῷ εἶναι αὐτὸν ἐν τῇ ἐρήμῳ τῆς Ἰδουμαίας. ξβ´.

2 Ὁ Θεὸς ὁ Θεός μου πρὸς σὲ ὀρθρίζω, ἐδίψη-
3 σέ σοι ἡ ψυχή μου, ποσαπλῶς σοι ἡ σάρξ μου, Ἐν γῇ ἐρήμῳ καὶ ἀβάτῳ καὶ ἀνύδρῳ, οὕτως ἐν τῷ ἁγίῳ ὤφθην σοι, τοῦ ἰδεῖν τὴν δύναμίν σου καὶ τὴν δόξαν
4 σου. Ὅτι κρεῖσσον τὸ ἔλεός σου ὑπὲρ ζωάς, τὰ
5 χείλη μου ἐπαινέσουσί σε. Οὕτως εὐλογήσω σε ἐν τῇ ζωῇ μου, ἐν τῷ ὀνόματί σου ἀρῶ τὰς χεῖράς
5 μου. Ὡσεὶ στέατος καὶ πιότητος ἐμπλησθείη ἡ ψυχή μου, καὶ χείλη ἀγαλλιάσεως αἰνέσει τὸ ὄνομά σου.
7 Εἰ ἐμνημόνευόν σου ἐπὶ τῆς στρωμνῆς μου, ἐν τοῖς
8 ὄρθροις ἐμελέτων εἰς σέ. Ὅτι ἐγενήθης βοηθός μου, καὶ ἐν τῇ σκέπῃ τῶν πτερύγων σου ἀγαλλιάσο-
9 μαι. Ἐκολλήθη ἡ ψυχή μου ὀπίσω σου, ἐμοῦ ἀντ-
10 ελάβετο ἡ δεξιά σου. Αὐτοὶ δὲ εἰς μάτην ἐζήτησαν τὴν ψυχήν μου, εἰσελεύσονται εἰς τὰ κατώτατα τῆς
11 γῆς, Παραδοθήσονται εἰς χεῖρας ῥομφαίας, μερίδες
12 ἀλωπέκων ἔσονται. Ὁ δὲ βασιλεὺς εὐφρανθήσεται ἐπὶ τῷ Θεῷ, ἐπαινεθήσεται πᾶς ὁ ὀμνύων ἐν αὐτῷ, ὅτι ἐνεφράγη στόμα λαλούντων ἄδικα.

1 Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυΐδ.
ξγ´.

2 Εἰσάκουσον ὁ Θεὸς τῆς προσευχῆς μου ἐν τῷ δέεσθαί με πρὸς σέ, ἀπὸ φόβου ἐχθροῦ ἐξελοῦ τὴν ψυχήν μου.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

7 In Deo ſalutare meum, & [c] gloria mea. Deus auxilii mei, & 8
ſpes mea [d] in Deo eſt. 8 Sperate in eo omnis congregatio (g) populi; effundite coram illo corda 9
veſtra: quia Deus adjutor (h) noſter. DIAPSALMA. 9 (i) Veruntamen [e] vani filii hominũ, 10
mendaces filii hominum [f] in ſtateris : ut (k) decipiant (l) ipſi de vanitate in idipſum. Nolite 11
ſperare ſuper iniquitatẽ, 10 & (m) ſuper rapinas nolite [g] concupiſcere: divitiæ ſi affluant, [h] nolite cor apponere. 11 Semel 12
locutus eſt Deus: [i] duo hæc audivi, Quia poteſtas Dei eſt, Et 13
(n) tua, Domine, miſericordia : quia tu reddes unicuique ſecundùm opera ſua.

Pſalmus ipſi David, cùm eſſet in deſerto Idumææ. *LXII.* 1

1 [a] DEus, Deus meus, ad te de luce vigilo. 2 Sitivit (a) tibi 2
anima mea, (b) quàm multipliciter tibi (c) caro mea, 3 In terra 3
deſerta, [b] & invia, & inaquoſa, ſic in Sancto apparui tibi ; ut viderem virtutem tuam, & gloriam tuam. 4 Quoniam melior 4
eſt miſericordia tua ſuper vitas : labia mea laudabunt te. 5 Sic be- 5
nedicam te in vita mea: in nomine tuo levabo manus meas.
6 (d) Sicut adipe, & pinguedine 6
repleatur anima mea, (e) Et [c] labia exultationis laudabunt nomẽ
tuum. 7 Si (f) memoratus ſum 7
tuî ſuper ſtratum meum, in matutinis meditabor in te; Quia fu- 8
iſti adjutor meus: 8 & in [d] velamento alarum tuarum exultabo. Adhæſit anima mea poſt te : 9
me ſuſcepit dextera tua. 9 Ipſi 10
verò in vanum quæſierunt animã meam: introibunt in inferi- 11
ora terræ: Tradentur in manus gladii: partes vulpium [e] erunt. 10 Rex verò læ- 12
tabitur in Deo : [f] laudabitur omnis qui jurat in eo: quia obſtructum eſt os loquentium iniqua.

In finem, pſalmus ipſi David. 1
LXIII.

1 EXaudi, Deus, (a) orationem 2
meam, [a] cùm (b) deprecor ad te: à timore inimici eripe animã meam.

Verſio ÆTHIOPICA.

በእግዚአብሔር ፡ መድኃኒትየ ፡፡ ወበእግዚ 7
አብሔር ፡ ክብርየ ፡፡ አምላክ ፡ ረድኤትየ ፡
ወተስፋየ ፡ እግዚአብሔር ፡፡=፡ ተወከሉ ፡ 8
ቦቱ ፡ ኵልክሙ ፡ ማኅበረ ፡ አሕዛብ ፡፡ ወክዐ
ው ፡ ልበክሙ ፡ ቅድሜሁ ፡፡ ወእግዚአብሔ
ር ፡ ውእቱ ፡ ረዳኢነ ፡፡=፡ ወባሕቱ ፡ ከንቱ ፡ 9
ኵሉ ፡ ደቂቀ ፡ እጓለ ፡ እመሕያው ፡፡ ሐሳውያ
ን ፡ ደቂቀ ፡ እጓለ ፡ እመሕያው ፡ ወይዔምፁ ፡
መደልው ፡፡ እሙንቱሰ ፡ እምከንቱ ፡ ውስተ ፡ ከን
ቱ ፡ ክመ ፡፡ ኢትሰፈውዋ ፡ ለዐመፃ ፡፡=፡
ወኢትትአመንዎ ፡ ለሀይድ ፡፡ ብዕል ፡ ለእመ ፡ 10
በዝኀ ፡ ኢታፅብዑ ፡ ልበክሙ ፡፡=፡ ምዕረ ፡ 11
ነበበ ፡ እግዚአብሔር ፡ ወዘንተ ፡ ክመ ፡ ሰማዕ
ኩ ፡፡ እስመ ፡ ዘእግዚአብሔር ፡ ሣህል ፡፡
ወዚአከ ፡ እግዚኦ ፡ ኀይል ፡፡ እስመ ፡ አንተ ፡
ትፈድዮ ፡ ለኵሉ ፡ በከመ ፡ ምግባሩ ፡፡=፡
መዝሙር ፡ ዘደዊት ፡ አመ ፡ ሀሎ ፡ ውስተ ፡
ገደመ ፡ ኢዶምያስ ፡፡

፷፪ አምላኪየ ፡ አምላኪየ ፡ እገይሥ ፡ ኀቤ 1
ከ ፡፡=፡ ጸምአት ፡ ነፍስየ ፡ ለከ ፡፡ እፎ ፡ 2
እስፋሕ ፡ ለከ ፡ ሥጋየ ፡፡=፡ በምድረ ፡ በድ 3
ው ፡ ኀበ ፡ አልቦ ፡ ዕፅ ፡ ወማይ ፡፡ ከመዝ ፡ በመ
ቅደስከ ፡ አስተርአይኩከ ፡፡ ከመ ፡ እእምር ፡
ኀይለከ ፡ ወስብሐቲከ ፡፡=፡ እስመ ፡ ይኄይስ ፡ 4
እምሕይው ፡ ሣህልከ ፡፡ ከናፍሪየ ፡ ይሴብሑ
ከ ፡፡=፡ ከመዝ ፡ እባርከከ ፡ በሕይወትየ ፡፡ 5
ወበስመ ፡ ዚአከ ፡ አነሥእ ፡ እደዊየ ፡፡=፡
ከመዝ ፡ እምስቡሕ ፡ ወእምአንጕዕ ፡ ጸግበ 6
ት ፡ ነፍስየ ፡፡ ከናፍሪየ ፡ ፍሡሐት ፡ ይሴብሑ ፡
ለስምከ ፡፡=፡ ወበመስካብየኒ ፡ እዜከረከ ፡፡ 7
በጽባሕ ፡ አነብብ ፡ ለከ ፡ እስመ ፡ ኮንከኒ ፡ ረደ
ኤየ ፡፡=፡ ወእትዌከል ፡ በጽላሎተ ፡ ክንፊ 8
ከ ፡፡ ተለወት ፡ ነፍስየ ፡ ድኅሬከ ፡፡ ሊተሰ ፡
ተወክፈተኒ ፡ የማንከ ፡፡=፡ እሙንቱሰ ፡ ለከ 9
ንቱ ፡ ኀሠሠዋ ፡ ለነፍስየ ፡፡ ለይባኡ ፡ ውስተ ፡
ማዕመቅቲሃ ፡ ለምድር ፡፡ ወይግብኡ ፡ ውስተ ፡
እደ ፡ ሰይፍ ፡፡ ክፍለ ፡ ቈናጽል ፡ ለይኩኑ ፡፡=፡
ወንጉሥሰ ፡ ይትፌሣሕ ፡ በእግዚአብሔር ፡፡ 10
ወይከብር ፡ ኵሉ ፡ ዘይመሐል ፡ ቦቱ ፡፡ እስ
መ ፡ ይትፈጸም ፡ አፈ ፡ ዘይነብብ ፡ ዐመፃ ፡፡

ፍጻሜ ፡ መዝሙር ፡ ዘደዊት ፡፡

፷፫ ስምዓኒ ፡ እግዚኦ ፡ ጸሎትየ ፡ ዘሰአልኩ ፡ 1
ኀቤከ ፡፡ እምትሕዝብተ ፡ ጸላኢ ፡ አድኅና ፡
ለነፍስየ ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [c] in Deo gloria mea. [d] Deus eſt. [e] vani omnes [f] & iniquè agit omnis homini placens. Ipſi de vanitate in vanitatem ſimul. [g] confidere: [h] ne intumeſcat cor veſtrum. [i] & iſtud ſimul audivi: quia miſericordia Dei eſt, & tua Domine potentia: *PSAL. LXII.* Deus meus, Deus meus, [b] ubi nec arbor eſt nec aqua, [c] labia mea [d] umbra alarum tuarum confidam. [e] ſint. [f] benedicet omnis qui *PSAL.* [a] quam à te poſtulo:

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

8 9 *خلاصي ومجدي هما بالاله* الله معيني وعلي الله توكلت *توكلوا عليه يا جميع الشعوب *ابتهلوا
10 اليه بقلوبكم فانه اله عونكم *جميع بني البشر كالفي يذهبون* والذين يبخسون بالموازين*
11 كاذبون* وهم باجمعهم خائبون *لا تعتمدوا على الظلم* ولا تحبوا الخطف* ولا تفرح قلوبكم
12 13 بما تذخرونه* مرة تكلم الله هولاء سمعناهن مرتين *ان العز لله* ولك يا رب الرحمة* وانت
المجازي كل واحد واحد كعمله* اللبلويا*

1 *المزمور الثاني والستون* *لداود حين كان في برية ادوم* وهو استيخن ك*
2 *اللهم يا الهي اليك ابتكرت* لان نفسي ظمئت اليك* ورجاك جسدي في ارض مقفرة*
3 4 وموضع غير مسلوك* ومكان عديم الماء* هكذا ظهرت لك في القدس* لاري قوتك ومجدك *لان
5 رحمتك تختار* افضل من الحياة* شفتاي يباركانك* وهكذا اباركك في حياتي* وباسمك ارفع
6 7 يدي* وتشبع نفسي مثل شحم ودسم* شفاه التهليل تبارك اسمك *كنت اذكرك على
8 9 فراشي* وفي اوقات الاسحار انت فكري *لانك كنت لي معينا* وبظلال كنفك ابتهج *تبعت
10 11 نفسي اثارك* وعضدتني يمينك *هم طلبوا نفسي باطلا* فيهبطون الى اسافل الارض *والى يد
12 السيف يسلمون* وللثعالب طعاما يكونون *والملك يفرح بالله* ويفتخر كل من يحلف به*
لانه سد فم المتكلمين بالظلم* اللبلويا*

1 *المزمور الثالث والستون* *لداود لما طارده طالوت* وهو كط استيخن*
2 *اللهم تقبل صلاتي اذا طلبت اليك* ومن جزع العدو انقذ نفسي*

Salus mea & gloria mea ſunt in Deo : Deus eſt adjutor meus, & Deo ſum fretus. 8
Confidite in eo, O omnes populi, ſupplicate eum cordibus veſtris: quia ipſe eſt Deus adjutorii veſtri. 9
Omnes filii hominum velut umbra prætereunt : & qui fœdant in ſtateris, mendaces ſunt, & ipſi omnes deceptores ſunt. 10
Ne innitamini flagitio, neque diligatis rapinam, & ne gaudeant corda veſtra in eo quod theſaurizatis. 11
Semel locutus eſt Deus, hæc audivimus bis; Quòd magnificentia Dei eſt, 12
& tibi O Domine, miſericordia : & tu es retributurus unicuique ſecundùm opus ejus. Alleluja. 13

PSAL. LXII.
Davidis, quum eſſet in deſerto Edom. Verſ. 20. 1

DEus, O Deus meus, ad te anteverti manè, quia anima mea ſitivit te, téq; ſperavit corpus meum in terra deſerta & loco invio locoque carente aquâ : 2
Sic apparui tibi in ſanctuario, ut viderem potentiam tuam, & gloriam tuam. 3
Quoniã miſericordia tua eligibilior eſt vitâ, labia mea te benedicent, 4
Atq; ita benedicam te in vita mea, & in nomine tuo levabo manus meas. 5
Et ſaturabitur anima mea quaſi adipe & pinguedine: labia exultationis benedicent nomen tuum. 6
Recordabar tui ſuper ſtrato meo, & temporibus matutinis tu es cogitatio mea: 7
Quia fuiſti mihi adjutor, & in umbra protectionis tuæ exhilarabor. 8
Secuta eſt anima mea veſtigia tua, & amplexata eſt me dextera tua, 9
Ipſi poſtulaverunt animam meam iniquè, iccirco ruent in ima terræ, 10
Et in manum gladii tradentur, & vulpibus eſca fient. 11
At rex lætabitur in Deo, & gloriabitur omnis qui jurat in eo : quoniam ipſe obturavit os loquentium ſcelus. Alleluja. 12

PSAL. LXIII.
Davidis, quando perſecutus eſt eum Saul. Verſ. 29. 1

DEus, accepta orationem meam cùm ſupplicavero tibi, & à timore inimici redime animam meam : 2

תהלים : סה

.Iniquitatem operantium tumultu à : malignorum *ſecreto* à me *Abſcondes*

3 תַּסְתִּירֵנִי מִסּוֹד מְרֵעִים מֵרִגְשַׁת פֹּעֲלֵי אָוֶן׃

.amarum verbum ſuā ſagittam tetenderunt : ſuā linguā gladium ut acuerunt *Qui*

4 אֲשֶׁר שָׁנְנוּ כַחֶרֶב לְשׁוֹנָם דָּרְכוּ חִצָּם דָּבָר מָר׃

.*timebunt* non & ,eū *ſagittabunt* ſubitò : perfectum abſconditis in *ſagittandum Ad*

5 לִירוֹת בַּמִּסְתָּרִים תָּם פִּתְאֹם יֹרֻהוּ וְלֹא יִירָאוּ׃

, dixerunt : laqueos *abdendum ad narrabunt* : nequam verbum ſibiipſis *Roborabunt*

6 יְחַזְּקוּ־לָמוֹ ׀ דָּבָר רָע יְסַפְּרוּ לִטְמוֹן מוֹקְשִׁים אָמְרוּ

: *perveſtigatum* ſcrutiniū perfecerunt , iniquitates *Inveſtigabunt* ? eos videbit Quis

7 מִי יִרְאֶה־לָּמוֹ׃ יַחְפְּשׂוּ־עוֹלֹת תַּמְנוּ חֵפֶשׂ מְחֻפָּשׂ

: ſubitò ſagitta Deus eos ſagittavit Et .profundum cor & , *viri* intimū &

8 וְקֶרֶב אִישׁ וְלֵב עָמֹק׃ וַיֹּרֵם אֱלֹהִים חֵץ פִּתְאוֹם

: ſuā linguam ſemetipſis in *eam* facient impingere Et .eorum *percuſſiones* fuerunt

9 הָיוּ מַכּוֹתָם׃ וַיַּכְשִׁילוּהוּ עָלֵימוֹ לְשׁוֹנָם

annunciaverunt & ,homines omnes timuerunt Et .eos *in videns omnis ſe amovebunt*

10 יִתְנֹדְדוּ כָּל־רֹאֵה בָם׃ וַיִּירְאוּ כָּל־אָדָם וַיַּגִּידוּ

ſperabit & ,Domino in juſtus Lætabitur .intellexerunt ejus opus & : Dei opus

11 פֹּעַל אֱלֹהִים וּמַעֲשֵׂהוּ הִשְׂכִּילוּ׃ יִשְׂמַח צַדִּיק בַּיהוָה וְחָסָה

.corde recti omnes *gloriabuntur* & : eo in

בוֹ וְיִתְהַלְלוּ כָּל־יִשְׁרֵי־לֵב׃

PSAL. LXV. סה

Deus laus *ſilentium* Tibi .canticum , David ipſi cantus Victori

1 2 לַמְנַצֵּחַ מִזְמוֹר לְדָוִד שִׁיר׃ לְךָ דֻמִיָּה תְהִלָּה ׀ אֱלֹהִים

.*venient* caro omnis te ad uſque ; orationē *Audiens* .votum reddetur tibi & ;Sijon in

3 בְּצִיּוֹן וּלְךָ יְשֻׁלַּם־נֶדֶר׃ שֹׁמֵעַ תְּפִלָּה עָדֶיךָ כָּל־בָּשָׂר יָבֹאוּ׃

.*eis* propitiaberis tu noſtris prævaricationibus : *mihi* prævaluerunt *iniquitatum Verba*

4 דִּבְרֵי עֲוֺנֹת גָּבְרוּ מֶנִּי פְּשָׁעֵינוּ אַתָּה תְכַפְּרֵם׃

bono in ſaturabimur , *tu atria* habitabit ,*facies* appropinquare & ,*eliges Felicitates*

5 אַשְׁרֵי ׀ תִּבְחַר וּתְקָרֵב יִשְׁכֹּן חֲצֵרֶיךָ נִשְׂבְּעָה בְּטוּב

Deus *nobis reſpondebis* juſtitia in *Terribilia* .tui templi ſancti ; tuæ domus

6 בֵּיתֶךָ קְדֹשׁ הֵיכָלֶךָ׃ נוֹרָאוֹת ׀ בְּצֶדֶק תַּעֲנֵנוּ אֱלֹהֵי

Firmans .*longinquorum* maris & , terræ finium omnium ſpes : noſtræ ſalutis

7 יִשְׁעֵנוּ מִבְטָח כָּל־קַצְוֵי־אֶרֶץ וְיָם רְחֹקִים׃ מֵכִין ׀

ſonitum *Compeſcens* .fortitudine in accinctus : ſua potentia in montes

8 הָרִים בְּכֹחוֹ נֶאְזָר בִּגְבוּרָה׃ מַשְׁבִּיחַ ׀ שְׁאוֹן

timuerunt Et .gentium *turbam* & , eorum fluctuum ſonitum , marium

9 יַמִּים שְׁאוֹן גַּלֵּיהֶם וַהֲמוֹן לְאֻמִּים׃ וַיִּירְאוּ

Viſitâſti .facies laudare *veſperæ & auroræ exitus* : tuis ſignis à finium habitatores

10 יֹשְׁבֵי קְצָוֺת מֵאוֹתֹתֶיךָ מוֹצָאֵי בֹקֶר וָעֶרֶב תַּרְנִין׃ פָּקַדְתָּ

: aquis plenus Dei rivus ; eam *ditabis* plurimū ,*ei intuliſti deſiderium &* ,terram

הָאָרֶץ וַתְּשֹׁקְקֶהָ רַבַּת תַּעְשְׁרֶנָּה פֶּלֶג אֱלֹהִים מָלֵא מָיִם

fac deſcendere ,inebria ejus *Liras* .eam *parabis* ſic quia ,eorū frumentū *parabis*

11 תָּכִין דְּגָנָם כִּי־כֵן תְּכִינֶהָ׃ תְּלָמֶיהָ רַוֵּה נַחֵת

.*benedices* ejus germini ,eam *liquefacies* imbribus in : ejus *ſulcos*

גְּדוּדֶיהָ בִּרְבִיבִים תְּמֹגְגֶנָּה צִמְחָהּ תְּבָרֵךְ׃

תרגום TARGUM.

3 תִּטְמְרִנַּנִי מֵרָזֵיהוֹן דִּמְבָאֲשִׁין מֵאִתְרְגוֹשַׁת עָבְדֵי
4 שְׁקַר : דִּי שְׁנִינוּ הֵיךְ סַיְפָא לִישָׁנְהוֹן נְגַדוּ
קַשְׁתְּהוֹן מְשַׁחוּ גִּרְרֵיהוֹן סַמָּא דִּקְטוֹל וּמְרִיר :
5 לְגָרָאָה בְּטוּמְרַיָּא דְּלָא מוּם בִּתְכֵיף יְגָרוּן לֵיהּ
6 וְלָא יִדְחֲלוּן : יִתְקְפוּן לְהוֹן פִּתְגָם בִּישׁ יִשְׁתָּעוּן
7 לְמִכְמַן תַּקְלָן אָמְרִין מַן חָמֵי לְהוֹן : יְבַלְּשׁוּן
לְמִשְׁכַּח עִילִּין לְשֵׁיצָאָה זַכָּאִין בְּלוּשָׁא
דְּמִתְבַּלֵּשׁ בְּגוּף בַּר נָשָׁא וְהִרְהוּרֵי לִבָּא עֲמִיקָא:
8 וְיִגְרֵי עֲלֵיהוֹן אֱלָהָא גִּירָא בִּתְכֵיף וִיהוֹן עַל
9 מַחֲתֵיהוֹן : וְיִתְקְלוּן לְהוֹן לִישָׁנְהוֹן יְטַלְטְלוּן
10 כָּל דְּחָמֵי בְהוֹן : וְיִדְחֲלוּן כָּל בְּנֵי נָשָׁא וִיחַוּוּן
עוֹבָדָא דַּיְיָ אֱלֹהִים וְעוֹבָדוֹהִי יְהֶוְיָן מִתְבַּיְנִין :
11 יֶחְדֵּי צַדִּיקָא בַּיְיָ וְיִתְרְחֵיץ בְּמֵימְרֵיהּ וְיִשְׁתַּבְּחוּן
כָּל תְּרִיצֵי לִבָּא:

סה

1 2 לְשַׁבָּחָא תּוּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד שִׁירְתָא : קֳדָמָךְ
מִתְחַשְׁבָא הֵיךְ שְׁתִיקוּתָא תּוּשְׁבַּחְתָּא אֱלָהָא
3 דִּי שְׁכִנְתֵּיהּ בְּצִיּוֹן וְלָךְ יִשְׁתַּלְּמוּן נִדְרַיָּא : מְקַבֵּל
4 צְלוֹתָא לְוָתָךְ כָּל בְּנֵי בִסְרָא יֵיתוּן : פִּתְגָּמֵי עֲוַיָן
5 תַּקִּפוּ מִנִּי סוּרְחָנָנָא אַנְתְּ תְּכַפְּרִנּוּן : טוּבוֹי
דְּתִבְחַר וּתְקָרֵב יִשְׁרֵי דָּרָתָךְ יֵימְרוּן צַדִּיקֵי
6 נִשְׂבַּע בְּטוּב בֵּיתָךְ קוּדְשָׁא דְּהֵיכְלָךְ : דְּחִילָן
בְּצִדְקְתָא תְּקַבֵּל צְלוֹתְהוֹן אֱלָהָא פּוּרְקָנָא
סַבְרָא דְּכָל סְיָפֵי אַרְעָא וְנַגְוָת יַמָּא דִּרְחִיקִין
7 מִן יַבֶּשְׁתָּא : דְּאַתְקִין מְזוֹנַיָּא לְיַעֲלֵי טוּרַיָּא בְּכֹחַ
8 גְּבוּרְתֵּיהּ מְזָרֵז קָמוּר בִּגְבוּרְתָּא : מַמְאִךְ רְגוּשׁ
9 יַמַּיָּא וּרְגוּשׁ גַּלֵּיהוֹן וְרִכְפַּת אוּמַּיָּא: וּדְחִילוּ יָתְבֵי
סְיָפִין מֵאָתְוָתָךְ מַפְקָנֵי צַפְרָא וְרַמְשָׁא תְּסַדֵּר
10 בְּפוּמְהוֹן שְׁבָחָא : אַדְכַּרְתָּא אַרְעָא וְאַשְׁקֵיתָהּ
סוּגֵי עֲלַלְתָּא תַּעְתְּרִנָּהּ מִן קוּבְתָא דֶאֱלָהָא דִי
בִּשְׁמַיָּא מַלְיָא מִטְרָא תַּתְקִין עִבּוּרְהוֹן אֲרוּם
11 הֵיכְנָא תְּשַׁכְלְלִנַּהּ : מַרְבִּיָנֵי צִמְחָהָא רַוֵּי אַשְׁרָךְ
גִּיסְהָא צִמְחָהָא תְּבָרֵךְ :

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Abſcondes me à ſecretis pravorum, à fremitu operantium iniquitatem. 3 Qui exacuerunt ſicut gladium linguas ſuas; tetenderunt arcus ſuos, unxerunt ſagittas ſuas veneno mortifero et amaro. 4 Ut ſagittarent occultè immaculatum : ſubitò ſagittabunt eum; & non timebunt. 5 Roborabunt ſibi verbum iniquum, narrabunt, ut abſcondant laqueos, dicentes niminem eos videre. 6 Perveſtigabunt, ut inveniant iniquitates ad diſperdendum juſtos, machinationem, quæ exquiritur intra hominem, et cogitationes cordis profundi. 7 Et excutiet in eos Deus ſagittam repentè, et *narrabunt* plagas eorum. 8 Et offendent ſeipſos lingua ſua, & movebunt [*capita ſua*] quicunque conſpexerint eos. 9 Et timebunt omnes filii hominum, et annunciabunt opus *Domini* Dei, et opera ejus intelligent. 10 Lætabitur juſtus in Domino, & ſperabit in verbo ejus, & laudabuntur omnes recti corde. 11

Ad laudandum, hymnus Davidis & canticum. 1

PSAL. LXV.

Coram te reputatur ſicut ſilentium laus, Deus cujus Majeſtas [*reſidet*] in Sion ; & tibi reddentur vota. 2 Receptor orationis ad te omnes filii carnis venient. 3 Verba iniquitatū potentiora me fuerunt: peccata noſtra tu expiabis. 4 Beatus *quem elegeris & ſuſceperis*, habitabit in atriis tuis: dicentque juſti, Saturabimur bonitate domus tuæ, ſanctitate templi tui. 5 Timenda in juſtitia ; *exaudies* orationem *illorū* Deus redemptio [*noſtra*,] ſpes omnium finium terræ, et inſularum maris, quæ diſtant ab arida. 6 Qui præparat cibaria ibicibus montium, in virtute fortitudinis ſuæ : accingens ſe cingulo in robore. 7 Compeſcens ſonitum marium, ſonitum undarum ejus, & tumultum gentium. 8 Et timebunt incolæ finium à ſignis tuis : et ordinabis laudem in ore egreſſionum matutini & veſperæ. 9 Recordatus es terræ, et potum dediſti ei ; ubertate fructuum ditabis eam, ex fonticulo Dei, qui eſt in cœlis, qui plenus eſt imbribus, præparabis ſegetes eorum, cùm ſic eam fundaveris. 10 *Sulcos germinum* ejus inebria, compeſcas cohortes ejus, germini ejus benedicas. 11

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

3 * ܛܫܝܢܝ ܡܢ ܟܢܫܗ ܕܒܝܫܐ : ܘܡܢ ܗܘܦܟܐ ܕܥܒܕܝ ܥܘܠܐ. * ܕܠܛܫܘ ܠܫܢܗܘܢ
4
5 ܐܝܟ ܣܝܦܐ : ܘܡܠܬܗܘܢ ܐܝܟ ܓܐܪܐ. * ܠܡܫܕܝܘ ܒܡܛܫܝܬܐ ܠܕܠܐ ܡܘܡܐ : * ܡܢ ܫܠܝܐ ܢܫܕܘܢܝܗܝ
6
ܒܗ ܘܠܐ ܢܬܚܙܘܢ. ܘܐܥܫܢܘ ܡܠܬܗܘܢ ܒܝܫܬܐ : ܘܐܬܚܫܒܘ ܠܡܛܫܝܘ ܦܚܐ. ܘܐܡܪܘ ܕܡܢܘ
ܚܙܐ ܠܢ : * ܐܬܚܫܒܘ ܥܘܠܐ ܘܫܠܡܘ. ܒܥܩܒܐ ܥܘܠܐ ܡܢ ܓܘܗ ܕܒܪܢܫܐ : ܘܡܢ ܠܒܗ
7
8 ܥܡܝܩܐ. * ܢܬܬܪܝܡ ܐܠܗܐ ܘܢܫܕܐ ܒܗܘܢ ܓܐܪܐ ܡܢ ܫܠܝܐ : * ܘܢܬܡܚܠܢ ܠܫܢܝܗܘܢ.
9
10 ܘܢܕܚܠܘܢ ܟܠ ܕܚܙܝܢ ܠܗܘܢ :* ܘܢܕܚܠܘܢ ܟܠ ܒܢܝܢܫܐ. ܘܢܚܘܘܢ ܥܒܕܘܗܝ ܕܐܠܗܐ :
11 ܘܥܒܕܐ ܕܐܝܕܘܗܝ ܢܣܬܟܠܘܢ. * ܢܚܕܘܢ ܙܕܝܩܐ ܒܡܪܝܐ ܘܢܬܬܟܠܘܢ ܥܠܘܗܝ : ܘܢܫܒܚܘܢܝܗܝ
ܟܠ ܬܪܝܨܝ ܠܒܐ.

* ܡܙܡܘܪܐ * ܕܣܗ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܡܦܩܢܘܬܐ ܕܟܕ ܐܣܩ ܗܘܐ ܐܪܘܢܐ ܕܐܠܗܐ ܠܨܗܝܘܢ. ܘܠܢ ܡܚܘܐ ܪܘܚܢܐܝܬ ܟܪܘܙܘܬܐ
ܒܗ ܕܫܠܝܚܐ ܕܗܦܟܘ ܥܡܡܐ ܒܣܒܪܬܐ ܕܐܘܢܓܠܝܘܢ. ܦܬܓܡ ܠܒ.
2 * ܠܟ ܝܐܝܐ ܬܫܒܘܚܬܐ ܐܠܗܐ ܒܨܗܝܘܢ. ܘܠܟ ܡܬܦܪܥ ܢܕܪܐ. * ܫܡܥ ܨܠܘܬܝ : ܠܘܬܟ
3
4 ܟܠ ܒܣܪ ܢܐܬܐ. * ܡܠܝ ܕܥܘܠܐ ܚܣܢܘ ܡܢܝ : ܘܚܛܗܝ ܐܢܬ ܚܣܐ ܐܢܬ. * ܛܘܒܘܗܝ
5
ܠܡܢ ܕܨܒܐ ܐܢܬ ܒܗ : ܘܡܩܪܒ ܐܢܬ ܠܗ ܕܢܥܡܪ ܒܕܪܝܟ. ܘܢܣܒܥ ܡܢ ܛܒܬܗ ܕܒܝܬܟ :
6 ܘܡܢ ܩܕܝܫܘܬܗ ܕܗܝܟܠܟ. * ܘܡܢ ܙܕܝܩܘܬܟ ܕܚܝܠܬܐ : ܥܢܝܢܝ ܐܠܗܐ ܦܪܘܩܢ. ܣܒܪܐ
7 ܕܟܠܗܘܢ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ : ܘܕܥܡܡܐ ܪܚܝܩܐ. * ܡܬܩܢ ܛܘܪܐ ܒܚܝܠܟ ܘܡܚܝܠ
8 ܒܓܢܒܪܘܬܟ : * ܡܫܬܩ ܡܫܒܚܘܬܐ ܕܝܡܡܐ ܘܩܠܐ ܕܓܠܠܝܗܘܢ. ܢܬܕܠܚܘܢ ܥܡܡܐ.
9 * ܘܢܕܚܠܘܢ ܥܡܘܪܝܗ ܕܐܪܥܐ : ܡܢ ܐܬܘܬܟ ܘܡܢ ܡܦܩܢܐ ܕܨܦܪܐ ܘܕܪܡܫܐ. ܒܫܘܒܚܐ * ܐܬܕܟܪܬܗ
10
ܠܐܪܥܐ : ܫܝܢܬܗ ܘܒܣܘܓܐܐ ܐܥܬܪܬܗ. ܦܠܓܐ ܕܐܠܗܐ ܡܠܐ ܡܝܐ : ܛܝܒܬ ܡܐܟܘܠܬܗܘܢ
11 ܟܕ ܫܪܪܬܗ. * ܬܠܡܝܗ ܐܪܘܝܬ ܕܢܦܩܘܢ ܦܐܪܘܗܝ : ܒܪܣܝܣܐ ܢܬܪܒܐ ܡܥܒܕܢܗ
ܘܬܬܒܪܟ.

Protege me à ſcelere maligni, & à converſatione operantium iniquitatem, 3 Qui acuerunt linguam ſuam ut gladium & ſermonem ſuum ut ſagittam, 4 Ad jaculandum in abſcondito innocentem; ex improviſo jaculabuntur in eum & non videbuntur. 5 Et magnificârunt ſermonem ſuum peſſimum, & cogitârunt de abſcondendis laqueis, ac dixerunt, Quis videt nos? 6 Meditati ſunt ſceleſti, atque abſumpti ſunt in perſcrutanda iniquitate ex intimis hominis & è corde ipſius profundo. 7 Exaltabitur Deus & jaciet in eos ſagittam repentè. 8 Et infirmabuntur linguæ eorum. 9 Et timebunt omnes qui videbunt illos. Ac 10 metuent cuncti homines, patefacientque opera Dei, & opus manuum ejus intuebuntur. Exultabunt juſti in Domino, & confident in 11 eo, & laudabunt eum omnes recti corde.

PSAL. LXV.

Davidis. Ad literam, Quùm aſſumpſit arcam Dei ad Sion. Et nobis proinde ſpiritualis ſenſus *innuit in eo prædicationem Apoſtolorum, qui reduxerunt Gentes per annuntiationem Evangelii. Verſ. 32.* 1

TE decet laus Deus in Sion, tibíque perſolvitur votum. Audi orationem meam : 2 ad te omnis caro veniet. 3 Verba iniquorum prævaluerunt mihi, & peccata mea tu expiabis. 4 Beatus is qui placet tibi, & quem tu provehis, ut habitet in atrio tuo, atque ſatietur bonis domûs tuæ, & ſanctitate templi tui, 5 Ac juſtitiâ tuâ terribili. Exaudi me 6 Deus Servator noſter, ſpes omnium finium terræ & gentium remotarum : Qui firmas 7 montes virtute tuâ, & corroboras potentiâ tuâ. Qui ſedas undas marium, & 8 ſonitum fluctuum eorum. Turbabuntur populi, Et timebunt habitatores terræ ſigna 9 tua & exitus matutini ac veſperæ. Cum gloria Recordatus es terræ, pacâſti eam, & 10 abundantiâ ditâſti illam : rivi Dei pleni ſunt aquis. Parâſti cibum illorum, quando firmâſti eam; Arva ejus inebriâſti, ut educarentur 11 fructus ejus : pluviis nutrietur germen illius, ac benedicetur.

Versio VULG. LAT.

3 Protexisti me à conventu malignantiū, à
4 multitudine operantiū iniquitatē. Quia
exacuerunt ut gladium linguas suas: in-
tenderunt arcum rem amaram, ut sagit-
5 tent in occultis immaculatum. Subitò
sagittabunt eum, & non timebunt: fir-
6 maverunt sibi sermonem nequā. Narra-
verunt ut absconderent laqueos: dixe-
7 runt, Quis videbit eos? Scrutati sunt
iniquitates: defecerunt scrutantes scru-
8 tinio. Accedet homo ad cor altū: Et ex-
altabitur Deus. Sagittæ parvulorū factæ
9 sunt plagæ eorū: Et infirmatæ sunt cōtra
eos linguæ eorū. Conturbati sunt omnes
10 qui videbāt eos: Et timuit omnis homo.
Et annuntiaverunt opera Dei: & facta
11 ejus intellexerunt. Lætabitur justus in
Domino, & sperabit in eo, & lauda-
buntur omnes recti corde.

In finem, Psalmus David,
1 Canticum Jeremiæ & Ezechielis populo
transmigrationis, cùm inciperent
exire.

LXIV.

2 TE decet hymnus, Deus, in Sion: &
3 tibi reddetur votū in Jerusalē. Exaudi
orationē meā: ad te omnis caro veniet.
4 Verba iniquorū prævaluerunt sup nos:
& impietatibus nostris tu propitiabe-
5 ris. Beatus, quem elegisti, & assumpsisti:
inhabitabit in atriis tuis. Replebimur
in bonis domꝰ tuæ: sanctum est templū
6 tuū, Mirabile in æquitate. Exaudi nos,
Deus salutaris noster, spes omniū finiū
7 terræ, & in mari longé. Præparans mon-
tes in virtute tua, accinctus potentiâ:
8 Qui conturbas profundum maris, sonum
9 fluctuum ejus. Turbabuntur gentes, Et
timebunt qui habitant terminos à signis
tuis: exitus matutini & vespere de-
10 lectabis. Visitâsti terram & inebriâsti
eam: multiplicâsti locupletare eam.
Flumen Dei repletum est aquis, parâsti
cibum illorum: quoniam ita est præ-
11 paratio ejus. Rivos ejus inebria, mul-
tiplica genimina ejus: in stillicidiis ejus
lætabitur germinans.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

3 Ἐσκέπασάς με ἀπὸ συστροφῆς πονηρευομένων, ἀπὸ
4 πλήθους ἐργαζομένων ἀδικίαν· Οἵτινες ἠκόνησαν
ὡς ῥομφαίαν τὰς γλώσσας αὐτῶν, ἐνέτειναν τόξον
πρᾶγμα πικρὸν, τοῦ κατατοξεῦσαι ἐν ἀποκρύφοις
5 ἄμωμον, Ἐξάπινα κατατοξεύσουσιν αὐτὸν, καὶ οὐ φο-
βηθήσονται. ἐκραταίωσαν ἑαυτοῖς λόγον πονηρὸν,
6 Διηγήσαντο τοῦ κρύψαι παγίδας· εἶπαν, Τίς ὄψεται
7 αὐτούς; Ἐξηρεύνησαν ἀνομίαν, ἐξέλιπον ἐξε-
ρευνῶντες ἐξερευνήσει. προσελεύσεται ἄνθρωπος,
8 καὶ καρδία βαθεῖα, Καὶ ὑψωθήσεται ὁ Θεός. βέλος
9 νηπίων ἐγενήθησαν αἱ πληγαὶ αὐτῶν, Καὶ ἐξουθέ-
νησαν αὐτὸν αἱ γλῶσσαι αὐτῶν. ἐταράχθησαν πάν-
10 τες οἱ θεωροῦντες αὐτοὺς, Καὶ ἐφοβήθη πᾶς ἄν-
θρωπος· καὶ ἀνήγγειλαν τὰ ἔργα τοῦ Θεοῦ, καὶ τὰ
11 ποιήματα αὐτοῦ συνῆκαν. Εὐφρανθήσεται δίκαιος
ἐν τῷ κυρίῳ, καὶ ἐλπιεῖ ἐπ' αὐτόν· καὶ ἐπαινεθή-
σονται πάντες οἱ εὐθεῖς τῇ καρδίᾳ.

1 Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυὶδ, ᾠδή.

ξδʹ.

2 ΣΟὶ πρέπει ὕμνος ὁ Θεὸς ἐν Σιὼν, καὶ σοὶ ἀπο-
3 δοθήσεται εὐχή. Εἰσάκουσον προσευχῆς μου, πρὸς
4 σὲ πᾶσα σὰρξ ἥξει. Λόγοι ἀνόμων ὑπερεδυνάμω-
5 σαν ἡμᾶς, καὶ τὰς ἀσεβείας ἡμῶν σὺ ἱλάσῃ. Μακά-
ριος, ὃν ἐξελέξω καὶ προσελάβου, κατασκηνώσει
ἐν ταῖς αὐλαῖς σου. πλησθησόμεθα ἐν τοῖς ἀγαθοῖς τοῦ
6 οἴκου σου, ἅγιος ὁ ναός σου, Θαυμαστὸς ἐν δικαιο-
σύνῃ. ἐπάκουσον ἡμῶν ὁ Θεὸς ὁ σωτὴρ ἡμῶν, ἡ ἐλ-
πὶς πάντων τῶν περάτων τῆς γῆς, καὶ τῶν ἐν θα-
7 λάσσῃ μακράν· Ἑτοιμάζων ὄρη ἐν τῇ ἰσχύϊ σου,
8 περιεζωσμένος ἐν δυναστείᾳ· Ὁ συνταράσσων τὸ
κύτος τῆς θαλάσσης, ἤχους κυμάτων αὐτῆς. τα-
9 ραχθήσονται τὰ ἔθνη, Καὶ φοβηθήσονται οἱ κατοικοῦν-
τες τὰ πέρατα ἀπὸ τῶν σημείων σου. ἐξόδους πρωΐ-
10 ας καὶ ἑσπέρας τέρψεις. Ἐπεσκέψω τὴν γῆν καὶ ἐ-
μέθυσας αὐτὴν, ἐπλήθυνας τοῦ πλουτίσαι αὐτήν.
ὁ ποταμὸς τοῦ Θεοῦ ἐπληρώθη ὑδάτων. ἡτοίμασας
11 τὴν τροφὴν αὐτῶν, ὅτι οὕτως ἡ ἑτοιμασία. Τοὺς αὔ-
λακας αὐτῆς μέθυσον, πλήθυνον τὰ γεννήματα
αὐτῆς, ἐν ταῖς σταγόσιν αὐτῆς εὐφρανθήσεται
ἀνατέλλουσα.

Vers. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Transl. LAT.

2 (c) [b] Protexisti me à (d) 3
conventu malignantiū, à multi-
tudine operantium iniquitatem.
3 Qui exacuerunt [c] ut gladi- 4
um linguas suas: intenderunt ar-
cum rem (e) amaram, ut [d]
sagittent in (f) occultis immacu-
latum. 4 Subitò sagittabunt e- 5
um, & non timebunt: firmave-
runt sibi sermonem (g) mali-
gnum. 5 Narraverunt ut abscon- 6
derent laqueos: dixerūt, [e] Quis
videbit eos? 6 Perscrutati sunt 7
iniquitatem: defecerunt (h) scru-
tantes [f] scrutinio. 7 Accedet
(i) homo, [g] & cor altum, Et 8
exaltabitur Deus. 8 Sagittæ in-
fantiū factæ sunt plagæ eorū, Et 9
[h] pro (k) nihilo habuerunt eum
linguæ eorum. 9 Conturbati sunt
omnes qui videbant eos. Et ti- 10
muit omnis homo. 10 Et annuntiaverunt opera Dei; & facta ejus intellexerunt.
11 Lætabitur justus in Domino, & sperabit in eo: & [i] laudabuntur omnes recti 11
corde.

In finem, [a] Psalmus ipsi David, 1
(a) Canticum. *LXIV.*

1 TE decet hymnꝰ, Deꝰ, in (b) 2
Siō: et tibi reddetur (c) votū [b].
2 [c] Exaudi orationem meā: ad 3
te omnis caro veniet: 3 Verba (d) 4
impiorū prævaluerūt super nos;
(e) & [d] impietates nostras tu
propitiabis. 4 Beatus quem elegi- 5
sti, & assumpsisti: [e] inhabita-
bit in atriis tuis. 5 Replebimur in
bonis domûs tuæ: sanctum est
templum tuum, Mirabile in 6
justitia. 6 Exaudi nos, [f] De-
us Salvator noster, spes o-
mnium finium terræ, & [g] in
mari longè. 7 (f) [h] Præparans 7
montes in fortitudine tua, (g) [i]
circumcinctus in potentatu. Qui 8
(h) [k] conturbas (i) fundum
maris, (k) sonos fluctuum ejus.
8 Turbabuntur gentes, Et time- 9
bunt, qui inhabitant fines, à si-
gnis tuis. [l] Exitus matutini &
vesperæ delectabis: 9 Visitâsti 10
terram, & inebriâsti eam: (l)
multiplicâsti locupletare eam. 10
Flumen Dei repletum est aquis:
(m) parâsti cibum illorum; quoniam ita [m] est (n) præparatio. 11 Rivos ejus [n] inebria, 11
multiplica genimina ejus: in stillicidiis ejus lætabitur germinans.

Versio ÆTHIOPICA.

ወሰወረኒ ፡ እማዕሌቶሙ ፡ ለእኩያን፡፡ ወ 2
እምብዝኆሙ፡ለገበርተ፡ዐመፃ፡፡=፥ እለ፡ 3
አብልሑ፡ ልሳኖሙ፡ ከመ፡ አርዌ፡ ምድር፡፡
ወወሠቁ፡ቀስቶሙ፡ለገቢረ፡መረር፡፡ ከመ፡ይ
ቅትልዎ፡ለንጹሕ፡በጽሚት፡፡=፥ ግብተ፡ 4
ይነድፍዎሙ ፡ ወኢይፈርሁ፡፡ ወአጽንዑ፡
ሎሙ፡ነገረ፡ እኩየ፡፡=፥ ወተማከሩ ፡ ይሳ 5
ብሉ፡ሎሙ፡መሥገርተ፡፡ ወይቤሉ፡አልቦ፡
ዘይሬእየነ፡፡=፥ ወኃሠሠዋ ፡ ለዐመፃ፡፡ 6
ወኀልቁ፡ እንዘ፡ይፈትኑ፡ ወይወጥኑ፡፡=፥ወይ 7
በውእ፡ሰብእ፡በልብ፡ዕሙቅ፡፡ወይትሌዐል፡እ
ግዚአብሔር፡፡=፥ ከመ፡ሕጻን፡ደቂቅ፡ኮነ፡ 8
መቅሠፍቶሙ፡፡ ወደክመ ፡ ልሳኖሙ ፡ በሳዕ
ሊሆሙ፡፡=፥ ወደንገፁ፡ኵሎሙ፡እለ፡ርእይ 9
ዎሙ፡፡ወፈርሀ፡ኵሉ፡ሰብእ፡፡=፥ ወነገሩ፡ 10
ግብረ፡ እግዚአብሔር፡፡ ወአእመሩ፡ ምግባ
ሮ፡፡=፥ ይትፌሣሕ፡ጻድቅ፡በእግዚአብሔ 11
ር፡፡ ወይትዌከሉ፡ቦቱ፡፡ ወይከብሩ፡ ኵሎ
ሙ፡ርቱዓነ፡ ልብ፡፡

ፍጻሜ፡መዝሙር፡ዘደዊት፡፡

፷፬ ለከ፡ይደሉ፡ እግዚኦ፡ ስብሐት፡ በጽዮ 1
ን፡፡ ወለከ፡ ይትፌነው፡ ጸሎት፡በኢየሩሳሌ
ም፡፡=፥ ስማዕ፡ጸሎተ፡ኵሉ፡ዘሥጋ፡ ዘም 2
ጽአ፡ኀቤከ፡፡=፥ ነገረ፡ዐመፂያን፡ኀየለነ፡፡ 3
ወኀጢአትነሰ፡ አንተ፡ ትስሪ፡ለነ፡፡=፥ ብፁ 4
ዕ፡ ዘኀረይኮ፡ ወዘተወከፍኮ፡፡ ወዘአኅደር
ኮ፡ውስተ ፡ አዕጻዲከ፡፡=፥ ጸገብነ፡እምበ 5
ረከተ፡ቤትከ፡፡ ቅዱስ፡ጽርሕከ፡ ወመንክር፡
በጽድቅ፡፡=፥ስምዓነ፡አምላክነ፡ወመድኃኒ 6
ነ፡፡ ተስፈሆሙ፡ ለኵሎሙ፡ አጽናፈ፡ ምድ
ር፡፡ ወለእለሂ፡ ውስተ፡ባሕር፡ርሑቅ፡፡=፥
አጽናዕኮሙ ፡ ለአድባር፡ በኃይልከ፡፡ ወቅኑ 7
ታን፡ እሙንቱ ፡ በኃይል፡፡ ዘየሀውኮ፡ ለእን
በረ፡ባሕር፡፡ ወመኑ ፡ ይትቃወሞ፡ለድምፀ፡
ማዕበሉ፡፡=፥ ይደንግፁ፡ አሕዛብ ፡ ወይፈር 8
ሁ፡፡ እለ፡ ይነብሩ፡ ውስተ፡አጽናፍ፡ እምተ
አምሪከ፡፡ ይወፅኡ፡በጽባሕ፡ወ ሰርክ፡ይትፌ
ሥሑ፡፡=፥ ኀወጽካ ፡ ለምድር ፡ ወአርወ 9
ይካ፡፡ ወአብዘኃኮ ፡ ለብዕላ፡፡=፥ ፈለገ፡ 10
እግዚአብሔር፡ ምሉእ፡ ማያት፡፡ ወአስተ
ደሎከ፡ ሲሳዮሙ፡እስመ፡ ከማሁ ፡ ታስተደ
ሉ፡፡=፥ አርዊዮ ፡ ለትለሚሃ፡፡ ወአስም 11
ሮ፡ለማእረራ፡፡ ወበነጠብጣብከ፡ትበቍል፡
ተፈሥሐ፡፡=፥

INTERP. ÆTHIOP. [b] Et protege me à die malignantium, [c] sicut aspis [d] interficiant [e] Non est qui videbit nos. [f] & quærentes. [g] cum corde profundo, Et [h] infirmatæ sunt contra eos linguæ [i] glorificabunt *PSAL. LXIV.* [a] Psalmꝰ David. Te [b] in Hierusalem. [c] Exaudi orationē: omnis qui caro est, qui ad te veniet: [d] *quamū* ad peccata nostra tu nobis propitiꝰ eris. [e] & quem inhabitare fecisti in [f] Deꝰ noster & Salvator [g] eorū quidē qui in [h] Stabiliens montes [i] & accinctꝰ etiā ille [k] conturbat alveū maris, & quis resistet sonitui fluctuū ejꝰ? [l] Exeunt in matutino, & vesperè delectantur: [m] eū præparabis. [n] inebriant, & gratā reddit messem ejꝰ: & in stillicidiis tuis germinans lætabitur.

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

3 * ومن غل الاشرار استرني * ومن كثرة عاملي الظلم * هولاء الذين ارهفوا مثل السيف
4 السنتهم * واوتروا قسيهم عملا مرا * ليرشقوا بالسهام خفية السليمين من العيب * يرشقوهم بغتة
5 ولا يخافون * ثبتوا لهم كلمة سو * تواطوا على اخفاء فخاخا * وقالوا من الذي يرانا * فحصوا عن
6 الاثم فبادوا وهم فاحصون فحصا * لان الانسان يتقدم بقلب عميق * فيتعالى الله * وتصير جراحهم
7 من سهام صغار الصبيان * وضعفت السنتهم عليهم فاضطرب جميع من يراهم * وجزع كل
8 انسان * واظهروا اعمال الله * وفهموا صنايعه * يفرح الصديق بالرب ويتوكل عليه * ويفتخر كل
9 المستقيمين بقلوبهم * اللليلويا * المزمور الرابع والستون *
10
11

1 * لداود في جلا الشعب * وهو * ل * استيخن *

2 * لك يا الله ينبغي التسبيح في صهيون * ولك توفي النذور في يوروسليم * اسمع اللهم صلاتي
3 فاليك ياتي كل البشر * اقوال الظالمين قويت علينا * وانت تغفر ذنوبنا * طوبى لمن اخترته
4 وقبلته فيسكن في ديارك الى الابد * سيشبع من خيرات بيتك * هيكلك مقدس وعجيب جدا
5
6 * استجب لنا يا الله وخلصنا يا رجاء اقطار الارض والبحار البعيدة * المتقن الجبال بقوته
7 وجبروته يقرها * الذي يقلق سعة البحر * وعجيج امواجه من يحمله * يضطرب الامم * ويخاف
8 سكان اقطار الارض من اياتك * ومن خروج الليل والنهار * تعاهدت الارض فارويتها * بالكثرة
9
10 اغنيتها * لان انهار الله مملوة من المياه * اعددت طعامهم * لان هذا هو استعدادهم * فلترو
11 اتلامها * ولتكثر اثمارها * وبقطرها تفرح فتنبت *

Et ab invidia malorum protege me, & à 3
multitudine operantium scelus, Horum 4
qui exacuerunt ut gladium linguas su-
as, tetenderunt arcus suos, opus amarum:
Ut jacularentur sagittas clanculùm in li- 5
beros à vitio. Jaculantur in eos ex im-
proviso, & non timent. Statuerunt sibi 6
verbum nequitiæ, incurvaverunt se ad
abscondendos laqueos, & dixerunt, Quis
est qui videt nos? Investigaverunt sce- 7
lus, & perierunt dum investigarent in-
vestigationem; Nam homo accedet cum
corde profundo, Et exaltabitur Deus: 8
fientque vulnera eorum à sagittis mini-
morum inter pueros, Et infirmatæ sunt 9
linguæ eorum contra ipsos; qua de re
conturbati sunt omnes qui viderant eos:
Et extimuit quilibet homo, & patefece- 10
runt opera Dei, & perceperunt artes
ejus. Lætabitur justus in Domino, & 11
gloriabuntur omnes qui recti sunt in cor-
dibus suis. Alleluja.

PSAL. LXIV.

Davidis, de transmigratione po- 1
puli. Vers. 30.

TIbi Deus, convenit laus in Sion, & 2
tibi solvemus vota in Jerusalem.
Audi Deus orationem meam; ad te enim 3
venient omnes homines. Sermones scelera- 4
torum invaluerunt adversùm nos, & tu
remittes delicta nostra. Beatitudo ei quem 5
elegisti, & suscepisti: nam habitabit in
atriis tuis in seculum, satiabitur bonis do-
mûs tuæ. Templum tuum sanctum est &
admirandum verè. Exaudi nos, O Deus, 6
& salva nos, O spes finium terræ & ma-
rium remotissimorum. Condens montes 7
virtute suâ, & potentiâ suâ stabi-
liens eos. Qui agitat amplitudinem 8
maris, & sonitum fluctuum ejus quis fe-
rat? Turbabuntur gentes, & timebunt 9
incolæ finium terræ à signis tuis, & ab
exitu noctis & diei. Visitâsti terram, & 10
irrigâsti eam, abundantiâ ditâsti eam:
quoniam flumina Dei plena sunt aquis.
Parâsti cibū illorum, quoniam hujusmodi
est præparatio eorum. Itaque irrigen- 11
tur sulci ejus, & multiplicentur fructus
ejus: & stillis suis fruatur, ac germinet.

תהלים : סו

pascua Stillabunt .pinguedinem stillabunt tuæ orbitæ & :tuo bono annum Coronâsti
עִטַּרְתָּ שְׁנַת טוֹבָתֶךָ וּמַעְגָּלֶיךָ יִרְעֲפוּן דָּשֶׁן׃ יִרְעֲפוּ נְאוֹת 12 13
, pecore campi se Induerunt .se accingent colles exultatione & : deserti
מִדְבָּר וְגִיל גְּבָעוֹת תַּחְגֹּרְנָה׃ לָבְשׁוּ כָרִים הַצֹּאן 14
.canent etiam ,clamabunt : frumento se operuerunt valles &
וַעֲמָקִים יַעַטְפוּ־בָר יִתְרוֹעֲעוּ אַף־יָשִׁירוּ׃

PSAL. LXVI. סו

gloriam Cantate .terra omnis Deo Jubilate .cantus canticum Victori
לַמְנַצֵּחַ שִׁיר מִזְמוֹר הָרִיעוּ לֵאלֹהִים כָּל־הָאָרֶץ׃ זַמְּרוּ כְבוֹד־ 1 2
Quàm : Deo Dicite .ejus laudem ,gloriam ponite : ejus nominis
שְׁמוֹ שִׂימוּ כָבוֹד תְּהִלָּתוֹ׃ אִמְרוּ לֵאלֹהִים מַה־ 3
Omnis .tui inimici te *in mentientur* tuæ fortitudinis *multitudine in,tuis operibus terribilis*
נּוֹרָא מַעֲשֶׂיךָ בְּרֹב עֻזְּךָ יְכַחֲשׁוּ לְךָ אֹיְבֶיךָ׃ כָּל־ 4
videte & , *Ite* .Selah ,tuo nomini canent : tibi canent & ,tibi se incurvabunt *terra*
הָאָרֶץ יִשְׁתַּחֲווּ לְךָ וִיזַמְּרוּ־לָךְ יְזַמְּרוּ שִׁמְךָ סֶלָה׃ לְכוּ וּרְאוּ 5
mare Convertit .hominum filios super *opere terribilis* : Dei opera
מִפְעֲלוֹת אֱלֹהִים נוֹרָא עֲלִילָה עַל־בְּנֵי אָדָם׃ הָפַךְ יָם 6
Dominans .ipso in *lætabimur* ibi : pede *in* transierunt *flumine in* : aridam in
לְיַבָּשָׁה בַּנָּהָר יַעַבְרוּ בְרָגֶל שָׁם נִשְׂמְחָה־בּוֹ׃ מֹשֵׁל 7
elevent ne rebelles *:speculabuntur* gentes in ejus oculi ,*seculo* sua fortitudine *in*
בִּגְבוּרָתוֹ עוֹלָם עֵינָיו בַּגּוֹיִם תִּצְפֶּינָה הַסּוֹרְרִים אַל־יָרִימוּ
vocem facite audire & : nostro Domino populi Benedicite .Selah , seipsos
לָמוֹ סֶלָה׃ בָּרְכוּ עַמִּים אֱלֹהֵינוּ וְהַשְׁמִיעוּ קוֹל 8
nutandum ad dedit non & : vitam in nostram animam *Ponens* .ejus laudis
תְּהִלָּתוֹ׃ הַשָּׂם נַפְשֵׁנוּ בַּחַיִּים וְלֹא־נָתַן לַמּוֹט 9
.argentum *excoquere secundū* nos *excoxisti* : Deus nos probâsti Quoniam *.nostrū pedem*
רַגְלֵנוּ׃ כִּי־בְחַנְתָּנוּ אֱלֹהִים צְרַפְתָּנוּ כִּצְרָף־כָּסֶף׃ 10
fecisti Equitare .nostris lumbis in *coarctationem* posuisti : rete in nos Introduxisti
הֲבֵאתָנוּ בַמְּצוּדָה שַׂמְתָּ מוּעָקָה בְמָתְנֵינוּ׃ הִרְכַּבְתָּ 11 12
nos eduxisti & : aquas in & ,ignem *in* sumus ingressi ; nostrum caput *in* hominem
אֱנוֹשׁ לְרֹאשֵׁנוּ בָּאנוּ־בָאֵשׁ וּבַמַּיִם וַתּוֹצִיאֵנוּ
.mea vota tibi reddam *: ascensionibus* in tuam domum Ingrediar .irriguam ad
לָרְוָיָה׃ אָבוֹא בֵיתְךָ בְעוֹלוֹת אֲשַׁלֵּם לְךָ נְדָרָי׃ 13
Ascensiones .mihi angustia *in* meū os est locutū & : mea labia aperuerunt Quæ
אֲשֶׁר־פָּצוּ שְׂפָתָי וְדִבֶּר־פִּי בַּצַּר־לִי׃ עֹלוֹת 14
cum *bovem* faciam : arietum suffitu cum tibi *ascendere faciam* medullatorum
מֵחִים אַעֲלֶה־לָּךְ עִם־קְטֹרֶת אֵילִים אֶעֱשֶׂה בָקָר עִם־ 15
fecit quæ , Deum timentes omnes narrabo & ,audite , *Ite* .Selah , hircis
עַתּוּדִים סֶלָה׃ לְכוּ־שִׁמְעוּ וַאֲסַפְּרָה כָּל־יִרְאֵי אֱלֹהִים אֲשֶׁר עָשָׂה 16
.mea lingua *sub est exaltatus* & : clamavi meo ore ipsum Ad .meæ animæ
לְנַפְשִׁי׃ אֵלָיו פִּי־קָרָאתִי וְרוֹמַם תַּחַת לְשׁוֹנִי׃ 17
exaudivit Verè .Dominus exaudiet non ,meo corde in vidi si Iniquitatem
אָוֶן אִם־רָאִיתִי בְלִבִּי לֹא יִשְׁמַע אֲדֹנָי׃ אָכֵן שָׁמַע 18
non qui , Deus Benedictus .meæ orationis *voce in* attendit : Deus
אֱלֹהִים הִקְשִׁיב בְּקוֹל תְּפִלָּתִי׃ בָּרוּךְ אֱלֹהִים אֲשֶׁר לֹא־ 19 20
.me à suam misericordiam & , meam orationem removit
הֵסִיר תְּפִלָּתִי וְחַסְדּוֹ מֵאִתִּי׃

תרגום TARGUM.

12 אַכְלִלְתָּא שְׁנַת טוּב בִּרְכָתָךְ וּכְבָשֵׁי אוֹרְחָךְ
13 יַבְסְמוּן דִּיהֲנָא׃ יַבְסְמוּן תּוּשְׁבְּחַת מַדְבְּרָא וְדִיצָא
14 גַּלְמָתָא תִּתְקַמְּרָן לְהוֹן׃ יַעֲלוּן דִּכְרַיָּא עֲלֵי עָנָא
וּמֵישְׁרַיָּא יִתְחַפְיָן עֲבוּרָא יִתְיַבְּבוּן בְּרַם יְשַׁבְּחוּן׃

סו

1 לְשַׁבָּחָא שִׁירָא תּוּשְׁבַּחְתָּא יַבִּיבוּ קֳדָם יְיָ כָּל
2 יָתְבֵי אַרְעָא׃ שַׁבַּחוּ אִיקַר שְׁמֵיהּ שַׁווּ אִיקַר
3 תּוּשְׁבַּחְתֵּיהּ׃ אֱמַרוּ קֳדָם אֱלָהָא מָה דְּחִילִין
הִנּוּן עוֹבָדָךְ בִּסְגִיעֵי עוּשְׁנָךְ יְכַדְּבוּן לָךְ בַּעֲלֵי
4 דְבָבָךְ׃ כָּל יָתְבֵי אַרְעָא יִסְגְּדוּן קֳדָמָךְ וִישַׁבְּחוּן
5 לָךְ יְשַׁבְּחוּן שְׁמָךְ לְעָלְמִין׃ אֱזִילוּ וַחֲמוֹן עוֹבָדֵי
6 אֱלָהָא דְּחִיל מָרֵי תַּסְקוֹפִין עַל בְּנֵי נָשָׁא׃ הֲפַךְ
יַמָּא דְסוּף לְיַבֶּשְׁתָּא בִּנְהַר יוֹרְדְנָא עֲבַרוּ בְּנֵי
יִשְׂרָאֵל בְּרִגְלֵיהוֹן אוֹבִיל יָתְהוֹן לְטוּר קוּדְשֵׁיהּ
7 תַּמָּן נֶחְדֵי בְּמֵימְרֵיהּ׃ דְּשַׁלִּיט בְּכֹחַ גְּבוּרְתֵּיהּ
עַל עָלְמָא עֵינוֹי בְּעַמְמַיָּא מִסְתַּכְּלִין מְסָרְהֲבִין
8 לָא יִתְרַמּוֹן לְהוֹן לְעָלְמִין׃ בְּרִיכוּ עַמְמַיָּא אֱלָהִים
9 וְאַשְׁמִיעוּ קָל תּוּשְׁבַּחְתֵּיהּ׃ דְּמַנֵּי נַפְשָׁנָא בְּחַיֵּי
דְּעָלְמָא דְאָתֵי וְלָא מְסַר לְאוֹדְעוּעָא רִגְלָנָא׃
10 אֲרוּם בְּחַנְתָּנָא אֱלָהָא אַתְכְתָּנָא הֵיךְ קְנָאָה
11 דְּמַתִּיךְ סִימָא׃ אַעֲלְתָּנָא בִּמְצַדְתָּא שַׁוִּיתָא
12 שׁוּשְׁלְתָּא בְחַרְצָנָא׃ אַמְאֵכְתָּנָא אַרְכֵּבְתָּא מָרֵי
מוֹפִיתָא עַל רֵישָׁנָא דַּנְתָּא יָתָנָא כְּדֵי בְנוּרָא
13 וּבְמוֹי וְאַפֵּקְתָּנָא לִרְוָחְתָּא׃ אֵעוֹל לְבֵיתָא בַּעֲלָוָן
14 אֲשַׁלֵּם לָךְ נִדְרַי׃ דִּי פַּתַּחוּ סִפְוָתִי וּמַלֵּל פּוּמִי
15 כַּד עָקַת לִי׃ עֲלָוָן שְׁמֵינִין אַסֵּיק קֳדָמָךְ עִם קְטוֹרֶת
בּוּסְמִין קָרְבַּן דִּכְרִין אַעְבֵּד תּוֹרִין עִם בַּרְחַיָּא
16 לְעָלְמִין׃ אֱזִילוּ שְׁמַעוּ וְאִשְׁתָּעֵי כָּל דַּחֲלַיָּא
17 דֶאֱלָהָא מַה דַּעֲבַד לְנַפְשִׁי׃ לְוָתֵיהּ בְּפוּמִי קְרֵיתִי
18 וְתוּשְׁבַּחְתֵּיהּ תְּחוֹת לִישָׁנִי׃ שְׁקַר אִין חֲמִיתִי
19 בְּלִבִּי הָאֶפְשַׁר דִּי לָא יִשְׁמַע יְיָ׃ בְּקוּשְׁטָא שְׁמַע
20 אֱלָהָא אֲצֵית בְּקָל צְלוֹתִי׃ בְּרִיךְ אֱלָהָא דְּלָא
אַעְדִּי צְלוֹתִי וְטוּבֵיהּ מִנִּי׃

PARAPH. CHALD Verſ. Lat.

Coronâſti annum bonitate benedictionis 12 tuæ, & itinera viæ tuæ ſtillabunt dulcedinem pinguedinis. Dulceſcent laudabilia 13 deſerti, et exultatione colles accingent ſe. Aſcendent arietes ſuper pecora, & valles 14 cooperientur frumento : jubilabunt, certè laudem dicent.

Ad laudandum canticum [&] hymnus. 1

PSAL. LXVI.

Jubilate coram Domino omnes habitatores 2 terræ : laudes dicite *gloriæ nominis* ejus, conſtituite gloriam laudi ejus. Dicite 3 coram Deo, Quàm timenda ſunt illa opera tua! in multitudine fortitudinis tuæ mentientur *tibi* inimici tui. Omnes habitatores 4 terræ adorabunt coram te, & laudabunt te: laudabunt nomen tuum in æternum. Ite, vi- 5 dete opera Dei terribilis, auctoris adinventionum ſuper filios hominum. Convertit 6 mare Suph in ſiccum : per flumen Jordanis tranſierunt pedibus ſuis filii Iſrael : ducam eos ad montem *ſanctitatis ejus*, ibi lætabimur in verbo ejus. Qui poteſtatem habet 7 virtute fortitudinis ſuæ ſuper orbem, oculi ejus populos reſpiciunt: rebelles non exaltabuntur in ſeipſis in ſecula. Benedicite po- 8 puli *Deo*, & audiri facite vocem laudis ejus. Qui connumeravit animam noſtram in vi- 9 ta ſeculi venturi, nec tradidit commotioni pedes noſtros. Quoniam probâſti nos De- 10 us : conflâſti nos ſicut argentarius qui conflat argentum. Introduxiſti nos in laqueum; 11 poſuiſti catenam in lumbis noſtris. Humi- 12 liâſti nos, juſſiſti equitare auctorem *increpationis* ſuper caput noſtrum, judicâſti nos tanquam *igne* et aqua; et eduxiſti nos in latitudinem. Introibo in domū [*tuam*] cum 13 holocauſtis, reddam tibi vota mea. Quæ 14 aperuerunt labia mea, et locutum eſt os meum dum anguſtia aderat mihi. Holocauſta 15 pinguia ſacrificabo coram te cum ſuffitu aromatico, ſacrificiáque arietum, faciam boves cum hircis ſemper. Venite audite & 16 narrabo, omnes qui timetis Deum, quid fecerit animæ meæ. Ipſum ore meo invocavi; 17 & laus ejus ſub lingua mea. Mendacium ſi 18 vidi in corde meo, nunquid num audiet Dominus? In veritate audivit Deus, exaudivit 19 vocem orationis meæ. Benedictus Dominus 20 qui non amovit orationem meam & benignitatem ſuam à me.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

12 * ܒܪܟ ܟܠܝܠܐ ܕܫܢܬܐ ܒܛܒܘܬܟ : ܘܥܓܠܝܟ ܢܣܒܥܘܢ ܬܕܐܐ܂ * ܘܢܣܒܥܘܢ ܝܬܝܪ
13 ܡܢ ܥܡܘܪܐ ܕܡܕܒܪܐ : ܒܫܘܒܚܐ ܪ̈ܡܬܐ ܢܬܐܣܪܢ܂ * ܘܢܠܒܫܘܢ ܫ̈ܡܝܢܐ ܕܥܢܐ : ܘܒܩܥ̈ܬܐ 14
ܢܬܡܠܝܢ ܥܒܘܪܐ܂ ܘܢܪܘܙܘܢ ܘܢܫܒܚܘܢ܂

* ܡܙܡܘܪܐ ܣܘ *

1 * ܠܐ ܝܕܝܥܐ܂ ܥܠ ܕܒ̈ܚܐ ܘܝܩ̈ܕܐ ܘܒܣܡ̈ܐ ܕܕܟܪ̈ܐ܂ ܘܪܘܚܢܐܝܬ ܪܡܙ ܠܢ ܩܪܝܬܐ ܕܥܡ̈ܡܐ ܘܟܪܘܙܘܬܐ܂
2 ܩܠܣܘ ܡܪܝܐ܂ * ܫܒܚܘ ܟܠܗ ܐܪܥܐ ܙܡܪܘ ܠܐܝܩܪܐ ܕܫܡܗ ܘܙܡܪܘ ܠܐܝܩܪܐ
3 ܕܬܫܒܘܚܬܗ : * ܐܡܪܘ ܠܐܠܗܐ ܡܐ ܕܚܝܠܝܢ ܥܒܕܝܟ܂ ܡܢ ܣܘܓܐܐ ܕܥܘܫܢܟ ܢܕܓܠܘܢ
4 ܠܟ ܒܥܠܕܒܒܝܟ : * ܟܠܗ ܐܪܥܐ ܢܣܓܕܘܢ ܠܟ ܘܢܙܡܪܘܢ ܠܟ܂ ܘܢܫܒܚܘܢ ܠܫܡܟ
5 ܠܥܠܡܝܢ : * ܕܝܐܦܣܐܠܡܐ * ܘܢܐܡܪܘܢ ܬܘ ܚܙܘ ܥܒܕܘܗܝ ܕܐܠܗܐ܂ ܕܣܓܝܐܝܢ ܬܕܡܪ̈ܬܗ ܥܠ
6 ܒ̈ܢܝܢܫܐ : * ܕܗܦܟ ܝܡܐ ܠܝܒܫܐ܂ ܘܢܗܪܘܬܐ ܥܒܪܘܗܝ ܒܪܓܠܐ : ܬܡܢ ܢܚܕܐ ܒܗ * ܕܫܠܝܛ
7 ܒܚܝܠܗ ܠܥܠܡ܂ ܥܝܢܘܗܝ ܒܥܡ̈ܡܐ ܚܝܪܢ : ܘܡܪ̈ܘܕܐ ܠܐ ܢܬܪܘܪܒܘܢ
8 ܠܥܠܡ܂ * ܕܝܐܦܣܐܠܡܐ * ܒܪܟܘ ܥܡ̈ܡܐ ܠܐܠܗܐ : ܘܐܫܡܥܘ ܩܠܐ ܕܬܫܒܘܚܬܗ܂ * ܕܣܡ ܢܦܫܢ 9
10 ܒܚܝ̈ܐ : ܘܠܐ ܝܗܒ ܪܓܠܢ ܠܙܘܥܐ܂ * ܡܛܠ ܕܢܣܝܬܢ ܐܠܗܐ ܘܒܚܪܬܢ : ܐܝܟ ܕܒܚܪܝܢ
11 ܟܣܦܐ܂ * ܐܥܠܬܢ ܒܡܨܝܕܬܐ ܘܣܡܬ ܐܘܠܨܢܐ ܒܚܨܝܢ : * ܘܐܪܟܒܬ ܒܪܢܫܐ ܥܠ ܪܫܢ܂ 12
13 ܐܥܠܬܢ ܒܢܘܪܐ ܘܒܡ̈ܝܐ ܘܐܦܩܬܢ ܠܪܘܝܚܐ܂ * ܐܥܘܠ ܠܒܝܬܟ ܒܫܘܒܚܐ ܘܐܦܪܘܥ ܠܟ ܢܕܪ̈ܝ܂ * ܗܘ ܡܐ
15 ܕܦܬܚܘ ܣܦܘ̈ܬܝ : ܘܡܠܠ ܦܘܡܝ ܒܐܘܠܨܢܝ܂ * ܝܩ̈ܕܐ ܫܡ̈ܝܢܐ ܐܣܩ ܠܟ ܥܡ ܒܣܡܐ 14
16 ܕܕܟܪ̈ܐ : ܘܐܥܒܕ ܬܘܪ̈ܐ ܥܡ ܓܕܝ̈ܐ܂ * ܬܘ ܫܡܥܘ ܘܐܫܬܥܐ ܠܟܘܢ : ܟܠܟܘܢ ܥܒܕܘܗܝ ܕܐܠܗܐ܂
17 ܡܕܡ ܕܥܒܕ ܠܢܦܫܝ : * ܒܦܘܡܝ ܩܪܝܬܗ ܘܥܢܢܝ ܘܐܪܝܡܬܗ ܒܠܫܢܝ܂ * ܥܘܠܐ ܐܢ 18
19 ܚܙܝܬ ܒܠܒܝ ܠܐ ܬܦܪܘܩܝܢܝ ܡܪܝܐ : * ܗܝܕܝܢ ܫܡܥ ܐܠܗܐ ܩܠܐ ܕܒܥܘܬܝ܂ * ܒܪܝܟ ܗܘ 20
ܡܪܝܐ : ܕܠܐ ܐܥܒܪ ܨܠܘܬܝ ܘܛܝܒܘܬܗ ܡܢܝ܂

Benedic coronæ anni bonitate tuâ, & vituli 12 tui ſaturabuntur herbâ : Et ſaturabuntur 13 pluſquam habitacula, hi qui ſunt in deſerto. Gloriâ colles accingentur, Et induentur 14 pingues ovium; valleſque implebuntur frumento, & exultabunt atque laudabunt.

PSAL. LXVI.

Incertus. De Sacrificiis, & holocauſtis, deque ſuffitu arietum. Spiritualis ſenſus *innuit nobis vocationem Gentium, & prædicationem. Verſ.* 42. 1

LAudate Dñm univerſa terra, pſallite glo- 2 riæ nominis ejus, canite honori laudis ejus. Dicite Deo, Quàm terribilia ſunt ope- 3 ra tua! Ob multitudinẽ roboris tui mendaces tibi fient inimici tui : In tota terra adora- 4 bũt te, & pſallent tibi, atque laudabunt nomẽ tuũ in ſecula. * *Diapſal.* * Dicentque, Venite, videte opera Dei; plurima namque ſunt mi- 5 racula ejus erga filios hominum : Qui mutavit mare in aridam, & flumen tranſierunt pe- 6 de. Ibi lætabimur in eo, Qui dominatur potentiâ ſuâ in æternum. Oculi ejus gentes con- 7 templantur : & rebelles non ſuperbient in ſeculum. * *Diapſal.* * Benedicite gentes Deo, 8 & audire facite vocem laudis ejus. Qui col- 9 locavit animam noſtram in vita, & non dedit pedem noſtrum vacillationi. Quia ten- 10 tâſti nos Deus, & probâſti nos ut probant argentũ. Induxiſti nos in rete, atque poſuiſti 11 afflictionem in dorſis noſtris, Et inequitare 12 feciſti filium hominis ſuper caput noſtrum : induxiſti nos in ignem & in aquam, atque eduxiſti nos in refrigerium. Veniam ad do- 13 mum tuā cum decore, ac perſolvam tibi vota mea : Id quod aperuêre labia mea cum 14 ſermone oris mei in tribulatione. Holocau- 15 ſta pinguia attollam tibi cum ſuffitu arietum, faciamque boves & hœdos. Venite, audite, 16 & narrabo vobis, omnes ſervi Dei, quod fecit animæ meæ. Ore meo vocavi eum, & re- 17 ſpondit mihi : & exaltavi eum linguâ meâ. Iniquitatem ſi videris in corde meo, ne me 18 ſalves Domine. Tunc audivit Deus vocem 19 petitionis meæ. Benedictus Dñs qui non re- 20 pulit orationẽ meam & gratiam ſuam à me.

Verſio VULG. LAT.

12 Benedices coronæ anni benignitatis
tuæ : & campi tui replebuntur uber-
13 tate. Pingueſcent ſpecioſa deſerti : &
14 exultatione colles accingentur. Indu-
ti ſunt arietes oviũ, & valles abunda-
bunt frumento : clamabunt, etenim
hymnum dicent.

In finem,
1 Canticum Pſalmi reſurrectionis.

LXV.

2 Jubilate Deo omnis terra, Pſalmum
dicite nomini ejᵒ: date gloriam laudi
3 ejᵒ. Dicite Deo, Quàm terribilia ſunt
opera tua, Dñe! in multitudine virtutis
4 tuæ mentientur tibi inimici tui. Omnis
terra adoret te, & pſallat tibi: pſalmũ
5 dicat nomini tuo. Venite, & videte
opera Dei : terribilis in conſiliis ſup
6 filios hominũ. Qui convertit mare in
aridã, in flumine pertranſibunt pede:
7 ibi lætabimur in ipſo. Qui dominatur
in virtute ſua in æternũ, oculi ejᵒ ſup
gentes reſpiciunt : qui exaſperant,
8 non exaltentur in ſemetipſis. Bene-
dicite gentes Deum noſtrum : & au-
9 ditam facite vocem laudis ejus, Qui
poſuit animã meã ad vitã: & non dedit
10 in commotionẽ pedes meos. Quoniã
probâſti nos, Deᵒ: igne nos examinâſti,
11 ſicut examinatur argentum. Induxiſti
nos in laqueum, poſuiſti tribulationes
12 in dorſo noſtro : Impoſuiſti homines
ſup capita noſtra. Tranſivimᵒ p ignem
& aquã : & eduxiſti nos in refrigeriũ.
13 Introibo in domũ tuã in holocauſtis :
14 reddã tibi vota mea, Quæ diſtinxerunt
labia mea. Et locutum eſt os meum, in
15 tribulatione mea. Holocauſta medul-
lata offeram tibi cum incenſo arietum:
16 offerã tibi boves cum hircis. Venite,
audite, & narrabo, omnes qui timetis
17 Deum, quanta fecit animæ meæ. Ad
ipſũ ore meo clamavi, & exaltavi ſub
18 lingua mea. Iniquitatẽ ſi aſpexi in cor-
19 de meo, non exaudiet Dñs. Propterea
exaudivit Deus, & attendit voci de-
20 precationis meæ. Benedictus Deus,
qui non amovit orationem meam, &
miſericordiam ſuam à me.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp.

12 Εὐλογήσεις τὸν στέφανον τοῦ ἐνιαυτοῦ τῆς χρηστότη-
τός σου, καὶ τὰ πεδία σου πλησθήσονται πιότητος.
13 Πιανθήσονται τὰ ὄρη τῆς ἐρήμου, καὶ ἀγαλλίασιν οἱ
14 βουνοὶ περιζώσονται. Ἐνεδύσαντο οἱ κριοὶ τῶν προ-
βάτων, καὶ αἱ κοιλάδες πληθυνοῦσι σῖτον, κε-
κράξονται, καὶ γὰρ ὑμνήσουσιν.

1 Εἰς τὸ τέλος, Ὠδὴ ψαλμοῦ ἀναστάσεως.
ξέ.

2 Ἀλαλάξατε τῷ θεῷ πᾶσα ἡ γῆ, Ψάλατε
δὴ τῷ ὀνόματι αὐτοῦ. δότε δόξαν αἰνέσει αὐτοῦ.
3 Εἴπατε τῷ θεῷ, Ὡς φοβερὰ τὰ ἔργα σου; ἐν τῷ
πλήθει τῆς δυνάμεώς σου ψεύσονταί σε οἱ ἐχθροί
4 σου. Πᾶσα ἡ γῆ προσκυνησάτωσάν σοι, καὶ ψα-
λάτωσάν σοι, ψαλάτωσαν τῷ ὀνόματί σου. ΔΙΑ-
5 ΨΑΛΜΑ. Δεῦτε καὶ ἴδετε τὰ ἔργα τοῦ θεοῦ, φο-
βερὸς ἐν βουλαῖς ὑπὲρ τοὺς υἱοὺς τῶν ἀνθρώπων.
6 Ὁ μεταστρέφων τὴν θάλασσαν εἰς ξηράν, ἐν πο-
ταμῷ διελεύσονται ποδί. ἐκεῖ εὐφρανθησόμεθα
7 ἐπ' αὐτῷ, Τῷ δεσπόζοντι ἐν τῇ δυναστείᾳ αὐτοῦ
τοῦ αἰῶνος. οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ ἐπὶ τὰ ἔθνη ἐπι-
βλέπουσιν, οἱ παραπικραίνοντες μὴ ὑψούσθωσαν
8 ἐν ἑαυτοῖς. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. Εὐλογεῖτε ἔθνη τὸν
θεὸν ἡμῶν, καὶ ἀκουτίσατε τὴν φωνὴν τῆς αἰνέσεως
9 αὐτοῦ, Τοῦ θεμένου τὴν ψυχήν μου εἰς ζωήν, καὶ μὴ
10 δόντος εἰς σάλον τοὺς πόδας μου. Ὅτι ἐδοκί-
μασας ἡμᾶς ὁ θεός, ἐπύρωσας ἡμᾶς ὡς πυροῦται
11 τὸ ἀργύριον. Εἰσήγαγες ἡμᾶς εἰς τὴν παγίδα, ἔθου
12 θλίψεις ἐπὶ τὸν νῶτον ἡμῶν, Ἐπεβίβασας ἀνθρώ-
πους ἐπὶ τὰς κεφαλὰς ἡμῶν. διήλθομεν διὰ
πυρὸς καὶ ὕδατος, καὶ ἐξήγαγες ἡμᾶς εἰς ἀναψυ-
13 χήν. Εἰσελεύσομαι εἰς τὸν οἶκόν σου ἐν ὁλοκαυ-
14 τώμασιν, ἀποδώσω σοι τὰς εὐχάς μου, Ἃς διέ-
στειλε τὰ χείλη μου, καὶ ἐλάλησε τὸ στόμα μου ἐν
15 τῇ θλίψει μου. Ὁλοκαυτώματα μεμυελωμένα
ἀνοίσω σοι μετὰ θυμιάματος καὶ κριῶν, ποιήσω
16 σοι βόας μετὰ χιμάρων. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. Δεῦτε
ἀκούσατε, καὶ διηγήσομαι, πάντες οἱ φοβούμενοι τὸν
17 θεόν, ὅσα ἐποίησε τῇ ψυχῇ μου. Πρὸς αὐτὸν τῷ
στόματί μου ἐκέκραξα, καὶ ὕψωσα ὑπὸ τὴν γλῶσ-
18 σάν μου. Ἀδικίαν εἰ ἐθεώρουν ἐν καρδίᾳ μου, μὴ
19 εἰσακουσάτω κύριος. Διὰ τοῦτο εἰσήκουσέ μου ὁ θε-
20 ός, προσέσχε τῇ φωνῇ τῆς προσευχῆς μου. Εὐλο-
γητὸς ὁ θεός, ὃς οὐκ ἀπέστησε τὴν προσευχήν
μου, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ ἀπ' ἐμοῦ.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

12 Benedices coronam anni benignitatis tuæ : & campi tui replebuntur ubertate. 13 (o) [o] Pingueſcent (p) montes deſerti, & exultatione colles accingentur. 14 Induti ſunt arietes ovium, & valles (q) abundabunt frumento : clamabunt, etenim hymnum dicent.

In finem, Canticum pſalmi *(a)* reſurrectionis. 1

LXV.

*Jubilate Deo (b) [a] omnis terra :
Pſalmum dicite nomini ejus : date* 2
gloriam laudi ejus : 2 Dicite Deo, 3
*[b] Quàm terribilia ſunt opera
tua ! In multitudine virtutis tuæ
mentientur tibi inimici tui. 3 Omnis* 4
*terra adoret te, & [c] pſallat tibi :
pſalmum dicat nomini (c) tuo.
4 DIAPSALMA. Venite, & vide-* 5
*te opera Dei : (d) terribilis in con-
ſiliis ſuper filios hominum. 5 Qui* 6
*(e) convertit mare in aridam : in
flumine pertranſibunt pede. Ibi læ-
tabimur [d] in ipſo, 6 Qui domina-* 7
*tur in virtute ſua (f) [e] ſeculo.
Oculi ejus ſuper gentes reſpiciunt :
qui (g) exaſperant, [f] non exalten-
tur in ſemetipſis. 7 DIAPSALMA.
Benedicite gentes Deum noſtrum: &* 8
*(h) auditam facite vocem laudis e-
jus. 8 Qui poſuit animam meam ad* 9
*vitam : & non dedit in commotio-
nem pedes meos. 9 Quoniam pro-* 10
*bâſti nos, Deus: [g] ignâſti nos, ſicut
ignitur argentum. 10 Induxiſti nos* 11
*in laqueum, poſuiſti tribulationes
[h] in dorſo noſtro : [i] Impoſui-* 12
*ſti homines ſuper capita noſtra.
11 Tranſivimus per ignem, & a-
quam : & eduxiſti nos in refrige-
rium. 12 Introibo in domum tuam in* 13
*holocauſtis ; reddam tibi vota mea,
Quæ [k] diſtinxerunt labia mea ;* 14
*13 et loquutum eſt os meum in tri-
bulatione mea. 14 Holocauſta [l] me-* 15
*dullata offeram tibi [m] cum (i) in-
cenſo, & arietibus, (k) faciam tibi
boves cum hircis. 15 DIAPSALMA.
Venite, audite, & narrabo, omnes* 16
*qui timetis Deum, quanta fecit ani-
mæ meæ. 16 Ad (l) ipſum ore meo clamavi, et exaltavi ſub lingua mea. 17 Iniquitatem* 17 18
ſi [n] aſpexi in corde meo ; non (m) exaudiat Dominus. 18 Propterea exaudivit (n) me 19
Deus: attendit voci orationis meæ. 19 Benedictus Deus, qui non [o] amovit orationem 20
meam, [p] & miſericordiam ſuam à me.

Verſio ÆTHIOPICA.

ወትባርክ ፡ እክሊለ ፡ ዓመተ ፡ ምሕረትከ ፡፡ ወ 12
ይጸግቡ ፡ ጠላተ ፡ ገዳም ፡፡=፡ ወይረውዩ ፡ አድ 13
ባረ ፡ በድው ፤ ወይትሐሠዩ ፡ አውግር ፡ ወይቀን
ቱ ፡፡=፡ ወይለብሱ ፡ አብሐኰ ፡ አባግዕ ፡፡ ወ 14
ቈላትኒ ፡ ይመልእ ፡ ሠርናየ ፡፡ ይጸርኁ ፡ እን
ዘ ፡ ይሴብሑ ፡፡=፡

ፍጻሜ ፡ ማኅሌት ፡ መዝሙር ፡ ዘትሣኤ ፡፡

፷፭ የብቡ ፡ ለእግዚአብሔር ፡ በኵሉ ፡ ምድ 1
ር ፡፡ ወዘምሩ ፤ ለስሙ ፡፡ ሀቡ ፡ አኰቴተ ፡ ለስብሐ
ቲሁ ፡፡=፡ በልዎ ፡ ለእግዚአብሔር ፡ ግሩም ፡ 2
ግብርከ ፡፡ እንዘ ፡ ብዙኅ ፡ ኃይልከ ፡ ሐሰውከ ፡ ጸ
ለእትከ ፡፡=፡ ኵሉ ፡ ምድር ፡ ትሰግድ ፡ ወትገ 3
ኒ ፡ ለከ ፡፡ ወትዜምር ፡ ለስምከ ፡፡=፡ ንዑ ፡ ወት 4
ርአዩ ፡ ግብሮ ፡ ለእግዚአብሔር ፡፡ ግሩም ፡ ምክ
ሩ ፡ እምእጓለ ፡ እመሕያው ፡፡=፡ ዘይሬስያ ፡ 5
ለባሕር ፡ የብሰ ፡፡ ወበተከዜ ፡ የኀልፉ ፡ በእግር ፡፡
ወበህየ ፡ ንትፌሣሕ ፡ ሎቱ ፡፡=፡ ዘይኴንን ፡ በ 6
ኃይሉ ፡ ዘለዓለም ፡፡ ወአዕይንቲሁኒ ፡ ኀበ ፡ አሕ
ዛብ ፡ ይኔጽሩ ፡፡ እለ ፡ ታአምሩ ፡ ኢታዕብዩ ፡ ርእ
ሰክሙ ፡፡=፡ ባርክዎ ፡ አሕዛብ ፡ ለአምላክነ ፡፡ 7
ወአጽምዑ ፡ ቃለ ፡ ስብሐቲሁ ፡፡=፡ ዘአንበራ ፡ 8
ለነፍስየ ፡ ውስተ ፡ ሕይወት ፡፡ ወኢይሁቦን ፤ ሁከ
ተ ፡ ለእገሪየ ፡፡=፡ እስመ ፡ አመከርከነ ፡ እግዚ 9
እ ፡፡ ወፈተንከነ ፡ ከመ ፡ ይፈትንዎ ፡ ለብሩር ፡፡=፡
ወአባእከነ ፡ ውስተ ፡ መሠገርት ፡፡ ወአምጻእ 10
ከ ፡ ሕማመ ፡ ቅድሜነ ፡፡ ወአጽአንከ ፡ ሰብአ ፡ ደ
በ ፡ አርእስቲነ ፡፡=፡ አኅለፍከነ ፡ ማእከለ ፡ እ 11
ሳት ፡ ወማይ ፡፡ ወአውፃእከነ ፡ ውስተ ፡ ዕረፍ
ት ፡፡=፡ እበውእ ፡ ቤተከ ፡ ምስለ ፡ መባእየ ፡፡ ወ 12
እሁብ ፡ ብፅአትየ ፡ ዘነበብኩ ፡ በአፉየ ፡፡=፡ ዘ 13
እቤ ፡ በከናፍርየ ፡ አመ ፡ ምንደቤየ ፡፡=፡ መሠዋ 14
ዕተ ፡ ንጹሐ ፡ ዘአልቦ ፡ ነውረ ፡፡ አበውእ ፡ ለከ ፡ ዕ
ጣነ ፡ ምስለ ፡ ሐራጊት ፡፡ እሠውዕ ፡ ለከ ፡ አልህ
ምተ ፡ ወአጣሊ ፡፡=፡ ንዑ ፡ ስምዑኒ ፡ ወእነግ 15
ርክሙ ፡፡ ኵልክሙ ፡ እለ ፡ ትፈርህዎ ፡ ለእግዚአ
ብሔር ፡፡ መጠነ ፡ ገብረ ፡ ሎቱ ፡ ለነፍስየ ፡፡=፡ ዘ 16
ጸራኅኩ ፡ ኀቤሁ ፡ በአፉየ ፡፡ ወከላሕኩ ፡ በልሳን
የ ፡፡=፡ እመሰ ፡ ዐመፃ ፡ ይሬኢ ፡ ውስተ ፡ ልብየ ፡፡ 17
ኢይሰምዐኒ ፡ እግዚአብሔር ፡፡=፡ ወበእንተ 18
ዝ ፡ ሰምዐኒ ፡ እግዚአብሔር ፡፡ ወአጽምአኒ ፡
ቃለ ፡ ስእለትየ ፡፡=፡ ይትባረክ ፡ እግዚአብሔ 19
ር ፡ ዘኢከልአኒ ፡ ጸሎትየ ፡፡ ወኢያርሐቀ ፡ ሣህ
ሎ ፡ እምኔየ ፡፡=፡

INTERP. ÆTH. [o] Et irrigabuntur montes *PSAL. LXV.* [a] in omni terra : [b] Terribile eſt opus tuum: Ad multitudinem [c] confitebitur tibi : [d] ſimul. Qui [e] qui in æternum. [f] ne exaltetis voſmetipſos. [g] & nos examinâſti, ſicut examinatur argentum. [h] in conſpectu noſtro : [i] Equitare feciſti homines [k] locutus ſum ore meo ; quæ dixi labiis meis in [l] pura & quæ ſine macula [m] incenſum cum arietibus, offeram tibi [n] aſpexit in corde meo ; non exaudiet [o] repulit [p] nec amovit miſericordiam

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

12 * باركت اكليل السنة بصلاحك * وتمتلي بقاعك من الدسم * وتدسم جبال البرية * وتنطق 13
14 الآكام بالقوة * وتكتسي كباش الغنم شحما * والاودية تكثر القمح فيصرخون ويباركون * اللليلويا *
1 * المزمور الخامس والستون * لداود تسبحة وعن القيامة * وهو لط * استيخن *
2 3 * هللوا لله يا جميع الارض * رتلوا اسمه واعطوا مجدا لتسبحته * قولوا لله ما ارهب اعمالك من
4 كثرة اياتك تجحدها اعداؤك * فلتسجد لك الارض جميعها * وليرتلوا لك وليرتلوا اسمك *
5 6 * تعالوا فانظروا اعمال الله * المرهوب في ارائه اكثر من بني البشر * الذي قلب البحر يبسا *
7 يعبرون النهر بارجلهم * هناك سيفرح به * الذي يسود الدهر بقدرته * عيناه الى الامم
8 تنظران * المغضبون لا يرتفعون في ذاتهم * باركوا الاهنا ايها الامم * واسمعوا صوت تسبحته *
9 10 * الذي وضع نفسي في الحياة * ومنع من الزلل رجلي * لانك امتحنتنا يا الله وسبكتنا كما
11 12 تسبك الفضة * ادخلتنا في الفخ * جعلت الشدائد على ظهورنا * اركبت الناس على روسنا *
13 اجزتنا في النار والماء * واخرجتنا الى الراحة * سادخل الى بيتك بمحرقات * واوفيك نذوري *
14 15 * التي نطقت بها شفتاي * وتكلم بها فمي في شدتي * اقدم لك محرقات شحم بغير عظم * مع
16 بخور وكباش * اقدم لك بقرا وجديا * تعالوا اسمعوا فاخبركم يا كل من يخاف من الله جميع ما
17 18 صنع بنفسي * صرخت اليه بفمي * ورفعت لساني كثيرا * اني كنت رايت في قلبي
19 20 ظلما * فلا يسمع الرب مني * لذلك استجاب الله لي * والتفت الى صوت طلبتي * تبارك الله
الذي لم يبعد صلاتي * ولا رحمته عني * اللليلويا *

Benedixiſti coronæ anni ex bonitate tua, 12
& implebuntur campi tui fertilitate, Et 13
*pingueſcent montes deſerti, & proferent
colles fortitudinem. Et induentur arie-* 14
*tes ovium pinguedine, & valles abundè
producent frumentum ; quapropter cla-
mabunt ac benedicent. Alleluja.*

PSAL. LXV.

Davidis. Laudatio, & de Reſur- 1
rectionẽ. Verſus 39.

Canite Deo, O univerſa terra : canite 2
*nomini ejus, & referte gloriam laudi
ejus. Dicite Deo, Quàm terribilia ſunt* 3
*opera tua propter multitudinem prodigio-
rum tuorum!* nihilominus *negant ea
inimici tui. Adoret te terra univerſa, &* 4
pſallant tibi, & pſallant nomini tuo. Ve- 5
*nite, & videte opera Dei: terribilis in ſen-
tentiis ſuis pluſquam filii hominum : Qui* 6
*convertit mare in aridam. Tranſibunt
flumen pedibus ſuis ; ibi lætabitur in eo.
Qui dominatur ſeculo in potentia ſua :* 7
*oculi ejus in gentes reſpiciunt. Irritatores
non extollentur in ſemetipſis. Benedicite* 8
*Deum noſtrum, O gentes, & audire fa-
cite vocem laudis ejus. Qui poſuit ani-* 9
*mam meam in vita, & prohibuit lapſu
pedes meos. Quoniam probâſti nos, O* 10
*Deus, & fudiſti nos quemadmodum fun-
ditur argentum. Introduxiſti nos in la-* 11
*queum, poſuiſti tribulationes ſuper terga
noſtra. Equitare feciſti homines ſuper ca-* 12
*pita noſtra : Traduxiſti nos per ignem,
& aquam, & eduxiſti nos ad requiem.
Introibo in domum tuam cum holocau-* 13
ſtis, & reddam tibi vota mea. Quæ pro- 14
*nuntiaverunt labia mea, & locutum eſt os
meum in anguſtia mea : Offeram tibi ho-
locauſta pinguedinis ſine oſſe, cum thure* 15
*& arietibus : offeram tibi boves & hæ-
dos. Venite, audite, & narrabo vobis, O* 16
*quicunque timetis Deum, quicquid fecit
in anima mea. Clamavi ad ipſum ore meo,* 17
& exaltavi linguam meam admodùm. Si 18
*aſpexi in corde meo ſcelus, non audiet me
Dominus. Propterea exaudivit Deus* 19
*me, converſus eſt ad vocem petitionis
meæ. Benedicatur Deus qui non amovit* 20
*orationem meam, neque miſericordiam
ſuam à me. Alleluja.*

תהלים : כז סח

PSAL. LXVII. סז

:nobis benedicat &,nostri misereatur Deus .cantici cantus Neghinoth in Victori
1 למנצח בנגינת מזמור שיר : 2 אלהים יחננו ויברכנו
omnibus in : tuam viam terra in *sciendum Ad* .Selah ,nobiscum *suas facies* illuminet
יאר פניו אתנו סלה : 3 לדעת בארץ דרכך בכל־
tibi confiteantur : Deus populi tibi Confiteantur .tuam salutem gentibus
גוים ישועתך : 4 יודוך עמים אלהים יודוך
populos judicabis quoniam , gentes *ovent* & ,Lætentur .ipsi omnes populi
עמים כלם : 5 ישמחו וירננו לאמים כי־תשפט עמים
populi tibi Confiteantur .Selah , *eas* duces terram in gentes & : æquitate
מישר ולאמים בארץ תנחם סלה : 6 יודוך עמים
: suum *germen* dedit Terra .ipsi omnes populi tibi confiteantur : Deus
אלהים יודוך עמים כלם : 7 ארץ נתנה יבולה
eum metuant & : Deus nobis Benedicat .noster Deus , Deus nobis benedicat
8 יברכנו אלהים אלהינו : יברכנו אלהים וייראו אותו
.terræ fines omnes
כל־אפסי־ארץ :

PSAL. LXVIII. סח

dispergantur , Deus Exurgat .cantici cantus David ipsi Victori
1 למנצח לדוד מזמור שיר : 2 יקום אלהים יפוצו
; propelles ,*fumum propelli Ut* .ejus *faciebus* à eum *habentes odio* fugiant & :ejus inimici
אויביו וינוסו משנאיו מפניו : 3 כהנדף עשן תנדף
.Dei *faciebus* à impii peribunt ; ignis *faciebus* à *ceram liquefieri ut*
כהמס דונג מפני־אש יאבדו רשעים מפני אלהים :
.lætitia in gaudebunt & , *Dei facies ad* exultabunt ,lætabuntur justi Et
4 וצדיקים ישמחו יעלצו לפני אלהים וישישו בשמחה :
Jah in ,*cœlis supremis in equitantem* exaltate ,ejus nomini canite , Deo Cantate
5 שירו לאלהים זמרו שמו סלו לרכב בערבות ביה
: viduarum judex & ,pupillorum Pater .*ejus facies ad* exultate & ,ejus *nomen*
שמו ועלזו לפניו : 6 אבי יתומים ודין אלמנות
, domo in unicos habitare *faciens* Deus .suæ sanctitatis habitaculo in Deus
אלהים במעון קדשו : 7 אלהים מושיב יחידים ביתה
.*siccum* habitaverunt rebelles veruntamen : compedibus in vinctos educens
מוציא אסירים בכושרות אך־סוררים שכנו צחיחה :
.Selah ,*solitudine in te incedere in* : *tui populi facies ad te egrediendo in* , Deus
8 אלהים בצאתך לפני עמך בצעדך בישימון סלה :
; Sinai hic Dei *faciebus* à distillaverunt cœli etiam ,tremuit Terra
9 ארץ רעשה אף־שמים נטפו מפני אלהים זה סיני
fecisti elevare *munificentiarum* Pluviam .Israel Dei , Dei *faciebus* à
10 מפני אלהים אלהי ישראל : גשם נדבות תניף
tua *Societas* .eam confirmâsti tu ,*confectam labore* & ,tuam hæreditatem ; Deus
11 אלהים נחלתך ונלאה אתה כוננתה : חיתך
dabit Dominus .Deus pauperi *tua bonitate in parabis* : ea in habitaverunt
12 ישבו־בה תכין בטובתך לעני אלהים : אדני יתן
, fugiebant exercituum Reges .*multus* exercitus *annunciatricum* : sermonem
13 אמר המבשרות צבא רב : מלכי צבאות ידדון
.*spolium* dividebat domus *habitatio* & : fugiebant
ידדון ונות בית תחלק שלל :

תרגום TARGUM.

סז

1 2 לשבחא בנגינתא תושבחתא ושירתא : אלהא
יחוס עלנא ויברכננא ינהר זיו אנפוי עמנא
3 לעלמין : להודעא בארעא אורחך בכל עממיא
4 פורקנך : יודון קדמך עממיא אלהא יודון קדמך
5 עממיא כולהון : יחדון וידוצון אומיא ארום תדין
עמיא בתירוצא ואומיא בארעא תדברנון
6 לעלמין : יודון קדמך עמיא אלהא יודון קדמך
7 עמיא כולהון : ארעא יהבת אבה יברך יתן
8 אלהא אלהנא : יברך יתן אלהא וידחלון יתיה
כל סיפי ארעא :

סח

1 2 לשבחא לדוד תושבחא ושירא : יקום אלהא
יתבדרון בעלי דבבוי ויערקון סנאוי מן קדמוי :
3 היכמה דשקיף תננא ישקפון היכמה די יתמסי
שעוא מן קדם אשא יהובדון רשיעיא מן קדם
4 אלהא : וצדיקיא יחדון וידוצון קדם יי ויחדון
5 בחדוא : שבחו קדם אלהא שבחו שום יקריה
קלסון ליתב על כורסיה יקריה בערבות יה
6 שמיה וביעו קדמוי : אבוהון דיתמי ודינהון
דארמלן אלהא במדור בית שכינת קודשיה :
7 אלהא די מזוג זוגים יחידאין לבר זוגא כחדא
דאפיק בית ישראל דהוון אסירין במצרים על
עובדיהון דאבהתהון כשרין בפומבי ברם פרעה
ומשריתיה דסרבו לשלחותהון שרון צחיחין :
8 אלהא כד נפקתא בעמודא דעננא ובעמודא
דאשתא קדם עמך כד טיילתא במדברא דישימון
9 לעלמין : כד יהבתא אוריתא לעמך ארעא
אתרגישת לחוד שמיא אטיפו טלא מן קדם יי
דין סיני סליק תנניה כתננא דאתונא מן קדם
10 דאתגלי עלוי יי אלהא דישראל : כד שמעו בית
ישראל ית קל גבורתך פרחו נפשיהון מן יד
אחתתא עליהון טלין דתחיותא ומטרין דרעוא
ארימתא אלהא על אחסנתך וכנשתא
11 דאשתלהיית את אתקינתא : חיתך אתיבתא בה
אתקינתא משריית מלאכיא לאוטבא לענייא
12 דאלהא : יי יהב פתגמי אוריתא לעמיה ברם משה ואהרן מבשרן מימר אלהא לחילות רבא דישראל : מלכותא
13 עם חיליהון אטלטלו מן פלטריהון וחכימיא אטלטלו מן מדעיהון וכנשתא דישראל מפלגא עדאה מן שמיא :

PARAPH. CHALD. Vers. Lat.

Ad laudandum in fidium pulsatione hymnus & canticum. 1

PSAL. LXVII.

DEus misereatur nostri, & benedicat nobis: 2 lucere faciat splendorē faciei suæ nobiscum semper. Ut innotescat in terra via tua; 3 in omnibus populis redemptio tua. Confitebuntur coram te populi Deus; 4 confitebuntur coram te gentes omnes. Lætabuntur & 5 gaudebunt gentes, quoniā judicabis populos in *rectitudine*, & gentes in terra duces in æternū. Confitebuntur corā te populi Deus, 6 confitebuntur coram te gentes omnes. Terra 7 dedit fructum suum: benedicat nobis Deus, Deus noster. Benedicat nobis Deus, & timeant eum omnes fines terræ. 8

Ad laudandū *Davidi* hymnus & canticū. 1

PSAL. LXVIII.

EXurgat Deus, dispergantur inimici ejus, 2 & fugiant odientes eum à facie ipsius. Sicut 3 propellitur fumus, propellantur; & sicut liquescit cera ab aspectu ignis, sic pereant improbi ab aspectu Dei. Et justi lætabuntur & 4 exultabunt corā Deo, & lætabūtur in lætitia. Laudate corā Deo, laudes dicite nomini glo- 5 riæ ej⁹: extollite sedentē sup sedē gloriæ *suæ* in nono cœlo, JAH est nomen ejus, & lætamini corā eo. Pater est orphanorū & judex 6 viduarum, Deus in habitaculo domus sanctæ suæ majestatis. Deus est qui copulat conjugia 7 unica cum filio legitimo simul; qui eduxit *domū* Israel qui erant ligati in Ægypto; propter opera patrū suorū recta in pompa: Pharao autē & exercitus ejus, qui pertinaces fuerunt ad dimittendos illos, inhabitant siccum. Deus cùm egredereris in columna nubis, & 8 in columna ignis ante populū tuū, cùm perambulares in deserto solitudinis in æternum. Quando dabas legem populo tuo, terra mota 9 est, insuper *cœli* stillaverunt *rorē* à conspectu Dñi; hic est Sinai: ascendebat fumus ej⁹ sicut fumus fornacis, propterea quòd *manifestatus* est super illū *Dominus Deus* Israel. *Quando* 10 *audiverunt domus Israel vocem potentiæ tuæ, defecerūt animi ipsorū; statim demisisti super eos* rores vivificationis, & pluvias spontaneas projecisti De⁹ super hæreditatē tuā, & Ecclesiam laborantē tu erexisti. Vivificationē tuā 11 collocâsti in ea, præparâsti exercit⁹ *angelorū*, ut benefaceres pauperib⁹ Dei. *Domin⁹* dedit 12 verba legis populo suo; verùm Mosseh & Aharon evangelizabant verbū Dei *exercitui magno* Israelis. Reges cum exercitibus suis 13 migraverunt de prætoriis suis, & sapientes dimoti sunt à scientia sua; & congregatio Israelis dividebat prædam de cœlis.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

1 [illegible]
[illegible]
2 [illegible]
3 [illegible]
4
5 [illegible]
6 [illegible]
7
8 [illegible]
[illegible]
1 [illegible]
2 [illegible]
3 [illegible]
4 [illegible]
5 [illegible]
6 [illegible]
7 [illegible]
8 [illegible]
9 [illegible]
10 [illegible]
11
12 [illegible]
13 [illegible]

PSAL. LXVII.

Incertum quis eum ediderit. Canebat illū populus quū traducerent Davidem per flumē Jordanē. Nobis autē innuit in eo prophetiā de vocatione Gentium, & prædicatione Apostolorum, deque judiciis Domini. Vers. 15. 1

DEus noster misereatur nostrî, benedicat 2 nobis, & illustret vultū suū erga nos: **Diapsal.** Ut cognoscam⁹ in terra vias ejus, 3 & inter omnes gentes salutē ipsius. Confiteantur tibi populi De⁹, confiteantur tibi populi omnes. 4 Lætentur & laudē dicāt regna, 5 quòd judices populos rectè, & regna gubernes in terra. * *Diapsalma.* * Confiteantur 6 tibi populi Deus, confiteantur tibi populi omnes. Terra dedit fructus suos. Benedi- 7 cat nos Deus, Deus noster; Etiam benedicat 8 nos Deus noster: ac metuant eū omnes fines terræ. *Laus, & initium gradûs.*

PSAL. LXVIII.

Davidis. Quum parârunt se reges ad bellandum contra eum. Item Prophetia de dispensatione Christi, deque vocatione Gentium ad fidem. Vers. 42. 1

EXurgat De⁹ & dissipentur omnes inimici 2 ejus, & fugiāt osores ej⁹ à conspectu ipsius. Quemadmodū evanescit fum⁹, evanescāt: 3 & sicut liquefit cera à conspectu ignis, pereant impii à conspectu Dei. Justi autē gaude- 4 ant & confortentur corā Deo, atq; lætentur in suavitate ejus. Canite Deo, & laudate no- 5 men ejus: glorificate eum qui inequitat occasum, Dñs est nomē ejus. Corroboramini corā Patre orphanorū et judice viduarū. De⁹ 6 in habitaculo suo sancto: Deus sedere facit 7 unicū in domo: & educit vinctos cum prosperitate; rebelles autē habitabunt in sepulchris. Deus quando egressus es ante populū 8 tuū, & quū transivisti per Asimun, Terra tre- 9 muit, * *Diapsal.** etiā cœli distillaverunt à conspectu Dei: iste mons Sinai à conspectu Dei, Dei Israel. Pluviam voti concessisti 10 Deus hæreditati tuæ: ægrotavit, at tu confirmâsti eam: At animalia tua habitârunt in ea; 11 roborâsti gratiâ tuâ pauperes Deus. Dominus 12 suppeditabit verbum Evangelii virtute ma- 13 gnâ. Reges exercituum congregabuntur, & pulchritudo domûs tuæ dividet spolia.

Verſio VULG. LAT.

In finem,
1 In hymnis, Pſalmus cantici
David. LXVI.
2 DEus miſereatur noſtrî, & benedi-
cat nobis: illuminet vultum ſuum ſup
3 nos, & miſereatur noſtrî. Ut cognoſca-
mus in terra viã tuã, in omnibus gen-
4 tibus ſalutare tuum. Confiteantur tibi
populi, Deus: confiteantur tibi populi
5 omnes. Lætentur & exultent gentes:
quoniam judicas populos in æquitate, &
6 gentes in terra dirigis. Confiteantur
tibi populi, Deus: confiteantur tibi po-
7 puli omnes: Terra dedit fructum ſuum.
8 Benedicat nos Deus, Deus noſter, Be-
nedicat nos Deus: & metuant eum
omnes fines terræ.

In finem,
1 Pſalmus Cantici ipſi David.
LXVII.
2 EXurgat Deus, & diſſipentur ini-
mici ejus: & fugiant qui oderunt eum,
3 à facie ejus. Sicut deficit fumus, defici-
ant: ſicut fluit cera à facie ignis, ſic per-
4 eant peccatores à facie Dei. Et juſti
epulentur, & exultent in conſpectu Dei:
5 & delectentur in lætitia. Cantate Deo,
pſalmum dicite nomini ejus: iter facite
ei, qui aſcendit ſuper occaſum: Dñs no-
men illi. Exultate in conſpectu ejus,
6 turbabuntur à facie ejus, Patris orpha-
norum, & judicis viduarum. Deus in
7 loco ſancto ſuo: Deus qui inhabitare
facit unius moris in domo: Qui educit
vinctos in fortitudine, ſimiliter eos qui
exaſperant, qui habitant in ſepulchris.
8 Deus, cùm egredereris in conſpectu po-
9 puli tui, cùm pertrãſires in deſerto: Ter-
ra mota eſt, etenim cœli diſtillaverunt
à facie Dei Sinai, à facie Dei Iſrael.
10 Pluviam voluntariam ſegregabis, Deus,
hæreditati tuæ: & infirmata eſt, tu ve-
11 rò perfeciſti eam. Animalia tua habi-
tabunt in ea: parâſti in dulcedine tua
12 pauperi, Deus. Dominus dabit verbum
13 evangelizantibus, virtute multã. Rex
virtutũ dilecti dilecti: & ſpeciei domûs
dividere ſpolia.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

1 Εἰς τὸ τέλος, Ἐν ὕμνοις ψαλμὸς τῷ Δαυίδ.
ξϛʹ.
2 Ὁ Θεὸς οἰκτειρήσαι ἡμᾶς, καὶ εὐλογήσαι ἡμᾶς,
ἐπιφάναι τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἐφ' ἡμᾶς. ΔΙΑΨΑΛΜΑ.
3 Τοῦ γνῶναι ἐν τῇ γῇ τὴν ὁδόν σου, ἐν πᾶσιν ἔ-
4 θνεσι τὸ σωτήριόν σου. Ἐξομολογησάσθωσάν σοι
λαοί ὁ Θεός, ἐξομολογησάσθωσάν σοι λαοὶ πάν-
5 τες. Εὐφρανθήτωσαν καὶ ἀγαλλιάσθωσαν ἔθνη, ὅτι κρι-
νεῖς λαοὺς ἐν εὐθύτητι, καὶ ἔθνη ἐν τῇ γῇ ὁδηγή-
6 σεις. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. Ἐξομολογησάσθωσάν σοι λα-
οὶ ὁ Θεός, ἐξομολογησάσθωσάν σοι λαοὶ πάντες.
7 Γῆ ἔδωκε τὸν καρπὸν αὐτῆς. εὐλογήσαι ἡμᾶς ὁ
8 Θεός, ὁ Θεὸς ἡμῶν, Εὐλογήσαι ἡμᾶς ὁ Θεός, καὶ
φοβηθήτωσαν αὐτὸν πάντα τὰ πέρατα τῆς γῆς.

1 Εἰς τὸ τέλος, Τῷ Δαυὶδ ψαλμὸς ᾠδῆς.
ξζʹ.
2 Ἀναστήτω ὁ Θεός, καὶ διασκορπισθήτωσαν οἱ ἐ-
χθροὶ αὐτοῦ, καὶ φυγέτωσαν οἱ μισοῦντες αὐτὸν ἀπὸ
3 προσώπου αὐτοῦ. Ὡς ἐκλείπει καπνός, ἐκλιπέτω-
σαν· ὡς τήκεται κηρὸς ἀπὸ προσώπου πυρός, οὕτως
ἀπόλοιντο οἱ ἁμαρτωλοὶ ἀπὸ προσώπου τοῦ Θεοῦ.
4 Καὶ οἱ δίκαιοι εὐφρανθήτωσαν· ἀγαλλιάσθωσαν ἐν-
5 ώπιον τοῦ Θεοῦ, τερφθήτωσαν ἐν εὐφροσύνῃ. Ἄσατε
τῷ Θεῷ, ψάλατε τῷ ὀνόματι αὐτοῦ, ὁδοποιήσατε
τῷ ἐπιβεβηκότι ἐπὶ δυσμῶν, Κύριος ὄνομα αὐτῷ,
καὶ ἀγαλλιᾶσθε ἐνώπιον αὐτοῦ. ταραχθήσονται ἀπὸ
6 προσώπου αὐτοῦ, Τοῦ πατρὸς τῶν ὀρφανῶν, καὶ κρι-
7 τοῦ τῶν χηρῶν, ὁ Θεὸς ἐν τόπῳ ἁγίῳ αὐτοῦ. Ὁ Θε-
ὸς κατοικίζει μονοτρόπους ἐν οἴκῳ, ἐξάγων πεπε-
δημένους ἐν ἀνδρείᾳ· ὁμοίως τοὺς παραπικραίνον-
8 τας, τοὺς κατοικοῦντας ἐν τάφοις. Ὁ Θεός, ἐν τῷ
ἐκπορεύεσθαί σε ἐνώπιον τοῦ λαοῦ σου, ἐν τῷ δια-
9 βαίνειν σε τὴν ἔρημον· ΔΙΑΨΑΛΜΑ· Γῆ ἐσεί-
σθη, καὶ γὰρ οἱ οὐρανοὶ ἔσταξαν ἀπὸ προσώπου τοῦ Θεοῦ
10 τοῦ Σινᾶ, ἀπὸ προσώπου τοῦ Θεοῦ Ἰσραήλ. Βροχὴν
ἑκούσιον ἀφοριεῖς ὁ Θεὸς τῇ κληρονομίᾳ σου, καὶ ἠσθέ-
11 νησε, σὺ δὲ κατηρτίσω αὐτήν. Τὰ ζῶά σου κατοι-
κοῦσιν ἐν αὐτῇ, ἡτοίμασας ἐν τῇ χρηστότητί σου τῷ
12 πτωχῷ. Ὁ Θεὸς κύριος δώσει ῥῆμα τοῖς εὐαγ-
13 γελιζομένοις δυνάμει πολλῇ, Ὁ βασιλεὺς τῶν δυνά-
μεων τοῦ ἀγαπητοῦ, τοῦ ἀγαπητοῦ, καὶ ὡραιότητι τοῦ οἴ-
κου διελέσθαι σκῦλα.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

In finem, In hymnis (a) [a] Pſal- 1
mus ipſi David. LXVI.
1 *DEus miſereatur noſtri, &* 2
benedicat nos: illuminet vultum
ſuum (b) ſuper nos. [b]. *DIA-*
PSALMA. 2 [c] *Ad (c) cogno-* 3
ſcendum in terra viam tuam, in
omnibus gentibus ſalutare tuum.
3 *Confiteantur tibi populi, Deus:* 4
confiteantur tibi populi omnes.
4 *Lætentur & exultent gentes:* 5
quoniam (d) judicabis populos in
æquitate, & gentes in terra di-
riges. DIAPSALMA. 5 *Confi-* 6
teantur tibi populi, Deus: confite-
antur tibi populi omnes: Terra 7
dedit fructum ſuum. 6 *Benedi-*
cat nos Deus, Deus noſter, Be- 8
nedicat nos Deus: &
metuant eum omnes fines terræ.

In finem, Ipſi David Pſalmus can- 1
tici. *LXVII.*
1 *EXurgat (a) Deus, & diſſi-* 2
pentur inimici ejus: & fugiant,
qui oderunt eum, à facie ejus.
2 *Sicut deficit fumus, deficiant:* 3
ſicut liqueſcit cera à facie ignis;
ſic pereant (b) peccatores à facie
Dei. 3 *Et juſti (c) lætentur, ex-* 4
ultent in conſpectu Dei: delecten-
tur in lætitia. 4 *Cantate Deo,* 5
pſallite nomini ejus: (d) iter fa-
cite ei, qui aſcendit ſuper occa-
ſum: (e) Dominus nomen illi.
5 *Et exultate in conſpectu ejus:*
turbabuntur à facie ejus, Patris 6
orphanorum, & judicis vidua-
rum. 6 *(f) Deus in loco ſancto*
ſuo. Deus inhabitare facit [a] *u-* 7
nius (g) moris in domo. 7 *Qui*
educit vinctos in fortitudine. Si-
militer eos qui (h) exaſperant,
qui habitant in ſepulchris. 8 *De-* 8
us, (i) cùm egredereris in con-
ſpectu [b] *populi tui, cùm (k)*
pertranſires deſertum: DIA-
PSALMA. 9 *Terra mota eſt: et-* 9
enim cœli diſtillaverunt à facie
Dei (l) Sinai, à facie Dei Iſra-
el. 10 *Pluviam voluntariam ſe-* 10
gregabis, Deus, hæreditati tuæ: &
infirmata (m) eſt: tu verò [c] *per-*
feciſti eam. 11 *Animalia tua in-* 11
habitabunt in ea: parâſti in dul-
cedine tua (n) pauperi, 12 *Deus (o) Dominus dabit verbum evangelizantibus virtute* 12
multã: 13 *Rex virtutum (p) dilecti, dilecti, &* [d] *ſpeciei domûs dividere ſpolia.* 13

Verſio ÆTHIOPICA.

ፍጻሜ:ስብሐት:መዝሙር:ማኅሌት::
ጃ፣ እግዚአብሔር : ይባርከነ : ወይሣሀለ 1
ነ::ወያርኢ:ገጾ:ላዕሌነ:ወንሕዮ::=፦ ከ 2
መ : ናእምር : በምድር : ፍኖተከ::ወበኵ
ሉ:አሕዛብ:አድኅኖተከ::=፦ ይገንዩ:ለ 3
ከ:አሕዛብ:እግዚኦ::ይገንዩ: ለከ: አሕዛ
ብ:ኵሎሙ::=፦ ይትፌሥሑ:ወይትሐሠ 4
ዩ: አሕዛብ::እስመ : ትኴንኖሙ፤ ለአሕዛ
ብ : በርትዕ::ወትመርሖሙ: ለአሕዛብ: በ
ምድር::=፦ ይገንዩ:ለከ:አሕዛብ:እግዚ 5
ኦ::ይገንዩ: ለከ: አሕዛብ : ኵሎሙ::ም
ድርኒ: ወሀበት: ፍሬሃ::=፦ ወይባርከነ:እ 6
ግዚአብሔር : አምላክነ :: ወይባርከነ: እ
ግዚአብሔር :: ወይፈርህዎ : ኵሎሙ:አ
ጽናፈ:ምድር::=፦

ፍጻሜ:ዘደዊት:መዝሙር:ማኅሌት::
ጃጊ ይትነሣእ:እግዚአብሔር:ወይዘረው: 1
ፀሩ::ወይጕዩ : ጸላእቱ : እምቅድመ : ገ
ጹ::=፦ ከመ:የኅልቅ:ጢስ:ከማሁ:የኅል 2
ቁ::ወከመ:ይትመሰው:ሰምዕ:እምቅድመ:
ገጸ:እሳት::ከማሁ : ይትሐጐሉ : ኃጥኣን:
እምቅድመ:ገጹ:ለእግዚአብሔር::=፦ ወ 3
ጻድቃንሰ: ይትፌሥሑ::ወይትሐሠዩ : በቅ
ድመ: እግዚአብሔር::ወይትፌሥሑ: በሐ
ሤት::=፦ ሰብሕዎ : ለእግዚአብሔር: ወ 4
ዘምሩ:ለስሙ::ፍኖተ: ግበሩ : ለዘ:ዐርገ:
እንተ:ዐረብ:እግዚአብሔር:ስሙ::=፦ ወ 5
ተፈሥሑ: በቅድሜሁ::ወይደነግፁ: እም
ቅድመ:ገጹ::አብ:ለእጓለ: ማውታ: መኰ
ንኖን: ለአቤራት::=፦ እግዚአብሔር: ው 6
ስተ: ቤተ: መቅደሱ::እግዚአብሔር:የኀድ
ሮሙ:ለባሕታዊያን:ውስተ:ቤቱ::=፦ ወያ 7
ወፅኦሙ : ለሙቁሐን: በኀይሉ::ከማሁ: ለ
ምሩራን : እለ : ይነብሩ : ውስተ : መቃብ
ር::=፦ እግዚኦ: አመ : ወፃእከ:ቅድመ: 8
ኵሉ: ሕዝብከ::ወአመ፤: እንተ : ገደም:
ኃለፍከ::=፦ ምድርኒ ; አድለቅለቀት:ወ 9
ሰማይኒ : አንጠብጠበ::እምቅድመ : ገጹ:
ለአምላከ:ሲና::እምቅድመ: ገጹ: ለአም
ላከ:እስራኤል::=፦ ዝናመ:ፈቃዱ:ዘፈለ 10
ጠ:እግዚአብሔር : ለርስትከ::አመ፤: ደክ
መ:አንተ:ታጸንዖ::=፦ እንስሳከ:የኀድር: 11
ውስቴቱ::ወአስተደሎከ : ለነደያን:በኂሩት
ከ፡ እግዚኦ::=፦ እግዚአብሔር : ይሁብ 12
ሙ:ቃለ:ለእለ:ይዜንው:ኃይለ:ብዙኀ::=፦
ንጉሠ: ኃያላን: ለፍቁሩ::ለፍቁሩ:ወለስን: 13
ቤትከ:ተካፈልነ:ምህርከ::=፦

INTERP. ÆTHIOP. *PSAL. LXVI.* [a] Pſalmus cantici. [b] & vivamus. [c] Ut cognoſcamus in *PSAL. LXVII.* [a] ſolitarios in domo. [b] omnis populi [c] confirmâſti eam. [d] decori
domûs tuæ divides nobis ſpolia.

Verſio *ARABICA.* cum Interpretatione *LATINA.*

1 * المزمور السادس والستون * لداود في التسابيح * وعدده * يه * استيخن *
2 3 * الله يتراءف علينا ويباركنا * يجلي وجهه علينا ويرحمنا * لنعرف في الارض سبلك * وفي
4 5 جميع الامم خلاصك * فلتعترف لك الشعوب يا الله * ولتشكرك جميع الشعوب * ولتفرح
6 الامم ويبتهجوا * لانك تحكم في الشعوب بالاستقامة * وتهدي الامم في الارض * فلتعترف
7 8 لك الشعوب يا الله * ولتشكرك الشعوب جميعها * الارض اعطت ثمرها * باركنا الله * الله الهنا
يباركنا فلتخشاه جميع اقطار الارض * الليلويا * * المزمور السابع والستون *

1 * لداود تسبحه * وعدده * ف * استيخن *
2 3 * يقوم الله وليتفرق اعداوه وليهرب من وجهه كل مبغضيه * وليضمحلوا كما يضمحل
4 الدخان * وكما يذوب الشمع قدام النار * كذلك تهلك الخطاة من قدام الله * وليفرح
5 الصديقون * ويستبشروا امام الله وليفرحوا فرحا * سبحوا الله ورتلوا اسمه * يسروا طريق
6 الرب الراكب على المغارب الرب اسمه * فليبتهجوا امامه وليضطربوا من وجهه * لانه ابو
7 الايتام * وقاضي الارامل * الله في مكان قدسه * الله يسكن ذوي الخلق الواحد في بيت * ويطلق
8 المقيدين بقوة * كذلك المردة الساكنين في القبور * اللهم حين جزت امام شعبك * اذ عبرت في
9 البرية * تزلزلت الارض * والسموات قطرت من عند الله * في جبل سينا * من وجه اله اسرائيل *
10 11 * سقيت يا الله لميراثك مطر الرضي * مرضت وانت جبرتها * اسكنت فيها حيوانك * اعددت
12 13 للمساكين بصلاحك يا الله * الرب يعطي المبشرين كلاما بقوة عظيمة * ملك القوات هو
المحبوب * وفي بهاء بيت الحبيب يقسم الغنايم *

PSAL. LXVI.
Davidis, de laudationibus. Et nu- 1
merus verſ. 15.
DEus propitietur nobis, & benedicat 2
nos: oriri faciat vultũ ſuũ ſuper
nos, & miſereatur noſtri. Ut cognoſcamus 3
in terra ſemitas tuas, & in omnibus gen-
tibus ſalutem tuã. Confiteantur tibi po- 4
puli, O Deus, & gratias agant tibi omnes
populi: Et lætentur gentes ac jubilent; 5
quia tu judicas inter populos cum æqui-
tate, & dirigis gentes in terra. Confitean- 6
tur tibi populi, O Deus, & gratias agant
tibi populi omnes. Terra dedit fructum 7
ſuum: benedixit nos Deus. Deus, Deus 8
noſter benedicet nobis: quarè formident
eum univerſi fines terræ. Alleluja.

PSAL. LXVII.
Davidis, laudatio. Et numerus 1
verſ. 80.
EXurgat Deus, & diſſipentur inimici 2
ejus, & fugiant à facie ejus omnes
oſores ipſius. Et evaneſcant quemadmo- 3
dũ evaneſcit fumus, & quemadmodum
liqueſcit cera corã igne, ſic pereant pec-
catores à conſpectu Dei. At gaudeant ju- 4
ſti & exhilarentur ante Deum, & exul-
tent exultatione. Laudate Deum & pſal- 5
lite nomini ejus, facilem reddite viã Do-
mini equitantis ſuper occaſus, Dominus
nomen ejus. Itaque exhilarentur coram
eo, & conturbentur à facie ipſius: Quo- 6
niam ipſe eſt pater orphanorum, & judex
viduarũ. Deus eſt in loco ſanctitatis ſuæ:
Deus inhabitare facit habentes morem 7
eundem in domo, & dimittit vinctos cũ
potentia, ſimiliter rebelles habitantes in
ſepulchris. Deus, quandò tranſîſti ante 8
populum tuum, quum præteriîſti per de-
ſertum, Tremefacta eſt terra, & cœli 9
diſtillaverunt à conſpectu Dei in mon-
tem Sinai, à conſpectu Dei Iſrael. Po- 10
tâſti O Deus, hæreditatem tuam pluviã
oblectationis: infirmata eſt, & tu reſar-
ſiſti eam. Habitare feciſti in ea animalia 11
tua: diſpoſuiſti pauperibus ex bonitate
tua, O Deus. Dominus dabit evangeli- 12
zantibus ſermonem cum virtute magna.
Rex virtutum ipſe eſt dilectus, & in 13
ſplendore domûs dilecti dividet ſpolia.

תהלים : כח

: argento *in tectæ* columbæ pennæ ,tripodes inter *accubueritis* Si

14 אִם־תִּשְׁכְּבוּן בֵּין שְׁפַתָּיִם כַּנְפֵי יוֹנָה נֶחְפָּה בַכֶּסֶף

reges *Sadai diſſipando In* .auro flavo in ejus alæ &

15 וְאֶבְרוֹתֶיהָ בִּירַקְרַק חָרוּץ׃ בְּפָרֵשׂ שַׁדַּי מְלָכִים

: Baſan mons Dei Mons .Salmon in *nix ut albeſcebas* ,ea in

16 בָּהּ תַּשְׁלֵג בְּצַלְמוֹן׃ הַר־אֱלֹהִים הַר־בָּשָׁן

montes *deſpicitis* quid Ut .Baſan mons *gibborum* mons

17 הַר גַּבְנֻנִּים הַר־בָּשָׁן׃ לָמָּה תְּרַצְּדוּן הָרִים

Dominus etiam ? *cum* inhabitare Deus deſideravit montem ,*gibboſi*

גַּבְנֻנִּים הָהָר חָמַד אֱלֹהִים לְשִׁבְתּוֹ אַף יְהוָה

: *duplicata* millia *myriades duæ* Dei Currus .*æternum* in inhabitabit

18 יִשְׁכֹּן לָנֶצַח׃ רֶכֶב אֱלֹהִים רִבֹּתַיִם אַלְפֵי שִׁנְאָן

,altitudinem in Aſcendiſti .ſanctitate in Sinai ,eis *in* Dominus

19 אֲדֹנָי בָם סִינַי בַּקֹּדֶשׁ׃ עָלִיתָ לַמָּרוֹם

etiam & : *homine* in dona accepiſti ,captivitatem captivam duxiſti

שָׁבִיתָ שֶּׁבִי לָקַחְתָּ מַתָּנוֹת בָּאָדָם וְאַף

Dominus Benedictus .Deum *Jah inhabitandum ad* ,rebelles

20 סוֹרְרִים לִשְׁכֹּן יָהּ אֱלֹהִים׃ בָּרוּךְ אֲדֹנָי

.Selah ,noſtram ſalutem Deus nobis *onus in imponet* ,*die die*

יוֹם יוֹם יַעֲמָס־לָנוּ הָאֵל יְשׁוּעָתֵנוּ סֶלָה׃

mortem ad *Adonai* Domino & ,ſalutes ad Deus nobis Deus

21 הָאֵל לָנוּ אֵל לְמוֹשָׁעוֹת וְלֵיהוִה אֲדֹנָי לַמָּוֶת

,ſuorum inimicorum caput transfiget Deus Veruntamen .exitus

22 תּוֹצָאוֹת׃ אַךְ־אֱלֹהִים יִמְחַץ רֹאשׁ אֹיְבָיו

, Dominus Dixit .ſuis delictis in ambulantis ;crinis verticem

23 קָדְקֹד שֵׂעָר מִתְהַלֵּךְ בַּאֲשָׁמָיו׃ אָמַר אֲדֹנָי

.maris profundis de redire faciam : faciam redire Baſan ex

מִבָּשָׁן אָשִׁיב אָשִׁיב מִמְּצֻלוֹת יָם׃

tuorum canum lingua , ſanguine in *tuum pedem figas* Ut

24 לְמַעַן תִּמְחַץ רַגְלְךָ בְּדָם לְשׁוֹן כְּלָבֶיךָ

itinera ;Deus tua itinera Viderunt .*ipſo ex* inimicis ex

25 מֵאֹיְבִים מִנֵּהוּ׃ רָאוּ הֲלִיכוֹתֶיךָ אֱלֹהִים הֲלִיכוֹת

cantores Prævenerunt .ſanctitate in mei regis , mei Dei

26 אֵלִי מַלְכִּי בַקֹּדֶשׁ׃ קִדְּמוּ שָׁרִים

.tympanizantium puellarum medio in ;*modulatores* poſt

אַחַר נֹגְנִים בְּתוֹךְ עֲלָמוֹת תּוֹפֵפוֹת׃

vena ex Domino ;Deo benedicite eccleſiis In

27 בְּמַקְהֵלוֹת בָּרְכוּ אֱלֹהִים אֲדֹנָי מִמְּקוֹר

principes , eis dominans *puſillus* Binjamin Ibi .Iſrael

28 יִשְׂרָאֵל׃ שָׁם בִּנְיָמִן צָעִיר רֹדֵם שָׂרֵי

.Naphthali principes , Zebulun principes : eorum *lapis* , Jehudah

יְהוּדָה רִגְמָתָם שָׂרֵי זְבֻלוּן שָׂרֵי נַפְתָּלִי׃

hoc Deus fortifica , tuæ fortitudini tuus Deus Præcepit

29 צִוָּה אֱלֹהֶיךָ עֻזֶּךָ עוּזָּה אֱלֹהִים זוּ

offerent tibi Jeruſalaim *ſuper* tuo templo *A* .nobis es operatus

30 פָּעַלְתָּ לָּנוּ׃ מֵהֵיכָלֶךָ עַל־יְרוּשָׁלָםִ לְךָ יוֹבִילוּ

.*munus* reges

מְלָכִים שָׁי׃

תרגום TARGUM.

14 אִין אַתּוּן מַלְכַיָא רַשִׁיעַיָא שָׁכְבִין בֵּינֵי קִלְקְלָתָא
כְּנִשְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל דְּדַמְיָא לְיוֹנְתָא מְטַלְלָא בַּעֲנָנֵי
יְקָרָא מַפְלְגָא בִּזַּת מִצְרָאֵי סִימָא דְזִקִיק וְטַסְקְרַיָא
מַלְיָן אוֹבְרִיזִין סְנִין׃ 15 כַּד פַּרְסַת אִידָהָא עַל יַמָּא בִּצְלוֹ
שַׁדַּי אַמֵּיךְ מַלְכְּוָן וְאַמְטוּלְתָהּ עֲנַן גֵּיהִנָּם הֵיךְ תַּלְגָא
פְּצָא יָתָהּ מִטּוּלָא דְמוֹתָא׃ 16 טוּר מוֹרִיָּה אֲתַר דִּי
פְּלַחוּ אֲבָהָת עָלְמָא קֳדָם יְיָ אִתְבְּחַר לְבִנְיַן בֵּית
מַקְדְּשָׁא וְטוּר סִינַי לְמוֹהֲבִית אוֹרַיְתָא טוּר מַתְנָן
טוּר תָּבוֹר וְכַרְמֶל אִתְפְּסִילוּ אִתְעֲבֵד לְהוֹן גִּבְבָא
הֵיךְ טוּר מַתְנָן׃ 17 אֲמַר אֱלָהָא לְמָה אַתּוּן טָפְזִין טוּרַיָא
לֵית רַעֲוָתִי לְמִתַּן אוֹרַיְתָא עַל טוּרַיָא גֵּיוְתָנִין
מִבְסְרָנַיָא הָא טוּר סִינַי דְּמַכִּיךְ רַגֵּג מֵימְרָא דַיְיָ
לְאַשְׁרָאָה עֲלוֹי שְׁכִנְתֵּיהּ לְחוּד בִּשְׁמֵי שְׁמַיָּא יְיָ יִשְׁרֵי
לְעָלְמָא׃ 18 אַרְתִּיכִין דֶּאֱלָהָא תְּרֵין רִבְּבָן דְּנוּר דָּלִיק
תְּרֵין אַלְפִין דְּאַנְגְּלַיָא מַדְבְּרִין לְהוֹן שְׁכִנְתָּא דַיְיָ
שָׁרַת עֲלֵיהוֹן עַל טוּרָא דְסִינַי בִּקְדוּשָׁה׃ 19 סְלֵקְתָּא
לִרְקִיעַ [מֹשֶׁה נְבִיָּא] שְׁבִיתָא שְׁבִיתָא [אַלֵּפְתָּא
פִּתְגָּמֵי אוֹרַיְתָא] יְהַבְתָּא לְהוֹן מַתְּנָן לִבְנֵי נָשָׁא
וּבְרַם סַרְבָנַיָא דִּי מִתְגַּיְּרִין וְתָיְבִין בִּתְתוּבָא שָׁרַת
עֲלֵיהוֹן שְׁכִינַת יְקָרָא דַיְיָ אֱלֹהִים׃ 20 בְּרִיךְ יְיָ כָּל יוֹמָא
וְיוֹמָא טָעֵן לָנָא מוֹסִיף פִּקּוּדַיָא עֲלַוֵי פִּקּוּדַיָא תַּקִּיפָא
דִּי הוּא פּוּרְקָנָא וְסַעְדָּנָא לְעָלְמִין׃ 21 אֱלָהָא לָנָא
תְּקוֹף וּפוּרְקָן וּמִן קֳדָם יְיָ מִתְגָּרִין בְּרַשִׁיעַיָא מוֹתָא
וּמַפְּקָנוּת נִשְׁמְתָא בְּסַרְנוּקָא׃ 22 בְּרַם אֱלָהָא יִתְבַּר רֵישׁ
בַּעֲלֵי דְבָבוֹי יְנַתַּר שֵׂעַר גְּבַר דִּי מִתְהַלֵּךְ בְּחוֹבוֹי׃
23 צַדִּיקַיָא דְמִיתוּ וְאִתְאֲכַלוּ מִן חֵיוַת בְּרָא אֲמַר יְיָ
מִבּוּתְנַן אֲתִיב אֲתִיב צַדִּיקַיָא דִּי יִשְׁתְּנִיקוּ בִּמְצוּלָתֵיהּ
דְיַמָּא׃ 24 מִן בְּגַלַל דִּיחְמוּן פּוּרְעָנוּת רַשִׁיעַיָא יִטַמְשׁוּן
רַגְלֵיהוֹן בִּדְם קְטִילִין לִישָׁן חֵיוַת בָּרָא מִן תַּרְבְּהוֹן
יִדְהֲנוּן מִן בַּעֲלֵי דְבָבָא מִנְּהוֹן יִסְבְּעוּן׃ 25 חֲמוֹן בֵּית
יִשְׂרָאֵל הֲלִיכוּת שְׁכִנְתָּךְ עַל יַמָּא אֱלָהָא אָמְרִין
הֲלִיכָת אֱלָהָא מְלֵךְ כָּל עָלְמָא בִּקְדוּשָׁא׃ 26 אַקְדִּימוּ
וַאֲמַרוּ שִׁירְתָא בָּתַר מֹשֶׁה וְאַהֲרֹן דִּמְנַגְּנִין קֳדָמֵיהוֹן
בִּמְצַע נְשַׁיָּא צַדִּיקָתָא דִּי עִם מִרְיָם מְתוֹפְפָן׃ 27 בֵּינֵי
כְּנִישַׁיָּא בָּרִיכוּ אֱלָהָא רוֹמְמוּ יְיָ עוּבְרַיָּא בִּמְעֵי אִמְּהוֹן
זַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל׃ 28 תַּמָּן בִּנְיָמִן זְעֵיר בְּשִׁבְטַיָא דְמִן
שֵׁירוּיָא נְחַת לְיַמָּא מְטוּל הֵיכְנָא קַבֵּל מַלְכוּתָא מִן שֵׁירוּיָא וּבַתְרֵיהוֹן נְחַתוּ רַבְרְבֵי יְהוּדָה רְגַמוּ
יַתְהוֹן שִׁבְטַיָא אַבְנִין וְקַבִּילוּ רַבָּנוּתָא בַּתְרֵהוֹן רַבָּנֵי זְבוּלֻן הֲווֹ תַּגָּרֵיהוֹן רַבָּנֵי נַפְתָּלִי הֲווֹ גִּבָּרֵיהוֹן׃
29 פַּקֵּד אֱלָהָא עוּשְׁנָךְ אִתְעַשַּׁן אֱלָהָא שְׁרֵי בְּבֵית מַקְדְּשָׁא דְנָן דַּעֲבַדְתְּ לָנָא׃ 30 מִן הֵיכְלָךְ תְּקַבֵּל
קוּרְבָּנַיָא עַל יְרוּשְׁלֶם שְׁכִנְתָּךְ שָׁרְיָא מִפַּנְקְטֵיהוֹן לָךְ יַיְתוֹן מַלְכַיָא קוּרְבָּנַיָא׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

14 Si vos reges *impii* dormitis inter aulæa, Eccleſia Iſraelis quæ ſimilis eſt columbæ, cooperta nubibus gloriæ, dividit prædam Ægyptiorũ, argentũ repurgatum & arculas plenas obrizo puriſſimo. 15 Quando extendit manus ſuas in oratione ſuper mare, Omnipotens proſtravit regna; *&* propter eam *refrixit* gehenna ſicut nix; eripuit eam de umbra mortis. 16 Mons *Moria, locus ubi adoraverunt patres antiqui coram Domino, electus eſt ad ædificationem domus ſanctuarii, & mons Sinai ad dandam legem*; mons Baſan, *mons Tabor et Carmel repudiati ſunt, factus eſt ipſis collis* ſicut mons Baſan. 17 Dixit Deus, Quare ſubſilitis montes excelſi? *haud placitũ eſt mihi dare legem ſuper montibus altis & ſupercilioſis*; ecce mons Sinai humilis eſt: deſideravit Verbum Dei collocare *ſuper eum* majeſtatẽ ſuam, quinetiam *Dominus* in cœlis cœlorũ habitabit in perpetuum. 18 Currus Dei binæ myriades ignis ardentis, duo millia angelorũ ducunt illos: majeſtas Dñi quieſcit ſuper illos ſuper montem Sinai in ſanctitate. 19 Aſcendiſti firmamentum *Moſſeh propheta*: captivam duxiſti captivitatem: docuiſti verba Legis, dediſti dona filiis hominum: at ſuper rebelles proſelytos qui revertuntur *reſipiſcentia*, quieſcit majeſtas gloriæ Domini. 20 Benedictus Dominus qui ſingulis diebus onerat nos; addens præcepta ſuper præcepta; fortis qui eſt redemptio noſtra & auxilium noſtrum in æternum. 21 Deus noſtra fortitudo, & redemptio, & à conſpectu Domini concertant in impios mors & exitus animæ in ſuffocationẽ. 22 Verùm Deus confringet caput inimicorum ſuorũ, evellet capillos viri ambulantis in flagitiis ſuis. 23 [*De*] juſtis qui mortui ſunt & devorati à feris ſylveſtribus, dixit Dñs; De Baſan reducam, reducã juſtos qui ſunt ſuffocati in profundo maris. 24 Ut videant vindictam *improbi*: intingant pedes ſuos in ſanguine occiſorum; linguæ ferarum ſylveſtriũ impingueſcant de adipe illorũ: de inimicis ſuis iiſdem ſatientur. 25 Viderunt domus Iſrael inceſſum Majeſtatis tuæ ſuper mare Deus, dicentes; Inceſſus Dei regnantis ſuper univerſum orbem in ſanctitate. 26 Prævenerunt & dixerunt canticum poſt Moſſeh, & Aharon qui modulabantur ante eos, in medio mulierum juſtarum cum Maria, tympana pulſantium. 27 In medio eccleſiarum benedicite Deum, exaltate Dominum fœtus in viſceribus matrum ſuarum de ſemine Iſrael. 28 Ibi erat Binjamin minor inter tribus *qui primò deſcendit in mare, propterea accepit regnum* ab initio: & poſt eos deſcenderunt principes Jehuda, *obruerunt ipſos* tribus lapidibus; & *acceperunt principatum poſt eos*: principes Zebulon fuerunt negotiatores *eorum*, *principes* Neptali *fuerunt robuſti eorum*. 29 Præcipe Deus fortitudine tua; fortis eſto Deus, habita in hac domo ſanctuarii, quam feciſti nobis. 30 A templo tuo accipies ſacrificia ſuper Jeruſalem, [*ubi*] majeſtas tua quieſcit, *ex palatiis ſuis* tibi offerent reges munera.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

14 ܐܢ * ܬܫܟܒܘܢ ܒܝܬ ܩܛܡܐ: ܓܦܐ ܕܝܘܢܐ ܕܡܚܦܝܢ ܒܣܐܡܐ. ܘܐܒܪ̈ܘܗܝ ܒܕܗܒܐ ܫܚܝܢܐ:
15 * ܕܝܐܦܣܠ * * ܟܕ ܦܪܫ ܐܠܗܐ ܡܠܟܐ ܒܗ ܐܬܠܓ. ܒܨܠܡܘܢ * ܛܘܪܗ ܕܐܠܗܐ: ܛܘܪ̈ܐ
16 ܕܒܝܫܢ ܛܘܪ̈ܐ ܕܓܒܢܝܢ. ܛܘܪ̈ܐ ܕܒܝܫܢ * ܡܢܐ ܪܓܝܢ ܐܢܬܘܢ ܛܘܪ̈ܐ ܕܓܒܢܝܢ: ܛܘܪܐ ܕܓܒܐ
17 ܠܗ ܐܠܗܐ ܠܡܥܡܪ ܒܗ. ܡܪܝܐ ܢܥܡܪ ܒܗ ܠܥܠܡ: * ܪܟܒ ܐܠܗܐ ܒܪ̈ܒܘܬܐ ܘܒܐܠ̈ܦܐ
18 ܕܚܝܠܐ. ܡܪܝܐ ܒܗܘܢ ܣܝܢܝ ܒܩܘܕܫܗ: * ܦܣܘܩܐ * ܣܠܩܬ ܠܪܘܡܐ ܘܫܒܝܬ
19 ܫܒܝܬܐ. ܘܝܗܒܬ ܡܘܗܒܬܐ ܠܒܢܝ̈ ܐܢܫܐ: ܘܐܦ ܡܪ̈ܘܕܐ ܠܐ ܢܥܡܪܘܢ ܩܕܡ ܐܠܗܐ. * ܒܪܝܟ
20 ܗܘ ܡܪܝܐ ܟܠ ܝܘܡ ܕܓܒܢ ܠܝܪܬܘܬܗ: * ܕܝܐܦܣܠ * ܐܠܗܐ ܦܪܘܩܢ ܐܠܗܐ ܡܚܝܢܢ.
21 ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܡܪܗ ܕܡܘܬܐ ܘܕܡܦܩܢܐ: * ܒܪܡ ܐܠܗܐ ܢܦܣܘܩ ܪܫܐ ܕܒܥܠܕܒܒ̈ܘܗܝ.
22 ܘܩܘܕܩܕܐ ܕܣܥܪܐ ܕܡܗܠܟܝܢ ܒܚܛܗ̈ܝܗܘܢ: * ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܕܡܢ ܒܝܬ ܫܢ̈ܐ ܐܦܩ.
23 ܘܐܗܦܟ ܡܢ ܥܘܡܩܐ ܕܝܡܐ: * ܡܛܠ ܕܬܨܛܒܥ ܪܓܠܟ ܒܕܡܐ. ܘܠܫܢܐ ܕܟܠܒܝܟ
24 ܡܢ ܒܥܠܕܒܒܝܟ: * ܚܙܘ ܗܠܟܬܟ ܐܠܗܐ. ܗܠܟܬܗ ܕܐܠܗܝ ܘܡܠܟܝ ܩܕܝܫܐ:
25 * ܩܕܡܘ ܪ̈ܘܪܒܢܐ ܒܬܪ ܡܫܒܚܢ̈ܐ. ܒܝܢܝ ܥܠܝ̈ܡܬܐ ܕܢܩܫܢ ܦܠܓ̈ܐ * ܒܟܢ̈ܘܫܬܐ:
26 ܒܪܝܟ ܗܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܡܢ ܡܒ̈ܘܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܬܡܢ ܒܢܝܡܝܢ ܙܥܘܪܐ ܒܫܠܝܐ:
27 ܪ̈ܘܪܒܢܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܫܠܝ̈ܛܢܝܗܘܢ. ܪ̈ܘܪܒܢܐ ܕܙܒܘܠܘܢ. ܪ̈ܘܪܒܢܐ ܕܢܦܬܠܝ: * ܦܩܘܕ
28 ܐܠܗܐ ܠܥܘܫܢܟ. ܘܐܫܪ ܐܠܗܐ ܗܢܐ ܕܥܒܕܬ ܠܢ: ܡܢ ܗܝܟܠܟ ܠܐܘܪܫܠܡ. ܠܟ
29 ܢܝܬܘܢ ܡܠܟ̈ܐ ܩܘܪ̈ܒܢܐ:
30

14 Si dormieritis inter ſcobes, alæ columbæ contectæ argento, plumæque ejus auro puriſſimo. 15 * *Diapſal.* * Cùm ſegregâſſet Deus Regem: 16 ninxit ipſo in Selmon Monte Dei. Montes Baiſan, montes Ghebenjã, Montes Baiſan: 17 Quid cupitis montes Gheben iã? montem quem elegit ſibi Deus ad degendum in eo, Dominus inhabitabit in ſeculum. 18 Equitavit Deus cum myriadibus & cum millibus exercitûs: Dominus cum eis eſt, Sinai in ſanctitate ejus.

* *Sectio* *

19 Aſcendiſti in altum, & cepiſti captivitatem, & largitus es dona hominibus: atque etiam rebelles non habitabunt coram Deo. 20 Benedictus Dominus per ſingulos dies, qui elegit nos hæreditatem ſuam: * *Diapſalma* * 21 Deꝰ redemptor noſter, Deus ſervator noſter; Dominus Deus, Dominus mortis & evaſionis. 22 Veruntamen Deus abſcindet caput hoſtium ſuorum, & vertices capilli eorum qui ambulant in peccatis ſuis. 23 Dixit Dominus, E dentibus educam, & reducam ex profundis maris; 24 Nam intingetur pes tuus ſanguine, & lingua canum tuorum ex inimicis tuis. 25 Viderunt greſſus tuos Deus, greſſus Dei mei regiſque mei ſancti. 26 Præceſſerunt magnates, dein pſallentes, inter puellas pulſantes tympana 27 Turmatim. Benedictus Dominus Deus de fontibus Iſraelis. 28 Ibi Benjamin parvulus in tranquillitate, proceres Judha & principes eorum, proceres Zabolon, magnates Nephtali. 29 Impera Deus robori tuo, & conforta Deus hoc quod parâſti nobis. 30 De templo tuo ad Hieruſalem tibi afferent Reges munera.

Verſio VULG. LAT.

14 Si dormiatis inter medios cleros, pennæ columbæ deargentatæ, & poſteriora
15 dorſi ejus in pallore auri. Dum diſcernit Cœleſtis reges ſuper eam, nive dealba-
16 buntur in Selmon: Mons Dei, mons pinguis. Mons coagulatus, mons pinguis: Ut quid ſuſpicamini montes
17 coagulatos? Mons, in quo beneplacitum eſt Deo habitare in eo: etenim
18 Dominus habitabit in finem. Currus Dei decem millibus multiplex, millia lætantium: Dominus in eis in
19 Sina in Sancto. Aſcendiſti in altum, cepiſti captivitatem: accepiſti dona in hominibus: Etenim non credentes, in-
20 habitare Dominum Deum. Benedictus Dominus die quotidié: proſperum iter faciet nobis Deus ſalutarium
21 noſtrorum. Deus noſter, Deus ſalvos faciendi: & Domini Domini exitus
22 mortis. Veruntamen Deus confringet capita inimicorum ſuorum: verticem capilli perambulantium in delictis ſuis.
23 Dixit Dominus; Ex Baſan convertam,
24 convertã in profundũ maris: Ut intingatur pes tuus in ſanguine: lingua canũ
25 tuorum ex inimicis, ab ipſo. Viderunt ingreſſus tuos, Deus, ingreſſus Dei mei;
26 regis mei qui eſt in Sancto. Prævenerunt principes conjuncti pſallentibus, in medio juvencularum tympaniſtriarũ.
27 In eccleſiis benedicite Deo Domino,
28 de fontibus Iſrael. Ibi Benjamin adoleſcentulus, in mentis exceſſu. Principes Juda, duces eorum: principes
29 Zabulon, principes Nephthali. Manda, Deus, virtuti tuæ: confirma hoc, Deus, quod operatus es in nobis.
30 A templo tuo in Jeruſalem, tibi offerent reges munera.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

14 Ἐὰν κοιμηθῆτε ἀναμέσον τῶν κλήρων, πτέρυγες περιστερᾶς περιηργυρωμέναι, καὶ τὰ μετάφρενα
15 αὐτῆς ἐν χλωρότητι χρυσίου. Ἐν τῷ διαστέλλειν τὸν ἐπουράνιον βασιλεῖς ἐπ' αὐτῆς, χιονωθή-
16 σονται ἐν Σελμών. Ὄρος τοῦ θεοῦ ὄρος πῖον,
17 ὄρος τετυρωμένον, ὄρος πῖον. Ἱνατί ὑπολαμβάνετε ὄρη τετυρωμένα; τὸ ὄρος ὃ εὐδόκησεν ὁ θεὸς κατοικεῖν ἐν αὐτῷ· καὶ γὰρ ὁ κύριος κατασκη-
18 νώσει εἰς τέλος. Τὸ ἅρμα τοῦ θεοῦ μυριοπλάσιον, χιλιάδες εὐθηνούντων, κύριος ἐν αὐτοῖς
19 ἐν Σινᾶ ἐν τῷ ἁγίῳ. Ἀναβὰς εἰς ὕψος, ᾐχμαλώτευσας αἰχμαλωσίαν· ἔλαβες δόματα ἐν ἀνθρώπῳ, καὶ γὰρ ἀπειθοῦντες τοῦ κατασκηνῶσαι.
20 Κύριος ὁ θεὸς εὐλογητός, εὐλογητὸς κύριος ἡμέραν καθ' ἡμέραν, καὶ κατευοδώσει ἡμῖν ὁ θεὸς τῶν σωτηρίων ἡμῶν. ΔΙΑΨΑΛΜΑ.
21 Ὁ θεὸς ἡμῶν, ὁ θεὸς τοῦ σώζειν, καὶ τοῦ κυρίου
22 αἱ διέξοδοι τοῦ θανάτου. Πλὴν ὁ θεὸς συνθλάσει κεφαλὰς ἐχθρῶν αὐτοῦ, κορυφὴν τριχὸς
23 διαπορευομένων ἐν πλημμελείαις αὐτῶν. Εἶπε κύριος, Ἐκ Βασὰν ἐπιστρέψω, ἐπιστρέψω ἐν βυ-
24 θοῖς θαλάσσης. Ὅπως ἂν βαφῇ ὁ πούς σου ἐν αἵματι, ἡ γλῶσσα τῶν κυνῶν σου ἐξ ἐχ-
25 θρῶν παρ' αὐτοῦ. Ἐθεωρήθησαν αἱ πορεῖαί σου ὁ θεός, αἱ πορεῖαι τοῦ θεοῦ μου τοῦ βασιλέως
26 τοῦ ἐν τῷ ἁγίῳ. Προέφθασαν ἄρχοντες ἐχόμενοι ψαλλόντων, ἐν μέσῳ νεανίδων τυμπανι-
27 στριῶν. Ἐν ἐκκλησίαις εὐλογεῖτε τὸν θεόν,
28 τὸν κύριον ἐκ πηγῶν Ἰσραήλ. Ἐκεῖ Βενιαμὶν νεώτερος ἐν ἐκστάσει, ἄρχοντες Ἰούδα ἡγεμόνες αὐτῶν, ἄρχοντες Ζαβουλών, ἄρχον-
29 τες Νεφθαλί. Ἔντειλαι ὁ θεὸς τῇ δυνάμει σου, δυνάμωσον ὁ θεὸς τοῦτο, ὃ κατ-
30 ηρτίσω ἐν ἡμῖν. Ἀπὸ τοῦ ναοῦ σου ἐπὶ Ἱερουσαλήμ, σοὶ οἴσουσι βασιλεῖς δῶρα.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

14 Si [c] dormiatis inter medi- 14
os cleros, pennæ columbæ dear-
gentatæ, & (q) poſteriora
dorſi ejus [f] in (r) viriditate
auri. 15 Dum [g] diſcernit (ſ) 15
Cœleſtis reges ſuper eam, [h]
nive dealbabuntur in (t) Selmon.
Mons Dei, mons pinguis; 16 16
mons (u) coagulatus, mons pin-
guis: ut quid (x) [i] ſuſpica- 17
mini montes coagulatos? 17
Mons, in quo beneplacitum eſt
Deo habitare in eo: etenim Do-
minus inhabitabit in finem. 18
Currus Dei decem millibus mul- 18
tiplex, millia lætantium: Dominus
in eis, in Sina, in Sancto. 19 (y)
[k] Aſcendens in altũ captivâſti 19
captivitatem, [l] accepiſti dona in
homine: 20 [m] etenim (z) non
credentes inhabitare. Dominus De- 20
us benedictus, 21 benedictus Dñs
de die in diem: proſperum iter
faciet nobis Deus ſalutarium no-
ſtrorum. 22 DIAPSALMA. 21
Deus noſter, Deus ſalvos fa-
ciendi, & Domini exitus mor- 22
tis. 23 Veruntamen Deus con-
fringet capita inimicorum ſuo-
rum, (aa) verticem capilli per-
ambulantium in delictis ſuis. 24
Dixit Dominus, [n] Ex Baſan 23
(bb) convertam: convertam in
(cc) profundis maris: 25 ut 24
(dd) intingatur pes tuus in
ſanguine, lingua canum tuorum
[o] ex inimicis ab ipſo. 26 Viſi 25
(ee) ſunt ingreſſus tui, Deus:
ingreſſus Dei mei, regis, qui eſt
in Sancto. 27 Prævenerunt 26
principes (ff) conjuncti pſal-
lentibus in medio juvencularum
tympaniſtriarum. 28 In eccle- 27
ſiis benedicite Deum, [p] Do-
minum de fontibus Iſrael. 29 Ibi 28
Benjamin adoleſcentior [q] in
(gg) ecſtaſi: 30 principes Juda,
duces eorum: principes Zabulon,
principes Nephthali. 31 Manda, 29
Deus, (hh) virtuti tuæ; confirma hoc Deus, (ii) quod [r] perfeciſti in nobis. 32 [ſ] A templo tuo in Hieruſalem, tibi offerent reges munera. 30

Verſio ÆTHIOPICA.

እምኒ ፡ ቤትክሙ ፡ ማእከለ ፡ መዋርስ 14
ት፡፡ ክንፈ ፡ ርግብ ፡ በብሩር ፡ ዘግቡ
ር፡፡ ወገበዋቲሃ ፡ በኅመልሚለ ፡ ወር
ቅ፡፡=፡ አመ ፡ አዘዘ ፡ ሰማያዊ ፡ ንጉ 15
ሠ፡ሳዕሌሃ፡፡ በረድ ፡ ይዘንም ፡ ላዕለ፡
ሰልሞን፡፡ ደብረ ፡ እግዚአብሔር ፡ ደብር፡
ጥሉል፡፡=፡ ደብረ ፡ ርጉዕ፡ ወደብር ፡ ጥሉ 16
ል፡፡ ለምንት ፡ ይትናሠኡ ፡ አድባር ፡ ርጉ
ዓን፡፡=፡ ደብረ ፡ ዘሠምረ ፡ እግዚአብሔ 17
ር ፡ የኀድር ፡ ውስቴታ፡፡ እስመ ፡ የኀድሮ፡
እግዚአብሔር ፡ ለዝሉፉ፡፡=፡ ሰረገላቲ 18
ሁ ፡ ለእግዚአብሔር ፡ እምእልፊተ ፡ አእ
ላፍ ፡ ፍሡሓን ፡፡ እግዚአብሔር ፡ ውስቴቶ
ሙ ፡ በሲና ፡ መቅደሱ፡፡=፡ ዐርገ ፡ ውስተ፡ 19
አርያም ፡ ፄዊወከ ፡ ፄዋ፡፡ ወወሀብከ፡
ጸጋከ ፡ ለእጓለ ፡ እመሕያው፡፡=፡ እስመ፡ 20
ይክሕዱ ፡ ከመ ፡ ይኅድሩ፡፡ እግዚአብሔ
ር ፡ አምላክ ፡ ቡሩክ፡፡=፡ ይትባረክ፡ እ 21
ግዚአብሔር ፡ በኵሉ ፡ መዋዕል፡፡ ይረድ
እነ ፡ አምላክነ ፡ ወመድኅኒነ፡፡=፡ አም 22
ላክነሰ ፡ አምላክ ፡ አድኅኖ፡፡ ወፍናዊ
ሁኒ ፡ ለሞት፡ ዘእግዚአብሔር፡ውእቱ፡፡=፡
ወባሕቱ ፡ እግዚአብሔር ፡ ይሰብር ፡ አርእ 23
ስተ ፡ ጸላእቱ፡፡ ወበከተማ ፡ ሠዕርቶሙ፡
የሐውር ፡ ጌጋዮሙ፡፡=፡ ይቤ ፡ እግዚአብ 24
ሔር ፡ ወፂእየ ፡ እገብእ፡፡ ወእትመየጥ ፡ እ
ንተ ፡ ቀላየ ፡ ባሕር፡፡=፡ ከመ ፡ ይሠረይ፡ 25
እገሪከ ፡ በደም፡፡ ልሳነ ፡ ከለባቲከ ፡ ላዕ
ለ ፡ ጸላእቱ፡፡=፡ አስተርአየ ፡ ፍናዊከ፡ 26
እግዚኦ፡፡ ፍናዊሁ፡ ለአምላኪየ፡ ለንጉሠ፡
ዘውስተ ፡ መቅደስ፡፡=፡ በጽሑ ፡ መለእክ 27
ት ፡ ወቦሙ ፡ መዘምራን፡፡ ማእከለ፡ ደናግ
ል፡ ዘባጥያተ ፡ ከበሮ፡፡=፡ በማኅበ 28
ር ፡ ባርክዎ ፡ ለእግዚአብሔር፡፡ ወ
ለአምላክነ ፡ በአንቅዕተ ፡ እስራኤል፡፡=፡ 29
ህየ ፡ ብንያም ፡ ወሬዛ ፡ በኀይሉ፡፡=፡ መ 30
ላእክተ ፡ ይሁደ ፡ ወመሳፍንቲሆሙ፡፡
መላእክተ ፡ ዛቢሎን ፡ መላእክተ ፡ ንፍታ
ሌም፡፡=፡ አዝዝ፡እግዚኦ፡በኀይልከ፡፡ ወአ 31
ጽንዖ፡እግዚኦ፡ለዝንቱ፡ ዘሠራዕከ፡ለነ፡፡=፡
ውስተ፡ጽርሕከ፡ዘኢየሩሳሌም፡፡ ለከ፡ያመ 32
ጽኡ፡ ነገሥት፡ አምኃ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [e] manſeritis in medio hæredum, [f] in pallore [g] ordinavit [h] nivem pluet ſuper Salmon. [i] elevamini montes coagulati? [k] Aſcendit in [l] dediſti dona tua [m] quoniã abnegabunt ut inhabitent Dominũ Deũ benedictum. Benedictus ſit Deus per ſingulos dies: auxiliabitur nobis Deus noſter & Salvator noſter. [n] Emigrationem meã reſtituã: & convertã per abyſſum maris. [o] adverſùs inimicos ejus. [p] et Dominum noſtrum [q] in fortitudine ſua: [r] ordinâſti nobis. [ſ] In templo tuo quod Hieroſolymis eſt,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* إن نمتم في وسط السهل فثم أجنحة حمامة مفضضة * ومنكباها بصفرة الذهب الخالص 14
* عندما قسم السماوي عليها ملوكا * يبيضون مثل الثلج في صلمون * جبل الله 15 16
الجبل الدسم * الجبل الجبن السمين * لماذا تظنون جبالا جبنة * الجبل الذي شاء الله 17
يسكنه * وإن الرب ليحل فيه إلى الانقضاء * مراكب الله مضاعفة الربوات خصبة الالوف * 18
الله فيهم في سينا قدسه * صعد إلى العلا وسبى سبيا * واعطى الناس مواهب * والمردة لا 19
تثبت أمام الرب * الرب مبارك الرب الاله مبارك * الرب يوما فيوما * الاه خلاصنا يسهل 20
سبيلنا لنا * إلهنا هو الاله المخلص * ربنا منجينا * الله ربنا * وللرب الرب مخارج الموت 21
* لكن الله يرض رؤوس أعدائه * وهام الرؤوس الذين يمشون في خطاياهم * قال الرب 22 23
أنا أخرج من بين الأسنة * وأرجع من عمق البحار * لكي تصبغ رجلاك بالدم * وألسن 24
كلابك من أعدائك * رأوا آثارك يا إلهي * آثار إلهي الملك القدوس * بكرت الرؤساء * 25 26
مقترنين إلى المرتلين بين الفتيات المدففات * باركوا الله في الكنائس * الرب في 27
ينابيع إسرائيل * هناك بنيامين الصغير في طمأنينته * رؤساء يهودا ومدبروهم * رؤساء 28
زابلون * رؤساء نفتاليم * اللهم مر بقوتك واعضد اللهم هذا الذي صنعته لنا * في هيكلك 29 30
المقدس بيروسليم * تأتيك الملوك بالقرابين *

Si dormieritis in medio planitiei, illic alæ columbæ deargentatæ, & humeri ejus in pallore auri puriſſimi. Quando diviſit Cœleſtis ſuper eam reges, albeſcent inſtar nivis in Selmon. 14 15
Mons Dei, mons eſt ille pinguis, mons inquam condenſus, uber. 16
Quarè imaginamini montes condenſos? montem, quem voluit Deus, inhabitabit: & quidem Dominus requieſcet in eo ad finem uſque. 17
Currus Dei multiplices ſunt myriadibus, abundantes millibus: Deus in ipſis, in Sinai ſanctitas ejus. 18
Aſcendit in altum, & captivavit captivitatem, & dedit hominibus dona; & rebelles non perſiſtent coram Domino. 19
Dominus ſit benedictus, Dominus Deus benedictus, Dominus per ſingulos dies. Deus ſalutis noſtræ complanabit viam noſtram nobis. 20
Deus noſter eſt Deus ſalvator, Deus noſter eſt redemptor noſter, Deus Dominus noſter: & Domini, Domini inquam exitus mortis. 21
Verùm Deus contundet capita inimicorum ſuorum, & vertices capitum eorum qui ambulant in peccatis ſuis. 22
Dixit Dominus, Ego educam è medio cuſpidum, & reducam de profunditate marium. 23
Quatenus intingantur pedes tui ſanguine, & linguæ canum tuorum ex inimicis tuis. 24
Viderunt veſtigia tua, O Deus meus, veſtigia Dei mei Regis ſancti. 25
Prævenerunt diluculò principes comitati pſaltibus inter puellas tympanizantes. 26
Benedicite Deum in Eccleſiis, Dominum in fontibus Iſrael. 27
Ibi Benjamin exiguus in ſecuritate ſua, principes Judæ & gubernatores eorum, principes Zabulon, principes Nephthalim. 28
Deus, præcipe per potentiam tuam: & confirma Deus, hoc quod feciſti nobis. 29
In templo tuo ſancto, in Jeroſolyma: venient ad te reges cum muneribus. 30

תהלים : סט

ſe gloriantium populorum vitulis *in robuſtorum* congregationem, *calamæ feram* Increpa
31 גער חית קנה עדת אבירים בעגלי עמים מתרפס
principes magni Venient .*violent conflictum*, populos diſperſit : *argenti fragmentis in*
32 ברצי־כסף בזר עמים קרבות יחפצו: יאתיו חשמנים
Regna .Deo ſuas manus faciet currere Æthiopia : Ægypto ex
33 מני מצרים כוש תריץ ידיו לאלהים: ממלכות
cœlis in Equitanti .Selah, Domino cantate : Deo cantate terræ
34 הארץ שירו לאלהים זמרו אדני סלה: לרכב בשמי
fortitudinem Date .fortitudinis vocem ſua voce in dabit En : *quondam* cœlorum
35 שמי־קדם הן יתן בקולו קול עז: תנו עז
Terribilis .*ætheribus* in ejus fortitudo & : ejus *celſitudo* Iſrael ſuper , Deo
36 לאלהים על־ישראל גאותו ועזו בשחקים: נורא
robora & , fortitudinē *dans* ipſe Iſrael Deus : *tuis* ſanctuariis à Deus
אלהים ממקדשיך אל ישראל הוא נתן עז ותעצמות
.Deus benedictus : populo
לעם ברוך אלהים:

PSAL. LXIX. סט

intraverunt quoniam ;Deus me Serva .David ipſi Soſannim ſuper Victori
1 2 למנצח על־שושנים לדוד: הושיעני אלהים כי באו
: ſtatus non & , profundi *cœno* in ſum Demerſus .animam ad uſque aquæ
3 מים עד־נפש: טבעתי ביון מצולה ואין מעמד
,*me* clamando *in* Laboravi .*me inundavit alveus* & ,aquarum profunda in veni
4 באתי במעמקי־מים ושבלת שטפתני: יגעתי בקראי
ſunt Plures .meo Deo in *ſperans* : mei oculi defecerunt ,meum guttur eſt *adustum*
5 נחר גרוני כלו עיני מיחל לאלהי: רבו
mei inimici me *conterentes* ſunt roborati :gratis me *habentes odio*,mei capitis *capillis præ*
משערות ראשי שנאי חנם עצמו מצמיתי איבי
nôſti tu Deus .*reddam* tunc , rapui non quæ : *falsò*
6 שקר אשר לא־גזלתי אז אשיב: אלהים אתה ידעת
afficiantur pudore Ne .ſunt *celata* non te à mea delicta & ; meam ſtultitiam
7 לאולתי ואשמותי ממך לא־נכחדו: אל־יבשו
me *in* erubeſcant ne exercituum DOMINE , Domine te *expectantes me in*
בי קויך אדני יהוה צבאות אל־יכלמו בי
operuit : opprobrium ſuſtinui te *ſuper* Quoniam .Iſrael Deus , te *quærentes*
8 מבקשיך אלהי ישראל: כי־עליך נשאתי חרפה כסתה
.meæ matris filiis extraneus & ; meis fratribus fui Alienus .*meas facies* confuſio
9 כלמה פני: מוזר הייתי לאחי ונכרי לבני אמי:
ceciderunt *tibi exprobrantium* probra & ; me comedit tuæ domus zelus Quoniam
10 כי־קנאת ביתך אכלתני וחרפות חורפיך נפלו
.mihi opprobria in fuit & ; *meæ animæ* jejunio in flevi Et .me ſuper
11 עלי: ואבכה בצום נפשי ותהי לחרפות לי:
Eloquentur .parabolam in eis fui & ; ſaccum meum veſtimentum *dedi* Et
12 13 ואתנה לבושי שק ואהי להם למשל: ישיחו
mea oratione ego Et .ſichar *bibentium moduli* & ; porta ſedentes *me in*
14 בי ישבי שער ונגינות שותי שכר: ואני תפלתי־
: tuæ miſericordiæ *multitudine in* Deus beneplaciti tempus : Domine te ad
לך יהוה עת רצון אלהים ברב־חסדך
.tuæ ſalutis *veritate in* ,me exaudi
ענני באמת ישעך:

תרגום TARGUM.

31 נזוף במשרית חיבין תרע יתהון היך קניא
כנישת גברין דמתרחצין בעגליא טעות עממיא
רעותיה בעמא די מתעסקין ברעותא באוריתא
דוקיקא מן סימא בדר עממיא דלאנחא קרבא
32 צבין: ייתון בנוי דחם חוסמניא ממצרים
לאתגיירא בנוי דכוש ירהטון למפרש ידיהון
33 בצלו קדם אלהא: מלכות ארעא שבחו קדם יי
34 שבחו יי לעלמין: ליתיב על כורסיה בשמי
שמיא מן לקדמין הוא במימריה יהב בקליה קל
35 רוח נבואתא לנביאיא: הבו יקר עושנא לאלהא
36 די על ישראל גיותנותיה ועושניה בשמיא: דחיל
אלהא מן בית מקדשך תקיפא דישראל הוא יהב
עושנא ותוקפא לעמיה בריך אלהא: סט
1 לשבחא על גלות סנהדרין על יד דוד: 2 פרוק יתי
אלהא ארום מטו משרית חיבין עד די אעיקון לי
3 היך מיא דמטו עד נפשא: טמעית בגלותא היך
במיא דמצולתא ולית אתר למקום מטית בעמקי
תקוף סיעת רשיעיא ומלכא רשיעא אגלי יתי:
4 אשתלהית במקרי אתחרחר ענקי כלו עיני
5 מלאורכא לאלהי: סגיעו מן סערן דרישי סנאי
מגן תקפו מקטיני בעלי דבבי סהדי שקרא דלא
6 אנסית על סהדותכון הבכין אשלם: אלהא את
ידעתא לטפשותי וסורחנותי מן קדמך לא
7 אתכסיאו: לא יבהתון בי דסברין עלך ולא
יכספון בי דתבעין אולפן מנך אלהא דישראל:
8 ארום אמטולתך סוברית חסודא חפת כסופא
9 אפי: נוכרי אתחשיבית לאחי והיך בר עממין לבני
10 אמי: ארום טננא דבית מקדשא גמרת יתי
וחסודי רשיעיא דמחסדין לך במשתפהון
11 טעותהון לאיקרך נפלו עלי: ובכית בצומא
12 דנפשי והוות חסודתי לקלנא לי: ויהבית תחות
13 כסותי סקא והוית להון למתלא: ימללון עלי
יתבי תרעא בית קרנתא וזמריהון דאזלין
14 למשתי מרוות בבית קרקסון: ואנא צלותי
קדמך יי בעדן רעוא אלהא בסגיעי טובך עני
יתי בקשוט פורקנך:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Increpa exercit⁹ peccatorũ; confringe illos 31
ſicut cannā, congregationē *fortiũ*, qui con-
fidunt in vitulis idolis gentiũ : beneplacitũ
ej⁹ eſt in populis, qui ſtudent mente [*ſuæ*] in
lege multò puriori argēto: diſſipavit gentes
quæ præliũ committere volunt. Venient filii 32
Cham *magnates* de Ægypto ut fiant proſe-
lyti; filii Chus current ut expandant manus
ſuas in oratione coram *Deo*. Regna *terræ* 33
laudate coram *Domino*, cantate Dño in æter-
nũ: Sedenti ſup thronũ *ſuum* in cœlis cœ- 34
lorũ à principio: ipſe in verbo ſuo dat voce
ſua vocem ſpiritus prophetiæ *prophetis*. Date 35
gloriam *fortitudinis* Deo, qui eſt ſuper
Iſrael: celſitudo & fortitudo ejus in cœlis.
Terribilis es tu Deus à domo ſanctuarii tui, 36
fortis Iſrael : ipſe dat fortitudinem & ro-
bur populo ſuo. Benedictus Deus.

Ad laudandum ſuper *captivitate Sanhedrin* per manum Davidis. 1

PSAL. LXIX.

REdime me Deus, quia prævenerunt ca- 2
ſtra peccatorum, adeò ut coarctârint me ſic-
ut aquæ, quæ uſq; ad animā pertigerunt. De- 3
merſus ſum *in captivitate* tanquam in *aquis*
profundi, nec fuit conſiſtendi locus: perveni
ad profunda fortitudinis cohortis impiorũ;
et rex *impi⁹* captivũ me abduxit. Laſſat⁹ ſum 4
dum clamarē, ſiccatũ eſt guttur meũ, conſum-
pti ſunt oculi mei *ab expectando* Deo meo.
Multiplicati ſunt pluſquā capilli capitis mei, 5
inimici mei ſine cauſa; roborati ſunt truci-
datores mei, inimici mei teſtes mendaces :
quæ non rapui, ob teſtimoniũ *veſtrũ* tunc
reſtituā. De⁹ tu nôſti ſtultitiā meā; & flagi- 6
tia mea à cōſpectu tuo non ſunt abſcondita.
Non erubeſcant in me qui ſperant in te, & 7
non confundantur in me , qui quærunt do-
ctrinam à te, Deus Iſrael. Quoniam propter 8
te ſuſtinui opprobrium; cooperuit pudor fa-
ciē meam. Extraneus reputatus ſum apud 9
fratres meos, & veluti filius populorum fi-
liis matris meæ. Quoniam zelus domus ſan- 10
ctitatis [*tuæ*] conſumpſit me, & vituperia
impiorum qui vituperant te, dum participia
faciunt idola ſua gloriæ tuæ, ceciderunt ſu-
per me. Et deflevi in jejunio *animæ meæ*, 11
& fuit pietas mea in opprobrium mihi.
Et poſui pro veſtimento meo ſaccos, & fui 12
illis in proverbiũ. Loquētur adverſũ me ſe- 13
dētes in porta in domo anguli, & cantilena
eorũ ero, qui vadunt bibitum ſiceram in do-
mo cauponaria. Et ego orationem meam 14
coram te [*effundo*] Dñe in tempore benepla-
citi: Deus propter multitudinē bonitatis tuæ
exaudi me in veritate redemptionis tuæ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

31 * ܟܐܐ ܒܚܝܘܬܐ ܕܩܢܝܐ. ܒܟܢܘܫܬܐ ܕܬܘܪܐ: ܒܥܓܠܝ ܕܥܡܡܐ ܕܡܚܦܝܢ ܒܣܐܡܐ. ܒܕܪ ܥܡܡܐ
32 ܕܨܒܝܢ ܩܪܒܐ: * ܢܐܬܘܢ ܐܝܙܓܕܐ ܡܢ ܡܨܪܝܢ. ܘܟܘܫ ܬܬܠ ܐܝܕܐ ܠܐܠܗܐ: * ܕܝܐܦܣ *
33 34 * ܡܠܟܘܬܐ ܕܐܪܥܐ ܫܒܚܘ ܠܐܠܗܐ. ܘܙܡܪܘ ܠܡܪܝܐ * ܕܪܟܒ ܒܫܡܝ ܫܡܝܐ: ܡܢ ܡܕܢܚܐ
35 ܝܗܒ ܩܠܗ ܩܠܐ ܥܫܝܢܐ. * ܗܒܘ ܬܫܒܘܚܬܐ ܠܐܠܗܐ: ܘܠܐܝܣܪܝܠ ܪܒܐ ܫܘܒܚܐ. ܕܥܘܫܢܗ
36 ܒܫܡܝ ܫܡܝܐ: * ܕܚܝܠ ܐܢܬ ܐܠܗܐ ܡܢ ܡܩܕܫܟ. ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ: ܗܘ ܢܬܠ ܚܝܠܐ
1 ܘܥܘܫܢܐ ܠܥܡܗ. ܒܪܝܟ ܗܘ ܐܠܗܐ. * ܕܕܘܝܕ * * [illegible]
[illegible] ܥܡܐ ܡܢ ܕܢܐܙܠ ܒܬܪ ܕܘܝܕ. ܘܡܬܐܡܪܐ ܢܒܝܘܬܐ ܥܠ
2 ܗܠܝܢ ܕܚܫ ܡܫܝܚܐ. ܘܡܣܠܝܢܘܬܐ ܕܝܗܘܕܝܐ. ܦܬܓܡܐ ܡܒ. * ܦܪܘܩܝܢܝ ܐܠܗܐ ܡܛܠ
3 ܕܥܠܘ ܡܝܐ ܥܕܡܐ ܠܢܦܫܝ: * ܐܬܛܒܥܬ ܒܥܘܡܩܐ ܕܥܘܡܩܐ. ܕܠܝܬ ܒܗ ܡܩܘܡܐ: ܥܠܬ
4 ܠܥܘܡܩܐ ܕܡܝܐ ܘܫܒܠܬܐ ܐܛܒܥܬܢܝ. * ܠܐܝܬ ܒܩܥܝܬܝ ܘܚܪ ܓܓܪܬܝ: ܘܫܠܡ ܥܝܢܝ ܡܢ ܡܣܟܝܘ
5 ܠܐܠܗܝ. * ܣܓܝܘ ܡܢ ܣܥܪܐ ܕܪܫܝ ܒܥܠܕܒܒܝ ܕܡܓܢ: ܘܥܫܢܘ ܡܢ ܓܪܡܝ
6 ܒܥܠܕܒܒܝ ܕܫܘܩܪܐ. ܡܕܡ ܕܠܐ ܚܛܦܬ ܦܪܥ ܗܘܝܬ: * ܐܠܗܐ ܐܢܬ ܝܕܥ ܐܢܬ ܫܛܝܘܬܝ.
7 ܘܣܟܠܘܬܝ. ܡܢܟ ܠܐ ܐܬܟܣܝ: * ܠܐ ܢܒܗܬܘܢ ܒܝ ܐܝܠܝܢ ܕܡܣܒܪܝܢ ܠܟ. ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ
8 ܚܝܠܬܢܐ: ܘܠܐ ܢܬܟܢܥܘܢ ܒܝ ܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܠܟ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ: * ܡܛܠܬܟ ܩܒܠܬ
9 ܚܣܕܐ: ܘܚܦܬ ܒܗܬܬܐ ܐܦܝ. * ܘܢܘܟܪܝܐ ܗܘܝܬ ܠܐܚܝ: ܘܬܘܬܒܐ ܠܒܢܝ ܐܡܝ. * ܡܛܠ
10
11 ܕܛܢܢܗ ܕܒܝܬܟ ܐܟܠܢܝ: ܘܚܣܕܐ ܕܡܚܣܕܝܢ ܠܟ ܢܦܠ ܥܠܝ. * ܘܡܟܟܬ ܒܨܘܡܐ ܢܦܫܝ
12 ܘܗܘܝܬ ܠܗܘܢ ܠܒܘܙܚܐ: * ܥܒܕܬ ܠܒܘܫܝ ܣܩܐ ܘܗܘܝܬ ܠܗܘܢ ܠܡܬܠܐ. * ܘܪܢܘ
13
14 ܥܠܝ ܐܝܠܝܢ ܕܝܬܒܝܢ ܒܬܪܥܐ: ܘܪܢܘ ܒܝ ܐܝܠܝܢ ܕܫܬܝܢ ܫܟܪܐ. * ܘܐܢܐ ܨܠܝܬ ܩܕܡܝܟ ܡܪܝܐ
ܒܥܕܢܐ ܡܩܒܠܐ: ܐܠܗܐ ܒܣܘܓܐܐ ܕܛܝܒܘܬܟ ܥܢܝܢܝ. ܘܒܣܘܓܐܐ ܕܦܘܪܩܢܟ

* Increpa feram arundinis, cœtum juvenco- 31
rum, vitulos populorum obductos argento :
Diſſipa gentes quæ volunt bella. Venient le- 32
gati ex Ægypto, & Æthiopia dabit manum
Deo.* *Diapſal.** Regna terræ glorificate Deũ: 33
canite Dño. Qui equitat in cœlis cœli ; ex 34
Oriente edidit vocē ſuā, vocē validā. Date 35
laudem Deo, & Iſraeli ſummũ dec⁹: nam for-
titudo ejus in cœlis cœli. Formidabilis es 36
Deus de ſanctuario tuo : Deus Iſraelis ipſe
dabit vires & robur populo ſuo. Benedictus
Deus.

PSAL. LXIX.

Davidis. Ad literam Quum clanxit Semei filius Bochri buccinâ, & deſtitit populus ab eundo poſt Davidem. Diciturq; Prophetia de his quæ paſſus eſt Chriſtus : & reprobatione Judæorum. Verſ. 42. 1

LIbera me Deus, quoniā devenerunt aquæ 2
uſque ad animā : Demerſus ſum in præ- 3
cipitium profundiſſimũ, in quo non eſt locus
conſiſtendi. Ingreſſus ſum profundũ aquarũ,
& vorago demerſit me. Feſſus ſum ob clamo- 4
rem meũ, et raucedine laboravit guttur meũ,
& defecerunt oculi mei expectādo Deũ meũ.
Multiplicati ſunt pluſquā capilli capitis mei 5
hoſtes mei gratuiti, & creverunt præ oſſibus
meis inimici mei falſiloqui ; id quod minimè
extorſerā reddebā. Deus tu nôſti deliria mea, 6
& peccata mea te non latuerunt. Non con- 7
fundantur in me qui ſperant in te Dñe Deus
potentiſſime: & ne erubeſcāt in me qui quæ-
runt te Deus Iſrael. Propter te accepi inju- 8
riā, & operuit pudor vultũ meũ : Et extra- 9
neus factus ſum fratrib⁹ meis, atq; peregrin⁹
filiis matris meæ; Quoniā zelus domûs tuæ 10
comedit me, & probrũ improperantiũ tibi
recidit in me. Et humiliavi animā meā je- 11
junio, & factus ſum illis ludibrio. Feci ve- 12
ſtimentũ meũ cilicũ, & factus ſum illis fa-
bula. Et cogitaverunt de me qui ſedent in
porta, cogitârunt etiam de me qui bibunt ſi-
ceram ; Ego verò oravi coram te Dñe tem- 13
pore accepto. De⁹ pro multitudine bonitatis 14
tuæ exaudi me: et pro multitudine ſalutis tuæ

Versio VULG. LAT.

31 Increpa feras arundinis, congregatio
taurorum in vaccis populorū: ut excludant
eos, qui probati sunt argento.
32 Dissipa gentes,quæ bella volunt: Venient
legati ex Ægypto: Æthiopia
33 præveniet man⁹ ejus Deo. Regna terræ,
cantate Deo: psallite Dn̄o: psallite
34 Deo, Qui ascendit sup̄ cœlū cœli,
ad Orientē. Ecce dabit voci suæ vocem
35 virtutis, Date gloriā Deo super
Israel,magnificentia ejus, & virt⁹ ejus
36 in nubibus. Mirabilis De⁹ in sanctis
suis, Deus Israel ipse dabit virtutem
& fortitudinem plebi suæ: Benedictus
Deus.

1 In finem, pro iis qui commutabuntur,
David. LXVIII.

2 SAlvū me fac, Deus: quoniā intraverunt
aquæ usque ad animam meam.
3 Infixus sum in limo profundi: & non
est substantia. Veni in altitudinē maris:
4 & tempestas demersit me. Laboravi
clamans, raucæ factæ sunt fauces
meæ: defecerunt oculi mei, dum spero
5 in Deū meū. Multiplicati sunt super
capillos capitis mei, qui oderunt me
gratis. Confortati sunt qui persecuti
sunt me inimici mei injustè: quæ non
6 rapui,tunc exolvebā. Deus,tu scis insipientiā
meā: & delicta mea à te non
7 sunt abscondita.Non erubescant in me
qui exspectant te,Dn̄e, Dn̄e virtutum.
Non confundantur sup̄ me qui quærūt
8 te,De⁹ Israel. Quoniā propter te sustinui
opprobriū: operuit confusio faciem
9 meā.Extraneus fact⁹ sum fratrib⁹
meis, & peregrin⁹ filiis matris meæ.
10 Quoniā zel⁹ dom⁹ tuæ comēdit me: &
opprobria exprobrantiū tibi, ceciderunt
11 sup̄ me. Et operui in jejunio animam
meā; & factū est in opprobrium
12 mihi.Et posui vestimentū meū ciliciū:
13 & fact⁹ sum illis in parabolā. Adversùm
me loquebantur qui sedebant in
porta: & in me psallebant qui bibebant
14 vinū.Ego verò orationē meā ad
te,Dn̄e: temp⁹ beneplaciti, Deus. In
multitudine misericordiæ tuæ exaudi
me, in veritate salutis tuæ.

Versio GRÆC. LXX. Interp.

31 Ἐπιτίμησον τοῖς θηρίοις τοῦ καλάμου· ἡ συναγωγὴ
τῶν ταύρων ἐν ταῖς δαμάλεσι τῶν λαῶν, τοῦ μὴ ἀποκλεισθῆναι
τοὺς δεδοκιμασμένους τῷ ἀργυρίῳ. διασκόρπισον
ἔθνη τὰ τοὺς πολέμους θέλοντα.
32 Ἥξουσι πρέσβεις ἐξ Αἰγύπτου, Αἰθιοπία προφθάσει
33 χεῖρα αὐτῆς τῷ θεῷ. Αἱ βασιλεῖαι τῆς
γῆς ᾄσατε τῷ θεῷ, ψάλατε τῷ κυρίῳ. ΔΙΑΨΑΛΜΑ.
34 ψάλατε τῷ θεῷ τῷ ἐπιβεβηκότι ἐπὶ
τὸν οὐρανὸν τοῦ οὐρανοῦ κατὰ ἀνατολάς, ἰδοὺ δώσει
35 ἐν τῇ φωνῇ αὐτοῦ φωνὴν δυνάμεως. Δότε δόξαν
τῷ θεῷ, ἐπὶ τὸν Ἰσραὴλ ἡ μεγαλοπρέπεια αὐτοῦ,
36 καὶ ἡ δύναμις αὐτοῦ ἐν ταῖς νεφέλαις. Θαυμαστὸς ὁ
θεὸς ἐν τοῖς ὁσίοις αὐτοῦ, ὁ θεὸς Ἰσραήλ,
αὐτὸς δώσει δύναμιν καὶ κραταίωσιν τῷ λαῷ αὐτοῦ.
εὐλογητὸς ὁ θεός.

1 Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῶν ἀλλοιωθησομένων,
τῷ Δαυίδ. ξη΄.

2 Σῶσόν με ὁ θεός, ὅτι εἰσήλθοσαν ὕδατα ἕως
3 ψυχῆς μου. Ἐνεπάγην εἰς ἰλὺν βυθοῦ, καὶ
οὐκ ἔστιν ὑπόστασις· ἦλθον εἰς τὰ βάθη τῆς θαλάσσης,
4 καὶ καταιγὶς κατεπόντισέ με. Ἐκοπίασα
κράζων, ἐβραγχίασεν ὁ λάρυγξ μου, ἐξέλιπον
οἱ ὀφθαλμοί μου ἀπὸ τοῦ ἐλπίζειν με ἐπὶ
5 τὸν θεόν μου. Ἐπληθύνθησαν ὑπὲρ τὰς τρίχας
τῆς κεφαλῆς μου οἱ μισοῦντές με δωρεάν· ἐκραταιώθησαν
οἱ ἐχθροί μου οἱ ἐκδιώκοντές με
6 ἀδίκως. ἃ οὐκ ἥρπασα, τότε ἀπετίννυον. Ὁ
θεὸς σὺ ἔγνως τὴν ἀφροσύνην μου, καὶ αἱ πλημμέλειαί
7 μου ἀπὸ σοῦ οὐκ ἐκρύβησαν. Μὴ αἰσχυνθείησαν
ἐπ᾽ ἐμὲ οἱ ὑπομένοντές σε κύριε
τῶν δυνάμεων, μὴ ἐντραπείησαν ἐπ᾽ ἐμὲ οἱ
8 ζητοῦντές σε ὁ θεὸς τοῦ Ἰσραήλ. Ὅτι ἕνεκα
σου ὑπήνεγκα ὀνειδισμόν, ἐκάλυψεν ἐντροπὴ
9 τὸ πρόσωπόν μου. Ἀπηλλοτριωμένος ἐγενήθην
τοῖς ἀδελφοῖς μου, καὶ ξένος τοῖς υἱοῖς τῆς μητρός
10 μου. Ὅτι ὁ ζῆλος τοῦ οἴκου σου κατέφαγέ με,
καὶ οἱ ὀνειδισμοὶ τῶν ὀνειδιζόντων σε ἐπέπεσον
11 ἐπ᾽ ἐμέ. Καὶ συνέκαμψα ἐν νηστείᾳ τὴν ψυχήν
μου, καὶ ἐγενήθη εἰς ὀνειδισμοὺς ἐμοί.
12 Καὶ ἐθέμην τὸ ἔνδυμά μου σάκκον, καὶ ἐγενόμην
13 αὐτοῖς εἰς παραβολήν. Κατ᾽ ἐμοῦ ἠδολέσχουν
οἱ καθήμενοι ἐν πύλῃ, καὶ εἰς ἐμὲ ἔψαλλον
14 οἱ πίνοντες τὸν οἶνον. Ἐγὼ δὲ τῇ προσευχῇ
μου πρὸς σὲ κύριε, καιρὸς εὐδοκίας ὁ θεός· ἐν
τῷ πλήθει τοῦ ἐλέους σου ἐπάκουσόν μου, ἐν ἀληθείᾳ
τῆς σωτηρίας σου

Vers. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiop. Transl. LAT.

Increpa feras (kk) [t] calami: (ll) 31
congregatio taurorū in vaccis populorū:
ut (mm) non excludantur ii qui
probati sunt [v] argento. 34 Dissipa
gentes quæ bella volunt: Venient legati 32
ex Ægypto: Æthiopia (nn) præveniet
manum suam Deo. 35 Regna 33
terræ cantate Deo, psallite [x] Domino.
36 DIAPSALMA. Psallite (oo)
Deo, Qui ascendit super cœlum cœli 34
ad Orientem. 37 Ecce dabit [y] in
(pp) voce sua vocem virtutis: Date 35
gloriā Deo: super Israel magnificentia
[z] ejus, et virtus ejus [aa] in nubibus.
38 Mirabilis Deus in sanctis 36
suis: Deus Israel ipse dabit virtutem,
& fortitudinem plebi suæ: Benedictus
Deus.

In finem, pro his qui commutabuntur, 1
ipsi David. LXVIII.

1 *SAlvum me fac, Deus: quoniam* 2
intraverunt aquæ usque ad animam
meam. 2 (a) Infixus sum in 3
[a] limo profundi; & non est substantia.
3 Veni in altitudinem maris: &
tempestas demersit me. 4 Laboravi 4
clamans: raucæ factæ sunt fauces
meæ: defecerunt oculi mei, ab (b)
sperando me in Deum meum. 5 Multiplicati 5
sunt super capillos capitis
mei, qui oderunt me gratis. 6 Confortati
sunt (c) inimici mei, qui persequuntur
me injustè: quæ non rapui,
[b] tunc (d) exolvebam. 7 Deus, tu 6
scis insipientiam meam, & delicta
mea à te non sunt abscondita. 8 Non 7
erubescant in me, qui [c] expectant
te, (e) Domine virtutum. Non
confundantur super me, qui [d] quærunt
te, De⁹ Israel. 10 Quoniam propter 8
te sustinui (f) exprobrationem:
operuit (g) confusio faciem meam.
11 (h) [e] Alienatus factus sum fratribus 9
meis, & hospes filiis [f] matris
meæ. 12 Quoniam zelus domûs tuæ 10
(i) comēdit me: & opprobria exprobrantium
tibi ceciderunt super me.
13 Et (k) incurvavi in jejunio animam 11
meam: & factum est mihi in
opprobrium. 14 Et posui vestimentum 12
meum saccum: & factus sum
illis in parabolā. 15 Adversùs me (l) 13
[g] loquebantur, qui sedebant in porta:
Et in me psallebant, qui bibebant
vinum. 16 Ego verò (m) [h] oratione 14
meā ad te, Domine: tempus (n) beneplaciti,
Deus. 17 In multitudine
misericordiæ tuæ exaudi me: [i] in veritate salutis tuæ.

Versio ÆTHIOPICA.

ገሥጾሙ፡ ለአራዊተ፡ ሓሰት፡፡ ማኅበረ፡ አ 33
ልህምት፡ ውስተ፡ እጐላተ፡ ሕዝብ፡፡ ከመ፡
ኢይትዐጸው፡እለ፡ፍቱናን፡ከመ፡ብሩር፡፡፨
ዝርዎሙ፡ለአሕዛብ፡እለ፡ይፈቅዱ፡ቀትለ፡፡ 34
ይመጽኡ፡ ተናብልት፡ እምግብፅ፡፡ ኢትዮ
ጵያ፡ ታበጽሕ፡ እደዊሃ፡ ኀበ፡ እግዚአብሔ
ር፡፡፨ ነገሥተ፡ ምድር፡ ሰብሕዎ፡ለእግ 35
ዚአብሔር፡፡ ወዘምሩ፡ ለአምላክነ፡፡፨
ዘምሩ፡ ለእግዚአብሔር፡ ዘዐርገ፡ ውስተ፡ 36
ሰማይ፡፡ሰማይ፡ ዘምንገለ፡ ጽባሕ፡፡፨ ናሁ፡ 37
ይሁብ፡ቃሎ፡ቃለ፡ ኀይል፡፡ ሀቡ፡ አኰቴተ፡
ለእግዚአብሔር፡፡ ሳዕለ፡ እስራኤል፡ ዐቢ
ይ፡ ስብሐቲሁ፡፡ ወኀይሉሂ፡ እስከ፡ ደመና
ት፡፡፨ መንክር፡ እግዚአብሔር፡ በላዕለ፡ 38
ቅዱሳኒሁ፡፡ አምላከ፡ እስራኤል፡ ውእቱ፡
ይሁብ፡ ኀይለ፡ ወጽንዐ፡ ለሕዝቡ፡፡ ወይት
ባረክ፡እግዚአብሔር፡፡፨

ፍጻሜ፡በእንተ፡እለ፡ተበዐዱ፡ዘደዊት፡፡
ጟጟ ኣድኅነኒ፡ እግዚኦ፡ እስመ፡ በጽሑኒ፡ 1
ማይ፡እስከ፡ነፍስየ፡፡
ወጠጋእኩ፡ ውስተ፡ ዕሙቅ፡ ቀላይ፡ወኀይል፡ 2
አልብየ፡፡፨ በጻሕኩ፡ ውስተ፡ ማዕምቀ፡ 3
ባሕር፡ወዐውሎ፡አስጠመኒ፡፡፨ ሠራኅኩ፡ 4
በከልሖ፡ ወስሐከኒ፡ ጕርዔየ፡፡ ደክመ፡ አዕ
ይንትየ፡ እንዘ፡ እሴፎ፡ ለአምላኪየ፡፡፨
በዝኁ፡እምስዕርተ፡ርእስየ፡እለ፡ይጸልኡኒ፡ 5
በከንቱ፡፡፨ ጸንዑ፡ፀርየ፡ እለ፡ ይረውዱኒ፡ 6
በዐመፃ፡፡ ወዘኢነሣእኩ፡ ይትፈደዩኒ፡፡፨
ለሊከ፡እግዚኦ፡ ተአምር፡ዕበድየ፡፡ ወኢይ 7
ትኀባእ፡እምኔከ፡ኃጢአትየ፡፡፨ ወኢይት 8
ኃፈሩ፡ብየ፡እለ፡የኀሡከ፡እግዚኦ፡እግዚኦ፡
ኀያላን፡፡፨ ወኢይኅሰሩ፡ብየ፡እለ፡ ይሴፈ 9
ውከ፡ አምላከ፡ እስራኤል፡፡፨ እስመ፡በእ 10
ንቲአከ፡ ተዐገሥኩ፡ ፅእለተ፡፡ ወከደነኒ፡
ኀፍረተ፡ገጽየ፡፡፨ ከመ፡ነኪር፡ኮንክዎሙ፡ 11
ለአኀዊየ፡፡ ወነግደ፡ ለደቂቀ፡ አቡየ፡ወእም
የ፡፡፨ እስመ፡ ቅንአተ፡ ቤትከ፡ በልዐኒ፡፡ 12
ትዕይርቶሙ፡ ለእለ፡ ይትዔየሩከ፡ ወድቀ፡
ላዕሌየ፡፡፨ ወቀጻእክዋ፡በጾም፡ለነፍስየ፡፡ 13
ወኮነኒ፡ፅእለተ፡፡፨ ወለበስኩ፡ሠቀ፡ወኮንክ 14
ዎሙ፡ነገረ፡፡፨ ላዕሌየ፡ይዘውዑ፡እለ፡ይነ 15
ብሩ፡ውስተ፡አናቅጽ፡፡ ወኪያየ፡የኀልዩ፡እለ፡
ይሰትዩ፡ወይነ፡፡፨ ወአንሰ፡በጸሎትየ፡ኀበ፡ 16
እግዚአብሔር፡፡ ሣህሉ፡ ለእግዚአብሔር፡
በጊዜሁ፡፡፨ እንዘ፡ ብዙኅ፡ ሣህልከ፡፡ 17
ስምዐኒ፡ዘበአማን፡መድኀኒየ፡፡፨

INTERP. ÆTHIOP. [t]rhamni: [v]tanquam aurum. [x]Domino nostro. [y]vocem suam [z]gloriæ ejus, [aa]usq; ad nubes. *PSAL. LXVIII.* [a] imo voraginis; & non est mihi robur. [b]retribuerunt mihi. [c] quærunt te Domine, Domine [d]expectant te, [e] Tanquam extraneus [f]patris mei & matris meæ. [g] exercebant se, [h] cum oratione mea ad Dominum: Misericordia Domini in tempore suo. In [i] qui in confessione es salutaris mei.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

31 * انتهر يا الله وحوش الغاب الذي افتت الثيران * وعجول الشعب لكي يحبسوا المجربين بالفضة *
32 مزق الامم الذين يريدون القتال * تاتي الرسل من مصر * الحبش تسبق وتسلم يدها لله * يا
33
34 جميع ممالك الارض سبحي الله ورتلي الرب * رتلوا الله الذي صعد الي سماء السماء جهة
35 المشارق * ها هوذا اسمع صوته بصوت قوة * اعطوا مجدا لله * فان عظمة بهائه علي اسرائيل *
36 وقوته في السحاب * عجيب هو الله في قديسيه * اله اسرائيل هو يعطي قوة وعزا لشعبه *
تبارك هو الاله * الليلويا *
* المزمور الثامن والستون *

1 * لداود علي المتغيرين ونبوة * وعدده * عه * استيخن *
2 * اللهم احيني فان المياه قد بلغت الي نفسي * وحلت في حماة الموت فلا استطاعة بعد *
3
4 وصلت الي عمق البحر * وغرقتني اهواله * اعييت صارخا وبح حنجرتي * فنيت عيناي راجيا
5 الاهي * كثر الذين يبغضونني مجانا اكثر من شعر راسي * واعتزوا اعداي الطاردين
6 لي ظلما * فرددت حينئذ ما لم اخطف * اللهم انت عالم جهلي * ولم تخف عنك خطاياي *
7 * لا يخزي راجوك يا اله الجنود * ولا تخيب الراغبون اليك يا اله اسرائيل * فان من اجلك احتملت
8
9 عارا * وغشي الخزي وجهي * صرت اجنبيا من اخوتي * ومن بني امي غريبا * لان غيرة بيتك
10
11 اكلتني * وعار معيريك وقع علي * اذللت نفسي بالصيام * فصار لي تعييرات * جعلت لباسي
12
13 مسحا * فصرت لهم مثلا * تكلموا علي الجالسون علي الابواب * وترنم في شاربوا الخمر * وانا
14
صعدت صلاتي اليك يا رب وقت المسرة * اللهم فاستجب لي بكثرة رحمتك * بحق خلاصك

Increpa O Deus, feras sylvæ quā vastaverunt 31
tauri & vituli populi, ut cohibeant
tentatos argento. Discerpe gentes, quæ volunt 32
pugnā. Venient legati ab Ægypto:
Æthiopes prævenient, & tradēt manum
suā Deo. O cuncta regna terræ laudate 33
Deū, et psallite Domino. Psallite Deo qui 34
ascendit super cœlū cœli, versùs Orientē.
Ecce audire fecit vocē suā cum sono valido.
Date gloriam Deo, quia magnitudo 35
majestatis ejus est super Israel, & virtus
ejus in nubibus. Admirandus est Deus in 36
sanctis suis: Deus Israel ipse dabit virtutem,
& fortitudinem populo suo. Benedictus
sit, ipse est Deus. Alleluja.

PSAL. LXVIII.

Davidis. De commutandis: & 1
prophetia. Et numerus ver. 75.

DEus vivifica me, quoniā aquæ jam 2
pervenerunt ad animā meā. Obrutus 3
sum luto mortis, & nequeo illud amplius
sustinere: perveni usque ad intimū maris,
& submerserunt me tempestates ejus. Defeci 4
clamans, & raucū factū est guttur
meū: consumpti sunt oculi mei in expectando
Deū meū. Multiplicati sunt qui 5
me oderunt gratis plusquā capillis capitis
mei, & invaluerūt inimici mei persequentes
me iniquè: & reddidi tunc quod non
rapuerā. Deus, tu nôsti insipientiā meam, 6
& non latent te peccata mea. Ne confundantur
sperantes te, O Deus exercituum: 7
nevè frustrentur supplicantes ad te, O
Deus Israel. Quoniā propter te sustinui 8
opprobriū, & velavit confusio faciē meā.
Factus sum alienus à fratribus meis, & 9
à filiis matris meæ peregrinus. Quoniam 10
zelus domûs tuæ comedit me, & improperiū
improperantium tibi, cecidit super
me. Humiliavi animā meam jejunio, & 11
factū est mihi convitia. Feci indumentum 12
meum cilicium, & factus sum eis
parabola. Obloquuti sunt de me sedentes 13
ad portas, & cecinerunt de me bibaces
vini. Mea verò oratio ascendit ad te O 14
Domine, tempore placito. Deus exaudi me
per multitudinem misericordiæ tuæ. Per
veritatem salutis tuæ

תהלים : סט

prof n lis è & ,me habentibus odio ab eripiar : infigar *non &* ,luto è me Eripe
15 הַצִּילֵנִי מִטִּיט וְאַל־אֶטְבָּעָה אִנָּצְלָה מִשֹּׂנְאַי וּמִמַּעֲמַקֵּי־
: profundum me absorbeat nec ,aquarum *alveus* me *inundet* Ne .aquarum
16 מָיִם׃ אַל־תִּשְׁטְפֵנִי שִׁבֹּלֶת מַיִם וְאַל־תִּבְלָעֵנִי מְצוּלָה
bona quoniam ,Domine me Exaudi .suum os puteus me super *obturet* neque
17 וְאַל־תֶּאְטַר־עָלַי בְּאֵר פִּיהָ׃ עֲנֵנִי יְהוָה כִּי־טוֹב
ne Et .me *ad* respice tuarū miserationū multitudinē secundùm : tua misericordia
18 חַסְדֶּךָ כְּרֹב רַחֲמֶיךָ פְּנֵה אֵלָי׃ וְאַל־
.me exaudi ,festina ,mihi angustia quoniam : tuo servo à *tuas facies* abscondas
תַּסְתֵּר פָּנֶיךָ מֵעַבְדֶּךָ כִּי־צַר־לִי מַהֵר עֲנֵנִי׃
.me redime meos inimicos propter : eam redime ,*meam animam ad* Appropinqua
19 קָרְבָה אֶל־נַפְשִׁי גְאָלָהּ לְמַעַן אֹיְבַי פְּדֵנִי׃
omnes te coram : meā ignominiā & ,meū pudorē & ,meū probrum nôsti Tu
20 אַתָּה יָדַעְתָּ חֶרְפָּתִי וּבָשְׁתִּי וּכְלִמָּתִי נֶגְדְּךָ כָּל־
,*condolendum ad* expectavi & ,*fui anxius* & ,meū cor contrivit Probrum .mei hostes
21 צוֹרְרָי׃ חֶרְפָּה שָׁבְרָה לִבִּי וָאָנוּשָׁה וָאֲקַוֶּה לָנוּד
: fel meam escam in dederunt Et .inveni non & ,consolantes & : non &
22 וָאַיִן וְלַמְנַחֲמִים וְלֹא מָצָאתִי׃ וַיִּתְּנוּ בְּבָרוּתִי רֹאשׁ
: *laqueum in suas facies ad* eorum mensa Erit .acetum mihi propinaverūt mea siti in &
23 וְלִצְמָאִי יַשְׁקוּנִי חֹמֶץ׃ יְהִי־שֻׁלְחָנָם לִפְנֵיהֶם לְפָח
eorū lumbos & : *videndo à* eorum oculi Obscurabuntur .offendiculū *in* ,*paces ad &*
24 וְלִשְׁלוֹמִים לְמוֹקֵשׁ׃ תֶּחְשַׁכְנָה עֵינֵיהֶם מֵרְאוֹת וּמָתְנֵיהֶם
.eos comprehendat *tui nasi* furor & :tuā iram eos super Effunde .facies nutare semper
25 תָּמִיד הַמְעַד׃ שְׁפָךְ־עֲלֵיהֶם זַעְמֶךָ וַחֲרוֹן אַפְּךָ יַשִּׂיגֵם׃
Quoniam .*habitans* sit ne eorum *tentoriis* in : desolatum eorum palatium Sit
26 27 תְּהִי־טִירָתָם נְשַׁמָּה בְּאָהֳלֵיהֶם אַל־יְהִי יֹשֵׁב׃ כִּי־
.narrabunt tuorū vulneratorū dolorem *ad* & : sunt persecuti ,percussisti quem *tu*
אַתָּה אֲשֶׁר־הִכִּיתָ רָדָפוּ וְאֶל־מַכְאוֹב חֲלָלֶיךָ יְסַפֵּרוּ׃
Deleantur .tuā justitiā *in* ingrediantur non & :eorū *iniquitatem super iniquitatem* Da
28 29 תְּנָה־עָוֺן עַל־עֲוֺנָם וְאַל־יָבֹאוּ בְּצִדְקָתֶךָ׃ יִמָּחוּ
: dolens & ,*afflictus* ego Et .scribantur non justis cum & : viventiū libro è
30 מִסֵּפֶר חַיִּים וְעִם צַדִּיקִים אַל־יִכָּתֵבוּ׃ וַאֲנִי עָנִי וְכוֹאֵב
: cantico *in* Dei nomen Laudabo .me elevabit Deus tua salus
31 יְשׁוּעָתְךָ אֱלֹהִים תְּשַׂגְּבֵנִי׃ אֲהַלְלָה שֵׁם־אֱלֹהִים בְּשִׁיר
vitulus ,bos quàm ,Domino erit *melior* Et .confessione in eum magnificabo &
32 וַאֲגַדְּלֶנּוּ בְתוֹדָה׃ וְתִיטַב לַיהוָה מִשּׁוֹר פָּר
, Deum quærentes ; gaudebunt ,humiles Viderunt .ungulificans ,cornificans
33 מַקְרִן מַפְרִיס׃ רָאוּ עֲנָוִים יִשְׂמָחוּ דֹּרְשֵׁי אֱלֹהִים
& ; Dominus *egenos ad audiens* Quoniam .vestrum cor vivet &
34 וִיחִי לְבַבְכֶם׃ כִּי־שֹׁמֵעַ אֶל־אֶבְיוֹנִים יְהוָה וְאֶת־
omne & ,maria : terra & ,cœli eum Laudent .despexit non suos vinctos
35 אֲסִירָיו לֹא בָזָה׃ יְהַלְלוּהוּ שָׁמַיִם וָאָרֶץ יַמִּים וְכָל־
: Jehudah civitates ædificabit & ,Sijon servabit Deus Quoniam .eis in repens
36 רֹמֵשׂ בָּם׃ כִּי אֱלֹהִים יוֹשִׁיעַ צִיּוֹן וְיִבְנֶה עָרֵי יְהוּדָה
: cā *hæreditabunt* ejus servorum semen Et .eā accipient hæreditate & ,ibi habitabunt &
37 וְיָשְׁבוּ שָׁם וִירֵשׁוּהָ׃ וְזֶרַע עֲבָדָיו יִנְחָלוּהָ
.ea in habitabunt ejus nomen diligentes &
וְאֹהֲבֵי שְׁמוֹ יִשְׁכְּנוּ־בָהּ׃

תרגום TARGUM.

15 פְּצָא יָתִי מִן גָלוּתָא דִמְתִילָא לְטִינָא וְלָא
אֶשְׁתְּמוֹעַ אֶתְפְּצֵי מִן סָנְאַי דְּדָמְיָן לְעוּמְקֵי מוֹי׃
16 לָא יַגְלֵי יָתִי מְלִיךְ תַּקִּיף וְלָא יְסַלְעֵם לְמֶחְפֵּי
עֲלַי מְצוּלְתָא חָסִין וְלָא תִפְתַּח עֲלַי גֵּהִנָּם
17 פּוּמַהּ׃ עֲנֵי יָתִי יְיָ אֲרוּם טָב חִסְדָּךְ הֵיךְ כְּסַגִּיעוּת
18 רַחֲמָךְ תִּסְתַּכֵּל לְוָתִי׃ וְאַל תִּסְתַּלֵּק שְׁכִנְתָּךְ
19 מֵעַבְדָּךְ אֲרוּם עִיק לִי סַרְהֵב עֲנֵי יָתִי׃ קְרֵב
לְוַת נַפְשִׁי פְּרוֹק יָתַהּ מְטוּל דְּלָא אִתְרַבְרְבוּ
20 עֲלַי בַּעֲלֵי דְבָבִי פְּרוֹק יָתִי׃ אַתְּ יְדַעְתָּא קְלָנִי
21 וּבַהֲתִי וְכִסּוּפִי לְקִבְלָךְ קַיְמִין כָּל מְעִיקַי׃ קְלָנָא
תְּבָרַת לִבִּי וְהָא הִיא תַּקִּיפָא וְאַמְתֵּינִית לְמָרֵי
מַסְפְּדַיָּא וְלֵיתֵיהוֹן וּלְמָרֵי תַנְחוּמִין וְלָא
22 אַשְׁכְּחֵית׃ וִיהֲבוּ בִּסְעוּדְתִי מְרִירַת רֵישֵׁי
23 חוּרְמָנֵי וּלְצָחוּתִי אַשְׁקְיָאוּ יָתִי חַלָּא׃ יְהֵי
פָּתוֹרְהוֹן דְּסַדַּרוּ קֳדָמַי בְּאַכְלֵי קֳדָמֵיהוֹן לְקוּלָא
24 וְנִכְסַתְהוֹן לְתַקְלָא׃ יִתְחַשְׁכָן עֵינֵיהוֹן מִן לְמֶחֱמֵי
25 וְחַרְצֵיהוֹן תְּדִירָא תְּזַעְזַע׃ שְׁדֵי עֲלֵיהוֹן רוּגְזָךְ
26 וּתְקוֹף רוּגְזָךְ יִדְבְּקִנּוּן׃ תְּהֵי מַשְׁכְּנוּתְהוֹן צַדְיָא
27 בְּמַשְׁכְּנֵיהוֹן לָא יְהֵי יָתֵיב׃ אֲרוּם דִּי אַנְתְּ
מְחֵיתָא רְדַפוּ וּמִן דִּכְאֵיב עַל קְטוֹלָךְ יִשְׁתַּעֲיָן׃
28 הַב עֲוָיָת עַל עֲוָיַתְהוֹן וְלָא יִזְכּוּן לְמֵעַל
29 בִּכְנִישַׁת צַדִּיקָךְ׃ יִתְמְחוּן מִסֵּפֶר דָּכְרָן חַיַּיָּא
30 וְעִם צַדִּיקַיָּא לָא יִתְכַּתְבוּן׃ וַאֲנָא עַנְיָא וּכְאֵבָא
31 פּוּרְקָנָךְ אֱלָהָא תְּשֵׁיזְבִנָנִי׃ אֲשַׁבַּח שׁוּם אֱלָהִי
32 בְּשִׁירָא וַאֲרַבְרְבִנֵּיהּ בְּתוֹדְתָא׃ וְתִשְׁפַּר צְלוֹתִי קֳדָם
יְיָ מִן תּוֹר פַּטִּים וּבְחִיר דְּקָרֵיב אָדָם קַדְמַי
33 דְּקַדִּימוּ קַרְנוֹי לְטִלְפוֹהִי׃ חֲמוֹן עִנְוְתָנַיָּא וְיֶחְדּוּן
תָּבְעֵי אוּלְפָן מִן קֳדָם אֱלָהָא וִיחֵי לִבְּכוֹן׃
34 אֲרוּם מְקַבֵּל צְלוֹתְהוֹן דַּחֲשִׁיכֵי יְיָ וְלַאֲסִירוֹי
35 לָא בְסַר׃ יְשַׁבְּחוּנֵיהּ מַלְאֲכֵי שְׁמַיָּא וְיָתְבֵי
36 אַרְעָא יַמַּיָּא וְכָל דְּרָחֲשִׁין בְּהוֹן׃ אֲרוּם
אֱלָהָא יִפְרוֹק צִיּוֹן וִישַׁכְלֵל קִרְוִין דִּיהוּדָה
37 וִיתוּבוּן תַּמָּן וְיֵירְתוּנַהּ׃ וּבְנֵי עַבְדוֹי יַחְסְנוּן
יָתַהּ וְרָחֲמֵי שְׁמֵיהּ יִשְׁרוֹן בְּגַוַּהּ׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Libera me de captivitate quæ ſimilis eſt luto, et non ſubmergar: eripiar ab oſorib⁹ meis, qui comparantur profunditatibus aquarū. 15
Ne captivum abducat me rex fortis, nec abſorbeat, ut claudat ſuper me *profundum, validus*: & non *aperiat* adverſùm me gehenna os ſuum. 16
Exaudi me Domine quoniam bona eſt miſericordia tua, ſecundùm multitudinem miſerationum tuarum reſpice ad me. 17
Neque *auferatur majeſtas tua* à ſervo tuo, quoniam anguſtia eſt mihi: feſtina, exaudi me. 18
Appropinqua animæ meæ, redime illam, ut non ſeſe efferant in me inimici mei, redime me. 19
Tu nôſti opprobrium meum & confuſionem meam & ignominiam meam: in conſpectu tuo ſtant omnes qui moleſtant me. 20
Ignominia fregit cor meum, & ecce ipſa *valida*: porrò expectavi præfectos *luctuū*, & non ſubſiſtunt; et conſolatores, & non inveni. 21
Et dederunt in eſcam meā fel capitū baſiliſcorum, & in ſiti mea potaverunt me aceto. 22
Sit menſa eorū, quā paraverunt coram me *ut comederem*, coram eis in laqueum, & ſacrificia eorum in ſcandalum. 23
Obtenebrentur oculi eorū ne videant, et lumbos eorum continuè fac nutare. 24
Effunde ſuper eos furorē tuum, & violentia furoris tui apprehendat eos. 25
Sit habitatio eorum deſerta, et in tabernaculis eorū non ſit qui habitet. 26
Quoniam quem tu vulneràſti, perſecuti ſunt, et de eo qui dolorem ſuffert propter interfectos tuos, obloquentur. 27
Adde iniquitatem ſuper iniquitatem eorum, & non mereantur intrare in Eccleſiam juſtorum tuorum. 28
Deleantur de libro memoriæ vivorum, et cum juſtis non ſcribantur. 29
Et ego pauper & mœſtus ſum: redemptio tua Deus *liberet* me. 30
Laudabo nomen Dei mei in cantico, & magnificabo eum in confeſſione. 31
Et placebit oratio mea corā Dño magis quàm bos pinguis & electus, *quem offerebat Adam primus, cujus cornua præcedebant* ungularum *fiſſiones*. 32
Viſuri ſunt humiles, & lætaturi quærentes doctrinam à conſpectu Dei; & vivet cor veſtrum. 33
Quoniam ſuſcipit orationem pauperum Dominus, & vinctos ſuos non deſpexit. 34
Laudent eum angeli cœlorum, & habitatores terræ; maria, et omnia reptantia in eis. 35
Quoniam Deus redimet Sion, et fundabit civitates Judæ, & *revertentur* ibi, & poſſidebunt eam. 36
Et filii ſervorum ejus poſſidebunt eam: & qui diligunt nomen ejus, habitabunt in medio illius. 37

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

15 * ܦܨܢܝ: ܡܢ ܣܝܢܐ ܕܠܐ ܐܛܒܘܥ. ܘܐܬܦܨܐ ܡܢ ܣܢܐܝ ܘܡܢ ܥܘܡܩܐ ܕܡܝܐ: * ܕܠܐ
16 ܢܛܒܥܢܝ ܥܠܥܠܐ ܕܡܝܐ. ܘܠܐ ܢܒܠܥܢܝ ܬܗܘܡܐ: ܘܠܐ ܢܐܚܘܕ ܥܠܝ ܒܐܪܐ ܦܘܡܗ.
17 * ܥܢܝܢܝ ܡܪܝܐ ܡܛܠ ܕܛܒܐ ܛܝܒܘܬܟ: ܘܒܣܘܓܐܐ ܕܪܚܡܝܟ ܐܬܦܢܐ ܠܘܬܝ.
18 * ܘܠܐ ܬܗܦܘܟ ܐܦܝܟ ܡܢ ܥܒܕܟ: ܡܛܠ ܕܥܩܐ ܠܝ ܥܓܠ ܥܢܝܢܝ. * ܩܪܒ
19 20 ܢܦܫܝ ܠܦܘܪܩܢܟ: ܡܛܠ ܒܥܠܕܒܒܝ ܦܪܘܩܝܢܝ. * ܐܢܬ ܝܕܥ ܐܢܬ ܚܣܕܝ: ܘܒܗܬܬܝ
21 ܩܕܡܝܟ ܟܠܗܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝ. * ܦܣܘܩܐ * ܐܣܝ ܬܒܪܗ ܕܠܒܝ ܘܚܒܘܫ: ܣܟܝܬ
22 ܠܡܢ ܕܢܬܟܪܐ ܥܡܝ ܘܠܐ ܗܘܐ. ܘܠܡܒܝܐܢܐ ܘܠܐ ܐܫܟܚܬ * ܝܗܒܘ ܒܡܐܟܘܠܬܝ ܡܪܪܬܐ.
23 ܘܠܨܗܝ ܚܠܐ ܐܫܩܝܘܢܝ: * ܢܗܘܐ ܦܬܘܪܗܘܢ ܩܕܡܝܗܘܢ ܦܚܐ. ܘܦܘܪܥܢܗܘܢ
24 25 ܠܬܘܩܠܬܐ: * ܢܚܫܟܢ ܥܝܢܝܗܘܢ ܕܠܐ ܢܚܙܘܢ. ܘܚܨܗܘܢ ܒܟܠܙܒܢ ܢܗܘܐ ܟܦܝܦ: * ܐܫܘܕ
26 ܥܠܝܗܘܢ ܪܘܓܙܟ. ܘܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܟ ܬܕܪܟ ܐܢܘܢ: * ܬܗܘܐ ܥܡܪܬܗܘܢ ܚܪܒܐ.
27 ܘܒܡܫܟܢܝܗܘܢ ܠܐ ܢܗܘܐ ܕܥܡܪ: * ܡܛܠ ܕܠܡܢ ܕܐܢܬ ܡܚܝܬ ܪܕܦܘ. ܘܐܘܣܦܘ ܥܠ
28 29 ܟܐܒܗ ܕܩܛܝܠܐ: * ܗܒ ܥܘܠܐ ܥܠ ܥܘܠܗܘܢ. ܘܠܐ ܢܥܠܘܢ ܒܙܕܝܩܘܬܟ: * ܢܬܠܚܘܢ ܡܢ
30 ܣܦܪܟ ܕܚܝܐ. ܘܥܡ ܙܕܝܩܝܟ ܠܐ ܢܬܟܬܒܘܢ: * ܘܐܢܐ ܡܣܟܢܐ ܐܢܐ ܘܟܐܒܐ.
31 ܦܘܪܩܢܟ ܐܠܗܐ ܥܕܪܢܝ: * ܐܫܒܚ ܫܡܗ ܕܐܠܗܐ ܒܬܫܒܘܚܬܐ. ܘܐܪܘܪܒܝܘܗܝ
32 33 ܒܬܘܕܝܬܐ: * ܢܫܦܪ ܠܡܪܝܐ ܡܢ ܬܘܪܐ ܕܡܦܛܡܐ. ܡܩܪܢܐ ܘܡܦܪܣܐ: * ܚܙܘ ܡܣܟܢܐ
34 ܘܚܕܘ ܘܢܚܐ ܠܒܟܘܢ. * ܡܛܠ ܕܫܡܥ ܡܪܝܐ ܠܡܣܟܢܐ. ܘܠܐܣܝܪܘܗܝ ܠܐ ܫܛܐ:
35 36 * ܢܫܒܚܘܢܝܗܝ ܫܡܝܐ ܘܐܪܥܐ: ܘܝܡܡܐ ܘܟܠ ܕܪܚܫ ܒܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܦܪܩ
37 ܨܗܝܘܢ: ܘܒܢܐ ܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܕܢܥܡܪܘܢ ܒܗ ܥܒܕܘܗܝ * ܘܢܐܪܬܘܢܗ: ܘܪܚܡܝ
ܫܡܗ ܢܫܪܘܢ ܒܗ.

Eripe me de luto, ne demergar. Et ſalvus fiam de oſoribus meis, & de profundo aquarum. 15
Ut ne obruat me vorago aquarum, neque abſorbeat me præcipitium, neve claudat ſuper me puteus os ſuum. 16
Exaudi me Domine, quoniam benigna eſt bonitas tua: & in abundantia miſerationum tuarum convertere ad me. 17
Et ne avertas faciem tuam à ſervo tuo. Quia triſtis ſum, citò exaudi me: 18
Admove animam meam ad ſalutem tuam: propter inimicos meos libera me. 19
Tu nôſti opprobrium meum: & ignominia mea eſt in conſpectu omniū hoſtium meorū. 20

* *Sectio* *

Cura fracturam cordis mei, & alliga. Expectavi aliquem qui contriſtaretur, & non fuit: conſolatorem, & non inveni. 21
Dederunt in cibo meo fel, & ad ſitim meam aceto potaverunt me. 22
Sit menſa eorum ante ipſos laqueus, & retributio illorum in offendiculum. 23
Obtenebrentur oculi eorum ne videant, & dorſum eorum omni tempore ſit curvum. 24
Effunde ſuper eos iram tuam, & furor iræ tuæ apprehendat illos. 25
Fiat habitatio eorum diruta, & in tabernaculis eorum non ſit qui habitet: 26
Quoniam quem tu percuſſiſti perſecuti ſunt, & addiderunt ſuper dolorem occiſi. 27
Da iniquitatem ad iniquitatem eorum, & non intrent in juſtitiam tuam. 28
Deleantur de libro tuo vitæ, & cum juſtis tuis non ſcribantur. 29
Ego verò pauper ſum & dolens: ſalus tua Deus adjuvit me. 30
Laudabo nomen Dei cum cantico, & magnificabo eum gratiarū actione. 31
Placebo Dño magìs quā boves ſaginati, cornibus atq; ungulis *inſtructi*. 32
Videte pauperes ac lætamini, & vivat cor veſtrū; 33
Nā audit Dñs pauperes, & vinctos ſuos non deſpicit. 34
Laudēt eū cœlū ac terra, & maria & quicquid reptat in eis; 35
Quoniā De⁹ ſervat Sion, et ædificat urbes Judha: ut habitēt in ea ſervi ej⁹, 36
Illāq; hæreditario poſſideant: et diligentes nomen ej⁹ cōmorentur in ipſa. 37

Verſio VULG. LAT.

15 Eripe me de luto, ut non infigar : libera
me ab iis qui oderunt me, &
16 de profundis aquarum. Non me demergat
tempeſtas aquæ, neque abſorbeat
me profundum: neque urgeat ſuper
17 me puteus os ſuum. Exaudi me,
Domine, quoniam benigna eſt miſericordia
tua : ſecundùm multitudinem
miſerationum tuarum reſpice in me.
18 Et ne avertas faciem tuam à puero
tuo: quoniam tribulor, velociter exaudi
19 me. Intende animæ meæ, & libera
eam: propter inimicos meos eripe
20 me. Tu ſcis improperium meum, &
confuſionem meam, & reverentiam
21 meam. In conſpectu tuo ſunt omnes
qui tribulant me: improperium exſpectavit
cor meum, & miſeriam. Et ſuſtinui
qui ſimul contriſtaretur, & non
fuit : & qui conſolaretur, & non inveni.
22 Et dederunt in eſcam meam fel: &
23 in ſiti mea potaverunt me aceto. Fiat
menſa eorum coram ipſis in laqueum,
& in retributiones, & in ſcandalum.
24 Obſcurentur oculi eorum ne videant:
& dorſum eorum ſemper incurva.
25 Effunde ſuper eos iram tuam: & furor
26 iræ tuæ comprehendat eos. Fiat habitatio
eorum deſerta: et in tabernaculis
27 eorum non ſit qui inhabitet. Quoniã
quẽ tu percuſſiſti, perſecuti ſunt :
& ſuper dolorem vulnerum meorum
28 addiderunt. Appone iniquitatem ſuper
iniquitatem eorum: & non intrent in
29 juſtitiam tuam. Deleantur de libro Viventium:
et cum juſtis non ſcribantur.
30 Ego ſum pauper & dolens : ſalus tua,
31 Deꝰ, ſuſcepit me. Laudabo nomen Dei
cum cantico : & magnificabo eum in
32 laude: Et placebit Deo ſuper vitulum
novellum, cornua producentem & ungulas.
33 Videant pauperes & lætentur :
quærite Deum, & vivet anima veſtra:
34 Quoniam exaudivit pauperes Dominus:
& vinctos ſuos non deſpexit.
35 Laudent illum cœli & terra, mare, &
36 omnia reptilia in eis. Quoniam Deus ſalvam faciet Sion : & ædificabuntur
37 civitates Juda. Et inhabitabunt ibi, & hæreditate acquirent eam. Et ſemen
ſervorum ejus poſſidebit eam; & qui diligunt nomen ejus, habitabunt in ea.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp.

15 Σῶσόν με ἀπὸ πηλοῦ, ἵνα μὴ ἐμπαγῶ· ῥυσθείην
ἐκ τῶν μισούντων με, καὶ ἐκ τοῦ βάθους τῶν ὑδάτων.
16 Μή με καταποντισάτω καταιγὶς ὕδατος, μηδὲ
καταπιέτω με βυθὸς, μηδὲ συσχέτω ἐπ' ἐμὲ φρέαρ
17 τὸ στόμα αὐτοῦ. Εἰσάκουσόν μου κύριε, ὅτι χρηστὸν
τὸ ἔλεός σου, κατὰ τὸ πλῆθος τῶν οἰκτιρμῶν
18 σου ἐπίβλεψον ἐπ' ἐμέ. Καὶ μὴ ἀποστρέψῃς τὸ
πρόσωπόν σου ἀπὸ τοῦ παιδός σου· ὅτι θλίβομαι,
19 ταχὺ ἐπάκουσόν μου. Πρόσχες τῇ ψυχῇ μου, καὶ
λύτρωσαι αὐτὴν, ἕνεκα τῶν ἐχθρῶν μου ῥῦσαί με.
20 Σὺ γὰρ γινώσκεις τὸν ὀνειδισμόν μου, καὶ τὴν αἰσχύνην
21 μου, καὶ τὴν ἐντροπήν μου· Ἐναντίον σου πάντες οἱ
θλίβοντές με. ὀνειδισμὸν προσεδόκησεν ἡ ψυχὴ
μου καὶ ταλαιπωρίαν. καὶ ὑπέμεινα συλλυπούμενον,
καὶ οὐχ ὑπῆρξε, καὶ παρακαλοῦντα, καὶ οὐχ εὗρον.
22 Καὶ ἔδωκαν εἰς τὸ βρῶμά μου χολὴν, καὶ εἰς τὴν δίψαν
23 μου ἐπότισάν με ὄξος. Γενηθήτω ἡ τράπεζα
αὐτῶν ἐνώπιον αὐτῶν εἰς παγίδα, καὶ εἰς ἀνταπόδοσιν,
24 καὶ εἰς σκάνδαλον. Σκοτισθήτωσαν οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτῶν
τοῦ μὴ βλέπειν, καὶ τὸν νῶτον αὐτῶν διαπαντὸς σύγκαμψον.
25 Ἔκχεον ἐπ' αὐτοὺς τὴν ὀργήν σου, καὶ ὁ
26 θυμὸς τῆς ὀργῆς σου καταλάβοι αὐτούς. Γενηθήτω
ἡ ἔπαυλις αὐτῶν ἠρημωμένη, καὶ ἐν τοῖς σκηνώμασιν
27 αὐτῶν μὴ ἔστω ὁ κατοικῶν. Ὅτι ὃν σὺ
ἐπάταξας, αὐτοὶ κατεδίωξαν, καὶ ἐπὶ τὸ ἄλγος
28 τῶν τραυμάτων μου προσέθηκαν. Πρόσθες ἀνομίαν
ἐπὶ τὴν ἀνομίαν αὐτῶν, καὶ μὴ εἰσελθέτωσαν ἐν δικαιοσύνῃ
29 σου. Ἐξαλειφθήτωσαν ἐκ βίβλου ζώντων,
30 καὶ μετὰ δικαίων μὴ γραφήτωσαν. Πτωχὸς καὶ ἀλγῶν
εἰμι ἐγὼ, καὶ ἡ σωτηρία τοῦ προσώπου σου ἀντελάβετό
31 μου. Αἰνέσω τὸ ὄνομα τοῦ θεοῦ μου μετ'
32 ᾠδῆς, μεγαλυνῶ αὐτὸν ἐν αἰνέσει. Καὶ ἀρέσει
τῷ θεῷ ὑπὲρ μόσχον νέον κέρατα ἐκφέροντα καὶ
33 ὁπλάς. Ἰδέτωσαν πτωχοὶ καὶ εὐφρανθήτωσαν. ἐκζητήσατε
34 τὸν θεὸν, καὶ ζήσεσθε. Ὅτι εἰσήκουσε τῶν
πενήτων ὁ κύριος, καὶ τοὺς πεπεδημένους αὐτοῦ οὐκ
35 ἐξουδένωσεν. Αἰνεσάτωσαν αὐτὸν οἱ οὐρανοὶ καὶ
ἡ γῆ, θάλασσα καὶ πάντα τὰ ἕρποντα ἐν αὐτοῖς.
36 Ὅτι ὁ θεὸς σώσει τὴν Σιὼν, καὶ οἰκοδομηθήσονται
αἱ πόλεις τῆς Ἰουδαίας, καὶ κατοικήσουσιν ἐκεῖ, καὶ
37 κληρονομήσουσιν αὐτήν. Καὶ τὸ σπέρμα τῶν δούλων
αὐτοῦ καθέξουσιν αὐτὴν, καὶ οἱ ἀγαπῶντες τὸ
ὄνομα αὐτοῦ κατασκηνώσουσιν ἐν αὐτῇ.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopica, Tranſl. LAT.

18 *Salvum me fac de luto, ut non* 15
infigar : eruar ex iis qui oderunt me,
& de profundo aquarum. 19 *Non* 16
me demergat tempeſtas aquæ : neque
abſorbeat me profundum : neque coarctet
ſuper me puteus os ſuũ. 20 *Exaudi* 17
me, Domine, quoniam ſuavis eſt
miſericordia tua : ſecundùm multitudinem
miſerationum tuarum reſpice in me. 21 *Et ne avertas faciem* 18
tuam à puero tuo. Quoniam tribulor,
velociter exaudi me: 22 *Intende* 19
animæ meæ, & redime eam : propter
inimicos meos eripe me. 23 *Tu* 20
enim agnoſcis opprobrium meum, &
confuſionem meam, & [k] *verecundiã meã.* 24 *In conſpectu tuo ſunt* 21
omnes qui tribulant me : opprobrium
expectavit (o) *anima mea, et miſeriã.*
25 *Et* [l] *ſuſtinui, qui ſimul contriſtaretur,*
& non fuit: *et qui conſolaretur;*
& non inveni. 26 *Et dederunt in* 22
eſcam meam fel : & in ſiti mea potaverunt
me aceto. 27 *Fiat menſa* 23
eorum coram ipſis in (p) *laqueum, &*
[m] *in retributionem, & in ſcandalum.*
28 *Obſcurentur oculi eorum,* 24
ne videant: & dorſum eorum ſemper
incurva. 29 *Effunde ſuper eos iram* 25
tuam : & furor iræ tuæ comprehendat
eos. 30 *Fiat habitatio eorum de-* 26
ſerta : & in tabernaculis eorum non
ſit qui inhabitet. 31 *Quoniam quem* 27
tu percuſſiſti, ipſi perſequuti ſunt: &
ſuper [n] *dolorem vulnerum meorũ*
addiderunt. 32 *Appone iniquitatem* 28
ſuper iniquitatem ipſorum : & non
intrent in tua juſtitia. 33 *Deleantur* 29
de libro Viventium : & cum juſtis
non ſcribantur. 34 *Pauper & dolens* 30
ego ſum : & (q) [o] *ſalus vultûs tui*
ſuſcepit me. 35 *Laudabo nomen Dei* 31
mei cum cantico : magnificabo eum
in laude. 36 *Et placebit Deo ſuper vitulum* 32
novellum, [p] *cornua producentem*
et ungulas. 37 *Videant pau-* 33
peres, & lætentur : quærite Deum,
[q] *&* (r) *vivetis.* 38 *Quoniam* 34
exaudivit pauperes Dominꝰ, & compeditos
ſuos non ſprevit. 39 *Lau-* 35
dent illum cœli, & terra, mare, &
omnia repentia in eis. 40 *Quoniam* 36
Deus ſalvam faciet Sion, & ædificabuntur
civitates Judææ : 41 *Et*
inhabitabunt ibi, & hæreditate acquirent
eam. 42 *Et ſemen ſervorum* 37
[r] *ejus obtinebunt eam : & qui diligunt* [ſ] *nomen ejus, inhabitabunt in ea.*

Verſio ÆTHIOPICA.

ወአድኅነኒ፡እምዐምዓም፡ከመ፡ኢይሐጠኒ፡፡ 18
ወእንግፈኒ ፡ እምጸላእትየ ፡፡ ወእምቀላየ፡ማ
ይ፡፡ወኢያስጥመኒ፡ ዐውሎ፡ ማይ፡፡=፡ ወኢ 19
ይኅጠኒ፡ ቀላይ፡፡ወኢያብቁ፡ አፉሁ ፡ ዐዘቅት፡
ላዕሌየ፡፡=፡ ስምዐኒ ፡ እግዚኦ ፡ እስመ፡ሠና 20
ይ፡ምሕረትከ፡፡ወበከመ፡ ብዙኃ፡ ሣህልከ፡ነጽ
ር፡ላዕሌየ፡፡=፡ ወኢትሚጥ፡ገጽከ፡ እምገብ 21
ርከ፡፡እስመ፡ተመንደብኩ፡ፍጡነ፡ስምዐኒ፡=፡
ነጽራ፡ ለነፍስየ ፡ ወአድኅና፡፡ወአድኅነኒ፡ በእ 22
ንተ፡ ጸላእትየ፡፡=፡ ለሊከ፡ ተአምር ፡ ፅእለ 23
ትየ፡፡ኃፍረትየ ፡ ወኀሳርየ፡፡=፡ በቅድሜከ፡ኵ 24
ሎሙ፡ እለ፡ ይሣቅዩኒ፡፡ተዐገሠት፡ ነፍስየ፡ፅእ
ለተ፡ ወኀሳረ፡፡=፡ ወነበርኩ፡ ተኵዝየ፡ ወኃጣ 25
እኩ፡ ዘይናዝዘኒ፡፡=፡ ወወደዩ ፡ ሐሞተ፡ ውስ 26
ተ፡መብልዕየ፡፡ወአስተዩኒ ፡ ብሒአ ፡ ለጽምእ
የ፡፡=፡ ለትኩኖሙ፡ ማእደሙ ፡ መሠገርተ፡ 27
በቅድሜሆሙ፡፡ወማዕገተ ፡ ዕቅፍተ ፡ ለፍደሆ
ሙ፡፡=፡ ወይጽለማ፡ አዕይንቲሆሙ ፡ ወኢይ 28
ርአዩ፡፡ወይትቀጻዕ ፡ ዘባናቲሆሙ ፡ በኵሉ፡ ጊ
ዜ፡፡=፡ ከዐው፡ መዐተከ፡ ላዕሌሆሙ፡፡ወይር 29
ክቦሙ ፡ መቅሠፍተ ፡ መዐትከ፡፡=፡ ለትኩን፡ 30
ሀገሮሙ ፡ በድወ፡፡ወአልቦ ፡ ዘይነብር ፡ ውስተ፡
አቢያቲሆሙ፡፡=፡ እስመ፡ ዘአንተ፡ቀሠፍከ፡ 31
እሙንቱ ፡ ተለው፡፡ወወሰኩኒ ፡ ደበ ፡ ጸልእየ፡
ቍስለ፡፡=፡ ወስከሙ ፡ ጌጋየ ፡ በደበ ፡ ጌጋዮ 32
ሙ፡፡ ወኢይበኡ፡በጽድቅከ፡፡=፡ ወይደምሰ 33
ሱ፡እመጽሐፈ፡ ሕያዋን ፡፡ ወኢይጸሐፉ ፡ ምስ
ለ፡ጻድቃን፡፡=፡ ነደይ፡ ወቍሱል፡ አነ፡፡መድ 34
ኃኒ፡ገጽየ፡ እግዚአብሔር፡ ተወክፈኒ፡፡=፡ እ 35
ሴብሕ፡ ለስመ ፡ አምላኪየ፡ በማሕሌት፡፡ ወአ
ዐቢዮ፡በስብሐት፡፡=፡ ወአሠምሮ፡ ለእግዚ 36
አብሔር ፡ እምላህም ፡ ጣዕዋ ፡፡ ዘኢያብቈ
ለ፡ቀርነ፡ ወጽፈረ፡፡=፡ ይርአዩ፡ ነደያን ፡ ወ 37
ይትፈሥሑ፡፡ ኅሥዎ ፡ ለእግዚአብሔር ፡ ወተ
ሐዩ ፡ ነፍስክሙ፡፡=፡ እስመ ፡ ሰምዖሙ ፡ እ 38
ግዚአብሔር ፡ ለነደያን ፡፡ ወኢመነኖሙ ፡ ለሙ
ቁሓን፡፡=፡ ይሴብሕዎ ፡ ሰማያት ፡ ወምድ 39
ር፡፡ ወባሕርኒ ፡ ወኵሉ ፡ ዘይትኃወሥ ፡ ውስ
ቴታ፡፡=፡ እስመ፡ አድኅና ፡ እግዚአብሔር፡ 40
ለጽዮን ፡፡ ወይትሐነጻ፡ አሕጉረ፡ ይሁደ፡፡=፡
ይነብሩ ፡ ህየ ፡ ወይወርስዋ፡፡=፡ ወዘርአ፡ 41
አግብርቲከ፡ ይነብርዋ ፡፡ ወእለ፡ ያፈቅሩ፡ስመ 42
ከ፡የኀድሩ፡ውስቴታ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [k] deſpectum meum: [l] contriſtatus ipſe permanſi : & defuit qui me conſolaretur. Et [m] circuitus offenſionis, in retributionem eis. [n] inimicitiam meam etiam vulnus addiderunt. [o] ſalus vultûs mei Deus [p] qui nondum produxit cornua & ungulas. [q] & vivet anima veſtra. [r] tuorum poſſidebunt [ſ] nomen tuum,

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

15 * خلصني من هذا الطين فلا اوحل * نجني من المبغضين لي * ومن عمق المياه * فلا تغرقني
16
17 امواج الماء * ولا يبتلعني العمق * ولا يطبق الجب علي فاه * استجب لي يا رب فان رحمتك
18 صالحة * انظر الي بكثرة رافتك * لا تصرف وجهك عن عبدك * اجبني عاجلا فاني في شدة *
19 * انظر الي نفسي ونجها * من اجل اعداي خلصني * لانك عارف تعييري * وخزيي
20
21 واستحياي * امامك جميع الذين يحزنوني * انتظرت نفسي عارا وشقوة * املت من يحزن
22 معي فلم اصب * ومن يعزيني فلم اجده * جعلوا في طعامي مرارة * وعند عطشي سقوني
23 خلا * فلتكن مايدتهم امامهم فخا * ومجازاة وعثرة * ولتظلم عيونهم فلا يبصرون * ولتحن
24
25 ظهورهم في كل حين * افض عليهم سخطك * وغضب سخطك يدركهم * ولتكن منازلهم
26
27 خرابا * ولا يكون من يسكن في مساكنهم * لانهم طردوا الذي ضربته * وزادوا علي جراحي
28 اوجاعا * زدهم علي اثمهم اثما * لا يدخلون في عدلك * يمحون من سفر الاحياء * ولا
29
30 يكتبون مع الصديقين * مسكين انا وجع * خلاصك اللهم عضدني * اسبح اسم الله
31
32 بتسبحة * وارفعه ببركة * فيرضي الله افضل من عجل فتي * يخرج قرونا واظلافا * فلينظروا
33
34 المساكين وليفرحوا * اطلبوا الله تحيا نفوسكم * فقد اجاب الرب الفقراء * ولم يرذل اساراه *
35 * فلتسبحه السموات والارض * والبحر وكلما يسعي فيه * لان الله يخلص صهيون * ويبنون
36
37 مداين اليهودية * ويسكنون هناك ويرثونها * وذرية عبيدك يستولون عليها * ومحبوا اسمك
يسكنون فيها * الليلويا *

Libera me ab hoc luto, nève infigar in illud. Salves me ab oſoribus meis, et ab imo 15
aquarum : Nève immergant me fluctus 16
aquæ, neq; abſorbeat me profundum, neq;
claudat puteus ſuper me os ſuum. Exaudi 17
me, O Domine, quoniam miſericordia tua
bona eſt ; reſpice in me per multitudinem
benignitatis tuæ. Ne avertas faciem tu- 18
am à ſervo tuo, reſponde mihi velociter,
quia verſor in anguſtia. Reſpice in animã 19
meam, et ſalva illam: propter inimicos me-
os libera me. Quia tu ſcis improperium 20
meum et afflictionem meam et verecundi-
am meam: coram te ſunt omnes qui me af-
fligunt. Expectavit anima mea impropeperium 21
et miſeriam: ſperavi qui contriſtaretur
mecum, et non inveni: & qui me con-
ſolaretur, et non reperi eum ; Poſuerunt in 22
cibo meo amaritudinem, et ad ſitim meam
potaverunt me aceto. Sit menſa eorum 23
ante eos laqueus, et retributio, & offenſio.
Et tenebreſcant oculi eorum neque vide- 24
ant : & curva ſint dorſa eorum in omni
tempore. Effunde ſuper eos iram tuam, et 25
furor iræ tuæ apprehendat eos. Sintque 26
habitationes eorum vaſtatæ, et non ſit qui
habitet in domiciliis eorum. Quia inſe- 27
ctati ſunt quem percuſſiſti, et addiderunt
vulneribus meis dolores. Appone eis ſuper 28
iniquitatem eorum iniquitatem, ne intrent
in æquitatem tuam : Deleantur de libro 29
viventium, & non ſcribantur cum juſtis.
Pauper ego ſum, dolens : Salus tua Deus, 30
confortavit me, Celebrabo nomen Dei 31
laude, et extollam illud benedictione : Et 32
placebit Deo pluſquam vitulus tener emit-
tens cornua & ungulas. Videant ergò 33
pauperes & lætentur : quærite Deum, vi-
vent animæ veſtræ. Jam enim exaudivit 34
Dominus pauperes, et non deſpexit vinctos
ſuos. Laudent illum cœli ac terra, & 35
mare ac quicquid motatur in eo. Quoni- 36
am Deus ſalvabit Sionem, & ædificabunt
civitates Judææ, & habitabunt ibi, &
hereditariò poſſidebunt eas. Et progenies 37
ſervorum tuorum dominabuntur in eas, et
amantes nomen tuum habitabunt in eis.
Alleluja.

תהלים : ע עא

PSAL. LXX. ע

1 mei auxiliū ad Domine:me *liberandum ad* Deus .recordandum ad David ipsi Victori
2 לַמְנַצֵּחַ לְדָוִד לְהַזְכִּיר׃ אֱלֹהִים לְהַצִּילֵנִי יְהוָה לְעֶזְרָתִי
Convertantur .meam animam quærentes erubescant & afficiantur Pudore .festina 1
3 חוּשָׁה׃ יֵבֹשׁוּ וְיַחְפְּרוּ מְבַקְשֵׁי נַפְשִׁי יִסֹּגוּ 2
;sui pudoris mercede *super* Convertantur.meum malū volentes:erubescant &,retrorsum 3
4 אָחוֹר וְיִכָּלְמוּ חֲפֵצֵי רָעָתִי׃ יָשׁוּבוּ עַל־עֵקֶב בָּשְׁתָּם
, te quærentes omnes te in lætentur & , Gaudeant .euge , Euge , *dicentes* 4
5 הָאֹמְרִים הֶאָח הֶאָח׃ יָשִׂישׂוּ וְיִשְׂמְחוּ בְּךָ כָּל־מְבַקְשֶׁיךָ
,*indigus & ,afflictus* ego Et.tuā salutem *diligentes* , Deus magnificetur : semper dicent &
6 וְיֹאמְרוּ תָמִיד יִגְדַּל אֱלֹהִים אֹהֲבֵי יְשׁוּעָתֶךָ׃ וַאֲנִי עָנִי וְאֶבְיוֹן 5
.tardaveris ne Domine : *tu* meus erutor & ,meum auxilium,*mihi* festina Deus
אֱלֹהִים חוּשָׁה־לִּי עֶזְרִי וּמְפַלְטִי אַתָּה יְהוָה אַל־תְּאַחַר׃ 6

PSAL. LXXI. עא

, me *eripies* *tua justitiis In* .seculum in afficiar pudore ne : speravi Domine te In
1 בְּךָ־יְהוָה חָסִיתִי אַל־אֵבוֹשָׁה לְעוֹלָם׃ בְּצִדְקָתְךָ תַּצִּילֵנִי
2 *habitaculi petram in* mihi Esto .me serva & ,tuam aurem me ad inclina : me *erues* & 1
3 וּתְפַלְּטֵנִי הַטֵּה־אֵלַי אָזְנְךָ וְהוֹשִׁיעֵנִי׃ הֱיֵה לִי לְצוּר מָעוֹן 2
,tu mea munitio & ,mea petra quia : me servare præcepisti ,jugiter *ingrediendū ad*
לָבוֹא תָּמִיד צִוִּיתָ לְהוֹשִׁיעֵנִי כִּי־סַלְעִי וּמְצוּדָתִי אָתָּה׃ 3
tu Quoniam .*violenti* & ,pervertentis *vola* è : impii manu è me erue mi Deus
4 5 אֱלֹהַי פַּלְּטֵנִי מִיַּד רָשָׁע מִכַּף מְעַוֵּל וְחוֹמֵץ׃ כִּי־אַתָּה
sum innixus *te Super* .*meis pueritiis* à mea fiducia Dominus,Domine : mea expectatio 4
6 תִקְוָתִי אֲדֹנָי יְהוִה מִבְטַחִי מִנְּעוּרָי׃ עָלֶיךָ נִסְמַכְתִּי 5
portentū Tanquā.semper mea laus te in:me *eductor* tu meæ matris *visceribus à ventre de* 6
7 מִבֶּטֶן מִמְּעֵי אִמִּי אַתָּה גוֹזִי בְּךָ תְהִלָּתִי תָמִיד׃ כְּמוֹפֵת
die tota : tua laude meum os Repleatur .fortis mea spes tu & : multis fui
8 הָיִיתִי לְרַבִּים וְאַתָּה מַחֲסִי־עֹז׃ יִמָּלֵא פִי תְּהִלָּתֶךָ כָּל־הַיּוֹם 7
,*meā fortitudinē deficere secundū* : senectutis tempore in me projicias Ne .tua gloria 8
9 תִּפְאַרְתֶּךָ׃ אַל־תַּשְׁלִיכֵנִי לְעֵת זִקְנָה כִּכְלוֹת כֹּחִי
meam animam custodientes & : *mihi* mei inimici *dixerunt* Quia .me derelinquas ne 9
10 אַל־תַּעַזְבֵנִי׃ כִּי־אָמְרוּ אוֹיְבַי לִי וְשֹׁמְרֵי נַפְשִׁי 10
,eū comprehendite &,persequimini:eū dereliquit Deus:Dicendo.pariter sunt consiliati 11
11 נוֹעֲצוּ יַחְדָּו׃ לֵאמֹר אֱלֹהִים עֲזָבוֹ רִדְפוּ וְתִפְשׂוּהוּ
meum auxilium ad mi Deus : me à elongeris ne Deus .*eruens* non quia
12 כִּי־אֵין מַצִּיל׃ אֱלֹהִים אַל־תִּרְחַק מִמֶּנִּי אֱלֹהַי לְעֶזְרָתִי 12
, probro operiantur , meæ animæ adversarii deficiant , afficiantur Pudore .festina
13 חוּשָׁה׃ יֵבֹשׁוּ יִכְלוּ שֹׂטְנֵי נַפְשִׁי יַעֲטוּ חֶרְפָּה 13
adjiciam & , expectabo semper ego Et .meum malum quærentes ; pudore & 14
14 וּכְלִמָּה מְבַקְשֵׁי רָעָתִי׃ וַאֲנִי תָּמִיד אֲיַחֵל וְהוֹסַפְתִּי 15
die tota , tuam justitiam narrabit meum Os .tuam laudem omnem super
15 עַל־כָּל־תְּהִלָּתֶךָ׃ פִּי יְסַפֵּר צִדְקָתֶךָ כָּל־הַיּוֹם
.numeros cognovi non quoniam : tuam salutem
תְּשׁוּעָתֶךָ כִּי לֹא יָדַעְתִּי סְפֹרוֹת׃

תרגום TARGUM.

ע

1 לְשַׁבָּחָא עַל יַד דָּוִד לְמִדְכַּר עַל צְרוֹךְ לְבוֹנְתָא׃
2 3 אֱלָהָא לְפַצָּאָה יָתָנָא יְיָ לְסַעְדִי זְרֵיז׃ יִבְהֲתוּן
וְיִתְחַסְּרוּן תָּבְעֵי נַפְשִׁי יְזוּרוּן לַאֲחוֹרָא וְיִכְסְפוּן
4 דְּצָבְיָן בִּישְׁתִּי׃ יְתוּבוּן לַאֲחוֹרָא מְטוּל דִּי כְמַנּוּ
עֲלַי יִתְפַּרְעוּן הֵיךְ בְּהִיתְהוֹן דְּאָמְרִין עֲלַי חֲדֵינָא
5 חֲדֵינָא׃ יֶחְדוּן וְיִדּוּצוּן בְּמֵימְרָךְ כָּל תָּבְעֵי אוּלְפָן
מִנָּךְ וְיֵימְרוּן תְּדִירָא יִסְגֵּי יְקָרֵיהּ דַּייָ רָחֲמֵי
6 פּוּרְקָנָךְ׃ וַאֲנָא עַנְיָא וַחֲשִׁיכָא אֱלָהָא זְרֵיז לִי סַעְדִי
וְשֵׁיזָבוּתִי אַתְּ הוּא יְיָ לָא תוֹחַר׃

עא

1 2 בְּמֵימְרָךְ יְיָ רְחִיצִית לָא אֶבְהַת לַעֲלָם׃ בְּצִדְקָתָךְ
פְּצֵי יָתִי וְשֵׁיזְבִנַּנִי אַצְלֵי לְוָתִי אוּדְנָךְ וּפְרוֹק
3 יָתִי׃ הֱוֵי לִי לְטִינַר תַּקִּיף עָשִׁין לְמֵעַל תְּדִירָא
פַּקֵּדְתָּא לְמִפְרַק יָתִי אֲרֵי תוּקְפִּי וּכְרַךְ חוּסְנָא
4 אַתְּ׃ אֱלָהָא שֵׁיזֵיב יָתִי מִן יַד רַשִׁיעָא מִן יְדָא דְּמָרֵי
5 עִילָא וַחֲטוֹף׃ אֲרוּם אַתְּ הוּא סוֹבְרִי יְיָ אֱלָהַי
6 רוּחְצָנִי מִן טַלְיוּתִי׃ עֲלָךְ סַמְכֵית מִן כְּרֵיסָא מִן
מְעַיָּא דְּאִמִּי אַנְתְּ מַפֵּקִי בְּמֵימְרָךְ תּוּשְׁבַּחְתִּי
7 תְּדִירָא׃ הֵיךְ תִּמְהָא הֲוֵיתִי לְסַגִּיעִין וְאַנְתְּ רוּחְצָנִי
8 וְעוּשְׁנָא דִּילִי׃ יִתְמְלֵי פוּמִּי תּוּשְׁבַּחְתָּךְ כָּל יוֹמָא
9 שְׁבָהוֹרָךְ׃ לָא תִטְלוֹק יָתִי לְעִדָּן סִיבוּ כַּד יִפְסוֹק
10 חֵילִי לָא תִשְׁבְּקִנַּנִי׃ אֲרוּם אֲמַרוּ בַּעֲלֵי דְּבָבִי עֲלַי
11 בִּישׁ וְנָטְרֵי נַפְשִׁי יִתְמַלִּיכוּ כַּחֲדָא׃ לְמֵימַר אֱלָהָא
שַׁבְקֵיהּ רְדוּפוּ וַאֲחִידוּ יָתֵיהּ אֲרוּם לֵית דְּפָצֵי׃
12 אֱלָהָא לָא תִרְחִיק מִנִּי אֱלָהִי לְסַעְדִי זְרֵיז׃
13 יִבְהֲתוּן יִשְׁתֵּיצוּן סָטְנֵי נַפְשִׁי יִתְעַטְּפוּן קְלָנָא
14 וְכִסּוּפָא תָּבְעֵי בִּישׁוּתִי׃ וַאֲנָא תְּדִירָא אוֹרִיךְ
15 וְאוֹסִיף עַל כָּל תּוּשְׁבַּחְתָּךְ׃ פּוּמִּי יִשְׁתָּעֵי צִדְקוּתָךְ
כָּל יוֹמָא פּוּרְקָנָךְ אֲרוּם לָא יְדַעִית מִנְיָנְהוֹן׃

PARAPH. CHALD. Vers. Lat.

Ad laudandum per manum Davidis, *ad* 1
recordandum usum thuris.

PSAL. LXX.

DEus ad liberandum *nos*; Domine ad 2
adjuvandum me accinctus esto. Confun- 3
dantur & opprobrio afficiantur quærentes
animam meam; convertantur retrorsum,
& erubescant volentes malum meum. *Re-* 4
*vertantur retrorsum, quoniam insidiati
sunt mihi*; *puniantur* juxta confusionem
suam, qui dicunt adversum me, Gavisi
sumus, gavisi sumus. Exultent & lætentur 5
in Verbo tuo, omnes quærentes eruditio-
nem à te: & dicant continuè, Magnifice-
tur gloria Domini, diligentes redemptio-
nem tuam. Ego autem egenus sum & pau- 6
per: Deus festina ad me: auxilium me-
um, & redemptio mea tu es, Domine ne
moreris.

PSAL. LXXI.

IN verbo tuo Domine confisus sum: non 1
confundar in seculum. In justitia tua erue 2
me & libera me: inclina ad me aurem
tuam, & redime me. Esto mihi rupes for- 3
tis *valdè* ad quā ingrediar jugiter: jussisti
redimi me, quoniam firmitas mea, & arx
fortitudinis meæ tu es. Deus libera me de 4
manu impii, de manu auctoris iniquitatis
& violentiæ. Quoniam tu es spes mea 5
Domine Deus meus, fiducia mea à pueritia
mea. Super te confirmatus sum ab utero, 6
à ventre matris meæ tu extraxisti me: in
verbo tuo laus mea jugiter. Sicut prodigi- 7
um fui plurimis, & tu fiducia mea, & for-
titudo mea. Replebitur os meum laude tua, 8
tota die gloria tua. Ne projicias me in 9
tempore senectutis; cùm defecerit virtus
mea, ne deseras me. Quoniam dixerunt 10
inimici mei adversùm me malum, & ob-
servatores animæ meæ consultant simul.
Dicendo: Deus dereliquit eum, persequi- 11
mini & apprehendite eum, quoniam non
est qui redimat. Deus ne elongeris à me; 12
Dñe ad auxilium meū festina. Confundan- 13
tur & deleantur adversarii animæ meæ:
amiciantur ignominia, & opprobrio quæ-
rentes malum meum. Ego autem jugiter 14
expectabo, & adjiciam super omnem lau-
dem tuam. Os meum annunciabit justiti- 15
am tuam, tota die redemptionem tuam, quoniam nescivi numerum earum.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܥ̄ * ܕܕܘܝܕ. ܡܦܩܢܐ. ܟܕ ܫܕܪ ܗܘܐ ܝܘܐܒ ܠܡܨܝܕܗ 1
ܠܫܡܥܝ ܕܡܪܕ. ܘܬܘܒ ܐܦ ܨܠܘܬܐ ܕܙܕܝܩܐ ܘܕܝܠܗ ܕܡܫܝܚܐ. ܦܬܓܡ̈ܐ ܡܒ.
2 3 * ܐܠܗܐ ܦܪܘܩ ܡܪܝܐ ܠܡܥܕܪܢܝ ܩܘܡ: * ܢܒܗܬܘܢ ܘܢܬܚܦܪܘܢ ܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܢܦܫܝ.
ܢܬܗܦܟܘܢ ܠܒܣܬܪܗܘܢ ܘܢܒܗܬܘܢ: ܐܝܠܝܢ ܕܨܒܝܢ ܒܒܝܫܬܝ. * ܢܬܡܗܘܢ ܒܟܦܠܐ 4
ܒܗܬܬܗܘܢ: ܐܝܠܝܢ ܕܐܡܪܝܢ ܠܝ ܐܗ ܐܗ. * ܢܚܕܘܢ ܒܟ ܟܠ ܕܒܥܝܢ ܠܟ: ܘܢܐܡܪܘܢ 5
ܒܟܠܙܒܢ ܕܪܒ ܗܘ ܐܠܗܐ. ܐܝܠܝܢ ܕܪܚܡܝܢ ܦܘܪܩܢܟ: ܐܢܐ ܡܣܟܢܐ ܐܢܐ ܘܒܨܝܪܐ. ܐܠܗܐ 6
ܥܕܪܝܢܝ: ܡܥܕܪܢܝ ܐܢܬ ܘܡܦܨܝܢܝ ܡܪܝܐ ܠܐ ܬܘܚܪ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܥܐ *
ܡܬܚܒܪ ܠܕܘܝܕ. ܟܕ ܗܘܐ ܩܪܒ ܫܐܘܠ ܥܡ ܒܝܬܗ ܕܕܘܝܕ. ܘܡܬܢܒܐ ܥܠ ܚܫܗ ܘܩܝܡܬܗ
1 2 ܕܡܫܝܚܐ. ܦܬܓܡ̈ܐ ܢ. * ܒܟ ܡܪܝܐ ܣܒܪܬ ܠܐ ܐܒܗܬ ܠܥܠܡ. * ܘܒܙܕܝܩܘܬܟ
3 ܦܨܢܝ: ܨܠܐ ܠܘܬܝ ܐܕܢܟ ܘܦܪܘܩܝܢܝ. * ܗܘܝ ܠܝ ܒܝܬ ܡܥܡܪܐ ܕܐܥܘܠ ܠܗ ܒܟܠܙܒܢ:
4 ܘܦܩܘܕ ܕܢܦܪܩܘܢܢܝ. ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܗܘ ܓܘܣܝ ܘܚܣܢܝ: * ܐܠܗܐ ܦܪܘܩܝܢܝ ܡܢ
5 ܐܝܕܗ ܕܪܫܝܥܐ. ܘܡܢ ܐܝܕܗ ܕܥܘܠܐ ܒܝܫܐ: * ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܗܘ ܣܒܪܝ ܡܪܝܐ. ܐܠܗܐ ܬܘܟܠܢܝ
6 ܡܢ ܛܠܝܘܬܝ: * ܕܥܠܝܟ ܐܣܬܡܟܬ ܡܢ ܡܪܒܥܐ. ܘܡܢ ܡܥܝܗ ܕܐܡܝ ܐܢܬ ܗܘ ܬܘܟܠܢܝ:
7 ܘܠܟ ܫܒܚܬ ܒܟܠܙܒܢ. * ܘܬܕܡܘܪܬܐ ܗܘܝܬ ܠܣܓܝܐܐ: ܕܐܢܬ ܗܘ ܬܘܟܠܢܝ ܚܣܝܢܐ.
8 9 * ܢܬܡܠܐ ܦܘܡܝ ܬܫܒܘܚܬܟ: ܘܟܠܗ ܝܘܡܐ ܪܒܘܬܟ. * ܠܐ ܬܫܕܝܢܝ ܒܙܒܢܐ ܕܣܝܒܘܬܐ:
10 ܘܡܐ ܕܫܠܡ ܚܝܠܝ ܠܐ ܬܫܒܩܝܢܝ. * ܡܛܠ ܕܐܡܪܘ ܥܠܝ ܒܥܠܕܒܒܝ: ܘܐܝܠܝܢ ܕܢܛܪܝܢ
11 ܢܦܫܝ، ܐܬܡܠܟܘ ܐܟܚܕܐ * ܘܐܡܪܘ: ܐܠܗܐ ܫܒܩܗ ܪܕܘܦܘܗܝ ܘܐܚܘܕܘܗܝ. ܡܛܠ
12 ܕܠܝܬ ܠܗ ܡܦܪܩܢܐ: * ܐܠܗܐ ܠܐ ܬܪܚܩ ܡܢܝ. ܐܠܗܐ ܠܡܥܕܪܢܝ ܩܘܡ: * ܢܒܗܬܘܢ
13 ܘܢܬܚܦܪܘܢ ܐܝܠܝܢ ܕܩܝܡܝܢ ܠܘܩܒܠ ܢܦܫܝ. ܢܬܥܛܦܘܢ ܒܗܬܬܐ ܐܝܠܝܢ ܕܨܒܝܢ ܒܒܝܫܬܝ:
14 15 * ܐܢܐ ܕܝܢ ܒܟܠܙܒܢ ܐܨܠܐ ܘܐܘܣܦ ܥܠ ܬܫܒܘܚܬܟ. * ܘܦܘܡܝ ܢܫܬܥܐ ܙܕܝܩܘܬܟ:
ܘܟܠܗ ܝܘܡܐ ܬܫܒܘܚܬܟ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܝܕܥܬ ܣܦܪܐ:

PSAL. LXX

Davidis. Ad literam quum misit Joab ad 1
*capiendum Semù qui rebellaverat. Tum
quoque supplicatio justorum, imò ipsius
Christi. Vers. 42.*

DEus libera me, Domine in adjutorium 2
meum persiste. Confundantur & eru- 3
bescant qui quærunt animam meam: agan-
tur retro & pudefiant qui volunt malum me-
um: Obstupescant duplici cum ignominia 4
qui dixerunt de me, Ehe, ehe, Lætentur in te 5
omnes qui quærunt te: dicant omni tempore,
Magnus est Deus, qui diligunt salutem tuam.
Ego autem pauper sum & inops, Deus assiste 6
mihi: auxiliator meus es, & salvator meus,
Deus mi ne morêris.

PSAL. LXXI.

*Compositus à Davide. Quum Saul bel-
laret adversus domum David. Et prophetia
de passione ac resurrectione Christi. Vers. 50.*

IN te Domine speravi, non confundar un- 1
quam: Et in justitia tua libera me. Inclina 2
ad me aurem tuam, & salva me. Esto mihi 3
domicilium quod ingrediar omni tempore:
& mandes ut server, quia tu es refugium me-
um, & arx mea. Deus eripe me de manu im- 4
pii, & de manu flagitiosi maligni. Quia tu es 5
spes mea Domine, Deus fiducia mea à pueri-
tia mea: Quia tibi innixus sum à vulva, & 6
à visceribus matris meæ tu es spes mea: teque
laudavi omni tempore. Admiratio factus sum 7
multis, quia tu es fiducia mea prævalida. Re- 8
pleatur os meum laude tuâ, & totâ die magni-
ficentiâ tuâ. Ne projicias me tempore senectu- 9
tis, & cum defecerint vires meæ, ne me dese-
ras. Quia dixerunt de me hostes mei: & qui 10
observant animam meam, consultârunt simul.
Ac dixerunt; Deus dereliquit eum, persequi- 11
mini eum & apprehendite illum: non enim
est illi salvator. Deus ne longè sis à me: Deus, 12
in adjutorium meum persiste. Confundan- 13
tur & erubescant qui adversantur animæ
meæ: induantur ignominiâ qui volunt ma-
lum meum. Ego verò jugiter orabo, & ad- 14
jiciam ad laudes tuas: Et os meum annunti- 15
abit justitiā tuam, totâque die glorificationes
tuas. Non enim novi scripturam,

Verſio VULG. LAT.

1 In finē, Pſalm⁹ David, In rememorati-
onē, q̄ ſalvū fecerit eū Dn̄s. LXIX.
2 DEus, in adjutorium meum intende:
Domine, ad adjuvandum me feſti-
3 na. Confundantur, & revereantur,
4 qui quærunt animam meam: Aver-
tantur retrorſum, & erubeſcant,
qui volunt mihi mala: Avertan-
tur ſtatim erubeſcentes, qui dicunt
5 mihi; Eugè, eugè. Exultent & læten-
tur in te omnes qui quærunt te, &
dicant ſemper; Magnificetur Domin⁹:
6 qui diligunt ſalutare tuum. Ego verò
egenus, & pauper ſum: Deus, adjuva
me. Adjutor meus, & liberator meus
es tu: Domine, ne morêris.
1 Pſalmus David, Filiorum Jonadab,
& priorum captivorum. LXX.
IN te, Domine, ſperavi, non confun-
2 dar in æternum: In juſtitia tua libe-
ra me, & eripe me. Inclina ad me au-
3 rem tuam, & ſalva me. Eſto mihi in
Deum protectorē, & in locū munitū:
ut ſalvum me facias: Quoniā firmamē-
tum meum, & refugium meum es tu.
4 Deus meus, eripe me de manu pecca-
toris, & de manu contra legem agen-
5 tis & iniqui: Quoniam tu es patientia
mea, Domine: Domine, ſpes mea à ju-
6 ventute mea. In te confirmatus ſum ex
utero: de ventre matris meæ tu es pro-
tector me⁹. In te cantatio mea ſemper:
7 Tanquā prodigium fact⁹ ſum multis: &
8 tu adjutor fortis. Repleatur os meum
laude, ut cantē gloriā tuā, totâ die ma-
9 gnitudinē tuā. Ne projicias me in tē-
pore ſenectutis: cùm defecerit virtus
10 mea, ne derelinquas me. Quia dixerunt
inimici mei mihi: & qui cuſtodiebant
animā meā, conſilium fecerunt in unū,
11 Dicētes; De⁹ dereliquit eum, perſequi-
mini, & comprehēdite eum: quia non
12 eſt qui eripiat. Deus, ne elongeris à me:
Deus me⁹, in auxilium meum reſpice.
13 Confundātur, & deficiant detrahētes
animæ meæ: operiantur confuſione &
14 pudore qui quærunt mala mihi. Ego
autē ſemper ſperabo: & adjiciā ſuper
15 omnē laudē tuā. Os meum annuntiabit
juſtitiam tuam; totâ die ſalutare tuum.
Quoniam non cognovi literaturam,

Verſ. GRÆC. LXX. Interp.

1 Εἰς τὸ τέλος, τῷ Δαυὶδ Εἰς ἀνάμνησιν, εἰς
τὸ σῶσαί με κύριον. ξθ'.
2 Ὁ θεὸς εἰς τὴν βοήθειάν μου πρόσχες. Αἰ-
3 σχυνθείησαν καὶ ἐντραπείησαν οἱ ζητοῦντες
4 τὴν ψυχήν μου· Ἀποστραφείησαν εἰς τὰ ὀπίσω,
καὶ καταισχυνθείησαν οἱ βουλόμενοί μοι κακά·
ἀποστραφείησαν παραυτίκα αἰσχυνόμενοι οἱ λέ-
5 γοντές μοι, Εὖγε, εὖγε. Ἀγαλλιάσθωσαν καὶ εὐ-
φρανθήτωσαν ἐπὶ σοὶ πάντες οἱ ζητοῦντές σε,
καὶ λεγέτωσαν διαπαντὸς, Μεγαλυνθήτω ὁ θεὸς,
6 οἱ ἀγαπῶντες τὸ σωτήριόν σου. Ἐγὼ δὲ πτω-
χὸς καὶ πένης, ὁ θεὸς βοήθησόν μοι. βοηθός μου,
καὶ ῥύστης μου εἶ σὺ, κύριε μὴ χρονίσῃς.
1 Τῷ Δαυὶδ, Υἱῶν Ἰωναδὰβ, καὶ τῶν πρώτων
αἰχμαλωτισθέντων. ο'.
Ἐπὶ σοὶ κύριε ἤλπισα, μὴ καταισχυνθείην
2 εἰς τὸν αἰῶνα. Ἐν τῇ δικαιοσύνῃ σου ῥῦσαί
με καὶ ἐξελοῦ με, κλῖνον πρὸς μὲ τὸ οὖς σου καὶ σῶ-
3 σόν με. Γενοῦ μοι εἰς θεὸν ὑπερασπιστὴν, καὶ εἰς
τόπον ὀχυρὸν τοῦ σῶσαί με, ὅτι στερέωμά μου
4 καὶ καταφυγή μου εἶ σύ. Ὁ θεός μου ῥῦσαί με ἐκ
χειρὸς ἁμαρτωλοῦ, ἐκ χειρὸς παρανομοῦντος καὶ
5 ἀδικοῦντος. Ὅτι σὺ εἶ ἡ ὑπομονή μου κύριε,
6 κύριε ἡ ἐλπίς μου ἐκ νεότητός μου. Ἐπὶ σὲ ἐπε-
στηρίχθην ἀπὸ γαστρὸς, ἐκ κοιλίας μητρός μου σύ
μου εἶ σκεπαστής. ἐν σοὶ ἡ ὕμνησίς μου διαπαν-
7 τός. Ὡσεὶ τέρας ἐγενήθην τοῖς πολλοῖς, καὶ
8 σὺ βοηθὸς κραταιός. Πληρωθήτω τὸ στόμα μου
αἰνέσεως, ὅπως ὑμνήσω τὴν δόξαν σου, ὅλην τὴν
9 ἡμέραν τὴν μεγαλοπρέπειάν σου. Μὴ ἀπορρίψῃς
με εἰς καιρὸν γήρους, ἐν τῷ ἐκλείπειν τὴν ἰσχύν
10 μου μὴ ἐγκαταλίπῃς με. Ὅτι εἶπαν οἱ ἐχθροί
μου ἐμοὶ, καὶ οἱ φυλάσσοντες τὴν ψυχήν μου ἐβουλεύ-
11 σαντο ἐπιτοαυτὸ, Λέγοντες, Ὁ θεὸς ἐγκατέ-
λιπεν αὐτὸν, καταδιώξατε καὶ καταλάβετε αὐ-
12 τὸν, ὅτι οὐκ ἔστιν ὁ ῥυόμενος. Ὁ θεὸς μὴ μα-
κρύνῃς ἀπ' ἐμοῦ, ὁ θεός μου εἰς τὴν βοήθειάν μου
13 πρόσχες. Αἰσχυνθήτωσαν καὶ ἐκλιπέτωσαν οἱ ἐν-
διαβάλλοντες τὴν ψυχήν μου, περιβαλέσθωσαν
αἰσχύνην καὶ ἐντροπὴν οἱ ζητοῦντες τὰ κακά μοι.
14 Ἐγὼ δὲ διαπαντὸς ἐλπιῶ, καὶ προσθήσω ἐπὶ
15 πᾶσαν τὴν αἴνεσίν σου. Τὸ στόμα μου ἐξαγγε-
λεῖ τὴν δικαιοσύνην σου, ὅλην τὴν ἡμέραν τὴν
σωτηρίαν σου. ὅτι οὐκ ἔγνων πραγματείας,

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

In finem, ipſi David, In rememoratio- 1
nem, eò(a) quòd ſalvū me fecit Dn̄s.
L X I X.
1 *DEus, in adjutoriū meum (b) in- 2
tende: [a] 2 Confundantur, et revere- 3
antur, qui quærunt animā meā. 3 A- 4
vertantur retrorſum, & erube-
ſcant, qui volunt mihi mala. 4 Aver-
tantur ſtatim erubeſcentes, qui dicunt
mihi, Eugè, eugè. 5 Exultent, & læ- 5
tentur in te omnes, qui quærunt [b]
te: & dicant ſemper, Magnificetur
Dn̄s, qui diligunt ſalutare tuū[c].
6 Ego verò egenus, & pauper ſum: 6
Deus, adjuva me. 7 Adjutor meus,
& liberator meus es tu: Domine, [d]
ne tardaveris.*
Ipſi David, (a) Filiorum [a] Jonadab, 1
& eorū qui primi captivi ducti ſunt.
L X X.
1 *IN te, Domine, ſperavi; non con-
fundar in æternum. In juſtitia tua 2
erue me, & exime me. 2 Inclina ad
me aurē tuam, & ſalva[b] me. 3 Eſto 3
mihi[c] in Deum protectorem, & in
locum munitū; ut ſalvum me facias.
4 Quoniam firmamentum meum, &
refugium meum es tu. 5 Deus meus, 4
erue me de manu [d] peccatoris: de
manu contra legem agentis, & ini-
qui. 6 Quoniam tu es patientiā mea, 5
Domine: Domine [e], ſpes mea à ju-
ventute mea. 7 In te confirmatus ſum 6
ex[f] utero: de ventre matris meæ tu
[g] es protector meus. 8 [h] In te can-
tatio mea ſemper: Tanquam [i] pro- 7
digium factus ſum multis: & tu[k]
adjutor fortis. 9 Repleatur os meum 8
laude[l]; ut (b) cantē gloriam tuam,
totâ die (c) magnificentiam tuam.
10 Ne projicias me tempore ſenectu- 9
tis: cùm deficiet virtus mea; ne dere-
linquas me [m]. 11 Quia dixerunt 10
inimici mei mihi: & qui[n] cuſtodie-
bant animam meam, conſilium fece-
runt in unum: 12 Dicentes, Deus de- 11
reliquit eum: perſequimini, & com-
prehendite eum, quia non eſt qui eri-
piat. 13 Deus[o], ne elongeris à me: 12
Deus meus, in auxilium meum reſpi-
ce. 14 Confundantur, & deficiant 13
(d) detrahentes animæ meæ: indu-
antur confuſione, & verecundiâ,
qui quærunt [p] mala mihi. 15 Ego 14
autem ſemper[q] ſperabo, & adjiciā ſuper omnē laudem tuam. 16 Os meum annunti- 15
abit juſtitiam tuam, totâ die ſalutem tuam. 17 Quoniam non cognovi(e) negotiationes;*

Verſio ÆTHIOPICA.

ፍጻሜ:ዘደዊት:በእንተ:ተዝከረ:
አድኅነኒ:እግዚእ::
ኗሀ እግዚአ:ነጽር: ውስተ:ረዲኦትየ::እግዚ 1
አ:አፍጥን:ረዲኦትየ::=፦ ይትኃፈሩ:ወይኅሰ 2
ሩ:እለ:የኃሥሠዋ:ለነፍስየ::=፦ ወይግብኡ:ድ 3
ኅሬሆሙ:ወይትኃፈሩ:እለ:መከሩ: እኩየ:ላዕ
ልየ::=፦ ለይግብኡ:ድኅሬሆሙ:በጊዜሃ:ተኃ 4
ፊሮሙ: እለ: ይብሉኒ: እንቋዕ: እንቋዕ::=፦
ለይትፈሥሑ: ወይትሐሠዩ: ኵሎሙ: እለ:የ 5
ኃሥሡከ: እግዚኦ::ወይበሉ: ዘልፈ: ዐቢይ:እ
ግዚአብሔር::እለ: ይፈቅዱ: አድኅኖተከ:በ
ኵሉ: ጊዜ::=፦ አንሰ:ነደይ: ወምስኪን:አ 6
ነ:: ወእግዚአብሔር: ይረድአኒ::=፦ ረዳኢ 7
የ:ወምስካይየ : አንተ : እግዚአ: አምላኪየ:
ወኢትጕንዲ::=፦
ዘደዊት:ዘወልደ:አሚናደብ:ለእለ:
አቅደሙ:ተፄውዎ::
ሮ ኪያከ: ተወከልኩ: እግዚኦ: ወኢትኃፈር: 1
ለዓለም :: ወበጽድቅከ : አንግፈኒ : ወበልሐ
ኒ::=፦ አጽምእ: እዝነከ: ኀቤየ: ወፍጡነ: 2
አድኅነኒ::=፦ ኩነኒ: አምላኪየ:ወመድኃኒ 3
የ::ውስተ:ብሔር:ጽኑዕ:ከመ:ታድኅነኒ::=፦
እስመ:ኃይልየ: ወጸወንየ: አንተ::=፦ አምላ 4
ኪየ: አድኅነኒ : እምእደ: ኃጥእን::ወእምእ 5
ደ: ዐማፂ: ወገፋዒ::=፦ እስመ: አንተ: ተስፋ 6
የ:እግዚኦ::እግዚእየ: ተሰፈውኩከ: እምንእ
ስየ::=፦ ወብከ: ጸናዕኩ: በውስተ:ከርሠ:እ 7
ምየ :: ወበውስተ : ማኅፀን: አንተ : ከደንከ
ኒ::=፦ ወአንተ:ዝክርየ:በኵሉ:ጊዜ::ከመ: 8
ኳኂላ: ኮንኩዎሙ: ለብዙኃን::ወአንተ:ረዳኢ
የ:ወኃይልየ::=፦ ምላእ:አፉየ:ስብሐቲከ:: 9
ከመ: እሴብሕ: አኰቴተከ::ወኵሎ: አሚረ:
ዕበየ:ስብሐቲከ::=፦ ኢትግድፈኒ:በመዋዕለ: 10
ርስእየ::ወአመ: ኃልቀ: ኃይልየ : ኢትኅድገ
ኒ:አምላኪየ::=፦ እስመ: ነበቡ:ላዕሌየ:ጸላ 11
እትየ::ወእለ : የኃሥሠዋ : ለነፍስየ:: ተማከ
ሩ:ኅቡረ: 12 ወይቤሉ::ኅድጎ:እግዚአብሔ 12
ር::ይግንዎ: ወትእኃዝዎ::እስመ: አልቦ:ዘያ
ድኅኖ::=፦ አምላኪየ : ኢትርሐቅ : እምኔ 13
የ::አምላኪየ: ነጽር : ውስተ: ረዲኦትየ::=፦
ይትኃፈሩ: ወይኅሰሩ: እለ: ያስተዋድይዋ:ለነ 14
ፍስየ::ወይልበሱ: ኃፍረተ: ወኃሳረ: እለ: ይፈ
ቅዱ:ሊተ:ሕማመ::=፦ ወአንሰ:ዘልፈ:እሰፈ 15
ወከ:እግዚኦ::ወእዌስክ:ዲበ: ኵሉ: ስብሐቲ
ከ::=፦ አፉየ : ይነግር : ጽድቀከ::ወኵሎ: 16
አሚረ : አድኅኖተከ::=፦ እስመ : ኢያእም 17
ር:ተግባረ::=፦

INTERP. ÆTH. *PSAL. LXIX.* [a]Domine ad adjuvandum me feſtina. [b]te Domine: [c]continuò. [d]Deus mi, ne *PSAL. LXX.* [a]Aminadab, [b]me citó. [c]Deus meus & protector meus, [d]peccatorum: [e]mi, ſperavi in te à [f] ipſo matris meæ utero; [g]operuiſti me. [h]Et tu es recordatio mea jugiter: [i] globus factus [k] adjutor es meus, & fortitudo mea. [l] tuâ; [m] Domine mi. [n]quærebant animam [o] mi, ne [p] cruciatum mihi. [q]expectabo te Domine; & adjiciam

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 * المزمور التاسع والستون * لداوود ذكر ما خلصه الرب * وعدده * ي * استيخانات *
2 3 * اللهم التفت الى معونتي * اعني يا رب عاجلا * وليخز وليعثر ملتمسوا نفسي * وليرتدوا على
4 اعقابهم خزيا * الذين يريدون ان يصنعوا بي سوا * وليرجعوا لوقتهم منفضحين * القايلون لي
5 نعما نعما * وليبتهج فرحا بك كل الراغبين اليك يا الله * وليقولوا في كل حين * فليعظم الرب
6 7 الذين يحبون خلاصك * انا فقير ومسكين * اللهم اعني * انت معيني ومخلصي يا رب لا
تبطي * الليلويا * * المزمور السبعون * لداوود لابناء يواداب الاولين الذين سبوهم *
* وعدده * ق * استيخن *
1 2 * عليك يا رب توكلت فلا اخزى ابدا * بعدلك نجني
3 وانقذني * اصغ الي بسمعك وخلصني * كن لي الاها نصيرا * وحصنا لخلاصي لانك قوتي
4 5 وملجاي * اللهم خلصني من يد الخاطي * ومن يد مخالف الناموس والظالم * فانت هو
صبري يا رب * الرب هو رجاي منذ صباي * عليك اعتمادي من الاحشاء * ومنذ كنت في
7 بطن امي انت هو ناصري * وتسبحي لك في كل حين * صرت مثل عجب للكثيرين وانت
8 9 لي ناصر ومعين * فيملي فمي بركة * لكي ابارك مجدك * وعظم بهايك النهار كله * لا
10 تطرحني زمن الشيخوخة * ولا ترفضني عند نفاد قوتي * لان اعداي تكلموا في * والذين
11 يرصدون نفسي تشاوروا جميعا قايلين * قد رفضه الله فاطلبوه وادركوه فانه ليس من
12 13 يخلصه * فلا تبتعد عني يا الهي * الاهي التفت لمعونتي * ليخز وليبد الطالبون نفسي * وليلبس
14 15 العار والخزي الطالبون لي الشر * وانا رجوتك في كل حين * وازيد على كل تسبحتك * فمي
يخبر بعدلك وخلاصك النهار كله * لاني لم اعلم الكتاب *

PSAL. LXIX.
Davidis. Rememoratio quòd ſal- 1
vum fecerit eum Dominus. Et
num. verſ. 10.
*DEus, convertere ad auxilium meum: 2
adjuva me, O Domine, citó. Et con- 3
fundantur atque impingant quærentes ani-
mam meam. Et retrocedant ſuper calca- 4
neos ſuos affligentes me, qui volunt perpe-
trare in me malum, & revertantur illico
ignominiâ ſuffuſi qui dicunt mihi, Euge,
euge. Et geſtiant Letitiâ in te omnes ſup- 5
plicantes te, O Deus, et dicant omni tem-
pore, Magnificetur Dominus, qui diligunt
ſalutem tuam. Ego pauper ſum et egenus, 6
Deus adjuva me. Tu es auxiliator meus 7
& redemptor meus, O Domine, ne tarda-
veris. Alleluja.*
PSAL. LXX.
Davidis, filiis Jonadab primis
quos duxerunt captivos. Et num.
ver. 100.
*IN te, O Domine, ſum confiſus, non con- 1
fundar unquam. Ex juſtitia tua ſalva 2
me, et redime me: admove ad me auditum
tuum, & ſalva me. Eſto mihi Deus adju- 3
tor, & arx pro ſalute mea: quoniam tu es
robur meum et refugium meum. Deus, li- 4
bera me de manu peccatoris & de manu
prævaricantis legem & impii. Nam tu es 5
expectatio mea, O Domine: Dominus eſt
ſpes mea à pueritia mea. In te firmitas 6
mea à viſceribus: et ex quo eram in ven-
tre matris meæ, tu es adjutor meus: et laus
mea ad te eſt omni momento. Factus ſum 7
quaſi portentū compluribus, te mihi adju-
tore et fautore. Repleatur os meum bene- 8
dictione, ut benedicam gloriā tuā, et ma-
gnificentiam majeſtatis tuæ die totâ. Ne 9
projicias me tempore ſenectutis, & ne re-
ſpuas me deficientibus viribus meis. Nam 10
hoſtes mei locuti ſunt de me: & qui inſidi-
antur animæ meæ, conſultaverunt ſimul,
dicentes; Jam rejecit illū Deus; quapropter 11
petite eum et aſſequimini illū, quia nemo
eſt qui liberet eum. Ne igitur elongeris à 12
me, O Deus meus: Deus mi, convertere ad
auxilium meum. Confundantur et pereant 13
accuſantes animā meam, et induantur op-
probrio et confuſione optantes mihi malū.
Et ego ſperavi te omni momento, et addam 14
omni laudationi tuæ. Os meum narrabit 15
æquitatem tuam et ſalutem tuam die totâ.
Quia non novi Scripturam,*

תהלים : עב

.solius tuæ justitiæ recordabor : *Domini* domini fortitudines *in* Introibo
אָבוֹא בִּגְבוּרוֹת אֲדֹנָי יֱהוִה אַזְכִּיר צִדְקָתְךָ לְבַדֶּךָ׃ 16
.tua mirabilia annunciabo hactenus & *: meis pueritiis à* me docuisti Deus
אֱלֹהִים לִמַּדְתַּנִי מִנְּעוּרָי וְעַד־הֵנָּה אַגִּיד נִפְלְאוֹתֶיךָ׃ 17
donec , me derelinquas ne Deus : caniciem & , senium ad usque etiam Et
וְגַם עַד־זִקְנָה וְשֵׂיבָה אֱלֹהִים אַל־תַּעַזְבֵנִי עַד־ 18
.tuam fortitudinem est venturus omni : generationi tuum brachium annunciem
אַגִּיד זְרוֹעֲךָ לְדוֹר לְכָל־יָבוֹא גְּבוּרָתֶךָ׃
quis Deus : magna fecisti quæ , excelsum in usque Deus tua justitia Et
וְצִדְקָתְךָ אֱלֹהִים עַד־מָרוֹם אֲשֶׁר־עָשִׂיתָ גְדֹלוֹת אֱלֹהִים מִי 19
: me *vivificabis reverteris* ,malas & , multas angustias mihi ostendisti Qui ? tu sicut
כָּמוֹךָ׃ אֲשֶׁר הִרְאִיתַנוּ צָרוֹת רַבּוֹת וְרָעוֹת תָּשׁוּב תְּחַיֵּינוּ 20
Multiplicabis .me *facies* ascendere *reverteris* terræ voraginibus ex &
וּמִתְּהוֹמוֹת הָאָרֶץ תָּשׁוּב תַּעֲלֵנוּ׃ תֶּרֶב 21
instrumento in tibi confitebor ego Etiam .me *consolaberis circuibis* & : meã magnitudinẽ
גְּדֻלָּתִי וְתִסֹּב תְּנַחֲמֵנִי׃ גַּם־אֲנִי אוֹדְךָ בִכְלִי־ 22
Prædicabunt .Israel sancte :cithara in tibi cantabo mi Deus tuam veritatẽ ,Nebel
נֶבֶל אֲמִתְּךָ אֱלֹהָי אֲזַמְּרָה לְךָ בְכִנּוֹר קְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל׃ תְּרַנֵּנָּה 23
tota mea lingua Insuper .redemisti quam mea anima &:tibi cantavero cùm , mea labia
שְׂפָתַי כִּי אֲזַמְּרָה־לָּךְ וְנַפְשִׁי אֲשֶׁר פָּדִיתָ׃ גַּם־לְשׁוֹנִי כָּל־ 24
quærentes erubuerunt quia,sunt affecti pudore quia : tuam justitiam loquetur die
הַיּוֹם תֶּהְגֶּה צִדְקָתֶךָ כִּי־בֹשׁוּ כִּי־חָפְרוּ מְבַקְשֵׁי
.meum malum
רָעָתִי׃

PSAL. LXXII. עב

.regis filio tuam justitiam & : da regi tua judicia Deus .Selomoh Ipsi
לִשְׁלֹמֹה ׀ אֱלֹהִים מִשְׁפָּטֶיךָ לְמֶלֶךְ תֵּן וְצִדְקָתְךָ לְבֶן־מֶלֶךְ׃ 1
montes Deferent .judicio in tuos *afflictos* & :justitia in tuum populum Judicabit
יָדִין עַמְּךָ בְצֶדֶק וַעֲנִיֶּיךָ בְמִשְׁפָּט׃ יִשְׂאוּ הָרִים ׀ 2 3
filios servabit ,populi *afflictos* Judicabit *.justitia in* colles & : populo pacem
שָׁלוֹם לָעָם וּגְבָעוֹת בִּצְדָקָה׃ יִשְׁפֹּט ׀ עֲנִיֵּי־עָם יוֹשִׁיעַ לִבְנֵי 4
generatio , *lunæ facies ad* & : sole cum te Timebunt *.oppressorem contundet &* : *egeni*
אֶבְיוֹן וִידַכֵּא עוֹשֵׁק׃ יִירָאוּךָ עִם־שָׁמֶשׁ וְלִפְנֵי יָרֵחַ דּוֹר 5
.terræ stillicidium imbres sicut ,vellus super pluvia sicut Descendet .generationum
דּוֹרִים׃ יֵרֵד כְּמָטָר עַל־גֵּז כִּרְבִיבִים זַרְזִיף אָרֶץ׃ 6
Dominabiturq; *.lunam* non *ad usque* , pacis multitudo & :justus ejꝰ diebus in Florebit
יִפְרַח־בְּיָמָיו צַדִּיק וְרֹב שָׁלוֹם עַד־בְּלִי יָרֵחַ׃ וְיֵרְדְּ 7 8
se incurvabunt ejus facies Ad.terræ terminos ad usque flumine à & ,mare ad usque mari à
מִיָּם עַד־יָם וּמִנָּהָר עַד־אַפְסֵי־אָרֶץ׃ לְפָנָיו יִכְרְעוּ 9
munus insularum & , *Tharsis* Reges .lingent *pulverem* ejus inimici & *,solitudinicolæ*
צִיִּים וְאֹיְבָיו עָפָר יְלַחֵכוּ׃ מַלְכֵי תַרְשִׁישׁ וְאִיִּים מִנְחָה 10
omnes ei se incurvabunt Et .offerent *honorarium* Seba & ,*Scheba* reges :reddent
יָשִׁיבוּ מַלְכֵי שְׁבָא וּסְבָא אֶשְׁכָּר יַקְרִיבוּ׃ וְיִשְׁתַּחֲווּ־לוֹ כָל־ 11
.ei servient gentes omnes : reges
מְלָכִים כָּל־גּוֹיִם יַעַבְדוּהוּ׃

תרגום TARGUM.

אֵעוֹל בִּגְבוּרְתָא דַיְיָ אֱלֹהִים אַדְכַּר צִדְקוּתָךְ 16
בִּלְחוֹדָךְ׃ אֱלָהִי אַלֵּיפְתַּנִי בְּנִסַּיָא מִן טַלְיוּתִי 17
וְעַד הַעִדָּנָא אַשְׁנֵי פְּרִישָׁתָךְ׃ וּלְחוֹד עַד זִקְנְתָא 18
וְסֵיבוּתָא אֱלָהָא לָא תִשְׁבּוֹק יָתִי עַד דַּאֲתַנֵּי תְקוֹף
אֶדְרְעָךְ לְדָר דָּרֵי לְכָל דִּי יֵיתֵי כֹּחַ גְּבוּרְתָךְ׃
וְצִדְקָתָךְ אֱלָהָא עַד שְׁמֵי מְרוֹמָא דִּי עֲבַדְתָּא 19
רַבְרְבָן אֱלָהָא מַן כְּוָתָךְ׃ דִּי אַחְמֵתַנִי עָקָן 20
סַגִּיעָן וּבִישָׁן תְּתוּב תְּחַיֵּי יָתָנָא וּמִתְּהוֹמָא
אַרְעִיתָא תְּתוּב תַּסֵּק יָתָנָא׃ תַּסְגֵּי רַבְיוּתִי 21
וְתַחֲזוֹר תְּנַחֲמִנַּנִי׃ לְחוֹד אֲנָא אוֹדֵי קֳדָמָךְ 22
בְּזִינֵי זְמַר וְנִבְלָא אֲתַנֵּי קוּשְׁטָךְ אֱלָהִי אֲשַׁבַּח
קֳדָמָךְ בְּכִנָּרָא קַדִּישָׁא יִשְׂרָאֵל׃ תְּבוּעָן סִפְוָתִי 23
אֲרוּם אֲשַׁבַּח קֳדָמָךְ וְנַפְשִׁי דִּי פְרַקְתָּא׃ לְחוֹד 24
לִישָׁנִי כָּל יוֹמָא תְּרַנֵּן צִדְקָתָךְ אֲרוּם בְּהִיתוּ
אֲרוּם אִתְחַסַּדוּ תָּבְעֵי בִישׁוּתִי׃

עב

עַל יְדוֹי דִּשְׁלֹמֹה אִתְאֲמַר בִּנְבוּאָה אֱלָהָא 1
הִלְכַת דִּינָךְ לְמַלְכָּא מְשִׁיחָא הַב וְצִדְקָתָךְ
לְבָרֵיהּ דְּדָוִד מַלְכָּא׃ יְדִין עַמָּךְ בִּצְדָקָה וַעֲנָיָךְ 2
בְּהִלְכַת דִּינָא׃ יִטְּלוּן יָתְבֵי טוּרַיָא שְׁלָמָא 3
לְבֵית יִשְׂרָאֵל וְגַלְמָתָא בִּזְכוּתָא׃ יְדִין עֲנַיֵּי 4
עַמָּא יִפְרוֹק לִבְנֵי חֲשִׁיכָא וְיִשׁוּף גַּבְרָא טְלוּמָא׃
יִדְחֲלוּן מִנָּךְ עִם מִפַּק שִׁמְשָׁא וִיצַלּוּן קֳדָמָךְ 5
קֳדָם מִנְהַר סִיהֲרָא דָּרֵי דָרַיָא׃ יֵחוֹת הֵיךְ 6
מִטְרָא דְּרַעֲוָא עַל עִסְבָּא דְּגִזְיוֹ מִן גּוּבָאֵי הֵיךְ
רְסִיסֵי מַלְקוֹשָׁא דְּנָטְפִין עַל עִסְבָּא דְּאַרְעָא׃
יִסְגּוּן בְּיוֹמוֹהִי צַדִּיקַיָּא וְסַגִּיעֵי שְׁלָמָא עַד דִּי 7
יִשְׁתֵּיצוּן פָּלְחֵי סִהֲרָא׃ וְיִשְׁלוֹט מִן סְטַר יַמָּא 8
רַבָּא לִסְטַר יַמָּא רַבָּא וּמִן פְּרָת עַד סְיָפֵי
אַרְעָא׃ קֳדָמוֹי יִגְחֲנוּן אִיפַּרְכַיָּא וּבַעֲלֵי דְּבָבוֹי 9
עַפְרָא יְלַחֲכוּן׃ מַלְכַיָּא דְּטַרְסִים וְנִיסֵי יַמָּא 10
דְּאוֹקְיָנוֹס תִּקְרוּבְתָּא יְתִיבוּן מַלְכַיָּא דִּשְׁבָא
וּסְבָא דּוֹרוֹן יְקָרְבוּן׃ וְיִסְגְּדוּן לֵיהּ כָּל מַלְכַיָּא 11
כָּל עַמְמַיָּא יִשְׁתַּעְבְּדוּן לֵיהּ׃

PARAPH. CHALD. Vers. Lat.

Ingrediar in fortitudinem Dñi: Deꝰ recor- 16
dabor justitiæ tuæ tantummodò. Deus *meus* 17
docuisti me in portentis ab adolescentia
mea; ad hoc usq; momentum annunciabo
mirabilia tua. Sed etiam usq; in senectu- 18
tem, & canitiem Deus ne derelinquas me,
donec annunciem fortitudinem brachii
tui generationi *generationum*, cuilibet
venturo virtutem fortitudinis tuæ. Et ju- 19
stitia tua Deus usq; ad cœlos excelsos, quos
fecisti maximos: Deus, quis est sicut tu?
Qui ostendisti nobis afflictiones multas & 20
malas; redeas, vivifica nos; & de abysso
inferiori revertens, educas nos. Multiplica- 21
bis magnificentiam meam, & reversus con-
solaberis me. Sed & ego confitebor coram 22
te instrumentis musices, & nablo annunci-
abo veritatem tuam Deus meus: laudabo
coram te in cithara Sancte Israelis. Exul- 23
tabunt labia mea cùm laudes dixero coram
te, & anima mea quam redemisti. Insuper 24
lingua mea tota die annunciabit justitiam
tuam, quoniã confusi sunt, quoniam oppro-
brio affecti sunt quærentes malum meum.

Per manum Salomonis dictus propheticè. 1

PSAL. LXXII.

DEus sententiam judiciorum tuorum re-
gi Christo dato, & justitiam tuam filio Da-
vidis regis. Judicabit populum tuum in ju- 2
stitia, & pauperes tuos in sententia judicii.
Afferent habitatores montium pacem *do-* 3
mui Israel, & colles justitiam. Judicabit 4
pauperes populi, redimet filios miserorum,
& conteret virũ raptorem. Timebunt à te 5
cum ascensu Solis, & orabunt corã *te ante*
lumen Lunæ in generationes generatio-
num. Descendet sicut pluvia spontanea su- 6
per herbam corrosam à locustis; sicut stillæ
pluviæ serotinæ stillantes super *herbam*
terræ. Multiplicabuntur in diebus ejus 7
justi; & abundantia pacis, donec destru-
antur servi Lunæ. Et dominabitur ab an- 8
gulo maris magni usque ad angulum *maris*
magni, & ab Euphrate usque ad fines ter-
ræ. Coram eo humiliabuntur proceres; & 9
inimici ejꝰ pulverem lingent. Reges Thar- 10
sis & insulæ maris Oceani oblationem ad-
ducent: reges Seba, & Saba dona offe-
rent. Et adorabunt eum omnes reges; 11
omnes populi subditi erunt ei.

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

16 * ܐܥܘܠ ܠܚܝܠܘܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܐܥܗܕ ܙܕܝܩܘܬܟ ܒܠܚܘܕܝ: * ܐܠܗܐ ܝܘܠܦܢܝ ܕܝܠܝ
17 ܡܢ ܛܠܝܘܬܝ ܘܥܕܡܐ ܠܗܫܐ. ܕܐܚܘܐ ܬܕܡܪܬܟ: * ܥܕܡܐ ܠܣܝܒܘܬܐ ܘܠܩܫܝܫܘܬܐ ܠܐ
18 ܬܫܒܩܢܝ. ܥܕܡܐ ܕܐܚܘܐ ܕܪܥܟ ܘܓܢܒܪܘܬܟ ܠܕܪܐ ܕܐܬܐ: * ܙܕܝܩܘܬܟ ܐܠܗܐ ܥܕܡܐ
19 ܠܡܪܘܡܐ. ܘܪܘܪܒܬܐ ܕܥܒܕܬ ܐܠܗܐ ܡܢܘ ܕܕܡܐ ܠܟ: * ܕܐܚܘܝܬܢܝ ܐܘܠܨܢܐ ܣܓܝܐܐ ܘܒܝܫܬܐ.
20 ܘܗܦܟܬ ܘܐܚܝܬܢܝ: ܐܦ ܡܢ ܬܗܘܡܐ ܕܐܪܥܐ ܬܘܒ ܐܣܩܬܢܝ. * ܐܣܓܝܬ ܪܒܘܬܝ
21 ܘܗܦܟܬ ܘܒܝܐܬܢܝ: * ܐܦ ܐܢܐ ܐܘܕܐ ܠܟ ܒܟܢܪܐ ܘܠܩܘܫܬܟ ܐܙܡܪ. ܐܠܗܐ ܐܙܡܪ ܠܟ
22 ܒܟܢܪܐ ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ: * ܘܢܫܒܚܢ ܣܦܘܬܝ ܟܕ ܐܙܡܪ ܠܟ ܘܢܦܫܝ ܕܦܪܩܬ. * ܘܠܫܢܝ
23 24 ܟܠܗ ܝܘܡܐ ܬܗܪܓ ܒܙܕܝܩܘܬܟ: ܡܛܠ ܕܢܒܗܬܘܢ ܘܢܬܚܦܪܘܢ. ܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܒܝܫܬܝ.

Ut penetrem fortitudinem Domini, & com- 16
memorem æquitatem tuam ego solus. Deus 17
doctrina mea à pueritia & usque modò, ut
ostendam prodigia tua. Usque ad senectam 18
& grandævam ætatem ne deseras me: quoad
patefaciam brachium tuum & fortitudinem
tuam generationi venturæ: Justitiam tuam 19
Deus usque ad excelsum, & ingentia quæ
patrâsti: Deus quis tibi similis? Tu qui 20
ostendisti mihi tribulationem multam atque
miseriam, & reversus es ac vivificâsti me, tu
idem etiam de abyssis terræ reduces & ex-
trahes me: Auxisti magnificentiam meam, 21
& conversus es atque consolatus es me. Ego 22
quoque confitebor tibi cum cithara & veri-
tati tuæ canam: Deus psallam tibi cum ci-
thara, Sancte Israelis: Et laudabunt labia 23
mea quum psallam tibi, & anima mea quam
redemisti: Et lingua mea totâ die confitebitur 24
æquitatem tuam, quoniam erubescent & con-
fundentur qui volunt malum meum.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܥܒ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܟܕ ܐܡܠܟ ܗܘܐ ܠܫܠܝܡܘܢ. ܘܡܬܢܒܝܢܘܬܐ ܥܠ ܡܐܬܝܬܗ
ܕܡܫܝܚܐ. ܘܩܪܝܢܐ ܕܥܡܡܐ ܟܠܗܘܢ:
2 ܐܠܗܐ ܗܒ ܕܝܢܟ ܠܡܠܟܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܟ ܠܒܪ ܡܠܟܐ: * ܕܢܕܘܢ ܥܡܟ ܒܙܕܝܩܘܬܐ.
3 ܘܠܡܣܟܢܝܟ ܒܕܝܢܐ: * ܢܣܒܘܢ ܛܘܪܐ ܫܠܡܐ ܠܥܡܟ. ܘܪܡܬܐ ܙܕܝܩܘܬܐ:
4 * ܕܢܕܘܢ ܠܡܣܟܢܐ ܕܥܡܐ. ܘܢܦܪܘܩ ܠܒܢܝ ܡܣܟܢܐ: ܘܢܡܟܟ ܠܥܠܘܒܐ
5 6 * ܢܣܓܕܘܢ ܠܟ ܥܡ ܫܡܫܐ: ܘܩܕܡ ܣܗܪܐ ܠܕܪܕܪܝܢ. * ܢܚܘܬ ܐܝܟ ܡܛܪܐ ܥܠ
7 ܓܙܬܐ: ܘܐܝܟ ܪܣܝܣܐ ܕܢܫܒܝܢ ܥܠ ܐܪܥܐ. * ܢܦܘܩ ܒܝܘܡܘܗܝ ܙܕܝܩܐ: ܘܣܘܓܐܐ ܕܫܠܡܐ
8 ܥܕܡܐ ܕܢܥܒܪ ܣܗܪܐ. * ܢܐܚܘܕ ܡܢ ܝܡܐ ܠܝܡܐ: ܘܡܢ ܢܗܪܘܬܐ ܥܕܡܐ ܠܣܘܦܝܗ
9 10 ܕܐܪܥܐ. * ܩܕܡܘܗܝ ܢܓܚܢܘܢ ܓܙܪܬܐ: ܘܒܥܠܕܒܒܘܗܝ ܥܦܪܐ ܢܠܚܟܘܢ. * ܡܠܟܐ
ܕܬܪܫܝܫ ܘܕܓܙܪܬܐ: ܩܘܪܒܢܐ ܢܝܬܘܢ ܠܗ. ܡܠܟܐ ܕܫܒܐ ܘܕܣܒܐ: ܩܘܪܒܢܐ ܢܩܪܒܘܢ
11 ܠܗ. * ܢܣܓܕܘܢ ܠܗ ܟܠܗܘܢ ܡܠܟܐ: ܘܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܢܦܠܚܘܢܝܗܝ.

PSAL. LXXII.

Davidis. Quum regem constituisset Sa- 1
lomonem. Et prophetia de adventu Christi,
& vocatione gentium. Vers. 45.

DEus, da judicium tuum regi, & justiti-
am tuam filio regis: Ut judicet popu- 2
lum tuum in justitia, & pauperes tuos in ju-
dicio. Ferent montes pacem populo tuo, & 3
colles æquitatem tuam. Ut judicet pauperes 4
populi, & salvet filios inopum, humiliétque
tyrannos. Adorabunt te cum sole & ante lu- 5
nam in generationẽ generationũ. Descendet 6
sicut pluvia super vellus, & ceu stillæ caden-
tes super terram. Germinabit in diebus ejus 7
justitia & multitudo pacis, donec desierit lu-
na. Possidebit à mari ad mare, & à fluminibus 8
usque ad extremitates terræ. Corã illo proci- 9
dent Insulæ, & inimici ejus pulverem lingent.
Reges Tharsis & Insularum munera offerent 10
ei: Reges Sceba & Saba oblationes offerent
illi: Adorabunt eum omnes reges, & omnes 11
gentes colent eum;

Verſio VULG. LAT.

16 Introibo in potentias Dñi: Domine,
17 memorabor juſtitiæ tuæ ſolius. Deus,
docuiſti me à juventute mea: & uſque
18 nunc pronuntiabo mirabilia tua: Et
uſq; in ſenectam & ſenium: Deus, ne
derelinquas me, Donec annuntiẽ bra-
chiũ tuum generationi omni, quæ ven-
19 tura eſt; Potentiam tuam, Et juſtitiam
tuam, Deus, uſq; in altiſſima, quæ feciſti
20 magnalia: De⁹, quis ſimilis tibi? Quan-
tas oſtendiſti mihi tribulationes mul-
tas, & malas? & converſus vivificâſti
me: & de abyſſis terræ iterùm re-
21 duxiſti me: Multiplicâſti magnificen-
tiam tuam, & converſus conſolatus
22 es me. Nam & ego confitebor tibi
in vaſis Pſalmi veritatem tuam: Deus,
pſallam tibi in cithara, ſanctus Iſrael.
23 Exultabunt labia mea cùm cantavero
tibi; & anima mea, quam redemiſti.
24 Sed & lingua mea totâ die meditabi-
tur juſtitiam tuam: cùm confuſi & re-
veriti fuerint qui quærunt mala mihi.

1 Pſalmus, In Salomonem. LXXI.

2 DEus, judicium tuũ regi da: & ju-
ſtitiam tuam filio regis: Judicare
populũ tuum in juſtitia, & pauperes
3 tuos in judicio. Suſcipiant montes pa-
4 cem populo, & colles juſtitiam. Judi-
cabit pauperes populi, & ſalvos fa-
ciet filios pauperum: & humiliabit ca-
5 lumniatorem. Et permanebit cum So-
le, & ante Lunam, in generatione &
6 generationem. Deſcendet ſicut pluvia
in vellus: & ſicut ſtillicidia ſtillantia
7 ſuper terrã. Orietur in diebus ejus ju-
ſtitia, & abundantia pacis: donec au-
8 feratur luna. Et dominabitur à mari
uſq; ad mare; & à flumine uſq; ad ter-
9 minos orbis terrarũ. Corã illo proci-
dent Æthiopes: & inimici ej⁹ terram
10 lingent. Reges Tharſis et inſulæ mune-
ra offerẽt: reges Arabũ & Saba dona
11 adducent: Et adorabunt eum omnes
reges terræ: omnes gentes ſervient ei.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp.

16 Εἰσελεύσομαι ἐν δυναστείᾳ κυρίου, κύριε μνησθή-
17 σομαι τῆς δικαιοσύνης σου μόνου. Ἐδίδαξάς με ὁ
θεὸς ἐκ νεότητός μου, καὶ μέχρι νῦν ἀπαγγελῶ τὰ
18 θαυμάσιά σου, Καὶ ἕως γήρους καὶ πρεσβείου. ὁ
θεὸς μὴ ἐγκαταλίπῃς με, ἕως ἂν ἀπαγγεί-
λω τὸν βραχίονά σου πάσῃ τῇ γενεᾷ τῇ ἐρ-
19 χομένῃ. τὴν δυναστείαν σου, Καὶ τὴν δικαιοσύ-
νην σου ὁ θεὸς ἕως ὑψίστων, ἃ ἐποίησας μεγα-
10 λεῖα. ὁ θεὸς τίς ὅμοιός σοι; Ὅσας ἔδειξάς
μοι θλίψεις πολλὰς καὶ κακάς; καὶ ἐπιστρέψας ἐ-
ζωοποίησάς με, καὶ ἐκ τῶν ἀβύσσων τῆς γῆς πάλιν
21 ἀνήγαγές με. Ἐπλεόνασας τὴν δικαιοσύνην σου,
καὶ ἐπιστρέψας παρεκάλεσάς με, καὶ ἐκ τῶν ἀ-
22 βύσσων τῆς γῆς πάλιν ἀνήγαγές με. Καὶ γὰρ
ἐγὼ ἐξομολογήσομαί σοι ἐν σκεύει ψαλμοῦ
τὴν ἀλήθειάν σου ὁ θεός, ψαλῶ σοι ἐν κιθά-
23 ρᾳ ὁ ἅγιος τοῦ Ἰσραήλ. Ἀγαλλιάσονται τὰ
χείλη μου ὅταν ψάλω σοι, καὶ ἡ ψυχή μου ἣν ἐ-
24 λυτρώσω. Ἔτι δὲ καὶ ἡ γλῶσσά μου ὅλην τὴν ἡμέ-
ραν μελετήσει τὴν δικαιοσύνην σου, ὅταν αἰ-
σχυνθῶσι καὶ ἐντραπῶσιν οἱ ζητοῦντες τὰ κακά
μοι.

1 Εἰς Σαλωμών. οα΄.

2 Ὁ θεὸς τὸ κρίμα σου τῷ βασιλεῖ δὸς, καὶ
τὴν δικαιοσύνην σου τῷ υἱῷ τοῦ βασιλέως·
κρίνειν τὸν λαόν σου ἐν δικαιοσύνῃ, καὶ τοὺς πτω-
3 χούς σου ἐν κρίσει. Ἀναλαβέτω τὰ ὄρη εἰρήνην
4 τῷ λαῷ σου, καὶ οἱ βουνοὶ ἐν δικαιοσύνῃ. Κρινεῖ τοὺς
πτωχοὺς τοῦ λαοῦ, καὶ σώσει τοὺς υἱοὺς τῶν πενή-
5 των· καὶ ταπεινώσει συκοφάντην, Καὶ συμ-
παραμενεῖ τῷ ἡλίῳ, καὶ πρὸ τῆς σελήνης γενε-
6 ὰς γενεῶν. Καταβήσεται ὡς ὑετὸς ἐπὶ πό-
7 κον, καὶ ὡσεὶ σταγόνες στάζουσαι ἐπὶ τὴν γῆν. Ἀ-
νατελεῖ ἐν ταῖς ἡμέραις αὐτοῦ δικαιοσύνη, καὶ
πλῆθος εἰρήνης ἕως οὗ ἀνταναιρεθῇ ἡ σελήνη.
8 Καὶ κατακυριεύσει ἀπὸ θαλάσσης ἕως θα-
λάσσης, καὶ ἀπὸ ποταμοῦ ἕως περάτων τῆς
9 οἰκουμένης. Ἐνώπιον αὐτοῦ προπεσοῦνται Αἰ-
10 θίοπες, καὶ οἱ ἐχθροὶ αὐτοῦ χοῦν λείξουσι. Βα-
σιλεῖς Θαρσὶς καὶ αἱ νῆσοι δῶρα προσοίσουσι,
βασιλεῖς Ἀράβων καὶ Σαβὰ δῶρα προσάξουσι.
11 Καὶ προσκυνήσουσιν αὐτῷ πάντες οἱ βασι-
λεῖς, πάντα τὰ ἔθνη δουλεύσουσιν αὐτῷ.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

Introibo in potentia Domini: Dñe, me- 16
morabor juſtitiæ tuæ ſolius. 18 (f)
Docuiſti [r] *me,* Deus, *ex juventute* 17
mea: & uſq; nunc annuntiabo mira-
bilia tua, 19 *Et uſque* [ſ] *in ſenectã,* 18
& ſenium. Deus, ne derelinquas me;
20 *donec annuntiem brachium tuũ*
omni generationi, quæ ventura eſt.
21 *Potentiam* [t] *tuam, Et juſtitiam* 19
tuam, De⁹, (g) uſq; in altiſſima, quæ
feciſti magnalia: De⁹, *quis ſimilis ti-*
bi? 22 [u] *Quãtas oſtẽdiſti mihi tri-* 20
bulationes multas, & (h) malas? &
converſus vivificâſti me: & de a-
byſſis terræ iterum reduxiſti me.
23 *Multiplicâſti (i) juſtitiam tuam:* 21
& converſus conſolatus es me: &
(k) de abyſſis terræ iterum reduxiſti
me. 24 *Nam & ego confitebor tibi* 22
in (l) vaſe pſalmi veritatẽ tuã, Deus:
pſallã tibi in cithara, ſanctus Iſrael.
25 *Exultabunt labia mea, cùm pſal-* 23
lam tibi, & anima mea, quã rede-
miſti. 26 *Adhuc autem & lingua* 24
mea totâ die meditabitur juſtitiam
tuam: cùm confuſi fuerint, & erubu-
erint, qui quærunt mala mihi.
MS. Æth. Poc. Gloria Patri, & Fi-
lio, et Spiritui Sãcto: eſt modò, ſemper
erit, & in ſecula ſeculorum, Amen.
In Salomonem. *LXXI.* 1
1 *Deus, judicium tuum regi da,* 2
& juſtitiam tuam filio regis.
2 [a] *Judicare populum tuum in ju-*
ſtitia, & pauperes tuos in judicio.
3 *Suſcipiant montes pacem populo* 3
tuo, & colles. 4 *(a) In juſtitia judi-* 4
cabit pauperes populi, & ſalvos fa-
ciet filios [b] *pauperum: & humili-*
abit [c] *calumniatorem:* 5 *Et (b) per-* 5
manebit cum Sole, & ante Lunã (c)
generationes generationũ. 6 *Deſcen-* 6
det, ſicut pluvia in vellus: & ſicut
ſtillicidia ſtillantia ſuper terram.
7 *Orietur in diebus ejus juſtitia, &* 7
abundãtia pacis; donec auferatur Lu-
na. 8 *Et dominabitur à mari uſque* 8
ad mare, & à (d) flumine uſque ad
terminos orbis terrarum. 9 *Coram illo* 9
procident Æthiopes: & inimici ejus
[d] *terram lingent.* 10 *Reges Thar-* 10
ſis, & inſulæ munera offerent: reges
Arabum & Saba dona adducent.
11 *Et adorabunt eum omnes (e)* [e] 11
reges: omnes gentes ſervient ei.

Verſiõ ÆTHIOPICA.

እበውእ ፡ በኀይለ ፡ እግዚአብሔር ፡፡ እግዚኦ ፡
እዜክር ፡ ጽድቀከ ፡ ባሕቲቶ ፡፡=፥ ወመሐር 18
ከኒ ፡ እምሳኪየ ፡ እምንእስየ ፡፡ እስከ ፡ ይእዜ ፡
እነግር ፡ ስብሐቲከ ፡፡=፥ እስከ ፡ እልህቅ ፡ ወእ 19
ረሥእ ፡ ኢትኅድገኒ ፡ አምላኪየ ፡፡=፥ እስከ ፡ 20
እነግር ፡ መዝራዕተከ ፡ ለትውልድ ፡ ዘይመጽ
እ ፡፡=፥ ኀይለከኒ ፡ ወጽድቀከኒ ፡፡ እግዚ 21
ኦ ፡ እስከ ፡ አርያም ፡ ገበርከ ፡ ዐቢያተ ፡፡
እግዚኦ ፡ መኑ ፡ ከማከ ፡፡=፥ እስመ ፡ አር 22
አይከኒ ፡ ሕማመ ፡ ወመንደቤ ፡ ብዙኀ ፡፡ ወተመ
የጥከኒ ፡ ወአሕየውከኒ ፡፡ ወእመቀላየ ፡ ምድ
ር ፡ ካዕበ ፡ አውፃእከኒ ፡፡=፥ ወአብዛኅከ ፡ ለ 23
ጽድቅከ ፡፡ ወገባእከ ፡ ታስተፌሥሐኒ ፡፡ ወእም
ቀላየ ፡ ምድር ፡ ካዕበ ፡ አውፃእከኒ ፡፡=፥ ወአ 24
ነሂ ፡ እገኒ ፡ ለከ ፡ በንዋየ ፡ መዝሙር ፡ ለጽድቅ
ከ ፡፡ እዜምር ፡ ለከ ፡ አምላኪየ ፡ በመሰንቆ ፡ ቅዱ
ስ ፡ እስራኤል ፡፡=፥ ይትፌሥሓ ፡ ከናፍርየ ፡ 25
ሶበ ፡ እዜምር ፡ ለከ ፡፡ ወለነፍስየኒ ፡ እንተ ፡ አድ
ኀንካ ፡፡=፥ ወዓዲ ፡ ልሳንየ ፡ ያነብብ ፡ ጽድቀ 26
ከ ፡ ኵሎ ፡ አሚረ ፡፡ ሶበ ፡ ተኀፍሩ ፡ ወኀስሩ ፡ እ
ለ ፡ የኀሥሡ ፡ ሊተ ፡ እኩየ ፡፡=፥
ስብሐት ፡ ለአብ ፡ ወወልድ ፡ ወመንፈስ ፡ ቅዱ
ስ ፡፡ ይእዜኒ ፡ ወዝልፈኒ ፡ ወለዓለመ ፡ ዓለም ፡ አ
ሜን ፡፡=፥

በእንተ ፡ ሰሎሞን ፡፡

ሮል እግዚኦ ፡ ኵነኔከ ፡ ሀብ ፡ ለንጉሥ ፡፡ ወጽ 1
ድቅከኒ ፡ ለወልደ ፡ ንጉሥ ፡፡=፥ ከመ ፡ ይኰንኖ 2
ሙ ፡ ለሕዝብከ ፡ በጽድቅ ፡፡ ወለነዳያኒከ ፡ በፍ
ትሕ ፡፡=፥ ይትወከፉ ፡ አድባር ፡ ወአውግር ፡ 3
ሰላመ ፡ ሕዝብከ ፡፡=፥ ኰንን ፡ በጽድቅ ፡ ነዳያ 4
ነ ፡ ሕዝብከ ፡፡ ወአድኅኖሙ ፡ ለደቂቀ ፡ ምስኪና
ኒከ ፡፡ ወአኅስሮ ፡ ለዕቡይ ፡፡=፥ ወይፀንሕ ፡ 5
ምስለ ፡ ፀሐይ ፡፡ እምቅድመ ፡ ወርኅ ፡ ለትውል
ደ ፡ ትውልድ ፡፡=፥ ወይወርድ ፡ ከመ ፡ ጠል ፡ ው 6
ስተ ፡ ፀምር ፡፡ ወከመ ፡ ነጠብጣብ ፡ ዘያንጠበ
ጥብ ፡ ዲበ ፡ ምድር ፡፡=፥ ወይሠርጽ ፡ ጽድቅ ፡ 7
በመዋዕሊሁ ፡፡ ወብዙኅ ፡ ሰላም ፡ እስከ ፡ የኀል
ፍ ፡ ወርኅ ፡፡=፥ ወይኬንን ፡ እምባሕር ፡ እስ 8
ከ ፡ ባሕር ፡፡ ወእም ፡ አፍላግ ፡ እስከ ፡ አጽናፈ ፡
ዓለም ፡፡=፥ ይገንዩ ፡ ቅድሜሁ ፡ ኢትዮጵያ ፡፡ 9
ወጸላእቱሂ ፡ ሐመደ ፡ ይቀምሑ ፡፡=፥ ነገሥተ ፡ 10
ተርሴስ ፡ ወደሰያት ፡ አምኃ ፡ ያበውኡ ፡፡ ነገሠ
ተ ፡ ሳባ ፡ ወዐረብ ፡ ጋዳ ፡ ያመጽኡ ፡፡=፥ ወ 11
ይሰግዱ ፡ ሎቱ ፡ ኵሎሙ ፡ ነገሥተ ፡ ምድር ፡፡
ወይትቀነዩ ፡ ሎቱ ፡ ኵሎሙ ፡ አሕዛብ ፡፡=፥

INTERP. ÆTHIOP. [r] me, Deus meus, ex [ſ] dum ſenuero & canuero Deus meus, ne [t] etiam tuam, [u] Quoniam oſtendiſti mihi tribulationem & tentationem multam: & converſus *PSAL. LXXI.* [a] Ut judicet [b] pauperum tuorum: [c] ſuperbum: [d] cinerem manducabunt. [e] reges terræ: & omnes

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

16 * فَادْخُلُ فِي قُوَّةِ ٱلرَّبِّ * يَا رَبُّ أَنَا أَذْكُرُ عَدْلَكَ وَحْدَكَ * ٱلَّذِي عَلَّمْتَنِي مُنْذُ صِبَايَ يَا إِلَاهِي *
17
18 وَإِلَى ٱلْآنَ أُخْبِرُ بِعَجَائِبِكَ * وَإِلَى ٱلشَّيْخُوخَةِ وَٱلْهَرَمِ * ٱللَّهُمَّ لَا تَطْرَحْنِي إِلَى أَنْ أُخْبِرَ بِذِرَاعِكَ
19 كُلَّ ٱلْجِيلِ ٱلْآتِي * قُوَّتَكَ وَعَدْلَكَ يَا ٱللهُ إِلَى ٱلْعُلَى * وَٱلْعَظَائِمَ ٱلَّتِي صَنَعْتَهَا مَعِي * يَا ٱللهُ فَمَنْ
20 أَشْبَهَ بِكَ * لِأَنَّكَ أَرَيْتَنِي شَدَائِدَ كَثِيرَةً وَشُرُورًا * ثُمَّ عُدْتَ فَأَحْيَيْتَنِي * وَأَيْضًا مِنْ أَعْمَاقِ ٱلْأَرْضِ
21 أَصْعَدْتَنِي * أَكْثَرْتَ عَلَيَّ بِرَّكَ ثُمَّ عُدْتَ فَعَزَّيْتَنِي * وَأَيْضًا أَصْعَدْتَنِي مِنَ ٱلْعُمْقِ * وَإِنِّي لَأَشْكُرُكَ
22
23 يَا رَبِّي فِي ٱلشُّعُوبِ * بِآلَةِ مَزْمُورٍ حَقَّكَ * يَا ٱللهُ أُرَتِّلُ لَكَ بِقِيثَارَةٍ * يَا قُدُّوسَ إِسْرَائِيلَ * تَبْتَهِجُ
24 شَفَتَايَ إِذَا أُرَتِّلُ لَكَ * وَنَفْسِي ٱلَّتِي خَلَّصْتَهَا * وَلِسَانِي أَيْضًا يَدْرُسُ عَدْلَكَ * وَحَقَّكَ ٱلنَّهَارَ كُلَّهُ *
إِذَا مَا خَزِيَ وَٱفْتَضَحَ ٱلَّذِينَ يَطْلُبُونَ لِيَ ٱلشَّرَّ * ٱللِّيلُويَا *

1 * ٱلْمَزْمُورُ ٱلْحَادِي وَٱلسَّبْعُونَ * لِسُلَيْمَانَ بْنِ دَاوُودَ * وَعَدَدُهُ * مب * ٱسْتِيخِن *

2 ٱللَّهُمَّ أَعْطِ ٱلْمَلِكَ حُكْمَكَ * وَٱبْنَ ٱلْمَلِكِ عَدْلَكَ * لِيَقْضِيَ لِشَعْبِكَ بِٱلْعَدْلِ * وَلِمَسَاكِينِكَ
3 بِٱلْحَقِّ * فَلْتَأْخُذِ ٱلْجِبَالُ سَلَامَةً لِلشَّعْبِ * وَٱلْآكَامُ عَدْلًا * وَيَحْكُمُ لِمَسَاكِينِ ٱلشَّعْبِ بِعَدْلٍ *
4
5 وَيُخَلِّصُ بَنِي ٱلْمَسَاكِينِ * وَيُذِلُّ ٱلْبَاغِيَ * وَيَدُومُ مَعَ ٱلشَّمْسِ * وَهُوَ قَبْلَ ٱلْقَمَرِ * بِأَجْيَالِ
6 ٱلْأَجْيَالِ * يَنْزِلُ مِثْلَ ٱلْمَطَرِ عَلَى ٱلصُّوفِ * وَكَٱلْقَطْرِ عَلَى ٱلْأَرْضِ * يَكْثُرُ ٱلْعَدْلُ فِي أَيَّامِهِ *
7
8 وَكَثْرَةُ ٱلسَّلَامَةِ حَتَّى يَبِيدَ ٱلْقَمَرُ * وَيَمْلِكُ مِنَ ٱلْبَحْرِ إِلَى ٱلْبَحْرِ * وَمِنَ ٱلنَّهْرِ إِلَى أَقَاصِي ٱلْمَسْكُونَةِ *
9 * تَسْبِقُ ٱلْحَبَشُ فَيَخِرُّونَ قُدَّامَهُ * وَجَمِيعُ أَعْدَائِهِ يَلْحَسُونَ ٱلتُّرَابَ * وَيُقْبِلُ إِلَيْهِ مُلُوكُ
10
11 تَرْسِيسَ وَٱلْجَزَائِرِ بِٱلْهَدَايَا * وَمُلُوكُ ٱلْعَرَبِ أَرَابِيَا وَسَابَا يُقَدِّمُونَ إِلَيْهِ ٱلْقَرَابِينَ * وَتَسْجُدُ لَهُ جَمِيعُ
مُلُوكِ ٱلْأَرْضِ * وَجَمِيعُ ٱلْأُمَمِ تَتَعَبَّدُ لَهُ *

Introibo in potentiam Domini: O Domi- 16
ne, ego recordabor juſtitiæ tui ſolius, Qui 17
docuiſti me à pueritia mea, O Deus meus;
& hucuſque narro miracula tua, Et uſ- 18
que ad ſenectutem & decrepitam ætatem.
Deus, ne me projicias quoad enarrem bra-
chium tuum omni poſteritati venturæ.
Juſtitiam tuam & potentiam tuam, O 19
Deus, uſque in excelſum: & magnalia
quæ feciſti erga me. O Deus, ecquis eſt
ſimilis tibi? Tu enim oſtendiſti mihi an- 20
guſtias multas & ærumnas: deinde re-
verſus es & vivificâſti me, atque iterum
ex imis terræ elevâſti me. Multiplicâſti 21
ſuper me juſtitiam tuam, deinde rever-
ſus es et conſolatus es me: imò etiam ex-
traxiſti me de profundo. Et ego quidem 22
gratias agam tibi, O Domine mi, inter
populos: cum inſtrumento pſalmi, veri-
tati tuæ. O Deus, pſallam tibi cithara, O
Sancte Iſraelis. Exultabunt labia mea 23
quum celebravero te, & anima mea quam
liberâſti. Et lingua mea quoque repetet 24
juſtitiam tuam & magnificentiam tuam
die totâ, quum rubore & ignominiâ
ſuffuſi fuerint qui petunt mihi malum,
Alleluja.

PSAL. LXXI.
Salomoni filio Davidis. Et 1
num. verſ. 42.

Deus, da Regi judicium tuum, & filio
regis æquitatem tuam: ut judiciũ 2
decernat populo tuo cum æquitate, & pau-
peribus tuis cum veritate. Aſſumant mon- 3
tes pacem populo, & colles juſtitiam. Et 4
judicium dicet pauperibus populi cum æ-
quitate, & ſalvabit filios pauperum, de-
primetque ſceleſtum. Et perdurabit cum 5
ſole, quum ſit ipſe ante lunam, in genera-
tionem generationum. Deſcendet ſicut 6
pluvia ſuper vellus, & ſicut ſtillæ ſuper
terram. Multiplicabitur juſtitia in diebus 7
ejus, et abundantia pacis, donec pereat lu-
na. Et regnabit à mari ad mare, & à 8
flumine uſque ad terminos habitatæ. Præ- 9
venient Æthiopes & procident ante eum,
& omnes inimici ejus lingent terram. Et 10
venient ad eum reges Tarſis & Inſularũ
cum muneribus; & reges Arabum, Ara-
bia, & Saba offerent ei munera. Et ad- 11
orabunt eum omnes Reges terræ, & cun-
ctæ gentes ſe ſubdent ei.

Pr:r:et ... auxiliator non & , *afflictum* & : clamantem *egenum* eruet Quia

12 כִּי־יַצִּיל אֶבְיוֹן מְשַׁוֵּעַ וְעָנִי וְאֵין־עֹזֵר לוֹ׃ יָחֹס 13

extorſione ab & , dolo A .ſervabit *egenorum* animas & : *egeno* & , *tenui ſuper*

14 עַל־דַּל וְאֶבְיוֹן וְנַפְשׁוֹת אֶבְיוֹנִים יוֹשִׁיעַ׃ מִתּוֹךְ וּמֵחָמָס

, vivet Et .ejus oculis in eorum ſanguis erit pretioſus & : eorum animam redimet

15 יִגְאַל נַפְשָׁם וְיֵיקַר דָּמָם בְּעֵינָיו׃ וִיחִי

die tota : ſemper eo pro orabit & , *Scheba* auro de ei dabit &

וְיִתֶּן־לוֹ מִזְּהַב שְׁבָא וְיִתְפַּלֵּל בַּעֲדוֹ תָמִיד כָּל־הַיּוֹם

perſtrepet , montium capite in terra in , frumenti *particula* Erit .ei benedicet

16 יְבָרְכֶנְהוּ׃ יְהִי פִסַּת־בַּר בָּאָרֶץ בְּרֹאשׁ הָרִים יִרְעַשׁ

Erit .terræ herba ſicut civitate à florebunt & : ejus fructus Lebanon ſicut

17 כַּלְּבָנוֹן פִּרְיוֹ וְיָצִיצוּ מֵעִיר כְּעֵשֶׂב הָאָרֶץ׃ יְהִי

eo in benedicentur & , ejus nomen *filiabitur Solis facies ad* : ſeculum in ejus nomen

שְׁמוֹ לְעוֹלָם לִפְנֵי־שֶׁמֶשׁ יִנּוֹן שְׁמוֹ וְיִתְבָּרְכוּ בוֹ

Deus Deus Dominus Benedictus .eum beatificabunt , gentes omnes

18 כָּל־גּוֹיִם יְאַשְּׁרוּהוּ׃ בָּרוּךְ יְהוָה אֱלֹהִים אֱלֹהֵי

ejus gloriæ nomen benedictum Et .*ipſe* ſolus mirabilia *faciens* : Iſrael

19 יִשְׂרָאֵל עֹשֵׂה נִפְלָאוֹת לְבַדּוֹ׃ וּבָרוּךְ שֵׁם כְּבוֹדוֹ

.amen & , Amen , terra omnis ejus gloria replebitur & , ſeculum in

לְעוֹלָם וְיִמָּלֵא כְבוֹדוֹ אֶת־כֹּל הָאָרֶץ אָמֵן וְאָמֵן׃

.Iſai filii David orationes ſunt Conſummatæ

20 כָּלּוּ תְּפִלּוֹת דָּוִד בֶּן־יִשָׁי׃

ספר שלישי

PSAL. LXXIII. עג

ego Et .corde mundis Deus Iſraeli bonus Profectò.Aſaph ipſi Cantus

1 מִזְמוֹר לְאָסָף אַךְ טוֹב לְיִשְׂרָאֵל אֱלֹהִים לְבָרֵי לֵבָב׃ וַאֲנִי 2

zelavi Quia .mei greſſus ſunt effuſi *nihil quaſi*:mei pedes declinaverunt *parum quaſi*

3 כִּמְעַט נָטוּי רַגְלָי כְּאַיִן שֻׁפְּכָה אֲשֻׁרָי׃ כִּי קִנֵּאתִי

,eorum morte in ligamenta non Quia .*videbo* impiorum pacem : inſanos in

4 בַּהוֹלְלִים שְׁלוֹם רְשָׁעִים אֶרְאֶה׃ כִּי אֵין חַרְצֻבּוֹת לְמוֹתָם

hominibus cum & : *ipſi* non hominis labore In .eorum fortitudo ſana &

5 וּבָרִיא אוּלָם׃ בַּעֲמַל אֱנוֹשׁ אֵינֵמוֹ וְעִם־אָדָם

iniquitas ornamento involvet : ſuperbia eos *ligavit torque* Ideo .flagellabuntur non

6 לֹא יְנֻגָּעוּ׃ לָכֵן עֲנָקַתְמוֹ גַאֲוָה יַעֲטָף־שִׁית חָמָס

.cordis *imaginationes* tranſierunt : eorum *oculus* adipe præ *Exiit* .*eos*

7 לָמוֹ׃ יָצָא מֵחֵלֶב עֵינֵמוֹ עָבְרוּ מַשְׂכִּיּוֹת לֵבָב׃

Poſuerunt .*loquentur* excelſo de : calumniam *malo in loquentur* & ,*diſſolutos ſe Reddent*

8 יָמִיקוּ וִידַבְּרוּ בְרָע עֹשֶׁק מִמָּרוֹם יְדַבֵּרוּ׃ שַׁתּוּ

9 ejus populus revertetur Ideo .terra in *ambulabit* eorum lingua & : ſuum os cœlos in

10 בַשָּׁמַיִם פִּיהֶם וּלְשׁוֹנָם תִּהֲלַךְ בָּאָרֶץ׃ לָכֵן יָשִׁיב עַמּוֹ

eſt & : Deus ſcivit quomodo ,dixerunt Et .eis exprimentur pleni aquæ & : huc

11 הֲלֹם וּמֵי מָלֵא יִמָּצוּ לָמוֹ׃ וְאָמְרוּ אֵיכָה יָדַע־אֵל וְיֵשׁ

.*facultatē* apprehenderūt ſeculi *tranquilli* & ; impii iſti Ecce ? excelſo in ſcientia

12 דֵּעָה בְעֶלְיוֹן׃ הִנֵּה־אֵלֶּה רְשָׁעִים וְשַׁלְוֵי עוֹלָם הִשְׂגּוּ־חָיִל׃

תרגום TARGUM.

12 ארום יפצי חשיכא דבעי מטו ועניא ולית סעיד
13 ליה: יחוס על מסכינא וחשוכא ונפשת חשיכיא
14 יפרוק: מאונסא ומחטופין יפרוק נפשהון ויהי
15 יקיר אדמהון קדומי: ויחי ויתן ליה מוהב
דאיתיאו ליה משבא ויצלי מטולתיה תדירא כל
16 יומא יברכניה: יהי סעיד לחמא בארעא בריש
טוריא ירגיש היך כלבנן אביה וינצצון מן קרתא
17 דירושלם היך עסבא דארעא: יהי שמיה
מדכר לעלם וקדם מהוי שמשא מזמן הוה
שמיה ויתברכון בזכותיה כל עממיא ויימרון טב
18 ליה: בריך יי אלהים אלהא דישראל דעביד
19 פרישן רברבן בלחודוהי: ובריך שום יקריה
לעלמא ויתמלי מזיו יקריה כל ארעא אמן ואמן:
20 גמירין צלותיא דדוד בר ישי:

עג

1 תושבחתא על ידיה דאסף ברם טב לישראל
2 אלהא לברירי לבא: ואנא כזעיר אתמוטטא
3 רגלי כלמא דאודעזעא אסתורי: ארום טננית
4 במתלעביא בעדן די שלם רשיעיא אחמי: ארום
ליתיהון תוהין ומצטערין מטול יום מיתתהון
אתבעין מחשבתהון ופטים ואלים לבהון:
5 בלעות גברין דמתעסקין באוריתא ליתיהון
לעין ועם בני נשא צדיקי דסבלין יסורי לא
6 מתכתשין: לכד כן עטרתנון גיותנותא כלילא
7 דמשוין ברישיהון היא מן חטוף דילהון: שנא
מן שומנא פרצופהון עברו חוטביהון חפורת
8 לבא: יתמקמקון מן פטמא וימללון לאבאשא
9 ולטלומא מן רום לבהון ימללון: שויאו בקדישי
שמיא פומהון ולישנהון מצלהבא בקדישי
10 ארעא: בכן תבו על עמיא דיי לאלקיותהון
וימחונון במרזופין ודמעין סגיעין מחתין להון:
11 ויימרון הכדין ידע אלהא ואית מנדעא בעלאה:
12 הא אלין רשיעיא דיתבין בשלותא בעלמא
הדין אדביקו נכסין קנו חילא:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Quoniam liberabit miſerum qui quærit inclinationem; & pauperem cui non eſt adjutor. 12
Miſerabitur miſero & inopi : & animas inopum redimet. 13
Ab oppreſſione & injuriis liberabit *animā* eorum, & erit car⁹ ſanguis eorū coram eo. 14
Et vivet & dabit ei de auro ꝙ attulerunt *ei* de Seba, & orabit pro eo continuè, omni die benedicet ei. 15
Erit ſubſtantific⁹ panis in terra in capite montium; ſtrepitum edet ſicut Liban⁹ fructus ejus; & germinabunt de civitate Jeruſalem ſicut herba terræ. 16
Erit nomen ejus ſemper memorabile, & antequam eſſet Sol, præparatum erat nomen ejus : & benedicentur in merito ejus omnes populi, & dicent bonum illi. 17
Benedictus Dn̄s Deus Deus Iſrael, qui facit miracula magna ſolus. 18
Et benedictum nomen gloriæ ejus in æternum : ac repleatur ſplendore gloriæ ejus omnis terra, Amen & amen. 19

Completæ ſunt orationes Davidis filii Iſſai. 20

Canticum per manus Aſaph. 1

PSAL. LXXIII.

PRofectò bonus Iſraeli Deus, iis qui mundi ſunt corde. Mei autem penè moti 2 ſunt pedes, penè vacillaverunt greſſus mei. Quoniam æmulatus ſum deriſores; in tem 3 pore *pacis* improbos videbo. Quoniam non terrentur nec conturbantur pro- 4 pter diem mortis ipſorum; *accelerantur* cogitatus eorum : & pingue, & forte eſt cor eorum. Labori virorum Legi operam navantium non compatiuntur; & 5 cum hominibus juſtis, qui patiuntur martyria, non vulnerantur. Ideò circundedit 6 eos ſuperbia : corona quam imponunt capiti ſuo de *rapina* illorum eſt. *Mutatus* eſt 7 ob pinguedinem *vultus* eorum : *tranſierunt deciſiones* eorum *foſſam* cordis. Li- 8 queſient præ *pinguedine*, & loquentur ut noceant, & ad violentiam de celſitudine cordis ſui loquentur. Poſuerunt in ſanctos 9 cœlorum os ſuum, & lingua eorum ardet in *ſanctos* terræ. Propterea *convertuntur* 10 *adverſus populos* Dn̄i, ut *cædant eos*, & *percutiant* eos malleis, & lachrymæ multæ defluent illis. Et dicent, Hæccine cognovit 11 Deus, & eſt ſcientia in Altiſſimo? Ecce 12 ipſi impii permanentes in tranquillitate in mundo *hoc*, adepti ſunt divitias, acquiſierunt ſubſtantiam.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

12 * ܡܛܠ ܕܦܪܩ ܠܡܣܟܢܐ ܡܢ ܡܢ ܕܥܫܝܢ ܡܢܗ : ܘܠܡܣܟܢܐ ܕܠܝܬ ܠܗ ܡܥܕܪܢܐ .
13 * ܢܚܘܣ ܥܠ ܡܣܟܢܐ ܘܥܠ ܒܨܝܪܐ : ܘܢܦܫܬܐ ܕܡܣܟܢܐ ܦܪܘܩ . * ܡܢ ܢܟܠܐ ܘܡܢ ܥܘܠܐ ܦܪܘܩ 14
15 ܢܦܫܬܗܘܢ : ܝܩܝܪ ܗܘ ܕܡܗܘܢ ܒܥܝܢܘܗܝ . * ܢܚܐ ܘܢܬܝܗܒ ܠܗ ܡܢ ܕܗܒܐ ܕܫܒܐ : ܘܢܨܠܐ
16 ܥܠܘܗܝ ܒܟܠܙܒܢ . ܘܟܠܗ ܝܘܡܐ ܢܒܪܟܝܘܗܝ : * ܢܗܘܐ ܐܝܟ ܣܘܓܐܐ ܕܥܒܘܪܐ ܒܐܪܥܐ .
ܘܒܪܝܫܐ ܕܛܘܪܐ ܢܥܒܕ ܦܐܪܘܗܝ ܐܝܟ ܕܠܒܢܢ : ܘܢܦܪܥ ܡܢ ܡܕܝܢܬܗ ܐܝܟ ܥܣܒܐ ܕܐܪܥܐ .
17 * ܘܢܗܘܐ ܫܡܗ ܠܥܠܡ : ܘܩܕܡ ܫܡܫܐ ܐܝܬܘܗܝ ܫܡܗ . ܢܬܒܪܟܘܢ ܒܗ ܟܠܗܘܢ
18 ܥܡܡܐ : ܘܟܠܗܘܢ ܢܫܒܚܘܢܝܗܝ . * ܒܪܝܟ ܗܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ : ܕܥܒܕ ܬܕܡܪܬܐ
19 ܪܘܪܒܬܐ ܒܠܚܘܕܘܗܝ . * ܘܒܪܝܟ ܗܘ ܫܡܐ ܕܐܝܩܪܗ ܠܥܠܡ : ܘܢܬܡܠܐ ܐܝܩܪܗ ܟܠܗ
ܐܪܥܐ . ܐܡܝܢ ܐܡܝܢ .

* ܫܠܡ ܣܦܪܐ ܕܬܪܝܢ *

* ܣܦܪܐ ܕܬܠܬܐ *

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܐܣܦ *

1 * ܕܐܣܦ ܡܥܗܕܢܐ ܥܠ ܡܘܬܗ ܕܐܒܫܠܘܡ . ܘܬܘܒ ܬܘܕܝܬܐ ܕܡܚܝܠܘܬܐ
ܕܒܪܢܫܐ . ܘܥܠ ܫܝܢܐ ܕܪܫܝܥܐ ܘܥܠ ܢܓܝܪܘܬ ܪܘܚܗ ܕܐܠܗܐ . ܦܬܓܡܐ ܟܐ .
2 ܐܠܗܐ ܛܒ ܠܐܝܣܪܝܠ ܘܠܬܪܝܨܝ ܠܒܐ . * ܘܐܢܐ ܩܠܝܠ ܕܠܡ ܡܬܪܟܢܝܢ ܗܘܝ ܪܓܠܝ : ܘܐܝܟ ܠܐ
3 ܡܕܡ ܡܬܐܫܕܝܢ ܗܘܘ ܗܠܟܝ . * ܡܛܠ ܕܛܢܢܬ ܒܥܘܠܐ : ܟܕ ܚܙܐ ܗܘܝܬ ܫܝܢܐ
4 5 ܕܪܫܝܥܐ . * ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܣܟܐ ܠܡܘܬܗܘܢ : ܘܣܓܝܐܐ ܗܝ ܫܛܝܘܬܗܘܢ . * ܒܥܡܠܐ ܕܐܢܫܐ
6 ܠܝܬ ܐܢܘܢ : ܘܥܡ ܒܢܝܢܫܐ ܠܐ ܡܬܢܓܕܝܢ . * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܚܕܬ ܐܢܘܢ ܡܪܚܘܬܐ :
7 ܘܠܒܫܘ ܥܘܠܗܘܢ ܘܪܫܝܥܘܬܗܘܢ . * ܘܢܦܩ ܐܝܟ ܬܪܒܐ ܥܘܠܗܘܢ : ܘܥܒܪܘ ܐܝܟ ܬܪܥܝܬܐ
8 9 ܕܠܒܐ . * ܐܬܚܫܒܘ ܘܡܠܠܘ ܒܒܝܫܬܐ : ܘܥܘܠܐ ܠܡܪܝܡܐ ܡܠܠܘ . * ܣܡܘ ܦܘܡܗܘܢ
10 ܒܫܡܝܐ : ܘܠܫܢܗܘܢ ܡܗܠܟ ܒܐܪܥܐ . * ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܬܦܢܐ ܥܡܝ ܠܗܪܟܐ :
11 ܘܡܠܝܐ ܢܫܟܚܘܢ ܠܗܘܢ . * ܘܐܡܪܝܢ ܕܐܝܟܢ ܝܕܥ ܐܠܗܐ : ܘܐܝܬ ܝܕܥܬܐ ܒܡܪܝܡܐ .
12 * ܘܗܐ ܗܠܝܢ ܪܫܝܥܐ ܫܠܝܢ ܒܥܠܡܐ : ܘܡܥܫܢܝܢ ܒܚܝܠܐ .

Quia liberavit inopem ab eo qui fortior eſt 12 ipſo, & pauperem cui non eſt adjutor. Miſe- 13 rebitur pauperum & egenorum, & animas pauperum ſalvabit. A fraude & ab iniquitate 14 ſalvabit animas eorum : pretioſus enim eſt ſanguis eorum in oculis ejus. Vivit & dabitur 15 ei de auro Sceba : & orabimus pro eo omni 16 tempore, & totâ die benedicemus illi. Erit velut copia frumenti in terra, & in cacumine montium germinare faciet fructus ſuos, ut Libani : & pullulare faciet è civitate ſua ſicut herbam terræ. Erítque nomen ejus in ſem- 17 piternum, & ante ſolem eſt nomen ejus. Benedicentur in ipſo omnes gentes, & omnes laudabunt eum. Benedictus Dominus Deus 18 Iſrael qui edit miracula grandia ſolus, Et be- 19 nedictum nomen majeſtatis ejus in ſeculum : & impleatur majeſtate ejus tota terra. Amen, amen.

Finis Liberi ſecundi.

LIBER TERTIUS.

PSAL. LXXIII.

Compoſitus ab Aſaph memoratore, de morte Abſalomi. Præterea confeſſio infirmitatis humanæ. Et de proſperitate impiorum; deque longanimitate Dei. Verſ. 21. 1

DEus bonus eſt Iſraeli, & ſinceris corde. Mei autem paulò minùs inclinati ſunt 2 pedes, & ferè nil abfuit quin effunderentur greſſus mei : Quia æmulatus ſum iniquos, 3 cùm viderem pacem impiorum. Non enim 4 eſt terminus morti eorum, quum plurima ſit ſtultitia illorum. In labore hominum non 5 ſunt, & cum filiis hominum haud flagellantur; Ideò cepit eos audacia, & induti ſunt 6 iniquitate ſuâ, & impietate ſuâ. Et prodiit 7 velut pinguedo ſcelus eorum, operatiq; ſunt pro cogitatione cordis. Meditati ſunt & lo- 8 cuti ſunt malum, & oppreſſionem adverſus Altiſſimum locuti ſunt: Poſuerunt os ſuum 9 in cœlum, & lingua eorum perambulat terram. Propterea vertat ſe populus meus huc, 10 & abundanter invenient ſibi, Dicéntque: 11 Quomodo ſcit Deus, & eſt ſcientia in Excelſo? Nam ecce iſti quum ſint impii, abundantes 12 ſunt in mundo & potentes robore.

Verſio VULG. LAT.

12 Quia liberabit pauperem à potente; &
13 pauperem, cui non erat adjutor. Parcet
pauperi & inopi: & animas pauperum
14 ſalvas faciet. Ex uſuris & iniquitate
redimet animas eorum: & honorabile
nomen eorum coram illo.
15 Et vivet, & dabitur ei de auro Arabiæ,
& adorabunt de ipſo ſemper: totâ
16 die benedicent ei. Et erit firmamentum
in terra in ſummis montium, ſuperextolletur
ſuper Libanum fructus
ejus: & florebunt de civitate ſicut fœnum
17 terræ. Sit nomen ejus benedictum
in ſecula: ante Solem permanet nomẽ
ejus. Et benedicentur in ipſo omnes
tribus terræ: omnes gentes magnificabunt
18 eum. Benedictus Dominus Deus
19 Iſrael, qui facit mirabilia ſolus: Et benedictum
nomen majeſtatis ejus in æternum:
& replebitur majeſtate ejus
omnis terra: fiat, fiat.

20 Defecerunt laudes David
filii Jeſſe.

1 Pſalmus Aſaph. LXXII.

QUàm bonus Iſrael Deus his, qui
2 recto ſunt corde? Mei autem penè
moti ſunt pedes: penè effuſi ſunt
3 greſſus mei. Quia zelavi ſuper iniquos,
4 pacem peccatorum videns. Quia non
eſt reſpectus morti eorum; & firmamentum
5 in plaga eorum. In labore
hominum non ſunt, & cum hominib⁹
6 non flagellabuntur: Ideò tenuit eos
ſuperbia, operti ſunt iniquitate & impietate
7 ſuâ. Prodiit quaſi ex adipe iniquitas
eorum: tranſierunt in affectum
8 cordis. Cogitaverunt, & locuti ſunt
nequitiam: iniquitatem in excelſo locuti
9 ſunt. Poſuerunt in cœlum os ſuum:
& lingua eorum tranſivit in terra.
10 Ideò convertetur populus meus
hîc: & dies pleni invenientur in eis.
11 Et dixerunt; Quomodò ſcit Deus, &
12 ſi eſt ſcientia in Excelſo? Ecce ipſi peccatores,
& abundantes in ſeculo, obtinuerunt
divitias.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp.

12 Ὅτι ἐῤῥύσατο πτωχὸν ἐκ δυνάστου, καὶ πένητα ᾧ
13 οὐχ ὑπῆρχε βοηθός. Φείσεται πτωχοῦ καὶ πένητος,
14 καὶ ψυχὰς πενήτων σώσει. Ἐκ τόκου καὶ ἐξ ἀδικίας
λυτρώσεται τὰς ψυχὰς αὐτῶν, καὶ ἔντιμον
15 τὸ ὄνομα αὐτῶν ἐνώπιον αὐτοῦ. Καὶ ζήσεται,
καὶ δοθήσεται αὐτῷ ἐκ τοῦ χρυσίου τῆς
Ἀραβίας, καὶ προσεύξονται περὶ αὐτοῦ διαπαντός·
ὅλην τὴν ἡμέραν εὐλογήσουσιν αὐτόν.
16 Ἔσται στήριγμα ἐν τῇ γῇ ἐπ' ἄκρων τῶν ὀρέων·
ὑπεραρθήσεται ὑπὲρ τὸν Λίβανον ὁ καρπὸς αὐτοῦ,
καὶ ἐξανθήσουσιν ἐκ πόλεως ὡσεὶ χόρτος
17 τῆς γῆς. Ἔστω τὸ ὄνομα αὐτοῦ εὐλογημένον εἰς
τοὺς αἰῶνας, πρὸ τοῦ ἡλίου διαμενεῖ τὸ ὄνομα
αὐτοῦ, καὶ εὐλογηθήσονται ἐν αὐτῷ πᾶσαι αἱ
φυλαὶ τῆς γῆς· πάντα τὰ ἔθνη μακαριοῦσιν αὐτόν.
18 Εὐλογητὸς κύριος ὁ θεὸς τοῦ Ἰσραήλ, ὁ
19 ποιῶν θαυμάσια μόνος, Καὶ εὐλογητὸν τὸ ὄνομα
τῆς δόξης αὐτοῦ εἰς τὸν αἰῶνα καὶ εἰς αἰῶνα τοῦ
αἰῶνος· καὶ πληρωθήσεται τῆς δόξης αὐτοῦ πᾶσα ἡ
γῆ. γένοιτο, γένοιτο.

20 Ἐξέλιπον οἱ ὕμνοι Δαυὶδ τοῦ υἱοῦ Ἰεσσαί.

1 Ψαλμὸς τῷ Ἀσάφ. οβʹ.

ὩΣ ἀγαθὸς ὁ θεὸς τῷ Ἰσραήλ, τοῖς εὐθέσι
2 καρδίᾳ. Ἐμοῦ δὲ παρὰ μικρὸν ἐσαλεύθησαν
οἱ πόδες, παρ' ὀλίγον ἐξεχύθη τὰ
3 διαβήματά μου. Ὅτι ἐζήλωσα ἐπὶ τοῖς ἀνόμοις,
4 εἰρήνην ἁμαρτωλῶν θεωρῶν. Ὅτι οὐκ ἔστιν
ἀνάνευσις ἐν τῷ θανάτῳ αὐτῶν, καὶ στερέωμα
5 ἐν τῇ μάστιγι αὐτῶν. Ἐν κόποις ἀνθρώπων οὐκ
6 εἰσὶ, καὶ μετὰ ἀνθρώπων οὐ μαστιγωθήσονται. Διὰ
τοῦτο ἐκράτησεν αὐτοὺς ἡ ὑπερηφανία, περιεβάλοντο
7 ἀδικίαν καὶ ἀσέβειαν αὐτῶν. Ἐξελεύσεται
ὡς ἐκ στέατος ἡ ἀδικία αὐτῶν· διῆλθον εἰς
8 διάθεσιν καρδίας. Διενοήθησαν, καὶ ἐλάλησαν
ἐν πονηρίᾳ, ἀδικίαν εἰς τὸ ὕψος ἐλάλησαν.
9 Ἔθεντο εἰς οὐρανὸν τὸ στόμα αὐτῶν, καὶ ἡ γλῶσσα
10 αὐτῶν διῆλθεν ἐπὶ τῆς γῆς. Διὰ τοῦτο ἐπιστρέψει
ὁ λαός μου ἐνταῦθα, καὶ ἡμέραι πλήρεις εὑρεθήσονται
11 ἐν αὐτοῖς. Καὶ εἶπαν, Πῶς ἔγνω
12 ὁ θεὸς, καὶ εἰ ἔστι γνῶσις ἐν τῷ ὑψίστῳ; Ἰδοὺ οὗτοι
οἱ ἁμαρτωλοὶ καὶ εὐθηνοῦντες εἰς τὸν αἰῶνα,
κατέσχον πλούτου.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

12 Quia liberavit egenum [f] à potente; & pauperem, cui non erat adjutor. 12
13 Parcet inopi, & pauperi: 13
& animas pauperum ſalvas faciet.
14 Ex uſura & iniquitate redimet 14
animas eorum: & (f) honorabile nomen
eorum coram [g] illo. 15 Et vivet, 15
& dabitur ei de auro (g) Arabiæ:
& (h) orabunt de ipſo ſemper:
totâ die benedicent ei. 16 Erit firmamentum 16
in [h] terra in ſummis
montium: [i] ſuperextolletur ſuper
Libanum fructus ejus: & florebunt
de civitate ſicut fœnum terræ. 17 (i)
Sit nomen ej⁹ benedictum in ſecula: 17
ante Solem (k) permanebit nomen
ejus, 18 & benedicentur in ipſo omnes
tribus terræ: omnes gentes [k]
magnificabunt eum. 19 Benedictus 18
Dominus (l) Deus Iſrael, qui facit
mirabilia ſolus. 20 Et benedictum 19
nomen gloriæ ejus in æternum, & in
ſeculum ſeculi: & replebitur gloriâ
ejus omnis terra: Fiat, Fiat.

Defecerunt (a) hymni David filii 20
Jeſſe, Pſalm⁹ ipſi Aſaph. LXXII. 1

1 QUàm (b) bonus (c) Deus Iſrael *rectis corde. 2 Mei autem* 2
penè commoti ſunt pedes: (d)
paulominùs effuſi ſunt greſſus mei.
3 Quia zelavi ſuper iniquos, pacem 3
peccatorum intuens. 4 Quia [a] non 4
eſt (e) declinatio in morte eorum, [b]
& firmamentum in flagello (f) eorum.
5 In (g) laboribus hominum non 5
ſunt: & cum hominibus non flagellabuntur.
6 Ideò (h) obtinuit eos ſuperbia: 6
circumamicti ſunt iniquitate,
& impietate ſuâ. 7 (i) Prodibit 7
quaſi ex adipe iniquitas eorũ: tranſierunt
[c] in (k) diſpoſitionem cordis.
8 Cogitaverunt, & loquuti ſunt (l) 8
[d] in malignitate: iniquitatem in
altum loquuti ſunt. 9 Poſuerunt in 9
cœlum os ſuum: & lingua eorum
tranſivit ſuper terram. 10 Ideò (m) 10
revertetur populus meus huc: (n) &
dies pleni invenientur in eis. 11 Et 11
(o) dixerunt, Quomodò ſcivit De⁹?
& ſi eſt ſcientia in Altiſſimo? 12 Ecce 12
[e] ipſi peccatores, & abundantes
in ſeculo, obtinuerunt divitias.

Verſio ÆTHIOPICA.

እስመ፡ አድኀኖ፡ ለነደይ፡ እምእደ፡ ዘይትዔገ 12
ሎ።ለምስኪን፡ ዘአልቦ፡ ረዳኤ።፨ ወይም 13
ሕክ፡ነደየ፡ወምስኪነ።ወያድኅን፡ ነፍሰ፡ ነደያ
ን።፨ እምርደ፡ወእምትእግልት፡ያድኅና፡ 14
ለነፍሶሙ።ወክቡር፡ስሙ፡በቅድሜሆሙ።፨
ወየሐዩ፡ ወይሁብዎ፡ እምወርቀ፡ አረብ።ወዘ 15
ልፉ፡ ይጼልዩ፡ በእንቲአሁ።ወኵሎ፡ አሚረ፡
ይድኅርዎ።፨ ወይከውን፡ ምስማከ፡ ለኵ 16
ሉ፡ምድር።ውስተ፡ አርእስተ፡ አድባር።ወይ
ነውኅ፡ እምአርዝ፡ ፍሬሁ።ወይበቍል፡ ውስ
ተ፡ሀገር፡ከመ፡ ሣዕረ፡ ምድር።፨ ወይከው 17
ን፡ ቡሩከ፡ ስሙ፡ ለዓለም።እምቅድመ፡ ፀሐ
ይ፡ ሀሎ፡ ስሙ።፨ ወይትባረኩ፡ ቦቱ፡ ኵሎ 18
ሙ፡ አሕዛብ፡ ምድር።ወያስተበፅዕዎ፡ ኵሎ
ሙ፡ሕዝብ።፨ ይትባረክ፡ እግዚአብሔር፡ 19
አምላከ፡ እስራኤል።ዘገብረ፡ መንክረ፡ ባሕቲ
ቱ።፨ ወይትባረክ፡ ስሙ፡ ስብሐቲሁ።ለዓለ 20
ም፡ ወለዓለመ፡ ዓለም።ወይመላእ፡ ስብሐቲ
ሁ፡ኵሎ፡ ምድረ፡ ለይኩን፡ ለይኩን።፨

ኀልቀ፡ዘደዊት፡መኀልይ፡ዘወልደ፡ሴሴይ፡
መዝሙር፡ዘደዊት፡ዘአሳፍ።

፸፪ ጥቀ፡ ኄር፡ እግዚአብሔር፡ ለእስራኤል፡ 1
ለርቱዓነ፡ልብ።፨ ሊተሰ፡ ሕቀ፡ክመ፡ዘእም 2
ተንተና፡ እገሪየ።ወሕቀ፡ ክመ፡ ዘእምድኅፀ፡
ሰኰናየ።፨ እስመ፡ ቀናዕኩ፡ ሳዕለ፡ ኃጥአ 3
ን።ሰላሞሙ፡ ርእይየ፡ ለዐማፅያን።፨ እስ 4
መ፡ አልቦሙ፡ ሣሕተ፡ ለሞቶሙ።ወሊኃይለ፡
ለመቅሠፍቶሙ።፨ ወበጻማሂ፡ ሊኮኑ፡ ዕድ 5
ወ።ወሊተቀሥፉ፡ ምስለ፡ሰብእ።፨ ወበእን 6
ተዝ፡ አኃዞሙ፡ ትዕቢት።ወተዐፀፉ፡ ለኃጢ
አቶሙ፡ወለዐመፃሆሙ።፨ ወይወፅእ፡ከመ፡ 7
እምእንጕዕ፡ ኃጢአቶሙ።ወኃለፈ፡ እምት
ዕቢተ፡ልቦሙ።፨ ወሐለዩ፡ወነበቡ፡ከንቶ። 8
ወነበቡ፡ ዐመፃ፡ ውስተ፡ አርያም።፨ ወአን 9
በሩ፡ ውስተ፡ ሰማይ፡ አፉሆሙ።ወአንሶሰወ፡
ውስተ፡ ምድር፡ ልሳኖሙ።፨ ወበእንተዝ፡ 10
ይትመየጡ፡ ሕዝብየ፡ እምዝየ።ወይትረከ
ብ፡ፍጹም፡ መዋዕል፡ በላዕሌሆሙ።፨ ወይ 11
ብሉ፡ እፎ፡ ያእምር፡ እግዚአብሔር።ወ
ቦኑ፡ ዘየአምር፡ በአርያም።፨ ናሁ፡ እ 12
ሉ፡ ኃጥአን፡ ይትፌግዑ።ወለዓለም፡ ያጸንዕ
ዋ፡ለብዕሎሙ።፨

INTERP. ÆTHIOP. [f] à manu ejus qui opprimeret eum; & [g] illis. [h] omni terra [i] & extendetur præ cedro fructus ejus: [k] beatum prædicabunt eum. *PSAL. LXXII.* [a] non eſt remiſſio [b] neque virtus eſt in [c] ex ſuperbia cordis eorum. [d] inane: iniquitatem [e] qui peccatores ſunt delitiis affluunt; & in ſeculo obtinuerunt divitias ſuas.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

12 13 * لانه خلص المسكين من يد القوي والضعيف الذي لا معين له * يشفق على المسكين
14 والضعيف * ويخلص انفس المساكين * ومن الربا والظلم ينقذ نفوسهم * اسمه كريم لديهم *
15 16 * يحيا ويعطي من ذهب ارابيا * ويصلون من اجله في كل حين * النهار جميعه يباركونه * يكون
قوة على الارض * وعلى اركان الجبال ترتفع ثمرته افضل من لبنان * ويزهر من المدينة مثل
17 عشب الارض * فليكن اسمه مباركا الى الابد * وقبل الشمس دائما اسمه * ويتبارك به جميع
18 قبائل الارض * وكل الامم تمجده * مبارك الرب اله اسرائيل * الذي صنع العجائب وحده *
19 * ومبارك اسم مجده القدوس * الى الابد والى ابد الابد * تمتلي الارض جميعها من مجده
يكون يكون * الليلويا *

1 * المزمور الثاني والسبعون * لاصاف * وعدده * ن * استيخن *

2 صالح هو اله اسرائيل لمستقيمي القلوب * وانا كدت عن قليل تزل قدماي * والا يسيرا
3 4 تزحف خطواتي * لاني غرت على الذين لا ناموس لهم لما رايت سلامة الخطاة * لانهم لا راحة
5 6 في موتهم * وشديدة ضرباتهم * اذ ليس هم في تعب الناس * ولا يؤدبون مع البشر * من اجل
7 هذا استولت عليهم الكبرياء الى المنتهي * لبسوا ظلما ونفاقا * يخرج مثل الشحم ظلمهم *
8 9 دخلوا في قلوبهم * تفكروا وتكلموا بالشر * وقالوا ظلما الى العلي * ووضعوا الى السماء
10 افواههم * ولسانهم انبسط على الارض * لاجل هذا يرجع شعبي الى هاهنا وايام كاملة توجد
11 12 فيهم * فقالوا كيف علم الله * وهل عند العلي علم * فما هولاء خطاة وهم مخصبون * وقد
حازوا الغنى الى الابد *

Quoniam ipſe liberavit pauperem de manu 12
potentis, et debilem cui nullus erat adjutor.
Parcet pauperi & imbecilli, & 13
ſalvabit animas pauperum, Et ab uſura 14
& tyrannide redimet animas eorum; nomen
ejus venerabile apud eos. Vivet, & 15
dabitur ei de auro Arabiæ, et orabunt pro
eo omni tempore, die totâ benedicent ei.
Erit in robur ſuper terram, & ſuper baſes 16
montium elevabitur fructus ejus magis
quàm Libani, & florebit de civitate
ſicut herba terræ. Sit nomen ejus benedictum 17
in ſeculum: & ante ſolem, ſempiternum
nomen ejus. Et benedicentur in
ipſo omnes tribus terræ, et omnes gentes
glorificabunt eum. Benedictus Dominus 18
Deus Iſrael, qui fecit miracula ſolus. Et 19
benedictum nomen gloriæ ejus ſacroſanctum,
in æternum & in ſeculum ſeculi:
Impleatur univerſa terra gloriâ ejus. Sit,
ſit. Alleluja.

PSAL. LXXII.

Aſapho. Et num. ver. 50. 1

O*Ptimus eſt Deus Iſraelis iis qui recti*
ſunt cordibus. Mei autem penè lapſi 2
ſunt pedes, & paulò minùs nutârunt
greſſus mei. Quia zelavi ſuper eos quibus 3
nulla lex eſt, cùm vidiſſem pacem
peccatorum. Non eſt enim requies in morte 4
eorum; & dura ſunt flagella eorum:
Quum non ſint in labore hominum, neque 5
corripiantur cum hominibus. Propter hoc 6
dominata eſt in eos ſuperbia uſque ad extremum:
induti ſunt ſcelere & impietate.
Prodit quaſi adip. ſcelus eorum: introierunt 7
in corda ſua. Cogitaverunt & 8
locuti ſunt malum, & dixerunt ſcelus
uſque in excelſum. Et poſuerunt uſque 9
ad cœlum ora ſua, & lingua eorum pretenſa
eſt ſuper terram. Propterea convertetur 10
populus meus huc, & dies integri
invenientur in eis. Dixerunt, Quomodò 11
ſcivit Deus? & num eſt apud Excelſum
ſcientia? Nonne iſti peccatores 12
ſunt? & tamen ipſi ſunt locupletes, &
jam poſſederunt divitias in æternum.

flagellatus fui Et .meas *vola mundicia* in lavi & : meum cor mundavi fruſtra Verè
13 אַךְ־רִיק זִכִּיתִי לְבָבִי וָאֶרְחַץ בְּנִקָּיוֹן כַּפָּי׃ וָאֱהִי נָגוּעַ
14 : hoc ſicut narrabo , dicebam Si .*matutinis in* mea increpatio & : die omni
15 כָּל־הַיּוֹם וְתוֹכַחְתִּי לַבְּקָרִים׃ אִם־אָמַרְתִּי אֲסַפְּרָה כְמוֹ
labor : hoc ſcire putabam Et .ſum prævaricatus tuorum filiorum generatio ecce
16 הִנֵּה דוֹר בָּנֶיךָ בָגָדְתִּי׃ וָאֲחַשְּׁבָה לָדַעַת זֹאת עָמָל
.eorum noviſſimum intelligam : Dei ſanctuaria *ad* intrem Donec .meis oculis in *ipſum*
17 הִיא בְעֵינָי׃ עַד־אָבוֹא אֶל־מִקְדְּשֵׁי־אֵל אָבִינָה לְאַחֲרִיתָם׃
Quomodo .deſolationes in eos feciſti cadere : eos poſuiſti lubricis in Profectò
18 אַךְ בַּחֲלָקוֹת תָּשִׁית לָמוֹ הִפַּלְתָּם לְמַשּׁוּאוֹת׃ אֵיךְ
19 .terroribus à ſunt conſumpti ,defecerunt ? Subitò ferè deſolationem in fuerunt
הָיוּ לְשַׁמָּה כְרָגַע סָפוּ תַמּוּ מִן־בַּלָּהוֹת׃
Quia .ſpernes eorum imaginem ,*ſuſcitando in* Domine *expergiſcendo* ab ſomnium Velut
20 כַּחֲלוֹם מֵהָקִיץ אֲדֹנָי בָּעִיר צַלְמָם תִּבְזֶה׃ כִּי
21 : cognoſcebam non & ,inſipiens ego Et .*acuar meis renibus* & : meum cor *aceſcet*
22 יִתְחַמֵּץ לְבָבִי וְכִלְיוֹתַי אֶשְׁתּוֹנָן׃ וַאֲנִי־בַעַר וְלֹא אֵדָע
.meam dexterā manum *in* tenuiſti : tecum ſemper ego Et .te apud eram jumenta
23 בְּהֵמוֹת הָיִיתִי עִמָּךְ׃ וַאֲנִי תָמִיד עִמָּךְ אָחַזְתָּ בְּיַד יְמִינִי׃
tecum & ? cœlo in mihi Quis .me accipies gloriam poſtea & :me duces tuo conſilio In
24 בַּעֲצָתְךָ תַנְחֵנִי וְאַחַר כָּבוֹד תִּקָּחֵנִי׃ מִי־לִי בַשָּׁמָיִם וְעִמְּךָ
25 mea pars & ,mei cordis *rupes* ,meum cor & ,mea caro Defecit .terra in nolui
26 לֹא־חָפַצְתִּי בָאָרֶץ׃ כָּלָה שְׁאֵרִי וּלְבָבִי צוּר־לְבָבִי וְחֶלְקִי
feciſti ſuccidere : peribunt ,te à *ſe elongantes* ecce Quoniam .ſeculum in Deus
27 אֱלֹהִים לְעוֹלָם׃ כִּי־הִנֵּה רְחֵקֶיךָ יֹאבֵדוּ הִצְמַתָּה
poſui : *bona mihi* Dei *appropinquatio* ego Et .te à fornicantem omnem
28 כָּל־זוֹנֶה מִמֶּךָּ׃ וַאֲנִי קִרֲבַת אֱלֹהִים לִי טוֹב שַׁתִּי
.tua opera omnia *narrandum ad* : meam ſpem *Domino* Domino in
בַּאדֹנָי יֱהֹוִה מַחְסִי לְסַפֵּר כָּל־מַלְאֲכוֹתֶיךָ׃

PSAL. LXXIV. עד

tuum naſus fumabit : *finem* in te elongâſti Deus quid Ut .Aſaph ipſi *Eruditio*
1 מַשְׂכִּיל לְאָסָף לָמָה אֱלֹהִים זָנַחְתָּ לָנֶצַח יֶעְשַׁן אַפְּךָ
virgam redemiſti , *quondam* acquiſiviſti ,*tui cœtus* Recordare ? tuæ paſcuæ *pecus in*
2 בְּצֹאן מַרְעִיתֶךָ׃ זְכֹר עֲדָתְךָ קָנִיתָ קֶּדֶם גָּאַלְתָּ שֵׁבֶט
tuos pedes Leva .*eo in* habitâſti , iſtum Sion montem : tuæ hæreditatis
3 נַחֲלָתֶךָ הַר־צִיּוֹן זֶה שָׁכַנְתָּ בּוֹ׃ הָרִימָה פְעָמֶיךָ
tui hoſtes Rugierunt .ſanctitate in *inimicus malefecit omnia* : *perpetuitatis* deſolationes ad
4 לְמַשֻּׁאוֹת נֶצַח כָּל־הֵרַע אוֹיֵב בַּקֹּדֶשׁ׃ שָׁאֲגוּ צֹרְרֶיךָ
adducens *velut Cognoſcetur* .ſigna ſua ſigna poſuerunt : tui *conventus intimo* in
5 בְּקֶרֶב מוֹעֲדֶךָ שָׂמוּ אוֹתֹתָם אֹתוֹת׃ יִוָּדַע כְּמֵבִיא
,bipenni in;pariter ejus *apertiones* nunc Et .ſecures ligni perplexitate in *ſublime in*
6 לְמָעְלָה בִּסְבָךְ־עֵץ קַרְדֻּמּוֹת׃ וְעַתָּ פִּתּוּחֶיהָ יָּחַד בְּכַשִּׁיל
.*conquaſſabunt* malleis &
וְכֵילַפּוֹת יַהֲלֹמוּן׃

13 בְּרַם לִסְרִיקוּתָא זַכֵּית לִבִּי וְשַׁזֵּית בִּבְרִירוּ יְדָי׃
14 וַהֲוֵיתִי כְּתִישׁ כָּל יוֹמָא וּמַכְסְנוּתִי לְצַפְרַיֵּי׃ אִין
15 אֲמַרִית אֶשְׁתָּעֵי דִּכְמָתְהוֹן הָא עַל דָּר בְּנָךְ
16 אַרְשְׁעִית׃ וַחֲשִׁיבֵית לְמִדַּע יַת דָּא לֵעוּת הוּא
17 בְּעֵינָי׃ עַד זְמַן פּוּרְקָנָא דְּאֵיתֵי לְוַת מַקְדְּשֵׁי אֱלָהָא
18 אֶתְבַּיַּן לְסוֹפְהוֹן׃ בְּרַם בְּקִבְלַיָּא שַׁוִּיתָא לְהוֹן
19 רְמִיתִנוּן לְשַׁהֲוָתָא׃ הַכְדֵין הֲווֹ לְצָדוּ כְּשַׁעְתָּא
20 כָּלוֹ אִשְׁתֵּיצוֹן מִן אִתְרְגַשְׁוָן׃ הֵיךְ חֶלְמָא מִן גְּבַר
דְּמִתְּעַר יְיָ לְיוֹם דִּינָא רַבָּא בְּאִתְּעַר יַתְהוֹן מִן בֵּית
21 קְבוּרַתְהוֹן בְּרַגַּז דְּמוּתְהוֹן תִּבְסַר׃ אֲרוּם יְחוּשׁ
22 לִבִּי וְכוּלְיָתַי בָּעֲרָן כְּאֶשָּׁא׃ וַאֲנָא שַׁטְיָא וְלָא
23 אֵידַע הֵיךְ בְּעִירֵי אִתְחַשְׁבֵית גַּבָּךְ׃ וַאֲנָא תְּדִירָא
24 עִמָּךְ אוֹחַדְתָּא בְּיַד יְמִינִי׃ בְּמַלְכְּתָךְ תַּדְבְּרָנַנִי
וּבָתַר דְּשַׁלִּים אִיקָרָא דַּאֲמַרְתְּ עֲלַי לְאַיְתָאָה
25 תְּסַבְּנֵנִי׃ מַן כְּוָתָךְ דִּילִי בִשְׁמַיָּא אֶלָּא אַתְּ וְעִמָּךְ
26 חַבְרָא לָא צְבֵיתִי בְּאַרְעָא׃ אִשְׁתֵּיצָא גּוּשְׁמִי
וְלִבִּי תַּקִּיפָא דְּבָחֵין לִבִּי וְחוּלְקִי אֱלָהָא
27 לְעָלְמָא׃ אֲרוּם הָא רַשִׁיעַיָּא דִּי מִתְרַחֲקִין מִנָּךְ
28 יֵיבְדוּן שֵׁיצִיתָא כָּל דְּטָעֵי מִן בָּתַר דַּחַלְתָּךְ׃ וַאֲנָא
לְמִקְרַב בְּיָי לִי טָב שַׁוֵּית בְּיָי אֱלֹהִים רוּחְצָנִי
לְאִשְׁתָּעָיָא לְצַדִּיקַיָּא כוּלְהוֹן פִּקּוּדֵי שְׁלִיחוּתָךְ׃

עד

1 שִׂכְלָא טָבָא עַל יְדוֹי דְּאָסָף לְמָה אֱלָהָא רַחֵיקְתָּא
2 לַעַלְמִין יִתְקֵף רוּגְזָךְ בְּעָאן רַעֲיָתָךְ׃ אִדְּכַר כְּנִשְׁתָּךְ
דִּקְנֵית מִלְּקַדְמִין פְּרַקְתְּ מִמִּצְרַיִם שִׁבְטֵי אַחְסַנְתָּךְ
3 טוּר דְּצִיּוֹן דְּנַן דִּי שָׁרֵיתָא שְׁכִנְתָּךְ בֵּיהּ׃ אֲרִים
אִסְתַּוְרָךְ לְמִשְׁוַק אוּמַיָּא לְעַלְמִין דִּבְכָל חֵילֵיהּ
4 אַבְאֵישׁ בְּעֵל דְּבָבָא בְּקוּדְשָׁא׃ אַכְלִין מְעִיקָךְ
5 בְּמִצַּע זִמְנָךְ שַׁוּוֹן אַתְוָתְהוֹן אַתְיָא׃ יִצְלֵף
בְּקוּרְנָסָא הֵיךְ גְּבַר דִּמְרִים יְדֵיהּ בִּסְבִיךְ קִיסַיָּא
6 לְמִקְטַע בְּכוּלְבַּיָּא׃ וּכְדֵין גְּלִיפַיְהָא גָרְרִין כַּחֲדָא
בְּקוּפִּיץ וּבְמַפְּסַלְתְּ דְּיוּסְטַר מָחָן כִּבְמַרְזוֹפִין׃

Ergo inaniter purificavi cor meum, & lavi 13
in munditie manus meas. Et fui flagellatus 14
tota die, & caſtigatio mea in matutinis. Si 15
dixi, Narrabo qualitates eorum: ecce ſuper
generatione filiorum tuorum improbè egi.
Et cogitavi ut ſcirem iſtud : labor hoc in 16
oculis meis. Uſq; ad tempus redemptionis, 17
quo veniam ad *ſanctuaria* Dei, intelligam
finem eorū. Profectò in tenebris 18
poſuiſti eos, projeciſti eos in *vaſtitates*.
Quomodo facti ſunt in deſolationem in 19
momento, conſumpti ſunt & vaſtati à commotionibus?
Sicut ſomnium ab homine 20
qui expergeſit [*evaneſcit*,] Dñe in die judicii
magni cū fuerint ſuſcitati de ſepulchris
ſuis, in furore imaginem eorū ſpernes. Etenim 21
compungetur cor meū, & renes mei
ardent ſicut ignis. Et ego ſtultꝰ qui neſciam, 22
quaſi beſtia reputatꝰ ſum apud te. Ego autē 23
continuè ſum apud te: tenuiſti manū dexteram
meā. In conſilio tuo deduces me : & 24
poſtquā completa fuerit gloria, quā dixiſti
te adducturū eſſe ſup me, accipias me. Quis 25
ſimilis tui qui meꝰ es in cœlo, niſi tu? proinde
tecum ſocium non volui in terra.
Conſumptum eſt corpus meum & cor meum 26
: fortis eſt qui probat cor meum, &
pars mea Deus in æternū. Quia ecce impii 27
qui abhorrent à *te*, peribunt : perdidiſti
omnes qui aberrarunt à timore tui. Mihi 28
verò accedere ad *Dominum*, bonū eſt : poſui
in *Domino Deo* fiduciam meam, ut enarrem
juſtis præcepta omnia apoſtolatus tui.

Intellectus bonus per manus Aſaph. 1

PSAL. LXXIV.

Quare Deus repuliſti in æternum, flagrabit
furor tuus in oves paſcuæ tuæ?
Recordare congregationis tuæ, quam acquiſiviſti 2
ab initio, redemiſti ab Ægypto,
tribꝰ hæreditatis tuæ, montis Sion hujꝰ in
quo requievit *majeſtas tua*. Leva greſſus 3
tuos ad deſolandas nationes in perpetuū,
quia pro viribꝰ ſuis detrimenta *intulit inimicus*
in ſanctuariū. Clamant moleſtatores 4
tui in medio temporum tuorum; ponunt
ſigna ſua, ſigna. Contundent malleo, 5
ſicut vir qui levat manū ſuā in perplexitatem
lignorū, ut incîdat ſecuribꝰ. Et ſic ſculpturas 6
ejus excîdunt ſimul bipenni & dolabro
devaſtario, percutientes malleis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

13 * ܘܐܢܐ ܒܠܚܘܕܝ ܕܟܝܬ ܠܒܝ : ܘܐܫܝܓܬ ܐܝܕܝ ܒܕܟܝܘܬܐ. * ܘܗܘܝܬ ܠܡܚܘܬܐ ܟܠܗ
14 ܝܘܡܐ: ܘܡܟܣܢܘܬܝ ܠܨܦܪܐ. * ܘܐܢ ܐܡܪܬ ܕܐܥܒܕ ܐܟܘܬܗܘܢ * ܥܘܠܐ ܗܘ ܒܥܝܢܝ : * ܥܕܡܐ
15
16
17 ܕܐܥܘܠ ܠܡܩܕܫܗ ܕܐܠܗܐ. ܘܐܬܒܩܐ ܒܚܪܬܗܘܢ : * ܐܝܟ ܢܟܠܗܘܢ ܬܣܝܡ ܠܗܘܢ. ܘܬܪܡܐ
18
19 ܐܢܘܢ ܟܕ ܡܬܬܪܝܡܝܢ : * ܐܝܟܢ ܗܘܘ ܠܬܗܪܐ ܡܢ ܫܠܝܐ. ܫܠܡܘ ܘܣܦܘ ܡܢ ܕܘܘܕܐ :
20 * ܐܝܟ ܗܘ ܕܡܬܬܥܝܪ ܡܢ ܒܬܪ ܕܚܙܐ ܚܠܡܐ. ܡܪܝܐ ܒܡܕܝܢܬܐ ܨܠܡܗܘܢ ܬܫܘܛ : * ܘܐܢܐ ܐܬܕܠܚ
21
22 ܠܒܝ ܘܟܘܠܝܬܝ ܐܫܬܢܝ. * ܘܐܢܐ ܦܫܝܛ ܗܘܝܬ ܘܠܐ ܝܕܥ : ܒܥܝܪܐ ܗܘܝܬ ܠܘܬܟ. **
24 * ܒܡܠܟܟ ܒܝܐܢܝ : ܘܒܬܪ ܐܝܩܪܟ ܕܒܪܢܝ. * ܡܢܐ ܐܝܬ ܠܝ ܒܫܡܝܐ ܥܡܟ : ܘܡܢܐ ܨܒܝܬ
25 ܒܐܪܥܐ ܕܬܐܚܘܕ ܐܝܕܝ ܝܡܝܢܐ : * ܘܫܠܡ ܠܒܝ ܘܒܣܪܝ ܘܚܝܠܗ ܕܠܒܝ. ܡܢܬܝ
26 ܕܝܠܝ ܐܠܗܐ ܠܥܠܡ : * ܡܛܠ ܕܗܐ ܪܚܝܩܝܢ ܡܢܟ ܢܐܒܕܘܢ : ܘܬܘܒܕ ܠܟܠ ܕܛܥܝܢ ܡܢܟ ܠܥܠܡ :
27
28 * ܐܢܐ ܕܝܢ ܨܒܝܬ ܕܐܬܩܪܒ ܠܐܠܗܐ. ܛܒ ܠܝ ܫܡܟ ܡܪܝܐ ܬܘܟܠܢܝ : ܕܐܫܬܥܐ ܟܠܗܘܢ ܬܕܡܪܬܟ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܥܕ *

1 * ܕܐܣܦ. ܟܕ ܚܙܐ ܕܘܝܕ ܠܡܠܐܟܐ ܕܩܛܠ ܒܥܡܐ ܘܒܟܐ ܘܐܡܪ : ܒܝ ܘܒܫܪܒܬܝ ܘܠܐ ܒܗܠܝܢ ܥܢܐ
ܙܟܝܬܐ. ܘܬܘܒ ܡܬܢܒܝܢܘܬܐ ܕܡܨܠܠܬܐ ܕܡܕܝܢܬܐ ܕܝܗܘܕܝܐ. ܒܬܪ ܐܪܒܥܝܢ
ܫܢܝܢ ܕܣܘܠܩܗ. ܡܢ ܐܣܦܣܝܢܘܣ ܣܒܐ ܘܛܛܘܣ ܒܪܗ ܕܩܛܠܘ ܡܢ ܝܗܘܕܝܐ ܪܒܘܬܐ.
ܘܚܪܒܘܗ ܠܐܘܪܫܠܡ. ܘܐܬܫܝܛܘ ܝܗܘܕܝܐ ܥܕܡܐ ܠܝܘܡܢܐ. ܦܬܓܡܐ ܡܙ.
2 ܠܡܢܐ ܐܠܗܐ ܛܥܝܬܢ ܠܥܠܡ : ܘܐܣܓܝܬ ܪܘܓܙܟ ܥܠ ܥܢܐ ܕܡܪܥܝܬܟ. * ܐܬܕܟܪ ܥܕܬܟ
ܕܩܢܝܬ ܡܢ ܩܕܝܡ : ܘܦܪܩܬ ܫܒܛܐ ܕܝܪܬܘܬܟ. ܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ ܗܢܐ ܕܐܥܡܪܬ ܒܗ :
3 * ܐܪܝܡ ܥܒܕܝܟ ܥܠ ܗܢܘܢ ܕܡܫܬܥܠܝܢ ܥܠܝܢ ܒܚܝܠܐ. ܟܠ ܕܡܒܐܫ
4 ܒܥܠܕܒܒܐ ܕܡܩܕܫܟ : * ܘܐܫܬܒܗܪܘ ܒܥܠܕܒܒܝܟ ܒܓܘ ܥܐܕܝܟ. ܥܒܕܘ ܐܬܘܬܗܘܢ
5
6 ܐܬܘܬܐ : * ܘܝܕܥܬ ܐܝܟ ܡܪܝܡܐ ܕܠܥܠ. ܐܝܟ ܥܒܐ ܕܩܝܣܐ ܒܢܪܓܐ * ܦܛܪܘ ܬܪܥܐ :
ܐܟܚܕܐ ܒܢܪܓܐ ܘܒܡܩܒܐ ܐܪܡܝܘ.

Et ego ſolus mundâvi cor meum, & lavi manus 13
meas puritate, Et tamen *expoſitus* fui 14
flagello totâ die, & caſtigatio mea ad matutinum 15
uſque. Si dixero, Faciam ut ipſi, Sce- 16
lus eſt in oculis meis : Donec intrem in ſanctuarium 17
Dei, & conſiderem finem illorum.
Juxta fraudem eorum conſtitues illis, & dejicies 18
eos cum ſeſe extulerint. Quomodo facti 19
ſunt in admirationem repentè : defecerunt,
& conſumpti ſunt perturbatione. Velut 20
is qui evigilat poſtquam vidit ſomnium, Domine
in civitate imaginem ipſorū deſpicies.
Meî autem conturbatum eſt cor, & renes mei 21
abſceſſerunt; Et ego ſimplex eram & ignarus: 22
jumentum eram tecum. Conſilio tuo 24
conſolare me, & poſt decus tuum rege me.
Quid eſt mihi in cœlo tecum, & quid optavi 25
in terra, ut apprehenderis manum meā dexteram,
Et conſumptū ſit cor meū, & caro mea, 26
ac robur cordis mei? Portio mea in Deo eſt
in ſempiternum; Quoniam ecce remoti à te 27
peribunt : & perdes omnes qui aberrant à
te in æternū. Mihi placuit accedere ad Deum: 28
pergratum eſt mihi nomen tuum, Domine fiducia
mea, ut enarrem cuncta mirabilia tua.

PSAL. LXXIV.

Aſaphi. Quum vidit David angelum perimentem 1
*populum, & flevit ac dixit : In me
& in progeniem meam, non in has oves innoxias.
Præterea prædictio obſidionis urbis Judæorum,
quadraginta poſt Aſcenſionem annos,
per Veſpaſianum ſenem, & Titum ejus filium :
qui occiderunt ex Judæis myriades, &
deſtruxerunt Jeruſalem, indeq; deſpecti ſunt
Judæi uſque in præſentem diem. Verſ.* 47.

DEus, quare oblitus es noſtrî in æternum,
& auxiſti iram tuam in oves gregis
tui? Recordare Eccleſiæ tuæ, quam poſſediſti 2
jampridem, & liberâſti tribum hæreditatis
tuæ : montem Sion iſtum, in quo habitâſti.
Eleva ſervos tuos ſuper eos qui ſuperbiunt 3
in nos cum fortitudine, omnem qui
malum infert, inimicum ſanctuarii tui. Gloriati 4
ſunt hoſtes tui in medio feſtivitatis tuæ:
fecerunt ſigna ſua, ſigna : Et cognoviſti, ut 5
excelſus qui ſupernè es. Non ſecus ac ſylvam
lignorum ſecuribus Fiderunt januas : ſimul 6
bipennibus atque malleis proſtraverunt.

Verſio VULG. LAT.

13 Et dixi ; Ergò ſine cauſa juſtificavi
cor meum, & lavi inter innocentes
14 manus meas: Et fui flagellatꝰ totâ die,
15 & caſtigatio mea in matutinis. Si di-
cebam, Narrabo ſic: ecce nationem
16 filiorũ tuorum reprobavi. Exiſtima-
bam ut cognoſcerem hoc,labor eſt an-
17 te me: Donec intrem in Sanctuarium
Dei: & intelligam in noviſſimis eorũ.
18 Veruntamen propter dolos poſuiſti
eis: dejeciſti eos dum allevarentur.
19 Quomodò facti ſunt in deſolationem,
ſubitò defecerunt: perierunt propter
20 iniquitatem ſuam. Velut ſomnium ſur-
gentium,Domine,in civitate tua ima-
21 ginem ipſorũ ad nihilũ rediges. Quia
inflammatum eſt cor meum, & renes
22 mei commutati ſunt: Et ego ad nihi-
23 lum redactus ſum, & neſcivi. Ut ju-
mentum factus ſum apud te: & ego
24 ſemper tecum. Tenuiſti manum dexte-
ram meã: & in voluntate tua deduxi-
25 ſti me,& cũ gloria ſuſcepiſti me. Quid
enim mihi eſt in cœlo?& à te quid vo-
26 lui ſuper terrã? Defecit caro mea, &
cor meum: Deus cordis mei, & pars
27 mea Deus in æternũ. Quia ecce, qui
elongant ſe à te, peribunt: perdidiſti
28 omnes,qui fornicantur abs te.Mihi au-
tem adhærere Deo bonum eſt: ponere
in Domino Deo ſpem meam: Ut an-
nuntiem omnes prædicationes tuas,in
portis filiæ Sion.

1 Intellectûs Aſaph. LXXIII.

UT quid,Deꝰ,repuliſti in finem: ira-
tus eſt furor tuus ſuper oves pa-
2 ſcuæ tuæ? Memor eſto congregationis
tuæ,quã poſſediſti ab initio. Redemiſti
virgam hæreditatis tuæ:mons Sion, in
3 quo habitâſti in eo.Leva manus tuas in
ſuperbias eorũ in finẽ:quãta maligna-
4 tus eſt inimicus in Sancto! Et gloriati
ſunt qui oderunt te, in medio ſolenni-
5 tatis tuæ.Poſuerunt ſigna ſua,ſigna: Et
non cognoverunt ſicut in exitu ſuper
ſummum.Quaſi in ſylva lignorũ ſecu-
6 ribus Exciderunt januas ejꝰ in idipſũ:
in ſecuri & aſciâ dejecerunt eam.

Verſ. GRÆC. LXX.Interp.

13 Καὶ εἶπα, Ἄρα ματαίως ἐδικαίωσα τὴν καρδίαν
14 μου, καὶ ἐνιψάμην ἐν ἀθῴοις τὰς χεῖράς μου. Καὶ
ἐγενόμην μεμαστιγωμένος ὅλην τὴν ἡμέραν, καὶ
15 ὁ ἔλεγχός μου εἰς τὰς πρωΐας. Εἰ ἔλεγον, Δι-
ηγήσομαι οὕτως, ἰδοὺ τῇ γενεᾷ τῶν υἱῶν σου
16 ἠσυνθέτηκα. Καὶ ὑπέλαβον τοῦ γνῶναι, τοῦτο
17 κόπος ἐστὶν ἐναντίον μου, Ἕως εἰσέλθω εἰς τὸ
18 ἁγιαστήριον τοῦ Θεοῦ, συνῶ εἰς τὰ ἔσχατα. Πλὴν
διὰ τὰς δολιότητας ἔθου αὐτοῖς, κατέβαλες αὐ-
19 τοὺς ἐν τῷ ἐπαρθῆναι. Πῶς ἐγένοντο εἰς ἐρήμω-
σιν; ἐξάπινα ἐξέλιπον, ἀπώλοντο διὰ τὴν ἀνο-
20 μίαν αὐτῶν. Ὡσεὶ ἐνύπνιον ἐξεγειρομένου, κύ-
ριε ἐν τῇ πόλει σου τὴν εἰκόνα αὐτῶν ἐξουδενώσεις.
21 Ὅτι ηὐφράνθη ἡ καρδία μου, καὶ οἱ νεφροί μου
22 ἠλλοιώθησαν. Κἀγὼ ἐξουδενωμένος, καὶ οὐκ ἔγνων,
23 Κτηνώδης ἐγενόμην παρὰ σοί, κἀγὼ διαπαν-
24 τὸς μετὰ σοῦ. Ἐκράτησας τῆς χειρὸς τῆς δεξιᾶς μου, ἐν
τῇ βουλῇ σου ὡδήγησάς με, καὶ μετὰ δόξης προσ-
25 ελάβου με. Τί γάρ μοι ὑπάρχει ἐν τῷ οὐρανῷ, καὶ
26 παρὰ σοῦ τί ἠθέλησα ἐπὶ τῆς γῆς; Ἐξέλιπεν ἡ
καρδία μου καὶ ἡ σάρξ μου, ὁ Θεὸς τῆς καρδίας μου,
27 καὶ ἡ μερίς μου ὁ Θεὸς εἰς τὸν αἰῶνα. Ὅτι ἰδοὺ οἱ
μακρύνοντες ἑαυτοὺς ἀπὸ σοῦ, ἀπολοῦνται· ἐξω-
28 λόθρευσας πάντα τὸν πορνεύοντα ἀπὸ σοῦ. Ἐμοὶ
δὲ τὸ προσκολλᾶσθαι τῷ Θεῷ ἀγαθόν ἐστι, τίθεσθαι
ἐν τῷ κυρίῳ τὴν ἐλπίδα μου· τοῦ ἐξαγγεῖλαι πά-
σας τὰς αἰνέσεις σου ἐν ταῖς πύλαις τῆς θυγατρὸς
Σιών.

Συνέσεως τῷ Ἀσάφ. ογʹ.

1 Ἵνα τί ἀπώσω ὁ Θεὸς εἰς τέλος; ὠργίσθη ὁ θυ-
2 μός σου ἐπὶ πρόβατα νομῆς σου; Μνήσθητι
τῆς συναγωγῆς σου ἧς ἐκτήσω ἀπ' ἀρχῆς· ἐλυ-
τρώσω ῥάβδον κληρονομίας σου· ὄρος Σιὼν τοῦ-
3 το ὃ κατεσκήνωσας ἐν αὐτῷ. Ἔπαρον τὰς χεῖ-
ράς σου ἐπὶ τὰς ὑπερηφανίας αὐτῶν εἰς τέλος·
ὅσα ἐπονηρεύσατο ὁ ἐχθρὸς ἐν τοῖς ἁγίοις σου,
4 Καὶ ἐνεκαυχήσαντο οἱ μισοῦντές σε ἐν μέσῳ τῆς
ἑορτῆς σου. ἔθεντο τὰ σημεῖα αὐτῶν σημεῖα,
5 Καὶ οὐκ ἔγνωσαν, ὡς εἰς τὴν εἴσοδον ὑπεράνω. ὡς
6 ἐν δρυμῷ ξύλων ἀξίναις Ἐξέκοψαν τὰς θύρας
αὐτῆς ἐπὶ τὸ αὐτό, ἐν πελέκει καὶ λαξευτηρίῳ
κατέρραξαν αὐτήν.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

13Et dixi;(p)Ergò ſine cauſa(q)ju- 13
ſtificavi cor meum:& lavi inter in-
nocentes manus meas. 14 Et fui fla- 14
gellatus totâ die:& caſtigatio mea in
matutinis. 15 Si dicebam,Narrabo 15
ſic; ecce (r) generationem filiorum
tuorum[f]reprobavi. 16 Et(ſ)ſuſce- 16
pi cognoſcere; hoc labor eſt ante me.
17Donec intrem in Sanctuariũ Dei, 17
intelligam[g]in(t)noviſſima.18Ve- 18
runtamen propter[h] doloſitates(u)
poſuiſti eis:(x) dejeciſti eos, dum
extollerentur. 19 Quomodò facti 19
ſunt in deſolationem? ſubitò defece-
runt: perierunt propter iniquitatem
ſuam. 20 Velut[i] ſomnium (y)ex- 20
urgentis,Domine,in civitate tua,ima-
ginem ipſorum ad nihilum rediges.
21 Quia (z)[k] delectatum eſt cor 21
meum, & renes mei [l] mutati ſunt:
Et ego ad(aa)nihilum redactus ſum, 22
& non cognovi. 22 ut (bb) jumen- 23
tum factus ſum apud te:& ego ſem-
per tecum. 23 Tenuiſti manum dex- 24
teram meam:in (cc) conſilio tuo de-
duxiſti me: & cum gloria aſſumpſi-
ſti me. 24 Quid enim (dd) mihi eſt 25
in cœlo?& à te quid volui ſuper ter-
ram? 25 Defecit (ee) cor meum,& 26
caro mea: [m] Deus cordis mei,&
pars mea Deus in æternum. 26 Quia 27
ecce, qui elongant ſe à te, peribunt:
perdidiſti [n] omnem,qui fornicatur
abs te. 27 Mihi autem adhærere Deo 28
bonum eſt: ponere in Domino ſpem
meam. 28 ut annuntiem omnes(ff)
[o] laudes tuas in (gg) portis filiæ
Sion.

Intellectûs ipſi Aſaph. LXXIII. 1

1UT(a)quid repuliſti,Deus,in fi-
nem? iratꝰ eſt furor tuus ſuper
oves paſcuæ tuæ. 2 Memento congre- 2
gationis tuæ, quam poſſediſti ab ini-
tio. 3 Redemiſti (b) virgam hære-
ditatis tuæ, montem (c) Sion hunc,
in quo habitâſti in eo. 4 Leva ma- 3
nus tuas in ſuperbias eorum in finẽ.
Quanta malignè operatus eſt inimi-
cus in (d) Sanctis tuis! 5 Et gloriati 4
ſunt, qui oderunt te, in medio(e)ſo-
lennitatis tuæ. 6 Poſuerunt ſigna ſua
ſigna, Et non cognoverunt, ſicut [a] 5
in (f) ingreſſu deſupér. 7 [b]Quaſi
in ſylva lignorum, ſecuribus Exci- 6
derunt januas ejus in idipſum:in ſecuri, & aſciâ dejecerunt eam.

Verſio ÆTHIOPICA.

ወአቤ፡ከንቶሁ፡ እንጋ፡ አጽደቅዋ፡ለልብየ፡፡ወ 13
ኅፀብኩ፡በንጹሕ፡ እደዊየ፡፡=፦ ወኮንኩ፡ቅሡ 14
ፉ፡ ኵሎ፡ አሚረ፡፡ወዘለፉየኒ፡ በጽባሕ፡፡=፦
ሶበ፡ እቤሁ፡ ነበብኩ፡ ከመዝ፡፡ናሁ፡ሠራዕኩ፡ 15
ለትውልደ፡ ደቂቅከ፡፡=፦ ወተወከፍኩ፡ ከመ፡ 16
አእምር፡፡ወዝንቱሰ፡ ጻማ፡ ውእቱ፡ በቅድሜ
የ፡፡=፦ እስከ፡ እበውእ፡ ውስተ፡ መቅደሱ፡ለ 17
እግዚአብሔር ፡፡ ከመ፡ አእምር ፡ ደኃሪቶ
ሙ፡፡=፦ ወባሕቱ፡ በእንተ፡ ጽልሑቶሙ፡ አ 18
ጽነሕኮሙ፡፡ወነጻሕኮሙ፡ በተንሥኦቶሙ፡፡=
እፎ፡ ኮኑ፡ ለሙስና፡፡ግብተ፡ ሐልቁ፡ ወተሐጕ 19
ሉ፡ በእንተ፡ ኃጢአቶሙ፡፡=፦ ከመ፡ ዘንቃህ፡ 20
እምንዋም፡፡እግዚኦ፡ በሀገርከ፡ አሳስሮሙ፡
ራእዮሙ፡፡=፦ እስመ፡ ውዕየ፡ ልብየ፡ ወተመ 21
ስወ፡ ኵልያትየ፡፡ወአንሰ፡ ምኑን፡ ሊያእምር
ኩ፡፡=፦ ወኮንኩ፡ ከመ፡ እንስሳ፡ በኀቤከ፡፡ 22
ወአንሰ፡ ዘልፈ፡ ምስሌከ፡፡=፦ አኃዝከኒ፡እዴ 23
የ፡ ዘየማን፡፡ወበምክረ፡ ዚአከ፡ መራሕከኒ፡፡
ወምስለ፡ ስብሐት፡ ተወከፍከኒ፡፡=፦ ምንተ፡ 24
ብከ፡ ተሀሉ፡ ውስተ፡ ሰማይ፡፡ወምንት፡ እፈቅ
ድ፡ ኀቤከ፡ ውስተ፡ ምድር፡፡=፦ ኀልቀ፡ልብ 25
የ፡ ወሥጋየ፡ በእምላክ፡ መድኀኒትየ፡፡እግዚ
አብሔር፡ መክፈልትየ፡ ለዓለም፡፡=፦ እስ 26
መ፡ናሁ፡ እለ፡ ይርሕቁ፡ እምኔከ፡ ይትሐጐ
ሉ፡፡ወሠረውኮሙ፡ ለኵሎሙ፡ እለ፡ ይዜም
ው፡ እምኔከ፡፡=፦ ሊተሰ፡ ተሊወ፡ እግዚአ 27
ብሔር፡ይኄይሰኒ፡፡ወቱክልትየኒ፡ ለዐለ፡ እግዚ
አብሔር፡፡=፦ ከመ፡ እንግር፡ ኵሎ፡ ስብሐ 28
ታሁ፡፡በአናቅጺሃ፡ለወለተ፡ጽዮን፡፡=፦

ዘበአእምሮ፡ዘአሳፍ፡፡

ሮር ለምንት፡ገደፍከነ፡እግዚኦ፡ ለዝሉፉ፡፡ 1
ወተምዐከ፡ መዐትከ፡ ላዕለ፡ አባግዐ፡ መርዔት
ከ፡፡=፦ ተዘከር፡ ማኅበረከ፡ ዘአቅደምከ፡ 2
ፈጢረ፡፡=፦ ወአድኀንከ፡ በትረ፡ ርስትከ፡፡ 3
ደብረ፡ ጽዮን፡ ዘኀደርከ፡ ውስቴታ፡፡=፦ አን 4
ሥእ፡ እዴከ፡ ዲበ፡ ትዕቢቶሙ፡ ለዝሉፉ፡፡
መጠነሰ፡ አሕሰመ፡ ጸላዊ፡ዲበ፡ቅዱሳኒከ፡፡=፦
ወተዘሀሩ፡ጸላእትከ፡ በማእከለ፡ በዐልከ፡፡=፦ 5
ወረሰዩ፡ ትእምርቶሙ፡ ትእምርተ፡ ዘሊየአ 6
ምሩ፡፡ከመዘ፡ ውስተ፡ ላእለይ፡ ፍኖት፡፡=፦
ወከመ፡ ዕፀወ፡ ገደም፡ በጕድብ፡ ሰበሩ፡ ኖኃ 7
ቲሃ፡፡ ወከማሁ፡ በማሕጼ፡ ወበመፍጽሕ፡
ሰበርዋ፡፡=፦

INTERP. ÆTHIOP. [f] determinavi. [g] noviſſima eorum. [h] doloſitates eorum pati feciſti eos: [i] ille qui vigilat à ſomno, [k] inflammatum eſt [l] tabuerunt: [m] in Deo ſalus mea,& pars [n] omnes, qui fornicantur [o] laudes ejus *PSAL.LXXIII.* [a] in via ſupra me. [b] Et ſicut ligna ſylvæ, ſecuribus exciderunt januas ejus; ſic in ſecuri,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* فقلت اتري بالباطل زكيت قلبي وغسلت بالطهارة يدي * وصرت مضروبا النهار اجمع * 13 14
وتوبيخي الي وقت الغداة * ان كنت قلت فاني هكذا اقول * هانذا قد فرزت مع جيل بنيك * 15
* وجعلته في قلبي لكي اعلم * وهذا هو تعب قدامي * الي ان ادخل الي موضع قدس الله * 16 17
وافهم الاواخر * بل من اجل غشهم وضعت لهم المساوي وحططتهم لما استعلوا * وللخراب 18 19
بغتة اسلمتهم * بادوا وهلكوا لاجل اثمهم * مثل رويا المستيقظ يا رب في مدينتك ترذل 20
اشخاصهم * لان قلبي قد احترق وذابت كليتاي * وانا مرذول ولم اعلم * صرت مثل بهيمة 21 22
عندك * وانا معك في كل حين * امسكت بيدي اليمني * وبمسرتك هديتني * وبمجد قبلتني * 23 24
* لان ماذا لي في السماء * وما هو الذي اريده منك على الارض * فقد فني قلبي وجسدي * اله 25 26
قلبي ونصيبي هو الله الي الابد * فهوذا المتباعدون منك يهلكون * وكل الزناة استاصلتهم 27
عنك * وانا لاصلح لي ان التصق بالله لانه صالح * واجعل توكلي على الله * لكي اخبر 28
بجميع تسابيحك * في ابواب ابنة صهيون * الليلويا *

* المزمور الثالث والسبعون * لاصاف فهم * وعدده * مه * استيخن * 1
لماذا اقصيتنا يا الله الي الغاية * واشتد سخطك على غنم رعيتك * اذكر جماعتك التي 2
اقتنيتها منذ الابتداء * خلصت قضيب ميراثك جبل صهيون * هذا الذي سلكت فيه *
* ارفع يديك على تعاظمهم الي التمام * كثيرة هي الشرور التي صنعها العدو في قدسك * 3
* وقد افتخر مبغضوك في وسط عيدك * وجعلوا علاماتهم ايات بجهلهم * ومثلوها بما ياتي 4 5
من العلي * ومثل غيضة حطب قطعوا بالفوس ابوابها * وبفاس ومعول معا حطموها * 6

*Et dixi; An fortè fruſtrà juſtificavi cor 13
meum, & lavi in puritate manus meas?
Et factus ſum flagellatus die totâ,& ca- 14
ſtigatio mea uſque ad tempus matutinum?
Si dixero, Ita dicam; ecce jam ſegrega- 15
tus ſum cum progenie filiorum tuorum. Et 16
poſui illud in corde meo, ut ſcirem,& hoc
eſt labor ante me, Quoad intrem in lo- 17
cum ſanctitatis Dei,& intelligam noviſ-
ſima. Verùm propter dolum eorum po- 18
ſuiſti eis lubrica, & depreſſiſti eos quum
elevati eſſent. Et vaſtationi repentè tra- 19
didiſti eos, perierunt & conſumpti ſunt
propter iniquitatem ſuam. Velut ſomnium 20
expergiſcentis O Domine, in civitate tua
contemnes imagines eorum. Nam cor 21
meum jam exuſtum eſt, & liquati ſunt
renes mei. Et ego vilis ſum, & ignora- 22
vi: factus ſum ut jumentum apud te, Et 23
ego tecum in omni tempore, Tenuiſti ma-
num meã dexterã, Et in beneplacito tuo 24
direxiſti me,et cum gloria ſuſcepiſti me.
Nam quid mihi eſt in cœlo, & quid eſt 25
quod volo à te ſuper terram? Jam con- 26
ſumptum eſt cor meum & corpus meum:
Deus cordis mei & pars mea, eſt Deus in
æternum. Ecce remoti à te, peribunt: & 27
omnes fornicarios extirpâſti à te. Et mi- 28
hi quidem optimum eſt adhærere Deo,quia
bonus eſt: & collocare fiduciam meam in
Deo: ut annuntiem omnes laudes tuas in
portis filiæ Sion. Alleluja.*

PSAL. LXXIII.

Aſapho intellectus. Et num. 1
verſ. 45.

*Quarè extermināſti nos, O Deus in
finem, & invaluit ira tua adverſus
oves paſcuæ tuæ? Memento cœtûs tui 2
quem poſſediſti ab initio, liberâſti virgam
hæreditatis tuæ, montem Sion hunc in
quo ſunt ſemitæ tuæ. Leva manus tuas 3
contra ſuperbiam eorum uſque ad con-
ſummationem:multa enim ſunt mala quæ
commiſit inimicus in ſanctos tuos. Et jam 4
gloriati ſunt oſores tui in medio feſtivi-
tatis tuæ: & poſuerunt vexilla ſua pro
ſignis in ſtultitia ſua.Et comparaverunt 5
ea rei quæ venit ab alto. Et quaſi nemus
lignorum exciderunt ſecuribus januas e-
jus: Et ſecuri atque bipenni ſimul per- 6
fregerunt eas.*

תהלים : עה

.tui nominis tabernaculum polluerunt terra in : tua ſanctuaria *igne in* Miſerunt
שִׁלְּחוּ בָאֵשׁ מִקְדָּשֶׁךָ לָאָרֶץ חִלְּלוּ מִשְׁכַּן שְׁמֶךָ׃ 7
Dei *conventicula* omnia incenderunt : pariter *eorum poſteri* , ſuo corde in Dixerunt
8 אָמְרוּ בְלִבָּם נִינָם יַחַד שָׂרְפוּ כָל־מוֹעֲדֵי־אֵל
nobiſcum non & : propheta ultrà non , videmus non noſtra Signa .terra in
9 בָּאָרֶץ׃ אוֹתֹתֵינוּ לֹא־רָאִינוּ אֵין־עוֹד נָבִיא וְלֹא־אִתָּנוּ
blaſphemabit:hoſtis afficiet probris , Deus Uſquequo .quo uſque *cognoſcens*
10 יֹדֵעַ עַד־מָה׃ עַד־מָתַי אֱלֹהִים יְחָרֶף צָר יְנָאֵץ
? tuam dexteram &,tuam manum *reduces* quid Ut ? *æternum* in tuum nomen inimicus
11 אוֹיֵב שִׁמְךָ לָנֶצַח׃ לָמָּה תָשִׁיב יָדְךָ וִימִינֶךָ
operans : initio ab meus rex Deus Et .*conſume* tui ſinus *interiori ex*
12 מִקֶּרֶב חוֹקְךָ כַלֵּה׃ וֵאלֹהִים מַלְכִּי מִקֶּדֶם פֹּעֵל
confregiſti:mare tua fortitudine *in* contriviſti Tu .terræ *interiori* in ſalutes
13 יְשׁוּעוֹת בְּקֶרֶב הָאָרֶץ׃ אַתָּה פוֹרַרְתָּ בְעָזְּךָ יָם שִׁבַּרְתָּ
: Leviathan capita confregiſti Tu .aquis *ſuper* cetorum capita
14 רָאשֵׁי תַנִּינִים עַל־הַמָּיִם׃ אַתָּה רִצַּצְתָּ רָאשֵׁי לִוְיָתָן
: torrentem & , fontem *rupiſti* Tu .*ſolitudinicolis* populo eſcam eum *dabis*
15 תִּתְּנֶנּוּ מַאֲכָל לְעָם לְצִיִּים׃ אַתָּה בָקַעְתָּ מַעְיָן וָנָחַל
tu : nox *tibi* etiam , dies *Tibi .fortitudinis* fluvios ſiccâſti tu
16 אַתָּה הוֹבַשְׁתָּ נַהֲרוֹת אֵיתָן׃ לְךָ יוֹם אַף־לְךָ לָיְלָה אַתָּה
: terræ terminos omnes ſtatuiſti Tu .ſolem & luminare præparâſti
17 הֲכִינוֹתָ מָאוֹר וָשָׁמֶשׁ׃ אַתָּה הִצַּבְתָּ כָּל־גְּבוּלוֹת אָרֶץ
affecit probris inimicus:hujus Memento .*ea* plaſmâſti tu hyemem & , æſtatem
18 קַיִץ וָחֹרֶף אַתָּה יְצַרְתָּם׃ זְכָר־זֹאת אוֹיֵב חֵרֵף
tradas Ne .tuum nomen *blaſphemaverunt* ſtultus populus & : Dominum
19 יְהוָה וְעַם־נָבָל נִאֲצוּ שְׁמֶךָ׃ אַל־תִּתֵּן
.æternum in obliviſcaris ne tuorum *afflictorum cœtus* : tuæ turturis animam *feræ*
לְחַיַּת נֶפֶשׁ תּוֹרֶךָ חַיַּת עֲנִיֶּיךָ אַל־תִּשְׁכַּח לָנֶצַח׃
Ne .*rapinæ habitaculis* terræ tenebroſa loca ſunt repleta quia :pactum ad Reſpice
20 הַבֵּט לַבְּרִית כִּי־מָלְאוּ מַחֲשַׁכֵּי־אֶרֶץ נְאוֹת חָמָס׃ אַל־ 21
Surge .tuum nomen laudabunt *egenus & afflictus* : affectus pudore *tenuis* recedat
22 יָשֹׁב דַּךְ נִכְלָם עָנִי וְאֶבְיוֹן יְהַלְלוּ שְׁמֶךָ׃ קוּמָה
Ne .die omni ſtulto à , tui probri memento :tuam *litem litiga* Deus
23 אֱלֹהִים רִיבָה רִיבֶךָ זְכֹר חֶרְפָּתְךָ מִנִּי־נָבָל כָּל־הַיּוֹם׃ אַל־
.ſemper *aſcendens tibi obſiſtentium* ſonitus : tuorum hoſtium vocis obliviſcaris
תִּשְׁכַּח קוֹל צֹרְרֶיךָ שְׁאוֹן קָמֶיךָ עֹלֶה תָמִיד׃

PSAL. LXXV. עה

tibi *Sumus Confeſſi* .canticum Aſaph ipſi cantus , *corrumpas* ne , Victori
1 לַמְנַצֵּחַ אַל־תַּשְׁחֵת מִזְמוֹר לְאָסָף שִׁיר׃ הוֹדִינוּ לְּךָ 2
Cùm .tua mirabilia *narrant* : tuum nomen propinquum & *,ſumus confeſſi* , Deus
3 אֱלֹהִים הוֹדִינוּ וְקָרוֹב שְׁמֶךָ סִפְּרוּ נִפְלְאוֹתֶיךָ׃ כִּי
omnes & , terra *Liquefacti* .judicabo *rectitudines* ego : *ſtatutum* tempus accepero
4 אֶקַּח מוֹעֵד אֲנִי מֵישָׁרִים אֶשְׁפֹּט׃ נְמֹגִים אֶרֶץ וְכָל־
.Selah , ejus columnas *æquilibrio* direxi ego : ejus habitatores
יֹשְׁבֶיהָ אָנֹכִי תִכַּנְתִּי עַמּוּדֶיהָ סֶּלָה׃

תרגום TARGUM.

אדליקו בנורא בית מקדשא לארעא אפיסו 7
משכן דאתקרי ביה שמך: אמרו בלבהון בניהון 8
כחדא אוקידו אבהתהון כל מערעיא אלהא
בארעא: אתוונא דיהבו לנא נביייא לא חמינא 9
לית תוב נביא ולית עמנא דידע עד אימתי:
עד אימתי אלהא יחסד מעיקא ירחיק בעל דבבא 10
שמך לעלמא: למה תתיב ידך וימינך למפרוק 11
מן גו עטפך אפיק ושיצי עקתא: ואלהא מלכא 12
דשכינת קודשיה מלקדמין עביד פורקנא בגו
ארעא: אנת גזרתא בעושנך מוי דימא אנת 13
תברתא רישי תניניא ושנקת מצראי על ימא:
אנת תרעתא רישי גברי פרעה יהבתנון לנמרא 14
לעם בית ישראל ונושמיהון לירודי: אנת 15
בזעתא מעינא מן כיפא והוי לנחלא אנת יבשת
מגיזת נחלי ארנונא ומגיזת יובקא ויורדנא דהון
תקיפין: די לך יממא לחוד די לך ליליא את 16
אתקנתא סיהרא ושמשא: את אקמתא כל 17
תחומא דארעא קיטא וסתוא אנת בראתנון:
אדכר דא בעל דבבא מנדף יי ועמא טפשא 18
דרחיקו שמך: לא תמסור לעמיא דמתילין 19
לחיות ברא נפשת מאלפי אוריתך חייהון
דענייך לא תתנשי לעלמין: אסתכל לקימא 20
דגזרתא לאבהתן ארום אתמליאו בניהון
חשוכא פרים על ארעא ואונאותא וחטופין:
לא יתוב מסכן מכסיף ענייא וחשוכא ישבחון 21
שמך: קום אלהא נצי מצותך אדכר קלנא 22
דעמך מן מלכא טפשא כל יומא: לא 23
תתנשי קל מעיקיך אתרגושת דקימין לקבלך
דסלקא תדירא:

עה

לשבחא בזמן די אמר דוד לא תחבל עמך 1
תושבחתא על ידוי דאסף ושירא: אודינא 2
לך יי אודינא וקריב שמך אשתעיו פרישותך:
ארום אידע זמנא אנא תריצן אדון: מתמסמסין 3 4
דיירי ארעא וכל יתבהא אנא אתקנית
עמודהא לעלמין:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Incenderunt igni domum ſanctuarii; ad 7
terram proſtraverunt tabernaculum in quo
invocatũ eſt nomen tuũ. *Dixerunt* in corde 8
ſuo filii eorũ ſimul, incenderunt patres *eo-*
rum omnes feſtivitates Dei in terra. Signa 9
noſtra quæ dederunt nobis prophetæ, non
vidimus: non eſt ampliùs propheta, & non
eſt apud nos qui ſciat quouſq;. Uſquequo 10
Deus improperabit moleſtator; abomina-
bitur auctor inimicitiæ nomen tuum in
æternũ? Quare avertes manum tuã & dex- 11
teram tuam quò minus redimas? de me-
dio ſinus tui educ eam, & dele afflictionẽ.
Et Deus rex cujᵘˢ majeſtas ſancta eſt ab æter- 12
no, operatur *redemptionem* in medio ter-
ræ. Tu diviſiſti in fortitudine tua aquas ma- 13
ris : tu contriviſti capita draconum, & ſuf-
focâſti Ægyptios in *mari*. Tu confregiſti 14
capita fortium Pharaonis; dediſti eos ad in-
ternecionem populo domus Iſrael, corpo-
ra verò eorũ *draconibus*. Tu erumpere fe- 15
ciſti fontem de rupe, & fuit in flumen : tu
ſiccâſti vada torrentium Arnon, & vada
Joubecha, & Jordanis, quæ erant valida.
Tuus eſt dies, inſuper tua eſt nox, tu præ- 16
parâſti Lunam & Solem. Tu ſtatuiſti omnes 17
terminos terræ: æſtatẽ & hyemẽ tu creâſti.
Hoc in memoriam revoca: inimicus ex- 18
probravit, Domine; & populus inſipiens
execratus eſt nomen tuum. Ne tradas popu- 19
lis, ſimilibus beſtiæ ſylveſtri, animas docen-
tium Legem tuam: vitam pauperum tuo-
rum ne obliviſcaris in perpetuum. Reſpi- 20
ce ad pactũ quod pepigiſti patribᵘˢ noſtris;
quoniam impleti ſunt filii eorum obſcuri-
tate ſeſe diffundẽte ſuper terrã, & violen-
tia & rapinis. Non revertatur miſer confu- 21
ſus: pauper & egenus laudabunt nomẽ tuũ.
Surge Deus, age cauſam tuam : memento 22
improperii *populi tui*, [*illati*] à rege ſtulto
tota die. Ne obliviſcaris vocis moleſtan- 23
tium te, fremitus inſurgentium adverſum
te, qui aſcendit jugiter.

Ad laudandum quo tempore dixit Da- 1
vid, Ne deſtruas populum tuum, hymnus
per manus Aſaph & canticum.

PSAL. LXXV.

COnfitemur tibi Deus, confitemur; 2
& appropinquante *nomine tuo*, nar-
raverunt miracula tua. Cùm *ſcivero* 3
tempus, ego recta judicabo. Liquefa- 4
cti ſunt incolæ terræ, & omnis habitator
ejus, ego firmavi columnas ejus in per-
petuum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܘܩܕܘ ܒܢܘܪܐ ܡܩܕܫܟ : ܘܛܢܦܘ ܒܐܪܥܐ ܡܫܟܢܐ ܕܫܡܟ . * ܘܐܡܪܘ ܒܠܒܗܘܢ ܢܣܘܦ 7 8
ܐܢܘܢ ܐܟܚܕܐ : ܘܢܘܒܕ ܟܠܗܘܢ ܥܐܕܘܗܝ ܕܐܠܗܐ ܡܢ ܐܪܥܐ . * ܐܬܘܬܗܘܢ ܠܐ ܚܙܘ : ܠܝܬ 9
ܬܘܒ ܢܒܝܐ . ܘܠܝܬ ܥܡܢ ܚܟܝܡܐ : * ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܐܠܗܐ ܢܚܣܕ ܒܥܠܕܒܒܐ 10
ܘܢܡܪܓܙ ܫܡܟ ܠܥܠܡ : * ܠܡܢܐ ܐܗܦܟܬ ܐܝܕܟ ܘܝܡܝܢܟ ܡܢ ܓܘ ܥܐܕܟ . * ܐܠܗܢ 11 12
ܡܠܟܢ ܗܘ : ܕܦܩܕܬ ܡܢ ܩܕܝܡ ܥܠ ܦܘܪܩܢܗ ܕܝܥܩܘܒ . * ܐܢܬ ܒܚܝܠܟ ܦܠܓܬ ܝܡܡܐ : 13
ܘܬܒܪܬ ܪܫܝ̈ ܬܢܝܢܐ ܒܡܝ̈ܐ . * ܐܢܬ ܪܥܥܬ ܪܫܘܗܝ ܕܠܘܝܬܢ : ܘܝܗܒܬܗ ܡܐܟܘܠܬܐ 14
ܠܥܡܐ ܥܫܝܢܐ . * ܐܢܬ ܒܙܥܬ ܡܒܘܥܐ ܒܢܚܠܐ : ܐܢܬ ܐܘܒܫܬ ܢܗܪܘܬܐ ܥܫܝܢܬܐ . 15
* ܕܝܠܟ ܗܘ ܐܝܡܡܐ ܘܕܝܠܟ ܗܘ ܠܠܝܐ : ܐܢܬ ܐܬܩܢܬ ܢܘܗܪܐ ܘܫܡܫܐ . * ܐܢܬ ܐܩܝܡܬ 16 17
ܟܠܗܘܢ ܬܚܘܡܝ̈ܗ ܕܐܪܥܐ : ܩܝܛܐ ܘܣܬܘܐ ܐܢܬ ܒܪܝܬ ܐܢܘܢ . * ܐܬܕܟܪ ܡܪܝܐ ܚܣܕܗ 18
ܕܒܥܠܕܒܒܐ : ܥܡܐ ܣܟܠܐ ܐܪܓܙ ܫܡܟ . * ܠܐ ܬܬܠ ܠܬܒܪܐ ܢܦܫܐ ܕܡܘܕܝܐ ܠܟ : ܘܢܦܫܬܐ 19
ܕܡܣܟܢܝ̈ܟ ܠܐ ܬܛܥܐ ܠܥܠܡ . * ܚܘܪ ܡܪܝܐ ܒܩܝܡܟ : ܡܛܠ ܕܐܬܡܠܝܘ ܡܥܡܪ̈ܐ ܕܐܪܥܐ 20
ܚܫܘܟܐ ܘܥܘܠܐ . * ܠܐ ܢܬܒ ܡܣܟܢܐ ܟܕ ܒܗܝܬ : ܚܫܝܟܐ ܘܡܣܟܢܐ ܢܫܒܚܘܢ ܫܡܟ : 21
* ܩܘܡ ܐܠܗܐ ܘܕܘܢ ܕܝܢܟ : ܘܐܬܕܟܪ ܚܣܕܟ ܕܡܢ ܣܟܠܐ ܟܠܗ ܝܘܡܐ . * ܘܠܐ ܬܛܥܐ ܩܠܐ 22 23
ܕܒܥܠܕܒܒܝ̈ܟ : ܘܫܓܘܫܝܐ ܕܐܝܠܝܢ ܕܩܝܡܝܢ ܥܠܝܟ . ܕܣܠܩ ܒܟܠܙܒܢ .

* ܬܫܒܘܚܬܐ ܘܪܫܝܬ ܡܣܩܬܐ *   * ܡܙܡܘܪܐ ܕܥܗ *

* ܕܐܣܦ ܢܒܝܐ . ܡܡܠܠܘܬܐ ܐܠܗܝܬܐ ܕܡܫܝܚܐ . ܘܡܥܗܕܢܘܬܐ ܕܕܝܢܐ . ܦܬܓܡ̈ܐ ܟܒ . 1
* ܐܘܕܝܢ ܠܟ ܐܠܗܐ . ܐܘܕܝܢ ܠܟ ܘܩܪܝܢ ܫܡܟ : ܘܐܫܬܥܝܢ ܟܠܗܘܢ ܬܕܡܪܬܟ . 2
* ܡܛܠ ܕܐܣܒ ܙܒܢܐ ܘܐܢܐ ܒܬܪܝܨܘܬܐ ܐܕܘܢ : * ܬܬܡܟܟ ܐܪܥܐ ܘܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪ̈ܝܗ . 3 4
ܐܢܬ ܬܩܢܬ ܠܥܡܘܪ̈ܝܗ :

Et combuſſerunt igni ſanctuarium tuum : & 7
polluerunt in terra habitaculum nominis tui.
Dixerúntque in corde ſuo, Conſumamus eos 8
ſimul, & perdamus omnes feſtivitates Dei de
terra. Prodigia illarum non viderunt : non 9
eſt ampliùs propheta, neque eſt nobiſcum
ſapiens. Quouſque, Deus, improperabit ini- 10
micus, & irritabit nomen tuum in æternum?
Quare retraxiſti manum tuam & dexteram 11
tuam de medio feſtivitatis tuæ? Deus noſter 12
rex eſt, qui mandâſti ab æterno de ſalute
Jacob. Tu potentiâ tuâ diviſiſti maria, & fre- 13
giſti capita draconum in aquis. Tu contriviſti 14
capita Leviathan, & dediſti eum eſcã populo
forti. Tu perforâſti fontes in vallibus. Tu 15
arefeciſti fluvios magnos. Tuus eſt dies, & tua 16
eſt nox. Tu præparâſti lucem & ſolem. Tu 17
ſtatuiſti omnes fines terræ. Æſtatem atque
hyemem tu creâſti. Memento Domine im- 18
properii hoſtis: populus ſtolidus ad iram pro-
vocavit nomen tuũ. Ne des fracturæ animã 19
confitentem tibi, & animas pauperum tuo-
rum ne obliviſcaris in æternum. Reſpice Do- 20
mine ad fœdus tuum, quoniam impletæ ſunt
habitationes terræ tenebris & iniquitate. Ne 21
ſedeat pauper confuſus; inopes ac pauperes
laudabunt nomen tuum. Exurge Deus, & ju- 22
dica judicia tua : memórque ſis probri quo-
tidiani quod à ſtultis : Et ne obliviſcaris vo- 23
cem inimicorum tuorum, atque tumultum
eorum qui ſurgunt adverſùm te : nam aſcen-
dit omni tempore.

Laus, & initium gradûs.

PSAL. LXXV.

Aſaphi prophetæ. Theologia de Chriſto, & 1
memoratio judicii. Verſ. 22.

GRatias egimus tibi Deus, gratias egimus 2
tibi, & invocavimus nomen tuũ, & nar-
ravimus univerſa miracula tua. Quia nan- 3
ciſcar tempus & ego cum rectitudine judica-
bo, Humilietur terra & omnes habitatores 4
ejus : tu diſpoſuiſti incolas ejus.

Verſio VULG. LAT.

7 Incenderunt igni Sanctuarium tuum :
in terra polluerunt tabernaculum nominis
8 tui. Dixerunt in corde ſuo, cognatio
eorum ſimul ; Quieſcere faciamus
omnes dies feſtos Dei à terra.
9 Signa noſtra non vidimus, jam non
eſt propheta : & nos non cognoſcet
10 ampliús. Uſquequò, Deus, improperabit
inimicus : irritat adverſarius nomen
11 tuum in finem? Ut quid avertis
manum tuam, & dexteram tuam, de
12 medio ſinu tuo in finem? Deꝰ autē rex
noſter ante ſecula, operatus eſt ſalutem
13 in medio terræ. Tu confirmâſti in virtute
tua mare : contribulâſti capita
14 draconum in aquis. Tu confregiſti
capita draconis : dediſti eum eſcam
15 populis Æthiopum. Tu dirupiſti fontes,
& torrentes : tu ſiccâſti fluvios
16 Ethan. Tuus eſt dies, & tua eſt nox :
tu fabricatus es auroram & Solem.
17 Tu feciſti omnes terminos terræ: æſtatem
18 & ver tu plaſmâſti ea. Memor eſto
hujus, inimicus improperavit Domino:
& populus inſipiens incitavit nomen
19 tuum. Ne tradas beſtiis animas
confitentes tibi, & animas pauperum
20 tuorum ne obliviſcaris in finem. Reſpice
in teſtamentum tuum : quia repleti
ſunt, qui obſcurati ſunt terræ, domibus
21 iniquitatum. Ne avertatur humilis
factus confuſus: pauper & inops
22 laudabunt nomen tuum. Exurge, Deus,
judica cauſam tuam : memor eſto improperiorum
tuorum, eorum quæ ab
23 inſipiente ſunt totâ die. Ne obliviſcaris
voces inimicorum tuorum: ſuperbia
eorum, qui te oderunt, aſcendit
ſemper.

1 In finem, Ne corrumpas, Pſalmus
Cantici Aſaph. LXXIV.

2 Confitebimur tibi, Deus : confitebimur, & invocabimus nomen
3 tuum. Narrabimus mirabilia tua: Cùm
accepero tempus, ego juſtitias judicabo.
4 Liquefacta eſt terra, & omnes qui
habitant in ea : ego confirmavi columnas ejus.

Verſ GRÆC. LXX. Interp.

7 Ἐνεπύρισαν ἐν πυρὶ τὸ ἀγιαστήριόν σου εἰς τὴν
γῆν, ἐβεβήλωσαν τὸ σκήνωμα τοῦ ὀνόματός
8 σου. Εἶπαν ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτῶν, ἡ συγγένεια
αὐτῶν ἐπὶ τὸ αὐτό, Δεῦτε, καταπαύσωμεν τὰς
9 ἑορτὰς κυρίου ἀπὸ τῆς γῆς. Τὰ σημεῖα ἡμῶν
οὐκ εἴδομεν, οὐκ ἔστιν ἔτι προφήτης, καὶ ἡμᾶς οὐ
10 γνώσεται ἔτι. Ἕως πότε ὁ θεός, ὀνειδιεῖ ὁ ἐχθρός,
παροξυνεῖ ὁ ὑπεναντίος τὸ ὄνομά σου εἰς τέλος;
11 Ἱνατί ἀποστρέφεις τὴν χεῖρά σου, καὶ τὴν δεξιάν
12 σου ἐκ μέσου τοῦ κόλπου σου εἰς τέλος; Ὁ δὲ
θεὸς βασιλεὺς ἡμῶν πρὸ αἰῶνος, εἰργάσατο
13 σωτηρίαν ἐν μέσῳ τῆς γῆς. Σὺ ἐκραταίωσας ἐν
τῇ δυνάμει σου τὴν θάλασσαν, σὺ συνέτριψας
14 τὰς κεφαλὰς τῶν δρακόντων ἐπὶ τοῦ ὕδατος. Σὺ
συνέτριψας τὰς κεφαλὰς τοῦ δράκοντος, ἔδωκας
15 αὐτὸν βρῶμα λαοῖς τοῖς Αἰθίοψι. Σὺ διέρρηξας
πηγὰς καὶ χειμάρρους, σὺ ἐξήρανας ποταμοὺς
16 ἠθάμ. Σή ἐστιν ἡ ἡμέρα, καὶ σή ἐστιν ἡ
17 νύξ, σὺ κατηρτίσω ἥλιον καὶ σελήνην. Σὺ ἐποίησας
πάντα τὰ ὅρια τῆς γῆς, θέρος καὶ ἔαρ σὺ
18 ἐποίησας. Μνήσθητι ταύτης τῆς κτίσεώς σου· ἐχθρὸς
ὠνείδισε τὸν κύριον, καὶ λαὸς ἄφρων παρώξυνε
19 τὸ ὄνομά σου. Μὴ παραδῷς τοῖς θηρίοις
ψυχὴν ἐξομολογουμένην σοι, τῶν ψυχῶν
20 τῶν πενήτων σου μὴ ἐπιλάθῃ εἰς τέλος. Ἐπίβλεψον
εἰς τὴν διαθήκην σου, ὅτι ἐπληρώθησαν
21 οἱ ἐσκοτωμένοι τῆς γῆς οἴκων ἀνομιῶν. Μὴ
ἀποστραφήτω τεταπεινωμένος καὶ κατῃσχυμμένος,
πτωχὸς καὶ πένης αἰνέσουσι τὸ ὄνομά σου.
22 Ἀνάστα ὁ θεός, δίκασον τὴν δίκην σου, μνήσθητι
τῶν ὀνειδισμῶν σου τῶν ὑπὸ ἄφρονος ὅλην τὴν
23 ἡμέραν. Μὴ ἐπιλάθῃ τῆς φωνῆς τῶν ἱκετῶν σου,
ἡ ὑπερηφανία τῶν μισούντων σε ἀναβαίη διαπαντὸς πρὸς σέ.

1 Εἰς τὸ τέλος, μὴ διαφθείρῃς, ψαλμὸς ᾠδῆς
τῷ Ἀσάφ. οδʹ.

2 Ἐξομολογησόμεθά σοι ὁ θεός, ἐξομολογησόμεθα,
καὶ ἐπικαλεσόμεθα τὸ ὄνομά σου. διηγήσομαι
3 πάντα τὰ θαυμάσιά σου. Ὅταν
4 λάβω καιρόν, ἐγὼ εὐθύτητας κρινῶ. Ἐτάκη
ἡ γῆ, καὶ πάντες οἱ κατοικοῦντες αὐτήν, ἐγὼ
ἐστερέωσα τοὺς στύλους αὐτῆς. ΔΙΑΨΑΛΜΑ.

Verſ. GRÆ.LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

8 *Incenderunt in igne Sanctuarium* 7
tuum : In terra polluerunt tabernaculum
nominis tui. 9 *Dixerunt in corde* 8
ſuo, cognatio eorum ſimul ; (g) *Heus,*
quieſcere faciamus ſolennitates Domini
à terra. 10 (h) *Signa noſtra* 9
non vidimus : jam non eſt ampliùs
propheta, [c] *& nos non cognoſcet*
(i) *ampliùs.* 11 *Uſquequò, Deus,* 10
improperabit inimicus? irritabit adverſarius
nomen tuum in finem?
12 *Ut quid* [d] *avertis manum tuam,* 11
et dexteram tuam de medio ſinu tuo
in finem? 13 *Deus autem rex noſter* 12
ante ſeculum : operatus eſt ſalutem
in medio terræ. 14 *Tu confirmâſti* 13
in virtute tua mare : tu contriviſti
capita (k) *draconum in* (l) *aqua.* 15 *Tu* 14
(m) *contriviſti capita* (n) *draconis:*
dediſti eum eſcam populis Æthiopibus.
16 *Tu dirupiſti* (o) *fontes, &* 15
[c] *torrentes : tu ſiccâſti fluvios* (p)
Etham. 17 *Tuus eſt dies, & tua eſt* 16
nox : tu perfeciſti (q) *Solem, & Lunam.*
18 *Tu* (r) *feciſti* [f] *omnes* (ſ) 17
terminos terræ : æſtatem & ver tu
feciſti. 19 *Memor eſto hujus* (t) *creaturæ* 18
tuæ : inimicus improperavit
Domino : & populus imprudens exacerbavit
nomen tuum: 20 *Ne tradideris* 19
beſtiis animam confitentem
tibi : animas pauperum tuorum ne
obliviſcaris in finem. 21 *Reſpice in* 20
teſtamentum tuum : quoniam repleti
ſunt, qui obſcurati ſunt terræ, domibus
(u) *iniquitatum.* 22 *Ne avertatur* 21
(x) [g] *humilis factus, & confuſus : egenus & pauper laudabunt*
nomen tuum. 23 *Exurge, Deus,* [h] 22
judica cauſam (y) *tuam : memento*
opprobriorum tuorum, eorum quæ
ab imprudente ſunt totâ die. 24 *Ne* 23
obliviſcaris vocem (z) [i] *deprecantium*
te : ſuperbia eorum, qui te oderunt,
(aa) *aſcendat ſemper ad te.*

In finem, Ne (*a*) corrumpas, (*b*) [a] 1
Pſalmus Cantici ipſi Aſaph.

LXXIV.

1 [b] *Confitebimur tibi, Deus,* (c) 2
[c] *confitebimur, & invocabimus*
nomen tuum. 2 (d) [d] *Enarrabo omnia*
mirabilia tua : (e) *Cùm accepero* 3
[e] *tempus,* [f] *ego juſtitias*
judicabo. 3 *Liquefacta eſt terra, &* 4
omnes inhabitantes in ea : ego confirmavi
columnas ejꝰ. *DIAPSALMA.*

Verſio ÆTHIOPICA.

ወአውዐዩ ፡ በእሳት ፡ መቅደሰከ ። ወአርኰሱ ፡ 8
ማኅደረ ፡ ስምከ ፡ ውስተ ፡ ምድር ።=፡ ወይ 9
ቤሉ ፡ በልቦሙ ፡ ኅቢሮሙ ፡ በበሕዝቢሆሙ ። ን
ሑ ፡ ንሥዐር ፡ ኵሎ ፡ በዓላቲሁ ፡ ለእግዚአብሔ
ር ፡ እምድር ።=፡ ወትእምርቶሂ ፡ ኢናአም 10
ር ። ወአልቦ ፡ እንከ ፡ ነቢይ ። ወንሕነሂ ፡ ኢናአ
ምር ፡ እንከ ።=፡ እስከ ፡ ማእዜኑ ፡ እንከ ፡ እ 11
ግዚኦ ፡ ይጼእል ፡ ፀሩዊ ። ወዘልፈ ፡ ያምዕዕ ፡ ለ
ስምከ ፡ ጸላኢ ።=፡ ለምንት ፡ እግዚኦ ፡ ትመ 12
ይጥ ፡ እዴከ ። ወየማንከ ፡ ማእከለ ፡ ሕፅንከ ፡ ለ
ግሙራ ።=፡ ወእግዚአብሔር ፡ ንጉሥ ፡ ውእ 13
ቱ ፡ እምቅድመ ፡ ዓለም ። ወገብረ ፡ መድኀኒተ ፡
በማእከለ ፡ ምድር ።=፡ አንተ ፡ አጽናዕከ ፡ 14
ለባሕር ፡ በኀይልከ ። ወአንተ ፡ ሰበርከ ፡ ርእሰ ፡
ከይሲ ፡ በውስተ ፡ ማይ ። ወአንተ ፡ ቀጥቀጥ 15
ከ ፡ አርእስቲሁ ፡ ለከይሲ ። ወወሀብኮሙ ፡ ሲሳ
ዮሙ ፡ ለሕዝበ ፡ ኢትዮጵያ ።=፡ አንተ ፡ ሰጠ 16
ቀ ፡ አፍላገ ፡ ወአንቅዕተ ።=፡ ለከ ፡ ውእቱ ፡ መ 17
ዓልት ፡ ወዚአከ ፡ ሌሊት ። አንተ ፡ ፈጠርከ ፡ ፀሐ
የ ፡ ወወርኀ ።=፡ ወአንተ ፡ ገበርከ ፡ አድባረ ፡ 18
ወምድረ ፡ ኵሎ ። ክረምተ ፡ ወሐጋየ ፡ አንተ ፡
ፈጠርከ ።=፡ ወተዘከር ፡ ዘንተ ፡ ተግብረከ ። 19
ፀሩዊ ፡ ተዐየሮ ፡ ለእግዚአብሔር ። ወሕዝብ ፡
አብድ ፡ አምዕዖ ፡ ለስሙ ።=፡ ወኢትመጥ 20
ዋ ፡ ለአራዊት ፡ ነፍሰ ፡ እንተ ፡ ትገኒ ፡ ለከ ። ወኢት
ርስዕ ፡ ነፍሰ ፡ ነዳያኒከ ፡ ለዝሉፉ ።=፡ ወነጽ 21
ር ፡ ውስተ ፡ ሥርዓትከ ። እስመ ፡ በዝኁ ፡ ጽሉማ
ነ ፡ ምድር ፡ አብያተ ፡ ኀጥአን ።=፡ ኢይግባ 22
ዕ ፡ ነዳይ ፡ ተኀፊሮ ። ነዳይ ፡ ወምስኪን ፡ ይሴብ
ሑ ፡ ለስምከ ።=፡ ተንሥእ ፡ እግዚኦ ፡ ወተበ 23
ቀል ፡ በቀልየ ። ወተዘከር ፡ ዘተዐየሩከ ፡ አብደን ፡
ኵሎ ፡ አሚረ ።=፡ ኢትርሳዕ ፡ ቃለ ፡ አግብ 24
ርቲከ ። ትዝኅርቶሙ ፡ ለጸላእትከ ፡ ይዕረግ ፡
ኀቤከ ፡ በኵሉ ፡ ጊዜ ።=፡

ፍጻሜ ፡ ኢታማስን ፡ ዘአሳፍ ፡
መዝሙር ፡ ዘደዊት ።

ሮዐ እገኒ ፡ ለከ ፡ እግዚኦ ። እገኒ ፡ ለከ ፡ ወእ 1
ጼውዕ ፡ ስምከ ።=፡ ወእነግር ፡ ኵሎ ፡ ስብ 2
ሐቲከ ። ሶበ ፡ ረከብኩ ፡ ጊዜሁ ። ወአንሰ ፡ ጽ
ድቀ ፡ እኴንን ።=፡ ወተመስወት ፡ ምድር ፡ 3
ወኵሎሙ ፡ እለ ፡ ይነብሩ ፡ ውስቴታ ። ወአነ ፡ አ
ጽናዕኩ ፡ አዕማዲሃ ።=፡

INTERP. ÆTHIOP. [c] ac proinde nos non cognoſcemus [d] Domine avertis [e] torrentes : Tuus eſt dies [f] montes & univerſam terram : hyemem & æſtatem tu [g] humilis factus confuſus : [h] ſume vindictam meam: [i] ſervorum tuorum : *PSAL. LXXIV.* [a] ipſi Aſaph, Pſalmus David. [b] Confitebor [c] confitebor tibi, & invocabo [d] Et enarrabo omnem laudem tuam : [e] tempus ejus, [f] ego etiam

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

7/8 * احرقوا موضعك المقدس بالنار * نجسوا مسكن اسمك علي الارض * قال كل جنسهم في
9 قلوبهم جميعا * هلموا فلنبطل جميع اعياد الله من علي الارض * اياتنا لم نرها وليس
10 نبي موجود * ولا من يعرفنا بعد * الي متي يا الله يعير العدو المقاوم لنا * يغضب اسمك
11/12 الي الغاية * لماذا تردد يدك ويمينك من وسط حضنك الي الانقضاء * والله هو ملكنا قبل
13 الدهور * صنع خلاصا في وسط الارض * انت ثبت البحر بقوتك * انت حطمت روس التنين
14/15 في المياه * انت سحقت راس التنين * واعطيته طعاما لشعب الحبش * انت فجرت العيون
16 والاودية * انت جففت انهارا جارية * النهار هو لك * الليل ايضا هو لك * انت انشات الشمس
17/18 والقمر * انت خلقت جميع حدود الارض * الصيف والربيع انت خلقتهما * فاذكر خليقتك
19 هذه * فان العدو عير الرب * والشعب الجاهل اسخط اسمك * لا تسلم للسباع نفسا عارفة بك
20 لا تنس نفوس مساكينك الي الغاية * انظر الي عهدك * فان مظلمي الارض قد ملوا البيوت
21/22 اثما * لا يرجع المتواضع خازيا * المسكين والبائس يعبدون اسمك * قم يا الله فاحكم
23 لظلامتي * واذكر ما صنعه الجاهل من تعييراتك النهار اجمع * لا تنس صوت الذين
يدعونك * فقد ارتفع اليك تعاظم مبغضيك في كل حين * الليلويا *

1 * المزمور الرابع والسبعون * تسبحة لاساف * وعدده * ك * استيخن *
2/3 * نشكرك يا الله * ونعترف لك وندعوا اسمك ونخبر بجميع عجائبك * اذا اعطيت اجلا * فانا
4 احكم بالاستقامة * انحلت الارض وكل سكانها * انا ثبت عمدها *

* *Incenderunt locum tuum ſanctum igne :* 7
polluerunt habitaculum nominis tui ſuper
terram. Dixit totum genus eorum in cor- 8
dibus ſuis ſimul, Venite, abrogemus omnes
dies feſtos Dei de terra. Signa noſtra non 9
vidimus, & non eſt propheta exiſtens, nec
qui agnoſcat nos ampliús. Quouſque, O 10
Deus, improperabit inimicus adverſarius
nobis? irritabit nomen tuum ad extremum?
Quarè avertis manum tuam & 11
dexteram tuam de medio ſinu tuo uſque
ad conſummationem? Et Deus eſt rex no- 12
ſter ante ſecula, operatus eſt ſalutem in
medio terræ. Tu ſtitiſti mare virtute tuâ: 13
tu confregiſti capita draconis in aquis. Tu 14
contriviſti caput draconis, & dediſti eum
eſcam populo Æthiopum. Tu diſrupiſti 15
fontes & torrentes : tu ſiccâſti fluvios
decurrentes. Dies, eſt tuus : nox etiam, 16
tua eſt : tu condidiſti ſolem & lunam. Tu 17
creâſti omnes terminos terræ : æſtatem &
ver tu creâſti. Igitur memento creaturæ 18
tuæ hujus : quandoquidem inimicus improperavit
Domino, & populus inſipiens
ad iram provocavit nomen tuum. Ne tra- 19
das feris animam cognoſcentem te: ne obliviſcaris
animarum pauperum tuorum in
finem. Reſpice in pactum tuum : quoniam 20
obſcuriſſimi terræ jam impleverunt domos
iniquitate. Ne revertatur humilis 21
confuſus : pauper & inops adorabunt nomen
tuum. Exurge, O Deus, & judica 22
oppreſſionem meam : & in memoriam revoca
quales fecerit inſanus tibi injurias
die totâ. Ne obliviſcaris vocem eorum 23
qui te invocant ; jam enim aſcendit ad te
ſuperbia oſorum tuorum in omni momento.
Alleluja.

PSAL. LXXIV.
Canticū Aſapho. Et num. ver. 20. 1

Gratias agemus tibi, O Deus; & con- 2
fitebimur tibi, & invocabimus nomen
tuum, & anuntiabimus cuncta miracula
tua. Quum nanciſcar tempus, ego judi- 3
cabo cum rectitudine. Diſſoluta eſt terra 4
& omnes habitatores ejus; ego confirmavi
columnas ejus.

תהלים : עו עז

exaltetis Ne , impiis & : insaniatis Ne , insanis Dixi
5 אָמַרְתִּי לַהוֹלְלִים אַל־תָּהֹלּוּ וְלָרְשָׁעִים אַל־תָּרִימוּ
collo in loquamini: vestrum cornu excelsum in extollatis Ne .cornu
6 קָרֶן׃ אַל־תָּרִימוּ לַמָּרוֹם קַרְנְכֶם תְּדַבְּרוּ בְצַוָּאר
deserto à nec : Occidente ab & , exitu ab non Quia .præfracto
7 עָתָק׃ כִּי לֹא מִמּוֹצָא וּמִמַּעֲרָב וְלֹא מִמִּדְבַּר
hunc & ,humiliabit hunc : judicans Deus Quoniam .montium
8 הָרִים׃ כִּי־אֱלֹהִים שֹׁפֵט זֶה יַשְׁפִּיל וְזֶה
,mixto plenus,rubuit vinum &,Domini manu in calix Quia.exaltabit
9 יָרִים׃ כִּי כוֹס בְּיַד־יְהוָה וְיַיִן חָמַר מָלֵא מֶסֶךְ
omnes bibent , exprimenτ ejus fæces Veruntamen .hoc ex effudit &
וַיַּגֵּר מִזֶּה אַךְ־שְׁמָרֶיהָ יִמְצוּ יִשְׁתּוּ כֹּל
Deo cantabo : seculum in annunciabo ego Et .terræ impii
10 רִשְׁעֵי־אָרֶץ׃ וַאֲנִי אַגִּיד לְעֹלָם אֲזַמְּרָה לֵאלֹהֵי
exaltabuntur : *concidam* impiorum cornua omnia Et .Jahacob
11 יַעֲקֹב׃ וְכָל־קַרְנֵי רְשָׁעִים אֲגַדֵּעַ תְּרוֹמַמְנָה
.justi cornua
קַרְנוֹת צַדִּיק׃

PSAL. LXXVI עו

Jehudah in Notus .canticum Asaph ipsi cantus ,*modulis* in Victori
1 לַמְנַצֵּחַ בִּנְגִינֹת מִזְמוֹר לְאָסָף שִׁיר׃ 2 נוֹדָע בִּיהוּדָה
Salem in fuit Et .ejus nomen magnum Israel in : Deus
3 אֱלֹהִים בְּיִשְׂרָאֵל גָּדוֹל שְׁמוֹ׃ וַיְהִי בְשָׁלֵם
confregit Ibi .Sijon in ejus habitatio & : ejus tabernaculum
4 סֻכּוֹ וּמְעוֹנָתוֹ בְצִיּוֹן׃ שָׁמָּה שִׁבַּר
Illustris .Selah , bellum ac ,gladium &,scutum :arcus *ignita jacula*
5 רִשְׁפֵי־קָשֶׁת מָגֵן וְחֶרֶב וּמִלְחָמָה סֶלָה׃ נָאוֹר
fortes fuerunt Spoliati .*præda* montibus præ potens : tu
6 אַתָּה אַדִּיר מֵהַרְרֵי־טָרֶף׃ אֶשְׁתּוֹלְלוּ אַבִּירֵי
roboris viri omnes invenerũt non &:*suum somnum* dormitaverũt,corde
לֵב נָמוּ שְׁנָתָם וְלֹא־מָצְאוּ כָל־אַנְשֵׁי־חַיִל
,currus &,est soporatus:Jahacob Deus *tua increpatione Ab* .*suas manus*
7 יְדֵיהֶם׃ מִגַּעֲרָתְךָ אֱלֹהֵי יַעֲקֹב נִרְדָּם וְרֶכֶב
tunc ex ,*tuas facies ad* stabit quis & : *tu* terribilis Tu .equus &
8 וָסוּס׃ אַתָּה נוֹרָא אַתָּה וּמִי־יַעֲמֹד לְפָנֶיךָ מֵאָז
.quievit & timuit terra :judicium fecisti audire cœlis E ? tua *naris*
9 אַפֶּךָ׃ מִשָּׁמַיִם הִשְׁמַעְתָּ דִּין אֶרֶץ יָרְאָה וְשָׁקָטָה׃
,terræ *mansuetos* omnes *servandum ad* ,Deus judicium ad *surgendo In*
10 בְּקוּם־לַמִּשְׁפָּט אֱלֹהִים לְהוֹשִׁיעַ כָּל־עַנְוֵי־אֶרֶץ
irarum residuum :tibi confitebitur hominis *fervor* Quoniam .Selah
11 סֶלָה׃ כִּי־חֲמַת אָדָם תּוֹדֶךָּ שְׁאֵרִית חֵמֹת
:ejus *circuitus* omnes vestro Deo Domino reddite &,Vovete .accinges
12 תַּחְגֹּר׃ נִדְרוּ וְשַׁלְּמוּ לַיהוָה אֱלֹהֵיכֶם כָּל־סְבִיבָיו
terribilis : ducum spiritum *Amputabit* .terribili munus afferant
13 יוֹבִילוּ שַׁי לַמּוֹרָא׃ יִבְצֹר רוּחַ נְגִידִים נוֹרָא
.terræ regibus
לְמַלְכֵי־אָרֶץ׃

PSAL. LXXVII. עז

.cantus Asaph ipsi , Iduthun *super* Victori
1 לַמְנַצֵּחַ עַל־יְדִיתוּן לְאָסָף מִזְמוֹר׃

תרגום TARGUM.

5 אמרית למתלעבין לא תתלעבון ורשיעיא לא תרימון
6 איקר : לא תרימון למרומא איקרכון אתון די ממללין
7 בתוקפא ובנדופין : ארום לית בר מני ממדנחא ועד
מערבא ולא מן צפונא דמדבריא ומן דרומא אתר טוריא :
8 ארום אלהא דין זכי דנן ימאיך ודנן ירומם : 9 ארום כס
דלווט ביד יי וחמר עשין מלי מזיגת מררתא לטלטלא
מדעת די רשיעיא ומה דשדי מניה קשי מן דין קדמאין
ברם דורדיהא ופקטיהא ימצצון ישתון כל רשיעי ארעא :
10 ואנא אתני לעלם נסיא אשבח לאלהא דיעקב : 11 וכל
תקוף רום רשיעיא אמאיך אתלשנון מתוקפהון יתרומם
תקוף רומהון דצדיקיא :

עו

1 לשבחא בתשבחתא תשבחא על ידא דאסף שירא :
2 אתידע בדבית יהודה אלהא בדבית ישראל רב שמיה :
3 והוה בירושלם בית מקדשיה ומדור בית שכינת קודשיה
4 בציון : כד עבדו בית ישראל רעותיה אשרי שכנתיה
ביניהון תמן תבר גררין וקשתין דעמיא מגיחי קרבא
5 תריסא וסדרי קרבא בטל לעלמין : נהיר דחיל את אלהא
משבח מן בית מקדשך יזועון מן קדמך מלכיא דיתבין
6 בכרכי טוריא אתר בית כנישות בזתהון : אשלחון
מעלויהון זיני קרבא גברי לבא אתנמנמו בשנתהון ולא
7 ספיקו כל גברי חילא למיחד זיניהון בידיהון : ממזופתך
8 אלהא דיעקב דמכון ארתיכין ופרשין אתעקרו : את דחיל
9 את הוא אלהא ומן יקום קדמך מעדן דיתקוף רוגזך : מן
שמיא אשמעתא דין ארעא דעממי דחילת ארעא דישראל
10 שדוכת : אמרין צדיקיא יקום לדינא עם רשיעיא אלהא
11 למפרק מן ידיהון כל ענותני ארעא לעלמין : כד אנת
רגז על עמך אנת מרחם עליהון והנון יודון לשמך ושארא
דרתחא דאשתאר לך מן רוגזא די רגזתא תזריז לחבלא
עממיא : [ת״א ארום כד יתקוף רוגזך על עמך יתובון ויודון
לשמך ואנת תאיב מן רוגזא ברם על שאר עממיא מני רוגזא
12 תזריז] : נדרו נדרין ושלימו קדם יי אלהכון כל דיתבין
חזור חזור למקדשיה ייתון קורבניא לבית מוקדש דחיל :
13 יזער נפוחת רוחהון דרברבניא דחילא על כל מלכי
ארעא :

עז

1 לשבחא על יד ידותון לאסף תושבחא :

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Dixi ſubſannatorib⁹, Ne derideatis : & *impiis*, 5
ne extollatis cornu. Ne extollatis in excelſum 6
gloriam veſtram, vos loquentes in fortitudine & opprobriis. Quoniam non eſt ali⁹ præter me 7
ab Oriente uſq; ad Occidentem, à Septentrione *deſertorũ* & ab Auſtro loco montium. Quoniam 8
Deus eſt judex juſtus; hunc humiliabit, & illum exaltabit. Quoniam calix maledictionis 9
eſt in manu Dñi, & vinum forte, plenum mixtione amaritudinis ad tollendam ſcientiam impiorum: quod verò projecit ab illo, *durius eſt hoc priorum*: fæces autem & amurcas ej⁹ ſugent & epotabunt omnes impii terræ. Ego autem narrabo 10
in æternum miracula illa, laudabo Deum Jaacob. Et *omnem* fortitudinem excelſam impiorũ 11
humiliabo: *evellam eos* à fortitudine ſua; *exaltabitur robur* ſublimitatis *juſtorum*.

Ad laudandum in laude, Pſalmus per manum Aſaph, [*&*] canticum. PSAL. LXXVI. 1

NOtus eſt in domo Jehudah Deus; in domo 2
Iſraelis magnum nomen ej⁹. Et fuit in Jeruſalem 3
domus ſanctuarii ejus, & habitaculum majeſtatis *ſancta* ej⁹ in Sion. Quando fecit domus 4
Iſrael voluntatem ejus, locavit majeſtatem ſuam inter eos : ibi confregit ſagittas & arcus populorum præliantium: *ſcutũ*, aciéſq; belli deſtruxit in perpetuum. *Splendidus*, timendus tu 5
Deus, laudatus à domo ſanctuarii tui; contremiſcant ab aſpectu tuo reges, habitantes in arcib⁹ montium, loco dom⁹ congregationis prædæ ipſorum. Abjecerunt à ſe arma bellica fortes 6
corde, dormitarunt in *ſomno ſuo*, *&* non valuerunt omnes *viri roboris* apprehendere arma ſua manib⁹ ſuis. Ab increpatione tua Deus 7
Jaacob dormierunt, currus & equites ſunt ſubverſi. Tu timend⁹ es, *tu ipſe Deus*, & quis ſtabit 8
coram te *ex* tempore quo exarſerit furor tuus. De cœlis audiri feciſti judiciũ: terra nationum 9
timuit; [*ſed*] terra Iſrael quievit. Dicunt juſti, 10
Exurgat ad judiciũ cum impiis De⁹, ut redimat de manib⁹ eorũ omnes mites terræ in perpetuũ. Cum tu iraſceris in populũ tuũ, tu ej⁹ mifereris: 11
ipſi verò confitebuntur nomini tuo; at reliquũ furoris quod remanſit tibi ab ira qua irat⁹ fuiſti, præparabis ad diſperdendas gentes. *Targũ aliud: Nã cùm excanduerit ira tua* in populũ tuũ, *convertentur &* confitebuntur nomini tuo; *te quoq; pœnitebit iræ: at in reliquos populos arma furoris apparabis*. Vovete vota & reddite corã 12
Dño Deo veſtro: oẽs qui habitant in circuitu ſanctuarii ej⁹ adducant oblationem in domũ ſanctuarii terribilis. Comprimet tumorẽ ſpirit⁹ 13
magnatũ, [*Deus*] timend⁹ ſuper oẽs reges terræ.

Ad laudandum per manum Idutun ipſi Aſaph hymnus PSAL. LXXVII. 1

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

5 * ܐܢܬ ܐܡܪܬ ܠܫܛܝܐ ܠܐ ܬܫܛܘܢ. ܘܠܪ̈ܫܝܥܐ ܠܐ ܬܪܝܡܘܢ ܩܪܢܐ : * ܘܠܐ ܬܪܝܡܘܢ ܠܡܪܘܡܐ
6 ܩܪܢܟܘܢ. ܘܠܐ ܬܡܠܠܘܢ ܒܨܘܪܐ ܙܩܝܦܐ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܡܦܩܢܐ ܡܢ ܡܥܪܒܐ. ܘܐܦܠܐ ܡܢ ܡܕܒܪܐ 7
8 ܕܛܘܪܐ : * ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܗܘ ܕܝܢܐ. ܠܗܢܐ ܡܡܟܟ ܘܠܗܢܐ ܡܪܝܡ : * ܡܛܠ ܕܟܣܐ ܒܐܝܕܗ 9
ܕܡܪܝܐ. ܘܡܠܐ ܡܙܓܐ ܕܚܡܪܐ ܥܟܝܪܐ : ܘܐܪܟܢ ܡܢ ܗܢܐ ܠܗܢܐ. ܛܠܦܗ ܢܡܨܘܢ ܘܢܫܬܘܢ
10 ܟܠܗܘܢ ܪ̈ܫܝܥܐ ܕܐܪܥܐ : * ܘܐܢܐ ܐܚܐ ܠܥܠܡ. ܘܐܙܡܪ ܠܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ : * ܘܟܠܗܘܢ ܩܪ̈ܢܬܐ 11
ܕܪ̈ܫܝܥܐ ܐܓܕܘܥ. ܘܢܬܥܠܝܢ ܩܪ̈ܢܬܗܘܢ ܕܙܕܝܩܐ.
* ܡܙܡܘܪܐ ܕܥܗ *

1 * ܕܐܣܦ. ܟܕ ܐܬܚܪܒܬ ܪܒܬ ܕܒ̈ܢܝ ܥܡܘܢ. ܘܬܘܒ ܡܚܘܐ ܬܒܥܬܐ ܕܕܝܢܗ ܕܡܫܝܚܐ
ܥܠ ܪ̈ܫܝܥܐ. ܦܬܓ̈ܡܐ ܟܐ. * ܝܕܝܥ ܒܝܗܘܕܐ ܐܠܗܐ. ܘܒܐܝܣܪܝܠ ܪܒ ܫܡܗ : 2
3 * ܘܗܘܐ ܒܫܠܝܡ ܡܛܠܠܗ. ܘܡܥܡܪܗ ܒܨܗܝܘܢ : * ܬܡܢ ܬܒܪ ܕܪ̈ܥܐ ܕܩܫ̈ܬܐ. ܙܝܢܐ 4
ܘܣܝܦܐ ܒܩܪܒܐ : * ܕܠܦܐ * * ܢܗܝܪ ܐܢܬ ܘܡܫܝܚ ܡܢ ܛܘܪܟ ܚܣܝܢܐ. 5
6 * ܐܬܕܠܚܘ ܟܠܗܘܢ ܣܟ̈ܠܝ ܠܒܐ : ܘܕܡܟܘ ܫܢܬܗܘܢ ܓܢ̈ܒܪܐ ܚܝܠܬܢ̈ܐ. ܘܠܐ ܐܫܟܚܘ
7 ܐܝ̈ܕܝܗܘܢ. * ܡܢ ܟܐܬܟ ܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ : ܢܕܡܘ ܪ̈ܟܒܝ ܪ̈ܟܫܐ * ܘܐܢܬ ܕܚܝܠ ܐܢܬ. ܡܢܘ 8
9 ܢܩܘܡ ܩܕܡܝܟ ܒܗܢܐ ܪܘܓܙܐ : * ܡܢ ܫܡܝܐ ܐܫܡܥܬ ܕܝܢܐ. ܐܪܥܐ ܚܙܬ ܘܐܬܬܙܝܥܬ : * ܟܕ
10 ܩܐܡ ܐܠܗܐ ܠܕܝܢܐ. ܘܠܡܦܪܩܘ ܠܟܠܗܘܢ ܡܣܟ̈ܢܐ ܕܐܪܥܐ : * ܡܛܠ ܕܬܪܥܝܬܗ ܕܒܪܢܫܐ 11
12 ܬܘܕܐ ܠܟ. ܘܫܪܟܐ ܕܚܡܬܗ ܢܥܒܪ ܪܘܓܙܐ : * ܢܕܪܘ ܘܦܪܘܥܘ ܠܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ. ܟܠ
13 ܕܚܕܪܝܢ ܠܗ ܢܝܬܘܢ ܩܘܪ̈ܒܢܐ ܠܕܚܝܠܐ : * ܕܡܟܟ ܪܘܚܐ ܕܫ̈ܠܝܛܢܐ ܘܕܚܝܠ
ܥܠ ܡܠܟ̈ܐ ܕܐܪܥܐ : * ܡܙܡܘܪܐ ܕܥܘ *

1 * ܕܐܣܦ. ܥܠ ܡܓܪܬ ܪܘܚܗ ܕܐܠܗܐ ܘܥܠ ܬܕܡܪ̈ܬܗ. ܘܐܝܟܢܐ ܙܟܐ
ܕܘܝܕ ܠܒܥܠܕܒ̈ܒܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܦܬܓ̈ܡܐ ܡܒ.

Tu dixiſti ſtultis, Ne deſipiatis: & impiis, Ne 5
attollatis cornu, Et ne attollatis in ſublime 6
cornu veſtrum, neve loquamini collo erecto. Nam non eſt evaſio ab Occidente, neq; à de- 7
ſerto montium : Siquidem Deus eſt judex : 8
hunc deprimit, illum autem extollit. Nam 9
calix in manu Domini, & plenus eſt miſtione vini fæculenti : inclinavit ab hoc ad illum, fæcem ejus exugent ac bibent omnes impii terræ. Ego verò vivam in æternum, & can- 10
tabo Deo Jacob. Et omnia cornua impiorum 11
præcidam, & extollentur cornua juſtorum.

PSAL. LXXVI.

Aſaphi. Quum vaſtata fuit Rabbath filiorum Amnon. Præterea indicat ultionem judicii Chriſti adverſus impios. Verſ. 21. 1

NOtus eſt in Judha Deus, & in Iſrael ma- 2
gnum nomen ejus. Erit in Salim taber- 3
naculum ejus, & habitatio illius in Sion. Ibi 4
confregit brachia arcuum, arma, & gladium in bello. * *Diapſalma.* * Splendens es & 5
unguentis delibutus de monte tuo Potentiſſime; Conturbati ſunt omnes inſipientes cor- 6
de, & dormierunt ſomnum ſuum viri magnanimi, & non potuerunt manus eorum, Ob 7
increpationem tuam Deus Jacob. Conſopiti ſunt conſcendentes equos : Et tu terribilis es, 8
quis conſiſtat coram te in tali iracundia? De 9
cœlo audire feciſti judicium : terra vidit & expavit, Cùm exurget Deus ad judicandum, 10
& ad ſalvandos omnes pauperes terræ. Nam 11
conſilium hominis confitebitur tibi, & reſiduum furoris ejus amovebit iram. Vovete & 12
perſolvite Domino Deo veſtro; omnes qui circumaſſiſtunt illi, afferant munera terribili. Deprimenti ſpiritum principum, & metuendo regibus terræ. 13

PSAL. LXXVII.

Aſaphi. De longanimitate Dei, & miraculis ejus. Et quomodo vicerit David inimicos Domini. Verſus 42. 1

Verſio VULG. LAT.

5 Dixi iniquis, Nolite iniquè agere: &
delinquentibꝰ, Nolite exaltare cornu.
6 Nolite extollere in altũ cornu veſtrũ:
nolite loqui adverſùs Deũ iniquitatẽ.
7 Quia neq; ab Oriente, neq; ab Occidente,
8 neq; à deſertis mõtibꝰ: Quoniã
Deꝰ judex eſt. Hunc humiliat, & hunc
9 exaltat: Quia calix in manu Dñi vini
meri plenus miſto. Et inclinavit ex hoc
in hoc: veruntamen fæx ejus non eſt
exinanita: bibent omnes peccatores
10 terræ. Ego autem annuntiabo in ſeculum:
11 cantabo Deo Jacob. Et omnia
cornua peccatorum confringam: &
exaltabuntur cornua juſti.

1 In finem, in Laudibus, Pſalmus Aſaph,
Canticum ad Aſſyrios. LXXV.

2 Notus in Judæa Deus: in Iſrael magnum
3 nomen ejus. Et factus eſt in
pace locus ejus: & habitatio ejus in
4 Sion. Ibi confregit potentias arcuum,
5 ſcutum, gladium, & bellum. Illuminans
tu mirabiliter à montibus æternis:
6 Turbati ſunt omnes inſipientes
corde. Dormierunt ſomnum ſuum: &
nihil invenerunt omnes viri divitiarum
7 in manibus ſuis. Ab increpatione
tua, Deus Jacob, dormitaverunt qui aſcenderunt
8 equos. Tu terribilis es, &
9 quis reſiſtet tibi? ex tunc ira tua. De
cœlo auditum feciſti judicium: terra
10 tremuit & quievit, Cùm exurgeret in
judicium Deꝰ, ut ſalvos faceret omnes
11 manſuetos terræ. Quoniam cogitatio
hominis confitebitur tibi: & reliquiæ
cogitationis diem feſtum agent tibi.
12 Vovete, & reddite Domino Deo veſtro,
omnes qui in circuitu ejus affertis
13 munera, Terribili Et ei qui aufert ſpiritum
principum, terribili apud
reges terræ.

In finem, pro Idithun, Pſalmus
Aſaph. LXXVI. 1

Verſ. GRÆC. LXX. Interp.

5 Εἶπα τοῖς παρανομοῦσι, μὴ παρανομεῖν, καὶ τοῖς
6 ἁμαρτάνουσι, Μὴ ὑψοῦτε κέρας. Μὴ ἐπαίρετε
εἰς ὕψος τὸ κέρας ὑμῶν, μὴ λαλεῖτε κατὰ τοῦ Θεοῦ
7 ἀδικίαν. Ὅτι οὔτε ἀπὸ ἐξόδων, οὔτε ἀπὸ δυσμῶν,
8 οὔτε ἀπὸ ἐρήμων ὀρέων, Ὅτι ὁ Θεὸς κριτής
9 ἐστι· τοῦτον ταπεινοῖ, καὶ τοῦτον ὑψοῖ. Ὅτι
ποτήριον ἐν χειρὶ κυρίου, οἴνου ἀκράτου πλῆρες κεράσματος·
καὶ ἔκλινεν ἐκ τούτου εἰς τοῦτο, πλὴν
ὁ τρυγίας αὐτοῦ οὐκ ἐξεκενώθη· πίονται πάντες
10 οἱ ἁμαρτωλοὶ τῆς γῆς. Ἐγὼ δὲ ἀγαλλιάσομαι
11 εἰς τὸν αἰῶνα, ψαλῶ τῷ Θεῷ Ἰακώβ. Καὶ πάντα
τὰ κέρατα τῶν ἁμαρτωλῶν συγκλάσω, καὶ ὑψωθήσεται
τὰ κέρατα τοῦ δικαίου.

1 Εἰς τὸ τέλος ἐν ὕμνοις, ψαλμὸς τῷ Ἀσάφ·
ᾠδὴ πρὸς τὸν Ἀσσύριον. οε΄.

2 Γνωστὸς ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ ὁ Θεός, ἐν τῷ Ἰσραὴλ
3 μέγα τὸ ὄνομα αὐτοῦ. Καὶ ἐγενήθη ἐν εἰρήνῃ
ὁ τόπος αὐτοῦ, καὶ τὸ κατοικητήριον αὐτοῦ ἐν
4 Σιών. Ἐκεῖ συνέτριψε τὰ κράτη τῶν τόξων, ὅπλον
καὶ ῥομφαίαν καὶ πόλεμον. ΔΙΑΨΑΛΜΑ.
5 Φωτίζεις σὺ θαυμαστῶς ἀπὸ ὀρέων αἰωνίων,
6 Ἐταράχθησαν πάντες οἱ ἀσύνετοι τῇ καρδίᾳ·
ὕπνωσαν ὕπνον αὐτῶν, καὶ οὐχ εὗρον οὐδὲν πάντες
7 οἱ ἄνδρες τοῦ πλούτου ταῖς χερσὶν αὐτῶν. Ἀπὸ ἐπιτιμήσεώς
σου ὁ Θεὸς Ἰακώβ, ἐνύσταξαν οἱ ἐπιβεβηκότες
8 τοὺς ἵππους. Σὺ φοβερὸς εἶ, καὶ τίς
9 ἀντιστήσεταί σοι ἀπὸ τῆς ὀργῆς σου; Ἐκ τοῦ
οὐρανοῦ ἠκούτισας κρίσιν, γῆ ἐφοβήθη καὶ ἡσύχασεν,
10 Ἐν τῷ ἀναστῆναι εἰς κρίσιν τὸν Θεόν,
τοῦ σῶσαι πάντας τοὺς πραεῖς τῇ καρδίᾳ.
11 ΔΙΑΨΑΛΜΑ. Ὅτι ἐνθύμιον ἀνθρώπου ἐξομολογήσεταί
σοι, καὶ ἐγκατάλειμμα ἐνθυμίου
12 ἑορτάσει σοι. Εὔξασθε καὶ ἀπόδοτε κυρίῳ τῷ
Θεῷ ἡμῶν, πάντες οἱ κύκλῳ αὐτοῦ οἴσουσι δῶρα
13 τῷ φοβερῷ Καὶ ἀφαιρουμένῳ πνεύματα ἀρχόντων,
φοβερῷ παρὰ τοῖς βασιλεῦσι τῆς
γῆς.

1 Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ Ἰδιθοὺν ψαλμὸς τῷ
Ἀσάφ. ος΄.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

4 Dixi iniquis, Nolite iniquè agere: 5
& delinquentibus, Nolite exaltare
cornu [g]. 5 Nolite (f) extollere in 6
altum cornu veſtrum: Nolite loqui
adverſùs Deum iniquitatẽ. 6 Quoniam 7
neque ab Oriente, neq. ab Occidente,
neque à deſertis montium.
Quoniam Deus judex eſt: 7 Hunc 8
humiliat, & hunc exaltat: Quia calix 9
in manu Domini [h] vini meri
plenus miſto. 8 Et [i] inclinavit ex
hoc in (g) hunc: Veruntamen (h) [k]
fæx ejus non eſt exinanita: bibent omnes
peccatores terræ. 9 Ego autem 10
in ſeculum (i) gaudebo: pſallam Deo
Jacob. 10 Et omnia cornua peccatorum 11
(k) confringam: & exaltabuntur
cornua (l) juſti.

In finem, [a] in hymnis, Pſalmus ipſi 1
Aſaph, Canticum ad (a) Aſſyrium.
LXXV.

1 Notus in Judæa Deꝰ, in Iſrael 2
magnum nomen ejus. 2 Et 3
factus eſt in pace locus ejus: & habitatio
ejus in Sion. 3 Ibi confregit 4
(**) potentias arcuũ, ſcutũ, et gladium,
& [b] bellum, DIAPSALMA.
4 (b) Illuminas tu mirabiliter à mõtibus 5
æternis: Turbati ſunt omnes 6
inſipientes corde. 5 Dormierunt ſomnũ
ſuũ, et nihil invenerunt omnes
viri divitiarum (c) manibus ſuis.
6 (d) Ab increpatione tua, Deus Jacob, 7
dormitaverunt [c], qui aſcenderunt
equos. 7 Tu terribilis es: et quis 8
(c)[d] reſiſtet tibi ab ira tua? 8 De 9
cœlo (f) auditum feciſti judicium:
terra timuit, & quievit: 9 Cùm exurgeret 10
in judicium Deus; ut ſalvos
faceret omnes (g) mites corde. DIAPSALMA.
10 (b) Quoniam [e] 11
cogitatio hominis confitebitur tibi:
& reliquiæ cogitationis diem feſtum
agent tibi. 11 Vovete, & reddite 12
Domino Deo (i) noſtro. Omnes qui
in circuitu ejus, afferent munera:
Terribili, Et ei, qui aufert (k) ſpiritus 13
principum: terribili apud reges terræ.

In finem, pro (a) Idithum, Pſalmus 1
ipſi Aſaph. LXXVI.

Verſio ÆTHIOPICA.

ወእቤሎሙ፡ ለኃጥኣን፡ ኢይኤብሱ፡፡ወእለሂ፡ 4
ይኤብሱ፡ኢያንሥኡ፡ ቀርኖሙ፡፡፨ ወኢያን 5
ሥኡ፡ ቀርኖሙ፡ ውስተ፡ አርያም፡፡ወኢይንብ
ቡ፡ዐመፃ፡ላዕለ፡እግዚአብሔር፡፡፨ እስመ፡ 6
ኢእምጽባሕ፡ወኢእምዐረብ፡ ወኢእምአድባ
ረ፡ገደም፡እስመ፡እግዚአብሔር፡መኰንን፡ውእ
ቱ፡፡፨ ዘንተ፡ ያኀስር፡ ወዘንተ፡ ያከብር፡፡እ 7
ስመ፡ ጽዋዕ፡ ውስተ፡ እደ፡ እግዚአብሔር፡፡ወ
ይን፡ዘኢኮነ፡ቱሱሐ፡ዘምሉእ፡ ቅድሐቴ፡፡፨
ወሶጦ፡እምዝንቱ፡ውስተ፡ዝንቱ፡፡ወባሕቱ፡ጣ 8
ሕሉዪ፡ኢይትከዐው፡፡ወይሰትይዎ፡ኵሎሙ፡ኃ
ጥኣነ፡ ምድር፡፡፨ ወአንሰ፡እትፌሣሕ፡ለዓለ 9
ም፡፡ወእዜምር፡ለአምላከ፡ያዕቆብ፡፡፨ ወ 10
እሰብር፡ አቅርንተ፡ ኃጥኣን፡፡ወይትሌዐል፡ አ
ቅርንተ፡ጻድቃን፡፡፨

ፍጻሜ፡መዝሙር፡ዘአሳፍ፡ማሕሌት፡
ዘበእንተ፡አሶርዮን፡፡

ሮቱ ተዐውቀ፡ እግዚአብሔር ፡ በይሁደ፡፡ወዐ 1
ቢይ ፡ ስሙ ፡ በእስራኤል፡፡፨ ወነበረ ፡ በሰላ 2
ም፡ብሔሮ፡፡ወማኅደሪሁ፡ ውስተ፡ጽዮን፡፡፨
ወበህየ፡ ሰበረ፡ ኀይለ፡ ቀስት፡፡ወልታ፡ወኵናተ፡ 3
ወፀባዓት፡፡ወበህየ ፡ ሰበረ ፡ አቅርንተ፡፡፨ አ 4
ንተ፡ ታበርህ ፡ መንክረ፡፡እምአድባር ፡ ዘለዓለ
ም፡፡ደንገፁ፡ኵሎሙ፡ አብዳን፡ ልብ፡፡፨ ወ 5
ሖለሙ፡ ሕልመ ፡ ወአልቦ ፡ ዘረከቡ፡፡ኵሉ፡ሰ
ብእ ፡ ለብዕል ፡ እደዊሁ፡፡፨ እምተግሣጽ 6
ከ፡ አምላከ፡ ያዕቆብ፡፡ደቀሱ፡ ኵሎሙ፡እለ፡
ይጼእኑ ፡ አፍራሰ፡፡፨ ወአንተሰ ፡ ግሩም፡ 7
አንተ፡፡ ወመኑ ፡ ይትቃወሞ ፡ ለመዐትከ፡፡፨
እምሰማይ ፡ ታጸምእ፡ ፍትሐ፡፡ምድርኒ፡ፈር 8
ሀት፡ ወአርመመት፡፡፨ ሶበ፡ ተንሥአ፡እግዚ 9
አብሔር ፡ ለኰንኖ፡፡ከመ ፡ ያድኅኖሙ ፡ ለኵ
ሉ ፡ የዋሃነ ፡ ልብ፡፡፨ እስመ ፡ እምፈቃዱ፡ 10
የአምንከ ፡ ሰብእ ፡፡ ወእምተረፈ ፡ ሕሊናሆ
ሙ፡ ይገብር ፡ በዓለከ፡፡፨ ብፅዑ ፡ ወሀቡ፡ለ 11
እግዚአብሔር ፡ አምላክነ፡፡ ወኵሎሙ፡እለ፡
አውዱ፡ ያበውኡ ፡ አምኃ፡፡፨ ለግሩም፡ ዘ 12
ያወፅእ ፡ ነፍሶሙ ፡ ለመሳፍንት ፡፡ ወይገርም፡
እምነገሥተ፡ምድር፡፡

ፍጻሜ፡ዘበእንተ፡ኢዶትም፡መዝሙ
ር፡ዘአሳፍ፡፡

INTERP. ÆTHIOP. [g] veſtrum. [h] vini nequaquam mixti, & plenus hauſtus ejus. [i] effundit illud ex [k] turbidum vinum ejus non eſt effuſum: & bibent illud omnes PSAL. LXXV. [a] Pſalmus ipſi Aſaph, [b] bellum: & ibi confregit cornua. [c] omnes, qui [d] reſiſtet iræ tuæ? [e] cùm cogitaverit homo confitebitur

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* قلت لمخالفي الناموس لا تخالفوا الناموس * وللخطاة لا ترفعوا قرنكم * ولا تنصبوا قرنكم 5 6
الى العلو * ولا تتكلموا على الله ظلما * فانه لا من المخارج ولا من المغارب * ولا من الجبال 7
البرية * بل هو الله الديان * يضع من يشاء ويرفع من يشاء * وان بيد الرب كاسا * مملوء خمرا 8 9
صرفا ممزوجة * ويميل من هذا الى هذا * لكن عكرها لم يهرق * يشربه جميع خطاة الارض * وانا 10
ابتهج الى الابد * وارتل لاله يعقوب * واحطم جميع قرون الخطاة * ويرتفع قرن الصديق * 11
اللّيلويا *

Dixi prævaricatoribus, Ne prævaricemini legem: & peccatoribus, Ne attollatis cornu veſtrum. 5
Et ne erigatis cornu veſtrum in altum: & ne loquamini de Deo ſceleſtè. 6
Nam non ab Oriente, neque ab Occidente, neque à montibus deſertis, 7
Sed ipſe eſt Deus judex: humiliat quem vult, & exaltat quem vult. 8
Et verò in manu Domini calix plenus vino puro temperato, & inclinatur ab hoc ad hunc: verùm fæx ejus non eſt effuſa: bibent eam omnes peccatores terræ. 9
At ego exultabo in æternum, & pſallam Deo Jacob. 10
Et confringam omnia cornua peccatorum, et exaltabitur cornu juſti. Alleluja. 11

* المزمور الخامس والسبعون * لاساف تسبحة لاجل الحبيب * 1
* وعدده * كد * استيخن *

PSAL. LXXV.

Aſapho canticum pro dilecto. 1
Et num. ver. 24.

* الله ظاهر في اليهودية * وعظيم اسمه في اسرائيل * صار موضعه في السلامة * وفي صهيون 2 3
مسكنه * هناك كسر عز القسي والسلاح والسيوف والحرب * انت تضيء عجيبا من الجبال 4 5
الدهرية * اضطرب جميع الذين لا يفهمون بقلوبهم * ونام الرجال الاشدا * ولم يقدروا على 6
تحدل ايديهم * من سخطك يا اله يعقوب * نعس ركاب الخيل * انت مرهوب فمن يقدر ان 7 8
يقاومك * منذ الزمان غضبك كاين * سمعت حكما من السماء * فزعت الارض وسكنت * عند 9 10
ما يقوم الله للحكم * ويخلص جميع ودعاء الارض * لان ضمير الانسان يعترف لك * ويتعبد 11
لك في سر * انذروا واوفوا الرب الهنا كل الطالبين له * ياتون بالقرابين المخشي * ونازع ارواح 12 13
السلاطين * المرهوب عند جميع ملوك الارض * اللّيلويا *

Deus manifeſtus eſt in Judæa, et magnum eſt nomen ejus in Iſraële. 2
Factus eſt locus ejus in pace, & in Sion habitaculum ejus. 3
Ibi confregit fortitudinem arcuum, & armorum, & gladiorum, & belli. 4
Tu ſplendes mirabiliter è montibus æternis. 5
Conturbati ſunt omnes qui non intelligunt cordibus ſuis, & dormierunt viri fortes, nec potuerunt implere manus ſuas. 6
Ob furorem tuum, O Deus Jacob, dormitaverunt aſcenſores equorum. 7
Tu es terribilis, & quis poteſt reſiſtere tibi? ab intervallo ira tua viget. 8
Audire feciſti judicium de cœlo; & expavit terra, & quievit; 9
Quando exurget Deus ad judicium & ad ſalutem omnium manſuetorum terræ. 10
Quoniam mens hominis confitebitur tibi, & ſubjicietur tibi in ſecreto ſuo. 11
Vovete & ſolvite Domino Deo noſtro omnes quærentes eum: afferant ſacrificia Tremendo, 12
Et eripienti ſpiritus Imperatorum, metuendo apud omnes reges terræ. Alleluja. 13

* المزمور السادس والسبعون * لاساف * وعدده * كج * استيخن * 1

PSAL. LXXVI.

Aſapho. Et num. ver. 43. 1

תהלים : עח

.me ad auſcultando & ,Deum ad mea vox : clamabo & ,Deum ad mea Vox
קולי אל־אלהים ואצעקה קולי אל־אלהים והאזין אלי : 2
non & , defluxit nocte mea *manus* , quæſivi Dominum meæ anguſtiæ die In
ביום צרתי אדני דרשתי ידי לילה נגרה ולא 3
: *tumultuabor* & , Dei Recordabor .mea anima conſolari renuit : *ſe remiſit*
תפוג מאנה הנחם נפשי : אזכרה אלהים ואהמיה 4
vigilias Tenuiſti .Selah , meus ſpiritus *involvetur &* ; *meditabor*
אשיחה ותתעטף רוחי סלה : אחזת שמרות 5
: principio à dies Supputavi .loquar non & ,ſum *quaſſatus* ;meorum oculorum
עיני נפעמתי ולא אדבר : חשבתי ימים מקדם 6
meo corde cum nocte in , mei *moduli Recordabor* .ſeculorum annos
שנות עולמים : אזכרה נגינתי בלילה עם־לבבי 7
: Dominus ſe elongabit ſecula in Nunquid .meus ſpiritus *perveſtigabit &* ,*meditabor*
אשיחה ויחפש רוחי : הלעולמים יזנח אדני 8
: ejus miſericordia *æternum in deſiit* Nunquid ? ultrà *velle* addet non &
ולא־יסיף לרצות עוד : האפס לנצח חסדו 9
eſt oblitus Nunquid ? generationem & , generatione in , eloquium eſt conſumptum
גמר אמר לדר ודר : השכח 10
meum infirmari dixi Et .Selah ? ſuas miſericordias *naſo* in clauſit num : Deus miſereri
חנות אל אם־קפץ באף רחמיו סלה : ואמר חלותי 11
quondam à recordabor quia : *Jah ſtudiorum* Recordabor .excelſi dexteræ *anni* : *ipſum*
היא שנות ימין עליון : אזכיר מעללי־יה כי־אזכרה מקדם 12
.*fabor* tuis *ſtudiis in* & : tuis operibus omnibus in meditabor Et .*tui miraculi*
פלאך : והגיתי בכל־פעלך ובעלילותיך אשיחה : 13
Deus Tu ? Deus ſicut ,magnus Deus Quis .tua via ſanctitate in Deus
אלהים בקדש דרכך מי־אל גדול כאלהים : אתה האל 14
15 brachio in Redemiſti .tuam fortitudinem populis in feciſti ſcire : mirabile *faciens*
עשה פלא הודעת בעמים עזך : גאלת בזרוע 16
, Deus aquæ te Viderunt .Selah , Joſeph & , Jahacob filios :tuum populum
עמך בני־יעקב ויוסף סלה : ראוך מים אלהים 17
aquas *Inundaverunt* .voragines ſunt commotæ etiam : *parturierunt*,aquæ te viderunt
ראוך מים יחילו אף ירגזו תהמות : זרמו מים 18
tui tonitrui Sonitus .*ibunt tuæ ſagittæ* etiam : *ætheres* dederunt *vocem* ,nubes
עבות קול נתנו שחקים אף־חצציך יתהלכו : קול רעמך 19
mari In .terra contremuit &,eſt commota : orbem fulgura illuminârunt,*rotunditate* in
בגלגל האירו ברקים תבל רגזה ותרעש הארץ : בים 20
Duxiſti .agnita ſunt non tua *veſtigia* & : multis aquis in tuæ ſemitæ & , tua via
דרכך ושביליך במים רבים ועקבותיך לא נדעו : נחית 21
.Aharon & , Moſeh *manu in* : tuum populum *pecus* ſicut
כצאן עמך ביד־משה ואהרן :

PSAL. LXXVIII. עח

eloquia ad veſtram aurē inclinate:meā legē mi popul⁹ Auſculta .Aſaph ipſi *Eruditio*
משכיל לאסף האזינה עמי תורתי הטו אזנכם לאמרי־ 1
Quæ .*quondam* à ænigmata *ſcaturiam* : meum os parabola in Aperiam .mei oris
פי : אפתחה במשל פי אביעה חידות מני־קדם : אשר 2 3
.nobis narraverunt noſtri patres & : *ea* cognovimus &,audivimus
שמענו ונדעם ואבותינו ספרו־לנו :

תרגום TARGUM.

2 קלי קדם יי ואקבל קלי קדם אלהא ואצית
3 מימרי : ביום עקתי אולפן מן קדם יי תבעית שרת
עלי נבואה בליליא ולנת עיני דמעתא ולא
4 תפוג סריבת לאתנחמא נפשי : אדכר אלהא
וארגוש קדם יי אמלל ותשתלהי רוחי לעלמין :
5 אחדתא תימורתא דעיני אטרפית ולא אמלל :
6 מניתי יומין טבין דמן לקדמין שניא טביא דמן
7 עלמין : אדכר תושבחתי בליליא עם הרהורי
8 לבבי אמלל ויבלש נסיא מנדע דרוחי : האפשר
די לעלמין ירחק יי ולא יוסיף לאתרעיא תוב :
9 האפשר די פסק לעלמין טוביה שלים פתגם
10 דביש על כל דר ודר : האפשר דאתנשי לחיסא
אלהא אין סליק ברוגזיה מן למכמר רחמוי
11 לעלמין : ואמרית מרעותי היא אשתניו גבורת
ימין עלאה : [תא ואמרית בעותי היא שנין דקץ
12 מימין] : אדכר עובדי אלהא ארום אדכר מן
13 לקדמין פרישותך : ורננית בכל עובדך טביא
14 ובתסקופי נסיך אמלל : אלהא דקדישין אורחתך
15 מן אלהא רבא כאלהא דישראל : את הוא
אלהא עביד פרישן הודעת בעמיא עושנך :
16 פרקתא בגבורת אדרעך עמך בניא דאוליד יעקב
17 וזן יוסף לעלמין : חמון שכנתך בגו ימא אלהא
חמון גבורתך על ימא רתתון עמיא לחוד
18 אתרגוון תהומיא : אחיתו מיא ענני שמיא קלין
יהבו שחקי לחוד כפי גררך אולין ומשתלהבין :
19 קל אכליותך בגלגלא אשתמע אנהירו ברקין
20 תבל רגזת ואתרגיפת ארעא : בימא דסוף אורחך
וכבשך במין סגיעין ורושמת פסיעתך לא
21 אתידעו : דברתא היך ענא עמך ביד משה
ואהרן :

עח

1 שכלא דרוח קודשא על ידוי דאסף אצירת עמי
2 אוריתי אצלון אודניכון למימרי פומי : אפתח
3 במתל פומי אביע חדון דמן לקדמין : די שמענן
וידענן להון ואבהתן תניאו לנא :

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Vox mea coram *Domino*, & clamabo voce mea coram Deo, & *attendit* verbo meo. In die afflictionis meæ eruditionem ab aſpectu Domini quæſivi : habitavit autem ſuper me *prophetia* ; nocte ſtillavit oculus me⁹ lachrymas, nec ceſſabit ; renuit conſolationem accipere anima mea. Recordabor Dei & tumultum edam : coram Dño *loquar*, & laſſabitur ſpirit⁹ meus in æternum. Apprehendiſti palpebras oculorum meorum : corrept⁹ ſum, & non loquar. Numeravi dies bonos à principio, annos felicitatis à ſeculis. Recordabor laudis meæ in nocte ; cùm cogitationib⁹ cordis mei loquar, & inquiret res mirandas ſcientia ſpiritus mei. Nunquid poſſibile eſt ut in æternum aſpernetur Dñs ; ut non apponat ut bene velit ulteriùs? Nunquid poſſibile eſt ut defecerit in æternum ſua benignitas : atq; completum fuerit verbū malum ſuper omnem generationem & generationem? Nunquid eſt poſſibile ut oblit⁹ ſit miſereri Deus ; ſi ira percitus eſt, ut non incaleſcant miſericordiæ ejus in æternum ? Et dixi, Infirmitas mea hæc : mutatio potentis dexteræ excelſi. *Targum aliud* : Et dixi, *Petitio* mea hæc : *anni finis à dextera*. Recordabor operum *Dei*, quapropter memor ero ab initio mirabilium tuorum. Meditatus autem ſum in omnib⁹ operibus tuis optimis, & de adinventionib⁹ miraculorum tuorū loquar. De⁹ quàm ſanctæ ſunt viæ tuæ ! quis Deus magn⁹ ſicut Deus Iſrael ? Tu es ipſe De⁹ faciens miranda : notā feciſti in populis fortitudinē tuā. Redemiſti potentia brachii tui populū tuum ; filios quos genuit Jaacob, & enutrivit Joſeph in ſecula. Viderunt majeſtatem tuam *in* medio maris Deus, viderunt virtutem tuam ſuper mare ; contremiſcentibus populis, nec non interturbatis abyſſis. Effuderunt aquas nubes cœlorum, voces dederunt æthera, ſed & ſpicula ſagittarum tuarū diſcurrebant & accendebantur. Vox tonitrui tui in rota audita eſt : illuminaverūt coruſcationes orbē : infremuit, et commota eſt terra. In mari Suph via tua, & ſemitæ tuæ in aquis multis, & veſtigia greſſuū tuorum non ſunt agnita. Deduxiſti ſicut oves populū tuum per manū Moſſeh & Aharon. 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21

Intellect⁹ Spirit⁹ ſancti per manū Aſaph. 1

PSAL. LXXVIII.

Auſculta popule mi legem meam, inclinate aures veſtras ad verba oris mei. Aperiā in parabola os meū ; eloquar ænigmata, quæ fuerūt à principio. Quæ audivim⁹ & quæ cognovim⁹, & patres noſtri nunciaverūt nobis. 2 3

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

2 * ܒܩܠܝ ܠܘܬ ܐܠܗܐ ܩܥܝܬ ܘܫܡܥܢܝ. ܘܐܪܝܡܬ ܩܠܝ ܠܘܬܗ ܘܥܢܢܝ : * ܒܝܘܡܐ
3 ܕܐܘܠܨܢܝ ܠܡܪܝܐ ܒܥܝܬ. ܘܐܝܕܗ ܒܠܠܝܐ ܢܓܕܬܢܝ ܘܠܐ ܫܠܝܬ : ܘܠܝܬ ܕܡܒܝܐܢܐ ܠܢܦܫܝ.
4 5 * ܐܬܕܟܪܬ ܠܐܠܗܐ ܘܐܬܕܠܚܬ : ܘܪܢܝܬ ܘܐܬܬܙܝܥܬ ܪܘܚܝ. * ܘܐܚܕܘ ܣܘܚܪܢܐ ܒܥܝܢܝ : ܫܬܩܬ
6 ܘܠܐ ܡܠܠܬ. * ܐܬܚܫܒܬ ܝܘܡܬܐ ܕܡܢ ܩܕܝܡ : ܘܫܢܝܐ ܕܡܢ ܥܠܡ ܐܬܕܟܪܬ. * ܪܢܝܬ ܒܠܠܝܐ
7 8 ܘܒܠܒܝ ܪܢܝܬ : ܘܒܨܝܬ ܪܘܚܝ ܘܐܡܪܬ. * ܕܠܥܠܡ ܛܥܝܢܝ ܡܪܝܐ : ܘܠܐ ܡܘܣܦ ܬܘܒ
9 ܠܡܬܪܥܝܘ ܒܝ. * ܐܘ ܕܠܥܠܡ ܢܥܒܪ ܛܝܒܘܬܗ ܡܢܝ : ܐܘ ܢܫܡܠܐ ܡܠܬܗ
10 11 ܠܕܪ ܕܪܝܢ. * ܐܘ ܛܥܐ ܐܠܗܐ ܠܡܬܪܚܡܘ : ܐܘ ܢܟܠܐ ܒܪܘܓܙܗ ܪܚܡܘܗܝ. * ܐܡܪܬ ܕܟܘܪܗܢܝ
12 ܗܘ : ܘܫܘܢܝܐ ܕܝܡܝܢܗ ܕܡܪܝܡܐ. * ܡܛܠ ܕܐܬܕܟܪܬ ܡܢ ܩܕܝܡ ܬܕܡܪܬܟ : * ܘܪܢܝܬ ܒܟܠܗܘܢ
13 14 ܥܒܕܝܟ. ܘܒܨܢܥܬܟ ܐܬܒܩܝܬ : * ܐܠܗܐ ܕܩܕܝܫܐ ܗܝ ܐܘܪܚܟ. ܘܠܝܬ ܕܪܒ ܐܝܟ ܐܠܗܢ : * ܐܢܬ ܗܘ
15 16 ܐܠܗܐ ܕܥܒܕܬ ܬܕܡܪܬܐ. ܘܚܘܝܬ ܒܥܡܡܐ ܚܝܠܟ : * ܘܦܪܩܬ ܒܕܪܥܟ ܠܥܡܟ. ܒܢܘܗܝ
17 ܕܝܥܩܘܒ ܘܕܝܘܣܦ : * ܕܝܦܣܠܡܐ * ܚܙܘܟ ܡܝܐ ܐܠܗܐ. ܚܙܘܟ ܡܝܐ ܡܪܝ ܘܕܚܠܘ : ܐܦ
18 19 ܬܗܘܡܐ ܐܬܬܙܝܥܘ * ܘܥܢܢܐ ܐܫܕܘ ܡܝܐ. ܩܠܐ ܝܗܒܘ ܫܡܝ ܫܡܝܐ : ܐܦ ܓܐܪܝܟ ܦܪܚܝܢ. * ܘܩܠܐ
20 ܕܪܥܡܝܟ ܒܓܝܓܠܐ : ܐܢܗܪܘ ܒܪܩܝܟ ܠܬܒܝܠ. ܐܬܬܙܝܥܬ ܘܪܬܬ ܐܪܥܐ : * ܒܝܡܐ ܐܘܪܚܟ
21 ܘܫܒܝܠܝܟ ܒܡܝܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܥܩܒܬܟ ܠܐ ܐܬܝܕܥܝ : * ܕܒܪܬ ܐܝܟ ܥܢܐ ܥܡܟ. ܒܐܝܕܐ
ܕܡܘܫܐ ܘܕܐܗܪܘܢ. * ܫܠܡ ܡܙܡܘܪܐ ܕܫܒܥܝܢ *

1 * ܕܐܣܦ. ܡܪܡܙ ܒܗ ܕܢܛܪܘܢ ܦܘܩܕܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܘܠܐ ܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܐܒܗܝܗܘܢ. ܦܬܓܡܐ ܩܣܐ.
2 ܫܡܥܘ ܥܡܝ ܢܡܘܣܝ ܘܐܬܛܦܝܣܘ. ܘܐܪܟܢܘ ܐܕܢܝܟܘܢ ܠܡܠܝ ܦܘܡܝ : * ܗܐ ܓܝܪ
3 ܐܦܬܚ ܦܘܡܝ ܒܡܬܠܐ. ܘܐܡܠܠ ܦܠܐܬܐ ܕܡܢ ܩܕܝܡ : * ܐܝܠܝܢ ܕܫܡܥܢ ܘܝܕܥܢ
ܐܢܝܢ. ܘܐܒܗܝܢ ܐܫܬܥܝܘ ܠܢ.

Voce meâ ad Deum clamavi, & exaudivit me : & extuli vocem meam ad eum, & reſpondit mihi. In die anguſtiæ meæ Dominum quæſivi, & manus ejus nocte flagellavit me, & non quievi, nec erat conſolator animæ meæ. Memoriâ recolui Deum, & conturbatus ſum : & meditatus ſum, & exagitatus eſt ſpiritus meus, Atque occupaverunt me vertigines in oculis meis : obmutui, & non ſum locutus. Recenſui dies meos priſtinos, & annos æternos memoriâ repetii : Cogitavi noctu, & in corde meo cogitavi, & perſcrutatus ſum ſpiritum meum ac dixi, In æternum oblitus eſt mei Dominus, nec addet ultrà eſſe mihi placidus : Aut fortè in æternum amovebit bonitatem ſuam à me : aut complebit verbum ſuum in generationem generationū : Aut obliviſcitur Deus miſereri : vel contrahit miſericordias ſuas in ira ſua. Dixi, Infirmitas mea eſt ; & repetita plaga ſunt hæc dexteræ Excelſi ; Nam recordat⁹ ſum olim mirabilium tuorum : Et meditatus ſum cuncta opera tua, & artes tuas ſum cōtemplat⁹. Deus via tua ſancta eſt, nec eſt qui magnus ſit ſicut Deus noſter. Tu es Deus qui edidiſti miracula, & declarâſti in populis virtutem tuam, Et ſalvâſti brachio tuo populum tuum, filios Jacob & Joſeph. * *Diapſal.* * Viderunt te Deus aquæ, viderunt te Domine mi aquæ, & timuerunt : etiam abyſſi conterritæ ſunt, Et nubes profuderunt aquas : ediderunt fragorem cœli cœlorum, ſagittæ quoque tuæ evolant, Et vox tonitruorum tuorum in rotis : illuminârunt fulgura tua orbem ; conturbata eſt & contremuit terra. In mari via tua, & ſemitæ tuæ in aquis multis, & veſtigia tua minimè deprehenſa ſunt. Duxiſti populum tuum ſicut oves per manum Moſis & Aharon. 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21

PSAL. LXXVIII.

Aſaphi. Innuit in eo ut ſervent mandata Domini, & ne ſint ut patres eorum. Verſ. 161. 1

Popule mi, auſcultate legem meam, & acquieſcite, & inclinate aures veſtras ad ſermones oris mei. Ecce enim aperiam os meum ad proverbia, referámq; parabolas antiquas, Quas audivimus, cognovim⁹ eas, quaſq; etiam patres noſtri narraverunt nobis ; 2 3

Verſio VULG. LAT.

2 VOce meâ ad Dominum clamavi :
voce meâ ad Deum, & intendit
3 mihi. In die tribulationis meæ Deum
exquiſivi, manibus meis nocte contra
eum : & non ſum deceptus. Renuit
4 conſolari anima mea, Memor fui Dei,
& delectatus ſum, & exercitatus ſum :
5 & defecit ſpiritus meus. Anticipave-
runt vigilias oculi mei : turbatus ſum,
6 & non ſum locutus. Cogitavi dies an-
tiquos : & annos æternos in mente
7 habui. Et meditatus ſum nocte cum
corde meo, & exercitabar, & ſcope-
8 bam ſpiritum meum. Numquid in æ-
ternum projiciet Deus : aut non ap-
9 ponet ut complacitior ſit adhuc? Aut
in finem miſericordiam ſuã abſcindet,
10 à generatione in generationem? Aut
obliviſcetur miſereri Deus? aut con-
tinebit in ira ſua miſericordias ſuas?
11 Et dixi, Nunc cœpi : hæc mutatio
12 dexteræ Excelſi. Memor fui operum
Domini : quia memor ero ab initio
13 mirabilium tuorum. Et meditabor in
omnibus operibꝰ tuis : & in adinven-
14 tionibus tuis exercebor. Deus, in San-
cto via tua : quis Deus magnus ſicut
15 Deus noſter? Tu es Deus qui facis mi-
rabilia. Notam feciſti in populis vir-
16 tutem tuam : Redemiſti in brachio tuo
populum tuum, filios Jacob, & Joſeph.
17 Viderunt te aquæ, Deus, viderunt te
aquæ : & timuerunt, & turbatæ ſunt
18 abyſſi. Multitudo ſonitûs aquarum :
vocem dederunt nubes. Etenim ſagit-
19 tæ tuæ tranſeunt : Vox tonitrui tui in
rota. Illuxerunt coruſcationes tuæ or-
bi terræ : commota eſt & contremuit
20 terra. In mari via tua, & ſemitæ tuæ
in aquis multis : & veſtigia tua non
21 cognoſcentur. Deduxiſti ſicut oves
populum tuum, in manu Moyſi &
Aaron.

1 Intellectûs Aſaph. LXXVII.

ATtendite, popule meꝰ, legem meã :
inclinate aurem veſtram in verba
2 oris mei. Aperiã in parabolis os meũ :
3 loquar propoſitiones ab initio. Quan-
ta audivimus & cognovimus ea : &
patres noſtri narraverunt nobis.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp.

2 ΦΩνῇ μου πρὸς κύριον ἐκέκραξα, καὶ ἡ
3 φωνή μου πρὸς τὸν θεὸν, καὶ προσέσχε μοι. Ἐν
ἡμέρᾳ θλίψεώς μου τὸν θεὸν ἐξεζήτησα, ταῖς χερσί
μου νυκτὸς ἐναντίον αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἠπατήθην.
4 ἀπηνήνατο παρακληθῆναι ἡ ψυχή μου· Ἐμνή-
σθην τοῦ θεοῦ, καὶ εὐφράνθην, ἠδολέσχησα, καὶ ὠλι-
γοψύχησε τὸ πνεῦμά μου. ΔΙΑΨΑΛΜΑ.
5 Προκατελάβοντο φυλακὰς πάντες οἱ ἐχθροί μου,
6 ἐταράχθην καὶ οὐκ ἐλάλησα. Διελογισάμην ἡμέ-
7 ρας ἀρχαίας, καὶ ἔτη αἰώνια ἐμνήσθην, Καὶ ἐμε-
λέτησα· νυκτὸς μετὰ τῆς καρδίας μου ἠδολέσχουν,
8 καὶ ἔσκαλλον τὸ πνεῦμά μου. Μὴ εἰς τοὺς αἰῶ-
νας ἀπώσεται κύριος, καὶ οὐ προσθήσει τοῦ εὐδο-
9 κῆσαι ἔτι; Ἢ εἰς τέλος ἀποκόψει τὸ ἔλεος
10 ἀπὸ γενεᾶς καὶ γενεᾶς; Ἢ ἐπιλήσεται τοῦ οἰ-
κτειρῆσαι ὁ θεὸς, ἢ συνέξει ἐν τῇ ὀργῇ αὐτοῦ
11 τοὺς οἰκτιρμοὺς αὐτοῦ; ΔΙΑΨΑΛΜΑ. Καὶ
εἶπα, Νῦν ἠρξάμην, αὕτη ἡ ἀλλοίωσις τῆς δε-
12 ξιᾶς τοῦ ὑψίστου. Ἐμνήσθην τῶν ἔργων κυρίου, ὅτι
μνησθήσομαι ἀπὸ τῆς ἀρχῆς τῶν θαυμασίων σου,
13 Καὶ μελετήσω ἐν πᾶσι τοῖς ἔργοις σου, καὶ ἐν
14 τοῖς ἐπιτηδεύμασί σου ἀδολεσχήσω. Ὁ θεὸς ἐν
τῷ ἁγίῳ ἡ ὁδός σου, τίς θεὸς μέγας ὡς ὁ θε-
15 ὸς ἡμῶν; Σὺ εἶ ὁ θεὸς ὁ ποιῶν θαυμάσια, ἐ-
γνώρισας ἐν τοῖς λαοῖς τὴν δύναμίν σου,
16 Ἐλυτρώσω ἐν τῷ βραχίονί σου τὸν λαόν
σου, τοὺς υἱοὺς Ἰακὼβ καὶ Ἰωσήφ. ΔΙΑΨΑΛΜΑ.
17 Εἴδοσάν σε ὕδατα ὁ θεὸς, εἴδοσάν σε ὕδατα
18 καὶ ἐφοβήθησαν, καὶ ἐταράχθησαν ἄβυσσοι. Πλῆ-
θος ἤχους ὑδάτων, φωνὴν ἔδωκαν αἱ νεφέλαι·
19 καὶ γὰρ τὰ βέλη σου διαπορεύονται, Φωνὴ τῆς
βροντῆς σου ἐν τῷ τροχῷ. ἔφαναν αἱ ἀστρα-
παί σου τῇ οἰκουμένῃ, ἐσαλεύθη καὶ ἔντρομος
20 ἐγενήθη ἡ γῆ. Ἐν τῇ θαλάσσῃ ἡ ὁδός σου, καὶ
αἱ τρίβοι σου ἐν ὕδασι πολλοῖς, καὶ τὰ ἴχνη
21 σου οὐ γνωσθήσονται. Ὡδήγησας ὡς πρόβατα
τὸν λαόν σου ἐν χειρὶ Μωυσῆ καὶ Ἀαρών.

1 Συνέσεως τῷ Ἀσάφ. οζ'.

ΠΡοσέχετε λαός μου τὸν νόμον μου, κλίνατε
τὸ οὖς ὑμῶν εἰς τὰ ῥήματα τοῦ στόματός
2 μου. Ἀνοίξω ἐν παραβολαῖς τὸ στόμα μου,
3 φθέγξομαι προβλήματα ἀπ' ἀρχῆς. Ὅσα
ἠκούσαμεν καὶ ἔγνωμεν αὐτὰ, καὶ οἱ πατέρες ἡ-
μῶν διηγήσαντο ἡμῖν.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

1 *VOce meâ ad (b) Dominum* 2
clamavi, & (c) vox mea ad
Deum : & attendit mihi. 2 In die 3
tribulationis meæ Deum exquiſivi,
manibus meis nocte (d) coram eo, &
[a] non ſum decep. 3 Renuit (e) con-
ſolari anima mea : Memor fui Dei, 4
& delectatus ſum : (f) [b] garrivi,
& defecit ſpiritus meus. DIA-
PSALMA. 4 [c] Anticipaverunt 5
vigilias (g) omnes inimici mei : tur-
batus ſum, & non ſum loquutus.
5 Cogitavi dies antiquos : & annorũ 6
æternorum memor fui. 6 [d] Et me- 7
ditatus ſum nocte, cum corde meo
garriebam, & (h) ſarriebam ſpiritũ
meum. 7 Numquid in (i) ſecula pro- 8
jiciet Deus? & non (k) apponet, ut
beneplaceat ei adhuc? 8 Aut in fi- 9
nem abſcĩdet (l) miſericordiam à ge-
neratione, & (m) generatione? 9 Aut 10
obliviſcetur miſereri Deus, aut con-
tinebit in ira miſerationes ſuas?
DIAPSALMA. 10 Et dixi, (n) Nũc 11
cœpi : (o) [e] hæc immutatio dexteræ
Excelſi. 11 Memor (p) fui operũ Do- 12
mini : quia memor ero ab initio [f]
mirabiliũ tuorũ. 12 Et meditabor in 13
omnibus operibus tuis : & in (q) ad-
inventionibus tuis [g] garriam.
13 Deus, in (r) Sancto via tua : quis 14
Deus magnus, ſicut Deus noſter? Tu 15
es [h] Deus, qui facis (ſ) mirabilia.
14 Notam feciſti in populis virtu-
tem tuam ; Redemiſti in brachio tuo 16
populum tuum, filios Jacob, & (t)
Joſeph. DIAPSALMA. 15 Viderũt 17
te aquæ, Deus, viderunt te aquæ, &
timuerunt : & turbatæ ſunt abyſſi.
16 [i] Multitudo ſonitûs aquarum : 18
(u) vocẽ dederunt nubes. 17 Etenim
ſagittæ tuæ tranſeunt : Vox tonitrui 19
tui in (x) rota. 18 Apparuerunt [k]
fulgura tua orbi terrarum ; commota
eſt, & contremebunda facta eſt ter-
ra. 19 In mari via tua : & ſemitæ 20
tuæ in aquis multis : & veſtigia tua
non cognoſcentur. 20 Deduxiſti ſicut 21
oves, populum tuum in manu (y)
Moyſi & Aaron.

Intellectûs ipſi Aſaph. *LXXVII.* 1

1 *ATtendite, populus meus, legem*
meam : inclinate aurem ve-
ſtram in verba oris mei. 2 Aperiam 2
in parabolis os meum : loquar propo-
ſitiones ab (a) initio. 3 Quanta audivimus, & cognovimus ea : & patres noſtri narraverunt nobis. 3

Verſio ÆTHIOPICA.

ሮ፺ ቃልየ፡ ኀበ፡ እግዚአብሔር ፡ ጸራኅኩ፡፡ ቃ 1
ልየ፡ ኀበ፡ እግዚአብሔር፡ ወአጽምአኒ፡፡=፡ በ 2
ዕለተ ፡ ምንዳቤየ ፡ ኀሠሥክዎ ፡ ለእግዚአብ
ሔር፡፡ እደዊየ ፡ ሌሊተ ፡ ቅድሜሁ ፡ ወኢኬዱ
ኒ፡፡=፡ ቀብጸት ፡ ነፍስየ ፡ ትፍሥሕተ፡፡ ተዘ 3
ከርክዎ ፡ ለእግዚአብሔር ፡ ወተፈሣሕኩ፡፡ ተ
ዛዋዕኩኒ፡ ወአንበዘት ፡ ነፍስየ፡፡=፡ ተረክብ 4
ክዎን፡ ለሰዓታተ፡ ኵሎሙ፡ ጸላእትየ፡፡ ደንገፅ
ኩኒ፡ ወኢነበብኩ፡፡=፡ ወሐለይኩ፡ መዋዕለ፡ 5
ትካት፡፡ ወተዘከርኩ ፡ ዓመተ ፡ ዓለም ፡ ወአንበ
ብኩ፡፡=፡ ሌሊተ፡ ተዛዋዕኩ፡ ምስለ፡ ልብየ፡ 6
ወአንቃህክዋ ፡ ለነፍስየ፡፡=፡ ቦኑ ፡ ለዓለም፡ 7
ይገድፍ ፡ እግዚአብሔር፡፡ ወኢይደግምኑ፡ እ
ንከ፡ ተሣህሎ፡፡=፡ ቦኑ፡ ለግሙራ፡ ይመትር ፡ 8
ምሕረቶ፡ ለትውልደ፡ ትውልድ፡፡=፡ ወይረስ 9
ዕኑ ፡ እግዚአብሔር ፡ ተሣህሎ፡፡ ወይደፍንኑ፡
ምሕረቶ፡ በመዐቱ፡፡=፡ ወእቤ ፡ እምይእዜ፡ 10
ወጠንኩ ፡፡ ከመዝ ፡ ያስተባሪ ፡ የማና ፡ ልዑ
ል፡፡= ወተዘከርኩ ፡ ግብሮ ፡ ለእግዚአብሔ 11
ር፡፡ እስመ፡ እዜክር፡ ዘትካት፡ ምሕረትከ፡፡=፡
ወአነብብ፡ በኵሉ፡ ምግባሪከ ፡፡ ወእዛዋዕ፡ በ 12
ግብርከ፡፡=፡ እግዚኦ ፡ ውስተ ፡ መቅደስ፡ ፍ 13
ኖትከ፡፡ መኑ፡ አምላክ፡ ዐቢይ፡ ከመ፡ አምላክ
ነ፡፡ አንተ፡ እግዚአብሔር፡ ባሕቲትከ፡ ዘትገብ
ር ፡ መንክረ፡፡=፡ አርአይኮሙ ፡ ለሕዝብከ፡ 14
ኀይለከ፡፡ ወአድኀንኮሙ ፡ ለሕዝብከ ፡ በመዝ
ራዕትከ፡፡ ለደቂቀ፡ ያዕቆብ ፡ ወዮሴፍ፡፡=፡ ር 15
እዩከ ፡ ማያት ፡ እግዚኦ ፡ ርእዩከ፡፡ ማያት፡ ወ
ፈርሁ፡፡ ደንገፁ፡ ቀላያተ፡ 16 ማያት፡ ወደም
ፀ፡ ማያቲሆሙ፡፡ ቃለ፡ ወሀበ ፡ ደመና፡ 17 አሕ
ፃከ ፡ ይወፅኡ፡፡ ቃለ ፡ ነጐድጓድከ ፡ በሰረገላ
ት፡፡=፡ አስተርአየ፡ መባርቅቲሁ፡ ለዓለም፡፡ 18
ር ዕደት ፡ ወአድለቅለቀት ፡ ምድር ፡፡=፡ ው 19
ስተ፡ ባሕር ፡ ፍኖትከ፡፡ ወአሰር ከኒ፡ ውስተ፡ ማ
ይ፡ ብዙኅ፡፡ ወኢይትዐወቅ ፡ አሰር ከ፡፡=፡ ወ 20
መራሕኮሙ፡ ከመ ፡ አባግዐ ፡ ለሕዝብከ፡፡ በእ
ደ፡ ሙሴ፡ ወአሮን፡፡=፡

ዘበአእምሮ፡ ዘአሳፍ፡፡

ሮ፺ አጽምኡ ፡ ሕዝብየ፡ ሕግየ፡፡ ወጽልው፡ 1
እዝንክሙ፡ ኀበ፡ ቃለ፡ አፉየ፡፡=፡ እከሥት፡ 2
በምስሌ ፡ አፉየ፡፡ ወእነግር ፡ አምሳለ ፡ ዘእም
ትካት፡፡=፡ ኵሎ ፡ ዘሰማዕነ፡ ወዘር ሊነ፡፡ ወ 3
ዘነገሩነ፡ አበዊነ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. *PSAL. LXXVI.* [a] non conculcârunt me. [b] exercitatus ſum, [c] Deprehendiſti vigilias omnium inimicorum meorum : [d] Et meditatus ſum. Nocte exercitabar cum corde meo, & excitabam animam meam. [e] ita innovatur dextera Excelſi. [f] miſericordiæ tuæ. [g] exercebor. [h] Deus ſolus, [i] Aquæ & ſonitus aquarum ſuarum : [k] fulgura ejus

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

2 * بصوتي اعلنت الى الرب * ورفعت الى الله ابتهالي فنظر الي * في يوم شدتي رغبت الى الله *
3
4 بسطت يدي في الليل قدامه فزال جزعي * وحيث لم يكن لقلبي معزي * ذكرت الله
5 فتعزيت * وعند همي صغرت نفسي * سعت جميع اعداي فادركت محارسي * قلقت ولم
6 انطق * فكرت في الايام السالفة * وذكرت السنين الدهرية * وتلوت في الليل * وفرغت قلبي *
7
8 * وكنت افحص بروحي * هل يقصي الرب الى الابد * ولا يعود الى الرضا ايضا * او يقطع رحمته
9
10 الى الانقضاء * او كمل قوله من جيل الى جيل * وهل ينسى الله ان يتراءف * وهل يمنع
11 بسخطه رافته عني * فقلت الان ابتديت * هذا هو تغير يمين العلي * تذكرت اعمال
12
13 الرب * لاني اذكر منذ الازل عجايبك * واقرا في جميع اعمالك * واكون دايما في اعمالك *
14 * اللهم في القدس طريقك * من اله عظيم مثل الاهنا * انت الله هو صانع العجايب * اظهرت
15
16 في الشعوب قوتك * خلصت شعبك بذراعك بني يعقوب ويوسف * اللهم راتك المياه راتك
17
18 المياه فخافت * اضطربت الاعماق * وكثر عجيج المياه * ابدت السحب اصواتها * وان
19 سهامك لنافذة * صوت رعدك في الفلك * اضات بروقك المسكونة * اضطربت الارض
20 وارتعدت * اللهم ان في البحر طريقك وفي المياه الكثيرة * مسالكك واثارك لا تعرف * هديت
21
شعبك مثل الغنم بيد موسى وهرون * اللليلويا *

1 * المزمور السابع والسبعون * لاصاف * موعظة للشعب * وعدده * قنز * استيكس
2 انصت يا شعبي لوصاياي * اصغوا اذانكم الى كلام فمي * فاني افتح فاي بالامثال * وانطق
3 بالخفيات الازلية * التي سمعناها وعلمناها * وخبرونا اباونا بها *

VOce meâ revelavi Domino, & eleva- 2
vi ad Deum ſupplicationem meam,
& reſpexit in me. In die tribulationis 3
meæ deprecatus ſum Deum : extendi ma-
nus meas in nocte coram ipſo, & prater-
iit timor meus. Et cùm non eſſet cordi
meo conſolator, Recordatus ſum Dei, & 4
conſolatus ſum ; & in ſolicitudine mea
puſilla facta eſt anima mea. Conjuncti 5
ſunt omnes inimici mei, & occupave-
runt præſidia mea : turbatus ſum & non
protuli verbum. Mente revolvi dies e- 6
lapſos, & in memoriam revocavi annos
æternos. Et meditatus ſum noctu, & 7
evacuavi cor meum. Et perpendebam 8
ſpiritu meo, utrùm propulſaret me Domi-
nus in æternum, nec rediret ad placabili-
tatem ampliùs. Aut revocaret miſericor- 9
diam ſuam uſque in finem, aut expletus
ſit ſermo ejus à generatione in generatio-
nem. Et utrùm obliviſcatur Deus propi- 10
tiari, & num cohibeat in ira ſua clemen-
tiam ſuam à me. Et dixi, Nunc cœpi, 11
hæc eſt mutatio dexteræ Excelſi. Recor- 12
datus ſum operum Domini ; nam memor
ero ab æterno mirabilium tuorum, Et le- 13
ctitabo omnia facta tua, & ero ſemper in
operibus tuis. Deus, in ſanctitate via tua 14
eſt : quis Deus fortis ſicut Deus noſter?
Tu Deus, es factor miraculorum : patefe- 15
ciſti inter populos virtutem tuam : Sal- 16
vâſti populum tuum brachio tuo, filios
Jacob & Joſeph. Deus viderunt te aquæ : 17
viderunt te aquæ & timuerunt : contur-
batæ ſunt abyſſi, Et multiplicatum eſt 18
murmur aquarum. Ediderunt nubes voces
ſuas : & quidem ſagittæ tuæ ſunt pene-
trantes. Fragor tonitrui tui in ſphæra : 19
illuſtrârunt fulgura tua Habitatam : com-
mota eſt terra atque concuſſa. Deus, pro- 20
fectò in mari eſt via tua, & in aquis mul-
tis : ſemitæ tuæ & veſtigia tua non cogno-
ſcuntur. Duxiſti populum tuum ſicut oves 21
per manum Moyſis, & Aharon. Alleluja.

PSAL. LXXVII.

Aſapho. Concio ad populum. 1

Et num. ver. 157.

AUſculta, O popule meꝰ, præcepta mea,
præbete aures veſtras ſermoni oris
mei : Quoniam aperiam os meum in pro- 2
verbiis & proferã myſteria æterna, Quæ 3
audivimus & cognovimus, quæque ſigni-
ficârunt nobis patres noſtri,

תהלים : עח

laudes narrantes noviſſimæ generationi ,eorum filiis à *celabimus* Non
לא נכחד מבניהם לדור אחרון מספרים תהלות 4
ſuſcitavit Et .fecit quæ ejus mirabilia & ,ejus fortitudinem & ,Domini
יהוה ועזוזו ונפלאותיו אשר עשה : ויקם 5
præcepit quæ , Iſrael in poſuit legem & , Jahacob in teſtimonium
עדות ביעקב ותורה שם בישראל אשר צוה את־
generatio cognoſcant Ut .ſuis filiis ea *notificandum ad* noſtris patribus
אבותינו להודיעם לבניהם : למען ידעו דור 6
Deo in ponant *Et* .ſuis filiis narrabunt &,ſurgent:naſcentur filii noviſſima
אחרון בנים יולדו יקמו ויספרו לבניהם : וישימו באלהים 7
non Et .cuſtodiant ejus mandata &:Dei *ſtudiorum* obliviſcantur non & , ſuam ſpem
כסלם ולא ישכחו מעללי־אל ומצותיו ינצרו : ולא 8
non generatio , rebellis & , declinans generatio , eorum patres ſicut ſint
יהיו כאבותם דור סורר ומרה דור לא־
Ephraim Filii .ejus ſpiritus Deo cum fuit fidelis nec : ſuum cor præparavit
הכין לבו ולא־נאמנה את־אל רוחו : בני־אפרים 9
cuſtodierunt Non .*conflictus* die in ſe verterunt : arcu jacientes ,armati
נושקי רומי־קשת הפכו ביום קרב : לא שמרו 10
: ejus *ſtudiorum* ſunt obliti Et .ambulare *renuerunt* ejus lege in & ; Dei pactum
ברית אלהים ובתורתו מאנו ללכת : וישכחו עלילותיו 11
fecit eorum patribus Coram .eis oſtendit quæ ejus mirabilium &
ונפלאותיו אשר הראם : נגד אבותם עשה 12
: eos fecit tranſire & , mare Rupit .Sohan agro Ægypti terra in : *miraculum*
פלא בארץ מצרים שדה־צען : בקע ים ויעבירם 13
tota & : *interdiu* nube in eos duxit Et .acervum veluti aquas fecit ſtare &
ויצב־מים כמו־נד : וינחם בענן יומם וכל־ 14
dedit potum & : deſerto in petras Scidit .ignis lumine in nocte
הלילה באור אש : יבקע צרים במדבר וישק 15
fecit deſcendere & : petra de fluenta eduxit Et .*multum* voraginibus *ut*
כתהמות רבה : ויוצא נוזלים מסלע ויורד 16
exacerbandum ad ,ei *peccandum ad* adbuc addiderunt Et .aquas flumina tanquam
כנהרות מים : ויוסיפו עוד לחטא־לו למרות 17
cibum petendo : ſuo corde in Deum tentaverunt Et .ſolitudine in excelſum
עליון בציה : וינסו־אל בלבבם לשאל־אכל 18
Deus poterit Nunquid : dixerunt , Deum *in* ſunt locuti Et .ſuæ animæ
לנפשם : וידברו באלהים אמרו היוכל אל 19
,aquæ fluxerunt & ,petram percuſſit *En* ? deſerto in menſam *diſponere*
לערך שלחן במדבר : הן הכה־צור ויזובו מים 20
parabit num ? dare poterit panem etiam Nunquid .inundaverunt torrentes &
ונחלים ישטפו הגם־לחם יוכל תת אם־יכין
eſt ſuccenſus ignis & ; eſt iratus & , Dominus audivit Ideo ? ſuo populo carnem
שאר לעמו : לכן שמע יהוה ויתעבר ואש נשקה 21
crediderunt non Quia .Iſrael *in* aſcendit *naſus* etiam & : Jahacob in
ביעקב וגם־אף עלה בישראל : כי לא האמינו 22
: deſuper *ætheribus* mandavit Et .ejus ſalute in ſperaverunt nec , Deo *in*
באלהים ולא בטחו בישועתו : ויצו שחקים ממעל 23
.aperuit cœlorum januas &
ודלתי שמים פתח :

תרגום TARGUM.

לא נכסי מבניהון לדר בתרי משתעין תשבחתא 4
דיי ועשניה ופרישותיה די עבד : ואקים סהדותא 5
בדבית יעקב ואוריתא גזר בדבית ישראל די
פקד לאבהתן להודעותהון לבניהון : מן בגלל 6
די ידעון דר בתרי בנין דמתילדין יקומון ויתנון
לבניהון : וישוון באלהא סברהון ולא יתנשון 7
עובדי אלהא ופקודוי ינטרון : ולא יהוון היך 8
אבהתהון דר מסרבן ומרגיז דר דלא מתקן
לביה למריה ולא הות מהימנא באלהא רוחיה :
כד הוו יתבין במצרים אתרברבו בני אפרים מנו 9
קצא וטעו ונפקו תלתין שנין קדם קצא בזיני
קרבא וגברין נטלי קשתא אפיכו קדל ואתקטלו
ביום סדרי קרבא : מטול דלא נטרו קים אלהא 10
ובאוריתיה סרבו להלכא : ואתנשיאו עובדוי 11
עמא בית ישראל ופרישותיה די אחמי יתהון :
קבל אברהם יצחק ויעקב ושבטיא דאבהתהון 12
עבד פרישן בארעא דמצרים חקל טאנים : בזע 13
ימא בחוטרא דמשה רבהון ואעברנון ואוקים
מיא צרירין היך זיקא : ודברנון בעננא ביממא 14
וכל ליליא בנהור אשא : בזע טורין בחוטריה 15
דמשה רבהון במדברא ואשקי כד בתהומיא
רברבן : ואפיק נוזליא דמיא מן כיפא 16
ואחית היך נהרין דנגדין מיא : ואוסיפו תוב 17
למחטי קדמוי למרגז קדם עלאה במדברא
צחי : ונסיאו אלהא בלבהון למשאל אוכלא 18
לנפשיהון : ואתרעמו קדם יי אמרו האית 19
יוכלא קדם אלהא לסדרא פתורא במדברא :
הא כבר מחא בטינר ודיבו מיא ונחליא 20
הלחוד לחמא יכיל למתן אם יתקן מזונא
לעמיה : בכן שמיע קדם אלהא ורגיז 21
ואשתא אתסקרת בדבית יעקב ולחוד תקוף
רוגזא סליק בישראל : ארום לא הימינו 22
באלהא ולא אתרחיצו בפורקניה : ופקיד 23
שחקי מלעיל ודשי שמיא פתח :

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Non abſcondemus à filiis eorum, generationi 4
ultimæ narrantes laudes Domini, &
fortitudinem ejus & mirabilia ejus facta,
quæ edidit. Et firmavit teſtamentum in 5
domo Jacob, & legem ſtatuit in domo Iſrael,
quæ præcepit patribus noſtris, ut docerent
filios ſuos. Ut cognoſceret generatio 6
ultima; filii qui naſcituri ſunt, ſurgent
& narrabunt filiis ſuis. Et collocabunt 7
in Deo ſpem ſuam, & non obliviſcentur
operum Dei, & mandata ejus cuſtodient.
Et non erunt ſicut patres eorum 8
generatio rebellis, & provocans ad iracundiam,
generatio quæ non direxit cor
ſuum ad Dominum ſuum, nec fuit fidelis
in Deum ſpiritus ejus. *Cùm habitarent* 9
in Ægypto ſuperbierunt filii Ephraim;
ſtatuerunt terminum, & errantes egreſſi
ſunt triginta annis ante terminum cum armis
bellicis, & fortes geſtantes arcum verterunt
cervicem *& occiſi ſunt* in die acierum
bellicarum. Eò quod non obſervâſſent 10
fœdus Dei, & in lege ejus ambulare
renuiſſent. Et obliti ſunt operationum 11
ejus populus domus Iſrael; & mirabilium
ejus facinorum quæ oſtendit eis. Coram 12
Abraham, Iſaac & Jaacob, atque tribubus
patrum eorum miranda edidit in
terra Ægypti in campo Tanes. Scidit 13
mare virgâ Moſſeh præceptoris eorum, &
tranſmiſit eos; & ſtare fecit aquas coadunatas
ſicut in *utrem*. Et duxit eos in nube 14
per diem, & tota nocte in illuminatione
ignis. Rupit *montes* virgâ Moſſeh præceptoris 15
eorum in deſerto, & potum dedit
eis veluti ex abyſſis magnis. Et eduxit 16
aquarum fluenta de petra, & deduxit tanquam
flumina currentia aquas. Et addiderunt 17
ultrà peccare in eum, ut provocarent
ad iram Altiſſimum in deſerto arido.
Et tentaverunt Deum in corde ſuo, petentes 18
cibum animabus ſuis. Et infremuerunt 19
coram *Domino*: dixerunt: Ergóne
poterit Deus inſtruere menſam in deſerto?
Ecce jam percuſſit petram; & fluxerunt 20
aquæ torrentéſque: nunquid & panem
poterit dare? an præparabit nutrimentum
populo ſuo? Ideo auditum fuit coram 21
Domino qui iratus eſt, & ignis accenſus
eſt in domû Jaacob, & inſuper furor *validus*
aſcendit in Iſrael. Quoniam non 22
crediderunt Deo, & non confiſi ſunt in
redemptione ejus. Et præcepit nubibus 23
ſupernè; & januas cœli aperuit.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܕܠܐ ܢܟܣܐ ܡܢ ܒܢܝܗܘܢ. ܐܠܐ ܠܕܪܐ ܐܚܪܢܐ ܢܫܬܥܐ : ܬܫܒܚܬܗ ܕܡܪܝܐ 4
ܘܥܘܫܢܗ. ܘܬܕܡܪܬܗ ܕܥܒܕ : * ܘܐܩܝܡ ܣܗܕܘܬܗ ܒܝܥܩܘܒ. ܘܢܡܘܣܗ ܣܡ 5
ܒܐܝܣܪܝܠ : ܐܝܟ ܕܦܩܕ ܠܐܒܗܝܢ. * ܕܢܘܕܥܘܢ ܠܒܢܝܗܘܢ : ܕܢܕܥܘܢ ܠܕܪܐ ܐܚܪܢܐ 6
ܒܢܝܐ. ܕܥܬܝܕܝܢ ܘܢܩܘܡܘܢ : ܕܢܫܬܥܘܢ ܠܒܢܝܗܘܢ. * ܕܢܗܘܐ ܣܒܪܗܘܢ ܒܐܠܗܐ : ܘܠܐ 7
ܢܬܛܥܘܢ ܥܒܕܘܗܝ ܕܐܠܗܐ. ܘܦܘܩܕܢܘܗܝ ܢܛܪܘܢ : * ܘܠܐ ܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܐܒܗܝܗܘܢ. ܕܪܐ 8
ܥܩܡܐ ܘܡܡܪܡܪܢܐ : ܕܪܐ ܕܠܐ ܬܩܢ ܠܒܗ. ܘܠܐ ܗܝܡܢ ܒܐܠܗܐ ܪܘܚܗ : * ܒܢܘܗܝ ܕܐܦܪܝܡ 9
ܕܡܬܚܝܢ ܝܬܪܐ ܘܫܕܝܢ ܒܩܫܬܐ. ܘܐܬܗܦܟܘ ܒܝܘܡܐ ܕܩܪܒܐ : * ܥܠ ܕܠܐ ܢܛܪܘ ܩܝܡܗ ܕܐܠܗܐ. 10
ܘܒܢܡܘܣܗ ܠܐ ܨܒܘ ܠܡܗܠܟܘ : * ܘܛܥܘ ܥܒܕܘܗܝ ܘܬܕܡܪܬܗ. ܕܚܘܝ ܐܢܘܢ * ܩܕܡ 11 12
ܐܒܗܝܗܘܢ : ܕܥܒܕ ܬܕܡܪܬܐ ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܒܚܩܠܐ ܕܨܘܥܢ : * ܨܪܐ ܝܡܐ ܘܥܒܪ ܐܢܘܢ. 13
ܘܐܩܝܡ ܡܝܐ ܐܝܟ ܕܒܙܩܐ : * ܘܕܒܪ ܐܢܘܢ ܒܐܝܡܡܐ ܒܥܢܢܐ. ܘܟܠܗ ܠܠܝܐ ܒܢܘܗܪܐ ܕܢܘܪܐ : 14
* ܦܠܓ ܫܘܥܐ ܒܡܕܒܪܐ. ܘܐܫܩܝ ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܕܡܢ ܬܗܘܡܐ ܪܒܐ : * ܐܦܩ ܪܕܝܐ ܡܢ ܟܐܦܐ. ܘܪܕܘ 15 16
ܡܝܐ ܐܝܟ ܢܗܪܘܬܐ : * ܘܐܘܣܦܘ ܬܘܒ ܥܡܐ ܠܡܚܛܐ. ܘܠܡܡܪܡܪܘ ܠܡܪܝܡܐ 17
ܒܨܗܝܐ : * ܘܢܣܝܘ ܠܐܠܗܐ ܒܠܒܗܘܢ. ܠܡܫܐܠ ܡܐܟܘܠܬܐ ܠܢܦܫܗܘܢ : * ܘܪܛܢܘ 18 19
ܥܠ ܐܠܗܐ ܘܐܡܪܘ. ܕܠܡܐ ܡܫܟܚ ܐܠܗܐ ܠܡܣܕܪ ܠܢ ܦܬܘܪܐ ܒܡܕܒܪܐ : * ܗܐ ܡܚܝܗ 20
ܠܫܘܥܐ ܘܪܕܘ ܡܝܐ ܘܢܚܠܐ ܐܫܬܦܥܘ. ܕܠܡܐ ܐܦ ܠܚܡܐ ܡܫܟܚ ܠܡܬܠ ܠܢ ܐܘ ܢܛܝܒ
ܡܐܟܘܠܬܐ ܠܥܡܗ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܫܡܥ ܡܪܝܐ ܘܪܓܙ : ܘܢܘܪܐ ܐܬܚܡܬ ܒܝܥܩܘܒ. ܘܐܦ 21
ܪܘܓܙܐ ܣܠܩ ܒܐܝܣܪܝܠ : * ܥܠ ܕܠܐ ܗܝܡܢܘ ܒܐܠܗܐ ܘܠܐ ܣܒܪܘ ܒܦܘܪܩܢܗ : 22
* ܘܦܩܕ ܠܥܢܢܐ ܡܢ ܠܥܠ. ܘܬܪܥܐ ܕܫܡܝܐ ܐܦܬܚ ܐܢܘܢ : 23

* Ut ne celemus eas filios eorum, ſed generationi 4
alteri narremus laudes Domini, & potentiam
ejus, ac miracula ipſius quæ edidit. Conſtituit 5
enim conteſtationem ſuam in Jacob, &
legem ſuam poſuit in Iſraele: ſicuti monuerat
patres noſtros, Ut notum facerent filiis 6
ſuis: quatenus ſcirent in generationem alteram
filii naſcituri & exurrecturi: ut narrarent
filiis ſuis. Ut eſſet ſpes eorum in Deo, & non 7
obliviſcerentur operum Dei, ejuſque mandata
obſervarent: Et ne fierent ſimiles patribus 8
ſuis generationi pravæ & exacerbanti,
generationi quæ non direxit cor ſuum, neque
credidit in Deum ſpiritûs ſui. Filii Afrem, 9
qui tetenderunt chordam, & jaculati ſunt arcu,
attamen verterunt ſe in die belli: Eò 10
quòd non obſervaverint pactû Dei, & in lege
ejus noluerint ambulare, Et obliti ſint operum 11
ejus atque miraculorum ipſius quæ oſtenderat
eis Coram patribus eorum. Fecit enim 12
prodigia in terra Ægypti, & in agris Soon:
Fidit mare & traduxit illos, & conſiſtere fecit 13
aquas quaſi in utribus: Et deduxit eos interdiu 14
nube, & totâ nocte ſplendore ignis:
Secuit rupem in deſerto, & potavit illos ut 15
ex abyſſo magna: Eduxit fluenta è petra, & 16
fluxerunt aquæ ceu flumina. Nihilominus appoſuerunt 17
adhuc populus peccare, & exaſperare
Altiſſimum in ſitibundo; Et tentaverunt 18
Deum in corde ſuo, petendo cibum
animæ ſuæ: Et muſſitârunt de Deo ac dixerunt, 19
Nunquid poteſt Deus ſternere nobis
menſam in deſerto? Quandoquidem percuſſit 20
rupem & fluxerunt aquæ, & torrentes
profuderunt: num etiam panem poterit dare
nobis, aut parabit cibum populo ſuo? Ideo 21
audivit Dominus & iratus eſt, & ignis accenſus
eſt in Jacob, atque etiam furor aſcendit
in Iſrael. Quia non crediderunt in Deum, 22
neque ſperaverunt ſalutem ejus. Et mandavit 23
nubibus deſuper, januæque cœli apertæ
ſunt.

Versio VULG. LAT.

4 Non ſunt occultata à filiis eorum, in
generatione altera. Narrantes laudes
Domini, & virtutes ejus, & mirabilia
5 ejus quæ fecit. Et ſuſcitavit teſtimoniũ
in Jacob: & legem poſuit in Iſrael.
Quanta mandavit patribus noſtris no-
6 ta facere ea filiis ſuis: Ut cognoſcat
generatio altera. Filii qui naſcentur, &
7 exurgẽt et narrabunt filiis ſuis, Ut po-
nant in Deo ſpem ſuam, & non obli-
viſcantur operum Dei: & mandata e-
8 jus exquirant. Ne fiant ſicut patres e-
orum, generatio prava & exaſperans;
Generatio, quæ non direxit cor ſuum:
& non eſt creditus cum Deo ſpiritus
9 ejus. Filii Ephrem intendentes & mit-
tentes arcum, converſi ſunt in die bel-
10 li. Non cuſtodierunt teſtamentum Dei:
11 & in lege ejus noluerunt ambulare. Et
obliti ſunt benefactorum ejus, & mi-
12 rabilium ejus quæ oſtendit eis. Coram
patribus eorum fecit mirabilia in ter-
13 ra Ægypti, in campo Taneos. Interru-
pit mare, & perduxit eos: & ſtatuit a-
14 quas quaſi in utre. Et deduxit eos in
nube diei: & totâ nocte in illuminati-
15 one ignis. Interrupit petrã in eremo:
& adaquavit eos velut in abyſſo mul-
16 ta. Et eduxit aquam de petra: & dedu-
17 xit tanquam flumina aquas. Et appo-
ſuerunt adhuc peccare ei: in iram ex-
18 citaverunt Excelſum in inaquoſo. Et
tentaverunt Deũ in cordibus ſuis: ut
19 peterent eſcas animabus ſuis. Et malè
locuti ſunt de Deo: dixerunt; Num-
quid poterit Deus parare menſam in
20 deſerto? Quoniam percuſſit petram,
& fluxerunt aquæ, & torrentes inun-
daverunt. Numquid & panem poterit
dare, aut parare menſam populo ſuo?
21 Ideò audivit Dominus, & diſtulit: &
ignis accenſus eſt in Jacob, & ira a-
22 ſcendit in Iſrael: Quia non credide-
runt in Deo, nec ſperaverunt in ſalu-
23 tari ejus. Et mandavit nubibus deſu-
pèr, & januas cœli aperuit.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

4 Οὐκ ἐκρύβη ἀπὸ τῶν τέκνων αὐτῶν εἰς γενεὰν ἑτέ-
ραν, ἀπαγγέλλοντες τὰς αἰνέσεις κυρίου καὶ τὰς
δυναστείας αὐτοῦ, καὶ τὰ θαυμάσια αὐτοῦ ἃ ἐποίησε.
5 Καὶ ἀνέστησε μαρτύριον ἐν Ἰακὼβ, καὶ νόμον ἔθετο
ἐν Ἰσραήλ· ὃν ἐνετείλατο τοῖς πατράσιν ἡμῶν,
6 γνωρίσαι αὐτὸν τοῖς υἱοῖς αὐτῶν, Ὅπως ἂν γνῷ
γενεὰ ἑτέρα, υἱοὶ οἱ τεχθησόμενοι, καὶ ἀναστήσον-
7 ται καὶ ἀπαγγελοῦσιν αὐτὰ τοῖς υἱοῖς αὐτῶν· Ἵ-
να θῶνται ἐπὶ τὸν θεὸν τὴν ἐλπίδα αὐτῶν, καὶ
μὴ ἐπιλάθωνται τῶν ἔργων τοῦ θεοῦ, καὶ τὰς ἐντο-
8 λὰς αὐτοῦ ἐκζητήσωσιν· Ἵνα μὴ γένωνται ὡς οἱ
πατέρες αὐτῶν, γενεὰ σκολιὰ καὶ παραπικραίνου-
σα, γενεὰ ἥτις οὐ κατεύθυνεν ἐν τῇ καρδίᾳ αὐ-
τῆς, καὶ οὐκ ἐπιστώθη μετὰ τοῦ θεοῦ τὸ πνεῦμα αὐτῆς.
9 Υἱοὶ Ἐφραὶμ ἐντείνοντες καὶ βάλλοντες τόξον,
10 ἐστράφησαν ἐν ἡμέρᾳ πολέμου. Οὐκ ἐφύλαξαν τὴν
διαθήκην τοῦ θεοῦ, καὶ ἐν τῷ νόμῳ αὐτοῦ οὐκ ἤθελον
11 πορεύεσθαι. Καὶ ἐπελάθοντο τῶν εὐεργεσιῶν αὐτοῦ
καὶ τῶν θαυμασίων αὐτοῦ, ὧν ἔδειξεν αὐτοῖς·
12 Ἐναντίον τῶν πατέρων αὐτῶν ἃ ἐποίησε θαυμά-
13 σια, ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, ἐν πεδίῳ Τάνεως. Διέῤῥηξε
θάλασσαν, καὶ διήγαγεν αὐτοὺς, ἔστησεν ὕδατα ὡσεὶ
14 ἀσκόν. Καὶ ὡδήγησεν αὐτοὺς ἐν νεφέλῃ ἡμέρας,
15 καὶ ὅλην τὴν νύκτα ἐν φωτισμῷ πυρός. Διέῤῥηξε
πέτραν ἐν ἐρήμῳ, καὶ ἐπότισεν αὐτοὺς ὡς ἐν ἀβύσσῳ
16 πολλῇ. Καὶ ἐξήγαγεν ὕδωρ ἐκ πέτρας, καὶ κατήγα-
17 γεν ὡς ποταμοὺς ὕδατα. Καὶ προσέθεντο ἔτι τοῦ ἁ-
μαρτάνειν αὐτῷ· παρεπίκραναν τὸν ὕψιστον ἐν ἀν-
18 ύδρῳ, Καὶ ἐξεπείρασαν τὸν θεὸν ἐν ταῖς καρδί-
αις αὐτῶν, τοῦ αἰτῆσαι βρώματα ταῖς ψυχαῖς αὐ-
19 τῶν. Καὶ κατελάλησαν τοῦ θεοῦ, καὶ εἶπαν, Μὴ δυ-
20 νήσεται ὁ θεὸς ἑτοιμάσαι τράπεζαν ἐν ἐρήμῳ; Ἐ-
πεὶ ἐπάταξε πέτραν, καὶ ἐῤῥύησαν ὕδατα, καὶ χείμαῤ-
ῥοι κατεκλύσθησαν· μὴ καὶ ἄρτον δυνήσεται δοῦναι;
21 ἢ ἑτοιμάσαι τράπεζαν τῷ λαῷ αὐτοῦ; Διὰ τοῦτο
ἤκουσε κύριος καὶ ἀνεβάλετο, καὶ πῦρ ἀνήφθη ἐν Ἰ-
22 ακὼβ, καὶ ὀργὴ ἀνέβη ἐπὶ τὸν Ἰσραήλ. Ὅτι οὐκ
ἐπίστευσαν ἐν τῷ θεῷ, οὐδὲ ἤλπισαν ἐπὶ τὸ σωτήρι-
23 ον αὐτοῦ. Καὶ ἐνετείλατο νεφέλαις ὑπεράνωθεν, καὶ
θύρας οὐρανοῦ ἀνέῳξε·

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ Tranſ. LAT.

4 Non ſunt occultata à filiis eorum in (b) generationem alteram. Annuntiantes laudes Domini, & potentias ejus, & mirabilia ejus, quæ fecit. 5 Et (c) ſuſcitavit teſtimonium in Jacob: & legem poſuit in Iſrael. (d) Quam mandavit patribus noſtris, ut notam facerent eam filiis ſuis, ut cognoſcat generatio altera, 8 filii qui naſcentur. Et exurgent, & (e) annuntiabunt ea filiis ſuis. 9 ut ponant in Deo ſpem ſuam, & non obliviſcantur operum Dei, & mandata ejus exquirant. 10 Nè fiant ſicut patres eorum, (f) generatio prava, & exaſperans: 11 Generatio quæ non direxit in corde ſuo: & non eſt creditus cum Deo ſpiritus ejus. 12 Filii Ephræm intendentes, & mittentes (g) arcum, converſi ſunt in die belli. 13 [a] Non cuſtodierunt teſtamentum Dei; & in lege ejus noluerunt ambulare. 14 Et obliti ſunt [b] beneficiorum ejus, & mirabilium ejus, quæ oſtendit eis. 15 Coram patribus eorum quæ (h) fecit mirabilia in terra Ægypti, in campo Taneos. 16 Dirupit mare, & perduxit eos: ſtatuit aquas, (i) quaſi utrem. 17 Et deduxit eos in nube die, (k) & totâ nocte in illuminatione ignis. 18 Dirupit petram in eremo, & potavit eos, velut in abyſſo multa. 19 Et eduxit aquam [c] de petra, & deduxit tanquam flumina aquas. 20 Et appoſuerunt adhuc peccare ei: exacerbaverunt Altiſſimum [d] in (l) inaquoſo. 21 Et tentaverunt Deum in cordibus ſuis, ut peterent eſcas animabus ſuis. 22 Et detraxerunt de Deo, & dixerunt; Nunquid poterit Deus parare menſam in deſerto? 23 Quoniam percuſſit petram, & fluxerunt [c] aquæ: & torrentes inundaverunt. 24 Numquid & panem poterit dare, aut parare menſam populo ſuo? 25 [f] Propter hoc audivit Dominus, (m) & diſtulit, & ignis accenſus eſt in Jacob: & ira (n) aſcendit in Iſrael. 26 Quia non crediderunt in Deo: nec ſperaverunt in ſalutare ejus. 27 Et mandavit nubibus deſupèr, & januas cœli aperuit.

(4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23)

Verſio ÆTHIOPICA.

ወሊኅብኡ፡እምደቂቆሙ፡ ለካልእ፡ ትውል 4
ድ።=፡ ወነገሩ፡ስብሐቲሁ፡ለእግዚአብሔ 5
ር። ኃይሎሂ፡ ወመንክሮሂ፡ ዘገብረ።=፡
ዘአቀመ፡ ስምዐ፡ለያዕቆብ። ወሠርዐ፡ሕገ፡ 6
ለእስራኤል።=፡ ዘአዘዞሙ፡ ለአበዊነ። 7
ከመ፡ ይንግሩ፡ ለደቂቆሙ። ወከመ፡ያእም
ር፡ካልእ፡ትውልድ።=፡ ደቂቅ፡እለ፡ ይት 8
ወለዱ፡ ወይትነሥኡ። ወይዜንዉ፡ ለደቂቆ
ሙ።=፡ ከመ፡ይረስዩ፡ትውክልቶሙ፡ሳዕለ፡ 9
እግዚአብሔር። ወከመ፡ ኢይርስዑ፡ ግብረ፡
እግዚአብሔር። ወይኅሥሡ፡ትእዛዞ።=፡
ከመ፡ኢይኩኑ፡ከመ፡አበዊሆሙ።፡ትውልድ፡ 10
እኩት፡ወመሪር።=፡ትውልድ፡እንተ፡ኢያርት 11
ዐት፡ልባ። ወኢትአመነት፡መንፈሳ፡ በእግዚ
አብሔር።=፡ ደቂቀ፡ ኤፍሬም፡ ይወስቁ፡ 12
ወይነድፉ። ወተገፍትኡ፡ አመ፡ ዕለተ፡ቀት
ል።=፡ እስመ፡ ኢዐቀቡ፡ ኪዳኖ፡ለእግዚአ 13
ብሔር። ወአበዩ፡ ሖዊረ፡ በሕጉ።=፡ ወረ 14
ስዑ፡ረድኤቶሙ። ወመንክሮሂ፡ ዘአርአዮ
ሙ።=፡ ዘገብረ፡መንክረ፡በቅድመ፡አበዊሆ 15
ሙ። በምድረ፡ ግብጽ፡ ወበሐቅለ፡ ጣኔዎ
ስ።=፡ ሰጠቀ፡ባሕረ፡ወአኅለፎሙ።ወአቀ 16
መ፡ማየ፡ከመ፡ዝቅ።=፡መርሖሙ፡መዐልተ፡ 17
በደመና። ወኵሎ፡ ሌሊተ፡ በብርሃነ፡ እሳ
ት።=፡ ወአንቅዐ፡ኰኵሐ፡በበድው። ወአ 18
ስተዮሙ፡ ከመ፡ ዘእምቀላይ፡ ብዙኅ።=፡
ወአውሐዘ፡ ማየ፡ከመ፡ ዘእምአፍላግ። ወ 19
አውፅአ፡ ማየ፡እምእብን።=፡ ወደገሙ፡ ዓ 20
ደ፡ ወአበሱ፡ሎቱ። ወአምረርዎ፡ለልዑል፡
በበድው።=፡ ወአመከርዎ፡ለእግዚአብሔ 21
ር፡በልቦሙ። ከመ፡ይስአሉ፡ መብልዐ፡ ለነፍ
ሶሙ።=፡ሐመይዎ፡ለእግዚአብሔር፡ወይቤ 22
ሉ። ይክልኑ፡ እግዚአብሔር፡ ሠሪዐ፡ ማእ
ደ፡በገዳም።=፡ ወይዝብጥ፡ኰኵሐ፡ወያ 23
ውኅዝ፡ማየ።=፡ ወይክልኑ፡ውሂበ፡ኅብስ 24
ተ። ወይሠርዕ፡ ማእደ፡ለሕዝቡ።=፡ ወሰ 25
ምዐ፡ ዘንተ፡ እግዚአብሔር፡ ወአናሕሰየ።
ወነደደ፡እሳት፡ ሳዕለ፡ ያዕቆብ። ወመጽአ፡
መቅሠፍት፡ ሳዕለ፡ እስራኤል።=፡ እ 26
ስመ፡ ኢተአምንዎ፡ ለእግዚአብሔር። ወ
ኢተወከሉ፡ በአድኅኖቱ።=፡ ወአዘዘ፡ ደ 27
መና፡ በላዕሉ። ወአርኅወ፡ ኆኅተ፡ሰማ
ይ።=፡

INTERP. ÆTHIOP. [a] Quoniam non [b] auxiliorum ſuorum, [c] tanquam de flumine, & deduxit aquam de petra. [d] in deſerto. [e] aquæ: Nunquid & panem [f] Et audivit hoc Dominus,

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

4 * ولم يخفوا عن بنيهم الي جيل اخر * يخبرون تسابيح الرب وقواته * والعجايب التي صنعها
5 * اقام شهاداته في يعقوب * ورتب ناموسا في اسراييل * كالذي امر به اباءنا لكي يعلموا
6 7 ابناءهم * لكيما يعلم الجيل الاخر البنين المولودين * فيقومون ويعلمون بنيهم * لكي
8 يجعلوا توكلهم علي الله * ولا ينسوا اعمال الله * ويتبعوا وصاياه * لكيلا يكونوا كاباءيهم
9 جيلا معوجا معضبا * الجيل الذي لم يستقم قلبه * ولم تومن روحه بالله * بنوا افرايم
10 اوتروا قسيهم ورموا عنها * وانهزموا في يوم الحرب * ولم يحفظوا عهد الله * ولم يشاوا
11 12 ان يسلكوا في ناموسه * وتناسوا اعماله الحسنة * وعجايبه التي اراهم * العجايب التي
13 صنعها قدام اباءهم * بارض مصر وفي مزارع صاغان * فلق البحر الاحمر واجازهم فيه *
14 واقام المياه كانها في ازقاق * وهداهم في النهار بالغمامة * وفي الليل اجمع بضياء النار
15 16 * فجر الصخرة في البرية * وسقاهم كمن عمق كثير * واخرج الماء من الصخرة فجرت المياه
17 18 كالانهار * ثم عادوا ايضا فاخطوا اليه * واغضبوا العلي حيث ليس ماء * وجربوا الله في
19 قلوبهم * بمسلة طعام لنفوسهم * وتكلموا في الله قايلين * هل يقدر الله ان يعد لنا مايدة
20 في البرية * لانه ضرب الصخرة فجرت المياه وغرقت الاودية * فهل يمكنه ان يعطي خبزا ايضا *
21 او يعد مايدة لشعبه * لاجل هذا سمع الله وطرحهم الي خلف * واشتعلت نار في يعقوب *
22 23 واتي الغضب علي اسراييل * لانهم لم يومنوا بالله ولم يرجوا خلاصه * فامر السحاب من
فوق * وفتح ابواب السماء *

Et non abſconderunt à filiis ſuis in generationem alteram. Narrabunt laudationes Domini & virtutes ejus & miracula quæ fecit. 4
Conſtituit teſtimonia ſua in Jacob, & ordinavit legem in Iſrael, prout præcepit Patribus noſtris ut docerent filios ſuos; 5
Quatenus doceret generatio altera filios progenitos, ut ſurgerent ac docerent filios ſuos: 6
ut collocent fiduciam ſuam in Deo, nec obliviſcantur operum Dei, & ſectentur mandata ejus; 7
ut ne ſint ſicut patres ſui generatio perverſa, exaſperans: generatio cujus cor non fuit rectum, neque credidit ſpiritus ejus in Deum. 8
Filii Ephrem intenderunt arcus ſuos, & jaculati ſunt: & profligati ſunt in die belli: 9
Et non cuſtodierunt pactum Dei, nec voluerunt ambulare in lege ejus. 10
Et obliti ſunt opera ejus optima, & mirabilia ejus quæ oſtendit ipſis: 11
Mirabilia quæ fecit coram patribus eorum in terra Ægypti & in arvis Sagan. 12
Diviſit mare rubrum, & traduxit eos per illud: & ſtare fecit aquas ac ſi eſſent in utribus. 13
Et duxit eos interdiu in nube, 14
& nocte totâ in luce ignis. *Scidit petram in deſerto, & potavit eos quaſi ex abyſſo multa.* 15
Et eduxit aquam è petra, & fluxerunt aquæ tanquam flumina. 16
Deinde reverſi ſunt iterum & peccaverunt in eum, & irritaverunt Excelſum ubi non erat aqua. 17
Et tentaverunt Deum in cordibus ſuis, petendo cibum animabus ſuis. 18
Et obloquuti ſunt de Deo, dicentes: Anne poterit Deus parare nobis menſam in deſerto? 19
Quoniam ipſe percuſſit petram, & fluxerunt aquæ & obruerunt valles, nunquid poterit dare panem etiam, aut parare menſam populo ſuo? 20
Propterea audivit Deus, & abjecit eos retro, & accenſus eſt ignis in Jacob, & venit furor adverſus Iſrael. 21
Quia non crediderunt in Deum, neque ſperaverunt ſalutem ejus. 22
Præcepit nubibus deſuper, et aperuit portas cœli. 23

תהלים: עח

.eis dedit cœleste triticum & : comedendum ad Man eos ſuper pluit Et
וימטר עליהם מן לאכל ודגן־שמים נתן למו׃ 24
.ſaturitatem ad eis miſit *venationem* : vir comedit fortium Panem
לחם אבירים אכל איש צידה שלח להם לשבע׃ 25
.Auſtrum ſua fortitudine in induxit & : cœlis in Eurum fecit Proficiſci
יסע קדים בשמים וינהג בעזו תימן׃ 26
.alatum volatile marium arenam ſicut & : carnem pulverem ſicut eos ſuper pluit Et
וימטר עליהם כעפר שאר וכחול ימים עוף כנף׃ 27
,comederunt Et .ejus habitacula circa : ejꝰ *caſtrametationis interius* in fecit cadere Et
ויפל בקרב מחנהו סביב למשכנתיו׃ ויאכלו 28 29
:ſuo deſiderio à ſunt alienati Non .eis attulit eorũ deſideriũ & :valde ſunt ſaturati &
וישבעו מאד ותאותם יבא להם׃ לא־זרו מתאותם 30
occidit & ,eos in aſcendit Dei *naſus* Et .eorum ore in eorum eſca adhuc
עוד אכלם בפיהם׃ ואף אלהים עלה בהם ויהרג 31
peccaverunt hoc omni In .incurvavit Iſrael electos & : eorum pingues *in*
במשמניהם ובחורי ישראל הכריע׃ בכל־זאת חטאו־ 32
vanitate in conſumpſit Et .ejus mirabilibus *in* crediderunt non & : adhuc
עוד ולא האמינו בנפלאותיו׃ ויכל־בהבל 33
: eum quærebant & ,eos occidebat Si *.terrore in* eorum annos & : eorum dies
ימיהם ושנותם בבהלה׃ אם־הרגם ודרשוהו 34
Deus quia ,ſunt recordati Et .Deum *manè* quærebant & ,revertebantur &
ושבו ושחרו־אל׃ ויזכרו כי־אלהים 35
.eſt eorum redemptor ,excelſus Deus & : eorum *petra*
צורם ואל עליון גאלם׃ חצי הספר
eorum cor Et .ei ſunt mentiti ſua lingua in & : ſuo ore in *eum allexerunt* Et
ויפתוהו בפיהם ובלשונם יכזבו־לו׃ ולבם 36 37
miſericors ipſe Et .ejus pacto in *fuerunt fideles* nec ,eo cum rectum erat non
לא־נכון עמו ולא נאמנו בבריתו׃ והוא רחום 38
,*ſuum naſum avertendum ad*,multiplicabit & : diſperdet non *&* ,iniquitati *propitiabitur*
יכפר עון ולא־ישחית והרבה להשיב אפו
: *ipſi* caro quòd eſt recordatus Et .ſuam iram omnem ſuſcitabit non &
ולא־יעיר כל־חמתו׃ ויזכר כי־בשר המה 39
, deſerto in eum exacerbaverunt Quoties *.redibit* non & , *vadens* ſpiritus
רוח הולך ולא ישוב׃ כמה ימרוהו במדבר 40
ſanctum & : Deum tentaverunt & ,ſunt reverſi Et ! ſolitudine in eũ *affecerunt dolore*
יעציבוהו בישימון׃ וישובו וינסו אל וקדוש 41
eos redemit qua diei : ejus manus ſunt recordati Non *.limitaverunt* Iſrael
ישראל התוו׃ לא־זכרו את־ידו יום אשר־פדם 42
.Sohan *campo* in ſua *portenta* & : ſua ſigna Ægypto in poſuit Qui .anguſtia de
מני־צר׃ אשר־שם במצרים אתותיו ומופתיו בשדה־צען׃ 43
Miſit .biberent ne ,eorum fluenta & : eorum *rivos* ſanguinem in convertit Et
ויהפך לדם יאריהם ונזליהם בל־ישתיון׃ ישלח 44 45
brucho dedit Et .eos *corrupit* & , ranam & : eos comedit & ,*mixtionem* eos in
בהם ערב ויאכלם וצפרדע ותשחיתם׃ ויתן לחסיל 46
:eorũ *vineam* grandine in Occidit .locuſtæ eorum laborem & : eorum *germen*
יבולם ויגיעם לארבה׃ יהרג בברד גפנם 47
: eorum *jumentum* grandini *concluſit* Et *.glaciato lapide in* eorum ſycomoros &
ושקמותם בחנמל׃ ויסגר לברד בעירם 48
.carbonibus eorum poſſeſſiones &
ומקניהם לרשפים׃

תרגום TARGUM. PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

ואחית עליהון מנא למיכל ועבור שמיא יהב 24
להון׃ מזון דנחת ממדור מלאכיא אכלו בני 25
נשא זוודין שלח להון לשבעא׃ אטיל רוח 26
קדומא בשמיא ודבר בעושניה רוח דרומא׃
ואחית עליהון היך כעפרא בסרא והיך חלא 27
דימא עופא דפרח׃ ואפיל במצע משריתיה 28
חזור חזור למשכנוי׃ ואכלו ושבעו לחדא 29
ורגוגיהון איתי להון׃ לא זרו מן רגוגיהון עד 30
כדין מיכלהון בפומהון׃ ורוגזא דאלהא סליקת 31
בהון וקטיל בגבריהון ועולימי ישראל
אחמיט׃ בכל דא חבו תוב ולא הימינו 32
בפרישותוי׃ ושיצי בלמא יומיהון ושנתיהון 33
בבהולתא׃ בזמן דקטלנון תיבין ותבעו יתיה 34
ויתובון ויצלון קדם אלהא׃ ואדכרו ארום 35
אלהא תקיפהון ואלהא עלאה פרקנון׃
ושרגינון ליה בפומהון ובלישנהון מכדבין 36
ליה׃ מטול דלבהון לא מהימן עמיה ולא 37
הימינו בקימיה׃ והוא רחמנא מכפר עויתהון 38
ולא מחבל יתהון ומסגי למתב מן רוגזיה ולא
יוחי בהון כל חמתיה׃ ודכיר ארום בני בסרא 39
הנון רוחא דאזיל ולא תאיב׃ כמה יסרבון 40
ליה במדברא ירגזון קדמוי באתר צדיא׃ ותבו 41
ונסיאו אלהא וקדישא דישראל אתוו תוהא׃
לא אדכרו ית נסא דידיה ויומא דפרקנון מן 42
מעיקא׃ דשוי במצרים אתוהי ותמהוי בחקל 43
טנים׃ והפך לדמא אריתהון ונוזליהון לא 44
שתן מנהון׃ יגרי בהון ערבובי חיות ברא 45
וגמר יתהון ועורדעניא ויחבל יתהון׃ ויהב 46
ומסר לזחלא עבורהון ולעותהון לגובאי׃
וקלף בברדא גופניהון ושקמתהון בכרוזבא׃ 47
ומסר לברדא בעירהון וגיתיהון לרשפין 48
די נור׃

Et deſcendere fecit ſuper illos manna, ut 24
manducarent; & triticum cœli dedit eis.
Cibum qui deſcendit de habitaculo an- 25
gelorum comederunt homines : cibaria
miſit eis ad ſaturitatem. Intulit ventum ve- 26
hementem in cœlos, & induxit virtute ſua
Auſtrum. Et pluit ſuper eos ſicut pulverem 27
carnem, & ſicut arenam maris avẽ volan-
tem. Et *dejecit* in medio caſtrorum ejus, 28
in circuitu tabernaculi ejus. Et comederunt 29
& ſaturati ſunt nimis, & deſiderium ipſo-
rum adduxit eis. Non fuerunt alieni à cu- 30
piditate ſua, cùm adhuc cibus eorum eſſet
in ore ipſorum. Et furor Dei aſcendit in 31
eos, & occidit robuſtos eorum, & juve-
nes Iſrael proſtravit. In omnibus his pec- 32
caverunt adhuc, & non crediderunt mira-
culis ejus. Et conſumpſit in vanitate dies 33
eorum, & annos eorum in obſtupefactio-
ne. In tempore quo interficiebat eos 34
reſipiſcebant & quærebant eum, ac rever-
tebantur, precéſque fundebant coram Deo.
Et recordati ſunt, quòd Deus erat fortis 35
eorum, & quòd Deus excelſus redemerat
eos. Sed nugati ſunt ei ore ſuo atque lin- 36
gua, mentientes ei. Quoniam cor eorum 37
non erat *fidum* cum eo, & non fuerunt fide-
les in pacto ejus. Et ipſe miſericors expi- 38
at peccatum eorum; & non exterminat
eos, ſed multiplicat ut revertatur ab ira ſua,
& non accelerat in eos omnem furorem ſu-
um. Et recordatus eſt quòd filii carnis ſunt, 39
ſpiritus vadens & non rediens. Quoties 40
defecerunt ab illo in deſerto, excandue-
runt coram eo in loco deſolato! Et con- 41
verſi ſunt & tentaverunt Deum, & ſanctum
Iſraelis ſignaverunt ſigno. Non ſunt recor- 42
dati *miraculi* manus ejus, & diei quo rede-
mit eos ab infeſtatore. Qui poſuit in Ægy- 43
pto ſigna ſua, & portenta ſua in agro Tanes.
Et convertit in ſanguinem flumina eorum, 44
& ſtillationes eorum, ne biberent ex illis.
Miſit in eos mixtiones beſtiarum ſylveſtri- 45
um, & conſummavit eos; & ranas, & diſ-
ſipavit eos. Et dedit brucho frumenta eo- 46
rum & labores eorum locuſtis. Et decor- 47
ticavit grandine vineas eorum, & ſycomo-
ros eorum pruina. Et tradidit grandini 48
beſtias eorum, & armenta eorum carboni-
bus ignis.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

24 * ܐܚܬ ܠܗܘܢ ܡܢܢܐ ܠܡܐܟܘܠܬܐ. ܘܠܚܡܐ ܕܫܡܝܐ ܝܗܒ ܠܗܘܢ: * ܠܚܡܐ ܕܡܠܐܟܐ ܐܟܠ
25
26 ܒܪܢܫܐ. ܘܙܘܕܐ ܫܕܪ ܠܗܘܢ ܠܡܣܒܥ: * ܐܙܝܥ ܓܝܪ ܪܘܚܐ ܒܫܡܝܐ. ܘܐܝܬܝ ܒܚܝܠܗ ܠܬܝܡܢܐ:
27 * ܐܚܬ ܠܗܘܢ ܒܣܪܐ ܐܝܟ ܥܦܪܐ. ܘܐܝܟ ܚܠܐ ܕܝܡܐ ܦܪܚܬܐ ܕܓܦܐ: * ܘܢܦܠܘ ܒܡܨܥܬ ܡܫܪܝܬܗܘܢ
28
29 ܘܚܕܪ ܡܫܟܢܝܗܘܢ. * ܘܐܟܠܘ ܘܣܒܥܘ ܛܒ: ܘܪܓܬܗܘܢ ܐܝܬܝ ܠܗܘܢ. * ܘܠܐ
30
31 ܦܪܩܘ ܡܢ ܪܓܝܓܬܗܘܢ: ܘܥܕ ܡܐܟܘܠܬܗܘܢ ܒܦܘܡܗܘܢ. * ܘܪܘܓܙܗ ܕܐܠܗܐ ܣܠܩ
32 ܒܗܘܢ: ܘܩܛܠ ܡܢ ܥܬܝܪܝܗܘܢ. ܘܓܒܝܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ ܟܒܫ: * ܒܗܠܝܢ ܟܠܗܘܢ ܚܛܘ.
33 ܘܬܘܒ ܠܐ ܗܝܡܢܘ ܒܬܕܡܪܬܗ: * ܘܫܠܡܘ ܒܣܪܝܩܘܬܐ ܝܘܡܝܗܘܢ. ܘܫܢܝܗܘܢ ܒܥܓܠ:
34 * ܟܕ ܩܛܠ ܗܘܐ ܠܗܘܢ. ܒܥܝܢ ܗܘܘ ܠܗ. ܘܗܦܟܝܢ ܗܘܘ ܘܡܩܕܡܝܢ ܠܘܬܗ: * ܘܐܬܕܟܪܘ
35
36 ܕܐܠܗܐ ܗܘ ܥܕܘܪܗܘܢ. ܘܐܠܗܐ ܡܪܝܡܐ ܦܪܘܩܗܘܢ: * ܘܪܚܡܘܗܝ ܒܦܘܡܗܘܢ. ܘܒܠܫܢܗܘܢ
37 ܟܕܒܘ ܠܗ. * ܠܒܗܘܢ ܠܐ ܬܪܝܨ ܥܡܗ. ܘܠܐ ܗܝܡܢܘ ܒܩܝܡܗ: * ܘܗܘ ܡܪܚܡܢ
38 ܘܡܚܣܐ ܚܛܗܐ ܘܠܐ ܡܚܒܠ. ܘܡܣܓܐ ܠܡܗܦܟܘ ܪܘܓܙܗ. ܘܠܐ ܡܥܝܪ ܟܠܗ ܚܡܬܗ:
39 * ܘܐܬܕܟܪ ܕܒܣܪܐ ܐܢܘܢ. ܪܘܚܐ ܕܐܙܠܐ ܘܠܐ ܗܦܟܐ: * ܟܡܐ ܡܪܡܪܘܗܝ ܒܡܕܒܪܐ. ܘܐܪܓܙܘܗܝ
40
41 ܒܐܝܫܝܡܘܢ: * ܘܗܦܟܘ ܘܢܣܝܘ ܠܐܠܗܐ. ܘܠܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ ܐܪܓܙܘ: * ܘܠܐ ܐܬܕܟܪܘ
42
43 ܐܝܕܗ ܕܝܘܡܐ ܕܦܪܩ ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܐܠܘܨܐ. * ܕܥܒܕ ܒܡܨܪܝܢ ܐܬܘܬܗ: ܘܬܕܡܪܬܗ
44 ܒܚܩܠܐ ܕܨܘܥܢ. * ܕܗܦܟ ܢܗܪܘܬܗܘܢ ܠܕܡܐ: ܘܪܕܝܗܘܢ ܕܠܐ ܢܫܬܘܢ ܡܝܐ. * ܢܫܕܪ
45
46 ܒܗܘܢ ܕܒܒܐ ܕܟܠܒܐ ܘܢܐܟܠܘܢ ܐܢܘܢ: ܘܥܘܪܕܥܢܐ ܘܢܚܒܠܘܢ ܐܢܘܢ. * ܢܬܠ ܠܩܡܨܐ ܥܠܠܬܗܘܢ:
47 ܘܥܡܠܗܘܢ ܠܙܚܠܐ: * ܢܬܒܪ ܒܒܪܕܐ ܓܦܬܗܘܢ: ܘܬܐܢܝܗܘܢ ܒܓܠܝܕܐ. * ܢܫܠܡ ܠܒܪܕܐ
48 ܒܥܝܪܗܘܢ: ܘܩܢܝܢܗܘܢ ܠܝܩܕܢܐ.

Demiſit eis manna ad manducandum, & pa- 24
nem cœli dedit illis; Pané Angelorum man-
ducavit homo. Et venationem miſit eis, ut 25
ſatiarentur; Concitavit enim ventos in cœ- 26
lo, & adduxit virtute ſuâ Auſtrum : Demiſit 27
illis carnem ſicut pulverem, & velut arenam
maris volucre alatum. Ceciditque intra ca- 28
ſtra illorum, & circum tabernacula eorum;
Et comederunt atque ſaturati ſunt abundè, & 29
optatis eorum ſatisfecit. Non tamen deſtite- 30
runt à concupiſcentiis ſuis : ſed dum adhuc
cibus eorum eſſet in ore ipſorum, Ira Dei 31
aſcendit in eos, interfecitque ex divitibus il-
lorum, & ſelectiores in Iſraele proſtravit. In 32
his omnibus peccaverunt, & iterum non
crediderunt mirabilibus ejus. Finierunt 33
in vanitate dies ſuos, & annos ſuos ce-
leriter. Quando interficiebat illos, quære- 34
bant eum, & revertebantur, ac maturè veni-
ebant ad eum. Recordati ſunt Deum eſſe ad- 35
jutoré eorum, & Deum altiſſimũ redempto-
rem ipſorum. Dilexerunt eum ore ſuo, lin- 36
guâ auté ſuâ mentiti ſunt in illum. Cor ſuum 37
non direxerunt erga eũ, neq; crediderũt fœ-
deri ipſiꝰ. At ipſe miſericors eſt, & condonat 38
peccata, nec deſtruit. Sæpè revocat irã ſuã,
& non exciæt totum furoré ſuum. Et recor- 39
datus eſt carné eſſe illos, ventum qui abit &
non redit. Iidé exacerbaverunt eum in de- 40
ſerto, & ad indignationé concitaverunt illũ
in Aſimon. Et reverſi ſunt ac tentaverunt De- 41
um, & Sanctũ Iſraelis provocaverunt. Nec 42
ſunt recordati manꝰ ejus die quâ redemit eos
de manu affligétis: Quòd geſſerit in Ægypto 43
ſigna ſua & prodigia ſua in campis Soon :
Quòd verterit flumina eorum in ſanguiné, & 44
fluenta eorum ne biberent aquã: Miſerit ad- 45
versùm illos muſcas caninas, & comederint
eos: & ranas, corruperintq; illos: Dederit lo- 46
cuſtæ proventus eorum, & laboré eorum bru-
cho : Fregerit grandine vites eorum, ac ficus 47
eorum glacie: Tradiderit grandini pecora il- 48
lorum, & poſſeſſioné eorum combuſtioni :

Verſio VULG. LAT.

14 Et pluit illis manna ad manducandū,
25 & panē cœli dedit eis. Panē angelo-
rū manducavit homo:cibaria miſit eis
26 in abundantia. Tranſtulit Auſtrum de
cœlo: & induxit in virtute ſua Afri-
27 cū. Et pluit ſuper eos ſicut pulverem
carnes:& ſicut arenam maris volatilia
28 pennata. Et ceciderunt in medio ca-
29 ſtrorū eorū,circa tabernacula eorū.Et
manducaverunt & ſaturati ſunt nimis,
30 & deſideriū eorum attulit eis: Non
ſunt fraudati à deſiderio ſuo. Adhuc
31 eſcæ eorum erant in ore ipſorū: Et ira
Dei aſcendit ſup eos. Et occîdit pin-
gues eorū,& electos Iſrael impedivit.
32 In omnib⁹ his peccaverunt adhuc: &
33 non crediderunt in mirabilib⁹ ej⁹. Et
defecerunt in vanitate dies eorum, &
34 anni eorum cum feſtinatione. Cùm oc-
cideret eos,quærebāt eum:& reverte-
bantur,& diluculò veniebant ad eum.
35 Et rememorati ſunt quia De⁹ adjutor
eſt eorum: & De⁹ excelſus redemptor
36 eorū eſt. Et dilexerunt eum in ore ſuo,
37 & linguâ ſuâ mentiti ſunt ei:Cor autē
eorum non erat rectum cum eo:nec fi-
38 deles habiti ſunt in teſtamento ej⁹. I-
pſe autē eſt miſericors, & propiti⁹ fiet
peccatis eorum: & non diſperdet eos.
Et abundavit ut averteret irā ſuā: &
39 non accendit omnē irā ſuā: Et recor-
dat⁹ eſt quia caro ſunt: ſpirit⁹ vadens,
40 & non rediens. Quoties exacerbave-
runt eū in deſerto,in irā concitaverunt
41 eum in inaquoſo? Et converſi ſunt,&
tentaverunt Deum : & ſanctum Iſrael
42 exacerbaverunt. Non ſunt recordati
man⁹ ej⁹,die quâ redemit eos de manu
43 tribulantis, Sicut poſuit in Ægypto
ſigna ſua, & prodigia ſua in campo
44 Taneos. Et convertit in ſanguinē flu-
mina eorum, & imbres eorum, nè bi-
45 berēt. Miſit in eos cœnomyiā,& com-
êdit eos ; et ranā, & diſperdidit eos.
46 Et dedit ærugini fructus eorum,& la-
47 bores eorū locuſtæ. Et occîdit in gran-
dine vineas eorum, & moros eorum in
48 pruina. Et tradidit grandini jumenta
eorum,& poſſeſſionem eorum igni.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

24 Καὶ ἔβρεξεν αὐτοῖς μάννα φαγεῖν, καὶ ἄρτον οὐρα-
25 νοῦ ἔδωκεν αὐτοῖς. Ἄρτον ἀγγέλων ἔφαγεν ἄνθρω-
πος, ἐπισιτισμὸν ἀπέστειλεν αὐτοῖς εἰς πλησμο-
26 νήν. Ἀπῆρεν Νότον ἐξ οὐρανοῦ, καὶ ἐπήγαγεν ἐν τῇ
27 δυναστείᾳ αὐτοῦ Λίβα. Καὶ ἔβρεξεν ἐπ᾽ αὐτοὺς ὡσεὶ
χοῦν σάρκας, καὶ ὡσεὶ ἄμμον θαλασσῶν πετεινὰ πτε-
28 ρωτά. Καὶ ἐπέπεσον εἰς μέσον τῆς παρεμβολῆς αὐ-
29 τῶν, κύκλῳ τῶν σκηνωμάτων αὐτῶν. Καὶ ἔφαγο-
σαν καὶ ἐνεπλήσθησαν σφόδρα, καὶ τὴν ἐπιθυμίαν αὐ-
30 τῶν ἤνεγκεν αὐτοῖς. Οὐκ ἐστερήθησαν ἀπὸ τῆς ἐπι-
θυμίας αὐτῶν· ἔτι τῆς βρώσεως αὐτῶν οὔσης ἐν τῷ
31 στόματι αὐτῶν, Καὶ ὀργὴ τοῦ θεοῦ ἀνέβη ἐπ᾽ αὐ-
τούς, καὶ ἀπέκτεινεν ἐν τοῖς πίοσιν αὐτῶν, καὶ τοὺς
32 ἐκλεκτοὺς τοῦ Ἰσραὴλ συνεπόδισεν. Ἐν πᾶσι τού-
τοις ἥμαρτον ἔτι, καὶ οὐκ ἐπίστευσαν τοῖς θαυμασί-
33 οις αὐτοῦ. Καὶ ἐξέλιπον ἐν ματαιότητι αἱ ἡμέραι
34 αὐτῶν, καὶ τὰ ἔτη αὐτῶν μετὰ σπουδῆς. Ὅταν ἀπέκτει-
νεν αὐτούς, ἐζήτουν αὐτόν, καὶ ἐπέστρεφον καὶ ὤρθριζον
35 πρὸς τὸν θεόν. Καὶ ἐμνήσθησαν, ὅτι ὁ θεὸς βοηθὸς
αὐτῶν ἐστι, καὶ ὁ θεὸς ὁ ὕψιστος λυτρωτὴς αὐτῶν ἐστι.
36 Καὶ ἠγάπησαν αὐτὸν ἐν τῷ στόματι αὐτῶν, καὶ τῇ γλώσ-
37 σῃ αὐτῶν ἐψεύσαντο αὐτῷ. Ἡ δὲ καρδία αὐτῶν οὐκ εὐ-
θεῖα μετ᾽ αὐτοῦ, οὐδὲ ἐπιστώθησαν ἐν τῇ διαθήκῃ αὐ-
38 τοῦ. Αὐτὸς δέ ἐστιν οἰκτίρμων, καὶ ἱλάσεται τὰς ἁμαρ-
τίας αὐτῶν, καὶ οὐ διαφθερεῖ· καὶ πληθυνεῖ τοῦ ἀπο-
στρέψαι τὸν θυμὸν αὐτοῦ, καὶ οὐχὶ ἐκκαύσει πᾶσαν τὴν
39 ὀργὴν αὐτοῦ. Καὶ ἐμνήσθη ὅτι σάρξ εἰσι, πνεῦμα
40 πορευόμενον καὶ οὐκ ἐπιστρέφον. Ποσάκις παρεπίκρα-
ναν αὐτὸν ἐν τῇ ἐρήμῳ, παρώργισαν αὐτὸν ἐν γῇ ἀν-
41 ύδρῳ; Καὶ ἐπέστρεψαν καὶ ἐπείρασαν τὸν θεόν, καὶ
42 τὸν ἅγιον τοῦ Ἰσραὴλ παρώξυναν. Οὐκ ἐμνήσθησαν
τῆς χειρὸς αὐτοῦ ἡμέρας, ἧς ἐλυτρώσατο αὐτοὺς ἐκ
43 χειρὸς θλίβοντος. Ὡς ἔθετο ἐν Αἰγύπτῳ τὰ ση-
μεῖα αὐτοῦ, καὶ τὰ τέρατα αὐτοῦ ἐν πεδίῳ Τάνεως.
44 Καὶ μετέστρεψεν εἰς αἷμα τοὺς ποταμοὺς αὐτῶν, καὶ
45 τὰ ὀμβρήματα αὐτῶν ὅπως μὴ πίωσιν. Ἐξαπέ-
στειλεν εἰς αὐτοὺς κυνόμυιαν, καὶ κατέφαγεν αὐτούς,
46 καὶ βάτραχον, καὶ διέφθειρεν αὐτούς. Καὶ ἔδωκε τῇ
ἐρυσίβῃ τὸν καρπὸν αὐτῶν, καὶ τοὺς πόνους αὐτῶν
47 τῇ ἀκρίδι. Ἀπέκτεινεν ἐν χαλάζῃ τὴν ἄμπελον
48 αὐτῶν, καὶ τὰς συκαμίνους αὐτῶν ἐν τῇ πάχνῃ. Καὶ
παρέδωκεν ἐν χαλάζῃ τὰ κτήνη αὐτῶν, καὶ τὴν ὕ-
παρξιν αὐτῶν τῷ πυρί.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP.Tranſl.LAT.

28 Et pluit illis manna ad mandu- 24
candū:& panem cœli dedit eis.29
Panē Angelorū manducavit homo: 25
cibaria miſit eis [g] in abundantia.
30 [h]Tranſtulit(o)Auſtrū de cæ 26
lo:et induxit in virtute ſua Africū.
31 Et pluit ſuper eos,ſicut pulvere, 27
carnes:& ſicut arenam marium,vo-
latilia pennata.32 Et ceciderunt in 28
medio caſtrorū eorum, circa taber-
nacula eorum. 33 Et manducave- 29
runt,& ſaturati ſunt nimis;& de-
ſiderium eorū attulit eis: Non ſunt 30
privati à deſiderio ſuo. 34 Adhuc
eſca eorum erat in ore ipſorum : Et 31
ira Dei aſcendit ſuper eos.35 Et oc-
cîdit(p) [i]in pinguibus eorum: &
electos Iſrael compedivit.36 [k]In 32
omnibus his peccaverunt adhuc:&
non crediderunt mirabilibus ejus.
37 Et defecerunt in vanitate dies 33
eorum:& [l]anni eorum cum feſti-
natione.38 Cùm occideret eos; [m] 34
quærebant eum, & revertebantur :
& diluculò veniebant ad Deum.39
Et rememorati ſunt, quoniam Deus 35
adjutor eſt eorum : & Deus(q)ex-
celſus redemptor eorum eſt. 40 Et 36
dilexerunt eum in ore ſuo,et linguâ
ſuâ mentiti ſunt ei. 41 Cor autem i- 37
pſorum non erat rectum[n]cum eo:
nec fideles(r)habiti ſūt in teſtamen-
to ejus. 42 Ipſe autē eſt miſericors, 38
& propitius fiet[o]peccatis eorum:
& non (ſ)diſperdet [p]. 43 Et(t)
multiplicabit ad avertendam iram
ſuam,& non accendet omnem iram
ſuā. 44 Et recordatus eſt,quia caro 39
ſunt,ſpirit⁹ [q]vadens,et non red-
iens. 45 Quoties exacerbaverunt 40
eum in deſerto ; in iram concitave-
runt eū in(u)[r]terra ſine aqua.46
Et converſi ſunt,et tentaverunt De- 41
um : et ſanctum Iſrael exacerbave-
runt.47 Non ſunt recordati manûs 42
ej⁹,diei,(x)quâ redemit eos de ma-
nu tribulantis. 48 Sicut poſuit in 43
Ægypto ſigna ſua, & prodigia ſua
in campo Taneos. 49 Et convertit 44
in ſanguinem flumina eorum, et(y)
[ſ] imbres eorum ; nè biberent.50
Miſit in eos(z)cynomyam, et comē- 45
dit eos:et ranam,et diſperdidit eos.
51 Et dedit (aa) ærugini fructum 46
eorum:et labores eorū(bb)locuſtæ.
52 Occîdit in grandine (cc)vineam 47
eorum, & (dd)moros eorum in(ee)
pruina.53 Et tradidit in(ff)grandine jumenta eorum, et ſubſtantiam eorum igni. 48

Verſio ÆTHIOPICA.

ወአዝነመ:ሎሙ:መና:ይብልዑ::ወወሀቦሙ: 28
ኅብስተ:ሰማይ::=: ወኅብስተ:መላእክቲ 29
ሁ:በልዑ:እጓለ:እመሕያው:: ወፈነወ:ሎ
ሙ:ስንቀሙ:ዘየአክሎሙ::=: ወአንሥአ: 30
አዜብ:እምሰማይ:: ወአምጽአ:መስዐ:በኀ
ይሉ::=: ወአዝነመ:ላዕሌሆሙ:ሥጋ:ከ 31
መ:መሬት:: ወከመ:ኖጻ:ባሕር:አዕዋፈ:
ዘይሠርር::=: ወወድቀ:ማእከለ:ተዐይኒ 32
ሆሙ::ወአውደ:ደብተራሆሙ::=: በልዑ:ወ 33
ጸግቡ:ጥቀ:: ወወሀቦሙ:ለፍትወቶሙ:: ወ
ኢያኅጥኦሙ:እመዘ:ፈቀዱ::=: ወእንዘ: 34
ዓዲ:መብልዖሙ:ውስተ:አፈሆሙ:: ወመጽ
አ:መቅሠፍተ:እግዚአብሔር:ላዕሌሆ
ሙ::=: ወቀተሎሙ:መብዝኃቶሙ:: ወአ 35
ዕቀጾሙ:ለኅሩያነ:እስራኤል::=: ወምስ 36
ለ:ዝኒ:ዓዲ:አበሱ:ሎቱ:: ወኢተአመንዎ:
በተአምሪሁ::=: ወኀልቀ:በከንቱ:መዋዕ 37
ሊሆሙ:: ወኀለፈ:በጕጕአ:አመቲሆ
ሙ::=: ወአመ:ይቀትሎሙ:ውእተ:አሚረ: 38
የኀሥሥዎ:: ወይትመየጡ:ወይገይሱ:ኀበ:
እግዚአብሔር::=: ወተዘከሩ:ከመ:እግዚ 39
አብሔር:ውእቱ:ረድኤቶሙ:: ወእግዚአ
ብሔር:ልዑል:መድኅኒሆሙ::=:ወአፍቀር 40
ዎ:በአፈሆሙ:: ወሐሰውዎ:በልሳኖሙ::=:
ወኢኮነ:ርቱዐ:ልቦሙ:በላዕሌሆሙ: ወኢ 41
ተአመንዎ:በኪዳኑ::=:ወውእቱሰ:መሐሪ: 42
ውእቱ:: ወይሰሪ:ሎሙ:ኵሎ:ኃጢአቶሙ:
ወኢያጠፍኦሙ::=: ወያበዝኃ:መይጠ: 43
መዐቱ:: ወኢያነድድ:በኵሉ:መቅሠፍ
ቱ::=: ወተዘከረ:ከመ:ሥጋ:እሙንቱ:: 44
መንፈስ:እምከመ:ወፅአ:ኢይገብእ::=:ሚ 45
መጠነ:አምዕዕዎ በገዳም:: ወወሀክዎ:
በበድው::=: ወተመይጡ:ወአመከርዎ:ለ 46
እግዚአብሔር:: ወወሐክዎ:ለቅዱስ:እስ
ራኤል::=: ወኢተዘከሩ:እዴሁ:: ዘአድ 47
ኀኖሙ:እምእደ:ፀሮሙ::=: ዘገብረ:ተአ 48
ምረ:በግብጽ:: ወመንክረ:በሐቅለ:ጣኔዎ
ስ::=: ወረሰየ:ደመ:ለአፍላጊሆሙ:: ወለ 49
ዐንቅዐቲሆሙኒ:ከመ:ኢይስተዩ::=: ወፈነ 50
ወ:ላዕሌሆሙ:አኮተ: ወበልዖሙ:: ወቈርነ
ንዓተ: ወአርኰሶሙ::=: ወወሀበ: ለአናኵ 51
ዕ:ፍሬሆሙ:: ወተግባሮሙኒ:ለአንበጣ::=:
ወቀተለ: ወይኖሙ:በበረድ:: ወበለሶሙኒ:በ 52
አስሐትያ::=: ወወሀበ:ለበረድ:እንስሳሆ 53
ሙ::ወንዋዮሙኒ:ለእሳት::=:

INTERP. ÆTHIOP.[g]quæ ſufficerent illis.[h] Et excitavit Auſtrum[i] plurimos eorum : [k] Et cum iſthoc etiam in eum peccaverunt:et [l] tranſierunt anni[m]illo die quærebant [n] apud eos: nec[o]omnibus peccatis[p]eos. Et [q]quandocumque vadens [r] ſolitudine ; et[ſ] fontes eorum;ut non

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

24 25 وامطر لهم منا لياكلوا * اعطاهم خبز السماء * خبز الملايكة اكله الانسان * وبعث
26 27 اليهم بطعام مشبع * واثار ريحا قبلية من السماء * واحضر بقوة العاصف * فامطر عليهم
28 لحوما مثل التراب * وطيرا ذات اجنحة مثل رمل البحر * وسقطت وسط معسكرهم حول منازلهم
29 30 * فاكلوا وشبعوا جدا * واتاهم بشهوتهم * ولم يعدمهم ارادتهم * فبينما الطعام في افواههم
31 32 * اتى عليهم غضب الله * فقتل مختاريهم * وصرع مختاري اسرائيل * وفي هذا كله اخطوا
33 اليه ايضا * ولم يومنوا بعجايبه * ففنيت في الباطل ايامهم * وسنوهم بسرعة تصرمت
34 35 * ولما قتلهم حينيذ طلبوه * وعادوا فابتكروا الى الله * وذكروا ان الله معينهم * والله
36 37 العلي مخلصهم * فاحبوه بافواههم وكذبوه بالسنتهم * ولم تستقم معه قلوبهم * ولم
38 يومنوا بعهده * وهو روف رحيم يغفر لهم خطاياهم ولا يهلكهم * ويرد كثير
39 40 سخطه * ولا يشعل كل غضبه * ذكر انهم لحم وروح اذا خرج لم يعد بعد * مرارا كثيرة
41 اغضبوه في البرية * واغضبوه في مكان عديم الماء * وعادوا جربوا الله واغضبوا قدوس
42 43 اسرائيل * ولم يذكروا يده في اليوم الذي خلصهم من يد مضطهديهم * ولما جعل
44 اياته بمصر * وعجايبه في مزارع صاغان * اذ حول انهارهم دما * وصهاريجهم لكيلا
45 46 يشربوا * ارسل عليهم ذباب الكلب فاكلهم * والضفادع فافسدتهم * اطعم القمل
47 48 ثمارهم * والجراد كدهم * كسر بالبرد كرومهم * وبالجليد تينهم * اسلم للبرد مواشيهم *
وللنار كل مالهم *

Et pluit illis manna ut manducarent:dedit 24
illis panem cœli: panem Angelorum man- 25
ducavit homo : miſitque eis cibū ſaturan-
tem. Et excitavit ventum Auſtralem de 26
de cœlo, & induxit vehementiam turbi-
nis : Et pluit ſuper eos carnes ut pulve- 27
rem, & volatilia alata ut arenam maris.
Et ceciderunt in medium caſtrorum eo- 28
rum circa manſiones eorum. Et comede- 29
runt ac ſaturati ſunt valde & dedit eis
deſiderium eorum. Et non privavit eos 30
voluntate eorum. Dum autem eſſet eſca in
oribus eorum, Venit ſuper eos ira Dei,& 31
occîdit ſelectiores eorum, et proſtravit e-
lectos Iſrael. Attamen peccaverunt in e- 32
um iterum, & non crediderunt miracu-
lis ejus. Conſumptique ſunt in vanitate 33
dies eorum, & anni eorum cum celeri-
tate ſecti fuerunt. Quum autem occidiſ- 34
ſet eos,tunc quæſierunt illum : & reverſi,
diluculò venerunt ad Deum. Et recordati 35
ſunt quòd Deus adjutor eorum eſt,& De-
us altiſſimus, Salvator eorum. Nam di- 36
lexerunt eum oribus ſuis,& mentiti ſunt
ei linguis ſuis, Et recta non fuerunt cum 37
eo corda eorum, neque crediderunt pacto
ejus. Ipſe verò eſt clemens, miſericors,re- 38
mittens eis delicta eorū,et non perdet eos:
& retrahet multitudinem iræ ſuæ, &
non accendetur totus furor illius. Recor- 39
datus eſt eſſe eos carnem,& ſpiritum qui
quum exierit,non redit ampliùs. Multo- 40
ties concitaverunt eum ad indignationem
in deſerto, & ad iram commoverunt eum
in loco carente aquâ ; Et reverſi ſunt, ac 41
tentaverunt Deū,et excitaverunt ad iram
SanctumIſrael.Et non ſunt recordati ma- 42
nûs ej⁹ in die quâ liberavit eos de manu
perſequentium illos. Et quando fecit pro- 43
digia ſua in Ægypto & miracula ſua in
arvis Sagan. Quando convertit flumina 44
eorum in ſanguinem,& ciſternas eorum,
ut ne biberent.Miſit adverſus eos muſcas 45
caninas,& comederunt eos: & ranas,&
corruperunt eos.Cibavit pediculos fructi- 46
bus eorum,& locuſtas labore eorum:Con- 47
fregit grandinibus vineas eorum,et glacie
ficus eorum. Tradidit grandini armenta 48
eorum, et igni cunctas facultates eorum.

תהלים ׃ עח

immiſſionem : anguſtiam & ,furorem & ,iram ,ſuæ *naris* iram eos in Miſit
יְשַׁלַּח־בָּם ׀ חֲרוֹן אַפּוֹ עֶבְרָה וָזַעַם וְצָרָה מִשְׁלַחַת 49
morte à prohibuit non ,ſuo *naſo* ſemitam Ponderavit .malorum angelorum
מַלְאֲכֵי רָעִים׃ יְפַלֵּס נָתִיב לְאַפּוֹ לֹא־חָשַׂךְ מִמָּוֶת 50
primogenitum omne percuſſit Et .*concluſit peſti* eorum *beſtiam* & : eorum animam
נַפְשָׁם וְחַיָּתָם לַדֶּבֶר הִסְגִּיר׃ וַיַּךְ כָּל־בְּכוֹר 51
fecit proficiſci Et .Cham tabernaculis in fortitudinum principium : Ægypto in
בְּמִצְרָיִם רֵאשִׁית אוֹנִים בְּאָהֳלֵי־חָם׃ וַיַּסַּע 52
eos duxit Et .deſerto in gregem ſicut eos duxit & ; ſuum populum oves ſicut
כַּצֹּאן עַמּוֹ וַיְנַהֲגֵם כַּעֵדֶר בַּמִּדְבָּר׃ וַיַּנְחֵם 53
eos adduxit Et .mare operuit eorum inimicos & : *expaverunt* non & ,*fiducia in*
לָבֶטַח וְלֹא פָחָדוּ וְאֶת־אוֹיְבֵיהֶם כִּסָּה הַיָּם׃ וַיְבִיאֵם 54
ejecit Et .ejus dextera acquiſivit ,iſtum montem : ſuæ ſanctitatis terminum ad
אֶל־גְּבוּל קָדְשׁוֹ הַר־זֶה קָנְתָה יְמִינוֹ׃ וַיְגָרֶשׁ 55
fecit habitare & : hæreditatis *fune* in eas fecit cadere & ,gentes eorum *faciebus* à
מִפְּנֵיהֶם ׀ גּוֹיִם וַיַּפִּילֵם בְּחֶבֶל נַחֲלָה וַיַּשְׁכֵּן
Deum exacerbaverunt & ,tentaverunt Et .Iſrael tribus eorũ tabernaculis in
בְּאָהֳלֵיהֶם שִׁבְטֵי יִשְׂרָאֵל׃ וַיְנַסּוּ וַיַּמְרוּ אֶת־אֱלֹהִים 56
,ſunt prævaricati & ,ſe averterunt Et .cuſtodierunt non ejus teſtimonia & : excelſum
עֶלְיוֹן וְעֵדוֹתָיו לֹא שָׁמָרוּ׃ וַיִּסֹּגוּ וַיִּבְגְּדוּ 57
:ſuis excelſis in eã irritaverunt Et .*doli* arcus ut ſunt verſi : eorũ patres ſicut
כַּאֲבוֹתָם נֶהְפְּכוּ כְּקֶשֶׁת רְמִיָּה׃ וַיַּכְעִיסוּהוּ בְּבָמוֹתָם 58
: eſt iratus & ,Deus Audivit .eum fecerunt æmulari ſuis ſculptilibus in &
וּבִפְסִילֵיהֶם יַקְנִיאוּהוּ׃ שָׁמַע אֱלֹהִים וַיִּתְעַבָּר 59
collocavit tentorium : Siloh tabernaculum reliquit Et .Iſrael in valde *reprobavit* &
וַיִּמְאַס מְאֹד בְּיִשְׂרָאֵל׃ וַיִּטֹּשׁ מִשְׁכַּן שִׁלוֹ אֹהֶל שִׁכֵּן 60
manũ in ſuã gloriam & : ſuã fortitudinem captivitatem in tradidit Et .*homine in*
בָּאָדָם׃ וַיִּתֵּן לַשְּׁבִי עֻזּוֹ וְתִפְאַרְתּוֹ בְיַד־ 61
.eſt iratus ſuam hæreditatem in & : ſuum populum gladio *concluſit* Et .*anguſtiatoris*
צָר׃ וַיַּסְגֵּר לַחֶרֶב עַמּוֹ וּבְנַחֲלָתוֹ הִתְעַבָּר׃ 62
.*ſunt celebratæ epithalamio* non ejus virgines & : ignis comedit ejus *Electos*
בַּחוּרָיו אָכְלָה־אֵשׁ וּבְתוּלֹתָיו לֹא הוּלָּלוּ׃ 63
eſt excitatus Et .fleverunt non ejus viduæ & : ceciderunt gladio in ej⁹ Sacerdotes
כֹּהֲנָיו בַּחֶרֶב נָפָלוּ וְאַלְמְנֹתָיו לֹא תִבְכֶּינָה׃ וַיִּקַץ 64 65
percuſſit Et .*vino præ exclamans* potens tanquam : Dominus dormiens tanquam
כְּיָשֵׁן ׀ אֲדֹנָי כְּגִבּוֹר מִתְרוֹנֵן מִיָּיִן׃ וַיַּךְ־ 66
tentorium *in reprobavit* Et .eis dedit *ſeculi* opprobrium : retrorſum ſuos hoſtes
צָרָיו אָחוֹר חֶרְפַּת עוֹלָם נָתַן לָמוֹ׃ וַיִּמְאַס בְּאֹהֶל 67
:Jehudah tribum elegit Et .elegit non Ephraim tribum *in* & : Joſeph
יוֹסֵף וּבְשֵׁבֶט אֶפְרַיִם לֹא בָחָר׃ וַיִּבְחַר אֶת־שֵׁבֶט יְהוּדָה 68
:ſuũ ſanctuarium excelſa ſicut ædificavit Et .dilexit quem ,Sijon montem
אֶת־הַר צִיּוֹן אֲשֶׁר אָהֵב׃ וַיִּבֶן כְּמוֹ־רָמִים מִקְדָּשׁוֹ 69
eum tulit & : ſuum ſervum David *in* elegit Et .ſeculum in *eam* fundavit terram ſicut
כְּאֶרֶץ יְסָדָהּ לְעוֹלָם׃ וַיִּבְחַר בְּדָוִד עַבְדּוֹ וַיִּקָּחֵהוּ 70
Jahacob *in paſcendum ad* ,eum adduxit ,fœtas *poſt* De .*pecoris* caulis de
מִמִּכְלְאֹת צֹאן׃ מֵאַחַר עָלוֹת הֱבִיאוֹ לִרְעוֹת בְּיַעֲקֹב 71
ſimplicitatẽ ſecundum eos pavit Et .ſuam hæreditatem Iſrael in & : ſuum populum
עַמּוֹ וּבְיִשְׂרָאֵל נַחֲלָתוֹ׃ וַיִּרְעֵם כְּתֹם 72
.eos duxit ſuarum *volarum* intelligentiis *in* & : ſui cordis
לְבָבוֹ וּבִתְבוּנוֹת כַּפָּיו יַנְחֵם׃

תרגום TARGUM.

49 יגרי בהון מאתן וחמשין מחן בתקוף רוגזיה
ברתחא ובתריכותא ובעקא דמשתלחן בעדן
50 בידיהון דאזגדין בישין ׃ יטיל בכביש תוקפיה
לא מנע ממותא נפשהון ובעיריהון למותא
51 מסר ׃ וקטל כל בוכרא במצרים שרוי צעריהון
52 במשכניהון דחם ׃ ואטיל היך ענא עמיה
53 ודברנון היך ענא עדרא במדברא ׃ ואשרנון
לרוחצן ולא החלין וית בעלי דבביהון חפא
54 ימא ׃ ואעלנון לתחום אתר בית מקדשיה
55 טור דין קנת ימיניה ׃ ותריך מן קדמיהון עממיא
ואשרי יתהון בעדב אחסנתיה ואשרי
56 במשכניהון שבטיא דישראל ׃ ואנסיאו וארגיזו
57 קדם אלהא עלאה וסהדותיה לא נטרו ׃ וזורו
וארשיעו היך אבהתהון אתהפיכו היך קשתא
58 דרמיא גררין ׃ וארגיזו קדמוי בנסכיהון
59 ובפסיליהון ובצלמניהון אקנון יתיה ׃ שמיע
קדם אלהא ורגז ורחקת נפשיה לחדא
60 בישראל ׃ ושבק משכנא דשילו משכן די שרת
61 תמן שכנתיה בגו בני נשא ׃ ומסר לשביתא
62 אורייתיה ושבהוריה ביד מעיקא ׃ ומסר לקטלין
63 בחרבא עמיה ובאחסנתיה ארגיז ׃ עולימוהי
64 אכלת אשתא ובתולתיה לא אשתבחן ׃ כהנוי
בקטלא דחרבא יפלון וארמלתוי לא ספיקן
דתבכין ׃ [תנא בעדן דשבו פלשתאי ארונא דיי
בחרבא נפלו כהני שילו חפני ופנחס ובעדן
דבשרו נשוהי לא בכין ארום מיתו אוף אנון
65 בהדא יומא] ׃ ואתער היך דמיך יי היך גברא
66 דמתפקח מן חמרא ׃ ומחא מעיקוי בטחוריא
67 באחוריהון קלנא בעלמא יהב להון ׃ ורחיק
במשכנא דפרס על תחומיה דיוסף ובשבט
68 אפרים לא רעא ׃ ואתרעי ית שבט יהודה ית
69 טורא דציון די רחים ׃ ובנא היך קרנא דרימנא
מקדשיה מעתד היך ארעא דיסדה לעלמי
70 עלמין ׃ ואתרעי בדוד עבדיה ודבריה מן עדרי
71 דענא ׃ ומן בתר מינקן איתיה למשלט ביעקב
עמיה ובישראל אחסנתיה ׃ ומלך עליהון בשלימות לבביה ובסוכלתנות אידוי ידברנון ׃ 72

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Immiſit in eos *ducentas et quinquaginta* 49
plagas in ira furoris ſui, in iracũdia et expulſione et in anguſtia quæ immiſſa *ſũt eo tẽpore*
ꝑ *man⁹ angelorũ malorũ*. Movit in via for- 50
titudinẽ ſuã; non prohibuit à morte animas
eorũ, et jumenta eorũ morti tradidit. Et oc- 51
cîdit omne primogenitũ in Ægypto; primitias laboris eorũ in tabernaculis Cham.
Et movere juſſit velut oves populum ſuum, 52
& perduxit eos ſicut *oves gregis* in deſerto.
Et habitare eos fecit ſecurè, et nõ timuerũt, 53
cùm inimicos eorum cooperuiſſet mare. Et
adduxit eos ad terminũ *loci* dom⁹ ſanctuarii 54
ſui, montẽ quẽ acquiſivit dextera ej⁹. Et eje- 55
cit à facie eorũ gentes; et induxit ipſos ſorte
in hæreditatem *ſuam*, et habitare fecit in tabernaculis eorũ trib⁹ Iſrael. Et tentaverunt, 56
et ad iracundiã concitaverunt Deũ altiſſimum, ac teſtimonia ej⁹ non ſervaverunt. Sed 57
averſi ſunt, et impiè egerunt ſicut patres
eorũ; ſeſe converterunt ſicut arc⁹ excutiens
ſagittas. Et ad iram concitaverunt eum *libaminibus* ſuis, et ſculptilib⁹ idoliſq; ſuis ad 58
æmulationẽ eum provocaverunt. Auditũ eſt 59
corã Deo, et irat⁹ eſt, et abominata eſt anima ejus valdè Iſraelem. Et reliquit taber- 60
naculũ Silo, *tabernaculũ* in quo habitaverat
majeſtas ej⁹ inter homines. Et tradidit capti- 61
vitati legẽ ſuã, et pulchritudinẽ ſuã in manu
moleſtantis. Et tradidit occidentib⁹ gladio 62
populũ ſuũ, et hæreditati ſuæ irat⁹ eſt. Juve- 63
nes eorũ devoravit ignis, & virgines eorum
non fuerunt laudatæ. Sacerdotes ej⁹ *occiſione gladii* ceciderunt, et viduæ ejus non ſuf- 64
fecerunt luctui. *Targum aliud: Quo tempore captivã duxerunt Paleſtini arcam Domini,* gladio ceciderunt ſacerdotes *Silo Hophni et Phineas; quo vero tempore nuntiũ attulerunt, uxores ejus non luxerunt, mortuæ ſunt enim ipſæ quoq; eodem die.* Et evi- 65
gilavit acſi dormiſſet Dñs, ſicut vir qui reſipiſcit à vino. Et percuſſit moleſtantes eos 66
hæmorrhoidib⁹ in poſteriora eorũ: opprobriũ ſempiternũ dedit eis. Et reprobavit ta- 67
bernaculũ ꝙ tetenderat in termino Joſeph,
et in tribu Ephraim non complacuit ſibi. Sed 68
elegit tribũ Jehudæ, montẽ Sion quẽ dilexit.
Et ædificavit ſicut cornu naricornis ſanctua- 69
riũ ſuũ, [*quod*] permanet ſicut terra quã fundavit in *ſecula ſeculorũ*. Et complacuit ſibi 70
in Davide ſervo ſuo, et tulit eũ de gregib⁹
oviũ. *Et* à veſtigiis lactantiũ aſcivit eũ, ut 71
dominaretur in Jaacob populo ſuo, et in Iſrael hæreditate ſua. Et regnavit ſuꝑ eos in 72
integritate cordis ſui, et per prudentiã manuum ſuarum deduxit illos.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܢܫܕܪ ܒܗܘܢ ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ ܚܡܬܐ ܘܪܘܓܙܐ ܘܐܘܠܨܢܐ ܢܫܕܪ ܒܝܕ ܡܠܐܟܐ ܒܝܫܐ ׃ 49
* ܘܦܬܚ ܫܒܝܠܐ ܒܝܫܐ. ܘܠܐ ܚܣܟ ܡܢ ܡܘܬܐ ܢܦܫܬܗܘܢ ׃ ܘܚܝܘܬܗܘܢ ܠܡܘܬܐ ܐܫܠܡ. 50
* ܘܩܛܠ ܟܠ ܒܘܟܪܐ ܕܡܨܪܝܢ ׃ ܪܫ ܟܠܗ ܚܝܠܗܘܢ ܒܡܫܟܢܐ ܕܚܡ. * ܦܣܘܩܐ * 51
* ܐܫܩܠ ܠܥܡܗ ܐܝܟ ܥܢܐ. ܘܕܒܪ ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܓܙܪܐ ܒܡܕܒܪܐ ׃ * ܐܫܪܝ ܐܢܘܢ ܒܣܒܪܐ ܘܠܐ 52 53
ܕܚܠܘ. ܘܠܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ ܟܣܐ ܝܡܐ ׃ * ܐܝܬܝ ܐܢܘܢ ܠܬܚܘܡܐ ܕܩܘܕܫܗ. ܠܗܢܐ ܛܘܪܐ 54
ܕܩܢܬ ܝܡܝܢܗ ׃ * ܐܘܒܕ ܡܢ ܩܕܡܝܗܘܢ ܥܡܡܐ. ܘܐܪܡܝ ܐܢܘܢ ܒܚܒܠܐ ܕܝܪܬܘܬܗ ׃ ܘܫܪܘ 55
ܒܡܫܟܢܝܗܘܢ ܫܒܛܐ ܕܐܝܣܪܝܠ . * ܢܣܝܘ ܘܡܪܡܪܘ ܠܐܠܗܐ ܡܪܝܡܐ ׃ ܘܣܗܕܘܬܗ ܠܐ ܢܛܪܘ. 56
* ܘܗܦܟܘ ܘܕܓܠܘ ܐܝܟ ܐܒܗܝܗܘܢ ׃ ܘܐܬܗܦܟܘ ܐܝܟ ܩܫܬܐ ܢܟܝܠܬܐ. * ܘܐܪܓܙܘܗܝ 57 58
ܒܕܒܚܝܗܘܢ ׃ ܘܒܦܬܟܪܝܗܘܢ ܐܛܢܘܗܝ. * ܫܡܥ ܐܠܗܐ ܘܐܬܚܡܬ ׃ ܘܪܓܙ ܛܒ ܥܠ 59
ܐܝܣܪܝܠ. * ܘܛܥܐ ܠܡܫܟܢܐ ܕܫܝܠܘ ׃ ܡܫܟܢܐ ܕܫܪܐ ܒܗ ܒܒܢܝܢܫܐ. * ܝܗܒ ܠܒܙܬܐ 60 61
ܥܡܗ ܘܫܘܒܚܗ ܒܐܝܕܐ ܕܐܠܘܨܐ ׃ * ܐܫܠܡ ܥܡܗ ܠܚܪܒܐ ܘܐܗܡܝ ܡܢ ܝܪܬܘܬܗ. 62
* ܠܥܠܝܡܝܗܘܢ ܐܟܠܬ ܢܘܪܐ ׃ ܘܒܬܘܠܬܗܘܢ ܐܬܕܘܝ. * ܘܟܗܢܝܗܘܢ ܢܦܠܘ ܒܚܪܒܐ. 63 64
ܘܐܪܡܠܬܗܘܢ ܠܐ ܐܬܒܟܝ. * ܐܬܬܥܝܪ ܡܪܝܐ ܐܝܟ ܕܕܡܟ ׃ ܘܐܝܟ ܓܒܪܐ ܕܒܠܥܗ ܚܡܪܗ. * ܘܡܚܐ 65 66
ܠܒܥܠܕܒܒܘܗܝ ܠܒܣܬܪܗ ׃ ܘܚܣܕܐ ܕܥܠܡܐ ܝܗܒ ܠܗܘܢ. * ܐܣܠܝ ܠܡܫܟܢܐ 67
ܕܝܘܣܦ ׃ ܘܠܫܒܛܐ ܕܐܦܪܝܡ ܠܐ ܐܨܛܒܝ. * ܓܒܐ ܠܫܪܒܬܐ ܕܝܗܘܕܐ ׃ ܠܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ ܕܪܚܡ. 68
* ܒܢܐ ܒܪܘܡܐ ܡܩܕܫܗ ׃ ܘܒܐܪܥܐ ܫܪܪܗ ܠܥܠܡ. * ܓܒܐ ܠܕܘܝܕ ܥܒܕܗ ׃ ܘܕܒܪܗ 69
ܡܢ ܓܙܪܐ ܕܥܢܐ. * ܘܡܢ ܒܬܪ ܡܝܢܩܬܐ ׃ ܠܡܪܥܐ ܠܝܥܩܘܒ ܥܡܗ ܘܠܐܝܣܪܝܠ 70 71
ܝܪܬܘܬܗ. * ܘܪܥܐ ܐܢܘܢ ܒܬܡܝܡܘܬ ܠܒܗ ׃ ܘܒܣܘܟܠܐ ܕܐܝܕܘܗܝ ܕܒܪ ܐܢܘܢ. 72

Miſerit in eos æſtum indignationis ſuæ, furo- 49
rem, & irã, atque angorẽ: miſerit per Angelum malũ. Aperuitq; ſemitas malas, & non 50
continuerit à morte animas eorũ: & animantia illorũ morti tradiderit: Occiderit omnia 51
primogenita Ægypti, primũ quemq; fœtum
illorũ in tabernaculo Ham: * *Sectio* *
Tranſtulerit populũ ſuũ ſicut oves, et duxerit 52
eos ut gregẽ per deſertũ: Caſtrametari fece- 53
rit illos cum ſpe, & non timuerint; hoſtes
autẽ illorũ obtexerit mare: Adduxerit eos ad 54
terminũ ſanctitatis ſuæ, ad iſtũ montẽ quem
poſſedit dextera ipſius. Perdiderit è conſpe- 55
ctu eorũ gentes, jeceritque illas fune hæreditatis ſuæ, habitaverintque in tabernaculis
earũ tribus Iſraelis. Tentaverunt, & exaſpe- 56
raverunt Deum excelſum, & teſtimonia ejus
non obſervaverunt. Et averterunt ſe, ac 57
mentiti ſunt ſicut patres ſui, & retroacti ſunt
inſtar arcûs fallacis. Et ad iracundiam pro- 58
vocaverũt eum ſacrificiis ſuis, & ſimulachris
ſuis ad æmulationẽ accenderunt illũ. Audi- 59
vitq; De⁹ & excanduit, iratuſq; eſt valde Iſraeli: Et oblit⁹ eſt tabernaculi Silo, tabernaculi 60
ꝙ inhabitaverat inter homines: Dedit prædæ 61
populũ ſuũ, & gloriã ejus in manu tribulãtis:
Tradidit populũ ſuũ gladio, & neglexit hæ- 62
reditatẽ ſuã: Juvenes eorũ voravit ignis, & 63
virgines eorũ exagitatæ ſunt: Sacerdoteſque 64
eorũ ceciderunt gladio, & viduæ illorũ non
fuerunt deploratæ. Experrectus eſt Dñs tan- 65
quã dormiens, & quaſi vir quem excuſſit vinum ſuum: Percuſſit inimicos ſuos à tergo 66
ſuo, & opprobrium mundi dedit illis. Spre- 67
vit tentorium Joſeph, & tribus Afrem ei non
placuit: Elegit familiam Judhæ, montẽ Sion 68
quem dilexit: Ædificavit in ſublimi ſanctua- 69
rium ſuum, & in terra firmavit illud in æternum: Elegit David ſervum ſuum, & abdu- 70
xit eum de grege ovium, Et de poſt pecudes 71
lactantes: ad paſcendum Jacob populum ſuum, & Iſraelem hæreditatem ſuam. Pavitq; 72
illos in innocentia cordis ſui, & intellectu
manuum ſuarum gubernavit eos.

Versio VULG. LAT.

49 Miſit in eos irã indignationis ſuæ, in-
dignationẽ, & irã, & tribulationem,
50 immiſſiones per angelos malos. Viam
fecit ſemitæ iræ ſuæ, non pepercit à
morte animab⁹ eorũ: & jumenta eorũ
51 in morte concluſit. Et percuſſit omne
primogenitum in terra Ægypti, pri-
mitias omnis laboris eorũ in taber-
52 naculis Cham. Et abſtulit ſicut oves
populũ ſuũ: & perduxit eos tanquam
53 gregem in deſerto. Et eduxit eos in
ſpe, & non timuerunt: & inimicos
54 eorũ operuit mare. Et induxit eos in
montem ſanctificationis ſuæ; montẽ,
quem acquiſivit dextera ejus. Et ejecit
à facie eorũ gentes; & ſorte diviſit
55 eis terrã in funiculo diſtributionis. Et
habitare fecit in tabernaculis eorũ tri-
56 bus Iſrael. Et tentaverunt, & exacer-
baverunt Deũ excelſũ: & teſtimonia
57 ej⁹ non cuſtodierunt. Et averterunt
ſe, & non ſervaverunt pactũ: quem-
admodùm patres eorum, converſi
58 ſunt in arcum pravum. In irã concita-
verunt eum in collibus ſuis: & in
ſculptilibus ſuis ad æmulationem eũ
59 provocaverunt. Audivit Deus, &
ſprevit: & ad nihilum redegit valdè
60 Iſrael. Et repulit tabernaculũ Silo,
tabernaculũ ſuũ, ubi habitavit in ho-
61 minib⁹. Et tradidit in captivitatẽ vir-
tutẽ eorũ: & pulchritudinẽ eorũ in
62 man⁹ inimici. Et concluſit in gladio
populũ ſuũ: & hæreditatẽ ſuã ſprevit.
63 Juvenes eorũ comêdit ignis: & vir-
64 gines eorũ non ſunt lamentatæ. Sa-
cerdotes eorũ in gladio ceciderunt:
65 & viduæ eorũ non plorabantur. Et
excitatus eſt tanquam dormiens Dñs,
66 tanquã potens crapulatus à vino. Et
percuſſit inimicos ſuos in poſteriora:
67 opprobriũ ſempiternũ dedit illis. Et
repulit tabernaculũ Joſeph: & tribũ
68 Ephraim non elegit: Sed elegit tribũ
69 Juda, montẽ Sion quem dilexit. Et æ-
dificavit ſicut unicorniũ ſanctificium
70 ſuũ in terra, quã fundavit in ſecula. Et
elegit David ſervũ ſuũ, & ſuſtulit eũ
de gregibus oviũ: de poſt fœtantes ac-
71 cepit eũ, Paſcere Jacob ſervũ ſuũ, &
72 Iſrael hæreditatẽ ſuã. Et pavit eos in
innocentia cordis ſui: & in intellecti-
bus manuum ſuarum deduxit eos.

Verſ. GRÆCA. LXX. Interp.

49 Ἐξαπέστειλεν εἰς αὐτοὺς ὀργὴν θυμοῦ αὐτοῦ, θυμὸν
καὶ ὀργὴν καὶ θλῖψιν, ἀποστολὴν δι᾽ ἀγγέλων πονη-
50 ρῶν. Ὡδοποίησε τρίβον τῇ ὀργῇ αὐτοῦ, οὐκ ἐφείσα-
το ἀπὸ θανάτου τῶν ψυχῶν αὐτῶν, καὶ τὰ κτήνη αὐ-
51 τῶν εἰς θάνατον συνέκλεισε. Καὶ ἐπάταξε πᾶν
πρωτότοκον ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, ἀπαρχὴν πόνων αὐ-
52 τῶν ἐν τοῖς σκηνώμασι Χάμ. Καὶ ἀπῆρεν ὡς
πρόβατα τὸν λαὸν αὐτοῦ, ἤγαγεν αὐτοὺς ὡσεὶ ποί-
53 μνιον ἐν ἐρήμῳ. Καὶ ὡδήγησεν αὐτοὺς ἐν ἐλπίδι,
καὶ οὐκ ἐδειλίασαν, καὶ τοὺς ἐχθροὺς αὐτῶν ἐκάλυψε θά-
54 λασσα. Καὶ εἰσήγαγεν αὐτοὺς εἰς ὄρος ἁγιάσματος
αὐτοῦ, ὄρος τοῦτο ὃ ἐκτήσατο ἡ δεξιὰ αὐτοῦ. καὶ
ἐξέβαλεν ἀπὸ προσώπου αὐτῶν ἔθνη, καὶ ἐκληρο-
55 δότησεν αὐτοὺς ἐν σχοινίῳ κληροδοσίας, Καὶ κατεσκή-
νωσεν ἐν τοῖς σκηνώμασιν αὐτῶν τὰς φυλὰς τοῦ Ἰσ-
56 ραήλ. Καὶ ἐπείρασαν καὶ παρεπίκραναν τὸν θεὸν
τὸν ὕψιστον, καὶ τὰ μαρτύρια αὐτοῦ οὐκ ἐφυλάξαντο.
57 Καὶ ἀπέστρεψαν, καὶ ἠσυνθέτησαν καθὼς καὶ οἱ πα-
58 τέρες αὐτῶν, μετεστράφησαν εἰς τόξον στρεβλόν. Καὶ
παρώργισαν αὐτὸν ἐπὶ τοῖς βουνοῖς αὐτῶν, καὶ ἐν τοῖς
59 γλυπτοῖς αὐτῶν παρεζήλωσαν αὐτόν. Ἤκουσεν ὁ θεὸς
60 καὶ ὑπερεῖδε, καὶ ἐξουδένωσε σφόδρα τὸν Ἰσραήλ. Καὶ
ἀπώσατο τὴν σκηνὴν Σηλὼμ, σκήνωμα αὐτοῦ οὗ κατε-
61 σκήνωσεν ἐν ἀνθρώποις. Καὶ παρέδωκεν εἰς αἰχμα-
λωσίαν τὴν ἰσχὺν αὐτῶν, καὶ τὴν καλλονὴν αὐτῶν εἰς χεῖρα
62 ἐχθροῦ. Καὶ συνέκλεισεν εἰς ῥομφαίαν τὸν λαὸν αὐτοῦ,
63 καὶ τὴν κληρονομίαν αὐτοῦ ὑπερεῖδε. Τοὺς νεανίσκους
αὐτῶν κατέφαγε πῦρ, καὶ αἱ παρθένοι αὐτῶν οὐκ ἐ-
64 πένθησαν. Οἱ ἱερεῖς αὐτῶν ἐν ῥομφαίᾳ ἔπεσον, καὶ αἱ
65 χῆραι αὐτῶν οὐ κλαυθήσονται. Καὶ ἐξηγέρθη ὡς ὁ ὑ-
πνῶν κύριος, ὡς δυνατὸς κεκραιπαληκὼς ἐξ οἴνου.
66 Καὶ ἐπάταξε τοὺς ἐχθροὺς αὐτοῦ εἰς τὰ ὀπίσω, ὄνει-
67 δος αἰώνιον ἔδωκεν αὐτοῖς. Καὶ ἀπώσατο τὸ σκή-
νωμα Ἰωσὴφ, καὶ τὴν φυλὴν Ἐφραὶμ οὐκ ἐξελέξατο.
68 Καὶ ἐξελέξατο τὴν φυλὴν Ἰούδα, τὸ ὄρος τὸ Σιὼν ὃ
69 ἠγάπησε. Καὶ ᾠκοδόμησεν ὡς μονοκερώτων τὸ ἁ-
γίασμα αὐτοῦ, ἐν τῇ γῇ ἐθεμελίωσεν αὐτὴν εἰς τὸν
70 αἰῶνα. Καὶ ἐξελέξατο Δαυὶδ τὸν δοῦλον αὐτοῦ, καὶ ἀν-
έλαβεν αὐτὸν ἐκ τῶν ποιμνίων τῶν προβάτων. ἐξόπι-
71 σθεν τῶν λοχευομένων ἔλαβεν αὐτόν Ποιμαίνειν Ἰα-
κὼβ τὸν δοῦλον αὐτοῦ, καὶ Ἰσραὴλ τὴν κληρονομίαν αὐ-
72 τοῦ. Καὶ ἐποίμανεν αὐτοὺς ἐν τῇ ἀκακίᾳ τῆς καρ-
δίας αὐτοῦ, καὶ ἐν τῇ συνέσει τῶν χειρῶν αὐτοῦ ὡδήγη-
σεν αὐτούς.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

54 Miſit in eos irã indignationis 49
ſuæ: indignationem, & iram, & tri-
bulationem, immiſſionem per (gg)
angelos malos. 55 Viã (†) fecit ſemi- 50
tæ iræ ſuæ: non pepercit à mor-
te animabus eorum: & jumenta
eorũ in morte concluſit. 56 Et per- 51
cuſſit omne primogenitum in terra
Ægypti: primitias (hh) [t] laborũ
eorum in tabernaculis Cham. 57 Et 52
abſtulit, ſicut oves, populum ſuum:
et perduxit eos tanquã gregem in
deſerto. 58 Et deduxit eos in ſpe, 53
& non timuerunt: & inimicos eo-
rum operuit mare. 59 Et induxit e- 54
os in montem ſanctificationis ſuæ,
(ii) montem hunc, quem acquiſivit
dextera ejus. 60 Et ejecit à facie
eorũ gentes: & ſorte diviſit eis ter-
rã in funiculo diſtributionis. 61 Et 55
habitare fecit in tabernaculis eorũ
trib⁹ Iſrael. 62 Et tentaverunt, & 56
exacerbaverunt Deũ excelſum. Et
teſtimonia ejus non cuſtodierunt.
63 (kk) Et averterunt ſe, & [v] nõ 57
(ll) ſervaverunt pactum, quemad-
modũ & patres eorũ: converſi ſunt
in arcum pravũ. 64 Et in irã con- 58
citaverunt eũ in collib⁹ ſuis: & in
ſculptilib⁹ ſuis ad æmulationẽ eum
provocaverunt. 65 Audivit De⁹, & 59
[x] ſprevit: & ad nihilum redegit
valdè Iſrael. 66 Et repulit taberna- 60
culũ Selõ, tabernaculũ ſuũ, ubi ha-
bitavit in hominib⁹. 64 Et tradidit 61
in captivitatẽ virtutẽ eorũ, & pul-
chritudinẽ eorum in manum inimi-
ci. 68 Et concluſit in gladio popu- 62
lum ſuum: & hæreditatẽ ſuã ſpre-
vit. 69 Juvenes eorũ comẽdit ignis, 63
& virgines eorum non ſunt (mm)
lamentatæ. 70 Sacerdotes eorum in 64
gladio ceciderunt: & viduæ eorum
non (nn) plorabuntur. 71 Et excita- 65
tus eſt, [y] tanquã dormiens, Do-
minus; tanquã potens crapulat⁹ à
vino. 72 Et percuſſit inimicos ſuos 66
in poſteriora: 73 Opprobrium ſem-
piternum dedit illis. 74 Et repulit 67
tabernaculum Joſeph: & tribum
Ephram non elegit. 75 Et elegit tri- 68
bum Juda, montẽ Sion, quem dile-
xit. 76 [z] Et ædificavit ſicut (oo) 69
unicorniũ (pp) ſanctificationẽ ſuã:
in (qq) terra fundavit eã in æternum. 77 Et elegit David ſervũ ſuũ: et aſſumpſit eũ de gregi- 70
bus ovium. De poſt (rr) fœtantes accepit eũ, 78 Paſcere Jacob ſervũ ſuũ, et Iſrael hæreditatẽ 71
ſuã. 79 Et pavit eos in innocentia cordis ſui: & in (ſſ) intellectu manuũ ſuarũ deduxit eos. 72

Verſio ÆTHIOPICA.

ወፈነወ፡ ላዕሌሆሙ፡ መቅሠፍተ፡ መዐቱ፡፡ መ 54
ቅሠፍተ፡ ወመንሱተ፡ ወሕማመ፡፡ ወፈነወ፡
መስለ፡ መላእክት፡ እኩያን፡፡ ፨ ወጺሐ፡ ፍ 55
ኖተ፡ ለመዓቱ፡፡ ወኢምሕከ፡ እሞት፡ ለነፍ
ሶሙ፡፡ ወአጸወ፡ ውስተ፡ ሞት፡ እንስሳሆ
ሙ፡፡ ፨ ወቀተለ፡ ኵሎ፡ በኵሮሙ፡ በምድረ፡ 56
ግብጽ፡፡ ወቀደሜ፡ ኵሉ፡ ጻማሆሙ፡ በውስተ፡
አብያቲሆሙ፡፡ ፨ ወአውፈሮሙ፡ ከመ፡ አ 57
ባግዕ፡ ለሕዝቡ፡፡ ወአውፅኦሙ፡ ገደመ፡ ከመ፡
መርዔት፡፡ ፨ ወመርሖሙ፡ በተስፈሁ፡ ወኢ 58
ፈርሁ፡፡ ወደፈኖሙ፡ ባሕር፡ ለፀሮሙ፡፡ ፨
ወወሰዶሙ፡ ደብረ፡ መቅደሱ፡፡ ደብረ፡ ዘፈጠ 59
ረት፡ የማኑ፡፡ ፨ ወሰደደ፡ አሕዛበ፡ እምቅ 60
ድሜ፡ ገጾሙ፡፡ ወአውረሶሙ፡ በሐብለ፡ ር
ስቱ፡፡ ፨ ወአንበረ፡ ውስተ፡ አብያቲሆሙ፡ 61
ሕዝበ፡ እስራኤል፡፡ ፨ ወአመከርዎ፡ ወአ 62
ምዕዕዎ፡ ለእግዚአብሔር፡ ልዑል፡፡ ወኢዐ
ቀቡ፡ ስምዖ፡፡ ፨ ወተመይጡ፡ ወዐለው፡ 63
ከመ፡ አበዊሆሙ፡፡ ወኮኑ፡ ከመ፡ ቀስት፡ ጠ
ዋይ፡፡ ፨ ወአምዕዕዎ፡ በአውግሪሆሙ፡፡ 64
ወአቅንዕዎ፡ በግልፎሆሙ፡፡ ፨ ወሰምዐ፡ እ 65
ግዚአብሔር፡ ወአናሕሰየ፡፡ ወመነኖሙ፡ ለእ
ስራኤል፡ ፈድፋደ፡፡ ፨ ወኀደጋ፡ ለደብተራ፡ 66
ሴሎም፡፡ ደብተራሁ፡ እንተ፡ ባቲ፡ ኀደረ፡
ምስለ፡ ሰብእ፡፡ ፨ ወወሀበ፡ ኀይሎሙ፡ ለተ 67
ፄዋው፡፡ ወሥናሞሙ፡ ውስተ፡ እደ፡ ፀሮሙ፡፡ ፨
ወአፀወዎሙ፡ ውስተ፡ ኵናት፡ ለሕዝቡ፡፡ ወ 68
ተሀየዮሙ፡ ለርስቱ፡፡ ፨ ወበልዐቶሙ፡ እሳ 69
ት፡ ለወራዙቶሙ፡፡ ወኢለሐዋ፡ ደናግሊሆ
ሙ፡፡ ፨ ወካህናቲሆሙ፡ ወድቁ፡ በኵና 70
ት፡፡ ወኢበከያ፡ አቤራቲሆሙ፡፡ ፨ ወተን 71
ሥአ፡ እግዚአብሔር፡ ከመ፡ ዘንቃህ፡ እም
ንዋም፡፡ ወከመ፡ ኀያል፡ ወኀደገ፡ ወይን፡፡ ፨ 72
ወቀተለ፡ ፀሮሙ፡ በድኅሬሆሙ፡፡ ወወሀቦሙ፡ 73
ኀሳረ፡ ዘለዓለም፡፡ ፨ ወኀደጋ፡ ለደብ 74
ተራ፡ ዮሴፍ፡፡ ወኢኀረየ፡ ለሕዝበ፡
ኤፍሬም፡፡ ፨ ወኀረዮሙ፡ ለሕዝበ፡ 75
ይሁዳ፡፡ ደብረ፡ ጽዮን፡ ዘአፍቀረ፡፡ ፨ ሐ 76
ነጸ፡ መቅደሰ፡ በአርያም፡፡ ወሳረራ፡ ውስ
ተ፡ ምድር፡ ለዓለም፡፡ ፨ ወኀረዮ፡ ለዳዊ 77
ት፡ ገብሩ፡፡ ወነሥኦ፡ እመርዔተ፡ አባግዒ
ሁ፡፡ ወተመጠዎ፡ እምድኅረ፡ ኀረሰት፡፡ ፨
ከመ፡ ይርአዮ፡ ለያዕቆብ፡ ገብሩ፡፡ ወለእ 78
ስራኤል፡ ርስቱ፡፡ ፨ ወይሬእዮሙ፡ በየዋ 79
ሃተ፡ ልቡ፡፡ ወመርሆሙ፡ በጥበበ፡ እደ
ዊሁ፡፡ ፨

INTERP. ÆTHIOP. (†) paravit iræ ſuæ: [t] omnis laboris eorum in tabernaculis illorum. [v] prævaricati ſunt, quemadmodùm [x] fruſtravit: & [y] Domin⁹, ſicut qui evigilat à ſomno; & tanquàm po-
tens, qui rejecit vinũ [z] Ædificavit ſanctuarium in excelſo: & in terra

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

49 50 * أرسل عليهم غضب سخطه سخطا وغضبا * وشدة بغتة على يد ملائكة أشرار * صنع طريقا
51 لغضبه ولم يشفق على نفوسهم من الموت * أسلم للموت دوابهم * وأهلك كل بكر في مصر *
52 53 وأول أولادهم في مساكن حام * وساق شعبه كالغنم * وأخرجهم كالرعية إلى البرية * وهداهم
54 بالرجاء فلم يجزعوا * والبحر غرق أعداءهم * وأدخلهم إلى طور قدسه * هذا الجبل الذي
55 اقتناه يمينه * وأخرج الأمم من قدام وجههم * وأعطاهم ميراثا بحبل ميراث العطية * وأسكن
56 57 في مساكنهم قبائل إسرائيل * ثم جربوا وأغضبوا الله العلي * ولم يحفظوا شهاداته * وعادوا
58 فغدروا مثل آبائهم * وانقلبوا كاعوجاج القوس * وأغضبوه بأصنامهم * وأغاروه بمنحوتات اليد
59 60 * سمع الله وأهملهم * ورذل إسرائيل جدا * ورفض مظلة شيلوم القبة التي نصبها للناس
61 62 * وأسلم قوتهم للسبي * وجمالهم في أيدي أعدائهم * وأسلم شعبه للسيف * وتغافل عن ميراثه
63 64 * فأكلت النار شبانهم * وعذاراهم لم يحزن * وسقطت كهنتهم بالسيف * ولم تبك أراملهم
65 66 عليهم * واستيقظ الرب كالنائم * وكالجبار السكران من الخمر * فرد أعداءهم إلى ورائهم
67 68 وأعطاهم عارا مؤبدا * وأقصى مسكن يوسف * ولم ينتخب قبيلة أفرام * وانتخب قبيلة
69 يهوذا * جبل صهيون هو الذي أحبه * وبنى موضع المقدس مثل ذي القرن الواحد * وأسسه
70 71 على الأرض إلى الأبد * واصطفى داود عبده وأخذه من قطيع الغنم * ومن خلف المرضعات
72 أخذه * ليرعى يعقوب عبده * وإسرائيل ميراثه * فرعاهم بسلامة قلبه * وبفهم يديه
هداهم * الليلويا *

Miſit in eos iram indignationis ſuæ, in- 49
dignationem & furorem, & tribulatio-
nem ſubitam per manum angelorum ma-
lorum. Fecit viam furori ſuo, & non pe- 50
percit animabus eorum à morte: tradidit
morti jumenta eorum. Et perdidit omne 51
primogenitum in Ægypto, & primitias
filiorum eorum in habitaculis Cham. Et 52
duxit populũ ſuum velut oves, et eduxit
eos tanquam gregem in deſertum. Et rexit 53
eos cum ſpe, & non timuerunt. Et mare
obruit inimicos eorum. Et introduxit eos 54
in montem ſanctitatis ſuæ, montem iſtum
quem poſſedit dextera ejus, Et ejecit gen- 55
tes è conſpectu eorum, & dedit illis hæ-
reditatem funiculo quo hæreditas aſſigna-
tur, & habitare fecit in habitationibus eo-
rum tribus Iſrael. Rurſus tentaverunt & 56
ad iracundiam provocaverunt Deum ex-
celſum, & non cuſtodierunt teſtimonia e-
jus. Et reverſi deceperunt ſicut patres 57
eorum, & recurvati ſunt inſtar curvita-
tis arcûs. Et irritaverunt eum idolis ſuis, 58
& ad æmulationem provocaverunt eum
ſculpturis manufactis. Audivit Deus, & 59
neglexit eos, ſprevítque Iſraelem magno-
pere. Et reſpuit tabernaculum Silom, te- 60
ſtudinem quam erexerat pro hominibus. Et 61
tradidit potentiam eorum captivitati, &
pulchritudinem eorũ manibus inimicorum
eorum. Et tradidit populum ſuum gladio, 62
& neglexit hæreditatem ſuam. Comedit 63
ignis juvenes eorum, & virgines eorum
non planxerunt. Et ceciderunt ſacerdo- 64
tes eorum gladio, & non defleverunt eos
viduæ eorum. Et experrectus eſt Dominus 65
tanquam dormiens, & tanquam gigas e-
brius vino. Egit inimicos eorum retrò, & 66
affecit eos opprobrio ſempiterno. Et pro- 67
cul amovit habitationem Joſephi, & non
elegit familiam Ephremi. Elegit autem 68
familiam Judæ: Mons Sion eſt quem di-
lexit. Et ædificavit locum ſuum ſanctum, 69
ut habentis cornu unicũ: et fundavit illũ
ſuper terram in perpetuum. Et elegit Da- 70
vid ſervũ ſuum, et ſumpſit eum ex grege
ovium: Et de poſt lactantes ſumpſit eum; 71
ut paſceret Jacob ſervũ ſuũ, et Iſrael hæ-
reditatẽ ſuã. Quare pavit eos cũ trãquil- 72
litate cordis ſui, et cum intelligentia ma-
nuum ſuarum gubernavit eos. Alleluja.

תהלים : עט פ

PSAL. LXXIX. עט

polluerunt ,tuam hæreditatem in gentes venerunt Deus .Aſaph ipſi Cantus
1 מִזְמוֹר לְאָסָף אֱלֹהִים בָּאוּ גוֹיִם ׀ בְּנַחֲלָתֶךָ טִמְּאוּ אֶת־
cadaver Dederunt .acervos in Jeruſalaim poſuerunt :tuæ ſanctitatis templum
2 הֵיכַל קָדְשֶׁךָ שָׂמוּ אֶת־יְרוּשָׁלִַם לְעִיִּים׃ נָתְנוּ אֶת־נִבְלַת
.terræ ipſius feræ tuorum piorum carnem : cœlorum volatili eſcam tuorum ſervorum
עֲבָדֶיךָ מַאֲכָל לְעוֹף הַשָּׁמָיִם בְּשַׂר חֲסִידֶיךָ לְחַיְתוֹ־אָרֶץ׃
.ſepeliens non & : Jeruſalaim circuitibus aquam tanquam eorum ſanguinem Effuderunt
3 שָׁפְכוּ דָמָם ׀ כַּמַּיִם סְבִיבוֹת יְרוּשָׁלִָם וְאֵין קוֹבֵר׃
.noſtris circumviciniis deriſio & , ſubſannatio : noſtris vicinis probrum Fuimus
4 הָיִינוּ חֶרְפָּה לִשְׁכֵנֵינוּ לַעַג וָקֶלֶס לִסְבִיבוֹתֵינוּ׃
? tuus zelus ignis velut ardebit , æternum in iraſceris DOMINE Uſquequo
5 עַד־מָה יְהוָה תֶּאֱנַף לָנֶצַח תִּבְעַר כְּמוֹ־אֵשׁ קִנְאָתֶךָ׃
: regna ſuper & ,te cognoverunt non quæ , gentes ad tuam iram Effunde
6 שְׁפֹךְ חֲמָתְךָ ׀ אֶל־הַגּוֹיִם אֲשֶׁר לֹא־־־יְדָעוּךָ וְעַל־מַמְלָכוֹת
ej' habitaculum & : Jahacob comedit Quia .invocaverunt non tuo nomine in quæ
7 אֲשֶׁר בְּשִׁמְךָ לֹא קָרָאוּ׃ כִּי אָכַל אֶת־יַעֲקֹב וְאֶת־נָוֵהוּ
nos præveniant ,feſtina : priorum iniquitatum nobis memineris Ne .deſolaverunt
8 הֵשַׁמּוּ׃ אַל־תִּזְכָּר־לָנוּ עֲוֺנֹת רִאשֹׁנִים מַהֵר יְקַדְּמוּנוּ
noſtræ ſalutis Deus nos Adjuva .valde ſumus attenuati quia : tuæ miſericordiæ
9 רַחֲמֶיךָ כִּי דַלּוֹנוּ מְאֹד׃ עָזְרֵנוּ ׀ אֱלֹהֵי יִשְׁעֵנוּ
noſtris peccatis ſuper propitiare & , nos erue & : tui nominis gloriæ verbum ſuper
עַל־דְּבַר כְּבוֹד־שְׁמֶךָ וְהַצִּילֵנוּ וְכַפֵּר עַל־חַטֹּאתֵינוּ
cognoſcatur ? eorum Deus Ubi : gentes dicent quid Ut .tuum nomen propter
10 לְמַעַן שְׁמֶךָ׃ לָמָּה ׀ יֹאמְרוּ הַגּוֹיִם אַיֵּה אֱלֹהֵיהֶם יִוָּדַע
.effuſi tuorum ſervorum ſanguinis ultio : noſtris oculis in , gentibus in
בַּגּוֹיִם לְעֵינֵינוּ נִקְמַת דַּם־־־עֲבָדֶיךָ הַשָּׁפוּךְ׃
reſiduos fac : tui brachii magnitudinem ſecundùm ,vincti clamor tuas facies ad Introeat
11 תָּבוֹא לְפָנֶיךָ אֶנְקַת אָסִיר כְּגֹדֶל זְרוֹעֲךָ הוֹתֵר
eorũ probrum : eorum ſinum ad ſeptuplum noſtris vicinis redde Et .mortis filios
12 בְּנֵי תְמוּתָה׃ וְהָשֵׁב לִשְׁכֵנֵינוּ שִׁבְעָתַיִם אֶל־חֵיקָם חֶרְפָּתָם
tuæ paſcuæ pecus & ,tuus populus nos Et .Domine te probris affecerunt qui
13 אֲשֶׁר חֵרְפוּךָ אֲדֹנָי׃ וַאֲנַחְנוּ עַמְּךָ ׀ וְצֹאן מַרְעִיתֶךָ
.tuam laudem narrabimus : generationẽ & ,generatione in ,ſeculum in tibi cõfitebimur
נוֹדֶה לְּךָ לְעוֹלָם לְדֹר וָדֹר נְסַפֵּר תְּהִלָּתֶךָ׃

PSAL. LXXX. פ

Iſrael Paſcens .cantus Aſaph ipſi , teſtimonium Soſannim ad Victori
1 לַמְנַצֵּחַ אֶל־שֹׁשַׁנִּים עֵדוּת לְאָסָף מִזְמוֹר׃ רֹעֵה יִשְׂרָאֵל ׀
2 facies Ad .irradia Cherubim inſidens : Joſeph pecus tanquam ducens , auſculta
3 הַאֲזִינָה נֹהֵג כַּצֹּאן יוֹסֵף יֹשֵׁב הַכְּרוּבִים הוֹפִיעָה׃ לִפְנֵי
ito & : tuam fortitudinem ſuſcita Menaſſeh & , Binjamin & , Ephraim
אֶפְרַיִם ׀ וּבִנְיָמִן וּמְנַשֶּׁה עוֹרְרָה אֶת־גְּבוּרָתֶךָ וּלְכָה
.ſervabimur & ,tuas facies illuſtra & : nos converte Deus .nobis ſalutem ad
4 לִישֻׁעָתָה לָּנוּ׃ אֱלֹהִים הֲשִׁיבֵנוּ וְהָאֵר פָּנֶיךָ וְנִוָּשֵׁעָה׃
? tui populi oratione in fumâſti uſquequo :exercituum Deus DOMINE
5 יְהוָה אֱלֹהִים צְבָאוֹת עַד־מָתַי עָשַׁנְתָּ בִּתְפִלַּת עַמֶּךָ׃
lachrymis in eis feciſti propinare & : lachrymæ panem eos feciſti Comedere
6 הֶאֱכַלְתָּם לֶחֶם דִּמְעָה וַתַּשְׁקֵמוֹ בִּדְמָעוֹת
.magna menſura
שָׁלִישׁ׃

תרגום TARGUM.

עט

1 תושבחא על ידוי דאסף על חורבן בית מקדשא
אמר ברוח נבואה אלהים עלין עמיא באחסנתך
סאיבו ית היכל קדשך שויאו ית ירושלם לצדו:
2 יהבו ית נושמי עבדך למיכלא לעופא דשמיא
3 בסר חסידך לחיות ארעא: שדון ארמהון היך
4 מיא חזרנות דירושלם ולית דקבר: הוינא
קלנא לשכננא תולעבא וגוחכא לחזרנותנא:
5 עד אימתי יי תתקוף לעלמין תבער היך אשא
6 טננותך: שדי חמתך על עממיא דלא חכימו
7 יתך ועל מלכותא די בשמך לא צליאו: ארום
8 גמרו בית יעקב וית בית מקדשיה אצדיאו: לא
תדכר לנא עוין דמן שרויא בסרהוביא יקדמון
9 לך טבותך ארום אתמסכננא לחדא: סעד
יתנא אלהא פורקננא מטול איקר שמך ופרוק
10 יתנא וכפר על חובנא בגלל שמך: למה יימרון
עממיא אן אלההון יתגלי בעממיא למחמינא
11 פורענות אדם עבדך דאשתפך: תעול קדמך
אנקתא דאסירי היך סגי תקוף אדרעך שרי
12 בניא דמתמסרין למיתותא: ואתיב לשכננא
על חד שבעה גומלא על פום ענות קימהון
13 וחסודן די חסדו יתך יי: ואנחנא עמך ועאן
רעיתך נודי קדמך לעלם דרי לדרי דריא נתני
תושבחתך:

פ

1 לשבחא על יתבי סנהדרין די מתעסקין
בסהדות אוריתא על ידוי דאסף תושבחתא:
2 פרנסא דישראל אצית דמדבר היך ענא ארונא
דיוסף דשכנתיה שריא ביני כרוביא הופע:
3 קדם אפרים ובנימן ומנשה עורר ית כח
גבורתך עלנא ועלך מן דינא למפרוק לנא:
4 אלהא אתיב יתנא מגלותנא ואנהר זיו סבר
5 אפך עלנא ונתפרק: יי אלהים צבאות עד
6 אימתי לא קבלתא צלותא דעמך: אוכלתא
להון לחם טמיש בדמעתא ואשקיתן חמר
דמעא תלתי:

PARAPH. CHALD. Verſ Lat.

1 Canticum per *manus* Aſaph, *de deſtructione domus ſanctuarii, dixit ſpiritu prophetico* :

PSAL. LXXIX.

DEus ingreſſi ſunt populi in hæreditatem tuam; polluerunt templum ſanctum tuum, poſuerunt Jeruſalem in deſolationẽ. 2 Dederunt cadavera ſervorum tuorum eſcam volatilibus cœli, carnem ſanctorum tuorum beſtiæ terræ. 3 Effuderunt ſanguinem eorum ſicut aquam in circuitu Jeruſalem, et non erat qui ſepeliret. 4 Facti ſumus opprobrium vicinis noſtris ; ſubſannatio, et deriſio his qui in circuitu noſtro ſunt. 5 Uſquequo Dñe iraſcêris in perpetuum , accendetur ſicut ignis zelus tuus ? 6 Effunde iram tuam ſuper populos qui te non noverunt, et ſuper regna, *qui* in nomine tuo precati non ſunt. 7 Quoniam diſſipaverunt domum Jacob, et domum ſanctuarii ejus vaſtaverunt. 8 Ne remiſcaris iniquitatum noſtrarum priorum: celeriter præveniant nos bonitates tuæ, quoniam miſerabiles facti ſumus nimis. 9 Adjuva nos Deus redemptionis noſtræ propter gloriam nominis tui, et libera nos, & propitiare peccatis noſtris propter nomen tuum. 10 Quare dicent populi, Ubi eſt Deus eorum? manifeſtetur in populis ut videamus ultionem ſanguinis ſervorum tuorum qui effuſus eſt. 11 Introeat coram te gemitus vinctorum ſecundùm multitudinem fortitudinis brachii tui, ſolve filios qui traditi ſunt internecioni. 12 Et redde vicinis noſtris pro una ſeptuplá retributionem, pro punitione fœderis eorũ, & improperii quo exprobrarunt tibi Dñe. 13 Nos autem populus tuus, et oves paſcuæ tuæ confitebimur coram te in ſeculum *generationum* ; in generationem generationum annunciabimus laudem tuam.

1 Ad laudandum pro ſedentibus judicibus ordinariis, qui incumbunt teſtimonio Legis, per manus Aſaph canticum.

PSAL. LXXX.

2 PAſtor Iſrael intellige, qui ducis velut oves arcam Joſeph; [ô] cujus majeſtas quieſcit inter Cherubim, manifeſtare. 3 *Coram* Ephraim et Binjamin, et Menaſſeh, exuſcita virtutem fortitudinis tuæ *ſuper nos*: tuum eſt enim à judicio nos redimere. 4 Deus reducito nos à captivitate noſtra, et ſplendeſcere fac ſplendorẽ aſpectus faciei tuæ ſup nos, et redimemur. 5 Dñe De' exercituũ uſquequo non recipies orationem populi tui ? 6 Paviſti eos pane intincto lachrymis, et potum dediſti eis vinum lachrymarum tripliciter.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܐܣܦ *

1 * ܐܬܐܡܪ ܡܢ ܐܣܦ ܥܠ ܚܘܪܒܢܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܦܬܓ̈ܡܐ ܟܛ. ܐܠܗܐ ܥܠܘ ܥܡ̈ܡܐ ܠܝܪܬܘܬܟ:
2 ܘܛܢܦܘܗܝ ܠܗܝܟܠܟ ܩܕܝܫܐ. ܘܥܒܕܘܗ ܠܐܘܪܫܠܡ ܚܪܒܐ: * ܝܗܒܘ ܫܠܕ̈ܐ ܕܥܒܕ̈ܝܟ
3 ܡܐܟܘܠܬܐ ܠܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܒܣܪܐ ܕܙܕܝܩ̈ܝܟ ܠܚܝܘܬܐ ܕܐܪܥܐ: * ܐܫܕܘ ܕܡܗܘܢ ܐܝܟ
4 ܡܝܐ ܚܕܪܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܘܠܝܬ ܕܩܒܪ. * ܘܗܘܝܢ ܚܣܕܐ ܠܫܒܒ̈ܝܢ: ܘܡܘܝܩܐ ܘܡܒܙܚܢܐ
5 ܠܐܝܠܝܢ ܕܚܕܪܝܢ ܠܢ. * ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܡܪܝܐ ܪܓܙ ܐܢܬ ܠܥܠܡ: ܘܝܩܕ ܐܝܟ ܢܘܪܐ ܚܡܬܟ.
6 * ܐܫܘܕ ܪܘܓܙܟ ܥܠ ܥܡ̈ܡܐ ܕܠܐ ܝܕܥܘܟ: ܘܥܠ ܡܠܟܘ̈ܬܐ ܐܝܠܝܢ ܕܒܫܡܟ ܠܐ ܩܪܘ.
7
8 * ܡܛܠ ܕܐܟܠܘܗܝ ܠܝܥܩܘܒ ܘܥܡܪܗ ܐܚܪܒܘ: * ܠܐ ܬܬܕܟܪ ܠܢ ܚܛܗ̈ܝܢ ܩܕܡ̈ܝܐ. ܥܓܠ
9 ܢܩܕܡܘܢ ܪ̈ܚܡܝܟ: ܡܛܠ ܕܐܬܡܟܟܢ ܛܒ. * ܥܕܪܝܢ ܐܠܗܐ ܦܪܘܩܢ: ܡܛܠ ܐܝܩܪܐ
10 ܕܫܡܟ. ܢܦܨܢ ܘܚܣܝ ܥܠ ܚܛܗ̈ܝܢ ܡܛܠ ܫܡܟ: * ܕܠܐ ܢܐܡܪܘܢ ܥܡ̈ܡܐ ܐܝܟܘ ܐܠܗܟܘܢ.
11 ܢܬܝܕܥ ܒܥܡ̈ܡܐ ܠܥܝܢܝܢ: ܬܒܥܬܐ ܕܕܡܐ ܕܥܒܕ̈ܝܟ ܕܐܬܐܫܕ. * ܬܥܘܠ ܩܕܡܝܟ ܬܢܚܬܗ
12 ܕܐܣܝܪܐ: ܒܪܒܘܬܐ ܕܕܪܥܟ ܫܪܝ ܒܢ̈ܝ ܡܘܬܐ. * ܘܦܪܘܥ ܠܫܒܒ̈ܝܢ ܫܒܥܐ ܒܥܘܒܗܘܢ:
13 ܚܣܕܐ ܕܚܣܕܘܟ ܡܪܝܐ. * ܘܚܢܢ ܥܡܟ ܘܥܢܐ ܕܡܪܥܝܬܟ: ܢܘܕܐ ܠܟ ܠܥܠܡ. ܘܠܕܪ ܕܪ̈ܝܢ
ܢܫܬܥܐ ܬܕܡܪ̈ܬܟ. * ܡܙܡܘܪܐ * ܦ * * ܐܬܝܠܕ ܠܐܣܦ. ܦܬܓ̈ܡܐ ܢܐ. 1
2 * ܪܥܝܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܨܘܬ ܘܕܒܪ ܐܝܟ ܥܢܐ ܠܝܘܣܦ: ܝܬܒ ܥܠ ܟܪ̈ܘܒܐ ܐܬܓܠܐ. * ܩܕܡ
3
4 ܐܦܪܝܡ ܘܒܢܝܡܝܢ ܘܡܢܫܐ: ܚܘܝ ܓܢܒܪܘܬܟ ܘܬܐ ܠܦܘܪܩܢܢ. * ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܦܢܝܢ:
5 ܘܐܢܗܪ ܐܦܝܟ ܘܢܬܦܪܩ. * ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ: ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܪܓܙ ܐܢܬ ܥܠ
6 ܨܠܘܬܗ ܕܥܒܕܟ. * ܐܘܟܠܬ ܐܢܘܢ ܠܚܡܐ ܒܕܡܥܬܐ: ܘܐܫܩܝܬ ܐܢܘܢ ܒܕܡܥܬܐ.

PSAL. LXXIX.

1 *Ab Aſapho dictus de deſtructione Jeruſalem, Verſ.29.*

DEus ingreſſæ ſunt gentes in hæreditatem tuam, & polluerunt templum tuum ſanctum, feceruntque Jeruſalem deſolatam : 2 Dederunt cadavera ſervorũ tuorũ eſcã volucri cœli, & carnẽ juſtorũ tuorũ beſtiæ terræ: 3 Effuderunt ſanguinẽ eorũ velut aquã circum Jeruſalẽ, & non eſt qui ſepeliat. 4 Et facti ſum' opprobriũ vicinis noſtris, & ſubſannatio atque illuſio his qui circũ nos ſunt. 5 Uſquequo iraſceris Dñe in ſempiternũ, & ardebit ſicut ignis ira tua ? 6 Effunde irã tuã in gentes quæ non te noverunt, & in regna quæ nomen tuũ non invocaverunt ; 7 Quia comederunt Jacob, & domiciliũ ej' vaſtaverunt. 8 Ne memineris nobis peccatorũ noſtrorũ veterũ ; citò præveniant nos miſericordiæ tuæ, quia humiliati ſum' vehementer. 9 Adjuva nos Deus ſalvator noſter ob honorẽ nominis tui: propitiare nobis, & libera nos à peccatis noſtris propter nomen tuũ; 10 Ut ne dicant gentes, Ubi eſt De' veſter ? Nota fiat inter gentes corã nobis ultio ſanguinis ſervorũ tuorũ qui effuſus eſt. 11 Intret in conſpectum tuum ſuſpirium vincti. Magnitudine brachii tui ſolve filios à morte: 12 Et repende vicinis noſtris ſeptuplũ in ſinum eorũ, ignominiã quâ te vituperârunt Dñe. 13 Et nos populus tuus & oves paſcuæ tuæ, confitebimur tibi in ſeculum : & in generationem generationum narrabimus miracula tua.

PSAL. LXXX.

1 *Editus ab Aſapho, Verſ.51.*

2 PAſtor Iſraelis auſculta, & rege velut oves Joſephũ. Qui ſedes ſup Cherubim indica te, 3 Coram Aphrem Benjamin & Manaſſe. Oſtende potentiã tuã, & veni in ſalutẽ noſtrã. 4 De' fortiſſime reduc nos, & lucere fac vultũ tuũ, & ſalvabimur. 5 Dñe De' fortiſſime, quouſque iraſceris orationi ſervi tui? 6 Cibâſti eos pane cũ lachryma, et potâſti eos cũ lachryma.

Verſio VULG. LAT.

1 Pſalmus Aſaph. LXXVIII.
DEus, venerunt gentes in hæreditatẽ
tuã, polluerũt tẽplũ ſanctũ tuũ: poſuerunt
Jeruſalẽ in pomorũ cuſtodiã.
2 Poſuerunt morticina ſervorũ tuorũ,
eſcas volatilib⁹ cœli; carnes Sanctorũ
3 tuorũ, beſtiis terræ. Effuderũt ſanguinẽ
eorũ tãquã aquã in circuitu Jeruſalẽ:
4 & non erat qui ſepeliret. Facti ſum⁹
opprobriũ vicinis noſtris; ſubſannatio
et illuſio his, qui in circuitu noſtro ſũt.
5 Uſquequò, Dñe, iraſcêris in finẽ: accẽdetur
6 velut ignis zel⁹ tu⁹? Effunde irã
tuã in gentes, quæ te non noverũt; &
in regna, quæ nomen tuũ non invocaverunt
7 : Quia comederunt Jacob : et
8 locũ ej⁹ deſolaverunt. Ne memineris
iniquitatũ noſtrarũ antiquarũ, citò anticipent
nos miſericordiæ tuæ : quia
9 pauperes facti ſum⁹ nimis. Adjuva nos,
De⁹ ſalutaris noſter: & propter gloriã
nominis tui, Dñe, libera nos: & propitius
eſto peccatis noſtris, propter nomen
10 tuũ : Ne fortè dicant in gentib⁹,
Ubi eſt De⁹ eorũ? & innoteſcat in nationib⁹
corã oculis noſtris, Ultio ſanguinis
11 ſervorũ tuorũ, qui effuſ⁹ eſt: Introëat
in conſpectu tuo gemit⁹ compeditorũ.
Secundùm magnitudinẽ brachii
12 tui, poſſide filios mortificatorũ. Et
redde vicinis noſtris ſeptuplũ in ſinu
eorũ: improperiũ ipſorũ ꝙ exprobraverunt
13 tibi, Dñe. Nos autẽ popul⁹ tu⁹,
& oves paſcuæ tuæ, confitebimur tibi
in ſeculum : In generationem & generationẽ
anuntiabimus laudẽ tuam.

1 In finem, Pro iis qui commutabuntur,
teſtimonium Aſaph, Pſalmus.
LXXIX.
2 QUi regis Iſrael, intende : qui deducis
velut ovẽ Joſeph. Qui ſedes
3 ſup Cherubim, manifeſtare Coram Ephraim,
Benjamin, & Manaſſe. Excita
potentiã tuã, & veni, ut ſalvos facias
4 nos. De⁹, còverte nos : et oſtende faciẽ
5 tuã, et ſalvi erim⁹. Dñe Deus virtutũ,
quouſq; iraſcêris ſup orationẽ
6 ſervi tui? Cibabis nos pane lachrymarum:
et potum dabis nobis in lachrymis
in menſura ?

Verſ. GRÆCA LXX. Interp.

1 Ψαλμὸς τῷ Ἀσάφ. οη΄.
Ὁ Θεὸς, ἤλθοσαν ἔθνη εἰς τὴν κληρονομίαν σου,
ἐμίαναν τὸν ναὸν τὸν ἅγιόν σου· ἔθεντο Ἱερουσαλὴμ
2 εἰς ὀπωροφυλάκιον. Ἔθεντο τὰ θνησιμαῖα τῶν δούλων
σου βρώματα τοῖς πετεινοῖς τοῦ οὐρανοῦ, τὰς
3 σάρκας τῶν ὁσίων σου τοῖς θηρίοις τῆς γῆς. Ἐξέχεαν
τὸ αἷμα αὐτῶν ὡς ὕδωρ, κύκλῳ Ἱερουσαλὴμ,
4 καὶ οὐκ ἦν ὁ θάπτων. Ἐγενήθημεν εἰς ὄνειδος τοῖς
γείτοσιν ἡμῶν, μυκτηρισμὸς καὶ χλευασμὸς τοῖς
5 κύκλῳ ἡμῶν. Ἕως πότε κύριε ὀργισθήσῃ εἰς τέλος;
6 ἐκκαυθήσεται ὡς πῦρ ὁ ζῆλός σου; Ἔκχεον τὴν ὀργήν
σου ἐπὶ ἔθνη τὰ μὴ ἐπεγνωκότα σε, καὶ ἐπὶ βασιλείας
7 αἳ τὸ ὄνομά σου οὐκ ἐπεκαλέσαντο. Ὅτι κατέφαγον
8 τὸν Ἰακὼβ, καὶ τὸν τόπον αὐτοῦ ἠρήμωσαν. Μὴ
μνησθῇς ἡμῶν ἀνομιῶν ἀρχαίων, ταχὺ προκαταλαβέτωσαν
ἡμᾶς οἱ οἰκτιρμοί σου, ὅτι ἐπτωχεύσαμεν
9 σφόδρα. Βοήθησον ἡμῖν ὁ Θεὸς ὁ σωτὴρ ἡμῶν, ἕνεκα
τῆς δόξης τοῦ ὀνόματός σου κύριε ῥῦσαι ἡμᾶς, καὶ
ἱλάσθητι ταῖς ἁμαρτίαις ἡμῶν ἕνεκα τοῦ ὀνόματός σου.
10 Μή ποτε εἴπωσιν ἐν τοῖς ἔθνεσι, Ποῦ ἐστιν ὁ Θεὸς
αὐτῶν; καὶ γνωσθήτω ἐν τοῖς ἔθνεσιν ἐνώπιον τῶν ὀφθαλμῶν
ἡμῶν ἡ ἐκδίκησις τοῦ αἵματος τῶν δούλων
11 σου τοῦ ἐκκεχυμένου. Εἰσελθέτω ἐνώπιόν σου
ὁ στεναγμὸς τῶν πεπεδημένων, κατὰ τὴν μεγαλωσύνην
τοῦ βραχίονός σου περιποίησαι τοὺς υἱοὺς τῶν τεθανατωμένων.
12 Ἀπόδος τοῖς γείτοσιν ἡμῶν ἑπταπλάσια
εἰς τὸν κόλπον αὐτῶν, τὸν ὀνειδισμὸν αὐτῶν ὃν ὠνείδισάν
13 σε κύριε. Ἡμεῖς γὰρ λαός σου καὶ πρόβατα
νομῆς σου, ἀνθομολογησόμεθά σοι εἰς τὸν αἰῶνα, εἰς
γενεὰν καὶ γενεὰν ἐξαγγελοῦμεν τὴν αἴνεσίν σου.

1 Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῶν ἀλλοιωθησομένων, μαρτύριον
τῷ Ἀσάφ, ψαλμὸς ὑπὲρ τοῦ Ἀσσυρίου.
οθ΄.
2 Ὁ Ποιμαίνων τὸν Ἰσραὴλ πρόσχες, ὁ ὁδηγῶν ὡσεὶ
πρόβατα τὸν Ἰωσήφ· ὁ καθήμενος ἐπὶ τῶν χερουβὶμ
3 ἐμφάνηθι, Ἐναντίον Ἐφραὶμ καὶ Βενιαμὶν καὶ
Μανασσῆ· ἐξέγειρον τὴν δυναστείαν σου, καὶ ἐλθὲ εἰς
4 τὸ σῶσαι ἡμᾶς. Ὁ Θεὸς ἐπίστρεψον ἡμᾶς, καὶ ἐπίφανον
5 τὸ πρόσωπόν σου, καὶ σωθησόμεθα. Κύριε ὁ
Θεὸς τῶν δυνάμεων, ἕως πότε ὀργίζῃ ἐπὶ τὴν προσευχὴν
6 τοῦ δούλου σου; Ψωμιεῖς ἡμᾶς ἄρτον δακρύων,
καὶ ποτιεῖς ἡμᾶς ἐν δάκρυσιν ἐν μέτρῳ.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

[a] Pſalmus ipſi Aſaph. LXXVIII. 1

1 DEus, venerunt gentes in hæreditatẽ tuã: polluerunt templum ſanctum tuum: poſuerunt Hieruſalẽ [b] in (a) pomorum cuſtodiam. 2 Poſuerunt morticina ſervorũ tuorum eſcas volatilib⁹ cœli: carnes ſanctorum tuorum [c] beſtiis terræ. 3 Effuderunt ſanguinẽ eorum, ſicut aquã, in circuitu Hieruſalẽ: & non erat qui ſepeliret. 4 Facti ſum⁹ (b) in opprobrium vicinis noſtris: (c) ſubſannatio & irriſio iis qui in circuitu noſtro ſunt. 5 Uſquequò, Domine, iraſcêris in finẽ? exardeſcet, velut ignis, zel⁹ tu⁹? 6 Effunde irã tuã in gentes, quæ te non noverunt; & in regna, quæ nomen tuum non invocaverunt. 7 Quia comederunt Jacob, & (d) locum ejus deſolaverunt. 8 Ne memineris [d] iniquitatum noſtrarum antiquarum: citò anticipient nos miſericordiæ [e] tuæ: quia [f] pauperes facti ſumus nimis. 9 Adjuva nos, De⁹ [g] ſalutaris noſter: propter gloriã nominis tui, Domine, libera nos: & propiti⁹ eſto peccatis noſtris propter nomen tuum: 10 Nequando dicant (e) in gentib⁹, ubi eſt De⁹ eorum? Et [h] innoteſcat in nationibus corã oculis noſtris 11 ultio ſanguinis ſervorum tuorum, qui effuſ⁹ eſt: Intret in cõſpectum tuum gemit⁹ compeditorũ. 12 Secundùm magnitudinẽ brachii tui (f) [i] poſſide filios mortificatorum. 13 Redde vicinis noſtris ſeptuplum in ſinum eorum: opprobrium ipſorum, quod exprobraverunt tibi, Domine. 14 Nos autẽ populus tuus, & oves paſcuæ tuæ, confitebimur tibi in ſeculum : 15 in generationem & generationem annuntiabimus laudem tuam.

In finem, Pro iis qui immutabuntur, teſtimoniũ (a) ipſi Aſaph, *Pſalmus* pro Aſſyrio. LXXIX. 1

1 [a] QUi paſcis Iſrael, intende: qui [b] adducis, velut (b) oves, (c) Joſeph. 2 Qui ſedes ſuper Cherubim, appare Corã (d) Ephræm, & Benjamin, & Manaſſe. 3 Excita potentiã tuã, & veni: ut ſalvos facias nos. 4 De⁹ [c], converte nos: & (e) oſtende faciẽ tuã: & ſalvi erim⁹. 5 Domine De⁹ virtutũ, quouſq; iraſcêris ſuper (f) orationẽ ſervi tui? 6 (g) Cibabis nos pane lachrymarũ, et potabis nos in lachrymis in (h) menſura?

Verſio ÆTHIOPICA.

ፍጻሜ፡መዝሙር፡ዘአሳፍ፡፡
ሮፓ እግዚኦ፡ቦኡ፡አሕዛብ፡ውስተ፡ርስ 1
ትከ፡፡ ወአርኰሱ፡ጽርሐ፡መቅደስከ፡፡ ወረ
ሰይዋ፡ለኢየሩሳሌም፡ከመ፡ልኅተ፡ዐቃቤ፡ቀ
ምሕ፡፡=፡ ወረሰዩ፡አብድንቲሆሙ፡ለአግ 2
ብርቲከ፡መብልዖሙ፡ለአዕዋፈ፡ሰማይ፡፡
ወሥጋሆሙኒ፡ለጻድቃኒከ፡ለአራዊተ፡ገደ
ም፡፡=፡ ወከዐው፡ደሞሙ፡ከመ፡ማይ፡አው 3
ደ፡ለኢየሩሳሌም፡፡ ወኃጥኡ፡ዘይቀብሮ
ሙ፡፡=፡ ወኮነ፡ፀእለተ፡ለጎርን፡፡ ሣሕቀ፡ 4
ወስላቀ፡ለአድያሚነ፡፡=፡ እስከ፡ማእዜኑ፡ 5
እግዚኦ፡ትትመዓዕ፡ለዝሉፉ፡፡ወይነድድ፡
ከመ፡እሳት፡ቅንዐትከ፡፡=፡ ከዐው፡መዐተ 6
ከ፡ላዕለ፡አሕዛብ፡እለ፡ኢያአምሩከ፡፡
ወላዕለ፡መንግሥት፡እንተ፡ኢጸውዐት፡ስመ
ከ፡፡=፡ እስመ፡በልዕዎ፡ለያዕቆብ፡ወአ 7
ማሰኑ፡ብሔሮ፡፡=፡ ኢትዝክር፡ለነ፡አበሳ 8
ነ፡ዘትካት፡፡ ፍጡነ፡ይርከበነ፡ሣህልከ፡
እግዚኦ፡፡ እስመ፡ተመንደብነ፡ፈድፋደ፡፡=፡
ረድአነ፡አምላክነ፡ወመድኃኒነ፡፡ በእንተ፡ 9
ስብሐተ፡ስምከ፡እግዚኦ፡በልሐነ፡፡ ወስረ
ይ፡ኃጢአተነ፡በእንተ፡ስምከ፡፡=፡ ከመ፡ 10
ኢይበሉነ፡አሕዛብ፡አይቴ፡ውእቱ፡አምላ
ኮሙ፡፡ ወይርአዩ፡አሕዛብ፡በቅድመ፡አ
ዕይንቲነ፡፡=፡ በቀለ፡ደሞሙ፡ለአግብርቲ 11
ከ፡ዘተክዕወ፡፡ ይባእ፡ቅድሜከ፡ገዓሮሙ፡
ለሙቁሐን፡፡=፡ ወበከመ፡ዕበየ፡መዝራዕት 12
ከ፡፡ ተሣሀሎሙ፡ለደቂቀ፡ቅቱላን፡፡=፡ ፈ 13
ድዮሙ፡ለጎርን፡ምስብዒተ፡ውስተ፡ሕፅኖ
ሙ፡፡ ትዕይርቶሙ፡ዘተዐየሩከ፡እግዚ
እ፡፡=፡ ወንሕነሰ፡ሕዝብከ፡አባግዐ፡መ 14
ርዓትከ፡፡ ወንገኒ፡ለከ፡ለዓለም፡፡=፡ ወንነ 15
ገር፡ስብሐታቲከ፡ለትውልደ፡ትውልድ፡፡
ፍጻሜ፡ዘበእንተ፡እለ፡ተበዐዱ፡ስምዐ፡
ዘአሳፍ፡መዝሙር፡ዘበእንተ፡
አሶርዮን፡፡
ሮሀ ኖላዊሆሙ፡ለእስራኤል፡አጽምእ፡፡ 1
ዘይርዕዮሙ፡ከመ፡አባግዐ፡ዮሴፍ፡፡=፡ ዘይ 2
ነብር፡፡ ላዕለ፡ኪሩቤል፡አስተርአየ፡፡በቅድ
መ፡ኤፍሬም፡ወብንያም፡ወምናሴ፡፡=፡
አንሥእ፡ኃይለከ፡ወነዐ፡አድኅነነ፡፡=፡ 3
አምላክ፡ኃያላን፡ሚጠነ፡አብርህ፡ገጸከ፡ 4
ላዕሌነ፡ወንድኃን፡፡=፡ እግዚኦ፡አምላ 5
ከ፡ኃያላን፡፡ እስከ፡ማእዜኑ፡ትትመዐዕ፡
ላዕለ፡ጸሎተ፡ገብርከ፡፡=፡ ወትሴስየነ፡ 6
እክለ፡አንብዕነ፡፡ ወታሰትየነ፡አንብዐነ፡
በመስፈርት፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. *PSAL. LXXVIII.* [a] In finẽ, Pſalm⁹ ipſi Aſaph. [b] tanquã profundã pomorũ cuſtodiã. [c] beſtiis deſerti. [d] contra nos [e] tuæ Dñe: [f] afflicti ſum⁹ [g] noſter & ſalutaris [h] videant nationes corã oculis noſtris ultionẽ [i] propiti⁹ eſto filiis *PSAL. LXXIX.* [a] Paſtor Iſraelitarũ [b] paſcis [c] virtutũ, converte

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 * المزمور الثامن والسبعون * لاصاف * وعدده * كط * استيخن *
اللهم ان الامم دخلت ميراثك * ونجست هيكلك المقدس * جعلت يروسليم كالحرس الخراب *
2 3 * جعلت جثث عبيدك طعاما لطير السماء ولحوم قديسيك لوحوش الصحاري * هراقت
4 دماءهم كالماء حول يروسليم * وليس لهم من يدفنهم * صرنا عارا لجيراننا وهزوا وضحكة لمن
5 6 حولنا * فالي متي يا رب تغضب الي الغاية * تشتعل غيرتك مثل النار * افض غضبك علي هاولاء
7 الامم الذين لا يعرفونك * وعلي الممالك التي لم تدع اسمك * لانهم قد اكلوا يعقوب واخربوا
8 9 موضعه * لا تذكر اثامنا الاولي * ولتدركنا رحمتك يا رب سريعا * لانا قد افتقرنا جدا * فاعنا اللهم
10 مخلصنا * لاجل مجد اسمك يا رب خلصنا * واغفر خطايانا من اجل اسمك * لئلا يقال في الامم
11 اين الههم * وليعلم في الامم قدام عيوننا * انتقام دماء عبيدك المسفوكة * وليدخل امامك تنهد
12 الاسراء * كعظمة ذراعك انقذ بني المقتولين * عوض جيراننا سبعة اضعاف في احضانهم *
13 بالعار الذي عيروك به يا رب * فانا نحن شعبك وغنم رعيتك نشكرك الي الابد * من جيل الي
جيل نخبر بتسابيحك * الليلويا *
* المزمور التاسع والسبعون *
1 * شهادة لاصاف علي المتغيرين * وعدده * لح * استيخن *
2 * يا راع اسرائيل انصت الهادي يوسف كالخروف * ايها الجالس علي الكاروبين اظهر
3 4 * قدام افرام وبنيامين ومنسا * انهض قوتك وهلم لخلاصنا * اللهم اردنا * وانر وجهك علينا
5 6 فنخلص * ايها الرب اله القوات * الي متي تغضب علي صلاة عبيدك * اطعمتنا خبز الدموع *
وسقيتنا العبرات بالكيل *

PSAL. LXXVIII.
Aſapho. Et numerus verſ. 29. 1

PRofectò, Deus, gentes ingreſſæ ſunt hæreditatem tuam, & polluerunt templum tuum ſanctum: fecerunt Jeruſalem quaſi carcerem dirutum: 2 Fecerunt cadavera ſervorum tuorum eſcam volatilibus cœli, & carnes ſanctorum tuorum beſtiis camporum. 3 Fuderunt ſanguinem eorum ſicut aquam circa Jeruſalem, & non eſt eis qui ſepeliat illos. 4 Facti ſumus opprobrium vicinis noſtris, & deriſus atque contemptus iis, qui circa nos ſunt. 5 Quouſque O Domine, indignaberis in finem? 6 exardeſcet zelus tuus velut ignis? Effunde iram tuam in has gentes quæ non cognoſcunt te, et in regna quæ non invocaverunt nomen tuum; 7 Quia jam comederunt Jacob, & vaſtaverunt locum ejus. 8 Ne memineris iniquitatum noſtrarum præcedentium: ſed aſſequatur nos miſericordia tua O Domine, quamprimùm, quia in 9 paupertatem redacti ſumus maximam. Adjuva nos igitur Deus ſalvator noſter, propter gloriam nominis tui O Domine, liberes nos, & remittas peccata noſtra 10 propter nomen tuum: ut ne dicatur inter gentes, ubi eſt Deus eorũ? Et nota fiat inter gentes corã oculis noſtris ultio ſanguinum ſervorum tuorum, qui effuſi ſunt: 11 Et introeat coram te gemitus captivorum: ſecundùm magnitudinem brachii tui redime filios occiſorum: 12 Compenſa vicinos noſtros ſeptupliciter in ſinus eorum opprobrio quo te vituperaverunt, O Domine. 13 Nos enim popul⁹ tu⁹, et oves paſcuæ tuæ gratias agemus tibi in æternum, de generatione in generationem narrabimus laudationes tuas. Alleluja.

PSAL. LXXIX.
Teſtimonium Aſapho de immutandis. Et numerus ver. 38. 1

2 O Paſtor Iſrael, auſculta: ductor Joſephi velut agni: O ſedens ſuper Cherubim, manifeſtare 3 Coram Ephraim, & Benjamin, & Manaſſe: excita potentiã tuam, & veni in ſalutem noſtram. 4 Deus, reduc nos, & illuſtra faciem tuam ſuper nos, & ſalvabimur. 5 O Domine Deus virtutum, quouſque indignaberis orationi ſervorũ tuorũ? 6 Cibâſti nos pane lachrymarũ & potâſti nos ſingultibus cum menſura.

תהלים : פא

.ſibi ſubſannabunt noſtri inimici & : noſtris vicinis *contentionem* nos Poſuiſti
תְּשִׂימֵנוּ מָדוֹן לִשְׁכֵנֵינוּ וְאֹיְבֵינוּ יִלְעֲגוּ־לָמוֹ׃ 7
.ſervabimur & , *tuas facies* illumina & : nos converte exercituum Deus
אֱלֹהִים צְבָאוֹת הֲשִׁיבֵנוּ וְהָאֵר פָּנֶיךָ וְנִוָּשֵׁעָה׃ 8
Scopâſti .eam plantâſti & , gentes *expuliſti* : feciſti proficiſci Ægypto ex Vitem
גֶּפֶן מִמִּצְרַיִם תַּסִּיעַ תְּגָרֵשׁ גּוֹיִם וַתִּטָּעֶהָ׃ פִּנִּיתָ 9 10
montes ſunt Operti .terram implevit & ,ejus radices feciſti radicare & *: ejus facies ad*
לְפָנֶיהָ וַתַּשְׁרֵשׁ שָׁרָשֶׁיהָ וַתְּמַלֵּא־אָרֶץ׃ כָּסּוּ הָרִים 11
: mare ad uſque ejus *palmites Mittes* .*fortis* cedri ejus rami & : ejus umbra
צִלָּהּ וַעֲנָפֶיהָ אַרְזֵי־אֵל׃ תְּשַׁלַּח קְצִירֶהָ עַד־יָם 12
eam *decerpſerunt* & : ejus macerias dirupiſti quid Ut .ejus *ramulos* flumen ad &
וְאֶל־נָהָר יוֹנְקוֹתֶיהָ׃ לָמָּה פָּרַצְתָּ גְדֵרֶיהָ וְאָרוּהָ 13
agreſtis *fera &* : *ſylva de* aper eam Conſumpſit ? viam tranſeuntes omnes
כָּל־עֹבְרֵי דָרֶךְ׃ יְכַרְסְמֶנָּה חֲזִיר מִיָּעַר וְזִיז שָׂדַי 14
: vide & , cœlis è reſpice , obſecro revertere exercituum Deus .eã eſt depaſta
יִרְעֶנָּה׃ אֱלֹהִים צְבָאוֹת שׁוּב־נָא הַבֵּט מִשָּׁמַיִם וּרְאֵה 15
filium ſuper & :tua dextera plantavit *quod* , *vitiarium* Et .iſtam vitem viſita &
וּפְקֹד גֶּפֶן זֹאת׃ וְכַנָּה אֲשֶׁר־נָטְעָה יְמִינֶךָ וְעַל־בֵּן 16
.peribunt *tuarum facierum increpatione præ* : ſuccifa , igne *in* Incenſa .tibi roborâſti
אִמַּצְתָּה לָּךְ׃ שְׂרֻפָה בָאֵשׁ כְּסוּחָה מִגַּעֲרַת פָּנֶיךָ יֹאבֵדוּ׃ 17
.tibi roborâſti hominis filium ſuper : tuæ dexteræ virum ſuper tua manus Sit
תְּהִי־יָדְךָ עַל־אִישׁ יְמִינֶךָ עַל־בֶּן־אָדָם אִמַּצְתָּ לָּךְ׃ 18
.invocabimus *tuo nomine in* & , nos vivificabis : te à retrocedemus non Et
וְלֹא־נָסוֹג מִמֶּךָּ תְּחַיֵּנוּ וּבְשִׁמְךָ נִקְרָא׃ 19
, tuam faciem illumina : nos converte exercituum Deus DOMINE
יְהוָה אֱלֹהִים צְבָאוֹת הֲשִׁיבֵנוּ הָאֵר פָּנֶיךָ 20
.ſervabimur &
וְנִוָּשֵׁעָה׃

PSAL. LXXXI. פא

:noſtræ fortitudini Deo Vociferate .Aſaph ipſi Haghitith ſuper Victori
לַמְנַצֵּחַ עַל־הַגִּתִּית לְאָסָף׃ הַרְנִינוּ לֵאלֹהִים עוּזֵּנוּ 1 2
citharam : tympanum date & ,pſalmum Sumite .Jahacob Deo jubilate
הָרִיעוּ לֵאלֹהֵי יַעֲקֹב׃ שְׂאוּ־זִמְרָה וּתְנוּ־תֹף כִּנּוֹר 3
ſtatuto tempore in : tuba *novilunio* in Clangite .Nebel cum jucundam
נָעִים עִם־נָבֶל׃ תִּקְעוּ בַחֹדֶשׁ שׁוֹפָר בַּכֵּסֶה 4
Deo judicium *: iſtud* Iſraeli ſtatutum Quia .noſtræ ſolennitatis die in
לְיוֹם חַגֵּנוּ׃ כִּי חֹק לְיִשְׂרָאֵל הוּא מִשְׁפָּט לֵאלֹהֵי 5
terram ſuper *ipſum exeundo in* , illud poſuit Joſeph in Teſtimonium .Jahacob
יַעֲקֹב׃ עֵדוּת בִּיהוֹסֵף שָׂמוֹ בְּצֵאתוֹ עַל־אֶרֶץ 6
: ejus humerum onere ab Subduxi .*audiam* noveram non *labium* : Ægypti
מִצְרָיִם שְׂפַת לֹא־יָדַעְתִּי אֶשְׁמָע׃ הֲסִירוֹתִי מִסֵּבֶל שִׁכְמוֹ 7
, te erui & , invocâſti anguſtia In .*tranſibunt* aheno ab ejus manus
כַּפָּיו מִדּוּד תַּעֲבֹרְנָה׃ בַּצָּרָה קָרָאתָ וָאֲחַלְּצֶךָּ 8
, *litigii* *aquas ſuper* te probabo : tonitrui abſcondito in te *exaudiam*
אֶעֶנְךָ בְּסֵתֶר רַעַם אֶבְחָנְךָ עַל־מֵי מְרִיבָה
ſi , Iſrael : te in faciam teſtificari & , mi populus Audi .Selah
סֶלָה׃ שְׁמַע עַמִּי וְאָעִידָה בָּךְ יִשְׂרָאֵל אִם־ 9
.mihi audieris
תִּשְׁמַע־לִי׃

תרגום TARGUM.

7 שויתנא למדנא לשיבבנא ובעלי דבבנא
8 יתלעבון להון : אלהים צבאות אתיב יתנא
מגלותנא ואנהר זיו סבר אפך עלנא ונתפרק :
9 בית ישראל דמתילין לגופנא ממצרים אטלתא
תרכתא מעממיא מארעא דישראל ונצבתנון :
10 פניתא מן קדמיהון כנענאי ושרשתא שורשיהון
11 ומלאת ארעא : חפין טוריא דירושלם טול
בית מקדשא ובתי מדרשיא רבנין אמרין
12 אלימין דמתילין לארזין תקיפין : שבשת שבשין
[שדרת תלמידהא] עד ימא רבא ולנהר פרת
13 יניקהא : למא תקפתא גודרהא ומכסחין יתהא
14 כל עברי אורחא : ינוברנה חזיר דמן חורשא
15 ותרנגול ברא יתפרנס מנה : אלהים צבאות
תוב כדון אסתכל מן שמיא וחמי ואדכר ברחמי
16 גופנא הדא : ועוברא די נציבת ימינך ועל מלכא
17 משיחא דחילתא לך : מתוקדא בנורא ומפרכא
18 ממזופיתא דמן קדמך ייבדון : תהי אידך על
גבר דקימתא ליה ביד ימינך על בר נש דחילתא
19 לך : לא נוור מבתר דחלתך תקימננא ובשמך
20 נקרי : יי אלהים צבאות אתיב יתנא מגלותא
אנהר זיו סבר אפך עלנא ונתפרק : פא
1 לשבחא על כנרא דאתיא מן גת על ידא
2 דאסף : שבחו קדם אלהים עושננא יבבו קדם
3 אלהא דיעקב : ארימו קלא בתושבחתא וסדרו
4 תופיא כנרא דקליה בסים עם נבלין : תקעו
בירחא דתשרי שופרא בירחא דמתכסי יומי
5 חגיא דילנא : ארום קים גזר ישראל הוא הלכת
6 דינא לאלהא דיעקב : סהדותא על יהוסף שויה
דלא קרב לאתת רבוניה ביה ביומא נפק מבית
אסירי ושליט בכל ארעא דמצרים ספתא דלא
7 חכימית אליפית שמעית : אעדיתי משעבודא
כתפיה אידוי מן למרמי טינא לקדרא אסתלקן
8 : בעדן עקתא דמצרים קרית ופצית יתך ענית
יתך באתר טמיר בית שכנתי דאכלין קדמוי
גלגלין די נור בחנתך על מי מצותא לעלמין :
9 שמעו עמי ואסהיד בכון ישראל אם תקבל למימרי :

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Poſuiſti nos contradictionẽ vicinis noſtris, 7
et inimici noſtri ludibrio[*nos*]habuerũt *ſibi*.
Deꝰ exercituũ reducito nos de captivitate, 8
et illumina ſplendorẽ aſpectꝰ faciei tuæ ſuꝑ
nos,et ſalvi erimꝰ. Domũ Iſraelis quæ aſſi- 9
milatur vineæ,de Ægypto tranſtuliſti;expu-
liſti populos de terra Iſrael,et plantâſti eos.
Scopâſti à conſpectu ejꝰ Cananæos,et plan- 10
tâſti radices ejꝰ, et implevit terrã.Cooperti 11
ſunt montes Jeruſalem umbra domꝰ ſanctu-
arii, et domꝰ doctrinæ: præceptores *ſermo-
cinantes* fortes qui aſſimilati ſunt cedris for-
tiſſimis. *Expandit* propagines,*miſit* diſci- 12
pulos ejꝰ uſq; ad mare magnũ,et uſq; ad flu-
men Euphratẽ ſugentes eam. Quare deſtru- 13
xiſti ſepẽ ejus,et excidunt eam omnes tranſ-
euntes viam? *Suffodiet* eam aper de ſylva,et 14
gallꝰ ſylveſtris paſcetur ex ea. Deꝰ exerci- 15
tuũ convertere nunc, aſpice de cœlo et vi-
de,et recordare in miſerationibꝰ vitis hujꝰ.
Et propaginis quam plantavit dextera tua , 16
idq; propter regẽ Chriſtũ quẽ confirmâſti
tibi. Succenſa eſt igne et exciſa : ab incre- 17
patione quæ à conſpectu tuo[*prodibit*,]per-
eant.Sit manꝰ tua ſuꝑ virũ cui jurâſti in ma- 18
nu dextera tua,ſuꝑ hominẽ quẽ confirmâſti
tibi.Non diſcedemꝰ à timore tui : vivifica- 19
bis nos;et in nomine tuo invocabimꝰ. Dñe 20
Deus exercituum reducito nos de captivi-
tate : illuſtra ſplendorẽ aſpectus faciei tuæ
ſuper nos,et ſalvi erimus.

Ad laudandum cithara allata de Gath 1
per manum Aſaph.

PSAL. LXXXI.

LAudes dicite corã Deo fortitudine no- 2
ſtra, jubilate corã Deo Jaacob. Erigite vo- 3
cẽ in laude, et *diſponite* tympana, citharam
vocis dulcis cum *nablis*. Clangite in menſe 4
Tiſri cornu,in menſe qui coopertꝰ eſt, *diebꝰ
ſolemnitatũ noſtrarũ*.Quoniã præceptũ ſta- 5
tuit Iſraeli, et ſententiã judicii Dei Jaacob.
Teſtimoniũ ſuꝑ Joſeph poſuit eum, *ut non* 6
accederet ad uxorẽ Domini ſui, eo die quo
egreſſꝰ eſt de domo vinctorũ,et dominatꝰ eſt
ſuper *totam* terrã Ægypti: labiũ ꝙ non no-
vi, didici et audivi. Amovi à ſervitute hu- 7
merũ ejꝰ :manꝰ ejꝰ à projiciendo luto ad ol-
las ſeſe ſubduxerunt.In tempore tribulatio- 8
nis Ægypti invocâſti,et liberavi te: reſpon-
di tibi in loco abſcondito domus majeſtatis
meæ;perſonâtibꝰ corã me rotis igneis: pro-
bavi te apud aquas contradictionis in per-
petuum. Audite popule mi & teſtificabor 9
in *vos*; Iſrael, ſi admiſeris verbum meum.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

7 8 * ܣܡܬܢ ܪܢܝܐ ܠܫܒܒܝܢ: ܘܒܥܠܕܒܒܝܢ ܡܡܝܩܝܢ ܒܢ. * ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܦܢܝܢ: ܘܐܢܗܪ
ܐܦܝܟ ܘܢܬܦܪܩ. * ܕܝܐܦܣܠܡܐ * ܓܦܬܐ ܐܦܩܬ ܡܢ ܡܨܪܝܢ: ܐܘܒܕܬ ܥܡܡܐ ܘܢܨܒܬܗ. 9
10 * ܚܪܬ ܒܗ ܘܢܨܒܬ ܥܩܪܗ: ܘܡܠܬ ܐܪܥܐ ܡܢܗ. * ܘܐܬܟܣܝܘ ܛܘܪܐ ܡܢ ܛܠܠܗ:
11 12 ܘܫܒܘܫܘܗܝ ܥܠ ܐܪܙܐ ܕܐܠܗܐ. * ܫܕܪ ܫܒܫܘܗܝ ܥܕܡܐ ܠܝܡܐ: ܘܥܠ ܢܗܪܘܬܐ ܣܘܟܘܗܝ.
13 14 * ܠܡܢܐ ܬܪܥܬ ܣܝܓܗ: ܘܕܫܘܗ ܟܠ ܥܒܪܝ ܐܘܪܚܐ. * ܘܐܟܠܗ ܚܙܝܪܐ ܕܥܒܐ: ܘܚܝܘܬܐ
15 ܕܒܪܐ ܪܥܝܘܗ. * ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܬܦܢܝ: ܘܚܘܪ ܡܢ ܫܡܝܐ ܘܚܙܝ. ܘܣܥܘܪܝܗ ܠܓܦܬܐ
16 17 ܗܕܐ: * ܘܫܒܫܬܐ ܕܢܨܒܬ ܝܡܝܢܟ. ܘܥܠ ܒܪܢܫܐ ܕܐܚܝܠܬ ܠܟ: * ܐܘܩܕ ܒܢܘܪܐ ܫܒܘܫܘܗܝ.
18 ܡܢ ܟܐܬܐ ܕܐܦܝܟ ܢܐܒܕܘܢ: * ܬܗܘܐ ܐܝܕܟ ܕܝܡܝܢܐ ܥܠ ܓܒܪܐ. ܘܥܠ ܒܪܢܫܐ ܕܐܚܝܠܬ ܠܟ:
19 20 * ܘܠܐ ܢܗܦܘܟ ܡܢܟ. ܐܠܐ ܐܚܝܢ ܘܒܫܡܟ ܢܩܪܐ: * ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܦܢܝܢ. ܘܐܢܗܪ
ܐܦܝܟ ܘܢܬܦܪܩ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܦܐ *

1 * ܠܐܣܦ. ܟܕ ܕܘܝܕ ܒܗ ܡܬܛܝܒ ܠܥܐܕܐ. ܦܬܓ̈ ܠܗ.
2 3 * ܫܒܚܘ ܠܐܠܗܐ ܡܥܘܕܪܢܢ. ܘܝܒܒܘ ܠܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ: * ܫܩܘܠܘ ܦܠܓܐ ܘܟܢܪܐ.
4 5 ܒܣܝܡܐ ܥܡ ܩܝܬܪܐ: * ܩܪܘ ܒܩܪܢܬܐ ܒܪܝܫ ܝܪܚܐ. ܘܒܫܘܪ̈ܝܐ ܒܝܘܡܬܐ ܕܥܐܕܐ: * ܡܛܠ
6 ܕܢܡܘܣܐ ܗܘ ܠܐܝܣܪܐܝܠ. ܘܕܝܢܐ ܠܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ: * ܣܗܕܘܬܗ ܒܝܘܣܦ ܣܡܗ. ܟܕ ܢܦܩ
7 ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ: ܠܫܢܐ ܕܠܐ ܝܕܥ ܗܘܐ ܫܡܥ. * ܐܥܒܪܬ ܢܝܪܐ ܡܢ ܟܬܦܗ: ܘܐܝܕܘܗܝ ܡܢ
8 ܐܣܘܪܐ ܫܪܝܬ. * ܒܐܘܠܨܢܐ ܩܪܢܝ ܘܦܪܩܬܗ: ܘܟܣܝܬܗ ܒܟܣܝܐ ܕܫܘܒܚܝ. ܘܒܚܢܬܗ
9 ܒܡܝܐ ܕܚܪܝܢܐ: * ܕܝܐܦܣܠܡܐ * ܫܡܥ ܥܡܝ ܘܐܡܠܠ. ܐܝܣܪܐܝܠ ܐܣܗܕ ܒܟ: ܐܢ ܬܫܡܥܢܝ

Feciſti nos meditationem vicinis noſtris, & 7
hoſtes noſtri ſubſannaverunt nos. Deus for- 8
tiſſime reduc nos, & ſplendere fac vultum tu-
um, & ſalvabimur. * *Diapſal.* * Vitem eduxi- 9
ſti ex Ægypto, perdidiſti gentes & plantâſti
eam. Intuitus es illam, & plantâſti radicem 10
ejus : & impletus eſt orbis illâ. Et operti 11
ſunt montes umbrâ ejus, & pampini ejus ſu-
pra cedros Dei. Jecit palmites ſuos uſque ad 12
mare, & ſuper flumina ramos ſuos. Quare 13
rupiſti ſepem ejus, & conculcaverunt illam
omnes tranſeuntes viam ? Et comedit eam 14
porcus ſylvæ, beſtiæque campi depaſtæ ſunt
eam ? Deus potentiſſime convertere, & in- 15
tuere de cœlo, ac vide, atque viſita vitem
hanc, Et propaginem quam plantavit dextera 16
tua, & filium hominis quem roborâſti tibi.
Ure igni ſarmenta ejus : ob increpatione vul- 17
tûs tui pereant. Sit manus tua dextera ſuper 18
virum & ſuper filium hominis quem roborâ-
ſti tibi ; Ut non retrocedamus à te. Imò vi- 19
vifica nos, & nomen tuum invocabimus. Do- 20
mine Deus fortiſſime reduc nos, & elucere
fac vultum tuum, & ſalvabimur.

PSAL. LXXXI.

Aſaphi. Quum David per eum ſe pararet ad 1
ſolennitates. Verſ. 35.

LAudate Deum corroboratorem noſtrum, 2
& clamitate Deo Jacob. Sumite tympa- 3
pana & fides jucundas cum citharis : Clan- 4
gite cornibus initio menſium, & in novilu-
niis, diebus feſtis. Nam lex eſt Iſraeli, & ju- 5
dicium Deo Jacob. Teſtimonium hoc ſuum 6
in Joſeph poſuit, quum egreſſus eſt è terra
Ægypti : linguam quam non noverat audi-
vit. Averti jugum ab humero ejus, & manus 7
illius vinculo ſolvi. In anguſtia vocavit me, 8
& eripui eum, atque operui illum velamen-
to meo glorioſo. Et tentavi eum aquis jur-
gii. * *Diapſal.* * Audi popule mi, & loquar: 9
et ô Iſrael atteſtabor contra te. Si me audias,

Versio VULG. LAT.

7 Posuisti nos in contradictionē vicinis
nostris: & inimici nostri subsannave-
8 runt nos. Deus virtutū, converte nos:
& ostende faciem tuam: & salvi eri-
9 mus. Vineam de Ægypto transtulisti:
10 ejecisti gentes, & plantâsti eam. Dux
itineris fuisti in conspectu ejus: plan-
tâsti radices ejus, & implevit terram.
11 Operuit montes umbra ejus: & ar-
12 busta ejus cedros Dei. Extendit pal-
mites suos usque ad mare: & usque ad
13 flumen propagines ejus. Ut quid de-
struxisti maceriam ejus: & vindemiant
eam omnes, qui prætergrediuntur vi-
14 am? Exterminavit eam aper de syl-
va: & singularis ferus depastus est e-
15 am. Deus virtutum, convertere: respi-
ce de cœlo, & vide, & visita vineam
16 istam. Et perfice eam, quam plantavit
dextera tua: & super filium hominis,
17 quem confirmâsti tibi. Incensa igni, et
suffossa: ab increpatione vultûs tui
18 peribunt. Fiat manus tua super virum
dexteræ tuæ; & super filium hominis,
19 quem confirmâsti tibi. Et non disce-
dimus à te, vivificabis nos: & nomen
20 tuum invocabimus. Domine Deus vir-
tutum, converte nos: & ostende faciem
tuam, & salvi erimus.

In finem,
1 Pro torcularibus, Psalmus ipsi Asaph.
LXXX.

2 EXultate Deo adjutori nostro: jubi-
3 late Deo Jacob. Sumite psalmum, &
date tympanum; psalterium jucundum
4 cum cithara. Buccinate in Neomenia
tubâ, in insigni die solennitatis vestræ:
5 Quia præceptum in Israel est: & judi-
6 cium Deo Jacob. Testimonium in Jo-
seph posuit illud, cùm exiret de terra
Ægypti: linguam, quam non noverat,
7 audivit. Divertit ab oneribus dorsum
ejus: manus ejus in cophino servie-
8 runt. In tribulatione invocâsti me, &
liberavi te: exaudivi te in abscondi-
to tempestatis: Probavi te apud aquā
9 Contradictionis. Audi, populus meus,
& contestabor te: Israel, si audieris
me,

Vers. GRÆCA LXX. Interp.

7 Ἔθου ἡμᾶς εἰς ἀντιλογίαν τοῖς γείτοσιν ἡμῶν, καὶ
8 οἱ ἐχθροὶ ἡμῶν ἐμυκτήρισαν ἡμᾶς. Κύριε ὁ Θεὸς τῶν
δυνάμεων ἐπίστρεψον ἡμᾶς, καὶ ἐπίφανον τὸ πρόσω-
9 πόν σου, καὶ σωθησόμεθα. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. Ἄμπελον
ἐξ Αἰγύπτου μετῆρας, ἐξέβαλες ἔθνη καὶ κατεφύ-
10 τευσας αὐτήν. Ὡδοποίησας ἔμπροσθεν αὐτῆς, καὶ
11 κατεφύτευσας τὰς ῥίζας αὐτῆς, καὶ ἐπλήσθη ἡ γῆ. Ἐ-
κάλυψεν ὄρη ἡ σκιὰ αὐτῆς, καὶ αἱ ἀναδενδράδες
12 αὐτῆς τὰς κέδρους τοῦ Θεοῦ. † Ἐξέτεινε τὰ κλήμα-
τα αὐτῆς ἕως θαλάσσης, † καὶ ἕως (α) ποταμοῦ τὰς πα-
13 ραφυάδας αὐτῆς. † Ἱνατί καθεῖλες τὸν φραγμὸν
αὐτῆς, † καὶ τρυγῶσιν αὐτὴν πάντες οἱ παραπορευό-
14 μενοι τὴν ὁδόν; † Ἐλυμήνατο αὐτὴν (β) σῦς ἐκ
δρυμοῦ, † καὶ μονιὸς ἄγριος κατενεμήσατο αὐτήν. †
15 Ὁ Θεὸς τῶν δυνάμεων ἐπίστρεψον δή, † (γ) ἐπίβλε-
ψον ἐξ οὐρανοῦ καὶ ἴδε, † καὶ ἐπίσκεψαι τὴν ἄμπελον
16 ταύτην. † Καὶ κατάρτισαι αὐτήν, ἣν ἐφύτευσεν ἡ
δεξιά σου, † καὶ ἐπὶ υἱὸν ἀνθρώπου ὃν ἐκραταίω-
17 σας σεαυτῷ. † Ἐμπεπυρισμένη πυρὶ καὶ ἀνεσκαμ-
μένη· † ἀπὸ ἐπιτιμήσεως τοῦ προσώπου σου ἀπολοῦν-
18 ται. † Γενηθήτω ἡ χείρ σου ἐπ' ἄνδρα δεξιᾶς
σου, † καὶ ἐπὶ υἱὸν ἀνθρώπου, ὃν ἐκραταίωσας σεαυ-
19 τῷ. † Καὶ οὐ μὴ ἀποστῶμεν ἀπὸ σοῦ, † ζωώσεις ἡμᾶς,
20 καὶ τὸ ὄνομά σου (δ) ἐπικαλεσόμεθα. † Κύριε ὁ Θεὸς
τῶν δυνάμεων ἐπίστρεψον ἡμᾶς, † καὶ ἐπίφανον τὸ
πρόσωπόν σου, καὶ σωθησόμεθα.

MS. A. (α) ποταμῶν (β) ὗς (γ) καὶ ἐπίβλεψον
(δ) ἐπικαλεσώμεθα.

1 Εἰς τὸ τέλος, Ὑπὲρ τῶν (α) ληνῶν, ψαλμὸς τῷ
Ἀσάφ. π'.

2 † Ἀγαλλιᾶσθε τῷ Θεῷ τῷ βοηθῷ ἡμῶν, † ἀλαλάξατε
3 τῷ Θεῷ Ἰακώβ. † Λάβετε ψαλμὸν καὶ δότε τύμ-
4 πανον, † ψαλτήριον τερπνὸν μετὰ κιθάρας. † Σαλ-
πίσατε ἐν νεομηνίᾳ σάλπιγγι, † ἐν εὐσήμῳ (β) ἡ-
5 μέρᾳ ἑορτῆς ὑμῶν. † Ὅτι πρόσταγμα τῷ Ἰσραήλ
6 ἐστι, † καὶ κρίμα τῷ Θεῷ Ἰακώβ. † Μαρτύριον ἐν τῷ
Ἰωσὴφ ἔθετο αὐτόν, † ἐν τῷ ἐξελθεῖν αὐτὸν ἐκ
7 γῆς Αἰγύπτου· † γλῶσσαν ἣν οὐκ ἔγνω, ἤκουσεν. † Ἀπ-
έστησεν ἀπὸ ἄρσεων τὸν νῶτον (ʺ) αὐτοῦ· † αἱ χεῖρες αὐτοῦ
8 ἐν τῷ κοφίνῳ ἐδούλευσαν. † Ἐν θλίψει ἐπεκαλέσω
με καὶ ἐρρυσάμην σε· † ἐπήκουσά σου ἐν ἀποκρύφῳ
καταιγίδος, † ἐδοκίμασά σε ἐπὶ ὕδατος (γ) ἀντιλο-
9 γίας. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Ἄκουσον λαός μου καὶ λα-
λήσω σοι, Ἰσραήλ, καὶ διαμαρτύρομαί σοι. ἐὰν
ἀκούσῃς μου,

MS. A. (α) ἀλλοιωθησομένων, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ.
(β) ἡμέρας ἑορτῆς ἡμῶν. (ʺ) αὐτοῦ· (γ) ἀντιλογίας. Ἄ-
κουσον λαός μου καὶ διαμαρτύρομαί σοι· † Ἰσραήλ, ἐὰν

Vers. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Transl. LAT.

7 Posuisti nos in (i) contradictionem 7
vicinis nostris: et inimici nostri sub-
sannaverunt nos. 8 Domine Deus vir- 8
tutum, converte nos: & ostende fa-
ciem tuam, & salvi erimus. DIA-
PSALMA. 9 Vineā de (k) Ægypto 9
transtulisti: ejecisti gentes, et plan-
tâsti eam. 10 Viā (l) fecisti in con- 10
spectu ejus: & plantâsti radices e-
jus: [d] & (m) repleta est terra. 11
Operuit montes umbra ejus, & (n) 11
arbusta ejus cedros Dei. 12 (o) Ex- 12
tendit palmites ejus usq; ad mare,
& usq; ad flumen propagines ejus.
13 Ut quid destruxisti maceriam e- 13
jus? & [e] vindemiant eam omnes,
qui prætergrediuntur viam? 14 (p)
Devastavit eam (q) aper de sylva: et 14
[f] singularis ferus depastus est eā.
15 Deus virtutū, (r) convertere ve- 15
rò: respice de cœlo, & vide, & [g]
visita vineam istam. 16 Et [h] perfi- 16
ce eam, quā plantavit dextera tua:
[i] & super filium hominis, quem
confirmâsti tibi. 17 (s) Incensa igni, 17
et effossa: ab increpatione vultûs tui
peribunt. 18 Fiat manus tua super 18
virum dexteræ tuæ, & super filiū
hominis, quem confirmâsti tibi. 19
Et non discedemus à te: vivificabis 19
nos, & nomen tuum invocabimus.
20 Domine Deus virtutum, conver- 20
te nos: & ostende faciem tuam [k],
& salvi erimus.

In finem, Pro torcularibus, Psalmus 1
(a) ipsi Asaph [a]. LXXX.

1 EXULTATE (b) Deo adjutori 2
nostro: jubilate Deo Jacob. 2
Sumite Psalmum, & date tympa- 3
num: (c) psalterium jucundum cum
cithara. 3 (d) Buccinate in Neome- 4
nia tubâ, in insigni die solen-
nitatis vestræ. 4 Quia præce- 5
ptum ipsi Israel est, et judicium Deo
Jacob. 5 Testimonium in Joseph po- 6
suit (e) ipsum, cùm exiret de terra
Ægypti; linguam, quam non nove-
rat, audivit. 6 Avertit [b] ab oneribus 7
dorsum ejus: manus ejus in cophino
servierunt. 7 In tribulatione [c] in- 8
vocâsti me, & liberavi te. Exau-
divi te in abscondito tempestatis:
probavi te super aquam Contra-
dictionis. DIAPSALMA. 8
Audi, populus meus, (f) & loquar 9
tibi: Israel, & testificabor tibi. Si
audieris me;

Versio ÆTHIOPICA.

ወረሰይከነ:ነገረ:ለጎርነ:: ወተሳለቁ:ላዕሌነ: 7
ጸላእትነ::=እግዚኦ:አምላክ:ኃያላን:ሚጠ 8
ነ:: አብርህ:ገጸከ: ላዕሌነ: ወንድኅን::=፥
ዐጸደ:ወይን:አፍለስከ: እምግብጽ:: ወሰደ 9
ድከ:አሕዛብ:ወተከልከ:ኪያሃ::=፥ ወጺሕ 10
ከ:ፍኖተ:ቅድሜሃ::ወተከልከ: ሥረዊሃ:ወመ
ልአት:ምድረ::=፥ ወከደነ:አድባረ:ጽላሎ 11
ታ::ወአዕጹቂሃ: ከመ:አርዘ:እግዚአብሔ
ር::=፥ ወሰፍሐ:አዕጹቂሃ:እስከ:ባሕር:: 12
ወእስከ:አፍላግ:ሠርፃ::=፥ ለምንት:ትነ 13
ሥት : ጸቆና:: ወይበልዐ: ኵሉ: ኃላፌ:
ፍኖት::=፥ ወአርኰሳ: ሐራዊያ: ሐቅል:: ወ 14
ተርእያ:እንስሳ:ገደም::=፥ አምላክ:ኃያላ 15
ን:ተመየጥ::ኃውጽ:እምሰማይ : ወርኢ::
ወተሠሀላ:ለዛ:ዐጸደ: ወይን::=፥ ወአስተ 16
ናሥእ:ወአጽንዓ:ዘተከለት:የማንከ:: በወል
ደ:እጓለ:እምሕያው:ዘአጽናዕከ:ለከ::=፥
ለውዓት: እሳት:ወምልሕት::ወእምተግሣ 17
ጸ:ገጽከ:ይትሐጐሉ::=፥ ለይኩን:እዴከ: 18
ላዕለ:ብእሲ: የማንከ:: በወልደ: እጓለ:እ
ምሕያው: ዘአጽናዕከ:ለከ::=፥ ወኢንርሐ 19
ቅ : እምኔከ:: አሕይወነ : ወንጼውዕ : ስመ
ከ::=፥ እግዚኦ:አምላክ: ኃያላን: ሚጠ 20
ነ::አብርህ:ገጸከ:ላዕሌነ:ወንድኅን::

ፍጻሜ:ዘበእንተ:ማኅበብት:ዘአሳፍ:መዝ
ሙር:ዘኃምስቱ:ሰንበት::

፹ ተፈሥሑ:በእግዚአብሔር:ዘረድአነ:: 1
ወየብቡ: ለአምላከ:ያዕቆብ::=፥ ንሥኡ: 2
መዝሙረ : ወሀቡ: ከበሮ:: መዝሙር: ሐዋ
ዝ: ምስለ: ለሰንቆ::=፥ ንፍኁ:ቀርነ: በዕለ 3
ተ:ሰርቅ:: በዕምርት: ዕለት : በዓልነ::=፥
እስመ:ሥርዓቱ:ለእስራኤል:ውእቱ:: ወፍ 4
ትሑ : ለአምላከ : ያዕቆብ::=፥ ወአቀመ: 5
ስምዓ:ለዮሴፍ:: እመ:የሐውር: ብሔረ: ግ
ብጽ:: ወሰምዐ : ልሳነ : ዘኢያአምር::=፥
ወሚጠ : ዘባና : እምሕራማቲሆሙ:: ወ 6
ተቀንያ : እደዊሁ : ውስተ : አክፋር::=፥ በ 7
ምንደቤከ : ጸዋዕከኒ: ወአድኅንኩከ:: ወተ
ሰጠውኩከ : በዐውሎ: ኃቡእ:: ወአመከር
ኩከ : በኀበ : ማየ : ቅስት::=፥ ስምዓኒ: 8
ሕዝብየ: ወእንግርከ:: እስራኤል፡ወአስም
ዕ:ለከ::እመሰ:ሰማዕከኒ:

INTERP. ÆTHIOP. [d] & implevit terram. [e] comedunt eam [f] depascit eam bestia deserti. [g] propitius esto isti vineæ tuæ. [h] eleva, & confirma eam, [i] & filium hominis, [k] super nos, &
PSAL. LXXX. [a] qui quintâ Sabbathi. [b] ab interdictis eorum dorsum [c] tua invocâsti

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

7 8 * جعلتنا مناظرة لجيراننا * واستهزي بنا اعداونا * ايها الرب اله الجنود اعدنا واضي وجهك
9 10 علينا فنخلص * نقلت الكرمة من مصر * اخرجت امما وغرستها * اصلحت الطريق امامها *
11 12 وغرست اصولها فملات الارض * ظلل الجبال ظلها * واغصانها على ارز الله * امتدت اغصانها
13 14 الى البحر * والى الانهار فروعها * فلما هدمت سياجها * قطفها كل العابرين في الطريق * وافسدها
15 خنزير الجبل من الغاب * ورعاها حمار الوحش * يا رب اله القوات تعطف علينا واطلع من
16 السماء * وانظر وتعاهد هذه الكرمة * واصلحها وثبتها * هذه التي غرستها يمينك * وابن
17 الانسان الذي ثبته لك * الذين احرقوها بالنار وهدموها * من انتهار وجهك يهلكون
18 19 * ولتكن يدك على الانسان * وعينك على ابن الانسان الذي ثبته لك * ولا نبتعد عنك *
20 وتحيينا وندعوا باسمك * ايها الرب اله القوات اردنا * وانر وجهك علينا فنخلص * الليلويا *
1 * المزمور الثمنون * لاساف على المعاصر * وعدده * له * استيكن *
2 3 * ابتهجوا بالله معيننا * هللوا لاله يعقوب * خذوا مزمارا واضربوا دفا * مزمارا حسنا مع
4 5 قيثارة * بوقوا في روس الشهور بالبوق في يوم عيدنا المشهور * لانها وصية لاسرائيل * وحكم
6 لاله يعقوب * جعل شهادته في يوسف * عند خروجه من ارض مصر * سمع لسانا لم يكن
7 8 يعرفه * ابعد الثقل عن ظهره * واطلق من وثاق العبودية يده * دعاني في الضر فنجيته *
9 وفي خفا ابتهاله اجبته * وعلى ماء الخصام جربته * اسمع يا شعبي فاقول لك * ويا اسرائيل لاشهد
لك * ان اطعتني *

Posuisti nos rixam vicinis nostris, & il- 7
luserunt nos inimici nostri. O Domine De- 8
us exercituum, reduc nos, & lucere fac
vultum tuum super nos, & salvabimur.
Transtulisti vitem de Ægypto, expulisti 9
populos & plantâsti eam. Parâsti viam 10
ante eam, & plantâsti radices ejus, imple-
vitque terram: Obumbravit montes um- 11
bra ejus: & rami ejus super cedros Dei.
Protenderunt se rami ejus usque ad mare, 12
et usque ad flumina germina ejus. Quare 13
ergò destruxisti sepem ejus, vindemiâ-
runt eam omnes prætereuntes per viam?
Et corrupit eam porcus montanus de syl- 14
va, & depavit eam asinus sylvester? O 15
Domine Deus virtutum, propitiare nobis,
& prospice de cœlo, & vide, & visita
hanc vitem, Et redintegra eam, & con- 16
firma illam: hanc, inquam, quam planta-
vit dextera tua, & filium hominis quem
corroborâsti tibi: Qui eam combusserunt 17
igne, & destruxerunt eam, ab increpati-
one vultûs tui peribunt. Et sit manus tua 18
super hominem, & oculus tuus super fi-
lium hominis quem confirmâsti tibi. Et 19
non recedemus à te, imò vivificabis nos, et
invocabimus nomen tuum. O Domine 20
Deus virtutum, reduc nos, & lucere fac
vultum tuum super nos, & salvabimur.
Alleluja.

PSAL. LXXX.

Asapho, de torcularibus. Et nu- 1
merus ver. 35.

EXultate in Deo adjutore nostro: ju- 2
bilate Deo Jacob: Sumite psalterium, 3
et pulsate tympanum, psalterium optimum
cum cythara. Clangite initiis mensium 4
buccinâ, in die solennitatis nostræ cele-
berrimo. Id enim præceptum est Israeli, 5
& judicium Deo Jacob. Posuit testimo- 6
nium suum in Joseph, cùm exiret de terra
Ægypti, audivit linguam quam ignora-
bat. Amovit onus à dorso ejus, & dimi- 7
sit de vinculo servitutis manum ejus. In- 8
vocavit me in necessitate, & liberavi e-
um: & in abscondito supplicationis ejus
exaudivi eum: & super aquam conten-
tionis tentavi eum. Audi, O popule meus, et 9
dicam tibi: et O Israel, equidem testor tibi.
Si obedieris mihi,

תהלים: פב פג

Dominus Ego .extraneo Deo te incurvabis nec : alienus Deus te in erit Non
10 11 לֹא־יִהְיֶה בְךָ אֵל זָר וְלֹא תִשְׁתַּחֲוֶה לְאֵל נֵכָר׃ אָנֹכִי יְהוָה
.illud implebo & ,tuū os dilata : Ægypti terra à te *faciens aſcendere* tuus Deus
אֱלֹהֶיךָ הַמַּעַלְךָ מֵאֶרֶץ מִצְרָיִם הַרְחֶב־פִּיךָ וַאֲמַלְאֵהוּ׃
eum dimiſi Et .mihi *acquievit non* Iſrael & : meæ voci meus populus paruit non Et
12 13 וְלֹא־שָׁמַע עַמִּי לְקוֹלִי וְיִשְׂרָאֵל לֹא־אָבָה לִי׃ וָאֲשַׁלְּחֵהוּ
audiens meus populus Utinam .ſuis conſiliis in *ibunt* :ſui cordis *pertinacia* in
14 בִּשְׁרִירוּת לִבָּם יֵלְכוּ בְּמוֹעֲצוֹתֵיהֶם׃ לוּ עַמִּי שֹׁמֵעַ
:humiliâſſem eorum inimicos *parum Quaſi* .*ambulâſſent* meis viis in Iſrael : mihi
15 לִי יִשְׂרָאֵל בִּדְרָכַי יְהַלֵּכוּ׃ כִּמְעַט אוֹיְבֵיהֶם אַכְנִיעַ
Dominum odio Habentes .meam manum vertiſſem eorum hoſtes *ſuper* &
16 וְעַל־צָרֵיהֶם אָשִׁיב יָדִי׃ מְשַׂנְאֵי יְהוָה
:frumenti adipe *ex* eum cibavit Et .ſeculum in eorum tempus erit & : *ei mentientur*
17 יְכַחֲשׁוּ־לוֹ וִיהִי עִתָּם לְעוֹלָם׃ וַיַּאֲכִילֵהוּ מֵחֵלֶב חִטָּה
.te *ſaturabo* melle petra de &
וּמִצּוּר דְּבַשׁ אַשְׂבִּיעֶךָ׃

PSAL. LXXXII. פב

.judicabit *divorum interiori* in : *fortis cœtu in ſtans* 'Deus .Aſaph ipſi *Cantus*
1 מִזְמוֹר לְאָסָף אֱלֹהִים נִצָּב בַּעֲדַת־אֵל בְּקֶרֶב אֱלֹהִים יִשְׁפֹּט׃
.Selah ? ſuſcipietis impiorum facies & : iniquitatem judicabitis Uſquequo
2 עַד־מָתַי תִּשְׁפְּטוּ־עָוֶל וּפְנֵי רְשָׁעִים תִּשְׂאוּ־סֶלָה׃
,*exhauſtum* Eripite .juſtificate *pauperem &* ,*afflictum* : pupillo & , *tenui* Judicate
3 שִׁפְטוּ־דַל וְיָתוֹם עָנִי וָרָשׁ הַצְדִּיקוּ׃ פַּלְּטוּ־דַל
4 *tenebroſitate* in,intellexerunt nec , Neſciverunt .eruite impiorum manu de :egenum &
5 וְאֶבְיוֹן מִיַּד רְשָׁעִים הַצִּילוּ׃ לֹא יָדְעוּ וְלֹא יָבִינוּ בַּחֲשֵׁכָה
: *vos* Dii , dixi Ego .terræ fundamenta omnia *nutabunt : ambulabunt*
6 יִתְהַלָּכוּ יִמּוֹטוּ כָּל־מוֹסְדֵי אָרֶץ׃ אֲנִי־אָמַרְתִּי אֱלֹהִים אַתֶּם
principum unus ſicut & : moriemini *homo* ſicut Verè .vos omnes excelſi filii &
7 וּבְנֵי עֶלְיוֹן כֻּלְּכֶם׃ אָכֵן כְּאָדָם תְּמוּתוּן וּכְאַחַד הַשָּׂרִים
hæreditabis tu quoniam : terram judica ,Deus Surge .cadetis
8 תִּפֹּלוּ׃ קוּמָה אֱלֹהִים שָׁפְטָה הָאָרֶץ כִּי־אַתָּה תִנְחַל
.gentes omnes *in*
בְּכָל־הַגּוֹיִם׃

PSAL. LXXXIII. פג

ne & , taceas ne : tibi *ſilentium* ne Deus .Aſaph ipſi Cantus .Canticum
1 2 שִׁיר מִזְמוֹר לְאָסָף׃ אֱלֹהִים אַל־דֳּמִי־לָךְ אַל־תֶּחֱרַשׁ וְאַל־
extulerunt te habētes odio & :*tumultuabuntur* tui inimici ecce Quoniam .Deus quieſcas
3 תִּשְׁקֹט אֵל׃ כִּי־הִנֵּה אוֹיְבֶיךָ יֶהֱמָיוּן וּמְשַׂנְאֶיךָ נָשְׂאוּ
.tuos abſconditos ſuper *cōſiliabuntur* &,*ſecretum inibunt* callidè tuū populū Super .caput
4 רֹאשׁ׃ עַל־עַמְּךָ יַעֲרִימוּ סוֹד וְיִתְיָעֲצוּ עַל־צְפוּנֶיךָ׃
nomen memoretur non & : gente de eos ſuccidamus & , Venite , Dixerunt
5 אָמְרוּ לְכוּ וְנַכְחִידֵם מִגּוֹי וְלֹא־יִזָּכֵר שֵׁם־
.*excident* fœdus te *ſuper* : pariter corde ſunt conſiliati Quoniam .ultrà Iſrael
6 יִשְׂרָאֵל עוֹד׃ כִּי נוֹעֲצוּ לֵב יַחְדָּו עָלֶיךָ בְּרִית יִכְרֹתוּ׃
.Hagharim & ,Moab , Iſmahelim & ,Edom Tabernacula
7 אָהֳלֵי אֱדוֹם וְיִשְׁמְעֵאלִים מוֹאָב וְהַגְרִים׃

תרגום TARGUM.

10 לָא יְהֵי בֵינֵיכוֹן פָּלְחֵי טַעֲוָתָא נוּכְרָאָה וְלָא
11 תִסְגְּדוּן לְטַעֲוַת חִילוֹנֵי׃ אֲנָא יְיָ אֱלָהָךְ דְּאַסֵּקִית
יָתְכוֹן מֵאַרְעָא דְמִצְרַיִם אַפְּתֵי פוּמָךְ בְּפִתְגָמֵי
12 אוֹרַיְתָא וַאֲמַלֵּי יָתֵהּ מִכָּל טָבְתָא׃ וְלָא קַבִּילוּ
13 עַמִּי לְקָלִי וְיִשְׂרָאֵל לָא צְבוּ לְמֵימְרִי׃ וְתָרֵכְתֵּיהּ
14 בְּהִרְהוּרֵי לִבְּהוֹן אֲזַלוּ בְּמַלְכַּת רַשִׁיעֲהוֹן׃ הַלְוַאי
15 עַמִּי שְׁמַע לִי יִשְׂרָאֵל בְּאוֹרְחָתַי יְהַלְּכוּן׃ כִּזְעֵר
בַּעֲלֵי דְבָבֵיהוֹן אַמְאֵךְ וְעַל בַּעֲלֵי דְבָבֵהוֹן אֲתִיב
16 מְחַת גְּבוּרְתִי׃ סַנְאֵי יְיָ יְכַדְּבוּן לֵיהּ וִיהֵי תוּקְפְּהוֹן
17 לַעֲלָם׃ וְיוֹכְלִנֵּיהּ מִן טוּב לְחֵם חִטִּין וּמִן
טִינָרָא דוּבְשָׁא אַשְׂבְּעִנָּךְ׃ פב
1 תּוּשְׁבַּחְתָּא עַל יְדָא דְאָסָף אֱלֹהִים שְׁכִנְתֵּיהּ
שַׁרְיָא בִּכְנִישַׁת צַדִּיקִין דְּתַקִּיפִין בְּאוֹרַיְתָא
2 בִּמְצַע דִּינִין דִּקְשׁוֹט יְדַן׃ עַד אֵימָתַי רַשִׁיעַיָּא
3 תְּדוּנוּן שְׁקַר וְאַפֵּי רַשִׁיעַיָּא תִּסְּבוּן לְעָלְמִין׃ דּוּנוּ
4 מִסְכֵּנָא וְיַתְמָא עַנְיָא וּמִסְכֵּנָא אַצְדִּיקוּ׃ שֵׁיזִיבוּ
מִסְכֵּן וַחֲשׁוֹכָא מִן יְדֵיהוֹן דְּרַשִׁיעַיָּא פְּצוֹ יָתְהוֹן׃
5 לָא חַכִּימוּ לְאוֹטָבָא וְלָא אִתְבַּיְנַן בְּאוֹרַיְתָא
בַּחֲשׁוֹכָא מְהַלְּכִין מְטוּל הֵיכְנָא מִתְמוֹטְטִין
6 רִגְלֵיהוֹן דִּי בְּסִיסֵי אַרְעָא׃ אֲנָא אֲמָרִית הֵי
כְּמַלְאֲכַיָּא אַתּוּן חֲשִׁיבִין וְהֵיךְ אַנְגְּלֵי מְרוֹמָא
7 כּוּלְכוֹן׃ בְּרַם בִּקְוּשְׁטָא הֵיךְ בְּנֵי נָשָׁא תְּמוּתוּן
8 וְהֵיךְ חַד מִן רַבְרְבָנַיָּא תִּפְּלוּן׃ קוּם יְיָ דּוּן יָת כָּל
יָתְבֵי אַרְעָא אֲרוּם אַתְּ תַּחְסִין בְּכָל עַמְמַיָּא׃
פג
1 שִׁיר וְשִׁבְחָא עַל יְדָא דְאָסָף׃ אֱלֹהִים לָא תִשְׁתּוֹק
2 לָךְ לָא תִתְרַשַּׁל וְלָא תִשְׁרוֹךְ אֱלָהָא׃ אֲרוּם
3 הָא בַּעֲלֵי דְבָבָךְ מִתְרַגְשִׁין וְסָנְאָךְ זְקִיפוּ רֵישָׁא׃
4 עַל עַמָּךְ נְכִילוּ רָזָא וּמִתְמַלְּכִין עַל דְּמִתְטַשְׁיָן
5 בְּאוֹצְרָךְ׃ אֲמַרִין אֱתוּ וְנִכְסְנוּן מִלְּמֶהֱוֵי עַם וְלָא
6 אִדְּכַר שְׁמָא דְיִשְׂרָאֵל תּוּב׃ אֲרוּם אִתְמַלְּכוּן
בְּכָל לִבָּא עֲלָךְ כַּחֲדָא וְאַמְטוּלְתָךְ קְיָמָא גְזָרִין׃
7 מַשְׁכְּנֵי אֱדוֹמָאֵי וַעֲרָבָאֵי מוֹאָבָאֵי וְהוּנְגְרָאֵי׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Non erunt *inter vos* ſervientes idolis alie- 10
nigenarum, nec adorabitis idola profana.
Ego ſum Dn̄s Deus *tuus* qui eduxi vos de 11
terra Ægypti : aperi os tuum ad verba Le-
gis,et implebo illud omni bono. Sed non re- 12
cepit popul⁹ meus vocem meā,et Iſrael non
acquievit verbo meo. Proinde expuli eos in 13
cogitationibus cordis eorum: ambulaverunt
in conſiliis impietatum ſuarum. Utinam po- 14
pulus meus audîſſet me; Iſrael in viis meis
ambulâſſet. Brevi inimicos eorum humiliâſ- 15
ſem,et adverſus hoſtes illorum convertiſſem
percuſſionem potentiæ meæ. Odientes Dn̄m 16
mentientur ei,et erit furor eorum in æternū.
At cibâſſet illos de optimo pane tritici, & 17
de rupe melle ſaturâſſem te.

Canticum per manum Aſaph, 1

PSAL. LXXXII.

DEus cujus majeſtas commoratur in con-
gregatione juſtorum qui potentes ſunt in
Lege; in medio judicum *veritatis* judicat.
Uſquequo impii judicabitis falſitatem et fa- 2
cies impiorum ſuſcipietis in æternum. Ju- 3
dicate miſerabili et pupillo, egeno et miſe-
ro juſtitiam facite. Salvate miſerum et ege- 4
num, de manibus impiorum liberate eos.
Neſcierunt bonum operari et non intelle- 5
xerunt legem, in tenebris ambulant, pro-
pterea moventur *pedes baſium* terræ. Ego 6
dixi, Veluti angeli vos eſtis reputati, et tan-
quam angeli excelſi vos omnes. Attamen in 7
veritate ſicut homines moriemini, et tan-
quam unus de principibus cadetis. Surge 8
Dn̄e judica *omnes* habitatores terræ, quoni-
am tu hæreditabis omnes populos.

Canticum *et laus* per manum Aſaph. 1

PSAL, LXXXIII.

DEus ne taceas tibi; et ne ceſſes, nève 2
quieſcas Deus. Quoniam ecce inimici tui 3
fremunt, et odientes te extulerunt caput.
Super populum tuum ſecretas machinati 4
ſunt fraudes, & conſulunt adverſus abſcon-
dita in theſauris tuis. Dicentes, Venite & 5
trucidemus eos ne ſint populus, et non com-
memoretur nomen Iſrael amplius. Quoni- 6
am conſilium ineunt in toto corde adver-
ſum te pariter, & propter te pactum feri-
unt. Tabernacula Idumæorum et Arabum, 7
Moabitæ et Hungari;

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

10 11 *ܠܐ ܢܗܘܐ ܠܟ ܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ. ܘܠܐ ܬܣܓܘܕ ܠܐܠܗܐ ܚܪܢܐ:*ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ. ܕܐܣܩܬܟ
12 ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ: ܦܬܚ ܦܘܡܟ ܘܐܡܠܝܘܗܝ. *ܘܥܡܝ ܠܐ ܫܡܥ ܒܩܠܝ: ܘܐܝܣܪܐܝܠ
13 ܠܐ ܐܬܦܝܣ ܡܢܝ. *ܐܠܐ ܗܠܟܘ ܒܪܓܝܓܬܐ ܕܠܒܗܘܢ: ܘܒܡܠܟܐ ܕܢܦܫܗܘܢ. *ܐܠܘ
14 15 ܥܡܝ ܫܡܥ ܗܘܐ ܠܝ. ܘܐܝܣܪܐܝܠ ܒܐܘܪܚܬܝ ܗܠܟ:*ܒܩܠܝܠ ܡܟܝܟ ܗܘܝܬ ܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ.
16 ܘܥܠ ܣܢܐܝܗܘܢ ܡܦܢܐ ܗܘܝܬ ܐܝܕܝ: *ܣܢܐܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܟܕܒܘ ܒܗ. ܘܗܘܐ ܙܘܥܗܘܢ
17 ܠܥܠܡ: *ܘܐܘܟܠܗ ܡܢ ܬܪܒܐ ܕܚܛܬܐ. ܘܡܢ ܫܘܥܐ ܕܒܫܐ ܐܣܒܥܗ.
ܡܙܡܘܪܐ ܕܦܒ
1 *ܠܐܣܦ. ܡܟܣܢܘܬܐ ܕܥܡܐ ܝܗܘܕܝܐ. ܦܣܘܩܐ ܝܘ. ܐܠܗܐ ܩܡ ܒܟܢܫܐ ܕܡܠܐܟܐ. ܘܒܝܢܬ
2 ܡܠܐܟܐ ܢܕܘܢ:*ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܕܐܢܝܢ ܐܢܬܘܢ ܥܘܠܐ. ܘܐܦܐ ܕܪܫܝܥܐ ܢܣܒܝܢ ܐܢܬܘܢ:*ܕܘܢܘ
3 4 ܠܝܬܡܐ ܘܠܡܣܟܢܐ. ܘܠܡܣܟܢܐ ܘܠܡܟܝܟܐ ܙܕܩܘ: * ܦܪܘ ܠܡܣܟܢܐ ܘܠܡܣܟܢܐ ܡܢ ܐܝܕܐ
5 ܕܪܫܝܥܐ. * ܕܠܐ ܝܕܥܘ ܘܠܐ ܐܣܬܟܠܘ: ܒܚܫܘܟܐ ܡܗܠܟܝܢ ܗܘܘ. ܘܙܥܘ ܟܠܗܘܢ ܫܬܐܣܝܗ
6 7 ܕܐܪܥܐ: * ܐܢܐ ܐܡܪܬ ܕܐܠܗܐ ܐܢܬܘܢ. ܘܒܢܝ ܡܪܝܡܐ ܟܠܟܘܢ: * ܡܟܝܠ ܐܝܟ ܒܢܝܢܫܐ
8 ܬܡܘܬܘܢ. ܘܐܝܟ ܚܕ ܡܢ ܪܘܪܒܢܐ ܬܦܠܘܢ:*ܩܘܡ ܐܠܗܐ ܘܕܘܢ ܠܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܬܐܪܬ
1 ܒܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. * ܫܘܒܚܐ ܘܫܘܪܝܐ ܕܡܣܩܬܐ * *ܡܙܡܘܪܐ ܕܦܓ * *ܠܐܣܦ.
ܨܠܘܬܐ ܠܐܠܗܐ ܚܠܦ ܥܡܐ ܕܢܣܒ ܐܘܠܨܢܐ. ܘܢܒܝܘܬܐ ܥܠ ܒܘܕܪܐ ܕܒܥܠܕܒܒܘܗܝ ܕܡܪܝܐ.
2 3 ܦܣܘܩܐ ܠܕ. *ܐܠܗܐ ܡܢܘ ܕܕܡܐ ܠܟ. ܠܐ ܬܫܬܘܩ ܘܠܐ ܬܫܠܐ ܐܠܗܐ:*ܡܛܠ ܕܗܐ ܒܥܠܕܒܒܝܟ
4 ܡܬܬܙܝܥܝܢ. ܘܣܢܐܝܟ ܐܪܝܡܘ ܪܫܐ * ܥܠ ܥܡܟ: ܒܢܟܠܗܘܢ ܐܪܡܝܘ ܐܪܙܐ. ܘܐܬܡܠܟܘ ܥܠ
5 6 ܩܕܝܫܝܟ *ܘܐܡܪܘ: ܬܘ ܢܘܒܕ ܐܢܘܢ ܡܢ ܥܡܐ. ܘܠܐ ܢܬܕܟܪ ܬܘܒ ܫܡܗ ܕܐܝܣܪܐܝܠ: * ܡܛܠ
7 ܕܐܬܪܥܝܘ ܒܠܒܗܘܢ ܐܟܚܕܐ. ܘܥܠܝܟ ܩܝܡܐ ܩܝܡܘ: *ܡܫܟܢܐ ܕܐܕܘܡ ܘܕܥܪܒܝܐ
ܘܕܡܘܐܒ ܘܕܓܕܪܝܐ:

Non ſit tibi Deus peregrinus, & ne adores 10
deum alienum; Ego ſum Dn̄s Deus tuus qui 11
eduxi te de terra Ægypti : aperi os tuum &
implebo illud. At populus meus non audi- 12
vit vocem meam, & Iſrael non accepit ſuaſi-
onem à me; Sed ambulaverunt pro libidine 13
cordis ſui, & juxta conſilium animæ ſuæ. Si 14
populus meus audiret me, & Iſrael per vias
meas ambularet, Brevi perderem hoſtes eo- 15
rum, & in oſores eorum converterem manū
meam. Oſores Dn̄i mentiti ſunt in ipſum, & 16
facta eſt nutatio illorum in ſeculum. Cibavit 17
eū adipe fruméti, & de petra melle ſaturavit
eum.

PSAL. LXXXII.

Aſaphi. Invectio in Judæos impios, Verſ. 16. 1

DEus ſtetit inter cœtum Angelorum, & in
medio Angelorum judicabit. Quouſque 2
judicabitis iniquitatem, et facies impiorum
ſumetis? Judicate pupillis et egenis, et pau- 3
peres humileſque juſtificate : Eripite paupe- 4
res et inopes de manu impiorum, Qui non 5
nôrunt neque intellexerunt; nam in tenebris
ambulabant: et vacillârunt omnia fundaméta
terræ. Ego dixerā deos eſſe vos, et filios Ex- 6
celſi omnes; Nunc autem ſicut homines mo- 7
riemini, et ſicut unus è magnatibus cadetis.
Surge Deus, et judica terram : nam tu hæredi- 8
tate poſſidebis cunctas gentes.

Laus, & initium gradûs.

PSAL. LXXXIII.

Aſaphi. Precatio ad Deum pro populo qui 1
pertulerat afflictionem. Et prophetia de
diſſipatione hoſtium Domini. Verſ. 34.

DEus, quis eſt qui ſimilis ſit tibi? Ne tace- 2
as, neque ſileas Deus : Quoniā ecce ini- 3
mici tui concitantur, et oſores tui extulerunt
caput Super populum tuum : verſutiâ ſuâ 4
aſtruxerunt ſecretum, et conſultârunt adver-
ſus ſanctos tuos, Ac dixerunt; Venite, per- 5
damus eos de populo, nec fiat amplius men-
tio nominis Iſraelis. Quoniam meditati ſunt 6
corde ſuo ſimul, et contra te inierunt fœ-
dus Tentorium Adum, et Arabum, et Moa- 7
bi, atque Godaræorum :

Versio VULG. LAT.

10 Non erit in te deus recens, neque ad-
11 orabis deũ alienum. Ego enim ſum
Dominus Deus tuus, qui eduxi te de
terra Ægypti: dilata os tuum, & im-
12 plebo illud. Et non audivit populus
meus vocem meam: & Iſrael non in-
13 tendit mihi. Et dimiſi eos ſecundùm
deſideria cordis eorum, ibunt in ad-
14 inventionibus ſuis. Si popul⁹ meus au-
diſſet me: Iſrael ſi in viis meis am-
15 bulâſſet: Pro nihilo forſitan inimicos
eorum humiliâſſem: & ſuper tribu-
16 lantes eos miſiſſem manum meam. In-
imici Domini mentiti ſunt ei: & e-
17 rit tempus eorum in ſecula. Et ciba-
vit eos ex adipe frumenti: & de petra,
melle ſaturavit eos.

1 Pſalmus Aſaph. LXXXI.

DEus ſtetit in ſynagoga deorum: in
2 medio autem deos dijudicat. Uſque-
quò judicatis iniquitatem: & facies
3 peccatorum ſumitis? Judicate ege-
no, & pupillo: humilem, & pauperem
4 juſtificate. Eripite pauperẽ: & egenũ
5 de manu peccatoris liberate. Neſcie-
runt, neque intellexerunt, in tenebris
ambulant: movebuntur omnia funda-
6 menta terræ. Ego dixi; Dii eſtis, et fi-
7 lii Excelſi omnes. Vos autem ſicut ho-
mines moriemini: et ſicut un⁹ de prin-
8 cipibus cadetis. Surge, Deus, judica ter-
ram: quoniam tu hæreditabis in omni-
bus gentibus.

1 Canticum Pſalmi Aſaph. LXXXII.

2 DEus, quis ſimilis erit tibi? ne ta-
3 ceas, neque compeſcaris, Deus: Quo-
niam ecce inimici tui ſonuerunt: et
4 qui oderunt te, extulerunt caput. Su-
per populum tuum malignaverunt cõ-
ſilium; et cogitaverunt adverſùs ſan-
5 ctos tuos. Dixerunt; Venite, et diſper-
damus eos de gente, et non memore-
6 tur nomen Iſrael ultrá. Quoniam
cogitaverunt unanimiter, ſimul adver-
7 ſùm te teſtamentum diſpoſuerunt, Ta-
bernacula Idumæorum et Iſmahelitæ:
Moab, et Agareni,

Verſ. GRÆCA. LXX. Interp.

10 † Οὐκ ἔσται ἐν σοὶ θεὸς πρόσφατος, † οὐδὲ προσ-
11 κυνήσεις θεῷ ἀλλοτρίῳ. † Ἐγὼ γάρ εἰμι κύριος
ὁ θεός σου, † ὁ ἀναγαγών σε ἐκ γῆς Αἰγύπτου, †
12 πλάτυνον τὸ στόμα σου καὶ πληρώσω αὐτό. † Καὶ οὐκ
ἤκουσεν ὁ λαός μου τῆς φωνῆς μου, † καὶ Ἰσραὴλ οὐ προσ-
13 έσχε μοι. † Καὶ ἐξαπέστειλα αὐτοὺς κατὰ τὰ ἐπιτη-
δεύματα τῶν καρδιῶν αὐτῶν; † πορεύσονται ἐν
14 τοῖς ἐπιτηδεύμασιν αὐτῶν. † Εἰ ὁ λαός μου ἤκουσέ
15 μου, † Ἰσραὴλ ταῖς ὁδοῖς μου εἰ ἐπορεύθη, † Ἐν τῷ
μηδενὶ ἂν τοὺς ἐχθροὺς αὐτῶν ἐταπείνωσα, † καὶ ἐπὶ
τοὺς θλίβοντας αὐτοὺς ἐπέβαλον ἂν τὴν χεῖρά μου.
16 † Οἱ ἐχθροὶ κυρίου ἐψεύσαντο αὐτῷ, † καὶ ἔσται ὁ και-
17 ρὸς αὐτῶν εἰς τὸν αἰῶνα. † Καὶ ἐψώμισεν αὐτοὺς
ἐκ στέατος πυροῦ, † καὶ ἐκ πέτρας μέλι ἐχόρτασεν
αὐτούς.

1 Ψαλμὸς τῷ Ἀσάφ. πά.

† Ὁ Θεὸς ἔστη ἐν συναγωγῇ θεῶν, † ἐν μέσῳ δὲ
2 θεοὺς διακρινεῖ. † Ἕως πότε κρίνετε ἀδικίαν, †
καὶ πρόσωπα ἁμαρτωλῶν λαμβάνετε; ΔΙΑΨΑΛ-
3 ΜΑ. † (α) Κρίνατε ὀρφανὸν καὶ πτωχόν, † ταπεινὸν
4 καὶ πένητα δικαιώσατε. † Ἐξέλεσθε πένητα, καὶ πτω-
5 χὸν † ἐκ χειρὸς ἁμαρτωλοῦ (β) ῥύσασθε. † Οὐκ ἔ-
γνωσαν οὐδὲ συνῆκαν, ἐν σκότει διαπορεύονται, † σα-
6 λευθήσονται πάντα τὰ θεμέλια τῆς γῆς. † Ἐγὼ εἶ-
7 πα, Θεοί ἐστε, καὶ υἱοὶ ὑψίστου πάντες. † Ὑμεῖς δὲ ὡς ἄν-
θρωποι ἀποθνήσκετε, † καὶ ὡς εἷς τῶν ἀρχόντων πί-
8 πτετε. † Ἀνάστα ὁ θεός, κρῖνον τὴν γῆν, † ὅτι σὺ κα-
τακληρονομήσεις (γ) ἐν πᾶσι τοῖς ἔθνεσιν.

MS. A. (α) Κρίνατε ὀρφανῷ καὶ πτωχῷ, (β) ῥύσασθαι αὐτούς. Οὐκ (γ) αὐτοὺς ἐν πᾶσιν

1 Ὠδὴ ψαλμοῦ τῷ Ἀσάφ. πβ'.

2 † Ὁ Θεὸς τίς ὁμοιωθήσεταί σοι; † μὴ σιγήσῃς,
3 μηδὲ καταπραΰνῃς ὁ θεός. † Ὅτι ἰδοὺ οἱ ἐχθροί
σου ἤχησαν· † καὶ οἱ μισοῦντές σε ἦραν κεφαλήν. †
4 Ἐπὶ τὸν λαόν (α) σου κατεπανουργεύσαντο γνώμην,
5 † καὶ ἐβουλεύσαντο κατὰ τῶν ἁγίων σου. † Εἶπαν, Δεῦ-
τε καὶ (β) ἐξολοθρεύσωμεν αὐτοὺς ἐξ ἔθνους, † καὶ οὐ
6 μὴ μνησθῇ τὸ ὄνομα Ἰσραὴλ ἔτι. † Ὅτι ἐβουλεύ-
σαντο ἐν ὁμονοίᾳ ἐπὶ τὸ αὐτό, † κατὰ σοῦ διαθήκην δι-
7 έθεντο. † Τὰ σκηνώματα τῶν Ἰδουμαίων † καὶ οἱ
Ἰσμαηλῖται, † Μωὰβ καὶ οἱ (γ) Ἀγαρηνοί,

MS. A. (α) Σου κύριε κατεπανουργεύσαντο (β) ἐξολεθρεύσωμεν (γ) Ἀγγαρηνοί,

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

Non erit in te [d] *deus recens: neq; adorabis deum alienum.* 9 *Ego enim ſum Dominus Deus tuus, qui eduxi te de terra Ægypti: dilata os tuum, & adimplebo* [e] *illud.* 10 *Et non audivit populus meus vocem meã: & Iſrael* [f] *non attendit mihi.* 11 *Et dimiſi eos ſecundùm*(g)[g] *affectiones cordium eorũ: ibunt in affectionibus ſuis.* 12 *Si popul⁹ meus audîſſet me, Iſrael ſi in viis meis ambulâſſet;* 13 [h] *In*(h) *nihilo utiq; inimicos eorum humiliâſſem: & ſuper tribulantes eos miſiſſem manum* [i] *meam.* 14 (i) *Inimici Domini mentiti ſunt ei: & erit tempus eorum in æternum.* 15 *Et cibavit eos ex adipe frumenti: et de petra, melle ſaturavit eos.*

MS. Æthiop. Po. Gloria Patri, & Filio, & Spiritui Sancto: Eſt modò, ſemper erit, & in ſecula ſeculorum, Amen.

Pſalmus ipſi Aſaph. LXXXI.

1 D*EUS ſtetit in ſynagoga deorũ: in*(a) *medio autem deos diſcernet.* 2 *Uſquequò judicatis iniquitatem; & facies peccatorum ſumitis?* DIAPSALMA. 3 *Judicate* (b)*pupillum, & egenum: humilem & pauperem juſtificate.* 4 *Eripite* [a] *pauperem: & egenum de manu peccatoris liberate.* 5 *Neſcierunt, neque intellexerunt: in tenebris ambulant: movebuntur omnia* [b] *fundamenta terræ.* 6 *Ego dixi, Dii eſtis, & filii Excelſi omnes.* 7 (c) *Vos autem ſicut homines, morimini; & ſicut unus de principibus, caditis.* 8 *Surge, Deus, judica terram: quoniam tu*(d) *hæreditabis in omnibus gentibus.*

Canticum Pſalmi ipſi Aſaph. LXXXII.

1 D*EUS, quis ſimilis erit tibi? ne taceas, neq;* (a) *compeſcaris, Deus.* 2 *Quoniam ecce inimici tui*(b)*ſonuerunt: & qui oderunt te, extulerunt caput.* 3 *Super populum tuum*(c)*aſtutè cogitaverunt conſilium, & cogitaverunt adverſùs ſanctos tuos.* 4 *Dixerunt; Venite, & diſperdamus eos de gente: et non memoretur nomen Iſrael ultrá.* 5 *Quoniam cogitaverunt unanimiter* [a] *ſimul: adverſùs te teſtamentum diſpoſuerunt. Tabernacula Idumæorũ, & Iſmaelitæ, 6 Moab, & Agareni,*

Verſio ÆTHIOPICA.

ሊይከውንከ፡ አምላክ ፡ ግብት፡፡
ወኢትስግድ ፡ ለአምላክ ፡ ነኪር፡፡=፦
እስመ፡ አነ ፡ ውእቱ፡ እግዚአብሔር፡ አምላ 9
ክከ፡፡ ዘአውፃእኩከ ፡ እምድረ ፡ ግብጽ፡፡
አርኅብ፡ አፉከ፡ ወእመልዖ፡ለከ፡፡=፦ ወኢ 10
ሰምዑኒ፡ ሕዝብየ፡ቃልየ፡፡ ወእስራኤልኒ፡፡
ኢያጽምኡኒ፡፡=፦ ወፈነውኩ ፡ ሎሙ፡በከ 11
መ፡ምግባሮሙ፡፡ወሖሩ፡በሕሊና፡ልቦሙ፡፡=፦
ሶበሰ፡ሰምዑኒ፡ ሕዝብየ፡ ቃልየ፡፡ ወእስራኤ 12
ልኒ፡ሶበ፡ሖሩ፡ በፍኖትየ፡፡=፦ እምአኅሰር 13
ክዎሙ፡በኵሉ፡ለጸላእቶሙ፡፡ ወእመወደይ
ኩ ፡ እዴከ ፡ ዲበ፡እለ ፡ ይሣቅይዎሙ፡፡=፦
ጸላእቱሰ፡ለእግዚአብሔር፡ሐሰውዎ፡ ወይከ 14
ውን፡ጊዜሆሙ፡እስከ፡ለዓለም፡፡=፦ ወሴሰ 15
ዮሙ፡ሥብሐ፡ስርናይ፡፡ ወአጽገቦሙ፡መዓረ፡
እምኰኵሕ፡፡
ስብሐት፡ለአብ፡ ወወልድ፡ ወመንፈስ፡ ቅዱስ፡
ይእዜኒ ፡ ወዘልፈኒ ፡ ወለዓለመ ፡ ዓለም፡
አሜን፡፡=፦

መዝሙር፡ዘአሳፍ፡፡

፹፩ እግዚአብሔር፡ቆመ፡ውስተ፡ማኅበረ፡ 1
አማልክት፡፡ ወኳንን ፡ በማእከለ ፡ አማልክ
ት፡፡=፦ እስከ፡ማእዜኑ፡ትኴንኑ፡ዐመፃ፡፡ወ 2
ታደልው፡ለገጸ፡ኃጥአን፡፡=፦ ፍትሑ፡ለነደ 3
ይ፡ ወለእጓለ፡ማውታ፡፡ ወአጽድቁ፡ግፉዐ፡
ወምስኪነ፡፡=፦ ወአድኅኑ፡ባሕታዌ፡ወጽኑ 4
ሰ፡፡ ወእንግፍዎሙ፡ እምእደ፡ኃጥአን፡፡=፦
ኢያእመሩ፡ወኢለበው፡ውስተ፡ጽልመት፡የሐ 5
ውሩ፡፡ ወያድለቀልቅ፡ኵሉ፡መሰረታተ፡አድ
ባር፡፡=፦ አነሰ፡እቤ፡አማልክት፡አንትሙ፡፡ 6
ወደቂቀ፡ልዑል፡ኵልክሙ፡፡=፦ አንትሙሰ፡ 7
ከመ፡ሰብእ፡ትመውቱ፡፡ ወከመ፡አሐዱ፡እመ
ላእክት፡ትወድቁ፡፡=፦ ተንሥእ፡ እግዚኦ፡ 8
ወኰንና፡ለምድር፡፡ እስመ፡አንተ፡ትወርስ፡
በኵሉ፡አሕዛብ፡፡

ማኅሌት፡መዝሙር፡ዘአሳፍ፡፡

፹፪ እግዚኦ፡መኑ፡ከማከ፡፡ ኢታርምም፡ 1
ወኢትጸመም፡እግዚኦ፡፡=፦ እስመ፡ነሁ፡ ወ 3
ውዑ፡ፀርከ፡፡ ወአንሥኡ፡ርእሶሙ፡ጸላእት
ከ፡፡=፦ ወተጓሕለውዎሙ፡ምክረ፡ለሕዝብ 3
ከ፡፡ ወተማከሩ፡ዲበ፡ቅዱሳኒከ፡፡=፦ ወይ 4
ቤሉ፡ንዑ፡ንሰርዎሙ፡ እምአሕዛብ፡፡ ወኢ
ይዝከሩ፡እንከ፡ ስመ ፡ እስራኤል፡፡=፦ እስ 5
መ፡ ተማከሩ፡ኅቡረ፡ ወዐለው፡፡ሳዕሌከ፡ተ
ሰካተዩ፡ ወተካየዱ፡፡ ተዐይኒሆሙ፡ለኢደም
ያስ፡ ወለእስማኤላውያን፡፡=፦ ሞአብ፡ ወአ 6
ጋሬዊያን፡፡

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

10 * فلا يكون فيك اله جديد * ولا تسجد لاله غريب * اني انا هو الرب الهك * الذي اخرجتك
11
12 من ارض مصر * اوسع فاك فاملاه * فلم يسمع شعبي صوتي * واسرائيل لم يصغ لي * فتركتهم
13
14 ومراد قلوبهم يذهبون في اعمالهم * فلو ان شعبي اطاعني واسرائيل سلك في سبلي * اذن
15
16 في لا شي كنت اذل اعداءهم * واجعل يدي على محزنيهم * الان ان اعداء الرب كذبوه في ان
17 يكون زمانهم الي الابد * وقد اطعمهم من الحنطة شحما * واشبعهم من الصخر عسلا * اللليلويا *

1 * المزمور الحادي والثمنون * لاساف * وهو * كو استيخن *

2 قام الله في مجمع الالهة * وفي الوسط يدين الالهة * الي متي تحكمون الظلم * وبوجه الخطاة
3 تاخذون * احكموا لليتيم والمسكين * زكوا الذليل والفقير * استنقذوا مسكينا وضعيفا ومن يد
4
5 الخاطي خلصوهم * لم يعلموا ولم يفهموا انهم في الظلمة يسلكون * تتزعزع جميع اساسات
6 الارض * انا قلت انكم الهة وبنو العلي جميعكم * فانكم مثل البشر تموتون * ومثل احد
7
8 الروساء تسقطون * قم يا الله ودن الارض فانك انت وارث جميع الامم * اللليلويا *

1 * المزمور الثاني والثمنون * تسبحة لاساف * وعدده * لد * استيخن *

2 * اللهم من يشبهك * اللهم لا تهمل ولا تمهل * لان هاهوذا اعداءك قد صرخوا * ومبغضوك قد
3
4 رفعوا روسهم * تشاوروا بالمكر علي شعبك * وتوامروا علي قديسيك * وقالوا تعالوا لنبيدهم
5
6 من الامم ولا يذكر بعد اسم اسرائيل * واستوروا جميعا بقلب واحد * وتعاهدوا عليك عهدا
7 * مساكن الادوميين والاسماعيليين مواب والهاجريين *

Nec fuerit in te deus novus, neque adoraveris deum peregrinum; (Nam ego ſum Dominus Deus tuus qui eduxi te de terra Ægypti) dilata os tuum & implebo illud. 10 11 *Verùm non audivit populus meus vocem meam, & Iſrael non intendit mihi.* 12 *Ideo dereliqui eos & voluntatem cordium eorum: abibunt in operibus ſuis.* 13 *Quòd ſi populus meus audiret me, & Iſrael ambularet in ſemitis meis, Equidem nullo negotio deprimerem inimicos eorum, & ponerem manum meam ſuper affligentes illos,* 14 15 *Nunc autem inimici Domini negaverunt ei fore tempus eorum in ſeculum.* 16 *Et tamen jam cibaverat eos de frumento, adipe: & ſaturaverat eos de petra, melle. Alleluja.* 17

PSAL. LXXXI.

Aſapho. Verſ. 26. 1

S*Tetit Deus in congregatione deorum, et in medio judicat deos.* 2 *Uſquequò judicabitis iniquitatem, & faciem peccatorũ ſumetis?* 3 *Judicate pupillo & pauperi: juſtificate vilem & egenũ.* 4 *Redimite pauperem ac debilem, & de manu peccatoris liberate eos.* 5 *Neſcierunt, neque intellexerunt ſe in tenebris ambulare; tremefient omnia fundamenta terræ.* 6 *Ego dixi, quòd eſtis dii, & filii Altiſſimi omnes.* 7 *Vos autem ſicut homines moriemini; & ſicut unus principum cadetis.* 8 *Surge O Deus, & judica terram, quoniam tu es hæres omnium gentium. Alleluja.*

PSAL. LXXXII.

Canticum Aſapho. Et numerus ver. 34. 1

D*Eus, quis aſſimilatur tibi? Deus, ne negligas, neq; procraſtines.* 2 *Nam ecce inimici tui jam exclamaverunt, & oſores tui jam elevârunt capita ſua:* 3 *Conſultârunt de dejiciendo populo tuo, et conſilium inierunt adverſùs ſanctos tuos,* 4 *Et dixerunt; Venite, ut perdam⁹ eos de gentibus, et non memoretur ampliùs nomen Iſraelis.* 5 *Et conſultârunt ſimul corde uno, et pacti ſunt adverſùm te pactum.* 6 *Habitationes Idumæorum, et Iſmaëlitarum, Moab, et Agarenorum,* 7

INTERP. ÆTHIOP. [d] deus repentinus: [e] illud tibi. [f] etiam non [g] opera eorum: & ambulabunt in imaginationibus cordis eorum. [h] Inimicos eorum omnes contempſiſſem: [i] tuam.
PSAL. LXXXI. [a] ſolitarium & egenum: et de [b] fundamenta montium. *PSAL. LXXXII.* [a] et prævaricati ſunt; adverſùs te concluſerunt & conculcârunt. Tabernacula

תהלים : פד

.Sor habitatoribus cum Peleſeth : Hamalech & , Hammon & , Ghebal
גבל ועמון ועמלק פלשת עם־ישבי צור: 8
.Selah , Loth filiis brachium fuerunt ;eis *cum* eſt copulatus Aſſur Etiam
גם־אשור נלוה עמם היו זרוע לבני־לוט סלה: 9
.Chiſon torrente in Jabin ſicut , Siſera ſicut : Midian ſicut illis Fac
עשה־להם כמדין כסיסרא כיבין בנחל קישון: 10
,eorum *magnificos* eos Pone .terræ ſtercus fuerunt : Dor-Hen in *ſunt* Deleti
11 12 נשמדו בעין־דאר היו דמן לאדמה: שיתמו נדיבמו
.eorũ principes omnes Salmunnah ſicut & ,Zebach ſicut & : Zeeb ſicut & ,Horeb ſicut
כערב וכזאב וכזבח וכצלמנע כל־נסיכמו:
eos pone mi Deus .Dei habitacula ,nobis Poſſideamus ,dixerunt Qui
13 14 אשר אמרו נירשה־לנו את נאות אלהים: אלהי שיתמו
: *ſylvam comburet* ignis Sicut .*venti facies ad* ſtipulam ſicut : rotam ſicut
כגלגל כקש לפני־רוח: כאש תבער־יער 15
: tua tempeſtate in eos perſequêris Ita .montes *conflagrabit* flamma ſicut &
וכלהבה תלהט הרים: כן תרדפם בסערך 16
tuũ nomen quærent & : ignominia eorum facies Imple .eos terrebis tuo turbine *in* &
ובסופתך תבהלם: מלא פניהם קלון ויבקשו שמך 17
,erubeſcant & : *perpetuum in uſque* terreantur & ,afficiantur Pudore .DOMINE
יהוה: יבשו ויבהלו עדי־עד ויחפרו 18
: tu ſolus ,DOMINE tuum nomen tu quòd cognoſcant Et .pereant &
ויאבדו: וידעו כי־אתה שמך יהוה לבדך 19
.terram omnem ſuper altiſſimus
עליון על־כל־הארץ:

PSAL. LXXXIV. פד

tua tabernacula dilecta Quam .cantus Corach filiis Haghithith ſuper Victori
1 2 למנצח על־הגתית לבני־קרח מזמור: מה־ידידות משכנותיך
atria *ad* mea anima deſideravit etiam & ,Concupivit ! exercituum Domine
יהוה צבאות: נכספה וגם־כלתה נפשי לחצרות 3
paſſer Etiam .vivum Deum ad exultabunt : mea caro & ,meum cor,DOMINI
יהוה לבי ובשרי ירננו אל אל־חי: גם־צפור 4
tua altaria : ſuos pullos poneret quo ,ſibi nidum hirundo & ,domũ invenit
מצאה בית ודרור קן לה אשר־שתה אפרחיה את־מזבחותיך
: tuæ domus habitatores Beati .mi Deus & ,mi rex ,exercituum DOMINE
יהוה צבאות מלכי ואלהי: אשרי יושבי ביתך 5
ſtratæ viæ : te in *ei* fortitudo *hominis Beatitudines* .Selah , te laudabunt *adhuc*
עוד יהללוך סלה: אשרי אדם עוז־לו בך מסלות 6
benedictionib⁹ etiam : eã ponent fontem Habbacha vallem *in* Tranſeuntes .eorũ corde in
בלבבם: עברי בעמק הבכא מעין ישיתוהו גם־ברכות 7
.Sijon in Deorum Deus videbitur : *virtutem ad virtute* de Ibunt .*docens operietur*
יעטה מורה: ילכו מחיל אל־חיל יראה אל־אלהים בציון: 8
,Jahacob Deus auſculta : meam orationem exaudi exercituum Deus Domine
יהוה אלהים צבאות שמעה תפלתי האזינה אלהי יעקב 9
.tui *uncti facies* aſpice & : Deus vide *noſter Clypeus* .Selah
סלה: מגננו ראה אלהים והבט פני משיחך: 10

תרגום TARGUM.

נובלאי ועמונאי ועמלקאי פלשתאי עם יתבי 8
צור: לחוד סנחריב מלכא דאתור אתחבר 9
עמהון הוון לסעיד לבני לוט לעלמין: עבד 10
להון היך עבדתא למדין ולסיסרא והיך
עבדתא ליבין בנחל דקישון: אשתציו בעינא 11
דדאר הוון היך רעי דרמים לארעא: שוי יתהון 12
ורבניהון היך עורב והיך זאב היך זבח והיך
צלמונע וכל מלכיהון: די אמרו נירת לנאית 13
כל עידית אלהים: אלהי שוי יתהון היך גלגלא 14
דמתגלגל ואזיל ולא ניח במדרון והיך קשא
קדם זעפא: היך אשא דבערא בחורשא והיך 15
שלהוביתא דמצלהבא וזרזי טוריא: הכנא 16
תרדפנון בעלעולך ובזעפך תבהלנון: מליא 17
אפיהון קלנא ויבעון שמך יי: יבהתון ויבהלון 18
לעלמי עלמין ויתחסדון ויהובדון: ונדעון 19
ארום את שמך יי בלחוד עלאה על כל יתבי
ארעא:

פד

לשבחא על כנרא דאתיא מגת על ידיהון 1
דבני קרח תושבחתא: מה הנון רחימין 2
משכנך יי צבאות: רגגת ולחוד תאיבת נפשי 3
לדרת יי לבי ובסרי מרננן לאלהא קים: לחוד 4
יונתא אשכחת ביתא ושפנינא שרכפא ליה די
כשרין גוזליה לאתקרבא על מדבחתך יי
צבאות מלכי ואלהי: טוביהון דצדיקין דיתבין 5
בבית מקדשך תוב ישבחונך לעלמין: טוביה 6
דגבר דעושנא ליה במימרך רוחצנותא
בלבביהון: רשיעיא דעברין על עומקי גהנם 7
בכין בכיתא היך מעינא ישוויניה לחוד ברכן
יעטוף לדתיבין לאולפן אוריתיה: אזלין 8
צדיקיא מן בית מקדשא לבית מדרשא יתחמי
לעות אוריתא דילהון קדם יי דשכנתיה שריא
בציון: אמר דוד יי אלהים צבאות קבל צלותי 9
אצירת אלהא דיעקב לעלמין: זכות אבהתנא 10
חמי אלהים ואסתכל אנפי משיחך:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Gabalitæ & Ammonitæ et Amalechitæ,Palestini cum habitatoribus Tyri. 8 Sed et Senacherib rex Aſſyriæ aſſociatus eſt illis, 9 fuerunt adjutorio filiis Lot in perpetuum. Fac 10 illis ſicut feciſti Madianitis et Siſaræ,atq; *ut feciſti* Jabin in torrente Kiſſon. Extermina- 11 ti ſunt ad fontem Dor;facti ſunt ſicut ſtercus conculcatum in *terra*. Pone eos & prin- 12 cipes eorum ſicut Oreb & ſicut Zeeb & ſicut Zebach et *ſicut* Salmunah,*et* omnes reges eorum. Qui dixerunt, Hæreditabimus 13 nobis omne mundum Dei. Deus meus pone 14 eos ſicut rotam, *quæ volvitur & movetur & non conſiſtit in declivi*, & ſicut ſtipulam coram turbine. Sicut ignis qui comburit 15 ſylvam, & tanquam flamma quæ inflammat peripherias montium. Sic perſequêris 16 eos in tempeſtate tua, & furore tuo interturbabis eos. Imple facies eorum ignomi- 17 nia, et quærent nomen tuum Domine. Con- 18 fundantur & interturbentur in ſecula ſeculorum, et ſint opprobrio atque pereant. Et ſciant quoniam tu es nomen tuum, 19 DOMINE,ſolus altiſſimus ſuper omnes habitatores terræ.

Ad laudandum citharâ allatâ de Gath, 1 per manus filiorum Korach hymnus.

PSAL. LXXXIV.

Quàm dilecta ſunt tabernacula tua 2 Domine exercituum! Concupivit atque 3 vehementer deſideravit anima mea atria *Domini*: cor meum atque caro mea exultant in Deo viventi. Equidem columba inve- 4 nit domum, et turtur nidum habet, quòd legitimi ſint pulli ejus ut offerantur *ſuper altaria tua* Domine exercituum, rex meus & Deus meus. Beati juſti qui habitant in 5 domo ſanctuarii tui: rurſus laudabunt te in ſecula. Beatus vir cujus eſt fortitudo in 6 Verbo tuo; fiducia in corde ſuo. Peccato- 7 res qui tranſeunt per profundum gehennæ, flentes fletu, ſicut fontem ponent illud: atqui benedictionibus operiet [*Deus*] eos qui *revertuntur ad doctrinam* Legis ſuæ. Progredientibus juſtis de domo ſanctuarii 8 in domum doctrinæ apparebit labor legis ab ipſis [*ſuſceptus*] coram Domino, cujus majeſtas reſidet in Sion. *Dixit David*, Do- 9 mine Deus exercituum accipe orationẽ meam, auſculta Deus Jacob ſemper. Merita 10 patrum noſtrorum reſpice Deus, et attende faciei Chriſti tui.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

8 9 * ܬܚܘܡܗ ܕܥܡܘܢ ܘܕܥܡܠܝܩ. ܘܦܠܫܬ ܥܡ ܥܡܘܪܝ ܨܘܪ: * ܐܦ ܐܬܘܪܝܐ ܐܬܚܒܪ ܥܡܗܘܢ.
10 ܘܗܘܘ ܥܘܕܪܢܐ ܠܒܢܝ ܠܘܛ: * ܥܒܕ ܠܗܘܢ ܐܝܟ ܕܠܡܕܝܢ ܘܐܝܟ ܕܠܣܝܣܪܐ. ܘܐܝܟ
11 12 ܕܠܝܒܝܢ ܒܢܚܠܐ ܕܩܝܫܘܢ: * ܕܐܬܚܪܒܘ ܒܥܝܢܕܘܪ ܘܗܘܘ ܙܒܠܐ ܥܠ ܐܪܥܐ. * ܣܚܘܦ ܐܢܘܢ
ܘܐܘܒܕ ܐܢܘܢ: ܐܝܟ ܕܠܥܘܪܒ ܘܐܝܟ ܙܐܒ ܘܐܝܟ ܙܒܚ ܘܐܝܟ ܨܠܡܢܥ. ܟܠܗܘܢ
13 14 ܫܠܝܛܢܝܗܘܢ * ܕܐܡܪܘ: ܢܐܪܬ ܠܢ ܡܕܝܢܬܗ ܕܐܠܗܐ. * ܐܠܗܐ ܥܒܕ ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܓܝܓܠܐ
15 ܘܐܝܟ ܚܠܐ ܩܕܡ ܪܘܚܐ: * ܘܐܝܟ ܢܘܪܐ ܕܡܫܬܕܪܐ ܒܥܒܐ. ܘܐܝܟ ܫܠܗܒܝܬܐ ܕܡܘܩܕܐ ܛܘܪܐ:
16 17 * ܗܟܢܐ ܪܕܘܦ ܐܢܘܢ ܒܥܠܥܠܝܟ. ܘܒܥܠܥܠܝܟ ܫܓܘܫ ܐܢܘܢ: * ܡܠܝ ܐܦܝܗܘܢ ܨܥܪܐ.
18 ܕܢܒܥܘܢ ܫܡܟ ܡܪܝܐ: * ܢܒܗܬܘܢ ܘܢܬܕܠܚܘܢ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ. ܢܒܗܬܘܢ ܘܢܐܒܕܘܢ:
19 * ܘܢܕܥܘܢ ܕܫܡܟ ܗܘ ܡܪܝܐ ܒܠܚܘܕܝܟ. ܪܡ ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܝܢ *
1 * ܠܒܢܝ ܩܘܪܚ. ܘܟܕ ܕܘܝܕ ܡܬܗܓܐ ܗܘܐ ܟܕ ܐܙܠ ܡܢ ܨܗܝܘܢ ܠܡܣܓܕ ܒܒܝܬܗ ܕܐܠܗܐ.
2 ܘܡܬܐܡܪ ܢܒܝܘܬܐ ܥܠ ܡܫܝܚܐ ܘܥܠ ܥܕܬܗ. ܦܬܓܡܐ ܟܛ. * ܡܐ ܚܒܝܒܝܢ
3 ܡܫܟܢܝܟ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܣܟܝܬ ܢܦܫܝ ܘܐܬܪܓܪܓܬ ܠܕܪܬܗ ܕܡܪܝܐ: ܠܒܝ ܘܒܣܪܝ
4 ܫܒܚܘ ܠܐܠܗܐ ܚܝܐ. * ܐܦ ܨܦܪܐ ܐܫܟܚܬ ܠܗ ܒܝܬܐ ܘܫܘܦܢܝܢܐ ܩܢܐ: ܪܒܝܘ ܦܪܘܓܐ
5 ܠܘܬ ܓܢܒ ܡܕܒܚܟ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܡܠܟܝ ܘܐܠܗܝ * ܛܘܒܝܗܘܢ ܠܕܥܡܪܝܢ
6 ܒܒܝܬܟ: ܘܢܫܒܚܘܢܟ ܠܥܠܡ. * ܕܝܦܣܠܡܐ * ܛܘܒܘܗܝ ܠܓܒܪܐ ܕܐܢܬ ܗܘ
7 ܣܡܘܟܗ. ܘܫܒܝܠܝܟ ܒܠܒܗ. * ܥܒܪܘ ܒܥܘܡܩܐ ܕܒܟܝܬܐ ܘܥܒܕܘܗܝ ܥܡܗ
8 ܡܥܡܪܐ: ܐܦ ܒܘܪܟܬܐ ܢܬܥܛܦ ܣܐܡ ܢܡܘܣܐ. * ܢܐܙܠܘܢ ܡܢ ܚܝܠܐ ܠܚܝܠܐ:
9 ܘܢܬܚܙܐ ܐܠܗ ܐܠܗܝܢ ܒܨܗܝܘܢ. * ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܥ ܨܠܘܬܝ: ܘܨܘܬ
10 ܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ. * ܘܚܙܝ ܐܢܬ ܐܠܗܐ ܡܣܝܥܢܢ: ܘܚܘܪ ܒܐܦܐ ܕܡܫܝܚܟ.

Terminus Ammon, & Amalec, & Palæſthinæ, cum incolis Tyri: 8 Etiam Aſſyrius conſpiravit cum eis,et facti ſunt adjutorium filiis 9 Lot. Fac illis ut Madian, & ut Siſaræ, & ut 10 Nabin in torrente Ciſon, Qui interfecti fuerunt in Endor, & facti ſtercus in terra. 11 Trucida illos, & perde eos ut Oreb & ut Zeb, 12 ut Zabah & ut Salmana: cunctos illorum præfectos, Qui dixerunt, Hæreditate acqui- 13 quiramus nobis civitatem Dei. Deus fac il- 14 los ut rotam, & velut feſtucam coram vento; Et ſicut ignis dimiſſus in ſylvã, & quaſi flam- 61 ma comburens montes, Ita propulſa eos pro- 51 cellis tuis, & turbinibus tuis exagita illos. Imple facies eorum ignominiâ, ut quærant 17 nomen tuum Domine: Confundantur & 18 conturbentur in ſeculum ſeculorum: pudefiant ac pereant; Ut cognoſcant nomen tui 19 ſolius Dñe, excelſum eſſe in univerſa terra.

PSAL. LXXXIV.

Filiorum Corah. Quem David meditabatur quum iret de Sion, adoraturus in domo Dei. Dicitur etiam Prophetia de Chriſto, & de Eccleſia ejus. Verſ. 29. 1

Quam dilecta ſunt tabernacula tua Dñe 2 potentiſſime. Expectavit anima mea & 3 expetivit atria Dñi. Cor meum & caro mea laudate Deũ vivũ. Etiam paſſer invênit ſibi 4 domum, & turtur nidũ: educaverunt pullos ad latus altaris tui Dñe fortiſſime? Rex meus & Deus meus, Beati qui habitant in domo 5 tua, teque laudabunt in ſeculum. **Diapſal.** Beatus homo, cujus tu es ſuffultor, & cujus 6 cor ſemitæ tuæ Penetrârunt cum profundo fletu, & fecerunt illud habitationem. Nam 7 etiam benedictione amicietur Ponens legẽ: Ibũt de fortitudine in fortitudinẽ,& apparebit Deus deorum in Sion. 8 Dñe Deus validiſſime,audi orationem meam, 9 & auſculta Deus Jacob, 10 Ac vide tu Deus ſuffultor noſter, & intuere faciem Uncti tui.

Verſio VULG. LAT.

8 Gebal, & Ammon, & Amalec : alie-
9 nigenæ cum habitantib⁹ Tyrum. Ete-
nim Aſſur venit cum illis : facti ſunt
10 in adjutorium filiis Lot. Fac illis ſicut
Madian, & Siſaræ, ſicut Jabin in tor-
11 rente Ciſſon. Diſperierunt in Endor :
12 facti ſunt ut ſtercus terræ. Pone prin-
cipes eorum, ſicut Oreb, & Zeb, &
Zebee, & Salmana; Omnes princi-
13 pes eorum, Qui dixerunt; Hæreditate
14 poſſideamus Sanctuarium Dei. Deus
meus, pone illos ut rotam : & ſicut
15 ſtipulam ante faciem venti. Sicut
ignis, qui comburit ſylvam : & ſicut
16 flamma comburens montes : Ita per-
ſequêris illos in tempeſtate tua : &
17 in ira tua turbabis eos. Imple facies
eorum ignominiâ : & quærent nomen
18 tuum, Domine. Erubeſcant, & con-
turbentur in ſeculum ſeculi : & con-
19 fundantur, & pereant. Et cognoſcant
quia nomen tibi Dominus : tu ſolus
Altiſſimus in omni terra.

In finem,
1 Pro torcularibus filiis Core, Pſalmus.
LXXXIII.

2 Quàm dilecta tabernacula tua, Do-
3 mine virtutũ : Concupiſcit, & deficit
anima mea in atria Domini. Cor me-
um, & caro mea, exultaverunt in De-
4 um vivum. Etenim paſſer invenit ſibi
domum, & turtur nidum ſibi, ubi po-
nat pullos ſuos. Altaria tua, Domine
virtutum : rex meus, & Deus meus.
5 Beati, qui habitant in domo tua, Do-
mine: in ſecula ſeculorũ laudabunt te.
6 Beatus vir, cujus eſt auxilium abs te :
7 aſcenſiones in corde ſuo diſpoſuit, In
valle lachrymarum in loco, quem po-
8 ſuit. Etenim benedictionem dabit le-
giſlator, ibunt de virtute in virtutem:
9 videbitur Deus deorum in Sion. Do-
mine Deus virtutum, exaudi oratio-
nem meam : auribus percipe, Deus
10 Jacob. Protector noſter, aſpice Deus :
& reſpice in faciem Chriſti tui :

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

8 †Γεβὰλ καὶ Ἀμμὼν καὶ Ἀμαλὴκ, † καὶ ἀλλόφυλοι με-
9 τὰ τῶν κατοικούντων Τύρον. †Καὶ γὰρ καὶ Ἀσσοὺρ συμ-
παρεγένετο μετ' αὐτῶν, † ἐγενήθησαν εἰς ἀντίληψιν
10 τοῖς υἱοῖς (δ) Λώτ. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Ποίησον αὐ-
τοῖς ὡς τῇ Μαδιὰμ καὶ τῷ Σισάρᾳ, † ὡς (ε) τῷ Ἰ-
11 αβεὶν ἐν τῷ χειμάῤῥῳ (ζ) Κεισῶν. † Ἐξωλοθρεύ-
θησαν ἐν Ἀενδὼρ, † ἐγενήθησαν ὡσεὶ κόπρος τῇ γῇ.
12 †Θοῦ τοὺς ἄρχοντας αὐτῶν ὡς τὸν Ὠρὴβ † καὶ Ζὴβ,
καὶ Ζεβεὲ καὶ Σαλμανὰ, πάντας τοὺς ἄρχοντας αὐτῶν·
13 † Οἵτινες εἶπαν, Κληρονομήσωμεν ἑαυτοῖς τὸ (η)
14 θυσιαστήριον τοῦ θεοῦ. † Ὁ θεός μου θοῦ αὐτοὺς ὡς
τροχὸν, † ὡς καλάμην κατὰ πρόσωπον ἀνέμου. †
15 Ὡσεὶ πῦρ ὃ διαφλέξει δρυμὸν, † ὡσεὶ φλὸξ κατα-
16 καύσαι ὄρη· †Οὕτως καταδιώξεις αὐτοὺς ἐν τῇ κα-
ταιγίδι σου, † καὶ ἐν τῇ ὀργῇ σου ταράξεις αὐτούς. †
17 Πλήρωσον τὰ πρόσωπα αὐτῶν ἀτιμίας, † καὶ ζητήσουσι
18 τὸ (θ) ὄνομά σου κύριε. †Αἰσχυνθήτωσαν καὶ ταραχθή-
τωσαν εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος, † καὶ ἐντραπήτωσαν καὶ ἀπο-
19 λέσθωσαν. † Καὶ γνώτωσαν ὅτι ὄνομά σοι Κύριος· † σὺ
μόνος ὕψιστος ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν.

MS. A. (δ) Λώτ. Ποίησον (ε) ὁ Ἰαβεὶν (ζ) Κισ-
σῶν. Ἐξωλεθρεύθησαν (η) ἁγιαστήριον (θ) πρόσωπόν
σου

1 Εἰς τὸ τέλος, Ὑπὲρ τῶν ληνῶν τοῖς υἱοῖς Κορὲ
ψαλμός. πγʹ.

2 †ΩΣ ἀγαπητὰ τὰ σκηνώματά σου κύριε τῶν δυ-
3 νάμεων. † Ἐπιποθεῖ καὶ ἐκλείπει ἡ ψυχή μου εἰς
τὰς αὐλὰς τοῦ κυρίου· † ἡ καρδία μου καὶ ἡ σάρξ
4 μου ἠγαλλιάσαντο ἐπὶ θεὸν ζῶντα. †Καὶ γὰρ στρουθί-
ον εὗρεν ἑαυτῷ οἰκίαν, † καὶ τρυγὼν νοσσιὰν ἑαυτῇ, οὗ
θήσει τὰ νοσσία ἑαυτῆς· † τὰ θυσιαστήριά σου κύριε
5 τῶν δυνάμεων, † ὁ βασιλεύς μου καὶ ὁ θεός μου. † Μακά-
ριοι (α) οἱ κατοικοῦντες ἐν τῷ οἴκῳ σου, † εἰς τοὺς αἰ-
ῶνας τῶν αἰώνων αἰνέσουσί (β) σε. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. †
6 Μακάριος ἀνὴρ οὗ ἐστιν (γ) ἡ ἀντίληψις αὐτοῦ παρὰ
σοῦ κύριε· † ἀναβάσεις ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ διέθε-
7 το, † Εἰς τὴν κοιλάδα τοῦ κλαυθμῶνος, (δ) εἰς
8 τὸν τόπον ὃν ἔθετο. † Καὶ γὰρ εὐλογίας δώσει ὁ
νομοθετῶν, † πορεύσονται ἐκ δυνάμεως εἰς δύ-
ναμιν, † ὀφθήσεται ὁ θεὸς τῶν θεῶν ἐν Σιών. †
9 Κύριε ὁ θεὸς τῶν δυνάμεων εἰσάκουσον τῆς προσ-
ευχῆς μου, † ἐνώτισαι ὁ θεὸς (ε) Ἰακώβ. ΔΙΑ-
10 ΨΑΛΜΑ. † Ὑπερασπιστὰ ἡμῶν ἴδε ὁ θεὸς, † καὶ ἐ-
πίβλεψον ἐπὶ τὸ πρόσωπον τοῦ χριστοῦ σου.

MS. A. (α) πάντες οἱ (β) σε. Μακάριος (γ) ἀντι-
λήμψεις αὐτοῦ (δ) εἰς τόπον (ε) Ἰακώβ. Ὑπερ-
ασπιστὰ

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

[b]Gebal, & Ammon, & Amalec, 8
& (d)alienigenæ cum habitantibus
Tyrum. 7 Etenim & (e)Aſſur[c]ſi- 9
mul venit cum illis. Facti ſunt in
(f) [d] ſuſceptionem filiis (g)Lot.
DIAPSALMA. 8 Fac illis, ſicut 10
Madiã, & Siſaræ, ſicut[e] Jabin in
torrente Ciſon. 9(b)Diſperierunt[f] 11
in Aendor, facti ſunt ut ſterc⁹ terræ.
10 Pone principes eorũ, ſicut Oreb, 12
& Zeb, 11 & [g]Zebee, & Salma-
na, Omnes principes eorũ Qui dixe- 13
runt, (i)Hæreditate poſſideam⁹ no-
bis(k)altare Dei. 12 Deus meus, po- 14
ne illos, ut rotam, ſicut ſtipulã ante
[h]faciẽ venti. 13 Sicut ignis, qui 15
comburet ſylvam, velut ſi flamma
(l)incendat montes: 14 Ita perſe- 16
quêris illos in tempeſtate tua: & in
ira tua turbabis eos. 15 Imple(m) 17
facies eorum ignominiâ : & [i]
quærent nomen tuum, Domine.
16 Erubeſcant, & conturbentur in 18
ſeculum ſeculi, & confundantur, et
pereant. 17 Et cognoſcant, quia no- 19
men (n) tibi Dominus : [k] tu ſolus
Altiſſimus ſuper omnem terram.

In finẽ, Pro torcularibus filiis Core, 1
Pſalmus. LXXXIII.

1 Quàm (a) amabilia ſunt ta- 2
bernacula tua, Domine virtutum :
[a] Concupiſcit, & deficit anima 3
mea in atria Domini. 2 Cor meum, et
caro mea exultaverunt in Deum vi-
vum. 3 Nam & paſſer invenit ſibi 4
domum, & turtur[b]nidum ſibi, ubi
(b)ponet pullos ſuos. 4 Altaria tua,
Domine virtutum, rex meus, & De-
us meus. 5 Beati[c], qui habitant in 5
domo tua: in ſecula ſeculorum lau-
dabunt te. DIAPSALMA. 6 Beatus 6
vir, cujus eſt (c) [d] ſuſceptio ejus
abs te, Domine : [e] aſcenſiones in
corde(d)ſuo diſpoſuit, In convalle 7
plorationis, in (e) loco, quem poſuit.
7 Etenim benedictiones dabit legiſ- 8
lator: ibunt de virtute in virtutem;
videbitur Deus deorũ in Sion. 8 Do- 9
mine Deus virtutũ, exaudi orationẽ
meam: auribus percipe, Deus Jacob.
DIAPSALMA. 9 [†]Protector no- 10
ſter, aſpice Deus: & reſpice in faciẽ
Chriſti tui.

Verſio ÆTHIOPICA.

ኔባል፡ወአሞን ፡ ወአማሌቅ፡፡ ወሌሉፍሊ፡
ምስለ፡ ሰብአ፡ ጠርሰ፡፡=፡ ወአሰረዊ፡ ኅበረ፡ 7
ምስሌሆሙ፡፡ ወኮንዎሙ፡ ረድኤተ ፡ ለደቂ
ቀ፡ሎጥ፡፡=፡ ረሰዮሙ ፡ ከመ ፡ ምድያም፡ 8
ወሲሳራ፡፡ ወከመ ፡ ኢያቤስ ፡ በፈለገ ፡ ቂሶ
ን፡፡=፡ ወደሰረው፡ከመ፡ እለ፡እንደር፡፡ ወ 9
ይኩኑ፡ከመ፡ምሬተ፡ምድር፡፡=፡ ረሰዮሙ፡ 10
ለመሳእክቲሆሙ፡ ከመ ፡ ሄሬብ፡ወዜብ፡፡=፡
ወዜብሄል ፡ ወስልማና ፡ ወኵሎሙ ፡ መሳእክ 11
ቲሆሙ፡፡ እለ፡ይብሉ ፡ ንወርስ ፡ መሠዋዒ
ሁ፡ለእግዚአብሔር፡፡=፡ አምላኪየ፡ረስዮ 12
ሙ፡ከመ ፡ መንኰራኵር፡፡ ወከመ ፡ ሠዕር፡
ቅድመ፡ገጸ፡እሳት፡፡=፡ ወከመ፡እሳት፡ዘያ 13
ውዒ፡ገደመ፡፡ ወከመ፡ነበልባል፡ዘያነድድ፡
አድባረ፡፡=፡ ከማሁ ፡ ሳድዶሙ ፡ በዐውሎ 14
ከ፡፡ ወሁኮሙ፡ በመቅሠፍትከ፡፡=፡ ምላ 15
እ፡ውስተ ፡ ገጾሙ፡ኀሳረ፡፡ ወያእምሩ፡ስመ
ከ፡እግዚኦ፡፡=፡ ወይትኀፈሩ፡ወይትሀወኩ፡ 16
ለዓለም ፡ ዓለም፡፡ ወይኅስሩ ፡ ወይትሐጐ
ሉ፡፡=፡ ወያእምሩ፡ስምከ፡እግዚኦ፡፡ ከመ፡ 17
አንተ ፡ ባሕቲትከ ፡ ልዑል ፡ ደበ ፡ ኵሉ፡
ምድር፡፡

ፍጻሜ፡ ዘበእንተ፡ ማሕበብት ፡ ዘደቂቀ፡
ቆሬ፡መዝሙር፡፡

ጠር ጥቀ፡ፍቁረ፡ አብያቲከ፡ እግዚኦ፡ኃያሳ 1
ን፡፡ ተፈሥሐት፡ነፍስየ፡በአፍቅሮ፡አዕጻደ
ከ፡እግዚኦ፡፡=፡ ልብየኒ፡ ወሥጋየኒ ፡ ተፈ 2
ሥሐ፡በእግዚአብሔር፡ሕያው፡፡=፡ ዖፍ 3
ኒ ፡ ረከበት፡ ላቲ፡ቤተ፡፡ ወማዕነቅኒ፡ ኀበ፡
ታነብር፡ እጐሊሃ፡፡=፡ ምሥዋዒከ፡ እግዚ 4
እ፡ኃያላን፡፡ ንጉሥየኒ፡ ወአምላኪየኒ፡፡=፡
ብፁዓን፡ ኵሎሙ፡ እለ፡ ይነብሩ፡ ውስተ፡ቤ 5
ትከ፡፡ ወለዓለመ፡ዓለም፡ይሴብሑከ፡፡=፡
ብፁዕ፡ ብእሲ፡ ዘእምኀቤከ፡ ረድኤቱ፡እግ 6
ዚእ፡፡ ወዘደሃሊ፡ በልቡ፡ ዘበሳሁሉ፡፡ ውስ
ተ ፡ ቈላት ፡ ብካይ፡ ብሔር፡ ኀበ ፡ ሠራዕኮ
ሙ፡፡=፡ እስመ፡ መምህረ፡ ሕግ፡ይሁብ፡በ 7
ረከተ፡፡ ወየሐውር ፡ እምኀይል ፡ ውስተ፡
ኀይል፡፡ ወያስተርኢ፡ አምላከ፡አማልክት፡
በጽዮን፡፡=፡ እግዚኦ ፡ አምላከ፡ ኃያላን፡ 8
ስምዐኒ ፡ ጸሎትየ፡፡ ወአጽምአኒ ፡ አምላ
ኩ ፡ ለያዕቆብ፡፡=፡ ወርእየኒ ፡ እግዚኦ ፡ 9
ትአምኖትየ፡፡ ወነጽር ፡ ኀበ ፡ ገጸ ፡ መሲ
ሕከ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP·[b]Nebal,[c] aſſociavit *ſe* cum [d] adjutorium [e] Jabes [f]ſicut illi qui in Aendor, [g] Zebhel, &[h]faciem ignis. [i]cognoſcent nomen [k]quòd tu *PSAL. LXXXIII.*[a] lætata eſt anima mea amore atriorum tuorum Domine.[b]ubi ponet [c]omnes illi qui [d]auxilium[e]cujus in corde ſunt aſcenſiones ejus, in convalle[†]Et aſpice me De⁹ protector me⁹:

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

8 9 * جبال وعمان وعماليق الغرباء القبائل مع سكان صور * وان اسور ايضا اتى معهم * وصاروا
10 11 انصارا لبني لوط * اجعلهم مثل مدين وسيسرا * ومثل اوبيم في وادي قيسون * الذين هلكوا
12 في عين دور * وكانوا مثل تراب الارض * اجعل رووساءهم مثل عوريب وزيب وزابح وصلمونا *
13 14 جميع رووسائهم * الذين قالوا فلنرث لنا مذبح الله * الهي اجعلهم كالبكرة وكالقصب امام
15 16 وجه الريح * ومثل النار اذا احرقت الغياض * ومثل اللهيب الذي يحرق الجبال * كذلك
17 18 تطردهم بعاصفك وبغضبك تقلقهم * واملا وجوههم هوانا ليتبعوا اسمك يا رب * فليخزوا
19 ويقلقوا الى ابد الابد وليعيروا وليهلكوا * وليعلموا ان الرب هو اسمك * وانت وحدك العالي
على جميع الارض * الليلويا *

1 * المزمور الثالث والثمانون * لبني قورح * وعدده * كو * استيخن *
2 3 * مساكنك محبوبة ايها الرب اله القوات * نفسي تشتاق وتذوب الى ان ادخل ديار الرب *
4 قلبي وجسمي يفرحان بالله الحي * لان العصفور وجد له بيتا واليمام عشا حيث يضعن فراخهن
5 الى جانب مذابحك يا رب اله القوات * انت ملكي والهي * طوبا لكل الساكنين في بيتك *
6 يباركونك الى ابد الابد * طوبى للانسان الذي نصرته من عندك يا رب * ذاك الذي جعل
7 في قلبه سننك * وحل في عمق البكاء * في المكان الذي اخذه مسكنا * لان واضع الناموس يعطي
8 9 البركات * يسيرون من قوة الى قوة * تظهر في صهيون * ايها الرب اله القوات * استجب صلاتي *
10 وانصت يا اله يعقوب * وانظر ايها الاله المقاتل عنا * واطلع على وجه مسيحك *

Gebal, & Amman, & Amalec, alieni- 8
genæ nationes cum habitantibus Tyrum.
Et quidem Aſſur quoque venit cum illis, 9
& facti ſunt adjutores filiis Lot. Fac eos 10
ſicut Midian & Siſaram, & ſicut O-
bim in torrente Ciſſon : Qui conſumpti 11
ſunt in fonte Dor, & fuerunt ſicut pul-
vis terræ. Fac principes eorum ſicut O- 12
reb & Zeb & Zebch & Salmona: omnes
principes eorum, Qui dixerunt, Hære- 13
ditate poſſideamus nobis altare Dei. Deus 14
mi, fac eos ut rotam, & velut arundines
ante faciem venti. Et ſicut ignis quando 15
comburit ſylvas, & ſicut flamma quæ
comburit montes : Ita perſequeris eos 16
turbine tuo, & irâ tuâ vexabis illos. Et 17
implebis facies eorum contemptu, ut ſe-
quantur nomen tuum, O Domine. Con- 18
fundantur & conturbentur in æternum
æternitatis, & opprobrio afficiantur ac
pereant. Et ſciant Dominum eſſe nomen 19
tuum & te ſolum Altiſſimum ſuper uni-
verſam terram. Alleluja.

PSAL. LXXXIII.

Filiis Coræ. Et numerus ver. 26. 1

Habitationes tuæ amabiles ſunt, 2
O Domine Deus virtutum; Anima 3
mea flagrat & liqueſit deſiderio ingredi-
endi atria Domini. Cor meum, & cor-
pus meum gaudebunt in Deo vivo; Quo- 4
niam paſſer invenit ſibi domum & turtur
nidum ubi ponant pullos ſuos ad latus al-
tarium tuorum, O Domine Deus virtu-
tum; tu es Rex meus, & Deus meus.
Beati omnes commorantes in domo tua: 5
benedicent te in ſeculum ſeculorum. Bea- 6
titudo homini cujus adjutorium à con-
ſpectu tuo, O Domine: ei, qui poſuit in
corde ſuo jura tua, Et habitavit in a- 7
byſſo luctûs, in loco quem accepit in ha-
bitaculum. Quia Legiſlator dabit bene- 8
dictiones, Incedent de virtute in virtu-
tem : apparebis in Sion. O Domine Deus 9
virtutum, exaudi orationem meam, &
auſculta, O Deus Jacob: Et conſidera 10
O Deus propugnator noſter, & aſpice fa-
ciem Chriſti tui;

תהלים : פה פו

; mei Dei domo in limine in esse elegi , mille *præ* tuis atriis in dies *bonum* Quia

11 כִּי טוֹב־יוֹם בַּחֲצֵרֶיךָ מֵאָלֶף בָּחַרְתִּי הִסְתּוֹפֵף בְּבֵית אֱלֹהַי

, Deus Dominus scutũ & Sol Quia .impietatis tabernaculis in habitare *præ*

12 מִדּוּר בְּאָהֳלֵי־רֶשַׁע׃ כִּי שֶׁמֶשׁ ׀ וּמָגֵן יְהוָה אֱלֹהִים

.*integritate in* ambulantibus bonum prohibebit non : Dominus dabit gloriam &,gratiam

חֵן וְכָבוֹד יִתֵּן יְהוָה לֹא יִמְנַע־טוֹב לַהֹלְכִים בְּתָמִים׃

.te in *sperantis hominis beatitudines* : exercituum Domine

13 יְהוָה צְבָאוֹת אַשְׁרֵי אָדָם בֹּטֵחַ בָּךְ׃

PSAL. LXXXV. פה

reduxisti : tuæ terræ Domine Complacuisti .cantus Corach filiis Victori

1 2 לַמְנַצֵּחַ לִבְנֵי־קֹרַח מִזְמוֹר׃ רָצִיתָ יְהוָה אַרְצֶךָ שַׁבְתָּ

omne operuisti : tui populi iniquitatem *Sustulisti* .Jahacob captivitatem

3 שְׁבוּת יַעֲקֹב׃ נָשָׂאתָ עֲוֺן עַמֶּךָ כִּסִּיתָ כָל־

.*tuũ nasum ira ab* reduxisti :.tuam iram omnem *Collegisti* .Selah,eorũ peccatum

4 חַטָּאתָם סֶלָה׃ אָסַפְתָּ כָל־עֶבְרָתֶךָ הֱשִׁיבוֹתָ מֵחֲרוֹן אַפֶּךָ׃

.*nobiscum tuam indignationem irritam* fac & : nostræ salutis Deus nos Converte

5 שׁוּבֵנוּ אֱלֹהֵי יִשְׁעֵנוּ וְהָפֵר כַּעַסְךָ עִמָּנוּ׃

?generationẽ &,generationẽ in *tuũ nasum protrahes* :nos in *exacerbaberis* seculũ in Nunquid

6 הַלְעוֹלָם תֶּאֱנַף־בָּנוּ תִּמְשֹׁךְ אַפְּךָ לְדֹר וָדֹר׃

nobis Ostende ? te in *lætabuntur* tuus populus & :nos vivificabis,converteris tu Nónne

7 8 הֲלֹא־אַתָּה תָּשׁוּב תְּחַיֵּנוּ וְעַמְּךָ יִשְׂמְחוּ־בָךְ׃ הַרְאֵנוּ

quid Audiam .nobis *dabis* tuam salutem & : tuam misericordiam Domine

9 יְהוָה חַסְדֶּךָ וְיֶשְׁעֲךָ תִּתֶּן־לָנוּ׃ אֶשְׁמְעָה מַה־

ad & ,suum populum ad pacem loquetur quoniam , Dominus Deus loquetur

יְדַבֵּר הָאֵל ׀ יְהוָה כִּי ׀ יְדַבֵּר שָׁלוֹם אֶל־עַמּוֹ וְאֶל־

eũ timentibus *propinqua* Verè .stultitiã ad convertentur non & : suos misericordes

10 חֲסִידָיו וְאַל־יָשׁוּבוּ לְכִסְלָה׃ אַךְ קָרוֹב לִירֵאָיו

:sibi obviaverunt veritas & Misericordia .nostra terra in *gloriam habitandũ ad* : ejꝰ salus

11 יִשְׁעוֹ לִשְׁכֹּן כָּבוֹד בְּאַרְצֵנוּ׃ חֶסֶד־וֶאֱמֶת נִפְגָּשׁוּ

.prospexit *cælis* è justitia & :*germinabit* terra è Veritas.sunt osculatæ pax & justitia

12 צֶדֶק וְשָׁלוֹם נָשָׁקוּ׃ אֱמֶת מֵאֶרֶץ תִּצְמָח וְצֶדֶק מִשָּׁמַיִם נִשְׁקָף׃

Justitia .suum *germen* dabit nostra terra & : bonum dabit DOMINUS Etiam

13 14 גַּם־יְהוָה יִתֵּן הַטּוֹב וְאַרְצֵנוּ תִּתֵּן יְבוּלָהּ׃ צֶדֶק

.suos pedes via in ponet & : ambulabit *ejus facies ad*

לְפָנָיו יְהַלֵּךְ וְיָשֵׂם לְדֶרֶךְ פְּעָמָיו׃

PSAL. LXXXVI. פו

afflictus quoniam : me exaudi ,tuam aurem Domine Inclina .Davidi ipsi Oratio

1 תְּפִלָּה לְדָוִד הַטֵּה־יְהוָה אָזְנְךָ עֲנֵנִי כִּי־עָנִי

tuũ servũ serva *: ego* misericors quoniam ,meam animam Custodi .*ego* egenus &

2 וְאֶבְיוֹן אָנִי׃ שָׁמְרָה נַפְשִׁי כִּי־חָסִיד אָנִי הוֹשַׁע עַבְדְּךָ

clamabo te ad quoniam : Domine mei Miserere .te *ad* sperantem mi Deus tu

3 אַתָּה אֱלֹהַי הַבּוֹטֵחַ אֵלֶיךָ׃ חָנֵּנִי אֲדֹנָי כִּי־אֵלֶיךָ אֶקְרָא

Quoniã .*levabo* meã animã Domine te ad quoniã:tui servi animã Lætifica .die omni

4 5 כָּל־הַיּוֹם׃ שַׂמֵּחַ נֶפֶשׁ עַבְדֶּךָ כִּי אֵלֶיךָ אֲדֹנָי נַפְשִׁי אֶשָּׂא׃ כִּי־

.te invocantibꝰ omnibus misericordia multus & : *parcens* & ,bonus Domine tu

אַתָּה אֲדֹנָי טוֹב וְסַלָּח וְרַב־חֶסֶד לְכָל־קֹרְאֶיךָ׃

.mearũ deprecationum *voce in* intende & : meam orationem Domine Ausculta

6 הַאֲזִינָה יְהוָה תְּפִלָּתִי וְהַקְשִׁיבָה בְּקוֹל תַּחֲנוּנוֹתָי׃

תרגום TARGUM.

11 ארום טב למיתב יומא חד בדרת מקדשך מן
אלף בגלותא בחרית לאדבקא בבית מקדש
12 אלהא מן למדר במשכני רשיעא׃ ארום היך
שור רם ותריס תקיף יי אלהים חנא ויקרא יתן
13 יי לא יכסי טבא מן דאזלין בשלימותא׃ יי
צבאות טב לבר נשא דמתרחץ במימרך׃

פה

1 לשבחא על ידיהון דבני קרח תושבחא׃
2 רעיתא יי ארעך אתבתא שביתא דבית יעקב׃
3 שבקתא חוביהון דעמך כסיתא כל חטאיהון
4 לעלמין׃ כנשתא כל רוגזך תבתא מן תקוף
5 רוגזך׃ תוב לותנא אלהא פורקנא ובטל רוגזך
6 עמנא׃ האפשר די לעלמיא תתקף בנא תניד
7 תוקפך לדר ודר׃ הלא את תתוב תחיי יתנא
8 ועמך ייחדון במימרך׃ אחמי יתנא יי טובך
9 ופורקנך תתיהב לנא׃ אשמע מה ימלל אלהא
יי ארום ימלל שלם לעמיה ולחסידוי ולא
10 יחזרון לסכלא׃ ברם קריב לדחלין מניה
11 פורקניה לאשראה יקרא בארענא׃ טבון
12 וקשוט ארעין צדיקא ושלמא אדבקו׃ קשוט
מן ארעא ארבית וצדקא מן שמיא אודיק׃
13 14 לחוד יי יתן טבא וארענא תתן אבה׃ צדקא
קדמוי יהלך וישוי לאורח טב אסתורוי׃

פו

1 צלותא דצלי דוד אצלי יי אודנך עני יתי ארום
2 עניא וחשיכא אנא׃ נטור נפשי ארום חסידא
אנא פרוק עבדך את אלהי די אנא מתרחץ
3 עלך׃ חוס עלי יי ארום קדמך אצלי כל יומא׃
4 אחדי נפשא דעבדך ארום לותך יי נפשי אזקוף
5 בצלו׃ ארום את הוא יי טב לצדיקיא ושבק
לדתיבין לאורייתיה ומסגי טיבו לכל דמצלין
6 קדמך׃ אצית יי צלותי וקבל לקל תחנוני׃

PARAPH. CHALD. Verſ Lat.

Quia meliùs eſt habitare die uno in atrio ſanctuarii tui, quàm mille *in exilio* : elegi adhærere domui *ſanctuarii* Dei magis, quàm habitare in tabernaculis *impii*. Quoniam ſicut murus excelſus & clypeus fortis eſt Dominus Deus: gratiam & gloriam dabit Dominus, non privabit beatitudine ambulantes in perfectione. Domine exercituum, beatitudo erit homini qui fiduciam ſuam collocat in Verbo tuo. 11 12 13

Ad laudandum per manus filiorum Korah hymnus. PSAL. LXXXV. 1

BEnevolentia proſequutꝰ es Domine terram tuam : convertiſti captivitatem domus Jacob. Remiſiſti iniquitates populo tuo, operuiſti omnia peccata eorum in æternum. Continuiſti omnem iram tuam, converſus es à fortitudine iræ tuæ. Convertere ad nos Deꝰ ſalutis noſtræ, & irritam fac iram tuam *nobiſcum*. Nunquid poſſibile eſt quòd in perpetuum iraſcaris nobis? protrahes furorem tuum in generationẽ & generationem? Nónne tu converſus vitam præſtabis nobis, & populus tuus lætabitur in verbo tuo? Oſtende nobis Domine bonitatem tuam, & *ſalus tua detur* nobis. Audiam quid loquatur Deus Dominus, quoniam loquetur pacem populo ſuo & piis ſuis, & non convertentur ad inſipientiam. Siquidem propè eſt timentibus ab illo, redemptio ejus, ut habitet gloria in terra noſtra. Benignitas & veritas obviaverunt invicem : juſtitia & pax conjunctæ ſunt. Veritas de terra pullulavit, & juſtitia de cœlo proſpexit. Prætereà *Dominus* dabit beatitudinem, & terra noſtra dabit germen ſuum. Juſtitia ante eum ibit, & ponet in via bona greſſus ſuos. 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14

Oratio qua orabat David. PSAL. LXXXVI. 1

INclina Domine aurem tuam, reſponde mihi, quoniam pauper & egenus ſum ego. Cuſtodi animam meam, quoniam miſericors ſum; redime ſervum tuum, tu Deus meus, quandoquidem confido in te. Miſerere mei Domine, quoniam coram te orabo tota die. Lætifica animam ſervi tui, quoniam ad te Domine animam meam levabo in oratione. Quoniam tu *ipſe* Domine bonus es juſtis & parcens iis qui convertuntur ad Legem, atque multiplicans bonitatem omnibus orantibus coram te. Exaudi Domine orationem meam, & ſuſcipe vocem deprecationum mearum. 2 3 4 5 6

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

11 * ܡܛܠ ܕܛܒ ܗܘ ܝܘܡܐ ܚܕ ܒܕܪܬܟ ܡܢ ܐܠܦܐ : ܨܒܝܬ ܠܡܥܡܪ ܒܒܝܬܗ ܕܐܠܗܐ. ܛܒ
12 ܡܢ ܕܐܥܡܪ ܒܡܫܟܢܐ ܕܪܫܝܥܐ : * ܡܛܠ ܕܡܪܒܝܢܢ ܘܡܥܕܪܢܢ ܡܪܝܐ ܗܘ ܐܠܗܐ. ܘܚܣܕܐ
13 ܘܐܝܩܪܐ ܢܬܠ ܡܪܝܐ : ܘܠܐ ܢܟܠܐ ܛܒܬܗ. ܡܢ ܐܝܠܝܢ ܕܡܗܠܟܝܢ ܒܬܡܝܡܘܬܐ : * ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ
ܚܝܠܬܢܐ. ܛܘܒܘܗܝ ܠܓܒܪܐ ܕܡܣܒܪ ܒܟ. * ܫܠܡ ܡܙܡܘܪܐ ܕܦܕ *
1 * ܠܒܢܝ ܩܘܪܚ. ܦܘܪܥܢܐ ܘܦܘܪܩܢܐ ܕܗܘܐ ܠܗܘܢ ܡܢ ܐܠܗܐ. ܘܢܒܝܘܬܐ ܥܠ ܡܫܝܚܐ.
2 3 ܦܣܘ̈ ܟܗ. * ܨܒܝܬ ܡܪܝܐ ܒܐܪܥܟ. ܘܐܗܦܟܬ ܫܒܝܬܗ ܕܝܥܩܘܒ :* ܫܒܩܬ ܥܘܠܗ
4 ܠܥܡܟ. ܘܟܣܝܬ ܟܠܗܘܢ ܚܛܗܝܗܘܢ : * ܐܥܒܪܬ ܟܠܗ ܚܡܬܟ. ܘܐܗܦܟܬ ܚܡܬ
5 6 ܪܘܓܙܟ : * ܐܗܦܟܢ ܐܠܗܐ ܦܪܘܩܢ. ܘܒܛܠ ܪܘܓܙܟ ܡܢܢ : * ܘܠܐ ܠܥܠܡ ܬܪܓܙ ܥܠܝܢ. ܘܠܐ
7 8 ܬܛܪ ܪܘܓܙܟ ܠܕܪ ܕܪܝܢ : * ܐܠܐ ܐܢܬ ܐܗܦܟ ܘܐܚܝܢ. ܘܥܡܟ ܢܚܕܘܢ ܒܟ. * ܚܘܢ ܡܪܝܐ ܛܝܒܘܬܟ
9 ܘܦܘܪܩܢܟ ܗܒ ܠܢ : * ܕܢܫܡܥ ܡܢܐ ܡܡܠܠ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. ܡܛܠ ܕܡܡܠܠ ܫܠܡܐ ܥܡ ܥܡܗ
10 ܘܥܡ ܙܕܝܩܘܗܝ : ܕܠܐ ܢܬܗܦܟܘܢ ܠܒܣܬܪܗܘܢ. * ܩܪܝܒ ܗܘ ܦܘܪܩܢܗ ܠܕܚܠܘܗܝ : ܢܫܪܐ
11 12 ܐܝܩܪܗ ܒܐܪܥܢ. * ܛܝܒܘܬܐ ܘܩܘܫܬܐ ܐܪܥܘܢ : ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܘܫܠܡܐ ܢܫܩܘܢ. * ܘܗܝܡܢܘܬܐ
13 ܡܢ ܐܪܥܐ ܬܕܢܚ : ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܐܕܝܩܬ ܡܢ ܫܡܝܐ. * ܐܦ ܡܪܝܐ ܢܬܠ ܛܒܬܗ : ܘܐܪܥܐ ܬܬܠ
14 ܥܠܠܬܗ. * ܘܙܕܝܩܐ ܩܕܡܘܗܝ ܢܗܠܟ : ܘܢܣܝܡ ܒܐܪܥܐ ܗܠܟܬܗ.
1 * ܫܠܡ ܡܙܡܘܪܐ ܕܦܗ * * ܕܕܘܝܕ ܟܕ ܒܢܐ ܒܝܬܐ ܠܡܪܝܐ. ܘܢܒܝܘܬܐ ܕܩܪܝܢܐ ܕܥܡܡܐ
ܘܬܘܒ ܨܠܘܬܐ ܕܒܠܚܘܕܝܬܐ ܕܙܕܝܩܐ. ܦܣܘ̈ ܠܓ. ܨܠܝ ܡܪܝܐ ܐܕܢܟ ܘܥܢܝܢܝ. ܡܛܠ
2 ܕܡܣܟܢܐ ܐܢܐ ܘܒܨܝܪܐ :* ܛܪ ܢܦܫܝ ܡܛܠ ܕܛܒ ܐܢܬ. ܦܪܘܩ ܠܥܒܕܟ ܐܢܬ ܐܠܗܐ
3 4 ܕܡܣܒܪ ܒܟ : * ܪܚܡ ܥܠܝ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܠܘܬܟ ܩܪܐ ܐܢܐ ܟܠ ܝܘܡ :* ܚܕܝ ܢܦܫܗ ܕܥܒܕܟ.
5 ܡܛܠ ܕܠܘܬܟ ܡܪܝܐ ܐܪܝܡܬ ܢܦܫܝ : * ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܡܪܝܐ ܛܒ ܐܢܬ. ܘܣܓܝܐܐ ܗܝ
6 ܛܝܒܘܬܟ ܠܟܠ ܕܩܪܝܢ ܠܟ : * ܨܘܬ ܡܪܝܐ ܨܠܘܬܝ. ܘܫܡܥ ܩܠܐ ܕܒܥܘܬܝ :

Quia melior eſt una dies in atrio tuo quàm mille : optavi degere in domo Dei potiùs quàm degere in tabernaculo impiorũ. Quia educator noſter et adjutor noſter Dñs eſt Deus, miſericordiã & honorẽ dabit Dñs: et non cohibebit beneficia ſua ab his qui ambulãt in innocentia. Dñe Deus fortiſſime, beatꝰ homo qui ſperat in te. 11 12 13

PSAL. LXXXV.

Filiorum Corah. De compenſatione & ſalute factâ ipſis à Deo. Et Prophetia de Chriſto. Verſ. 25. 1

OBlectâſti te Domine terrâ tuâ, & reduxiſti captivitatem Jacob : Remiſiſti iniquitatẽ ſuam populo tuo, & operuiſti omnia peccata eorum : Tranſtuliſti omnẽ furorẽ tuũ, & avertiſti æſtũ iræ tuæ. Reduc nos Deus Servator noſter, & ceſſare fac indignationẽ tuam à nobis, Et ne in perpetuũ iraſcaris nobis, & ne ſerves iram tuam in generationẽ generationũ; Sed tu reſtitue nos, & vivifica nos, & populus tuꝰ lætabuntur in te. Oſtende nobis Dñe bonitatẽ tuã, & ſalutẽ tuam concede nobis : Ut audiamus quid loquatur Dñs Deus noſter. Loquitur enim pacem cum populo ſuo & cum juſtis ſuis, ne vertãt ſe retró. Proxima eſt ſalus ejus timentibus eum: habitare faciet gloriam ſuam in terra noſtra. Gratia & veritas occurrerunt nobis : & juſtitia & pax oſculabuntur nos. Fides germinabit è terra, & juſtitia proſpexit è cœlo. Etiam Dominus largietur beneficia ſua, & terra proferet proventus ſuos; Et juſtus coram eo ambulabit, ponetque in terra greſſus ſuos. 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14

PSAL. LXXXVI.

Davidis. Quum ædificavit domum Domino. Et prophetia de vocatione Gentium. Praterea oratio peculiaris juſti. Verſ. 33. 1

INclina Dñe aurẽ tuam, & exaudi me, quia pauper ſum ac inops. Cuſtodi animam meam, quia bonꝰ tu es. Libera ſervũ tuũ, tu Deꝰ, ſperantem in te. Miſerere mei Dñe, quoniã ad te clamabo ſingulis diebus. Exhilara animã ſervi tui, quoniã ad te Dñe levavi animã meam. Quoniam tu Domine bonus es, & copioſa eſt bonitas tua in omnes invocantes te : Auſculta Domine orationem meam, & audi vocem clamoris mei; 2 3 4 5 6

Verſio VULG. LAT.

11 Quia melior eſt dies una in atriis tuis
ſuper millia. Elegi abjectus eſſe in do-
mo Dei mei, magis quàm habitare in
12 tabernaculis peccatorū. Quia miſeri-
cordiam, & veritatē diligit Deus: gra-
13 tiam, & gloriā dabit Dn̄s. Non priva-
bit bonis eos, qui ambulant in inno-
centia: Dn̄e virtutū, Beatus homo, qui
ſperat in te.

1 In finem, filiis Core, Pſalmus.
LXXXIV.

2 BEnedixiſti, Domine, terram tuam:
3 avertiſti captivitatem Jacob. Remiſiſti
iniquitatem plebis tuæ : operuiſti
4 omnia peccata eorum. Mitigâſti
omnem iram tuam : avertiſti ab ira
5 indignationis tuæ. Converte nos, De⁹
ſalutaris noſter : & averte iram tuam
6 à nobis. Numquid in æternū iraſcêris
nobis? aut extendes iram tuam à ge-
7 neratione in generationem? Deus, tu
converſus vivificabis nos : & plebs
8 tua lætabitur in te. Oſtende nobis, Do-
mine, miſericordiā tuā : & ſalutare tuū
9 da nobis. Audiā quid loquatur in me
Dn̄s Deus : quoniā loquetur pacē in
plebē ſuā; Et ſuper ſanctos ſuos, & in
10 eos qui convertuntur ad cor. Verunta-
men prope timentes eū ſalutare ipſi⁹:
11 ut inhabitet gloria in terra noſtra. Mi-
ſericordia & veritas obviaverunt ſibi:
12 juſtitia & pax oſculatæ ſunt. Veritas de
terra orta eſt : & juſtitia de cœlo
13 proſpexit. Etenim Dn̄s dabit beni-
gnitatem: & terra noſtra dabit fructū
14 ſuum. Juſtitia ante eū ambulabit : &
ponet in via greſſus ſuos.

Oratio ipſi David. LXXXV.

1 INclina, Dn̄e, aurē tuā, & exaudi me :
2 quoniā inops & pauper ſum ego. Cu-
ſtodi animā meā, quoniā ſanctus ſū :
ſalvū fac ſervū tuū, Deus me⁹, ſperan-
3 tem in te. Miſerere meî, Dn̄e, quoniam
4 ad te clamavi totâ die: Lætifica animā
ſervi tui, quoniā ad te, Dn̄e, animam
5 meā levavi. Quoniā tu, Dn̄e, ſuavis, &
mitis, & multæ miſericordiæ omnib⁹
6 invocantibus te. Aurib⁹ percipe, Dn̄e,
orationem meā : & intende voci de-
precationis meæ.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

11 †Ὅτι κρείσσων ἡμέρα μία ἐν ταῖς αὐλαῖς σου,
ὑπὲρ χιλιάδας. †Ἐξελεξάμην (ζ) παραῤῥιπτεῖσθαι ἐν
τῷ οἴκῳ τοῦ (η) Θεοῦ μᾶλλον †ἢ οἰκεῖν με ἐν σκη-
12 νώμασιν ἁμαρτωλῶν. †Ὅτι ἔλεον καὶ ἀλήθειαν ἀγα-
πᾷ †κύριος, ὁ θεὸς †χάριν καὶ δόξαν δώσει. †Κύ-
13 ριος Οὐχ ὑστερήσει τὰ ἀγαθὰ (θ) τοῖς πορευομένοις
ἐν ἀκακίᾳ. †κύριε τῶν δυνάμεων, μακάριος ἄν-
θρωπος ὁ ἐλπίζων ἐπὶ σέ.

MS. A. (ζ) παραῤῥιπτεῖσθαι (η) Θεοῦ μου μᾶλλον ἢ
οἰκεῖν ἐν (θ) τοὺς πορευομένοις

1 Εἰς τὸ τέλος, τοῖς υἱοῖς Κορὲ ψαλμός.
πδʹ.

2 †ΕΥδόκησας κύριε τὴν γῆν σου, †(*) ἀπέστρεψας τὴν
3 αἰχμαλωσίαν Ἰακώβ. †Ἀφῆκας τὰς ἀνομίας τῷ
λαῷ σου, †ἐκάλυψας πάσας τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν.
4 ΔΙΑΨΑΛΜΑ. †Κατέπαυσας πᾶσαν τὴν ὀργήν σου,
5 †ἀπέστρεψας ἀπὸ ὀργῆς θυμοῦ σου. †Ἐπίστρεψον
ἡμᾶς ὁ θεὸς τῶν σωτηρίων ἡμῶν, †καὶ ἀπόστρεψον τὸν
6 θυμόν σου ἀφ' ἡμῶν. †Μὴ εἰς (α) τὸν αἰῶνα ὀργισθῇς
ἡμῖν; †ἢ διατενεῖς τὴν ὀργήν σου ἀπὸ γενεᾶς εἰς
7 γενεάν; †Ὁ θεὸς, σὺ ἐπιστρέψας ζωώσεις ἡμᾶς, †
8 καὶ ὁ λαός σου εὐφρανθήσεται ἐπὶ σοί. †Δεῖξον ἡμῖν
κύριε τὸ ἔλεός σου, †καὶ τὸ σωτήριόν (β) σου δῴης
9 ἡμῖν. †Ἀκούσομαι τί λαλήσει ἐν ἐμοὶ κύριος ὁ θε-
ός, †ὅτι λαλήσει εἰρήνην ἐπὶ τὸν λαὸν αὐτοῦ, †καὶ ἐπὶ
τοὺς ὁσίους αὐτοῦ, †καὶ ἐπὶ τοὺς ἐπιστρέφοντας πρὸς αὐ-
10 τὸν καρδίαν. †Πλὴν ἐγγὺς τῶν φοβουμένων αὐτὸν τὸ σω-
τήριον αὐτοῦ, †τοῦ κατασκηνῶσαι δόξαν ἐν τῇ γῇ ἡ-
11 μῶν. †Ἔλεος καὶ ἀλήθεια συνήντησαν, †δικαιοσύ-
12 νη καὶ εἰρήνη κατεφίλησαν. †Ἀλήθεια ἐκ τῆς γῆς ἀν-
έτειλε, †(γ) καὶ δικαιοσύνη ἐκ τοῦ οὐρανοῦ διέκυψε. †
13 Καὶ γὰρ ὁ κύριος δώσει χρηστότητα, †καὶ ἡ γῆ ἡμῶν
δώσει τὸν καρπὸν αὐτῆς. †Δικαιοσύνη (δ) ἐναντίον
14 αὐτοῦ προπορεύσεται, †καὶ θήσει εἰς ὁδὸν τὰ διαβή-
ματα αὐτοῦ.

MS. A. (*) ἐπέστρεψας (α) τοὺς αἰῶνας (β) σου κύριε
δῴης (γ) δικαιοσύνη (δ) ἐνώπιον αὐτοῦ

(α) Προσευχὴ τῷ Δαυίδ. πεʹ.

1 †ΚΛῖνον κύριε τὸ οὖς σου, καὶ (β) εἰσάκουσόν μου, †ὅτι
2 πτωχὸς καὶ πένης εἰμὶ ἐγώ. †Φύλαξον τὴν ψυχήν μου
ὅτι ὅσιός εἰμι, †σῶσον τὸν δοῦλόν σου (γ) ὁ θεὸς, τὸν ἐλ-
3 πίζοντα ἐπὶ σέ. †Ἐλέησόν με κύριε, ὅτι πρὸς σὲ κε-
4 κράξομαι ὅλην τὴν ἡμέραν. †Εὔφρανον τὴν ψυχὴν τοῦ
5 δούλου σου, †ὅτι πρὸς σὲ κύριε ἦρα τὴν ψυχήν μου. †Ὅτι
σὺ κύριε χρηστὸς καὶ ἐπιεικὴς, †καὶ πολυέλεος πᾶσι
6 τοῖς ἐπικαλουμένοις σε. †Ἐνώτισαι κύριε τὴν προσ-
ευχήν μου, †καὶ πρόσχες τῇ φωνῇ τῆς δεήσεώς μου.

MS. A. (α) Τῷ Δαυίδ. (β) ἐπάκουσόν (γ) ὁ θεός μου,

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

10 *Quia melior eſt dies una in a-* 11
triis tuis, ſuper (f) millia. 11 *Elegi*
abjici in domo (g) Dei magis quā
habitare in tabernaculis peccatorū.
12 *Quia (b)miſericordiā &*[f]*ve-* 12
ritatē diligit Domin⁹ Deus:[g]*gra-*
tiā & gloriā dabit Dominus. 13(i)
[h]*Nō probibebit bona ambulātib⁹* 13
in innocentia: Domine virtutū, Bea-
tus homo, qui ſperat in te.
In finem, filiis Core Pſalmus [a]. 1
LXXXIV.
1[b]B*Enedixiſti, (a)Domine, ter-* 2
ram tuā: avertiſti captivitatem Ja-
cob. 2 *Remiſiſti iniquitates (b) plebi* 3
tuæ; operuiſti omnia peccata eorum.
DIAPSALMA. 3 *Sedâſti omnem* 4
iram tuam:(c)avertiſti ab ira indi-
gnationis tuæ. 4 *Converte nos,* [c] 5
De⁹(d)ſanitatum noſtrarum: & a-
verte iracundiam tuā à nobis. 5 *(e)*
[d] *Numquid in æternum iraſcêris* 6
nobis? aut intendes iram tuam à
generatione in generationem? 6[e]
Deus, tu (f) convertens vivificabis 7
nos: & plebs tua lætabitur in te. 7 *O-* 8
ſtende nobis, Domine, miſericordiam
tuam : & ſalutare tuum da nobis
[f].8*(g)Audiam quid loquetur in* 9
me Dominus [g] *Deus: quoniam lo-*
quetur pacem in plebem ſuam : 9
Et ſuper ſanctos ſuos, & in eos qui
(h)convertunt [h]*cor ad ipſum.* 10
Veruntamen prope timentes eum ſa- 10
lutare ipſius : ut inhabitet gloria in
terra noſtra. 11 *Miſericordia, et ve-* 11
ritas(i)occurrerunt : juſtitia, et pax
oſculatæ ſunt. 12 *Veritas de terra* 12
orta eſt : & juſtitia de cælo proſpe-
xit. 13 *Etenim Domin⁹ dabit benigni-* 13
tatē : & terra[†]*noſtra dabit fru-*
ctū ſuum: 14 *Juſtitia ante eū præi-* 14
bit, &[i]*ponet in via greſſ⁹ (k)ej⁹.*
Oratio ipſi David. LXXXV.
I*Nclina, Domine, aurē tuā, et ex-* 1
1 *audi me: quoniā egen⁹ & pauper*
ſum ego. 2 *Cuſtodi animā meā, quo-* 2
niā ſanctus ſum: ſalvū fac ſervum
tuū,[a]*Deus, ſperantē in te.* 3 *Mi-* 3
ſerere mei, Domine, quoniam ad te
(a)clamabo (b) totâ die. Lætifica 4
animam ſervi tui: quoniā ad te, Do-
mine, levavi animā meā. 4 *Quoniā* 5
tu, Domine, [b]*ſuavis, (c)ac mitis,*
(d) et multæ miſericordiæ omnibus
invocantibus te. 5 *Auribus percipe,* 6
Domine, orationem meam: & in-
tende voci deprecationis meæ.

Verſio ÆTHIOPICA.

እስመ:ትኄይስ: ዕለት:ዕለት: ውስተ:አዕጻ 10
ደክ:እምእእላፍ::=: አብደርኩ:እትገደፍ: 11
ውስተ: ቤተ:እግዚአብሔር:: እምእንበር:
ውስተ:ቤተ: ኃጥአን::=: እስመ:ጽድቀ:ወ 12
ምጽዋተ:ያበድር : እግዚአብሔር:: እግዚ
አብሔር:ይሁብ:ክብረ:ወሞገሰ::=: እግዚ 13
አብሔር:ኢያስተቴንሶሙ:እምበረከቱ:እለ:
የሐውሩ:በየዋሃት:: እግዚኦ:አምላከ:ኃያ
ላን:ብፁዕ:ብእሲ:ዘተወከለ:ኪያከ::

ፍጻሜ:ዘደቂቀ:ቆሬ:መዝሙር:ጸሎት:
ዘደዊት::

፹፬ ተሣሀልከ: እግዚኦ:ምድረከ:: ወሜጥ 1
ከ : ፄዋሁ:ለያዕቆብ::=: ወኀደገ:ኃጢአ 2
ቶሙ : ለሕዝብከ:: ወከደንከ : ኵሎ:አበ
ሳሆሙ::=: ወኀደገ : ኵሎ : መዐተከ:: 3
ወሜጥከ:መቅሠፍተ: መዐትከ::=: ሚጠ 4
ነ:አምላክነ : ወመድኃኒነ:: ወሚጥ:መዐተ
ከ : እምኔነ::=: ወለዓለምሰ : ኢትትመዐ 5
ዐነ:: ወኢታኑኅ:መዐተከ:ለዐለ:ትውልደ:
ትውልድ::=: አንተ: አምላክነ : ተመየጠ 6
ነ:ወአሕይወነ:: ወሕዝብከኒ:ይትፌሣሕ:
ብከ::=: አርእየነ : እግዚኦ : ሣህለከ:: 7
ወሀበነ:አምላክነ:አድኅኖተከ::=: አጽም 8
እ: ዘይነበኒ : እግዚአብሔር : አምላኪየ::
እስመ : ይነብብ : ሰላመ : ላዕለ : ሕዝቡ:: 9
ላዕለ: ጻድቃኑ:ወላዕለ: እለ:ይሜይጡ:ልበ
ሙ : ኀቤሁ::=: ወባሕቱ:ቅሩብ: አድኅኖ 10
ቱ:ለእለ:ይፈርህዎ:: ከመ:ይኅድር:ስብሐ
ቲሁ:ውስተ: ምድርነ::=: ሣህል : ወርት 11
ዕ:ተራከባ:: ጽድቅ:ወሰላም:ተሰዐማ::=:
ርትዕሰ : እምድር : ሠረጸት:: ወጽድቅኒ: 12
እምሰማይ:ኀወጸ::=: ወእግዚአብሔርኒ: 13
ይሁብ: ምሕረቶ:: ወምድርኒ : ትሁብ:
ፍሬሃ::=:ጽድቅ:የሐውር:ቅድሜሁ: 14
ወየኀድግ : ውስተ : ፍኖተ : አሰሮ::=:

ጸሎተ:ዘደዊት::

፹፭ አጽምእ:እግዚኦ:እዝነከ:ኀቤየ:ወስ 1
ምዐኒ:: እስመ:ነደይ: ወምስኪን:አነ::=:
ዕቀብ:ለነፍስየ:እስመ:የዋህ:አነ::አድኅኖ: 2
ለገብርከ:አምላኪየ:ዘተወከለ:ኪያከ::=:
ተሣሀለኒ:እግዚኦ: እስመ: ኀቤከ: አጸርኅ: 3
ኵሎ : እሚረ:: ወአስተፌሥሐ : ለነፍሰ:
ገብርከ:: እስመ:ኀቤከ: አንቀዐደውኩ:ነፍ
ስየ::=: እስመ:መሐሪ:አንተ:እግዚኦ:ወመ 4
ስተሣህል:: ወብዙኅ: ሣህልከ: ለኵሎሙ:
እለ:ይጼውዑከ::=: አጽምእ: እግዚኦ: 5
ጸሎትየ::ወነጽር:ቃለ:ስእለትየ::=:

INTERP. ÆTHIOP. [f]eleemoſynam diligit [g] gloriam & gratiam [h]Dominus benedictione ejus non privabit eos, qui ambulant *PSAL. lxxxiv.* [a]Oratio Davidis. [b]Propiti⁹ fuiſti Dn̄e, terræ tuæ: [c] Deus noſter: & Redemptor noſter, & averte [d]Et ne iraſcaris nobis in æternum, neque extendas [e] Tu Deus noſter convertes nos, & vivificabis [f] Deus noſter. [g]Deus meus : [h] cor ſuum [i]etiam dabit [i]remittet in *PSAL. lxxxv.* [a] Deus meus [b] miſericors es, ac miſerator,

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* فان يوما واحدا في ديارك * افضل من الالوف * لذلك احسب ان القي في بيت الاهي افضل من 11
ان اسكن في مظال الخطاة * لان الرب يحب الرحمة والعدل * الله يعطي المجد والنعمة * الذين 12
يسلكون بالدعة * لا يعدمهم الرب الخيرات * الرب اله القوات * طوبي للانسان المتوكل عليه * الليلويا * 13
* المزمور الرابع والثمانون * لبني قورح * وهو * كز * استيخن * سررت يا رب 1 2
بارضك * رددت سبي يعقوب * غفرت لشعبك اثامهم * سترت جميع خطاياهم * سكنت جميع غضبك * 3 4
رجعت عن غضب سخطك * اردنا يا اله خلاصنا * واصرف سخطك عنا * ولا تغضب علينا الي 5 6
الابد * ولا تمد غضبك من جيل الي جيل انت يا الله * وترجع تحيينا وشعبك يفرح بك * اظهر لنا يا 7 8
رب رحمتك * واعطنا خلاصك * سأسمع ما يتكلم به الرب الاله في * لانه يتكلم بالسلامة علي شعبه * 9
وعلي قديسيه * وعلي المنصرفين اليه بكل قلوبهم * بل خلاصه قريب من كل الذين يتقونه ليسكن 10
المجد في ارضنا * الرحمة والعدل تلاقيا * العدل والسلامة تقابلا * الحق من الارض اشرق * والعدل 11 12
من السماء اطلع * لان الرب يعطي الخيرات * وارضنا تعطي ثمرها * العدل يسبق سائرا امامه * 13 14
ويضع في السبيل خطواته * الليلويا * * المزمور الخامس والثمانون *
* لداود صلاة * وهو * لد * استيخن * انصت الي يا رب بسمعك * واستجب لي فاني مسكين وبائس 1
* احفظ نفسي لاجل صلاحك * الهي خلص عبدك الراجي لك * ارحمني يا رب فاني صرخت اليك 2 3
النهار كله * فرح نفس عبدك فاني قد رفعت نفسي اليك يا رب * لانك انت يا رب صالح ووديع * 4 5
وكثير الرحمة لكل الصارخين اليك * انصت يا رب الي صلاتي * واصغ الي صوت طلبتي * 6

11 *Nam dies una in atriis tuis, melior eſt millibus. Propterea elegi abjici in domum Dei mei, potiùs quàm habitare in tabernaculis peccatorum.* 12 *Quia Dominus diligit miſericordiam & æquitatem, Deus dabit gloriam & gratiam; eos qui ambulant cum manſuetudine, non privabit Dominus bonis.* 13 *Dominus eſt Deus virtutum; beatitudo homini qui confidit in eo. Alleluja.*

PSAL. LXXXIV.
1 Filiis Coræ. Verſ. 27.

2 O*Blectatus es, O Domine, terrâ tuâ :* 3 *reduxiſti captivitatem Jacob: Remiſiſti populo tuo iniquitates eorum : operuiſti omnia peccata eorum:* 4 *Sedâſti omnem furorem tuum, retraxiſti te ab ira indignationis tuæ.* 5 *Reduc nos O Deus ſalutis noſtræ, & averte iram tuam à nobis.* 6 *Et ne iraſcaris nobis in perpetuum, & ne extendas iram tuam à generatione in generationem, O Deus.* 7 *Et reverſus liberes nos, & populus tuus lætabitur in te.* 8 *Manifeſta nobis, O Domine, miſericordiam tuam, & da nobis ſalutem tuam.* 9 *Audiam quod loquetur Dominus Deus in me; Nam loquetur pacem de populo ſuo, & de ſanctis ſuis, & de tendentibus ad eum ex totis cordibus ſuis.* 10 *Imò ſalus ejus proxima eſt omnibus qui colunt eum, ut habitet gloria in terra noſtra.* 11 *Miſericordia, & æquitas ſibi invicem occurrerunt : juſtitia & pax viderunt ſe facie ad faciem.* 12 *Veritas de terra emicuit, & æquitas de cœlo proſpexit.* 13 *Quia Dominus dabit bona, & terra noſtra dabit fructus ſuos:* 14 *Juſtitia præcedet protegens ante eum, & ponet in via greſſus ſuos. Alleluja.*

1 Davidi, Oratio. Verſ. 34

I*Ntende ad me, O Domine, auditū tuum, & exaudi me, quia pauper ſum et egen⁹.* 2 *Cuſtodi animā meā propter bonitatem tuā. De⁹ mi, ſalva famulū tuū ſperantem te.* 3 *Miſerere mei, O Domine, quia clamavi ad te die totâ.* 4 *Lætifica animam ſervi tui, quia jā levavi animā meā ad te, O Domine.* 5 *Quoniā tu O Domine, bon⁹ es ac mitis, et affluis miſericordiâ in omnes clamātes ad te.* 6 *Auſculta O Domine orationē meam, et intende voci deprecationis meæ.*

תהלים : פז פח

deos inter tu ſicut Non .me exaudies quia : te invocabo meæ anguſtiæ die In
7 בְּיוֹם צָרָתִי אֶקְרָאֶךָּ כִּי תַעֲנֵנִי׃ אֵין־כָּמוֹךָ בָאֱלֹהִים 8
, venient feciſti quas gentes Omnes .tua opera ſecundū nec , Domine
אֲדֹנָי וְאֵין כְּמַעֲשֶׂיךָ׃ כָּל־גּוֹיִם ׀ אֲשֶׁר עָשִׂיתָ יָבוֹאוּ ׀ 9
magnus Quoniam .tuum nomen glorificabunt &,Domine *tuas facies ad ſe incurvabunt* &
וְיִשְׁתַּחֲווּ לְפָנֶיךָ אֲדֹנָי וִיכַבְּדוּ לִשְׁמֶךָ׃ כִּי־גָדוֹל 10
,tuam viam Domine me Doce .*tu* ſolus Deus tu ,mirabilia *faciens* & , tu
אַתָּה וְעֹשֵׂה נִפְלָאוֹת אַתָּה אֱלֹהִים לְבַדֶּךָ׃ הוֹרֵנִי יְהוָה ׀ דַּרְכֶּךָ 11
tibi Confitebor .tuum nomen *timendum ad* meum cor uni : tua veritate in ambulabo
אֲהַלֵּךְ בַּאֲמִתֶּךָ יַחֵד לְבָבִי לְיִרְאָה שְׁמֶךָ׃ אוֹדְךָ ׀ 12
.ſeculum in tuum nomen glorificabo & : meo corde toto in mi Deus Domine
אֲדֹנָי אֱלֹהַי בְּכָל־לְבָבִי וַאֲכַבְּדָה שִׁמְךָ לְעוֹלָם׃
.inferiori *fovea* ex meā animam eruiſti & : me ſuper magna tua miſericordia Nam
כִּי־חַסְדְּךָ גָּדוֹל עָלָי וְהִצַּלְתָּ נַפְשִׁי מִשְּׁאוֹל תַּחְתִּיָּה׃ 13
quæſierunt *terribilium cœtus* & ,me adverſum ſurrexerunt ſuperbi Deus
אֱלֹהִים ׀ זֵדִים קָמוּ עָלַי וַעֲדַת עָרִיצִים בִּקְשׁוּ 14
,miſericors Deus Domine tu Et .ſe coram te poſuerunt non & : meam animam
נַפְשִׁי וְלֹא שָׂמוּךָ לְנֶגְדָּם׃ וְאַתָּה אֲדֹנָי אֵל־רַחוּם 15
,me ad Reſpice .veritate & ,miſericordia multus & , *narium* longus : *gratioſus* &
וְחַנּוּן אֶרֶךְ אַפַּיִם וְרַב־חֶסֶד וֶאֱמֶת׃ פְּנֵה אֵלַי 16
.tuæ ancillæ filium ſerva & : tuo ſervo tuam fortitudinem da ,mei miſerere &
וְחָנֵּנִי תְּנָה־עֻזְּךָ לְעַבְדֶּךָ וְהוֹשִׁיעָה לְבֶן־אֲמָתֶךָ׃
:afficiantur pudore & ,me habentes odio videant & ,bonitate in ſignum mecum Fac
עֲשֵׂה־עִמִּי אוֹת לְטוֹבָה וְיִרְאוּ שֹׂנְאַי וְיֵבֹשׁוּ 17
.me es conſolatus & ,me adjuviſti Domine tu quoniam
כִּי־אַתָּה יְהוָה עֲזַרְתַּנִי וְנִחַמְתָּנִי׃

PSAL. LXXXVII. פז

Diligens .*ſanctitatis* montibus in ejus *Fundamentum* .cantici cantus Corach Filiis
1 לִבְנֵי־קֹרַח מִזְמוֹר שִׁיר יְסוּדָתוֹ בְּהַרְרֵי־קֹדֶשׁ׃ אֹהֵב 2
dicta Glorioſa .Jahacob *habitaculis omnibus præ* : Sijon portas Dominus
יְהוָה שַׁעֲרֵי צִיּוֹן מִכֹּל מִשְׁכְּנוֹת יַעֲקֹב׃ נִכְבָּדוֹת מְדֻבָּר 3
,me ſcientibus Babel & ,*Rahab* faciam Memorare .Selah Dei civitas : te *in*
בָּךְ עִיר הָאֱלֹהִים סֶלָה׃ אַזְכִּיר ׀ רַהַב וּבָבֶל לְיֹדְעָי 4
Sijon *ipſi* Et .ibi eſt natus iſte : Æthiopia cum Tyrus & , Peleſtina ecce
הִנֵּה פְלֶשֶׁת וְצוֹר עִם־כּוּשׁ זֶה יֻלַּד־שָׁם׃ וּלְצִיּוֹן ׀ 5
Dominus .altiſſimus eam *firmabit* ipſe & : ea in eſt natus vir & Vir ,dicetur
יֵאָמַר אִישׁ וְאִישׁ יֻלַּד־בָּהּ וְהוּא יְכוֹנְנֶהָ עֶלְיוֹן׃ יְהוָה 6
cantores Et .Selah , ibi eſt natus iſte : populos *ſcribendo in* numerabit
יִסְפֹּר בִּכְתוֹב עַמִּים זֶה יֻלַּד־שָׁם סֶלָה׃ וְשָׁרִים 7
.te in mei fontes omnes : tibicines ſicut
כְּחֹלְלִים כָּל־מַעְיָנַי בָּךְ׃

PSAL. LXXXVIII. פח

reſpondendum ad , Machalath ſuper victori Corach filiis cantus Canticum
שִׁיר מִזְמוֹר לִבְנֵי־קֹרַח לַמְנַצֵּחַ עַל־מָחֲלַת לְעַנּוֹת 1
, clamavi *interdiu* meæ ſalutis Deus Domine .Ezrachitæ Heman ipſi *Maſchil*,
מַשְׂכִּיל לְהֵימָן הָאֶזְרָחִי׃ יְהוָה אֱלֹהֵי יְשׁוּעָתִי יוֹם־צָעַקְתִּי 2
.meū clamorē ad tuā aurem inclina : mea oratio *tuas facies ad* Intret .te coram nocte in
בַלַּיְלָה נֶגְדֶּךָ׃ תָּבוֹא לְפָנֶיךָ תְּפִלָּתִי הַטֵּה־אָזְנְךָ לְרִנָּתִי׃ 3
.*pertigerunt* ſepulchrum ad *meæ vitæ* & : mea anima malis in eſt ſaturata Quia
כִּי־שָׂבְעָה בְרָעוֹת נַפְשִׁי וְחַיַּי לִשְׁאוֹל הִגִּיעוּ׃ 4

תרגום TARGUM.

7 בְּיוֹמָא דְעָקְתִי אֶקְרֵי לְוָתָךְ אֲרוּם אַתְּ עָנֵי יָתִי׃
8 לֵית בַּר מִנָּךְ בְּאַנְגְּלֵי מְרוֹמָא יְיָ וְלֵית כְּעוּבָדָךְ׃
9 כָּל עַמְמַיָּא דִי עֲבַדְתָּ יֵיתוּן וְיִסְגְּדוּן קֳדָמָךְ יְיָ
10 וְיִתְּנוּן אִיקַר לִשְׁמָךְ׃ אֲרוּם רַבָּא אַתְּ אֱלָהָא וְעָבֵד
11 פְּרִישָׁן אַתְּ הוּא אֱלָהָא בִּלְחוֹדָךְ׃ אַלֵּף יָתִי יְיָ
אוֹרְחָתָךְ אֶתְהַלֵּךְ בְּקוּשְׁטָךְ יַחֵד לִבְּבִי לְמִדְחַל
12 שְׁמָךְ׃ אוֹדֶה קֳדָמָךְ יְיָ אֱלָהִי בְּכָל לִבְּבִי וְאַיְקַר
13 שְׁמָךְ לַעֲלָם׃ אֲרוּם טוּבָךְ רַב עֲלַי וּפַצֵּיתָא נַפְשִׁי
14 מִשְּׁיוֹל אַרְעִיתָא׃ אֱלָהָא זֵדוֹנִין קָמוּן עֲלַי
וְתַקִּיפִין תְּבַעוּ נַפְשִׁי וְלָא שַׁוִּיאוּ יָתָךְ לְקִבְלְהוֹן׃
15 וְאַתְּ יְיָ אֱלָהָא רַחֲמָנָא וְחַנָּנָא מְרַחֵק רְגַז וּמַסְגֵּי
16 לְמֶעְבַּד טַבְוָן וּקְשׁוֹט׃ אִתְפְּנֵי לְוָתִי וְחוּס עֲלַי
17 הַב עוּשְׁנָךְ לְעַבְדָךְ וּפְרוֹק לְבַר אַמְתָךְ׃ עֲבֵד
עִמִּי אָת לְטָבָא בְּזִמְנָא דְעָיֵל שְׁלֹמֹה בְּרִי יַת
אֲרוֹנָא בְּבֵית מַקְדְּשָׁא יִתְפַּתְּחָן תַּרְעַיָּא
אַמְטוּלְתִי וְיֶחֱמוּן סָנְאַי אֲרוּם שְׁבַקְתָּא לִי
וְיִבַּהֲתוּן וִידוּן אֲרוּם אַתְּ יְיָ סַיַּעְתַּנִי וְנַחֲמְתַּנִי׃

פז

1 עַל יְדֵיהוֹן דִבְנֵי קֹרַח אִתְאֲמַר שִׁירְתָא דְמִתְיַסַּד
2 עַל פּוּם אֲבָהָתָא דְמִן לְקַדְמִין׃ רָחֵם יְיָ מַעֲלָנֵי
בָּתֵּי מֶדְרְשַׁיָּא דִקְבִיעָן בְּצִיּוֹן מִכָּל בָּתֵּי כְנִישָׁתָא
3 דְבֵית יַעֲקֹב׃ מִלִּין דִיקָר אִתְמַלַּל עֲלָךְ קַרְתָּא
4 דֶאֱלָהָא לְעָלְמִין׃ אַדְכָּרוּ תוּשְׁבַּחְתָּךְ מִצְרָאֵי
וּבַבְלָאֵי לְיָדְעֵי יָתָךְ הָא פְלִשְׁתָּאֵי וְצוֹרָאֵי עִם
5 כּוּשָׁאֵי דֵין מַלְכָּא אִתְרַבָּא תַמָּן׃ וּלְצִיּוֹן יִתְאֲמַר
דָּוִד מַלְכָּא וּשְׁלֹמֹה בְרֵיהּ אִתְרַבָּא בְגַוָּהּ וֶאֱלָהָא
6 הוּא יְשַׁכְלְלִנַּהּ לְעֵילָא׃ יְיָ עַל סִפְרָא דִי מְכַתְּבִין
בֵּיהּ חוּשְׁבַּן כָּל עַמְמַיָּא דֵין מַלְכָּא אִתְרַבָּא תַמָּן
7 לְעָלְמִין׃ וְאָמְרֵי שִׁירִין עַל חִנְגַּיָּא כָּל מִינֵי
תוּשְׁבְּחָן עַל קוּרְבָּנָא מִתְאַמְּרִין בְּגַוָּךְ׃

פח

1 שִׁירָא וְתוּשְׁבַּחְתָּא עַל יְדֵיהוֹן דִבְנֵי קֹרַח עַל
צְלוֹתָא לְשַׁבָּחָא שִׂכְלָא טָבָא עַל יְדוֹי דְהֵימָן
2 יַצִּיבָא׃ יְיָ אֱלָהָא פוּרְקָנִי יֵימָם קַבְלֵית בְּלֵילְיָא
3 צְלוֹתִי לְקִבְלָךְ׃ תֵּיעוֹל קֳדָמָךְ צְלוֹתִי אַצְלֵי אוּדְנָךְ
לְבָעוּתִי׃ נ״א יֵיתֵי קֳדָמָךְ צְלוֹתִי עַל עַמָּךְ בֵּית
יִשְׂרָאֵל וְהַט אוּדְנָךְ לְתוּשְׁבַּחְתִּי דְשַׁבְּחֵית
4 לִיקָרָךְ׃] אֲרוּם שָׂבְעַת בְּבִישָׁן נַפְשִׁי וְחַיַּי לִשְׁיוֹל מְטוֹ׃

PARAPH. CHALD Verſ. Lat.

In die afflictionis meæ clamabo ad te, quo- 7
niā tu reſpondebis mihi. Non eſt præter te 8
in angelis *excelſis* Dñe, nec quicquam eſt
ſicut opera tua. Omnes populi quos feciſti 9
venient, et adorabunt coram te Dñe, et da-
bunt gloriā nomini tuo. Quoniam magn⁹ es 10
tu De⁹, et faciens mirabilia, tu *ipſe* De⁹ ſol⁹.
Doce me Dñe viā tuā, ambulabo in verita- 11
te tua: uni cor meū ut timeat nomen tuum.
Confitebor *coram te* Dñe Deus me⁹ in toto 12
corde meo, et honorificabo nomen tuum in
æternum. Quoniā benignitas tua magna eſt 13
ſuꝑ me, et liberâſti animā meā de inferno
inferiori. De⁹ ſuperbi inſurrexerunt adver- 14
ſùm me, et *fortes* quæſiverunt animā meam,
& non poſuerunt te in conſpectu ſuo. Et tu 15
Dñe De⁹ miſerator et miſericors, alienus ab
ira, et multiplicia conferens beneficia et ve-
ritatē. Reſpice in me et miſerere mei, da for- 16
titudinē tuam ſervo tuo, et redime filiū an-
cillæ tuæ. Fac mecum ſignū ad bonū, *tem-* 17
pore quo introducturus fuerit Selomoh filius
me⁹ arcam in domū ſanctuarii, aperiant ſe
portæ mei gratia; ut videant odio habentes
me ꝙ ignoveris mihi: et erubeſcant et con-
fiteantur quoniam tu es Dominus qui auxi-
liatus es mihi, et conſolatus es me.

Per manus filiorum Korach *dictū* eſt can- 1
ticum fundatum in ore patrum priſcorum.

PSAL. LXXXVII.

DIligit Dñs portas *ſcholarum* ſtructas in 2
Sion, pluſquàm omnes domos eccleſiarum
dom⁹ Jacob. Verba honorifica dicta ſunt de 3
te civitas Dei in æternum. Commemorant 4
laudes tuas Ægyptii et Babylonii his qui ſci-
unt te, ecce Paleſtini et Tyrii cum Æthiopi-
bus, ubi rex iſte *educatus* eſt. Proinde Sion 5
dictum eſt, David rex & Selomoh fili⁹ ejus
educatus eſt intra eam, & Deus *ipſe* funda-
bit eam in ſublimitatē. Dñe in libro in quo 6
ſcriptæ ſunt computationes omniū populo-
rum, hic rex *educatus* eſt ibi in æternum.
Et dicunt cantica in choris, omnes ſpecies 7
laudis ſuꝑ ſacrificia dicuntur in medio tui.

Canticum et hymnus per manus filiorum 1
Korach ad laudandum intellectu bono per
manus Heman indigenæ.

PSAL. LXXXVIII.

DOmine De⁹ redemptionis meæ, ꝑ diem 2
clamavi; in nocte [*verò*] oratio mea coram
te. Ingrediatur corā te oratio mea: inclina 3
aurē tuā ad precē meā. *Targū aliud*: *Veni-*
at coram te oratio mea *pro populo tuo dom⁹*
Iſrael: *et* inclina aurē tuā ad *hymnū meū*,
quo laudes dixi gloriæ tuæ. Quoniā ſatiata 4
eſt malis anima mea, et vita mea ad inferos
proximè acceſſit.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

7 8 ܒܝܘܡܐ ܕܐܘܠܨܢܝ ܩܪܝܬܟ ܘܥܢܝܬܢܝ.* ܠܝܬ ܕܕܡܐ ܠܟ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܘܠܝܬ ܕܐܝܟ ܥܒܕܝܟ:
9 * ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܥܒܕܬ. ܢܐܬܘܢ ܘܢܣܓܕܘܢ ܩܕܡܝܟ ܡܪܝܐ: ܘܢܫܒܚܘܢ ܠܫܡܟ * ܡܛܠ
10 11 ܕܪܒ ܐܢܬ. ܥܒܕ ܐܢܬ ܬܕܡܪܬܐ ܐܢܬ ܐܠܗܐ ܒܠܚܘܕܝܟ: * ܚܘܝܢܝ ܡܪܝܐ ܐܘܪܚܟ ܘܐܗܠܟ
12 ܒܩܘܫܬܟ. ܢܚܕܐ ܠܒܝ ܒܐܝܠܝܢ ܕܕܚܠܝܢ ܠܫܡܟ: * ܐܘܕܐ ܠܟ ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ ܡܢ ܟܠܗ
13 ܠܒܝ. ܘܐܫܒܚ ܫܡܟ ܠܥܠܡ: * ܡܛܠ ܕܛܝܒܘܬܟ ܣܓܝܐܬ ܥܠܝ. ܘܦܨܝܬ ܢܦܫܝ
14 ܡܢ ܫܝܘܠ ܬܚܬܝܬܐ: * ܐܠܗܐ ܥܘܠܐ ܩܡܘ ܥܠܝ. ܘܟܢܘܫܬܐ ܕܥܫܝܢܐ ܒܥܘ ܢܦܫܝ
15 ܘܠܐ ܐܬܕܟܪܘܟ: * ܘܐܢܬ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܡܪܚܡܢܐ ܘܡܪܚܦܢܐ. ܢܓܝܪ ܪܘܚܐ ܘܣܓܝ ܛܝܒܘܬܐ
16 17 ܘܩܘܫܬܐ: * ܐܬܦܢܐ ܠܘܬܝ ܘܐܬܪܚܡ ܥܠܝ. ܗܒ ܚܝܠܐ ܠܥܒܕܟ ܘܦܪܘܩ ܠܒܪ ܐܡܬܟ: * ܘܥܒܕ
ܥܡܝ ܐܬܐ ܠܛܒܬܐ. ܢܚܙܘܢ ܣܢܐܝ ܘܢܒܗܬܘܢ: ܕܐܢܬ ܡܪܝܐ ܥܕܪܬܢܝ ܘܒܝܐܬܢܝ.

1 * ܡܙܡܘܪܐ * ܕܒܢܝ * ܥܠ ܦܘܪܩܢܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܦܬܓܡܐ ܝܓ.
2 ܫܬܐܣܘܗܝ ܒܛܘܪܗ ܩܕܝܫܐ: * ܪܚܡ ܡܪܝܐ ܠܬܪܥܝܗ ܕܨܗܝܘܢ. ܝܬܝܪ ܡܢ ܟܠܗܘܢ
3 4 ܡܫܟܢܘܗܝ ܕܝܥܩܘܒ: * ܫܒܝܚܬܐ ܐܬܡܠܠ ܥܠܝܟܝ ܡܕܝܢܬܗ ܕܐܠܗܢ. * ܕܝܦܣܠܡܐ * ܐܬܕܟܪ
ܠܪܗܒ ܘܠܒܒܝܠ ܕܝܕܥܝܢ ܠܝ: ܗܐ ܦܠܣܛܝܢܝܐ ܘܨܘܪ ܘܥܡܐ ܕܟܘܫܝܐ. ܗܢܐ ܐܬܝܠܕ ܬܡܢ:
5 6 * ܘܠܨܗܝܘܢ ܐܬܐܡܪ. ܕܓܒܪܐ ܓܢܒܪܐ ܐܬܝܠܕ ܒܗ ܘܗܘ ܐܫܬܐܣܗ: * ܡܪܝܐ ܢܡܢܐ ܒܟܬܒܐ
7 ܠܥܡܡܐ. ܗܢܐ ܐܬܝܠܕ ܬܡܢ: * ܪܘܪܒܢܐ ܕܥܡܪܝܢ ܒܟܝ ܢܚܕܘܢ. ܘܟܠ ܕܡܬܡܟܟܝܢ ܒܟܝ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܒܢܝ * ܥܠ ܥܡܐ ܕܒܒܒܝܠ. ܦܬܓܡܐ ܡ.
1 2 * ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܦܘܪܩܢܝ. ܒܐܝܡܡܐ ܩܥܝܬ ܘܒܠܠܝܐ ܩܕܡܝܟ:* ܬܥܘܠ ܩܕܡܝܟ ܨܠܘܬܝ.
3 ܘܪܟܢ ܐܕܢܟ ܠܒܥܘܬܝ: * ܡܛܠ ܕܣܒܥܬ ܢܦܫܝ ܒܝܫܬܐ. ܘܚܝܝ ܠܓܘܡܨܐ ܡܛܝܘ:

In die anguſtiæ meæ vocavi te, & reſpondi- 7
ſti mihi. Non eſt ſimilis tibi Dñe De⁹, & non 8
eſt quid ſimile operibus tuis. Cunctæ gentes 9
quas feciſti, venient & adorabunt te Dñe, &
glorificabunt nomen tuum: Quia magnus es 10
tu: edis miracula tu Deus ſolus. Præbe mihi 11
Dñe viam tuam, & ambulabo in veritate: læ-
tabitur cor meum in his qui timent nomen
tuum. Confitebor tibi Dñe Deus meus ex 12
toto corde meo, & laudabo nomen tuum in
ſeculum: Quia bonitas tua abundavit erga 13
me, & eripuiſti animam meam ex fovea in-
fima. Deus, iniqui inſurrexerunt adverſùm 14
me, & cœtus potentium quæſierunt animā
meam, nec recordati ſunt tui. At tu Domine 15
Deus miſericors & benignus, longanimis,
& copioſus bonitate ac veritate, Con- 16
vertere ad me & miſerere mei: da robur ſer-
vo tuo, & libera filium ancillæ tuæ: Et fac 17
erga me ſignum bonum, ut videant oſores
mei & confundantur, quòd tu Domine juve-
ris me, ſiſque me conſolatus.

PSAL. LXXXVII.

De liberatione Jeruſalem. Verſ. 13. 1

FUndamenta ejus in monte ſuo ſancto; Dile- 2
xit Dñs portas Sion magis quàm cuncta ta- 3
bernacula Jacob. Præclara dicta ſunt in te
civitas Dei noſtri. **Diapſal.** Memor eſto 4
Rahab & Babylonis agnoſcentium me. En
Palæſthini & Tyrus, ac populus Æthiopum:
iſte natus eſt ibi. Et Sioni dictum eſt, Vir gi- 5
gas natus eſt in ea: & ipſe firmavit illam.
Dñs recenſebit in libro populos: iſte natus eſt 6
ibi. Magnates qui commorantur in te, gaude- 7
bunt: & omnes qui humiliati ſunt in te.

PSAL. LXXXVIII.

De populo qui erat in Babel. Verſ. 40. 1

DOmine Deus ſalutis meæ, die clamavi ac
nocte coram te. Intret in conſpectum tu- 2
um oratio mea, & inclina aurem tuam preci
meæ; Quoniā ſaturata eſt anima mea malis, & 3
vita mea ad foveam devenit.

Verſio VULG. LAT.

7 In die tribulationis meæ clamavi ad
8 te: quia exaudîſti me. Non eſt ſimilis
tuî in diis,Dñe; & non eſt ſecundùm
9 opera tua. Omnes gentes quaſcunq;
feciſti, venient,& adorabunt corã te,
Dñe: & glorificabunt nomen tuum.
10 Quoniã magn⁹ es tu,& faciens mira-
11 bilia: tu es Deus ſol⁹. Deduc me,Dñe,
in via tua,et ingrediar in veritate tua:
lætetur cor meum ut timeat nomen
12 tuũ. Confitebor tibi,Dñe De⁹ me⁹,in
toto corde meo,& glorificabo nomen
13 tuũ in æternũ: Quia miſericordia tua
magna eſt ſup me: & eruiſti animam
14 meã ex inferno inferiori. Deus,iniqui
inſurrexerũt ſup me, & ſynagoga potentiũ quæſierũt animã meam: & non
15 propoſuerũt te in cõſpectu ſuo. Et tu,
Dñe De⁹,miſerator et miſericors,patiens, & multæ miſericordiæ, & verax,
16 Reſpice in me,& miſerere meî, da imperiũ tuũ puero tuo: & ſalvũ fac filiũ
17 ancillæ tuæ. Fac mecũ ſignũ in bonũ,
ut videant qui oderunt me,et confundantur: quoniã tu,Dñe,adjuviſti me,
& conſolatus es me.

1 Filiis Core,Pſalm⁹ Cantici. LXXXVI.
Fundamenta ej⁹ in montib⁹ ſanctis:
2 Diligit Dñs portas Sion ſup omnia
3 tabernacula Jacob. Glorioſa dicta ſunt
4 de te,Civitas Dei. Memor ero Rahab et
Babylonis ſcientiũ me. Ecce alienigenæ,&Tyrus,& popul⁹ Æthiopũ, hi fuerũt illic. Numquid Sion dicet;Homo,
5 & homo nat⁹ eſt in ea: & ipſe fũdavit
6 eã Altiſſim⁹? Dñs narrabit in ſcripturis
populorũ,et principũ;horũ,qui fuerũt
7 in ea. Sicut lætantiũ omniũ habitatio
eſt in te. Canticum Pſalmi,

1 Filiis Core,in finem,pro Maheleth ad
reſpondendum, intellectûs Eman
Ezrahitæ. LXXXVII.
2 Domine De⁹ ſalutis meæ,in die cla-
3 mavi, & nocte coram te. Intret in
cõſpectu tuo oratio mea: inclina aurẽ
4 tuam ad precem meam: Quia repleta
eſt malis anima mea: & vita mea inferno appropinquavit.

Verſ. GRÆCA. LXX. Interp.

7 †Ἐν ἡμέρᾳ θλίψεώς μου ἐκέκραξα πρὸς σέ, ὅτι
8 (δ) εἰσήκουσάς μου. †Οὐκ ἔστιν ὅμοιός σοι ἐν θεοῖς
9 κύριε, †καὶ οὐκ ἔστι κατὰ τὰ ἔργα σου. †Πάντα τὰ ἔθνη
ὅσα ἐποίησας ἥξουσι, †καὶ προσκυνήσουσιν ἐνώπιόν σου
κύριε, †καὶ δοξάσουσι τὸ ὄνομά σου, Ὅτι μέγας εἶ σύ,
10 †καὶ ποιῶν θαυμάσια, σὺ εἶ ὁ θεὸς (ε) μόνος ὁ μέγας.
11 †Ὁδήγησόν με κύριε ἐν τῇ ὁδῷ σου, †καὶ πορεύσομαι (ζ) ἐν τῇ ἀληθείᾳ σου, †εὐφρανθήτω ἡ καρδία
12 μου, τοῦ φοβεῖσθαι τὸ ὄνομά σου. †Ἐξομολογήσομαί σοι
κύριε ὁ θεός μου ἐν ὅλῃ καρδίᾳ μου, †καὶ δοξάσω τὸ
13 ὄνομά σου εἰς τὸν αἰῶνα. †Ὅτι τὸ ἔλεός σου μέγα ἐπ'
ἐμέ, †καὶ ἐρρύσω τὴν ψυχήν μου ἐξ ᾅδου κατωτάτου. †
14 Ὁ θεός, παράνομοι ἐπανέστησαν ἐπ' ἐμέ, †καὶ συναγωγὴ κραταιῶν ἐζήτησαν τὴν ψυχήν μου, †καὶ οὐ προέθεντό σε ἐνώπιον αὐτῶν.
15 †Καὶ σὺ κύριε ὁ θεὸς οἰκτίρμων καὶ ἐλεήμων, †μακρόθυμος καὶ πολυέλεος
16 καὶ ἀληθινός. †Ἐπίβλεψον ἐπ' ἐμέ, καὶ ἐλέησόν με,
†δὸς τὸ κράτος σου τῷ παιδί σου, †καὶ σῶσον τὸν υἱὸν
17 τῆς παιδίσκης σου. †Ποίησον μετ' ἐμοῦ σημεῖον εἰς
ἀγαθόν, †καὶ ἰδέτωσαν οἱ μισοῦντές με, καὶ αἰσχυνθήτωσαν· †ὅτι σὺ κύριε ἐβοήθησάς μοι, καὶ παρεκάλεσάς με.

1 Τοῖς υἱοῖς Κορὲ ψαλμὸς ᾠδῆς. πϛʹ.
†ΟΙ θεμέλιοι αὐτοῦ ἐν τοῖς ὄρεσι τοῖς ἁγίοις. †
2 Ἀγαπᾷ κύριος τὰς πύλας Σιών, †ὑπὲρ πάντα τὰ
3 σκηνώματα Ἰακώβ. †Δεδοξασμένα ἐλαλήθη περὶ
4 σοῦ ἡ πόλις τοῦ θεοῦ. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. Μνησθήσομαι
Ῥαὰβ, καὶ Βαβυλῶνος, τοῖς γινώσκουσί με· †καὶ ἰδοὺ
ἀλλόφυλοι καὶ Τύρος καὶ λαὸς Αἰθιόπων, οὗτοι (α) ἐγεννήθησαν ἐκεῖ.
5 †Μήτηρ Σιὼν ἐρεῖ, Ἄνθρωπος, καὶ ἄνθρωπος ἐγεννήθη ἐν αὐτῇ, †καὶ αὐτὸς ἐθεμελίωσεν
6 αὐτὴν ὁ ὕψιστος. †Κύριος διηγήσεται ἐν γραφῇ λαῶν,
καὶ ἀρχόντων †τούτων τῶν γεγενημένων ἐν (β) αὐτῇ.
7 ΔΙΑΨΑΛΜΑ. †Ὡς εὐφραινομένων πάντων ἡ
κατοικία ἐν σοί.

1 Ὠδὴ ψαλμοῦ Τοῖς υἱοῖς Κορέ, εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ
μαελὲθ τοῦ ἀποκριθῆναι, συνέσεως (α) Αἰμὰν τῷ Ἰσραηλίτῃ. πζʹ.
2 †Κύριε ὁ θεὸς τῆς σωτηρίας μου, †ἡμέρας (β) ἐκέκραξα
3 καὶ ἐν νυκτὶ ἐναντίον σου, †(ϛ) Εἰσελθέτω ἐνώπιόν σου ἡ προσευχή μου, †κλῖνον τὸ οὖς σου εἰς τὴν
4 δέησίν μου κύριε. †Ὅτι ἐπλήσθη κακῶν ἡ ψυχή μου,
†καὶ ἡ ζωή μου τῷ ᾅδῃ ἤγγισε.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopica, Tranſl. LAT.

In die tribulationis meæ(c) clamavi 7
ad te:quoniã exaudîſti me. 7 Non eſt 8
ſimilis tuî in diis,Domine:& non eſt
ſecundùm opera tua.8 Omnes gentes, 9
quaſcunque feciſti, venient,& adorabunt coram te,Domine:et glorificabunt nomen tuum.9 Quoniam magn⁹ 10
es[c] tu,& faciens mirabilia: tu es
Deus ſolus(f)magnus.10 Deduc me, 11
Domine,in via tua; & ambulabo in
veritate tua.(g)Lætetur cor meũ,ut
timeat nomen tuum. 11 Confitebor 12
tibi,Domine Deus meus,in toto corde
meo,& glorificabo nomen tuum in
æternum. 12 Quoniam miſericordia 13
tua magna eſt ſuper me:& eruiſti animam meam ex inferno inferiore.
13[d]Deus,iniqui(h)inſurrexerunt 14
ſuper me:& ſynagoga potentiũ quæſierant animam meam:& non propoſuerunt te in conſpectu ſuo.14 Et tu, 15
Domine Deus,miſerator, & miſericors:longanimis, et multæ miſericordiæ,& verax: 15 Reſpice in me,& 16
miſerere meî: da(i)poteſtatem tuam
puero tuo;& ſalvum fac filium ancillæ tuæ.16 Fac[e] mecum ſignũ in 17
bono:et videant,qui oderunt[f]me,et
cõfundãtur. Quoniã tu,Domine,adjuviſti[g]me:et conſolatus es[h]me.

Filiis (a) Core,Pſalmus Cantici. 1
LXXXVI.
1 *Fundamenta(b)ejus in montibus*
ſanctis:Diligit Dñs portas Sion ſuper 2
omnia tabernacula Jacob.2[a]Glori- 3
oſã dicta ſũt de te,Civitas Dei.DIA-
PSALMA.3 Memor ero Raab, et Ba- 4
bylonis,(c)ſcientib⁹ me.4 Et ecce alienigenæ,& Tyrus,& popul⁹ Æthiopũ,[b]hi fuerũt illic.5(d)[c]Mater 5
Sion dicet,Homo,et homo(e)fact⁹ eſt
in ea:et ipſe fundavit eam Altiſſim⁹.
6 Domin⁹ narrabit[d]in(f)ſcriptura 6
populorũ,et principum horũ,qui fuerũt in ea.DIAPSALMA.7[e]Sicut 7
lætantiũ(g)omnium habitatio in te.

(a) Canticum Pſalmi, Filiis Core in 1
finem,[a] pro(b)Maeleth ad reſpondendũ,intellect⁹ Æman (c)Iſraelita.
LXXXVII.
Domine Deus ſalutis meæ, in[b] 2
die clamavi,& in[c]nocte coram te.
2.Intret in conſpectu tuo oratio mea: 3
inclina aurẽ tuam ad precem meam,
(d)Domine. 3 Quia repleta eſt ma- 4
lis anima mea: & vita mea [†] inferno appropinquavit.

Verſio ÆTHIOPICA.

በዕለተ፡ምንዳቤየ፡ጸራኅኩ፡ ኀቤከ፡ እስመ፡ 6
ሰማዕከኒ፡፡=፡ አልቦ፡ዘይመስለከ፡ እምነ፡ 7
አማልክት፡እግዚኦ፡፡ወአልቦ፡ዘከመ፡ ምግባ
ሪከ፡፡=፡ ኵሎሙ፡ አሕዛብ፡ እለ፡ገበርከ፡ 8
ይመጽኡ፡፡ወይሰግዱ፡ቅድሜከ፡ እግዚኦ፡፡
ወይሴብሑ፡ ለስምከ፡፡=፡ እስመ፡ዐቢይ፡አ 9
ንተ፡ እግዚኦ፡ ወትገብር፡ መንክረ፡፡አንተ፡እ
ግዚአብሔር፡ባሕቲትከ፡ ዐቢይ፡፡=፡ ምር 10
ሐኒ፡ እግዚኦ፡ ፍኖተከ፡፡ወእሖር፡ በጽድቅ
ከ፡፡ይትፈሣሕ፡ልብየ፡ለፈሪሃ፡ስምከ፡፡=፡
እገኒ፡ለከ፡እግዚኦ፡በኵሉ፡ልብየ፡ አምላኪ 11
የ፡፡ወእሴብሕ፡ ለስምከ፡ ለዓለም፡፡=፡ እስ 12
መ፡ዐቢይ፡ ምሕረትከ፡ ላዕሌየ፡፡ወአድኀን
ከ፡ለነፍስየ፡እምሲኦል፡ታሕቲት፡፡=፡ አም 13
ላኪየ፡ዐማፅያን፡ ቆሙ፡ ላዕሌየ፡፡ወማኅበረ፡
እኩያን፡ ኀሠሥዋ ፡ ለነፍስየ፡፡ወኢረሰዩከ፡
ቅድሜሆሙ፡፡=፡ ወአንተሰ፡ እግዚኦ፡ መሐ 14
ሪ፡ወመስተሣህል፡፡ርሑቀ፡ መዐት፡ ወብዙኅ፡
ምሕረት፡ወጻድቅ፡፡=፡ ነጽር ፡ ላዕሌየ፡ወተ 15
ሣሀለኒ፡፡ሀብ፡ኀይለ፡ ለገብርከ፡፡ወአድኅኖ፡
ለወልደ፡ አመትከ፡፡=፡ ግበር፡ ምስሌነ፡ትእ 16
ምርተ፡ለሠናይ፡፡ወይርአዩ፡ጸላእትነ፡ወይት
ኀፈሩ፡፡ከመ፡ አንተ፡ እግዚኦ፡ ረዳእከነ፡ ወ
አስተፈሣሕከነ፡፡=፡

ዘደቂቀ፡ቆሬ፡መዝሙር፡ማኅሌት፡፡

፹፮ መሰረታቲሃ፡ውስተ፡አድባር ፡ ቅዱሳን፡፡ 1
ያበድሮን፡እግዚአብሔር፡ለአናቅጸ፡ጽዮን፡፡
እምኵሉ፡ተዐይኒሁ፡ለያዕቆብ፡፡=፡ ነኪር፡ 2
ነገሩ፡በእንቲአኪ፡ሀገረ፡እግዚአብሔር፡፡=፡
እዜክሮን፡ለራዐብ፡ ወለባቢሎን፡እለ፡ያአም 3
ሩኒ፡፡=፡ ወናሁ፡ሊሉፍሊ፡ወጢሮስ፡ወሕዝ 4
ብ፡ኢትዮጵያ፡፡እለ፡ ተወልዱ፡ በህየ፡፡=፡ እ 5
ምነ፡ ጽዮን፡ ይብል፡ሰብእ፡፡ወብእሲ፡ ተወል
ደ፡በውስቴታ፡፡ወውእቱ፡ ልዑል፡ ሣረራ፡፡=፡
እግዚአብሔር፡ ይነግሮሙ ፡ ለሕዝቡ ፡ በመ 6
ጽሐፍ፡፡ወለመሳፍንቲሆን፡ እለ፡ ተወልዱ፡በ
ውስቴታ፡፡=፡ ከመ፡ ፍሡሓን፡ኵሎሙ፡ እ 7
ለ፡ይነብሩ፡ውስቴትከ፡፡=፡

ማኅሌት፡መዝሙር፡ዘደቂቀ፡ቆሬ፡ፍጻ
ሜ፡ዘአመ፡መጽአ፡ዘበአእምሮ፡አ
ማን፡እስራኤላዊ፡፡

፹፯ እግዚአብሔር፡አምላከ፡መድኀኒትየ፡፡ 1
ዕለትየ፡ ጸራኅኩ፡ ኀቤከ፡ ወሌሊትየኒ፡ ቅድ
ሜከ፡፡=፡ ለትባእ፡ ጸሎትየ፡ቅድሜከ፡፡አ 2
ጽምእ ፡ እዝነከ፡ ኀበ፡ ስእለትየ፡፡=፡ እስ 3
መ፡ ጸግበት፡ ነፍስየ፡ ሕማመ፡፡ወአልጸቀት፡
ለሞት፡ሕይወትየ፡፡=፡

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

7 8 صرخت اليك في يوم شدتي * فاستجبت لي * ليس مثلك يا رب في الالهة * ولا مثل اعمالك * وجميع
9 10 الامم الذين خلقتهم * ياتون ويسجدون امامك يا رب * ويمجدون اسمك * لانك عظيم وصانع
11 العجايب * انت وحدك الاله العظيم * اهدني يا رب الي طرقك فاسلك في عدلك * فليفرح قلبي حين
12 13 يخشي اسمك * اشكرك يا ربي والهي من جميع قلبي * واجد اسمك الي الابد * لان رحمتك عظيمة
14 علي * وخلصت نفسي من الجحيم السفلي * اللهم ان مخالفي الناموس قاموا علي * وجماعة الاقوياء
15 طلبت نفسي * ولم يسبقوا فيجعلوك امامهم * وانت ايها الرب * الله رووف رحيم * انت عظيم الاناة
16 17 وكثير الرحمة والعدل * انظر الي وارحمني * اعط عبدك قوة * وخلص ابن امتك * اصنع معي اية
صالحة * وليرى الذين يبغضوني فيخزون * لانك انت يا رب اعنتني وعزيتني * اللليلويا *

1 * المزمور السادس والثمانون * لبني قورح * وعدده * ي * استيخن *

2 اساساته في الجبال المقدسة * احب الرب ابواب صهيون افضل من جميع مساكن يعقوب *
3 4 * اعمال كريمة قيلت من اجلك يا مدينة الله * اذكر راحاب وبابل اللذين يعرفانني * وها القبايل
5 الغريبة * وصور وشعب الحبش * هاولاء كانوا هناك * الام صهيون تقول ان انسانا وانسان ولد فيها *
6 7 وهو العلي اسسها الي الابد * الرب يخبر في كتاب الشعوب * والروساء المولودين فيها * ان سكني
الفرحين جميعهم فيك * اللليلويا * * المزمور السابع والثمانون *

1 * تسبحة لبني قورح لاجل مالاث عندما صرخ * وهو لح استيخن *
2 3 * يا رب اله القوات اله خلاصي * صرخت النهار والليل امامك * فلتدخل امامك صلاتي * يا رب
4 امل سمعك الي طلبتي * فقد امتلات نفسي من الشر * ودنت من الجحيم حياتي *

Clamavi ad te in die tribulationis meæ, 7
& exaudîſti me. Non eſt ſimilis tui O 8
Domine,inter deos: neque ſicut opera tua:
Et omnes gentes, quas creâſti venient,& 9
adorabunt corã te, O Domine, & glorificabunt nomen tuũ. Quia tu es magnus 10
& factor miraculorum: tu ſolus Deus
maximus. Dirige me O Domine, per vias 11
tuas,& incedã in æquitate tua: lætetur
cor meum cùm timuerit nomen tuum.
Gratias agam tibi, O Domine mi & Deus 12
meus, ex toto corde meo, & glorificabo
nomen tuum in æternum. Quoniam mi- 13
ſericordia tua magna eſt ſuper me,& ſalvâſti animã meã ex inferno infimo. Deus, 14
profectò refragantes legi adorti ſunt me,
& ſynagoga potentium quæſivit animã
meã, & non præpoſuerunt te in conſpectu
ſuo. Et tu O Domine, Deus es clemens, 15
miſericors: tu patientiſſimus, & abundans
miſericordiâ & æquitate. Reſpice in me, 16
& miſerere mei: da ſervo tuo virtutem,
& ſalva filium ancillæ tuæ. Fac mecum 17
ſignum optimum, & videant qui me oderunt, & confundantur: quia tu, O
Domine adjuviſti me, & conſolatus es
me. Alleluja.

PSAL. LXXXVI.
Filiis Coræ. Et numerus verſ. 10. 1
Fundamenta ejus in montibus ſanctis.
Dilexit Dominus portas Sion pluſquã 2
omnes habitationes Jacob. Geſta præclara 3
dicta ſunt de te,O civitas Dei. Recordabor 4
Rahab & Babel quæ cognoſcunt me:
& ecce tribus alienigenæ, & Tyrus, &
populus Æthiopum, hi erant illic. Mater 5
Sion dicit, Si homo; & quidem Homo
natus eſt in ea, & ipſe Altiſſimus fundavit eã in æternum. Dominus commemo- 6
rabit in libro populorum & principum
qui nati ſunt in ea, Habitationem lætorum 7
omnium in te eſſe. Alleluja.

PSAL. LXXXVII.
Canticum filiis Coræ pro Malath 1
quando exclamavit, verſ. 38.
O Domine Deus virtutum, Deus ſa- 2
lutis meæ, clamavi diu noctuque
coram te. Ingrediatur ante te oratio mea: 3
O Domine, inclina auditum tuum ad
precem meam. Quia jam repleta eſt ani- 4
ma mea miſeriis,& propè acceſſit ad infernum vita mea.

MS.A. (δ) ἐπήκουσάς (ε) μόνος. Ὁδήγησόν με κύριε τῇ ὁδῷ σου, (ζ) τῇ ἀληθείᾳ σου, MS.A. πϛʹ.
(α) ἐγεννήθησαν (β) αὐτῇ. Ὡς εὐφραινομένων MS.A. πζʹ. (α) Αἰθὰμ (β) κεκεκράξομαι
(ϛ) Εἰσελθάτω

INTERP. ÆTHIOP. [c] tu Domine, [d] Deus meus, [e] nobiſcum ſignum [f] nos, [g] nos: [h] nos. *PSAL. LXXXVI.* [a] Extranei locuti ſunt de te, [b] hi nati fuerunt [c] De Sion [d] populo ſuo in ſcriptura, & principibus etiam ejus qui nati fuerunt in ea. [e] Ut læti ſint omnes qui in te habitant. *PSAL. LXXXVII.* [a] cùm advenit, intellectus [b] die meo [c] nocte mea [†] morti

.fortitudo non vir sicut fui : *cisternam* descendentibus cum *sum Reputatus*
נֶחְשַׁבְתִּי עִם־יוֹרְדֵי בוֹר הָיִיתִי כְּגֶבֶר אֵין־אֱיָל׃ 5
non quorum ,sepulchro *jacentes* vulnerati sicut , liber mortuos Inter
בַּמֵּתִים חָפְשִׁי כְּמוֹ חֲלָלִים ׀ שֹׁכְבֵי קֶבֶר אֲשֶׁר לֹא־ 6
lacu in me Posuisti .sunt abscissi tua manu à ipsi & : amplius *eorum* es recordatus
זְכַרְתָּם עוֹד וְהֵמָּה מִיָּדְךָ נִגְזָרוּ׃ שַׁתַּנִי בְּבוֹר 7
cunctis & :tua *excandescentia est fulta me Super* .profundis in ,tenebris in : *inferorum*
תַּחְתִּיּוֹת בְּמַחֲשַׁכִּים בִּמְצֹלוֹת׃ עָלַי סָמְכָה חֲמָתֶךָ וְכָל־ 8
me posuisti ,me à meos notos fecisti Elongare .Selah ,afflixisti tuis *procellis*
מִשְׁבָּרֶיךָ עִנִּיתָ סֶּלָה׃ הִרְחַקְתָּ מְיֻדָּעַי מִמֶּנִּי שַׁתַּנִי 9
propter doluit meus Oculus .egrediar non & clausus : eis abominationes
תוֹעֵבוֹת לָמוֹ כָּלֻא וְלֹא אֵצֵא׃ עֵינִי דָאֲבָה מִנִּי־ 10
.meas *volas* te ad *distendi* : die omni in Domine te invocavi ,meâ afflictione
עֹנִי קְרָאתִיךָ יְהוָה בְּכָל־יוֹם שִׁטַּחְתִּי אֵלֶיךָ כַפָּי׃
.Selah ? tibi confitebũtur ,resurgent *manes si* ? mirabile facies mortuis Nũquid
הֲלַמֵּתִים תַּעֲשֶׂה־פֶּלֶא אִם־רְפָאִים יָקוּמוּ יוֹדוּךָ סֶּלָה׃ 11
? perditione in tua veritas : tua misericordia sepulchro in narrabitur Nunquid
הַיְסֻפַּר בַּקֶּבֶר חַסְדֶּךָ אֱמוּנָתְךָ בָּאֲבַדּוֹן׃ 12
? oblivionis terra in tua justitia & :tuũ mirabile *tenebrositate* in cognoscetur Nũquid
הֲיִוָּדַע בַּחֹשֶׁךְ פִּלְאֶךָ וְצִדְקָתְךָ בְּאֶרֶץ נְשִׁיָּה׃ 13
quid Ut .te præveniet mea oratio mane in & : clamavi Domine te ad ego Et
וַאֲנִי ׀ אֵלֶיךָ יְהוָה שִׁוַּעְתִּי וּבַבֹּקֶר תְּפִלָּתִי תְקַדְּמֶךָּ׃ לָמָה 14
15 *moribundus* & ,ego *Afflictus* ? me à *tuas facies* abscondes :meã animã elongabis Domine
יְהוָה תִּזְנַח נַפְשִׁי תַּסְתִּיר פָּנֶיךָ מִמֶּנִּי׃ עָנִי אֲנִי וְגֹוֵעַ 16
: tuæ iræ transierunt me Super .*addubitabo* tuos *terrores* portavi : adolescentia ab
מִנֹּעַר נָשָׂאתִי אֵמֶיךָ אָפוּנָה׃ עָלַי עָבְרוּ חֲרוֹנֶיךָ 17
ambierunt die tota ,aqua sicut me Circundederunt .me succiderunt tui terrores
בִּעוּתֶיךָ צִמְּתוּתֻנִי׃ סַבּוּנִי כַמַּיִם כָּל־הַיּוֹם הִקִּיפוּ 18
.*obscuritas meis notis* ,*socium* & ,amantem me à Elongâsti .pariter me *super*
עָלַי יָחַד׃ הִרְחַקְתָּ מִמֶּנִּי אֹהֵב וָרֵעַ מְיֻדָּעַי מַחְשָׁךְ׃ 19

PSAL. LXXXIX. פט

: cantabo seculum Domini Misericordias .Ezrachitæ Ethan ipsi *Maschil*
מַשְׂכִּיל לְאֵיתָן הָאֶזְרָחִי׃ חַסְדֵי יְהוָה עוֹלָם אָשִׁירָה 1 2
Quoniam .meo ore in tuam veritatem faciam scire generatione & generatione in
לְדֹר וָדֹר ׀ אוֹדִיעַ אֱמוּנָתְךָ בְּפִי׃ כִּי־ 3
.*eis in* tuã veritatem firmabis cœlis : ædificabitur misericordia seculum dixi
אָמַרְתִּי עוֹלָם חֶסֶד יִבָּנֶה שָׁמַיִם ׀ תָּכִן אֱמוּנָתְךָ בָהֶם׃
stabiliam seculum in Usque .meo servo David juravi : meo electo fœdus *Excidi*
כָּרַתִּי בְרִית לִבְחִירִי נִשְׁבַּעְתִּי לְדָוִד עַבְדִּי׃ עַד־עוֹלָם אָכִין 4 5
.Selah ,tuum thronum generatione & generatione in ædificabo & : tuum semen
זַרְעֶךָ וּבָנִיתִי לְדֹר־וָדוֹר כִּסְאֲךָ סֶלָה׃
ecclesia in tuam veritatem etiam : Domine tuum mirabile cœli confitebuntur Et
וְיוֹדוּ שָׁמַיִם פִּלְאֲךָ יְהוָה אַף־אֱמוּנָתְךָ בִּקְהַל 6
Domino assimilabitur : Domino æquabitur *æthere* in quis Quoniam .sanctorum
קְדֹשִׁים׃ כִּי מִי בַשַּׁחַק יַעֲרֹךְ לַיהוָה יִדְמֶה לַיהוָה 7
terribilis & : multo sanctorum secreto in *formidandus* Deus ? Deorum filiis in
בִּבְנֵי אֵלִים׃ אֵל נַעֲרָץ בְּסוֹד־קְדֹשִׁים רַבָּה וְנוֹרָא 8
.ejus *circuitus* omnes *super*
עַל־כָּל־סְבִיבָיו׃

תרגום TARGUM.

5 אִתְחַשְׁבֵית עִם נָחֲתֵי בֵית אֲסִירֵי הֲוֵיתִי הֵיךְ בַּר
6 נָשׁ דְלֵית לֵיהּ חֵילָא׃ הֵיךְ רַשִׁיעַיָא דְמִיתוּ וְלָא
תָבוּ יִתְעַבְדוּ בְנֵי חוֹרִין מִן מַצּוּתָא הֵיךְ קְטִילִין
דְחַרְבָּא שָׁכְבֵי בֵית קְבוּרְתָּא דְלָא דַבַּרְתִּנוּן תּוּב
7 וְהִנוּן מֵאַפֵּי שְׁכִנְתָּךְ אִתְפַּלְגוּן׃ שַׁוִיתָא יָתִי
בְּגָלוּתָא דְמַתִילָא לְגוּבָּא אַרְעִיתָא בַחֲשׁוֹכַיָא
8 בִּמְצוּלְתָא׃ עֲלַי סַמְכַת חֵימְתָךְ וְכָל גְזֵירָן בִּישָׁן
9 תַּבַּרוּ יָתִי סַגִיפְתָּא לְעַלְמִין׃ אַרְחֵקְתָּא מְיוּדָעַי מִנִּי
שַׁוִיתָא יָתִי רִיחוּקִין לְהוֹן כָּלוּא בְּבֵית אֲסִירֵי וְלָא
10 אֶפּוּק׃ עֵינִי זַלְגַת דִמְעִין מִן עַנְיוּתָא קְרִיתָךְ יְיָ
11 בְּכָל יוֹמָא פַּרְסֵית לְוָתָךְ בִּצְלוֹ יְדַי׃ הַאֶפְשַׁר דִי
לְמֵיתַיָא תַעְבֵיד פְּרִישָׁן אִין גוּשְׁמַיָא דְאִתְמְסִיאוּ
12 בְּעַפְרָא יְקוּמוּן יוֹדוּן קֳדָמָךְ לְעַלְמִין׃ הַאֶפְשַׁר דִי
יִתְחַוֵי בְּבֵית קְבוּרְתָּא טוּבָךְ קוּשְׁטָךְ בְּבֵית
13 אֲבַדָּנָא׃ הַאֶפְשַׁר דִי תִּוְדְעוּ בַּחֲשַׁךְ גֵיהִנָּם
פְּרִישׁוּתָךְ וְצִדְקָתָךְ בְּאַרְעָא דְצַחוּתָא וְצַדְיָא׃
14 וַאֲנָא קֳדָמָךְ יְיָ צַלֵיתִי וּבְצַפְרָא צְלוֹתִי תְקַדְמִנָךְ׃
15 לְמָה יְיָ שְׁבַקְתָּא נַפְשִׁי תַּעֲלִים אַפָּךְ מִנִי דְלָא
16 אֶחְמֵי בִנְהוֹרָךְ נְהוֹרָא׃ עַנְיָא אֲנָא וְנָגִיד מִן טַלְיָא
17 סוֹבַרִית רְחִימְתָךְ טְעִינָא עֲלַי׃ עֲלַי עֲבַרוּ רוּגְזָךְ
18 בַּעֲתָיךְ שֵׁיצִיאוּ יָתִי׃ אַחֲזָרוּ יָתִי הֵיךְ מוֹי כָּל
19 יוֹמָא אַקִיפוּן עֲלַי כַּחֲדָא׃ אַרְחֵקְתָּא מִנִי רְחִימָא
וְחַבְרָא וּלְיַדְעַי חֲשִׁיךְ אֲנָא בְּפוּמְהוֹן׃

פט

1 שִׂכְלָא טָבָא דְאִתְאֲמַר עַל יְדָא דְאַבְרָהָם דְאָתָא
2 מִן מַדִינְחָאָה׃ חִסְדָא דַיְיָ לְעָלַם אֲשַׁבַּח לְדָר וְדָר
3 אֲהוֹדַע קוּשְׁטָךְ בְּפוּמִי׃ אֲרוּם אֲמַרִית עַלְמָא
בְּחִסְדָא יִתְבְּנֵי שְׁמַיָא תְתַקֵן קוּשְׁטָךְ בְּהוֹן׃
4 גְזֵרִית קְיָם לְאַבְרָהָם בְּחִירִי קַיֵמִית לְדָוִד עַבְדִי׃
5 עַד עַלְמָא אַתְקֵין בְּנָךְ וְאֶבְנֵי לְדָר וְדָר כּוּרְסֵי
6 מַלְכוּתָךְ לְעָלְמִין׃ וְיוֹדוּן שְׁמַיָא פְּרִישׁוּתָךְ יְיָ
7 לְחוֹד קוּשְׁטָךְ בִּכְנִישַׁת קַדִישִׁין׃ אֲרוּם מַן הוּא
בִשְׁחָקֵי דְמִשְׁתְּוֵי לַיְיָ דְדָמֵי לַיְיָ בְּאוֹכְלוֹסֵי
8 מַלְאֲכַיָא׃ אֱלָהָא תַקִיפָא בְּרָזֵיהוֹן דְקַדִישִׁין יָתֵיב
עַל כּוּרְסֵי יְקָרָא וְרַבָּא וּדְחִיל עַל כָּל מַלְאֲכַיָא
דְקָיְמִין חֲזוֹר חֲזוֹר לֵיהּ׃

PARAPH. CHALD. Vers. Lat.

Reputatus ſum cum deſcendentib⁹ in domum vinctorũ; fui ſicut homo cui nullæ ſunt vires. 5 Sicut impii qui mortui ſunt quiq; non reſipuerũt, fient liberi à *contentione*, ſicut interfecti gladio dormientes in domo ſepulchri, *quos* non *recepturus* es ampli⁹, ſed ipſi à facie majeſtatis tuæ ſeparati ſunt. 6 Poſuiſti me in captivitatem quæ ſimilis eſt foveæ inferiori inter tenebras in profundo. 7 Super me confirmatus eſt furor tuus, & omnes procellæ malæ attriverũt me, afflixiſti in æternũ. 8 Elongâſti notos meos à me, poſuiſti me in execrationes illis, clauſum in domo vinctorũ ut non egrediar. 9 Oculus meus ſtillavit lacrymas ob calamitatem: invocavi te Dñe omnibus dieb⁹: extendi ad te in oratione manus meas. 10 Nunquid in mortuos edes miracula? an corpora quæ *diſſoluta* ſunt *in pulvere*, reſurgent [*ut*] confiteantur corã te in perpetuũ? 11 Nũquid narrabitur in ſepulchro bonitas tua, & veritas tua in domo perditionis? 12 Nunquid cognoſcentur in tenebris gehennæ miracula tua, & juſtitia tua in terra ſiccitatis & deſolationis? 13 At ego in conſpectu tuo Domine oravi, & manè oratio mea præveniet te. 14 Quare Domine *dereliquiſti animam meam*, abſcondes aſpectũ faciei tuæ à me, *ne videam in lumine tuo lumen?* 15 Pauper ſum ego & expirans ab adoleſcentia: ſuſtinui *amorem* tui onus ſuper me. 16 Super me tranſierunt iræ tuæ: terrores tui conciderunt me. 17 Circundederunt me ſicut aquæ tota die, vallaverunt me ſimul. 18 Elongâſti à me amicum & ſocium, & in *ore* notorum meorum obſcurus ſum. 19

Intellectus bonus dictus per manum Abrahæ qui venit de Oriente. 1

PSAL. LXXXIX.

MIſericordiam Dñi in perpetuũ laudibus efferã, generationi et generationi annunciabo veritaté tuã ore meo. 2 Quoniã dixi, Mundus miſericordiâ ædificatus eſt, in cœlis præparabis veritatem tuam. 3 Diſpoſui fœdus Abraham electo meo, juravi Davidi ſervo meo: 4 Vſq; in æternum firmabo filios tuos, & ædificabo in generationem & generationem ſedem regni tui in æternũ. 5 Et confitebuntur cœli ſtupenda opera tua Dñe, inſuper veritaté tuam in eccleſia ſanctorum. 6 Quoniã quis ille in æthere qui æquatur Domino, qui comparetur Domino inter choros angelorum? 7 Deus fortis in ſecreto ſanctorum, ſedens ſuper thronum gloriæ, & magnus timendúſque pluſquam omnes angeli qui aſſiſtunt circa eum. 8

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܬܚܫܒܬ ܥܡ ܢܚ̈ܬܝ ܓܘܒܐ. ܘܗܘܝܬ ܐܝܟ ܓܒܪܐ ܕܠܝܬ ܠܗ ܡܥܕܪܢܐ: * ܒܝܢܬ ܡܝ̈ܬܐ 5 6
ܒܪ ܚܐܪܐ. ܐܝܟ ܩܛܝ̈ܠܐ ܕܫܟܝܒܝܢ ܒܩܒܪ̈ܐ: ܐܝܠܝܢ ܕܬܘܒ ܠܐ ܐܬܕܟܪܬ ܐܢܘܢ. ܘܗܢܘܢ ܡܢ ܐܝܕܝܟ
ܐܬܒܪܘ: * ܐܚܬܬܢܝ ܠܓܘܒܐ ܬܚܬܝܐ. ܒܚܫܘܟܐ ܘܒܛܠܠܝ ܡܘܬܐ: * ܘܥܠܝ ܣܡܟܬ ܚܡܬܟ. 7 8
ܘܟܠܗܘܢ ܡܫܒܪ̈ܝܟ ܐܝܬܝܬ ܥܠܝ: * ܐܪܚܩܬ ܡܢܝ ܝܕ̈ܥܝ ܘܥܒܕܬܢܝ ܠܗܘܢ ܛܢܦܐ. 9
ܐܬܟܠܝܬ ܕܠܐ ܐܦܘܩ * ܘܥܝܢܝ ܕܥܒܬ ܡܢ ܡܘܟܟܝ: ܩܪܝܬܟ ܡܪܝܐ ܒܟܠ ܝܘܡ. ܘܦܫܛܬ 10
ܐܝܕܝ ܠܘܬܟ:* ܗܐ ܠܡܝ̈ܬܐ ܥܒܕ ܐܢܬ ܬܕܡܪ̈ܬܐ ܘܓܢܒܪ̈ܐ ܢܩܘܡܘܢ ܘܢܘܕܘܢ ܠܟ: *ܕܝܦܣ* 11
* ܘܢܫܬܥܘܢ ܕܒܩܒܪ̈ܐ ܛܝܒܘܬܟ. ܘܗܝܡܢܘܬܟ ܒܐܒܕܢܐ: * ܬܬܝܕܥ ܒܚܫܘܟܐ ܬܕܡܘܪܬܟ. 12 13
ܘܙܕܝܩܘܬܟ ܒܐܪܥܐ ܕܐܬܛܥܝܬ * ܘܐܢܐ ܠܘܬܟ ܡܪܝܐ ܩܥܝܬ. ܘܒܨܦܪܐ ܨܠܘܬܝ ܬܩܕܡ ܠܘܬܟ: 14
* ܠܐ ܬܛܥܐ ܢܦܫܝ ܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܬܗܦܘܟ ܐܦܝܟ ܡܢܝ: * ܡܣܟܢܐ ܐܢܐ ܘܠܐܐ ܡܢ ܛܠܝܘܬܝ. 15 16
ܐܬܬܪܝܡܬ ܘܐܬܡܟܟܬ ܘܐܬܬܘܗܬ: * ܘܥܠܝ ܥܒܪ ܪܘܓܙܟ. ܘܕܘܠܚܟ ܐܫܬܩܢܝ: * ܐܚܕܪܘܢܝ 17 18
ܐܝܟ ܡܝ̈ܐ ܟܠܗ ܝܘܡܐ. ܘܣܡܘ ܥܠܝ ܐܟܚܕܐ: * ܐܪܚܩܬ ܡܢܝ ܪ̈ܚܡܝ ܘܫܘ̈ܬܦܝ. ܘܝܕ̈ܥܝ 19
ܐܪܚܩܬ ܡܢܝ. * ܡܫܠܡܘܬܐ ܕܦܚ *

* ܥܠ ܥܡܐ ܕܒܒܒܠ ܦܬ̈ܓܡܐ ܟܓ. 1
* ܛܝܒܘܬܗ ܕܡܪܝܐ ܠܥܠܡ ܐܙܡܪ. ܘܠܕܪ̈ ܕܪܝܢ ܐܘܕܥ ܗܝܡܢܘܬܗ ܒܦܘܡܝ: * ܡܛܠ ܕܐܡܪܬ 2 3
ܕܥܠܡܐ ܒܛܝܒܘܬܐ ܢܬܒܢܐ. ܘܫܡܝܐ ܬܬܩܢ ܗܝܡܢܘܬܟ: * ܩܝܡܐ ܐܩܝܡܬ ܥܡ ܓܒܝܝ. 4
ܘܝܡܝܬ ܠܕܘܝܕ ܥܒܕܝ: * ܕܥܕܡܐ ܠܥܠܡ ܐܬܩܢ ܙܪܥܟ. ܘܐܒܢܐ ܠܕܪ̈ ܕܪܝܢ ܟܘܪܣܝܟ: 5
* ܕܝܦܣ * ܢܘܕܘܢ ܫܡܝܐ ܬܕܡܪ̈ܬܟ ܡܪܝܐ. ܘܗܝܡܢܘܬܟ ܒܥܕܬܐ ܕܩܕܝ̈ܫܐ: * ܡܢܘ 6 7
ܕܢܫܬܘܐ ܠܡܪܝܐ ܒܫܡܝ ܫܡܝܐ. ܘܢܬܕܡܐ ܠܡܪܝܐ ܒܒܢܝ̈ ܡܠܐܟܐ: * ܐܠܗܐ ܩܡ ܒܟܢܘܫܬܐ 8
ܕܩܕܝ̈ܫܐ. ܪܒܐ ܘܕܚܝܠܐ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܕܚܕܪܘܗܝ:

Reputatus ſum cum deſcendentibus in foveã, 5 & fact⁹ ſum ut vir cui non eſt adjumentũ; 6 Inter mortuos liber, velut interfecti decumbẽtes in ſepulchris, quorũ amplius non meminiſti, quiq; è manib⁹ tuis perierunt. 7 Demiſiſti me in foveã infimã, in tenebras & in umbras mortis: 8 Et mihi incubuit ira tua, omneſque fluct⁹ tuos adduxiſti contra me: 9 Abegiſti à me notos meos, & feciſti me illis pollutũ: detentus fui quin egrederer, 10 Et ocul⁹ me⁹ elanguit præ humilitate mea. Invocavi te Dñe ſingulis dieb⁹, & extendi manus meas ad te. 11 En erga mortuos facis admiranda, et gigantes ſurgẽt atq; confitebũtur tibi: * *Diapſal.* * 12 Et narrabunt qui ſunt in ſepulchris bonitatẽ tuam, fidemque tuã in interitu. 13 Notũ fiet in tenebris miraculũ tuũ, et juſtitia tua in terra quæ oblivioni data eſt. 14 Et ego ad te Dñe clamavi, & in matutino oratio mea maturè veniet ad te. 15 Ne obliviſcaris animæ meæ Dñe, & ne avertas faciẽ tuã à me. 16 Inops ego ſum, et fatigat⁹ à pueritia mea: exaltat⁹ ſũ, ac tũ depreſſus, & obſtupui: 17 Et ſup me tranſiit indignatio tua, & conturbatio tua ſilere me fecit. 18 Obſederunt me ſicut aquæ totâ die, et poſuerũt contra me ſimul. 19 Elongâſti à me amicos & ſodales meos: & notos meos abegiſti à me.

PSAL. LXXXIX.

De populo qui erat in Babel. Verſ. 23. 1

BOnitatẽ Dñi perpetuò canã, & in generationẽ generationũ patefaciã fidẽ ejus ore meo. 2 3 Quoniã dixiſti, Mund⁹ bonitate ædificabitur, & cœlũ confirmabit fides tua: 4 Fœdus pepigi cũ electo meo, & juravi Davidi ſervo meo, 5 Me uſq; in æternũ confirmaturũ ſemen tuũ, & ædificaturũ in generationẽ generationũ thrõnũ tuũ. *Diapſal.* * 6 Confiteãtur cœli mirabilia tua Dñe, et fidẽ tuã in cœtu ſanctorum. 7 Quis eſt qui comparetur cum Domino in cœlis cœli, quíque ſimilis ſit Domino inter filios Angelorum? 8 Deus ſtetit in cœtu Sanctorum, magnus & formidabilis omnibus qui circa eum ſunt.

Verſio VULG. LAT.

5 Æſtimatus ſum cum deſcendentib⁹ in
lacum: factus ſum ſicut homo ſine ad-
6 jutorio, Inter mortuos liber, Sicut
vulnerati dormientes in ſepulchris,
quorum non es memor amplius: &
7 ipſi de manu tua repulſi ſunt. Poſue-
runt me in lacu inferiori: in tene-
8 broſis, & in umbra mortis. Super me
confirmatus eſt furor tuus: & omnes
9 fluctus tuos induxiſti ſuper me. Longè
feciſti notos meos à me: poſuerunt
me abominationem ſibi. Traditus ſũ,
10 & non egrediebar: Oculi mei lan-
guerunt præ inopia. Clamavi ad te,
Dñe, totâ die: expandi ad te manus
11 meas. Numquid mortuis facies mira-
bilia: aut medici ſuſcitabunt, & con-
12 fitebuntur tibi? Numquid narrabit
aliquis in ſepulchro miſericordiam
tuam, & veritatem tuam in perdi-
13 tione? Numquid cognoſcentur in te-
nebris mirabilia tua, & juſtitia tua in
14 terra oblivionis? Et ego ad te, Dñe,
clamavi: & manè oratio mea præve-
15 niet te. Ut quid, Dñe, repellis oratio-
16 nem meã: avertis faciẽ tuã à me? Pau-
per ſũ ego, & in laborib⁹ à juventute
mea: exaltat⁹ autẽ, humiliatus ſum &
17 conturbatus. In me tranſierũt iræ tuæ:
18 & terrores tui conturbaverũt me. Cir-
cumdederunt me ſicut aqua totâ die:
19 circumdederunt me ſimul. Elongâſti à
me amicũ, & proximũ, & notos meos
à miſeria.

1 Intellect⁹ Ethan Ezrahitæ. LXXXVIII.

2 MIſericordias Dñi in æternũ can-
tabo. In generationẽ & genera-
tionẽ annuntiabo veritatẽ tuã in ore
3 meo. Quoniã dixiſti, In æternũ mi-
ſericordia ædificabitur in cœlis: præ-
4 parabitur veritas tua in eis. Diſpoſui
teſtamentũ electis meis, juravi David
5 ſervo meo; Uſq; in æternũ præparabo
ſemen tuũ. Et ædificabo in generatio-
6 nem et generationẽ ſedẽ tuã. Confite-
būtur cœli mirabilia tua, Dñe: etenim
7 veritatẽ tuã in eccleſia ſãctorũ. Quoniã
quis in nubib⁹ æquabitur Dño: ſimilis
8 erit Deo in filiis Dei? De⁹, qui glorifi-
catur in cõſilio ſãctorũ: magn⁹ et terri-
bilis ſup omnes qui in circuitu ej⁹ ſũt.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

5 † Προσελογίσθην μετὰ τῶν καταβαινόντων εἰς λάκκον,
6 † ἐγενήθην (δ) ὡς ἄνθρωπος ἀβοήθητος, Ἐν νε-
κροῖς ἐλεύθερος, † ὡσεὶ (ε) τραυματίαι ἐρριμμένοι
καθεύδοντες ἐν τάφῳ, ὧν οὐκ ἐμνήσθης ἔτι, † καὶ αὐτοὶ
7 ἐκ τῆς χειρός σου ἀπώσθησαν. † Ἔθεντό με ἐν λάκκῳ
8 κατωτάτῳ, † ἐν σκοτεινοῖς καὶ ἐν σκιᾷ θανάτου. † Ἐπ'
ἐμὲ ἐπεστηρίχθη ὁ θυμός σου, † καὶ πάντας τοὺς μετεω-
9 ρισμούς σου ἐπήγαγες ἐπ' ἐμέ. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Ἐ-
μάκρυνας τοὺς γνωστούς μου ἀπ' ἐμοῦ, † ἔθεντό με βδέ-
λυγμα ἑαυτοῖς. † παρεδόθην καὶ οὐκ ἐξεπορευόμην.
10 † Οἱ ὀφθαλμοί μου ἠσθένησαν ἀπὸ πτωχείας· † (ϛ) καὶ ἐκέ-
κραξα πρὸς σὲ κύριε ὅλην τὴν ἡμέραν, † διεπέτασα
11 πρὸς σὲ τὰς χεῖράς μου. † Μὴ τοῖς νεκροῖς ποιή-
σεις θαυμάσια, † ἢ ἰατροὶ ἀναστήσουσι καὶ ἐξομολογή-
12 σονταί σοι; † Μὴ διηγήσεταί τις ἐν τάφῳ τὸ ἔλεός
13 σου, † καὶ τὴν ἀλήθειάν σου ἐν τῇ ἀπωλείᾳ; † Μὴ γνω-
σθήσεται ἐν τῷ σκότει τὰ θαυμάσιά σου, † καὶ ἡ δικαι-
14 οσύνη σου ἐν γῇ ἐπιλελησμένῃ; † (ζ) Κἀγὼ πρὸς σὲ
κύριε ἐκέκραξα, † καὶ τὸ πρωῒ ἡ προσευχή μου προφθά-
15 σει σε. † Ἱνατί κύριε ἀπωθεῖς (η) τὴν προσευχήν μου,
16 ἀποστρέφεις τὸ πρόσωπόν σου ἀπ' ἐμοῦ; † Πτωχός εἰμι
ἐγὼ καὶ ἐν κόποις ἐκ νεότητός μου, † ὑψωθεὶς δὲ ἐτα-
17 πεινώθην καὶ ἐξηπορήθην. † Ἐπ' ἐμὲ διῆλθον αἱ
ὀργαί σου, † καὶ οἱ φοβερισμοί σου ἐξετάραξάν με. †
18 Ἐκύκλωσάν με ὡς ὕδωρ, ὅλην τὴν ἡμέραν † περιέσχον
19 με ἅμα. † Ἐμάκρυνας ἀπ' ἐμοῦ φίλον, † (θ) καὶ τοὺς
γνωστούς μου ἀπὸ ταλαιπωρίας.

MS.A. (δ) ὡσεὶ (ε) τραυματίαι καθεύδοντες (ϛ) ἐνέκραξα πρὸς (ζ) Καὶ ἐγὼ (η) τὴν ψυχήν (θ) καὶ πλησίον, καὶ τοὺς

1 Συνέσεως (α) Αἰθὰμ τῷ Ἰσραηλίτῃ. πη'.
2 † ΤΑ ἐλέη σου κύριε εἰς τὸν αἰῶνα ᾄσομαι, † εἰς γε-
νεὰν καὶ γενεὰν ἀπαγγελῶ τὴν ἀλήθειάν σου ἐν τῷ στό-
3 ματί μου. † Ὅτι εἶπας, Εἰς τὸν αἰῶνα ἔλεος οἰκοδομη-
θήσεται, † ἐν τοῖς οὐρανοῖς ἑτοιμασθήσεται ἡ ἀλήθειά
4 σου. † Διεθέμην διαθήκην τοῖς ἐκλεκτοῖς μου, † ὤμο-
5 σα Δαυὶδ τῷ δούλῳ μου. † Ἕως τοῦ αἰῶνος ἑτοιμάσω
τὸ σπέρμα σου, † καὶ οἰκοδομήσω εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τὸν
6 θρόνον (β) σου. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Ἐξομολογήσονται οἱ οὐ-
ρανοὶ τὰ θαυμάσιά σου κύριε, † (γ) καὶ τὴν ἀλήθειάν σου ἐν
7 ἐκκλησίᾳ ἁγίων. † Ὅτι τίς ἐν νεφέλαις ἰσωθήσεται
τῷ κυρίῳ; † (δ) καὶ τίς ὁμοιωθήσεται τῷ κυρίῳ ἐν υἱοῖς
8 θεοῦ; Ὁ θεὸς ἐνδοξαζόμενος ἐν βουλῇ ἁγίων, † μέ-
γας † καὶ (ε) φοβερὸς ἐπὶ πάντας τοὺς περικύκλῳ αὐτοῦ.

MS.A. (α) Αἰθὰν (β) σου. Ἐξομολογήσονται (γ) καὶ γοῦ τὸν (δ) ὁμοιωθήσεται τῷ (ε) φοβερός ἐστιν ἐπὶ

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiop. Tranſl. LAT.

4 Æſtimat⁹ ſum cũ deſcendentib⁹ in 5
lacum: fact⁹ ſum ſicut homo ſine ad-
jutorio, Inter mortuos liber. 5 Sicut 6
vulnerati (e) projecti dormientes in
ſepulchro, quorum nõ meminiſti am-
plius: [d] & ipſi de manu tua expul-
ſi ſunt. 6 Poſuerunt me in lacu (f) in- 7
fimo, in tenebroſis, & in umbra mor-
tis. 7 Super me confirmatus eſt (g) fu- 8
ror tuus, & [e] omnes (h) elationes
tuas induxiſti ſuper me. DIAPSAL-
MA. 8 Longè feciſti notos meos à 9
(i) me: (f) poſuerunt me abominati-
onẽ ſibi. 9 Tradit⁹ ſum, & non egre-
diebar: Oculi (k) mei infirmati ſunt 10
præ inopia. 10 Et (l) clamavi ad te,
Domine, totâ die: [g] expandi ad te
manus meas. 11 Numquid mortuis 11
facies [h] mirabilia? aut medici [i]
ſuſcitabunt, & confitebuntur tibi?
12 Numquid narrabit aliquis in ſe- 12
pulchro miſericordiã tuã, & veri-
tatẽ tuã [k] in perditione? 13 Num- 13
quid cognoſcentur in tenebris mira-
bilia tua, & juſtitia tua in terra ob-
lita? 14 (m) Et [l] ego ad te, Dñe, cla- 14
mavi: et manè oratio mea præveniet
te. 15 Ut quid, Domine, repellis orati- 15
onẽ (n) meã: avertis faciem tuã à
me? 16 Inops ſum ego, & in labori- 16
b⁹ à juventute mea: exaltatus autẽ,
humiliatus ſum, & [m] confuſus. 17
In me tranſierunt iræ tuæ: & terro- 17
res tui conturbaverunt me. 18 Cir- 18
cundederũt me, ſicut aqua: totâ die
[n] circundederunt me ſimul. 19 E- 19
longâſti à me amicum [o], (o) &
notos meos à miſeria.

Intellectûs [a] Ætham *(a)* Iſraelitæ. 1
LXXXVIII.

1 MIſericordias (b) tuas, Domine, 2
in æternũ cantabo: 2 in generationẽ
et generationẽ annuntiabo veritatẽ
tuã in ore meo. 3 Quoniã dixiſti; In 3
æternũ [b] miſericordia (c) ædifica-
bitur: in cælis [c] præparabitur veri-
tas (d) tua. 4 [d] Diſpoſui teſtamen- 4
tũ electis meis: juravi David [e]
ſervo meo; Uſq; in æternũ præpara- 5
bo ſemen tuũ: 5 et ædificabo in ge-
neratione et generationẽ ſedẽ tuã.
DIAPSALMA. 6 Confitebuntur 6
cæli [f] mirabilia tua, Domine, (e) et
veritatẽ tuam in eccleſia ſanctorũ. 7
7 Quoniam quis in (f) nubibus æ-
quabitur Domino? et quis ſimilis erit Domino inter filios Dei? 8 Deus, qui glorificatur in (g) con- 8
ſilio ſanctorũ: magnus . . . (h) terribilis ſuper omnes qui in circuitu ejus ſunt.

Verſio ÆTHIOPICA.

ወተኈለቁ፡ምስለ፡ እለ፡ ይወርዱ፡ውስተ፡ዐ 4
ዘቅት፡፡ወኮንኩ፡ ከመ፡ ብእ..፡ ዘአልቦ፡ረደ
ኤ፡፡ግዑዘ፡ ውስተ፡ ምውታን፡፡=፡ ከመ፡ቅ 5
ቱላን፡ወግዱፋን፡እለ፡ ይሰክቡ፡ ውስተ፡ መቃ
ብር፡፡እለ፡ሊዘከርኮሙ፡ ለግሙራ፡፡እስመ፡
እሙንቱሂ፡ርሑቁ፡ እምእዴከ፡፡=፡ ወአንበ 6
ሩኒ፡ ውስተ፡ ዐዘቅት ፡ ታሕተ፡፡ውስተ፡ ጽል
መት፡ወጽላሎተ፡ ሞት፡፡=፡ ላዕሌየ፡ጸንዐ፡ 7
መዐትከ፡፡ ወኵሉ ፡ መቅሠፍተከ፡ አምጻእ
ከ፡ላዕሌየ፡፡=፡ አርሐቅ፡ እምኔየ፡ እለ፡ይ 8
አምሩኒ ፡፡ ወረሰዩኒ ፡ ርኩሰ ፡ በኀቤሆ
ሙ፡፡=፡ አኀዙኒ፡ አልብየ ፡ ሙፃእ፡፡አዕይ 9
ንትየኒ፡ ደክማ ፡ በተፀናስ፡፡=፡ ወጸራኅኩ፡ 10
ኀቤከ ፡ እግዚኦ፡፡ኵሎ፡ ዕሚረ፡ እኔሥእ፡
እደዊየ፡ ኀቤከ፡=፡ ቦኑ፡ ለምውታን፡ትገብ 11
ር፡መንክረከ፡፡ወዐቀብተ ፡ ሠራይኑ፡ ያነሥ
ሉ፡፡=፡ ወይነግሩኑ፡ እለ፡ ውስተ ፡ መቃብ 12
ር ፡ ሣህልከ ፡፡ ወጽድቅከኒ ፡ ውስተ ፡ ሞት
ኑ፡፡=፡ ወይትዐወቅኑ፡ ውስተ ፡ ጽልመት፡ 13
መንክርከ፡፡ ወርትዕከኒ ፡ በምድርኑ ፡ ተረስ
ዐ፡፡=፡ ወአንሂ፡እግዚኦ፡ኀቤከ፡ጸራኅኩ፡፡ 14
በጽባሕ፡ትብጽሕከ፡ጸሎትየ፡ቅድሜከ፡፡=፡
ለምንት፡ እግዚኦ፡ ትገድፍ፡ ጸሎትየ፡፡ወት 15
ሜይጥ፡ገጸከ፡እምኔየ፡፡=፡ ነዳይ፡አነ፡ወሰራ 16
ኅ፡ እምንእስየ፡፡ተልዒልየ፡ ተተሐትኩ፡ ወተ
መነንኩ፡፡=፡ ላዕሌየ ፡ ኀለፈ ፡ መቅሠፍት 17
ከ፡፡ወግርማከ፡ አደንገፀኒ፡፡=፡ ዐገቱኒ፡ኵ 18
ሎ፡ አሚረ ፡ ከመ፡ ማይ፡፡ወአኀዙኒ ፡ ኅቡ
ረ፡፡=፡ አርሐቅ ፡ እምኔየ፡ አዕርክትየ፡ ወ 19
ቢጽየ፡፡ወአዝማድየ፡እምተፀናስየ፡፡=፡

ዘበአእምሮ፡ኢማን፡እስራኤላዊ፡፡

፹፰ ምሕረተከ፡ እሴብሕ፡ እግዚኦ፡ለዓለ 1
ም፡፡=፡ ወእዜኑ ፡ ጽድቀከ፡ በአፉየ፡ ለት 2
ውልደ፡ ትውልድ፡፡=፡ እስመ፡ ትቤ፡ ለዓለ 3
ም፡ ኢሐንጽ፡ ምሕረተ፡፡በሰማይ ፡ ጸንዓ፡ጽ
ድቅከ፡፡=፡ ኪደነ፡ ተካየድኩ፡ ምስለ ፡ ኅ 4
ሩያንየ፡፡ ወመሐልኩ ፡ ለዳዊት ፡ ገብርከ፡፡
ለዓለም፡ አስተዳሉ፡ ዘርአከ፡፡=፡ ወአሐን 5
ጽ፡ለትውልደ፡ትውልድ፡ መንበረከ፡፡=፡ ይ 6
ገንየ፡ ሰማያት፡ ለስብሐቲከ፡ እግዚኦ፡፡ወጽ
ድቅከኒ፡በማኅበረ፡ ቅዱሳን፡፡=፡ መኑ፡ይት 7
ዐረይ ፡ ለእግዚአብሔር ፡ በደመናት ፡፡ ወመ
ኑ፡ ይመስሎ ፡ ለእግዚአብሔር፡ እምደቂቀ፡
አማልክት፡፡=፡ እግዚአብሔር ፡ ስቡሕ፡ በ 8
ምክረ፡ ቅዱሳን፡፡ዐቢይ፡ ወግሩም፡ ደበ፡ ኵ
ሎሙ፡እለ፡አውዱ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [d] quoniã ipſi [e] omnẽ plagam tuam [f] & poſuiſti me abominationẽ apud eos. Apprehenderunt me, neq; erat mihi egreſſio: [g] levavi ad [h] mirabilia tua? [i] ſuſcitabunt? Nunquid [k] in morte? [l] ego quidem [m] contempt⁹. In me [n] detinuerunt me [o] meũ & proximũ meũ, & cognatos meos ab inopia mea. *PSAL. LXXXVIII.* [a] Aeman Iſraelitæ. [b] miſericordiam ædificabo: [c] ſtabilitur juſtitia tua. [d] Teſtamentum cum electis meis diſpoſui firmiter: [e] ſervo tuo; [f] gloriam tuam,

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

5 6 * عدوني من الهابطين في الجب * صرت مثل انسان لا معين له * معدا في الاموات مثل قتلي
7 طريحين راقدين في القبور الذين لم تذكرهم بعد * وهم من يدك مقصيون * وضعوني في جب
8 9 سفلي في مواضع مظلمة * وظلال الموت * اشتد علي سخطك * وغشيني جميع اهوالك * ابعدت
10 عني معارفي * تركوني لهم رذالا * دفعت فلم انطق * عيناي من المسكنة ضعفتا * فصرخت اليك
11 يا رب * النهار كله بسطت يدي نحوك * هل تصنع في الموتي عجائبك * او الفلاسفة يقومون
12 13 ويعترفون لك * وهل يخبر احد في القبر برحمتك * او عند الهلكة امانتك * وهل تعرف في الظلمة
14 عجائبك * او عدلك في الارض المنسية * وانا اليك يا رب صرخت * وصلاتي تسبق فتبلغ اليك
15 16 في الغدوات * لماذا يا رب تقصي نفسي * وصرفت وجهك عني * فاني المسكين وفي الاتعاب منذ
17 18 صباي * وحين ارتفعت اتضعت وتحيرت * وجاء علي غضبك * واقلقني تخوفاتك * واحاطت بي
19 مثل الماء * واستولت علي جميعا النهار كله * ابعدت عني الصديق والقريب ومعارفي من المسكنة *
1 اللبلويا * المزمور الثامن والثمنون * فهم لناثان الاسرائيلي * وعدده قب . استيحن *
2 3 * مراحمك يا رب اسبحها الي الابد * اخبر عدلك بفمي من جيل الي جيل * لانك قلت ان
4 الرحمة تبني الي الابد * اتقنت في السموات امانتك * فرت عهدا مع مختاري * حلفت لداود
5 6 عبدي * اني مصلح زرعك الي الابد * ومثبت كرسيك من جيل الي جيل * السموات تعترف
7 بعجائبك يا رب * وحقك في مجمع القديسين * لان من في السحب شبيه الرب * ومن يشبه الرب
8 في ابناء الله * الله ممجد في مشورة القديسين * هو عظيم ومرهوب عند كل من حوله *

Annumeraverũt me inter deſcendentes in 5
foveã: fact⁹ ſum ſicut homo cui nullus eſt
adjutor: Computat⁹ inter mortuos inſtar 6
occiſorũ abjectorũ, jacentiũ in ſepulchris,
quorũ non meminiſti amplius, quiq; ſunt è
manu tua propulſati. Poſuerunt me in fo- 7
vea profunda, in locis tenebroſis, & umbrâ
mortis. Invaluit adverſũ me furor tu⁹, & 8
operuerunt me omnes fluct⁹ tui. Elongâ- 9
ſti à me notos meos, reliquerunt me ſibi
cõtemptionẽ: traditus ſum, et non ſum lo-
cutus. Oculi mei propter paupertatẽ infir- 10
mati ſunt: quapropter clamavi ad te, O Do-
mine: totâ die extendi manus meas ad te.
Num facturus es erga mortuos miracula 11
tua, aut Philoſophi ſurgent, & cõfitebun-
tur tibi? Et num enarrabit quis in ſepul- 12
chro miſericordiã tuã, aut apud perditos
fidẽ tuã? Et nũ cognoſcentur in tenebris 13
mirabilia tua, aut juſtitia tua in terra ob-
livioni tradita? Et ego ad te, O Domine, 14
clamavi: & oratio mea maturè perveniet
ad te in matutinis. Quare, O Domine, ex- 15
terminas animã meã, & avertiſti faciem
tuã à me? Ego enim ſũ pauper ille, *& in* 16
laboribus à pueritia mea: & quando ex-
altatus ſũ, humiliatus ſũ, & obſtupui; Et 17
invaſit me furor tuus, & conturbaverunt
me terrores tui: Et circundederunt me ſicut 18
aqua, & ſupereminuerunt mihi ſimul die
totâ. Elongâſti à me amicũ & proximũ, 19
& notos meos præ paupertate. Alleluja.

PSAL. LXXXVIII.

Intellectus Nathan Iſraelitæ. Et 1
numerus verſ. 102.

MIſericordias tuas, O Domine, cele- 2
brabo in æternũ: narrabo juſtitiam
tuam ore meo ab ævo in ævum. Quia tu 3
dixiſti, quòd miſericordia ædificabitur in
æternũ: confirmâſti cœlis fidem tuã. Pepi- 4
gi pactũ cum electis meis, juravi Davidi
ſervo meo, Quòd ego diſpoſiturus ſum ſe- 5
men tuum in ſeculum, & confirmaturus
ſedem tuã à generatione in generationem.
Cœli confitentur miracula tua, O Domine, 6
& veritas tua in cœtu ſanctorum. Nam 7
quis eſt in nubibus ſimilis Domino, &
quis comparatur Domino inter filios Dei?
Deus glorioſus eſt in conſilio ſanctorum: 8
ipſe magnus eſt ac terribilis apud omnes
qui circa eum ſunt.

תהלים ׃ פט

.tui circuitus tua veritas & ?Jah fortis tu ſicut quis ,exercituũ Deus Domine
9 יְהוָה אֱלֹהֵי צְבָאוֹת מִי־כָמוֹךָ חֲסִין יָהּ וֶאֱמוּנָתְךָ סְבִיבוֹתֶיךָ׃
Tu .eos compeſces tu ,ejus fluctus *elevando in* : maris *elatione in dominans* Tu
10 11 אַתָּה מוֹשֵׁל בְּגֵאוּת הַיָּם בְּשׂוֹא גַלָּיו אַתָּה תְשַׁבְּחֵם׃ אַתָּה
diſperſiſti tuæ fortitudinis brachio in *: Rahab* vulneratum tanquam confregiſti
דִכִּאתָ כֶחָלָל רָהַב בִּזְרוֹעַ עֻזְּךָ פִּזַּרְתָּ
tu ejus plenitudinẽ & orbem : terra *tibi* etiam ,cœli *Tibi* .tuos inimicos
12 אוֹיְבֶיךָ׃ לְךָ שָׁמַיִם אַף־לְךָ אָרֶץ תֵּבֵל וּמְלֹאָהּ אַתָּה
tuo nomine in Chermon & Tabor *.ea* creâſti tu *dexteram* & ,Aquilonẽ *.ea* fundâſti
13 יְסַדְתָּם׃ צָפוֹן וְיָמִין אַתָּה בְרָאתָם תָּבוֹר וְחֶרְמוֹן בְּשִׁמְךָ
.tua dextera exaltetur,tua man⁹ roboretur:fortitudine cum brachiũ Tibi *.perſonabunt*
14 יְרַנֵּנוּ׃ לְךָ זְרוֹעַ עִם־גְּבוּרָה תָּעֹז יָדְךָ תָּרוּם יְמִינֶךָ׃
.tuas facies præcedent veritas & miſericordia :tui ſolii *paratus locus* judiciũ & Juſtitia
15 צֶדֶק וּמִשְׁפָּט מְכוֹן כִּסְאֶךָ חֶסֶד וֶאֱמֶת יְקַדְּמוּ פָנֶיךָ׃
.ambulabunt *tuarũ facierum* lumine in Domine :jubilationẽ *ſcientium populi Beatitudines*
16 אַשְׁרֵי הָעָם יוֹדְעֵי תְרוּעָה יְהוָה בְּאוֹר־פָּנֶיךָ יְהַלֵּכוּן׃
gloria Quoniã .ſe exaltabũt tua juſtitia in & : die omni exultabũt tuo nomine In
17 18 בְּשִׁמְךָ יְגִילוּן כָּל־הַיּוֹם וּבְצִדְקָתְךָ יָרוּמוּ׃ כִּי־תִפְאֶרֶת
Domino Quia *.noſtrum cornu* exaltabis tua voluntate in & *: tu* eorũ fortitudinis
19 עֻזָּמוֹ אָתָּה וּבִרְצוֹנְךָ תָּרִים קַרְנֵנוּ׃ כִּי לַיהוָה
viſione in es locutus Tunc .noſter Rex Iſraelis ſancto & : noſter clypeus
20 מָגִנֵּנוּ וְלִקְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל מַלְכֵּנוּ׃ אָז דִּבַּרְתָּ־בְחָזוֹן
electum exaltavi : potentem ſuper adjutorium Poſui ,dixiſti & ,tuo miſericordi
לַחֲסִידֶיךָ וַתֹּאמֶר שִׁוִּיתִי עֵזֶר עַל־גִּבּוֹר הֲרִימוֹתִי בָחוּר
.eum unxi meæ ſanctitatis oleo in : meum ſervum David Inveni .populo de
21 מֵעָם׃ מָצָאתִי דָּוִד עַבְדִּי בְּשֶׁמֶן קָדְשִׁי מְשַׁחְתִּיו׃
Non .eum roborabit meũ brachium etiam *: eo cum* erit firma mea manus . Quo
22 23 אֲשֶׁר יָדִי תִּכּוֹן עִמּוֹ אַף־זְרוֹעִי תְאַמְּצֶנּוּ׃ לֹא־
contundam Et .eum affliget non iniquitatis filius & : eo *in* inimicus exiget
24 יַשִּׁא אוֹיֵב בּוֹ וּבֶן־עַוְלָה לֹא יְעַנֶּנּוּ׃ וְכַתּוֹתִי
,mea veritas Et .percutiam eum habentes odio & : ejus hoſtes ejus *faciebus* à
25 מִפָּנָיו צָרָיו וּמְשַׂנְאָיו אֶגּוֹף׃ וֶאֱמוּנָתִי
ponam Et .ejus cornu exaltabitur meo nomine in & : ipſo cum mea miſericordia &
26 וְחַסְדִּי עִמּוֹ וּבִשְׁמִי תָּרוּם קַרְנוֹ׃ וְשַׂמְתִּי
meus Pater ,me invocabit Ipſe .ejus dexteram fluminibus in & :ejus manũ mari in
27 בַיָּם יָדוֹ וּבַנְּהָרוֹת יְמִינוֹ׃ הוּא יִקְרָאֵנִי אָבִי
: eum *dabo* primogenitum ego Etiam .meæ ſalutis *rupes* & ,meus Deus *: tu*
28 אָתָּה אֵלִי וְצוּר יְשׁוּעָתִי׃ אַף־אָנִי בְּכוֹר אֶתְּנֵהוּ
: meam miſericordiam ei cuſtodiam ſeculum In .terræ regibus excelſum
29 עֶלְיוֹן לְמַלְכֵי־אָרֶץ׃ לְעוֹלָם אֶשְׁמוֹר־לוֹ חַסְדִּי
ejus thronum & : ejus ſemen *perpetuum* in ponam Et .ipſi erit fidele meũ pactum &
30 וּבְרִיתִי נֶאֱמֶנֶת לוֹ׃ וְשַׂמְתִּי לָעַד זַרְעוֹ וְכִסְאוֹ
meis judiciis in & : meam legem ejus filii dereliquerint Si *.cælorum* dies ſicut
31 כִּימֵי שָׁמָיִם׃ אִם־יַעַזְבוּ בָנָיו תּוֹרָתִי וּבְמִשְׁפָּטַי
non mea præcepta & : prophanaverint mea ſtatuta Si .ambulaverint non
32 לֹא יֵלֵכוּן׃ אִם־חֻקֹּתַי יְחַלֵּלוּ וּמִצְוֹתַי לֹא
.eorũ iniquitatẽ plagis in & :eorũ prævaricationẽ virga in viſitabo Et .cuſtodierint
33 יִשְׁמֹרוּ׃ וּפָקַדְתִּי בְשֵׁבֶט פִּשְׁעָם וּבִנְגָעִים עֲוֹנָם׃
.mea veritate in *fallam* neque : eo *cum à infringam* non meam miſericordiam At
34 וְחַסְדִּי לֹא־אָפִיר מֵעִמּוֹ וְלֹא אֲשַׁקֵּר בֶּאֱמוּנָתִי׃

תרגום TARGUM.

9 יְיָ אֱלָהָא עַל כָּל חֵילֵי מְרוֹמָא מַן דִּכְוָתָךְ חֲסִינָא
10 יְיָ וְקוּשְׁטָךְ חֲזוֹר לָךְ׃ אַתְּ שַׁלִּיט בְּגֵיוּתְנוּתָא דְיַמָּא
11 כַּד מִתְרַבָּא מִתְנַטְלִין גַּלּוֹי אַנְתְּ תְּמַאכִנּוּן׃ אַתְּ
שַׁפֵּיתָ הֵיךְ קְטִיל דְּחַרְבָּא רַהֲבָא הוּא פַּרְעֹה
רַשִׁיעָא בִּתְקוֹף אֶדְרַע עוּשְׁנָךְ בַּדַּרְתָּא בַּעֲלֵי
12 דְבָבָךְ׃ דִּי לָךְ שְׁמַיָּא לְחוֹד דִּי לָךְ אַרְעָא תֵּבֵל
13 וּמַלְיָהּ אַתְּ יְסַדְתִּנּוּן׃ מַדְבְּרַיָּא דִּי בִצְפוּנָא וְיָתְבִין
דִּי בְדָרוֹמָא וְחֶרְמוֹן דִּי בְמַדִּנְחָא בִּשְׁמָךְ מְשַׁבְּחִין׃
14 דִּי לָךְ אֶדְרְעָא עִם גְּבוּרְתָּא תַּעְשֵׁן יְדָךְ לְמִפְרַק
15 עַמָּךְ תָּרוֹם יְמִינָךְ לְשַׁכְלָלָא בֵּית מַקְדְּשָׁךְ׃ צִדְקְתָא
וְדִינָא מְדוֹר כּוּרְסֵי יְקָרָךְ טֵיבוּ וּקְשׁוֹט מְקַדְּמִין
16 אַפָּךְ׃ טוּבֵיהוֹן דְּעַמָּא דְיָדְעִין לְרַצּוּיֵי בְּרִיְהוֹן
בְּיַבָּבָא יְיָ בִּנְהוֹר זִיו אַפָּךְ יְהַלְּכוּן וְיִזְכּוּן בְּדִינָא׃
17 בִּשְׁמָךְ יְרַנְּנוּן כָּל יוֹמָא וּבְצִדְקָתָךְ יִתְרוֹמְמוּן׃
18 אֲרוּם שְׁבָהוֹר עוּשְׁנְהוֹן אַתְּ וּבִרְעוּתָךְ תָּרִים
19 קַרְנְהוֹן׃ אֲרוּם דַּיְיָ הִנּוּן תְּרֵיסָנָא וְדַיְיָ קַדִּישׁ
20 יִשְׂרָאֵל מַלְכָּנָא׃ כְּהֶדֵין מַלֵּלְתָּא בְּחֶזְוָנָא
לַחֲסִידַיךְ וַאֲמַרְתְּ שַׁוֵּיתִי סָעִיד לְעַמִּי עַל יְדֵיהּ
דְּמִתְגַּבַּר בְּאוֹרַיְתָא אַפְרֵשִׁית עוּלֵים מִן בֵּינֵי
21 עַמָּא׃ אַשְׁכְּחֵית דָּוִד עַבְדִּי בִּמְשַׁח קוּדְשָׁא רַבֵּיתִי
22 יָתֵיהּ׃ דִּי אִידַי מְתַקְּנָן בְּסַעֲדֵיהּ בְּרַם אֶדְרְעִי
23 תְּחַיְלְנֵיהּ׃ לָא יַטְעֵי בְּעֵל דְּבָבָא בֵיהּ וּבַר רַשִׁיעָא
24 לָא יְסַגְּפִנֵּיהּ׃ וְאֶשּׁוֹף מִן קֳדָמוֹי מְעִיקוֹי וּמְסַנְאוֹי
25 אֶגּוֹף׃ וְקוּשְׁטִי וְטוּבִי עִמֵּיהּ וּבְשׁוּם מֵימְרִי
26 תְּרוֹמַם יְקָרֵיהּ׃ וַאֲשַׁוֵּי בִּמְחוֹזֵי יַמָּא שׁוּלְטָנֵיהּ
27 וּבְיָתְבֵי עַל נַהֲרָוָתָא גְּבוּרַת יְמִינֵיהּ׃ הוּא יִקְרֵי
28 לִי אַבָּא אַתְּ אֱלָהָא וּתְקוֹף פּוּרְקָנִי׃ לְחוֹד אֲנָא
בּוּכְרָא לְמַלְכַיָּא דְבֵית יְהוּדָה אֶתְּנִנֵּיהּ עִלָּאָה עַל
29 מַלְכֵי אַרְעָא׃ לַעֲלַם אֶטּוֹר לֵיהּ טוּבִי וּקְיָמִי
30 מְהֵימְנָא לֵיהּ׃ וַאֲשַׁוֵּי לְעָלְמִין בְּנוֹי וְכוּרְסֵיהּ
31 כְּיוֹמַיָּא דִיקוּמוּן שְׁמַיָּא׃ אִין יִשְׁבְּקוּן בְּנוֹי אוֹרַיְתִי
32 וּבְדִינַי לָא יְהַלְּכוּן׃ אִין קְיָמַי יַפְסוּן וּפִקּוּדַי
33 לָא יִנְטְרוּן׃ וְאַסְעַר עַל יְדֵיהוֹן דְּשִׁבְטָא
דְרַשִּׁיעִין מְרָדֵיהוֹן וּבְמַזִּיקַיָּא בְּמַכְתָּשִׁין לְהוֹן
34 עֲוָיָתְהוֹן׃ וְטוּבִי לָא אֲבַטֵּל מִנֵּיהּ וְלָא אֲשַׁקֵּר
בְּהֵימָנוּתִי׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Domine Deus ſuper omnes virtutes excel- 9
ſas, quis ſicut tu fortiſſime Domine ? ſanè
veritas tua circundat te. Tu poteſtatem 10
habes in elationem maris: quando *excre-
vit* [*et*] intumeſcunt fluctus ejus, tu depri-
mis eos. Tu contriviſti veluti interfectum 11
gladio, ſuperbum, hic eſt Pharao impius:
in fortitudine brachii roboris tui diſperſiſti
inimicos tuos. Tui ſunt cœli, & inſuper tua 12
eſt terra; orbẽ & plenitudinẽ ej⁹ tu fundâſti.
Deſerta Aquilonis habitatoréſque Auſtri, & 13
Hermon ab Oriente in nomine tuo laudes di-
cunt. Tuũ eſt brachiũ cum fortitudine: robo- 14
rabis manũ tuã ut redimas populũ tuũ,exal-
tabis dexterã tuã ut ædifices domũ ſanctuarii
tui. Juſtitia & judiciũ habitatio ſedis gloriæ 15
tuæ, benignitas & veritas præcedunt faciem
tuã. Beatus popul⁹ qui novit complacêre cre- 16
atori ſuo cum jubilo: Dñe in lumine ſplendo-
ris faciei tuæ ambulabunt, & juſtificabuntur
in judicio. In nomine tuo exultabũt tota die, 17
& in juſtitia tua exaltabuntur. Quoniã gloria 18
fortitudinis eorũ tu es: & in beneplacito tuo
extolles *cornu eorũ*. Quoniã Dñi ſunt prote- 19
ctiones *noſtræ*, & *Domini* ſancti Iſrael regis
noſtri. Tunc locutus es in viſione piis tuis,et 20
dixiſti: Poſui adjutoriũ populo meo,per ma-
num ejus qui valet in lege, ſecrevi juvenẽ de
populo. Inveni Davidẽ ſervũ meũ: unctione 21
ſanctitatis meæ unxi eũ. Quoniã manus meæ 22
paratæ ſunt in adjutorio ejus: ſed & brachiũ
meũ virtutẽ dabit ei. Non decipiet eũ auctor 23
inimicitiæ, & filius impietatis non affliget
eum. Conteram enim à conſpectu ejus qui 24
angunt eum; & qui odio proſequuntur eum,
feriam. Et veritas mea & bonitas mea cum 25
ipſo, & in nomine Verbi mei exaltabitur
gloria ejus. Et ſtatuam in regionibus maris 26
imperium ejus, & in his qui habitant juxta
flumina robur dexteræ ejus. Ipſe invocabit 27
me, Pater meus es tu, Deus meus & forti-
tudo redemptionis meæ. Sed ego primoge- 28
nitum regum domus Judæ ponam eum, ſub-
limem ſuper reges terræ. In æternum ſer- 29
vabo illi benignitatem meam, & pactum
meum fidele ipſi erit. Et ponam in perpe- 30
tuum filios ejus, & ſedem ejus juxta dies
quibus ſteterint cœli. Si dereliquerint filii 31
ejus Legem meam, & in judiciis meis non
ambulaverint: Si præcepta mea polluerint, 32
& mandata mea non cuſtodierint: Viſitabo 33
per manum tribus impiorum ſcelera eorum,
& nocumentis plagarum *ipſis* iniquitates
eorum. Bonitatem autem meam non 34
auferam ab eo, & non mentiar in fide
mea.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

9 ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܡܢܘ ܐܟܘܬܟ ܚܣܝܢܐ: ܘܗܝܡܢܘܬܟ ܚܕܪܝܟ. * ܐܢܬ ܫܠܝܛ ܐܢܬ
10 11 ܒܬܘܩܦܗ ܕܝܡܐ: ܘܐܫܘܝܐ ܕܓܠܠܘܗܝ ܐܢܬ ܡܫܬܩ. * ܐܢܬ ܡܟܟ ܐܢܬ ܠܡܫܬܒܗܪܢܐ ܐܝܟ
12 ܕܩܛܝܠܐ: ܒܕܪܥܐ ܚܝܠܬܢܐ ܒܕܪܬ ܠܒܥܠܕܒܒܝܟ. * ܕܝܠܟ ܐܢܘܢ ܫܡܝܐ ܘܕܝܠܟ ܗܝ ܐܪܥܐ:
13 ܬܐܒܝܠ ܒܡܠܝܗ ܐܢܬ ܬܩܢܬ. * ܓܪܒܝܐ ܘܬܝܡܢܐ ܐܢܬ ܒܪܝܬ: ܬܒܘܪ ܘܚܪܡܘܢ ܠܫܡܟ
14 ܗܘ ܡܫܒܚܝܢ. * ܕܝܠܟ ܗܘ ܕܪܥܐ ܘܕܝܠܟ ܗܝ ܓܢܒܪܘܬܐ: ܬܬܥܫܢ ܐܝܕܟ ܘܬܬܪܝܡ ܝܡܝܢܟ.
15 16 * ܒܟܐܢܘܬܐ ܘܒܕܝܢܐ ܡܬܩܢ ܟܘܪܣܝܟ: ܒܛܝܒܘܬܐ ܘܒܩܘܫܬܐ ܡܩܕܡܝܢ ܐܦܝܟ. * ܛܘܒܘܗܝ
17 ܠܥܡܐ ܕܝܕܥ ܠܬܫܒܘܚܬܟ: ܡܪܝܐ ܒܢܘܗܪܐ ܕܐܦܝܟ ܢܗܠܟܘܢ. * ܘܒܫܡܟ ܢܚܕܘܢ ܟܠܝܘܡ:
18 ܘܒܟܐܢܘܬܟ ܢܬܥܫܢܘܢ. * ܡܛܠ ܕܫܘܒܚܐ ܕܥܘܫܢܢ ܐܢܬ ܗܘ: ܘܒܨܒܝܢܟ ܬܬܪܝܡ ܩܪܢܢ.
19 20 * ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܗܘ ܬܘܟܠܢ: ܘܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܡܠܟܢ. * ܗܝܕܝܢ ܡܠܠ ܒܚܙܘܢܐ
21 ܥܡ ܙܕܝܩܘܗܝ: ܘܐܡܪ ܕܣܡܬ ܥܘܕܪܢܐ ܠܓܒܪܐ ܘܐܪܝܡܬ ܓܒܝܐ ܡܢ ܥܡܐ: * ܘܐܫܟܚܬ
22 23 ܠܕܘܝܕ ܥܒܕܝ. ܘܒܡܫܚܐ ܕܩܘܕܫܝ ܡܫܚܬܗ. * ܐܝܕܝ ܥܕܪܬܗ ܘܐܦ ܕܪܥܝ ܚܝܠܬܗ. * ܘܠܐ ܐܘܬܪ ܒܗ
24 ܒܥܠܕܒܒܗ: ܘܒܪ ܥܘܠܐ ܠܐ ܡܟܟܗ. * ܐܘܒܕ ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ ܠܒܥܠܕܒܒܘܗܝ:
25 ܘܠܣܢܐܘܗܝ ܐܬܒܪ. * ܗܝܡܢܘܬܝ ܘܛܝܒܘܬܝ ܥܡܗ: ܘܒܫܡܝ ܬܬܪܝܡ ܩܪܢܗ. * ܕܝܦܣ*
26 27 * ܦܣܘܩܐ* * ܐܣܝܡ ܐܝܕܗ ܒܝܡܐ: ܘܒܢܗܪܘܬܐ ܝܡܝܢܗ. * ܗܘ ܢܩܪܝܢܝ ܐܒܝ ܐܢܬ: ܐܠܗܝ
28 29 ܘܦܪܘܩܝ ܚܝܠܬܢܐ. * ܘܐܦ ܐܢܐ ܒܘܟܪܐ ܐܣܝܡܝܘܗܝ: ܘܐܪܝܡܝܘܗܝ ܥܠ ܡܠܟܐ ܕܐܪܥܐ. * ܘܠܥܠܡ
30 ܐܛܪ ܠܗ ܛܝܒܘܬܝ: ܘܩܝܡܝ ܢܗܘܐ ܡܗܝܡܢ ܠܗ. * ܐܣܝܡ ܠܥܠܡ ܙܪܥܗ: ܘܟܘܪܣܝܗ ܐܝܟ
31 33 ܝܘܡܬܐ ܕܫܡܝܐ. * ܐܢ ܢܫܒܩܘܢ ܒܢܘܗܝ ܢܡܘܣܝ: ܘܒܦܘܩܕܢܝ ܠܐ ܢܗܠܟܘܢ. ** ܐܦܩܘܕ
34 ܒܫܒܛܐ ܥܘܠܗܘܢ: ܘܒܡܚܘܬܐ ܚܛܗܝܗܘܢ. * ܛܝܒܘܬܝ ܠܐ ܐܥܒܪ ܡܢܗ: ܘܠܐ ܐܕܓܠ ܒܗܝܡܢܘܬܝ.

Dñe Deus fortiſſime, quis ut tu potens, fide 9
tuâ circum te exiſtente ? Tu præes nitori ma- 10
ris,& agitationem fluctuum ejus tu ſedas. Tu 11
humilias ſuperbos tanquã occiſos : brachio
tuo valido diſſipâſti inimicos tuos. Tui ſunt 12
cœli, & tua eſt terra : orbẽ cum plenitudine
ipſius tu præparâſti : Aquilonem & Auſtrum 13
tu creâſti. Tabor & Hermon nomẽ tuũ glo-
rificant. Tibi eſt brachiũ, & tibi eſt poten- 14
tia ; magnificetur man⁹ tua,& exaltetur dex-
tera tua. Juſtitiâ & judicio firmũ eſt ſoliũ 15
tuũ; bonitate & veritate præoccupatur vul-
tus tuus. Beat⁹ popul⁹ qui ſcit laudationes tu- 16
as: Dñe in lumine faciei tuæ ambulabunt, Et 17
in nomine tuo exhilarabuntur quotidie, &
in juſtitia tua ſeſe attollent. Quoniam gloria 18
roboris noſtri tu es, teq; volente exaltabitur
cornu noſtrũ. Quoniã Dñs eſt fiducia noſtra, 19
& Sanctus Iſraelis Rex noſter : Tunc locut⁹ 20
eſt per viſiones cum juſtis ſuis,ac dixit, Statui
pro adjutorio virum,et extuli ſelectũ è popu-
lo: Et inveni Davidem ſervum meũ, & oleo 21
ſanctitatis meæ unxi eum : Manus mea auxi- 22
liata eſt ei, etiã brachiũ meũ roboravit illũ ;
Et non profecit quidquã inimicus ej⁹, & fili⁹ 23
iniqui non humiliavit illũ. Perdã è conſpectu 24
ej⁹ hoſtes ipſi⁹, & oſores ej⁹ conterã. Fides
mea & gratia mea cũ ipſô,& in nomine meo 25
exaltabitur cornu ej⁹. **Diapſal.** **Sectio**
Ponam manum ejus in mari,& in fluminibus 26
dexterã ejus. Ipſe vocabit me, dicens, Pater 27
me⁹ tu es, Deus me⁹ & liberator meus poten-
tiſſimus. Et ego quoque primogenitũ conſti- 28
tuã illũ, & elevabo eum ſuper reges terræ :
Et in æternũ ſervabo illi bonitatem meã, & 29
fœdus meũ fidele erit erga ipſum : Ponam in 30
ſeculũ ſemen ej⁹, & ſoliũ ej⁹ ſicut dies cœli.
Si deſeruerint filii ej⁹ legẽ meã, & in præce- 31
ptis meis non ambulaverint : Viſitabo virgâ
iniquitatẽ eorum, & flagello peccata eorum, 33
Bonitatem meam non avertam ab illo, & 34
non mentiar in fide mea,

Verſio VULG. LAT.

9 Domine Deus virtutũ, quis ſimilis tibi?
potens es, Dñe, & veritas tua in cir-
10 cuitu tuo. Tu dominaris poteſtati ma-
ris: motum autem fluctuũ ejus tu mi-
11 tigas. Tu humiliâſti ſicut vulneratum,
ſuperbum: in brachio virtutis tuæ di-
12 ſperſiſti inimicos tuos. Tui ſunt cœli,
& tua eſt terra, orbẽ terræ & plenitu-
13 dinem ejus tu fundâſti: Aquilonem &
mare tu creâſti. Thabor & Hermon in
14 nomine tuo exultabunt: Tuũ brachiũ
cum potentia. Firmetur manꝰ tua, &
15 exaltetur dextera tua: Juſtitia & judi-
ciũ preparatio ſedis tuæ. Miſericordia
16 & veritas præcedent faciẽ tuã: Beatus
populꝰ, qui ſcit jubilationẽ. Dñe, in
17 lumine vultꝰ tui ambulabunt, Et in
nomine tuo exultabunt totâ die: & in
18 juſtitia tua exaltabuntur. Quoniã glo-
ria virtutis eorũ tu es: et in beneplaci-
19 to tuo exaltabitur cornu noſtrũ. Quia
Domini eſt aſſumptio noſtra, & ſancti
20 Iſrael regis noſtri. Tunc locutus es in
viſione ſanctis tuis, & dixiſti; Poſui
adjutoriũ in potente: & exaltavi e-
21 lectum de plebe mea. Inveni David
ſervum meum: oleo ſancto meo unxi
22 eum. Manus enim mea auxiliabitur
ei: & brachium meum confortabit
23 eum. Nihil proficiet inimicus in eo,
& filius iniquitatis non apponet no-
24 cere ei. Et concîdam à facie ipſius
inimicos ejus: & odientes eum in fu-
25 gam convertam. Et veritas mea,
& miſericordia mea cum ipſo: et
in nomine meo exaltabitur cornu e-
26 jus. Et ponam in mari manum ejus,
27 & in fluminibus dexteram ejus. Ipſe
invocabit me, Pater meus es tu: De-
us meus, & ſuſceptor ſalutis meæ:
28 Et ego primogenitum ponam illum
29 excelſum præ regibus terræ. In æter-
num ſervabo illi miſericordiam me-
am: & teſtamentum meum fidele ipſi.
30 Et ponam in ſeculum ſeculi ſemen
ejus, & thronum ejus ſicut dies cœli.
31 Si autem dereliquerint filii ejus legem
meam: & in judiciis meis non ambu-
32 laverint: Si juſtitias meas profana-
verint: et mandata mea non cuſtodi-
33 erint: Viſitabo in virga iniquitates
eorum: & in verberibus peccata eo-
34 rum. Miſericordiam autem meam non
diſpergam ab eo: neque nocebo in
veritate mea:

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

9 † Κύριε ὁ Θεὸς τῶν δυνάμεων, τίς ὅμοιός σοι; † δυ-
10 νατὸς εἶ κύριε, ϗ ἡ ἀλήθειά σου κύκλῳ σου. † Σὺ
δεσπόζεις τοῦ κράτους τῆς θαλάσσης, † τὸν δὲ σάλον τῶν
11 κυμάτων αὐτῆς σὺ (ᵘ)καταπραΰνεις. † Σὺ ἐταπεί-
νωσας ὡς τραυματίαν, ὑπερήφανον, † (ε) ϗ ἐν τῷ βρα-
χίονι τῆς δυνάμεώς σου διεσκόρπισας τοὺς ἐχθρούς σου.
12 † Σοί εἰσιν οἱ οὐρανοί, ϗ σή ἐστιν ἡ γῆ, † τὴν οἰκουμέ-
13 νην ϗ τὸ πλήρωμα αὐτῆς σὺ ἐθεμελίωσας. † Τὸν
Βορρᾶν (ζ) ϗ θάλασσαν σὺ ἔκτισας, † Θαβὼρ ϗ
14 (η) Ἑρμὼν ἐν τῷ ὀνόματί σου ἀγαλλιάσονται. † Σὸς
ὁ βραχίων μετὰ δυναστείας· † κραταιωθήτω ἡ χείρ
15 σου, ὑψωθήτω ἡ δεξιά σου. † Δικαιοσύνη ϗ κρίμα
ἑτοιμασία τοῦ θρόνου σου· † ἔλεος ϗ ἀλήθεια προ-
16 πορεύσονται πρὸ προσώπου σου. † Μακάριος ὁ λαὸς
ὁ γινώσκων ἀλαλαγμόν· † κύριε ἐν τῷ φωτὶ τοῦ
17 προσώπου σου πορεύσονται, † Καὶ ἐν τῷ ὀνόματί σου
ἀγαλλιάσονται ὅλην τὴν ἡμέραν, † ϗ ἐν τῇ δικαιοσύ-
18 νῃ σου ὑψωθήσονται. † (θ) Ὅτι τὸ καύχημα τῆς δυ-
νάμεως αὐτῶν (ι) σὺ εἶ, † ϗ ἐν τῇ εὐδοκίᾳ σου
19 ὑψωθήσεται τὸ κέρας ἡμῶν. † Ὅτι τοῦ κυρίου ἡ ἀντί-
20 ληψις, † ϗ τοῦ ἁγίου Ἰσραὴλ βασιλέως ἡμῶν. † Τό-
τε ἐλάλησας ἐν ὁράσει τοῖς υἱοῖς σου, † ϗ εἶπας,
Ἐθέμην βοήθειαν ἐπὶ δυνατόν, † ὕψωσα ἐκλε-
21 κτὸν ἐκ τοῦ λαοῦ μου. † Εὗρον Δαυὶδ τὸν δοῦλόν μου,
22 † (κ) ἐν ἐλέει ἁγίῳ ἔχρισα αὐτόν. † Ἡ γὰρ χείρ
μου συναντιλήψεται αὐτῷ, † ϗ ὁ βραχίων μου κατι-
23 σχύσει αὐτόν. † Οὐκ ὠφελήσει ἐχθρὸς ἐν αὐτῷ, † ϗ
24 υἱὸς ἀνομίας οὐ προσθήσει τοῦ κακῶσαι αὐτόν. † Καὶ
συγκόψω (λ) ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ τοὺς ἐχθροὺς αὐ-
25 τοῦ, † ϗ τοὺς μισοῦντας αὐτὸν τροπώσομαι. † Καὶ ἡ
ἀλήθειά μου ϗ τὸ ἔλεός μου μετ᾽ αὐτοῦ, † ϗ ἐν τῷ
26 ὀνόματί μου ὑψωθήσεται τὸ κέρας αὐτοῦ. † Καὶ
θήσομαι ἐν θαλάσσῃ χεῖρα αὐτοῦ, † ϗ ἐν ποτα-
27 μοῖς δεξιὰν αὐτοῦ. † Αὐτὸς ἐπικαλέσεταί με,
Πατήρ μου εἶ σύ, † (¨) Θεός μου ϗ ἀντιλήπτωρ τῆς σω-
28 τηρίας μου. † (μ) Κἀγὼ πρωτότοκον θήσομαι αὐ-
29 τόν, † ὑψηλὸν παρὰ τοῖς βασιλεῦσι τῆς γῆς. † Εἰς
τὸν αἰῶνα φυλάξω αὐτῷ τὸ ἔλεός μου, † ϗ ἡ διαθή-
30 κη μου πιστὴ αὐτῷ. † Καὶ θήσομαι εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ
αἰῶνος τὸ σπέρμα αὐτοῦ, † ϗ τὸν θρόνον αὐτοῦ ὡς
31 τὰς ἡμέρας τοῦ οὐρανοῦ. † Ἐὰν ἐγκαταλίπωσιν οἱ
υἱοὶ αὐτοῦ τὸν νόμον μου, † ϗ τοῖς κρίμασί μου μὴ
32 πορευθῶσιν· † Ἐὰν τὰ δικαιώματά μου (ν) βεβη-
33 λώσωσι, † ϗ τὰς ἐντολάς μου μὴ φυλάξωσιν· † Ἐπι-
σκέψομαι ἐν ῥάβδῳ τὰς ἀνομίας αὐτῶν, † ϗ ἐν
34 μάστιξι τὰς (ξ) ἁμαρτίας αὐτῶν. † Τὸ δὲ ἔλεός μου
οὐ μὴ διασκεδάσω ἀπ᾽ αὐτοῦ, † (ο) οὐδὲ μὴ ἀδική-
σω ἐν τῇ ἀληθείᾳ μου,

MS. A. (ᵘ) καταπραΰνῃς. (ε) ἐν τῷ (ζ) ϗ τὴν θάλασσαν (η) Ἑρμωνιεὶμ τῷ ὀνόματί (θ) Ὅτι καύχημα (ι) εἶ σὺ, (κ) ἐν ἐλαίῳ ἁγίῳ μου ἔχρισα (λ) τοὺς ἐχθρούς μου ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ, (¨) ὁ Θεός (μ) Καὶ ἐγὼ (ν) βεβηλώσουσιν, (ξ) ἀδικίας (ο) οὐδ᾽ οὐ μὴ ἀδικήσω

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

9 Domine Deus virtutum, quis ſi- 9
milis tibi? potens es, Dominꝰ, & ve-
ritas tua in circuitu tuo. 10 Tu do- 10
minaris poteſtati maris: [g] *motum*
autem fluctuum ejus tu mitigas.
11 Tu humiliâſti ſicut vulneratum, 11
ſuperbum: & in brachio virtutis
tuæ diſperſiſti inimicos tuos. 12 Tui 12
ſunt cœli, & tua eſt terra: orbem
terrarum, & plenitudinem ejus tu
fundâſti. (i) Aquilonem & mare tu 13
creâſti: 13 Thabor & Hermon in
nomine tuo (k) exultabunt: [h] *Tuũ* 14
brachium cum (l) potentia: 14 (m)
firmetur manus tua: exaltetur dex-
tera tua. Juſtitia, & judicium præ- 15
paratio ſedis tuæ: 15 miſericordia
et veritas præibunt ante faciem tu-
am. Beatus populus, qui ſcit jubila- 16
tionem. 16 Domine, in lumine vul-
tûs tui ambulabunt: Et in nomine tuo 17
exultabunt totâ die: & in tua juſti-
tia exaltabuntur. 17 Quoniã gloria 18
virtutis eorum tu es: & in benepla-
cito tuo exaltabitur cornu noſtrum.
18 Quoniã [i] *Domini eſt (n) ſuſce-* 19
ptio, & ſancti Iſrael regis noſtri.
19 [k] *Tunc loquuꝰ es in (o) viſione* 20
filiis tuis, & dixiſti; Poſui adjutori-
um ſuper potentem: exaltavi ele-
ctum de populo meo. 20 Inveni Da- 21
vid ſervum meum: [l] *in (p) miſeri-*
cordia ſancta unxi eum. 21 Manus 22
enim mea auxiliabitur ei: & brachi-
um meum confortabit eum. 22 Non 23
proficiet inimicus in eo: & filius
iniquitatis (q) non apponet nocere
ei. 23 Et concîdam à facie ipſius 24
inimicos ejus, & odientes eum, [m]
in fugam convertam. 24 Et veri- 25
tas mea, & miſericordia mea cum
ipſo: & in nomine meo exaltabitur
cornu ejus. 25 Et ponam in mari 26
manum ejus, et in fluminibus dex-
teram ejus. 26 Ipſe invocabit me; 27
Pater meus es tu: Deus meus, [n] *et*
ſuſceptor ſalutis meæ. 27 Et ego 28
primogenitum ponam illum, excel-
ſum (r) apud reges terræ. 28 In 29
æternum ſervabo illi miſericordiam
meam: [o] *et teſtamentum meum*
fidele ipſi. 29 Et ponam in ſeculum 30
ſeculi ſemen ejus, 30 & thronum e-
jus, ſicut dies cœli. 31 Si dereliqu̇e- 31
rint filii ejus legem meam, & in
judiciis meis non ambulaverint: 32
[p] *Si juſtificationes meas propha-* 32
naverint, & mandata mea non cu-
ſtodierint; 33 Viſitabo in virga ini- 33
quitates eorum, & in flagellis
peccata eorum. 34 Miſericordiam 34
verò meam non [q] *diſpergam ab*
eo: non (ſ) nocebo in veritate
mea.

Verſio ÆTHIOPICA.

እግዚኦ ፡ አምላከ ፡ ኃያላን ፡ መኑ ፡ ከማከ ፡፡ 9
ኃያል ፡ አንተ ፡ እግዚኦ ፡ ወጽድቅ ፡ የዐው
ደከ ፡፡ ፨ አንተ ፡ ትኴንን ፡ ኃይለ ፡ ባሕር ፡፡ 10
ወአንተ ፡ ታረምም ፡ ለኃይለ ፡ ማዕበ
ላ ፡፡ ፨ ወአንተ ፡ አኅሰርኮ ፡ ለዕቡይ ፡ ከ 11
መ ፡ ቅቱል ፡፡ ወበመዝራዕተ ፡ ኃይልከ ፡ ዘ
ረውኮሙ ፡ ለፀርከ ፡፡ ፨ ዚአከ ፡ ውእቱ ፡ 12
ሰማያት ፡ ወእንቲአከ ፡ ይእቲ ፡ ምድር ፡፡
ወለዓለምኒ ፡ በምልኡ ፡ አንተ ፡ ሳረርከ ፡፡
ባሕር ፡ ወመስዐ ፡ አንተ ፡ ፈጠርከ ፡፡ ፨
ታቦር ፡ ወአርሞንኤም ፡ በስመ ፡ ዚአከ ፡ 13
ይትፌሥሑ ፡፡ ወይሴብሑ ፡ ለስምከ ፡፡ መ
ዝራዕትከ ፡ ምስለ ፡ ኃይል ፡፡ ፨ ጸንዓት ፡ 14
እዲከ ፡ ወተለዐለት ፡ የማንከ ፡፡ ፍትሕ ፡
ወርትዕ ፡ ተድላ ፡ መንበርከ ፡፡ ፨ ሣህል ፡ 15
ወጽድቅ ፡ የሐውሩ ፡ ቅድመ ፡ ገጽከ ፡፡ ብ
ፁዕ ፡ ሕዝብ ፡ ዘያአምር ፡ የብቦ ፡፡ ፨ እ 16
ግዚኦ ፡ በብርሃነ ፡ ገጽከ ፡ የሐውሩ ፡፡ ወ
በስምከ ፡ ይትፌሥሑ ፡ ኵሉ ፡ አሚረ ፡፡
ወበጽድቅከ ፡ ይትሌዐሉ ፡፡ ፨ እስመ ፡ ም 17
ክሐ ፡ ኃይሎሙ ፡ አንተ ፡፡ ወበሣህልከ ፡ ይ
ትሌዐል ፡ ቀርንነ ፡፡ ፨ እስመ ፡ እግዚአብ 18
ሔር ፡ ረድኤትነ ፡፡ ወለቅዱሰ ፡ እስራኤ
ል ፡ ንጉሥነ ፡፡ ፨ ወውእቱ ፡ አሚረ ፡ ተናገርኮ 19
ሙ ፡ በራእይ ፡ ለደቂቅከ ፡፡ ወትቤ ፡ እሬሲ ፡ ረድ
ኤተ ፡ በላዕለ ፡ ኃይል ፡፡ ወአልዐልኩ ፡ ኅሩየ ፡ እ
ምሕዝብየ ፡፡ ፨ ወረከብክዎ ፡ ለዳዊት ፡ ገብ 20
ርየ ፡፡ ወቀባዕክዎ ፡ ቅብአ ፡ ቅዱስ ፡፡ ፨ እስመ ፡ 21
እደየ ፡ ትረድኦ ፡፡ ወመዝራዕትየ ፡ ታጸን
ዖ ፡፡ ፨ ወኢይበቍዕ ፡ ጸላኢ ፡ በላዕሌሁ ፡፡ ወ 22
ውሉደ ፡ ዐመፃ ፡ ኢይደግም ፡ አሕምሞቶ ፡፡ ፨
ወእመትሮሙ ፡ ለፀሩ ፡ እምቅድመ ፡ ገጹ ፡፡ ወ 23
አኅስሮሙ ፡ ለጸላእቱ ፡፡ ፨ ወሣህልየሰ ፡ 24
ወጽድቅየ ፡ ምስሌሁ ፡፡ ወበስምየ ፡ ይትሌ
ዐል ፡ ቀርኑ ፡፡ ፨ ወእሠይሞ ፡ ውስተ ፡ ባ 25
ሕር ፡ እዴሁ ፡፡ ወውስተ ፡ አፍላግ ፡ የማ
ኑ ፡፡ ፨ ወውእቱ ፡ ይብለኒ ፡ አቡየ ፡ አን 26
ተ ፡፡ አምላኪየ ፡ ወረዳኢየ ፡ ወመድኃኒ
የ ፡፡ ፨ ወአንሰ ፡ በኵርየ ፡ እሬስዮ ፡፡ 27
ወልዑል ፡ እምነገሥተ ፡ ምድር ፡፡ ፨ ወለዓ 28
ለም ፡ አዐቅብ ፡ ሎቱ ፡ ሣህልየ ፡፡ ወመእመን ፡
ውእቱ ፡ ለኪዳንየ ፡፡ ፨ ወእሬሲ ፡ ዘርአ ፡ ለዓለ 29
መ ፡ ዓለም ፡፡ ፨ ወመንበሮሂ ፡ ከመ ፡ መዋዕለ ፡ 30
ሰማይ ፡፡ ፨ ወእመሰ ፡ ኀደጉ ፡ ደቂቁ ፡ ሕግየ ፡፡ 31
ወኢሖሩ ፡ በኵነኔየ ፡፡ ፨ ወእመሂ ፡ አርኰ 32
ሱ ፡ ሥርዓትየ ፡፡ ወኢዐቀቡ ፡ ትእዛዝየ ፡፡ ፨
እሔውጽ ፡ በበትር ፡ ለኃጢአቶሙ ፡፡ ወበመቅ 33
ሠፍት ፡ ለአበሳሆሙ ፡፡ ፨ ወሣህልየሰ ፡ ኢ 34
ይከልእ ፡ እምኔሆሙ ፡፡ ወኢይዔምፅ ፡ በጽ
ድቅየ ፡፡ ፨

INTERP. ÆTHIOP. [g] et vim fluctuum ejus tu ſedas. [h] et laudabunt nomen tuum. Tuum [i] Dominus eſt adjutorium noſtrum, [k] Et illo die loquutus [l] et oleo ſancto unxi eum. [m] contemnam. Et [n] et adjutor meus, & Salvator meus. Et ego quidem primogenitum meum ponam [o] & teſtamento meo ille fidelis erit. [p] Et ſi quidem ſtatuta mea [q] retinebo ab eis: neque injuſtè agam in

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ايها الرب اله القوات من يشبهك * قوي انت يا رب وعدلك يحيط بك * انت مالك عز البحر * 9 10
انت تسكن حركات امواجه * انت اذللت المتكبر كالجريح وبذراع قوتك تفرق اعداءك * لك 11 12
هي السموات ولك هي الارض * انت اسست المسكونة بكمالها * انت خلقت البر والبحر * 13
تابور وحرمون يبتهجان باسمك * لك القوة والجبروت * فلتعتز يدك ولتعل يمينك * بالعدل 14 15
والحكم اتقنت كرسيك * الرحمة والعدل يتقدمان * سالكين امام وجهك * طوبي 16
للشعب الذي يعرف تسبحتك يا رب * في نور وجهك يسلكون * وباسمك جميع النهار يبتهجون * 17
وبعدلك يرتفعون * لانك انت فخر قوتهم * وبحقك يعلو قرننا * لان النصر هو للرب * وقدوس 18 19
اسرائيل هو ملكنا * حينئذ بالوحي كلمت بنيك * وقلت اني جعلت معونة علي الجبار * رفعت 20
مختارا من شعبي * وجدت داود عبدي مسحته بدهن مقدس * لان يدي تنصره * وذراعي 21 22
تقويه * لا يرباح العدو منه * وابن الاثم لا يعود يضاره * اعداءه قطعتهم من قدام وجهه * ولمبغضيه 23 24
هزمت * حقي ورحمتي معه * وباسمي يعلو قرنه * اجعل في البحر يده * وفي الانهار يمينه * هو يدعوني 25 26
قائلا انت هو ابي * الهي وناصر خلاصي * انا اجعله بكرا عاليا علي جميع ملوك الارض * احفظ له 27 28
رحمتي الي الابد * وعهدي صادق له * اثبت ذريته الي ابد الابد * وكرسيه مثل ايام السماء * فان رفض 29 30
بنوه ناموسي * ولم يسيروا في احكامي * وان نجسوا حقوقي * ولم يحفظوا وصاياي * فانا اتفقد بالعصا 31 32 33
اثامهم وبالسوط خطاياهم * واما رحمتي فلا انزعها عنه * ولا اظلم في حقي * 34

O Domine Deus virtutũ, quis comparatur 9
tecũ? Fortis es O Domine, & æquitas tua
circunſtat tibi. Tu regis potentiã maris, tu 10
mitigas agitationes fluctuũ ejus. Tu hu- 11
miliâſti ſuperbũ quaſi vulneratũ: brachio
fortitudinis tuæ diſperſiſti inimicos tuos.
Tibi ſunt cœli & tibi eſt terra: tu fundâ- 12
ſti Habitatã integrã. Tu creâſti terrã 13
& mare: Thabor & Hermon exultant in
nomine tuo. Tibi eſt fortitudo & poten- 14
tia; corroboretur igitur manus tua, &
extollatur dextera tua: Juſtitiâ, & ju- 15
dicio parâſti ſedem tuã: miſericordia &
juſtitia præcedent ambulantes ante faciem
tuã. Fœlix populꝰ qui ſcit laudationẽ tuã 16
Domine: in lumine vultûs tui ambulabunt,
Et in nomine tuo die totâ exultabunt, & 17
in juſtitia tua exaltabuntur: Quoniam 18
tu es gloria virtutis eorũ, & in veritate
tua extolletur cornu noſtrũ. Quoniã au- 19
xiliũ eſt Domini, & Sanctus Iſraelis eſt
Rex noſter. Tunc in viſione allocutus es 20
filios tuos & dixiſti, Ego poſui adjutoriũ
ſuper potentem, exaltavi electũ è populo
meo: Inveni David ſervũ meũ, unxi eũ 21
unguento ſancto. Nam manꝰ mea auxilia- 22
bitur ei, & brachiũ meũ fortificabit illũ.
Non proficiet inimicus contra eum, & 23
filius iniquitatis non malignabitur ulte-
riùs in eũ. Inimicos ejus præcîdi è con- 24
ſpectu ipſiꝰ, & oſores ejus profligavi. Ve- 25
ritas mea & miſericordia mea cũ ipſo, et
in nomine meo extolletur cornu ejus. Po- 26
nam in mari manũ ejus, & in fluminibus
dexteram ejus. Ipſe vocabit me, dicens, Tu 27
es Pater meus, Deus meus, & adjutor ſa-
lutis meæ. Ego conſtituã eũ primogenitũ 28
excelſũ ſuper omnes reges terræ. Servabo 29
ei miſericordiã meã uſque in æternũ, &
pactũ meũ verax ipſi. Stabiliã progeniem 30
ejus in ſeculũ ſeculi, & ſedem ejus ſicut
dies cœli. Quòd ſi reſpuerint filii ejus 31
legẽ meã, et non ambulaverint in judiciis
meis: Siq; coinquinaverint ſtatuta mea, & 32
non cuſtodierint præcepta mea: Ego viſi- 33
tabo cũ fuſti ſcelera eorũ, et cũ loris pec-
cata eorũ; Verũ miſericordiã meã nõ au- 34
ferã ab eo, neq; opprimã in veritate mea.

Semel .mutabo non meorū labiorū egressum & : meum pactum prophanabo Non
35 לא־אחלל בריתי ומוצא שפתי לא אשנה: אחת
36 : erit seculum in ejus Semen .mentiar Davidi Si : meā sanctitatē per juravi
37 נשבעתי בקדשי אם־לדוד אכזב: זרעו לעולם יהיה
testis & : seculum stabilietur luna Sicut .me coram sol sicut ejus thronus &
38 וכסאו כשמש נגדי: כירח יכון עולם ועד
cum es iratus : *reprobâsti* & ,elongâsti tu At .Selah , fidelis *æthere* in
39 בשחק נאמן סלה: ואתה זנחת ותמאס התעברת עם־
.ejus diadema terra in prophanâsti : tui servi pactum *Abolevisti* .tuo *uncto*
40 משיחך: נארתה ברית עבדך חללת לארץ נזרו:
eū Diripuerunt .contritionem ejus munitiones posuisti :ejus macerias omnes *Rupisti*
41 פרצת כל־גדרתיו שמת מבצריו מחתה: שסהו
42 dexteram Exaltâsti .suis vicinis opprobrium fuit : *via* transeuntes omnes
43 כל־עברי דרך היה חרפה לשכניו: הרימות ימין
: ejus gladii aciem *obtundes* Etiam .ejus inimicos omnes Lætificâsti : ejus hostium
44 צריו השמחת כל־אויביו: אף־תשיב צור חרבו
ejus solium & : ejus *puritatem* fecisti Cessare .prælio in eum *statuisti* non &
45 ולא הקמתו במלחמה: השבת מטהרו וכסאו
eum *super* operuisti : ejus *adolescentiarum* dies Abbreviâsti .fecisti cadere terram in
46 לארץ מגרתה: הקצרת ימי עלומיו העטית עליו
sicut exardescet : *æternum* in te abscondes Domine Usquequo .Selah , pudore
47 בושה סלה: עד־מה יהוה תסתר לנצח תבער כמו־
creâsti *vane* quid ut : *ævi quanti ego* Memento ? tua *excandescentia* ignis
48 אש חמתך: זכר־אני מה־חלד על־מה־שוא בראת
eruet ? mortem videbit non & , vivet vir Quis ? hominum filios omnes
49 כל־בני־אדם: מי גבר יחיה ולא יראה־מות ימלט
priscæ tuæ misericordiæ Ubi .Selah ? inferi manu de suam animam
50 נפשו מיד־שאול סלה: איה חסדיך הראשנים
opprobrii Domine Recordare ? tua veritate in Davidi jurâsti : Domine
51 אדני נשבעת לדוד באמונתך: זכר אדני חרפת
affecerint probris Quod .*populos multos omnes meo sinu in me ferre* : tuorū servorū
52 עבדיך שאתי בחיקי כל־רבים עמים: אשר חרפו
Benedictus .tui *uncti* vestigia affecerint probris quod ; Domine tui inimici
53 אויביך יהוה אשר חרפו עקבות משיחך: ברוך
.Amen & ,Amen ,seculum in Dominus
יהוה לעולם אמן ואמן:

ספר רביעי

PSAL. XC. צ

nobis fuisti tu habitaculum Domine .Dei viri Moseh ipsius Oratio
1 תפלה למשה איש־האלהים אדני מעון אתה היית לנו
,terram formares & ,nascerentur montes Priusquam .generatione & ,generatione in
2 בדר ודר: בטרם הרים ילדו ותחולל ארץ
ad usque hominem *Convertes* .Deus tu seculum ad usque seculo à & : orbem &
3 ותבל ומעולם עד־עולם אתה אל: תשב אנוש עד־
anni mille Quoniam .hominum filii Convertimini , *dices* & : contritionem
4 דכא ותאמר שובו בני־אדם: כי אלף שנים
.nocte in custodia & : transierit cùm hesterna dies sicut ,tuis oculis in
בעיניך כיום אתמול כי יעבר ואשמורה בלילה:

תרגום TARGUM.

35 לא אפס קימי ומפקנות ספותי לא אשני : חדא
36 ומנא קימית בשום קודשי אם לדוד אכדיב: בנוי
37 לעלם יהוון וכורסיה נהיר היך שמשא לקבלי:
38 היך סיהרא דמתקן לאת לעלם וסהיד בשחקא
39 מהימן לעלמין : ואת שבקתא ורחקתא ארגותא
40 עם משיחך : אשניתא קים דעם עבדך אפסתא
41 לארעא כליליה : תקפתא כל כרכוי שויתא
42 פציחוי תבירא : רמסין יתיה כל עברי אורחא
43 הוה קלנא לשבבוי : ארמתא ימינא דמעיקוי
44 אחדיתא כל בעלי דבבוי : לחוד תתיב לאחורא
45 סיפיה ולא אקמתא יתיה בקרבא : בטלתא
כהניא דמדין על מדבחא ומדכין עמיה וכורסי
46 מלכותיה לארעא מגרתא : קצרתא יומי עלימוי
47 עטפתא עלוי בהתא וכסופא לעלמין: עד אימתי
יי תסלק שכנתך לעלמין תדליק היך אשתא
48 חמתך : אדכר די אנא אתבריתי מן עפרא מטול
49 מה לבטלא בריתא כל בני נשא : מן הוא גברא
דיחי ולא יחמי מלאכא דמותא וישיזב נפשיה מן
50 ידיה ולא יחות לבית קבורתיה לעלמין: אן הנון
טבותך דמן שרויא יי דקימתא לדוד בהימנותך:
51 אדכר יי חסודא דעבדך סוברית בעטפי כל
52 גדופיהון דסגיעין עממין : די חסידו בעלי דבבך
יי די חסידו איחור רושמת רגלי משיחך יי :
53 בריך שמא דיי בעלמא הדין אמן ואמן בריך
שמא דיי לעלמא דאתי אמן ואמן : צ
1 צלותא דצלי משה נביא דיי כד חבו עמא בית
ישראל במדברא עני וכן אמר יי דמדור בית
שכנתך בשמיא את הויתא לנא סעיד בכל דר
2 ודר : כד אתגלי קדמך דעמך עתידין למחוב
אתקנתא תתובא עד דלא טוריא אתנטלו
ואתבריאת ארעא ויתבי תבל ומן עלמא הדין
3 עד עלמא דאתי את הוא אלהא: תתיב בר נש על
4 חוביה עד מותא ואמרת תובו בני נשא : ארום
אלף שנין בעינך מתחשבין קדמך היך יומא
דאתמלי ארום יעבר והיך מטרת ליליא:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Non prophanabo pactum meum, & quod de- 35
promptū eſt ex labiis meis, non mutabo. Se- 36
mel juravi in nomine ſancto meo, nequaquā
Davidi mentiar. Filii ejus in æternū erunt, et 37
thronus ejus lucidus ſicut Sol in conſpectu
meo. Sicut Luna firmata ad ſignum æternū, 38
& teſtis in æthere fidelis in perpetuum. Tu 39
autem deſeruiſti & abominatus es; iratus es
cum Chriſto tuo. Irritum feciſti pactum cum 40
ſervo tuo: prophanâſti ad terram coronam
ejus. Deſtruxiſti omnia caſtra ejus: poſuiſti 41
oppida ejus deſtructionem. Conculcant eum 42
omnes tranſeuntes viam: fuit opprobrio vi-
cinis ſuis. Exaltâſti dexterā moleſtantiū eū: 43
lætificâſti omnes inimicos ejus. Siquidē ver- 44
tiſti retrorſum gladium ejus, & non confir-
mâſti *eum* in prælio. Abſtuliſti ſacerdotes 45
qui conſperſionem faciebant ſuper altari, &
purificabant populū ejus, & ſedem regnorum
ejus ad terram colliſiſti. Breviâſti dies juven- 46
tutis ejus: operuiſti eum pudore & confuſi-
one in perpetuū. Uſquequo Dñe auferes ma- 47
jeſtatē tuā in æternum? accendes in modum
ignis iram tuā? Recordare quòd creatus ſum 48
de pulvere: quare ut aboleātur creâſti omnes
filios hominū? Quis eſt ille vir qui vivet, & 49
non videbit angelū mortis? liberabit animā
ſuam de manu ejus, & non deſcendet in do-
mum ſepulchri *ſui* in perpetuū? Ubi illæ be- 50
nignitates tuæ primordiales Dñe, quas pactus
es Davidi in veritate tua? Recordare Dñe 51
opprobrii ſervorum tuorum: ſuſtinui in ſinu
meo cuncta opprobria multorum populorū.
Quoniam exprobraverunt hoſtes tui, expro- 52
braverunt tarditatē veſtigiorū pedū Chriſti
tui *Domine*. Benedictū nomen Dñi in ſeculo 53
iſto, *Amen & Amen: benedictum nomen
Domini* in ſeculo venturo; Amen & Amen.

Oratio qua oravit Moſſeh propheta Do- 1
mini, quando peccavit populus domus Iſrael
in deſerto, *elocutus eſt & ſic dixit:*

PSAL. XC.

DOmine cujus habitatio domus maje-
ſtatis tuæ eſt in cœlis, tu fuiſti nobis adjutor
in omni generatione & generatione. Quan- 2
do manifeſtum fuit coram te, quod populus
tuus eſſet peccaturus, diſpoſuiſti converſionē.
Antequam montes erigerentur, et creata eſſet
terra & habitatores orbis, à ſeculo hoc, &
uſq; ad ſeculū venturū, tu ipſe es Deus. Redi- 3
ges hominē propter peccatū ej⁹ uſq; ad mor-
tem: & dixiſti, Convertimini filii hominis.
Quoniā mille anni *in oculis tuis* computan- 4
tur apud te ſicut dies heſterna quando præ-
terierit, & ſicut vigilia noctis.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

35 * ܘܠܐ ܐܛܠܡ ܩܝܡܝ : ܡܕܡ ܕܢܦܩ ܡܢ ܣܦܘܬܝ ܠܐ ܐܫܚܠܦ . * ܚܕܐ ܝܡܝܬ ܒܩܘܕܫܝ ܠܕܘܝܕ
36
37 ܘܠܐ ܐܕܓܠ : * ܙܪܥܗ ܠܥܠܡ ܢܗܘܐ . ܘܟܘܪܣܝܗ ܐܝܟ ܫܡܫܐ ܩܕܡܝ * ܘܐܝܟ ܣܗܪܐ
38
39 ܢܬܩܢ ܠܥܠܡ . ܣܗܕܐ ܒܫܡܝܐ ܡܗܝܡܢܐ : * ܘܐܢܬ ܛܥܝܬܢܝ ܘܐܣܠܝܬܢܝ . ܘܐܗܦܟܬ
40 ܐܦܘܗܝ ܕܡܫܝܚܟ : * ܘܐܣܠܝܬ ܩܝܡܗ ܕܥܒܕܟ . ܘܐܪܡܝܬ ܠܐܪܥܐ ܬܓܗ : * ܦܣܩܬ
41
42 ܣܝܓܘܗܝ ܘܚܒܠܬ ܚܣܢܘܗܝ . * ܘܕܫܘܗܝ ܟܠ ܥܒܪܝ ܐܘܪܚܐ : ܘܗܘܐ ܚܣܕܐ
43 ܠܫܒܒܘܗܝ . * ܘܐܪܝܡܬ ܝܡܝܢܐ ܕܒܥܠܕܒܒܘܗܝ : ܘܚܕܝܬ ܠܟܠܗܘܢ ܣܢܐܘܗܝ
44 * ܘܐܗܦܟܬ ܥܘܕܪܢܐ ܕܣܝܦܗ : ܘܠܐ ܣܡܟܬܝܗܝ ܒܩܪܒܐ . * ܘܒܛܠܬ ܡܙܟܝܢܘܗܝ :
45
46 ܘܟܘܪܣܝܗ ܠܐܪܥܐ ܗܦܟܬ . * ܙܥܪܬ ܝܘܡܬܐ ܕܛܠܝܘܬܗ : ܘܐܥܛܦܬܝܗܝ ܒܗܬܬܐ . * ܥܕܡܐ
47
48 ܠܐ ܬܪܓܙ ܐܢܬ ܡܪܝܐ ܠܥܠܡ : ܘܬܐܩܕ ܐܝܟ ܢܘܪܐ ܚܡܬܟ . * ܐܬܕܟܪܝܢܝ ܡܢ ܚܒܠܐ : ܡܛܠ
49 ܕܠܐ ܗܘܐ ܣܪܝܩܐܝܬ ܒܪܝܬ ܠܟܠܗܘܢ ܒܢܝ ܐܢܫܐ . * ܡܢܘ ܓܒܪܐ ܕܢܚܐ ܘܠܐ ܢܚܙܐ ܡܘܬܐ :
50 ܘܢܦܨܐ ܢܦܫܗ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܫܝܘܠ . * ܐܝܟܐ ܐܢܝܢ ܛܝܒܘܬܟ ܡܪܝܐ ܩܕܡܝܬܐ : ܕܝܡܝܬ ܠܕܘܝܕ
51 ܒܗܝܡܢܘܬܐ . * ܐܬܕܟܪ ܡܪܝܐ ܚܣܕܗ ܕܥܒܕܟ : ܕܣܝܒܪܬ ܒܚܝܝ ܟܠܗ ܝܨܝܦܘܬܗܘܢ ܕܥܡܡܐ .
52 * ܚܣܕܘܢܝ ܒܥܠܕܒܒܝܟ ܡܪܝܐ : ܘܚܣܕܘ ܥܩܒܬܗ ܕܡܫܝܚܟ . * ܒܪܝܟ ܗܘ ܡܪܝܐ
53 ܠܥܠܡ ܐܡܝܢ ܘܐܡܝܢ .

* ܫܠܡ ܣܦܪܐ ܕܬܠܬܐ *

* ܪܝܫ ܣܦܪܐ ܕܐܪܒܥܐ *

* ܡܙܡܘܪܐ ܨ *

1 * ܕܡܘܫܐ . ܦܬܓܡܐ ܠܙ . ܡܪܝܐ ܒܝܬ ܡܥܡܪܐ ܗܘܝܬ ܠܢ ܠܕܪܕܪܝܢ . ܥܕܠܐ ܢܬܒܛܢܘܢ
2 ܛܘܪܐ : ܘܥܕܠܐ ܬܒܚܒܠ ܐܪܥܐ . ܘܥܕܠܐ ܬܬܬܩܢ ܬܐܒܝܠ : ܡܢ ܥܠܡ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ ܐܢܬ
3 ܗܘ ܐܠܗܐ . * ܕܐܗܦܟܬܝܗܝ ܠܒܪܢܫܐ ܠܡܘܟܟܐ : ܘܐܡܪܬ ܬܘܒܘ ܒܢܝ ܐܢܫܐ .
4 * ܡܛܠ ܕܐܠܦ ܫܢܝܢ ܒܥܝܢܝܟ : ܐܝܟ ܝܘܡܐ ܕܐܬܡܠܝ ܕܥܒܪ . ܘܐܝܟ ܡܛܪܬܐ ܕܠܠܝܐ :

Neque contemnam pactum meum: quod e- 35
greſſum eſt è labiis meis non mutabo. Unum 36
juravi per ſanctitatem meam Davidi, & non
retractabo: Semen ejus in æternum erit, & 37
thronus ejus ſicut ſol in conſpectu meo, Et 38
ut luna firmus erit in perpetuum: teſtis in
cœlo fidelis. Et tamen tu oblitus es mei, & 39
deſpexiſti me, atque avertiſti faciem Uncti
tui: Aſpernatuſq; es fœdus ſervi tui, & dejeci- 40
ſti in terram diadema ipſius: Diruiſti ſepes 41
ejus, atque deſtruxiſti arces illius: Et concul- 42
caverunt eum omnes tranſeuntes viā, factuſq;
eſt opprobrium vicinis ſuis: Et elevâſti dex- 43
terā inimicorum ejus, atque lætificâſti omnes 44
oſores illius: Et deflexiſti adjutorium gladii
ejus, neque fulſiſti eum in prælio: Et ceſſare 45
feciſti victores ipſius, & ſolium ejus in ter-
ram evertiſti: Minuiſti dies juventutis ejus, 46
& amiciviſti eum confuſione. Uſquequò 47
iraſceris Domine in æternum, & ardebit ve-
lut ignis indignatio tua? Memento mei à fo- 48
vea, non enim fruſtrà condidiſti omnes ho-
mines. Quis eſt vir qui vivet & non videbit 49
mortem, eripietque animā ſuam de manu fo- 50
veæ? Ubi ſunt beneficia tua Dñe priſtina, quæ
jurâſti Davidi cum fide? Memento Dñe op- 51
probrii ſervi tui: quòd portaverim in vita
mea cunctam ſolicitudinē populorū: Igno- 52
miniâ me affecerint hoſtes tui Dñe, & vitu-
perârint calcaneos Chriſti tui. Benedict⁹ Dñs 53
in æternū. Amen, amen.

Finis Libri Tertii.

Initium Libri Quarti.

PSAL. XC.

Moſis. Verſus 37.

DOmine, habitaculum fact⁹ es nobis in ge- 1
neratione generationū. Priuſquā concipe- 2
rentur montes, & antequā parturiret terra,
& priuſquā conderetur orbis, à ſeculo et uſq; 3
in ſeculum tu es Deus: Qui reduxiſti hominē
uſque ad humilitatem, ac tum dixiſti, Pœni-
tentiam agite filii hominum. Nam mille an- 4
ni in oculis tuis ſunt tanquam dies heſterna
quæ præteriit, ut vigilia noctis.

Verſio VULG. LAT.

35 Neque profanabo teſtamentum meū :
& quæ procedunt de labiis meis, non
36 faciam irrita. Semel juravi in Sancto
37 meo, ſi David mentiar : Semen ejus in
38 æternū manebit. Et thronus ejus ſicut
Sol in conſpectu meo, & ſicut Luna
perfecta in æternū : & teſtis in cœlo
39 fidelis. Tu verò repuliſti & deſpexiſti:
40 diſtuliſti Chriſtum tuum. Evertiſti teſtamentum
ſervi tui : profanâſti in terra
41 Sanctuariū ejus. Deſtruxiſti omnes
ſepes ejus : poſuiſti firmamentum ejꝰ
42 formidinem. Diripuerunt eum omnes
tranſeuntes viā : factus eſt opprobriū
43 vicinis ſuis. Exaltâſti dexteram deprimentiū
eum : lætificâſti omnes inimicos
44 ejus. Avertiſti adjutoriū gladii
ejus : & non es auxiliatus ei in bello.
45 Deſtruxiſti eum ab emundatione : &
46 ſedem ejus in terram colliſiſti. Minorâſti
dies temporis ejus : perfudiſti eū
47 confuſione. Uſquequò, Domine, avertis
in finem : exardeſcet ſicut ignis ira
48 tua ? Memorare quæ mea ſubſtantia :
numquid enim vanè cōſtituiſti omnes
49 filios hominū ? Quis eſt homo, qui
vivet, & non videbit mortem : eruet
50 animam ſuam de manu inferi ? Ubi
ſunt miſericordiæ tuæ antiquæ, Domine,
ſicut jurâſti David in veritate
51 tua ? Memor eſto, Domine, opprobrii
ſervorū tuorū (quod continui in ſinu
52 meo) multarū gentiū. Quod exprobraverunt
inimici tui, Dñe, ꝙ exprobraverunt
commutationē Chriſti tui.
53 Benedictus Dominus in æternū : Fiat,
fiat.

1 Oratio Moyſi hominis Dei.
LXXXIX.

DOmine, refugiū factus es nobis, à
2 generatione in generationē. Priuſquā
montes fierent, aut formaretur terra,
& orbis ; à ſeculo & uſque in ſeculum
3 tu es Deus. Ne avertas hominē
in humilitatem : & dixiſti, Conver-
4 timini filii hominum. Quoniam mille
anni ante oculos tuos, tanquam dies
heſterna, quæ præteriit, Et cuſtodia
in nocte,

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

35 † Οὐ δὲ μὴ βεβηλώσω τὴν διαθήκην μου, † καὶ τὰ ἐκπορευόμενα
διὰ τῶν χειλέων μου οὐ μὴ ἀθετήσω.
36 † Ἅπαξ ὤμοσα ἐν τῷ ἁγίῳ μου, εἰ τῷ Δαυὶδ
37 ψεύσομαι. † Τὸ σπέρμα αὐτοῦ εἰς τὸν αἰῶνα μενεῖ,
38 † Καὶ ὁ θρόνος αὐτοῦ ὡς ὁ ἥλιος ἐναντίον μου, † Καὶ
ὡς ἡ σελήνη κατηρτισμένη εἰς τὸν αἰῶνα, † καὶ ὁ
39 μάρτυς ἐν οὐρανῷ πιστός. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Σὺ δὲ
ἀπώσω καὶ ἐξουδένωσας, ἀνεβάλου τὸν χριστόν σου.
40 † Κατέστρεψας τὴν διαθήκην τοῦ δούλου σου, † ἐβεβήλωσας
41 εἰς τὴν γῆν τὸ ἁγίασμα αὐτοῦ. † Καθεῖλες
πάντας τοὺς φραγμοὺς αὐτοῦ, † ἔθου τὰ ὀχυρώματα
42 αὐτοῦ δειλίαν. † Διήρπασαν αὐτὸν πάντες οἱ (π)
διοδεύοντες ὁδὸν, † ἐγενήθη ὄνειδος τοῖς γείτοσιν
43 αὐτοῦ. † Ὕψωσας τὴν δεξιὰν τῶν (ρ) ἐχθρῶν αὐτοῦ,
44 † εὔφρανας πάντας τοὺς ἐχθροὺς αὐτοῦ. † Ἀπέστρεψας
τὴν βοήθειαν τῆς ῥομφαίας αὐτοῦ, † καὶ οὐκ ἀντελάβου
45 αὐτοῦ ἐν τῷ πολέμῳ. † Κατέλυσας ἀπὸ καθαρισμοῦ
αὐτὸν, † τὸν θρόνον αὐτοῦ εἰς τὴν γῆν κατέρραξας.
46 † Ἐσμίκρυνας τὰς ἡμέρας τοῦ (σ) θρόνου αὐτοῦ,
47 † κατέχεας αὐτοῦ αἰσχύνην. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Ἕως
πότε κύριε (τ) ἀποστρέφῃ εἰς τέλος; † ἐκκαυθή-
48 σεται ὡς πῦρ ἡ ὀργή σου; † Μνήσθητι τίς (υ) ἡ
ὑπόστασίς μου· † μὴ γὰρ ματαίως ἔκτισας πάντας
49 τοὺς υἱοὺς τῶν ἀνθρώπων; † Τίς ἐστιν ἄνθρωπος, ὃς
ζήσεται καὶ οὐκ ὄψεται θάνατον; † ῥύσεται τὴν ψυχὴν
50 αὐτοῦ ἐκ χειρὸς ᾅδου; ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Ποῦ
(φ) ἐστιν τὰ ἐλέη σου τὰ ἀρχαῖα κύριε, † ἃ ὤμοσας
51 τῷ Δαυὶδ ἐν τῇ ἀληθείᾳ σου; † Μνήσθητι κύριε τοῦ
ὀνειδισμοῦ τῶν δούλων σου, † οὗ ὑπέσχον ἐν τῷ κόλπῳ
52 μου πολλῶν ἐθνῶν· † Οὗ ὠνείδισαν οἱ ἐχθροί σου
κύριε, † οὗ ὠνείδισαν τὸ ἀντάλλαγμα τοῦ χριστοῦ σου.
53 † Εὐλογητὸς κύριος εἰς τὸν αἰῶνα. γένοιτο, γένοιτο.

MS.A. (π) παραπορευόμενοι τὴν ὁδὸν, (ρ) θλιβόντων
αὐτὸν, (σ) χρόνου αὐτοῦ, (τ) ἀποστρέφεις
(υ) μου ἡ ὑπόστασις· (φ) εἰσιν

Προσευχὴ (α) τῷ Μωυσῇ ἀνθρώπῳ τοῦ θεοῦ. πθʹ.

1 † Κύριε καταφυγὴ ἐγενήθης ἡμῖν ἐν γενεᾷ καὶ γε-
2 νεᾷ. † Πρὸ τοῦ ὄρη γενηθῆναι καὶ πλασθῆναι (β)
τὴν γῆν καὶ τὴν οἰκουμένην, † καὶ ἀπὸ τοῦ αἰῶνος (γ) ἕως
3 τοῦ αἰῶνος σὺ εἶ. † Μὴ ἀποστρέψῃς ἄνθρωπον εἰς ταπείνωσιν,
† καὶ εἶπας, Ἐπιστρέψατε (δ) υἱοὶ ἀνθρώπων;
4 † Ὅτι χίλια ἔτη ἐν ὀφθαλμοῖς (ε) σου, † ὡς ἡ ἡμέρα
ἡ ἐχθὲς ἥτις διῆλθε, καὶ φυλακὴ ἐν νυκτί.

MS.A. (α) τῷ Μωσῇ (β) γῆν (γ) καὶ ἕως (δ) οἱ υἱοὶ (ε) σου κύριε, ὡς

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

35 Neque prophanabo teſtamentum
meum : & quæ procedunt de labiis
meis, non faciam irrita. 36 Semel
juravi in Sancto meo, [n] (ſi David
mentiar;) Semen ejus in æternū manebit.
37 Et ſedes ejus, ſicut Sol, in
conſpectu meo, & [o] ſicut Luna perfecta
in æternum, & (t) teſtis in cœlo
fidelis. DIAPSALMA. 38 Tu verò
repuliſti, & (u) ſpreviſti : diſtuliſti
Chriſtum tuum. 39 (x) [p] Evertiſti
teſtamentum ſervi tui : prophanâſti
in terra (y) ſanctitatem ejus.
40 Deſtruxiſti omnes macerias ejus :
poſuiſti munitiones ejus formidinem.
41 Diripuerunt eum omnes tranſeuntes
viam : factus eſt opprobrium
vicinis ſuis. 42 Exaltaſti dexteram
(z) inimicorum ejus : lætificâſti omnes
inimicos ejus. 43 Avertiſti
adjutorium gladii ejus : & non es
auxiliatus ei in bello. 44 Diſſolviſti
(æ) eum ab emundatione ; [q] ſedem
ejus in terram colliſiſti. 45 Minuiſti
dies (aa) ſedis ejus : perfudiſti eum
confuſione. DIAPSALMA. 46 Quouſque,
Domine, (bb) averteris in finem?
exardeſcet, ſicut ignis, ira tua ?
47 Memento, [r] quæ eſt ſubſtantia
mea : numquid enim vanè (cc) conſtituiſti
omnes filios hominum? 48 Quis
eſt homo, qui vivet, & non videbit
mortē? [ſ] eruet animā ſuam de manu
inferi? DIAPSALMA. 49 Ubi
ſunt miſericordiæ tuæ antiquæ, Domine,
quas jurâſti David [t] in veritate
tua? 50 Memento, Domine, opprobrii
ſervorum tuorum, (dd) quod
continui in ſinu meo multarum gentium.
51 Quod exprobraverunt inimici
tui, Domine, quod exprobraverunt,
(ee) commutationem Chriſti tui.
52 Benedictus Dominus in æternum :
(ff) Fiat, fiat.

Oratio (a) [a] Moyſi homini Dei.
LXXXIX.

DOmine, refugium factus es nobis
in generatione & (b) generatione.
2 Priuſquàm (c) montes fierent,
& formaretur terra, & orbis terræ,
& à ſeculo uſque in ſeculum tu es.
3 Ne avertas hominem in humilitatem :
& dixiſti, (d) Convertimini filii
hominum. 4 Quoniam mille anni
in (e) oculis tuis, tanquam dies heſterni,
quæ præteriit, 5 & (f) cuſtodia
in nocte.

Verſio ÆTHIOPICA.

35
36 ወኢያረኵስ፡ኪዳንየ:: ወኢይኄሱ፡ዘወፅአ፡ 35
37 እምአፉየ::=፦ ምዕረ ፡ መሐልኩ ፡ በቅዱ 36
38 ስየ:: ከመ፡ለደዊት፡ኢይሔስዎ:: ወዘር
ኡሂ፡ ለዓለም፡ ይኄሉ::=፦ ወመንበርሂ፡ 37
39 ከመ፡ ፀሐይ ፡ በቅድሜየ:: ወሥሩዕ፡ከመ፡
ወርኅ፡ለዓለም:: ወሰማዕሂ፡መእመን፡በሰ
40 ማይ::=፦ ወአንተሰ ፡ መነንከ ፡ ወገደፍከ:: 38
ወአናሕሰይከ ፡ ለመሲሕከ::=፦ ወሜጥከ፡ 39
ሥርዓቶ፡ለገብርከ:: ወአርኰስከ፡ ውስተ፡
41 ምድር፡መቅደሶ::=፦ ወነሠትከ ፡ ኵሎ፡ 40
42 ጥቅሞ:: ወረሰይከ ፡ አጽዋኒሁ ፡ መፍር
ሀ::=፦ ወተማሰጠ፡ ኵሉ፡ ኃላፌ፡ፍኖት:: 41
43 ወኮነ ፡ ጽእለተ ፡ ለጎሩ::=፦ ወአልዐልከ፡ 42
የማነ ፡ ፀሩ:: ወአስተፈሣሕኮ ፡ ኵሎ፡ ጸላ
44 እቶ::=፦ ወሜጥከ ፡ ረድኤተ ፡ ኲናቱ:: 43
45 ወኢተወከፍኮ ፡ በውስተ፡ ፀብእ::=፦ ወሰዐ 44
ርኮ፡እምንጽሑ:: ወነፃሕከ፡ውስተ፡ምድ
46 ር፡ መቅደሶ::=፦ ወአውሐድከ፡መዋዕለ፡ 45
መንበሩ:: ወሶጥከ፡ ሳዕሌሁ፡ ኃፍረተ::=፦
47 እስከ፡ማእዜኑ፡ እግዚኦ፡ ትመይጥ፡ ለግሙ 46
ራ:: ወይነድድ፡ ከመ፡ እሳት፡መዐትከ::=፦
48 ተዘከር ፡ ምንት ፡ ውእቱ ፡ ኀይልየ:: ቦኑ፡ 47
ለከንቱ፡ ፈጠርኮ፡ ለኵሉ ፡ እጓለ ፡ እመሕ
49 ያው::=፦ መኑ፡ ሰብእ፡ዘየሐዩ፡ወኢይሬእ 48
ዮ ፡ ለሞት:: ወመኑ ፡ ዘያድኅና ፡ ለነፍሱ፡
50 እምእደ፡ ሲኦል::=፦ አይቴ፡ ውእቱ፡ ዘት 49
ካት፡ ሣህልከ፡ እግዚኦ:: ዘመሐልከ ፡ ለደዊ
ት፡ገብርከ፡በጽድቅ::=፦ ተዘከር፡እግዚ 50
51 ኦ ፡ ዘጸአልዎሙ ፡ ለአግብርቲከ:: ዘተወከ
ፍኩ፡ በሕፅንየ ፡ ብዙኃ፡ አሕዛበ::=፦ ዘፀ 51
52 አሉ፡ጸላእትከ፡እግዚኦ:: ወፀአሉ፡ አቤራ
ተ፡መሲሕከ::=፦ ይትባረክ፡እግዚአብሔር ፡ 52
ለዓለም፡ለይኩን፡ለይኩን::
53

ጸሎት፡ዘሙሴ፡ዘብእሴ፡እግዚአብሔር::

፹፱ እግዚኦ፡ ጸወነ፡ ኮንከነ፡ ለትውልደ፡ት 1
1 ውልድ::=፦ ዘእንበለ ፡ ይቁም ፡ አድባር፡ 2
ወይትፈጠር፡ዓለም፡ወምድር::
2 እምቅድመ፡ ዓለም ፡ ወእስከ ፡ ለዓለም፡ አ
ንተ፡ከመ::=፦ ኢትሚጦ ፡ ለሰብእ ፡ ለኅሳ
ር:: ወትቤ፡ተመየጡ፡ደቂቀ፡እጓለ፡እመሕ 3
3 ያው::=፦ እስመ፡ ዐሠርቱ ፡ ምእት ፡ ዓመ 4
4 ት:: በቅድሜከ፡ ከመ፡ዕለት ፡ እንተ ፡ ትማ
ልም፡ኃለፈት::=፦ወሰዓተ፡ሌሊት:: 5

INTERP. ÆTHIOP. [n] quòd Davidi non mentiar : & ſemen quidem ejus in æternum prævalebit. [o] poſita ſicut Luna in [p] Avertiſti teſtamentum [q] & ſanctuarium ejus [r] quod eſt robur meum : [ſ] & quis eſt qui eruet [t] ſervo tuo in *PSAL. LXXXIX.* [a] Moyſis, qui homo fuit Dei.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

35 ولا أدنس عهدي * ولا أجحد ما خرج من شفتي * دفعة حلفت بقدسي أني لا أخلف 36
37 لداود * وأن يكون زرعه إلى الأبد * وكرسيه مثل الشمس قدامي * وكالقمر الثابت إلى الأبد 38
39 الشاهد في السموات صادق * وأنت أقصيت وذللت وطرحت مسيحك * ونقضت عهد عبدك * 40
41 ونجست موضعه المقدس على الأرض * هدمت جميع سياجاته. تركت حصونه حافية * اختطفه كل 42
43 السالكين في الطريق * صار عارا لجيرانه * أعليت يمين مضطهديه * أفرحت جميع أعدائه *
44 * رددت معونة سيفه * ولم تنصره في الحرب * أبطلت شجاعته * أقلبت على الأرض كرسيه * 45
46 * صغرت أيام سنيه * أفضت عليه الخزي * فإلى متى يا رب تعرض إلى الانقضاء * يتوقد مثل 47
48 النار غضبك * أذكر ما هو قوامي * هل باطلا خلقت جميع بني البشر * من هو الإنسان الذي 49
50 يعيش ولا يرى الموت * ويخلص نفسه من الجحيم * أين هي مراحمك السابقة يا رب * اللواتي
51 حلفت بحقك لداود عليها * أذكر يا رب عار عبيدك الذي وعدت به في حضن أمم كثيرين *
52 * اللهم إن أعداءك عيروا * وعيروا آثار مسيحك * مبارك الرب إلى الأبد * يكون يكون * اللويا * 53

* المزمور التاسع والثمانون *

1 * صلاة موسى رجل الله * وهو * لح * استيخن *

2 يا رب صرت لنا ملجأ من جيل إلى جيل * قبل أن تكون الجبال * وقبل أن تخلق الأرض
3 والمسكونة * وأنت هو منذ الأزل وإلى الأبد * فلا ترد الإنسان إلى الذل * وقد قلت ارجعوا يا
4 بني البشر * لأن ألف سنة أمام عينيك يا رب مثل نهار أمس الماضي * ومثل هجعة من الليل *

Neque profanabo pactum meum, neque inficiabor 35
quod exivit è labiis meis. Semel 36
juravi per ſanctitatem meam, me non abjecturum
poſt tergum meū Davidem : Et 37
fore ſemen ejus in æternū, & thronum
ejus ſicut ſol corā me. Et ſicut luna per- 38
manes in ſeculum. Qui teſtis eſt in cœlis,
verax eſt. Tu verò exterminâſti & 39
humiliâſti atque abjeciſti unctum tuum :
Et ſolviſti pactum ſervi tui, & polluiſti 40
locū ejus ſanctum in terra. Deſtruxiſti 41
omnes ſepes ejus, reliquiſti arces ejus nudas.
Diripuerunt eum omnes prætereuntes 42
viam : factus eſt opprobrium vicinis ſuis :
Exaltâſti dexteram perſequutorū ejus : 43
lætificâſti omnes inimicos ipſius. Et aver- 44
tiſti adjutorium gladii ejus, & non auxiliatus
es ei in bello : Ceſſare feciſti ma- 45
gnanimitatem ejus : devolviſti ſuper terram
ſedem ejus : Minorâſti dies annorum 46
ejus : effudiſti ſuper eum ruborem. Quo- 47
uſque indignaberis, O Domine, in finem?
exardeſcet velut ignis furor tuus? Me- 48
mento qualis ſit ſtatus meus. Num fruſtrà
creâſti omnes filios hominum? Quis eſt 49
homo qui vivet, & non videbit mortem?
& liberabit animam ſuam de inferno?
Ubi ſunt miſericordiæ tuæ priſtinæ, O 50
Domine, de quibus jurâſti per veritatem
tuam Davidi? Memento, O Domine, im- 51
properii ſervorum tuorum, quod minitatus
es in ſinu gentium multarum. Deus 52
inimici tui improperârunt, & mutârunt
veſtigia Chriſti tui. Benedictus Dominus 53
in æternum. Sit, ſit. Allelujа.

PSAL. LXXXIX.

Oratio Moſis viri Dei. Verſ. 38. 1

O Domine, factus es nobis refugium ab
ævo in ævum : Antequam eſſent 2
montes, & antequam crearetur terra &
habitata ; & tu es ab æterno & uſque in
æternum. Ne ergò reducas hominem in 3
humiliationem : quum jam dixeris, Revertimini
O filii hominum. Quoniam 4
mille anni ante oculos tuos O Domine,
tanquam dies heſterna præterita ; & velut
particula noctis,

תהלים : צא

,florebit *matutino* In .*mutabitur* herba sicut mane *in* : erunt somnus ,eos Inundâsti
5 זרמתם שנה יהיו בבקר כחציר יחלף: בבקר יציץ 5
: tuo *naso* in sumus consumpti Quia .siccabitur & ,excidetur *vespera in* : transibit &
7 וחלף לערב ימולל ויבש: כי־כלינו באפך 6
: te coram nostras iniquitates Posuisti .sumus territi tua *excandescentia* in &
8 ובחמתך נבהלנו: שת עונתינו לנגדך 7
declinaverunt nostri dies omnes Quoniã .*tuarũ facierum* luminare ad *nostrũ* absconditum
9 עלמנו למאור פניך: כי כל־ימינו פנו 8
nostrorũ annorũ Dies .sermonẽ tanquam nostros annos consumpsimus : *tua ira in*
10 בעברתך כלינו שנינו כמו־הגה: ימי־שנותינו 9
eorũ *amplitudo* & ,anni octoginta fortitudinibus in si & ,anni septuaginta ipsis in
בהם שבעים שנה ואם בגבורת שמונים שנה ורהבם 10
fortitudinẽ *cognoscens* Quis .avolavimus & ,citò *resecatur quia* : iniquitas & , *labor*
11 עמל ואון כי־גז חיש ונעפה: מי־יודע עז
: fac scire sic ,nostros dies *numerandum Ad* .tua ira ,tuus timor sicut & : tuæ *iræ*
12 אפך וכיראתך עברתך: למנות ימינו כן הודע 11
super consolare & : usquequo Domine Convertere .sapientiam cor adducemus &
13 ונבא לבב חכמה: שובה יהוה עד־מתי והנחם על־ 12
lætabimur & ,*ovabimus* & : tua misericordia *matutino in* nos Satura .tuos servos
14 עבדיך: שבענו בבקר חסדך ונרננה ונשמחה 13
vidimus annos : nos afflixisti dies juxta nos Lætifica .nostris diebus omnibus in
15 בכל־ימינו: שמחנו כימות עניתנו שנות ראינו 14
.eorum filiis in *tuus decor* & : tuum opus tuis servis in Conspiciatur .malum
16 רעה: יראה אל־עבדיך פעלך והדרך על־בניהם: 15
nostrarum manuum opus & ,nos super nostri Dei Domini *jucunditas* sit Et
17 ויהי נעם יהוה אלהינו עלינו ומעשה ידינו
.*illud* confirma nostrarum manuum opus & : nos super stabile fac 16
כוננה עלינו ומעשה ידינו כוננהו: 17

PSAL. XCI. צא

Dicam .commorabitur *Sadai* umbra in : altissimi abscondito in *Habitans* 1
1 ישב בסתר עליון בצל שדי יתלונן: 2 אמר 2
ipse Quoniam .eo in sperabo meus Deus : mea *munitio* & ,mea spes , Domino 3
3 ליהוה מחסי ומצודתי אלהי אבטח־בו: כי הוא
,tibi obumbrabit *sua ala In* .*contritionum peste* à : venatoris laqueo à te liberabit 4
4 יצילך מפח יקוש מדבר הוות: באברתו יסך לך
timebis Non .ejus veritas *parma* & scutum : sperabis ejus pennis sub & 5
5 ותחת־כנפיו תחסה צנה וסחרה אמתו: לא תירא
: ambulabit caligine in *peste* A .diem per volaverit sagitta à : noctis *pavore* à 6
6 מפחד לילה מחץ יעוף יומם: מדבר באפל יהלך
:tua dextera à millia decem & ,mille tuo latere à *Cadet* .meridie *vastabit excidio ab* 7
7 מקטב ישוד צהרים: יפל מצדך אלף ורבבה מימינך
impiorum retributionẽ & :aspicies tuis oculis in Veruntamen .*accedet* non *te ad*
8 אליך לא יגש: רק בעיניך תביט ושלמת רשעים 8
.tuũ habitaculũ posuisti excelsum : mea spes Domine tu Quoniam .videbis
9 תראה: כי־אתה יהוה מחסי עליון שמת מעונך: 9

תרגום TARGUM.

5 ואין לא תיבין תיתי עליהון מותא היך דמכין
יהון ולעלמא דאתי היך עסבא דמתפרכא
6 יתחלפון: דמין עובדיהון היך עסבא די בצפרא
יניץ ויסגי לרמשא מתמולל ומתיבש מן חורבא:
7 ארום אשתיצנא מן תוקפך ומן רגזך אתבהלנא:
8 שויתא חובנא לקובלך עוית טליותנא קבל
9 נהור אפך: ארום כל יומנא אתפניאו קדמך
ברוגזך שיצינא יומי חיינא היך הבל פומא
10 דסתוא: יומי שנותנא בעלמא הדין שובעין שנין
מתאלמין ואין בגבורתא תמנן שנין וסוגעיהון
ליאות ושקר לחיביא ארום עדו בסרהוביא
11 וטיסין לצפרא: מן הוא דידע לאתבא עושנא
דתוקפך אלהן צדיקיא דדחלין מנך משדכין
12 רוגזך: לממני יומנא כן יתכוין להודע ברם נביא
13 דלביה מבע חוכמתא: תוב יי עד אימתי
תסגפננא ותוב מן בישתא די מללתא למעבד
14 לעבדך: שבע יתנא לעלמא דמתיל לצפרא
15 טובך ונרנן ונחדי בכולהון יומנא: שמח יתנא
היך יומין דסגפתנא היך שניא דחמינא בישתא:
16 יתחמי לעבדך עובדי נסך ושבהורך על בניהון:
17 ויהי בסימותא דגן עדן מן קדם יי עלנא ועובדי
ידנא מניה יתקנון:

צא

1 דאשרי שכנתיה ברזא עלאה בטלל ענני יקרא
2 דשדי יבית: אמר דוד אימר ליי רוחצני וכרך
3 תוקפי אלהי אכלי במימריה: ארום הוא יפצנך
שלמה ברי מפחא ותקלא ממותא ואתרגושתא:
4 בטלל שכנתיה יטלל עלך ותחות טלל יקריה
5 תתרחץ תריסא ועגילא הימנותיה: לא תדחל
מן דלוחא דמזיקי דאזלין בליליא מן גררא
6 דמלאך מותא דשדי ביממא: מן מותא די
בקבלא מהלך מסיעת שידין דמחבלין
7 בטיהרא: תדכר שמא דקודשא יפלון מן סטר
שמאלך אלפא ורבבותא מן ימינך לותך לא
8 יקרבון למנזק: לחוד בעינך תהי מסתכל
9 והיך מתנפרין רשיעי תחמי: עני שלמה
וכן אמר ארום אנת הוא יי רוחצני במדור עלאה שויתא בית שכנתך:

PARAPH. CHALD. Vers. Lat.

Et si non convertantur, induces in eos mortem; sicut *somniantes erunt* : & in mundo venturo sicut herba quæ exciditur, permutabuntur. 5 Similes sunt operationes eorum herbæ quæ manè florebit atq; crescet; vesperi excisa siccatur propter æstum. 6 Quoniã consumpti sumus à furore tuo, & ab indignatione tua conturbati sumus. 7 Posuisti peccata nostra in conspectu tuo, iniquitates juventutis nostræ coram luce vultus tui. 8 Quoniam omnes dies nostri recesserunt *ante te* in ira tua, consumpsimus dies vitæ nostræ tanquam vaporẽ oris in hyeme. 9 Dies annorũ nostrorũ in mundo hoc septuaginta anni robustiorũ; & si in fortitudine octoginta anni: at multiplicatio eorũ labor & falsitas peccatoribus, quoniã transierũt velociter, et volãt *ad mane*. 10 Quis est ille qui sciet avertere fortitudinẽ iræ tuæ, nisi justi qui timẽt te, sedãtes furorẽ tuũ? 11 Ad numerandos dies nostros, [*quis*] *sic* diriget ut scire faciat? certè propheta cujus cor *profundit* sapientiã. 12 Convertere Dñe, usquequo affliges nos? convertere, inquam, à malo quod locutus es facere *servis tuis*. 13 Satura nos in mundo, qui similis est matutino benignitate tua; & lætabimur & exultabimus omnibus diebus nostris. 14 Lætifica nos secundùm dies quibus afflixisti nos, sicut anni quibus vidimus mala. 15 Manifestæ fiant servis tuis operationes signorum tuorũ, & decor tuus super filios eorũ. 16 Et sit dulcedo horti deliciarum à conspectu Dñi super nos, & opera manuum nostrarum ab ipso præparentur. 17

PSAL. XCI.

Qui posuit majestatem suam in secreto altissimo, in umbra nubiũ gloriæ omnipotentis commorabitur. 1 Dixit David; Dicã Domino: Fiducia mea et arx fortitudinis meæ, Deus meus confidam in verbo ejus. 2 Quoniã ipse liberabit te, *Selomoh fili mi*, de laqueo & offendiculo, de morte atque tumultu. 3 In umbra majestatis suæ obumbrabit tibi, & sub umbra gloriæ ejus securus consistes: clypeus & parmula veritas ejus. 4 Non timebis à timore dæmonũ qui ambulant in nocte, à sagitta angeli mortis, quam emittit interdiu. 5 A morte in tenebris ambulante, à caterva dæmonum qui grassantur in meridie. 6 Recordaberis nominis sancti: & cadent à latere sinistro tuo mille, & decem millia à dextera tua; tibi autem non appropinquabunt ut noceant. 7 Veruntamen oculis tuis considerabis: & quemadmodum consumantur impii videbis. 8 *Respondit Selomoh & sic dixit*, Quoniam tu *ipse* Domine fiducia mea, in habitaculo *excelso* posuisti domum majestatis tuæ. 9

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

5 6 * ܫܢܝܗܘܢ ܫܢܬܐ ܢܗܘܝܢ. ܘܒܨܦܪܐ ܐܝܟ ܥܣܒܐ ܢܚܠܦ: * ܒܨܦܪܐ ܢܦܪܥ ܘܢܚܠܦ.
7 8 ܘܒܪܡܫܐ ܢܬܡܠܠ ܘܢܝܒܫ: * ܡܛܠ ܕܫܠܡܢ ܒܪܘܓܙܟ. ܘܒܚܡܬܟ ܐܬܕܠܚܢ: * ܣܡܬ ܣܟܠܘܬܢ
9 ܠܘܩܒܠܟ. ܥܠܝܡܘܬܢ ܠܢܘܗܪܐ ܕܦܪܨܘܦܟ: * ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ ܝܘܡܬܢ ܫܠܡܘ ܒܪܘܓܙܟ. ܘܫܠܡ
10 ܫܢܝܢ ܐܝܟ ܓܘܣܐ: * ܝܘܡܝ ܫܢܝܢ ܒܗܘܢ ܫܒܥܝܢ ܫܢܝܢ. ܘܒܡܣܟܝܢ ܬܡܢܝܢ ܫܢܝܢ:
11 ܘܣܘܓܐܗܘܢ ܥܡܠܐ ܘܟܐܒܐ. ܡܛܠ ܕܐܬܐ ܥܠܝܢ ܡܘܟܟܐ ܘܐܬܕܠܚܢ: * ܡܢ ܝܕܥ ܥܘܫܢܐ
12 13 ܕܪܘܓܙܟ ܘܕܚܠܬܐ ܕܚܡܬܟ. * ܐܘܕܥܢ ܡܢܝܢܐ ܕܝܘܡܬܢ: ܕܢܥܘܠ ܠܠܒܐ ܕܚܟܡܬܐ. * ܐܬܦܢܐ
14 ܡܪܝܐ ܥܕܡܬܝ ܠܐ ܡܬܒܝܐܢܬ: ܠܥܒܕܝܟ. * ܣܒܥܢ ܒܨܦܪܐ ܛܝܒܘܬܟ: ܢܫܒܚ ܘܢܚܕܐ
15 16 ܒܟܠܗܘܢ ܝܘܡܬܢ. * ܚܕܝܢ ܡܛܠ ܕܡܝܬ ܚܘܒܢ: ܘܫܢܝܐ ܕܚܙܝܢ ܒܝܫܬܐ. * ܢܬܚܙܘܢ
17 ܠܥܒܕܝܟ ܥܒܕܝܟ: ܘܗܕܪܟ ܥܠ ܒܢܝܗܘܢ. * ܬܗܘܐ ܒܣܝܡܘܬܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܥܠܝܢ:
ܕܥܒܕ ܐܝܕܘܗܝ ܐܫܪ ܥܠܝܢ. ܘܥܒܕܐ ܕܐܝܕܘܗܝ ܬܩܢܢ. * ܫܘܠܡܗ ܕܨ *
1 * ܕܕܘܝܕ. ܥܠ ܚܙܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܢܬܩܪܐ ܒܪܗ ܕܕܘܝܕ. ܘܪܘܚܢܐܝܬ ܡܬܐܡܪܐ ܙܟܘܬܗ
ܕܡܫܝܚܐ ܘܕܟܠ ܕܒܗ ܡܫܬܡܠܐ. ܦܬܓܡ̈ܐ ܠܗ. ܕܝܬܒ ܒܣܬܪܗ ܕܡܪܝܡܐ. ܘܒܛܠܠܗ
2 ܕܐܠܗܐ ܡܫܬܒܗܪ: * ܐܡܪ ܠܡܪܝܐ ܬܘܟܠܢܝ. ܘܓܘܣܝ ܐܠܗܐ ܕܥܠܘܗܝ ܬܟܝܠ ܐܢܐ:
3 4 * ܕܗܘ ܢܦܨܝܟ ܡܢ ܦܚܐ ܕܬܘܩܠܬܐ. ܘܡܢ ܡܡܠܠܐ ܕܣܪܝܩܘܬܐ: * ܒܐܒܪܘܗܝ ܢܦܨܝܟ
5 ܘܬܚܬ ܟܢܦܘܗܝ ܬܬܟܣܐ. ܙܝܢܐ ܢܚܙܪܟ ܩܘܫܬܗ: * ܠܐ ܬܕܚܠ ܡܢ ܕܚܠܬܐ ܕܠܠܝܐ. ܘܡܢ
6 ܓܐܪܐ ܕܦܪܚ ܒܐܝܡܡܐ: * ܘܡܢ ܡܠܬܐ ܕܡܗܠܟܐ ܒܚܫܘܟܐ. ܘܡܢ ܪܘܚܐ ܕܢܫܒܐ ܒܛܗܪܐ:
7 8 * ܢܦܠܘܢ ܡܢ ܣܛܪܟ ܐܠܦܐ. ܘܪܒܘܬܐ ܡܢ ܝܡܝܢܟ: ܘܠܘܬܟ ܠܐ ܢܬܩܪܒܘܢ. * ܐܠܐ ܒܥܝܢܝܟ
9 ܒܠܚܘܕ ܬܚܙܐ: ܘܦܘܪܥܢܗܘܢ ܕܚ̈ܛܝܐ ܬܚܙܐ. * ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܗܘ ܡܪܝܐ ܬܘܟܠܢܝ:
ܕܒܡܪܘܡܐ ܣܡܬ ܡܥܡܪܟ.

Æva illorum annus erunt; et mane sicut herba germinabit, 5 Quæ matutino tempore pullulat ac germinat: vespere autẽ languet & arescit. 6 Quoniam defecimus in ira tua, & in furore tuo turbati sumus. 7 Posuisti peccata nostra è regione tui: *ideo* juvenescere fac nos lumine vultûs tui. 8 Nam cuncti dies nostri confecti sunt indignatione tuâ, & defecerunt anni nostri sicut aranea. 9 In dieb⁹ nostris anni nostri sunt septuaginta anni, & vix octoginta anni: & plerique ipsorum labor doloresque; nam venit adversùm nos humiliatio, & territi sumus. 10 Quis noscit vim iræ tuæ, & terrorem indignationis tuæ? 11 Indica nobis numerũ dierum nostrorũ, ut ingrediamur in cor sapientiæ. 12 Revertere Dñe: quousque? Nonne consolaberis servos tuos? 13 Satia nos manè gratiâ tuâ: laudabimus & exultabim⁹ omnibus diebus nostris. 14 Lætifica nos, quia mortua est iniquitas nostra, & anni quib⁹ vidim⁹ mala. 15 Appareant servis tuis opera tua, & decor tu⁹ super filios eorũ. 16 Sit benignitas Dñi Dei nostri super nos, qui opus manuũ suarũ confirmavit sup nos, & operâ manuũ suarũ condidit nos. 17

PSAL. XCI.

Davidis. De Ezechia Rege, quòd appellandus erat filius Davidis. Spiritualiter autem dicitur victoria Christi, & omnis qui per eum perficitur. Vers. 35. 1

Qui sedet in protectione Altissimi, & in umbra Dei gloriatur, Dixit Dño, Fiducia mea, refugium meum Deus, cui sum confisus. 2 Ipse enim te eripiet è laqueo offensaculi & è sermone vanitatis. 3 Pennis suis liberabit te, & sub alis ejus protegêris. 4 Pro armis, te muniet veritate suâ: Non timebis terrorem noctis, 5 neq; sagittam volantẽ in die. Neq; verbũ quod incedit per tenebras, neq; ventũ flantẽ meridie. 6 Cadent à latere tuo millia, & myriades à dextera tua, & ad te non accedẽt; 7 Sed oculis tuis tantùm spectabis, & retributionem impiorum videbis: 8 Quoniã tu es Dñe, fiducia mea, qui in excelsis collocâsti domiciliũ tuũ. 9

Verſio VULG. LAT.

5 Quæ pro nihilo habentur, eorum anni
6 erunt. Manè ſicut herba tranſeat, manè
floreat, & tranſeat: veſperè decidat,
7 induret, & areſcat. Quia defecimus in ira
tua, & in furore tuo turbati ſumus.
8 Poſuiſti iniquitates noſtras in
conſpectu tuo, ſeculum noſtrum in
9 illuminatione vultûs tui. Quoniam omnes
dies noſtri defecerunt: & in ira
tua defecimus. Anni noſtri ſicut
10 aranea meditabuntur: Dies
annorum noſtrorum in ipſis, ſeptuaginta
anni. Si autem in potentatibus,
octoginta anni: & ampliùs eorum,
labor & dolor. Quoniam supervênit
11 manſuetudo, & corripiemur. Quis
novit poteſtatē iræ tuæ, & præ timore tuo
12 iram tuā Dinumerare? Dexteram tuam
ſic notam fac, & eruditos corde in
13 ſapientia. Convertere, Dñe, uſquequò? et
deprecabilis eſto ſuper ſervos tuos.
14 Repleti ſumus manè miſericordiâ tuâ:
& exultavim⁹, & delectati ſum⁹
15 omnib⁹ diebus noſtris. Lætati ſumus pro
diebus, quib⁹ nos humiliâſti; annis, quib⁹
16 vidim⁹ mala. Reſpice in ſervos tuos, et
17 in opera tua: et dirige filios eorū. Et ſit
ſplēdor Dñi Dei noſtri ſuꝑ nos, et
opera manuū noſtrarū dirige ſuper nos:
& opus manuum noſtrarum dirige.

Laus Cantici David. XC.

1 Qui habitat in adjutorio Altiſſimi,
in protectione Dei cœli
2 commorabitur. Dicet Dño; Suſceptor meus
es tu, et refugium meum: Deus meus,
3 ſperabo in eum. Quoniā ipſe liberavit
me de laqueo venantiū, et à verbo
4 aſpero. Scapulis ſuis obumbrabit tibi:
5 et ſub pennis ejus ſperabis. Scuto
circumdabit te veritas ejus: non timebis
6 à timore nocturno, A ſagitta volante
in die, à negotio perambulante in
tenebris, ab incurſu, et dæmonio
7 meridiano. Cadent à latere tuo mille, et
decem millia à dextris tuis: ad te autem
8 nō appropinquabit. Verūtamē oculis
tuis conſiderabis: et retributionē
9 peccatorū videbis. Quoniam tu es, Dñe,
ſpes mea: Altiſſimum poſuiſti
refugium tuum.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

5 † Τὰ ἐξουδενώματα αὐτῶν ἔτη ἔσονται, † Τὸ πρωῒ
6 ὡσεὶ χλόη παρέλθοι, † τὸ πρωῒ ἀνθήσαι ϗ
παρέλθοι, † τὸ ἑσπέρας ἀποπέσοι, σκληρυνθείη ϗ
7 ξηρανθείη. † Ὅτι ἐξελίπομεν ἐν τῇ ὀργῇ σου, † ϗ ἐν τῷ
8 θυμῷ σου ἐταράχθημεν. † Ἔθου τὰς ἀνομίας ἡμῶν
ἐνώπιόν σου, † ὁ αἰὼν ἡμῶν εἰς φωτισμὸν τοῦ
9 προσώπου σου. † Ὅτι πᾶσαι αἱ ἡμέραι ἡμῶν ἐξέλιπον,
† ϗ ἐν τῇ ὀργῇ σου ἐξελίπομεν. † τὰ ἔτη ἡμῶν (ζ)
10 ὡς ἀράχνη ἐμελέτων. † Αἱ ἡμέραι τῶν ἐτῶν ἡμῶν ἐν
αὐτοῖς ἑβδομήκοντα ἔτη, † ἐὰν δὲ ἐν δυναστείαις,
ὀγδοήκοντα ἔτη, † ϗ τὸ πλεῖον αὐτῶν κόπος ϗ
πόνος· † ὅτι ἐπῆλθε (η) πραΰτης ἐφ' ἡμᾶς, ϗ
11 παιδευθησόμεθα. † Τίς (θ) γινώσκει τὸ κράτος τῆς
12 ὀργῆς σου, † ϗ ἀπὸ τοῦ (ι) φόβου τοῦ θυμοῦ σου
Ἐξαριθμήσασθαι; † τὴν δεξιάν σου οὕτως (κ) γνώρισον, †
13 ϗ τοὺς πεπαιδευμένους τῇ καρδίᾳ ἐν σοφίᾳ. †
Ἐπίστρεψον κύριε· ἕως πότε; † ϗ παρακλήθητι ἐπὶ
14 τοῖς δούλοις σου. † Ἐνεπλήσθημεν τὸ πρωῒ τοῦ ἐλέους
σου, † ϗ ἠγαλλιασάμεθα ϗ (ʹ) εὐφράνθημεν. † ἐν
15 πάσαις ταῖς ἡμέραις ἡμῶν (ʺ) Εὐφρανθείημεν, † ἀνθ' ὧν
ἡμερῶν ἐταπείνωσας ἡμᾶς, † ἐτῶν ὧν εἴδομεν
16 κακά. † Καὶ ἴδε ἐπὶ τοὺς δούλους σου ϗ ἐπὶ τὰ ἔργα
17 σου, † ϗ (λ) ὁδήγησον τοὺς υἱοὺς αὐτῶν. † Καὶ ἔστω
ἡ λαμπρότης κυρίου τοῦ θεοῦ ἡμῶν ἐφ' ἡμᾶς, † ϗ τὰ
ἔργα τῶν χειρῶν ἡμῶν κατεύθυνον ἐφ' (μ) ἡμᾶς.

MS. A. (ζ) ὡσεὶ (η) πραότης (θ) γιγνώσκει (ι) φόβου σου τὸν θυμόν σου (κ) γνώρισόν μοι, ϗ τοὺς πεπεδημένους (ʹ) ηὐφράνθημεν. (ʺ) Εὐφράνθημεν (λ) ὡδήγησον (μ) ἡμᾶς, † ϗ τὸ ἔργον τῶν χειρῶν ἡμῶν κατεύθυνον.

Αἶνος ᾠδῆς τῷ Δαυίδ. ζ.

1 † Ὁ κατοικῶν ἐν βοηθείᾳ τοῦ ὑψίστου, † ἐν σκέπῃ
2 τοῦ θεοῦ τοῦ οὐρανοῦ αὐλισθήσεται. † Ἐρεῖ τῷ
κυρίῳ, Ἀντιλήπτωρ μου εἶ ϗ καταφυγή μου, † ὁ
3 θεός μου, ἐλπιῶ ἐπ' αὐτόν. † Ὅτι αὐτὸς ῥύσεταί (a)
σε ἐκ παγίδος θηρευτῶν, † ϗ ἀπὸ λόγου
4 ταραχώδους. † Ἐν τοῖς μεταφρένοις αὐτοῦ ἐπισκιάσει
σοι, † ϗ ὑπὸ τὰς πτέρυγας αὐτοῦ ἐλπιεῖς. † ὅπλῳ
5 κυκλώσει σε ἡ ἀλήθεια αὐτοῦ. † Οὐ φοβηθήσῃ ἀπὸ
6 φόβου νυκτερινοῦ, † Ἀπὸ βέλους πετομένου ἡμέρας,
† ἀπὸ πράγματος διαπορευομένου ἐν σκότει, † ἀπὸ
7 συμπτώματος ϗ δαιμονίου μεσημβρινοῦ. † Πεσεῖται
ἐκ τοῦ κλίτους σου χιλιάς, † ϗ μυριὰς ἐκ
8 δεξιῶν σου, πρὸς σὲ δὲ οὐκ ἐγγιεῖ. † Πλὴν τοῖς
ὀφθαλμοῖς σου κατανοήσεις, † ϗ ἀνταπόδοσιν
9 ἁμαρτωλῶν (ʹ) ὄψει. † Ὅτι σὺ κύριε ἡ ἐλπίς μου, †
τὸν ὕψιστον ἔθου καταφυγήν σου.

MS. A. (a) με (ʹ) ὄψῃ

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

[b] Quæ pro nihilo habentur, eorum 5
anni erunt: 6 Manè, ſicut herba 6
tranſeat: manè floreat, & tranſeat:
veſperè decidat, induresceat, &
areſcat. 7 Quia defecimus in ira tua: 7
& in furore tuo (g) turbati ſumus.
8 Poſuiſti (h) iniquitates noſtras in 8
conſpectu tuo: (i) [c] ſeculum noſtrum
in illuminatione vultûs tui.
9 Quoniam omnes dies noſtri 9
defecerunt: & in ira tua defecimus.
10 Anni noſtri, ſicut aranea (k)
meditati ſunt: Dies annorum noſtrorum 10
in (l) ipſis ſeptuaginta anni. 11 [d] Si
autem in (m) potentatibus, octoginta
anni; & ampliùs eorum, labor, &
dolor. 12 Quoniam supervênit
manſuetudo (n) ſuper nos; & corripiemur.
13 Quis (o) noſcit poteſtatē iræ tuæ, 11
et præ timore (p) iræ tuæ [e] 11
Dinumerare? 14 Dexteram tuam ſic notam
fac, (q) et eruditos corde in ſapientia.
15 Convertere, Domine: (r) 13
uſquequò? et deprecabilis eſto ſuper ſervos
tuos. 16 (ſ) [f] Repleti ſumus manè 14
miſericordiâ tuâ: & exultavimus,
& delectati ſumus, in omnibus
diebus (t) noſtris. 17 Lætati ſumus pro 15
diebus, quibus nos humiliâſti; [g]
annis, quibus vidimus mala. 18 Et 16
reſpice in ſervos tuos, & in opera [h]
tua: & dirige filios eorum. 19 Et ſit 17
ſplēdor Domini Dei noſtri ſuper nos:
& opera manuum noſtrarum dirige
ſuper (u) nos.

(a) Laus Cantici ipſi David. XC.

Qui habitat in adjutorio Altiſſimi; in protectione Dei cœli 1
commorabitur. 2 Dicet Domino, 2
Suſceptor meus es, & refugium meum,
Deus meus [a]: ſperabo in eum.
3 Quoniam ipſe (b) liberabit [b] te 3
de laqueo venantium, & à (c) verbo
aſpero. 4 (d) Inter ſcapulas ſuas 4
obumbrabit tibi: & ſub alis ejus
ſperabis. 5 Scuto circumdabit te veritas 5
ejus: non timebis à timore nocturno,
6 A ſagitta volante per diem, à 6
negotio perambulante in tenebris: à (e)
ruina, & dæmonio meridiano. 7 Cadent 7
à (f) latere tuo mille, & decem
millia à dextris tuis: ad te autem
non appropinquabunt. 8 Veruntamen 8
oculis tuis conſiderabis, &
retributionem peccatorū videbis. 9 (g) Quo- 9
niam tu, Domine, ſpes mea: Altiſſimum
poſuiſti refugium tuum.

Verſio ÆTHIOPICA.

ምኑን፡ዓመታት፡በቅድሜሆሙ፡፡=፡ በጽባ 6
ሕ፡ ከመ፡ ሣዕር፡ የኀልፍ፡፡በጽባሕ፡ ይሠር
ፅ፡ ወየኀልፍ፡፡ወሰርከሰ፡ ይወድቅ፡ የቢሶ፡ወ
እንፅ፡ወ፡፡=፡ እስመ፡ ኀለቅነ፡ በመዓትከ፡፡ 7
ወደንገፅነ፡ በመቅሠፍትከ፡፡=፡ ወሤምከ፡ 8
ኀጢአተነ፡ ቅድሜከ፡፡ወዓለምነሂ፡ ውስተ፡
ብርሃነ፡ገጽከ፡፡=፡ እስመ፡ ኀልቀ፡ ኵሉን፡ 9
መዋዕሊነ፡፡ ወኀለቅነ፡ በመቅሠፍትከ፡፡=፡
ወዓመቲነኒ፡ ከመ፡ ሣሬት፡ ይከውኑ፡፡ወመዋዕ 10
ለ፡ ዓመቲነ፡ ሰብዓ፡ ክራማት፡፡=፡ ወእመ 11
ሰ፡ በዝኀ፡ ሰማንየ፡ ዓመ፡፡ወፈድፋደንሰ፡እ
መእሰ፡ጻማ፡ ወሕማም፡፡=፡ እስመ፡ ኀለፈ 12
ት፡ የዋሃት፡ እምኔነ፡ ወተገሠጽነ፡፡=፡ መ 13
ኑ፡ያእምር፡ ኀይለ፡ መቅሠፍትከ፡፡ ወእም
ግርማ፡ መዐትከ፡ ኀልቁ፡፡=፡ ከመዝ፡ አር 14
ኢ፡የማንከ፡፡ለመሁራነ፡ ልብ፡ በጥበብ፡፡=፡
ተመየጥ፡ እግዚኦ፡ እስከ፡ ማእዜኑ፡፡ወተና 15
በብ፡ በእንተ፡ አግብርቲከ፡፡=፡ እስመ፡ጸገ 16
ብነ፡ በጽባሕ፡ ምሕረተከ፡፡ወተፈሣሕነ፡ ወ
ትሐሠይነ፡ በኵሉ፡ መዋዕሊነ፡፡=፡ ወተፈ 17
ሣሕነ፡ህየንተ፡ መዋዕል፡ ዘአሕመምከነ፡፡ ወ
ህየንተ፡ዓመት፡እንተ፡ ርኢናሃ፡ለእኪት፡፡=፡
ርኢ፡ ላዕለ፡ አግብርቲከ፡ ወላዕለ፡ ተግባር 18
ከ፡ እግዚኦ፡፡ወምርሖሙ፡ ለደቂቆሙ፡፡=፡
ለይኩን፡ ብርሃኑ፡ ለእግዚአብሔር፡ አምላ 19
ክነ፡ ላዕሌነ፡፡ወይሠርሕ፡ ለነ፡ ተግባረ፡ እደ
ዊነ፡፡=፡

ስብሐት፡ማኅሌት፡ዘዳዊት፡፡

ዘ ዘየኀድር፡በረድኤተ፡ ልዑል፡፡ወይነብር፡ 1
ውስተ፡ጽላሉቱ፡ለአምላከ፡ሰማይ፡፡=፡ ይ 2
ብሎ፡ ለእግዚአብሔር፡ ምስካይየ፡ ወጸወን
የ፡አንተ፡፡አምላኪየ፡ ወረድኤትየ፡ ወእትዌከ
ል፡ቦቱ፡፡=፡ እስመ፡ ውእቱ፡ ይባልሐኒ፡ እ 3
መሥገርተ፡ ናዓዊት፡፡ ወእምነገር፡ መደንግ
ፅ፡፡=፡ ይጸልለከ፡ በገበዋቲሁ፡፡ወትትዌከ 4
ል፡በታሕተ፡ ክነፊሁ፡፡=፡ ጽድቅ፡ በወልታ፡ 5
የዐውደከ፡፡ወኢትፈርህ፡ እመግርማ፡ ሌሊ
ት፡፡=፡ ወእምሐፅ፡ ዘይሰርር፡በመዐልት፡፡ 6
እምግብር፡ ዘየሐውር፡ በጽልመት፡፡እመድ
ድቅ፡ ወእምጋኔነ፡ ቀትር፡፡=፡ ይወድቁ፡በ 7
ገቦከ፡ ዐሠርቱ፡ ምእት፡፡አእላፍ፡ በየማን
ከ፡ ወኀቤከሰ፡ ኢይቀርቡ፡፡=፡ ወባሕቱ፡ት 8
ሬኢ፡ በአዕይንቲከ፡፡ወትሬኢ፡ ፍደሆሙ፡ለ
ኃጥኣን፡፡=፡ እስመ፡ አንተ፡ እግዚኦ፡ ተስፋ 9
የ፡፡ልዑለ፡ረሰይከ፡ጸወንከ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [b] Res contemnenda anni in conſpectu eorum: [c] & ſeculum quidem noſtrum [d] Et ſi multum quidem, octoginta [e] deficiunt. [f] Quoniam repleti [g] & pro annis; [h] tua Domine: PSAL. XC. [a] & auxiliator meus: & ſperabo [b] me de

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* سنوهم تكون مرذولة * بالغدوات يزول مثل العشب * يزهر في الغدوات ويزول * وفي العشيات يسقط 5 6
ويذبل وييبس * لأنا فنينا في غضبك * واضطربنا في سخطك * جعلت آثامنا قدامك * ودهرنا 7 8
في نور وجهك * لأن جميع أيامنا فنيت * وفي غضبك فنينا * سنونا مثل نسج العنكبوت 9
ماضية * وأيام حياتنا سبعون سنة * وإن زادت فثمانون * والأكثر تعب ووجع * ونحن الآن في 10
دعتك متأدبون * لأنا لا نقدر على شدة سخطك وخشية رجزك * فاهدنا بيمينك لنكون 11 12
مع المؤدبين القلب بالحكمة * حتى متى يا رب تتعطف علينا * واقبل السؤال في عبيدك * 13
* امتلأنا وقت الغدوات من رحمتك * وابتهجنا وفرحنا وسررنا جميع أيامنا * عوض الأيام التي 14 15
أذللتنا فيها * والسنين التي رأينا فيها الرزايا * وانظر إلى عبيدك وإلى أعمالك واهد بنيهم * 16
* وليكن نور الرب إلهنا علينا * كما أصلح فينا عمله * وسهل أعمال أيدينا * الليلويا * 17
* المزمور التسعون * لداود * بركة التسبحة * وعدده * لد * استيخن * 1
الساكن في عون العلي * يستريح في ظلال إله السماء * يقول للرب أنت هو ناصري وملجأي 2
إلهي أتوكل عليه * لأنه ينجيني من فخ الصيادين * ومن كلام المضطهدين * في وسط 3 4
منكبيه يظللك * وتحت جناحيه يسترك * يحوط بك عدله سلاحا * لا تخاف من خشية الليل * 5
ولا من سهم طائر في النهار * ولا من أمر جائز في الظلمة * ولا من سقطة وشيطان الظهيرة * 6
* يسقط عن يسارك الألوف * والربوات عن يمينك * وأنت لا يقتربون إليك * بل بعينيك تتأمل * 7 8
ومجازاة الخطاة تبصر * لأنك أنت يا رب رجائي * جعلت العلو مسكنك * 9

Anni eorum erunt deſpecti. In matutinis 5
præteribit ſicut herba, Quæ floret in 6
matutinis & præterit, & in veſperis decidit
ac languet atque areſcit. Nos enim 7
conſumpti ſumus in ira tua, et turbati in
furore tuo. Poſuiſti dies noſtros coram te, et 8
ævum noſtrum in lumine vultûs tui. Nam 9
cuncti dies noſtri finierunt, & in ira tua
conſumpti ſumus: anni noſtri ceu
textura araneæ ſunt labentes. Et dies vitæ 10
noſtræ, ſeptuaginta ſunt anni: et ſi excedant,
octoginta: & complures labor ſunt ac
dolor. Et nos modò in manſuetudine tua
corripimur, Non enim valemus contra vim 11
indignationis tuæ, & timorem furoris tui.
Dirige nos ergò dexterâ tuâ, ut ſimus 12
cum eruditis corde in ſapientia. Quouſque 13
tandem, O Domine, propitiaberis
nobis? & admitte deprecationem pro ſervis
tuis. Repleti ſumus temporibus matutinis 14
miſericordiâ tuâ, & exaltavimus & gaviſi
ac lætati ſumus omnibus diebus
noſtris, Pro diebus in quibus depreſſiſti nos, 15
& annis in quibus vidimus calamitates.
Et reſpice in ſervos tuos & in opera tua, 16
& dirige filios eorum. Et ſit lumen 17
Domini Dei noſtri ſuper nos, quemadmodum
diſpoſuit in nobis opus ſuū, et facilia
reddidit opera manuum noſtrarum. Alleluja.

PSAL. XC.

Davidis, benedictio cantici, Et num. verſ. 34. 1

Habitans in adjutorio Altiſſimi,
requieſcet in umbra Dei cœli. Dicet 2
Domino, Tu es adjutor meus, & refugium
meum, Deus meus cui confido. Quoniam 3
ipſe liberabit me à laqueo venatorū, et à
ſermone perſequutorū. In mediis humeris 4
ſuis te proteget, & ſub alis ejus te
tuebitur: Circundabit te juſtitia ejus armis:
Haud metues terrorem noctis neque 5
ſagittam volantem in die: Neque negotium 6
tranſiens per tenebras, neque caſum &
dæmonium meridiei. Cadent ad ſiniſtram 7
tuam millia, & myriades ad dexteram
tuam; ad te autem non accedent. Sed 8
oculis tuis conſiderabis, & retributionem
peccatorum videbis. Quoniam tu es O 9
Domine, ſpes mea, feciſti altitudinem
habitaculum tuum:

תהלים : צב

Quoniam.tuo tentorio ī: appropinquabit non plaga &:malum te ad fortuitò accidet Non

10 לֹא־תְאֻנֶּה אֵלֶיךָ רָעָה וְנֶגַע לֹא־יִקְרַב בְּאָהֳלֶךָ׃ כִּי

11 volis In .tuis viis omnibus in te custodiendum ad : tibi mandabit suis angelis

מַלְאָכָיו יְצַוֶּה־לָּךְ לִשְׁמָרְךָ בְּכָל־דְּרָכֶיךָ׃ עַל־כַּפַּיִם 12

:calcabis aspidem & leonem Super .tuus pes lapidem in percutiatur forte ne ,te portabunt

13 יִשָּׂאוּנְךָ פֶּן־תִּגֹּף בָּאֶבֶן רַגְלֶךָ׃ עַל־שַׁחַל וָפֶתֶן תִּדְרֹךְ

,cum exaltabo:eū eruam &,est amplexus me in Quoniā.draconem &,leunculum conculcabis

14 תִּרְמֹס כְּפִיר וְתַנִּין׃ כִּי בִי חָשַׁק וַאֲפַלְּטֵהוּ אֲשַׂגְּבֵהוּ

ego ipso cum ; eum exaudiam & ,me Invocabit .meum nomen cognovit quoniam

15 כִּי־יָדַע שְׁמִי׃ יִקְרָאֵנִי וְאֶעֱנֵהוּ עִמּוֹ אָנֹכִי

: eum saturabo dierum Longitudine .eum glorificabo & ,eum eruam : angustia in

16 בְצָרָה אֲחַלְּצֵהוּ וַאֲכַבְּדֵהוּ׃ אֹרֶךְ יָמִים אַשְׂבִּיעֵהוּ

.mea salute in eum videre faciam &

וְאַרְאֵהוּ בִּישׁוּעָתִי׃

PSAL. XCII. צב

tuo nomini psallere & :Domino confiteri Bonum .Sabbathi die in cantici Cantus

1 מִזְמוֹר שִׁיר לְיוֹם הַשַּׁבָּת׃ טוֹב לְהֹדוֹת לַיהוָה וּלְזַמֵּר לְשִׁמְךָ

2 tuam fidem & : tuam misericordiam mane in annunciandum Ad .Altissime

3 עֶלְיוֹן׃ לְהַגִּיד בַּבֹּקֶר חַסְדֶּךָ וֶאֱמוּנָתְךָ

Quia .cithara cum Highajon super ; nebel super &,decachordo Super .noctibus in

4 בַּלֵּילוֹת׃ עֲלֵי־עָשׂוֹר וַעֲלֵי־נָבֶל עֲלֵי הִגָּיוֹן בְּכִנּוֹר׃ כִּי

5 Quàm evabo tuarum manuum factis in : tuo opere in Domine me lætificâsti

6 שִׂמַּחְתַּנִי יְהוָה בְּפָעֳלֶךָ בְּמַעֲשֵׂי יָדֶיךָ אֲרַנֵּן׃ מַה־

.tuæ cogitationes sunt profundæ valde : Domine tua opera sunt magnificata

גָּדְלוּ מַעֲשֶׂיךָ יְהוָה מְאֹד עָמְקוּ מַחְשְׁבֹתֶיךָ׃

florendo In .illud intelliget non stultus & : cognoscet non stupidus Vir

7 אִישׁ־בַּעַר לֹא יֵדָע וּכְסִיל לֹא־יָבִין אֶת־זֹאת׃ בִּפְרֹחַ

8 eos exterminari ad:iniquitatis operarii omnes germinaverint & ,herba sicut impios

רְשָׁעִים כְּמוֹ עֵשֶׂב וַיָּצִיצוּ כָּל־פֹּעֲלֵי אָוֶן לְהִשָּׁמְדָם

tui inimici ecce Quoniam .Domine seculum in excelsus tu Sed .pepetuum in usq;

9 עֲדֵי־עַד׃ וְאַתָּה מָרוֹם לְעֹלָם יְהוָה׃ כִּי הִנֵּה אֹיְבֶיךָ

10 .iniquitatis operarii omnes segregabuntur : peribunt tui inimici ecce quoniam;Domine

יְהוָה כִּי־הִנֵּה אֹיְבֶיךָ יֹאבֵדוּ יִתְפָּרְדוּ כָּל־פֹּעֲלֵי אָוֶן׃

respexit Et .viridi oleo in sum delibutus : meum cornu monocerotis sicut exaltabis Et

11 וַתָּרֶם כִּרְאֵים קַרְנִי בַּלֹּתִי בְּשֶׁמֶן רַעֲנָן׃ וַתַּבֵּט

12 audient malignis me adversum consurgentibus in ,meis invidis in meus oculus

עֵינִי בְּשׁוּרָי בַּקָּמִים עָלַי מְרֵעִים תִּשְׁמַעְנָה

.multiplicabitur Lebanon in cedrus sicut : florebit palma ut Justus .meæ aures

13 אָזְנָי׃ צַדִּיק כַּתָּמָר יִפְרָח כְּאֶרֶז בַּלְּבָנוֹן יִשְׂגֶּה׃

germinabunt Adhuc .florebunt nostri Dei atriis in ; Domini domo in Plantati

14 שְׁתוּלִים בְּבֵית יְהוָה בְּחַצְרוֹת אֱלֹהֵינוּ יַפְרִיחוּ׃ עוֹד יְנוּבוּן

15 : Dominus rectus quòd annunciandum Ad .erunt virides & , pingues : canitie in

16 בְּשֵׂיבָה דְּשֵׁנִים וְרַעֲנַנִּים יִהְיוּ׃ לְהַגִּיד כִּי־יָשָׁר יְהוָה

.eo in iniquitas non & ,mea rupes

צוּרִי וְלֹא־עַוְלָתָה בּוֹ׃

תרגום TARGUM.

10 אתיב מרי עלמא וכן אמר לא תארע לך בישתא
11 ומכתשא ומזיקיא לא יקרבון במשכניך׃ ארום
12 מלאכוי יפקד עלך למטרנך בכל אורחתך׃ על
תוקפיהון יטלונך דלמא תתקל ביצרא בישא
13 דמתיל לאבני רגלך׃ על גור בר אריון ופתנא
14 תבעוץ תרמוס אריא וחורמנא׃ מטול די
במימרי אתרעי ואשיזבניה אשגבניה מטול דידע
15 שמי׃ יצלי קדמי ואנא עני יתיה עמיה אנא
16 בעקתא אפצניה ואיקרניה׃ אוריכות יומין
אסבעניה ואחמיניה בפורקני׃

צב

1 שבחא ושירא די אמר אדם קדמאה על יומא
2 דשבתא׃ טב לאודאה קדם יי ולשבחא
3 שמך עלאה׃ לתנאה בצפרא טובך וקושטך
4 בליליון׃ על פום כנרא דעשרתי נימין ועל פום
5 נבלא עלי רננת כנריא׃ ארום אחדיתני יי
6 בעובדך בעובדי אידך אבוע׃ כמה רברבין
7 עובדך יי לחדא עמיקין מחשבתך׃ בר נש שטיא
8 לא ידע וכסילא לא יתבין ית דא׃ כד מתלבלבין
רשיעיא היך עסבא ונצצין כל עבדי שקר ועתיד
9 דישצנון אלהא עד עלמא׃ ואת רמא ועלאה
בעלמא הדין יי ואת רמא ועלאה לעלמא דאתי׃
10 ארום הא בעלי דבבך יי ארום הא בעלי דבבך
יהובדון לעלמא דאתי ומתפרשין מן סיעתהון
11 דצדיקיא כל עבדי שקר׃ ווקפתא היך רימנא
תוקפי רביתא יתי במשח רבותא רטיבא דזית
12 עבוף׃ ואסתכלת עיני באובדנא דמעיקי בקימין
13 עלי לאבאשא שמען אודני קל תבירהון׃ צדיקא
היך דקלא ילבלב פרין היך ארזא בלבנן יסגא
14 ויעביד שרשין׃ בנוי יהוון שתילין בבית מקדשא
15 דיי בדרת בית אלהנא ילבלבון׃ תוב
כאבהתהון יעבדון בנין בשיבו דהנין ורטיבין
16 יהון׃ מטול דיחוון דיירי ארעא ארום תריץ יי
תקפי ולית עולתא ביה׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Reſpondit Domin' mundi & ſic dixit, Non 10
eveniet tibi malū ; & plaga atq; *nocumenta*
non accedent ad tabernacula tua. Quoniā 11
angelis ſuis præcipiet de te, ut cuſtodiant
te in omnib' viis tuis. Fortitudine ſua por- 12
tabunt te, ne fortè impingat ad cupiditatem
pravam ſimilem lapidi, pes tuus. Catulum 13
filium leonum & baſiliſcum calcabis, con-
culcabis leonem & draconem. Quoniam 14
in verbo meo ſibi complacuit, & liberabo
eum: protegam eum quoniam ſcivit nomen
meum. Orabit coram me, & *ego* reſponde- 15
bo ei, cum ipſo ego [*adero*] in afflictione:
eruam eum, & glorificabo eum. Longitu- 16
dine dierum ſatiabo illum, & faciam eum
intueri in ſalutem meam.

Laus & canticum quod dixit homo pri- 1
mus pro die Sabbati.

PSAL. XCII.

BOnum eſt confiteri coram Dn̄o, & lau- 2
dare nomen tuum Altiſſime. Ad annunci- 3
andum manè benignitatem tuam, & veri-
tatem tuam in noctibus. Super os citharæ 4
decem chordarum, & ſuper os nabli, &
in exultatione citharæ. Quoniam lætifi- 5
câſti me Dn̄e in operibus *tuis*, in operibus
manuum tuarum exultabo. Quàm magni- 6
fica opera tua Domine, multum profundæ
ſunt cogitationes tuæ. Homo inſipiens non 7
cognoſcet, & ſtultus non intelliget hæc,
Quando germinât impii ſicut herba, & flo- 8
rent omnes operarii falſitatis, tunc futurum
eſt quòd deſtruat eos De' uſq; in æternum.
Tu autem excelſus ſublimiſq; in ſeculo iſto 9
Dn̄e, quinimò excelſus & ſublimis in ſeculo
venturo. Quoniam ecce inimici tui Dn̄e, 10
quoniam ecce inimici tui diſſipabuntur in
ſeculo venturo, et ſeparabuntur à congre-
gatione juſtorū omnes qui operantur ini-
quitatem. Exaltâſti autem quaſi naricornis 11
fortitudinē meā : unxiſti me oleo *unctionis*
recenti olivæ frondoſæ. Et intuit' eſt ocul' 12
me' in interitū moleſtantiū me; in inſurgē-
tes contra me ad malè agendū, audiunt au-
res meæ vocem confractionū eorum. Juſtus 13
tanquàm palma producet germina: ſicut ce-
dr' in Libano multiplicabitur & aget ra-
dices. Filii ej' plantati erūt in domo ſanctu- 14
arii Dn̄i, in atriis *dom'* Dei noſtri florebunt.
Adhuc veluti patres eorū procreabūt filios; 15
in ſenectute pingues & virides erūt. Ut an- 16
nuncient habitantes terram, ꝙ rect' eſt Dn̄s,
fortitudo mea, & non eſt iniquitas in eo.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

10 *ܠܐ ܬܩܪܘܒ ܠܘܬܟ ܒܝܫܬܐ܂ ܘܡܚܘܬܐ ܠܐ ܬܬܩܪܒ ܠܡܫܟܢܟ܂ * ܡܛܠ ܕܠܡܠܐܟܘܗܝ ܢܦܩܘܕ
11 ܥܠܝܟ܂ ܕܢܛܪܘܢܟ ܒܟܠܗܘܢ ܐܘܪܚܬܟ܂ * ܘܥܠ ܕܪܥܝܗܘܢ ܢܛܥܢܘܢܟ܂ ܕܠܐ ܬܬܩܠ ܒܟܐܦܐ ܪܓܠܟ܂ 12
13 * ܥܠ ܚܪܡܢܐ ܘܥܠ ܒܝܣܠܝܣܩܘܣ ܬܗܠܟ܂ ܘܬܕܘܫ ܐܪܝܐ ܘܬܢܝܢܐ܂ * ܡܛܠ ܕܒܝ ܒܥܐ ܐܦܨܝܘܗܝ
14 ܘܐܫܒܚܝܘܗܝ܂ ܡܛܠ ܕܝܕܥ ܫܡܝ * ܢܩܪܝܢܝ ܘܐܥܢܝܘܗܝ܂ ܘܥܡܗ ܐܢܐ ܒܐܘܠܨܢܗ܂ 15
16 ܐܚܠܨܝܘܗܝ ܘܐܝܩܪܝܘܗܝ܂ * ܢܘܓܪܐ ܕܝܘܡܬܐ ܐܣܒܥܝܘܗܝ܂ ܘܐܚܘܝܘܗܝ ܦܘܪܩܢܝ܂

* ܬܫܒܘܚܬܐ ܘܫܘܪܝܐ ܕܡܥܠܬܐ *

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܨܒ *

1 *ܠܐ ܡܫܡܗܐ܂ ܥܠ ܬܫܡܫܬܐ ܕܟܗܢܐ ܘܥܠ ܩܘܪܒܢܝܗܘܢ ܕܨܦܪܐ܂ ܘܡܬܢܒܐ
ܥܠ ܡܬܢܝܚܢܘܬܐ ܕܒܐܠܗܐ܂ ܦܬܓܡܐ ܠܒ܂

2 *ܛܒ ܠܡܘܕܝܘ ܠܡܪܝܐ܂ ܘܠܡܙܡܪܘ ܠܫܡܟ ܡܪܝܡܐ܂ * ܘܠܡܚܘܝܘ ܒܨܦܪܐ ܛܝܒܘܬܟ܂
3 ܘܗܝܡܢܘܬܟ ܒܠܠܝܐ܂ * ܐܢܐ ܐܩܫ ܒܟܢܪܐ ܕܥܣܪ܂ ܘܐܩܫ ܒܟܝܬܪܐ܂ * ܡܛܠ ܕܚܕܝܬܢܝ 4
5 ܡܪܝܐ ܒܥܒܕܝܟ܂ ܘܒܥܒܕ ܐܝܕܝܟ ܐܫܬܒܚ܂ * ܡܐ ܪܘܪܒܝܢ ܥܒܕܝܟ ܡܪܝܐ܂ ܘܛܒ ܥܡܝܩܝܢ 6
7 ܡܚܫܒܬܟ܂ * ܘܓܒܪܐ ܫܛܝܐ ܠܐ ܝܕܥ܂ ܘܣܟܠܐ ܠܐ ܡܣܬܟܠ ܒܗܕܐ܂ * ܡܐ ܕܦܪܥܝܢ ܪܫܝܥܐ 8
ܐܝܟ ܥܣܒܐ܂ ܘܡܦܪܥܝܢ ܟܠܗܘܢ ܦܠܚܝ ܥܘܠܐ܂ ܢܐܒܕܘܢ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ܂ * ܘܐܢܬ ܡܪܝܐ 9
10 ܡܪܝܡܐ ܠܥܠܡ܂ * ܡܛܠ ܕܗܐ ܒܥܠܕܒܒܝܟ ܡܪܝܐ܂ ܡܛܠ ܕܗܐ ܒܥܠܕܒܒܝܟ ܢܐܒܕܘܢ܂
11 ܘܢܬܒܕܪܘܢ ܟܠܗܘܢ ܦܠܚܝ ܥܘܠܐ܂ * ܘܬܪܝܡ ܩܪܢܝ ܐܝܟ ܕܪܝܡܐ܂ ܘܨܒܥܬܢܝ ܒܡܫܚܐ
12 ܒܣܝܡܐ܂ * ܘܚܙܝ ܥܝܢܝ ܒܒܥܠܕܒܒܝ܂ ܘܒܒܝܫܐ ܕܩܝܡܝܢ ܥܠܝ ܬܫܡܥܢ ܐܕܢܝ܂
13 * ܙܕܝܩܐ ܐܝܟ ܕܩܠܐ ܢܦܪܥ܂ ܘܐܝܟ ܐܪܙܐ ܕܠܒܢܢ ܢܫܘܚ܂ * ܢܨܝܒܝܢ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ܂ 14
15 ܘܒܕܪܘܗܝ ܕܐܠܗܢ܂ ܢܦܪܥܘܢ ܬܘܒ * ܘܢܬܪܒܘܢ ܒܣܝܒܘܬܐ܂ ܫܡܝܢܐ ܘܒܣܝܡܐ ܢܗܘܘܢ܂
16 * ܘܢܚܘܘܢ ܕܬܪܝܨ ܗܘ ܡܪܝܐ܂ ܚܣܝܢ ܘܠܝܬ ܒܗ ܥܘܠܐ܂

Non tanget te malum, & flagellum non ap- 10
propinquabit tabernaculo tuo; Nam an- 11
gelos ſuos monebit de te, ut cuſtodiant te
in omnibus viis tuis; Et ſuper brachia ſua te 12
geſtent, ne offendas pede tuo. Super aſpidem 13
& ſuper baſiliſcum gradiêris, conculcabíſque
leonem atque draconem. Quandoquidem me 14
quæſivit, eripiam eum & magnificabo eum.
Quia cognovit nomen meum, Vocabit me & 15
reſpondebo illi, & cum ipſo ſum in tribula-
tione: extollam eum & honorificabo illum : 16
Longitudine dierum ſatiabo eum, & oſten-
dam illi ſalutem meam.

Laus, & initium gradûs.

PSAL. XCII.

*Anonymus. De miniſterio Sacerdotum, & 1
de ſacrificiis eorū matutinis. Prædicit etiam
quietem in Deo. Verſ. 32.*

BOnum eſt confiteri Domino, & pſallere 2
nomini tuo, Altiſſime, Et patefacere manè 3
bonitatem tuam, fidémque tuam noctibus.
Ego pulſabo lyram decem, & pulſabo citha- 4
ram : Quoniam exhilarâſti me, Domine, ope- 5
ribus tuis, & in opera manuum tuarum glo-
riabor. Quàm magna ſunt facta tua, Domine, 6
& valdè profundæ cogitationes tuæ! At vir 7
ſtolidus non agnoſcit, & ſtultus haud percipit
hoc. Quum germinabunt impii ſicut herba, 8
& pullulabunt omnes operantes iniquitatem:
peribunt in ſeculum ſeculorum; Tu verò, Do- 9
mine Altiſſime, in æternum eris. Nam ecce 10
hoſtes tui, Domine, nam ecce hoſtes tui peri-
bunt, & diſpergentur omnes operantes ini-
quitatem. Extuliſti cornua mea ut Rhinoce- 11
rotis, & tinxiſti me unguento ſuavi; Et vide- 12
runt oculi mei in hoſtibus meis, & in ma-
lignis inſurgentibus adverſùm me audient
aures meæ. Juſtus ut palma germinabit, & 13
ſicut cedri Libani pullulabit. Plantati in do- 14
mo Domini & in atriis Dei noſtri, germen
emittent adhuc, Et creſcent in ſenectute: pin- 15
gues atque ſuaves reddentur. Et manifeſta- 16
bunt rectum eſſe Dominum, fortem, & nul-
lam eſſe in ipſo iniquitatem.

Verſio VULG. LAT.

10 Non accedet ad te malum: & flagellũ
non appropinquabit tabernaculo tuo.
11 Quoniam angelis ſuis mandavit de te:
ut cuſtodiant te in omnibus viis tuis.
12 In manib' portabunt te : ne fortè of-
13 fendas ad lapidem pedem tuum. Su-
per aſpidem & baſiliſcum ambulabis:
& conculcabis leonem & draconem.
14 Quoniam in me ſperavit, liberabo e-
um: protegam eum, quoniam cognovit
15 nomen meum. Clamabit ad me, &
ego exaudiam eum : cum ipſo ſum in
tribulatione : eripiam eum & glorifi-
16 cabo eum. Longitudine dierum reple-
bo eum: & oſtendã illi ſalutare meum.

1 Pſalmus Cantici, In die Sabbati. XCI.

2 BOnum eſt confiteri Dño, & pſalle-
3 re nomini tuo, Altiſſime; Ad annun-
tiandum manè miſericordiam tuam, et
4 veritatem tuam per noctem; In deca-
chordo, pſalterio, cum cantico, in ci-
5 thara. Quia delectâſti me, Domine, in
factura tua : & in operibus manuum
6 tuarum exultabo. Quàm magnificata
ſunt opera tua, Domine: nimis profun-
7 dæ factæ ſunt cogitationes tuæ. Vir in-
ſipiens non cognoſcet : & ſtultus non
8 intelliget hæc. Cùm exorti fuerint
peccatores ſicut fœnum : & apparue-
rint omnes, qui operantur iniquitatẽ:
9 Ut intereant in ſeculum ſeculi : Tu au-
tem Altiſſimus in æternum, Domine.
10 Quoniam ecce inimici tui, Domine,
quoniam ecce inimici tui peribunt :
& diſpergentur omnes, qui operantur
11 iniquitatem. Et exaltabitur ſicut uni-
cornis cornu meum : & ſenectus mea
12 in miſericordia uberi. Et deſpexit o-
culus meus inimicos meos : & in in-
ſurgentibus in me malignantibus au-
13 diet auris mea. Juſtus, ut palma flore-
bit : ſicut cedrus Libani multiplicabi-
14 tur. Plantati in domo Domini, in a-
15 triis domûs Dei noſtri florebunt. Ad-
huc multiplicabuntur in ſenecta ube-
16 ri : & benè patientes erunt, Ut an-
nuntient : Quoniam rectus Dominus
De' noſter: & non eſt iniquitas in eo.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

10 † Οὐ προσελεύσεται πρὸς σὲ κακὰ, † καὶ μάστιξ οὐκ
11 ἐγγιεῖ τῷ σκηνώματί σου. † Ὅτι τοῖς ἀγγέλοις
αὐτοῦ ἐντελεῖται περὶ σοῦ, † τοῦ διαφυλάξαι σε ἐν πά-
12 σαις ταῖς ὁδοῖς σου. † Ἐπὶ χειρῶν ἀροῦσί σε, † μή
13 ποτε προσκόψῃς πρὸς λίθον τὸν πόδα σου. † Ἐπ'
ἀσπίδα καὶ βασιλίσκον ἐπιβήσῃ, † καὶ καταπατήσεις
14 λέοντα καὶ δράκοντα. † Ὅτι ἐπ' ἐμὲ ἤλπισε, καὶ
ῥύσομαι αὐτόν· † σκεπάσω αὐτὸν, ὅτι ἔγνω τὸ
15 ὄνομά μου. † (β) Ἐπικαλέσεται πρὸς μὲ, καὶ εἰσα-
κούσομαι αὐτοῦ, † μετ' αὐτοῦ εἰμι ἐν θλίψει, καὶ ἐξ-
16 ελοῦμαι αὐτὸν, καὶ δοξάσω αὐτόν. † (γ) Μακρότητι ἡμε-
ρῶν ἐμπλήσω αὐτὸν, † καὶ δείξω αὐτῷ τὸ σωτήρι-
όν μου.

MS.A. (β) Καὶ κράξεται πρὸς μὲ, καὶ (γ) Μακρότητα

1 Ψαλμὸς ᾠδῆς Εἰς τὴν ἡμέραν τοῦ σαββάτου. ϟα'.
2 † Ἀγαθὸν τὸ ἐξομολογεῖσθαι τῷ κυρίῳ, † καὶ
3 ψάλλειν τῷ ὀνόματί σου ὕψιστε. † Τοῦ ἀν-
αγγέλλειν τὸ πρωῒ τὸ ἔλεός σου, † καὶ τὴν ἀλήθειάν σου
4 κατὰ νύκτα, † Ἐν δεκαχόρδῳ ψαλτηρίῳ, μετ' ᾠδῆς
5 ἐν κιθάρᾳ. † Ὅτι εὔφρανάς με κύριε ἐν τῷ ποιή-
ματί σου, † καὶ ἐν τοῖς ἔργοις τῶν χειρῶν σου ἀγαλλι-
6 άσομαι. † Ὡς ἐμεγαλύνθη τὰ ἔργα σου κύριε;
7 † Σφόδρα ἐβαθύνθησαν οἱ διαλογισμοί σου. † Ἀ-
νὴρ ἄφρων οὐ γνώσεται, † καὶ ἀσύνετος οὐ συνήσει
8 ταῦτα. † Ἐν τῷ ἀνατεῖλαι (ª) τοὺς ἁμαρτωλοὺς ὡσεὶ
χόρτον, † καὶ διέκυψαν πάντες οἱ ἐργαζόμενοι τὴν
ἀνομίαν, † ὅπως ἂν (α) ἐξολοθρευθῶσιν εἰς τὸν αἰ-
9 ῶνα τοῦ αἰῶνος. † Σὺ δὲ ὕψιστος εἰς τὸν αἰῶνα κύριε.
10 † (β) Ὅτι ἰδοὺ οἱ ἐχθροί σου ἀπολοῦνται, † καὶ δια-
σκορπισθήσονται πάντες οἱ ἐργαζόμενοι τὴν ἀνομί-
11 αν. † Καὶ ὑψωθήσεται ὡς μονοκέρωτος τὸ κέρας
12 μου, † καὶ τὸ γῆράς μου ἐν ἐλέῳ πίονι. † Καὶ (γ)
ἐπεῖδεν ὁ ὀφθαλμός μου ἐν τοῖς ἐχθροῖς μου, † καὶ ἐν
τοῖς (δ) ἐπανισταμένοις ἐπ' ἐμὲ πονηρευομένοις ἀκού-
13 σεται τὸ οὖς μου. † Δίκαιος ὡς φοῖνιξ ἀνθήσει, † ὡς
14 ἡ κέδρος ἡ ἐν τῷ Λιβάνῳ πληθυνθήσεται. † Πε-
φυτευμένοι ἐν τῷ οἴκῳ κυρίου, † ἐν ταῖς αὐλαῖς τοῦ
15 θεοῦ ἡμῶν ἐξανθήσουσιν. † (ε) Τότε πληθυνθήσον-
16 ται ἐν γήρει πίονι, καὶ εὐπαθοῦντες ἔσονται τοῦ
ἀναγγεῖλαι· † ὅτι εὐθὴς κύριος ὁ (ζ) θεός μου, † καὶ
οὐκ ἔστιν ἀδικία ἐν αὐτῷ.

MS.A. (ª) ἁμαρτωλοὺς (α) ἐξολεθρευθῶσιν (β) Ὅτι ἰδοὺ οἱ ἐχθροί σου κύριε, ὅτι ἰδοὺ (γ) ἐφεῖδεν (δ) ἐπανισταμένους (ε) Ἔτι πληθυνθήσονται (ζ) θεὸς ἡμῶν,

Verſ. GRÆ.LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

10 [c] *Non accedent ad te mala: & flagellum non appropinquabit taber-* 10
naculo tuo. 11 *Quoniam angelis* 11
ſuis mandabit de te, ut cuſtodiant te
in omnibus viis tuis. 12 *In manibus* 12
tollent te : ne (*b*) *quando offendas ad*
lapidem pedem tuum. 13 *Super* [d] 13
aſpidem, & baſiliſcum (i) *ambula-*
bis : & conculcabis leonem, & dra-
conem. 14 *Quoniam in me ſpera-* 14
vit; et eruam eum : protegam eum,
quoniam cognovit nomen meum.
15 (*k*) *Invocabit me, & ego* [e] *exau-* 15
diam eum : cum ipſo ſum in [f] *tri-*
bulatione : & eximam eum, & glo-
rificabo eum. 16 *Longitudine die-* 16
rum replebo eum : & oſtendam illi
ſalutare meum.

M.S. Æthiop. Pock. Gloria Patri, & Filio, & Spiritui Sancto: In ſeculum ſeculorum. Amen & Amen.

Pſalmus Cantici In die Sabbati. XCI. 1

1 B*Onum eſt confiteri Domino, &* 2
pſallere (*a*) *nomini tuo Altiſſi-*
me. 2 *Ad annuntiandum manè mi-* 3
ſericordiam tuam, & veritatem
tuam per noctem. 3 *In decachordo* 4
pſalterio, cum cantico in cithara.
4 *Quia delectâſti me, Domine, in fa-* 5
ctura tua : & in operibus manuum
tuarum exultabo. 5 *Quàm magnifi-* 6
cata ſunt opera tua, Domine : nimis
(*b*) *profundæ factæ ſunt cogitatio-*
nes tuæ. 6 *Vir imprudens non co-* 7
gnoſcet: & [a] *ſtultus non intelliget*
hæc. 7 *Cùm exorti fuerint peccato-* 8
res ſicut fœnum, & (*c*) *apparuerint*
omnes, qui operantur iniquitatem :
8 *ut intereant in ſeculum ſeculi :*
Tu autem Altiſſimus in æternũ, Do- 9
mine. 9 (*d*) *Quoniã ecce inimici tui* 10
peribunt : & diſpergentur omnes qui
operantur iniquitatem. 10 *Et exal-* 11
tabitur, ſicut unicornis, cornu meum:
& [b] *ſenectus mea in* (*e*) *miſeri-*
cordia pingui. 11 *Et* (*f*) *reſpexit o-* 12
culus meus in inimicis meis : & in
eis qui inſurgunt in me malignanti-
bus, audiet auris mea. 12 *Juſtus ſic-* 13
ut palma, florebit : velut cedrus,
quæ in Libano eſt, multiplicabitur.
13 (*g*) *Plantati in domo Domini, in* 14
atriis Dei noſtri florebunt. 14 (*h*)
[c] *Tunc multiplicabuntur in ſenecta* 15
uberi : & (*i*) *tranquilli erunt,* 15 *ut* 16
annuntient : Quoniam rectus Domi-
nus [d] *Deus* (*k*) *meus : & non eſt*
iniquitas in eo.

Verſio ÆTHIOPICA.

ወይቀርብ፡ እኩይ፡ ኀቤከ፡፡ወኢይበውእ፡ መ 10
ቅሠፍት ፡ ቤተከ፡፡ ፨ እስመ፡ ለመላእክቲ 11
ሁ፡ ይኤዝዞሙ፡ በእንቲአከ፡፡ከመ፡ ይዕቀቡ
ከ፡ በኵሉ ፡ ፍናዊከ፡፡ ፨ ወበእደው፡ ያን 12
ሥኡከ፡፡ከመ፡ ኢትትዐቀፍ፡ በእብን፡ እግረ
ከ፡፡ ፨ ላዕለ፡ ተኵላ፡ ወከይሲ፡ ትጼዒን፡፡ 13
ወትከይድ ፡ አንበሳ ፡ ወከይሴ፡፡ ፨ እስመ፡ 14
ብየ፡ተወከለ፡ እድኅኖ፡፡ወእከድኖ ፡ እስመ፡
አእመረ ፡ ስምየ፡፡ ፨ ይጼውዐኒ ፡ ወእሰጠ 15
ዎ፡፡ሀሎኩ ፡ ምስሌሁ፡ ለመ፡ ምንደቤሁ፡፡
እድኅኖ ፡ ወእሴብሖ፡፡ ፨ ለነዋኅ ፡ መዋዕ 16
ል፡አጸግቦ፡፡ወአርእዮ፡አድኅኖትየ፡፡ ፨
ስብሐት፡ ለአብ ፡ ወወልድ ፡ ወመንፈስ፡ ቅዱ
ስ፡፡ለዓለመ፡ ዓለም፡አሜን፡ ወአሜን፡፡ ፨

መዝሙር፡መሓሌት፡በዕለተ፡ሰንበት፡፡

ኔሳ ይኄይስ፡ተአምኖ፡በእግዚአብሔር፡፡ወ 1
ዘምሮ፡ ለስምከ ፡ ልዑል፡፡ ፨ ወነጊረ ፡ በ 2
ጽባሕ ፡ ምሕረትከ ፡፡ ወጽድቅከኒ ፡ በሌሊ
ት፡፡ ፨ በዘ፡ዐሠርቱ፡ አውታሪሁ፡ መዝሙ 3
ር፡ማኅሌት፡ ወመሰንቆ፡፡ ፨ እስመ ፡ አስተ 4
ፌሥሐከኒ፡እግዚኦ፡በምግባሪከ፡፡ወእትሐሠ
ይ፡በግብረ ፡ እደዊከ፡፡ ፨ ጥቀ፡ ዐቢይ፡ግብ 5
ርከ ፡ እግዚኦ፡፡ወፈድፋደ ፡ ዕሙቅ ፡ ሕሊና
ከ፡፡ ፨ ብእሲ፡አብድ፡ኢያአምር፡፡ወዘአ 6
ልቦ፡ ልበ፡ ኢይሌብዎ ፡ ለዝንቱ፡፡ ሶበ፡ይበ 7
ቍሉ ፡ ኃጥኣን ፡ ከመ ፡ ሣዕር፡፡ወይሠርጹ፡
ኵሎሙ፡ ገበርተ፡ ዐመፃ፡፡ ፨ ከመ፡ ይሠረ 8
ዉ፡ ለዓለመ፡ ዓለም፡፡ወአንተሰ፡ ልዑል፡ለ
ዓለም፡ እግዚኦ፡፡ ፨ እስመ ፡ ነሁ ፡ ጸላእ 9
ትከ፡ ይትሐጐሉ፡፡ ወይዘረዉ፡ ኵሎሙ፡ ገ
በርተ፡ ዐመፃ፡፡ ፨ ወይትሌዐል፡ ቀርንየ፡ከ 10
መ፡ ዘአሐዱ ፡ ቀርኑ፡፡ወይጠልል ፡ በቅብአ፡
ሢበትየ፡፡ ፨ ወርእየት ፡ ዐይንየ፡ በጸላእት 11
የ፡፡ ወሰምዐት፡ እዝንየ፡ደቤሆሙ፡ ለእኩያ
ን፡እለ፡ ቆሙ፡ ላዕሌየ፡፡ ፨ ጻድቅሰ፡ከመ፡ 12
በቀልት፡ ይፈሪ፡፡ወይበዝኅ ፡ ከመ፡ ዘግባ፡ዘ
ሊባኖስ፡፡ ፨ ትኩላን፡ እሙንቱ፡ ውስተ፡ቤ 13
ተ፡ እግዚአብሔር፡፡ወይበቍሉ ፡ ውስተ፡ ዐ
ጸዱ፡ ለአምላክነ፡፡ ፨ ውእተ ፡ አሚረ፡ ይ 14
በዝኁ ፡ በርስአን ፡ ጥሉል፡፡ወይከውኑ፡ዕሩ
ፋን፡፡ ፨ ወይነግሩ፡ ከመ፡ ጻድቅ፡ እግዚአ 15
ብሔር ፡ አምላክነ ፡፡ ወአልቦ ፡ ዐመፃ ፡ በኀ
ቤሁ፡፡ ፨

INTERP. ÆTHIOP. [c] Et accedet ad te malum: ſed [d] lupum & draconem equitabis: [e] reſpondebo ei : [f] tribulatione ejus : *PSAL.XCI.* [a] excors non [b] impinguabitur in oleo quietis meæ. [c] In illo die multiplicabuntur [d] Deus noſter :

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

10 * لا ياتي عليك الشر * ولا تدنوا ضربة من مسكنك * لانه يوصي ملايكته من اجلك *
11
12 لكي يحفظوك في جميع طرقك * وعلي ايديهم يحملونك * ليلا تعثر بحجر رجلك * تطا
13
14 علي الافعي والحية الجرداء * وتدوس الاسد والتنين * لانه اياي رجا فاخلصه * واستر لانه
15 عرف اسمي * يدعوني فاجيبه * انا اكون معه في الشدة * انقذه وامجده * واشبعه طول
16 الايام واريه خلاصي * اللليلويا *

1 * المزمور الحادي والتسعون * لداود * تسبحة يوم السبت * وعدده * كط * استيخن *

2 * جيد هو الشكر للرب * والترتيل لاسمك ايها العالي * لكي نخبر في الغدوات برحمتك * وفي
3
4 الليالي بحقك * بمزمار ذي عشر اوتار * مع تسبيح وقيثارة * لانك افرحتني يا رب بصنعك
5
6 وباعمال يديك استبشر * يا رب ما اعظم اعمالك * وافكارك عمقت جدا * الرجل الجاهل لا يعلم *
7
8 وعديم الفهم لا يفهم هذه * عندما تشرق الخطاة مثل العشب ويشرق عاملوا الاثم * هناك
9 يستاصلون الي الابد * انت الرب المتعالي الي ابد الابد * انه ها هوذا اعداوك يا رب *
10
11 انه ها هوذا اعداوك يهلكون * وجميع عاملي الاثم يتبددون * ويعلو قرني كوحيد القرن *
12 وشيخوختي في دهن دسم * وتقر عيناي باعداي * وتسمع اذني في القايمين علي صانعي الشر *
13 * البار يعلو مثل النخلة * ويكثر مثل ارز لبنان * مغروسون في بيت الرب * ومزهرون في ديار
14
15 بيت الهنا * حينيذ يكثرون في شيخوخة دسمة * ويكون اجتهادهم نعما * ليخبروا ان الرب
16 الهنا عادل * وليس عنده ظلم * اللليلويا *

Non eveniet tibi malum, & non accedet 10
flagellum ad habitationem tuam. Quoniã 11
ipſe mandabit angelis ſuis de te, ut cuſto-
diant te in omnibus viis tuis ; Et ſuper 12
manus ſuas portabunt te, ut non offendat
in lapide pes tuus. Calcabis aſpidem & 13
baſiliſcum, et comprimes leonem et draco-
nem. Quoniam ipſe me ſperavit, liberabo 14
eum : et protegam eum, quoniam ipſe cog-
novit nomen meum. Invocabit me, et ex- 15
audiam eum: ego ero cum ipſo in tribula-
tione : Liberabo eum, & glorificabo eum. 16
Et ſaturabo eum longitudine dierum, &
oſtendam illi ſalutem meam. Alleluja.

PSAL. XCI.
Davidis. Canticum diei Sabbathi. 1
Et num. ver. 19.

B*Ona eſt gratiarum actio Domino, &* 2
pſalmodia nomini tuo, O Altiſſime. Ut 3
enarremus in matutinis miſericordiam tu-
am, & in noctibus veritatem tuam, Cum 4
pſalterio decem chordarum, cum laude &
cithara. Quoniam lætificâſti me, O Do- 5
mine, præclaris operibus tuis, & factis
manuum tuarum gaudebo. O Domine, 6
quàm magna ſunt opera tua! & cogita-
tiones tuæ profundæ factæ ſunt nimis.
Vir ignorans non cognoſcit, et expers ju- 7
dicio non intelligit hæc. Quum exorti 8
fuerint peccatores tanquam herba, et ap-
paruerint operantes iniquitatem, illico era-
dicabuntur in æternum. Tu es Dominus 9
exaltatus in ſeculum ſeculi. Nam ecce 10
inimici tui, O Domine, nam ecce inimi-
ci tui diſpergentur, & omnes operan-
tes iniquitatem interibunt ; Et extolletur 11
cornu meum ſicut unicornis, & ſenectus
mea in unguento ſuavi. Et quieſcent ocu- 12
li mei in hoſtibus meis, & audiet auris
mea de inſultantibus mihi, auctoribus ſce-
leris. Juſtus evehetur in altum ſicut pal- 13
ma, et multiplicabitur ſicut cedri Libani.
Plantati in domo Domini, & florentes in 14
atriis domûs Dei noſtri, Tunc creſcent in 15
ſenectute jucunda, eritque ſedulitas eorum
optima. Ut annuntient Dominum Deum 16
noſtrum eſſe juſtum, & nullam eſſe apud
eum iniquitatem. Alleluja.

PSAL. XCIII. צג

:se accinxit,fortitudinem Dominus induit , induit *celsitudinem* ; regnavit Dominus
יְהוָה מָלָךְ גֵּאוּת לָבֵשׁ לָבֵשׁ יְהוָה עֹז הִתְאַזָּר 1
seculo à : *tunc* ex tuum solium Paratum *.nutet* ne *orbis* *firmabitur* etiam
אַף־תִּכּוֹן תֵּבֵל בַּל־תִּמּוֹט׃ נָכוֹן כִּסְאֲךָ מֵאָז מֵעוֹלָם 2
: *suam vocem* flumina elevaverunt ; Domine flumina Elevaverunt .tu
אָתָּה׃ נָשְׂאוּ נְהָרוֹת יְהוָה נָשְׂאוּ נְהָרוֹת קוֹלָם 3
potentium , multarum aquarum *vocibus Præ* .suam illisionem flumina elevabunt
יִשְׂאוּ נְהָרוֹת דָּכְיָם׃ מִקֹּלוֹת מַיִם רַבִּים אַדִּירִים 4
,valde sunt fidelia tua Testimonia .Dominus excelso in *potens* : maris *procellarum*
מִשְׁבְּרֵי־יָם אַדִּיר בַּמָּרוֹם יְהוָה׃ עֵדֹתֶיךָ נֶאֶמְנוּ מְאֹד 5
.dierum longitudinem in Domine : sanctitas est decora tuæ domui
לְבֵיתְךָ נַאֲוָה־קֹדֶשׁ יְהוָה לְאֹרֶךְ יָמִים׃

PSAL. XCIV. צד

: terram judicans te Eleva *.irradia* ultionum Deus , Domine ultionum Deus
אֵל־נְקָמוֹת יְהוָה אֵל נְקָמוֹת הוֹפִיעַ׃ הִנָּשֵׂא שֹׁפֵט הָאָרֶץ 1 2
-usque ? Domine impii quo---Usque .superbis *super* retributionem redde
הָשֵׁב גְּמוּל עַל־גֵּאִים׃ עַד־מָתַי רְשָׁעִים יְהוָה עַד־ 3
omnes se *prædicabunt : durum* loquentur *Effutient* ?exultabunt impii quo
מָתַי רְשָׁעִים יַעֲלֹזוּ׃ יַבִּיעוּ יְדַבְּרוּ עָתָק יִתְאַמְּרוּ כָּל־ 4
tuam hæreditatem & : conterent Domine tuum Populum *.iniquitatis* operarii
פֹּעֲלֵי אָוֶן׃ עַמְּךָ יְהוָה יְדַכְּאוּ וְנַחֲלָתְךָ 5
.occident pupillos & : interficient peregrinum & Viduam .affligent
יְעַנּוּ׃ אַלְמָנָה וְגֵר יַהֲרֹגוּ וִיתוֹמִים יְרַצֵּחוּ׃ 6
Intelligite .Jahacob Deus intelliget non & *:Jah* videbit non , dixerunt Et
וַיֹּאמְרוּ לֹא יִרְאֶה־יָּהּ וְלֹא־יָבִין אֱלֹהֵי יַעֲקֹב׃ בִּינוּ 7 8
aurem plantans Nónne *? intelligetis quando* fatui & : populo in stulti
בֹּעֲרִים בָּעָם וּכְסִילִים מָתַי תַּשְׂכִּילוּ׃ הֲנֹטַע אֹזֶן 9
nónne gentes corripiens Nónne ?aspiciet non oculum formans an : audiet non
הֲלֹא יִשְׁמָע אִם־יֹצֵר עַיִן הֲלֹא יַבִּיט׃ הֲיֹסֵר גּוֹיִם הֲלֹא 10
cogitationes *sciens* Dominus ?scientiam hominem *docens* ipse ? arguet
יוֹכִיחַ הַמְלַמֵּד אָדָם דָּעַת׃ יְהוָה יֹדֵעַ מַחְשְׁבוֹת 11
: Jah eum erudieris quem *viri Felicitates* .vanitas *ipsæ* quoniam : hominum
אָדָם כִּי־הֵמָּה הָבֶל׃ אַשְׁרֵי הַגֶּבֶר אֲשֶׁר־תְּיַסְּרֶנּוּ יָּהּ 12
fodiatur donec : mali diebus à ,ei *præstandum* quietem *Ad* .eum docueris *tua lege è &*
וּמִתּוֹרָתְךָ תְלַמְּדֶנּוּ׃ לְהַשְׁקִיט לוֹ מִימֵי רָע עַד יִכָּרֶה 13
suam hæreditatē & :suum populū Dominus derelinquet non Quia .fovea impio
לָרָשָׁע שָׁחַת׃ כִּי לֹא־יִטֹּשׁ יְהוָה עַמּוֹ וְנַחֲלָתוֹ 14
omnes illud post &:judicium revertetur justitiam ad usque Quia .derelinquet non
לֹא יַעֲזֹב׃ כִּי־עַד־צֶדֶק יָשׁוּב מִשְׁפָּט וְאַחֲרָיו כָּל־ 15
cum mihi stabit quis?malignantibus cum mihi consurget Quis .corde recti
יִשְׁרֵי־לֵב׃ מִי־יָקוּם לִי עִם־מְרֵעִים מִי־יִתְיַצֵּב לִי עִם־ 16
habitâsset *parum quasi* : mihi *auxilium* Dominus Nisi *? iniquitatis* operariis
פֹּעֲלֵי אָוֶן׃ לוּלֵי יְהוָה עֶזְרָתָה לִּי כִּמְעַט שָׁכְנָה 17
.mea anima *silentium*
דוּמָה נַפְשִׁי׃

צג

יי מליך גיותנותא אלבש אלבש יי עושנא 1
ואזדרז לחוד תקיף תבל דלא תזדעזע : מתקן 2
כורסיך מן לקדמין מן עלמא את אלהא :
וקיפין נהרותא יי וקיפין נהרותא קלהון 3
בשירתא יקבלון נהרותא אגר שבחיהון : מן 4
קלן דמיין סגיעין משבחיא תבירי ימא רבא
משבח בשמי מרומא דיי : סהדותך קשיטין 5
לחדא לבית מקדשך יאין וקדישין יי לאוריכות
יומין :

צד

אלהא מרי פורענותא יי אלהא מרי פורענותא 1
הופע : אתנטל דין ארעא אתיב גומלא בישא 2
על גיותניא : עד אימתי רשיעיא יי עד אימתי 3
רשיעיא יתבון בשלותא : יבועון וימללון 4
גדופין אמרין מלין דקלנא כל עבדי שקר :
עמך יי ישופון ואחסנתך ימסכנון : ארמלתא 5 6
וגיורא יקטלון ויתמי ירצחון : ואמרו לא 7
יחמי יה ולא יתבין אלהא דיעקב : אתבוננו 8
דשטין בעמא וכסיליא אימתי תשכילון :
האפשר די נציב אודנא הלא שמיע אולפנא 9
אין אפשר די ברא עינא ולא אסתכל
באורייתא : האפשר דיהב אורייתא לעמיה 10
וכד יחובון הלא יתוכחון הלא יי אליף
לאדם קדמי מנדעא : קדם יי ידיען מחשבת 11
בני נשא ארום הנון למא : טב לגברא 12
די תכסנניה יה ומן אורייתך תאלפניה : לשדכא 13
ליה מן יומי בישא עד דיתכרי לרשיעא שוחה :
ארום לא ינטוש יי עמיה ואחסנתיה לא 14
ישבוק : ארום עד צדקתא יתוב דינא ובתרוי 15
יתפרקון כל תריצי לבא : מן יקום לי לאגחא 16
קרבא עם מבאשין מן יתעתד לי למנצי עם
עבדי שקר : אלולי יי סעיד לי כזער שרת 17
בשתיקותא נפשי :

PSAL. XCIII.

DOminus regnavit, celſitudinem indut' eſt, indutus eſt Dominus fortitudine, & accinxit ſe : inſuper ſtabilivit orbem ut non commoveatur. 1 Parata eſt ſedes tua à principio : à ſeculo tu ipſe es Deus. 2 Elevaverunt flumina Domine, elevaverunt flumina vocem ſuam in cantico : recipient flumina præmium laudum ſuarum. 3 A vocibus aquarum multarum, à laudibus fluctuum maris magni laudatus eſt in cœlis ſuperioribus Dominus. 4 Teſtimonia tua vera ſunt admodum ; domo ſanctuarii tui pulchrè conveniunt : ſancta ſunt Domine in longitudine dierum. 5

PSAL. XCIV.

DEus auctor ultionis Domine, Deus auctor ultionis ſplendidum te exhibe. 1 Elevare judex terræ, redde retributionem malam ſuperbis. 2 Uſquequo improbi Domine, uſquequo improbi ſedebunt in tranquillitate ? 3 Effutient & loquentur calumnias, dicentes verba opprobrii, omnes qui operantur falſitatem. 4 Populum tuum Domine conterent, & hæreditatem tuam vexabunt. 5 Viduam & advenam interficient, & pupillos occident. 6 Et dixerunt : Non *videbit* Dominus, & non intelliget Deus Jacob. 7 Intelligite inſipientes in populo : & ſtulti quando eritis intelligentes ? 8 Nunquid poſſibile eſt ut is per quem plantata eſt auris, non audiat doctrinam ? num poſſibile eſt ut creaverit oculum, & non reſpiciat in Legem ? 9 An poſſibile eſt ut dederit Legem populo ſuo, & cùm peccaverint, non arguantur ? nonne Dominus docuit hominem primum ſcientiam ? 10 Coram Dño notæ ſunt cogitationes filiorum hominis, quoniam vanæ ſunt. 11 Beatus vir quem corripies Domine, & quem de Lege tua docebis. 12 Ut des quietem illi à diebus malis, donec fodiatur impio fovea. 13 Quoniam non derelinquet Dominus populum ſuum, & hæreditatem ſuam non deſeret. 14 Quoniam uſque ad juſtitiam convertetur judicium, & poſt eum redimentur omnes recti corde. 15 Quis conſurget pro me ad gerendum bellum adverſum ſceleratos ? quis ſtabit pro me ad certandum contra operantes iniquitatem ? 16 Niſi Dominus ſuſtentâſſet me, parum [*abſuiſſet quin*] commoraretur in ſilentio anima mea. 17

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܙܡܘܪܐ ܨܓ *
ܕܕܘܝܕ. ܥܠ ܬܫܡܫܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܦܬܓܡܐ ܝܕ.
* ܡܪܝܐ ܐܡܠܟ ܘܫܘܒܚܐ ܠܒܫ: ܠܒܫ ܡܪܝܐ ܥܘܫܢܐ ܘܐܬܚܝܠ. ܘܫܪܪܗ ܠܬܒܝܠ ܕܠܐ 1
ܬܙܘܥ: * ܡܛܝܒ ܗܘ ܟܘܪܣܝܟ ܡܢ ܩܕܝܡ. ܘܡܢ ܥܠܡ ܐܢܬ ܗܘ: * ܐܪܝܡܘ ܢܗܪܘܬܐ 2 3
ܡܪܝܐ. ܐܪܝܡܘ ܢܗܪܘܬܐ ܩܠܗܝܢ: ܐܪܝܡܘ ܢܗܪܘܬܐ ܒܕܟܝܘܬܐ. * ܡܢ ܩܠܐ ܕܡܝܐ ܣܓܝܐܐ: 4
ܬܡܝܗܝܢ ܡܫܒܪܘܗܝ ܕܝܡܐ. ܡܫܒܚ ܒܡܪܘܡܐ ܡܪܝܐ: * ܘܣܗܕܘܬܟ ܛܒ ܡܗܝܡܢܢ. 5
ܘܠܒܝܬܟ ܝܐܝܐ ܩܕܝܫܘܬܐ: ܡܪܝܐ ܠܐܘܪܟܐ ܕܝܘܡܬܐ. * ܡܙܡܘܪܐ ܨܕ *
* ܕܕܘܝܕ ܥܠ ܟܢܘܫܬܐ ܕܩܘܪܚ ܘܕܬܢ ܘܐܒܝܪܘܡ. ܘܪܘܚܢܐܝܬ ܕܝܢ ܥܠ ܪܕܘܦܝܐ ܕܥܕܬܐ 1
ܠܘܩܒܠ ܥܕܬܐ. ܦܬܓܡܐ ܡܙ. ܐܠܗܐ ܬܒܥܐ ܡܪܝܐ: ܐܠܗܐ ܬܒܥܐ ܐܬܓܠܝ.
* ܐܬܬܪܝܡ ܕܝܢܗ ܕܐܪܥܐ: ܘܐܦܪܘܥ ܦܘܪܥܢܐ ܠܐܝܠܝܢ ܕܡܫܬܒܗܪܝܢ. * ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ 2
ܥܘܠܐ ܡܪܝܐ: ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܥܘܠܐ ܢܫܬܒܗܪܘܢ. * ܘܢܒܥܘܢ ܘܢܡܠܠܘܢ ܥܘܠܐ: ܘܢܐܡܪܘܢ 3 4
ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝ ܥܘܠܐ. * ܕܡܟܟܘ ܠܥܡܟ ܡܪܝܐ: ܘܠܝܪܬܘܬܟ ܫܥܒܕܘ. * ܠܐܪܡܠܬܐ ܘܠܬܘܬܒܐ 5 6
ܩܛܠܘ: ܘܠܝܬܡܐ ܢܟܣܘ. * ܘܐܡܪܘ ܕܠܐ ܚܙܐ ܡܪܝܐ: ܘܠܐ ܡܣܬܟܠ ܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ. 7
* ܐܣܬܟܠܘ ܫܛܝܐ ܕܒܥܡܐ: ܣܟܠܐ ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܠܐ ܡܣܬܟܠܝܢ ܐܢܬܘܢ. * ܗܘ ܕܢܨܒ 8 9
ܐܕܢܐ ܕܠܡܐ ܠܐ ܫܡܥ: ܗܘ ܕܒܪܐ ܥܝܢܐ ܕܠܡܐ ܠܐ ܡܣܬܟܠ. * ܗܘ ܕܪܕܐ ܠܥܡܡܐ ܕܠܡܐ ܠܐ 10
ܡܟܣ: ܗܘ ܕܡܠܦ ܠܒܪܢܫܐ ܝܕܥܬܐ. * ܡܪܝܐ ܝܕܥ ܡܚܫܒܬܗܘܢ ܕܒܢܝܢܫܐ: ܡܛܠ 11
ܕܐܝܟ ܠܗܓܐ ܐܢܘܢ. * ܛܘܒܘܗܝ ܠܒܪܢܫܐ ܕܐܪܕܝܬܝܗܝ ܐܢܬ ܡܪܝܐ: ܘܡܢ ܢܡܘܣܟ ܐܠܦܬܝܗܝ. 12
* ܘܐܢܝܚܬܝܗܝ ܡܢ ܝܘܡܬܐ ܒܝܫܐ: ܥܕܡܐ ܕܢܬܚܦܪ ܠܪܫܝܥܐ ܓܘܡܨܐ. * ܡܛܠ ܕܠܐ 13 14
ܫܒܩ ܡܪܝܐ ܠܥܡܗ: ܘܠܝܪܬܘܬܗ ܠܐ ܫܒܩ. * ܡܛܠ ܕܒܬܪ ܙܕܝܩܐ ܗܦܟ ܕܝܢܐ: ܘܒܬܪܗ 15
ܟܠܗܘܢ ܬܪܝܨܝ ܠܒܐ. * ܡܢܘ ܢܩܘܡ ܠܝ ܥܡ ܒܝܫܐ: ܘܡܢܘ ܢܬܛܝܒ ܠܝ ܥܡ ܥܒܕܝ 16
ܥܘܠܐ. * ܐܠܘ ܠܐ ܡܪܝܐ ܕܗܘܐ ܠܝ ܡܥܕܪܢܐ: ܟܡܐ ܩܠܝܠ ܫܪܝܐ ܗܘܬ ܢܦܫܝ ܒܐܘܠܨܢܐ. 17

PSAL. XCIII.

Davidis. De miniſterio Domini. Verſ. 14.

DOminus regnavit, & decorem indutus eſt : indutus eſt Dominus fortitudine, & corroboratus eſt : firmavítque orbem ne moveatur. 1 Stabile eſt ſolium tuum ab antiquo, & ab æterno tu es. 2 Extulerunt ſe flumina Domine, extulerunt flumina ſtrepitum ſuum, extulerunt ſe flumina cum puritate, 3 Pluſquam ſonitus aquarum multarum. Immenſi quidem ſunt fluctus maris : at glorioſiſſimus in excelſis Dominus. 4 Et teſtimonia tua maximè fidelia : domúmque tuam decet ſanctitas, Domine, in longitudinem dierum. 5

PSAL. XCIV.

Davidis. De cœtu Corah & Dathan & Abirom. Spiritualiter verò de perſequutione adverſùs Eccleſiam. Verſus 47. 1

DEus ultor Domine, Deus ultor appare : Effer te judex terræ, & redde retributionem his qui ſe oſtentant. 2 Uſquequò impii Domine, uſquequò impii gloriabuntur. 3 Et eructabunt ac loquentur ſcelus, dicéntque omnes operantes iniquitatem ? 4 Qui humiliaverunt populum tuum Domine, & hæreditatem tuam in ſervitutem redegerunt : 5 Viduas & incolas interfecerunt, atq; pupillos trucidârunt : 6 Dixerúntque, Non videt Domin', nec intelligit Deus Jacob. 7 Intelligite ſtolidi in populo : ſtulti, quouſque demũ non ſapietis ? 8 Is qui plantavit aures, an non audit ? ille qui creavit oculos, nónne percipit ? 9 Is qui caſtigat gentes, an non arguit, is qui docet hominem ſcientiam ? 10 Dñs ſcit cogitationes hominum, quoniam vapor ipſi ſunt. 11 Beatus homo quem corripies tu Dñe, & de lege tua docebis, 12 Tranquillúmq; reddes à diebus malis, donec fodiatur impiis fovea. 13 Non enim deſeret Dominus populũ ſuum, & hæreditatem ſuam minimè deſtituet. 14 Nam poſt juſtum redit judiciũ, & poſt ipſum omnes recti corde. 15 Quis conſurget mihi contra malos, & quis ſe parabit mihi adverſùs operantes flagitium? 16 Abſque Domino qui fuit mihi adjutor, brevi habitâſſet anima mea in afflictione. 17

Verſio VULG. LAT.

Laus Cantici ipſi David in die ante Sabbatum, quando fundata eſt terra.
XCII.

1 DOminꝰ regnavit, decorem indutꝰ
eſt: indutus eſt Dñs fortitudinem,
& præcinxit ſe. Etenim firmavit orbem
terræ, qui non commovebitur.
2 Parata ſedes tua ex tunc: à ſeculo tu
3 es. Elevaverunt flumina, Domine: elevaverunt
flumina vocem ſuam. Elevaverunt
4 flumina fluctus ſuos, A vocibus
aquarum multarum. Mirabiles elationes
maris, mirabilis in altis Dominus.
5 Teſtimonia tua credibilia facta
ſunt nimis: domum tuam decet ſanctitudo,
Domine, in longitudinem dierũ.

Pſalmus ipſi David,
Quartâ Sabbati. XCIII.

1 DEus ultionum Dominus: Deus ultionum
2 liberè egit. Exaltare qui
judicas terram: redde retributionem
3 ſuperbis. Uſquequò peccatores, Domine,
uſquequò peccatores gloriabũtur:
4 Effabuntur, & loquentur iniquitatem:
loquentur omnes, qui operantur injuſtitiam?
5 Populũ tuum, Domine, humiliaverunt:
& hæreditatem tuam vexaverunt.
6 Viduam & advenam interfecerunt:
7 & pupillos occiderunt. Et dixerunt;
Non videbit Dominus, nec intelliget
8 Deus Jacob. Intelligite inſipientes
in populo: & ſtulti aliquando
9 ſapite. Qui plantavit aurem, non audiet?
aut qui finxit oculum, non conſiderat?
10 Qui corripit gentes, non arguet:
11 qui docet hominem ſcientiam? Dominus
ſcit cogitationes hominum, quoniã
12 vanæ ſunt. Beatus homo, quem tu erudieris,
Domine, & de lege tua docueris
13 eum: Ut mitiges ei à diebus malis: donec
14 fodiatur peccatori fovea. Quia
non repellet Dominus plebem ſuam:
& hæreditatẽ ſuam non derelinquet.
15 Quoadúſque juſtitia convertatur in judiciũ:
et qui juxta illã omnes qui recto
16 ſunt corde. Quis conſurget mihi adverſùs
malignantes? aut quis ſtabit mecũ
17 adverſùs operantes iniquitatem? Niſi
quia Dominus adjuvit me: paulominùs
habitâſſet in inferno anima mea.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Εἰς τὴν ἡμέραν τοῦ (α) προσαββάτου, ὅτε κατῴκισται ἡ γῆ, αἶνος ᾠδῆς τῷ Δαυΐδ. ϟβʹ.

1 †Ὁ κύριος ἐβασίλευσεν, εὐπρέπειαν ἐνεδύσατο,
†ἐνεδύσατο κύριος δύναμιν καὶ περιεζώσατο·
†καὶ γὰρ ἐστερέωσε τὴν οἰκουμένην, ἥτις οὐ σαλευθήσεται.
2 †Ἕτοιμος ὁ θρόνος σου ἀπὸ τότε,
3 †ἀπὸ τοῦ αἰῶνος σὺ εἶ. †Ἐπῆραν οἱ ποταμοὶ
4 κύριε, †ἐπῆραν οἱ ποταμοὶ †φωνὰς αὐτῶν, †(β) Ἀπὸ
φωνῶν ὑδάτων πολλῶν. †θαυμαστοὶ οἱ μετεωρισμοὶ
τῆς θαλάσσης· †θαυμαστὸς ἐν ὑψηλοῖς ὁ κύριος.
5 †Τὰ μαρτύριά σου ἐπιστώθησαν σφόδρα.
†τῷ οἴκῳ σου πρέπει ἁγίασμα κύριε, †εἰς μακρότητα ἡμερῶν.

MS.A. (α) σαββάτου, (β) †ἄρουσιν οἱ ποταμοὶ ἐπιτρίψεις αὐτῶν, Ἀπὸ φωνῶν

Ψαλμὸς (α) τῷ Δαυΐδ τετράδι σαββάτου. ϟγʹ.

1 †Θεὸς ἐκδικήσεων κύριος, †(″)ὁ θεὸς ἐκδικήσεων
2 ἐπαρρησιάσατο. †Ὑψώθητι ὁ κρίνων τὴν
γῆν, †ἀπόδος ἀνταπόδοσιν τοῖς ὑπερηφάνοις.
3 †Ἕως πότε ἁμαρτωλοὶ κύριε, †ἕως πότε ἁμαρτωλοὶ
4 καυχήσονται; †Φθέγξονται καὶ λαλήσουσιν ἀδικίαν,
†λαλήσουσι πάντες οἱ ἐργαζόμενοι τὴν ἀνομίαν.
5 †Τὸν λαόν σου κύριε ἐταπείνωσαν, †καὶ
6 τὴν κληρονομίαν σου ἐκάκωσαν. †Χήραν καὶ ὀρφανὸν
7 ἀπέκτειναν, †καὶ προσήλυτον ἐφόνευσαν. †Καὶ
εἶπαν, Οὐκ ὄψεται κύριος, †οὐδὲ συνήσει ὁ θεὸς
8 τοῦ Ἰακώβ. †Σύνετε δὴ ἄφρονες ἐν τῷ λαῷ,
9 †καὶ μωροὶ, ποτὲ φρονήσατε. †Ὁ φυτεύσας τὸ
οὖς, οὐχὶ ἀκούει; †ἢ ὁ πλάσας τὸν ὀφθαλμὸν, οὐχὶ
10 κατανοεῖ; †Ὁ παιδεύων ἔθνη, οὐχὶ ἐλέγξει;
11 †ὁ διδάσκων ἄνθρωπον γνῶσιν; †Κύριος γινώσκει
τοὺς διαλογισμοὺς τῶν ἀνθρώπων, ὅτι εἰσὶ μάταιοι.
12 †Μακάριος (″)ὁ ἄνθρωπος ὃν ἂν σὺ παιδεύσῃς
κύριε, καὶ ἐκ τοῦ νόμου σου διδάξῃς αὐτόν·
13 †Τοῦ πραΰναι αὐτῷ ἀφ᾽ ἡμερῶν πονηρῶν, †ἕως
14 οὗ ὀρυγῇ τῷ ἁμαρτωλῷ βόθρος. †Ὅτι οὐκ ἀπώσεται
κύριος τὸν λαὸν αὐτοῦ, †καὶ τὴν κληρονομίαν
15 αὐτοῦ οὐκ ἐγκαταλείψει, †Ἕως οὗ δικαιοσύνη
(″) ἐπιστρέψῃ εἰς κρίσιν, †καὶ ἐχόμενοι αὐτῆς πάντες
16 οἱ εὐθεῖς τῇ καρδίᾳ. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. †Τίς ἀναστήσεταί
μοι ἐπὶ (β) πονηρευομένους, †ἢ τίς συμπαραστήσεταί
μοι ἐπὶ τοὺς ἐργαζομένους τὴν ἀνομίαν;
17 †Εἰ μὴ ὅτι κύριος ἐβοήθησέ μοι, †παραβραχὺ
παρῴκησε τῷ ᾅδῃ ἡ ψυχή μου.

MS.A. (α) ᾠδῆς τῷ Δαυΐδ (″) θεὸς (″) ἄνθρωπος ὃν ἂν παιδεύσῃς (″) ἐπιστρέψει (β) πονηρευομένοις,

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

In die (a)[a] ante Sabbatum, quando fundata eſt terra, laus Cantici ipſi David. XCII.

1 DOminus regnavit, decorem induit: induit Dominus fortitudinem, 1
& præcinxit ſe. 2 Etenim firmavit
orbem terræ, qui non commovebitur. 3 Parata ſedes tua [b] ex 2
tunc: à ſeculo tu es. 4 Elevaverunt 3
flumina, Domine: elevaverunt flumina
voces (b) ſuas: 5 A vocibus aquarum 4
multarũ. 6 Mirabiles elationes
maris, (c) mirabilis in excelſis
Dominus. 7 Teſtimonia tua (d) credita 5
facta ſunt nimis: domum tuam
decet [c] ſanctificatio, Domine, in
longitudinem dierum.

Pſalmus (a) ipſi David quartâ Sabbati. XCIII.

1 DEus ultionum Dominus, Deus 1
ultionum (b) fidentèr egit.
2 Exaltare, qui judicas terrã; redde 2
retributionem ſuperbis. 3 Uſquequò 3
peccatores, Dñe, uſquequò peccatores
gloriabuntur? 4 (c) Effabuntur, & loquentur 4
iniquitatẽ: loquẽtur omnes,
qui operantur injuſtitiam. 5 Populum 5
tuum, Domine, humiliaverunt: & hæreditatem
tuam vexaverunt. 6 (d)
Viduam & pupillum interfecerunt, 6
& proſelytum occiderunt. 7 Et dixerunt, 7
Non videbit Dominus: neque
intelliget Deus Jacob. 8 [a]
Intelligite nunc inſipientes in populo: 8
& ſtulti aliquando ſapite. 9 Qui 9
plantavit aurem, non audit? aut qui
finxit oculũ, non conſiderat? 10 Qui 10
erudit gentes, non arguet: qui docet
hominem ſcientiam? 11 Dominus 11
ſcit [b] cogitationes hominum, quoniam
vanæ ſunt. 12 Beatus homo, 12
quem tu erudieris, Domine, & ex
lege tua docueris [c] eum. 13 Ut mitiges 13
eum à diebus malis: donec fodiatur
[d] peccatori fovea. 14 Quia 14
non repellet Dominus plebem ſuam:
& hæreditatem ſuam non derelinquet.
15 (e) Quoadúſque juſtitia 15
convertatur [e] in judicium, & [f]
juxta illam, omnes qui recto ſunt
corde. DIAPSALMA. 16 Quis (f) 16
exurget mihi adverſùs malignantes?
aut quis ſtabit mecum adverſùs operantes
iniquitatem? 17 Niſi, quia 17
Dominus adjuvit me; paulominùs
habitâſſet in inferno anima mea.

Verſio ÆTHIOPICA.

በዕለተ፡ሰንበት፡ኃም፡ሳድረተ፡ምድር፡
ስብሐተ፡ማኅሌት፡ዘደዊት፡፡

፺፪ እግዚአብሔር፡ ነግሠ፡ ስብሐቲሁ፡ ለብ 1
ሰ፡፡ ለብሰ፡ እግዚአብሔር፡ ኃይሉ፡ ወቀና
ተ፡፡፦ ወአጽንዓ፡ ለዓለም፡ ከመ፡ ኢታንቀ 2
ልቅል፡፡፦ ድልው፡ መንበርከ፡ እግዚኦ፡፡ እ 3
ምትካት፡ ወእስከ፡ ለዓለም፡ አንተ፡ ከመ፡፡፦
አልዐሉ፡ አፍላግ፡ እግዚኦ፡፡ አልዐሉ፡ አፍላ 4
ግ፡ ቃላቲሆሙ፡፡፦ እምቃለ፡ ማያት፡ ብዙ 5
ኃ፡፡፦ መንክር፡ ተላህያ፡ ለባሕር፡፡ መንክ 6
ርሰ፡ እግዚአብሔር፡ በአርያም፡፡፦ ስም 7
ዐ፡ ዚአከ፡ እሙን፡ ፈድፋደ፡፡ ለቤትከ፡ ይደሉ፡
ስብሐት፡ እግዚኦ፡ ለነዋኅ፡ መዋዕል፡፡፦

መዝሙር፡ዘደዊት፡ዘበረቡዕ፡ሰንበት፡፡

፺፫ እግዚአብሔር፡ እግዚኦ፡ መስተበቅል፡፡ 1
እግዚአብሔር፡ መስተበቅል፡ ገሃደ፡፡፦ ተ 2
ለዐለ፡ ዘይኴንና፡ ለምድር፡፡ ፍድዮሙ፡ ፍ
ደሆሙ፡ ለዕቡያን፡፡፦ እስከ፡ ማእዜኑ፡ ኃ 3
ጥአን፡ እግዚኦ፡፡ እስከ፡ ማእዜኑ፡ ይዜሀሩ፡
ኃጥአን፡፡፦ ወይትዋሥኡ፡ ወይነቡ፡ ዐመ 4
ፃ፡፡ ወይነቡ፡ ኵሎሙ፡ ገበርተ፡ ዐመፃ፡፡፦
ወአኅሰሩ፡ ሕዝበከ፡ እግዚኦ፡፡ ወሳቀዩ፡ ርስ 5
ተከ፡፡፦ ወቀተሉ፡ እቤራተ፡ ወእጓለ፡ ሙው 6
ታ፡፡ ወቀተሉ፡ ፈላሴ፡፡፦ ወይቤሉ፡ ኢይሬ 7
ኢ፡ እግዚአብሔር፡፡ ወኢያአምር፡ አምላ
ከ፡ ያዕቆብ፡፡፦ ለብዉ፡ አብደን፡ ሕዝብ፡፡ 8
አብደንኬ፡ ማእዜኑ፡ ይጠቡ፡፡፦ ዘተከለ 9
ሑ፡ ለእዝን፡ ኢይሰምዕ፡፡ ወዘፈጠረሁ፡ ለዐ
ይን፡ ኢይሬኢ፡፡፦ ዘይጌሥጾሙ፡ ለአሕዛ 10
ብ፡ ወኢይዛለፎኑ፡፡ ዘይምሕሮሙ፡ ለሰብ
እ፡ ጥበበ፡፡፦ እግዚአብሔር፡ ያአምር፡ 11
ሕሊናሆሙ፡ ለጠቢባን፡ ከመ፡ ከንቱ፡ ውእ
ቱ፡፡፦ ብፁዕ፡ ብእሲ፡ ዘአንተ፡ ገሠጽኮ፡ 12
እግዚኦ፡፡ ወዘመሀርኮ፡ ሕገከ፡ እግዚኦ፡፡፦
ከመ፡ ይትገኃሥ፡ እመዋዕለ፡ እኩያት፡፡ እስ 13
ከ፡ ይትከረይ፡ ግብ፡ ለኃጥአን፡፡፦ እስመ፡ 14
ኢይገድፎሙ፡ እግዚአብሔር፡ ለሕዝቡ፡፡
ወኢያኃድጎሙ፡ ለርስቱ፡፡፦ እስከ፡ ይገ 15
ብእ፡ ፍትሕ፡ ለዘ፡ ይጸድቅ፡፡ ወኵሎሙ፡ ር
ቱዓነ፡ ልብ፡ እለ፡ ክያሃ፡ ቦሙ፡፡፦ መኑ፡ ይ 16
ትናሥአኒ፡ በእንተ፡ እኩያት፡፡ ወመኑ፡ ይትቃ
ወመኒ፡ በእንተ፡ ገበርተ፡ ዐመፃ፡፡፦ ሶበ፡ አ 17
ኮ፡ እግዚአብሔር፡ ዘረድአኒ፡፡ ሕቀ፡ ከመ፡
ዘእምኃደረት፡ ነፍስየ፡ ውስተ፡ሲኦል፡፡፦

INTERP. ÆTHIOP. [a] Sabbati, quando [b] Domine: ab initio, & uſque in æternum tu idem es. [c] glorificatio Domine, PSAL. XCIII. [a] Intelligite inſipientes [b] cogitationes prudentum, [e] eum Domine. Ut divertas eum à diebus [d] peccatoribus [e] illi qui judicabit, [f] omnes recto ſunt corde qui illam habent.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

1 * المزمور الثاني والتسعون * لداود قاله في يوم السبت تمجيدا حين سكنت الارض *
وهو * يج * استيخن *
ملك الرب ولبس البهاء * لبس الرب القدرة وتمنطق بها * وانه ثبت المسكونة هذه فلن
2 3 تتحرك * كرسيك مستعد منذ البدء * وانت هو منذ الازل * ارتفعت الانهار يا رب * رفعت الانهار
4 اصواتها ترفع الانهار تكسيرها * من خرير مياه كثيرة * عجيبة هي اهوال البحر * وعجيب هو
5 الرب في الاعالي * شهاداتك صدقت جدا * ينبغي لبيتك التقديس طول الايام * اللليلويا *
1 * المزمور الثالث والتسعون * لداود رابع السبت * وعدده مه * استيخن * اله الانتقام الرب *
2 3 اله الانتقام ظهر * تعال يا ديان الارض * اعط مجازاة المتعظمين * الى متى الخاطئون يا رب * الى متى
4 الخاطئون يفتخرون * يجيبون ويتكلمون بالظلم * ويتكلم جميع عاملي الاثم * شعبك يا رب
5 6 7 اذلوه * وميراثك اضروه * هتكوا الارملة * واهلكوا اليتيم * وقتلوا الغريب * وقالوا ان الرب لا
8 يري * واله يعقوب لا يفهم * افهموا ايها الجهال الذين في الشعب * ويا ايها الحمق متى تعقلون *
9 10 * هل الذي خلق الاذن لا يسمع * والذي كون العين لا يري * والذي ادب الامم لا
11 12 يبكت * الذي عرف الانسان العلم * الرب يعرف افكار الناس انها باطل * طوبى للانسان الذي
13 انت تؤدبه يا رب * ومن ناموسك تعلمه * لكي تعطيه دعة في ايام شرير * الى ان تحفر للخاطي
14 15 حفرة * لان الرب لا يقصي شعبه * ولا يخذل ميراثه * حتى يرجع الحق الى الحكم * مع جميع
16 القريبين منه * المستقيمين بقلوبهم * من الذي يقوم معي على الاشرار * ومن يساعدني على
17 فاعلي الاثم * فلولا ان الرب اعانني * لكادت نفسي عن قليل تسكن الجحيم *

PSAL. XCII.

Davidis. Dixit eum die Sabbathi pro encomio quando quievit terra. Verſ. 13. 1

REgnavit Dominus, & indutus eſt decore: indutus eſt Dominus fortitudine, eâque ſe præcinxit. Et ipſe quidem
firmavit Habitatam hanc, & nequaquam
movebitur. Sedes tua parata eſt ab initio, 2
& tu es ab æterno. Extulerunt ſe 3
flumina, O Domine: elevaverunt flumina voces ſuas: elevant flumina rupturas
ſuas Præ murmure aquarum multarum. 4
Mirabiles ſunt tempeſtates maris, et mirabilis eſt Dominus in excelſis. Teſtimonia 5
tua verificata ſunt valde. Decet domum tuam ſanctificatio longitudine dierum. Alleluja.

PSAL. XCIII.

Davidis. Quartâ Sabbathi. Et num. ver. 45. 1

DEus ultionis Dominus, Deus ultionis
apparuit. Exaltare, O judex terræ, 2
da retributionem ſuperborum. Quouſque 3
peccatores, O Domine, quouſque peccatores
gloriabuntur? Reſpondebunt ac loquentur 4
oppreſſionem, et effabuntur omnes operantes flagitium? Populum tuum, O Domine, 5
depreſſerunt, et hæreditatem tuam anguſtiaverunt. Stuprârunt viduam, et per- 6
emerunt pupillum, et occiderunt peregrinum.
Et dixerunt, Certè Dominus non 7
videt, et Deus Jacobi non intelligit. In- 8
telligite O ſtulti qui eſtis inter populum:
& O heus ſtolidi, quandonam ſapietis?
Num qui creavit aurem non audit? & 9
qui condidit oculum non videt? Et qui e- 10
rudivit gentes non arguit? qui notam fe-
cit hominibus ſcientiam? Dominus ſcit 11
cogitationes hominum eſſe vanitatem.
Beatus homo quem tu erudis, O Domine, et 12
quem de lege tua doces. Ut concedas ei 13
manſuetudinem in diebus malis, quoad
fodiatur peccatori fovea. Nam Dominus 14
non exterminabit populum ſuum, neque
auxilio deſtituet hæreditatem ſuam. Do- 15
nec redeat veritas ad judicium, cum omnibus
qui proximi ſunt ei, qui recti ſunt
cordibus ſuis. Quis eſt qui ſurgat mecum 16
adverſùs improbos? et quis auxilietur mi-
hi adverſùs operantes iniquitatem? Niſi 17
Dominus adjuviſſet me, certè parum abfuiſſet
quin anima mea habitâſſet in inferno.

תהלים : צה צא

.me ſuſtentat Domine tua miſericordia : meus pes eſt Motus , dicebam Si
18 אִם־אָמַרְתִּי מָטָה רַגְלִי חַסְדְּךָ יְהוָה יִסְעָדֵנִי׃
delectabunt tuæ conſolationes : meo intimo in mearum cogitationum multitudine In
19 בְּרֹב שַׂרְעַפַּי בְּקִרְבִּי תַּנְחוּמֶיךָ יְשַׁעַשְׁעוּ
ſuper laborem formans ? confractionum thronus tibi jungetur Nunquid .meam animam
20 נַפְשִׁי׃ הַיְחָבְרְךָ כִּסֵּא הַוּוֹת יֹצֵר עָמָל עֲלֵי־
.condemnabunt innocentem ſanguinem &:juſti animam contra excurrent Turmatim? ſtatuto
21 חֹק׃ יָגוֹדּוּ עַל־נֶפֶשׁ צַדִּיק וְדָם נָקִי יַרְשִׁיעוּ׃
reddet Et .meæ fiduciæ petram in meus Deus & :elevationem in mihi Dominus fuit Et
22 23 וַיְהִי יְהוָה לִי לְמִשְׂגָּב וֵאלֹהַי לְצוּר מַחְסִי׃ וַיָּשֶׁב
Dominus eos ſuccidet : eos ſuccidet eorum malitia in & ,eorum iniquitatem eis ſuper
עֲלֵיהֶם אֶת־אוֹנָם וּבְרָעָתָם יַצְמִיתֵם יַצְמִיתֵם יְהוָה
.noſter Deus
אֱלֹהֵינוּ׃

PSAL. XCV. צה

Præoccupemus .noſtræ ſalutis fortitudini jubilemus : Domino dicamus præconium, Adeſte
1 לְכוּ נְרַנְּנָה לַיהוָה נָרִיעָה לְצוּר יִשְׁעֵנוּ׃ נְקַדְּמָה
2 :Dominus magnus Deus Quoniam .ei jubilemus cantilenis in :confeſſione in ejus facies
3 פָנָיו בְּתוֹדָה בִּזְמִרוֹת נָרִיעַ לוֹ׃ כִּי אֵל גָּדוֹל יְהוָה
: terræ inveſtigationes ejus manu in Quod .deos omnes ſuper magnus rex &
4 וּמֶלֶךְ גָּדוֹל עַל־כָּל־אֱלֹהִים׃ אֲשֶׁר בְּיָדוֹ מֶחְקְרֵי־אָרֶץ
ejus manus ſiccam &:illud fecit ipſe &,mare ei Quod .ei montium cacumina &
5 וְתוֹעֲפוֹת הָרִים לוֹ׃ אֲשֶׁר־לוֹ הַיָּם וְהוּא עָשָׂהוּ וְיַבֶּשֶׁת יָדָיו
Domini facies ad genuflectamus : nos incurvemus &,adoremus Venite .formaverunt
6 יָצָרוּ׃ בֹּאוּ נִשְׁתַּחֲוֶה וְנִכְרָעָה נִבְרְכָה לִפְנֵי־יְהוָה
:ej⁹ manus pecus &,ejus paſcuæ populus nos & , noſter Deus ipſe Quia .noſtri factoris
7 עֹשֵׂנוּ׃ כִּי הוּא אֱלֹהֵינוּ וַאֲנַחְנוּ עַם מַרְעִיתוֹ וְצֹאן יָדוֹ
:Meribah ſicut veſtrum cor obduretis Ne : audieritis ejus voce in ſi hodie
8 הַיּוֹם אִם־בְּקֹלוֹ תִשְׁמָעוּ׃ אַל־תַּקְשׁוּ לְבַבְכֶם כִּמְרִיבָה
;me probaverunt :veſtri patres me tentaverunt Quo .deſerto in Maſſah die ſicut
9 כְּיוֹם מַסָּה בַּמִּדְבָּר׃ אֲשֶׁר נִסּוּנִי אֲבוֹתֵיכֶם בְּחָנוּנִי
; dixi &,generatione in habui faſtidio annis Quadraginta .meum opus viderunt etiam
10 גַּם־רָאוּ פָעֳלִי׃ אַרְבָּעִים שָׁנָה אָקוּט בְּדוֹר וָאֹמַר
Quod .meas vias cognoverunt non ipſi & : ipſi corde errantium populus
11 עַם תֹּעֵי לֵבָב הֵם וְהֵם לֹא־יָדְעוּ דְרָכָי׃ אֲשֶׁר־
.meam requiem in introibunt ſi : mea nare in juravi
נִשְׁבַּעְתִּי בְאַפִּי אִם־יְבֹאוּן אֶל־מְנוּחָתִי׃

PSAL. XCVI. צו

,Domino Cantate .terra omnis Domino cantate:novum canticum Domino Cantate
1 שִׁירוּ לַיהוָה שִׁיר חָדָשׁ שִׁירוּ לַיהוָה כָּל־הָאָרֶץ׃ שִׁירוּ לַיהוָה
2 gentibus in Narrate .ejus ſalutem diem in die de evangelizate:ej⁹ nomini benedicite
3 בָּרְכוּ שְׁמוֹ בַּשְּׂרוּ מִיּוֹם־לְיוֹם יְשׁוּעָתוֹ׃ סַפְּרוּ בַגּוֹיִם
,Dominus magnus Quoniā .ejus mirabilia populis omnibus in:ejus gloriam
4 כְּבוֹדוֹ בְּכָל־הָעַמִּים נִפְלְאוֹתָיו׃ כִּי גָדוֹל יְהוָה
.deos omnes ſuper ipſe terribilis : valde laudatus &
וּמְהֻלָּל מְאֹד נוֹרָא הוּא עַל־כָּל־אֱלֹהִים׃

תרגום TARGUM.

18 אִין אֲמַרִית אִתְמוֹטְטָא רַגְלִי טוּבָךְ יְיָ יְסָעִיד
19 יָתִי׃ בִּסְגְעֵי מַחְשְׁבָתָא בְּגַוִּי נִיחוּמָךְ יְפַרְנְקוּן
20 נַפְשִׁי׃ הַאֶפְשַׁר דְּיִתְחַבַּר עִמָּךְ כּוּרְסֵי שִׁקְרָא
12 בְּרִית לְעוּתָא הֲיִתְעֲתַד עֲלֵי קְיָם׃ יִכְנְשׁוּן
בִּישָׁן עַל נַפְשָׁא דְצַדִּיקָא וְאַדְמָא זַכַּי יְחַיְבוּן
22 דִּין דִּקְטוֹל׃ וִיהֵי יְיָ לִי לְסָעִיד וֵאלָהִי לִתְקוֹף
23 רוּחְצָנִי׃ וַאֲתִיב עֲלֵיהוֹן יַת שִׁקְרֵיהוֹן וּבְבִישְׁתְּהוֹן
יְגַמְרִינּוּן יְגַמְרִנּוּן יְיָ אֱלָהָנָא׃

צה

1 אֱתוֹן נְשַׁבַּח קֳדָם יְיָ נְיַבֵּב קֳדָם תַּקִּיף פּוּרְקָנָא׃
2 נְקַדֵּם אַפּוֹי בְּתוֹדְתָא בְּתוּשְׁבְּחָיָא נְיַבֵּב קֳדָמוֹי׃
3 אֲרוּם אֱלָהָא רַבָּא יְיָ וּמַלְכָּא רַבָּא עַל כָּל
4 אֱלָהָא׃ דִּי בִידֵיהּ תְּלָיָן פִּשְׁפּוּשִׁין דְּאַרְעָא
5 וְתוּקְפֵי רוּם טוּרַיָּא דִּי לֵיהּ׃ דִּי לֵיהּ יַמָּא וְהוּא
6 עֲבַד יָתֵיהּ וְיַבֶּשְׁתָּא אַיְדוֹי בְּרִיאוּ׃ אֱתוֹן נִסְגוֹד
7 וְנִגְחַן נַחְמוּט קֳדָם יְיָ דַּעֲבִיד יָתָנָא׃ אֲרוּם
הוּא אֱלָהָנָא וַאֲנַחְנָא עַמֵּיהּ וְעָאן רַעֲיַת אַיְדֵיהּ
8 יוֹמָא דֵין אִם בְּמֵימְרֵיהּ תְּקַבְּלוּן׃ לָא תַקְשׁוּן
לִבְּכוֹן הֵיךְ בְּמַצּוּתָא הֵיךְ יוֹמָא דְנַסֵּיתוּן אֱלָהָא
9 בְּמַדְבְּרָא׃ דִּי נַסִּיאוּ יָתִי אֲבָהָתְכוֹן בַּחֲנוּ
10 יָתִי לְחוּד חֲמוֹן עוֹבָדִי׃ אַרְבְּעִין שְׁנִין מָאֲסֵית
בְּדָרָא בְּמַדְבְּרָא וַאֲמַרִית עַמָּא דְטַעֲוָתָא
11 בְּלִבְּהוֹן הִנּוּן וְאִנּוּן לָא יָדְעוּ אָרְחִי׃ דְּקַיְמֵית
בִּתְקוֹף רוּגְזִי אִם יֵעֲלוּן לְנִיחַ בֵּית מַקְדְּשִׁי׃

צו

1 שַׁבַּחוּ קֳדָם יְיָ תּוּשְׁבַּחְתָּא חֲדַתָּא שַׁבַּחוּ
אַנְגְּלֵי מְרוֹמָא שַׁבַּחוּ קֳדָם יְיָ כָּל צַדִּיקֵי
2 אַרְעָא׃ שַׁבַּחוּ קֳדָם יְיָ בְּרִיכוּ שְׁמֵיהּ בַּשַּׂרוּ
3 מִיּוֹמָא לְיוֹמָא פּוּרְקָנֵיהּ׃ אִשְׁתָּעוּ בְעַמְמַיָּא
4 אִיקָרֵיהּ בְּכָל עַמַּיָּא פְּרִישׁוּתֵיהּ׃ אֲרוּם
רַב יְיָ וּמְשַׁבַּח לַחֲדָא דִּדְחִיל הוּא עַל כָּל
אֱלָהַיָּא׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Si dixi : Motus eſt pes meus, miſericor- 18
dia tua Domine adjuvabit me. In multi- 19
tudine cogitationum quæ intra me ſunt,
conſolationes tuæ oblectabunt animam
meam. An poſſibile eſt ut adhæreat tibi 20
ſedes mendacii : figmentum pravitatis num
ſtabit in ſtatuto ? Coacervabunt mala ad- 21
verſus animam juſti, & ſanguinem inno-
centem condemnabunt *judicio mortis.* Et 22
erit Dominus auxiliator mihi, & Deus me⁹
in fortitudinem fiduciæ meæ. Et reddet 23
illis mendacia eorum, & in malignitate
eorum perdet eos; perdet eos Dominus
Deus noſter.

PSAL. XCV.

VEnite, laudes dicamus coram Domino, 1
jubilemus coram fortiſſimo redemptionis
noſtræ. Præveniamus faciem ejus in con- 2
feſſione, in canticis jubilemus coram eo.
Quoniam Deus magnus Dominus, & rex 3
magnus ſuper *omnem deum.* Quoniam à 4
manu ejus pendent penetralia terræ, & ro-
bora ſublimitatis montium ipſius ſunt.
Quoniam ipſi⁹ eſt mare & ipſe fecit illud: 5
& aridam manus ejus creaverunt. Venite 6
adoremus & procidam⁹ : genu flectamus
coram Dn̄o qui fecit nos. Quoniam ipſe 7
eſt Deus noſter, & nos popul⁹ ejus, & oves
paſcuæ manus ejus. Die iſto ſi Verbum ejus
receperitis, Ne induretis corda veſtra ſicut 8
in contentione, ſicut die qua tentâſtis De-
um in deſerto : Quoniam tentaverunt me 9
patres veſtri; probaverunt me, etiam *vi-*
derunt opera mea. Quadraginta annis 10
aſpernatus ſum generationem deſerti : &
dixi; Populus eſt quorum idola ſunt in
corde eorum, & ipſi non cognoverunt vias
meas. Quibus juravi in vehementia furoris 11
mei, ſi introibunt in requiem domus ſan-
ctuarii mei.

PSAL. XCVI.

CAntate coram Dn̄o canticum novum, 1
cantate angeli excelſi : laudate coram
Domino omnes juſti terræ. Laudate coram 2
Domino, benedicite nomini ejus, annun-
ciate de die in diem redemptionem ejus.
Narrate in populis gloriam ejus, in omni- 3
bus populis mirabilia ejus. Quoniam 4
magnus Dominus & laudabilis valdè, &
timendus ſuper omnes deos.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

18 * ܐܢ ܐܡܪܬ ܕܫܪܥܘ ܪܓܠܝ : ܘܛܝܒܘܬܟ ܡܪܝܐ ܣܡܟܬܢܝ. * ܒܣܘܓܐܐ ܕܟܘܪܗܢܐ ܕܠܒܝ : 19
20 ܒܘܝܐܝܟ ܦܪܩܘܗ ܠܢܦܫܝ. * ܠܐ ܢܫܬܘܬܦ ܠܟ ܟܘܪܣܝܐ ܕܥܘܠܐ : ܕܓܒܠܘ ܥܘܠܐ ܥܠ
21 22 ܢܡܘܣܟ. * ܘܨܠܝܢ ܠܡܨܕ ܢܦܫܗ ܕܙܕܝܩܐ : ܘܕܡܐ ܕܙܟܝܐ ܡܚܝܒܝܢ. * ܘܗܘܐ ܠܝ ܡܪܝܐ
23 ܡܥܫܢܢܐ: ܐܠܗܐ ܥܫܝܢܐ ܘܡܥܕܪܢܐ. * ܐܗܦܟ ܥܠܝܗܘܢ ܥܘܠܗܘܢ: ܘܒܒܝܫܘܬܗܘܢ ܫܬܩ
ܐܢܘܢ. ܫܬܩ ܐܢܘܢ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܨܗ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܡܦܫܩܢܐ ܟܕ ܥܒܪ ܥܡܐ ܠܝܘܪܕܢܢ. ܘܡܚܘܐ ܒܗ ܦܣܩ ܣܒܪܐ ܕܝܗܘܕܝܐ. ܡܐܢܐ
ܠܝ ܡܢ ܕܪܐ ܗܘ. ܐܝܟ ܕܝܡܝܬ ܒܪܘܓܙܝ. ܦܬܓܡܐ ܟܘ. ܬܘ ܢܫܒܚ ܠܡܪܝܐ.
2 3 ܘܢܙܡܪ ܠܐܠܗܢ ܦܪܘܩܢ : * ܢܩܕܡ ܐܦܘܗܝ ܒܬܘܕܝܬܐ. ܘܒܡܙܡܘܪܐ ܢܫܒܚܝܘܗܝ : * ܡܛܠ
4 ܕܐܠܗܐ ܗܘ ܪܒܐ ܡܪܝܐ. ܡܠܟܐ ܪܒܐ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܐܠܗܐ : * ܕܒܐܝܕܘܗܝ ܐܢܘܢ ܫܬܐܣܬܗ
5 6 ܕܐܪܥܐ ܘܪܘܡܐ ܕܛܘܪܐ. * ܕܕܝܠܗ ܗܘ ܝܡܐ ܘܗܘ ܥܒܕܗ: ܘܝܒܝܫܬܐ ܐܝܕܘܗܝ ܓܒܠܝ. * ܬܘ
7 ܢܣܓܘܕ ܘܢܬܟܪܥ ܠܗ : ܘܢܒܪܟܝܘܗܝ ܠܡܪܝܐ ܕܥܒܕܢ. * ܡܛܠ ܕܗܘܝܘ ܐܠܗܢ : ܘܚܢܢ
8 ܥܡܐ ܕܝܠܗ ܘܥܢܐ ܕܡܪܥܝܬܗ. ܝܘܡܢܐ ܐܢ ܒܩܠܗ ܬܫܡܥܘܢ : * ܠܐ ܬܩܫܘܢ ܠܒܘܬܟܘܢ
9 ܠܡܪܓܙܘܬܗ ܐܝܟ ܡܪܓܙܢܐ ܘܐܝܟ ܝܘܡܐ ܕܢܣܝܘܢܐ ܕܒܡܕܒܪܐ : * ܕܢܣܝܘܢܝ ܐܒܗܝܟܘܢ.
10 ܘܒܩܘ ܘܚܙܘ ܥܒܕܝ * ܐܪܒܥܝܢ ܫܢܝܢ : ܡܐܢܐ ܠܝ ܡܢ ܕܪܐ ܗܘ. ܘܐܡܪܬ ܕܥܡܐ ܗܘ ܕܛܥܐ
11 ܠܒܗܘܢ. ܘܗܢܘܢ ܠܐ ܝܕܥܘ ܐܘܪܚܬܝ. * ܐܝܟ ܕܝܡܝܬ ܒܪܘܓܙܝ ܕܠܐ ܢܥܠܘܢ ܠܢܝܚܬܝ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܨܘ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܢܒܝܘܬܐ ܥܠ ܡܐܬܝܬܗ ܕܡܫܝܚܐ. ܘܥܠ ܩܪܝܬܐ ܕܥܡܡܐ ܕܗܝܡܢܘ ܒܗ.
ܦܬܓܡܐ ܟܛ. ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ ܬܫܒܘܚܬܐ ܚܕܬܐ. ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ
2 ܟܠܗ ܐܪܥܐ : * ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ ܘܒܪܟܘ ܠܫܡܗ. ܣܒܪܘ ܡܢ ܝܘܡ ܠܝܘܡ ܦܘܪܩܢܗ :
3 4 * ܐܫܬܥܘ ܒܥܡܡܐ ܐܝܩܪܗ. ܘܒܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܬܕܡܪܬܗ : * ܡܛܠ ܕܪܒ ܗܘ ܡܪܝܐ
ܘܡܫܒܚ ܛܒ. ܘܕܚܝܠ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܐܠܗܐ :

Ego dixeram, Lapſi ſunt pedes mei:at boni- 18
tas tua Domine ſuffulſit me; In multitudine 19
dolorum cordis mei, conſolationes tuæ libe-
raverunt animam meam. Non aſſociabitur 20
tibi ſolium ſceleratorum, qui compegerunt
iniquitatem contra legem tuam : Et tendunt 21
ad capiendam animam juſti; & ſanguinem in-
nocentis condemnant. Et factus eſt mihi Do- 22
minus roborator, Deus fortiſſimus, atq; ad-
jutor. Retorſit in eos iniquitatem ipſorum, 23
& in malitiis illorum ſilere fecit illos : ſilere
fecit eos Dominus Deus.

PSAL. XCV.

Davidis. Ad literam. Quum tranſivit po- 1
pulus per Jordanem: & innuit in eo deſpera-
tionem Judæorum. Tædet me generationis
hujus. Sicut juravi in ira mea. Verſ.26.

VEnite, laudemus Dominum, & canamus
Deo noſtro ſervatori : Præveniamus fa- 2
ciem ejus gratiarum actione, & pſalmis glori-
ficemus eum; Quoniam Deus eſt magnus Do- 3
minus, rex maximus ſuper omnes Deos: Cu- 4
jus in manibus ſunt fundamenta terræ & ver-
tex montium: Ipſius eſt mare, & ipſe fecit il- 5
lud, & aridam manus ejus finxerunt. Venite 6
procumbamus & adoremus eum, atq; bene-
dicamus Dominum qui fecit nos. Nam ipſe eſt 7
Deus noſter, & nos populus ejus, & oves
paſcuæ illius. Hodie ſi vocem ejus audieritis,
Ne obduretis corda veſtra ad provocandam 8
iram ipſius ut exaſperatores: & ſicut die ten-
tationis quæ in deſerto, Quâ tentaverunt me 9
patres veſtri, & explorârunt, viderunt opera
mea Quadraginta annis. Tædio mihi fuit ge- 10
neratio illa: & dixi, Popul⁹ eſt quorū aberrat
cor, & iſti non cognoverunt vias meas. Ut ju- 11
ravi in ira mea, non ingredientur in requiem
meam.

PSAL. XCVI.

Davidis. Prophetia de adventu Chriſti; & 1
vocatione gentium credentium in eo. Verſ.29.

CAnite Dn̄o canticum novum, canite Do-
mino omnis terra : Canite Dn̄o & bene- 2
dicite nomini ejus, prædicate de die in diem
ſalutem ejus: Narrate inter gentes gloriā ejus, 3
& inter omnes populos facta ipſius; Quoni- 4
am magnus eſt Dominus noſter & glorioſus
valdé, atque tremendus præ omnibus diis.

Verſio VULG. LAT.

18 Si dicebam, Motus eſt pes meus: miſericordia tua, Dñe, adjuvabat me. 19 Secundũ multitudinẽ dolorũ meorum in corde meo, conſolationes tuæ lætificaverunt animã meã. 20 Numquid adhæret tibi ſedes iniquitatis: qui fingis laborem in præcepto? 21 Captabunt in animã juſti: & ſanguinẽ innocentẽ condemnabunt. 22 Et factus eſt mihi Dominus in refugiũ, & Deus meꝰ in adjutoriũ ſpei meæ. 23 Et reddet illis iniquitatem ipſorum: & in malitia eorũ diſperdet eos: diſperdet illos Dominus Deus noſter.

Laus Cantici ipſi David. XCIV.

1 VEnite, exultemus Dño: jubilemus 2 Deo ſalutari noſtro. Præoccupemꝰ faciẽ ejus in confeſſione: & in pſalmis 3 jubilemus ei. Quoniã Deꝰ magnꝰ Dñs: 4 & rex magnꝰ ſuper omnes deos. Quia in manu ejꝰ ſunt omnes fines terræ: & 5 altitudines montium ipſiꝰ ſunt. Quoniam ipſiꝰ eſt mare, & ipſe fecit illud: 6 & ſiccam manꝰ ejus formaverunt. Venite, adoremꝰ, & procidamꝰ: & plore- 7 mꝰ ante Dñm, qui fecit nos. Quia ipſe eſt Dñs Deꝰ noſter: & nos populꝰ pa- 8 ſcuæ ejꝰ, & oves manꝰ ejus. Hodiè ſi vocem ejꝰ audieritis, nolite obdurare 9 corda veſtra, Sicut in irritatione ſecũdùm diem tentationis in deſerto: ubi tentaverũt me patres veſtri, probave- 10 rũt me, & viderũt opera mea. Quadraginta annis offenſus fui generationi illi, 11 & dixi; Semper hi errãt corde. Et iſti non cognoverunt vias meas: ut juravi in ira mea; Si introibũt in requiẽ meã.

Canticum ipſi David.

1 Quando domus ædificabatur poſt captivitatem. (*1 Par.* 16.) XCV.

CAntate Dño canticũ novũ: can- 2 tate Dño oĩs terra. Cãtate Dño, & benedicite nomini ejꝰ: annuntiate de 3 die in diẽ ſalutare ejꝰ. Annũtiate inter gẽtes gloriã ejꝰ, in omnibꝰ populis mi- 4 rabilia ejꝰ. Quoniã magnꝰ Dñs, & laudabilis nimis: terribilis eſt ſup oẽs deos.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

18 † Εἰ ἔλεγον, Σεσάλευται ὁ πούς μου, τὸ ἔλεός σου κύ- 19 ριε ἐβοήθει μοι. † (γ) Κύριε κατὰ τὸ πλῆθος τῶν ὀδυνῶν μου ἐν τῇ καρδίᾳ μου, † αἱ παρακλήσεις σου 20 (δ) ἠγάπησαν τὴν ψυχήν μου. † Μὴ (ε) συμπροσέσται σοι θρόνος ἀνομίας, † ὁ πλάσσων κόπον (ζ) ἐπὶ 21 προστάγματι. † Θηρεύσουσιν ἐπὶ ψυχὴν δικαίου, † καὶ 22 αἷμα ἀθῷον καταδικάσονται. † Καὶ ἐγένετό μοι κύριος εἰς καταφυγήν, † καὶ ὁ Θεός μου εἰς βοηθὸν ἐλπίδος 23 μου. † Καὶ ἀποδώσει αὐτοῖς (η) τὴν ἀνομίαν αὐτῶν, † καὶ τὴν πονηρίαν αὐτῶν ἀφανιεῖ αὐτοὺς κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν.

Αἶνος ᾠδῆς τῷ Δαυίδ. ϟδʹ.

1 † ΔΕῦτε ἀγαλλιασώμεθα τῷ κυρίῳ, † ἀλαλάξωμεν τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρι ἡμῶν. † Προφθά- 2 σωμεν τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἐν ἐξομολογήσει, † καὶ 3 ἐν ψαλμοῖς ἀλαλάξωμεν αὐτῷ. † Ὅτι Θεὸς μέγας κύριος, καὶ βασιλεὺς μέγας (α) ἐπὶ πάντας τοὺς θεούς. 4 ὅτι οὐκ ἀπώσεται κύριος τὸν λαὸν αὐτοῦ, † Ὅτι ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ τὰ πέρατα τῆς γῆς, † καὶ τὰ ὕψη τῶν ὀρέων 5 αὐτοῦ (β) ἐστιν. Ὅτι αὐτοῦ ἐστιν ἡ θάλασσα καὶ αὐτὸς ἐποίησεν αὐτήν, † καὶ τὴν ξηρὰν αἱ χεῖρες αὐτοῦ ἔπλασαν. 6 † Δεῦτε προσκυνήσωμεν καὶ προσπέσωμεν αὐτῷ, † καὶ (ʹ) κλαύσωμεν ἐναντίον κυρίου τοῦ ποιήσαντος ἡμᾶς, 7 † Ὅτι αὐτός ἐστιν ὁ Θεὸς ἡμῶν, † καὶ ἡμεῖς λαὸς νο- 8 μῆς αὐτοῦ, † καὶ πρόβατα (ʺ) χειρὸς αὐτοῦ. † Σήμερον ἐὰν τῆς φωνῆς αὐτοῦ ἀκούσητε, † Μὴ σκληρύνητε 9 τὰς καρδίας ὑμῶν, Ὡς ἐν τῷ παραπικρασμῷ, † κατὰ τὴν ἡμέραν τοῦ πειρασμοῦ ἐν τῇ ἐρήμῳ, † Οὗ (γ) ἐπείρασάν με οἱ πατέρες ὑμῶν· (δ) † ἐ- 10 δοκίμασαν, καὶ εἶδον τὰ ἔργα μου. (ε) Τεσσαράκοντα ἔτη προσώχθισα τῇ γενεᾷ ἐκείνῃ, † (ζ) καὶ εἶπα, 11 Ἀεὶ πλανῶνται τῇ καρδίᾳ, † (η) Καὶ αὐτοὶ οὐκ ἔγνωσαν τὰς ὁδούς μου. † Ὡς ὤμοσα ἐν τῇ ὀργῇ μου, (θ) † Εἰ εἰσελεύσονται εἰς τὴν κατάπαυσίν μου.

1 (α) Ὅτε ὁ οἶκος (β) ᾠκοδόμηται μετὰ τὴν αἰχμαλωσίαν, ᾠδὴ τῷ Δαυίδ. ϟεʹ.

1 † ΑΣατε τῷ κυρίῳ † ᾆσμα καινόν, † ᾄσατε τῷ 2 κυρίῳ πᾶσα ἡ γῆ, † Ἄσατε τῷ κυρίῳ, εὐλογήσατε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, † εὐαγγελίζεσθε ἡμέραν ἐξ 3 ἡμέρας τὸ σωτήριον αὐτοῦ. † Ἀναγγείλατε ἐν τοῖς ἔθνεσι τὴν δόξαν αὐτοῦ, † ἐν πᾶσι τοῖς λαοῖς τὰ 4 θαυμάσια αὐτοῦ. † Ὅτι μέγας κύριος καὶ αἰνετὸς σφόδρα, † φοβερός ἐστιν ἐπὶ πάντας τοὺς θεούς.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

18 *Si dicebam; Motus eſt pes meus: miſericordia tua, Domine, adjuvabat me.* 19 *Domine, ſecundùm multitudinem dolorum meorũ in corde meo, conſolationes tua* (g) [g] *dilexerũt animam meam.* 20 [h] *Numquid adhærebit tibi ſedes iniquitatis,* (b) *formans laborem in præcepto?* 21 *Captabunt in animam juſti: & ſanguinem innocentem condemnabunt.* 22 *Et factus eſt mihi Dominus in refugium: & Deus meus* [i] *in adjutorium ſpei meæ.* 23 *Et reddet illis* [k] *iniquitatem ipſorum,* (i) *et malitiam eorum: diſperdet illos Dominus Deus noſter.*

Laus Cantici ipſi (a) David. XCIV.

1 V*Enite, exultemus Domino: jubilemus* [a] *Deo ſalutari noſtro.* 2 *Præveniamus faciem ejus in confeſſione: & in pſalmis jubilemus ei.* 3 *Quoniã Deus magnꝰ* [b] *Dominus, & rex magnus ſuper omnes* (b) *deos: quoniam non repellet Dominus plebem ſuam:* 4 *Quoniam in manu ejus fines terræ: & altitudines montium ipſius ſunt.* 5 *Quoniam ipſius eſt mare, & ipſe fecit illud: & aridam manus ejus formaverunt.* 6 *Venite, adoremus, &* [c] *procidamus ei: & ploremus ante Dominum, qui fecit nos. Quoniam ipſe eſt Deus noſter:* 7 *nos autem* [d] *populus* (c) *paſcuæ ejus, & oves manûs ejus. Hodiè ſi vocem ejus audieritis, nolite obdurare corda veſtra,* 8 *Sicut* [e] *in exacerbatione ſecundùm diem tentationis in deſerto:* 9 *ubi tentaverunt me patres veſtri:* (d) *probaverunt, & viderunt opera mea:* 10 (e) *Quadraginta annis* (f) [f] *offenſus fui generationi illi, & dixi; Semper errãt corde:* 11 *Et ipſi non cognoverunt vias meas.* (g) *Sicut juravi in ira mea,* [g] *Si introibunt in* (h) *requiem meam.*

1 (a) Quando domus ædificabatur poſt captivitatem, (*b*) Canticum ipſi David. *XCV.*

1 C*Antate Domino canticum novum: Cantate Domino omnis terra.* 2 *Cantate Domino, benedicite nomen ejus: benè nuntiate de die in diem ſalutare ejus.* 3 *Annuntiate in gentibus gloriam ejꝰ, in omnibus populis mirabilia ejus.* 4 *Quoniã magnus Dominus, &* [a] *laudabilis nimis: terribilis eſt ſuper omnes deos.*

Verſio ÆTHIOPICA.

ወሶበ፡ እቤ፡ ድኅጸ፡ እገሪየ፡፡ በምሕረትከ፡ 18
እግዚኦ፡ ረድአኒ፡፡ =፡ እግዚኦ፡ በከመ፡ ብ 19
ዝኃ፡ ሕማማ፡ ለልብየ፡፡ ናዝዞትከ፡ አስተፈ
ሥሐ፡ ለነፍስየ፡፡ =፡ ወኢይትቃረመከ፡ መ 20
ንበረ፡ ዐመፃ፡፡ ዘይፈጥር፡ ጻማ፡ ደበ፡ ትእዛ
ዝ፡፡ =፡ ወይነዕዉዋ፡ ለነፍሰ፡ ጻድቅ፡፡ ወይ 21
ኬንኑ፡ ደመ፡ ንጹሐ፡፡ =፡ ወኮነኒ፡ እግዚአ 22
ብሔር፡ ጸወንየ፡፡ አምላኪየ፡ ወረድኤተ፡ ተ
ስፋየ፡፡ =፡ ወይፈድዮሙ፡ እግዚአብሔር፡ 23
በከመ፡ እከዮሙ፡፡ ወያጠፍኦሙ፡ እግዚአ
ብሔር፡ አምላክነ፡፡ =፡

ስብሐት፡ ማኅሌት፡ ዘዳዊት፡፡

፺፬ ንዑ፡ ንትፈሣሕ፡ በእግዚአብሔር፡፡ ወን 1
የብብ፡ ለአምላክነ፡ መድኅኒነ፡፡ =፡ ወንብ 2
ጽሕ፡ ቅድመ፡ ገጹ፡ በአሚን፡፡ ወበመዝሙር፡
ንየብብ፡ ሎቱ፡፡ =፡ እስመ፡ ዐቢይ፡ ውእቱ፡ 3
እግዚአብሔር፡ አምላክነ፡፡ ወንጉሥ፡ ዐቢ
ይ፡ ውእቱ፡ ላዕለ፡ ኵሉ፡ አማልክት፡፡ እስ
መ፡ ኢይገድፎሙ፡ እግዚአብሔር፡ ለሕዝ
ቡ፡፡ =፡ እስመ፡ ውስተ፡ እዴሁ፡ አጽናፈ፡ ም 4
ድር፡፡ አድባር፡ ነዋኅት፡ ዚአሁ፡ ውእቱ፡፡ =፡
እስመ፡ እንቲአሁ፡ ይእቲ፡ ባሕር፡ ወውእቱ፡ 5
ፈጠራ፡፡ ወየብስኒ፡ እደዊሁ፡ ገብራ፡፡ =፡ ን 6
ዑ፡ ንስግድ፡ ወንግነይ፡ ሎቱ፡፡ ወንብኪ፡ ቅድ
መ፡ እግዚአብሔር፡ ዘውእቱ፡ ፈጠረነ፡፡ እስ
መ፡ ውእቱ፡ አምላክነ፡፡ =፡ ወንሕነሰ፡ ሕዝ 7
ቡ፡ አባግዐ፡ መርዔቱ፡፡ ዮም፡ ለእመ፡ ሰማዕ
ክሙ፡ ቃሎ፡፡ ኢታጽንዑ፡ ልበክሙ፡፡ =፡ ከ 8
መ፡ አመ፡ አምረርዎ፡ በገዳም፡፡ ወከመ፡ አመ
ከርዎ፡፡ =፡ ዘአመከሩኒ፡ አበዊክሙ፡፡ ወፈ 9
ተኑኒ፡ ወርእዩ፡ ምግባርየ፡፡ =፡ ወአርብዓ፡ 10
ዓመተ፡ ተቆጥዕክዎሙ፡ ለይእቲ፡ ትውል
ድ፡፡ ወእቤ፡ ዘልፈ፡ ይስሕቱ፡ ልቦሙ፡፡ =፡ ወ 11
እሙንቱሰ፡ ኢያእመሩ፡ ፍናዊየ፡፡ በከመ፡ መ
ሐልኩ፡ በመዐትየ፡፡ ከመ፡ ኢይበውኡ፡ ውስ
ተ፡ ዕረፍትየ፡፡ =፡

ዘአመ፡ ተሐንጸ፡ ቤት፡ ዘእምድኅረ፡
ፄዋዌ፡ ማኅሌት፡ ዘዳዊት፡፡

፺፭ ሰብሕዎ፡ ለእግዚአብሔር፡ ስብሐተ፡ 1
ሐዲስ፡፡ ሰብሕዎ፡ ለእግዚአብሔር፡ ኵላ፡
ምድር፡፡ =፡ ሰብሕዎ፡ ለእግዚአብሔር፡ 2
ወባርክዎ፡ ለስሙ፡፡ ወተዜነዉ፡ እምዕለት፡ አ
ድኅኖቶ፡፡ =፡ ወንግርዎሙ፡ ለአሕዛብ፡ ስ 3
ብሐቲሁ፡፡ ወለኵሎሙ፡ አሕዛብ፡ ተአምሪ
ሁ፡፡ =፡ እስመ፡ ዐቢይ፡ እግዚአብሔር፡ ወ 4
ብዙኅ፡ አኰቴቱ፡፡ ወግሩም፡ ውእቱ፡ ላዕለ፡
ኵሉ፡ አማልክት፡፡ =፡

Ψαλ. ϟγ. MS. A. (γ) Κατὰ τὸ πλῆθος (δ) ηὔφρανάν (ε) συμπροσέσται (ζ) ἐπὶ πρόσταγμα. (η) κύριος κατὰ τὴν ἀνομίαν αὐτῶν, καὶ κατὰ τὴν πονηρίαν αὐτῶν Ψαλ. ϟδʹ. MS. A. (α) ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν. Ὅτι ἐν τῇ χειρὶ (β) εἰσιν. (ʹ) κλαύσομεν (ʺ) τῆς χειρὸς (γ) ἐπείρασαν οἱ πατέρες (δ) ἐδοκίμασάν με, (ε) Τεσσεράκοντα (ζ) καὶ εἶπον, (η) Αὐτοὶ δὲ οὐκ (θ) Ἡ εἰσελεύσονται Ψαλ. ϟεʹ. MS. A. (α) Ὠδὴ τῷ Δαυίδ ὅτε (β) ᾠκοδομεῖτο μετὰ τὴν αἰχμαλωσίαν.

INTERP. ÆTHIOP. [g] lætificaverunt [h] Neque apud te conſtituta erit ſedes [i] & auxiliator ſpei meæ. [k] Deus ſecundùm malitiam eorum: & diſperdet *PSAL. XCIV.* [a] Deo noſtro, & ſalutari noſtro. [b] Dominus noſter, [c] confiteamur ei: [d] populus ejus, & oves paſcuæ ejus. [e] cùm exacerbaverunt eum in deſerto, & cùm tentaverunt eum: ubi [f] faſtidivi generationem illam, [g] quòd non introibunt *PSAL. XCV.* [a] gloria ejus ampla:

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* كنت اقول انه قد زلت قدماي * فرحمتك يا رب اعانتني * كثيرة احزان قلبي يا رب * كان 18 19
عزاؤك يفرح نفسي * هل يكون معك كرسي الاثم * الذين يختلقون الكذب على شريعتك * 20
* ويتصيدون نفس الصديق * ويستحلون دما زكيا * والرب صار لي ملجا * والاهي معونة 21 22
رجائي * والرب يجازيهم على اثمهم * وكشرهم يبيدهم الرب الهنا * الليلويا * 23

* المزمور الرابع والتسعون * لداود * بركة وتسبحة * وهو كد * استيخن * 1

تعالوا فلنبتهج بالرب * ولنهلل لله مخلصنا * ولنسبق الى وجهه بالشكر ولنهلل له بالمزامير * 2
* لانك يا رب اعظم الالهة * وملك عظيم على جميع الالهة * لان في يديه اقطار الارض 3 4
جميعها * واعالي الجبال هي له * والبحر هو له وهو الذي خلقه * يداه صنعتا الارض * هلموا 5 6
فلنسجد ونخر له * ونبكي امام الرب الذي صنعنا * لانه هو الهنا * ونحن شعب رعيته * واغنام 7
يديه * اليوم اذا سمعتم صوته * فلا تقسوا قلوبكم مثل ما في التمرمر * كيوم الامتحان في 8
البرية * حيث جربني اباوكم * اختبروني ونظروا اعمالي * اربعين سنة * من اجل هذا بغضت 9 10
ذلك الجيل * وقلت انهم ضالون بقلوبهم دايما * وهم لم يعرفوا سبلي * كما حلفت في غضبي 11
انهم لا يدخلون في موضع راحتي * الليلويا *

* المزمور الخامس والتسعون * لداود تسبحة عند بني البيت بعد السبي * وهو كط * استيخن * 1

سبحوا الرب تسبيحا جديدا * سبحوا الرب يا جميع الارض * وسبحوا الرب وباركوا اسمه * 2
بشروا بخلاصه يوما فيوما * اخبروا في الامم بمجده * وفي جميع الشعوب بعجائبه * لان الرب 3 4
عظيم ومبارك جدا * مرهوب على جميع الالهة *

Dicebam jam lapſos eſſe pedes meos, at 18 *miſericordia tua, O Domine, adjuvit me.* 19 *Multi erant mœrores cordis mei O Domine: at conſolatio tua recreabit animam meam.* 20 *Nunquid erit tecum ſedes iniquitatis, eorum qui architectantur mendacium contra legem tuam,* 21 *Et venantur animam juſti, & licitum faciunt ſanguinem innocentem?* 22 *Et Dominus factus eſt mihi refugium, & Deus meus adjutorium ſpei meæ.* 23 *Et Dominus rependet eis pro ſcelere eorum, et juxta malitiam ipſorum perdet eos Dominus Deus noſter. Alleluja.*

PSAL. XCIV.

1 Davidis, benedictio & canticum. Verſ. 24.

V*Enite, exultemus in Domino, &* 2 *jubilemus Deo ſalvatori noſtro: Et antevertamus ad faciem ejus cum gratiarum actione, et canamus ei cum pſalmis.* 3 *Quia tu, O Domine, maximus deorum es, et rex ſummus præ omnibus diis.* 4 *Quia in manibus ejus ſunt fines terræ univerſæ, & cacumina montium ipſius ſunt.* 5 *Et mare ipſius eſt, & ipſe eſt qui creavit illud:* 6 *manus ejus fecerunt terram. Venite, adoremus, & procidamus ante eum, & ploremus coram Domino qui fecit nos.* 7 *Nam ipſe eſt Deus noſter, et nos populus paſcuæ ejus, & oves manuum ejus. Hodiè cùm audiveritis vocem ejus,* 8 *Ne obdurentur corda veſtra prout egiſtis in irritatione, juxta diem tentationis in deſerto.* 9 *Ubi tentaverunt me patres veſtri, probaverunt me, et viderunt opera mea* 10 *Quadraginta annis. Propterea odi illam generationem, et dixi; Sanè iſti falluntur in cordibus ſuis ſemper, & ipſi non nôrunt vias meas.* 11 *Quemadmodum juravi in ira mea, certè non ingredientur in locum requiei meæ. Alleluja.*

PSAL. XCV.

1 Davidis. Canticum quando extruebatur domus poſt captivitatem. Verſ. 29.

L*Audate Dominum laudatione novâ: laudate Dominum, O univerſa terra.* 2 *Etiam laudate Dominum, et benedicite nomini ejus, prædicate ſalutem ejus ſingulis diebus.* 3 *Narrate inter gentes glorificationem ejus, et inter omnes populos, miracula ejus:* 4 *Quoniam Dominus magnus eſt ac benedicendus magnoperè, formidabilis præ omnibus diis.*

תהלים : צו

.fecit cœlos Dominus Et : *vana* populorum dii omnes Quoniam
כִּי כָּל־אֱלֹהֵי הָעַמִּים אֱלִילִים וַיהוָֹה שָׁמַיִם עָשָׂה׃ 5
Domino *Tribuite* .ejus ſanctuario in *pulchritudo* & fortitudo:*ejus facies ad* decor & Gloria
6 הוֹד־וְהָדָר לְפָנָיו עֹז וְתִפְאֶרֶת בְּמִקְדָּשׁוֹ׃ הָבוּ לַיהוָֹה 7
Domino *Tribuite* .fortitudinem & gloriam Domino *tribuite* : populorum familiæ
8 מִשְׁפְּחוֹת עַמִּים הָבוּ לַיהוָֹה כָּבוֹד וָעֹז׃ הָבוּ לַיהוָֹה
Domino vos Incurvate .ejus atria in introite & , *munus* ferte :ejus nominis gloriam
9 כְּבוֹד שְׁמוֹ שְׂאוּ־מִנְחָה וּבֹאוּ לְחַצְרוֹתָיו׃ הִשְׁתַּחֲווּ לַיהוָֹה
;gentibus in Dicite .terra univerſa ejus *faciebus* à pavete : ſanctitatis decore in
10 בְּהַדְרַת־קֹדֶשׁ חִילוּ מִפָּנָיו כָּל־הָאָרֶץ׃ אִמְרוּ בַגּוֹיִם
populos judicabit *: nutet* ne , orbis firmabitur etiam , regnavit Dominus
יְהוָֹה מָלָךְ אַף־תִּכּוֹן תֵּבֵל בַּל־תִּמּוֹט יָדִין עַמִּים
.ejꝰ plenitudo &,mare tonabit : terra exultabit & , cœli Lætabuntur .*rectitudinibus* in
11 בְּמֵישָׁרִים׃ יִשְׂמְחוּ הַשָּׁמַיִם וְתָגֵל הָאָרֶץ יִרְעַם הַיָּם וּמְלֹאוֹ׃
.ſylvæ ligna omnia *dicent præconia* tunc : eo in quod omne & , ager Exultabit
12 יַעֲלֹז שָׂדַי וְכָל־אֲשֶׁר־בּוֹ אָז יְרַנְּנוּ כָּל־עֲצֵי־יָעַר׃
orbem judicabit ; terram Judicare venit quoniam : venit quia *Domini facies Ad*
13 לִפְנֵי יְהוָֹה כִּי בָא כִּי בָא לִשְׁפֹּט הָאָרֶץ יִשְׁפֹּט־תֵּבֵל
.ſua veritate in populos & ,juſtitia in
בְּצֶדֶק וְעַמִּים בֶּאֱמוּנָתוֹ׃

PSAL. XCVII. צז

caligo & , Nubes .multæ inſulæ lætentur : terra exultet ,regnavit Dominus
1 יְהוָֹה מָלָךְ תָּגֵל הָאָרֶץ יִשְׂמְחוּ אִיִּים רַבִּים׃ עָנָן וַעֲרָפֶל 2
ejus facies ad Ignis .ejus ſolii *paratus locus* judicium & juſtitia : ejus *circuitus*
3 סְבִיבָיו צֶדֶק וּמִשְׁפָּט מְכוֹן כִּסְאוֹ׃ אֵשׁ לְפָנָיו
, vidit : orbem ejus fulgura Illuminaverunt .ejus hoſtes *circum* exuret & : ibit
4 תֵּלֵךְ וּתְלַהֵט סָבִיב צָרָיו׃ הֵאִירוּ בְרָקָיו תֵּבֵל רָאֲתָה
: Domini *faciebus* à ſunt diſſoluti cera ſicut Montes .terra contremuit &
5 וַתָּחֵל הָאָרֶץ׃ הָרִים כַּדּוֹנַג נָמַסּוּ מִלִּפְנֵי יְהוָֹה
viderunt &:ejus juſtitiam cœli Annunciaverunt .*terræ omnis* Domini *faciebus* à
6 מִלִּפְנֵי אֲדוֹן כָּל־הָאָרֶץ׃ הִגִּידוּ הַשָּׁמַיִם צִדְקוֹ וְרָאוּ
ſe glorificantes , *ſculptili ſervientes* omnes afficiantur Pudore.ejꝰ gloriā populi omnes
7 כָל־הָעַמִּים כְּבוֹדוֹ׃ יֵבֹשׁוּ כָּל־עֹבְדֵי פֶסֶל הַמִּתְהַלְלִים
, Sijon eſt lætata & , Audivit .*Divi* omnes ei vos incurvate *: vanis in*
8 בָּאֱלִילִים הִשְׁתַּחֲווּ־לוֹ כָּל־אֱלֹהִים׃ שָׁמְעָה וַתִּשְׂמַח צִיּוֹן
tu Quoniam .Domine tua judicia propter : Jehudah filiæ exultaverunt &
9 וַתָּגֵלְנָה בְּנוֹת יְהוּדָה לְמַעַן מִשְׁפָּטֶיךָ יְהוָֹה׃ כִּי־אַתָּה
.*Divos* omnes ſuper es elevatus valde :terram omnem ſuper excelſus Dominus
יְהוָֹה עֶלְיוֹן עַל־כָּל־הָאָרֶץ מְאֹד נַעֲלֵיתָ עַל־כָּל־אֱלֹהִים׃
manu è : ſuorum *piorum* animas *cuſtodiens* , malum habete odio Dominum *Diligentes*
10 אֹהֲבֵי יְהוָֹה שִׂנְאוּ רָע שֹׁמֵר נַפְשׁוֹת חֲסִידָיו מִיַּד
Lætamini .lætitia corde rectis & : juſto eſt ſata Lux .eos eruet impiorum
11 רְשָׁעִים יַצִּילֵם׃ אוֹר זָרֻעַ לַצַּדִּיק וּלְיִשְׁרֵי־לֵב שִׂמְחָה׃ שִׂמְחוּ
12 .ejus ſanctitatis memoriæ confitemini & : Domino in juſti
צַדִּיקִים בַּיהוָֹה וְהוֹדוּ לְזֵכֶר קָדְשׁוֹ׃

תרגום TARGUM.

5 אֲרוּם כָּל דַּחֲלַת עַמְמַיָּא טַעֲוָתָא וַיְיָ שְׁמַיָּא
6 עֲבַד׃ שִׁבְחָא וּשְׁבְהוֹרָא קֳדָמוֹי עוּשְׁנָא
7 וְתוּשְׁבַּחְתָּא בְּבֵית מַקְדְּשֵׁיהּ׃ הַבוּ זְמַר קֳדָם יְיָ
8 יִחוּסֵי עַמְמַיָּא הַבוּ קֳדָם יְיָ אִיקַר וְעוּשְׁנָא׃ הַבוּ
קֳדָם יְיָ אִיקַר וְרוֹמְמוּ שְׁמֵיהּ אוֹבִלוּ וְסוֹבָרוּ
9 תִּקְרוּבְתָּא וְעוּלוּ לִקְדָמוֹי לְדַרְתּוֹי׃ סְגוּדוּ קֳדָם
יְיָ בְּשִׁבְהוֹרַת קוּדְשָׁא רְתִתוּ מִן קֳדָמוֹהִי כָּל
10 יָתְבֵי אַרְעָא׃ אֱמַרוּ בְעַמְמַיָּא יְיָ מְלַךְ לְחוּד
תַּקִּין תֵּבֵל דְּלָא תִתְמוֹטֵט יְדִין עַמְמַיָּא בְּתִירוּצָא׃
11 יֶחְדוּן חֵילֵי דִשְׁמַיָּא וִידוּצוּן צַדִּיקֵי אַרְעָא יַכְלֵי
12 יַמָּא וּמְלֵיתֵיהּ׃ יְבוּעַ תּוּשְׁבַּחְתָּא חַקְלָא וְכָל דִּי
13 בֵיהּ הֲבְכֵן יְשַׁבְּחוּן כָּל אִילָנֵי חוּרְשָׁא׃ קֳדָם יְיָ
אֲרוּם אֲתָא אֲרוּם אֲתָא לְמֵדַן אַרְעָא יְדוּן
תֵּבֵל בְּצִדְקְתָא וְעַמְמַיָּא בְּהֵימְנוּתֵיהּ׃

צז

1 יְיָ מְלַךְ תְּדוּץ אַרְעָא יֶחְדוּן נְגָוָן סַגִּיעִין׃ עֲנָנֵי
2 יְקָרָא וַאֲמִטְתָּא חֲזוֹר חֲזוֹר דִּי לֵיהּ צִדְקְתָא
3 וְדִינָא אֲתַר דִּי מְכַוַּן כּוּרְסְיֵהּ׃ אֶשָּׁתָא קֳדָמוֹי
4 תְּהַלֵּךְ וּמְצַלְהֲבָא חֲזוֹר חֲזוֹר מְעִיקוֹי׃ מְנַהֲרִין
5 בַּרְקוֹי תֵּבֵל חֲמַת וְאִתְחַלְחַלַת אַרְעָא׃ טוּרַיָּא
הֵיךְ שַׁעֲוָא יִתְמַסּוּן מִן קֳדָם יְיָ מִן קֳדָם רִבּוֹן
6 כָּל אַרְעָא׃ יְתַנּוּן אַנְגְּלֵי מְרוֹמָא צִדְקָתֵיהּ
7 וְיֶחֱמוּן כָּל עַמְמַיָּא אִיקָרֵיהּ׃ יִבְהֲתוּן כָּל פָּלְחֵי
פִּסְלָא דְּמִשְׁתַּבְּחִין בְּטַעֲוָתָא וְיִסְגְּדוּן קֳדָמוֹי
8 כָּל עַמְמַיָּא פָּלְחֵי טַעֲוָתָא׃ שְׁמַעַת וַחֲדַת כְּנִשְׁתָּא
דְצִיּוֹן וְדִיצָן בְּנָתָא דְבֵית יְהוּדָה מִן בְּגַלַל
9 דִּינָךְ יְיָ׃ אֲרוּם אַתְּ הוּא יְיָ עִלָּאָה עַל כָּל
יָתְבֵי אַרְעָא לַחֲדָא אִתְעַלֵּיתָ עַל כָּל דַּחֲלַיָּא׃
10 רְחִימַיָּא דַּיְיָ סְנוּ בִישׁ מְטוּל דְּקֵירִים נָטֵר
נַפְשָׁת חֲסִידוֹי מִן אִידֵיהוֹן דְּרַשִּׁיעֵי יַפְצֵי אִנּוּן׃
11 נְהוֹר דְּנַח וּמִטַּמַּר לְצַדִּיקַיָּא וְלִתְרִיצֵי לִבָּא
12 חֶדְוָא׃ חֲדוֹן צַדִּיקַיָּא בְּמֵימְרָא דַּיְיָ וְאוֹדוֹן
לְדָכְרָן שׁוּם קוּדְשֵׁיהּ׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Quoniam omnes dii gentium idola ſunt, 5
Dominus autem cœlos fecit. Laus & gloria 6
coram eo, fortitudo & exultatio in domo
ſanctuarii ejus. Adferte canticum coram 7
Domino familiæ populorum, afferte
coram Domino honorem & fortitudinem.
Afferte coram Domino gloriam *& celſitudinem* 8
nomini ejus, *adducite &* portate
munus & intrate *coram eo* in atria ejus.
Adorate coram Dño in decore ſanctitatis 9
: contremiſcite à conſpectu ejus omnes
habitatores terræ. Dicite in gentibus : Dominus 10
regnavit, inſuper firmavit orbem ne
moveatur : judicabit populos in æquitate.
Lætentur exercitus cœlorum, & exultent 11
juſti terræ ; tonet mare & plenitudo ejus.
Promat laudem ager, & omnia quæ ſunt in 12
eo : tunc laudabunt omnes arbores ſylvæ.
Coram Domino quoniam venit, ſiquidem 13
venit judicare terram : judicabit orbem
in juſtitia, & populos in veritate ſua.

PSAL. XCVII.

Dominus regnavit, exultet terra, lætentur 1
inſulæ multæ. Nubes gloriæ & caligo 2
in circuitu ejus : juſtitia & judicium locus
paratus ſedi ejus. Ignis ante eum *ibit*, concremans 3
per circuitum moleſtatores ejus.
Colluſtrant fulgura ejus orbem : vidit & 4
commota eſt terra. Montes tanquam cera 5
liqueſcent à præſentia Domini dominatoris
omnis terræ. Annunciabunt angeli *excelſi* 6
juſtitiam ejus, & videbunt omnes populi
gloriam ejus. Confundentur omnes 7
qui ſerviunt ſculptili, qui gloriantur in
idolis, & adorabunt coram eo omnes gentes
quæ ſerviunt idolis. Audivit & lætata 8
eſt eccleſia Sion ; & exultent filiæ domus
Jehudæ propter judicia tua Domine. Quoniam 9
tu Domine altiſſimus ſuper omnes
habitatores terræ ; valdè exaltatus es ſuper
omnes deos. Amatores Domini odio 10
habete malum, quoniam Dominus cuſtodit
animas miſericordium ſuorum, de manibus
impiorum eruet eos. Lux orta *&* 11
conſervata eſt juſtis, & rectis corde lætitia.
Lætamini juſti in Verbo Domini, & 12
confitemini memoriæ nominis ſanctitatis
ejus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

5 * ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ ܐܠܗܐ ܕܥܡܡܐ ܫܪܝܩܝܢ ܐܢܘܢ. ܘܡܪܝܐ ܫܡܝܐ ܥܒܕ : * ܙܝܘܐ ܘܫܘܒܚܐ
6 ܩܕܡܘܗܝ. ܥܘܫܢܐ ܘܬܫܒܘܚܬܐ ܒܡܩܕܫܗ : * ܗܒܘ ܠܡܪܝܐ ܫܪܒܬܐ ܕܥܡܡܐ. ܗܒܘ 7
ܠܡܪܝܐ ܬܫܒܘܚܬܐ ܘܐܝܩܪܐ : * ܗܒܘ ܠܡܪܝܐ ܐܝܩܪܐ ܠܫܡܗ. ܫܩܘܠܘ ܩܘܪܒܢܐ ܘܥܘܠܘ 8
ܠܕܪܘܗܝ : * ܣܓܘܕܘ ܠܡܪܝܐ ܒܕܪܬܐ ܕܩܘܕܫܗ. ܢܙܘܥ ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ ܟܠܗ ܐܪܥܐ : * ܐܡܪܘ 9
10 ܒܥܡܡܐ ܕܡܪܝܐ ܐܡܠܟ. ܘܐܬܩܢܗ ܠܬܒܝܠ ܕܠܐ ܬܙܘܥ : ܢܕܘܢ ܠܥܡܡܐ ܒܬܪܝܨܘܬܐ.
11 * ܢܚܕܘܢ ܫܡܝܐ ܘܬܕܘܨ ܐܪܥܐ : ܢܪܥܡ ܝܡܐ ܒܡܠܘܗ. * ܢܬܥܫܢܘܢ ܚܩܠܬܐ ܘܟܠ ܕܐܝܬ
12 ܒܗܘܢ : ܘܗܝܕܝܢ ܢܫܒܚܘܢ ܟܠܗܘܢ ܐܝܠܢܝ ܕܥܒܐ. * ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܕܐܬܐ ܠܡܕܢܗ ܠܐܪܥܐ : 13
ܢܕܘܢ ܬܒܝܠ ܒܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܠܥܡܡܐ ܒܗܝܡܢܘܬܐ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܨܙ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܡܬܢܒܐ ܒܗ ܥܠ ܡܐܬܝܬܗ ܕܡܫܝܚܐ. ܘܪܡܙ ܒܗ ܥܠ ܓܠܝܢܗ
ܐܚܪܝܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܙ. ܡܪܝܐ ܐܡܠܟ ܬܬܪܘܙ ܐܪܥܐ. ܢܚܕܘܢ ܓܙܪܬܐ ܣܓܝܐܬܐ :
2 * ܥܢܢܐ ܘܥܪܦܠܐ ܚܕܪܘܗܝ. ܒܟܐܢܘܬܐ ܘܒܕܝܢܐ ܡܬܩܢ ܟܘܪܣܝܗ : * ܢܘܪܐ ܩܕܡܘܗܝ
3 ܬܐܟܘܠ. ܘܬܘܩܕ ܠܒܥܠܕܒܒܘܗܝ : * ܢܢܗܪܘܢ ܒܪܩܘܗܝ ܠܬܒܝܠ. ܚܙܬ ܘܐܬܬܙܝܥܬ
4 ܐܪܥܐ : * ܘܛܘܪܐ ܐܝܟ ܫܥܘܬܐ ܐܬܦܫܪܘ. ܩܕܡ ܐܦܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܡܪܐ ܕܟܠܗ ܐܪܥܐ : * ܚܘܝܘ ܫܡܝܐ 5
6 ܙܕܝܩܘܬܗ. ܘܚܙܘ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܐܝܩܪܗ : * ܢܒܗܬܘܢ ܟܠ ܕܥܒܕܝܢ ܓܠܝܦܐ.
7 ܘܡܫܬܒܗܪܝܢ ܒܨܠܡܐ : ܣܓܘܕܘ ܠܗ ܟܠܗܘܢ ܡܠܐܟܘܗܝ. * ܫܡܥܬ ܘܚܕܝܬ 8
ܨܗܝܘܢ. ܘܪܘܙ ܒܢܬܗ ܕܝܗܘܕܐ : ܡܛܠ ܕܝܢܝܟ ܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܗܘ ܡܪܝܐ ܡܪܝܡܐ 9
10 ܥܠ ܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܘܛܒ ܐܬܬܪܝܡܬ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܐܠܗܐ : * ܪܚܡܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܣܢܝܢ
11 ܒܝܫܬܐ. ܘܢܛܪ ܢܦܫܬܐ ܕܙܕܝܩܘܗܝ : ܘܡܢ ܐܝܕܐ ܕܚܛܝܐ ܢܦܨܐ ܐܢܘܢ. * ܢܘܗܪܐ ܕܢܚ
12 ܠܙܕܝܩܐ: ܘܠܬܪܝܨܝ ܠܒܐ ܚܕܘܬܐ. * ܚܕܘ ܙܕܝܩܐ ܒܡܪܝܐ: ܘܐܘܕܘ ܠܕܘܟܪܢܐ ܕܩܘܕܫܗ.

Nam cuncti dii gentium vani ſunt, Dominus 5
autem cœlum condidit. Splendor & gloria 6
coram ipſo, robur atque laus in Sanctuario
ejus. Date Domino,familiæ populorum,date 7
Domino gloriam & honorem : Date Domino, 8
honorem nomini ejus. Ferte oblationes
& intrate in atria ejus : Adorate Dominum 9
in atrio ſanctitatis ejus : tremat à conſpectu
ipſius univerſa terra. Dicite inter gentes, 10
Dominus regnavit, & firmavit orbem ne moveatur
: judicabit populos cum æquitate. Lætabuntur 11
cœli, & geſtiet terra, exultabit mare
cum plenitudine ſua : Confortabuntur 12
agri & quidquid eſt in eis: tunc laudē dicent
omnes arbores ſylvæ Coram Domino, qui 13
venturus eſt ad judicandam terram; judicabit
orbem cum juſtitia, & populos cum fide.

PSAL. XCVII.

Davidis. Prædicit in eo adventum Chriſti. 1
Itémque innuit in ipſo apparitionem ejus poſtremam. Verſ. 27.

Dominus regnavit, exultet terra, gaudeant
inſulæ multæ. Nubes & caligines 2
circa eum ſunt : in æquitate & in judicio
eſt firmatum ſolium ejus. Ignis vorabit ante 3
ipſum, & amburet inimicos ejus. Illuſtrabunt 4
fulgura ejus orbem : vidit & turbata eſt
terra, Monteſque ut cera liquefacti ſunt à 5
conſpectu Domini dominatoris univerſi orbis.
Indicârunt cœli juſtitiam ejus, & viderunt 6
omnes populi gloriam ejus. Confundantur 7
omnes qui componunt idola, & glorientur
in ſculptis. Adorate eum omnes Angeli
ejus. Audiet & gaudebit Sion, & geſtient 8
filiæ Judhæ propter judicia tua Domine:
Quia tu es Dominus Altiſſimus ſuper univerſam 9
terram, & ſummopere exaltatus es
ſuper omnes deos. Amici Domini deteſtantur 10
malum : & cuſtodit animas juſtorum ſuorum,
déque manu impiorum liberabit eos.
Quia lux effulſit juſtis,& rectis corde lætitia: 11
Exhilaramini juſti in Domino,& gratias agite 12
memoriæ ſanctitatis ejus.

Verſio VULG. LAT.

5 Quoniam omnes dii gentium dæmo-
6 nia : Dominꝰ autem cœlos fecit. Con-
feſſio & pulchritudo in conſpectu ejꝰ :
ſanctimonia et magnificentia in ſancti-
7 ficatione ejus. Afferte Domino patriæ
gentiũ, afferte Dño gloriam & hono-
8 rem : Afferte Domino gloriã nomini
ejus. Tollite hoſtias, & introite in a-
9 tria ejus : Adorate Dominum in atrio
ſancto ejus. Commoveatur à facie ejus
10 univerſa terra : Dicite in gentibꝰ, quia
Dñs regnavit. Etenim correxit orbem
terræ qui non commovebitur : judica-
11 bit populos in æquitate. Lætentur cæli,
& exultet terra : commoveatur mare, et
12 plenitudo ejus : Gaudebunt campi, &
omnia quæ in eis ſunt. Tunc exulta-
13 bunt omnia ligna ſylvarũ A facie Do-
mini, quia venit : quoniam venit judi-
care terram. Judicabit orbem terræ in
æquitate, & populos in veritate ſua.

1 Huic David, Quando terra ejus
reſtituta eſt. XCVI.

Dominus regnavit, exultet terra :
2 lætentur inſulæ multæ. Nubes, &
caligo in circuitu ejus : juſtitia, & ju-
3 dicium correctio ſedis ejus. Ignis ante
ipſum præcedet, & inflammabit in cir-
4 cuitu inimicos ejus. Illuxerunt fulgura
ejus orbi terræ : vidit, & commota eſt
5 terra. Montes, ſicut cera, fluxerũt à facie
6 Dñi; à facie Dñi omnis terra. Annũtia-
verũt cœli juſtitiã ejus : et viderunt o-
7 mnes populi gloriã ejus. Confundan-
tur omnes, qui adorant ſculptilia : &
qui gloriantur in ſimulachris ſuis. Ad-
8 orate eum omnes angeli ejus : Audivit,
et lætata eſt Sion. Et exultaverunt filiæ
9 Judæ, propter judicia tua, Dñe : Quo-
niã tu Dominus altiſſimus ſuper omnẽ
terram : nimis exaltatꝰ es ſuper omnes
10 deos. Qui diligitis Dñm, odite malũ :
cuſtodit Dominus animas ſanctorum
ſuorum, de manu peccatoris liberabit
11 eos. Lux orta eſt juſto, et rectis corde
12 lætitia. Lætamini juſti in Domino : et
confitemini memoriæ ſanctificationis
ejus.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

5 †Ὅτι πάντες οἱ θεοὶ τῶν ἐθνῶν δαιμόνια, †ὁ δὲ κύ-
6 ριος τοὺς οὐρανοὺς ἐποίησεν. †Ἐξομολόγησις καὶ ὡ-
ραιότης ἐνώπιον αὐτοῦ, †ἁγιωσύνη καὶ μεγαλοπρέ-
7 πεια ἐν τῷ ἁγιάσματι αὐτοῦ. †Ἐνέγκατε τῷ κυρίῳ
αἱ πατριαὶ τῶν ἐθνῶν, †ἐνέγκατε τῷ κυρίῳ δόξαν καὶ
8 τιμήν, †Ἐνέγκατε τῷ κυρίῳ δόξαν ὀνόματι αὐτοῦ,
†ἄρατε θυσίας καὶ εἰσπορεύεσθε εἰς τὰς αὐλὰς αὐτοῦ.
9 †Προσκυνήσατε τῷ κυρίῳ ἐν αὐλῇ ἁγίᾳ αὐτοῦ, †σα-
10 λευθήτω ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ πᾶσα ἡ γῆ. †Εἴπατε
ἐν τοῖς ἔθνεσιν, (β) Ὁ κύριος ἐβασίλευσε· †καὶ γὰρ
κατώρθωσε τὴν οἰκουμένην, ἥτις οὐ σαλευθήσεται, †κρι-
11 νεῖ λαοὺς ἐν εὐθύτητι. †Εὐφραινέσθωσαν οἱ οὐρανοὶ καὶ
ἀγαλλιάσθω ἡ γῆ, †σαλευθήτω ἡ θάλασσα καὶ τὸ
12 πλήρωμα αὐτῆς. †Χαρήσεται τὰ πεδία, καὶ πάντα
τὰ ἐν αὐτοῖς· †τότε ἀγαλλιάσονται πάντα τὰ ξύλα
13 τοῦ δρυμοῦ †(γ) Πρὸ προσώπου τοῦ κυρίου, ὅτι ἔρχεται,
†ὅτι ἔρχεται κρῖναι τὴν γῆν. †κρινεῖ τὴν οἰκουμένην ἐν
δικαιοσύνῃ, †καὶ λαοὺς ἐν τῇ ἀληθείᾳ αὐτοῦ.

MS. A. (β) ὅτι κύριος (γ) Ἀπὸ προσώπου
κυρίου,

1 Τῷ Δαυίδ, ὅτε ἡ γῆ αὐτοῦ καθίσταται. ϟϛʹ.

†Ὁ κύριος ἐβασίλευσεν, ἀγαλλιάσθω ἡ γῆ, †εὐ-
2 φρανθήτωσαν νῆσοι πολλαί. †Νεφέλη καὶ γνόφος
κύκλῳ αὐτοῦ, †δικαιοσύνη καὶ κρίμα κατόρθωσις τοῦ
3 θρόνου αὐτοῦ. †Πῦρ ἐναντίον αὐτοῦ προπορεύσεται, †καὶ
4 φλογιεῖ κύκλῳ τοὺς ἐχθροὺς αὐτοῦ. †Ἔφαναν αἱ ἀστρα-
5 παὶ αὐτοῦ τῇ οἰκουμένῃ, †εἶδε καὶ ἐσαλεύθη ἡ γῆ. †Τὰ
ὄρη (α) ὡσεὶ κηρὸς ἐτάκησαν ἀπὸ προσώπου κυρίου, †ἀ-
6 πὸ προσώπου κυρίου πάσης τῆς γῆς. †Ἀνήγγειλαν οἱ
οὐρανοὶ τὴν δικαιοσύνην αὐτοῦ, †καὶ εἴδοσαν πάντες οἱ
7 λαοὶ τὴν δόξαν αὐτοῦ. †Αἰσχυνθήτωσαν πάντες οἱ
προσκυνοῦντες τοῖς γλυπτοῖς, †οἱ (β) ἐγκαυχώ-
μενοι ἐν τοῖς εἰδώλοις αὐτῶν. †προσκυνήσατε αὐ-
8 τῷ πάντες (γ) ἄγγελοι αὐτοῦ. †Ἤκουσε καὶ εὐφράν-
θη Σιών, †καὶ ἠγαλλιάσαντο αἱ θυγατέρες τῆς Ἰουδαί-
9 ας, †ἕνεκεν τῶν κριμάτων σου κύριε. †Ὅτι (δ) σὺ
εἶ κύριος ὁ ὕψιστος ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν, †σφόδρα
10 ὑπερυψώθης ὑπὲρ πάντας τοὺς θεούς. †Οἱ ἀγαπῶν-
τες τὸν κύριον, μισεῖτε (ε) πονηρόν. †φυλάσσει κύ-
ριος τὰς ψυχὰς τῶν ὁσίων αὐτοῦ, †ἐκ χειρὸς (ζ)
11 ἁμαρτωλῶν ῥύσεται αὐτούς. †Φῶς ἀνέτειλε τῷ
δικαίῳ, †καὶ τοῖς εὐθέσι τῇ καρδίᾳ εὐφροσύνη.
12 †Εὐφράνθητε δίκαιοι ἐν τῷ κυρίῳ, †καὶ ἐξομο-
λογεῖσθε τῇ μνήμῃ τῆς ἁγιωσύνης αὐτοῦ.

MS. A. (α) ἐτάκησαν ὡσεὶ κηρὸς (β) ἐνκαυχώ-
μενοι (γ) οἱ ἄγγελοι (δ) σὺ κύριος ὕψιστος (ε)
πονηρά. (ζ) ἁμαρτωλοῦ

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

5 [b] *Quoniam omnes dii gentium,* 5
(c) dæmonia : Dominus autem cælos
fecit. 6 *Confeſſio & pulchritudo in* 6
conſpectu ejus : ſanctitas & magni-
ficentia in ſanctificatione ejus. 7 *Af-* 7
ferte Domino patriæ gentium : affer-
te Domino gloriam, & honorem :
Afferte Domino gloriam nomini e- 8
jus. 8 *Tollite hoſtias, & introite in a-*
tria ejus : Adorate Dominum in a- 9
trio ſancto ejus. 9 *(d) Commoveatur*
à facie ejus univerſa terra : Dicite 10
in gentibus, Dominus (e) regnavit.
10 [c] *Etenim correxit orbem terræ,*
qui non commovebitur : judicabit po-
pulos in æquitate. 11 *Lætentur cæli,* 11
& exultet terra : (f) commoveatur
mare, & plenitudo ejus. (g) Gau- 12
debunt campi, & omnia quæ in eis
ſunt : 12 *Tunc (h) exultabunt omnia*
ligna ſylvæ Ante faciem Domini : 13
quoniam venit : quoniam venit judi-
care terram. 13 *Judicabit orbem*
terræ in æquitate, & populos in ve-
ritate ſua.

Ipſi David, cum terra ejus conſti- 1
tuta eſt. XCVI.

Dominus regnavit, exultet terra :
lætentur inſulæ multæ. 2 *Nubes,* 2
& caligo in circuitu ejus : juſtitia,
& judicium [a] *directio ſedis ejus.*
3 *Ignis ante ipſum præibit, &* [b] *in-* 3
flammabit in circuitu inimicos ejus.
4 *Illuxerunt fulgura ejus orbi terræ :* 4
vidit, et cõmota eſt terra. 5 [c] *Mon-* 5
tes, ſicut cera, fluxerunt à facie Do-
mini : à facie Domini omnis (a) ter-
ræ. 6 *Annuntiaverunt cæli juſtitiam* 6
ejus : & viderunt omnes populi glo-
riam ejus. 7 *Confundantur omnes, qui* 7
adorant ſculptilia : qui gloriantur in
ſimulachris ſuis. 8 *Adorate eum o-*
mnes angeli ejus. Audivit, & læta- 8
ta eſt Sion : 9 *et exultaverunt filiæ*
Judææ, propter judicia tua, Domine.
10 *Quoniam tu es Dominus altiſſi-* 9
mus ſuper omnem terram : nimis ex-
altatus es ſuper omnes deos : 11 *Qui* 10
diligitis Dominum ; odite (b) [d]
malignum : cuſtodit Dominus ani-
mas (c) ſanctorum ſuorum : de ma-
nu (d) peccatorum liberabit eos.
12 *Lux orta eſt* [e] *juſto : & rectis* 11
corde lætitia. 13 *Lætamini juſti in* 12
Domino : & confitemini memoriæ
ſanctitatis ejus.

Verſio ÆTHIOPICA.

እስመ፡ አማልክተ፡ አሕዛብ፡ አጋንንት፡፡ወእ 5
ግዚአብሔርሰ፡ ሰማያተ፡ ገብረ፡፡=፡ አሚ 6
ን፡ወሠናይት፡ ቅድሜሁ፡፡ቅድሳት፡ ወዕበየ፡
ስብሐት፡ውስተ፡ መቅደሱ፡፡=፡ አምጽኡ፡ 7
ለእግዚአብሔር፡ በሐውርተ፡ አሕዛብ፡፡አ
ምጽኡ፡ ለእግዚአብሔር፡ ክብረ፡ ወስብሐ
ተ፡፡አምጽኡ፡ ለእግዚአብሔር፡ ስብሐተ፡
ለስሙ፡፡=፡ ንሥኡ፡መሥዋዕተ፡ወባኡ፡ው 8
ስተ፡አዕጻዲሁ፡፡ስግዱ፡ ለእግዚአብሔር፡ በ
ዐጸደ፡ መቅደሱ፡፡=፡ ታድለቀልቅ፡ እምቅ 9
ድመ፡ገጹ፡ ኵሉ፡ ምድር፡፡በሉሙ፡ ለአሕ
ዛብ፡ከመ፡እግዚአብሔር፡ ነግሠ፡፡=፡ ወአ 10
ጽንዐ፡ለዓለም፡ ከመ፡ ኢታንቀለቅል፡፡ወይኰ
ንኖሙ፡ለአሕዛብ፡በርትዕ፡፡=፡ ይትፌሣሕ፡ 11
ሰማያት፡ ወትትሐሠይ፡ ምድር፡፡ወትትከወ
ስ፡ባሕር፡ በምልኣ፡፡ይትሐሠይ፡ ገዳም፡ወ
ኵሉ፡ዘውስቴታ፡፡=፡ ውእተ፡አሚረ፡ ይት 12
ፌሣሕ፡ ኵሉ፡ ዕጸወ፡ ገዳም፡፡እምቅድመ፡
ገጹ፡ለእግዚአብሔር፡ እስመ፡ ይመጽ፡፡ወይ
መጽእ፡ወይኴንና፡ለምድር፡፡=፡ወይኴንና፡ለ 13
ዓለም፡በጽድቅ፡፡ወለአሕዛብኒ፡በርትዕ፡፡=፡

ዘደዊት፡ዘአመ፡ገብአ፡ምድሩ፡፡

፺፯ እግዚአብሔር፡ነግሠ፡ትትሐሠይ፡ምድ 1
ር፡፡ወይትሐሠዩ፡ ደሰያት፡ብዙኃት፡፡=፡ ደ 2
መና፡ ወቆባር፡ አውደ፡፡ ፍትሕ፡ ወርትዕ፡ ተ
ድላ፡መንበሩ፡፡=፡ እሳት፡የሐውር፡ ቅድሜ 3
ሁ፡፡ወነደ፡ የዐግቶሙ፡ ለጸላእቱ፡፡=፡ አስ 4
ተርአዩ፡ መባርቅቲሁ፡ ለዓለም፡፡ርእየት፡ ወ
አድለቅለቀት፡ምድር፡፡=፡ ወአድባርኒ፡ ተ 5
መሰው፡ ከመ፡ሰምዕ፡፡እምቅድመ፡ገጹ፡ ለእ
ግዚአብሔር፡፡እምቅድመ፡ ገጹ፡ ለእግዚአ
ብሔር፡ኵሉ፡ምድር፡፡=፡ ይነግሩ፡ ሰማያ 6
ት፡ጽድቀ፡ ዚአሁ፡፡ወለኵሎሙ፡ አሕዛብ፡
ርእዩ፡ ስብሐቲሁ፡፡=፡ ይትሐፈሩ፡ ኵሎ 7
ሙ፡ እለ፡ ይሰግዱ፡ ለግልፎ፡፡እለ፡ ይትሜክ
ሁ፡በአማልክቲሆሙ፡፡=፡ ወይስግዱ፡ ሎቱ፡ 8
ኵሎሙ፡መላእክቲሁ፡፡ሰምዐት፡ ወተፈሥሐ
ት፡ጽዮን፡፡=፡ ወታሐሠያ፡አዋልደ፡ይሁደ፡፡ 9
በእንተ፡ፍትሕከ፡እግዚኦ፡፡=፡ እስመ፡ አን 10
ተ፡እግዚአብሔር፡ ልዑል፡በኵሉ፡ምድር፡፡
ፈድፋደ፡ ተለዐልከ፡ እምኵሉ፡ አማልክ
ት፡፡=፡ እለ፡ታፈቅርዎ፡ ለእግዚአብሔር፡ 11
ጽልእዋ፡ ለእኪት፡፡ የዐቅብ፡ እግዚአብሔ
ር፡ ነፍሰ፡ ጻድቃኑ፡፡ወያድኅኖሙ፡ እምእ
ደ፡ኃጥኣን፡፡=፡ በርህ፡ሠረቀ፡ለጻድቃን፡፡ወ 12
ለርቱዓነ፡ ልብ፡ ትፍሥሕት፡፡=፡ ይትፌሣ 13
ሑ፡ ጻድቃን፡ በእግዚአብሔር፡፡ ወይገንዩ፡
ለዝክረ፡ቅድሳቱ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [b] Quoniam dii [c] Et ſtabilivit orbem PSAL. XCVI. [a] præparatio ſedis [b] flamma circundabit [c] Et montes etiam, [d] malum : [e] juſtis :

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

5 6 * لان جميع الهة الامم شياطين * والرب هو خلق السموات * الشكر والبهاء امامه * الطهر وعظيم
7 8 البهاء في قدسه * قربوا للرب يا جميع قبايل الامم * قربوا للرب مجدا وكرامة * قربوا للرب مجدا
9 لاسمه * احملوا الذبايح وانطلقوا فادخلوا دياره * اسجدوا للرب في ديار قدسه * وليتزلزل قدام
10 وجهه جميع الارض * قولوا في الامم ان الرب قد ملك * وانه اثبت المسكونة هذه فلن تتحرك *
11 12 يدين الشعوب بالاستقامة * فلتفرح السموات ولتبتهج الارض * وليتحرك البحر وجميع ملئه * تفرح
13 البقاع وكلما فيها * حينئذ يبتهج جميع شجر الغياض 13 من وجه الرب * لانه ات انه ات ليدين
الارض * يدين المسكونة بالعدل * والشعوب بالاستقامة * بالحق الرب ربنا اله القوات * الليلويا *

1 * المزمور السادس والتسعون * لداود * لما استقامت ارضه * وعدده * كز * استيخن *

2 ملك الرب فلتتهلل الارض * ولتفرح جزاير كثيرة * سحاب وضباب حوله * العدل والحكم
3 4 قوام كرسيه * النار سابقة في السير قدامه * وبلهب يحرق اعداءه حوله * اضاءت بروقه المسكونة *
5 رات الارض فتزلزلت * الجبال مثل الشمع ذابت من وجه الرب * ومن قدام وجه رب الارض
6 7 جميعها * السموات تكلمت بعدله * ورأى جميع الشعوب مجده * يخزى جميع الساجدين لصنعة
8 الايادي المفتخرون باصنامهم * اسجدوا لله يا جميع ملايكته * سمعت صهيون وفرحت *
9 وهللت بنات اليهودية لاجل احكامك يا رب * لانك انت هو الرب العالي على جميع الارض *
10 علوت جدا اكثر من جميع الالهة * يا محبي الرب ابغضوا الشر * فان الرب يحفظ نفوس
11 قديسيه * ومن يد الخطاة يخلصهم * نور اشرق للصديقين * والفرح للمستقيمين بقلوبهم *
12 * افرحوا ايها الصديقون بالرب * اشكروا لذكر قدسه * الليلويا *

Nam omnes dii gentium, dæmonia ſunt : at 5
Dominus, ipſe creavit cælos. Gratiarum 6
actio & nitor, ante illum ſunt : puritas &
ſummum decus, in Sanctuario ejus. Offer- 7
te Domino, O omnes familiæ gentium, of-
ferte Domino gloriam & honorẽ. Offerte 8
Domino gloriam nomini ejus : ferte ſacrifi-
cia, & abeuntes ingredimini atria ejus.
Adorate Dominum in atriis Sanctuarii i- 9
pſius : & contremiſcat ante faciem ejus u-
niverſa terra. Dicite in gentibus, Domi- 10
nus jam regnavit, ipſeque ſtabilivit Ha-
bitatam iſtam, & haudquaquam movebi-
tur : judicabit populos cum æquitate. Ita- 11
que lætentur cæli, & exhilaretur terra :
& concutiatur mare, totáque plenitudo e-
jus. Gaudeant campi & quicquid in eis 12
eſt. Tunc exultabunt omnes arbores ſylva-
rum A conſpectu Domini. Quoniam ipſe 13
venturus eſt, venturus inquam ad judican-
dam terram. Judicabit orbem terrarum
cum juſtitia, & populos cum æquitate.
Verè Dominus, Dominus inquam noſter,
Deus virtutum eſt. Alleluja.

PSAL. XCVI.

Davidis, quando ſtabilita eſt terra 1
ejus. Et num. verſ. 27.

Regnavit Dominus : quapropter exultet
terra, et gaudeant inſulæ multæ. Nu- 2
bes et nebula circa eum : æquitas & judi-
cium firmitas ſedis ejus. Ignis prævius in- 3
cedit ante eum, et flammâ comburit ini-
micos ejus circa illum. Illuminârunt ful- 4
gura ejus Habitatam : vidit terra et con-
tremuit. Montes quaſi cera liquefacti ſunt 5
à facie Domini, et à conſpectu faciei Do-
mini terræ totius. Cæli locuti ſunt juſtitiã 6
ejus, et viderunt omnes populi gloriã ejus.
Confundantur omnes adorantes opus ma- 7
nuum, gloriantes de idolis ſuis. Adorate
Deum omnes angeli ejus. Audivit Sion, 8
& lætata eſt : et jubilârunt filiæ Judææ,
propter judicia tua, O Domine : Quoniam 9
tu es Dominus excelſus ſuper univerſam
terram, exaltatus es vehementer pluſquã
omnes dii. O diligentes Dominum, odio 10
habete malum ; nam Dominus cuſtodit a-
nimas ſanctorum ſuorum, & de manu
peccatorum liberat eos. Lux orta eſt ju- 11
ſtis, et lætitia iis qui recti ſunt in cordibus
ſuis. Gaudete, O juſti, in Domino : grati- 12
as agite memoriæ ſanctitatis ejus. Alle-
luja.

תהלים : צח צט

PSAL. XCVIII. צח

ei fecit ſalutem : fecit mirabilia quia ,novum canticum Domino Cantate *.Cantus*
מִזְמוֹר שִׁירוּ לַיהוָה שִׁיר חָדָשׁ כִּי־נִפְלָאוֹת עָשָׂה הוֹשִׁיעָה־לּוֹ 1
oculis in : ſuam ſalutem Dominus fecit Notam .ejꝰ ſanctitatis brachium &,ejꝰ dextera
יְמִינוֹ וּזְרוֹעַ קָדְשׁוֹ׃ הוֹדִיעַ יְהוָה יְשׁוּעָתוֹ לְעֵינֵי 2
ſuæ veritatis & , ſuæ miſericordiæ eſt Recordatus .ſuam juſtitiam revelavit gentium
הַגּוֹיִם גִּלָּה צִדְקָתוֹ׃ זָכַר חַסְדּוֹ וֶאֱמוּנָתוֹ 3
Jubilate .noſtri Dei ſalutem terræ fines omnes viderunt : Iſrael domum erga
לְבֵית יִשְׂרָאֵל רָאוּ כָל־אַפְסֵי־אָרֶץ אֵת יְשׁוּעַת אֱלֹהֵינוּ׃ הָרִיעוּ 4
Domino Canite .canite & , *dicite præconia* & ,vociferate :terra omnis Domino
לַיהוָה כָּל־הָאָרֶץ פִּצְחוּ וְרַנְּנוּ וְזַמֵּרוּ׃ זַמְּרוּ לַיהוָה 5
facies ad jubilate : cornu *voce* & ,claſſicis tubis In .cantus voce &,cithara in;cithara in
בְּכִנּוֹר בְּכִנּוֹר וְקוֹל זִמְרָה׃ בַּחֲצֹצְרוֹת וְקוֹל שׁוֹפָר הָרִיעוּ לִפְנֵי 6
Flumina .eo in habitantes & ,orbis :ejus plenitudo &,mare Tonet .*Domini regis*
הַמֶּלֶךְ יְהוָה׃ יִרְעַם הַיָּם וּמְלֹאוֹ תֵּבֵל וְיֹשְׁבֵי בָהּ׃ נְהָרוֹת 7 8
; terram judicare venit quia *Domini facies Ad* .*ovabunt* montes ſimul : *vola* plaudent
יִמְחֲאוּ־כָף יַחַד הָרִים יְרַנֵּנוּ׃ לִפְנֵי־יְהוָה כִּי בָא לִשְׁפֹּט הָאָרֶץ 9
.*rectitudinibus* in populos & ,juſtitia in orbem judicabit
יִשְׁפֹּט־תֵּבֵל בְּצֶדֶק וְעַמִּים בְּמֵישָׁרִים׃

PSAL. XCIX. צט

.terra *nutet* ,Cherubim *inſidens* : populi contremiſcant ,regnavit Dominus
יְהוָה מָלָךְ יִרְגְּזוּ עַמִּים יֹשֵׁב כְּרוּבִים תָּנוּט הָאָרֶץ׃ 1
.populos omnes ſuper *ipſe* excelſus & : magnus Sijon in Dominus
יְהוָה בְּצִיּוֹן גָּדוֹל וְרָם הוּא עַל־כָּל־הָעַמִּים׃ 2
fortitudo Et .*ipſum* ſanctum terribili & , magno tuo nomini Confitebuntur
יוֹדוּ שִׁמְךָ גָּדוֹל וְנוֹרָא קָדוֹשׁ הוּא׃ וְעֹז 3 4
juſtitiam & judicium : *rectitudines* paraſti tu : dilexit judicium regis
מֶלֶךְ מִשְׁפָּט אָהֵב אַתָּה כּוֹנַנְתָּ מֵישָׁרִים מִשְׁפָּט וּצְדָקָה
vos incurvate & , noſtrum Deum Dominum Exaltate .feciſti tu Jahacob in
בְּיַעֲקֹב אַתָּה עָשִׂיתָ׃ רוֹמְמוּ יְהוָה אֱלֹהֵינוּ וְהִשְׁתַּחֲווּ 5
, ejus ſacerdotes inter Aharon & Moſeh .*ipſum* ſanctum ejus pedum ſcabello
לַהֲדֹם רַגְלָיו קָדוֹשׁ הוּא׃ מֹשֶׁה וְאַהֲרֹן בְּכֹהֲנָיו 6
ipſe & : Dominum *ad clamantes* : ejus nomen invocantes inter Semuel &
וּשְׁמוּאֵל בְּקֹרְאֵי שְׁמוֹ קֹרְאִים אֶל־יְהוָה וְהוּא
,ejus teſtimonia cuſtodiebant : eos ad loquebatur nubis columna In .eos exaudiebat
יַעֲנֵם׃ בְּעַמּוּד עָנָן יְדַבֵּר אֲלֵיהֶם שָׁמְרוּ עֵדֹתָיו 7
fuiſti parcens Deus ,eos exaudiſti tu , noſter Deus Domine .eis dedit ſtatutum &
וְחֹק נָתַן־לָמוֹ׃ יְהוָה אֱלֹהֵינוּ אַתָּה עֲנִיתָם אֵל נֹשֵׂא הָיִיתָ 8
, noſtrum Deum Dominum Exaltate .illorum *ſtudia ſuper vindicans &* : *eis*
לָהֶם וְנֹקֵם עַל־עֲלִילוֹתָם׃ רוֹמְמוּ יְהוָה אֱלֹהֵינוּ 9
.noſter Deus Dominus ſanctus quoniam : ejus ſanctitatis monti vos incurvate &
וְהִשְׁתַּחֲווּ לְהַר קָדְשׁוֹ כִּי־קָדוֹשׁ יְהוָה אֱלֹהֵינוּ׃

תרגום TARGUM.

צח

1 תושבחת נבואה שבחו קדם יי שבח חדת
ארום פרישן עבד פריקת ליה ימיניה ואדרע
2 שכינת קודשיה: הודע יי פורקניה למחמיהון
3 דעמיא גלי צדקתיה: דכר טוביה וקושטיה
לבית ישראל וחמון כל סיפי ארעא ית
4 פורקנא דאלהא: יביבו קדם יי כל יתבי
5 ארעא בועו ושבחו וזמרו: זמרו קדם יי בכנרין
6 בכנרין וקל זמריא: בחצוצרתא וקל שופרא
7 יביבו קדם מלכא יי: יכלי ימא ומליה תבל
8 וכל דירין עלה: נהרותא ימחון כפיא
9 כחדא טוריא ירננון: קדם יי ארום אתא
למדן ארעא ידון תבל בצדקתא ועמיא
בתרוצתא:

צט

1 יי מלך יזועון עמיא די שכנתיה שריא ביני
2 כרוביא יזוע ארעא: יי בציון רבא ורמא
3 הוא על כל עממיא: יהודון שמך רבא
4 ודחילא קדישא הוא: ועושניה דמלכא דדינא
רחים את אתקינתא תריצותא דינא וצדקתא
5 ביעקב את עבדתא: שבחו קדם יי אלהנא
6 וסגידו לבית מקדשיה קדיש הוא: משה
ואהרן בכהנוי דמסרו נפשהון מטול עמא דיי
ושמואל אמטולהון צלי קדם יי היך אבהת
עלמא דצלו בשמיה מצלין קדם יי והוא
7 עני יתהון: בעמוד ענני יקרא ממלל עמהון
8 נטרו סהדותיה וקים דיהב להון: יי אלהנא
את עניתא יתהון אלהא שביק הויתא לעמך
9 אמטולהון ומתפרע על עובדיהון: שבחו קדם
יי אלהנא וסגידו לטור בית מקדשיה ארום
קדיש יי אלהנא:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Pſalmus propheticus. 1

PSAL. XCVIII.

CElebrate coram Domino canticum no-
vum, quoniam edidit miranda : ſalvavit
eum dextera ejus, & brachium ſanctæ ma-
jeſtatis ejus. Manifeſtavit Dominus redem- 2
ptionem ſuam, ad aſpectum populorum
revelavit juſtitiam ſuam. Recordatus eſt 3
benignitatis ſuæ & veritatis ſuæ domui Iſ-
rael, & viderunt omnes fines terræ redem-
ptionem Dei. Jubilate coram Dño omnes 4
habitatores terræ; perſonate, & laudes di-
cite & pſallite. Pſallite coram Domino in 5
citharis, in *citharis* & voce pſalmorum.
In tubis & voce cornu, jubilate coram 6
illo rege Domino. Tonet mare & pleni- 7
tudo ejus; orbis, & omnes habitantes in
eo. Flumina complodant manibus; pa- 8
riter montes exultēt Coram Domino, quo- 9
niam venit judicare terram : judicabit or-
bem in juſtitia, & populos in æquitate.

PSAL. XCIX.

DOminus regnavit, contremiſcant po- 1
puli, quoniam ejus majeſtas habitat inter
Cherubim; concutiatur terra. Dominus in 2
Sion magnus & excelſus eſt ſuper omnes
populos. Confitebuntur nomini tuo magno 3
& timendo, ſanctum [*ſiquidem*] eſt. Et for- 4
titudo regis judicium dilexit : tu præpa-
râſti rectitudinem, judicium & juſtitiam
in Jacob tu feciſti. Laudate coram Dño 5
Deo noſtro, & adorate in domo ſanctuarii
ejus : ſanctus [*ſiquidem*] eſt. Moſſeh & 6
Aharon in Sacerdotibus ejus, qui tradide-
runt animas ſuas propter populum Domi-
ni; & Samuel propter illos oravit Do-
minum, ſicut patres ſeculi qui oraverunt
in nomine ejus : precabantur coram Dño,
& ipſe reſpondebat eis. In columna nubi- 7
um gloriæ loquebatur cum illis : obſerva-
verunt teſtimonia ejus, & pactum quod
dedit eis. Domine Deus noſter tu reſpon- 8
diſti eis : Deus pepercisti populo tuo pro-
pter eos, & ultus es opera ipſorum. Lau- 9
des dicite coram Domino Deo noſtro, &
adorate in monte domus ſanctuarii ejus,
quoniam ſanctus eſt Dominus Deus noſter.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܡܙܡܘܪܐ ܨ̄ܚ̄ *
1 * ܕܕܘܝܕ. ܥܠ ܦܘܪܩܢܐ ܕܥܡܐ ܡܢ ܡܨܪܝܢ ܟܕ ܙܟܘ ܘܢܨܚܘ.
ܘܪܘܚܢܐܝܬ ܢܒܝܘܬܐ ܥܠ ܡܐܬܝܬܗ ܕܡܫܝܚܐ ܘܩܪܝܬܐ ܕܥܡ̈ܡܐ ܠܗܝܡܢܘܬܐ. ܦܬܓ̈ ܟ̄ܓ̄.
ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ ܬܫܒܘܚܬܐ ܚܕܬܐ. ܡܛܠ ܕܬܕܡܘܪܬܐ ܥܒܕ: ܦܪܩܗ ܝܡܝܢܗ ܘܕܪܥܗ
2 ܩܕܝܫܐ. * ܚܘܝ ܡܪܝܐ ܦܘܪܩܢܗ: ܘܩܕܡ ܥܡ̈ܡܐ ܓܠܐ ܙܕܝܩܘܬܗ. * ܐܬܕܟܪ ܛܝܒܘܬܗ
3 ܘܗܝܡܢܘܬܗ ܠܒܢܝ̈ ܒܝܬܗ ܕܐܝܣܪܝܠ: ܘܚܙܘ ܟܠܗܘܢ ܣܘܦܝ̈ܗ ܕܐܪܥܐ ܦܘܪܩܢܗ ܕܐܠܗܢ.
4 5 * ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ ܟܠܗ ܐܪܥܐ: ܐܬܦܨܚܘ ܘܙܡܪܘ ܘܫܒܚܘ. * ܙܡܪܘ ܠܡܪܝܐ ܒܟܢܪܐ ܘܒܩܠܐ
6 7 ܕܙܡܪܐ: * ܘܒܩܠܐ ܕܩܪ̈ܢܬܐ ܫܒܚܘ ܩܕܡ ܡܠܟܐ ܡܪܝܐ. * ܢܙܘܥ ܝܡܐ ܒܡܠܝܘܬܗ: ܬܒܝܠ
8 9 ܘܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪ̈ܝܗ. * ܢܗܪ̈ܘܬܐ ܢܢܩܫܘܢ ܟܦܐ ܐܟܚܕܐ: ܘܛܘܪ̈ܐ ܢܫܒܚܘܢ ܘ ܩܕܡ ܡܪܝܐ.
ܕܐܬܐ ܠܡܕܢܗ ܠܐܪܥܐ: ܢܕܘܢ ܬܒܝܠ ܒܟܐܢܘܬܐ. ܘܥܡ̈ܡܐ ܒܬܪܝܨܘܬܐ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܨ̄ܛ̄ *
1 * ܕܕܘܝܕ. ܥܠ ܩܛܠܐ ܕܡܕܝܢܝ̈ܐ ܕܫܒܐ ܐܢܘܢ ܡܘܫܐ ܘܥܡܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܢܒܝܘܬܐ
ܕܫܘܒܚܐ ܕܡܠܟܘܬܐ ܕܡܫܝܚܐ. ܦܬܓ̈ ܟ̄ܕ̄.
2 ܡܪܝܐ ܐܡܠܟ ܢܙܘܥܘܢ ܥܡ̈ܡܐ. ܝܬܒ ܥܠ ܟܪ̈ܘܒܐ ܬܬܙܝܥ ܐܪܥܐ: * ܡܪܝܐ ܪܒ ܒܨܗܝܘܢ.
3 ܘܪܡ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡ̈ܡܐ: * ܢܘܕܘܢ ܠܫܡܟ ܪܒܐ ܘܕܚܝܠܐ ܕܩܕܝܫ ܗܘ. * ܘܥܘܫܢܗ
4 ܕܡܠܟܐ ܕܝܢܐ ܪܚܡ: ܐܢܬ ܬܩܢܬ ܬܪܝܨܘܬܐ. ܘܕܝܢܐ ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܒܝܥܩܘܒ ܐܢܬ ܥܒܕܬ:
5 6 * ܪܘܡܡܘܗܝ ܠܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. ܘܣܓܘܕܘ ܠܟܘܒܫܐ ܕܪ̈ܓܠܘܗܝ: ܩܕܝܫ ܗܘ * ܡܘܫܐ
ܘܐܗܪܘܢ ܒܟܘܡܪ̈ܘܗܝ. ܘܫܡܘܐܝܠ ܒܩܪ̈ܝܢܝ ܫܡܗ: ܩܪܘ ܠܡܪܝܐ ܘܥܢܐ ܐܢܘܢ.
7 * ܘܒܥܡܘܕܐ ܕܥܢܢܐ ܡܡܠܠ ܗܘܐ ܥܡܗܘܢ: ܢܛܪܘ ܣܗܕܘܬܗ ܘܩܝܡܐ ܕܝܗܒ ܠܗܘܢ.
8 * ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܐܢܬ ܥܢܝܬ ܐܢܘܢ: ܐܠܗܐ ܬܒܘܥܐ ܗܘܝܬ ܠܗܘܢ. ܦܪܘܥ ܐܢܘܢ
9 ܐܝܟ ܥܒܕܝܗܘܢ: * ܪܘܡܡܘܗܝ ܠܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. ܘܣܓܘܕܘ ܠܛܘܪܐ ܩܘܕܫܗ: ܡܛܠ
ܕܩܕܝܫ ܗܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ.

PSAL. XCVIII.

Davidis. De libertate populi ex Ægypto, 1
quum vicerunt atq; triumphaverunt. Spiri-
tualiter autem prophetia de adventu Chriſti,
& vocatione gentium ad fidem. Verſ. 23.

CAnite Domino canticum novum, quia
prodigium fecit : ſalvavit eum dexte-
ra ipſius & brachium ejus ſanctum. Ma- 2
nifeſtavit Dominus ſalutem ſuam, & coram
gentibus revelavit juſtitiam ſuam. Recorda- 3
tus eſt bonitatis ſuæ & fidei ſuæ erga do-
meſticos Iſraelis : & viderunt omnes termini
terræ ſalutem Dei noſtri. Laudate Dominum 4
univerſa terra: exhilaramini, & canite, atque
laudem dicite. Pſallite Domino lyrâ & voce 5
cantûs, Sonitúque cornuum laudem dicite co- 6
ram rege Domino. Moveatur mare cum ple- 7
nitudine ſua, orbis & cuncti habitatores ejus:
Flumina pulſent volam ſimul, & montes ca- 8
nant Coram Domino, qui venturus eſt ad 9
judicandam terram; judicabit orbem cum
æquitate, & populos cum rectitudine.

PSAL. XCIX.

Davidis. De cæde Madianitarum, quos ca- 1
ptivos duxit Moſes ac populus Iſrael. Et pro-
phetia de gloria regni Chriſti. Verſ. 24.

DOminus regnavit, contremiſcant po-
puli ſedet ſuper Cherubim, tremefiat
terra. Dominus magnꝰ eſt in Sion, & ſublimis 2
ſuper omnes populos. Confiteantur nomini 3
tuo magno atque tremendo, quia ſanctum eſt.
Fortitudo regis diligit judicium : tu præpa- 4
râſti rectitudinem, & judicium, & æquitatem
in Jacob tu feciſti. Exaltate Dominum Deum 5
noſtrum, & adorate ſcabellum pedum ejus.
Sanctus eſt Moſes & Ahron inter pontifices 6
ipſius, & Samüel inter invocantes nomen
ejus : qui vocaverunt Dominum, & reſpon-
dit eis : Et in columna nubis allocutus eſt eos: 7
obſervaverunt teſtimonium ejus, & fœdus
quod dedit illis. Domine Deus noſter, tu ex 8
audîſti eos : Deus, ultor fuiſti pro eis : re-
pende illis juxta opera eorum. Exaltate Do- 9
minum Deum noſtrum, & adorate montem
ejus ſanctum : quoniam ſanctus Dominus
Deus noſter.

Verſio VULG. LAT.

1 Pſalmus ipſi David. XCVII.

CAntate Dño canticũ novum: quia
mirabilia fecit. Salvavit ſibi dex-
2 tera ejus, & brachiũ ſanctũ ejꝰ. Notũ
fecit Dominus ſalutare ſuũ: in conſpe-
3 ctu gentiũ revelavit juſtitiã ſuã. Recor-
datꝰ eſt miſericordiæ ſuæ, & veritatis
ſuæ domui Iſrael. Viderunt omnes ter-
4 mini terræ ſalutare Dei noſtri. Jubila-
te Deo omnis terra: cãtate, & exultate,
5 et pſallite. Pſallite Domino in cithara,
6 in cithara & voce pſalmi: In tubis du-
ctilibus & voce tubæ corneæ. Jubilate
7 in conſpectu regis Domini: Moveatur
mare, & plenitudo ejus; orbis terra-
8 rum, & qui habitant in eo. Flumina
plaudent manu, ſimul montes exulta-
9 bunt A conſpectu Domini: quoniam
venit judicare terram. Judicabit or-
bem terrarum in juſtitia, & populos
in æquitate.

1 Pſalmus ipſi David. XCVIII.

DOminus regnavit, iraſcantur po-
puli: qui ſedet ſuper Cherubim,
2 moveatur terra. Dominus in Sion ma-
gnus: et excelſus ſuper omnes populos.
3 Confiteantur nomini tuo magno: quo-
4 niam terribile, et ſanctum eſt: Et honor
regis judicium diligit. Tu parâſti dire-
ctiones: judicium & juſtitiam in Jacob
5 tu feciſti. Exaltate Dominũ Deum no-
ſtrum, & adorate ſcabellũ pedum ejꝰ:
6 quoniam ſanctum eſt. Moyſes & Aa-
ron in ſacerdotibus ejus: & Sa-
muel inter eos, qui invocant nomen
ejꝰ: Invocabant Dominum, & ipſe
7 exaudiebat eos: In columna nubis lo-
quebatur ad eos. Cuſtodiebant teſti-
monia ejus, & præceptũ quod dedit
8 illis. Domine Deus noſter, tu exaudie-
bas eos: Deus, tu propitius fuiſti eis,
& ulciſcens in omnes adinventiones
9 eorum. Exaltate Dominum Deum no-
ſtrum, & adorate in monte ſancto ejꝰ:
quoniam ſanctus Dominꝰ Deus noſter.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

1 Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. ϟζ′.

† Ἄσατε τῷ κυρίῳ ᾆσμα καινόν, † ὅτι θαυμα-
στὰ ἐποίησεν ὁ κύριος· † ἔσωσεν αὐτῷ ἡ
2 δεξιὰ αὐτοῦ, † καὶ ὁ βραχίων ὁ ἅγιος αὐτοῦ. † Ἐγνώ-
ρισε κύριος τὸ σωτήριον αὐτοῦ, † ἐναντίον τῶν ἐθνῶν
3 ἀπεκάλυψε τὴν δικαιοσύνην αὐτοῦ. † Ἐμνήσθη τοῦ ἐ-
λέους αὐτοῦ τῷ Ἰακώβ, † καὶ τῆς ἀληθείας αὐτοῦ τῷ οἴκῳ
Ἰσραήλ. † εἴδοσαν πάντα τὰ πέρατα τῆς γῆς τὸ σωτή-
4 ριον τοῦ θεοῦ ἡμῶν. † Ἀλαλάξατε (α) τῷ θεῷ πᾶσα ἡ
5 γῆ, † ᾄσατε καὶ ἀγαλλιᾶσθε καὶ ψάλατε. † Ψάλατε τῷ
6 κυρίῳ ἐν κιθάρᾳ, † ἐν κιθάρᾳ καὶ φωνῇ ψαλμοῦ, † Ἐν
σάλπιγξιν ἐλαταῖς, † καὶ (γ) φωνῇ σάλπιγγος κερα-
τίνης. † ἀλαλάξατε ἐνώπιον τοῦ βασιλέως (β) κυρίῳ.
7 † Σαλευθήτω ἡ θάλασσα καὶ τὸ πλήρωμα αὐτῆς, † ἡ
8 οἰκουμένη καὶ (ϛ) οἱ κατοικοῦντες αὐτήν. † Ποταμοὶ κρο-
τήσουσι χειρὶ ἐπὶ τὸ αὐτό, † τὰ ὄρη ἀγαλλιάσονται (δ)·
9 † Ὅτι ἥκει κρῖναι τὴν γῆν. † κρινεῖ τὴν οἰκουμένην ἐν
δικαιοσύνῃ, † καὶ λαοὺς ἐν εὐθύτητι.

MS.A. (α) τῷ κυρίῳ πᾶσα (γ) φωνῆς (β) κυρίου. (ϛ) πάντες οἱ κατοικοῦντες ἐν αὐτῇ. (δ) Ἀπὸ προσώπου κυρίου ὅτι ἔρχεται, ὅτι ἥκει

1 Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. ϟη′.

† Ὁ κύριος ἐβασίλευσεν, ὀργιζέσθωσαν λαοί· † ὁ
καθήμενος ἐπὶ τῶν (α) χερουβίμ, σαλευθήτω
2 ἡ γῆ. † Κύριος ἐν Σιὼν μέγας, † καὶ ὑψηλός ἐστιν
3 ἐπὶ πάντας τοὺς λαούς. † Ἐξομολογησάσθωσαν τῷ
ὀνόματί σου τῷ μεγάλῳ, † ὅτι φοβερὸν καὶ ἅγιόν ἐστι·
4 † Καὶ τιμὴ βασιλέως κρίσιν ἀγαπᾷ. † Σὺ ἡτοί-
μασας εὐθύτητας, † κρίσιν καὶ δικαιοσύνην ἐν Ἰα-
5 κὼβ σὺ ἐποίησας. † Ὑψοῦτε κύριον τὸν θεὸν ἡμῶν,
† καὶ προσκυνεῖτε τῷ ὑποποδίῳ τῶν ποδῶν αὐτοῦ, † ὅτι
6 (β) ἅγιός ἐστι. † Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν ἐν τοῖς ἱερεῦ-
σιν αὐτοῦ, † καὶ Σαμουὴλ ἐν τοῖς ἐπικαλουμένοις τὸ
ὄνομα αὐτοῦ· † ἐπεκαλοῦντο τὸν κύριον, καὶ αὐτὸς (γ)
7 εἰσήκουεν, † Ἐν στύλῳ νεφέλης ἐλάλει πρὸς αὐτούς.
† (δ) ἐφύλασσον τὰ μαρτύρια αὐτοῦ, † καὶ τὰ προσ-
8 τάγματα (ε) ἃ ἔδωκεν αὐτοῖς. † Κύριε ὁ θεὸς ἡ-
μῶν, σὺ ἐπήκουες αὐτῶν· † (ζ) ὁ θεὸς εὐίλατος
ἐγίνου αὐτοῖς,, † καὶ ἐκδικῶν ἐπὶ πάντα τὰ ἐπιτη-
9 δεύματα αὐτῶν. † Ὑψοῦτε κύριον τὸν θεὸν ἡμῶν,
† καὶ προσκυνεῖτε εἰς ὄρος ἅγιον αὐτοῦ, † ὅτι ἅ-
γιος κύριος ὁ θεὸς ἡμῶν.

MS.A. (α) χερουβείν, (β) ἅγιόν ἐστιν. (γ) εἰσήκουσεν αὐτῶν, (δ) ὅτι ἐφύλασσον (ε) αὐτοῦ ἃ ἔδωκεν (ζ) ὁ θεὸς σὺ εὐίλατος

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

Pſalmus Ipſi David. XCVII.

*CAntate Domino canticum no- 1
vum: quia mirabilia fecit Domi-
nus. 2 (a) [a] Salvavit ſibi dextera 2
ejus, & brachiũ ſanctum ejus. 3 No-
tum fecit Dominus ſalutare ſuum:
ante conſpectum gentium revelavit
[b] juſtitiam ſuam. 4 Memor fuit 3
miſericordiæ ſuæ (b) Jacob, & veri-
tatis ſuæ domui Iſrael. 5 [c] Vide-
runt omnes fines terræ ſalutare Dei
noſtri. 6 Jubilate Deo [d] omnis ter- 4
ra: cantate, & exultate, & pſallite.
7 Pſallite Domino in cithara, in ci- 5
thara, & voce pſalmi: In tubis 6
ductilibus, & voce tubæ corneæ.
8 Jubilate in conſpectu regis (c) Do-
mino: (d) Commoveatur mare, & 7
plenitudo ejus: [e] orbis terrarum,
& qui habitant in eo. 9 [f] Flumi- 8
na plaudent manu in idipſum: mon-
tes (e) exultabunt: Quoniam [g] 9
venit judicare terram. 10 Judicabit
orbem terrarum in juſtitia, & popu-
los in æquitate.*

Pſalmus ipſi David. XCVIII. 1

*DOminus regnavit, iraſcantur po-
puli: qui ſedet ſuper Cherubim;
commoveatur terra. 2 Dominus in 2
Sion magnus, & excelſus eſt ſuper
omnes populos. 3 [a] Confiteantur no- 3
mini tuo (a) magno: quoniam ter-
ribile, & ſanctum eſt: Et (b) honor 4
regis judicium diligit. 4 Tu [b] pa-
râſti (c) directiones: judicium &
juſtitiam in Jacob tu feciſti. 5 Ex- 5
altate Dominum [c] Deum noſtrum:
& adorate [d] ſcabellum pedum e-
jus, 6 quoniam (d) ſanctus eſt.
Moyſes, & (e) Aaron in ſacerdoti- 6
bus ejus: & Samuel inter eos, qui
invocant nomen ejus: 7 Invoca-
bant Dominum: & ipſe (f) ex-
audiebat: In columna nubis loque- 7
batur ad eos. 8 (g) Cuſtodiebant te-
ſtimonia ejus, & (h) præcepta, quæ
dedit illis. 9 Domine Deus noſter, tu 8
exaudiebas eos: Deus, tu propitius
fuiſti eis, et (i) ulciſcens in omnes ad-
inventiones eorum. 10 [e] Exaltate 9
Dominum Deum noſtrum, & ado-
rate in monte ſancto ejus: quoniam
ſanctus Dominus Deus noſter.*

Verſio ÆTHIOPICA.

መዝሙር፡ዘደዊት፡፡

ንጊ ሰብሑዎ፡ ለእግዚአብሔር፡ ስብሐተ፡ 1
ሐዲስ፡፡እስመ፡ መንክረ ፡ ገብረ፡ እግዚአብ
ሔር፡፡=፡ ወአድኃኖተ፡የማኑ፡፡ወመዝራዕ 2
ቱሂ ፡ ቅዱስ፡፡=፡ አርአየ ፡ እግዚአብሔ 3
ር፡ አድኃኖቶ፡፡ወበቅድመ ፡ አሕዛብ ፡ ከሠ
ተ፡ ኪዳኖ፡፡=፡ ወተዘከረ፡ ሣህሎ፡ ለያዕቆ 4
ብ፡፡ወጽድቆሂ፡ ለቤተ፡ እስራኤል፡፡=፡ ርእ 5
ዩ፡ኵልክሙ፡ አጽናፈ፡ ምድር ፡ አድኃኖቶ፡
ለአምላክነ፡፡=፡ የብቡ፡ለእግዚአብሔር፡ 6
በኵሉ፡ምድር፡፡ሰብሑ፡ተፈሥሑ፡ ወዘም
ሩ፡፡=፡ ዘምሩ ፡ ለእግዚአብሔር ፡ በመሰን 7
ቆ፡፡በመሰንቆ ፡ ወበቃለ፡ መዝሙር፡፡በቀርን፡
ዝብጦ፡ ወበቃለ፡ ቀርን፡፡=፡ የብቡ፡ በቅድ 8
መ፡ እግዚአብሔር፡ ንጉሠ፡፡ወትትከወስ፡ባ
ሕር፡በምልአ፡፡ወዓለምኒ፡ ወኵሎሙ፡እለ፡
ይነብሩ፡ ውስቴታ፡፡=፡ ወአፍላግኒ፡ ይጠፍ 9
ሑ፡እደ፡ኅቡረ፡፡አድባርኒ፡ ይትሐሠዩ፡ እስ
መ፡በህየ፡ ይኴንና ፡ ለምድር፡፡=፡ ወይኴን 10
ና፡ ለዓለም ፡ በጽድቅ፡፡ወለአሕዛብኒ ፡ በር
ትዕ፡፡=፡

መዝሙር፡ዘደዊት፡፡

ንጊ እግዚአብሔር፡ ነግሠ፡ ደንገፁ፡ አሕዛ 1
ብ፡፡ዘይነብር፡ ዲበ፡ ኪሩቤል፡ አድለቅለቃ፡
ለምድር፡፡=፡ እግዚአብሔር፡ ዐቢይ፡ በጽ 2
ዮን፡፡ወልዑል፡ ውእቱ፡ ላዕለ፡ ኵሉ፡አሕዛ
ብ፡፡=፡ ኵሉ፡ ይገኒ፡ ለስምከ፡ ዐቢይ፡፡እ 3
ስመ፡ ግሩም፡ ወቅዱስ፡ ውእቱ፡፡ክብረ፡ንጉ
ሠ፡ፍትሐ፡ያፈቅር፡፡=፡ አንተ፡ አጽናዕከ፡ 4
ለጽድቅ፡፡ፍትሐ ፡ ወጽድቀ፡ ለያዕቆብ፡ አን
ተ፡ ገበርከ፡፡=፡ ተለዐሉ ፡ እግዚአብሔር፡ 5
ፈጣሪነ፡፡ወይሰግዱ፡ ሎቱ፡ ታሕተ፡ መከየደ፡
እገሪሁ፡፡=፡ እስመ፡ ቅዱሳን፡ እሙንቱ፡ሙ 6
ሴ፡ ወአሮን፡በክህነቶሙ፡፡ወሰሙኤልኒ፡ ምስ
ለ፡እለ፡ ይጼውዑ፡ ስሞ፡፡=፡ ይጼውዕዎ፡ለ 7
እግዚአብሔር፡ ወውእቱኒ ፡ ይሰጠዎሙ፡፡ወ
ይትናገሮሙ፡ በዐምደ፡ ደመና፡፡=፡ ወያዐቅ 8
ቡ፡ስምዖ፡ ወትእዛዞ፡ ዘወሀቦሙ፡፡=፡ እ 9
ግዚኦ፡አምላክነ፡አንተ፡ ሰማዕኮሙ፡፡እግዚ
ኦ፡ አንተ፡ ተሣሃልኮሙ፡፡ወትትቤቀል ፡ በኵ
ሉ፡ምግባሮሙ፡፡=፡ ተለዐሉ፡ እግዚአብሔ 10
ር፡አምላክነ፡፡ወይሰግዱ፡ ሎቱ፡ ውስተ፡ ደብ
ረ፡መቅደሱ፡፡እስመ፡ቅዱስ፡ ውእቱ፡ እግዚአ
ብሔር፡ አምላክነ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. *PSAL.* XCVII. [a] Salvavit dextera [b] teſtamentum ſuum. [c] Videte vos omnes [d] in omni terra: [e] & orbis etiam [f] Et flumina etiam [g] ibi judicabit terram.
PSAL. XCVIII. [a] Confiteatur unuſquiſque [b] confirmâſti veritatem: [c] creatorem noſtrum: [d] ei ſubter ſcabellum pedum ejus, quoniam ſancti ſunt iſti: [e] Exaltatus eſt Dominus Deus noſter, & adorate ei in

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 * المزمور السابع والتسعون * لداود * وهو * كب * استيخن *

سبحوا الرب تسبيحا جديدا * لان الرب قد صنع اعمالا عجيبة * احيت له يمينه * وقدس ذراعه *
2 3 * اظهر الرب خلاصه قدام الامم * كشف لهم عدله * ذكر رحمته ليعقوب * وحقه لبيت
4 اسرائيل * رات اقطار الارض جميعها خلاص الاهنا * فهللوا للرب يا جميع الارض * سبحوا
5 6 وهللوا وزمروا * ورتلوا للرب بالقيثار * بالقيثار وصوت المزمور * بابواق خافقة * وبصوت بوق
7 القرن * هللوا قدام الملك الرب * فليضطرب البحر وجميع ما فيه * والمسكونة وكل سكانها *
8 9 * الانهار تصفق بايديها جميعا * الجبال تبتهج و قدام وجه الرب * لانه جاء يدين الارض * يدين
المسكونة بالعدل * والشعوب بالاستقامة * اللليلويا *

1 * المزمور الثامن والتسعون * لداود * وعدده * كب * استيخن *

2 ملك الرب فلتغضب الشعوب * الجالس على الكروبين فلتهتز الارض * عظيم هو الرب في
3 4 صهيون * وعال على جميع الشعوب * فليشكروا لاسمك العظيم * لانه مخوف وقدوس * وكرامة
5 الملك ان يحب العدل * انت اعددت الاستقامة * انت صنعت الحكم والعدل في يعقوب * علوا
6 الرب الهنا * واسجدوا لموطي قدميه فانه قدوس * لانه جعل موسي وهرون في كهنته *
7 وصموئيل في الذين يدعون اسمه * كانوا يدعون الرب وهو كان يستجيب لهم 7 في عمود
8 الغمام * وهو كان يكلمهم * لانهم حفظوا شهاداته والاوامر التي اعطاهم * ايها الرب الاهنا انت
9 استجبت لهم * صرت لهم اللهم غفارا * ومنتقما على جميع اعمالهم * علوا الرب الاهنا * واسجدوا
في جبله المقدس * فان الرب الاهنا قدوس * اللليلويا *

PSAL. XCVII.

Davidis. Ver. 22. 1

*LAudate Dominum laudatione novâ:
quia Dominus jam fecit opera admi-
randa. Vivificavit ei dextera ſua, & ſan-
ctitas brachii ſui. Manifeſtavit Dominus 2
ſalutem ſuam coram gentibus, revelavit
eis juſtitiam ſuam. Recordatus eſt miſeri- 3
cordiæ ſuæ erga Jacobum, & veritatis
ſuæ erga domum Iſraelis. Viderunt extre-
ma terræ totius ſalutem Dei noſtri. Ita- 4
que canite Domino, O univerſa terra: lau-
date, & canite, & pſallite, Ac modula- 5
mini Domino cum cithara, cum cithara et
voce pſalmi: Cum buccinis crepitantibus, 6
& voce tubæ corneæ, jubilate coram rege
Domino. Concitetur mare & quicquid 7
in eo continetur, & Habitata omnéſque
habitatores ejus. Flumina plaudant ma- 8
nibus ſuis ſimul: montes exultent Ante 9
faciem Domini: quia venit judicare ter-
ram. Judicabit Habitatam cum juſtitia, et
populos cum rectitudine. Alleluja.*

PSAL. XCVIII.

Davidis. Et num. ver. 22. 1

*REgnavit Dominus, quapropter iraſcan-
tur populi: ſedens ſuper Cherubim,
tremefiat terra. Maximus eſt Dominus in 2
Sion, & excelſus ſuper omnes populos.
Gratias agant nomini tuo magno, quoniam 3
terribile & ſanctum eſt: Si honor Regis 4
eſt diligere æquitatem. Tu parâſti rectitu-
dinem, tu feciſti judicium & juſtitiam in
Jacob. Exaltate Dominum Deum no- 5
ſtrum, & adorate ſcabellum pedum ejus,
quoniam ſanctum eſt. Quia ipſe conſtituit 6
Moyſem & Aaronem inter Sacerdotes
ſuos, & Samuelem inter eos qui invocant
nomen ejus. Invocabant Dominum, & ipſe
exaudiebat eos In columna nubis, & i- 7
pſemet alloquebatur eos: eò quòd ſerva-
verint teſtimonia ejus & præcepta quæ
dederat illis. O Domine Deus noſter, tu 8
exaudîſti eos: fuiſti erga eos, O Deus, pro-
pitius, & ultor adverſus omnia opera eo-
rum. Exaltate Dominum Deum noſtrum, 9
& adorate in monte ejus ſancto: quia
Dominus Deus noſter ſanctus eſt. Alle-
luja.*

תהלים : ק קא קב

PSAL. C. ק

Domino Servite .terra omnis Domino Jubilate .confeſſione pro Cantus
מזמור לתודה הריעו ליהוה כל־הארץ: עבדו את־יהוה 1 2
ipſe : Deus ipſe DOMINUS ꝙ Scitote.ovatione in ejꝰ facies ad ingredimini:lætitia in
בשמחה באו לפניו ברננה: דעו כי־יהוה הוא אלהים הוא 3
ejus portas Ingredimini .ejus paſcuæ pecus & ,ejus populus : nos non & ,nos fecit
עשנו ולא אנחנו עמו וצאן מרעיתו: באו שעריו 4
Quoniã.ejꝰ nomini benedicite,ei confitemini : laude cum ejus atria , confeſſione cum
בתודה חצרתיו בתהלה הודו לו ברכו שמו: כי־ 5
generationẽ & generationẽ in uſq; & : ejus miſericordia ſeculum in ,Dominus bonus
טוב יהוה לעולם חסדו ועד־דר ודר
.ejus veritas
אמונתו:

PSAL. CI. קא

.canam Domine tibi : cantabo judicium & Miſericordiam .cantus David *Ipſius*
לדוד מזמור חסד־ומשפט אשירה לך יהוה אזמרה: 1
perfectione in ambulabo : me ad veniet quando , perfecta via in Intelligam
אשכילה בדרך תמים מתי תבוא אלי אתהלך בתם־ 2
facere ,*Belijahal verbum* meis oculis coram ponam Non.meæ domꝰ *interiori* in,mei cordis
לבבי בקרב ביתי: לא־אשית לנגד עיני דבר־בליעל עשה־ 3
non malum : me à recedet pravum Cor .*me in* adhærebit non : odivi *declinantium*
סטים שנאתי לא ידבק בי: לבב עקש יסור ממני רע לא 4
vaſtum & ,oculis elatum : ſuccidam hunc ſuo *ſocio* ſecreto in *Obloquentem* .cognoſcam
אדע: מלושני בסתר רעהו אותו אצמית גבה־עינים ורחב 5
: mecum *ſedendum ad* terræ fideles ad mei Oculi .potero non ipſum corde
לבב אתו לא אוכל: עיני בנאמני־ארץ לשבת עמדי 6
,meæ domꝰ *interiori* in habitabit Non.mihi miniſtrabit ipſe ,perfecta via in ambulans
הלך בדרך תמים הוא ישרתני: לא ישב בקרב ביתי 7
matutinis in.meis oculis coram firmabitur nequaquam :mendacia loquens ,dolum faciens
עשה רמיה דבר שקרים לא־יכון לנגד עיני: לבקרים 8
operarios omnes Domini civitate à *exeindendum ad* : terræ impios omnes ſuccidam
אצמית כל־רשעי־ארץ להכרית מעיר־יהוה כל־פעלי
.iniquitatis
און:

PSAL. CII. קב

Domine .ſuum eloquium *effundet Domini facies ad* &:*angore deficiet cùm afflicti* Oratio
תפלה לעני כי־יעטף ולפני יהוה ישפך שיחו: יהוה 1
tuas facies abſcondas Ne .veniat te ad meus clamor &:meam orationem exaudi 2
שמעה תפלתי ושועתי אליך תבוא: אל־תסתר פניך 3
.me exaudi,feſtina,invocavero die in:tuã aurẽ me ad inclina mihi anguſtiæ die in,me à
ממני ביום צר לי הטה־אלי אזנך ביום אקרא מהר ענני:
eſt Percuſſum .ſunt exuſta focus tanquam mea oſſa &:mei dies *fumo in* defecerunt Quia
כי־כלו בעשן ימי ועצמותי כמוקד נחרו: הוכה 4
voce A .meum panem *edendo ab* ſum oblitus quia : meum cor aruit & ,herba ſicut 5
כעשב ויבש לבי כי־שכחתי מאכל לחמי: מקול 6
.meæ carni meum os adhæſit , mei gemitus
אנחתי דבקה עצמי לבשרי:

תרגום TARGUM

ק

שבחא על קורבן תודתא יביבו קדם יי כל יתבי 1
ארעא: פלחו קדם יי בחדוה אתו קדמוי 2
בתושבחתא: אודיעו ארום יי הוא אלהים הוא 3
עבד יתנא ודיליה אנחנא עמיה ועאן רעיתיה:
עולו בתרעוי באודותא דרתוי בתושבחתא 4
אודון קדמוי בריכו שמיה: ארום טב יי לעלם 5
טוביה ועד דר ודר הימנותיה:

קא

על יד דוד תושבחתא אין חסדא את גמל עמי 1
אין דינא את עבד עמי על כולא אשבח קדמך יי
אזמר: אשכלנך באורח שלים אימתי תעול 2
לותי אתהלך בשלימות לבבי בגו בית אולפני:
לא אשוי ללבי מלתא דרשיעא עבדי בישין 3
ושטין מן פקודיא סניתי לא ידבקון בי: לבא 4
עוקמנא יעדי מני יצרא בישא לא אדע: דמשתעי 5
לישן תליתי על חבריה יתיה אמגר ויילקי
בצרעתא: דאזיל בגסות עינין עמיה לא אדור
בעלמא: עיני בקשיטי ארעא למתב במחיצת 6
צדיקי דאזיל באורחא שלים הוא יקום עם
שמשי: לא יתב במצע בית מוקדשי עבד 7
נכילו די ממלל שקרין לית ליה רשו לאתכוונא
קבל עיני: לעלמא דאתי דאמתיל לנהור 8
צפרא אמגר כל רשיעי ארעא לשיצאה מן
ירושלם קרתא דיי כל עבדי שקר:

קב

צלותא על מסכנא ארום משתלהי וקדם יי יימר 1
צלותיה: יי קבל צלותי ופגינותי לקדמך תעול: 2
לא תסלק שכנתך מני ביום עקתי אצלי לותי 3
אודנך ביומא דאקרי סרהיב עני יתי: ארום 4
אשתיציאו היך תננא יומי ואבריי היך תפיא חררן:
לקא היך עסבא לבי ארום אתנשיתי אוריית 5
אולפני: מן קל תנחתי אדבק גרמי לבסרי: 6

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Canticum pro ſacrificio confeſſionis. 1

PSAL. C.

Jubilate coram Domino omnes habitato-
res terræ: Servite coram Domino in læ- 2
titia, venite coram eo cum hymno. No- 3
tum facite quoniã DOMINUS ipſe eſt Deꝰ:
ipſe fecit nos, & ipſius ſumus; populus
ejus & oves paſcuæ ejus. Ingredimini por- 4
tas ejus in confeſſione, porticus ejus cum
laude: confitemini coram eo, benedicite
nomini ejus. Quoniam bonus eſt Domi- 5
nus, in æternum benignitas ejus; & uſque
in generationem & generationem fides ejꝰ.

Per manum Davidis Canticum. 1

PSAL. CI.

Si miſericordiam tu rependis mecum, ſi
judicium mecum facis, pro omnibus hy-
mnos dicam coram te Domine, & pſallam.
Faciam te intelligere viã perfectam, quan- 2
do venies ad me: ambulabo in perfectione
cordis mei in medio domus doctrinæ meæ.
Non *apponam cordi meo* verbum impietatis: 3
operantes mala, & recedentes à mandatis,
odio habui; nequaquam adhærebunt mihi.
Cor pravum recedet à me; concupiſcen- 4
tiam malã non cognoſcã. Loquentem lin- 5
gua triplici adverſus proximum ſuũ; hunc
diſperdam, *& percutietur leprâ*: gradi-
entem in ſuperbia oculorũ, cum eo non ha-
bitabo in æternũ. Oculi mei ſunt ad vera- 6
ces terræ, ut inhabitem in thalamo juſtorũ:
ambulans in via perfecta, hic ſtabit cum
ſervis meis. Non habitabit in medio domꝰ 7
ſanctuarii mei faciens dolum: qui loquitur
mendaciũ, non erit ei facultas comparendi
coram oculis meis. *In mundo venturo, qui* 8
aſſimulatur luci matutinæ, perdam omnes
impios terræ, ut diſperdam de Jeruſalem
civitate Domini omnes operarios falſitatis.

Oratio pro miſero cùm deficiet, & co- 1
ram Domino dicet orationem ſuam.

PSAL. CII.

Domine accipe orationem meam: & 2
clamor meꝰ coram te ingrediatur. Ne 3
auferas majeſtatem tuam à me: in die affli-
ctionis meæ inclina ad me aurem tuam; in
die qua invocavero, feſtina exaudi me.
Quoniam defecerunt ſicut fumus dies mei; 4
& membra mea ſicut *chytropꝰ, aduſta*. Per- 5
cuſſum eſt ſicut fœnum cor meum, quoni-
am oblitus ſum legem doctrinæ meæ. A voce ſuſpirii mei adhæſit os meum carni meæ. 6

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩ *

1 *ܕܠܐ ܫܘܡܐ. ܥܠ ܝܫܘܥ ܒܪ ܢܘܢ، ܟܕ ܐܬܬܢܝܚ
ܡܢ ܩܪܒܐ ܕܥܡܘܢܝܐ. ܘܒܕܝܬܩܐ ܚܕܬܐ ܥܠ ܦܢܝܬܐ ܕܥܡܡܐ ܠܗܝܡܢܘܬܐ. ܦܬܓ̈ ܝܕ.
ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ ܟܠܗ ܐܪܥܐ: * ܦܠܘܚܘ ܠܡܪܝܐ ܒܚܕܘܬܐ. ܥܘܠܘ ܩܕܡܘܗܝ 2
ܒܬܫܒܘܚܬܐ: * ܕܥܘ ܕܗܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. ܘܗܘ ܥܒܕܢ، ܘܠܐ ܚܢܢ: ܥܡܗ ܚܢܢ 3
ܘܥܢܐ ܕܡܪܥܝܬܗ. * ܥܘܠܘ ܠܬܪܥܘܗܝ ܒܬܘܕܝܬܐ: ܘܠܕܪܘܗܝ ܒܬܫܒܘܚܬܐ: ܐܘܕܘ ܠܗ 4
ܘܒܪܟܘ ܠܫܡܗ. * ܡܛܠ ܕܛܒ ܗܘ ܡܪܝܐ ܘܠܥܠܡ ܛܝܒܘܬܗ: ܘܠܕܪ ܕܪܝܢ ܗܝܡܢܘܬܗ. 5

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܐ *

*ܕܐܣܦ. ܡܦܝܣܢܘܬܐ ܕܕܘܝܕ ܥܠ ܗܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܒܬܫܡܫܬܐ 1
ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܢܒܝܘܬܐ ܕܥܠ ܬܫܒܘܚܬܐ ܕܙܟܘܬܐ ܘܡܫܡܠܝܘܬܐ ܕܒܐܠܗܐ. ܦܬܓ̈ ܝܙ.
ܛܝܒܘܬܐ ܘܕܝܢܐ ܐܙܡܪ: ܘܐܫܒܚܟ ܡܪܝܐ. * ܘܐܗܠܟ ܒܐܘܪܚܟ ܕܠܐ ܡܘܡ: ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ 2
ܬܐܬܐ ܠܘܬܝ. ܗܠܟܬ ܒܬܡܝܡܘܬܗ ܕܠܒܝ ܒܓܘ ܒܝܬܝ: * ܘܠܐ ܣܡܬ ܩܕܡ ܥܝܢܝ 3
ܡܠܬܐ ܕܥܘܠܐ. ܠܥܒܕ ܒܝܫܬܐ ܣܢܝܬܗ ܘܠܐ ܕܒܩ ܒܝ: * ܠܒܐ ܥܩܡܐ ܥܒܪ ܡܢܝ 4
ܘܒܝܫܬܐ ܠܐ ܝܕܥܬ. * ܠܡܢ ܕܐܟܠ ܩܪܨܐ ܕܚܒܪܗ ܒܛܘܫܝܐ ܗܘܝܬ ܡܘܒܕ: ܠܕܪܡܢ ܥܝܢܘܗܝ 5
ܘܪܘܝܚ ܠܒܗ ܥܡܗ ܠܐ ܐܟܠܬ ܗܘܝܬ. * ܥܝܢܝ ܥܠ ܡܗܝܡܢܐ ܕܐܪܥܐ ܕܢܬܒܘܢ ܥܡܝ: 6
ܘܡܢ ܕܡܗܠܟ ܒܐܘܪܚܐ ܕܠܐ ܡܘܡ ܗܘ ܢܫܡܫܢܝ. * ܠܐ ܢܬܒ ܒܓܘ ܒܝܬܝ ܥܒܕ ܢܟܠܐ: ܘܡܡܠܠܐ 7
ܕܓܠܐ ܠܐ ܢܬܩܢ ܩܕܡ ܥܝܢܝ. * ܒܨܦܪܐ ܐܫܬܩ ܠܟܠܗܘܢ ܪ̈ܫܝܥܐ ܕܐܪܥܐ: ܘܐܘܒܕ ܡܢ 8
ܡܕܝܢܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܠܟܠܗܘܢ ܥܒ̈ܕܝ ܥܘܠܐ:

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܒ *

1 *ܕܠܐ ܫܘܡܐ. ܟܐܒܐ ܠܝܗܘܕܝܐ. ܘܡܬܢܒܝܢܘܬܐ ܕܥܠ ܥܡܐ ܚܕܬܐ ܕܥܡܡܐ ܒܗܝܡܢܘܬܐ. ܦܬܓ̈ ܟܘ.
2 * ܡܪܝܐ ܫܡܥ ܨܠܘܬܝ. ܘܩܥܬܝ ܩܕܡܝܟ ܬܥܘܠ: * ܠܐ ܬܗܦܟ ܐܦܝܟ ܡܢܝ ܒܝܘܡܐ ܕܐܘܠܨܢܝ. 3
ܐܪܟܢ ܠܝ ܐܕܢܟ ܒܝܘܡܐ ܕܐܩܪܝܟ ܘܥܢܝܢܝ ܥܓܠ: * ܡܛܠ ܕܫܠܡܘ ܐܝܟ ܬܢܢܐ ܝܘܡܝ. 4
ܘܓܪ̈ܡܝ ܝܒܫܘ ܐܝܟ ܩܝܣܐ: * ܐܬܡܚܝ ܐܝܟ ܥܣܒܐ ܘܝܒܫ ܠܒܝ. ܡܛܠ ܕܛܥܝܬ 5
ܠܡܐܟܠ ܠܚܡܝ: * ܡܢ ܩܠܐ ܕܐܬܢܚܬܝ ܕܒܩ ܓܪܡܝ ܠܒܣܪܝ. 6

PSAL. C.

Anonymus. De Joſue filio Nun, quum 1
quieviſſet bellum Ammonitarum. In Teſta-
mento autem novo, de converſione gentium ad
fidem. Verſ. 14.

Laudate Dominum univerſa terra, Colite 2
Dominum cum gaudio: ingredimini in
conſpectu ejus cum laudatione. Scitote ipſum 3
eſſe Dominum Deum noſtrum, & ab ipſo nos
conditos eſſe, non autem à nobis: populum
ejus nos eſſe, & oves paſcuæ illius. Ingredi- 4
mini portas ejus cum gratiarum actione, &
atria ejus cum laude. Confitemini illi, & be-
nedicite nomini ejus: Quoniam bonus eſt 5
Dominus, & in æternum bonitas ejus, & in
generationem generationum fides ipſius.

PSAL. CI.

Aſaphi. Hortatio Davidis de iis quæ requi- 1
rũtur in miniſterio domꝰ Domini. Et prophetia
de laude victoris atq; perfecti in Deo. Ver. 17.

Bonitatem & judicium canam, téque lau-
dabo Domine, Et incedam per viam tuam 2
abſq; macula. Quouſque venies ad me? Am-
bulavi cum ſinceritate cordis mei in medio
domûs meæ, Et non propoſui ante oculos 3
meos verbum iniquitatis: eum qui operatur
malum, deteſtatus ſum, & non adhæſit mihi:
Cor perverſum tranſiit à me, & malitiam non 4
agnovi: Eum qui obtrectat ſocio ſuo clàm, 5
perdebam: cum eo, cujus elati ſunt oculi &
amplum cor, non edebam. Oculi mei ad fide- 6
les terræ, ut ſedeant mecum: qui ambulat in
via ſine vitio, ipſe miniſtrabit mihi. Non 7
commorabitur domi meæ qui facit dolum: &
ſermo mendax non erit firmus coram oculis
meis. In matutino ſilere faciam cunctos im- 8
pios terræ, perdámque de civitate Domini
omnes perpetrantes flagitium.

PSAL. CII.

Anonymus. Dolor Judæis. Et prophetia de 1
populo novo, nempè *gentibꝰ, per fidem. Ver.* 26.

Domine, audi orationem meam, & cla- 2
mor meus ad te ingrediatur. Ne de- 3
flectas vultum tuũ à me in die anguſtiæ meæ:
ſed inclina ad me aurẽ tuã in die quâ invocabo
te, & illicò reſponde mihi. Nam finierunt in 4
fumũ dies mei, & oſſa mea facta ſunt alba ceu
foci: Elanguit cor meũ sicut foenum, & exaruit, 5
quia oblitus ſum eſus panis mei: Et præ voce 6
ſuſpiriorum meorum adhæſit caro mea oſſi-
bus meis:

Verſio VULG. LAT.

1 Pſalmus in Confeſſione. XCIX.
2 Jubilate Deo omnis terra: ſervite
Dño in lætitia. Introite in conſpe-
3 ctu ejus,in exultatione. Scitote quo-
niam Dñs ipſe eſt Deus: ipſe fecit nos,
& non ipſi nos: Populus ejus, & oves
4 paſcuæ ejus: Introite portas ejus in
confeſſione,atria ejus in hymnis: con-
fitemini illi. Laudate nomen ejus.
5 Quoniam ſuavis eſt Dominus, in æter-
num miſericordia ejus, & uſq; in ge-
neratione & generationem veritas ej⁹.
1 Pſalmus ipſi David. C.
Miſericordiam, & judicium canta-
2 bo tibi,Dñe: Pſallam, Et intel-
ligam in via immaculata, quando ve-
nies ad me. Perambulabam in inno-
centia cordis mei,in medio dom⁹ meæ.
3 Non proponebam ante oculos meos
rem injuſtam: facientes prævaricatio-
4 nes odivi.Non adhæſit mihi Cor pra-
vum: declinantẽ à me malignum non
5 cognoſcebam. Detrahentem ſecretò
proximo ſuo, hunc perſequebar. Su-
perbo oculo,& inſatiabili corde,cum
6 hoc non edebam. Oculi mei ad fide-
les terræ ut ſedeant mecum: ambulans
in via immaculata, hic mihi miniſtra-
7 bat. Non habitabit in medio domûs
meæ,qui facit ſuperbiam: qui loquitur
iniqua, non direxit in conſpectu ocu-
8 lorum meorum. In matutino interfici-
ebam omnes peccatores terræ: ut diſ-
perderem de civitate Domini omnes
operantes iniquitatem.
1 Oratio pauperis, Cùm anxius fuerit,
& in conſpectu Domini effuderit
precem ſuam. CI.
2 Domine,exaudi orationem meam:
3 & clamor meus ad te veniat. Non
avertas faciem tuam à me: in quacun-
que die tribulor, inclina ad me aurem
tuam. In quacunque die invocavero
4 te,velociter exaudi me: Quia defece-
runt ſicut fumus dies mei: & oſſa mea
5 ſicut cremium aruerunt. Percuſſus
ſum ut fœnum, & aruit cor meum:
quia oblitus ſum comedere panem
6 meum. A voce gemitûs mei adhæſit
os meum carni meæ.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

1 Ψαλμὸς εἰς ἐξομολόγησιν. ϟθʹ.
2 † Ἀλαλάξατε τῷ κυρίῳ πᾶσα ἡ γῆ, † δουλεύ-
σατε τῷ κυρίῳ ἐν εὐφροσύνῃ. † εἰσέλθατε
3 ἐνώπιον αὐτοῦ ἐν ἀγαλλιάσει. † Γνῶτε ὅτι κύριος
αὐτός ἐστιν ὁ (α) Θεός· † αὐτὸς ἐποίησεν ἡμᾶς, καὶ οὐχ
ἡμεῖς, † (β) λαὸς αὐτοῦ καὶ πρόβατα τῆς νομῆς αὐτοῦ.
4 † Εἰσέλθατε εἰς τὰς πύλας αὐτοῦ ἐν ἐξομολογή-
σει, † (γ) τὰς αὐλὰς αὐτοῦ ἐν ὕμνοις. ἐξομολογεῖ-
5 σθε αὐτῷ, † αἰνεῖτε τὸ ὄνομα αὐτοῦ. † Ὅτι χρηστὸς
κύριος, (δ) εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ, † καὶ ἕως
γενεᾶς καὶ γενεᾶς ἡ ἀλήθεια αὐτοῦ.

MS.A. (α) Θεὸς ἡμῶν· (β) ἡμεῖς δὲ λαὸς αὐτοῦ
(γ) εἰς τὰς αὐλὰς (δ) ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα

1 (α) Ψαλμὸς τῷ Δαυΐδ. ρʹ.
† Ἔλεος καὶ κρίσιν ᾄσομαί σοι κύριε· † ψαλῶ
2 Καὶ συνήσω ἐν ὁδῷ ἀμώμῳ. πότε ἥξεις
πρός με; † διεπορευόμην ἐν ἀκακίᾳ καρδίας μου,
3 ἐν μέσῳ τοῦ οἴκου μου. † Οὐ προεθέμην πρὸ ὀφθαλ-
μῶν μου πρᾶγμα παράνομον, † ποιοῦντας παραβά-
4 σεις ἐμίσησα· † οὐκ ἐκολλήθη μοι Καρδία σκαμ-
βή, † ἐκκλίνοντος ἀπ' ἐμοῦ τοῦ πονηροῦ, οὐκ ἐγίνω-
5 σκον. † Τὸν καταλαλοῦντα λάθρᾳ τὸν πλησίον αὐτοῦ,
τοῦτον ἐξεδίωκον. † ὑπερηφάνῳ ὀφθαλμῷ καὶ ἀπλήστῳ
6 καρδίᾳ, † τούτῳ οὐ συνήσθιον. † Οἱ ὀφθαλμοί μου
ἐπὶ τοὺς πιστοὺς τῆς γῆς, † τοῦ συγκαθῆσθαι αὐτοὺς μετ'
ἐμοῦ· † πορευόμενος ἐν ὁδῷ ἀμώμῳ, οὗτός μοι ἐ-
7 λειτούργει. † Οὐ κατῴκει ἐν μέσῳ τῆς οἰκίας μου ποι-
ῶν ὑπερηφανίαν· † λαλῶν ἄδικα οὐ (β) κατεύθυνεν
8 ἐναντίον τῶν ὀφθαλμῶν μου. † Εἰς τὰς πρωΐας ἀ-
πέκτενον πάντας τοὺς ἁμαρτωλοὺς τῆς γῆς, † τοῦ (γ) ἐξ-
ολοθρεῦσαι ἐκ πόλεως κυρίου πάντας τοὺς ἐργαζο-
μένους τὴν (δ) ἀδικίαν.

MS.A. (α) Τῷ Δαυΐδ. (β) κατεύθυνεν ἐνώπιον
(γ) ἐξολεθρεῦσαι (δ) ἀνομίαν.

1 Προσευχὴ τῷ πτωχῷ, ὅταν ἀκηδιάσῃ, καὶ (α)
ἐναντίον κυρίου ἐκχέῃ τὴν δέησιν αὐτοῦ. ραʹ.
2 † Κύριε εἰσάκουσον τῆς προσευχῆς μου, † καὶ ἡ κραυ-
3 γή μου πρὸς σὲ (β) ἐλθέτω. † Μὴ ἀποστρέ-
ψῃς τὸ πρόσωπόν σου ἀπ' ἐμοῦ· † ἐν ᾗ ἂν ἡμέρᾳ
θλίβομαι, κλῖνον πρός με τὸ οὖς σου· † ἐν ᾗ ἂν ἡμέ-
4 ρᾳ (γ) ἐπικαλέσωμαί σε, ταχὺ εἰσάκουσόν μου. † Ὅ-
τι ἐξέλιπον ὡσεὶ καπνὸς αἱ ἡμέραι μου, † καὶ τὰ
5 ὀστᾶ μου ὡσεὶ φρύγιον συνεφρύγησαν. † Ἐπλήγην
ὡσεὶ χόρτος, καὶ ἐξηράνθη ἡ καρδία μου, † ὅτι ἐπ-
6 ελαθόμην τοῦ φαγεῖν τὸν ἄρτον μου. † Ἀπὸ φωνῆς τοῦ
στεναγμοῦ μου, ἐκολλήθη τὸ ὀστοῦν μου τῇ σαρκί μου.

MS.A. (α) ἔναντι (β) ἐλθάτω. (γ) ἐπικαλέσωμαι

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

Pſalmus in Confeſſionem. XCIX. 1
1 *Iubilate Domino [a]omnis terra: 2
ſervite Domino in lætitia. 2 In-
troite in conſpectu ejus in(a)exulta-
tione. 3 Scitote, quòd Dominus ipſe 3
eſt[b]Deus: ipſe fecit(b)nos,& non
nos. 4 (c)[c]Populus ejus, & oves
paſcuæ ejus, Introite portas ejus in 4
cõfeſſione,[d]atria ej⁹ in(d)hymnis.
Confitemini illi: 5 laudate nomen e-
jus. Quoniam ſuavis eſt Dominus: 5
[e]in æternum miſericordia ejus: &
uſque in generationem & generatio-
nem veritas ejus.*
(a) Pſalmus ipſi David. C. 1
1 *Miſericordiã,et judiciũ canta-
bo[†]tibi, Domine: 2 (b)pſal-
lam, Et intelligã[a]in via immacu- 2
lata: quando venies(c)ad me? 3 De-
ambulabam in innocentia cordis mei,
in medio domûs meæ. 4 Non propo- 3
nebã ante oculos meos rem injuſtam:
[b] facientes prævaricationes odivi:
5 Non adhæſit mihi Cor pravũ:(d) 4
cũ declinaret à me malign⁹,nõ cog-
noſcebã. 6 Detrahentẽ occultè pro- 5
ximo ſuo,hunc perſequebar. 7 Super-
bo oculo, et[c]inſatiabili corde,huic
non conveſcebar. 8 Oculi mei ad fide- 6
les terræ,ut ſedeant mecũ: ambulãs
in via immaculata, hic mihi mini-
ſtrabat. 9 Non habitavit in medio do- 7
mûs meæ faciens ſuperbiã: loquens
iniqua non direxit in conſpectu ocu-
lorum meorum. 10 In matutinis in- 8
terficiebam omnes peccatores terræ;
ut diſperderẽ de civitate Domini[d]
omnes operantes iniquitatem.*

MS. Æth. Poc. Davidis,cujus filius
eſt Chriſt⁹ Sacerdos: Gloria Patri,&
Filio,& Spiritui Sancto: omni tẽpore,
nunc etiam, & ſemper,& in ſecula ſe-
culorum, Amen.

Oratio (a) [a] pauperi, cùm anxius 1
fuerit, & corã Domino effuderit
[b] precem ſuam. CI.
1 *Domine,exaudi orationẽ meã: 2
& (b)clamor meus ad te ve-
niat. 2 Ne avertas faciem tuã à me: 3
in quacunq; die tribulor; inclina ad
me aurẽ tuã. 4 In quacunque die in-
vocavero te; velociter exaudi me.
4 Quia defecerunt ſicut fumus,dies 4
mei: & oſſa mea, ſicut(c)cremium,
[c]confrixa ſunt. 5 (d) Percuſſus 5
ſum,ſicut fœnũ,& aruit cor meum:
quia oblitus ſum comedere panẽ meũ. 6 A voce gemitûs mei,(c)adhæſit os meum carni meæ.* 6

INTERP. ÆTHIOP. [a] in omni terra: [b] Deus noſter: [c] Et nos quidem populus [d]& in atriis ejus cum hymnis confitemini illi: [e] quoniam in æternũm *PSAL. C.* [†]tibi: pſallam[a] viam immaculatam:[b] opera iniqua [c] duplici [d] omnia eorum opera iniqua. *PSAL. CI.* [a]ſolitarii, [b] omnem precem ſuam. [c]areſcunt.

Verſio ÆTHIOPICA.

መዝሙር፡ዘተጋንዮ፡፡
ንሀ የብቡ፡ለእግዚአብሔር፡ በኵሉ፡ምድ 1
ር፡፡ ተቀነዩ ፡ ለእግዚአብሔር ፡ በትፍሥሕ
ት፡፡=፡ ወባኡ ፡ ቅድሜሁ ፡ በሐሤት፡፡=፡ 2
አእምሩ፡ ከመ ፡ እግዚአብሔር፡ ውእቱ፡አ 3
ምላክነ፡፡ ወውእቱ ፡ ፈጠረነ ፡ ወአኮ ፡ ንሕ
ነ፡፡=፡ ወንሕነሰ፡ ሕዝቡ፡ አባግዐ፡ መርዔ 4
ቱ፡፡ባኡ፡ ውስተ ፡ አናቅጺሁ፡ በተጋንዮ፡፡ወ
ውስተ፡አዕጻዲሁ፡ በስብሐት፡ አመንዎ፡፡=፡
ወሰብሑ፡ ለስሙ፡ እስመ፡ ኄር፡እግዚአብሔ 5
ር፡፡እስመ ፡ ለዓለም፡ ምሕረቱ፡፡ወለትውል
ደ፡ትውልድ፡ጽድቁ፡፡=፡
መዝሙር ፡ዘዳዊት፡፡
የ ምሕረተ ፡ ወፍትሐ ፡ እሐሊ ፡ ለከ፡፡=፡ 1
እዜምር ፡ ወእሌቡ፡ ፍኖተ፡ ንጹሐ፡፡ማእዜ፡ 2
ትመጽእ፡ኀቤየ፡፡=፡ ወአሐውር ፡በየዋሀት፡ 3
ልብየ፡ማእከለ፡ቤትየ፡፡=፡ ወኢረሰይኩ፡ቅ 4
ድመ፡ አዕይንትየ ፡ ግብረ፡ እኩየ፡፡ጸላእኩ፡
ገበርተ፡ ዐመፃ፡፡=፡ ወኢተለወኒ፡ ልብ፡ ጠዋ 5
ይ፡፡ሶበ፡ተግሕሠ፡እኩይ፡እምኔየ፡ ኢያእም
ርኩ፡፡=፡ ዘያሐሚ፡ ቢጸ፡ በጽሚት፡ኪ 6
ያሁ፡ ሰደድኩ፡፡=፡ ዕቡየ፡ ዐይን፡ ወሥሡ 7
ዐ፡ልብ፡ኢይትሀወል፡ምስሌየ፡፡=፡ አዕይን 8
ትየሰ፡ኀበ፡መሃይምናን፡ምድር፡፡ከመ፡ እንብ
ሮ፡ ምስሌየ፡፡ዘየሐውር ፡ በፍኖት ፡ ንጹሕ፡
ውእቱ፡ ይትለአከኒ፡፡=፡ ወኢይነብር፡ማእ 9
ከለ፡ ቤትየ፡ ዘይገብር፡ ትዕቢተ፡፡ወኢያረት
ዕ፡ ቅድሜየ ፡ ዘይነብብ፡ ዐመፃ፡፡=፡ በጽባ 10
ሕ፡እቀትሎሙ፡ ለኵሎሙ፡ ኃጥኣነ፡ ምድር፡፡
ከመ፡ እሠርዎሙ ፡ እምሀገረ፡ እግዚአብሔ
ር፡ኵሎሙ፡ገበርተ፡ዐመፃ፡፡=፡
ዝዳዊት፡ዘወልደ፡ክርስቶስ፡ካህን፡፡ስብሐት፡
ለአብ፡ወወልድ፡ ወመንፈስ፡ ቅዱስ፡ ኵሉ፡ጊ
ዜ፡፡ ይእዜኒ ፡ ወዘልፈኒ ፡ ወለዓለም፡ ዓለም
አሜን፡፡=፡
ጸሎተ፡ባሕታዊ፡ሶበ፡ ይቴክዝ፡ወይክዑ፡ቅድ
መ፡እግዝአብሔር፡ኵሎ፡ስእለቶ፡፡
የሐ ስምዓኒ፡እግዚኦ፡ጸሎትየ፡፡ወይብጻሕ፡ 1
ቅድሜከ፡ገዓርየ፡፡=፡ ወኢትሚጥ፡ ገጸከ፡ 2
እምኔየ፡፡በዕለተ ፡መንደቤየ፡አጽምእ፡ እዝ
ነከ፡ ኀቤየ፡፡=፡ አመ፡ዕለተ፡ እጼውዐከ፡ፍ 3
ጡነ፡ስምዐኒ፡፡=፡ እስመ፡ኃልቀ፡ከመ፡ጢስ፡ 4
መዋዕልየ፡፡ወነቅጸ፡ ከመ፡ ሣዕር፡ አዕጽምት
የ፡፡=፡ ተቀሠፍኩ፡ወየብሰ፡ ከመ፡ሣዕር፡ል 5
ብየ፡፡እስመ፡ተረስዓኒ፡በሊዐ፡እክል፡፡=፡

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

1 * المزمور التاسع والتسعون * لداود * وهو * ي * استيخن *
2 3 هللوا للرب يا جميع الارض * تعبدوا للرب بفرح * ادخلوا امامه بابتهاج * اعلموا ان الرب هو
4 الله * هو خلقنا ولم نكن * وانا نحن شعبه وغنم رعيته * ادخلوا ابوابه بالشكر وديارة بالتسبيح *
5 اعترفوا له وباركوا اسمه * فان الرب صالح هو وان رحمته الكاينة الي الابد * وحقه من جيل
الي جيل * الليلويا *
1 * المزمور المايه * لداود * وهو * يو * استيخن *
2 يا رب اني بالرحمة والعدل اسبحك * ارتل 2 والتمس طريقا لا ريب فيها * الي متي تاتي الي * مشيت
3 في وسط بيتي بلا شر في قلبي * لم اجعل امام عيني شيا يخالف الناموس * ابغضت عاملي
4 5 المعاصي * لم يلصق بي قلب معوج * عند ميل الشرير علي لم اعلم * والذي يستغيب
6 صاحبه هذا كنت اطرده * لم اواكل المتعالي العين الشره القلب * عيناي علي مومني الارض
7 ليجالسوني * السالك طريقا بلا عيب هذا كان يخدمني * المستكبر لم يكن في وسط بيتي *
8 المتكلم بالظلم لم يستقم امام عيني * في اوقات الغدوات كنت اقتل جميع خطاة الارض *
لكي ابيد من مدينة الرب جميع عاملي الاثم * الليلويا *
* المزمور المايه وواحد *
1 * صلاة للمسكين اذا حزن وافرغ دعاءه الي الرب * * وهو * نه * استيخن *
2 3 * يا رب استجب صلاتي * وليصعد امامك ابتهالي * لا تصرف وجهك عني في اليوم الذي
4 اضيق فيه * اصغ الي بسمعك في اليوم الذي اصرخ اليك فيه * اسرع واجبني * فان ايامي
5 اضمحلت مثل الدخان * وعظامي في مثل مقلي قد انقلت * ذبلت مثل العشب * ويبس
6 قلبي لاني نسيت اكل خبزي * من صوت تنهدي عظمي التصق بلحمي *

PSAL. XCIX.
Davidis. Verſ.10. 1
*Jubilate Domino O univerſa terra: Sub- 2
jicite vos Domino hilariter: introite
ante eum exultanter. Scitote Dominum 3
eſſe Deum,ipſum creâſſe nos dum nil eſſe-
mus: nos autem populum ejus eſſe et oves
paſcuæ ejus. Introite portas ejus cum 4
gratiarum actione,& atria ejus cum lau-
datione: confitemini ei,& benedicite no-
mini ejus. Nam Dominus bonus eſt: & 5
verò miſericordia ejus permanens eſt in
æternum, & veritas ejus à generatione
in generationem. Alleluja.*
PSAL. C.
Davidis. Verſ.16. 1
*O Domine, equidem cum miſericordia
& æquitate laudabo te, pſallam, Et 2
quæram viam in qua nullum ſit crimen.
Quando venies ad me? ambulavi in me-
dio domûs meæ ſine malitia in corde meo:
Non poſui ante oculos meos quicquã con- 3
tradicens legi: odivi facientes prævari-
cationes. Non adhæſit mihi cor perverſum. 4
Quum deflecteret quis improbus in me,
non cognoſcebam. Et eum qui detractat 5
de proximo ſuo, hunc ipſum perſequebar.
Non comedi cum elato ſupercilio & avi-
do corde. Oculi mei ſuper fideles terræ,ut 6
conſideant mecum. Ambulans in via irre-
prehenſibili, hic mihi miniſtrabat. Super- 7
bus non fuit in domo mea. Loquens per-
versè,non ex exit ſe corã oculis meis. Tem- 8
poribus matutinis interficiebam omnes pec-
catores terræ,ut perderem de civitate Do-
mini omnes operantes iniquitatem. Alle-
luja.*
PSAL. CI.
Oratio pauperis quum triſtis eſt, 1
& effundit precem ſuam ad Do-
minum. Verſ.55.
*O Domine, exaudi orationem meam, et 2
aſcendat coram te ſupplicatio mea.
Ne avertas faciem tuam à me in die quâ 3
anguſtiabor. Inclina ad me auditum tuum
in die quâ clamabo ad te. Propera & ex-
audi me, Quoniam dies mei evanuerunt 4
veluti fumus: & oſſa mea quaſi in ſarta-
gine frixa ſunt. Elangui inſtar herbæ, & 5
aruit cor meum: quia oblitus ſum come-
ſtionem panis mei. Ob vocem gemitûs mei 6
os meum adhæſit carni meæ.*

תהלים : קג

fui & ,Vigilavi .ſolitudinum *falco* ſicut fui : deſerti pellicano ſum Aſſimilatus
7 8 דָּמִיתִי לִקְאַת מִדְבָּר הָיִיתִי כְּכוֹס חֳרָבוֹת׃ שָׁקַדְתִּי וָאֶהְיֶה
: mei inimici me afficiebant probris die Tota .tectum ſuper ſolitarius paſſer ſicut
9 כְּצִפּוֹר בּוֹדֵד עַל־גָּג׃ כָּל־הַיּוֹם חֵרְפוּנִי אוֹיְבָי
: manducavi panem tanquam cinerem Quia .jurabant me adverſum,me inſanientes
10 מְהוֹלָלַי בִּי נִשְׁבָּעוּ׃ כִּי־אֵפֶר כַּלֶּחֶם אָכָלְתִּי
,me elevâſti quia:tuæ iræ &,tuæ indignationis *faciebꝰ* A .miſcui fletu cum meũ potum &
11 וְשִׁקֻּוַי בִּבְכִי מָסָכְתִּי׃ מִפְּנֵי־זַעַמְךָ וְקִצְפֶּךָ כִּי נְשָׂאתַנִי
tu & .arui herba ſicut ego & : inclinata umbrá ſicut mei Dies .me projeciſti &
12 13 וַתַּשְׁלִיכֵנִי׃ יָמַי כְּצֵל נָטוּי וַאֲנִי כָּעֵשֶׂב אִיבָשׁ׃ וְאַתָּה
,exurges Tu .generatione &,generatione in tui memoria &:*ſedebis* ſeculum in Domine
14 יְהוָה לְעוֹלָם תֵּשֵׁב וְזִכְרְךָ לְדֹר וָדֹר׃ אַתָּה תָקוּם
bene voluerũt Quia.*ſtatutũ* tempꝰ venit quia,ejꝰ miſerendi tempꝰ quia :Sijon miſereberis
15 תְּרַחֵם צִיּוֹן כִּי־עֵת לְחֶנְנָהּ כִּי־בָא מוֹעֵד׃ כִּי־רָצוּ
gentes timebunt Et .ſunt miſerti ejus pulveris & : ejus lapidibus tui ſervi
16 עֲבָדֶיךָ אֶת־אֲבָנֶיהָ וְאֶת־עֲפָרָהּ יְחֹנֵנוּ׃ וְיִירְאוּ גוֹיִם
ædificavit Quia .tuam gloriam terræ reges omnes & :Domini nomen
17 אֶת־שֵׁם יְהוָה וְכָל־מַלְכֵי הָאָרֶץ אֶת־כְּבוֹדֶךָ׃ כִּי־בָנָה
non & : *ſolitarii* orationem ad Reſpexit .ſua gloria in videbitur:Sijon Dominus
18 יְהוָה צִיּוֹן נִרְאָה בִּכְבוֹדוֹ׃ פָּנָה אֶל־תְּפִלַּת הָעַרְעָר וְלֹא
creatus populus & : *noviſſimæ generationi* hoc Scribatur .eorum orationem ſprevit
19 בָזָה אֶת־תְּפִלָּתָם׃ תִּכָּתֶב זֹאת לְדוֹר אַחֲרוֹן וְעַם נִבְרָא
in cœlis de Dominus:ſuæ ſanctitatis excelſo de proſpexit Quia .*Jah* laudabit
20 יְהַלֶּל־יָהּ׃ כִּי־הִשְׁקִיף מִמְּרוֹם קָדְשׁוֹ יְהוָה מִשָּׁמַיִם אֶל־
narrandũ Ad .mortis filios *ſolvendum ad* : *vincti* gemitum *audiendum Ad* .aſpexit terram
21 22 אֶרֶץ הִבִּיט׃ לִשְׁמֹעַ אֶנְקַת אָסִיר לְפַתֵּחַ בְּנֵי תְמוּתָה׃ לְסַפֵּר
;ſimul *populos congregari In* .Jeruſalaim in ejus laudem & : Domini nomen Sijon in
23 בְּצִיּוֹן שֵׁם יְהוָה וּתְהִלָּתוֹ בִּירוּשָׁלִָם׃ בְּהִקָּבֵץ עַמִּים יַחְדָּו
.meos dies abbreviavit,meã fortitudinẽ via in Afflixit.Domino *ſerviendum ad* regna &
24 וּמַמְלָכוֹת לַעֲבֹד אֶת־יְהוָה׃ עִנָּה בַדֶּרֶךְ כֹּחִי קִצַּר יָמָי׃
generationũ generationẽ in:meorũ dierũ dimidio in me *facias aſcendere* ne mi Deꝰ,*Dicam*
25 אֹמַר אֵלִי אַל־תַּעֲלֵנִי בַּחֲצִי יָמָי בְּדוֹר דּוֹרִים
Ipſi .cœli tuarum manuum opus & : fundâſti terram Antea .tui anni
26 27 שְׁנוֹתֶיךָ׃ לְפָנִים הָאָרֶץ יָסַדְתָּ וּמַעֲשֵׂה יָדֶיךָ שָׁמָיִם׃ הֵמָּה
veſtimentum ſicut : veteraſcent veſtis ſicut ipſi omnes & ,ſtabis tu & , peribunt
יֹאבֵדוּ וְאַתָּה תַעֲמֹד וְכֻלָּם כַּבֶּגֶד יִבְלוּ כַּלְּבוּשׁ
Filii .conſumentur non tui anni & ,ipſe tu Et .mutabuntur & ,eos mutabis
28 29 תַּחֲלִיפֵם וְיַחֲלֹפוּ׃ וְאַתָּה־הוּא וּשְׁנוֹתֶיךָ לֹא יִתָּמּוּ׃ בְּנֵי־
.ſtabilietur *tuas facies ad* eorum ſemen & :habitabunt tuorum ſervorum
עֲבָדֶיךָ יִשְׁכּוֹנוּ וְזַרְעָם לְפָנֶיךָ יִכּוֹן׃

PSAL. CIII. קג

nomini .mea interiora omnia & : Domino mea anima Benedic .David Ipſi
1 לְדָוִד בָּרְכִי נַפְשִׁי אֶת־יְהוָה וְכָל־קְרָבַי אֶת־שֵׁם
.ejus ſanctitatis
קָדְשׁוֹ׃

תרגום TARGUM.

7 אדמית לקקתא דמדברא הוית היך קפופא די
8 בארעא נגובתא : שקדית כל ליליא והויתי היך
9 צפר דפרח ונייד בלחודיה על אגרא : כל יומא
יחסדון לי בעלי דבבי מחלעבי במימרי קימו
10 מגן : ארום אפרא היך מזונא סעדית ושקיותי
11 בבכותא מזגית : מן קדם רוגזך וקצפך ארום
12 נטלתני וטלקתני : יומי היך טולא דיצלי ואנא
13 היך עסבא איבש : ואת יי מדורך לעלם בשמיא
14 תתב ודכרנך לדר ודר : את תקום תרחם ציון
ארום עדן למחוס עלה ארום אתא זמנא :
15 ארום רעו עבדך ית אבנהא וית עפרהא יחיסון :
16 וידחלון עמיא ית שמא דיי וכל מלכיא דארעא
17 ית יקרך : ארום אתבני במימרא דיי קרתא
18 דציון אתגלי ביקריה : אתפני לות צלותיה
19 דמצטדין ולא בסר ית צלותהון : תתכתב
צלותא דא לדר בתרי ועמא דעתיד לאתבראה
20 ישבח יה : ארום אודיק משמי מרומא דקודשיה
21 יי מן שמיא לארעא אסתכל : למשמע אניקותא
דאסיריא למשרי בניא דמסירין למיתותא :
22 למשתעי בציון שמא דיי ותושבחיה בירושלם :
23 באתכנשות עמין כחדא ומלכותא למפלח
24 קדם יי : אסתגף מן טורח דאורח גלותא חילי
25 אתקצרון יומי : אימר קדם אלהי לא תסלקנני
מן עלמא בפלגות יומי איתי יתי לעלמא דאתי
26 מטול די בדרי דריא שנתך : מן שרויא דאתבריו
כל בריתא ארעא יסדתא ועובדי ידך שמיא :
27 הנון יהובדון ואת תקום וכולהון היך לבושא
יתבלין היך אצטלי תחליפנון ויתחלפון :
28 ואת הוא די בריתנון ושנתך לא משתלמן :
29 בני עבדך ישרון בארעא וזרעיתהון קדמך
יתקנון :

קג

1 על יד דוד אתאמר בנבואה בריכי נפשי ית שמא
דיי וכל בני גוי ית שמא דקודשיה :

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Similis factꝰ ſum pellicano deſerti ; factus 7
ſum ſicut noctua quæ eſt in terra torrefacta.
Vigilavi tota nocte, & fui ſicut paſſer qui 8
volatu movetur, ſolitarius in tecto. Tota 9
die exprobrant mihi inimici mei, irriſores
mei in verbo meo juraverunt in vanum.
Quoniam cinerem tanquam cibum comedi, 10
& potus meos fletu temperavi. Propter 11
indignationem tuã & iram tuam, quoniam
elevâſti me & projeciſti me. Dies mei ſicut 12
umbra quæ declinavit, & ego ſicut fœnum
areſcam. Tua autem Domine habitatio in 13
æternũ in cœlis permanet, & memoria tua
in generationem & generationem. Tu ex- 14
urgens miſereberis Sion, quoniam tempus
eſt ut miſerearis ejus, quoniam venit tem-
pus. Quoniam placuerunt ſervis tuis lapi- 15
des ejus, & pulveris ejus miſerebuntur.
Et timebunt populi nomen Dñi,& omnes 16
reges terræ gloriam tuam. Quoniam *ædifi-* 17
cata eſt verbo Domini urbs Sion, manife-
ſtatus eſt in gloria ſua. Reſpexit ad ora- 18
tionem deſolatorum, & non ſprevit pre-
cationem eorum. Scribetur *oratio iſta* pro 19
generatione noviſſima, & populus qui in
futurum creandus eſt,laudabit Deum. Quo- 20
niam proſpexit de cœlis excelſis ſanctitatis
ſuæ, Dominus de cœlis in terram aſpexit:
Ut audiret gemitum compeditorum, & ſol- 21
veret filios qui morti traditi ſunt. Ut an- 22
nuncietur in Sion nomen Domini, & laus
ejus in Jeruſalem. Dum congregabuntur 23
populi in unum, & regna, ut ſerviant co-
ram Domino. Afflicta eſt ob laborem iti- 24
neris *exilii* virtus mea : abbreviati ſunt
dies mei. Dicam coram Deo meo : Ne 25
tollas me de mundo in dimidio dierum
meorum : adduc me ad mundum ventu-
rum, quoniam in generationes generatio-
num ſunt anni tui. A principio cùm crea- 26
rentur omnes creaturæ,terram fundâſti, &
opera manuum tuarum ſunt cœli. Ipſi peri- 27
bunt, & tu permanebis; & omnes ſicut ve-
ſtimentum veteraſcent : tanquam ſtolá mu-
tabis eos, & mutabuntur. Et tu idem qui 28
creâſti eos, & anni tui non deficiunt. Fi- 29
lii ſervorum tuorum inhabitabunt terram,
& ſemen eorum coram te dirigetur.

Per manum David,dictꝰ *per prophetiam.* 1

SSAL. CIII.

BEnedic anima mea nomini Domini, &
omnes filii viſcerum meorum nomini ſan-
ctitatis ejus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

7 8 * ܘܐܬܕܡܝܬ ܠܩܩܐ ܕܒܡܕܒܪܐ : ܘܗܘܝܬ ܐܝܟ ܩܘܦܐ ܕܒܚܘܪܒܐ܂ * ܫܗܪܬ ܘܗܘܝܬ ܒܠܚܘܕܝ :
9 ܐܝܟ ܨܦܪܐ ܕܦܪܚܐ ܥܠ ܐܓܪܐ܂ * ܟܠܗ ܝܘܡܐ ܚܣܕܘܢܝ ܒܥܠܕܒܒܝ : ܘܡܫܒܚܢܝ ܒܝ
10 11 ܝܡܘ܂ * ܡܛܠ ܕܩܛܡܐ ܐܝܟ ܠܚܡܐ ܐܟܠܬ : ܘܡܫܬܝܝ ܒܒܟܝܐ ܡܙܓܬ܂ * ܡܢ ܩܕܡ
12 ܚܡܬܟ ܘܪܘܓܙܟ : ܕܐܪܝܡܬܢܝ ܘܫܕܝܬܢܝ܂ * ܘܝܘܡܝ ܐܝܟ ܛܠܠܐ ܐܬܪܟܢܘ : ܘܐܢܐ ܝܒܫܬ ܐܝܟ
13 14 ܥܣܒܐ܂ * ܘܐܢܬ ܡܪܝܐ ܠܥܠܡ ܩܐܡ ܐܢܬ : ܘܕܘܟܪܢܟ ܠܕܪܕܪܝܢ܂ * ܐܢܬ ܩܘܡ ܘܐܬܪܚܡ ܥܠ
15 ܨܗܝܘܢ : ܡܛܠ ܕܐܬܐ ܙܒܢܐ ܠܡܬܪܚܡܘ ܥܠܝܗ܂ * ܡܛܠ ܕܐܬܒܣܡܘ ܥܒܕܝܟ ܒܟܐܦܝܗ
16 ܘܠܥܦܪܗ ܪܚܡܘ : * ܢܕܚܠܘܢ ܥܡܡܐ ܠܫܡܟ ܡܪܝܐ܂ ܘܟܠܗܘܢ ܡܠܟܐ ܕܐܪܥܐ ܠܐܝܩܪܟ :
17 18 * ܡܛܠ ܕܒܢܐ ܡܪܝܐ ܠܨܗܝܘܢ : ܘܐܬܚܙܝ ܒܫܘܒܚܗ : * ܘܐܬܦܢܝ ܠܘܬ ܒܥܘܬܐ ܕܡܣܟܢܐ܂
19 ܘܠܐ ܫܛ ܨܠܘܬܗܘܢ : * ܬܬܟܬܒ ܗܕܐ ܠܕܪܐ ܐܚܪܢܐ܂ ܘܥܡܐ ܕܡܬܒܪܐ ܢܫܒܚ ܠܡܪܝܐ :
20 21 * ܡܛܠ ܕܐܕܝܩ ܡܢ ܡܪܘܡܐ ܕܩܘܕܫܗ܂ ܡܪܝܐ ܡܢ ܫܡܝܐ ܠܐܪܥܐ ܚܪ : * ܠܡܫܡܥ ܬܢܚܬܗ
22 ܕܐܣܝܪܐ܂ ܘܠܡܫܪܐ ܒܢܝܐ ܡܢ ܡܘܬܐ : * ܕܢܫܬܥܘܢ ܒܨܗܝܘܢ ܫܡܗ ܕܡܪܝܐ܂ ܘܬܫܒܚܬܗ
23 24 ܒܐܘܪܫܠܡ : * ܡܐ ܕܐܬܟܢܫܘ ܥܡܡܐ ܐܟܚܕܐ܂ ܘܡܠܟܘܬܐ ܠܡܦܠܚܘ ܠܡܪܝܐ : * ܡܟܟܘ
25 ܚܝܠܝ ܒܐܪܥܐ܂ ܘܒܨܝܪܘܬܐ ܕܝܘܡܝ * ܐܡܪ ܠܝ : ܠܐ ܬܫܩܠܢܝ ܒܦܠܓܘܬ ܝܘܡܝ܂ ܡܛܠ ܕܒܕܪܕܪܝܢ
26 27 ܫܢܝܟ : * ܡܢ ܠܩܘܕܡܝܢ ܐܪܥܐ ܫܬܐܣܬ܂ ܘܥܒܕ ܐܝܕܝܟ ܫܡܝܐ : * ܗܢܘܢ ܢܥܒܪܘܢ ܘܐܢܬ
28 ܩܐܡ ܐܢܬ܂ ܘܟܠܗܘܢ ܐܝܟ ܠܒܘܫܐ ܢܒܠܘܢ : ܘܐܝܟ ܡܪܛܘܛܐ ܢܬܚܠܦܘܢ܂ * ܘܐܢܬ ܐܝܟ
29 ܕܐܝܬܝܟ ܐܢܬ ܘܫܢܝܟ ܠܐ ܢܫܠܡܢ :* ܘܒܢܝ ܥܒܕܝܟ ܢܥܡܪܘܢ ܒܐܪܥܐ܂ ܘܙܪܥܗܘܢ ܩܕܡܝܟ ܢܬܩܢ܂

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܓ *

1 * ܕܕܘܝܕ܂ ܥܠ ܩܪܝܪܘܬܐ ܕܫܠܛܬ ܒܗ ܒܣܝܒܘܬܐ܂ ܘܐܦ ܡܠܦܢܘܬܐ
ܘܬܘܕܝܬܐ ܡܢ ܓܒܪܐ ܕܐܠܗܐ܂ ܩܝܡܐ ܡܙ܂
ܒܪܟܝ ܢܦܫܝ ܠܡܪܝܐ܂ ܘܟܠܗܘܢ ܓܪܡܝ ܠܫܡܗ ܩܕܝܫܐ :

Et ſimilis factus ſum pellicano qui eſt in ſoli- 7
tudine, factúſque ſum velut noctua in ruina :
Seceſſi, & fui ſolus inſtar paſſeris volitantis 8
ſuper tecto : Totâ die conviciati ſunt in me 9
hoſtes mei, & commendatores mei per me
jurârunt. Nam cinerem ut panem comedi,& 10
potum meum fletu miſcui: Præ furore tuo & 11
indignatione tuâ,quia ſublimâſti me, tum de-
jeciſti me. Diéſque mei velut umbra declina- 12
ti ſunt, & ego arui ſicut fœnum. Tu autem 13
Domine,in æternum permanens es,& memo-
ria tua in æva. Tu exurge & miſerere Sionis, 14
quia advenit tempus miſerendi illius; Nam 15
oblectati ſunt ſervi tui lapidibus ejus, & pul-
verem ejus dilexerunt. Timebunt gentes no- 16
men tuum Domine,& omnes reges terræ ma-
jeſtatem tuam. Ædificat enim Dominus Sion, 17
& apparet cum gloria. Convertitúrque ad 18
precem pauperum,& non deſpicit orationes
eorum. Scribetur hoc generationi alteri, & 19
populus qui creabitur, laudabit Dominum.
Quia proſpexit de excelſo ſanctitatis ſuæ:Do- 20
minus de cœlo in terram aſpexit, Ad audi- 21
endum gemitum vincti,& ad ſolvendos filios
à morte: Ut enarrent in Sion nomen Domini, 22
& laudes ejus in Jeruſalem,Quando congre- 23
gabuntur gentes ſimul,ac regna ad colendum
Dominum. Humiliaverunt vires meas in ter- 24
ra:& paucitatem dierum meorum, Dic mihi. 25
Ne me tollas in medio dierũ meorũ quando-
quidem in generationem generationum ſunt
anni tui. Ab antiquo terram firmâſti, & opus 26
manuum tuarum ſunt cœli; Ipſi præteribunt, 27
& tu permanens es : omnéſque ſicut veſtis
conſumentur, & ut pallium mutabuntur; Tu 28
verò es ut es, & anni tui nequaquam finien-
tur. Et filii ſervorum tuorum cõmorabuntur 29
in terra, & ſemen eorum coram te perſtabit.

PSAL. CIII.

Davidis. De frigiditate qua dominata eſt 1
in eum tempore ſenectutis. Item documen-
tum : & gratiarum actio à viris Dei ob-
lata. Verſ. 47.

BEnedic anima mea Domino, & omnia
oſſa mea nomini ejus ſancto.

Verſio VULG. LAT.

7 Similis factus ſum pellicano ſolitudi-
nis:factꝰ ſum ſicut nycticorax in domi-
8 cilio. Vigilavi, & factus ſum ſicut paſ-
9 ſer ſolitarius in tecto. Totâ die expro-
brabãt mihi inimici mei: & qui lauda-
10 bant me adverſùm me jurabant. Quia
cinerem tanquã panem manducabam,
11 & potum meũ cum fletu miſcebam, A
facie iræ & indignationis tuæ: quia
12 elevans alliſiſti me. Dies mei ſicut um-
bra declinaverunt: & ego ſicut fœnũ
13 arui. Tu autem, Domine, in æternum
permanes: et memoriale tuum in gene-
14 rationem & generationẽ. Tu exurgens
miſereberis Sion: quia tempus miſe-
15 rendi ejus, quia venit tempus. Quoniã
placuerunt ſervis tuis lapides ejus: &
16 terræ ejus miſerebuntur. Et timebunt
gentes nomẽ tuũ, Domine, & omnes
17 reges terræ gloriam tuam. Quia ædifi-
cavit Dominus Sion: & videbitur in
18 gloria ſua. Reſpexit in orationem hu-
milium: & non ſprevit precem eorum.
19 Scribantur hæc in generatione altera:
& populus, qui creabitur, laudabit
20 Dominum: Quia proſpexit de excelſo
ſancto ſuo: Dominus de cœlo in ter-
21 ram aſpexit: Ut audiret gemitus com-
peditorum: ut ſolveret filios interem-
22 ptorum: Ut annuntient in Sion no-
men Dñi: & laudem ejus in Jeruſalẽ.
23 In conveniendo populos in unũ, et re-
24 ges ut ſerviant Domino. Reſpondit ei
in via virtutis ſuæ: Paucitatem die-
25 rum meorum nuntia mihi. Ne revoces
me in dimidio dierum meorum: in ge-
nerationem & generationem anni tui.
26 Initio tu, Domine, terram fundâſti: &
27 opera manuum tuarum ſunt cœli. Ipſi
peribunt, tu autem permanes: & o-
mnes ſicut veſtimentũ veteraſcent. Et
ſicut opertorium mutabis eos, & mu-
28 tabuntur: Tu autem idem ipſe es, &
29 anni tui non deficient. Filii ſervorum
tuorum habitabunt: et ſemen eorum
in ſeculum dirigetur.

1 Ipſi David. CII.

Benedic anima mea Domino: et omnia, quæ intra me ſunt, nomini ſancto ejus.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

7 † Ὡμοιώθην πελεκᾶνι ἐρημικῷ, † ἐγενήθην ὡσεὶ
8 νυκτικόραξ ἐν οἰκοπέδῳ. † Ἠγρύπνησα, καὶ (δ)
ἐγενήθην ὡσεὶ στρουθίον (ε) μονάζον ἐπὶ δώματι.
9 † Ὅλην τὴν ἡμέραν ὠνείδιζόν με οἱ ἐχθροί μου, † καὶ
10 οἱ ἐπαινοῦντές με κατ' ἐμοῦ ὤμνυον. † Ὅτι σποδὸν
ὡσεὶ ἄρτον ἔφαγον, † καὶ τὸ πόμα μου μετὰ κλαυθμοῦ
11 ἐκίρνων, † Ἀπὸ προσώπου τῆς ὀργῆς σου καὶ τοῦ θυ-
12 μοῦ σου, † ὅτι ἐπάρας κατέρραξάς με. † Αἱ ἡμέραι
μου ὡσεὶ σκιὰ ἐκλίθησαν, † (ζ) κἀγὼ ὡσεὶ χόρτος
13 ἐξηράνθην. † Σὺ δὲ κύριε εἰς τὸν αἰῶνα μένεις, † καὶ
14 τὸ μνημόσυνόν σου εἰς γενεὰν καὶ γενεάν. † Σὺ ἀνα-
στὰς οἰκτειρήσεις τὴν Σιών, † ὅτι καιρὸς τοῦ οἰκτειρῆ-
15 σαι αὐτήν, ὅτι ἥκει καιρός. † Ὅτι εὐδόκησαν οἱ
δοῦλοί σου τοὺς λίθους αὐτῆς, † καὶ τὸν χοῦν αὐτῆς οἰ-
16 κτειρήσουσι. † Καὶ φοβηθήσονται τὰ ἔθνη τὸ ὄνομά
σου κύριε, † καὶ πάντες οἱ βασιλεῖς (η) τὴν δόξαν σου.
17 † Ὅτι οἰκοδομήσει κύριος τὴν Σιών, † καὶ ὀφθήσεται
18 ἐν τῇ δόξῃ αὐτοῦ. † Ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν προσευ-
χὴν τῶν ταπεινῶν, † καὶ οὐκ ἐξουδένωσε τὴν δέησιν αὐ-
19 τῶν. † Γραφήτω αὕτη εἰς γενεὰν ἑτέραν, † καὶ λαὸς
20 ὁ κτιζόμενος αἰνέσει τὸν κύριον. † Ὅτι ἐξέκυψεν ἐξ
ὕψους ἁγίου αὐτοῦ, † κύριος ἐξ οὐρανοῦ ἐπὶ τὴν γῆν
21 ἐπέβλεψε, † Τοῦ ἀκοῦσαι (θ) τοῦ στεναγμοῦ τῶν πεπεδη-
22 μένων, † τοῦ λῦσαι τοὺς υἱοὺς τῶν τεθανατωμένων, † Τοῦ
ἀναγγεῖλαι ἐν Σιὼν τὸ ὄνομα κυρίου, † καὶ τὴν αἴνεσιν
23 αὐτοῦ ἐν Ἱερουσαλήμ. † Ἐν τῷ (ι) συναχθῆναι λαοὺς
ἐπὶ τὸ αὐτό, † καὶ βασιλεῖς τοῦ δουλεύειν τῷ κυρίῳ.
24 † Ἀπεκρίθη αὐτῷ ἐν ὁδῷ ἰσχύος αὐτοῦ, † τὴν ὀλι-
25 γότητα τῶν ἡμερῶν μου ἀνάγγειλόν μοι. † Μὴ ἀνα-
γάγῃς με ἐν ἡμίσει ἡμερῶν μου, † ἐν γενεᾷ γενεῶν
26 τὰ ἔτη σου. † Κατ' ἀρχὰς (κ) τὴν γῆν σὺ κύριε ἐθε-
μελίωσας, † καὶ ἔργα τῶν χειρῶν σου εἰσὶν οἱ οὐρανοί.
27 † Αὐτοὶ ἀπολοῦνται, σὺ δὲ διαμενεῖς· † καὶ πάντες
ὡς ἱμάτιον παλαιωθήσονται, † καὶ ὡσεὶ περιβόλαιον ἑ-
28 λίξεις αὐτούς, καὶ ἀλλαγήσονται. † Σὺ δὲ ὁ αὐτὸς εἶ,
29 καὶ τὰ ἔτη σου οὐκ ἐκλείψουσιν. † (λ) Οἱ υἱοὶ τῶν δούλων
σου κατασκηνώσουσι, † καὶ τὸ σπέρμα αὐτῶν εἰς τὸν
αἰῶνα κατευθυνθήσεται.

MS.A. (δ) ἐγενόμην ὡς (ε) μονάζων (ζ) καὶ ἐγὼ (η) τῆς γῆς τὴν (θ) τὸν στεναγμὸν (ι) ἐπισυναχθῆναι (κ) σὺ κύριε τὴν γῆν (λ) Υἱοὶ

1 Τῷ Δαυίδ. ρβ'.

† Εὐλόγει ἡ ψυχή μου τὸν κύριον, † καὶ πάντα τὰ ἐντός μου τὸ ὄνομα τὸ ἅγιον αὐτοῦ.

Verſ. GRÆ. LXX. Intep. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

7 Similis factꝰ ſum Pelicano,(f) qui 7
habitat in ſolitudine: factꝰ ſum ſicut
Nycticorax in(g)[d]parietinis: 8 Vi- 8
gilavi, & factus ſum, ſicut paſſer(b)
ſolitariꝰ in tecto. 9 Totâ die expro- 9
brabant me inimici mei: et(i) qui[e]
laudabant me, adverſùs me jurabãt.
10 Quia cinerem tanquã panẽ man- 10
ducabã, & potum meũ cũ fletu[f]
miſcebam. 11 A facie iræ tuæ, & 11
indignationis tuæ, quia elevans alli-
ſiſti me. 12 Dies mei, ſicut umbra de- 12
clinaverunt: & ego, ſicut fœnũ, arui.
13 Tu autẽ, Domine, in æternũ per- 13
manes: & memoriale tuum in gene-
rationẽ, & generationẽ. 14 Tu [g] 14
exurgens miſereberis (k) Sion, quia
tempus [h]miſerendi ejus, quia venit
tempus. 15 Quoniã beneplacitũ(l) 15
habuerunt ſervi tui in lapides ejus:
& [i] pulveris ejus miſerebuntur.
16 Et timebunt gentes nomen tuum, 16
Domine, & omnes reges gloriã tuã.
17 Quoniã ædificabit Dominus Si- 17
on: et videbitur in gloria ſua. 18 Re- 18
ſpexit in orationem[k]humiliũ: &
non ſprevit preces eorũ. 19(m) Scri- 19
batur hæc in generationẽ alterã: &
populus, qui creatur, laudabit Domi-
nũ. 20 Quoniã proſpexit de [l]ex- 20
celſo ſancto ſuo: Dominus de cœlo in
terram aſpexit: 21 ut audiret gemi- 21
tũ compeditorũ: ut [m]ſolvat filios
mortificatorũ. 22 ut annuntient in 22
Sion nomẽ Domini: & laudẽ ejus in
Hieruſalem. 23 In conveniendo po- 23
pulos in unum; & (n)reges, ut ſer-
viant Domino. 24 Reſpondit ei in 24
via (o)fortitudinis ſuæ: exiguitatem
dierũ meorum annuntia mihi. 25 Ne 25
[n]revoces me in dimidio dierũ me-
orum: in (p) generatione generationũ
anni tui. 26 In principio terrã tu, Do- 26
mine, fundâſti: & opera manuũ tu-
arum ſunt cœli. 27 Ipſi peribunt: tu 27
autẽ permanes. Et omnes, ſicut veſti-
mentum, veteraſcent: 28 & ſicut o- 28
pertoriũ, (q)[o]volves eos, et muta-
buntur. Tu autem idẽ ipſe es: & anni 28
tui non deficient. 29 Filiĩ ſervorum 29
tuorum habitabunt[p]: & ſemen eo-
rum in ſeculũ [q]dirigetur.

(a) Ipſi David. CII. 1

Benedic anima mea Dominum: & [a] omnia interiora mea nomen ſanctum ejus.

Verſio ÆTHIOPICA.

እምቃለ፡ገዓርየ፡ጠግአ፡ለሠጋየ፡ ደበ፡ ለዕጽ 6
ምትየ፡፡=፦ ወኮንኩ፡ከመ፡ አድገ፡ መሬብ፡ 7
ዘገደም፡፡ወኮንኩ፡ከመ፡ ጉጓ፡ ውስተ፡ቤተ፡
ሰሊት፡፡=፦ ተጋሕኩ፡ወኮንኩ፡ ከመ፡ ዖፍ፡ 8
ባሕታዊ፡ውስተ፡ናሕስ፡፡=፦ ወኵሎ፡ አሚ 9
ረ፡ይጼእሉኒ፡ጸላእትየ፡፡ወእለኒ፡ ይሰድዱኒ፡ይ
ሰካተዩ፡ላዕሌየ፡፡=፦ እስመ፡ሐመደ፡ ከመ፡ 10
እክል፡ ቀማሕኩ፡፡ወስቴየኒ፡ ምስለ፡ አንብዕ
የ፡ሰተይኩ፡፡=፦ እምገጸ፡ መቅሠፍተ፡መዐ 11
ትከ፡፡እስመ ፡ አንሣእከኒ ፡ ወነጸሕከኒ፡፡=፦
ወመዋዕልየኒ ፡ ከመ፡ ጽላሎት፡ ኀለፈ፡፡ወአነ 12
ኒ፡ከመ፡ሣዕር፡የበስኩ፡፡=፦ ወአንተሰ፡እግዚ 13
አ፡ለዓለም፡ ትነብር፡፡ወዝክርከኒ፡ ለትውል
ደ፡ትውልድ፡፡=፦ ተንሥእ፡እግዚአ፡ወተሣ 14
ሀላ፡ለጽዮን፡፡እስመ፡ ጊዜሃ፡ ውእቱ ፡ ከመ፡
ትሣሀላ፡ወበጽሐ፡ እድሜሃ፡፡=፦ እስመ፡ሠ 15
ምሩ፡ አግብርቲከ፡ እበኒሃ፡፡ወአክበርዎ፡ ለ
መሬታ፡፡=፦ ወይፈርሁ፡አሕዛብ፡ስመከ፡እ 16
ግዚኦ ፡፡ ወኵሎሙ ፡ ነገሥት ፡ ለስብሐቲ
ከ፡፡=፦ እስመ፡ ያሐንጻ፡ እግዚአብሔር፡ለ 17
ጽዮን፡፡ወያስተርኢ፡ በስብሐቲሁ፡፡=፦ ወነ 18
ጸረ፡ ላዕለ፡ ጸሎተ፡ ነዳይ፡፡ወኢታቀዎጸ፡ስ
እለቶሙ፡፡=፦ ወተጽሕፈት፡ዛቲ፡ ለካልእ፡ 19
ትውልድ፡፡ወሕዝብ ፡ ዘይትፈጠር ፡ ይሴብ
ሖ፡ለእግዚአብሔር፡፡=፦ እስመ፡ኀወጸ፡ እ 20
ምሰማይ፡መቅደሱ፡፡እግዚአብሔር፡ ኀወጸ፡
እምሰማይ፡ዲበ፡ምድር፡፡=፦ ከመ፡ ይስማ 21
ዕ፡ ገዐሮሙ ፡ ለሙቁሓን፡፡ወከመ ፡ ያሕይዎ
ሙ፡ለደቂቀ፡ ቅቱላን፡፡=፦ ከመ፡ ይንግሩ፡በ 22
ጽዮን፡ስመ፡ እግዚአብሔር፡፡ወስብሐቲሁኒ፡
በኢየሩሳሌም፡፡=፦ ሶበ፡ ተጋብኡ ፡ አሕዛ 23
ብ፡ኅቡረ፡፡ወነገሥትኒ፡ከመ፡ይትቀነዩ፡ ለእ
ግዚአብሔር፡፡=፦ ወተሰጥዎሙ ፡ በፍናተ፡ 24
ኀይሉ፡፡ንግረኒ ፡ ውሕደኒ፡ ለመዋዕልየ፡፡=፦
ወኢትስደኒ፡በመንፈቀ፡ ዓመትየ፡፡ለትውልደ፡ 25
ትውልድ፡ዓመቲከ፡፡=፦ አንተ፡ እግዚኦ፡ አ 26
ቅደምከ፡ሣርታ ፡ ለምድር፡፡ወግብረ፡ እደዊ
ከ፡ እማንቱ፡ ሰማያት፡፡=፦ እማንቱሰ፡ ይት 27
ሐጕላ ፡ ወአንተሰ፡ ትሄሉ፡፡ወኵሉ፡ ከመ፡ል
ብስ፡ ይበሊ፡፡=፦ ወከመ፡ ሞጣሕት፡ ትዌል 28
ጦሙ ፡ ወይትዌለጡ፡፡ወአንተሰ ፡ አንተ ፡ ክ
ሙ፡፡ወዐመቲከኒ፡ ዘኢይኀልቅ፡፡=፦ ወደቂ 29
ቀ፡ አግብርቲከ፡ ይነብርዋ፡፡ወዘርኦሙኒ ፡ ለ
ዓለም፡ይጸንዕ፡፡=፦

ዘደዊት፡፡

፻፪ ትባርኮ፡ነፍስየ፡ለእግዚአብሔር፡፡ወኵ 1
ሉ፡አዕጽምትየ፡ለስሙ፡ቅዱስ፡፡=፦

INTERP. ÆTHIOP. [d] domicilio nocturno. [e] perſequebantur me, pacti ſunt contra me. [f] bibebam. [g] exurges Domine, & [h] ejus eſt quaſi miſerendi ejus, [i] pulverem ejus honorabunt. [k] pauperis: [l] cœlo ſancto [m] vivificaret filios [n] rejicias me in dimidio annorum meorum: [o] mutabis eos, [p] eam: & [q] ſtabilietur. *PSAL. CII.* [a] omnia oſſa mea

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

7 8 * أشبهت العيهب البري * صرت مثل البوم في منزل خرب * سهرت وصرت مثل عصفور باق
9 10 على السطح وحده * عيرني أعدائي النهار أجمع * والذين مدحوني كانوا يتحالفوا علي * أكلت
11 الرماد مثل الخبز * وشرابي مزج لي بدموع * من وجه سخطك وغضبك * لأنك رفعتني ثم
12 13 طرحتني * وكالفيء زالت أيامي * وأنا يبست مثل الحشيش * وأنت يا رب تدوم إلى الأبد * وذكرك
14 إلى جيل الأجيال * أنت تقوم وتتراءف على صهيون * لأنه زمان أن تتراءف عليها * لأن الزمان
15 16 قد حضر * إن عبيدك سروا بحجارتها * وعلى ترابها يتحننون * الأمم تخاف من اسمك يا رب *
17 18 وجميع الممالك من مجدك * لأن الرب يبني صهيون * ويظهر في مجده * لأنه نظر إلى صلاة
19 المساكين * ولم يرذل طلبتهم * فليكتب هذا إلى جيل آخر * والشعب الذي يخلق يبارك
20 21 الرب * لأنه نظر من علو قدسه * الرب نظر من السماء على الأرض * لسماع تنهد الأسارى *
22 23 لكي يفك بني المقتولين * لكي يخبروا باسم الرب في صهيون * وبتسبحته في يروشليم * عند
24 اجتماع الشعوب جميعا * والملوك ليعبدوا الرب * ويذعنوا إلى جبروته * اللهم أعلمني قصر
25 26 أيامي * ولا تدعني في نصف عمري * فإن سنينك إلى جيل الأجيال * أنت يا رب أسست الأرض
27 منذ البدء * والسموات أعمال يديك * هي تهلك وأنت تدوم * والجميع يبلى مثل الثوب
28 29 ومثل الرداء تطويها وتتغير * وأنت هو أنت وسنوك لا تفنى * بنو عبيدك يسكنون الأرض
بهدوء وزرعهم إلى الأبد يستقيم * الليلويا *

1 * المزمور المائة واثنان * لداود * وهو مو استيخن *

يا نفسي باركي الرب * ويا جميع حواسي باركي اسمه القدوس *

Similis factus ſum pellicano ſylveſtri: fa- 7
ctus ſum velut noctua in domicilio diru-
to. Vigilavi & factus ſum ſicut paſſer 8
manens ſuper tecto ſolus. Convitiati ſunt 9
in me hoſtes mei die totâ: & qui lauda-
verant me, conjuraverant in me. Man- 10
ducavi cinerem tanquam panem, & potus
meus temperatus eſt mihi lachrymis, A 11
facie iræ tuæ & indignationis tuæ, quo-
niam elevâſti me, deinde projeciſti me. Et 12
velut umbra prætericrunt dies mei, & ego
arui velut herba. Et tu, O Domine per- 13
ſeveras in æternum & memoria tua in
generationem generationum. Tu ſurges 14
& propitiaberis Sioni, quia tempus eſt pro-
pitiandi illi: nam tempus jam adeſt. Quo- 15
niam ſervis tuis placuerunt lapides ejus,
& pulveris ejus miſerentur. Gentes ti- 16
mebant nomen tuum O Domine, & omnia
regna gloriam tuam. Quia Dominus æ- 17
dificabit Sionem, & apparebit in majeſta-
te ſua. Nam reſpexit in orationem pau- 18
perum, & non deſpexit deprecationem
eorum. Scribatur hoc generationi aliĩ, et 19
populus qui creabitur, benedicet Domino.
Quia proſpexit è celſitudine Sanctuarii 20
ſui, Dominus proſpexit è cœlo in terram:
Ad audiendum ſuſpirium vinctorum, ut 21
ſolveret filios interfectorum: Quatenus 22
enarrent nomen Domini in Sione, & lau-
dem ejus in Jeroſolyma, Convenientibus 23
populis ſimul, ac regibus ad ſerviendum
Domino, Et obediendum potentiæ ejus. 24
Deus, notam fac mihi brevitatem dierum
meorum: Et ne me tollas in medio æta- 25
tis meæ quandoquidem anni tui ſunt in
generationem generationum. Tu, O Do- 26
mine, fundâſti terram ab initio: & cœli
ſunt opera manuum tuarum. Ipſi peribunt, 27
& tu perdurabis: & omnes atterentur ut
veſtis, & ut pallium complicabis eos, &
mutabuntur; Tu verò es tu, & anni tui 28
non deficient. Filii ſervorum tuorum in- 29
habitabunt terram pacatè, & ſemen eo-
rum in æternum erigetur. Alleluja.

PSAL. CII.

Davidis. Verſ. 46. 1

O Anima mea benedic Domino, & O cuncti ſenſus mei nomini ejus ſancto.

תהלים : קד

omni Parcens.ej⁹ retributionũ omniũ obliviſcaris ne & : Domino mea anima Benedic
2 בָּרְכִי נַפְשִׁי אֶת־יְהוָה וְאַל־תִּשְׁכְּחִי כָּל־גְּמוּלָיו׃ הַסֹּלֵחַ לְכָל־ 3
te *redimiens* :tuam vitã fovea de *Redimens*.tuas infirmitates omnes *ſanans*:tuæ iniquitati
4 עֲוֺנֵכִי הָרֹפֵא לְכָל־תַּחֲלוּאָיְכִי׃ הַגּוֹאֵל מִשַּׁחַת חַיָּיְכִי הַמְעַטְּרֵכִי
aquilæ ut renovabitur :tuum os bono in Saturans .miſerationibus &,miſericordia
5 חֶסֶד וְרַחֲמִים׃ הַמַּשְׂבִּיעַ בַּטּוֹב עֶדְיֵךְ תִּתְחַדֵּשׁ כַּנֶּשֶׁר
Notificavit .*oppreſſis* omnibus judicia & :Dominus juſtitias *Faciens* .tua adoleſcentia
6 7 נְעוּרָיְכִי׃ עֹשֵׂה צְדָקוֹת יְהוָה וּמִשְׁפָּטִים לְכָל־עֲשׁוּקִים׃ יוֹדִיעַ
longus ,Dñs *gratioſus* &,Miſericors .ſua *ſtudia* Iſrael filiis , Moſeh ſuas vias
8 דְּרָכָיו לְמֹשֶׁה לִבְנֵי יִשְׂרָאֵל עֲלִילוֹתָיו׃ רַחוּם וְחַנּוּן יְהוָה אֶרֶךְ
.cuſtodiet ſeculum in nec : contendet ſeculum in Non.miſericordia multus & ,*naribus*
9 אַפַּיִם וְרַב־חָסֶד׃ לֹא־לָנֶצַח יָרִיב וְלֹא לְעוֹלָם יִטּוֹר׃
retribuit noſtras iniquitates ſecundùm neque ,nobis fecit noſtra peccata ſecundùm Non
10 לֹא כַחֲטָאֵינוּ עָשָׂה לָנוּ וְלֹא כַעֲוֺנֹתֵינוּ גָּמַל
ſuper *ej⁹ miſericordia eſt roborata*:terram ſuper cœli altitudinẽ ſcd̃m Quoniã.nobis *ſuper*
11 עָלֵינוּ׃ כִּי כִגְבֹהַּ שָׁמַיִם עַל־הָאָרֶץ גָּבַר חַסְדּוֹ עַל־
nobis à fecit diſtare : occidente ab *orientem diſtare Secundùm* .eum timentes
12 יְרֵאָיו׃ כִּרְחֹק מִזְרָח מִמַּעֲרָב הִרְחִיק מִמֶּנּוּ אֶת־
ſuper Dominus eſt miſertus :*filiis ſuper patrem miſereri Secundùm*.noſtras prævaricationes
13 פְּשָׁעֵינוּ׃ כְּרַחֵם אָב עַל־בָּנִים רִחַם יְהוָה עַל־
.*nos* pulvis quòd recordatus:noſtrũ figmentũ cognovit ipſe Quia.ipſum *timentibus*
14 יְרֵאָיו׃ כִּי־הוּא יָדַע יִצְרֵנוּ זָכוּר כִּי־עָפָר אֲנָחְנוּ׃
tranſivit ventus Quoniam .florebit ſic agri flos ſicut:*ejus* dies herba ſicut Hominis
15 16 אֱנוֹשׁ כֶּחָצִיר יָמָיו כְּצִיץ הַשָּׂדֶה כֵּן יָצִיץ׃ כִּי רוּחַ עָבְרָה־
Domini miſericordia Et .ejus locus amplius eum cognoſcet non & : *ipſe* non &,eum *in*
17 בּוֹ וְאֵינֶנּוּ וְלֹא־יַכִּירֶנּוּ עוֹד מְקוֹמוֹ׃ וְחֶסֶד יְהוָה
Cuſtodientibus .filiorum *filiis* ej⁹ juſtitia &:eũ timentes ſup ſeculum in uſq; & ſeculo à
18 מֵעוֹלָם וְעַד־עוֹלָם עַל־יְרֵאָיו וְצִדְקָתוֹ לִבְנֵי בָנִים׃ לְשֹׁמְרֵי
paravit cœlis in Dominus.ea faciendũ ad,ej⁹ præceptorum *recordantibus* & :ejus pactum
19 בְרִיתוֹ וּלְזֹכְרֵי פִקֻּדָיו לַעֲשׂוֹתָם׃ יְהוָה בַּשָּׁמַיִם הֵכִין
, ejus angeli Domino Benedicite .*dominatum eſt omnes in* ipſius regnum &:ſuum thronum
20 כִּסְאוֹ וּמַלְכוּתוֹ בַּכֹּל מָשָׁלָה׃ בָּרְכוּ יְהוָה מַלְאָכָיו
Domino Benedicite .ejus verbi *voce in audiendum ad* :ej⁹ verbum facientes robore fortes
21 גִּבֹּרֵי כֹחַ עֹשֵׂי דְבָרוֹ לִשְׁמֹעַ בְּקוֹל דְּבָרוֹ׃ בָּרְכוּ יְהוָה
omnia Domino Benedicite .ej⁹ voluntatem facientes,ej⁹ miniſtri:ej⁹ exercit⁹ omnes
22 כָּל־צְבָאָיו מְשָׁרְתָיו עֹשֵׂי רְצוֹנוֹ׃ בָּרְכוּ יְהוָה כָּל־
.Domino mea anima benedic :ejus dominationis locis omnibus in ,ejus opera
מַעֲשָׂיו בְּכָל־מְקֹמוֹת מֶמְשַׁלְתּוֹ בָּרְכִי נַפְשִׁי אֶת־יְהוָה׃

PSAL. CIV. קד

gloriam :vehementer es magnificatus mi Deus Domine ; Domino mea anima Benedic
1 בָּרְכִי נַפְשִׁי אֶת־יְהוָה יְהוָה אֱלֹהַי גָּדַלְתָּ מְּאֹד הוֹד
.cortinã ſicut *cœlos* extendens:veſtimento ſicut lumine *te Amiciens* .es indutus decorẽ &
2 וְהָדָר לָבָשְׁתָּ׃ עֹטֶה אוֹר כַּשַּׂלְמָה נוֹטֶה שָׁמַיִם כַּיְרִיעָה׃

תרגום TARGUM.

2 בְּרִיכִי נַפְשִׁי יַת שְׁמָא דַיְיָ וְלָא תִתְנַשִׁי יַת
3 כָּל חִסוּלוֹי׃ דְשָׁבֵק לְכָל עֲוָיָיכִי דְמַסֵי לְכָל
4 מַרְעָיְכִי׃ דְפָרֵק מִגֵהִנָם חַיָיכִי דְאַכְלֵל יָתִיכִי
5 חִסְדָא וְרַחֲמֵי׃ דְמַסְבַּע בְּטוּבָא יוֹמֵי סֵבוּתָיְכִי
וּלְעָלְמָא דְאָתֵי תִחַדֵת הֵיךְ נִשְׁרָא טַלְיוּתָיְכִי׃
6 7 עָבֵד צִדְקָתָא יְיָ וְדִינִין לְכָל טְלוּמִין׃ גַלֵי
אָרְחָתֵיהּ לְמשֶׁה לִבְנֵי יִשְׂרָאֵל עוֹבָדוֹי׃
8 רַחְמָנָא וְחַנָנָא יְיָ מַרְחֵיק רְגַז וּמַסְגֵי לְמֶעְבַּד
9 טַבְוָן וּקְשׁוֹט׃ לָא לְעָלְמִין יִנְצֵי וְלָא לְעָלַם
10 יִנְטוֹר דְבָבוּ׃ לָא כְחוֹבְנָא עֲבַד לָנָא וְלָא
11 כְעֲוָיָתָנָא שַׁלֵם לָנָא׃ אֲרוּם הֵיךְ גְבִיהִין שְׁמַיָא
מֵעִלָוֵי אַרְעָא הֵכְדֵין גְבַר טוּבֵיהּ עַל דָחֲלוֹי׃
12 הֵיךְ דְרָחִיק מַדִנְחָא מִן מַעַרְבָא הֵכְדֵין אַרְחֵיק
13 מִנָנָא יַת סוּרְחָנָנָא׃ הֵיךְ דִי רָחֵם אַבָּא עַל
14 בְּנַיָא הֵכְדֵין רָחֵם יְיָ עַל דָחֲלוֹי׃ אֲרוּם
הוּא יָדַע יִצְרָנָא בִּישָׁא דְמַחְטֵי יָתָנָא דְכִיר
15 קֳדָמוֹי אֲרוּם מִן עַפְרָא אֲנַחְנָא׃ בַּר נָשׁ הֵיךְ
עִסְבָּא יוֹמֵיהּ הֵיךְ נִצָא דְחַקְלָא הֵכְדֵין יָנִיץ׃
16 אֲרוּם זַעְפָא נַתְבַת בֵּיהּ וְלֵיתוֹי וְלָא אִשְׁתְּמוֹדְעֵיהּ
17 תּוּב אַתְרֵיהּ׃ וְחִסְדָא דַיְיָ מִן עָלְמָא וְעַד
עָלְמָא דְאָתֵי עַל דָחֲלוֹי וְצִדְקְתֵיהּ לִבְנֵי בְנִין׃
18 19 לְנָטְרֵי קְיָמֵיהּ וּלְדָכְרֵי פִקוּדוֹי לְמֶעְבַּדְהוֹן׃ יְיָ
בִּשְׁמֵי מְרוֹמָא אַתְקֵין כּוּרְסֵיהּ וּמַלְכוּתֵיהּ בְּכוּלָא
20 שָׁלְטָא׃ בְּרִיכוּ שְׁמָא דַיְיָ מַלְאֲכוֹי דְמִתְגַבְּרִין
בְּחֵילָא עָבְדֵי מִלוּלֵיהּ לְמִשְׁמַע קָל מְלוּלֵיהּ׃
21 בְּרִיכוּ שְׁמָא דַיְיָ כָּל חֵילוֹי מְשַׁמְשָׁנוֹי דְעָבְדֵי
22 רְעוּתֵיהּ׃ בְּרִיכוּ שְׁמָא דַיְיָ כָּל עוּבָדוֹי בְּכָל אֲתַר
שׁוּלְטָנֵיהּ בָּרִיכִי נַפְשָׁא יַת שְׁמָא דַיְיָ׃

קד

1 בְּרִיכִי נַפְשִׁי יַת שְׁמָא דַיְיָ אֱלָהִי אִתְגַדַלְתָּא
2 לַחֲדָא שְׁבָחָא וּשְׁבָהוֹרָא אַלְבִּישְׁתָּא׃ דְמִתְעַטֵף
נְהוֹרָא הֵיךְ סְדִינָא דִמְתַח שְׁמַיָא הֵיךְ יְרִיעֲתָא׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Benedic anima mea nomini Domini,& non 2
obliviſcaris omnium retributionum ejus.
Qui remittit omnes iniquitates tuas, qui 3
ſanat omnes infirmitates tuas. Qui redimit 4
à gehenna vitam tuam : qui coronavit te
miſericordia & miſerationibus. Qui ſatiat 5
bonis dies ſenectutis tuæ, & in mundo ven-
turo renovabis ſicut aquila juventutem tu-
am. Faciet juſtitiam Dominus, & judicia 6
omnibus injuriam patientibus. Revelavit 7
vias ſuas Moſſeh; filiis Iſrael opera ſua.
Miſericors & clemens Dñs, alienus ab ira, 8
& multiplicans facere miſericordias , &
veritatem. Non in perpetuum concertabit, 9
neque in æternum reſervabit odium. Non 10
ſecundùm peccata noſtra fecit nobis, neq;
ſecundùm iniquitates noſtras retribuit no-
bis. Quoniam quanto celſiores ſunt cœli 11
terra,tanto prævaluit benignitas ejus ſuper
timentes eum. Quantum longè eſt Oriens 12
ab Occidente, tantum longè fecit à nobis
iniquitates noſtras. Sicut miſeretur pater 13
filiorum,ſic miſeretur *Domin⁹* timentiũ ſe.
Quoniam *ipſe novit concupiſcentiã noſtrã* 14
pravam,quæ in *peccatum* abripit nos : me-
moratur coram eo quòd ex pulvere ſumus.
Filii hominis ſicut herba ſunt dies; ſicut 15
flos agri ſic efflorebit. Quoniam ventus 16
impetuoſus ſpiravit in eum : & non ſubſi-
ſtit ; neque notus eſt amplius locus ejus.
Miſericordia autem Dñi à ſeculo,& uſque 17
ad ſeculum venturum ſuper timentes eum,
& juſtitia ejus in filios filiorum, Servantib⁹ 18
pactum ejus, & his qui recordantur man-
datorum ej⁹ ut faciant ea. *Domin⁹* in cœlis 19
excelſis paravit ſedem ſuam : & regnum
ejus in omnia poteſtatem habet. Benedicite 20
nomini Dñi angeli ejus,qui valetis viribus,
exequentes eloquium ejus, ut audiatur vox
ſermonis ejus. Benedicite nomini Domini 21
omnes exercitus ejus, miniſtri ej⁹ facientes
voluntatem ipſi⁹. Benedicite nomini Dñi 22
omnia opera ej⁹, in omni loco principatus
ejus eſt : benedic anima mea nomini Dñi.

PSAL. CIV.

BEnedic anima mea nomini Dñi : Deus 1
meus magnificatus es valdè;laudem & pul-
chritudinem induiſti. Qui amicitur lumine 2
ſicut linteo,qui extẽdit cœlos ſicut cortinã.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܒܪܟܝ ܢܦܫܝ ܠܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܬܛܥܝܢ ܟܠܗܘܢ ܦܘܪܥܢܘܗܝ: * ܕܫܒܩ ܠܟܝ ܟܠܗ ܚܛܗܝܟܝ. 2
ܘܡܐܣܐ ܠܟܠܗܘܢ ܟܘܪܗܢܝܟܝ: * ܦܪܩ ܠܟܝ ܡܢ ܚܒܠܐ. ܘܡܣܥܕ ܠܟܝ ܒܛܝܒܘܬܐ ܘܒܪܚܡܐ: 3 4
* ܡܣܒܥ ܠܦܓܪܟܝ ܒܛܒܬܐ. ܘܡܚܕܬ ܐܝܟ ܢܫܪܐ ܠܛܠܝܘܬܟܝ: * ܥܒܕ ܙܕܝܩܘܬܐ ܡܪܝܐ. 5 6
ܘܕܝܢܐ ܠܟܠܗܘܢ ܛܠܝܡܐ: * ܡܚܘܐ ܐܘܪܚܬܗ ܠܡܘܫܐ. ܘܠܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܥܒܕܘܗܝ: 7
* ܡܪܚܡܢ ܗܘ ܘܡܚܢܢ ܡܪܝܐ. ܢܓܝܪ ܪܘܚܗ ܘܣܓܝܐ ܛܝܒܘܬܗ: * ܡܛܠ ܕܠܐ ܢܛܪ 8
ܠܥܠܡ. ܘܠܐ ܠܥܠܡ ܢܛܪ ܪܘܓܙܗ: * ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܐ ܐܝܟ ܚܛܗܝܢ ܥܒܕ ܠܢ. ܘܐܦܠܐ ܐܝܟ 9 10
ܥܘܠܢ ܦܪܥܢ: * ܡܛܠ ܕܐܝܟ ܕܪܡܝܢ ܫܡܝܐ ܡܢ ܐܪܥܐ. ܗܟܢ ܥܫܝܢܐ ܛܝܒܘܬܗ ܥܠ 11
ܕܚܠܘܗܝ: * ܘܐܝܟ ܕܪܚܝܩܝܢ ܡܕܢܚܐ ܡܢ ܡܥܪܒܐ. ܗܟܢ ܐܪܚܩ ܡܢܢ ܥܘܠܢ: * ܘܐܝܟ ܕܡܪܚܡ 12
ܐܒܐ ܥܠ ܒܢܘܗܝ. ܡܪܚܡ ܡܪܝܐ ܥܠ ܕܚܠܘܗܝ: * ܡܛܠ ܕܗܘ ܝܕܥ ܓܒܠܢ. ܘܐܬܕܟܪ ܕܥܦܪܐ 13 14
ܚܢܢ: * ܒܪܢܫܐ ܐܝܟ ܥܡܝܪܐ ܝܘܡܬܗ. ܘܐܝܟ ܗܘܒܐ ܕܚܩܠܐ ܗܟܢ ܢܦܪܥ: * ܕܡܐ ܕܢܫܒܬ 15 16
ܒܗ ܪܘܚܐ ܠܝܬܘܗܝ. ܘܐܦܠܐ ܡܬܝܕܥ ܕܘܟܬܗ: * ܛܝܒܘܬܗ ܕܡܪܝܐ ܡܢ ܥܠܡ ܗܝ. 17
ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ ܥܠ ܕܚܠܘܗܝ: ܘܙܕܝܩܘܬܗ ܠܒܢܝ ܒܢܝܗܘܢ. * ܠܐܝܠܝܢ ܕܢܛܪܝܢ ܩܝܡܗ: 18
ܘܕܟܪܝܢ ܦܘܩܕܢܘܗܝ ܘܥܒܕܝܢ ܠܗܘܢ. * ܡܪܝܐ ܒܫܡܝܐ ܬܩܢ ܟܘܪܣܝܗ: 19
ܘܡܠܟܘܬܗ ܒܟܠ ܫܠܝܛܐ. * ܒܪܟܘ ܠܡܪܝܐ ܡܠܐܟܘܗܝ: ܕܥܫܝܢ ܒܚܝܠܐ ܘܥܒܕܝܢ 20
ܦܘܩܕܢܘܗܝ. * ܒܪܟܘ ܠܡܪܝܐ ܟܠܗܘܢ ܚܝܠܘܗܝ: ܘܡܫܡܫܢܘܗܝ ܕܥܒܕܝܢ ܨܒܝܢܗ. 21
* ܒܪܟܘ ܠܡܪܝܐ ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܘܗܝ: ܕܒܟܠܗ ܐܪܥܐ ܫܘܠܛܢܗ. ܒܪܟܝ ܢܦܫܝ ܠܡܪܝܐ. 22

* ܫܘܒܚܐ ܘܫܘܪܝܐ ܕܡܣܩܬܐ *   * ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܕ *

* ܕܕܘܝܕ. ܟܕ ܐܙܠ ܕܢܣܓܘܕ ܩܕܡ ܐܪܘܢܐ ܕܡܪܝܐ ܥܡ ܟܗܢܐ. ܠܘܬܢ ܕܝܢ ܡܠܦ ܠܢ 1
ܬܘܕܝܬܐ ܘܨܠܘܬܐ. ܘܪܡܙ ܠܢ ܠܬܘܩܢܐ ܕܫܘܪܝܐ ܕܒܪܝܬܐ. ܘܥܠ ܡܠܐܟܐ ܡܪܡܙ.
ܦܬܓܡܐ ܥܚ: ܒܪܟܝ ܢܦܫܝ ܠܡܪܝܐ. ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ ܪܒܝܬ ܛܒ: ܙܝܘܐ
ܘܗܕܪܐ ܠܒܫܬ. * ܘܐܬܟܣܝ ܢܘܗܪܐ ܐܝܟ ܡܪܛܘܛܐ: ܡܬܚ ܫܡܝܐ ܐܝܟ ܝܪܝܥܬܐ. 2

Benedic anima mea Dño, & ne obliviſcaris 2
omnium retributionum ejus;Siquidem remit- 3
tit tibi omne crimen tuũ,et ſanat cunctos lan-
guores tuos:Liberat te à corruptione,fulcit te 4
bonitate ac miſericordiâ:Satiat bonis corpus 5
tuũ,& renovat ſicut aquilæ juventutem tuam.
Reddit juſtitiam Dñs & judiciũ omnibus op- 6
preſſis. Oſtendit vias ſuas Moſi,& filiis Iſrael 7
opera ſua. Miſericors eſt ac benignus Dñs, 8
longanimis,& copioſæ bonitatis. Non enim 9
retinet odium in æternum, neque in perpe-
tuũ ſervat irã ſuam; Quoniam haud quidem 10
juxta peccata noſtra tractavit nos, neque ſe-
cundum ſcelus noſtrũ retribuit nobis. Nam 11
prout altiores ſunt cœli terrâ, ſic magna eſt
bonitas ejus erga timentes eum : Et quàm 12
longè diſtat ortus ab occaſu,tam longè fecit à
nobis iniquitatẽ noſtram:Utque miſeretur pa- 13
ter filiorũ,miſeretur Dñs timentiũ eum. Ipſe 14
enim novit maſſam noſtrã, & recordatus eſt
pulverem nos eſſe. Hominis ætas fœno ſimi- 15
lis:& ſicut herba campi,ſic germinat : Quæ, 16
cùm perflaverit in eam ventus, haud exiſtit,
nec cognoſcitur locus ejus. Benignitas Dñi 17
ab æterno eſt,& uſq; in ſempiternũ ſuper ti-
mentes ipſum; & juſtitia ejus erga filios filio-
rum eorum:Erga illos qui ſervant pactũ ejus, 18
& memores ſunt mandatorũ ipſius & pera-
gunt illa. Domini ſolium eſt in cœlo firmum, 19
& regnum ipſius in omnia dominans. Bene- 20
dicite Dño angeli ejus, qui polletis virtute,
atque exequimini mandata ejus, Benedicite 21
Domino cuncti exercitus ejus & miniſtri
ipſius,qui perficitis voluntatem ejus. Benedi- 22
cite Dño omnia opera ejus;quoniam in totam
terrã dominiũ ejus. Benedic anima mea Dño.

Laus, & initium gradûs.

PSAL. CIV.

Davidis. Quum iret ad adorandum coram 1
arca Domini unà cum ſacerdotibus. Quod
autem ad nos,docet nos confeſſionem & oratio-
nem. Et innuit nobis conſtitutionem principii
creaturarũ. Déque angelis inſinuat. Verſ.78.

BEnedic anima mea Domino : nam Domi-
nus Deus meus magnificatus eſt vehemen-
ter;ſplendorem atque decus induit, Texitque 2
ſe luce tanquam veſtimento:extendit cœlum
quaſi tentorium :

Versio VULG. LAT.

2 Benedic anima mea Domino: & noli
3 oblivisci omnes retributiones ejꝰ. Qui
propitiatur omnibus iniquitatibus tuis:
qui ſanat omnes infirmitates tuas.
4 Qui redimit de interitu vitam tuam:
qui coronat te in miſericordia & mi-
5 ſerationibus. Qui replet in bonis deſiderium
tuum: renovabitur ut aquilæ
6 juventus tua. Faciēs miſericordias Dominus,
& judicium omnibus injuriam
7 patientibus. Notas fecit vias ſuas Moy-
8 ſi, filiis Iſrael voluntates ſuas. Miſerator,
& miſericors Dominus: longani-
9 mis, & multùm miſericors. Nō in perpetuum
iraſcetur: neque in æternum
10 comminabitur. Non ſecundùm peccata
noſtra fecit nobis: neque ſecundùm
iniquitates noſtras retribuit nobis.
11 Quoniam ſecundùm altitudinem cœli
à terra, corroboravit miſericordiam
12 ſuam ſuper timentes ſe. Quantum diſtat
Ortus ab Occidente: longè fecit
13 à nobis iniquitates noſtras. Quomodò
miſeretur pater filiorum, miſertus eſt
14 Dominus timentibus ſe: Quoniā ipſe
cognovit figmentū noſtrū. Recordatꝰ
15 eſt quoniam pulvis ſumus: Homo, ſicut
fœnum dies ejus, tanquàm flos agri ſic
16 efflorebit. Quoniam ſpiritus pertranſibit
in illo, & non ſubſiſtet: & nō cog-
17 noſcet ampliùs locum ſuum: Miſericordia
autē Domini ab æterno, & uſque
in æternum ſuper timentes eum.
18 Et juſtitia illius in filios filiorum, His
qui ſervant teſtamentum ejus: Et memores
ſunt mādatorū ipſiꝰ, ad facien-
19 dum ea. Dn̄s in cœlo paravit ſedē ſuam:
& regnum ipſius omnibus domi-
20 nabitur. Benedicite Dn̄o omnes angeli
ejus: potentes virtute, facientes
verbū illius, ad audiendam vocē ſer-
21 monū ejus. Benedicite Dn̄o omnes
virtutes ejꝰ: miniſtri ejꝰ, qui facitis vo-
22 luntatē ejꝰ. Benedicite Dn̄o omnia opera
ejus: in omni loco dominationis
ejus. Benedic anima mea Domino.

Ipſi David. CIII.

1 BEnedic anima mea Domino. Dn̄e
Deus meus, magnificatus es vehementer.
Confeſſionē, & decorē induiſti:
2 Amictus lumine ſicut veſtimento: Extendens
cœlum ſicut pellem:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

2 † Εὐλόγει ἡ ψυχή μου τὸν κύριον, † καὶ μὴ ἐπιλανθάνου
3 πάσας τὰς (α) αἰνέσεις αὐτοῦ· † Τὸν εὐιλατεύοντα
πάσαις ταῖς ἀνομίαις σου, † τὸν ἰώμενον πάσας
4 τὰς νόσους σου, † Τὸν λυτρούμενον ἐκ φθορᾶς τὴν ζωήν
σου, † τὸν στεφανοῦντά σε ἐν ἐλέει καὶ οἰκτιρμοῖς, †
5 Τὸν ἐμπιπλῶντα ἐν ἀγαθοῖς τὴν ἐπιθυμίαν σου· †
6 ἀνακαινισθήσεται ὡς ἀετοῦ ἡ νεότης σου. † Ποιῶν ἐλεημοσύνας
ὁ κύριος, † καὶ κρίμα πᾶσι τοῖς ἀδικου-
7 μένοις. † Ἐγνώρισε τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ τῷ Μωυσῇ, †
8 τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ τὰ θελήματα αὐτοῦ· † Οἰκτίρμων
9 καὶ ἐλεήμων ὁ κύριος, † μακρόθυμος καὶ πολυέλεος (β).
† Οὐκ εἰς τέλος ὀργισθήσεται, † οὐδὲ εἰς τὸν αἰῶνα
10 μηνιεῖ. † Οὐ κατὰ τὰς ἁμαρτίας ἡμῶν ἐποίησεν ἡμῖν,
† οὐδὲ κατὰ τὰς ἀνομίας ἡμῶν ἀνταπέδωκεν ἡμῖν. †
11 † Ὅτι κατὰ τὸ ὕψος τοῦ οὐρανοῦ ἀπὸ τῆς γῆς, † ἐκραταίωσε
κύριος τὸ ἔλεος αὐτοῦ ἐπὶ τοὺς φοβουμέ-
12 νους αὐτόν. † Καθόσον ἀπέχουσιν ἀνατολαὶ ἀπὸ δυσμῶν,
† ἐμάκρυνεν ἀφ' ἡμῶν τὰς ἀνομίας ἡμῶν. †
13 Καθὼς οἰκτείρει πατὴρ υἱοὺς, † (γ) ᾠκτείρησε κύρι-
14 ος τοὺς φοβουμένους αὐτόν. † Ὅτι αὐτὸς ἔγνω τὸ
15 πλάσμα ἡμῶν, † (δ) μνήσθητι ὅτι χοῦς ἐσμεν. † Ἄνθρωπος,
ὡσεὶ χόρτος αἱ ἡμέραι αὐτοῦ, † ὡσεὶ ἄν-
16 θος τοῦ ἀγροῦ οὕτως ἐξανθήσει. † Ὅτι πνεῦμα διῆλθεν
ἐν αὐτῷ, καὶ οὐχ ὑπάρξει, † καὶ οὐκ ἐπιγνώσεται
17 ἔτι τὸν τόπον αὐτοῦ. † Τὸ δὲ ἔλεος τοῦ κυρίου ἀπὸ
τοῦ αἰῶνος † καὶ ἕως τοῦ αἰῶνος ἐπὶ τοὺς φοβουμένους
18 αὐτόν· † καὶ ἡ δικαιοσύνη αὐτοῦ ἐπὶ υἱοὺς υἱῶν, † Τοῖς
φυλάσσουσι τὴν διαθήκην αὐτοῦ, † καὶ μεμνημένοις τῶν
19 ἐντολῶν αὐτοῦ τοῦ ποιῆσαι αὐτάς. † Κύριος ἐν τῷ
οὐρανῷ ἡτοίμασε τὸν θρόνον αὐτοῦ, † καὶ ἡ βασιλεία
20 αὐτοῦ πάντων δεσπόζει. † Εὐλογεῖτε τὸν κύριον
πάντες ἄγγελοι αὐτοῦ, † δυνατοὶ ἰσχύϊ ποιοῦντες
τὸν λόγον αὐτοῦ, † τοῦ ἀκοῦσαι τῆς φωνῆς τῶν λόγων αὐ-
21 τοῦ. † Εὐλογεῖτε τὸν κύριον πᾶσαι αἱ δυνάμεις αὐ-
τοῦ, † λειτουργοὶ αὐτοῦ ποιοῦντες (ε) τὰ θελήματα
22 αὐτοῦ. † Εὐλογεῖτε τὸν κύριον πάντα τὰ ἔργα αὐτοῦ,
† ἐν παντὶ τόπῳ τῆς (ζ) δυναστείας αὐτοῦ· † εὐλόγει
ἡ ψυχή μου τὸν κύριον.

MS. A. (α) ἀνταποδόσεις (β) καὶ ἀληθινός. Οὐκ (γ) οἰκτείρησεν (δ) ἐμνήσθη (ε) τὸ θέλημα (ζ) δεσποτίας

(*) Τῷ Δαυίδ. ργ΄.

1 † ΕΥλόγει ἡ ψυχή μου τὸν κύριον. † κύριε ὁ θεός
μου ἐμεγαλύνθης σφόδρα· † ἐξομολόγησιν καὶ (α)
2 εὐπρέπειαν ἐνεδύσω, † Ἀναβαλλόμενος φῶς ὡς ἱμάτιον,
† ἐκτείνων τὸν οὐρανὸν ὡσεὶ δέρριν.

MS. A. (*) Τοῦ (α) μεγαλοπρέπειαν

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

Benedic anima mea Dominum: et noli oblivisci omnes (b) laudationes ejꝰ. 2
3 Qui [b] propitius fit omnibus iniquitatibus tuis: qui ſanat [c] omnes 3
infirmitates tuas. 4 Qui redimit de corruptione vitam tuam: qui coro- 4
nat te in miſericordia et (c) miſerationibus: 5 Qui ſatiat [d] in bonis 5
deſiderium tuum. Renovabitur, ſicut aquilæ juventus tua. 6 Faciens mi- 6
ſericordias Dominus, et judicium omnibus injuriam patientibus. 7 No- 7
tas fecit vias ſuas Moyſi, filiis Iſrael voluntates ſuas. 8 Miſerator, 8
et miſericors Dominus: longanimis, et multæ miſericordiæ [e]. 9 Non 9
in finem iraſcetur: neq; in æternum (d) indignabitur. 10 Non ſecundùm 10
peccata noſtra fecit nobis; neque ſecundū iniquitates noſtras retribuit
nobis. 11 Quoniam ſecundùm alti- 11
tudinem cœli à terra, corroboravit Dominus miſericordiā ſuam ſuper
timentes eum. 12 Quantum diſtat 12
Ortus ab Occidente; longè fecit à nobis iniquitates noſtras. 13 Quomo- 13
dò miſeretur pater filiorū; miſertus eſt Dominus timentibus eum: Quo- 14
niam ipſe cognovit figmentum noſtrum. 14 (e) Memento, [f] quòd pul-
vis ſumus: Homo, ſicut fœnum, dies 15
ejus: ſicut flos agri, ita efflorebit. 15
Quoniam (f) ſpiritus pertranſibit in 16
eo, & [g] non ſubſiſtet: & non cognoſcet ampliùs locum ſuum. 16 Mi- 17
ſericordia autem Domini à ſeculo, & in ſeculum ſuper timentes eum:
17 & juſtitia ejus ſuper filios filiorum, Cuſtodientibꝰ teſtamentum ejꝰ, 18
18 & memoriâ retinentibus mandata ejus, ut faciant ea. 19 Domi- 19
nus in cœlo paravit ſedem ſuam: et [h] regnum ejus omnium (g) domi-
natur. 20 Benedicite Dominum [i] 20
omnes angeli ejus, [k] potentes fortitudine, facientes verbum ejus, [l]
ad audiendam vocem ſermonum ejus. 21 Benedicite Dominum omnes 21
virtutes ejus, miniſtri ejus, qui facitis [m] voluntates ejus. 22 Bene- 22
dicite Dominum omnia opera ejus, in omni loco dominationis ejus. Benedic anima mea Dominum.

Ipſi David. CIII. 1

1 BENEDIC anima mea Dominum: Domine Deus meus, (a) magnificatus es vehementer. 2 Confeſſionem, & (b) [a] decorem induiſti, Amictus lumine, 2
ſicut veſtimento, 3 [b] extendens cœlum, ſicut pellem.

Verſio ÆTHIOPICA.

ትባርክ፡ነፍስየ፡ለእግዚአብሔር፡፡ ወኢትር 2
ሳዕ፡ኵሎ፡ሰብሐቲሁ፡፡=፡ ዘይሰሪ፡ለከ፡ኵ 3
ሎ፡ኃጢአተከ፡፡ ዘይፈውሰከ፡እምኵሉ፡ደ
ዌከ፡፡=፡ ዘያድኅና፡እምስና፡ለሕይወትከ፡፡ 4
ዘይኬልለከ፡በሣህሉ፡ ወበምሕረቱ፡፡=፡ ዘ 5
ያጸግብ፡እምበረከቱ፡ለፍትወትከ፡፡ ዘይኄድ
ሳ፡ከመ፡ንስር፡ ለውርዙትከ፡፡=፡ ገባሬ፡ሣህ 6
ል፡እግዚአብሔር፡፡ ወይፈትሕ፡ለኵሉ፡ግፉ
ዓን፡፡=፡ አርአየ፡ፍናዊሁ፡ለሙሴ፡፡ ወለደ 7
ቂቀ፡እስራኤል፡ሥምረቶ፡፡=፡ መሐሪ፡ወመስ 8
ተሣህል፡እግዚአብሔር፡፡ርሑቀ፡መዐት፡ ወ
ብዙኃ፡ምሕረት፡ወጻድቅ፡፡=፡ ኢይቀስፍ፡ 9
ወትረ፡ወኢይትመዐዕ፡ዘልፈ፡፡=፡ ወአኮ፡በከ 10
መ፡ኃጢአትነ፡ዘገብረ፡ለነ፡፡ወኢፈደየነ፡በከ
መ፡አበሳነ፡፡=፡ ወበከመ፡ልዑል፡ሰማይ፡እም 11
ድር፡፡ አጽንዓ፡ምሕረቶ፡እግዚአብሔር፡ላ
ዕለ፡እለ፡ይፈርህዎ፡፡=፡ ወበከመ፡ይርሕቅ፡ 12
ሠርቅ፡እምዐረብ፡፡ አርሐቀ፡እምኔነ፡ኃጢ
አተነ፡፡=፡ወበከመ፡ይምህር፡አብ፡ውሉደ፡፡ 13
ከማሁ፡ ይምሕሮሙ ፡ እግዚአብሔር፡ ለእ
ለ፡ይፈርህዎ፡፡ እስመ፡ውእቱ፡ያአምር፡ፍ
ጥረተነ፡፡=፡ ተዘከር፡እግዚኦ፡ከመ፡መሬት፡ 14
ንሕነ፡፡ ወሰብእሰ፡ከመ፡ሣዕር፡መዋዕሊሁ፡፡
ወከመ፡ጽጌ፡ገደም፡ከማሁ፡ይፈሪ፡፡=፡ እ 15
ስመ፡ መንፈስ፡ ይወጽእ፡ እምኔሁ፡ ወኢይሄ
ሉ፡እንከ፡፡ ወኢያአምር፡እንከ፡መካኖ፡፡=፡
ወሣህሉሰ፡ለእግዚአብሔር፡እምዓለም፡ ወ 16
እስከ፡ለዓለም፡፡ ዲበ፡እለ፡ይፈርህዎ፡፡=፡
ወጽድቁኒ፡ዲበ፡ትውልደ፡ትውልድ፡፡ ለእለ፡ 17
የዐቅቡ፡ሕጎ፡፡=፡ወይዜክሩ፡ትእዛዞ፡ከመ፡ 18
ይግበሩ፡፡=፡ እግዚአብሔር፡አስተደለወ፡ 19
መንበሮ፡በሰማያት፡፡ ወኵሎ፡ይኴንን፡በመን
ግሥቱ፡፡=፡ ባርክዎ፡ለእግዚአብሔር፡ኵል 20
ክሙ ፡ መላእክቲሁ፡፡ ጽኑዓን፡ ወኃያላን፡ እ
ለ፡ትገብሩ፡ቃሎ፡፡ ወእለ፡ትሰምዑ፡ ቃለ፡
ነገሩ፡፡=፡ ይባርክዎ፡ለእግዚአብሔር፡ኵ 21
ሉ፡ኃይሉ፡፡ላእኩ፡ እለ፡ይገብሩ፡ፈቃዶ፡፡=፡
ይባርክዎ ፡ ለእግዚአብሔር፡ ኵሉ ፡ ተግባ 22
ሩ፡፡ ውስተ፡ኵሉ፡በሐውርት፡መለኮቱ፡፡ት
ባርክ፡ነፍስየ፡ለእግዚአብሔር፡፡=፡

ዘዳዊት፡፡

፻፫ ትባርክ፡ነፍስየ፡ለእግዚአብሔር፡፡እግ 1
ዚኦ፡አምላኪየ፡ጥቀ፡ዐበይከ፡ፈድፋደ፡፡=፡
አሚን፡ ወዕበየ፡ስብሐት፡ ለበስከ፡፡ ወለበስ 2
ከ፡ ብርሃነ፡ ከመ፡ ልብስ፡፡=፡ ወረበብከ፡ 3
ለሰማይ፡ከመ፡ሠቅ፡፡

INTERP. ÆTHIOP. [b] condonat tibi omnes iniquitates tuas: [c] te de omnibus infirmitatibus tuis. [d] benedictionibus ejus deſiderium tuum: [e] & juſtus. Non [f] Domine, quòd [g] proinde non ſubſiſtet: neque [h] omnibus dominabitur in regno ſuo. [i] vos omnes [k] potentes & fortes, qui facitis [l] & qui auditis [m] voluntatem *PSAL. CIII.* [a] magnificentiam gloriæ [b] concinnâſti cœlum,

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

2 * يا نفسي باركي الرب * ولا تنسي جميع مجازاته * الغافر لك جميع اثامك * الشافي جميع اسقامك 3
4 * المنقذ من الفساد حياتك * الذي يتوجك بالمراحم والرافة * المشبع من الخيرات شهواتك * 5
6 يتجدد شبابك مثل النسر * الرب هو الذي يصنع المراحم * والعدل لكل المظلومين * اظهر 7
8 لموسى طرقه * ولبني اسرائيل ارادته * الرب هو رووف رحيم * كثير الاناة والرحمة * لا يغضب 9
10 الي الغاية * ولا يسخط الي الابد * لم يصنع الينا كخطايانا * ولا كاثامنا نحن جازانا * بل كعلو 11
12 السماء من الارض * قوي الرب رحمته على خائفيه * وكبعد المشارق من المغارب * ابعد عنا اثامنا
13 * وكما يتراف الاب على بنيه * كذلك يتراف على خائفيه * لانه عارف جبلتنا * اذكر يا رب انا تراب 14
15 * وان ايام الانسان مثل عشب الحقل * وكزهر الحقل هكذا يجف * فاذا هبت فيه الريح لا يوجد * 16
17 ولا يعرف موضعه ايضا * فاما رحمة الرب فمنذ الازل * والي الابد على خائفيه * وعدله على بني
18 البنين * الحافظين عهده * الذاكرين وصاياه * العاملين بها * الرب اتقن كرسيه في السماء 19
20 ومملكته تسود الكل * باركوا الرب يا جميع ملايكته المقتدرين بقوتهم الصانعين كلمته * عند
21 سماع صوت كلامه * باركوا الرب يا جميع قواته وخدمه الصانعين مشيته * باركوا الرب يا 22
جميع اعماله في كل موضع قوته * يا نفسي باركي الرب * الليلويا *

1 * المزمور المائة وثلاثة * لداود * وعدده * عح * استيخن *
2 يا نفسي باركي الرب * ايها الرب الاله لقد عظمت جدا * لبست الشكر وعظم البهاء * اشتملت
بالنور كالرداء * الذي مد السماء مثل الخيمة *

O anima mea benedic Domino, & ne obli- 2
viſcaris omnes retributiones ejus: Condo- 3
nantis tibi omnes iniquitates tuas, ſanantis omnes morbos tuos: Redimentis de cor- 4
ruptione vitam tuam: qui te coronat miſerationibus & clementiâ: Satiat bonis de- 5
ſideria tua: Renovabitur juventus tua ut aquilæ. Dominus eſt qui facit miſericor- 6
dias & juſtitiam omnibus oppreſſis. Oſ- 7
tendit Moſi vias ſuas, & filiis Iſrael voluntatem ſuam. Dominus eſt clemens, mi- 8
ſericors, abundans patientiâ & miſericordiâ. Non iraſcetur uſque ad extremum, 9
neque excandeſcet in perpetuū. Non fecit 10
nobis ſecundùm peccata noſtra, neque ſecundùm delicta noſtra retribuit nobis, Sed 11
prout altum eſt cœlum à terra, corroboravit Dominus miſericordiam ſuam erga timentes ſe. Et prout diſtant Orientales pla- 12
gæ ab Occidentalibus, elongavit à nobis iniquitates noſtras. Et quemadmodum pro- 13
pitiatur pater filiis ſuis, ita propitius eſt erga timentes ſe: Quoniā ipſe cognoſcens 14
eſt figmentum noſtrum. Memento, O Domine, nos pulverem eſſe, Et quòd dies ho- 15
minis ſimiles ſunt herbæ campi: & ut flos agri, ſic areſcat: Quumq; flaverit in eum 16
ventus, non inveniatur, neque agnoſcatur locus ejus ampliùs. At verò miſericordia 17
Domini eſt ab æterno & uſq; in æternum erga timentes eum, & juſtitia illius erga filios filiorum Cuſtodientiū pactū ipſius, 18
memorū mādatorū ipſius, operantiū illa. Dominus firmavit ſedem ſuā in cœlo, & 19
regnum ejus dominatur in omnia. Benedi- 20
cite Dominū, O omnes Angeli ejus, potentes in fortitudine ſua, facientes verbum illius ſtatim atque audiunt vocem ſermonis ejus. Benedicite Dominū O omnes virtutes 21
ejus, et miniſtri ejus facientes voluntatem ipſius. Benedicite Dominū O omnia opera 22
ejus in omni loco potentiæ illius. O anima mea, benedic Dominum. Alleluja.

PSAL. CIII.

Davidis. Et numerus ver. 78. 1

O anima mea, benedic Domino. O Domine Deꝰ, jā magnificatꝰ es vehemēter. Induꝰ es confeſſione et ſūmo decore: ami- 2
ctus es lumine quaſi pallio: qui extendit cœlum ſicut tentorium:

תהלים: קד

alas super *ambulans* : suum currum nubes *ponens* ,*sua cœnacula* aquis in *Contignans*
הַמְקָרֶה בַמַּיִם עֲלִיּוֹתָיו הַשָּׂם־עָבִים רְכוּבוֹ הַמְהַלֵּךְ עַל־כַּנְפֵי־ 3
Fundavit .*flagrantem* ignem suos ministros : spiritus suos angelos *Faciens* .venti
רוּחַ׃ עֹשֶׂה מַלְאָכָיו רוּחוֹת מְשָׁרְתָיו אֵשׁ לֹהֵט׃ יָסַד־ 4 5
vestimento sicut Abysso .*perpetuò* & ,seculum *nutet* ne : ejus *bases* super terram
אֶרֶץ עַל־מְכוֹנֶיהָ בַּל־תִּמּוֹט עוֹלָם וָעֶד׃ תְּהוֹם כַּלְּבוּשׁ 6
voce à *: fugient* tua increpatione Ab .aquæ *stabunt* montes super : eam operuisti
כִּסִּיתוֹ עַל־הָרִים יַעַמְדוּ־מָיִם׃ מִן־גַּעֲרָתְךָ יְנוּסוּן מִן־קוֹל 7
quem locum ad *: valles descendent* ,montes *Ascendent .præcipites ferentur* tui tonitrui
רַעַמְךָ יֵחָפֵזוּן׃ יַעֲלוּ הָרִים יֵרְדוּ בְקָעוֹת אֶל־מְקוֹם זֶה׀ 8
operiendū ad revertantur ne : transeant ne posuisti Terminum .eis fundâsti
יָסַדְתָּ לָהֶם׃ גְּבוּל־שַׂמְתָּ בַּל־יַעֲבֹרוּן בַּל־יְשׁוּבוּן לְכַסּוֹת 9
omni Propinabunt .*ibunt* montes inter :convallibꝰ in fontes *Mittens* .terram
הָאָרֶץ׃ הַמְשַׁלֵּחַ מַעְיָנִים בַּנְּחָלִים בֵּין הָרִים יְהַלֵּכוּן׃ יַשְׁקוּ כָּל־ 10 11
cœli *volatile* eos Super .suam sitim onagri frangent *: agri bestiæ*
חַיְתוֹ שָׂדָי יִשְׁבְּרוּ פְרָאִים צְמָאָם׃ עֲלֵיהֶם עוֹף־הַשָּׁמַיִם 12
:suis cœnaculis de montes *Adaquans* .vocem dabunt frondes inter *ex* *: habitabit*
יִשְׁכּוֹן מִבֵּין עֳפָאיִם יִתְּנוּ־קוֹל׃ מַשְׁקֶה הָרִים מֵעֲלִיּוֹתָיו 13
,*jumento* herbam *faciens Germinare* .terra satiabitur tuorū operum fructu de
מִפְּרִי מַעֲשֶׂיךָ תִּשְׂבַּע הָאָרֶץ׃ מַצְמִיחַ חָצִיר לַבְּהֵמָה 14
.terra de panem *educendum ad* : hominum obsequium ad herbam &
וְעֵשֶׂב לַעֲבֹדַת הָאָדָם לְהוֹצִיא לֶחֶם מִן־הָאָרֶץ׃
hominis cor panem & :oleo ab *facies faciendū nitere ad*,hominis cor *exhilarabit* vinum Et
וְיַיִן׀ יְשַׂמַּח לְבַב־אֱנוֹשׁ לְהַצְהִיל פָּנִים מִשָּׁמֶן וְלֶחֶם לְבַב־אֱנוֹשׁ 15
.plantavit quas Lebanon cedri : DOMINI *ligna* Saturabuntur .*sustentabit*
יִסְעָד׃ יִשְׂבְּעוּ עֲצֵי יְהוָה אַרְזֵי לְבָנוֹן אֲשֶׁר נָטָע׃ 16
excelsi Montes .*ejus* domus abietes *ciconia* : nidificent aves ibi Ut
אֲשֶׁר־שָׁם צִפֳּרִים יְקַנֵּנוּ חֲסִידָה בְּרוֹשִׁים בֵּיתָהּ׃ הָרִים הַגְּבֹהִים 17 18
: tempora stata in lunam Fecit .*cuniculis refugium* petræ : ibicibus
לַיְּעֵלִים סְלָעִים מַחְסֶה לַשְׁפַנִּים׃ עָשָׂה יָרֵחַ לְמוֹעֲדִים 19
repet ipsa in : nox fuit & ,*tenebrositatem Pones* .suū occasum cognovit sol
שֶׁמֶשׁ יָדַע מְבוֹאוֹ׃ תָּשֶׁת־חֹשֶׁךְ וִיהִי לָיְלָה בּוֹ־תִרְמֹשׂ 20
quærendū ad & : prædam ad *rugientes* Leunculi .sylvestris bestia omnis
כָּל־חַיְתוֹ־יָעַר׃ הַכְּפִירִים שֹׁאֲגִים לַטָּרֶף וּלְבַקֵּשׁ 21
suis habitaculis in & : se congregabunt , sol Orietur .suam escam Deo à
מֵאֵל אָכְלָם׃ תִּזְרַח הַשֶּׁמֶשׁ יֵאָסֵפוּן וְאֶל־מְעוֹנֹתָם 22
.vesperam ad usque suā culturam ad & : suū opus ad homo Egredietur .accubabunt
יִרְבָּצוּן׃ יֵצֵא אָדָם לְפָעֳלוֹ וְלַעֲבֹדָתוֹ עֲדֵי־עָרֶב׃ 23
: fecisti sapientia in ipsa omnia ,DOMINE tua opera sunt multiplicata Quàm
מָה־רַבּוּ מַעֲשֶׂיךָ׀ יְהוָה כֻּלָּם בְּחָכְמָה עָשִׂיתָ 24
;*manibus* latum & magnum mare Hoc .tua possessione terra est impleta
מָלְאָה הָאָרֶץ קִנְיָנֶךָ׃ זֶה׀ הַיָּם גָּדוֹל וּרְחַב יָדָיִם 25
naves Ibi .magnis cum pusillæ bestiæ : numerus non & ,*reptile ibi*
שָׁם־רֶמֶשׂ וְאֵין מִסְפָּר חַיּוֹת קְטַנּוֹת עִם־גְּדֹלוֹת׃ שָׁם אֳנִיּוֹת 26
.eo , *in* ludendum ad formâsti iste Leviathan ; ambulabunt
יְהַלֵּכוּן לִוְיָתָן זֶה־יָצַרְתָּ לְשַׂחֶק־בּוֹ׃

תרגום TARGUM.

דְּטָלֵל בְּמַיָּא הֵיךְ בִּנְיָנָא דְּכַשּׁוּרֵי אַכְסַדְרוֹי 3
דְּשַׁוֵּי עֲנָנִין אַרְתִּיכֵיהּ עַל עֲנָנִין קַלִּילִין הֵיךְ
כַּנְפֵי נִשְׁרָא׃ דַּעֲבַד אִזְגַּדּוֹי סַרְהוֹבִין הֵיךְ רוּחָא 4
שַׁמָּשׁוֹי תַּקִּיפִין הֵיךְ אֶשָּׁא מְצַלְהֲבָא׃ דִּי מְיַסַּד 5
אַרְעָא עֲלַוֵּי בְּסִיסָהּ דְּלָא תְזוּעַ לְעַלְמֵי עַלְמִין׃
תְּהוֹמָא כַּד בִּלְבוּשָׁא חֲפִיתָהּ וּמְבַזְּעִין עַל טוּרַיָּא 6
וְקָיְמִין מַיָּא׃ מִן מְזוֹפִיתָךְ יַעַרְקוּן לְמִסְגַּר מִן קָל 7
אַכְלָיוּתָךְ יִתְבַּהֲלוּן לְמִשְׁפָּךְ׃ יִסַּלְּקוּן מִן תְּהוֹמָא 8
לְטוּרַיָּא וְנָחְתִין בְּבִקְעָתָא לַאֲתַר דְּנָן דִּי סַדַּרְתָּא
לְהוֹן׃ תְּחוּם שַׁוִּיתָא לְגַלְלֵי יַמָּא דִּי לָא 9
יַעְבְּרוּן דִּי לָא יְתוּבוּן לְמֶחְפֵי אַרְעָא׃ דִּי מְשַׁלַּח 10
מַעְיָנֵי בְּנַהֲרוּתָא בֵּינֵי טוּרַיָּא מְהַלְּכִין׃ מַשְׁקִין 11
כָּל חֵיוַת בָּרָא יִתְבְּרוּן עֲרוֹדַיָּא צַחוּתְהוֹן׃
עֲלַוֵּיהוֹן צִפְּרֵי שְׁמַיָּא יִשְׁרוּן מִבֵּינֵי אוּזַיָּא יִתְּנוּן 12
קָל זְמַר׃ דְּמַשְׁקֵי טוּרַיָּא מִן בֵּית גִּנְזֵי עִלָּאֵי דִּי 13
לֵיהּ מִן עוֹבָדָיךְ תִּשְׂבַּע אַרְעָא׃ דְּמַרְבֵּי עִסְבָּא 14
לִבְעִירֵי וְיַרְקֵי לְפוּלְחָנָא דְּבַר נָשָׁא לְמַפָּק
לַחְמָא מִן אַרְעָא׃ וְחַמְרָא דִּמְחַדֵּי לִבָּא דְּבַר 15
נָשָׁא לְאַנְהָרָא אַפַּיָּא מִן מִשְׁחָא וְלַחְמָא לִבָּא
דְּבַר נָשָׁא יִסְעַד׃ שָׂבְעִין אִילָנַיָּא דִּי בְרָא יְיָ אַרְזֵי 16
לִבְנָן דִּי נְצִיב׃ דִּי תַמָּן צִפְּרַיָּא עָבְדִין שַׁרְכְּפֵי 17
וְחָא בְּרָאתֵי בֵּית מְדוֹרָהּ׃ טוּרַיָּא רָמַיָּא לְיַעֲלֵי 18
כֵּיפֵי רוּחְצָן לְטַפְזַיָּא׃ עֲבַד סִיהֲרָא לְמִמְנֵי 19
בֵּיהּ זִמְנַיָּא שִׁמְשָׁא יָדַע עִידָּן טְמוּעֵיהּ׃ תְּשַׁוֵּי 20
חֲשׁוֹךְ וַהֲוֵי לֵילְיָא בֵּיהּ רָחֲשָׁן כָּל חֵיוַת חוּרְשָׁא׃
בְּנֵי אַרְיָוָן אָכְלִין לְמִשְׁכַּח מְזוֹנָא וּלְמִבְעֵי מִן 21
אֱלָהָא מֵיכַלְהוֹן׃ תִּדְנַח שִׁמְשָׁא מִתְכַּנְשִׁין 22
וּלְבֵית מְדוֹרְהוֹן רָבְעִין׃ יִפּוֹק בַּר נָשָׁא לְעוֹבָדֵיהּ 23
וּלְפוּלְחָנֵיהּ עַד עֲרוּבֵי רַמְשָׁא׃ מָה סַגִּיעִין הִנּוּן 24
עוֹבָדָךְ יְיָ כּוּלְּהוֹן בְּחָכְמְתָא עֲבַדְתָּא מַלְיָא
אַרְעָא קִנְיָנָךְ׃ דְּנַן יַמָּא רַבָּא וּפְתֵי תְחוּמִין תַּמָּן 25
רִיחֲשָׁא וְלֵית מִנְיָן חֵיוָתָא זְעֵירָתָא עִם רַבְרְבָתָא׃
תַּמָּן אִלְפַיָּא אָזְלִין לִוְיָתָן דֵּין בְּרֵיתָא לְמִגְחַךְ 26
בֵּיהּ לְצַדִּיקַיָּא בִּסְעוּדַת בֵּית מְדוֹרֵיהּ׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Qui operit aquis veluti contignatione trabi- 3
um *atria* ſua : qui ponit *nubes* vehiculum
ſuum : [*qui obambulat*] ſuper nubes velo-
ces inſtar alarum aquilæ. Qui facit nuncios 4
ſuos veloces ſicut ſpiritus , miniſtros ſuos
fortes ſicut ignis flammicans. Qui fundat 5
terram ſuper baſim ſuam, ne commoveatur
in ſecula ſeculorum. Abyſſum veluti ve- 6
ſtimento operuiſti, & erumpunt ſuper
montes, ſtantque aquæ. Ab increpatio- 7
ne tua fugient ut ſeſe contrahant : à voce
tonitrui tui conturbabuntur ut diffundan-
tur. Aſcendunt de abyſſis ad montes , & 8
deſcendunt in valles ad locum iſtum quem
fundâſti eis. Terminum poſuiſti fluctibus 9
maris, quem non tranſgredientur,ne rever-
tantur ut operiant terram. Qui emittit fon- 10
tes in fluvios, qui inter montes commeant.
Potum ſuppeditant omnibus animalibus 11
agri : infringent onagri ſitim ſuam. Ju- 12
xta eos volucres cœli habitabunt ; de me-
dio ramuſculorum edent vocem cantus. Qui 13
irrigat montes de domo theſaurorum ſupe-
riorum ſuiipſius : de *operibus tuis ſatiabitur*
terra. Multiplicans fœnum jumentis, & 14
herbas ſervituti hominum, ad producendū
alimentum de terra. Et vinum quod lætifi- 15
cat cor hominum , ad illuminandas facies
oleo: & panis cor filiorum hominum ſuſten-
tabit. Saturantur arbores quas creavit Do- 16
minus ; cedri Libani quas plantavit. Illic 17
enim aves faciunt nidos: ciconiæ abietes do-
mus habitationis ipſius ſunt. Montes excelſi 18
ibicibus : petræ refugium cuniculis. Fecit 19
Lunam ut numerentur in ea tempora : Sol
novit tempus occaſus ſui. Poſuiſti tenebras 20
& fuit nox : in ipſa moventur omnes beſtiæ
ſylvæ. Catuli leonum rugiunt ut inveniant 21
nutrimentum, et ut requirant à Deo cibum
ſuum. Oriente Sole congregabuntur, & in 22
domo latibulorum ſuorum accubabunt.
Egredietur homo ad opus ſuum, & ad cul- 23
turam ſuam uſque ad *mixturas veſperti-*
nas. Quàm multa ſunt opera tua Domine ! 24
illa omnia in ſapientia feciſti : plena eſt
terra poſſeſſione tua. Hoc mare magnum 25
& ſpatioſum terminis : illic ſunt reptilia
innumera, animalia parva cum magnis. Ibi 26
naves pertranſeunt , [*ibi*] Leviathan iſte
quem creâſti ut ludat in eo, *pro juſtis in con-*
vivium domus habitaculi ſui.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܕܒܢܐ ܒܡܝܐ ܡܫܪܝܘܗܝ : ܘܣܡ ܥܠ ܥܢܢܐ ܡܪܟܒܬܗ. ܘܡܗܠܟ ܥܠ ܟܢܦܝ ܪܘܚܐ : 3
* ܕܥܒܕ ܡܠܐܟܘܗܝ ܪܘܚܐ. ܘܡܫܡܫܢܘܗܝ ܢܘܪܐ ܝܩܕܐ : * ܫܬܐܣ ܐܪܥܐ ܥܠ ܡܫܬܐܣܬܗ. ܕܠܐ 4 5
ܬܙܘܥ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ : * ܬܗܘܡܐ ܐܝܟ ܡܪܛܘܛܐ ܟܣܝܬܗ. ܘܥܠ ܛܘܪܐ ܩܡܘ ܡܝܐ : 6
* ܡܢ ܟܐܬܟ ܥܪܩܝܢ. ܘܡܢ ܩܠܐ ܕܪܥܡܝܟ ܡܬܕܘܕܝܢ : * ܣܠܩܘ ܛܘܪܐ ܘܢܚܬܘ ܦܩܥܬܐ. 7 8
ܠܐܬܪܐ ܕܛܝܒܬ ܠܗܘܢ : * ܬܚܘܡܐ ܣܡܬ ܠܗܘܢ. ܕܠܐ ܢܥܒܪܘܢ. ܘܢܚܦܘܢ ܠܐܪܥܐ : * ܫܕܪܬ 9 10
ܡܒܘܥܐ ܒܢܚܠܐ. ܘܒܝܢܝ ܛܘܪܐ ܗܘܘ ܡܗܠܟܝܢ : * ܢܫܬܘܢ ܟܠܗ ܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ. ܘܢܣܒܥܘܢ 11
ܦܪܐܐ ܨܗܝܐ : * ܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ ܥܠܝܗܘܢ ܬܫܪܐ. ܡܢ ܒܝܢܝ ܛܘܪܐ ܢܬܠܘܢ ܩܠܐ : * ܡܫܩܐ 12 13
ܛܘܪܐ ܡܢ ܡܫܪܝܘܗܝ. ܘܡܢ ܦܐܪܐ ܕܥܒܕܝܟ ܬܣܒܥ ܐܪܥܐ : * ܡܦܩ ܥܣܒܐ ܠܒܥܝܪܐ. 14
ܘܝܪܩܐ ܠܦܘܠܚܢܗ ܕܒܪܢܫܐ : ܠܡܦܩܘ ܠܚܡܐ ܡܢ ܐܪܥܐ. * ܚܡܪܐ ܡܚܕܐ ܠܒܗ ܕܒܪܢܫܐ. 15
ܘܡܢܗܪ ܐܦܘܗܝ ܒܡܫܚܐ. ܘܠܚܡܐ ܣܡܟ ܠܒܗ ܕܒܪܢܫܐ : * ܢܣܒܥܘܢ ܐܝܠܢܘܗܝ 16
ܕܡܪܝܐ. ܘܐܪܙܐ ܕܠܒܢܢ ܕܢܨܒ : * ܬܡܢ ܩܢܢܘ ܨܦܪܐ. ܘܚܘܣܕܐ ܩܢܗ ܒܒܪܘܬܐ : * ܛܘܪܐ ܪܡܐ 17 18
ܠܝܥܠܐ. ܘܫܘܥܐ ܓܘܣܐ ܠܚܓܣܐ :

* ܦܣܘܩܐ *

* ܥܒܕ ܣܗܪܐ ܠܙܒܢܐ. ܘܫܡܫܐ ܝܕܥ ܙܒܢܐ ܕܡܥܪܒܘܗܝ : * ܥܒܕ ܚܫܘܟܐ ܘܗܘܐ ܠܠܝܐ. 19 20
ܘܒܗ ܢܥܒܪܘܢ ܟܠܗܝܢ ܚܝܘܬܐ ܕܥܒܐ : * ܐܪܝܘܬܐ ܢܗܡܝܢ ܠܡܛܪܦ. ܘܠܡܒܥܐ ܡܢ ܐܠܗܐ 21
ܡܐܟܘܠܬܗܘܢ : * ܒܡܕܢܚ ܫܡܫܐ ܡܬܟܢܫܝܢ. ܘܡܥܡܪܝܗܘܢ ܪܒܥܝܢ : * ܢܦܘܩ 22 23
ܒܪܢܫܐ ܠܥܒܕܗ. ܘܠܦܘܠܚܢܗ ܥܕܡܐ ܠܪܡܫܐ : * ܡܐ ܣܓܝܐܝܢ ܥܒܕܝܟ ܡܪܝܐ. 24
ܘܟܠܗܘܢ ܒܚܟܡܬܐ ܥܒܕܬ. ܘܡܠܝܐ ܐܪܥܐ ܩܢܝܢܟ. * ܗܢܐ ܝܡܐ ܪܒܐ ܘܪܘܝܚܐ ܕܐܝܕܝܐ : 25
ܕܒܗ ܪܚܫܐ ܕܠܐ ܡܢܝܢ. ܚܝܘܬܐ ܪܘܪܒܬܐ ܥܡ ܙܥܘܪܬܐ : * ܘܒܗ ܗܘ ܡܗܠܟܢ ܐܠܦܐ. 26
ܘܠܘܝܬܢ ܗܢܐ ܕܒܪܝܬ ܠܡܓܚܟ ܒܗ :

* Conſtituit in aquis manſiones ſuas, & collo- 3
cavit ſuper nubes currum ſuum, graditurque
ſuper alas venti. Fecit Angelos ſuos ſpiritū, 4
& miniſtros ſuos ignem ardentem. Firmavit 5
terrā ſuper firmamentis ſuis, ne moveatur in
ſeculum ſeculorum. Abyſſum quaſi pallio oc- 6
cultâſti, & ſuper montes exurrexerunt aquæ:
Ab increpatione tua fugiunt, & voce toni- 7
truum tuorum deterrentur : Scandunt mon- 8
tes, & decurrunt in planities in locum quem
præparâſti eis : Terminum præſcripſiſti illis, 9
ne tranſgrediantur & operiant terram. Im- 10
miſiſti fontes in valles, interq; montes ince-
dunt, Potant omne animal deſerti, & ſatu- 11
rantur onagri ſitientes, Volatile cœli eis aſſi- 12
det : de medio montium edunt murmur. Ri- 13
gat montes ex habitaculis ſuis, & de fructibꝰ
operum tuorum ſatiabitur terra. Producit 14
fœnum jumentis, & olus ad uſum hominis, ad
eliciendum panē è terra. Vinum lætificat cor 15
hominis, & exhilarat faciē ſuā oleo, & pa-
nis fulcit cor hominis. Saturabuntur arbores 16
Dñi, & cedri Libani quas plantavit : Ibi ni- 17
dificârunt aves, & ciconiæ nidus eſt in abie-
tibus. Montes ſublimes ibicibus, & rupes 18
defenſio leporibus.

* *Sectio* *

Fecit Lunam in tempora, & Sol novit tem- 19
pus occaſûs ſui. Conſtituit tenebras, & fa- 20
cta eſt nox: atque in ipſa abeunt omnes beſtiæ
ſaltûs. Leones rugiunt ad prædandum, & ad 21
petendam à Deo eſcam ſuā: Ad ortum Solis, 22
recipiunt ſeſe, & in cubilibus ſuis cubant.
Exit homo ad opus ſuum, & ad negotium 23
ſuum, uſque ad veſperam. Quàm multa 24
ſunt opera tua Domine ? & quidem omnia
cum ſapientia feciſti, & impleta eſt terra opi-
bus tuis. Iſtud mare vaſtū & amplitudo ma- 25
nuum in quo continentur reptilia abſque nu-
mero, animalia magna cum parvis, Et per 26
quod ambulant naves ; & Leviathan iſte,
quem creâſti ad ridendum illud :

Versio VULG. LAT.

3 Qui tegis aquis superiora ejus. Qui
ponis nubem ascensum tuum: qui am-
4 bulas super pennas ventorum. Qui fa-
cis angelos tuos, spiritus; & ministros
5 tuos, ignem urentem. Qui fundâsti ter-
ram super stabilitatem suam: non in-
6 clinabitur in seculum seculi. Abyssus,
sicut vestimentum, amictus ejus; super
7 montes stabunt aquæ. Ab increpatio-
ne tua fugient: à voce tonitrui tui for-
8 midabunt. Ascendunt montes, & de-
scendunt campi, in locum quem fun-
9 dâsti eis. Terminum posuisti, quem nõ
transgredientur: neque convertentur
10 operire terram. Qui emittis fontes in
convallibus: inter medium montium
11 pertransibuut aquæ. Potabunt omnes
bestiæ agri: exspectabunt onagri in si-
12 ti sua. Super ea volucres cœli habita-
bunt: de medio petrarum dabunt vo-
13 ces. Rigans montes de superioribus su-
is: de fructu operum tuorum satiabi-
14 tur terra: Producens fœnum jumen-
tis, & herbam servituti hominum: Ut
15 educas panem de terra: Et vinum læ-
tificet cor hominis: Ut exhilaret faciẽ
in oleo: & panis cor hominis confir-
16 met. Saturabuntur ligna campi, & ce-
17 dri Libani, quas plantavit: Illîc pas-
seres nidificabunt. Herodii domꝰ dux
18 est eorũ: Montes excelsi cervis: petra
19 refugiũ herinaciis. Fecit Lunã in tem-
20 pora: Sol cognovit occasũ suũ. Posu-
isti tenebras, & facta est nox: in ipsa
21 pertransibunt omnes bestiæ sylvæ. Ca-
tuli leonũ rugientes, ut rapiant, & quæ-
22 rant à Deo escam sibi. Ortus est Sol,
& congregati sunt: & in cubilibus su-
23 is collocabuntur. Exibit homo ad opꝰ
suum: & ad operationem suam usque
24 ad vesperum. Quàm magnificata sunt
opera tua, Domine! omnia in sapientia
fecisti: impleta est terra possessione
25 tuâ. Hoc mare magnum, & spatiosum
manibus: illîc reptilia, quorum non est
numerus. Animalia pusilla cũ magnis:
26 Illîc naves pertransibunt. Draco iste,
quem formâsti ad illudendum ei:

Versio GRÆCA LXX. Interp.

3 † Ὁ ςεγάζων ἐν ὕδασι τὰ ὑπερῷα αὐτοῦ, † ὁ τιθεὶς
νέφη τὴν ἐπίβασιν αὐτοῦ· † ὁ περιπατῶν ἐπὶ πτερύ-
4 γων ἀνέμων· † Ὁ ποιῶν τοὺς ἀγγέλους αὐτοῦ πνεύ-
5 ματα, † καὶ τοὺς λειτουργοὺς αὐτοῦ (α) πῦρ φλέγον· † Ὁ
θεμελιῶν τὴν γῆν ἐπὶ τὴν ἀσφάλειαν αὐτῆς, † οὐ (β)
6 κλιθήσεται εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος. † Ἄβυσσος
ὡς ἱμάτιον τὸ περιβόλαιον αὐτοῦ, † ἐπὶ τῶν ὀρέων
7 ςήσονται ὕδατα. † Ἀπὸ ἐπιτιμήσεώς σου φεύξονται,
8 † ἀπὸ φωνῆς βροντῆς σου δειλιάσουσιν. † Ἀναβαί-
νουσιν ὄρη, καὶ καταβαίνουσι πεδία· † εἰς τόπον ὃν
9 ἐθεμελίωσας αὐτοῖς. † Ὅριον ἔθου ὃ οὐ παρελεύσον-
10 ται, † οὐδὲ ἐπιςρέψουσι καλύψαι τὴν γῆν. † Ὁ ἐξ-
αποςέλλων πηγὰς ἐν φάραγξιν, † ἀναμέσον τῶν
11 ὀρέων διελεύσονται ὕδατα. † Ποτιοῦσι πάντα τὰ θη-
ρία τοῦ ἀγροῦ, † προσδέξονται ὄναγροι εἰς δίψαν αὐτῶν.
12 † Ἐπ' αὐτὰ τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ κατασκηνώσει,
13 † ἐκ μέσου τῶν πετρῶν δώσουσι φωνήν. † Ποτίζων ὄρη
ἐκ τῶν ὑπερῴων αὐτοῦ, † ἀπὸ καρποῦ τῶν ἔργων σου χορ-
14 τασθήσεται ἡ γῆ. † Ὁ ἐξανατέλλων χόρτον τοῖς
κτήνεσι, † καὶ χλόην τῇ δουλείᾳ τῶν ἀνθρώπων· † τοῦ
15 ἐξαγαγεῖν ἄρτον ἐκ τῆς γῆς, † Καὶ οἶνος εὐφραίνει
καρδίαν ἀνθρώπου· † τοῦ ἱλαρῦναι πρόσωπον ἐν ἐ-
λαίῳ, † καὶ ἄρτος καρδίαν ἀνθρώπου ςηρίζει. † (γ)
16 Χορτασθήσεται τὰ ξύλα τοῦ πεδίου, † αἱ κέδροι τοῦ Λι-
17 βάνου ἃς (δ) ἐφύτευσεν. † Ἐκεῖ ςρουθία ἐννοσ-
18 σεύσουσι, † τοῦ (ε2) ἐρωδιοῦ ἡ οἰκία ἡγεῖται αὐτῶν. † Ὄ-
ρη τὰ ὑψηλὰ ταῖς ἐλάφοις, † πέτρα καταφυγὴ τοῖς
19 (ε) χοιρογρυλλίοις. † Ἐποίησε σελήνην εἰς καιρούς,
20 † ὁ ἥλιος ἔγνω τὴν δύσιν αὐτοῦ. † Ἔθου σκότος καὶ ἐ-
γένετο νύξ, † ἐν αὐτῇ διελεύσονται πάντα τὰ θηρία
21 τοῦ δρυμοῦ. † Σκύμνοι ὠρυόμενοι (ϛ) ἁρπάσαι, † καὶ ζητῆ-
22 σαι παρὰ τοῦ θεοῦ βρῶσιν αὐτοῖς. † Ἀνέτειλεν ὁ ἥλι-
ος καὶ (ζ) συνήχθησαν, † καὶ ἐν ταῖς μάνδραις αὐτῶν
23 κοιτασθήσονται. † Ἐξελεύσεται ἄνθρωπος ἐπὶ τὸ
ἔργον αὐτοῦ, † καὶ ἐπὶ τὴν ἐργασίαν αὐτοῦ ἕως ἑσπέρας.
24 † Ὡς ἐμεγαλύνθη τὰ ἔργα σου κύριε, † πάντα ἐν
σοφίᾳ ἐποίησας. † ἐπληρώθη ἡ γῆ τῆς κτίσεώς σου·
25 † Αὕτη ἡ θάλασσα ἡ μεγάλη καὶ εὐρύχωρος· † ἐκεῖ
ἑρπετὰ ὧν οὐκ ἔςιν ἀριθμός, † ζῶα μικρὰ μετὰ μεγά-
26 λων. † Ἐκεῖ πλοῖα διαπορεύονται, † δράκων οὗτος ὃν
ἔπλασας ἐμπαίζειν αὐτῷ.

MS. A. (α) * πυρὸς * φλέγα· (β) κινηθήσε-
ται (γ) Χορτασθήσονται (δ) ἐφύτευσας. (ε2) *
ἐρωδιοῦ (ε) λαγωοῖς. (ϛ) τοῦ ἁρπάσαι (ζ) συνήχθησαν,
καὶ εἰς τὰς μάνδρας

Vers. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Transl. LAT.

Qui (c) tegit in aquis superiora ejꝰ: 4 3
qui ponit [c] nubes ascensũ (d) suũ.
Qui ambulat super pennas ventorũ:
5 Qui facit angelos suos spiritus, & 4
[d] ministros suos ignẽ (e) flagran-
tem. 6 Qui fundat terram [e] super 5
(f) stabilitatẽ ejus: non inclinabitur
in seculũ seculi. 7 Abyssus, sicut ve- 6
stimentũ, (g) amiclꝰ ejus: super mon-
tes stabunt aquæ. 8 Ab increpatione 7
tua fugient: à voce tonitrui tui for-
midabunt. 9 Ascendunt montes, & 8
descendunt campi in locũ, quẽ fun-
dâsti eis. 10 Terminũ posuisti, quem 9
non transgredientur: neq; reverten-
tur operire terram. 11 Qui emittis 10
fontes in convallibus: inter medium
montiũ pertransibunt aquæ. 12 Pota- 11
bunt omnes bestiæ agri: (h) suscipi-
ent onagri in sitim suã. 13 [f] Super 12
(i) ea volucres cœli habitabunt: de
medio petrarum dabunt vocem. 14
Rigans montes de superioribus suis: 13
de fructu operũ tuorum satiabitur
terra. 15 Producens fœnũ jumentis; 14
& herbã servituti hominũ. 16 ut
educat panẽ de terra: Et vinum (k) 15
lætificat cor hominis. 17 [g] ut ex-
hilaret faciẽ in oleo: & panis [h] cor
hominis confirmat. 18 Saturabuntur 16
ligna (l) campi, cedri libani, quas [i]
plantavit. Illîc (m) [k] passeres nidi- 17
ficabunt: 19 (n) erodii domus dux
est eorum. Montes excelsi cervis, pe- 18
tra refugium (o) herinaciis. 20 Fecit 19
Lunã in tempora: Sol cognovit oc-
casum suum. 21 Posuisti tenebras, et 20
facta est nox: in ipsa pertransibunt o-
mnes bestiæ sylvæ. 22 Catuli leonum 21
rugientes, ut rapiant, et quærãt à Deo
escam sibi. 23 [l] Ortus est Sol, & (p) 22
congregabuntur: & in cubilibus su-
is cubabunt. 24 Exibit homo ad opus 23
suum, & [m] ad operationem suam
usque ad vesperam. 25 Quàm ma- 24
gnificata sunt opera tua, Domine?
omnia in sapientia fecisti. Repleta
est terra (q) creaturâ tuâ: 26 Hoc 25
mare magnum, & (r) spatiosum:
illîc reptilia, quorum non est nu-
merus: 27 animalia pusilla cum
magnis: Illic naves (s) pertranse- 26
unt. 28 Draco hic, quem finxisti,
ad (t) illudendum [n] ei.

Versio ÆTHIOPICA.

ዘይጠፍር:በማይ:ጽርሑ::=፡ ወረሰየ:ደመ 4
ና:መክየደ:: ዘየሐውር: በክንፈ:ነፋስ::=፡
ዘይሬስዮሙ:ለመላእክቲሁ: መንፈሰ:: ወለ 5
እለ: ይትለአክዎ : ነደ:እሳት::=፡ ሰረረ:ለ 6
ምድር: ወአጽንዓ:: ከመ: ኢታንቀልቅል:ለ
ዓለም:ዓለም::=፡ ወቀላይ፮: ከመ:ልብስ: 7
አጽፋ:: ውስተ : አድባር : ይቀውም: ማያ
ት::=፡ ወእምተግሣጽከ: ይጕዩ:: ወእም 8
ድምፀ:ነጐድጓድከ: ይደነግፁ::=፡ የዐር 9
ጉ:አድባረ: ወይወርዱ:ገደም:: ውስተ: ብ
ሔር :ኅበ:ሰረርኮሙ::=፡ ወሠራዕኮሙ: ወ 10
ሰኖሙ:እምኅበ:ኢይኅልፈ:: ከመ:ኢይትመ
የጡ: ወኢይክድንዋ:ለምድር::=፡ ዘይፌ 11
ኑ:አንቅዕተ: ውስተ: ቈላት:: ወማእከለ:
አድባር:የኅልፈ:ማያት::=፡ወያስትዩ:ለኵ 12
ሉ:አርዌ : ገደም::ወይትወከፈ: ሐለስትዮ
ታት:ለጽምዖሙ::=፡ ወያጸሉ:ህየ:አዕዋ 13
ፈ: ሰማይ:: ወይነቅው : በማእከለ : ጸሳዓ
ት::=፡ ዘይሠቅዮሙ:ለአድባር፡እምውሳ 14
ጢያቲሆሙ:: እምፍሬ:ተግባርከ:ትጸግብ:
ምድር::=፡ ዘያበቍል:ሣዕረ:ለእንስሳ::ወ 15
ኀመልማለ: ለቅኔ : እጓለ: እመሕያው:: ከ 16
መ:ያውፅእ:እክለ:እምድር:: ወይን:ያስታ
ፌሥሕ:ልበ:ሰብእ::=፡ ወቅብእ: ለአብር 17
ሆ:ገጽ:: ወእክል:ያጸንዕ:ኅይለ:ሰብእ::=፡
ወይጸግቡ:ዕፀወ : ገደም:: አርዘ:ሊባኖስ: 18
ዘተከልከ:: ወበህየ:ይትዋለደ:አዕዋፍ::=፡
ወይትጋወሮን: ቤተ:ሄሮድያኖስ:: አድባር: 19
ነዋኃት:ለኀየለት:: ወጸሳዓት: ምጕያዮን:
ለጊሑ::=፡ ወገበርከ : ወርኀ : በእድሜ 20
ሁ::=፡ወፀሐይ፮:አእመረ:ምዕራቢሁ::=፡ 21
ታመጽእ : ጽልመተ : ወይከውን : ሌሊተ::
ወይወጽኡ:ቦቱ: ኵሉ: አርዌ: ገደም::=፡
ወእጕለ:አናብስት:ይጥሕሩ: ወይመስጡ:: 22
ወይስእሉ : ኅበ : እግዚአብሔር : ሲሳዮ
ሙ::=፡ ወእምከመ: ሠረቀ:ፀሐይ: የአት 23
ው:: ወይውዕሉ : ውስተ : ግበቢሆሙ::=፡
ወይወፍር: ሰብእ: ውስተ: ተግባሩ:: ወይው 24
ዕል: ወይትቀነይ:እስከ:ይመሲ::=፡ ጥቀ: 25
ዐቢይ: ግብርከ:እግዚኦ:: ወኵሎ : በጥበ
ብ:ገበርከ::መልአ:ምድረ: ዘፈጠርከ::=፡
ዛቲ: ባሕር:ዐባይ : ወረሒብ:: ህየ : ዘይት 26
ሀወስ:ዘአልቦ:ኍልቍ::=፡ እንስሳ : ዐበይ 27
ት፡ምስለ:ደቃቅ:: ወህየ:የሐውሩ : አሕማ
ር ::=፡ ከይሲ : ዘፈጠርከ : ይሠለቅ : ላዕ 28
ሌሆሙ::

INTERP. ÆTHIOP. [c] nubem scabellum suum. [d] eos qui ministrant ei flammam ignis. [e] et stabilem reddit eam: [f] Et illic volucres [g] Et oleum ad illustrandum faciem ejus: [h] robur hominis [i] plantâsti. [k] aves parient: [l] Et quando Sol oritur conveniunt: [m] pergit inservire donec vesperascit. [n] eis.

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

3 * الذي سقف علاليه بالمياه * الذي جعل مسالكه على السحاب الذي مشي علي اجنحة
4 5 الرياح * الذي خلق ملايكته ارواحا * وخدامه لهيب نار * الذي اسس الارض علي ثباتها * ولا
6 7 يتحرك الي الابد * اشتملت بالعمق مثل الثوب * وعلي الجبال تقف المياه * من انتهارك يهربون *
8 ومن صوت رعدك يجزعون * الجبال ارتفعت * والبقاع انخفضت الي الموضع الذي اسسته لهن
9 10 * جعلت لها حدا لا تتجاوزه * ولن تعود هي فتغطي الارض * الذي ارسل ينابيع في الاودية *
11 في وسط الجبال تجري المياه * تشرب جميع وحوش الارض * وتقبل حمير الوحش عند عطشها
12 13 * وتحل عليها طيور السماء * وتعطي اصواتها من وسط الصخور * الذي يسقي الجبال من علاليه *
14 ومن ثمر اعمالك تشبع الارض * الذي ينبت العشب للدواب * وانواع الخضر لاستعباد البشر *
15 لكي يخرج من الارض خبزا * وخمرا يفرح قلب الانسان * ولكي يهلل وجهه بالدهن * الخبز
16 17 يشد قلب الانسان * يشبع شجر الحقل وارز لبنان * التي غرسها * هناك حيث تفرخ العصافير * بيت
18 19 البلشوم ماش قدامه * الجبال العالية للايايل * الصخور ملجاء الارانب * خلق القمر للازمان *
20 21 والشمس تعرف اوان غروبها * وضع ظلمة فصارت ليلا * يعبر فيه جميع وحوش الغياض * زئير
22 الاسد لطلب فريستها * وتطلب من الله طعامها * عند طلوع الشمس ينتشرون * والي مساكنهم
23 24 يرجعون * ويرجع الانسان الي عمله * والي صناعته الي الليل * ما اعظم اعمالك يا رب * خلقت كل
25 شي بحكمتك * امتلات الارض من خليقتك * هذا البحر العظيم السعة * فيه دبابات لا تحصى *
26 صغار وكبار الحيوان * حيث تعبر فيه السفن * هناك هذا التنين الذي خلقته ليتعجب منه *

Qui tectum posuit superioribus ejus a- 3
quas: qui fecit ambulacra sua super nu-
bes: qui ambulavit super alas ventorum:
Qui creavit Angelos suos spiritus, & mi- 4
nistros suos flammam ignis: Qui funda- 5
vit terram super stabilitatem ejus, nec mo-
vebitur in æternum: Amictus es abysso 6
quasi veste: et super montes stabunt aquæ.
Ab increpatione tua fugient, & à voce 7
tonitrui tui formidabunt. Montes extule- 8
runt sese, & valles sese demiserunt ad
locum quem fundâsti eis. Posuisti eis ter- 9
minum quem non præteribunt, nec ampliùs
ipsæ operient terram. Qui emisit fontes in 10
valles, interque montes decurrunt aquæ.
Bibunt omnes bestiæ terræ, & accedunt 11
asini sylvestres in siti sua. Et commoran- 12
tur super eas volucres cœli, eduntque vo-
ces suas è mediis rupibus. Qui rigat mon- 13
tes è superioribus habitaculis suis, & de
fructu operum tuorum satias terram. Qui 14
producit herbam jumentis, & genera ole-
rum virentium in servitutem hominis.
Quatenus eliciat è terra panem Et vi- 15
num lætificans cor hominis: atque ut ex-
hilaretur facies ejus oleo: panis corrobo-
ret cor hominis. Satiat arbores campi & 16
cedros Libani quas plantavit. Illic est 17
ubi pullos gignunt aves, domus ciconiæ
gradiens est ante ipsum. Montes excelsi 18
cervis, petræ refugium leporibus. Crea- 19
vit lunam pro temporibus, & sol novit
tempus occasûs sui. Posuit tenebras, 20
facteque sunt nox, in qua pertranseunt
omnes bestiæ sylvarum. Rugiunt leones 21
ad quærendam prædam suam, & petunt
à Deo escam suam. Oriente sole disper- 22
guntur, & ad habitacula sua se recipi-
unt. Et revertitur homo ad operam suam, 23
& ad artem suam usque ad noctem.
Quam magna sunt opera tua O Domine: 24
creâsti singulas res sapientiâ tuâ: imple-
ta est terra creaturis tuis. In hoc mari 25
summè amplo extant reptilia haud nu-
meranda, minima & maxima animan-
tium: ubi transeunt in illud naves, 26
ibi est ille draco quem creâsti ut esset ad-
mirationi.

תהלים : קה

,eis Dabis .ſuo tempore in eorũ eſcam *dandum ad* : *ſperabunt* te ad ipſa Univerſa
27 כלם אליך ישברון לתת אכלם בעתו : תתן להם
,*tuas facies* Abſcondes .bono ſaturabuntur ,tuam manum aperies : colligent
28 ילקטון תפתח ידך ישבעון טוב : תסתיר פניך
.revertentur ſuum pulverem in & : *expirabunt* ,eorum ſpiritum *colliges* ; terrebuntur
29 יבהלון תסף רוחם יגועון ואל־עפרם ישובון :
Domini gloria Erit .terræ *facies* innovabis & : creabuntur ,tuũ ſpiritũ Emittes
30 תשלח רוחך יבראון ותחדש פני אדמה : יהי כבוד יהוה
31 ,terram *ad Aſpiciens* .ſuis operibus in DOMINUS lætabitur : ſeculum in
לעולם ישמח יהוה במעשיו : המביט לארץ
32 : *meis vitis* in DOMINO Cantabo .*fumabunt* & , montes *in tanget* : *tremet* &
ותרעד יגע בהרים ויעשנו : אשירה ליהוה בחיי
33 lætabor ego : meum eloquium eo ſuper *Dulceſcet* .*me adhuc in* meo Deo canam
אזמרה לאלהי בעודי : יערב עליו שיחי אנכי אשמח
34 .*ipſi* non ultrà impii & :terra de peccatores Conſumentur .DOMINO in
ביהוה : יתמו חטאים מן־הארץ ורשעים עוד אינם
35 .Hallelujah : Domino mea anima Benedic
ברכי נפשי את־יהוה הללו־יה :

PSAL. CV. קה

.ejus *ſtudia* populis in facite nota : ej⁹ nomen *in* invocate ,Domino Confitemini
1 הודו ליהוה קראו בשמו הודיעו בעמים עלילתיו :
vos Laudate .ejus mirabilibus univerſis *in* loquimini : ei pſallite ,ei Cantate
2 שירו־לו זמרו־לו שיחו בכל־נפלאתיו : התהללו
3 Dominum Quærite .Dominum quærentiũ cor lætetur : ej⁹ *ſanctitatis* nomine in
בשם קדשו ישמח לב מבקשי יהוה : דרשו יהוה
4 quæ ej⁹ mirabilium Mementote .ſemper ej⁹ *facies* quærite : ejus fortitudinẽ &
ועזו בקשו פניו תמיד : זכרו נפלאתיו אשר־
5 : ejus ſervi Abraham Semen .ejus oris judiciorum & ,ejus prodigiorum : fecit
עשה מפתיו ומשפטי־פיו : זרע אברהם עבדו
6 .ejus judicia terra univerſa in : noſter Deus Dominus Ipſe .ejus electi Jahacob filii
בני יעקב בחיריו : הוא יהוה אלהינו בכל־הארץ משפטיו :
7 Quod .*generationes* mille *ad* præcepit verbi : ſui pacti ſeculum in fuit Memor
זכר לעולם בריתו דבר צוה לאלף דור : אשר
8 Jahacob ipſi illud ſtatuit Et .Iſchac ad ſuũ juramentũ & : Abraham cum *excidit*
9 כרת את־אברהם ושבועתו לישחק : ויעמידה ליעקב
10 ;Chenahan terram dabo Tibi ,Dicendo .*ſeculi* pactum Iſraeli ; ſtatutũ in
לחק לישראל ברית עולם : לאמר לך אתן את־ארץ כנען
11 .ea in peregrini *& parum ſicut:numeri viros ipſos exiſtendo In* .veſtræ hæreditatis funiculũ
חבל נחלתכם : בהיותם מתי מספר כמעט וגרים בה :
12 Non .alterũ populum ad regno de : gentem ad gente de ambulaverunt Et
ויתהלכו מגוי אל־גוי ממלכה אל־עם אחר : לא־
13 14 attingatis Ne .reges eos propter corripuit & : *eos opprimere* hominem permiſit
הניח אדם לעשקם ויוכח עליהם מלכים : אל־תגעו
15 : terram ſuper famem vocavit Et .malefaciatis ne meis prophetis & : meos *unctos in*
במשיחי ולנביאי אל־תרעו : ויקרא רעב על־הארץ
16 .contrivit panis virgam omnem
כל־מטה־לחם שבר :

תרגום TARGUM.

27 כולהון עלך סבירין למתן מזונהון בזמניה :
28 תתן להון וכנשין תפתח אידך ושבעין טבא :
29 תסלק שכנתך מתבהלין תכנוש רוחהון
30 ומתנגדין ולות עפרהון תיבין : תשלח רוח
31 קודשך ומתברין ותחדת אפי ארעא : יהי
32 איקר יי לעלם יחדי יי בעובדוי : דמסתכל
לארעא ומתרגפא מקרב בטוריא ומסקין
33 תננא : אשבח קדם יי בחיי אזמר לאלהי
34 בעוד איתי : יבסם קדמוי שותי אנא אחדי
35 במימרא דיי : ישתצון חטאיא מן ארעא
ורשיעיא תוב ליתיהון בריכי נפשי ית שמא
דיי הללויה :

קה

1 שבחו קדם יי קרון בשמיה הודעון בעממיא
2 עובדוי : שבחו קדמוי זמרו קדמוי מלילו בכל
3 פרישותיה : שבחו בשום קודשיה יחדי לבהון
4 דתבעי אולפן מן קדם יי : תבעו אולפנא
5 דיי ואוריתיה אקבילו אפוי תדירא : אדכרו
6 פרישותיה די עבד תמהוי ודיני פומיה : זרעא
7 דאברהם עבדיה בני יעקב בחירוי : הוא יי
8 אלהנא בכל ארעא מתיחין דינוי : דכיר לעלם
9 קימיה פתגם פקד לאלפי דרין : די גזר עם
10 אברהם וקימיה ליצחק : וקימניה ליעקב
11 לגזירא לישראל קים עלם : למימר לך אתן
12 ית ארעא דכנען עדב אחסנתכון : כד הויתון
13 עם דמנין כזעירין ויתבין בה : והליכו
מן עמא לעמא ממלכותא לעמא אחורן :
14 לא שבק אנש לטלומהון ואוכח בגינהון
15 מלכיא : לא תקרבון במשיחי ובנביאי לא
16 תבאישון : ואכלי כפנא על ארעא כל סעיד
לחמא תבר :

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Omnia illa in te ſperant, ut des eſcam eis in 27 tempore ſuo. Dabis illis, *&* colligent; ape- 28 ries manum tuam, & ſaturabuntur bonitate. Auferes majeſtem tuam, conturba- 29 buntur : congregabis ſpiritum eorum, & deficient, ac in pulverem ſuum revertentur. Mittes ſpiritum ſanctum tuum, & cre- 30 abuntur, & renovabis faciem terræ. Sit 31 gloria Domini in ſeculum, lætetur Dominus in operibus ſuis. Qui reſpicit terram, 32 & tremit: tangit montes, & fumum in altum emittunt. Laudabo coram Domino in 33 vita mea, pſallam Deo meo quamdiu ſum. Jucunda ſit coram eo meditatio mea : ego 34 lætabor in verbo Domini. Deficiant pec- 35 catores à terra, & improbi ultrà non ſint : benedic anima mea nomini Domini, *Hallelujah.*

PSAL. CV.

LAudes dicite coram Domino, invocate 1 nomen ejus, notas facite in populis operationes ejus. Laudes dicite coram eo, pſal- 2 lite coram eo, narrate omnia miranda ejus facinora. Laudate in nomine ſancto ejus, 3 lætetur cor illorum qui quærunt doctrinam à conſpectu Domini. Quærite doctrinam 4 Domini & Legem ejus : accipite faciem ejus ſemper. Recordamini miraculorum 5 ejus quæ edidit; portentorum ejus, & judiciorum oris ejus. Semen Abraham ſervi 6 ejus, filii Jacob electi ejus. Ipſe eſt Do- 7 minus Deus noſter, in omni terra protenſa ſunt judicia ejus. Recordatus eſt in 8 æternum pacti ſui, verbi quod præcepit in mille generationes. Quod pepigit cum 9 Abraham, & jusjurandum ſuum ad Iſaac : Et ſtatuit illud Jacob pro decreto, Iſraeli 10 pro fœdere æterno. Dicendo : Tibi dabo 11 terram Chanaan ſortem hæreditatis veſtræ. Cùm eſſetis populus numero modicus, & 12 incolæ in ea. Et transierunt de populo in 13 populum, de regno ad populum alterum. Non permiſit hominem injuriam inferre il- 14 lis, & corripuit propter eos reges. Nolite 15 tangere chriſtos meos, & prophetis meis ne malefeceritis. Et vocavit famem ſuper 16 terram, omnem ſuſtentamentum panis contrivit.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

27 * ܟܠܗܘܢ ܠܟ ܗܘ ܡܣܟܝܢ. ܕܬܬܠ ܠܗܘܢ ܡܐܟܘܠܬܗܘܢ ܒܙܒܢܗ : * ܝܗܒ ܐܢܬ ܠܗܘܢ
28 ܘܡܬܬܙܝܢܝܢ. ܦܬܚ ܐܢܬ ܐܝܕܟ ܘܣܒܥܝܢ :* ܡܗܦܟ ܐܢܬ ܐܦܝܟ ܘܡܬܬܙܝܥܝܢ. ܫܩܠ ܐܢܬ 29
ܪܘܚܗܘܢ ܘܡܝܬܝܢ : ܘܠܥܦܪܗܘܢ ܗܦܟܝܢ. * ܡܫܕܪ ܐܢܬ ܪܘܚܟ ܘܡܬܒܪܝܢ : ܘܡܚܕܬ ܐܢܬ 30
ܦܪܨܘܦܗ ܕܐܪܥܐ : * ܢܗܘܐ ܫܘܒܚܗ ܕܡܪܝܐ ܠܥܠܡ : ܢܚܕܐ ܡܪܝܐ ܒܥܒܕܘܗܝ. * ܕܚܐܪ ܒܐܪܥܐ 31
32 ܘܪܬܬܐ : ܘܟܐܐ ܒܛܘܪܐ ܘܬܢܢܝܢ. * ܐܫܒܚ ܠܡܪܝܐ ܒܚܝܝ : ܘܐܙܡܪ ܠܐܠܗܝ ܥܕ ܕܩܐܡ ܐܢܐ. 33
* ܢܫܦܪ ܠܗ ܬܫܒܘܚܬܝ : ܘܐܢܐ ܐܚܕܐ ܒܡܪܝܐ. * ܘܢܫܬܠܡܘܢ ܚܛܝܐ ܡܢ ܐܪܥܐ : ܘܥܘܠܐ 34
35 ܠܐ ܢܥܟܒܘܢ ܒܗ. ܒܪܟܝ ܢܦܫܝ ܠܡܪܝܐ. * ܫܠܡ ܡܙܡܘܪܐ ܕܡܐܐ *

* ܠܐ ܡܫܡܗܐ. ܡܦܩ ܒܗ ܥܠ ܬܫܥܝܬܐ : ܠܐ ܬܕܚܠ ܝܥܩܘܒ ܠܡܚܬ ܠܡܨܪܝܢ. ܐܦ ܠܢ 1
ܪܘܚܢܐܝܬ ܕܠܐ ܢܕܚܠ ܡܐ ܕܢܦܩ ܐܢܫ ܕܢܬܟܬܫ ܥܡ ܫܐܕܐ. ܕܐܠܗܐ ܗܘ ܡܥܕܪܢܢ
ܘܡܬܟܬܫ ܚܠܦܝܢ. ܦܬܓܡܐ ܨܐ. ܐܘܕܘ ܠܡܪܝܐ ܘܩܪܘ ܫܡܗ. ܘܚܘܘ ܒܥܡܡܐ ܥܒܕܘܗܝ :
* ܫܒܚܘܗܝ ܘܙܡܪܘ ܠܗ. ܘܐܫܬܥܘ ܟܠܗܘܢ ܬܕܡܪܬܗ : * ܫܒܚܘ ܠܫܡܐ ܕܩܘܕܫܗ. 2
3 ܢܚܕܐ ܠܒܗܘܢ ܕܒܥܝܢ ܠܡܪܝܐ : * ܒܥܘ ܠܡܪܝܐ ܘܐܬܚܝܠܘ. ܘܒܥܘ ܐܦܘܗܝ 4
ܒܟܠܙܒܢ : * ܐܬܕܟܪܘ ܬܕܡܪܬܗ ܕܥܒܕ. ܬܕܡܪܬܗ ܘܕܝܢܐ ܕܦܘܡܗ : * ܙܪܥܗ ܕܐܒܪܗܡ ܥܒܕܗ. 5
6 ܘܒܢܝ ܝܥܩܘܒ ܓܒܝܘܗܝ : * ܗܘܝܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. ܕܒܟܠܗ ܐܪܥܐ ܕܝܢܘܗܝ : * ܐܬܕܟܪ 7
8 ܠܥܠܡ ܩܝܡܗ. ܡܠܬܐ ܕܦܩܕ ܠܐܠܦ ܕܪܝܢ : * ܕܩܝܡ ܩܝܡܗ ܥܡ ܐܒܪܗܡ. ܘܡܘܡܬܗ 9
10 ܥܡ ܐܝܣܚܩ : * ܘܣܗܕܘܬܗ ܥܡ ܝܥܩܘܒ. ܩܝܡܐ ܠܐܝܣܪܝܠ ܠܥܠܡ : * ܘܐܡܪ ܕܠܟ 11
ܐܬܠ ܐܪܥܐ ܕܟܢܥܢ. ܚܒܠܐ ܕܝܪܬܘܬܟܘܢ : * ܟܕ ܗܘܝܬܘܢ ܒܡܢܝܢܐ ܙܥܘܪܐ. ܘܒܨܝܪܐ 12
ܗܘܝܬܘܢ ܘܬܘܬܒܐ ܗܘܝܬܘܢ ܒܗ : * ܘܥܒܪܘ ܡܢ ܥܡܐ ܠܥܡܐ. ܘܡܢ ܡܠܟܘܬܐ ܠܥܡܐ ܐܚܪܢܐ : 13
14 * ܘܠܐ ܫܒܩ ܠܒܪܢܫܐ ܕܢܛܠܘܡ ܐܢܘܢ. ܐܟܣ ܡܠܟܐ ܡܛܠܬܗܘܢ : * ܕܠܐ ܬܬܩܪܒܘܢ ܠܡܫܝܚܝ. 15
ܘܒܢܒܝܐ ܠܐ ܬܒܐܫܘܢ : * ܘܩܪܐ ܟܦܢܐ ܥܠ ܐܪܥܐ. ܘܟܠܗ ܣܘܡܟܐ ܕܥܒܘܪܗܘܢ ܬܒܪ. 16

Omnia te expectant, ut ſuppedites eis cibum 27 ſuo tempore. Das illis, & veſcuntur : ape- 28 ris manum tuam, & ſaturantur ; Avertis fa- 29 ciem tuam, & turbantur : tollis ſpiritum eorum, & moriuntur, inque pulverem ſuum revertuntur ; Mittis ſpiritum tuum, & crean- 30 tur, atque renovas faciem terræ. Sit gloria 31 Domini in ſeculum : gaudeat Dominus operibus ſuis: Qui reſpicit humum, ac tremefit: 32 & increpat montes, ac fumant. Laudabo 33 Dominum in vita mea, & canam Deo meo quamdiu ſuperſtes ero. Grata ſit ei laudatio 34 mea, & ego lætabor in Domino. Et conſu- 35 mentur peccatores de terra, & ſcelerati haud moram facient in ea. Benedic anima mea Domino.

PSAL. CV.

Anonymus. Diſſerit in eo de hiſtoria, Ne me- 1 *tuas Jacob deſcendere in Ægyptum. Simul etiam nos ſpiritualiter docet non eſſe pertimeſcendum quum exit quis ad decertandum contra dæmones; quia Deus eſt auxilium noſtrũ, & pugnat pro nobis. Verſus 91.*

COnfitemini Dño, & invocate nomẽ ejus, et declarate inter populos opera ej⁹ : Glo- 2 rificate eum, & canite illi, & enarrate cuncta mirabilia ejus : Laudate nomen ſanctitatis 3 ejus : lætetur cor eorum qui quærunt Dñm. Quærite Dñm & corroboramini, & expetite 4 faciem ejus omni tempore. Memoriâ repetite 5 prodigia ejus quæ patravit, miracula ejus & judicium oris ejus. O ſemen Abrahæ ſervi 6 ejus, & filii Jacob electi ejus, Ipſe eſt Domi- 7 nus Deus noſter, cujus judicia in univerſa terra. Meminit in perpetuum fœderis ſui, verbi 8 de quo monuit in mille æva. Sanxit enim 9 pactum ſuum cum Abraham, & juramenta ſua cum Iſaac. Et teſtimonium ſuum cum Ja- 10 cob, fœdus Iſraeli in ſempiternũ ; Dixitque, 11 Tibi dabo terram Canaan funes hæreditatis veſtræ. Cùm igitur exigui eſſetis numero, 12 pauci eſſetis, & advenæ eſſetis in ea : Pro- 13 ceſſerunt de gente ad gentem, & de regno ad populum alium : Et non permiſit homini op- 14 primere eos. Corripuit reges propter illos, *dicens,* Ne accedatis ad unctos meos, & 15 prophetas meos ne lædatis. Et advocavit fa- 16 mem ſuper terram, & omnem culmum ſegetis eorum contrivit.

Verſio VULG. LAT.

27 Omnia à te expectant ut des illis escã
28 in tempore. Dante te illis, colligent :
aperiente te manũ tuã, omnia implebuntur
29 bonitate. Avertente autem te
faciem, turbabuntur: auferes ſpiritum
eorũ, & deficient, & in pulverem ſuũ
30 revertentur. Emittes ſpiritũ tuũ, &
creabuntur: & renovabis faciẽ terræ.
31 Sit gloria Dñi in ſeculũ: lætabitur Dominus
32 in operibus ſuis : Qui reſpicit
terrã, & facit eã tremere: qui tangit
33 montes, & fumigant. Cantabo Domino
in vita mea : pſallam Deo meo
34 quamdiu ſum. Jucundũ ſit ei eloquiũ
meũ : ego verò delectabor in Domino.
35 Deficiant peccatores à terra, &
iniqui ita ut non ſint: Benedic anima
mea Domino.

Alleluja. (1 *Par*.16.8.)

CIV.

1 COnfitemini Domino, & invocate
nomen ejus : annuntiate inter gentes
2 opera ejus. Cantate ei, & pſallite ei:
3 narrate omnia mirabilia ejus. Laudamini
in nomine ſancto ejus : lætetur
4 cor quærentiũ Dominũ. Quærite Dominũ,
& confirmamini : quærite faciẽ
5 ejus ſemp. Mementote mirabiliũ ej⁹,
quæ fecit : prodigia ejus, & judicia
6 oris ejus, Semen Abraham, ſervi ejus:
7 filii Jacob electi ejus. Ipſe Dominus
Deus noſter: in univerſa terra judicia
8 ejus. Memor fuit in ſeculum teſtamenti
ſui; verbi, quod mandavit in mille
9 generationes : Quod diſpoſuit ad Abraham
: & juramenti ſui ad Iſaac :
10 Et ſtatuit illud Jacob in præceptum :
& Iſrael in teſtamentum æternum :
11 Dicens; Tibi dabo terrã Chanaan,
12 funiculum hæreditatis veſtræ. Cùm
eſſent numero brevi, pauciſſimi & in-
13 colæ ejus : Et pertranſierunt de gente
in gentem, et de regno ad populum
14 alterum : Non reliquit hominem nocere
eis : et corripuit pro eis reges.
15 Nolite tangere chriſtos meos : et in
16 prophetis meis nolite malignari. Et
vocavit famem ſuper teram : et omne
firmamentum panis contrivit.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

27 † Πάντα πρὸς σὲ προσδοκῶσι, † δοῦναι τὴν τροφὴν
28 (η) αὐτοῖς εὔκαιρον. † Δόντος σου αὐτοῖς, συλλέξουσιν· † ἀνοίξαντος δέ σου τὴν χεῖρα, τὰ
29 σύμπαντα πλησθήσονται (θ) χρηστότητος. † Ἀποστρέψαντος δέ σου τὸ πρόσωπον, ταραχθήσονται·
† ἀντανελεῖς τὸ πνεῦμα αὐτῶν, καὶ ἐκλείψουσι, † καὶ
30 εἰς τὸν χοῦν αὐτῶν ἐπιστρέψουσιν. † Ἐξαποστελεῖς
τὸ πνεῦμά σου καὶ κτισθήσονται, † καὶ ἀνακαινιεῖς τὸ
31 πρόσωπον τῆς γῆς. † Ἤτω ἡ δόξα κυρίου εἰς (ι)
τὸν αἰῶνα, † εὐφρανθήσεται κύριος ἐπὶ τοῖς ἔργοις
32 αὐτοῦ. † Ὁ ἐπιβλέπων ἐπὶ τὴν γῆν καὶ ποιῶν
αὐτὴν τρέμειν, † ὁ ἁπτόμενος τῶν ὀρέων καὶ καπνίζονται.
33 † Ἄσω τῷ κυρίῳ ἐν τῇ ζωῇ μου, † ψαλῶ τῷ
34 θεῷ μου ἕως ὑπάρχω. † Ἡδυνθείη αὐτῷ ἡ διαλογή μου, † ἐγὼ δὲ εὐφρανθήσομαι ἐπὶ τῷ κυρίῳ. †
35 Ἐκλείποιεν ἁμαρτωλοὶ ἀπὸ τῆς γῆς, † καὶ ἄνομοι,
ὥστε μὴ ὑπάρχειν αὐτούς. † Εὐλόγει ἡ ψυχή μου τὸν
κύριον.

MS. A. (η) αὐτῶν εἰς καιρόν. (θ) πιότητος. (ι) τοὺς αἰῶνας,

Ἀλληλούϊα. ρδʹ.

1 † Ἐξομολογεῖσθε τῷ κυρίῳ, καὶ ἐπικαλεῖσθε τὸ ὄνομα αὐτοῦ· † ἀπαγγείλατε ἐν τοῖς ἔθνεσι τὰ ἔργα
2 αὐτοῦ. † Ἄσατε αὐτῷ καὶ ψάλατε αὐτῷ· † διηγήσασθε
3 πάντα τὰ θαυμάσια αὐτοῦ. † Ἐπαινεῖσθε ἐν τῷ
ὀνόματι τῷ ἁγίῳ αὐτοῦ· † εὐφρανθήτω καρδία ζητούντων
4 τὸν κύριον. † Ζητήσατε τὸν κύριον καὶ κραταιώθητε·
† ζητήσατε τὸ πρόσωπον αὐτοῦ διαπαντός.
5 † Μνήσθητε τῶν θαυμασίων αὐτοῦ ὧν ἐποίησε, † τὰ
τέρατα αὐτοῦ, καὶ τὰ κρίματα τοῦ στόματος αὐτοῦ. †
6 Σπέρμα Ἀβραὰμ δοῦλοι αὐτοῦ, † υἱοὶ Ἰακὼβ ἐκλεκτοὶ
7 αὐτοῦ. † Αὐτὸς κύριος ὁ θεὸς ἡμῶν, † ἐν
8 πάσῃ τῇ γῇ τὰ κρίματα αὐτοῦ. † Ἐμνήσθη εἰς τὸν
αἰῶνα διαθήκης αὐτοῦ, † λόγου οὗ ἐνετείλατο εἰς χιλίας
9 γενεάς, † Ὃν διέθετο τῷ Ἀβραάμ, καὶ (α) τοῦ
10 ὅρκου αὐτοῦ τῷ Ἰσαάκ. † Καὶ ἔστησεν αὐτὴν
τῷ Ἰακὼβ εἰς πρόσταγμα, † καὶ τῷ Ἰσραὴλ εἰς
11 διαθήκην αἰώνιον, † Λέγων, Σοὶ δώσω τὴν γῆν
12 Χαναάν, † σχοίνισμα κληρονομίας ὑμῶν. † Ἐν
τῷ εἶναι αὐτοὺς ἀριθμῷ βραχεῖς, † ὀλιγοστοὺς καὶ
13 παροίκους ἐν αὐτῇ, † Καὶ διῆλθον ἐξ ἔθνους εἰς
14 ἔθνος, † καὶ ἐκ βασιλείας εἰς λαὸν ἕτερον, † Οὐκ
ἀφῆκεν ἄνθρωπον ἀδικῆσαι αὐτούς, † καὶ ἤλεγξεν
15 ὑπὲρ αὐτῶν βασιλεῖς· † Μὴ (β) ἅψησθε τῶν χριστῶν μου, † καὶ ἐν τοῖς προφήταις μου μὴ πονηρεύεσθε.
16 † Καὶ ἐκάλεσε λιμὸν ἐπὶ τὴν γῆν, † πᾶν στήριγμα
ἄρτου συνέτριψεν.

MS.A. (α) τῷ ὅρκῳ (β) ἅπτεσθαι

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

*Omnia (u) ad te expectant, ut des illis
escam in [†] tempore. 29 Dante te
illis, colligent : aperiente autem te
manum, (x) univerſa [ſ] implebuntur
bonitate : 30 Avertente autem
te faciem, turbabuntur. Auferes ſpiritum,
eorum, & deficient : & in
pulverem ſuum revertentur. 31 Emittes
ſpiritum tuum, & creabuntur:
& renovabis faciem terræ. 32
Sit gloria Domini in ſeculum : lætabitur
Dominus in operibus ſuis.
33 Qui reſpicit ſuper terram, &
facit eam tremere: qui tangit montes,
& fumigant. 34 Cantabo Domino
in vita mea: pſallam Deo meo,
quamdiu ſum. 35 (y) Jocundum
ſit ei eloquium meum: ego verò lætabor
in Domino. 36 Deficiant peccatores
à terra, & iniqui, ita ut
non ſint [t]: Benedic anima mea
Dominum.*

(a) Alleluja. CIV.

*1 Confitemini Domino, & (b) invocate
nomen ejus : annuntiate inter
gentes opera ejus. 2 Cantate ei,
& pſallite ei : narrate omnia mirabilia
ejus. (c) Laudamini in nomine
ſancto ejus. 3 lætetur cor quærentium
Dominum. 4 Quærite Dominum,
& (d) confortamini: quærite
faciem ejus ſemper. 4 Mementote
mirabilium ejus, quæ fecit :
prodigia ejus, & judicia oris ejus.
5 Semen Abraham ſervi ejus, filii
Jacob electi ejus. 6 Ipſe Dominus
Deus noſter: in omni terra judicia
ejus. 7 Memor fuit in ſeculũ teſtamenti
ſui : verbi, quod mandavit
in mille generationes, 8 Quod diſpoſuit
ad Abraham, & juramenti
ſui ad Iſaac. 9 Et ſtatuit illud Jacob
in præceptum, & Iſrael in teſtamentum
æternum : 10 Dicens; Tibi
dabo terram Chanaan, funiculum
hæreditatis veſtræ. 11 [a] Cùm eſſent
numero breves, pauciſſimi, &
incolæ in ea. 12 Et tranſierũt de gente
in gentem, & de regno ad populum
alterum. 13 Non permiſit hominem
nocere eis : & corripuit pro
eis reges. 14 Nolite tangere chriſtos
meos : & in prophetis meis nolite
malignari. 15 Et vocavit famem ſuper
terram : et omne firmamentum
panis contrivit.*

Verſio ÆTHIOPICA.

27
28 ወኵሉ፡ይሴፎ፡ኀቤከ፡፡ ለእንተ፡ትሁቦሙ፡ሲ
ሳዮሙ፡በጊዜሁ፡፡=፡ ወእምከመ፡ወሀብከ 29
29 ሙ፡ያስተጋብኡ፡፡ ወፈቲሐከ፡ እዴከ፡ታጸግ
ብ፡ለኵሉ፡እምሕረትከ፡፡=፡ወእመሰ፡ሜጥ 30
ከ፡ገጸከ፡ይደነግፁ፡፡ታወፅእ፡ መንፈሶሙ፡ ወ
30 የኀልቁ፡፡ ወይገብኡ፡ውስተ፡መሬቶሙ፡፡=፡
ወትፌኑ፡መንፈስከ፡ወይትፈጠሩ፡፡ ወትሔድ 31
31 ስ፡ገጸ፡ለምድር፡፡=፡ ለይኩን፡ስብሐቲሁ፡ 32
ለእግዚአብሔር፡ለዓለም፡፡ ይትፌሣሕ፡እግ
32 ዚአብሔር፡በትግባሩ፡፡=፡ዘይኔጽራ፡ለምድ 33
ር፡ወይሬስያ፡ከመ፡ትርዓድ፡፡ ዘይገሶሙ፡ለአ
33 ድባር፡ወይጠይሱ፡፡=፡ እሴብሖ፡ለእግዚአ 34
34 ብሔር፡በሕይወትየ፡፡ወእዜምር፡ለአምላኪ
የ፡በአምጣነ፡ሀሎኩ፡፡=፡ ወአሠምሮ፡ ቃል 35
35 የ፡፡ ወአንሰ ፡ እትፌሣሕ ፡ በእግዚአብሔ
ር፡፡=፡ወየኀልቁ፡ኃጥአን፡እምድር፡፡ወአማ 36
ፂያንሂ፡ ኢይሄሉ፡ እንከ፡፡ ትባርኮ፡ ነፍስየ፡
ለእግዚአብሔር፡፡

1 ሃሌሉያ፡፡

2 ፻፬ ግነዩ፡ለእግዚአብሔር፡ወጸውዑ፡ስሞ፡፡ 1
3 ወንግርዎሙ፡ለአሕዛብ፡ምግባሮ፡፡=፡ ሰብ 2
ሕዎ፡ወዘምሩ፡ሎቱ፡፡ወንግሩ፡ኵሎ፡መንክ
4 ሮ፡፡ ወትከብሩ፡በስሙ፡ቅዱስ፡፡=፡ ለይትፌ 3
ሣሕ፡ልብ፡ዘየኀሥሥ፡ለእግዚአብሔር፡፡ ኅሠ
5 ሥዎ፡ለእግዚአብሔር፡ ወትጸነዑ፡፡ ወኅሥሡ፡ገ
ጾ፡ በኵሉ፡ጊዜ፡፡=፡ ወተዘከሩ፡ መንክሮ፡ 4
6 ዘገብረ፡፡ ትእምርቲሁ፡ወኵነኔ፡አፉሁ፡፡=፡
7 ዘርአ፡ አብርሃም፡ አግብርቲሁ፡፡ ወደቂቀ፡ 5
ያዕቆብ፡ኅሩያኒሁ፡፡=፡ ውእቱ፡ እግዚአብ 6
8 ሔር፡አምላክነ፡፡ ውስተ፡ኵሉ፡ምድር፡ኵ
ነኔሁ፡፡=፡ ወተዘከረ፡ሥርዓቶ፡ዘለዓለም፡፡ 7
9 ቃሎ ፡ ዘአዘዘ፡ለዐሠርቱ ፡ ምእት ፡ ትውል
10 ድ፡፡=፡ ዘሠርዐ፡ለአብርሃም፡፡ ወመሐለ፡ 8
ለይስሐቅ፡፡ ወአቀሞ፡ስምዐ፡ ለያዕቆብ፡፡ ወ
11 ለእስራኤል፡ ኪደነ፡ ዘለዓለም፡፡=፡ ወይቤ 9
12 ሎ፡ለከ፡እሁበከ፡ምድረ፡ከናአን፡፡ ትኩንክ
ሙ፡ሀብለ፡ርስትክሙ፡፡=፡ እንዘ፡ውሁዳን፡ 10
13 ጥቀ፡ እሙንቱ፡፡ ወፈላሲያን፡ውስቴታ፡፡=፡
ወኃለፉ፡ እምሕዝብ፡ ውስተ፡ሕዝብ፡፡ወእ 11
14 ምነገሥት፡ውስተ፡ካልእ፡ሕዝብ፡፡=፡ ወኢ 12
15 ኃደገ፡ይስሐጦሙ፡ሰብእ፡፡ ወገሠጸ፡ነገሥ
ተ፡በእንቲአሆሙ፡፡=፡ ወኢትግስሱ፡መሲሐ 13
16 ንየ፡፡ ወኢታኅስሙ ፡ ደቂ ፡ ነቢያትየ፡፡=፡
ወአምጽአ፡ ረኃበ ፡ ለብሔር፡፡ ወአጥፍአ፡ 14
ኵሎ፡ኀይለ፡እክል፡፡

INTERP. ÆTHIOP. [†] tempore ſuo. [ſ] adimplebis bonitate tuâ : [t] ampliùs : *PSAL. CIV.* [a] Cùm pauci admodum eſſent, & advenæ in ea.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

27 28 *والكل ينتظروك لتعطي طعامهم في حينه *فاذا اعطيتهم اياه يجمعون *فاذا بسطت يديك *
29 امتلأ الكل من نعمتك *واذا صرفت وجهك يقلقون *وتنزع ارواحهم فيموتون *والي ترابهم
30 31 يرجعون *ترسل روحك فيخلقون *وتجدد وجه الارض دفعة اخري *فليكن مجد الرب الي الابد *
32 يفرح الرب بجميع اعماله *الذي ينظر الي الارض فيجعلها مرتعدة *الذي يلمس الجبال
33 34 فتدخن *اسبح الرب في حياتي *ارتل الهي ما دمت *ويلذ له تسبيحي *وانا ابتهج بالرب *ويفني
35 الخطاة من الارض *ومخالفو الناموس كانهم لم يكونوا *يا نفس باركي الرب *اللليلويا *

1 * المزمور المايه واربعة * مرسوم باللليلويا * وهو * فتح * استيخن *

2 3 اشكروا الرب وادعوا اسمه *نادوا في الامم باعماله *سبحوه ورتلوه *حدثوا بجميع عجايبه *افتخروا
4 باسمه القدوس *وليفرح قلب طالبي الرب *اطلبوا الرب واعتزوا به *اطلبوا وجهه في كل حين *
5 6 *اذكروا العجايب التي صنع *اياته واحكام فيه *ذرية ابرهيم عبده *بنو يعقوب مختاروه
7 8 *وهو الرب الاهنا *واحكامه علي جميع الارض *ذكر عهده الي الابد *القول الذي امر به الي
9 10 الف اجيال *ومنه الذي عهد لابراهيم عبده *وقسمه لاسحاق *ووصيته ليعقوب *ميثاقا
11 12 لاسرايل عهدا موبدا *قايلا اني اعطيك ارض كنعان بحبل القياس ميراثك *لما كانوا قليلا
13 14 في عددهم *قليلين غرباء فيها *فعبروا من امة الي امة ومن مملكة الي شعب اخر *لم يدع
15 انسانا يظلمهم *وبكت ملوكا لاجلهم *قايلا لا تلمسوا مسحاي *ولا تصنعوا شرا بانبيايي
16 *ودعا غلاء علي الارض *وحطم قوة الخبز *

*Et omnia expectant ut des illis escã tempore 27
ſuo. Quumq; dederis eis illam, contrahunt 28
ſeſe; & quum protenderis manus
tuas, implentur omnia gratiâ tuâ. At quũ 29
avertis faciem tuã, conturbantur : & eripis
ſpiritus eorum atque moriuntur, & in
pulverem ſuum revertuntur. Mittis ſpiritum 30
tuum, & creantur: & renovas faciẽ
terræ vice alterâ. Sit igitur gloria Domini 31
in perpetuum : fruetur Dominus cunctis
operibus ſuis. Qui intuetur terram, & 32
facit eam tremebundam: qui tangit montes,
& fumigant. Laudabo Dominum in 33
vita mea, pſallam Deo meo quandiu durabo.
Et jucunda erit ei laudatio mea, & 34
ego delectabor in Domino. Et deficient 35
peccatores de terra atq; prævaricatores
legis ac ſi non extitiſſent. O anima, benedic
Domino. Alleluja.*

PSAL. CIV.

Notatus titulo Alleluja. verſ. 88. 1

*GRatias agite Domino, & invocate
nomen ejus, prædicate in gentibus opera
ejus. Laudate eum & pſallite ei, narrate 2
omnia miracula ejus. Gloriamini in 3
nomine ejus ſancto, et lætetur cor quærentium
Dominum. Petite Dominum, & profitemini 4
illum : petite faciem ejus in omni
tempore. Mementote mirabilium quæ fecit, 5
prodigiorũ ejus, & judiciorum oris ejus.
Progenies Abraham, ſervi ejus: filii Jacob, 6
electi ejus. Et quidem ipſe eſt Dominus 7
Deus noſter, & judicia ejus ſuper
univerſam terrã. Recordatus eſt teſtamenti 8
ſui in æternũ, ſermonis quem mandavit
in mille generationes, Et beneficii ſui quod 9
pactus eſt cum Abraham, ſervo ſuo, & juramenti
ſui ad Iſaac, Et præcepti ſui ad 10
Jacobum, in fœdus Iſraeli, teſtamentum
æternum. Dicens, Equidem dabo tibi terram 11
Canaan funiculo menſorio in hæreditatem
tuam. Quum eſſent pauci numero, 12
pauci inquam & advenæ in ipſa, Tamen 13
tranſierunt de gente ad gentem, & de regno
ad populũ alium. Non permiſit cuiquã 14
opprimere eos, & corripuit reges pro eis,
Dicens ; Ne tangatis unctos meos, et ne 15
committatis malum in prophetas meos. Et 16
vocavit caritatem ſuper terram, & confregit
robur panis.*

תהלים : קה

compede in Affixerunt .Joseph est venditus *servum in* : virum *eorum facies ad* Misit

17 18 שָׁלַח לִפְנֵיהֶם אִישׁ לְעֶבֶד נִמְכַּר יוֹסֵף׃ עִנּוּ בַכֶּבֶל

:ejus verbū *venire* tempus ad Usque .ejus animā est ingressum ferrum : ejus pedem

19 רַגְלוֹ בַּרְזֶל בָּאָה נַפְשׁוֹ׃ עַד־עֵת בֹּא־דְבָרוֹ

,populorum dominator : eum solvit & ,rex Misit .eum *examinavit* Domini eloquiū

20 אִמְרַת יְהוָה צְרָפָתְהוּ׃ שָׁלַח מֶלֶךְ וַיַּתִּירֵהוּ מֹשֵׁל עַמִּים

.sua possessione omni in dominatorē & : suæ domus dominū eū Posuit .eum solvit &

21 וַיְפַתְּחֵהוּ׃ שָׂמוֹ אָדוֹן לְבֵיתוֹ וּמֹשֵׁל בְּכָל־קִנְיָנוֹ׃

est ingressus Et .efficeret sapientes ejꝰ senes & : *sua anima in* ejꝰ principes *alligandū Ad*

22 23 לֶאְסֹר שָׂרָיו בְּנַפְשׁוֹ וּזְקֵנָיו יְחַכֵּם׃ וַיָּבֹא

fecit fructificare Et .Cham terra in est peregrinatus Jahacob & : Ægyptum Israel

24 יִשְׂרָאֵל מִצְרָיִם וְיַעֲקֹב גָּר בְּאֶרֶץ־חָם׃ וַיֶּפֶר

eorū cor Convertit .suis hostibus præ eum roboravit & : valde suū populum

25 אֶת־עַמּוֹ מְאֹד וַיַּעֲצִמֵהוּ מִצָּרָיו׃ הָפַךְ לִבָּם

Moseh Misit .ipsius servos in *agendum callidè ad* ; ipsius populum *odiendum ad*

26 לִשְׂנֹא עַמּוֹ לְהִתְנַכֵּל בַּעֲבָדָיו׃ שָׁלַח מֹשֶׁה

:suorum signorum verba eis in Posuerunt .*eo in* elegit quem Aharon :suū servum

27 עַבְדּוֹ אַהֲרֹן אֲשֶׁר בָּחַר־בּוֹ׃ שָׂמוּ־בָם דִּבְרֵי אֹתוֹתָיו

exacerbaverūt non &:fecit obtenebrare &,*tenebrositatē* Misit .Cham terra in prodigia &

28 וּמֹפְתִים בְּאֶרֶץ חָם׃ שָׁלַח חֹשֶׁךְ וַיַּחְשִׁךְ וְלֹא־מָרוּ

.eorū *piscem* *interfecit* & :sanguinē in eorū aquas Convertit .ejꝰ verbum

29 אֶת־דְּבָרוֹ׃ הָפַךְ אֶת־מֵימֵיהֶם לְדָם וַיָּמֶת אֶת־דְּגָתָם׃

venit & , Dixit .eorum regum cubicula in : ranas eorum terra *Produxit*

30 שָׁרַץ אַרְצָם צְפַרְדְּעִים בְּחַדְרֵי מַלְכֵיהֶם׃ אָמַר וַיָּבֹא

31 ,eorū pluvias Dedit .eorum termino omni in pediculi : insectorum mixtura

32 עָרֹב כִּנִּים בְּכָל־גְּבוּלָם׃ נָתַן גִּשְׁמֵיהֶם

: eorū *ficulneam* & ,eorū *vineam* percussit Et .eorū terra in flammarū ignem :grandinem

33 בָּרָד אֵשׁ לֶהָבוֹת בְּאַרְצָם׃ וַיַּךְ גַּפְנָם וּתְאֵנָתָם

.numerus non &,bruchus & :locusta venit & ,Dixit .eorū termini *lignum* contrivit &

34 וַיְשַׁבֵּר עֵץ גְּבוּלָם׃ אָמַר וַיָּבֹא אַרְבֶּה וְיֶלֶק וְאֵין מִסְפָּר׃

percussit Et .eorū terræ fructum comedit &:eorum terra in herbam omnem comedit Et

35 וַיֹּאכַל כָּל־עֵשֶׂב בְּאַרְצָם וַיֹּאכַל פְּרִי אַדְמָתָם׃ וַיַּךְ

36 eos eduxit Et .eorū *roboris* omnis primitivum : eorū terra in primogenitū omnem

37 כָּל־בְּכוֹר בְּאַרְצָם רֵאשִׁית לְכָל־אוֹנָם׃ וַיּוֹצִיאֵם

:*eos egrediendo in* Ægyptus est Lætata .*corruens* ejꝰ tribubꝰ in non &:auro & argento cum

38 בְּכֶסֶף וְזָהָב וְאֵין בִּשְׁבָטָיו כּוֹשֵׁל׃ שָׂמַח מִצְרַיִם בְּצֵאתָם

ignem & : operimentum in nubem Expandit .eos super eorum pavor *ceciderat* quia

39 כִּי־נָפַל פַּחְדָּם עֲלֵיהֶם׃ פָּרַשׂ עָנָן לְמָסָךְ וְאֵשׁ

.eos saturavit cœli pane & : *coturnicem* adduxit & ,*Petiit* .noctem illuminandū ad

40 לְהָאִיר לָיְלָה׃ שָׁאַל וַיָּבֵא שְׂלָו וְלֶחֶם שָׁמַיִם יַשְׂבִּיעֵם׃

Quoniam .fluminis *siticulosa* in abierunt : aquæ fluxerunt & , petram Aperuit

41 42 פָּתַח צוּר וַיָּזוּבוּ מָיִם הָלְכוּ בַּצִּיּוֹת נָהָר׃ כִּי

suū populum eduxit Et .sui servi Abraham : *suæ sanctitatis* verbi est recordatus

43 זָכַר אֶת־דְּבַר קָדְשׁוֹ אֶת־אַבְרָהָם עַבְדּוֹ׃ וַיּוֹצִא עַמּוֹ

: gentium terras eis dedit Et .suos electos *ovatione* in : gaudio in

44 בְשָׂשׂוֹן בְּרִנָּה אֶת־בְּחִירָיו׃ וַיִּתֵּן לָהֶם אַרְצוֹת גּוֹיִם

ejus leges & ,ejus statuta custodirent Ut .possiderent *nationum laborem &*

45 וַעֲמַל לְאֻמִּים יִירָשׁוּ׃ בַּעֲבוּר יִשְׁמְרוּ חֻקָּיו וְתוֹרֹתָיו

.jah-Hallelu : conservarent

יִנְצֹרוּ הַלְלוּ־יָהּ׃

תרגום TARGUM.

שַׁדַּר קֳדָמֵיהוֹן גְּבַר חַכִּים לְעַבְדָּא אִזְדַּבַּן יוֹסֵף׃ 17
עַנִּיאוּ בְשׁוּשְׁלְתָא רִגְלוֹי שֵׁיר דְּפַרְזֶל עָלַת 18
בְּנַפְשֵׁיהּ׃ עַד עִדָּן דַּאֲתָא פִּתְגָּמֵיהּ מֵימְרָא דַיְיָ 19
סַנֵּן יָתֵיהּ׃ שַׁדַּר מַלְכָּא וְשַׁרְיֵיהּ שׁוּלְטָן בְּעַמַּיָּא 20
וּפְתַח לֵיהּ׃ שַׁוְיֵיהּ רִבּוֹן עַל בֵּיתֵיהּ וְשַׁלִּיט בְּכָל 21
קִנְיָנֵיהּ׃ לְמֵיסַר רַבְרְבָנוֹי הֵיךְ בְּנַפְשֵׁיהּ וּמִן סָבוֹי 22
אִתְחַכַּם׃ וַאֲתָא יִשְׂרָאֵל לְמִצְרַיִם וְיַעֲקֹב דָּר 23
בְּאַרְעָא דְחָם׃ וְאַפִּישׁ יַת עַמֵּיהּ לַחֲדָא 24
וְאַתְקְפֵיהּ מִן מְעִיקוֹי׃ אִתְהַפִּיךְ לִבְּהוֹן לְמִסְנֵי 25
עַמֵּיהּ לְחַשְׁבָא בִישָׁן עַל עַבְדוֹי׃ שְׁלַח 26
מֹשֶׁה עַבְדֵּיהּ אַהֲרֹן דְּאִתְרְעֵי בֵיהּ׃ שַׁוּוּ בְהוֹן 27
פִּתְגָּמֵי אָתְוָתוֹהִי וְתִמְהוֹי בְּאַרְעָא דְחָם׃ שַׁדַּר 28
חֲשׁוֹכָא וְחַשְׁכִנּוּן וְלָא סָרִיבוּ עַל פִּתְגָּמֵיהּ׃
הֲפַךְ לְאַדְמָא מֵימֵיהוֹן וְקַטֵּל כָּל נוּנֵיהוֹן׃ 29
רְחִישׁ אַרְעֲתְהוֹן עוּרְדְּעַנַּיָּא בְּקִטוֹנֵי מַלְכֵיהוֹן׃ 30
אֲמַר וַאֲתָא עִרְבּוּבִין קַלְמְתָא בְּכָל תְּחוּמֵיהוֹן׃ 31
יְהַב מִטְרֵיהוֹן בַּרְדָּא אֶשָּׁא מְצַלְהֲבָא בְּאַרְעֲהוֹן׃ 32
וּמְחָא גוּפְנֵיהוֹן וְתִינֵיהוֹן וּתְבַר אִילָנֵי תְּחוּמֵיהוֹן׃ 33
אֲמַר וַאֲתָא גוֹבָאֵי וְרִשְׁוָנָא לֵית מִנְיָן׃ וְגַמַּר 34 35
כָּל עִסְבָּא בְּאַרְעֲהוֹן וַאֲכַל פֵּירֵי אַרְעֲהוֹן׃
וּמְחָא כָּל בּוּכְרָא בְּמִצְרַיִם שֵׁירוּי לְכָל 36
תּוּקְפֵיהוֹן׃ וְאַפְּקִנּוּן בְּסִימָא וּבְדַהֲבָא וְלָא 37
אִתְרְנוּ עִם מִצְרָאֵי לְמַתְקְלָא׃ חֲדוֹן מִצְרָאֵי 38
בְּמַפַּקְהוֹן אֲרוּם נְפַל דַּחַלְהוֹן עֲלֵיהוֹן׃ פְּרַסֵיהּ 39
לַעֲנָנֵי הֵיךְ וִילְתָא וְאֶשָּׁתָא לְאַנְהָרָא
בְּלֵילְיָא׃ שְׁאִילוּ בִסְרָא וְאַיְתֵי פְּסְיוֹנִין 40
וְלַחְמָא דִשְׁמַיָּא יַשְׂבְּעִנּוּן׃ פְּתַח טִינָרָא 41
וְדָאִיבוּ מַיָּא הֲלִיכוּ בְּצַחֲוָתָא הֵיךְ נַהֲרָא׃
אֲרוּם דְּכַר יַת מַמְלַל קוּדְשֵׁיהּ דִּי עִם 42
אַבְרָהָם עַבְדֵּיהּ׃ וְאַפִּיק עַמֵּיהּ בְּחֶדְוָה 43
בְּתוּשְׁבַּחְתָּא יַת בְּחִירוֹי׃ וִיהַב לְהוֹן אַרְעַת 44
עַמְמִין וְלֵעוּת אוּמַיָּא יַרְתוּן׃ מִן בִּגְלַל דְּיִטְרוּן 45
קְיָמוֹי וְאוֹרַיְתֵיהּ יִנְטְרוּן הַלְלוּיָהּ׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Miſit ante eos virum ſapientem, in ſervum 17
venditus eſt Joſeph. Afflixerunt compede 18
pedes ejus, *catena ferrea* intravit *in animam* ejus. Quouſque tempus veniret ſer- 19
monis ejus, Verbum Domini repurgavit
eum. Miſit rex & ſolvit eum; princeps po- 20
pulorum, & dimiſit eum. Conſtituit eum 21
dominum ſuper domum ſuam, *et* principem
in omni acquiſitione ſua. Ut devinciret pro- 22
ceres ejus tanquam ad animam ſuam : &
ſenioribus ejus ſapientia præcelluit. Et 23
venit Iſrael in Ægyptum, & Jacob habi-
tavit in terra Cham. Et creſcere fecit po- 24
pulum ſuum valdè, & fortiorem eum fe-
cit moleſtatoribus ejus. Converſum eſt 25
cor eorum ut odio haberent populum ejus,
ut excogitarent mala contra ſervos ejus.
Miſit Moſſeh ſervum ſuum, [*&*] Aharon, 26
quoniam complacuit ſibi in eo. Poſue- 27
runt in eis verba ſignorum ejus, & pro-
digia ejus in terra Cham. Miſit tenebras 28
& obtenebravit eos: & non reſtiterunt ver-
bo ejus. Convertit aquas eorum in ſan- 29
guinem, & occîdit *omnes* piſces eorum.
Ebulliit terra eorum ranas in cubilibus re- 30
gum eorum. Dixit, ut venirent inſecto- 31
rum commixtiones, pediculi in omnibus
finibus eorum. *Dedit* pluvias eorum gran- 32
dinem, ignem urentem in terra eorum.
Et percuſſit vineas eorum, & ficus eorum, 33
& confregit arbores finium eorum. Dixit, 34
& adduxit locuſtam & bruchum innume-
ros. Et conſumpſit omnem herbam in ter- 35
ra eorum, et comedit fructus terræ eorum.
Et *percuſſit* omne primogenitum in 36
Ægypto, primitias omnis fortitudinis eo-
rum. Et eduxit eos cum argento & auro; 37
& non adjudicati ſunt cum Ægyptiis ad of-
fendiculum. Lætati ſunt Ægyptii cùm 38
egrederentur, quoniam ceciderat timor eo-
rum ſuper ipſos. Expandit tentorium 39
ſuum in nubibus tanquam velamen, &
ignem ut luceret in nocte. Petierunt car- 40
nes, & adduxit coturnices, ac pane cœle-
ſti ſaturabit eos. Aperuit petram & flu- 41
xerunt aquæ, ambulaverunt in aridis [*locis*]
fluminis inſtar. Quoniam memor fuit elo- 42
quii ſancti ſui quod [*habuit*] cum Abraham
ſervo ſuo. Et eduxit populum ſuum in læ- 43
titia, in laude electos ſuos. Et dedit eis 44
terras populorum, & laborem gentium poſ-
ſederunt hæreditatis jure. Ut obſervent 45
præcepta ejus, & Legem ejus cuſtodiant: *Hallelujah.*

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

17 18 * ܫܕܪ ܩܕܡܝܗܘܢ ܓܒܪܐ. ܘܠܥܒܕܘܬܐ ܐܙܕܒܢ ܝܘܣܦ : * ܐܥܨܘ ܒܟܒܠܐ ܪ̈ܓܠܘܗܝ.
19 ܘܒܦܪܙܠܐ ܥܒܪܬ ܢܦܫܗ : * ܥܕܡܐ ܕܢܐܬܐ ܡܠܬܗ. ܡܐܡܪܗ ܕܡܪܝܐ ܒܚܢܝܗܝ : * ܫܕܪ ܡܠܟܐ
20 21 ܘܫܪܝܗܝ. ܘܐܩܝܡܗ ܫܠܝܛܐ ܥܠ ܥܡܗ : * ܡܪܐ ܥܠ ܒܝܬܗ ܘܫܠܝܛܐ ܥܠ ܟܠܗ ܩܢܝܢܗ.
22 23 * ܕܢܪܕܐ ܠܪ̈ܘܪܒܢܘܗܝ ܐܝܟ ܕܨܒܐ : ܘܠܩܫܝܫܘܗܝ ܢܚܟܡ. *ܦܣܘܩܐ* * ܘܥܠ ܐܝܣܪܐܝܠ ܠܡܨܪܝܢ:
24 ܘܝܥܩܘܒ ܥܡܪ ܒܡܫܟܢܐ ܕܚܡ. * ܐܣܓܝ ܛܒ ܠܥܡܗ : ܘܐܥܫܢܗ ܝܬܝܪ ܡܢ
25 ܒܥܠܕܒܒܘܗܝ. * ܘܗܦܟ ܠܒܗܘܢ ܠܡܣܢܝܗ ܠܥܡܗ : ܘܠܡܬܢܟܠܘ ܥܠ ܥܒܕܘܗܝ.
26 27 * ܫܕܪ ܠܡܘܫܐ ܥܒܕܗ ܘܠܐܗܪܘܢ ܕܓܒܐ : * ܥܒܕ ܒܗܘܢ ܐܬܘܬܗ ܘܬܕܡܪܬܗ ܒܐܪܥܐ ܕܚܡ.
28 29 * ܫܕܪ ܚܫܘܟܐ ܘܐܚܫܟ ܘܡܪܡܪܘ ܡܠܬܗ : * ܘܗܦܟ ܡܝ̈ܗܘܢ ܠܕܡܐ ܘܐܡܝܬ ܢܘ̈ܢܝܗܘܢ.
30 * ܐܪܚܫ ܐܪܥܗܘܢ ܥܘܪ̈ܕܥܢܐ ܘܒܬܘ̈ܢܐ ܕܡܠܟܝܗܘܢ : * ܐܡܪ ܘܐܬܐ ܥܪܒܐ ܘܩܠܡܐ
31 32 ܒܟܠܗ ܬܚܘܡܗܘܢ : * ܥܒܕ ܡܛܪܗܘܢ ܒܪܕܐ. ܘܢܘܪܐ ܐܬܝܩܕܬ ܒܐܪܥܗܘܢ * ܘܡܚܐ
33 34 ܓܦܬܗܘܢ ܘܬܐܢܝܗܘܢ. ܘܬܒܪ ܐܝܠܢܐ ܕܬܚܘܡܗܘܢ : * ܐܡܪ ܘܐܬܐ ܩܡܨܐ. ܘܙܚܠܐ ܕܠܐ ܡܢܝܢ
35 36 ܒܟܠܗ ܐܪܥܗܘܢ : * ܐܟܠܘ ܟܠܗ ܥܣܒܐ ܘܦܐܪܐ ܕܐܪ̈ܥܬܗܘܢ. * ܘܩܛܠ ܟܠ ܒܘܟܪܐ ܕܡܨܪܝܢ:
37 38 ܪܫܐ ܟܠܗ ܥܡܠܗܘܢ. * ܐܦܩ ܐܢܘܢ ܒܣܐܡܐ ܘܒܕܗܒܐ : ܘܠܐ ܗܘܐ ܒܫܒܛܝܗܘܢ ܟܪܝܗܐ. * ܚܕܝܬ
39 ܡܨܪܝܢ ܒܡܦܩܢܗܘܢ : ܡܛܠ ܕܢܦܠܬ ܕܚܠܬܗܘܢ ܥܠܝܗܘܢ. * ܦܪܣ ܥܠܝܗܘܢ ܥܢܢܐ
40 ܘܐܛܠܠ ܐܢܘܢ : ܘܢܘܪܐ ܠܡܢܗܪܘ ܒܠܠܝܐ. * ܫܐܠܘ ܘܐܝܬܝ ܠܗܘܢ ܣܠܘܝܐ : ܘܠܚܡܐ
41 42 ܕܫܡܝܐ ܐܣܒܥ ܐܢܘܢ. * ܦܬܚ ܫܘܥܐ ܘܪܕܘ ܡܝܐ : ܘܐܪܕܝܘ ܡܝܐ ܒܐܬܪܐ ܨܗܝܐ. * ܡܛܠ ܕܐܬܕܟܪ
43 ܡܠܬܐ ܕܩܘܕܫܗ ܕܐܒܪܗܡ ܥܒܕܗ : * ܐܦܩ ܠܥܡܗ ܒܚܕܘܬܐ. ܘܒܫܘܒܚܐ ܠܛܠܝܘܗܝ:
44 45 * ܘܝܗܒ ܠܗܘܢ ܐܪܥܬܐ ܕܥܡܡܐ. ܘܥܡܠܐ ܕܐܡܘܬܐ ܝܪܬܘ. * ܕܢܙܗܪܘܢ ܒܦܘܩܕܢܘܗܝ
ܘܢܡܘܣܗ ܢܛܪܘܢ.

Miſit ante illos virum, & in ſervitutem ven- 17
ditus fuit Joſeph : Strinxerunt compedibus 18
pedes ejus, & per ferrum tranſiit anima ipſi-
us, Quoadusq; eventu comprobaretur verbū 19
illius. Sermo Dñi exploravit eum. Miſit Rex 20
& ſolvit eū, & conſtituit illū principē ſuper
populū ſuū, dñm ſuper domū ſuam, & præ- 21
fectū ſuper omnē poſſeſſionē ſuam: Ut caſti- 22
garet principes prout vellet, & ſeniores ſapi-
entes redderet. * *Sectio* *
Et ingreſſus eſt Iſrael Ægyptum, & Jacob ha- 23
bitavit in tabernaculo Ham. Auxit vehemē- 24
ter populū ſuū, & potentiorē fecit eum ini-
micis ſuis. Verſúmq; eſt cor eorū ad proſe- 25
quendū odio populū ejus, & ad machinandū
in ſervos ipſiꝰ. Miſit Moſen ſervū ſuū, & Ah- 26
ron quem elegerat : Edidit per eos prodigi- 27
gia ſua, & portenta ſua in terra Ham. Miſit 28
tenebras et obſcuravit: & exacerbaverūt ver-
bum ejꝰ. Vertit aquas eorū in ſanguinē, & 29
mortificavit piſces eorum. Reptare fecit in 30
terrā illorū ranas, & in arcana regum eorū.
Dixit, & venerunt inſecta atque pediculꝰ per 31
omnem finem ipſorum. Fecit pluviam eorum 32
grandinem, & ignis accenſus eſt in terra eo- 33
rum. Percuſſit vites eorum, & ficus eorum:
& confregit arbores finium ipſorum. Dixit, 34
& venit locuſta, atq; bruchꝰ abſq; numero in
univerſam terrā eorū, Vorârunt omnem her- 35
bam ac fructus agrorū eorum, Occîdit pri- 36
mogenitos quoſq; Ægypti, primum quemque
fœtū eorum. Eduxit illos cum argento & au- 37
ro, & non erat in familiis eorū, infirmus. Læ- 38
tata eſt Ægyptus de egreſſu eorum, quia ceci-
derat formido ipſorum in illos. Expandit ſu- 39
per eos nubē, & obumbravit illos : ignemq;
ad illuminandū noctu. Petierunt, & adduxit 40
eis cibum, & pane cœli ſatiavit illos. Aperu- 41
it petram, & fluxerunt aquæ, & decurrerunt
aquæ per regionem ſitibundam; Quia recor- 42
datus eſt verbi ſanctitatis ſuæ, Abraham eſſe
ſervum ſuum. Eduxit populū ſuum cum gau- 43
dio, & cum gloria adoleſcentes ſuos. Dedit- 44
que illis terras populorum, & laborem gen-
tium poſſederunt: Ut caverent præcepta ejus, 45
& legem ipſius obſervarent.

Verſio VULG. LAT.

17 Miſit ante eos virũ : in ſervũ venundatus
18 eſt Joſeph. Humiliaverunt in
compedibus pedes ejus, ferrum pertranſiit
19 animam ejus, Donec veniret
verbũ ej⁹. Eloquium Domini inflammavit
20 eũ: Miſit rex,& ſolvit eũ; princeps
21 populorũ,& dimiſit eũ. Cõſtituit
eum dominũ domûs ſuæ : & principem
22 omnis poſſeſſionis ſuæ. Ut erudiret
principes ejus ſicut ſemetipſum:
23 & ſenes ejus prudentiã doceret. Et
intravit Iſrael in Ægyptum: & Jacob
24 accola fuit in terra Cham. Et auxit
populũ ſuũ vehementer : & firmavit
25 eum ſuper inimicos ejus. Convertit
cor eorũ ut odirent populum ejus: &
26 dolum facerent in ſervos ejus. Miſit
Moyſen ſervum ſuum ; Aaron, quem
27 elegit ipſũ. Poſuit in eis verba ſignorum
ſuorum, & prodigiorum in terra
28 Cham. Miſit tenebras,& obſcuravit :
& non exacerbavit ſermones ſuos.
29 Convertit aquas eorũ in ſanguinem :
30 & occîdit piſces eorum. Edidit terra
eorũ ranas in penetralib⁹ regũ ipſorum.
31 Dixit,& venit cœnomyia:& cinifes
32 in omnib⁹ finib⁹ eorũ. Poſuit
pluvias eorũ grandinẽ, ignẽ cõburentẽ
33 in terra ipſorũ. Et percuſſit vineas
eorũ, & ficulneas eorũ : & contrivit
34 lignum finium eorum. Dixit, & venit
locuſta, & bruch⁹, cuj⁹ non erat numerus
35 : Et comêdit omne fœnum in
terra eorum : & comêdit omnem fructum
36 terræ eorum. Et percuſſit omne
primogenitũ in terra eorũ : primitias
37 omnis laboris eorum. Et eduxit eos
cum argento & auro : & non erat in
38 tribubus eorum infirmus. Lætata eſt
Ægyptus in profectione eorum : quia
39 incubuit timor eorũ ſup̃ eos. Expandit
nubẽ in protectionẽ eorum,& ignẽ ut
40 luceret eis ꝑ noctẽ. Petierunt,& venit
coturnix : & pane cœli ſaturavit eos.
41 Dirupit petrã,& fluxerunt aquæ : abierunt
42 in ſicco flumina. Quoniã memor
fuit verbi ſancti ſui, ꝙ habuit ad
43 Abraham puerũ ſuũ. Et eduxit populum
ſuũ in exultatione, & electos ſuos
44 in lætitia. Et dedit illis regiones
gentium : & labores populorum poſſederunt
45 : Ut cuſtodiant juſtificationes
ejus, & legem ejus requirant.

Verſ. GRÆCA LXX. Interp.

17 † (ε)Ἀπέστειλεν ἔμπροσθεν αὐτῶν ἄνθρωπον, † εἰς
18 δοῦλον ἐπράθη Ἰωσήφ. † Ἐταπείνωσαν ἐν πέδαις
τοὺς πόδας αὐτοῦ, † σίδηρον διῆλθεν ἡ ψυχὴ αὐτοῦ·
19 †Μέχρι τοῦ ἐλθεῖν τὸν λόγον αὐτοῦ. †τὸ λόγιον (ζ) τοῦ
20 κυρίου ἐπύρωσεν αὐτόν. †Ἀπέστειλεν βασιλεὺς καὶ ἔλυσεν
21 αὐτὸν, †ἄρχων λαῶν καὶ ἀφῆκεν αὐτόν. †Κατέστησεν
αὐτὸν κύριον τοῦ οἴκου αὐτοῦ, †καὶ ἄρχοντα πάσης
22 τῆς κτήσεως αὐτοῦ, †Τοῦ παιδεῦσαι τοὺς ἄρχοντας
αὐτοῦ ὡς ἑαυτὸν, † καὶ τοὺς πρεσβυτέρους αὐτοῦ
23 σοφίσαι. † Καὶ εἰσῆλθεν Ἰσραὴλ εἰς Αἴγυπτον, †καὶ
24 Ἰακὼβ παρῴκησεν ἐν γῇ Χάμ. † Καὶ ηὔξησε τὸν
λαὸν αὐτοῦ σφόδρα, † καὶ ἐκραταίωσεν αὐτὸν ὑπὲρ
25 τοὺς ἐχθροὺς αὐτοῦ. † (η)Καὶ μετέστρεψε τὴν καρδίαν
(ʰ)αὐτῶν τοῦ μισῆσαι τὸν λαὸν αὐτοῦ, †τοῦ δολιοῦσθαι
26 ἐν τοῖς δούλοις αὐτοῦ. † Ἐξαπέστειλεν Μωυσῆν τὸν
δοῦλον αὐτοῦ, † Ἀαρὼν ὃν ἐξελέξατο (θ)αὐτόν. †
27 Ἔθετο ἐν αὐτοῖς τοὺς λόγους τῶν σημείων αὐτοῦ, † καὶ
28 τῶν τεράτων (ι)ἐν γῇ Χάμ. †Ἐξαπέστειλε σκότος καὶ
ἐσκότασεν, †(κ) καὶ παρεπίκραναν τοὺς λόγους αὐτοῦ.
29 † Μετέστρεψε τὰ ὕδατα αὐτῶν εἰς αἷμα, †καὶ ἀπέκτεινε
30 τοὺς ἰχθύας αὐτῶν. † Ἐξῆρψεν ἡ γῆ αὐτῶν
βατράχους, † ἐν τοῖς ταμείοις τῶν βασιλέων αὐτῶν.
31 † Εἶπε καὶ ἦλθε κυνόμυια, † καὶ (λ) σκνῖπες ἐν
32 πᾶσι τοῖς ὁρίοις αὐτῶν. † Ἔθετο τὰς βροχὰς αὐτῶν
χάλαζαν, † πῦρ καταφλέγον ἐν τῇ γῇ αὐτῶν.
33 †Καὶ ἐπάταξε τὰς ἀμπέλους αὐτῶν † καὶ τὰς συκᾶς
αὐτῶν, †καὶ συνέτριψε πᾶν ξύλον ὁρίου αὐτῶν. †
34 Εἶπε καὶ ἦλθεν ἀκρὶς, καὶ βροῦχος οὗ οὐκ ἦν ἀριθμὸς,
35 †Καὶ κατέφαγε(μ)πάντα τὸν χόρτον ἐν τῇ γῇ αὐτῶν,
†καὶ κατέφαγε (ν) τὸν καρπὸν τῆς γῆς αὐτῶν. †
36 Καὶ ἐπάταξε πᾶν πρωτότοκον (ξ) ἐκ τῆς γῆς
37 αὐτῶν, † ἀπαρχὴν παντὸς πόνου αὐτῶν. †Καὶ ἐξήγαγεν
αὐτοὺς ἐν ἀργυρίῳ καὶ χρυσίῳ, † καὶ οὐκ ἦν ἐν ταῖς
38 φυλαῖς αὐτῶν (ο)ὁ ἀσθενῶν. †Εὐφράνθη Αἴγυπτος ἐν
τῇ ἐξόδῳ αὐτῶν, † ὅτι ἐπέπεσεν ὁ φόβος αὐτῶν
39 ἐπ' αὐτούς. †Διεπέτασε νεφέλην εἰς σκέπην αὐτοῖς,
40 †καὶ πῦρ τοῦ φωτίσαι αὐτοῖς τὴν νύκτα. †Ἤτησαν,
καὶ ἦλθεν ὀρτυγομήτρα, † καὶ ἄρτον οὐρανοῦ ἐνέπλησεν
41 αὐτούς. † Διέρρηξε πέτραν, καὶ ἐρρύησαν
ὕδατα, † ἐπορεύθησαν ἐν ἀνύδροις ποταμοί. †
42 Ὅτι ἐμνήσθη τοῦ λόγου τοῦ ἁγίου αὐτοῦ, † τοῦ πρὸς
43 Ἀβραὰμ τὸν δοῦλον αὐτοῦ. † Καὶ ἐξήγαγε τὸν λαὸν
αὐτοῦ ἐν ἀγαλλιάσει, † καὶ τοὺς (π) ἐκλεκτοὺς αὐτοῦ
44 ἐν εὐφροσύνῃ. † Καὶ ἔδωκεν αὐτοῖς χώρας ἐθνῶν,
45 †καὶ πόνους λαῶν (ρ)ἐκληρονόμησαν. † Ὅπως ἂν φυλάξωσι
τὰ δικαιώματα αὐτοῦ, † καὶ τὸν νόμον αὐτοῦ
(σ) ἐκζητήσωσιν.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

16 Miſit ante eos hominem:[b] in 17
ſervũ venundatus eſt Joſeph. 17
Humiliaverunt in compedib⁹ pedes 18
ejus: [c] ferrum pertranſivit (e) anima
ejus : Donec veniret verbum 19
ejus. 18 Eloquium Domini [d] inflammavit
eũ : Miſit rex,& ſolvit 20
eũ : [e]princeps(f)populorũ,& dimiſit
eum. 19 Conſtituit eũ dominũ 21
domûs ſuæ, & [f]principem omnis
poſſeſſionis ſuæ. 20 Ut erudiret principes 22
ejus, ſicut ſemetipſum, & [g]
ſeniores ejus ſapientiam doceret. 21
Et intravit Iſrael in [h] Ægyptũ : 23
& Jacob accola fuit in terra Cham.
22 Et auxit populum ſuum vehementer: 24
& firmavit eum ſuper inimicos
ejus. 23 Et convertit cor eorum, 25
ut odirent populum ejus, &
dolum facerent in ſervis ejus. 24
Miſit Moyſem ſervum ſuum, Aarõ, 26
quem elegit ipſum. 25 Poſuit[i]in eis 27
verba ſignorum ſuorum, & prodigiorum
in terra Cham. 26 Miſit 28
tenebras,& obſcuravit: & (g)exacerbaverunt
[k]ſermones ejus. 27
Convertit aquas eorum in ſanguinem 29
: (h)& occîdit piſces eorum :
28 Edidit (i)terra eorum ranas, in 30
[l] penetralibus regum ipſorum. 29
Dixit, & venit cynomya, & cyniphes 31
in [m]omnibus finibus eorum.
30 Poſuit pluvias eorum grandinẽ, 32
ignẽ comburentem in terra ipſorũ.
31 Et percuſſit vites eorum,& 33
ficus eorum: & contrivit omne lignum
finiũ eorũ. 32 Dixit,& venit 34
locuſta: & bruchus,cujus non erat
numerus. 33 Et comêdit omne fœnum 35
in terra eorum: & (k) comêdit
[n] fructum terræ eorum. 34
Et percuſſit omne primogenitum (l) 36
de terra eorum, primitias omnis laboris
eorum. 35 Et eduxit eos in argento, 37
& auro : & non erat in tribubus
eorum infirmus. 36 Lætata eſt 38
Ægyptus in profectione eorum, quia
incubuit timor eorum ſuper eos. 37
Expandit nubem in protectionem eorum: 39
& ignẽ, ut luceret eis per noctem.
38 (m)Petierunt, et venit coturnix: 40
et pane cœli ſaturavit eos.
39 Dirupit petram, et fluxerunt aquæ 41
: (n) iverunt [o] in ſiccis flumina.
40 Quoniam memor fuit verbi ſancti ſui, quod habuit ad Abraham ſervum ſuum. 42
41 Et eduxit populum ſuum in exultatione, et electos ſuos in lætitia. 42 Et dedit 43 44
eis regiones gentium, et labores [p] populorum poſſederunt. 43 Ut cuſtodiant [q] juſtificationes 45
ejus, et legem ejus exquirant.

Verſio ÆTHIOPICA.

ወፈነወ : ብእሴ: ቅድሜሆሙ::ወተሰይጠ:ዮ 16
ሴፍ:ወኮነ:ከመ:ገብረ::=:ወሐመ:እገሪሁ: 17
በመዋቅሕት::ወእመሰጠት:ነፍሱ:እመኀፂ
ን:: ዘእንበለ : ይብጻሕ:ቃሉ::=: ቃለ:እ 18
ግዚአብሔር:አመከሮ:: ወፈነወ:ንጉሠ:ወ
ፈትሖ::ወሤሞ:መልአከ:ለሕዛብ::=: ወረ 19
ሰዮ:እግዚአ:ለቤቱ:: ወአኰነኖ:ለኵሉ:ጥ
ሪቱ::=: ከመ:ይገሥጾሙ:ለመላእክቲሁ: 20
ከማሁ:: ወከመ:ያጥብቦሙ: ለሊቃውንቲሆ
ሙ:ከማሁ::=:ወቦአ:እስራኤል: ብሔረ:ግ 21
ብጽ::ወያዕቆብኒ:ኀደረ:ምድረ:ካም::=:
ወአብዝኖሙ:ለሕዝቡ:ፈድፋደ:: ወአጽኖ 22
ዖሙ:እምፀሮሙ::=: ወሜጠ:ልቦሙ:ከ 23
መ:ይጽልኡ:ሕዝቦ:: ወከመ: ያሐብልይዎ
ሙ:ለአግብርቲሁ::=: ወፈነወ:ሙሴሃ:ገ 24
ብሮ:: ወአሮንሃ:ኀሬዮ::=:ወሤመ:ቃለ:ት 25
እምርት: ላዕሌሆሙ:: ወመንክርሂ:በምድ
ረ:ካም::=: ወፈነወ:ጽልመተ: ወአጽለሞ 26
ሙ::ወአምረርዎ:ለቃሉ::=: ወረሰየ:ማዮ 27
ሙ:ደመ::ወቀተለ: አሣቲሆሙ::=: ወአ 28
ውፅአት:ምድሮሙ:ቈርነናዓተ::ወውስተ:
ዐቢያተ:ነገሥቶሙ::=: ይቤ:ወመጽአ: 29
አኮት:: ወትንንያ:ውስተ: ኵሉ: ምድሮ
ሙ::=: ወረሰየ:ዝናሞሙ:በረደ:: ወነደደ: 30
እሳት:ውስተ:ምድሮሙ::=:ወቀተለ: ወይኖ 31
ሙ:ወበለሶሙ::ወቀጥቀጠ:ኵሎ: ዕፀወ:ብ
ሔሮሙ::=:ወይቤ:ወመጽአ:አንበጣ::ወደ 32
ገብያ:ዘአልቦ:ኍልቈ::=:ወበልዐ:ኵሉ:ፍ 33
ሬ:ምድሮሙ::=: ወቀደማ:ኵሉ: ተግባሮ 34
ሙ::ወቀተለ:ኵሎ:በኵረ: ብሔሮሙ::=:
ወአውፅኦሙ:በወርቅ:ወብሩር:: ወአልቦ:ደ 35
ዌ:ውስተ:ሕዝቦሙ::=:ወተፈሥሑ:ግብጽ: 36
በፀአቶሙ::እስመ:ፈርህዎሙ::=: ወአንጦ 37
ልዐ:ደመና: ወሰወሮሙ::ወእሳትኒ:ከመ:ያብ
ርህ:ሎሙ:በሌሊት::=:ወሰአሉ:ወመጽአ: 38
ፍርፍርት:: ወአጽገቦሙ : ኀብስተ : ሰማ
ይ::=: ወአንቅዐ:ኰኵሐ: ወአውሐዘ:ማ 39
የ::ወሖሩ:ውስተ:አፍላግ:በደው::=: እስ 40
መ:ተዘከረ:ቃሎ:ቅዱስ::ዘኀበ:አብርሃም:
ገብሩ::=: ወአውፅኦሙ:ለሕዝቡ:በትፍ 41
ሥሕት::ወለኀሩያኒሁ:በሐሤት::=: ወወ 42
ሀቦሙ : በሐውርተ : አሕዛብ:: ወወረሱ:ጻ
ማ:ባዕድ::=: ከመ:ይዕቀቡ:ሕጎ::ወይኅ 43
ሥሡ:ሥርዓቶ::

MS. A. Ἐξαπέστειλεν (ζ)κυρίου (η)Μετέστρεψεν (ʰ)αὐτοῦ (θ)ἑαυτοῦ.(ι) αὐτοῦ ἐν γῇ (κ)ὅτι παρεπίκραναν (λ) σκνῖφες (μ) πάντα χόρτον (ν) πάντα τὸν(ξ)ἐν τῇ γῇ αὐτῶν,(ο)ἀσθενῶν.(π)ἐκλεκτοὺς ἐν(ρ)κατεκληρονόμησαν.(σ)ἐκζητήσουσιν.

INTERP. ÆTHIOP. [b] & emptus eſt Joſeph & factus tanquã ſervus,[c]& evolavit anima ejus à terro: [d]probavit eum [e] & poſuit eum principẽ populorum. [f] & poteſtatem dedit ei in omnẽ poſſeſſionẽ ſuam. [g]ut ſeniores eorum prudentes redderet,ſicut ipſũ. [h] terram Ægypti: & Jacob etiam inhabitabat[i] in eis vocẽ ſignorũ,&[k]verbũ ejus.[l] palatiis[m]omni terra eorũ.[n]omnẽ fructũ [o]in flumina ſolitudines.[p]aliorum poſſederũt[q]legẽ ejus,& teſtamentum ejus

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

17 18 *ارسل امامهم رجلا. فبيع يوسف كعبد* وادلوا رجليه بقيود الحديد * عبرت نفسه * حتي جاء
19 20 كلمته* وكلمة الرب طرحت فيه النار* ارسل الملك فاطلقه * وجعله رئيس شعوب * وبركه سيدا
21 22 علي منزله* ورئيسا علي جميع ماله* لكي يودب روساءه كمثله ويفقه مشايخه* ثم دخل اسرائيل
23 24 25 الي مصر* وانتجع يعقوب الي ارض حام* فاكثر شعبه جدا* واعز اكثر من اعدائه* فانصرف
26 27 قلبهم لبغض شعبه ليمكروا بعبيده* فارسل موسي عبده وهرون الذي اختار* ووضع فيهما
28 29 اقوال اياته * وعجايبه في ارض حام* بعث ظلمة فاظلمت* فاغضبوا اقواله* فقلب مياههم دما*
30 31 وقتل اسماكهم* وبعثت الارض ضفادع في بواطن ملوكهم* قال فجاء ذباب الكلب* والقمل في
32 33 جميع تخومهم* جعل امطارهم بردا* واشتعلت النار في ارضهم* ضرب شجر كرومهم وشجر تينهم*
34 35 وحطم جميع شجر تخومهم * قال فاتي جراد وجندب لا يحصي* فاكل جميع عشب ارضهم* واكل
36 37 جميع ثمر ارضهم *وضرب كل بكر في ارضهم* واول تعبهم جميعه * واخرجهم بالفضة والذهب*
38 39 وليس مريضا في اسباطهم* ففرحت مصر بخروجهم* لان خوفهم اتي عليهم* بسط سحابا فظللهم*
40 41 ونارا في الليل ليضيء لهم * سالوا طعاما فجاءهم السلوي * وخبز السماء اشبعهم به * شق
42 الصخر فسالت المياه* وسلكت في المعاطش انهارا* لانه ذكر كلامه المقدس الذي قرن
43 44 لابرهيم عبده* واخرج شعبه بالفرح ومختاريه بالسرور* واعطاهم كور الامم* وورثوا اتعاب
45 الشعوب *لكي يحفظوا حقوقه* ويطلبوا ناموسه* الليلويا*

Miſit ante eos virũ, et vendit⁹ eſt Joſeph 17
ut ſerv⁹: Et humiliaverunt pedes ej⁹ compedibus 18
ferreis. Pertranſiit anima ejus
Quoad veniſſet verbũ ejus, & verbũ Domini 19
injeciſſet in eũ ignem. Miſit rex & 20
dimiſit illũ, et conſtituit eũ principem populorũ.
Et poſuit eũ dominũ ſuper domũ 21
ſuã, & præfectũ ſuper omnes facultates
ſuas. Ut erudiret principes ejus inſtar ſui 22
ipſius, et doceret ſenes ejus. Deinde ingreſſus 23
eſt Iſrael in Ægyptũ, & migravit Jacob
in terrã Hã. Multiplicavit autem populũ 24
ejus vehementer, & corroboravit eũ
præ inimicis ipſi⁹. Et converſũ eſt cor eorũ 25
ad odium populi ejus, ut doloſè agerent in
ſervos illius. Quare miſit Moſem ſervum 26
ſuũ, & Aaronem quem elegerat. Et poſuit 27
in utroque verba ſignorũ ſuorum, & miracula
ſua in terra Hã. Miſit obſcuritatẽ, 28
& factæ ſunt tenebræ: & ad iram concitaverunt
ſermones ejus. Et cõvertit aquas 29
eorũ in ſanguinem, et occîdit piſces eorũ.
Et ſcatuit terra ranis, in cubilibus regum 30
eorum. Dixit, & venerunt muſcæ canũ et 31
pediculi in omnes terminos eorum. Fecit 32
pluvias eorum grandinem, et accenſus eſt
ignis in terra eorum. Percuſſit arbores vinearũ 33
illorũ, et arbores ficuũ eorũ, et confregit
omnes arbores finium eorũ. Dixit, et 34
venerunt locuſtæ et bruchus innumerabilis.
Et comedit omnem herbam terræ eorũ, 35
voravitque omnem fructum terræ eorum.
Et percuſſit omne primogenitum in terra 36
eorũ, & primitias laboris eorũ cujuſcunque.
Et eduxit eos cum argento et auro, & 37
non erat ægrotus in tribubus eorum : Et 38
gaviſa eſt Ægyptus de exitu illorũ : quia
timor eorũ venit ſuper eos. Extendit nubem, 39
& obumbravit eos: et ignem in nocte,
ut luceret eis. Petierunt cibũ, & venerunt 40
eis coturnices, et pane cœli ſaturavit illos.
Fidit petrã, et effluxerunt aquæ et excurrerunt 41
per ſitibunda in fluvios. Quoniam 42
recordatus eſt ſermonis ſui ſancti, quem
aſſeruit Abrahæ ſervo ſuo. Et eduxit populũ 43
ſuum cum lætitia, & electos ſuos cum
gaudio. Et dedit illis provincias gentium, 44
et hæreditariò poſſederunt labores populorum.
Ut cuſtodiant ſtatuta ejus, & requirant legem ipſius. Alleluja. 45

תהלים : קו

PSAL. CVI. קו

.ejꝰ misericordia seculum in quoniã :bonus quoniã,Domino Confitemini .*Jah* Laudate
1 הללו יה ׀ הודו ליהוה כי־טוב כי לעולם חסדו : 1
Beati ? ejus laudem omnem evulgabit : DOMINI fortitudines eloquetur Quis
2 מי ימלל גבורות יהוה ישמיע כל־תהלתו : אשרי
3 Domine mei Memento .tempore omni in justitiam *faciens* : judicium *custodientes*
4 שמרי משפט עשה צדקה בכל־עת : זכרני יהוה
bonitate in videndum Ad .tua salute in me visita : tui populi voluntate in
5 ברצון עמך פקדני בישועתך : לראות ׀ בטובת
.tua hæreditate cum *gloriandum ad* : tuæ gentis lætitia in *lætandum ad* ,tuorũ electorũ
בחיריך לשמח בשמחת גויך להתהלל עם־נחלתך :
6 Ægypto in nostri Patres .fecimus impia,fecimus prava,nostris patribꝰ cum Peccavimus
7 חטאנו עם־אבותינו העוינו הרשענו : אבותינו במצרים ׀
multitudinis fuerunt memores non , tua mirabilia intellexerunt non
לא־השכילו נפלאותיך לא זכרו את־רב
eos servavit Et .*carecti* mari in ,mare juxta rebellaverunt sed : tuarũ misericordiarũ
8 חסדיך וימרו על־ים בים־סוף : ויושיעם
mare *in* increpavit Et .suã fortitudinẽ *notificandum ad* : suum nomen propter
9 למען שמו להודיע את־גבורתו : ויגער בים־
eos servavit Et .deserto *sicut* ,abyssos per eos fecit ambulare & : est siccatum & ,Suph
10 סוף ויחרב ויוליכם בתהמות כמדבר : ויושיעם
aquæ operuerunt Et .inimici manu de eos redemit & : habentis odio manu de
11 מיד שונא ויגאלם מיד אויב : ויכסו־מים
cantaverunt :ejꝰ verbis in crediderunt Et .remansit non eis ex unus : eorum hostes
12 צריהם אחד מהם לא נותר : ויאמינו בדבריו ישירו
.ejꝰ consilium expectaverunt non :ejꝰ operum sunt obliti ,Festinaverunt .ejus laudem
13 תהלתו : מהרו שכחו מעשיו לא־חכו לעצתו :
eis dedit Et .solitudine in Deum tẽtaverũt & : deserto in cõcupiscẽtiã cõcupierũt Et
14 ויתאוו תאוה במדבר וינסו־אל בישימון : ויתן להם
15 :*castrametatione* in Moseh in sunt zelati Et .eorũ anima in *maciem* misit &:eorũ petitionẽ
16 שאלתם וישלח רזון בנפשם : ויקנאו למשה במחנה
cœtum super operuit &:Dathan deglutivit & ,terra Aperuit .Domini sanctũ Aharon in
17 לאהרן קדוש יהוה : תפתח־ארץ ותבלע דתן ותכס על־עדת
vitulum Fecerunt .impios combussit flamma :eorũ *cœtum* in ignis exarsit Et .Abiram
18 אבירם : ותבער־אש בעדתם להבה תלהט רשעים : יעשו־עגל
19 bovis *exemplar* in :suã gloriã mutaverũt Et .conflatili se incurvaverunt & :Choreb in
20 בחרב וישתחוו למסכה : וימירו את־כבודם בתבנית שור
.Ægypto in magna *facientis* : sui servatoris Dei sunt Obliti .herbam comedentis
21 אכל עשב : שכחו אל מושיעם עשה גדלות במצרים :
,eos *delendos ad* ,dixit Et .Suph mari super terribilia : Cham terra in Mirabilia
22 נפלאות בארץ חם נוראות על־ים־סוף : ויאמר להשמידם
23 ejꝰ *excandescentiam avertendum ad :ejus facies ad ruptura* in stetisset ejꝰ electꝰ Moseh nisi
לולי משה בחירו עמד בפרץ לפניו להשיב חמתו
.ejus verbo crediderunt non : *desiderii terra in reprobaverunt* Et .*corrumpendo à*
24 מהשחית : וימאסו בארץ חמדה לא־האמינו לדברו :

תרגום TARGUM.

קו
1 הללויה אודו קדם יי ארום טב ארום לעלם
2 טוביה : מן ייכול למללא גבורתא דיי ירשי
3 לאשמעא לכולהון תושבחתיה : טוביהון
4 דנטרי דינא עבדי צדקתא בכל עדן : דכר יתי
יי ברעוא טבא עם עמך אדכר לי בפורקנך :
5 למחמי בטובת בחיריך למחדי בחדות עמך
6 לאשתבחא עם אחסנתך : חבנא עם
7 אבהתנא אעוינא ארשענא : אבהתנא
במצרים לא אשכילו פרשותך לא דכרו
ית סוגעי טובך וסריבו על מימרך על ימא
8 בימא דסוף : ופרקנון בגלל שמיה לאודעא
9 ית גבורתיה : ונזף בימא דסוף ואתנגיב
10 והלכנון בתהומיא היך כבמדברא : ופרקנון
מיד סנאה ופרק יתהון מן יד בעלי דבבא :
11 וחפון מיא מעיקיהון חד מנהון לא אשתאר :
12 והימינו בשום מימריה שבחו תושבחתיה :
13 סרהיבו אתנשיאו עובדוי לא אסתברו
14 למלכתיה : ושיילו שאלתא במדברא ונסיאו
15 אלהא באתר צדו : ויהב להון שילותהון
16 ושדר פתרנותא בנפשהון : וטננו למשה
17 במשריתא לאהרן קדישא דיי : אתפתחת
ארעא ובלעת דתן וחפת על סיעת אבירם :
18 ודלקת אשתא בסיעתהון להבותא תשלהב
19 רשיעיא : עבדו עגלא בחורב וסגידו למתכא :
20 ופרגון ית איקר רבונהון בדמות תור דאכיל
21 עסבא ומודהם : אתנשיאו אלהא פרקהון
22 דעבד רברבן במצרים : פרישן בארעא דחם
23 דחילן על ימא דסוף : ואמר במימריה
לשיצותהון אלמלי משה בחיריה דקם ואתקף
בצלו קדמוי לאתבא חמתיה מלחבלא :
24 ואתרחיקת נפשהון בארעא רגינא לא המינו
בפתגמיה

PARAPH. CHALD Verſ. Lat.

Hallelujah.

PSAL. CVI.

COnfitemini coram Dño,quoniam bonꝰ 1
quoniam in æternum benignitas ejus. Quis 2
poterit eloqui fortitudines Domini, valebit notas facere omnes laudes ejus? Beati 3
cuſtodientes judicium, facientéſque juſtitiam in omni tempore. Recordare mei Do- 4
mine in voluntate bona cum populo tuo,
recordare mei in redemptione tuâ. Ut vide- 5
am in bonitate electorum tuorum, ut gaudeam in lætitia populi tui , & laudes dicam cum hæreditate tua. Peccavimus cum 6
patribus noſtris, iniquè fecimus, & impiè
egimus. Patres noſtri in Ægypto non intel- 7
lexerunt facta mirabilia tua, nec fuerunt
memores multitudinis miſericordiæ tuæ,
ſed fuerunt rebelles in Verbum tuum juxta mare in mari rubro. Et redemit eos 8
propter nomen ſuum, ut notam faceret potentiam ſuam. Et comminatus eſt mari ru- 9
bro, ac ſiccatum eſt ; & deduxit eos per
abyſſos ſicut per deſertum. Et redemit eos 10
de manu oſoris,& eruit eos *è manu auctorum* inimicitiæ. Et operuerunt aquæ op- 11
preſſores ipſorum; unus ex eis non ſuperfuit. Et crediderunt in nomine Verbi ejus, 12
cecinerunt laudem ejus. Citò obliti ſunt 13
operũ ejus, nec converſi ſunt ad conſilium
ejus. Et *petierunt petitionem* in deſerto, & 14
tentaverunt Deum in loco *deſolato*. Et de- 15
dit eis petitionem eorum, & miſit maciem
in animas ipſorum. Et invidia commoti 16
ſunt contra Moſſeh in caſtris, & in Aharon
ſanctum Domini. Aperta eſt terra & deglu- 17
tivit Dathan, & operuit congregationem
Abiram. Et ſuccenſus eſt ignis in con- 18
gregationem eorum flamma depaſta eſt impios. Fecerunt vitulum in Choreb,& ado- 19
raverũt conflatile. Et mutaverũt gloriã Do- 20
mini ſui in ſimilitudinem vituli comedentis
herbam & mugientis. Obliti ſunt Dei re- 21
demptoris eorum, qui grandia edidit opera
in Ægypto. Mirabilia in terra Cham, terri- 22
bilia in mari rubro. Et dixit in verbo ſuo 23
ſe exterminaturum eos, niſi Moſſeh electus
ejus ſurrexiſſet, & ſeſe roborâſſet orando in
conſpectu ejus, ut averteret iram illius, ne
deſtrueret. Et *abominata eſt anima eorum* 24
terram deſiderabilem, neque crediderunt
verbo ejus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

1 ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܘ * ܠܐ ܡܫܬܡܗ. ܡܥܝܪ ܠܗܘܢ ܠܦܘܩܕܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܘܡܠܦ
ܠܢ. ܕܟܡܐ ܕܣܟܠܘ ܝܗܘܕܝܐ ܢܕܚܠ ܚܢܢ. ܠܐ ܢܫܬܓܫ ܒܥܕܬܐ ܘܠܐ ܢܬܚܪܐ ܥܡ ܐܚܝܢ ܒܫܘܡ ܦܘܡ:
ܘܝܬܝܪܐܝܬ ܟܕ ܩܝܡܝܢܢ ܒܙܒܢܐ ܕܐܪ̈ܙܐ ܘܕܨܠܘܬܐ. ܘܟܕ ܚܛܝܢܢ ܕܢܬܬܘܐ. ܦܬܓܡ̈ܐ ܩܕ. ܐܘܕܘ ܠܡܪܝܐ ܕܛܒ
2 ܗܘ ܘܠܥܠܡ ܛܝܒܘܬܗ. * ܡܢܘ ܢܫܬܥܐ ܓܒܪ̈ܘܬܗ ܕܡܪܝܐ: ܘܢܫܡܥ ܟܠܗܝܢ
3 ܬܫܒ̈ܚܬܗ. * ܛܘܒܝܗܘܢ ܠܐܝܠܝܢ ܕܢܛܪܝܢ ܕܝܢܘܗܝ : ܘܥܒܕܝܢ ܙܕܝܩܘܬܗ ܒܟܠ ܙܒܢ.
4 5 * ܐܬܕܟܪܢ ܡܪܝܐ ܒܨܒܝܢܟ ܥܡ ܥܡܟ : ܣܥܘܪܝܢ ܒܦܘܪܩܢܟ. * ܕܢܚܙܐ ܒܛܒܬܐ ܕܓܒܝܐ ܕܝܠܟ:
6 ܢܚܕܐ ܒܚܕܘܬܟ ܘܢܫܬܒܗܪ ܒܝܪܬܘܬܟ. * ܚܛܝܢ ܥܡ ܐܒܗܝܢ ܘܐܣܟܠܢ ܘܐܪܫܥܢ: * ܐܒܗܝܢ
7 ܒܡܨܪܝܢ ܠܐ ܐܣܬܟܠܘ ܬܕܡܪ̈ܬܟ: ܘܠܐ ܐܬܕܟܪܘ ܣܘܓܐܐ ܕܛܝܒܘܬܟ: ܘܐܬܚܪܝܘ ܥܠ ܡܝ̈ܐ ܒܝܡܐ
8 ܕܣܘܦ. * ܘܦܪܩ ܐܢܘܢ ܡܛܠ ܫܡܗ : ܕܢܚܘܐ ܚܝܠܗ. * ܘܟܐܐ ܒܝܡܐ ܕܣܘܦ ܘܝܒܫ:
9 10 ܘܕܒܪ ܐܢܘܢ ܒܬܗܘܡܐ ܐܝܟ ܕܒܡܕܒܪܐ. * ܘܦܪܩ ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܒܥܠܕܒܒܐ : ܘܦܪܩ ܐܢܘܢ
11 12 ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܐܠܘܨܐ. * ܘܟܣܘ ܡܝ̈ܐ ܠܐܠܘܨܝܗܘܢ : ܘܚܕ ܡܢܗܘܢ ܠܐ ܐܫܬܚܪ. * ܘܗܝܡܢܘ
13 ܒܡܠܘܗܝ ܘܫܒܚܘ ܬܫܒܘܚܬܗ. * ܐܣܬܪܗܒܘ ܘܛܥܘ ܠܐܠܗܐ. ܘܠܐ ܣܟܝܘ ܠܡܪܥܝܬܗ:
14 15 * ܪܓܝܘ ܪܓܬܐ ܒܡܕܒܪܐ. ܘܢܣܝܘ ܠܐܠܗܐ ܒܐܫܝܡܘܢ : * ܝܗܒ ܠܗܘܢ ܫܐܠܬܗܘܢ. ܘܫܕܪ
16 ܣܒܥܐ ܠܢܦܫܬܗܘܢ : * ܘܛܢܘ ܒܡܘܫܐ ܒܡܫܪܝܬܐ. ܘܒܐܗܪܘܢ ܩܕܝܫܗ ܕܡܪܝܐ:
17 18 * ܐܬܦܬܚܬ ܐܪܥܐ ܘܒܠܥܬ ܠܕܬܢ. ܘܟܣܬ ܥܠ ܟܢܘܫܬܗ ܕܐܒܝܪܡ. * ܘܕܠܩܬ ܢܘܪܐ
19 ܒܟܢܘܫܬܗܘܢ. ܘܫܠܗܒܝܬܐ ܐܘܩܕܬ ܠܪܘܫܥܐ : * ܥܒܕܘ ܥܓܠܐ ܒܚܘܪܝܒ ܘܣܓܕܘ
20 21 ܠܡܬܟܐ. * ܘܚܠܦܘ ܐܝܩܪܗܘܢ ܒܕܡܘܬܐ ܕܬܘܪܐ ܕܐܟܠ ܥܣܒܐ : * ܘܛܥܘ ܠܐܠܗܐ
22 ܕܦܪܩ ܐܢܘܢ. ܕܥܒܕ ܪܘܪ̈ܒܬܐ ܒܡܨܪܝܢ : * ܘܬܕܡܪ̈ܬܐ ܒܐܪܥܐ ܕܚܡ. ܘܕܚܝ̈ܠܬܐ ܒܝܡܐ
23 ܕܣܘܦ : * ܘܐܡܪ ܕܢܘܒܕ ܐܢܘܢ. * ܦܣܘܩܐ * ܐܠܘ ܠܐ ܡܘܫܐ ܓܒܝܗ : ܩܡ
24 ܒܬܘܪܥܐ ܩܕܡܘܗܝ. ܘܐܗܦܟ ܚܡܬܗ ܕܠܐ ܢܚܒܠ ܐܢܘܢ : * ܘܐܣܠܝܘܗ ܠܐܪܥܐ
ܕܪܓܬܐ. ܘܠܐ ܗܝܡܢܘ ܒܡܠܘܗܝ :

PSAL. CVI.

Anonymus. Excitat eos ad præcepta Domini 1
ſervanda. Docetq; nos ut quò magis deliquerunt Judæi, nos extimeſcamus : ne conſabulemur in Eccleſia, neve contendamus cũ fratribus noſtris ullo unquam pacto : & præſertim quum aſtamus tempore Myſteriorum & orationis. Quum peccamus, ut pœnitentiam agamus. Verſus 104.

COnfitemini Dño,quia,bonus eſt,& in ſeculum benignitas ejus. Quis recenſeat mi- 2
racula Dñi, & referat cunctas laudes ejus ?
Beati ii qui ſervãt judicia ejus, & exequun- 3
tur juſtitiam illius omni tempore. Memento 4
noſtrî Dñe cum beneplacito erga populũ tuum, viſita nos cum ſalute tua. Ut videamus 5
bona electorum tuorũ,gaudeamꝰ gaudio tuo,
& gloriemur hæreditate tuâ. Peccavimus 6
cum patribus noſtris, & deliravimꝰ,impietatemq; commiſimus. Patres noſtri in Ægypto 7
non deprehenderunt miracula tua, neque recordati ſunt multitudinis beneficiorũ tuorũ,
& altercati ſunt prope aquas, in mari Suph.
Attamen liberavit eos propter nomẽ ſuum ut 8
oſtenderet potentiã ſuã : Increpuitque mare 9
Suph, & exaruit:fecitq; eos ambulare per abyſſum quaſi p̃ deſertum: Et ſalvavit illos de 10
manu hoſtis, eripuitq; eos de manu urgentis:
Et obruerunt aquæ anguſtiantes illos, ac ne 11
unus quidẽ ex iis fuit ſuperſtes. Crediderunt 12
verbis ejus,& cecinerunt laudes ejꝰ. Feſtinã- 13
runt atq; obliti ſunt Deum,& non expectaverunt conſilium ipſius. Concupiſcentiã exarſe- 14
runt in ſolitudine,& tentaverunt Deum in Aſimun. Satisfecit illorum petitionibꝰ, miſitq; 15
ſatietatẽ animabꝰ eorũ. Et inviderunt Moſi 16
exercitꝰ, atq; Ahroni ſancto Dñi. Aperta eſt 17
terra,& deglutivit Dathan, & operuit congregationẽ Abirom; Exarſit ignis in cœtibus 18
eorum, & flamma combuſſit nefarios. Fece- 19
runt vitulum in Horib, et adoraverunt fuſile:
Ac permutaverunt gloriam ſuã effigie bovis 20
comedentis herbam. Et obliti ſunt Deum qui 21
ſalvavit eos, qui patravit magna in Ægypto,
Et mira in terra Ham, atq; terribilia in mari 22
Suph. Dixitque ſe perditurum eos, **Sectio.** 23
Niſi Moſes electus ejus ſtetiſſet in ruptura coram illo,divertiſſetq; irã ipſius ne corrũperet
eos. Et aſpernati ſunt terrã deſiderii,& non 24
crediderunt verbo ejus :

Verſio VULG. LAT.

Alleluja. (*Judith* 13.21.) CV.
1 CONfitemini Dño, quoniã bonus:
quoniam in ſeculum miſericordia ej⁹,
2 Quis loquetur potentias Domini, au-
3 ditas faciet omnes laudes ejus? Beati,
qui cuſtodiunt judicium, & faciunt ju-
4 ſtitiã in omni tempore. Memento no-
ſtrî, Dñe, in beneplacito populi tui: vi-
5 ſita nos in ſalutari tuo: Ad videndũ in
bonitate electorũ tuorũ, ad lætandũ in
lætitia gentis tuæ: ut lauderis cum hæ-
6 reditate tua. Peccavimus cũ patribus
noſtris: injuſtè egim⁹, iniquitatẽ feci-
7 mus. Patres noſtri in Ægypto non in-
tellexerunt mirabilia tua: non fuerunt
memores multitudinis miſericordiæ
tuæ. Et irritaverunt aſcendentes in
8 mare, Mare rubrũ. Et ſalvavit eos pro-
pter nomen ſuum: ut notã faceret po-
9 tentiã ſuam: Et increpuit Mare rubrũ,
& exiccatum eſt: & deduxit eos in a-
10 byſſis ſicut in deſerto. Et ſalvavit eos
de manu odientium: & redemit eos
11 de manu inimici. Et operuit aqua tri-
bulantes eos: un⁹ ex eis non remanſit.
12 Et crediderunt verbis ejus: & lauda-
13 verunt laudẽ ejus. Citò fecerunt, obli-
ti ſunt operum ejus: & nõ ſuſtinuerunt
14 conſilium ej⁹. Et concupierunt concu-
piſcentiã in deſerto: & tentaverunt
15 Deum in inaquoſo. Et dedit eis petiti-
onẽ ipſorum: & miſit ſaturitatẽ in a-
16 nimas eorũ. Et irritaverunt Moyſen in
17 caſtris, Aaron Sanctũ Domini. Aperta
eſt terra, & deglutivit Dathan: & ope-
18 ruit ſuper congregationem Abiron. Et
exarſit ignis in ſynagoga eorum: flam-
19 ma combuſſit peccatores. Et fecerunt
vitulũ in Horeb: & adoraverunt ſcul-
20 ptile. Et mutaverunt gloriã ſuã in ſi-
militudinẽ vituli comedentis fœnum.
21 Obliti ſunt Deum, qui ſalvavit eos, qui
22 fecit magnalia in Ægypto, Mirabilia
in terra Cham: terribilia in Mari ru-
23 bro. Et dixit ut diſperderet eos: ſi non
Moyſes elect⁹ ej⁹ ſtetiſſet in confracti-
one in conſpectu ejus: Ut averteret i-
24 ram ejus ne diſperderet eos: Et pro ni-
hilo habuerunt terram deſiderabilem:
Non crediderunt verbo ejus,

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Ἀλληλουΐα. ρε΄.
1 † Ἐξομολογεῖσθε τῷ κυρίῳ, ὅτι χρηστὸς, † ὅτι
2 εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. † Τίς λαλήσει τὰς
δυναστείας τοῦ κυρίου, † ἀκουστὰς ποιήσει πάσας τὰς
3 αἰνέσεις αὐτοῦ; † Μακάριοι οἱ φυλάσσοντες κρίσιν,
4 † καὶ ποιοῦντες δικαιοσύνην ἐν παντὶ καιρῷ. † Μνή-
σθητι ἡμῶν κύριε ἐν τῇ εὐδοκίᾳ τοῦ λαοῦ σου, † ἐπί-
5 σκεψαι ἡμᾶς ἐν τῷ σωτηρίῳ σου, † Τοῦ ἰδεῖν ἐν τῇ
χρηστότητι τῶν ἐκλεκτῶν σου, † τοῦ εὐφραν-
θῆναι ἐν τῇ εὐφροσύνῃ τοῦ ἔθνους σου, † τοῦ ἐπ-
6 αινεῖσθαι μετὰ τῆς κληρονομίας σου. † Ἡμάρτομεν
μετὰ τῶν πατέρων ἡμῶν, † ἠνομήσαμεν, ἠδικήσαμεν.
7 † Οἱ πατέρες ἡμῶν ἐν Αἰγύπτῳ οὐ συνῆκαν τὰ θαυ-
μάσιά σου, † (α) καὶ οὐκ ἐμνήσθησαν τοῦ πλήθους τοῦ ἐλέ-
ους σου· † καὶ παρεπίκραναν ἀναβαίνοντες ἐν τῇ ἐ-
8 ρυθρᾷ θαλάσσῃ. † Καὶ ἔσωσεν αὐτοὺς ἕνεκεν τοῦ ὀ-
νόματος αὐτοῦ, † τοῦ γνωρίσαι τὴν δυναστείαν αὐτοῦ. †
9 Καὶ ἐπετίμησε τῇ ἐρυθρᾷ θαλάσσῃ, καὶ ἐξηράνθη·
10 † καὶ ὡδήγησεν αὐτοὺς ἐν ἀβύσσῳ ὡς ἐν ἐρήμῳ. † Καὶ
ἔσωσεν αὐτοὺς ἐκ χειρὸς (β) μισούντων, † καὶ ἐλυτρώ-
11 σατο αὐτοὺς ἐκ χειρὸς ἐχθροῦ. † Ἐκάλυψεν ὕδωρ τοὺς
θλίβοντας αὐτοὺς, † εἷς ἐξ αὐτῶν οὐχ ὑπελείφθη.
12 † Καὶ ἐπίστευσαν (ς) τοῖς λόγοις αὐτοῦ, † καὶ ᾔνεσαν τὴν
13 αἴνεσιν αὐτοῦ. † Ἐτάχυναν, ἐπελάθοντο τῶν ἔργων
14 αὐτοῦ, † οὐχ ὑπέμειναν τὴν βουλὴν αὐτοῦ. † Καὶ ἐπε-
θύμησαν ἐπιθυμίαν ἐν τῇ ἐρήμῳ, † καὶ ἐπείρασαν τὸν
15 θεὸν ἐν ἀνύδρῳ. † Καὶ ἔδωκεν αὐτοῖς τὸ αἴτημα
αὐτῶν, † (δ) καὶ ἐξαπέστειλε πλησμονὴν εἰς (*) τὴν ψυχὴν
16 αὐτῶν. † Καὶ παρώργισαν (ε) Μωυσῆν ἐν τῇ παρεμ-
17 βολῇ, † (ζ) καὶ Ἀαρὼν τὸν ἅγιον κυρίου. † Ἠνοίχθη ἡ
γῆ καὶ κατέπιε Δαθὰν, † καὶ ἐκάλυψεν ἐπὶ τὴν συνα-
18 γωγὴν Ἀβειρών. † Καὶ ἐξεκαύθη πῦρ ἐν τῇ συν-
αγωγῇ αὐτῶν, † (η) καὶ φλὸξ κατέφλεξεν ἁμαρτω-
19 λούς. † Καὶ ἐποίησαν μόσχον ἐν Χωρὴβ, † καὶ προσεκύ-
20 νησαν τῷ γλυπτῷ. † Καὶ ἠλλάξαντο τὴν δόξαν (θ)
αὐτῶν † ἐν ὁμοιώματι μόσχου ἔσθοντος χόρτον. †
21 Ἐπελάθοντο (ι) τοῦ θεοῦ τοῦ σώζοντος αὐτοὺς, † τοῦ
22 ποιήσαντος (κ) μεγάλα ἐν Αἰγύπτῳ, † Θαυμαστὰ
ἐν γῇ Χὰμ, † (λ) καὶ φοβερὰ ἐπὶ θαλάσσης ἐρυθρᾶς. †
23 Καὶ εἶπε τοῦ (μ) ἐξολοθρεῦσαι αὐτοὺς, † εἰ μὴ Μωυ-
σῆς ὁ ἐκλεκτὸς αὐτοῦ † ἔστη ἐν τῇ θραύσει ἐνώπιον
αὐτοῦ, † τοῦ ἀποστρέψαι (ν) ἀπὸ θυμοῦ ὀργῆς αὐτοῦ, † τοῦ
24 μὴ (ξ) ἐξολοθρεῦσαι. † Καὶ ἐξουδένωσαν γῆν ἐπιθυ-
μητὴν, † (ο) καὶ οὐκ ἐπίστευσαν τῷ λόγῳ αὐτοῦ.

MS.A. (α) οὐκ ἐμνήσθησαν (β) μισοῦντος, (ς) ἐν τοῖς (δ) ἐξαπέστειλεν (*) τὰς ψυχὰς (ε) τὸν Μωσῆν (ζ) τὸν Ἀαρὼν (η) φλὸξ κατέφλεξεν (θ) αὐτοῦ (ι) θεοῦ (κ) μεγαλεῖα (λ) φοβερὰ (μ) ἐξολεθρεῦσαι (ν) τὸν θυμὸν αὐτοῦ, (ξ) ἐξολεθρεῦσαι αὐτούς. (ο) οὐκ ἐπίστευσαν

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

Alleluja. CV.
1 CONFITEMINI Domi- 1
no, quoniam (a) bonus: quoni-
am in ſeculum miſericordia ejus. 2
Quis loquetur potentias Domini, 2
auditas faciet omnes laudes ejus?
3 Beati qui cuſtodiunt judicium, et 3
faciunt juſtitiam in omni tempore.
4 (b) Memento noſtrî, Domine, in be- 4
neplacito populi tui: viſita nos in
ſalutari tuo: 5 [a] Ad videndum in 5
bonitate electorum tuorum, [b] ad
lætandum in lætitia gentis tuæ, [c]
ad (c) laudandum cum hæreditate
tua. 6 Peccavim⁹ cum patribus no- 6
ſtris, injuſtè egimus, iniquitatem fe-
cimus. 7 Patres noſtri in Ægypto 7
non intellexerunt mirabilia tua. &
non fuerunt memores multitudinis
miſericordiæ tuæ. 8 Et irritaverunt
aſcendentes in (d) rubrum mare: 9
Et ſalvavit eos propter nomen ſuũ: 8
ut notam faceret potentiã ſuam. 10
Et increpavit mare rubrum, & 9
exiccatum eſt: & deduxit eos in
abyſſo, ſicut in deſerto. 11 Et ſalva- 10
vit eos de manu odientium: & red-
emit eos de manu inimici. 12 O- 11
peruit aqua tribulantes eos: unus ex
eis non remanſit. 13 Et crediderunt 12
(e) verbis ejus, & (f) laudaverunt
laudem ejus. 14 (g) Feſtinaverunt, 13
obliti ſunt operũ ejus: non ſuſtinu-
erunt conſilium ejus. 15 Et concu- 14
pierunt concupiſcentiam in deſerto:
& [d] tentaverunt Deum in inaquo-
ſo. 16 Et dedit eis petitionem ipſo- 15
rum: et miſit ſaturitatem in (h) ani-
mam eorum. 17 Et irritaverunt 16
Moyſem in caſtris, & Aaron San-
ctũ Domini. 18 Aperta eſt terra, & 17
deglutivit Dathan: & operuit ſuper
ſynagogam Abiron. 19 Et exarſit i- 18
gnis in ſynagoga eorum: & flamma
combuſſit peccatores. 20 Et fecerunt 19
vitulum in Choreb: & adoraverunt
ſculptile: 21 Et mutaverunt gloriam 20
ſuã (i) in ſimilitudine vituli com-
edentis fœnum. 22 Obliti ſunt De- 21
um, qui ſalvavit eos, qui fecit ma-
gna in Ægypto, Mirabilia in terra 22
Cham, (k) & terribilia ſuper mare
rubrum. 23 Et dixit ut diſperderet 23
eos; ſi non Moyſes electus ejus ſte-
tiſſet in (l) confractione in con-
ſpectu ejus: 24 ut averteret (m) ab indignatione iræ ejus, ne diſperderet [e]. Et pro nihilo 24
habuerunt terram deſiderabilem, 25, & non crediderunt verbo ejus.

Verſio ÆTHIOPICA.

ሃሌሉያ፡፡
የ፫ ግነዩ ፡ ለእግዚአብሔር፡ እስመ፡ኄር፡፡ 1
እስመ፡ለዓለም፡ምሕረቱ፡፡=፡ መኑ፡ይነግ 2
ር፡ኀይለ ፡ እግዚአብሔር፡፡ ወይገብር ፡ ከ
መ፡ይስማዕ፡ኵሉ፡ስብሐቲሁ፡፡=፡ ብፁዓ 3
ን፡እለ፡የዐቅቡ፡ፍትሐ፡፡ ወይገብሩ፡ጽድቀ፡
በኵሉ፡ጊዜ፡፡=፡ ተዘከረነ፡እግዚኦ፡በሣ 4
ህልከ፡ሕዝብከ፡፡ ወተሣሀለነ ፡ በአድኅኖት
ከ፡፡=፡ ከመ፡ንርአይ፡ ሠናይቶሙ፡ለኅሩያ 5
ኒከ፡፡ ወከመ፡ንትፈሣሕ፡በፍሥሓ፡ሕዝብ
ከ፡፡ ወከመ፡ ንክበር፡ምስለ፡ርስትከ፡፡=፡
አበስነ፡ምስለ፡አበዊነ፡፡ዐመፅነ፡ወጌገይነ፡=፡ 6
ወአበዊነሂ፡ በብሔረ፡ ግብጽ፡ ኢያእመሩ፡መ 7
ንክረከ፡፡ ወኢተዘከሩ፡ ብዝኃ ፡ ምሕረት
ከ፡፡=፡ ወአምረሩከ፡እመ፡የዐርጉ፡ባሕረ፡ 8
ኤርትራ፡፡=፡ ወአድኅኖሙ፡በእንተ፡ስሙ፡፡ 9
ከመ፡ ያርእዮሙ፡ኀይሎ፡፡=፡ ወገሠጾ፡ለ 10
ባሕረ፡ኤርትራ፡ወየብሰ፡፡ ወመርሖሙ ፡ በ
ቀላይ፡ከመዘ፡በገዳም፡፡=፡ ወአድኀኖሙ፡ 11
እምእደ፡ ጸላእቶሙ፡፡ ወአንገፎሙ፡እም
እደ፡ፀሮሙ፡፡=፡ ወደፈኖሙ፡ማይ፡ለእለ፡ 12
ሮድዎሙ፡፡ ወኢተርፈ፡አሐዱ፡እም፡ውስ
ቴቶሙ፡፡=፡ ወተአምኑ፡በቃሉ፡፡ወሰብሕዎ፡ 13
በስብሐቲሁ፡፡=፡ ወአፍጠኑ፡ረሲዓ፡ምግ 14
ባሮ፡፡ወኢተዓገሡ፡በምክሩ፡፡=፡ ወፈተዉ፡ 15
ፍትወተ፡በገዳም፡፡ ወአምረርዎ፡ለእግዚአ
ብሔር፡በበድው፡፡=፡ ወወሀቦሙ፡ዘሰአሉ፡፡ 16
ወፈነወ፡ጽጋበ፡ለነፍሶሙ፡፡=፡ ወአምዕዕዎ፡ 17
ለሙሴ፡በትዕይንት፡፡ ወለአሮን፡ቅዱሰ፡እግ
ዚአብሔር፡፡=፡ ወአብቀወት፡ምድር፡ ወው 18
ኃጠቶ፡ ለዳታን፡፡ ወደፈነቶሙ ፡ ለተአይነ፡
አቤሮን፡፡=፡ ወነደደ፡እሳት፡ውስተ፡ተዓይኒሆ 19
ሙ፡፡ ወአውዓዮሙ፡ነበልባል፡ለኃጥአን፡፡=፡
ወገብሩ ፡ ላህመ ፡ በኮሬብ፡፡ ወሰገዱ፡ለግል 20
ፎ፡፡=፡ ወወለጡ፡ክብሮሙ፡፡በአምሳለ፡ 21
ላህም፡ዘይትረአይ፡ሣዕረ፡፡=፡ ወረስዕዎ፡ 22
ለእግዚአብሔር፡ዘአድኃኖሙ፡፡ ዘገብረ፡
ዐቢያተ፡በግብጽ፡፡ ወመንክረ፡ በምድረ፡ ካ
ም፡፡ ወግሩም፡ በባሕረ፡ ኤርትራ፡፡=፡ ወ 23
ይቤ፡ከመ፡ ይሠርዎሙ፡፡ ሶበ፡አኮ፡ ሙሴ፡
ኅሩዩ፡፡ቆመ፡ቅድሜሁ፡እመ፡ብድብድ፡፡=፡
ከመ፡ ይሚጥ ፡ መቅሠፍተ ፡ መዐቱ፡፡ ወከ 24
መ ፡ ኢይሠርዎሙ፡፡ ወመነኑ ፡ ምድረ፡
መፍትወ ፡፡=፡ ወኢተአመንዎ፡በቃሉ፡፡ 25

INTERP. ÆTHIOP. PSAL. CV. [a] ut videamus [b] & lætemur [c] & ut glorificemus [d] exacerbaverunt Deum [e] eos. Et

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

1 * المزمور المائة وخمسة * مرسوم بالليلويا * وهو صه * استيكن *
2 اشكروا الرب فانه صالح * وان رحمته الى الابد * من الذي يقدر ان يصف جميع جبروت الرب *
3 4 ويسمع كل تسابيحه * طوبا للذين يحفظون الحكم * ويعملون العدل في كل زمان * اذكرنا يا رب
5 في مسرة شعبك * وتعاهدنا بخلاصك * لنرى صلاح مختاريك * ونفرح بفرح امتك * ونفتخر مع
6 7 ميراثك * فانا اخطانا مع ابائنا * واثمنا وظلمنا * اباونا وهم بمصر لم يفهموا عجايبك * ولم
8 يذكروا كثرة رحمتك * واغضبوا وهم صاعدون في البحر الاحمر * فخلصهم من اجل اسمه لكي
9 10 يعرفوا بقدرته * زجر البحر الاحمر فجف * وهداهم في العمق مثل القفر * وخلصهم من ايدي
11 مبغضيهم * ونجاهم من ايدي اعدايهم * وغرق في الماء مضطهديهم * فلم يبق واحد منهم *
12 13 * فامنوا بقوله * وسبحوا تسبحته * ثم اسرعوا فنسوا اعماله * ولم يتمسكوا بمشورته * اشتهوا شهوة في
14 15 16 البرية * وجربوا الله حيث لا ماء * فاعطاهم الذي سالوه * وارسل شبعا على نفوسهم * اغضبوا
17 موسى في المعسكر * وهرون قديس الرب * فانفتحت الارض وابتلعت داثان * وانطبقت على
18 19 جماعة ابيرون * واشتعلت نار في محافلهم * واحرق اللهيب الخطاة * وصنعوا عجلا في حوريب *
20 21 وسجدوا لصنايع اليد * وبدلوا مجدهم بمثل عجل اكل حشيش * ونسوا الله الذي خلصهم *
22 23 الذي صنع العظايم بمصر * والعجايب بارض حام * والاعمال الهايلة في البحر الاحمر * فقال لكي
يبيدهم * لولا ان موسى صفيه وقف قدامه في وقت النكبة * لكي يرد سخط غضبه ولا
24 يبيدهم * رذلوا ارضا مشتهاة * ولم يومنوا بقوله *

PSAL. CV.
Notatus titulo, Alleluja. Verſ. 94. 1
GRatias agite Domino quoniam bonus
eſt, & quidẽ miſericordia ejus eſt in
æternum. Quis eſt qui poſſit cõmemorare 2
totã potentiã Domini? & auditas facere
omnes laudes ejus? Beati qui cuſtodiunt 3
judiciũ, & faciunt juſtitiã in omni tem-
pore. Memento noſtrî O Domine, ut oble- 4
cteris populo tuo: et viſita nos cum ſalute
tua, ut videamus bonitatem electorũ tuo- 5
rum, et gaudeamus cũ gaudio gentis tuæ,
et gloriemur cum hæreditate tua: Nã pec- 6
cavimus cum patrib⁹ noſtris, et iniquitatẽ
cõmiſimus, et perverſè egimus. Patres no- 7
ſtri dum eſſent in Ægypto, non intellexe-
runt miracula tua, & non ſuut recordati
multitudinis miſericordiæ tuæ: et irrita-
verunt dũ aſcenderent per mare rubrum.
Et ſalvavit eos propter nomen ſuum, ut fa- 8
terentur potentiam ejus. Increpavit mare 9
rubrum, et exſiccatum eſt, et duxit eos per
abyſſum quaſi per deſertũ. Et liberavit eos 10
de manibus odientiũ illos, et ſalvavit eos
è manibus hoſtiũ eorũ. Et immerſit in a- 11
quas perſequutores eorũ, & non remanſit
ullus ex eis. Et crediderũt ſermoni ipſius, 12
et cecinerunt laudẽ ejus. Tum feſtinârunt 13
et obliti ſunt operum ejus, nec adhæſerunt
cõſilio ej⁹. Cupierũt cupiditatẽ in deſerto, 14
et tentaverunt Deũ ubi non erat aqua. Et 15
dedit eis quod petierunt ab eo, et miſit ſa-
turitatem ſuper animas eorum. Irritave- 16
runt Moyſem in caſtris, et Aaronẽ ſanctum
Domini. Quare aperta eſt terra et deglu- 17
tivit Dathan, & concluſa eſt ſuper con-
gregationem Abiron. Et accenſus eſt ignis 18
in cœtibus eorum, et combuſſit flamma
peccatores. Et fecerunt vitulum in Horeb, 19
& adoraverunt opera manûs. Et mutave- 20
runt gloriã ſuã pro ſimulacro vituli com-
edentis herbam: Et obliti ſunt Deũ, qui li- 21
beravit eos, qui fecit magnalia in Ægy-
pto, Et mirabilia in terra Ham, & facta 22
formidanda in mari rubro. Dixit ergò ut 23
perderet eos, niſi Moyſes electus ejus ſte-
tiſſet ante ipſum in tempore infortunũ, ut
averteret iram indignationis ejus & non
perderet illos. Contempſerunt terram opta- 24
bilem, & non crediderunt ſermoni ipſius,

elevavit Et .Domini *voce in* *audierunt* non : suis *tentoriis* in murmuraverunt Et
25 וירגנו באהליהם לא שמעו בקול יהוה: וישא
26 eorū semen *faciendū* cadere *ad* Et .deserto in eos *faciendū* cadere *ad* : *eis* suā manū
ידו להם להפיל אותם במדבר: ולהפיל זרעם 27
comederūt & :pehor-Bahal ipsi *sunt adjuncti* Et .terras in eos *spargendū ad* &:gentibꝰ in
28 בגוים ולזרותם בארצות: ויצמדו לבעל פעור ויאכלו
.plaga eis in *erupit* & : suis *studiis in* irritaverunt Et .mortuorum sacrificia
29 זבחי מתים: ויכעיסו במעלליהם ותפרץ בם מגפה:
ei est reputatum Et .plaga est *restricta* & : dijudicavit & , Pinechas stetit Et
30 31 ויעמד פינחס ויפלל ותעצר המגפה: ותחשב לו
super irritaverunt Et .seculum in usque generationē & generationē in : justitiam ad
32 לצדקה לדר ודר עד עולם: ויקציפו על
exacerbaverunt Quia .eos propter Moseh ipsi fuit malum & : *Meribah* aquas
33 מי מריבה וירע למשה בעבורם: כי המרו את
dixit quos , populos disperdiderunt Non .suis labiis *in effutiit* & : ejꝰ spiritum
34 רוחו ויבטא בשפתיו: לא השמידו את העמים אשר אמר
servierunt Et .eorū opera didicerunt & :gentibꝰ cum se miscuerunt Et .eis Dominus
35 36 יהוה להם: ויתערבו בגוים וילמדו מעשיהם: ויעבדו
& ,suos filios sacrificaverunt Et .*laqueum in* eis fuerunt & : eorum *doloribus*
37 את עצביהם ויהיו להם למוקש: ויזבחו את בניהם ואת
,suorū filiorū sanguinem,*innocuum* sanguinem effuderunt Et .dæmoniis suas filias
38 בנותיהם לשדים: וישפכו דם נקי דם בניהם
.*sanguinibꝰ in* terra est infecta & :Chenahan *doloribus* sacrificaverūt quos ,suarū filiarū &
ובנותיהם אשר זבחו לעצבי כנען ותחנף הארץ בדמים:
nasus est iratus Et .suis *adinventionibus* in sunt fornicati & :suis operibꝰ in polluerūt Et
39 40 ויטמאו במעשיהם ויזנו במעלליהם: ויחר אף
manu in eos dedit Et .suam hæreditatem est abominatus & :suū populum in Domini
41 יהוה בעמו ויתעב את נחלתו: ויתנם ביד
,eorū inimici eos oppresserūt Et .eos habentes odio *eos in* sunt dominati & :gentium
42 גוים וימשלו בהם שנאיהם: וילחצום אויביהם
exacerbaverunt ipsi & ,eos eruit multis Vicibus .eorum manu sub sunt humiliati &
43 ויכנעו תחת ידם: פעמים רבות יצילם והמה ימרו
: eis angustia *in*,vidit Et .suā iniquitatē propter sunt humiliati & : suo cōsilio in
44 בעצתם וימכו בעונם: וירא בצר להם
eū pœnituit & : sui pacti eos erga est recordatus Et .eorū clamorem *ipsum audiendo in*
45 בשמעו את רנתם: ויזכר להם בריתו וינחם
omnium facies ad,misericordias in eos dedit Et .suarū miserationū multitudinē secūdū
46 כרב חסדו: ויתן אותם לרחמים לפני כל
, gentibus de nos cōgrega & , noster Deus Domine nos Serva .eos *captivantium*
47 שוביהם: הושיענו יהוה אלהינו וקבצנו מן הגוים
Benedictus .tua laude in *glorificandum ad* : tuæ sanctitatis nomini *confitendum ad*
48 להודות לשם קדשך להשתבח בתהלתך: ברוך
:populus omnis *dixit* & : seculū in usque & , seculo à Israel Deus Dominus
יהוה אלהי ישראל מן העולם ועד העולם ואמר כל העם
.*jah-Hallelu* ,Amen
אמן הללו יה:

ספר חמישי
PSAL. CVII. קז

.ejus misericordia seculum in quoniam : bonus quoniam DOMINO Confitemini
1 הדו ליהוה כי טוב כי לעולם חסדו:

תרגום TARGUM.

ואתרעמו במשכניהון לא קבילו במימרא דיי: 25
וארים ידיה בשבועה מטולהון למרמי יתהון 26
קטילין במדברא: ולאגלאה זרעהון בעממיא 27
ולבדרותהון בארעתא: ואדביקו בטעות פעור 28
ואכלו נכסי מיתיא: וארגיזו קדמוי בעובדיהון 29
ותקפת בהון מותנא: וקם פנחס וצלי 30
ואתכליית מותנא: ואתחשבת ליה לזכו לדר 31
ודר עד עלמא: וארגיזו על מי מצותא ובאיש 32
למשה בגללהון: ארום סרבו על רוח קודשיה 33
ופריש בספותיה: לא שיציאו ית עממיא די אמר 34
יי להון: ואתערבבו בעממיא ואליפו ית 35
עובדיהון: ופלחו ית טעוותהון והוו להון 36
לתקלא: ודבחו ית בניהון וית בנתיהון 37
למזיקיא: ושדו אדם זכי דמי בניהון ובנתיהון 38
די דבחו לטעוות דכנענאי ואטנפת ארעא
בחובין דקטול: וטמיאו בעובדיהון וטעו 39
במעלליהון: ותקיף רוגזא דיי בעמיה ורחק ית 40
אחסנתיה: ומסרנון ביד עממיא ושליטו בהון 41
סנאיהון: ודחקנון בעלי דבביהון ואתכניעו 42
תחות ידיהון: זמנין סגיעין יפצי אנון והנון 43
יסרבון ליה במלכתהון ואתמכיאו בחוביהון:
וחמא כד עיק להון כד שמע ית צלותהון: 44
ודכיר להון קימיה ותב מן רוגזיה כסוגעי 45
חסדוי: ויהב יתהון לרחמין באנפי כל דשבי 46
יתהון: פרוק יתנא יי אלהנא וכנוש יתן מביני 47
עממיא לאודאה בשום קודשך לאשתבחא
בתושבחתך: בריך שמא דיי אלהא דישראל 48
מן עלמא הדין ועד עלמא דאתי ויימר כל
עמא אמן הללויה:

קז

שבחו קדם יי ארום טב ארום לעלם 1
טוביה:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Et murmuraverunt in tabernaculis ſuis;non 25 admiſerunt verbum Domini. Et levavit 26 manum ſuam cum juramento propter illos, ut projiceret eos interfectos in deſerto. Et 27 ut migrare faceret ſemen eorum in populos, & diſpergeret eos in terram. Et adjunxerunt ſe idolo Peor, & comederunt ſacrificia mortuorum. 28 Et provocaverunt eum in 29 operibus ſuis, & invaluit in eos peſtis. Et 30 ſurrexit Pinchas & oravit, & reſtincta eſt mors. Et reputatum eſt ei ad meritum, in 31 generationem & generationem uſque in ſempiternum. Et provocaverunt eum ſuper 32 aquas contradictionis , & malum evenit Moſſeh propter eos. Quoniam reſtiterunt 33 ſpiritui ſancto ejus, & explicavit labiis ſuis. Non deſtruxerunt populos , quos dixerat 34 Dominus illis: Sed commixti ſunt populis, 35 & didicerunt opera eorum. Et ſervierunt 36 idolis eorum, & fuerunt illis in offendiculum. Et ſacrificaverunt filios ſuos & filias 37 ſuas dæmoniis. Et effuderunt ſanguinem 38 innocentem, ſanguinem filiorum ſuorum et filiarum ſuarum,quos ſacrificaverunt idolis Chananæorum,et maculata eſt terra peccatis homicidii. Et polluti ſunt in operibus 39 ſuis, & fornicati ſunt in adinventionibus ſuis. Proindè exarſit furor Dñi in populum ſuum, 40 & *abominatus* eſt hæreditatem ſuam. Et tradidit eos in manum populorum, 41 & dominati ſunt eis ipſorum oſores. Et oppreſſerunt eos ipſorum inimici, et humiliati ſunt ſub manibus eorum. 42 Sæpiſſimè 43 liberavit eos, ſed ipſi provocabant eum in conſiliis ſuis , et *attenuati* ſunt in peccatis ſuis. Et vidit cùm anguſtia ineſſet eis, 44 dum *audiret orationem* eorum. Et memor 45 fuit erga illos fœderis ſui : & converſus eſt ab ira ſua juxta multitudinem miſericordiarum ſuarum. Et dedit eos in miſerationes 46 in conſpectu omnium qui captivos abduxerant eos. Redime nos Domine Deus noſter, 47 et congrega nos de medio populorum,ut confiteamur nomini ſanctotuo, et laudemus laude tua. Benedictum nomen 48 Domini Dei Iſrael à mundo hoc uſque ad mundum venturum : et dicet omnis populus: Amen, *Hallelujah.*

PSAL. CVII.

LAndate Dominum quoniam bonus eſt, 1 quoniam in æternum miſericordia ejus.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

25 26 * ܘܪܛܢܘ ܒܡܫܟܢܝܗܘܢ ܘܠܐ ܫܡܥܘ ܒܩܠܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܐܪܝܡ ܐܝܕܗ ܥܠܝܗܘܢ ܕܢܦܠ
27 ܐܢܘܢ ܒܡܕܒܪܐ : * ܘܢܒܕܪ ܙܪܥܗܘܢ ܒܥܡܡܐ. ܘܢܘܒܕ ܐܢܘܢ ܒܐܪܥܬܐ : * ܡܛܠ ܕܐܬܢܩܦܘ
28 29 ܠܦܬܟܪܐ ܕܦܥܘܪ: ܘܐܟܠܘ ܕܒܚܐ ܕܡܝܬܐ : * ܘܐܪܓܙܘܗܝ ܒܥܒܕܝܗܘܢ. ܘܒܦܬܟܪܝܗܘܢ
30 ܐܛܢܘܗܝ : ܘܐܝܩܪ ܒܗܘܢ ܡܘܬܢܐ ܡܢ ܫܠܝܐ. * ܩܡ ܦܝܢܚܣ ܘܨܠܝ ܘܐܬܟܠܝ ܡܘܬܢܐ:
31 * ܘܐܬܚܫܒܬ ܠܗ ܙܕܝܩܘܬܐ ܠܕܪܕܪܝܢ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ. * ܘܐܪܓܙܘܗܝ ܥܠ ܡܝܐ ܕܚܪܝܢܐ :
32 33 ܘܐܒܐܫ ܠܡܘܫܐ ܡܛܠܬܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܡܪܡܪܘ ܪܘܚܗ ܘܡܠܠ ܒܣܦܘܬܗ : * ܘܠܐ ܐܘܒܕܘ
34 35 ܠܥܡܡܐ ܕܐܡܪ ܠܗܘܢ ܡܪܝܐ. * ܐܠܐ ܐܬܚܠܛܘ ܒܥܡܡܐ ܘܝܠܦܘ ܥܒܕܝܗܘܢ : * ܘܦܠܚܘ
36 37 ܠܦܬܟܪܝܗܘܢ ܘܗܘܘ ܠܗܘܢ ܠܬܘܩܠܬܐ:* ܘܕܒܚܘ ܒܢܝܗܘܢ ܘܒܢܬܗܘܢ ܠܫܐܕܐ:* ܘܐܫܕܘ
38 ܕܡܐ ܙܟܝܐ ܕܡܐ ܕܒܢܝܗܘܢ ܘܕܒܢܬܗܘܢ: ܕܕܒܚܘ ܠܦܬܟܪܐ ܕܟܢܥܢ. ܘܐܬܛܘܫܬ ܐܪܥܐ ܒܕܡܐ:
39 * ܘܐܬܛܘܫܘ ܒܥܒܕܝܗܘܢ. ܘܙܢܝܘ ܒܢܟܠܝܗܘܢ. * ܘܐܬܚܡܬ ܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܥܡܗ :
40 41 ܘܐܣܠܝ ܝܪܬܘܬܗ . * ܘܐܫܠܡ ܐܢܘܢ ܒܐܝܕܐ ܕܥܡܡܐ : ܘܫܠܛܘ ܒܗܘܢ ܣܢܐܝܗܘܢ.
42 43 * ܘܫܥܒܕܘ ܐܢܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ: ܘܐܬܡܟܟܘ ܬܚܝܬ ܐܝܕܝܗܘܢ. * ܙܒܢܐ ܣܓܝܐܐ ܦܪܩ
44 ܐܢܘܢ : ܗܢܘܢ ܕܝܢ ܐܡܪܡܪܘܗܝ ܒܡܬܪܥܝܬܗܘܢ. ܘܐܬܡܟܟܘ ܒܚܘܒܝܗܘܢ: * ܘܚܙܐ ܒܐܘܠܨܢܗܘܢ
45 ܘܫܡܥ ܒܥܘܬܗܘܢ. * ܘܐܬܕܟܪ ܩܝܡܗ ܘܐܬܪܚܡ ܥܠܝܗܘܢ: ܘܕܒܪ ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܣܘܓܐܐ ܕܛܝܒܘܬܗ.
46 47 * ܘܝܗܒ ܐܢܘܢ ܠܪܚܡܐ ܩܕܡ ܟܠ ܫܒܝܗܘܢ: * ܦܪܘܩܝܢ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܘܟܢܫܝܢ ܡܢ ܥܡܡܐ.
48 ܕܢܘܕܐ ܠܫܡܟ ܩܕܝܫܐ ܘܢܫܬܒܚ ܒܝܪܬܘܬܟ: * ܒܪܝܟ ܗܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܡܢ ܥܠܡ
ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ : ܘܢܐܡܪ ܟܠܗ ܥܡܐ ܐܡܝܢ ܐܡܝܢ. * ܫܠܡ ܣܦܪܐ ܕܐܪܒܥܐ *
1 * ܫܪܝ ܣܦܪܐ ܕܚܡܫܐ * * ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܙ * ܕܠܐ ܡܫܡܗܐ. ܡܬܐܡܪ ܥܠ ܝܘܐܝܠ ܘܐܒܝܐ ܒܢܝ
ܫܡܘܐܝܠ ܕܡܩܪܝܢ ܗܘܘ ܦܘܩܕܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܟܢܫ ܐܢܘܢ ܐܠܗܐ ܠܝܗܘܕܝܐ ܡܢ ܫܒܝܐ ܘܐܦܩ
ܐܢܘܢ ܡܢ ܒܒܠ ܘܟܢܫ ܬܘܒ ܝܚܝܕܝܐ ܒܪܗ ܕܐܠܗܐ ܝܫܘܥ ܡܫܝܚܐ ܠܥܡܡܐ ܡܢ ܐܪܒܥ ܦܢܝܢ
ܒܟܪܘܙܘܬܐ ܠܡܥܡܘܕܝܬܐ. ܦܬܓܡܐ ܦܘ. ܐܘܕܘ ܠܡܪܝܐ ܕܛܒ ܗܘ ܘܠܥܠܡ ܛܝܒܘܬܗ.

Et murmuraverunt in tabernaculis ſuis,& nō 25 acquieverunt voci Dñi. Quapropter levavit 26 manū ſuā in illos,ad enecandos eos in deſerto, Et diſſipandum ſemen eorū inter gentes, 27 atq; perdendos illos in terris, Quia adhæſerunt 28 ſimulachris Peor,et comederunt ſacrificia mortuorū: Et irritaverunt eū operibꝰ ſuis, 29 & idolis ſuis ad æmulationem provocaverunt eum. Et gravavit in eos mortalitatē repentē. Stetit Phinhes & oravit,ac prohibita 30 eſt mortalitas : Et reputata eſt ei juſtitia in 31 generationē generationū,& uſq; in ſempiternū. Et irritaverunt eū ob aquā jurgii,& malum 32 intulit Moſi propter eos : Quia exaſperaverunt 33 ſpiritū ejꝰ, & locutꝰ eſt labiis ſuis. Et 34 nō perdiderunt gentes quas dixerat eis Dñs ; Imò miſcuerunt ſe inter gentes, & didicerunt 35 opera eorū, Coluerūntq; idola ipſarum, 36 factáq; ſunt eis ſcandalū. Immolaverunt filios 37 ſuos,& filias ſuas dæmoniis, Et effuderūt ſanguinē 38 innocentē,ſanguinē filiorū ſuorū & filiarum ſuarum. Sacrificaverunt ſimulachris Canaan,et contaminata eſt terra ſanguine. Et 39 polluerunt ſe operibus ſuis, et fornicati ſunt artibꝰ ſuis, Et efferbuit ira Dñi in populum 40 ſuum,contempsítq; hæreditatē ſuā. Ac tradidit 41 illos in manū gentiū,& dominati ſunt in ipſos oſores eorū, Et ſubjugaverunt illos inimici 42 eorū, atq; ſubacti ſunt manibꝰ eorū. Vicibꝰ 43 multis liberavit illos, ipſi tamen exacerbaverunt eum cogitationibꝰ ſuis,& humiliati ſunt ob iniquitatē ſuā. Nihilominꝰ reſpexit 44 in anguſtiis eorū, & audivit precē illorum: Et recordatꝰ eſt fœderis ſui , ac miſertus illorū: 45 & gubernavit eos ſecundū abundantiam bonitatū ſuarū, Dedítq; illos in miſerationes 46 corā omnibus qui in captivitatē abduxerant eos. Redime nos Dñe Deus, & collige nos ex 47 gentibꝰ: ut confiteamur nomini tuo ſacroſancto, & gloriemur in hæreditate tua . Benedictꝰ 48 ſit Dñs Deꝰ Iſraelis à ſeculo & uſq; in ſeculū: & dicat univerſꝰ populꝰ, Amen,amen.

Finis Libri quarti. Sequitur Liber Quintus.

PSAL. CVII.

Anonymus. Dicitur de Joële & Abia filiis Samuel qui recitabant mandata Domini. Collegit Deus Judæos de captivitate, & extraxit illos ex Babel. Collegit quoq; filius unigenitꝰ Dei Jeſus Chriſtus gentes è quatuor angulis per prædicationem ad baptiſmum. Verſ. 86. 1

COnfitemini Dño, quoniam bonus eſt, & in æternum bonitas ejus:

Verſio VULG. LAT.

25 Et murmuraverunt in tabernaculis ſu-
26 is: non exaudierunt vocē Domini. Et
elevavit manum ſuam ſuper eos: ut
27 proſterneret eos in deſerto: Et ut deji-
ceret ſemen eorum in nationibus: &
28 diſpergeret eos in regionibus. Et ini-
tiati ſunt Beelphegor: & comederunt
29 ſacrificia mortuorū. Et irritaverūt eū
in adinventionibus ſuis: & multipli-
30 cata eſt in eis ruina. Et ſtetit Phinees,
31 & placavit: & ceſſavit quaſſatio. Et
reputatū eſt ei in juſtitiam, in genera-
tionē & generationem uſque in ſem-
32 piternum. Et irritaverunt eum ad a-
quas Contradictionis: & vexatus eſt
33 Moyſes propter eos: Quia exacerba-
verunt ſpiritum ejus. Et diſtinxit in la-
34 biis ſuis: Non diſperdiderunt gentes,
35 quas dixit Dominus illis. Et commiſti
ſunt inter gentes, & didicerunt opera
36 eorum: Et ſervierunt ſculptilibus eo-
37 rum: & factū eſt illis in ſcandalum. Et
immolaverunt filios ſuos, & filias ſuas
38 dæmoniis, Et effuderunt ſanguinē in-
nocentem: ſanguinem filiorum ſuorū
& filiarum ſuarū, quas ſacrificaverūt
ſculptilib⁹ Chanaan. Et infecta eſt ter-
39 ra in ſanguinib⁹, Et contaminata eſt in
operibus eorū: & fornicati ſunt in ad-
40 inventionibus ſuis. Et iratus eſt furore
Dñs in populum ſuum: & abominat⁹
41 eſt hæreditatem ſuā. Et tradidit eos in
manus gentiū: & dominati ſunt eorū
42 qui oderunt eos. Et tribulaverunt eos
inimici eorum, & humiliati ſunt ſub
43 manibus eorum: Sæpè liberavit e-
os. Ipſi autē exacerbaverunt eū in con-
ſilio ſuo: & humiliati ſunt in iniquita-
44 tibus ſuis. Et vidit cùm tribularentur:
45 & audivit orationē eorum. Et memor
fuit teſtamenti ſui: & pœnituit eum ſe-
cundū multitudinē miſericordiæ ſuæ.
46 Et dedit eos in miſericordias in cōſpe-
47 ctu omniū qui ceperāt eos. Salvos nos
fac, Dñe Deus noſter: & congrega nos
de nationib⁹: Ut confiteamur nomini
48 ſancto tuo: & gloriemur in laude tua.
Benedict⁹ Dñs De⁹ Iſrael à ſeculo et
uſq; in ſeculum: & dicet omnis po-
pulus; Fiat, fiat.

Alleluja. (*Judith* 13. 21.) CVI.

1 COnfitemini Dño quoniam bonus:
quoniā in ſeculum miſericordia ejus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

25 † Καὶ ἐγόγγυσαν ἐν τοῖς σκηνώμασιν αὐτῶν, † οὐκ εἰσ-
26 ήκουσαν τῆς φωνῆς κυρίου. † Καὶ ἐπῆρε τὴν χεῖρα
αὐτοῦ ἐπ' αὐτοὺς, † τοῦ καταβαλεῖν αὐτοὺς ἐν τῇ ἐρή-
27 μῳ, † Καὶ τοῦ καταβαλεῖν τὸ σπέρμα αὐτῶν ἐν τοῖς
ἔθνεσι, † καὶ διασκορπίσαι αὐτοὺς ἐν ταῖς χώραις. †
28 Καὶ ἐτελέσθησαν τῷ Βεελφεγὼρ, † καὶ ἔφαγον θυ-
29 σίας νεκρῶν. † Καὶ παρώξυναν αὐτὸν ἐν τοῖς ἐπιτη-
δεύμασιν αὐτῶν, † καὶ ἐπληθύνθη ἐν αὐτοῖς ἡ πτῶ-
30 σις. † Καὶ ἔστη Φινεὲς καὶ ἐξιλάσατο, † καὶ ἐκόπα-
31 σεν ἡ θραῦσις. † Καὶ ἐλογίσθη αὐτῷ εἰς δικαιοσύ-
32 νην, † εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν ἕως τοῦ αἰῶνος. † Καὶ
παρώργισαν αὐτὸν ἐπὶ ὕδατος ἀντιλογίας, † καὶ ἐκα-
33 κώθη Μωυσῆς δι' αὐτούς. † Ὅτι παρεπίκραναν
τὸ πνεῦμα αὐτοῦ, † καὶ διέστειλεν ἐν τοῖς χείλεσιν αὐ-
34 τοῦ. † Οὐκ (ϖ) ἐξωλόθρευσαν τὰ ἔθνη ἃ εἶπε κύρι-
35 ος αὐτοῖς. † Καὶ ἐμίγησαν ἐν τοῖς ἔθνεσι, † καὶ
36 ἔμαθον τὰ ἔργα αὐτῶν. † Καὶ ἐδούλευσαν τοῖς γλυ-
πτοῖς αὐτῶν, † καὶ ἐγενήθη αὐτοῖς εἰς σκάνδαλον. †
37 Καὶ ἔθυσαν τοὺς υἱοὺς αὐτῶν † καὶ τὰς θυγατέρας αὐ-
38 τῶν τοῖς δαιμονίοις, † Καὶ ἐξέχεαν αἷμα ἀθῶον, †
αἷμα υἱῶν αὐτῶν καὶ θυγατέρων, † ὧν ἔθυσαν τοῖς
γλυπτοῖς Χαναάν. † καὶ ἐφονοκτονήθη ἡ γῆ ἐν τοῖς
39 (ϱ) αἵμασι, Καὶ ἐμιάνθη ἐν τοῖς ἔργοις αὐτῶν· καὶ
40 ἐπόρνευσαν ἐν τοῖς ἐπιτηδεύμασιν αὐτῶν. † Καὶ ὠρ-
γίσθη θυμῷ κύριος ἐπὶ τὸν λαὸν αὐτοῦ, † καὶ ἐβδελύ-
41 ξατο τὴν κληρονομίαν αὐτοῦ. † Καὶ παρέδωκεν αὐτοὺς
εἰς χεῖρας ἐχθρῶν, † καὶ ἐκυρίευσαν αὐτῶν οἱ μισοῦν-
42 τες αὐτούς. † Καὶ ἔθλιψαν αὐτοὺς οἱ ἐχθροὶ αὐτῶν,
43 † καὶ ἐταπεινώθησαν ὑπὸ τὰς χεῖρας αὐτῶν. † Πλει-
ονάκις ἐρρύσατο αὐτούς, † αὐτοὶ δὲ παρεπίκραναν
αὐτὸν ἐν τῇ βουλῇ αὐτῶν· † καὶ ἐταπεινώθησαν ἐν
44 ταῖς ἀνομίαις αὐτῶν. † Καὶ εἶδε κύριος ἐν τῷ θλί-
βεσθαι αὐτούς, † ἐν τῷ αὐτὸν εἰσακοῦσαι τῆς δεήσεως
45 αὐτῶν. † Καὶ ἐμνήσθη τῆς διαθήκης αὐτοῦ, † καὶ μετε-
46 μελήθη κατὰ τὸ πλῆθος τοῦ ἐλέους αὐτοῦ. † Καὶ ἔδω-
κεν αὐτοὺς εἰς οἰκτιρμοὺς † ἐναντίον πάντων τῶν (σ)
47 αἰχμαλωτευσάντων αὐτούς. † Σῶσον ἡμᾶς κύριε
ὁ θεὸς ἡμῶν, † καὶ ἐπισυνάγαγε ἡμᾶς ἐκ τῶν ἐθνῶν,
† τοῦ ἐξομολογήσασθαι τῷ ὀνόματί σου τῷ ἁγίῳ,
48 † τοῦ ἐγκαυχᾶσθαι ἐν τῇ αἰνέσει σου. † Εὐλογητὸς
κύριος ὁ θεὸς Ἰσραήλ, † ἀπὸ τοῦ αἰῶνος καὶ ἕως
τοῦ αἰῶνος· † καὶ ἐρεῖ πᾶς ὁ λαός, Γένοιτο, γένοιτο.

MS.A. (ϖ) ἐξωλέθρευσαν (ϱ) αἵμασι. ** αὐ-
τῶν. Καὶ ὠργίσθη θυμῷ (σ) αἰχμαλωτισάντων

Ἀλληλούϊα. ρε'.

1 † Ἐξομολογεῖσθε τῷ κυρίῳ, ὅτι χρηστός, † ὅτι εἰς
τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

Et murmuraverunt in tabernaculis 25
ſuis: non exaudierunt vocē Domi-
ni. 26 *Et elevavit manum ſuam ſu-* 26
per eos, ut proſterneret eos in deſer-
to: 27 *Et ut dejiceret ſemen eorum* 27
in gentibus, & [f] *diſpergeret eos in*
regionibus. 28 *Et* [g] *initiati ſunt* 28
Beelphegor, et comederunt ſacrificia
mortuorum. 29 *Et irritaverunt eum* 29
in adinventionibus ſuis: & multi-
plicata eſt in eis ruina. 30 *Et* [h] *ſte-* 30
tit Phinees, & placavit: & ceſſavit
(*n*) *quaſſatio.* 31 *Et reputatum eſt ei* 31
in juſtitiam, in generationem &
generationem uſque in ſeculum. 32
Et irritaverunt eum ſuper aquam 32
Contradictionis: et vexatus eſt Moy-
ſes propter eos. Quia exacerbave- 33
runt ſpiritum ejus: 33 *&* (*o*) [i] *di-*
ſtinxit in labiis ſuis. Non diſperdi- 34
derunt gentes, quas dixit Dominus
illis: 34 *Et commiſti ſunt in genti-* 35
bus: & didicerunt opera eorum. Et 36
ſervierunt ſculptilibus eorum: &
[k] *factum eſt illis in ſcandalum.* 35
Et immolaverunt filios ſuos, & fili- 37
as ſuas dæmoniis: 36 *Et effuderunt* 38
ſanguinem innocentē, ſanguinē fili-
orū ſuorū & filiarū, quos ſacrifica-
verunt ſculptilibus Chanaan. 37 *Et*
(*p*) *interfecta eſt terra in ſanguini-*
bus: Et contaminata eſt [l] *in ope-* 39
ribus eorum: & fornicati ſunt [m]
in (*q*) *adinventionibus ſuis.* 38 *Et* 40
iratus eſt (*r*) *furore Dominus in po-*
pulum ſuum: & abominatus eſt hæ-
reditatem ſuam. 39 *Et tradidit eos* 41
in manus inimicorum: & dominati
ſunt eorum, qui oderunt eos. 40 *Et* 42
tribulaverunt eos inimici eorum: &
humiliati ſunt ſub manibus eorum.
[n] *Sæpe liberavit eos:* 41 *ipſi au-* 43
tem exacerbaverunt eum in conſilio
ſuo: & humiliati ſunt in iniquita-
tibus ſuis. 42 *Et* [o] *vidit Dominus,* 44
cùm tribularentur, (*ſ*) *cùm exaudi-*
ret orationem eorum. 43 *Et memor* 45
fuit teſtamenti ſui: & pœnituit eum
ſecundùm multitudinem miſericor-
diæ ſuæ. 44 *Et dedit* [p] *eos in mi-* 46
ſericordias in conſpectu omnium
qui [q] *ceperant eos.* 45 *Salvos nos* 47
fac, Domine Deus noſter, & congre-
ga nos de gentibus: 46 *ut confitea-*
mur nomini ſancto tuo, ut glorie-
mur in laude tua. 47 *Benedictus Do-* 48
minus Deus Iſrael à ſeculo, & uſq; in ſeculum: & [r] *dicet omnis populus; Fiat, Fiat.* 48

Alleluja. CVI.

1 C*ONFITEMINI Domino, quoniam bonus: quoniam in ſeculum miſericordia ejus.* 1

Verſio ÆTHIOPICA.

ወአንጐርጐሩ:በውስተ:ተዐይኒሆሙ:: ወኢ
ሰምዑ:ቃለ:እግዚአብሔር::=፡ ወአንሥ 26
አ:እዴሁ: ላዕሌሆሙ::ከመ: ይንጽሖሙ:
በገደም::=፡ ወከመ:ይንጽሕ:ዘርአሙ:ው 27
ስተ:አሕዛብ:: ወከመ:ይዝርዎሙ:ውስተ:
በሐውርት::=፡ወተፈጸሙ:በብዔል:ፌጎር:: 28
ወበልዑ:መሥዋዕተ:ምውት::=፡ ወአምዕ 29
ዕዎ:በምግባሪሆሙ:: ወበዝኃ: ብድብድ:ላ
ዕሌሆሙ::=፡ ወተንሥአ:ፊንሐስ:ወአድ 30
ኃኖሙ::ወኃደገ:ብድብድ: 31 ወተኈለ
ቈ:ጽድቀ:: ለትውልደ:ትውልድ:ወእስከ:
ለዓለም::=፡ ወአምዕዕዎ:በኀበ:ማየ: ቅ 32
ሥት:: ወሐመ:ሙሴ:በእንቲአሆሙ:: እስ
መ:አምረርዋ: ለነፍሱ::=፡ ወአዘዘ:በከና 33
ፍሪሆሙ:: ወኢያሠረውዎ : አሕዛብ : ዘይቤ
ሎሙ:እግዚአብሔር::=፡ ወተደመሩ:ም 34
ስለ : አሕዛብ:: ወተምሀሩ : ምግባሮሙ::
ወተቀንዩ:ለግልፎሙ:: ወኮኖሙ:ጌጋየ::=፡
ወዘብሑ:ደቂቆሙ: ወአዋልዲሆሙ:ለአጋንን 35
ት::=፡ ወከዐው: ደመ:ንጹሐ:: ደመ:ደቂ 36
ቆሙ : ወአዋልዲሆሙ:: ወሠዑ : ለግልፎ:
ከናአን::=፡ ወተቀትለት:ምድር:በደም:: 37
ወረኵሰት:ምድር:በምግባሪሆሙ:: ወዘ
መዉ:በጣዖቶሙ::=፡ ወተምዐ:እግዚአብ 38
ሔር:መዐተ:ላዕለ:ሕዝቡ::ወአስቆረሮሙ:
ለርስቱ::=፡ ወአግብኦሙ : ውስተ :እደ: 39
ፀሮሙ::ወቀነይዎሙ:ጸላእቶሙ::=፡ ወ 40
አሕመምዎሙ:ፀሮሙ:: ወኅሰሩ:በታሕተ:
እደዊሆሙ:: ወዘልፈ:ያድኅኖሙ::=፡ ወ 41
አሙንቱሰ: አምረርዎ: በምክሮሙ:: ወሐ
ሙ:በኃጢአቶሙ::::=፡ ወርእዮሙ: ከ 42
መ:ተመንደቡ:: ወሰምዖሙ:ጸሎቶሙ::=፡
ወተዘከረ:ኪዳኖ:: ወነስሐ :በከመ:ብዝኃ: 43
ምሕረቱ::=፡ ወወሀቦሙ : ሣህሎ:: በ 44
ቅድመ : ኵሎሙ : እለ : ፄወውዎሙ::=፡
አድኅነነ: እግዚኦ:አምላክነ:: ወአስተጋ 45
ብአነ : እምአሕዛብ::=፡ ከመ : ንግነይ: 46
በስምከ : ቅዱስ:: ወከመ : ንትመካሕ:
በስብሐቲከ::=፡ ይትባረክ : እግዚአ 47
ብሔር :አምላከ: እስራኤል:: እምቅድመ:
ዓለም:ወእስከ:ለዓለም:: ለይበሉ: ኵሉ:
ሕዝብ:ለይኩን:ለይኩን::=፡

ሃሌሉያ::

፻፮ ግነዩ: ለእግዚአብሔር: እስመ: ኄር::
እስመ:ለዓለም:ምሕረቱ::=፡

INTERP. ÆTHIOP. [f] ut diſſiparet eos [g] completi ſunt in Beel-phegor, [h] excitavit ſe Phinees, & liberavit eos: [i] præcepit in [k] facta eſt illis iniquitas. [l] terra in [m] in idolis ſuis. [n] Indeſinenter liberavit [o] vidit eos, cùm [p] eis miſericordiam ejus in [q] captivos ceperant [r] dicat

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

25 26 وتقمقموا في مساكنهم * ولم يسمعوا صوت الرب * فرفع يده عليهم لكي يطرحهم في البرية *
27 28 ويطرح ذريتهم في الامم * ويبددهم في البلدان * لانهم قربوا لاوثان فاغور واكلوا ذبائح الاموات *
29 30 واغضبوه باعمالهم فكثر فيهم السقطة * فوقف فنحاس خلصهم * وسكنت الكسر * وحسب
31 32 له ذلك برا * منذ جيل والى جيل والى الابد * واغضبوه على ماء المقاومة * وتعذب موسي من
33 34 اجلهم * لانهم اغضبوا روحه * افرز بشفتيه * ولم يهلكوا الامم الذين قال لهم الرب * واختلطوا
35 36 37 بالامم * وتعلموا اعمالهم * وتعبدوا لمصنوعات اليد * فصار لهم عثر * وانهم ذبحوا بنيهم وبناتهم
38 للشياطين * وسفكوا دما زكيا * دم بنيهم وبناتهم المذبوحين لمنحوتات كنعان * وفسدت الارض
39 40 بالقتل والدماء * وتنجست الارض باعمالهم * وزنوا بافعالهم * فغضب الرب بسخطه على شعبه *
41 42 ونجس ميراثه * واسلمهم في ايدي الامم * وتسلط عليهم مبغضوهم * واضطهدهم اعداوهم *
43 44 وذلوا تحت ايديهم * مرارا كثيرة خلصهم * وهم اغضبوه بافكارهم * وذلوا باثامهم * فراي الرب
45 46 عند ضيقهم * لما استجاب طلبتهم * وذكر عهده وندم بحسب كثرة رحمته * واعطاهم الرافة
47 قدام الذين سبوهم * خلصنا ايها الرب الهنا * واجمعنا من الامم * لكي نشكر اسمك القدوس *
48 ولكي نفتخر بتسبحتك * مبارك الرب اله اسرائيل * منذ الازل والى الابد * وجميع الشعوب
يقول يكون يكون * اللليلويا *

1 * المزمور المائة وستة * مرسوم باللليلويا * وهو * فه * استيخن *
اشكروا الرب فانه صالح * وان رحمته لكائنة الى الابد *

Et murmuraverunt in habitaculis ſuis, & 25
non audierunt vocem Domini. Quapropter 26
elevavit manū ſuā ſuper eos, ut proſterne-
ret eos in deſerto, Et projiceret ſobolem eo- 27
rum inter gentes, et diſpergeret eos per re-
giones: Eò quòd ſacrificârint idolis Pha- 28
gor, et māducârint ſacrificia mortuorū. Et 29
irritaverunt eū operib⁹ ſuis, et multiplica-
ta eſt in eis ruina. Stetit autem Phinees, & 30
ſalvavit eos, & ſedata fuit factio. Et an- 31
numeratū ei fuit hoc in juſtitiam ab ævo
in ævum & uſque ad æternitatem. Rurſus 32
irritaverunt eū ad aquā cōtradictionis, et
cruciatus eſt Moyſes propter eos: Quia 33
concitaverunt ſpiritū ejus. Definierat la-
biis ſuis, Et non peremerunt gentes quas 34
dixerat eis Dominus. Et immiſcuerunt ſe 35
gentibus, et didicerunt opera earū, Et ſer- 36
vierunt manufactis, et factū eſt illis ſcan-
dalum. Et verò jugulaverunt filios ſuos et 37
filias ſuas dæmoniis. Et effuderūt ſāguinē 38
innocentem, ſanguinē filiorū ſuorū ac fili-
arū ſuarū jugulatorū, ſculptilib⁹ Canaan.
Putrefacta eſt terra cæde et ſāguinib⁹, Et 39
contaminata eſt terra actionibus eorū, &
fornicati ſunt operibus ſuis. Idcirco iratus 40
eſt Dominus furore ſuo in populum ſuū, et
polluit hæreditatem ſuā. Et tradidit eos in 41
man⁹ gentium, et dominati ſunt in eos oſo-
res eorū: Et perſequuti ſunt illos inimici 42
eorū, et ſubacti fuerunt ſub manibus illo-
rū. Vicibus multis liberavit eos, et ipſi ad 43
iracundiā provocaverunt eū cogitationib⁹
ſuis, & humiliati ſunt in iniquitatib⁹ ſuis.
Vidit autem Dominus in anguſtia eorum, 44
quando exaudivit petitionem ipſorum. Et 45
recordatus eſt pacti ſui, et pœnituit eū pro
menſura multitudinis miſericordiæ ſuæ. Et 46
conceſſit eis clementiā apud eos qui capti-
vos duxerant illos. Salva nos O Domine 47
Deus noſter, & collige nos ex gentibus: ut
gratias agamus nomini tuo ſancto, & ut
gloriemur in laude tua. Benedict⁹ Domin⁹ 48
Deus Iſraelis ab æterno & in perpetuum.
Et omnes populi dicant, Sit, ſit. Alleluja.

PSAL. CVI.

Titulus, Alleluja. Verſ, 85. 1

G*Ratias agite Domino, quoniā bon⁹ eſt,*
& quia miſericordia ejus perſeverans
eſt in æternum.

תְּהִלִּים : קז

terris de Et .hostis manu de *eos* redemit quos : DOMINI redempti Dicant
2 יֹאמְרוּ גְּאוּלֵי יְהוָה אֲשֶׁר גְּאָלָם מִיַּד־צָר: וּמֵאֲרָצוֹת
3 Erraverunt .mari à & ,aquilone ab : occidente ab & , oriente ab ,eos congregavit
4 קִבְּצָם מִמִּזְרָח וּמִמַּעֲרָב מִצָּפוֹן וּמִיָּם: תָּעוּ
,Famelici .invenerunt non habitationis civitatem : *viæ* solitudine in deserto in
5 בַמִּדְבָּר בִּישִׁימוֹן דָּרֶךְ עִיר מוֹשָׁב לֹא מָצָאוּ: רְעֵבִים
DOMINUM ad clamaverunt Et .defecit ipsis in eorum anima : sitibundi etiam
6 גַּם־צְמֵאִים נַפְשָׁם בָּהֶם תִּתְעַטָּף: וַיִּצְעֲקוּ אֶל־יְהוָה
eos fecit ambulare Et .eos eruit suis *coarctationibus* de : *eis* angustia in
7 בַּצַּר לָהֶם מִמְּצוּקוֹתֵיהֶם יַצִּילֵם: וַיַּדְרִיכֵם
Domino Confiteantur .habitationis civitatem ad *eundum ad* : rectam viam per
8 בְּדֶרֶךְ יְשָׁרָה לָלֶכֶת אֶל־עִיר מוֹשָׁב: יוֹדוּ לַיהוָה
fecit saturare Quia .hominum filiis ejus mirabilia & : ejus misericordiam
9 חַסְדּוֹ וְנִפְלְאוֹתָיו לִבְנֵי אָדָם: כִּי־הִשְׂבִּיעַ
,*tenebrositatem* Habitantes .bono implevit famelicam animam & : *cupidam* animam
10 נֶפֶשׁ שֹׁקֵקָה וְנֶפֶשׁ רְעֵבָה מִלֵּא־טוֹב: יֹשְׁבֵי חֹשֶׁךְ
eloquia mutaverunt Quia .ferro & , *afflictione* vinctos : *mortis umbram &*
11 וְצַלְמָוֶת אֲסִירֵי עֳנִי וּבַרְזֶל: כִּי־הִמְרוּ אִמְרֵי־
: eorum cor labore in humiliavit Et .despexerunt altissimi consilium & : Dei
12 אֵל וַעֲצַת עֶלְיוֹן נָאָצוּ: וַיַּכְנַע בֶּעָמָל לִבָּם
angustia in DOMINUM ad clamaverunt Et .auxiliator non & , impegerunt
13 כָּשְׁלוּ וְאֵין עֹזֵר: וַיִּזְעֲקוּ אֶל־יְהוָה בַּצַּר
: mortis umbra & ,*tenebrositate* de eos Eduxit .eos servavit eorũ *coarctationibus* de ,*eis*
14 לָהֶם מִמְּצוּקוֹתֵיהֶם יוֹשִׁיעֵם: יוֹצִיאֵם מֵחֹשֶׁךְ וְצַלְמָוֶת
: ejus misericordiam DOMINO Confiteantur .disrupit eorum vincula &
15 וּמוֹסְרוֹתֵיהֶם יְנַתֵּק: יוֹדוּ לַיהוָה חַסְדּוֹ
ferri vectes & , æreas portas contrivit Quia .hominum filiis ejus mirabilia &
16 וְנִפְלְאוֹתָיו לִבְנֵי אָדָם: כִּי־שִׁבַּר דַּלְתוֹת נְחֹשֶׁת וּבְרִיחֵי בַרְזֶל
eorũ iniquitates propter & : eorum prævaricationis viam propter Stulti .*concidit*
17 גִּדֵּעַ: אֱוִלִים מִדֶּרֶךְ פִּשְׁעָם וּמֵעֲוֹנֹתֵיהֶם
pervenerunt & : eorum anima est abominata escam Omnem .fuerunt afflicti
18 יִתְעַנּוּ: כָּל־אֹכֶל תְּתַעֵב נַפְשָׁם וַיַּגִּיעוּ
: *eis* angustia in DOMINUM ad clamaverunt Et .mortis portas ad usque
19 עַד־שַׁעֲרֵי מָוֶת: וַיִּזְעֲקוּ אֶל־יְהוָה בַּצַּר לָהֶם
: eos sanavit & , suum verbum Misit .eos servavit suis *coarctationibus* à
20 מִמְּצוּקוֹתֵיהֶם יוֹשִׁיעֵם: יִשְׁלַח דְּבָרוֹ וְיִרְפָּאֵם
:ejꝰ misericordiam DOMINO Confiteantur .eorum *corruptionibus* de eruit &
21 וִימַלֵּט מִשְּׁחִיתוֹתָם: יוֹדוּ לַיהוָה חַסְדּוֹ
, laudis sacrificia sacrificent Et .hominum filiis ejus mirabilia &
22 וְנִפְלְאוֹתָיו לִבְנֵי אָדָם: וְיִזְבְּחוּ זִבְחֵי תוֹדָה
: navibus in mare ad Descendentes .*præconio* in ejus opera narrent &
23 וִיסַפְּרוּ מַעֲשָׂיו בְּרִנָּה: יוֹרְדֵי הַיָּם בָּאֳנִיּוֹת
:DOMINI opera viderunt Ipsi .multis aquis in opus facientes
24 עֹשֵׂי מְלָאכָה בְּמַיִם רַבִּים: הֵמָּה רָאוּ מַעֲשֵׂי יְהוָה
: turbinis *spiritum fecit stare* & , dixit Et .profundo in ejus mirabilia &
25 וְנִפְלְאוֹתָיו בִּמְצוּלָה: וַיֹּאמֶר וַיַּעֲמֵד רוּחַ סְעָרָה
.ejus fluctus *elevavit* &
וַתְּרוֹמֵם גַּלָּיו:

תרגום TARGUM.

2 יֵימְרוּן פְּרִיקַיָּא דַיְיָ דִי פַּרְקִנּוּן מִן יַד מְעִיקָא:
3 וּמֵאַרְעָתָא כַּנְשִׁנּוּן מִמַּדִּנְחָא וּמִמַּעַרְבָא מִצִּפּוּנָא
4 וּמִן יַמָּא דָרוֹמָא: עַל עַמָּא דְבֵית יִשְׂרָאֵל אִתְנַבֵּי
וַאֲמַר עַמָּא בֵית יִשְׂרָאֵל טְעוֹ בְמַדְבְּרָא בִּצְדִי
5 אָרְחָא קַרְתָּא דְמִיתְּבָא לָא אַשְׁכַּחוּ: כַּפְנִים
6 לְחוֹד צָהֲיָן נַפְשָׁתְהוֹן תִּשְׁתַּלְהֲיָא: וְצַלּוּ קֳדָם
יְיָ כַּד עִיק לְהוֹן מִמְּעַקְתְהוֹן פְּצָא יַתְהוֹן:
7 וְדַבְּרִנּוּן בְּאוֹרַח תְּרִיצְתָּא לְמֵיזַל לִירוּשְׁלֶם
8 קַרְתָּא דְמִיתַּבָא: יְהוֹדוּן קֳדָם יְיָ מְטוּל
9 חַסְדֵּיהּ וּמִשְׁתַּעַן פְּרִישְׁוָתֵיהּ לִבְנֵי נָשָׁא: אֲרוּם
אַשְׂבַּע נֶפֶשׁ סְרִיקָא וְנַפְשָׁא כְפִינָא מְלֵי טוּבָא:
10 עַל צִדְקִיָּהוּ וְרַבְרְבָנֵי יִשְׂרָאֵל אִתְנַבֵּי וַאֲמַר
צִדְקִיָּהוּ וְרַבְרְבָנֵי יִשְׂרָאֵל דִּגְלוֹ בְּבָבֶל וִיתִיבוּ
בַּחֲשׁוֹכָא וְטוּלוּ דְמוֹתָא וַהֲווֹ אֲסִירִין בְּסִגּוּף שֵׁרֵי
11 פַּרְזְלָא: אֲרוּם סָרִיבוּ עַל מֵימְרֵיהּ דֶאֱלָהָא
12 וּמִלְכַּת עִלָּאָה רָחִיקוּ: וְתַבַּר בְּלֵעוּתָא לִבְהוֹן
13 אַתְקִילוּ וְלֵית דְּסָעִיד: וְצַלּוּ קֳדָם יְיָ בִּדְעִיק
14 לְהוֹן מִמְּעִיקְתְהוֹן פַּרְקִנּוּן: אַפְּקִנּוּן מֵחֲשׁוֹכָא
15 וְטוּלָא דְמוֹתָא וְשַׁלְשְׁלָוָתְהוֹן יְתַרַע: יְהוֹדוּן
קֳדָם יְיָ מְטוּל חַסְדֵּיהּ וּמִשְׁתָּעַן פְּרִישְׁוָתֵיהּ
16 לִבְנֵי נָשָׁא: אֲרוּם תַּבַּר דָּשֵׁי נְחָשָׁא וְעַבְרֵי
17 פַּרְזְלָא קַצִּץ: שַׁטְיָן מֵאוֹרַח מְרָדֵיהוֹן וּמֵעַוְיָתְהוֹן
18 מִסְתַּגְּפִין: כָּל מֵיכְלָא תְּרַחִיק נַפְשְׁהוֹן וּמָטְיָן
19 עַד מַעֲלָנֵי מוֹתָא: וְצַלּוּ קֳדָם יְיָ כַּד עִיק לְהוֹן
20 מִמְּעִיקְתְהוֹן יִפְרְקִנּוּן: יְשַׁדַּר פִּתְגָּמֵי אָסוּתֵיהּ
21 וְיַסֵּי יַתְהוֹן וִישֵׁיזֵב מִלְּחַבָּלוּתְהוֹן: יְהוֹדוּן קֳדָם
יְיָ מְטוּל חַסְדֵּיהּ וּמִשְׁתָּעַן פְּרִישְׁוָתֵיהּ לִבְנֵי
22 נָשָׁא: וְיִכְּסוּן נִכְסֵי תוֹדְתָא וְיִשְׁתָּעוּן עוּבָדוֹי
23 בְּדִיצְתָא: מַלָּחַיָּא נָחוֹתֵי יַמָּא בְּאַלְפַיָּא עָבְדֵי
24 פּוּלְחָנָא בְּמַיִין סַגִּיעִין: הִנּוּן חָמוֹן עוּבָדַיָּא דַיְיָ
25 וּפְרִישְׁוָתֵיהּ בִּמְצוּלְתָּא: וַאֲמַר בְּמֵימְרֵיהּ
וַאֲקִים זַעְפָּא וְעַלְעוֹלָא וְאִתְרוֹמָמוּ גַּלְּלוֹי:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

2 Dicant redempti Domini, quos redemit de manu moleſtantis. 3 Et de terris congregavit eos ab Oriente et ab Occidente, ab Aquilone, & de mari Auſtrali. 4 *De populo domus Iſrael vaticinatus eſt et dixit, Populus domus Iſrael* erraverunt in deſerto in deſolata via, civitatem habitabilem non invenerunt; 5 Eſurientes, ſimul ſitientes: anima eorum defecit. 6 Et oraverunt Dominum dum afflictione premerentur: de anguſtia ipſorum liberavit eos. 7 Et duxit eos per viam rectam, ut ambularent ad Jeruſalem civitatem habitabilem. 8 Confitebuntur coram Domino propter miſericordiam ejus, & narrabunt mirabilia ejus opera filiis hominum. 9 Quoniam ſatiavit animam vacuam, & animã famelicã implevit bono. 10 *De Sedechia & principibꝰ Iſrael vaticinatꝰ eſt & dixit; Sedechias & principes Iſrael, qui exulârunt in Babel & habitârunt* in tenebris & umbra mortis, & *fuerunt vincti* in afflictione vinculorum ferri. 11 Quia rebelles fuerunt verbo Dei, & conſilium Altiſſimi execrati ſunt. 12 Et perfregit labore cor eorum; impegerunt & non fuit qui adjuvaret. 13 Et oraverunt Dominum cum afficerentur anguſtia, de afflictionibus ipſorum redemit eos. 14 Eduxit eos de tenebris & umbra mortis, & catenas eorum dirupit. 15 Confitebuntur coram Domino propter miſericordiam ejus, & narrabunt mirabilia ejus facta filiis hominum. 16 Quoniam confregit portas chalybeas, & peſſulos ferreos contrivit. 17 Stulti propter viam flagitiorum ſuorum, & propter iniquitates ſuas affliguntur. 18 Omnem cibum abominabitur anima eorum, & appropinquant ad introitus mortis. 19 At ſi oraverint coram Domino cùm adeſt eis anguſtia, de afflictionibus ipſorum redimet eos. 20 Mittet *verba* ſanationis ſuæ, & ſanabit eos, liberabítque ab eorum corruptione. 21 Confitebuntur coram Domino propter miſericordiam ejus, & narrabunt mirabilia ejus facta filiis hominum. 22 Et ſacrificabunt ſacrificia confeſſionis, & narrabunt opera ejus in lætitia. 23 *Nautæ* deſcendentes in mare navibꝰ, facientes opus in aquis multis: 24 Ipſi viderunt opera Domini, & miracula ejus in profundo. 25 Et dixit in verbo ſuo, & ſuſcitavit tempeſtatem & turbinem, & exaltati ſunt fluctus ejus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

2 * ܢܐܡܪܘܢ ܦܪ̈ܝܩܘܗܝ ܕܡܪܝܐ : ܕܦܪܩ ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܥܠܘܒܐ. * ܘܡܢ ܟܠܗܝܢ ܐܬܪ̈ܘܬܐ
3 ܟܢܫ ܐܢܘܢ : ܡܢ ܡܕܢܚܐ ܘܡܢ ܡܥܪܒܐ. ܘܡܢ ܓܪܒܝܐ ܘܡܢ ܝܡܐ : * ܛܥܘ ܒܡܕܒܪܐ
4 ܕܐܫܝܡܘܢ. ܘܐܘܪܚܐ ܕܡܕܝܢܬܐ ܕܝܬܒܬܐ ܠܐ ܐܫܟܚܘ : * ܟܦܢܘ ܘܨܗܝܘ ܘܢܦܫܗܘܢ ܐܬܛܪܦܬ.
5 * ܩܥܘ ܡܢ ܡܪܝܐ ܒܐܘܠܨܢܗܘܢ : ܘܡܢ ܚܫܘܟܗܘܢ ܐܦܩ ܐܢܘܢ. * ܘܗܘ ܕܒܪ ܐܢܘܢ
6 ܒܐܘܪܚܐ ܕܩܘܫܬܐ : ܠܡܐܙܠ ܠܡܕܝܢܬܐ ܕܝܬܒܢ. * ܢܘܕܘܢ ܠܡܪܝܐ ܙܕܝܩܘܗܝ : ܕܪ̈ܚܡܘܗܝ
7 ܠܘܬ ܒܢܝ̈ܢܫܐ. * ܡܛܠ ܕܐܣܒܥ ܢܦ̈ܫܬܐ ܡܬܛܪ̈ܦܬܐ : ܘܢܦܫܐ ܟܦܢܬܐ ܡܠܐ. * ܕܝܬܒܝܢ
8 ܒܚܫܘܟܐ ܘܒܛܠܠܐ ܕܡܘܬܐ : ܘܐܣܝܪܝܢ ܒܡܣܟܢܘܬܐ ܘܒܦܪ̈ܙܠܐ. * ܡܛܠ ܕܡܪܡܪܘ
9 ܡܠܬܗ ܕܐܠܗܐ : ܘܡܠܟܗ ܕܡܪܝܡܐ ܐܫܛܘ. * ܐܡܟ ܒܥܡܠܐ ܠܒܗܘܢ : ܐܬܟܪܗܘ
10 ܘܠܝܬ ܕܡܥܕܪ ܠܗܘܢ. * ܩܥܘ ܠܘܬ ܡܪܝܐ ܒܐܘܠܨܢܗܘܢ : ܘܡܢ ܐܘܠܨܢܗܘܢ ܦܪܩ ܐܢܘܢ.
11 * ܘܐܦܩ ܐܢܘܢ ܡܢ ܚܫܘܟܐ ܘܡܢ ܛܠ̈ܠܝ ܡܘܬܐ : ܘܣܘܪ̈ܝܗܘܢ ܦܣܩ. * ܢܘܕܘܢ ܠܡܪܝܐ
12 ܙܕܝܩܘܗܝ : ܕܪ̈ܚܡܘܗܝ ܠܘܬ ܒܢܝ̈ܢܫܐ. * ܡܛܠ ܕܬܒܪ ܬܪ̈ܥܐ ܕܢܚܫܐ : ܘܡܘܩ̈ܠܐ ܕܦܪܙܠܐ
13 ܓܕܡ. * ܥܕܪ ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܘܪܚܐ ܕܥܘܠܗܘܢ : ܘܡܛܠ ܚܛܗܝܗܘܢ ܐܬܡܟܟܘ. * ܘܟܠ
14 ܡܐܟܘܠܬܐ ܣܢܬ ܢܦܫܗܘܢ : ܘܡܛܝܘ ܥܕܡܐ ܠܬܪ̈ܥܝ ܡܘܬܐ. * ܩܥܘ ܡܢ ܡܪܝܐ
15 ܒܐܘܠܨܢܗܘܢ : ܘܡܢ ܐܘܠܨܢܗܘܢ ܐܦܩ ܐܢܘܢ. * ܫܕܪ ܡܠܬܗ ܘܐܣܝ ܐܢܘܢ : ܘܦܨܝ ܐܢܘܢ
16 ܡܢ ܚܒܠܐ. * ܢܘܕܘܢ ܠܡܪܝܐ ܙܕܝܩܘܗܝ : ܕܪ̈ܚܡܘܗܝ ܠܘܬ ܒܢܝ̈ܢܫܐ.
17
18
19
20
21

* ܦܣܘܩܐ *

22 * ܕܒܚܘ ܠܗ ܕܒܚ̈ܐ ܕܬܘܕܝܬܐ : ܫܒܚܘ ܥܒܕ̈ܘܗܝ ܒܬܕܡܪ̈ܬܗ. * ܢܚܬܝܢ ܝܡܐ ܒܐܠܦ̈ܐ :
23
24 ܘܥܒܕܝܢ ܥܒܕܐ ܒܡܝܐ ܣܓܝܐܐ. * ܗܢܘܢ ܚܙܘ ܥܒܕ̈ܘܗܝ ܕܡܪܝܐ : ܘܬܕܡܪ̈ܬܗ ܒܥܘܡܩ̈ܘܗܝ
25 ܕܝܡܐ. * ܐܩܝܡ ܪܘܚܐ ܕܥܠܥܠܐ : ܘܐܬܬܪܝܡܘ ܓܠ̈ܠܘܗܝ ܕܝܡܐ.

2 Dicant liberti Domini, quos liberavit de manu tyranni, 3 Quoſq; ex univerſis regionibus congregavit, ex Oriente & Occidente, ex Aquilone & ex mari: 4 Erraverunt in deſerto Aſimon, & viam civitatis cultæ non invenerunt: 5 Eſurierunt, atq; ſitierunt: & quorum anima perculſa fuerat: 6 Rogaverunt Dominum in angoribus ſuis, & ex mœroribus eorum eduxit eos: 7 Et quos deduxit per viam veritatis, quatenus irent ad oppida habitata. 8 Confiteantur Domino juſti ejus, quoniam miſerationes ejus erga filios hominum: 9 Quia ſatiavit animas exagitatas, & animam famelicam explevit 10 Eorum qui ſedebant in tenebris umbríſq; mortis, & conſtricti erant inopiâ & ferris. 11 Quia enim exaſperârũt verbũ Dei, & conſilium Altiſſimi deſpexerunt: 12 Ideò contrivit labore cor eorum: ægrotaverunt, & non fuit qui adjuvaret eos. 13 Orârunt ad Dominum in tribulationibus ſuis, & ex ærumnis eorum liberavit illos, 14 Eduxítque eos è tenebris atque ex umbris mortis, & lora eorum diſrupit. 15 Confiteantur Domino juſti ejus, quia miſericordiæ ejus erga filios hominum: 16 Quia confregit portas æris, & vectes ferri concîdit: 17 Adjuvit eos de via ſcelerum eorum. At pro crimine ſuo dejecti ſunt: 18 Omnémque cibum reſpuit anima ipſorum, atque devenerunt uſque ad portas mortis. 19 Deprecati ſunt Dominum in anguſtiis ſuis, & ex afflictionibus eorum eduxit illos. 20 Miſit verbum ſuum & ſanavit eos, & eripuit eos è corruptione. 21 Confiteantur Domino juſti ejus, quoniam miſerationes ejus in filios hominum:

* *Sectio* *

22 Immolate illi victimas laudis, glorificate opera ejus in portentis ipſius. 23 Qui deſcendunt in mare navibus, quíque gerunt negotium in aquis vaſtiſſimis, 24 Ipſi viderunt opera Domini, & ejus miracula in profunditatibus maris: 25 Qui ſuſcitavit ventum procelloſum, & intumuerunt fluctus maris.

Verſio VULG. LAT.

2 Dicant qui redempti ſunt à Domino,
quos redemit de manu inimici : & de
3 regionibus congregavit eos, A Solis
Ortu,& Occaſu:ab Aquilone,& mari.
4 Erraverunt in ſolitudine in inaquoſo:
viam civitatis habitaculi non inve-
5 nerunt. Eſurientes,& ſitientes: anima
6 eorum in ipſis defecit.Et clamaverunt
ad Dominũ cùm tribularentur : & de
7 neceſſitatibus eorum eripuit eos. Et
deduxit eos in viam rectam : ut irent
8 in civitatem habitationis. Confitean-
tur Dño miſericordiæ ejus: & mira-
9 bilia ejus filiis hominũ. Quia ſatiavit
animam inanẽ : & animã eſurientem
10 ſatiavit bonis. Sedentes in tenebris,&
umbrâ mortis: vinctos in mendicitate,
11 & ferro. Quia exacerbaverunt eloquia
Dei : & conſilium Altiſſimi irritave-
12 runt. Et humiliatũ eſt in laborib⁹ cor
eorum : infirmati ſunt, nec fuit qui
13 adjuvaret. Et clamaverunt ad Domi-
num cùm tribularentur : & de neceſ-
14 ſitatib⁹ eorũ liberavit eos. Et eduxit
eos de tenebris, & umbrâ mortis:
15 & vincula eorum diſrupit. Confitean-
tur Dño miſericordiæ ejus : & mira-
16 bilia ejus filiis hominũ. Quia contri-
vit portas æreas : & vectes ferreos
17 confregit. Suſcepit eos de via iniqui-
tatis eorum : propter injuſtitias enim
18 ſuas humiliati ſunt. Omnem eſcam
abominata eſt anima eorum : & ap-
propinquaverunt uſq; ad portas mor-
19 tis. Et clamaverunt ad Dominum cùm
tribularentur : & de neceſſitatibus
20 eorum liberavit eos. Miſit verbum
ſuum, & ſanavit eos : & eripuit eos
21 de interitionibus eorum. Confitean-
tur Domino miſericordiæ ejus : &
22 mirabilia ejus filiis hominum : Et ſa-
crificent ſacrificium laudis : & an-
nuntient opera ejus in exultatione.
23 Qui deſcendunt mare in navibus,
facientes operationem in aquis mul-
24 tis. Ipſi viderunt opera Domini, &
25 mirabilia ejus in profundo. Dixit, &
ſtetit ſpiritus procellæ : & exaltati
ſunt fluctus ejus.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp.

2 †Εἰπάτωσαν οἱ λελυτρωμένοι ὑπὸ κυρίου, † οὓς ἐ-
λυτρώσατο ἐκ χειρὸς ἐχθροῦ, † (α) καὶ ἐκ τῶν χω-
3 ρῶν συνήγαγεν αὐτούς· † Ἀπὸ ἀνατολῶν, καὶ δυ-
4 σμῶν, καὶ βοῤῥᾶ, καὶ θαλάσσης. † Ἐπλανήθησαν ἐν
τῇ ἐρήμῳ ἐν ἀνύδρῳ· † ὁδὸν πόλεως κατοικητη-
5 ρίου οὐχ εὗρον † Πεινῶντες καὶ διψῶντες, † ἡ ψυχὴ
6 αὐτῶν ἐν αὐτοῖς ἐξέλιπεν. † Καὶ ἐκέκραξαν πρὸς
κύριον ἐν τῷ θλίβεσθαι αὐτούς, † καὶ ἐκ τῶν ἀναγ-
7 κῶν αὐτῶν (β) ἐῤῥύσατο αὐτούς. † Καὶ ὡδήγη-
σεν αὐτοὺς εἰς ὁδὸν εὐθεῖαν, † τοῦ πορευθῆναι εἰς
8 πόλιν κατοικητηρίου. † Ἐξομολογησάσθωσαν τῷ
κυρίῳ τὰ ἐλέη αὐτοῦ, † καὶ τὰ θαυμάσια αὐτοῦ τοῖς
9 υἱοῖς τῶν ἀνθρώπων. † Ὅτι ἐχόρτασε ψυχὴν κε-
10 νήν, †(γ) καὶ πεινῶσαν ἐνέπλησεν ἀγαθῶν. † Καθη-
μένους ἐν σκότει καὶ σκιᾷ θανάτου, † πεπεδημένους
11 ἐν πτωχείᾳ καὶ σιδήρῳ· † Ὅτι παρεπίκραναν τὰ λό-
για τοῦ θεοῦ, † καὶ τὴν βουλὴν τοῦ ὑψίστου παρώξυ-
12 ναν· † Καὶ ἐταπεινώθη ἐν κόποις ἡ καρδία αὐτῶν,
13 † (δ) ἠσθένησαν καὶ οὐκ ἦν ὁ βοηθῶν. † Καὶ ἐκέκρα-
ξαν πρὸς κύριον ἐν τῷ θλίβεσθαι αὐτούς, † καὶ ἐκ
14 τῶν ἀναγκῶν αὐτῶν ἔσωσεν αὐτούς. † Καὶ ἐξήγαγεν
αὐτοὺς ἐκ σκότους καὶ σκιᾶς θανάτου, † καὶ τοὺς δε-
15 σμοὺς αὐτῶν διέῤῥηξεν. † Ἐξομολογησάσθωσαν τῷ
κυρίῳ τὰ ἐλέη αὐτοῦ, † καὶ τὰ θαυμάσια αὐτοῦ τοῖς υ-
16 ἱοῖς τῶν ἀνθρώπων. † Ὅτι συνέτριψε πύλας χαλ-
17 κᾶς, † καὶ μοχλοὺς σιδηροῦς συνέθλασεν. † Ἀντ-
ελάβετο αὐτῶν ἐξ ὁδοῦ ἀνομίας αὐτῶν, † διὰ γὰρ
18 τὰς ἀνομίας αὐτῶν ἐταπεινώθησαν. † Πᾶν βρῶμα
ἐβδελύξατο ἡ ψυχὴ αὐτῶν, † καὶ ἤγγισαν ἕως τῶν
19 πυλῶν τοῦ θανάτου. † Καὶ ἐκέκραξαν πρὸς κύρι-
ον ἐν τῷ θλίβεσθαι αὐτούς, † καὶ ἐκ τῶν ἀναγκῶν
20 αὐτῶν ἔσωσεν αὐτούς. † Ἀπέστειλε τὸν λόγον αὐ-
τοῦ, καὶ ἰάσατο αὐτούς, † καὶ ἐῤῥύσατο αὐτοὺς ἐκ τῶν
21 διαφθορῶν αὐτῶν. † Ἐξομολογησάσθωσαν τῷ κυ-
ρίῳ τὰ ἐλέη αὐτοῦ, † καὶ τὰ θαυμάσια αὐτοῦ τοῖς υ-
22 ἱοῖς τῶν ἀνθρώπων. † Καὶ θυσάτωσαν αὐτῷ θυσί-
αν αἰνέσεως, † καὶ ἐξαγγειλάτωσαν τὰ ἔργα αὐτοῦ
23 ἐν ἀγαλλιάσει. † Οἱ καταβαίνοντες εἰς (ε) θάλασσαν
ἐν πλοίοις, †(ϛ) ποιοῦντες ἐργασίαν ἐν ὕδασι πολλοῖς.
24 † Αὐτοὶ εἶδον τὰ ἔργα κυρίου, † καὶ τὰ θαυμάσια
25 αὐτοῦ ἐν τῷ βυθῷ. † Εἶπε, καὶ ἔστη πνεῦμα καταιγί-
δος, † καὶ ὑψώθη τὰ κύματα αὐτῆς.

MS.A. (α) ἐκ τῶν χωρῶν (β) ἐρύσατο (γ) καὶ ψυ-
χὴν πεινῶσαν (δ) καὶ ἠσθένησαν (ε) τὴν θάλασσαν (ϛ) οἱ
ποιοῦντες

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

2 Dicant, qui redempti ſunt à Do- 2
mino, quos redemit de manu inimi-
ci: & de regionibus congregavit e-
os:3 Ab Oriente,& Occaſu,& A- 3
quilone,& mari. 4 [a] Erraverunt 4
in ſolitudine in inaquoſo : viam ci-
vitatis habitaculi non invenerunt.
5 Eſurientes, & ſitientes : anima 5
eorum in ipſis defecit. 6 Et clama- 6
verunt ad Dominum, cùm tribula-
rentur : & de neceſſitatibus eorum
eripuit eos.7 Et deduxit eos in viam 7
rectam, ut irent in [b] civitatem
habitationis. 8 Confiteantur Domino 8
miſericordiæ ejus, & (b) mirabilia
ejus filiis hominum. 9 Quoniam ſa- 9
tiavit animam inanem : [c] & (c)
eſurientem implevit bonis. 10 Se- 10
dentes in tenebris, & umbrâ mor-
tis, compeditos in mendicitate, &
ferro. 11 Quia exacerbaverunt elo- 11
quia Dei: & conſilium Altiſſimi ir-
ritaverunt. 12 Et humiliatum eſt 12
in laborib⁹ cor eorũ: infirmati ſunt,
nec fuit, qui [d] adjuvaret. 13 Et 13
clamaverunt ad Dominũ, cũ tribu-
larentur: & de neceſſitatibus eorũ
ſalvos fecit eos. 14 Et eduxit eos 14
de tenebris, & umbrâ mortis : &
vincula eorum diſrupit. 15 Confitean- 15
tur Domino miſericordiæ ejus, &
mirabilia ejus filiis hominum. 16
Quia contrivit portas æreas : & 16
vectes ferreos confregit. 17 Suſce- 17
pit eos de via iniquitatis eorum: pro-
pter injuſtitias enim ſuas humiliati
ſunt. 18 Omnem eſcam abominata 18
eſt anima eorum : & appropinqua-
verunt uſq; ad portas mortis. 19 Et 19
clamaverunt ad Dominum, cùm tri-
bularentur: & de neceſſitatibus eo-
rum ſalvos fecit eos. 20 Miſit ver- 20
bum ſuum, & [e] ſanavit eos : &
eripuit eos de (d) [f] corruptelis
eorum. 21 Confiteantur Domino mi- 21
ſericordiæ ejus, & mirabilia ejus fi-
liis hominum. 22 Et ſacrificent ei 22
(c) ſacrificium laudis: & annunti-
ent opera ej⁹ in exultatione. 23 Qui 23
deſcendunt in mare in navibus, fa-
cientes operationem in aquis multis.
24 Ipſi viderunt opera Domini, & 24
mirabilia ejus in profundo. 25 Di- 25
xit, et [g] ſtetit ſpiritus procellæ: et
exaltati ſunt fluctus ejus.

Verſio ÆTHIOPICA.

ለይበሉ ፡ እለ ፡ አድኅኖሙ ፡ እግዚአብሔ 2
ር። እለ ፡ አድኅኖሙ ፡ እምእደ ፡ ፀሮ
ሙ። ወአስተጋብኦሙ፡እምበሐውርት።፨
እምጽባሕ ፡ ወእምዐረብ ፡ ወመስዕ ፡ ወ 3
ባሕር።፨ ወሶከዩ ፡ ውስተ ፡ በድው፡ 4
ዘአልቦ ፡ ማይ። ወኢረከቡ ፡ ፍኖተ ፡ ሀገ
ረ ፡ ብሔሮሙ።፨ ጸምኡ ፡ ወርኅቡ ፡ 5
ወኀልቀት ፡ ነፍሶሙ ፡ በላዕሌሆሙ።፨
ወአውየዉ ፡ ኀበ ፡ እግዚአብሔር ፡ ሶበ ፡ 6
ተመንደቡ። ወአድኅኖሙ ፡ እምንደቤሆ
ሙ።፨ ወመርሖሙ፡ ፍኖተ ፡ ርቱዓ። ከ 7
መ፡ይሖሩ፡ፍኖተ፡ሀገሮሙ።፨ ንግሩ፡ለእ 8
ግዚአብሔር፡ምሕረቶ። ወመንክሮሂ ፡ ለእ
ጓለ፡እመሕያው።፨ እስመ፡አጽገበ፡ነፍ 9
ሰ፡ርኅብተ። ወመልአ፡ ነፍሰ፡ዕሩቀ፡ በረከ
ተ።፨ ለእለ ፡ ይነብሩ ፡ ውስተ፡ጽልመት፡ 10
ወጽላሎተ፡ሞት። ወሙቁሓን፡በንዴት ፡ ወ
በኀጺን።፨ እስመ፡አምረሩ፡ቃለ፡እግዚ 11
አብሔር። ወአምዕዑ፡ምክረ፡ልዑል።፨
ወሠርሐ ፡ በሕማም ፡ ልቦሙ። ወደዊዩ፡ 12
ወኀጥኡ፡ ዘይቀብሮሙ።፨ ወአውየዉ፡ 13
ኀበ፡ እግዚአብሔር፡ሶበ ፡ ተመንደቡ። ወአ
ድኅኖሙ፡እምንደቤሆሙ።፨ ወአውፅኦ 14
ሙ፡እምጽልመት፡ወጽላሎተ፡ሞት። ወሰ
በረ፡መዋቅሕቲሆሙ።፨ ንግሩ፡ለእግዚአ 15
ብሔር ፡ ምሕረቶ። ወመንክሮሂ፡ ለእጓለ፡
እመሕያው።፨ እስመ፡ ሰበረ፡ ኆኅተ፡ብ 16
ርት። ወቀጥቀጠ፡ መናስግተ፡ ዘኀጺን።፨
ወተወክፎሙ፡ እምፍኖተ፡ጌጋዮሙ።እስመ፡ 17
ሐሙ፡በኀጢአቶሙ።፨ ወኵሎ፡መብል 18
ዐ፡አስቆረረት ፡ ነፍሶሙ። ወቀርቡ ፡ ኀበ፡
አናቅጸ፡ሞት።፨ ወአውየዉ፡ኀበ፡እግዚአ 19
ብሔር፡ሶበ፡ተመንደቡ። ወአድኅኖሙ፡እም
ንደቤሆሙ።፨ ወፈነወ፡ቃሎ፡ ወአሕየወ 20
ሙ።ወአድኅኖሙ፡እሞቶሙ።፨ ንግሩ፡ 21
ለእግዚአብሔር፡ምሕረቶ። ወመንክሮሂ፡
ለእጓለ፡እመሕያው።፨ ወይሡዑ፡ሎቱ፡ 22
መሥዋዕተ፡ ስብሐት። ወይንግሩ ፡ ግብሮ፡
በትፍሥሕት።፨ እለ ፡ ይወርዱ ፡ ውስ 23
ተ ፡ ባሕር ፡ በአሕማር። ወይትገበሩ ፡
ተግባሮሙ ፡ ውስተ ፡ ማይ ፡ ብዙኅ።፨
እሙንቱሰ ፡ ያአምሩ ፡ ግብረ ፡ እግዚአብ 24
ሔር። ወመንክሮሂ ፡ በውስተ ፡ ልጐ
ት።፨ ይቤ ፡ ወመጽአ ፡ መንፈስ ፡ ዐው 25
ሎ። ወተለዐለ ፡ ማዕበል።፨

INTERP. ÆTHIOP. *PSAL. CVI.* [a] Et anxiati ſunt in [b] viam civitatis eorum. [c] & animam vacuam implevit benedictione. [d] ſepeliret eos. Et [e] vivificavit eos: [f] interitionibus eorum. [g] advenit ſpiritus

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

2 3 فليقل المخلصون من قبل الرب الذي انقذهم من ايدي اعدايهم * ومن البلدان
4 جمعهم * من المشارق ومن المغارب والشمال والبحر * ضلوا في القفر في مكان عديم الماء * لم
5 6 يجدوا طريقا الي مدينة تسكن * جياعا عطاشا فهبت نفوسهم فيهم * فصرخوا الي الرب عند
7 ضيقهم * فخلصهم من شدايدهم * وهداهم الي طريق مستقيمة * ليدخلوا الي مدينة
8 9 مسكونة * فليشكر الرب على مراحمه وعجايبه لبني البشر * لانه اشبع نفوسا خاوية *
10 وملأ من الخيرات قلوبا جايعة * جالسين في الظلمة وظلال الموت ومقيدين بالمسكنة والحديد
11 12 * لانهم اغضبوا اقوال الله * واغضبوا مشورة العلي * فذلت بالكد قلوبهم * ومرضوا فلم
13 14 يكن لهم من يعين * صرخوا الي الرب عند ضيقهم * فخلصهم من شدايدهم * واخرجهم
15 من الظلمة وظلال الموت * وقطع رباطاتهم * فليشكر الرب مراحمه وعجايبه عند بني البشر
16 17 * لانه كسر ابواب النحاس * ورضض اغلاق الحديد * واحادهم عن طريق اثامهم *
18 19 لانهم ذلوا من اجل اثامهم * مقتت نفوسهم كل طعام * واقتربوا الي ابواب الموت * وضجوا
20 الي الرب عند ضيقهم * فخلصهم من شدايدهم * ارسل كلمته فشفاهم * وخلصهم من
21 22 فسادهم * فليشكر الرب مراحمه وعجايبه لبني البشر * وليذبح له ذبيحة التسبيح *
23 وليعترف باعماله بالتهليل * النازلون في البحر في السفن * الصانعون اعمالهم في مياه
24 25 كثيرة * لانهم راوا اعمال الرب * وعجايبه في العمق * قال فثارت ريح عاصفة * وارتفعت
امواجها *

Et dicant redempti à Domino, quos liberavit è manibus hoſtium ipſorum, 2
Quoſque è regionibus congregavit, ex Orientalibus atque Occidentalibus plagis, Septentrione, ac mari. 3
Erraverunt in ſolitudine, in loco experte aquis, non invenerunt iter ad civitatem habitabilem, 4
Famelici ac ſitibundi adeo ut defeciſſent animæ eorum in ipſis. 5
Clamaverunt ad Dominum in anguſtia ſua,& liberavit eos de tribulationibus eorum. 6
Et direxit eos ad viam rectam, ut introirent in civitatem habitatam. 7
Gratiæ igitur agantur Domino de miſerationibus ejus, & miraculis ejus erga filios hominum. 8
Quia ipſe ſatiavit animas vacuas, & implevit bonis corda eſurientia 9
Sedentium in tenebris & umbra mortis, & vinctorum in paupertate ac ferro. 10
Quia irritaverunt eloquia Dei, & ad iram provocaverunt conſilium Altiſſimi, 11
Humiliata ſunt labore corda eorum, & infirmati ſunt, nec fuit eis qui adjuvaret. 12
Clamaverunt ad Dominum in anguſtia ſua, et liberavit eos de tribulationibus eorum, 13
Et eduxit eos de tenebris & umbrâ mortis, & diſrupit vincula eorum. 14
Gratias agant Domino miſerationes ejus & miracula ejus apud filios hominum. 15
Nam ipſe fregit portas æneas, & contudit vectes ferreos. 16
Et avertit eos à via iniquitatũ eorum, quia humiliati fuerant ob iniquitates ſuas. 17
Oderunt animæ eorũ omnem eſcam,& acceſſerunt ad portas mortis. 18
Et vociferati ſunt ad Dominum in anguſtia ſua, & liberavit eos de tribulationibus eorum. 19
Miſit verbum ſuum, & ſanavit illos, & ſalvavit eos de tabe eorum. 20
Itaque gratias agant Domino miſericordiæ ejus, & miracula ejus erga filios hominum. 21
Et ſacrificent ei ſacrificium laudis, & fateantur opera ejus cum pſalmodia 22
Deſcendentes in mare navibus, agentes negotia ſua in aquis multis. 23
Nam ipſi viderunt opera Domini, & miracula ejus in abyſſo. 24
Dixit, & excitatus eſt ventus turbinis, & extulerunt ſe fluctus earum, 25

תהלים : קח

.se liquefecit malo in eorum anima : abyssos descenderunt ,cœlum Ascenderunt
25 יַעֲלוּ שָׁמַיִם יֵרְדוּ תְהוֹמוֹת נַפְשָׁם בְּרָעָה תִתְמוֹגָג׃
.est absorpta eorum sapientia omnis & : ebrius sicut se moverunt & ,*orbem in Iverunt*
27 יָחוֹגּוּ וְיָנוּעוּ כַּשִּׁכּוֹר וְכָל־חָכְמָתָם תִּתְבַּלָּע׃
.eos eduxit eorum *coarctationibus* de & . : eis angustia in Dominum ad clamaverunt Et
28 וַיִּצְעֲקוּ אֶל־יְהוָה בַּצַּר לָהֶם וּמִמְּצוּקוֹתֵיהֶם יוֹצִיאֵם׃
sunt lætati Et .eorum fluctus siluerunt & : silentium in turbinem fecit Stare
29 30 יָקֵם סְעָרָה לִדְמָמָה וַיֶּחֱשׁוּ גַּלֵּיהֶם׃ וַיִּשְׂמְחוּ
Confiteantur .eorum voluntatis *portum* ad eos duxit & : siluerunt quoniam
31 כִּי־יִשְׁתֹּקוּ וַיַּנְחֵם אֶל־מְחוֹז חֶפְצָם׃ יוֹדוּ
eum exaltent Et .hominum filiis ejus mirabilia & : ejus misericordiā Domino
32 לַיהוָה חַסְדּוֹ וְנִפְלְאוֹתָיו לִבְנֵי אָדָם׃ וִירוֹמְמוּהוּ
flumina Posuit .eum laudent seniorum cathedra in & : populi ecclesia in
33 בִּקְהַל עָם וּבְמוֹשַׁב זְקֵנִים יְהַלְלוּהוּ׃ יָשֵׂם נְהָרוֹת
:salsuginem in *fructus* Terram .sitis locum in aquarum exitus & : desertum in
34 לְמִדְבָּר וּמֹצָאֵי מַיִם לְצִמָּאוֹן׃ אֶרֶץ פְּרִי לִמְלֵחָה
: aquarum stagnum in desertum Posuit .ea in habitantium malitiam propter
35 מֵרָעַת יוֹשְׁבֵי בָהּ׃ יָשֵׂם מִדְבָּר לַאֲגַם־מַיִם
præparaverūt &,famelicos ibi *fecit habitare* Et.aquarum exitus in *siticulosam* terram &
36 וְאֶרֶץ צִיָּה לְמֹצָאֵי מָיִם׃ וַיּוֹשֶׁב שָׁם רְעֵבִים וַיְכוֹנְנוּ
: vineas plantaverunt & , agros seminaverunt Et .habitationis civitatem
37 עִיר מוֹשָׁב׃ וַיִּזְרְעוּ שָׂדוֹת וַיִּטְּעוּ כְרָמִים
: valde sunt multiplicati & ,eis benedixit Et .*proventus* fructum fecerunt &
33 וַיַּעֲשׂוּ פְּרִי תְבוּאָה׃ וַיְבָרְכֵם וַיִּרְבּוּ מְאֹד
,mala *tyrannide* à sunt humiliati &,sunt diminuti Et .minuit non eorum *animal* &
39 וּבְהֶמְתָּם לֹא יַמְעִיט׃ וַיִּמְעֲטוּ וַיָּשֹׁחוּ מֵעֹצֶר רָעָה
inani in eos fecit errare & : *magnificos* super despectionem *Effundens* .*anxietate* &
40 וְיָגוֹן׃ שֹׁפֵךְ בּוּז עַל־נְדִיבִים וַיַּתְעֵם בְּתֹהוּ
.familias *pecus* sicut posuit & : *afflictione ab egenum* sublevavit Et .via absque
41 לֹא־דָרֶךְ׃ וַיְשַׂגֵּב אֶבְיוֹן מֵעוֹנִי וַיָּשֶׂם כַּצֹּאן מִשְׁפָּחוֹת׃
Quis .suum os *compescuit* iniquitas omnis & : lætabuntur & , recti Videbunt
42 43 יִרְאוּ יְשָׁרִים וְיִשְׂמָחוּ וְכָל־עַוְלָה קָפְצָה פִּיהָ׃ מִי־
? DOMINI misericordias *intelligent* & : hæc custodiet & , sapiens
חָכָם וְיִשְׁמָר־אֵלֶּה וְיִתְבּוֹנְנוּ חַסְדֵי יְהוָה׃

PSAL. CVIII.

canam & cantabo : Deus meum cor Paratum .David ipsi cantus Canticum
1 2 שִׁיר מִזְמוֹר לְדָוִד׃ נָכוֹן לִבִּי אֱלֹהִים אָשִׁירָה וַאֲזַמְּרָה
.*diluculo* me suscitabo : cithara & , *nablum* Evigila .meam gloriam etiam
3 אַף־כְּבוֹדִי׃ עוּרָה הַנֵּבֶל וְכִנּוֹר אָעִירָה שָּׁחַר׃
magna Quia .nationibus in tibi canam & : Domine populis in tibi Confitebor
4 אוֹדְךָ בָעַמִּים יְהוָה וַאֲזַמֶּרְךָ בַּלְאֻמִּים׃ כִּי־גָדוֹל
5 super Exaltare .tua veritas *æthera* ad usque & : tua misericordia cœlos *desuper*
6 מֵעַל־שָׁמַיִם חַסְדֶּךָ וְעַד־שְׁחָקִים אֲמִתֶּךָ׃ רוּמָה עַל־
liberentur Ut .tua gloria terram omnem super & : Deus cœlos
7 שָׁמַיִם אֱלֹהִים וְעַל כָּל־הָאָרֶץ כְּבוֹדֶךָ׃ לְמַעַן יֵחָלְצוּן
est locutus Deus .me exaudi & ,tua dextera serva : tui dilecti
8 יְדִידֶיךָ הוֹשִׁיעָה יְמִינְךָ וַעֲנֵנִי׃ אֱלֹהִים דִּבֶּר
.metiar Succoth vallem & : Sechem *partiar* exultabo : suam sanctitatem per
בְּקָדְשׁוֹ אֶעְלֹזָה אֲחַלְּקָה שְׁכֶם וְעֵמֶק סֻכּוֹת אֲמַדֵּד׃

תרגום TARGUM.

26 סלקין צית שמיא נחתין עמקי תהומיא
27 נפשתהון בבישא תתמוגג : ירתתון
ינועון היך רויה דחמר וכל חוכמתהון
28 מסתלעמא : וצלו קדם יי כד עיק להון
29 וממעיקתהון יפיק יתהון : יקים עלעולא
30 לשתיקותא וישתקון גליהון : וחדון ארום
31 שתקין ודברינון למחוז רעיתהון: יהודון קדם
יי מטול חסדיה ומשתען פרישותיה לבני נשא:
32 ומרוממין יתיה בכנישת עמא בית ישראל
33 ובסנהדרין דחכימיא ישבחון יתיה : שוי
נהרותא היך מדברא ומפקנות מיא היך
34 צחותא : ארעא דישראל דעבדא פרי צדא
היך סדום דאתהפכת מן בישות יתבין בה:
35 כד תבו לאוריתא שוי מדברא היך אריתא
36 דמיא וארע ציהיא למפקנות מיא: ואשרי תמן
37 כפנים ואתקינו קרתא מיתבא : וזרעו חקלין
38 ונציבו כרמיא ועבדו פרי אבא: וברכנון ויסגון
39 לחדא ובעירהון לא יזער : וכד חבו אזערו
40 ואתמסכנו מן אניק בישתא ודוונא : שדי
בסרנותא על רברבניא ואטעיאונון בלמא
41 דלא אורחא : וכד תבו לאוריתא שגב חשיכא
42 ממסכינותא ושוי היך עאני גניסיא : חמון
תריציא ויחדון וכל מרי שקרא שור פומא
43 ואתחסם : מן חכימא וינטור אלין ויתבוננון
חסדיא דיי:

קח

1 שירא ושבחא על ידא דדויד : תקין לבי
2 אלהים אשבח ואזמר לחוד איקרי: שבח נבלא
3 וכנרא אשבח בקריצתא : אודה קדמך
4 בעמיא יי ואשבחנך באומיא : ארום רב מעלוי
5 שמיא טובך ועד שחקי מטי קושטך : אתרומם
6 עלוי שמיא אלהים ועל כל יתבי ארעא איקרך:
7 מן בגלל דישתזבון רחימך פרוק ימינך ועני
8 יתי : אלהא ממלל מאתר בית שכנתיה אבוע
אפלג בותא עם יתבי שכם ועם יתבי מישר
סכות אמשח תחומא:

PARAPH. CHALD. Vers Lat.

Ascendunt ad summitatem cœlorum, descen- 26
dúntque ad profunda abyssorum, anima eo-
rum in malo liquefiet. Trement et *agita-* 27
buntur sicut ebrius *vino*, & omnis sa-
pientia eorum absorbebitur. At si ora- 28
verint coram Domino cùm adest eis angu-
stia, tum de afflictiónibus ipsorum edu-
cet eos. Stare faciet tempestatem in 29
tranquillitatem, & silebunt fluctus ejus.
Tum læti sunt quia silent, & duxit eos ad 30
portum voluntatis ipsorum. Confitebuntur 31
coram Domino propter benignitatem ejus,
& narrabunt mirabilia ejus opera filiis ho-
minum. Et exaltant eum in congregatio- 32
ne populi domus Israel, & in consessu
sapientium laudant eum. Posuit flumina ve- 33
lut desertum, et egressus aquarum sicut sic-
citates. Terram Israel facientem fructus de- 34
vastavit sicut Sodomam, quæ subversa est
propter malitiam habitantium in ea. *Quan-* 35
do conversi sunt ad Legem posuit deser-
tum sicut stagnum aquarum, & terram *ari-*
dam in exitus aquarum. Et habitare fecit 36
ibi esurientes, & constituerunt civitatem
habitabilem. Et seminaverunt agros, & 37
plantaverunt vineas, & fecerunt fructus
germinis. Et benedixit eis, & multiplicati 38
sunt valdè, & jumenta eorum non diminuit.
Sed cum peccaverunt, imminuti sunt et at- 39
tenuati ab oppressione mali et doloris. Mi- 40
sit contemptum super principes, & errare
fecit eos per inane ubi non erat via. *At* 41
quando conversi sunt ad Legem sublevavit
pauperem de miseria, et posuit sicut oves
familias. Videbunt recti & lætentur, & cu- 42
jusvis auctoris mendacii os insolens fuit, &
obturatum est. Quis sapiens & custodiet 43
hæc, ac intelligent misericordias Domini?

Canticum & hymnus per manum David. 1

PSAL. CVIII.

Paratum cor meum Deus, canam et psal- 2
lam; etiam gloria mea. Canta nablum & 3
cithara; laudabo in aurora. Confitebor co- 4
ram te in populis Domine, & laudabo te
in gentibus. Quoniam magna est super cœ- 5
los benignitas tua, et usque ad nubes *perti-*
git veritas tua. Exaltare super cœlos Deus, 6
et super omnes habitatores terræ gloria tua.
Ut liberentur dilecti tui, redime dexteram 7
tuam, et responde mihi. Deus locutus est 8
de loco domus majestatis suæ: Lætabor,
dividam prædam cum habitatoribus Si-
chem, et cum habitatoribus planitiei Suc-
coth mensurabo terminum.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

26 27 * ܣܠܩܝܢ ܠܫܡܝܐ ܘܢܚܬܝܢ ܠܬܗܘܡܐ: ܘܢܦܫܗܘܢ ܒܗܘܢ ܡܬܬܙܝܥܐ. * ܙܥܘ ܘܢܓܕܘ ܐܝܟ
28 ܪܘܝܐ: ܘܟܠܗ ܚܟܡܬܗܘܢ ܐܬܒܠܥܬ. * ܩܥܘ ܠܘܬ ܡܪܝܐ ܒܐܘܠܨܢܗܘܢ ܘܡܢ ܥܩܬܗܘܢ ܦܪܩ
29 30 ܐܢܘܢ. * ܐܫܠܝ ܥܠܥܠܐ ܘܫܠܐ: ܘܐܬܢܝܚܘ ܓܠܠܘܗܝ ܕܝܡܐ. * ܘܚܕܝܘ ܟܕ ܫܠܝܘ: ܘܕܒܪ
31 32 ܐܢܘܢ ܠܠܡܐܢܐ ܕܨܒܘ. * ܢܘܕܘܢ ܠܡܪܝܐ ܙܕܝܩܘܗܝ: ܕܛܝܒܘܬܗ ܥܠ ܒܢܝܢܫܐ. * ܢܪܝܡܘܢܝܗܝ
33 ܒܟܢܫܐ ܕܥܡܡܐ: ܘܥܠ ܡܘܬܒܐ ܕܩܫܝܫܐ ܢܫܒܚܘܢܝܗܝ. * ܕܥܒܕ ܢܗܪܘܬܐ ܐܝܟ ܡܕܒܪܐ: ܘܡܒܘܥܐ
34 35 ܕܡܝܐ ܠܨܗܝܐ. * ܐܪܥܐ ܕܝܗܒܐ ܦܐܪܝܗ ܠܡܠܝܚܘܬܐ: ܡܛܠ ܒܝܫܘܬܗܘܢ ܕܥܡܘܪܝܗ. * ܕܥܒܕ
36 ܡܕܒܪܐ ܠܐܓܡܐ ܕܡܝܐ: ܘܐܪܥܐ ܨܗܝܐ ܠܡܒܘܥܐ ܕܡܝܐ. * ܘܐܘܬܒ ܬܡܢ ܟܦܢܐ: ܘܒܢܘ ܩܘܪܝܐ
37 38 ܘܝܬܒܘ ܒܗܝܢ. * ܘܙܪܥܘ ܚܩܠܬܐ ܘܢܨܒܘ ܟܪܡܐ: ܘܐܟܠܘ ܡܢ ܦܐܪܐ ܕܥܠܠܬܗܘܢ. * ܒܪܟ
39 ܐܢܘܢ ܘܣܓܝܘ ܛܒ: ܘܒܥܝܪܗܘܢ ܠܐ ܐܙܥܪ. * ܘܙܥܪܘ ܘܐܬܡܟܟܘ: ܒܒܝܫܬܐ ܣܓܝܐܬܐ ܘܒܫܘܢܩܐ.
40 * ܪܡܐ ܫܘܢܩܐ ܥܠ ܡܝܬܪܢܐ: ܘܐܛܥܝ ܐܢܘܢ ܒܛܥܝܘܬܐ ܕܠܐ ܐܘܪܚܐ. * ܘܐܪܒܝ ܠܡܣܟܢܐ ܘܥܒܕ
41 42 ܐܝܟ ܥܢܐ ܫܪܒܬܗܘܢ. * ܢܚܙܘܢ ܬܪܝܨܐ ܘܢܚܕܘܢ: ܘܟܠܗܘܢ ܥܘܠܐ ܢܣܟܪܘܢ ܦܘܡܗܘܢ:
43 * ܡܢܘ ܚܟܝܡ ܕܢܛܪ ܗܠܝܢ. ܘܢܣܬܟܠܘܢ ܛܝܒܘܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܫܘܒܚܐ ܘܪܝܫ ܡܣܩܬܐ *
1 * ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ * ܠܕܘܝܕ. ܟܕ ܡܛܝܒ ܠܬܫܡܫܬܐ ܘܙܡܪܐ
2 ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܥܠ ܩܪܝܬܐ ܕܥܡܡܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܛ. * ܡܛܝܒ ܗܘ ܠܒܝ ܐܠܗܐ ܡܛܝܒ
3 ܗܘ ܠܒܝ. ܐܫܒܚ ܘܐܙܡܪ ܒܐܝܩܪܝ: * ܐܬܬܥܝܪ ܟܢܪܝ ܐܬܬܥܝܪܝ ܩܝܬܪܐ ܘܟܢܪܐ. ܐܦ ܐܢܐ ܐܬܬܥܝܪܬ
4 5 ܒܨܦܪܐ: * ܐܘܕܐ ܠܟ ܒܥܡܡܐ ܐܠܗܐ. ܘܐܙܡܪ ܠܫܡܟ ܒܥܡܡܐ: * ܡܛܠ ܕܪܒܐ ܗܝ ܛܝܒܘܬܟ
6 ܥܕ ܫܡܝܐ. ܘܥܕ ܫܡܝ ܫܡܝܐ ܗܝܡܢܘܬܟ: * ܐܬܪܝܡ ܥܠ ܫܡܝܐ ܐܠܗܐ.
7 ܘܥܠ ܟܠܗ ܐܪܥܐ ܫܘܒܚܟ: * ܡܛܠ ܕܢܬܦܪܩܘܢ ܚܒܝܒܝܟ. ܦܪܘܩܝܢܝ ܒܝܡܝܢܟ ܘܥܢܝܢܝ:
8 * ܐܠܗܐ ܡܠܠ ܒܩܘܕܫܗ. ܐܫܬܒܚ ܐܢܐ ܘܐܦܠܓ ܠܫܟܝܡ: ܘܠܥܘܡܩܐ ܕܣܘܟܘܬ ܐܡܫܘܚ.

Attolluntur ad cœlum, & deprimuntur in a- 26
byssum, unde anima eorū intra ipsos pertur- 27
batur: Contremuerunt atq; titubârunt sicut
ebrii, & omnis illorū sapientia evanuit. Cla- 28
maverunt ad Dñm in tribulationibus suis, &
è mœroribus eorū eduxit eos. Sedavit tem- 29
pestatem, & tranquillum factum est, & quie-
verunt fluctus maris: Lætatique sunt cùm 30
siluissent; duxit illos ad portum quem opta-
verunt. Confiteantur Dño justi ejus, quia mi- 31
sericordiæ ejus erga filios hominū. Laudate 32
eum in cœtu populorū, & sup sedile senio-
rū attollite illū: Qui redegit flumina quasi in 33
desertum, fontes aquarū in locū sitibundū:
Tellurē proferentē fructus suos in salsuginē, 34
propter facinora prava incolarum ejus; Qui 35
vertit desertū in stagna aquarū, & terrā siti-
bundā in scatebras aquarum: Commorari fe- 36
cit ibi famelicos & ædificârunt oppida, atque
habitârunt in illis: Seminârunt agros, & 37
plantârunt vineas, comederuntq; de fructib⁹
proventuū earū. Benedixit eis & multiplica- 38
ti sunt valdè, & pecora eorū haud imminuta
sunt. At diminuti sunt etiā, atque humiliati 39
multis malis & calamitatib⁹. Injecit miseriā 40
in præstantiores, & vagari fecit eos errore
non habente viam; Magnificavit autē paupe- 41
res, fecitq; sicut oves familias eorū. Ut vide- 42
ant justi ac lætentur, omnesq; scelerati obtu-
rent fauces suas. Qui sapiens est, observabit 43
hæc, deprehendetque misericordiam Dñi.

Laus, & initium gradûs.

PSAL. CVIII.

Davidis. Quum esset paratus cum gloria ad 1
ministerium & psalmodiam domus Domi-
ni. Et de vocatione Gentium. Versus 29.

Paratum est cor meum Deus, paratū est cor 2
meū: laudabo & canā cū gloria mea. Ex- 3
pergiscere lyra mea, expergiscere cithara &
lyra: etiā ego experrect⁹ sum mané: Confite- 4
bor tibi inter populos Deus, & nomini tuo
psallam inter gentes; Quoniam maxima est 5
bonitas tua usq; ad cœlū, & usque ad cœlos
cœli fides tua. Attollere sup cœlū Deus, & 6
super universam terrā gloria tua. Quando- 7
quidem salvandi sunt dilecti tui, salva me dexterâ tuâ, et exaudi me. Deus locutus est in sanctitate sua, Glorificabo ego dividamq; Sechim, & profundum Sochuth metibor. 8

Verſio VULG. LAT.

16 Aſcendunt uſque ad cœlos, & de-
ſcendunt uſq; ad abyſſos: anima eorũ
27 in malis tabeſcebat. Turbati ſunt, &
moti ſunt ſicut ebrius: & omnis ſapi-
28 entia eorum devorata eſt. Et clamave-
runt ad Dñm cùm tribularentur, & de
29 neceſſitatibus eorum eduxit eos. Et
ſtatuit procellam ejus in auram: &
30 ſiluerunt fluctus ejus. Et lætati ſunt
quia ſiluerunt: & deduxit eos in
31 portum voluntatis eorum. Confitean-
tur Dño miſericordiæ ejus: & mira-
32 bilia ejus filiis hominum. Et exaltent
eum in eccleſia plebis: & in cathedra
33 ſeniorum laudent eum. Poſuit flumina
in deſertum, & exitus aquarum in ſi-
34 tim; Terram fructiferam in ſalſugi-
nem, à malitia inhabitantium in ea.
35 Poſuit deſertum in ſtagna aquarum:
& terram ſine aqua in exitus aquarum.
36 Et collocavit illic eſurientes: et conſti-
37 tuerunt civitatem habitationis. Et
ſeminaverunt agros, & plantaverunt
vineas: & fecerunt fructũ nativitatis.
38 Et benedixit eis, & multiplicati ſunt
nimis: & jumenta eorũ non minora-
39 vit. Et pauci facti ſunt: & vexati ſunt
à tribulatione malorum, & dolore.
40 Effuſa eſt contemptio ſup principes:
& errare fecit eos in invio, & non in
41 via. Et adjuvit pauperem de inopia:
42 & poſuit ſicut oves familias. Videbunt
recti, & lætabuntur: & omnis iniqui-
43 tas oppilabit os ſuum. Quis ſapiens
& cuſtodiet hæc: & intelliget miſe-
ricordias Dñi?

1 Canticum Pſalmi ipſi David.
(Sup. 56. 8.) CVII.

2 PAratum cor meum, Deus, paratum
cor meum: cantabo, & pſallam in
3 gloria mea. Exurge gloria mea, exurge
pſalteriũ, & cithara: exurgam dilucu-
4 lò. Confitebor tibi in populis, Dñe: &
5 pſallã tibi in nationibus. Quia magna
eſt ſup cœlos miſericordia tua: & uſq;
6 ad nubes veritas tua. Exaltare ſuper
cœlos, Deus, & ſuper omnem terram
7 gloria tua: Ut liberentur dilecti tui.
Salvum fac dexerâ tuâ, & exaudi me:
8 Deus locutus eſt in Sancto ſuo; Exul-
tabo, & dividam Sichimam, et con-
vallem tabernaculorum dimetiar.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

26 † Ἀναβαίνουσιν ἕως τῶν οὐρανῶν, † καὶ καταβαίνουσιν
ἕως τῶν ἀβύσσων. † ἡ ψυχὴ αὐτῶν ἐν κακοῖς ἐτήκετο,
27 † Ἐταράχθησαν, ἐσαλεύθησαν ὡς ὁ μεθύων, † καὶ πᾶ-
28 σα ἡ σοφία αὐτῶν κατεπόθη. † Καὶ ἐκέκραξαν πρὸς
κύριον ἐν τῷ θλίβεσθαι αὐτοὺς, † καὶ ἐκ τῶν ἀναγκῶν
29 αὐτῶν ἐξήγαγεν αὐτούς. † Καὶ ἐπέταξε τῇ καται-
γίδι, καὶ ἔστη εἰς αὔραν, † καὶ ἐσίγησαν τὰ κύματα αὐ-
30 τῶν. † Καὶ (ζ) εὐφράνθησαν, ὅτι ἡσύχασαν, † καὶ ὡδήγη-
31 σεν αὐτοὺς ἐπὶ λιμένα θελήματος (b) αὐτῶν. † Ἐξο-
μολογησάσθωσαν τῷ κυρίῳ τὰ ἐλέη αὐτοῦ, † καὶ τὰ
32 θαυμάσια αὐτοῦ τοῖς υἱοῖς τῶν ἀνθρώπων. † Ὑψωσά-
τωσαν αὐτὸν ἐν ἐκκλησίᾳ λαοῦ, † καὶ (η) ἐν καθέδρᾳ
33 πρεσβυτέρων αἰνεσάτωσαν αὐτόν. † Ἔθετο ποταμοὺς
34 εἰς ἔρημον, † καὶ διεξόδους ὑδάτων εἰς δίψαν· † Γῆν
καρποφόρον εἰς ἅλμην, † ἀπὸ κακίας τῶν κατοικούν-
35 των ἐν αὐτῇ. † Ἔθετο ἔρημον εἰς λίμνας ὑδάτων,
36 † καὶ γῆν ἄνυδρον εἰς διεξόδους ὑδάτων. † Καὶ κατ-
ῴκισεν ἐκεῖ πεινῶντας, † καὶ συνεστήσαντο πόλεις
37 κατοικεσίας· † Καὶ ἔσπειραν ἀγροὺς, καὶ ἐφύτευσαν ἀμ-
38 πελῶνας, † καὶ ἐποίησαν καρπὸν (θ) γεννήματος. † Καὶ
εὐλόγησεν αὐτοὺς, καὶ ἐπληθύνθησαν σφόδρα, † καὶ
39 τὰ κτήνη αὐτῶν οὐκ ἐσμίκρυνε. Καὶ ὠλιγώθησαν καὶ
40 ἐκακώθησαν † ἀπὸ θλίψεως κακῶν καὶ ὀδύνης. † Ἐξ-
εχύθη ἐξουδένωσις ἐπ᾽ ἄρχοντας αὐτῶν, † καὶ ἐπλά-
41 νησεν αὐτοὺς ἐν ἀβάτῳ καὶ οὐχ ὁδῷ. † Καὶ ἐβοήθησε
πένητι ἐκ πτωχείας, † καὶ ἔθετο ὡς πρόβατα πατρι-
42 άς. Ὄψονται εὐθεῖς καὶ εὐφρανθήσονται, † καὶ πᾶσα
43 ἀνομία ἐμφράξει (ι) τὸ στόμα αὐτῆς. † Τίς σοφὸς καὶ
φυλάξει ταῦτα, † καὶ (κ) συνήσει τὰ ἐλέη τοῦ κυρίου;

MS. A. (ζ) ηὐφράνθησαν, (b) αὐτοῦ. (η) ἐν καθέδραις (θ) γεννήματος. (ι) στόμα (κ) συνήσουσιν

1 (α) Ὠδὴ ψαλμοῦ τῷ Δαυίδ. ρζ΄.

2 † ΕΤοίμη ἡ καρδία μου ὁ θεὸς, ἑτοίμη ἡ καρ-
3 δία μου, † ᾄσομαι καὶ ψαλῶ ἐν τῇ δόξῃ μου. † Ἐξ-
εγέρθητι ψαλτήριον καὶ κιθάρα, † ἐξεγερθήσομαι
4 ὄρθρου. † Ἐξομολογήσομαί σοι ἐν λαοῖς κύριε, †
5 ψαλῶ σοι ἐν ἔθνεσιν. † Ὅτι μέγα ἐπάνω τῶν οὐρα-
νῶν τὸ ἔλεός σου, † καὶ ἕως τῶν νεφελῶν ἡ ἀλήθειά
6 σου. Ὑψώθητι ἐπὶ τοὺς οὐρανοὺς ὁ θεὸς, † καὶ ἐπὶ πᾶ-
7 σαν τὴν γῆν ἡ δόξα σου. † Ὅπως ἂν ῥυσθῶσιν οἱ ἀ-
γαπητοί σου, † σῶσον τῇ δεξιᾷ, καὶ ἐπάκουσόν
8 μου. † Ὁ θεὸς ἐλάλησεν ἐν τῷ ἁγίῳ αὐτοῦ, † ὑψω-
θήσομαι καὶ διαμεριῶ Σίκιμα, † καὶ τὴν κοιλάδα τῶν
σκηνῶν διαμετρήσω.

MS. A. (α) Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

16 *Aſcendunt uſq; ad cœlos: & 26
deſcendunt uſq; ad abyſſos. Ani-
ma eorum in malis tabeſcebat: 27
Turbati ſunt, moti ſunt, ſicut ebri- 27
us: & omnis ſapientia eorum ab-
ſorpta eſt. 28 Et clamaverunt ad 28
Dominum, cùm tribularentur: &
de neceſſitatibus eorum eduxit eos.
29 Et (f) [h] imperavit procellæ: 29
& ſtetit in auram: & ſiluerunt flu-
ctus ejus. 30 Et lætati ſunt, quia ſi- 30
luerunt: & deduxit eos in portum
voluntatis (g) eorum. 31 Confite- 31
antur Domino miſericordiæ ejus, &
mirabilia ejus filiis hominum. 32 E- 32
xaltent eum in eccleſia populi, &
in cathedra ſeniorum laudent eum.
33 Poſuit flumina in deſertum; 33
& exitus aquarum in ſitim. 34 [i]
Terram fructiferam in ſalſuginem, 34
à malitia inhabitantium in ea. 35
Poſuit deſertum in ſtagna aquarum, 35
& terram ſine aqua [k] in exitus
aquarum. 36 Et collocavit illic eſu- 36
rientes: & [l] conſtituerunt (h) ci-
vitates habitationis. 37 Et ſemina- 37
verunt agros, & plantaverunt vi-
neas: & fecerunt [m] fructum (i)
geniminis. 38 Et benedixit eos, & 38
multiplicati ſunt nimis: & jumen-
ta eorum non (k) minoravit. 39 Et 39
(l) [n] pauci facti ſunt: & vexa-
ti ſunt à tribulatione malorum,
& dolore. 40 Effuſus eſt (m) contem- 40
ptus ſuper principes eorum, & erra-
re (n) fecit eos in invio, & non in
via. 41 Et adjuvit pauperẽ à (o) 41
mendicitate, & [o] poſuit ſicut oves,
familias. 42 Videbunt recti, & læ- 42
tabuntur: et omnis iniquitas oppila-
bit os ſuum. 43 Quis ſapiens, et cu- 43
ſtodiet hæc, et intelliget miſericordi-
as Domini?*

Canticum pſalmi ipſi David. *CVII.* 1

*PAratum cor meũ, De⁹, paratum 2
cor meũ: cantabo, [a] et pſallã in
gloria (a) mea. 2 Exurge pſalteriũ, 3
et cithara: exurgam diluculò. 3 Con- 4
fitebor tibi in populis, Domi-
ne: pſallam tibi in gentibus. 4
Quia magna eſt ſuper cœlos miſe- 5
ricordia tua, et uſq; ad nubes
veritas tua. 5 Exaltare ſuper cœ- 6
los, Deus: et ſuper omnẽ terram glo-
ria tua. ut liberentur dilecti tui, 6 7
ſalvum fac dexterâ, (b) et exaudi
me: De⁹ loqutus eſt in Sancto ſuo; 8
7 (c) [b] Exaltabor, et dividã Sicima, et vallem tabernaculorum dimetiar.*

Verſio ÆTHIOPICA.

የዐርጉ:እስከ:ሰማይ:: ወይወርዱ:እስከ: 26
ቀላይ:: ወተመስወት : ነፍሶሙ : በሕማ
ም::=፦ወደንገፁ:ወተሀውኩ:ከመ:ስኩር:: 27
ወተሰጥመ: ኵሉ : ጥበቦሙ::=፦ ወአውየ 28
ው : ኀበ : እግዚአብሔር :ሶበ:ተመንደቡ::
ወአድኀኖሙ:እምንደቤሆሙ::=፦ ወለጥ 29
ፍኦ:ለዐውሎ:ወአርመመ:ባሕር:: ወአርመ
መ:ማዕበል::=፦ ወተፈሥሑ:እስመ:አዕረ 30
ፉ:: ወመርሖሙ : ውስተ:መርሶ:ኀበ: ፈቀ
ዱ::=፦ንግሩ:ለእግዚአብሔር:ምሕረቶ:: 31
ወመንክሮሂ : ለእጓለ:እምሕያው::=፦ ወያ 32
ዐቢይዎ:በማኅበረ: ሕዝብ:: ወይሴብሕ
ዎ:በመንበረ:ሊቃውንት::=፦ ወረሰዮሙ: 33
ለአፍላግ:በድው:: ወረሰየ:ምጽማአ:ሙሐ
ዘ:ማይ::=፦ ወረሰያ:ሄወ:ለምድር:እንተ: 34
ትፈሪ:: በእከዮሙ: ለእለ: ይነብርዋ::=፦
ወረሰዮ:ለበድው:ሙሐዘ:ማይ:: ወምድረ: 35
በድው:ቀለያተ:ማያት::=፦ ወአንበረ:ህ 36
የ:ርኁባነ:: ወሐነጹ : አህጉረ: ኀበ: ይነብ
ሩ::=፦ ወተከሉ : ወይነ: ወዘርኡ:ገራው 37
ሃ::ወገብሩ: ማእረረ:እክል::=፦ ወባረኮ 38
ሙ: ወበዝኁ: ፈድፋደ:: ወኢያውኀደ:ሎ
ሙ:እንስሳሆሙ::=፦ ወደወዩ: ወውሕዱ:: 39
በሕማም: እኩይ: ወበጻዕር::=፦ ወተክዐ 40
ወ:ኀሳር :ዲበ: መሳፍንት:: ወአስሐቶሙ:
ውስተ:በድው:ዘኢኮነ:ፍኖተ::=፦ ወረድ 41
አ:ለነዳይ: በተፅናሱ:: ወረሰዮ: ከመ: አባ
ግዐ : ብሔር::=፦ ወይርአዩ: ራትዓን : ወይ 42
ትፌሥሑ:: ወትትፌጸም: አፉሃ: ኵሉ:ዐ
መፃ::=፦ መኑ:ጠቢብ:ዘየዐቅቦ:ለዝ::ወ 43
የአምር:ከመ:ምሕረ:እግዚአብሔር::

መዝሙር:ማኅሌት:ዘዳዊት::

የጊ ጥቡዕ:ልብየ:እግዚኦ: ጥቡዕ: ልብየ:: 1
እሴብሕ : ወእዜምር:: ወይትነሣእ : ክብ
ርየ::=፦ ወእትነሣእ: በመዝሙር:ወበመሰ 2
ንቆ:: ወእትነሣእ:በጽባሕ::=፦ እገኒ:ለ 3
ከ:በውስተ:አሕዛብ:እግዚኦ:: ወእዜምር:
ለከ:በውስተ: ሕዝብ::=፦ እስመ : አቢየ 4
ት:እስከ:ሰማያት:ምሕረትከ:: ወእስከ:
ደመናት:ጽድቅከ::=፦ ተለዐል: እግዚአ 5
ብሔር: መልዕልተ:ሰማያት:: ወበኵሉ:ም
ድር:ስብሐቲሁ:: ከመ: ይድኀኑ : ፍቁራኒ
ከ::=፦ አድኅን : በየማንከ : ወስምዐኒ:: 6
እግዚአብሔር: ነበበ: በመቅደሱ::=፦ እት 7
ሐሠይ: ወእትከፈል: ሰቂማ:: ወእሳፈር:አዕ
ጸደተ:ቆላት

INTERP. ÆTHIOP. [h] abegit procellam ejus, & ſiluit mare: & ſiluerunt [i] Et poſuit ſalſuginem terram frugiferam, [k] in abyſſos aquarum. [l] ædificârunt [m] meſſem frumenti. [n] infirmi, & pauci facti ſunt à [o] poſuit ei *PSAL. CVII.* [a] & extolletur gloria mea. Et exurgam cum pſalterio, [b] Exultabo, &

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

26 27 * طالعة الي السموات * ونازلة الي الاعماق * ذابت نفوسهم من الشرور * اضطربوا ومادوا مثل
28 29 السكران * ضلت عنهم حكمتهم * صرخوا الي الرب عند كربهم * فاخرجهم من شدايدهم * وازال
30 31 العاصف فسكنت وكفت امواجها * ففرحوا بسكونها * وهداهم الي المينا الذي شاوا * فليشكر
32 الرب مراحمه وعجايبه في بني البشر * وليرفعوه في مجمع الشعوب * وليباركوه في مجالس الشيوخ *
33 34 * لانه جعل الانهار قفارا * ومخارج المياه عطشا * وارضا ذات ثمار جعلها سبخا * من سو اعمال
35 36 ساكنيها * وجعل القفر بحيرة ماء * وارضا عديمة الماء لينابيع المياه * واسكن هناك الجياع *
37 38 فاقاموا مدنا للسكنا * وزرعوا حقولا * وغرسوا كروما * واكلوا من ثمار غلاتها * وباركهم فكثروا
39 40 جدا ولم تقل ماشيتهم * فقلوا وبادوا من ضغطة الشرور والحزن * انصب الهوان على روسايهم *
41 42 اضلهم في التيه في غير طريق * اعان المسكين من المسكنة * وجعل القبايل مثل الاغنام * ترى
43 المستقيمون ويفرحون * وتسد افواه جميع الاثمة * من هو حكيم ليحفظ هذا * ويفهم رحمة الرب *
1 الليلويا * المزمور المائة وسبعة * تسبحة لداود * وهو كح * استيخن *
2 3 * مستعد قلبي اللهم * مستعد قلبي * اسبح وارتل في تمجيدي * قم يا تمجيدي * قم ايها
4 5 المزمار والقيثار * اقوم سحرا * واشكرك يا رب في الشعوب * وارتل لك في الامم * لان عظيمة
6 هي رحمتك على السموات * وحقك الي السحاب * اعل اللهم على السموات * ومجدك علي الارض
7 8 جميعها * لكيما تخلص احباوك * خلصني بيمينك واستجب لي * الله يتكلم في قدسيه * اني
ارتفع واقسم شاحيم * واقيس وادي المظال *

*Aſcendentes ad cœlos, et deſcendentes in 26
ima. Liquefactæ ſunt animæ eorum ob mi-
ſerias: Turbati ſunt & titubârunt ſicut e- 27
brius: periit ab eis ſapientia eorũ. Clamave- 28
runt ad Dominũ in mœrore ſuo, et eduxit
eos de tribulationib⁹ eorũ. Et amovit tur- 29
binẽ, ac ſedatæ ſunt, et ceſſaverũt fluctus
earũ. Et lætati ſunt de quiete earum. Di- 30
rexitq; eos ad portũ quẽ voluerũt. Igitur 31
gratias agant Domino miſerationes ejus, et
miracula ipſi⁹ in filiis hominũ. Et exaltent 32
eũ in congregatione populorũ, & benedi-
cant ei in conſeſſu ſenũ. Quoniã ipſe fecit 33
flumina, ſolitudines: et ſcatebras aquarũ,
ſitibunda. Et terram frugiferam redegit in 34
ſalſuginẽ, ob turpitudinẽ operũ incolarum
ejus. Et redegit deſertũ in lacũ aquæ, & 35
terrã carentẽ aquâ in fontes aquarum. Et 36
habitare fecit ibi eſurientes, et erexerunt
urbes ad habitandum. Et ſeminaverunt a- 37
gros, & plantaverunt vineas, & comede-
runt de fructib⁹ proventuũ illorũ. Et be- 38
nedixit eis ac multiplicati ſunt valdè, &
nõ ſunt imminuta armẽta eorũ. Imminuti 39
ſunt et perierunt præ ſuffocatione malorũ
& mœroris. Effuſa eſt contemptio ſuper 40
principes eorũ, errare fecit eos per ſolitu-
dinẽ ſine via. Sublevavit pauperẽ de pau- 41
pertate, fecitque familias inſtar ovium.
Videbunt recti, & lætabuntur, & obtura- 42
buntur ora omnium iniquorum. Qui eſt 43
ſapiens, obſervet hoc, & intelliget mi-
ſericordiam Domini. Alleluja.*

PSAL. CVII.

Canticum David. Verſ. 28. 1

*PAratum cor meus Deus, paratum cor 2
meũ: laudabo et pſallã in glorificati-
one mea. Surge O glorificatio mea, ſurge O 3
pſalterium et cithara. Surgã diluculò, Et 4
gratias agã tibi O Domine, inter populos,
et pſallã tibi inter gentes. Quia magna eſt 5
miſericordia tua ſuper cœlos, & veritas
tua uſq; ad nubes. Eleva te De⁹, ſuper cœ- 6
los, et gloria tua ſuper terrã univerſam.
Ad hoc ut ſalventur amici tui, ſalva me 7
dexterâ tuâ, & exaudi me. Deus loqui- 8
tur per ſanctos ſuos: Equidem elevabor, & dividam Sechim, & metibor vallem tabernaculorum.*

תהלים : קט

.meus legifer Jehudah:mei capitis fortitudo Ephraim & ,Menaſſeh *mihi* ,Ghilhad *Mihi*
לִי גִלְעָד ׀ לִי מְנַשֶּׁה וְאֶפְרַיִם מָעוֹז רֹאשִׁי יְהוּדָה מְחֹקְקִי׃ 9
Peleſeth ſuper :meũ calceamentũ projiciam Edom ſuper ,meæ lotionis olla Moab
מוֹאָב ׀ סִיר רַחְצִי עַל־אֱדוֹם אַשְׁלִיךְ נַעֲלִי עֲלֵי־פְלֶשֶׁת 10
? Edom ad uſque me educet quis ? *munitionis* civitatẽ me deducet Quis .taratantarizabo
אֶתְרוֹעָע׃ מִי יֹבִלֵנִי עִיר מִבְצָר מִי נָחַנִי עַד־אֱדוֹם׃ 11
Da ? noſtris exercitib' cũ Deus egredieris non &:nos elongâſti Deus Nonne
הֲלֹא־אֱלֹהִים זְנַחְתָּנוּ וְלֹא־תֵצֵא אֱלֹהִים בְּצִבְאֹתֵינוּ׃ הָבָה־ 12 13
: *virtutẽ* faciemus Deo in .hominis ſalus *mendacium* & :anguſtia ab auxiliũ nobis
לָּנוּ עֶזְרָת מִצָּר וְשָׁוְא תְּשׁוּעַת אָדָם׃ בֵּאלֹהִים נַעֲשֶׂה־חָיִל 14
.noſtros hoſtes conculcabit ipſe &
וְהוּא יָבוּס צָרֵינוּ׃

PSAL. CIX. קט

, impii os Quia .taceas ne meæ laudis Deus .cantus David ipſi Victori
לַמְנַצֵּחַ לְדָוִד מִזְמוֹר אֱלֹהֵי תְהִלָּתִי אַל־תֶּחֱרַשׁ׃ כִּי פִי רָשָׁע 1 2
verbis Et .*falſitatis* lingua mecum ſunt locuti : aperuerunt me ſuper doloſi os &
וּפִי־מִרְמָה עָלַי פָּתָחוּ דִּבְּרוּ אִתִּי לְשׁוֹן שָׁקֶר׃ וְדִבְרֵי 3
mea dilectione Pro .gratis me impugnaverunt & : me circumdederunt *odii*
שִׂנְאָה סְבָבוּנִי וַיִּלָּחֲמוּנִי חִנָּם׃ תַּחַת־אַהֲבָתִי 4
, bono pro malum me adverſum poſuerunt Et .*oratio* ego & ,mihi ſunt adverſati
יִשְׂטְנוּנִי וַאֲנִי תְפִלָּה׃ וַיָּשִׂימוּ עָלַי רָעָה תַּחַת טוֹבָה 5
ad ſtet Satan & : impium eum ſuper Conſtitue .mea dilectione pro odium &
וְשִׂנְאָה תַּחַת אַהֲבָתִי׃ הַפְקֵד עָלָיו רָשָׁע וְשָׂטָן יַעֲמֹד עַל־ 6
Sint peccatum in ſit ejus oratio & : impius exeat *ipſum judicari In* .ejus dexterã
יְמִינוֹ׃ בְּהִשָּׁפְטוֹ יֵצֵא רָשָׁע וּתְפִלָּתוֹ תִּהְיֶה לַחֲטָאָה׃ יִהְיוּ־ 7 8
: pupilli ej' filii Sint .alter accipiat ejus præfecturam : pauci ejus dies
יָמָיו מְעַטִּים פְּקֻדָּתוֹ יִקַּח אַחֵר׃ יִהְיוּ־בָנָיו יְתוֹמִים 9
quærant & : poſtulent & , ejus filii ſe moveant movendo Et .vidua ej' uxor &
וְאִשְׁתּוֹ אַלְמָנָה׃ וְנוֹעַ יָנוּעוּ בָנָיו וְשִׁאֵלוּ וְדָרְשׁוּ 10
.ej' laborẽ alieni diripiant & :ei quæ omnia fœnerator Illaqueet .ſuis *deſolationib'* de
מֵחָרְבוֹתֵיהֶם׃ יְנַקֵּשׁ נוֹשֶׁה לְכָל־אֲשֶׁר־לוֹ וְיָבֹזּוּ זָרִים יְגִיעוֹ׃ 11
Sit .ejus pupillis *miſereſcens* ſit ne & : miſericordiã *protrahens* ei ſit Ne
אַל־יְהִי־לוֹ מֹשֵׁךְ חָסֶד וְאַל־יְהִי חוֹנֵן לִיתוֹמָיו׃ יְהִי־ 12 13
.eorum nomen deleatur altera generatione in : *ſuccidendum ad* ejus *noviſſimum*
אַחֲרִיתוֹ לְהַכְרִית בְּדוֹר אַחֵר יִמַּח שְׁמָם׃
.deleatur ne ej' matris peccatũ & ,*Dominum ad* eorum patrum iniquitas Memoretur
יִזָּכֵר ׀ עֲוֹן אֲבֹתָיו אֶל־יְהוָה וְחַטַּאת אִמּוֹ אַל־תִּמָּח׃ 14
quòd eo Pro .eorũ memoriam terra è ſuccidat & : ſemper Domino coram Sint
יִהְיוּ נֶגֶד־יְהוָה תָּמִיד וְיַכְרֵת מֵאֶרֶץ זִכְרָם׃ יַעַן אֲשֶׁר ׀ 15 16
: *egenum & ,afflictum* virum eſt perſecutus & ,miſericordiam facere eſt recordatus non
לֹא זָכַר עֲשׂוֹת חָסֶד וַיִּרְדֹּף אִישׁ־עָנִי וְאֶבְיוֹן
non & :*eum invaſit* & ,maledictionem dilexit Et .interficiendum ad corde contritũ &
וְנִכְאֵה לֵבָב לְמוֹתֵת׃ וַיֶּאֱהַב קְלָלָה וַתְּבוֹאֵהוּ וְלֹא־ 17
,ſuã *amictum* ſicut maledictionẽ induit Et .eo ab ſe elõgavit & ,benedictionẽ *in* voluit
חָפֵץ בִּבְרָכָה וַתִּרְחַק מִמֶּנּוּ׃ וַיִּלְבַּשׁ קְלָלָה כְּמַדּוֹ 18
ei Sit .ejus oſſa in oleum ſicut & : ejus *interius in* aqua ſicut intravit &
וַתָּבֹא כַמַּיִם בְּקִרְבּוֹ וְכַשֶּׁמֶן בְּעַצְמוֹתָיו׃ תְּהִי־לוֹ 19
.*illud accinget* ſemper cingulum *in* & : ſe *operiet* veſtimentum ſicut
כְּבֶגֶד יַעְטֶה וּלְמֵזַח תָּמִיד יַחְגְּרֶהָ׃

תרגום TARGUM.

דילי גלעד דילי מנשה גברין דבית אפרים 9
עושנא דרישי ומדבית יהודה ספרי׃ דוששית 10
מואבאי היך דודי שווני על מלכות אדום
אטלוק סנדלי על מלכות פלשתאי אתיבב׃
וכדון מן אוביל יתי עד כרכא תקיפא מן 11
דברני עד אדום׃ הלא על דחבנא קדם יי 12
שבקתנא ולא נפקא שכנתיה בחילותנא׃
הב לן סעדא מן מעיקא דמגן פורקנא 13
דבר נשא׃ באלהא נעביד חילא והוא ידושש 14
מעיקנא׃

קט

לשבחא על יד דוד תושבחא אלהים שבחתי 1
לא תשתוק׃ ארום פומא דרשיעא ופומא 2
דנכלא עלי פתחין מלילו עמי לישן דשקר׃
וממללי סנותא חזרו יתי ואגיחו עמי מגן׃ 3
חלף די רחמית סטנו לי ואנא אצלי׃ 4
ושוון עלי בישתא חלף טבא וסנאתא חלף 5
דרחימית׃ אסער עלוי רשיעא וסטנא יקום על 6
ימיניה׃ באדיניה יפוק חיב וצלותיה תהי 7
לחובתא׃ יהון יומוי קלילין מנין שנוי יירת 8
אוחרן׃ יהון בנוי יתמי ואתתיה ארמלתא׃ 9
ואטלטלא יטלטלון בנוי ושאלון ותבעון 10
מדהוות צדתהון׃ ינבב מזופא לכל דיליה ויבזון 11
נוכראין ליעותיה׃ לא יהי ליה נגיד חסדא ולא 12
יהי ליה חיס על יתמוי׃ יהי סופיה לאשתציא 13
בדר אוחרן יתמחי שמהון׃ ידכיר עוית אבהתוי 14
קדם יי וחובת אמיה לא תתמחי׃ יהוין קביל 15
מימרא דיי תדירא וישצי מארעא דכרנהון׃
מטול דלא אדכר למעבד טיבו ורדיף גבר עניא 16
וחשיכא ומכיך לבא לאתקטלא׃ ורחים לוטיא 17
ואתית ליה ולא אתרעי בברכתא ואתרחקת
מניה׃ ולבש לוטא היך לבושא ועלת היך מיא 18
בגושמיה והיך משחא באברוי׃ תהוי ליה היך 19
לבושא יתעטף ולקמור תדירא יזרזנה׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Meus eſt Gilhad, meus eſt Menaſſeh: *robuſti* domus Ephraim fortitudo capitis mei, 9
& de domo Jehuda ſcriba meus. Confregi 10
Moabitas tanquam ollas lotionis meæ; ſuper *regnum* Edom projiciam calciamentum
meum : ſuper regnum Paleſtinorum jubilabo. *Et nunc* quis deducet me ad *arcem* 11
munitam? quis ducet me uſque ad Edom?
Nonne *quia peccavimus coram Domino deſeruiſti* nos, & nequaquam egreſſa eſt ma- 12
jeſtas ejus cum exercitibus noſtris? Da no- 13
bis auxilium ob infeſtatorem, quoniam vana eſt redemptio hominis. In Deo edemus 14
virtutem, & ipſe calcabit oppreſſores noſtros.

Ad laudandum per manum Davidis 1
hymnus.

PSAL. CIX.

DEus laus mea, ne taceas. Quoniam os 2
impium & os doloſum ſuper me aperuerunt: locuti ſunt adverſum me lingua mendaci. Et verbis odii circundederunt me, 3
et pugnaverunt adverſum me ſine cauſa.
Pro eo quòd dilexi, adverſantur mihi; ego 4
verò precabor. Et ponunt adverſum me 5
malum pro bono, & odium pro eo quòd
dilexi. Conſtitue ſuper eum impium, & Sa- 6
tanas ſtet ad dexteram ejus. Cùm judicium 7
ſubibit, exeat condemnatus, & oratio ejus
ſit ad condemnationem. Sint dies ejus ve- 8
loces; numerum annorum ejus hæreditate
acquirat alius. Sint filii ejus pupilli, & 9
uxor ejus vidua. Vagando vagentur filii 10
ejus; & petant & inquirant *poſtquam* fuerit deſolatio eorum. Colligat fœnerator 11
omnia quæ ipſius ſunt, & diripiant alieni
laborem ejus. Non ſit illi qui conciliet mi- 12
ſericordiam, & non ſit qui miſereatur pupillis ejus. Sit finis ejus ad interitum, in ge- 13
neratione altera deleatur nomen *eorum*.
Commemoretur iniquitas patrum ejus in 14
conſpectu Domini, et peccatum matris ejus
non deleatur. Sint in conſpectu Verbi Do- 15
mini ſemper, & deleat de terra memoriam eorum. Quoniam non meminit facere 16
benignitatem, & perſequitur hominem
pauperem & mendicum, & compunctum
corde ad internecionem. Et dilexit maledi- 17
ctionem, & obvenit ei; & noluit benignitatem, & elongata eſt ab eo. Et induit ma- 18
ledictionem ſicut veſtimentum, & intravit
quaſi aqua in corpus ejus, et ſicut oleum in
membra ejus. Sit ei ſicut veſtimentum quo 19
operiatur, & pro cingulo ſemp accingat illã.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܕܝܠܝ ܗܘ ܓܠܥܕ ܘܕܝܠܝ ܗܘ ܡܢܫܐ܆ ܐܦܪܝܡ ܡܥܫܢܢܘܬܗ ܕܪܫܝ. ܝܗܘܕܐ ܡܠܟܝ *ܡܘܐܒ 9 10
ܩܕܪܐ ܕܫܝܓܝ: ܥܠ ܐܕܘܡ ܐܫܪܐ ܡܣܐܢܝ ܘܥܠ ܦܠܫܬ ܐܩܥܐ. *ܡܢܘ ܢܕܒܪܢܝ ܠܡܕܝܢܬܐ 11
ܪܒܬܐ: ܘܡܢܘ ܢܕܒܪܢܝ ܥܕܡܐ ܠܐܕܘܡ. *ܗܐ ܓܝܪ ܐܢܬ ܐܠܗܐ ܛܥܝܬܢ. ܘܠܐ ܢܦܩ ܐܢܬ ܒܚܝܠܢ: 12
* ܗܒ ܠܢ ܥܘܕܪܢܐ ܥܠ ܒܥܠܕܒܒܝܢ. ܡܛܠ ܕܣܪܝܩ ܗܘ ܦܘܪܩܢܗ ܕܒܪܢܫܐ: * ܐܠܗܐ 13 14
ܢܬܠ ܚܝܠܐ. ܘܗܘ ܢܕܘܫ ܠܒܥܠܕܒܒܝܢ. *ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ* ܟܕ ܐܡܠܟܘ ܠܐܒܫܠܘܡ 1
ܠܐ ܡܫܬܘܕܥ ܘܠܐ ܐܘܕܥܘܗܝ: ܘܡܛܠ ܗܕܐ ܐܬܩܛܠ. ܘܠܢ ܡܦܫܩ ܠܢ ܚܫܐ ܕܡܫܝܚܐ ܐܠܗܐ.
ܦܬܓܡܐ ܣܕ. ܐܠܗܐ ܕܬܫܒܘܚܬܝ ܠܐ ܬܫܬܘܩ. * ܡܛܠ ܕܦܘܡܗ ܕܪܫܝܥܐ ܘܦܘܡܗ 2
ܕܢܟܘܠܐ ܐܬܦܬܚܘ ܥܠܝ: ܡܠܠܘ ܥܡܝ ܒܠܫܢܐ ܕܓܠܐ * ܘܒܩܠܐ ܕܣܢܐܬܐ. ܘܐܬܟܬܫܘ 3
ܥܡܝ ܡܓܢ: * ܘܚܠܦ ܕܪܚܡܬ ܗܘܘ ܣܛܢܝܢ ܠܝ. ܘܐܢܐ ܡܨܠܐ ܗܘܝܬ ܥܠܝܗܘܢ: *ܦܪܥܘܢܝ 4 5
ܒܝܫܬܐ ܚܠܦ ܛܒܬܐ. ܘܣܢܝܐܬܐ ܚܠܦ ܪܚܡܬܝ: *ܦܩܘܕ ܥܠܝܗܘܢ ܥܘܠܐ. ܘܣܛܢܐ ܢܩܘܡ 6
ܡܢ ܝܡܝܢܗܘܢ: * ܘܡܐ ܕܡܬܕܝܢܝܢ ܢܦܩܘܢ ܟܕ ܚܝܒܝܢ. ܘܨܠܘܬܗܘܢ ܬܗܘܐ ܠܚܛܗܐ: 7
*ܢܗܘܘܢ ܝܘܡܬܗܘܢ ܒܨܝܪܝܢ. ܘܡܕܡ ܕܢܛܝܪ ܠܗܘܢ ܐܚܪܢܐ ܢܣܒܘܢ: * ܢܗܘܘܢ 8
ܒܢܝܗܘܢ ܝܬܡܐ. ܘܢܫܝܗܘܢ ܐܪܡܠܬܐ: *ܢܫܠܘܛ ܡܪܐ ܚܘܒܐ ܥܠ ܟܠ ܕܐܝܬ ܠܗܘܢ. 9 11
ܘܢܒܨܘܢ ܢܘܟܪܝܐ ܚܝܠܗܘܢ: * ܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗܘܢ ܡܪܚܡܢܐ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܕܢܪܚܡ ܥܠ 12
ܝܬܡܝܗܘܢ: *ܢܗܘܐ ܚܪܬܗܘܢ ܠܐܒܕܢܐ. ܘܠܕܪܐ ܐܚܪܢܐ ܢܬܥܛܐ ܫܡܗܘܢ: *ܢܬܕܟܪ 13 14
ܥܘܠܐ ܕܐܒܗܝܗܘܢ. ܘܚܛܗܐ ܕܐܡܗܬܗܘܢ ܠܐ ܢܬܥܛܘܢ: *ܐܠܐ ܢܗܘܘܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ 15
ܒܟܠܙܒܢ. ܘܢܘܒܕ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܘܟܪܢܗܘܢ: * ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܬܕܟܪܘ ܠܡܥܒܕ ܛܒܬܐ. ܘܪܕܦܘ 16
ܠܡܣܟܢܐ ܘܠܒܝܫܐ: ܘܠܟܪܝܐ ܠܒܐ ܠܡܩܛܠܘ. * ܘܐܚܒܘ ܠܘܛܬܐ ܘܠܐ ܐܬܪܥܝܘ 17
ܒܒܘܪܟܬܐ: ܐܠܐ ܠܒܫܘ ܠܘܛܬܐ ܐܝܟ ܙܝܢܐ. ܘܥܠܬ ܒܗܘܢ ܐܝܟ ܡܝܐ ܘܐܝܟ ܡܫܚܐ 18
ܒܓܪܡܝܗܘܢ: *ܬܗܘܐ ܠܗܘܢ ܐܝܟ ܡܪܛܘܛܐ ܕܡܬܥܛܦܝܢ. ܘܐܝܟ ܐܣܪܐ ܕܚܨܐ ܒܟܠܙܒܢ: 19

Meus eſt Ghelaad, & meus eſt Manaſſe, A- 9
phrem magnificator capitis mei, Judha Rex
meus, Moab cacabus ablutionis meæ, ſuper 10
Adum ſolvam calceos meos, & ſuper Palæ-
ſtinam clamabo, Quis perducat me ad urbẽ 11
magnam ? quis ducat me uſque in Adum ?
Nam ecce tu Deus oblitus es noſtrî, & non 12
egrederis in robur noſtrum. Fer nobis opem 13
in hoſtes noſtros, ſiquidem vana eſt ſalus ho-
minis. Deus ſuppeditet nobis vires, & ipſe 14
concuſcet inimicos noſtros.

PSAL. CIX.

Davidis. Quum Regem creaverunt Abſalom, eo inſcio : & hac de cauſa interfectus fuit. Nobis autem exponit paſſiones Chriſti Dei. Verſus. 64. 1

DEus gloriæ meæ, ne taceas; Quia os impii 2
& os doloſi aperuerunt ſeſe contra me :
allocuti ſunt me linguâ mendaci Et voce o- 3
dii, & impugnaverunt me gratìs; Et pro amo- 4
re meo adverſati ſunt mihi: ego tamen orabã
pro eis; Rependerunt mihi malũ pro bono, 5
& odiũ pro dilectione. Præcipe adversùs eos 6
iniquo, & diabol' ſtet à dextera eorũ: Et cùm 7
judicabũtur, exeãt condemnati, et oratio eorũ
fiat peccatum. Sint illorũ dies pauci, quódq; 8
aſſervatum eſt eis, alii accipiant : Sint liberi 9
eorũ pupilli, & uxores illorũ viduæ: Præſit 11
Dñs debiti omnib' quæ poſſidẽt: & ſcruten-
tur alieni vires illorum : Non ſit erga illos 12
miſericors, neque ſit qui miſereatur pupil-
lis eorũ : Sit finis eorum in interitum, & ad 13
generationem ſequentem deleatur nomen eo-
rum; Memoriæ mandetur iniquitas patrum 14
illorum, & peccata matrum ipſorum minimè
deleantur : Sed ſint Domino omni tempore, 15
abrogetque de terra memoriam illorum;
Quia non fuerunt memores operandi bonũ : 16
& inſectati ſunt pauperem atque inopem &
dolentem corde, ad mortem. Dilexerunt 17
maledictiones, & non ſunt oblectati bene-
dictionibus; Imò induerunt maledictiones 18
ut arma, & ingreſſæ ſunt in eos ut aqua, ut-
que oleum in oſſa eorum. Fiat illis ſicut ve- 19
ſtis quâ operiuntur, & ſicut cingulum renum
omni tempore.

Verſio VULG. LAT.

9 Meus eſt Galaad, & meꝰ eſt Manaſſes:
& Ephraim ſuſceptio capitis mei. Ju-
10 da rex meus: Moab lebes ſpei meæ:
In Idumæam extendã calceamentum
meum: mihi alienigenæ amici facti
11 ſunt. Quis deducet me in civitatẽ mu-
nitã? quis deducet me uſque in Idu-
12 mæam? Nonne tu, Deus, qui repuliſti
nos, & non exibis, Deus, in virtutibus
13 noſtris? Da nobis auxiliũ de tribula-
14 tione: quia vana ſalus hominis. In Deo
faciemus virtutem: & ipſe ad nihilum
deducet inimicos noſtros.

1 In finem, Pſalmus David. CVIII.

2 Deus, laudẽ meã ne tacueris: quia
os peccatoris, & os doloſi ſuper
3 me apertũ eſt. Locuti ſunt adverſũ me
linguâ doloſâ, & ſermonibus odii cir-
cumdederunt me: & expugnaverunt
4 me gratis. Pro eo ut me diligerent, de-
trahebant mihi: ego autem orabam.
5 Et poſuerunt adverſùm me mala pro
bonis: & odium pro dilectione mea.
6 Conſtitue ſup eũ peccatorẽ: & diabo-
7 lus ſtet à dextris ejꝰ. Cùm judicatur, ex-
eat condemnatus: & oratio ejus fiat
8 in peccatũ. Fiant dies ejꝰ pauci: & e-
9 piſcopatũ ejꝰ accipiat alter. Fiant filii
10 ejus orphani: & uxor ejus vidua. Nu-
tantes transferantur filii ejꝰ, & mendi-
cent: & ejiciantur de habitationibus
11 ſuis. Scrutetur fœnerator omnem ſub-
ſtantiã ejꝰ: & diripiãt alieni labores
12 ejꝰ. Non ſit illi adjutor: nec ſit qui mi-
13 ſereatur pupillis ejus. Fiant nati ejus
in interitũ: in generatione una delea-
14 tur nomen ejꝰ. In memoriã redeat ini-
quitas patrũ ejꝰ in conſpectu Dñi: &
15 peccatũ matris ejꝰ non deleatur. Fiant
contra Dñm ſemper, & diſperat de
16 terra memoria eorũ: Pro eo quòd non
eſt recordatus facere miſericordiam.
17 Et perſecutus eſt hominẽ inopem, &
mendicũ, & compunctũ corde morti-
18 ficare. Et dilexit maledictionẽ, & veni-
et ei: & noluit benedictionẽ, & elon-
gabitur ab eo. Et induit maledictionẽ
ſicut veſtimentũ, & intravit ſicut aqua
in interiora ejꝰ, & ſicut oleũ in oſſibꝰ
19 ejꝰ. Fiat ei ſicut veſtimentũ, quo operi-
tur; & ſicut zona, quâ ſemper præ-
cingitur.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

9 †Ἐμός ἐστι Γαλαὰδ, καὶ ἐμός ἐστι Μανασσῆς, †καὶ Ἐ-
φραὶμ ἀντίληψις τῆς κεφαλῆς μου· †Ἰούδας βασι-
10 λεύς μου, †Μωὰβ λέβης τῆς ἐλπίδος μου· †ἐπὶ τὴν
Ἰδουμαίαν ἐκβαλῶ τὸ ὑπόδημά μου, †ἐμοὶ ἀλλό-
11 φυλοι ὑπετάγησαν. †Τίς ἀπάξει με εἰς πόλιν περι-
12 οχῆς· †ἢ τίς ὁδηγήσει με ἕως τῆς Ἰδουμαίας; †Οὐ-
χὶ σὺ ὁ Θεὸς ὁ ἀπωσάμενος ἡμᾶς; †καὶ οὐκ ἐξελεύ-
13 σῃ ὁ Θεὸς ἐν ταῖς δυνάμεσιν ἡμῶν; †Δὸς ἡμῖν
βοήθειαν ἐκ θλίψεως, †καὶ ματαία σωτηρία ἀν-
14 θρώπου. †Ἐν τῷ Θεῷ (β) ποιήσομεν δύναμιν, †καὶ
αὐτὸς ἐξουδενώσει τοὺς (γ) ἐχθροὺς ἡμῶν.

1 Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. ρη΄.

2 †Ὁ Θεὸς τὴν αἴνεσίν μου μὴ παρασιωπήσῃς, †ὅτι
στόμα ἁμαρτωλοῦ καὶ στόμα δολίου ἐπ' ἐμὲ ἠνοί-
3 χθη. †Ἐλάλησαν κατ' ἐμοῦ γλώσσῃ δολίᾳ, †καὶ λό-
γοις μίσους ἐκύκλωσάν με, †καὶ ἐπολέμησάν με δω-
4 ρεάν. †Ἀντὶ τοῦ ἀγαπᾶν με, ἐνδιέβαλλόν με, †ἐγὼ
5 δὲ προσηυχόμην. †Καὶ ἔθεντο κατ' ἐμοῦ κακὰ ἀντὶ
6 ἀγαθῶν, †καὶ μῖσος ἀντὶ τῆς ἀγαπήσεώς μου. †Κατά-
στησον ἐπ' αὐτὸν ἁμαρτωλὸν, †καὶ διάβολος στήτω
7 ἐκ δεξιῶν αὐτοῦ. †Ἐν τῷ κρίνεσθαι αὐτὸν, ἐξέλθοι
καταδεδικασμένος, †καὶ ἡ προσευχὴ αὐτοῦ γενέσθω
8 εἰς ἁμαρτίαν. †Γενηθήτωσαν αἱ ἡμέραι αὐτοῦ ὀλίγαι,
9 †καὶ τὴν ἐπισκοπὴν αὐτοῦ λάβοι ἕτερος. †Γενηθήτω-
σαν οἱ υἱοὶ αὐτοῦ ὀρφανοὶ, †καὶ ἡ γυνὴ αὐτοῦ χήρα. †
10 Σαλευόμενοι μεταναστήτωσαν οἱ υἱοὶ αὐτοῦ, καὶ ἐπαιτη-
σάτωσαν, †ἐκβληθήτωσαν ἐκ τῶν οἰκοπέδων αὐτῶν. †
11 (α) Ἐξερευνησάτω δανειστὴς πάντα ὅσα ὑπάρχει
αὐτῷ, †καὶ διαρπασάτωσαν ἀλλότριοι τοὺς πόνους αὐ-
12 τοῦ. †Μὴ ὑπαρξάτω αὐτῷ ἀντιλήπτωρ, †μηδὲ γενη-
13 θήτω οἰκτίρμων τοῖς ὀρφανοῖς αὐτοῦ. †Γενηθήτω
τὰ τέκνα αὐτοῦ εἰς (β) ἐξολόθρευσιν, †ἐν γενεᾷ μιᾷ
14 (γ) ἐξαλειφθείη τὸ ὄνομα αὐτοῦ. †Ἀναμνησθείη ἡ
ἀνομία τῶν πατέρων αὐτοῦ ἔναντι κυρίου, †καὶ ἡ ἁμαρ-
15 τία τῆς μητρὸς αὐτοῦ μὴ ἐξαλειφθείη. †Γενηθήτωσαν
ἐναντίον κυρίου διαπαντὸς, †καὶ (δ) ἐξολοθρευθείη
16 ἐκ γῆς τὸ μνημόσυνον (ε) αὐτῶν· †Ἀνθ' ὧν οὐκ ἐ-
17 μνήσθη (ζ) ποιῆσαι ἔλεος, †Καὶ κατεδίωξεν ἄνθρω-
πον πένητα καὶ πτωχὸν, †καὶ κατανενυγμένον τῇ
18 καρδίᾳ τοῦ θανατῶσαι. †Καὶ ἠγάπησε κατάραν, καὶ
ἥξει αὐτῷ, †καὶ οὐκ ἠθέλησεν εὐλογίαν, καὶ μακρυνθή-
σεται ἀπ' αὐτοῦ. †καὶ ἐνεδύσατο κατάραν ὡς ἱμάτιον, †
καὶ εἰσῆλθεν ὡσεὶ ὕδωρ εἰς τὰ ἔγκατα αὐτοῦ, †καὶ ὡσεὶ
19 ἔλαιον ἐν τοῖς ὀστέοις αὐτοῦ. †Γενηθήτω αὐτῷ ὡς ἱ-
μάτιον ὃ περιβάλλεται, †καὶ ὡσεὶ ζώνη ἣν διαπαντὸς
περιζώννυται.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

Meus eſt Galaad, et meus eſt Manaſ- 9
ſes: et Ephræm ſuſceptio capitis mei:
9 Judas rex meus. Moab [c] lebes 10
ſpei (d) meæ: 10 ſuper Idumeam pro-
jiciam calceamentũ meum: mihi alie-
nigenæ (e) ſubditi ſunt. 11 Quis ad- 11
ducet me in civitatem (f) [d] circun-
ſtantiæ? aut quis deducet me uſque in
Idumæam? 12 (g) Nonne tu, Deus, 12
qui repuliſti nos, et nõ (h) exibis, Deus,
in virtutibus noſtris? 13 Da nobis au- 13
xilium de tribulatione: & vana ſa-
lus hominis. 14 In Deo faciemus vir- 14
tutem: & ipſe [e] ad nihilum dedu-
cet inimicos noſtros.

In finem, Pſalmus ipſi David. CVIII. 1

1 Deus, (a) [a] laudẽ meam ne ta- 2
cueris: quia os peccatoris, et os
doloſi ſuper me apertum eſt. 2 Loquuti 3
ſunt adverſùm me linguâ [b] dolo-
ſâ: & [c] ſermonibus odii circunde-
derunt me: et expugnaverũt me gra-
tis. 3 Pro eo, ut diligerent me, detra- 4
hebant mihi: ego autem orabam. 4 Et 5
[d] poſuerunt adverſùm me mala pro
bonis: & odium pro dilectione mea.
5 Conſtitue ſuper eum peccatorem: & 6
diabolꝰ ſtet à dextris ejus: 6 Cùm ju- 7
dicatur, exeat condemnatus: & ora-
tio ejus fiat in peccatum. 7 Fiant dies 8
ejus pauci: & epiſcopatum ejus ac-
cipiat alter. Fiant filii ejus orphani, 9
& uxor ejus vidua. 9 [c] Nutan- 10
tes transferantur filii ejus, & men-
dicent: ejiciantur de (b) [f] parieti-
nis ſuis. 10 (c) [g] Scrutetur fœnera- 11
tor omnem ſubſtantiam ejus: & [h]
diripiant alieni labores ejus. 11 Non 12
ſit illi adjutor: nec ſit qui miſereatur
pupillis ejus. 12 Fiant nati ejus in in- 13
teritum: in generatione una deleatur
nomen ejus: 13 In memoriam redeat 14
iniquitas patrum ejus in conſpectu
Domini; & peccatum matris ejus non
deleatur. 14 Fiant contra Dominum 15
ſemper: & diſpereat de terra memo-
riale eorum: Pro eo, quod non eſt re- 16
cordatus facere [i] miſericordiam:
15 Et perſequutus eſt hominem ino- 17
pem, & mendicum, & [k] compun-
ctum corde mortificare. 16 Et dile- 18
xit maledictionem, & veniet ei: &
noluit benedictionem, & elongabi-
tur ab eo. 17 Et induit maledictionem, ſicut veſtimentum: & intravit, ſicut aqua, in in- 19
teriora ejus, & ſicut oleum in oſſibus ejus. 18 Fiat ei, ſicut veſtimentum, quo operitur: &
ſicut zona, quâ ſemper præcingitur.

Verſio ÆTHIOPICA.

9 ዚአየ:ውእቱ:ገለዓድ:ወዚአየ:ምናሴ::ወ 8
ኤፍሬም:ስዋቀ:ርእስየ::=: ወይሁዳ:ንጉ 9
10 ሥየ::ወሞአብ:ካህን:ተስፋየ::=: ዲበ:ኢ 10
ዶምያስ:እሰፍሕ:ሞከይድየ::ሊተ:ይገን
ዩ:ሊሎፍሊ::=: መኑ:ይወስደኒ:ሀገረ:ጥቅ 11
11 ም::ወመኑ:ይመርሐኒ:እስከ:ኢዶምያ
ስ::=: አኮኑ:አንተ:ዘገደፍከነ:እግዚኦ:: 12
12 ወኢትወፅእ:ምስለ:ኀይልነ::=:
ሀበነ:ረድኤተ:ለምንዳቤነ::ወከንቱ:ተስ 13
13 ፋ:በሰብእ::=: በእግዚአብሔር:ንገብ 14
14 ር:ኀይለ::ወውእቱ:ያኀስሮሙ:ለእለ:ይ
ሣቅዩነ::=:

ፍጻሜ:መዝሙር:ዘዳዊት::

1 ፻፰ እግዚኦ:ኢትጸመመኒ:ስእለትየ::እስ 1
2 መ:አፈ:ኃጥእ:ወአፈ:ጓሕላ:አብቀወ:ላዕ
ሌየ::=: ወነበቡ:ላዕሌየ:በልሳነ:ዐመፃ::ወ 2
3 እገቱኒ:በጽልእ::ወጸብኡኒ:በከንቱ::=: ወ 3
ዘእምአፍቀሩኒ:አስተዋደዩኒ::ወአንሰ:እጼ
ሊ::=: ፈደዩኒ:እኪተ:ህየንተ:ሠናይት::ወ 4
4 ጸልኡኒ:ህየንተ:ዘአፍቀርክዎሙ::=: ሢም: 5
5 ላዕሌሁ:ኃጥአ::ወሰይጣን:ይቁም:በየማ
ኑ::=: ወሶበ:ይትዋቀሥ:ይጻእ:ተመዊ 6
6 ኦ::ወጸሎቱሂ:ትኩን:ጌጋየ::=: ወይኩና: 7
7 መዋዕሊሁ:ኅዳጠ::ወሢመቶሂ:ይንሣእ:በዕ
ድ::=: ወይኩኑ:ደቂቁ:እጓለ:ሙውታ::ወ 8
8 ብእሲትሂ:ትኩን:መበለተ::=: ወይትሀወ 9
ኩ:ደቂቁ:ወይፍልሱ:ወያስተፍእሙ::ወይስ
9 ድድዎሙ:እምአብያቲሆሙ::=: ወይበር 10
10 ብሮ:ባዕለ:እዳ:ኵሎ:ንዋዮ::ወያሐብልዮ:
ነኪር:ኵሎ:ተግባሮ::=: ወኢይርከብ:ዘ 11
11 ይረድኦ::ወኢይምሐርዎሙ:ለእጓለ:ሙው
ታሁ::=: ወይሠረው:ደቂቁ::ወበአሐቲ:ት 12
12 ውልድ:ትደምሰስ:ስሙ::=: ወትዘከር:ኃ 13
13 ጢአተ:አቡሁ:በቅድመ:እግዚአብሔር::
ወኢይደምሰስ:ጌጋይ:ለእሙ::=: ወየሀሉ: 14
14 ቅድመ:እግዚአብሔር:በኵሉ:ጊዜ::ወይጥ
ፋእ:እምድር:ዝክሩ::እስመ:ኢተዘከረ:ይ
ግበር:ምጽዋተ::=: ወሰደደ:ብእሴ:ነዳየ: 15
15 ወምስኪነ::ወጥቡዐ:ልቡ:ለቀቲል::=: ወ 16
16 አብደረ:መርገመ:ወትመጽኦ::ወአበያ:ለበረ
ከት:ወትርሕቅ:እምኔሁ::=: ወለብሳ:ለ 17
17 መርገም:ከመ:ልብስ::ወቦአ:ከመ:ማይ:ው
18 ስተ:አማዑቱ::ወከመ:ቅብእ:ውስተ:አዕጽ
ምቲሁ::=: ወትኩኖ:ከመ:ልብስ:ዘይትዐጸ 18
ፍ::ወከመ:ቅናት:ዘይቀንት:ዘልፈ::=:

MS. A. (β) ποιήσωμεν (γ) θλίβοντας ἡμᾶς. MS. A. ρη΄. (α) Καὶ ἐξερευνησάτω (β) ἐξολέθρευσιν, (γ) ἐξαλειφθήτω (δ) ἐξολεθρευθείη (ε) αὐτοῦ· (ζ) τοῦ ποιῆσαι

INTERP. ÆTHIOP. [c] ſacerdos ſpei meæ: [d] munitam? aut [e] ſpernet eos qui affligunt me. *PSAL.* XCVIII. [a] orationem meam ne [b] iniquâ: & [c] odio circundederunt [d] reddiderunt mihi [e] Et conturbati filii ejus transferantur, & [f] habitationibus ſuis. [g] Diripiat dominus manûs omnem [h] fraudent eum alieni omni negotiatione ejus. [i] eleemoſynas: [k] cujus paratum erat cor

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

9 * لي جلعاد ولي منسا * افرام هو عز راسي * يهودا هو ملكي * مواب انية رجاي * علي ادوم 10
امد حذاي * ان القبايل الغريبة لي خضعت * من يبلغني الي مدينة حصينة * او من 11
يهديني الي الادومية * اليس انت هو الله الذي اقصيتنا ولم تخرج معنا يا الله في قواتنا * اعطنا 12 13
معونة في الشدة * فباطل هو خلاص الانسان * بالهنا نصنع القوة * وهو يرذل اعداءنا * الليلويا 14
* المزمور المايه وثمانيه * وهو * سا * استيخن * 1
اللهم لا تغفل عن تسبحتي * فانه قد انفتح علي فم الخاطي وفم الغاش * ناجوني بلسان 2
غاش * واكتنفوني باقوال بغض * وحاربوني مجانا * بدل ان يحبوني سعوا بي * وانا كنت اصلي * 3 4
* وقرروا علي الشر عوض الخير * والبغض عوض محبتي * اقم عليه خاطيا * وليقف ابليس 5 6
عن يمينه * اذا حوكم يخرج مخصوما * صلاته تخرج خطية * وتصير ايامه قليلة وليأخذ 7 8
رياسته واحد اخر * تصير بنوه ايتاما * وتصير امراته ارملة * وليتحرك بنوه مستقلبين في 9 10
طلب الصدقة * ينفون من مساكنهم * يفتش الغريم كل شي له * تخطف الغرباء جميع كده * 11
* ولا يكون له ناصر * ولا متراف يكون علي ايتامه * ولتستاصل بنوه * وليمح اسمه في جيل واحد * 12 13
* يذكر اثم ابائه قدام الرب * ولا تمحا خطية امه * ويكون امام الرب في كل زمان * ويبيد 14 15
ذكرهم من الارض * حيث انه لم يتذكر ان يصنع رحمة * طرد انسانا فقيرا ضعيفا * وواحدا خاشع 16
القلب ليقتله * احب اللعنة فهي تاتيه * ولم يشا البركة فهي تبتعد عنه * لبس اللعنة كالثوب 17 18
ودخلت في احشايه كالماء * وفي عظامه كالزيت * ويكون له كالثوب اذا لبسه * وكالمنطقة يمتطقها كل زمان * 19

Mihi eſt Galaad, & mihi Manaſſes, E- 9
phraim eſt magnificentia capitis mei, Juda
eſt rex meus, Moab vaſa ſpei meæ, ſuper 10
Edom extendã calceamentũ meũ: ſanè
nationes alienæ mihi ſe ſubjecerunt. Quis 11
perducat me ad urbem munitã? aut quis
dirigat me ad Idumæam? Nonne tu es 12
Deus qui exterminâſti nos, & non egrede-
ris nobiſcũ O Deus, inter virtutes noſtras?
Fer nobis opem in tribulatione, quia vana 13
eſt ſalus hominis. In Deo noſtro faciemus 14
virtutem, & ipſe contemnet inimicos no-
ſtros. Alleluja. PSAL. CVIII.

Verſ. 61. 1

Deus, ne negligas laudationẽ meam:
Nam jam apertum eſt contra me os 2
peccatoris & os doloſi: colloquuti ſunt
mecũ linguâ fraudulentâ. Et circundede- 3
runt me ſermonibus odii, & oppugnave-
runt me gratis. Pro eo quòd me diligerent, 4
detraxerunt mihi dũ ego orarem: Et de- 5
creverunt contra me malũ pro bono, & o-
diũ pro dilectione mea. Præfice illi pecca- 6
torem, ſtetque diabolꝰ à dextera ipſius.
Quum judicabitur exeat reus, & oratio 7
illius evadat peccatũ. Et fiant dies ejus 8
pauci, et occupet principatũ ejus alius. Fi- 9
ant filii ejꝰ orphani, & fiat uxor ejus vi-
dua. Et dimoveantur filii ejꝰ ſatagentes in 10
petenda eleemoſyna, expellantur ex habi-
tationibꝰ ſuis. Diſcutiat creditor quicquid 11
ad illũ pertinet, diripiant alieni cunctum
laborem ipſius. Et non ſit illi adjutor, nec 12
clemens ſit ullus erga pupillos ejus. Et ex- 13
tirpentur filii ejus, & deleatur nomen ejꝰ
in generatione una. Memoretur iniquitas 14
patrũ ejus ante Dominum, neque deleatur
peccatũ matris ejus: Sed ſit corã Domino 15
in omni tempore, & pereat memoria illo-
rum de terra. Eò quòd non ſit recordatus 16
facere miſericordiã, perſequutꝰ ſit homi-
nem pauperẽ imbecillem, & quendã hu-
milem corde ad interficiendũ illũ. Dilexit 17
maledictionẽ, et ipſa adveniet ei: et nolu-
it benedictionẽ, et ipſa recedet ab illo. In- 18
dutꝰ eſt maledictione ut veſtimento, et in-
travit in inteſtina ejꝰ velut aqua, et in oſ-
ſa ipſius ſicut oleũ. Eritque ei ceu veſtis 19
quã induerit illam, & quaſi amictu à-
micietur eâ quocunque tempore.

תהלים : קי קיא

contra malum loquentium &: Domino *cum* à meorū adverſariorum opus Hoc
20 זֹאת פְּעֻלַּת שֹׂטְנַי מֵאֵת יְהוָה וְהַדֹּבְרִים רָע עַל־
: tuum nomen propter mecum fac ,Domine Domine tu Et .meam animam
21 נַפְשִׁי׃ וְאַתָּה יְהוִה אֲדֹנָי עֲשֵׂה־אִתִּי לְמַעַן שְׁמֶךָ
meū cor & : ego egenus & *afflictus* Quia .me erue ,tua miſericordia bona quia
22 כִּי־טוֹב חַסְדְּךָ הַצִּילֵנִי׃ כִּי־עָנִי וְאֶבְיוֹן אָנֹכִי וְלִבִּי
excuſſus ſum : *ambulavi ipſam declinare circa* umbra Sicut .*meo interiori* in eſt *vulneratum*
23 חָלַל בְּקִרְבִּי׃ כְּצֵל כִּנְטוֹתוֹ נֶהֱלָכְתִּי נִנְעַרְתִּי
.pinguedine à macruit mea caro & : jejunio à *labarunt mei Poplites* .locuſta ſicut
24 כָּאַרְבֶּה׃ בִּרְכַּי כָּשְׁלוּ מִצּוֹם וּבְשָׂרִי כָּחַשׁ מִשָּׁמֶן׃
me Adjuva .ſuum caput moverunt me *viderunt* : eis opprobrium fui ego Et
25 וַאֲנִי הָיִיתִי חֶרְפָּה לָהֶם יִרְאוּנִי יְנִיעוּן רֹאשָׁם׃ עָזְרֵנִי
26 quia ſciant Et .tuā miſericordiam ſecundùm me ſerva : meus Deus Domine
27 יְהוָה אֱלֹהָי הוֹשִׁיעֵנִי כְחַסְדֶּךָ׃ וְיֵדְעוּ כִּי־
,benedices tu & , ipſi Maledicent .hoc feciſti Domine tu : hoc tua manus
28 יָדְךָ זֹּאת אַתָּה יְהוָה עֲשִׂיתָהּ׃ יְקַלְלוּ־הֵמָּה וְאַתָּה תְבָרֵךְ
ſe Induent .lætabitur tuus ſervus & ,afficientur pudore & ,inſurrexerunt
29 קָמוּ וַיֵּבֹשׁוּ וְעַבְדְּךָ יִשְׂמָח׃ יִלְבְּשׁוּ
Confitebor .ſuo pudore *pallium* tanquam operientur & : pudorem mei adverſarii
30 שׂוֹטְנַי כְּלִמָּה וְיַעֲטוּ כַמְעִיל בָּשְׁתָּם׃ אוֹדֶה
Quoniam .eum laudabo multorum medio in & : meo ore in valde Domino
31 יְהוָה מְאֹד בְּפִי וּבְתוֹךְ רַבִּים אֲהַלְלֶנּוּ׃ כִּי־
.ejus animæ judicibus à *ſalvandum ad* : *egeni* dexteram ad ſtabit
יַעֲמֹד לִימִין אֶבְיוֹן לְהוֹשִׁיעַ מִשֹּׁפְטֵי נַפְשׁוֹ׃

PSAL. CX. קי

donec : meā dexteram ad ſede ,meo domino Dominus Dixit .cantus Davidis
לְדָוִד מִזְמוֹר נְאֻם יְהוָה לַאדֹנִי שֵׁב לִימִינִי עַד
mittet tuæ fortitudinis Virgam .tuis pedibus ſcabellum tuos inimicos ponam
2 אָשִׁית אֹיְבֶיךָ הֲדֹם לְרַגְלֶיךָ׃ מַטֵּה עֻזְּךָ יִשְׁלַח
tuus Populus .tuorū inimicorum *interiori* in dominare : Sijon ex Dominus
3 יְהוָה מִצִּיּוֹן רְדֵה בְּקֶרֶב אֹיְבֶיךָ׃ עַמְּךָ
tibi : aurora ab *vulva à* ,ſanctitatis *decoribus* in tuæ fortitudinis die in *devotionum*
נְדָבֹת בְּיוֹם חֵילֶךָ בְּהַדְרֵי־קֹדֶשׁ מֵרֶחֶם מִשְׁחָר לְךָ
ſacerdos tu , pœnitebit non & ,Dominus Juravit .tuæ nativitatis ros
4 טַל יַלְדֻתֶיךָ׃ נִשְׁבַּע יְהוָה וְלֹא יִנָּחֵם אַתָּה־כֹהֵן
: tuam dexteram ad Dominus .Sedech-Malchi *meum verbum ſuper* : ſeculum in
5 לְעוֹלָם עַל־דִּבְרָתִי מַלְכִּי־צֶדֶק׃ אֲדֹנָי עַל־יְמִינְךָ
: *corporibus* implevit ,gentibus in Judicavit .reges ſui *naſi* die in transfixit
6 מָחַץ בְּיוֹם־אַפּוֹ מְלָכִים׃ יָדִין בַּגּוֹיִם מָלֵא גְוִיּוֹת
propterea : bibet via in torrente De .multam terram ſuper caput transfixit
7 מָחַץ רֹאשׁ עַל־אֶרֶץ רַבָּה׃ מִנַּחַל בַּדֶּרֶךְ יִשְׁתֶּה עַל־כֵּן
.caput exaltabit
יָרִים רֹאשׁ׃

PSAL. CXI. קיא

.cœtu & ,rectorum ſecreto in : corde toto *in* Domino Confitebor .Jah-Hallelu
הַלְלוּ יָהּ אוֹדֶה יְהוָה בְּכָל־לֵבָב בְּסוֹד יְשָׁרִים וְעֵדָה׃ 1

תרגום TARGUM.

20 דָּא עוּבָדָא דְשָׂטְנַי מִן יְיָ וּדְמַלְלִין בִּישְׁתָּא עַל
21 נַפְשִׁי׃ וְאַתְּ אֱלֹהִים יְיָ עֲבֵד עִמִּי מִן בְּגְלַל שְׁמָךְ
22 הֵיךְ טוּבָךְ וְחִסְדָּךְ פְּצֵי יָתִי׃ אֲרוּם עַנְיָא וְחַשִּׁיכָא
23 אֲנָא וְלִבִּי שְׁפֵי בְּגַוִּי׃ הֵיךְ טוּלָא בְּצַלְיוּתֵיהּ
24 אִתְנַמְרֵית אִטַּלְטְלֵית הֵיךְ גּוּבָאי׃ רְכוּבַי אִתְקַלוּ
25 מִצּוֹמָא וּבִסְרִי פַּתְרַן מִלְּהֱוֵי פַּטִּים׃ וַאֲנָא הֲוֵיתִי
26 קְלָנָא לְהוֹן יֶחֱמוּן יָתִי יְטַלְטְלוּן רֵישֵׁיהוֹן׃ סְעוֹד
27 לִי יְיָ אֱלָהִי פְּרוֹק יָתִי הֵיךְ חִסְדָּךְ׃ וְיִדְעוּן אֲרוּם
28 מַחְתָךְ דָּא אַנְתְּ יְיָ עֲבַדְתָּהּ׃ יְלַטְטוּן הִנּוּן וְאַתְּ
29 תְּבָרֵךְ יְקוּמוּן וְיִבַּהֲתוּן וְעַבְדָּךְ יֶחְדֵי׃ יִלְבְּשׁוּן
30 סָטְנַי כְּסוּפָא וְיִעַטְּפוּן הֵיךְ מְעִילָא בַּהֲתְהוֹן׃ אוֹדֵי
יְיָ לַחֲדָא בְּפוּמִי וּבִמְצַע חַכִּימַיָּא אֲשַׁבְּחִנֵּיהּ׃
31 אֲרוּם יְקוּם מִן יְמִינָא דַּחֲשִׁיכָא לְמִפְרַק מִמַּדִּינֵי
נַפְשֵׁיהּ׃

קי

1 עַל יַד דָּוִד תּוּשְׁבַּחְתָּא אֲמַר יְיָ בְּמֵימְרֵיהּ לְשַׁוָּאָה
יָתִי רִבּוֹן עַל כָּל יִשְׂרָאֵל בְּרַם אֲמַר לִי תוּב וְאוֹרֵךְ
לְשָׁאוּל דְּמִן שִׁבְטָא דְבִנְיָמִן עַד דִּימוּת אֲרוּם לֵית
מַלְכוּתָא מִקַּרְבָא אַחֲבַרְתָּהּ וּבָתַר כֵּן אֲשַׁוֵּי בַּעֲלֵי
דְבָבָךְ כְּבִישׁ לְרִגְלָךְ׃ [תּ״א] אָמַר יְיָ בְּמֵימְרֵיהּ
לְמִתַּן לִי רַבְּנוּתָא חֲלַף דְּיָתְבֵית לְאוּלְפַן אוֹרַיְתָא
דִּימִינֵיהּ אוֹרֵךְ עַד דַּאֲשַׁוֵּי בְּעֵל דְּבָבָךְ כְּבִישׁ
2 לְרִגְלָךְ׃ חוּטְרָא דְעוּשְׁנָךְ יְשַׁדַּר יְיָ מִצִּיוֹן וְתִהֵי
3 רָדֵי בִּמְצַע בַּעֲלֵי דְבָבָךְ׃ עַמָּךְ דְּבֵית יִשְׂרָאֵל
דְּמִתְנַדְּבִין לְאוֹרַיְתָא בְּיוֹם אַגָּחוּתָא קְרָבָא
תִּסְתַּיַּע עִמְּהוֹן בְּשִׁבְהוֹרֵי קוּדְשָׁא רַחֲמִין דֶּאֱלָהָא
יִסְתַּרְהֲבוּן לָךְ הֵיךְ נַחֲתַת טַלָּא יֵתְבוּן לְרוּחְצָן
4 תּוֹלְדָתָךְ׃ קַיֵּם יְיָ וְלָא יְתוּב דְּאַנְתְּ מִתְמַנֵּי לְרַבָּא
לְעָלְמָא דְאָתֵי בְּגִין זְכוּתָא דַּהֲוֵיתָא מֶלֶךְ זַכַּי׃
5 שְׁכִנְתָּא דַיְיָ עַל יְמִינָךְ מְחָא בְּיוֹם רוּגְזֵיהּ מַלְכַיָּא׃
6 אִתְמַנָּא לְדַיָּן עַל עַמְמַיָּא מְלֵי אַרְעָא נוּשְׁמֵי
רַשִּׁיעִין קְטִילִין מְחָא רֵישֵׁי מַלְכַיָּא עַל אַרְעָא
7 סַגִּיעִין לַחֲדָא׃ מִפּוּם נְבִיָּא בְּאוֹרְחָא אוּלְפַן יְקַבֵּל
מְטוּל הֵיכְנָא יְזַקֵּף רֵישָׁא׃

קיא

1 הַלְלוּיָהּ אֲשַׁבַּח קֳדָם יְיָ בְּכָל לִבָּא בְּרָזְהוֹן
דְּתְרִיצַיָּא וּכְנִשְׁתָּא׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Hoc eſt opus adverſantium mihi, à Dño, & 20 eorum qui locuti ſunt malum adverſus animam meam. Tu verò Deus Dñe age mecum 21 propter nomen tuum: juxta benignitatem & miſericordiam tuam libera me. Quoniā ege- 22 nus & pauper ego, & cor meum contritū eſt intra me. Sicut umbra cùm declinat, conſum- 23 ptus ſum; vagatus ſum ſicut locuſta. Genua 24 mea collapſa ſunt præ jejunio, & caro mea macilenta eſt abſque pinguedine. Et ego fui 25 opprobriū eis; viderunt me, et moverunt capita ſua. Adjuva me Dñe Deus meus, ſalva 26 me ſecundùm miſericordiam tuā. Et ſciant 27 quia percuſſio tua hæc eſt; tu Dñe feciſti eā. Maledicent illi, & tu benedices; inſurgent & 28 confundentur; ſervus autē tuus lætabitur. In- 29 duantur oſores mei pudore, & cooperiantur ſicut chlamyde confuſione ſua. Confitebor 30 Dño multū in ore meo, & in medio ſapientū laudabo eū. Quoniā ſtabit ad dexterā paupe- 31 ris, ut redimat à judicibus animam *ejus*.

Per manum Davidis canticum. 1

PSAL. CX.

DIxit Dñs in verbo ſuo, ſe *conſtituturum me dominum totius Iſraelis: ſed dixit mihi denuò, Opperire verò Saulem, qui eſt de tribu Benjamin, donec moriatur, quia non convenit regno cum ſocio; & poſteà* ponam inimicos tuos ſuppedaneum pedum tuorum. *Targum aliud*: Dixit Dñs in verbo ſuo, ſe daturum mihi dominationē, eò quòd incubuerim doctrinæ Legis dexteræ ejus: Expecta donec ponam *inimicum tuum* ſuppedaneum pedum tuorū. Virgam fortitudinis tuæ mit- 2 tet *Dominus* de Sion, & dominaberis in medio inimicorum tuorū. Populus tuus domus 3 Iſrael qui lubenter incumbunt Legi, in die quo præliū commiſeris, adjuvaberis cum eis; in ſplendorib' ſanctitatis miſericordiæ Dei ad te properabunt tanquam deſcenſio roris, ſedebunt confidenter proſapiæ tuæ. Juravit 4 Dominus *nec pœnitebit eum, te* præfectum iri magnum [*Sacerdotem*] in mundo futuro, pro merito quòd *fueris* rex immaculatus. Majeſtas Dñi ad dexteram tuam percuſſit in 5 die iræ ſuæ reges. Conſtitutus eſt judex ſuper 6 populos: implevit terram cadaveribus impiorum qui interfecti fuerunt: percuſſit capita regum ſuper terra multorum admodum. Ab 7 ore prophetæ in via doctrinam accipiet: propterea exaltabit caput.

Hallelujah. PSAL. CXI. 1

LAudabo coram Domino in toto corde, in ſecreto rectorum & congregatione.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܗܢܘ ܥܘܒܕܐ ܕܐܝܠܝܢ ܕܣܛܢܝܢ ܠܡܪܝܐ. ܘܕܡܡܠܠܝܢ ܒܝܫܬܐ ܥܠ ܢܦܫܝ: 20
* ܘܐܢܬ ܡܪܝܐ ܥܒܕ ܥܡܝ ܡܛܠ ܫܡܟ. ܡܛܠ ܕܛܒܐ ܗܝ ܛܝܒܘܬܟ ܦܨܝܢܝ: * ܡܛܠ 21
22 ܕܡܣܟܢܐ ܐܢܐ ܘܒܨܝܪܐ. ܘܠܒܝ ܐܬܕܠܚ ܒܓܘܝ: * ܘܐܝܟ ܛܠܠܐ ܐܬܪܟܢܘ ܗܠܟܝ ܘܐܬܢܦܨܬ 23
24 ܐܝܟ ܩܡܨܐ: * ܘܒܘܪܟܝ ܐܬܛܪܦܝ ܡܢ ܨܘܡܐ. ܘܒܣܪܝ ܚܣܪ ܡܢ ܡܫܚܐ: * ܘܐܢܐ
25 ܗܘܝܬ ܠܗܘܢ ܠܚܣܕܐ. ܚܙܘܢܝ ܘܢܕܘ ܪܝܫܝܗܘܢ: * ܥܕܪܢܝ ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ ܘܦܪܘܩܝܢܝ 26
27 ܐܝܟ ܛܝܒܘܬܟ. * ܕܢܕܥܘܢ ܕܐܝܕܟ ܗܝ ܗܕܐ ܘܐܢܬ ܥܒܕܬܗ: * ܢܠܘܛܘܢ ܗܢܘܢ. ܘܐܢܬ ܒܪܟ
28 ܘܥܒܕܟ ܢܚܕܐ: * ܢܠܒܫܘܢ ܒܗܬܬܐ ܐܝܠܝܢ ܕܣܛܢܝܢ ܗܘܘ ܠܝ. ܘܢܬܥܛܦܘܢܗ 29
30 ܐܝܟ ܡܥܛܦܐ: * ܐܘܕܐ ܠܡܪܝܐ ܒܦܘܡܝ. ܘܒܝܢܝ ܣܓܝܐܐ ܐܫܒܚܝܘܗܝ: * ܡܛܠ ܕܩܡ ܡܢ
ܝܡܝܢܗ ܕܡܣܟܢܐ. ܠܡܦܪܩܘ ܢܦܫܗ ܡܢ ܕܝܢܐ. * ܫܘܠܡ ܡܙܡܘܪܐ *

* ܕܕܘܝܕ. ܥܠ ܡܘܬܒܗ ܕܡܪܝܐ ܘܥܠ ܚܝܠܗ ܡܫܒܚܐ. ܘܥܠ ܡܫܝܚܐ ܘܙܟܘܬܗ 1
ܕܥܠ ܒܥܠܕܒܒܐ. ܦܬܓܡܐ ܝܗ. * ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܡܪܝ ܬܒ ܠܟ ܡܢ ܝܡܝܢܝ. ܥܕܡܐ ܕܐܣܝܡ
2 ܒܥܠܕܒܒܝܟ ܟܘܒܫܐ ܠܪܓܠܝܟ: * ܫܒܛܐ ܕܥܘܫܢܐ ܢܫܕܪ ܠܟ ܡܪܝܐ ܡܢ ܨܗܝܘܢ. ܘܬܫܬܠܛ
3 ܒܒܥܠܕܒܒܝܟ: * ܥܡܟ ܫܒܝܚܐ ܒܝܘܡܐ ܕܚܝܠܟ. ܒܫܘܒܗܪܐ ܕܩܘܕܫܐ ܡܢ ܟܪܣܐ
4 ܡܢ ܩܕܝܡ ܝܠܕܬܟ: * ܝܡܐ ܡܪܝܐ ܘܠܐ ܢܕܓܠ. * ܕܐܢܬ ܗܘ ܟܘܡܪܐ
5 ܠܥܠܡ ܒܕܡܘܬܗ ܕܡܠܟܝܙܕܩ. * ܡܪܝܐ ܥܠ ܝܡܝܢܟ. ܬܒܪ ܒܝܘܡܐ ܕܪܘܓܙܗ ܡܠܟܐ
6 * ܢܕܘܢ ܠܥܡܡܐ ܘܢܡܠܐ ܫܠܕܐ. ܘܢܦܣܘܩ ܪܫܐ ܣܓܝܐܐ ܒܐܪܥܐ: * ܡܢ ܢܚܠܐ ܒܐܘܪܚܐ 7
ܢܫܬܐ: ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܬܪܝܡ ܪܝܫܗ. * ܫܘܠܡ ܡܙܡܘܪܐ *

* ܠܐ ܡܬܝܕܥ. ܥܠ ܚܝܠܐ ܡܫܒܚܐ ܕܥܒܕܘܗܝ ܕܐܠܗܐ. ܟܕ ܡܦܝܣ ܠܢ ܕܢܘܕܐ ܠ 1
ܡܫܝܚܐ. ܘܡܢ ܦܪܨܘܦܐ ܕܫܠܝܚܐ ܡܬܐܡܪ. ܦܬܓܡܐ ܟܐ.
ܐܘܕܐ ܠܡܪܝܐ ܡܢ ܟܠܗ ܠܒܝ. ܒܡܠܟܐ ܕܬܪܝܨܐ ܘܒܟܢܘܫܬܐ:

Iſte eſt eventus eorum qui adverſantur Domino, & eorum qui loquuntur malum adverſùs animā meā. Verùm tu Domine, age me- 20 cum propter nomen tuū: quia optima eſt be- 21 nignitas tua, libera me. Nam pauper ſum & 22 inops, & cor meum exagitatū eſt intra me: Et velut umbra declinaverunt greſſus mei, & 23 excuſſus ſum ut locuſta: Genuaque mea infir- 24 mata ſunt præ jejunio, & caro mea macuit præ oleo: Et ego factus ſum illis in opprobri- 25 um, inſpexerunt me, dimoveruntq; capita ſua. Præſto ſis mihi Domine, & ſerva me ſecun- 26 dùm bonitatem tuam: Ut cognoſcant manū 27 tuam eſſe hanc, téque id feciſſe. Maledicantur 28 ipſi, tu autem benedicaris, & ſervus tuus ex- 29 hilaretur. Induant confuſionem ii qui adverſabantur mihi, eâque amiciantur ut pallio. Confitebor Domino ore meo, & inter 30 multos laudabo eum: Quia ſtetit à dextera 31 inopis ad eripiendam animam ejus è judicio.

PSAL. CX.

Davidis. De ſolio Domini, deque virtute ejus glorioſa. Et Prophetia de Chriſto, atque victoria contra hoſtem. Verſ. 15. 1

DIxit Dominus Domino meo, Sede à dextera mea, donec ponam inimicos tuos ſcabellum tuis pedibus. Sceptrum fortitudi- 2 nis mitttet tibi Dñs è Sion, & dominabitur in hoſtes tuos Populus tuus laudabilis in die 3 roboris. Cum nitoribus ſanctitatis ex utero ab antiquo te filium genui. Juravit Domin', 4 & non mentietur, quòd tu es Pontifex in æternum ſicut Melchizedec. Dominus eſt ſu- 5 per dextera tua: fregit in die iræ ſuæ reges. Judicabit populos, & implebit cadavera, 6 præcidetq; caput multorū in terra. Et de tor- 7 rēte in via bibet, idcircò attolletur caput ej'.

PSAL. CXI.

Anonymus. De virtutibus glorioſis operum Dei. Nos autem hortatur ut reddamus gratias Chriſto: & ex perſona Apoſtolorum refertur. Verſ. 21. 1

COnfitebor Domino ex toto corde meo, in conſilio rectorum, in cœtu.

Versio VULG. LAT.

20 Hoc opus eorum, qui detrahunt mihi
apud Dominum: & qui loquuntur ma-
21 la adversùs animam meam. Et tu, Do-
mine, Domine, fac mecum propter
nomen tuum: quia suavis est miseri-
22 cordia tua. Libera me, Quia egenus
& pauper ego sum: & cor meum con-
23 turbatum est intra me. Sicut umbra
cùm declinat, ablatus sum: & excus-
24 sus sum sicut locustæ. Genua mea in-
firmata sunt à jejunio: & caro mea
25 immutata est propter oleum. Et ego
factus sum opprobriū illis: viderunt
26 me, & moverunt capita sua. Adjuva
me, Domine Deus meus: salvum me
fac secundùm misericordiam tuam.
27 Et sciant quia manus tua hæc: & tu,
28 Domine, fecisti eam. Maledicent illi,
& tu benedices: qui insurgunt in me,
confundantur: servus autem tuus læ-
29 tabitur. Induantur qui detrahunt mi-
hi, pudore: & operiantur sicut di-
30 ploide confusione suâ. Confitebor
Domino nimis in ore meo: & in me-
31 dio multorum laudabo eum. Quia
astitit à dextris pauperis, ut salvā fa-
ceret à persequentibus animā meam.

Psalmus David. CIX.

1 Dixit Dominus Domino meo, Sede
à dextris meis: Donec ponam ini-
2 micos tuos, scabellū pedū tuorū. Vir-
gam virtutis tuæ emittet Dominus ex
Sion: dominare in medio inimicorum
3 tuorum. Tecum principium in die vir-
tutis tuæ in splendoribus sanctorum:
4 ex utero ante Luciferum genui te. Ju-
ravit Dominus, & non pœnitebit
eum; Tu es sacerdos in æternum se-
5 cundùm ordinem Melchisedech. Do-
minus à dextris tuis, confregit in die
6 iræ suæ reges. Judicabit in nationibus,
implebit ruinas: conquassabit capita
7 in terra multorum. De torrente in
via bibet: propterea exaltabit caput.

Alleluja. CX.

1 Confitebor tibi, Domine, in toto
corde meo; in consilio justorum,
& congregatione.

Vers. GRÆCA LXX. Interp.

20 † Τοῦτο τὸ ἔργον τῶν ἐνδιαβαλλόντων με (η) παρὰ κυ-
ρίου, † καὶ τῶν λαλούντων πονηρὰ κατὰ τῆς ψυχῆς μου.
21 † Καὶ σὺ κύριε κύριε ποίησον μετ' ἐμοῦ (θ) ἕνεκεν
22 τοῦ ὀνόματός σου, † ὅτι χρηστὸν τὸ ἔλεός σου. † Ῥῦσαί
με ὅτι πτωχὸς καὶ πένης εἰμὶ ἐγώ, † καὶ ἡ καρδία μου
23 τετάρακται ἐντός μου. † Ὡσεὶ σκιὰ ἐν τῷ ἐκκλῖναι
αὐτὴν (ι) ἀντανῃρέθην, † ἐξετινάχθην ὡσεὶ ἀκρί-
24 δες. † Τὰ γόνατά μου ἠσθένησαν ἀπὸ νηστείας, † καὶ ἡ σάρξ
25 μου ἠλλοιώθη δι' ἔλαιον. † (κ) Κἀγὼ ἐγενήθην ὄ-
νειδος αὐτοῖς· † εἴδοσάν με, ἐσάλευσαν κεφαλὰς αὐ-
26 τῶν. † Βοήθησόν μοι κύριε ὁ θεός μου, † καὶ σῶσόν
27 με κατὰ τὸ ἔλεός σου. † Καὶ γνώτωσαν ὅτι ἡ χείρ σου
28 αὕτη, † καὶ σὺ κύριε ἐποίησας αὐτήν. † Καταράσον-
ται αὐτοί, καὶ σὺ εὐλογήσεις· † οἱ (λ) ἐπανιστάμενοί
μοι αἰσχυνθήτωσαν, † ὁ δὲ δοῦλός σου εὐφρανθήσεται.
29 † Ἐνδυσάσθωσαν οἱ ἐνδιαβάλλοντές με, ἐντροπήν· † καὶ
30 περιβαλέσθωσαν ὡς διπλοΐδα, αἰσχύνην αὐτῶν. † Ἐξ-
ομολογήσομαι τῷ κυρίῳ σφόδρα ἐν τῷ στόματί
31 μου, † καὶ ἐν μέσῳ πολλῶν αἰνέσω αὐτόν· † Ὅτι παρ-
έστη ἐκ δεξιῶν πένητος, † τοῦ σῶσαι ἐκ τῶν κατα-
διωκόντων τὴν ψυχήν μου.

MS. A. (η) παρὰ κυρίῳ, (θ) ἔλεος ἕνεκεν (ι) ἀνταναιρέθην, (κ) Καὶ ἐγὼ (λ) ἐπανιστανόμενοί

(α) Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. ρθʹ.

1 † Εἶπεν ὁ κύριος τῷ κυρίῳ μου, Κάθου ἐκ δε-
ξιῶν μου, † ἕως ἂν θῶ τοὺς ἐχθρούς σου ὑποπόδιον
2 τῶν ποδῶν σου. † Ῥάβδον δυνάμεως (β) ἐξαποστε-
λεῖ σοι κύριος ἐκ Σιών, † κατακυρίευε ἐν μέσῳ
3 τῶν ἐχθρῶν σου. † Μετὰ σοῦ ἡ ἀρχὴ ἐν ἡμέρᾳ τῆς
δυνάμεώς σου, † ἐν ταῖς λαμπρότησι τῶν ἁγίων σου·
4 † ἐκ γαστρὸς πρὸ Ἑωσφόρου ἐγέννησά σε. † Ὤμο-
σε κύριος καὶ οὐ μεταμεληθήσεται, † Σὺ ἱερεὺς εἰς τὸν
5 αἰῶνα, † κατὰ τὴν τάξιν Μελχισεδέκ. † Κύριος ἐκ
δεξιῶν σου συνέθλασεν ἐν ἡμέρᾳ ὀργῆς αὐτοῦ βα-
6 σιλεῖς. † Κρινεῖ ἐν τοῖς ἔθνεσι, πληρώσει πτώματα,
7 † συνθλάσει κεφαλὰς ἐπὶ γῆς πολλῶν. † Ἐκ χει-
μάρρου ἐν ὁδῷ (γ) πίεται, † διὰ τοῦτο ὑψώσει κεφα-
λήν.

MS. A. (α) Τῷ Δαυὶδ ψαλμός. (β) ἐξαπο-
στελεῖ κύριος ἐκ Σιών, καὶ κατακυρίευε (γ) πίεται
ὕδωρ, διὰ τοῦτο

Ἀλληλούϊα. ριʹ.

1 † Ἐξομολογήσομαί σοι κύριε ἐν ὅλῃ καρδίᾳ
μου, † ἐν βουλῇ εὐθέων καὶ συναγωγῇ.

Vers. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Transl. LAT.

19 Hoc opus eorum, qui (d) detra- 20
hunt mihi apud Dominum, & qui
loquuntur mala adversùs animam
meam. 20 Et tu, Domine, [l] Domi- 21
mine, fac mecum propter nomen tu-
um; quia suavis est misericordia
tua. 21 Libera me, quia egenus & 22
pauper sum ego: & cor meum con-
turbatū est intra me. 22 [m] Sicut 23
umbra, cū declinat, ablatus sum: ex-
cussus sum sicut locustæ. 23 Genua 24
mea infirmata sunt à jejunio: (e) &
caro mea immutata est propter [n]
oleum. 24 Et ego factus sum oppro- 25
brium illis: viderunt me, moverūt
capita sua. 25 Adjuva me, Domine 26
Deus meus: & salvum me fac se-
cundùm misericordiā tuam. 26 Et 27
sciant, quia manus tua hæc: & tu,
Domine, fecisti eam. 27 Maledicent 28
illi, & tu benedices: qui insurgunt
adversùs me, confundantur: ser-
vus autem tuus lætabitur. 28 In- 29
duantur, qui detrahunt mihi, pudo-
re: & operiantur, sicut diploide,
[o] cōfusione suâ. 29 Confitebor Do- 30
mino (f) nimis in ore meo: & in
medio multorum laudabo eum. 30
Quia astitit à dextris pauperis, ut salvam faceret (g) à persequentibus animam meam. 31

Psalmus ipsi David. CIX. 1

1 Dixit Dominus Domino meo;
Sede à dextris meis: 2 donec ponam
inimicos tuos scabellū pedū tuorū.
3 Virgam virtutis tuæ (a) emittet 2
tibi Dominus ex Siō: (b) [a] dominare
in medio inimicorum tuorū. 4 Te- 3
cum principium in die [b] virtutis
tuæ, in (c) splendoribus sanctorum
tuorum: (d) ex utero ante Lucife-
rum genui te. 5 Juravit Dominus, & 4
non pœnitebit eū, Tu es sacerdos [†]
in æternum secundùm ordinē Mel-
chisedech. 6 Dominus à dextris 5
tuis: confregit in die iræ suæ reges.
7 Judicabit in gentibus, [c] im- 6
plebit ruinas: conquassabit capita
(e) [d] super terram multorum. 8 De 7
torrente in via bibit: propterea ex-
altabit caput.

Alleluja. CX.

Confitebor tibi, Domine, in toto 1
corde (a) meo; in consilio justorum,
& congregatione.

Versio ÆTHIOPICA.

20 ዝግብር፡ለእለ፡ ያስተዋድዩኒ፡ ኀበ፡ እግዚአ 19
ብሔር፡፡ ወለእለ፡ ይነቡ፡ እኩየ፡ ላዕለ፡ነፍ
21 ስየ፨ ወአንተሰ፡እግዚኦ፡ እግዚእየ፡ግበ 20
ር፡ ሣህለከ፡ ላዕሌየ፡ በእንተ፡ ስምከ፡፡እስ
መ፡ሠናይ፡ ምሕረትከ፨ አድኅነኒ፡እስ 21
22 መ፡ ነዳይ፡ ወምስኪን፡ አነ፡፡ልብየኒ፡ ደንገፀ
ኒ፡በውስጥየ፨ ወኀለቁ፡ከመ፡ ጽላሎት፡ 22
23 ዘኃለፈ፡፡ወተነገፍኩ፡ከመ፡አንበጣ፨ ወ 23
24 ደክማ፡ ብረክየ፡ በጾም፡፡ወስሕከ፡ ሥጋየ፡
በኀጢአ፡ ቅብዕ፨ ወአነሰ፡ ተፀአልኩ፡ 24
በኀቤሆሙ፡፡ሶበ፡ ይሬእዩኒ፡ የሐውሱ፡ ርእሶ
25 ሙ፨ ርድአኒ፡ እግዚኦ፡ አምላኪየ፡፡ወ 25
አድኅነኒ፡ በእንተ፡ ምሕረትከ፨ ወያእ 26
26 ምሩ፡ ከመ፡ እዴከ፡ ይእቲ፡ ዘቲ፡፡ወአንተ፡
እግዚኦ፡ ገበርከ፨ ወእሙንቱሰ፡ ይረግ 27
27 ሙኒ፡ወአንተ፡ባርክ፡፡ይትኃፈሩ፡ እለ፡ ይትነ
28 ሥኡ፡ላዕሌየ፡፡ወገብርከሰ፡ይትፌሣሕ፨
ለይልበሱ፡ ኀፍረተ፡ እለ፡ ያስተዋድዩኒ፡፡ወይ 28
ትአጸፍዋ፡ከመ፡ አጽፍ፡ ለኃጢአቶሙ፨
29 እገኒ፡ በአፉየ፡ ለእግዚአብሔር፡ ፈድፋደ፡፡ 29
ወእሴብሖ፡በማእከለ፡ብዙኃን፨ እስመ፡ 30
30 ቆመ፡ በየማነ፡ ነዳይ፡፡ከመ፡ ያድኅና፡ ለነፍ
ስየ፡እምእለ፡ሮድዋ፨

31

መዝሙር፡ዘዳዊት፡፡

1 ፻፱ ይቤሎ፡እግዚኦ፡ለእግዚእየ፡ ነበር፡ በየ 1
ማንየ፨ እስከ፡እገብኦሙ፡ለጸላእትከ፡ 2
ታሕተ፡ መከየደ፡ እገሪከ፨ በትረ፡ ኃይ 3
2 ል፡ይፌኑ፡ እግዚአብሔር፡ እምጽዮን፡፡ወኰ
3 ንን፡በማእከለ፡ ጸላእትከ፨ ምስሌከ፡ቀ 4
ደማዊ፡ በዕለተ፡ ኃይል፡፡በብርሃኖሙ፡ ለቅዱ
ሳን፡፡ወለድኩከ፡ እምከርሠ፡ እምቅድመ፡
ኮከበ፡ ጽባሕ፨ መሐለ፡ እግዚአብሔ 5
4 ር፡ ወኢይኔስሕ፨ አንተ፡ ካህኑ፡ ለዓለ
ም፡በከመ፡ሢመቱ፡ለመልከ፡ ጼዴቅ፨ እ 6
5 ግዚአብሔር፡ በየማንከ፡፡ይቀጠቅጦሙ፡ ለ
ነገሥት፡በዕለተ፡መዐቱ፨ ወይኴንኖሙ፡ 7
6 ለአሕዛብ፡ ወያበዝኅ፡ አብድንተ፡፡ወይሰብ
ር፡ አርእስተ፡ ብዙኃን፡ በዲበ፡ ምድር፨
7 እምውኂዝ፡ሰትዩ፡ ማየ፡ በፍኖት፡፡ወበእንተ 8
ዝ፡ይትሌዐል፡ርእሱ፨

ሃሌሉያ፡፡

፻፲ እገኒ፡ለከ፡ እግዚኦ፡ በኵሉ፡ ልብየ፡፡በ 1
1 ምክረ፡ ራትዓን፡ወበማኅበር፡

INTERP. ÆTHIOP. [l] Domine mi, exhibe misericordiam tuam in me, propter [m] Deficio ipse sicut umbra quæ transit: [n] defectum olei. [o] peccatis suis. *PSAL. CIX.* [a] judicato in [b] virtutis, in splendoribus sanctorum: ex [†] ejus in [c] multiplicabuntur cadavera: [d] multa super terram. De

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

20 21 * هذا هو عمل الذين يسعون بي عند الرب * والمتكلمين بالشر على نفسي * وانت يا ربي والاهي
22 فاصنع معي رحمة من اجل اسمك * فان رحمتك يا رب هي سابغة * خلصني 22 فاني انا فقير
23 24 ضعيف * وقد جزع قلبي في باطني * انحيت مثل الظل اذا مال * انتفضت مثل الجراد * وضعفتا
25 ركبتاي من الصوم * وتغير جسدي من عدم الدهن * صرت انا لهم معيرا * راوني حركوا
26 27 روسهم * اعني يا ربي والاهي * وخلصني بقدرتك ورحمتك * وليعلموا ان هذه هي يدك *
28 29 وانت يا رب صنعتها * هم يلعنون وانت تبارك * وليخز القايمون علي * وعبدك يفرح * وليلبس
30 الذين يثلبونني العار * وليشتملوا بالخزي مثل الجبة * اشكرك يا رب جدا بفمي * اسبحك
31 في وسط كثيرين * لانه وقف عن يمين الفقير * لكي يخلص نفسي من الطاردين لي * الليلويا *

1 * المزمور التسع والماية * وهو * يط * استيخن *

2 قال الرب لربي * اجلس عن يميني * حتى اضع اعداءك تحت موطي قدميك * يرسل لك الرب
3 من صهيون قضيب القوة * وتسلط وسط اعدايك * الرياسة كاينة معك في يوم قوتك * في
4 نور القديسين من البطن قبل كوكب الصبح ولدتك * حلف الرب ولن يندم * انك انت
5 6 هو الكاهن الى الابد كشبه طقس ملكيساداق * الرب عن يمينك حطم ملوكا في يوم غضبه *
7 8 * يحكم في الامم * ويملاهم جثثا * ويرض راس كثيرين علي الارض * يشرب الماء في الطريق من
الوادي * لاجل هذا يرفع راسا * الليلويا *

1 * المزمور العشر والماية * الليلويا * كا * استيخن *

اشكرك يا رب من كل قلبي في مشورة المستقيمين وجمعهم *

Hoc fiet his qui detrahunt mihi, apud Do- 20
minum: & loquentibus malum de ani-
ma mea. Et tu O Domine mi & Deus 21
meus, utere mecū misericordiâ propter
nomen tuum, quandoquidem misericordia
tua O Domine, copiosissima est. Libera me,
Quia ego pauper sum debilis, & jam tre- 22
pidavit cor meū in meis intestinis. Deletus 23
sum velut umbra quum declinaverit, ex-
cussus sum ut locustæ. Et infirmata sunt 24
genua mea præ jejunio, & immutatum est
corpus meū ob defectum unguenti. Factus 25
sum ego illis opprobriū: viderunt me &
moverunt capita sua. Adjuva me O Do- 26
mine mi, & Deus meus, & salva me po-
tentiâ tuâ & misericordiâ tuâ. Et sciant 27
hanc esse manum tuam, teque O Domine
id egisse. Ipsi maledicunt, at tu bene- 28
dices: & confundantur insurgentes in
me, & servus tuus lætabitur. Et induan- 29
tur qui me vituperant, ignominiâ: &
amiciantur pudore ut thorace. Gratias 30
agam tibi O Domine maximas ore meo,
laudabo te in medio multorū. Quoniam 31
stetit à dextera pauperis ut salvaret ani-
mā meā à persequentibus me. Alleluja.

PSAL. CIX.
Vers. 14.

Dixit Dominus Domino meo; Sede ad 1
dexteram meam, donec ponam ini-
micos tuos sub scabello pedum tuorum.
Mittet tibi Dominus de Sion baculum 2
fortitudinis, & dominaberis in medio ini-
micorum tuorum. Principatus extat tecū 3
in die roboris tui: in lumine sanctorum
ex utero ante stellam matutinam genui te.
Juravit Dominus, & haudquaquam 4
pœnitebit eum; Tu es sacerdos in æternū
juxta formam ordinis Melchisedec. Do- 5
minus à dextera tua confregit reges in
die iræ suæ: Judicabit inter gentes, & 6
implebit eas cadaveribus: Et contundet 7
caput multorū super terram. Bibet aquam 8
in via de torrente: propterea exaltabit
caput. Alleluja.

PSAL. CX.
Alleluja. Vers. 21.

Gratias agam tibi, O Domine mi, ex 1
toto corde meo, in consilio rectorum,
eorumque congregatione.

תהלים : קיב קיג

decor & ,Gloria .ea volentibus omnibus quæſita :Domini opera Magna
2 גְּדֹלִים מַעֲשֵׂי יְהוָֹה דְּרוּשִׁים לְכָל־חֶפְצֵיהֶם׃ הוֹד־וְהָדָר
3 *gratioſus* :ſuorũ mirabiliũ fecit Memoriã .*perpetuum in ſtans* ejus juſtitia &:ejus opus
4 פָּעֳלוֹ וְצִדְקָתוֹ עֹמֶדֶת לָעַד׃ זֵכֶר עָשָׂה לְנִפְלְאֹתָיו חַנּוּן
ſeculum in erit memor : ſe timentibus dedit *Prædam* .Dominus miſericors &
5 וְרַחוּם יְהוָֹה׃ טֶרֶף נָתַן לִירֵאָיו יִזְכֹּר לְעוֹלָם
eis *dandum ad* ,ſuo populo annunciavit ſuorũ operum Fortitudinem .ſui pacti
6 בְּרִיתוֹ׃ כֹּחַ מַעֲשָׂיו הִגִּיד לְעַמּוֹ לָתֵת לָהֶם
fidelia :judicium & ,veritas ejus manuum Opera .gentium hæreditatem
7 נַחֲלַת גּוֹיִם׃ מַעֲשֵׂי יָדָיו אֱמֶת וּמִשְׁפָּט נֶאֱמָנִים
,veritate in facta : ſeculum in *perpetuum* in *Fulta* .ejus præcepta omnia
8 כָּל־פִּקּוּדָיו׃ סְמוּכִים לָעַד לְעוֹלָם עֲשׂוּיִם בֶּאֱמֶת
: ſuum pactum ſeculum in præcepit ,ſuo populo miſit Redemptionem .rectitudine &
9 וְיָשָׁר׃ פְּדוּת ׀ שָׁלַח לְעַמּוֹ צִוָּה לְעוֹלָם בְּרִיתוֹ
intellectus ,Domini timor ſapientiæ Principium .ejus nomen terribile & ſanctum
10 קָדוֹשׁ וְנוֹרָא שְׁמוֹ׃ רֵאשִׁית חָכְמָה יִרְאַת יְהוָֹה שֵׂכֶל
.*perpetuum in ſtans* ejus laus : ea facientibus omnibus bonus
טוֹב לְכָל־עֹשֵׂיהֶם תְּהִלָּתוֹ עֹמֶדֶת לָעַד׃

PSAL. CXII. קיב

.valde *voluit* ejus *mandatis in* : Dominum *timentis viri Beatitudines* .Jah-Hallelu
1 הַלְלוּ יָהּ ׀ אַשְׁרֵי־אִישׁ יָרֵא אֶת־יְהוָֹה בְּמִצְוֹתָיו חָפֵץ מְאֹד׃
opulentia & Ubertas .benedicetur rectorum generatio :ejus ſemen erit terra in Potens
2 3 גִּבּוֹר בָּאָרֶץ יִהְיֶה זַרְעוֹ דּוֹר יְשָׁרִים יְבֹרָךְ׃ הוֹן־וָעֹשֶׁר
lumen *tenebroſitate* in eſt Ortum .*perpetuum* in *ſtans* ejus juſtitia & : ejus domo in
4 בְּבֵיתוֹ וְצִדְקָתוֹ עֹמֶדֶת לָעַד׃ זָרַח בַּחֹשֶׁךְ אוֹר
: *commodans & ,miſereſcens* vir Bonus .juſtus & miſericors & *gratioſus* : rectis
5 לַיְשָׁרִים חַנּוּן וְרַחוּם וְצַדִּיק׃ טוֹב־אִישׁ חוֹנֵן וּמַלְוֶה
memoria in : *nutabit* non ſeculum in Quia .judicio in ſua verba *moderabitur*
6 יְכַלְכֵּל דְּבָרָיו בְּמִשְׁפָּט׃ כִּי־לְעוֹלָם לֹא־יִמּוֹט לְזֵכֶר
ejus cor firmum : timebit non mala auditione Ab .juſtus erit *ſeculi*
7 עוֹלָם יִהְיֶה צַדִּיק׃ מִשְּׁמוּעָה רָעָה לֹא יִירָא נָכוֹן לִבּוֹ
videbit donec : timebit non ejus cor *Suffultum* .Domino *in* fidens
8 בָּטֻחַ בַּיהוָֹה׃ סָמוּךְ לִבּוֹ לֹא יִירָא עַד אֲשֶׁר־יִרְאֶה
: *perpetuum* in *ſtans* ejus juſtitia , *egenis* dedit Diſperſit .*ſuos anguſtiatores in*
9 בְצָרָיו׃ פִּזַּר ׀ נָתַן לָאֶבְיוֹנִים צִדְקָתוֹ עֹמֶדֶת לָעַד
ſuis dentibus ,iraſcetur & ,videbit Impius .gloria in exaltabitur ejus cornu
10 קַרְנוֹ תָּרוּם בְּכָבוֹד׃ רָשָׁע יִרְאֶה ׀ וְכָעָס שִׁנָּיו
peribit impiorum deſiderium : *liqueſiet* & frendet
יַחֲרֹק וְנָמָס תַּאֲוַת רְשָׁעִים תֹּאבֵד׃

PSAL. CXIII. קיג

Sit .Domini nomen laudate : Domini ſervi Laudate .Jah-Hallelu
1 2 הַלְלוּ יָהּ ׀ הַלְלוּ עַבְדֵי יְהוָֹה הַלְלוּ אֶת־שֵׁם יְהוָֹה׃ יְהִי
ſolis ortu Ab .ſeculum in uſque & *nunc* ex : benedictum Domini nomen
3 שֵׁם יְהוָֹה מְבֹרָךְ מֵעַתָּה וְעַד־עוֹלָם׃ מִמִּזְרַח־שֶׁמֶשׁ
.Domini nomen *laudatum* : ejus occaſum ad uſque
עַד־מְבוֹאוֹ מְהֻלָּל שֵׁם יְהוָֹה׃

תרגום TARGUM.

2 רַבְרְבִין עוֹבָדַיָא דַיְיָ מִתְבַּעְיָן לְכָל דִּצְבַן לְהוֹן׃
3 שְׁבָחָא וְשִׁבְהוֹרָא עוֹבָדֵיהּ וּזְכוּתֵיהּ קַיָמָא
4 לְעָלְמִין׃ דָּכְרָן טַב עֲבַד לִפְרִישׁוּתֵיהּ חַנָנָא
5 וְרַחֲמָנָא יְיָ׃ מְזוֹנָא יְהַב לְדָחֲלוֹי יִדְכַּר לַעֲלַם
6 קְיָמֵיהּ׃ חֵיל עוֹבָדוֹי חַוֵי לְעַמֵיהּ לְמִתַּן לְהוֹן
7 אַחְסָנַת עַמְמַיָא׃ עוֹבָדֵי יְדוֹי קוּשְׁטָא וְדִינָא
8 מְהֵימְנִין כָּל פִּקוּדוֹי׃ סְמוּכִין לְעָלְמֵי עָלְמָא
9 מִתְעַבְדִין בְּקוּשְׁטָא וְתִירוּצָא׃ פּוּרְקָנָא שְׁלַח
לְעַמֵיהּ פַּקֵיד לַעֲלַם קְיָמֵיהּ קַדִישָׁא וּדְחִילָא
10 שְׁמֵיהּ׃ שֵׁרוּי חוּכְמְתָא דַחַלְתָא דַיְיָ סָכְלְתָא
טָבָא לְכָל עוֹבְדֵיהוֹן תּוּשְׁבַּחְתֵּיהּ קַיָמָא
לְעָלְמִין׃

קיב

1 הַלְלוּיָהּ טוּבֵיהּ דְּגַבְרָא דָחֵל יַת יְיָ בְּפִקוּדוֹי
2 צָבֵי לַחֲדָא׃ גִּבָּר בְּאוֹרַיְתָא יְהֶוְיָן בְּנוֹי בְּדָר
3 תְּרִיצַיָא יִתְבָּרַךְ׃ מַוְלָא וְעֻתְרָא בְּבֵיתֵיהּ
4 וּזְכוּתֵיהּ קַיָמָא לְעָלְמִין׃ דְּנַח בַּחֲשׁוֹכָא
נְהוֹר לִתְרִיצַיָא חַנָנָא וְרַחֲמָנָא וְצַדִּיקָא׃
5 גַּבְרָא טָבָא חָיֵס עַל עַנְיֵי וּמוֹזִיף יְסוֹבַר
6 מִלּוֹי בְּהִלְכְתָא׃ אֲרוּם לַעֲלַם לָא יְזוּעַ
7 לְדָכְרָן עָלַם יְהֵי זַכַּי׃ מִשְׁמוּעֲתָא בִישָׁא
לָא יִדְחַל תַּקִּין לִבֵּיהּ רָחֵץ בְּמֵימְרָא דַיְיָ׃
8 סְמִיךְ לִבֵּיהּ לָא יִדְחַל עַד דְּיֶחֱמֵי פּוּרְקָנָא
9 בְּעָקְתָא׃ בַּדַּר מָמוֹנֵיהּ יְהַב לַחֲשִׁיכֵי זְכוּתֵיהּ
10 קַיָמָא לְעָלְמָא תּוּקְפֵיהּ תְּרוּם בְּאִיקָרָא׃ רַשִׁיעָא
יֶחֱמֵי וְיִכְעוֹס עֲלוֹי שִׁנּוֹי יַעֲסֵי וְאִתְמְסָא רִגּוּג
רַשִׁיעֵי תֵּיבִיד׃

קיג

1 הַלְלוּיָהּ שַׁבָּחוּ עַבְדַיָא דַיְיָ שַׁבָּחוּ יַת שְׁמָא
2 דַיְיָ׃ יְהֵוֵי שְׁמָא דַיְיָ מְבָרַךְ מֵהַשְׁתָּא וְעַד
3 עָלְמָא׃ מִמַּדְנַח שִׁמְשָׁא עַד מִטְמְעֵיהּ מְשַׁבַּח
שְׁמָא דַיְיָ׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Magna opera Domini exquiſita omnibus
qui volunt illa. Laus & decus opus ejus, 3
& meritum ejus perſtat in ſecula. Memo- 4
riam bonam fecit mirabilibus ſuis operi-
bus; clemens & miſericors Dominus. Ci- 5
bum dedit timentibus ſe, memor erit in
æternum pacti ſui. Virtutem operum ſuo- 6
rum annunciavit populo ſuo, ut det illis
hæreditatem populorum. Opera manuum 7
ejus veritas & judicium, fidelia omnia
mandata ejus: Confirmata in ſecula *ſe-* 8
culi, facta in veritate & æquitate. Redem- 9
ptionem miſit populo ſuo: præcepit in
æternum pactum ſuum, ſanctum & timen-
dum nomen ipſius. Principium ſapientiæ 10
eſt *timor* Domini: intellectus bonus omni-
bus facientibus ea: laus ejus manet in
æternum.

Hallelujah. 1

PSAL. CXII.

BEatus vir qui timet *Dominum*, mandata
ejus expetit vehementer. Fortes in Lege 2
erunt filii ejus, in generatione rectorum
benedicetur. Felicitas & divitiæ in do- 3
mo ejus, & juſtitia ejus manet in æternum.
Ortum eſt in tenebris lumen rectis, cle- 4
mens & miſericors & juſtus. Beatus vir 5
qui miſeretur *pauperum* & commodat; ſuſti-
nebit verba ſua quaſi ſententiam. Quo- 6
niam in æternum non commovebitur, ad
memoriam perpetuum erit juſtus. Ab au- 7
ditu malo non timebit: paravit cor ſuum
confidens in verbo Domini. Firmatum eſt 8
cor ejus, non timebit donec videat redem-
ptionem in anguſtia. Diſperſit pecuniam 9
ſuam, dedit pauperibus; juſtitia ejus ma-
net in æternum: fortitudo ejus exaltabitur
in gloria. Impius videbit & iraſcetur ſuper 10
eum, dentibus ſuis frendebit & contabeſcet:
deſiderium impiorum peribit.

Hallelujah. 1

PSAL. CXIII.

LAudate ſervi Domini, laudate nomen
Domini. Sit nomen Domini benedictum, 2
ex hoc momento & uſque in ſeculum. Ab 3
ortu Solis uſque ad occaſum ejus, laudabile
eſt nomen Domini.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA

2 * ܪܘܪܒܝܢ ܥܒܕܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܘܡܬܒܥܝܢ ܠܟܠ ܕܨܒܝܢ ܒܗܘܢ : * ܡܫܒܚܝܢ ܘܪܘܪܒܝܢ
3 4 ܥܒܕܘܗܝ. ܘܙܕܝܩܘܬܗ ܩܝܡܐ ܠܥܠܡ : * ܥܘܗܕܢܐ ܝܗܒ ܠܬܕܡܪܬܗ. ܡܪܚܡܢ ܗܘ
5 6 ܘܡܪܚܦ ܡܪܝܐ : * ܡܐܟܘܠܬܐ ܝܗܒ ܠܕܚܠܘܗܝ. ܘܥܗܕ ܠܥܠܡ ܩܝܡܗ : * ܚܝܠܐ
7 ܕܥܒܕܘܗܝ ܚܘܝ ܠܥܡܗ. ܕܢܬܠ ܠܗܘܢ ܝܪܬܘܬܐ ܕܥܡܡܐ : * ܥܒܕ ܐܝܕܘܗܝ ܩܘܫܬܐ
8 ܘܕܝܢܐ. * ܘܡܩܝܡܝܢ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ : ܡܫܪܪܝܢ ܟܠܗܘܢ ܦܘܩܕܢܘܗܝ. ܘܥܒܝܕܝܢ ܒܙܕܝܩܘܬܐ
9 ܘܒܩܘܫܬܐ : * ܦܘܪܩܢܐ ܫܕܪ ܡܪܝܐ ܠܥܡܗ. ܘܥܗܕ ܠܥܠܡ ܩܝܡܗ : ܩܕܝܫ ܗܘ
10 ܘܕܚܝܠ ܫܡܗ. * ܪܝܫ ܚܟܡܬܐ ܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ : ܘܣܘܟܠܐ ܛܒܐ ܠܥܒܘܕܝܗ. ܘܬܫܒܘܚܬܗ
1 ܩܝܡܐ ܠܥܠܡ. *ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܝܒ* *ܠܐ ܡܬܝܕܥܢܐ. ܟܕ ܕܘܝܕ ܒܗ ܡܦܩܕ
ܠܫܠܝܡܘܢ ܒܪܗ : ܛܪ ܦܘܩܕܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܘܦܠܘܚܝܗܝ. ܘܩܪܝܬܐ ܕܥܡܡܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܗ
2 ܕܡܫܝܚܐ. ܦܬܓܡ̈ܐ ܟܒ. ܛܘܒܘܗܝ ܠܓܒܪܐ ܕܕܚܠ ܡܢ ܡܪܝܐ. ܘܙܗܝܪ ܒܦܘܩܕܢܘܗܝ : * ܢܗܘܐ
3 ܚܝܠܬܢ ܙܪܥܗ ܒܐܪܥܐ. ܘܢܬܒܪܟ ܒܕܪܐ ܕܬܪܝܨܐ : * ܩܢܝܢܐ ܘܥܘܬܪܐ ܢܣܓܐ ܒܒܝܬܗ. ܘܙܕܝܩܘܬܗ
4 5 ܩܝܡܐ ܠܥܠܡ : * ܕܢܚ ܢܘܗܪܐ ܒܚܫܘܟܐ ܠܬܪܝܨܐ. ܘܡܪܚܡ ܥܠ ܙܕܝܩܐ : * ܛܒ ܗܘ ܓܒܪܐ
6 ܕܡܪܚܡ ܘܡܘܙܦ. ܘܡܣܝܒܪ ܡܠܘܗܝ ܒܕܝܢܐ : * ܠܥܠܡ ܠܐ ܢܙܘܥ. ܘܠܕܘܟܪܢܐ ܠܥܠܡ ܢܗܘܐ
7 8 ܙܕܝܩܐ : * ܘܡܢ ܫܡܥܐ ܒܝܫܐ ܠܐ ܢܕܚܠ. ܕܬܩܝܢ ܠܒܗ ܬܟܝܠ ܥܠ ܐܠܗܐ : * ܘܡܫܪܪ ܠܒܗ ܘܠܐ
9 ܕܚܠ. ܥܕܡܐ ܕܢܚܙܐ ܒܒܥܠܕܒܒܘܗܝ : * ܒܕܪ ܘܝܗܒ ܠܡܣܟܢܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܗ ܩܝܡܐ ܠܥܠܡ
10 ܥܠܡܝܢ : ܘܩܪܢܗ ܬܬܪܝܡ ܒܫܘܒܚܐ. * ܘܚܛܝܐ ܢܚܙܐ ܘܢܬܚܡܬ : ܘܫܢܘܗܝ ܢܚܪܘܩ ܘܢܬܚܒܠ.
1 ܘܪܓܬܐ ܕܪܫܝܥܐ ܬܐܒܕ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܝܓ * * ܠܐ ܡܬܝܕܥܢܐ. ܡܬܐܡܪ ܚܦܝܛܘܬܐ ܥܠ
ܬܫܡܫܬܐ ܕܡܪܝܐ ܒܥܕܢ ܨܦܪܐ ܡܢ ܟܗܢܐ. ܘܠܢ ܕܝܠܢ ܡܦܩܕ ܥܡܐ ܚܕܬܐ ܕܡܢ ܡܝܐ ܘܪܘܚܐ
ܕܢܩܕܡ ܠܬܫܡܫܬܐ ܟܕ ܪܣܝܣܝܢ ܠܒܘܬܢ، ܘܡܚܠܠܝܢ ܒܪܘܚܐ ܕܩܘܕܫܐ ܘܒܪܥܝܢܐ ܕܟܐ. ܦܬܓܡ̈ܐ ܝ.
2 ܫܒܚܘ ܥܒܕܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܫܒܚܘ ܠܫܡܗ ܕܡܪܝܐ : * ܢܗܘܐ ܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܡܒܪܟ. ܡܢ ܥܠܡ
3 ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ : * ܡܢ ܡܕܢܚܝܗ ܕܫܡܫܐ ܘܥܕܡܐ ܠܡܥܪܒܗ. ܪܒ ܗܘ ܫܡܗ ܕܡܪܝܐ :

Maxima ſunt facta Dñi, & quæſita ab omni- 2
b⁹ qui delectantur illis. Glorioſa ſunt ac ma- 3
gna opera ej⁹, & juſtitia ipſius perſtans eſt in
æternum. Memoriã dedit miraculorũ ſuorũ: 4
miſericors eſt ac benign⁹ Domin⁹. Eſcã dedit 5
timentibus eum, & memor eſt perpetuò fœ-
deris ſui, Potentiæ quam ſuis operibus oſten- 6
dit populo ſuo, ut concederet eis hæreditatẽ
gentium. Opus manuũ ejus veritas ac judici- 7
um, Súntq; permanentia in ſeculũ ſeculorũ: 8
firma ſunt omnia præcepta ejus, & facta cum
juſtitia & veritate. Salutem miſit Dominus 9
populo ſuo, & memor eſt in perpetuum fœ-
deris ſui: Sanctũ eſt ac formidabile nomen e- 10
j⁹. Initiũ ſapiẽtiæ timor Dñi, & intellect⁹ bo-
n⁹ facienti illud, & laus ej⁹ manet in æternũ.

PSAL. CXII.

Anonymus. Quum David in eo hortabatur 1
Salomonem filium ſuum dicens, Serva man-
data Domini, eumq; cole. Præterea vocatio
Gentium, & juſtitia Chriſti. Verſ. 22.

BEatus vir qui timet Dominũ, & caut⁹ eſt
in mandatis ejus. Erit potens ſemen illius 2
in terra, & benedicetur in generatione juſto-
rum. Facultates & divitiæ abundabunt in do- 3
mo ejus, & æquitas ipſius perſtabit in æter-
num. Effulſit lumen in caligine rectis, ac mi- 4
ſeretur juſtorũ. Probus eſt vir qui miſeretur 5
& dat mutuò, ſuſtinétq; verba ſua in judicio:
In ſeculum non movebitur. Memoria in ſem- 6
piternũ erit juſto, Et famam malam non ti- 7
mebit; Nam conſtans eſt cor ejus, fretũ Deo:
Firmúmq; cor illius & non formidat, donec 8
ſpectet in hoſtibus ſuis. Diſperſit ac dedit e- 9
genis, & juſtitia ejus perſtans eſt in ſeculũ
ſeculorum, cornúq; ipſi⁹ attolletur cum glo-
ria. Iniquus verò cernet ac indignabitur, atq; 10
ſuis dentibus frendebit, deſtruetúrque: &
deſiderium impiorum peribit.

PSAL. CXIII.

Anonymus. Dicitur ſolicitatio circa mini- 1
ſterium Domini tempore matutino, à ſacerdo-
tibus peragendum. Nos autem hortatur, nos
populum novum ex aqua & ſpiritu regenera-
tum, ut præmaturi ſimus ad miniſterium a-
ſperſis cordibus noſtris ac lotis ſpiritu ſancto,
mentéq; purâ. Verſ. 10.

LAudate ſervi Dñi, laudate nomen Dñi. Sit 2
nomẽ Dñi benedictũ à ſeculo & uſq, in
ſeculũ, Ab ortu ſolis uſque ad occaſum ejus. 3
Magnum eſt nomen Domini,

Verſio VULG. LAT.

2 Magna opera Domini : exquiſita in
3 omnes voluntates ejus. Confeſſio &
magnificentia opus ejus : & juſtitia
4 ejus manet in ſeculum ſeculi. Memo-
riam fecit mirabilium ſuorum , miſe-
5 ricors & miſerator Dominus : Eſcam
dedit timentibus ſe. Memor erit in ſe-
6 culum teſtamenti ſui : Virtutem ope-
rum ſuorum annuntiabit populo ſuo:
7 Ut det illis hæreditatem gentium :
opera manuum ejus, veritas & judici-
8 um. Fidelia omnia mandata ejus:con-
firmata in ſeculum ſeculi, facta in ve-
9 ritate & æquitate. Redemptionem
miſit populo ſuo: mandavit in æternũ
teſtamentum ſuum. Sanctum, & terri-
10 bile nomen ejus : Initium ſapientiæ
timor Dñi. Intellectus bonus omnibus
facientibus eum : laudatio ejus ma-
net in ſeculum ſeculi.

Alleluja, Reverſionis Aggæi, & Zachariæ. CXI.

1 BEatus vir, qui timet Dominum: in
2 mandatis ejus volet nimis. Potens
in terra erit ſemen ejus : generatio
3 rectorum benedicetur. Gloria, & di-
vitiæ in domo ejus : & juſtitia ejus
4 manet in ſeculum ſeculi. Exortum eſt
in tenebris lumen rectis : miſericors,
5 & miſerator, & juſtus. Jucundus ho-
mo qui miſeretur & commodat, diſ-
6 ponet ſermones ſuos in judicio:Quia
7 in æternum non commovebitur. In
memoria æterna erit juſtus : ab audi-
tione mala non timebit. Paratum cor
8 ejus ſperare in Domino,Confirmatum
eſt cor ejus:non commovebitur donec
9 deſpiciat inimicos ſuos. Diſperſit,de-
dit pauperibus : juſtitia ejus manet
in ſeculum ſeculi, cornu ejus exaltabi-
10 tur in gloria. Peccator videbit,& ira-
ſcetur, dentibus ſuis fremet & tabe-
ſcet : deſiderium peccatorum peribit.

Alleluja. CXII.

1 LAudate pueri Dominum : laudate
2 nomen Domini. Sit nomen Domi-
ni benedictum, ex hoc nunc, & uſque
3 in ſeculum. A ſolis Ortu uſque ad Oc-
caſum laudabile nomen Domini.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

2 Μεγάλα τὰ ἔργα κυρίου, † ἐξεζητημένα εἰς πάντα
3 τὰ θελήματα αὐτοῦ. † Ἐξομολόγησις καὶ μεγα-
λοπρέπεια τὸ ἔργον αὐτοῦ, † καὶ ἡ δικαιοσύνη αὐτοῦ
4 μένει εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος. † Μνείαν ἐποιήσατο
τῶν θαυμασίων αὐτοῦ, † ἐλεήμων καὶ οἰκτίρμων ὁ
5 κύριος. † Τροφὴν ἔδωκε τοῖς φοβουμένοις αὐτόν·
6 † μνησθήσεται εἰς τὸν αἰῶνα διαθήκης αὐτοῦ. † Ἰσχὺν
7 ἔργων αὐτοῦ ἀνήγγειλε τῷ λαῷ αὐτοῦ, † Τοῦ δοῦναι
αὐτοῖς κληρονομίαν ἐθνῶν. † Ἔργα χειρῶν αὐτοῦ,
8 ἀλήθεια καὶ κρίσις. † Πισταὶ πᾶσαι αἱ ἐντολαὶ αὐτοῦ,
† ἐστηριγμέναι εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος, † πεποι-
9 ημέναι ἐν ἀληθείᾳ καὶ εὐθύτητι. † Λύτρωσιν ἀπέ-
στειλε τῷ λαῷ αὐτοῦ· † ἐνετείλατο εἰς τὸν αἰῶνα
διαθήκην αὐτοῦ. † ἅγιον καὶ φοβερὸν τὸ ὄνομα
10 αὐτοῦ. † Ἀρχὴ σοφίας φόβος κυρίου, † σύνεσις δὲ
ἀγαθὴ πᾶσι τοῖς ποιοῦσιν αὐτήν· † ἡ αἴνεσις αὐτοῦ
μένει εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος.

Ἀλληλούϊα. ρια΄.

1 † ΜΑκάριος ἀνὴρ ὁ φοβούμενος τὸν κύριον, † ἐν
2 ταῖς ἐντολαῖς αὐτοῦ θελήσει σφόδρα. † Δυνα-
τὸν ἐν τῇ γῇ ἔσται τὸ σπέρμα αὐτοῦ, † γενεὰ εὐθέων
3 εὐλογηθήσεται. † Δόξα καὶ πλοῦτος ἐν τῷ οἴκῳ αὐ-
τοῦ, † καὶ ἡ δικαιοσύνη αὐτοῦ μένει εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ
4 αἰῶνος. † Ἐξανέτειλεν ἐν σκότει φῶς τοῖς εὐθέ-
5 σιν· † ἐλεήμων καὶ οἰκτίρμων καὶ δίκαιος (α). † Χρη-
στὸς ἀνὴρ ὁ οἰκτείρων καὶ κιχρῶν, † οἰκονομήσει τοὺς
6 λόγους αὐτοῦ ἐν κρίσει, † Ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα οὐ σα-
7 λευθήσεται. † Εἰς μνημόσυνον αἰώνιον ἔσται δίκαιος.
† ἀπὸ ἀκοῆς πονηρᾶς οὐ φοβηθήσεται. † ἑτοίμη ἡ
8 καρδία αὐτοῦ ἐλπίζειν ἐπὶ κύριον. † Ἐστήρικται ἡ
καρδία αὐτοῦ, (β) οὐ φοβηθῇ, † ἕως οὗ ἐπίδῃ ἐπὶ
9 τοὺς ἐχθροὺς αὐτοῦ. † Ἐσκόρπισεν, ἔδωκε τοῖς πέ-
νησιν, † ἡ δικαιοσύνη αὐτοῦ μένει εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ
10 αἰῶνος. † τὸ κέρας αὐτοῦ ὑψωθήσεται ἐν δόξῃ. † Ἁ-
μαρτωλὸς ὄψεται καὶ ὀργισθήσεται, † τοὺς ὀδόντας
αὐτοῦ βρύξει καὶ τακήσεται. † ἐπιθυμία (γ) ἁ-
μαρτωλῶν ἀπολεῖται.

MS. A. (α) κύριος ὁ θεός. Χρηστὸς (β) οὐ μὴ φοβη-
θῇ, (γ) ἁμαρτωλῶν

Ἀλληλούϊα. ριβ΄.

1 † ΑἰνεῖτεΑ παῖδες (α) κύριον, † αἰνεῖτε τὸ ὄνο-
2 μα κυρίου. † Εἴη τὸ ὄνομα κυρίου εὐλογημέ-
3 νον † ἀπὸ τοῦ νῦν καὶ ἕως τοῦ αἰῶνος. † Ἀπὸ ἀνατο-
λῶν ἡλίου (β) μέχρι δυσμῶν, † αἰνετὸν τὸ ὄνο-
μα κυρίου.

MS. A. (α) τὸν κύριον, (β) καὶ μέχρι

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiop. Tranſl. LAT.

2 Magna opera Domini,(b)exquiſita 2
in omnes voluntates ejus. 3 (c)Con- 3
feſſio,& magnificentia[a]opus ejus:
& juſtitia ejus manet in [b]ſecu-
lum ſeculi. 4 Memoriam fecit[c]mi- 4
rabilium ſuorum,miſericors, et mi-
ſerator Dominus : (d)Eſcam dedit 5
timentibus ſe. 5 Memor erit in ſecu-
lum teſtamenti ſui:Fortitudinem o- 6
perum ſuorum annuntiavit populo
ſuo. 6 ut det illis hæreditatem gen- 7
tium:opera manuum ejus(e)veritas,
& judicium. 7 Fidelia *omnia man-* 8
data ej⁹, confirmata in ſeculũ ſeculi,
facta in veritate , et æquitate. 9 9
Redemptionem miſit [d] popu-
lo ſuo : mandavit in æternum teſta-
mentum ſuum. 9 Sanctum & ter- 10
ribile nomen ejus: Initium ſapientiæ
timor Domini. 10[e]Intellect⁹ autẽ
bon⁹ omnib⁹ (f)facientib⁹ eum:lau-
datio ejus manet in ſeculum ſeculi.

MS. Æthiop. Po. Gloria Patri,&
Filio,& Spiritui Sancto: omni tem-
pore,nunc,& ſemper, & in ſecula ſe-
culorum,Amen. Alleluja. CXI.

1 BEATUS vir qui timet Do- 1
minum: [a] in mandatis ejus
volet nimis. 2 [b]Potens in terra e- 2
rit ſemen ejus : generatio rectorum
benedicetur. 3 Gloria, & divitiæ in 3
domo ejus : & (a) juſtitia ejus ma-
net in ſeculum ſeculi. 4 Exortum eſt 4
in tenebris lumen(b)rectis:miſeri-
cors, & miſerator[c], & juſtus. 5
(c) Suavis vir, qui miſeretur, & 5
commodat : diſponet ſermones ſuos
in judicio: Quoniam in æternum 6
non commovebitur. 6 In memoria 7
æterna erit juſtus : ab (d) auditione
mala non timebit. 7 (e)Paratum cor
ejus ſperare in Domino: Confirmatũ 8
eſt cor ejus:(f)non[d]timebit, (g)
donec videat ſuper inimicos ſuos. 8
Diſperſit,dedit pauperibus : juſtitia 9
ejus manet in ſeculum ſeculi:cornu
ejus exaltabitur in gloria. 9 Pecca- 10
tor videbit, & iraſcetur : dentibus
ſuis fremet,& tabeſcet: deſiderium
peccatoris peribit.

Alleluja. CXII.

1 LAUDATE (a)[a] pueri 1
Dominum:laudate nomen Do-
mini. 2 Sit nomen Domini bene- 2
dictum , ex hoc nunc & uſque in
ſeculum. 3 A Solis Ortu uſque ad 3
Occaſum, laudabile nomen Domini.

Verſio ÆTHIOPICA.

2 ዐቢይ:ግብረ: እግዚአብሔር:: ወትት 2
ሐሠሥ:ውስተ:ኵሉ:ፈቃዱ:: አሚን: ወዕ 3
በዮ:ስብሐት:ምግባሩ:: ወጽድቁሰ:ይነብር:
ለዓለም::=፦ ተዝከረ:ገብረ:ስብሐቲሁ:: 4
መሐሪ:ወመስተሣህል:እግዚአብሔር:: ወወ
ሀቦሙ:ሲሰዮሙ:ለእለ:ይፈርህዎ::=፦ ወተ 5
ዘከረ:ኪዳኖ:ዘለዓለም::ወአርአዮሙ:ለሕ
ዝቡ:ኀይለ:ምግባሩ::=፦ ከመ:የሀቦሙ:ር 6
ስተ:ለአሕዛብ::ግብረ:እደዊሁ:ጽድቅ:ወር
ትዕ::=፦ ወእሙን:ኵሉ:ትእዛዙ:ወጽኑዕ: 7
ለዓለም: ዓለም:: ወግቡር:በጽድቅ : ወበር
ትዕ::=፦ መድኀኒተ:ፈነወ:እግዚአብሔር: 8
ለሕዝቡ:: ወአዘዘ : ሥርዓቶ : ዘለዓለ
ም::=፦ ቅዱስ:ወግሩም: ስሙ:ዚአሁ::ቀደ 9
10 ሚሃ:ለጥበብ:ፈሪሃ:እግዚአብሔር::=፦ ወ 10
ምክር: ሠናይት: ለኵሉ:ዘይገብሩ:: ወስ
ብሐቲሁሰ:ይነብር :ለዓለም::=፦
ሰብሐት: ለአብ: ወወልድ:ወመንፈስ: ቅዱስ:
ኵሉ:ጊዜ፡ይእዜኒ:ወዘልፈኒ:ወለዓለመ:
ዓለም : አሜን::

ሃሌሉያ::

፻፲፩ ብፁዕ:ብእሲ:ዘይፈርሆ:ለእግዚአብ 1
ሔር:: ወዘይፈቅድ:ትእዛዞ:ፈድፋደ::=፦
ወይከውን: ጽኑዓ: ዘርኡ: ውስተ:ምድር:: 2
ትውልደ:ጻድቃን:ይትባረኩ::=፦ ክብር: ወ 3
ብዕል:ውስተ:ቤቱ:: ወ ጽድቁኒ:ይነብር :ለ
ዓለም:ዓለም::=፦ሠረቀ:ብርሃን:ለራትዓን፡ 4
በውስተ:ጽልመት:: መሐሪ: ወመስተሣህል:
እግዚአብሔር:ወጻድቅ:አምላክነ::=፦ ብ 5
እሲ:መሐሪ:ወመስተሣህል:ወኄር:: ወይሌ
ቅም:ቃሎ:በውስተ:ፍትሕ:: ወኢይትሀወ
ክ:ለዓለም::=፦ ዝክረ:ጻድቅ:ለዓለም:ይ 6
ሄሉ:: ወኢይፈርህ : እምነገር፡እኩይ::=፦
ጥቡዕ: ልቡ: ለተወክሎ: በእግዚአብሔር:: 7
ጽኑዕ:ልቡ:ወኢይትሀወክ: ለዓለም:: እስ
ከ:ይሬኢ:በጸላእቱ::=፦ ዘረወ:ወወሀበ:ለ 8
ነዳይ::ወጽድቅኒ:ይነብር :ለዓለም:ዓለም::
ወይትሌዐል:ቀርኑ:በክብር ::=፦ ይሬኢ:ኃ 9
ጥእ:ወይትመዐዕ:: ወየሐቂ:ስነኒሁ:ወይትመ
ሰው::ወተኃልቅ:ፍትወቶሙ: ለኃጥአኒ::=፦

ሃሌሉያ::

፻፲፪ ሰብሕዎ:አግብርቲሁ:ለእግዚአብሔ 1
ር:: ወሰብሑ፡ ለስሙ:እግዚአብሔር ::=፦
ወይኩን:ቡሩክ:ስሙ:ለእግዚአብሔር :: እ 2
ምይእዜ:ወእስከ:ለዓለም::=፦ እምሠረ 3
ቀ: ፀሐይ : ወእስከነ : ዐረብ : ይትአኰት:
ስሙ: ለእግዚአብሔር ::

INTERP. ÆTHIOP[a]gloriæ,opus[b]ſeculum.Memoriam[c]gloriæ ejus,[d]Dominus populo[e]Et conſilium bonum *PSAL.CXI.* [a] & qui mandata ejus volet [b] Et erit firmum in terra[c]Do-
minus,& juſtus eſt rex noſter. Homo miſericors,miſerator & bonus : [d] commovebitur in æternum,donec *PSAL. CXII.* [a]ſervi ejus Dominum :

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

2 3 * عظيمة هي اعمال الرب جميع ارادته مطلوبة * الشكر وعظيم البهاء هو عمله * وعدله دايم
4 5 الي ابد الابد * ذكر جميع عجايبه * الرب رحيم روف * اعطي اتقياءه طعاما * يذكر
6 7 عهده الي الابد * اعلم شعبه قوة اعماله * لكي يعطيهم ميراث الامم * اعمال يديه حق
8 9 وحكم * وجميع وصاياه صادقة * ثابتة الي الابد * مصنوعة بالحق والاستقامة * ارسل
10 خلاصا لشعبه * امر بعهده الي الابد * قدوس اسمه مخوف * راس الحكمة هي مخافة الرب *
والفهم صالح لكل من عمل به * وبركته دايمة الي الابد * الليلويا *

1. * المزمور المايه وحادي عشر * الليلويا * وهو * كب * استيخن *

2 طوبي للرجل الخايف من الرب * المتمسك بوصاياه جدا * زرعه يجد قوة علي الارض * جيل المستقيمين
3 4 يبارك * يكون المجد والعز في بيته وبره دايم الي الابد * نور اشرق في الظلمة للمستقيمين * الرب
5 6 الله رحيم رووف * صالح هو الرجل الذي يتراف * ويقرض * ويدبر اقواله بالحكم * فانه
7 لا يزول الي الابد * ذكر الصديق يكون ابديا * ومن سماع شرير لا يخشي * مستعد قلبه للتوكل
8 9 علي الرب * ثابت قلبه فلا يرجف حتي ينظر علي اعدايه * بدد واعطي المساكين * وبره
10 دايم الي ابد الابد * قرنه يعلو بالمجد * يري الخاطي فيغتاظ * ويصر باسنانه ويذوب * شهوة
1 الخاطي تبيد * الليلويا * * المزمور المايه والثاني عشر * الليلويا * وهو يو * استيخن *
2 سبحوا الرب ايها الفتيان * سبحوا اسم الرب * وليكن اسم الرب مباركا * منذ الان والي
3 الابد * من مشارق الشمس الي المغارب اسم الرب مبارك *

Magna ſunt opera Domini, omnis volun- 2
tas ejus expetibilis. Gratiarum actio & 3
magnitudo decoris eſt opus ejus, & æqui-
tas ejus perſeverans uſque in ſeculum ſe-
culi. Recordatus eſt omniũ miraculorũ 4
ſuorũ : Dominus miſericors eſt & cle-
mens : Dedit cultoribus ſuis cibũ : recor- 5
dabitur fœderis ſui in æternũ : Notã fecit 6
populo ſuo virtutem operũ ſuorũ, ut det
illis hæreditatem gentiũ. Opera manuum 7
ejus veritas & judiciũ , & cuncta man-
data ejus veridica, Firma in perpetuum, 8
facta cum veritate & æquitate. Miſit 9
ſalutem populo ſuo , præcepit pactum
ſuum in æternum. Sanctum nomen ejus
ac terribile. Initium ſapientiæ eſt timor 10
Domini : & intelligentia bona eſt cuili-
bet agenti per eam: & benedictio illius
perpetua eſt in æternum. Alleluja.

PSAL. CXI.

Alleluja. Verſ. 22. 1

BEatitudo viro timenti Dominũ, am-
plectenti præcepta ejus vehementer.
Semen ejus inveniet fortitudinem ſuper 2
terrã : generatio rectorũ benedicetur. Erit 3
gloria & magnificentia in domo ejus, &
juſtitia ejus perſeverans in æternum. Lu- 4
men exortũ eſt inter tenebras rectis: Do-
minus Deus miſericors eſt ac benignus.
Bonus eſt vir qui miſeretur & commo- 5
dat,& moderatur ſermones ſuos in judi-
dicio : Quia non deficiet in æternum. 6
Memoria juſti erit perpetua, Et auditio- 7
nem malam non timebit. Paratũ eſt cor
ejus ad fidendum Domino, Firmum cor 8
ej⁹, nec trepidabit donec videat ſuper ini-
micos ſuos. Diſperſit ac dedit pauperib⁹, 9
& juſtitia ejus permanens eſt in ſeculum
ſeculi : cornu ejus attolletur cum gloria.
Videbit peccator, & iraſcetur, ſtridebitq; 10
dentibus ſuis, ac liqueſcet : deſiderium
peccatorũ peribit. Alleluja.

PSAL. CXII.

Alleluja. Verſ. 16. 1

LAudate Dominum O pueri, laudate
nomen Domini. Sitque nomen Domi- 2
ni benedictum ex nunc & uſque in ſecu-
lum. Ab ortibus ſolis uſque ad occaſus ſit 3
nomen Domini benedictum.

תהלים : קיד קטו

Quis ejus gloria cœlos super : Dominus gentes omnes super Excelsus
4 רם על־כל־גוים יהוה על השמים כבודו : מי 5
videndum ad se *Humilians* .habitandum ad *se sustollens* : noster Deus Dominus sicut
כיהוה אלהינו המגביהי לשבת : המשפילי לראות 6
? *egenum elevabit sterquilinio* de : *tenuem* pulvere de *Erigens* .terra in & *cœlis* in
בשמים ובארץ : מקימי מעפר דל מאשפת ירים אביון : 7
faciens Sedere .sui populi *magnificis* cum : *magnificis* cum *faciendum* sedere *Ad*
8 להושיבי עם־נדיבים עם נדיבי עמו : מושיבי 9
.Hallelujah .lætantem *filiorum* matrem : *domum* sterilem
עקרת הבית אם־הבנים שמחה הללויה :

PSAL. CXIV. קיד

Jehudah Fuit .barbaro populo è Jahacob *domus* : Ægypto ex Israel *egrediendo In*
1 בצאת ישראל ממצרים בית יעקב מעם לעז : היתה יהודה 2
circuivit Jarden : fugit & vidit Mare .ejus *dominia* Israel : ejus *sanctitatem in*
לקדשו ישראל ממשלותיו : הים ראה וינס הירדן יסב 3
tibi Quid .*pecoris* filii sicut colles : arietes sicut exilierunt Montes .retrorsum
4 לאחור : ההרים רקדו כאילים גבעות כבני־צאן : מה־לך 5
: arietes sicut *saliistis* Montes .retrorsum *circuivisti* Jarden ô : fugisti quòd mare
הים כי תנוס הירדן תסב לאחור : ההרים תרקדו כאילים 6
Dei *faciebus* à : terra contremisce Domini *faciebus* A ?*pecoris* filii sicut colles
גבעות כבני־צאן : מלפני אדון חולי ארץ מלפני אלוה 7
.aquarum fontem in silicem : aquarum stagnum petram *Convertens* .Jahacob
יעקב : ההפכי הצור אגם־מים חלמיש למעינו־מים : 8

PSAL. CXV. קטו

propter : gloriam da tuo nomini sed ,nobis non ,Domine nobis Non
1 לא לנו יהוה לא־לנו כי־לשמך תן־כבוד על־
nunc Ubi : gentes dicent quid Ut :tuâ veritatem propter ,tuâ misericordiam
2 חסדך על־אמתך : למה יאמרו הגוים איה־נא
eorū *Dolores* .fecit voluit quæ omnia : cœlis in noster Deus Et ? eorum Deus
3 אלהיהם : ואלהינו בשמים כל אשר־חפץ עשה : עצביהם 4
oculi : loquentur non & ,eis Os .hominum manuū opus : *aurum* & ,*argentum*
כסף וזהב מעשה ידי אדם : פה־להם ולא ידברו עינים 5
.odorabunt non & ,eis *naris* : audient non & ,eis Aures .videbunt non & ,eis
להם ולא יראו : אזנים להם ולא ישמעו אף להם ולא יריחון : 6
immurmurabunt non ,ambulabunt non & ,*eorum* pedes :palpabunt non & ,*eorum* Manus
7 ידיהם ולא ימישון רגליהם ולא יהלכו לא־יהגו
Israel .eis in *fidens* qui omnis : ea *facientes* sint ipsa Sicut .suo gutture in
8 בגרונם : כמוהם יהיו עשיהם כל אשר־בטח בהם : ישראל 9
fidite Aharon Domus .ipse eorū clypeus & ,eorū auxilium : Domino *in* fide
10 בטח ביהוה עזרם ומגנם הוא : בית אהרן בטחו
fidite ,Dominum Timentes .ipse eorū clypeus & ,eorū auxilium : Domino *in*
11 ביהוה עזרם ומגנם הוא : יראי יהוה בטחו
; nostri fuit memor Dominus .ipse eorū clypeus & ,eorū auxilium : Domino in
12 ביהוה עזרם ומגנם הוא : יהוה זכרנו
.Aharon domui benedicet : Israel domui benedicet ,benedicet
יברך יברך את־בית ישראל יברך את־בית אהרן :

תרגום. TARGUM.

4 רמא על כל עמיא יי עלוי שמיא איקריה :
5 מן כותיה דיי אלהנא דגביה מותביה למתב :
6 דממיך עיניה למחמי בשמיא ובארעא : מקים 7
מעפרא מסכינא מקלקלתא ירים חשיכא :
8 לאותבא עם רברביא עם רברבי עמיה : מיתב 9
כנשתא דישראל דמתילא לעקרא דיתבא
מוריקא לאנשי ביתה מליא אוכלוסין היך אמא
די על בניא חדיא הללויה : קיד
1 במפק ישראל ממצרים בית יעקב מעמי
2 ברבראי : הות כנשתא דבית יהודה אחידא
3 לקודשיה ישראל לשליטוי : ימא אסתכל
4 ואפך יורדנא חזר לאחור : טוריא טפוו היך
5 דכרין גלמתא היך בנין דעאן : מה לך ימא
6 ארום תאפך יורדנא תחזור לאחורא : טוריא
7 טפוו היך דכרין גלמתא היך בנין דעאן : מן
קדם קירים אתחלחלי ארעא מן קדם אלהא
8 דיעקב : דהפך טינרא לאריתא דמיא שמיר
למעין דמין : קטו
1 לא מטולתנא יי לא מטול זכותנא ארום לשמך
2 הב איקרא מטול טובך ומטול קושטך : למא
3 יימרון עממיא אן השתא אלההון : ואלהנא
4 מדוריה בשמיא כל די יצבי עבד : טעותהון
5 דכספא ודהבא עובד ידוי בר נש : פומא להון
6 ולא ממללין עינין להון ולא חמין : אידנין להון
7 ולא שמעין נחירי להון ולא מריחין : ידיהון ולא
ממשמשין רגליהון ולא מהלכין לא מרננין
8 בענקהון : דכמתהון יהון עובדיהון כל די
9 מתרחץ עליהון : ישראל רחיץ במימרא דיי
10 סעדהון ותריסהון הוא : דבית אהרן רחיצו
11 במימרא דיי סעדהון ותריסהון הוא : דחליא
דיי רחיצו במימרא דיי סעדהון ותריסהון הוא :
12 מימרא דיי דכר יתנא לטב יברך יברך ית בית
ישראל יברך ית בית אהרן :

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Excelſus eſt ſuper omnes populos Dominus, 4 ſuper cœlos gloria ejus. Quis ſicut Dominus 5 Deus noſter, qui exaltavit habitationem ſuam ut ſedeat? Qui demittit oculos ſuos 6 ut videat in cœlis & in terra. Erigens 7 de pulvere miſerum, de ſtercore exaltans egenum: Ut ſedere eum faciat cum principibus, 8 cum principibus populi ſui. Qui 9 collocat *eccleſiam Iſraelis, quæ ſimilis eſt ſterili ſedenti mœſtæ pro domeſticis ſuis, frequentem turbis,* tanquam matrem ob filios lætantem. *Hallelujah.*

PSAL. CXIV.

Dum exiret Iſrael ex Ægypto, domus 1 Jaacob ex populo Barbaro: Fuit eccleſia 2 domus Jehudæ unita ſanctitati ejus: Iſrael poteſtatibus ejus. Mare vidit & erupit, 3 Jordanis converſus eſt retrorſum. Montes 4 ſubſilierunt ſicut arietes, colles ſicut filii ovium. Quid tibi erat mare cur erumperes? 5 Jordanis, ut convertereris retrorſum? Montes 6 ſubſilirent ſicut arietes, colles ſicut filii ovium? A facie Domini contremiſce terra; ab 7 aſpectu Dei Jaacob. Qui convertit petram 8 in rivum; rupem in *fontem* aquarum.

PSAL. CXV.

Non propter nos Domine, non propter 1 meritum noſtrum: verùm nomini tuo da gloriam, propter benignitatem tuam & propter veritatem tuam. Quare dicturi ſunt populi: 2 Ubi *nunc* [*eſt*] Deus eorum? Dei autem 3 noſtri habitatio in cœlis eſt; quicquid voluit, fecit. Idola *eorum* argentea & aurea; 4 *opus* manuum hominis. Os ineſt eis, & non 5 loquuntur; oculi inſunt eis, & non vident. Aures inſunt eis, & non audiunt, nares in- 6 ſunt eis, & non odorant. Manus habent, & 7 non palpant; pedes habent, & non ambulant; & non clamant gutture ſuo. Similes illis ſint 8 qui faciunt ea, omnis qui confidit in eis. Iſrael *confidit* in Verbo Domini: adjutorium 9 eorum & ſcutum eorum eſt ipſum. Domus 10 Aharon confidite in Verbo Domini: adjutorium eorum & ſcutum eorum ipſum eſt. Qui 11 timent Dominum confidite in Verbo Domini; auxilium eorum & ſcutum eorum ipſe eſt. Verbum Domini recordatum eſt noſtri 12 in bonum, *benedicet*: benedicet domui Iſrael, benedicet domui Aharon.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

4 * ܘܪܡ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܡܪܝܐ. ܘܥܠ ܫܡܝܐ ܐܝܩܪܗ : * ܡܢܘ ܐܝܟ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ.
5 6 ܕܝܬܒ ܒܪܘܡܐ * ܘܚܙܐ ܒܥܘܡܩܐ : ܫܡܝܐ ܘܐܪܥܐ. * ܡܩܝܡ ܡܢ ܩܩܠܬܐ ܠܡܣܟܢܐ :
7 8 * ܕܢܘܬܒܝܘܗܝ ܥܡ ܪܘܪܒܢܐ ܕܥܡܐ. * ܡܘܬܒ ܠܥܩܪܬܐ ܒܒܝܬܐ : ܘܐܡܐ ܕܒܢܝܐ ܕܚܕܝܐ.
9
* [illegible] *
1 * ܠܐ ܡܫܡܗܐ. ܡܢ ܟܬܒܐ ܥܬܝܩܐ ܕܡܘܫܐ ܕܫܒܚ ܗܘܐ ܥܠ ܝܡܐ. ܠܢ ܕܝܢ ܩܪܝܬܐ
ܕܐܘܢܓܠܝܘܢ ܕܒܗ ܗܘܝܢ ܥܡܐ ܚܕܬܐ ܕܠܩܕܡ ܒܪܒܪܝܐ ܘܗܫܐ ܪܘܚܢܝܐ ܠܐܠܗܐ ܕܐܬܒܣܪ ܝܫܘܥ ܡܫܝܚܐ ܕܦܪܩܢ ܒܕܡܗ
ܡܢ ܠܘܛܬܗ ܕܟܬܒܐ ܘܕܟܝܢ ܡܢ ܚܛܝܬܐ ܒܪܘܚܗ. ܦܬܓܡܐ ܠܒ. ܟܕ ܢܦܩ ܐܝܣܪܝܠ ܡܢ
2 ܡܨܪܝܢ : ܘܒܝܬܗ ܕܝܥܩܘܒ ܡܢ ܥܡܐ ܒܪܒܪܝܐ. * ܗܘܐ ܝܗܘܕܐ ܩܘܕܫܗ ܘܐܝܣܪܝܠ ܫܘܠܛܢܗ :
3 4 * ܝܡܐ ܚܙܝܗܝ ܘܥܪܩ. ܘܝܘܪܕܢܢ ܗܦܟ ܠܒܣܬܪܗ : * ܛܘܪܐ ܕܨܘ ܐܝܟ ܐܝܠܐ. ܘܪܡܬܐ ܐܝܟ
5 6 ܐܡܪܐ ܕܥܢܐ : * ܡܢܐ ܠܟ ܝܡܐ ܕܥܪܩܬ. ܘܠܟ ܝܘܪܕܢܢ ܕܗܦܟܬ ܠܒܣܬܪܟ : * ܛܘܪܐ ܕܕܨܬܘܢ ܐܝܟ
7 ܐܝܠܐ. ܘܪܡܬܐ ܐܝܟ ܐܡܪܐ ܕܥܢܐ : * ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܙܥܬ ܐܪܥܐ. ܡܢ ܩܕܡ ܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ :
8 1 * ܕܗܦܟ ܫܘܥܐ ܠܐܓܡܐ ܕܡܝܐ. ܘܟܐܦܐ ܚܪܝܦܬܐ ܠܡܒܘܥܐ ܕܡܝܐ. * ܠܐ ܠܢ ܡܪܝܐ ܠܐ ܠܢ. ܐܠܐ
2 ܠܫܡܟ ܗܒ ܐܝܩܪܐ : ܥܠ ܛܝܒܘܬܟ ܘܥܠ ܩܘܫܬܟ. * ܕܠܐ ܢܐܡܪܘܢ ܥܡܡܐ ܐܝܟܘ ܐܠܗܗܘܢ :
3 4 * ܐܠܗܢ ܒܫܡܝܐ ܗܘ ܘܟܠ ܕܨܒܐ ܥܒܕ. * ܦܬܟܪܝ ܕܥܡܡܐ ܣܐܡܐ ܘܕܗܒܐ : ܥܒܕ ܐܝܕܝ
5 6 ܒܪܢܫܐ. * ܦܘܡܐ ܐܝܬ ܠܗܘܢ ܘܠܐ ܡܡܠܠܝܢ : ܥܝܢܐ ܐܝܬ ܠܗܘܢ ܘܠܐ ܚܙܝܢ. * ܐܕܢܐ ܐܝܬ
7 ܠܗܘܢ ܘܠܐ ܫܡܥܝܢ : ܢܚܝܪܐ ܐܝܬ ܠܗܘܢ ܘܠܐ ܡܪܝܚܝܢ. * ܘܒܐܝܕܝܗܘܢ ܠܐ ܡܓܫܫܝܢ :
8 ܘܒܪܓܠܝܗܘܢ ܠܐ ܡܗܠܟܝܢ. ܘܠܐ ܡܡܠܠܝܢ ܒܓܓܪܬܗܘܢ : * ܐܝܟܘܬܗܘܢ ܢܗܘܘܢ
9 ܥܒܘܕܝܗܘܢ. ܘܟܠ ܕܬܟܝܠܝܢ ܥܠܝܗܘܢ : * ܒܝܬܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܬܟܝܠܝܢ ܥܠ ܡܪܝܐ. ܘܗܘܝܘ
10 ܥܕܪܗܘܢ ܘܡܣܡܟܢܗܘܢ : * ܒܝܬܗ ܕܐܗܪܘܢ ܬܟܝܠܝܢ ܥܠ ܡܪܝܐ. ܘܗܘܝܘ ܥܕܪܗܘܢ
11 ܘܡܣܡܟܢܗܘܢ : * ܕܚܠܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܬܟܝܠܝܢ ܥܠ ܡܪܝܐ. ܘܗܘܝܘ ܥܕܪܗܘܢ
12 ܘܡܣܡܟܢܗܘܢ : * ܡܪܝܐ ܐܬܕܟܪܢ ܘܒܪܟܢ. ܢܒܪܟ ܠܒܝܬܗ ܕܐܝܣܪܝܠ : ܢܒܪܟ ܠܒܝܬܗ ܕܐܗܪܘܢ.

Et excelſus ſuper omnes populos Dominus, 4 & ſuper cœlū majeſtas ejus? Quis ut Do- 5 minus Deus noſter, qui ſedet in alto, Et in- 6 ſpicit profundū, cœlum, ac terram? Erigit è 7 ſterquilinio pauperem, Ut eum ſedere faciat 8 cum proceribus populi? Habitare facit ſteri- 9 lem in domo, & matrem filiorū gaudentem?

PSAL. CXIV.

Anonymus. Ex ſcriptura veteri. De Moſe 1 *qui laudem dixerat ſecus mare. Nobis autē, vocatio Evangelii per quā popul⁹ novus facti ſumus, antehac barbarus, nunc ſpiritualis Deo qui incarnatus eſt, Jeſu Chriſto qui redemit nos ſanguine ſuo à maledicto ſcripturæ, & emundavit nos peccato per Spiritum ſuum. Verſus 32.*

Cum exiret Iſrael ex Ægypto, & familia Jacobi de populo barbaro: Factus eſt 2 Ihuda ſanctitas ejus, & Iſrael gloria ipſius. Mare vidit eum ac refugit, & Jordanis re- 3 troverſus eſt. Montes proſilierunt tanquam 4 cervi, & colles ut agni ovium. Quid eſt tibi 5 mare quòd refugiſti, & tibi Jordanis, quòd es retroverſus? Montes, quòd proſiliiſtis tan- 6 quam cervi, & colles ut agni oviū? A con- 7 ſpectu Domini tremuit terra, à conſpectu Dei Jacobi: Qui vertit rupem in ſtagna aquarū, 8 & ſaxum durum in ſcatebras aquarum.

Non nobis Dñe, non nobis, ſed nomini 1 tuo defer honorem ob bonitatem tuam, & ob veritatem tuam: Ut ne dicant gentes, 2 Ubi eſt Deus eorum? Deus noſter in cœlo 3 eſt, & quicquid vult operatur. Idola gentiū 4 argentum ſunt atque aurū, ſtructura manuum hominis. Ora habent, & non loquuntur: o- 5 culos habent, & non vident; Aures habent, 6 & non audiunt: nares habent, et non odorantur: Et manibus ſuis non palpant: neque 7 ſuis pedibus gradiuntur: neq; loquuntur gutturib⁹ ſuis. Sicut ipſa evadant opifices eorū, 8 & omnes qui fidunt illis. Domeſtici Iſraelis 9 fidunt Dño, & ipſe adjutor eſt eorum atque ſuffultor ipſorū. Domeſtici Aharonis fidunt 10 Dño, ipſeq; eſt adjutor eorū et ſuffultor eorum. Metuentes Dominum freti ſunt Domi- 11 no, et ipſe eſt adjutor eorum et ſuffultor ipſorum. Dominus recordatus eſt noſtrî, et be- 12 nedixit nobis. Benedicat domeſticis Iſraelis: benedicat familiæ Aharonis:

Versio VULG. LAT.

4 Excelsus sup omnes gentes Dominus,
5 & super cœlos gloria ejus. Quis sicut
Dñs Deus noster, qui in altis habitat,
6 Et humilia respicit in cœlo & in ter-
7 ra? Suscitans à terra inopem, & de
8 stercore erigens pauperem: Ut collo-
cet eum cũ principibus, cum princi-
9 pibus populi sui. Qui habitare facit
sterilem in domo, matrem filiorum læ-
tantem.

Alleluja. CXIII.

1 IN exitu Israel de Ægypto, domûs
2 Jacob de populo barbaro: Facta est
Judæa sanctificatio ejus, Israel pote-
3 stas ejus. Mare vidit, & fugit: Jorda-
4 nis conversus est retrorsum. Montes
exultaverunt ut arietes: & colles sicut
5 agni ovium. Quid est tibi mare quòd
fugisti: & tu Jordanis, quia conver-
6 sus es retrorsũ? Montes exultâstis sic-
ut arietes, & colles sicut agni oviũ.
7 A facie Dñi mota est terra, à facie Dei
8 Jacob. Qui convertit petram in stagna
aquarũ, & rupem in fontes aquarum.
1 NON NOBIS, DOMINE, NON
NOBIS; sed nomini tuo da gloriam.
2 Sup misericordia tua, & veritate tua:
nequando dicant gentes, Ubi est Deus
3 eorum? Deus autem noster in cœlo:
4 omnia quæcunque voluit, fecit. Si-
mulachra gentium argentum & au-
5 rum, opera manuũ hominum. Os ha-
bent, & non loquentur: oculos ha-
6 bent, & non videbunt. Aures habent,
& non audient: nares habent, & non
7 odorabunt. Manus habent, & non
palpabunt: pedes habent, & non am-
bulabunt: non clamabunt in gutture
8 suo. Similes illis fiant qui faciunt ea:
9 & omnes qui confidunt in eis. Domus
Israel speravit in Dño: adjutor eorũ
10 & protector eorum est. Domus Aaron
speravit in Domino: adjutor eorum &
11 protector eorum est. Qui timent Do-
minum, speraverunt in Domino: ad-
jutor eorum & protector eorum est.
12 Dominus memor fuit nostrî: & be-
nedixit nobis. Benedixit domui Israel,
benedixit domui Aaron.

Versio GRÆC. LXX. Interp.

4 † Ὑψηλὸς ἐπὶ πάντα τὰ ἔθνη ὁ κύριος, † ἐπὶ τοὺς
5 οὐρανοὺς ἡ δόξα αὐτοῦ. † Τίς ὡς κύριος ὁ θεὸς ἡμῶν;
6 † ὁ ἐν ὑψηλοῖς κατοικῶν, Καὶ τὰ ταπεινὰ ἐφορῶν
7 † ἐν τῷ οὐρανῷ, καὶ ἐν τῇ γῇ; † Ὁ ἐγείρων ἀπὸ γῆς
8 πτωχὸν, † καὶ ἀπὸ κοπρίας ἀνυψῶν πένητα, † Τοῦ καθίσαι
αὐτὸν μετὰ ἀρχόντων, † μετὰ ἀρχόντων λαοῦ αὐτοῦ.
9 † Ὁ κατοικίζων στεῖραν ἐν οἴκῳ, † μητέρα ἐπὶ τέκνοις
εὐφραινομένην.

Ἀλληλούϊα. ριγʹ.

1 † ΕΝ ἐξόδῳ Ἰσραὴλ ἐξ Αἰγύπτου, † οἴκου Ἰα-
2 κὼβ ἐκ λαοῦ βαρβάρου, † Ἐγενήθη Ἰουδαία ἁγίασμα
3 αὐτοῦ, † Ἰσραὴλ ἐξουσία αὐτοῦ. † Ἡ θάλασσα
εἶδε καὶ ἔφυγεν, † ὁ Ἰορδάνης ἐστράφη εἰς τὰ ὀπίσω.
4 † Τὰ ὄρη ἐσκίρτησαν ὡσεὶ κριοὶ, † καὶ οἱ βουνοὶ
5 ὡς ἀρνία προβάτων. † Τί σοί ἐστι θάλασσα ὅτι ἔφυγες;
† (α) καὶ σὺ Ἰορδάνη ὅτι ἐστράφης εἰς τὰ ὀπίσω;
6 † Τὰ ὄρη ὅτι (β) ἐσκιρτήσατε ὡσεὶ κριοί; † καὶ
7 οἱ βουνοὶ ὡς ἀρνία προβάτων; † Ἀπὸ προσώπου κυρίου
ἐσαλεύθη ἡ γῆ, † ἀπὸ προσώπου τοῦ θεοῦ Ἰακὼβ,
8 † Τοῦ στρέψαντος τὴν πέτραν εἰς λίμνας ὑδάτων, † καὶ
1 τὴν ἀκρότομον εἰς πηγὰς ὑδάτων. † Μὴ ἡμῖν κύριε,
μὴ ἡμῖν, † ἀλλ' ἢ τῷ ὀνόματί σου δὸς δόξαν,
2 † Ἐπὶ τῷ ἐλέει σου καὶ τῇ ἀληθείᾳ σου. † μήποτε εἴπωσι
3 τὰ ἔθνη, Ποῦ ἐστιν ὁ θεὸς αὐτῶν; † Ὁ δὲ θεὸς
ἡμῶν ἐν τῷ οὐρανῷ καὶ ἐν τῇ γῇ, † πάντα ὅσα ἠθέλησεν,
4 ἐποίησε. † Τὰ εἴδωλα τῶν ἐθνῶν, ἀργύριον
5 καὶ χρυσίον, † ἔργα χειρῶν ἀνθρώπων. † Στόμα ἔχουσι
καὶ οὐ λαλήσουσιν, † ὀφθαλμοὺς ἔχουσι καὶ οὐκ ὄψονται,
6 † Ὦτα ἔχουσι καὶ οὐκ ἀκούσονται, † ῥῖνας ἔχουσι
7 καὶ οὐκ ὀσφρανθήσονται, † Χεῖρας ἔχουσι καὶ οὐ
ψηλαφήσουσι, † πόδας ἔχουσι καὶ οὐ περιπατήσουσιν,
8 † οὐ φωνήσουσιν ἐν τῷ λάρυγγι αὐτῶν. † Ὅμοιοι (γ)
αὐτοῖς γένοιντο οἱ ποιοῦντες αὐτὰ, † καὶ πάντες οἱ
9 πεποιθότες ἐπ' αὐτοῖς. † Οἶκος Ἰσραὴλ ἤλπισεν
ἐπὶ κύριον, † βοηθὸς καὶ ὑπερασπιστὴς αὐτῶν ἐστιν.
10 † Οἶκος Ἀαρὼν ἤλπισεν ἐπὶ κύριον, † βοηθὸς
καὶ ὑπερασπιστὴς αὐτῶν ἐστιν. † Οἱ φοβούμε-
11 νοι (δ) τὸν κύριον ἤλπισαν ἐπὶ κύριον, † βοη-
12 θὸς καὶ ὑπερασπιστὴς αὐτῶν ἐστιν. † Κύριος μνη-
σθεὶς ἡμῶν εὐλόγησεν ἡμᾶς, † εὐλόγησε τὸν οἶκον
Ἰσραὴλ, † εὐλόγησε τὸν οἶκον Ἀαρών.

MS.A. (α) καὶ σοὶ (β) ἐσκιρτίσατε (γ) αὐτῶν (δ) κύριον

Vers. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Transl. LAT.

4 Excelsus super omnes gentes Dominus, super cœlos gloria ejus. 4
5 Quis sicut Dominus Deus noster; 5
qui in altis habitat, Et humilia respicit [b] in cœlo, & in terra? 6 Qui 6 7
suscitat à terra inopem, & de stercore erigit pauperem. 7 Ut collocet 8
eum cum [c] principibus, cum principibus populi sui. 8 Qui habitare fa- 9
cit sterilem in domo, matrem (b) super filiis lætantem.

Alleluia. CXIII.

IN exitu Israel de (a) Ægypto, 1
domûs Jacob de populo barbaro:
2 Facta est Judæa sanctificatio ejus: 2
[a] Israel potestas ejus. 3 Mare vidit, 3
& fugit: Jordanis conversus est retrorsum. 4 Montes (b) gestierunt vel- 4
ut arietes, & colles velut agni ovium. 5 Quid est tibi mare, quòd fu- 5
gisti? & tu Jordanis, quia conversus es retrorsum? 6 Montes (c) quia 6
gestiistis, velut arietes? et colles velut agni oviũ? 7 A facie Domini (d) 7
commota est terra, à facie Dei Jacob.
8 Qui (e) convertit petram in [b] 8
stagna aquarũ, & (f) rupẽ in [c] fontes aquarũ. 9 Non nobis, Do- 1
mine, non nobis: sed nomini tuo [d]
da gloriam. 10 (g) Super misericor- 2
dia tua, & veritate tua: nequando
dicant gentes, Ubi est Deus eorum?
11 Deus autẽ noster in cœlo [e], et 3
(h) in terra: omnia, quæ voluit, fecit
[f]. 12 (i) Simulachra gentium argẽ- 4
tum, & aurum, opera manuum hominum. 13 Os habent, & non loquen- 5
tur: oculos habent, & non videbunt.
14 Aures habent, & non audient: na- 6
res habent, & non odorabũt. 15 Ma- 7
nus habent, & non contrectabunt: pedes habent, & non ambulabunt: non
[g] clamabũt in gutture suo. 16 Si- 8
miles illis fiant [h], qui faciunt ea,
& omnes qui confidunt in eis. 17 Do- 9
mus Israel speravit in Domino: adjutor [i] & protector eorum est. 18 Do- 10
mus Aaron speravit in Domino: adjutor & protector eorũ est. 19 Qui 11
[k] timent Dominũ, speraverunt in Domino: adjutor [l] & protector eorũ est. 20 Dominus (k) recordatus 12
nostrî benedixit nos: 21 benedixit domũ Israel, benedixit domũ Aarõ.

Versio ÆTHIOPICA.

ልዑል፡እግዚአብሔር፡መልዕልተ፡ኵሉ፡አሕ 4
ዛብ፡፡ወውስተ፡ሰማያት፡ስብሐቲሁ፡፡=፡መኑ፡ 5
ከመ፡እግዚአብሔር፡አምላክነ፡፡ዘይነብር፡
ውስተ፡አርያም፡ወይሬኢ፡ዘበታሕቱ፡፡በሰማ
ያት፡ወበምድርኒ፡፡=፡ ዘያነሥኦ፡ለነዳይ፡እ 6
ምድር፡፡ወያሌዕሎ፡እምሬት፡ለምስኪን፡፡=፡ 7
ከመ፡ያንብሮ፡ምስለ፡መላእክቲሁ፡፡ ወምስ
ለ፡መላእክተ፡ሕዝቡ፡፡=፡ዘያነብራ፡ለመካን፡ 8
ውስተ፡ቤቱ፡፡ወያስተፌሥሓ፡ ለእመ፡ ውሉ
ሃሌሉያ፡፡ ፻፲፫፡፡=፡
ሶበ ለሙ፡ይወጽኡ፡እስራኤል፡እምግብጽ፡፡ 1
ወቤተ፡ያዕቆብ፡እምሕዝበ፡ፀር፡፡=፡ ወኮነ፡ 2
ይሁደ፡መቅደሶ፡ወእስራኤልኒ፡ምኵናኖ፡፡=፡
ባሕርኒ፡ርእየት፡ወጐየት፡፡ ወዮርዳኖስኒ፡ 3
ገብአ፡ድኅሬሁ፡፡=፡ወአድባር፡አንፈርዐጹ፡ 4
ከመ፡ሐራጊት፡፡ወአውግርኒ፡ከመ፡መሐስአ፡
አባግዕ፡፡=፡ ምንተ፡ኮንኪ፡ባሕር፡ዘጐየይ 5
ኪ፡፡ ወአንተኒ፡ዮርዳኖስ፡ዘገባእከ፡ድኅሬ
ከ፡፡=፡ ወአድባር፡ዘአንፈርዓጽክሙ፡ከመ፡ 6
ሐራጊት፡፡ ከአውግርኒ፡ከመ፡መሐስአ፡አባግ
ዕ፡፡=፡ እምቅድመ፡ገጹ፡ለእግዚአብሔር፡ 7
አድለቅለቀት፡ምድር፡እምቅድመ፡ገጹ፡ለአ
ምላከ፡ያዕቆብ፡፡=፡ዘይሬስያ፡ለኰኵሕ፡አ 8
ንቅዕተ፡ማያተ፡፡ ወለእዝሓ፡ አዘቃተ፡ ማያ
ት፡፡=፡ አኮ፡ለነ፡እግዚኦ፡አኮ፡ለነ፡፡ለስም፡ 9
ዚአከ፡ነሀብ፡ስብሐተ፡፡=፡በምሕረትከ፡ ወ 10
በጽድቅከ፡፡ ከመ፡ኢይበሉነ፡አሕዛብ፡አይ
ቴ፡ውእቱ፡አምላኮሙ፡፡=፡ አምላክነሰ፡ 11
ውስተ፡ሰ ማይ፡ሳዕለ፡፡ በሰማይኒ፡ወበምድር
ኒ፡፡ ኵሉ ፡ ዘፈቀደ ፡ ገብረ ፡ እግዚአብሔ
ር፡፡=፡ አማልክቲሆሙ፡ለአሕዛብ፡ዘወርቅ፡ 12
ወብሩር፡፡ ግብረ ፡ እደ ፡ እጓለ ፡ እመሕያ
ው፡፡=፡ አፈ፡ቦሙ፡ወኢይነቡ፡፡ ዐይነ፡ቦሙ፡ 13
ወኢይሬእዩ፡፡=፡እዝነ፡ቦሙ፡ወኢይሰምዑ፡፡ 14
አንፈ፡ቦሙ፡ ወኢያጼንዉ፡፡=፡ እደ፡ቦሙ፡ወ 15
ኢይገሱ፡፡ እግረ፡ቦሙ፡ ወኢየሐውሩ፡፡ወኢ
ይነቡ፡፡ በጐረዒቶሙ፡፡ ወአልቦሙ፡መንፈስ፡
ውስተ፡አፉሆሙ፡፡=፡ ከማሆሙ፡ለይኩኑ፡ 16
ኵሎሙ፡እለ፡ገብርዎሙ፡፡ ወኵሎሙ፡እ
ለ፡ይትዌከሉ፡ቦሙ፡፡=፡ ቤተ፡እስራኤል፡ተ 17
ወከሉ፡በእግዚአብሔር፡፡ ረዳኢሆሙ፡ውእ
ቱ፡ ወምእመናሙ፡፡=፡ቤተ፡አሮን፡ተወከሉ፡ 18
በእግዚአብሔር፡፡ ረዳኢሆሙ፡ውእቱ፡ወም
እመናሙ፡፡=፡ እለ፡ትፈርህዎ፡ ለእግዚአብ 19
ሔር፡ ተወከሉ፡ በእግዚአብሔር፡፡ ረዳኢሆ
ሙ፡ውእቱ፡ወምእመናሙ፡፡=፡ እግዚአብ 20
ሔር፡ተዘከረነ፡ ወበረከነ፡፡=፡ ባርክ፡ቤተ፡ 21
እስራኤል፡፡ወባርክ፡ ቤተ፡አሮን፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [b] cùm in cœlo, tum & in [c] principibus suis, PSAL. CXIII. [a] & Israel etiam [b] fontes aquarũ, [c] puteos aquarum. [d] dabimus gloriam. [e] suprà, in cœlo quidẽ, & in terra etiam: omnia [f] Deus. Dii gentiũ [g] loquuntur in faucibus suis: neq; est spiritus in oribus eorum. [h] omnes qui [i] eorum, & [k] timetis Dominum, sperate [l] eorum, &

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

4 5 * الرب عال علي جميع الامم * وعلي السموات مجده * من مثل الرب الهنا * الساكن في
6 7 العاليات * والناظر علي المتضعات * في السماء وعلي الارض * الذي يقيم علي الارض مسكينا *
8 9 والرافع من المزبلة فقيرا * لكي يجلسه مع الرؤساء * مع رؤساء شعبه * الذي يجعل العاقر
ساكنة في بيت * ام اولاد فرحة * الليلويا *

1 * المزمور المائة وثلثة عشر * الليلويا * وهو * ند * استيخن *
2 في خروج اسرائيل من مصر * وبيت يعقوب من شعب البربري * صارت اليهودية له مكان
3 4 قدس * واسرائيل هو سلطانه * البحر راي فهرب * الاردن رجع الي خلف * ابتهجت الجبال
5 مثل الكباش * والاكام مثل حملان الضان * فما لك ايها البحر هربت * وانت ايها الاردن حتي رجعت
6 7 الي خلف * ويا جبال حتي رقصت كالكباش * ويا اكام مثل حملان الضان * الارض تزلزلت من
8 قدام وجه الرب * ومن وجه اله يعقوب * الذي حول الصخر بحيرات ماء * والحجر الاصم
1 2 لينابيع الماء * * ليس لنا يا رب ليس لنا لكن مجد اسمك * لاجل رحمتك
3 4 وبرك * لئلا تقول الامم اين الههم * والهنا في السماء والارض * وكل شي اراد عمله * اوثان الامم
5 6 ذهب وفضة * وهي عمل ايدي الناس * لها افواه ولا تتكلم * لها اعين ولا تري * لها اذان
7 ولا تسمع * لها اناف ولا تشم * لها ايد ولا تلمس * لها ارجل ولا تمشي * ولا تقدر ان تدعوا بصوت
8 9 من حنجرتها * يشبهها جميع صانعيها * وكل من يتوكل عليها * بيت اسرائيل توكلوا علي الرب * وهو
10 11 معينهم وناصرهم * بيت هرون توكلوا علي الرب * هو معينهم وناصرهم * الخائفون من الرب توكلوا علي
12 الرب * هو معينهم وناصرهم * الرب ذكرنا وباركنا بارك بيت اسرائيل * بارك بيت هرون *

Dominus altissimus est super omnes gen- 4
tes, & super cœlos gloria ejus. Quis si- 5
milis est Domino Deo nostro, habitanti in
altissimis, Et prospicienti ima, in cœlo 6
& super terram? Qui erigit super ter- 7
ram, inopem, & elevat è sterquilinio
pauperem, ut sedere faciat eum cum 8
principibus, cum principibus populi sui.
Qui facit sterilem, degentem in domo: 9
matrem filiorum, lætantem. Alleluja.

PSAL. CXIII.

Alleluja. Vers. 54. 1

IN exitu Israel ex Ægypto, & domûs
Jacob de populo barbaro, Facta est Ju- 2
dæa ipsi locus sanctitatis, & Israel est
princeps ejus. Mare vidit refugitque, 3
Jordanis reversus est retrorsum. Exul- 4
taverunt montes ut arietes, & colles ut
agni ovium. Quid est tibi O mare quòd 5
fugeris? & tibi, O Jordanis, ut reversus
sis retrorsum. Et O montes, ut salieritis 6
sicut arietes? & O colles sicut agni
ovium? Terra tremuit à conspectu vul- 7
tûs Domini, & à facie Dei Jacob: Qui 8
convertit petram in stagna aquæ, & sa-
xum durum in fontes aquæ.

NOn nobis O Domine, non nobis: sed 1
glorifica nomen tuum propter mi-
sericordiam tuam & justitiam tuam.
ut ne dicant gentes, ubi est Deus eorum? 2
Et verò Deus noster in cœlo est & in ter- 3
ra, & quamcunque rem voluit, fecit.
Simulacra gentium argentum & aurum, 4
& sunt opus manuum hominum. Habent 5
ora, & non loquuntur: habent oculos, &
non vident: Habent aures, & non au- 6
diunt: habent nares, & non odorantur:
Habent manus, & non palpant: habent 7
pedes, & non ambulant: nec possunt
edere vocem è gutture suo. Similes sint 8
eis omnes opifices eorum & quisquis con-
fidit in eis. Domus Israel confisi sunt in 9
Domino, & ipse adjutor eorum & auxi-
liator eorum est. Domus Aaron confisi 10
sunt in Domino, ipse adjutor est eorum
& auxiliator illorum. Timentes Domi- 11
num confisi sunt in Domino, ipse adjutor
est eorum & auxiliator eorum. Dominus 12
recordatus est nostrî, & benedixit nobis:
benedixit domui Israel, benedixit domui
Aaron,

תהלים : קיו קיז

Dominus Adjiciat .magnis cum puſillis : Dominum timentibus Benedicet
יְבָרֵךְ יִרְאֵי יְהוָה הַקְּטַנִּים עִם־הַגְּדֹלִים׃ יֹסֵף יְהוָה 13 14
facienti : Domino vos Benedicti .veſtros filios ſuper & ,vos ſuper ; vos ſuper
עֲלֵיכֶם עֲלֵיכֶם וְעַל־בְּנֵיכֶם׃ בְּרוּכִים אַתֶּם לַיהוָה עֹשֵׂה 15
.hominum filiis dedit terram & : Domino cæli Cæli .terram & cœlos
שָׁמַיִם וָאָרֶץ׃ הַשָּׁמַיִם שָׁמַיִם לַיהוָה וְהָאָרֶץ נָתַן לִבְנֵי־אָדָם׃ 16
nos Et .ſilentium deſcendentes omnes nec : Jah laudabunt mortui Non
לֹא הַמֵּתִים יְהַלְלוּ־יָהּ וְלֹא כָּל־יֹרְדֵי דוּמָה׃ וַאֲנַחְנוּ 17 18
.Jah-Hallelu .ſeculum in uſque & ,nunc ex Jah benedicemus
נְבָרֵךְ יָהּ מֵעַתָּה וְעַד־עוֹלָם הַלְלוּ־יָהּ׃

PSAL. CXVI. קיו

inclinavit Quia .meas deprecationes ,meā vocem Dominus exaudiet quoniā , Dilexi
אָהַבְתִּי כִּי־יִשְׁמַע יְהוָה אֶת־קוֹלִי תַּחֲנוּנָי׃ כִּי־הִטָּה 1 2
,mortis funes me Circundederunt .invocabo meis diebus in & : mihi ſuam aurem
אָזְנוֹ לִי וּבְיָמַי אֶקְרָא׃ אֲפָפוּנִי חֶבְלֵי־מָוֶת 3
Domini nomine in Et .inveniam moleſtiam & anguſtiā:me invenerūt inferni anguſtiæ &
וּמְצָרֵי שְׁאוֹל מְצָאוּנִי צָרָה וְיָגוֹן אֶמְצָא׃ וּבְשֵׁם־יְהוָה 4
: juſtus & ,Dominus Gratioſus .meā animam erue Domine quæſo : invocabo
אֶקְרָא אָנָּה יְהוָה מַלְּטָה נַפְשִׁי׃ חַנּוּן יְהוָה וְצַדִּיק 5
.ſervabit me & ,ſum attenuatꝰ :Dñs ſimplices Cuſtodiens .miſerans noſter Deꝰ &
וֵאלֹהֵינוּ מְרַחֵם׃ שֹׁמֵר פְּתָאיִם יְהוָה דַּלּוֹתִי וְלִי יְהוֹשִׁיעַ׃ 6
eripuiſti Quia .te ſuper retribuit Dominus quia :tuā requiē ad mea anima Revertere
שׁוּבִי נַפְשִׁי לִמְנוּחָיְכִי כִּי־יְהוָה גָּמַל עָלָיְכִי׃ כִּי חִלַּצְתָּ 7 8
Ambulabo .impulſu ab meū pedem : lachryma à meū oculum ; morte à meā animā
נַפְשִׁי מִמָּוֶת אֶת־עֵינִי מִן־דִּמְעָה אֶת־רַגְלִי מִדֶּחִי׃ אֶתְהַלֵּךְ 9
ſum afflictus ego : loquar quia , Credidi .viventium terris in ,Domini facies ad
לִפְנֵי יְהוָה בְּאַרְצוֹת הַחַיִּים׃ הֶאֱמַנְתִּי כִּי אֲדַבֵּר אֲנִי עָנִיתִי 10
reddam Quid .mendax homo omnis : mea feſtinatione in dixi Ego .valde
מְאֹד׃ אֲנִי אָמַרְתִּי בְחָפְזִי כָּל־הָאָדָם כֹּזֵב׃ מָה־אָשִׁיב 11 12
nomine in & : levabo ſalutum Calicem ? me ſuper ejus retributiones omnes : Domino
לַיהוָה כָּל־תַּגְמוּלוֹהִי עָלָי׃ כּוֹס־יְשׁוּעוֹת אֶשָּׂא וּבְשֵׁם 13
.ejus populo omni nunc coram : reddam Domino mea Vota .invocabo Domini
יְהוָה אֶקְרָא׃ נְדָרַי לַיהוָה אֲשַׁלֵּם נֶגְדָה־נָּא לְכָל־עַמּוֹ׃ 14
ego quia ,Domine Obſecro .ejus miſericordium mors ,Domini oculis in Precioſa
יָקָר בְּעֵינֵי יְהוָה הַמָּוְתָה לַחֲסִידָיו׃ אָנָּה יְהוָה כִּי־אֲנִי 15 16
ſacrificabo Tibi .mea vincula ſolviſti : tuæ ancillæ filius tuus ſervus ego ,tuꝰ ſervus
עַבְדֶּךָ אֲנִי עַבְדְּךָ בֶּן־אֲמָתֶךָ פִּתַּחְתָּ לְמוֹסֵרָי׃ לְךָ אֶזְבַּח 17
, reddam Domino mea Vota .invocabo Domini nomine in & : laudis ſacrificium
זֶבַח תּוֹדָה וּבְשֵׁם יְהוָה אֶקְרָא׃ נְדָרַי לַיהוָה אֲשַׁלֵּם 18
tui medio in ,Domini domus atriis In .ejus populo omni nunc coram
נֶגְדָה־נָּא לְכָל־עַמּוֹ׃ בְּחַצְרוֹת בֵּית יְהוָה בְּתוֹכֵכִי 19
.Jah-Hallelu :Jeruſalaim
יְרוּשָׁלָםִ הַלְלוּ־יָהּ׃

PSAL. CXVII. קיז

Quoniam .populi omnes eum laudate : gentes omnes Dominum Laudate
הַלְלוּ אֶת־יְהוָה כָּל־גּוֹיִם שַׁבְּחוּהוּ כָּל־הָאֻמִּים׃ כִּי 1 2
Jah-Hallelu .ſeculum in Domini veritas &,ejꝰ miſericordia nos ſuper eſt roborata
גָבַר עָלֵינוּ חַסְדּוֹ וֶאֱמֶת־יְהוָה לְעוֹלָם הַלְלוּ־יָהּ׃

תרגום TARGUM.

13 יְבָרֵךְ דַּחֲלַיָּא דַּיְיָ זְעִירַיָּא עִם רַבְרְבַיָּא׃ יוֹסֵף
14 מֵימְרָא דַּיְיָ עֲלֵיכוֹן עֲלֵיכוֹן וַעֲלָוֵי בְּנֵיכוֹן׃
15 16 בְּרִיכִין אַתּוּן מִן קֳדָם יְיָ עֲבַד שְׁמַיָּא וְאַרְעָא׃ שְׁמֵי
שְׁמַיָּא לִשְׁכִינַת יְקָרָא דַּיְיָ וְאַרְעָא יְהַב לִבְנֵי נָשָׁא׃
17 לָא מֵיתַיָּא מְשַׁבְּחִין שְׁמָא דַּיְיָ וְלָא כָּל נָחֲתֵי בֵּית
18 קְבוּרַת אַדְמְתָא׃ וַאֲנַחְנָא נְבָרֵךְ יָהּ מִן הַשְׁתָּא
וְעַד עָלְמָא הַלְלוּיָהּ׃

קיו

1 2 רְחִימִית אֲרוּם יִשְׁמַע יְיָ יַת קָלִי בָּעוּתִי׃ אֲרוּם
3 אַצְלֵי אוּדְנֵיהּ לִי וּבְיוֹמַי אֲנָא קָרֵי׃ אַקִּיפוּ יָתִי
מַרְעֵי מוֹתָא וְעִיקְתִין דִּשְׁיוֹל אַשְׁכְּחוּנִי עִיקְתָא
4 וְדָבוֹנָא אֶשְׁכַּח׃ וּבִשְׁמָא דַּיְיָ אֶקְרֵי בְּבָעוּ יְיָ שֵׁזֵיב
5 6 נַפְשִׁי׃ חַנָּנָא יְיָ וְזַכָּאָה וֵאלָהָנָא מְרַחֵם׃ נָטֵר
7 שַׁרְגוֹנַיָּא יְיָ אִתְמַסְכְּנִית וְלִי חָמֵי לְמִפְרוֹק׃ תּוּבִי
נַפְשִׁי לְבֵית מְנָחֲיְכִי אֲרוּם מֵימְרָא דַּיְיָ גְּמַל טוּבָא
8 עֲלַיְכִי׃ אֲרוּם פְּצֵיתָא נַפְשִׁי מִקְּטוֹל יַת עֵינִי מִן
9 דִּמְעֲתָא יַת רִגְלִי מִן לְאִדְחָיָא׃ אֶתְהַלֵּךְ קֳדָם יְיָ
10 בְּאַרְעַת חַיַּיָּא׃ הֵימְנֵית אֲרוּם אֲמַלֵּל בִּכְנִישַׁת
11 צַדִּיקֵי אֲנָא שַׁבְּחֵית לַחֲדָא׃ אֲנָא אֲמָרִית בְּמֶעְרְקִי
12 כָּל בְּנֵי נָשָׁא מְכַדְּבִין׃ מָה אֲתִיב קֳדָם יְיָ כָּל גְּמוּלָן
13 טָבָן דִּילֵיהּ גְּמִילִין הִנּוּן עֲלַי׃ כָּסָא דְפוּרְקָנַיָּא
אֲסוֹבַר לְעָלְמָא דְאָתֵי וּבִשְׁמָא דַּיְיָ אֶקְרֵי׃
14 נִדְרַי קֳדָם יְיָ אֲשַׁלֵּם אֲתַנֵּי כְדוּן נִסּוֹי לְכָל עַמֵּיהּ׃
15 יַקִּיר קֳדָם יְיָ מִיתוּתָא דְּמִשְׁתַּלְחָא לַחֲסִידוֹי׃
16 בְּבָעוּ יְיָ אֲרוּם אֲנָא עַבְדָּךְ אֲנָא עַבְדָּךְ בַּר אַמְתָךְ
17 שְׁרֵיתָא לְשׁוּלְשְׁלָוָתִי׃ לָךְ אֶדְבַּח דְּבַח נִכְסָתָא
18 וּבִשְׁמָא דַּיְיָ אֶקְרֵי׃ נִדְרַי קֳדָם יְיָ אֲשַׁלֵּם אֲתַנֵּי
19 כְדוּן נִסּוֹי לְכָל עַמֵּיהּ׃ בְּדַרְתָּא דִּי בְּבֵית מַקְדַּשׁ
אֱלָהָנָא בִּמְצִיעִיכִי יְרוּשְׁלֶם הַלְלוּיָהּ׃

קיז

1 שַׁבַּחוּ יַת יְיָ כָּל עַמַּיָּא שַׁבַּחוּ לֵיהּ כָּל אוּמַּיָּא׃
2 אֲרוּם אַגְבַּר עֲלָנָא טוּבֵיהּ וְקוּשְׁטֵיהּ דַּיְיָ לְעָלְמָא
הַלְלוּיָהּ׃

PARAPH. CHALD. Verſ.Lat.

Benedicet timentibus Dominum, parvis cum 13
magnis. Apponat Dominus ſuper vos, ſuper 14
vos & ſuper filios veſtros. Benedicti vos à 15
præſentia Domini, qui fecit cœlum & terrā.
Cœli cœlorum majeſtati gloriæ Domini: 16
terram autem dedit filiis hominum. Non 17
mortui laudant *nomen Domini*, neque omnes
qui deſcendunt in domum ſepulturæ terre-
ſtris. Sed nos benedicemus Deo, ex hoc 18
tempore & uſque in æternum. *Hallelujah.*

PSAL. CXVI.

DIlexi, quoniam audiet Dominus vocem 1
meam [&] deprecationes meas. Quoniam 2
inclinavit aurem ſuam mihi, & in diebus
meis ego invocabo. Circundederunt me 3
ægritudines mortis, & moleſtiæ inferni in-
venerunt me, afflictionem & dolorem inve-
niam. In nomine autem Domini invocabo: 4
obſecro Domine libera animam meam. Cle- 5
mens Dominus & juſtus, & Deus noſter mi-
ſericors. Cuſtodit ſimplices Dominus : hu- 6
miliatus ſum, ſed reſpexit me ad redempti-
onem. Convertere anima mea in requiem 7
tuam, quoniam verbum Domini reddit bo-
num tibi. Quoniam eripuiſti animam meam 8
ab occiſione, oculum meum à lachrymis, pe-
dem meum à lapſu. Incedam coram Domino 9
in terra vivorum. Credidi, propterea lo- 10
quar, *in congregatione juſtorum* ego laudavi
majorem in modum. Ego dixi inter fugien- 11
dum, Omnes filii hominum mendaces. Quid 12
reddam coram Domino ? omnes retributio-
nes ejus bonæ repenſæ ſunt ſuper me. Cali- 13
cem *redemptionū* portabo *in ſeculo venturo*,
& in nomine Domini invocabo. Vota mea 14
coram Domino reddam : narrabo tunc ſigna
ejus omni populo ejus. Honorifica coram 15
Domino mors eſt quæ infertur ſanctis ejus.
Obſecro Domine, quia ego ſervus tuus, ego 16
ſervus tuus filius ancillæ tuæ ; ſolviſti *catenas*
meas. Tibi ſacrificabo ſacrificium oblatio- 17
nis, & in nomine Domini invocabo. Vota 18
mea coram Domino reddam : narrabo tunc
miracula ejus omni populo ipſius. In atriis 19
domus ſanctuarii *Dei noſtri*, in medio tui Je-
ruſalem. *Hallelujah.*

PSAL. CXVII.

LAudate Dominum omnes populi, laudate 1
eum omnes nationes. Quoniam roboravit 2
ſuper nos beneficentiam ſuam, & veritas
Domini in æternum. *Hallelujah.*

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܢܒܪܟ ܡܪܝܐ ܠܕܚܠܘܗܝ: ܙܥܘܪ̈ܐ ܥܡ ܪ̈ܘܪܒܐ. * ܢܘܣܦ ܥܠܝܟܘܢ ܡܪܝܐ: ܥܠܝܟܘܢ ܘܥܠ 13 14
ܒܢܝ̈ܟܘܢ. * ܒܪܝܟܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܡܪܝܐ: ܗܘ ܕܥܒܕ ܫܡܝܐ ܘܐܪܥܐ. * ܫܡܝܐ ܫܡܝܐ ܕܡܪܝܐ ܗܘ: 15 16
ܘܐܪܥܐ ܝܗܒܗ ܠܒܢܝ̈ ܐܢܫܐ. * ܠܐ ܡܝ̈ܬܐ ܢܫܒܚܘܢ ܠܡܪܝܐ: ܘܠܐ ܟܠ ܢܚ̈ܬܝ ܚܫܘܟܐ. * ܚܢܢ 17 18
ܕܝܢ ܢܒܪܟ ܠܡܪܝܐ: ܡܢ ܗܫܐ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܝܗ * ܠܐ ܡܫܡܗܐ. 1
ܡܦܩܢܗ ܕܥܡܐ ܚܕܬܐ ܕܗܦܟ ܠܬܫܡܫܬܐ ܟܪܣܛܝܢܝܬܐ ܐܝܟ ܛܠܝܐ ܠܣܘܟܠܐ. ܘܡܬܐܡܪ:
ܦܫܝܛܐܝܬ ܟܕ ܐܬܐ ܫܐܘܠ ܘܩܘܐ ܥܠ ܬܪܥܐ ܕܡܥܪܬܐ ܗܝ ܕܡܛܫܐ ܗܘܐ ܒܗ ܕܘܝܕ ܘܓܒܪ̈ܘܗܝ.
ܦܬܓܡܐ ܝܚ. ܐܬܪܓܪܓܬ ܕܢܫܡܥ ܡܪܝܐ ܩܠܐ ܕܒܥܘܬܝ. * ܘܢܨܠܐ ܐܕܢܗ ܠܘܬܝ ܒܝܘܡܐ ܕܐܩܪܝܘܗܝ: 2
* ܡܛܠ ܕܐܚܕܘܢܝ ܚܒ̈ܠܐ ܕܡܘܬܐ. ܘܐܘܠܨ̈ܢܐ ܕܫܝܘܠ ܐܕܪܟܘܢܝ: ܐܘܠܨܢܐ ܘܥܩܬܐ ܐܫܟܚܬ. 3
* ܘܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܩܪܝܬ: ܐܘ ܡܪܝܐ ܦܨܝ ܠܢܦܫܝ. * ܡܪܚܡܢ ܐܢܬ ܡܪܝܐ ܘܙܕܝܩ: ܘܐܠܗܐ 4 5
ܐܢܬ ܡܪܚܡܢܐ. * ܢܛܪ ܠܛܠܝܐ ܡܪܝܐ: ܡܟܟܢܝ ܘܦܪܩܢܝ. * ܬܘܒܝ ܢܦܫܝ ܠܢܝܚܟܝ: 6 7
ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܦܪܥܟܝ. * ܡܛܠ ܕܦܨܝܬ ܢܦܫܝ ܡܢ ܡܘܬܐ: ܘܪ̈ܓܠܝ ܡܢ ܫܘܪ̈ܥܬܐ. * ܕܐܫܦܪ 8 9
ܩܕܡܝܟ ܐܠܗܐ ܒܐܪܥܐ ܕܚܝ̈ܐ. * ܗܝܡܢܬ ܘܡܠܠܬ ܘܐܬܡܟܟܬ ܛܒ. * ܐܢܐ ܐܡܪܬ ܒܪܬܝܬܘܬܝ 10 11
ܕܟܠ ܒܪܢܫ ܕܓܠ: * ܡܢܐ ܐܦܪܘܥ ܠܡܪܝܐ ܕܟܠܗܘܢ ܛܘܒܘܗܝ ܠܘܬܝ. * ܟܣܐ ܕܦܘܪܩܢܐ 12 13
ܐܣܒ. ܘܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܩܪܐ. * ܘܢܕܪ̈ܝ ܠܡܪܝܐ ܐܦܪܘܥ: ܩܕܡ ܟܠܗ ܥܡܗ. * ܝܩܝܪ ܗܘ 14
ܒܥܝ̈ܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܡܘܬܐ ܕܙܕܝܩ̈ܘܗܝ: * ܐܘ ܡܪܝܐ ܐܢܐ ܥܒܕܟ. ܥܒܕܟ ܐܢܐ ܘܒܪ ܐܡܬܟ: ܫܪܝܬ 15 16
ܐܣ̈ܘܪܝ. * ܠܟ ܐܕܒܘܚ ܕܒܚ̈ܐ ܕܬܫܒܘܚܬܐ: ܘܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܩܪܐ. * ܘܢܕܪ̈ܝ ܠܡܪܝܐ ܐܦܪܘܥ: 17 18
ܩܕܡ ܟܠܗ ܥܡܗ. * ܘܒܕܪ̈ܬܐ ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ: ܘܒܓܘܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. 19
* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܝܘ * ܠܐ ܡܫܡܗܐ. ܡܬܐܡܪ ܥܠ ܟܢܫܐ ܕܚܢܢܝܐ ܟܕ ܢܦܩܘ 1
ܡܢ ܐܬܘܢܐ. ܘܡܬܢܒܐ ܥܠ ܩܪܝܬܐ ܕܥܡܡܐ ܒܣܒܪܬܐ ܕܐܘܢܓܠܝܘܢ. ܦܬܓܡܐ ܕ.
ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ: ܫܒܚܘܗܝ ܟܠܗܘܢ ܐܘܡܘܬܐ. * ܡܛܠ ܕܥܫܢܬ 2
ܥܠܝܢ ܛܝܒܘܬܗ: ܫܪܝܪܐܝܬ ܡܪܝܐ ܗܘ ܠܥܠܡ.

Benedicat Dominus metuentibus eum, par- 13
vis cum magnis. Addat vobis Dominꝰ, vobis 14
ac liberis veſtris. Benedicti vos eſtis Domi- 15
no, ei qui condidit cœlū ac terrā. Cœlū cœ- 16
li Domini eſt, terram autem dedit hominibꝰ.
Non mortui laudabunt Dominum, neque 17
omnes deſcendētes in tenebras. Nos autē be- 18
nedicemꝰ Domino ex nunc et uſq; in ſeculū.

PSAL. CXV.

Anonymus. Progreſſus populi novi redeun- 1
tis ad cultū Chriſtianū velut puer ad intel-
lectū. Diciturque, quoad literā, quum venit
Saul atq; moratus eſt ad januam ſpeluncæ in
qua deliteſcebat David & viri ejus. Verſ. 18.

EXoptavi ut audiret Dominus vocem ſup-
plicationis meæ, Inclinaretq; aurē ſuam 2
ad me die quâ vocavero eum. Nam circun- 3
dederunt me dolores mortis, & angores in-
ferni aſſecuti ſunt me : anguſtiā & ærumnā
inveni, Et nomen Domini invocavi, *dicens*; 4
Ah Domine libera animā meā. Miſericors es 5
tu Domine atq; juſtus, & Deus es tu clemen-
tiſſimꝰ. Tuetur adoleſcentulos Dominus: hu- 6
miliavit me, ac liberavit me. Revertere ani- 7
ma mea ad quietē tuā, quia Dominus ſatisfe-
cit tibi ; Nam eripuiſti animā meam è mor- 8
te, & pedes meos è lapſibus : Ut gratus ſim 9
corā te, Deus, in terra vivorū. Credidi, & lo- 10
cutꝰ ſum, méque vehementer humiliavi. Ego 11
dixi cum tremore meo, Omnis homo mendax 12
eſt : Ecquid ergò referam Domino, cujus
omnia beneficia ſunt erga me? Calicē ſalutis 13
accipiā, & nomē Domini invocabo. Meáq; 14
vota Domino perſolvā corā univerſo popu-
lo. Pretioſa eſt enim in oculis Domini mors 15
juſtorum ejus. O Domine, ego ſervus tuus, 16
ſervus tuus ſum, & filius ancillæ tuæ : ſolvi-
ſti à me vincula mea. Tibi ſacrificabo vi- 17
ctimas laudis, et nomen Domini invocabo.
Votaq; mea Domino exolvam coram univer- 18
ſo populo, Et in atrio domûs Domini, & in- 19
tra te Jeruſalem.

PSAL. CXVI.

Anonymus. Dicitur de cœtu Ananiæ quum 1
exirent è camino. Item prædicit vocationem 2
*Gentiū per annuntiationē Evangelii. Verſ.*4.

LAudate Dñm omnes gentes, laudate eum
omnes populi ; Nam invaluit erga nos
benignitas ejus. Verè Dominꝰ eſt in æternū.

Verſio VULG. LAT.

13 Benedixit omnibus, qui timent Dñm,
14 puſillis cum majoribus. Adjiciat Dñs
ſup vos; ſup vos, & ſup filios veſtros.
15 Benedicti vos à Domino, qui fecit cœ-
16 lum, & terrã. Cœlum cœli Domino:
17 terram autẽ dedit filiis hominum. Non
mortui laudabunt te, Domine: neq; o-
18 mnes, qui deſcendunt in infernũ. Sed
nos qui vivim⁹, benedicim⁹ Domino,
ex hoc nunc & uſque in ſeculum.

Alleluja. CXIV.

1 DIlexi, quoniam exaudiet Dñs vocẽ
2 orationis meæ. Quia inclinavit
aurem ſuam mihi: & in dieb⁹ meis in-
3 vocabo. Circumdederunt me dolores
mortis: & pericula inferni invenerũt
me. Tribulationem & dolorẽ inveni:
4 Et nomen Dñi invocavi. O Domine,
5 libera animã meam: Miſericors Domi-
nus, & juſt⁹, & Deus noſter miſeretur.
6 Cuſtodiens parvulos Dominus: humi-
7 miliatus ſum, & liberavit me. Conver-
tere, anima mea, in requiem tuam: quia
8 Domin⁹ benefecit tibi. Quia eripuit a-
nimã meam de morte, oculos meos à
9 lachrymis, pedes meos à lapſu. Placebo
Domino in regione vivorum.

Alleluja. CXV.

10 CRedidi, propter ꝙ locut⁹ ſum: ego
11 autem humiliat⁹ ſum nimis. Ego
dixi in exceſſu meo, Omnis homo mẽ-
12 dax. Quid retribuam Domino, pro o-
13 mnibus, quæ retribuit mihi? Calicem
ſalutaris accipiam: & nomen Domini
14 invocabo. Vota mea Domino reddam
15 coram omni populo ejus: Pretioſa in
conſpectu Dñi mors Sanctorum ejus.
16 O Domine, quia ego ſerv⁹ tuus: ego
ſervus tuus, & filius ancillæ tuæ. Diri-
17 puiſti vincula mea: Tibi ſacrificabo
hoſtiam laudis, & nomẽ Domini invo-
18 cabo. Vota mea Domino reddam in
19 conſpectu omnis populi ejus; In atriis
domûs Domini, in medio tui Jeruſalẽ.

Alleluja. CXVI.

1 LAudate Dominum omnes gentes:
2 laudate eum omnes populi: Quoniã
confirmata eſt ſuper nos miſericordia
ejus: & veritas Dñi manet in æternũ.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

13 † Εὐλόγησε τοὺς φοβουμένους τὸν κύριον, † τοὺς μικροὺς
14 μετὰ τῶν μεγάλων. † Προσθείη κύριος (ε) ἐφ' ὑμᾶς, † ἐφ'
15 ὑμᾶς καὶ ἐπὶ τοὺς υἱοὺς ὑμῶν. † Εὐλογημένοι ὑμεῖς
16 τῷ κυρίῳ, † τῷ ποιήσαντι τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν. † Ὁ
οὐρανὸς (ζ) τοῦ οὐρανοῦ τῷ κυρίῳ, † τὴν δὲ γῆν ἔδωκε
17 τοῖς υἱοῖς τῶν ἀνθρώπων. † Οὐχ οἱ νεκροὶ αἰνέσουσί
σε κύριε, † οὐδὲ πάντες οἱ καταβαίνοντες εἰς ᾅδου.
18 † Ἀλλ' ἡμεῖς οἱ ζῶντες (η) εὐλογήσομεν τὸν κύριον,
† ἀπὸ τοῦ νῦν καὶ ἕως τοῦ αἰῶνος.

Ἀλληλούϊα. ριδʹ.

1 † ΗΓάπησα, ὅτι εἰσακούσεται κύριος τῆς φωνῆς τῆς
2 δεήσεώς μου. † Ὅτι ἔκλινε τὸ οὖς αὐτοῦ ἐμοί,
3 † καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις μου ἐπικαλέσομαι. † Περιέσχον με
ὠδῖνες θανάτου, † κίνδυνοι ᾅδου εὕροσάν με. † Θλῖ-
4 ψιν καὶ ὀδύνην εὗρον, † Καὶ τὸ ὄνομα κυρίου ἐπεκα-
5 λεσάμην, † Ὦ κύριε ῥῦσαι τὴν ψυχήν μου. † Ἐλεή-
μων ὁ κύριος καὶ δίκαιος, † καὶ ὁ θεὸς ἡμῶν ἐλεεῖ.
6 † Φυλάσσων τὰ νήπια ὁ κύριος, † ἐταπεινώθην καὶ
7 ἔσωσέ με. † Ἐπίστρεψον ψυχή μου εἰς τὴν ἀνάπαυσίν
8 σου, † ὅτι κύριος εὐηργέτησέ (α) σε. † Ὅτι (β) ἐξεί-
λετο τὴν ψυχήν μου ἐκ θανάτου, † τοὺς ὀφθαλμούς μου
ἀπὸ δακρύων, † καὶ τοὺς πόδας μου ἀπὸ ὀλισθήματος.
9 † Εὐαρεστήσω ἐνώπιον κυρίου ἐν χώρᾳ ζώντων.

Ἀλληλούϊα. ριεʹ.

10 11 † ἘΠίστευσα, διὸ ἐλάλησα, † ἐγὼ δὲ ἐταπεινώ-
θην σφόδρα. † (α) Ἐγὼ δὲ εἶπα ἐν τῇ ἐκστάσει
12 μου, Πᾶς ἄνθρωπος ψεύστης. † Τί ἀνταποδώσω τῷ
13 κυρίῳ περὶ πάντων ὧν ἀνταπέδωκέ μοι; † Ποτήρι-
ον σωτηρίου λήψομαι, † καὶ τὸ ὄνομα κυρίου (β) ἐπι-
14 καλέσομαι. Τὰς εὐχάς μου τῷ κυρίῳ ἀποδώσω, ἐν-
15 αντίον παντὸς τοῦ λαοῦ αὐτοῦ. † Τίμιος ἐναντίον κυ-
16 ρίου † ὁ θάνατος τῶν ὁσίων (γ) αὐτοῦ. † Ὦ κύριε ἐγὼ
δοῦλος σός, ἐγὼ δοῦλος σός, καὶ υἱὸς τῆς παιδίσκης
17 σου, † διέρρηξας τοὺς δεσμούς μου. † Σοὶ θύσω θυ-
σίαν αἰνέσεως, † καὶ ἐν ὀνόματι κυρίου ἐπικαλέσο-
18 μαι. † Τὰς εὐχάς μου τῷ κυρίῳ ἀποδώσω, † ἐναν-
19 τίον παντὸς τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, † Ἐν αὐλαῖς οἴκου κυ-
ρίου, † ἐν μέσῳ σου Ἱερουσαλήμ.

Ἀλληλούϊα. ριϛʹ.

1 † ΑΙνεῖτε τὸν κύριον πάντα τὰ ἔθνη, † (α) ἐπαι-
2 νέσατε αὐτὸν πάντες οἱ λαοί. † Ὅτι ἐκραται-
ώθη (β) τὸ ἔλεος αὐτοῦ ἐφ' ἡμᾶς, † καὶ ἡ ἀλήθεια
τοῦ κυρίου μένει εἰς τὸν αἰῶνα.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

22 Benedixit eos, qui timent Domi-
num: puſillos cum magnis. 23 Adji-
ciat Domin⁹ ſuper vos: ſuper vos, et
ſuper filios veſtros. 24 Benedicti vos
(l) Domino, qui fecit cœlũ, et terrã.
25 Cœlum cœli Domino: terrã autẽ
dedit filiis hominum. 26 [m] Non
mortui laudabunt te, Domine: neq; o-
mnes qui deſcendunt in [n] infernũ.
27 Sed nos, qui vivimus, benedi-
cemus Dominum, ex hoc nunc &
uſque in ſeculum.

Alleluja. *CXIV.*

DIlexi; quoniam exaudiet Do- 1
minus vocẽ deprecationis meæ.
2 Quia inclinavit aurẽ ſuã mihi: et 2
in dieb⁹ meis [a] invocabo. 3 Circum- 3
dederunt me dolores mortis: pericula
inferni invenerunt me. 4 [b] Tribula-
tionem & dolorem inveni: Et nomen 4
Domini invocavi. 5 O (a) Domine, e-
rue animam meam: Miſericors Domi- 5
nus, & juſtus: & Deus noſter [c] mi-
ſeretur. 6 Cuſtodiens parvulos Do- 6
minus: (b) humiliatus ſum, & ſalvũ
me fecit. 7 Convertere, anima mea, in 7
requiem tuam: quia Dominus benefe-
cit tibi. 8 Quoniam exemit animam 8
meã de morte, oculos meos à lachry-
mis, & pedes meos à lapſu. 9 [d] Pla- 9
cebo in (c) conſpectu Domini, in re-
gione vivorum.

Alleluja. *CXV.*

CRedidi, (a) propter quod locutus 10
ſum: ego autem (b) humiliatus
ſum nimis. 2 Ego (c) autem dixi [a] 11
in ecſtaſi mea, Omnis homo mendax.
3 Quid retribuam Domino, pro omni- 12
bus quæ retribuit mihi? 4 Calicem [b] 13
ſalutaris accipiam: & nomen Domini
invocabo. 5 (d) Vota mea Domino 14
reddã coram omni populo ejus: Pre- 15
tioſa in conſpectu Domini mors San-
ctorum ejus. 6 O Domine, ego ſerv⁹ 16
tuus: ego ſervus tuus, & filius ancil-
læ tuæ. 7 Dirupiſti vincula mea: Tibi 17
ſacrificabo ſacrificium [c] laudis: &
in nomine Domini invocabo. 8 Vota 18
mea Domino reddam in conſpectu o-
mnis [d] populi ejus: In atriis domũs 19
Domini, in medio tuî Hieruſalem.

Alleluja. *CXVI.*

LAudate Dominum [a] omnes gen- 1
tes: laudate eum omnes populi.
2 Quoniam confirmata eſt ſuper nos 2
miſericordia ejus: & veritas Domini
manet in æternum.

Verſio ÆTHIOPICA.

13 ባርኮሙ፡ለኵሎሙ፡ለእለ፡ይፈርህዎ፡ለእግ 22
14 ዚአብሔር።ለንኡሶሙ፡ ወለዐቢዮሙ።=፡
15 ይዌስክ፡እግዚአብሔር፡ላዕሌክሙ።ላዕሌክ 23
ሙ፡ወላዕለ፡ ውሉድክሙ።=፡ ቡሩካን፡አ 24
16 ንትሙ፡ለእግዚአብሔር።ዘገብረ፡ ሰማየ፡ወ
17 ምድረ።=፡ ሰማይ ፡ ሰማያት ፡ ለእግዚአብ 25
ሔር።ወምድርሰ፡ ወሀበ፡ ለእጓለ፡ እምሕያ
18 ው።=፡ ዘአኮ፡ ምውታን ፡ ይሴብሑከ፡ እ 26
ግዚኦ።ወሊኵሎሙ፡እለ፡ይወርዱ፡ ውስተ፡
ሲኦል።=፡ ንሕነ፡ሕያዋን፡ንባርኮ፡ለእግዚአ 27
ብሔር።እምይእዜ፡ወእስከ፡ለዓለም።=፡

ሃሌሉያ።

1 ፻፲፬ አፍቀርኩ፡እስመ ፡ ሰምዐኒ፡ እግዚአብ 1
2 ሔር፡ቃለ፡ስእለትየ።=፡ ወአፅምአ፡ እዝ 2
3 ኖ፡ ኀቤየ።ወጸዋዕክዎ፡ በመዋዕልየ።=፡ አ 3
ኃዘኒ ፡ ፃዕረ፡ሞት።ወረከበኒ፡ ሕማመ ፡ ሲኦ
4 ል።=፡ ሕማመ፡ ወምንደቤ፡ ረከበኒ።ወጸዋ 4
5 ዕኩ፡ ስመ፡ እግዚአብሔር።=፡ እግዚኦ፡ባ 5
ልሖ፡ ለነፍስየ።መሐሪ፡ እግዚአብሔር፡ወጻ
6 ድቅ።ወአምላክነሂ፡ መስተሣህል።=፡ የዐ 6
ቅብ፡ ሕፃናተ፡ እግዚአብሔር።ተመንደብኩ
7 ሂ፡ወአድኃነኒ።=፡ ግብኢ፡ ነፍስየ፡ ውስተ፡ 7
ዕረፍትኪ። እስመ ፡ እግዚአብሔር ፡ ረደአ
8 ኪ።=፡ እስመ፡አድኃና፡ ለነፍስየ፡ እሞት። 8
9 ወለአዕይንትየኒ፡ እምአንብዕ።ወለእገሪየኒ፡
እምደሒፅ።=፡ ከመ፡ እሥምሮ፡ ለእግዚአ 9
ብሔር፡በብሔረ፡ሕያዋን።=፡

ሃሌሉያ።

10 11 ፻፲፭ አመንኩ ፡ በዘ፡ ነበብኩ።ወአንሰ፡ ብዙ 1
ኀ፡ሕመምኩ።=፡ ወአንሰ፡ እቤ፡ እመግዕዝ 2
12 የ፡ኵሉ፡ሰብእ፡ሐሳዊ፡ ውእቱ።=፡ ምንተ 3
13 ኑ፡አዐስዮ፡ለእግዚአብሔር፡ በእንተ፡ኵሉ፡
ዘገብረ፡ሊተ።=፡ ጽዋዐ፡ ሕይወት፡ እትሜ 4
14 ጦ።ወሰመ፡ እግዚአብሔር ፡ እጼውዕ።=፡
15 ክቡር፡ ሞቱ፡ ለጻድቅ፡ በቅድመ፡ እግዚአብ 5
16 ሔር ።=፡ እግዚኦ፡አነ፡ ገብርከ።ገብርከ፡ 6
ወልደ፡ አመትከ።=፡ ወሰበርከ፡ መዋቅሕት 7
17 የ ። ለከ ፡ እሠውዕ ፡ መሥዋዕተ ፡ ስብሐ
ት።=፡ ወአሁብ፡ብፅአትየ፡ለእግዚአብሔ 8
18 ር።በቅድመ ፡ ኵሉ ፡ ሕዝብ።በዐጸደ ፡ ቤ
19 ተ፡ እግዚአብሔር። ወበማእከሌኪ ፡ ኢየሩ
ሳሌም።=፡ ሃሌሉያ።

1 ፻፲፮ ሰብሕዎ ፡ ለእግዚአብሔር ፡ ኵልክ 1
ሙ፡ አሕዛብ። ወይሴብሕዎ፡ ኵሎሙ፡ ሕ
2 ዝብ።=፡ እስመ፡ጸንዓት፡ ምሕረቱ፡ ላዕሌ 2
ነ። ወጽድቁሰ፡ ለእግዚአብሔር፡ ይሄሉ፡ ለ
ዓለም።=፡

Ψαλ. ριγʹ. MS.A. (ε) ἐφ' * ἡμᾶς, (ζ) * τῷ οὐρανῷ (η) εὐλογήσωμεν Ψαλ. ριδʹ. MS.A. (α) με. (β) ἐξείλατο Ψαλ. ριεʹ. MS.A. (α) Ἐγὼ εἶπα (β) ἐπικαλέσομαι. Τίμιος (γ) αὐτοῦ. Ψαλ. ριϛʹ. MS.A. (α) ἐπαινεσάτωσαν (β) ἐφ' ἡμᾶς τὸ ἔλεος αὐτοῦ,

INTERP. ÆTHIOP. [m] Eò quòd non mortui [n] infernum. Nos *PSAL.CXIV.* [a] invocabo eum. Apprehendit me dolor [b] Tribulatio & dolor invenit me: [c] miſerator. [d] Ut placeam in *PSAL.CXV.* [a] de mea indole [b] vitæ circumferam: & nomen Domini invocabo. Pretioſa in [c] laudis: Vota [d] populi: In atriis *PSAL.CXVI.* [a] vos omnes gentes: &

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* بارك اتقياء الرب الصغار والكبار * يزيد الرب فينا وفي اولادنا * نحن مباركون من الرب الذي 13 14
خلق السماء والارض * سماء السماء للرب * والارض اعطاها لبني البشر * ليس الموتى يباركونك يا 15 16
رب * ولا كل الهابطين الى الجحيم * لكن نحن الاحياء الذين نباركك يا رب منذ الآن والى الابد * 17 18
الليلويا * * المزمور المائة واربعة عشر * * مرسوم الليلويا * وهو * يو * استيخن * 1
احببت ان يسمع الرب صوت تضرعي * لانه اصغى الي بسمعه وفي ايامي دعوته * لان غمرات 2 3
الموت احاطت بي * وشدائد الجحيم اصابتني * وجدت ضيقا وحزنا * فدعوت اسم الرب * يا رب 4
خلص نفسي * الرب هو رؤوف وهو بار * والاهنا يرحم * الذي يحفظ الاطفال هو الرب * اتضعت 5 6
فخلصني * ارجعي يا نفسي الى موضع راحتك * لان الرب قد احسن الي * وخلص نفسي من 7 8
الموت * وعيني من الدموع * ورجلي من الزلل * ارضي الله امامه في كون الاحياء * الليلويا * 9
* المزمور المائة وخمسة عشر * الليلويا * وهو * يب * استيخن * * امنت لاجل 10
هذا تكلمت * وانا تواضعت جدا * ان قلت في تحيري ان كل الناس كذابون * ماذا اعطي 11 12
الرب مكافاة * لاجل كل شي اعطاني * آخذ كاس الخلاص * وادعوا اسم الرب * اوفي الرب نذوري 13 14
قدام جميع شعبه * كريم امام الرب موت قديسيه * يا رب انا عبدك * انا عبدك وابن امتك * 15 16
قطعت وثاقي * اذبح لك ذبيحة التسبيح * وادعوا اسم الرب * اوفي الرب نذوري * قدام جميع 17 18
شعبه * في ديار بيت الرب * في وسط يروسليم * الليلويا * * المزمور المائة وستة عشر *
الليلويا * وهو * د * استيخانات * سبحوا الرب يا جميع الامم * وليباركه جميع 1
الشعوب * فان رحمته سابغة علينا * وحق الرب يدوم الى الابد والى ابد الابد * الليلويا * 2

Benedixit timentibus Dominum, minoribus 13
ac majoribus. Accreſcat Dominus nos et fi- 14
lios noſtros. Nos benedicti ſumus à Do- 15
mino qui creavit cœlum et terram. Cœlum 16
cœli Domino, terram autem dedit filiis ho-
minum. Non mortui benedicent te, O Do- 17
mine, neque omnes deſcendentes in infer-
num. Sed nos vivi, ſumus qui benedicimus 18
tibi, O Domine, ex nunc & uſque in ſecu-
lum. Alleluja.

PSAL. CXIV.

Titulus, Alleluja. Verſ. 16. 1

OPtavi ut audiret Dominus vocem de-
precationis meæ: Quoniam intendit ad 2
me auditum ſuum, et in diebus meis invoca-
vi eum. Quoniam aſperitates mortis cir- 3
cumdederunt me, & tribulationes inferni
contigerunt mihi: inveni anguſtiam & mæ-
rorem. Quapropter invocavi nomen Do- 4
mini: O Domine, libera animam meam. Do- 5
minus eſt clemens et eſt juſtus, et Deus noſter
miſeretur. Qui cuſtodit parvulos, eſt Do- 6
minus: humiliatus ſum, & liberavit me.
Revertere, O anima mea, ad locum requiei 7
tuæ: quia Dominus jam benefecit mihi,
Et ſalvavit animam meam à morte, & o- 8
culos meos à lachrymis, & pedes meos à
lapſu. Placebo Domino coram ipſo, in re- 9
gione vivorum. Alleluja.

PSAL. CXV.

Alleluja. Verſ. 12.

CRedidi, propterea locutus ſum, & ego 10
humiliatus ſum valdè. Quandoqui- 11
dem dixi in ſtupore meo, omnes homines
eſſe mendaces, Quid dabo Domino in re- 12
tributionem pro omni re quam dedit mihi?
Accipiam calicẽ ſalutis, et invocabo nomen 13
Domini. Perſolvam Domino vota mea co- 14
ram toto ipſius populo. Pretioſa eſt ante 15
Dominum mors ſanctorum ejus. O Domine, 16
ego ſervus tuus ſum, ego ſervus tuus, et fi-
lius ancillæ tuæ: ſcidiſti ligamina mea. Sa- 17
crificabo tibi ſacrificium laudis, et invocabo
nomen Domini. Solvam Domino vota mea 18
coram univerſo ejus populo, in atriis domûs
Domini, in medio Jeroſolymæ. Alleluja.

PSAL. CXVI.

Alleluja. Verſ. 4. 1

LAudate Dominum, O omnes gentes, &
benedicant eum omnes populi: Quoni- 2
am miſericordia ejus ampla eſt ſuper nos, et
veritas Domini perſeverat in æternum, &
in ſeculum ſeculi. Alleluja.

תהלים : קיח

PSAL. CXVIII. קיח

Dicat ejus misericordia seculum in quoniam : bonus quoniam Domino Confitemini
הוֹדוּ לַיהוָה כִּי־טוֹב כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ יֹאמַר־ 1 2
: Aharon *domus* nunc Dicant .ejus misericordia seculum in quoniam :Israel nunc
נָא יִשְׂרָאֵל כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ יֹאמְרוּ־נָא בֵית־אַהֲרֹן 3
quoniam:Dominum *timentes* nunc Dicant .ejus misericordia seculum in quoniam
כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ יֹאמְרוּ־נָא יִרְאֵי יְהוָה כִּי 4
latitudine in me exaudivit :*Jah* invocavi angustia De .ejus misericordia seculum in
לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ מִן־הַמֵּצַר קָרָאתִי יָּהּ עָנָנִי בַמֶּרְחָב 5
mihi Dominus .homo mihi faciat quid : timebo non ,*mihi* Dominus .*Jah*
יָהּ׃ יְהוָה לִי לֹא אִירָא מַה־יַּעֲשֶׂה לִי אָדָם׃ יְהוָה לִי 6
7 *fidere* Melius .me habentibus odio *in* videbo ego & :meos auxiliatores inter
בְּעֹזְרָי וַאֲנִי אֶרְאֶה בְשֹׂנְאָי׃ טוֹב לַחֲסוֹת 8
ſperare quàm : Domino in *confidere* Melius .homine in ſperare quàm : Domino in
בַּיהוָה מִבְּטֹחַ בָּאָדָם׃ טוֹב לַחֲסוֹת בַּיהוָה מִבְּטֹחַ 9
quoniam , Domini nomine in:me circundederunt gentes Omnes .*munificis* in
בִּנְדִיבִים׃ כָּל־גּוֹיִם סְבָבוּנִי בְּשֵׁם יְהוָה כִּי 10
quoniam , Domini nomine in:me circundederunt etiam,me Circundederũt .eas ſuccidã
אֲמִילַם׃ סַבּוּנִי גַם־סְבָבוּנִי בְּשֵׁם יְהוָה כִּי 11
: ſpinarum ignis ſicut ſunt extinctæ , apes ſicut me Circundederunt .eas ſuccidam
אֲמִילַם׃ סַבּוּנִי כִדְבֹרִים דֹּעֲכוּ כְּאֵשׁ קוֹצִים 12
: *cadendum ad* me impuliſti Impellendo .eas ſuccidam quoniam ,Domini nomine in
בְּשֵׁם יְהוָה כִּי אֲמִילַם׃ דַּחֹה דְחִיתַנִי לִנְפֹּל 13
.ſalutem in mihi fuit & : *Jah* *cantio* & , mea Fortitudo .me adjuvit Dominus &
וַיהוָה עֲזָרָנִי׃ עָזִּי וְזִמְרָת יָהּ וַיְהִי־לִי לִישׁוּעָה׃ 14
.fortitudinem *faciens* Domini dextera : juſtorum *tentoriis* in ſalutis & , *præconii* Vox
קוֹל רִנָּה וִישׁוּעָה בְּאָהֳלֵי צַדִּיקִים יְמִין יְהוָה עֹשָׂה חָיִל׃ 15
ſed , moriar Non .fortitudinem *faciens* Domini dextera:excelſa Domini Dextera
יְמִין יְהוָה רוֹמֵמָה יְמִין יְהוָה עֹשָׂה חָיִל׃ לֹא־אָמוּת כִּי־ 16 17
non morti & : *Jah* me corripuit Corripiendo .*Jah* opera narrabo & : vivam
אֶחְיֶה וַאֲסַפֵּר מַעֲשֵׂי יָהּ׃ יַסֹּר יִסְּרַנִּי יָּהּ וְלַמָּוֶת לֹא 18
Hæc .*Jah* confitebor , eas *in* ingrediar :juſtitiæ portas mihi Aperite .me tradidit
נְתָנָנִי׃ פִּתְחוּ־לִי שַׁעֲרֵי־צֶדֶק אָבֹא־בָם אוֹדֶה יָהּ׃ זֶה־ 19 20
:me exaudiſti quoniam,tibi Confitebor.eam per intrabunt juſti : Domini porta
הַשַּׁעַר לַיהוָה צַדִּיקִים יָבֹאוּ בוֹ׃ אוֹדְךָ כִּי עֲנִיתָנִי 21
caput in fuit ; ædificantes reprobaverunt *Lapidem* .ſalutem in mihi fuiſti &
וַתְּהִי־לִי לִישׁוּעָה׃ אֶבֶן מָאֲסוּ הַבּוֹנִים הָיְתָה לְרֹאשׁ 22
Hæc .noſtris oculis in mirabile *ipſum* : iſtud fuit Domino A .anguli
פִּנָּה׃ מֵאֵת יְהוָה הָיְתָה זֹּאת הִיא נִפְלָאת בְּעֵינֵינוּ׃ זֶה־ 23 24
Domine Obſecro .ea in lætemur & , exultemus : Dominus fecit dies
הַיּוֹם עָשָׂה יְהוָה נָגִילָה וְנִשְׂמְחָה בוֹ׃ אָנָּא יְהוָה 25
veniens Benedictus .nunc fac proſperare , Domine obſecro : nunc ſalvifica
הוֹשִׁיעָה נָּא אָנָּא יְהוָה הַצְלִיחָה נָּא׃ בָּרוּךְ הַבָּא 26
.Domini domo de vobis benediximus : Domini nomine in
בְּשֵׁם יְהוָה בֵּרַכְנוּכֶם מִבֵּית יְהוָה׃

תרגום TARGUM.

קיח

שבחו קדם יי ארום טב ארום לעלם 1
טוביה : יימרון כדון ישראל ארום לעלם 2
טוביה : יימרון כדון בית אהרן ארום לעלם 3
טוביה : יימרון כדון דחליא דיי ארום לעלם 4
טוביה : מן עקתא קריתי יה קביל צלותי 5
בפתיא יה : מימרא דיי בסעדי לא אדחל 6
מה יעבד לי בר נש : מימרא דיי למסעדא יתי 7
ואנא אחמי פורענותא בסנאי : טב למתרחצא 8
במימרא דיי מן למרחץ בבר נש : טב 9
למתרחצא במימרא דיי מן למרחץ ברברביא:
כל עממיא חזרו יתי בשום מימרא דיי רחצית 10
ארום אתשנון : אקיפון לי אף חזרו יתי בשום 11
מימרא דיי רחצית ארום אתשנון : אקיפון 12
לי היך זבוריתא דלקין היך אשתא בכובין
בשום מימרא דיי רחצית ארום אתשנון :
מדחי דחית יתי למנפל ומימרא דיי סיעני : 13
תוקפי ותושבחתי דחיל על כל עלמא יי 14
אמר במימריה והוה לי לפריק : קל תושבחתא 15
ופורקנא במשכניהון דצדיקי ימינא דיי עבדת
חילא : ימינא דיי מרממא ימינא דיי עבדת 16
חילא : לא אמות ארום אחי ואשתעי עובדי 17
אלהא : מכסנא אכסנני יה ולמותא לא מסר 18
יתי : פתחו לי מעלני קרתא דצדקא אעול 19
בהון אשבח יה : דין מעלנא דבית מקדשא 20
דיי צדיקיא יעלון ביה : אהודי קדמך ארום 21
קבלתא צלותי והוית לי לפריק : טליא 22
שביקו ארדיכליא הוה ביני בניא דישי וזכאה
לאתמנאה למליך ושולטן : מן קדם יי הות 23
דא אמרו ארדיכליא היא פרישא קדמנא
אמרו בנוי דישי : דין יומא עבד יי אמרו 24
ארדיכליא נרוץ ונחדי ביה אמרו בנוי דישי :
בבעו מנך יי כדון אמרו ארדיכליא בבעו מנך יי 25
אצלח כדון אמרו ישי ואנתתיה : בריך דאתי 26
בשום מימרא דיי אמרו ארדיכלי יברכון יתכון
מן בית מקדשא דיי אמר דוד :

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

PSAL. CXVIII.

LAudate Dominum, quoniam bonus, quo- 1
niam in æternum benignitas ejus. Dicant 2
nunc Iſrael, quoniam in æternum benigni-
tas ejus. Dicant nunc domus Aharon, quo- 3
niam in æternum benignitas ejus. Dicant 4
nunc qui timent Dominum , quoniam in
æternum benignitas ejus. De anguſtia in- 5
vocavi Deum, exaudivit orationem meam
in latitudine Deus. Verbum Domini in ad- 6
jutorium meum : non timebo quid mihi fa-
ciat homo. Verbum Domini ad adjuvan- 7
dum me, & ego videbo ultionem in oſores
meos. Melius eſt confidere in Verbo Do- 8
mini, quam confidere in homine. Melius 9
eſt confidere in Verbo Domini, quam con-
fidere in principibus. Omnes populi cir- 10
cundederint me : in nomine Verbi Domini
confiſus ſum, propterea abſcindam eos. Cir- 11
cundederint me, etiam circuierint me: in no-
mine Verbi Domini confiſus ſum , ideò ab-
ſcindam eos. Circundederint me ſicut apes, 12
arſerint ſicut ignis in ſpinis : in nomine
Verbi Domini confiſus ſum, ideò abſcindam
eos. Impulſione *impuliſti* me ut caderem : 13
ſed Verbum Domini adjuvit me. Fortitudo 14
mea & laus mea , qui timendus eſt ſuper
omnem mundum Dominus; dixit in verbo
ſuo, & fuit mihi redemptor. Vox laudis 15
& redemptionis in tabernaculis juſtorum :
dextera Domini edidit virtutem. Dextera 16
Domini exaltata; dextera Domini edidit vir-
tutem. Non moriar, ſed vivam, & narrabo 17
opera Domini. Corripendo corripuit me 18
Dominus, & morti non tradidit me. Aperite 19
mihi portas *urbis* juſtitiæ, ingrediar illas, &
laudabo Deum. Hæc eſt porta domus ſanctu- 20
arii Domini, juſti intrabunt in eam. Confi- 21
tebor coram te, quoniam accepiſti oratio-
nem meam, & factus es mihi redemptor.
Puerum deſpexerunt ædificatores, qui *fuit* 22
inter filios Iſſai & meruit conſtitui rex &
dominator. A conſpectu Domini hoc extitit, 23
dixerunt ædificatores : hoc mirabile eſt in
conſpectu noſtro, *dixerunt filii Iſſai*. Hanc 24
diem fecit Dominus, *dixerunt ædificatores* :
exultemus & lætemur in ea, *dixerunt filii*
Iſſai. *Obſecramus* te Dñe [*confer ſalutem*] 25
nunc, dixerunt ædificatores : *obſecramus* te
Domine proſperare nunc, *dixerunt Iſſai &*
uxor ejus. Benedictus qui venit in nomine 26
Verbi Domini, *dixerunt ædificatores* : *bene-*
dicant vobis de domo ſanctuarii Domini,
dixit David.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܝܚ *

* ܠܐ ܡܬܝܕܥܢܘܬܐ. ܡܬܐܡܪ: ܣܘܥܪܢܐܝܬ ܥܠ ܐܣܦ ܡܥܗܕܢܐ ܘܥܠ ܟܗܢܐ ܕܡܫܡܫܝܢ ܠܡܪܝܐ. 1
ܘܡܬܢܒܐ ܥܠ ܐܬܠܝܛܐ ܢܨܘܚܐ ܘܥܠ ܡܫܝܚܐ. ܦܬܓܡ ܣܕ.
ܐܘܕܘ ܠܡܪܝܐ ܕܛܒ ܗܘ ܘܠܥܠܡܝܢ ܪܚܡܘܗܝ : * ܢܐܡܪ ܐܝܣܪܐܝܠ ܕܠܥܠܡܝܢ ܪܚܡܘܗܝ. 2
* ܢܐܡܪܘܢ ܕܒܝܬ ܐܗܪܘܢ ܕܠܥܠܡܝܢ ܪܚܡܘܗܝ: * ܢܐܡܪܘܢ ܕܕܚܠܝܢ ܠܡܪܝܐ ܕܠܥܠܡܝܢ ܪܚܡܘܗܝ. 3 4
* ܡܢ ܐܘܠܨܢܐ ܩܪܝܬ ܠܡܪܝܐ: ܘܥܢܝܢܝ ܡܪܝܐ ܒܪܘܘܚܐ. * ܡܪܝܐ ܡܥܕܪܢܝ ܠܐ ܐܕܚܠ : ܡܢܐ 5 6
ܢܥܒܕ ܒܝ ܒܪܢܫܐ. * ܡܪܝܐ ܡܥܕܪܢܝ ܘܐܢܐ ܐܚܙܐ ܒܣܢܐܝ: * ܛܒ ܠܡܬܬܟܠܘ ܥܠ ܡܪܝܐ. 7 8
ܛܒ ܡܢ ܕܠܡܬܬܟܠܘ ܥܠ ܒܪܢܫܐ. * ܛܒ ܠܡܬܬܟܠܘ ܥܠ ܡܪܝܐ. ܛܒ ܡܢ ܕܠܡܬܬܟܠܘ 9
ܥܠ ܫܠܝܛܐ : * ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܚܕܪܘܢܝ. ܘܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܘܒܕܬ ܐܢܘܢ: * ܐܬܟܪܟܘܢܝ 10 11
ܘܚܕܪܘܢܝ. ܘܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܘܒܕܬ ܐܢܘܢ: * ܚܕܪܘܢܝ ܐܝܟ ܕܒܪܐ ܘܕܥܟܘ ܐܝܟ ܢܘܪܐ ܕܚܠܐ. 12
ܘܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܘܒܕܬ ܐܢܘܢ : * ܐܬܕܚܝܬ ܕܐܬܗܦܟ ܘܐܦܠ ܘܡܪܝܐ ܥܕܪܢܝ. * ܥܘܫܢܝ 13 14
ܘܬܫܒܘܚܬܝ ܡܪܝܐ ܗܘ: ܘܗܘ ܗܘܐ ܠܝ ܦܪܘܩܐ : * ܩܠܐ ܕܫܘܒܚܐ ܘܕܦܘܪܩܢܐ ܒܡܫܟܢܐ ܕܙܕܝܩܐ. 15
ܝܡܝܢܗ ܕܡܪܝܐ ܥܒܕܬ ܚܝܠܐ : * ܝܡܝܢܗ ܕܡܪܝܐ ܐܪܝܡܬܢܝ. ܝܡܝܢܗ ܕܡܪܝܐ ܥܒܕܬ ܚܝܠܐ 16
* ܕܠܐ ܐܡܘܬ : ܐܠܐ ܐܚܐ ܘܐܫܬܥܐ ܥܒܕܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. * ܡܪܕܘ ܪܕܝܢܝ ܡܪܝܐ ܘܠܡܘܬܐ ܠܐ ܐܫܠܡܢܝ : 17 18
* ܦܬܚܘ ܠܝ ܬܪܥܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ. ܕܐܥܘܠ ܒܗܘܢ ܘܐܘܕܐ ܠܡܪܝܐ : * ܗܢܘ ܬܪܥܗ ܕܡܪܝܐ ܕܙܕܝܩܐ 19 20
ܢܥܠܘܢ ܒܗ. * ܐܘܕܐ ܠܟ ܕܥܢܝܬܢܝ ܘܗܘܝܬ ܠܝ ܦܪܘܩܐ : * ܟܐܦܐ ܕܐܣܠܝܘ ܒܢܝܐ. ܗܝ 21 22
ܗܘܬ ܠܪܝܫܗ ܕܒܢܝܢܐ : * ܡܢ ܠܘܬ ܡܪܝܐ ܗܘܬ ܗܕܐ ܘܐܝܬܝܗ ܬܕܡܘܪܬܐ ܒܥܝܢܝܢ. * ܗܢܘ 23 24
ܝܘܡܐ ܕܥܒܕ ܡܪܝܐ : ܬܘ ܢܪܘܙ ܘܢܚܕܐ ܒܗ. * ܐܘ ܡܪܝܐ ܦܪܘܩܝܢܝ ܐܘ ܡܪܝܐ ܦܨܝܢܝ : 25
* ܡܒܪܟ ܗܘ ܕܐܬܐ ܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܒܪܟܢܟܘܢ ܡܢ ܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ : 26

PSAL. CXVII.

Anonymus. Dicitur ad literam de Aſapho 1
memoratore, & de Sacerdotibus miniſtranti-
bus Domino. Item vaticinatur de agoniſtis
triumphatoribus, & de Chriſto. Verſ. 64.

COnfitemini Domino quoniam bonus eſt,
& in æternum miſerationes ejus. Dicat 2
Iſrael, In æternum miſerationes ejus. Dicant 3
qui ſunt de domo Aharonis, In æternum mi-
ſerationes ejus. Dicant metuentes Dominum, 4
In æternum miſerationes ejus. Ab anguſtia 5
vocavi Dominum, & reſpondit mihi Domi-
nus cum relaxatione, Dominus adjutor meus 6
eſt, non timebo. Quid faciat in me homo?
Dominus auxiliator meus eſt, & ego ſpectabo 7
in hoſtibus meis. Bonum eſt fidere Domino, 8
melius quàm fidere homini. Bonum eſt fidere 9
Dño, melius quàm fidere principi. Omnes 10
gentes obſederunt me, & per nomen Domini
exterminavi eas: Cinxerunt me atque circun- 11
dederunt, & per nomen Dñi abſumpſi eas :
Obſederunt me ſicut apes, & extinctæ ſunt 12
velut ignis palearum, & per nomen Dñi con-
feci eas. Impulſus fui ut everterer & corru- 13
erem, at Dominus adjuvat me. Robur meum, 14
& gloria mea Dñs eſt, & ipſe factus eſt mihi
Salvator : Vox gloriæ & ſalutis in taberna- 15
culo juſtorum. Dextera Domini geſſit forti-
tudinem, Dextera Dñi extulit me, dextera Dñi 16
præſtitit fortitudinem, Ut non morerer, ſed 17
viverem & narrarem opera Domini. Caſti- 18
gando quidẽ caſtigavit me Dominus, at morti
non tradidit me. Aperuit mihi portas juſti- 19
tiæ, ut ingrederer per eas, & confiterer Domi-
no; Hæc eſt porta Domini, per quam juſti in- 20
grediũtur. Gratias tibi agã quòd me exaudie- 21
ris, & fueris mihi Salvator. Lapis quem aſper- 22
nati ſunt ædificatores, ipſe factus eſt in caput
ædificii. A Domino factum eſt id, eſtque pro- 23
digiũ in oculis noſtris Hæc eſt dies quam fecit 24
Dominus, venite, exultemus & lætemur in ea.
O Domine ſerva me, ô Domine libera me. 25
Benedictus ſit qui veniet in nomine Domini: 26
benediximus vobis de domo Domini.

Verſio VULG. LAT.

Alleluja. CXVII.

1 COnfitemini Domino, quoniã bo-
nus: quoniam in ſeculum miſeri-
2 cordia ej⁹. Dicat nunc Iſrael, quoniam
bon⁹: quoniam in ſeculum miſericor-
3 dia ejus. Dicat nunc dom⁹ Aaron: quo-
4 niam in ſeculum miſericordia ej⁹. Di-
cant nunc qui timent Dominum: quo-
5 niam in ſeculum miſericordia ejus. De
tribulatione invocavi Dominum: &
exaudivit me in latitudine Dominus.
6 Dñs mihi adjutor: non timebo quid
7 faciat mihi homo. Dominus mihi adju-
tor: & ego deſpiciam inimicos meos.
8 Bonum eſt confidere in Domino, quã
9 confidere in homine: Bonũ eſt ſperare
in Domino, quàm ſperare in princi-
10 pibus. Omnes gentes circuierunt me:
& in nomine Domini quia ultus ſum
11 in eos. Circumdantes circumdederunt
me: et in nomine Domini quia ult⁹ ſũ
12 in eos. Circumdederunt me ſicut apes,
& exarſerunt ſicut ignis in ſpinis: &
in nomine Domini quia ultus ſum in
13 eos. Impulſus everſus ſum ut caderem:
14 & Dominus ſuſcepit me. Fortitudo
mea, & laus mea Dominus: & fact⁹ eſt
15 mihi in ſalutẽ. Vox exultationis & ſa-
16 lutis, in tabernaculis juſtorum. Dexte-
ra Domini fecit virtutem: dextera Do-
mini exaltavit me, dextera Domini
17 fecit virtutem. Non moriar, ſed vivam:
18 & narrabo opera Domini. Caſtigans
caſtigavit me Dominus: & morti non
19 tradidit me. Aperite mihi portas juſti-
tiæ, ingreſſus in eas confitebor Do-
20 mino: Hæc porta Domini, juſti intra-
21 bunt in eam. Confitebor tibi, quoniam
exaudîſti me: & factus es mihi in ſalu-
22 tem. Lapidem, quem reprobaverunt æ-
dificantes, hic fact⁹ eſt in caput anguli.
23 A Domino factum eſt iſtud: & eſt mi-
24 rabile in oculis noſtris. Hæc eſt dies,
quam fecit Dominus: exultemus, & læ-
25 temur in ea. O Domine, ſalvũ me fac,
26 ô Domine, benè proſperare: Benedi-
ctus qui venit in nomine Domini.
Benediximus vobis de domo Domini:

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Ἀλληλούϊα. ριζ´.

1 † Ἐξομολογεῖσθε τῷ κυρίῳ, ὅτι ἀγαθὸς, † ὅτι
2 εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. † Εἰπάτω δὴ
οἶκος Ἰσραὴλ, ὅτι ἀγαθὸς, † ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα
3 τὸ ἔλεος αὐτοῦ. † Εἰπάτω δὴ οἶκος Ἀαρὼν, ὅτι
4 ἀγαθὸς, † ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. † Εἰ-
πάτωσαν δὴ πάντες οἱ φοβούμενοι τὸν (α) κύριον, ὅ-
5 τι ἀγαθὸς, † ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. † Ἐκ
θλίψεως ἐπεκαλεσάμην τὸν κύριον, † καὶ ἐπήκουσέ μου
6 εἰς πλατυσμόν. † Κύριος ἐμοὶ βοηθὸς, καὶ οὐ φοβη-
7 θήσομαι τί ποιήσει μοι ἄνθρωπος. † Κύριος ἐμοὶ
8 βοηθὸς, (β) κἀγὼ ἐπόψομαι τοὺς ἐχθρούς μου. † Ἀ-
γαθὸν πεποιθέναι ἐπὶ κύριον, † ἢ πεποιθέναι ἐπ᾽ ἄν-
9 θρωπον. † Ἀγαθὸν ἐλπίζειν ἐπὶ κύριον, † ἢ ἐλπί-
10 ζειν (γ) ἐπ᾽ ἄρχουσι. † Πάντα τὰ ἔθνη ἐκύκλω-
σάν με, † καὶ τῷ ὀνόματι κυρίου ἠμυνάμην αὐτούς.
11 † Κυκλώσαντες ἐκύκλωσάν με, † καὶ τῷ ὀνόματι
12 κυρίου ἠμυνάμην αὐτούς. † Ἐκύκλωσάν με ὡσεὶ
μέλισσαι κηρίον, † καὶ ἐξεκαύθησαν (δ) ὡς πῦρ ἐν ἀ-
κάνθαις, † καὶ τῷ ὀνόματι κυρίου ἠμυνάμην αὐτούς.
13 † Ὠσθεὶς ἀνετράπην τοῦ πεσεῖν, † καὶ ὁ κύριος ἀν-
14 τελάβετό μου. † Ἰσχύς μου καὶ ὕμνησίς μου ὁ κύριος,
15 † καὶ ἐγένετό μοι εἰς σωτηρίαν. † Φωνὴ ἀγαλλιάσεως
16 καὶ σωτηρίας † ἐν σκηναῖς δικαίων. † Δεξιὰ κυρίου
ἐποίησε δύναμιν, † δεξιὰ κυρίου ὕψωσέ με· † δεξιὰ
17 κυρίου ἐποίησε δύναμιν. † Οὐκ ἀποθανοῦμαι, ἀλλὰ
18 ζήσομαι, † καὶ (ε) διηγήσομαι τὰ ἔργα κυρίου. † Παι-
δεύων ἐπαίδευσέ με ὁ κύριος, † καὶ τῷ θανάτῳ οὐ
19 παρέδωκέ με. † Ἀνοίξατέ μοι πύλας δικαιοσύνης,
† εἰσελθὼν ἐν αὐταῖς ἐξομολογήσομαι τῷ κυρίῳ.
20 † Αὕτη ἡ πύλη τοῦ κυρίου, δίκαιοι εἰσελεύσονται ἐν
21 αὐτῇ. † Ἐξομολογήσομαί σοι ὅτι ἐπήκουσάς μου,
22 καὶ ἐγένου μοι εἰς σωτηρίαν. † Λίθον ὃν ἀπεδοκί-
μασαν οἱ οἰκοδομοῦντες, † οὗτος ἐγενήθη εἰς κεφαλὴν
23 γωνίας. † Παρὰ κυρίου ἐγένετο αὕτη, † καὶ ἔστι θαυμα-
24 στὴ ἐν ὀφθαλμοῖς ἡμῶν. † Αὕτη ἡ ἡμέρα ἣν ἐποίη-
σεν ὁ κύριος, † ἀγαλλιασώμεθα καὶ εὐφρανθῶμεν ἐν
25 αὐτῇ. † Ὦ κύριε σῶσον δὴ, † ὦ κύριε εὐόδωσον
26 δή. † Εὐλογημένος ὁ ἐρχόμενος ἐν ὀνόματι κυ-
ρίου· † εὐλογήκαμεν ὑμᾶς ἐξ οἴκου κυρίου.

MS.A. (α) κύριον, ὅτι εἰς αἰῶνα (β) καὶ ἐγὼ (γ) ἐπ᾽ ἄρχοντας. (δ) ὡσεὶ πῦρ (ε) ἐκδιηγήσομαι

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

Alleluja. CXVII.

1 COnfitemini Domino, quoniam 1
bonus: quoniã in ſeculum mi-
ſericordia ejus. 2 Dicat nunc domus 2
Iſrael, (a) quoniam bonus: quoniam
in ſeculum miſericordia ejus. 3 Dicat 3
nunc domus Aaron, quoniam bonus:
quoniam in ſeculum miſericordia e-
jus. 4 Dicant nunc [a] omnes, qui ti- 4
ment Dominum, quoniam bonus: quo-
niam in ſeculum miſericordia ejus.
5 [b] De tribulatione invocavi Do- 5
minum: & exaudivit me [c] in lati-
tudinem. 6 [d] Dominus mihi adju- 6
tor: & non timebo, quid faciet mihi
homo. 7 Domin⁹ mihi adjutor, & ego 7
deſpiciam inimicos meos. 8 Bonum eſt 8
confidere in Domino, quàm confidere
in homine. 9 Bonum eſt ſperare in Do- 9
mino, quàm ſperare in principibus.
10 Omnes gentes circundederunt 10
me: & (b) nomine Domini [e] ultus
ſum eos. 11 (c) Circumdantes circun- 11
dederunt me; & nomine Domini [f]
ultus ſum eos. 12 Circundederunt me, 12
ſicut apes (d) favum: & (e) exarſe-
runt, ſicut ignis in ſpinis: & nomine
Domini [g] ultus ſum eos. 13 (f) Im- 13
pulſus, everſus ſum, ut caderem: et
Dominus ſuſcepit me. 14 Fortitudo 14
mea, & [h] laudatio mea Dominus:
& factus eſt [i] mihi in ſalutem.
15 Vox exultationis, & ſalutis in [k] 15
tabernaculis juſtorum. 16 Dextera 16
Domini fecit virtutem: dextera Do-
mini exaltavit me: dextera Domini
fecit virtutem. 17 Non moriar, [l] 17
ſed vivam: & enarrabo opera Do-
mini. 18 (g) Caſtigans caſtigavit me 18
Dominus: [m] & morti non tradi-
dit me. 19 Aperite mihi portas juſti- 19
tiæ, ingreſſus in eas confitebor Domi-
no. (h) Hæc porta Domini, juſti in- 20
trabunt in eã. 20 Confitebor tibi [n], 21
quoniam exaudîſti me: & factus
es mihi in ſalutem. 21 Lapidem, 22
quem reprobaverunt ædificantes, hic
factus eſt in (i) caput anguli. 22 A 23
Domino (k) facta eſt hæc: & eſt mi-
rabilis in oculis noſtris. 23 Hæc eſt 24
dies, quam fecit Domin⁹: exultemus,
& lætemur in ea. 24 O Domine, ſal- 25
va (l) nunc: O Domine, benè (m)
proſperare nunc: Benedictus, qui 26
venit in nomine Domini: 25 bene-
diximus vos de domo Domini.

Verſio ÆTHIOPICA.

ሃሌሉያ፡፡

፻፲፯ ግነዩ፡ ለእግዚአብሔር፡ እስመ፡ኄር፡፡ 1
እስመ፡ለዓለም፡ምሕረቱ፡፡=፡ ንግሩ፡ቤተ፡ 2
እስራኤል፡ከመ፡ኄር፡፡ከመ፡ ለዓለም፡ ምሕ
ረቱ፡፡=፡ ንግሩ፡ቤተ፡ አሮን፡ ከመ፡ኄር፡፡ከ 3
መ፡ለዓለም፡ ምሕረቱ፡፡=፡ ንግሩ፡ ኵልክ 4
ሙ፡እለ፡ተፈርህዎ፡ ለእግዚአብሔር፡ ከመ፡
ኄር፡፡ከመ፡ለዓለም፡ምሕረቱ፡፡=፡ ሶበ፡ተ 5
መንደብኩ፡ ጸዋዕክዎ፡ ለእግዚአብሔር፡፡ ወ
ሰምዓኒ፡ወአርኀበ፡ሊተ፡፡=፡ ወእግዚአብሔ 6
ር፡ይረድአኒ፡ኢይፈርህ፡እጓለ፡ እመሕያው፡
ምንተ፡ይሬስየኒ፡፡=፡ እግዚአብሔር፡ይረድ 7
አኒ፡ወአነ፡ እሬእዮሙ፡ ለጸላእትየ፡፡=፡ ይ 8
ኄይስ፡ ተአምኖ፡ በእግዚአብሔር፡ እምተአ
ምኖ፡በእጓለ፡ እመሕያው፡፡=፡ ይኄይስ፡ተ 9
ሰፍዎ፡ በእግዚአብሔር፡ እምተሰፍዎ፡ በመ
ሳፍንት፡፡=፡ ኵሎሙ ፡ አሕዛብ ፡ ዓገቱ 10
ኒ ፡፡ ወበስመ ፡ እግዚአብሔር ፡ ሞእክዎ
ሙ፡፡=፡ ዐጊቶ፡ ዐገቱኒ፡፡ወበስመ፡ እግዚ 11
አብሔር፡ ሞእክዎሙ፡፡=፡ ዐገቱኒ፡ከመ፡ን 12
ህብ ፡ መዓረ፡፡ወነደዱ፡ ከመ፡ እሳት፡ ውስተ፡
አሥዋክ፡፡ወበስመ፡ እግዚአብሔር ፡ ሞእክዎ
ሙ፡፡=፡ ተንተንኩ፡ለወዲቅ፡ወእግዚአብሔ 13
ር፡ አንሥአኒ፡፡=፡ ኀይልየኒ፡ ወዝክርየኒ፡ 14
እግዚአብሔር፡፡ ወውእቱ ፡ ኮነኒ ፡ መድኀኒ
የ፡፡=፡ ቃለ፡ትፍሥሕት፡ውስተ፡ዓቢያቲሆ 15
ሙ፡ለጻድቃን፡፡=፡ የማኑ፡ እግዚአብሔር፡ 16
ገብረት፡ ኀይለ፡፡የማኑ፡ እግዚአብሔር፡አል
ዐለኒ፡፡የማኑ፡ እግዚአብሔር፡ ገብረት፡ ኀይ
ለ፡፡=፡ ኢይመውት ፡ ዘእንበለ፡ ዘአሐዩ፡፡ 17
ወእነግር ፡ግብሮ፡ ለእግዚአብሔር ፡፡=፡ ገ 18
ሠጸሰ ፡ ገሠጸኒ ፡ እግዚአብሔር፡፡ ወለሞት
ሰ፡በሕቱ፡ኢመጠወኒ፡፡=፡ አርኅዉ፡ ሊተ፡ 19
አናቅጸ፡ ጽድቅ፡፡እባእ፡ ውስቴቶን፡ ወእገኒ
ይ፡ ለእግዚአብሔር፡፡ዝአንቀጽ ፡ እንተ፡ እ
ግዚአብሔር ፡፡ ጻድቃን ፡ ይበውኡ ፡ ውስቴ
ታ፡፡=፡ እገኒ፡ ለከ፡ እግዚኦ፡ እስመ፡ሰማዕ 20
ከኒ፡፡ወኮንከኒ፡ መድኀኒየ፡፡=፡ እብን፡ዘመ 21
ነንዎ፡ነደቅት፡፡ወውእቱ፡ኮነ፡ ውስተ፡ርእሰ፡
ማእዘንት፡፡=፡ እምኀበ ፡ እግዚአብሔር፡ 22
ኮነት ፡ ዛቲ ፡፡ ወነኪር ፡ ይእቲ ፡ ለአዕይንቲ
ነ፡፡=፡ ዛቲ፡ዕለት፡እንተ፡ገብረ፡ እግዚአብ 23
ሔር፡፡ ንትፌሣሕ ፡ ወንትሐሠይ ፡ ባቲ፡፡=፡
ኦእግዚኦ ፡ አድኅነነ፡፡ ኦእግዚኦ ፡ ሠርሐ 24
ነ፡፡ቡሩክ፡ ዘይመጽእ፡ በስመ፡ እግዚአብሔ
ር፡፡=፡ ባረክናክሙ፡ እምቤተ ፡ እግዚአብ 25
ሔር ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. *PSAL.* CXVII. [a] vos omnes, qui timetis Dominum, [b] Cùm afflictus eſſem invocavi [c] & dilatavit mihi. [d] Et Dominus adjuvabit me: [e] ſuperavi eos. [f] devici eos. [g] expugnavi eos. [h] recordatio etiam mea [i] ille ſalvator meus. [k] palatiis [l] ita ut non vivam: & enarrem [m] & tamen morti [n] Domine, quoniam

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 * المزمور المائة وسبعة عشر * اللالويا * وهو لك * استيخن *
2 اشكروا الرب فانه صالح * وان رحمته لدايمة الي الابد * فليقل بيت اسرايل انه صالح * وان
3 4 رحمته لدايمة الي الابد * وليقل بيت هرون انه صالح * وان رحمته لثابتة الي الابد * وليقل
5 جميع الخايفين من الرب انه صالح * وان رحمته لكاينة الي الابد * في ضيقي صرخت الي الرب
6 7 فاستجاب لي * واخرجني الي السعة * الرب هو عوني فلا اخاف ماذا يصنع بي الانسان * الرب هو
8 9 عوني * وانا اظفر باعداي * التوكل علي الرب حسن وخير من التوكل علي البشر * الرجاء للرب
10 11 جيد وافضل من الرجاء للروساء * احاط بي جميع الامم * وباسم الرب انتقمت منهم * احاطوا بي
12 احتياطا وباسم الرب انتقمت منهم * احاطوا بي كاحتياط النحل بالشمع * والتهبوا كنار في شوك *
13 14 وباسم الرب افنيتهم * دفعوني لكي اسقط والرب عضدني * قوتي وبركتي هو الرب صار لي مخلصا *
15 16 * صوت تهليل الخلاص في مساكن الصديقين * يمين الرب صنعت القوة * يمين الرب رفعتني *
17 18 يمين الرب صنعت قوة * لا اموت بل احيا * واخبر باعمال الرب * ان ادبا ادبني الرب * والي الموت
19 20 لم يسلمني * فتحوا لي ابواب العدل * لكي ادخل فيها واشكر الرب * هذا باب الرب والابرار
21 22 يدخلون فيه * اشكرك يا رب لانك استجبت لي وصرت لي مخلصا * الحجر الذي رذله
23 24 البناوون هذا صار راس الزاوية * هذا كان من قبل الرب * وهو عجيب في عيوننا * هذا
25 اليوم الذي صنعه الرب * هلموا فلنبتهج ونفرح فيه * يا رب خلصنا * يا رب سهل طريقنا *
26 * مبارك الاتي باسم الرب * باركناكم في بيت الرب *

PSAL. CXVII.

Alleluja. Verſ. 34. 1

GRatias agite Domino, quoniam bonus
eſt, & quia miſericordia ejus perpe-
tua eſt in æternum. Dicat ergò domus Iſ- 2
rael, Sanè bonus eſt, & quidem miſericor-
dia ejus perpetua eſt in æternum. Et dicat 3
domus Aaron, Sanè bonus eſt, & quidem
miſericordia ejus conſtans eſt in æternum.
Et dicant omnes timentes Dominum, Sanè 4
bonus eſt, & quidẽ miſericordia ejus per-
ſiſtens eſt in æternum. In tribulatione mea 5
clamavi ad Dominum, & exaudivit me,
eduxitque me ad latitudinem. Dominus 6
eſt auxilium meum, ideò non timeo quid
faciat in me homo. Dominus eſt adjutori- 7
um meum, et ego ſuperabo inimicos meos.
Fidere Domino bonũ eſt, & melius quàm 8
fidere hominibus. Sperare in Domino bo- 9
num eſt, ac præſtantius quàm ſperare in
principibus. Circundederunt me omnes gen- 10
tes, & in nomine Domini ſumpſi vindi-
ctam ab eis. Obſiderunt me obſidione, & 11
in nomine Domini ſumpſi vindictã ab eis.
Circundederunt me quemadmodum cir- 12
cundant apes ceram, & inflammati ſunt
ſicut ignis in ſpinis: & in nomine Domini
conſumpſi eos. Impulerunt me ut caderẽ, 13
et Dominus amplexus eſt me. Fortitudo 14
mea et benedictio mea Dominus eſt, factus
eſt mihi ſalvator. Vox exultationis ſalu- 15
tis in habitaculis juſtorum eſt. Dextera 16
Domini fecit virtutem, dextera Domini
exaltavit me, dextera Domini fecit virtu-
tem. Non moriar, ſed vivam, et narrabo 17
opera Domini. Eruditione erudivit me Do- 18
minus, et morti non tradidit me. Aperite 19
mihi portas juſtitiæ, ut ingrediar per illas
& gratias agam Domino. Hæc eſt porta 20
Domini, & juſti ingrediuntur per eam.
Gratias ago tibi, O Domine, quoniam tu 21
exaudîſti me, & factus es mihi ſalvator.
Lapis, quem contempſerunt ædificantes, 22
hic factus eſt caput anguli. Hoc factum 23
eſt à conſpectu Domini, et eſt mirabile in
oculis noſtris. Hæc eſt dies quam fecit Do- 24
minus: venite exultemus & lætemur in
ea. O Domine, ſalves nos, O Domine, 25
complana viam noſtram. Benedictus ven- 26
turus in nomine Domini. Benediximus vo-
bis in domo Domini.

תהלים : קיט

cornua ad usque , *implicationibus in* agnum Ligate : nobis illuxit & ,Dominus Deus
27 אל יהוה ויאר לנו אסרו־חג בעבתים עד־קרנות 27

Confitemini .te exaltabo ,meus Deus : tibi confitebor & , tu meus Deus .altaris 28
28 המזבח : אלי אתה ואודך אלהי ארוממך : הודו
29 .ejus misericordia seculum in quoniam : bonus quoniam , Domino 29
ליהוה כי־טוב כי לעולם חסדו :

PSAL. CXIX. קיט

:ej* testimonia *custodientes* Beati .Domini lege in *euntes* : via perfecti Beati
1 אשרי תמימי־דרך ההלכים בתורת יהוה : אשרי נצרי עדתיו
2 .ambulaverũt ej* viis in:*pravitatem* sunt operati non Etiam .eum *quærent* corde toto in 1
3 בכל־לב ידרשוהו : אף לא־פעלו עולה בדרכיו הלכו : 2
, meæ viæ firmentur Utinam .valde *custodiendum ad*,tua mandata præcepisti Tu
4 אתה צויתה פקדיך לשמר מאד : אחלי יכנו דרכי 3
5 omnia ad *me respiciendo in*,afficiar pudore non Tunc .tua statuta custodiendum ad
6 לשמר חקיך : אז לא־אבוש בהביטי אל־כל־ 4
.tuæ justitiæ judicia *me discendo in* : cordis rectitudine in tibi Confitebor .tua præcepta 5
7 מצותיך : אודך בישר לבב בלמדי משפטי צדקך : 6
adolescens mundabit quo In .*valde usque* me derelinquas ne : custodiam tua Statuta
8 את־חקיך אשמר אל־תעזבני עד־מאד : במה יזכה־נער 7
9 :te exquisivi meo corde toto In ?tuum verbum juxta custodiendum ad :suam semitam 8
10 את־ארחו לשמר כדברך : בכל־לבי דרשתיך 9
non ut : tua eloquia abscondi meo corde In .tuis mandatis à me facias errare ne
11 אל־תשגני ממצותיך : בלבי צפנתי אמרתך למען לא 10
narravi meis labiis In .tua statuta me doce;Domine *tu* Benedictus .tibi peccem 11
12 אחטא־לך : ברוך אתה יהוה למדני חקיך : בשפתי ספרתי
13 *omni* super sicut:sum gavisus tuorũ testimoniorum via In .tui oris judicia omnia 12
14 כל משפטי־פיך : בדרך עדותיך ששתי כעל כל־ 13
tuis statutis In .tuas semitas aspiciam & : meditabor tuis præceptis In .*ubertate* 14
15 הון : בפקודיך אשיחה ואביטה ארחתיך : בחקתיך 15
16 : vivam tuo servo *super* Retribue .tuorum verborum obliviscar non : *delectabor* 16
17 אשתעשע לא אשכח דברך : גמל על־עבדך אחיה 17
.tua lege de mirabilia aspiciam & : meos oculos Revela .tua verba custodiam & 18
18 ואשמרה דברך : גל־עיני ואביטה נפלאות מתורתך :
est Confracta .tua præcepta me à abscondas ne : terra in ego *Peregrinus* 19
19 גר אנכי בארץ אל־תסתר ממני מצותיך : גרסה 20
20 superbos *Increpâsti* .tempore omni in tua judicia ad : desiderium ob mea anima
21 נפשי לתאבה אל־משפטיך בכל־עת : גערת זדים 21
:contemptum &,opprobrium me à Devolve .tuis præceptis à errantes : maledictos 22
22 ארורים השגים ממצותיך : גל מעלי חרפה ובוז 23
: sunt locuti me contra , principes sederunt Etiam .custodivi tua testimonia quia
23 כי עדתיך נצרתי : גם ישבו שרים בי נדברו
viri meæ *deliciæ* tua testimonia Etiam .tuis statutis in meditabitur tuus servus 24
24 עבדך ישיח בחקיך : גם־עדתיך שעשעי אנשי
.tuum verbum secundùm me vivifica ; mea anima pulveri Adhæsit .mei consilii 25
25 עצתי : דבקה לעפר נפשי חיני כדברך :

תרגום TARGUM.

27 אלהא יי אנהר לנא אמרו שבטיא דבית יהודה
כפיתו טליא לנכסת חגא בשלשלון עד די
תקרבוניה ותשדון אדמיה בקרנת מדבחא
28 אמר שמואל נביא : אלהי את ואודי קדמך
29 אלהי אשבחנך אמר דוד : מתיב שמואל ואמר
שבחו כנשתא דישראל אודו קדם יי ארום טב
ארום לעלם טוביה :

קיט

1 טוביהון דשלימי אורחיה דמהלכין באוריתא
2 דיי : טוביהון דנטרי סהדותיה בכל לבא
3 יתבעון אולפניה : ברם לא עבדו שקרא
4 באורחתיה תקניא הליכו : אנת פקדתא פקודך
5 למטר לחדא : טב לי דתקנן אורחתי למטר
6 גזרתך : הדין לא אבהית באסתכלותי לכל
7 פקודך : אודי קדמך בתריצות לבא במלפי דיני
8 זכותך : ית גזרתך אטר לא תשבוק יתי עד
9 לחדא : במא ידכי טליא ית אורחתיה למטר
10 היך דבריך : בכל לבי תבעית אולפנך לא
11 תשלגני מפקודיך : בלבי אטישית מימרך מן
12 בגלל דלא אחוב קדמך : בריך את יי אלף יתי
13 גזרתך : בספותי אשתעיתי כל דיני פומך :
14 באורח סהדותך חדיתי כעלוי כל מולא :
15 בפקודיך אמלל ואסתכל אורחתך : בגזרתך
16 אתפרנק לא אתנשי דבורך : שלם טב על
17 עבדך אחי ואטר דבוריך : גלי עיני ואסתכל
18 פרישן מאוריתך : דייר אנא בארעא לא
19 תסליק מני פקודיך : רגנת נפשי לרגנתא
20 לפקודיך בכל עדן : נופתא זידנין ליטין
21 דאשתליו מפקודיך : אעדי מעלוי קלנא
22 ובוזתא ארום סהדותך נטרית : ארום יתבין
23 רברבין מני ממללין עבדך עסק באחוית
24 גזרתך : לחוד סהדותך פרנוקי מרי עצתי :
25 אדבקת לעפרא נפשי אסי יתי כדבריך :

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Deus Dñs illuxit nobis, *dixerunt trib⁹ domus Jehudæ* : ligate puerum ad sacrificium solennitatis catenis, donec *sacrificaveritis* eum, & effuderitis sanguinem *ejus* in cornua altaris, *dixit Semuel propheta.* Deus meus es tu, & confitebor coram te : Deus meus, laudabo te, *dixit David. Respondit Semuel, & dixit* : *Laudate, Ecclesia Israel*, confitemini coram Domino, quoniam bonus, quoniam in æternum benignitas ejus. 27 28 29

PSAL. CXIX. ALEPH.

Beati qui perfecti sunt via, qui ambulant 1 in Lege Domini. Beati qui observant 2 testimonia ejus, in toto corde quærunt doctrinam ejus. Etenim non operati sunt ini- 3 quitatem, in viis ejus rectis ambulaverunt. Tu præcepisti mandata tua custodiri multum. 4 Bonum fuit mihi quòd *præparatæ fuerint viæ* 5 *meæ* ad custodienda decreta tua. Tunc non 6 confundar, cùm prospexero ad omnia mandata tua. Confitebor coram te in directione 7 cordis, cùm didicero judicia justitiæ tuæ. Decreta tua custodiam, ne derelinquas me 8 prorsus. BETH. In quo purificabit puer 9 viam suam, ut observet juxta verba tua ? In 10 toto corde meo quæsivi doctrinam tuam : ne aberrare me facias à mandatis tuis. In 11 corde meo abscondi verbum tuum, ut non peccarem coram te. Benedictus tu Domine, 12 doce me decreta tua. Labiis meis narravi 13 omnia judicia oris tui. In via testimoniorum tuorum gavisus sum, sicut in omni opu- 14 lentia. De præceptis tuis loquar, & specula- 15 bor vias tuas. In decretis tuis delectabor, non 16 obliviscar verbi tui. GIMEL. Retribue 17 bonum servo tuo ; vivam & custodiam verbum tuum. Revela oculos meos, & consi- 18 derabo miranda de Lege tua. Peregrinus 19 ego sum in terra : ne auferas à me mandata tua. Desideravit anima mea desiderium *præ-* 20 *ceptorum* tuorũ in omni tempore. Increpâsti 21 superbos : maledicti qui aberrant à præceptis tuis. Aufer à me opprobrium & con- 22 temptum, quoniam testimonia tua custodivi. Quinetiam sedentes principes de me loquun- 23 tur : servus verò tuus intentus est in annunciationibus decretorum tuorum. Etiam te- 24 stimonia tua delectatio mea, auctores consilii mei. DALETH. Adhæsit pulveri ani- 25 ma mea : *sana* me secundùm verbum tuum.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

27 28 * ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܐܢܗܪ ܠܢ. ܐܣܘܪܘ ܥܐܕܝܢ ܒܫܫܠܬܐ: ܥܕܡܐ ܠܩܪ̈ܢܬܗ ܕܡܕܒܚܐ.
29 * ܐܠܗܝ ܐܢܬ ܐܘܕܐ ܠܟ ܐܠܗܝ ܐܢܬ ܘܐܫܒܚܟ: * ܐܘܕܘ ܠܡܪܝܐ ܕܛܒ ܗܘ. ܘܠܥܠܡ
ܛܝܒܘܬܗ.

* ܬܫܒܘܚܬܐ ܘܫܘܪܝܐ ܕܡܣܩܬܐ *

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܝܚ *

1 * ܠܐ ܡܬܝܕܥ. ܪܫ ܗܘܓܝܐ ܕܡܬܥܠܝܘܬܐ ܕܒܐܠܗܐ. ܦܬ̈ܓܡܐ ܫܡܗ.

* ܐ * ܛܘܒܝܗܘܢ ܠܐܝܠܝܢ ܕܠܐ ܡܘܡ ܐܢܘܢ ܒܐܘܪܚܐ. ܘܡܗܠܟܝܢ ܒܢܡܘܣܗ ܕܡܪܝܐ:
2 3 * ܛܘܒܝܗܘܢ ܠܐܝܠܝܢ ܕܢܛܪܝܢ ܣܗܕܘܬܗ. ܘܒܟܠܗ ܠܒܗܘܢ ܒܥܝܢ ܠܗ: * ܠܐ ܓܝܪ ܥܒܕܘ ܥܘܠܐ
4 5 ܘܒܐܘܪ̈ܚܬܗ ܗܠܟܘ. * ܐܢܬ ܦܩܕܬ ܕܢܬܢܛܪܘܢ ܦܘܩܕܢܝܟ ܙܗܝܪܐܝܬ: * ܐܝܠܘ ܢܬܬܩܢ ܐܘܪ̈ܚܬܝ
6 ܕܐܛܪ ܦܘܩܕܢܝܟ. * ܘܠܐ ܐܒܗܬ ܟܕ ܐܚܘܪ ܒܟܠܗܘܢ ܦܘܩܕܢܝܟ: * ܐܘܕܐ ܠܟ
7 8 ܒܬܪܝܨܘܬ ܠܒܝ. ܡܐ ܕܝܠܦܬ ܕܝܢܐ ܕܙܕܝܩܘܬܟ: * ܦܘܩܕܢܝܟ ܢܛܪܬ ܠܐ ܬܫܒܩܢܝ ܠܥܠܡ.
9 10 * ܒ * ܒܡܢܐ ܢܕܟܐ ܛܠܝܐ ܐܘܪܚܗ: ܕܢܛܪ ܦܘܩܕܢܝܟ: * ܒܟܠܗ ܠܒܝ ܒܥܝܬܟ
11 12 ܠܐ ܬܛܥܝܢܝ ܡܢ ܦܘܩܕܢܝܟ. * ܒܠܒܝ ܛܫܝܬ ܡܠܝܟ ܕܠܐ ܐܚܛܐ ܠܟ: * ܡܒܪܟ ܐܢܬ ܡܪܝܐ
13 ܐܠܦܝܢܝ ܦܘܩܕܢܝܟ. * ܒܣܦܘܬܝ ܬܢܝܬ ܟܠܗܘܢ ܕܝܢܐ ܕܙܕܝܩܘܬܟ * ܠܐܘܪܚܐ ܕܣܗܕܘܬܟ
14 15 ܪܚܡܬ ܝܬܝܪ ܡܢ ܟܠܗ ܥܘܬܪܐ. * ܒܦܘܩܕܢܝܟ ܐܬܒܩܐ ܘܐܕܥ ܐܘܪ̈ܚܬܟ: * ܒܢܡܘܣܟ
16 17 ܐܬܗܓܐ ܕܠܐ ܐܛܥܐ ܡܠܝܟ. * * ܓ * * ܦܪܘܥ ܠܥܒܕܟ ܕܐܚܐ ܘܐܛܪ ܡܠܝܟ: * ܓܠܝ ܠܝ
18 19 ܥܝܢܝ ܕܐܚܙܐ ܬܕܡܪ̈ܬܐ ܕܒܢܡܘܣܟ. * ܬܘܬܒܐ ܐܢܐ ܥܡܟ ܠܐ ܬܛܫܐ ܡܢܝ ܦܘܩܕܢܝܟ.
20 21 * ܪܓܬ ܢܦܫܝ ܘܪܓܝܬ ܠܕܝܢܝܟ ܒܟܠܙܒܢ. * ܟܐܪܬ ܠܥܡܡ̈ܐ ܘܠܝܛܝܢ ܐܢܘܢ
22 23 ܐܝܠܝܢ ܕܛܥܝܢ ܡܢ ܦܘܩܕܢܝܟ: * ܐܥܒܪ ܡܢܝ ܚܣܕܐ ܡܛܠ ܕܣܗܕܘܬܟ ܢܛܪܬ. * ܝܬܒܝܢ
24 ܗܘܘ ܥܘܠܐ ܘܪܢܝܢ ܗܘܘ ܒܝ: ܘܐܢܐ ܒܦܘܩܕܢܝܟ ܪܢܐ ܗܘܝܬ. * ܣܗܕܘܬܟ ܪܢܝܬ ܘܡܠܟܐ
24 ܛܒܬܐ: * ܕ * ܕܒܩܬ ܢܦܫܝ ܠܥܦܪܐ ܐܚܝܢܝ ܐܝܟ ܡܠܬܟ.

Domine Deus noster lucem nobis infer, & li- 17 ga solennitates nostras catenis usq; ad cornua altaris. Deus me⁹ tu es, gratias agam tibi : Deus 28 meus tu es, glorificabo te. Confitemini Dño, 29 quoniam bonus est, & in æternum benignitas ejus.

Laus, & initium gradûs.

PSAL. CXVIII.

Anonymus. Initium meditationis altitudi- 1 *nis quæ in Deo est. Vers.* 345.

* *Olaph.* *

Beati illi qui sine macula sunt in via, & gradiuntur in lege Domini. O beatos eos 2 qui observant testimonium ejus, & ex toto corde suo quærunt eum : Non commiserunt 3 scelus, & incesserunt per vias ejus. Tu man- 4 dâsti ut custodirent tua præcepta summope- 5 rè ; Utinam ergò rectæ sint viæ meæ, ut custo- 6 diã mandata tua, Et non confundar ubi serva- 7 vero cuncta decreta tua. Confitebor tibi cum rectitudine cordis mei, quum didicero judicia justitiæ tuæ. Præceptiones tuas custodivi : ne 8 deseras me in æternum. * *Beth* * Quo 9 pacto mundabit adolescens viam suam, ut custodiat mandata tua ? Toto corde meo per- 10 quisivi te : ne me sinas aberrare à præceptis tuis. In corde meo reposui verba tua, ne pec- 11 cem in te. Benedictus sis tu Domine, doce me 12 decreta tua. Labiis meis repetii cuncta judi- 13 cia justitiæ tuæ. Viam testimonii tui dilexi 14 plusquàm omnes divitias. Mandata tua sum 15 contemplat⁹, & cognovi vias tuas. Legem tu- 16 am meditatus sum, ut ne obliviscar verborum tuorum. * *Gomal* * Exaudi servum tuum, 17 ut vivam, & custodiã verba tua. Detege mihi 18 oculos meos, ut videam mira quæ sunt in lege tua. Hospes sum tecum, ne me celes tua præ- 19 cepta. Expetivit anima mea, & exoptavit ju- 20 dicia tua omni tempore. Increpâsti gentes & 21 maledicti sunt ii qui aberrant à mandatis tuis. Repelle à me ignominiam, quia testimonium 22 tuũ custodivi. Sedebant nefarii & cogitabant 23 de me : ego verò de præceptis tuis cogitabam ; Testimonium tuum meditatus sum, & 24 mentem bonã. * *Dolath* * Adhæsit anima 25 mea pulveri, vivifica me secundùm verbum tuum.

Verſio VULG. LAT.

27 Deus Domin⁹, & illuxit nobis. Conſtituite diem ſolennem in condenſis,
28 uſq; ad cornu altaris. Deus me⁹ es tu,
& confitebor tibi: Deus meus es tu,
& exaltabo te. Confitebor tibi quoniā
exaudîſti me: & factus es mihi in ſalutē.
29 Confitemini Dño, quoniā bon⁹:
quoniam in ſeculū miſericordia ejus.

Alleluja. CXVIII.

ALEPH.

1 BEati immaculati in via: qui ambulāt
2 in lege Domini. Beati, qui ſcrutātur
teſtimonia ejus: in toto corde exquirunt eū.
3 Non enim qui operantur iniquitatē, in viis ejus ambulaverūt.
4 Tu mandâſti mandata tua cuſtodiri nimis.
5 Utinā dirigātur viæ meæ, ad cuſtodiendas
6 juſtificationes tuas. Tunc non confundar, cùm perſpexero in omnib⁹ mādatis
7 tuis. Confitebor tibi in directione cordis, in eo quòd didici judicia juſtitiæ
8 tuæ. Juſtificationes tuas cuſtodiā:
non me derelinquas uſquequaque.

9 BETH. In quo corrigit adoleſcentior viā ſuā? in cuſtodiendo ſermones
10 tuos. In toto corde meo exquiſivi te:
11 ne repellas me à mandatis tuis. In corde meo abſcōdi eloquia tua: ut nō peccē
12 tibi. Benedict⁹ es, Dñe: doce me juſtificationes
13 tuas. In labiis meis, pronuntiavi
14 omnia judicia oris tui. In via
teſtimoniorū tuorū delectatus ſū, ſicut
15 in omnib⁹ divitiis. In mādatis tuis exercebor:
16 & conſiderabo vias tuas. In
juſtificationib⁹ tuis meditabor: non
oblivifcar ſermones tuos.

17 GIMEL. Retribue ſervo tuo, vivifica
18 me: & cuſtodiā ſermones tuos. Revela oculos meos: & conſiderabo mirabilia
19 de lege tua. Incola ego ſum in terra: non abſcondas à me mandata tua.
20 Concupivit anima mea deſiderare juſtificationes
21 tuas, in omni tempore. Increpâſti ſuperbos: maledicti qui declinant
22 à mādatis tuis. Aufer à me opprobriū,
& contemptū: quia teſtimonia
23 tua exquiſivi. Etenim ſederunt principes,
& adverſū me loquebantur: ſerv⁹
autē tu⁹ exercebatur in juſtificationib⁹
24 tuis. Nam & teſtimonia tua meditatio
mea eſt: & conſilium meum juſtificationes tuæ. DALETH.
25 Adhæſit pavimento anima mea: vivifica me ſecundùm verbum tuum.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

27 †Θεὸς κύριος, καὶ ἐπέφανεν ἡμῖν· †συστήσασθε ἑορτὴν
ἐν τοῖς πυκάζουσιν, †ἕως τῶν κεράτων τοῦ θυσιαστηρίου.
28 †Θεός μου εἶ σὺ, καὶ ἐξομολογήσομαί σοι· †Θεός
μου εἶ σὺ, καὶ ὑψώσω σε. †Ἐξομολογήσομαί σοι, ὅτι
29 ἐπήκουσάς μου, †καὶ ἐγένου μοι εἰς σωτηρίαν. †Ἐξομολογεῖσθε
τῷ κυρίῳ, ὅτι ἀγαθὸς, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ
ἔλεος αὐτοῦ. Ἀλληλούϊα. ριη´.
1 †ΜΑκάριοι (α) ἄμωμοι ἐν ὁδῷ, †οἱ πορευόμενοι
2 ἐν νόμῳ κυρίου. †Μακάριοι οἱ (β) ἐξερευνῶντες
τὰ μαρτύρια αὐτοῦ, †ἐν ὅλῃ καρδίᾳ ἐκζητήσουσιν
3 αὐτόν. †Οὐ γὰρ οἱ ἐργαζόμενοι τὴν ἀνομίαν, ἐν ταῖς
4 ὁδοῖς αὐτοῦ ἐπορεύθησαν. †Σὺ ἐνετείλω τὰς ἐντολάς
5 σου, (γ) τοῦ φυλάξασθαι σφόδρα. †Ὄφελον κατευθυνθείησαν
αἱ ὁδοί μου, †τοῦ φυλάξασθαι τὰ δικαιώματά
6 σου. †Τότε οὐ μὴ (δ) αἰσχυνθῶ, †ἐν τῷ με ἐπιβλέπειν
7 ἐπὶ πάσας τὰς ἐντολάς σου. †Ἐξομολογήσομαί (ε) σοι ἐν εὐθύτητι καρδίας, †ἐν τῷ μεμαθηκέναι
8 με τὰ κρίματα τῆς δικαιοσύνης σου. †Τὰ
δικαιώματά σου φυλάξω, †μή με ἐγκαταλίπῃς ἕως
9 σφόδρα. †Ἐν τίνι κατορθώσει νεώτερος τὴν
ὁδὸν αὐτοῦ; †ἐν τῷ (ζ) φυλάξασθαι τοὺς λόγους σου.
10 †Ἐν ὅλῃ καρδίᾳ μου ἐξεζήτησά σε, †μὴ ἀπώσῃ
11 με ἀπὸ τῶν ἐντολῶν σου. †Ἐν τῇ καρδίᾳ μου ἔκρυψα
12 τὰ λόγιά σου, ὅπως ἂν μὴ ἁμάρτω σοι. †Εὐλογητὸς εἶ κύριε, δίδαξόν με τὰ δικαιώματά σου.
13 †Ἐν τοῖς χείλεσί μου ἐξήγγειλα πάντα τὰ κρίματα
14 τοῦ στόματός σου. †Ἐν τῇ ὁδῷ τῶν μαρτυρίων σου
15 ἐτέρφθην, †ὡς ἐπὶ παντὶ πλούτῳ. †Ἐν ταῖς ἐντολαῖς
16 σου ἀδολεσχήσω, †καὶ κατανοήσω τὰς ὁδούς σου. †Ἐν
τοῖς δικαιώμασί σου μελετήσω, †οὐκ ἐπιλήσομαι τῶν
17 λόγων σου. †Ἀνταπόδος τῷ δούλῳ σου, †ζήσομαι
18 καὶ φυλάξω τοὺς λόγους σου. †Ἀποκάλυψον τοὺς
ὀφθαλμούς μου, καὶ κατανοήσω †τὰ (η) θαυμάσια ἐκ
19 τοῦ νόμου σου. †Πάροικος ἐγώ εἰμι ἐν τῇ γῇ, †μὴ
20 ἀποκρύψῃς ἀπ᾽ ἐμοῦ τὰς ἐντολάς σου. †Ἐπεπόθησεν ἡ ψυχή μου τοῦ ἐπιθυμῆσαι †τὰ κρίματά
21 σου ἐν παντὶ καιρῷ. †Ἐπετίμησας ὑπερηφάνοις,
†ἐπικατάρατοι οἱ ἐκκλίνοντες ἀπὸ τῶν ἐντολῶν σου.
22 †Περίελε ἀπ᾽ ἐμοῦ ὄνειδος καὶ ἐξουδένωσιν, †ὅτι τὰ
23 μαρτύριά σου ἐξεζήτησα. †Καὶ γὰρ ἐκάθισαν ἄρχοντες,
καὶ κατ᾽ ἐμοῦ κατελάλουν, †ὁ δὲ δοῦλός σου ἠδολέσχει
24 ἐν τοῖς δικαιώμασί σου. †Καὶ γὰρ τὰ μαρτύριά σου μελέτη μού ἐστι, †καὶ (θ) αἱ συμβουλίαι μου
25 τὰ δικαιώματά σου. †Ἐκολλήθη τῷ ἐδάφει
ἡ ψυχή μου, †ζῆσόν με (ι) κατὰ τὸν λόγον σου.

MS.A. (α) οἱ ἄμωμοι (β) ἐξεραυνῶντες (γ) φυλάσσεσθαι (δ) ἐπαισχυνθῶ, (ε) σοι κύριε ἐν (ζ) φυλάσσεσθαι (η) θαυμάσιά σου ἐκ (θ) ἡ συμβουλία (ι) κατὰ τὸ λόγιόν σου.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

De⁹ Domin⁹, & illuxit nobis: 26 *(n)* 27
conſtituite [o] diē ſolennē in condenſis, uſq; ad cornua altaris. 27 *De⁹ me⁹* 28
es tu, & confitebor tibi: De⁹ me⁹ es
tu, & exaltabo te. 28 *(o) Confitebor*
tibi [p], quoniā exaudîſti me: & factus es mihi (q) in ſalutē. 29 *Confitemini Domino, quoniā bon⁹: quoniā* 29
in ſeculum miſericordia ejus.

Alleluja. CXVIII.

1 *BEati (a) immaculati in [a] via,* 1
qui ambulant in lege Domini.
2 *Beati qui ſcrutantur teſtimonia ejus, in toto [b] corde exquirunt eum.* 2
3 *[c] Non enim qui operantur iniquitatem, in viis ej⁹ [d] ambulaverunt.* 3
4 *Tu mandâſti mandata tua cuſtodiri nimis.* 4 5 *[e] Utinā dirigantur viæ* 5
meæ, ad cuſtodiendas juſtificationes
tuas. 6 *Tunc non confundar, dum (b)* 6
inſpicio in omnia mādata tua. 7 *Confitebor [f] tibi in directione cordis, in* 7
eo quod didici judicia juſtitiæ tuæ. 8
Juſtificationes tuas cuſtodiā: ne derelinquas me uſque (c) valdè. 9 *In* 9
quo (d) corriget adoleſcentior vias
ſuas? in cuſtodiendo ſermones tuos.
10 *In toto corde meo exquiſivi te: ne* 10
me repellas à mandatis tuis. 11 *In* 11
corde meo abſcondi eloquia tua; ut
non peccem tibi. 12 *Benedict⁹ es, Domine: doce me juſtificationes tuas.* 12
13 *In labiis meis pronuntiavi omnia* 13
judicia oris tui. 14 *In via teſtimoniorū tuorū delectat⁹ ſum, ſicut in omnibus divitiis.* 14
15 *In mandatis tuis* 15
(e) exercebor, & conſiderabo vias
tuas. 16 *In juſtificationib⁹ tuis meditabor: nō oblivifcar ſermones tuos.* 16
17 *Retribue ſervo tuo: (f) [g] vivam, & cuſtodiam ſermones tuos.* 17
18 *Revela oculos meos: & conſiderabo (g) [h] mirabilia de lege tua.* 18
19 *(b) Incola ego ſum in terra: ne* 19
abſcondas à me mandata tua. 20 *(i)*
Concupivit anima mea [i] deſiderare 20
judicia tua, in omni tempore. 21 *Increpâſti ſuperbos: maledicti qui declināt à mandatis tuis.* 21
22 *Aufer à* 22
me opprobriū, et contemptū: quia teſtimonia tua exquiſivi. 23 *Etenim* 23
ſederunt principes, & adverſùs me
obloquebantur: ſerv⁹ autē tuus exercebatur in juſtificationibus tuis.
24 *Nam & teſtimonia tua [k] meditatio mea eſt: & (k) conſilia mea juſtificationes tuæ.* 24 25 *Adhæſit pavimento anima mea:* 25
vivifica me ſecundùm verbum tuum.

Verſio ÆTHIOPICA.

27 እግዚአብሔር፡ እግዚእ፡ አስተርአየ፡ለነ፡፡=፡
ግበሩ፡በዐለ፡በትፍሥሕት፡በኀበ፡እለ፡ያስተ 26
ሐምምዎ፡፡እስከ፡ አቅርንቲሁ፡ ለምሥዋ
ዕ፡፡=፡ አምላኪየ፡ አንተ፡ለገኒ፡ለከ፡፡አም 27
ላኪየ፡አንተ፡ ወአሌዕለከ፡፡=፡ እገኒ፡ ለከ፡ 28
29 እግዚኦ፡ እስመ፡ ሰማዕከኒ፡፡ወኮንከኒ፡ መድ
ኀኒየ፡፡=፡ ግነዩ፡ለእግዚአብሔር፡እስመ፡ኄ 29
ር፡፡እስመ፡ለዓለም፡ምሕረቱ፡፡=፡
ሃሌሉያ፡፡
፻፲፰ አሌፍ፡ ብፁዓን፡እለ፡ንጹሐን፡በፍኖቶ 1
ሙ፡፡እለ፡ የሐውሩ፡ በሕገ፡ እግዚአብሔ
ር፡፡=፡ ብፁዓን፡ለለ፡ የኀሡ፡ ስምዖ፡፡ወበ 2
ኵሉ፡ልበሙ፡የኀሥሥዎ፡፡=፡ ወእለሰ፡ይገብ 3
ሩ፡ዐመፃ፡ፍኖተ፡ዚአሁ፡ኢሖሩ፡፡=፡ አንተ፡ 4
አዘዝከ፡ይዕቀቡ፡ትእዛዘከ፡ ፈድፋደ፡፡=፡
ይረትዕሰ፡ ይርታዕ፡ ፍኖትየ፡፡ከመ፡ እዕቀብ፡ 5
ኵነኔከ፡፡=፡ ወእተ፡ጊዜ፡ኢይትኀፈር፡፡በ 6
ርዕየ፡ ኵሉ፡ ትእዛዝከ፡፡=፡ እገኒ፡ ለከ፡እ 7
ግዚኦ፡ በልብ፡ ርቱዕ፡፡ሶበ፡ ተምህርኩ፡ ኵነ
ኔ፡ጽድቅከ፡፡=፡ ወዐቀብኩ፡ኵነኔከ፡፡ወኢ 8
ትግድፈኒ፡ለዝሉፉ፡፡=፡ ፪ ቤት፡ በምን 9
ት፡ ያረትዕ፡ ወሬዛ፡ ፍኖቶ፡፡በዐቂበ፡ ነቢብ
ከ፡፡=፡ ወበኵሉ፡ ልብየ፡ ኃሠሥኩከ፡፡ኢ 10
ታርሕቀኒ፡ እምትእዛዝከ፡፡=፡ ውስተ፡ልብ 11
የ፡ ኀባእኩ፡ ነቢበከ፡፡ከመ፡ ኢያአብስ፡ ለ
ከ፡፡=፡ ቡሩክ፡አንተ፡እግዚኦ፡ ወምሕረኒ፡ 12
ኵነኔከ፡፡=፡ በከናፍሪየ፡ነገርኩ፡ኵሎ፡ኵ 13
ነኔ፡አፉከ፡፡=፡ በፍኖተ፡ ስምዕከ፡ተፈሣሕ 14
ኩ፡፡ከመ፡ዘበኵሉ፡ብዕል፡፡=፡ ወእዛዋዕ፡በ 15
ትእዛዝከ፡፡ወአኀሥሥ፡ፍኖትከ፡፡=፡ ወአ 16
ነብብ፡ትእዛዚከ፡፡ወኢይረስዕ፡ቃለከ፡፡=፡
፫ ጋሜል፡ ዕስዮ፡ለገብርከ፡፡ከመ፡ እሕዮ፡ 17
ወእዕቀብ፡ ነቢበከ፡፡=፡ ክሠቶን፡ ለአዕይን 18
ትየ፡ ወእርአይ፡፡ መድምምከ፡ እምሕግ
ከ፡፡=፡ ፈላሲ፡ አነ፡ ውስተ፡ ምድር፡፡ ኢትሕ 19
ባእ፡ እምኔየ፡ ትእዛዝከ፡፡=፡ አፍቀረት፡ነ 20
ፍስየ፡ ወፈተወት፡፡ ኵነኔከ፡ በኵሉ፡ ጊ
ዜ፡፡=፡ ገሠጽኮሙ፡ለዕቡያን፡፡ርጉማን፡ እ 21
ለ፡ ይትገሐሡ፡ እምትእዛዝከ፡፡=፡ አእት 22
ት፡ እምኔየ፡ጽእለተ፡ወኀሳረ፡፡እስመ፡ትእዛ
ዝከ፡ኃሠሥኩ፡፡=፡ እስመ፡ነበሩ፡መላእክ 23
ት፡ወኪያየ፡ ሐመዩ፡፡ወገብርከሰ፡ ይዛዋዕ፡በ
ኵነኔከ፡፡=፡ እስመ፡ ስምዕከ፡ ተምህርየ፡ 24
ውእቱ፡ ወምክርየኒ፡ ኵነኔ፡ ዚአከ፡፡=፡
፬ ዳሌጥ፡ ጠግአት፡ ነፍስየ፡ በምድር፡፡አ 25
ሕይወኒ፡በከመ፡ነቢብከ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [o] diem feſtum cum lætitia pro iis, qui res *Dei* ſolicitè curant. [p] Domine, quoniam [q] Salvator meus. *PSAL. CXVIII.* [a] viis ſuis, [b] corde ſuo [c] Qui autem [d] non [e] Expedit quidem ut dirigeret vias meas [f] Domine cum recto corde, [g] ut vivam, [h] mirabilia tua [i] & exoptavit judicia [k] inſtitutio mea

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

27 28 الله الرب أضاء علينا رتبوا عيدا في الواصلين إلى قرون المذبح * أنت هو إلهي أشكرك *
29 أنت هو إلهي ربي أمجدك * أشكرك يا رب لأنك استجبت لي وصرت لي مخلصا * اعترفوا للرب
فإنه صالح وإن رحمته لكائنة إلى الأبد * اللليلويا * المزمور المائة وثمانية عشر *
1 * لداود * وهو قع * استيخن * الفصل الأول * وهو ح * طوبى للذين بلا عيب في
2 السبيل السالكين في ناموس الرب * طوبى للفاحصين عن شهاداته الطالبين له بجميع قلوبهم *
3 4 * لأن عاملي الإثم لم يسلكوا في سبله * أنت أمرت بحفظ وصاياك جدا * فليت طرقي تيسر
5 6 7 لحفظ حقوقك * حينئذ لا أخزى إذا اطلعت على جميع وصاياك * أشكرك يا رب باستقامة قلبي
8 عندما علمت أحكام عدلك * وحقوقك أحفظها فلا ترفضني جدا إلى الغاية *
9 10 * الفصل الثاني * وهو ح * بماذا يقوم الشباب طريقه عند حفظ وصاياك * طلبتك
11 12 بجميع قلبي فلا تقصيني من وصاياك * وضعت قولك في قلبي لكيلا أخطئ إليك * مبارك أنت
13 14 يا رب فعلمني عدلك * أظهرت بشفتي جميع أحكام فيك * فرحت في طريق شهاداتك مثل كل
15 16 غنى * أتكلم بوصاياك وأفهم طرقك * أدرس حقوقك ولا أنسى إكرامك * الفصل الثالث * وهو ح *
17 18 * استجب لعبدك ليحيى ويحفظ قولك * اكشف عيني فأتأمل عجائبك من ناموسك * غريب
19 20 أنا في الأرض فلا تخف عني وصاياك * اشتاقت نفسي أن أشتهي أحكامك في كل حين * زجرت
21 22 المتعظمين ملعون كل من يحيد عن وصاياك * انزع عني العار والخزي فإني طلبت شهاداتك *
23 24 * إن الرؤساء جلسوا ويقولوا علي وعبدك يدرس في عدلك * وإن شهاداتك لدرسي وحقوقك
25 لأفكاري * الفصل الرابع * وهو ح * لصقت نفسي بالتراب فأحيني كقولك *

Deus Dominus fulſit ſuper nos. Inſtituite ſolennitatem in iis qui attingunt cornua altaris. 27 *Tu es Deus meus, gratias agam tibi: tu es Deus meus Dominus meus, glorificabo te.* 28 *Gratias ago tibi O Domine, quia exaudîſti me, & factus es mihi ſalvator. Confitemini Domino, quia bonus eſt, & quidē miſericordia ejus perduratura eſt in æternū. Alleluja.* 29

PSAL. CXVIII.
Davidis. Verſ. 170.
Sectio prima. Verſ. 8.

1 *BEati qui ſunt ſine macula in via, ambulantes in lege Domini.* 2 *Beati ſcrutantes teſtimonia ejus, quærentes eum ex totis cordibus ſuis.* 3 *Nam operantes ſcelus non ambulaverunt in ſemitis ejus.* 4 *Tu mandâſti obſervantiā præceptorum tuorum vehementer.* 5 *Utinam ergò viæ meæ reddantur faciles ad obſervantiam ſtatutorum tuorum.* 6 *Tunc non confundar, quū perſpexero omnia mandata tua.* 7 *Gratias agam tibi O Domine cum rectitudine cordis mei, quum novero judicia juſtitiæ tuæ:* 8 *Et ſtatuta tua cuſtodiam. Ne quæſo, me reſpuas nimium ad extremum.* Sectio ſecunda. Verſ. 8. 9 *Per quid diriget juventus viam ſuam poſt obſervata præcepta tua?* 10 *Expetivi te ex toto corde meo, ne igitur me repellas à mandatis tuis.* 11 *Repoſui ſermonem tuum in corde meo, ut ne peccem in te.* 12 *Benedictus es tu O Domine, doce me æquitatem tuam.* 13 *Pateſeci labiis meis omnia judicia oris tui.* 14 *Gaviſus ſum de via teſtimoniorum tuorum æquè ac omnibus divitiis.* 15 *Loquor de præceptis tuis, & perpendo vias tuas.* 16 *Recito ſtatuta tua & non oblivifcor venerationē tuā.* Sect. tertia. Ver. 8 17 *Exaudi ſervum tuum, ut vivat & obſervet ſermonem tuum.* 18 *Detege oculos meos, & contemplabor miracula tua ex lege tua.* 19 *Peregrinus ego ſum in terra, ne abſcondas à me mandata tua.* 20 *Concupivit anima mea ut exoptem judicia tua in omni tempore.* 21 *Increpâſti ſuperbos, maledictus quicunque digreditur à judiciis tuis.* 22 *Exue me opprobrio & ignominiâ, quia petivi teſtimonia tua.* 23 *Sanè principes ſederunt & obloquuti ſunt de me, & ſervus tuus exercet ſe in æquitate tua.* 24 *Et quidem teſtimonia tua ſunt mihi pro exercitio & ſtatuta tua pro cogitationibus meis.* Sectio quarta. Verſ. 8 25 *Adhæſit anima mea pulveri, vivifica me ſecundum ſermonem tuum.*

תהלים : קיט

tuorum præceptorum Viam .tua ſtatuta me doce:me exaudiſti &,narravi meas Vias
26 דרכי ספרתי ותענני למדני חקיך: דרך־פקודיך
[illegible] præ mea anima Stillavit .tuis mirabilibus in meditabor & :me fac intelligere
27 28 הבינני ואשיחה בנפלאותיך: דלפה נפשי מתוגה
,mihi *largire* tuam legem & :me à amove mendacii Viam .tuũ verbum juxta me confirma
29 קימני כדברך: דרך שקר הסר ממני ותורתך חנני:
Domine:tuis teſtimoniis *in* Adhæſi .*propoſui* tua judicia :elegi veritatis Viam
30 31 דרך־אמונה בחרתי משפטיך שויתי: דבקתי בעדותיך יהוה
.me i cor dilataveris cum : curram tuorum mandatorũ Viam .me afficias pudore ne
32 אל־תבישני: דרך־מצותיך ארוץ כי תרחיב לבי:
,me fac Intelligere .*mercede* eam cuſtodiam &,tuorũ ſtatutorum viam Domine me Doce
33 34 הורני יהוה דרך חקיך ואצרנה עקב: הבינני
ſemitam per me fac *Calcare* .corde toto in illam cuſtodiam &,tuam legem cuſtodiã &
35 ואצרה תורתך ואשמרנה בכל־לב: הדריכני בנתיב
non &,tua teſtimonia ad meum cor Inclina .volui ipſam *in* quia:tuorum mandatorũ
36 מצותיך כי־בו חפצתי: הט־לבי אל־עדותיך ואל
.me vivifica tuis viis in:*mendaciũ videndo à*,meos oculos fac Tranſire :*concupiſcentiam* ad
37 אל־בצע: העבר עיני מראות שוא בדרכך חיני:
meĩ opprobriũ fac Tranſire .tuũ timorẽ ad quod : tuum eloquium tuo ſervo Confirma
38 39 הקם לעבדך אמרתך אשר ליראתך: העבר חרפתי
tua juſtitia in:tua mãdata ad concupivi Ecce .bona tua judicia quia :timui quod
40 אשר יגרתי כי משפטיך טובים: הנה תאבתי לפקדיך בצדקתך
.tuũ eloquiũ ſecundùm tua ſalus:Domine tuæ miſericordiæ mihi veniãt Et.me vivifica
41 חיני: ויבאני חסדך יהוה תשועתך כאמרתך:
auferas ne Et .tuo verbo in *ſperavi* quòd ,verbum *mihi exprobranti* reſpondebo Et
42 43 ואענה חרפי דבר כי־בטחתי בדברך: ואל־תצל
cuſtodiam Et .expectavi tua judicia ad quia :valde uſque veritatis verbũ meo ore de
44 מפי דבר־אמת עד־מאד כי למשפטך יחלתי: ואשמרה
tua mandata quia:latitudine in ambulabo Et.*perpetuum* & ſeculũ in ſemper tuam legem
45 תורתך תמיד לעולם ועד: ואתהלכה ברחבה כי פקדיך
.afficiar pudore non & , regibus coram tuis teſtimoniis *in* loquar Et .quæſivi
46 דרשתי: ואדברה בעדתיך נגד מלכים ולא אבוש:
tua præcepta ad meas palmas levabo Et .dilexi quæ ,tuis mandatis in *deliciabor* Et
47 48 ואשתעשע במצותיך אשר אהבתי: ואשא־כפי אל־מצותיך
in : *tuum ſervum erga* verbi Memento .tuis ſtatutis in meditabor & , dilexi quæ
49 אשר אהבתי ואשיחה בחקיך: זכר־דבר לעבדך על
tuum *dictum* quia :mea afflictione in mea conſolatio Hæc .me feciſti *expectare* quo
50 אשר יחלתני: זאת נחמתי בעניי כי אמרתך
.declinavi non tua lege à : valde uſque me deriſerunt Superbi .me vivificavit
51 חיתני: זדים הליצני עד־מאד מתורתך לא נטיתי:
me tenuit Terror .ſum conſolatus &,Domine ſeculo à tuorũ judiciorũ ſum Recordat⁹
52 53 זכרתי משפטיך מעולם יהוה ואתנחם: זלעפה אחזתני
domo in tua ſtatuta mihi fuerunt Cantus .tuam legem *deſerentibus* , *impiis ab*
54 מרשעים עזבי תורתך: זמרות היו־לי חקיך בבית
cuſtodivi & : Domine tui nominis nocte in ſum Recordatus .mearũ peregrinationũ
55 מגורי: זכרתי בלילה שמך יהוה ואשמרה
.cuſtodivi tua præcepta quòd :mihi fuit *Hæc* .tuam legem
56 תורתך: זאת היתה־לי כי פקדיך נצרתי:

תרגום TARGUM.

26 אורחי מניתי וקבלתא צלותי אליף יתי גזרתך:
27 אורח פקודיך תבינני ואמלל בפרישותך:
28 אנמרת נפשי מדבונא קיים יתי כדברך:
29 אורח דשקרא אעדי מני ואוריתך חיס לי:
30 31 אורח הימנותא בחרית דינך שוית: אדבקית
32 בסהדותך יי לא תבהתנני: אורח פקודיך
33 ארהוט ארום תפתי לבי: אליף יתי יי אורח
34 גזרתך ואנטרנה עד גמירא: תבינני ואנטור
35 אוריתך יי ואנטרנה בכל לבא: תדרכנני
36 בשביל פקודיך ארום ביה צביתי: אצלי
37 לבי לסהדותך ולא לות ממונא: אעבר
עיני מלמחמי שקרא בדבריך אסי יתי:
38 39 אקים לעבדך מימרך די לדחלתך: אעבר
40 חסודי די דחילית ארום דינך טבין: הא
41 רגגית לפקודיך בצדקתך אסי יתי: וייתון
42 עלי חסדיך יי פורקנך היך מימרך: ואתיב
43 מחסדי פתגם ארום סברית בדברך: ולא
תסלק מפומי פתגם דקשוט עד לחדא ארום
44 לדינך אוריכית: ואטור אוריתך תדירא
45 לעלמי עלמין: ואהך בפתיות אוריתא
46 ארום פקודיך תבעית: ואמלל בסהדותך
47 קבל מלכיא ולא אבהית: ואתפרנק בפקודיך
48 די רחימית: ואזקוף ידי לפקודיך דרחימית
49 ואמלל בגזרתך: אדכר פתגמא לעבדך די
50 אורכתני: דא היא תנחומתי בסגופי ארום
51 מימרך קיים יתי: זידונין ממיקנין לי עד
52 לחדא מאוריתך לא אצליתי: אדכרית
53 דינך מן עלמא יי ואתנחמית: רתיתא
54 אחידת יתי מרשיעי דשבקין אוריתך: תושבחן
55 הוו לי גזרתך בבית מדורי: אדכרית בליליא
56 שמך יי ונטרית אוריתך: דא הות לי לזכותא
ארום פקודיך נטרית:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Vias meas *recenſui*, & accepiſti orationem 26
meam : doce me ſtatuta tua. Viam manda- 27
torum tuorum fac me intelligere, & loquar
de mirabilibus factis tuis. In angore fuit 28
anima mea præ dolore : vivifica me ſecun-
dùm verbum tuum. Viam mendacii aufer 29
à me, & Lex tua miſereatur mei. Viam fi- 30
dei elegi, judicia tua poſui. Adhæſi teſti- 31
moniis tuis, Domine : ne me confundas.
Viam mandatorum tuorum percurram, cùm 32
dilataveris cor meum. HE. Doce me 33
Domine viam decretorum tuorum, & ſer-
vabo eam uſque ad complementum. Da 34
mihi intellectum, & ſervabo Legem tuam
Domine, & cuſtodiam illam in toto corde.
Deduc me in ſemitam præceptorum tuo- 35
rum, quoniam in illâ complacui mihi. In- 36
clina cor meum in teſtimonia tua, & non
in pecuniam. Averte oculos meos à videnda 37
falſitate, ſecundùm verbum tuum ſana me.
Confirma ſervo tuo verbum tuum quod ſit 38
ad timorem tuum. Amove opprobrium 39
meum quod timui, quoniam judicia tua
bona ſunt. Ecce deſideravi præcepta tua, 40
juſtitiâ tuâ *ſana* me. VAU. Et ve- 41
niant ſuper me miſericordiæ tuæ Domine,
redemptio tua ſecundùm verbum tuum. Et 42
reſpondebo exprobranti mihi verbum, quo-
niam ſperavi in verbo tuo. Et ne auferas de 43
ore meo verbum veritatis penitus, quoni-
am judicia tua expectavi. Et ſervabo Le- 44
gem tuam ſemper in ſecula ſeculorum. Et 45
ambulabo in latitudine *legis*, quoniam
præcepta tua quæſivi. Et loquar de teſti- 46
moniis tuis coram regibus, & non confun-
dar. Et delectabor in mandatis tuis quæ di- 47
lexi. Et levabo manus meas ad mandata tua 48
quæ dilexi, & loquar de præceptis tuis.
ZAIN. Memento verbi erga ſervum tu- 49
um, quod expectare me feciſti. Hæc fuit 50
conſolatio mea in afflictione mea, quoniam
Verbum tuum vivificavit me. Superbis illu- 51
dentibus mihi nimis, de Lege tua non de-
clinavi. Recordatus ſum judiciorum tuo- 52
rum à ſeculo Domine, & conſolationem
accepi. Tremor invaſit me ab impiis qui 53
derelinquunt Legem tuam. Hymni fuerunt 54
mihi decreta tua in domo habitaculi mei.
Recordatus ſum nocte nominis tui Domine, 55
& ſervavi Legem tuam. Hæc fuit mihi ad 56
meritum, quoniam mandata tua ſervavi.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

26 ܐܘܪܚܬܝ ܫܘܥܝܬ ܠܟ ܘܥܢܝܬܢܝ ܐܠܦܝܢܝ ܢܡܘܣܟ : * ܐܘܪܚܐ ܕܦܘܩܕܢܝܟ ܚܘܝܢܝ ܘܐܬܒܩܐ *
27 28 ܒܬܕܡܪܬܟ. * ܐܬܕܠܚܬ ܢܦܫܝ ܒܬܪܢܝܬܐ ܐܚܝܢܝ ܐܝܟ ܡܠܬܟ : * ܐܘܪܚܐ ܕܥܘܠܐ ܐܥܒܪ ܡܢܝ
29 30 ܘܢܡܘܣܟ ܐܠܦܝܢܝ. * ܐܘܪܚܐ ܕܗܝܡܢܘܬܟ ܓܒܝܬ ܘܒܕܝܢܝܟ ܒܣܡܬ : * ܢܩܦܬ
31 32 ܠܣܗܕܘܬܟ ܡܪܝܐ ܠܐ ܬܒܗܬܢܝ. * ܒܐܘܪܚܐ ܕܦܘܩܕܢܝܟ ܗܠܟܬ ܡܛܠ ܕܚܕܝܬܢܝ : * ܗ *
33 * ܐܠܦܝܢܝ ܡܪܝܐ ܐܘܪܚܐ ܕܦܘܩܕܢܝܟ ܘܐܛܪܝܗ. * ܣܟܠܝܢܝ ܕܐܛܪ ܢܡܘܣܟ ܘܐܛܪܝܘܗܝ
34 35 ܡܢ ܟܠܗ ܠܒܝ : * ܘܕܒܪܝܢܝ ܒܫܒܝܠܐ ܕܦܘܩܕܢܝܟ ܡܛܠ ܕܒܗ ܨܒܝܬ. * ܐܨܠܐ ܠܒܝ
36 37 ܠܣܗܕܘܬܟ ܘܠܐ ܠܫܘܥܝܬܐ : * ܐܥܒܪ ܥܝܢܝ ܕܠܐ ܢܚܙܝܢ ܕܓܠܘܬܐ ܘܒܐܘܪܚܬܟ ܐܚܝܢܝ.
38 39 * ܐܩܝܡ ܡܠܬܟ ܠܥܒܕܟ ܕܕܚܠ ܠܟ : * ܐܥܒܪ ܡܢܝ ܚܣܕܐ ܡܛܠ ܕܕܝܢܝܟ ܫܦܝܪܝܢ ܐܢܘܢ.
40 41 * ܨܒܝܬ ܒܦܘܩܕܢܝܟ ܘܒܙܕܝܩܘܬܟ ܐܚܝܢܝ : * ܘ * ܢܐܬܘܢ ܥܠܝ ܪܚܡܝܟ ܡܪܝܐ ܘܦܘܪܩܢܟ
42 43 ܕܐܡܪܬ. * ܘܐܬܠ ܦܬܓܡܐ ܠܡܚܣܕܢܝ ܡܛܠ ܕܐܬܬܟܠܬ ܥܠ ܡܠܝܟ : * ܠܐ ܬܥܒܪ ܡܢ
44 ܦܘܡܝ ܡܠܬܐ ܕܩܘܫܬܐ ܡܛܠ ܕܠܕܝܢܝܟ ܣܟܝܬ. * ܐܛܪ ܢܡܘܣܟ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ
45 46 * ܘܐܗܠܟ ܒܪܘܚܐ : ܡܛܠ ܕܒܦܘܩܕܢܝܟ ܨܒܝܬ. * ܐܡܠܠ ܒܙܕܝܩܘܬܐ ܩܕܡ ܡܠܟܐ
47 48 ܘܠܐ ܐܒܗܬ : * ܘܐܬܪܢܐ ܒܦܘܩܕܢܝܟ ܕܪܚܡܬ. * ܘܐܪܝܡ ܐܝܕܝ ܠܘܬ ܦܘܩܕܢܝܟ ܕܪܚܡܬ : ܘܐܬܪܢܐ
49 ܒܗܘܢ ܒܦܘܩܕܢܝܟ ܘܐܫܬܒܗܪ ܒܗܝܡܢܘܬܟ. * ܙ * ܕܟܘܪ ܡܠܬܟ ܠܥܒܕܟ ܗܘ
50 51 ܕܐܫܬܘܕܝܬ ܠܗ : * ܘܗܝ ܕܐܬܒܝܐܬ ܒܡܟܝܟܘܬܝ. ܡܛܠ ܕܡܐܡܪܟ ܐܚܝܢܝ : * ܥܘܠܐ ܐܠܨܘܢܝ
52 ܘܡܢ ܢܡܘܣܟ ܠܐ ܣܛܝܬ. * ܐܬܕܟܪܬ ܕܝܢܝܟ ܡܪܝܐ ܕܡܢ ܥܠܡ ܘܐܬܒܝܐܬ : ܘܗܘܘ ܠܝ ܠܡܪܕܘܬܐ.
53 54 * ܟܡܝܪܘܬܐ ܐܚܕܬܢܝ ܡܢ ܚܛܝܐ ܕܫܒܩܘ ܢܡܘܣܟ : * ܙܡܝܪܬܐ ܗܘܘ ܠܝ ܦܘܩܕܢܝܟ ܒܒܝܬ
55 56 ܬܘܬܒܘܬܝ. * ܐܬܕܟܪܬ ܒܠܠܝܐ ܫܡܟ ܡܪܝܐ ܘܢܛܪܬ ܢܡܘܣܟ : * ܘܐܬܒܝܐܬ ܡܛܠ
ܕܢܛܪܬ ܦܘܩܕܢܝܟ.

Vias meas expoſui tibi, & exaudiſti me : doce 26
me legem tuam. Viam mandatorum tuorum 27
oſtende mihi, & contemplabor miracula tua.
Turbata eſt anima mea in contemplatione, 28
vivifica me ſecundùm verbum tuum. Viam 29
iniquorum averte à me, & legem tuam edoce
me. Viam fidei tuæ ſelegi, & judiciis tuis ſum 30
delectatus. Adhæſi teſtimonio tuo Domine, 31
ne confundas me. Per viam præceptorũ tuorũ 32
inceſſi, quoniam exhilarâſti me. * *He* *
Doce me Dñe viã mandatorũ tuorum, & ſer- 33
vabo illa. Erudi me, ut cuſtodiã legem tuam, 34
eámq; obſervẽ ex toto corde meo. Ducito me 35
per ſemitã decretorum tuorum, quia mihi ju-
cunda eſt. Converte cor meũ ad teſtimoniũ 36
tuũ, & non ad fabulas. Averte oculos meos 37
ne cernant falſitatẽ, & in viis tuis vivifica me.
Confirma verbũ tuũ ſervo tuo te colenti. Au- 38
fer à me probrum, quoniam judicia tua pul- 39
chra ſunt. Placuerunt mihi præcepta tua, & 40
in æquitate tua vivifica me. * *Vau* * Adve- 41
niant mihi miſerationes tuæ Dñe, & ſalus tua
quam dixiſti. Dabóq; reſponſum exprobran- 42
tib⁹ mihi : fiſus enim ſum verbis tuis. Non re- 43
cedat ab ore meo ſermo veritatis : nam judicia
tua expectavi. Cuſtodiã legẽ tuã in ſeculũ ſe- 44
culorũ, Et ambulabo in latitudine : quia man- 45
datis tuis ſum oblectatus. Loquar cum juſtitia 46
corã regib⁹ & non erubeſcam. Et meditabor 47
præcepta tua quæ dilexi. Atq; levabo manus 48
meas ad mandata tua quæ amavi : & conſide-
rabo eadẽ præcepta tua, & gloriabor in fide
tua. * *Zain* * Memor ſis verbi tui ad ſer- 49
vum tuum, quod ei pollicitus es, Et quo con- 50
ſolatus ſum in humilitate mea; nam ſermo tu⁹
vivificavit me. Sceleſti oppreſſerunt me, atta- 51
men à lege tua non deflexi. Memoriâ repetii 52
judicia tua Dñe quæ à ſeculo ſunt, ac ſolatiũ
percepi, fuerúntq; mihi eruditioni. Mœror 53
occupavit me propter peccatores qui deſti-
tuerunt legem tuã. Cantus fuerunt mihi tua 54
præcepta in peregrinatione mea. Recordatus 55
ſum noctu nominis tui Domine, & ſervavi
legem tuam : Súmq; conſólatus quòd cuſto- 56
dierim mandata tua.

Versio VULG. LAT.

26 Vias meas enuntiavi, & exaudîsti me:
27 doce me justificationes tuas. Viam ju-
stificationum tuarũ instrue me: & ex-
28 ercebor in mirabilibus tuis. Dormita-
vit anima mea præ tædio: confirma me
29 in verbis tuis. Viam iniquitatis amo-
ve à me: & de lege tua miserere meî.
30 Viam veritatis elegi: judicia tua non
31 sũ oblitꝰ. Adhæsi testimoniis tuis, Dñe:
32 noli me confundere. Viã mandatorum
tuorũ cucurri, cùm dilatâsti cor meũ.
33 HE. Legem pone mihi, Dñe, viam
justificationũ tuarum: & exquirã eã
34 semper. Da mihi intellectum, & scruta-
bor legem tuam: & custodiã illam in
35 toto corde meo. Deduc me in semitam
mandatorum tuorum: quia ipsam vo-
36 lui. Inclina cor meũ in testimonia tua,
37 & non in avaritiã. Averte oculos meos
ne videant vanitatẽ: in via tua vivifica
38 me. Statue servo tuo eloquiũ tuũ in ti-
39 more tuo. Amputa opprobriũ meũ, ꝙ
suspicatꝰ sũ: quia judicia tua jucunda.
40 Ecce concupivi mandata tua: in æqui-
41 tate tua vivifica me. VAU. Et
veniat sup me misericordia tua, Dñe:
salutare tuum secundùm eloquiũ tuũ.
42 Et respondebo exprobrantibus mihi
verbũ: quia speravi in sermonibꝰ tuis.
43 Et ne auferas de ore meo verbũ veri-
tatis usquequaque: quia in judiciis tuis
44 supersperavi. Et custodiam legẽ tuam
45 semp, in seculũ & in seculũ seculi. Et
ambulabã in latitudine: quia mandata
46 tua exquisivi. Et loquebar de testimo-
niis tuis in conspectu regũ: et non con-
47 fundebar. Et meditabar in mandatis
48 tuis, quæ dilexi. Et levavi manus meas
ad mandata tua, quæ dilexi: & exerce-
bar in justificationibꝰ tuis. ZAIN.
49 Memor esto verbi tui servo tuo, in quo
50 mihi spem dedisti. Hæc me consolata
est in humilitate mea: quia eloquiũ tuũ
51 vivificavit me. Superbi iniquè agebant
usquequaq;: à lege autẽ tua nõ declina-
52 vi. Memor fui judiciorũ tuorũ à seculo,
53 Dñe: & consolatꝰ sum. Defectio tenuit
me, pro peccatoribus derelinquentibꝰ
54 legẽ tuã. Cantabiles mihi erãt justifi-
cationes tuæ, in loco peregrinationis
55 meæ. Memor fui nocte nominis tui,
56 Dñe: & custodivi legẽ tuam. Hæc facta est
mihi: quia justificationes tuas exquisivi.

Versio GRÆC. LXX. Interp.

26 † Τὰς ὁδούς (κ) μου ἐξήγγειλα καὶ ἐπήκουσάς μου, † δί-
27 δαξόν με τὰ δικαιώματά σου. † Ὁδὸν δικαιωμάτων
σου συνέτισόν με, † καὶ ἀδολεσχήσω ἐν τοῖς θαυμα-
28 σίοις σου. † Ἐνύσταξεν ἡ ψυχή μου ἀπὸ ἀκηδίας, † βε-
29 βαίωσόν με ἐν τοῖς λόγοις σου. † Ὁδὸν ἀδικίας ἀ-
30 πόστησον ἀπ' ἐμοῦ, † καὶ τῷ νόμῳ σου ἐλέησόν με. † Ὁ-
δὸν ἀληθείας ᾑρετισάμην, † (λ) καὶ τὰ κρίματά σου οὐκ
31 ἐπελαθόμην. † Ἐκολλήθην τοῖς μαρτυρίοις σου κύ-
32 ριε, μή με καταισχύνῃς. † Ὁδὸν ἐντολῶν σου ἔδρα-
33 μον, ὅταν ἐπλάτυνας τὴν καρδίαν μου. † Νομο-
θέτησόν με κύριε τὴν ὁδὸν τῶν δικαιωμάτων σου, † καὶ
34 ἐκζητήσω αὐτὴν διαπαντός. † Συνέτισόν με, καὶ (μ)
ἐξερευνήσω τὸν νόμον σου, † καὶ φυλάξω αὐτὸν ἐν ὅλῃ
35 καρδίᾳ μου. † Ὁδήγησόν με (ν) ἐν τῇ τρίβῳ τῶν ἐν-
36 τολῶν σου, † ὅτι αὐτὴν ἠθέλησα. † Κλῖνον τὴν καρ-
δίαν μου εἰς τὰ μαρτύριά σου, † καὶ μὴ εἰς πλεονεξί-
37 αν. † Ἀπόστρεψον τοὺς ὀφθαλμούς μου τοῦ μὴ ἰδεῖν
38 ματαιότητα, † ἐν τῇ ὁδῷ σου ζῆσόν με. † Στῆσον τῷ
39 δούλῳ σου τὸ λόγιόν σου εἰς τὸν φόβον σου. † Περίελε τὸν
ὀνειδισμόν μου ὃν ὑπώπτευσα, † ὅτι τὰ κρίματά σου
40 χρηστά. † Ἰδοὺ ἐπεθύμησα τὰς ἐντολάς σου, ἐν τῇ
41 δικαιοσύνῃ σου ζῆσόν με. † Καὶ ἔλθοι ἐπ' ἐ-
μὲ τὸ ἔλεός σου, κύριε † τὸ σωτήριόν σου (ξ) κατὰ τὸν
42 λόγον σου. † Καὶ ἀποκριθήσομαι τοῖς ὀνειδίζουσί
(ο) μοι λόγον, † ὅτι ἤλπισα (π) ἐπὶ τοῖς λόγοις σου.
43 † Καὶ μὴ περιέλῃς ἐκ τοῦ στόματός μου λόγον ἀληθείας
ἕως σφόδρα, † ὅτι ἐπὶ τοῖς κρίμασί σου (ρ) ἐπήλ-
44 πισα. † Καὶ φυλάξω τὸν νόμον σου διαπαντός, εἰς τὸν
45 αἰῶνα † καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος. † Καὶ ἐπορευό-
μην ἐν πλατυσμῷ, † ὅτι τὰς ἐντολάς σου ἐξεζή-
46 τησα. † Καὶ ἐλάλουν ἐν τοῖς μαρτυρίοις σου ἐναντίον
47 βασιλέων, καὶ οὐκ ᾐσχυνόμην. † Καὶ ἐμελέτων ἐν ταῖς
48 ἐντολαῖς σου, αἷς ἠγάπησα σφόδρα. † Καὶ ἦρα τὰς
χεῖράς μου πρὸς τὰς ἐντολάς σου ἃς (σ) ἠγάπησα,
49 † καὶ ἠδολέσχουν ἐν τοῖς δικαιώμασί σου. † Μνήσθη-
τι (τ) τῶν λόγων σου τῷ δούλῳ σου (υ) ὧν ἐπήλπισάς
50 με. † Αὕτη με παρεκάλεσεν ἐν τῇ ταπεινώσει μου,
51 † ὅτι τὸ λόγιόν σου ἔζησέ με. † Ὑπερήφανοι παρ-
ηνόμουν ἕως σφόδρα, † ἀπὸ δὲ τοῦ νόμου σου οὐκ ἐξέ-
52 κλινα. † Ἐμνήσθην τῶν κριμάτων σου ἀπ' αἰῶνος
53 κύριε, καὶ παρεκλήθην. † Ἀθυμία κατέσχε με ἀπὸ
ἁμαρτωλῶν τῶν ἐγκαταλιμπανόντων τὸν νόμον σου.
54 † Ψαλτὰ ἦσάν μοι τὰ δικαιώματά σου, ἐν τόπῳ
55 παροικίας μου. † Ἐμνήσθην ἐν νυκτὶ τοῦ ὀνόματός
56 σου κύριε, † καὶ ἐφύλαξα τὸν νόμον σου. † Αὕτη ἐγενή-
θη μοι, ὅτι τὰ δικαιώματά σου ἐξεζήτησα.

MS.A. (κ) σου (λ) τὰ κρίματα (μ) ἐξερευνήσω (ν) ἐν τρίβῳ (ξ) κατὰ λόγιόν σου. (ο) με (π) ἐπὶ τοῖς λόγοις σου. (ρ) ἐφήλπισα. (σ) ἠγάπησα σφόδρα, καὶ (τ) τὸν λόγον (υ) ᾧ ἐφήλπισάς με.

Vers. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Transl. LAT.

26 [l] Vias meas enuntiavi, & ex- 26
audîsti me: doce me justificationes
tuas. 27 Viam justificationum tuarũ 27
(l) fac me intelligere: et exercebor in
mirabilibꝰ tuis. 28 (m) Dormitavit 28
anima mea præ tædio: confirma me in
verbis tuis. 29 Viã iniquitatis amo- 29
ve à me, & lege tuâ miserere meî.
30 Viam [m] veritatis elegi: & ju- 30
dicia tua non sum oblitus. 31 Adhæ- 31
si testimoniis tuis, Domine: noli me
confundere. 32 Viã mandatorũ tu- 32
orũ cucurri, cùm dilatâsti cor meũ.
33 (n) [n] Legẽ pone mihi, Dñe, viã 33
justificationũ tuarum: et exquirã eã
semper. 34 Da mihi intellectum, & 34
scrutabor legem tuam: & custodiam
illã in toto corde meo. 35 Deduc me 35
in semita mandatorum tuorum, (o)
quia ipsam volui. 36 Inclina cor 36
meũ in testimonia tua, & non in a-
varitiam. 37 Averte oculos meos ne 37
videãt vanitatẽ: in via tua vivifica 38
me. 38 Statue servo tuo [o] eloquiũ
tuum, (p) in timorẽ tuum. 39 Ampu- 39
ta opprobriũ meũ, quòd (q) suspica-
tus sum, quia judicia tua jocunda.
40 Ecce concupivi mandata tua: in 40
tua justitia vivifica me. 41 Et ve- 41
niat super me misericordia tua, Dñe,
[p] salutare tuum (r) secundùm ver-
bum tuum. 42 Et respondebo expro- 42
brantibꝰ mihi verbũ, quia speravi in
sermonibus tuis. 43 Et ne auferas de 43
ore meo verbum veritatis usque val-
dè: quia in judiciis tuis supersper a-
vi. 44 Et custodiã legem tuam sem- 44
per, in seculum, & in seculũ seculi.
45 Et ambulabã in latitudine; quia 45
mandata tua exquisivi. 46 Et loque- 46
bar in testimonus tuis in conspectu
regũ, & non confundebar. 47 Et me- 47
ditabar in mandatis tuis, quæ dilexi
(ſ) nimis. 48 Et levavi manus meas 48
ad mandata (t) tua, quæ dilexi: &
(u) [q] exercebar in justificationibus
tuis. 49 Memento (x) [r] ver- 49
borum tuorũ servo tuo, in quibꝰ mi-
bi spem dedisti. 50 Hæc me consola- 50
ta est in humilitate mea; quia eloqui-
um tuũ vivificavit me. 51 Superbi 51
iniquè agebant usque valdè: à lege
autem tua non declinavi. 52 Memor 52
fui judiciorũ tuorum à seculo, Do-
mine: & (y) consolatus sum. 53 (z) [ſ] Tædiũ tenuit me à peccatoribus derelinquentibus 53
legẽ tuam. 54 Cantabiles mihi erant justificationes tuæ, in loco (ω) incolatûs mei. 55 Me- 54 55
mor fui in nocte nominis tui, Domine: & custodivi legem tuam. 56 (aa) Hæc facta 56
est mihi, quia justificationes tuas exquisivi.

Versio ÆTHIOPICA.

ንገርኩ ፡ ፍኖዊከ ፡ ወሰምዐከኒ፡፡ወምህረኒ፡ 26
ኵነኔከ፡፡=፡ ፍኖተ፡ ጽድቅከ፡ አለብወኒ፡፡ 27
ወእዛዋዕ፡ በመንክርከ፡፡=፡ ደቀሰት፡ነፍስየ፡ 28
እምሐዘን፡፡አጽንዐኒ ፡ በነቢብከ፡፡=፡ ፍኖ 29
ተ፡ዐመፃ፡አርሕቅ፡እምኔየ፡፡ወበሕግከ፡ተሣ
ሀለኒ፡፡=፡ ፍኖተ፡ ጽድቅከ፡ አብደርኩ፡፡ወ 30
ኵነኔከሰ፡ኢረሳዕኩ፡፡=፡ ተለውኩ፡ ስምዐ 31
ከ፡ እግዚኦ፡ኢታስተኀፍረኒ፡፡=፡ ፍኖተ፡ት 32
እዛዝከ ፡ ሮጽኩ፡፡ሶበ ፡ አርኃብከ ፡ ለልብ
የ፡፡=፡ ፭ ሄ፡ መህረኒ፡እግዚኦ፡ፍኖተ፡ 33
ጽድቅከ፡፡ወእኃሥሥ ፡ በኵሉ ፡ ጊዜ፡፡=፡
አለብወኒ ፡ ወእኃሥሥ፡ ሕግከ፡፡ወዕቀቦ፡በ 34
ኵሉ፡ልብየ፡፡=፡ ምርሐኒ፡ ፍኖተ፡ትእዛዝ 35
ከ፡፡እስመ፡ኪያሃ፡ፈቀድኩ፡፡=፡ ሚጥ፡ልብ 36
የ፡ውስተ፡ ስምዕከ፡፡ወአኮ፡ ውስተ፡ ትዕግል
ት፡፡=፡ ሚጠን፡ለአዕይንትየ፡ከመ፡ኢይርአ 37
ያ፡ከንቶ፡፡ወአሕይወኒ፡ በፍኖትከ፡፡=፡ አቅ 38
ም፡ለገብርከ፡ዘነበብከ፡ውስተ፡ነቢብከ፡፡=፡
አእትት፡እምኔየ፡ፅእለተ፡ ዘተሐዘብኩ፡፡እ 39
ስመ፡ ሠናይ፡ ኵነኔከ፡፡=፡ ናሁ፡ ፈተውኩ፡ 40
ትእዛዘከ ፡፡ ወአሕይወኒ ፡ በጽድቅከ፡፡=፡
፮ ዋው፡ ወይምጻእ፡ ሳዕሌየ፡ ምሕረትከ፡ 41
እግዚኦ፡፡እግዚኦ፡ አድኅኖትከ ፡ በከመ፡ ነ
ቢብከ፡፡=፡ አውሥኦሙ፡ ቃለ፡ ለእለ፡ይፄ 42
እሉኒ፡፡እስመ፡ተወከልኩ፡ በቃልከ፡፡=፡ ኢ 43
ታእትት፡ቃለ፡ጽድቅ፡እምአፉየ፡ለግሙራ፡፡
እስመ፡ ተወከልኩ ፡ በኵነኔከ፡፡=፡ ወእዐቅ 44
ብ፡ሕግከ፡ በኵሉ፡ ጊዜ፡፡ለዓለም፡ ወለዓለ
መ፡ዓለም፡፡=፡ ወአሐውር፡ስፉሐ፡፡እስመ፡ 45
ትእዛዘከ፡ ኃሠሥኩ፡፡=፡ ወእነግር፡ስምዐ 46
ከ፡ በቅድመ፡ ነገሥት ፡ ወኢይትኃፈር፡፡=፡
ወአነብብ፡ትእዛዘከ፡ ዘአፍቀርኩ፡ጥቀ፡፡=፡ 47
ወአነሥእ፡እደዊየ፡ ኀበ፡ ትእዛዘከ፡ዘአፍቀ 48
ርኩ፡፡ወእዛዋዕ፡በትእዛዝከ፡፡=፡ ፯ ዛይ፡ 49
ተዘከር ፡ ቃለከ ፡ ዘአሰፈውኮ ፡ ለገብርከ
ከ፡፡=፡ ወይእቲ፡አስተፈሥሐተኒ፡በሕማም 50
የ፡፡እስመ፡ ቃልከ፡ አሕየወኒ፡፡=፡ ዕቡያን፡ 51
ዐመፁ ፡ ፈድፋደ፡፡ወእምሕግከሰ ፡ ኢተገኀ
ሠኩ፡፡=፡ ወተዘከርኩ፡ ፍትሐከ፡ ዘእምዓ 52
ለም፡፡ወተፈሣሕኩ፡እግዚኦ፡፡=፡ ሐዘን፡እ 53
ኀዘኒ፡እምኃጥኣን፡፡እለ፡ኃደጉ፡ሕገከ፡፡=፡
መዝሙር፡ኮነኒ፡ኵነኔከ፡፡በብሔር፡ ኀበፈለ 54
ስኩ፡፡=፡ ተዘከርኩ፡በሌሊት፡ስመከ፡እግዚ 55
ኦ፡፡ወዐቀብኩ፡ ሕገከ፡፡=፡ ወይእቲ፡ ኮነት 56
ኒ፡፡እስመ፡ኵነኔከ፡ኃሠሥኩ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [l] Vias tuas [m] veritatis tuæ [n] Instrue me Domine, [o] quæ dixisti in verbo tuo. [p] Domine salutare [q] exercebor in præceptis tuis. [r] verbi tui, in quo sperare fecisti servum tuum. [ſ] Mœstitia tenuit

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* اخبرت بحقوقك فاستجب لي وعلمني حقوقك * افهمني سبيل فرايضك فاتلوا في عجايبك * 26 27
* نعست نفسي من الحزن فثبتني في اقوالك * ابعد عني طريق الظلم وارحمني بشرعك * 28 29
* اخترت لي طريق العدل ولم انس احكامك * لزمت شهاداتك يا رب فلا تخزني * سعيت في طريق 30 31
وصاياك لما وسعت قلبي * الفصل الخامس * وهو ه * يا رب ضع لي ناموسا في سبيل فرايضك 32 33
فاطلبه في كل حين * فهمني فافحص ناموسك واحفظها بجميع قلبي * اهدني الي طريق وصاياك 34 35
فان هذا هو الذي اردته * امل قلبي الي شهاداتك لا الي الظلم * اصرف عيني لئلا تنظرا 36 37
الباطل واحيني في سبلك * ثبت كلامك مع عبدك الداخل في مخافتك * وانزع عني الخزي 38 39
الذي شككت فيه فان احكامك شهية * هاانذا قد اشتهيت وصاياك فاحيني بعدلك * 40
* الفصل السادس * وهو و * فلتغشني رحمتك يا رب وخلاصك كمثل كلمتك * فاجيب قول 41 42
الذين يعيروني * لاني توكلت علي اقوالك * ولا تنزع من فمي كلام فرايضك الي الغاية جدا فاني 43
عليك توكلت * واحفظ ناموسك كل حين الي الابد والي ابد الابد * قد سلكت في سعة لاني 44 45
طلبت وصاياك * وانطق بشهاداتك امام الملوك ولا اخزي * درست وصاياك هذه التي 46 47
احببتها جدا * ورفعت ادرعي الي وصاياك هولاء اللواتي احببتهن جدا وتلوت فرايضك * 48
الفصل السابع * وهو ز * اذكر كلامك لعبدك الذي عليه اتكلتني * هذا الذي عزاني 49 50
في ذلي لان قولك يا رب هو احياني * المتعظمون خالفوا الناموس جدا الي الغاية وانا لم امل 51
عن ناموسك * ذكرت احكامك يا رب منذ الازل فتعزيت * لزمتني الكابة من الخطاة الذين 52 53
يرفضون شرعك * فرايضك هي مزاميري في موضع غربتي * في الليل ذكرت اسمك يا رب 54 55
وحفظت ناموسك * هذا صار لي لاني طلبت فرايضك * 56

Annuntiavi statuta tua; igitur exaudi me, et 26
doce me constitutiones tuas. Intelligere fac 27
me semitam præceptorũ tuorum, et medita-
bor miracula tua. Dormitavit anima mea 28
præ mœrore, confirma me sermonibus tuis.
Amove à me viam perversitatis, et miserere 29
mei secundùm legẽ tuam. Selegi mihi viam 30
æquitatis, & non sum oblitus judicia tua.
Adhæsi testimoniis tuis, O Domine, ne quæ- 31
so, me confundas. Cucurri in via mandato- 32
rum tuorum, ubi dilatâsti cor meum. Sect.v.
Ver.7. O Domine, pone mihi legem in via 33
decretorum tuorum, et queram illã in omni
tempore. Da mihi intellectum, et scrutabor 34
legem tuam, et custodiam illã ex toto corde
meo. Dirige me ad viam mandatorum tuo- 35
rum, quia hoc est quod volui. Inclina cor 36
meum ad testimonia tua, non ad perversita-
tem. Averte oculos meos ne videant vani- 37
tatem, et vivifica me in semitis tuis. Confirma 38
sermonem tuum cum servo tuo ingrediente
in timorẽ tuum. Et aufer à me opprobrium 39
quod sum suspicatus, quia judicia tua sunt
optabilia. Ecce jam expetivi mandata tua, 40
me igitur vivifica ex justitia tua. Sect.vi.
Ver.7. Cooperiat me misericordia tua, O 41
Domine, et salus tua, secundùm verbum tu-
um: Et respondebo sermoni eorum qui me 42
vituperant, quia fretus sum sermonibus tuis,
Et ne auferas de ore meo sermonẽ decretorũ 43
tuorum usque in finẽ penitùs, quia tibi sum
fisus. Et custodiam legem tuam omni tem- 44
pore, in æternum et in seculum seculi. Jam 45
ambulavi in latitudine, quia quæsivi man-
data tua. Et proferam testimonia tua corã 46
regibus, et non erubescam. Recitavi præcepta 47
tua hæc quæ dilexi valdè. Et extuli brachia 48
mea ad mandata tua ista quæ dilexi vehe-
menter, & contemplatus sum decreta tua.
Sect.vii. Ver.7. Memento sermonis tui ad 49
servum tuum, cui me fidere jussisti. Hoc 50
est quod me consolatum est in depressione
mea: nam sermo tuus, O Domine, ipse me
vivificavit. Superbi adversati sunt legi ni- 51
mis præter terminum, & ego non declinavi
à lege tua. Recordatus sum judicia tua, O 52
Domine, ab æterno, & consolatus sum. In- 53
hæsit mihi mœror à peccatoribus qui aver-
santur legem tuam. Decreta tua sunt can- 54
tica mea in loco peregrinationis meæ. In 55
nocte recordatus sum nominis tui, O Domi-
ne, & custodivi legem tuam. Hoc contigit 56
mihi, quia petivi decreta tua.

57 toto in *tuas facies* ſum Deprecatus *.tua verba cuſtodiendum ad* , dixi,Domine mea Portio
58 חֶלְקִי יְהוָה אָמַרְתִּי לִשְׁמֹר דְּבָרֶיךָ׃ חִלִּיתִי פָנֶיךָ בְכָל־
meos pedes converti &:meas vias Cogitavi .tuum eloquium ſecundũ mei miſerere:corde
59 לֵב חָנֵּנִי כְּאִמְרָתֶךָ׃ חִשַּׁבְתִּי דְרָכָי וָאָשִׁיבָה רַגְלַי
60 *Funes* .tua mandata *cuſtodiendum ad* : tardavi non &,Feſtinavi.tua teſtimonia ad
61 אֶל־עֵדֹתֶיךָ׃ חַשְׁתִּי וְלֹא הִתְמַהְמָהְתִּי לִשְׁמֹר מִצְוֹתֶיךָ׃ חֶבְלֵי
ſurgam *noctem Mediando* .ſum oblitus non tuæ legis : me ſunt *prædati* impiorum
62 רְשָׁעִים עִוְּדֻנִי תּוֹרָתְךָ לֹא שָׁכָחְתִּי׃ חֲצוֹת־לַיְלָה אָקוּם
: te timent qui omnibus *ego* Socius .tuæ juſtitiæ judicia ſuper :tibi confitendum ad
63 לְהוֹדוֹת לָךְ עַל מִשְׁפְּטֵי צִדְקֶךָ׃ חָבֵר אָנִי לְכָל־אֲשֶׁר יְרֵאוּךָ
64 tua ſtatuta : terra eſt plena,Domine,tuæ Miſericordiæ .tua præcepta cuſtodientibus &
65 וּלְשֹׁמְרֵי פִּקּוּדֶיךָ׃ חַסְדְּךָ יְהוָה מָלְאָה הָאָרֶץ חֻקֶּיךָ
Bonitatem .tuum verbum ſecundũ,Domine tuo ſervo cum feciſti Bonum .me doce
66 לַמְּדֵנִי׃ טוֹב עָשִׂיתָ עִם־עַבְדְּךָ יְהוָה כִּדְבָרֶךָ׃ טוּב
humiliarer Priuſquam .credidi tuis præceptis *in* quia : me doce ſcientiam & *ſenſum*
67 טַעַם וָדַעַת לַמְּדֵנִי כִּי בְמִצְוֹתֶיךָ הֶאֱמָנְתִּי׃ טֶרֶם אֶעֱנֶה
me doce : beneficus & , tu Bonus .cuſtodivi tuum eloquium nunc & : *errans* ego
68 אֲנִי שֹׁגֵג וְעַתָּה אִמְרָתְךָ שָׁמָרְתִּי׃ טוֹב־אַתָּה וּמֵטִיב לַמְּדֵנִי
cuſtodiam corde toto in ego : ſuperbi mendacium *me ſuper Concinnârunt* .tua ſtatuta
69 חֻקֶּיךָ׃ טָפְלוּ עָלַי שֶׁקֶר זֵדִים אֲנִי בְּכָל־לֵב אֱצֹּר
70 Bonum .ſum delectatus tua lege ego:eorũ cor adeps ſicut ſe Impinguavit .tua præcepta
71 פִּקּוּדֶיךָ׃ טָפַשׁ כַּחֵלֶב לִבָּם אֲנִי תּוֹרָתְךָ שִׁעֲשָׁעְתִּי׃ טוֹב־
millia quàm,tui oris lex mihi Melior.tua ſtatuta diſcam ut : fui afflictus quòd mihi
72 לִי כִי־עֻנֵּיתִי לְמַעַן אֶלְמַד חֻקֶּיךָ׃ טוֹב־לִי תוֹרַת־פִּיךָ מֵאַלְפֵי
diſcam &,me fac intelligere:me *plaſmaverunt* &,me fecerunt tuæ Manus .argenti & auri
73 זָהָב וָכָסֶף׃ יָדֶיךָ עָשׂוּנִי וַיְכוֹנְנוּנִי הֲבִינֵנִי וְאֶלְמְדָה
74 Novi .expectavi tuum verbũ quia:lætabũtur &,me videbunt,te *Timentes* .tua præcepta
75 מִצְוֹתֶיךָ׃ יְרֵאֶיךָ יִרְאוּנִי וְיִשְׂמָחוּ כִּי לִדְבָרְךָ יִחָלְתִּי׃ יָדַעְתִּי
tua miſericordia nunc Sit .me afflixiſti veritate & : tua judicia juſtitia quòd Domine
76 יְהוָה כִּי־צֶדֶק מִשְׁפָּטֶיךָ וֶאֱמוּנָה עִנִּיתָנִי׃ יְהִי־נָא חַסְדְּךָ
,tuæ miſericordiæ mihi Veniãt.tuo ſervo tuum eloquium ſecundùm,me conſolandum ad
77 לְנַחֲמֵנִי כְּאִמְרָתְךָ לְעַבְדֶּךָ׃ יְבֹאוּנִי רַחֲמֶיךָ
:me *perverterũt falsò* quoniã,ſuperbi afficiãtur Pudore *.meæ deliciæ* tua lex quia :vivam &
78 וְאֶחְיֶה כִּי־תוֹרָתְךָ שַׁעֲשֻׁעָי׃ יֵבֹשׁוּ זֵדִים כִּי־שֶׁקֶר עִוְּתוּנִי
.tua teſtimonia *ſcientes* &:*te timẽtes* me ad Convertãtur .tuis præceptis in meditabor ego
79 אֲנִי אָשִׂיחַ בְּפִקּוּדֶיךָ׃ יָשׁוּבוּ לִי יְרֵאֶיךָ וְיֹדְעֵי עֵדֹתֶיךָ׃
80 *Defecit* .afficiar pudore non ut : tuis ſtatutis in perfectum meum cor Sit
81 יְהִי־לִבִּי תָמִים בְּחֻקֶּיךָ לְמַעַן לֹא אֵבוֹשׁ׃ כָּלְתָה
:tuum *dictũ* ad mei oculi Defecerunt *.expectavi* tuũ verbũ ad:mea anima tuam ſalutem *ad*
82 לִתְשׁוּעָתְךָ נַפְשִׁי לִדְבָרְךָ יִחָלְתִּי׃ כָּלוּ עֵינַי לְאִמְרָתֶךָ
tuorum ſtatutorũ : *fumario* in uter ſicut fui Quia ? me conſolaberis quando,dicendo
83 לֵאמֹר מָתַי תְּנַחֲמֵנִי׃ כִּי־הָיִיתִי כְּנֹאד בְּקִיטוֹר חֻקֶּיךָ
me perſequentes *in* facies quando : tui ſervi dies Quot .ſum oblitus non
84 לֹא שָׁכָחְתִּי׃ כַּמָּה יְמֵי־עַבְדֶּךָ מָתַי תַּעֲשֶׂה בְרֹדְפַי
.tuam legem ſecundùm non quod : foveas ſuperbi mihi Foderunt ? judicium
85 מִשְׁפָּט׃ כָּרוּ־לִי זֵדִים שִׁיחוֹת אֲשֶׁר לֹא כְתוֹרָתֶךָ׃
.me adjuva ,me ſunt perſecuti *falſo* : veritas tua mandata Omnia
86 כָּל־מִצְוֹתֶיךָ אֱמוּנָה שֶׁקֶר רְדָפוּנִי עָזְרֵנִי׃

57 58 חוּלְקִי יְיָ אֲמָרִית לְמִטַּר דְּבָרָיךְ׃ צַלֵּיתִי קֳדָמָךְ
59 בְּכָל לִבָּא חוּס עֲלַי הֵיךְ מֵימְרָךְ׃ חֲשִׁיבֵית
לְאוֹטָבָא אוֹרְחַי וַאֲתֵיב רִגְלַי לְסַהֲדְוָתָךְ׃
60 61 זְרֵיזִית וְלָא אִתְעַכְּבִית לְמִטַּר פִּקּוּדָיךְ׃ סִיעַת
רַשִׁיעַיָּא אִתְכַּנַּשׁוּ עֲלַי אוֹרַיְתָךְ לָא אִתְנְשֵׁיתִי׃
62 בְּפַלְגוּת לֵילְיָא אֵקוּם לְשַׁבָּחָא קֳדָמָךְ מְטוּל
63 דִּינֵי צִדְקָךְ׃ חַבְרָא אֲנָא לְכָל דְּדָחֲלִין מִנָּךְ
64 וּלְנָטְרֵי פִּקּוּדָיךְ׃ טוּבָךְ יְיָ מַלְיָא אַרְעָא גְּזֵרָתָךְ
65 אַלֵּף יָתִי׃ טָבָא עֲבַדְתָּ עִם עַבְדָּךְ יְיָ הֵיךְ
66 דִּבְרָךְ׃ שַׁפִּיר טַעַם וּמַנְדְּעָא אַלֵּף יָתִי אֲרוּם
67 בְּפִקּוּדָיךְ הֵימְנֵית׃ עַד לָא אִסְתַּגִּיף אֲנָא
68 שָׁלֵי וּכְדוּן מֵימְרָךְ נַטְרֵית׃ טָב אַתְּ וּמֵטִיב
69 אַלֵּף יָתִי גְּזֵרָתָךְ׃ חַבַּרוּ עֲלַי שִׁקְרָא זֵידוֹנִין
70 אֲנָא בְּכָל לִבָּא אֶטּוֹר פִּקּוּדָיךְ׃ אִטְפַּשׁ הֵיךְ
תְּרַב יִצְרָא דְּלִבְּהוֹן אֲנָא אוֹרַיְתָךְ פִּרְנוּקִי׃
71 טָב לִי אֲרוּם אִתְעַנְּיֵית מִן בִּגְלַל דְּאֵילַף
72 גְּזֵרָתָךְ׃ טָב לִי אוֹרַיְתָ פּוּמָּךְ מִן אֲלַף כִּכְּרִין
73 דְּהַב וְסִימָא׃ אִידָךְ עֲבַדוּ יָתִי וְאַתְקִינוּ יָתִי
74 הִתְבַּיְּנֵנִי וְאֵילַף פִּקּוּדָיךְ׃ דְּחָלָיךְ יֶחֱמוּן יָתִי
75 וְיֶחֱדוּן אֲרוּם לְפִתְגָמָךְ אוֹרִיכֵית׃ יְדַעִית יְיָ
76 אֲרוּם זַכָּאִין דִּינָיךְ וּבְקוּשְׁטָא סַגַּפְתַּנִי׃ יְהֵי
כְדוּן חַסְדָּךְ לְנַחֲמוּתִי הֵיךְ מֵימְרָךְ לְעַבְדָּךְ׃
77 יֵיתוּן עֲלַי רַחֲמָךְ וְאֵחֵי אֲרוּם אוֹרַיְתָךְ פִּרְנוּקִי׃
78 יִבְהֲתוּן זֵידוֹנִין אֲרוּם עַל שִׁקְרָא עַוִּיתוּ יָתִי
79 אֲנָא אֲמַלֵּל בְּפִקּוּדָיךְ׃ יְתוּבוּן לְאוּלְפָנִי
80 דַּחֲלָיךְ וְיָדְעִין סַהֲדְוָתָךְ׃ יְהֵי לִבִּי דְּלָא מוּם
81 בִּגְזֵרָתָךְ מִן בִּגְלַל דְּלָא אֶבְהֵת׃ רְגִינַת
82 לְפוּרְקָנָךְ נַפְשִׁי לְפִתְגָמָךְ אוֹרִיכֵית׃ סָפוּ עֵינַי
83 לְמֵימְרָךְ לְמֵימַר אֵימָתַי תְּנַחֵם יָתִי׃ אֲרוּם
הֲוֵיתִי הֵיךְ זַרְנוּקָא דְּתָלֵי בִּקְטָרָא גְּזֵרָתָךְ לָא
84 אִתְנְשֵׁיתִי׃ כְּמָה יוֹמֵי עַבְדָּךְ אֵימָתַי תַּעֲבֵיד
85 בְּרוֹדְפַי דִּינָא׃ כְּרוֹ לִי זֵידוֹנִין שׁוּחִין דְּלָא
86 פַּקֶּדְתְּנוּן בְּאוֹרַיְתָךְ׃ כָּל פִּקּוּדָיךְ קוּשְׁטָא
עַל שִׁקְרָא רְדָפוּ יָתִי סַעֲדֵנִי׃

HETH. Pars mea Domine: dixi ut 57
cuſtodiam verbum tuum. Oravi coram te 58
in toto corde: miſerere mei ſecundùm verbum
tuum. Cogitavi bonas facere vias meas, 59
ut convertam pedes meos ad teſtimonia
tua. Feſtinavi, & non diſtuli obſervare mandata 60
tua. Cohors impiorum congregata eſt 61
contra me, Legem tuam non ſum oblitus. In 62
medio noctis ſurgam ut laudes dicam coram
te, propter judicia juſtitiæ tuæ. Socius ego 63
ſum omnium timentium te, & cuſtodientium
mandata tua. Benignitate tua Dñe plena eſt 64
terra, decreta tua doce me. TETH.
Bonitatem feciſti cum ſervo tuo Domine, 65
ſecundùm verbum tuum. Congruam rationem, 66
& ſcientiam doce me, quia præceptis
tuis credidi. Priúſquam affligerer, fui 67
ego in errore: nunc autem verbum tuum
obſervavi. Bonus es & beneficus, doce me 68
ſtatuta tua. Concinnârunt contra me mendacium 69
ſuperbi: ego [*autem*] in toto corde
ſervabo mandata tua. *Incraſſatus* eſt quaſi 70
adipe fomes cordis eorum; mihi verò lex
tua oblectationi fuit. Bonum mihi eſt quòd 71
humiliatus fuerim, ut diſcam ſtatuta tua. Melior 72
eſt mihi lex oris tui, quam millia talenta
auri & argenti. JOD. Manus tuæ fecerunt 73
me & concinnaverunt me: da mihi
intellectum, & diſcam mandata tua. Qui 74
timent te, videbunt me & lætabuntur: quia
Verbum tuum expectavi. Novi Domine quoniam 75
juſta ſunt judicia tua, & in veritate
afflixiſti me. *Sit* quæſo *pietas tua* ad conſolationem 76
meam, juxta verbum tuum [*factum*]
ſervo tuo. Obveniant mihi miſericordiæ 77
tuæ, & vivam, quoniam Lex tua delectationes
meæ ſunt. Confundantur ſuperbi, 78
quoniam iniquè ſubverterunt me: ego
loquar de mandatis tuis. Revertantur ad 79
doctrinam meam timentes te, & qui ſciunt
teſtimonia tua. Fiat cor meum immaculatum 80
in præceptis tuis, ut non confundar.
CAPH. Deſideravit redemptionem tuam 81
anima mea, verbúmq; tuum expectavi. Defecerunt 82
oculi mei in verbum tuum, dicentes:
Quando conſolaberis me? Quoniam factus 83
ſum ſicut uter *qui pendet* ad fumum: ſtatuta
tua non ſum oblitus. Quot ſunt dies ſervi 84
tui? quando facies in perſecutores meos judicium?
Foderunt mihi ſuperbi foveas, quas 85
non præcepiſti in Lege tua. Omnia mandata 86
tua veritas: falſò perſecuti ſunt me, adjuva
me.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

57 58 * ܚ * ܒܦܠܓܗ ܕܠܠܝܐ ܪܢܝܬ ܢܛܘܪܬܐ ܕܦܘܩܕܢܝܟ: * ܣܟܝܬ ܠܐܦܝܟ ܡܢ ܟܠܗ ܠܒܝ
59 ܐܚܝܢܝ ܐܝܟ ܡܠܬܟ * ܐܬܚܫܒܬ ܐܘܪܚܬܝ ܘܐܗܦܟܬ ܪܓܠܝ ܠܫܒܝܠܝܟ: * ܐܬܛܝܒܬ ܘܠܐ
60 61 ܐܬܡܗܡܗܬ ܠܡܛܪ ܦܘܩܕܢܝܟ. * ܚܒܠܐ ܕܥܘܠܐ ܟܪܟܘܢܝ ܘܡܢ ܢܡܘܣܟ ܠܐ ܣܛܝܬ:
62 63 * ܒܦܠܓܗ ܕܠܠܝܐ ܩܡܬ ܕܐܘܕܐ ܠܟ ܥܠ ܕܝܢܝܟ ܙܕܝܩܐ. * ܚܒܪܐ ܐܢܐ ܕܟܠܗܘܢ ܕܕܚܠܝܢ
64 ܘܐܝܠܝܢ ܕܢܛܪܝܢ ܦܘܩܕܢܝܟ: * ܘܪܚܡܝܟ ܡܪܝܐ ܡܠܝܐ ܐܪܥܐ ܐܠܦܢܝ ܦܘܩܕܢܝܟ. * ܛ *
65 66 * ܛܒܬܐ ܥܒܕ ܥܡ ܥܒܕܟ ܡܪܝܐ ܐܝܟ ܕܐܡܪܬ: * ܛܥܡܐ ܘܛܝܒܘܬܐ ܘܝܕܥܬܐ ܐܠܦܢܝ.
67 68 ܡܛܠ ܕܗܝܡܢܬ ܒܦܘܩܕܢܝܟ: * ܥܕܠܐ ܐܬܡܟܟܬ ܗܝܡܢܬ ܘܡܐܡܪܟ ܢܛܪܬ. * ܛܒ ܐܢܬ
69 ܡܪܝܐ ܘܡܛܝܒ ܐܠܦܢܝ ܦܘܩܕܢܝܟ: * ܣܓܝ ܥܘܠܐ ܕܫܒܗܪܢܐ ܘܐܢܐ ܒܟܠܗ ܠܒܝ ܢܛܪܬ
70 71 ܦܘܩܕܢܝܟ. * ܐܬܥܒܝ ܠܒܗܘܢ ܐܝܟ ܚܠܒܐ ܘܐܢܐ ܢܛܪܬ ܢܡܘܣܟ: * ܛܒ ܠܝ ܕܐܬܡܟܟܬ
72 ܕܐܠܦ ܦܘܩܕܢܝܟ. * ܫܦܪ ܠܝ ܢܡܘܣܐ ܕܦܘܡܟ ܡܢ ܐܠܦܐ ܕܕܗܒܐ ܘܕܣܐܡܐ:
73 74 * ܝ * ܐܝܕܝܟ ܥܒܕܢܝ ܘܐܬܩܢܘܢܝ ܐܠܦܢܝ ܢܡܘܣܟ. * ܕܢܚܙܘܢ ܕܕܚܠܝܟ ܘܢܕܥܘܢ
75 76 ܕܣܟܝܬ ܠܡܠܬܟ: * ܝܕܥܬ ܕܬܪܝܨܝܢ ܐܢܘܢ ܕܝܢܝܟ ܡܪܝܐ ܘܗܝܡܢܘܬܟ ܡܟܟܬܢܝ. * ܢܗܘܘܢ
77 ܪܚܡܝܟ ܠܒܘܝܐܝ ܐܝܟ ܕܐܡܪܬ ܠܥܒܕܟ: * ܢܐܬܘܢ ܥܠܝ ܪܚܡܝܟ ܘܐܚܐ ܡܛܠ ܕܢܡܘܣܟ
78 79 ܐܬܪܒܝܬ. * ܢܒܗܬܘܢ ܥܘܠܐ ܕܒܥܘܠܐ ܡܟܟܘܢܝ ܘܐܢܐ ܪܢܝܬ ܒܦܘܩܕܢܝܟ: * ܢܬܦܢܘܢ
80 ܠܘܬܝ ܕܕܚܠܝܟ ܘܐܝܠܝܢ ܕܝܕܥܝܢ ܣܗܕܘܬܟ. * ܢܚܪ ܠܒܝ ܒܦܘܩܕܢܝܟ ܘܠܐ ܐܒܗܬ: * ܟ *
81 82 * ܪܓܬ ܢܦܫܝ ܠܦܘܪܩܢܟ ܘܠܡܠܬܟ ܣܟܝܬ. * ܣܟܝ ܥܝܢܝ ܠܡܐܡܪܟ ܕܐܡܬܝ
83 84 ܬܒܝܐܢܢܝ: * ܡܛܠ ܕܗܘܝܬ ܐܝܟ ܙܩܐ ܒܓܠܝܕܐ ܘܦܘܩܕܢܝܟ ܠܐ ܛܥܝܬ. * ܟܡܐ ܐܢܘܢ ܝܘܡܬܐ
85 ܕܥܒܕܟ ܘܐܡܬܝ ܬܬܒܥ ܠܝ ܕܝܢܐ ܡܢ ܪܕܘܦܝ: * ܚܦܪܘ ܠܝ ܓܘܡܐ ܥܘܠܐ ܕܠܐ ܡܢ
86 ܢܡܘܣܟ. * ܟܠܗܘܢ ܦܘܩܕܢܝܟ ܡܗܝܡܢܝܢ ܘܥܘܠܐ ܪܕܦܘܢܝ:

* *Heth* * Mediâ nocte meditatus ſum obſervantiã 57
præceptorum tuorum. Expectavi vultũ 58
tuum ex toto corde meo: vivifica me juxta
verbũ tuum. Perpendi vias meas, & reduxi 59
pedes meos ad ſemitas tuas. Paravi me, nec 60
moram interpoſui, ad cuſtodienda mandata
tua. Funes iniquorum impediverunt me: at à 61
lege tua non deflexi. Mediâ nocte ſurrexi ad 62
agendas tibi gratias ob judicia tua, ô juſtiſſime.
Amicus ſum omnium timentium te, & 63
eorum qui cuſtodiunt præcepta tua. Miſerationibus 64
tuis Dñe plena eſt terra, doce me tua
mandata. * *Teth* * Beneficium confer in 65
ſervum tuum Dñe, ut dixiſti. Saporem & benignitatẽ 66
atq; ſcientiam doce me: quia credidi
mandatis tuis. Antequam humiliatus fuiſſem, 67
credideram, & ſermonem tuum cuſtodieram.
Bonus es tu Dñe atque beneficus, doce 68
me tua præcepta. Crevit iniquitas jactatorũ: 69
at ego toto corde meo ſervavi mandata tua.
Condenſatum eſt cor eorũ inſtar lactis, ego 70
tamen cuſtodivi legem tuam. Bonum eſt mihi 71
quòd humiliatus ſim, ut diſcerẽ mandata tua.
Placuit mihi lex oris tui pluſquàm millia auri 72
& argenti. * *Jud* * Manus tuæ me fecerunt, 73
méq; condiderunt, doce me legem tuam: Ut 74
videant metuentes te, ac ſciant verbum tuum
ſperâſſe me. Novi æqua eſſe judicia tua Dñe: 75
& fides tua humiliavit me. Sint miſericordiæ 76
tuæ ad conſolationẽ meã, uti dixiſti ſervo tuo.
Adveniant mihi miſerationes tuæ, ac vivam: 77
quoniam legem tuam ſum edoctus. Pudefiant 76
ſceleſti, qui ſcelere me humiliaverunt: nam
ego meditatus ſum tua præcepta. Convertantur 79
ad me timentes te, & hi qui norûnt teſtimoniũ
tuum. Contemplabitur cor meũ præcepta 80
tua, & non confundar. * *Coph* * Deſideravit 81
anima mea ſalutem tuam, & verbum
tuum ſperavi. Expectaverunt oculi mei eloquium 82
tuum, quando demùm ſis me conſolaturus;
Nam factus ſum ſicut uter in glacie: 83
tua tamen mandata non ſum oblitus. Quot 84
ſunt dies ſervi tui? & quando vendicabis mihi
judicium à perſequutoribus meis? Foderunt 85
mihi foveam ſcelerati præter legem tuam.
Omnia tua præcepta ſunt fidelia, & iniqui perſequuti ſunt me. 86

Verſio VULG. LAT.

57 HETH. Portio mea Dñe, dixi, custo-
58 dire legem tuam. Deprecat⁹ ſum faciem
tuā in toto corde meo: miſerere meî ſe-
59 cundũ eloquiũ tuũ. Cogitavi vias meas:
& converti pedes meos in teſtimonia
60 tua. Paratus ſum, & non ſum turbatus:
61 ut cuſtodiā mandata tua. Funes peccato-
rũ circumplexi ſunt me: & legē tuā non
62 ſum oblitus. Mediâ nocte ſurgebam ad
confitendũ tibi, ſuper judicia juſtificati-
63 onis tuæ. Particeps ego ſum omniũ ti-
mentiũ te, & cuſtodientiũ mandata tua.
64 Miſericordiâ tuâ, Domine, plena eſt ter-
rá: juſtificationes tuas doce me.
65 TETH. Bonitatē feciſti cum ſervo tuo,
66 Dñe, ſecundùm verbũ tuũ. Bonitatē, &
diſciplinā, & ſcientiā doce me: quia mā-
67 datis tuis credidi. Priuſquā humiliarer
ego deliqui: propterea eloquiũ tuũ cu-
68 ſtodivi Bonus es tu: & in bonitate tua
69 doce me juſtificationes tuas. Multipli-
cata eſt ſup me iniquitas ſuperborũ: ego
autē in toto corde meo ſcrutabor man-
70 data tua. Coagulatũ eſt ſicut lac cor eo-
71 rũ: ego verò legē tuā meditatus ſum. Bo-
nũ mihi quia humiliâſti me: ut diſcā ju-
72 ſtificationes tuas. Bonum mihi lex oris
tui, ſup millia auri & argenti. JOD.
73 Man⁹ tuæ fecerunt me, & plaſmaverũt
me: da mihi intellectum, & diſcam mā-
74 data tua. Qui timent te videbunt me, &
lætabuntur: quia in verba tua ſuperſpe-
75 ravi. Cognovi, Dñe, quia æquitas judicia
76 tua: & in veritate tua humiliâſti me. Fiat
miſericordia tua ut conſoletur me, ſe-
77 cundùm eloquiũ tuũ ſervo tuo. Veniant
mihi miſerationes tuæ, & vivā: quia lex
78 tua meditatio mea eſt. Confundantur ſu-
perbi, quia injuſtè iniquitatē fecerũt in
me: ego autem exercebor in mandatis
79 tuis. Convertātur mihi timētes te, et qui
80 noverũt teſtimonia tua. Fiat cor meum
immaculatũ in juſtificationibus tuis, ut
81 non confundar. CAPH. Defecit in
ſalutare tuũ anima mea: & in verbũ tuũ
82 ſuperſperavi. Defecerunt oculi mei in
eloquiũ tuũ, dicentes; Quando conſo-
83 laberis me? Quia factus ſum ſicut uter in
pruina: juſtificationes tuas non ſum ob-
84 lit⁹. Quot ſunt dies ſervi tui: quando fa-
85 cies de perſequentibus me judiciũ? Nar-
raverunt mihi iniqui fabulationes: ſed
86 non ut lex tua. Omnia mandata tua veri-
tas: iniquè perſecuti ſũt me, adjuva me.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

57 †Μερίς μου εἶ κύριε, εἶπα (φ) τοῦ φυλάξασθαι τὸν νόμον
58 σου. †Ἐδεήθην τοῦ προσώπου σου ἐν ὅλῃ καρδίᾳ μου,
59 †ἐλέησόν με (χ) κατὰ τὸ λόγιόν σου. †Διελογισάμην
(ψ) τὰς ὁδούς σου, †καὶ ἐπέστρεψα τοὺς πόδας μου εἰς τὰ
60 μαρτύριά σου. †Ἡτοιμάσθην καὶ οὐκ ἐταράχθην, †τοῦ
61 φυλάξασθαι τὰς ἐντολάς σου. †Σχοινία ἁμαρτωλῶν
περιεπλάκησάν μοι, †καὶ τοῦ νόμου σου οὐκ ἐπελαθόμην.
62 †Μεσονύκτιον ἐξεγειρόμην, τοῦ (ω) ἐξομολογεῖσθαί
63 σοι †ἐπὶ τὰ κρίματα τῆς δικαιοσύνης σου. †Μέτοχος
ἐγώ εἰμι πάντων τῶν φοβουμένων σε, †καὶ τῶν φυλασσόν-
64 των τὰς ἐντολάς σου. †(α) Τοῦ ἐλέους σου κύριε πλήρης
65 ἡ γῆ, †τὰ δικαιώματά σου δίδαξόν με. †Χρη-
στότητα ἐποίησας μετὰ τοῦ δούλου σου †κύριε (β) κατὰ τὸν
66 λόγον σου. †Χρηστότητα καὶ παιδείαν καὶ γνῶσιν δίδα-
67 ξόν με, †ὅτι ταῖς ἐντολαῖς σου ἐπίστευσα. †Πρὸ τοῦ
με ταπεινωθῆναι, ἐγὼ ἐπλημμέλησα, †διὰ τοῦτο τὸ
68 λόγιόν σου ἐφύλαξα. †Χρηστὸς εἶ σὺ κύριε· καὶ ἐν τῇ
69 χρηστότητί σου δίδαξόν με τὰ δικαιώματά σου. †Ἐ-
πληθύνθη ἐπ' ἐμὲ ἀδικία ὑπερηφάνων, †ἐγὼ δὲ ἐν ὅ-
70 λῃ καρδίᾳ μου (γ) ἐξερευνήσω τὰς ἐντολάς σου. †Ἐ-
τυρώθη ὡς γάλα ἡ καρδία αὐτῶν, †ἐγὼ δὲ τὸν νόμον
71 σου ἐμελέτησα. †Ἀγαθόν μοι ὅτι ἐταπείνωσάς με, †ὅ-
72 πως ἂν μάθω τὰ δικαιώματά σου. †(δ) Ἀγαθός μοι
ὁ νόμος τοῦ στόματός σου, †ὑπὲρ χιλιάδας χρυσίου καὶ
73 ἀργυρίου. †Αἱ χεῖρές σου ἐποίησάν με καὶ ἔπλασάν με,
74 †συνέτισόν με καὶ μαθήσομαι τὰς ἐντολάς σου. †Οἱ
φοβούμενοί σε ὄψονταί με καὶ εὐφρανθήσονται, †ὅτι εἰς
75 τοὺς λόγους σου (ε) ἐπήλπισα. †Ἔγνων κύριε ὅτι δι-
καιοσύνη τὰ κρίματά σου, †καὶ ἀληθείᾳ ἐταπείνωσάς
76 με. †Γενηθήτω δὴ τὸ ἔλεός σου τοῦ παρακαλέσαι με,
77 †κατὰ τὸ λόγιόν σου τῷ δούλῳ σου. †(ζ) Ἐλθέτωσάν μοι
οἱ οἰκτιρμοί σου, (η) καὶ ζήσομαι, †ὅτι ὁ νόμος σου με-
78 λέτη μού ἐστιν. †Αἰσχυνθήτωσαν ὑπερήφανοι, †ὅτι ἀδί-
κως ἠνόμησαν εἰς ἐμέ, †ἐγὼ δὲ ἀδολεσχήσω ἐν ταῖς ἐντο-
79 λαῖς σου. †Ἐπιστρεψάτωσάν με οἱ φοβούμενοί σε, †καὶ
80 οἱ γινώσκοντες τὰ μαρτύριά σου. †Γενηθήτω ἡ καρ-
δία μου ἄμωμος †ἐν τοῖς δικαιώμασί σου, ὅπως ἂν
81 μὴ αἰσχυνθῶ. †Ἐκλείπει εἰς τὸ σωτήριόν σου ἡ
82 ψυχή μου, †(θ) εἰς τοὺς λόγους σου ἐπήλπισα. †Ἐξέλι-
πον οἱ ὀφθαλμοί μου εἰς τὸ (ι) λόγιόν σου, λέγοντες,
83 Πότε παρακαλέσεις με; †Ὅτι ἐγενήθην ὡς ἀσκὸς ἐν
84 πάχνῃ· †τὰ δικαιώματά σου οὐκ ἐπελαθόμην. †Πό-
σαι εἰσὶν αἱ ἡμέραι τοῦ δούλου σου; †πότε ποιήσεις μοι
85 ἐκ τῶν καταδιωκόντων με κρίσιν; †Διηγήσαντό μοι
παράνομοι ἀδολεσχίας, †ἀλλ' οὐχ ὡς ὁ νόμος σου κύ-
86 ριε. †Πᾶσαι αἱ ἐντολαί σου ἀλήθεια· †ἀδίκως κατε-
δίωξάν με, βοήθησόν μοι.

MS.A. (φ) φυλάξασθαι (χ) κατὰ λόγιόν σου. (ψ) κατὰ τὰς ὁδούς σου, (ω) ἐξομολογήσασθαί σοι (α) Τοῦ ἐλαίους κυρίου πλήρης (β) κατὰ τὸ λόγιόν σου. (γ) ἐξερευνήσω (δ) Ἀγαθόν μοι (ε) ἐφήλπισα. (ζ) Ἐλθάτωσάν μοι (η) καὶ ζῆσόν με, (θ) εἰς τὸν λόγον σου ἐφήλπισα. (ι) λόγιόν σου, * Ὅτι ἐγενήθην ὡσεὶ ἀσκὸς

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

57 Portio mea es, Dñe: dixi [†] *cuſto-* 57
dire legē tuam. 58 *Deprecatus ſum fa-* 58
ciem tuam [t] *in toto corde meo: miſe-*
rere meî ſecundùm eloquium tuum.
59 *Cogitavi vias* (b) *tuas: & converti* 59
pedes meos in teſtimonia tua. 60 *Paravi* 60
ſum, et non [u] *ſum turba⁹, ad* (c) *cuſto-*
diendũ mandata tua. 61 *Funes pecca-* 61
torum (d) *circumplexi ſunt me: & le-*
gem tuam non ſum oblitus. 62 *Mediâ* 62
nocte ſurgebā ad confitendum tibi, ſu-
per judicia juſtitiæ tuæ. 63 (e) *Particeps* 63
ego ſum omnium timentium te, & cu-
ſtodientiũ mandata tua. 64 *Miſerico-* 64
diâ tuâ, Domine, plena eſt terra: juſtifi-
cationes tuas doce me. 65 [f] *Bonitatem* 65
feciſti cum ſervo tuo, Domine, ſecun-
dùm verbũ tuum. 66 *Bonitatem, et di-* 66
ſciplinam, & ſcientiam doce me: quia
mandatis tuis credidi. 67 *Priuſquàm* 67
humiliarer, ego [x] *deliqui: propterea e-*
loquiũ tuum cuſtodivi. 68 *Bonus es tu,* 68
Domine: et in bonitate tua doce me ju-
ſtificationes tuas. 69 *Multiplicata eſt* 69
ſuper me iniquitas ſuperborũ: ego autē
in toto corde meo ſcrutabor mandata
tua. 70 (g) *Coagulatum eſt ſicut lac, cor* 70
eorum: ego verò legem tuam meditatus
ſum. 71 (h) [y] *Bonũ mihi, quia humi-* 71
liâſti me: ut diſcā juſtificationes tuas.
72 *Bona mihi lex oris tui, ſuper millia* 72
auri, & argenti. 73 *Manus tuæ fece-* 73
runt me, & (i) *plaſmaverunt me: da*
mihi intellectum, & diſcam mandata
tua. 74 *Qui timent te videbunt me, &* 74
lætabuntur: quia in verba tua ſuper-
ſperavi. 75 *Cognovi, Domine, quia juſti-* 75
tia judicia tua: & (k) [z] *veritate hu-*
miliâſti me. 76 *Fiat* (l) *nunc miſerico-* 76
dia tua, ut conſoletur me: [ω] *ſecun-*
dùm eloquium tuum ſervo tuo. 77 *Ve-* 77
niant mihi miſerationes tuæ, & vi-
vam: quia lex tua [aa] *meditatio mea*
eſt. 78 *Confundantur ſuperbi, quoniam* 78
[b] *injuſtè iniquitatē fecerunt in me:*
ego autem exercebor in mandatis tuis.
79 (m) *Convertantur ad me, qui timent* 79
te, & qui cognoſcunt [c] *teſtimonia*
tua. 80 *Fiat cor meum immaculatum in* 80
juſtificationib⁹ tuis, ut non confundar.
81 *Defecit in ſalutare tuũ anima mea:* 81
in verba tua ſuperſperavi. 82 *Defece-* 82
runt oculi mei in [d] *eloquium tuum,*
dicentes; Quando conſolaberis me?
83 *Quia factus ſum, ſicut uter in prui-* 83
na: juſtificationes tuas non ſum oblit⁹.
84 *Quot ſunt dies ſervi tui? quando* 84
facies mihi de perſequentibus me judi-
cium? 85 *Narraverunt mihi iniqui* (n) 85
fabulationes, ſed non ut lex tua, Domine. 86 *Omnia mandata tua veritas:* (o) *injuſtè perſe-* 86
quuti ſunt me, adjuva me.

INTERP. ÆTHIOP. [†] cuſtodient [t] Domine in toto [u] hæſitavi, ad [x] pœnitentiam egi: [y] expedit mihi, [z] in æquitate [ω] et ſecundùm eloquium tuum fiat [aa] eruditio mea. [b] iniquè conſultârunt adverſùs [c] nomen tuum. [d] ſalutare tuum, dicentes;

Verſio ÆTHIOPICA.

ፗ ሄት፡ ክፍልየ፡ እግዚአብሔር፡፡ወእቤ፡ይ 57
ዕቀቡ፡ሕገከ፡፡=፡ ሰአልኩ፡ ገጽከ፡ እግዚ 58
አ፡ በኵሉ፡ ልብየ፡፡ተሣሀለኒ፡ በከመ፡ነቢብ
ከ፡፡=፡ ወሐለይኩ፡ በእንተ፡ፍናዊከ፡፡ሜጥ 59
ኩ፡እግርየ፡ ውስተ፡ ስምዕከ፡፡=፡ አጥባዕ 60
ኩ፡ወኢናፍቁ፡፡ለዓቂበ፡ ትእዛዝከ፡፡=፡ አ 61
ኀበለ፡ ኃጥአን፡ ተጸፍረ፡ ላዕሌየ፡፡ወሕግከ
ሰ፡ኢረሳዕኩ፡፡=፡ መንፈቀ፡ ሌሊት፡ እትነሣ 62
እ፡፡ከመ፡እግነይ፡ለከ፡በእንተ፡ ኵነኔ፡ ጽድ
ቅከ፡፡=፡ ከማሆሙ፡አነ፡ለኵሎሙ፡እለ፡ይ 63
ፈርሁከ፡፡ወለእለ፡ ያዐቅቡ፡ ትእዛዘከ፡፡=፡
ሣህልከ፡ እግዚኦ፡ መልአ፡ ምድረ፡፡ወምህረ 64
ኒ፡ኵነኔከ፡፡=፡ ፀ ጤት ሠናይተ፡ ገበር 65
ከ፡ ላዕለ፡ ገብርከ፡፡ እግዚኦ ፡ በከመ ፡ ቃል
ከ፡፡=፡ ሠናይተ፡ምክረ፡ ወጥበበ፡ምህረኒ፡፡ 66
እስመ፡ ተአመንኩ፡ በትእዛዝከ፡፡=፡ ወአን 67
ሰ፡ ዘእንበለ፡ እሕምም፡ ነሰሕኩ፡፡ወበእንተ
ዝ፡ አነ፡ ዐቀብኩ ፡ ነቢበከ፡፡=፡ ኄር፡ አን 68
ተ፡ እግዚኦ፡፡ወበኂሩትከ ፡ ምህረኒ ፡ ኵነኔ
ከ፡፡=፡ በዝኀ፡ላዕሌየ፡ገመፃሆሙ፡ ለዐቡያ 69
ን፡፡ወአንሰ፡በኵሉ፡ልብየ፡ ኃሠሥኩ፡ ትእዛ
ዘከ፡፡=፡ ረግዐ፡ከመ፡ ሐሊብ፡ ልቦሙ፡፡ወአ 70
ንሰ፡አነብብ፡በሕግከ፡፡=፡ ደለወኒ፡ዘአሕም 71
መከኒ፡፡ከመ፡ አእምር፡ ኵነኔከ፡፡=፡ ይኄ 72
ይስኒ፡ ሕገ፡ አፉከ፡፡እምአእላፍ፡ ወርቅ፡ወ
ብሩር፡፡=፡ ፲ ዮድ እደዊከ፡ገብራኒ፡ወ 73
ለሐኳኒ፡፡ አለብወኒ ፡ ወእትመሀር ፡ ትእዛዘ
ከ፡፡=፡ እለ፡ ይፈርሁከ፡ ይርአዩኒ፡ ወይትፌ 74
ሥሑ፡፡እስመ፡ተወከልኩ፡በነቢብከ፡፡=፡ አ 75
እመርኩ፡እግዚኦ፡ ከመ፡ ጽድቅ፡ ኵነኔከ፡፡
ወበርቱዕ፡ አሕመምከኒ፡፡=፡ ይኩነኒ፡ መ 76
ሕረትከ፡ከመ፡ያስተፈሥሐኒ፡፡ወበከመ፡ ነቢ
ብከ፡ ይኩኖ፡ ለገብርከ፡፡=፡ ይምጽአኒ፡ሣ 77
ህልከ ፡ ወእሕየው፡፡እስመ፡ ተመሀርየ፡ ውስ
ቱ፡ሕግከ፡፡=፡ ይትኀፈሩ፡ዕቡያን፡እስመ፡ዐ 78
መፃ፡መከሩ፡ላዕሌየ፡፡ወአንሰ፡ለዛዋዕ፡ በትእ
ዛዝከ፡፡=፡ይግብኡኒ፡እለ፡ይፈርሁከ፡፡ወእ 79
ለ፡ የአምሩ፡ ስምከ፡፡=፡ ለይኩን፡ ልብየ፡ን 80
ፁሐ ፡ በኵነኔከ ፡ ከመ ፡ ኢይትኀፈር፡፡=፡
፲፩ ካፍ ኃለፈት፡ነፍስየ፡ ውስተ፡ አድኅኖት 81
ከ፡፡ወተወከልኩ፡በቃልከ፡፡=፡ ደክማ፡ለዐይ 82
ንትየ፡ለመድኃኒትከ፡፡እንዘ፡ይብላ፡ መእዜ፡
ታስተፌሥሐኒ፡፡=፡ እስመ፡ ኮንኩ፡ከመ፡ዝ 83
ቅ፡ ውስተ ፡ አስሐትያ፡፡ወኵነኔከሰ፡ ኢረሳዕ
ኩ፡፡=፡ ሚመጠን፡ እማንቱ፡መዋዕሊሁ፡ለገ 84
ብርከ፡፡ወማእዜ፡ትፌትሕ፡ ሊተ፡ እምእለ፡
ይሰዱኒ፡፡=፡ ነገሩኒ፡ ኃጥአን፡ ዘውዐ፡፡ወአ 85
ኮሰ፡ከመ፡ሕግከ፡እግዚኦ፡፡=፡ ኵሉ፡ትእዛ 86
ዝከ፡ጽድቅ፡፡በዐመፃ፡ሰደዱኒ፡ረድአኒ፡፡=፡

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

57 58 * الفصل الثامن وهو ح * انت هو حظي يا رب اذا حفظت وصاياك * طلبت وجهك بجميع
59 60 قلبي فارحمني كنحو قولك * اني تفكرت في طرقك فرددت قدمي الي شهاداتك * استعددت ولم
61 62 اضطرب لحفظ وصاياك * عقلتني مصايد الخطاة ولم انس ناموسك * كنت اقوم في نصف الليل
63 64 واسبحك علي احكام عدلك * انا شريك اتقيائك وحافظي وصاياك * الارض امتلت من رحمتك
65 يا رب فعلمني عدلك * * الفصل التاسع * وهو ح * صنعت صلاحا مع عبدك يا رب كنحو قولك *
66 67 * علمني صلاحا وادبا وعلما فاني صدقت وصاياك * قبل ان اتواضع انا تكاسلت لذلك حفظت
68 69 انا كلامك * انك انت يا رب لصالح فبصلاحك علمني حقوقك * كثر علي ظلم المتعظمين وانا
70 71 بجميع قلبي افحص عن وصاياك * تجبنت قلوبهم مثل اللبن وانا اتلو ناموسك * ان اذلالك اياي
72 خيري لكي اعلم حقوقك * وناموس فمك هو خير لي ايضا افضل من الاف الذهب والفضة *
73 74 * الفصل العاشر * وهو ح * يداك صنعتاني وجبلتاني افهمني فاعلم وصاياك * يراني خائفوك
75 76 ويسرون لاني وثقت باقوالك * علمت يا رب ان احكامك عادلة هي وبحق اذللتني * فلتات علي رحمتك
77 78 لتعزيني كمثل قولك لعبدك * ولتات علي رافتك فاحيا فان ناموسك هو تلاوتي * وليخز المستكبرون
79 80 فانهم خالفوا الشرع في ظلما وانا اهتم بوصاياك * فليرجع الي اتقياؤك وعارفوا شهاداتك * وليكن
81 قلبي بلا عيب في حقوقك لكيلا اخزى * الفصل الحادي عشر * وهو ح * تاقت نفسي الي خلاصك
82 83 ورجوت قولك * فنيت عيناي الي قولك قايلتين متي تعزيني * صرت مثل زق في جليد ولم انس
84 85 حقوقك * كم هي ايام عبدك متي تصنع لي حكما علي الذين يضطهدونني * تكلموا معي مخالفوا
86 الناموس بكلام هذيان لكن ليس كناموسك * يا رب جميع وصاياك هي حق وظلما طردوني فاعني *

Sectio viii. Ver. 8. *Tu es portio mea, O Dñe,* 57
quum ſervavero mandata tua. Quæſivi fa- 58
ciem tuā in toto corde meo, miſerere mei ſe-
cundùm ſermonem tuum. Equidem conſide- 59
ravi vias tuas, et reduxi pedes meos ad te-
ſtimonia tua. Paravi me (nec ſum turbatus) 60
ad cuſtodiā mandatorum tuorum. Implica- 61
verunt me retia peccatorũ, et non ſum obli-
tus legē tuam. Surgebam media in nocte, et 62
laudabam te de judiciis æquitatis tuæ. Ego 63
particeps ſum timentiũ te et cuſtodientium
mandata tua. Terra impleta eſt miſericor- 64
diâ tuâ O Domine: doce me æquitatē tuā.
Sectio ix. Ver. 8. *Feciſti beneficium erga ſer-* 65
vum tuum O Domine, juxta ſermonē tuum.
Doce me bonitatem et diſciplinam & ſcien- 66
tiam, quia ego credidi mandatis tuis. Pri- 67
uſquam humiliarer, ego piger fui: propterea
ſervavi ego ſermonem tuum. Tu quidem, 68
O Domine, bonus es: quapropter ex bonitate
tua doce me decreta tua. Multiplicata eſt 69
ſuper me iniquitas ſuperborum, et ego in to-
to corde meo ſcrutabor de mandatis tuis.
Condenſata ſunt corda eorum veluti lac, et 70
ego meditabar legē tuam. Quòd autē hu- 71
miliaveris me, in bonum meum ceſſit, ut de-
ſcribendam decreta tua. Et lex oris tui me- 72
lior eſt mihi, etiam præſtantior millibus auri
& argenti. Sect. x. Ver. 8. *Manus tuæ fe-* 73
cerunt me & coagulârunt me: intellectum
dediſti mihi, ideò diſcam mandata tua. Vi- 74
debunt me timentes tui et exultabunt, quia
tuam præſtiti fidem ſermonibus tuis. Cog- 75
novi, O Domine, quod judicia tua juſta ſint,
& cum veritate humiliaveris me. Veniat 76
ergò ſuper me miſericordia tua, ut conſole-
tur me ſecundùm ſermonē tuum ſervo tuo.
Et veniat ſuper me clementia tua et vivam, 77
quia lex tua eſt meditatio mea. Confundan- 78
tur autē ſuperbi, quia prævaricati ſunt le-
gem in me iniquè, & ego ſolicitus ero in
mandatis tuis. Revertantur ad me cultores 79
tui, et agnoſcentes teſtimonia tua. Sitq; cor 80
meum ſine macula in decretis tuis; ut non
confundar. Sect. xi V. 8. *Expetivit anima* 81
mea ſalutem tuam, et ſperavi ſermonē tuũ.
Defecerunt oculi mei intenti ad ſermonem 82
tuum, dicentes, Quando conſolaberis me?
Factus ſum veluti uter in glacie, et non ſum 83
oblitus veritates tuas. Quot ſunt dies ſervi 84
tui? quando facies mihi judiciũ contra eos
qui perſequuntur me? Colloquuti ſunt mecũ 85
refractarũ legis verbis deliriis, ſed non juxta
legē tuā. O Dñe, univerſa mandata tua ſunt 86
vera: et injuſtè perſecuti ſũt me, adjuva me.

.tua præcepta dereliqui noa ego & : terra in me conſumpſerunt *parum* *Quaſi*
כמעט כלוני בארץ ואני לא־עזבתי פקדיך : 87
ſeculum In .tui oris teſtimonium cuſtodiam & :me vivifica tuam miſericordiā Secundū
כחסדך חיני ואשמרה עדות פיך : לעולם 88 89
fundâſti:tua veritas generationē & generatione In .cœlis in *ſtans* tuum verbū Domine
יהוה דברך נצב בשמים : לדר ודר אמונתך כוננת 90
Niſi .tui ſervi omnes quia *: hodie* ſteterunt tua judicia Ad .ſtabit & ,terram
ארץ ותעמד : למשפטיך עמדו היום כי הכל עבדיך : לולי 91 92
obliviſcar non ſeculum In .mea afflictione in periiſſem tunc : meæ *delitiæ* tua lex
תורתך שעשעי אז אבדתי בעניי : לעולם לא־אשכח 93
tua præcepta quoniā : me ſerva ,*ego* Tibi .me vivificâſti ipſis in quia:tuorū præceptorū
פקודיך כי־בם חייתני : לך־אני הושיעני כי פקודיך 94
.intelligam tua teſtimonia:me perdendum ad impii expectaverunt Me .quæſivi
דרשתי : לי קוו רשעים לאבדני עדתיך אתבונן : 95
Quàm .valde tuum præceptum latum : finem vidi conſummationis Omnis
לכל־תכלה ראיתי קץ רחבה מצותך מאד : מה־ 96 97
me *facies* ſapientē meis inimicis Præ.mea meditatio ipſa *die* *omni*:tuam legem dilexi
אהבתי תורתך כל־היום היא שיחתי : מאיבי תחכמני 98
: intellexi me docentibus omnibus Præ *.mihi* *ipſa* ſeculum in quia : tuis præceptis
מצותך כי לעולם היא־לי : מכל־מלמדי השכלתי 99
.cuſtodivi tua præcepta quia:*ero prudens* ſenibus Præ.*mihi* meditatio tua teſtimonia quia
כי עדותיך שיחה לי : מזקנים אתבונן כי פקודיך נצרתי : 100
tuis judiciis A .tuū verbū cuſtodiam ut : meos pedes *arcui* mala ſemita omni Ab
מכל־ארח רע כלאתי רגלי למען אשמר דברך : ממשפטיך 101 102
: tua eloquia meo palato *dulcuerunt* Quàm .me *docuiſti* tu quia : receſſi non
לא־סרתי כי־אתה הורתני : מה־נמלצו לחכי אמרתך 103
ſemitam omnem odivi propterea : *fiam prudens* tuis præceptis A .meo ori melle præ
מדבש לפי : מפקודיך אתבונן על־כן שנאתי כל־ארח 104
, Juravi .meæ ſemitæ lumen & : tuum verbum meo pedi Lucerna .*falſitatis*
שקר : נר־לרגלי דברך ואור לנתיבתי : נשבעתי 105 106
: *valde uſque* ſum Afflictus .tuæ juſtitiæ judicia *cuſtodiendum ad* : *faciam ratum* &
ואקימה לשמר משפטי צדקך : נעניתי עד־מאד 107
quæſo velis mei oris Voluntaria .tuum verbum ſecundùm me vivifica Domine
יהוה חיני כדברך : נדבות פי רצה־נא 108
tuæ legis & : ſemper mea *vola* in mea Anima .me doce tua judicia & : Domine
יהוה ומשפטיך למדני : נפשי בכפי תמיד ותורתך 109
non tuis præceptis à & ; mihi laqueum impii *Dederunt* .ſum oblitus non
לא שכחתי : נתנו רשעים פח לי ומפקודיך לא 110
mei cordis gaudium quia : ſeculum in tua teſtimonia accepi Hæreditate .erravi
תעיתי : נחלתי עדותיך לעולם כי־ששון לבי 111
.*calcem* , ſeculum in tua ſtatuta faciendum ad meum cor Inclinavi .*ipſa*
המה : נטיתי לבי לעשות חקיך לעולם עקב : 112
meum ſcutum & , meum Latibulum .dilexi tuam legem & :habui odio *Excogitata*
סעפים שנאתי ותורתך אהבתי : סתרי ומגני 113 114
cuſtodiam & : maligni me à Recedite .expectavi tuum verbum in : tu
אתה לדברך יחלתי : סורו ממני מרעים ואצרה 115
.mei Dei præcepta
מצות אלהי :

כזער שציאו יתי בארעא ואנא לא שבקית 87
פקודיך : היך חסדך קים יתי ואטור סהדות 88
פומך : לעלמא יי פתגמך קים בשמיא : 89
לדר ודר הימנותך אתקנתא ארעא וקימא : 90
לדינך קמו יומנא ארום כולהון עבדך : 91
אלולי אוריתך פרנוקי הידין אובדית 92
בסגופי : לעלם לא אתנשי פקודיך ארום 93
בהון קימתני : די לך אנא פרוק יתי ארום 94
פקודיך תבעית : לותי אמתינו רשיעיא 95
להובדא יתי סהדותך אתבין : לכל מה 96
דאשתדל ואשתכל חמיתי סיפא פתיא
תפקדתך לחדא : מה רחימית אוריתך 97
כל יומא היא שותי : יתיר מבעלי דבבי 98
מחכמה יתי פקודיך ארום לעלם היא דילי :
מכל מאלפי אסתכלית ארום סהדותך 99
שותא לי : מן חכימיא אתבין ארום פקודיך 100
נטרית : מכל אורח בישא מנעית רגלי מן 101
בגלל אטור דבריך : מן דיניך לא עדית 102
ארום את אלפתני : מה חלין למוריגי מימריך 103
בסימן יתיר מן דובשא לפומי : מפקודיך 104
אתבין מטול היכנא סניתי כל בר נש
דמשקר : היך שרגא די מנהרא לרגלי 105
דבריך ונהורא לכבשי : אומיתי וקימית 106
למטר פקודי זכותך : אסתגפית עד לחדא 107
יי אסי יתי היך דברך : נכסתא דפומי אתרעי 108
כדון יי ודינך אליף יתי : נפשי מסתכנא 109
על גב ידי תדירא ואוריתך לא אתנשיתי :
סדרו רשיעיא פחא לי ומפקודיך לא תעיתי : 110
אחסנית סהדותך לעלם ארום חדות לבי 111
הנון : אצליתי לבי למעבד גזרתך לעלם 112
עד סופא : דחשבין מחשבן סריקן סניתי 113
ואוריתך רחימית : טומרי ותריסי את 114
לפתגמך אוריכית : זורו מני מבאשין ואטור 115
פקודי אלהי :

Parum abſuit quin conſumpſerint me in 87
terra, ego verò non obmiſi præcepta tua.
Secundùm miſericordiam tuam vivifica me, 88
& cuſtodiam teſtimonia oris tui. LA-
MED. In æternum Domine verbum tuum 89
firmum eſt in cœlo. In generatione & 90
generationem veritas tua : præparâſti ter-
ram & *firma* [*eſt*.] Judiciis tuis perma- 91
nent hodie, quoniam cuncta ſerviunt tibi.
Niſi Lex tua deliciæ meæ [*fuiſſent*,] tunc 92
periiſſem in afflictione mea. In æternum 93
non obliviſcar præceptorum tuorum, quo-
niam in ipſis vivificâſti me. Tuus ego ſum, 94
ſalva me, quoniam mandata tua quæſivi.
Me expectaverunt impii ut perderent me, 95
teſtimonia tua intelligam. Omnium in qui- 96
bus fui ſollicitus atque proſpexi, vidi finem :
latum eſt mandatum tuum valdè. MEM.
Quàm dilexi Legem tuam ! tota die ipſa eſt 97
locutio mea. Abundantiùs quam inimicos 98
meos docet me mandata tua , quoniam in
æternum ipſa apud me eſt. Pluſquàm omnes 99
doctores mei intellexi, quoniam meditatio
mea teſtimonia tua ſunt. Pluſquàm ſapien- 100
tes intelligam, quoniam præcepta tua ſer-
vavi. Ab omni via mala prohibui pedes 101
meos, ut cuſtodiam verbum tuum. A judi- 102
ciis tuis non declinavi, quoniam tu docu-
iſti me. Quàm dulcia palato meo verba 103
tua ! dulciora ſunt quàm mel ori meo. A 104
præceptis tuis erudiar, propterea odi omnem
virum mendacem. NUN. Sicut lucerna 105
illucens pedi meo verbum tuum, & lumen
ſemitæ meæ. Juravi & conſtitui cuſtodire 106
præcepta juſtitiæ tuæ. Afflictus ſum vehe- 107
menter Domine, ſana me ſecundùm verbum
tuum. Oblationes oris mei velis obſecro 108
Domine, & judicia tua doce me. Anima 109
mea periclitatur in ſuperficie manus meæ
ſemper, at Legem tuam non ſum oblitus.
Tetenderunt impii laqueum mihi, & à præ- 110
ceptis tuis non aberravi. Hæreditatis jure 111
poſſedi teſtimonia tua in æternum, quoni-
am gaudium cordis mei ſunt. Inclinavi cor 112
meum ut faciat mandata tua in æternum
uſque ad finem. SAMECH. Cogitantes 113
cogitationes vanas odio habui, & Legem
tuam dilexi. Abſconſio mea & ſcutum me- 114
um tu es : in verbum tuum ſperavi. Rece- 115
dite à me ſcelerati, & cuſtodiam mandata
Dei mei.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܟܡ ܩܠܝܠ ܡܘܒܕܝܢ ܗܘܘ ܠܝ ܒܐܪܥܐ ܘܐܢܐ ܠܐ ܫܒܩܬ ܦܘܩܕܢܝܟ. * ܐܝܟ ܪܚܡܝܟ ܐܚܝܢܝ 87 88
ܘܐܛܪ ܣܗܕܘܬܐ ܕܦܘܡܟ : * ܠ * ܠܥܠܡ ܐܢܬ ܗܘ ܡܪܝܐ. ܘܡܠܬܟ ܩܝܡܐ ܒܫܡܝܐ : 89
* ܘܠܕܪܕܪܝܢ ܗܝܡܢܘܬܟ. ܫܪܪܬ ܐܪܥܐ ܘܐܩܝܡܬܗ :** ܐܠܘܠܐ ܢܡܘܣܟ ܕܗܘܐ ܠܝ ܪܢܝܐ 90
ܐܒܕ ܗܘܝܬ ܒܡܘܟܟܝ. * ܠܥܠܡ ܠܐ ܐܛܥܐ ܦܘܩܕܢܝܟ ܡܛܠ ܕܒܗܘܢ ܐܢܘܢ ܚܝܝ : * ܕܝܠܟ ܐܢܐ 92 93
ܦܪܘܩܝܢܝ ܡܛܠ ܕܦܘܩܕܢܝܟ ܢܛܪܬ. * ܠܝ ܣܟܝܘ ܚܛܝܐ ܕܢܘܒܕܘܢܢܝ ܘܣܗܕܘܬܟ ܐܣܬܟܠܬ : 94 95
* ܠܟܠ ܬܚܘܡܐ ܚܙܝܬ ܣܟܐ ܘܦܬܝܐ ܛܒ ܦܘܩܕܢܟ. * ܡ * ܟܡܐ ܪܚܡܬ ܢܡܘܣܟ 96
ܘܟܠܗ ܝܘܡܐ ܗܘܝܘ ܪܢܝܝ : * ܚܟܡܝܢܝ ܡܢ ܒܥܠܕܒܒܝ ܡܛܠ ܕܦܘܩܕܢܝܟ ܢܛܪܬ. 97 98
* ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܡܠܦܢܝ ܚܟܡܝܢܝ ܡܛܠ ܕܣܗܕܘܬܟ ܗܘܬ ܠܝ ܪܢܝܐ : * ܝܬܝܪ ܡܢ ܩܫܝܫܐ 99 100
ܐܣܬܟܠܬ ܡܛܠ ܕܦܘܩܕܢܝܟ ܢܛܪܬ. * ܡܢ ܟܠܗ ܐܘܪܚܐ ܒܝܫܬܐ ܟܠܝܬ ܪܓܠܝ ܕܐܛܪ 101
ܦܘܩܕܢܝܟ. * ܡܢ ܕܝܢܝܟ ܠܐ ܣܛܝܬ ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܐܠܦܬܢܝ. * ܚܠܝܢ ܡܠܝܟ ܠܚܟܝ 102 103
ܝܬܝܪ ܡܢ ܕܒܫܐ ܠܦܘܡܝ : * ܒܦܘܩܕܢܝܟ ܐܬܒܩܝܬ ܡܛܠ ܗܢܐ ܣܢܝܬ ܟܠܗ ܐܘܪܚܐ 104
ܕܥܘܠܐ. * ܢ * ܫܪܓܐ ܗܝ ܡܠܬܟ ܠܪܓܠܝ ܘܢܘܗܪܐ ܠܫܒܝܠܝ : * ܝܡܝܬ ܘܐܫܪܪܬ 105 106
ܕܐܛܪ ܕܝܢܐ ܕܟܐܢܘܬܟ. * ܐܬܡܟܟܬ ܛܒ ܡܪܝܐ ܐܚܝܢܝ ܐܝܟ ܡܠܬܟ : * ܒܡܠܘܗܝ 107 108
ܕܦܘܡܝ ܨܒܝ ܡܪܝܐ ܘܡܢ ܕܝܢܝܟ ܐܠܦܝܢܝ. * ܢܦܫܝ ܒܐܝܕܝܟ ܗܝ ܒܟܠܙܒܢ 109
ܘܢܡܘܣܟ ܠܐ ܛܥܝܬ : * ܣܡܘ ܠܝ ܚܛܝܐ ܦܚܐ ܘܡܢ ܦܘܩܕܢܝܟ ܠܐ ܣܛܝܬ. 110
* ܝܪܬܬ ܣܗܕܘܬܟ ܠܥܠܡ ܡܛܠ ܕܒܘܣܡܐ ܗܝ ܕܠܒܝ : * ܐܪܟܢܬ ܠܒܝ 111 112
ܕܐܥܒܕ ܦܘܩܕܢܝܟ ܠܥܠܡ ܒܫܪܪܐ. * ܣ * ܣܢܝܬ ܥܘܠܐ ܘܢܡܘܣܟ ܪܚܡܬ : 113
* ܡܥܕܪܢܝ ܘܓܘܣܝ ܐܢܬ ܗܘ ܘܠܡܠܬܟ ܣܟܝܬ. * ܦܪܘܩܘ ܡܢܝ ܒܝܫܐ ܕܐܛܪ 114 115
ܦܘܩܕܢܘܗܝ ܕܐܠܗܝ :

Paulò minùs perdiderunt me in terra, ego ta- 87
men non deſerui mandata tua. Juxta miſera- 88
tiones tuas vivifica me. et cuſtodiam teſtimo-
nium oris tui. * *Lomad* * In ſeculum tu es 89
Dñe, & verbum tuum perſiſtens in cœlo, Et 90
in generationē generationū fides tua: firmâſti
terrā, & erexiſti eam. Niſi lex tua fuiſſet mihi 91
meditatio, periiſſē in humilitate mea. In æ- 93
ternū non obliviſcar mandatorū tuorū, quo-
niam in ipſis conſiſtit vita mea. Tuus ſum 94
ego, libera me: quia tua præcepta ſervavi. Me 95
præſtolati ſunt ſceleſti, ut perderent me: teſti-
monium verò tuum perpendi. Omni regioni 96
vidi finem haberi, at ſummè patens eſt man-
datum tuum. * *Mim* * Quantùm dilexi le- 97
gem tuam? & quidem totâ die ipſa eſt medita-
tio mea. Redde me ſapientiorē hoſtib⁹ meis, 98
quia præcepta tua cuſtodivi. Præ omnibus 99
præceptorib⁹ meis fac me ſapientē, quia teſti-
monium tuum fuit mihi ſolicitudo. Pluſquā 100
ſenes intellexi, quoniam tua mandata obſer-
vavi. Ab omni via mala cohibui pedes meos, 101
ut cuſtodirem tua præcepta. A judiciis tuis 102
minimè deflexi, quia tu me erudiiſti. Dulcia 103
ſunt verba tua palato meo pluſquàm mel ori.
Mandata tua ſolicitè contemplatus ſum, pro- 104
ptereà odi omnem viam ſceleſtorū. * *Nun* *
Lucerna eſt verbū tuū pedibus meis, & lumen 105
ſemitis meis. Juravi & aſſeveravi ſervaturū 106
me judicia juſtitiæ tuæ. Humiliatus ſum ma- 107
gnopere, Dñe vivifica me ſecundùm verbum
tuum. Sermones oris mei accepta Dñe, & de 108
tuis judiciis me doceto. Anima mea in tuis 109
manibus eſt omni tempore, & legē tuam non
ſum oblitus. Poſuerunt mihi peccatores la- 110
queos, à tuis tamen præceptis non deflexi.
Hæreditariò poſſedi teſtimoniū tuum in æ- 111
ternum, quoniam hilaritas eſt cordis mei. Re- 112
duxi cor meum ad exequenda mandata tua in
perpetuum cum veritate. * *Semcath* * Odio 113
perſequutus ſum iniquos, legémque tuam di-
lexi. Defenſio mea & refugiū meum tu es, & 114
verbum tuum ſperavi. Abſcedite à me ſcele- 115
ſti, ut cuſtodiam præcepta Dei mei.

Versio VULG. LAT.

87 Paulominùs conſummaverunt me in terra: ego autẽ non dereliqui mandata
88 tua. Secundũ miſericordiã tuã vivifica me: & cuſtodiam teſtimonia oris tui.
89 LAMED. In æternũ, Dñe, verbum
90 tuũ permanet in cœlo. In generationẽ et generationẽ veritas tua: fundâſti ter-
91 rã, & permanet. Ordinatione tuâ perſeverat dies: quoniam omnia ſerviunt
92 tibi. Niſi quòd lex tua meditatio mea eſt: tunc fortè periiſſem in humilitate
93 mea. In æternũ non obliviſcar juſtificationes tuas: quia in ipſis vivificâſti
94 me. Tuus ſum ego, ſalvũ me fac: quo-
95 niã juſtificationes tuas exquiſivi. Me expectaverunt peccatores ut perderẽt
96 me: teſtimonia tua intellexi. Omnis conſummationis vidi finẽ: latum man-
97 datũ tuũ nimis. MEM. Quomodò dilexi legẽ tuã, Dñe? totâ die medi-
98 tatio mea eſt. Sup inimicos meos prudentẽ me feciſti mandato tuo: quia in
99 æternũ mihi eſt. Super omnes docentes me intellexi: quia teſtimonia tua me-
100 ditatio mea eſt. Super ſenes intellexi:
101 quia mandata tua quæſivi. Ab omni via mala prohibui pedes meos: ut cuſto-
102 diam verba tua. A judiciis tuis non de-
103 clinavi: quia tu legẽ poſuiſti mihi. Quã dulcia faucibus meis eloquia tua, ſuper
104 mel ori meo! A mandatis tuis intellexi, propterea odivi omnẽ viã iniquitatis.
105 NUN. Lucerna pedib⁹ meis verbũ
106 tuũ, & lumen ſemitis meis. Juravi, &
107 ſtatui cuſtodire judicia juſtitiæ tuæ. Humiliat⁹ ſũ uſquequaque, Dñe: vivifica
108 me ſecundùm verbũ tuũ. Voluntaria oris mei beneplacita fac, Domine: et ju-
109 dicia tua doce me. Anima mea in manibus meis ſemper: & legem tuã non
110 ſum oblitus. Poſuerunt peccatores laqueum mihi: & de mandatis tuis non
111 erravi. Hæreditate acquiſivi teſtimonia tua in æternum: quia exultatio cor-
112 dis mei ſunt. Inclinavi cor meum ad faciendas juſtificationes tuas in æternum, propter retributionem.
113 SAMECH. Iniquos odio habui: &
114 legem tuam dilexi. Adjutor, & ſuſceptor meus es tu: & in verbum tuum
115 ſuperſperavi. Declinate à me maligni: & ſcrutabor mandata Dei mei.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

87 † Παρὰ βραχὺ συνετέλεσάν με ἐν τῇ γῇ, † ἐγὼ δὲ
88 οὐκ ἐγκατέλιπον τὰς ἐντολάς σου. † Κατὰ τὸ ἔλεός σου ζῆσόν με, † καὶ φυλάξω τὰ μαρτύρια τοῦ στόματός
89 σου. † Εἰς τὸν αἰῶνα κύριε ὁ λόγος σου διαμένει
90 ἐν τῷ οὐρανῷ, † Εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν ἡ ἀλήθειά
91 σου. † ἐθεμελίωσας τὴν γῆν καὶ διαμένει. † Τῇ διατάξει σου διαμένει (κ) ἡμέρα, † ὅτι τὰ (λ) σύμ-
92 παντα δοῦλα σά. † Εἰ μὴ ὅτι ὁ νόμος σου μελέτη μου ἐστὶ, † τότε ἂν ἀπωλόμην ἐν τῇ ταπεινώσει μου.
93 † Εἰς τὸν αἰῶνα οὐ μὴ ἐπιλάθωμαι τῶν δικαιωμάτων
94 σου, † ὅτι ἐν αὐτοῖς ἔζησάς με. † Σός εἰμι ἐγὼ, σῶ-
95 σόν με, † ὅτι τὰ δικαιώματά σου ἐξεζήτησα. † Ἐμὲ ὑπέμειναν ἁμαρτωλοὶ τοῦ ἀπολέσαι με, † τὰ
96 μαρτύριά σου συνῆκα. † Πάσης συντελείας εἶδον
97 πέρας, † πλατεῖα ἡ ἐντολή σου σφόδρα. † Ὡς ἠγάπησα τὸν νόμον σου κύριε, † ὅλην τὴν ἡμέραν μελέτη μου
98 ἐστί. † Ὑπὲρ τοὺς ἐχθρούς μου ἐσόφισάς με τὴν ἐντολήν
99 σου, † ὅτι εἰς τὸν (μ) αἰῶνα ἐμή ἐστιν. † Ὑπὲρ πάντας τοὺς διδάσκοντάς με συνῆκα, † ὅτι τὰ μαρτύριά σου
100 μελέτη μου ἐστίν. † Ὑπὲρ πρεσβυτέρους συνῆκα, † ὅτι
101 τὰς ἐντολάς σου ἐξεζήτησα. † Ἐκ πάσης ὁδοῦ πονηρᾶς ἐκώλυσα τοὺς πόδας μου, † ὅπως ἂν φυλάξω
102 τοὺς λόγους σου. † Ἀπὸ τῶν κριμάτων σου οὐκ ἐξέκλινα,
103 † ὅτι σὺ ἐνομοθέτησάς με. † Ὡς (ν) γλυκέα τῷ λάρυγγί μου τὰ λόγιά σου, † ὑπὲρ μέλι τῷ στόματί
104 μου. † Ἀπὸ τῶν ἐντολῶν σου συνῆκα, † διὰ τοῦτο ἐμί-
105 σησα πᾶσαν ὁδὸν ἀδικίας (ξ). † Λύχνος τοῖς
106 ποσί μου ὁ νόμος σου, † καὶ φῶς ταῖς τρίβοις μου. † Ὤμοσα καὶ ἔστησα τοῦ φυλάξασθαι τὰ κρίματα τῆς δικαιο-
107 σύνης σου. † Ἐταπεινώθην ἕως σφόδρα † κύριε,
108 ζῆσόν με κατὰ τὸν λόγον σου. † Τὰ ἑκούσια τοῦ στόματός μου εὐδόκησον δὴ κύριε, † καὶ τὰ κρίματά σου δί-
109 δαξόν με. † Ἡ ψυχή μου ἐν ταῖς χερσί σου διαπαντὸς,
110 † καὶ τοῦ νόμου σου οὐκ ἐπελαθόμην. † Ἔθεντο ἁμαρτωλοὶ παγίδα μοι, † καὶ ἐκ τῶν ἐντολῶν σου οὐκ ἐπλα-
111 νήθην. † Ἐκληρονόμησα τὰ μαρτύριά σου εἰς τὸν αἰ-
112 ῶνα, † ὅτι ἀγαλλίαμα τῆς καρδίας μου εἰσίν. † Ἔκλινα τὴν καρδίαν μου τοῦ ποιῆσαι τὰ δικαιώματά
113 σου † εἰς τὸν αἰῶνα (ο) δι᾽ ἀντάμειψιν. † Παρα-
114 νόμους ἐμίσησα, τὸν δὲ νόμον σου ἠγάπησα. † Βοηθός μου, καὶ ἀντιλήπτωρ μου εἶ σύ, † εἰς τοὺς λόγους σου
115 (π) ἐπήλπισα. † Ἐκκλίνατε ἀπ᾽ ἐμοῦ πονηρευόμενοι, † καὶ (ϱ) ἐξερευνήσω τὰς ἐντολὰς τοῦ θεοῦ μου.

MS. A. (κ) ἡ ἡμέρα, (λ) σύμπαντα (μ) αἰῶνά μοι ἐστίν. (ν) γλυκεῖα (ξ) † ὅτι σὺ ἐνομοθέτησάς με. Λύχνος (ο) δι᾽ ἀντάμειψιν. (π) ἐφήλπισα (ϱ) ἐξεραυνήσω.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

87 Paulominùs conſummaverunt me in terra: ego autẽ non dereliqui mandata tua. 88 Secundùm miſericordiã tuam vivifica me: & cuſtodiam teſtimonia oris tui. 89 In æternũ, Dñe, verbũ tuum permanet in cœlo: 90 In generationem & generationem veritas tua. Fundâſti terram, & permanet: 91 Ordinatione tuâ perſeverat dies: quoniam (p) omnia ſerviunt tibi. 92 Niſi quòd lex tua [e] meditatio mea eſt, tunc (b) utique periiſſẽ in humilitate mea. 93 In æternum non obliviſcar juſtificationes tuas: quia in ipſis vivificâſti me. 94 Tuus ſum ego: ſalvũ me fac: quoniã juſtificationes tuas exquiſivi. 95 (r) Me ſuſtinuerũt peccatores, ut perderet me: [f] teſtimonia tua intellexi. 96 [g] Omnis (ſ) conſummationis vidi finem: latũ mandatũ tuũ valdè. 97 (t) Quomodò dilexi legẽ tuã, Domine? totâ die [h] meditatio mea eſt. 98 Super inimicos meos (u) ſapere me feciſti mandatum tuum: quoniã in æternũ, (x) meũ eſt. 99 Super omnes docentes me intellexi: quia teſtimonia tua meditatio mea eſt. 100 Super [i] ſeniores intellexi: quia mandata tua exquiſivi. 101 Ab omni via mala (y) prohibui pedes meos: ut cuſtodiam verba tua. 102 A judiciis tuis nõ declinavi, quia tu legem [k] poſuiſti mihi. 103 Quàm dulcia faucib⁹ meis eloquia tua, ſuper mel [l] ori meo! 104 A mandatis tuis intellexi: propterea odio habui omnẽ viã iniquitatis. 105 Lucerna pedib⁹ meis (z) lex tua, & lumen ſemitis meis. 106 Juravi, et ſtatui cuſtodire judicia juſtitiæ tuæ. 107 Humiliatus ſum uſq; valdè, Domine: vivifica me ſecundùm verbũ tuum. 108 [m] Voluntaria oris mei beneplacita fac, Domine: & judicia tua doce me. 109 Anima mea in manibus (ω) tuis ſemper: et legis tuæ non ſum oblitus. 110 Poſuerunt peccatores laqueũ mihi: et à mandatis tuis non erravi. 111 Hæreditate acquiſivi teſtimonia tua in æternũ: quia exultatio cordis mei ſũt. 112 Inclinavi cor meũ ad faciendas juſtificationes tuas in æternum, [n] propter retributionem. 113 Iniquos odio habui, et legẽ tuam dilexi. 114 Adjutor meus, et ſuſceptor meus es tu: in verba tua ſuperſperavi. 115 Declinate à me maligni, et ſcrutabor mandata Dei mei.

Verſio ÆTHIOPICA.

87 ሕቀ:ክሞ:ዘእምደምሰሱኒ:ውስተ:ምድ 87
88 ር::ወአንሰ:ኢኀደጉ:ትእዛዝከ::=፡ በከ 88
ሙ:ምሕረትከ:አሕይወኒ::ወእዕቀብ:ስ
89 ምዐ:አፉከ::=፡ ፲፪ ላሜድ እግዚ 89
90 አ:ለዓለም:ይነብር:ቃልከ:ውስተ:ሰማ
ይ::=፡ ወለትውልደ:ትውልድ:ጽድቅከ:: 90
91 ሳረርካ:ለምድር:ወትነብር::=፡ ወበትእ 91
ዛዝከ:ይቀውም:ዕለት::እስመ:ኵሉ:ቀ
92 ነይከ::=፡ ሶበ:አኮ:ሕግከ:ተምህርየ:ው 92
እቱ :: ትካት : እምተሐጕልኩ : በኅሳር
93 የ::=፡ ለዓለም:ኢይረስዕ:ኵነኔከ::እስ 93
94 መ:ቦቱ:አሕየውከኒ::=፡ ዚአከ:አነ:አ 94
ድኅነኒ::እስመ:ኵነኔከ:ኀሠሥኩ::=፡
95 ኪያየ:ይፀንሑ:ኃጥአን:ይቅትሉኒ::እስመ፡ 95
ስምዐከ:ለበውኩ::=፡ ለኵሉ:ግብር:ር 96
96 ኢኩ:ማኅለቅቶ::ወትእዛዝከሰ:ርኅብ:
ፈድፋደ::=፡ ፲፫ ሜም: ጥቀ:አፍቀ 97
97 ርኩ:ሕግከ:እግዚኦ::ኵሎ:አሚረ:ተም
98 ሀርየ:ውእቱ::=፡ እምጸላእትየ:አጥበ 98
በኒ:ትእዛዝከ::እስመ:ለዓለም:ሊተ:ው
99 እቱ::=፡ እምኵሎሙ:እለ:መሀሩኒ:ጠ 99
በብኩ::እስመ:ተምሃርየ:ውእቱ:ትእዛዝ
100 ከ::=፡ ወእምልሂቃን:ጠበብኩ::እስ 100
መ:ትእዛዘከ:ኀሠሥኩ::=፡ እምኵሉ: 101
101 ፍኖት:ዐመፃ:ከላእኩ:እግርየ::ከመ:እዕ
102 ቀብ:ነቢብከ::=፡ ወኢተግሕስኩ:እም 102
103 ኵነኔከ::እስመ:አንተ:መሀርከኒ::=፡ ጥ 103
ዑም:ለጕርዔየ:ነቢብከ::እምዐር:ወሶከ
104 ር:ጥዕመኒ:ለአፉየ::=፡ ወእምትእዛዝ 104
ከ:ለበውኩ::በእንተዝ:ኵሎ:ፍኖተ:ዐመ
105 ፃ:ጸላእኩ::=፡ ፲፬ ኖን ማኅቶት:ለ 105
106 እግርየ:ሕግከ::ብርሃን:ለፍኖትየ::=፡ መ 106
107 ሐልኩ:ወአጥባዕኩ:ከመ:እዕቀብ:ኵነኔ:
ጽድቅከ::=፡ ሐመምኩ:ፈድፋደ::እ 107
108 ግዚኦ:አሕይወኒ:በከመ:ነቢብከ::=፡ ሥ 108
ምር:እግዚኦ:ቃለ:አፉየ::ወምህረኒ:ኵነ
109 ኔከ::=፡ ነፍስየ:ውስተ:እዴከ:በኵሉ: 109
110 ጊዜ::ወኢረሳዕኩ:ሕግከ::=፡ ሠርዑ:ሊ 110
ተ:ኃጥአን:መሥገርተ::ወኢስሕትኩ:እም
111 ትእዛዝከ::=፡ ወረስኩ:ስምዐከ:ለዓለ 111
ም::እስመ:ሐሤቱ:ለልብየ:ውእቱ::=፡
112 ሚጥኩ:ልብየ:ከመ:እግበር:ትእዛዝከ:: 112
ለዓለም:ዘእንበለ:ሐስ::=፡ ፲፭ ሳም 113
113 ኬት: ዓማፂያነ:ጸላእኩ:ወሕግከሰ:አፍ
ቀርኩ::=፡ ረዳኢየ:ወምስካይየ:አንተ:: 114
114 ወበቃልከ:ተወከልኩ::=፡ ተገሐሱ:እም 115
115 ኔየ:ዐማፂያን::ወእኀሠሥ:ትእዛዘ:ለ
አምላኪየ::=፡

INTERP. ÆTHIOP. [e] inſtitutio mea; jam olim in contemptu meo periiſſem. [f] quoniam teſtimonia [g] Omnium rerum vidi [h] inſtitutio mea [i] ductores [k] docuiſti me. [l] & ſaccharum ſapiunt mihi in ore meo. [m] Gratus ſit Domine ſermo oris mei, [n] non propter beneficium.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

الا قليلا ابادوني علي الارض وانا لم اهمل وصاياك * نظير رحمتك احيني يا رب فاحفظ شهادات 87 88
فمك * الفصل الثاني عشر * وهو ر * كلمتك يا رب دايمة في السموات الي الابد * وعدلك ثابت 89 90
من جيل الي جيل اسست الارض فهي ثابتة * وبامرك والنهار ايضا ثابت لان كل الاشياء متعبدة 91
لك * لولا ان ناموسك درسي لهلكت في مذلتي * فالي الدهر لا انسي حقوقك لان بها احييتني 92 93
يا رب * خلصني يا رب فاني انا لك اني طلبت حقوقك * وقف لي الخطاة لاهلاكي وشهاداتك 94 95
فهمتها * رايت لكل تمام انقضا * ووصاياك واسعة جدا * الفصل الثالث عشر * وهو م * 96
* محبوب هو اسمك يا رب فهو جميع النهار درسي * علمني وصاياك افضل من اعداي لانها 97 98
ثابتة لي الي الابد * فهمت اكثر من جميع الذين يعلموني لان شهاداتك هي تلاوتي * فهمت 99 100
افضل من الشيوخ لاني طلبت وصاياك * منعت رجلي من كل طريق سوء لكيما احفظ كلامك * 101
* لم احد عن احكامك لانك انت وضعت لي شرعا * كلامك حلو في حنجرتي افضل من الشهد 102 103
في فمي * فهمت من وصاياك فلهذا ابغضت كل طرق الظلم لانك وضعت لي ناموسا * 104
* الفصل الرابع عشر * وهو ن * ناموسك هو مصباح لرجلي ونور لسبلي * اقسمت وثبت 105 106
لحفظ احكام فرايضك * ذللت جدا الي الغاية فاحيني يا رب نظير قولك * اقسام فمي تباركها يا رب 107 108
علمني احكامك * نفسي بيدك في كل حين * وناموسك لم انسه * نصب لي الخطاة فخا ولم اعدل 109 110
عن وصاياك * ورثت شهاداتك الي الابد لان بها بهجة نفسي * املت قلبي لاصنع شهاداتك 111 112
من اجل مجازاة موبدة * الفصل الخامس عشر * وهو س * ابغضت مخالفي الناموس 113
واحببت ناموسك * لانك انت معيني وناصري وعلي كلامك توكلت * حيدوا عني ايها الاشرار 114 115
فافحص عن وصايا الاهي *

* Parum abfuit quin perderent me ſuper terram, attamen ego nunquam neglexi mandata tua. Secundùm miſericordiã tuam vivifica me, O Domine, et cuſtodiam teſtimonia oris tui. Sect. xii. Ver. 7. Verbum tuum, O Domine, perpetuum eſt in cœlis ad æternitatem, Et juſtitia tua firma à generatione in generationem: fundâſti terram, éſtque ſtabilis Imperio tuo. et dies quoq; perſtans eſt: quia res omnes ſubjectæ ſunt tibi. Niſi lex tua meum eſſet exercitiũ, ſanè periiſſem in humilitate mea. In æternum non obliviſcar decreta tua, quia per ipſa vivificâſti me, O Domine. Salva me, O Domine, quia ego ſum tuus, ſiquidẽ quæſivi decreta tua. Steterunt mihi peccatores ad perdendum me, et teſtimonia tua intellexi. Vidi omni perfectioni finẽ, at præcepta tua ſunt ampla ſupra modum. Sect. xiii V. 3. Amabile eſt nomen tuũ, O Dñe, ideò ipſum totâ die meditatio mea eſt. Doce me mandata tua meliùs quàm inimicos meos, quoniã ipſa ſunt firma mihi in æternum. Intellexi pluſquàm omnes qui me docent, quia teſtimonia tua ſunt meditatio mea. Intellexi pluſquàm ſenes, quia quæſivi mandata tua. Prohibui pedes meos ab omni via mala, ut cuſtodiã eloquiũ tuũ; Non declinavi à judiciis tuis, quia tu poſuiſti mihi legẽ. Eloquium tuum dulce eſt in gutture meo, pluſquã favus in ore meo. Intellectum acquiſivi à mandatis tuis, & proptereà odi omnes vias perverſitatis, quia poſuiſti mihi legem. Sect. xiv. Ver. 3. Lex tua eſt fax pedibus meis, & lumen ſemitis meis. Juravi et perſtiti in obſervantia judiciorũ conſtitutionum tuarum. Humiliatus ſum valdè ad ſupremum uſque terminum, vivifica me, O Domine, ſecundùm ſermonẽ tuum. Juramenta oris mei benedicas, O Domine, doce me judicia tua. Anima mea in manu tua eſt in omni tempore, & legem tuam non ſum oblitus. Erexerunt mihi peccatores laqueum, et non declinavi à præceptis tuis. Hæreditariò poſſedi teſtimonia tua in æternum, quia in ipſis eſt hilaritas animæ meæ. Inclinavi cor meum ad perficienda teſtimonia tua propter retributionem æternam. Sectio xv. Ver. 8. Odio habui refractarios legis, & dilexi legem tuam: Quia tu es adjutor meus & auxiliator meus, & ſermoni tuo ſum fretus. Declinate à me, O maligni, & ſcrutabor mandata Dei mei.

87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115

תהלים : קיט

,me *Suſtenta*.mea *ſpe* à me afficias pudore ne &:vivam & ,tuũ *dictum* ſecundùm me *Fulcito*
116 סמכני כאמרתך ואחיה ואל־תבישני משברי: סעדני
117 errantes omnes Conculcâſti .ſemper tuis ſtatutis in *ſolatiabor* & : ſervabor & 116
118 ואושעה ואשעה בחקיך תמיד: סלית כל־שוגים 117
impios omnes feciſti ceſſare Scorias .eorum dolus *falſitas* quia :tuis ſtatutis à 118
119 מחקיך כי־שקר תרמיתם: סגים השבת כל־רשעי־
tuis judiciis à & : mea caro *tuo pavore à* Horruit .tua teſtimonia dilexi ideo : terræ 119
120 ארץ לכן אהבתי עדתיך: סמר מפחדך בשרי וממשפטיך
Fidejube .me opprimentibus me *permittas* ne : juſtitiam &,judicium Feci .timui 120
121 122 יראתי: עשיתי משפט וצדק בל־תניחני לעשקי: ערב
: tuam ſalutem ad defecerunt mei Oculi .ſuperbi *me opprimant* ne : bonum in *tuo ſervo* 121
123 עבדך לטוב אל־יעשקני זדים: עיני כלו לישועתך 122
, tuam miſericordiam ſecundùm tuo ſervo cum Fac .tuæ juſtitiæ eloquium ad &
124 ולאמרת צדקך: עשה עם־עבדך כחסדך 123
.tua teſtimonia ſciam &:me intelligere fac ,ego tuus Servus .me doce tua ſtatuta & 124
125 וחקיך למדני: עבדך־אני הבינני ואדעה עדתיך: 125
tua præcepta dilexi Ideo .tuam legem diſſipaverunt :Domino faciendi Tempus
126 127 עת לעשות ליהוה הפרו תורתך: על־כן אהבתי מצותיך 126
ſemitam omnem : *direxi* omnia , præcepta omnia Propterea .*obrizo præ & ,auro præ* 117
128 מזהב ומפז: על־כן כל־פקודי כל ישרתי כל־ארח 118
.mea anima ea cuſtodivit ideo : tua teſtimonia Mirabilia .habui odio *falſitatis*
119 שקר שנאתי: פלאות עדותיך על־כן נצרתם נפשי:
: reſpiravi & ,*patefeci* meum Os .ſimplices *erudiens* ,*illuminabit* tuorum verborũ Apertio 129
130 131 פתח דבריך יאיר מבין פתיים: פי פערתי ואשאפה 130
jus ſecundùm : mei miſerere & me ad Aſpice .deſideravi tua præcepta ad quia
132 כי למצותיך יאבתי: פנה־אלי וחנני כמשפט 131
non & : tuo eloquio in firma meos Greſſus .tuum nomen diligentes erga 132
133 לאהבי שמך: פעמי הכן באמרתך ואל־ 133
: hominis oppreſſione ab me Redime .iniquitas omnis *me in imperium exercebit*
134 תשלט־בי כל־און: פדני מעשק אדם 134
me doce & , tuo ſervo *in* lucêre fac *tuas* Facies .tua præcepta cuſtodiam & 135
135 ואשמרה פקודיך: פניך האר בעבדך ולמדני את־
non quod propterea : meis oculis deſcenderunt aquarum *Pelagi* .tua ſtatuta 136
136 חקיך: פלגי־מים ירדו עיני על לא־
.*tua judicia* rectum & : Domine *tu* Juſtus .tuam legem cuſtodierunt 137
137 שמרו תורתך: צדיק אתה יהוה וישר משפטיך: 138
: meus zelus me Succidit .valde veritatem & : tua teſtimonia juſtitiam Præcepiſti 139
138 139 צוית צדק עדתיך ואמונה מאד: צמתתני קנאתי
, valde *tuum dictum Purificatum* .mei hoſtes tuorum verborum ſunt obliti quia 140
140 כי־שכחו דבריך צרי: צרופה אמרתך מאד 141
non tuorum præceptorũ : deſpectus & , *ego* Parvulus .*illud* dilexit tuus ſervus & 142
141 ועבדך אהבה: צעיר אנכי ונבזה פקדיך לא 143
Afflictio .veritas tua lex & : ſeculum in juſtitia tua juſtitia .ſum oblitus
142 שכחתי: צדקתך צדק לעולם ותורתך אמת: צר־ 144
143 tuorũ teſtimoniorũ Juſtitia.meæ delectationes tua præcepta:me invenerunt anguſtia &
144 ומצוק מצאוני מצותיך שעשעי: צדק עדותיך
.vivam & , me fac intelligere:ſeculum in
לעולם הבינני ואחיה:

תרגום TARGUM.

116 סמוך יתי במימרך ואחי ולא תבהית יתי מן
117 כליותי: סעוד יתי ואתפרק ואנעע באוריתך
118 תדירא: כבשתא כל דשלין מגזרתך ארום
119 שקרא נכלהון: פסוליא פסקתא בטלתא
כל רשיעי ארעא מטול היכנא רחימית
120 סהדותך: מצלהב מדחלך בסרי ומדינך
121 דחלית: עבדית דינא וצדקתא לא תשבקנני
122 לטלומי: בסים עבדך לטבא לא יטלמון
123 יתי זידונין: עיני סברו לפורקנך ולמימר
124 צדקך: עבד עם עבדך היך חסדך וגזרתך
125 אליף יתי: עבדך אנא תבין יתי ואידע
126 סהדותך: עדן למעבד רעותא דיי אפיסו
117 תלמידיא אוריתך: מטול היכנא רחימית
118 פקודיך מדהבא ומן אובריזא: מטול היכנא
כל פקודיא כולהון התרצתנון כל אורח
129 שקרא סניתי: פרישן סהדותך מטול היכנא
130 נטרתנון נפשי: גליף דבריך ינהר חשיכיא
131 יתבין שרניני: פומי פתחית ואלפית ארום
132 לפקודיך צביתי: אתפני לותי וחוס עלי
133 כהלכתא לרחימי שמך: אסתורי אתקין
134 במימרך ולא תשליט בי כל שקר: פרוק
135 יתי מטלומא דבר נשא ואטור פקודיך: זיו
136 אפך אנהר בעבדך ואלפני ית גזרתך: טיפי
מיא יחתון עיני על מטול דלא נטרו
137 138 אוריתא: זכי את יי ותריצין דינך: פקדתא
139 צדקתא דסהדותך והימנותא לחדא: מגרת
יתי טננתי ארום אתנשיאו דבריך מעיקי:
140 141 סנינא מימרך לחדא ועבדך רחמיה: זוטר
142 אנא ובסיר פקודיך לא אתנשיתי: צדקתך
143 צדקא לעלמא ואוריתך קשוט: עקא ומעיקא
144 ערעו יתי פקודיך פרנוקי: צדקתא דסהדותך
לעלם תבינני ואתקים:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Suſtenta me in verbo tuo, & vivam: & ne 116 confundas me ab expectatione mea. Adjuva 117 me, & ſalvus ero: & meditabor in ſtatutis tuis ſemper. Conculcâſti omnes aber- 118 rantes à præceptis tuis, quoniam mendax eſt deceptio eorum. Idola confregiſti, abole- 119 viſti omnes impios terræ; propterea dilexi teſtimonia tua. Inflammatur præ timo- 120 re tui caro mea, & à judiciis tuis timui. HAIN. Feci judicium & juſtitiam: ne de- 121 ſeras me calumniatoribus meis. *Lætifica* 122 *ſervum tuum* in bonum; ne calumnia me opprimant ſuperbi. Oculi mei ſperaverunt 123 in redemptione tua, & in verbo juſtitiæ tuæ. Age cum ſervo tuo ſecundùm miſeri- 124 cordiam tuam, & præcepta tua doce me. Servus tuus ego ſum, da mihi intellectum, 125 & ſciam teſtimonia tua. Tempus eſt facien- 126 di voluntatem Domini: *profanârunt* diſcipuli Legem tuam. Propterea dilexi man- 127 data tua ſuper aurum & obrizum. Propter- 128 eà omnia mandata tua, ea [*inquam*] omnia direxi, omnem viam iniquam odio habui. PHE. Mirabilia teſtimonia tua, pro- 129 pterea cuſtodivit ea anima mea. Impreſſio 130 verbi tui illuminabit obſcuros, dabit intellectum ſimplicibus. Os meum aperui 131 & didici, quoniam mandata tua volui. Reſpice me, & miſerere mei, pro con- 132 ſuetudine [*tua*] erga diligentes nomen tuum. Greſſus meos dirige in verbum 133 tuum, & ne des poteſtatem in me ulli iniquitati. Redime me à calumnia hominum, 134 & cuſtodiam mandata tua. Splendorem 135 faciei tuæ lucere fac in ſervo tuo, & doce me decreta tua. Fluenta aquarum 136 emittant oculi mei, quoniam non cuſtodierunt Legem [*tuam*.] SADE. Juſtus es 137 tu Domine, & recta judicia tua. Præce- 138 piſti juſtitiam teſtimoniorum tuorum, & veritatem valdè. Diſſipavit me zelus meus, 139 quoniam obliti ſunt verbi tui moleſtatores mei. Purum eſt verbum tuum valdè, & 140 ſervus tuus dilexit illud. Parvulus ego ſum 141 & contemptus; mandata tua non ſum oblitus. Juſtitia tua juſtitia in æternum, & 142 Lex tua veritas eſt. Oppreſſio & anguſtia 143 evenerunt mihi: mandata tua deliciæ meæ ſunt. Juſtitia *teſtimoniorum tuorum* in æter- 144 num: intellectum da mihi, & vivam.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

116 [illegible]
117 118 [illegible]
119 120 [illegible]
121 [illegible]
122 123 [illegible]
124 125 [illegible]
126 [illegible]
127 128 [illegible]
129 [illegible]
130 131 [illegible]
132 [illegible]
133 134 [illegible]
135 136 [illegible]
137 138 [illegible]
139 [illegible]
140 141 [illegible]
142 [illegible]
143 144 [illegible]
[illegible]

Corrobora me verbo tuo, ac vivam, & ne me 116 fruſtres ſpe meâ. Suffulci me, ac ſalvabor, & 117 erudiar mandatis tuis. Omni tempore Sum 118 aſpernat⁹ quoſcũq; aberrantes à te, quia crimẽ eſt cura eorũ. Fulci me, & ſervabor, atq; me- 119 ditabor ſemper tua præcepta. Horruit caro 120 mea præ formidine tua, & judicia tua extimui. * *Ee* * O faciens judicium & æqui- 121 tatem, ne me deſeras in manu oppreſſorum meorum. Oblecta ſervum tuum bonis, ut ne 122 criminentur me ſuperbi. Oculi mei expecta- 123 verunt ſalutem tuam, & ſermonem juſtitiæ tuæ. Age cum ſervo tuo pro tua miſericordia, 124 & doce me legem tuam. Servus tuus ſum, 125 erudi me ut ſciam teſtimonium tuum. Tem- 126 pus eſt colendi Dominum, at ecce abrogârunt legem tuam; Ideò amavi præcepta tua 127 pluſquam aurum, & pluſquam lapides optimos: Omnia mandata tua dilexi, omnémque 128 viam ſceleſtorum odi. * *Phe* * Prægran- 129 dia ſunt teſtimonia tua, idcircò ſervavit ea anima mea. Aperi verbum tuum, & illumi- 130 na atque erudi pueros. Os meum aperui 131 traxíque ſpiritum, & expectavi ſalutem tuam. Convertere ad me, & miſerere mei: 132 quia dilexi nomen tuum. Confirma greſſus 133 meos in ſemitis tuis, ne dominetur mihi nefarius. Libera me à tyrannide hominis, ut cu- 134 ſtodiam mandata tua. Nitêre fac vultum tu- 135 um ſuper ſervum tuum, & doce me legem tuam. Rivi aquarum prodierunt ex oculis 136 meis, eò quòd non cuſtodierint legem tuam. * *Sſode* * Juſtus es, Domine, & maximè 137 recta ſunt judicia tua; Præcepiſti teſtimo- 138 nium tuum cum æquitate & fide. Cruciavit 139 me zelus omni tempore, quia obliti ſunt verbum tuum hoſtes tui. Selectiſſimum eſt ver- 140 bum tuum, & ſervus tuus amavit illud. Par- 141 vus ſum atq; deſpectus; attamen præcepta tua non ſum oblitus. Juſtitia tua permanet in 142 æternum, & lex tua cum veritate. Anguſtia 143 & mœror aſſecuti ſunt me, tuáque præcepta ſum contemplatus. Æquum eſt teſtimonium 144 tuum in æternum, erudi me ac vivam.

Verſio VULG. LAT.

Suſcipe me ſecundùm eloquium tuum,
116 & vivã : & non confundas me ab ex-
pectatione mea. Adjuva me,& ſalv⁹ e-
117 ro:& meditabor in juſtificationib⁹ tu-
is ſemper. Spreviſti omnes diſcedentes
118 à judiciis tuis : quia injuſta cogitatio
eorũ. Prævaricantes reputavi omnes
119 peccatores terræ: ideò dilexi teſtimo-
nia tua. Confige timore tuo carnes me-
120 as:à judiciis enim tuis timui. AIN.
Feci judiciũ & juſtitiã:non tradas me
121 calumniantib⁹ me. Suſcipe ſervũ tuũ
122 in bonũ:non calumnientur me ſuper-
bi. Oculi mei defecerunt in ſalutare
123 tuũ:& in eloquium juſtitiæ tuæ. Fac
124 cum ſervo tuo ſcđm miſericordiã tuã:
& juſtificationes tuas doce me. Serv⁹
125 tu⁹ ſum ego:da mihi intellectũ, ut ſciã
teſtimonia tua. Tempus faciendi,Dñe:
126 diſſipaverunt legẽ tuam. Ideò dilexi
127 mandata tua, ſuper aurũ & topazion.
Propterea ad omnia mandata tua di-
128 rigebar: omnẽ viã iniquã odio habui.
PHE. Mirabilia teſtimonia tua :
129 ideò ſcrutata eſt ea anima mea. Decla-
130 ratio ſermonũ tuorũ illuminat: & in-
tellectũ dat parvulis. Os meũ aperui,
131 & attraxi ſpiritum : quia mandata tua
deſiderabã. Aſpice in me,& miſerere
132 meî, ſecundùm judiciũ diligentiũ no-
mẽ tuũ. Greſſus meos dirige ſecundũ
133 eloquiũ tuum : & non dominetur meî
omnis injuſtitia. Redime me à calum-
134 niis hominũ :ut cuſtodiã mandata tua.
Faciẽ tuã illumina ſuper ſervũ tuũ:&
135 doce me juſtificationes tuas. Exitus a-
136 quarũ deduxerũt oculi mei: quia non
cuſtodierũt legẽ tuã. SADE. Juſt⁹
137 es,Dñe:& rectũ judiciũ tuũ.Mandâſti
138 juſtitiã teſtimonia tua: & veritatẽ tuã
nimis. Tabeſcere me fecit zel⁹ meus:
139 quia obliti ſunt verba tua inimici mei.
Ignitũ eloquiũ tuũ vehemẽter:& ſer-
140 vus tu⁹ dilexit illud.Adoleſcentul⁹ ſum
141 ego,& contempt⁹:juſtificationes tuas
non ſum oblitus. Juſtitia tua, juſtitia
142 in æternũ:& lex tua veritas. Tribula-
143 tio & anguſtia invenerunt me : man-
data tua meditatio mea eſt. Æquitas
144 teſtimonia tua in æternũ: intellectum
da mihi, & vivam.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

116 † Ἀντιλαβοῦ μου κατὰ τὸ λόγιόν σου, καὶ ζῆσόν με, † καὶ
117 μὴ καταισχύνῃς με ἀπὸ τῆς προσδοκίας μου. † Βοήθη-
σόν μοι, καὶ σωθήσομαι, † καὶ μελετήσω ἐν τοῖς δικαι-
118 ώμασί σου διαπαντός. † Ἐξουδένωσας πάντας τοὺς
ἀποστατοῦντας ἀπὸ τῶν δικαιωμάτων σου, † ὅτι ἄδικον
119 τὸ ἐνθύμημα αὐτῶν. † Παραβαίνοντας ἐλογισάμην
πάντας τοὺς ἁμαρτωλοὺς τῆς γῆς, † διὰ τοῦτο ἠγάπησα
120 τὰ μαρτύριά σου. † Καθήλωσον ἐκ τοῦ φόβου σου τὰς
σάρκας μου, † ἀπὸ γὰρ τῶν κριμάτων σου ἐφοβήθην.
121 † Ἐποίησα κρίμα καὶ δικαιοσύνην, † μὴ παραδῷς με
122 τοῖς ἀδικοῦσί με. † (ʹ) Ἔνδεξαι τὸν δοῦλόν σου εἰς ἀ-
123 γαθὸν, † μὴ συκοφαντησάτωσάν με ὑπερήφανοι. † Οἱ
ὀφθαλμοί μου ἐξέλιπον εἰς τὸ σωτήριόν σου, † καὶ εἰς
124 τὸ λόγιον τῆς δικαιοσύνης σου. † Ποίησον μετὰ τοῦ δού-
λου σου (σ) κατὰ τὸ ἔλεός σου, † καὶ τὰ δικαιώματά σου
125 δίδαξόν με. † Δοῦλός σου εἰμὶ ἐγὼ, συνέτισόν με,
126 † καὶ γνώσομαι τὰ μαρτύριά σου. † Καιρὸς τοῦ ποιῆσαι
127 τῷ κυρίῳ, † διεσκέδασαν τὸν νόμον σου. † Διὰ τοῦτο ἠ-
γάπησα τὰς ἐντολάς σου | ὑπὲρ (ʺ) χρυσίον καὶ τοπάζιον.
128 † Διὰ τοῦτο πρὸς πάσας τὰς ἐντολάς σου κατωρθού-
129 μην, † πᾶσαν ὁδὸν ἄδικον ἐμίσησα. † Θαυμαστὰ τὰ
μαρτύριά σου, † διὰ τοῦτο (τ) ἐξηρεύνησεν αὐτὰ ἡ ψυχή
130 μου. † Ἡ δήλωσις τῶν λόγων σου φωτιεῖ καὶ συνετιεῖ
131 νηπίους. † Τὸ στόμα μου (υ) ἤνοιξα, καὶ εἵλκυσα
132 πνεῦμα, † ὅτι τὰς ἐντολάς σου ἐπεπόθουν. † Ἐπί-
βλεψον ἐπ' ἐμὲ καὶ ἐλέησόν με, † κατὰ τὸ κρίμα τῶν
133 (φ) ἀγαπώντων τὸ ὄνομά σου. † Τὰ διαβήματά μου
κατεύθυνον κατὰ τὸ λόγιόν σου, † καὶ μὴ κατακυ-
134 ριευσάτω μου πᾶσα ἀνομία. † Λύτρωσαί με ἀπὸ
συκοφαντίας ἀνθρώπων, † καὶ φυλάξω τὰς ἐντολάς
135 σου. † Τὸ πρόσωπόν σου ἐπίφανον ἐπὶ τὸν δοῦλόν
136 σου, † καὶ δίδαξόν με τὰ δικαιώματά σου. † Δι-
εξόδους ὑδάτων (χ) κατέβησαν οἱ ὀφθαλμοί μου,
137 † ἐπεὶ οὐκ ἐφύλαξα τὸν νόμον σου. † Δίκαιος
138 εἶ κύριε, καὶ εὐθεῖς αἱ κρίσεις σου. † Ἐνετείλω δι-
καιοσύνην τὰ μαρτύριά σου, † καὶ ἀλήθειαν σφόδρα.
139 † Ἐξέτηξέ με (ψ) ὁ ζῆλός σου, † ὅτι ἐπελάθοντο
140 (ω) τῶν λόγων σου οἱ ἐχθροί μου. † Πεπυρωμένον τὸ
λόγιόν σου σφόδρα, † καὶ ὁ δοῦλός σου ἠγάπησεν αὐ-
141 τό. † Νεώτερος ἐγώ εἰμι καὶ ἐξουδενωμένος, † τὰ
142 δικαιώματά σου οὐκ ἐπελαθόμην. † Ἡ δικαιοσύνη
σου δικαιοσύνη εἰς τὸν αἰῶνα, † καὶ ὁ νόμος σου
143 ἀλήθεια. † Θλίψεις καὶ ἀνάγκαι εὕροσάν με, † (α)
144 ἐντολαί σου μελέτη μου. † Δικαιοσύνη τὰ μαρτύρια
σου εἰς τὸν αἰῶνα, † συνέτισόν με καὶ (β) ζήσομαι.

MS.A. (ʹ) Ἔκδεξαι (σ) κύριε κατὰ τὸ λόγιόν σου, (ʺ) τὸ χρυσίον (τ) ἐξηραύνησεν (υ) ἤνυξα, καὶ ἤλκυσα (φ) ἀγαπώντων (χ) διέβησαν (ψ) ὁ ζῆλος τοῦ οἴκου σου, (ω) τῶν ἐντολῶν σου (α) αἱ ἐντολαί σου (β) ζῆσόν με.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

116 Suſcipe me ſecundùm (aaa)elo- 116
quium tuũ, & (b) vivifica me: &
ne confundas me ab expectatione
mea. 117 Adjuva me,et ſalvus ero: 117
et meditabor in juſtificationibus tuis
ſemper. 118 (c)[o] Ad nihilum de- 118
duxiſti omnes diſcedentes à juſtifi-
cationibus tuis: quia injuſta cogitatio
eorũ. 119 (d)[p]Prævaricantes re- 119
putavi omnes peccatores terræ: ideò
dilexi teſtimonia tua. 120 Confige(e) 120
clavis à timore tuo carnes meas : à
judiciis enim tuis timui. 121 Feci 121
(f) judicium, & juſtitiã : ne tradas
me(g)iis[q]qui mihi injuriã faciũt.
122 (h)[r]Excipe ſervum tuum in 122
bonum:non calumnientur me ſuperbi.
123 Oculi mei defecerunt in ſaluta- 123
re tuum, et in eloquium juſtitiæ tuæ.
124 Fac cum ſervo tuo ſecundùm 124
miſericordiã tuã:& juſtificationes
tuas doce me. 125 Serv⁹ tu⁹ ſum e- 125
go: da mihi intellectum; & ſciã te-
ſtimonia tua. 126 Tempus faciendi 126
(i) Domino: (k)diſſipaverunt legem
tuã. 127 Ideò dilexi mandata tua 127
ſuper aurum, & topazion. 128 Pro- 128
pterea ad omnia mandata tua dirige-
bar : omnẽ viã iniquam odio habui.
129 Mirabilia teſtimonia tua : ideò 129
ſcrutata eſt ea anima mea. 130 Mani- 130
feſtatio ſermonum tuorum (l)illumi-
nabit, & intelligere faciet parvulos.
131 Os meum aperui,et attraxi ſpi- 131
ritũ : quia mandata tua deſiderabã.
132 Reſpice in me,et miſerere mei: 132
ſecundũ judicium diligentiũ nomen
tuum. 133 [ſ] Greſſus meos dirige 133
ſecundũ eloquium tuũ:& non domi-
netur mei omnis iniquitas. 134 Redi- 134
me me à calumnia hominum : &
cuſtodiam mandata tua. 135 Fa- 135
ciẽ tuã illumina ſuper ſervũ tuũ:et
doce me juſtificationes tuas. 136 Ex- 136
itus aquarũ (m) deſcenderunt oculi
mei, quia non(n)cuſtodivi legẽ tuã.
137 Juſtus es,Domine,et recta ju- 137
dicia tua. 138 [t]Mandâſti juſtitiã 138
teſtimonia tua, & veritatem valdè.
139 [v]Tabefecit me (o)zelus tuus, 139
quia obliti ſunt verba tua inimici
mei. 140 (p)Ignitum eloquium tuũ 140
valdè:& ſervus tuus dilexit illud.
141 Junior ego ſum,& contempt⁹: 141
juſtificationes tuas non ſum oblitus.
142 Juſtitia tua, juſtitia in æternũ, 142
& [x]lex tua veritas. 143 Tribula- 143
tio, & neceſſitates invenerunt me:mandata tua (y) meditatio mea eſt. 144 Juſtitia 144
teſtimonia tua in æternum : intellectum da mihi, (q) & vivam.

Verſio ÆTHIOPICA.

116 ተወከፈኒ፡ በከመ፡ ነቢብከ፡ ወአሕየው፡፡ወ 116
ኢታስተኃፍረኒ ፡ እምተስፋየ፡፡=፡ ርድአ 117
ኒ፡ወአድኅነኒ፡፡ወአነብብ፡ በኵነኔከ፡ በኵ
117 ሉ፡ጊዜ፡፡=፡ አኅሰርኮሙ፡ለኵሎሙ፡አ 118
118 ለ፡ይርሕቁ፡ እምትእዛዝከ፡፡እስመ፡ ዐመ
ፃ፡ፍትወቶሙ፡፡=፡ ዐላዊያን፡አሙንቱ፡ኵ 119
ሎሙ፡ኃጥአን፡ምድር፡፡በእንተዝ፡አፈቀር
119 ኩ፡ስምዐከ፡፡=፡ አውድድ፡ ውስተ፡ሥጋ 120
120 የ፡ ፈሪሆተከ፡፡እስመ፡ ፈራህኩ፡ እምኵነኔ
ከ፡፡=፡ ፲፮ ዔ፡ ገበርኩ ፡ ፍትሐ፡ ወጽ 121
121 ድቀ፡፡ኢትመጥወኒ፡ ለእለ፡ ይሣቅዩኒ፡፡=፡
ፀንሶ፡ ለገብርከ፡ ውስተ፡ ሠናይ፡፡ወኢይት 122
ዐገሉኒ፡ዕቡያን፡፡=፡ ደክማ፡ አዕይንትየ፡ 123
122 ለአድኅኖትከ፡፡ወለቃለ፡ጽድቅከ፡፡=፡ ግ 124
123 በር፡ለገብርከ፡ በከመ፡ ምሕረትከ፡፡ወምህ
ረኒ፡ኵነኔከ፡፡=፡ ገብርከ፡አነ፡አለብወኒ፡፡ 125
124 ወአአምር፡ስምዐከ፡፡=፡ ጊዜ፡ለገቢር፡ለ 126
እግዚአብሔር፡፡ወአለው፡ሕገከ፡፡=፡ በእ 127
125 ንተዝ፡ አፈቀርኩ፡ ትእዛዘከ፡፡እምወርቅ፡
126 ወእምጳዝዮን፡፡=፡ በእንተዝ፡አርተዕኩ፡ 128
ኃበ፡ኵሉ፡ ትእዛዝከ፡፡ኵሉ፡ ፍኖተ፡ዐመ
127 ፃ፡ጸላእኩ፡፡=፡ ፲፯ ፌ፡ መንክር፡ስም 129
128 ዐከ፡፡በእንተዝ፡ኀሠሠቶ፡ ነፍስየ፡፡=፡ ነገ 130
ረ፡ቃልከ፡ያበርህ፡ወያጠብብ፡ ሕፃናተ፡፡=፡
129 አፈየ፡ከሠትኩ፡ወነፍስየ፡አናሕኩ፡፡እስመ፡ 131
130 ትእዛዘከ፡አፈቀርኩ፡፡=፡ ነጽር ፡ ላዕሌየ፡ 132
ወተሣሀለኒ፡፡በከመ፡ ፍትሖሙ፡ ለእለ፡ ያፈ
ቅሩ፡ስመከ፡፡=፡ አርትዕ፡ ፍኖትየ ፡ ወሑረ 133
131 ትየ፡በከመ፡ ነቢብከ፡፡ወኢይመልከኒ፡ኵሉ፡
132 ኃጢአት፡፡=፡ አድኅነኒ፡ እምትእግልተ፡ 134
እጓለ ፡ እምሕያው ፡፡ ወአዐቅብ ፡ ትእዛዘ
133 ከ፡፡=፡ አብርህ፡ ገጸከ፡ ላዕለ፡ ገብርከ፡፡ 135
ወምህረኒ፡ኵነኔከ፡፡=፡ ሙሐዘ፡ ማይ፡ ወ 136
134 ረደ ፡ እምአዕይንትየ፡፡ወእምአኮሰ፡ እመ፡
135 ኢዐቀብኩ ፡ ሕገከ፡፡=፡ ፲፰ ጻዴ፡ ጻ 137
ድቅ፡እንተ፡እግዚኦ፡ወርቱዕ፡ኵነኔከ፡፡=፡
136 ወአሕዘዝከ ፡ ስምዐከ፡ በጽድቅ፡፡ ወርቱዕ፡ 138
ፈድፋደ፡፡=፡ መሰወኒ፡ቅንአተ፡ቤትከ፡፡እ 139
ስመ፡ረስዑ፡ትእዛዘከ፡ጸላእትየ፡፡=፡ ርሱ 140
137 138 ን ፡ ቃልከ ፡ ፈድፋደ፡፡ ወገብርከሰ ፡ አፈቀ
ሮ፡፡=፡ ወሬዛ፡ አነ ፡ ወትሑት፡፡ ወሕገከ 141
139 ሰ፡ ኢረሳዕኩ፡፡=፡ ጽድቅከሰ፡ ጽድቅ፡ ዘ 142
ለዓለም፡፡ወቃልከኒ ፡ እሙን፡ ውእቱ፡፡=፡
140 ሕማም፡ ወምንደቤ፡ ረከበኒ፡፡ወትእዛዝከ 143
141 ሰ፡ ተመሀርየ ፡ ውእቱ፡፡=፡ ጽድቅ፡ ውእ 144
ቱ፡ ስምዕከ፡ ለዓለም፡፡አለብወኒ ፡ ወአሕ
142 ይወኒ፡፡=፡
143

INTERP.ÆTHIOP. [o] Spreviſti omnes diſcedentes à præceptis tuis: quia deſiderium eorum eſt injuſtum. [p] Prævaricantes ſunt omnes [q] qui excruciant me. [r]Suſtenta ſervum [ſ]Dirige viam meã, & greſſus meos [t]Continuiſti teſtimonia tua in juſtitia, & rectus es valdè. [v]Liquefecit me zelus domûs tuæ,quia obliti ſunt præcepta tua [x] verbum tuum [y] doctrina mea

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

116 117 * أعضدني كقولك فأحيا ولا تخيب رجاي * أعني فأخلص وادرس في فرايضك في كل حين *
118 119 * رذلت كل الذين حادوا عن سننك لان فكرهم الظلم * عددت جميع الارض خطاة كفرة
120 لذلك احببت شهاداتك في كل حين * اقشعر جسمي من خشيتك لاني خفت احكامك يا رب *
121 122 * الفصل السادس عشر وهو ح * صنعت حكما وعدلا فلا تسلمني الى الظالمين لي * اقبل
123 عبدك اليك في الخير لئلا يغضب على المتعظمون * عيناي فنيتا الى خلاصك وقول عدلك *
124 125 * اصنع مع عبدك نظير رحمتك وعرفني حقوقك * انا هو عبدك افهمني فاعلم شهاداتك *
126 127 * هذا زمان يعبد فيه الرب فقد عطلوا سننك * من اجل هذا احببت وصاياك افضل من
128 الذهب والجوهر * ومن اجل هذا قمت في جهة وصاياك جميعها وابغضت كل طرق الظلم *
129 130 * الفصل السابع عشر وهو ح * شهاداتك عجايب لذلك فحصتها نفسي * اعلان
131 132 كلامك يضيء لي ويفهم الاطفال * فتحت فاي واستنشقت روحا لاني اشتقت الى وصاياك * انظر
133 الي وارحمني كمثل حكم محبي اسمك يا رب * قوم خطواتي الى طرقك فلم تتسلط علي كل
134 135 الاثام * انقذني من بغي البشر فاحفظ وصاياك * انر وجهك على عبدك وعرفني حقوقك *
136 * عيناي غاصت في مخارج المياه لاني لم احفظ ناموسك * الفصل الثامن عشر وهو ر
137 138 * انت عدل يا رب ومستقيم حكمك * امرت بالعدل والحق جدا في شهاداتك * غيرة بيتك
139 140 141 اذابتني لان اعداي نسوا وصاياك * قولك مجرب جدا وعبدك احبه * انا صغير مرذول ولم
142 143 انس وصاياك * عدلك حق هو الى الابد وكلامك حق هو * احزان وشدايد لحقتني فكانت
144 وصاياك قراءتي * شهاداتك صادقات الى الابد افهمني فاحيا *

Fulci me juxta ſermonem tuum et vivam, 116
& ne fruſtres ſpem meam. Adjuva me & 117
ſalvabor, et meditabor decreta tua in omni
tempore. Contempſi omnes qui deviârunt à 118
legibus tuis,quia cogitatio eorum eſt perver-
ſitas. Totam terrã reputavi infidelem,id ò 119
dilexi teſtimonia tua in omni tempore. Horruit corpus meum præ formidine tua , quia 120
extimui teſtimonia tua,O Domine. Sectio
decimaſexta. Verſ.3. *Feci judicium et ju-* 121
ſtitiam ; ne igitur me tradas opprimentibus
me. Accipe ſervum tuum ad te, in bonum: 122
ut ne excandeſcant mihi ſuperbi. Oculi mei 123
defecerunt intenti *ad ſalutem tuam et ſer-*
monem juſtitiæ tuæ. Age cum ſervo tuo ſe- 124
cundùm miſericordiam tuam,et notas mihi
fac veritates tuas. Ego ſum ſervus tuus, 125
intellectum da mihi & ſciam teſtimonia
tua. Hoc eſt tempus quo colendus eſt Deus, 126
jam enim abrogârunt leges tuas. Propterea 127
dilexi mandata tua pluſquam aurum &
gemmas. Et propterea ſteti à partibus o- 128
mnium præceptorum tuorum, & odi omnes
vias perverſitatis. Sectio decimaſeptima.
Verſ.8. *Teſtimonia tua mira ſunt , ideò* 129
ſcrutata eſt ea anima mea. Manifeſtatio 130
ſermonis tui elucet mihi, et intellectum dat
parvulis. Aperui os meum et attraxi aurã, 131
quia cupivi mandata tua. Reſpice in me et 132
miſerere mei ſecundùm judicium diligen-
tium nomen tuum, O Domine. Dirigas paſ- 133
ſus meos ad vias tuas, non enim dominatæ
ſunt mihi omnes iniquitates. Libera me à 134
calumnia hominum , & ſervabo mandata
tua. Illumina faciem tuam ſuper ſervum 135
tuum, & nota fac mihi ſtatuta tua. Oculi 136
mei immerſi ſunt in ſcatebras aquarum,quia
ego non cuſtodivi legem tuam. Sectio de-
cimaoctava. Ver.7. *Tu es juſtiſſimus , O* 137
Domine, & rectum judicium tuum. Præ- 138
cepiſti juſtitiam & veritatem ſummopere
in teſtimoniis tuis. Zelus domûs tuæ liqua- 139
vit me : eò quòd inimici mei obliti ſunt
mandata tua. Sermo tuus probatus eſt val- 140
dè, & ſervus tuus dilexit illum. Ego par- 141
vus ſum, contemptus, & non ſum oblitus
mandata tua. Æquitas tua vera eſt in æ- 142
ternum , & ſermo tuus verus eſt. Mœro- 143
res & tribulationes ſecutæ ſunt me,& fue-
runt mandata tua lectio mea. Teſtimonia 144
tua vera ſunt in æternum,intelligere fac me
& vivam.

145 , te Invocavi .cuſtodiam tua ſtatuta : Domine me exaudi ; corde toto in Clamavi
146 קראתי בכל־לב ענני יהוה חקיך אצרה: קראתיך 145
: clamavi & , crepuſculo *in* Præveni .tua teſtimonia cuſtodiam & : me ſerva
147 הושיעני ואשמרה עדתיך: קדמתי בנשף ואשועה 146 147
meditandum ad : vigilias mei oculi Prævenerunt .expectavi tuum verbum *ad*
148 לדבריך יחלתי: קדמו עיני אשמרות לשיח
Domine : tuam miſericordiam ſecundùm audi meam Vocem .tuo *dicto* in 148
149 באמרתך: קולי שמעה כחסדך יהוה 149
; *nefarium cogitatum* ſequentes Appropinquaverunt .me vivifica tuum judicium ſecundũ 150
150 כמשפטך חיני: קרבו רדפי זמה
tua præcepta omnia & : Domine tu *Propinquus* .ſe elongaverunt tua lege à 151
151 מתורתך רחקו: קרוב אתה יהוה וכל־מצותיך 152
Vide .ea fundâſti ſeculum in quia:tuis teſtimoniis de novi Anteà .veritas
152 153 אמת: קדם ידעתי מעדתיך כי לעולם יסדתם: ראה 153
, *meam litem Litiga* .ſum oblitus non tuæ legis quia : me erue &,meam afflictionem 154
154 עניי וחלצני כי־תורתך לא שכחתי: ריבה ריבי 155
: ſalus impiis ab eſt Longè .me vivifica tuum eloquium propter : me redime &
155 וגאלני לאמרתך חיני: רחוק מרשעים ישועה 156
: Domine multæ tuæ Miſericordiæ .quæſierunt non tua ſtatuta quia 157
156 כי־חקיך לא דרשו: רחמיך רבים יהוה 158
tuis teſtimoniis à:mei hoſtes &,me perſequentes Multi.me vivifica tua judicia ſecundũ
157 כמשפטיך חיני: רבים רדפי וצרי מעדותיך 159
non tuum eloquium quia : ſum affectus tædio & prævaricantes Vidi .declinavi non
158 לא נטיתי: ראיתי בגדים ואתקוטטה אשר אמרתך לא 160
tuam miſericordiam ſecundũ Domine : dilexi tua præcepta quia ,Vide .cuſtodierunt
159 שמרו: ראה כי־פקודיך אהבתי יהוה כחסדך 161
Principes .tuæ juſtitiæ judicium omne ſeculum in &:veritas tui verbi *Caput* .me vivifica 162
160 161 חיני: ראש־דברך אמת ולעולם כל־משפט צדקך: שרים 163
ſuper *ego Gaudens* .meum cor *expavit* tuo verbo à & : gratis me ſunt perſecuti
162 רדפוני חנם ומדבריך פחד לבי: שש אנכי על־ 164
: ſum abominatus & , odivi *Falſitatem* .*multum ſpolium inveniens* ſicut :tuo eloquio 165
163 אמרתך כמוצא שלל רב: שקר שנאתי ואתעבה
.tuæ juſtitiæ judicia ſuper : te laudavi die in Septies .dilexi tuam legem
164 תורתך אהבתי: שבע ביום הללתיך על משפטי צדקך: 166
Speravi .offenſio eis non & : tuam legem diligentibus multa Pax 167
165 166 שלום רב לאהבי תורתך ואין למו מכשול: שברתי
:tua teſtimonia mea anima Cuſtodivit .feci tua præcepta &:Domine tuam ſalutẽ *in* 168
167 לישועתך יהוה ומצותיך עשיתי: שמרה נפשי עדתיך 169
meæ viæ omnes quia:tua teſtimonia &,tua præcepta Cuſtodivi .vehementer ea diligo & 170
168 ואהבם מאד: שמרתי פקודיך ועדתיך כי כל־דרכי
tuum verbum ſecundùm : Domine *tuas facies ad* meus clamor Appropinquet .te coram 171
169 נגדך: תקרב רנתי לפניך יהוה כדברך 172
tuum eloquium ſecundùm : *tuas facies ad* mea deprecatio Veniat .me fac intelligere
170 הבינני: תבוא תחנתי לפניך כאמרתך
Reſpondebit .tua ſtatuta me docueris cum : laudem mea labia Eructabunt .me erue
171 172 הצילני: תבענה שפתי תהלה כי תלמדני חקיך: תען
.juſtitia tua mandata omnia quia : tuum eloquium mea lingua
לשוני אמרתך כי כל־מצותיך צדק:

תרגום TARGUM

145 קריתי בכל לבא עני יתי יי גזרתך אנטור :
146 147 קריתך פרוק יתי ואנטור סהדותך : אקדמית
בשפרפרא וצליתי לפתגמך אוריכית :
148 אקדימו עיני מטרתא דצפר ורמש למללא
149 במימרך : קלי שמע היך חסדך יי היך
150 דינך קיים יתי : קריבו רדפי זנו מאוריתך
151 אתרחקו : קריב את יי וכל פקודיך קשוט :
152 מן לקדמין חכימית מן סהדותך ארום
153 לעלם יסדתינון : חמי סגופי ופצי יתי ארום
154 אוריתך לא אתנשיתי : נצי מצותי ופרוק
155 יתי למימרך אסי יתי : רחיק מן רשיעי
156 פורקנא ארום גזרתך לא תבעו : רחמך
157 סגיעין יי היך דינך אסי יתי : סגיעין רדפי
158 ומעיקי מסהדותך לא אצליתי : חמיתי בזוזי
159 ואדיניית עמהון די מימרך לא נטרו : חמי
ארום פקודיך רחימית יי היך חסדך אסי
160 יתי : שרוי פתגמך קשוט ולעלם כל דיני
161 צדקתך : רברבין רדפו יתי מגן ומפתגמך
162 דלח לבי : חדי אנא על מימרך היך גבר
163 דמשכח עדי סגי : שקרא סניתי ורחקית
164 אוריתך רחימית : שבע זמנין ביומא
165 שבחית יתך מטול דיני צדקך : שלם סגי
לרחמי אוריתך בעלמא הדין ולית להון
166 תקלא לעלמא דאתי : סבירית לפורקנך
167 יי ופקודיך עבדית : נטרת נפשי סהדותך
168 ורחמנון לחדא : נטרית פקודיך וסהדותך
169 ארום כל אורחתי לקבלך : תתקרב צלותי
170 קדמך יי היך פתגמך תבינני : תיתי צלותי
171 קדמך היך מימרך פצי יתי : תבעין ספותי
172 תושבחתא ארום תלפנני גזירתך : תתיב
לישני מימרך ארום כל דינך צדקתא :

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

COPH. Clamavi in toto corde, exaudi 145
me Domine, decreta tua cuſtodiam. Invo- 146
cavi te, redime me, & cuſtodiam teſtimonia
tua. Præveni in aurora, & oravi, & ver- 147
bum tuum expectavi. Anticipaverunt ocu- 148
li mei vigilias matutinas & veſpertinas,
ut loquerer de verbo tuo. Vocem meam 149
audi ſecundùm miſericordiam tuam Do-
mine : ſecundùm judicia tua vivifica me.
Appropinquaverunt qui ſequuntur ſcelus : 150
à Lege tua longè facti ſunt. Propè es tu 151
Domine, & omnia mandata tua veritas.
A principio cognitionem conſecutus ſum 152
de teſtimoniis tuis, quòd in æternum fun-
daveris ea. RES. Vide afflictionem me- 153
am, & libera me; quia Legem tuam non
ſum oblitus. Age cauſam meam, & redime 154
me : in verbo tuo *ſana* me. Longè ab im- 155
piis abeſt ſalus, quoniam mandata tua non
exquiſierunt. Miſericordiæ tuæ multæ ſunt 156
Domine : ſecundùm judicia tua *ſana* me.
Multi perſecutores mei & moleſtatores mei 157
ſunt, à teſtimoniis tuis non declinavi. Vidi 158
direptores & certavi cum eis, quòd ver-
bum tuum non obſervâſſent. Vide quo- 159
niam mandata tua dilexi, Domine, ſecun-
dùm miſericordiam tuam *ſana* me. Prin- 160
cipium verbi tui veritas, & in æternum
omnia judicia juſtitiæ tuæ. SIN. Princi- 161
pes perſecuti ſunt me ſine cauſa, verbum
autem tuum timuit cor meum. Lætor ego 162
in verbo tuo, ſicut vir qui invenit ſpolia
multa. Falſitatem odio habui & abominatus 163
ſum, Legem tuam dilexi. Septies in die 164
laudem dixi tibi, propter judicia juſtitiæ
tuæ. Pax multa diligentibus Legem tuam 165
in mundo hoc : & non eſt illis ſcandalum
in mundo venturo. Expectavi redemptio- 166
nem tuam, Domine, & mandata tua exe-
cutus ſum. Cuſtodivit anima mea teſti- 167
monia tua, & diligam ea vehementer. Ser- 168
vavi mandata tua & teſtimonia tua, quo-
niam omnes viæ meæ in conſpectu tuo ſunt.
THAU. Appropinquet oratio mea coram 169
te, Domine, ſecundùm verbum tuum da
mihi intellectum. Veniat oratio mea in con- 170
ſpectum tuum, ſecundùm verbum tuum li-
bera me. Effundent labia mea hymnum, 171
quoniam docebis me præcepta tua. Nar- 172
rabit lingua mea verbum tuum, quoniam omnia judicia tua juſtitia ſunt.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

145 146 *ܩ* ܩܪܝܬܟ ܡܢ ܟܠܗ ܠܒܝ ܡܪܝܐ ܥܢܝܢܝ ܕܐܛܪ ܦܘܩܕܢܝܟ : * ܩܪܝܬܟ
147 ܦܪܘܩܝܢܝ ܕܐܛܪ ܣܗܕܘܬܟ. * ܩܡܬ ܒܨܦܪܐ ܘܩܥܝܬ ܘܣܟܝܬ ܠܡܠܬܟ : * ܩܕܡܘ ܥܝܢܝ
148 149 ܠܡܛܪܬܐ ܕܐܪܢܐ ܒܡܠܬܟ. * ܫܡܥ ܩܠܝ ܡܪܝܐ ܐܝܟ ܪܚܡܝܟ ܘܒܕܝܢܝܟ ܐܚܝܢܝ : * ܩܪܒܘ
150 151 ܪܕܘܦܝ ܒܝܫܐ ܘܡܢ ܢܡܘܣܟ ܐܬܪܚܩܘ. * ܩܪܝܒ ܐܢܬ ܡܪܝܐ ܘܟܠܗܘܢ ܦܘܩܕܢܝܟ
152 ܒܩܘܫܬܐ : ܩܕܡܘ ܥܝܢܝ ܠܡܛܪܬܐ ܕܐܪܢܐ ܒܡܠܬܟ. * ܡܢ ܩܕܝܡ ܝܕܥܬ ܣܗܕܘܬܟ
153 ܕܠܥܠܡ ܐܩܝܡܬܗ : *ܪ* * ܚܙܝ ܡܘܟܟܝ ܘܦܨܝܢܝ ܡܛܠ ܕܢܡܘܣܟ ܠܐ
154 155 ܛܥܝܬ. * ܕܘܢ ܕܝܢܝ ܘܦܪܘܩܝܢܝ ܘܒܡܠܬܟ ܐܚܝܢܝ : * ܪܚܝܩ ܗܘ ܦܘܪܩܢܐ ܡܢ ܚܛܝܐ
156 ܡܛܠ ܕܠܐ ܒܥܘ ܦܘܩܕܢܝܟ. * ܣܓܝܐܝܢ ܐܢܝܢ ܪܚܡܝܟ ܡܪܝܐ ܘܒܕܝܢܝܟ ܐܚܝܢܝ :
157 158 * ܣܓܝܘ ܪܕܘܦܝ ܘܒܥܠܕܒܒܝ ܘܡܢ ܣܗܕܘܬܟ ܠܐ ܣܛܝܬ. * ܚܙܝܬ ܠܥܘܠܐ
159 ܘܐܣܬܟܠܬ ܕܡܠܬܟ ܠܐ ܢܛܪܘ : * ܚܙܝ ܕܪܚܡܬ ܦܘܩܕܢܝܟ ܡܪܝܐ ܘܒܛܝܒܘܬܟ ܐܚܝܢܝ.
160 161 * ܪܫ ܡܠܬܟ ܩܘܫܬܐ ܘܠܥܠܡ ܟܠܗܘܢ ܕܝܢܐ ܕܙܕܝܩܘܬܟ : *ܫ* * ܪܘܪܒܢܐ
162 ܪܕܦܘܢܝ ܡܓܢܐܝܬ ܘܡܢ ܡܠܬܟ ܕܚܠ ܠܒܝ. * ܚܕܝܬ ܒܡܐܡܪܟ ܐܝܟ ܗܘ
163 164 ܕܡܫܟܚ ܒܙܬܐ ܣܓܝܐܬܐ : * ܥܘܠܐ ܣܢܝܬ ܘܐܣܬܠܝܬ ܘܢܡܘܣܟ ܪܚܡܬ. * ܫܒܥ
165 ܙܒܢܝܢ ܒܝܘܡܐ ܫܒܚܬܟ ܥܠ ܕܝܢܝܟ ܐܘ ܟܐܢܐ : * ܣܓܝ ܗܘ ܫܝܢܐ ܠܐܝܠܝܢ ܕܪܚܡܝܢ
166 ܢܡܘܣܟ ܘܠܝܬ ܠܗܘܢ ܬܘܩܠܬܐ. * ܣܒܪܬ ܠܦܘܪܩܢܟ ܡܪܝܐ ܘܦܘܩܕܢܝܟ ܥܒܕܬ :
167 168 * ܢܛܪܬ ܢܦܫܝ ܣܗܕܘܬܟ ܘܪܚܡܬܗ ܛܒ ܛܒ. * ܢܛܪܬ ܦܘܩܕܢܝܟ ܘܣܗܕܘܬܟ ܘܟܠܗܘܢ
169 ܐܘܪܚܬܝ ܩܕܡܝܟ : *ܬ* * ܬܥܘܠ ܬܫܒܘܚܬܝ ܩܕܡܝܟ ܡܪܝܐ ܘܒܡܠܬܟ ܐܚܝܢܝ.
170 172 * ܬܥܘܠ ܒܥܘܬܝ ܩܕܡܝܟ ܘܒܡܐܡܪܟ ܦܪܘܩܝܢܝ : * ܢܒܥ ܠܫܢܝ ܡܐܡܪܟ ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ
171 ܦܘܩܕܢܝܟ ܒܙܕܝܩܘܬܐ : * ܢܡܠܠܢ ܣܦܘܬܝ ܬܫܒܘܚܬܟ ܡܐ ܕܐܠܦܬܢܝ ܦܘܩܕܢܝܟ.

* *Qoph* * Invocavi te ex toto corde meo : 145
Domine exaudi me, ut cuſtodiã mandata tua.
Vocavi te, ſalva me : ut obſervem teſtimoniũ 146
tuum. Surrexi ſummo manè & clamavi, atque 147
expectavi tuum verbum. Præceſſerunt oculi 148
mei vigiliam, ut meditarer eloquium tuum.
Audi vocem meã Domine juxta miſerationes 149
tuas, & judiciis tuis vivifica me. Acceſſerunt 150
perſequutores mei peſſimi, & à lege tua receſ-
ſerunt. Vicinus es tu *quoq;* Domine, & omnia 151
tua mandata in veritate. Prævenerunt oculi
mei vigiliam, ut contemplarer eloquium tuũ.
Jampridẽ agnovi teſtimoniũ tuum, quoniam 152
ab æterno ſtatuiſti illud. * *Riſc* * Vide 153
humilitatem meam, & eripe me, quia legem
tuam non ſum oblitus. Judica judicium meũ 154
& vindica me, tuóq; verbo me vivifica. Re- 155
mota eſt ſalus à ſceleſtis, quia non petierunt
mandata tua. Copioſæ ſunt miſerationes tuæ 156
Domine, quare judiciis tuis vivifica me. Mul- 157
tiplicati ſunt perſequutores mei atque hoſtes
mei, *tamen* à teſtimonio tuo non deflexi. Con- 158
ſideravi iniquos, & percepi ſermonem tuum
haud ſervari ab eis. Vide quòd amaverim tua 159
præcepta Dñe : ideò ex bonitate tua vivifica
me. Initium eloquii tui veritas & in æternum 160
ſunt cuncta judicia æquitatis tuæ. * *Scin* *
Magnates inſecuti ſunt me gratìs, verbum au- 161
tem tuum extimuit cor meum. Lætatus ſum de 162
ſermone tuo ſicut is qui reperit ſpolia opima.
Iniquitatem odi atq; abominatus ſum, legem 163
verò tuã dilexi. Septies in die laudavi te ob 164
judicia tua, ô Juſtiſſime. Multa eſt tranquilli- 165
tas eorum qui amant legem tuã, & non eſt eis
infirmitas. Speravi ſalutem tuã Dñe, & man- 166
data tua ſum executus. Servavit anima mea 167
teſtimonium tuũ, & dilexit illud vehementer.
Cuſtodivi tua præcepta & teſtimonia tua, 168
omnéſq; viæ meæ ſunt coram te. **Tau** In- 169
grediatur laus mea in conſpectum tuum Dñe,
& verbo tuo vivifica me. Intret ſupplicatio 170
mea in conſpectum tuum, & ſermone tuo ſal-
va me. Depromet lingua mea eloquium tuum, 172
quia univerſa mandata tua ſunt cum juſtitia.
Loquentur labia mea laudes tuas, cùm docu- 171
eris me tua præcepta.

Versio VULG. LAT.

COPH. Clamavi in toto corde
145 meo, exaudi me, Dñe: justificationes
146 tuas requiram. Clamavi ad te, salvum
147 me fac: ut custodiā mandata tua. Præ-
veni in maturitate, & clamavi: quia
148 in verba tua supersperavi. Prævene-
runt oculi mei ad te diluculò: ut medi-
149 tarer eloquia tua. Vocem meam audi
secundùm misericordiam tuam, Dñe:
& secundùm judiciū tuū vivifica me.
150 Appropinquaverunt persequentes me
iniquitati: à lege autem tua longè facti
151 sunt. Propè es tu, Domine: & omnes
152 viæ tuæ veritas. Initio cognovi de te-
stimoniis tuis: quia in æternum fundâ-
153 sti ea. RES. Vide humilitatem
meam, & eripe me: quia legem tuā non
154 sum oblitus. Judica judicium meū, &
redime me: propter eloquiū tuū vivifi-
155 ca me. Longè à peccatoribus salus: quia
justificationes tuas non exquisierunt.
156 Misericordiæ tuæ multæ, Dñe: secundū
157 judiciū tuū vivifica me. Multi qui per-
sequuntur me, & tribulant me: à testi-
158 moniis tuis non declinavi. Vidi præva-
ricantes, & tabescebam: quia eloquia
159 tua non custodierunt. Vide quoniam
mādata tua dilexi, Domine: in miseri-
160 cordia tua vivifica me. Principiū ver-
borum tuorum, veritas: in æternum
omnia judicia justitiæ tuæ. SIN.
161 Principes persecuti sunt me gratìs: &
162 à verbis tuis formidavit cor meum. Læ-
tabor ego super eloquia tua: sicut qui
163 invenit spolia multa. Iniquitatem odio
habui, & abominatus sum: legem autē
164 tuā dilexi. Septies in die laudem dixi
165 tibi, sup judicia justitiæ tuæ. Pax multa
diligentibus legē tuā: & non est illis
166 scandalū. Expectabā salutare tuū, Dñe:
167 & mandata tua dilexi. Custodivit ani-
ma mea testimonia tua: & dilexit ea
168 vehementer. Servavi mandata tua, et
testimonia tua: quia omnes viæ meæ in
169 conspectu tuo. TAU. Appropin-
quet deprecatio mea in conspectu tuo,
Domine: juxta eloquium tuū da mihi
170 intellectū. Intret postulatio mea in cō-
spectu tuo: secundū eloquiū tuū eripe
171 me. Eructabunt labia mea hymnū, cū
172 docueris me justificationes tuas. Pro-
nuntiabit lingua mea eloquium tuum:
quia omnia mandata tua æquitas.

Versio GRÆC. LXX. Interp.

145 † Ἐκέκραξα ἐν ὅλῃ καρδίᾳ μου, ἐπάκουσόν μου κύ-
146 ριε, † τὰ δικαιώματά σου ἐκζητήσω. † Ἐκέκραξά
(γ) σοι, σῶσόν με, καὶ φυλάξω τὰ μαρτύριά σου.
147 † Προέφθασα ἐν ἀωρίᾳ καὶ ἐκέκραξα, † εἰς τοὺς λό-
148 γους σου (δ) ἐπήλπισα. † Προέφθασαν οἱ ὀφθαλμοί μου
149 πρὸς ὄρθρον, † τοῦ μελετᾶν τὰ λόγιά σου. † Τῆς φω-
νῆς μου ἄκουσον κύριε κατὰ τὸ ἔλεός σου, † κατὰ τὸ κρί-
150 μά σου ζῆσόν με. † Προσήγγισαν οἱ καταδιώκοντές με
151 ἀνομίᾳ, † ἀπὸ δὲ τοῦ νόμου σου ἐμακρύνθησαν. † Ἐγγὺς
152 εἶ (ε) κύριε, καὶ πᾶσαι αἱ ὁδοί σου ἀλήθεια. † Κατ'
ἀρχὰς ἔγνων ἐκ τῶν μαρτυρίων σου, † ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα
153 ἐθεμελίωσας αὐτά. † Ἴδε τὴν ταπείνωσίν μου καὶ
154 ἐξελοῦ με, † ὅτι τοῦ νόμου σου οὐκ ἐπελαθόμην. † Κρῖνον
τὴν κρίσιν μου καὶ λύτρωσαί με, † διὰ τὸν λόγον σου ζῆσόν
155 με. † Μακρὰν ἀπὸ ἁμαρτωλῶν σωτηρία, † ὅτι τὰ
156 δικαιώματά σου οὐκ ἐξεζήτησαν. † Οἱ οἰκτιρμοί σου
157 πολλοὶ κύριε, † κατὰ τὸ κρίμα σου ζῆσόν με. † Πολλοὶ
οἱ ἐκδιώκοντές με καὶ (ζ) θλίβοντές με· † ἐκ τῶν μαρ-
158 τυρίων σου οὐκ ἐξέκλινα. † Εἶδον ἀσυνετοῦντας καὶ ἐξ-
159 ετηκόμην, † ὅτι τὰ λόγιά σου οὐκ ἐφυλάξαντο. † Ἴδε
ὅτι τὰς ἐντολάς σου ἠγάπησα † κύριε, ἐν τῷ ἐλέει
160 σου ζῆσόν με. † Ἀρχὴ τῶν λόγων σου ἀλήθεια, † καὶ εἰς
τὸν αἰῶνα πάντα τὰ κρίματα τῆς δικαιοσύνης σου.
161 † Ἄρχοντες κατεδίωξάν με δωρεάν, † καὶ ἀπὸ τῶν
162 λόγων σου ἐδειλίασεν ἡ καρδία μου. † Ἀγαλλιά-
σομαι ἐγὼ ἐπὶ τὰ λόγιά σου, † ὡς ὁ εὑρίσκων σκῦλα
163 πολλά. † Ἀδικίαν ἐμίσησα καὶ ἐβδελυξάμην, † τὸν δὲ
164 νόμον σου ἠγάπησα. † Ἑπτάκις τῆς ἡμέρας ᾔνεσά (η)
165 σε † ἐπὶ τὰ κρίματα τῆς δικαιοσύνης σου. † Εἰρήνη
πολλὴ τοῖς ἀγαπῶσι (θ) τὸν νόμον σου, † καὶ οὐκ ἔστιν
166 αὐτοῖς σκάνδαλον. † (ι) Προσεδόκων τὸ σωτήριόν
167 σου κύριε, † καὶ τὰς ἐντολάς σου ἠγάπησα. † Ἐφύλα-
ξεν ἡ ψυχή μου τὰ μαρτύριά σου, † καὶ ἠγάπησεν αὐτὰ
163 σφόδρα. † Ἐφύλαξα τὰς ἐντολάς σου καὶ τὰ μαρτύ-
ριά σου, † ὅτι πᾶσαι αἱ ὁδοί μου (κ) ἐναντίον σου κύ-
169 ριε. † (λ) Ἐγγισάτω ἡ δέησίς μου (μ) ἐνώπιόν
170 σου † κύριε, κατὰ τὸ λόγιόν σου συνέτισόν με. † Εἰσέλ-
θοι τὸ ἀξίωμά μου ἐνώπιόν σου † κύριε, κατὰ (ν) τὸ λό-
171 γιόν σου ῥῦσαί με. † Ἐξερεύξαιντο τὰ χείλη μου
ὕμνον, † ὅταν διδάξῃς με τὰ δικαιώματά σου.
172 † (ξ) Φθέγξαιτο ἡ γλῶσσά μου (ο) τὰ λόγιά σου,
† ὅτι πᾶσαι αἱ ἐντολαί σου δικαιοσύνη.

MS.A. (γ) σε, (δ) ἐφήλπισα. (ε) σὺ κύριε, καὶ πᾶσαι αἱ ἐντολαί σου (ζ) ἐκθλίβοντές με· (η) σοι (θ) τὸ ὄνομά σου, (ι) Προσεδόκουν (κ) ἐνώπιόν σου (λ) Ἐγγισάτω (μ) ἐναντίον σου (ν) τὸ κρίμα σου ζῆσόν με. Ἐξερεύξονται (ξ) Φθέγξεται (ο) τὸ λόγιόν σου,

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

145 Clamavi in toto corde meo, 145
exaudi me, Domine: justificationes tu-
as exquirā. 146 Clamavi (r) tibi, [z] 146
salvū me fac: & custodiā testimonia
tua. 147 [†] Præveni (s) in immaturi- 147
tate, & clamavi: in verba tua super-
speravi. 148 Prævenerunt oculi mei 148
ad matutinū, ut meditarer eloquia
tua. 149 Vocē meam audi, Domine, 149
secundū misericordiā tuā: secundū
judiciū tuū (t) vivifica me. 150 Ap- 150
propinquaverunt persequentes me (u)
iniquitate: à lege autē tua longè fa-
cti sunt. 151 Propè [aaa] es, Dñe: et 151
omnes viæ tuæ [b] veritas. 152 Ini- 152
tio cognovi de testimoniis tuis: quia
in æternum fundâsti ea. 153 Vi- 153
de humilitatē meā, & eripe me; quia
legem tuam non sum oblitus. 154 Ju- 154
dica judiciū meū, et redime me: (x)
propter verbū tuū vivifica me. 155
Longè à peccatoribus [c] salus; quia 155
justificationes tuas non exquisierunt.
156 Miserationes tuæ [d] multæ, Do- 156
mine: secundū (y) judiciū tuū vivi-
fica me. 157 Multi, qui persequuntur 157
me, et tribulant me: à testimoniis tuis
non declinavi. 158 Vidi (z) [e] in- 158
sensatos, et tabescebam, quia eloquia
tua non custodierunt. 159 Vide quo- 159
niam mandata tua dilexi, Domine: in
misericordia tua vivifica me. 160 160
Principium verborū tuorū veritas:
& in æternū omnia judicia justitiæ
tuæ. 161 Principes persequuti 161
sunt me gratìs: & à verbis tuis for-
midavit cor meum. 162 Exultabo e- 162
go super eloquia tua, sicut qui inve-
nit spolia multa. 163 Injustitiā odio 163
habui, & abominatus sum: legē autē
tuam dilexi. 164 (ω) Septies in die 164
(aaaa) laudavi te, super judiciū ju-
stitiæ tuæ. 165 Pax multa diligenti- 165
bus [f] legē tuā: & non est eis scan-
dalum. 166 Expectabā salutare tuū, 166
Domine: et mandata [g] tua dilexi.
167 Custodivit anima mea [h] te- 167
stimonia tua, & dilexit ea valdè.
168 Custodivi mandata tua, et testi- 168
monia tua: quia omnes viæ meæ in
conspectu tuo, Domine. 169 Ap- 169
propinquet oratio mea in conspectu
tuo, Domine: secundū eloquiū tuū
da mihi intellectū. 170 Intret postu- 170
latio mea in conspectu tuo, Domine:
secundùm eloquium tuum eripe me. 171 (b) Eructent labia mea [i] hymnū; cùm docueris me 171
justificationes tuas. 172 Pronuntiet lingua mea eloquia tua: quia omnia mādata tua justitia. 172

Versio ÆTHIOPICA.

፲፱ ቆፍ፡ ጸራኅኩ፡በኵሉ፡ ልብየ፡ ስምዐ 145
ኒ፡እግዚኦ፡፡ወኀሠሥኩ፡ኵነኔከ፡፡=፡ ጸ 146
ራኅኩ፡ኀቤከ፡ስምዐኒ፡ ወአድኅነኒ፡፡ወዐቀ
ብ፡ስምዐከ፡፡=፡ በጽሕኩ፡ ማእከለ፡ ሌድ 147
ባር ፡ ወከለሕኩ፡፡እስመ ፡ ቃለከ፡ ተሰፈው
ኩ፡፡=፡ በጽሐ፡አዕይንትየ፡ለገይስ፡፡ከመ፡ 148
አንብብ፡ቃለከ፡፡=፡ ስማዕ፡ እግዚኦ፡ ቃል 149
የ፡በከመ፡ ሣህልከ፡፡ወአሕይወኒ፡ በከመ፡ፍ
ትሕከ፡፡=፡ ቀርቡ፡እለ፡ ሮዱኒ፡በዐመፃ፡፡ 150
ወእምሕግከሰ፡ርሕቁ፡፡=፡ ቅሩብ፡አንተ፡ 151
እግዚኦ፡ ወርቱዕ፡ ኵሉ፡ ፍናዊከ፡፡=፡ እ 152
ምትካት፡አእመርኩ፡ እምስምዕከ፡፡ከመ፡
ለዓለም፡ሣረርኮን፡፡=፡ ፳ ሬስ፡ ርኢ፡ 153
ሕማምየ፡ ወአድኅነኒ፡፡እስመ፡ ኢረሳዕኩ፡
ሕገከ፡፡=፡ ፍታሕ፡ ፍትሕየ፡ወባልሐኒ፡፡ 154
ወበእንተ፡ ቃልከ፡ አሕይወኒ፡፡=፡ ርሑቅ፡ 155
ሕይወት፡እምኃጥአን፡፡እስመ፡ ኢኀሠሡ፡
ኵነኔከ፡፡=፡ ብዙኅ፡ ሣሕልከ፡ እግዚኦ፡ 156
ፈድፋደ ፡፡ ወአሕይወኒ ፡ በከመ ፡ ፍትሕ
ከ፡፡=፡ ብዙኃን፡ እለ፡ ሮዱኒ፡ ወአመንደቡ 157
ኒ፡፡ወኢተገሐስኩ ፡ እምስምዕከ፡፡=፡ ር 158
ኢኩ፡አብዳነ ፡ ወተከዝኩ፡፡እስመ ፡ ኢዐቀ
ቡ፡ቃለከ፡፡=፡ ርኢ፡ከመ፡ አፍቀርኩ፡ ትእ 159
ዛዘከ፡፡እግዚኦ፡አሕይወኒ፡ በሣህልከ፡፡=፡
ቀደሜ፡ቃልከ፡ጽድቅ፡ ውእቱ፡፡ወለዓለም፡ 160
ኵሉ፡ኵነኔከ፡ጽድቅ፡፡=፡ ፳፩ ሳን፡መ 161
ላእክት፡ሰደዱኒ፡ ብከንቱ፡፡ወእምቃልከ፡ ደ
ንገፀኒ፡ልብየ፡፡=፡ ወበቃልከ፡ተፈሣሕኩ፡፡ 162
ከመዘ፡ ረከበ፡ ምህርከ፡ ብዙኀ፡፡=፡ ዐመ 163
ፀ፡ ጸላእኩ ፡ ወአስቆረርኩ፡፡ወሕገከሰ፡ አ
ፍቀርኩ፡፡=፡ ሰብዐ ፡ ለዕለትየ ፡ ወእሴብ 164
ሐከ፡፡በእንተ ፡ ኵነኔ ፡ ጽድቅከ፡፡=፡ ሰላ 165
ም፡ብዙኅ፡ለእለ፡ ያፈቅሩ፡ስምከ፡፡ወአል
ቦሙ፡ ዕቅፍተ፡፡=፡ ተሰፈውኩ ፡ አድኅኖ 166
ተከ፡እግዚኦ፡፡ወአቀብኩ፡ ትእዛዘከ፡፡=፡
ዐቀበት ፡ ነፍስየ ፡ ትእዛዘከ፡፡ወአፍቀረቶ፡ 167
ፈድፋደ፡፡=፡ ዐቀብኩ፡ ትእዛዘከ ፡ ወሰም 168
ዐከ፡፡ እስመ፡ ኵሉ፡ ፍናዊየ፡ቅድሜከ፡
እግዚኦ፡፡=፡ ፳፪ ታው፡ ለትቅረብ፡ስ 169
እለትየ፡ኀቤከ፡ እግዚኦ፡፡ወበከመ፡ ቃልከ፡
አለብወኒ፡፡=፡ ትብጻሕ፡አስተብቍዖትየ፡ 170
ቅድሜከ፡ እግዚኦ፡፡ ወበከመ ፡ ቃልከ፡አ
ድኅነኒ፡፡=፡ ጐሥአ ፡ ከናፍርየ ፡ ስብሐቲ 171
ከ፡፡እስመ፡መሐርከኒ፡ኵነኔከ፡፡=፡ ነበበ፡ 172
ልሳንየ፡ ቃለከ፡፡ እስመ፡ ጽድቅ ፡ ኵሉ፡ት
እዛዝከ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [z] exaudi me, & salvū [†] Præveni mediū intempestæ noctis, & clamavi, quoniā verbum tuum [aaa] es tu [b] rectæ. [c] vita; [d] valdè quam multæ sunt [e] stultos & conturbatus sum, [f] nomen tuum: & [g] tua custodivi. [h] mandata tua, [i] gloriam tuam; quoniam docebis

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل التاسع عشر * وهو ق * صرخت من جميع قلبي فاستجب لي يا رب لابتغي وصاياك * 145
* صرخت اليك خلصني فاحفظ شهاداتك * بكرت في غير الوقت وصرخت وعلى اقوالك 146 147
توكلت * بكرت عيناي وقت الاسحار لدرس كلامك * اسمع صوتي يا رب كرحمتك واحيني 148 149
كاحكامك * اقترب الطاردون لي اثما وبعدوا من ناموسك * قريب انت يا رب وجميع وصاياك 150 151
حق * منذ البدء علمت شهاداتك انك اسستها الى الابد * * الفصل العشرون * وهو ر * 152
* انظر الى تواضعي وخلصني فاني لم انس سنتك * اقض قضائي وانقذني من اجل كلامك 153 154
احيني * الخلاص بعيد من الخطاة لانهم لم يطلبوا عدلك * كثيرة رأفتك جدا يا رب فاحيني 155 156
كاحكامك * كثر الذين يطاردوني ويحزبوني ولم اعدل عن شهاداتك * رايت الذين لا 157 158
يفهمون فحزنت لانهم لم يحفظوا قولك * انظر يا رب اني احببت وصاياك فبرحمتك يا رب احيني * 159
* ابتداء كلامك حق هو وجميع احكام عدلك الى الابد * الفصل الحادي والعشرون * وهو ش * 160
* طاردني الرؤساء مجانا وان قلبي خاف من اقوالك * ابتهج انا باقوالك مثل الذي وجد 161 162
غنائم كثيرة * ابغضت الظلم وارذلته وناموسك احببته * سبع دفعات في النهار باركتك 163 164
على احكام عدلك * لتكون سلامة عظيمة للذين يحبون اسمك ولا يكون لهم شك * رجوت 165 166
خلاصك يا رب ووصاياك حفظتها * حفظت نفسي شهاداتك واحببتها جدا * حفظت وصاياك 167 168
وشهاداتك وجميع طرقي امامك يا رب * الفصل الثاني والعشرون * وهو ت * فليقرب 169
منك دعائي يا رب افهمني نطق قولك * يدخل قدامك تضرعي ككلمتك احيني * شفتاي 170 171
تفيض بركة اذا عرفتني فرائضك * لساني يجيب باقوالك لان جميع وصاياك عادلة * 172

Sectio xix. Ver.3. Clamavi ex toto corde 145
meo, exaudi me, O Domine, ut quæram præ-
cepta tua. Clamavi ad te, salva me & cu- 146
stodiam testimonia tua. Manè surrexi præ- 147
ter tempus & clamavi, & in sermonibus
tuis sum confisus. Præproperârunt oculi 148
mei tempore matutino ad meditationem ser-
monum tuorum. Audi vocem meam, O Do- 149
mine, juxta misericordiam tuam, & vivi-
fica me secundùm judicia tua. Accesserunt 150
persequentes me iniquè, & recesserunt à
lege tua. Propinquus es, O Domine, & o- 151
mnia mandata tua veritas. Ab initio cog- 152
novi testimonia tua, quòd fundaveris ea in
æternum. Sectio xx. Vers.8. Vide humili- 153
tatem meam, & salva me: quoniam ego
non sum oblitus jura tua. Judica causam 154
meam & redime me, pro sermone tuo vi-
vifica me. Salus distans est à peccatoribus, 155
quia non quæsierunt æquitatem tuam. Co- 156
piosa est clementia tua admodùm, O Domi-
ne, vivifica me, secundùm judicia tua.
Multiplicati sunt qui persequuntur me & 157
affligunt me, & non deviavi à testimoniis
tuis. Vidi eos qui non intelligunt, & con- 158
tristatus sum: quia non custodierunt ser-
monem tuum. Vide, O Domine, quòd a- 159
maverim præcepta tua: quarè ex miseri-
cordia tua, O Domine, vivifica me. Prin- 160
cipium sermonis tui verax est, & omnia
judicia justitiæ tua in æternum. Sect. xxi.
Vers.8. Persecuti me sunt principes gra- 161
tìs, & quidem cor meum formidavit ser-
mones tuos. Exultabo ego in sermonibus 162
tuis, velut is qui invênit spolia multa. Odio 163
habui perversitatem, & abominatus sum e-
am, & legem tuam dilexi. Septem vicibus 164
in die benedixi tibi pro judiciis justitiæ
tuæ. Proculdubiò erit pax summa iis qui 165
diligunt nomen tuum, et non erit ipsis scan-
dalum. Speravi salutem tuam, O Domine, 166
& mandata tua servavi. Servavit anima 167
mea testimonia tua, et dilexi ea vehementer.
Servavi mandata tua & testimonia tua, et 168
omnes viæ meæ coram te sunt, O Domine.
Sectio xxii. Vers.8. Accedat ad te depre- 169
catio mea, O Domine: intelligentem redde
me juxta sermonem tuum. Intret coram te 170
supplicatio mea, secundùm verbum tuum
vivifica me. Labia mea redundabunt bene- 171
dictione, quum nota mihi feceris tua statu-
ta. Lingua mea proferet sermones tuos, 172
quoniam cuncta mandata tua sunt justa.

Deſideravi .elegi tua præcepta quoniam : mihi auxiliandum ad tua manus Sit
173 תְּהִי־יָדְךָ לְעָזְרֵנִי כִּי פִקּוּדֶיךָ בָחָרְתִּי׃ תָּאַבְתִּי
174 : te laudabit & ,mea anima Vivet .meæ *deliciæ* tua lex & : Domine tuam ſalutem
175 לִישׁוּעָתְךָ יְהוָה וְתוֹרָתְךָ שַׁעֲשֻׁעָי׃ תְּחִי־נַפְשִׁי וּתְהַלְלֶךָּ
quia : tuum ſervum quære , *periens agnus* ſicut Erravi .me adjuvabunt tua judicia &
176 וּמִשְׁפָּטֶךָ יַעְזְרֻנִי׃ תָּעִיתִי כְּשֶׂה אֹבֵד בַּקֵּשׁ עַבְדֶּךָ כִּי
.oblitus ſum non tuorum mandatorum
מִצְוֺתֶיךָ לֹא שָׁכָחְתִּי׃

PSAL. CXX. קכ

.me exaudivit & ,clamavi ,*mihi* anguſtia in Dominum Ad .graduum Canticum
1 שִׁיר הַמַּעֲלוֹת אֶל־יְהוָה בַּצָּרָתָה לִּי קָרָאתִי וַיַּעֲנֵנִי׃
dabit Quid .doloſa lingua à *: falſitatis* labio à meam animam erue Domine
2 יְהוָה הַצִּילָה נַפְשִׁי מִשְּׂפַת־שֶׁקֶר מִלָּשׁוֹן רְמִיָּה׃ מַה־יִּתֵּן 3
cum : acutæ potentis Sagittæ ? doloſa lingua tibi *addet* quid & ,tibi
4 לְךָ וּמַה־יֹּסִיף לָךְ לָשׁוֹן רְמִיָּה׃ חִצֵּי גִבּוֹר שְׁנוּנִים עִם
cum habitavi : Meſech ſum peregrinat' quia ,mihi Heu *geniſtarum* carbonibus
5 גַּחֲלֵי רְתָמִים׃ אוֹיָה־לִי כִּי־גַרְתִּי מֶשֶׁךְ שָׁכַנְתִּי עִם־
.pacem habente odio cum ,mea anima ſibi habitavit Multùm .Chedar *tentoriis*
6 אָהֳלֵי קֵדָר׃ רַבַּת שָׁכְנָה־לָּהּ נַפְשִׁי עִם שׂוֹנֵא שָׁלוֹם׃
.bellum ad ipſi : loquebar cùm & , *pax* Ego
7 אֲנִי־שָׁלוֹם וְכִי אֲדַבֵּר הֵמָּה לַמִּלְחָמָה׃

PSAL. CXXI. קכא

venïet unde : montes ad meos oculos Levabo .graduum Canticum
1 שִׁיר לַמַּעֲלוֹת אֶשָּׂא עֵינַי אֶל־הֶהָרִים מֵאַיִן יָבֹא
.terram & cœlum *faciente* : Domino *cum* à meum Auxilium .meum auxilium
2 עֶזְרִי׃ עֶזְרִי מֵעִם יְהוָה עֹשֵׂה שָׁמַיִם וָאָרֶץ׃
non Ecce .te *cuſtodiens* dormitabit neque : *tuum pedem nutandum ad dabit* Non
3 אַל־יִתֵּן לַמּוֹט רַגְלֶךָ אַל־יָנוּם שֹׁמְרֶךָ׃ הִנֵּה לֹא־ 4
Dominus : tuus cuſtos Dominus .Iſrael *cuſtodiens* dormiet neque dormitabit
5 יָנוּם וְלֹא יִישָׁן שׁוֹמֵר יִשְׂרָאֵל׃ יְהוָה שֹׁמְרֶךָ יְהוָה
luna *&*,te percutiet non ſol *Interdiu* .tuam dexteram manum ſuper,tua umbra
6 צִלְּךָ עַל־יַד יְמִינֶךָ׃ יוֹמָם הַשֶּׁמֶשׁ לֹא־יַכֶּכָּה וְיָרֵחַ
Dominus .tuam animam cuſtodiet : malo omni ab te cuſtodiet Dominus .*nocte in*
7 בַּלָּיְלָה׃ יְהוָה יִשְׁמָרְךָ מִכָּל־רָע יִשְׁמֹר אֶת־נַפְשֶׁךָ׃ יְהוָה 8
.ſeculum in uſque & *nunc* ex : tuum *intrare* & , tuum *egredi* cuſtodiet
יִשְׁמָר־צֵאתְךָ וּבוֹאֶךָ מֵעַתָּה וְעַד־עוֹלָם׃

PSAL. CXXII. קכב

Domini domum : mihi dicentibus *in* ſum Lætatus .Davidi graduum Canticum
1 שִׁיר הַמַּעֲלוֹת לְדָוִד שָׂמַחְתִּי בְּאֹמְרִים לִי בֵּית יְהוָה
Jeruſalaim .Jeruſalaim tuis portis in : noſtri pedes fuerunt Stantes .ibimus
2 נֵלֵךְ׃ עֹמְדוֹת הָיוּ רַגְלֵינוּ בִּשְׁעָרַיִךְ יְרוּשָׁלָםִ׃ יְרוּשָׁלַםִ 3
, tribus aſcenderunt illuc Quia .ſimul *ſibi* eſt juncta *quæ* ,civitas ut , *ædificata*
4 הַבְּנוּיָה כְּעִיר שֶׁחֻבְּרָה־לָּהּ יַחְדָּו׃ שֶׁשָּׁם עָלוּ שְׁבָטִים
Quia .Domini nomini confitendum ad : Iſraeli teſtimonium ,*Jah* tribus
5 שִׁבְטֵי־יָהּ עֵדוּת לְיִשְׂרָאֵל לְהֹדוֹת לְשֵׁם יְהוָה׃ כִּי
.David domui *ſolia* : judicium ad *ſolia* ſederunt ibi
שָׁמָּה יָשְׁבוּ כִסְאוֹת לְמִשְׁפָּט כִּסְאוֹת לְבֵית דָּוִיד׃

תרגום Targum.

173 תהא ידך לסיעותי ארום פקודיך רעיתי׃ רגגית
174 לפורקנך יי ואוריתך פרנוקי׃ תחי נפשי
175 ותשבחנך ודינך יסיעונני׃ תעיתי היך ענא
176 דמתבר בעי עבדך ארום פקודיך לא אתנשיתי׃

קכ

1 שירא דאתאמר על מסוקין דתהומא קדם יי
2 כד עיק לי צליתי וקביל צלותי׃ יי פצי נפשי
3 מספותא דשקרא מן לישנא נכילתא׃ מא יהיב
לך מלשינא ומא יוסיף לך אכיל קורצי לישנא
4 נכילתא׃ גררין דגברא שנונין היך ברקין
מלעיל עם גומרי רתמין דדלקין בגהנם מלרע׃
5 ויי לי ארום אתותבית עם אוסאי שרית עם
6 משכניהון דערבאי׃ יתיר מנהון שרת נפשי
7 עם אדום סני שלם׃ אנא שלם ארום אצלי
הנון לקרבא׃ קכא
1 שירא דאתאמר על מסוקין דתהומא אזקוף
2 עיני לטוריא מן האן ייתי סעדי׃ סעדי מן קדם
3 יי דעבד שמיא וארעא׃ לא יתן לאתמוטטא
4 רגלך לא נים נטרך׃ הא לא נים ולא ידמוך
5 נטר ישראל׃ יי ינטרנך יי יטלל עלך על סטר
6 ימינך׃ יימם כד שליט שמשא לא ימחונך
צפרירי ולילי כד שליט סיהרא בליליא׃
7 מימרא דיי ינטרנך מכל ביש ינטור ית נפשך׃
8 יי ינטור מפקך לפרנסתיא ומעלך למעסק
באוריתא מן השתא ועד עלמא׃

קכב

1 שירא דאתאמר על מסוקין דתהומא חדיתי
2 באמרין לי בית מקדשא דיי ניזל׃ קימין
3 הואה רגלנא בתרעיך ירושלם׃ ירושלם
דמתבניא ברקיעא היך קרתא דאתחברא לה
4 כחדא בארעא׃ דתמן סליקו שבטיא שבטין
דיי מסהיד לישראל די שכנתיה שריא ביניהון
5 במיזליהון לאודאה לשמא דיי׃ ארום תמן
מתיתבין כורסון בירושלם כורסון בבית
מקדשא למלכיא דבית דוד׃

Paraph. Chald. Verſ. Lat.

Sit manus tua in auxilium meum, quoniam 173
mandata tua elegi. Deſideravi redemptio- 174
nem tuam Dñe,& Lex tua delectationes meæ
ſunt. Vivat anima mea, & laudabit te ; & 175
judicia tua adjuvabunt me. Erravi ſicut 176
agnus qui periit : quære ſervum tuum, quo-
niam mandata tua non ſum oblitus.

Canticum quod dictum eſt ſuper gradibus 1
abyſſi. PSAL. CXX.

Coram Domino cùm ineſſet anguſtia
mihi, oravi ; & accepit orationem me-
am. Domine libera animam meam à *labiis* 2
mendacii, à lingua doloſa. Quid dabit tibi 3
detrectator, aut quid adjiciet tibi *dela-*
tor lingua doloſa ? Sagittæ robuſti acutæ 4
ſunt *ſicut fulgura deſuper*, cum carbonibus
geniſtarum *accenſis in gehenna infernè*. Hei 5
mihi quoniam peregrinatus ſum cum Aſiati-
cis, habitavi in tabernaculis Arabum. Pluſ- 6
quàm illi habitavit anima mea cum Edom
odio pacem proſequente. Ego pacem pro- 7
inde orabo, ipſi verò bellum [*cupiunt.*]

Canticum quod dictum eſt ſuper gradibus 1
abyſſi. PSAL. CXXI.

Levabo oculos meos ad montes, unde
veniet auxilium meum. Auxilium meum 2
à conſpectu Domini, qui fecit cœlum & ter-
ram. Non dabit ut commoveantur pedes 3
tui, nec dormitabit qui cuſtodit te. Ecce 4
non dormitabit neque dormiet cuſtos Iſrael.
Dominus cuſtodiet te, Dominus obumbra- 5
bit tibi ad latus dexteræ tuæ. Interdiu quan- 6
do dominatur Sol, non feriet te ſpectris ma-
tutinis, neque noctu quando dominatur Lu-
na, nocturnis. Verbum Domini cuſtodiet te 7
ab omni malo, cuſtodiet animam tuam. Do- 8
minus cuſtodiet exitum tuum *ad negotiatio-*
nem, & introitum tuum *ad ſtudium legis*,
deinceps & uſque in æternum.

Canticum quod dictum eſt ſuper gradibus 1
abyſſi. PSAL. CXXII.

Lætatus ſum in his qui dicunt mihi, In
domum ſanctuarii Dñi ibimus. Stantes 2
erant pedes noſtri in portis tuis Jeruſalem.
Jeruſalem quæ ædificatur in firmamento tan- 3
quam civitas, quæ conjuncta eſt ſibi ipſi pa-
riter in terra. Quoniam illuc aſcenderunt 4
tribus, tribus Domini teſtificantis Iſraeli *ma-*
jeſtatem ſuam commoraturam inter eos, cùm
iverint ad confitendum nomini Domini.
Quia ibi præparantur ſedes in Jeruſalem, 5
ſedes in domo ſanctuarii regibus domus
David.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

173 * ܬܬܥܕܪܢܝ ܐܝܕܟ ܡܛܠ ܕܨܒܝܬ ܒܦܘܩܕܢܝܟ: * ܣܟܬ ܢܦܫܝ ܠܦܘܪܩܢܟ ܘܒܢܡܘܣܟ
174
175 ܪܢܝܬ. * ܬܚܐ ܢܦܫܝ ܘܬܫܒܚܟ ܘܕܝܢܟ ܗܘ ܢܥܕܪܢܝ: * ܛܥܝܬ ܐܝܟ ܐܡܪܐ ܕܐܒܕ ܒܥܝܗܝ
176
1 ܠܥܒܕܟ. ܡܛܠ ܕܦܘܩܕܢܝܟ ܠܐ ܛܥܝܬ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܡܣܩܬܐ * ܠܐ ܡܫܡܗܐ.
ܩܕܡܝܬܐ ܡܨܠܐ ܕܡܬܚܒܫܢܐ. ܡܛܠ ܥܡܐ ܕܒܒܒܠ ܕܢܬܦܨܐ. ܘܚܢܢ ܗܟܢ ܡܨܠܝܢܢ ܕܢܬܦܨܐ
2 ܡܢ ܫܐܕܐ. ܦܣܘܩܐ ܝܗ. ܠܡܪܝܐ ܟܕ ܐܬܐܠܨܬ ܩܪܝܬ ܘܥܢܢܝ * ܡܪܝܐ ܘܦܨܝܗ ܠܢܦܫܝ:
3 ܡܢ ܣܦܘܬܐ ܕܥܘܠܐ. ܘܡܢ ܠܫܢܐ ܢܟܝܠܬܐ: * ܡܢܐ ܢܬܠܘܢ ܠܟ ܘܡܢܐ ܢܘܣܦܘܢ ܠܟ.
4 ܠܫܢܐ ܢܟܝܠܬܐ: * ܓܐܪܘܗܝ ܕܓܢܒܪܐ ܚܪܝܦܝܢ. ܐܝܟ ܓܘܡܪܐ ܕܒܠܘܛܐ: * ܘܝ ܠܝ ܕܐܘܪܟܬ ܬܘܬܒܘܬܝ
5
6 ܘܥܡܪܬ ܒܡܫܟܢܐ ܕܩܕܪ: * ܣܓܝܐܐ ܥܡܪܬ ܢܦܫܝ ܥܡ ܐܝܠܝܢ ܕܣܢܝܢ ܫܠܡܐ.
7 * ܘܐܢܐ ܫܠܡܐ ܡܡܠܠ ܗܘܝܬ ܠܗܘܢ: ܘܗܢܘܢ ܡܬܟܬܫܝܢ ܗܘܘ ܥܡܝ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܬܪܝܢ *
1 * ܠܐ ܡܫܡܗܐ. ܡܢ ܡܙܡܘܪܐ ܕܡܣܩܬܐ ܕܡܢ ܒܒܠ. ܘܡܘܠܟܢܐ ܕܛܒܬܐ. ܦܣܘܩܐ ܝ. ܐܪܝܡܬ
2 ܥܝܢܝ ܠܛܘܪܐ: ܡܟܐ ܢܐܬܐ ܡܥܕܪܢܝ. * ܥܘܕܪܢܝ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ: ܗܘ ܕܥܒܕ ܫܡܝܐ
3 ܘܐܪܥܐ. * ܘܠܐ ܢܬܠ ܪܓܠܟ ܠܙܘܥܐ: ܘܠܐ ܢܢܘܡ ܢܛܘܪܟ. * ܠܐ ܓܝܪ ܢܢܘܡ ܘܠܐ ܢܕܡܟ: ܢܛܘܪܗ
4
5 ܕܐܝܣܪܐܝܠ. * ܡܪܝܐ ܗܘ ܢܛܘܪܟ: ܡܪܝܐ ܢܛܠܠ ܥܠܝܟ ܒܐܝܕܗ ܕܝܡܝܢܐ. * ܒܐܝܡܡܐ ܫܡܫܐ ܠܐ
6
7 ܢܚܒܠܟ: ܘܠܐ ܣܗܪܐ ܒܠܠܝܐ. * ܡܪܝܐ ܢܛܪܟ ܡܢ ܟܠܗܝܢ ܒܝܫܬܐ: ܢܛܪ ܢܦܫܟ * ܡܪܝܐ.
8 ܢܛܪ ܡܦܩܟ ܘܡܥܠܟ: ܡܢ ܗܫܐ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܬܠܬܐ *
1 * ܕܕܘܝܕ. ܡܢ ܡܙܡܘܪܐ ܕܡܣܩܬܐ. ܟܕ ܦܩܕ ܗܘܐ ܟܘܪܫ ܕܬܣܩ ܫܒܝܬܐ. ܘܪܘܚܢܐܝܬ ܡܘܠܟܢܐ
2 ܕܛܒܬܐ. ܦܣܘܩܐ ܝܛ. ܚܕܝܬ ܟܕ ܐܡܪܝܢ ܗܘܘ ܠܝ: ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܐܙܠܝܢܢ. * ܩܝܡܝܢ
3 ܗܘܝ ܪܓܠܝ ܒܬܪܥܝܟܝ ܐܘܪܫܠܡ: * ܐܘܪܫܠܡ ܡܚܝܠܬܐ. ܐܝܟ ܡܕܝܢܬܐ ܕܚܕܝܪ ܠܗ
4 ܫܘܪܐ: * ܠܬܡܢ ܣܠܩܘ ܫܪܒܬܐ ܫܪܒܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܣܗܕܘܬܐ ܠܐܝܣܪܐܝܠ ܠܡܘܕܝܘ ܠܫܡܗ
5 ܕܡܪܝܐ: * ܡܛܠ ܕܬܡܢ ܐܬܒܘ ܟܘܪܣܘܬܐ ܠܕܝܢܐ. ܟܘܪܣܘܬܐ ܕܒܝܬ ܕܘܝܕ:

Auxilietur mihi manus tua, quia ſum delecta- 173
tus conſtitutionibus tuis. Expectavit ani- 174
ma mea ſalutem tuam, & legem tuam conſi-
deravi. Vivat anima mea teque laudet, & ju- 175
dicium tuum ipſum ferat mihi opem. Erravi 176
ſicut ovis perdita, quære ſervum tuum, quia
tua præcepta non ſum oblitus.

PSAL. CXIX.

Anonymus. Canticum primum aſcenſionis. 1
Orat populus detentus in Babel ut liberetur.
Ac proinde nos oramus ut liberemur à dæ-
monibus. Verſ. 15.

Dominum in anguſtia mea vocavi, &
reſpondit mihi Dominus, atque libera- 2
vit animam meam à labiis iniquorum, & à
linguis doloſis. Quid dent tibi, & quid tibi 3
addant linguæ doloſæ, Sagittæ viri acutæ ut 4
carbones quercûs? Hei mihi quòd peregrina- 5
tio mea protracta eſt, et habitavi in taberna-
culo Cedar : Diu commorata eſt anima mea 6
cum his qui oderunt pacem. Nam ego pacem 7
loquebar eis : ipſi verò decertabant mecum.

PSAL. CXX.

Anonymus. Ex Pſalmis aſcenſionis è Ba- 1
bel. Et promiſſiones bonorum. Verſ. 10.

Levabo oculos meos ad montem unde ve-
niet auxiliator meus. Auxilium meum eſt 2
à conſpectu Domini, qui condidit cœlum ac
terram. Et non dabit pedē tuum vacillationi; 3
neque dormiſcet cuſtos tuus. Non enim dor- 4
miſcit neque dormit cuſtos Iſraelis. Domin' 5
eſt cuſtos tuus, Dominus obumbrabit te ma-
nu ſuâ dexterâ: Interdiu ſol non nocebit tibi, 6
neque luna noctu. Dominus cuſtodiet te ab 7
omnibus malis: cuſtodiet animam tuam Do- 8
minus: cuſtodiet egreſſum tuum & ingreſſum
tuum, ex nunc uſque in ſeculum.

PSAL. CXXI.

Davidis. Ex Pſalmis aſcenſionis. Quum 1
præcepit Cyr' ut aſcenderet captivitas. Spiri-
tualiter verò promiſſio bonorum. Verſ. 19.

Lætabar cùm dicerent mihi, Ad domū Dñi
pergim'. Siſtebant enim ſe pedes mei in 2
portis tuis Hieruſalē. Hieruſalē munita ſicut 3
urbs vallata muro. Illuc aſcenderunt familiæ, 4
familiæ *inquā* Dñi, obteſtatio Iſraeli, ad con-
fitendū nomini Domini. Illic enim locave- 5
runt ſedes ad judicium, ſedes domûs David.

Verſio VULG. LAT.

173 Fiat manus tua ut ſalvet me: quoniam
174 mandata tua elegi. Concupivi ſaluta-
re tuum, Domine: & lex tua meditatio
175 mea eſt. Vivet anima mea, & laudabit
176 te: & judicia tua adjuvabunt me. Er-
ravi, ſicut ovis quæ periit: quære ſervũ
tuũ, quia mandata tua non ſum oblitꝰ.

Canticum graduum. CXIX.
1 AD Dominum cùm tribularer cla-
2 mavi: & exaudivit me. Domine, libe-
ra animã meã à labiis iniquis, & à lin-
3 gua doloſa. Quid detur tibi, aut quid
apponatur tibi ad linguam doloſam ?
4 Sagittæ potentis acutæ, cum carboni-
5 bus deſolatoriis. Heu mihi, quia in-
colatus meus prolongatus eſt : habita-
6 vi cum habitantibus Cedar : Multùm
7 incola fuit anima mea. Cum his qui o-
derunt pacem, eram pacificus : cùm lo-
quebar illis, impugnabant me gratis.

Canticum graduum. CXX.
1 LEvavi oculos meos in montes, un-
2 de veniet auxilium mihi. Auxiliũ me-
um à Domino, qui fecit cœlum & ter-
3 ram. Non det in commotionẽ pedem
tuum: neque dormitet qui cuſtodit te.
4 Ecce non dormitabit neque dormi-
5 et, qui cuſtodit Iſrael. Dominus cu-
ſtodit te, Dominus protectio tua, ſup
6 manum dexteram tuam. Per diem Sol
7 non uret te, neq; Luna per noctẽ. Do-
minus cuſtodit te ab omni malo: cuſto-
8 diat animam tuã Dominus. Dominus
cuſtodiat introitum tuum, & exitũ tu-
um; ex hoc nunc, & uſque in ſeculum.

Canticum graduum. CXXI.
1 LÆtatus ſum in his, quæ dicta ſunt
2 mihi; In domum Domini ibimꝰ. Stan-
tes erant pedes noſtri, in atriis tuis, Je-
3 ruſalem. Jeruſalem, quæ ædificatur ut
civitas: cujus participatio ejus in id-
4 ipſum. Illuc enim aſcenderunt tribus,
tribus Domini, teſtimonium Iſrael ad
5 confitendum nomini Domini. Quia
illìc ſederunt ſedes in judicio, ſedes ſu-
per domum David.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

173 † Γενέσθω ἡ χείρ σου τοῦ σῶσαί με, † ὅτι τὰς ἐντο-
174 λάς σου ᾑρετισάμην. † Ἐπεπόθησα τὸ σωτήριόν σου
175 κύριε, † καὶ ὁ νόμος σου μελέτη μου ἐστί. † Ζήσεται ἡ ψυχή
μου καὶ αἰνέσει σε, † καὶ τὰ κρίματά σου βοηθήσει
176 μοι. † Ἐπλανήθην ὡς πρόβατον ἀπολωλὸς, † ζή-
τησον τὸν δοῦλόν σου, ὅτι τὰς ἐντολάς σου οὐκ ἐπελα-
θόμην.

1 Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. ριθ΄.
† ΠΡὸς κύριον ἐν τῷ θλίβεσθαί με ἐκέκραξα, καὶ
2 εἰσήκουσέ μου. † Κύριε ῥῦσαι τὴν ψυχήν μου ἀπὸ χειλέ-
3 ων ἀδίκων † καὶ ἀπὸ γλώσσης δολίας. † Τί δοθείη σοι,
4 καὶ τί προστεθείη σοι πρὸς γλῶσσαν δολίαν; † Τὰ
βέλη τοῦ δυνατοῦ ἠκονημένα † σὺν τοῖς ἄνθραξι
5 τοῖς ἐρημικοῖς. † (α) Οἴμοι ὅτι ἡ παροικία μου ἐμα-
κρύνθη, † κατεσκήνωσα μετὰ τῶν σκηνωμάτων Κηδάρ.
6 7 † Πολλὰ παρῴκησεν ἡ ψυχή μου. † Μετὰ τῶν μισούντων
(β) τὴν εἰρήνην ἤμην εἰρηνικός· † ὅταν ἐλάλουν αὐ-
τοῖς, ἐπολέμουν με δωρεάν.
MS. A. (α) Οἴμμοι (β) εἰρήνην

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. ρκ΄.
1 † ΗΡα τοὺς ὀφθαλμούς μου εἰς τὰ ὄρη, (α) ὅθεν ἥξει
2 ἡ βοήθειά μου. † Ἡ βοήθειά μου παρὰ κυρίου † τοῦ
3 ποιήσαντος τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν. † Μὴ δῴης εἰς σά-
λον τὸν πόδα σου, † μηδὲ (β) νυστάξῃ ὁ φυλάσσων σε. †
4 Ἰδοὺ οὐ νυστάξει οὐδὲ ὑπνώσει ὁ φυλάσσων τὸν Ἰσραήλ.
5 † Κύριος φυλάξει σε, κύριος σκέπη σου ἐπὶ χεῖρα
6 (γ) δεξιάν σου. † Ἡμέρας ὁ ἥλιος οὐ συγκαύσει σε,
7 † οὐδὲ ἡ σελήνη τὴν νύκτα. † Κύριος (δ) φυλάξαι σε
ἀπὸ παντὸς κακοῦ, † φυλάξει τὴν ψυχήν σου ὁ κύριος.
8 † Κύριος φυλάξει τὴν εἴσοδόν σου, καὶ τὴν ἔξοδόν
σου, † ἀπὸ τοῦ νῦν καὶ ἕως τοῦ αἰῶνος.
MS. A. (α) πόθεν (β) νυστάξει (γ) δεξιᾶς σου.
(γ) φυλάξει σε

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. ρκα΄.
1 † ΕΥφράνθην ἐπὶ τοῖς εἰρηκόσι μοι, † Εἰς οἶκον
2 κυρίου πορευσόμεθα. † Ἑστῶτες ἦσαν οἱ πόδες ἡμῶν †
3 ἐν ταῖς αὐλαῖς σου Ἱερουσαλήμ. † Ἱερουσαλὴμ οἰκοδο-
μουμένη ὡς πόλις, † ἧς (α) ἡ μετοχὴ αὐτῆς ἐπὶ τὸ αὐτό.
4 † Ἐκεῖ γὰρ ἀνέβησαν αἱ φυλαὶ, † (β) φυλαὶ κυρίου μαρ-
τύριον τῷ Ἰσραὴλ, † τοῦ ἐξομολογήσασθαι τῷ ὀνό-
5 ματι κυρίου. † Ὅτι ἐκεῖ ἐκάθισαν θρόνοι εἰς κρίσιν,
† θρόνοι (γ) ἐπὶ οἶκον Δαυίδ.
MS. A. (α) οἱ μέτοχοι αὐτῆς (β) αἱ φυλαὶ (γ)
ἐπ' οἶκον

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiop. Tranſl. LAT.

173 Fiat manus tua ut ſalvet me : 173
quia mandata[k]tua (c)elegi. 174
(d) Concupivi ſalutare tuum, Do- 174
mine : & lex tua [l]meditatio mea
eſt. 175 Vivet anima mea, & lau- 175
dabit te : & judicia tua adjuva-
bunt me. 176 [m]Erravi ſicut ovis 176
perdita : quære ſervum tuum; quia
mandata tua non ſum oblitus.

(a) Canticum graduum. CXIX. 1
1 AD Dominum, cùm tribularer,
clamavi, & exaudivit me.
2. Domine, erue animam meam à 2
(b)labiis injuſtis, & à lingua dolo-
ſa. 3 (c) Quid detur tibi, et quid ap- 3
ponatur tibi ad linguam doloſam ?
4 Sagittæ potentis acutæ [a] cum 4
carbonibus (d) deſolatoriis. 5 Heu 5
me, quia incolatus meus (e) prolon-
gatus eſt : inhabitavi [b] cum (f)
tabernaculis Cedar : Multum [c] in- 6
cola fuit anima mea. 6 Cum his 7
qui oderunt pacem, eram pacificus:
cum (g) loquebar illis, impugna-
bant me gratis.

Canticum graduum. CXX.
1 LEVAVI (a) oculos meos ad 1
montes, unde veniet auxili-
um meum. 2 Auxilium meum à Do- 2
mino; qui fecit cœlum, & terram.
3 [†] Non des (b) in commotionem 3
pedem tuum: neq; dormitet qui cu-
ſtodit te. 4 Ecce non dormitabit, 4
neque obdormiet, qui cuſtodit Iſ-
rael. 5 Dominus cuſtodiet te: Domi- 5
nus[a] protectio tua, (c) ſuper ma-
num dexteram tuam. 6 Per diem 6
Sol non uret te, neque Luna per no-
ctem. 7 Dominus (d) cuſtodiat te ab 7
omni malo : [b] cuſtodiet animam
tuam Dominus. 8 Dominus cuſto- 8
diet (e) introitum tuum, & exitum
tuũ, ex hoc nunc. & uſq; in ſeculũ.
MS. Æth. Poc. Gloria Patri & Filio
& Spiritui ſancto, omni tempore,
nunc, & ſemper, & in æternũ, Amen.

Canticum graduum. CXXI. 1
1 LÆTATUS ſum [a] in (a)
iis qui dixerunt mihi, In do-
mum Domini ibimus. 2 Stantes e- 2
rant pedes noſtri, in atriis tuis, Hie-
ruſalem. 3 Hieruſalem, (b) [b] quæ 3
ædificatur ut civitas : cujus parti-
cipatio[c] ejus in idipſum. 4 Illuc e- 4
nim aſcenderunt [d] tribꝰ, (c) tribus
Domini, teſtimonium Iſrael, ad confitendum. [c] nomini Domini. 5 Quoniam ibi ſederunt 5 ſedes in judicium : [f] ſedes ſuper domum David. 5

Verſio ÆTHIOPICA.

ይኩንኒ፡የማንከ፡ከመ፡ያድኅንኒ።እስመ፡ት 173
እዛዘከ፡አፍቀርኩ።=፡አፈቀርኩ፡አድኅና 174
ተከ፡እግዚኦ። ወሕግከሰ፡ተመሀርየ፡ውእ
ቱ።=፡ ትሕየወኒ፡ነፍስየ፡ወእሴብሐከ።ወ 175
ደርድአኒ፡ኵነኔ፡ዚአከ።=፡ ተረሳእኩ፡ከ 176
መ፡በግዕ፡ዘተገድፈ። ኅሠሥ ፡ ለገብርከ፡
እስመ፡ ትእዛዘከ ፡ ኢረሳእኩ።=፡
ማኅሌት፡ ዘበመዓርጊሁ።
፻፲፱ ኀቤከ፡ እግዚኦ ፡ ጸራኅኩ፡ ሶበ፡ ተመን 1
ደብኩ፡ ወሰማዕከኒ።=፡ እግዚኦ፡አድኅና፡ 2
ለነፍስየ፡እምከናፍረ፡ዐመፃ። ወእምልሳነ፡
ጽልሑት።=፡ ምንተ፡ ይሁቡከ፡ወምንተ፡ 3
ይዌስኩከ፡ በእንተ ፡ ከናፍረ፡ ጕሕሉት።=፡
አሕፃሁ፡ለኃያል፡ስሑል። ከመ፡ አፍሐመ፡ 4
ሐቅል።=፡ ሴልየ ፡ ዘርኅቀ ፡ ማኅደርየ።
ወኀደርኩ ፡ ውስተ ፡ አዕፃደተ፡ እለ፡ቄደር። 5
በዙኅ፡ተአገሠት፡ነፍስየ።=፡ ምስለ፡እለ፡ 6
ይጸልኡ ፡ ሰላመ። እንዘ ፡ ሰላማዊ ፡ አነ። 7
ወሶበ፡እትናገሮሙ፡ይፀብኡኒ፡ በከንቱ።=፡
ማኅሌት፡ዘበመዓርጊሁ።
፻፳ አንሣእኩ ፡ አዕይንትየ ፡ መንገለ፡አድ 1
ባር። እምአይቴ፡ይመጽእ፡ረድኤትየ።=፡
ረድኤትየሰ፡እምኀበ፡ እግዚአብሔር። ዘገ 2
ብረ፡ ሰማየ ፡ ወምድረ።=፡ ወኢይሁብ፡ 3
ሁከተ ፡ ለእገርየ። ወኢይዴቅስ ፡ ዘየዐቅ
በከ።=፡ ናሁ ፡ ኢይዴቅስ ፡ ወኢይነውም፡ 4
ዘየዐቅቦ ፡ ለእስራኤል።=፡ እግዚአብሔ 5
ር፡ይዕቀብከ፡ ወእግዚአብሔር ፡ ይከድንከ፡
በየማኑ፡እዴሁ።=፡ መዐልተ፡ፀሐይ፡ ኢያ 6
ውዒከ። ወኢወርኅ፡ በሌሊት።=፡ እግዚ 7
አብሔር፡ ይዕቀብከ፡እምኵሉ፡እኩይ።ወ
ይትማሐፀና፡ለነፍስከ፡ እግዚአብሔር።=፡
እግዚአብሔር፡ይዕቀብከ፡በንግደትከ ፡ወበዐ 8
ትወትከ።እም፡ይእዜ፡ወእስከ፡ለዓለም።=፡
ስብሐተ፡ ለአብ፡ ወወልድ፡ ወመንፈስ፡ቅዱስ፡
ኵሉ፡ ጊዜ፡ ይእዜኒ፡ ወዘልፈኒ፡ ወለዓለ
መ፡አሜን። ማኅሌት፡ዘበመዓርጊሁ።
፻፳፩ ተፈሣሕኩ፡እስመ፡ ይቤሉኒ፡ቤተ፡ እ 1
ግዚአብሔር፡ነሐውር።=፡ ወቆማ፡እገሪነ፡ 2
ውስተ፡አዕጻደኪ፡ኢየሩሳሌም።=፡ ኢየ 3
ሩሳሌምሰ፡ሕንጽት፡ከመ፡ ሀገር። እለ፡ ከ
ማሃ፡ኅቡረ፡ምስሌሃ።=፡ እስመ፡ህየ፡ዐር 4
ጉ፡አሕዛብ። ሕዝበ፡እግዚአብሔር ፡ስም
ዐ፡እስራኤል።ከመ፡ይግነዩ፡ለስምከ፡ እግዚ
ኦ፡ ።=፡እስመ፡ህየ፡አንበሩ፡መናብርቲሆሙ፡ 5
ለኰንኖ። መናብርት ፡ ቤተ፡ደዊት።=፡

INTERP. ÆTHIOP. [k]tua dilexi. Dilexi ſalutare[l]eruditio mea[m]Oblivioni traditus ſum ſicut PSAL. CXIX. [a]ſicut carbones deſerti. [b]in atriis Cedar: [c]ſuſtinuit anima, PSAL. CXX, [f]Non
dabit in commotionem pedem meum: [a]proteget te in manu dextera ſua. [b] commendatam ſibi habebit animam tuam Dominus. PSAL. CXXI. [a]quoniam dixerunt [b] quidem ædificatur[c]
ſimul eſt apud illam. [d]populi, populus[e] nomini tuo Domine. [f]ſedes domûs

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

173 174 * لتكن يدك لخلاصي فاني اشتهيت وصاياك * اشتقت خلاصك يا رب وشرعك هو تلاوتي * تحيا
175 176 نفسي وتباركك واحكامك تعينني * ضللت كالخروف الضال اطلب عبدك واستجب لي لاني لم
انس وصاياك * اللالويا *
* المزمور المائة وتسعة عشر *
1 * وهو الي آخر المائة وثلاثة وثلاثين * مرسوم لتسبحة الدرج * وهو ح * استيخانات *
2 الي الرب صرخت في ضري فاستجاب لي * يا رب خلص نفسي من شفاه ظالمة ومن لسان غاش *
3 4 * ما هو الذي يعطى لك وما هو الذي يزيدك الالسن الغاشة * نبال القوي مسنونة مثل
5 6 الجمر المحرق * الويل لي فان غربتي قد طالت علي * وسكنت في مساكن قيدار * كثيرا تغربت
7 نفسي * وكنت مسالما مع مبغضي السلامة * وكنت اذا كلمتهم بالسلام حاربوني مجانا * اللالويا *
1 * المزمور المائة وعشرون * وهو * ي * استيخانات *
2 رفعت عيني الي الجبال اي من اين تاتيني معونتي * معونتي انا هي من عند الرب الذي خلق
3 4 السماء والارض * لا يعطي الزلل رجليك ولا ينعس حافظك * حافظ اسرائيل لا ينعس ولا ينام * الرب
5 6 7 يحفظك * الرب يظلل عليك بيده اليمنى * لا تحرقك الشمس نهارا ولا القمر ليلا * الرب يحفظك
8 من كل سوء * الرب يحفظ نفسك * الرب يحفظ مدخلك ومخرجك منذ الآن والي الابد * اللالويا *
1 * المزمور المائة والحادي والعشرون * وهو * يه * استيخن * فرحت بالقائلين لي
2 3 اننا الي بيت الرب نمضي * ارجلنا وقفت في ديار يروشليم * يروشليم المبنية مثل مدينة التي
4 شركتها معها * لان هناك صعدت القبائل * قبائل الرب شهود لاسرائيل يشكرون اسم الرب *
5 * لان هناك جلسوا على كراسي الحكم كراسي على بيت داود *

Sit manus tua in ſalvationem meam, quia 173
expetivi præcepta tua. Concupivi ſalutem 174
tuam O Domine, & lex tua eſt meditatio
mea. Vivat anima mea, teque benedicat, 175
& judicia tua adjuvent me. Erravi ſicut 176
agnus devius: quære ſervum tuũ, et exau-
di me, quia non ſum oblitus mandata tua.
Alleluja.

PSAL. CXIX.

Iſte *cum ſequentibus pſalmis* uſ- 1
que ad extremum centeſimum
tertium, titulum gerunt, Pro
cantico graduum. Verſ. 8.

AD Dominum clamavi in neceſſitate
mea, & exaudivit me. O Domine, 2
libera animam meam à labiis iniquis, & à
lingua doloſa. Quid eſt quod dabunt tibi, 3
aut quid eſt quod addent tibi linguæ fal-
laces ? Sagittæ potentis, acutæ ſunt veluti 4
carbones comburentes. Væ mihi, quoniam 5
peregrinatio mea protracta eſt mihi, com-
moratus ſum in habitaculis Cedar: Mul- 6
tùm peregrinata eſt anima mea, & fui
pacificus cum oſoribus pacis Quumque al- 7
loquerer eos pacificè, impugnabant me
gratis. Alleluja.

PSAL. CXX.

Verſ. 10. 1

LEvavi oculos meos ad montes, ſcili-
cet unde mihi veniet auxilium meum.
Auxilium meum eſt à conſpectu Domini 2
qui creavit cœlum et terram. Non per- 3
mittet labi pedes tuos, neq; dormitabit cu-
ſtos tuus. Cuſtos Iſraelis non dormitabit 4
neque dormiet. Dominus cuſtodiet te, Do- 5
minus obumbrabit te manu ſuâ dexterâ.
Non comburet te ſol interdiu, neque luna 6
noctu. Dominꝰ cuſtodiet te ab omni malo:
Dominus cuſtodiet animã tuam, Dominus 7
cuſtodiet introitum tuum et exitum tuum 8
ex nunc et uſque in æternum. Alleluja.

PSAL. CXXI.

Verſ. 15. 1

GAviſus ſum in dicentibus mihi, Sanè
ad domũ Domini ibimus. Pedes noſtri 2
ſteterunt in atriis Jeroſolymæ, Jeroſolymæ 3
inquam *conſtructæ velut urbs cujus ſocie-*
tas concors eſt. Nam illuc aſcenderunt 4
tribꝰ, tribꝰ inquam *Domini teſtes Iſraeli,*
gratias acturi nomini Domini. Quoniam 5
illic ſederunt ſuper ſedibus judicii, ſedi-
bus ſuper domum David.

pax Sit .te diligentes *erunt quieti* : Jerusalaim pacem Postulate
6 שַׁאֲלוּ שְׁלוֹם יְרוּשָׁלִָם יִשְׁלָיוּ אֹהֲבָיִךְ׃ יְהִי־שָׁלוֹם
7 loquar : meos *socios* & ,meos fratres Propter .tuis *palatiis in tranquillitas ;tuo antemurali* in
בְּחֵילֵךְ שַׁלְוָה בְּאַרְמְנוֹתָיִךְ׃ לְמַעַן אַחַי וְרֵעָי אֲדַבְּרָה־ 8
.tibi bonum quæram : nostri Dei DOMINI domum Propter .te in pacem nunc
נָּא שָׁלוֹם בָּךְ׃ לְמַעַן בֵּית־יְהוָה אֱלֹהֵינוּ אֲבַקְשָׁה טוֹב לָךְ׃ 9

PSAL. CXXIII. קכג

Ecce .cœlis in *sedens* : meos oculos levavi te Ad .graduum Canticum
1 שִׁיר הַמַּעֲלוֹת אֵלֶיךָ נָשָׂאתִי אֶת־עֵינַי הַיֹּשְׁבִי בַּשָּׁמָיִם׃ הִנֵּה
2 manū ad ancillæ oculi sicut , suorū dominorum manum ad servorum oculi sicut
כְעֵינֵי עֲבָדִים אֶל־יַד אֲדוֹנֵיהֶם כְּעֵינֵי שִׁפְחָה אֶל־יַד
.nostri misereatur donec : nostrum Deum Dominum ad nostri oculi ita ; suæ *heræ*
גְּבִרְתָּהּ כֵּן עֵינֵינוּ אֶל־יְהוָה אֱלֹהֵינוּ עַד שֶׁיְּחָנֵּנוּ׃
Multùm .despectione sum⁹ satiati multū quia:nostri miserere,Domine nostri Miserere
3 חָנֵּנוּ יְהוָה חָנֵּנוּ כִּי־רַב שָׂבַעְנוּ בוּז׃ רַבַּת
4 .superborum despectione : *pacatorum* subsannatione nostra anima sibi est satiata
שָׂבְעָה־לָּהּ נַפְשֵׁנוּ הַלַּעַג הַשַּׁאֲנַנִּים הַבּוּז לִגְאֵיוֹנִים׃

PSAL. CXXIV. קכד

nunc dicat : *nobis* fuit qui Dominus Nisi .David ipsi graduum Canticum
1 שִׁיר הַמַּעֲלוֹת לְדָוִד לוּלֵי יְהוָה שֶׁהָיָה לָנוּ יֹאמַר־נָא
Tunc .homines nos *super* *surgendo in* : *nobis* fuit qui Dominus Nisi .Israel
2 יִשְׂרָאֵל׃ לוּלֵי יְהוָה שֶׁהָיָה לָנוּ בְּקוּם עָלֵינוּ אָדָם׃ אֲזַי
3 ,nos *inundâssent* aquæ Tunc .nos in eorum *nasum irascendo in* ,nos deglutissent vivos
חַיִּים בְּלָעוּנוּ בַּחֲרוֹת אַפָּם בָּנוּ׃ אֲזַי הַמַּיִם שְׁטָפוּנוּ 4
aquæ : nostrā animā super transisset Tunc .nostrā animā super transisset torrens
נַחְלָה עָבַר עַל־נַפְשֵׁנוּ׃ אֲזַי עָבַר עַל־נַפְשֵׁנוּ הַמַּיִם 5
.eorum dentibus prædam nos dedit non qui , Dominus Benedictus *tumidæ*
הַזֵּידוֹנִים׃ בָּרוּךְ יְהוָה שֶׁלֹּא נְתָנָנוּ טֶרֶף לְשִׁנֵּיהֶם׃ 6
nos & ,est contritus laqueus : *irretientium* laqueo de evasit avis sicut nostra Anima
7 נַפְשֵׁנוּ כְּצִפּוֹר נִמְלְטָה מִפַּח יוֹקְשִׁים הַפַּח נִשְׁבָּר וַאֲנַחְנוּ
.terram & cœlum *facientis* : Domini nomine in nostrum Adjutorium .evasimus
8 נִמְלָטְנוּ׃ עֶזְרֵנוּ בְּשֵׁם יְהוָה עֹשֵׂה שָׁמַיִם וָאָרֶץ׃

PSAL. CXXV. קכה

,commovebitur non ,Sijon mons sicut : Domino in *Confidentes* .graduum Canticum
1 שִׁיר הַמַּעֲלוֹת הַבֹּטְחִים בַּיהוָה כְּהַר־צִיּוֹן לֹא־יִמּוֹט
DOMINUS & , *ipsam* *circum* montes Jerusalaim .manebit seculum in
2 לְעוֹלָם יֵשֵׁב׃ יְרוּשָׁלִַם הָרִים סָבִיב לָהּ וַיהוָה
virga requiescet non Quia .seculum in usque & , *nunc ex* ,*suum populum* *circum*
3 סָבִיב לְעַמּוֹ מֵעַתָּה וְעַד־עוֹלָם׃ כִּי לֹא יָנוּחַ שֵׁבֶט
iniquitatem *in* justi mittant *non* *ut* , justorum sortem super impietatis
הָרֶשַׁע עַל גּוֹרַל הַצַּדִּיקִים לְמַעַן לֹא־יִשְׁלְחוּ הַצַּדִּיקִים בְּעַוְלָתָה
.suis cordibus in rectis & : bonis Domine Benefac .suas manus
4 יְדֵיהֶם׃ הֵיטִיבָה יְהוָה לַטּוֹבִים וְלִישָׁרִים בְּלִבּוֹתָם׃
operantibus cum Dominus eos faciet ambulare ,*suis tortuositatibus* *pervertentes* Et
5 וְהַמַּטִּים עֲקַלְקַלּוֹתָם יוֹלִיכֵם יְהוָה אֶת־פֹּעֲלֵי
.Israel super pax : iniquitatem
הָאָוֶן שָׁלוֹם עַל־יִשְׂרָאֵל׃

תרגום TARGUM.

שְׁאִילוּ בִּשְׁלָמָא דִירוּשְׁלֶם יִתְבוּן בִּשְׁלָוְתָא 6
רָחִימָךְ׃ יְהֵי שְׁלָם בְּחֵילֵיךְ שַׁלְוְתָא בִּבְרָנְיָתִיךְ׃ 7
מִן בִּגְלַל אַחַי וְחַבְרַי אֲמַלֵּל כְּדוּן שְׁלָם בָּךְ׃ 8
מְטוּל בֵּית מַקְדַּשׁ דַּיְיָ אֱלָהָנָא אֶתְבַּע 9
לְאוּטָבָא לָךְ׃

קכג

שִׁירָא דְאִתְאֲמַר עַל מַסּוּקִין דִתְהוֹמָא קֳדָמָךְ 1
זְקַפִּית יַת עֵינַי דְּיָתֵיב עַל כּוּרְסֵי יְקָרָא בִּשְׁמַיָּא׃
הָא כְמָא דְמוֹדִיקָן עֵינֵי עַבְדִין מִידַיָא דְרִבּוֹנֵיהוֹן 2
וְהֵיכְמָא דְמוֹדִיקָן עֵינֵי אַמְהָתָא מִידַיָּא
דְרִבּוֹנְתְהָא הֵכְדֵין מְדִיקָן עֵינָנָא קֳדָם יְיָ אֱלָהָנָא
עַד דִּי יְחוּס עֲלָנָא׃ חוּס עֲלָנָא יְיָ חוּס עֲלָנָא 3
אֲרוּם סַגִּי שְׂבַעְנָא בְסִירוּתָא׃ סוּגְעַת שַׂבְעַת 4
לָהּ נַפְשָׁנָא תְּלַעוּבָא דְשָׁלְוִין מְבַסְרָנַיָּא
וְגֵיוְתְנַיָּא׃

קכד

שִׁירָא דְאִתְאֲמַר עַל מַסּוּקִין דִתְהוֹמָא עַל יַד 1
דָּוִד אִלּוּלֵי יְיָ דַּהֲוָה בְּסַעֲדָנָא יֵימְרוּן כְּדוּן
יִשְׂרָאֵל׃ אִלּוּלֵי מֵימְרָא דַּיְיָ דַּהֲוָה בְּסַעֲדָנָא כַּד 2
קָם עֲלָנָא בַּר נָשׁ׃ הָא בְכֵן כַּד חַיִּין בְּלַעוּ יָתָנָא 3
כַּד תַּקִּיף רוּגְזְהוֹן בָּנָא׃ הָא בְכֵן מַיָּא שְׁטַפוּ 4
יָתָנָא מַרְעִית עָבְרָא עַל נַפְשָׁנָא׃ הָא בְכֵן 5
עֲבַר עַל נַפְשָׁנָא מַלְכָּא דְמַתִּיל לְמוֹי זֵידוֹנַיָּא
דְיַמָּא׃ בְּרִיךְ שְׁמָא דַּיְיָ דְּלָא מַסְרָנָא הֵיךְ תְּבִירָא 6
לְשִׁנֵּיהוֹן׃ נַפְשָׁנָא הֵיךְ כְּצִפְּרָא אִשְׁתֵּיזְבַת מִפַּחֵי 7
תַּקְלַיָּא פַּחָא אִתְּבַר וַאֲנַן אִשְׁתֵּיזְבְנָא׃ סַעֲדָנָא 8
בְּשׁוּם מֵימְרָא דַּיְיָ דַּעֲבַד שְׁמַיָּא וְאַרְעָא׃

קכה

שִׁירָא דְאִתְאֲמַר עַל מַסּוּקִין דִתְהוֹמָא צַדִּיקַיָּא 1
דְמִתְרַחֲצִין בְּמֵימְרָא דַּיְיָ הֵיךְ טוּרָא דְצִיּוֹן לָא
יִזְדַּעְזַע לְעָלַם יִתֵּיתֵב׃ יְרוּשְׁלֶם טוּרַיָּא חֲזוֹר 2
חֲזוֹר דִּי לָהּ וּמֵימְרָא דַּיְיָ חֲזוֹר חֲזוֹר לְעַמֵּיהּ מִן
הַשְׁתָּא וְעַד עַלְמָא׃ אֲרוּם לָא יְנוּחַ שֶׁבֶט רִשְׁעָא 3
עַל פִּצְתָּא דְצַדִּיקַיָּא מִן בִּגְלַל דְּלָא יוֹשִׁיטוּן
צַדִּיקַיָּא בְּשִׁקְרָא אִידֵיהוֹן׃ אוֹטִיב יְיָ לְטָבִין 4
וְלִתְרִיצִין בְּלִבְּהוֹן׃ וּדְסָטְיָן בָּתַר עוּקְמָנוּתְהוֹן 5
יוֹלִיכִנּוּן בְּגֵיהִנָּם חוּלָקְהוֹן עִם עָבְדֵי שְׁקַר שְׁלָמָא
עַל יִשְׂרָאֵל׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Rogate pro pace Jeruſalem;ſedeant in tran- 6
quillitate amatores tui. Sit pax in exercitu 7
tuo,tranquillitas in prætoriis tuis. Propter 8
fratres meos et ſocios meos loquar nunc pa-
cem in te. Propter domum ſanctuarii Dñi 9
Dei noſtri, quæram ut bene ſit tibi.

Canticum quod dictum eſt ſuper gradi- 1
bus *abyſſi*.

PSAL. CXXIII.

Coram te elevavi oculos meos, qui ha-
bitas ſuper ſedem gloriæ in cœlis. Ecce ſic- 2
ut reſpiciunt oculi ſervorum de manibus
dominorum ſuorum, et ecce ſicut reſpici-
unt oculi ancillarum de manibus domina-
rum ſuarum ; ſic reſpiciunt oculi noſtri ad
Dñm Deum noſtrum, uſque quo miſereatur
noſtri. Miſerere noſtri Dñe, miſerere no- 3
ſtri, quoniam multum ſaturati ſumus deſpe-
ctione. Multum ſaturata eſt anima noſtra 4
opprobrio opulentorum, *deſpectorum &*
ſuperborum.

Canticum quod dictum eſt ſuper gradi- 1
bus *abyſſi* per manum David.

PSAL. CXXIV.

Niſi fuiſſet *Dominus qui* fuit in auxiliū
noſtrum, dicat nunc Iſrael : Niſi fuiſſet 2
Verbum Dñi qui fuit in adjutoriū noſtrum,
cùm inſurgeret adverſus nos homo, Tunc 3
vivos deglutiſſent nos, cùm invaleſceret
furor eorum adverſum nos. Tunc aquæ ob- 4
ruiſſent nos, infirmitas tranſiſſet ſuper
animam noſtram. Ecce tunc tranſiſſet ſuper 5
nos rex, *qui comparatur* aquis elatis maris.
Benedictum nomen Domini, qui non dedit 6
nos *ſicut prædam* dentibus eorū. Anima no- 7
ſtra eſt ſicut avis[*quæ*]elapſa eſt de laqueo
offendiculorum : laqueus contritus eſt, &
nos liberati ſum⁹. Adjutoriū noſtrum in no- 8
nomine Verbi Dñi, qui fecit cœlū et terrā.

Canticum quod dictum eſt ſup gradibus 1
abyſſi.

PSAL. CXXV.

Juſti qui confidunt in verbo Domini ,
ſunt ſicut mons Sion, [*qui*] non commo-
vebitur, in æternum habitandus. Jeru- 2
ſalem montes in circuitu ejus, & majeſtas
Dñi in circuitu populi ſui, ex hoc tempore
& uſq; in æternum. Quoniam non quieſcet 3
virga impietatis ſuper ſortem juſtorum, ne
extendant juſti in iniquitatē manus ſuas.Be- 4
nignè fac Dñe bonis & rectis in corde ſuo.
Declinantes autem in obliquitates ſuas, de- 5
ducet in gehennā,pars eorum erit cum ope-
rantibus iniquitatē. Pax[*vero*]ſuper Iſrael.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

*ܫܐܠܘ ܫܠܡܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܢܗܘܘܢ ܫܝܢܝܢ ܪܚܡܝܟܝ: *ܢܗܘܐ ܫܠܡܐ ܒܚܝܠܟܝ. 6 7
ܘܫܝܢܐ ܒܦܠܛܪܝܟܝ: *ܡܛܠ ܐܚܝ ܘܪܚܡܝ. ܐܡܠܠ ܫܠܡܐ ܥܠܝܟܝ: *ܡܛܠ ܒܝܬܗ 8
ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. ܐܒܥܐ ܛܒܬܟܝ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܟܒ * ܕܕܘܝܕ. ܡܢ ܡܣܩܬܐ. 9 1
ܘܡܬܐܡܪ ܡܢ ܦܪܨܘܦܐ ܕܙܪܘܒܒܠ ܪܫ ܫܒܝܬܐ. ܘܨܠܘܬܐ ܕܒܥܘܬܐ. ܦܬܓܡܐ ܝ. ܠܘܬܟ
ܐܪܝܡܬ ܥܝܢܝ ܥܡܘܪܐ ܕܫܡܝܐ. *ܐܝܟ ܥܝܢܝ̈ ܥܒ̈ܕܐ ܠܘܬ ܡܪܘܬܗܘܢ: ܘܐܝܟ ܥܝܢܝ̈ ܐܡܬܐ 2
ܠܘܬ ܡܪܬܗ. ܗܟܢܐ ܥܝܢܝ̈ܢ ܠܘܬܟ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ: ܥܕܡܐ ܕܬܪܚܡ ܥܠܝܢ. *ܪܚܡ ܥܠܝܢ 3
ܡܪܝܐ ܪܚܡ ܥܠܝܢ: ܡܛܠ ܕܣܓܝܐܐ ܫܡܥܢ ܫܝܛܘܬܐ. *ܘܣܓܝ ܣܒܥܬ ܢܦܫܢ: ܡܚܣܕܐ 4
ܕܡܒܙܚܢܐ ܘܫܝܛܘܬܐ ܕܫܒܗܪܢܐ. *ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܟܓ *
*ܠܐ ܡܫܡܗܐ. ܬܘܕܝܬܐ. ܡܣܩܬܐ. ܦܬܓܡܐ ܝܗ. ܐܠܘܠܐ ܡܪܝܐ ܕܩܡ ܠܢ. ܢܐܡܪ ܐܝܣܪܐܝܠ 1
*ܕܐܠܘܠܐ ܡܪܝܐ ܕܩܡ ܠܢ: ܟܕ ܩܡܘ ܥܠܝܢ ܒܢܝ̈ܢܫܐ. *ܚܝܐ ܒܠܥܝܢ ܗܘܘ ܠܢ: ܘܟܕ 2 3
ܐܬܚܡܬ ܪܘܓܙܗܘܢ ܥܠܝܢ. *ܒܡܝܐ ܡܛܒܥܝܢ ܗܘܘ ܠܢ: ܪܕܝܐ ܥܒܪ ܥܠ ܢܦܫܢ. 4
*ܘܡܝܐ ܣܓܝܐܐ ܥܒܪܘ ܥܠ ܢܦܫܢ: *ܒܪܝܟ ܡܪܝܐ ܕܠܐ ܝܗܒܢ ܡܐܟܘܠܬܐ ܠܟܟܝ̈ܗܘܢ. 5 6
*ܢܦܫܢ ܐܝܟ ܨܦܪܐ ܐܬܦܨܝܬ ܡܢ ܦܚܐ ܕܨܝܕܐ: ܦܚܐ ܐܬܬܒܪ ܘܚܢܢ ܐܬܦܨܝܢ. *ܥܘܕܪܢܢ 7 8
ܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ: ܗܘ ܕܥܒܕ ܫܡܝܐ ܘܐܪܥܐ. *ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܟܕ * ܡܢ ܡܣܩܬܐ. ܠܐ 1
ܡܫܡܗܐ. ܦܬܓܡܐ ܝܕ. ܐܝܠܝܢ ܕܡܬܬܟܠܝܢ ܥܠ ܡܪܝܐ ܒܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ: ܠܐ ܢܬܙܝܥܘܢ ܠܥܠܡ
ܢܬܒܘܢ. *ܐܘܪܫܠܡ ܛܘܪ̈ܐ ܚܕܪܝܢ ܠܗ: ܘܡܪܝܐ ܚܕܪ ܠܥܡܗ. ܡܢ ܗܫܐ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ: 2
*ܡܛܠ ܕܠܐ ܬܬܢܝܚ ܫܒܛܐ ܕܥܘܠܐ ܥܠ ܡܢܬܐ ܕܙܕܝܩ̈ܐ. ܕܠܐ ܢܦܫܛܘܢ ܙܕܝܩ̈ܐ ܐܝܕܝܗܘܢ 3
ܒܥܘܠܐ: *ܐܛܐܒ ܡܪܝܐ ܠܛܒ̈ܐ. ܘܠܐܝܠܝܢ ܕܬܪܝܨܝܢ ܒܠܒܗܘܢ: ܘܐܝܠܝܢ ܕܡܥܩܡܝܢ 4 5
ܫܒܝܠܝܗܘܢ. ܢܕܒܪ ܐܢܘܢ ܡܪܝܐ ܥܡ ܥܒ̈ܕܝ ܥܘܠܐ: ܘܫܠܡܐ ܠܐܝܣܪܐܝܠ.

* Precamini pacem Hieruſalem, Sint *inquite* 6
affluentes amici tui : Sit pax in exercitu tuo, 7
& abundantia in palatiis tuis. Propter fra- 8
tres meos & amicos meos,loquar pacē de te.
Propter domū Dñi Dei noſtri, precabor tibi 9
fœlicitates.

PSAL. CXXII.

Davidis. Ex Pſalmis aſcenſionis. Dicitúrque ex perſona Zorobabel principis captivorum: & oratio ſupplicationis. Verſ. 10. 1

Ad te levavi oculos meos Habitator cœli.
Ut oculi ſervorū ad dominos ſuos utque 2
oculi ancillæ ad dominam ſuam,ita oculi no-
ſtri ad te Dñe Deus noſter, donec miſerearis
noſtrî. Miſerere noſtrî Dñe,miſerere noſtrî: 3
quia multitudinem contemptûs audivim⁹, Et 4
diu ſatiata eſt anima noſtra probro irriſorum
& contemptu ſuperborum.

PSAL. CXXIII.

Anonym⁹. Gratiarū actio. Aſcenſus Verſ. 15. 1

Niſi Dñs ſurrexiſſet pro nobis: dicat Iſra-
el, Niſi Dñs ſurrexiſſet pro nobis, cùm 2
inſurrexiſſent adverſùm nos homines, Vivos 3
deglutîſſent nos : & cùm æſtuâſſet ira illorū
contra nos, In aquas immerſiſſent nos : Tor- 4
rens tranſiiſſet ſuper animā noſtrā, Et aquæ 5
copioſæ tranſiiſſent ſuper animā noſtrā. Be- 6
nedictus Dñs qui non dedit nos eſcam denti-
bus eorū. Anima noſtra ſicut paſſer evaſit la- 7
queū aucupis : laqueus contritus eſt, & nos
liberati ſumus. Auxiliū noſtrum in nomine 8
Domini, qui condidit cœlum ac terram.

PSAL. CXXIV.

*Ex Pſalmis aſcenſionis. Anonymus. Verſ.*14. 1

II qui ſperant in Dño in monte Sion, haud
movebuntur : ſed perpetuò morabuntur.
Hieroſolymā montes circundant,& Dñs cir- 2
cundat populū ſuū ex nunc & uſq; in ſecu-
lum. Non enim requieſcet tribus iniquorū 3
in parte juſtorū, neq; protendent juſti man⁹
ſuas in ſcelere. Benefac Dñe bonis, & iis qui 4
recti ſunt in corde ſuo. Eos autem qui con- 5
torquent ſemitas ſuas, ducet Dominus cum
operantibus iniquitatem : pax verò Iſraeli.

Verſio VULG. LAT.

6 Rogate quæ ad pacem ſunt Jeruſalem:
7 & abundantia diligentib⁹ te. Fiat pax
in virtute tua:& abundantia in turri-
8 bus tuis. Propter fratres meos,& pro-
ximos meos, loquebar pacem de te :
9 Propter domum Domini Dei noſtri,
quæſivi bona tibi.

Canticum graduum. CXXII.

1 AD te levavi oculos meos,qui habi-
2 tas in cœlis. Ecce ſicut oculi ſervorũ,
in manibus dominorum ſuorũ. Sicut
oculi ancillæ in manibus dominæ ſuæ:
ita oculi noſtri ad Dominũ Deum no-
3 ſtrũ, donec miſereatur noſtrî. Miſe-
rere noſtrî,Domine, miſerere noſtrî :
quia multũ repleti ſumus deſpectione:
4 Quia multũ repleta eſt anima noſtra :
opprobrium abundantibus, & deſpe-
ctio ſuperbis.

1 Canticum graduum. CXXIII.

NIſi quia Domin⁹ erat in nobis,di-
2 cat nunc Iſrael: Niſi quia Dominus e-
rat in nobis, Cũ exurgerent homines
3 in nos, Fortè vivos deglutìſſent nos :
4 Cũ iraſceretur furor eorũ in nos,For-
5 ſitan aqua abſorbuiſſet nos. Torren-
tem pertranſivit anima noſtra:forſitan
pertranſìſſet anima noſtra aquam in-
6 tolerabilem. Benedictus Dominus,qui
non dedit nos in captionem dentibus
7 eorum. Anima noſtra ſicut paſſer ere-
pta eſt de laquo venantium : Laqueus
contritus eſt, & nos liberati ſumus.
8 Adjutorium noſtrum in nomine Do-
mini, qui fecit cœlum & terram.

1 Canticum graduum. CXXIV.

QUi confidunt in Dño, ſicut mons
Sion:non commovebitur in æternum,
2 qui habitat In Jeruſalem. Montes in
circuitu ejus : & Dominus in circuitu
populi ſui,ex hoc nunc & uſque in ſe-
3 culum. Quia non relinquet Dominus
virgam peccatorum ſuper ſortem ju-
ſtorum : ut non extendant juſti ad in-
4 iquitatem manus ſuas. Benefac, Do-
5 mine, bonis, & rectis corde. Decli-
nantes autem in obligationes,adducet
Dominus cum operantibus iniquita-
tem:pax ſuper Iſrael.

Verſ. GRÆCA. LXX. Interp.

6 †Ἐρωτήσατε δὴ τὰ εἰς εἰρήνην τὴν Ἱερουσαλήμ,
7 †καὶ εὐθηνία τοῖς ἀγαπῶσί σε. †Γενέσθω(γ) δὴ εἰρή-
νη ἐν τῇ δυνάμει σου, †καὶ εὐθηνία ἐν ταῖς πυργοβά-
8 ρεσί σου. †(δ)Ἕνεκα τῶν ἀδελφῶν μου καὶ τῶν πλησίον
9 μου, †ἐλάλουν(ε) δὴ εἰρήνην περὶ σοῦ. †(ϛ)Ἕνεκα τοῦ
οἴκου κυρίου τοῦ θεοῦ ἡμῶν ἐξεζήτησα ἀγαθά (ζ) σοι.
MS. A. (γ) δὴ (δ) Ἕνεκεν (ε) δὴ (ϛ) Ἕνεκεν (ζ) ἐξ-
εζήτησα ἀγαθά.

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. ρκβ'.

1 †ΠΡὸς σὲ ἦρα τοὺς ὀφθαλμούς μου, †τὸν κατοι-
2 κοῦντα ἐν τῷ οὐρανῷ. †Ἰδοὺ ὡς ὀφθαλμοὶ δούλων
εἰς χεῖρας τῶν κυρίων αὐτῶν, †ὡς ὀφθαλμοὶ παι-
δίσκης εἰς χεῖρας τῆς κυρίας αὐτῆς, †οὕτως οἱ ὀ-
φθαλμοὶ ἡμῶν πρὸς κύριον τὸν θεὸν ἡμῶν, †ἕως
3 οὗ οἰκτειρῆσαι ἡμᾶς. †Ἐλέησον ἡμᾶς κύριε, ἐλέη-
σον ἡμᾶς, †ὅτι ἐπὶ πολὺ ἐπλήσθημεν ἐξουδενώσεως.
4 †Ἐπὶ πλεῖον ἐπλήσθη ἡ ψυχὴ ἡμῶν· †τὸ ὄνειδος
τοῖς εὐθηνοῦσι †καὶ ἡ ἐξουδένωσις τοῖς ὑπερηφάνοις.

1 Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. ρκγ.

†ΕΙ μὴ ὅτι κύριος ἦν ἐν ἡμῖν, †εἰπάτω δὴ
2 Ἰσραήλ, Εἰ μὴ ὅτι κύριος ἦν ἐν ἡμῖν, †ἐν τῷ
3 ἐπαναστῆναι ἀνθρώπους ἐφ' ἡμᾶς, †Ἄρα ζῶντας ἂν
κατέπιον ἡμᾶς· †ἐν τῷ ὀργισθῆναι τὸν θυμὸν αὐ-
4 τῶν ἐφ' ἡμᾶς, †Ἄρα (α)τὸ ὕδωρ ἂν κατεπόντι-
5 σεν ἡμᾶς. †Χείμαρρον διῆλθεν ἡ ψυχὴ ἡμῶν· †ἄ-
ρα διῆλθεν ἡ ψυχὴ ἡμῶν τὸ ὕδωρ τὸ ἀνυπόστατον.
6 †Εὐλογητὸς κύριος, ὃς οὐκ ἔδωκεν ἡμᾶς †εἰς θή-
7 ραν τοῖς ὀδοῦσιν αὐτῶν. †Ἡ ψυχὴ ἡμῶν ὡς στρου-
θίον (β)ἐρρύσθη †ἐκ τῆς παγίδος τῶν θηρευόντων·
8 †ἡ παγὶς συνετρίβη, καὶ ἡμεῖς (γ)ἐρρύσθημεν. †Ἡ
βοήθεια ἡμῶν ἐν ὀνόματι κυρίου, †τοῦ ποιήσαντος
τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν. MS. A. (α)τὸ
ὕδωρ κατεπόντισεν (β) ἐρύσθη (γ) ἐρύσθημεν.

1 Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. ρκδ'.

†ΟΙ πεποιθότες ἐπὶ κύριον ὡς ὄρος Σιών, †οὐ
2 σαλευθήσεται εἰς τὸν αἰῶνα †ὁ κατοικῶν Ἱερου-
σαλήμ· †ὄρη κύκλῳ αὐτῆς, (a)†καὶ ὁ κύριος κύκλῳ
3 τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, †ἀπὸ τοῦ νῦν καὶ ἕως τοῦ αἰῶνος. †Ὅτι
(α) οὐκ ἀφήσει κύριος τὴν ῥάβδον τῶν ἁμαρτωλῶν
†ἐπὶ τὸν κλῆρον τῶν δικαίων, †ὅπως ἂν μὴ ἐκτείνω-
4 σιν οἱ δίκαιοι (β)ἐν ἀνομίαις χεῖρας αὐτῶν. †Ἀ-
γάθυνον κύριε τοῖς ἀγαθοῖς †καὶ τοῖς εὐθέσι τῇ
5 καρδίᾳ. †Τοὺς δὲ ἐκκλίνοντας εἰς τὰς στραγγαλιάς,
†ἀπάξει κύριος μετὰ τῶν ἐργαζομένων τὴν ἀνομί-
αν. †εἰρήνη ἐπὶ τὸν Ἰσραήλ. MS.A.(a)καὶ
κύριος (α) οὐκ ἀφήσει τὴν ῥάβδον (β) ἐν ἀνομίᾳ

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

6(d)[g] *Interrogate quæ ad pacem* 6
ſunt Hieruſalem:& (e)abundantia
diligentib⁹ te. 7 *Fiat pax in(f)vir-* 7
tute tua , & (g) abundantia in[h]
turrib⁹ tuis. 8 *Propter fratres meos,* 8
& proximos meos,(h) [i] *loquebar*
pacem de te. 9 *Propter domum Do-* 9
mini Dei[k]*noſtri quæſivi bona tibi.*

Canticum graduum.*CXXII.*

1 *AD te* [a] *levavi oculos meos,* 1
qui habitas in cœlo. 2 *Ecce* 2
ſicut oculi ſervorum ad manus do-
minorum ſuorum, 3 *ſicut oculi an-*
cillæ ad manus dominæ ſuæ ; ita o-
culi noſtri ad Dominum Deum no-
ſtrũ,donec miſereatur noſtrî. 4 *Miſe-* 3
rere noſtrî,Domine,miſerere noſtrî:
quoniam multùm repleti ſumus de-
ſpectione. 5 *In(a)plurimum repleta* 4
eſt anima noſtra : opprobrium[b]
abundantib⁹,& deſpectio ſuperbis.

Canticum graduum.*CXXIII.* 1

1 *NISI(a) quia Dominus erat*
in nobis,dicat nunc Iſrael,Niſi 2
quia Dominus erat in nobis, 2 *Cùm*
inſurgerent homines ſuper nos :[a]
*Forſitã vivos deglutiſſent nos:*3[b] 3
Cùm iraſceretur furor eorum ſuper
nos; (b) Forſitan aqua abſorbuiſſet 4
nos. 4 *Torrentẽ pertranſivit anima* 5
noſtra:(c)fortaſſe pertranſivit ani-
ma noſtra aquam(d) intolerabilem.
5 *Benedictus Dominus* [c], *qui non* 6
dedit nos in venationem dentibus e-
orum. 6 *Anima noſtra ſicut paſſer,* 7
erepta eſt de laqueo venantium. 7
Laqueus contritus eſt:& nos[d]*e-*
ruti ſumus. 8 *Auxilium noſtrum in* 8
nomine Domini:qui fecit cœlum,&
terram.

Canticum graduum. *CXXIV.* 1

1 *QUI confidunt in Domino;*
ſicut mons Sion,non(a) com-
movebitur in æternum,qui habitat
In Hieruſalem. 2 *Montes in cir-* 2
cuitu ejus,& Dominus [a] *in cir-*
cuitu populi ſui : ex hoc nunc &
uſque in ſeculum. 3 *Quia non re-* 3
linquet Dominus virgam peccato-
rum ſuper ſortem juſtorum : (b) ut
non[b] *extendant juſti ad iniquita-*
tes manus ſuas. 4 *Benefac,Domine,* 4
bonis, & rectis corde: 5 *Declinan-* 5
tes autem[c] *in(c)ſtrangulationes,*
abducet Dominus cum operantibus
iniquitatem: pax ſuper Iſrael.

Verſio ÆTHIOPICA.

ተዜነው: ደኅናሃ: ለኢየሩሳሌም:: ወፍሥ 6
ሐሆሙ: ለእለ: ያፈቅሩ: ስምከ::=: ይኩ 7
ን:ሰላም: በኃይልከ:: ወትፍሥሕት : ውስ
ተ:ማኅፈደ:ክብድከ::=: በእንተ:እኀዊየ: 8
ወቢጽየ:: ይትናገሩ : ሰላመ : በእንቲአ
ኪ::=: ወበእንተ : ቤተ : እግዚአብሔር: 9
እመስኪየ:ኀሠሥኩ:ሠናይተኪ::=:

ማኅሌት:ዘበመዓርጊሁ::

የ፻፳፪ ኀቤከ:አንቃዕደነ:አዕይንቲነ:ዘትነብ 1
ር:: ውስተ : ሰማይ::=: ናሁ : ከመ:
አዕይንተ:አግብርት : ውስተ:እደ : አጋእዝ 2
ቲሆሙ::=: ወከመ: ዐይነ:ዓመት:ውስተ:እ 3
ደ :እግዝእታ:: ከማሁ : አዕይንቲነ : ኀበ:
እግዚአብሔር: አምላክነ:: እስከ : አመ:
ይሣሀለነ::=: ተሣሀለነ : እግዚኦ : ተሣሀለ 4
ነ:: እስመ: ፈድፈደ: ጸገብነ: ፅእለተ::=:
ወፈድፈደ: ጸግበት: ነፍስነ:: ፅእለተ:ብዑ 5
ላን:ወኀሳረ:ዕቡያን::=:

ማኅሌት:ዘበመዓርጊሁ::

የ፻፳፫ ሶበ:አኮ:እግዚአብሔር:ምስሌነ::ይ 1
ብል: እስራኤል: ሶበ:አኮ : እግዚአብሔር:
ምስሌነ::=: እንተ:ጊዜ: ተንሥአ:ሰብእ: 2
ላዕሌነ:: አሕዝብ: ሕያዋኒነ:እምውኅጡ
ነ::=: በከመ: አንሥኡ: ቍጥዓ : መዐቶ 3
ሙ: ላዕሌነ:: እሕዛብ: በማይ: እምአስጠ
ሙነ::=: እምውኂዝ:አምሰጠት:ነፍስየ:: 4
አምሰጠት: ነፍስነ: እማየ: ሀከክ::=: ይ
ትባረክ : እግዚአብሔር: አምላክነ: ዘኢያ
ግብአነ:ውስተ:መሥገርተ: ማዕገቶሙ::=:
ነፍስነሰ: አምሰጠት:ከመ: ዖፍ: እመሥገር 6
ት:ነአዊት::=: መሥገርትሰ:ተቀጥቀጠት: 7
ወንሕነሰ:ድኅነ::=: ረድኤትነ:በስመ:እግ 8
ዚአብሔር::ዘገብረ: ሰማየ:ወምድረ::=:

ማኅሌት:ዘበመዓርጊሁ::

የ፻፳፬ እለ:ተወከሉ:በእግዚአብሔር:ከመ: 1
ደብረ: ጽዮን: ኢይትሀወክ : ለዓለም: ዘየኀ
ድር : ውስተ : ኢየሩሳሌም::=: አድ
ባር: የአውደ: ወእግዚአብሔር : ይሜግብ: 2
ሕዝቦ::እምይእዜ: ወእስከ:ለዓለም::=:
እስመ: ኢየኀድግ : እግዚአብሔር : በትረ: 3
ኀጥአን: ደበ: መክፈልተ: ጻድቃን:: ከመ:
ኢያንሥኡ :እደዊሆሙ : ጻድቃን : በዐመ
ፃ::=: አሠኒ:እግዚኦ : ለኄራን: ወለርቱዐ 4
ነ:ልብ::=: ወእለሰ: ይትመየጡ : ውስተ: 5
ፁግ::ይወስዶሙ: እግዚአብሔር: ምስለ: ገ
በርተ:ዐመፃ::ሰላም:ላዕለ : እስራኤል::=:

INTERP. ÆTHIOP. [g]Enarrate ſalutare Hieruſalem:& lætitiam eorum qui diligunt nomen tuum.[h]turritis palatiis tuis.[i]loquentur pacem[k]mei quæſivi decorem tuum. *PSAL.CXXII.* [a] levavimus oculos noſtros,[b]divitibus,& *PSAL.CXXIII.* [a]exiſtimaverim vivos[b]Secundum deſpectum & furorem eorum quem portabant in nos,exiſtimaverim ut in aqua abſorbuiſſent nos. Ex torrente evaſit anima noſtra aquas tumultuantes.[c]Deus noſter, qui [d] etiam liberavit. *PSAL.CXXIV.* [a]providebit populo ſuo :[b]attollant juſti[c] in nequitiam,

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

6 * سلوا السلم ليرسليم وحصبا للذين يحبونك * فلتكن السلامة في جنودك * والخصب واليسار في 7
8 ابراج قصورك * من اجل اخوتي والقريبين اليك * تكلمت من اجلك بالسلامة * ومن اجل بيت 9
الرب الهنا * طلبت لك الخيرات * الليلويا * * المزمور المايه والثاني والعشرون *
1 رفعت عيني اليك يا رب الساكن في السماء * فهاهما * وهو * ح * استيخانات * 2
كعيون العبيد الي ايدي مواليهم * وكعين الامة الي يد سيدتها كذلك عيوننا الي الرب الهنا *
3 حتي يتراف علينا * ارحمنا يا رب ارحمنا واغفر لنا * فقد راينا من الهوان كثيرا * وامتلت 4
نفوسنا اكثر * العار اعطه للمخصبين والهوان للمتعظمين * الليلويا *
* المزمور المايه وثلاثه وعشرون * وهو * يج * استيخن * لولا ان الرب كان فينا 1
2 يقول اسرايل * لولا ان الرب كان فينا * عند قيام الناس علينا اذن لابتلعونا ونحن احياء * وعند 3
4 غضب سخطهم علينا * اذن لغرقنا الما * عبرت نفوسنا واديا * اتري عبرت نفوسنا الما الذي 5
6 لا نهاية له * مبارك الرب الذي لم يسلمنا صيدا لاسنانهم * نجت نفوسنا مثل عصفور من 7
8 فخ الصياد * الفخ انكسر ونحن نجونا * معونتنا باسم الرب الذي خلق السما والارض * الليلويا *
* المزمور المايه واربعه وعشرون * وهو * ح * استيخانات * المتوكلون علي الرب 1
2 مثل جبل صهيون لا يزول بيروسليم الي الابد * الجبال تحيط بها * والرب يحيط بشعبه منذ الان
3 والي الابد * لان الرب لا يدع عصا الخطاة علي ميراث الصديقين لكيلا يمد الصديقون ايديهم
4 الي السيات * احسن يا رب الي المحسنين * والي المستقيمين بقلوبهم * واما الذين يميلون الي سبل 5
التعويج الرب يلقيهم مع عاملي الاثم * والسلم علي اسرايل * الليلويا *

Rogate pacem Jeroſolymis,et abundantiam 6
iis qui te diligunt. Sit pax in exercitibus 7
tuis,et abundantia atq; divitiæ in turrib⁹
palatiorum tuorũ. Propter fratres meos et 8
proximos tibi,locutus ſum pro te pacem. Et 9
propter domum Domini Dei noſtri, precatus ſum tibi proſpera. Alleluja.

PSAL. CXXII.

Verſus 8. 1

LEvavi oculos meos ad te Domine, 2
qui habitas in cœlo : Et ecce ipſi ſunt
velut oculi ſervorũ ad manus dominorũ
ſuorũ; & prout eſt oculus ancillæ ad ma-
num dominæ ſuæ,ſic oculi noſtri ad Domi-
num Deum noſtrum,quatenus propitietur
nobis. Miſerere noſtrî O Domine,miſerere 3
noſtrî,& parce nobis:quia jam vidimus è
contemptu multum. Et impletæ ſunt ani- 4
mæ noſtræ abundantiùs. Opprobriũ da o-
pulentis,et deſpectionem ſuperbis. Alleluja.

PSAL. CXXIII.

Verſus 13. 1

NIſi Dominus fuiſſet inter nos ; dicat
Iſrael. Niſi Dominus fuiſſet inter nos 2
inſurgentib⁹ hominib⁹ adversùm nos,Cer- 3
tè abſorbuiſſent nos adhuc viventes ; &
æſtuante furore eorum in nos, Certè obru- 4
iſſet nos aqua. Transfretàrunt animæ no-
ſtræ torrentem, Forſitan trajecerunt ani- 5
mæ noſtræ aquam cui nullus eſt terminus.
Benedictus Dominus qui non tradidit nos 6
in venationem dentibus eorum. Evaſe- 7
runt animæ noſtræ ſicut avis laqueum ve-
natoris.Laqueus fract⁹ eſt & nos evaſim⁹.
Adjutorium noſtrum in nomine Domini, 8
qui creavit cœlum & terram.

PSAL. CXXIV.

Verſus 8. 1

COnfidentes in Domino erunt ſicut
mons Sion, qui inceſſanter erit in
Jeruſalem in ſempiternum. Montes cir- 2
cundant eam, & Dominus circundat po-
pulum ſuum ex nunc & in perpetuum.
Quoniam Dominus non ſinet baculum pec- 3
catorum ſuper hæreditatem juſtorum, ut
ne extendant juſti manus ſuas ad ſcelera.
Benefac O Domine, benefacientibus,& eis 4
qui recti ſunt in cordibus ſuis. At verò qui 5
declinant ad ſemitas obliquitatis, Dominus projiciet eos cum operantibus iniquitatem ; & pax ſuper Iſrael. Alleluja.

PSAL. CXXVI. קכו

.ſomniantes veluti fuimus :Sijon reverſionem Dominum convertendo In .graduum Canticum
שִׁיר הַמַּעֲלוֹת בְּשׁוּב יְהוָה אֶת־שִׁיבַת צִיּוֹן הָיִינוּ כְּחֹלְמִים׃ 1
: gentibus in dixerunt tunc ; præconio noſtra lingua & ,noſtrū os riſu eſt repletū Tunc
אָז יִמָּלֵא שְׂחוֹק פִּינוּ וּלְשׁוֹנֵנוּ רִנָּה אָז יֹאמְרוּ בַגּוֹיִם 2
DOMINUS Magnificavit .iſtis cum facere DOMINUS Magnificavit
הִגְדִּיל יְהוָה לַעֲשׂוֹת עִם־אֵלֶּה׃ הִגְדִּיל יְהוָה 3
,noſtram captivitatē DOMINE fac redire .lætantes fuimus : nobiſcum facere
לַעֲשׂוֹת עִמָּנוּ הָיִינוּ שְׂמֵחִים׃ שׁוּבָה יְהוָה אֶת־שְׁבוֹתֵנוּ 4
, ibit Eundo .metent præconio in : lachryma in Seminantes .meridie in torrentes ſicut
כַּאֲפִיקִים בַּנֶּגֶב׃ הַזֹּרְעִים בְּדִמְעָה בְּרִנָּה יִקְצֹרוּ׃ הָלוֹךְ יֵלֵךְ 5 6
.ſuos manipulos portans,præconio in veniet veniendo :ſeminis tractionem portans flendo &
וּבָכֹה נֹשֵׂא מֶשֶׁךְ־הַזָּרַע בֹּא־יָבֹא בְרִנָּה נֹשֵׂא אֲלֻמֹּתָיו׃

PSAL. CXXVII. קכז

: domum ædificet non DOMINUS Si .Selomoh ipſi graduum Canticum
שִׁיר הַמַּעֲלוֹת לִשְׁלֹמֹה אִם־יְהוָה לֹא־יִבְנֶה בַיִת 1
,civitatem cuſtodiat non DOMINUS Si : ea in ejus ædificatores laboraverunt fruſtra
שָׁוְא עָמְלוּ בוֹנָיו בּוֹ אִם־יְהוָה לֹא־יִשְׁמָר־עִיר
,ſedere tardantibus ,ſurgere manicantibus vobis Fruſtra .cuſtos vigilavit fruſtra
שָׁוְא שָׁקַד שׁוֹמֵר׃ שָׁוְא לָכֶם מַשְׁכִּימֵי קוּם מְאַחֲרֵי־שֶׁבֶת 2
hæreditas Ecce .ſomnum ſuo dilecto dabit ſic : dolorum panem edentibus
אֹכְלֵי לֶחֶם הָעֲצָבִים כֵּן יִתֵּן לִידִידוֹ שֵׁנָא׃ הִנֵּה נַחֲלַת 3
filii ita : potentis manu in ſagittæ Sicut .ventris fructus merces ; filii DOMINI
יְהוָה בָּנִים שָׂכָר פְּרִי הַבָּטֶן׃ כְּחִצִּים בְּיַד־גִּבּוֹר כֵּן בְּנֵי 4
non , ipſis ex ſuam pharetram implevit qui viri Beatitudines .juventutum
הַנְּעוּרִים׃ אַשְׁרֵי הַגֶּבֶר אֲשֶׁר מִלֵּא אֶת־אַשְׁפָּתוֹ מֵהֶם לֹא־ 5
.porta in inimicis cum fuerint locuti cùm : afficientur pudore
יֵבֹשׁוּ כִּי־יְדַבְּרוּ אֶת־אוֹיְבִים בַּשָּׁעַר׃

PSAL. CXXVIII. קכח

ambulantis : DOMINUM timentis omnis Beatitudines .graduum Canticum
שִׁיר הַמַּעֲלוֹת אַשְׁרֵי כָּל־יְרֵא יְהוָה הַהֹלֵךְ 1
.tibi bonum & ,tuæ beatitudines : comedes quia tuarū volarum Laborem .ejus viis in
בִּדְרָכָיו׃ יְגִיעַ כַּפֶּיךָ כִּי תֹאכֵל אַשְׁרֶיךָ וְטוֹב לָךְ׃ 2
plantationes ſicut tui filii ,tuæ domus lateribus in fructificans vitis ſicut tua Uxor
אֶשְׁתְּךָ כְּגֶפֶן פֹּרִיָּה בְּיַרְכְּתֵי בֵיתֶךָ בָּנֶיךָ כִּשְׁתִלֵי 3
.Dominum timens vir benedicetur ſic quia Ecce .tuæ menſæ circum : olearum
זֵיתִים סָבִיב לְשֻׁלְחָנֶךָ׃ הִנֵּה כִי־כֵן יְבֹרַךְ גָּבֶר יְרֵא יְהוָה׃ 4
omnibus , Jeruſalaim bono in vide & , Sijon ex DOMINUS tibi Benedicat
יְבָרֶכְךָ יְהוָה מִצִּיּוֹן וּרְאֵה בְּטוּב יְרוּשָׁלִָם כֹּל 5
.Iſrael ſuper pacem : tuis filiis filios vide Et .tuarum vitarum diebus
יְמֵי חַיֶּיךָ׃ וּרְאֵה־בָנִים לְבָנֶיךָ שָׁלוֹם עַל־יִשְׂרָאֵל׃ 6

תרגום TARGUM.

קכו
שירא דאתאמר על מסוקין דתהומא כד יתיב 1
יי ית גלות ציון הוינא היך מרעיא דאתסין׃
הכדין יתמלי פומנא חוכא ולישננא תושבחא 2
הידין יימרון בעמיא אסגי יי למעבד טבא עם
אלין׃ אסגי יי למעבד טבא עמנא הוינא חדין׃ 3
אתיב יי ית גלותן היך דמיתבא ארעא כד 4
נבעין מפקני מיא בבצורתא׃ דזרעין בדמעתא 5
בשבחתא יחצדון׃ מהלכא יהלוך בבכותא 6
מסובר נגדא דבר זרעא מיתא ייתי בתושבחא
כד יסובר אסרתוי׃

קכז
שירא דאתאמר על מסוקין דתהומא על יד 1
שלמה אין מימרא דיי לא יבני קרתא מגן לען
ארדכלוי ביה אין מימרא דיי לא נטיר קרתא
דירושלם מגן אתער נטיר׃ על מגן תטרחון 2
לכון דתקדמון בצפרא למעבד לכון חטוף די
מאחרין ותתבון למעבד זנו דאכלין מזוני
דמסכנין דלעו בהון על יאות וכיון יתן יי
לרחמיה דמכא׃ הא אחסנת יי בנין כשרין 3
אגר עובדין טבין ולדי מעא׃ כגירין באידא 4
דגברא כן בנין דעולימא׃ טב ליה לגבר דימלי 5
בית מדרשיה מנהון לא יבהתון ארום ינצון
עם בעלי דבביהון בתרע בית דינא׃

קכח
שירא דאתאמר על מסוקין דתהומא טוביהון 1
דכל דחליא דיי דאזלין באורחתיה׃ לעות 2
אידך ארום תיכול טובך בעלמא הדין וטב לך
לעלמא דאתי׃ אתתך היך גופנא דעבדת פירין 3
על שדא דביתך בנך היך שתיליא דזיתיא חזור
חזור לפתורך׃ הא ארום היכנא מתברך גברא 4
דחיל מן קדם יי׃ יברכנך יי מציון ותחמי בטובא 5
דירושלם כל יומי חייך׃ ותחמי בנין לבניך 6
שלמא על ישראל׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Canticum quod dictum eſt ſuper gradibus 1
abyſſi.

PSAL.CXXVI.

QUando convertet Domin⁹ captivitatem
Sion,erimus ſimiles *infirmis* qui *convaluerunt*.
Tunc replebitur riſu os noſtrum, 2
& lingua noſtra *hymnodia*. Tunc dicent in
populis: Multiplicavit Dominus benignè
facere cum illis : Multiplicavit Dn̄s facere 3
benignè nobiſcū,facti ſumus lætantes. Converte 4
Domine captivitatem noſtrā,ſicut convertitur
terra quando erumpunt exitus aquarum
tempore ſiccitatis. Qui ſeminant cum lachrymis, 5
cum *laudatione* metent. Ambulans 6
ambulabit in fletu portans *tractū frumenti*
ſementis ; veniens veniet cum hymnodia
quando reportabit manipulos ſuos.

Canticum quod dictū eſt ſuper gradibus 1
abyſſi per manum Salomonis.

PSAL. CXXVII.

SI verbum Domini non ædificaverit *urbē*,
fruſtrà laborant in ea architecti ejus:ſi Verbum
Domini non cuſtodierit civitatem
Jeruſalem, fruſtrà vigilat cuſtos. In vanum 2
laborabitis vobis qui prævenietis
manè ad perpetrandam *vobis* rapinam, qui
moram facietis atque ſedebitis ad patrandū
ſcelus, comedentes cibos miſerorum, in quibus
laborârunt,convenienter verò & rectè
dabit Domin⁹ dilecto ſuo ſomnū. Ecce hæreditas 3
Dn̄i filii recti, præmiū operum bonorum
nati ventris. Sicut ſagittæ in manu 4
potentis, ſic *filii juvenis*. Beatus vir qui impleverit 5
ſcholam ſuam ex ipſis : non confūdentur
quando contenderint cum adverſariis
ſuis in porta dom⁹ judicii.

Canticum quod dictum eſt ſuper gradibus 1
abyſſi.

PSAL. CXXVIII.

BEati omnes qui timent Dominū,qui ambulant
in viis ejus. Laborem manuū tuarū 2
cùm comederis, beatus tu in mundo iſto;
& bonū erit tibi in mundo venturo. Uxor 3
tua erit ſicut vitis quæ facit fruct⁹ in latere
domus tuæ: filii tui ſicut plantationes olivarum
in circuitu menſæ tuæ. Ecce enim ſic 4
benedicitur viro,qui timet à conſpectu Domini.
Benedicat tibi *Dominus* ex Sion , & 5
videas bonum Jeruſalem omnibus diebus
vitæ tuæ. Et videas filios filiorum tuorum; 6
pacem ſuper Iſrael.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܟܗ *
* ܡܢ ܡܣܩܬܐ. ܠܐ ܡܬܝܕܥܐ. ܡܬܐܡܪ ܥܠ ܚܓܝ ܘܙܟܪܝܐ 1
ܕܣܠܩܘ ܡܢ ܒܒܠ ܥܡ ܫܒܝܬܐ. ܘܪܘܚܢܐܝܬ ܣܘܟܝܐ ܕܛܒܬܐ ܕܥܬܝܕܢ. ܦܬܓܡܐ ܝܗ.
ܟܕ ܡܗܦܟ ܡܪܝܐ ܫܒܝܬܐ ܕܨܗܝܘܢ. ܗܘܝܢ ܐܝܟ ܗܢܘܢ ܕܚܕܝܢ : ܗܝܕܝܢ ܢܬܡܠܐ ܦܘܡܢ 2
ܓܘܚܟܐ ܘܠܫܢܢ ܬܫܒܘܚܬܐ. ܗܝܕܝܢ ܢܐܡܪܘܢ ܒܝܬ ܥܡܡܐ : ܕܐܘܪܒ ܡܪܝܐ ܠܡܥܒܕ
ܥܡܗܘܢ. * ܐܘܪܒ ܡܪܝܐ ܠܡܥܒܕ ܥܡܢ ܘܗܘܝܢ ܒܚܕܘܬܐ : * ܐܗܦܟ ܡܪܝܐ ܫܒܝܬܢ ܐܝܟ 3 4
ܡܒܘܥܐ ܕܒܬܝܡܢܐ. * ܐܝܠܝܢ ܕܙܪܥܝܢ ܒܕܡܥܬܐ ܒܚܕܘܬܐ ܢܚܨܕܘܢ : * ܡܐܙܠ ܐܙܠ 5 6
ܘܒܟܐ. ܐܝܢܐ ܕܫܩܠ ܙܪܥܐ : ܡܐܬܐ ܐܬܐ ܒܚܕܘܬܐ. ܐܝܢܐ ܕܫܩܠ ܟܦܐ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܟܘ *
* ܡܢ ܡܣܩܬܐ. ܐܡܝܪ ܠܕܘܝܕ ܥܠ ܫܠܝܡܘܢ. ܘܡܬܐܡܪ ܥܠ ܚܓܝ ܘܙܟܪܝܐ ܕܡܥܝܩܝܢ ܗܘܘ ܥܠ 1
ܒܢܝܢܐ ܕܗܝܟܠܐ. ܦܬܓܡܐ ܝܕ. ܐܢ ܡܪܝܐ ܠܐ ܒܢܐ ܒܝܬܐ. ܣܪܝܩܐܝܬ ܠܐܝܘ ܒܢܝܘܗܝ : ܘܐܢ ܡܪܝܐ
ܠܐ ܢܛܪ ܡܕܝܢܬܐ. ܣܪܝܩܐܝܬ ܫܗܪܝܢ ܢܛܘܪܝܗ : * ܣܪܝܩܝܢ ܐܢܘܢ ܐܝܠܝܢ ܕܡܩܕܡܝܢ ܠܡܩܡ 2
ܘܡܘܚܪܝܢ ܠܡܬܒ. ܐܟܠܝܢ ܠܚܡܐ ܒܥܩܬܐ : ܗܟܢ ܢܬܠ ܠܚܒܝܒܘܗܝ ܫܢܬܐ. * ܝܪܬܘܬܗ 3
ܕܡܪܝܐ ܒܢܝܐ ܐܢܘܢ : ܐܓܪܐ ܕܦܐܪܐ ܕܟܪܣܐ. * ܐܝܟ ܓܐܪܐ ܕܒܐܝܕܐ ܕܓܢܒܪܐ : ܗܟܢܐ ܐܢܘܢ 4
ܒܢܝ ܥܠܝܡܘܬܐ. * ܛܘܒܘܗܝ ܠܓܒܪܐ ܕܢܡܠܐ ܩܛܪܩܗ ܡܢܗܘܢ : ܘܠܐ ܢܒܗܬܘܢ ܟܕ 5
ܢܡܠܠܘܢ ܥܡ ܒܥܠܕܒܒܐ ܒܬܪܥܐ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܟܙ *
* ܡܢ ܡܣܩܬܐ. ܠܐ ܡܬܝܕܥܐ. ܡܬܐܡܪ ܥܠ ܙܘܪܒܒܠ ܪܫܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܥܠ ܚܦܝܛܘܬܐ ܕܒܢܝܢܐ. 1
ܘܪܡܙ ܒܗ ܥܠ ܩܪܝܬܐ ܕܥܡܡܐ. ܦܬܓܡܐ ܝܕ.
ܛܘܒܘܗܝ ܠܟܠ ܕܕܚܠ ܡܢ ܡܪܝܐ : ܘܡܗܠܟ ܒܫܒܝܠܘܗܝ. * ܠܥܡܠܐ ܕܐܝܕܝܟ ܟܕ ܐܟܠܬ 2
ܒܪܢܫܐ : ܛܘܒܝܟ ܘܛܒܬܐ ܠܢܦܫܟ. * ܐܢܬܬܟ ܐܝܟ ܓܦܬܐ ܡܫܒܚܬܐ ܒܥܛܦܝ ܒܝܬܟ : 3
ܒܢܝܟ ܐܝܟ ܢܨܒܬܐ ܕܙܝܬܐ ܚܕܪܝܢ ܠܦܬܘܪܟ. * ܗܟܢ ܢܬܒܪܟ ܓܒܪܐ ܕܕܚܠ ܡܢ ܡܪܝܐ : 4
* ܢܒܪܟܟ ܡܪܝܐ ܡܢ ܨܗܝܘܢ. ܘܬܚܙܐ ܒܛܒܬܐ ܕܐܘܪܫܠܡ ܟܠ ܝܘܡܝ ܚܝܝܟ : * ܘܬܚܙܐ 5 6
ܒܢܝܐ ܠܒܢܝܟ. ܘܫܠܡܐ ܥܠ ܐܝܣܪܝܠ.

PSAL. CXXV.

Ex Pſalmis aſcenſionis. Anonymus. Dicitur 1
*de Aggæo & Zacharia, qui aſcenderūt
è Babel una cum captivitate. Spiritualiter
verò expectatio bonorum futurorum. Verſ. 15.*

CUm reducet Dn̄s captivitatem Sion, erimus
ut ii qui lætantur : Tunc implebitur 2
os noſtrū riſu,& lingua noſtra cantu : Tunc
dicent inter gentes, Multiplicavit Dn̄s facere
erga illos. Multiplicavit quidē Dn̄s facere nobis, 3
& facti ſumus in lætitia. Reduxit enim 4
Dominus captivitatem noſtram ut ſcatebras
quæ ſunt in Auſtro. Qui ſeminant in lachryma, 5
cum jubilo metent. Vadens vadit atque 6
plorat qui portat ſemen. Veniens venit cum
exultatione qui portat manipulum.

PSAL. CXXVI.

Ex Pſalmis aſcenſionis. Dictus à Davide 1
*de Salomone. Dicitur quoque de Aggæo &
Zacharia qui urgebant ſtructuram Templi.
Verſus 14.*

NIſi Dominus ædificet domum, fruſtrà laborant
ædificantes eam. Et niſi Dn̄s cuſtodiat
civitatē, fruſtrà vigilant cuſtodes ejus.
Vani ſunt ii qui maturi ſunt ad ſurgendum & 2
ſeri ad ſedendum, comedentes panem cum
doloribus : ſic concedet charis ſuis ſomnum.
Hæreditas enim Dn̄i filii ſunt, merces fructuum 3
uteri. Qualis eſt ſagitta in manu robuſti, 4
tales ſunt filii juventutis; Beatus vir qui impleverit 5
pharetram ſuam ipſis,certè non confundentur
cùm alloquentur inimicū in porta.

PSAL. CXXVII.

Ex Pſalmis aſcenſionis. Anonymus. Dicitur 1
*de Zorobabel principe Judha, & ſolicitationis
ædificii. Innuit etiam in eo vocationem
Gentium. Verſ. 14.*

BEatus quicunque timet Dn̄m, & incedit
per ſemitas ejus. Laborem manuum tuarū 2
cùm manducaveris homo,beatus eris, & fœlicitas
erit animæ tuæ. Uxor tua *erit* ſicut vitis 3
laudabilis in marginibus domûs tuæ : filii
tui ut planta olivæ ambientes menſam tuam.
Hac ratione benedicetur vir qui timet Dominum. 4
Benedicat tibi Dn̄s è Sion, & ſpectes 5
fauſta Jeroſolymæ omnib⁹ diebus vitæ tuæ :
Videaſque filios liberis tuis,& pacem Iſraeli. 6

Verſio VULG. LAT.

1 Canticum graduum. CXXV.

IN convertendo Dominus captivitatem Sion : facti ſumus ſicut conſolati : 2 Tunc repletum eſt gaudio os noſtrum: & lingua noſtra exultatione. Tunc dicent inter gentes; Magnificavit Dominus facere cum eis. 3 Magnificavit Dominus facere nobiſcum : facti ſumus lætantes. 4 Converte, Domine, captivitatem noſtram, ſicut torrens in Auſtro. 5 Qui ſeminant in lachrymis, in exultatione metent. 6 Euntes ibant & flebant, mittentes ſemina ſua. Venientes autem venient cum exultatione, portantes manipulos ſuos.

1 Canticum graduum Salomonis. CXXVI.

NIſi Dominus ædificaverit domũ, in vanum laboraverunt qui ædificant eam. Niſi Dominus cuſtodierit civitatem, fruſtrà vigilat qui cuſtodit eam. 2 Vanum eſt vobis ante lucem ſurgere : ſurgite poſtquàm ſederitis, qui manducatis panem doloris. Cùm dederit 3 dilectis ſuis ſomnum : Ecce hæreditas Domini, filii, merces ; fructus ventris. 4 Sicut ſagittæ in manu potentis : ita filii 5 excuſſorum. Beatus vir qui implevit deſiderium ſuum ex ipſis : non confundetur cùm loquetur inimicis ſuis in porta.

1 Canticum graduum. CXXVII.

BEati omnes, qui timent Dominũ, 2 qui ambulant in viis ejus. Labores manuum tuarum quia manducabis : 3 beatus es, & benè tibi erit. Uxor tua ſicut vitis abundans, in lateribus domûs tuæ. Filii tui ſicut novellæ olivarum, 4 in circuitu menſæ tuæ. Ecce ſic benedicetur homo, qui timet Dominum. 5 Benedicat tibi Dominus ex Sion: & videas bona Jeruſalem omnibus diebus vitæ tuæ. 6 Et videas filios filiorum tuorum, pacem ſuper Iſrael.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp.

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. ρκε'.

1 † ἘΝ τῷ ἐπιστρέψαι κύριον τὴν αἰχμαλωσίαν Σιών, † ἐγενήθημεν (α) ὡσεὶ παρακεκλημένοι. † 2 Τότε ἐπλήσθη χαρᾶς τὸ στόμα ἡμῶν, † καὶ ἡ γλῶσσα ἡμῶν ἀγαλλιάσεως· † τότε ἐροῦσιν ἐν τοῖς ἔθνεσιν, † Ἐμεγάλυνε κύριος τοῦ ποιῆσαι μετ' αὐτῶν. 3 † Ἐμεγάλυνε κύριος τοῦ ποιῆσαι μεθ' ἡμῶν, † ἐγενήθημεν εὐφραινόμενοι. 4 † Ἐπίστρεψον κύριε τὴν αἰχμαλωσίαν ἡμῶν † ὡς (β) χειμάῤῥους ἐν τῷ Νότῳ. 5 † Οἱ σπείροντες ἐν δάκρυσιν, ἐν ἀγαλλιάσει θεριοῦσι. 6 † Πορευόμενοι ἐπορεύοντο, καὶ ἔκλαιον † (γ) βάλλοντες τὰ σπέρματα αὐτῶν· † ἐρχόμενοι δὲ ἥξουσιν ἐν ἀγαλλιάσει, † αἴροντες τὰ δράγματα αὐτῶν.

MS. A. (α) ὡς (β) ὁ χειμάῤῥους (γ) αἴροντες

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. ρκϛ'.

1 † Ἐὰν μὴ (α) κύριος οἰκοδομήσῃ οἶκον, † εἰς μάτην ἐκοπίασαν (β) οἱ οἰκοδομοῦντες· † ἐὰν μὴ κύριος φυλάξῃ πόλιν, † εἰς μάτην ἠγρύπνησεν ὁ φυλάσσων. 2 † Εἰς μάτην ὑμῖν ἐστι (γ) τὸ ὀρθρίζειν· † ἐγείρεσθε μετὰ τὸ καθῆσθαι, † (δ) οἱ ἐσθίοντες ἄρτον ὀδύνης, † ὅταν δῷ τοῖς ἀγαπητοῖς αὐτοῦ ὕπνον. † 3 Ἰδοὺ ἡ κληρονομία κυρίου, υἱοί, † ὁ μισθὸς τοῦ καρποῦ 4 τῆς γαστρός. † Ὡσεὶ βέλη ἐν χειρὶ δυνατοῦ, † οὕτως 5 οἱ υἱοὶ τῶν ἐκτετιναγμένων. † Μακάριος (ε) ὃς πληρώσει τὴν ἐπιθυμίαν αὐτοῦ ἐξ αὐτῶν· † οὐ (ζ) καταισχυνθήσονται, ὅταν λαλῶσι τοῖς ἐχθροῖς αὐτῶν (η) ἐν πύλαις.

MS. A. (α) ὁ κύριος οἰκοδομήσει (β) οἱ οἰκοδομοῦντες αὐτόν· ἐὰν μὴ ὁ κύριος (γ) τοῦ ὀρθρίζειν· (δ) οἱ ἔσθοντες (ε) ἄνθρωπος ὃς (ζ) καταισχυνθῶσιν, (η) ἐν πύλῃ.

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. ρκζ'.

1 † ΜΑκάριοι πάντες οἱ φοβούμενοι τὸν κύριον, † οἱ 2 πορευόμενοι ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτοῦ. † (α) Τοὺς πόνους τῶν καρπῶν σου φάγεσαι· † μακάριος εἶ, καὶ καλῶς 3 σοι ἔσται. † Ἡ γυνή σου ὡς ἄμπελος εὐθηνοῦσα † (β) ἐν τοῖς κλίτεσι τῆς οἰκίας σου· † οἱ υἱοί σου ὡς νεόφυτα ἐλαιῶν 4 † κύκλῳ τῆς τραπέζης σου. † Ἰδοὺ οὕτως εὐλογηθήσεται ἄνθρωπος ὁ φοβούμενος τὸν κύριον. 5 † (ϛ) Εὐλογήσαι σε κύριος ἐκ Σιών, † καὶ ἴδοις τὰ ἀγαθὰ Ἱερουσαλὴμ † πάσας τὰς ἡμέρας τῆς ζωῆς 6 σου. † Καὶ ἴδοις υἱοὺς τῶν υἱῶν σου· † εἰρήνη ἐπὶ τὸν Ἰσραήλ.

MS. A. (α) Τοὺς καρποὺς τῶν πόνων σου (β) ἐν τοῖς κλίτεσιν (ϛ) Εὐλογήσει

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

Canticum graduum. *CXXV.* 1

1 *Cum (a) converteret Dñs captivitatẽ Siõ; facti ſum⁹ ſicut cõſolati.* 2 *Tunc repletum eſt gaudio os noſtrum, & lingua noſtra (b) exultatione.* 3 *Tunc dicent inter gentes; Magnificavit Dominus facere cum* [†] *eis. Magnificavit Dominus facere nobiſcũ:* 4 *facti ſum⁹ lætantes.* 5 *Converte, Domine, captivitatem noſtrã, ſicut (c)* [a] *torrentes in Auſtro.* 6 *Qui ſeminant in lachrymis, in exultatione metent.* 7 [b] *Euntes ibant, & flebant, mittentes ſemina ſua.* 8 *Venientes autem venient in exultatione, portantes manipulos ſuos.*

Canticum graduum. *CXXVI.* 1

1 *NIſi Dominus ædificaverit domum; in vanum laboraverunt (a) ædificantes.* 2 *Niſi Dominus cuſtodierit civitatem; fruſtrà* [a] *vigilat, qui cuſtodit.* 3 *(b)* [b] *In vanum eſt vobis ante lucem ſurgere: (c) ſurgite poſtquàm ſederitis, qui manducatis (d) panem doloris.* 4 *Cùm dederit dilectis ſuis ſomnum; Ecce* [c] *hæreditas Domini, filii, (e) merces fructûs ventris.* 5 *Sicut ſagittæ in manu potentis; ita (f) filii excuſſorum.* 6 *(g) Beatus* [d], *qui (h) implebit deſiderium ſuum ex eis: non (i)* [e] *confundentur, cùm loquentur inimicis ſuis in porta.*

Canticum graduum. *CXXVII.* 1

BEati omnes, qui timent Dominum, qui ambulant in viis ejus. 2 [a] *Labores (a) palmarum tuarum manducabis: beatus es, & benè tibi erit.* 3 *Uxor tua, ſicut (b) vitis* [b] *abundans, in (c) lateribus domûs tuæ.* 4 *Filii tui, ſicut (d) novellæ olivarum in circuitu menſæ tuæ.* 5 *Ecce ſic benedicetur homo, qui timet Dominum.* 6 *Benedicat te Dominus ex Sion, (e) & videas bona Hieruſalem omnibus diebus vitæ tuæ:* 7 *Et videas filios filiorum tuorum: (f) pax ſuper Iſrael.*

Verſio ÆTHIOPICA.

ማኅሌት፡ዘበመዓርጊሁ፡፡

፻፳፭ አመ፡ሜጠ፡እግዚአብሔር፡ፄዋ፡ጽዮ 1
ን፡፡ኮነ፡ፍሡሐነ፡፡=፡ አሜሃ፡መልአ፡ፍሠ 2
ሐ፡አፉነ፡፡ ወተሐሥየ፡ልሳንነ፡፡=፡ አሜ 3
ሃ፡ይቤሉ፡አሕዛብ፡፡ አዕበየ፡ገቢረ፡ሎሙ፡
እግዚአብሔር፡፡=፡ ወኮነ፡ፍሡሐነ፡፡=፡ 4
ሚጥ ፡ እግዚኦ፡ ፄዋነ፡፡ ከመ፡ ውኂዝ፡ውስ 5
ተ፡አዜብ፡፡=፡እለ፡ይዘርኡ፡በአንብዕ፡ወበሐ 6
ሤት፡የዓርሩ፡፡=፡ ወሶበሰ፡የሐውሩ፡ወፈ 7
ሩ፡እንዘ፡ይበክዩ፡፡ ወጾሩ ፡ ዘርዖሙ፡፡=፡
ወሶበ፡የአትው፡መጽኡ፡እንዘ፡ይትፌሥሑ፡፡ 8
ወጾሩ፡ከለስስቲሆሙ፡፡=፡

ማኅሌት፡ዘበመዓርጊሁ፡፡

፻፳፮ እመ፡እግዚአብሔር፡ ሊሐንጽ፡ ቤተ፡፡ 1
ከንቶ፡ይጻመው፡ እለ፡ የሐንጹ፡፡=፡ እመ፡ 2
እግዚአብሔር፡ ሊዐቀበ፡ ሀገረ፡፡ ከንቶ ፡ ይ
ትጋሁ፡እለ፡ይሄልው፡፡=፡ ወከንቱ፡ ገይሶት 3
ክሙ፡፡ ተንሥኡ ፡ እምድኅረ፡ ነበርክሙ፡፡
እለ፡ትሴሰዩ፡እክለ፡ሕማም፡፡=፡ ሶበ፡ይሁ 4
ቦሙ ፡ ንዋመ ፡ ለፍቁራኒሁ፡፡ ናሁ ፡ ጸጋሁ፡
ለእግዚአብሔር፡ውሉድ፡፡ ዕሤተ፡ፍሬሃ፡ለ
ከርሥ፡፡=፡ ከመ፡አሕፃ፡ውስተ፡እደ፡ኃያ 5
ል፡፡ከማሁ፡ደቂቆሙ፡ለንጉፋን፡፡=፡ ብፁ 6
ዕ፡ብእሲ፡ዘይፌጽም፡ ፍትወቶሙ፡ እምኔሆ
ሙ፡ወኢይትኃፈር፡ሶበ፡ይትናገሮሙ፡ለጸላእ
ቱ፡ በአናቅጽ፡፡=፡

ማኅሌት፡ ዘበዓርጊሁ፡፡

፻፳፯ ብፁዓን፡ ኵሎሙ፡ እለ፡ ይፈርህዎ፡ 1
ለእግዚአብሔር፡፡ እለ ፡ የሐውሩ ፡ በፍናዊ
ሁ፡፡=፡ ፍሬ፡ ጻማከ፡ ተሴሰይ፡፡ብፁዕ፡አን 2
ተ፡ወሠናይ፡ለከ፡፡=፡ ብእሲትከ፡ከመ፡ ወ 3
ይን፡ ሥሙር፡ ውስተ፡ ጽርሐ ፡ ቤትከ፡፡=፡
ወውሉድከ፡ ከመ፡ ተክል፡ ዘይት፡ ሐዲስ፡ ዐ 4
ውደ፡ማዕድከ፡፡=፡ ናሁ፡ከመዝ፡ይትባረክ፡ 5
ብእሲ ፡ ዘይፈርሆ ፡ ለእግዚአብሔር፡፡=፡
ይባርከ፡እግዚአብሔር ፡ እምጽዮን፡፡ ወት 6
ሬኢ፡ ሠናይታ ፡ ለኢየሩሳሌም፡፡ በኵሉ፡
መዋዕለ ፡ ሕይወትከ፡፡=፡ ወትሬኢ ፡ ውሉ 7
ደ ፡ ውሉድከ፡፡ ሰላም ፡ ላዕለ ፡ እስራኤ
ል፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. *PSAL. CXXV.* [†] eis. Facti [a] torrens [b] Et cùm ibant flentes egreſſi ſunt, & portantes ſemina. *PSAL. CXXVI.* [a] vigilant, qui *in ea* ſunt. [b] Vana eſt manicatio veſtra: [c] donum Domini, [d] vir, qui [e] confundetur, cùm loquetur *PSAL. CXXVII.* [a] Fructum laboris tui manducabis: [b] placens, in cœnaculis domûs tuæ.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

1 * المزمور المائة وخمسة وعشرون * وهو * سيـ * استيخانات *
2 لما رد الرب سبي صهيون صرنا كالمعزيين * حينئذ امتلي فمنا فرحا ولساننا تهليلا * حينئذ
3 4 يقال في الامم قد اكثر الرب الصنيع الي هولاء * اكثر الرب الصنيع الينا فصرنا فرحين * يا
5 6 رب ترد الينا سبينا كاودية التيمن * الذين يزرعون بالدموع ويحصدون بالفرح * كانوا ينطلقون
ماشيين باكين حاملين بذورهم * ويأتون مقبلين بالتهليل حاملين غلاتهم * اللليلويا *

1 * المزمور المائة وستة وعشرون * وهو * يح * استيخن *
إن لم يبن الرب البيت تعب البناؤون باطلا * وان لم يحفظ الرب المدينة سهر الحافظون باطلا *
2 * باطلا يكون بكوركم * انهضوا من بعد جلوسكم يا اكلي الخبز بالهموم * اذا اعطي محبيه نوما *
3 4 * فها هوذا البنون هم ميراث الرب * اجر ثمر البطن * مثل السهام في يد الجبار * هكذا هو
5 مثل البنين في شبيبتهم * مغبوط هو الرجل الذي يكمل شهوته منهم * حينئذ لا يخزون
اذا كلموا اعداءهم في الابواب * اللليلويا *

1 * المزمور المائة وسبعة وعشرون * وهو * سيـ * استيخانات *
2 طوبا لكل الخائفين من الرب السالكين في سبله * تاكل من ثمر اتعابك * تصير مغبوطا
3 ويكون لك الخير * امراتك تصير مثل كرمة مخصبة في جوانب بيتك * بنوك مثل غروس
4 5 الزيتون حول مائدتك * ما هوذا يبارك الرجل الخائف من الرب * هكذا يباركك الرب من صهيون *
6 وتري خيرات يروشليم جميع ايام حياتك * وتري بني بنيك * والسلم علي اسرائيل * اللليلويا *

PSAL. CXXV.

Verſ. 10.

1 *QUando revocabit Dominus captivitatem Sion, fiemus veluti conſolati :* 2 *Tunc implebitur os noſtrum gaudio, et lingua noſtra exultatione. Tunc dicetur inter gentes, Jam multiplicavit Dominus beneficium erga iſtos.* 3 *Multiplicavit Dominus beneficium erga nos, & facti ſumus lætantes.* 4 *O Domine, reducas nobis captivitatem noſtram ſicuti torrentes Auſtri.* 5 *Qui ſeminant cũ lachrymis, etiam metent cum gaudio.* 6 *Ibant gradientes gemebundi, portantes ſemina ſua; at venient redeuntes cum exultatione, geſtantes fruges ſuas. Alleluja.*

PSAL. CXXVI.

Verſ. 13.

1 *SI non ædificet Dominus domum, fruſtrà laborant ædificantes. Et niſi cuſtodiat Dominus urbem, fruſtrà vigilant cuſtodes :* 2 *Vana eſt ſurrectio veſtra matutina. Expergiſcimini poſtquam ſederitis O qui comeditis panem cum ſolicitudinibus. Quum dederit dilectis ſuis ſomnum: Ecce filii erunt hæreditas Domini.* 3 *Merces fructûs ventris* 4 *Eſt veluti ſagitta in manu gigantis. Hæc eſt ſimilitudo filiorum in juventute ipſorum.* 5 *Fœlix eſt homo qui explet votum ſuum in eis : tunc non confundentur, quum alloquentur inimicos ſuos in portis. Alleluja.*

PSAL. CXXVII.

Verſ. 10.

1 *BEati omnes timentes Dominum, ambulantes in ſemitis ejus.* 2 *Manducabis ex fructu laborum tuorum, fies proſper, & erit tibi bonum.* 3 *Uxor tua fiet inſtar vitis abundans in lateribus domûs tuæ, filii tui ſicut plantæ olivarum circa menſam tuam.* 4 *Nonne ecce benedicetur homo timens Dominum?* 5 *Sic benedicet tibi Dominus de Sion, & videbis bona Jeruſalem omnibus diebus vitæ tuæ,* 6 *Et videbis filios filiorum tuorum, & pacem ſuper Iſrael. Alleluja.*

תהלים : קכט קל קלא קלב

PSAL. CXXIX. קכט

1 nunc dicat : *meis pueritiis à* me affecerunt anguſtiis Multùm .graduum Canticum
1 שיר המעלות רבת צררוני מנעורי יאמר־נא 1
2 .mihi prævaluerunt non *etiam* :*meis pueritiis à* me affecerũt anguſtiis Multùm .Iſrael
2 ישראל: רבת צררוני מנעורי גם לא־יכלו לי: 2
3 .ſuum ſulcum protraxerunt longum in : arantes araverunt meum dorſum Supra
4 על־גבי חרשו חרשים האריכו למענותם: 3
5 :retrorſum *recedent* &,afficientur Pudore .impiorum funes concidit : juſtus Dominus
6 יהוה צדיק קצץ עבות רשעים: יבשו ויסגו אחור 4 5
.exaruit ,*erumpat* antequam quæ : tectorum herba ſicut Erunt .Sijon *odientes* omnes
7 כל שנאי ציון: יהיו כחציר גגות שקדמת שלף יבש: 6
8 dixerunt non Et .manipulos *colligens ſui ſinum &* ; *metens* ſuã *volam* implevit non Qua
8 שלא מלא כפו קוצר וחצנו מעמר: ולא אמרו 7
.Domini nomine in vobis benediximus : vos *ad* Domini Benedictio :tranſeuntes
העברים ברכת־יהוה אליכם ברכנו אתכם בשם יהוה:

PSAL. CXXX. קל

mea voce in audi Domine .Domine te *invocavi* profundis De .graduum Canticum
1 שיר המעלות ממעמקים קראתיך יהוה: אדני שמעה בקולי 1
2 iniquitates Si .mearum deprecationum vocem ad intentæ tuæ aures ſint
2 תהיינה אזניך קשבות לקול תחנוני: אם־עונות 3
3 .timeberis ideo : *venia tecum Quia* ? ſtabit quis Domine , *Jah* obſervaveris
תשמר־יה אדני מי־יעמד: כי־עמך הסליחה למען תורא: 4
4 .*ſum præſtolatus* ejus verbo in & : mea anima expectavit , Dominum Expectavi
5 קויתי יהוה קותה נפשי ולדברו הוחלתי: 5
6 Expecta .*matutino in cuſtodibus matutino in cuſtodibus præ* Dominum ad mea Anima
6 נפשי לאדני משמרים לבקר שמרים לבקר: יחל
7 eo cum multa & : miſericordia Domino cum quia , Dominum ad Iſrael
7 ישראל אל־יהוה כי־עם־יהוה החסד והרבה עמו
8 .ejus iniquitatibus omnibus ex , Iſrael redimet ipſe Et .redemptio
8 פדות: והוא יפדה את־ישראל מכל עונתיו:

PSAL. CXXXI. קלא

1 ſunt elati neque ,meũ cor eſt exaltatũ non Domine .David ipſi graduum Canticum
1 שיר המעלות לדוד יהוה לא־גבה לבי ולא־רמו
2 , poſui *non Si .me præ* mirabilibus in *&*,magnis in ambulavi neque : mei oculi
2 עיני ולא־הלכתי בגדלות ובנפלאות ממני: אם־לא שויתי 2
ablactatus ſicut : ſuam matrem ſuper ablactatum ſicut , meam animam feci ſilere &
ודוממתי נפשי כגמל עלי אמו כגמל
.ſeculum in uſque & ,*nunc* ex *: Dominum ad* Iſrael *Expecta* .mea anima me *ſuper*
3 עלי נפשי: יחל ישראל אל־יהוה מעתה ועד־עולם: 3

PSAL. CXXXII. קלב

.ejus afflictionis univerſæ : David Domine Memento .graduum Canticum
1 שיר המעלות זכור־יהוה לדוד את כל־ענותו: 1
.Jahacob potenti vovit : Domino juravit Qui
2 אשר נשבע ליהוה נדר לאביר יעקב: 2

תרגום TARGUM.

קכט

שירא דאתאמר על מסוקין דתהומא סגיעין 1
דאעיקו לי מן טליותי יימר כדון ישראל:
סגיעין דאעיקו לי מן טליותי ברם לא יכילו 2
לאבאשא לי: על גושמי רדו רדיא אוריכו 3
למורדניתהון: יי זכאה קצץ שולשלי רשיעיא: 4
יבהתון ויזורו לאחורא כל סנאי דציון: יהוון 5 6
כחציר אגריא דמן קדם דיציץ אתי רוח קדומא
נתב בידה ואתיבש: דלא מלי אידיה חצד 7
וכתפיה מעמר: ולא אמרו דעברין מתמן 8
ברכתא דיי עליכון ולא יתיבון להון ברכנא
יתכון בשמא דיי:

קל

שירא דאתאמר על מסוקין דתהומא מן 1
עומקיא קריתך יי: יי קביל צלותי תהוין 2
אודניך ציתין לקל צלותי: אין עוין תטור יה 3
יי מן יקום: ארום גבך שביקותא מן בגלל 4
דתתחמי: אמתינית יי מתינת נפשי ולאיקריה 5
אוריכית: נפשי אוריכא ליי מן נטרי מטרת 6
לצפרא דנטרין לקרבא קרבן צפרא: מוריך 7
ישראל ליי ארום גבי יי חסדא וסגי עמיה
פורקן: והוא יפרוק ית ישראל מכל עויתיה: 8

קלא

שירא דאתאמר על מסוקין דתהומא יי לא 1
גבה לבי ולא אתרוממו עיני ולא הלכית
ברברבן ובפרישן מני: אין לא שוית אידא 2
לפום ושתקית נפשי עד דצית פתגמי אוריתא
היך חסילא על תדיי אמיה אתגברית באוריתא
היך חסילא עלוי נפשי: יוריך ישראל ליי מן 3
השתא ועד עלמא:

קלב

שירא דאתאמר על מסוקין דתהומא אדכר יי 1
לדויד ית כל סגופיה: די קיים קדם יי נדר 2
לתקיפא דיעקב:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Canticũ ꝙ dictũ eſt ſup gradibus *abyſſi*. 1

PSAL. CXXIX.

Multi fuerunt qui moleſtias intulerunt
mihi à pueritia mea, dicat nunc Iſrael: Multi 2
qui moleſtias intulerunt mihi à pueritia
mea; verùm non potuerunt inferre malum
mihi. Super corpus meum araverunt arantes; 3
prolongaverunt arationem ſuam. Dominus 4
juſtus concìdit catenas impiorum.
Confundantur & revertantur retrorſum 5
omnes qui oderunt Sion. Fiant ſicut fœnum 6
tectorum, quod antequàm floruiſſet,
irruit ventus vehemens, perflavit in illud,
& ſiccatum eſt. De quo non implevit manum 7
ſuam meſſor, & axillam ſuam ſpicilegium
faciens. Et non dixerunt tranſeuntes 8
indè, Benedictio Domini ſuper vos: et
non reſponderunt eis, Benedicimus vobis
in nomine Domini.

Canticum quod dictũ eſt ſuper gradibus 1
abyſſi.

PSAL. CXXX.

De profundis invocavi te Domine: Dñe 2
exaudi orationem meam: ſint aures
tuæ attendentes voci orationis meæ. Si iniquitates 3
obſervaveris Deus, Domine quis
ſubſiſtet? Quoniam apud te eſt indulgentia, 4
ut videaris. Expectavi Dominum, expectavit 5
anima mea, & in gloria ejus ſperavi.
Anima mea expectavit Dominum, pluſquàm 6
obſervantes cuſtodias matutinas, quas obſervant
ut offerant oblationem matutinam.
Sperat Iſrael in Domino, quoniam apud 7
Dñm miſericordia, & copioſa cum illo redemptio. 8
Et ipſe redimet Iſrael ex omnibus
iniquitatibus ejus.

Canticum quod dictum eſt ſuper gradibus 1
abyſſi.

PSAL. CXXXI.

Domine non eſt exaltatũ cor meũ & non
ſunt elati oculi mei; & non ambulavi
in magnificentiis, rebúſq; mirandis præ me.
Si non poſui manum ad os, & tacere feci 2
animã meã donec audiret verba Legis, ſicut
ablactat⁹ ſup mammas matris ſuæ, roboratus
ſum in Lege, ſicut ablactatus ſup me
anima mea. Sperabit Iſrael in Domino, ex 3
hoc tempore et uſque in æternum.

Canticũ quod dictum eſt ſuper gradibus
abyſſi. 1

PSAL. CXXXII.

Memento Domine Davidis [*&*] omnis
afflictionis ejus. Qui juravit coram Domino; 2
vota nuncupavit fortiſſimo Jaacob.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܟܚ *

1 * ܡܢ ܡܣܩܬܐ. ܠܐ ܡܫܡܗܐ ܥܠ ܐܘܠܨܢܐ ܕܥܡܐ. ܡܛܠ ܕܝܠܢ ܪܡܙ ܠܢ ܙܟܘܬܐ ܘܢܨܚܢܐ ܕܦܠܚ̈ܐ.
2 ܦܬ̈ܓܡܐ ܝܓ. ܣܓܝܘ ܠܩܘܒܠܝ ܡܢ ܛܠܝܘܬܝ. ܢܐܡܪ ܕܝܢ ܐܝܣܪܝܠ * ܣܓܝܘ ܠܩܘܒܠܝ ܡܢ
3 ܛܠܝܘܬܝ: ܘܠܐ ܐܫܟܚܘ ܠܚܝܠܝ. * ܥܠ ܚܨܝ ܢܓܕܘ ܢܓܕܐ ܘܐܘܪܟܘ ܡܘܟܟܗܘܢ: * ܡܪܝܐ
4 ܙܕܝܩ ܘܦܣܩ ܫܒܫ̈ܐ ܕܪ̈ܫܝܥܐ. * ܢܗܦܟܘܢ ܠܒܣܬܪܗܘܢ ܟܠܗܘܢ ܣܢܐܝܗ ܕܨܗܝܘܢ: 5
6 * ܘܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܥܣܒܐ ܕܐܓܪ̈ܐ. ܕܡܐ ܕܢܫܒܘܒ ܒܗ ܪܘܚܐ ܡܬܚܡܠ ܘܝܒܫ: * ܘܠܐ ܡܡܠܐ ܡܢܗ 7
ܟܦܗ ܚܨܘܕܐ. ܘܚܘܣܢܗ ܡܠܩܛܢܐ: * ܘܠܐ ܐܡܪܘ ܐܝܠܝܢ ܕܥܒܪܝܢ. ܒܘܪܟܬܗ ܕܡܪܝܐ 8
ܥܠܝܟܘܢ: ܒܪܟܢܟܘܢ ܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܟܛ *

1 * ܡܢ ܡܣܩܬܐ. ܡܬܐܡܪ ܥܠ ܢܚܡܝܐ ܟܗܢܐ. ܘܪܡܙ ܒܗ ܨܠܘܬܐ ܕܣܗܕ̈ܐ. ܦܬ̈ܓܡܐ ܝܘ.
2 ܡܢ ܥܘܡܩܐ ܩܪܝܬܟ ܡܪܝܐ * ܘܫܡܥܬ ܩܠܝ: ܢܗܘܝܢ ܐܕܢܝܟ ܨܝܬܢ ܠܩܠܐ ܕܒܥܘܬܝ. * ܐܢ
3 ܣܘܪ̈ܚܢܐ ܬܛܪ ܡܪܝܐ ܡܢܘ ܡܨܐ ܠܡܩܡ: * ܡܛܠ ܕܡܢܟ ܗܘ ܫܘܒܩܢܐ. 4
5 * ܣܟܝܬ ܠܡܪܝܐ ܘܣܟܬ ܢܦܫܝ ܠܡܠܬܗ: * ܣܟܝܬ ܠܡܪܝܐ ܡܢ ܡܛܪܬܐ ܕܨܦܪܐ ܥܕܡܐ 6
ܠܡܛܪܬܐ ܕܨܦܪܐ. * ܢܣܟܐ ܐܝܣܪܝܠ ܠܡܪܝܐ: ܡܛܠ ܕܡܢ ܠܘܬܗ ܐܢܘܢ ܪ̈ܚܡܐ. ܘܣܓܝ 7
8 ܠܘܬܗ ܦܘܪܩܢܐ: * ܘܗܘ ܢܦܪܘܩܝܘܗܝ ܠܐܝܣܪܝܠ ܡܢ ܟܠܗ ܥܘܠܗ.

1 * ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܠ * ܕܕܘܝܕ. ܡܢ ܡܣܩܬܐ. ܘܡܬܐܡܪ ܥܠ ܝܫܘܥ ܒܪ ܝܘܨܕܩ ܟܗܢܐ ܪܒܐ
ܘܥܠ ܡܟܝܟܘܬܐ. ܦܬ̈ܓܡܐ ܗ. ܡܪܝܐ ܠܐ ܐܬܪܝܡ ܠܒܝ ܘܠܐ ܐܬܪܥܡܘ ܥܝܢܝ: ܘܠܐ
2 ܗܠܟܬ ܒܪ̈ܘܪܒܬܐ ܡܢܝ. * ܐܠܐ ܡܟܟܬ ܢܦܫܝ ܐܝܟ ܝܠܘܕܐ ܚܣܝܠܐ ܥܠ ܐܡܗ: ܘܐܝܟ ܚܣܝܠܐ
3 ܗܘܬ ܥܠܝ ܢܦܫܝ. * ܢܣܟܐ ܐܝܣܪܝܠ ܠܡܪܝܐ: ܡܢ ܗܫܐ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ.

1 ܫܘܒܚܐ ܘܫܘܪܝ ܡܣܩܬܐ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܠܐ * ܡܢ ܡܣܩܬܐ. ܠܐ ܡܫܡܗܐ: ܟܕ
ܨܒܝܢ ܠܡܒܢܐ ܒܝܬܐ ܠܡܪܝܐ ܨܒܐܘܬ. ܘܨܠܘܬܐ ܕܕܘܝܕ. ܘܓܠܝܢܐ ܕܡܫܝܚܐ. ܦܬ̈ܓܡܐ ܠܙ.
2 ܐܬܕܟܪ ܡܪܝܐ ܠܕܘܝܕ ܘܠܟܠܗ ܡܟܝܟܘܬܗ. * ܕܝܡܐ ܠܡܪܝܐ ܘܢܕܪ ܠܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ:

PSAL. CXXVIII.

Ex Pſalmis aſcenſionis. Anonymus. De anguſtia populi. Quod autẽ ad nos, innuit nobis victoriam atq; triumphum cultorum. Verſ. 13. 1

Creverunt oppreſſores mei à pueritia mea:
dicat Iſrael, Creverunt oppreſſores mei 2
à pueritia mea, at non potuerunt *reſiſtere* viribus
meis. Supra dorſum meũ flagellaverũt 3
flagella, & protraxerunt humiliationem ſuã.
Dñs juſtus eſt, ac divellit ramos iniquorum. 4
Agantur retro cuncti oſores Sion, Fiantque 5
ſimiles fœno tecti, quod quum invaſerit vent⁹, 6
languet atque areſcit, Nec implet eo volã 7
ſuã meſſor, neq; complexũ ſuũ collector.
Et non dixerũt hi qui prætereunt, Benedictio 8
Dñi ſuper vos, benedixim⁹ vobis in nomine
Dñi.

PSAL. CXXIX.

Ex Pſalmis aſcenſionis. Dicitur de Nehemia Sacerdote. Et innuit in eo precationẽ Martyrum. Verſ. 16. 1

Ex profundo te vocavi Dñe, Et audîſti vocẽ 2
meã. Sint aures tuæ intentæ ad vocem
precationis meæ. Si peccata obſerves Dñe, 3
quis valeat ſubſiſtere? Nam à te remiſſio eſt. 4
Speravi in Dño, & expectavit anima mea 5
verbũ ejus: Expectavi Dñm à cuſtodia matutina 6
uſq; ad cuſtodiã matutinã. Expectet 7
Iſrael Dñm, quoniã ab eo ſunt miſericordiæ,
& plurimum apud eum ſalutis, Ipſeq; ſalvabit 8
Iſraelem ab omni ejus inquitate.

PSAL. CXXX.

Davidis. Ex Pſalmis aſcenſionis: Diciturque de Jeſu filio Jozedec Sacerdote ſummo. Et de humiliate. Verſ. 5. 1

Domine, non ſuperbivit cor meum, neque
extulerunt ſe oculi mei, neq; inceſſi in rebus
me eminentiorib⁹; Sed humiliavi animã 2
meã, ut *puer* ablactatus apud matrẽ ſuã, &
quaſi *puer* ablactat⁹ erat apud me anima mea.
Expectet Iſrael Dominum ex nunc & uſque 3
in ſempiternum.

Laus, & initium gradûs.

PSAL. CXXXI.

Ex Pſalmis aſcenſionis. Anonymus. Quum vellent extruere domum Domino Sabaoth. Et oratio Davidis. Et revelatio Chriſti. Verſ. 37. 1

Memento Domine Davidis & omnis humilitatis 2
ejus, Qui juravit Domino vovitque
Deo Jacobi,

Verſio VULG. LAT.

1 Canticum graduum. CXXVIII.
SÆpè expugnaverunt me à juventute
2 mea,dicat nunc Iſrael. Sæpè expugnaverunt
me à juventute mea : etenim
3 non potuerunt mihi. Supra dorſum
meū fabricaverunt peccatores :
4 prolongaverunt iniquitatem ſuā. Dominus
juſtus concidit cervices peccatorū
5 : Confundantur & convertantur
6 retrorſū omnes, qui oderunt Sion. Fiant
ſicut fœnū tectorū : quod priuſquàm
7 evellatur, exaruit : De quo non
implevit manū ſuā qui metit, & ſinū
8 ſuū qui manipulos colligit. Et non dixerunt
qui præteribant, Benedictio
Domini ſuper vos : benediximus vobis
in nomine Domini.

1 Canticum graduum. CXXIX.
DE profundis clamavi ad te,Dñe:
2 Dñe,exaudi vocem meam : Fiant
aures tuæ intendentes, in vocem deprecationis
3 meæ. Si iniquitates obſervaveris,
Dñe : Dñe, quis ſuſtinebit?
4 Quia apud te propitiatio eſt : & propter
legē tuā ſuſtinui te,Dñe. Suſtinuit
5 anima mea in verbo ejus : Speravit
6 anima mea in Dño. A cuſtodia
matutina uſq; ad noctē,ſperet Iſrael in
7 Dño. Quia apud Dñm miſericordia :
8 & copioſa apud eū redemptio. Et ipſe
redimet Iſrael, ex omnibus iniquitatibus
ejus.

1 Canticum graduum David. CXXX.
DOmine,non eſt exaltatū cor meū:
neq; elati ſunt oculi mei. Neq; ambulavi
in magnis,neq; in mirabilibus
2 ſup me. Si non humiliter ſentiebam:
ſed exaltavi animā meā : Sicut ablactatus
eſt ſuper matre ſua, ita retributio
3 in anima mea. Speret Iſrael in Domino
, ex hoc nunc & uſque in ſeculum.

1 Canticum graduum. CXXXI.
MEmento,Domine,David,et omnis
2 manſuetudinis ejus : Sicut juravit
Domino, votum vovit Deo Jacob:

Verſio GRÆCA LXX.Interp.

1 Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. ρκή.
†ΠΛεονάκις ἐπολέμησάν με ἐκ νεότητός μου,†
2 εἰπάτω δὴ Ἰσραήλ· Πλεονάκις ἐπολέμησάν με
ἐκ νεότητός μου, † καὶ γὰρ οὐκ (α) ἠδυνήθησάν μοι. †
3 Ἐπὶ (β) τὸν νῶτόν μου ἐτέκταινον οἱ ἁμαρτωλοί, †
4 ἐμάκρυναν τὴν ἀνομίαν αὐτῶν. † Κύριος δίκαιος
5 συνέκοψεν αὐχένας ἁμαρτωλῶν· †Αἰσχυνθήτωσαν
καὶ ἀποστραφήτωσαν εἰς τὰ ὀπίσω πάντες οἱ μισοῦντες
6 Σιών. † Γενηθήτωσαν ὡσεὶ χόρτος (γ) δωμάτων,
7 †ὃς πρὸ τοῦ ἐκσπασθῆναι ἐξηράνθη· †Οὗ οὐκ
ἐπλήρωσε τὴν χεῖρα αὐτοῦ ὁ θερίζων, † καὶ τὸν κόλπον
8 αὐτοῦ ὁ τὰ δράγματα συλλέγων. † Καὶ οὐκ εἶπαν οἱ
παράγοντες, Εὐλογία κυρίου ἐφ' ὑμᾶς, †εὐλογήκαμεν
ὑμᾶς ἐν ὀνόματι κυρίου. MS. A. (α) ἐδυνήθησάν (β)* τοῦ νώτου ἐτέκτενον (γ) δωμάτων,

1 Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. ρκθ'.
2 † ἘΚ βαθέων ἐκέκραξά (α) σοι κύριε, †Κύριε εἰσάκουσον
τῆς (β) φωνῆς μου· †γενηθήτω τὰ ὦτά σου προσέχοντα
3 † εἰς τὴν φωνὴν τῆς δεήσεώς μου. †Ἐὰν ἀνομίας
4 (γ) παρατηρήσῃς κύριε, †κύριε τίς ὑποστήσεται; †Ὅτι
παρὰ σοὶ ὁ ἱλασμός ἐστιν. † ἕνεκεν τοῦ ὀνόματός
σου †ὑπέμεινά σε κύριε, †ὑπέμεινεν ἡ ψυχή μου εἰς
5 τὸν λόγον σου, † Ἤλπισεν ἡ ψυχή μου ἐπὶ τὸν κύριον.
6 †Ἀπὸ φυλακῆς πρωΐας (δ) μέχρι νυκτὸς, †ἐλπισάτω
7 Ἰσραὴλ ἐπὶ τὸν κύριον· †Ὅτι παρὰ τῷ κυρίῳ
8 τὸ (ε) ἔλεος, †καὶ πολλὴ παρ' αὐτῷ λύτρωσις. † Καὶ
αὐτὸς λυτρώσεται τὸν Ἰσραὴλ † ἐκ πασῶν τῶν ἀνομιῶν
αὐτοῦ.

MS.A. (α) σε κύριε, (β) προσευχῆς μου· (γ) παρατηρήσῃ (δ) καὶ μέχρι νυκτὸς, †ἀπὸ φυλακῆς πρωΐας ἐλπισάτω (ε) ἔλαιός ἐστιν, καὶ πολλὴ

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν (α). ρλ'.
1 †ΚΎριε οὐχ ὑψώθη (β) ἡ καρδία μου, †οὐδὲ ἐμετεωρίσθησαν
οἱ ὀφθαλμοί μου· †οὐδὲ ἐπορεύθην ἐν μεγάλοις,
†οὐδὲ ἐν θαυμασίοις ὑπὲρ ἐμέ. †Εἰ μὴ (γ) ἐταπεινοφρόνουν,
2 ἀλλὰ ὕψωσα (δ) τὴν ψυχήν μου· †ὡς τὸ
ἀπογεγαλακτισμένον ἐπὶ τὴν μητέρα αὐτοῦ, †ὡς (ε)
ἀνταποδώσεις ἐπὶ τὴν ψυχήν μου. † Ἐλπισάτω Ἰσραὴλ
3 ἐπὶ τὸν κύριον †ἀπὸ τοῦ νῦν καὶ ἕως τοῦ αἰῶνος.

MS.A. (α) τῷ Δαυίδ. (β) μου ἡ καρδία, (γ) ἐταπεινοφόρουν (δ) τὴν καρδίαν (ε) ἀνταποδόσεις

1 Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. ρλα'.
†ΜΝήσθητι κύριε τοῦ Δαυίδ, † καὶ πάσης τῆς
2 (α) πρᾳότητος αὐτοῦ· †Ὡς ὤμοσε τῷ κυρίῳ, ηὔξατο
τῷ θεῷ Ἰακώβ· MS.A. (α) πραΰτητος

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ.LAT.

Canticum graduum.*CXXVIII.* 1
SÆpe (a) impugnaverunt me à
juventute mea,[†]dicat nūc Iſrael:
2 Sæpe impugnaverunt me à juventute 2
mea:[a]etenim(b)nō potuerunt
mihi. 3 Supra dorſum meum(c)[b] 3
fabricaverunt peccatores : (d) prolongaverunt
iniquitatem ſuam. 4
Dominus juſtus(e)concidit cervices 4
peccatorum:Confundantur,& (f)avertantur 5
retrorſum omnes,qui oderunt
Sion. 5 Fiant ſicut fœnum tectorum 6
; quod priuſquā (g) evellatur,
exaruit. 6 De quo non (h)implevit 7
manum ſuam, qui metit, & ſinum
ſuū,qui manipulos colligit. 7 Et nō 8
dixerunt, qui præteribant; Benedictio
Domini ſuper vos, (i) benediximus
vos in nomine Domini.

Canticum graduū.*CXXIX.* 1
1 DE profundis clamavi (a)tibi,
Domine: Domine,exaudi vocem meam. 2
2 Fiant aures tuæ intendentes
in vocem deprecationis meæ. 3 Si 3
iniquitates obſervaveris, Domine;
Domine,quis ſuſtinebit? 4 Quoniam 4
apud te propitiatio eſt : propter
(b) nomen tuum ſuſtinui te,Domine.
5 Suſtinuit anima mea in(c) [a]
verbum tuum. Speravit anima mea 5
in Dominum. 6 [b]A cuſtodia matutina 6
uſque ad noctem, [c] ſperet
Iſrael in Dominum. 7 Quoniam apud 7
Dominū miſericordia, & multa
apud illum redemptio. Et ipſe 8
redimet Iſrael ex omnibus iniquitatibus
ejus.

Canticum graduum.*CXXX.* 1
1 DOmine, non eſt exaltum cor
meum : neque [a] in (a)altum elati
ſunt oculi mei. 2 Neque ambulavi
in (b) magnis, (c) neque in
[b] mirabilibus ſuper me. 3 Si (d) 2
non [c] humiliter ſentiebam, ſed
exaltavi animam meam. 4 Sicut
ablactatus ſuper matrem ſuam; ſic
(e) retribues in animam meam. 5
Speret Iſrael in Domino ex hoc 3
nunc, & uſq; in ſeculum.

MS.Æth.Poc.Gloria Patri, & Filio,& Spiritui ſancto,omni tempore,
nunc, & ſemper, & in ſecula ſeculorum Amen.

Canticum graduū.*CXXXI.* 1
1 MEmento,Domine,David, &
omnis (a)manſuetudinis ejus. 2 (b)[a] Sicut juravit Domino: votum vovit Deo Jacob. 2

Verſio ÆTHIOPICA.

ማኅሌት፡ዘበመዓርጊሁ።
፻፳፰ ዘልፈ፡ይፀብኡኒ፡እምንእስየ። ይብ 1
ል፡እስራኤል፡ 2 ዘልፈ፡ይፀብኡኒ፡እምንእ
ስየ። ወባሕቱ፡ ኢክህሉኒ።=፡ ዲበ፡ዘባን 3
የ፡ዘበጡ ፡ ኃጥአን። ወአስተርሐቀዋ፡ ለኃ
ጢአቶሙ።=፡ እግዚአብሔር ፡ ጻድቅ፡ ሰ 4
በረ፡ሐደፈሆሙ፡ለኃጥአን። ይትኃፈሩ፡ወይ
ግብኡ፡ድኅሬሆሙ። ኵሎሙ፡እለ፡ይጸልእ
ዋ፡ለጽዮን።=፡ ወይኩኑ፡ከመ ፡ ሣዕረ፡አን 5
ሕስት። ዘይየብስ ፡ ዘእንበለ ፡ ይምሐው
ዎ።=፡ ወኢይመልእ፡እዴሁ፡ለዘ፡የዐጽድ። 6
ወኢሕፅኖ ፡ ለዘ ፡ ያስተጋብእ ፡ ከለሰስቲ
ሁ።=፡ ወኢይበሉ፡እለ፡የኃልፉ፡በረከተ፡እ 7
ግዚአብሔር፡ምስሌኒ። ባረክናክሙ፡በስመ፡
እግዚአብሔር ።=፡

ማኅሌት፡ዘበመዓርጊሁ።
፻፳፱ እማዕምቅ ፡ ጸዋዕኩከ ፡ እግዚኦ። 1
እግዚኦ፡ ስምዓኒ፡ ቃልየ።=፡ ወይኩን ፡ እ 2
ዝንከ፡ ዘያጸምዕ፡ቃለ፡ስእለትየ።=፡ እመ 3
ሰ፡ኃጢአተነ፡ ትትዐቀብ። እግዚኦ፡እግዚ
ኦ፡ መኑ፡ ይቀውም።=፡ እስመ፡ እምኅቤ 4
ከ፡ውእቱ፡ሣህል። በእንተ፡ስምከ፡ተሰፈው
ኩከ፡እግዚኦ።=፡ ተዐገሠት፡ነፍስየ፡በሕ 5
ግከ። ተወከለት ፡ ነፍስየ ፡ በእግዚአብሔ
ር።=፡ እምሰዓተ፡ጽባሕ፡እስከ፡ሌሊት። 6
እምሰዓተ፡ጽባሕ፡ ተወከለ፡ እስራኤል ፡ በእ
ግዚአብሔር ።=፡ እስመ፡ እምኅበ፡ እግዚ 7
አብሔር፡ሣህል። ወብዙኅ ፡ ያድኅኖ፡ በኅ
ቤሁ። ወውእቱ ፡ ያድኅኖ ፡ ለእስራኤል፡
እምኵሉ፡ኃጢአቱ።=፡

ማኅሌት፡ዘበመዓርጊሁ።
፻፴ እግዚኦ፡ ኢይትዐበየኒ፡ ልብየ። ወኢ 1
ይዘቀዐ፡ አዕይንትየ።=፡ ወኢሖርኩ ፡ ም 2
ስለ፡ዐቢይት። ወኢምስለ፡ እለ፡ይከብሩ፡
እምኔየ።=፡ ዘእንበለ፡ ዘአትሐትኩ፡ርእ 3
ስየ።ወከላሕኩ፡ በቃልየ፡ 4 ከመ፡ ዘአኅደ
ግዎ፡ ጥበ፡እሙ።=፡ ከመ ፡ ትእስያ ፡ ለነፍ 4
ስየ።=፡ ተወከለ ፡ እስራኤል ፡ በእግዚአብ 5
ሔር ።እምይእዜ፡ ወእስከ፡ለዓለም።=፡
ስብሐት፡ ለአብ፡ወወልድ፡ ወመንፈስ፡ ቅዱስ፡
ኵሉ፡ጊዜ፡ይእዜኒ፡ወዘልፈኒ፡ወለዓለመ፡
ዓለም ፡ አሜን።

ማኅሌት፡ዘበመዓርጊሁ።
፻፴፩ ተዘከሮ፡እግዚኦ ፡ ለዳዊት ፡ ወለኵ 1
ሉ፡የዋሀቱ።=፡ ዘከመ፡መሐለ ፡ ለእግዚአ 2
ብሔር፡ ወበፅአ፡ለአምላከ፡ያዕቆብ።=፡

INTERP.ÆTHIOP. *PSAL.cxxviii.*[†]dicat Iſrael:[a]veruntamen non[b]flagellaverunt peccatores: *PSAL. cxxix.*[a]lege tuā.[b]Ab hora matutina [c]ab hora matutina ſperet *PSAL. cxxx.* [a]intendi oculos meos.[b]eminentioribus ſupra [c]meipſum humiliavi,& clamavi voce meā. Sicut qui dimiſit ubera matris ſuæ;Sic *PSAL. cxxxi.* [a] Qui ſic

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

1 * اَلْمَزْمُورُ الْمَائَةُ وَالثَّامِنُ وَالْعِشْرُونَ * وَعَدَدُهُ * يج * استيخن *
2 مِرَارًا كَثِيرًا حَارَبُونِي مُنْذُ صِبَايَ يَقُولُ اِسْرَائِيلُ * مِرَارًا كَثِيرًا حَارَبُونِي مُنْذُ صِبَايَ وَاِنَّهُمْ لَمْ
3 4 يَقْدِرُوا عَلَيَّ * وَعَلَى ظَهْرِي جَلَدَنِي الْخُطَاةُ * وَاَطَالُوا اِثْمَهُمْ * اَلرَّبُّ عَادِلٌ هُوَ يَقْطَعُ اَعْنَاقَ
5 6 الْخَاطِيِينَ * فَلْيَخْزَ وَلْيَرْتَدَّ عَلَى عَقِبِهِ كُلُّ مُبْغِضِي صِهْيُونَ * وَلْيَكُونُوا مِثْلَ حَشِيشِ الْاَسْطِحَةِ
7 اَلَّذِي يَجِفُّ قَبْلَ قَلْعِهِ * اَلَّذِي لَمْ يَمْلَاْ الْحَاصِدُ مِنْهُ يَدَهُ * وَلَمْ يَمْلَاْ جَامِعُ الْاَغْمَارِ مِنْهُ حِضْنَهُ *
8 * وَلَمْ يَقُلِ الْعَابِرُونَ اِنَّ بَرَكَةَ الرَّبِّ عَلَيْكُمْ * بَارَكْنَاكُمْ بِاسْمِ الرَّبِّ * اَللِّيلُويَا *

1 * اَلْمَزْمُورُ الْمَائَةُ وَالتَّاسِعُ وَالْعِشْرُونَ * وَهُوَ * ي * استيخن *
2 مِنَ الْاَعْمَاقِ صَرَخْتُ اِلَيْكَ * يَا رَبُّ يَا رَبُّ اِسْمَعْ صَوْتِي * وَلْتَكُنْ اُذُنَاكَ مُصْغِيَتَيْنِ اِلَى صَوْتِ طِلْبَتِي يَا
3 4 رَبُّ * اِنْ وَاخَذْتَ بِالْخَطَايَا فَمَنْ يَسْتَطِيعُ اَنْ يَثْبُتَ قُدَّامَكَ * لِاَنَّ الْمَغْفِرَةَ هِيَ مِنْ عِنْدِكَ * لِاَجْلِ
5 6 اِسْمِكَ 5 يَا رَبُّ رَجَوْتُكَ * لَزِمَتْ نَفْسِي نَامُوسَكَ * نَفْسِي تَوَكَّلَتْ عَلَى الرَّبِّ * مِنْ حِينِ الصَّبَاحِ اِلَى
7 الْمَسَاءِ 7 فَلْيَتَوَكَّلْ اِسْرَائِيلُ عَلَى الرَّبِّ مِنْ حِينِ الصَّبَاحِ اِلَى الْمَسَاءِ * لِاَنَّ الرَّحْمَةَ مِنْ عِنْدِ الرَّبِّ * وَعَظِيمٌ
8 هُوَ خَلَاصُهُ * وَهُوَ يُنْقِذُ اِسْرَائِيلَ مِنْ جَمِيعِ اَحْزَانِهِ * اَللِّيلُويَا * * اَلْمَزْمُورُ الْمَائَةُ وَالثَّلَثُونَ *

1 * وَهُوَ * ح * استيخانات * يَا رَبُّ لَمْ يَسْتَعْلِ قَلْبِي * وَلَمْ تَسْتَعْلِ عَيْنَايَ * وَلَمْ اَمْشِ فِي عَظَائِمَ *
2 وَلَا فِي عَجَائِبَ اَكْثَرَ مِنِّي * وَاِنْ كُنْتُ لَمْ اَتَوَاضَعْ * بَلْ رَفَعْتُ صَوْتِي مِثْلَ الْمَفْطُومِ مِنْ اُمِّهِ *
3 مِثْلَ الْمُجَازَاةِ عَلَى نَفْسِي * فَلْيَتَوَكَّلْ اِسْرَائِيلُ عَلَى الرَّبِّ * مُنْذُ الْآنَ وَاِلَى الْاَبَدِ * اَللِّيلُويَا *

1 * اَلْمَزْمُورُ الْمَائَةُ وَاحِدٌ وَثَلَاثُونَ * وَهُوَ * لب * استيخن *
2 اُذْكُرْ يَا رَبُّ دَاوُدَ وَجَمِيعَ دَعَتِهِ * كَمَا اَقْسَمَ لِلرَّبِّ وَنَذَرَ لِاِلَهِ يَعْقُوبَ *

PSAL. CXXVIII.

Et numerus verſuum 13. 1

VIcibus multis bellârunt mecum à pueritia
mea:dicat Iſrael, Vicibus mul- 2
tis bellârunt mecum à pueritia mea, attamen
non prævaluerunt in me. Et ſuper ter- 3
gum meum flagellârunt me peccatores,&
prolongârunt iniquitatem ſuam. Dominus 4
juſtus eſt:ipſe truncabit colla peccatorum.
Igitur pudefiant & retroagantur ſuper 5
calcaneos ſuos cuncti oſores Sionis. Sint- 6
que velut herba tectorum, quæ areſcit antequā
evellatur, Quâ non implevit meſ- 7
ſor manum ſuam, nec implevit collector
manipulorum ipsâ ſinum ſuum : Neq; di-
xerunt prætereuntes, Benedictio Domini 8
ſuper vos, benediximus vobis in nomine
Domini. Alleluja.*

PSAL. CXXIX.

Verſus 10. 1

*DE profundis clamavi ad te. O Do- 2
mine,O Domine audi vocem meam :
ſintque aures tuæ intentæ voci precis meæ
O Domine. Si ſuccenſeas peccatis,quis po- 3
terit conſiſtere coram te? Nam indulgen- 4
tia abs te eſt : propter nomen tuum. O 5
Domine, te ſperavi. Sequuta eſt anima
mea legem tuam:Anima mea confiſa eſt in 6
Domino, à tempore matutino uſque ad
veſperas. Confidat Iſrael in Domino à 7
tempore matutino uſque ad veſperas: quoniam
miſericordia à conſpectu Domini, et
maxima eſt ſalus ejus. Et ipſe redimet Iſ- 8
rael ex omnibus mæroribus ejus. Alleluja.*

PSAL. CXXX.

Verſus 8. 1

*O Domine, non magnificavit ſe cor
meum, neq; extulerunt ſe oculi mei,
neque ambulavi in magnificentiis, neque
in mirabilioribus me; Et niſi me humilia- 2
vi,imo extuli vocem meā ut ablactatus à
matre ſua, par ſit retributio in animam
meam. Confidat Iſrael in Domino ex nunc 3
& uſque in ſeculum. Alleluja.*

PSAL. CXXXI.

Verſus 32. 1

*MEmento Domine David & omnis
manſuetudinis ejus, Sicuti juravit 2
Domino, et vovit Deo Jacob :*

תהלים: קלג קלד

.meorum ſtratorum lectum ſuper aſcendero ſi : meæ domus tentorium in introiero Si
3 אִם־אָבֹא בְּאֹהֶל בֵּיתִי אִם־אֶעֱלֶה עַל־עֶרֶשׂ יְצוּעָי׃
inveniam Donec .dormitationem meis palpebris : meis oculis ſomnum dedero Si
4 אִם־אֶתֵּן שְׁנַת לְעֵינָי לְעַפְעַפַּי תְּנוּמָה׃ עַד־אֶמְצָא 5
:Ephrathah in eam audivimus Ecce .Jahacob forti habitacula : Domino locum
6 מָקוֹם לַיהוָה מִשְׁכָּנוֹת לַאֲבִיר יַעֲקֹב׃ הִנֵּה־שְׁמַעֲנוּהָ בְאֶפְרָתָה
nos incurvabimus :ejꝰ tabernacula in Introibimus .ſylvæ campis in eam invenimus
7 מְצָאנוּהָ בִּשְׂדֵי־יָעַר׃ נָבוֹאָה לְמִשְׁכְּנוֹתָיו נִשְׁתַּחֲוֶה
.tuæ fortitudinis arca & ,tu : tuā requiem ad Domine Surge .ejꝰ pedum ſcabello
8 לַהֲדֹם רַגְלָיו׃ קוּמָה יְהוָה לִמְנוּחָתֶךָ אַתָּה וַאֲרוֹן עֻזֶּךָ׃
David Propter .exultent tui ſancti & : juſtitiam induant tui Sacerdotes
9 כֹּהֲנֶיךָ יִלְבְּשׁוּ־צֶדֶק וַחֲסִידֶיךָ יְרַנֵּנוּ׃ בַּעֲבוּר דָּוִד 10
,veritatem David ipſi Dominus Juravit .tui uncti facies avertas ne ,tuū ſervum
11 עַבְדֶּךָ אַל־תָּשֵׁב פְּנֵי מְשִׁיחֶךָ׃ נִשְׁבַּע־יְהוָה לְדָוִד אֱמֶת
cuſtodierint Si .tibi ſolio in ponam ,tui ventris fructu de , ea ab avertetur non
12 לֹא־יָשׁוּב מִמֶּנָּה מִפְּרִי בִטְנְךָ אָשִׁית לְכִסֵּא־לָךְ׃ אִם־יִשְׁמְרוּ
:perpetuum in uſque eorū filii etiam ,eos docebo quæ meū teſtimoniū &,meū pactū tui filii
בָנֶיךָ בְּרִיתִי וְעֵדֹתִי זוֹ אֲלַמְּדֵם גַּם־בְּנֵיהֶם עֲדֵי־עַד
.ſibi habitaculū in deſideravit :Sijon in Dominus elegit Quoniam .tibi ſolio in ſedebūt
13 יֵשְׁבוּ לְכִסֵּא־לָךְ׃ כִּי־בָחַר יְהוָה בְּצִיּוֹן אִוָּהּ לְמוֹשָׁב לוֹ׃
ejus Eſcæ .cā deſideravi quoniam ,habitabo hic :perpetuum in uſque mea requies Hæc
14 זֹאת־מְנוּחָתִי עֲדֵי־עַד פֹּה־אֵשֵׁב כִּי אִוִּתִיהָ׃ צֵידָהּ 15
induam ejus ſacerdotes Et .pane ſaturabo ejus egenos : benedicam benedicendo
16 בָּרֵךְ אֲבָרֵךְ אֶבְיוֹנֶיהָ אַשְׂבִּיעַ לָחֶם׃ וְכֹהֲנֶיהָ אַלְבִּישׁ
: David cornu faciam germinare Ibi .exultabunt exultando ejus pii & : ſalutem
17 יֶשַׁע וַחֲסִידֶיהָ רַנֵּן יְרַנֵּנוּ׃ שָׁם אַצְמִיחַ קֶרֶן לְדָוִד
eum ſuper & : pudorem induam ejus Inimicos .meo uncto lucernam diſpoſui
18 עָרַכְתִּי נֵר לִמְשִׁיחִי׃ אוֹיְבָיו אַלְבִּישׁ בֹּשֶׁת וְעָלָיו
.ejus corona florebit
יָצִיץ נִזְרוֹ׃

PSAL. CXXXIII. קלג

etiā fratres habitare,jocundū quàm & bonum quàm Ecce.David ipſi graduum Canticum
1 שִׁיר הַמַּעֲלוֹת לְדָוִד הִנֵּה מַה־טּוֹב וּמַה־נָּעִים שֶׁבֶת אַחִים גַּם־
.pariter :Aharon barbam ,barbam ſuper deſcendens ,caput ſuper optimum oleum Sicut
2 יָחַד׃ כַּשֶּׁמֶן הַטּוֹב עַל־הָרֹאשׁ יֹרֵד עַל־הַזָּקָן זְקַן־אַהֲרֹן
mōtes ſuper deſcendens qui Chermon ros Sicut .ejꝰ veſtimentorū os ſuper deſcendens quod
3 שֶׁיֹּרֵד עַל־פִּי מִדּוֹתָיו׃ כְּטַל־חֶרְמוֹן שֶׁיֹּרֵד עַל־הַרְרֵי
.ſeculum in uſque vitas ,benedictionem Dominus præcepit ibi quoniam : Sijon
צִיּוֹן כִּי שָׁם צִוָּה יְהוָה אֶת־הַבְּרָכָה חַיִּים עַד־הָעוֹלָם׃

PSAL. CXXXIV. קלד

ſtantes : Domini ſervi omnes Domino Benedicite Ecce .graduum Canticum
1 שִׁיר הַמַּעֲלוֹת הִנֵּה בָּרְכוּ אֶת־יְהוָה כָּל־עַבְדֵי יְהוָה הָעֹמְדִים
benedicite & : ſanctitatem veſtras manus Levate .noctibus in Domini domo in
2 בְּבֵית־יְהוָה בַּלֵּילוֹת׃ שְׂאוּ־יְדֵכֶם קֹדֶשׁ וּבָרְכוּ
.terram & cœlum faciens : Sijon ex Dominus tibi Benedicat .Domino
3 אֶת־יְהוָה׃ יְבָרֶכְךָ יְהוָה מִצִּיּוֹן עֹשֵׂה שָׁמַיִם וָאָרֶץ׃

תרגום TARGUM.

3 אִין אֵעוּל עַל אִתְּתִי אִין אֶסַּק עַל דַּרְגַּשׁ
4 מַצָּעִי : אִין אֶתֵּן דּוּמְכָא לְעֵינַי לְתִימוֹרֵי
5 נִיוּמְתָא: עַד דְּאַשְׁכַּח אֲתַר לְמִבְנֵי בֵּית מַקְדְּשָׁא
6 דַּיְיָ מַשְׁכְּנַיָּא לְתַקִּיפָא דְּיַעֲקֹב : הָא שְׁמַעְנָא
יָתֵהּ בְּאֶפְרָת אַשְׁכַּחְנוּהָא בַּחֲקַל חוּרְשֵׁי לִבְנָן
7 אֲתַר דְּצַלִּיאוּ אֲבָהָת עַלְמָא : נֵעוּל לְמַשְׁכְּנוֹי
8 נִסְגּוּד לְכִבְשָׁא דְּרַגְלוֹי : קוּם יְיָ שְׁרֵי בְּבֵית
9 מֵישְׁרוּי נִיחָךְ אַתְּ וַאֲרוֹן דִּי בֵיהּ אוֹרַיְתָךְ : כַּהֲנָךְ
יִלְבְּשׁוּן לְבוּשִׁין דִּזְכוּ וְלֵוָאֵי חֲסִידָךְ יְשַׁבְּחוּן
10 עַל קוּרְבָּנַיָּא : מְטוּל זְכוּתֵיהּ דְּדָוִד עַבְדָּךְ בְּמֵעַל
אֲרוֹנָא בִּמְצַע תַּרְעַיָּא לָא תְּתֵיב אַפֵּי שְׁלֹמֹה
11 מְשִׁיחָךְ : קַיֵּם יְיָ לְדָוִד בְּקוּשְׁטָא לָא יְתוּב מִנַּהּ
מִן וַלְדָּא דִמְעָךְ אֲשַׁוֵּי מְלֵךְ עַל כּוּרְסֵי דִילָךְ :
12 אִין נָטְרִין בְּנָךְ קְיָמִי וְסַהֲדְוָתִי דְּנָן דְּאַלְפִנּוּן אַף
13 בְּנֵיהוֹן לְעָלְמִין יִתְבוּן עַל כּוּרְסֵי דִילָךְ : אֲרוּם
14 אִתְרְעֵי יְיָ בְּצִיּוֹן רַגֵּג יָתָהּ לְמוֹתָב דִּי לֵיהּ : דָּא
נְיָח שְׁכִנְתִּי עַד עַלְמָא כָּא אֵתִיב אֲרוּם רְגַגְתַּהּ :
15 זְוָדַהּ מְבָרְכָא אֲבָרֵךְ וַחֲשִׁיכָהָא יִסְבְּעוּן לַחְמָא :
16 וְכַהֲנָהָא אַלְבִּישׁ לְבוּשֵׁי פוּרְקָן וַחֲסִידָהָא
17 מְשַׁבְּחָא יְשַׁבְּחוּן : תַּמָּן אַצְמַח מְלֵךְ יַקִּיר לְבֵית
18 דָּוִד סְדָרֵית שְׁרָגָא לִמְשִׁיחִי : בַּעֲלֵי דְבָבוֹי
אַלְבִּישׁ לְבוּשִׁין דִּבְהַתְתָּא וַעֲלוֹי יָנִיץ כְּלִילֵיהּ :

קלג

1 שִׁירָא דְּאִתְאֲמַר עַל מַסּוּקִין דִּתְהוֹמָא הָא כְּמָא
טָב וּכְמָא בְּסִים לְמִתַּב צִיּוֹן וִירוּשְׁלֶם כִּתְרֵין
2 אַחִין בְּרַם כַּחֲדָא : כִּמְשַׁח טָב דְּמִתְרַק עַל
רֵישָׁא נָחֵת עַל דִּקְנָא דִּקְנֵיהּ דְּאַהֲרֹן דְּנָחֵית
3 עַל אִמְרָא דִּלְבוּשׁוֹי : הֵיךְ כְּטַלָּא דְּחֶרְמוֹן
דְּנָחֵת עַל טוּרֵי דְּצִיּוֹן אֲרוּם תַּמָּן פַּקִּיד יְיָ יַת
בִּרְכְּתָא חַיֵּי עַד עַלְמָא :

קלד

1 שִׁירָא דְּאִתְאֲמַר עַל מַסּוּקִין דִּתְהוֹמָא הָא
בָּרִיכוּ יַת יְיָ כָּל עַבְדַיָּא דַּיְיָ דְּקָיְמִין עַל בֵּית
מַטְּרַת בֵּית מַקְדְּשָׁא דַּיְיָ וּמְשַׁבְּחִין בְּלֵילְוָן :
2 טוּלוּ יְדֵיכוֹן קוּדְשָׁא כַּהֲנַיָּא עַל דּוּכַן קוּדְשָׁא
וּבָרִיכוּ יַת יְיָ : יְבָרְכִנָּךְ יְיָ מִצִּיּוֹן דַּעֲבַד שְׁמַיָּא וְאַרְעָא : 3

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Si introiero *ad uxorem meam*, ſi aſcendero 3
ſup lectū ſtrati mei: Si dedero ſomnū ocu- 4
lis meis, palpebris meis dormitationē: Do- 5
nec inveniā locū *ædificandæ* domui ſanctuarii Dñi, tabernaculum fortiſſimo Jaacob.
Ecce audivimus eam in Ephrata, invenimus 6
eam in campo ſylvæ Libani, *loco ubi oraverunt patres priſci.* Intrabimus in tabernacu- 7
la ejus, adorabimꝰ ſcabellū pedū ejꝰ. Sur- 8
ge Domine, pone in domo hoſpitii ejꝰ quietem tuā, tu et arca in qua eſt Lex tua. Sa- 9
cerdotes tui induant veſtes juſtitiæ, et Levitæ pii tui laudes dicant propter oblationes.
Propter merita Davidis ſervi tui, *cùm ingreſſa fuerit arca in mediū portarū*, ne aver- 10
tas faciē *Salomonis* chriſti tui. Juravit Dñs 11
Davidi in veritate, non avertetur ab ea: De fructu ventris tui ponā regē ſup ſedē tuam.
Si cuſtodierint filii tui pactū meū, & teſti- 12
ficationes meas iſtas quas docebo eos, etiam filii eorū uſque in *ſecula* ſedebunt ſuper ſedem tuam. Quoniam elegit Dominus Sion, 13
deſideravit eam pro habitatione ſua. Hæc 14
requies majeſtatis meæ uſq; in ſeculū : hîc habitabo quoniam deſideravi eam. Viatico 15
ejus benedicens benedicā, & pauperes ejus ſaturabuntur pane. Et ſacerdotes ejꝰ induā 16
veſtibꝰ redemptionis, et pii ejus laudando laudabunt. Ibi faciam germinare regē glo- 17
rioſum in domo Davidis : ordinavi lucernā chriſto meo. Inimicos ejus induā veſtibus 18
confuſionis: at ſup ipſū florebit corona ejꝰ.

Canticum quod dictum eſt ſuper gradibus 1
abyſſi. PSAL. CXXXIII.

ECce quàm bonum et quam jocundū habitare Sion et Jeruſalem ſicut duo fratres *etiam* in unum. Sicut unguentum bonum ꝙ 2
effuſum ſup caput deſcendit ſup barbā, barbam [*inquam*] Aharon, & deſcendit ſuper fimbriam veſtimentorū ejus. Sicut ros Her- 3
mon qui deſcendit ſup montes Sion, quoniā illic præcepit Dominus benedictionem, vitam uſque in æternum.

Canticum quod dictum eſt ſuper gradibus 1
abyſſi.

PSAL. CXXXIV.

ECce benedicite Dñm omnes ſervi Dñi, qui ſtatis in vigiliis domꝰ ſanctuarii Dñi, et laudatis per noctes. Levate manus veſtras 2
[*cum*] *ſanctitate* Sacerdotes ad ſuggeſtum ſanctitatis, & benedicite Dño. Benedicat 3
tibi Dñs ex Sion, qui fecit cœlū & terram.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

3 [illegible]
4 5 [illegible]
6 7 [illegible]
8 9 [illegible]
10 [illegible]
11 [illegible]
12 [illegible]
13 [illegible]
14 15 [illegible]
16 [illegible]
17 18 [illegible]
[illegible]

1 [illegible]
[illegible]
2 [illegible]
3 [illegible]
[illegible]

1 [illegible]
[illegible]
2 [illegible]
3 [illegible]

Dicens; Non ingrediar tabernaculū domûs 3
meæ, neq; conſcendā ſtratū lecti mei, Neque 4
concedā ſomnū oculis meis, neq; dormitationē ſuperciliis meis, Donec inveniā locū Do- 5
mino & habitaculū Deo Jacobi. Ecce audi- 6
vimus hoc in Ephrata, & invenimus illud in agris. Adibimus habitationē ejꝰ & adorabi- 7
mus ſcabellū pedū ejus. Surge Dñe ad requiē 8
tuam, tu & arca fortitudinis tuæ. Sacerdo- 9
tes tui induant æquitatē, & juſti tui gloriam.
Propter David ſervū tuū non avertas faciem 10
uncti tui. Juravit Dñs Davidi in veritate & 11
non recedet ab ea, *inquiens*, De fructibꝰ ventris tui ſedere faciam ſuper ſoliū tuū. Si cu- 12
ſtodierint filii tui fœdus meū & teſtimoniū hoc quod docebo eos, etiam de ipſorū filiis ſedebūt in ſeculū ſeculorū ſup ſoliū tuū. Nam 13
oblectatus eſt Dñs Sione, & elegit eam ſibi domiciliū. Hæc eſt requies mea in ſeculum 14
ſeculorū: hîc ſedebo, quoniam expetivi eam.
Et venationibus ejus benedicam, ejuſq; pau- 15
peres ſatiabo pane. Pontifices ejus induam 16
ſalute, & juſtos ipſius gloriâ. Ibi oriri faciā 17
cornu Davidi, & accendā lucernam Chriſto ejus. Hoſtes autē ejꝰ induam confuſione, & 18
erga eum multiplicabitur ſanctitas mea.

PSAL. CXXXII.

Davidis. Ex Pſalmis aſcenſûs. Dicitur de Moſe & de Aharone degentibus in tabernaculo in domo Domini. Et innuit in eo populum perfectum. Verſ. 8. 1

QUàm bonum & quàm pulchrū eſt fratri- 2
bus cùm habitaverint ſimul : Sicut unguentū ꝙ defluit ſuper caput & ſuper barbā, barbam *inquam* Aharonis; quod defluit ſuper os veſtis ejus : Sicut ros Hermon, qui deci- 3
dit ſuper montē Sion: nam ibi mandavit Dñs benedictionem & vitam uſq; in ſempiternū.

PSAL. CXXXIII.

Davidis. De Sacerdotibus quos conſtituerat ad incumbendum miniſterio Domini noctibus, Spiritualiter autem documentum vitæ. Verſ. 8. 1

BEnedicite Dominum omnes ſervi Dñi, qui commoramini in domo Domini noctibus.
Levate manus veſtras ad ſanctitatem, & be- 2
nedicite Domino. Benedicat tibi Dominus 3
è Sion, qui condidit cœlum ac terram.

Verſio VULG. LAT.

3 Si introiero in tabernaculum domûs
meæ, ſi aſcendero in lectũ ſtrati mei :
4 Si dedero ſomnũ oculis meis, & pal-
5 pebris meis dormitationẽ, Et requiẽ
temporib⁹ meis: donec inveniã locum
6 Dño, tabernaculum Deo Jacob. Ecce
audivimus eã in Ephrata: invenim⁹ eã
7 in campis ſylvæ. Introibimus in taber-
naculum ejus : adorabimus in loco,
8 ubi ſteterunt pedes ejus. Surge, Domi-
ne, in requiem tuã, tu & arca ſanctifi-
9 cationis tuæ. Sacerdotes tui induantur
10 juſtitiã: & Sancti tui exultent. Propter
David ſervum tuũ, non avertas faciem
11 Chriſti tui. Juravit Domin⁹ David ve-
ritatem, & non fruſtrabitur eam; De
fructu ventris tui ponam ſuper ſedem
12 tuam. Si cuſtodierint filii tui teſtamen-
tum meũ, & teſtimonia mea hæc, quæ
docebo eos: Et filii eorum uſq; in ſe-
13 culum, ſedebunt ſuper ſedẽ tuã. Quo-
niam elegit Domin⁹ Sion: elegit eam
14 in habitationẽ ſibi. Hæc requies mea
in ſeculum ſeculi : hîc habitabo quo-
15 niam elegi eam. Viduam ejus benedi-
cens benedicam : pauperes ejus ſatura-
16 bo panibus. Sacerdotes ejus induã ſa-
lutari : & Sancti ejus exultatione exul-
17 tabunt. Illuc producã cornu David, pa-
18 ravi lucernã Chriſto meo. Inimicos e-
jus induam confuſione: ſuper ipſum
autẽ efflorebit ſanctificatio mea.

Canticũ graduũ David. CXXXII.

1 ECce quàm bonũ, & quã jucundũ,
2 habitare fratres in unũ: Sicut unguen-
tum in capite, quòd deſcendit in bar-
bã, barbã Aaron: Quod deſcendit in
3 oram veſtimenti ej⁹: Sicut ros Hermõ,
qui deſcendit in montẽ Sion. Quoni-
am illîc mandavit Domin⁹ benedictio-
nem, & vitã uſq; in ſeculum.

Canticum graduum. CXXXIII.

1 ECce nunc benedicite Dominum,
omnes ſervi Domini: Qui ſtatis in do-
mo Domini, in atriis domûs Dei no-
2 ſtri, In noctibus extollite manus ve-
ſtras in Sancta, & benedicite Dominũ.
3 Benedicat te Dominus ex Sion, qui fe-
cit cœlum & terram.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

3 †(a)Εἰ εἰσελεύσομαι εἰς σκήνωμα οἴκου μου, †εἰ ἀναβή-
4 σομαι ἐπὶ κλίνης στρωμνῆς μου· †Εἰ δώσω ὕπνον τοῖς
ὀφθαλμοῖς μου, †καὶ τοῖς βλεφάροις μου νυσταγμὸν,
5 †Καὶ ἀνάπαυσιν τοῖς κροτάφοις μου· †ἕως οὗ εὕ-
ρω τόπον τῷ κυρίῳ, †σκήνωμα τῷ θεῷ Ἰακώβ.
6 †Ἰδοὺ ἠκούσαμεν αὐτὴν (α) ἐν Ἐφραθᾷ, †εὕρομεν αὐ-
7 τὴν ἐν τοῖς πεδίοις τοῦ δρυμοῦ. †(b)Εἰσελευσόμεθα
εἰς τὰ σκηνώματα αὐτοῦ· †προσκυνήσομεν (β) εἰς
8 τὸν τόπον οὗ ἔστησαν οἱ πόδες αὐτοῦ. †Ἀνάστηθι κύριε εἰς
τὴν ἀνάπαυσίν σου, †σὺ καὶ ἡ κιβωτὸς τοῦ ἁγιάσματός
9 σου. †Οἱ ἱερεῖς σου ἐνδύσονται δικαιοσύνην, †καὶ οἱ ὅ-
10 σιοί σου (γ) ἀγαλλιάσονται. †Ἕνεκεν Δαυὶδ τοῦ δούλου
σου, †μὴ ἀποστρέψῃς τὸ πρόσωπον τοῦ χριστοῦ σου. †
11 Ὤμοσε κύριος τῷ Δαυὶδ ἀλήθειαν, †καὶ οὐ μὴ ἀ-
θετήσει (δ) αὐτὴν, †Ἐκ καρποῦ τῆς κοιλίας σου, θή-
12 σομαι ἐπὶ (ε) τοῦ θρόνου σου. †Ἐὰν φυλάξωνται (ζ)
οἱ υἱοί σου τὴν διαθήκην μου, †καὶ τὰ μαρτύριά μου
ταῦτα ἃ διδάξω αὐτοὺς, †καὶ οἱ υἱοὶ αὐτῶν (η) ἕως τοῦ
13 αἰῶνος καθιοῦνται ἐπὶ τοῦ θρόνου σου. †Ὅτι ἐξελέ-
ξατο κύριος τὴν Σιὼν, †ᾑρετίσατο αὐτὴν εἰς κατοι-
14 κίαν ἑαυτῷ. †Αὕτη ἡ κατάπαυσίς μου εἰς αἰῶνα αἰ-
ῶνος, †ὧδε κατοικήσω ὅτι ᾑρετισάμην αὐτήν. †(θ)
15 Τὴν θήραν αὐτῆς εὐλογῶν εὐλογήσω, †τοὺς πτω-
16 χοὺς αὐτῆς χορτάσω ἄρτων. †Τοὺς ἱερεῖς αὐτῆς ἐν-
δύσω σωτηρίαν, †καὶ οἱ ὅσιοι αὐτῆς ἀγαλλιάσει ἀγαλ-
17 λιάσονται. †Ἐκεῖ ἐξανατελῶ κέρας τῷ Δαυὶδ, †
18 (ι) ἡτοίμασα λύχνον τῷ χριστῷ μου. †Τοὺς ἐχθροὺς
αὐτοῦ ἐνδύσω αἰσχύνην, †ἐπὶ δὲ αὐτὸν ἐξανθήσει τὸ
ἁγίασμά μου.

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν (α). ρλβ΄.

1 †ΙΔοὺ δὴ τί καλὸν, ἢ τί τερπνὸν, †ἀλλ᾽ ἢ τὸ κατ-
2 οικεῖν ἀδελφοὺς ἐπὶ τὸ αὐτό; †Ὡς μύρον (β) ἐπὶ κε-
φαλῆς τὸ καταβαῖνον ἐπὶ πώγωνα, †τὸν πώγωνα
τὸν Ἀαρὼν, †τὸ καταβαῖνον ἐπὶ τὴν ᾤαν τοῦ ἐνδύ-
3 ματος αὐτοῦ. †Ὡς δρόσος Ἀερμὼν ἡ καταβαίνου-
σα ἐπὶ τὰ ὄρη Σιών· †ὅτι ἐκεῖ ἐνετείλατο κύριος
τὴν (γ) εὐλογίαν, †ζωὴν ἕως τοῦ αἰῶνος.

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. ρλγ΄.

1 †ΙΔοὺ δὴ εὐλογεῖτε τὸν κύριον †πάντες οἱ δοῦλοι κυ-
ρίου, †οἱ ἑστῶτες ἐν οἴκῳ κυρίου, †ἐν αὐλαῖς οἴκου
2 θεοῦ ἡμῶν. †Ἐν ταῖς νυξὶν ἐπάρατε τὰς χεῖρας ὑμῶν
3 εἰς τὰ ἅγια, †καὶ εὐλογεῖτε τὸν κύριον. †Εὐλογήσαι σε
κύριος ἐκ Σιὼν, †ὁ ποιήσας τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν.

MS.A. (a)Ἦ(α) ἐν Εὐφραθᾷ, εὕραμεν αὐτὴν ἐν
*τῇ δάσει τοῦ. (b)Εἰσελευσόμεθα (β) εἰς τόπον (γ) ἀ-
γαλλιάσει ἀγαλλιάσονται. (δ) αὐτὴν, (ε) τὸν θρόνον (ζ) υἱοί
σου (η) καθιοῦνται ἕως τοῦ αἰῶνος ἐπὶ τὸν θρόνον σου. Ὅτι ἐκεῖ ἐξελέξατο (θ) Τὴν χήραν (ι) ἡτοίμασας
τῷ χριστῷ μου λύχνον. MS.A. ρλβ΄. (α) τῷ Δαυίδ. (β) ἐπὶ κεφαλὴν (γ) εὐλογίαν αὐτοῦ, καὶ ζωὴν

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

3 [b] *Si introiero in tabernaculum* 3
domûs meæ: [c] *ſi aſcendero ſuper*
lectum ſtrati mei. 4 [d] *Si dedero* 4
ſomnum oculis meis, [e] *& palpebris*
meis dormitationem, 5 [f] *Et* (c) *re-* 5
quiẽ temporibus meis : donec inve-
niam locum Domino: tabernaculum
Deo Jacob. 6 *Ecce audivimus eam* 6
in Ephratha: invenimus eam in (d)
campis ſylvæ. 7 (e) *Intremus in* [g] *ta-* 7
bernacula ejus: adoremus in loco, ubi
ſteterunt pedes [h] *ejus.* 8 *Surge, Do-* 8
mine, in requiem tuam, tu, & arca
(f) *ſanctificationis tuæ.* 9 *Sacerdo-* 9
tes tui (g) *induentur juſtitiam : &*
Sancti tui [i] *exultabunt.* 10 *Propter* 10
David ſervum tuum, non (h) *aver-*
tas faciẽ Chriſti tui. 11 *Juravit Do-* 11
minus David [k] *veritatem, & non*
(i) *fruſtrabitur eam; De fructu ven-*
tris tui ponã ſuper (k) *ſedẽ tuã.* 12
Si cuſtodierint filii tui [l] *teſtamen-* 12
tum meum, & teſtimonia mea hæc,
quæ docebo eos; 13 *Et filii eorum*
uſq; in ſeculum ſedebunt ſuper ſe-
dem tuã. 14 *Quoniã elegit Domi-* 13
nus Sion, (l) [m] *præelegit eam in*
habitationem ſibi. 15 *Hæc requies* 14
mea in [n] *ſeculum ſeculi: hîc habi-*
tabo, quoniã præelegi eã. 16 (m) [o]
Venationẽ ejus benedicens benedi- 15
cam; pauperes ejus ſaturabo panib⁹.
17 *Sacerdotes ejus induam* [p] *ſalu-* 16
te : & Sancti ejus (n) *exultatione*
exultabunt. 18 *Ibi* (o) [q] *ſuſcitabo* 17
cornu David: paravi lucernam Chri-
ſto [r] *meo.* 19 *Inimicos ejus induã* 18
confuſione : ſuper ipſum autem ef-
florebit (p) *ſanctificatio mea.*

Canticum graduum. CXXXII.

1 ECce (a) [a] *nunc quid bonum,* 1
vel quid jocundũ, niſi habita-
re fratres in unum? 2 *Sicut* (b) *un-* 2
guentum in capite, quod deſcendit
in barbam, barbam Aaron : 3 *quod*
deſcendit in oram veſtimenti ejus.
Sicut ros [b] *Ærmon, qui deſcendit* 3
ſuper (c) *montes Sion.* 4 [c] *Quoni-*
am ibi mandavit Dominus benedi-
ctionem, [d] *vitam uſq; in ſeculum.*

Canticum graduum. CXXXIII.

1 ECce *nunc benedicite Dominum* 1
omnes ſervi Domini : qui ſta-
tis in domo Domini, in (a) *atriis do-*
mûs Dei noſtri. 3 *In* (b) *noctibus ex-* 2
tollite manus veſtras (c) *in* [a] *San-* 3
cta, & benedicite Dominum. 4 *Be-*
nedicat te Dominus ex Sion, qui
fecit cœlum, & terram.

Verſio ÆTHIOPICA.

ከመ ፡ ኢይበውእ ፡ ውስተ ፡ ጽላሎተ ፡ ቤት 3
የ፡፡ ወከመ ፡ ኢያዐርግ ፡ ውስተ ፡ ዓራተ፡
ምስካብየ፡፡ ፨ ወከመ ፡ ኢይሁቦን ፡ ንዋ 4
መ ፡ ለአዕይንትየ፡፡ ወኢድቃሰ ፡ ለቀራ
ንብትየ፡፡ ፨ ወኢዕረፍተ ፡ ለመሳትሕ 5
የ፡፡ እስከ ፡ እረክብ ፡ መካና ፡ ለእግዚአ
ብሔር፡፡ ወማኅደሮ ፡ ለአምላከ ፡ ያዕቆ
ብ፡፡ ፨ ናሁ፡ ሰማዕናሁ ፡ በኤፍራታ፡፡ ወረ 6
ከብናሁ፡ውስተ፡ለመ፡ገዳም፡፡ ፨ ንበውእ፡ 7
እንከሰ፡ውስተ፡ዐቢያቲሁ፡፡ ወንስግድ፡ውስ
ተ፡መካን፡ኀበ፡ ቆመ፡ እግረ፡ እግዚእነ፡፡ ፨
ተንሥእ፡ እግዚኦ፡ ውስተ፡ዕረፍትከ፡፡ አን 8
ተ፡ወታቦተ፡ መቅደስከ፡፡ ፨ ከህናቲከ፡ይለ 9
ብሱ፡ ጽድቀ፡፡ ወጻድቃኒከ፡ትፍሥሕተ፡ይት
ፌሥሑ፡፡ ፨ በእንተ ፡ ዳዊት ፡ ገብርከ፡፡ 10
ወኢትሚጥ፡ገጸከ፡እመሲሕከ፡፡ ፨ መሐለ፡ 11
እግዚአብሔር፡ለዳዊት፡ በጽድቅ፡ ወኢይኔስ
ሐ፡፡ እስመ፡እምፍሬ ፡ ከርሥከ፡ አነብር፡
ዲበ፡መንበርከ፡፡ ፨ ወለእመ፡ዐቀቡ፡ደቂቅ 12
ከ ፡ ሕግየ፡፡ ወሰምዑኒ፡ ዘንተ ፡ ዘአመሀሮ 13
ሙ፡፡ ፨ ወደቂቆሙኒ፡ እስከ፡ ለዓለም፡ይነ
ብሩ፡ ዲበ፡መንበርከ፡፡ ፨ እስመ፡ ኀረያ፡እ 14
ግዚአብሔር ፡ ለጽዮን፡፡ ወአብደራ ፡ ከመ፡
ትኩኖ፡ማኅደሮ፡፡ ፨ ዛቲ፡ይእቲ፡ምዕራፍ 15
የ፡ለዓለም፡፡ ወዝየ፡ኣኀድር፡፡እስመ፡ኀረይ
ክዋ፡፡ ፨ ለአቤራቲሃ ፡ ባርኮ ፡ እባርኮን፡፡ 16
ወለነዳያኒሃ፡አጸግቦሙ፡እክለ፡፡ ፨ ወለካህ 17
ናቲሃ፡አለብሶሙ፡ሕይወተ፡፡ ወጻድቃኒሃ፡
ትፍሥሕተ፡ይትፌሥሑ፡፡ ፨ ወበህየ፡አበቍ 18
ል፡ቀርነ፡ ለዳዊት፡፡ ወአስተደሉ፡ ማኅቶተ፡
ለመሲሕየ፡፡ ፨ ወአለብሶሙ፡ኀፍረተ፡ለጸ 19
ላእቱ፡፡ ወቦቱ፡ይፈሪ፡ቅድሳትየ፡፡ ፨

ማኅሌት፡ዘበመዓርጊሁ፡፡

የሀቦ ናሁ፡ሠናይ፡ወናሁ፡አደም፡፡ ሶበ፡ይሃ 1
ልው፡አኀው፡ኅቡረ፡፡ ፨ ከመ፡ዕፍረት፡ዘይ 2
ውኅዝ፡እምርእሱ ፡ እስከ፡ጽሕሙ፡፡ ጽኅ
ሙ፡ለአሮን፡ 3 ዘይወርድ፡ዲበ፡ኅባኔ፡ መል
በሱ፡፡ ከመ፡ጠለ፡አርሞንኤም ፡ዘይወርድ፡
ዲበ፡አድባረ፡ጽዮን፡፡ ፨ እስመ፡አዘዘ፡እግ 4
ዚአብሔር፡በረከቶ፡፡ ወሕይወት፡እምይእ
ዜ፡ወእስከ፡ለዓለም፡፡ ፨

ማኅሌት፡ዘበመዓርጊሁ፡፡

የሀር ናሁ፡ይባርክዎ፡ለእግዚአብሔር፡፡ኵ 1
ሎሙ፡አግብርተ፡እግዚአብሔር፡፡ ፨ እለ፡ 2
ይቀውሙ፡ውስተ፡ቤተ፡እግዚአብሔር፡፡ውስ
ተ፡ዐጸደ፡ቤተ፡አምላክነ፡፡ ፨ በሌሊተ፡አንሥ 3
ኡ፡እደዊክሙ፡በቤተ፡ መቅደስ፡ ፡ወባርክዎ፡
ለእግዚአብሔር፡፡ ፨ ይባርክ፡እግዚአብሔ 4
ር፡እምጽዮን፡፡ዘገብረ፡ሰማየ፡ወምድረ፡ ፨

INTERP. ÆTHIOP. [b] Quòd non ingrediar in [c] & quòd non [d] neque dedero [e] neque [f] neque requiem [g] palatia ejus: [h] Domini noſtri. [i] exultatione exultabunt [k] in veritate, & non pœnitebit; Quoniam de [l] legem meam, [m] & voluit ut ejus eſſet habitaculum. [n] ſeculum: hîc [e] Viduam ejus benedicens [p] vitâ: [q] florere faciam [r] tuo. *PSAL. CXXXII.* [a] bonum eſt, & ecce jucundum, cùm fratres ſunt ſimul: [b] Ærmonèm, [c] Quoniam mandavit [d] & vitam, ex nunc & uſque, *PSAL. CXXXIII.* [a] domo Sanctuarii, &

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

3 4 * اني لا ادخل الي مسكن بيتي ولا اصعد علي سرير فراشي * ولا اعطي عيني نوما * ولا اجفاني
5 6 نعاسا * ولا لصدغي راحة * الي ان اجد موضعا للرب * ومسكنا لاله يعقوب * ها نحن قد سمعناها في
7 8 افراثا * ووجدناها في مواضع الغياض خالية * ندخل الي مسكنه ونسجد في موضع قامت فيه رجلاه *
9 10 * قم يا رب الي راحتك انت وتابوت مقدسك * كهنتك يلبسون عدلا * وقديسوك يبتهجون * لاجل
11 12 داود عبدك لا ترد وجه مسيحك * حلف الرب لداود حقا ولن يغدر به * ان من ثمر بطنك
13 اجعل علي كرسيك * ان حفظ بنوك عهدي * وشهاداتي التي انا اعلمها لهم * فبنوهم الي الابد
14 15 يجلسون علي كرسيك * الان الرب اختار صهيون واختارها له مسكنا * هذا هو موضع راحتي الي
16 17 الابد * هاهنا اسكن لاني اردتها * ابارك في صيدها تبريكا * واشبع مساكينها خبزا * البس
18 كهنتها خلاصا * وابرارها يبتهجون ابتهاجا * هناك اقيم لداود قرنا * اعددت لمسيحي نورا * والبس
اعداءه خزيا ويزهر عليه قدسي * الليلويا *

* المزمور المائة والثاني والثلثون *

1 * وهو * ز * استيحانات * ها ما هو الحسن او الحلو * الا الاخوة الساكنون باتفاق *
2 3 * كالطيب الكاين علي الراس النازل علي اللحية لحية هرون النازلة الي جيب قميصه * مثل ندا
حرمون * النازل علي جبل صهيون * لان هناك امر الرب بالبركة والحياة الي الابد * الليلويا *

1 * المزمور المية والثلاثة والثلثون * * وهو * ه * استيحانات * ها باركوا الرب يا جميع عبيد
2 الرب * القايمين في بيت الرب في ديار بيت الهنا * ارفعوا ايديكم في الليالي الي القدس وباركوا
3 الرب * الرب يباركك من صهيون * خالق السموات والارض * الليلويا *

Quòd non ingrediar in habitaculũ domûs 3
meæ, & non aſcendã ſuper lectũ ſtrati mei,
Nec dabo oculis meis ſomnũ, neq; palpebris 4
meis dormitationem, neque temporibus meis
requiem : Donec inveniã locũ Domino, & 5
habitaculum Deo Jacob. Ecce nos jam au- 6
divimus eã in Ephratha, & invenimus eam
in locis ſylvarũ vacuã. Intrabimus in habi- 7
taculum ejus, & adorabimus in loco in quo
ſteterunt pedes ejus. Surge O Domine ad re- 8
quiem tuam, tu & arca ſanctuarii tui. Sa- 9
cerdotes tui induentur juſtitiã, et ſancti tui
exultabunt. Propter David ſamulum tuum 10
ne avertas faciem Chriſti tui. Juravit Do- 11
minus Davidi veritatem, & non fraudabit
eam : dicens, *De fructu ventris tui ponam*
ſuper ſedem tuam. Si cuſtodierint filii tui 12
pactum meum, & teſtimonia mea quæ ego
docebo eos, filii eorum in æternum ſedebunt
ſuper ſedem tuam. Itaque Dominus elegit 13
Sion, & elegit eam ſibi habitaculum. Hic eſt 14
locus requiei meæ in ſeculum : hîc habita-
bo, quoniam volui eam. Benedicam vena- 15
tionem ejus benedictione, & ſaturabo pau-
peres ejus pane. Induam ſacerdotes ejus ſa- 16
lute, & juſti ejus exultabunt exultatione.
Ibi erigam Davidi cornu, paravi Chriſto 17
meo lucem. Et induam inimicos ejus con- 18
fuſione, & florebit ſuper eum ſanctitas
mea. Alleluja.

PSAL. CXXXII.

Verſus 7.

1 ECce, *quid eſt bonum aut dulce? nonne*
fratres habitantes cum concordia? Si- 2
cuti fragrantia quæ eſt ſuper caput, deſcen-
ditq; ſuper barbã, barbã Aaron demiſſam ad
aperturam ſubuculæ ejus : Sicut ros Her- 3
mon decidens ſuper montem Sion, quoniam
ibi præcepit Dominus benedictionem, &
vitam in æternum. Alleluja.

PSAL. CXXXIII.

Verſus 5.

1 ECce, *benedicite Dominum O omnes ſer-*
vi Domini ſtantes in domo Domini, in
atriis domûs Dei noſtri. Elevate manus ve- 2
ſtras in noctibus ad ſanctuarium, & bene-
dicite Dominum. Dominus benedicat tibi 3
ex Sion, Creator cœlorum & terræ.
Alleluja.

תהלים : קלה קלו

PSAL. CXXXV. קלה

stantes Qui .Domini servi laudate : Domini nomen Laudate .Jah-Hallelu
1 הללו יה הללו את שם יהוה הללו עבדי יהוה: שעמדים 2
bonus quia , *Jah* Laudate .nostri Dei domus atriis in : Domini domo in
בבית יהוה בחצרות בית אלהינו: הללו־יה כי־טוב 3
sibi elegit Jahacob Quoniam .jocundum quia ,ejus nomini canite : Dominus
יהוה זמרו לשמו כי נעים: כי־יעקב בחר לו 4
: Dominus magnus quòd , novi ego Quia *suum peculium in* Israel : *Jah*
יה ישראל לסגלתו: כי אני ידעתי כי־גדול יהוה 5
fecit Dominus voluit quæ Omnia .diis omnibus præ noster *Dominus* &
ואדנינו מכל־אלהים: כל אשר־חפץ יהוה עשה 6
vapores faciens Aſcendere .voraginibus omnibus & ,maribus in : terra in & cœlo in
בשמים ובארץ בימים וכל־תהמות: מעלה נשאים 7
.suis theſauris de ventum *educens* : *fecit* pluviam ad fulgura , terræ extremo ab
מקצה הארץ ברקים למטר עשה מוצא רוח מאוצרותיו:
Miſit .jumentum ad uſque homine ab : Ægypti primogenita percuſſit Qui
8 שהכה בכורי מצרים מאדם עד־בהמה: שלח 9
.ejus ſervos omnes in & ,Parhoh in : Ægypte tui medio in prodigia & ſigna
אתות ומפתים בתוככי מצרים בפרעה ובכל־עבדיו:
regem Sichon .fortes reges occidit & : multas gentes percuſſit Qui
10 שהכה גוים רבים והרג מלכים עצומים: לסיחון מלך 11
dedit Et .Chenahan regna omnia & : Baſan regem Hogh & , Emoræum
האמרי ולעוג מלך הבשן ולכל ממלכות כנען: ונתן 12
tuũ nomen Domine .ſuo populo Iſrael hæreditatem : hæreditatem eorum terram
ארצם נחלה נחלה לישראל עמו: יהוה שמך 13
faciet judicium Quia .generationẽ & generatione in tua memoria Domine : ſeculũ in
לעולם יהוה זכרך לדר־ודר: כי־ידין 14
,argentũ ,gentium *Dolores* .*pœnitentia ducetur* ſuis ſervis *ſuper* & : ſuo populo Dominus
יהוה עמו ועל־עבדיו יתנחם: עצבי הגוים כסף 15
non & , eis oculi : loquentur non & ,eis Os .hominis manuũ opus : aurum &
וזהב מעשה ידי אדם: פה־להם ולא ידברו עינים להם ולא 16
.ipſorũ ore in ſpiritus eſt non etiam : auſcultabunt non & , eis Aures .videbunt
יראו: אזנים להם ולא יאזינו אף אין־יש־רוח בפיהם: 17
benedicite Iſrael *Domus* .eis *in fidens* qui omnis ,ea facientes ſint ipſa Sicut
כמוהם יהיו עשיהם כל אשר־בטח בהם: בית ישראל ברכו 18
Levi *Domus* .DOMINO benedicite Aharon *domus* : DOMINO 19
את־יהוה בית אהרן ברכו את־יהוה: בית הלוי 20
.DOMINO benedicite DOMINUM *timentes* : Domino benedicite
ברכו את־יהוה יראי יהוה ברכו את־יהוה:
.Jah-Hallelu .Jeruſalaim *habitans* : Sijon ex DOMINUS Benedictus
21 ברוך יהוה מציון שכן ירושלם הללו־יה:

PSAL. CXXXVI. קלו

.ejus miſericordia ſeculum in quoniam : bonus quoniam DOMINO Confitemini
1 הודו ליהוה כי־טוב כי לעולם חסדו:

תרגום TARGUM.

קלה

הללויה שבחו ית שמא דיי שבחו עבדיא דיי: 1
דקימין בבית מקדשא דיי בדרת בית אלהנא: 2
הללויה ארום טב יי זמרו לשמיה ארום בסים: 3
ארום דבית יעקב בחר ליה יי ישראל 4
לחבוביה: ארום אנא ידעית ארום רב יי 5
ורבוננא על כל אלהים: כל די יתרעי יי עבד 6
בשמיא ובארעא ביממיא וכל תהומיא:
דמסיק ענגין מסיפי ארעא ברקין למחת 7
מטרא עבד דמפיק זעפא מן תוסבריא
דיליה: די קטל בוכריא דמצראי מאנשא 8
עד בעירא: שדר אתין ותמהין במציעיך 9
מצרים בפרעה ובכל עבדוי: די מחא 10
עממין סגיעין וקטל מלכין תקיפין: לסיחון 11
מלכא אמוראה ולעוג מלכא דמתנן
ולכל מלכות כנען: ויהב ארעהון אחסנא 12
אחסנא לישראל עמיה: יי שמך לעלם 13
יי דכרנך לדר ודר: ארום ידין יי במימריה 14
דינא דעמיה ועל עבדוי צדיקיא יתוב ברחמוי:
טען דעממיא סימא ודהבא עובד אידי 15
בר נש: פום להון ולא ממללין עינין 16
להון ולא חמין: אודנין להון ולא צייתין 17
נחירי ולא אית רוחא דחיי בפומהון: די 18
כמתהון יהון עובדיהון כל דמתרחיץ עליהון:
דבית ישראל בריכו ית יי דבית אהרן 19
בריכו ית יי: דבית ליואי בריכו ית יי 20
דחליא דיי בריכו ית יי: בריך יי מציון 21
דאשרי שכנתיה בירושלם הללויה:

קלו

שבחו קדם יי ארום טב ארום לעלם 1
טוביה:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Hallelujah. 1

PSAL. CXXXV.

Laudate nomen Domini, laudate ſervi
Domini : Qui ſtatis in domo ſanctuarii Do- 2
mini, in atriis domus Dei noſtri. Laudate 3
Dominum, quoniam *bonus* Dominus :
pſallite nomini ejus, quoniam ſuave. Quo- 4
niam domum Jaacob elegit ſibi Dominus,
Iſraelem in dilectum ſuum. Quoniam ego 5
ſcio quòd magnus eſt Dñs, & dominator
noſter ſupra omnes deos. Omnia quæ vo- 6
luit Dominus fecit in cœlis & in terra,
in maribus & omnibus abyſſis. Elevans 7
nubes ab extremis terræ,fulgura ad deſcen-
ſum *pluviæ* edidit : qui producit ven-
tum impetuoſum de theſauris ſuis. Qui 8
interfecit primogenita Ægypti ab homine
uſque ad pecus. Miſit ſigna et portenta in 9
medio tui Ægypte, in Pharaonem & in
omnes ſervos ejus. Qui percuſſit populos 10
plurimos, & interfecit reges fortes. Sichon 11
regem Amorrhæum, & Og regem Baſan,
& univerſum regnum Chananæum. Et de- 12
dit terram eorum hæreditatem, hæredita-
tem [*inquam*] Iſrael populo ſuo. Domi- 13
ne nomen tuum in æternum eſt, Domine
memoria tui in generatione & generatio-
nem. Quoniam judicabit Dominus *ver-* 14
bo ſuo judicium populi ſui, & ſuper ſer-
vos ſuos juſtos convertetur in miſerationi-
bus ſuis. Idola gentium argentea & au- 15
rea, opera manuum hominis. Os habent 16
& non loquuntur ; oculos habent & non
vident. Aures habent & non audiunt ; 17
nares, nec eſt ſpiritus vivens in ore ipſo-
rum. Similes illis fiant qui faciunt ea ; 18
omnes qui confidunt in eis. Domus Iſra- 19
el benedicite Domino, domus Aharon be-
nedicite Domino. Domus Levi benedici- 20
te Domino : timentes Dominum benedi-
cite Domino. Benedictus Dominus ex Si- 21
on, qui poſuit majeſtatem ſuam in Jeruſa-
lem : *Hallelujah.*

PSAL. CXXXVI.

Laudes dicite coram Domino, quoni- 1
am bonus eſt, quoniam in æternum beni-
gnitas ejus.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

1 * ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܠܗ * * ܠܐ ܡܫܡܗܢܐ. ܪܘܚܢܐܝܬ ܡܬܐܡܪ: ܥܠ ܢܦܫܐ ܕܡܙܡܪܐ
ܬܫܒ̈ܚܬܐ ܒܝܕܥܬܐ ܥܡ ܬܚܘܬ ܥܝܪܘܬܐ ܒܚܝܘܕܐ ܥܡ ܬܠܝܬܝܘܬܐ. ܘܪܡܙ ܒܗ ܥܠ ܦܘܢܝܐ ܕܥܡܡܐ
ܕܟܪ̈ܝܣܛܝܢܐ ܠܗܝܡܢܘܬܐ. ܦܬ̈ܓܡܐ ܡܗ. ܫܒܚܘ ܠܫܡܗ ܕܡܪܝܐ: ܫܒܚܘ ܥܒ̈ܕܘܗܝ
2 ܕܡܪܝܐ. * ܐܝܠܝܢ ܕܩܝܡܝܢ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ: ܘܒܕܪ̈ܬܐ ܕܒܝܬ ܐܠܗܢ. * ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ
3
4 ܡܛܠ ܕܛܒ ܗܘ: ܘܙܡܪܘ ܠܫܡܗ ܡܛܠ ܕܒܣܝܡ ܗܘ. * ܡܛܠ ܕܠܝܥܩܘܒ ܓܒܐ ܠܗ
5 ܡܪܝܐ: ܘܠܐܝܣܪܝܠ ܠܟܢܘܫܬܗ. * ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܝܕܥܬ: ܕܪܒ ܗܘ ܡܪܝܐ ܡܪܢ ܡܢ ܟܠܗܘܢ
6 ܐܠܗ̈ܐ. * ܘܟܠ ܕܨܒܐ ܡܪܝܐ ܥܒܕ: ܒܫܡܝܐ ܘܒܐܪܥܐ. ܒܝܡ̈ܡܐ ܘܒܟܠܗܘܢ ܬܗܘ̈ܡܐ:
7 * ܡܣܩ ܥܢܢ̈ܐ ܡܢ ܣܘܦܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ. ܘܒܪ̈ܩܐ ܠܡܛܪܐ ܥܒܕ: ܡܦܩ ܪܘܚܐ ܡܢ ܐܘܨܪ̈ܘܗܝ.
8 * ܕܡܚܐ ܠܒܘܟܪ̈ܐ ܕܡܨܪܝܢ: ܡܢ ܒܢܝܢܫܐ ܘܥܕܡܐ ܠܒܥܝܪܐ. * ܫܕܪ ܐܬܘܬܗ ܘܬܕܡܪ̈ܬܗ
9
10 ܒܓܘܗ̇ ܕܡܨܪܝܢ: ܥܠ ܦܪܥܘܢ ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܒ̈ܕܘܗܝ. * ܕܡܚܐ ܠܥܡ̈ܡܐ ܣܓܝ̈ܐܐ:
11 ܘܩܛܠ ܠܡܠܟ̈ܐ ܥܫܝܢ̈ܐ. * ܠܣܝܚܘܢ ܡܠܟܐ ܕܐܡܘܪ̈ܝܐ: ܘܠܥܘܓ ܡܠܟܐ ܕܡܬܢܢ.
12 ܘܠܟܠܗܘܢ ܡܠܟܘ̈ܬܐ ܕܟܢܥܢ: * ܘܝܗܒ ܐܪܥܗܘܢ ܝܪܬܘܬܐ ܠܐܝܣܪܝܠ ܥܡܗ. * ܡܪܝܐ ܫܡܟ
13
14 ܠܥܠܡ ܡܪܝܐ ܘܕܘܟܪܢܟ ܠܕܪ̈ ܕܪܝܢ: * ܡܛܠ ܕܕܐܢ ܡܪܝܐ ܠܥܡܗ. ܘܥܠ ܥܒ̈ܕܘܗܝ ܡܬܒܝܐ:
15
16 * ܦܬܟܪ̈ܐ ܕܥܡ̈ܡܐ ܣܐܡܐ ܘܕܗܒܐ. ܥܒܕ ܐܝ̈ܕܝܐ ܕܒܢܝ̈ܢܫܐ: * ܦܘܡܐ ܐܝܬ ܠܗܘܢ ܘܠܐ ܡܡܠܠܝܢ.
17 ܥܝ̈ܢܐ ܐܝܬ ܠܗܘܢ ܘܠܐ ܚܙܝܢ: * ܐܕ̈ܢܐ ܐܝܬ ܠܗܘܢ ܘܠܐ ܫܡܥܝܢ. ܘܠܝܬ ܪܘܚܐ ܒܦܘܡܗܘܢ:
18 * ܐܝܟܘܬܗܘܢ ܢܗܘܘܢ ܥܒ̈ܘܕܝܗܘܢ. ܘܟܠ ܕܬܟܝܠ ܥܠܝܗܘܢ: * ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܒܪܟܘ
19
20 ܠܡܪܝܐ. ܒܝܬ ܐܗܪܘܢ ܒܪܟܘ ܠܡܪܝܐ: * ܒܝܬ ܠܘܝ ܒܪܟܘ ܠܡܪܝܐ. ܕܚ̈ܠܘܗܝ ܕܡܪܝܐ
21 ܒܪܟܘ ܠܡܪܝܐ: * ܡܒܪܟ ܡܪܝܐ ܡܢ ܨܗܝܘܢ. ܗܘ ܕܫܪܐ ܒܐܘܪܫܠܡ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܠܘ *
1 * ܠܐ ܡܫܡܗܢܐ. ܡܬܐܡܪ ܥܠ ܡܘܫܐ ܘܐܝܣܪܝܠ ܕܡܫܒܚܝܢ ܠܡܪܝܐ ܥܠ ܗܠܝܢ
ܕܐܬܦܪܩܘ: ܘܥܠ ܦܘܪܩܢܐ ܕܢܦܫ̈ܬܐ ܡܢ ܓܗܢܐ ܡܢ ܦܪܥܘܢ ܣܛܢܐ. ܒܝܕ ܡܫܝܚܐ
ܦܪܘܩܢ ܡܚܝܢܢܗܝܢ. ܦܬ̈ܓܡܐ ܢܘ. ܐܘܕܘ ܠܡܪܝܐ ܕܛܒ ܗܘ ܘܠܥܠܡ ܚܢܢܘܗܝ.

PSAL. CXXXIV.

Anonymus. Spirituali ſenſu dicitur de ani- 1
ma ſomniante hymnos cum cognitione, vi-
gilante in unione cum Trinitate. Et innu-
it in eo converſionem populi Chriſtiani ad
fidem. Verſus 45.

Laudate nomen Dñi, laudes præcinite ſer-
vi Dñi. Qui ſtatis in domo Dñi & in a- 2
trio domûs Dei noſtri, Glorificate Dñm, 3
quia bonus eſt : & pſallite nomini ejus, quo-
niam ſuave eſt. Jacobum enim elegit ſibi 4
Dñs, & Iſraelẽ in cœtũ ſuũ. Quoniam ego 5
novi quòd maximus eſt Dñs. Dñs *inquam*
noſter, omnium deorum. Et quicquid vult 6
Dñs facit in cœlo & in terra, in maribus &
in omnibus abyſſis : Elevat nubes è finibus 7
terræ, & fulgura in pluviam ſtatuit : educit
ventos ex horreis. Qui percuſſit primoge- 8
nita Ægypti ab hominibus uſq; ad jumenta:
Miſit ſigna ſua & prodigia ſua in centrum 9
Ægypti, adversùs Pharaonem, & adversùs
omnes ſubditos ejus. Qui percuſſit gentes 10
plurimas, & occîdit reges potentes : Sihon 11
regem Amorræorũ, & Og regem Baiſan, &
omnia regna Canaan : Deditque terrã eorũ 12
hæreditatem Iſraeli populo ſuo. Dñe nomẽ 13
tuum ſempiternum eſt, Dñe memoria tua in
generationem generationum. Judicat enim 14
Dñs populũ ſuum, & de ſervis ſuis ſolatium
percipit. Simulacra gentium argentum *ſunt* 15
atque aurum, opus manuum hominis. Ora 16
habent, & non loquuntur : oculos habent &
non vident : Aures habent, & non audiunt : 17
neque eſt flatus in ore ipſorum. Similes ſint 18
eis opifices eorũ, & quicunque fidunt illis.
Domeſtici Iſraelis benedicite Dño : domeſti- 19
ci Aharonis benedicite Dño: Domeſtici Levi 20
benedicite Dño : Timentes Dñm benedicite
Dño. Benedictus ſit Dñs è Sion, qui habitat 21
in Hieruſalem.

PSAL. CXXXV.

Anonymus. Dicitur de Moſe & Iſraele lau- 1
dantibus Dominum de his qui liberati fue-
runt : deque liberatione animarum è ge-
henna ex Pharaone diabolo per Chriſtum
Salvatorem noſtrum redemptorem earum.
Verſ. 56.

Confitemini Domino quoniam bonus eſt,
& in æternum miſerationes ejus.

Verſio VULG. LAT.

1 Alleluja. CXXXIV.

LAudate nomen Domini, laudate
2 ſervi Dominũ. Qui ſtatis in domo Do-
3 mini, in atriis domûs Dei noſtri. Lau-
date Dominũ, quia bonus Dominus :
pſallite nomini ejus, quoniam ſuave.
4 Quoniam Jacob elegit ſibi Dominus,
5 Iſrael in poſſeſſionem ſibi. Quia ego
cognovi quòd magnus eſt Dominus, &
6 Deus noſter præ omnibus diis. Omnia
quæcunque voluit, Dominus fecit in
cœlo, in terra, in mari, & in omnibus
7 abyſſis. Educens nubes ab extremo
terræ: fulgura in pluviam fecit. Qui
8 producit ventos de theſauris ſuis: Qui
percuſſit primogenita Ægypti ab ho-
9 mine uſque ad pecus. Et miſit ſigna et
prodigia in medio tuî, Ægypte; in Pha-
10 raonem, & in omnes ſervos ejus. Qui
percuſſit gentes multas: & occîdit re-
11 ges fortes. Sehon regem Amorrhæo-
rum, & Og regem Baſan, & omnia re-
12 gna Chanaan. Et dedit terram eorum
hæreditatem, hæreditatem Iſrael popu-
13 lo ſuo. Domine, nomen tuum in æter-
num: Domine, memoriale tuum in ge-
14 nerationem & generationem. Quia
judicabit Dominus populum ſuum: &
15 in ſervis ſuis deprecabitur. Simula-
chra gentium argentum & aurum, o-
16 pera manuum hominum. Os habent,
& non loquentur : oculos habent &
17 non videbunt. Aures habent, & non
audient: neque enim eſt ſpiritus in o-
18 re ipſorum. Similes illis fiant qui faci-
unt ea: & omnes, qui confidunt in e-
19 is. Domus Iſrael benedicite Domi-
no : domus Aaron benedicite Domi-
20 no. Domus Levi benedicite Domino:
qui timetis Dominum, benedicite Do-
21 mino. Benedictus Dominus ex Sion,
qui habitat in Jeruſalem.

1 Alleluja. CXXXV.

COnfitemini Domino, quoniam bonus : quoniam in æternum miſericordia ejus.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp.

1 Ἀλληλούϊα. ρλδʹ.
2 † Αἰνεῖτε τὸ ὄνομα κυρίου, † αἰνεῖτε δοῦλοι κύρι-
ον. † Οἱ ἑστῶτες ἐν οἴκῳ κυρίου, † ἐν αὐλαῖς οἴκου
3 Θεοῦ ἡμῶν. † Αἰνεῖτε τὸν κύριον ὅτι ἀγαθὸς κύριος,
4 † ψάλατε τῷ ὀνόματι αὐτοῦ ὅτι (α) καλόν. † Ὅτι τὸν
Ἰακὼβ ἐξελέξατο ἑαυτῷ ὁ κύριος, † Ἰσραὴλ εἰς
5 περιουσιασμὸν (β) ἑαυτῷ. † Ὅτι ἐγὼ (γ) ἔγνωκα,
ὅτι μέγας (δ) ὁ κύριος, † καὶ ὁ κύριος ἡμῶν παρὰ
6 πάντας τοὺς θεούς. † Πάντα ὅσα ἠθέλησεν ὁ κύρι-
ος, ἐποίησεν † ἐν τῷ οὐρανῷ καὶ ἐν τῇ γῇ, † ἐν ταῖς
7 θαλάσσαις καὶ (ʹ) ἐν πάσαις ταῖς ἀβύσσοις. † Ἀνάγων νε-
φέλας ἐξ ἐσχάτου τῆς γῆς, † ἀστραπὰς εἰς ὑετὸν ἐ-
ποίησεν· † ὁ ἐξάγων ἀνέμους ἐκ θησαυρῶν αὐτοῦ. †
8 Ὃς ἐπάταξε τὰ πρωτότοκα Αἰγύπτου † ἀπὸ ἀν-
9 θρώπου ἕως κτήνους. † Ἐξαπέστειλε σημεῖα καὶ τέ-
ρατα † ἐν μέσῳ σου Αἴγυπτε, † ἐν Φαραὼ καὶ ἐν πᾶ-
10 σι τοῖς δούλοις αὐτοῦ. † Ὃς ἐπάταξεν ἔθνη πολλά,
11 † καὶ ἀπέκτεινε βασιλεῖς κραταιούς. † Τὸν Σηὼν βα-
σιλέα τῶν Ἀμορραίων, † καὶ τὸν Ὢγ βασιλέα τῆς Βα-
12 σάν, † καὶ πάσας τὰς βασιλείας Χαναάν· † Καὶ ἔδω-
κε τὴν γῆν αὐτῶν κληρονομίαν, † κληρονομίαν Ἰσ-
13 ραὴλ (ε) λαῷ αὐτοῦ. † Κύριε τὸ ὄνομά σου εἰς τὸν
αἰῶνα, † (ζ) καὶ τὸ μνημόσυνόν σου εἰς γενεὰν καὶ γε-
14 νεάν. † Ὅτι κρινεῖ κύριος τὸν λαὸν αὐτοῦ, † καὶ ἐπὶ
15 τοῖς δούλοις αὐτοῦ παρακληθήσεται. † Τὰ εἴδωλα τῶν
ἐθνῶν ἀργύριον καὶ χρυσίον, ἔργα χειρῶν ἀνθρώ-
16 πων. † Στόμα ἔχουσι καὶ οὐ λαλήσουσιν· † ὀφθαλμοὺς
17 ἔχουσι καὶ οὐκ ὄψονται· † Ὦτα ἔχουσι καὶ οὐκ (η) ἐνω-
τισθήσονται· † οὐδὲ γάρ ἐστι πνεῦμα ἐν τῷ στόματι
18 αὐτῶν. Ὅμοιοι αὐτοῖς γένοιντο (θ) οἱ ποιοῦντες αὐ-
19 τά, † καὶ πάντες οἱ πεποιθότες ἐπ' αὐτοῖς. † Οἶ-
κος Ἰσραὴλ εὐλογήσατε τὸν κύριον· † οἶκος Ἀα-
20 ρὼν εὐλογήσατε τὸν κύριον· Οἶκος Λευὶ εὐλο-
γήσατε τὸν κύριον· † οἱ φοβούμενοι τὸν κύριον
21 εὐλογήσατε τὸν κύριον. † Εὐλογητὸς κύριος (ι)
ἐν Σιών, † ὁ κατοικῶν Ἱερουσαλήμ.

MS. A. (α) ἡδύ. (β) αὐτοῦ. (γ) ἔγνων, (δ) κύριος, (ʹ) ἐν τῷ (ε) δούλῳ αὐτοῦ. (ζ) κύριε τὸ μνημόσυνόν (η) ἀκούσονται· † ῥῖνας ἔχουσιν καὶ οὐκ ὀσφρανθήσονται· † χεῖρας ἔχουσιν καὶ οὐ ψηλαφήσουσιν· † πόδας ἔχουσιν καὶ οὐ περιπατήσουσιν. † Οὐ φωνήσουσιν ἐν τῷ λάρυγγι αὐτῶν· οὐδὲ γάρ ἐστιν πνεῦμα (θ) πάντες οἱ ποιοῦντες (ι) ἐκ Σιών,

Ἀλληλούϊα. ρλεʹ.
1 † Ἐξομολογεῖσθε τῷ κυρίῳ ὅτι (α) ἀγαθός, † ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ.

MS. A. (α) χρηστός,

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

(a) Alleluja. CXXXIV. 1
1 LAudate nomen Domini : lau-
date [a] ſervi Dominum. 2
Qui ſtatis in domo Domini, in a- 2
triis domûs Dei noſtri. 3 Laudate 3
Dominum, quia (a) bonus Dominus :
pſallite nomini ejus, (b) quoniam [b]
decens. 4 Quoniam Jacob elegit 4
ſibi Dominus, [c] Iſrael in (c) poſſeſ-
ſionem ſibi. 5 Quoniam ego cogno- 5
vi, quòd magnus eſt Dominus, &
Deus noſter ſuper omnes deos. 6
Omnia, quæcunque voluit Dominus, 6
fecit, in cœlo, & in terra: in mari-
bus, & in omnibus abyſſis. 7 (d)
Educens nubes ab extremo terræ: 7
fulgura in [d] pluviam fecit. 8 Qui
(e) educit ventos de theſauris (f)
ſuis. Qui percuſſit primogenita Æ- 8
gypti : ab homine uſque ad pecus.
9 Emiſit ſigna & prodigia ſua in 9
medio tuî, Ægypte: in Pharaonem,
& [e] in omnes ſervos ejus. 10 Qui 10
percuſſit gentes multas, & occîdit
reges fortes. 11 Scon regem Amor- 11
rhæorum, & Og regem Baſan, &
omnia regna Chanaan. 12 Et dedit 12
terram eorum hæreditatem : hære-
ditatem (g) Iſrael populo ſuo. 13
Domine, nomen tuum in ſeculum : 13
et (h) memoriale tuum in gene-
rationem & generationem. 14 Quo- 14
niam judicabit Dominus populum
ſuum : & in ſervis ſuis (i) depreca-
bitur. 15 Idola gentium argentum, 15
& aurum: opera manuum hominũ.
16 Os habent, & non loquentur : o- 16
culos habent, & non videbunt. 17
Aures habent, & non (k) audient : 17
[f] neque enim eſt ſpiritus in ore i-
pſorũ. 18 Similes illis fiant [g], qui 18
faciunt ea : & (l) omnes qui confi-
dunt in eis. 19 Domus Iſrael bene- 19
dicite Dominum; domus Aaron be-
nedicite Dominum. 20 Domus Le- 20
vi benedicite Dominum: qui timetis
Dominum, benedicite Dominum. 21 21
Benedictus Dominus in (m) Sion,
qui habitat in Hieruſalem.

(a) Alleluja. CXXXV. 1

1 COnfitemini Domino, quoniam bonus : quoniam in ſeculum miſericordia ejus.

Verſio ÆTHIOPICA.

ሃሌሉያ፡፡
የሀዐ ሰብሑ፡ ለስመ፡ እግዚአብሔር፡፡ ሰ 1
ብሕዎ፡ አግብርቲሁ፡ለእግዚአብሔር፡፡=፦
እለ፡ ይቀውሙ፡ ውስተ፡ ቤተ፡ እግዚአብሔ 2
ር፡፡ውስተ፡አጸደ፡ቤተ፡አምላክነ፡፡=፦ ሰብ 3
ሕዎ፡ለእግዚአብሔር፡እስመ፡ኄር፡እግዚአ
ብሔር፡፡ወዘምሩ፡ለስሙ፡እስመ፡ሠናይ፡፡=፦
እስመ፡ ለያዕቆብ፡ ሐረዮ፡ እግዚአብሔር፡፡ 4
ወለእስራኤልኒ፡ሎቱ፡ለርስቱ፡፡=፦ እስመ፡ 5
አነ፡ አእመርኩ፡ ከመ፡ ዐቢይ፡ እግዚአብሔ
ር፡፡ ወአምላክነሂ፡ እምኵሉ፡ አማልክ
ት፡፡=፦ ኵሉ፡ዘፈቀደ፡ገብረ፡እግዚአብሔ 6
ር፡፡ በሰማይኒ፡ወበምድርኒ፡፡ በባሕርኒ፡ወበ
ኵሉ፡ቀላያት፡፡=፦ የዐርግ፡ደመናተ፡እምአ 7
ጽናፈ፡ ምድር፡፡ ወገብረ፡ መብረቀ፡ለጊዜ፡
ዝናም፡፡=፦ ዘያወፅኦሙ፡ለነፋሳት፡እመዛግ 8
ብቲሆሙ፡፡ ዘቀተለ፡ ኵሎ፡ በኵሮሙ፡ለግ
ብጽ፡፡እምሰብእ፡ወእስከ፡እንስሳ፡፡=፦ ፈነ 9
ወ፡ተአምረ፡ወመንክረ፡ማእከሌኪ፡ግብጽ፡፡
ላዕለ፡ፈርዖን፡ወላዕለ፡አግብርቲሁ፡፡=፦ ዘ 10
ቀተለ፡አሕዛበ፡ብዙኃነ፡፡ ወቀተለ፡ነገሥተ፡
ጽኑዓነ፡፡=፦ ለሴዎን፡ ንጉሠ፡ አሞሬዎን፡፡ 11
ወለአግ፡ ንጉሠ፡ ባሳን፡፡ ወለኵሎሙ፡ ነገ
ሥተ፡ከናአን፡፡=፦ ወወሀበ፡ ምድሮሙ፡ር 12
ስተ፡፡ ወርስተ፡ እስራኤል፡ገብሩ፡፡=፦ስም 13
ከ፡እግዚኦ፡ለዓለም፡፡ ወዝክርከኒ፡ ለትው
ልደ፡ ትውልድ፡፡=፦ እስመ፡ ይኴንኖ፡ እግዚ 14
አብሔር፡ሕዝቦ፡፡ ወይትናበብ፡ በእንተ፡አ
ግብርቲሁ፡፡=፦ አማልክቲሆሙ፡ለአሕዛብ፡ 15
ዘወርቅ፡ወብሩር፡፡ ግብረ፡ እደ፡ እጓለ፡እመ
ሕያው፡፡=፦ አፈ፡ቦሙ፡ ወኢይነቡ፡፡ አዕይ 16
ንተ፡ቦሙ፡ ወኢይሬእዩ፡፡=፦ እዝነ፡ ቦሙ፡ 17
ወኢይሰምዑ፡፡ አንፈ፡ቦሙ፡ ወኢያጼንዉ፡፡
እደ፡ቦሙ፡ ወኢይገሱ፡፡ እግረ፡ቦሙ፡ወኢይ
ሐውሩ፡፡ ወኢይነቡ፡ በጕረዔቶሙ፡፡ ወአል
ቦሙ፡መንፈስ፡ውስተ፡አፉሆሙ፡፡=፦ ከማ 18
ሆሙ፡ለይኩኑ፡ኵሎሙ፡ እለ፡ ገብርዎሙ፡፡
ወኵሎሙ፡ እለ፡ ይትአመኑ፡ቦሙ፡፡=፦ ቤ 19
ተ፡ እስራኤል፡ ባርክዎ፡ ለእግዚአብሔር፡፡
ቤተ፡አሮን፡ባርክዎ፡ ለእግዚአብሔር፡፡=፦ 20
ቤተ፡ሌዊ፡ባርክዎ፡ለእግዚአብሔር፡፡ እለ፡
ትፈርህዎ፡ለእግዚአብሔር፡ ባርክዎ፡ ለእግ 21
ዚአብሔር፡፡=፦ቡሩክ፡እግዚአብሔር፡በጽ
ዮን፡፡ዘየኃድር፡ውስተ፡ኢየሩሳሌም፡፡=፦

ሃሌሉያ፡፡
የሀቱ ግነዩ፡ ለእግዚአብሔር፡ እስመ፡ ኄ 1
ር፡፡እስመ፡ ለዓለም፡ምሕረቱ፡፡=፦

INTERP. ÆTHIOP. [a] vos ſervi ejus [b] bonũ eſt. [c] & Iſrael etiam [d] tempus pluviæ [e] ſervos ejus. [f] nares habent, & non odorabunt: manus habent, & non palpabunt: pedes habent, & non ambulabunt : & non loquuntur in gutture eorum : neque eſt [g] omnes, qui

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 * المزمور المايه واربعه وثلاثون * مرسوم بالليلويا * وهو * مه * استيخن *
2 3 سبحوا الرب يا عبيد الرب * القايمين في بيت الرب في ديار بيت الهنا * سبحوا الرب فان الرب
4 5 صالح * رتلوا اسمه فانه حلو * ان الرب اختار له يعقوب * واسرايل ميراثا له * اني انا علمت ان
6 الرب عظيم هو * والهنا اعظم من جميع الالهة * وكلما شاء الرب صنعه في السماء وعلي الارض
7 وفي البحار وجميع الاعماق * الذي يصعد السحاب من اقطار الارض * خلق بروقا للامطار الذي
8 9 اخرج الرياح من خزاينه * الذي اهلك ابكار مصر من الانسان الي البهيمة * وارسل الايات
10 والعجايب في وسطك يا مصر * في فرعون وجميع جنوده * الذي اهلك امما كثيرين * وقتل
11 12 ملوكا اعزا * سيحون ملك الامورانيين * وعوج ملك بيسان * وجميع مملكات كنعان * اعطي
13 ارضهم ميراثا * ميراثا لاسرايل عبده * اسمك يا رب دايما الي الابد * وذكرك من جيل الي جيل *
14 15 ان الرب يتراءف علي شعبه * ويدعوه عبيده * ان الهة الامم فضة وذهب وهي عمل ايدي
16 17 البشر * لها افواه ولا تتكلم * لها عيون ولا تري * لها اذان ولا تسمع * لها اناف ولا تشم * لها
ايدي ولا تلمس * لها ارجل ولا تمشي * ولا تقدر ان تدعوا بصوت من حناجرها * وانها لا
18 19 روح في افواهها * يشبهها الذين يصنعونها * وكل المتوكلين عليها * يا بيت اسرايل بارك الرب * يا بيت
20 21 هرون باركوا الرب * يا بيت لاوي باركوا الرب * يا اتقياء الرب باركوا الرب * مبارك الرب من صهيون
الساكن في يروشليم * الليلويا *
* المزمور المايه وخمسه وثلاثون *
1 اشكروا الرب فانه صالح هو * وان رحمته لدايمة الي الابد * وهو * كح * استيخن * الليلويا *

PSAL. CXXXIV.
Titulus, Alleluja. Verſ. 45. 1
LAudate Dominum O ſervi Domini,
Stantes in domo Domini, in atrio do- 2
mûs Dei noſtri. Laudate Dominum quo- 3
niam Dominus bonus eſt : pſallite nomini
ejus quia dulce eſt. Quoniam Dominus 4
elegit ſibi Jacobum, & Iſraelem hæredita-
tem ſibi. Quoniam ego novi quòd Domi- 5
nus magnus eſt, & Deus noſter maximus
omnium deorum. Et quicquid voluit Do- 6
minus, fecit in cœlo, & ſuper terram, &
in maribus, & in omnibus profundis. Qui 7
elevat nubes de extremitatibus terræ: con-
didit fulgur in pluvias : qui eduxit ven-
tos de theſauris ſuis. Qui perdidit primo- 8
genita Ægypti ab homine uſq; ad jumen-
tum, Et miſit ſigna et miracula in medium 9
tui, O Ægypte, in Pharaonem & omnes
exercitus ejus. Qui perdidit gentes mul- 10
tas, & occîdit reges fortes: Sihon regem 11
Amorræorum, & Og regem Baſan, & o-
mnia regna Canaan : Dedit terram eorum 12
hæreditatem, hæreditatem Iſraeli ſervo
ſuo. Nomen tuum O Domine, perpetuum 13
eſt in æternum, & memoria tua à genera-
tione in generationem. Miſerebitur Domi- 14
nus populo ſuo, & invocabunt eum ſervi
ipſius. Nam dii gentium argentum ſunt 15
ac aurum, et ſunt opus manuũ hominum.
Habent ora, & non loquuntur : habent o- 16
culos, & non vident : Habent aures, & 17
non audiunt : habent nares, & non odo-
rantur : habent manus, & non palpant :
habent pedes & non ambulant : nec poſ-
ſunt edere vocem è gutturibus ſuis: &
quidem non eſt ſpiritus in oribus eorum.
Similes ſint eis qui faciunt eos, & omnes 18
confidentes in illis. O domus Iſraelis, bene- 19
dic Dominum: O domus Aaronis, benedicite 20
Dominum : O domus Levi, benedicite Do-
minum: O cultores Domini, benedicite Do-
minum. Benedictus Dominus de Sion, ha- 21
bitans in Jeruſalem. Alleluja.

PSAL. CXXXV.
Verſ. 28. Alleluja. 1
GRatias agite Domino, quoniam bonus
eſt: & quia miſericordia ejus perman-
ſura eſt in æternum.

Confitemini .ejus miſericordia ſeculum in quoniam : deorum Deo Confitemini
2 הוֹדוּ לֵאלֹהֵי הָאֱלֹהִים כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ הוֹדוּ
3 mirabilia *Facienti* .ejus miſericordia ſeculum in quoniam ,dominorum Domino
4 לַאֲדֹנֵי הָאֲדֹנִים כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ לְעֹשֵׂה נִפְלָאוֹת
cœlos *Facienti* .ejus miſericordia ſeculum in quoniam : *ſoli* magna
5 גְדֹלוֹת לְבַדּוֹ כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ לְעֹשֵׂה הַשָּׁמַיִם
ſuper terram *Expandenti* .ejus miſericordia ſeculum in quoniam : intelligentia in
6 בִּתְבוּנָה כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ לְרֹקַע הָאָרֶץ עַל־
: magna luminaria *Facienti* .ejus miſericordia ſeculum in quoniam : aquas
7 הַמָּיִם כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ לְעֹשֵׂה אוֹרִים גְּדֹלִים
: die in dominium ad Solem .ejus miſericordia ſeculum in quoniam
8 כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ אֶת־הַשֶּׁמֶשׁ לְמֶמְשֶׁלֶת בַּיּוֹם
dominia ad ſtellas & Lunam .ejus miſericordia ſeculum in quoniam
9 כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ אֶת־הַיָּרֵחַ וְכוֹכָבִים לְמֶמְשְׁלוֹת
Ægyptum *Percutienti* .ejus miſericordia ſeculum in quoniam : nocte in
10 בַּלָּיְלָה כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ לְמַכֵּה מִצְרַיִם
eduxit Et .ejus miſericordia ſeculum in quoniam : eorum primogenitis *in*
11 בִּבְכוֹרֵיהֶם כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ וַיּוֹצֵא
manu In .ejus miſericordia ſeculum in quoniam : eorum medio de Iſrael
12 יִשְׂרָאֵל מִתּוֹכָם כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ בְּיָד
.ejus miſericordia ſeculum in quoniam : extento brachio in & , forti
חֲזָקָה וּבִזְרוֹעַ נְטוּיָה כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃
.ejus miſericordia ſeculum in quoniam : diviſiones in Suph mare *Scindenti*
13 לְגֹזֵר יַם־סוּף לִגְזָרִים כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃
.ejus miſericordia ſeculum in quoniam : ejus mediū *in* Iſrael fecit tranſire Et
14 וְהֶעֱבִיר יִשְׂרָאֵל בְּתוֹכוֹ כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃
.ejꝰ miſericordia ſeculum in quoniam :Suph mare in ejꝰ *virtutem* & ,Parhoh excuſſit Et
15 וְנִעֵר פַּרְעֹה וְחֵילוֹ בְיַם־סוּף כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃
.ejus miſericordia ſeculum in quoniam : *deſerto in* ſuum populum *Deducenti*
16 לְמוֹלִיךְ עַמּוֹ בַּמִּדְבָּר כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃
occidit Et .ejus miſericordia ſeculum in quoniā : magnos reges *Percutienti*
17 לְמַכֵּה מְלָכִים גְּדֹלִים כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ וַיַּהֲרֹג
18 regem Sichon .ejus miſericordia ſeculum in quoniam : fortes reges
19 מְלָכִים אַדִּירִים כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ לְסִיחוֹן מֶלֶךְ
quoniā ,Baſan regem Hogh Et .ejus miſericordia ſeculum in quoniam : Emoræum
20 הָאֱמֹרִי כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ וּלְעוֹג מֶלֶךְ הַבָּשָׁן כִּי
quoniam : hæreditatem in eorum terram dedit Et .ejus miſericordia ſeculum in
21 לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ וְנָתַן אַרְצָם לְנַחֲלָה כִּי
ſeculum in quoniā : ſuo ſervo Iſrael Hæreditatem .ejus miſericordia ſeculum in
22 לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ נַחֲלָה לְיִשְׂרָאֵל עַבְדּוֹ כִּי לְעוֹלָם
ſeculum in quoniā : noſtri fuit memor noſtra humilitate in Qui .ejus miſericordia
23 חַסְדּוֹ׃ שֶׁבְּשִׁפְלֵנוּ זָכַר לָנוּ כִּי לְעוֹלָם
.ejꝰ miſericordia ſeculū in quoniā :noſtris hoſtibꝰ ab nos redemit Et .ejꝰ miſericordia
24 חַסְדּוֹ׃ וַיִּפְרְקֵנוּ מִצָּרֵינוּ כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃
Confitemini .ejus miſericordia ſeculū in quoniam : carni omni panem *Dans*
25 26 נֹתֵן לֶחֶם לְכָל־בָּשָׂר כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ הוֹדוּ
.ejus miſericordia ſeculum in quoniam : cœli Deo
לְאֵל הַשָּׁמָיִם כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃

תרגום TARGUM.

2 שַׁבַּחוּ לֶאֱלָהֵי אֱלָהַיָּא אֲרוּם לַעֲלַם טוּבֵיהּ׃
3 שַׁבַּחוּ לְמָרֵי מָרַיָּא אֲרוּם לַעֲלַם טוּבֵיהּ׃
4 לְעָבֵד פְּרִישָׁן רַבְרְבָן בִּלְחוֹדֵיהּ אֲרוּם
5 לַעֲלַם טוּבֵיהּ׃ לְעָבֵד שְׁמַיָּא בְּסוּכְלְתָנוּ
6 אֲרוּם לַעֲלַם טוּבֵיהּ׃ לְרָדֵיד אַרְעָא
7 עֲלָוֵי דְמַיָּא אֲרוּם לַעֲלַם טוּבֵיהּ׃ לְעָבֵד
8 נְהוֹרִין רַבְרְבִין אֲרוּם לַעֲלַם טוּבֵיהּ׃ יַת
שִׁמְשָׁא לְמִשְׁלַט בִּימָמָא אֲרוּם לַעֲלַם
9 טוּבֵיהּ׃ יַת סִיהֲרָא וְכוֹכְבַיָּא לְמִשְׁלַט
10 בְּלֵילְיָא אֲרוּם לַעֲלַם טוּבֵיהּ׃ לְמָחֵי
מִצְרָאֵי בְּמַכְתָּשִׁין קְטַל אֲרוּם לַעֲלַם טוּבֵיהּ׃
11 וְאַפֵּיק יִשְׂרָאֵל פְּרִיקִין מִבֵּינֵיהוֹן אֲרוּם
12 לַעֲלַם טוּבֵיהּ׃ בְּאִידָא תַקִּיפָא וּבִדְרַע
13 מְרַמְמָא אֲרוּם לַעֲלַם טוּבֵיהּ׃ לְצָלַח
יַמָּא דְסוּף לְצִלּוּחִין אֲרוּם לַעֲלַם טוּבֵיהּ׃
14 וְאַעְבַּר יִשְׂרָאֵל בִּמְצִיעֵיהּ אֲרוּם לַעֲלַם
15 טוּבֵיהּ׃ וְשַׁנֵּק פַּרְעֹה וְחֵילְוָתֵיהּ בְּיַמָּא
16 דְסוּף אֲרוּם לַעֲלַם טוּבֵיהּ׃ לִמְהַלֵּךְ עַמֵּיהּ
17 בְּמַדְבְּרָא אֲרוּם לַעֲלַם טוּבֵיהּ׃ לְמָחֵי
מַלְכִין רַבְרְבִין אֲרוּם לַעֲלַם טוּבֵיהּ׃
18 וּקְטַל מַלְכִין גֵּיוְתָנִין אֲרוּם לַעֲלַם טוּבֵיהּ׃
19 לְסִיחוֹן מַלְכָּא אֱמוֹרָאָה אֲרוּם לַעֲלַם
20 טוּבֵיהּ׃ וּלְעוֹג מַלְכָּא דְמַתְנָן אֲרוּם לַעֲלַם
21 טוּבֵיהּ׃ וִיהַב אַרְעֲהוֹן לְאַחְסָנָא אֲרוּם
22 לַעֲלַם טוּבֵיהּ׃ אַחְסַנְתָּא לְיִשְׂרָאֵל עַבְדֵּיהּ
23 אֲרוּם לַעֲלַם טוּבֵיהּ׃ בְּאִתְמַכְּכוּתָנָא
דְּכַר לָנָא קְיָמֵיהּ אֲרוּם לַעֲלַם טוּבֵיהּ׃
24 וּפְרִיקְנָא מִן מְעִיקָנָא אֲרוּם לַעֲלַם טוּבֵיהּ׃
25 דְּיָהֵב מְזוֹנֵיהּ לְכָל בִּסְרָא אֲרוּם לַעֲלַם
26 טוּבֵיהּ׃ שַׁבַּחוּ לֶאֱלָהָא שְׁמַיָּא אֲרוּם
לַעֲלַם טוּבֵיהּ׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Laudes dicite Deo deorum , quoniam in 2
æternum benignitas ejus. Laudes dicite 3
Domino dominorum , quoniam in æter-
num benignitas ejus. Factori mirabilium 4
magnorum ſoli, quoniam in æternum be-
nignitas ejus. Factori cœlorum in intelli- 5
gentia , quoniam in æternum benignitas
ejus. Ei qui extendit terram ſuper aquas, 6
quoniam in æternum benignitas ejus. Ipſi 7
qui fecit luminaria magna , quoniam in
æternum benignitas ejus. Solem ut præ- 8
eſſet diei, quoniam in æternum benignitas
ejus. Lunam & ſtellas ut præeſſent nocti , 9
quoniam in æternum benignitas ejus. Qui 10
percuſſit *Ægyptios* plagis *occiſionis* [*pri-
mogenitorum* ,] quoniam in æternum beni-
gnitas ejus. Et eduxit Iſraelem ereptum 11
de medio eorum , quoniam in æternum
benignitas ejus. In manu forti & bra- 12
chio excelſo, quoniam in æternum beni-
gnitas ejus. Qui diviſit mare rubrum in 13
diviſiones, quoniam in æternum benigni-
tas ejus. Et tranſire fecit Iſrael per me- 14
dium ejus, quoniam in æternum benigni-
tas ejus. Et ſubmerſit Pharaonem & ex- 15
ercitum ejus in mari rubro, quoniam in
æternum benignitas ejus. Qui deduxit 16
populum ſuum per deſertum, quoniam in
æternum benignitas ejus. Qui percuſſit 17
reges magnos, quoniam in æternum beni-
gnitas ejus. Et occîdit reges ſuperbos , 18
quoniam in æternum benignitas ejus. Si- 19
chon regem Amorræorum, quoniam in
æternum benignitas ejus. Et Og regem Baſ- 20
ſan, quoniam in æternum benignitas ejus.
Et dedit terram eorum hæreditatem, quo- 21
niam in æternum benignitas ejus. Hæredi- 22
tatem Iſrael ſervo ſuo, quoniam in æter-
num benignitas ejus. In *humilitate noſtra* 23
memor fuit erga nos pacti ſui, quoniam
in æternum benignitas ejus. Et redemit 24
nos ab iis qui angebant nos, quoniam in
æternum benignitas ejus. Qui dat eſ- 25
cam *ſuam* omni carni, quoniam in æter-
num benignitas ejus. Laudes dicite Deo 26
cœli , quoniam in æternum benignitas
ejus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

2 * ܐܘܕܘ ܠܐܠܗܐ ܕܐܠܗ̈ܐ ܕܠܥܠܡ ܪ̈ܚܡܘܗܝ: * ܐܘܕܘ ܠܡܪܐ ܕܡܪ̈ܘܬܐ ܕܠܥܠܡ ܪ̈ܚܡܘܗܝ.
3
4 * ܠܡܢ ܕܥܒܕ ܬܕܡܪ̈ܬܐ ܪ̈ܘܪܒܬܐ ܒܠܚܘܕܘܗܝ ܕܠܥܠܡ ܪ̈ܚܡܘܗܝ: * ܠܡܢ ܕܥܒܕ ܫܡܝܐ
5
6 ܒܣܘܟܠܬܗ ܕܠܥܠܡ ܪ̈ܚܡܘܗܝ. * ܠܡܢ ܕܪܩܥ ܐܪܥܐ ܥܠ ܡ̈ܝܐ ܕܠܥܠܡ ܪ̈ܚܡܘܗܝ:
7 * ܠܡܢ ܕܥܒܕ ܢܗܝܪ̈ܐ ܪ̈ܘܪܒܐ ܕܠܥܠܡ ܪ̈ܚܡܘܗܝ. * ܫܡܫܐ ܠܫܘܠܛܢܐ ܕܐܝܡܡܐ
8
9 ܕܠܥܠܡ ܪ̈ܚܡܘܗܝ : * ܣܗܪܐ ܘܟܘܟ̈ܒܐ ܠܫܘܠܛܢܐ ܕܠܠܝܐ ܕܠܥܠܡ ܪ̈ܚܡܘܗܝ.
10 * ܠܡܢ ܕܡܚܐ ܠܒܘܟܪ̈ܐ ܕܡܨܪܝܢ ܕܠܥܠܡ ܪ̈ܚܡܘܗܝ: * ܘܐܦܩ ܠܐܝܣܪܝܠ ܡܢ ܒܝܢܬܗܘܢ
11
12 ܕܠܥܠܡ ܪ̈ܚܡܘܗܝ. * ܒܐܝܕܐ ܥܫܝܢܬܐ ܘܒܕܪܥܐ ܪܡܐ ܕܠܥܠܡ ܪ̈ܚܡܘܗܝ: * ܠܡܢ ܕܦܠܓ
13
14 ܝܡܐ ܕܣܘܦ ܕܠܥܠܡ ܪ̈ܚܡܘܗܝ: * ܘܐܥܒܪ ܠܐܝܣܪܝܠ ܒܓܘܗ ܕܠܥܠܡ ܪ̈ܚܡܘܗܝ.
15 * ܘܫܓܫ ܠܦܪܥܘܢ ܘܠܚܝܠܗ ܒܝܡܐ ܕܣܘܦ ܕܠܥܠܡ ܪ̈ܚܡܘܗܝ: * ܠܡܢ ܕܕܒܪ ܠܥܡܗ
16
17 ܒܡܕܒܪܐ ܕܠܥܠܡ ܪ̈ܚܡܘܗܝ. * ܠܡܢ ܕܡܚܐ ܡܠܟ̈ܐ ܪ̈ܘܪܒܐ ܕܠܥܠܡ ܪ̈ܚܡܘܗܝ. * ܘܩܛܠ
18
19 ܡܠܟ̈ܐ ܥܫܝܢ̈ܐ ܕܠܥܠܡ ܪ̈ܚܡܘܗܝ : * ܠܣܝܚܘܢ ܡܠܟܐ ܕܐܡܘܪ̈ܝܐ ܕܠܥܠܡ
20 ܪ̈ܚܡܘܗܝ. * ܘܠܥܘܓ ܡܠܟܐ ܕܒܝܫܢ ܕܠܥܠܡ ܪ̈ܚܡܘܗܝ : * ܘܝܗܒ ܐܪܥܗܘܢ
21
22 ܝܪܬܘܬܐ ܕܠܥܠܡ ܪ̈ܚܡܘܗܝ. * ܝܪܬܘܬܐ ܠܐܝܣܪܝܠ ܥܒܕܗ ܕܠܥܠܡ ܪ̈ܚܡܘܗܝ:
23 * ܕܐܬܕܟܪܢ ܒܡܘܟܟܢ ܕܠܥܠܡ ܪ̈ܚܡܘܗܝ. * ܘܦܪܩܢ ܡܢ ܒܥܠܕܒ̈ܒܝܢ ܕܠܥܠܡ
24
25 ܪ̈ܚܡܘܗܝ : * ܕܝܗܒ ܡܐܟܘܠܬܐ ܠܟܠ ܒܣܪ ܕܠܥܠܡ ܪ̈ܚܡܘܗܝ. * ܐܘܕܘ ܠܐܠܗܐ
26
ܕܒܫܡܝܐ ܕܠܥܠܡ ܪ̈ܚܡܘܗܝ.

Confitemini Deo deorum, quoniam in æ- 2
ternum miſerationes ejus. Confitemini 3
Domino dominorum, quoniam in æternum
miſerationes ejus. Ei qui fecit prodigia 4
magna ſolus, quoniam in æternum miſerati-
ones ejus. Ei qui condidit cœlum ſuâ ſa- 5
pientiâ, quoniam in æternum miſerationes
ejus. Qui firmavit terram ſuper aquas, 6
quoniam in æternum miſerationes ejus.
Qui fecit luminaria magna, quoniam in æ- 7
ternum miſerationes ejus. Solem in domi- 8
nium diei, quoniam in æternum miſeratio-
nes ejus. Lunam & ſtellas in dominium
noctis, quoniam in æternum miſerationes 9
ejus. Qui percuſſit primogenita Ægypti, 10
quoniam in æternum miſerationes ejus. Et 11
eduxit Iſraelem de medio eorum, quoniam
in æternum miſerationes ejus. Manu va- 12
lidâ & brachio excelſo, quoniam in æter-
num miſerationes ejus. Qui diviſit mare 13
Suph , quoniam in æternum miſerationes
ejus. Et traduxit Iſraelem per illud, quo- 14
niam in æternum miſerationes ejus. Qui 15
exagitavit Pharaonem & exercitum ejus in
mari Suph, quoniam in æternum miſerati-
ones ejus. Qui duxit populum ſuum per 16
deſertum, quoniam in æternum miſeratio-
nes ejus. Qui percuſſit reges magnos, quo- 17
niam in æternum miſerationes ejus. Et oc- 18
cîdit reges potentes , quoniam in æternum
miſerationes ejus. Sihon regem Amorræ- 19
orum, quoniam in æternum miſerationes
ejus. Et Og regem Baiſan, quoniam in 20
æternum miſerationes ejus. Deditque ter- 21
ram eorum hæreditatem, quoniam in æter-
num miſerationes ejus. Hæreditatem Iſra- 22
eli ſervo ſuo, quoniam in æternum miſera-
tiones ejus. Qui memor fuit noſtri in hu- 23
militate noſtra, quoniam in æternum miſe-
rationes ejus. Et liberavit nos ab inimicis 24
noſtris, quoniam in æternum miſerationes
ejus. Qui dat eſcam omni carni, quoniam 25
in æternum miſerationes ejus. Confite- 26
mini Deo qui eſt in cœlo, quoniam in æter-
num miſerationes ejus.

Versio VULG. LAT.

2 Confitemini Deo deorũ : quoniam in
3 æternũ misericordia ejus. Confitemini
Dño dominorum : quoniã in æternum
4 misericordia ejus. Qui facit mirabilia
magna solus : quoniã in æternũ mi-
5 sericordia ejus. Qui fecit cœlos in in-
tellectu : quoniã in æternũ misericor-
6 dia ejus. Qui firmavit terrã super a-
quas: quoniam in æternũ misericor-
7 dia ejus. Qui fecit luminaria magna:
quoniam in æternum misericordia ej⁹.
8 Solem in potestatẽ diei : quoniã in æ-
9 ternũ misericordia ej⁹. Lunam & stel-
las in potestatem noctis : quoniã in
10 æternum misericordia ejus. Qui per-
cussit Ægyptũ cũ primogenitis eorũ :
quoniã in æternum misericordia ejus.
11 Qui eduxit Israel de medio eorum :
quoniã in æternum misericordia ejus.
12 In manu potenti, & brachio excelso:
quoniã in æternum misericordia ejus.
13 Qui divisit Mare rubrum in divisio-
nes : quoniã in æternum misericordia
14 ejus. Et eduxit Israel per medium ej⁹:
quoniã in æternum misericordia ejus.
15 Et excussit Pharaonem, & virtutẽ ej⁹
in Mari rubro : quoniam in æternum
16 misericordia ejus. Qui traduxit po-
pulum suum per desertum : quoniam
17 in æternum misericordia ejus. Qui
percussit reges magnos : quoniam in
18 æternum misericordia ejus. Et occi-
dit reges fortes : quoniam in æter-
19 num misericordia ejus. Sehon regem
Amorrhæorum : quoniam in æternum
20 misericordia ejus. Et Og regem Ba-
san : quoniam in æternum miseri-
21 cordia ejus. Et dedit terram eorum hære-
ditatem : quoniam in æternum mise-
22 ricordia ejus. Hæreditatẽ Israel servo
suo : quoniã in æternum misericordia
23 ejus. Quia in humilitate nostra memor
fuit nostri : quoniã in æternũ mise-
24 ricordia ej⁹. Et redemit nos ab inimi-
cis nostris: quoniã in æternũ miseri-
25 cordia ejus. Qui dat escam omni carni :
quoniam in æternum misericordia ej⁹.
Confitemini Deo cœli : quoniam in
26 æternum misericordia ejus. Confite-
mini Domino dominorum : quoniam
in æternum misericordia ejus.

Verſ. GRÆCA LXX. Interp.

2 †Ἐξομολογεῖσθε τῷ θεῷ τῶν θεῶν, †ὅτι εἰς τὸν αἰ-
3 ῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. †Ἐξομολογεῖσθε τῷ κυρίῳ τῶν
4 κυρίων, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. †Τῷ
ποιήσαντι θαυμάσια μεγάλα μόνῳ, †ὅτι εἰς τὸν
5 αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. †Τῷ ποιήσαντι τοὺς οὐρανοὺς
ἐν συνέσει, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. †
6 Τῷ στερεώσαντι τὴν γῆν ἐπὶ τῶν ὑδάτων, †ὅτι εἰς
7 τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. Τῷ ποιήσαντι φῶτα
μεγάλα μόνῳ, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ·
8 †Τὸν ἥλιον εἰς ἐξουσίαν τῆς ἡμέρας, †ὅτι εἰς τὸν
9 αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ· †Τὴν σελήνην καὶ (β) τοὺς
ἀστέρας εἰς ἐξουσίαν τῆς νυκτός, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶ-
10 να τὸ ἔλεος αὐτοῦ. †Τῷ πατάξαντι Αἴγυπτον σὺν
τοῖς πρωτοτόκοις αὐτῶν, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔ-
11 λεος αὐτοῦ. †Καὶ ἐξαγαγόντι τὸν Ἰσραὴλ ἐκ μέ-
12 σου αὐτῶν, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ· †Ἐν
χειρὶ κραταιᾷ καὶ ἐν βραχίονι ὑψηλῷ, †ὅτι εἰς τὸν
13 αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. †Τῷ καταδιελόντι τὴν ἐρυθρὰν
θάλασσαν εἰς διαιρέσεις, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος
14 αὐτοῦ· †Καὶ διαγαγόντι τὸν Ἰσραὴλ διὰ μέσου αὐ-
15 τῆς, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ· †(γ)Καὶ ἐκ-
τινάξαντι Φαραὼ καὶ τὴν δύναμιν αὐτοῦ εἰς θάλασσαν
16 ἐρυθράν, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. †Τῷ
διαγαγόντι τὸν λαὸν αὐτοῦ ἐν τῇ ἐρήμῳ, †ὅτι εἰς τὸν
17 αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. †Τῷ πατάξαντι βασιλεῖς
18 μεγάλους, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ· †Καὶ
ἀποκτείναντι βασιλεῖς κραταιούς, †ὅτι εἰς τὸν αἰ-
19 ῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ· Τὸν Σηὼν βασιλέα τῶν Ἀμορ-
20 ραίων, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ· Καὶ τὸν
Ὢγ βασιλέα τῆς Βασάν, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ
21 ἔλεος αὐτοῦ. †Καὶ δόντι τὴν γῆν αὐτῶν κληρονο-
22 μίαν, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ· Κληρο-
νομίαν Ἰσραὴλ δούλῳ αὐτοῦ, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα
23 τὸ ἔλεος αὐτοῦ. †Ὅτι ἐν τῇ ταπεινώσει ἡμῶν ἐ-
μνήσθη ἡμῶν ὁ κύριος, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλε-
24 ος αὐτοῦ· †Καὶ ἐλυτρώσατο ἡμᾶς ἐκ τῶν ἐχθρῶν ἡ-
25 μῶν, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. †Ὁ διδοὺς
τροφὴν πάσῃ σαρκί, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος
αὐτοῦ. †Ἐξομολογεῖσθε (δ) τῷ θεῷ τοῦ οὐρανοῦ, †ὅτι
εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ.

MS. A. (β) τὰ ἄστρα (γ) Τῷ ἐκτινάξαντι (δ) τῷ κυρίῳ

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

2 Confitemini Deo deorum : quoni- 2
am in seculum misericordia ejus. 3
Confitemini Domino dominorum : 3
quoniam in seculum misericordia
ejus. 4 Qui facit [a] mirabilia 4
magna solus : quoniam in seculum
misericordia ejus. 5 Qui fecit cœ- 5
los in intellectu : quoniam in se-
culum misericordia ejus. 6 Qui (b) 6
firmavit terram super aquas : quo-
niam in seculum misericordia ejus.
7 Qui fecit (c) luminaria magna so- 7
lus : quoniam in seculum misericor-
dia ejus. 8 Solem [b] in (d) pote- 8
statem diei : quoniam in seculum
misericordia ejus. 9 Lunam & stel- 9
las [c] in potestatem noctis : quo-
niam in seculum misericordia ejus.
10 Qui percussit Ægyptum cum pri- 10
mogenitis eorum : quoniam in se-
culum misericordia ejus. 11 Et qui 11
eduxit Israel de medio eorum : quo-
niam in seculum misericordia ejus.
12 In manu potenti & in brachio 12
excelso : quoniam in seculum miseri-
cordia ejus. 13 Qui divisit Mare 13
rubrum in (e) divisiones : quoniam
in seculum misericordia ejus. 14
Et traduxit Israel per medium e- 14
jus : quoniam in seculum misericor-
dia ejus. 15 Et percussit Pharao- 15
hem, & virtutem ejus in Mare ru-
brum : quoniam in seculum miseri-
cordia ejus. 16 Qui traduxit popu- 16
lum suum in deserto : quoniam in
seculum misericordia ejus. [d]
17 Qui percussit reges magnos : 17
quoniam in seculum misericordia
ejus. 18 Et occidit reges fortes : 18
quoniam in seculum misericordia e-
jus. 19 Seon regem Amorrhæorum : 19
quoniam in seculum misericordia
ejus. 20 Et Og regem Basan : 20
quoniam in seculum misericordia e-
jus. 21 Et dedit terram eorum hæ- 21
reditatem : quoniam in seculum mi-
sericordia ejus. 22 Hæreditatem Is- 22
rael servo suo : quoniam in seculũ
misericordia ejus. 23 Quia in hu- 23
militate nostra memor fuit nostri
Dominus : quoniam in seculum mi-
sericordia ejus. 24 Et redemit nos 24
[e] ab inimicis nostris : quoniam in
seculum misericordia ejus. 25 Qui 25
dat (f) escam omni carni : quoniam in seculum misericordia ejus. 26 Con-
fitemini Deo cœli : quoniam in seculum misericordia ejus.

Verſio ÆTHIOPICA.

ግነዩ፡ ለአምላከ፡ አማልክት፡፡ እስመ፡ ለ 2
ዓለም፡ ምሕረቱ፡፡=፡ ግነዩ፡ ለእግዚአ፡ 3
አጋእዝት፡፡ እስመ፡ ለዓለም፡ ምሕረ
ቱ፡፡=፡ ዘገብረ፡ ዐቢየ፡ ወመንክረ፡ በ 4
ሕቲቱ፡፡ እስመ፡ ለዓለም፡ ምሕረቱ፡፡=፡
ዘገብረ፡ ሰማያተ፡ በጥበቡ፡፡ እስመ፡ ለዓ 5
ለም፡ ምሕረቱ፡፡=፡ ዘአጽንአ፡ ለምድ 6
ር፡ ደበ፡ ማይ፡፡ እስመ፡ ለዓለም፡ ም
ሕረቱ፡፡=፡ ዘገብረ፡ ብርሃናተ፡ ዐቢየ 7
ተ፡ በሕቲቱ፡፡ እስመ፡ ለዓለም፡ ምሕረ
ቱ፡፡=፡ ለፀሐይ፡ ለኰንኖሙ፡ መዐልተ፡፡ እስ 8
መ፡ ለዓለም፡ ምሕረቱ፡፡=፡ ለወርኅ፡ ወለከ 9
ዋክብት፡ ለኰንኖሙ፡ ሌሊተ፡፡ እስመ፡ ለዓለ
ም፡ ምሕረቱ፡፡=፡ ዘቀተሎሙ፡ ለግብጽ፡ ም 10
ስለ፡ በኵሮሙ፡፡ እስመ፡ ለዓለም፡ ምሕረ
ቱ፡፡=፡ ወአውፅኦሙ፡ ለእስራኤል፡ እማእ 11
ከሎሙ፡፡ እስመ፡ ለዓለም፡ ምሕረቱ፡፡=፡
በእድ፡ ፅንዕት፡ ወበመዝራዕቱ፡ ልዑል፡፡ እስ 12
መ፡ ለዓለም፡ ምሕረቱ፡፡=፡ ወነፈቃ፡ ለባሕ 13
ረ፡ ኤርትራ፡ ወከፈሎ፡፡ እስመ፡ ለዓለም፡ ም
ሕረቱ፡፡=፡ ወአውፅኦሙ፡ ለእስራኤል፡ እ 14
ንተ፡ ማእከሉ፡፡ እስመ፡ ለዓለም፡ ምሕረ
ቱ፡፡=፡ ዘነፅሐ፡ ለፈርዖን፡ ወኀይሉ፡ ውስተ፡ 15
ባሕረ፡ ኤርትራ፡፡ እስመ፡ ለዓለም፡ ምሕረ
ቱ፡፡=፡ ዘወአውፅኦሙ፡ ለሕዝቡ፡ ውስተ፡ 16
ገዳም፡፡ እስመ፡ ለዓለም፡ ምሕረቱ፡፡ ዘአው
ፅአ፡ ማየ፡ እምኰኵሕ፡፡ እስመ፡ ለዓለም፡
ምሕረቱ፡፡=፡ ዘቀተለ፡ ነገሥተ፡ ዐቢይተ፡፡ 17
እስመ፡ ለዓለም፡ ምሕረቱ፡፡=፡ ወቀተለ፡ 18
ነገሥተ፡ ፀኑዓነ፡፡ እስመ፡ ለዓለም፡ ምሕ
ረቱ፡፡=፡ ለሴዎን፡ ንጉሠ፡ አሞሬዎን፡፡ 19
እስመ፡ ለዓለም፡ ምሕረቱ፡፡=፡ ወለዖግ፡ 20
ንጉሠ፡ ባሳን፡፡ እስመ፡ ለዓለም፡ ምሕረ
ቱ፡፡=፡ ወወሀበ፡ ምድሮሙ፡ ለርስት፡፡ እስ 21
መ፡ ለዓለም፡ ምሕረቱ፡፡=፡ ርስተ፡ እስራኤ 22
ል፡ ገብሩ፡፡ እስመ፡ ለዓለም፡ ምሕረቱ፡፡=፡
እስመ፡ ተዘከረነ፡ እግዚአብሔር፡ በሕማም 23
ነ፡፡ እስመ፡ ለዓለም፡ ምሕረቱ፡፡=፡ ወአ 24
ድኀነነ፡ እምእደ፡ ፀርነ፡፡ እስመ፡ ለዓለም፡
ምሕረቱ፡፡=፡ ዘይሁብ፡ ሲሳየ፡ ለኵሉ፡ ዘ 25
ሥጋ፡፡ እስመ፡ ለዓለም፡ ምሕረቱ፡፡=፡ ግነ 26
ዩ፡ ለአምላከ፡ ሰማይ፡፡ እስመ፡ ለዓለም፡
ምሕረቱ፡፡

INTERP. ÆTHIOP. *PSAL. CXXXV.* [a] magnalia & mirabilia [b] ad dominandum diei : [c] ad dominandum noctis : [d] Qui eduxit aquam ex rupe : quoniam in seculum misericordia ejus. Qui percussit [e] à manu inimicorum nostrorum :

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

2 3 * اشكروا اله الالهة * فان رحمته لثابتة الى الابد * اشكروا رب الارباب * فان رحمته كاينة الى
4 5 الابد * الذي صنع العجايب العظيمة وحده * وان رحمته لدايمة الى الابد * الذي خلق
6 السموات بحكمته * وان رحمته لثابتة الى الابد * الذي ثبت الارض على المياه * وان رحمته لكاينة
7 8 الى الابد * الذي خلق الانوار العظيمة وحده * لان رحمته دايمة الى الابد * الشمس لسلطان
9 النهار * لان رحمته دايمة الى الابد * القمر والنجوم لسلطان الليل * لان رحمته دايمة الى الابد *
10 11 * الذي ضرب مصر مع ابكارها * فان رحمته ثابتة الى الابد * واخرج اسرايل من وسطهم * وان
12 13 رحمته دايمة الى الابد * بيد عزيزة وذراع رفيعة * فان رحمته دايمة الى الابد * الذي فرق البحر
14 الاحمر فلقا * وان رحمته لثابتة الى الابد * واجاز اسرايل في وسطهم * لان رحمته دايمة الى الابد *
15 16 * وغرق فرعون وجميع جنوده في البحر الاحمر * وان رحمته لثابتة الى الابد * الذي هدى شعبه في
البرية * فان رحمته لكاينة الى الابد * وانبع الماء من صخر صماء * وان رحمته لكاينة الى الابد *
17 18 * الذي ضرب ملوكا عظيمة * وان رحمته لثابتة الى الابد * وقتل ملوكا عجيبة * وان رحمته لثابتة
19 20 الى الابد * سيحون ملك الاموريين * وان رحمته لكاينة الى الابد * وعوج ملك بيسان * وان رحمته
21 22 لدايمة الى الابد * واعطى ارضهم ميراثا * لان رحمته دايمة الى الابد * ميراثا لاسرايل عبده * وان رحمته
23 24 لكاينة الى الابد * ان الرب ذكرنا في تواضعنا * لان رحمته الى الابد * وخلصنا من يد اعداينا * لان
25 26 رحمته الى الابد * الذي يعطي طعاما لكل ذي جسد * وان رحمته لثابتة الى الابد * اشكروا اله
27 السماء * فان رحمته كاينة الى الابد * اشكروا رب الارباب * فان رحمته دايمة الى الابد * اللليلويا *

Gratias agite Deo deorum, quoniã miseri- 2
cordia ejus firmissima est in æternũ. Gra- 3
tias agite Domino dominorũ, quia mise-
ricordia ejus duratura est in æternũ. Qui 4
edidit miracula magna solus: et quidẽ mi-
sericordia ejus perpetua est in æternũ. Qui 5
creavit cœlos sapientiâ suâ: et quidẽ mi-
sericordia ejus cõstans est in æternũ. Qui 6
stabilivit terrã super aquas: et quidẽ mi-
sericordia ejus perstat in æternum. Qui 7
creavit lumina magna solus: quia mise-
ricordia ejus perpetua est in æternũ. Solem 8
in dominiũ diei: quia misericordia ej⁹ per-
severans est in æternũ. Lunã et stellas in 9
dominiũ noctis: quia misericordia ej⁹ per-
stans est in æternũ. Qui percussit Ægyptũ 10
cũ primogenitis ejus: quia misericordia e-
jus firma est in æternũ. Et eduxit Israelẽ 11
è medio eorũ: et quidẽ misericordia ejus
perpetua est in æternũ. Manu robustâ & 12
brachio excelso: quoniã misericordia ejus
perpetua est in æternũ. Qui fidit mare ru- 13
brum in scissiones: et quidem misericordia
ejus constantissima est in æternum. Et tra- 14
duxit Israelẽ per mediũ earum: quia mi-
sericordia ejus perpetua est in æternũ. Et 15
submersit Pharaonem omnesque exercitus
ejus in mare rubrum: et quidẽ misericor-
dia ejus firmissima est in æternum. Qui 16
rexit populũ suũ in deserto: quia miseri-
dia ejus perstans est in æternum. Et pro-
fluere fecit aquam è petra solidissima:
& quidem misericordia ejus perstans est
in æternum. Qui percussit reges magnos: 17
& quidem misericordia eius perseverans
est in æternum. Et occidit reges admiran- 18
dos: & quidem misericordia eius firma
est in æternum. Sehon regem Amorræorũ: 19
& quidem misericordia ejus permanens
est in æternum. Et Og regẽ Basã: & quidẽ 20
misericordia ejus perpetua est in æternum.
Et dedit terrã eorum hæreditatẽ: quia mi- 21
sericordia ej⁹ perpetua est in æternum. Hæ- 22
reditatẽ Israeli servo suo: & quidẽ mise-
ricordia ej⁹ perstans est in æternum. Quia 23
Domin⁹ recordatus est nostrî in humilita-
te nostra: quia misericordia ejus est in æ-
ternum. Et salvavit nos de manu inimico- 24
rum nostrorum: quia misericordia eius est
in æternum. Qui dat escã omni corporeo: 25
& quidem misericordia eius firma est in 26
æternum. Gratias agite Deo cœli, quia misericordia eius existet in æternum. Gratias agite Domino dominorum, quia misericordia ejus perpetua est in æternum. Alleluia. 27

PSAL. CXXXVII. קלז

.Sijon nos recordando in : flevimus etiam , ſedimus ibi Babel flumina Super
עַל־נַהֲרוֹת ׀ בָּבֶל שָׁם יָשַׁבְנוּ גַּם־בָּכִינוּ בְּזָכְרֵנוּ אֶת־צִיּוֹן׃ 1
,nos petierunt ibi Quia .noſtras citharas ſuſpendimus : ejus medio in ſalices Super
עַל־עֲרָבִים בְּתוֹכָהּ תָּלִינוּ כִּנֹּרוֹתֵינוּ׃ כִּי שָׁם שְׁאֵלוּנוּ 2
3 cantico de nobis cantate : lætitiam noſtros ululatus & , cantici verba , nos captivantes
שׁוֹבֵינוּ דִּבְרֵי־שִׁיר וְתוֹלָלֵינוּ שִׂמְחָה שִׁירוּ לָנוּ מִשִּׁיר
? alienigenæ humum ſuper Domini canticum cantabimus Quomodo .Sijon
צִיּוֹן׃ אֵיךְ נָשִׁיר אֶת־שִׁיר־יְהוָה עַל אַדְמַת נֵכָר׃ 4
mea lingua Adhæreat .mea dextera obliviſcatur : Jeruſalaim tui fuero oblitus Si
אִם־אֶשְׁכָּחֵךְ יְרוּשָׁלִָם תִּשְׁכַּח יְמִינִי׃ תִּדְבַּק לְשׁוֹנִי 5
6 ſuper Jeruſalaim fecero aſcendere non ſi : tui meminero non ſi ,meo palato
לְחִכִּי אִם־לֹא אֶזְכְּרֵכִי אִם־לֹא אַעֲלֶה אֶת־יְרוּשָׁלִַם עַל־
, Jeruſalaim diei Edom filiorū Domine Recordare .meæ lætitiæ capite
רֹאשׁ שִׂמְחָתִי׃ זְכֹר יְהוָה ׀ לִבְנֵי אֱדוֹם אֵת יוֹם יְרוּשָׁלִָם 7
Babel Filia .ea in fundamentum ad uſque diſcooperite , Diſcooperite : dicentium
הָאֹמְרִים עָרוּ ׀ עָרוּ עַד הַיְסוֹד בָּהּ׃ בַּת־בָּבֶל 8
.nobis retribuiſti quam ,tuam retributionem tibi retribuit qui beatitudines , vaſtata
הַשְּׁדוּדָה אַשְׁרֵי שֶׁיְשַׁלֶּם־לָךְ אֶת־גְּמוּלֵךְ שֶׁגָּמַלְתְּ לָנוּ׃ 9
.petram ad tuos parvulos allidet & ,apprehendet qui Beatitudines
אַשְׁרֵי ׀ שֶׁיֹּאחֵז וְנִפֵּץ אֶת־עֹלָלַיִךְ אֶל־הַסָּלַע׃

PSAL. CXXXVIII. קלח

.tibi canam Divis coram : meo corde toto in tibi Confitebor .David ipſi
לְדָוִד ׀ אוֹדְךָ בְכָל־לִבִּי נֶגֶד אֱלֹהִים אֲזַמְּרֶךָּ׃ 1
ſuper tuo nomini confitebor & , tuæ ſanctitatis templum ad me Incurvabo
אֶשְׁתַּחֲוֶה אֶל־הֵיכַל קָדְשְׁךָ וְאוֹדֶה אֶת־שְׁמֶךָ עַל־ 2
,tuū nomen omnia ſuper magnificâſti quoniam : tua veritate ſuper & ,tua miſericordia
חַסְדְּךָ וְעַל־אֲמִתֶּךָ כִּי־הִגְדַּלְתָּ עַל־כָּל־שִׁמְךָ
mea anima in me roborabis : me exaudiſti & , invocavi die In .tuum eloquium
אִמְרָתֶךָ׃ בְּיוֹם קָרָאתִי וַתַּעֲנֵנִי תַּרְהִבֵנִי בְנַפְשִׁי 3
eloquia audierunt quia :terræ reges omnes Domine tibi Confiteantur .fortitudine
עֹז׃ יוֹדוּךָ יְהוָה כָּל־מַלְכֵי־אָרֶץ כִּי שָׁמְעוּ אִמְרֵי־ 4
Quoniam .Domini gloria magna quoniā : Domini viis in cantent Et .tui oris
פִיךָ׃ וְיָשִׁירוּ בְּדַרְכֵי יְהוָה כִּי־גָדוֹל כְּבוֹד יְהוָה׃ כִּי־ 5 6
Si .cognoſcet longinquo à altum & : videbit humilem & ,Dominus excelſus
רָם יְהוָה וְשָׁפָל יִרְאֶה וְגָבֹהַּ מִמֶּרְחָק יְיֵדָע׃ אִם־ 7
mittes meorū inimicorum naſum ſuper : me vivificabis anguſtiæ interiori in ambulavero
אֵלֵךְ ׀ בְּקֶרֶב צָרָה תְּחַיֵּנִי עַל אַף אֹיְבַי תִּשְׁלַח
,Domine ,me pro perficiet DOMINUS .tua dextera me ſervabit & : tuā manum
יָדֶךָ וְתוֹשִׁיעֵנִי יְמִינֶךָ׃ יְהוָה יִגְמֹר בַּעֲדִי יְהוָה 8
.dimittas ne tuarum manuum facta : ſeculum in tua miſericordia
חַסְדְּךָ לְעוֹלָם מַעֲשֵׂי יָדֶיךָ אַל־תֶּרֶף׃

PSAL. CXXXIX. קלט

cognoviſti Tu .cognoviſti &,me inveſtigâſti Domine .cantus David ipſi Victori
לַמְנַצֵּחַ לְדָוִד מִזְמוֹר יְהוָה חֲקַרְתַּנִי וַתֵּדָע׃ אַתָּה יָדַעְתָּ 1
2 .longè à meam cogitationem intellexiſti : meum reſurgere &,meum ſedere
שִׁבְתִּי וְקוּמִי בַּנְתָּה לְרֵעִי מֵרָחוֹק׃

תרגום TARGUM.

קלו

עַל נַהֲרְוָתָא דְּבָבֶל תַּמָּן יָתִבְנָא לְחוּד בְּכֵינָא 1
כַּד הֲוֵינָא דָּכְרִין יַת צִיּוֹן׃ עַל עַרְבִין 2
בִּמְצִיעֲתָהּ תְּלֵינָן כִּנָּרָנָא׃ אֲרוּם תַּמָּן 3
שַׁיְּלוּ יָתָנָא בַּבְלָאֵי דִּשְׁבוֹ יָתָנָא לְמֵימַר
מִלִּין דְּשִׁירָיָא וּבִזָּזָנָא עַל עֵסֶק חֶדְוָא אָמְרִין
שַׁבַּחוּ לָנָא מִן שִׁירָתָא דַּהֲוֵיתוּן אָמְרִין
בְּצִיּוֹן׃ מִן יַד לֵיוָאֵי אָמְרִין הֵיכְדֵין נְשַׁבַּח 4
יַת תּוּשְׁבַּחְתָּא דַּיְיָ עַל אַרְעָא חִילוֹנִיתָא׃
מְתִיבָא קָל רוּחָא דְּקוּדְשָׁא וְאָמְרָה דְּאִין 5
מַנְשְׁיָנָא לִיךְ יְרוּשְׁלֶם אַנְשְׁיָהּ לִימִינִי׃ תִּדְבַּק 6
לִישָּׁנִי לְמוּרִינִי אִין לָא אֶדְכַּר יָתִיכִי אִין לָא
אַסֵּיק דִּכְרַן יְרוּשְׁלֶם עַל שֵׁרוּי חֶדְוַת בֵּית
שַׁמְשַׁי׃ אֲמַר מִיכָאֵל רַבָּה דִּירוּשְׁלֶם אִדְכַּר 7
יְיָ לְעַמָּא דֶּאֱדוּמָא דְּאַחֲרִיבוּ יְרוּשְׁלֶם דְּאָמְרִין
צַדּוּ צַדּוּ עַד דְּשִׁתְאַסָּא בָּהּ׃ אֲמַר גַּבְרִיאֵל 8
רַבָּה דְּצִיּוֹן לְאוּמָּא בַּבְלֵיתָא בְּזוֹזִיתָא טְבָא לֵיהּ
דִּישַׁלֵּם לִיךְ יַת גּוּמְלִיךְ בִּישׁ דִּי גְּמַלְתְּ לָנָא׃
טָבָא לֵיהּ דְּיֵאחוֹד וּמְרַטֵּשׁ יַת טַלְיַיִךְ עַל כֵּיפָא׃ 9

קלח

עַל יַד דָּוִד אוֹדֵי קֳדָמָךְ יְיָ בְּכָל לִבִּי קֳבֵל 1
דַּיָּנַיָּא אֲזַמְּרִנָּךְ׃ אֶסְגּוּד קֳדָם הֵיכְלָא 2
דְּקוּדְשָׁא וְאוֹדֵי יַת שְׁמָךְ מְטוּל טוּבָךְ וּמְטוּל
קוּשְׁטָךְ אֲרוּם אַסְגֵּיתָא עַל כָּל שְׁמָךְ מֵימְרֵי
תוּשְׁבַּחְתָּךְ׃ בְּיוֹמָא דִּי קְרֵית עֲנֵי יָתִי אַסְגֵּעְתָּנִי 3
בְנַפְשִׁי עוּשְׁנָא׃ יוֹדוּן קֳדָמָךְ יְיָ כָּל מַלְכֵי 4
אַרְעָא אֲרוּם שְׁמַעוּ מֵימְרֵי תוּשְׁבַּחְתָּךְ׃ וִישַׁבְּחוּן 5
עַל כְּבִישֵׁי יְיָ אֲרוּם רַב אִיקָרָא דַּיְיָ׃ אֲרוּם רָמָא 6
יְיָ וּמַכִּיךְ יְחֱמֵי לְטָב וְגֵיוְתָנָא מִן שְׁמַיָּא רְחִיקִין
יְמָאֵיךְ׃ אִין אֲהַלֵּךְ בִּמְצַע עָקְתָא תְּחַיְּנַנִי עַל 7
נְחִירָא בַּעֲלֵי דְבָבַי תוֹשִׁיט אִידָךְ לְחַבָּלוּתְהוֹן
וְתִפְרְקִנַּנִי יְמִינָךְ׃ יְיָ יְשַׁלֵּים בִּישָׁא עֲלַוֵיהוֹן 8
אַמְטוּלְתִי יְיָ טוּבָךְ לְעָלַם עוּבָדֵי אִידָךְ לָא
תִשְׁבּוֹק׃

קלט

לְשַׁבָּחָא עַל יַד דָּוִד תּוּשְׁבַּחְתָּא יְיָ פַּשְׁפַּשְׁתַּנִי 1
וִידַעְתְּ׃ אַתְּ קֳדָמָךְ גְּלֵי אוֹתָבוּתִי לְמֶעֱסַק בְּאוֹרָיְתָא וְאוֹקִימוּתִי לְמֵיזַל בִּקְרָבָא אִתְבַּיְנְתְּ לְחַבְרוּתִי בִּכְנִשְׁתָּךְ מִן עַם רָחִיק׃ 2

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

PSAL. CXXXVII.

1 Super flumina Babylonis, ibi ſedimus & flevim⁹ cum recordaremur Sion. 2 Sup ſalices in medio ejus ſuſpendim⁹ citharas noſtras. 3 Ibi autem rogaverunt nos Babylonii, qui captivos adduxerunt nos, ut diceremus verba canticorum: et raptores noſtri lætitiæ cauſa dicebant : Pſallite nobis cantica quæ dicebatis in Sion. 4 *Eveſtigiò Levitæ dixerunt*, Quomodo cantabim⁹ hymnos Dñi in terra aliena ? 5 *Reſpondit vox ſpirit⁹ ſancti et dixit, Quòd* ſi oblitus fuero tui Jeruſalem, oblivioni tradam dexterã meam. 6 Adhæreat lingua mea palato meo, niſi recordatus fuero tui, niſi aſcendere fecero memoriam Jeruſalem in initio lætitiæ *domus* miniſtrorũ meorũ. 7 *Dixit Michael princeps Jeruſalem*, Memor eſto Domine populi Edom, *qui* deſtruxerunt Jeruſalem, dicentes : *Deſtruite, deſtruite* uſq; ad fundamentũ in ea. 8 *Dixit Gabriel princeps Sion genti Babylonicæ devaſtatrici*, Beat⁹ qui reddiderit tibi *retributionẽ tuã malã* quã retribuiſti nobis. 9 Beat⁹ qui capiet et allidet parvulos tuos ſup petrã.

1 Per manum Davidis.

PSAL. CXXXVIII.

Confitebor coram te Dñe in toto corde meo : in conſpectu judicum cantabo tibi. 2 Adorabo corã templo ſancto[*tuo,*] & confitebor nomini tuo propter benignitatẽ tuam & propter veritatem tuam, quoniam magnificâſti ſuper omne nomen tuum *verba* laudis tuæ. 3 In die qua invocavi, *reſponde* mihi : multiplicâſti in anima mea fortitudinem. 4 Confiteantur coram te Dñe omnes reges terræ, quoniam audierunt *verba* laudis tuæ. 5 Et cantent in viis Dñi, quoniam magna eſt gloria Domini. 6 Quoniam excelſus Dominus & humilem reſpiciet *in bonum*, et ſuperbum de cœlis longinquis deprimet. 7 Si ambulavero in media anguſtia, vivificabis me ; & ſuper *naſum* inimicorum meorum pones manũ tuam ut deſtruas illos: et redimet me dextera tua. 8 *Dominus* reddet malum illis propter me: Domine benignitas tua in æternum; opera manuum tuarum ne derelinquas.

1 Ad laudandũ p manum Davidis canticũ.

PSAL. CXXXIX.

Domine perſcrutatus es me & cognoviſti. 2 Coram te nota eſt ſeſſio mea *ad ſtudendum legi*, et ſurrectio mea *ad eundum in bellum*: intellexiſti ſocietatem meam in eccleſia *tua* de *populo longinquo*

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ * ܡ̈ܠܐ ܕܩܕܝ̈ܫܐ ܗܢܘܢ ܕܐܫܬܒܝܘ ܠܒܒܠ . 1
ܥܠ ܢܗܪ̈ܘܬܐ ܕܒܒܠ ܬܡܢ ܝܬܒܢ ܘܒܟܝܢ ܟܕ ܐܬܕܟܪܢ ܠܨܗܝܘܢ . * ܥܠ ܥܪ̈ܒܐ 2
ܕܒܓܘܗ̇ ܬܠܝܢ ܟܢܪ̈ܝܢ : * ܡܛܠ ܕܬܡܢ ܫܐܠܘܢ ܡܢܢ ܫܒ̈ܝܢ . ܡ̈ܠܐ ܕܬܫܒܘܚܬܐ : ܘܕܒܪܘܢ 3
ܐܡܪܘ ܠܢ ܙܡܪܘ ܠܢ ܡܢ ܬܫ̈ܒܚܬܐ ܕܨܗܝܘܢ : * ܐܝܟܢܐ ܢܙܡܪ ܬܫ̈ܒܚܬܗ 4
ܕܡܪܝܐ ܒܐܪܥܐ ܢܘܟܪܝܬܐ . * ܐܢ ܐܛܥܝܟܝ ܐܘܪܫܠܡ ܬܛܥܝܢܝ ܝܡܝܢܝ : * ܬܕܒܩ ܠܫܢܝ 5 6
ܒܫܡܝܐ ܕܦܘܡܝ . ܐܢ ܠܐ ܐܬܕܟܪܬܟܝ . ܐܢ ܠܐ ܐܣܩܬ ܠܐܘܪܫܠܡ ܒܪܫ ܚܕܘܬܝ : * ܐܬܕܟܪ ܡܪܝܐ ܠܒܢ̈ܝ 7
ܐܕܘܡ ܒܝܘܡܗ̇ ܕܐܘܪܫܠܡ . ܕܐܡܪܝܢ ܥܪܘ ܥܪܘ ܥܕܡܐ ܠܫܬܐܣܝܗ̇ : * ܒܪܬ ܒܒܠ 8
ܒܙܘܙܬܐ . ܛܘܒܘܗܝ ܠܡܢ ܕܢܦܪܥܟܝ ܦܘܪܥܢܟܝ ܕܦܪܥܬܝ ܠܢ : * ܛܘܒܘܗܝ ܠܡܢ ܕܢܐܚܘܕ 9
ܘܢܪܛܫ ܥܘ̈ܠܝܟܝ ܒܫܘܥܐ .

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ * ܬܘܕܝܬܐ ܘܢܒܝܘܬܐ ܒܚܕܐ .

* ܐܘܕܐ ܠܡܪܝܐ ܒܟܠܗ ܠܒܝ . ܘܩܕܡ ܡܠܟ̈ܐ ܐܙܡܪ ܠܟ : * ܐܣܓܘܕ ܒܗܝܟܠܐ ܕܩܘܕܫܟ : 1
ܘܐܘܕܐ ܠܫܡܟ ܥܠ ܛܝܒܘܬܟ ܘܥܠ ܩܘܫܬܟ : * ܡܛܠ ܕܐܘܪܒܬ ܥܠ 2
ܟܠ ܫܡܐ ܡܐܡܪܟ : * ܒܝܘܡܐ ܕܩܪܝܬܟ ܥܢܝܬܢܝ . ܘܐܥܫܢܬ ܠܢܦܫܝ : 3
ܢܘܕܘܢ ܠܟ ܡܪܝܐ ܟܠܗܘܢ ܡܠܟ̈ܐ ܕܐܪܥܐ . ܡܛܠ ܕܫܡܥܘ ܡ̈ܠܐ ܕܦܘܡܟ : * ܘܢܫܒܚܘܢ 4
ܐܘܪܚܬܗ ܕܡܪܝܐ . ܡܛܠ ܕܪܒ ܗܘ ܫܘܒܚܗ ܕܡܪܝܐ : * ܘܪܡ ܗܘ ܡܪܝܐ 5 6
ܘܒܡܟܝܟܐ ܚܐܪ . ܘܠܪܡܐ ܡܢ ܪܘܚܩܐ ܝܕܥ : * ܘܐܢ ܐܗܠܟ ܒܐܘܠܨܢܐ ܬܚܝܢܝ . ܘܥܠ 7
ܪܘܓܙܐ ܕܒܥܠܕܒܒ̈ܝ ܬܦܫܘܛ ܐܝܕܟ ܘܬܦܪܩܢܝ : * ܝܡܝܢܟ ܡܪܝܐ ܬܢܝܚ 8
ܥܠܝ . ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܠܥܠܡ ܛܝܒܘܬܟ : ܘܥܒܕ̈ܐ ܕܐܝ̈ܕܝܟ ܠܐ ܬܫܒܘܩ .

ܕܕܘܝܕ . ܟܕ ܩܥܐ ܗܘܐ ܘܡܚܣܕ ܠܗ ܕܡܪܕ . * ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ * ܚܕ ܕܫܡܗ ܗܘܐ 1
ܫܡܥܝ ܒܪ ܓܪܐ ܟܕ ܐܡܪ : ܐܘ ܐܫܘܕ ܕܡܐ . ܘܒܪܘܚܢܐ
ܬܐܘܠܘܓܝܐ ܘܨܠܘܬܐ ܥܡ ܒܥܘܬܐ . ܡܪܝܐ ܒܨܝܬܢܝ ܘܝܕܥܬܢܝ .
* ܐܢܬ ܝܕܥܬ ܡܘܬܒܝ ܘܡܩܝܡܝ : ܐܣܬܟܠܬ ܡܚܫܒܬܝ ܡܢ ܡܪܘܡܐ . 2

PSAL. CXXXVI.

1 *Davidis. Verba Sanctorum qui captivi ducti ſunt in Babel. Verſ. 16.*

Ad flumina Babylonis ibi ſedim⁹ & flevimus cũ recordaremur Siõ, 2 Ad ſalices quæ ſunt intra ipſã appendim⁹ citharas noſtras. 3 Quoniã illîc petierunt à nobis qui captivos duxerũt nos verba laudationũ: & qui abduxerũt nos, dixerũt nobis; Canite nobis de cãticis Siõ. 4 Quomodò canem⁹ vobis laudes Dñi in terra aliena? 5 Si obliviſcar tuî Hieruſalem, obliviſcatur meî dextera mea. 6 Hæreat lingua mea cœlo oris mei, ſi nõ meminero tuî: ſi nõ attollã Hieruſalẽ in principio gaudiorũ meorũ. 7 Memor eſto Dñe filiorũ Adũ in die Hieruſalem: dicentiũ; Detegite, detegite uſq; ad ipſius fundamenta. 8 Filia Babylonis deprædatrix, beatus qui reddet tibi retributionem quam nobis retuliſti : 9 Beatus qui apprehendet tuos infantes & allidet ad petram.

PSAL. CXXXVII.

1 *Compoſitus à Davide. Gratiarum actio cum prophetia. Verſ. 21.*

Confitebor Dño ex toto corde meo, & corã regib⁹ pſallã tibi: 2 Adorabo in Tẽplo ſanctitatis tuæ, & gratias agã nomini tuo de tua bonitate deque veritate tua : quia magnificâſti ſup omne nomen, eloquiũ tuũ. 3 Die quâ vocavi te reſpondiſti mihi, et auxiſti robur animæ meæ. 4 Confiteantur tibi Dñe omnes reges terræ, quoniã audierunt ſermonẽ oris tui : 5 Et glorificent vias Dñi, quoniã magna eſt majeſtas Dñi, 6 Et excelſ⁹ eſt Dñs, qui in profundũ reſpicit, & eũ qui ſuperbit emin⁹ cognoſcit. 7 Si ambulavero p anguſtiã, vivificabis me: in ira inimicorũ meorũ extendes manũ tuã, & ſalvabis me. 8 Dexteram tuam Domine quieſcere fac ſuper me, *quandoquidem* Dñe miſericordia tua ſempiterna eſt : & opus manuum tuarum ne deſtituas.

PSAL. CXXXVIII.

1 *Davidis. Quum clamabat & exprobrabat ei quòd rebellâſſet, quidam qui vocabatur Samei filius Gari dicens, O effundens ſanguinem. Spirituali verò ſenſu Theologia, & oratio cum petitione. Verſ. 46.*

Domine ſcrutatus es me, & agnoviſti me: 2 Tu nôſti meũ ſedendi atque ſurgendi locũ : Intellexiſti cogitationes meas ab alto :

Verſio VULG. LAT.

Pſalmus David, Jeremiæ, CXXXVI.

1 SUper flumina Babylonis, illîc ſedimus
& flevimꝰ : cùm recordaremur Sion:
2 In ſalicibus in medio ejus, ſuſpendimus
3 organa noſtra. Quia illîc interrogaverunt
nos, qui captivos duxerunt nos, verba
cantionum : Et qui abduxerunt nos ;
Hymnũ cantate nobis de canticis Sion.
4 Quomodò cantabimus canticũ Dñi in
5 terra aliena ? Si oblitus fuero tuî, Jeruſalem,
6 oblivioni detur dextera mea. Adhæreat
lingua mea faucibus meis, ſi non
meminero tuî : Si non propoſuero Jeruſalem,
7 in principio lætitiæ meæ. Memor
eſto, Dñe, filiorũ Edom, in die Jeruſalem:
Qui dicunt; Exinanite, exinanite uſq; ad
8 fundamentũ in ea. Filia Babylonis miſera:
beatꝰ, qui retribuet tibi retributionẽ
9 tuã, quã retribuiſti nobis. Beatus, qui tenebit,
& allidet parvulos tuos ad petrã.

1 Ipſi David. CXXXVII.

COnfitebor tibi, Dñe, in toto corde
meo: quoniã audîſti verba oris mei.
In conſpectu Angelorum pſallam tibi :
2 Adorabo ad templum ſanctum tuum, &
confitebor nomini tuo, Super miſericordia
tua, & veritate tua : quoniam magnificâſti
ſup omne, nomen ſanctũ tuũ.
3 In quacumque die invocavero te, exaudi
me : multiplicabis in anima mea
4 virtutem. Confiteantur tibi, Domine,
omnes reges terræ : quia audierunt
5 omnia verba oris tui : Et cantent in viis
Domini : quoniam magna eſt gloria Domini.
6 Quoniam excelſus Dominus, &
humilia reſpicit : & alta à longè cognoſcit.
7 Si ambulavero in medio tribulationis,
vivificabis me: & ſup irã inimicorũ
meorũ extendiſti manũ tuã, & ſalvũ
8 me fecit dextera tua. Dñs retribuet
pro me : Dñe, miſericordia tua in ſeculum
: opera manuũ tuarũ ne deſpicias.

1 In finem, Pſalmꝰ David. CXXXVIII.

DOmine, probâſti me, et cognoviſti
2 me: Tu cognoviſti ſeſſionem meã, &
3 reſurrectionem meam. Intellexiſti cogitationes
meas de longè :

Verſ. GRÆCA. LXX. Interp.

(α) Τῷ Δαυίδ, Ἱερεμίου. ρλϛʹ.

1 †Ἐπὶ τῶν ποταμῶν Βαβυλῶνος †ἐκεῖ ἐκαθίσαμεν,
καὶ ἐκλαύσαμεν †ἐν τῷ μνησθῆναι ἡμᾶς τῆς Σιών.
2 †Ἐπὶ ταῖς ἰτέαις ἐν μέσῳ αὐτῆς (β) ἐκρεμάσαμεν τὰ ὄρ-
3 γανα ἡμῶν. †Ὅτι ἐκεῖ ἐπηρώτησαν ἡμᾶς οἱ (γ) αἰχμαλωτεύσαντες
ἡμᾶς, λόγους ᾠδῶν, †καὶ οἱ ἀπαγαγόντες
ἡμᾶς, ὕμνον· †Ἄσατε ἡμῖν ἐκ τῶν ᾠδῶν
4 Σιών. †Πῶς ᾄσωμεν τὴν ᾠδὴν κυρίου ἐπὶ γῆς ἀλλοτρίας;
5 †Ἐὰν ἐπιλάθωμαί σου Ἱερουσαλὴμ, ἐπιλησθείη
6 ἡ δεξιά μου. †Κολληθείη ἡ γλῶσσά μου τῷ
λάρυγγί μου, ἐὰν μή σου μνησθῶ· †ἐὰν μὴ προανατάξωμαι
τὴν Ἱερουσαλὴμ (δ) ὡς ἐν ἀρχῇ τῆς εὐφροσύνης
7 μου. †Μνήσθητι κύριε τῶν υἱῶν Ἐδὼμ τὴν ἡμέραν
Ἱερουσαλήμ· †τῶν λεγόντων, Ἐκκενοῦτε, ἐκκενοῦτε,
8 (ε) ἕως τῶν θεμελίων αὐτῆς. †Θυγάτηρ Βαβυλῶνος
ἡ ταλαίπωρος, †μακάριος ὃς ἀνταποδώσει
σοι τὸ ἀνταπόδομά σου, ὃ ἀνταπέδωκας ἡμῖν.
9 †Μακάριος ὃς κρατήσει καὶ ἐδαφιεῖ τὰ νήπιά
σου πρὸς τὴν πέτραν.

1 (α) Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ, Ἀγγαίου καὶ
Ζαχαρίου. ρλζʹ.

†Ἐξομολογήσομαί σοι κύριε ἐν ὅλῃ καρδίᾳ μου,
†καὶ ἐναντίον ἀγγέλων (β) ψαλῶ σοι, †ὅτι ἤκουσας πάντα
2 τὰ ῥήματα τοῦ στόματός μου. †Προσκυνήσω πρὸς
ναὸν ἅγιόν σου, †καὶ ἐξομολογήσομαι τῷ ὀνόματί
σου, †ἐπὶ τῷ ἐλέει σου καὶ τῇ ἀληθείᾳ σου· †ὅτι ἐμεγάλυνας
3 (γ) ἐπὶ πᾶν τὸ ὄνομα τὸ ἅγιόν σου. †Ἐν ᾗ
ἂν ἡμέρᾳ (ʹ) ἐπικαλέσωμαί σε, ταχὺ ἐπάκουσόν μου·
4 †πολυωρήσεις με ἐν ψυχῇ μου (δ) δυνάμει σου. †Ἐξομολογησάσθωσάν
σοι κύριε πάντες οἱ βασιλεῖς τῆς
γῆς, †ὅτι ἤκουσαν πάντα τὰ ῥήματα τοῦ στόματός σου.
5 †Καὶ ᾀσάτωσαν ἐν ταῖς ὁδοῖς κυρίου, †ὅτι μεγάλη ἡ δό-
6 ξα κυρίου. †Ὅτι ὑψηλὸς κύριος, καὶ τὰ ταπεινὰ ἐφ-
7 ορᾷ, †καὶ τὰ ὑψηλὰ ἀπὸ μακρόθεν γινώσκει. †Ἐὰν
πορευθῶ ἐν μέσῳ θλίψεως, (ε) ζήσεις με. †ἐπ᾽ ὀργὴν
ἐχθρῶν μου ἐξέτεινας χεῖράς σου, †καὶ ἔσωσέ με
8 ἡ δεξιά σου. †(ζ) Κύριε ἀνταποδώσεις ὑπὲρ ἐμοῦ.
†κύριε τὸ ἔλεός σου εἰς τὸν αἰῶνα, †τὰ ἔργα τῶν
χειρῶν σου μὴ παρίδῃς.

1 Εἰς τὸ τέλος, (α) ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. ρληʹ.

†Κύριε ἐδοκίμασάς με, καὶ ἔγνως με. †Σὺ ἔγνως
2 τὴν καθέδραν μου, καὶ τὴν ἔγερσίν μου. †Σὺ συνῆκας τοὺς
3 διαλογισμούς μου ἀπὸ μακρόθεν.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

[a] Ipſi David, (a) Hieremiæ.
CXXXVI.

1 SUper flumina Babylonis illîc ſedimꝰ, & flevimꝰ: dũ (b) recordaremur Siõ. 2 In ſalicibus in medio ejꝰ 1 2
ſuſpendimꝰ (c) organa noſtra. 3 Quoniã illîc interrogaverunt nos, qui 3
captivos duxerunt nos, verba canticorum: 4 & [b] qui (d) abduxerunt
nos, hymnũ; Cantate nobis de canticis
Siõ. 5 Quomodò cantabimꝰ canticũ 4
Domini in terra aliena? 6 Si oblitus 5
fuero tuî, Hieruſalem; (e) obliviſcatur dextera mea. 7 Adhæreat lingua 6
mea faucibus meis; ſi non meminero
tuî: 8 Si non [c] præpoſuero Hieruſalem,
ſicut in (f) principio lætitiæ
meæ. 9 Memento, Domine, filiorũ (g) 7
Edom in die Hieruſalem. 10 Qui
dicũt, [d] Exinanite, exinanite uſq;
ad (h) fundamenta ejus. 11 Filia 8
Babylonis (i) miſera: beatꝰ, qui retribuet
tibi retributionẽ tuã, quam (k)
retribuiſti nobis. 12 Beatꝰ qui tenebit, 9
& allidet parvulos tuos ad petrã.

[a] Pſalmus ipſi David, (a) Aggæi, 1
& Zachariæ. CXXXVII.

1 COnfitebor tibi, Domine, in toto
corde meo; 2 [b] et (b) coram angelis
pſallã tibi: (c) quoniã audîſti omnia
verba oris mei. Adorabo ad templũ 2
ſanctũ tuum: & confitebor nomini
tuo, 3 Super miſericordia tua, & veritate
tua : quoniã magnificâſti ſuper (d) omne nomẽ ſanctũ tuũ. 4 In
(e) quacunq; die invocavero te; citò 3
exaudi me: (f) [c] multiplicabis me
in anima mea virtute tuâ. 5 Confiteantur
tibi, Domine, omnes reges terræ; quoniã audierunt omnia verba 4
oris tui. 6 Et cantent [d] in (g) viis 5
Domini : quoniam magna eſt gloria
Domini. 7 Quoniã excelſus Dominꝰ, & humilia reſpicit: & (h) ex- 6
celſa à longè cognoſcit. 8 Si (i) ambulavero 7
in medio tribulationis; vivificabis me. Super irã [e] inimicorum
meorũ extendiſti manꝰ tuas, &
ſalvũ me fecit dextera tua. 9 Domine, (k) retribues pro me: Domine, 8
miſericordia tua in ſeculum: [f] opera
manuum tuarum ne deſpicias.

In finem, Pſalmus ipſi (a) David. 1
CXXXVIII.

1 DOmine, probâſti me, et cognoviſti me: Tu cognoviſti ſeſſionẽ meã, & reſurrectionẽ meã. 2 Tu intellexiſti [a] cogitationes meas de longè : 2 3

Verſio ÆTHIOPICA.

ዘደዊት፡፡

የሀገ ውስተ፡ አፍላገ፡ ባቢሎን፡ህየ፡ነበርነ፡ 1
ወበከይነ፡፡ሶበ፡ተዘከርናሃ፡ለጽዮን፡፡=፡ ወ 2
ስተ፡ኵሎቲሃ፡ሰቀልነ፡እንዚራቲነ፡፡=፡ እስ 3
ም፡በህየ፡ተስእሉነ፡እለ፡ፄወዉነ፡ ነገረ፡ማሓ
ሌት፡፡=፡ ወእለሂ፡ይወስዱነ፡ ይቤሉነ፡ኅልዩ፡ 4
ለነ፡እማሓልዪ፡ለጽዮን፡፡=፡ወእፎ፡ነሐሊ፡ማ 5
ሓሌተ፡እግዚአብሔር፡ በምድረ፡ነኪር፡፡=፡
ወእመሰ፡ ረሳእኩኪ፡ ሊየሩሳሌም፡ ለትርስእ 6
ኒ፡የማንየ፡፡=፡ወይጥጋዕ፡ልሳንየ፡በጕርዔየ፡ 7
እመ፡ሊተዘከርኩኪ፡፡=፡ ወለእመ፡ሊበፅአ 8
ኩ፡ ለሊየሩሳሌም፡ በቀደሜ፡ ትፍሥሕት
የ፡፡=፡ ተዘከሮሙ፡እግዚኦ፡ለደቂቀ፡ኤዶ 9
ም፡፡በዕለተ፡ ሊየሩሳሌም፡፡=፡ እለ፡ይብ 10
ሉ፡ ተክዕዉ፡ ወተሰወጠ፡ እስከ፡ መሰረታቲ
ሃ፡፡=፡ ወለተ፡ባቢሎን፡ኅስርት፡፡ብፁዕ፡ዘ 11
ይትቤቀለኪ፡በቀለ፡ተበቀልክነ፡፡=፡ ብፁዕ፡ 12
ዘይእኅዞሙ፡ ለደቂቅ፡ ወይነጽሖሙ፡ ውስ
ተ፡ኰኵሕ፡፡=፡

ዘደዊት፡፡

የሀገ እገኒ፡ለከ፡እግዚኦ፡በኵሉ፡ልብየ፡፡ 1
እስመ፡ሰማዕከኒ፡ኵሉ፡ቃለ፡አፉየ፡፡=፡ በ 2
ቅድመ፡መላእክቲከ፡ እዜምር፡ለከ፡፡ ወእ
ሰግድ፡ውስተ፡ጽርሐ፡መቅደስከ፡፡ ወእገኒ፡
ለስምከ፡፡=፡ በምሕረትከ፡ወበጽድቅከ፡፡ 3
እስመ፡አዕበይከ፡ ዲበ፡ ኵሉ፡ ስምከ ፡ ቅዱ
ስ፡፡=፡አመ፡ዕለተ፡እጼውአከ፡ፍጡነ፡ሰም 4
ዐኒ፡፡ ብዙኀ፡ አጽንዕከ፡ ለነፍስየ፡ በኀይል
ከ፡፡=፡ ይገንዩ፡ለከ ፡ እግዚኦ ፡ ኵሎሙ፡ 5
ነገሥተ፡ምድር፡፡ ለስመ፡ሰምዑ፡ ኵሉ፡ቃ
ለ፡አፉከ፡፡=፡ ወየኀልዩ፡በስብሐተ፡ለእግዚአ 6
ብሔር፡፡ እስመ፡ዐቢይ፡ክብረ፡እግዚአብሔ
ር፡፡=፡ እስመ፡ ልዑል፡እግዚአብሔር ፡ወይ 7
ሬኢ፡ዘበታሕቱ፡፡ ወለነዋኃኒ፡እምርሑቅ፡
ያአምሮ፡፡=፡ እመኒ፡ሖርኩ፡ማእከለ፡መ 8
ንደቤ፡ተሐይወኒ፡፡ ዲበ፡ መዐተ፡ አሕዛብ፡ሰ
ፋሕከ፡ እደዊየ፡፡ ወአድኀነኒ፡ የማንከ፡፡=፡
እግዚአብሔር፡ ይትቤቀል፡ ሊተ፡፡ እግዚኦ፡ 9
ሣህልከ፡ለዓለም፡፡ እግዚኦ፡ ተግባረ፡እደዊ
ከ፡ሊትትሀየይ፡፡=፡

ፍጻሜ፡መዝሙር ፡ዘደዊት፡፡

የሀጀ እግዚኦ ፡ አመከርከኒ፡ ወአእመርከ 1
ኒ፡፡ አንተ፡ተአምር፡ ንብረትየ፡ ወትንሣኤት
የ፡፡=፡ ወአንተ፡ተአምር ፡ ኵሉ፡ ሕሊና፡ 2
ልብየ፡ እምርሑቅ፡፡

MS.A. ρλϛʹ. (α) Τῷ Δαυίδ. (β) ἐκεῖ ἐκρεμάσαμεν (γ) *ἐχμαλωτεύοντες (δ) ἐν ἀρχῇ (ε) ἕως ὁ θεμέλιος ἐν αὐτῇ. MS.A. ρλζʹ. (α) Τῷ Δαυίδ, Ζαχαρίου. (β) ψαλῶ σοι. Προσκυνήσω πρὸς (γ) ἐπὶ πάντας τὸ ὄνομά σου τὸ ἅγιον. (ʹ) ἐπικαλέσομαί (δ) ἐν δυνάμει. Ἐξομολογησάσθωσάν (ε) *ζώσεις με. (ζ) Κύριος *ἀνταποδώσει MS.A. ρληʹ. (α) τῷ Δαυίδ, ψαλμὸς Ζαχαρίου ἐν τῇ διασπορᾷ.

INTERP. ÆTHIOP. PSAL. CXXXVI. [a] Ipſi David. [b] qui adduxerunt nos allocuti ſunt nos, dicentes: Cantate [c] vovero Hieruſalem fore in [d] Effuſa eſt & exinanita PSAL. CXXXVII. [a] Ipſi David. [b] quoniam audîſti omnia verba oris mei: coram Angelis tuis pſallam tibi. [c] valdè corroborâſti animam meam virtute tuâ. [d] in canticis Dñi: [e] populorũ extendiſti manus meas, [f] Dñe opera PSAL. CXXXVII. [a] omnes cogitationes cordis mei de

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

1 * المزمور المائة والسادس والثلثون * لداود في ارمياء * وهو يه * استيخن * علي انهار بابل
2 جلسنا هناك وبكينا لما ذكرنا صهيون * علي الصفصاف الذي في وسطها علقنا الاتنا * لان هناك
3 سالنا الذين سبونا اقوال التسبيح * والذين انتزعونا الي هناك قالوا * سبحوا لنا تسبحة من تسابيح
4 5 صهيون * كيف نسبح لكم تسبحة الرب في ارض غريبة * ان نسيتك يا يروسليم تنسي يميني *
6 7 * ان لم اذكرك يلصق لساني بحنكي * وان لم اسبق فارتب يروسليم في ابتداء فرحي * اذكر
8 يا رب بني ادوم في يوم يروسليم * القائلين اهدموا الي اساسها * يا ابنة بابل الشقية * طوبي
9 لمن يجازيك عوض ما صنعت بنا * طوبي لمن يمسك اطفالك ويصرعهم الصخر * الليلويا *

1 * المزمور المائة والسابع والثلثون * لداود في زخاريا * وهو * ك * استيخن *
2 اشكرك يا رب من كل قلبي * واحمدك امام الملائكة * لانك استجبت جميع اقوال فمي * واسجد
عند هيكل قدسك * واشكر اسمك علي رحمتك وعدلك * لانك عظمت اسمك القدوس علي
3 الكل * استجب لي عاجلا في اليوم الذي ادعوك فيه * تكثر التطلع علي نفسي بقوة *
4 5 * فليعترف لك يا رب جميع ملوك الارض * لانهم سمعوا جميع اقوال فمك * وليسبحوا في طرق
6 7 الرب * لان عظيم هو مجد الرب * الرب عالم ويري ما في العمق * ويعلم ما بعد السموات * ان
سلكت في وسط الشدائد احييتني * بسطت يدك علي غضب الاعداء وخلصتني يمينك *
8 * الرب يكافي عني * يا رب رحمتك دائمة الي الابد * يا رب لا تطرح ما صنعته يداك * الليلويا *

1 * المزمور المائة والثامن والثلثون * كمل * مزمور داود في التفريق * وهو * مو * استيخن *
2 يا رب جربتني وعلمتني * انت عارف جلسي وقومي * انت فهمت افكاري من البعد *

PSAL. CXXXVI.

Davidis, de Jeremia. Verſ. 15. 1

PRope flumina Babylonis ſedimus ibi et flevimus, cùm recordati ſumus Sion. Ad ſa- 2
lices quæ erant in medio eorũ, appendimꝰ inſtrumẽta noſtra. Quoniã illic poſtulaverunt 3
à nobis qui nos captivos duxerant, ſermones
cantici : Et qui abripuerant nos illuc, dixerunt;
Canite nobis canticum è cantilenis Si-
on. Quomodo canemus vobis canticum Do- 4
mini in terra aliena? Si oblitus fuero tui Je- 5
ruſalem, obliviſcatur mei dextera mea : Si 6
non meminero tui, adhæreat lingua mea palato
meo : itidem ſi non prævenero ac diſpoſuero
Jeruſalem in principio lætitiæ meæ.
Recordare O Domine, filiorum Edom in die 7
Jeruſalem, dicentium, Evertite uſq; ad fundamentum
ipſius. O filia Babylonis miſera, 8
Beatus qui rependet tibi quicquid egiſti nobis.
Beatus qui arripiet parvulos tuos, eoſque al- 9
lidet ad petram. Alleluja.

PSAL. CXXXVII.

Davidis, de Zacharia. Verſ. 10. 1

GRatias ago tibi O Domine, ex toto corde
meo, & glorifico te in conſpectu Angelorum:
quoniam exaudîſti cunctos ſermones
oris mei. Et adorabo prope templum ſanctita- 2
tis tuæ, & gratias agam nomini tuo pro miſericordia
tua & æquitate tua: quia magnificâſti
nomen tuum ſanctum ſuper omnia.
Exaudi me protinus in die quâ invocabo te: 3
multiplica reſpicere animã meã cum virtute.
Confiteantur tibi O Domine, omnes reges 4
terræ, quoniã audierunt omnes ſermones oris
tui. Et laudem dicant in viis Domini, quia 5
magna eſt gloria Domini. Dominus ſciens eſt, 6
ac videt quicquid eſt in profundo, & novit
quicquid eſt ultra cælos. Si ambulavero in 7
mediis tribulationibus vivificabis me: extendes
manum tuã adversùs irã inimicorũ, et
& ſalvabit me dextera tua. Dominus retri- 8
buet pro me. O Domine, miſericordia tua perpetua
eſt in æternum. O Domine, ne projicias
quod operatæ ſunt manus tuæ. Alleluja.

PSAL. CXXXVIII.

Perfectio. Pſalmus Davidis, de diſperſione. Verſ. 46. 1

O Domine, probâſti me et cognoviſti me :
Tu nôſti ſeſſionem meam & ſurrectionem
meam. Tu intellexiſti cogitationes me- 2
as de longinquo:

תהלים: קמ

Quia .aſſuevisti meis viis omnibus & : ventilâſti meum accubitum &,meam Semitam

3 אָרְחִי וְרִבְעִי זֵרִיתָ וְכָל־דְּרָכַי הִסְכַּנְתָּה׃ כִּי 4

antè & ,Retrò .ipſum totum nôſti tu Domine ecce : mea lingua in ſermo non

אֵין מִלָּה בִּלְשׁוֹנִי הֵן יְהוָה יָדַעְתָּ כֻלָּהּ׃ אָחוֹר וָקֶדֶם 5

; me præ ſcientia Mirabilis .tuam volam me ſuper poſuiſti & : me formâſti

צַרְתָּנִי וַתָּשֶׁת עָלַי כַּפֶּכָה׃ פְּלִאיָה דַעַת מִמֶּנִּי 6

? fugiam tuis faciebus à quò & :tuo ſpiritu à ibo Quò .ei potero non ,eſt excelſa

נִשְׂגְּבָה לֹא־אוּכַל לָהּ׃ אָנָה אֵלֵךְ מֵרוּחֶךָ וְאָנָה מִפָּנֶיךָ אֶבְרָח׃ 7

Aſſumpſero .tu ecce ,infernum fecero ſtratū & : tu ibi ,cœlos aſcendero Si

8 אִם־אֶסַּק שָׁמַיִם שָׁם אָתָּה וְאַצִּיעָה שְּׁאוֹל הִנֶּךָּ׃ אֶשָּׂא 9

: me ducet tua manus ibi Etiam .Maris noviſſimo in habitavero : auroræ pennas

כַנְפֵי־שָׁחַר אֶשְׁכְּנָה בְּאַחֲרִית יָם׃ גַּם־שָׁם יָדְךָ תַנְחֵנִי 10

nox & : me occultabit tenebra Veruntamen : dixero Et .tua dextera me tenebit &

וְתֹאחֲזֵנִי יְמִינֶךָ׃ וָאֹמַר אַךְ־חֹשֶׁךְ יְשׁוּפֵנִי וְלַיְלָה 11

: lucebit dies ſicut nox & , te à obſcurabit non tenebroſitas Etiam .me circa lux

אוֹר בַּעֲדֵנִי׃ גַּם־חֹשֶׁךְ לֹא־יַחְשִׁיךְ מִמֶּךָ וְלַיְלָה כַּיּוֹם יָאִיר 12

utero in me texiſti : meos renes poſſediſti tu Quia .lux ſicut ,tenebroſitas ſicut

כַּחֲשֵׁיכָה כָּאוֹרָה׃ כִּי־אַתָּה קָנִיתָ כִלְיֹתָי תְּסֻכֵּנִי בְּבֶטֶן 13

mirabilibus ſum mirificatus terribilibus quòd ſuper tibi Confitebor .meæ matris

אִמִּי׃ אוֹדְךָ עַל כִּי נוֹרָאוֹת נִפְלֵיתִי נִפְלָאִים 14

, te à meū corpus fuit occultum Non .valdè cognoſcens mea anima & :tuis operibus

מַעֲשֶׂיךָ וְנַפְשִׁי יֹדַעַת מְאֹד׃ לֹא־נִכְחַד עָצְמִי מִמֶּךָּ 15

meum Informe .terræ imis in ſum compactus variè : occulto in fui factus quando

אֲשֶׁר־עֻשֵּׂיתִי בַסֵּתֶר רֻקַּמְתִּי בְּתַחְתִּיּוֹת אָרֶץ׃ גָּלְמִי 16

non & : ſunt formata dies ſcribentur ipſa omnia tuo libro ſuper & ,tui oculi viderunt

רָאוּ עֵינֶיךָ וְעַל־סִפְרְךָ כֻּלָּם יִכָּתֵבוּ יָמִים יֻצָּרוּ וְלֹא

invaluerūt quàm : Deus tuæ cogitationes fuerūt precioſæ quàm mihi Et .eis in unum

אֶחָד בָּהֶם׃ וְלִי מַה־יָּקְרוּ רֵעֶיךָ אֵל מֶה עָצְמוּ 17

ego adhuc & ,evigilavi :multiplicabuntur arena præ ,eas Dinumerabo ? earum capita

רָאשֵׁיהֶם׃ אֶסְפְּרֵם מֵחוֹל יִרְבּוּן הֱקִיצֹתִי וְעוֹדִי 18

Qui .me à recedite : ſanguinum viros & : impium Deus occideris Si .tecum

19 עִמָּךְ׃ אִם־תִּקְטֹל אֱלוֹהַּ רָשָׁע וְאַנְשֵׁי דָמִים סוּרוּ מֶנִּי׃ אֲשֶׁר 20

te habētes odio Nónne .tui hoſtes vanum in aſſumpſerunt : nefas in te dicent

יֹמְרֻךָ לִמְזִמָּה נָשֻׂא לַשָּׁוְא עָרֶיךָ׃ הֲלוֹא־מְשַׂנְאֶיךָ 21

odii Perfectione ? afficiar tædio te in inſurgentes in & : habebo odio Domine

יְהוָה אֶשְׂנָא וּבִתְקוֹמְמֶיךָ אֶתְקוֹטָט׃ תַּכְלִית שִׂנְאָה 22

: meum cor ſcito & ,Deus me Inveſtiga .mihi fuerunt inimicos in : illos odi

שְׂנֵאתִים לְאוֹיְבִים הָיוּ לִי׃ חָקְרֵנִי אֵל וְדַע לְבָבִי 23

: me in doloris via ſi vide Et .meas cogitationes ſcito & , me proba

בְּחָנֵנִי וְדַע שַׂרְעַפָּי׃ וּרְאֵה אִם־דֶּרֶךְ עֹצֶב בִּי 24

.ſeculi viam in me duc &

וּנְחֵנִי בְּדֶרֶךְ עוֹלָם׃

PSAL. CXL. קמ

viro à : malo homine ab Domine me Eripe .David ipſi cantus Victori

1 לַמְנַצֵּחַ מִזְמוֹר לְדָוִד׃ חַלְּצֵנִי יְהוָה מֵאָדָם רָע מֵאִישׁ 2

.me cuſtodies iniquitatum

חֲמָסִים תִּנְצְרֵנִי׃

תרגום TARGUM.

3 כְּדוֹן בַּהֲלִיכוּתִי בְּאוֹרְחָא וּבְרַבְעוּתִי לְמֶעֱסַק
בְּאוֹרַיְתָא אִתְעֲבַדְתְּ חִילוֹנַי וְכָל אָרְחָתַי
4 אַסְכֵּנְתָּא׃ וְכַד לֵית מְמַלַּל בְּלִישָׁנִי הָא
5 יְיָ יְדַעְתָּ מַחְשְׁבָת לִבִּי כּוּלָּא׃ מֵאֲחוֹרֵי וּמֵאַפֵּי
6 אַעֲקְתָא יָתִי וְגָרֵיתָ עֲלַי מַחְתָא דִּידָךְ׃ מְכַסְיָא
7 לְמִידַע מִנִּי אִתְקְפַת לָא אֶכּוּל לָהּ׃ אָן אֵיזֵיל
8 מִן קֳדָם זַעְפָךְ וְאָן מִן קֳדָמָךְ אֶפּוּךְ׃ אִין אֶסַּק
לִשְׁמַיָּא תַּמָּן אַנְתְּ וְאֶמּוּךְ לִשְׁיוֹל הָא תַּמָּן
9 מֵימְרָךְ׃ אֶזְקוֹף צִיצִין דִּקְרִיץ אֶשְׁרֵי בְּסוֹפֵי יַמָּא׃
10 לְחוֹד תַּמָּן אֵידָךְ תַּדְבַּר יָתִי וְתֶחֱדְנַנִי יְמִינָךְ׃
11 וַאֲמָרֵית בְּרַם חוֹשֶׁךְ מְחַבְרְבַר עֲלַי וְלֵילְיָא
12 קְבֵל אַמְטוּלְתִי׃ לְחוֹד חֲשׁוֹכָא לָא יַחְשֵׁיךְ
מִן מֵימְרָךְ וְלֵילְיָא הֵיךְ יוֹמָא יַנְהִיר הֵיךְ
13 חֲשׁוֹכָא הֵיךְ נְהוֹרָא שָׁוְיָן׃ אֲרוּם אַנְתְּ קְנֵיתָא
14 כָּלְיָתַי אַשְׁתֵּיתְ לִי בִּכְרֵיסָא דְאִמִּי׃ אוֹדֵינָךְ
מְטוּל דִּדְחִילָן פְּרִישָׁת פְּרִישָׁן עוֹבָדָיךְ וְנַפְשִׁי
15 חַכְמָא לַחֲדָא׃ לָא אִתְכַּסְּיָא גַרְמִי מִנָּךְ דִּי
אִתְעֲבֵידִית בְּטוּמְרָא אִצְטַיְּרֵית בִּכְרֵיסָא
16 דְאִמָּא׃ גּוּשְׁמִי חֲמְיָן עֵינָךְ וְעַל סֵפֶר דָּכְרָנָךְ
כּוּלְהוֹן יוֹמַי מִכַּתְּבִין בְּיוֹמָא דְאִתְבְּרֵי עַלְמָא
מִן שֵׁרוּיָא אִתְבְּרִיאוּ כּוּלְהוֹן בִּרְיָתָא וְלֵית
17 כַּחַד חַד בֵּינֵיהוֹן׃ וְלִי כְּמָה יַקִּירִין רַחֲמָיךְ
צַדִּיקַיָּא אֱלָהָא כְּמָה אִתְחֲלוּ רַבָּנֵיהוֹן׃
18 אֶמְנִנּוּן בְּעַלְמָא הָדֵין יַתִּיר מִן חָלָא יִסְגְּעוּן
אִתְעָרֵית בְּעַלְמָא דְאָתֵי וְעַד כְּדוּן אֲנָא גַבָּךְ׃
19 אִין תִּקְטוֹל אֱלָהָא לְרַשִׁיעָא וְגַבְרִין דְּחַיְּבִין
20 דִּין דִּקְטוֹל יְזוּרוּן מִנִּי׃ דִּי יֵימוֹן בִּשְׁמָךְ עַל
נִכְלָא מִשְׁתַּבְּעִין עַל מַגָּן בַּעֲלֵי דְבָבָךְ׃
21 הֲלָא מְסַנְאָךְ יְיָ אֲנָא סָנֵי וְכַד קָיְמִין לְקִבְלָךְ
22 אֲנָא מִגְרֵג׃ עַד שֵׁיצִיאוּת סְנֵיתָא סְנֵיתִינוּן
23 לְבַעֲלֵי דְבָבִין הֲווֹן לִי׃ חַקְרֵנִי אֱלָהָא וִידַע
24 רַעְיוֹנַי בְּחוֹן יָתִי וִידַע הִרְהוּרַי׃ וַחֲמֵי אִין
אוֹרַח דְּטָעִין בִּי וְדַבַּר יָתִי בְּאוֹרַח תְּרִיצֵי עַלְמָא׃

קמ

1 לְשַׁבָּחָא תּוּשְׁבַּחְתָּא עַל יַד דָּוִד׃ פַּצֵּי יָתִי יְיָ 2
מִבַּר נַשׁ בִּישׁ מִגְּבַר חֲטוֹפִין תִּנְטוֹר יָתִי׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Nunc autem ambulante me in via, aut recumbente *ad ſtudium legis*, factus es extraneus; & omnes vias meas frequentâſti. 3
Et cum non eſt eloquium in lingua mea: *ecce Domine* cognoviſti *cogitationes cordis mei omnes.* 4
A tergo & ante moleſtâſti me, et concitâſti ſuper me percuſſionem manuum tuarum. 5
Occulta eſt ſcientia *à* me, ardua facta eſt, non potero ad eam. 6
Quò ibo à præſentia tempeſtatis tuæ? & quò à conſpectu tuo me vertam? 7
Si aſcendero in cœlum, illic tu es: et ſi ſtratum fecero in inferno, *ecce* ibi [*aderit*] Verbum tuum. 8
Si ſuſtulero alas auroræ, & habitavero in noviſſimo *maris*: 9
Etiam illuc manus tua deducet me, & apprehendet me dextera tua. 10
Et dixi: Certè tenebræ obſcurant me, nox *quoque tenebroſa eſt circa* me. 11
Verùm tenebræ non occultabunt [*aliquid*] à Verbo tuo, & nox ſicut dies illuminabit: & tenebræ & lux apud te æquales. 12
Quoniam tu poſſediſti renes meos, fundâſti me in utero matris meæ. 13
Confitebor te quia terribilia [*feciſti,*] mirificè *factus ſum*, mirabilia [*ſunt*] opera tua; & anima mea evaſit ſapiens valdè. 14
Non eſt abſconſa ſubſtantia mea à te qua factus ſum in abſcondito, formatus ſum in utero matris meæ. 15
Corpus meum viderunt oculi tui, & in libro memoriæ tuæ omnes dies *mei* ſcripti ſunt, in die qua creatus eſt mundus, à principio creatæ ſunt omnes creaturæ, nec *ſicut altera* eſt *ulla* in eis. 16
Et *mihi* quàm honorabiles ſunt qui amant te *juſti* Deus, quàm fortificantur principes eorum! 17
Dinumerabo eos in mundo iſto; uberantiùs quàm arena multiplicabuntur: reſurrexi in mundo venturo, licet adhuc apud te ſim. 18
Si occideris Deus impium, viri autem addicti judicio mortis diſcedant à me. 19
Qui jurant in nomine tuo doloſè, jurant in vanum auctores inimicitiæ tuæ. 20
Nonne odientes te Domine odio habeo? & in iis qui inſurgunt contra te, nauſea afficior? 21
Conſummato odio infeſtus fui illis: auctores inimicitiæ facti ſunt mihi. 22
Scrutare me Deus, & ſcito cogitationes meas; proba me, & ſcito cogitatus meos. 23
Et vide ſi via erroris in me eſt: & deduc me in via rectorum mundi. 24

Ad laudandū canticū p manū Davidis. 1

PSAL. CXL.

Libera me Deus ab homine malo, à viro iniquitatum cuſtodi me. 2

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

3 * ܐܘܪܚܝ ܘܫܒܝܠܝ ܚܙܐ ܐܢܬ: ܟܠܗܝܢ ܐܘܪܚܬܝ ܒܩܝܬ. * ܐܢ ܐܝܬ ܥܘܩܡܐ ܒܠܫܢܝ
4 ܐܢܬ ܡܪܝܐ ܝܕܥ ܐܢܬ: ܟܠܗܝܢ * ܕܡܢ ܩܕܝܡ ܘܥܕܡܐ ܠܚܪܬܐ. ܓܒܠܬܢܝ ܘܣܡܬ ܥܠܝ ܐܝܕܟ: 5
6 * ܡܢܝ ܗܘܬ ܝܕܥܬܐ ܘܬܕܡܘܪܬܐ. ܐܬܚܝܠܬ ܘܠܐ ܡܨܐ ܐܢܐ ܚܝܠܐ: * ܠܐܝܟܐ ܐܙܠ ܡܢ ܪܘܚܟ.
7 ܘܐܝܟܐ ܐܬܛܫܐ ܡܢ ܩܕܡܝܟ: * ܐܢ ܐܣܩ ܠܫܡܝܐ ܬܡܢ ܐܢܬ. ܘܐܢ ܐܚܘܬ ܠܫܝܘܠ ܐܦ ܬܡܢ 8
9 ܐܝܬܝܟ: * ܘܐܢ ܐܫܩܘܠ ܟܢܦܝ ܐܝܟ ܕܢܫܪܐ. ܘܐܫܪܐ ܒܚܪܬܗ ܕܝܡܐ: * ܐܦ ܬܡܢ ܐܝܕܟ ܬܐܚܕܝܢܢܝ 10
11 ܘܬܕܒܪܝܢܢܝ ܝܡܝܢܟ. * ܐܡܪܬ ܕܚܫܘܟܐ ܢܢܗܪ ܠܝ: ܘܠܠܝܐ ܢܢܗܪ ܩܕܡܝ. * ܘܚܫܘܟܐ ܠܐ
12 ܢܚܫܘܟ ܡܢܟ: ܘܠܠܝܐ ܐܝܟ ܐܝܡܡܐ ܢܢܗܪ. ܘܚܫܘܟܐ ܐܝܟ ܢܘܗܪܐ: * ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܐܬܩܢܬ 13
14 ܟܘܠܝܬܝ. ܘܩܒܠܬܢܝ ܡܢ ܟܪܣܗ ܕܐܡܝ: * ܕܩܐܠܬܐ * ܐܘܕܐ ܠܟ ܡܛܠ ܕܬܕܡܘܪܬܐ
15 ܥܒܕܬ. ܪܘܪܒܝܢ ܐܢܘܢ ܓܝܪ ܥܒܕܝܟ ܘܢܦܫܝ ܝܕܥܐ ܠܗ ܛܒ: * ܘܠܐ ܟܣܝܢ ܡܢܟ ܓܪܡܝ
16 ܕܥܒܕܬ ܒܛܘܫܝܐ. ܢܚܬܬ ܠܬܚܬܝܬܗ ܕܐܪܥܐ: * ܦܘܪܥܢܝ ܚܙܝ ܥܝܢܝ. ܘܥܠ ܟܬܒܝܟ
17 ܟܠܗܘܢ ܢܬܟܬܒܘܢ: ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܟܪܝܘ ܘܠܝܬ ܒܗܘܢ ܐܢܫ. * ܠܝ ܕܝܢ ܛܒ ܝܩܝܪܝܢ ܪܚܡܝܟ
18 ܐܠܗܐ ܘܛܒ ܥܫܢܘ. ܘܡܫܬܒܗܪܝܢ ܪܫܢܝܗܘܢ * ܐܡܢܐ ܐܢܘܢ. ܘܝܬܝܪ ܡܢ ܚܠܐ ܢܣܓܘܢ: ܐܬܬܥܝܪܬ
19 ܘܬܘܒ ܥܡܟ ܐܢܐ. * ܐܢ ܬܩܛܘܠ ܐܠܗܐ ܠܚܛܝܐ: ܘܓܒܪܐ ܕܕܡܐ ܢܣܛܘܢ ܡܢܝ. * ܡܛܠ 20
21 ܕܐܡܪܘ ܥܠܝܟ ܡܪܡܝܢܘܬܐ ܘܢܣܒܘ ܠܣܪܝܩܘܬܐ ܡܕܝܢܬܟ: * ܠܣܢܐܝܟ ܡܪܝܐ ܣܢܝܬ. ܘܥܠ ܐܝܠܝܢ ܕܩܝܡܝܢ
22 ܠܘܩܒܠܟ ܐܬܚܡܬ: * ܘܣܢܝܐܬܐ ܡܫܡܠܝܬܐ ܣܢܝܬ ܐܢܘܢ. ܘܗܘܘ ܠܝ ܠܒܥܠܕܒܒܐ:
23 * ܒܩܝܢܝ ܐܠܗܐ ܘܕܥ ܠܒܝ. ܘܒܘܚܘܢܝ ܘܕܥ ܫܒܝܠܝ: * ܘܚܙܝ ܐܢ ܐܝܬ ܒܝ ܐܘܪܚܐ
24 ܕܫܘܩܪܐ. ܕܒܪܝܢܝ ܒܐܘܪܚܟ ܕܠܥܠܡ. * ܫܠܡ ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܠܛ *

1 * ܐܡܝܪ ܠܕܘܝܕ ܟܕ ܫܕܐ ܒܗ ܫܐܘܠ ܡܘܪܢܝܬܐ ܠܡܩܛܠܗ ܘܐܬܬ ܒܫܘܪܐ: ܘܪܘܚܢܐܝܬ
ܡܠܐ ܕܗܘ ܕܒܐܠܗܐ ܢܩܝܦ ܘܡܬܟܬܫ ܥܡ ܣܢܐܘܗܝ. ܦܬܓܡܐ ܟܘ.
2 * ܦܨܢܝ ܡܪܝܐ ܡܢ ܒܪܢܫܐ ܒܝܫܐ. ܘܡܢ ܓܒܪܐ ܥܘܠܐ ܢܛܪܝܢܝ:

Viam meam & ſemitas meas tu cognoſcis: 3
omnes vias meas exploratas habes. Si eſt tergiverſatio in lingua mea, tu Dñe nôſti: univerſa 4
Quæ ab antiquo ſunt uſque ad poſtremum. Condidiſti me, & poſuiſti ſuper me manum tuam: 5
Ex me facta eſt ſcientia & admiratio. Sumpſi animos, at non polleo viribus. 6
Quò ibo à ſpiritu tuo, & ubi me abſcondam à conſpectu tuo? 7
Si aſcendero in cœlum, ibi es: & ſi deſcendero in infernū, etiam ibi ades: 8
Sique efferam alas meas ſicut aquilæ, habitemque in extremitate maris, 9
Etiam illic manus tua apprehendet me, regetq; me dextera tua. 10
Dixi, Tenebræ lucebunt mihi, & nox lucebit coram facie mea. 11
Et tenebræ non obſcurabuntur tibi, & nox ut dies lucebit, tenebroſumq; ut lucidum. 12
Quoniam tu condidiſti renes meos, meq; ſuſcepiſti de ventre matris meæ. 13
* *Diapſal.* * Confitebor tibi ob miraculū quod patrâſti; grandia ſunt enim opera tua, & anima mea optimè novit. 14
Neque te latent oſſa mea, quæ formâſti in occulto: deſcendi in imas terræ partes. 15
Retributionem meam viderunt oculi mei: Super libros tuos cuncta ſcribentur. Ecce dies breviati ſunt, & *tamen* non eſt in eis quiſquam. 16
Apud me autē maximo ſunt in pretio amici tui Deus, & valdè magnificantur; & eorum principes 17
Enumerabo, ac pluſquam arenâ excreſcent. Evigilavi, & rursùs tecum ſum. 18
O ſi occîdas Deus peccatores, & viri ſanguinis deflectant à me: 19
Quoniam de te obloquuti ſunt, & ſumpſerunt in vanitatem civitatē tuam. 20
Oſores tuos Dñe odio habui, & in eos qui tibi reſiſtunt, excandui: 21
Et odio integro ſum eos proſecutus, & fuerunt mihi inimici. 22
Explora me Deus, & noſce cor meū: & experire me, ac noſce greſſus meos: 23
Et vide quòd ſi ſit in me via falſitatis, ducito me per viam tuam ſempiternam. 24

PSAL. CXXXIX.

Dictus à Davide, quum jaculatus eſt in eum Saul haſtam ad eum occidendum, at feriit parietem. Spiritualiter autem verba ejus qui Deo inhæret decertatque cum oſoribus ſuis. Verſ. 26. 1

Libera me Domine ab homine pravo, & à viris nefariis me ſerva: 2

Verſio VULG. LAT.

ſemitam meam, & funiculum meum
4 inveſtigâſti. Et omnes vias meas præ-
vidiſti: quia non eſt ſermo in lingua
5 mea. Ecce, Dñe, tu cognoviſti omnia,
noviſſima & antiqua: tu formâſti me,
6 & poſuiſti ſup me manum tuam. Mira-
bilis facta eſt ſcientia tua ex me: con-
fortata eſt, & non potero ad eam.
7 Quò ibo à Spiritu tuo? & quò à fa-
8 cie tua fugiam? Si aſcendero in cœ-
lum, tu illîc es: ſi deſcendero in in-
9 fernũ, ades. Si ſumpſero pennas meas
diluculò, & habitavero in extremis
10 maris: Etenim illuc manus tua dedu-
11 cet me: & tenebit me dextera tua. Et
dixi, Forſitan tenebræ conculcabunt
me: & nox illuminatio mea in deliciis
12 meis. Quia tenebræ non obſcurabun-
tur à te, & nox ſicut dies illuminabi-
tur: ſicut tenebræ ejus, ita & lumen
13 ejus. Quia tu poſſediſti renes meos:
ſuſcepiſti me de utero matris meæ.
14 Confitebor tibi quia terribiliter ma-
gnificatus es: mirabilia opera tua, &
15 anima mea cognoſcit nimis. Non eſt
occultatum os meum à te, quod fe-
ciſti in occulto: & ſubſtantia mea in
16 inferioribus terræ. Imperfectum meũ
viderunt oculi tui, & in libro tuo
omnes ſcribentur: dies forma-
17 buntur, & nemo in eis. Mihi
autem nimis honorificati ſunt amici
tui, Deus: nimis confortatus eſt prin-
18 cipatus eorum. Dinumerabo eos, &
ſuper arenam multiplicabuntur: ex-
19 urrexi, & adhuc ſum tecum. Si occi-
deris, Deus, peccatores: viri ſanguinũ
20 declinate à me: Quia dicitis in cogi-
tatione: Accipient in vanitate civi-
21 tates tuas. Nónne qui oderunt te, Dñe,
oderam: & ſuper inimicos tuos ta-
22 beſcebam? Perfecto odio oderam il-
23 los: & inimici facti ſunt mihi. Proba
me, Deus, & ſcito cor meũ: interroga
24 me, & cognoſce ſemitas meas. Et vide,
ſi via iniquitatis in me eſt: & deduc
me in via æterna.

1 In finem, Pſalmus David.
CXXXIX.

2 Eripe me, Domine, ab homine ma-
lo: à viro iniquo eripe me.

Verſ. GRÆCA LXX. Interp.

4 † τὴν τρίβον μου καὶ τὴν σχοῖνόν μου (β) ἐξιχνίασας· † Καὶ
πάσας τὰς ὁδούς μου προεῖδες, † ὅτι οὐκ ἔστι λόγος
5 ἄδικος ἐν γλώσσῃ μου. † Ἰδοὺ κύριε σὺ ἔγνως πάν-
τα τὰ ἔσχατα καὶ τὰ ἀρχαῖα. † Σὺ ἔπλασάς με καὶ
6 ἔθηκας ἐπ' ἐμὲ τὴν χεῖρά σου. † Ἐθαυμαστώθη ἡ γνῶ-
σίς σου ἐξ ἐμοῦ, † ἐκραταιώθη, οὐ μὴ δύνωμαι πρὸς
7 αὐτήν. † Ποῦ πορευθῶ ἀπὸ τοῦ πνεύματός σου, † καὶ ἀ-
8 πὸ τοῦ προσώπου σου ποῦ φύγω; † Ἐὰν ἀναβῶ εἰς τὸν οὐ-
ρανὸν, (ϛ) σὺ ἐκεῖ εἶ, † ἐὰν καταβῶ εἰς τὸν ᾅδην, πάρ-
9 ει. † Ἐὰν ἀναλάβοιμι τὰς πτέρυγάς μου (δ) κατ' ὄρ-
θον, † καὶ κατασκηνώσω εἰς τὰ ἔσχατα τῆς θαλάσσης, †
10 Καὶ γὰρ ἐκεῖ ἡ χείρ σου ὁδηγήσει με, † καὶ καθέξει με
11 ἡ δεξιά σου. † Καὶ εἶπα, Ἄρα σκότος καταπατήσει
12 με, † καὶ νὺξ φωτισμὸς ἐν τῇ τρυφῇ μου. † Ὅτι (ε) σκό-
τος οὐ σκοτισθήσεται ἀπὸ (ζ) σοῦ, καὶ νὺξ ὡς ἡμέρα φω-
τισθήσεται· † ὡς τὸ σκότος αὐτῆς, οὕτως καὶ τὸ φῶς
13 αὐτῆς. † Ὅτι σὺ ἐκτήσω τοὺς νεφρούς μου κύριε, †
14 ἀντελάβου μου ἐκ γαστρὸς μητρός μου. † Ἐξομολογή-
σομαί σοι ὅτι φοβερῶς ἐθαυμαστώθης· † θαυμάσια
15 τὰ ἔργα σου, καὶ ἡ ψυχή μου γινώσκει σφόδρα. † Οὐκ
ἐκρύβη τὸ ὀστοῦν μου ἀπὸ σοῦ ὃ ἐποίησας ἐν κρυφῇ,
† καὶ ἡ ὑπόστασίς μου ἐν τοῖς (η) κατωτάτω τῆς
16 γῆς. † Ἀκατέργαστόν μου εἴδον οἱ ὀφθαλμοί σου, †
καὶ ἐπὶ τὸ βιβλίον σου πάντες γραφήσονται. † ἡμέρας
17 πλασθήσονται καὶ οὐθεὶς ἐν αὐτοῖς. † Ἐμοὶ δὲ λίαν ἐτι-
μήθησαν οἱ φίλοι σου ὁ θεὸς, † λίαν ἐκραταιώθησαν αἱ
18 ἀρχαὶ αὐτῶν. † Ἐξαριθμήσομαι αὐτοὺς καὶ ὑπὲρ ἄμ-
μον πληθυνθήσονται· † ἐξηγέρθην, καὶ ἔτι εἰμὶ μετὰ σοῦ.
19 † Ἐὰν ἀποκτείνῃς ἁμαρτωλοὺς ὁ θεός· † ἄνδρες αἱ-
20 μάτων ἐκκλίνατε ἀπ' ἐμοῦ, † Ὅτι ἐρεῖς εἰς διαλο-
γισμόν· † λήψονται εἰς ματαιότητα τὰς πόλεις σου.
21 † Οὐχὶ τοὺς μισοῦντάς σε κύριε ἐμίσησα, † καὶ (θ) ἐπὶ
22 τοὺς ἐχθρούς σου ἐξετηκόμην; † Τέλειον μῖσος
23 ἐμίσουν αὐτοὺς, † εἰς ἐχθροὺς ἐγένοντό μοι. † Δοκίμα-
σόν με (ι) ὁ θεὸς, καὶ γνῶθι τὴν καρδίαν μου· † ἔτασόν
24 με, καὶ γνῶθι τὰς τρίβους μου. † Καὶ ἴδε (κ) εἰ ὁδὸς ἀνο-
μίας ἐν ἐμοὶ, † καὶ ὁδήγησόν με ἐν ὁδῷ αἰωνίᾳ.

MS. A. (β) σὺ ἐξιχνίασας· (ϛ) σὺ εἶ ἐκεῖ, (δ) κατ' ὄρθρον, (ε) τὸ σκότος (ζ) σου, * ὡς τὸ σκότος (η) κατωτάτοις τῆς γῆς. Τὸ ἀκατέργαστόν σου εἴδοσαν οἱ ὀφθαλμοί μου, (θ) ἐπὶ τοῖς ἐχθροῖς (ι) κύριε, καὶ (κ) ἢ εἶδες ὁδὸν ἀνομίας

1 Εἰς τὸ τέλος, τοῦ Δαυὶδ (α) ψαλμός. ρλθ'.
2 † Ἐξελοῦ με κύριε ἐξ ἀνθρώπου πονηροῦ, † ἀπὸ ἀν-
δρὸς ἀδίκου ῥῦσαί με.

MS. A. (α) ψαλμὸς τῷ Δαυίδ,

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

(b) ſemitam meã, [b] & (c) funiculũ
meum inveſtigâſti. 3 Et omnes vias 4
meas prævidiſti: quia non eſt ſermo
(d) injuſtus in lingua mea. 4 Ecce, 5
Domine, tu cognoviſti omnia [c] no-
viſſima, et antiqua. Tu formâſti me, et
poſuiſti ſuper me manum tuam. 5 (e)
Mirificata eſt ſcientia tua ex me: (f) 6
invaluit; (g) non potero ad illam. 6
Quo ibo à ſpiritu tuo? et quo à fa- 7
cie tua fugiam? 7 Si aſcendero in
cœlum; tu illîc es: ſi deſcendero in 8
[d] infernum, ades: 8 [e] Si recipiam 9
pennas (h) meas in directum, et (i)
habitavero in extremis maris: 9 Nam 10
et ibi manus tua deducet me: et [f]
tenebit me dextera tua. 10 Et (k) 11
dixi; Forſitan tenebræ (l) conculca-
bunt me: & [g] nox (m) illuminatio in
deliciis meis. 11 Quoniam tenebræ 12
non (n) obtenebrabuntur à te: & nox
ſicut dies illuminabitur: [h] ſicut (o)
tenebræ ejus; ita & lumen ejus. 12
Quoniam tu [i] poſſediſti renes 13
meos, Domine: (p) ſuſcepiſti me de
utero matris meæ. 13 Confitebor tibi, 14
[k] quoniam terribiliter mirificatus
es. (q) Mirabilia opera tua: & anima
mea (r) cognoſcit valdè. 14 Non eſt 15
abſconditum (ſ) os meum à te, quod
feciſti in abſcondito: et [l] ſubſtantia
mea in infimis terræ. 15 (t) [m] Ino- 16
peratum meum viderunt oculi tui: et
in libro tuo omnes ſcribentur. (u)
Dies formabuntur: et [n] nemo in eis.
16 Mihi (x) autem valdè honorifi- 17
cati ſunt amici tui, Deus: valdè (y)
[o] confortati ſunt principatus eo-
rum. 17 Dinumerabo eos: et ſuper 18
arenam multiplicabuntur: (z) exur-
rexi, et adhuc ſum tecum. 18 Si oc- 19
cideris, Deus, (ω) peccatores: viri (aa)
ſanguinũ declinate à me. 19 [p] Quo- 20
niam (bb) dices in cogitatione: acci-
pient in vanitate civitates ſuas. 20
Nónne eos, qui oderunt te, Domine, 21
odio habui, et ſuper inimicos tuos [q]
tabeſcebam? 21 Perfecto odio ode- 22
ram illos: inimici facti ſunt mihi. 22
[r] Proba me, Deus: et cognoſce cor 23
meum. Scrutare me: et cognoſce ſemi-
tas meas. 23 Et vide, ſi (ſ) via iniqui- 24
tatis in me eſt, et deduc me in via æ-
terna.

In finem, ipſi David Pſalmus. 1
CXXXIX.

1 Exime me, Domine, ab homine ma- 2
ligno: à viro injuſto erue me.

Verſio ÆTHIOPICA.

ፍኖትየ፡ወአሰርየ፡አንተ፡ቀጻዕከ፡፡=፦ ወኵ 3
ሉ፡ፍናዊየ፡አንተ፡አቅደምከ፡አእምሮ፡፡ ከ
መ፡አልቦ፡ቃለ፡ዐመፃ፡ውስተ፡ልሳንየ፡፡=፦ ና 4
ሁ፡አንተ፡እግዚኦ፡አእመርከ፡ኵሎ፡ ዘቀ
ደሚ፡ወዘደኃሪ፡፡ አንተ፡ፈጠርከ፡ወደይከ፡እ
ዴከ፡ላዕሌየ፡፡=፦ ተነክረ፡አእምሮትከ፡በላ 5
ዕሌየ፡፡ ፀንዐተኒ፡ ወኢይክል፡ ምስሌሃ፡፡=፦
ለ ይቴኑ፡አሐውር፡እምንፈስከ፡፡ ወአይቴኑ፡ 6
እጕይ፡እምቅድመ፡ገጽከ፡፡=፦ ወእመኒ፡ዐ 7
ረጉ፡ውስተ፡ሰማይ፡ህየኒ፡አንተ፡፡ ወእመኒ፡
ወረድኩ፡ውስተ፡ቀላይ፡ህየኒ፡ሀሎከ፡፡=፦ ወ 8
እመኒ፡ነሣእኩ፡ክንፈ፡ ከመ፡ ንስር፡፡ ወሰረር
ኩ፡እስከ፡ማኅለቅተ፡ባሕር፡፡=፦ ህየኒ፡እዴ 9
ከ፡ትመርሐኒ፡፡ ወታነብረኒ፡ የማንከ፡፡=፦
ወእቤ፡ጽልመትኑ፡እንጋ፡ ኬደኒ፡፡ ወሌሊት 10
ኒ፡ብሩህ፡ውስተ፡ትፍሥሕትየ፡፡=፦ እስመ፡ 11
ጽልመትኒ፡ ኢይጸልም፡ በኀቤከ፡፡ ወሌሊት
ኒ፡ብሩህ፡ከመ፡ መዓልት፡፡ በአምጣነ፡ጽል
መታ፡ ከማሁ፡ ብርሃና፡፡=፦ እስመ፡አንተ፡ 12
ፈጠርከ፡ ኵልያትየ፡ እግዚኦ፡፡ ወተወከፍ
ከኒ፡ከመ፡አእምር፡፡=፦ እገኒ፡ለከ፡እግዚ 13
ኦ፡እስመ፡ግሩመ፡ተሰባሕከ፡፡ መንክር፡ግብ
ርከ፡ወነፍስየ፡ትጤይቆ፡ ጥቀ፡፡=፦ ወኢይ 14
ትኀባእ፡እምኔከ፡ አዕፅምትየ፡ ዘገበርከ፡በ
ኅቡእ፡፡=፦ ወኢአካልየ፡ በመትሕተ፡ምድ
ር፡፡=፦ ወዘኒ፡ገበርኩ፡ርእያ፡አዕይንቲከ፡፡ 15
ወኵሉ፡ ይጸሐፍ፡ ውስተ፡ መጽሐፍከ፡፡ መ
ዐልተ፡ይትፈጠሩ፡ ወኢይሄሉ፡ አሐዱ፡ እም
ኔሆሙ፡፡=፦ ወበኀቤየሰ፡ፈድፋደ፡ክቡራን፡ 16
አዕርክቲከ፡እግዚኦ፡፡ ወፈድፋደ፡ጸንዑ፡እ
ምቀደምቶሙ፡፡=፦ ወእኄልቆሙ፡እምኆፃ፡ 17
ይበዝኁ፡፡ ተንሣእኩኒ፡ ወዓዲ፡ሀሎኩ፡ምስ
ሌከ፡፡=፦ እመሰ፡ቀተልኮሙ፡ለኃጥኣን፡እግዚ 18
ኦ፡፡ እደወ፡ደም፡ተግሐሡ፡ እምኔየ፡፡=፦
እስመ፡ ይዜኀሩ፡በሕሊናሆሙ፡፡ ወይነሥአወ 19
ን፡ለአህጉሪከ፡ በከንቱ፡፡=፦ አኮኑ፡ ጸላእ 20
ትከ፡ ጸላእኩ፡ እግዚኦ፡፡ ወተመንሰውኩ፡
በእንተ፡ፀርከ፡፡=፦ ፍጹመ፡ ጻልአ፡ ጸላእክ 21
ዎሙ፡፡ ወኮኑኒ ፡ ፀርየ፡፡=፦ ፈትነኒ፡ 22
እግዚኦ ፡ ወአምክር ፡ ልብየ፡፡ አምክረኒ፡
ወርኢ፡ፍናዊየ፡፡=፦ ወርኢ፡እመ፡ትረክብ፡ 23
ዐመፃ ፡ በላዕሌየ፡፡ ወምርሐኒ ፡ ፍኖተ ፡ ዘ
ለዓለም፡፡=፦

ፍጻሜ ፡ መዝሙር፡ ዘደዊት፡፡

የሀሀ አድኅነኒ፡እግዚኦ፡እምብእሲ፡ እኩ 1
ይ፡፡ ወእምብእሲ፡ዐማፂ፡ባልሐኒ፡፡=፦

INTERP. ÆTHIOP. [b] & veſtigia mea tu preſſiſti. [c] quæ præceſſerunt & quæ ſequentur. [d] abyſſum, illic ades. [e] Et ſi ſumpſero pennas ſicut aquilæ, & avolavero uſque in extremum maris: [f] habitare faciet me [g] nox etiam illuminatio in gaudio meo. [h] quam diu tenebræ ejus, eſt etiam pariter lux ejus. [i] formâſti renes meos, & ſcientiâ quaſi foviſti me. [k] Domine, quoniam [l] nutritio mea [m] Et hoc quidem quod operatus ſum viderunt [n] non erit ex eis unus. [o] corroborati ſunt à principatu eorum. [p] Quoniam concertabunt in cogitatione eorum: & accipient in vanitate civitates tuas [q] offendebar. [r] Scrutare me Deus & proba cor meum: proba me, & [ſ] deprehenderis in me iniquitatem: &

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

3 * فحصت سبلي وتدابيري * وسبقت رويتك الى جميع طرقي * وانه ليس في لساني من كلام ظلم * 4
5 ها انت يا رب قد عرفت جميع الاواخر والاوايل * انت جبلتني ووضعت يدك علي * فكان علمك 6
7 متعجبا مني * تشددت فلم استطع لها * اين اذهب من روحك * واين اهرب من وجهك * ان 8
9 صعدت الى السماء فانت هناك * وان هبطت الى الجحيم فهناك انت ايضا * وان ارتفعت
10 بجناحين كالنسر * وسقطت في اقاصي البحر * فان يدك تهديني * ويمينك تضبطني * فقلت 11
12 اترى الظلمة تغشاني * فالليل هو نوري في فرحي * لان الظلمة لا تظلم عنك * والليل ينير مثل
13 النهار والظلام كالنور * انت يا رب جبلت كليتي * وقبلتني منذ خرجت من بطن امي * اعترف 14
15 لك لان عجايبك صنعت بعلم عجايب هي اعمالك ونفسي علمت جدا * ولم يخف عنك
16 عظمي الذي خلقته خفيا * وشخصي في مواضع سفل الارض * بدء اعمالي ابصرت عيناك
17 والجميع مكتوب في مصحفك * انت خالق الايام وليس فيها انسان * وانا اكرمني اصحابك جدا يا
18 الله * وجدا عز رياستهم * احصيتهم فيكثرون اكثر من الرمل * قمت وانا معك ايضا * اذا اهلكت 19
20 الخطاة يا الله * يا رجال الدماء حيدوا عني * فانكم متماحكون في الافكار ياخذون مدنك بالباطل * 21
22 * يا رب اليس ابغضت مبغضيك * وسخطت على مخالفيك * ابغضتهم بغضا كاملا فصاروا لي
23 اعداء * اللهم جربني واعلم قلبي * وامتحني واعلم طرقي * وانظر فان رايت في اثما فاهدني الى سبل 24
الابد * الليلويا *

1 * المزمور المائة والتاسع والثلاثون * * لداود * وهو لز * استيخن *
2 * يا رب نجني من انسان شرير * ومن رجل ظالم انقذني *

Scrutatus es ſemitas meas & mores me- 3
os: & prævenit viſio tua omnes vias
meas, Et quòd non ſit in lingua mea ullus 4
ſermo perverſus. Ecce tu O Domine, cog-
noviſti omnia poſtrema & prima: Tu me 5
coagulâſti, & poſuiſti manum tuam ſuper
me: Et reddita eſt ſcientia tua admiran- 6
da apud me. Invaluit, nec potui ad eam.
Quò ibo à ſpiritu tuo? & quò fugiam à 7
facie tua? Si aſcendero ad cœlũ, tu qui- 8
dem illîc es: & ſi deſcendero in inferos,
ibi quoque ades. Sique me evexero dua- 9
bus alis ut aquila, & decidero in extimas
partes maris: Sanè manus tua du- 10
cet me, & dextera tua me continebit. Et 11
dixi, Forſitan tenebræ velabunt me: at
nox eſt lumen in gaudio meo. Nam tene- 12
bræ nil obnubilant à te: & nox elucet ve-
luti dies, & tenebræ veluti lumen. Tu O 13
Domine, compegiſti renes meos, & ex-
cepiſti me à quo egreſſus ſum ex utero
matris meæ. Confiteor tibi, quia miracu- 14
la tua feciſti cum ſcientia: mira ſunt o-
pera tua, & anima mea cognovit multùm.
Non eſt abſtruſũ tibi os meũ quod creâſti 15
occultum, & perſona mea in locis pro-
funditatis terræ. Cœptũ actionũ mearum 16
viderunt oculi tui, & omnia ſcripta ſunt
in libro tuo. Tu creator es dierum, dum
non exiſteret in eis quiſquã. Me autem ve- 17
nerati ſunt amici tui vehementer O Deus:
& valdè roboratus eſt principatus eorum.
Numeravi eos, & multiplicabuntur pluſ- 18
quam arena. Surrexi, & ego tecũ adhuc
ſũ. Quũ perdideris peccatores, O Deus: 19
O viri ſanguinum deflectite à me, Quia 20
temere vos geritis in cogitationibus: ra-
piunt urbes tuas injuſtè. O Domine, nónne 21
odi oſores tuos, & excandui in adver- 22
ſarios tuos? Odi eos odio integro, & facti
ſunt mihi inimici. Deus experire me, & 23
cognoſce cor meum: et ſcrutare me, et co-
gnoſce ſemitas meas: Et conſidera, quòd ſi 24
videris in me iniquitatem, ducito me ad
ſemitas æternitatis. Alleluja.

PSAL. CXXXIX.
Davidis. Verſ. 37. 1

O Domine, libera me ab homine malo, 2
& à viro ſcelerato redime me:

תהלים : קמא

Acuerunt .bella *congregabunt* die omni ,corde in mala cogitaverunt Qui
3 אֲשֶׁר חָשְׁבוּ רָעוֹת בְּלֵב כָּל־יוֹם יָגוּרוּ מִלְחָמוֹת׃ שָׁנְנוּ 4
.Selah ,eorum labiis *ſub* , aſpidis venenum ; ſerpens ſicut ſuam linguam
לְשׁוֹנָם כְּמוֹ־נָחָשׁ חֲמַת עַכְשׁוּב תַּחַת שְׂפָתֵימוֹ סֶלָה׃
qui : me *cuſtodies iniquitatum* viro à , impii manibus à Domine me Cuſtodi
5 שָׁמְרֵנִי יְהוָה ׀ מִידֵי רָשָׁע מֵאִישׁ חֲמָסִים תִּנְצְרֵנִי אֲשֶׁר
funibus & ,mihi laqueum ſuperbi Abſconderunt .meos pedes impellere cogitaverũt
6 חָשְׁבוּ לִדְחוֹת פְּעָמָי׃ טָמְנוּ־גֵאִים ׀ פַּח לִי וַחֲבָלִים
Dixi .Selah ,mihi poſuerunt laqueos : *orbitæ manum ad* rete extenderunt
7 פָּרְשׂוּ רֶשֶׁת לְיַד־מַעְגָּל מֹקְשִׁים שָׁתוּ־לִי סֶלָה׃ אָמַרְתִּי
,mearum deprecationum vocem Domine auſculta : tu meus Deus : Domino
לַיהוָה אֵלִי אָתָּה הַאֲזִינָה יְהוָה קוֹל תַּחֲנוּנָי׃
.*armaturæ* die in meum caput *operuiſti* ; meæ ſalutis fortitudo ,Domine Domine
8 יֱהוִה אֲדֹנָי עֹז יְשׁוּעָתִי סַכֹּתָה לְרֹאשִׁי בְּיוֹם נָשֶׁק׃
,*provehatur* ne ejus *malam* cogitationem ; *impii* deſideria Domine tradas Ne
9 אַל־תִּתֵּן יְהוָה מַאֲוַיֵּי רָשָׁע זְמָמוֹ אַל־תָּפֵק
.eos operiet eorum labiorum *labor* : me circundantium Caput .Selah ,*ſe exaltabunt*
10 יָרוּמוּ סֶלָה׃ רֹאשׁ מְסִבָּי עֲמַל שְׂפָתֵימוֹ יְכַסּוּמוֹ׃
ne ,*profundis* foveas in ,eos faciet cadere ignem in , prunæ eos ſuper Declinabunt
11 יִמּוֹטוּ עֲלֵיהֶם גֶּחָלִים בָּאֵשׁ יַפִּלֵם בְּמַהֲמֹרוֹת בַּל־
ipſũ venabitur :malus rapinæ vir ,terra in firmabitur non linguæ Vir .reſurgant
12 יָקוּמוּ׃ אִישׁ לָשׁוֹן בַּל־יִכּוֹן בָּאָרֶץ אִישׁ־חָמָס רָע יְצוּדֶנּוּ
.mendicorum judicium : *afflicti* judiciũ Dominus faciet quòd Novi .*impulſiones ad*
13 לְמַדְחֵפֹת׃ יָדַעְתִּי כִּי־יַעֲשֶׂה יְהוָה דִּין עָנִי מִשְׁפַּט אֶבְיֹנִים׃
.*tuis faciebus cum* recti habitabunt :tuo nomini confitebuntur juſti Veruntamen
14 אַךְ צַדִּיקִים יוֹדוּ לִשְׁמֶךָ יֵשְׁבוּ יְשָׁרִים אֶת־פָּנֶיךָ׃

PSAL. CXLI. קמא

meam vocem auſculta : me ad feſtina ; te *invocavi* Domine .David ipſi Cantus
1 מִזְמוֹר לְדָוִד יְהוָה קְרָאתִיךָ חוּשָׁה לִּי הַאֲזִינָה קוֹלִי
elevatio : *tuas facies ad* ſuffimentum mea oratio Firmetur .te ad *me clamando in*
2 בְּקָרְאִי־לָךְ׃ תִּכּוֹן תְּפִלָּתִי קְטֹרֶת לְפָנֶיךָ מַשְׂאַת
cuſtodi : meo ori cuſtodiam Domine Pone .*veſperæ munus* mearum *volarum*
3 כַּפַּי מִנְחַת־עָרֶב׃ שִׁיתָה יְהוָה שָׁמְרָה לְפִי נִצְּרָה
moliendum ad malum verbum ad meum cor inclines Ne .meorũ labiorum *janua ſuper*
4 עַל־דַּל שְׂפָתָי׃ אַל־תַּט־לִבִּי ׀ לְדָבָר ׀ רָע לְהִתְעוֹלֵל
comedam non & : iniquitatem operantibus viris cum impietate in *ſtudia*
עֲלִלוֹת ׀ בְּרֶשַׁע אֶת־אִישִׁים פֹּעֲלֵי־אָוֶן וּבַל־אֶלְחַם
oleum ,me increpet & ,miſericordia juſtus me *malleo* Percutiat .eorum *deliciis in*
5 בְּמַנְעַמֵּיהֶם׃ יֶהֶלְמֵנִי צַדִּיק ׀ חֶסֶד וְיוֹכִיחֵנִי שֶׁמֶן
.eorum malis *in* ,mea oratio & ,adhuc quoniam :meum caput frangat ne *capitis*
רֹאשׁ אַל־יָנִי רֹאשִׁי כִּי־עוֹד וּתְפִלָּתִי בְּרָעוֹתֵיהֶם׃
quoniam , mea verba audient & : eorum judices *petræ manus* in ſunt *Demiſſi*
6 נִשְׁמְטוּ בִידֵי־סֶלַע שֹׁפְטֵיהֶם וְשָׁמְעוּ אֲמָרַי כִּי
ore in noſtra oſſa ſunt diſperſa : terra in findens & ,ſcindens Sicut .*fuerunt jucunda*
7 נָעֵמוּ׃ כְּמוֹ פֹלֵחַ וּבֹקֵעַ בָּאָרֶץ נִפְזְרוּ עֲצָמֵינוּ לְפִי
, ſperavi te in ,mei oculi Domine DOMINE te ad Quia .ſepulchri
8 שְׁאוֹל׃ כִּי אֵלֶיךָ ׀ יֱהוִה אֲדֹנָי עֵינָי בְּכָה חָסִיתִי
: mihi tetenderunt ,laquei *manibus* à me Cuſtodi .meam animam effundas ne
9 אַל־תְּעַר נַפְשִׁי׃ שָׁמְרֵנִי מִידֵי פַח יָקְשׁוּ לִי
.iniquitatem operantium tendiculis &
וּמֹקְשׁוֹת פֹּעֲלֵי אָוֶן׃

תרגום TARGUM.

די חשילו בישן בלבא כל יומא מגרגין קרביא׃ 3
מתנין בלישנהון היך חויא ארסא דעכוביתא 4
תחות ספותהון לעלמין׃ נטור יתי יי מן יד 5
דרשיעיא מן גבר חטופין תנטור יתי די חשילו
למנקוף אסתורי׃ כמנו גיותנין פחא לי ואשליא 6
פרסין מצדתא לסטר אורחא תקלין שון לי
תדירא׃ אמרית ליי אלהי אנת אצית יי לקל 7
בעותי׃ אלהים יי עושנא דפורקני טללתא על 8
רישי ביום קרבא׃ לא תתן יי רגוגי דואג רשיעא 9
מחשבתיה לא תספק יסתלקון לעלמין׃
אחיתופל ריש סנהדרי תלמידי לעות מלשינותא 10
דספותהון יחפינון׃ ימטון עליהון גומרין מן 11
שמיא בנורא דגהינם יפלנון בניצין דמחמרין
דלא יקומון לחיי עלמא׃ גבר דמשתעי לישן 12
תליתאי לא אפשר דיתכן בארעא דחיי גבר
חטופא ביש יצודניה מלאך דמותא ינקפניה
בגהנם׃ הבכן גלי קדמי ארום יעבד יי דינהון 13
דעניי דינא דחשיכי׃ ברם צדיקיא יהודון לשמך 14
יתבון תריצי לצלאה קדמך׃

קמא

תושבחתא לדוד יי קריתך חיש לי אצית קלי 1
במקרי לך׃ תתכון צלותי היך קטורת בוסמין 2
קדמך זקפות ידי בצלו היך דורון בסים
דמתקרב ברמש׃ שוי יי מטרא לפומי נטר על 3
זקוף ספותי׃ לא תצלי לבי לפתגם ביש למחשב 4
מחשבן ברשעא עם גברי עבדי שקר ולא
אסעוד בזמר בית משתיהון׃ יטפחנני צדיקא 5
מטול חסדא ויכסנני משח רבות קודשא לא
יבטל מן רישי ארום עד כדון צלותי מסתדרא
בבישתיהון׃ אשתמיטו מבית מדרשא על ידי 6
תקוף דיניהון תיבין ושמעין מימרי ארום
בסימו׃ די כמת גבר דפלח ומבזע במרדיא 7
בארעא הכדין אתבדרו אברנא על פום
קבורתא׃ מטול היכנא לותך אלהים יי עיני 8
מודיקן במימרא סבריית לא תרוקן נפשי׃ נטור 9
יתי מן אידי פחא דאתקילו לי ותקלן עבדי שקר׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Qui cogitaverunt mala in corde, tota die 3
commiſcentes bella. Exacuunt linguam ſuam 4
ſicut ſerpens : venenum aſpidis ſub labiis
eorum in æternũ. Cuſtodi me Dñe de manu 5
impii: de *viro* iniquitatum cuſtodias me,qui
cogitaverunt ſupplantare greſſus meos. Abſconderunt 6
ſuperbi laqueum *mihi*, & funibus
extenderunt rete juxta ſemitam; ſcandala
ponunt mihi continenter. Dixi Dño : 7
Deus meus es tu: exaudi Domine vocem deprecationis
meæ. Deus Dñe fortitudo redem- 8
ptionis meæ, obumbrâſti caput meum in die
belli. Non des Dñe deſideria *Doeg* impii : 9
cogitationi ejus ne ſatisfacias: auferantur in
æternum. Achitophel caput ordinatorũ diſci- 10
pulorum *pravitatis* , inſimulatio labiorum
eorũ cooperiat eos. Cadant ſuper illos car- 11
bones de cœlo; in ignem gehennæ præcipitet
eos in foveas *lutoſas*, de quibus non re-
ſurgant ad vitam æternã. Vir delator lingua 12
triplici nequaquã poſſit dirigi in terra vitæ:
virum pravum *malum* venetur angelus mortis,
& detrudat eum in gehennam. Propterea 13
conſtat mihi quòd faciet Dominus judicium
pauperum & judicium egenorum. Profectò 14
juſti confitebuntur nomini tuo, revertentur
recti ut orent coram te.

Canticum Davidi. 1

PSAL. CXLI.

DOmine invocavi te, feſtina ad me, intende
voci meæ dum clamo ad te. Diriga- 2
tur oratio mea ſicut ſuffimentum aromaticũ
coram te ; elevatio manuum mearum ſicut
munus ſuave quod offertur in veſpere. Pone 3
Domine cuſtodiam ori meo, cuſtodi elevationem
labiorum meorũ. Non declines cor 4
meum in verbum malum, ad cogitandas cogitationes
in impietate, cum viris operantibus
iniquitatem, nec ſuſtentabor cantilena
domus convivii eorũ. Verberabit me juſtus 5
propter miſericordiam, & corripiet me ;
oleum unctionis ſanctuarii non auferet de
capite meo, quoniam adhuc oratio mea ordinatur
in malitiam eorum. Diſtracti ſunt 6
de domo ſcholæ manibus *fortitudinis* judicũ
ſuorum: revertuntur & audiunt verba mea,
quoniã jucunda fuerunt. Sicut vir qui findit 7
& ſcindit *ſarculis* terram ; ſic diſperſa ſunt
membra noſtra in ore ſepulchri. *Quamobrem* 8
ad te Deus Domine oculi mei aſpiciunt :
in Verbum [*tuum*] ſperavi, ne effundas
animam meam. Cuſtodi me de ma- 9
nibus laquei quem poſuerunt mihi, & de
ſcandalis operantium iniquitatem.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

3 * ܕܐܬܚܫܒܘ ܒܝܫܬܐ ܒܠܒܗܘܢ. ܘܟܠܗ ܝܘܡܐ ܟܢܫܘ ܚܪܝܢܐ : * ܕܫܢܘ ܠܫܢܗܘܢ ܐܝܟ
4 ܚܘܝܐ. ܘܚܡܬܐ ܕܐܣܦܣ ܬܚܝܬ ܣܦܘܬܗܘܢ : * ܢܛܪܝܢܝ ܡܪܝܐ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܚܛܝܐ. ܘܡܢ
5 ܓܒܪܐ ܚܛܘܦܐ ܢܛܪܝܢܝ : ܕܐܬܚܫܒܘ ܠܡܬܪܦܘ ܪܓܠܝ. * ܘܛܫܘ ܠܝ ܫܒܝܚܐ ܦܚܐ :
6 ܘܚܒܠܐ ܕܡܨܝܕܬܗܘܢ ܦܪܣܘ ܥܠ ܫܒܝܠܝ. ܘܡܟܫܘܠܐ ܐܪܡܝܘ ܠܝ : * ܙܡܝܪܐ * * ܐܡܪܬ
7 ܠܡܪܝܐ ܕܐܠܗܝ ܐܢܬ. ܨܘܬ ܡܪܝܐ ܠܩܠ ܒܥܘܬܝ * ܡܪܝܐ ܦܪܘܩܝ ܚܝܠܬܢܐ : ܡܛܠܠܬܗ ܕܪܫܝ 8
9 ܒܝܘܡܐ ܕܩܪܒܐ. * ܠܐ ܬܬܠ ܡܪܝܐ ܪܓܬܗ ܠܥܘܠܐ : ܘܡܠܟܗ ܠܐ ܬܣܩ * ܠܪܝܫܝ. ܢܟܣܝܘܢ 10
11 ܥܘܠܐ ܕܣܦܘܬܗܘܢ : * ܢܦܠܘܢ ܥܠܝܗܘܢ ܓܘܡܪܐ. ܢܬܟܪܟܘܢ ܒܢܘܪܐ ܘܠܐ ܢܫܟܚܘܢ
12 ܠܡܩܡ : * ܓܒܪܐ ܠܫܢܢܐ ܠܐ ܢܫܬܪܪ ܒܐܪܥܐ. ܘܠܓܒܪܐ ܥܘܠܐ ܒܝܫܬܗ ܬܨܘܕܝܘܗܝ ܠܚܒܠܐ :
13 * ܝܕܥܬ ܕܥܒܕ ܡܪܝܐ ܕܝܢܐ ܕܡܣܟܢܐ ܘܕܝܢܐ ܕܒܨܝܪܐ. * ܒܪܡ ܙܕܝܩܐ ܢܘܕܘܢ ܠܫܡܟ : 14
ܘܢܬܒܘܢ ܬܪܝܨܐ ܩܕܡ ܐܦܝܟ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ *
1 * ܕܘܝܕ. ܟܕ ܡܬܗܦܟ ܒܬܫܡܫܬܐ ܕܪܡܫܐ : ܘܨܠܘܬܐ ܕܡܫܡܠܝܐ ܒܐܠܗܐ. ܦܬܓܡ ܟܐ.
2 ܡܪܝܐ ܩܪܝܬܟ ܐܢܬ ܥܢܝܢܝ : ܨܘܬ ܠܡܠܝ ܘܩܒܠ. * ܬܬܩܢ ܨܠܘܬܝ ܐܝܟ ܒܣܡܐ ܩܕܡܝܟ : ܩܘܪܒܢܐ
3 ܕܐܝܕܝ ܐܝܟ ܩܘܪܒܢܐ ܕܪܡܫܐ. * ܐܩܝܡ ܡܪܝܐ ܢܛܘܪܐ ܠܦܘܡܝ ܘܢܛܘܪܐ ܠܣܦܘܬܝ : * ܕܠܐ ܢܣܛܐ
4 ܠܒܝ ܠܡܠܬܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܐܥܒܕ ܥܒܕܐ ܕܥܘܠܐ : ܥܡ ܓܒܪܐ ܪܫܝܥܐ ܠܐ ܐܬܡܠܚ ܥܡܗܘܢ.
5 * ܢܪܕܝܢܝ ܙܕܝܩܐ ܘܢܟܣܢܝ : ܡܫܚܐ ܕܪܫܝܥܐ ܪܫܝ ܠܐ ܢܕܗܢ. ܡܛܠ ܕܨܠܘܬܝ ܥܠ ܒܝܫܬܗܘܢ :
6 * ܘܐܬܪܡܝܘ ܒܐܝܕܐ ܕܟܐܦܐ ܕܝܢܝܗܘܢ. ܘܫܡܥܘ ܡܠܝ ܕܒܣܝܡܢ : * ܐܝܟ ܦܠܚܐ ܕܒܙܥ ܐܪܥܐ.
7 ܐܬܒܕܪܘ ܓܪܡܝܗܘܢ ܥܠ ܦܘܡܗ ܕܫܝܘܠ : * ܘܐܢܐ ܠܘܬܟ ܡܪܝܐ ܐܪܝܡܬ ܥܝܢܝ. ܘܥܠܝܟ
8 ܐܬܬܟܠܬ ܠܐ ܬܫܕܐ ܢܦܫܝ : * ܢܛܪܝܢܝ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܫܒܝܚܐ. ܕܛܫܘ ܠܝ ܦܚܐ :

Qui meditati ſunt malitiam in corde ſuo, to- 3
tâque die conciliârunt rixam : Qui acuerunt 4
linguam ſuam ut ſerpentis, & furor aſpidis
eſt ſub labiis eorum. Serva me Domine de 5
manu ſceleſtorum, & à viris rapacib⁹ me cu-
ſtodi:qui cogitaverunt impellere greſſus me-
os, Et abdiderunt mihi ſuperbi laqueos, & 6
funes retium ſuorũ tetenderunt ſuper ſemi-
tas meas,reteq; jecerũt ſuper me.* *Diapſal.**
Dixi Dño, Deus meus es tu,auſculta voci de- 7
precationis meæ Dñe Salvator meus fortiſſi- 8
me,umbraculũ capitis mei die belli. Ne con- 9
cedas Dñe deſideriũ ſuũ iniquo, & conſiliũ
ejus ne aſcendat Ad caput meum.Operiat 10
eos iniquitas labiorũ eorũ:Decidant ſup eos 11
carbones : corruant in ignem, nec valeant
ſurgere. Homo linguax non ſit firmus in ter- 12
ra,& virũ ſceleſtũ ſua malignitas venetur ad
interitũ. Novi quòd facit Dñs judicium pau- 13
perum, & cauſam egenorum. Verùm juſti 14
confitebuntur nomini tuo, & ſedebunt recti
coram facie tua.

PSAL. CXL.

Davidis,quum meditaretur miniſteriũ ve- 1
*ſpertinum.Et oratio perfecti in Deo.Verſ.*21.

DOmine te vocavi, tu me exaudi ; auſculta
verba mea,ac ſuſcipe. Oratio mea 2
ſit ut incenſum coram te : oblatio manuum
mearũ ut oblatio veſpertina. Conſtitue Do- 3
mine cuſtodẽ ori meo, & cuſtodẽ labiis me-
is : Ut non deflectat cor meũ ad verbũ pra- 4
vum,committamq; facinora iniquitatis.Cum
viris impiis haud ſumã ſalẽ cum eis. Doce- 5
bit me juſtus, meque corripiet : oleum impiorum
caput meum non unget ; quoniam o-
ratio mea eſt adversùs malitiam ipſorum, Et 6
repreſſi ſunt manu lapideâ judices eorum:Et
audierunt verba mea quia ſunt jucunda. Ut 7
vomer findens terram, diſperſa ſunt oſſa eo-
rum ad os ſepulchri. At ego Domine ad te 8
levavi oculos meos, tibique fretus ſum : ne
rejicias animã meam. Cuſtodi me de manu 9
ſuperborum,qui abſconderunt mihi laqueos:

Versio VULG. LAT.

3 Qui cogitaverūt iniquitates in corde:
4 totâ die constituebant prælia. Acue-
runt linguas suas sicut serpentis: ve-
5 nenum aspidum sub labiis eorum. Cu-
stodi me, Domine, de manu peccatoris:
& ab hominib⁹ iniquis eripe me. Qui
cogitaverunt supplantare gress⁹ meos:
6 Absconderunt superbi laqueum mihi:
Et funes extenderunt in laqueū: juxta
7 iter scandalū posuerūt mihi. Dixi Dño,
Deus me⁹ es tu: exaudi, Dñe, vocem de-
8 precationis meæ. Dñe, Dñe, virt⁹ salutis
meæ: obumbrâsti sup caput meū in die
9 belli: Ne tradas me, Dñe, à desiderio
meo peccatori: cogitaverunt contra
me, ne derelinquas me, ne fortè exaltē-
10 tur. Caput circuit⁹ eorū: labor labio-
11 rum ipsorū operiet eos. Cadent sup
eos carbones, in ignē dejicies eos: in
12 miseriis non subsistent. Vir linguosus
non dirigetur in terra: virū injustum
13 mala capient in interitu. Cognovi
quia faciet Dñs judicium inopis, &
14 vindictam pauperum. Veruntamen
justi confitebuntur nomini tuo: & ha-
bitabunt recti cum vultu tuo.

Psalmus David. CXL.

1 Domine, clamavi ad te, exaudi me:
intende voci meæ, cùm clamavero
2 ad te. Dirigatur oratio mea sicut in-
censum in conspectu tuo: elevatio ma-
nuū mearum sacrificium vespertinum.
3 Pone, Dñe, custodiā ori meo: & osti-
4 um circumstantiæ labiis meis. Non de-
clines cor meum in verba malitiæ, ad
excusandas excusationes in peccatis.
Cum hominib⁹ operantib⁹ iniquitatē,
& non communicabo cum electis eo-
5 rum. Corripiet me just⁹ in misericor-
dia, & increpabit me: oleū autem
peccatoris non impinguet caput meū.
Quoniā adhuc & oratio mea in bene-
6 placitis eorum: Absorpti sunt juncti
petræ judices eorum. Audient verba
7 mea quoniā potuerunt: Sicut cras-
situdo terræ erupta est sup terrā. Dis-
sipata sunt ossa nostra sec⁹ infernum:
8 Quia ad te, Domine, Domine, oculi
mei: in te speravi, non auferas ani-
9 mam meā: Custodi me à laqueo, quē
statuerunt mihi: & à scandalis ope-
rantium iniquitatem.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

3 †Οἵτινες ἐλογίσαντο (β)ἀδικίας ἐν καρδίᾳ, †ὅλην
4 τὴν ἡμέραν παρετάσσοντο πολέμους. †Ἠκόνησαν γλῶσ-
σαν αὐτῶν ὡσεὶ ὄφεως, †ἰὸς ἀσπίδων ὑπὸ τὰ χείλη
5 αὐτῶν. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. †Φύλαξόν με κύριε ἐκ χειρὸς
ἁμαρτωλοῦ, †ἀπὸ (γ)ἀνθρώπων ἀδίκων ἐξελοῦ με· †
οἵτινες ἐλογίσαντο (δ) τοῦ ὑποσκελίσαι τὰ διαβή-
6 ματά μου, †Ἔκρυψαν ὑπερήφανοι παγίδα μοι· †καὶ
σχοινία διέτειναν παγίδας τοῖς ποσί μου, †ἐχόμενα
τρίβου σκάνδαλον ἔθεντό (ε)μοι. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. †
7 Εἶπα τῷ κυρίῳ, Θεός μου εἶ σύ, †ἐνώτισαι κύριε τὴν
8 φωνὴν τῆς δεήσεώς μου. †Κύριε κύριε, δύναμις τῆς σω-
τηρίας μου, †ἐπεσκίασας ἐπὶ τὴν κεφαλήν μου ἐν ἡμέρᾳ
9 πολέμου. †Μὴ παραδῷς με κύριε ἀπὸ τῆς ἐπιθυμίας
μου ἁμαρτωλῷ· †διελογίσαντο κατ᾽ ἐμοῦ, μὴ ἐγκατα-
λίπῃς με, μή ποτε (ζ)ὑψωθῶσιν. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. †
10 Ἡ κεφαλὴ τοῦ κυκλώματος αὐτῶν, †κόπος τῶν χει-
11 λέων αὐτῶν καλύψει αὐτούς. †Πεσοῦνται ἐπ᾽ αὐτοὺς ἄν-
θρακες (η)πυρὸς ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ καταβαλεῖς αὐτοὺς †
12 ἐν ταλαιπωρίαις, οὐ μὴ ὑποστῶσιν. †Ἀνὴρ γλωσσώ-
δης οὐ κατευθυνθήσεται ἐπὶ τῆς γῆς· †ἄνδρα ἄδικον
13 κακὰ θηρεύσει εἰς (θ)καταφθοράν. †Ἔγνων ὅτι ποι-
ήσει κύριος τὴν κρίσιν τῶν πτωχῶν, καὶ τὴν δίκην τῶν πενή-
14 των. †Πλὴν δίκαιοι ἐξομολογήσονται τῷ ὀνόματί
σου, †(ι)κατοικήσουσιν εὐθεῖς σὺν τῷ προσώπῳ σου.

Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. ρμʹ.

1 †Κύριε ἐκέκραξα πρὸς σέ, εἰσάκουσόν μου· †πρόσ-
χες τῇ φωνῇ τῆς δεήσεώς μου, ἐν τῷ κεκραγέναι με
2 πρὸς σέ. †Κατευθυνθήτω ἡ προσευχή μου ὡς θυ-
μίαμα ἐνώπιόν σου· †ἔπαρσις τῶν χειρῶν μου θυσία ἑ-
3 σπερινή. †Θοῦ κύριε φυλακὴν τῷ στόματί μου, †καὶ θύ-
4 ραν περιοχῆς περὶ τὰ χείλη μου. †Μὴ ἐκκλίνῃς τὴν
καρδίαν μου εἰς λόγους πονηρίας, †τοῦ προφασίζεσθαι
προφάσεις ἐν ἁμαρτίαις. †σὺν ἀνθρώποις ἐργαζομέ-
νοις τὴν ἀνομίαν, †καὶ οὐ μὴ (α)συνδυάσω μετὰ τῶν ἐκλε-
5 κτῶν αὐτῶν. †Παιδεύσει με δίκαιος ἐν ἐλέει καὶ ἐλέγ-
ξει με, †ἔλαιον δὲ ἁμαρτωλοῦ μὴ λιπανάτω τὴν κε-
φαλήν μου, †ὅτι ἔτι καὶ ἡ προσευχή μου ἐν ταῖς εὐδοκίαις
6 αὐτῶν. †Κατεπόθησαν ἐχόμενα πέτρας οἱ κραταιοὶ
7 αὐτῶν· †ἀκούσονται τὰ ῥήματά μου, ὅτι ἡδύνθησαν. †Ὡσεὶ
πάχος γῆς διερράγη ἐπὶ τῆς γῆς, †διεσκορπίσθη τὰ
8 ὀστᾶ (β) ἡμῶν παρὰ τὸν ᾅδην. †Ὅτι πρὸς σὲ κύριε
κύριε, οἱ ὀφθαλμοί μου, †ἐπὶ σοὶ ἤλπισα, μὴ ἀντανέ-
9 λῃς τὴν ψυχήν μου. †Φύλαξόν με ἀπὸ παγίδος ἧς
συνεστήσαντό μοι, †καὶ ἀπὸ (γ)σκανδάλων τῶν ἐργα-
ζομένων τὴν ἀνομίαν.

Vers. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Transl. LAT.

2 Qui cogitaverunt injustitias in 3
[a]corde: totâ die[b]constituebant
prælia. 3 Acuerunt(a)linguā suā, 4
sicut serpentis: venenum aspidū sub
labiis eorū. DIAPSALMA. 4 Custo- 5
di me, Domine, de manu [c]peccato-
ris: ab hominibus injustis erue me. 5
Qui cogitaverunt supplantare gres-
sus meos: Absconderunt superbi la- 6
queū mihi. 6 Et funes[d]extenderūt
laqueos pedib⁹ meis: juxta[e]semi-
tā scandalū posuerunt mihi. DIA-
PSALMA. 7 Dixi Domino, Deus 7
me⁹ es tu: auribus percipe, Domine,
vocē deprecationis meæ. 8 Domine, 8
Domine, (b)virt⁹ salutis meæ: ob-
umbrâsti super caput meum in die
belli. 9 Ne(c)tradas[f]me, Domine, 9
à desiderio meo peccatori: cogitave-
runt advers⁹ me: ne(d)derelinquas
me; nequandò exaltentur. DIA-
PSALMA. 10 (e)Caput circuit⁹ eo- 10
rū: labor labiorū ipsorū operiet eos.
11 Cadēt super eos carbones [g]ignis 11
in(f)terra: & (g)dejicies eos in(h)
miseriis, nō subsistēt. 12 Vir linguo- 12
s⁹ nō(i)dirigetur super terrā: virū
injustū mala(k)venabuntur in inte-
ritum. 13 Cognovi, quia faciet Do- 13
minus judicium inopis: & (l)causā
pauperum. 14 Veruntamen justi cō- 14
fitebuntur nomini tuo: (m)inhabita-
bunt recti(n)[h]cum vultu tuo.

Psalmus David[a]. CXL.

Domine, clamavi ad te, exaudi 1
me: intende voci (a)deprecationis
meæ, cū clamavero ad te. 2 (b)Diri- 2
gatur oratio mea, sicut incensum in
conspectu tuo: elevatio manuū me-
arum (c)sacrificium vespertinum. 3
Pone, Domine, custodiā ori meo, & 3
ostium[b]circumstantiæ circa(d)la-
bia mea. 4 Ne(e)declines cor meum 4
in verba malitiæ, ad excusandas
excusationes in peccatis, 5 cū homi-
nib⁹ operantib⁹ iniquitatē: & nō(f)
communicabo cum electis eorum. 6
(g) [c]Corripiet me justus in mise- 5
ricordia, & arguet me: oleum autē
peccatoris nō impinguet caput me-
um. 7 Quoniā (h) adhuc & oratio
mea[d]in beneplacitis eorum: Ab- 6
sorpti sunt (i)juxta petrā potentes
eorū. Audiēt verba mea, quoniā(k)
[†]dulcuerunt: Sicut(l) crassitudo 7
terræ[e]dirupta est super terrā; 9 dissipata sunt ossa (m)nostra secus infernum. Quoniā ad te, 8
[f]Domine, Domine, oculi mei: in te speravi, ne(n)auferas animam meam. 10 Custodi me à la- 9
queo, quem[g]statuerunt mihi, & à scandalis operantium iniquitatem.

Versio ÆTHIOPICA.

እለ:ዐመፃ:መከሩ: በልቦሙ::ኵሎ:እሚረ: 2
ይረውዱኒ : ይቀትሉኒ::=: ወአብልሑ: ል 3
ሳናሙ:ከመ:አርዌ:ምድር::ሓምዘ:አርዌ:
ምድር:ታሕተ : ከናፍሪሆሙ::=: ዕቀበኒ: 4
እግዚኦ: እምእደ: ኃጥእን::ወእምብእሲ:
ዐመፂ: አድሕነኒ::=: እለ: መከሩ: የዐቅ 5
ጹ:መከይድየ::ወኅብሉ: ሲተ: መሠገርተ:
ዕቡያን::=: ወሠተሩ : አሓባለ : መሣግረ: 6
ለእገርየ::ወአንበሩ:ዕቅፍተ: ውስተ: ፍናት
የ::=: ወእቤሎ: ለእግዚአብሔር: አምላ 7
ኪየ : አንተ :: ወአጽምዓኒ : ቃለ : ስእለት
የ::=: እግዚኦ:እግዚኦ:ኃይለ:መድኃኒት 8
የ::ሰወርከኒ:በዕለተ: ቀትል: መልዕልተ:ር
እስየ::=: ኢትመጥወኒ : እምፍትወትየ:ለኃ 9
ጥእን::ተማከሩ : ላዕሌየ : ወኢትሕድገኒ:
ከመ : ኢይዜኃሩ::=: ወርእሰ : ማዕገቶ 10
ሙ::ወጻማ: ከናፍሪሆሙ: ይድፍኖሙ::=:
ወይደቅ: ላዕሌሆሙ: አፍሐመ: እሳት::ወት 11
ንጽሖሙ:ውስተ:ምድር::በምንደቤ: ከመ:
ኢይክሀሉ: ቀዊመ::=: ብእሲ: ነባቢ: ኢያ 12
ረትዕ:በደበ:ምድር::ወለብእሲ: ዐመፂ: ይ
ንዕዎ: እኪት : ለአማስኖ::=: አእመርኩ: 13
ከመ:ይገብር:እግዚአብሔር: ኵነኔ:ለነደያ
ን:ወፍትሐ : ለምስኪናን::=: ወባሕቱ: ጻ 14
ድቃን:ይገንዩ:ለስምከ::ወይነብሩ:ራትዐን:
ቅድመ:ገጽከ::=:

መዝሙር:ዘደዊት:ማኅሊት::

የሀ እግዚኦ: ጸራኅኩ: ኀቤከ: ስምዐኒ::ወ 1
አጽምእ: ቃለ: ስእለትየ: ዘጸራኅኩ : ኀቤ
ከ::=: ተወከፈኒ: ጸሎትየ: ከመ: ዕጣን:በ 2
ቅድሜከ::አንሥኦ: እደዊየ: መሥዋዕተ:ሰ
ርክ::=: ሢም:እግዚኦ:ዐቃቤ : ለአፉየ:: 3
ወማዕጾ:ዘዓቅም:ለከናፍርየ::=: ኢትሚ 4
ጦ:ለልብየ: ውስተ: ነገረ: እኩይ::ለአምክ
ንዮ: ምክንያት: ለኃጢአት::=: ምስለ: ሰ 5
ብእ:ገበርተ:ዐመፃ::ወኢይትኃበር : ምስለ:
ኅሩያኒሆሙ::=: ገሥጸኒ:በጽድቅ:ወተዘ 6
ለፈኒ:በምሕረት::ወቅብአ: ኃጥእንሰ: ኢይ
ትቀባእ: ርእስየ::=: እስመ: ዓዲ: ጸሎትየ 7
ኒ: ከመ: ይሠሀሉ::ተሰጥሙ: በጥቃ: ኰኵ
ሕ፤ ጽኑዓኒሆሙ::=: ሰምዑኒ: ቃልየ: እስ 8
መ:ተክህለኒ::ከመ:ግዝፈ: ምድር : ተሠጥ
ቁ: ደበ: ምድር ::=: ወተዘርወ፣ አዕጽም 9
ቲሆሙ:በኀበ:ሲኦል::እስመ: ኀቤከ: እግዚ
እ:አዕይንትየ::ብከ:ተወከልኩ:ኢታውፅእ:
ለነፍስየ::=: ዕቀበኒ: እመሠገርት: እንተ: 10
ኀብሉ : ሲተ:: ወእማዕቀፎሙ : ለገበርተ:
ዐመፃ::=:

MS.A. (β)ἀδικίαν (γ)ἀνθρώπου ἀδίκου ῥῦσαί με· (δ)ὑποσκελίσαι (ε) μοι. Εἶπα (ζ)ὑψωθῶσιν. Ἡ κεφαλὴ (η) †ἐν πυρὶ καταβαλεῖς αὐτούς (θ)διαφθοράν. (ι)καὶ κατοικήσουσιν

MS. A. ρμʹ. (α) συνδυάσω (β) αὐτῶν (γ) σκανδάλου

INTERP. ÆTHIOP. PSAL. cxxxix. [a]corde suo: [b]persequuntur me, meq; interficiunt. [c]peccatorum: [d]occultârunt in laqueos [e]semitā meā [f]me à desiderio [g]ignis: & in terrā dejicies eos in miseria, ut subsistere nequeant: [h]corā facie tua. PSAL. Cxl. [a]Canticum. [b] quod firmum sit labiis meis. [c] Corripuit me in justitia, & in misericordia argues me: oleum autem peccatorum. [d] ut misereatur eorum: [e]dirupti sunt super [†]valida sunt: [f] Domine, oculi [g] absconderunt mihi,

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

3 4 * الذين يفكرون بالظلم في قلوبهم * اعدوا الحرب النهار كله * سنوا لسانهم مثل ذي الحية * سم
5 الافاعي تحت شفاههم * احفظني يا رب من يد الخاطي * ومن رجل ظالم خلصني * الذين اسوروا
6 علي ازلاق خطواتي * المتكبرون اخفوا لي فخاخا * ورباطات مدوها فخا لرجلي * وضعوا لي عثر
7 8 بقرب طرقي * فقلت للرب انت هو الاهي * انصت يا رب الي صوت طلبتي * يا رب يا رب يا قوة
9 خلاصي * ظللت علي راسي في يوم الحرب * يا رب لا تسلمني الي الخاطي من قبل شهوتي *
10 11 اشوروا علي فلا تخذلني لئلا يستعلوا * راس فسادهم وتعب شفاههم يغطيهم * يسقط عليهم
12 جمر نار * علي الارض تطرحهم فلا يستطيعون القيام من الشقاء * رجل ذو لسانين لا يستقيم
13 علي الارض * رجل ظالم تصيده الشرور المهلكة * علمت ان الرب يصنع حكما للمساكين *
14 وانتقاما للبائسين * لكن الصديقون يشكرون اسمك والمستقيمون يسكنون مع وجهك * اللويا *

1 * المزمور المائة والاربعون * لداود * وهو * كج * استيخن *

2 صرخت اليك يا رب فاستجب لي * انصت الي صوت طلبتي اذا صرخت اليك * وليستقم تضرعي
3 امامك مثل البخور * ورفع يدي يكون كقربان المساء * يا رب ضع علي فمي حافظا * وعلي شفتي
4 بابا حصينا * لئلا يميل قلبي الي كلام ردي * فيجد سببا من الاسباب الي الخطايا مع اناس
5 عاملي الاثم * ولا اتفق مع مختاريهم * البار يؤدبني برحمة ويوبخني * وزيت الخطاة لن ادهن به
6 7 راسي * ولا صلاتي في مسرتهم * ابتلعوا احكامهم عند الصخرة * اسمعوا قولي فانه نافع * كحديدة
8 الحرث التي تشق الارض * وخلف الجحيم تبددت عظامهم * ان عيوننا اليك يا رب * يا رب عليك
9 توكلت * ولا تنقص نفسي * احفظني من الفخ الذي وضعوه لي ومن شباك فاعلي الاثم *

Qui cogitant scelus in cordibus suis, præ- 3
parârunt prælium totâ die: Acuerunt lin- 4
guā suā veluti serpentis, venenū aspidum
sub labiis eorū. Custodi me O Domine, de 5
manu peccatoris, & à viro flagitioso li-
bera me: qui consultaverunt de labefa-
ctandis gressib⁹ meis. Superbi abdiderunt 6
mihi laqueos, & vincula tetenderunt in
laqueum pedibus meis: posuerunt mihi
offendiculū juxta vias meas. Et dixi Do- 7
mino, Tu es Deus meus, attende O Do-
mine vocem petitionis meæ. O Domine, O 8
Domine, O virtus salutis meæ, obumbrâsti 9
caput meū in die belli: O Domine, ne tra-
das me peccatori ob desideriū meū. Con-
silium inierunt adversùm me, ne me desti-
tuas auxilio, ut ne superbiant. Caput cor- 10
ruptionis eorū, & labor labiorū eorum o-
periat eos. Decidant super eos carbones 11
ignis, super terrā dejice illos, & nequeant
emergere ex ærumnis. Vir ancipitis lingua 12
non consistet super terrā: virum scele-
stum venabuntur mala perniciosa. Novi 13
Dominum facturum esse judicium paupe-
ribus & vindictā egenis; Verùm justi 14
gratias agent nomini tuo, & recti habi-
tabunt cum vultu tuo. Alleluja.

PSAL. CXL. 1

Davidis. Versus 23.

Clamavi ad te, O Domine exaudi
me: intende voci precis meæ, quum
clamavero ad te: Et erigatur supplicatio 2
mea ante te sicut incensum, & elevatio
manuum mearum erit velut sacrificiū ve-
spertinum. O Domine pone super os meum 3
custodem, & super labia mea portam mu-
nitā. ut: ne flectatur cor meū ad sermonē 4
pravum, reperiatq; occasionē aliquā pec-
candi cum hominibus operantibus iniqui-
tatē: neq; conveniā cū selectioribus inter
eos. Innoxius erudiet me clementer corri- 5
pietq;: & oleo peccatorū haudquaquā un-
gam caput meum: neq; oratio mea in bene-
placitum eorū. Deglutierunt judicia sua 6
apud petrā. Audite sermonē meū, quoniā
utilis est. Veluti ferrum arationis quod 7
findit terrā; & retro infernū dispersa
sunt ossa eorum. Certè oculi nostri ad te 8
sunt O Domine: O Domine, tibi sum fi-
sus; nè quæso extermines animā meam.
Custodi me à laqueo, quem posuerunt 9
mihi, & à retibus operantium iniquitatē.

תהלים : קמב קמג

.tranſeam donec ego ſimul : impii ejus retiacula in Cadent
10 יִפְּלוּ בְמַכְמֹרָיו רְשָׁעִים יַחַד אָנֹכִי עַד־אֶעֱבוֹר׃

PSAL. CXLII. קמב

Dominum ad mea Voce .oratio ſpelunca in *ipſum exiſtendo in* David ipſi *Maſchil*
1 2 מַשְׂכִּיל לְדָוִד בִּהְיוֹתוֹ בַמְּעָרָה תְפִלָּה׃ קוֹלִי אֶל־יְהוָֹה
:meā *meditationē ejus facies ad* Effundam .deprecabor Dominum ad mea voce :clamabo
3 אֶזְעָק קוֹלִי אֶל־יְהוָֹה אֶתְחַנָּן׃ אֶשְׁפֹּךְ לְפָנָיו שִׂיחִי
tu & ,meus ſpiritus me *ſuper ſe involvendo* In .annunciabo *ejus facies ad* meā anguſtiā
4 צָרָתִי לְפָנָיו אַגִּיד׃ בְּהִתְעַטֵּף עָלַי רוּחִי וְאַתָּה
Reſpice .mihi laqueum abſconderūt ,ambulabā qua via in :meā ſemitam cognoviſti
5 יָדַעְתָּ נְתִיבָתִי בְּאֹרַח־זוּ אֲהַלֵּךְ טָמְנוּ פַח לִי׃ הַבֵּיט
.meā animā *quærens* non : me à *refugium* periit ;*cognoſcens* me non & ,*vide* & ,dexteram
יָמִין וּרְאֵה וְאֵין־לִי מַכִּיר אָבַד מָנוֹס מִמֶּנִּי אֵין דּוֹרֵשׁ לְנַפְשִׁי׃
.viventium terra in mea portio : mea ſpes Tu ,dixi ,Domine te ad Clamavi
6 זָעַקְתִּי אֵלֶיךָ יְהוָֹה אָמַרְתִּי אַתָּה מַחְסִי חֶלְקִי בְּאֶרֶץ הַחַיִּים׃
:me perſequentib⁹ à me erue ,valdè ſum attenuat⁹ quia :meū *præconium* ad Intende
7 הַקְשִׁיבָה אֶל־רִנָּתִי כִּי־דַלּוֹתִי מְאֹד הַצִּילֵנִי מֵרֹדְפַי
laudandū ad meā animam clauſura de Educ .me *præ fuerunt* robuſtiores quoniā
8 כִּי אָמְצוּ מִמֶּנִּי׃ הוֹצִיאָה מִמַּסְגֵּר נַפְשִׁי לְהוֹדוֹת
.*me ſuper* retribueris cūm : juſti coronabunt me *in* : tuum nomen
אֶת־שְׁמֶךָ בִּי יַכְתִּרוּ צַדִּיקִים כִּי תִגְמֹל עָלָי׃

PSAL. CXLIII. קמג

: *meas deprecationes ad* auſculta ,meā orationem audi Domine .David ipſi Cantus
1 מִזְמוֹר לְדָוִד יְהוָֹה שְׁמַע תְּפִלָּתִי הַאֲזִינָה אֶל־תַּחֲנוּנַי
cum judicium in venias ne Et .*tua juſtitia in* ,me exaudi *tua veritate in*
2 בֶּאֱמֻנָתְךָ עֲנֵנִי בְּצִדְקָתֶךָ׃ וְאַל־תָּבוֹא בְמִשְׁפָּט אֶת־
eſt perſecutus Quia .vivens omnis *tuas facies ad erit juſtus* non quia : tuo ſervo
3 עַבְדֶּךָ כִּי לֹא־יִצְדַּק לְפָנֶיךָ כָל־חָי׃ כִּי רָדַף
, obſcuris in me fecit habitare :meā vitam terram ad *contudit* ,meā animam inimicus
אוֹיֵב נַפְשִׁי דִּכָּא לָאָרֶץ חַיָּתִי הוֹשִׁיבַנִי בְמַחֲשַׁכִּים
deſolabitur mei medio in :meus ſpiritus me *ſuper ſe involvit* Et .ſeculi mortuos ſicut
4 כְּמֵתֵי עוֹלָם׃ וַתִּתְעַטֵּף עָלַי רוּחִי בְּתוֹכִי יִשְׁתּוֹמֵם
omni in ſum,meditatus ;*quondam à* dierum ſum Recordatus .meum cor
5 לִבִּי׃ זָכַרְתִּי יָמִים מִקֶּדֶם הָגִיתִי בְכָל־
: te ad meas manus Expandi .meditabor tuarum manuum opere in : tuo opere
6 פָּעֳלֶךָ בְּמַעֲשֵׂה יָדֶיךָ אֲשׂוֹחֵחַ׃ פֵּרַשְׂתִּי יָדַי אֵלֶיךָ
defecit ,Domine me exaudi Velociter .Selah ,tibi *laſſa* terra ſicut mea anima
7 נַפְשִׁי כְּאֶרֶץ־עֲיֵפָה לְךָ סֶלָה׃ מַהֵר עֲנֵנִי יְהוָֹה כָּלְתָה
deſcendentibus *cum comparabor &* : me à *tuas facies* abſcondas ne : meus ſpiritus
רוּחִי אַל־תַּסְתֵּר פָּנֶיךָ מִמֶּנִּי וְנִמְשַׁלְתִּי עִם־יֹרְדֵי
me fac ſcire ,ſperavi te in quia ,tuā miſericordiā mane *in* me fac Audire .*ciſternam*
8 בוֹר׃ הַשְׁמִיעֵנִי בַבֹּקֶר חַסְדֶּךָ כִּי־בְךָ בָטָחְתִּי הוֹדִיעֵנִי
meis inimicis ab me Erue .meā animam levavi te ad quia : ambulem *qua* viam
9 דֶּרֶךְ־זוּ אֵלֵךְ כִּי־אֵלֶיךָ נָשָׂאתִי נַפְשִׁי׃ הַצִּילֵנִי מֵאֹיְבַי
tu quia ,tuā voluntatē facere me Doce .me abſcondi *te ad* ; Domine
10 יְהוָֹה אֵלֶיךָ כִסִּתִי׃ לַמְּדֵנִי לַעֲשׂוֹת רְצוֹנֶךָ כִּי־אַתָּה
.*rectitudinis* terram in me ducet bonus tuus ſpiritus : meus Deus
אֱלוֹהָי רוּחֲךָ טוֹבָה תַּנְחֵנִי בְּאֶרֶץ מִישׁוֹר׃

תרגום TARGUM.

10 יִפְּלוּן בִּמְצוּדָתְהוֹן רַשִׁיעֵי כַּחֲדָא אֲנָא עַד וְמַן
דִּי אֶעֱבַר׃

קמב

1 שִׂכְלָא טָבָא עַל יְדֵי דָוִד בְּמֶהֱוֵיהּ בְּאַסְפְּלִידָא
2 צְלוֹתָא׃ קָלִי קֳדָם יְיָ אֶקְבַּל קָלִי קֳדָם יְיָ
3 אֶצַלֵּי׃ אֱשׁוֹד קֳדָמוֹי שׁוּתִי עָקְתִי קֳדָמוֹי
4 אֲחַוֵּי׃ בְּאִשְׁתַּלְהֲיוּת עֲלַי רוּחִי וְאַתְּ יָדַעְתְּ
שְׁבִילִי בִּכְבִישָׁא דְנָן דַּאֲהַלֵּךְ כְּמַנוּ פַּחָא לִי׃
5 אִסְתַּכְּלֵית עַל יְמִינָא וַחֲמֵית וְלֵית לִי
מִשְׁתְּמוֹדַע הוֹבַד שֵׁיזָבוּ מִנִּי וְלֵית תָּבַע לְנַפְשִׁי׃
6 קַבְלֵית לְוָתָךְ יְיָ אֲמַרִית אַנְתְּ מְשֵׁיזְבִי חוּלָקִי
7 בְּאַרַע חַיַּיָא׃ אֲצֵית לִצְלוֹתִי אֲרוּם אִתְמַסְכְּנִית
לַחֲדָא פְּצֵי יָתִי מֵרָדְפַי אֲרוּם אִתְחַיִּלוּ מִנִּי׃
8 הַנְפֵּיק מִן מַסְגִּירָא נַפְשִׁי לְאוֹדָאָה יַת שְׁמָךְ
אַמְטוּלְתִי יַעְבְּדוּן לָךְ כְּלִיל דִּשְׁבָח צַדִּיקַיָּא אֲרוּם
תְּשַׁלֵּם גוּמְלָא טָבָא עֲלַי׃

קמג

1 שְׁבָחָא לְדָוִד יְיָ שְׁמַע צְלוֹתִי אֲצֵית לְתַחֲנוּנַי
2 בְּקוּשְׁטָךְ עֲנֵי יָתִי בְּצִדְקְתָךְ׃ וְלָא תֵעוֹל לְבֵית
דִּינָא עִם עַבְדָּךְ אֲרוּם לָא יִזַּכֵּי קֳדָמָךְ כָּל דְּחֵי׃
3 אֲרוּם רְדֵיף בְּעֵל דְּבָבָא נַפְשִׁי דַּכְדֵּךְ לְאַרְעָא
חַיָּתִי אוֹתְבַנִי בַּחֲשׁוֹכַיָּא הֵיךְ שְׁכִיבֵי עַלְמָא
4 הָדֵין׃ בְּאִשְׁתַּלְהֲיוּת עֲלַי רוּחִי בְּגוּשְׁמִי יִשְׁתַּעֲמֵם
5 לִבִּי׃ אִדְכְּרֵית יוֹמִין מִלְּקַדְמִין רְנֵנִית בְּכוּלְהוֹן
6 עוֹבָדָךְ בְּעוֹבָדֵי אִידָךְ אֲמַלֵּל׃ פְּרִיסִית אִידַי בִּצְלוֹ
קֳדָמָךְ נַפְשִׁי הֵיךְ אַרְעָא דְּצַהְיָא לְמַיָּא מוֹדִיקָא
7 לָךְ לְעָלְמִין׃ סַרְהֵב עֲנֵי יָתִי יְיָ רְגִינַת לָךְ רוּחִי
לָא תְסַלֵּק שְׁכִנְתָּךְ מִנִּי וְאִתְמַתְּלֵית עִם נָחֲתֵי
8 גוֹב בֵּית קְבוּרְתָא׃ אַשְׁמִיעַ יָתִי בְּצַפַּר טוּבָךְ
אֲרוּם בְּמֵימְרָךְ סַבְרֵית אוֹדַע יָתִי אוֹרַח דְּנָן
9 דַּאֲהַלֵּךְ אֲרוּם לְוָתָךְ זְקַפִית נַפְשִׁי בִצְלוֹ׃ פְּצֵי
יָתִי מִבַּעֲלֵי דְבָבַי יְיָ מֵימְרָךְ מַנֵּיתִי לְפָרִיק׃
10 אַלֵּף יָתִי לְמֶעְבַּד רְעוּתָךְ אֲרוּם אַנְתְּ אֱלָהַי
רוּחַ קוּדְשָׁךְ טָבָא תְּדַבַּר יָתִי בְּאַרְעָא תְּרִיץ׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Incidant in retiacula *ejus* impii : ſimul ego 10
donec tranſeam [*permanebo.*]

Intellectus bonus per *manus* David, dum 1
eſſet in ſpelunca, oratio.

PSAL. CXLII.

VOce mea coram Domino clamabo, voce 2
mea in conſpectu Domini deprecabor. Ef- 3
fundam coram eo eloquium meum, tribula-
tionem meam coram illo annunciabo. Cùm 4
defeciſſet in me ſpiritus meus, & tu cogno-
viſſes ſemitam meam, in via qua ambulabā,
abſconderunt laqueum mihi. Reſpexi ad 5
dexteram & vidi,et non erat qui cognoſceret
me: periit refugiū à me, & non eſt qui quæ-
rat animam meā. Clamavi ad te Dñe: dixi, 6
Tu es liberator meus, portio mea in terra vi-
ventiū. Auſculta orationē meā, quoniā paup 7
factus ſum multū: libera me à perſecutorib⁹
meis, quoniam fortiores me facti ſunt. Educ 8
de cuſtodia animam meam, ut confiteantur
nomini tuo : in mei gratiam facient tibi co-
ronam laudis juſti ; quoniam reddes retri-
butionem bonam mihi.

Hymnus Davidi. 1

PSAL. CXLIII.

DOmine exaudi orationē meam, auſculta
deprecationes meas; in veritate tua reſponde
mihi, in tua juſtitia. Et non intres in præto- 2
riū cum ſervo tuo; quoniā non juſtificabitur
coram te omnis vivens. Quoniam perſecutus 3
eſt inimicus meus animā meā, conculcavit ad
terram vitam meā; collocavit me in tenebris
ſicut jacentes ſeculi illius. *Cùm* anxius fuit 4
ſuper me ſpiritus meus; in corpore meo per-
culſum eſt ſtupore cor meū. Recordatus ſum 5
dierū antiquorū, meditatus ſum in omnibus
operibus tuis; opera manuū tuarum loquar.
Expandi manus meas in oratione coram te: 6
anima mea ſicut terra quæ indiget aqua, re-
ſpicit ad te in æternū. Feſtina, reſponde mihi 7
Dñe, deſideravit te ſpiritus meus : non amo-
veas majeſtatē tuam à me, ne ſimilis fiam his,
qui deſcendunt in *foveam domus* ſepulchri.
Fac me audire manè benignitatē tuā; quoniā 8
in verbū tuū ſperavi: notam mihi fac viam
hanc in qua ambulē; quoniā ad te animā meā
levavi in oratione. Libera me ab inimicis 9
meis Dñe : Verbum tuum conſtitui Redem-
ptorem [*meum.*] Doce me facere voluntatem 10
tuam, quoniam tu Deus meus es : ſpiritus
ſanctus tuus bonus deducet me in *terram*
rectam.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

10 * ܢܦܠܘܢ ܚܛ̈ܝܐ ܒܡܨܝ̈ܕܬܗܘܢ. ܐܟܚܕܐ ܥܕܡܐ ܕܐܥܒܪ ܐܢܐ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܡܐ *
1 * ܕܕܘܝܕ. ܥܠ ܟܦܢܐ ܕܗܘܐ ܬܠܬ ܫܢ̈ܝܢ ܥܠ ܣܟܠܘܬܗ ܕܫܐܘܠ : ܘܪܘܚܢܐܝܬ ܡ̈ܠܐ ܕܡܬܟܬܫܢܐ
2 ܕܐܬܠܝ̈ܛܐ. ܒܥܘܬܐ ܘܨܠܘܬܐ ܕܡܩܪܒܐ ܠܢ ܠܘܬ ܐܠܗܐ. ܦܬܓ̈ܡܐ ܟܗ. * ܒܩܠܝ ܠܡܪܝܐ
3 ܩܪܝܬ ܒܩܠܝ ܠܡܪܝܐ ܐܬܚܢܢܬ. * ܘܐܫܕܬ ܩܕܡܘܗܝ ܒܥܘܬܝ : ܘܐܘܠܨܢܝ ܩܕܡܘܗܝ
4 ܚܘܝܬ. * ܟܕ ܐܬܬܥܝܩܬ ܪܘܚܝ ܐܢܬ ܝܕܥ ܐܢܬ ܫܒܝ̈ܠܝ : ܒܐܘܪܚܐ ܕܗܠܟܬܝ ܛܫܝܘ ܠܝ
5 ܦܚ̈ܐ. * ܚܪܬ ܠܝܡܝܢܐ. ܘܚܙܝܬ ܘܠܝܬ ܕܢܫܬܘܕܥ ܠܝ : ܐܒܕ ܡܢܝ ܡܥܪܩܐ ܘܠܝܬ ܬܒܘܥܐ
6 ܠܢܦܫܝ. * ܘܩܥܝܬ ܠܘܬܟ ܡܪܝܐ ܘܐܡܪܬ : ܕܐܢܬ ܗܘ ܣܒܪܝ ܘܡܢܬܝ ܒܐܪܥܐ
7 ܕܚ̈ܝܐ. * ܨܘܬ ܠܒܥܘܬܝ ܡܛܠ ܕܐܬܡܟܟܬ ܛܒ : ܦܨܢܝ ܡܢ ܪ̈ܕܘܦܝ ܡܛܠ ܕܥܫܢܘ ܡܢܝ.
8 * ܐܦܩ ܢܦܫܝ ܡܢ ܒܝܬ ܐܣܝܪ̈ܐ ܕܐܘܕܐ ܠܫܡܟ : ܘܒܝ ܢܣܟܘܢ ܙܕܝ̈ܩܐ ܡܐ ܕܦܪܥܬܢܝ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܡܒ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܡܛܠ ܐܕܘܡܝ̈ܐ ܕܐܬܘ ܥܠܘܗܝ : ܘܨܠܘܬܐ ܕܗܘ ܕܡܘܕܐ ܒܟܠܫܥ ܥܠ ܡܬܟܬܫܢܘܬܐ.
2 ܦܬܓ̈ܡܐ ܠܒ. ܫܡܥ ܡܪܝܐ ܨܠܘܬܝ ܘܨܘܬ ܠܒܥܘܬܝ : ܒܡܐܡܪܟ ܥܢܝܢܝ ܘܒܙܕܝܩܘܬܟ. * ܠܐ
3 ܬܥܠܝܘܗܝ ܠܥܒܕܟ ܒܕܝܢܐ : ܡܛܠ ܕܠܐ ܙܕܩ ܩܕܡܝܟ ܟܠ ܕܚܝ. * ܡܛܠ ܕܪܕܦ ܒܥܠܕܒܒܐ
4 ܠܢܦܫܝ : ܘܡܟܟ ܚܝ̈ܝ ܠܐܪܥܐ. ܐܘܬܒܢܝ ܒܚܫܘܟܐ ܐܝܟ ܡܝܬܐ ܕܥܠܡ : * ܐܬܬܥܝܩܬ ܒܝ
5 ܪܘܚܝ ܘܙܥ ܠܒܝ ܒܓܘܝ. * ܐܬܕܟܪܬܟ ܡܪܝܐ ܡܢ ܩܕܝܡ : ܘܐܪܢܝܬ ܒܟܠܗܘܢ ܥܒ̈ܕܝܟ.
6 ܘܐܪܢܝܬ ܒܥܒܕ ܐܝ̈ܕܝܟ * ܘܦܫܛܬ ܐܝ̈ܕܝ ܠܘܬܟ : ܢܦܫܝ ܨܗܝܐ ܠܟ ܐܝܟ ܐܪܥܐ. * ܥܢܝܢܝ
7 ܒܥܓܠ ܡܪܝܐ ܡܛܠ ܕܫܠܡܬ ܪܘܚܝ : ܠܐ ܬܗܦܟ ܐܦ̈ܝܟ ܡܢܝ. ܕܠܐ ܐܬܕܡܐ ܥܡ ܢܚ̈ܬܝ
8 ܓܘܒܐ : * ܐܫܡܥܝܢܝ ܒܨܦܪܐ ܛܝܒܘܬܟ. ܡܛܠ ܕܥܠܝܟ ܗܘ ܬܟܝܠ ܐܢܐ : ܚܘܝܢܝ ܡܪܝܐ ܐܘܪܚܟ
9 10 ܕܐܗܠܟ ܒܗ. ܡܛܠ ܕܠܘܬܟ ܡܪܝܐ ܐܪܝܡܬ ܢܦܫܝ : * ܦܨܢܝ ܡܢ ܒܥܠܕܒ̈ܒܝ * ܘܐܠܦܝܢܝ
ܠܡܥܒܕ ܨܒܝܢܟ. ܡܛܠ ܕܐܢܬܘ ܐܠܗܝ : ܪܘܚܟ ܒܣܝܡܬܐ ܬܕܒܪܢܝ ܒܐܘܪܚܐ ܕܚ̈ܝܐ.

Cadant ſceleſti ſimul in retia ſua, quoaduſ- 10
que pertranſeam ego.

PSAL. CXLI.

Davidis de fame qua duravit tribus annis ob 1
ſcelus Saulis. Spiritualiter autem verba
Agoniſtarum. Petitio & oratio promovens
nos ad Deum. Verſ. 25.

VOce meâ Dñm invocavi, voce meâ Dñm 2
ſum deprecatus : Atque profudi coram 3
eo ſupplicationē meā, & tribulationem meā
corā eo declaravi. Cùm perturbatur ſpiri- 4
tus meus, tu ſcis tramites meos : in via greſ-
ſuū meorū abſconderunt mihi laqueos. Re- 5
ſpexi ad dexterā ac vidi, & non erat qui me
agnoſceret : periit à me effugium, & non eſt
vindex animæ meæ. Et clamavi ad te Dñe ac 6
dixi, Tu es ſpes mea & portio mea in terra
vivorum. Auſculta precē meā, quia humili- 7
atus ſum valdé : Libera me à perſecutoribus
meis, quia prævaluerunt mihi : Educ animā 8
meā è carcere, ut gratias agā nomini tuo, me-
que conſiderent juſti tui cùm mihi repēderis.

PSAL. CXLII.

Davidis. De Idumæis qui venerant adver- 1
sùs eum. Et oratio ejus qui gratias refert
omni horâ pro moleſtiis. Verſ. 32.

AUdi Domine orationē meā, & auſculta
deprecationē meam : per ſermonē tuū
exaudi me, perq; juſtitiā tuā. Ne inducas ſer- 2
vum tuum in judicium, non enim juſtificatur
corā te quiſquā vivens. Quoniam perſecut⁹ 3
eſt inimic⁹ animā meam, proſtravitque vitam
meam humi. Sedere me fecit in tenebris
quaſi mortuū in perpetuum. Perturbatus eſt 4
in me ſpirit⁹ me⁹, atq; trepidavit cor meum
intra me. Recordatus ſum tui Dñe jampridē, 5
& conſideravi cuncta opera tua: ſumq; medi-
tatus opus manuū tuarum, Atq; expandi ma- 6
n⁹ meas ad te. Anima mea ſitiens eſt tui quaſi
terra: Exaudi me celeriter Dñe, quia conſum- 7
ptus eſt ſpiritus me⁹. Ne avertas faciē tuam à
me, ut ne comparer cum deſcendētibus in fo-
veam. Audire me fac in matutino bonitatē 8
tuam, quoniam in te ſum confiſus. Oſtende
mihi Domine viam tuam, ut incedam per eā :
Nam ad te Domine levavi animā meam. Eri- 9
pe me ab hoſtib⁹ meis, Et doce me facere vo- 10
luntatē tuam, quia tu es De⁹ meus. Spirit⁹ tu⁹
ſuavis ducat me per viam tuam vitæ.

Verſio VULG. LAT.

10 Cadent in retiaculo ejus peccatores :
ſingulariter ſum ego donec tranſeam.
1 Intellect⁹ David, Cùm eſſet in ſpelunca, oratio. (1 *Reg.* 24.) CXLI.
2 VOce meâ ad Dñm clamavi : voce
3 meâ ad Dñm deprecatus ſum: Effundo in conſpectu ejus orationem
meā, & tribulationē meā ante ipſum
4 pronuntio. In deficiendo ex me ſpiritū meū, & tu cognoviſti ſemitas meas.
In via hac, quâ ambulabā, abſconderunt
5 laqueū mihi. Conſiderabā ad dexterā, & videbā : & non erat qui cognoſceret
me. Periit fuga à me, & non eſt
6 qui requirat animā meā. Clamavi ad
te, Domine: dixi; Tu es ſpes mea, por-
7 tio mea in terra viventiū. Intende ad
deprecationē meam : quia humiliatus
ſum nimis. Libera me à perſequenti-
8 bus me: quia confortati ſūt ſup me. Educ de cuſtodia animā meā ad confitendū
nomini tuo : me exſpectant ju-
ſti, donec retribuas mihi.

Pſalmus David,
1 Quando perſequebatur eum Abſalom
filius ejus. (2 *Reg.* 17.) CXLII.

DOmine, exaudi orationē meā : auribus
percipe obſecrationem meā
in veritate tua : exaudi me in tua
2 juſtitia. Et non intres in judiciū cum
ſervo tuo : quia non juſtificabitur in
3 conſpectu tuo omnis vivens. Quia
perſecutus eſt inimicus animā meā :
humiliavit in terra vitā meā. Collocavit
me in obſcuris ſicut mortuos ſe-
4 culi : Et anxiatus eſt ſuper me ſpiritus
5 meus, in me turbatū eſt cor meū. Memor
fui dierum antiquorū, meditatus
ſum in omnibus operib⁹ tuis: in factis
6 manuū tuarum meditabar. Expandi
man⁹ mea ad te: anima mea ſicut terra
7 ſine aqua tibi : Velociter exaudi me,
Domine : defecit ſpiritus meus. Non
avertas faciem tuā à me: & ſimilis ero
8 deſcendentib⁹ in lacū. Auditā fac mi-
hi manè miſericordiā tuā : quia in te
ſperavi. Notam fac mihi viā, in qua
ambulē: quia ad te levavi animā meā.
9 Eripe me de inimicis meis, Domine, ad
10 te confugi : Doce me facere voluntatem
tuā, quia Deus meus es tu. Spirit⁹
tuus bonus deducet me in terrā rectā :

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

10 †Πεσοῦνται ἐν ἀμφιβλήστρῳ αὐτοῦ ἁμαρτωλοί, †καταμόνας
εἰμὶ ἐγὼ (δ) ἕως οὗ ἂν παρέλθω.
1 Συνέσεως τῷ Δαυὶδ, ἐν τῷ εἶναι αὐτὸν ἐν
τῷ σπηλαίῳ, προσευχή. ρμα'.
2 †Φωνῇ μου πρὸς κύριον ἐκέκραξα, (α) φωνῇ μου
3 πρὸς κύριον ἐδεήθην. †Ἐκχεῶ ἐναντίον αὐτοῦ
τὴν δέησίν μου, †τὴν θλῖψίν μου ἐνώπιον αὐτοῦ
4 ἀπαγγελῶ. †Ἐν τῷ ἐκλείπειν ἐξ ἐμοῦ τὸ πνεῦμά
μου, †καὶ σὺ ἔγνως τὰς τρίβους μου. †ἐν ὁδῷ ταύτῃ
5 ᾗ ἐπορευόμην, ἔκρυψαν παγίδα μοι. †Κατενόουν
εἰς τὰ δεξιὰ καὶ ἐπέβλεπον, †ὅτι οὐκ ἦν ὁ ἐπιγινώσκων
με· †(β)ἀπώλετο φυγὴ ἀπ' ἐμοῦ, †καὶ οὐκ
6 ἔστιν ὁ ἐκζητῶν τὴν ψυχήν μου. †(γ)Πρὸς σὲ κύριε
ἐκέκραξα, †καὶ εἶπα, Σὺ εἶ ἡ ἐλπίς μου, †μερίς μου
7 ἐν γῇ ζώντων. †Πρόσχες (δ)πρὸς τὴν δέησίν μου,
ὅτι ἐταπεινώθην σφόδρα· †ῥῦσαί με ἐκ τῶν καταδιωκόντων
8 με, †ὅτι ἐκραταιώθησαν ὑπὲρ ἐμέ. †Ἐξάγαγε
ἐκ φυλακῆς τὴν ψυχήν μου, †τοῦ ἐξομολογήσασθαι
τῷ ὀνόματί σου κύριε. †ἐμὲ ὑπομενοῦσι δίκαιοι,
ἕως οὗ ἀνταποδῷς μοι.
1 Ψαλμὸς τῷ Δαυὶδ, Ὅτε αὐτὸν ὁ υἱὸς
(α) καταδιώκει. ρμβ'.
†Κύριε εἰσάκουσον τῆς προσευχῆς μου, †ἐνώτισαι
τὴν δέησίν μου ἐν τῇ ἀληθείᾳ σου, †(β)ἐπάκουσόν
2 μου ἐν τῇ δικαιοσύνῃ σου. †Καὶ μὴ εἰσέλθῃς εἰς
κρίσιν μετὰ τοῦ δούλου σου, †ὅτι οὐ δικαιωθήσεται ἐνώπιόν
3 σου πᾶς ζῶν. †Ὅτι κατεδίωξεν ὁ ἐχθρὸς τὴν
ψυχήν μου, †ἐταπείνωσεν (γ)εἰς τὴν γῆν τὴν ζωήν
μου. †ἐκάθισέ με ἐν σκοτεινοῖς ὡς νεκροὺς αἰῶνος,
4 †Καὶ ἠκηδίασεν ἐπ' ἐμὲ τὸ πνεῦμά μου· †ἐν ἐμοὶ
5 ἐταράχθη ἡ καρδία μου. †Ἐμνήσθην ἡμερῶν
ἀρχαίων· †καὶ ἐμελέτησα ἐν πᾶσι τοῖς ἔργοις σου,
6 †ἐν ποιήμασι τῶν χειρῶν σου ἐμελέτων. †Διεπέτασα
πρὸς σὲ τὰς χεῖράς μου, †ἡ ψυχή μου ὡς γῆ ἄνυδρός
7 (δ) σοι. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. †Ταχὺ εἰσάκουσόν
μου κύριε, ἐξέλιπε τὸ πνεῦμά μου· †μὴ ἀποστρέψῃς
τὸ πρόσωπόν σου ἀπ' ἐμοῦ, †καὶ ὁμοιωθήσομαι
8 τοῖς καταβαίνουσιν εἰς λάκκον. †Ἀκουστὸν ποίησόν
μοι τὸ πρωῒ τὸ ἔλεός σου, †ὅτι ἐπὶ σοὶ ἤλπισα·
†γνώρισόν μοι κύριε ὁδὸν, ἐν ᾗ πορεύσομαι,
9 †ὅτι πρὸς σὲ ἦρα τὴν ψυχήν μου. †Ἐξελοῦ με
ἐκ τῶν ἐχθρῶν μου κύριε, ὅτι πρὸς σὲ κατέφυγον.
10 †Δίδαξόν με τοῦ ποιεῖν (ε)τὸ θέλημά σου, ὅτι θεός
μου εἶ σύ, †τὸ πνεῦμά σου τὸ ἀγαθὸν ὁδηγήσει
με ἐν τῇ εὐθείᾳ.

Ψαλ. ρμ'. MS. A. (δ) ἕως οὗ παρέλθω. Ψαλ. ρμα'.
MS. A. (α) †καὶ ἡ φωνή μου πρὸς τὸν θεὸν, καὶ προσέχιν μοι. Ἐκχεῶ ἐνώπιον αὐτοῦ (β) ἀπόλετο (γ) Ἐκέκραξα πρὸς σὲ κύριε, εἶπα, (δ) εἰς τὴν δέησίν μου, Ψαλ. ρμβ'. (α) κατεδίωξεν. (β) εἰσάκουσόν (γ) εἰς γῆν (δ) σοι. Ταχὺ (ε) τὸ θέλημά σου, * τὸ πνεῦμά σου τὸ ἅγιον

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

11 *Cadeāt in retiaculo (o) ejus peccatores: (p) ſingulariter ſum ego, donec tranſeam.* 10

MS. Æthiop. Po. Gloria Patri, & Filio, & Spiritui Sancto: omni tempore, nunc, & ſemper, & in ſecula ſeculorum, Amen.

Intellectûs ipſi David, cùm eſſet in [a] ſpelunca, (a) oratio. *CXLI.* 1

1 *VOce meâ ad Dominū clamavi: voce meâ ad Dominū deprecatus ſum.* 2
2 *Effundam ante eum* 3
precē meā : tribulationem meam in conſpectu ejus annuntiabo. 3 *In de-* 4
ficiendo ex me ſpiritum meum, & [b] *tu (b) cognoviſti ſemitas meas.* 4
In via hac, quâ ambulabā, abſcondcrunt laqueū mihi. 5 [c] *Conſiderabam* 5
ad dexterā, & videbam : (c) quia non erat, qui cognoſceret me. 6
Periit fuga à me: & non eſt qui requirat animam meam. 7 *Ad te, (d)* 6
Domine, clamavi: & dixi, Tu es ſpes mea, [d] *portio mea in terra viventium.* 8 *(e) Intende ad deprecationē* 7
meā: quia humiliatus ſum nimis. 9
Erue me à perſequentibus me: quoniam corroborati ſunt ſuper me: 10
Educ de (f) cuſtodia animā meam, 8
ut confiteatur nomini tuo, Domine. Me (g) ſuſtinebunt juſti, quoadusque retribuas mihi.

Pſalmus ipſi (a) David, Quando eum filius perſequebatur. *CXLII.* 1

1 *DOMINE, exaudi orationem meā: auvib⁹ percipe precē meam in (b) veritate tua, exaudi me in*
tua juſtitia. 2 *Et nō intres in judiciū* 2
cum ſervo tuo : quia non juſtificabitur in conſpectu tuo omnis vivens. 3
Quoniā perſequutus eſt inimicus 3
animā meā, humiliavit in (c) terrā vitā meam. 4 *Collocavit me in tenebroſis, ſicut mortuos ſeculi: Et (d)* 4
[a] *anxiat⁹ eſt ſuper me ſpirit⁹ meus: In me turbatum eſt cor meum.* 5
Memoratus ſum dierū antiquorū; 5
& meditatus ſum in omnib⁹ operib⁹ tuis: in (e) facturis manuū tuarū meditabar. 6 [b] *Expandi manus meas* 6
ad te: anima mea, ſicut terra [c] *ſine aqua tibi.* DIAPSALMA. 7 *Cito exaudi me, Domine:* [d] *defecit ſpirit* 7
meus. 8 *Ne (f) avertas faciem tuā à mè, &* [e] *ſimilis ero deſcendentibus*
in lacū. 9 *Auditā fac mihi (g) manè miſericordiā tuā, quia in te ſperavi.* 8
10 *Notā fac mihi, Domine, viam, in qua ambulē: quoniā ad te levavi animā meā.* 11 *Exime me de* 9
inimicis meis, Domine: quia ad te confugi. Doce me [f] *ut faciā voluntatem* 10
tuā: quia Deus meus es tu : 12 *Spiritus tuus* [g] *bonus deducet me in (h) rectam:*

Verſio ÆTHIOPICA.

ለይደቁ፡ውስተ፡መሠገርቶሙ፡ኃጥኣን። እ 11
ስከ፡እኅልፍ፡አነ፡ባሕቲትየ።=፥
ስብሐት፡ለአብ፡ወወልድ፡ወመንፈስ፡ቅዱስ፡
ኵሉ፡ጊዜ፡ይእዜኒ፡ወዘልፈኒ፡ወለዓለመ፡
ዓለም፡አሜን፡=፥
አእምሮ፡ዘደዊት፡አመ፡ሀሎ፡ውስተ፡በዓት።
፻፵፩ ቃልየ፡ኀበ፡እግዚአብሔር፡ጸራኅኩ። 1
ቃልየ፡ኀበ፡እግዚአብሔር፡ሰአልኩ።=፥ ወ 2
እክዑ፡ቅድሜሁ፡ስእለትየ። ወእነግር፡ቅድ
ሜሁ፡ሕማምየ።=፥ ሶበ፡ተኀልቅ፡ነፍስየ፡ 3
በላዕሌየ። አንተ፡እግዚኦ፡ተአምር፡ፍኖት
የ።=፥ በዛቲ፡ፍኖት፡እንተ፡ሖርኩ፡ወኀብ 4
ኡ፡ሊተ፡መሠገርተ።=፥ ወተመየጥኩ፡መን 5
ገለ፡የማንየ፡ወሊርኢኩ። ወኃጣእኩ፡ዘየአ
ምረኒ።=፥ ወኀበዊ፡አምስጥ፡አልብየ። ወ 6
አልቦ፡ዘይትኀሠሠ፡በእንተ፡ነፍስየ።=፥ ኀ 7
ቤከ፡እግዚኦ፡ጸራኅኩ፡ወእቤለከ፡አንተ፡ተ
ስፋየ። ወአንተ፡መክፈልትየ፡በምድረ፡ሕያ
ዋን።=፥ ነጽር፡ስእለትየ፡እስመ፡ሐመምኩ፡ 8
ፈድፋደ።=፥ አድኅነኒ፡እምእለ፡ሮዱኒ፡ 9
እስመ፡ይሄይሉኒ።=፥ ወአውፅአ፡እሞቅሕ፡ 10
ለነፍስየ። ከመ፡እገኒ፡ለስምከ፡እግዚኦ።
ኪያየ፡ይፀንሑ፡ጻድቃን፡እስከ፡ሶበ፡ተአስየ
ኒ።=፥ መዝሙር፡ዘደዊት፡ዘአመ፡
ይስዱ፡ወልዱ።
፻፵፪ እግዚኦ፡ስምዐኒ፡ጸሎትየ። ወአጽም 1
ኣኒ፡ስእለትየ፡በጽድቅከ። ወስምዐኒ፡በርት
ዕከ።=፥ ወኢትባእ፡ውስተ፡ቅሠት፡ምስ 2
ለ፡ገብርከ። እስመ፡ኢይጸድቅ፡ኵሉ፡ሕያ
ው፡በቅድሜከ።=፥ እስመ፡ሮደ፡ጸላኢ፡ለ 3
ነፍስየ። ወአኅሰረ፡ውስተ፡ምድር፡ለሕይወ
ትየ።=፥ ወአንበረኒ፡ውስተ፡ጽልመት፡ከመ፡ 4
ምውት፡ትካት። ወቀብጸተኒ፡ነፍስየ፡በላዕ
ሌየ። ወደንገፀኒ፡ልብየ፡በውስጤየ።=፥
ወተዘከርኩ፡መዋዕለ፡ትካት። ወአንበብኩ፡ 5
በኵሉ፡ግብርከ። ወአነብብ፡ግብረ፡እደዊ
ከ።=፥ ወአንሣእኩ፡እደዊየ፡ኀቤከ፡ነፍ 6
ስየኒ፡ከመ፡ምድረ፡በድው፡ጸምአተከ።=፥
ፍጡነ፡ስምዐኒ፡እግዚኦ፡ኀለፈት፡ነፍስ 7
የ።=፥ ወኢትሚጥ፡ገጸከ፡እምኔየ። ወኢ 8
ይኩን፡ከመ፡እለ፡ይወርዱ፡ውስተ፡አዘቅ
ት።=፥ ዘይሰማዕ፡ገበረ፡ሊተ፡ምሕረትከ፡ 9
በጽባሕ። እስመ፡ኪያከ፡ተወከልኩ፡እግዚ
ኦ።=፥ ምርሐኒ፡እግዚኦ፡ፍኖተ፡እንተ፡ባ 10
ቲ፡አሐውር። እስመ፡ኀቤከ፡አንቃዕደኩ፡
ነፍስየ።=፥ አድኅነኒ፡እግዚኦ፡እምፀርየ። 11
እስመ፡ኀቤከ፡ተማኅፀንኩ። ምህረኒ፡እግዚ
ኦ፡ለገቢረ፡ፈቃድከ፡እስመ፡አምላኪየ፡አ 12
ንተ።=፥ ወመንፈስከ፡ቅዱስ፡ይምርሐኒ፡
በምድረ፡ጽድቅ።

INTERP. ÆTHIOP. *PSAL. CXLI.* [a] ſpelunca. [b] tu Domine. [c] Converſus ſum ad dexteram, & non videbam: [d] & tu es portio *PSAL. CXLII.* [a] contracta eſt in me anima mea: & in [b] Et levavi manus [c] deſerta ſitit ad te. [d] tranſit anima mea. [e] ne fiam ſicut illi qui deſcendunt [f] Domine ut [g] ſanctus

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* تسقط الخطاة في شباكهم إلى أن أجوز وحدي وأنجو منهم * الليلويا * 10

* المزمور المائة والحادي والاربعون * لداود * لما كان في المغارة مصليا * وهو يج استيخن * 1

* أعلنت بصوتي إلى الرب وطلبت من الرب بصوتي * وأفيض أمامه طلبتي * وأفرغ قدامه 2 3
حزني * حين فنيت روحي مني أنت علمت سبلي * في طريقي هذه التي أسلك فيها * أخفوا لي 4
فخاخا * التفت من يميني ونظرت انه ان يكون من يعرفني * ضل عني الهرب وليس طالب 5
لنفسي * فصرخت إليك يا رب * وقلت أنت هو رجائي وحظي في أرض الأحياء * أنصت إلى 6 7
طلبتي فإني قد ذللت جدا * نجني من الطاردين لي فإنهم اعتزوا أكثر مني * أخرج نفسي 8
من الحبس لكي أشكر اسمك يا رب * فإياي ينتظر الأبرار حتى تجازيني * الليلويا *

* المزمور المائة والثاني والاربعون * لداود * لما كان أبشلوم ولده يطارده * وهو كح استيخن * 1

يا رب اسمع صلاتي بحقك * أنصت لسؤالي بعدلك * استجب لي * ولا تحاكم عبدك * فإن كل 2
حي لا يتزكى أمامك * وإن العدو اضطهد نفسي * وأذل في الأرض حياتي * أجلسني في 3
الظلمات كأموات دهرية * حزن روحي علي * قلق قلبي في باطني * تذكرت الأيام السالفة 4 5
درست في جميع أعمالك * وفي خلق يديك * بسطت يدي نحوك * صارت نفسي إليك مثل 6
أرض عديمة الماء * استجب لي يا رب عاجلا فقد فنيت روحي * لا تصرف وجهك عني * فأصير 7
كالهابطين في الجب * أسمعني رحمتك في الغدوات فإني عليك توكلت * علمني يا رب الطريق 8
التي أسلكها فإني رفعت نفسي إليك * نجني من أعدائي فإني لجأت إليك * علمني أن 9 10
أصنع مشيئتك فإنك أنت هو إلهي * وليهدني روحك القدس إلى سبل الاستقامة *

Cadant peccatores in retia ſua, donec pertranſeā ſolus, & liberer ab eis. Alleluja. 10

PSAL. CXLI.

Davidis, quum eſſet in ſpelunca orans. Verſ. 13. 1

REvelavi voce meâ Domino, & deprecatus ſum Dominum voce meâ. 2
Et 3 *fundo corā ipſo precem meā, & evacuo ante illum mœrorem meum. Quum defi-* 4
ceret ſpiritus meus à me, tu cognoviſti ſemitas meas: in via mea hac in qua ambulo, abſconderunt mihi laqueos. Verti me ad 5
dexterā meā, & conſideravi num adeſſet qui me cognoſceret. Aberravit à me fuga, & non eſt qui quærat animā meā. Qua- 6
propter clamavi ad te O Domine, & dixi; Tu es ſpes mea & ſors mea in terra vivorum. Auſculta deprecationem meam, 7
quia humiliatus ſum valdè. Libera me à perſequentibus me, quia invaluerunt plus me. Educ animā meā è carcere, ut gratias 8
agam nomini tuo O Domine: me enim expectant innocentes donec retribuas mihi. Alleluja.

PSAL. CXLII.

Davidis, quum Abſalom filius ejus perſequeretur eum. Ver. 28. 1

O Domine, audi orationem meam per veritatem tuā : auſculta petitionem meam ex juſtitia tua : exaudi me. Et ne 2
committas judicium cum ſervo tuo, quia ullus vivens non juſtificabitur ante te. Et quidem inimicus perſecutus eſt animā 3
meā, & depreſſit humi vitā meā : ſedere me fecit in tenebris ut mortuos æternos. Contriſtatus eſt ſpiritus meus in me, 4
turbatum eſt cor meum in inteſtinis meis. Recordatus ſum dierum præteritorum, ex- 5
ercui me in omnibus operibus tuis, & meditatus ſum creaturā manuum tuarum. Extendi manus meas erga te: facta 6
eſt anima mea ad te tanquam terra carens aquâ. Exaudi me O Domine, cito: jam 7
enim conſumptus eſt ſpiritus meus. Ne avertas faciem tuam à me, fiamque ſicuti deſcendentes in foveam. Audire fac me 8
miſericordiam tuam in matutinis: quoniam in te confiſus ſum. Doce me O Domine, viam per quam ambulem: quia levavi animam meam ad te. Salva me ab 9
inimicis meis, quoniam confugi ad te. Doce me facere voluntatem tuam, quia 10
tu es Deus meus. Et ducat me ſpiritus ſanctitatis tuæ ad ſemitas rectitudinis.

תהלים : קמד קמה

anguſtia de educes *tua juſtitia in* : me vivificabis Domine tuum nomen Propter
11 לְמַעַן־שִׁמְךָ יְהוָה תְּחַיֵּנִי בְּצִדְקָתְךָ תּוֹצִיא מִצָּרָה 11
omnes perdes & ,meos inimicos *excindes tua miſericordia in* Et .meam animam
12 נַפְשִׁי׃ וּבְחַסְדְּךָ תַּצְמִית אֹיְבָי וְהַאֲבַדְתָּ כָּל־ 12
.tuus ſervus ego quia : meæ animæ hoſtes
צֹרְרֵי נַפְשִׁי כִּי אֲנִי עַבְדֶּךָ׃

PSAL. CXLIV. קמד

,*conflictum* ad meas manus *docens mea rupes* Dominus Benedictus .David Ipſi
1 לְדָוִד בָּרוּךְ יְהוָה צוּרִי הַמְלַמֵּד יָדַי לַקְרָב 1
me liberator &,mea elevatio,mea arx &,mea Miſericordia .bellum ad meos digitos
2 אֶצְבְּעוֹתַי לַמִּלְחָמָה׃ חַסְדִּי וּמְצוּדָתִי מִשְׂגַּבִּי וּמְפַלְטִי 2
Domine .me ſub meũ populum *ſternens* : ſperavi ipſo in & ,meum ſcutum ,mihi
3 לִי מָגִנִּי וּבוֹ חָסִיתִי הָרוֹדֵד עַמִּי תַחְתָּי׃ יְהוָה 3
vanitati Homo ? eum reputâſti & ,hominis filius : eũ cognoviſti & ,homo quid
4 מָה־אָדָם וַתֵּדָעֵהוּ בֶּן־אֱנוֹשׁ וַתְּחַשְּׁבֵהוּ׃ אָדָם לַהֶבֶל 4
,tuos cœlos inclina Domine .tranſiens umbra ſicut ejus dies : eſt ſimilis
5 דָּמָה יָמָיו כְּצֵל עוֹבֵר׃ יְהוָה הַט־שָׁמֶיךָ 5
:eos diſperge *fractos* & ,fulgur Fulgura .fumigabunt & ,montes *in* tange *: deſcendes* &
6 וְתֵרֵד גַּע בֶּהָרִים וְיֶעֱשָׁנוּ׃ בְּרוֹק בָּרָק וּתְפִיצֵם 6
,me redime ,excelſo de tuas manus Mitte .illos *diſturbabis* & ,tuas ſagittas mitte
7 שְׁלַח חִצֶּיךָ וּתְהֻמֵּם׃ שְׁלַח יָדֶיךָ מִמָּרוֹם פְּצֵנִי 7
eorum os Quorum .*alienigenæ* filiorum manu è : multis aquis ex me erue &
8 וְהַצִּילֵנִי מִמַּיִם רַבִּים מִיַּד בְּנֵי נֵכָר׃ אֲשֶׁר פִּיהֶם 8
canticum Deus .*falſitatis* dextera ,eorum dextera & : mendacium eſt locutus
9 דִּבֶּר־שָׁוְא וִימִינָם יְמִין שָׁקֶר׃ אֱלֹהִים שִׁיר 9
ſalutem *Dans* .tibi canam decachordo ,*nebel* in ; tibi cantabo novum
10 חָדָשׁ אָשִׁירָה לָּךְ בְּנֵבֶל עָשׂוֹר אֲזַמְּרָה־לָּךְ׃ הַנּוֹתֵן תְּשׁוּעָה 10
me erue & ,me Redime .malo gladio de ſuũ ſervum David *redimens* ,regibus
11 לַמְּלָכִים הַפּוֹצֶה אֶת־דָּוִד עַבְדּוֹ מֵחֶרֶב רָעָה׃ פְּצֵנִי וְהַצִּילֵנִי 11
,eorũ dextera & :mendaciũ eſt locutum *eorum* os quorum ,*alienigenæ* filiorũ manu de
מִיַּד בְּנֵי־נֵכָר אֲשֶׁר פִּיהֶם דִּבֶּר־שָׁוְא וִימִינָם
:ſuis adoleſcẽtiis in *grandeſcentes* plantationes ſicut noſtri filii Ut .*falſitatis* dextera
12 יְמִין שָׁקֶר׃ אֲשֶׁר בָּנֵינוּ כִּנְטִעִים מְגֻדָּלִים בִּנְעוּרֵיהֶם 12
plena noſtra Penaria .*templi ſimilitudine* inciſi anguli ſicut noſtræ filiæ
13 בְּנוֹתֵינוּ כְזָוִיֹּת מְחֻטָּבוֹת תַּבְנִית הֵיכָל׃ מְזָוֵינוּ מְלֵאִים 13
millia decẽ parientes,mille parientes noſtræ pecudes,ſpeciem ad ſpecie de *educentia*
מְפִיקִים מִזַּן אֶל־זַן צֹאונֵנוּ מַאֲלִיפוֹת מְרֻבָּבוֹת
: egrediens nec ,*irruptio* non onuſti noſtri Boves .noſtris plateis in
14 בְּחוּצֹתֵינוּ׃ אַלּוּפֵינוּ מְסֻבָּלִים אֵין פֶּרֶץ וְאֵין יוֹצֵאת 14
beatitates : ei ſic cui *populi Beatitates* .noſtris plateis in clamor nec
15 וְאֵין צְוָחָה בִּרְחֹבֹתֵינוּ׃ אַשְׁרֵי הָעָם שֶׁכָּכָה לּוֹ אַשְׁרֵי 15
.ejus Deus DOMINUS cujus ,*populi*
הָעָם שֶׁיְהוָה אֱלֹהָיו׃

PSAL. CXLV. קמה

tuo nomini benedicam & : rex meus Deus te Exaltabo .David ipſi Laus
1 תְּהִלָּה לְדָוִד אֲרוֹמִמְךָ אֱלוֹהַי הַמֶּלֶךְ וַאֲבָרְכָה שִׁמְךָ 1
.perpetuum in & ,ſeculum in
לְעוֹלָם וָעֶד׃

תרגום TARGUM.

מִן בְּגַלַל שְׁמָךְ יְיָ תְּקַיְּמִנַנִי בְּצִדְקָךְ אַפֵּק מִן עָקְתָא 11
נַפְשִׁי׃ וּבְחִסְדָּךְ תְּמַגַּר בַּעֲלֵי דְבָבַי וּתְהוֹבֵד 12
כָּל מְעִיקֵי נַפְשִׁי אֲרוּם אֲנָא עַבְדָּךְ׃

קמד

עַל יַד דָּוִד בְּרִיךְ יְיָ תּוּקְפִּי דִּמְאַלֵּף אִידַי לִסְדְרֵי 1
קְרָב אֶצְבְּעָתַי לְאַגָּחָא קְרָבָא׃ עָבֵד טֵיבוּ וּכְרַךְ 2
תַּקִּיפִי תָּקְפִּי וּמְשֵׁזֵב יָתִי תְּרִיסִי וּבְמֵימְרֵיהּ
סְבָרִית דִּי מְרַדֵּד עַמִּין תְּחוֹתַי׃ יְיָ מָה הוּא 3
בַּר נָשׁ דְּחַכִּימְתֵּיהּ בְּנֵי אֱנָשָׁא וַחֲשַׁבְתֵּיהּ׃ בַּר 4
נָשׁ לִלְמָא אִדְמָא יוֹמוֹי הֵיךְ טוּלָא דְעָבַר׃ יְיָ 5
אַרְכֵין שְׁמַיָּא וְאִתְגְּלֵי קְרַב בְּטוּרַיָּא וּמַסְּקִין
תְּנָנָא׃ אַבְרֵיק בַּרְקָא וּבַדְּרִנּוּן שַׁדַּר גִּרָרִין 6
תְּשַׁגְשְׁנוּן׃ אוֹשִׁיט יְדָךְ מִן שְׁמֵי מְרוֹמָא פְּצִי 7
יָתִי וְשֵׁיזֵיב יָתִי מֵאוֹכְלוֹסִין דִּמְתִילִין לְמַיִין
סַגִּיעִין מִן יְדֵהוֹן דִּבְנֵי נוּכְרָאִין׃ דִּי פּוּמְהוֹן 8
מְמַלֵּל מוּמְתָא דְמַגָּן וְאוֹרַיְתְהוֹן אוֹרַיְת שִׁקְרָא׃
אֱלֹהִים שְׁבָח חֲדַת אֲשַׁבַּח קֳדָמָךְ בְּנִבְלָא 9
עַסְרְתֵּי נִימִין אֲזַמֵּר קֳדָמָךְ׃ דִּיהַב פּוּרְקָן לְמַלְכַיָּא 10
דִּפְצֵי יָת דָּוִד עַבְדֵּיהּ מֵחַרְבָּא בִּישָׁא דְגָלְיַת׃
פְּצֵי יָתִי וְשֵׁיזֵיב יָתִי מִידֵיהוֹן דִּבְנֵי נוּכְרָאִין דִּי 11
פּוּמְהוֹן מַלֵּל מוּמְתָא דְמַגָּן וְאוֹרַיְתְהוֹן אוֹרַיְת
שִׁקְרָא׃ דִּבְנָנָא כִּנְצִיבִין דְּדִקְלִין בְּאוּלְפַן 12
אוֹרַיְתָא רַבְיָן מִן טַלְיוּתְהוֹן בְּנָתָנָא זְוָתַנִין
וּכְשֵׁרִין לְכַהֲנַיָּא דִּמְשַׁמְּשִׁין בִּמְצַע הֵיכְלָא׃
תּוּסְבְּרָנָא מַלְיָן מְסַפְּקָן מִן שַׁתָּא לְשַׁתָּא 13
עָאנָנָא מֵילְדָן אַלְפַיָּא מַפְשָׁן רִבְוָתָא בְּאַשְׁקָקָנָא׃
תּוֹרָנָא מָרֵי מַטּוֹל לֵית תְּקוֹף וְלָא מַפְּקָא 14
בִּישָׁא וְלֵית צְוָחַת בְּכִיתָא בִּפְלַטְיָתָנָא׃
טוּבוֹי דְעַמָּא דְהָכְדֵין לֵיהּ טוּבוֹי דְעַמָּא דַיְיָ 15
אֱלָהֵיהּ׃

קמה

תּוּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד אֲרוֹמְמִנָּךְ אֱלָהִי מַלְכָּא 1
וַאֲבָרֵךְ שְׁמָךְ לְעָלְמֵי עָלְמִין׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Propter nomen tuum Deus erige me; in 11
juſtitia tua *educ* de afflictione animam meã.
Et in miſericordia tua diſperdes inimicos 12
meos, & perdes omnes qui in anguſtias
adigunt animam meam; quoniam ego ſervus
tuus ſum.

Per manum Davidis. 1

PSAL. CXLIV.

BEnedictus Dominus fortitudo mea, qui
docet manus meas ad ordines belli, digitos
meos ad movendum prælium. Auctor be- 2
nignitatis meæ, & arx *valida mea, fortitudo
mea* & liberator meus, ſcutum meum, &
in Verbo ejus ſperavi, qui ſubjicit popu-
los ſub me. Domine quid eſt homo ut 3
agnoſcas eum; filius hominis ut reputes
eum? Homo vanitati ſimilis eſt, dies ejus 4
ſicut umbra quæ præteriit. Domine inclina 5
cœlos, & manifeſta te; tange montes, &
emittent fumum. Fulgura *fulgurationem*, & 6
diſſipa eos; emitte ſagittas [*tuas*,&] con-
turbabis eos. Extende manum tuam de cœ- 7
lis excelſis, eripe & libera me de exercitibus
ſimilibus aquis multis, de manu filiorum
alienorum. Quorum os locutum eſt jura- 8
mentum vanum, & lex eorum lex iniquita-
tis. Deus hymno novo laudabo coram te, in 9
pſalterio decem chordarum pſallam coram
te. Qui das ſalutem regibus, qui liberâſti 10
David ſervum tuum à gladio pravo *Goliath*.
Libera me, & eripe me de manu filiorum 11
alienorum, quorum os locutum eſt juramen-
tum vanitatis, & lex eorum lex mendacii.
Quòd filii noſtri ſint ſicut plantationes 12
dactylorum in doctrina Legis, nutriti à ju-
ventute ſua: filiæ noſtræ ſplendidæ, & ac-
ceptæ ſacerdotibus qui miniſtrant in medio
templi. Cellaria noſtra plena, ſuperexu- 13
berantia quotannis; oves noſtræ parientes
millia, multiplicantes in myriadas in ſtabu-
lis noſtris. Tauri noſtri *patientes oneris*: 14
non eſt fortitudo, non eſt prolatio mala,
non eſt clamor luctuoſus in plateis noſtris.
Beatus populus cui ſunt hujuſmodi: beatus 15
populus, cujus DOMINUS eſt Deus
ejus.

Hymnus Davidi. 1

PSAL. CXLV.

EXaltabo te Deus meus Rex, & benedi-
cam nomen tuum in ſecula ſeculorum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

11 * ܡܛܠ ܫܡܟ ܡܪܝܐ ܒܝܐܝܢܝ: ܡܛܠ ܙܕܝܩܘܬܟ ܐܦܩ ܢܦܫܝ ܡܢ ܐܘܠܨܢܐ. * ܘܒܛܝܒܘܬܟ 11
12 ܫܬܩ ܠܒܥܠܕܒܒܝ: ܘܐܘܒܕ ܠܒܥܠܕܒܒܘܗܝ ܕܢܦܫܝ. ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܥܒܕܟ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܡܓ *

* ܕܕܘܝܕ. ܟܕ ܩܛܠ ܠܐܣܦ ܐܚܘܗܝ ܕܓܘܠܝܕ. ܘܬܘܕܝܬܐ ܕܗܘ ܕܙܟܐ. ܦܬܓܡܐ ܠܚ. 1
ܒܪܝܟ ܗܘ ܡܪܝܐ ܕܐܠܦ ܐܝܕܝ ܠܩܪܒܐ. ܘܨܒܥܬܝ ܠܩܪܒܐ: * ܓܘܣܝ ܘܦܪܘܩܝ. 2
ܡܣܝܥܢܝ ܕܒܗ ܬܟܠܬ: ܘܫܥܒܕ ܥܡܡܐ ܬܚܘܬܝ. * ܡܪܝܐ ܡܢܘ ܒܪܢܫܐ 3
ܕܝܕܥܬܝܗܝ: ܘܒܪܢܫܐ ܕܚܫܒܬܝܗܝ. * ܒܪܢܫܐ ܠܗܒܠܐ ܕܡܐ: ܘܝܘܡܬܗ ܥܒܪܝܢ ܐܝܟ 4
ܛܠܠܐ. * ܐܪܟܢ ܫܡܝܐ ܡܪܝܐ ܘܚܘܬ: ܘܟܐܝ ܒܛܘܪܐ ܘܢܬܢܢܘܢ. * ܐܒܪܩ ܒܪܩܝܟ ܘܕܘܚ ܐܢܘܢ: 5 6
ܫܕܪ ܓܐܪܝܟ ܘܒܕܪ ܐܢܘܢ. * ܐܘܫܛ ܐܝܕܟ ܡܢ ܡܪܘܡܐ: ܘܦܨܝܢܝ ܡܢ ܡܝܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܡܢ ܐܝܕܐ 7
ܕܥܘܠܐ: * ܕܦܘܡܗܘܢ ܡܡܠܠ ܣܪܝܩܘܬܐ. ܘܝܡܝܢܗܘܢ ܝܡܝܢܐ ܕܥܘܠܐ: * ܐܠܗܐ 8
ܬܫܒܘܚܬܐ ܚܕܬܐ ܐܫܒܚ ܠܟ. ܘܒܟܢܪܐ ܕܥܣܪ ܢܩܫܝܢ ܐܙܡܪ ܠܟ: * ܕܝܗܒܬ ܦܘܪܩܢܐ 9 10
ܠܡܠܟܐ. ܘܦܨܝܬ ܠܕܘܝܕ ܥܒܕܟ ܡܢ ܣܝܦܐ ܒܝܫܐ: * ܦܪܘܩ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܥܘܠܐ. ܕܦܘܡܗܘܢ 11
ܡܡܠܠ ܣܪܝܩܘܬܐ: ܘܝܡܝܢܗܘܢ ܝܡܝܢܐ ܕܥܘܠܐ. * ܕܒܢܝܗܘܢ ܐܝܟ ܢܨܒܬܐ ܡܬܪܒܝܢ 12
ܡܢ ܛܠܝܘܬܗܘܢ: ܘܒܢܬܗܘܢ ܐܝܟ ܟܠܬܐ ܕܡܨܒܬܢ ܒܕܡܘܬܐ ܕܗܝܟܠܐ: * ܐܘܨܪܝܗܘܢ 13
ܡܠܝܢ ܘܡܬܓܘܪܝܢ ܚܕ ܒܚܕ: ܘܥܢܗܘܢ ܝܠܕܢ ܘܡܪܒܝܢ ܒܫܘܩܝܗܘܢ. * ܬܘܪܝܗܘܢ ܥܫܝܢܝܢ 14
ܘܠܝܬ ܒܗܘܢ ܥܩܪܬܐ: ܠܝܬ ܬܪܥܐ ܘܐܦܠܐ ܝܠܠܬܐ ܒܫܘܩܝܗܘܢ. * ܛܘܒܘܗܝ ܠܥܡܐ 15
ܕܗܟܢ ܐܝܬ ܠܗ: ܛܘܒܘܗܝ ܠܥܡܐ ܕܡܪܝܐ ܗܘ ܐܠܗܗ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܡܕ * * ܬܫܒܘܚܐ ܘܪܫܝܬ ܡܣܩܬܐ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܬܫܒܘܚܬܐ ܥܡ ܡܡܠܠܘܬܐ ܐܠܗܝܬܐ: ܦܬܓܡܐ ܡܒ.
* ܐܪܝܡܢܟ ܡܪܝ ܡܠܟܐ. ܘܐܒܪܟ ܫܡܟ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ:

Propter nomen tuum Dn̄e conſolare me. 11
Propter æquitatẽ tuã educ animã meã ex an-
guſtia: Perque tuã benignitatẽ ſilere fac oſo- 12
res meos; & perde hoſtes animæ meæ, ſiqui-
dem ego ſum ſervus tuus.

PSAL. CXLIII.

Davidis. Quum interfecit Aſaph fratrem 1
*Goliad. Et gratiarum actio ejus qui victo-
riam eſt conſequutus. Verſ. 38.*

BEnedictus ſit Dn̄s qui inſtruxit manus me-
as ad prælium, & digitos meos ad bellum:
Refugium meũ, & liberator meus, ſuffultor 2
meus, cui ſum fiſus, & *qui* ſubjugavit populos
mihi. Dn̄e quid eſt homo, ut ejus notitiam 3
habueris: & homo, ut eũ æſtimaveris? Homo 4
vapori ſimilis eſt, & dies ejus labuntur ſicut
umbra. Inclina cœlũ Dn̄e, ac deſcende: atque 5
increpa montes, & fumabunt. Coruſcare fac 6
fulgura tua, & exagita illos: emitte ſagittas
tuas, & diſſipa eos. Extende manũ tuã ex al- 7
to, & extrahe me ex aquis vaſtis, & ex manu
ſceleſtorũ, Quorum os loquitur vanitatẽ, & 8
quorũ dextera dextera eſt iniquitatis. Deus 9
laudationẽ novã canã tibi, & lyrâ decẽ chor-
darũ pſallã tibi, Quòd contuleris ſalutẽ Re- 10
gi, & eripueris Davidem ſervũ tuũ è gladio
malo. Libera me de manu ſceleſtorũ, quorũ 11
os loquitur vanitatẽ, & quorũ dextera dex-
tera eſt iniquitatis: Quorum filii ut planta 12
aluntur à pueritia ſua, & filiæ eorum velut
ſponſæ ornatæ inſtar templorũ: Cellæ eorũ 13
plenæ, ſeque profundentes una in aliã: oves
eorũ fœtant ac nutricantur in plateis ipſorũ:
Boves prægrandes, & non eſt inter eas ſteri- 14
lis: non eſt ruptura, neque ululatus in plateis
eorũ. Nunquid beatus populus cui talia con- 15
tingunt? Beatus populus cujus Dominus eſt
Deus ejus.

Laus, & initium gradûs.

PSAL. CXLIV.

Davidis. Laudatio cum Theologia. Verſ. 42. 1

EXtollam te Domine mi Rex, & benedi-
cam nomini tuo in ſeculum ſeculorum.

Verſio VULG. LAT.

11 Propter nomen tuū, Dn̄e, vivificabis
me, in æquitate tua. Educes de tribulatione
12 animā meā: Et in miſericordia
tua diſperdes inimicos meos. Et perdes
omnes, qui tribulant animā meā:
quoniam ego ſervus tuus ſum.

Pſalmus David,
1 Adverſus Goliath. CXLIII.

BEnedictus Dn̄s Deus meus, qui docet
manꝰ meas ad præliū, & digitos
2 meos ad bellū. Miſericordia mea,
& refugiū meū: ſuſceptor meus, &
liberator meus: Protector meus, & in
ipſo ſperavi: qui ſubdit populum meū
3 ſub me. Dn̄e, quid eſt homo, quia innotuiſti
ei? aut filius hominis, quia
4 reputas eum? Homo vanitati ſimilis
factus eſt: dies ejus ſicut umbra prætereunt.
5 Dn̄e, inclina cœlos tuos, &
deſcende: tange montes, & fumigabunt.
6 Fulgura coruſcationem, & diſſipabis
eos: emitte ſagittas tuas, & conturbabis
7 eos. Emitte manū tuā de alto,
eripe me, & libera me de aquis multis;
8 de manu filiorū alienorū. Quorū
os locutū eſt vanitatē: & dextera eorū,
9 dextera iniquitatis. Deus, canticū novum
cantabo tibi: in pſalterio, decachordo
10 pſallā tibi. Qui das ſalutē regibus:
qui redemiſti David ſervū tuū de
11 gladio maligno: Eripe me. Et erue me
de manu filiorū alienorū, quorū os locutū
eſt vanitatē: et dextera eorū, dextera
12 iniquitatis: Quorū filii, ſicut novellæ
plantationes in juventute ſua. Filiæ
eorū compoſitæ: circumornatæ ut
13 ſimilitudo templi. Promptuaria eorum
plena, eructantia ex hoc in illud. Oves
eorum fœtoſæ, abundantes in egreſſibus
14 ſuis: Boves eorum craſſæ. Non
eſt ruina maceriæ, neque tranſitus,
15 neque clamor in plateis eorum. Beatum
dixerunt populum, cui hæc ſunt:
Beatus populus, cujus Dn̄s Deus ejus.

1 Laudatio ipſi David. CXLIV.

EXaltabo te, Deus meus rex: & benedicam
nomini tuo in ſeculum,
& in ſeculum ſeculi.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

11 †Ἕνεκα τοῦ ὀνόματός σου κύριε ζήσεις με, ἐν τῇ δικαιοσύνῃ
σου †ἐξάξεις ἐκ θλίψεως τὴν ψυχήν μου.
12 †Καὶ ἐν τῷ ἐλέει σου (ᵈ) ἐξολοθρεύσεις τοὺς ἐχθρούς
μου, †καὶ ἀπολεῖς πάντας τοὺς θλίβοντας τὴν ψυχήν
μου, †(ζ)ὅτι δοῦλός σου εἰμὶ ἐγώ.
MS.A.(ᵈ)ἐξολεθρεύσεις (ζ)ὅτι ἐγὼ δοῦλός σου εἰμί.

1 Τῷ Δαυὶδ Πρὸς τὸν Γολιάδ. ρμγʹ.

†ΕΥλογητὸς κύριος ὁ θεός μου, †ὁ διδάσκων
τὰς χεῖράς μου εἰς παράταξιν, †τοὺς δακτύλους
2 μου εἰς πόλεμον· †Ἔλεός μου καὶ καταφυγή μου,
†ἀντιλήπτωρ μου καὶ ῥύστης μου, †ὑπερασπιστής μου,
καὶ ἐπ' αὐτῷ ἤλπισα, †ὁ ὑποτάσσων τὸν λαόν (α)
3 μου ὑπ' ἐμέ. †Κύριε (ᵈ) τί ἐστιν ἄνθρωπος, ὅτι ἐγνώσθης
αὐτῷ; †ἢ υἱὸς ἀνθρώπου, ὅτι λογίζῃ αὐτόν;
4 †Ἄνθρωπος ματαιότητι ὡμοιώθη, †αἱ ἡμέραι αὐτοῦ
5 ὡσεὶ σκιὰ παράγουσι. †Κύριε κλῖνον οὐρανούς σου καὶ
6 κατάβηθι, †ἅψαι τῶν ὀρέων καὶ καπνισθήσονται. †Ἄστραψον
(β)ἀστραπὴν καὶ σκορπιεῖς αὐτούς, †ἐξαπόστειλον
7 τὰ βέλη σου καὶ συνταράξεις αὐτούς. †Ἐξαπόστειλον
τὴν χεῖρά σου ἐξ ὕψους, †ἐξελοῦ με καὶ ῥῦσαί
με ἐξ ὑδάτων πολλῶν, †ἐκ χειρὸς υἱῶν ἀλλοτρίων·
8 †Ὧν τὸ στόμα ἐλάλησε ματαιότητα, †καὶ ἡ δεξιὰ
9 αὐτῶν δεξιὰ ἀδικίας. †Ὁ θεὸς ᾠδὴν καινὴν ᾄσομαί
σοι, †ἐν ψαλτηρίῳ δεκαχόρδῳ ψαλῶ σοι.
10 †Τῷ διδόντι (ˇ) τὴν σωτηρίαν τοῖς βασιλεῦσι, †τῷ
λυτρουμένῳ Δαυὶδ τὸν δοῦλον αὐτοῦ ἐκ ῥομφαίας πονηρᾶς·
11 †Ῥῦσαί με καὶ ἐξελοῦ με ἐκ χειρὸς υἱῶν
ἀλλοτρίων, †ὧν τὸ στόμα ἐλάλησε ματαιότητα,
12 †καὶ ἡ δεξιὰ αὐτῶν δεξιὰ ἀδικίας. †Ὧν οἱ
υἱοὶ (ς) ὡς νεόφυτα ἱδρυμένα ἐν τῇ νεότητι αὐτῶν·
†αἱ θυγατέρες αὐτῶν κεκαλλωπισμέναι, περικεκοσμημέναι
13 ὡς ὁμοίωμα ναοῦ. †Τὰ ταμεῖα αὐτῶν
πλήρη, (δ) ἐξερευγόμενα ἐκ τούτου εἰς τοῦτο· †τὰ
πρόβατα αὐτῶν πολύτοκα, πληθύνοντα ἐν ταῖς ἐξόδοις
14 αὐτῶν· †Οἱ βόες αὐτῶν παχεῖς. †οὐκ ἔστι κατάπτωμα
φραγμοῦ, οὐδὲ διέξοδος, †οὐδὲ κραυγὴ
15 ἐν ταῖς ἐπαύλεσιν αὐτῶν. †Ἐμακάρισαν τὸν λαὸν ᾧ
ταῦτά ἐστι· †μακάριος ὁ λαὸς οὗ κύριος ὁ θεὸς
αὐτοῦ.
MS.A.(α)αὐτοῦ(ᵈ)τίς(β)ἀστραπήν σου καὶ(ˇ)σωτηρίαν(ς)αὐτῶν ὡς νεόφυτα ἡδρυμμένα(δ)*ἐξερευόμενα

1 (ᵈ) Αἴνεσις τοῦ Δαυίδ. ρμδʹ.

†ΥΨώσω σε (α) ὁ θεός μου ὁ βασιλεύς μου, †καὶ
εὐλογήσω τὸ ὄνομά σου εἰς τὸν αἰῶνα †καὶ εἰς
τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος.
MS.A. (ᵈ) Αἰνέσεως τῷ (α) ὁ θεὸς ὁ βασιλεύς μου,

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

Propter nomen tuum, Domine, vivificabis 11
me: in tua (i) juſtitia 13 educes
de tribulatione animam meam. Et 11
in [h] tua miſericordia diſperdes inimicos
meos. 14 Et perdes omnes, qui
tribulant animam meam: quoniam
ſervus tuus ſum ego.

Ipſi David (a) [a] Ad Goliam. 1
CXLIII.

1 *BEnedictus Dominꝰ Deus meus;*
qui docet manus meas ad prælium;
digitos meos ad bellum: 2 Miſericordia 2
mea, & refugium meum,
ſuſceptor meus, & liberator meus:
3 Protector meus, & in ipſo ſperavi,
ſubjiciens populū meū ſub me. 4 Domine, 3
quid eſt homo, quia (b) innotuiſti
ei? aut filius hominis, quia reputas
eum? 5 Homo (c) vanitati ſimilis 4
factus eſt: dies ejus, ſicut umbra prætereunt.
6 Domine, (d) inclina cœlos 5
tuos, & deſcende: tange montes, &
fumigabunt. 7 Coruſca [b] coruſcationem, 6
& diſſipabis eos: emitte ſagittas
tuas, & conturbabis eos. 8 Emitte 7
manum tuā ex alto: exime
me, & erue me de aquis multis, de
manu filiorū alienorum. 9 Quorum 8
os locutum eſt vanitatem, & dextera
eorū dextera iniquitatis. 10 Deus, 9
canticum novū cantabo tibi: in pſalterio
decachordo pſallā tibi. 11 Qui 10
dat ſalutem regibus, qui redimit David
ſervū ſuum de gladio maligno.
12 Erue me, et exime me de manu filiorum 11
alienorum: quorū os locutum
eſt vanitatem: et dextera eorū dextera
iniquitatis. 13 Quorum filii ſicut 12
novellæ plantationes, (e) conſtabilitæ
in juventute ſua. 14 Filiæ eorum
(f) compoſitæ: circumornatæ ut
ſimilitudo templi. 15 Promptuaria eorum 13
plena, eructantia ex hoc in hoc.
16 Oves eorū fœtoſæ, multiplicantes
in egreſſibus (g) ſuis: Boves eorum 14
craſſæ. 17 Non eſt ruina [c] ſepis, neque
tranſitus, neque clamor (h) in
villis eorum. 18 Beatum dixerunt 15
populum, cui hæc ſunt: Beatus populus,
cujus Dominus Deus ejus.

(a) Laudatio [a] ipſi David. *CXLIV.* 1

1 *EXaltabo (b) te, [b] Deus meus,*
(c) rex meus: & benedicam
nomen tuum (d) in ſeculum, & in
ſeculum ſeculi.

Verſio ÆTHIOPICA.

11 ወበእንተ፡ስምከ፡እግዚኦ፡ አሕይወኒ፡በጽድ
ቅከ።=፡ ወአውፅእ፡ እምንደቤሃ፡ ለነፍስ 13
11 የ። ወበሠምረትከ፡ሠርዎሙ፡ለፀርየ።=፡
ወታጠፍኦሙ፡ ለኵሎሙ፡ እለ፡ የሐምዋ፡ 14
ለነፍስየ።እስመ፡አነ፡ገብርከ።=፡

ዘደዊት፡ ዘአመ፡ ይተበአስ፡ ምስለ፡
ዘጎልያድ።

የሀር ይትባረክ፡ እግዚአብሔር፡ አምላኪ 1
የ። ዘመሐረኒ፡ፀብአ፡ለእደዊየ። ወቀተለ፡
ለአጻብእየ።=፡ መሐርየ፡ ወጻወንየ። ም 2
ስካይየ፡ ወመድኃኒየ።=፡ ምእመንየ፡ ወ 3
ኪያሁ፡ ተወከልኩ። ዘያገርር፡ ሊተ፡ አ
ሕዛበ፡ በመትሕትየ።=፡ እግዚኦ፡ ምንት 4
ኑ፡ሰብእ፡ከመ፡ታስተርእዮ፡ሎቱ።ወእጓለ፡እ
ምሕያው፡ ዘትሔሰቦ።=፡ ሰብእሰ፡ ከንቶ፡ 5
ይመስል። ወመዋዕሊሁኒ፡ ከመ፡ጽላሎት፡የ
ኃልፍ።=፡ እግዚኦ፡ አፅንን፡ ሰማያቲከ፡ወ 6
ረድ። ግስሶሙ፡ለአድባር፡ ወይጠይሱ።=፡
አብርቅ፡መባርቅቲከ፡ወዝርዎሙ።ፈኑ፡ አ 7
ሐጻከ፡ወሁኮሙ።=፡ ፈኑ፡እዴከ፡እምአር 8
ያም። አድኅነኒ፡ ወባልሐኒ፡ እማይ፡ብዙ
ኅ። ወእምእዴሆሙ፡ለደቂቀ፡ ነኪር።=፡
እለ፡ከንቶ፡ ነበበ፡ አፉሆሙ። ወየማኖሙኒ፡ 9
የማነ፡ዐመፃ።=፡ እግዚኦ፡ስብሐተ፡ሐዲስ፡ 10
እሴብሐከ። ወበመዝሙር፡ዘዐሠርቱ፡አው
ታሪሁ፡እዜምር፡ለከ።=፡ ዘይሁቦሙ፡ለነገ 11
ሥት፡መድኃኒተ። ዘአድኃኖ፡ለደዊት፡ገብ
ሩ፡እምኲናት፡እኪት።=፡ አድኅነኒ፡ወበ 12
ልሐኒ፡እምእዴሆሙ፡ለደቂቀ፡ነኪር። እለ፡
ከንቶ፡ነበበ፡አፉሆሙ። ወየማኖሙኒ፡ የማነ፡
ዐመፃ።=፡ እለ፡ደቂቆሙ፡ከመ፡ተክል፡ሐዲ 13
ስ፡ጽኑዓን፡በውርዙቶሙ።=፡ ወአዋልዲሆ 14
ሙኒ፡ርሱያት።ወስርግዋት፡ ከመ፡እንተ፡ ጽ
ርሕ።=፡ ወአብያቲሆሙኒ፡ምሉእ። ወይ 15
ስወጥ፡እምዝ፡ውስተዝ።=፡ ወአባግዒሆሙ 16
ኒ፡ብዙኃ፡ይትዌለዱ። ወይትባዝኃ፡ በሙፋሬ
ሆን። ወአልህምቲሆሙኒ፡ስቡሕ።=፡ ወአ 17
ልቦ፡ደቀተ፡ቅጽሮሙ። ወአልቦ፡እንተ፡ኀበ፡
ያበውእዎሙ። ወአልቦ፡አውያተ፡ውስተ፡ሀ
ገሮሙ።=፡ አስተብፅዕዎ፡ለዘ፡ ከመዝ፡ሕ 18
ዝብ። ብፁዕ፡ሕዝብ፡ዘእግዚአብሔር፡አ
ምላኩ።

አኰቴት፡መዝሙር፡ዘደዊት።

የሀዐ እሌዕለከ፡ ንጉሥየ፡ ወአምላኪየ። 1
ወአባርክ፡ ለስምከ። ለዓለም፡ ወለዓለመ፡
ዓለም።=፡

INTERP. ÆTHIOP. [h] beneplacito tuo diſperde *PSAL. CXLIII.* [a] cùm decertavit adverſus Goliad. [b] coruſcationem tuam, [c] arcium eorum, & non eſt quò ingrediantur, neque *PSAL. CXLIV.* [a] pſalmus [b] rex meus & Deus meus.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* من اجل اسمك يا رب احيني بحقك * تخرج من الشدايد نفسي * وبرحمتك تستاصل 11 12
اعداي * وتهلك كل الذين يحزنون نفسي لاني انا هو عبدك * الليلويا *
* المزمور المية والثالث والاربعون * لداود * لاجل جلياث * وهو لة * استيخن * 1
مبارك الرب الاهي الذي علم يدي ترتيب القتال * واصابعي الحرب * راحمي وملجاي 2
ناصري ومنقذي المقاتل عني وعليه توكلت * الذي اخضع الشعوب لي * يا رب من هو الانسان 3
حتي ظهرت له * وابن الانسان حتي عددته * الانسان اشبه الهباء * وايامه مثل الفي تمضي * 4
* اللهم طاطي السموات وانزل * المس الجبال فتدخن * ابرق بروقا فتبددهم * ارسل اسهامك 5 6
فتقلقهم * ارسل يدك من العلي نجني وخلصني من مياه غزيرة * ومن ايدي بني الغرباء * 7
* الذين تكلمت افواههم بالباطل * ويمينهم يمين الظلم هي * اللهم اني اسبحك تسبحة جديدة * 8 9
بالة المزمر ذات عشر الاوتار * وارتل لك يا معطي الخلاص للملوك * يا مخلص داود عبده * 10
نجني من سيف شرير * نجني وخلصني من يد بني الغربا * الذين تكلمت افواههم بالباطل * 11
ويمينهم هي يمين الظلم * هاولاء الذين بنوهم كغروس جدد اقويا في شبيبتهم * بناتهم مزخرفات 12
مزينات مثل شبه الهيكل * خزاينهم مملوءة فايضة من هذا الي هذا * اغنامهم كثيرة النتاج 13
كثيرا في شوارعهم * وبقرهم سمان وليس فيها هزيل * ليس يوجد لهم سقطة جدار سياج * ولا منفذ 14
ولا صراخ في اسواقهم * مغبوط الشعب الذي هذا له * طوبي للشعب الذي الرب الهه * 15
الليلويا * * المزمور المية والرابع والاربعون * لداود تسبحة * وهو * مز * استيخن * 1
ارفعك يا الاهي وملكي وابارك اسمك الي الابد * والي ابد الابد *

* *Propter nomen tuum O Domine, vivifica me* 11
in veritate tua. Educes è tribulationibus animā
meam: Et ex miſericordia tua eradicabis 12
inimicos meos: perdeſque omnes qui
affligunt animam meam, quoniam ego ſum
ſervus tuus. Alleluja.

PSAL. CXLIII. 1
Davidis, proper Goliath. Verſ. 34.

BEnedictus Dominus Deus meus qui docuit
manus meas diſpoſitionem certaminis,
& digitos meos bellum. Miſerator meꝰ, 2
& refugium meum, adjutor meus, & redemptor
meus, propugnator meus, cui ſum
fiſus, qui ſubjecit populum mihi. O Domine, 3
quis eſt homo ut apparueris ei, & filius hominis
ut computaris eum? Homo ſimilis eſt 4
vapori, & dies ejus velut umbra prætereunt.
Deus, inclina cœlos, & deſcende: tange 5
montes, & fumigabunt: Fulgura fulgores, 6
& diſſipabis eos: mitte ſagittas tuas, et
conturbabis eos: Mitte manum tuam ab alto: 7
ſalva me, & libera me ab aquis multis,
& de manibus filiorum alienorum: Quorum 8
ora locuta ſunt falſitatē, & juramentum
eorum, juramentum eſt iniquitatis. Deus, 9
equidem celebrabo te laude novâ cum
inſtrumento pſalmodiæ inſtructo decem
chordis: Et canam tibi O qui largiris ſalutem 10
regibus, O ſalvator Davidis ſervi
ſui. Eripe me è gladio peſſimo: Eripe me & 11
libera me de manu filiorum alienorum,
quorum ora locuta ſunt falſitatem, & juramentum
eorum, eſt juramentum iniquitatis.
Horum, inquam, quorum filii ſunt 12
veluti plantæ recentes, robuſti in juventute
eorum: filiæ ipſorum concinnæ, ornatæ
ad modum templi: Æraria illorum plena, 13
redundantia ab hoc ad illud: Oves eorum
uberes fœtu, plurimæ in compitis eorum:
Et boves eorum pingues, nec eſt inter 14
illas macra: non invenitur apud eos caſus
ambitûs ſepis, neque meatus, neque clamor
in plateis eorum. Fœlix populus cui hæc 15
ſunt, beatus populus cujus Dominus eſt
Deus. Alleluja.

PSAL. CXLIV.
Davidis, canticum. Verſ. 4?. 1

EXaltabo te O Deus meus & Rex meus,
& benedicam nomen tuum in æternum,
& in ſeculum ſeculi.

תהלים : קמו

.perpetuum &,seculum in tuum nomen laudabo & : tibi benedicam die omni In
בְּכָל־יוֹם אֲבָרְכֶךָּ וַאֲהַלְלָה שִׁמְךָ לְעוֹלָם וָעֶד׃ 2
.investigatio non ejus magnitudinis & : valdè *laudatus* & Dominus Magnus
גָּדוֹל יְהוָה וּמְהֻלָּל מְאֹד וְלִגְדֻלָּתוֹ אֵין חֵקֶר׃ 3
.annunciabunt tuas fortitudines & : tua opera *celebrabit* generationi Generatio
דּוֹר לְדוֹר יְשַׁבַּח מַעֲשֶׂיךָ וּגְבוּרֹתֶיךָ יַגִּידוּ׃ 4
fortitudinē Et .meditabor tuorū mirabiliū *verba* & :tuæ *magnificentiæ* gloriæ Decorem
הֲדַר כְּבוֹד הוֹדֶךָ וְדִבְרֵי נִפְלְאֹתֶיךָ אָשִׂיחָה׃ וֶעֱזוּז 5 6
multitudinis Memoriam .*eam* narrabo tuam magnitudinē & :dicent tuorū terribiliū
נוֹרְאֹתֶיךָ יֹאמֵרוּ וּגְדֻלָּתְךָ אֲסַפְּרֶנָּה׃ זֵכֶר רַב־ 7
:Dominus miserator &,*Gratiosus* .*præconio canent* tuā justitiā &,*eructabunt* tuæ bonitatis
טוּבְךָ יַבִּיעוּ וְצִדְקָתְךָ יְרַנֵּנוּ׃ חַנּוּן וְרַחוּם יְהוָה 8
ejus *miserationes* & : universis Dominus Bonus .misericordia magnus &,*naribus* longus
אֶרֶךְ אַפַּיִם וּגְדָל־חָסֶד׃ טוֹב־יְהוָה לַכֹּל וְרַחֲמָיו 9
tui *pii* & : tua opera omnia Domine tibi Confiteantur .ejus opera omnia super
עַל־כָּל־מַעֲשָׂיו׃ יוֹדוּךָ יְהוָה כָּל־מַעֲשֶׂיךָ וַחֲסִידֶיךָ 10
.loquentur tuam fortitudinem & : dicent tui regni Gloriam .tibi benedicant
יְבָרְכוּכָה׃ כְּבוֹד מַלְכוּתְךָ יֹאמֵרוּ וּגְבוּרָתְךָ יְדַבֵּרוּ׃ 11
.ejus regni decoris gloriam & : ejus fortitudines *hominis* filios *faciendum* scire *Ad*
לְהוֹדִיעַ ׀ לִבְנֵי הָאָדָם גְּבוּרֹתָיו וּכְבוֹד הֲדַר מַלְכוּתוֹ׃ 12
,generatione omni in tua dominatio & : seculorum omnium regnum ,tuum Regnum
מַלְכוּתְךָ מַלְכוּת כָּל־עֹלָמִים וּמֶמְשַׁלְתְּךָ בְּכָל־דּוֹר 13
.incurvatos omnes *erigens* & : cadentes omnes Dominus *Fulciens* .generatione &
וָדֹר׃ סוֹמֵךְ יְהוָה לְכָל־הַנֹּפְלִים וְזוֹקֵף לְכָל־הַכְּפוּפִים׃ 14
.suo tempore in eorū escam eis *dans* tu & : *sperabunt* te *ad* omnium Oculi
עֵינֵי־כֹל אֵלֶיךָ יְשַׂבֵּרוּ וְאַתָּה נוֹתֵן־לָהֶם אֶת־אָכְלָם בְּעִתּוֹ׃ 15
omnibus in Dominus Justus .*voluntate* vivens omne *saturans* & ,tuā manum *Aperiens*
פּוֹתֵחַ אֶת־יָדֶךָ וּמַשְׂבִּיעַ לְכָל־חַי רָצוֹן׃ צַדִּיק יְהוָה בְּכָל־ 16 17
omnibus Dominus Propinquus .suis operibus omnibus in misericors & : suis viis
דְּרָכָיו וְחָסִיד בְּכָל־מַעֲשָׂיו׃ קָרוֹב יְהוָה לְכָל־ 18
se timentiū Voluntatem .veritate in eū invocaverint qui omnibus :eū invocantibus
קֹרְאָיו לְכֹל אֲשֶׁר יִקְרָאֻהוּ בֶאֱמֶת׃ רְצוֹן־יְרֵאָיו 19
Dominus *Custodiens* .eos faciet servare & , audiet eorum clamorem & : faciet
יַעֲשֶׂה וְאֶת־שַׁוְעָתָם יִשְׁמַע וְיוֹשִׁיעֵם׃ שׁוֹמֵר יְהוָה אֶת־ 20
Domini Laudem .faciet disperdere impios omnes & :ipsum diligentes omnes
כָּל־אֹהֲבָיו וְאֵת כָּל־הָרְשָׁעִים יַשְׁמִיד׃ תְּהִלַּת יְהוָה 21
,seculum in ejus *sanctitatis* nomini caro omnis benedicet & ,meum os loquetur
יְדַבֶּר־פִּי וִיבָרֵךְ כָּל־בָּשָׂר שֵׁם קָדְשׁוֹ לְעוֹלָם
.perpetuum &
וָעֶד׃

PSAL. CXLVI. קמו

canam : *meis vitis* in Dominū Laudabo .Dominum mea anima Lauda .jah-Hallelu
הַלְלוּ־יָהּ הַלְלִי נַפְשִׁי אֶת־יְהוָה׃ אֲהַלְלָה יְהוָה בְּחַיָּי אֲזַמְּרָה 1 2
.salus ei non cui,hominis filio *in* ,*munificis in* fidatis Ne .*me* adhuc *in* meo Deo
לֵאלֹהַי בְּעוֹדִי׃ אַל־תִּבְטְחוּ בִנְדִיבִים בְּבֶן־אָדָם שֶׁאֵין לוֹ תְשׁוּעָה׃ 3
.ejꝰ cogitationes peribunt illa die in :suā terrā in,revertetur,ejꝰ spiritus *Egredietur*
תֵּצֵא רוּחוֹ יָשֻׁב לְאַדְמָתוֹ בַּיּוֹם הַהוּא אָבְדוּ עֶשְׁתֹּנֹתָיו׃ 4

תרגום TARGUM.

2 בְּכָל יוֹמָא אֲבָרְכִנָךְ וַאֲשַׁבַּח שְׁמָךְ לְעָלְמֵי
עָלְמִין׃ 3 רַב יְיָ וּמְשַׁבַּח לַחֲדָא וְלִרְבוּתֵיהּ
לֵית סוֹף׃ 4 דָּרָא לְדָרָא יְשַׁבַּח עוּבָדָךְ
וּגְבוּרְוָתָךְ יְתַנּוּן׃ 5 שִׁבְהוֹר אִיקַר זִיוָךְ וּמִלֵּי
פְּרִישׁוּתָךְ אֲמַלֵּל׃ 6 וְעוּשְׁנָא דְחַלְתָּךְ יֵימְרוּן
וְרַבְּנוּתָךְ יִשְׁתְּעוּן׃ 7 דָּכְרָן סַגִּיעֵי טוּבָךְ יַבִּיעוּן
וְצִדְקָתָךְ יְשַׁבְּחוּן׃ 8 חַנָּנָא וְרַחְמָנָא יְיָ מַרְחִיק
רְגַז וּמַסְגֵּי לְמֶעְבַּד טַבְוָן׃ 9 טָב יְיָ לְכוּלָּא
וְרַחֲמוֹי עַל כּוּלְּהוֹן עוֹבָדוֹי׃ 10 יְהוֹדוּנָךְ יְיָ כּוּלְּהוֹן
עוֹבָדָךְ וַחֲסִידָךְ יְבָרְכוּנָךְ׃ 11 אִיקַר מַלְכוּתָךְ
יֵימְרוּן וּגְבוּרְתָּךְ יְמַלְּלוּן׃ 12 לְהוֹדָעָא לִבְנֵי
נָשָׁא גְּבוּרָתוֹי וְאִיקָר שִׁבְהוֹר מַלְכוּתֵיהּ׃
13 מַלְכוּתָךְ מַלְכוּתָא דְכָל עָלְמַיָּא וְשׁוּלְטָנוּתָךְ
בְּכָל דָּר וְדָר׃ 14 סָעֵד יְיָ לְכָל נָפְלִין וְזָקֵף
לְכוּלְּהוֹן כְּפִיפִין׃ 15 עֵינֵיהוֹן דְכוּלָּא לְוָתָךְ
סְבִירָן וְאַתְּ יָהֵב לְהוֹן יַת מֵיכַלְהוֹן בְּזִמְנֵיהּ׃
16 פּוֹתֵחַ יַת אִידָךְ וּמַסְבַּע לְכוּלְּהוֹן חַיֵּי רְעוּתְהוֹן׃
17 זַכַּי יְיָ בְּכָל אוֹרְחָתֵיהּ וַחֲסִידָא בְּכָל עוֹבָדוֹי׃
18 קְרִיב יְיָ לְכָל דְּקָרָן לֵיהּ לְכוּלְּהוֹן דְּקָרָן
יָתֵיהּ בִּקְשׁוֹט׃ 19 רְעוּת דָּחֲלוֹי יַעְבֵּד וְיַת בָּעוּתְהוֹן
יִשְׁמַע וְיִפְרְקִנּוּן׃ 20 נָטַר יְיָ יַת כָּל רָחִימוֹי
וְיַת כָּל רַשִׁיעֵי יְשֵׁיצֵי׃ 21 שְׁבָחָא דַיְיָ יְמַלֵּל
פּוּמִי וִיבָרְכוּן כָּל בְּנֵי בִסְרָא שׁוּם קוּדְשֵׁיהּ
לְעָלְמֵי עָלְמִין׃

קמו

1 הַלְלוּיָהּ שַׁבְּחִי נַפְשִׁי יַת שְׁמָא דַיְיָ׃ 2 אֲשַׁבַּח
יְיָ בְּחַיַּי אֲזַמֵּר לֶאֱלָהִי בִּדְאִיתִי׃ 3 לָא תִתְרַחֲצוּן
בְּרַבְרְבַיָּא בְּבַר נָשׁ דְּלֵית לֵיהּ פּוּרְקָנָא׃
4 תִּפּוֹק רוּחֵיהּ יְתוּב לְעַפְרֵיהּ בְּיוֹמָא הַהוּא
הוֹבְדוּ וּמִיוּנוֹי׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Omni die benedicam tibi, & laudabo no- 2
men tuum in ſecula ſeculorum. Magnus 3
Dominus & laudabilis multum, & magni-
ficentiæ ejus non eſt finis. Generatio ge- 4
nerationi laudabit opera tua, & potentiam
tuam narrabunt. Decorem gloriæ ſplen- 5
doris tui, & verba mirabilium operum
tuorum eloquar. Et fortitudinem terribi- 6
lium tuorum dicent, & magnificentiam
tuam narrabunt. Memoriam multæ boni- 7
tatis tuæ perſonabunt, & juſtitiam tuam
laudabunt. Clemens & miſericors Domi- 8
nus, longanimis, & multiplices edens be-
neficentias. Bonus Dominus omnibus, & 9
miſericordiæ ejus ſuper omnia opera ejus.
Confiteantur tibi Deus omnia opera tua, 10
& miſericordes tui benedicant tibi. Glo- 11
riam regni tui dicent, & fortitudinem tuam
loquentur. Ut notam faciant filiis homi- 12
num fortitudinem tuam, & gloriam deco-
ris regni tui. Regnum tuum regnum om- 13
nium ſeculorum, et poteſtas tua in omni
generatione et generatione. Suſtentat Do- 14
minus omnes corruentes, et dirigit omnes
curvatos. Oculi omnium in te ſperant, et 15
tu das illis cibum illorum in tempore ſuo.
Aperis manum tuam, et ſatias *omnia* 16
animalia deſiderio ipſorum. Juſtus Do- 17
minus in omnibus viis ſuis, & miſericors
in omnibus operibus ſuis. Proximus eſt 18
Dominus omnibus qui invocant eum;
omnibus qui invocant eum in veritate.
Voluntatem timentium ſe faciet, & preces 19
eorum exaudiet, & ſalvabit illos. Servat 20
Dominus omnes diligentes ſe, & omnes
impios diſperdet. Laudem Dei loquetur 21
os meum, & benedicent cuncti filii car-
nis nomen ſanctitatis ejus in ſecula ſecu-
lorum.

Hallelujah. 1

PSAL. CXLVI.

LAuda anima mea *nomen Domini.* Lau- 2
dabo *Dominum* in vita mea, pſallam Deo
meo quamdiu fuero. Nolite confidere in 3
principibus, in filio hominis in quo non
eſt ſalus. Egredietur flatus ejus, rever- 4
tetur in pulverem ſuum, in die illo peri-
bunt machinationes ejus.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

2 3 * ܒܟܠ ܝܘܡ ܐܒܪܟܟ ܘܐܫܒܚ ܫܡܟ ܠܥܠܡ. * ܪܒ ܗܘ ܡܪܢ ܘܡܫܒܚ ܛܒ : ܘܠܝܬ
4 ܣܟܐ ܠܪܒܘܬܗ. * ܕܪ ܠܕܪ ܢܫܒܚܘܢ ܥܒܕܝܟ ܘܓܢܒܪܘܬܟ ܢܚܘܘܢ : * ܘܥܘܫܢܐ
5 6 ܕܕܚܠܬܟ ܢܐܡܪܘܢ ܘܡܝܬܪܬܐ ܕܥܒܕܝܟ ܢܫܬܥܘܢ. * ܘܕܚܠܬܐ ܕܓܢܒܪܘܬܟ ܢܐܡܪ : ܘܪܒܘܬܟ ܐܫܬܥܐ.
7 8 * ܘܕܘܟܪܢܐ ܕܛܝܒܘܬܟ ܣܓܝܐܬܐ : ܢܒܥܘܢ ܙܕܝܩܝܟ ܘܢܫܟܚܘܢ. * ܡܪܚܡܢ ܗܘ ܡܪܝܐ
9 ܘܚܢܢ : ܢܓܝܪܐ ܪܘܚܗ ܘܣܓܝܐܐ ܛܝܒܘܬܗ. * ܛܒ ܗܘ ܡܪܝܐ ܘܪܚܡܘܗܝ ܥܠ ܟܠܗܘܢ
10 11 ܥܒܕܘܗܝ : * ܢܘܕܘܢ ܠܟ ܡܪܝܐ ܥܒܕܝܟ. ܘܙܕܝܩܝܟ ܢܫܒܚܘܢܟ : * ܫܘܒܚܐ ܕܡܠܟܘܬܟ
12 ܢܐܡܪܘܢ. ܘܓܢܒܪܘܬܟ ܢܡܠܠܘܢ :* ܘܢܚܘܘܢ ܠܒܢܝܢܫܐ ܓܢܒܪܘܬܟ. ܘܫܘܒܚܐ ܕܡܠܟܘܬܟ
13 * ܡܠܟܘܬܟ ܡܠܟܘܬܐ ܕܟܠ ܥܠܡܝܢ : ܘܫܘܠܛܢܟ ܒܟܠ ܕܪܕܪܝܢ. ܡܗܝܡܢ ܗܘ ܡܪܝܐ
14 ܒܡܠܘܗܝ. ܘܙܕܝܩ ܒܟܠܗܘܢ ܥܒܕܘܗܝ. * ܣܡܟ ܡܪܝܐ ܠܟܠ ܕܢܦܠܝܢ : ܘܙܩܦ ܠܟܠ
15 ܟܦܝܦܝܢ. * ܥܝܢܐ ܕܟܠ ܐܢܫ ܠܘܬܟ ܚܝܪܢ : ܘܐܢܬ ܝܗܒ ܐܢܬ ܠܗܘܢ ܡܐܟܘܠܬܐ ܒܥܕܢܗ.
16 17 * ܦܬܚ ܐܢܬ ܐܝܕܟ ܘܡܣܒܥ ܐܢܬ ܪܓܬܐ ܕܟܠ ܚܝ :* ܙܕܝܩ ܗܘ ܡܪܝܐ ܒܟܠܗܝܢ ܐܘܪܚܬܗ.
18 19 ܘܡܪܚܡ ܒܟܠܗܘܢ ܥܒܕܘܗܝ : * ܩܪܝܒ ܗܘ ܡܪܝܐ ܠܐܝܠܝܢ ܕܩܪܝܢ ܠܗ ܒܩܘܫܬܐ. * ܘܥܒܕ
20 ܨܒܝܢܐ ܕܕܚܠܘܗܝ : ܘܫܡܥ ܒܥܘܬܗܘܢ ܘܦܪܩ ܠܗܘܢ. * ܢܛܪ ܡܪܝܐ ܠܟܠܗܘܢ ܕܕܚܠܝܢ ܠܗ :
21 ܘܠܟܠܗܘܢ ܪܘܫܥܐ ܡܘܒܕ. * ܬܫܒܘܚܬܗ ܕܡܪܝܐ ܐܡܠܠ ܒܦܘܡܝ : ܘܢܒܪܟܘܢ ܟܠ ܒܢܝ
ܒܣܪܐ. ܠܫܡܐ ܕܩܘܕܫܗ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ. * [illegible] *

1 * ܐܡܝܪ ܚܓܝ ܘܙܟܪܝܐ ܢܒܝܐ ܗܢܘܢ ܕܣܠܩܘ ܥܡ ܫܒܝܬܐ ܡܢ ܒܒܠ. ܥܠ ܬܫܡܫܬܐ
ܕܟܗܢܐ ܕܨܦܪܐ : ܘܒܥܘܬܐ ܘܬܫܒܘܚܬܐ ܥܡ ܬܐܘܠܘܓܝܐ. ܦܬܓܡܝܢ ܟܓ.
2 3 ܫܒܚܝ ܢܦܫܝ ܠܡܪܝܐ. * ܐܫܒܚ ܠܡܪܝܐ ܒܚܝܝ : ܘܐܙܡܪ ܠܐܠܗܝ ܥܕܡܐ ܕܐܝܬܝ. * ܠܐ
4 ܬܬܟܠܘܢ ܥܠ ܫܠܝܛܢܐ ܘܥܠ ܒܪܢܫܐ : ܕܠܝܬ ܒܐܝܕܗ ܦܘܪܩܢܐ. * ܕܢܦܩܐ ܪܘܚܗ ܘܗܦܟ
ܠܐܪܥܗ : ܘܒܗܘ ܝܘܡܐ ܐܒܕܝܢ ܡܚܫܒܬܗ.

Per ſingulos dies benedicā tibi, et laudabo no- 2
men tuū in æternū. Maximus eſt Dn̄s noſter 3
& laudandꝰ vehementer, neque ullus eſt ter-
minꝰ magnitudini ejus. Ævum ævo narrabunt 4
opera tua, & potentiam tuam declarabunt :
Vímque terroris tui dicent, atque præſtantia 5
facinora tua memorabunt: Terroremque for- 6
titudinis tuæ referet: tuamq; majeſtatē recen-
ſebo: Et memoriā beneficiorū tuorum pluri- 7
morum exquirent juſti tui, atque reperient.
Miſericors eſt Dominꝰ, atque benignus : lon- 8
gus animꝰ ejus, & plurima bonitas ipſius. Bo- 9
nus eſt Dominus, & miſerationes ejus in o-
mnia opera ipſius. Gratias tibi agant Domine 10
ſervi tui, & juſti tui te glorificent : Faſtū re- 11
gni tui dicant, et magnificentiā tuam loquan-
tur : Et exponant hominibus fortitudinē tu- 12
am majeſtatemque regni tui. Regnum tuum 13
regnum eſt omnium ſeculorum, & dominium
tuum in omnem generationem generationū.
Verax eſt Dominus in verbis ſuis, & juſtus in
cunctis operibus ſuis. Fulcit Dominus omnes 14
labentes, & erigit omnes incurvatos. Oculi 15
cujuſlibet hominis ad te ſunt erecti, tu præbes
illis cibum tempeſtivé: Aperis tu manum tu- 16
am, & exples deſiderium omnis viventis.
Juſtus eſt Dominus in cunctis viis ſuis, & cle- 17
mens in omnibus operibus ſuis: Proximus eſt 18
Dominus iis qui vocant eum in veritate, Fa- 19
citque voluntatem timentium eum : audit
precem eorum, ſervatque illos. Cuſtodit Do- 20
minus omnes metuentes eum, omnes autem
ſceleſtos perdit. Laudes Domini loquar ore 21
meo: & benedicent omnes filii carnis nomini
ſanctitatis ejus in ſeculum ſeculorum.

PSAL. CXLV.

Dictus ab Aggæo & Zacharia Prophetis, 1
qui aſcenderunt cum captivitate ex Babel, de
miniſterio Sacerdotum matutino. Et precatio
atque laudatio cum Theologia. Verſ. 23.

LAuda anima mea Dominum : Laudabo 2
Dominū in vita mea, & pſallam Deo meo
quandiu ſuperſtes ero. Ne fidatis principi, 3
& homini, cujus in manu nulla eſt ſalus, Qui 4
ejus exeunte ſpiritu, redigitur in terram ſu-
am, ipſâque die pereunt omnia conſilia ipſiꝰ.

Verſio VULG. LAT.

2 Per ſingulos dies benedicam tibi: & laudabo nomen tuum in ſeculum, & in 3 ſeculũ ſeculi. Magnus Dñs & laudabilis nimis: & magnitudinis ejꝰ non eſt finis. 4 Generatio & generatio laudabit opera tua: & potentiã tuã pronuntiabunt. 5 Magnificentiam gloriæ ſanctitatis tuæ loquentur: & mirabilia tua narrabunt. 6 Et virtutẽ terribiliũ tuorũ dicent: & magnitudinẽ tuam narrabunt. 7 Memoriam abundantiæ ſuavitatis tuæ eructabunt: & juſtitiâ tuâ exultabunt. 8 Miſerator & miſericors Dñs: patiens, 9 & multùm miſericors. Suavis Dñs univerſis: & miſerationes ejꝰ ſuper omnia 10 opera ejꝰ. Confiteãtur tibi, Dñe, omnia opera tua: et Sancti tui benedicant tibi. 11 Gloriã regni tui dicẽt: & potentiã tuã 12 loquẽtur. Ut notã faciant filiis hominũ potentiã tuã; & gloriam magnificentiæ 13 regni tui. Regnũ tuũ regnum omniũ ſeculorũ: & dominatio tua in omni generatione & generationẽ. Fidelis Dñs in omnibus verbis ſuis: & ſanctus in 14 omnibus operibus ſuis. Allevat Dñs omnes, qui corruunt: & erigit omnes 15 eliſos. Oculi omniũ in te ſperant Dñe; & tu das eſcam illorũ in tempore op-16 portuno. Aperis tu manũ tuã: et imples 17 omne animal benedictione. Juſtꝰ Dñs in omnibꝰ viis ſuis: et ſanctꝰ in omnibꝰ 18 operibus ſuis. Propè eſt Dñs omnibus invocantibꝰ eum: omnibꝰ invocantibꝰ 19 eum in veritate. Voluntatẽ timentiũ ſe faciet, & deprecationẽ eorũ exau-20 diet: & ſalvos faciet eos. Cuſtodit Dominus omnes diligentes ſe: & omnes 21 peccatores diſperdet. Laudationẽ Dñi loquetur os meũ: & benedicat omnis caro nomini ſancto ejꝰ in ſeculũ, & in ſeculum ſeculi.

1 Alleluja, Aggæi, & Zachariæ.

CXLV.

2 LAuda, anima mea, Dñm, laudabo Dominum in vita mea: pſallã Deo meo quamdiu fuero. Nolite confidere 3 in principibus: In filiis hominum, in 4 quibus non eſt ſalus. Exibit ſpiritus ejus, & revertetur in terram ſuam: in illa die peribunt omnes cogitationes eorum.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

2 † Καθ' ἑκάστην ἡμέραν εὐλογήσω σε, † καὶ αἰνέσω τὸ ὄνομά σου εἰς τὸν αἰῶνα † καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος. 3 † (β) Μέγας ὁ κύριος καὶ αἰνετὸς σφόδρα, † καὶ τῆς με-4 γαλωσύνης αὐτοῦ οὐκ ἔστι πέρας. † Γενεὰ καὶ γενεὰ ἐπαινέσει τὰ ἔργα σου, † καὶ τὴν δύναμίν σου ἀπαγγε-5 λοῦσι. † Καὶ τὴν μεγαλοπρέπειαν τῆς (γ) δόξης † τῆς ἁγιωσύνης σου λαλήσουσι, † καὶ τὰ θαυμάσιά σου διηγή-6 σονται. † Καὶ τὴν δύναμιν τῶν φοβερῶν σου ἐροῦσι, † καὶ τὴν 7 μεγαλωσύνην σου διηγήσονται (δ). † Μνήμην τοῦ πλήθους τῆς χρηστότητός σου (ε) ἐξερεύξονται, καὶ τῇ δι-8 καιοσύνῃ σου (ζ) ἀγαλλιάσονται. † Οἰκτίρμων καὶ ἐλεή-9 μων ὁ κύριος, † μακρόθυμος καὶ πολυέλεος. † Χρηστὸς κύριος τοῖς (η) ὑπομένουσι, † καὶ οἱ οἰκτιρμοὶ αὐ-10 τοῦ ἐπὶ πάντα τὰ ἔργα αὐτοῦ. † Ἐξομολογησάσθωσάν σοι κύριε πάντα τὰ ἔργα σου, † καὶ οἱ ὅσιοί σου εὐλο-11 γησάτωσάν σε. † Δόξαν τῆς βασιλείας σου ἐροῦσι, † καὶ 12 τὴν δυναστείαν σου λαλήσουσι. † Τοῦ γνωρίσαι τοῖς υἱοῖς τῶν ἀνθρώπων (θ) τὴν δυναστείαν σου, † καὶ τὴν δόξαν τῆς 13 μεγαλοπρεπείας τῆς βασιλείας σου. † Ἡ βασιλεία σου βασιλεία πάντων τῶν αἰώνων, † καὶ ἡ δεσποτεία σου ἐν πάσῃ γενεᾷ καὶ γενεᾷ. † πιστὸς κύριος ἐν τοῖς λόγοις 14 αὐτοῦ, † καὶ ὅσιος ἐν πᾶσι τοῖς ἔργοις αὐτοῦ. † Ὑποστηρίζει κύριος πάντας τοὺς καταπίπτοντας, † καὶ ἀνορ-15 θοῖ πάντας τοὺς κατερραγμένους. † Οἱ ὀφθαλμοὶ πάντων εἰς σὲ ἐλπίζουσι, † καὶ σὺ δίδως τὴν τροφὴν αὐ-16 τῶν ἐν εὐκαιρίᾳ. † (ι) Ἀνοίγεις σὺ τὰς χεῖράς σου, 17 † καὶ ἐμπιπλᾷς πᾶν ζῶον εὐδοκίας. † Δίκαιος κύριος ἐν πάσαις ταῖς ὁδοῖς αὐτοῦ, † καὶ ὅσιος ἐν πᾶσι τοῖς 18 ἔργοις αὐτοῦ. † Ἐγγὺς κύριος πᾶσι τοῖς ἐπικαλουμένοις αὐτόν, † πᾶσι τοῖς ἐπικαλουμένοις αὐτὸν 19 ἐν ἀληθείᾳ. † Θέλημα τῶν φοβουμένων αὐτὸν ποιήσει, καὶ τῆς δεήσεως αὐτῶν ἐπακούσεται, καὶ 20 σώσει αὐτούς. † Φυλάσσει κύριος πάντας τοὺς ἀγαπῶντας αὐτόν, † καὶ πάντας τοὺς ἁμαρτωλοὺς (κ) ἐξ-21 ολοθρεύσει. † Αἴνεσιν κυρίου λαλήσει τὸ στόμα μου, † καὶ εὐλογείτω πᾶσα σὰρξ τὸ ὄνομα τὸ ἅγιον αὐτοῦ, † εἰς τὸν αἰῶνα καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος.

1 Ἀλληλούϊα. Ἀγγαίου καὶ Ζαχαρίου. ρμε΄.

2 † ΑΙνει ἡ ψυχή μου τὸν κύριον. † αἰνέσω κύριον ἐν ζωῇ μου, † ψαλῶ τῷ θεῷ μου ἕως ὑπάρχω. 3 † μὴ πεποίθατε ἐπ' ἄρχοντας καὶ ἐφ' υἱοὺς ἀνθρώπων, 4 οἷς οὐκ ἔστι σωτηρία. † Ἐξελεύσεται τὸ πνεῦμα αὐτοῦ, καὶ ἐπιστρέψει εἰς τὴν γῆν αὐτοῦ, † ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ ἀπολοῦνται πάντες οἱ διαλογισμοὶ αὐτῶν.

Ψαλ. ρμδ΄. MS. A. (β) Μέγας κύριος (γ) δόξης σου τῆς ἁγιωσύνης (δ) † καὶ τὴν δυναστείαν σου λαλήσουσιν. Μνήμην (ε) ἐρεύξονται, (ζ) ὑψωθήσονται. (η) ὑπομένουσιν αὐτόν, καὶ (θ) τὴν δύναμίν (ι) Ἀνοίξεις (κ) ἐξολεθρεύσει.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

2 Per ſingulos dies benedicam te, & laudabo nomen tuum in ſeculum, & in ſeculum ſeculi. 3 Magnus Dominus, & [c] laudabilis valdè: & magnitudinis ejus non eſt (e) finis. 4 Generatio & generatio laudabit opera tua: & virtutem tuam annuntiabunt. 5 Et (f) magnificentiam gloriæ ſanctitatis tuæ loquentur; & mirabilia tua narrabunt. 6 Et [d] virtutem terribilium tuorum dicent; & (g) magnitudinem tuam narrabunt. 7 Memoriam abundantiæ (h) ſuavitatis tuæ eructabunt: et (i) juſtitiâ tuâ exultabunt. 8 Miſerator & miſericors Dominus, [e] longanimis, & multũ miſericors. 9 Suavis eſt Dominus (k) [f] ſuſtinentibus: & miſerationes (l) ejus ſuper omnia opera ejus: 10 Confiteantur tibi, Domine, omnia opera tua: & Sancti tui benedicant te. 11 Gloriam regni tui dicent; & potentiam tuam loquentur. 12 Ut notam faciant filiis hominum potentiam tuam, & gloriã magnificentiæ regni tui. 13 Regnum tuum, regnum omnium ſeculorum: et dominatio tua in omni generatione, & generatione. 14 (m) Fidelis Dominus in verbis ſuis, [g] & ſanctus in omnibꝰ operibꝰ ſuis. 15 (n) Suffulcit Dominus [h] omnes qui ruunt: & erigit omnes eliſos. 16 [i] Oculi omnium in te ſperant: & tu das eſcam [k] illorum in tempore opportuno. 17 [l] Aperis tu manus tuas: & imples omne animal [m] benedictione. 18 Juſtus Dominus in omnibus viis ſuis, [n] & ſanctus in omnibus operibus ſuis. 19 Propè eſt Dominus invocantibus eum: omnibus invocantibus eum in veritate. 20 Voluntatem timentium ſe faciet: & deprecationem eorum exaudiet: et ſalvos faciet eos. 21 Cuſtodit Dominus omnes [o] diligentes ipſũ: et omnes peccatores diſperdet. 22 Laudationem Domini loquetur os meum: & benedicat omnis caro nomen ſanctum ejus in ſeculum, & in ſeculum ſeculi.

1 Alleluja, (a) Aggæi, & Zachariæ.

CXLV.

1 LAuda, anima mea, Dñm: laudabo Dominum in vita mea: pſallam Deo meo, (b) quamdiu ſum. 2 Nolite confidere in principibus, (c) Et in filiis hominũ, [a] quibꝰ (d) non eſt ſalꝰ. 3 Exibit [b] ſpiritus ejus, et (e) revertetur in terrã ſuã: in illa die (f) peribunt omnes cogitationes (g) eorum.

Verſio ÆTHIOPICA.

ኵሉ:እሚረ:እባርከከ::ወእሴብሖ:ለስም 2
ከ::ለዓለም:ወለዓለመ:ዓለም::=: ዐቢ 3
ይ:እግዚአብሔር:ወብዙሕ:እኮቴቱ::ወ
አልቦ:ጽንፈ:ዕበዩ:ዘእሁ::=: ትውልደ:ት 4
ውልድ:ይንዕዱ:ምግባሪከ::ወይዜንው:ኀ
ይለከ::=: ወይነግሩ:ዕበየ:ክብረ:ስብሐተ: 5
ቅድሳቲከ::ወያየድዑ:መንክረከ::=: ወይብ 6
ሉ:ግሩመ:ኀይልከ::ወይነግሩ:ኀይለ:ግር
ማከ::ወያየድዑ:ጽንዐከ::=: ወይጕሥ 7
ዑ:ተዝከረ:ብዝኀ:ምሕረትከ::ወይትሐ
ሠዩ:በጽድቅከ::=: መሐሪ:ወመስተሣህ 8
ል:እግዚአብሔር::ርሑቀ:መዐት:ወብዙ
ኀ:ምሕረት:ወጻድቅ::=: ኄር:እግዚአብ 9
ሔር:ለእለ:ይትዔገሥዎ::ወሣህሉ:ሳዕለ:
ኵሉ:ተግባሩ::=: ይገኑ:ለከ:እግዚኦ: 10
ኵሉ:ተግባሪከ::ይባርኩከ:ጻድቃኒከ::=:
ስብሐተ:ይብሉ:ለመንግሥትከ::ወይነግሩ: 11
ኀይለከ::=: ከመ:ይንግርዎሙ:ለእጓለ:እ 12
መሕያው:ኀይለከ::ወዕበየ:ክብረ:ስብሐ
ተ:መንግሥትከ::=: መንግሥትከሰ:መንግ 13
ሥት:ዘለኵሉ:ዓለም::ወምኵናኒከኒ:ለት
ውልደ:ትውልድ::=: መእመን:እግዚአብ 14
ሔር:በኵሉ:ቃሉ:ወጻድቅ:በኵሉ:ምግባ
ሩ::=: ይሠውቆሙ:እግዚአብሔር:ለእ 15
ለ:ተንተኑ::ወያንሥኦሙ:እግዚአብሔር:
ለእለ:ወድቁ::=: ዐይነ:ኵሉ:ነፍስ:ይሴ 16
ፎ:ኪያከ::አንተ:ትሁቦሙ:ሲሳዮሙ:በጊ
ዜሁ::=: ትሰፍሕ:የመንከ:ወታጸግብ:ለ 17
ኵሉ:እንስሳ:ዘበሥርዐትከ::=: ጻድቅ: 18
እግዚአብሔር:በኵሉ:ፍናዊሁ::ወኄር:በ
ኵሉ:ምግባሩ::=: ቅሩብ:እግዚአብሔ 19
ር:ለኵሎሙ:እለ:ይጼውዕዎ::ወለኵሎ
ሙ:እለ:ይጼውዕዎ:በጽድቅ::=: ወይገብ 20
ር:ፈቃደሙ:ለእለ:ይፈርህዎ::ወይሰምዖ
ሙ:ጸሎቶሙ:ወያድኅኖሙ::=: የዐቅቦ 21
ሙ:እግዚአብሔር:ለኵሎሙ:እለ:ይፈርህ
ዎ::ወይሠርዎሙ:ለኵሎሙ:ኃጥአን::=:
ስብሐተ:እግዚአብሔር:ይነግር:አፉየ::ወ 22
ኵሉ:ዘሥጋ:ይባርክ:ለስሙ:ቅዱስ::ለዓ
ለም:ወለዓለመ:ዓለም::=:

ሃሌሉያ:ዘሐጌ:ወዘካርያስ::

የሀቲ ተአኵቶ:ነፍስየ:ለእግዚአብሔር:: 1
እሴብሖ:ለእግዚአብሔር:በሕይወትየ::ወ
እዜምር:ለአምላኪየ:በአምጣነ:ሀለው
ኩ::=: ወኢትትአመኑ:በመላእክት::ወኢ 2
በእጓለ:እመሕያው:እለ:ኢይክሉ:አድኅ
ኖ::=: ተወፅአ:ነፍሶሙ:ወይገብኡ:ውስ 3
ተ:መሬቶሙ::ውእተ:እሚረ:ይጠፍእ:ኵ
ሎ:ምክሮሙ::=:

INTERP. ÆTHIOP. [c] multa eſt ejus gloria: [d] terrorem virtutis tuæ dicent; & virtutem terroris tui prædicabunt; & potentiam tuam annuntiabunt. [e] tardus ad iram, & abundans miſericordiâ & veritate. [f] ſuſtinentibus eum. [g] & juſtus in [h] eos qui dilabuntur: & erigit Deus eos qui corruunt. [i] Oculus omnis viventis in te ſperat: [k] illius in tempore ſuo. [l] Extendis dexteram tuam: & [m] ſecundum decretum tuum. [n] & bonus [o] timentes ipſum: *PSAL. CXLV.* [a] qui ſalvare nequeunt. [b] ſpiritus eorum, & revertentur

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

2 كل يوم اباركك وابارك اسمك الي الابد والي ابد الابد * ان الرب عظيم هو ومبارك جدا *
3
4 ولا نهاية لعظمته * جيل فجيل يبارك اعمالك ويخبر بقوتك * ويتكلم بعظمة بهاء مجد قدسك *
5
6 ويذكر عجايبك * وينطق بقوة مخافتك * ويحدث بعظمتك ويقال بجبروتك * ويستفاض في
7
8 ذكر كثرة صلاحك ويتلي عدلك * الرب رووف رحيم هو طويل الاناة وكثير الرحمة * صالح
9
10 هو الرب للكل ورافته علي جميع اعماله * فليشكرك يا رب جميع اعمالك وقديسوك يباركونك *
11 * وينطقون بمجد مملكتك ويقولون جبروتك * ويظهرون جبروتك لبني البشر ومجد عظيم
12
13 بهاء مملكتك * مملكتك هي مملكة الي جميع الدهور وسيادتك في كل جيل فجيل الرب
14 صادق في كل اقواله وقدوس في جميع اعماله * الرب يسند الساقطين ويقيم المنكسرين *
15 * ان اعين الكل لمرتجية اياك وانت توتيهم طعامهم في حينه * تبسط يدك فيمتلي كل
16
17 حي مسرة * الرب عدل هو في جميع سبله وقدوس في جميع اعماله * الرب قريب من كل
18
19 الصارخين اليه وكل الطالبين منه بحق * وصانع ارادة اتقياه يستجيب طلبتهم
20 ويخلصهم * الرب يحفظ الذين يحبونه ويبيد جميع الخطاة * بتسبيح الرب ينطق فمي *
21 فليبارك اسمه القدوس كل ذي جسد الي الابد والي ابد الابد * اللليلويا *

1 * المزمور المائة والخامس والاربعون * لاجاس وزكرياء * وهو ك * استيخن *

2 يا نفسي باركي الرب * ابارك الرب في حياتي * وارتل لالهي ما دمت حيا * لا تتوكلوا علي الروساء
3
4 ولا علي بني البشر * الذين ليس عندهم خلاص * فان ارواحهم تفارقهم ويعودون الي ترابهم *
في ذلك اليوم تفسد جميع افكارهم *

2 *Singulis diebus benedicam te, & benedicam nomini tuo in æternum, et in ſeculum ſeculi.* 3 *Nam Dominus magnus eſt & benedictus admodum, et nullus eſt terminus magnitudini ejus.* 4 *Generatio et generatio benedicet opera tua, & enarrabit fortitudinem tuam:* 5 *Et loquetur magnitudinem nitoris gloriæ ſanctitatis tuæ, & commemorabit miracula tua:* 6 *Et depromet vim terroris tui, et effabitur majeſtatem tuam,* 7 *& referet potentiam tuam: Et prorumpet in memoriam copiæ bonitatis tuæ, & recitabit juſtitiam tuam.* 8 *Dominus clemens ac miſericors eſt, longanimis, & copioſus miſericordiâ.* 9 *Optimus eſt Dominus in omnes, & clementia ejus ſuper omnia opera ejus.* 10 *Itaque gratias agant tibi omnia opera tua, & ſancti tui benedicent tibi:* 11 *Et proferent gloriam regni tui, & dicent* 12 *potentiam tuam: Et patefacient potentiam tuam filiis hominum, et gloriam ſummi ſplendoris regni tui.* 13 *Regnum tuum eſt regnum ad omnia ſecula, & dominatio tua in omnem generationem & generationem. Dominus verax eſt in cunctis ſermonibus ſuis, & ſanctus in omnibus operibus ſuis.* 14 *Dominus corroborat labentes, & erigit fractos.* 15 *Et verò oculi omnium te ſperant, & tu concedis eis cibum illorum tempeſtivè.* 16 *Extendis manum tuam,* 17 *et repletur omne vivum exultatione. Dominus juſtiſſimus eſt in omnibus ſemitis ſuis, & ſanctus in cunctis operibus ſuis.* 18 *Dominus proximus eſt omnibus clamantibus ad eum, & omnibus verè precantibus eum.* 19 *Et exequentium voluntatem ejus, timentium illum, exaudiet petitionem, & ſalvabit eos.* 20 *Dominus tuetur eos qui diligunt ipſum, & perdet omnes peccatores.* 21 *Laudationem Domini promet os meum, & benedicat nomini ejus ſancto omne præditum corpore, in æternum & in ſeculum ſeculi. Alleluja.*

PSAL. CXLV.

1 Aggæi et Zachariæ. Ver.20.

2 *O Anima mea benedic Domino: Benedicam Dominum in vita mea, et pſallam, Deo meo quamdiu vixero.* 3 *Ne confidatis in principibus, neque in filiis hominum, apud quos non eſt ſalus:* 4 *Quoniam ſpiritus eorum ſeparabuntur ab eis, & revertentur in pulverem ſuum. In illo die corrumpentur omnes cogitationes eorum.*

תהלים : קמז

Faciens .ſuo Deo Domino *ſuper ejus* ſpes:*ejus* auxilio in Jahacob Deus cuj' *Beatitates*
5 אַשְׁרֵי שֶׁאֵל יַעֲקֹב בְּעֶזְרוֹ שִׂבְרוֹ עַל־יְהוָה אֱלֹהָיו׃ עֹשֶׂה 5 6
.ſeculum in veritatem *cuſtodiens* :eis in quæ omnia & , mare ,terram & ,cœlos
שָׁמַיִם וָאָרֶץ אֶת־הַיָּם וְאֶת־כָּל־אֲשֶׁר־בָּם הַשֹּׁמֵר אֱמֶת לְעוֹלָם׃ 6
ſolvens Dominus : famelicis panem *dans* , afflictis violentia judicium *Faciens*
7 עֹשֶׂה מִשְׁפָּט לָעֲשׁוּקִים נֹתֵן לֶחֶם לָרְעֵבִים יְהוָה מַתִּיר 7
diligens Dominus : curvatos *erigens* Dominus ,*cæcos aperiens* Dominus .vinctos
8 אֲסוּרִים׃ יְהוָה פֹּקֵחַ עִוְרִים יְהוָה זֹקֵף כְּפוּפִים יְהוָה אֹהֵב 8
viam & :*eriget* viduam & , pupillum ,advenas *cuſtodiens* Dominus .juſtos
9 צַדִּיקִים׃ יְהוָה שֹׁמֵר אֶת־גֵּרִים יָתוֹם וְאַלְמָנָה יְעוֹדֵד וְדֶרֶךְ 9
Sijon tuus Deus , ſeculum in Dominus Regnabit .ſubvertet impiorum
10 רְשָׁעִים יְעַוֵּת׃ יִמְלֹךְ יְהוָה לְעוֹלָם אֱלֹהַיִךְ צִיּוֹן 10
.jah-Hallelu .generatione &,generatione in
לְדֹר וָדֹר הַלְלוּ־יָהּ׃

PSAL. XCLVII. קמז

.laus *decens*;*jucundum* quoniam:noſtro Deo canere bonum quoniam ,*Jah* Laudate
1 הַלְלוּ יָהּ כִּי־טוֹב זַמְּרָה אֱלֹהֵינוּ כִּי־נָעִים נָאוָה תְהִלָּה׃ 1
contritos *Sanans* .congregabit Iſrael *expulſos* : Dominus Jeruſalaim Ædificans
2 בּוֹנֵה יְרוּשָׁלַםִ יְהוָה נִדְחֵי יִשְׂרָאֵל יְכַנֵּס׃ הָרֹפֵא לִשְׁבוּרֵי 2 3
eis omnibus : ſtellarum numerum *Numerans* .eorum dolores *alligans* & : corde
4 לֵב וּמְחַבֵּשׁ לְעַצְּבוֹתָם׃ מוֹנֶה מִסְפָּר לַכּוֹכָבִים לְכֻלָּם 4
non ejus intelligentiæ:fortitudine multus &,noſter Dominus Magnus.*vocabit* nomina
5 שֵׁמוֹת יִקְרָא׃ גָּדוֹל אֲדוֹנֵינוּ וְרַב־כֹּחַ לִתְבוּנָתוֹ אֵין 5
.terram ad uſque impios *humilians* : Dominus manſuetos *Erigens* .numerus
6 מִסְפָּר׃ מְעוֹדֵד עֲנָוִים יְהוָה מַשְׁפִּיל רְשָׁעִים עֲדֵי־אָרֶץ׃ 6
Operiens .cithara in noſtro Deo canite : confeſſione in Domino *Reſpondete*
7 עֱנוּ לַיהוָה בְּתוֹדָה זַמְּרוּ לֵאלֹהֵינוּ בְכִנּוֹר׃ הַמְכַסֶּה 7 8
.herbam montes *faciens germinare* : pluviam terræ *parans* ,nubibus *in* cœlos
8 שָׁמַיִם בְּעָבִים הַמֵּכִין לָאָרֶץ מָטָר הַמַּצְמִיחַ הָרִים חָצִיר׃
fortitudine in Non .clamaverint quum , *corvi* filiis :*ſuum panem* jumento *Dans*
9 נוֹתֵן לִבְהֵמָה לַחְמָהּ לִבְנֵי עֹרֵב אֲשֶׁר יִקְרָאוּ׃ לֹא בִגְבוּרַת 9 10
; eum timentes Dominus *Volens* .volet viri *coxendicibus in non* :*volet* equi
10 11 הַסּוּס יֶחְפָּץ לֹא־בְשׁוֹקֵי הָאִישׁ יִרְצֶה׃ רוֹצֶה יְהוָה אֶת־יְרֵאָיו אֶת־ 11
tuum Deum lauda : Dominum Jeruſalaim Lauda .ejus miſericordia in *exſpectantes*
12 הַמְיַחֲלִים לְחַסְדּוֹ׃ שַׁבְּחִי יְרוּשָׁלַםִ אֶת־יְהוָה הַלְלִי אֱלֹהַיִךְ 12
tuis filiis benedixit : tuarum portarum vectes roboravit Quoniam .Sijon
13 צִיּוֹן׃ כִּי־חִזַּק בְּרִיחֵי שְׁעָרָיִךְ בֵּרַךְ בָּנָיִךְ 13
.te faciet ſaturare *triticorum* adipe : pacem tuum terminum *Ponens* .*tuo interiori* in
14 בְּקִרְבֵּךְ׃ הַשָּׂם־גְּבוּלֵךְ שָׁלוֹם חֵלֶב חִטִּים יַשְׂבִּיעֵךְ׃ 14

תרגום TARGUM.

טוּבֵיהּ דֶּאֱלָהָא יַעֲקֹב בְּסַעֲדֵיהּ סַבְרֵיהּ 5
עַל יְיָ אֱלָהֵיהּ׃ דַּעֲבַד שְׁמַיָּא וְאַרְעָא יַת 6
יַמָּא וְיַת כָּל דִּי בְהוֹן דִּי נָטַר קְשׁוֹט לַעֲלָם׃
דִּי עָבֵד דִּינָא לִטְלוּמִין יָהֵב מְזוֹן לִכְפִינִין 7
יְיָ דְּשָׁרֵי אֲסִירַיָּא׃ יְיָ פָּקַח לְסַמְיָן יְיָ זָקֵף 8
כְּפִיפִין יְיָ רָחֵם צַדִּיקַיָּא׃ יְיָ נָטַר יַת גִּיּוֹרַיָּא 9
יַתְמִין וְאַרְמְלָא יְסוֹבַר וְאוֹרְחָא דְרַשִׁיעֵי
יְטַלְטֵל׃ יִמְלוֹךְ יְיָ לַעֲלַם אֱלָהַיִךְ צִיּוֹן לְדָר 10
וְדָר הַלְלוּיָהּ׃

קמז

הַלְלוּיָהּ אֲרוּם טָב לְזַמָּרָא קֳדָם אֱלָהָנָא 1
אֲרוּם בְּסִים יָאֵיָא תּוּשְׁבַּחְתָּא׃ בָּנֵי יְרוּשְׁלֵם 2
יְיָ גָּלְוָת יִשְׂרָאֵל יְכַנֵּשׁ׃ דְּמַסֵּי לִתְבִירֵי לִבָּא 3
וּמַסִּיק אַרְכָא לְצַעֲרֵיהוֹן׃ מָנֵי סְכוּם 4
לְכוֹכְבַיָּא לְכוּלְהוֹן בִּשְׁמָא קָרֵי׃ רַב מָרָנָא 5
וְסַגִּי חֵילָא לְסוּכְלְתָנוּתֵיהּ לֵית סְכוּם׃
מְסוֹבַר עִנְוְתָנַיָּא יְיָ מַכִּיךְ רַשִׁיעַיָּא עֲדֵי 6
אַרְעָא׃ שַׁבַּחוּ קֳדָם יְיָ בְּתוֹדַתָא זַמַּרוּ קֳדָם 7
אֱלָהָנָא בְּכִנָּרָא׃ דְּחָפֵי שְׁמַיָּא בַּעֲנָנֵי דִּמְתַקֵּן 8
לְאַרְעָא מִטְרָא דְּמַרְבֵּי טוּרַיָּא עִסְבֵּי׃ יָהֵיב 9
לִבְעִירָא מְזוֹנֵיהּ לִבְנֵי עוֹרְבָא דְּקָרַן׃ לָא 10
בִּגְבוּרְתָא דְּרָכְבִין עַל סוּסֵי יִצְבֵּי לָא בְשׁוֹקֵי
גּוּבְרִין רַהֲטָנִין יִצְבֵּי׃ רָעֵי יְיָ יַת דַּחֲלוּי 11
יַת דִּמְסַבְּרִין לְטוּבֵיהּ׃ שַׁבַּחִי יְרוּשְׁלֵם יַת 12
יְיָ שַׁבַּחִי אֱלָהַיִךְ צִיּוֹן׃ אֲרוּם תַּקִּף נַגְרֵי תַּרְעַיִךְ 13
בָּרִיךְ בְּנַיְכִי בִּמְצִעַיִךְ׃ דְּשַׁוֵּי תְּחוּמַיִךְ שְׁלָם 14
שְׁמַן חִנְטַיָּא יְסַבְּעִנַּךְ׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Beatus ille cui Deus Jaacob eſt auxilio; 5
ſpes ejus in Domino Deo ejus. Qui fecit 6
cœlos & terram, maria & omnia quæ in
eis ſunt: qui cuſtodit veritatem in perpetuum.
Qui facit judicium calumniam ſuſti- 7
nentibus, dat cibum eſurientibus: Dominus
ſolvit vinctos. Dominus illuminat cæ- 8
cos, Dominus erigit curvos, Dominus diligit
juſtos. Dominus ſervat *advenam*; pu- 9
pillum & viduam ſuſcipiet; & *viam* impiorum
diſperdet. Regnabit Dominus in 10
æternum, Deus tuus Sion in generationem
& generationem. *Hallelujah.*

PSAL. CXLVII.

LAudate Deum, quoniam bonum eſt 1
pſallere coram Deo noſtro, quoniam delectabilis
[*&*] pulchra laus eſt. Ædifi- 2
cans Jeruſalem Dominus, captivitatem Iſrael
congregabit. Qui ſanat contritos cor- 3
de, & adducit ſanitatem morbis eorum.
Imponit numerũ ſtellis, & omnes nomina- 4
tim vocat. Magn' dominator noſter, & mul- 5
tus virtute: & prudentiæ ejus non eſt numerus.
Suſcipiens manſuetos Deus, humilians 6
impios uſque ad terram. Laudes dicite co- 7
ram Domino in confeſſione: pſallite coram
Deo noſtro in cithara. Qui operit cœlum 8
nubibus, qui præparat terræ pluviam; qui
creſcere facit in montibus herbam. Dat ju- 9
mentis cibum ſuum; pullis corvi qui clamant.
Non in fortitudine equitantium equos 10
beneplacet ei; neque in tibiis *virorum*
currentium voluntas ejus. Benevolentia 11
complectitur Dominus timentes ſe, & eos
qui expectant benignitatem ipſius. Lau- 12
da Jeruſalem Dominum, lauda Deum tuum
Sion. Quoniam roboravit ſeras portarum 13
tuarum: benedixit filiis tuis in medio tui.
Qui poſuit terminos tuos pacem, *adipe* 14
frumentorum ſaturavit te.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

5 * ܛܘܒܘܗܝ ܠܡܢ ܕܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ ܒܥܘܕܪܢܗ : ܘܣܒܪܗ ܥܠ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗ. * ܕܥܒܕ 5 6
ܫܡܝܐ ܘܐܪܥܐ : ܘܝܡܡܐ ܘܟܠ ܕܐܝܬ ܒܗܘܢ. ܢܛܪ ܩܘܫܬܐ ܠܥܠܡ : * ܥܒܕ ܕܝܢܐ 7
ܠܡܛܠܡܐ. ܝܗܒ ܠܚܡܐ ܠܟܦܢܐ ܡܪܝܐ : ܫܪܐ ܐܣܝܪܐ * ܡܪܝܐ. ܦܬܚ ܥܘܝܪܐ 8
ܡܪܝܐ : ܙܩܦ ܠܟܦܝܦܐ ܡܪܝܐ. ܪܚܡ ܠܙܕܝܩܐ * ܡܪܝܐ : ܘܢܛܪ ܠܡܣܟܢܐ. ܠܝܬܡܐ 9
ܡܬܪܣ ܘܠܐܪܡܠܬܐ : ܘܐܘܪܚܐ ܕܥܘܠܐ ܡܛܒܥ. * ܐܡܠܟ ܡܪܝܐ ܠܥܠܡ : ܐܠܗܟܝ 10
ܨܗܝܘܢ ܠܕܪܕܪܝܢ.

Beatus qui Deum Jacobi habet in auxilium 5
ſuum, & cujus ſpes eſt in Domino Deo Con- 6
ditore cœli ac terræ & marium, atque omniũ
quæ ſunt in eis. Cuſtodit veritatem in ſeculum,
Facit judicium oppreſſis, dat panem eſu- 7
rientibus Dominus: ſolvit vinctos Dominus: 8
aperit cœcos Dominus: erigit inclinatos Dominus:
diligit juſtos Dominus, ſervátque pau- 9
peres: alit pupillos ac viduas: viam autem
nefariorum ſubmergit. Regnavit Dominus 10
in æternum, Deus tuus ô Sion in generationem
generationum.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܡܘ *

1 ܕܚܓܝ ܘܕܙܟܪܝܐ. ܥܠ ܙܘܪܒܒܠ ܘܝܫܘܥ ܟܗܢܐ ܘܥܙܪܐ ܕܡܬܚܦܛܝܢ ܥܠ ܒܢܝܢܐ
ܕܐܘܪܫܠܡ : ܠܢ ܕܝܢ ܬܫܒܘܚܬܐ ܥܡ ܡܡܠܠܘܬܐ ܐܠܗܝܬܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܕ.

2 3 * ܛܒ ܠܡܙܡܪܘ ܠܐܠܗܢ ܘܒܣܝܡ : ܘܠܗ ܝܐܝܐ ܬܫܒܘܚܬܐ. * ܒܢܐ ܠܐܘܪܫܠܡ ܡܪܝܐ :
4 5 ܘܡܒܕܪܘܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܡܟܢܫ. * ܡܐܣܐ ܠܬܒܝܪܝ ܠܒܐ ܘܡܚܒܫ ܠܟܐܒܝܗܘܢ : * ܡܢܐ
ܡܢܝܢܐ ܠܟܘܟܒܐ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܫܡܗܐ ܩܪܐ : * ܪܒ ܗܘ ܡܪܢ ܘܣܓܝ ܚܝܠܗ. ܘܠܝܬ
6 ܣܟܐ ܠܣܘܟܠܗ : * ܡܪܝܡ ܡܪܝܐ ܠܡܟܝܟܐ. ܘܡܫܦܠ ܠܪܫܝܥܐ ܥܕܡܐ ܠܐܪܥܐ :
7 8 * ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ ܒܬܫܒܘܚܬܐ. ܙܡܪܘ ܠܡܪܝܐ ܒܟܢܪܐ : * ܕܡܟܣܐ ܫܡܝܐ ܒܥܢܢܐ. ܘܡܚܬ
9 ܡܛܪܐ ܥܠ ܐܪܥܐ : ܡܦܩ ܥܣܒܐ ܥܠ ܛܘܪܐ. * ܘܝܗܒ ܠܒܥܝܪܐ ܡܐܟܘܠܬܐ : ܘܠܒܢܝ
10 11 ܥܘܪܒܐ ܕܩܪܝܢ. * ܠܐ ܨܒܐ ܡܪܝܐ ܒܚܝܠܗ ܕܣܘܣܝܐ : ܘܠܐ ܒܫܩܘܗܝ ܕܓܢܒܪܐ ܨܒܐ. * ܐܠܐ
ܨܒܐ ܡܪܝܐ ܒܕܚܠܘܗܝ : ܘܒܐܝܠܝܢ ܕܡܣܟܝܢ ܠܛܝܒܘܬܗ.

PSAL. CXLVI.

Aggæi & Zachariæ. De Zorobabel & Jeſu Sacerdote atque Ezrâ qui ſolicitabant ædificium Jeruſalem. Nobis autem laudatio cum Theologia. Verſ. 24. 1

BOnum eſt pſallere Deo noſtro, atque ju- 2
cundum: eúmque decet laudatio. Ædificat
Jeruſalem Dominus, & diſperſos Iſraelis
congregat: Sanat fractos corde, & medetur 3
doloribus eorum: Numeravit numerum ſtel- 4
lis, & omnibus impoſuit nomina. Maximus 5
eſt Dominus noſter, & potentiſſimum robur
ejus, neque ullus eſt terminus intelligentiæ
ejus. Evehit Dominus pauperes, & deprimit 6
iniquos uſque ad terram. Laudate Dominum 7
laude, pſallite Domino cum lyra: Qui operit 8
cœlum nubibus inſértque pluviam ſuper terram;
producit fœnum ſuper montes, Præ- 9
bétque pecori cibum, & pullis corvi vocantibus.
Non eſt gratum Domino robur equi, 10
neque crura gigantis probat; Sed oblecta- 11
tur Dominus timentibus eum, & iis qui præſtolantur
ipſius bonitatem.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܡܙ *

ܕܚܓܝ ܘܕܙܟܪܝܐ. ܟܕ ܡܬܚܦܛܝܢ ܒܫܘܠܡܐ ܕܗܝܟܠܐ ܕܐܘܪܫܠܡ : ܘܬܫܒܘܚܬܐ
ܥܡ ܡܡܠܠܘܬܐ ܐܠܗܝܬܐ. ܦܬܓܡܐ ܝܚ.

12 * ܫܒܚܝ ܐܘܪܫܠܡ ܠܡܪܝܐ. ܫܒܚܝ ܠܐܠܗܟܝ ܨܗܝܘܢ : * ܡܛܠ ܕܐܚܣܢ
13 14 ܡܘܟܠܐ ܕܬܪܥܝܟܝ ܘܒܪܟ ܠܒܢܝܟܝ ܒܓܘܟܝ : * ܣܡ ܬܚܘܡܝܟܝ ܒܫܠܡܐ.
ܘܡܢ ܬܪܒܐ ܕܚܛܐ ܣܒܥܟܝ :

PSAL. CXLVII.

Aggæi & Zachariæ. Quum urgerent complementum templi Jeroſolymitani. Et laus cum Theologia. Verſ. 18.

LAudate Jeruſalem Dominũ, lauda Deum 12
tuum Sion; Quoniam roboravit vectes 13
portarum tuarum, & benedixit filiis tuis intra
te; Conſtituit fines tuos in tranquillitate, 14
& adipe frumenti ſaturavit te;

Versio VULG. LAT.

5 Beatus, cujus Deus Jacob adjutor ejus,
6 spes ejus in Dño Deo ipsius: Qui fecit
cœlum & terram, mare, & omnia
7 quæ in eis sunt. Qui custodit verita-
tem in seculum, facit judicium injuri-
am patientibus: dat escam esurien-
tibus. Dominus solvit compeditos:
8 Dominus illuminat cœcos. Dominus
erigit elisos, Dominus diligit justos.
9 Dominus custodit advenas, pupillum
& viduam suscipiet: & vias pecca-
10 torum disperdet. Regnabit Dominus
in secula: Deus tuus, Sion, in generati-
onem & generationem.

1 Alleluja. CXLVI.

Laudate Dominum, quoniam bo-
nus est psalmus: Deo nostro sit ju-
2 cunda, decoráque laudatio. Ædificans
Jerusalem Dominus: dispersiones
3 Israelis congregabit. Qui sanat con-
tritos corde: & alligat contritiones
4 eorum. Qui numerat multitudinem
stellarum: & omnibus eis nomina vo-
5 cat. Magnus Dominus noster, &
magna virtus ejus: & sapientiæ ejus
6 non est numerus. Suscipiens mansue-
tos Dominus: humilians autem pecca-
7 tores usque ad terram. Præcinite Do-
mino in confessione: psallite Deo
8 nostro in cithara. Qui operit cœlum
nubibus: & parat terræ pluviam.
Qui producit in montibus fœnum, &
9 herbam servituti hominum. Qui dat
jumentis escam ipsorum, & pullis cor-
10 vorum invocantibus eum. Non in for-
titudine equi voluntatem habebit: nec
11 in tibiis viri beneplacitum erit ei. Be-
neplacitum est Domino super timen-
tes eum: & in eis, qui sperant super
misericordia ejus.

Alleluja. CXLVII.

12 Lauda, Jerusalem, Dominum: lauda
13 Deum tuum, Sion. Quoniam con-
fortavit seras portarum tuarum: bene-
14 dixit filiis tuis in te. Qui posuit fi-
nes tuos pacem: & adipe frumenti
satiat te.

Versio GRÆC. LXX. Interp.

5 † Μακάριος οὗ ὁ θεὸς Ἰακὼβ (α) βοηθὸς αὐτοῦ,
6 † ἡ ἐλπὶς αὐτοῦ ἐπὶ κύριον τὸν θεὸν αὐτοῦ. † Τὸν
ποιήσαντα τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν, † τὴν θά-
7 λασσαν καὶ πάντα τὰ ἐν αὐτοῖς. † Τὸν φυλάσσοντα
ἀλήθειαν εἰς τὸν αἰῶνα. † ποιοῦντα κρίμα τοῖς ἀ-
δικουμένοις, † διδόντα τροφὴν τοῖς πεινῶσι. † κύ-
8 ριος λύει πεπεδημένους, † (β) Κύριος σοφοῖ τυφλοὺς,
† κύριος ἀνορθοῖ κατεῤῥαγμένους, † κύριος ἀγα-
9 πᾷ δικαίους, † Κύριος φυλάσσει τοὺς προσηλύτους.
† ὀρφανὸν καὶ χήραν ἀναλήψεται, † καὶ ὁδὸν ἁμαρτω-
10 λῶν (γ) ἀφανιεῖ. † Βασιλεύσει κύριος εἰς τὸν
αἰῶνα, † ὁ θεός σου Σιὼν εἰς γενεὰν καὶ γενεάν.

MS.A. (α) βοηθὸς, ἡ ἐλπὶς (β) Κύριος ἀνορθοῖ
κατεῤῥαγμένους, κύριος σοφοῖ τυφλοὺς, κύριος ἀ-
γαπᾷ δικαίους, (γ) ἀφανίσει.

1 Ἀλληλούϊα. Ἀγγαίου καὶ Ζαχαρίου. ρμϛʹ.

† Αἰνεῖτε τὸν κύριον ὅτι ἀγαθὸν ψαλμὸς,
2 † τῷ θεῷ ἡμῶν ἡδυνθείη αἴνεσις. † Οἰ-
κοδομῶν Ἱερουσαλὴμ ὁ κύριος, † καὶ τὰς δια-
3 σπορὰς τοῦ Ἰσραὴλ ἐπισυνάξει. † Ὁ ἰώμενος τοὺς
συντετριμμένους τὴν καρδίαν, † καὶ δεσμεύων τὰ
4 συντρίμματα αὐτῶν. † Ὁ ἀριθμῶν πλήθη ἄ-
5 στρων, καὶ πᾶσιν αὐτοῖς ὀνόματα καλῶν. † Μέ-
γας ὁ κύριος ἡμῶν, καὶ μεγάλη ἡ ἰσχὺς αὐτοῦ,
6 † καὶ τῆς συνέσεως αὐτοῦ οὐκ ἔστιν ἀριθμός. † Ἀ-
ναλαμβάνων πραεῖς ὁ κύριος, † ταπεινῶν δὲ ἁ-
7 μαρτωλοὺς ἕως τῆς γῆς. † Ἐξάρξατε τῷ κυρίῳ
ἐν ἐξομολογήσει, † ψάλατε τῷ θεῷ ἡμῶν ἐν κι-
8 θάρᾳ. † Τῷ περιβάλλοντι τὸν οὐρανὸν ἐν νεφέ-
λαις, † τῷ ἑτοιμάζοντι τῇ γῇ ὑετόν. † τῷ
ἐξανατέλλοντι ἐν ὄρεσι (α) χόρτον, καὶ
9 χλόην τῇ δουλείᾳ τῶν ἀνθρώπων. † Καὶ διδόντι
τοῖς κτήνεσι τροφὴν αὐτῶν, † καὶ τοῖς νεοσσοῖς
10 τῶν κοράκων τοῖς ἐπικαλουμένοις αὐτόν. † Οὐκ
ἐν τῇ δυναστείᾳ τοῦ ἵππου θελήσει, † οὐδὲ ἐν ταῖς
11 κνήμαις τοῦ ἀνδρὸς εὐδοκεῖ. † Εὐδοκεῖ κύριος
ἐν τοῖς φοβουμένοις αὐτὸν, † καὶ ἐν πᾶσι τοῖς ἐλ-
πίζουσιν ἐπὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ.

MS.A. (α) χόρτον, Καὶ διδόντι

Ἀλληλούϊα. Ἀγγαίου καὶ Ζαχαρίου. ρμζʹ.

12 13 † Ἐπαίνει Ἱερουσαλὴμ τὸν κύριον, † αἴνει τὸν θεόν
σου Σιών. † Ὅτι ἐνίσχυσε τοὺς μοχλοὺς τῶν
14 πυλῶν σου, † εὐλόγησε τοὺς υἱούς σου ἐν σοί. † Ὁ
τιθεὶς τὰ ὅριά σου εἰρήνην. † καὶ στέαρ πυροῦ ἐμ-
πιπλῶν σε.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

Beatus [c], *cujus Deus Jacob adju-* 5
tor ejus, spes ejus in Domino Deo i-
psius: Qui fecit cœlum, & terram, 6
mare, et omnia quæ in eis sunt. 5 Qui 7
custodit veritatem in seculum; facit
judicium injuriam patientibus, dat
escam esurientibus. 6 Dominus solvit
compeditos: Dominus (b) [d] *sapien-* 8
tes facit cæcos: 7 Dominus erigit eli-
sos: Dominus diligit justos: 8 Domi- 9
nus custodit (i) *proselytos, pupillum*
& viduam suscipiet: & viam pec-
catorum exterminabit. 9 Regnabit 10
Dominus in seculū: Deus tuus, Sion,
in generationem & generationem.

Alleluja, Aggæi, & Zachariæ. 1

CXLVI.

1 *Laudate Dominū, quoniam* (a)
bonum est psalmus: Deo nostro ju-
cunda (b) *sit laudatio. 2* (c) *Ædifi-* 2
cans Hierusalem Dominus: & (d)
dispersiones Israelis congregabit.
3 Qui sanat (e) *contritos corde: &* 3
alligat (f) *contritiones eorum. 4 Qui* 4
numerat (g) [a] *multitudines stella-*
rum, & (h) *omnibus eis nomina vo-*
cat. 5 Magnus Dominus noster, & 5
magna virtus ejus, & (i) *intelligen-*
tiæ ejus non est numerus. 6 (k) *Sus-* 6
cipiens mansuetos Dominus, humili-
ans autem peccatores usque ad ter-
ram. 7 (l) *Incipite Domino in con-* 7
fessione, psallite Deo nostro in (m)
cithara. 8 Qui cooperit cœlum in nu- 8
bibus, qui parat terræ pluviam. 9 Qui
exoriri facit in montibus fœnum,
& (n) *herbam servituti hominum.*
10 Et dat pecoribus escam ipsorum, 9
& pullis corvorum invocantibus
eum. 41 Non in (o) *potentatu equi* (p) 10
voluntatem habebit: neque in tibiis
(q) *viri* (r) *benè sentit. 12 Benè sen-* 11
tit Dominus in timentibus eum, &
(s) *in omnibus qui sperant super*
misericordia ejus.

Alleuja, (a) Aggæi, & Zachariæ.

CXLVII.

1 *Collauda, Hierusalem, Domi-* 12
num: (b) *lauda Deum tuum, Sion.*
2 Quoniam confirmavit vectes por- 13
tarum tuarum; [a] *benedixit filios*
tuos in te. 3 [b] *Qui ponit fines* 14
tuos pacem, & adipe frumenti sa-
tiat te.

Versio ÆTHIOPICA.

ብፁዕ ፡ ብእሲ፡ ዘእምላኩ፡ ያዕቆብ፡ ረዳኢ 4
ሁ። ወትውክልቱሂ ፡ ላዕለ፡ እግዚአብሔር፡
አምላኩ።ዘገብረ ፡ ሰማየ ፡ ወምድረ።ወባ
ሕረ ፡ ወኵሎ ፡ ዘውስቴቱ።፨ ዘየዐቅብ፡ 5
ለጽድቅ ፡ ለዓለም።ወይፈትሕ ፡ ሎሙ ፡ ለ
ግፉዓን ። ዘይሁቦሙ ፡ ሲሳዮሙ ፡ ለርኁባ
ን።፨ እግዚአብሔር፡ ይፈትሖሙ፡ለሙቁ 6
ሓን።እግዚአብሔር፡ያነሥኦሙ፡ ለእለ፡ ወ
ድቁ።፨ እግዚአብሔር ፡ ያጠብቦሙ፡ለዕ 7
ውራን።እግዚአብሔር ፡ ያፈቅሮሙ፡ ለጻድ
ቃን።፨ እግዚአብሔር፡የዐቅቦሙ፡ለፈላስ 8
ያን።ወይትዌከፎሙ፡ለአበሬት፡ ወለእጓለ፡
ማውታ።ወያማስን፡ፍኖተ፡ ኃጥኣን።፨ ይ 9
ነግሥ ፡ እግዚአብሔር፡ ለዓለም።አምላክ
ኪ፡ጽዮን፡ለትውልደ፡ትውልድ።፨

ሃሌሉያ።

የሀገ ሰብሕዎ ፡ ለእግዚአብሔር ፡ እስመ፡ 1
ሠናይ፡መዝሙር። ወለአምላክነ፡ ሐዋዝ፡ሰ
ብሖ።፨ የሐንጻ ፡ እግዚአብሔር፡ ለኢየ 2
ሩሳሌም።ወያስተጋብእ ፡ ዝርወቶሙ ፡ ለእ
ስራኤል።፨ ዘይፌውሶሙ ፡ ለቍሱላነ ፡ ል 3
ብ።ወይፀምሞሙ ፡ ቍስሎሙ።፨ ዘይኌል 4
ቆሙ፡ ለከዋክብት፡ በምልኦሙ።ወይጼውዖ
ሙ፡ለኵሎሙ፡ በበ ፡ አስማቲሆሙ።፨ ዐ 5
ቢይ፡እግዚአብሔር፡ ወዐቢይ፡ ኀይሉ።ወአ
ልቦ፡ ኍልቍ፡ ጥበቢሁ።፨ ያነሥኦሙ፡ እ 6
ግዚአብሔር ፡ ለየዋሃን።ወያኀስሮሙ ፡ ለኃ
ጥኣን፡ እስከ፡ ምድር።፨ ሰብሕዎ፣ ለእ 7
ግዚአብሔር ፡ በአሚን። ወዘምሩ ፡ ለአምላ
ክነ፡ በመሰንቆ።፨ ዘይገለብቦ፡ ለሰማይ፡በ 8
ደመና።ወያስተዴሉ፡ክረምተ፡ለምድር።፨
ወያበቍል፡ ሣዕረ፡ ውስተ፡ አድባር።ወሐመ 9
ልማለ፡ ለቅኔ፡ እጓለ፡ እመሕያው።፨ ዘይ 10
ሁቦሙ ፡ ሲሳዮሙ ፡ ለእንስሳ።ወለእጕለ፡ቋ
ዓት፡ እለ ፡ ይጼውዕዎ።፨ ኢይፈቅድ፡ ኀ 11
ይለ ፡ ፈረስ።ወኢይሠምር ፡ በአቍያጸ፡ ብ
እሲ።፨ ይሠምር፡እግዚአብሔር፡በእለ፡ 12
ይፈርህዎ።ወኵሎሙ ፡ እለ ፡ ይትዌከሉ፡በ
ምሕረቱ።፨

ሃሌሉያ።

የሀገ ትሴብሖ፡ ኢየሩሳሌም፡ ለእግዚአብ 1
ሔር።ሰብሕዮ ፡ ለአምላክኪ ፡ ጽዮን።፨
እስመ፡ አጽንዐ፡ መናስግተ፡ ኆኃትኪ።ወባረ 2
ኮሙ፡ ለውሉድኪ፡ በውስቴትኪ።፨ ወረሰ 3
የ፡ ሰላመ ፡ ለበሐውርትኪ። ወአጽገበኪ፡ ቁ
ቅሐ፡ስርናየ።፨

INTERP. ÆTHIOP. [c] vir, cujus [d] erigit eos qui corruunt: Dominus sapientes facit cœcos: Dominus diligit *PSAL.* CXLVI. [a] stellas in plenitudine earum, iisque omnibus & singulis nomina *PSAL. CXLVII.* [a] & benedixit [b] Et posuit regiones tuas pacem,

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

5 6 * طوبي لمن اله يعقوب معينه * وتوكله على الرب الاهه * خالق السماء والارض والبحر وجميع ما
7 فيه * حافظ العدل الي الابد * صانع الحكم للمظلومين * معطي الجياع طعاما * الرب يحلّ
8 9 الاسري * الرب يقيم الساقطين * الرب يعلم العميان * الرب يحب الصديقين * الرب يحفظ
10 الغرباء * ويعضد اليتيم والارملة * ويهلك سبيل الخطاة * الرب يملك الي الابد * والهك يا
صهيون منذ جيل الي جيل * اللليلويا *

1 * المزمور المائة والسادس والاربعون * * اللليلويا لاجاس وزخاريا * وهو كد * استيخن *
2 سبحوا الرب بالقول الصالح * والاهنا يرضيه التسبيح * باني يروسليم هو الرب * الرب يجمع متفرقي
3 4 اسرائيل * الذي يشفي المنكسرين قلوبهم وجابر كسرهم * المحصي كثرة الكواكب
5 6 ويسميها جميعها * عظيم هو الرب وعظيمة قوته ولا عدد لفهمه * الرب يقبل الوديعين ويذل
7 8 الخطاة الي الارض * ابتدوا للرب بالشكر * رتلوا لالهنا بالقيثار * الذي يجلل السماء بالغمام *
الذي يعد مطرا على الارض * الذي ينبت على الجبال عشبا * وخضرا لاستعباد البشر *
9 10 * ويعطي البهائم طعاما * وفراخ الغربان الذي يصرخ اليه * الرب لا يشاء قوة الفرس * ولا يسر
11 بغطاطة الجبار * وانما يسر الرب بخائفيه وبالذين يرجون رحمته * اللليلويا *
* المزمور المائة والسابع والاربعون * * على ما تقدم * وهو يح * استيخن *
12 13 * سبحي الرب يا يروسليم * سبحي الهك يا صهيون * فانه قوي عمد ابوابك * وبارك لبنيك
14 فيك * الذي يجعل تخومك في سلامة * ومن شحم القمح اشبعك *

Beatitudo illi, cujus Deus Jacobi adjutor 5
est, & cujus fiducia in Domino Deo suo:
Creatore cœli, & terræ, & maris, & o- 6
mnium quæ in eo sunt: servante æquita-
tem in æternum: Faciente judicium op- 7
pressis, & largiente famelicis escam. Do-
minus solvit vinctos: Dominus erigit ca- 8
dentes: Dominus docet cæcos: Dominus
diligit justos: Dominus custodit adve- 9
nas, & opitulatur pupillo ac viduæ, per-
dit autem semitam peccatorum: Dominus 10
regnabit in æternū, & Deus tuus O Sion,
à generatione in generationem. Alleluja.

PSAL. CXLVI.

Alleluja, Aggæi & Zachariæ. 1
Verſ. 24.

Laudate Dominum sermone bono, et-
enim Deo nostro placet laudatio. Fa- 2
bricator Jerosolymæ est Dominus: Do-
minus congregat dispersos Israelis. Qui 3
sanat eos quorum fracta sunt corda, &
consolidat fracturam eorum. Numerans 4
multitudinem stellarum, & nominans eas
omnes. Maximus est Dominus, et maxi- 5
ma virtus ejus, & nullus est numerus in-
telligentiæ ipsius. Dominus suscepit man- 6
suetos, & deprimit peccatores usque ad
terram. Aggredimini Domino gratiarum 7
actionem: psallite Deo nostro citharâ:
Qui amicit cœlum nubibus, qui parat 8
pluviam super terram, qui germinare fa-
cit super montes herbam, & viriditatem
in servitutem hominum, Et dat jumentis 9
escam, ac pullis corvorum qui clamant ad
eum. Dominus non vult fortitudinem e- 10
qui, neque delectatur sævitie gigantis.
Imò delectatur Dominus timentibus eum, 11
& iis qui sperant misericordiam ipsius.
Alleluja.

PSAL. CXLVII.

De eo quod præcessit. Ver. 18.

Lauda Dominum, O Jerusalem, lauda 12
Deum tuum, O Sion. Quoniam ipse 13
fortificavit columnas portarum tuarum,
& benedixit filiis tuis in te. Qui red- 14
dit confinia tua pacifica, & adipe fru-
menti te satiavit.

Dans .ejus verbum *curat* velociter donec : terræ ſuum eloquium *Mittens*
15 16 הַשֹּׁלֵחַ אִמְרָתוֹ אָרֶץ עַד־מְהֵרָה יָרוּץ דְּבָרוֹ׃ הַנֹּתֵן
:buccellas ſicut ſuam glaciē *Projiciens* .*ſparget* cinerē ſicut pruinam:lanam ſicut nivem
17 שֶׁלֶג כַּצָּמֶר כְּפוֹר כָּאֵפֶר יְפַזֵּר׃ מַשְׁלִיךְ קַרְחוֹ כְפִתִּים
flabit : eas liquefaciet & ,ſuum verbum Mittet ? ſtabit quis ejus *frigoris facies ad*
18 לִפְנֵי קָרָתוֹ מִי יַעֲמֹד׃ יִשְׁלַח דְּבָרוֹ וְיַמְסֵם יַשֵּׁב
, ſua ſtatuta : Jahacob ipſi ſuum verbum *Annuncians* .aquæ fluent ,ejus ſpiritus
19 רוּחוֹ יִזְּלוּ־מָיִם׃ מַגִּיד דְּבָרוֹ לְיַעֲקֹב חֻקָּיו
non judicia & , genti omni ſic fecit Non .Iſraeli ſua judicia &
20 וּמִשְׁפָּטָיו לְיִשְׂרָאֵל׃ לֹא עָשָׂה כֵן לְכָל־גּוֹי וּמִשְׁפָּטִים בַּל־
.Jah-Hallelu .*ea* cognoſcent

PSAL. CXLVIII. קמח

יְדָעוּם הַלְלוּ־יָהּ׃
.excelſis in eum laudate :.cœlis de Dominum Laudate .Jah-Hallelu
1 הַלְלוּ־יָהּ הַלְלוּ אֶת־יְהוָה מִן־הַשָּׁמַיִם הַלְלוּהוּ בַּמְּרוֹמִים׃
ſol eum Laudate.ejus exercit⁹ omnes eum laudate : ejus angeli omnes eum Laudate
2 3 הַלְלוּהוּ כָל־מַלְאָכָיו הַלְלוּהוּ כָּל־צְבָאָו׃ הַלְלוּהוּ שֶׁמֶשׁ
aquæ & : cœlorum cœli eum Laudate .*lucis* ſtellæ omnes eum laudate : luna &
4 וְיָרֵחַ הַלְלוּהוּ כָּל־כּוֹכְבֵי אוֹר׃ הַלְלוּהוּ שְׁמֵי הַשָּׁמָיִם וְהַמַּיִם
,præcepit ipſe quia : Domini nomen Laudent .cœlos ſupra quæ
5 אֲשֶׁר מֵעַל הַשָּׁמָיִם׃ יְהַלְלוּ אֶת־שֵׁם יְהוָה כִּי הוּא צִוָּה
.tranſibit non & ,dedit ſtatutū:ſeculum in perpetuū in ea fecit ſtare Et.ſunt creata &
6 וְנִבְרָאוּ׃ וַיַּעֲמִידֵם לָעַד לְעוֹלָם חָק־נָתַן וְלֹא יַעֲבוֹר׃
,grando &,Ignis .voragines omnes & , dracones : terra de Dominum Laudate
7 8 הַלְלוּ אֶת־יְהוָה מִן־הָאָרֶץ תַּנִּינִים וְכָל־תְּהֹמוֹת׃ אֵשׁ וּבָרָד
: colles omnes & , Montes .ejus verbum faciens turbinis ventus : vapor & , nix
9 שֶׁלֶג וְקִיטוֹר רוּחַ סְעָרָה עֹשָׂה דְבָרוֹ׃ הֶהָרִים וְכָל־גְּבָעוֹת
.*pennæ* avis & , reptile : jumentum omne & , Beſtia .cedri omnes &,*fructus lignum*
10 עֵץ פְּרִי וְכָל־אֲרָזִים׃ הַחַיָּה וְכָל־בְּהֵמָה רֶמֶשׂ וְצִפּוֹר כָּנָף׃
Juvenes .terræ judices omnes & principes : populi omnes & , terræ Reges
11 12 מַלְכֵי־אֶרֶץ וְכָל־לְאֻמִּים שָׂרִים וְכָל־שֹׁפְטֵי אָרֶץ׃ בַּחוּרִים
quia,Domini nomen Laudent .junioribus cum ſenes : virgines etiam &
13 וְגַם־בְּתוּלוֹת זְקֵנִים עִם־נְעָרִים׃ יְהַלְלוּ אֶת־שֵׁם יְהוָה כִּי־
exaltavit Et .cœlum & terram ſuper ejus *magnificentia*:ſolius ejus nomen eſt exaltatum
14 נִשְׂגָּב שְׁמוֹ לְבַדּוֹ הוֹדוֹ עַל־אֶרֶץ וְשָׁמָיִם׃ וַיָּרֶם
, ei propinquo populo , Iſrael filiis , ejus *piis* omnibus laus:ſuo populo cornu
קֶרֶן לְעַמּוֹ תְּהִלָּה לְכָל־חֲסִידָיו לִבְנֵי יִשְׂרָאֵל עַם־קְרֹבוֹ
.Jah--Hallelu

PSAL. CXLIX. קמט

הַלְלוּ־יָהּ׃
.piorum *cætu* in ejus laus : novum canticum Domino Cantate .Jah-Hallelu
1 הַלְלוּ־יָהּ שִׁירוּ לַיהוָה שִׁיר חָדָשׁ תְּהִלָּתוֹ בִּקְהַל חֲסִידִים׃
Laudent .ſuo rege in exultent Sijon filii :ſuo factore in Iſrael Lætetur
2 3 יִשְׂמַח יִשְׂרָאֵל בְּעֹשָׂיו בְּנֵי־צִיּוֹן יָגִילוּ בְמַלְכָּם׃ יְהַלְלוּ
.ei canant cithara &,tympano in : choro in ejus nomen
שְׁמוֹ בְמָחוֹל בְּתֹף וְכִנּוֹר יְזַמְּרוּ־לוֹ׃

תרגום TARGUM.

15 דִּמְשַׁדַּר מֵימְרֵיהּ לְאַרְעָא עַד סַרְהוֹבָא יִרְהוֹט
16 מִלּוּלֵיהּ׃ דְּיָהֵב תַּלְגָּא חִוָּר הֵיךְ עֲמַר גְּלִיד הֵיךְ
17 קְטַם יְבַדַּר׃ מַטְלֵק קַרְחֵיהּ פְּלִיג הֵיךְ רְסוּקִין
דְּמַן קֳדָם קוֹרֵיהּ מַן אֶפְשַׁר לֵיהּ לְמֵקָם׃
18 יְשַׁדַּר קְדוּם חֶמְתֵּיהּ וְיִמְסִנּוּן יְנַתֵּב רוּחֵיהּ
19 וְלַחִין מַיָּא׃ דְּתָנֵי דִּבְרַיָּא דְּאוֹרַיְתָא לְיַעֲקֹב
20 קְיָמוֹי וְדִינוֹי לְיִשְׂרָאֵל׃ לָא עֲבַד הֵיכְנָא לְכָל
עַמָּא וְדִינִין לָא הוֹדְעִנּוּן הַלְלוּיָהּ׃

קמח

1 הַלְלוּיָהּ שַׁבָּחוּ יַת יְיָ בִּרְיָתָא קַדִּישַׁיָּא מִן שְׁמַיָּא
2 שַׁבָּחוּ יָתֵיהּ כָּל חֵילוּ אַנְגְּלֵי מְרוֹמָא׃ שַׁבָּחוּ
יָתֵיהּ כָּל מַלְאֲכַיָּא דִּי מְשַׁמְּשִׁין קֳדָמוֹי שַׁבָּחוּ
3 יָתֵיהּ כָּל חֵילְוָתֵיהּ׃ שַׁבָּחוּ יָתֵיהּ שִׁמְשָׁא וְסִיהֲרָא
4 שַׁבָּחוּ יָתֵיהּ כָּל כּוֹכְבֵי נְהוֹרָא׃ שַׁבָּחוּ יָתֵיהּ
שְׁמֵי שְׁמַיָּא וּמַיָּא דִּתְלַיִן בְּמֵימְרָא מֵעִלָּוֵי שְׁמַיָּא׃
5 יְשַׁבְּחוּן יַת שְׁמָא דַּיְיָ אֲרוּם הוּא פַּקֵּד
6 וְאִתְבְּרִיאוּ׃ וַהֲקִימִנּוּן לְעָלְמֵי עָלְמִין גְּזֵירְתָא
7 יְהַב וְלָא יֶעְבַּר׃ שַׁבָּחוּ יַת יְיָ מִן אַרְעָא תַּנִּינַיָּא
8 וְכָל תְּהוֹמַיָּא׃ אֶשָּׁא וּבַרְדָּא תַּלְגָּא וְקִטְרָא רוּחַ
9 עַלְעוֹלָא עָבְדָא פִּתְגָּמֵיהּ׃ טוּרַיָּא וְכָל גַּלְמָתָא
10 אִילָן דְּעָבֵד פֵּירִין וְכָל אַרְזִין׃ חַיְתָא וְכָל
11 בְּעִירָא רִיחֲשָׁא וְצִפַּר גַּדְפָּא דְּפָרַח׃ מַלְכַיָּא
דְּאַרְעָא וְכָל אוּמַיָּא רַבְרְבָנַיָּא וְכָל דַּיָּנֵי אַרְעָא׃
12 עוּלֵימַיָּא וּלְחוֹד בְּתוּלָן סָבַיָּא עִם טַלְיָא׃
13 יְשַׁבְּחוּן יַת שְׁמָא דַּיְיָ אֲרוּם תַּקִּיף שְׁמֵיהּ
14 בִּלְחוֹדוֹי תּוּשְׁבַּחְתֵּיהּ עַל אַרְעָא וּשְׁמַיָּא׃ וּזְקַף
אִיקָר לְעַמֵּיהּ שִׁבְחָא לְכָל חֲסִידוֹי לִבְנֵי יִשְׂרָאֵל
עַמָּא דִּקְרִיבִין לֵיהּ שַׁבָּחוּ יַת יְיָ׃

קמט

1 שַׁבָּחוּ קֳדָם יְיָ שְׁבַח חֲדַת תּוּשְׁבַּחְתֵּיהּ בִּקְהָלָא
2 דַּחֲסִידֵי׃ יֶחְדוּן דְּבֵית יִשְׂרָאֵל בְּעוֹבָדֵיהוֹן בְּנֵי
3 צִיּוֹן יְדוּצוּן בְּמַלְכֵּיהוֹן׃ יְשַׁבְּחוּן שְׁמֵיהּ בְּחִנְגִּין
בְּתוּפִּין וְכִנָּרִין יְזַמְּרוּן לֵיהּ׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Qui mittit verbum ſuum in terram : feſti- 15
nanter curret ſermo ejus. Qui dat nivem al- 16
bam ſicut lanam ; pruinam ſicut cinerem
ſpargit. Projicit glaciem ſuam diviſam tan- 17
quam buccellas : & ante faciem frigoris
ejus quis poterit ſubſiſtere ? Mittet rigorem 18
caliditatis ſuæ & liquefaciet eos : faciet ſe-
dere ſpiritum ſuum, [&] fluent aquæ. Qui 19
annunciat verba legis Jacob, pacta ſua &
judicia ſua Iſrael. Non fecit ſimiliter omni 20
populo, & judicia non docuit eos. *Halle-lujah.*

Hallelujah. 1

PSAL. CXLVIII.

LAudate Dominum creaturæ ſanctæ de
cœlis, laudate eum *omnes exercitus angelorum* excelſi. Laudate eum omnes angeli ejus 2
qui miniſtratis coram eo, laudate eum
omnes exercitus ejus. Laudate eum Sol & 3
Luna, laudate eum omnes ſtellæ luminoſæ.
Laudate eum cœli cœlorum & aquæ, quæ 4
pendent à verbo[*ejus*]è ſupernis cœlorum.
Laudabunt nomen Domini, quoniam ipſe 5
mandavit & creata ſunt. Et firmavit ea in 6
ſecula ſeculorum : decretum edidit, & non
præteribit. Laudate Dominum de terra, ceti 7
& omnes abyſſi. Ignis, & grando, nix & 8
vapor, ſpiritúſque tempeſtatis exequens
verbum ejus. Montes & omnes colles, arbor 9
fructifera & univerſæ cedri. Feræ & omnes 10
beſtiæ, reptile & avis *ala* volatilis. Reges 11
terræ & omnes populi, principes & omnes
judices terræ. Adoleſcentes ſimul cum vir- 12
ginibus, ſenes cum junioribus. Laudabunt 13
nomen Domini, quoniam forte nomen ejus
ſolius : laus ejus ſuper terram & cœlos. Et 14
extulit gloriam populo ſuo : laus omnibus
piis ejus, filiis Iſrael populo qui appropin-
quant ei. laudate *Dominum.*

PSAL. CXLIX.

LAudate coram Domino hymno novo : 1
laus ejus in Eccleſia piorum. *Lætentur* [*homines*] *domus* Iſrael in factore ſuo : filii 2
Sion exultent in rege ſuo. Laudent nomen 3
ejus in choris, in tympanis, & citharis
pſallant ei.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

15 16 * ܡܫܕܪ ܡܠܬܗ ܥܠ ܐܪܥܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܥܓܠ ܪܗܛܐ ܡܠܬܗ: * ܝܗܒ ܬܠܓܐ ܐܝܟ ܥܡܪܐ.
17 ܘܥܪܦܠܐ ܐܝܟ ܩܛܡܐ ܡܒܕܪ: * ܪܡܐ ܓܠܝܕܐ ܐܝܟ ܦܬܬܐ. ܘܩܕܡ ܩܪܘܫܗ ܡܢܘ ܢܩܘܡ ܠܘܩܒܠܗ:
18 19 * ܡܫܕܪ ܡܠܬܗ ܘܡܫܪܐ ܠܗܘܢ. ܡܢܫܒ ܪܘܚܐ ܘܡܪܕܝܢ ܡܝܐ: * ܡܚܘܐ ܡܠܬܗ ܠܝܥܩܘܒ.
20 ܘܢܡܘܣܗ ܘܦܘܩܕܢܘܗܝ ܠܐܝܣܪܝܠ: * ܠܐ ܥܒܕ ܗܟܢܐ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. ܘܕܝܢܘܗܝ
ܠܐ ܚܘܝ ܐܢܘܢ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܡܚ * ܕܚܓܝ ܘܙܟܪܝܐ. 1
ܡܡܠܠܘܬܐ ܥܠ ܐܠܗܐ ܕܐܝܟ ܕܥܠܝܐ ܢܫܒܚܘܢ ܗܟܢܐ ܢܫܒܚܘܢ ܬܚܬܝܐ ܠܡܪܝܐ ܡܫܒܚܐ ܡܪܝܐ ܨܒܐܘܬ
ܐܠܫܕܝ. ܦܬܓܡܐ ܠܐ. ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ ܡܢ ܫܡܝܐ. ܫܒܚܘܗܝ ܒܡܪܘܡܐ.
2 3 * ܫܒܚܘܗܝ ܟܠܗܘܢ ܡܠܐܟܘܗܝ. ܫܒܚܘܗܝ ܟܠܗܘܢ ܚܝܠܘܗܝ: * ܫܒܚܘܗܝ ܫܡܫܐ
4 ܘܣܗܪܐ. ܫܒܚܘܗܝ ܟܠܗܘܢ ܟܘܟܒܐ ܘܢܘܗܪܐ: * ܫܒܚܘܗܝ ܫܡܝܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܡܝܐ ܕܠܥܠ ܡܢ
5 ܫܡܝܐ * ܢܫܒܚܘܢ ܠܫܡܗ ܕܡܪܝܐ: ܡܛܠ ܕܗܘ ܐܡܪ ܘܗܘܘ. ܘܗܘ ܦܩܕ ܘܐܬܒܪܝܘ:
6 7 * ܘܐܩܝܡ ܐܢܘܢ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ. ܢܡܘܣܐ ܝܗܒ ܘܠܐ ܢܥܒܪ: * ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ ܡܢ ܐܪܥܐ.
8 ܬܢܝܢܐ ܘܟܠܗܘܢ ܬܗܘܡܐ: * ܢܘܪܐ ܘܒܪܕܐ ܘܬܠܓܐ ܘܓܠܝܕܐ. ܘܪܘܚܐ ܘܡܥܠܥܠܐ ܥܒܕܝܢ
9 10 ܡܠܬܗ: * ܛܘܪܐ ܘܟܠܗܘܢ ܪܡܬܐ. ܐܝܠܢܐ ܕܦܐܪܐ ܘܟܠܗܘܢ ܐܪܙܐ: * ܚܝܘܬܐ ܘܟܠܗ ܒܥܝܪܐ.
11 ܪܚܫܐ ܘܨܦܪܐ ܘܦܪܚܬܐ: * ܡܠܟܐ ܕܐܪܥܐ ܘܟܠܗܘܢ ܐܘܡܘܬܐ. ܪܘܪܒܢܐ ܘܟܠܗܘܢ ܕܝܢܐ ܕܐܪܥܐ:
12 13 * ܥܠܝܡܐ ܘܒܬܘܠܬܐ. ܣܒܐ ܘܥܠܝܡܐ * ܢܫܒܚܘܢ ܠܫܡܗ ܕܡܪܝܐ: ܡܛܠ ܕܪܡ ܗܘ ܫܡܗ
14 ܒܠܚܘܕܘܗܝ. ܘܫܘܒܚܗ ܒܐܪܥܐ ܘܒܫܡܝܐ: * ܘܐܪܝܡ ܩܪܢܐ ܕܥܡܗ ܘܬܫܒܘܚܬܐ ܠܟܠܗܘܢ
ܙܕܝܩܘܗܝ. ܘܠܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܥܡܐ ܕܩܪܝܒ ܠܗ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܡܛ *
1 * ܥܠ ܗܝܟܠܐ ܚܕܬܐ. ܘܡܙܡܘܪܐ ܗܢܐ ܠܐ ܡܫܡܗܐ: ܬܫܒܘܚܬܐ ܥܡ ܬܐܘܠܘܓܝܐ.
ܦܬܓܡܐ ܝܚ. ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ ܬܫܒܘܚܬܐ ܚܕܬܐ. ܬܫܒܘܚܬܗ ܒܥܕܬܐ
2 3 ܕܙܕܝܩܐ: * ܢܚܕܐ ܐܝܣܪܝܠ ܒܥܒܘܕܗ. ܘܒܢܝ ܨܗܝܘܢ ܢܪܘܙܘܢ ܒܡܠܟܗܘܢ: * ܘܢܫܒܚܘܢ
ܠܫܡܗ ܒܦܠܓܐ ܘܒܛܒܠܐ ܘܒܟܢܪܐ ܢܙܡܪܘܢ ܠܗ:

Mittit verbum ſuum ſuper terram, & veloci- 15
ter currit ſermo ejus: Dat nivem ſicut lanam, 16
& caliginem ut cinerem ſpargit: Projicit gla- 17
ciem velut micas : & frigori ejus quis poteſt
reſiſtere? Mittit verbum ſuum, & liquefacit 18
ea: & excitat ventos qui fluere faciunt aquas:
Manifeſtat verbum ſuum in Jacobo, & jus 19
ſuum atque præcepta ſua in Iſraele. Non fe- 20
cit ſic omnibus populis, & judicia ſua non
declaravit eis.

PSAL. CXLVIII.

Aggai & Zechariæ. Sermo de Deo, ut 1
quemadmodum ſuperi ſic laudent inferi Dominum glorioſum Dominum Sabaoth Alſadai. Verſ. 31.

LAudate Dominum de cœlo, laudate eum
in excelſis. Laudate eum omnes Angeli 2
ejus, laudate eum omnes exercitus ejus : Lau- 3
date eum ſol & luna, laudate eum omnes ſtel-
læ & lumen : Laudate eum cœli cœlorum, 4
& aquæ quæ ſuper cœlum ſunt, Laudent no- 5
men Domini: quoniam ipſe dixit ac fuerunt,
ipſéque juſſit & creata ſunt. Stabilivit ea in 6
ſeculum ſeculorum: legem tulit quæ non præ-
teribit. Laudate Dominum de terra dracones, 7
& omnes abyſſi: Ignis & grando, & nix, atq; 8
gelu, venti, ac turbines opus verbi ejus :
Montes, & omnes colles, arbores frugiferæ, 9
& omnes cedri : Animal, & univerſa pecora, 10
reptilia, & volucre, atque volatile : Reges 11
terræ, cunctæque gentes, magnates, atque
omnes judices terræ : Adoleſcentes, & virgi- 12
nes, ſenes ac juvenes. Laudent nomen Do- 13
mini : quia magnum eſt nomen ejus ſolius,
& gloria ejus in terra & in cœlo. Attollit cor- 14
nu populi ſui, & laudem omnibus juſtis ſuis,
& filiis Iſrael populo ſibi conjuncto.

PSAL. CXLIX.

De templo novo. Et pſalmus iſte anonymus eſt. Laudatio cum Theologia. Verſ. 18. 1

CAnite Domino laudem novam : laus ejus
in cœtu juſtorum. Gaudeat Iſrael in fa- 2
ctore ſuo, & filii Sion exhilarentur in ſuo
rege : Laudéntque nomen ejus tympanis ac 3
ſiſtris, & lyris pſallant ei :

Verſio VULG. LAT.

15 Qui emittit eloquium ſuum terræ: ve-
16 lociter currit ſermo ejus. Qui dat ni-
vem ſicut lanam: nebulam ſicut cine-
17 rem ſpargit. Mittit cryſtallum ſuam
ſicut buccellas: ante faciem frigoris
18 ejus quis ſuſtinebit? Emittet verbum
ſuum, & liquefaciet ea: flabit ſpiritus
19 ejus, & fluent aquæ. Qui annuntiat
verbum ſuum Jacob: juſtitias & ju-
20 dicia ſua Iſrael. Non fecit taliter omni
nationi: & judicia ſua non manifeſta-
vit eis. Alleluja.

1 Alleluja. CXLVIII.

LAudate Dominum de cœlis: lau-
2 date eum in excelſis. Laudate eum
omnes angeli ejus: laudate eum omnes
3 virtutes ejus. Laudate eum Sol & Lu-
na: laudate eum omnes ſtellæ, & lu-
4 men. Laudate eum cœli cœlorum: &
aquæ omnes, quæ ſuper cœlos ſunt,
5 Laudent nomen Domini. Quia ipſe
dixit, & facta ſunt: ipſe mandavit, &
6 creata ſunt. Statuit ea in æternum, &
in ſeculum ſeculi: præceptum poſuit,
7 & non præteribit. Laudate Domi-
num de terra, dracones, & omnes a-
8 byſſi. Ignis, grando, nix, glacies, ſpi-
ritus procellarum: quæ faciunt ver-
9 bum ejus: Montes, & omnes colles:
10 ligna fructifera, & omnes cedri. Be-
ſtiæ, & univerſa pecora: ſerpentes, &
11 volucres pennatæ: Reges terræ, &
omnes populi: principes, & omnes
12 judices terræ. Juvenes, & virgines:
ſenes cum junioribus laudent nomen
13 Domini: Quia exaltatum eſt nomen
14 ejus ſolius. Confeſſio ejus ſuper cœ-
lum & terram: & exaltavit cornu po-
puli ſui. Hymnus omnibus Sanctis e-
jus: filiis Iſrael, populo appropin-
quanti ſibi. Alleluja.

1 Alleluja. CXLIX.

CAntate Domino canticum novum:
2 laus ejus in eccleſia Sanctorũ. Læ-
tetur Iſrael in eo, qui fecit eum: & fi-
3 lii Sion exultent in rege ſuo. Laudent
nomen ejus in choro: in tympano &
pſalterio pſallant ei:

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

15 † Ὁ ἀποστέλλων τὸ λόγιον αὐτοῦ τῇ γῇ, † ἕως τά-
16 χους δραμεῖται ὁ λόγος αὐτοῦ. † Τοῦ διδόντος χιό-
να ὡσεὶ ἔριον, † ὁμίχλην ὡσεὶ σποδὸν πάσσοντος.
17 † Βάλλοντος κρύσταλλον αὐτοῦ ὡσεὶ ψωμούς. † κατὰ
18 πρόσωπον ψύχους αὐτοῦ τίς ὑποστήσεται; † Ἀποστε-
λεῖ τὸν λόγον αὐτοῦ, καὶ τήξει αὐτά, † πνεύσει τὸ
19 πνεῦμα αὐτοῦ, καὶ ῥυήσεται ὕδατα. † Ἀπαγγέλλων
τὸν λόγον αὐτοῦ τῷ Ἰακώβ, † δικαιώματα καὶ κρί-
20 ματα αὐτοῦ τῷ Ἰσραήλ. † Οὐκ ἐποίησεν οὕτως
παντὶ ἔθνει, † καὶ τὰ κρίματα αὐτοῦ οὐκ ἐδήλωσεν
αὐτοῖς.

Ἀλληλούϊα. Ἀγγαίου καὶ Ζαχαρίου. ρμη´.

1 † Αἰνεῖτε τὸν κύριον ἐκ τῶν οὐρανῶν, † αἰνεῖτε αὐ-
τὸν ἐν τοῖς ὑψίστοις. † Αἰνεῖτε αὐτὸν πάν-
2 τες οἱ ἄγγελοι αὐτοῦ, † αἰνεῖτε αὐτὸν πᾶσαι αἱ
3 δυνάμεις αὐτοῦ. † Αἰνεῖτε αὐτὸν ἥλιος καὶ σελήνη,
† αἰνεῖτε αὐτὸν πάντα τὰ ἄστρα καὶ τὸ φῶς. † Αἰ-
4 νεῖτε αὐτὸν οἱ οὐρανοὶ τῶν οὐρανῶν, † καὶ τὸ ὕδωρ τὸ
5 ὑπεράνω τῶν οὐρανῶν, † Αἰνεσάτωσαν τὸ ὄνομα κυρίου·
† ὅτι αὐτὸς εἶπε καὶ ἐγενήθησαν, † αὐτὸς ἐνετείλα-
6 το καὶ ἐκτίσθησαν. † Ἔστησεν αὐτὰ εἰς τὸν αἰῶνα, καὶ
εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος, † πρόσταγμα ἔθετο, καὶ οὐ
7 παρελεύσεται. † Αἰνεῖτε τὸν κύριον ἐκ τῆς γῆς, † δρά-
8 κοντες καὶ πᾶσαι ἄβυσσοι. † Πῦρ, χάλαζα, χιών,
κρύσταλλος, πνεῦμα καταιγίδος, † τὰ ποιοῦντα
9 τὸν λόγον αὐτοῦ. † Τὰ ὄρη καὶ πάντες (α) βουνοί, † ξύ-
10 λα καρποφόρα καὶ πᾶσαι κέδροι. † Τὰ θηρία καὶ
πάντα τὰ κτήνη, † ἑρπετὰ καὶ πετεινὰ πτερωτά.
11 † Βασιλεῖς τῆς γῆς καὶ πάντες λαοί, † ἄρχοντες καὶ
12 πάντες κριταὶ γῆς· † Νεανίσκοι καὶ παρθένοι,
† πρεσβύται μετὰ νεωτέρων † αἰνεσάτωσαν τὸ ὄνο-
13 μα κυρίου, † Ὅτι ὑψώθη τὸ ὄνομα αὐτοῦ μόνου. † Ἡ
14 ἐξομολόγησις αὐτοῦ ἐπὶ γῆς καὶ οὐρανοῦ, † καὶ ὑψώσει
κέρας λαοῦ αὐτοῦ. † ὕμνος πᾶσι τοῖς ὁσίοις αὐτοῦ,
† τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ, λαῷ ἐγγίζοντι αὐτῷ.

MS.A. (α) οἱ βουνοί,

1 Ἀλληλούϊα. ρμθ´.

† Ἄσατε τῷ κυρίῳ ᾆσμα καινόν· † ἡ αἴνεσις
2 αὐτοῦ ἐν ἐκκλησίᾳ ὁσίων. † Εὐφρανθήτω
Ἰσραὴλ ἐπὶ τῷ ποιήσαντι αὐτόν, † καὶ υἱοὶ Σιὼν
3 ἀγαλλιάσθωσαν ἐπὶ τῷ βασιλεῖ αὐτῶν. † Αἰνεσά-
τωσαν τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐν χορῷ, † ἐν τυμπάνῳ καὶ
ψαλτηρίῳ ψαλάτωσαν αὐτῷ.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

4 Qui emittit eloquium ſuũ terræ: 15
(c) uſque in velocitatẽ currit verbũ
ejus. 5 Qui dat nivẽ ſicut lanam: (d) 16
nebulã, ſicut cinerem ſpargit. 6 Qui 17
mittit cryſtallum ſuam, ſicut (e) buc-
cellas: ante faciem frigoris ejus quis
(f) ſubſiſtet? 7 Emittet (g) verbum 18
ſuum & liquefaciet ea: ſpirabit ſpi-
ritus ejus, & fluent aquæ. 8 Qui 19
annuntiat verbum ſuum Jacob: (b)
juſtificationes, et judicia ſua Iſrael.
9 Non fecit (i) ſic [c] omni nationi: 20
& judicia ſua non manifeſtavit eis.

Alleluja. Aggæi & Zachariæ. 1

CXLVIII.

1 LAudate Dominum de cœlis: lau-
date eum in excelſis. 2 Laudate 2
eum omnes angeli ejus: laudate eum
(a) omnes virtutes ejus. 3 Laudate 3
eum Sol & Luna: laudate eum (b)
omnes ſtellæ, & lumen. 4 Laudate e- 4
um cœli cœlorum, & (c) aqua, quæ
ſuper cœlos. Laudent nomen Domini, 5
5 Quoniam ipſe dixit, et facta ſunt:
ipſe mandavit, & creata ſunt.
6 (d) Statuit ea in ſeculum, & in 6
ſeculum ſeculi: præceptum poſuit, et
non [†] præteribit. 7 Laudate Dñm 7
de terra, dracones, & omnes abyſſi.
8 Ignis, [a] grando, nix, glacies. ſpi- 8
ritus (e) tempeſtatis, facientia verbũ
jus: 9 Montes, et omnes colles: ligna 9
fructifera, & omnes cedri: 10 Beſtiæ, 10
& omnia pecora: reptilia, & [b] vo-
latilia pennata: 11 Reges terræ, & 11
(f) omnes populi: principes, & omnes
judices terræ. 12 (g) Juvenes, et vir- 12
gines: ſenes cum junioribus laudent
nomen Domini: (h) Quia exaltatum 13
eſt nomen ejus ſolius. 13 (i) [c] Con- 14
feſſio ejus ſuper cœlum, & terram:
& (k) exaltabit cornu populi ſui.
14 (l) Hymnus omnibus Sanctis ejus:
filiis Iſrael, populo appropinquanti
(m) ſibi.

Alleluja. CXLIX. 1

1 CAntate Domino canticũ no-
vũ: laus ejus in eccleſia San-
ctorum. 2 Lætetur Iſrael in eo qui 2
fecit eum: & (a) filii Sion exultent
in rege ſuo. 3 Laudent nomen ejus [a] 3
in choro: in tympano & pſalterio
pſallant ei.

Verſio ÆTHIOPICA.

ዘይፌኑ፡ቃሎ፡ ለምድር። ወፍጡነ፡ ይረው 4
ጽ፡ ነቢቡ።=፥ ዘይሁብ፡ በረደ፡ ከመ፡ፀም 5
ር።ወይዘርዎ፡ ለጊሜ፡ ከመ፡ ሐመድ።=፥
ወያወርድ፡በረደ፡ከመ፡ፍተታት።ወመኑ፡ይት 6
ቃወሞ፡ለቍረ።=፥ይፌኑ፡ቃሎ፡ወይመስዎ። 7
ይነፍሕ፡ መንፈሱ፡ ወይውኅዝ፡ማያት።=፥
ዘነገሮ፡ ቃሎ፡ ለያዕቆብ።ፍትሐ፡ ወኵነኔ 8
ሁ፡ለእስራኤል።=፥ ወኢገብረ፡ ከማሁ፡ለ 9
ባዕድ፡ አሕዛብ።ወኢነገሮሙ፡ ፍትሐ።=፥

ሃሌሉያ፡ዘሐጌ፡ወዘዘካርያስ።

፻፵፰ ሰብሕዎ፡ለእግዚአብሔር፡ እምሰማ 1
ያት።ይሴብሕዎ፡በአርያም።=፥ ይሴብሕ 2
ዎ፡ ኵሎሙ፡ መላእክቲሁ።ይሴብሕዎ፡ኵ
ሉ፡ ኃይሉ።=፥ ይሴብሕዎ፡ ፀሐይ፡ ወወር 3
ኅ።ይሴብሕዎ፡ ኵሉ፡ከዋክብት፡ ወብርሃ
ን።=፥ ይሴብሕዎ፡ ሰማያተ።ሰማያት።ወ 4
ማይኒ፡ዘመልዕልተ፡ሰማያት።ይሴብሑ፡ ለስ
ሙ፡እግዚአብሔር።=፥እስመ፡ውእቱ፡ይቤ፡ 5
ወኮኑ፡ወውእቱ፡አዘዘ፡ወተፈጥሩ።=፥ ወአ 6
ቀሞሙ፡ለዓለም፡ ወለዓለመ፡ ዓለም።ትእዛ
ዘ፡ወሀቦሙ፡ ወኢኃለፈ።=፥ ሰብሕዎ፡ለእ 7
ግዚአብሔር፡ እምድር።አክይስት፡ ወኵ
ሉ፡ ቀላያት።=፥ እሳት፡ ወበረድ፡ አስሐት 8
ያ፡ ወሐመደ፡ መንፈሰ፡ ዓውሎ።ዘይገብር፡
ነቢቦ።=፥ አድባርኒ፡ ወኵሉ፡ አውግር። 9
ዕፀውኒ፡ዘይፈሪ፡ ወኵሉ፡ አርዝ።=፥ አራ 10
ዊትኒ፡ ወኵሉ፡ እንስሳ።ዘይትሐወስኒ፡ አዕ
ዋፍ፡ ዘይሠርር።=፥ ነገሥተ፡ ምድርኒ፡ 11
ወኵሉ፡ አሕዛብ።መላእክትኒ፡ ወኵሉ፡መ
ኳንንተ፡ ምድር።=፥ ወራዙትኒ፡ ወደናግ 12
ል።ሊቃናትኒ፡ ወመሐዘት። ይሴብሑ፡ ለስ
ሙ፡ እግዚአብሔር።እስመ፡ተለዐለ፡ ስሙ፡
ለባሕቲቱ።=፥ ይገንዩ፡ሎቱ፡ በሰማይ፡ ወበ 13
ምድር። ወያሌዕል፡ቀርነ፡ሕዝቡ።=፥ ወ 14
ስብሐተ፡ ኵሉ፡ጻድቃኑ።ለደቂቀ፡ እስራኤ
ል፡ሕዝብ፡ዘቅሩብ፡ሎቱ።=፥

ሃሌሉያ።

፻፵፱ ሰብሕዎ፡ለእግዚአብሔር፡ ስብሐተ፡ 1
ሐዲስ።ስብሐቲሁ፡በማኅበረ፡ጻድቃኑ።=፥
ይትፌሣሕ፡ እስራኤል፡ በፈጣሪሁ። ወደቂ 2
ቀ፡ጽዮን፡ ይትሐሠዩ፡በንጉሦሙ።=፥ ወይ 3
ሴብሑ፡ ለስሙ፡ በትፍሥሕት።በከበሮ፡ወ
በመዝሙር፡ይዜምሩ፡ሎቱ።=፥

INTERP. ÆTHIOP. [c] aliis nationibus: *PSAL. CXLVIII.* [ ] præteribunt [a] grando, pruina, & cinis, ſpiritus [b] volucres quæ volant: [c] Confitebuntur ei in cœlo, & in terra: *PSAL. CXLXIX.* [a] in lætitiae in tympano

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

15 16 * المرسل كلمته الي الارض كلمته جارية بسرعة * المعطي الثلج كالصوف * الساكب الضباب
17 18 كالدخان * والملقي الجليد كلباب البر * من يطيق القيام امام برده * يرسل كلمته فيذيبه *
19 20 تهب ريحه فتسيل المياه * الذي قال كلمته ليعقوب * وحقوقه واحكامه في آل اسرائيل * لم
يصنع هكذا مع كل الشعوب * ولم يظهر لهم احكامه * الليلويا *

1 * المزمور المائة والثامن والاربعون * على ما تقدم * وهو كط * استيخن *

2 سبحوا الرب من السموات * سبحوه في الاعالي * سبحوه يا جميع ملائكته * سبحوه يا جميع قواته *
3 4 * سبحاه ايها الشمس والقمر * سبحيه يا جميع الكواكب والنور * سبحيه يا سموات السموات *
5 وايتها المياه الاخر التي فوق السموات * فليسبح الجميع اسم الرب. لانه قال فكانت وهو امر
6 7 فخلقت * اقامها الي الابد والدهر والي ابد الابد * وضع امرا فلم يتجاوز * سبحوا الرب من
8 في الارض * ايها التنانين وجميع الاعماق * والنار والبرد والثلج والجليد * والريح العاصف
9 10 الصانعات بكلمته * والجبال العالية وجميع الاكام * والشجر المثمر وجميع الارز * والوحوش
11 وجميع الدواب والهوام * والطيور المجنحة * وملوك الارض وجميع الشعوب * الرؤساء وجميع
12 13 حكام الارض * الشبان والعذارى * والشيوخ والشبان * فليسبح الجميع اسم الرب لانه قد
14 علا اسمه وحده * ومجده على الارض وعلى السماء * ويرفع قرن شعبه * ومجد جميع ابراره بنو
اسرائيل الشعب القريب اليه * الليلويا *

1 * المزمور المائة والتاسع والاربعون * الليلويا * وهو ح * استيخن *

2 سبحوا الرب تسبيحا جديدا * لان تسبحته في كنائس القديسين * فليفرح اسرائيل بخالقه *
3 وليبتهج بنو صهيون بملكهم * وليسبحوا اسمه القدوس في الصفوف * وليرتلوا له بالدف والمزمار *

Qui mittit verbum ſuum in terram, ver- 15
bum ejus currens eſt cum celeritate. Qui 16
dat nivem ſicut lanam, effundit nebulam
ſicut fumum. Quique projicit glaciem ut 17
ſimilam tritici: quis poſſit conſiſtere ante
grandinem ejus? Mittit verbum ſuum, 18
& liquefacit eam: flat ventus ejus, &
fluunt aquæ. Qui dixit verbum ſuum 19
Jacobo, & ſtatuta atque judicia ſua in
progenie Iſraelis. Non egit ita cum omni- 20
bus populis, neque manifeſtavit eis judi-
cia ſua. Alleluja.

PSAL. CXLVIII.

De eo quod præceſſit, Ver. 29. 1

LAudate Dominum de cœlis, laudate
eum de excelſis. Laudate eum, O 2
omnes angeli ejus: laudate eum, O omnes
virtutes ejus. Laudate eum, O ſol et lu- 3
na: laudate eum, O omnes ſtellæ & lu-
men. Laudate eum, O cœli cœlorum, & 4
O aquæ aliæ quæ ſuper cœlos: Laudent 5
omnia nomen Domini: quoniam ipſe di-
xit, & fuerunt: ipſéque mandavit, &
creata ſunt. Statuit ea in æternum et ſe- 6
culum, & in æternitatem perpetuam: po-
ſuit præceptum quod non eſt prætergreſ-
ſus. Laudate Dominum qui eſtis in ter- 7
ra, O dracones & omnes abyſſi: Et ignis, 8
& grando, & nix, & glacies, & ven-
tus procelloſus, executores verbi ejus.
Etiam montes ſublimes, & omnes colles, 9
& arbores frugiferæ, omnéſque cedri. Et 10
beſtiæ, atque omnia reptilia, & inſecta,
& volucres alatæ. Et reges terræ, & o- 11
mnes populi, principes, & omnes judices
terræ. Juvenculæ & virgines, & ſenes 12
ac juvenes. Laudent cuncta nomen Domi- 13
ni, quia exaltatum eſt nomen ejus ſolius:
& gloria ejus ſuper terram, & ſuper cœ-
lum. Et exaltabit cornu populi ſui: & 14
gloria omnium juſtorum ejus, ſunt filii
Iſraelis populi propinqui illi. Alleluja.

PSAL. CXLIX.

Alleluja. Verſ. 8. 1

LAudate Dominum laudatione novâ,
nam laus ejus in eccleſiis ſanctorum.
Lætitur Iſrael in creatore ſuo, et exultent 2
filii Sion in rege ſuo. Et laudent nomen 3
ejus ſanctum in ordinibus, & pſallant ei
cum tympano & pſalterio.

תהלים : קנ

.ſalute in humiles glorificabit : ſuo populo in Dominus complacebit Quia
4 כִּי־רוֹצֶה יְהוָה בְּעַמּוֹ יְפָאֵר עֲנָוִים בִּישׁוּעָה׃
.ſuis cubilibus *ſuper* *præconizabunt* : gloria in miſericordes Exultabunt
5 יַעְלְזוּ חֲסִידִים בְּכָבוֹד יְרַנְּנוּ עַל־מִשְׁכְּבוֹתָם׃
faciendum Ad .eorum *manu* in *acierum* gladius & : eorum gutture in Dei Exaltationes
6 7 רוֹמְמוֹת אֵל בִּגְרוֹנָם וְחֶרֶב פִּיפִיּוֹת בְּיָדָם׃ לַעֲשׂוֹת
eorum reges alligandum Ad .populis in increpationes : gentibus in vindictam
8 נְקָמָה בַּגּוֹיִם תּוֹכֵחוֹת בַּלְאֻמִּים׃ לֶאְסֹר מַלְכֵיהֶם
judicium eis in faciendum Ad .*ferri* *compedibus* in eorum *inclytos* & : compedibus in
9 בְּזִקִּים וְנִכְבְּדֵיהֶם בְּכַבְלֵי בַרְזֶל׃ לַעֲשׂוֹת בָּהֶם מִשְׁפָּט
.Jah-Hallelu , ſuis *piis* omnibus hic decor : ſcriptum
כָּתוּב הָדָר הוּא לְכָל־חֲסִידָיו הַלְלוּ־יָהּ׃

PSAL. CL. קנ

.ej⁹ fortitudinis *expanſione* in eũ laudate:ej⁹ ſanctitate in Deum Laudate .Jah-Hallelu
1 הַלְלוּיָהּ הַלְלוּ־אֵל בְּקָדְשׁוֹ הַלְלוּהוּ בִּרְקִיעַ עֻזּוֹ׃
multitudinem ſecundùm eum laudate : ejus fortitudinibus in eum Laudate
2 הַלְלוּהוּ בִגְבוּרֹתָיו הַלְלוּהוּ כְּרֹב
, nebel in eum laudate : buccinæ clangore in eum Laudate .ejus magnitudinis
3 גָּדְלוֹ׃ הַלְלוּהוּ בְּתֵקַע שׁוֹפָר הַלְלוּהוּ בְּנֵבֶל
.organo & ,chordis in eum laudate : choro & ,tympano in eum Laudate .cithara &
4 וְכִנּוֹר׃ הַלְלוּהוּ בְתֹף וּמָחוֹל הַלְלוּהוּ בְּמִנִּים וְעוּגָב׃
Omnis .*ovationis* cymbalis in eum laudate : *auditus* cymbalis in eum Laudate
5 6 הַלְלוּהוּ בְצִלְצְלֵי־שָׁמַע הַלְלוּהוּ בְּצִלְצְלֵי תְרוּעָה׃ כֹּל
.Jah-Hallelu ,*Jah* *laudabit* *halitus*
הַנְּשָׁמָה תְּהַלֵּל יָהּ הַלְלוּיָהּ׃

תרגום TARGUM.

4 אֲרוּם רְעוּתָא דַיְיָ בְּעַמֵּיהּ יְשַׁבְּחוּ עִנְוְתָנַיָא
5 בְּפוּרְקָנָא׃ יְבוּעוּן חֲסִידֵי בִיקָרָא יְרַנְּנוּן
6 עַל דְּמִכֵיהוֹן׃ תּוּשְׁבְּחָן דֶּאֱלָהָא בְּעוּנְקֵיהוֹן
7 וְהֵיךְ סַיְפָא דְּיוּסְטְרָא בְּאִידֵיהוֹן׃ לְמֶעְבַּד
8 נִקְמְתָא בְּעַמְמַיָּא מַכְסְנוּתָא בְּאוּמַיָּא׃ לְמֵיסַר
מַלְכֵיהוֹן בְּשֵׁירִין וְיַקִּירֵיהוֹן בְּכַבְלֵי דְּפַרְזְלָא׃
9 לְמֶעְבַּד בְּהוֹן דִּין דִּכְתִיב בְּאוֹרַיְתָא שִׁבְהוֹרָא
הוּא לְכָל חֲסִידוֹי הַלְלוּיָהּ׃

קנ

1 הַלְלוּיָהּ שַׁבַּחוּ אֱלָהָא בְּבֵית מַקְדְּשֵׁיהּ שַׁבַּחוּ
2 יָתֵיהּ בִּרְקִיעָא דְּעוּשְׁנֵיהּ׃ שַׁבַּחוּ יָתֵיהּ
בִּגְבוּרְתֵיהּ שַׁבַּחוּ יָתֵיהּ הֵיךְ סוּגְעֵי רְבוּתֵיהּ׃
3 שַׁבַּחוּ יָתֵיהּ בִּתְקִיעוּתָא דְשׁוֹפָרָא שַׁבַּחוּ
4 יָתֵיהּ בְּנִבְלִין וְכִנָּרִין׃ שַׁבַּחוּ יָתֵיהּ בְּתוּפִּין
5 וּבְחִנְגִּין שַׁבַּחוּ יָתֵיהּ בַּחֲלִילִין וְאַבּוּבִין׃ שַׁבַּחוּ
יָתֵיהּ בְּצִלְצְלִין דְּשָׁמְעִין בִּלְחוֹדֵיהוֹן שַׁבַּחוּ
6 יָתֵיהּ בְּצִלְצְלִין דְּמַשְׁמְעִין בְּיַבָּבָא׃ כָּל נִשְׁמְתָא
תְּשַׁבַּח יָהּ הַלְלוּיָהּ׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Quoniam voluntas Domini in populo ejus : 4 *laudabunt* humiles in redemptione. Exultabunt 5 miſericordes in gloria, jubilabunt in cubilibus ſuis. Laudes Dei in gutture eorum; 6 & tanquam gladii ancipites in manibus eorum. Ad faciendam vindictam in 7 nationes; correptionem in populos. Ad 8 alligandos reges eorum catenis, & nobiles eorum compedibus ferreis. Ad peragendum 9 in eos judicium quod ſcriptum eſt in Lege: gloria ipſe eſt omnibus piis ejus. *Hallelujah.*

Hallelujah. 1

PSAL. CL.

LAudate Deum in domo ſanctuarii ejus, laudate eum in firmamento fortitudinis ipſius. Laudate eum in potentia ipſius, lau- 2 date eum ſecundùm multitudinem magnificentiæ ejus. Laudate eum clangore buccinæ: 3 laudate eum pſalteriis & citharis. Laudate 4 eum tympanis & choris : laudate eum *tibiis* & organis. Laudate eum cymbalis tantum- 5 modò ipſum reſonantibus : laudate eum cymbalis *reſonantibus cum jubilatione*. Mens 6 omnis laudet Dominum. *Hallelujah.*

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܕܨܒܐ ܡܪܝܐ ܒܥܡܗ. ܘܝܗܒ ܠܡܣܟܢܐ ܦܘܪܩܢܐ: * ܢܬܥܫܢܘܢ ܙܕܝܩܐ ܒܐܝܩܪܐ. 4
ܘܢܫܒܚܘܢܝܗܝ ܥܠ ܡܫܟܒܝܗܘܢ: * ܘܢܪܘܡܡܘܢܝܗܝ ܠܐܠܗܐ ܒܓܓܪܬܗܘܢ. ܣܝܦܐ ܕܬܪܝܢ 5 6
ܦܘܡܝܗܘܢ ܒܐܝܕܝܗܘܢ: * ܠܡܥܒܕ ܦܘܪܥܢܐ ܡܢ ܥܡܡܐ. ܘܡܟܣܢܘܬܐ ܡܢ ܐܡܘܬܐ: 7
* ܠܡܐܣܪ ܡܠܟܝܗܘܢ ܒܩܘܦܕܐ. ܘܝܩܝܪܝܗܘܢ ܒܫܫܠܬܐ ܕܦܪܙܠܐ: * ܠܡܥܒܕ ܒܗܘܢ 8 9
ܕܝܢܐ ܕܟܬܝܒ. ܘܫܘܒܚܐ ܠܟܠܗܘܢ ܙܕܝܩܘܗܝ.

Quoniam oblectatur Dominus populo ſuo, 4 præſtàtque pauperibus ſalutem. Conforten- 5 tur juſti cum decore, & laudent eum ſuper lectos ſuos, Extollàntque Deum ſuis gutturi- 6 bus. Gladius duarum acierum in manibus eorum, Ad ulciſcendam retributionem à gen- 7 tibus & correptionem à populis: Ad vincien- 8 dos reges eorum compedibus, & nobiliores eorum catenis ferri : Ad faciendum eis judi- 9 cium quod ſcriptum eſt, & gloriam omnibus juſtis ejus.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܢ *

1 * ܠܐ ܡܬܝܕܥ. ܡܫܘܕܥܢܘܬܐ ܕܬܫܒܘܚܬܐ ܓܘܢܝܬܐ ܕܐܝܠܝܢ ܕܒܪܘܚܐ
ܐܬܟܬܒ ܘܐܬܚܬܡ. ܦܬܓܡܐ ܝܐ.
ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ ܒܩܘܕܫܗ. ܫܒܚܘܗܝ ܒܪܩܝܥܐ ܕܥܘܫܢܗ: * ܫܒܚܘܗܝ ܒܚܝܠܬܢܘܬܗ. 2
ܫܒܚܘܗܝ ܒܣܘܓܐܐ ܕܪܒܘܬܗ: * ܫܒܚܘܗܝ ܒܩܠܐ ܕܩܪܢܐ. ܫܒܚܘܗܝ ܒܟܢܪܐ 3
ܘܒܩܝܬܪܐ: * ܫܒܚܘܗܝ ܒܦܠܓܐ ܘܒܛܒܠܐ. ܫܒܚܘܗܝ ܒܢܒܠܐ ܚܠܝܐ: * ܫܒܚܘܗܝ ܒܨܠܨܠܐ 4 5
ܫܡܝܥܐ. ܫܒܚܘܗܝ ܒܩܠܐ ܘܒܩܥܬܐ: * ܟܠ ܢܫܡܬܐ ܬܫܒܚ ܠܡܪܝܐ. 6

PSAL. CL.

Anonymus. Hortatio ad laudem generalem eorum quæ per Spiritum ſcripta ſunt atque ſignata. Verſ. 11. 1

LAudate Dominum in ſanctitate ejus : laudate eum in firmamento roboris ejus. Laudate eum in fortitudine ipſius : laudate 2 eum in abundantia magnitudinis ejus. Lauda- 3 te eum voce cornu: laudate eum citharis ac lyris. Laudate eum tympanis & ſiſtris : lau- 4 date eum chordis jucundis. Laudate eum 5 cymbalis ſonoris : laudate eum voce & clamore. Omnis aura laudet Dominum. 6

ܫܠܡܘ ܡܙܡܘܪܐ ܡܐܐ ܘܚܡܫܝܢ: ܣܦܪܐ ܕܝܢ ܚܡܫܐ. ܡܪܡܝܬܐ ܚܡܫܬܥܣܪܐ. ܫܘܒܚܐ
ܫܬܝܢ: ܦܬܓܡܐ ܕܝܢ ܐܪܒܥܐ ܐܠܦܝܢ ܘܬܡܢܡܐܐ ܘܬܠܬܝܢ ܘܬܪܝܢ. ܐܝܬ ܐܢܫܐ ܕܐܘܣܦܘ ܬܪܥܣܪ
ܐܚܪܢܝܢ: ܚܢܢ ܠܐ ܣܢܝܩܝܢ ܠܗܘܢ. ܘܠܐܠܗܐ ܫܘܒܚܐ ܠܥܠܡܝܢ.

Completi ſunt Pſalmi Centum quinquaginta, Libri verò quinque, Gradus quindecim, Laudes ſexaginta, Verſus autem quatuor millia octingenti triginta duo. Sunt nonnulli qui addiderunt duodecim alios; nos haud egemus illis. Et Deo laus in perpetuum.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܢܐ *

ܡܙܡܘܪܐ ܗܢܐ ܕܝܠܢܝܐ ܠܕܘܝܕ: ܠܒܪ ܡܢ ܡܢܝܢܐ ܕܝܠܗܘܢ. ܘܠܐ ܒܟܠܗܘܢ ܢܘܣܚܐ
ܡܫܬܟܚ: ܟܕ ܒܠܚܘܕܘܗܝ ܐܬܟܬܫ ܥܡ ܓܘܠܝܕ. ܦܬܓܡܐ ܝܕ.
1 2 * ܙܥܘܪܐ ܐܝܬܝ ܗܘܝܬ ܒܝܬ ܐܚܝ. ܘܛܠܝܐ ܒܒܝܬܗ ܕܐܒܝ: ܪܥܐ ܗܘܝܬ ܥܢܐ ܕܐܒܝ. * ܐܝܕܝ
3 ܥܒܕܝ ܐܪܓܢܘܢ: ܘܨܒܥܬܝ ܬܩܢ ܟܢܪܐ. * ܘܡܢܘ ܢܚܘܐ ܠܡܪܝ: ܗܘ ܡܪܝܐ ܘܗܘ
4 ܐܠܗܐ ܕܝܠܝ. * ܗܘ ܫܕܪ ܡܠܐܟܗ: ܘܫܩܠܢܝ ܡܢ ܥܢܐ ܕܐܒܝ. ܘܡܫܚܢܝ ܒܡܫܚܐ
5 6 ܕܡܫܝܚܘܬܗ: * ܐܚܝ ܫܦܝܪܐ ܘܪܘܪܒܐ. ܘܠܐ ܐܨܛܒܝ ܒܗܘܢ ܡܪܝܐ: * ܢܦܩܬ ܠܐܘܪܥܗ
7 ܕܦܠܫܬܝܐ. ܘܠܛܢܝ ܒܦܬܟܪܘܗܝ: * ܐܢܐ ܕܝܢ ܟܕ ܫܡܛܬ ܣܦܣܪܗ ܦܣܩܬ ܪܫܗ.
ܘܐܥܒܪܬ ܚܣܕܐ ܡܢ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ.

PSAL. CLI.

Pſalmus iſte peculiaris Davidi, extra numerum eſt; nec in omnibus exemplaribus invenitur. Quando ſolus certavit cum Goliad, tunc dixit eum. Verſ. 14.

PArvus eram inter fratres meos, & puer in 1 domo patris mei, paſcebam oves patris mei. Manus meæ aptârunt organum, & digiti 2 mei compegerunt lyram; Et quis annuntiet 3 Domino meo ? Ipſe Dñs, & ipſe Deus meus, Ipſemet miſit Angelum ſuum, & eripuit me 4 de ovibus patris mei, unxítq; me oleo unctionis ſuæ. Fratres mei pulchri & grandes : & 5 *tamen* non eſt oblectat⁹ eis Dominus. Egreſ- 6 ſus ſum in occurſum Philiſthæi, maledixítq; mihi per ſimulacra ſua. Ego autem, evagina- 7 to ipſius enſe, amputavi caput ejus, & abſtuli probrum è filiis Iſrael.

Verſio VULG. LAT.

4 Quia beneplacitum eſt Do-
mino in populo ſuo: & exal-
tabit manſuetos in ſalutem.
5 Exultabunt Sancti in gloria :
lætabuntur in cubilibus ſuis.
6 Exaltationes Dei in gutture
eorum : & gladii ancipites in
7 manibus eorum: Ad faciendã
vindictam in nationibus, in-
8 crepationes in populis. Ad al-
ligandos reges eorũ in com-
pedibus: & nobiles eorum in
9 manicis ferreis. Ut faciant in
eis judiciũ conſcriptum: glo-
ria hæc eſt omnibus Sanctis
ejus. Alleluja.

1 Alleluja. CL.

Laudate Dominũ in San-
ctis ejus : laudate eum in
2 firmamento virtutis ejus. Lau-
date eũ in virtutib⁹ ej⁹: lau-
date eum ſecundùm multitu-
3 dinẽ magnitudinis ejus. Lau-
date eum in ſono tubæ : lau-
date eum in pſalterio, & ci-
4 thara. Laudate eum in tympa-
no, & choro: laudate eum in
5 chordis, & organo. Laudate
eum in cymbalis beneſonan-
tibus: laudate eum in cymba-
6 balis jubilationis : Omnis
ſpiritus laudet Dominum.
Alleluja.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

4 † Ὅτι εὐδοκεῖ κύριος ἐν λαῷ αὐτοῦ, † καὶ ὑψώσει
5 πραεῖς ἐν σωτηρίᾳ. † Καυχήσονται ὅσιοι ἐν δόξῃ,
6 † καὶ ἀγαλλιάσονται ἐπὶ τῶν κοιτῶν αὐτῶν. † Αἱ ὑψώσεις
τοῦ θεοῦ (α) ἐν λάρυγγι αὐτῶν, † καὶ ῥομφαῖαι δίστομοι
7 ἐν ταῖς χερσὶν αὐτῶν· † Τοῦ ποιῆσαι ἐκδίκησιν ἐν
8 τοῖς ἔθνεσιν, † ἐλεγμοὺς ἐν τοῖς λαοῖς· † Τοῦ δῆ-
σαι τοὺς βασιλεῖς αὐτῶν ἐν πέδαις, † καὶ τοὺς ἐνδό-
9 ξους αὐτῶν ἐν χειροπέδαις σιδηραῖς· † Τοῦ ποιῆ-
σαι ἐν αὐτοῖς κρίμα ἔγγραπτον· † δόξα αὕτη ἐστὶν
πᾶσι τοῖς ὁσίοις αὐτοῦ. MS.A. (α) ἐν τῷ

1 Ἀλληλούϊα. ρν΄.

† Αἰνεῖτε τὸν θεὸν ἐν τοῖς ἁγίοις αὐτοῦ, † αἰνεῖτε
αὐτὸν ἐν στερεώματι δυνάμεως αὐτοῦ. † Αἰ-
2 νεῖτε αὐτὸν ἐπὶ ταῖς δυναστείαις αὐτοῦ, † αἰνεῖτε αὐτὸν
3 κατὰ τὸ πλῆθος τῆς μεγαλωσύνης αὐτοῦ. † Αἰνεῖτε
αὐτὸν ἐν ἤχῳ σάλπιγγος, † αἰνεῖτε αὐτὸν ἐν
4 ψαλτηρίῳ καὶ κιθάρᾳ. † Αἰνεῖτε αὐτὸν ἐν τυμπάνῳ καὶ
5 χορῷ, † αἰνεῖτε αὐτὸν ἐν χορδαῖς καὶ (α) ὀργάνῳ. † Αἰνεῖ-
τε αὐτὸν ἐν κυμβάλοις εὐήχοις, † αἰνεῖτε αὐτὸν ἐν
6 κυμβάλοις ἀλαλαγμοῦ. † Πᾶσα πνοὴ αἰνεσάτω τὸν
κύριον. MS.A. (α) ὀργάνοις.

Οὗτος ὁ ψαλμὸς ἰδιόγραφος (α) εἰς Δαυίδ,
καὶ ἔξωθεν τοῦ ἀριθμοῦ, ὅτε ἐμονομάχησε
(β) τῷ Γολιάδ.

† Μικρὸς ἤμην ἐν τοῖς ἀδελφοῖς μου, † καὶ νεώ-
τερος ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ πατρός μου, † ἐποίμαι-
νον τὰ πρόβατα τοῦ πατρός μου. † Αἱ χεῖρές μου
ἐποίησαν ὄργανον, † (γ) καὶ οἱ δάκτυλοί μου ἥρ-
μοσαν ψαλτήριον. † Καὶ τίς ἀναγγελεῖ τῷ κυρίῳ μου;
† αὐτὸς κύριος, αὐτὸς (δ) εἰσακούει. † Αὐτὸς
ἐξαπέστειλε τὸν ἄγγελον αὐτοῦ, † καὶ ἦρέ με ἐκ τῶν προ-
βάτων τοῦ πατρός μου, † καὶ ἔχρισέ με ἐν τῷ (ε) ἐ-
λαίῳ τῆς χρίσεως αὐτοῦ. † (ζ) Οἱ ἀδελφοί μου κα-
λοὶ καὶ μεγάλοι, † καὶ οὐκ εὐδόκησεν ἐν αὐτοῖς (η)
κύριος. † Ἐξῆλθον εἰς συνάντησιν τῷ ἀλλοφύ-
λῳ, † καὶ ἐπικατηράσατό με ἐν τοῖς εἰδώλοις αὐτοῦ.
† Ἐγὼ δὲ σπασάμενος τὴν (θ) παρ' αὐτοῦ μά-
χαιραν, † ἀπεκεφάλισα αὐτόν, † καὶ ἦρα ὄνει-
δος ἐξ υἱῶν Ἰσραήλ.

Βίβλος ψαλμῶν ρν΄.

MS.A. (α) τοῦ Δαυίδ, (β) πρὸς τὸν Γολιάθ. (γ) οἱ δάκτυλοί μου (δ) εἰσακούσεταί μου. (ε) ἐλάει (ζ) Οἱ δὲ ἀδελφοί (η) ὁ κύριος. (θ) παρ' ἐκείνου

Ψαλμοὶ ρν΄. καὶ ἰδιόγραφος α΄.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

4 Quia (b) beneplacitum eſt Domino 4
in populo ſuo: & (c) exaltabit man-
ſuetos in ſalute. 5 (d) [b] Exulta- 5
bunt Sancti in gloria: & lætabuntur
in cubilibus ſuis. 6 (e) Exaltationes 6
Dei in gutture eorum: & gladii (f)
ancipites in manibus eorum: 7 Ad 7
faciendam vindictam in nationibus,
[c] increpationes in populis: 8 Ad al- 8
ligandos reges eorum in compedibus,
& nobiles eorũ in manicis ferreis:
9 [d] Ad faciendum in eis judicium 9
(g) conſcriptum: gloria hæc eſt omni-
bus Sanctis ejus.

Alleluja. *CL.* 1

Laudate Dominum in (a) Sanctis
ejus : laudate eum in firmamento
(b) virtutis ejus. 2 Laudate eum [a] 2
in (c) potentatibus ejus: laudate eum
ſecundùm multitudinẽ magnitudinis
ejus. 3 Laudate eum in (d) ſono tu- 3
bæ: laudate eum in (e) pſalterio, &
cithara. 4 Laudate eum in tympano, 4
& [b] choro: laudate eũ in (f) chor-
dis, & [c] organo. 5 Laudate eum in 5
cymbalis benè ſonantib⁹: laudate eũ
in cymbalis (g) [d] jubilationis: O- 6
mnis (h) ſpiritus laudet Dominum.

INTERP. ÆTH. Abſolut⁹ eſt David.

Hic Pſalmus [a] Idiographus (a)
in David: & extra (b) numerum:
quando monomachiam iniit
cum Goliad.

1 *Parvus eram in fratribus meis,*
& junior in domo patris mei,
paſcebam oves patris mei. 2 Manus
meæ fecerunt organum: & digiti mei
[b] concinnaverunt pſalterium. 3 Et
quis annuntiabit Domino meo? Ipſe
Dominus, ipſe [c] exaudit. 4 Ipſe e-
miſit angelum ſuum, & tulit me de
ovibus patris mei: & unxit me in [d]
oleo unctionis ſuæ. 5 Fratres [e] mei
pulchri, & magni: & non benè ſen-
ſit in eis Domin⁹. 6 Exivi in occur-
ſũ alienigenæ, & [†] maledixit me in
idolis ſuis: 7 Ego verò trahens gladi-
um, qui [f] ab illo, capite truncavi eũ,
& abſtuli opprobrium ex filiis Iſrael.

Verſio ÆTHIOPICA.

እስመ፡ ሠምረ ፡ እግዚአብሔር ፡ በሕዝቡ።ወያሌዕ 4
ሎሙ ፡ ለየዋሃን ፡ በአድኅኖቱ።=፦ ይትሜክሁ፡ጻ 5
ድቃን ፡ በክብሩ። ወይትፌሥሑ ፡ በዲበ ፡ ምስካቢሆ
ሙ።=፦ ወያሌዕልዎ ፡ ለእግዚአብሔር ፡ በጕሮዒ 6
ቶሙ ። ሰይፍ ፡ ዘክልኤ ፡ አፉሁ ፡ ውስተ ፡ እደዊ
ሁ።=፦ ከመ ፡ ይግበር፡በቀለ፡ ውስተ፡ አሕዛብ።ወ 7
ከመ፡ይዛለፍሙ፡ለአሕዛብ።=፦ ከመ፡ ይዕስሮሙ፡ 8
ለነገሥቶሙ ፡ በመዋቅሕት። ወለክቡራኒሆሙ ፡ በእ
ደ፡ሰናስለ፡ ኀጺን።=፦ ከመ ፡ ይግበር፡ ኵነኔ ፡ ዘጽ 9
ሑፍ ፡ ላዕሌሆሙ ። ክብር፡ ይእቲ ፡ ዛቲ ፡ ለኵሉ፡
ጻድቃኑ።=፦

ሃሌሉያ።

፻፶ ሰብሕዎ ፡ ለእግዚአብሔር ፡ በቅዱሳኑ ። ሰብ 1
ሕዎ ፡ በጽንዓ ፡ ኀይሉ።=፦ ሰብሕዎ ፡ በክሂሎ 2
ቱ ። ሰብሕዎ ፡ በከመ ፡ ብዝኀ ፡ ዕበዩ።=፦ ሰብ 3
ሕዎ ፡ በቃለ ፡ ቀርን ። ሰብሕዎ ፡ በመዝሙር ፡ ወ
በመሰንቆ።=፦ ሰብሕዎ ፡ በከበሮ ፡ ወበትፍሥሕ 4
ት ። ሰብሕዎ ፡ በአውታር ፡ ወበእንዚራ።=፦ ሰብ 5
ሕዎ ፡ በጸናጽል ፡ ዘሠናይ ፡ ቃሉ። ሰብሕዎ ፡ በጸና
ጽል ፡ ወበይባቤ ። ኵሉ ፡ ነፍስ ፡ ይሴብሖ ፡ ለእ
ግዚአብሔር።=፦

ተፈጸመ፡ደዊት።

መዝሙር፡ዘርዕሱ፡ዘደዊት፡ዘጸሐፈ፡ወውፅአ፡
ወእቱ፡እምኍልቍ፡ዘአመ፡ይትበሐቶ፡ወ
ይትበአስ፡ምስለ፡ጎልያድ፡ወይቤ።

ዐ ንኡሰ ፡ አነ ፡ እምአኀውየ። ወሬዛ፡ በቤተ፡ አቡ 1
የ። ወእሬኢ ፡ አባግዐ ፡ አቡየ።=፦ እደዊየ ፡ ገ 2
ብራ ፡ መሰንቆ።ወአጻብዕየ ፡ ያስተዋድዳ ፡ መዝሙ
ረ።=፦ መኑ ፡ ይነግሮ ፡ ለእግዚእየ ። ውእቱ ፡ እ 3
ግዚአብሔር ፡ ወውእቱ ፡ ይሰምዐኒ።=፦ ውእቱ፡ 4
ፈነወ ፡ መልአኮ።ወነሥአኒ ፡ እምአባግዐ ፡ አቡየ።
ወቀብአኒ ፡ ቅብአ ፡ ቅዱስ።=፦ አኀዊየሰ ፡ ሠናያ 5
ን ፡ ወልሂቃን ። ወኢሠምረ ፡ ቦሙ ፡ እግዚአብሔ
ር።=፦ ወወፃእኩ ፡ ለትእኅዛዜቱ ፡ ለሕዝብ ፡ ነኪ 6
ር።ወረገመኒ ፡ በአማልክቲሆሙ።=፦ ወአንስ ፡ ነ 7
ሣእኩ ፡ ዘእምላዕሌሆሙ ፡ ሰይፈ ። ወመተርኩ ፡ ር
እሶ ። ወአሰሰልኩ ፡ ጽእለተ ፡ እምደቂቀ ፡ እስራ
ኤል።=፦

INTERP. ÆTHIOP. [b] Gloriabuntur Sancti [c] & ad increpandum populos: [d] Ut exequatur judicium de illis conſcriptum: *PSAL. CL.* [a] in omnimoda potentia ejus: [b] in lætitia : [c] organis. [d] & in jubilatione. *PSAL. CLI.* [a] ipſiuſmet Davidis, quem ſcripſit, ſed extra numerum, cùm ſolus fuit in certamine cum Goliad, & dixit ; [b] confixerunt pſalterium. [c] exaudiet me. [d] oleo ſancto. [e] mei quidem pulchri, & grandiores me, [†] maledixerunt [f] apud illos,

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* لان الرب سر بشعبه * ويعلي الودعاء بالخلاص * يفتخر القديسون بالمجد * ويهللون علي 4 5
مضاجعهم * تعظيم الله موضوع في حناجرهم * وسيوف ذوات حدين موضوعة في ايديهم * 6
* لكي ينتقموا من الامم * ويبكتوا الشعوب * ولكي يوثقوا ملوكهم بالقيود * واشرافهم بيد اغلال 7 8
الحديد * لكي يصنعوا فيهم حكما مكتوبا * هذا المجد هذا كان في جميع قديسيه * الليلويا * 9

* المزمور الخمسون والماية *

* سبحوا الله في جميع قديسيه * سبحوه في فلك 1
قوته * سبحوه علي جبروته * سبحوه ككثرة عظمته * سبحوه بصوت البوق * سبحوه بالمزمار 2 3
والقيثار * سبحوه بالدف والصنج * سبحوه بالاوتار والارغن * سبحوه بمعازف حسن صوتها * 4 5
سبحوه بمعازف التهليل * كل نسمة فلتسبح الرب * 6

* كملت خمسة اسفار * فالاول آخره الاربعون * والثاني آخره السبعون * والثالث آخره
الثمانون * والرابع آخره الخامس والماية * والخامس الي الكمال *

* المزمور الحادي والخمسون والماية * هذا المزمور كتب خاصة لداود * وهو
خارج عن العدد * حين بارز جلياث فقط * وهو يو * استيخن *

* صغيرا كنت في اخوتي * وشابا في بيت ابي * كنت ارعي غنم ابي * يداي صنعتا ارغنا * 1 2
واصابعي الفت مزمارا * فمن ذا الذي اعلم سيدي هو الرب * والمستجيب لكل صارخ 3
اليه * هو ارسل ملاكه * ورفعني من اغنام ابي * ومسحني بدهن مسحته * اخوتي حسان وهم 4 5
عظماء ولم يسر بهم الرب * خرجت الي لقاء الغريب القبيلة * فلعنني باوثانه * فرميته بثلثة 6 7
احجار في جبهته بقوة الرب فصرعته * وانا سللت سيفه الذي بيده وقطعت راسه * ورفعت 8
العار عن بني اسرائيل *

* تمت المزامير بحمد الله وعونه وحسن توفيقه *

Quoniam Dominus oblectatus eſt populo 4
ſuo, & extollit manſuetos per ſalutem.
Gloriabuntur ſancti de gloria, & laudem 5
celebrabunt ſuper cubilibus ſuis. Magni- 6
ficatio Dei ſita eſt in gutturibus eorum: et
gladii duarum acierum poſiti in manibus
eorum: ut vindictam ſumant à gentibus, 7
& objurgent populos. Et ut vinciant re- 8
ges eorum compedibus, & præcipuos eo-
rum manu vinculorum ferreorum: ut fa- 9
ciant in eis judicium ſcriptum. Hæc eſt
gloria, hæc erat in omnibus ſanctis ejus.
Alleluja.

PSAL. CL.

Laudate Deum in omnibus ſanctis e- 1
jus : laudate eum in ſphæra fortitu-
dinis ejus : Laudate eum ob potentiam e- 2
jus : laudate eum ſecundùm multitudi-
nem magnitudinis ejus : Laudate eum ſo- 3
nitu buccinæ : laudate eum pſalterio &
citharâ : Laudate eum tympano & ſiſtro : 4
laudate eum chordis & organo : Lauda- 5
te eum fidibus dulciſonis, laudate eum in-
ſtrumentis pſalmodiæ. Omnis halitus lau- 6
det Dominum.

Finis quinq; librorum, quorum primus terminatur *Pſalmo* quadrageſimo ; Secundus terminatur ſeptuageſimo, Tertius terminatur octuageſimo, Quartus terminatur centeſimo quinto, Quintus ultimo.

PSAL. CLI.

Hic pſalmus aſcribitur peculiariter Davidi, éſtque præter numerum. Quum ſuperavit Goliath tantúm. Verſ. 16.

Minimus eram inter fratres meos, & 1
adoleſcens in domo patris mei, pa-
ſcebam oves patris mei. Manus meæ fe- 2
cerunt organum, & digiti mei compoſue-
runt pſalterium. Quis iſte eſt qui docuit? 3
herus meus ipſe Dominus, et exauditor cu-
juſvis clamantis ad eum. Ipſemet miſit 4
angelum ſuum, & extraxit me ex ovibus
patris mei, et unxit me unguento unctionis
ſuæ. Fratres mei pulchri ſunt et magni, 5
& tamen non eſt oblectatus eis Dominus.
Egreſſus ſum in occurſum extraneæ natio- 6
ne, et maledixit mihi per ſimulachra ſua.
Et jaculatus ſum in eum tres lapides, in 7
frontẽ ipſius, in virtute Domini, et proſtra-
vi eum. Et ego evaginavi gladium ejus 8
quẽ ſuâ manu tenebat, et amputavi caput
ejus, et abſtuli opprobrium à filiis Iſrael.

Abſoluti ſunt Pſalmi glorioſiſſimo Deo juvante rectéque diſponente.

כפר משלי : א

CAP. I. א

1 ,ſapientiam ſciendum Ad .Iſrael regis ,David filii,Selomoh Parabolæ
2 מִשְׁלֵי שְׁלֹמֹה בֶן־דָּוִד מֶלֶךְ יִשְׂרָאֵל׃ לָדַעַת חָכְמָה
ſuſcipiendum Ad .intelligentiæ eloquia intelligendum ad:eruditionem &
3 וּמוּסָר לְהָבִין אִמְרֵי בִינָה׃ לָקַחַת
.rectitudines & , judicium & , juſtitiam : intellectus eruditionem
מוּסַר הַשְׂכֵּל צֶדֶק וּמִשְׁפָּט וּמֵשָׁרִים׃
.verſutiam & , ſcientiam puero ; calliditatem ſimplicibus dandum Ad
4 לָתֵת לִפְתָאיִם עָרְמָה לְנַעַר דַּעַת וּמְזִמָּה׃
ſolertia conſilia intelligens & : doctrinam addet & , ſapiens Audiet
5 יִשְׁמַע חָכָם וְיוֹסֶף לֶקַח וְנָבוֹן תַּחְבֻּלוֹת
verba *: jucundiam* & , parabolam intelligendum Ad .poſſidebit
6 יִקְנֶה׃ לְהָבִין מָשָׁל וּמְלִיצָה דִּבְרֵי
: ſcientiæ principium Domini Timor .eorum ænigmata & ,ſapientum
7 חֲכָמִים וְחִידֹתָם׃ יִרְאַת יְהוָה רֵאשִׁית דָּעַת
eruditionem mi fili Audi .deſpexerunt ſtulti eruditionem & , ſapientiam
8 חָכְמָה וּמוּסָר אֱוִילִים בָּזוּ׃ שְׁמַע בְּנִי מוּסַר
gratiæ *copulatio* Quia .tuæ matris legem dimittas ne & ; tui patris
9 אָבִיךָ וְאַל־תִּטֹּשׁ תּוֹרַת אִמֶּךָ׃ כִּי לִוְיַת חֵן
te *pellexerint* ſi , mi Fili *.tuis gutturibus* torques & : tuo capiti *ipſæ*
10 הֵם לְרֹאשֶׁךָ וַעֲנָקִים לְגַרְגְּרֹתֶךָ׃ בְּנִי אִם־יְפַתּוּךָ
, nobiſcum *Age* , dixerint Si *.velis* ne , peccatores
11 חַטָּאִים אַל־תֹּבֵא׃ אִם־יֹאמְרוּ לְכָה אִתָּנוּ
.gratis innocentem *ad* nos abſcondamus : ſanguini inſidiemur
נֶאֶרְבָה לְדָם נִצְפְּנָה לְנָקִי חִנָּם׃
deſcendentes ſicut integros & ; viventes ſepulchrum ſicut eos Deglutiam
12 נִבְלָעֵם כִּשְׁאוֹל חַיִּים וּתְמִימִים כְּיוֹרְדֵי
implebimus : reperiemus precioſam ſubſtantiam Omnem *.ciſternam*
13 בוֹר׃ כָּל־הוֹן יָקָר נִמְצָא נְמַלֵּא
: noſtrum medio in *cadere fac* tuam Sortem *.ſpolio* noſtras domos
14 בָתֵּינוּ שָׁלָל׃ גּוֹרָלְךָ תַּפִּיל בְּתוֹכֵנוּ
ambules ne , mi Fili .nobis omnibus erit unum marſupium
15 כִּיס אֶחָד יִהְיֶה לְכֻלָּנוּ׃ בְּנִי אַל־תֵּלֵךְ
Nam .eorum *ſemita* à tuum pedem prohibe : eis cum via in
16 בְּדֶרֶךְ אִתָּם מְנַע רַגְלְךָ מִנְּתִיבָתָם׃ כִּי
.ſanguinem *effundendum ad feſtinabunt* & , *current* malum ad eorum pedes
רַגְלֵיהֶם לָרַע יָרוּצוּ וִימַהֲרוּ לִשְׁפָּךְ־דָּם׃
competis omnis oculis in rete *expanſum* *gratis* Quoniam
17 כִּי־חִנָּם מְזֹרָה הָרָשֶׁת בְּעֵינֵי כָּל־בַּעַל
.eorum *animabus* abſcondent:inſidiabuntur eorum ſanguini ipſi Et *.pennæ*
18 כָּנָף׃ וְהֵם לְדָמָם יֶאֱרֹבוּ יִצְפְּנוּ לְנַפְשֹׁתָם׃
animam ; *lucri concupiſcentiam concupiſcentis* omnis ſemitæ Sic
19 כֵּן אָרְחוֹת כָּל־בֹּצֵעַ בָּצַע אֶת־נֶפֶשׁ
plateis in : prædicabit *plateis in Sapientiæ* .capiet illius *patronorũ*
20 בְּעָלָיו יִקָּח׃ חָכְמוֹת בַּחוּץ תָּרֹנָּה בָּרְחֹבוֹת
oſtiis in clamabit tumultuantium capite In .ſuam vocem dabit
21 תִּתֵּן קוֹלָהּ׃ בְּרֹאשׁ הֹמִיּוֹת תִּקְרָא בְּפִתְחֵי
ſimplices Uſquequo .dicet ſua eloquia urbe in , portarum
22 שְׁעָרִים בָּעִיר אֲמָרֶיהָ תֹאמֵר׃ עַד־מָתַי פְּתָיִם
deſiderabunt deriſionem deriſores & ? ſimplicitatem diligetis
תְּאֵהֲבוּ פֶתִי וְלֵצִים לָצוֹן חָמְדוּ
Convertemini ? ſcientiam habebunt odio ſtulti & ? ſibi
23 לָהֶם וּכְסִילִים יִשְׂנְאוּ־דָעַת׃ תָּשׁוּבוּ
: meum ſpiritum vobis *eructabo* En : meam increpationem ad
לְתוֹכַחְתִּי הִנֵּה אַבִּיעָה לָכֶם רוּחִי
.vos mea verba faciam ſcire
אוֹדִיעָה דְבָרַי אֶתְכֶם׃

Verſio VULG. LAT.

LIBER PROVERBIORUM, QUEM HEBRÆI MISLE appellant.

CAP. I.

1 PArabolæ Salomonis, filii 2 David, regis Iſrael. Ad ſciendam ſapientiam, & diſciplinam: 3 Ad intelligenda verba prudentiæ, & ſuſcipiendã eruditionem doctrinæ, juſtitiam, 4 & judicium, & æquitatem: Ut detur parvulis aſtutia, adoleſcenti ſcientia, & intellectus. 5 Audiens ſapiens, ſapientior erit: & intelligens, gubernacula 6 poſſidebit. Animadvertet parabolam, & interpretationem; verba ſapientum, & æni- 7 gmata eorum. Timor Domini principium ſapientiæ. Sapientiam, atque doctrinam ſtulti 8 deſpiciunt. Audi, fili mi, diſciplinam patris tui, & ne dimit- 9 tas legem matris tuæ: Ut addatur gratia capiti tuo, & tor- 10 ques collo tuo. Fili mi, ſi te lactaverint peccatores, ne ac- 11 quieſcas eis. Si dixerint; Veni nobiſcum, inſidiemur ſanguini, abſcondamus tendiculas 12 contra inſontem fruſtrá: Deglutiamus eum ſicut infernus viventem, & integrum quaſi 13 deſcendentem in lacum. Omnem pretioſam ſubſtantiam reperiemus, implebimus do- 14 mos noſtras ſpoliis. Sortem mitte nobiſcum, marſupium u- 15 num ſit omnium noſtrûm. Fili mi, ne ambules cum eis, prohibe pedem tuum à ſemitis eo- 16 rum. Pedes enim illorum ad malum currunt, & feſtinant ut 17 effundant ſanguinem. Fruſtrà autem jacitur rete ante oculos 18 pennatorum. Ipſi quoque contra ſanguinem ſuum inſidiantur, & moliuntur fraudes con- 19 tra animas ſuas. Sic ſemitæ omnis avari, animas poſſiden- 20 tium rapiunt. Sapientia forìs prædicat, in plateis dat vocem 21 ſuam: In capite turbarum clamitat, in foribus portarum urbis profert verba ſua, di- 22 cens; Uſquequò parvuli diligitis infantiam, & ſtulti ea, quæ ſibi ſunt noxia, cupient, & imprudentes odibunt ſci- 23 entiam? Convertimini ad correptionem meam: en proferam vobis ſpiritum meum, et oſtendam vobis verba mea.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cùm Tranſlatione LATINA.

ΠΑΡΟΙΜΙ'ΑΙ ΣΑΛΩΜΩ͂ΝΤΟΣ.

ΚΕΦ. α΄.

1 †ΠΑροιμίαι (*) Σαλωμῶντος υἱοῦ Δαυὶδ, 2 † ὃς ἐβασίλευσεν ἐν Ἰσραὴλ, † Γνῶναι σο- 3 φίαν καὶ παιδείαν, † Νοῆσαί τε λόγους φρονήσεως, † δέξασθαί τε στροφὰς λόγων, † νοῆσαί τε δικαιοσύνην ἀληθῆ, † καὶ κρίμα κατ- 4 ευθύνειν· † Ἵνα δῷ ἀκάκοις πανουργίαν, † παιδὶ δὲ νέῳ αἴσθησίν τε καὶ ἔννοιαν. † (α) 5 Τῶνδε γὰρ ἀκούσας σοφὸς σοφώτερος ἔσται, 6 † ὁ δὲ νοήμων κυβέρνησιν κτήσεται· † Νοήσει τε παραβολὴν καὶ σκοτεινὸν λόγον, † ῥήσεις 7 τε σοφῶν καὶ αἰνίγματα. † Ἀρχὴ σοφίας φόβος κυρίου, † σύνεσις δὲ ἀγαθὴ πᾶσι τοῖς ποιοῦσιν αὐτήν. † εὐσέβεια δὲ εἰς Θεὸν (β) ἀρχὴ αἰσθήσεως, † σοφίαν δὲ καὶ παιδείαν ἀσε- 8 βεῖς ἐξουθενήσουσιν. † Ἄκουε υἱὲ (γ) παιδείαν πατρός σου, † καὶ μὴ ἀπώσῃ θεσμοὺς μητρός 9 σου. † Στέφανον γὰρ χαρίτων (δ) δέξῃ σῇ κορυφῇ, † καὶ κλοιὸν χρύσεον περὶ σῷ τραχή- 10 λῳ. † Υἱὲ μή σε πλανήσωσιν ἄνδρες ἀσε- 11 βεῖς, † μηδὲ βουληθῇς. Ἐὰν παρακαλέσωσί σε, λέγοντες, † Ἐλθὲ μεθ᾽ ἡμῶν, κοινώνησον αἵματος, † κρύψωμεν δὲ εἰς γῆν ἄν- 12 δρα δίκαιον ἀδίκως, † Καταπίωμεν δὲ αὐτὸν ὥσπερ ᾅδης ζῶντα, † καὶ ἄρωμεν αὐ- 13 τοῦ τὴν μνήμην ἐκ γῆς, † Τὴν (ε) κτῆσιν αὐτοῦ τὴν πολυτελῆ καταλαβώμεθα, † πλήσωμεν 14 δὲ οἴκους ἡμετέρους σκύλων· † Τὸν δὲ σὸν κλῆρον βάλε ἐν ἡμῖν, † κοινὸν δὲ (**) βαλάντιον κτησώμεθα πάντες, † καὶ μαρσίππιον ἓν γενη- 15 θήτω ἡμῖν· † Μὴ πορευθῇς ἐν (ζ) ὁδῷ μετ᾽ αὐτῶν, † ἔκκλινον δὲ (η) τὸν πόδα σου 17 ἐκ τῶν τρίβων αὐτῶν. † (θ) Οὐ γὰρ ἀδίκως 18 ἐκτείνεται δίκτυα πτερωτοῖς. † Αὐτοὶ γὰρ οἱ φόνου μετέχοντες, θησαυρίζουσιν ἑαυτοῖς κακά. † ἡ δὲ καταστροφὴ ἀνδρῶν παρανόμων 19 κακή. † Αὗται αἱ ὁδοί εἰσι πάντων τῶν συντελούντων τὰ ἄνομα· † τῇ γὰρ ἀσεβείᾳ τὴν ἑ- 20 αυτῶν ψυχὴν ἀφαιροῦνται. † Σοφία ἐν ἐξόδοις ὑμνεῖται, † ἐν δὲ πλατείαις παῤῥησίαν 21 ἄγει. † Ἐπ᾽ ἄκρων δὲ τειχέων κηρύσσεται, † ἐπὶ δὲ πύλαις δυναστῶν παρεδρεύει, † ἐπὶ 22 δὲ πύλαις πόλεως θαῤῥοῦσα λέγει, † Ὅσον ἂν χρόνον ἄκακοι (ι) ἔχονται τῆς δικαιοσύνης, οὐκ αἰσχυνθήσονται; † οἱ δὲ ἄφρονες τῆς ὕβρεως ὄντες ἐπιθυμηταὶ, ἀσεβεῖς γενόμενοι 23 ἐμίσουσαν αἴσθησιν, † Καὶ ὑπεύθυνοι ἐγένοντο ἐλέγχοις. † ἰδοὺ προήσομαι ὑμῖν ἐμῆς πνοῆς ῥῆσιν, † διδάξω δὲ ὑμᾶς τὸν ἐμὸν λόγον.

PROVERBIA SALOMONIS.

CAP. I.

*PRoverbia (a) Salomonis filii David, qui regnavit in Iſrael: Ad ſciendam ſapientiam, & diſciplinam, Et (b) intelligendum verba prudentiæ, & (c) ſuſcipiendum verſutias ſermonum; & intelligendam juſtitiam veram, & judicium dirigendum: ut det (d) ſimplicibus aſtutiam, & puero novo & ſenſum, & (e) cogitationem. Hæc enim audiens ſapiens ſapientior erit: intelligens autem, rationem gubernandi poſſidebit. Animadvertétque (f) parabolam, & tenebroſum ſermonem, dictáque ſapientum, & ænigmata. Principium ſapientiæ timor (g) Domini: intellectus autem bonus omnibus facientibus eum. Pietas autem in Deũ principium ſenſûs: ſapientiam autem & diſciplinam (h) impii ſpernent. Audi, fili, (i) diſciplinam patris tui: & ne abjicias leges matris tuæ. (k) Coronã enim gratiarum recipies vertici tuo, & (l) torquem aureum circa tuum collum. Fili, ne te ſeducant viri impii, neque *velis. Si advocaverint te, dicentes; Veni nobiſcum, (m) particeps eſto ſanguinis, abſcondamus autem in terram virum (n) juſtum injuſtè, Deglutiamus autem eum, ſicut infernus viventem, & tollamus ejus memoriam de terra, (o) Poſſeſſionem ejus (p) pretioſã occupemus, impleamus autem domos noſtras (q) ſpoliis, (r) Tuam autem ſortem mitte in nobis, (ſ) communem autem crumenam poſſideamus omnes, & marſupium unum ſit (t) nobis; (u) Ne ambules in via cum eis, (x) declina autem pedem tuum à ſemitis (y) eorum. Non (z) enim iniquè tenduntur retia avibꝰ. Ipſi enim qui homicidii participes ſunt, theſaurizant ſibi ipſis mala. (ω) Everſio autem virorum iniquorum mala. Hæ viæ ſunt (aa) omnium conſummantium iniqua. (bb) Impietate enim ſuam ipſorum animam auferunt. Sapientia in exitibus (cc) canitur, in plateis autem cum libertate agit; Et ſuper ſummos muros (dd) clamitat, et (ee) in portis dynaſtarum aſſidet, & in portis civitatis confidenter ait; Quanto tempore ſimplices (ff) inhærent juſtitiæ; non erubeſcent? inſipientes autem dum contumeliæ cupidi, ſunt impii (gg) facti, oderunt ſenſum, (bb) Et ſubjecti facti ſunt opprobriis. Ecce (ii) proferam vobis mei ſpiritûs dictionem: docebo autem vos meum ſermonem.*
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 17 18 19 20 21 22 23

MS.A. Παροιμίαι.¦ (*) Σολομῶντος (α) Τῶν τε (β) ἀρετὴ (γ) νόμους (δ) ἕξῃ (ε) κτίσιν (**) βαλλάντιον (ζ) ὁδοὺς (η) τὸν σὸν πόδα (θ) † Οἱ γὰρ 16 πόδες αὐτῶν εἰς κακίαν τρέχουσι, † καὶ ταχινοὶ τοῦ ἐκχέαι αἷμα. Οὐ γὰρ ἀδίκως (ι) ἔχωνται

תרגום TARGUM.

א

1 2 מַתְלוֹי דִשְׁלֹמֹה בַּר דָּוִד מַלְכָּא דְיִשְׂרָאֵל : לְמֵדַע חָכְמְתָא וּמַרְדוּתָא לְאִתְבַּיָּן אִמְרֵי
3 בִּיוּנְתָא : לְמִקַבְּלָא מַרְדוּתָא דְשׁוּכְלָא וְצִדְקְתָא וְדִינָא וְתְרִיצוּתָא : לְמִתַּן לְשַׁבְרֵי
4 5 עֲרִימוּתָא וְלְטַלְאֵי יְדִיעְתָא וְתַרְעִיתָא : יִשְׁמַע חַכִּימָא וְיוֹסֵיף מַדְעָא וְסוּכְלְתָנָא
6 7 מַרְבַּרְנוּתָא יִקְנֶה : לְמִתְבַּיְנָא מַתְלָאָה וּפְלְאֲתָא וּמִלֵּי דְחַכִּימֵי וְאוּחֲדָתְהוֹן : רֵישׁ
8 חָכְמְתָא דְחַלְתָא דַיְיָ וְחָכְמְתָא וּמַרְדוּתָא סַכְלֵי שָׁיְטִין : שְׁמַע בְּרִי מַרְדוּתָא דַאֲבוּךְ
9 10 וְלָא תִטְעֵי מִנִּימוֹסָא דְאִמָּךְ : מְטוּל דְיָאוּתָא וְחִסְדָא אִנּוּן לְרֵישָׁךְ וְהַמְנִיכָה לְצַוְּרָךְ :
11 בְּרִי אִין נְשַׁדְּלוּ לָךְ חַטָּאֵי לָא תִתְפַּיֵּס : אִין יֵמְרוּן אֱתָא עִמָּנָא נִכְמוֹן לִדְמָא נִטְשֵׁי
12 13 לְזַכַּי מַגָּן : נִבְלְעִנּוּן כִּשְׁיוֹל לְחַיֵּי וְלִדְלָא מוּם הֵיךְ נָחְתֵי גוּבָּא : כָּל עוּתְרָא וִיקָרָא
14 נִשְׁכַּח וּנְמַלֵּא בָתָּנָא בִּזְּתָא : כִּיסָךְ אַרְמֵה בֵּינָתָנָא כִּיסָא חַד יֶהֱוֵי לְכֻלָּן : בְּרִי
15 16 לָא תֵיזֵל בְּאָרְחָא עִמְּהוֹן מְנַע רִגְלָךְ מִן שְׁבִילֵיהוֹן : מְטוּל דְרִגְלֵיהוֹן לְבִישְׁתָא
17 רָהֲטָן וּמִסְתַּרְהֲבִין לְמִשְׁפַּךְ דְּמָא : מְטוּל דְמַגָּן פְּרִיסָא מְצוּדְתָא עַל פַּרְחַתָא דְגַפָּא :
18 19 וְהִנּוּן לִדְמָהוֹן כָּמְנִין וּמְטַשִּׁין לְנַפְשָׁתְהוֹן : הֵכְדֵין אִנּוּן אָרְחָתָא דְכָל דְּעָבְדִין עַוְלָא
20 21 נַפְשָׁתָא דְמָרֵיהוֹן נָסְבִין : חָכְמְתָא בְּשׁוּקָא מִשְׁתַּבְּחָא וּמִשְׁקָקֵי יָהֲבָא קָלָהּ : בְּרֵישׁ
22 בִּירָתָא מַכְרְזָא וּבְמַעֲלָנָא דְתַרְעֵי בִּכְרַכֵּי מִלְּהָא אָמְרָה : עַד אֵימַת שַׁבְרֵי רָחֲמִין
23 שַׁבְרוּתָא וּמִמְקְנֵי מִמְקְנוּתָא רְגִינוּ לְהוֹן וְסַכְלֵי סָגִין יְדִיעְתָא : תִּתְפְּנוּן לְמַכְסְנוּתִי
אַבַּע לְכוֹן רוּחִי וְאוֹדְעִנּוּן מִלַּי :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAPUT. I

PArabolæ Salomonis filii David regis Iſrael. Ad ſciendam ſapientiam 1
& diſciplinam, ad intelligenda verba intelligentiæ. Ad ſuſcipiendam 2
diſciplinam intellectus, & juſtitiam, & judicium, & æquitatem. Ad dan- 3
dum inſipientibus aſtutiam, & adoleſcentibus ſcientiam & conſilium. 4
Audiet ſapiens, & addet ſcientiam, & intelligens gubernaculum poſſide- 5
bit. Ut intelligat parabolam, & interpretationem, & verba ſapientum, 6
& ænigmata eorum. Initium ſapientiæ timor Domini: ſapientiam autem 7
& diſciplinam ſtulti deſpiciunt. Audi fili mi diſciplinam patris tui, & ne 8
erres à lege matris tuæ. Quoniam decor *& gratia* ſunt capiti tuo; & tor- 9
ques collo tuo. Fili mi ſi te ſeduxerint peccatores, ne acquieſcas. Si 10
dixerint, Veni nobiſcum, inſidiemur ſanguini abſcondamur contra inno- 11
centem fruſtra. Abſorbeamus eos quaſi infernus viventes, & immaculatos 12
ſicut deſcendentes in lacum. Omnes divitias & gloriam inveniemus, & 13
implebimus domos noſtras ſpoliis. Sortem tuam mitte inter nos, marſu- 14
pium unum erit omnibus nobis. Fili mi ne ambules in via cum eis, pro- 15
hibe pedem tuam à ſemitis eorum. Quoniam pedes eorum ad malum 16
currunt, & feſtinant ad effundendum ſanguinem. Quoniam fruſtrà ex- 17
panditur rete ante volucrem pennatam. Ipſi autem contra ſanguinem 18
ſuum inſidiantur, *& abſcondunt* contra animas ſuas. Sic ſunt viæ omnium 19
operantium iniquitatem: animas dominorum ſuorum capiunt. Sapientia 20
vicatim cantat, ac de plateis dat vocem ſuam. In capite arcium præconi- 21
zat, & in introitu portarum per urbes verba ſua dicit. Uſquequo inſipi- 22
entes diligitis inſipientiam, & deriſores deriſionem appetunt ſibi, & ſtulti
odiunt ſcientiam? Convertimini ad correptionem meam: en proferam 23
vobis ſpiritum meum, & oſtendam vobis verba mea.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܟܬܒܐ ܕܡܬܠܐ ܕܫܠܝܡܘܢ ܒܪ ܕܘܝܕ ܡܠܟܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ *

* ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

* ܡܬܠܘܗܝ ܕܫܠܝܡܘܢ ܒܪ ܕܘܝܕ ܡܠܟܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ. * ܠܡܕܥ ܚܟܡܬܐ ܘܡܪܕܘܬܐ. 1 2
ܘܠܡܣܬܟܠܘ ܡܠܐ ܕܣܘܟܠܐ. * ܘܠܡܩܒܠܘ ܡܪܕܘܬܐ ܘܕܚܠܬܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܕܝܢܐ 3
ܘܬܪܝܨܘܬܐ. * ܠܡܬܠ ܠܛܠܝܐ ܚܪܝܦܘܬܐ. ܘܠܥܠܝܡܐ ܝܕܥܬܐ ܘܡܠܟܐ. * ܢܫܡܥ ܚܟܝܡܐ 4 5
ܘܢܘܣܦ ܠܗ ܚܟܡܬܗ. ܘܣܘܟܠܬܢܐ ܡܕܒܪܢܘܬܐ ܢܩܢܐ. * ܕܢܕܥܘܢ ܡܬܠܐ ܘܦܠܐܬܐ. 6
ܘܡܠܐ ܕܚܟܝܡܐ ܘܐܘܚܕܬܗܘܢ. * ܪܫܝܬ ܚܟܡܬܐ ܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܝܕܥܬܐ ܕܝܢ ܘܡܪܕܘܬܐ ܥܘܠܐ 7
ܫܐܛܝܢ. * ܫܡܥ ܒܪܝ ܡܪܕܘܬܗ ܕܐܒܘܟ. ܘܠܐ ܬܫܒܘܩ ܢܡܘܣܗ ܕܐܡܟ. * ܡܛܠ ܕܫܘܒܚܐ ܐܢܘܢ ܠܪܫܟ. 8 9
ܘܗܡܢܝܟܐ ܠܨܘܪܟ. * ܒܪܝ. ܐܢ ܢܦܝܣܘܢܟ ܚܛܝܐ ܠܐ ܬܬܦܝܣ. * ܐܢ ܢܐܡܪܘܢ ܠܟ. ܬܐ ܥܡܢ 10 11
ܢܟܡܢ ܠܕܡܐ. ܘܢܛܫܐ ܠܙܟܝܐ ܡܓܢ. * ܘܢܒܠܥܝܘܗܝ ܐܝܟ ܫܝܘܠ ܚܝܐ. ܘܟܠܗ ܡܢܗ 12
ܐܝܟ ܢܚܬܝ ܓܘܒܐ. * ܟܠܗ ܩܢܝܢܗ ܘܐܝܩܪܗ ܢܫܟܚ. ܘܢܡܠܐ ܒܬܝܢ ܒܙܬܐ. * ܦܣܟ 13 14
ܐܪܡܐ ܒܝܢܬܢ. ܘܟܝܣܐ ܚܕ ܢܗܘܐ ܠܟܠܢ. * ܒܪܝ. ܠܐ ܬܐܙܠ ܥܡܗܘܢ ܒܐܘܪܚܐ. ܐܠܐ ܟܠܝ 15
ܪܓܠܟ ܡܢ ܫܒܝܠܝܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܪܓܠܝܗܘܢ ܠܒܝܫܬܐ ܗܘ ܪܗܛܝܢ. ܘܡܣܪܗܒܝܢ 16
ܠܡܐܫܕ ܕܡܐ ܙܟܝܐ. * ܘܒܢܟܠܐ ܗܘ ܦܪܣܝܢ ܡܨܝܕܬܐ ܥܠ ܦܪܚܬܐ. * ܘܡܟܡܢܝܢ ܠܕܡܐ. 17 18
ܘܡܛܫܝܢ ܢܦܫܬܗܘܢ. * ܗܟܢܐ ܐܢܘܢ ܐܘܪܚܬܐ ܕܟܠ ܕܥܒܕܝܢ ܥܘܠܐ. ܘܢܣܒܝܢ ܢܦܫܬܐ 19
ܕܡܪܝܗܝܢ. * ܚܟܡܬܐ ܒܫܘܩܐ ܡܫܬܒܗܪܐ. ܘܒܫܩܐ ܡܪܝܡܐ ܩܠܗ. * ܘܒܪܝܫ ܒܬܐ 20 21
ܡܟܪܙܐ. ܘܒܡܥܠܢܐ ܕܬܪܥܐ ܕܡܕܝܢܬܐ ܡܠܝܗ ܐܡܪܐ. * ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܛܠܝܐ ܪܚܡܝܬܘܢ ܛܠܝܘܬܐ 22
ܡܨܚܢܘܬܐ. ܘܡܨܚܢܢܐ ܢܪܓܪܓܘܢ ܡܨܚܢܘܬܐ. ܘܣܟܠܐ ܣܢܝܢ ܝܕܥܬܐ. * ܐܢ ܬܬܦܢܘܢ 23
ܠܡܟܣܢܘܬܝ. ܐܒܥ ܠܟܘܢ ܪܘܚܝ. ܘܐܘܕܥܟܘܢ ܡܠܝ.

LIBER

PROVERBIORUM

Salomonis filii David Regis Iſrael.

CAPUT I.

PRoverbia Salomonis filii David Regis 1
Iſrael. Ad noſcendū ſapientiā & eruditionē, 2
& ad percipienda verba intelligentiæ: Et 3
ad acquirendā eruditionē, & timorē, & juſti-
tiā, & judiciū, atq; rectitudinē: Ad imbuen- 4
dum pueros ſagacitate, & adoleſcentes ſcien-
tiā, & conſilio. Audiet ſapiens, & augebit ſa- 5
pientiā ſuam: & cordatus moderationē aſſe-
quetur. Quatenus ſciat proverbia, & parabo- 6
las, & verba ſapientū, & ænigmata eorum.
Initium ſapientiæ, timor Dñi: ſcientiā autem 7
& eruditionē aſpernantur iniqui. Audi fili 8
mi, legem patris tui, & ne obliviſcaris legem
matris tuæ. Decus enim ſunt capiti tuo, & 9
torquis collo tuo. Fili mi, ſi te pellexerint 10
peccatores, ne acquieſcas: Et ſi dixerint tibi, 11
Veni nobiſcum, inſidiemur ſanguini, & latite-
mus innocenti, cum dolo. Et deglutiamꝰ eum, 12
velut infernus, viventē, & eos qui ſine noxa
ſunt, quaſi deſcendentes in foveam: Omnes 13
divitias & gloriam ejus reperiemus, & im-
plebimus domos noſtras ſpoliis. Sortē tuam 14
projice inter nos, & crumena eadem ſit nobis
omnibus. Fili mi, ne incedas cum iis per viā, 15
ſed cohibe pedē tuū à ſemitis eorū. Quoniā 16
pedes eorū ad malū decurrunt, & feſtinant ad
effundendū ſanguinē innoxiū. Et fraudulen- 17
ter expandunt retia ſuper volucre, Et inſidi- 18
antur ſanguini, & abſcondunt ſeipſos. Hujuſ- 19
modi ſunt viæ omnium operantiū iniquitatē,
& auferentiū animas à dominis earū. Sapien- 20
tia in plateis gloriabitur, & in compitis attol-
lit vocē ſuā, Et in vertice ædiū prædicat, & in 21
aditu portarū urbiū verba ſua promit, *dicens*,
Quouſque pueri, diligetis pueritiā? & irriſo- 22
res deſiderabitis irriſionē? et ſtulti odio ha-
bebitis ſcientiam? Si convertamini ad incre- 23
pationē meam, profundā vobis ſpiritum meū,
et notum faciam vobis ſermonem meum.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* بسم الله القديم الازلي الدايم السرمدي *

* الفصل الاول *

* امثال سليمان الحكيم اي مواعظه الذي ملك في بني اسرائيل * اعرف حكمة وادبا * تفهم 1 2
اقوال الفطنة * اقبل حجج الاقوال * افهم العدل الحق والانصاف المستقيم * لكيما اعطي من لا 3 4
شر فيهم تدبيرا * والصبي الشاب حسا وذكا * لان الحكيم اذا سمع هذه سيكون اوفر حكمة * والفقيه 5
يقتني سياسة * فيفهم المثل والكلام المستعجم * واقوال الحكماء ورموزهم * بدو الحكمة مخافة 6 7
الله * والفهم الصالح لجميع الذين يعملونه * حسن العبادة لله بدو الحس * والكافرون يهوون
بالحكمة والادب * يا بني اسمع شرايع ابيك * ولا تبعد فرايض امك * فستاخذ هامتك اكليل 8 9
النعم * ويحوط بعنقك طوق ذهبي * يا بني لا يضلنك الرجال المنافقون * ولا يروعن رايك * ان 10 11
تملقوك قايلين هلم معنا شارك الدم * فنخفي في الارض بظلم رجلا عدلا * ونبتلعه كالهاوية 12
حيا * ونقلع ذكره من الارض * وناخذ قنيته الجليلة * ونملا بيوتنا من الغنايم * فاجعل نصيبك 13 14
معنا * فنقتني كلنا كيسا مشاعا * ولتكن لنا مصر واحدة * يا بني لا تمضين معهم في طريق * 15
امل رجلك من مسالكهم * فان الشباك ما تنصب لذوات الاجنحة ظلما * لان هولاء الذين 16 17
يشاركون القتل * يكثرون لانفسهم الاسواء * وانصراع الرجال المتجاوزين الشريعة ردي * هذه 18 19
الطريق تخص جميع الذين يتمون الافعال المنافية الشريعة * لانهم يسحبون انفسهم الي الكفر *
* الحكمة في المنازل تسبح * وفي الشوارع تفيد تجاهر * ومن زوايا الحيطان تنادي * وعلي ابواب 20 21
المقتدرين تكمن * وعند ابواب المدينة تقول * مذلة ان ذوي الدعة مهما دام لهم زمان 22
عدلهم ما يشكرون * فاما الاغبياء فيوجدون مشتهين التعظم * ولما صاروا منافقين مقتوا الحس *
وبحب التبعات حصلوا في التوبيخات * ها انذا اعطيكم كلام نسمتي * واعلمكم قولي * 23

IN NOMINE DEI
ſempiterni, immortalis, æterni,
ac perpetui.

CAPUT I.

PRoverbia, nempe documenta Salomo- 1
nis ſapientis, qui regnavit ſuper filios Iſ-
rael. Noſce ſapientiam ac diſciplinam, 2
percipe eloquia prudentiæ. Suſcipe ratio- 3
nes ſermonum, intellige juſtitiam vera-
cem, et æquitatem prudentem. ut dem iis 4
in quibus non eſt malitia, calliditatem, &
puero adoleſcenti ſenſum et acumen. Nam 5
ſapiens, quando hæc audierit, erit locuple-
tior in ſapientia: & doctus poſſidebit re-
gimen. Intelligit enim parabolam, et ſer- 6
mones peregrinos, & verba ſapientum, et
nutus eorum. Initium ſapientiæ, timor 7
Domini, et intellectus bonus omnibus faci-
entibus eum. Sana religio in Deū, eſt ini-
tium prudentiæ: infideles autem deſpici-
unt ſapientiam, et diſciplinam. O fili mi, 8
audi leges patris tui, et ne rejicias decre-
ta matris tuæ. Conſequetur enim caput 9
tuum coronam gratiarum, et circundabit
collum tuū torquis aureus. Fili mi, ne te 10
decipiant viri iniqui, neq; ſeducant men-
tem tuam. Si blandiantur tibi, dicentes; 11
Veni nobiſcum, particeps eſto ſanguinis,
abſcondamus in terra iniquè virū juſtum,
Et deglutiamus eum quaſi infernus vivū, 12
et eradicemus memoriam ejus de terra, Et 13
accipiamus poſſeſſionē ejus magnificam, et
impleamus domos noſtras ſpoliis. Pone 14
igitur ſortem tuā nobiſcum, et poſſidebimꝰ
omnes commune marſupium, ſintque nobis
iidem loculi: Fili mi, nullo modo incedas 15
cum iis in via: retrahe pedem tuum à ſe-
mitis ipſorum. Nam retia non tenduntur 16
pennatis fruſtrà. Ii enim qui participant 17
homicidium, multiplicant animabus ſuis
mala: Et proſtratio virorum tranſgredi- 18
entium legem, eſt peſſima. Hujuſmodi via 19
propria eſt omnibus qui perficiunt opera re-
pellentia legem; nam trahunt animas ſuas
ad infidelitatem. Sapientia in domibus 20
laudat, & in plateis affert emolumentum
palàm. Et de angulis parietum clamitat, 21
& ad fores potentium inſidiatur, et prope
portas urbis dicit; Abominanda res eſt 22
quòd manſueti, dum durat illis tempus
juſtitiæ ſuæ, non ſublimantur ad honores:
at verò ſtulti inveniuntur cupidi ſuper-
biæ; & cùm facti fuerint iniqui, deſpi-
ciunt prudentiam, & ſub ambitionibus
acquirunt correptiones. Ecce do vobis 23
verba ſpiritûs mei, & doceo vos ſermo-
nes meos.

מִשְׁלֵי : ב

non & , meam manum extendi : renuiſtis & , vocavi quòd eo Pro
24 יַעַן קָרָאתִי וַתְּמָאֵנוּ נָטִיתִי יָדִי וְאֵין
meam increpationem & ; meum conſilium omne feciſtis *feriari* Et .*attendens*
25 מַקְשִׁיב׃ וַתִּפְרְעוּ כָל־עֲצָתִי וְתוֹכַחְתִּי
, ſubſannabo : ridebo *veſtro exitio* in ego Etiam .voluiſtis non
26 לֹא אֲבִיתֶם׃ גַּם־אֲנִי בְּאֵידְכֶם אֶשְׂחָק אֶלְעַג
, *veſtrum pavorem* deſolatio ſicut *veniendo In* .*veſtrum pavorem* *veniendo in*
27 בְּבֹא פַחְדְּכֶם׃ בְּבֹא כְשַׁאֲוָה פַּחְדְּכֶם
., *anguſtiam* vos ſuper *veniendo in* : *ingruerit* turbo veluti *veſtrum exitium* &
וְאֵידְכֶם כְּסוּפָה יֶאֱתֶה בְּבֹא עֲלֵיכֶם צָרָה
,me *diluculo* quærent:exaudiam non &,me invocabunt Tunc.*coarctationem* &
28 וְצוּקָה׃ אָז יִקְרָאֻנְנִי וְלֹא אֶעֱנֶה יְשַׁחֲרֻנְנִי
timorem & : ſcientiam odiverunt quòd Pro .me invenient non &
29 וְלֹא יִמְצָאֻנְנִי׃ תַּחַת כִּי־שָׂנְאוּ דָעַת וְיִרְאַת
ſpreverunt *:meo conſilio acquieverunt* Nec .elegerunt non Domini
30 יְהוָה לֹא בָחָרוּ׃ לֹא־אָבוּ לַעֲצָתִי נָאֲצוּ
: ſuæ viæ fructu de comedent Et .meam increpationem omnem
31 כָּל־תּוֹכַחְתִּי׃ וְיֹאכְלוּ מִפְּרִי דַרְכָּם
ſimplicium averſio Quia .ſaturabuntur ſuis conſiliis de &
32 וּמִמֹּעֲצֹתֵיהֶם יִשְׂבָּעוּ׃ כִּי מְשׁוּבַת פְּתָיִם
audiens Et .eos perdet ſtultorum *tranquillitas* & ; eos interficiet
33 תַּהַרְגֵם וְשַׁלְוַת כְּסִילִים תְּאַבְּדֵם׃ וְשֹׁמֵעַ
.malo *pavore à pacatus erit* & :fiducialiter habitabit mihi
לִי יִשְׁכָּן־בֶּטַח וְשַׁאֲנַן מִפַּחַד רָעָה׃

CAP. II. ב

.tecum abſconderis mea mandata & ; mea eloquia ſuſceperis ſi , mi Fili
1 בְּנִי אִם־תִּקַּח אֲמָרָי וּמִצְוֺתַי תִּצְפֹּן אִתָּךְ׃
tuum cor inclines : tuam aurem *ſapientiam ad ſaciendum* attendere *Ad*
2 לְהַקְשִׁיב לַחָכְמָה אָזְנֶךָ תַּטֶּה לִבְּךָ
intelligentiæ ; clamaveris intelligentiam ad ſi Quia .intelligentiæ
3 לַתְּבוּנָה׃ כִּי אִם לַבִּינָה תִקְרָא לַתְּבוּנָה
; argentum tanquam eam quæſieris Si .tuam vocem dederis
4 תִּתֵּן קוֹלֶךָ׃ אִם־תְּבַקְשֶׁנָּה כַכָּסֶף
intelliges Tunc .eam fueris ſcrutatus *abſconditos* theſauros ſicut &
5 וְכַמַּטְמוֹנִים תַּחְפְּשֶׂנָּה׃ אָז תָּבִין
Dominus Quia .invenies Dei ſcientiam & ; Domini timorem
6 יִרְאַת יְהוָה וְדַעַת אֱלֹהִים תִּמְצָא׃ כִּי־יְהוָה
abſcondet Et .intelligentia & , ſcientia ejus ore ex :ſapientiam *dabit*
7 יִתֵּן חָכְמָה מִפִּיו דַּעַת וּתְבוּנָה׃ וְצָפַן
cuſtodiendum Ad .*perfectè ambulantibus clypeus* ; eſſentiam rectis
8 לַיְשָׁרִים תּוּשִׁיָּה מָגֵן לְהֹלְכֵי תֹם׃ לִנְצֹר
Tunc .cuſtodiet ejus miſericordium viam & : judicii ſemitas
9 אָרְחוֹת מִשְׁפָּט וְדֶרֶךְ חֲסִידָו יִשְׁמֹר׃ אָז
.bonam *orbitam* omnem,rectitudines &;judicium &,juſtitiam intelliges
תָּבִין צֶדֶק וּמִשְׁפָּט וּמֵישָׁרִים כָּל־מַעְגַּל־טוֹב׃
.*fuerit jucunda* tuæ animæ ſcientia & ; tuum cor in ſapientia intraverit Cùm
10 כִּי־תָבוֹא חָכְמָה בְלִבֶּךָ וְדַעַת לְנַפְשְׁךָ יִנְעָם׃
te *eruendum Ad* .te ſervabit intelligentia : te *ſuper* cuſtodiet *Cura*
11 12 מְזִמָּה תִּשְׁמֹר עָלֶיךָ תְּבוּנָה תִנְצְרֶכָּה׃ לְהַצִּילְךָ
ſemitas *Relinquentes* .perverſitates loquente viro à : mala via à
13 מִדֶּרֶךְ רָע מֵאִישׁ מְדַבֵּר תַּהְפֻּכוֹת׃ הַעֹזְבִים אָרְחוֹת
facere *Lætantes* .*tenebroſitatis viis in eundum ad* ; rectitudinis
14 יֹשֶׁר לָלֶכֶת בְּדַרְכֵי־חֹשֶׁךְ׃ הַשְּׂמֵחִים לַעֲשׂוֹת
eorum ſemitæ Quorum .mali perverſitatibus in *exultabunt* ; malum
15 רָע יָגִילוּ בְּתַהְפֻּכוֹת רָע׃ אֲשֶׁר אָרְחֹתֵיהֶם
muliere à te *eruendum Ad* .eorum *orbitis* in *recedentes &* ; *obliquæ*
16 עִקְּשִׁים וּנְלוֹזִים בְּמַעְגְּלוֹתָם׃ לְהַצִּילְךָ מֵאִשָּׁה
.*lenificavit* ſua eloquia aliena ab ; extranea
זָרָה מִנָּכְרִיָּה אֲמָרֶיהָ הֶחֱלִיקָה׃

Verſio VULG. LAT.

24 Quia vocavi, & renuiſtis : extendi manũ meam, & non fuit 25 qui aſpiceret. Deſpexiſtis omne conſilium meum, & incre-26 pationes meas neglexiſtis. Ego quoque in interitu veſtro ridebo, & ſubſannabo, cùm vobis id, quod timebatis, advenerit. 27 Cùm irruerit repentina calamitas, et interitus quaſi tempeſtas ingruerit : quando venerit ſup vos tribulatio, & anguſtia: 28 Tunc invocabunt me, & non exaudiam: manè conſurgent, & 29 non invenient me: Eò quòd exoſam habuerint diſciplinã, & timorẽ Domini non ſuſce-30 perint. Nec acquieverint conſilio meo, & detraxerint uni-31 verſæ correptioni meæ. Comedent igitur fructus viæ ſuæ, ſuíſque conſiliis ſaturabuntur. 32 Averſio parvulorum interficiet eos, & proſperitas ſtultorum 33 perdet illos. Qui autem me audierit, abſque terrore requieſcet, & abundantiâ perfruetur, timore malorum ſublato.

CAP. II.

1 FIli mi, ſi ſuſceperis ſermones meos, & mandata mea abſ-2 conderis penes te, Ut audiat ſapientiam auris tua : inclina cor tuum ad cognoſcendã pru-3 dentiam. Si enim ſapientiam invocaveris, & inclinaveris 4 cor tuum prudentiæ : Si quæſieris eam quaſi pecuniam, & ſicut theſauros effoderis illam: 5 Tunc intelliges timorem Domini, & ſcientiam Dei inve-6 nies: Quia Dominus dat ſapientiam: & ex ore ejus pruden-7 tia, & ſcientia. Cuſtodiet rectorum ſalutem, & proteget 8 gradientes ſimpliciter, Servans ſemitas juſtitiæ, & vias 9 Sanctorum cuſtodiens. Tunc intelliges juſtitiam, & judiciũ, & æquitatem, & omnem ſemi-10 tam bonam. Si intraverit ſapientia cor tuum, & ſcientia a-11 nimæ tuæ placuerit: Conſiliũ cuſtodiet te, & prudentia ſer-12 vabit te, Ut eruaris à via mala, & ab homine, qui perverſa lo-13 quitur: Qui relinquunt iter rectum, et ambulant per vias 14 tenebroſas: Qui lætantur cùm malefecerint, & exultant in re-15 bus peſſimis: Quorũ vitæ perverſæ ſunt, & infames greſſus 16 eorum. Ut eruaris à muliere aliena, & ab extranea, quæ mollit ſermones ſuos,

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

24 † Ἐπειδὴ ἐκάλουν, καὶ οὐχ (κ) ὑπηκούσατε,
† καὶ ἐξέτεινον λόγους, καὶ οὐ προσείχετε·
25 † Ἀλλὰ ἀκύρους ἐποιεῖτε ἐμὰς βουλάς, † τοῖς
26 δὲ ἐμοῖς ἐλέγχοις (λ) ἠπειθήσατε· † Τοιγαροῦν κἀγὼ τῇ ὑμετέρᾳ ἀπωλείᾳ ἐπιγελάσομαι, † καταχαροῦμαι δὲ (μ) ἡνίκα ἔρχη-
27 ται ὑμῖν ὄλεθρος· † Καὶ ὡς ἂν ἀφίκηται ὑμῖν ἄφνω θόρυβος, † ἡ δὲ καταστροφὴ ὁμοίως καταιγίδι παρῇ, † (ν) καὶ ὅταν ἔρχηται ὑμῖν θλῖψις καὶ πολιορκία, † ἢ ὅταν
28 ἔρχηται ὑμῖν ὄλεθρος. † Ἔσται γὰρ ὅταν ἐπικαλέσησθέ με, ἐγὼ δὲ οὐκ εἰσακούσομαι ὑμῶν, † ζητήσουσί με κακοί, καὶ οὐχ εὑρήσου-
29 σιν. † Ἐμίσησαν γὰρ (ξ) σοφίαν, τὸν δὲ λόγον
30 (ο) τοῦ κυρίου οὐ προείλαντο, † Οὐδὲ ἤθελον ἐμαῖς προσέχειν βουλαῖς, † ἐμυκτήριζον
31 δὲ ἐμοὺς ἐλέγχους. † Τοιγαροῦν ἔδονται τῆς ἑαυτῶν ὁδοῦ τοὺς καρποὺς, † καὶ τῆς ἑαυτῶν ἀσε-
32 βείας πλησθήσονται. † Ἀνθ' ὧν γὰρ ἠδίκουν νηπίους, φονευθήσονται, † καὶ ἐξετασμὸς
33 ἀσεβεῖς ὀλεῖ. † Ὁ δὲ ἐμοῦ ἀκούων κατασκηνώσει (υ) ἐπ' ἐλπίδι, † καὶ ἡσυχάσει ἀφόβως ἀπὸ παντὸς κακοῦ.

MS.A. (κ) ὑπήκουσε, (λ) οὐ προσείχετε· Τοιγαροῦν (μ) ἡνίκα ἂν ἔρχηται (ν) ἢ ὅταν (ξ) παιδίαν, (ο) κυρίου (υ) ἐν

ΚΕΦ. β'.

1 † ΥΙὲ ἐὰν δεξάμενος ῥῆσιν ἐμῆς ἐντο-
2 λῆς κρύψῃς παρὰ σεαυτῷ, † Ὑπακούσεται σοφίας τὸ οὖς σου, † καὶ παραβαλεῖς καρδίαν σου εἰς σύνεσιν, † παραβαλεῖς δὲ αὐτὴν ἐπὶ
3 νουθέτησιν τῷ υἱῷ σου. † Ἐὰν γὰρ τὴν σοφίαν ἐπικαλέσῃ, † καὶ τῇ συνέσει δῷς φωνήν σου,
4 (α) † Καὶ ἐὰν ζητήσῃς αὐτὴν ὡς ἀργύριον, † καὶ ὡς θησαυροὺς (β) ἐξερευνήσῃς αὐτήν·
5 † Τότε συνήσεις φόβον κυρίου, † καὶ ἐπίγνω-
6 σιν θεοῦ εὑρήσεις. † Ὅτι κύριος δίδωσι σοφίαν, † καὶ ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ γνῶσις καὶ
7 σύνεσις. † Καὶ θησαυρίζει τοῖς κατορθοῦσι σωτηρίαν, † ὑπερασπιεῖ τὴν πορείαν αὐ-
8 τῶν, Τοῦ φυλάξαι (γ) ὁδοὺς δικαιωμάτων, † καὶ ὁδὸν εὐλαβουμένων αὐτὸν διαφυλάξει.
9 † Τότε συνήσεις δικαιοσύνην καὶ κρίμα, † καὶ κατορθώσεις πάντας (δ) ἄξονας ἀγαθούς.
10 † Ἐὰν γὰρ ἔλθῃ ἡ σοφία εἰς σὴν διάνοιαν, † ἡ δὲ αἴσθησις τῇ σῇ ψυχῇ καλὴ εἶναι
11 δόξῃ, † Βουλὴ καλὴ φυλάξει σε, † ἔννοια δὲ
12 ὁσία τηρήσει σε, † (ε) Ἵνα ῥύσηταί σε ἀπὸ ὁδοῦ κακῆς, † καὶ ἀπὸ ἀνδρὸς λαλοῦν-
13 τος μηδὲν πιστόν. † Ὦ οἱ ἐγκαταλείποντες ὁδοὺς εὐθείας † τοῦ πορεύεσθαι ἐν ὁδοῖς
14 σκότους· † Οἱ εὐφραινόμενοι ἐπὶ κακοῖς
15 † καὶ χαίροντες ἐπὶ διαστροφῇ κακῇ· † Ὧν αἱ τρίβοι σκολιαὶ, † καὶ καμπύλαι αἱ τροχιαὶ αὐτῶν, † τοῦ μακράν σε ποιῆσαι
16 Ἀπὸ ὁδοῦ εὐθείας, † καὶ ἀλλότριον τῆς δικαίας γνώμης. † Υἱὲ μή σε καταλάβῃ κακὴ βουλή·

MS.A. (α) † τὴν δὲ αἴσθησιν ζητήσῃς μεγάλῃ τῇ φωνῇ. Καὶ (β) ἐξερευνήσεις (γ) ὁδὸν (δ) * αὔξονας (ε) Ἵνα ῥύσηται ἀπὸ ὁδοῦ

*Quoniam vocabam, & non obediſtis: & extendebam (kk) verba & non attendiſtis : Sed (ll) irrita faciebatis mea conſilia, & meis increpationibus (mm) rebelles fuiſtis. Itaque & ego veſtrâ (nn) perditione ridebo : (oo) gaudebo autem, cùm venerit vobis interitus, Et cùm advenerit vobis ſubitò tumultus; everſio autem ſimilis (pp) procellæ affuerit, & cùm venerit vobis tribulatio, & (qq) oppreſſio, vel cùm venerit vobis interitus. (rr) Erit enim, cùm invocabitis me, ego autem non exaudiam vos: quærent me mali, & non invenient. (ſſ) Oderunt enim ſapientiam: (tt) verbum autem Domini non aſſumpſerunt. (uu) Neq; volebant meis attendere conſiliis : (xx) ſubſannabant autem meas redargutiones. Ergò comedent viæ ſuæ fructus, & ſuâ ipſorum (yy) impietate ſaturabuntur. Pro (zz) eo enim, quòd injuriam inferebant parvulis, occidentur, & (aaa) examinatio impios perdet. Qui autem me audit; *habitabit in ſpe, et quieſcet ſine timore ab omni malo.* 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33

CAP. II.

FIli, ſi ſuſcipiens eloquium mei mandati abſconderis penes te; (a) Obediet ſapientiæ auris tua, (b) & adjicies cor tuum ad intellectum: adjicies autem ipſum ad monitionem filio tuo. Si enim (c) ſapientiam invoces, & intellectui des vocem (d) tuam, Et, ſi exquiras eam tanquam argentum, & tanquam (e) theſauros inveſtiges eam; Tunc intelliges timorem Domini, & ſcientiam Dei reperies : Quia Dominus dat ſapientiam, & à (f) facie ejus cognitio, & intellectus. Et theſaurizat (g) rectè agentibus ſalutem : proteget egreſſum eorum, Ad cuſtodiendas (h) vias juſtificationum; & viam reverentium ſe cuſtodiet. Tunc intelliges juſtitiam, & judicium : & diriges omnes (i) ſemitas bonas. Si enim venerit ſapientia in tuam (k) mentem, & ſenſus eſſe animæ tuæ (l) pulcher videbitur; Conſilium bonum cuſtodiet te, & (m) cogitatio ſancta ſervabit te : ut eruat te à via mala, & à viro loquente nihil fidele. O qui dereliquiſtis vias rectas abeundo in vias tenebrarum, Qui lætamini in malis, & gaudetis in everſione mala: Quorum ſemitæ (n) pravæ, & (o) flexuoſi curſus eorum ad longè te faciendũ (p) A via recta, & alienum à juſta ſententia. Fili, ne te comprehendat malum conſilium. 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16

תרגום TARGUM.

24 עַל דִּקְרֵית וְלָא הֵימַנְתּוּן אֲרֵימִית אִידַי וְלָא אֲצֵיתוּן׃ וְשַׁנֵּיתוּן כָּל תַּרְעִיתִי וּמַכְסְנוּתִי
25 26 לָא אֲבִיתוּן׃ אַף אֲנָא בְּתַבְרְכוֹן אֶגְחַךְ וְאֶדְחַךְ כַּד יֵיתֵי דְּלוּחְיָא עֲלֵיכוֹן׃ כַּד יֵיתֵי
27 28 בְּשִׁלְיָא דְּלוּחְיְכוֹן וְתַבְרְכוֹן בְּעַלְעוֹלָא יֵיתֵא כַּד תֵּיתֵא עֲלֵיכוֹן עָקְתָא וְשִׁנּוּקָא׃ הֵידֵין
29 נִקְרוּנִי וְלָא אֶעֱנֵה נִקְרֵין וְלָא תִשְׁכְּחֻנַּנִי׃ עַל דִּסְנוֹ יְדִיעְתָּא וּדְחַלְתֵיהּ דֶּאֱלָהָא לָא
30 31 אִתְרְעוּ׃ לָא צְבוֹ בְּתַרְעִיתִי וְאַשְׁלִיאוּ כָּל מַכְסְנוּתִי׃ וְאֶכְלוּ מִן פֵּרֵי דְּאָרְחָתְכוֹן
32 וּמִמַּלְכֵיהוֹן יִסְבְּעוּן׃ מְטוּל דְּנֶהְפְּכְנוּתָא דְּשַׁבְרֵי תִּקְטוֹל אִנּוּן וְטוּעֵי דְּסַכְלֵי תּוֹבְדִנּוּן׃
33 מַן דְּשָׁמַע לִי נִשְׁרֵי בְּסַבְרָא וְנִשְׁרָא מִן דְּלוּחָא דְּבִישְׁתָּא׃

ב

1 2 בְּרִי אִין תְּקַבֵּל מִלַּי וּפוּקְדָנַי תְּטַשֵּׁי גַּבָּךְ׃ וְתַצְלֵי אֶדְנָךְ לְחָכְמְתָא וְתַפְנֵה לִבָּא לְבִיוּנָא׃
3 וְאִמָּא לְבִיוּנְנוּתָא תִּקְרָא וּלְבִיוּנָה תִּתֵּן קָלָךְ׃ וְתִבְעֵי הֵיךְ סִימָא וְהֵיךְ סִימְתָא תִּבְצְיָה׃
4 5 הֵידֵין תִּתְבַּיַּן דְּחַלְתֵיהּ דֶּאֱלָהָא וִידַעְתֵּיהּ מִן קֳדָם אֱלָהָא תִּשְׁכַּח׃ מְטוּל דֶּאֱלָהָא
6 יָהֵב חָכְמְתָא מִן פּוּמֵּיהּ יְדִיעֲתָא וּבִיוּנָא׃ יְטַשֵּׁי לִתְרִיצֵי שְׁבְהוֹר וּמְסַיֵּעַ לְאִלֵּין דִּמְהַלְּכִין
7 8 בְּלָא מוּם׃ לְמִנְטוֹר אָרְחָתָא דְּדִינָא וְאָרְחָתָא דְּצַדִּיקִין נִנְטַר׃ הֵידֵין תִּתְבַּיַּן צִדְקְתָא
9 וְדִינָא וּתְרִיצוּתָא דְּכָל שְׁבִילֵי שַׁפִּירֵי׃ אֲרֵי תֵּעוֹל חָכְמְתָא לְלִבָּךְ וִידִיעֲתָא לְנַפְשָׁךְ
10 11 יִבְסַם׃ תַּרְעִיתָא תִּנְטוֹר עֲלָךְ בִּיוּנְתָא תִּנְצְרָךְ׃ דִּי תִּתְפְּצֵי מִן אָרְחָא בִּישָׁא וּמִן
12 13 גַּבְרָא דִּמְמַלֵּל מְפַרְכְיָתָא׃ דְּשָׁבְקִין אָרְחָתָא תְּרִיצָתָא וְאָזְלִין בְּאָרְחָתָא דַּחֲשׁוֹכָא׃
14 15 דְּחָדֵין לְמֶעְבַּד בִּישׁ וְדָיְצִין בְּהוּפְכָא דְּבִישְׁתָּא׃ דְּאָרְחָתְהוֹן מְעַקְמָן וּמְפַתְּלִין שְׁבִילֵיהוֹן׃
16 דְּתִתְפְּצֵי מִן אִתְּתָא חִילוֹנִיתָא מְנוּכְרֵיתָא דְּמִלְּהָא חַלְיָן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quia vocavi & non credidiſtis, levavi manus meas, & non auſcultâſtis. 24
Et commutâſtis omne conſilium meum, & correptionem meam noluiſtis. 25
Ego quoq; in interitu veſtro ridebo, & irridebo cùm venerit pavor ſuper 26
vos. Cùm venerit tanquam repentina vaſtitas pavor veſter, et interitus ve- 27
ſter quaſi tempeſtas venerit ; cùm venerit ſuper vos tribulatio & anguſtia : 28
Tunc invocabunt me, & non reſpondebo; clamabunt, & non invenient me. 29
Eò quòd oderint ſcientiam : & timorem Dei non eligerunt. Noluerunt 30
conſilium meum, & detraxerunt univerſæ correptioni meæ. Et comedant 31
de fructibus viarum ſuarum, & conſiliis ſuis ſatientur. Quoniam averſio 32
inſipientium interficiet eos, & error ſtultorum perdet eos. Qui audit me, 33
habitabit in ſpe, & *quieſcet* à timore mali.

CAP. II.

FIli mi ſi ſuſceperis verba mea, & mandata mea abſconderis apud te : 1
Et inclinaveris aurem tuam ad ſapientiam, et converteris cor tuum ad in- 2
telligentiam : Atque matrem intelligentiam vocaveris, et ad prudentiam 3
dederis vocem tuam. Et quæſieris ſicut argentum, et ſicut theſauros *inve-* 4
ſtigaveris illam. Tunc intelliges timorem Dei, et ſcientiam à facie Dei in- 5
venies. Quoniam Deus dat ſapientiam : ex ore ejus ſcientia et intelligen- 6
tia. Abſcondet rectis incolumitatem, et auxiliabitur eis qui ambulant 7
abſque macula. Ad cuſtodiendas vias judicii, et vias juſtorum cuſtodiet. 8
Tunc intelliges juſtitiam et judicium, et æquitatem omnium ſemitarum 9
bonarum. Si ingreſſa fuerit ſapientia in cor tuum, et ſcientia animæ tuæ 10
dulcis fuerit ; Conſilium cuſtodiet te, intelligentia ſervabit te. Ut eruaris 11
à via mala, et à viro qui loquitur perverſa : Qui relinquunt vias rectas, et 12
ambulant in viis tenebrarum. Qui lætantur ad faciendum malum, et exul- 13
tant in perverſione malitiæ. Quorum viæ pravæ ſunt, et perverſæ ſemi- 14
tæ eorum. Ut eruaris à muliere aliena, ab extranea, cujus verba lenia ſunt. 15
16

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

24 * ܡܛܠ ܕܩܪܝܬ ܘܠܐ ܗܝܡܢܬܘܢ. ܘܐܪܝܡܬ ܩܠܝ ܘܠܐ ܫܡܥܬܘܢ. * ܘܫܒܩܬܘܢ ܟܠܗܘܢ
25 26 ܡܠܟܝ. ܘܡܟܣܢܘܬܝ ܠܐ ܨܒܝܬܘܢ. * ܐܦ ܐܢܐ ܐܓܚܟ ܥܠ ܐܒܕܢܟܘܢ. ܘܐܚܕܐ ܟܕ ܢܐܬܐ
27 ܥܠܝܟܘܢ ܫܓܘܫܝܐ. ܘܐܒܕܢܐ ܡܢ ܫܠܝܐ. * ܘܬܒܪܟܘܢ ܐܝܟ ܥܠܥܠܐ ܢܐܬܐ. ܘܡܐ ܕܐܬܐ ܥܠܝܟܘܢ
28 ܐܘܠܨܢܐ ܘܥܩܬܐ. * ܗܝܕܝܢ ܢܩܪܘܢܢܝ ܘܠܐ ܐܥܢܐ ܐܢܘܢ. ܘܢܒܥܘܢܢܝ ܒܨܦܪܐ. ܘܠܐ ܢܫܟܚܘܢܢܝ.
29 30 * ܡܛܠ ܕܣܢܘ ܝܕܥܬܐ. ܘܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܠܐ ܓܒܘ. * ܘܠܐ ܨܒܘ ܒܡܠܟܝ. ܘܐܣܠܝܘ ܟܠܗ
31 32 ܡܟܣܢܘܬܝ. * ܘܐܟܠܘ ܡܢ ܦܐܪܐ ܕܐܘܪܚܬܗܘܢ. ܘܡܢ ܬܪܥܝܬܗܘܢ ܣܒܥܘ. * ܡܛܠ ܗܢܐ
33 ܡܗܦܟܢܘܬܐ ܕܛܠܝܐ ܬܩܛܘܠ ܐܢܘܢ. ܘܛܘܥܝܝܐ ܕܣܟܠܐ ܬܘܒܕ ܐܢܘܢ. * ܘܡܢ
ܕܢܫܡܥ ܠܝ ܢܫܪܐ ܒܣܒܪܐ. ܘܢܬܢܝܚ ܡܢ ܣܘܓܐܐ ܕܒܝܫܬܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܒ *

1 2 * ܒܪܝ. ܐܢ ܬܩܒܠ ܡܠܝ. ܘܦܘܩܕܢܝ ܬܛܫܐ ܠܘܬܟ. * ܘܬܨܝܬ ܐܕܢܟ ܠܚܟܡܬܐ. ܘܬܪܟܢ
3 4 ܠܒܟ ܠܣܘܟܠܐ. * ܘܐܢ ܬܩܪܐ ܠܣܘܟܠܐ. ܘܠܣܘܟܠܐ ܬܪܝܡ ܩܠܟ. * ܘܐܢ ܬܒܥܝܘܗܝ ܐܝܟ ܣܐܡܐ.
5 ܘܐܢ ܬܒܨܝܘܗܝ ܐܝܟ ܣܝܡܬܐ. * ܗܝܕܝܢ ܬܣܬܟܠ ܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܬܫܟܚ ܝܕܥܬܗ
6 7 ܕܐܠܗܐ. * ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܝܗܒ ܚܟܡܬܐ. ܘܡܢ ܦܘܡܗ ܝܕܥܬܐ ܘܣܘܟܠܐ. * ܘܢܛܪ
8 ܣܒܪܐ ܠܬܪܝܨܐ. ܘܡܥܕܪ ܠܐܝܠܝܢ ܕܡܗܠܟܝܢ ܕܠܐ ܡܘܡ. * ܘܢܛܪ ܐܘܪܚܬܐ ܕܕܝܢܐ.
9 ܘܐܘܪܚܬܐ ܕܚܣܝܕܘܗܝ ܢܛܪ. * ܗܝܕܝܢ ܬܣܬܟܠ ܙܕܝܩܘܬܐ ܘܕܝܢܐ. ܘܬܪܝܨܘܬܐ ܕܟܠܗܘܢ
10 11 ܫܒܝܠܐ ܛܒܐ. * ܡܐ ܕܥܠܬ ܚܟܡܬܐ ܠܠܒܟ. ܘܝܕܥܬܐ ܠܢܦܫܟ ܬܒܣܡ. * ܪܥܝܢܐ ܛܒܐ
12 ܢܛܪܟ. ܘܣܘܟܠܐ ܕܙܕܝܩܐ ܢܦܪܩܟ. * ܘܬܬܦܨܐ ܡܢ ܐܘܪܚܬܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܡܢ ܓܒܪܐ ܕܡܡܠܠܝܢ
13 14 ܗܦܟܬܐ. * ܕܫܒܩܝܢ ܐܘܪܚܐ ܬܪܝܨܬܐ. ܘܡܗܠܟܝܢ ܒܐܘܪܚܐ ܕܚܫܘܟܐ. * ܘܚܕܝܢ ܠܡܥܒܕ
15 ܒܝܫܬܐ. ܘܪܘܙܝܢ ܒܗܘܦܟܐ ܒܝܫܐ. * ܕܐܘܪܚܬܗܘܢ ܡܥܩܡܢ. ܘܫܒܝܠܝܗܘܢ ܡܥܩܡܢ.
16 * ܠܦܪܘܩܟ ܚܟܡܬܐ ܡܢ ܐܢܬܬܐ ܢܘܟܪܝܬܐ ܕܡܗܦܟܐ ܡܠܝܗ̇.

Eò quòd vocavi, & non crediditis, & extuli 24
vocē meam, & non audiviſtis, Et neglexiſtis 25
omnes cogitationes meas, & objurgationem
meā renuiſtis, Etiā ego ridebo exitiū veſtrū, 26
& lætabor cùm venerit ſuper vos perturbatio
& interitus repentinus, Et contritio veſtra, 27
turbinis inſtar advenerit. Cúmq; ingruerit
in eos anguſtia & tribulatio, Tunc vocabunt 28
me, & non reſpondebo eis: & diluculò venient
ad me, et non invenient me. Quia odio 29
habuerunt ſcientiā, et timorē Dñi non elegerunt,
Nec admiſerunt conſilia mea, et ſpreverunt 30
omnem reprehenſionē meā, Et comederunt 31
de fructibus viarū ſuarū et cogitationibus
ſuis ſaturati ſunt: Propterea averſio 32
puerilis interficiet eos, et error carentium
ratione perdet illos. Qui autem obedierit 33
mihi, habitabit ſecurus, et requieſcet à multitudine
malorum.

CAP. II.

Filii mi, ſi ſuſceperis verba mea, et præcepta 1
mea abſconderis in corde tuo, Et inclinaveris 2
aurē tuā ſapientiæ, et converteris cor
tuū ad intelligentiā Vocaveriſque intellectū, 3
et ad intellectū extuleris vocē tuā, Et quæſieris 4
eum tanquam argentū, et indagaveris
eum tanquam theſaurū: Tunc percipies timorem 5
Dñi, et invenies ſcientiā Dei. Siquidem 6
Dñs dat ſapientiā, et ex ore ejus *prodit* ſcientia
et intellectus, Ipſéq; ſervat ſpem iis qui 7
recti ſunt, et protegit eos qui ambulant ſine
labe, Et cuſtodit vias judicii, et vias ſanctorū 8
ſuorū tuebitur. Tunc intelliges juſtitiam, et 9
judiciū, et rectitudinē omniū ſemitarū bonarū.
Cùm indideris ſapientiā in cor tuū, et 10
ſcientia animā tuā oblectaverit, Mens bona 11
cuſtodiet te, et intelligentia juſtorū ſalvabit
te: Et liberaberis à viis pravis, et ab hominibus 12
loquentibus perverſa, Qui deſerunt viam 13
rectā, et ambulant in via tenebrarum, Et geſtiunt 14
ad perpetranda ſcelera, et delectantur
converſatione malignâ; Quorū viæ perverſæ 15
ſunt, et obliquæ ſemitæ. Liberabit te ſapientia 16
à muliere extranea, quæ ſubvertit verba ſua,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

24 * وإذ كنت أدعوكم * فما أطعتموني * وأسهبت أقوالاً * فما أصغيتم إليها * وجعلتم آرائي متناقصة *
25 26 وما أطعتم توبيخاتي * لذلك سأضحك أنا على هلاككم وأشمت بكم متى يوافيكم الهلاك *
27 * وإذا دهمكم الهيج بغتة * وصرعتكم سيحضر كالزوبعة * وإذا ورد إليكم الاغتمام والحصار
28 والضنك * أو إذا دهمكم الهلاك * إذا استغثتم بي فلا أستجيب لكم * الأشرار يطلبونني فلا
29 30 يجدونني * لأنهم مقتوا الحكمة * وما آثروا مخافة الرب * ولا أرادوا أن يصغوا إلى مشورتي * وكانوا
31 32 يستهزئون بتوبيخاتي * لذلك سيأكلون أثمار طريقهم * ويمتلئون من نفاقهم * لأنهم بدل
33 ما كانوا يظلمون الأطفال سيقتلون * والاستفحاص يجتاح المنافقين * ومن يسمعني يسكن
في الرجاء * ويهدأ من كل شر بلا خوف *

* الفصل الثاني *

1 2 * يا ابني إن اقتبلت كلام وصيتي وخبأته عندك * وسمعت الحكمة أذنك * ودفعت قلبك
3 إلى الفهم * ودفعتها إلى ابنك ليتعظ بها * وإن استدعيت الحكمة * ومنحت الفقه صوتك *
4 وابتغيت الحس بصوت عظيم * وإن ابتغيتها كما تطلب الفضة * واستبحثت عنها كما يفتش عن
5 6 الكنوز * حينئذ ستفهم مخافة الرب * وتصادف معرفة الله * لأن الرب يعطي الحكمة * ومن وجهه
7 8 العلم والفهم * وهو يخزن لمن يتقون سبيلهم خلاصاً * ويعضد مسالكهم ليحفظوا مناهج حقوقه *
9 ويحفظ طرائق المتورعين منه * حينئذ تفهم العدل والإنصاف * وتقوم على كافة أفعال الوصايا
10 11 الصالحة * لأن الحكمة إن جاءت إلى قلبك * فسيكون الحس في نفسك مجداً حسناً * ويحفظك
12 الرأي السديد * ويصونك التفكر البار في أواخرك * لينقذك من الطريقة الرديئة * ومن رجل
13 14 يتكلم ما لا صدقاً فيه * أيها التاركون الطرائق المستقيمة لتسلكوا في مناهج الظلمة * أيها
15 المسرورون بالمساوئ والمستبشرون بالارتجاع الردي * الذين سبلهم معوجة ومناهجهم معرجة *
16 * ليجعلوك من طريق الحق المستوية بعيداً * ومن العزم المقسط غريباً *

Cùm vos vocarem, non obediſtis mihi: & multiplicavi verba, & non admoviſtis animum: 24
Et feciſtis conſilia mea manca, et non obediviſtis correptionibus meis. 25
Propterea ego ridebo in interitu veſtro, & geſtiam de vobis cùm advenerit vobis interitus, 26
Et cum offuſcaverit vos tempeſtas repentè, & proſtratio veſtra adſuerit quaſi turbo: & cum venerit ad vos miſeria et anguſtia et calamitas, aut quando offuſcaverit vos interitus. 27
Et cùm imploraveritis opem meam, non exaudiam vos. Sceleſti quærent me, & non invenient me. 28
Quia oderunt ſapientiam, et non elegerunt timorem Domini, 29
Et noluerunt auſcultare conſilia mea, & irridebant correptiones meas: 30
Ideò manducabunt fructus viæ ſuæ, et ſaturabuntur iniquitate ſuâ. 31
Nam pro eo quòd opprimebant parvulos, occidentur: et diſquiſitio perdet impios. 32
Qui autem audit me, habitabit in ſpe, & requieſcet ab omni malo ſine timore. 33

CAP. II.

Filii mi, ſi ſuſceperis verba moniti mei, & ea ſervaveris apud te: 1
Et audierit ſapientiam auris tua, et tradideris cor tuum ad intelligentiam, & tradideris eam filio tuo, ut eâ erudiatur: 2
Et ſi invocaveris ſapientiam, & dederis prudentiæ vocem tuam, & quæſieris prudentiam clamore ingenti: 3
Et ſi eam cupieris ut experiuntur argentum, & inveſtigaveris eam ut perquiruntur theſauri: 4
Tunc intelliges timorem Domini, & reperies cognitionem Dei; 5
Quia Dominus dat ſapientiam, & ex ejus vultu eſt doctrina & intellectus: 6
Ipſéque recondit eis qui cuſtodiunt vias ſuas, ſalutem: 7
Et adjuvat ſemitas eorum, ut cuſtodiant vias veritatum ejus: & ſervat vias timentium ſe. 8
Tunc intelliges juſtitiam & æquitatem, & inſiſtes omnibus operibus mandatorum bonis. 9
Quia ſi ſapientia venerit ad cor tuum, erit prudentia in anima tua gloria pulcherrima. 10
Téque tuebitur conſilium firmum, & conſervabit te cogitatio juſta in noviſſimis tuis, 11
ut liberent te à via mala, & à viro loquente quod nullam in ſe continet veritatem. 12
O vos qui deſeritis vias rectas, ut ambuletis in viis tenebroſis: 13
O vos qui gaudetis malignitate, & lætamini in converſatione mala: 14
Quorum ſemitæ ſunt retortæ, & viæ claudicantes, 15
ut faciant te à tramite veritatis recto extorrem, & à deliberatione juſta extraneum. 16

.eſt oblita ſui Dei pacti & *ſuarum adoleſcentiarum* ducem *Relinquens*
17 העזבת אלוף נעוריה ואת־ברית אלהיה שכחה׃
manes ad & ; ejus domus mortem ad eſt *incurvata* Quia
18 כי שחה אל־מות ביתה ואל־רפאים
nec ; revertentur non eam ingredientes Omnes .ejus *orbitæ*
19 מעגלתיה׃ כל־באיה לא ישובון ולא
viâ in ambulabis Eapropter .*vitarum* ſemitas apprehendent
20 ישיגו ארחות חיים׃ למען תלך בדרך
inhabitabunt recti Quia .*cuſtodies* juſtorum ſemitas & ; bonorum
21 טובים וארחות צדיקים תשמר׃ כי־ישרים ישכנו־
terra de impii Et .ea in remanebunt *integerrimi* & ; terram
22 ארץ ותמימים יותרו בה׃ ורשעים מארץ
.ea ex *eradentur* prævaricatores & ; ſuccidentur
יכרתו ובוגדים יסחו ממנה׃

CAP. III. ג

.tuum cor cuſtodiat mea præcepta & ; obliviſcaris ne meæ legis ,mi Fili
1 בני תורתי אל־תשכח ומצותי יצר לבך׃
.tibi *addent* pacem & ; *vitarum* annos & , dierum longitudinẽ Quia
2 כי ארך ימים ושנות חיים ושלום יוסיפו לך׃
: *tuis gutturibus ſuper* eas liga , te deſerant ne veritas & Miſericordia
3 חסד ואמת אל־יעזבך קשרם על־גרגרותיך
intellectum & gratiam *inveni* Et .tui cordis tabula *ſuper* eas ſcribe
4 כתבם על־לוח לבך׃ ומצא־חן ושכל
Domino *in* Fide .*hominis* & , Dei oculis in ; bonum
5 טוב בעיני אלהים ואדם׃ בטח אל־יהוה
omnibus In .innitaris ne *tuam intelligentiam ad* & ; tuo corde toto in
6 בכל־לבך ואל־בינתך אל־תשען׃ בכל־
ſis Ne .tuas ſemitas diriget ipſe & ; eum ſcito tuis viis
7 דרכיך דעהו והוא יישר ארחתיך׃ אל־תהי
Sanitas .malo à recede & , Dominum time : tuis oculis in ſapiens
8 חכם בעיניך ירא את־יהוה וסור מרע׃ רפאות
Dominum Honora .tuis oſſibus *irrigatio* & ; tuo umbilico erit
9 תהי לשרך ושקוי לעצמותיך׃ כבד את־יהוה
implebuntur Et .*tui proventus omnis principio à* & ; *tua ſubſtantia è*
10 מהונך ומראשית כל־תבואתך׃ וימלאו
.ſe rumpent tua torcularia novo vino & ; ſaturitate tua horrea
אסמיך שבע ותירוש יקביך יפרצו׃
faſtidias ne & ; *reprobes* ne mi fili Domini Correctionem
11 מוסר יהוה בני אל־תמאס ואל־תקץ
pater veluti & : *arguet*, Dominus *diliget* quem Quippe .ejus *increpatione in*
12 בתוכחתו׃ כי את אשר־יאהב יהוה יוכיח וכאב
,*hominis* & : ſapientiam invenit , *hominis Beatitudines* .*volet filium*
13 את־בן ירצה׃ אשרי אדם מצא חכמה ואדם
negotiatione *præ* ejus negotiatio *bona* Quia .intelligentiam *educet*
14 יפיק תבונה׃ כי טוב סחרה מסחר־
; margaritis *præ ipſa Precioſa* .ejus *proventus* auro *præ* & : argenti
15 כסף ומחרוץ תבואתה׃ יקרה היא מפניים
dierum Longitudo .*ea in* æquabuntur non *tuæ voluntates omnes* &
16 וכל־חפציך לא ישוו־בה׃ ארך ימים
viæ ejus Viæ .gloria & , *opulentia* illiꝰ ſiniſtra in:illiꝰ dextera in
17 בימינה בשמאולה עשר וכבוד׃ דרכיה דרכי־
ipſi vitarum Lignum .*pax* ejus ſemitæ omnes & ; *amœnitatis*
18 נעם וכל־נתיבותיה שלום׃ עץ־חיים היא
Dominus .*beatus* , eam *ſuſtentantes* & : eam *in* apprehendentibus
19 למחזיקים בה ותמכיה מאשר׃ יהוה
.intelligentia *in* cœlos ſtabilivit ; terram fundavit ſapientia *in*
בחכמה יסד־ארץ כונן שמים בתבונה׃
.rorem ſtillabunt *æthres* & ; ſunt ruptæ abyſſi ejus ſcientia *In*
20 בדעתו תהומות נבקעו ושחקים ירעפו־טל׃

Verſio VULG. LAT.

17 Et relinquit ducem pubertatis
18 ſuæ, Et pacti Dei ſui oblita eſt.
Inclinata eſt enim ad mortem
domus ejus, & ad inferos ſemitæ
19 ipſius. Omnes, qui ingrediuntur
ad eam, non revertentur,
nec apprehendent ſemitas vitæ.
20 Ut ambules in via bona: et
21 calles juſtorum cuſtodias. Qui
enim recti ſunt, habitabunt in
terra, & ſimplices permanebũt
22 in ea. Impii verò de terra perdentur:
& qui iniquè agunt,
auferentur ex ea.

CAP. III.

1 Fili mi, ne obliviſcaris legis
meæ, & præcepta mea cor tuũ
2 cuſtodiat. Longitudinem enim
dierum, & annos vitæ, & pacẽ
3 apponent tibi. Miſericordia
& veritas te non deſerant, circumda
eas gutturi tuo, & de-
4 ſcribe in tabulis cordis tui: Et
invenies gratiam, & diſciplinam
bonam, coram Deo et ho-
5 minibus. Habe fiduciã in Dño
ex toto corde tuo, & ne innita-
6 ris prudentiæ tuæ. In omnibus
viis tuis cogita illum, & ipſe
7 diriget greſſus tuos. Ne ſis ſapiens
apud temetipſum: time
8 Deum, & recede à malo: Sanitas
quippe erit umbilico tuo,
9 & irrigatio oſſiũ tuorum. Honora
Dominum de tua ſubſtantia,
& de primitiis omniũ fru-
10 gum tuarum da ei: Et implebuntur
horrea tua ſaturitate; et
vino torcularia tua redunda-
11 bunt. Diſciplinã Domini, fili
mi, ne abjicias: ne deficias cùm
12 ab eo corriperis: Quem enim
diligit Dominus, corripit: &
quaſi pater in filio complacet
13 ſibi. Beatus homo, qui invenit
ſapientiam, & qui affluit
14 prudentiâ: Melior eſt acquiſitio
ejus negotiatione argenti,
& auri primi & puriſſimi fru-
15 ctus ejus: Pretioſior eſt cunctis
opibus: & omnia, quæ deſiderantur,
huic non valent com-
16 parari. Longitudo dierum in
dextera ejus, et in ſiniſtra illius
17 divitiæ, & gloria. Viæ ejus viæ
pulchræ, et omnes ſemitæ illius
18 pacificæ. Lignum vitæ eſt his,
qui apprehenderint eam: &
19 qui tenuerit eam, beatus. Dominus
ſapientiâ fundavit terram,
ſtabilivit cœlos pruden-
20 tiâ. Sapientiâ illius eruperunt
abyſſi, et nubes rore concreſcunt.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

17 †Ἡ ἀπολιποῦσα διδασκαλίαν νεότητος,
18 †Καὶ διαθήκην θείαν ἐπιλελησμένη. †Ἔθετο
γὰρ παρὰ τῷ θανάτῳ τὸν οἶκον αὐτῆς, †καὶ
παρὰ τῷ ᾅδῃ μετὰ τῶν γηγενῶν τοὺς (ζ) ἄξονας
19 αὐτῆς. †Πάντες οἱ πορευόμενοι ἐν αὐτῇ
οὐκ ἀναστρέψουσιν, †οὐδὲ μὴ καταλάβωσι
20 τρίβους εὐθείας· †οὐ γὰρ (η) καταλαμβάνονται
21 ὑπὸ ἐνιαυτῶν ζωῆς. †Εἰ γὰρ ἐπορεύοντο
τρίβους ἀγαθὰς, †εὕροσαν ἂν τρίβους δι-
22 καιοσύνης (θ) λείας. †Ὅτι εὐθεῖς κατασκηνώσουσι
γῆν. †καὶ ὅσιοι ὑπολειφθήσονται ἐν
αὐτῇ, †(ι) Ὁδοὶ ἀσεβῶν ἐκ γῆς ὀλοῦνται,
†οἱ δὲ παράνομοι ἐξωσθήσονται ἀπ᾽ αὐτῆς.

(q) *Quæ dereliquit (r) doctrinam* 17
juventutis, Et (ſ) teſtamenti divi- 18
*ni oblita eſt. (t) Poſuit enim juxta
mortem domum ſuam, & penes infernum
cum terrigenis (u) orbitas
ſuas. Omnes euntes in ea non (x)* 19
*revertent, neque apprehendent ſemitas
rectas: non enim apprehenduntur
ab annis vitæ. Nam ſi am-* 20
*bularent ſemitas bonas, inveniſſent
utique (y) ſemitas juſtitiæ leves.
(z) Quoniam recti (ω) inhabita-* 21
*bunt terram, & ſancti remanebunt
in ea. Viæ impiorum è terra per-* 22
*dentur: & * iniqui expellentur
ab ea.*

MS.A. (ζ) *αὔξονας (η) καταλαμβάνωνται (θ) λείους. †χρηστοὶ ἔσονται
οἰκήτορες γῆς, †ἄκακοι δὲ ὑπολειφθήσονται ἐν αὐτῇ. Ὅτι (ι) Ὁδοὶ δὲ ἀσεβῶν

ΚΕΦ. γ΄.

1 †Υἱὲ, ἐμῶν νομίμων μὴ ἐπιλανθάνου,
†τὰ δὲ ῥήματά μου τηρείτω σὴ καρδία.
2 †Μῆκος γὰρ βίου, καὶ ἔτη ζωῆς, καὶ εἰρήνην
3 προσθήσουσί σοι. †Ἐλεημοσύναι καὶ πίστεις
μὴ ἐκλιπέτωσάν σε· †ἄφαψαι δὲ
4 αὐτὰς ἐπὶ σῷ τραχήλῳ, Καὶ εὑρήσεις χάριν·
(α) †καὶ προνοοῦ καλὰ ἐνώπιον κυρίου
5 καὶ ἀνθρώπων. †Ἴσθι πεποιθὼς (β) ἐν ὅλῃ
τῇ καρδίᾳ ἐπὶ θεῷ, †ἐπὶ δὲ σῇ σοφίᾳ μὴ
6 ἐπαίρου. †(γ) Πάσαις ὁδοῖς σου γνώριζε
αὐτὴν, †ἵνα ὀρθοτομῇ τὰς ὁδούς σου.
7 †Μὴ ἴσθι φρόνιμος παρὰ σεαυτῷ, †φοβοῦ
δὲ τὸν θεὸν, καὶ ἔκκλινε ἀπὸ παντὸς κακοῦ.
8 †Τότε ἴασις ἔσται τῷ σώματί σου, †καὶ ἐπι-
9 μέλεια τοῖς ὀστέοις σου. †Τίμα τὸν κύριον
ἀπὸ σῶν δικαίων πόνων, †καὶ ἀπάρχου αὐ-
10 τῷ ἀπὸ σῶν καρπῶν δικαιοσύνης· †Ἵνα
πίμπληται τὰ ταμιεῖά σου πλησμονῆς (δ)
σίτῳ, †οἴνῳ δὲ αἱ ληνοί σου ἐκβλύζωσιν.
11 †Υἱὲ μὴ ὀλιγώρει παιδείας κυρίου, †μηδὲ
12 ἐκλύου ὑπ᾽ αὐτοῦ ἐλεγχόμενος. †Ὃν γὰρ ἀγαπᾷ
κύριος, (ε) ἐλέγχει· †μαστιγοῖ δὲ
13 πάντα υἱὸν ὃν παραδέχεται. †Μακάριος ἄνθρωπος
ὃς εὗρε σοφίαν, †καὶ θνητὸς ὃς
14 εἶδε φρόνησιν. (ζ) †Κρεῖσσον γὰρ αὐτὴν
ἐμπορεύεσθαι, †ἢ χρυσίου καὶ ἀργυ-
15 ρίου θησαυρούς. †Τιμιωτέρα δέ ἐστι λίθων
πολυτελῶν, †οὐκ (η) ἀντιτάξετ[illegible] οὐδὲν
πονηρόν· †εὔγνωστός ἐστι πᾶσ[illegible] ζουσιν
αὐτῇ, †πᾶν δὲ τίμιο[illegible] ιον αὐτῆς ἐστι.
16 †Μῆκος γὰρ βίου [illegible] ζωῆς ἐν τῇ δεξιᾷ
αὐτῆς, †ἐν δὲ τῇ ἀριστερᾷ αὐτῆς πλοῦτος
καὶ δόξα· †ἐκ τοῦ στόματος αὐτῆς ἐκπορεύεται
δικαιοσύνη, †νόμον δὲ καὶ ἔλεον ἐπὶ
17 γλώσσης φορεῖ. †Αἱ ὁδοὶ αὐτῆς ὁδοὶ καλαὶ,
†καὶ (θ) πᾶσαι αἱ τρίβοι αὐτῆς ἐν εἰρήνῃ.
18 †Ξύλον ζωῆς ἐστι πᾶσι τοῖς ἀντεχομένοις
αὐτῆς, †καὶ τοῖς ἐπερειδομένοις ἐπ᾽ αὐ-
19 τὴν ὡς ἐπὶ κύριον, ἀσφαλής. †Ὁ θεὸς
τῇ σοφίᾳ ἐθεμελίωσε τὴν γῆν, †ἡτοίμασε δὲ
20 οὐρανοὺς (ι) φρονήσει. †Ἐν αἰσθήσει ἄβυσσοι
ἐῤῥάγησαν, †νέφη δὲ ἐῤῥύησαν δρόσους.

CAP. III.

Fili, mearum legum ne obliviſca- 1
*ris: verba autem mea ſervet tuum
cor. Longitudinem enim ætatis, et* 2
*annos vitæ, & pacem apponent tibi.
(a) Eleemoſynæ & fides ne de-* 3
*ſerant te: (b) alliga autem eas
ſuper collum (c) tuum, Et inve-* 4
*nies gratiam: & (d) provide bona
(e) coram Domino, & hominibus.
(f) Eſto fidens in toto corde ſuper* 5
*Deum: in tua autem ſapientia (g)
ne exalteris. (h) Omnibus viis tuis* 6
*cognoſce illam; (i) ut rectas faciat
vias tuas. Ne ſis (k) prudens* 7
*apud temetipſum: time autem Deum,
& declina ab omni malo.
Tunc ſanitas erit corpori tuo, &* 8
(l) curatio oſſibus tuis. Honora 9
*Dominum de juſtis tuis laboribus:
& primitias da ei de (m) tuis
fructibus juſtitiæ: ut impleantur* 10
*(n) cellaria tua (o) ſaturitate frumento:
& vino torcularia tua (p)
redundent. Fili, noli (q) negligere* 11
*diſciplinam Domini: neque (r)
fatigeris, dum ab eo argueris.
Quem enim diligit Dominus, (ſ)* 12
*arguit: flagellat autem omnem filium,
quem ſuſcipit. Beatus (t) ho-* 13
*mo qui invenit ſapientiam, & (u)
mortalis qui vidit prudentiã. Me-* 14
*lius eſt enim illã mercari, quã auri
& argenti theſauros. Pretioſior eſt* 15
enim lapidibꝰ pretioſis: *non reſiſtet
illi ullum malum: benè nota eſt
omnibus (x) appropinquantibus ei:
omne autem pretioſum non eſt illâ
dignum. * Longitudo enim ætatis,* 16
*& anni vitæ in dextera ejus: in
ſiniſtra autem ejus divitiæ, & gloria.
Ex ore ejus procedit juſtitia:
legẽ autem & miſericordiã (y) in
lingua portat. Viæ ejus viæ bonæ:* 17
*& omnes (z) ſemitæ ejus in pace.
Lignum vitæ eſt omnibꝰ qui com-* 18
*plectuntur eam, & qui incumbunt
in eam, ſicut in Domino, (ω) ſecura.
Deus ſapientiâ fundavit terram;* 19
*paravit autem cœlos prudentiâ.
In (aa) ſenſu abyſſi eruperunt, nu-* 20
bes autem manaverunt (bb) rores.

MS.A. (α) †γράψον δὲ αὐτὰς ἐπὶ τὸ πλάτος τῆς καρδίας σου. καὶ προνοοῦ (β) ἐν
ὅλῃ καρδίᾳ (γ) Ἐν πάσαις (δ) σίτου, (ε) παιδεύει· (ζ) Κρεῖττον (η) ἀντι-
τάσσεται (θ) πάντες οἱ τρίβοι (ι) ἐν φρονήσει.

תרגום TARGUM.

17 דשבקה מרביתא דטליותהא וקימא דאלהא טעת׃ דבעמקא דמותא ביתה
18 ולגבריא הלכתא דשבילהא׃ כל דעילן לא חזרין בשלם ולא צירין ארחתא דחיי׃ 19
20 בדיל הלך בארחתא דטבי ושבילי דצדיקי תנטור׃ מטול דתריצי עמדין בארעא 21
22 ואלין דלא מום משתותרין בה׃ ורשיעיא מן ארעא נסופון ובזוזי נתעקרון מנה׃

ג

1 ברי נימוסי לא תנשי ופוקדני ינטר לבך׃ מטול דנוגדא דיומתא ושניא דחיי ושלמא 2
נוספון לך׃ טיבותא וקושטא לא נשבקונך קטורנון בצורך וכתוב אנון על לוח דלבך׃ 3
4 ותשכח חסדא ושכלא וטיבותא קדם אלהא וקדם בני אנשא׃ סביר באלהא מן כלי 5
6 לבך ועל ביונתא דלבך לא תסתמיך׃ בכל ארחתך דעה והוא יתרץ שבילך׃ לא תהוי
7 חכים באפך דחל מן אלהא וסטא מן בישתא׃ אסיותא תהוי לכונשרך ודוהנא לגרמיך׃ 8
9 יקר לאלהיך מן ממונך ומריש כלהון עללתך׃ ומתמלין אוצרך שבענא ומעצרתך
10 חמרא נשפען׃ ברי מרדותא דאלהא לא תסלא ולא תמריק במכסנותיה׃ מטול 11
12 דלמן דרחם ליה אלהא רדיה ליה והיך אבא דרדי לבריה׃ טובוהי לבר נשא דאשכח 13
14 חכמתא ובר נשא דמביע ביונתא׃ מטול דטבא תגרותה מן תגרותא דסימא ומן דהבא
15 סנינא עללתה׃ יקירא היא מן כיפי טבתא וכל מדעם לא פחים ליה׃ נוגדא דיומתא 16
17 בימינה ובשמאלה עותרא ויקרא׃ ארחתהא ארחתא דבוסמא וכלהון הליכתהא
18 שלמא׃ אילנא דחיי היא לאלין דמתחזקין בה ואלין דמתעסקין בה טוביהון׃ אלהא 19
20 בחכמתא שתאסיה ארעא ואתקין שמיא בביונה׃ בדעתיה תהומי אתבזיעו ושמיא
צעי מטליא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quæ relinquit ducatum adoleſcentiæ ſuæ, & pactum Dei ſui abjecit. 17
Quoniam in fovea mortis eſt domus ejus, & ad gigantes itinera ſemitarum 18
ipſius. Omnes qui ingrediuntur, non revertentur in pace, neque 19
capient ſemitas vitæ. Ut ambules in viis bonorum, & ſemitas juſtorum 20
cuſtodias. Quoniam juſti ſtabunt in terra, & immaculati remanebunt in 21
ea. Impii autem de terra conſumentur, & direptores eradicabuntur ex ea. 22

CAP. III.

Fili mi ne obliviſcaris legis meæ, & præcepta mea cuſtodiat cor tuum. 1
Quoniam longitudinem dierum, & annos vitæ & pacem adjicient tibi. 2
Benignitas & veritas ne dimittant te: liga eas in collo tuo, & ſcribe eas 3
in tabula cordis tui. Et invenies gratiam & intellectum, & benignitatem 4
coram Deo, & coram filiis hominum. Spera in Deo ex toto corde tuo, & 5
prudentiæ cordis tui ne innitaris. In omnibus viis tuis cognoſce eum, & 6
ipſe diriget ſemitas tuas. Ne ſis ſapiens apud temetipſum: time Deum, 7
& recede à malo. Medicina erit umbilico tuo, & pinguedo oſſibus tuis. 8
Honora Deum tuum de mammona tuo, & de primitiis omnium fructuum 9
tuorum. Et implebuntur cellaria tua ſaturitate, & torcularia tua vino re- 10
dundabunt. Diſciplinam Dei fili mi ne execreris, & ne tædio afficiaris in 11
correptione ejus. Quoniam quem diligit Deus, corripit; & ſicut pater qui 12
corripit filium ſuum. Beatus filius hominis qui invenit ſapientiam, & fi- 13
lius viri qui profert intelligentiam. Quoniam melior eſt negotiatio ejus 14
negotiatione argenti, & auro conflato fructus ejus. Precioſior eſt lapidi- 15
bus precioſis, & nihil eſt quod ei comparetur. Longitudo dierum in dex- 16
tera ejus, & in ſiniſtra ejus divitiæ, & gloria. Viæ ejus viæ ſuavitatis, & 17
omnia itinera ejus pacifica. Arbor vitæ eſt his qui apprehendunt eam: 18
& hi qui occupantur in ea, beati. Deus in ſapientia poſuit fundamenta 19
terræ, et præparavit cœlos in prudentia. In ſcientia ejus abyſſi rupti ſunt, 20
et nubes deſtillaverunt rorem.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

17 18 * ܕܫܒܩܬ ܡܪܒܝܢܐ ܕܛܠܝܘܬܗ̇. ܘܛܥܬ ܩܝܡܐ ܕܐܠܗܗ̇. * ܘܛܥܬ ܐܣܩܘܦܬܐ ܕܒܝܬܗ̇.
19 ܘܗܠܟܬܐ ܕܫܒܝܠܝܗ̇. * ܟܠ ܕܥܐܠܝܢ ܠܘܬܗ̇. ܠܐ ܗܦܟܝܢ. ܘܠܐ ܡܬܕܟܪܝܢ ܐܘܪܚܐ ܕܚܝܐ.
20 21 * ܗܠܟ ܗܟܝܠ ܒܐܘܪܚܐ ܕܛܒܐ. ܘܛܪ ܐܘܪܚܐ ܕܙܕܝܩܐ. * ܡܛܠ ܕܬܪܝܨܐ ܢܥܡܪܘܢ ܒܐܪܥܐ. ܘܐܝܠܝܢ
22 ܕܠܐ ܡܘܡ ܐܢܘܢ. ܢܫܬܚܪܘܢ ܒܗ̇. * ܘܚܛܝܐ ܢܬܚܒܠܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ. ܘܥܘܠܐ ܢܬܥܩܪܘܢ ܡܢܗ̇.
1 * ܩܦܠܐܘܢ * ܓ * * ܒܪܝ. ܠܐ ܬܛܥܐ ܢܡܘܣܝ. ܘܦܘܩܕܢܝ ܢܛܪ ܠܒܟ. * ܡܛܠ
2 3 ܕܢܘܓܪܐ ܕܝܘܡܬܐ. ܘܫܢܝܐ ܕܚܝܐ ܢܬܬܘܣܦܢ ܠܟ. * ܘܫܠܡܐ ܘܛܝܒܘܬܐ ܘܬܪܝܨܘܬܐ ܠܐ
4 ܢܫܒܩܘܢܟ. ܐܠܐ ܩܛܘܪ ܐܢܘܢ ܒܨܘܪܟ. ܘܟܬܘܒ ܐܢܘܢ ܥܠ ܠܘܚܐ ܕܠܒܟ. * ܕܬܫܟܚ ܪ̈ܚܡܐ
5 ܘܛܝܒܘܬܐ ܘܣܘܟܠܐ ܛܒܐ. ܩܕܡ ܐܠܗܐ ܘܩܕܡ ܒܢܝ ܐܢܫܐ. * ܬܟܠ ܥܠ ܡܪܝܐ ܡܢ ܟܠܗ ܠܒܟ. ܘܠܐ
6 ܚܟܡܬܐ ܕܢܦܫܟ ܠܐ ܬܬܬܟܠ. * ܒܟܠܗܘܢ ܐܘܪܚܬܟ ܐܘܕܥܝܗܝ. ܘܗܘ ܢܬܪܘܨ ܫܒܝܠܝܟ. * ܠܐ ܬܗܘܐ
7 8 ܚܟܝܡ ܒܥܝܢܝ ܢܦܫܟ. ܐܠܐ ܕܚܠ ܡܢ ܡܪܝܐ. ܘܣܛܝ ܡܢ ܒܝܫܬܐ. * ܕܬܗܘܐ ܐܣܝܘܬܐ ܠܒܣܪܟ.
9 10 ܘܪܘܘܝܐ ܠܓܪ̈ܡܝܟ. * ܝܩܪ ܠܡܪܝܐ ܡܢ ܩܢܝܢܟ. ܘܡܢ ܪܫ ܟܠܗܘܢ ܥܠܠܬܟ. * ܕܢܬܡܠܘܢ
11 ܐܘܨܪ̈ܝܟ ܣܒܥܐ. ܘܡܥܨܪ̈ܬܟ ܢܦܩܢ ܚܡܪܐ. * ܒܪܝ. ܡܪܕܘܬܗ ܕܡܪܝܐ ܠܐ ܬܣܠܐ. ܘܠܐ ܬܬܡܐܠ ܒ
12 13 ܡܟܣܢܘܬܗ. * ܡܛܠ ܕܠܡܢ ܕܪܚܡ ܠܗ ܡܪܝܐ. ܡܟܣ ܠܗ ܐܝܟ ܐܒܐ ܕܡܟܣ ܠܒܪܗ. * ܛܘܒܘܗܝ
14 ܠܓܒܪܐ ܕܐܫܟܚ ܚܟܡܬܐ. ܘܠܒܪ ܒܣܪܐ ܕܐܫܟܚ ܣܘܟܠܐ. * ܡܛܠ ܕܛܒܐ ܗܝ ܬܐܓܘܪܬܗ̇
15 ܡܢ ܬܐܓܘܪܬܐ ܕܣܐܡܐ. ܘܡܢ ܕܗܒܐ ܦܪܝܫܐ ܡܝܬܪܢ ܥܠܠܬܗ̇. * ܝܩܝܪܐ ܗܝ ܓܝܪ ܡܢ ܟܐܦܐ
16 ܛܒܬܐ. ܘܡܕܡ ܠܐ ܦܚܡ ܠܗ̇. * ܢܘܓܪܐ ܕܝܘܡܬܐ. ܒܝܡܝܢܗ̇. ܘܥܘܬܪܐ ܘܐܝܩܪܐ ܒܣܡܠܗ̇.
17 18 * ܐܘܪܚܬܗ̇ ܐܘܪܚܬܐ ܐܝܢܝܢ ܒܣܝܡܬܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܫܒܝ̈ܠܝܗ̇ ܫܠܡܐ. * ܐܝܠܢܐ ܗܘ ܕܚܝܐ ܠܐܝܠܝܢ
19 ܕܡܬܬܚܕܝܢ ܒܗ̇. ܘܐܝܠܝܢ ܕܡܣܬܟܝܢ ܠܗ̇ ܛܘܒܝܗܘܢ. * ܡܪܝܐ ܒܚܟܡܬܗ ܣܡ ܫܬܐܣܘܗ̇
20 ܕܐܪܥܐ. ܘܬܩܢ ܫܡܝܐ ܒܣܘܟܠܗ. * ܘܒܝܕܥܬܗ ܐܬܒܙܥܘ ܬܗܘܡܐ. ܘܥܢܢܐ ܕܠܦܘ ܛܠܐ.

Quæ deſeruit nutritium adoleſcentiæ ſuæ, & 17
oblita eſt fœderis Dei ſui, Et oblivioni tradi- 18
dit limina domûs ſuæ, & greſſus ſemitarum
ſuarum. Quicunq; ingrediuntur ad eam, non 19
revertuntur, neq; reminiſcuntur viæ vitæ.
Ambula igitur in via proborum, & cuſtodi 20
viam juſtorum; Nam recti habitabunt in ter- 21
ra, & ii qui ſine labe ſunt, remanebunt in ea.
Peccatores verò exterminabuntur de terra, & 22
iniqui evellentur ex ea.

CAP. III.

FIli mi, ne obliviſcaris legis meæ, & mandata 1
mea cuſtodiat cor tuũ: Quia longitudo di- 2
erũ & anni vitæ apponentur tibi. Et pax, & 3
gratia, & æquitas ne te deſerant: ſed innecte
eas collo tuo, & inſculpe illas tabulis cordis
tui: Ut invenias miſericordiã & gratiã atque 4
intellectũ bonũ corã Deo, & corã filiis homi-
num. Spera in Dño ex toto corde tuo, & ſapi- 5
entiæ animæ tuæ ne confidas. Noſce eum in 6
omnibꝰ viis tuis, & ipſe diriget ſemitas tuas.
Ne ſis ſapiens in oculis tuiipſius: ſed time 7
Dñm, & declina à malo, Ut ſit ſanitas carni 8
tuæ, & impinguatio oſſibus tuis. Honora Dñm 9
de poſſeſſione tua, & de primitiis omnium
proventuũ tuorũ. Ut impleantur horrea tua 10
ſaturitate, & torcularia tua redundent vino.
Fili mi, reprehenſioné Dñi ne deſpexeris, nec 11
te pigeat in correptione ejus: Quoniã quem 12
diligit Dñs, corripit inſtar patris qui corripit
filiũ ſuũ. Beatus homo qui reperit ſapientiã, 13
& filius carnis, qui invenit intelligentiam;
Quoniam melius eſt cõmercium ejus cõmer- 14
cio argenti: & auro puriſſimo præſtantiores
ſunt reditus ejus. Pretioſior enim eſt lapillis 15
optimis, & nihil æquatur illi. Longitudo die- 16
rum in dextera ejus, & divitiæ atq; gloria in
læva ipſius. Viæ ejus, viæ ſunt jucundæ: & 17
cunctæ ſemitæ illius, pax. Arbor eſt vitæ iis 18
qui tenent eam: & qui expectant eam, beati
ſunt. Dominus ſapientiâ ſuâ poſuit fundamen- 19
ta terræ, & condidit cœlum intellectu ſuo:
Et ſcientiâ ipſius ruptæ ſunt abyſſi, & nubes 20
ſtillaverunt rorem.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

17 18 * يا بني لا تدركنك المشورة الردية * التاركة تعليم الحذاقة والناسية العهد الالهي * فانها قد
19 جعلت منزلها في الموت واعمالها مع الارضيين عند الجحيم الموت * فكافة السالكين فيها لن
20 يرجعوا ولا يدركوا سبلا مستقيمة لان سني الحياة لم تدركهم * لانهم لو كانوا سلكوا طرقا صالحة
21 لكانوا قد وجدوا طرايق العدل الممهدة * الاخيار يكونوا قاطني الارض * وذوو الدعة يبقون
22 فيها * وطرق المنافقين تبيد من الارض والذين يتجاوزون الشريعة يقصون منها *
1 2 * الفصل الثالث * يا بني لا تنس شرايعي وليحفظ قلبك اقوالي * فستزيدك طول
3 العمر وسني حياة وسلامة * الصدقات والامانات لا تفن من عندك تقلدها حول عنقك فتجد
4 5 نعمة * واسبق فتفطن في الحسنات امام الرب والناس * كن بكل قلبك متوكلا على الله *
6 7 وبحكمتك لا تترفع * وفي جميع طرايقك اعرفها لتقوم طرقك * لا تكون عند نفسك عاقلا *
8 9 اتق الله واحجم عن كل شر * حينيذ يكون لجسمك شفاء * واهتماما بعظامك * اكرم الرب من
10 اتعابك المقسطة * ومن اثمار عدلك اعطه بواكيرها * لتمتلي خزاينك ملوها حنطة * وتفيض
11 12 معاصرك خمرا * يا بني لا تسام من ادب ربك * ولا تضجر مني وبخك * فان الرب يودب من
13 يحبه * ويجلد كل ابن يقبله * مغبوط هو الانسان الذي قد وجد حكمة * وسعيد المرء الذي
14 15 قد وجد فطنة * لانها اكرم من احجار الجواهر النفيسة * ولن يعاندها امر خبيث * ويعرفها
16 سريعا كل من يدنوا اليها وكل شي كريم ما يساواها * لان من يمينها طول العمر وسني الحياة *
17 وفي شمالها ثروة وشرفا ومن فمها ينبعث العدل وعلى لسانها تحمل الشريعة والرحمة * وطرايقها
18 طرايق حسنة ومسالكها في السلامة * هي عود حياة صاينة لجميع المعتصمين بها والمستندين
19 20 عليها كمن يستند على الرب * الله بالحكمة اسس الارض وبالفطنة سوى السموات * وبالحس
تشققت اللجج وهطلت الغيوم الندا *

Fili mi, haudquaquam te apprehendat 17
conſilium malum quod refellit doctrinam
perſpicacitatis, & quod obliviſcitur pacti
divini. Nam collocavit habitaculum ſuum 18
in morte, & ejus opera cum terreſtribus
prope infernum mors eſt. Univerſi ambu- 19
lantes in eo, nullo modo revertuntur, nec
apprehendunt ſemitas rectas, quia anni
vitæ non apprehendent eos. Nam ſi ambu- 20
laſſent vias rectas, ſanè inveniſſent vias
juſtitiæ planas. Boni habitabunt terram, 21
& manſueti manebunt in ea. At via im- 22
piorum peribunt de terra, & qui præter-
grediuntur legem, exterminabuntur ab ea.

CAP. III.

FIli mi, ne obliviſcaris leges meas, & 1
cuſtodiat cor tuum verba mea. Augebunt 2
enim tibi longitudinem ætatis, & annos
vitæ, atque incolumitatem. Eleemoſynæ 3
& fidelitates ne deficiant à te: cinge eas
circa collum tuum, & invenies gratiam.
Et præveniens intellige opera bona coram 4
Deo & hominibus. Eſto ex toto corde tuo 5
fretus Deo: & in ſapientia tua ne extolla-
ris. Et in omnibus viis tuis noſce eam, ut 6
dirigat vias tuas. Nullo modo ſis apud 7
temetipſum prudens: time Deum, & decli-
na ab omni malo. Tunc erit corpori tuo ſa- 8
nitas, & cura de oſſibus tuis. Honora 9
Deum de laboribus tuis juſtis, & de fru-
ctibus juſtitiæ tuæ da illi primitias. Ut 10
penitùs impleantur horrea tua frumento, et
redundent torcularia tua vino. Fili mi, ne 11
cadas animis ob diſciplinam Domini tui,
nec tædio afficiaris cùm te corripuerit;
Quia Dominus corrigit quem diligit, & 12
flagellat omnem filium quem charum ha-
bet. Beatus eſt homo qui reperit ſcientiã, 13
& fœlix eſt vir qui invenit prudentiam:
Quia eſt pretioſior lapidibus gemmarum 14
præclaris: & nullatenus adverſabitur ei
quicquam malignum. Et cognoſcet eam 15
brevi quicunque accedet ad eam: & omne
pretioſum non adæquatur ei. Quia à dex- 16
tra ejus eſt longitudo ætatis & anni vitæ,
& in ſiniſtra ipſius, opes & nobilitas: Et
ex ore ejus fluit juſtitia, & ſuper linguam
ſuam portat legem & miſericordiam. Et 17
viæ ejus ſunt viæ pulchræ: et ſemitæ ejus,
in tranquillitate. Ipſa eſt lignum vitæ, 18
ſervans omnes amplectentes eam & inni-
tentes ei, ut eum qui innititur Domino.
Deus ſapientiâ fundavit terram, & pru- 19
dentiâ ſtabilivit cœlos: Et conſilio di- 20
ſciſſæ ſunt abyſſi, & manarunt nubes rore.

.cogitationem & , *essentiam* custodi : tuis oculis ab recedant ne , mi Fili
21 בְּנִי אַל־יָלֻזוּ מֵעֵינֶיךָ נְצֹר תֻּשִׁיָּה וּמְזִמָּה׃
ambulabis Tunc .*tuis gutturibus* gratia & , tuæ animæ *vitæ* erunt Et
22 וְיִהְיוּ חַיִּים לְנַפְשֶׁךָ וְחֵן לְגַרְגְּרֹתֶיךָ׃ אָז תֵּלֵךְ
23 non , *tacueris* Si .impinget non tuus pes & ; tua via *fiducia in*
24 לָבֶטַח דַּרְכֶּךָ וְרַגְלְךָ לֹא תִגּוֹף׃ אִם־תִּשְׁכַּב לֹא־
pavore à timebis Non .tuus somnus erit suavis & , *jacebis* & : *pavebis*
25 תִפְחָד וְשָׁכַבְתָּ וְעָרְבָה שְׁנָתֶךָ׃ אַל־תִּירָא מִפַּחַד
Dominus Quia .venerit cùm , impiorum desolatione à & ; repentino
26 פִּתְאֹם וּמִשֹּׁאַת רְשָׁעִים כִּי תָבֹא׃ כִּי־יְהוָה
prohibeas Ne .captura à tuum pedem custodiet & ; tua fiducia *in* erit
27 יִהְיֶה בְכִסְלֶךָ וְשָׁמַר רַגְלְךָ מִלָּכֶד׃ אַל־תִּמְנַע
Ne .faciendum ad *tuæ manus facultati existendo in* ; *suo patrono* à bonum
28 טוֹב מִבְּעָלָיו בִּהְיוֹת לְאֵל יָדְךָ לַעֲשׂוֹת׃ אַל־
Ne .*tecum est &* , dabo cras & , revertere & , Vade : tuo *sodali* dicas
29 תֹּאמַר לְרֵעֲךָ לֵךְ וָשׁוּב וּמָחָר אֶתֵּן וְיֵשׁ אִתָּךְ׃ אַל־
Ne .tecum *fiducia in sedens* ipse & : malum tuum *socium super fabrices*
30 תַּחֲרֹשׁ עַל־רֵעֲךָ רָעָה וְהוּא־יוֹשֵׁב לָבֶטַח אִתָּךְ׃ אַל־
Ne .malum tibi retribuit non si , gratis homine cum contendas
31 תָּרוֹב עִם־אָדָם חִנָּם אִם־לֹא גְמָלְךָ רָעָה׃ אַל־
Quia .ejus vias omnes *in* eligas ne & ; *violentiæ* virum *in* æmuleris
32 תְּקַנֵּא בְּאִישׁ חָמָס וְאַל־תִּבְחַר בְּכָל־דְּרָכָיו׃ כִּי
Maledictio .ejus secretum rectis cum & ; perversus Domini abominatio
33 תוֹעֲבַת יְהוָה נָלוֹז וְאֶת־יְשָׁרִים סוֹדוֹ׃ מְאֵרַת
illusores *Si* .benedicet justorum *tugurio* & : impii domo in Domini
34 יְהוָה בְּבֵית רָשָׁע וּנְוֵה צַדִּיקִים יְבָרֵךְ׃ אִם־לַלֵּצִים
sapientes Gloriam : gratiam dabit *mansuetis* & ; illudet ipse
35 הוּא־יָלִיץ וְלַעֲנָוִים יִתֶּן־חֵן׃ כָּבוֹד חֲכָמִים
.*ignominiam exaltans stulti* & : possidebunt hæreditate
יִנְחָלוּ וּכְסִילִים מֵרִים קָלוֹן׃

CAP. IV. ד

.intelligentiam *sciendum ad* attendite & ; patris eruditionem filii Audite
1 שִׁמְעוּ בָנִים מוּסַר אָב וְהַקְשִׁיבוּ לָדַעַת בִּינָה׃
Quia .derelinquatis ne meam legem : vobis dedi bonam doctrinam Quia
2 כִּי לֶקַח טוֹב נָתַתִּי לָכֶם תּוֹרָתִי אַל־תַּעֲזֹבוּ׃ כִּי־
3 ,me docebat Et .meæ matris *facies ad* unicus & , tener ; meo patri fui filius
4 בֵן הָיִיתִי לְאָבִי רַךְ וְיָחִיד לִפְנֵי אִמִּי׃ וַיֹּרֵנִי
.*vive* & , mea præcepta custodi : tuũ cor mea eloquia Fulciat , mihi dicebátq;
וַיֹּאמֶר לִי יִתְמָךְ־דְּבָרַי לִבֶּךָ שְׁמֹר מִצְוֹתַי וֶחְיֵה׃
declines neque , obliviscaris ne : intelligentiam eme , sapientiam Eme
5 קְנֵה חָכְמָה קְנֵה בִינָה אַל־תִּשְׁכַּח וְאַל־תֵּט
, eam dilige : te custodiet & , eam derelinquas Ne .mei oris *dictis* à
6 מֵאִמְרֵי־פִי׃ אַל־תַּעַזְבֶהָ וְתִשְׁמְרֶךָּ אֱהָבֶהָ
omni *in* & ; sapientiam *acquire sapientia* Principium .te conservabit &
7 וְתִצְּרֶךָּ׃ רֵאשִׁית חָכְמָה קְנֵה חָכְמָה וּבְכָל־
: te exaltabit & , eam Exalta .intelligentiam *acquire* tua *acquisitione*
8 קִנְיָנְךָ קְנֵה בִינָה׃ סַלְסְלֶהָ וּתְרוֹמְמֶךָּ
copulam tuo capiti Dabit .fueris eam amplexatus cùm , te glorificabit
9 תְּכַבֵּדְךָ כִּי תְחַבְּקֶנָּה׃ תִּתֵּן לְרֹאשְׁךָ לִוְיַת־
: mea *dicta* suscipe & , mi fili Audi .*te muniet* decoris *diademate* : gratiæ
10 חֵן עֲטֶרֶת תִּפְאֶרֶת תְּמַגְּנֶךָּ׃ שְׁמַע בְּנִי וְקַח אֲמָרָי
: te *instituit* sapientiæ viam In .*vitarum* anni tibi multiplicabũtur &
11 וְיִרְבּוּ לְךָ שְׁנוֹת חַיִּים׃ בְּדֶרֶךְ חָכְמָה הֹרֵתִיךָ
coarctabitur non , *te eundo In .rectitudinis orbitis in* te feci calcare
12 הִדְרַכְתִּיךָ בְּמַעְגְּלֵי־יֹשֶׁר׃ בְּלֶכְתְּךָ לֹא־יֵצַר
, eruditionem *in Apprehende* .impinges non , cucurreris si & : tuus gressus
13 צַעֲדֶךָ וְאִם־תָּרוּץ לֹא תִכָּשֵׁל׃ הַחֲזֵק בַּמּוּסָר
impiorum semitam In .*tuæ vitæ* ipsa quia , eam custodi : dimittas ne
14 אַל־תֶּרֶף נִצְּרֶהָ כִּי־הִיא חַיֶּיךָ׃ בְּאֹרַח רְשָׁעִים
.malorum via in gradiaris ne & ; ingrediaris ne
אַל־תָּבֹא וְאַל־תְּאַשֵּׁר בְּדֶרֶךְ רָעִים׃

Versio VUL. LAT.

21 Fili mi, ne effluant hæc ab ocu-
lis tuis : Custodi legem atque
22 consilium: Et erit vita animæ
tuæ, & gratia faucibus tuis.
23 Tunc ambulabis fiducialiter in
via tua, & pes tuus non impin-
24 get: Si dormieris, non timebis:
quiesces, & suavis erit somnus
25 tuus. Ne paveas repentino ter-
rore, & irruentes tibi potentias
26 impiorum. Dñs enim erit in la-
tere tuo, & custodiet pedẽ tuũ
27 ne capiaris. Noli prohibere
benefacere eum, qui potest : si
28 vales, & ipse benefac. Ne di-
cas amico tuo; Vade, & rever-
tere: cras dabo tibi: cùm statim
29 possis dare. Ne moliaris amico
tuo malũ, cùm ille in te habeat
30 fiduciam. Ne contendas adver-
sùs hominem frustrà, cùm ipse
31 tibi nihil mali fecerit. Ne æ-
muleris hominẽ injustum, nec
32 imiteris vias ejus: Quia abo-
minatio Dñi est omnis illusor,
& cum simplicibus sermocina-
33 tio ejus. Egestas à Dño in do-
mo impii: habitacula autem ju-
34 storum benedicentur. Ipse de-
ludet illusores, et mansuetis da-
35 bit gratiam. Gloriam sapien-
tes possidebunt : stultorum ex-
altatio, ignominia.

CAP. IV.

1 AUdite filii disciplinam pa-
tris, & attendite ut sciatis pru-
2 dentiam. Donum bonum tri-
buam vobis, legem meam ne
3 derelinquatis. Nam & ego fi-
lius fui patris mei, tenellus, &
4 unigenitus corã matre mea: Et
docebat me, atque dicebat; Sus-
cipiat verba mea cor tuum, cu-
stodi præcepta mea, & vives.
5 Posside sapientiã, posside pru-
dentiam : ne obliviscaris, neq;
6 declines à verbis oris mei. Ne
dimittas eam, & custodiet te :
dilige eam, & conservabit te.
7 Principium sapientiæ, posside
sapientiam, & in omni possessi-
one tua, acquire prudentiam :
8 Arripe illam, & exaltabit te :
glorificaberis ab ea, cùm eam
9 fueris amplexatus. Dabit ca-
piti tuo augmenta gratiarũ, &
coronã inclytã proteget te.
10 Audi fili mi, & suscipe verba
mea, ut multiplicentur tibi an-
11 ni vitæ. Viam sapientiæ mon-
strabo tibi, ducã te per semitas
12 æquitatis: Quas cùm ingressꝰ
fueris, non arctabuntur gressus
tui, & currens non habebis of-
13 fendiculum. Tene disciplinã,
ne dimittas eam : custodi illã,
14 quia ipsa est vita tua. Ne de-
lecteris in semitis impiorũ, nec
tibi placeat malorum via.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cùm Translatione LATINA.

21 † Υἱὲ μὴ (ͱ) παραῤῥυῇς, † τήρησον δὲ ἐμὴν
22 βουλὴν καὶ ἔννοιαν· † Ἵνα ζήσῃ ἡ ψυχή σου, καὶ
χάρις ᾖ περὶ σῷ τραχήλῳ. † Ἔσται δὲ ἴασις
ταῖς σαρξί σου, † καὶ ἐπιμέλεια τοῖς (ι) σοῖς
23 ὀστέοις· † Ἵνα πορεύῃ πεποιθὼς ἐν εἰρήνῃ
πάσας τὰς ὁδούς σου, † ὁ δὲ πούς σου οὐ μὴ
24 προσκόψῃ. † (κ) Ἐὰν γὰρ κάθῃ, ἄφοβος ἔ-
σῃ, † ἐὰν δὲ καθεύδῃς, ἡδέως ὑπνώσεις.
25 † Καὶ (λ) οὐ φοβηθήσῃ πτόησιν ἐπελθοῦσαν,
26 † οὐδὲ ὁρμὰς ἀσεβῶν ἐπερχομένας. † Ὁ γὰρ
κύριος ἔσται ἐπὶ πασῶν ὁδῶν σου, † καὶ ἐρεί-
27 σει σὸν πόδα ἵνα μὴ σαλευθῇς. † Μὴ ἀπό-
σχῃ εὖ ποιεῖν ἐνδεῆ, † ἡνίκα ἂν ἔχῃ ἡ χείρ
28 σου (μ) βοηθεῖν. † Μὴ εἴπῃς, Ἐπανελθὼν
ἐπάνηκε, (ν) αὔριον δώσω, δυνατοῦ σου ὄν-
τος εὖ ποιεῖν· † οὐ γὰρ οἶδας τί τέξεται ἡ ἐπι-
29 οῦσα. † Μὴ (″) τεκτήνῃ ἐπὶ σὸν φίλον κακὰ,
30 † παροικοῦντα καὶ πεποιθότα ἐπὶ σοί. † Μὴ
φιλεχθρήσῃς πρὸς ἄνθρωπον μάτην, † μή-
31 ποτε (ξ) σε ἐργάσηται κακόν. † Μὴ κτήσῃ κα-
κῶν ἀνδρῶν ὀνείδη, † μηδὲ (ο) ζηλώσῃς
32 τὰς ὁδοὺς αὐτῶν. † Ἀκάθαρτος γὰρ ἔναντι
κυρίου πᾶς παράνομος, † ἐν δὲ δικαίοις οὐ
33 συνεδριάζει. † Κατάρα θεοῦ ἐν οἴκοις ἀσε-
34 βῶν, † ἐπαύλεις δὲ δικαίων εὐλογοῦνται. † Κύ-
ριος ὑπερηφάνοις ἀντιτάσσεται, † ταπεινοῖς
35 δὲ δίδωσι χάριν. † Δόξαν σοφοὶ κληρονο-
μήσουσιν, † οἱ δὲ ἀσεβεῖς ὕψωσαν ἀτιμίαν.

Fili, ne diffluas : serva autem me- 21
um consilium, & sententiam : ut 22
vivat anima tua, & gratia sit cir-
ca collum tuum: erit autem sani-
tas carnibus tuis, & curatio tuis
ossibus : ut ambules fidens in pace 23
omnes vias tuas, & pes tuus non
impingat. Si enim sederis, sine ti- 24
more eris : si verò dormieris, sua-
viter dormies : Et non (cc) timebis 25
pavorem supervenientem, neque
impetus impiorum ingruentes. Do- 26
minus enim erit super vias tuas,
(dd) & firmabit tuum pedem; ut
non (ee) commovearis. Ne abstine- 27
as benefacere egeno; quandocunq;
habuerit manus tua auxiliari. Ne 28
* dixeris; Revertens redi, cras da-
bo, cùm potens tu sis benefacere :
Non enim scis quid pariat sequens
dies. Ne fabriceris in tuum ami 29
cum mala, incolam, & fidentem
super te. Noli (ff) inimicitias ex- 30
ercere adversùs hominem sine cau-
sa : ne quod tibi operetur malum.
Ne acquiras malorum virorum op- 31
probria; (gg) neque zelaveris vi-
as eorum. Immundus enim coram 32
Domino omnis iniquus: in (hh) ju-
stis autem non facit concilium.
Maledictio Dei in domibus impi- 33
orum : tuguria autem justorum be-
nedicuntur. (ii) Dominus superbis 34
resistit: humilibus autem dat gra-
tiam. Gloriam sapientes hæreditabunt : (kk) impii autem exaltabunt ignominiam. 35

MS. A. (ͱ) παραῤῥυῇς, (ι) ὀστέοις σου· (κ) Ἐὰν κάθῃ (λ) οὐ μὴ φοβηθήσῃ
(μ) εὖ ποίει. Μὴ (ν) καὶ αὔριον (″) τέκτενε (ξ) εἰς σὲ (ο) ζηλώσῃ

ΚΕΦ. δʹ.

1 † ἈΚούσατε παῖδες παιδείαν πατρὸς,
2 † καὶ προσέχετε γνῶναι ἔννοιαν. † Δῶρον γὰρ
ἀγαθὸν δωροῦμαι ὑμῖν, † τὸν ἐμὸν νόμον μὴ
3 ἐγκαταλίπετε. † Υἱὸς γὰρ ἐγενόμην κἀ-
γὼ πατρὶ ὑπήκοος, † καὶ ἀγαπώμενος ἐν
4 προσώπῳ μητρός. † Οἳ ἔλεγον καὶ ἐδίδα-
σκόν με, † Ἐρειδέτω ὁ ἡμέτερος λόγος
εἰς σὴν καρδίαν· † φύλασσε ἐντολὰς, μὴ
5 ἐπιλάθῃ. † Μηδὲ παρίδῃς ῥῆσιν ἐμοῦ στό-
6 ματος, (α) † Μηδὲ ἐγκαταλίπῃς αὐτὴν,
καὶ ἀνθέξεταί σου· † ἐράσθητι αὐτῆς, καὶ τη-
8 ρήσει σε. † Περιχαράκωσον αὐτὴν καὶ ὑψώ-
σει σε. † τίμησον αὐτὴν, ἵνα σε περιλά-
9 βῃ. † Ἵνα δῷ τῇ σῇ κεφαλῇ στέφανον χαρί-
των, † στεφάνῳ δὲ τρυφῆς ὑπερασπίσῃ σου.
10 † Ἄκουε υἱὲ καὶ δέξαι ἐμοὺς λόγους, † καὶ πλη-
θυνθήσεται (β) ἔτη ζωῆς σου, † ἵνα σοι
11 γένωνται πολλαὶ ὁδοὶ βίου. † Ὁδοὺς γὰρ σοφίας
διδάσκω σε, † ἐμβιβάζω δέ σε τροχιαῖς
12 ὀρθαῖς. † Ἐὰν γὰρ πορεύῃ, οὐ συγκλεισθή-
σεταί σου τὰ διαβήματα, † ἐὰν δὲ τρέχῃς,
13 οὐ κοπιάσεις. † Ἐπιλαβοῦ ἐμῆς παιδείας,
μὴ ἀφῇς, † (γ) ἀλλὰ φύλαξον αὐτὴν σε-
14 αυτῷ εἰς ζωήν σου. † Ὁδοὺς ἀσεβῶν μὴ
ἐπέλθῃς, † μηδὲ ζηλώσῃς ὁδοὺς παρανόμων.

CAP. IV.

AUdite pueri disciplinã patris, 1
et attendite, ut sciatis (a) cogitatio-
nem. Donum enim bonum donabo 2
vobis: meam (b) legem ne dereliн-
quatis. Filius enim fui & ego pa- 3
tri obediens, & (c) dilectus in fa-
cie matris. Qui dicebant, & (d) 4
docebant me; (e) Firmetur noster
sermo in tuo corde: custodi (f) præ-
cepta, (g) non obliviscaris. Neque 5
despexeris eloquium oris mei. Ne 6
dereliqueris eam, & (h) adhærebit
tibi: ama illam, & (i) servabit te.
Circunda illam, & exaltabit te. 8
Honora eam : ut te amplexetur:
ut det tibi capiti coronam gratia- 9
rum: Coronã autem (k) delicia-
rum protegat te. Audi fili, & sus- 10
cipe mea verba: & multiplicabun-
tur anni vitæ tuæ, ut tibi sint
multæ viæ vitæ. Vias enim sapi- 11
entiæ (l) doceo te : & ingredi te
facio (m) orbitis rectis. Si enim 12
ambulaveris, non (n) concludentur
tui gressus : si autem cucurreris,
non (o) laborabis. Tene meam di- 13
sciplinam: ne demittas : sed custo-
di eam tibi ad vitam tuam. Vias 14
impiorum ne intres : neque (p) ze-
laveris vias iniquorum.

MS. A. (α) † Κτῆσαι σοφίαν, κτῆσαι σύνεσιν, μὴ ἐπιλάθῃ, † μηδὲ ἐκκλείνῃς
ἀπὸ ῥημάτων στόματός μου. Μὴ ἐγκαταλείπῃς (β) σοι ἔτη (γ) φύλαξον

תרגום TARGUM.

21 בְּרִי לָא נֵוּל בְּעֵינָךְ נְטַר מַדְּעָא וְתַרְעִיתָא׃ וְיֶהֱוֹן חַיֵּי לְנַפְשָׁךְ וְחִסְדָּא לְצַוְּרָךְ׃ הֵידֵין
22 23 תֵּיזֵל בְּסַבְרָא בְּאָרְחָתָךְ וְרִגְלָךְ לָא תִתְקַל׃ אִם תִּשְׁכּוּב וְתִדְמוּךְ לָא תִדְחַל וְתִשְׁכַּב
24 וְתִבְסַם שִׁנְתָּךְ׃ לָא תִדְחַל מִן דַּחֲלְיָא וּמִן שִׁלְיָא וּמִן חִיסָא דְרַשִׁיעֵי כַּד יֵיתֵי׃ מְטוּל
25 26 דֶּאֱלָהָא יְהֵי בְסַעְדָּךְ וְיִנְטַר רִגְלָךְ וְלָא תִתְצִיד׃ לָא תִתְכְּלֵי לְמֶעְבַּד שַׁפִּיר כַּד אִית חֵילָא
27 בִּידָךְ לְמֶעְבַּד׃ לָא תֵימַר לְחַבְרָךְ אֱזֵל וְתוּב וּלְמְחַר אֶתֵּן וְאִית גַּבָּךְ׃ לָא תְחַשֵּׁב עַל
28 חַבְרָךְ בִּישְׁתָא וְהוּא יָתֵב עִמָּךְ בִּשְׁלָוְתָא׃ לָא תִנְצֵי עִם בַּר נָשָׁא מַגָּן אִם לָא עֲבַד לָךְ
29 30 בִּישָׁא׃ לָא תִתַּן בְּגַבְרָא חֲטוּפָא וְלָא תִצְבֵּי בְּכֻלְּהוֹן אָרְחָתֵיהּ׃ מְטוּל דִּמְרַחַק עַוְּתָא
31 32 מִן קֳדָם יְיָ וְעִם תְּרִיצַיָּא שׁוּעִיתֵיהּ׃ לְוָטְתָא דֶּאֱלָהָא בְּבָתֵּיהוֹן דְּרַשִׁיעֵי וּמַעֲמַדְהוֹן דְּצַדִּיקֵי
33 34 35 יְבָרֵךְ׃ וְלִמְמַקְנֵי נִסְחוֹף וּלְעַנְוְנֵי יִתֵּן חִסְדָּא׃ יְקָרָא חַכִּימֵי נַחְסְנָן וְסַכְלֵי נְקַבְּלוּן צַעֲרָא׃

ד

1 שְׁמַעוּ בְנַיָּא מַרְדּוּתָא דְאַב וְאַצִּיתוּ לְמֵדַע בִּיוּנָא׃ מְטוּל דְּיוּלְפָנָא טָבָא יְהַבִית לְכוֹן
2 3 וְנִימוּסִי לָא תִשְׁבְּקוּן׃ מְטוּל דִּבְרָא הֲוֵית לְאַבָּא מְפַנַּק וִיחִידָא קֳדָם אִמִּי׃ וְאַלְפַנִי וַאֲמַר
4 5 לִי יְיָ יִקַּמַּט מִלַּי לִבָּךְ נְטַר פִּקּוּדַי וֶחְיֵה׃ קְנֵה חָכְמְתָא קְנֵה בִיוּנָה לָא תִנְשֵׁי וְלָא תִסְטֵי מִן
6 מַאֲמְרֵי פוּמִי׃ וְלָא תִשְׁבְּקִיָּהּ וְתִנְטְרָךְ רַחֲמָהּ דְּתִשְׁגְּבִיָךְ׃ רֵישׁ חָכְמְתָא קְנֵי חָכְמְתָא וּבְכָל
7 8 קִנְיָנָךְ קְנֵה בִיוּנָה׃ חַבְּבִיהּ דִּי תְרוֹמְמִנָּךְ וְחַבְּקִיָּהּ דְּתִיקְּרָךְ׃ וְתְשִׁים בְּרֵישָׁךְ יָאֵיוּתָא
9 דְחִסְדָּא כְּלִילָא דְשַׁבְהוֹרָה עֲלָךְ׃ שְׁמַע בְּרִי וְקַבֵּל מִנִּי וְנִסְגְּיוּן שְׁנַיָּא דְחַיָּךְ׃ אָרְחָתָא
10 11 דְחָכְמְתָא אַלְּפִתָּךְ וְהַלֵּכְתָּךְ בִּשְׁבִילֵי תְרִיצֵי׃ כַּד תֵּיזֵל לָא תִתְעוּק אָרְחָךְ וְאִין תִרְהַט לָא
12 13 תִתְקַל׃ תִּתְחֲזֵק בְּמַרְדּוּתָא וְלָא תִרְפֵּא נַטְרִיָּהּ מְטוּל דְּהִיא חַיָּךְ׃ בְּאָרְחָא דְרַשִׁיעֵי
14 לָא תֵיזֵל וְלָא תִתַּן בְּאָרְחָא דְבִישִׁין׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Fili mi ne *vilescat in* oculis tuis : custodi scientiam & consilium. Et erunt 21
vita animæ tuæ, & gratia collo tuo. Tunc ambulabis in spe in viis tuis, 22
& pes tuus non offendet. Si cubueris & dormieris, non timebis : & si cu- 23
bueris, dulcis erit somnus tuus. Non timebis à pavore & repentino casu, 24
& à calamitate impiorum cùm venerit. Quoniam Deus erit in adjutorium 25
tuum, & custodiet pedem tuum ne capiaris. Ne desinas facere bonum, 26
dum valet manus tua ad faciendum. Ne dicas socio tuo : Vade, & re- 27
vertere ; & cras dabo , si habes apud te. Ne cogites contra proximum 28
tuum malum, cùm ipse habitet tecum in pace. Ne contendas cum homine 29
frustra, cum non fecerit tibi malum. Ne æmuleris virum raptorem, nec 30
velis omnes vias ejus. Quoniam abominabilis est iniquitas coram Domi- 31
no, & cum rectis est colloquium ejus. Maledictio Dei in domibus impio- 32
rum , et domicilium justorum benedicetur. Et illusores propellet, et hu- 33
milibus dabit gratiam. Gloriam sapientes hæreditabunt , et stulti susci- 34
pient tribulationem. 35

CAP. IV.

AUdite filii disciplinam patris, et attendite ut sciatis prudentiam. Quo- 1
niam doctrinam bonam dedi vobis, et legem meam ne derelinquatis. 2
Quoniam filius fui patri meo , delicatus et unicus coram matre mea. 3
Et docebant me, et dixit mihi Dominus : Apprehendat cor tuum verba 4
mea : custodi præcepta mea, et vives. Posside sapientiam, posside pru- 5
dentiam, ne obliviscaris, nec declines à sermonibus oris mei. Neque di- 6
mittas eam , et custodiet te ; dilige eam ut protegat te. Initio sapientiæ 7
posside sapientiam, et in omnibus possessionibus tuis posside intelligen- 8
tiam. Dilige eam ut exaltet te; et amplexare eam ut glorificet te. Et po- 9
net in capite tuo pulchritudinem gratiæ , corona splendoris erit super te. 10
Audi fili mi, et suscipe à me ; et multiplicabuntur anni vitæ tuæ. Vias sa- 11
pentiæ docebo te, et deducam te in semitis rectis. Cùm ambulaveris, non 12
arctabitur via tua ; et si cucurreris, non offendes. Apprehende discipli- 13
nam, nec dimittas : custodi eam, quoniam ipsa est vita tua. In via impio- 14
rum ne ambules , nec æmuleris viam malorum.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

21 * ܒܪܝ. ܠܐ ܬܒܐܫ ܡܛܪܬܝ ܒܥܝܢܝܟ. ܛܪ ܡܠܟܝ ܘܬܪܥܝܬܝ. * ܘܢܗܘܘܢ ܚܝܐ ܠܢܦܫܟ ܘܛܝܒܘܬܐ
22 ܠܨܘܪܟ. * ܗܝܕܝܢ ܬܗܠܟ ܒܐܘܪܚܟ ܒܬܘܟܠܢܐ. ܘܪܓܠܟ ܠܐ ܬܬܩܠ. * ܘܐܢ ܬܕܡܟ ܠܐ ܬܕܚܠ.
23 ܘܬܫܟܘܒ ܘܢܚܡܝܡ ܠܟ ܫܢܬܟ. * ܘܠܐ ܬܕܚܠ ܡܢ ܕܘܘܕܐ ܕܡܢ ܫܠܝ. ܘܡܢ ܒܙܬܐ
24 ܕܪܫܝܥܐ. ܡܐ ܕܬܐܬܐ. * ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܢܗܘܐ ܥܡܟ. ܘܢܛܪ ܪܓܠܟ ܕܠܐ ܬܬܬܨܕ. * ܠܐ ܬܬܒܛܠ
25 ܡܢ ܠܡܥܒܕ ܛܒܬܐ. ܥܕܡܐ ܕܡܫܟܚܐ ܐܝܕܝܟ ܠܡܥܒܕ. * ܘܡܐ ܕܐܝܬ ܠܟ. ܠܐ ܬܐܡܪ ܠܚܒܪܟ
26 ܙܠ ܘܬܘܒ ܬܐ ܡܚܪ. ܘܐܬܠ ܠܟ. * ܠܐ ܬܬܢܟܠ ܒܝܫܬܐ ܥܠ ܚܒܪܟ ܕܝܬܒ ܥܡܟ ܒܫܠܡܐ.
27 * ܠܐ ܬܕܘܢ ܥܡ ܒܪܢܫܐ ܡܓܢ. * ܘܠܐ ܬܛܢ ܒܓܒܪܐ ܥܘܠܐ. ܘܠܐ ܬܨܒܐ ܒܟܠܗܝܢ ܐܘܪܚܬܗ.
28 * ܡܛܠ ܕܡܣܠܝܐ ܥܘܠܐ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܡܫܬܥܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܥܡ ܬܪܝܨܐ. * ܠܘܛܬܗ ܕܡܪܝܐ
29 ܒܒܬܝܗܘܢ ܕܥܘܠܐ. ܘܡܫܪܝܗܘܢ ܕܙܕܝܩܐ ܢܒܪܟ. * ܘܢܣܚܘܦ ܠܡܒܙܚܢܐ. ܘܥܡ ܚܟܝܡܐ
30 ܢܪܚܡ. * ܐܝܩܪܐ ܢܐܪܬܘܢ ܚܟܝܡܐ. ܘܫܟܠܐ ܢܩܒܠܘܢ ܨܥܪܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܕ̄ *
31
32
33
34
35

1 * ܫܡܥܘ ܒܢܝܐ ܡܪܕܘܬܗ ܕܐܒܐ. ܘܨܘܬܘ ܠܡܕܥ ܣܘܟܠܐ. * ܡܛܠ ܕܡܠܦܢܘܬܐ ܛܒܬܐ ܝܗܒܬ
2 ܠܟܘܢ. ܢܡܘܣܝ ܠܐ ܬܫܒܩܘܢ. * ܒܪܐ ܓܝܪ ܗܘܝܬ ܠܐܒܝ ܪܟܝܟܐ. ܘܝܚܝܕܝܐ ܩܕܡ ܐܡܝ.
3 * ܘܐܠܦܢܝ ܘܐܡܪ ܠܝ. ܢܫܪܪ ܡܠܬܝ ܒܠܒܟ. ܘܛܪ ܦܘܩܕܢܝ ܘܬܚܐ. ܘܢܡܘܣܝ ܐܝܟ
4 ܒܒܬܐ ܕܥܝܢܐ. * ܩܢܝ ܚܟܡܬܐ ܘܩܢܝ ܣܘܟܠܐ. ܘܠܐ ܬܣܛܐ ܡܢ ܡܐܡܪܐ ܕܦܘܡܝ. * ܠܐ
5 ܬܫܒܩܝܗ ܕܬܛܪܟ. ܘܪܚܡܝܗ ܕܬܦܨܝܟ. * ܪܫ ܚܟܡܬܐ. ܩܢܝ ܚܟܡܬܐ. ܘܒܟܠܗ ܩܢܝܢܟ
6 ܩܢܝ ܣܘܟܠܐ. * ܒܝܩܪܝܗ ܕܬܪܝܡܟ. ܘܓܦܘܦܝܗ ܕܬܫܒܚܟ. * ܘܬܬܠ ܠܪܝܫܟ ܠܒܘܫܐ ܕܛܝܒܘܬܐ.
7 ܘܒܟܠܝܠܐ ܕܫܘܒܚܐ ܬܣܡܟܟ. * ܫܡܥ ܒܪܝ. ܘܩܒܠ ܡܠܝ. ܘܢܣܓܘܢ ܫܢܝܐ ܕܚܝܝܟ.
8 * ܐܘܪܚܐ ܕܚܟܡܬܐ ܐܠܦܟ. ܘܐܕܒܪܟ ܒܫܒܝܠܐ ܬܪܝܨܐ. * ܘܡܐ ܕܡܗܠܟ ܐܢܬ. ܠܐ
9 ܢܬܥܩܢ ܗܠܟܬܟ. ܘܐܢ ܬܪܗܛ ܠܐ ܬܬܬܩܠ. * ܐܚܘܕ ܡܪܕܘܬܝ. ܘܠܐ ܬܫܒܩܝܗ. ܛܪܝܗ.
10 ܡܛܠ ܕܗܝ ܚܝܝܟ. * ܒܐܘܪܚܐ ܕܚܛܝܐ ܠܐ ܬܐܙܠ. ܘܠܐ ܬܛܢ ܒܐܘܪܚܐ ܕܪܫܝܥܐ.
11
12
13
14

Fili mi, ne vile ſit in oculis tuis cuſtodire do- 21
ctrinā meam & conſilia mea; Erit enim vita 22
animæ tuæ, & benevolentia collo tuo. Et 23
tunc gradiêris in itineribus tuis cōfidenter,&
pede tuo non impinges. Et dormies, & non 24
timebis:& cubabis,eritq; ſuavis tibi ſomnus
tu°. Et non timebis perturbationē repentinā, 25
& impetū ſceleſtorū,cùm ingruerit; Quoniā 26
Dn̄s erit tecū,& cuſtodiet pedē tuū ne capiatur.
Ne deſiſtas operari bonū,quandiù valent 27
manus tuæ operari. Et cùm habes, ne dicas 28
ſodali tuo, Vade & veni iterū cras, et dabo
tibi. Ne moliaris malū contra ſociū tuū com- 29
morantē tecum pacificē. Ne litiges cum quo- 30
quam fraudulenter. Et ne æmuleris hominē 31
iniquum,nec approbes ullas vias ejus: Quo- 32
niam ſordidus eſt iniquus corā Dn̄o, & confabulationes
Dn̄i cum rectis. Maledictio Dn̄i 33
in domibus iniquorū, & habitationē juſtorū
benedicet. Deſtruétq; irriſores, et erga ſapi- 34
entes benevolus erit. Gloriam adipiſcentur 35
ſapientes,& ſtulti conſequentur ignominiam.

CAP. IIII.

ACquieſcite filii diſciplinæ patris, & au- 1
ſcultate ſcientiā et intelligentiā. Quo- 2
niā documentū bonum dedi vobis, legē meā
ne derelinquatis. Filius enim fui patri meo 3
tenellus,et unicus apud matrē meam: Et do- 4
cuit me, dixítque mihi, Firmū ſit verbū meū
in corde tuo,et ſerva præceptū meū,ut vivas,
et legē meā quaſi pupillam oculi. Poſſide ſa- 5
pientiā,et poſſide intelligentiā, neq; declines
ab eloquio oris mei. Ne deſeras eam, ut cu- 6
ſtodiat te: dilige illā, ut ſalvet te. Principiū 7
ſapientiæ, poſſide ſapientiā: et in omni poſ-
ſeſſione tua,acquire prudentiā. Blandire illi, 8
ut te exaltet:et amplectere eam, ut te glorifi-
cet, Imponátq; capiti tuo decus benevolen- 9
tiæ, et coronâ gloriæ te fulciat. Audi fili mi, 10
et accipe ſermones meos,et multiplicabuntur
anni vitæ tuæ. Vias ſapientiæ docebo te, et 11
ducā te per tramites rectos. Cúmq; ambula- 12
veris, non vacillabunt greſſus tui:et ſi cucur-
reris,non impinges. Tene diſciplinā meam, 13
et ne deſeras illam : conſerva eam, quoniam
ipſa eſt vita tua. In viam peccatorum ne ab- 14
eas, neque invideas itineri ſceleſtorum :

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

21 * يا بني لا تسقط هذه من امام عينيك * احفظ مشورتي ورايي * لتحيا نفسك * ويطوق على عنقك
22 نعمة * ويكون للحمانك شفاء * واهتماما بعظامك * لتذهب في جميع طرقك واثقا في سلامة * وما
23 يعثر قدمك * وان جلست تكون غير خايف * وان نمت تنام نوما لذيذا * ولم تدهش من
24 جبانة بجزعة واردة * ولا من وثبات المنافقين متقاطرة * لان الرب يكون في طرقك * ويوطد
25 رجلك ليلا تتزعزع * لا تمتنع بان تفعل بالفقير احسانا ما دام في شيا تمكن يدك به * ولا تقل
26 عد الي راجعا فاعطيك غدا * وفي مكنتك ان تعمل الان معروفا * فانك لا تعلم ماذا يلده
27 اليوم المقبل * لا تنشي على صديقك الساكن معك المتوكل عليك اسواء * ولا تنو مجانا
28 ان تعادي انسانا لئلا يصنع بك سوا * لا تقتن عار الرجال الاردياء * ولا تسلكن طرايقهم * لان
29 كل من يتعدى الشريعة نجس قدام الرب * واما يجالس الصديقين * لعنة الله في منازل
30 المنافقين * ومساكن المقسطين تبارك * الرب يناصب المتكبرين * ويمنح المتواضعين
31 نعمة * الحكماء يرثون المجد * واما المنافقين فرفعوا هوانا * * الفصل الرابع *
32
33
34
35

1 * ايها الغلمان اسمعوا ادب ابيكم * واصغوا لتعرفوا فقها * لاني اهبي لكم هدية صالحة * ولا
2 تهملوا شريعتي * فاني كنت ابنا مطيعا لابي * ومحبوبا في وجه امي * فعلماني وقالا لي * فليرسخ
3 قولنا في قلبك * احفظ وصاياي * لا تنسها * لا تعرض عن كلام فمي * لا تهمل الحكمة فتنصرك *
4 * اعشقها فتحفظك * سيج حولها فتعليك * اكرمها لكيما تعضدك * ** * لتعطي راسك
5 اكليل النعيم * اسمع يا بني واقبل اقوالي * فتتكاثر لك سنو حياتك * لتتصير لك طرق عمرك
6 كثيرة * فاني اعلمك طرايق الحكمة * واسلك بك في مناهج مستقيمة * فانك ان سلكتها
7 فما تتعرقل خطواتك * ان حاضرت فيها فما تتعب * اتخذ ادبي ولا تتركه * احفظه لنفسك
9 في حياتك * طرق المنافقين لا تجي اليها * وعداة الشريعة لا تماثل طرايقهم *
10
11
12
13
14

Fili mi, ne cadant hæc è conſpectu oculo- 21
rum tuorum : ſerva conſilium meum, &
monitum meum, ut vivat anima tua, & 22
circundes collum tuum gratiâ, & ſit car-
nibus tuis ſanitas, & cura de oſſibus tuis.
ut ambules in omnibus viis tuis ſecurus in 23
tranquillitate, & non impingat pes tuus.
Et ſi ſederis, eris intrepidus : & ſi dormi- 24
eris, dormies ſomnum ſuavem : Et non 25
turbaberis à timore horrendo inſtante,neq;
ab invaſionibus impiorum dehiſcentibus.
Nam Dominus erit in viis tuis, & firma- 26
bitur pes tuus quominus nutet. Ne te re- 27
trahas à præſtando pauperi beneficium,
quandiu ſuppetit in manu tua aliquid quo
juves. Et ne dicas, Revertere ad me ite- 28
rum, daboque tibi cras, cùm ſit in poten-
tia tua ut modò conferas beneficium, quia
neſcis quid occurrat die venturâ. Ne ex- 29
cogites contra proximum tuum cohabitan-
tem tecum, confidentem tibi, mala: Et 30
ne velis gratis inimicari cuiquam, ne in-
ferat tibi malum. Ne poſſideas æmula- 31
tionem virorum malorum, & ne imiteris
ullo modo vias illorum : Quia quicun- 32
que tranſgreditur legem, immundus eſt co-
ram Domino,confidet autem Dominus *cum*
juſtis. Maledictio Dei in habitaculis im- 33
piorum, & tabernacula juſtorum benedi-
centur. Dominus reſiſtit ſuperbis, & hu- 34
milibus dat gratiam. Sapientes poſſide- 35
bunt gloriam, at verò ſtulti exaltantur
ad ignominiam.

CAP. IV.

O Pueri, audite diſciplinam patris ve- 1
ſtri, & attendite, ut cognoſcatis doctri-
nam. Quoniam ego præparo vobis mu- 2
nus bonum, ne negligatis legem meam. Nam 3
ego fui filius obediens patri meo, & ama-
tus in conſpectu matris meæ : Docebánt- 4
que me ambo, & dicebant mihi ; Firmiter
hereat ſermo noſter in corde tuo : cuſtodi
mandata mea : non obliviſcaris ea: Non 5
declines à ſermone oris mei : non negligas
ſapientiam, & ipſa te juvabit : Adama 6
eam, & ſervabit te ; circunſepi eam, &
exaltabit te : Honora eam, ut opituletur 7
tibi : ut det capiti tuo coronam deli- 9
tiarum. Audi fili mi, & ſuſcipe verba 10
mea, & augebuntur tibi anni vitæ tuæ, ut
plures tibi pateant ætatis tuæ viæ. Do- 11
cebo enim te vias ſapientiæ, & ducam te
per vias rectas, In quibus ſi ambulave- 12
ris, non implicabuntur greſſus tui : ſi am-
plectaris eas, non fatigaberis. Cape di- 13
ſciplinam meam, & ne eam derelinquas :
ſerva eam animæ tuæ in vita tua. Ad 14
vias impiorum ne accedas, & legis tranſ-
greſſorum vias ne imiteris.

מִשְׁלֵי׃ ה

.tranſi & , ea *deſuper* declina *: eâ in* tranſeas ne , eam Deſere
15 פְּרָעֵהוּ אַל־תַּעֲבָר־בּוֹ שְׂטֵה מֵעָלָיו וַעֲבוֹר׃
rapitur *&* ; maleſecerint niſi , dormiunt non Etenim
16 כִּי לֹא יִשְׁנוּ אִם־לֹא יָרֵעוּ וְנִגְזְלָה
panem *comederunt* Quia .fecerint ruere niſi , eorum ſomnus
17 שְׁנָתָם אִם־לֹא יַכְשׁוֹלוּ׃ כִּי לָחֲמוּ לֶחֶם
juſtorum ſemita Et *.bibent* rapinarum vinum & ;impietatis
18 רֶשַׁע וְיֵין חֲמָסִים יִשְׁתּוּ׃ וְאֹרַח צַדִּיקִים
.diem paratum ad uſque *illuminans &* , *vadens* , *ſplendens* lux veluti
כְּאוֹר נֹגַהּ הוֹלֵךְ וָאוֹר עַד־נְכוֹן הַיּוֹם׃
.corruent quid in *noverunt non* : caligo ſicut impiorum Via
19 דֶּרֶךְ רְשָׁעִים כָּאֲפֵלָה לֹא יָדְעוּ בַּמֶּה יִכָּשֵׁלוּ׃
.tuam aurem inclina mea eloquia ad : attende meis verbis , mi Fili
20 בְּנִי לִדְבָרַי הַקְשִׁיבָה לַאֲמָרַי הַט־אָזְנֶךָ׃
.tui cordis medio in ea cuſtodi : tuis oculis ab recedant Ne
21 אַל־יַלִּיזוּ מֵעֵינֶיךָ שָׁמְרֵם בְּתוֹךְ לְבָבֶךָ׃
ejus carni univerſæ & ; ea invenientibus *ipſa* *vitæ* Quia
22 כִּי־חַיִּים הֵם לְמֹצְאֵיהֶם וּלְכָל־בְּשָׂרוֹ
ipſo ex quia ; tuum cor cuſtodi cuſtodia omni *Ex* *.medela*
23 מַרְפֵּא׃ מִכָּל־מִשְׁמָר נְצֹר לִבֶּךָ כִּי מִמֶּנּוּ
pravitatem & ; oris perverſitatem te à Remove *.vitarum* exitus
24 תּוֹצְאוֹת חַיִּים׃ הָסֵר מִמְּךָ עִקְּשׁוּת פֶּה וּלְזוּת
; aſpiciant rectum ad tui Oculi .te à elonga labiorum
25 שְׂפָתַיִם הַרְחֵק מִמֶּךָּ׃ עֵינֶיךָ לְנֹכַח יַבִּיטוּ
; *tui pedis orbitam* Pondera .te coram dirigant tuæ palpebræ &
26 וְעַפְעַפֶּיךָ יַיְשִׁרוּ נֶגְדֶּךָ׃ פַּלֵּס מַעְגַּל רַגְלֶךָ
: ſiniſtram *&* ,dexteram declines Ne .ſtabilientur tuæ viæ omnes &
27 וְכָל־דְּרָכֶיךָ יִכֹּנוּ׃ אַל־תֵּט יָמִין וּשְׂמֹאול
.malo à tuum pedem remove
הָסֵר רַגְלְךָ מֵרָע׃

CAP. V. ה

.tuam aurem inclina meæ intelligentiæ : intende meæ ſapientiæ mi Fili
1 בְּנִי לְחָכְמָתִי הַקְשִׁיבָה לִתְבוּנָתִי הַט־אָזְנֶךָ׃
Quia .conſervent tua labia ſcientiam & ; *ſagacitates* *cuſtodiendum Ad*
2 3 לִשְׁמֹר מְזִמּוֹת וְדַעַת שְׂפָתֶיךָ יִנְצֹרוּ׃ כִּי
.ejus palatum oleo *præ* *lene* & ; extraneæ labia *ſtillabunt ſtillationem*
נֹפֶת תִּטֹּפְנָה שִׂפְתֵי זָרָה וְחָלָק מִשֶּׁמֶן חִכָּהּ׃
acutum ; abſinthium ſicut amarum ejus noviſſimum Et
4 וְאַחֲרִיתָהּ מָרָה כַלַּעֲנָה חַדָּה
infernum : mortem *deſcendentes* ejus Pedes *.acierum* gladius veluti
5 כְּחֶרֶב פִּיּוֹת׃ רַגְלֶיהָ יֹרְדוֹת מָוֶת שְׁאוֹל
ſunt mobiles:ponderes fortè ſi *vitarum* Semitam *.ſuſtentabunt* ejus greſſus
6 צְעָדֶיהָ יִתְמֹכוּ׃ אֹרַח חַיִּים פֶּן־תְּפַלֵּס נָעוּ
ne & ; mihi *audite* filii nunc Et .ſcies non , ejus *orbitæ*
7 מַעְגְּלֹתֶיהָ לֹא תֵדָע׃ וְעַתָּה בָנִים שִׁמְעוּ־לִי וְאַל־
ne & ; tuam viam ea *deſuper* longè Fac .mei oris eloquiis ab recedatis
8 תָּסוּרוּ מֵאִמְרֵי־פִי׃ הַרְחֵק מֵעָלֶיהָ דַרְכֶּךָ וְאַל־
alienis des fortè Ne .ejus domus *oſtium* *ad* appropinques
9 תִּקְרַב אֶל־פֶּתַח בֵּיתָהּ׃ פֶּן־תִּתֵּן לַאֲחֵרִים
alieni ſaturentur fortè Ne .crudeli tuos annos & ; tuum decorem
10 הוֹדֶךָ וּשְׁנֹתֶיךָ לְאַכְזָרִי׃ פֶּן־יִשְׂבְּעוּ זָרִים
; tuo noviſſimo in rugias Et .aliena domo in tui *dolores* & ; tuo robore
11 כֹּחֶךָ וַעֲצָבֶיךָ בְּבֵית נָכְרִי׃ וְנָהַמְתָּ בְאַחֲרִיתֶךָ
Quomodo , dicas Et .tuum corpus & , tuam carnem *conſumendo in*
12 בִּכְלוֹת בְּשָׂרְךָ וּשְׁאֵרֶךָ׃ וְאָמַרְתָּ אֵיךְ
? meum cor ſprevit increpationem & ; eruditionem odivi
שָׂנֵאתִי מוּסָר וְתוֹכַחַת נָאַץ לִבִּי׃

Verſio VULG. LAT.

15 Fuge ab ea, nec tranſeas per il-
16 lam: declina, & deſere eã. Non
enim dormiunt niſi malefece-
rint: & rapitur ſomnus ab eis
17 niſi ſupplantaverint. Comedunt
panem impietatis, & vi-
18 num iniquitatis bibunt. Juſtorum
autem ſemita, quaſi lux
ſplendens, procedit & creſcit
19 uſque ad perfectam diem. Via
impiorum tenebroſa: neſciunt
20 ubi corruant. Fili mi, auſculta
ſermones meos, & ad eloquia
21 mea inclina aurem tuam. Ne
recedant ab oculis tuis, cuſtodi
22 ea in medio cordis tui: Vita
enim ſunt invenientibus ea, &
23 univerſæ carni ſanitas. Omni
cuſtodiâ ſerva cor tuum, quia
24 ex ipſo vita procedit. Remove
à te os pravum, & detrahentia
labia ſint procul à te.
25 Oculi tui rectâ videant, & palpebræ
tuæ præcedant greſſus
26 tuos. Dirige ſemitam pedibus
tuis, & omnes viæ tuæ ſtabili-
27 entur. Ne declines ad dexteram,
neque ad ſiniſtram: averte
pedem tuum à malo. Vias enim,
quæ à dextris ſunt, novit
Dominus: perverſæ verò ſunt
quæ à ſiniſtris ſunt. Ipſe autem
rectos faciet curſus tuos, itinera
autem tua in pace producet.

CAP. V.

1 Fili mi, attende ad ſapientiã
meam, & prudentiæ meæ incli-
2 na aurem tuam, Ut cuſtodias
cogitationes, & diſciplinam labia
tua conſervent. Ne atten-
3 das fallaciæ mulieris. Favus enim
diſtillans labia meretricis,
& nitidius oleo guttur ejus:
4 Noviſſima autem illius amara
quaſi abſynthiũ, & acuta quaſi
5 gladius biceps. Pedes ejus deſcendunt
in mortem, & ad inferos
greſſus illius penetrant.
6 Per ſemitam vitæ non ambulant,
vagi ſunt greſſus ejus, &
7 inveſtigabiles. Nunc ergò, fili
mi, audi me, & ne recedas à
8 verbis oris mei. Longè fac ab
ea viam tuam, & ne appropin-
9 ques forib⁹ domûs ejus. Ne des
alienis honorẽ tuum, & annos
10 tuos crudeli. Ne fortè impleantur
extranei viribus tuis, &
labores tui ſint in domo alie-
11 na, Et gemas in noviſſimis,
quando conſumpſeris carnes
tuas & corpus tuum, & dicas;
12 Cur deteſtatus ſum diſciplinam,
& increpationibus non
acquievit cor meum,

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

15 † Ἐν ᾧ ἂν τόπῳ στρατοπεδεύσωσι, μὴ ἐπέλθῃς
ἐκεῖ, † ἔκκλινον δὲ ἀπ' αὐτῶν καὶ παράλλαξον.
16 † Οὐ γὰρ μὴ ὑπνώσωσιν, ἐὰν μὴ
κακοποιήσωσι, † ἀφῄρηται ὁ ὕπνος (δ) αὐτῶν,
17 καὶ οὐ κοιμῶνται. † Οἵδε γὰρ σιτοῦνται
σῖτα ἀσεβείας, † οἴνῳ δὲ παρανόμῳ μεθύσκονται.
18 † Αἱ δὲ ὁδοὶ τῶν δικαίων ὁμοίως
φωτὶ λάμπουσι, † προπορεύονται καὶ φωτίζουσιν,
19 ἕως (ε) κατορθώσῃ ἡ ἡμέρα. † Αἱ
δὲ ὁδοὶ τῶν ἀσεβῶν σκολιαί, † οὐκ οἴδασι
20 πῶς προσκόπτουσιν. † Υἱὲ ἐμῇ ῥήσει
πρόσεχε, † τοῖς δὲ ἐμοῖς λόγοις παράβαλλε
21 σὸν οὖς. † Ὅπως μὴ ἐκλίπωσί σε
αἱ πηγαί σου, † φύλασσε αὐτὰς (ζ) ἐν
22 καρδίᾳ. † Ζωὴ γάρ ἐστι τοῖς εὑρίσκουσιν
23 αὐτάς, † καὶ πάσῃ (η) σαρκὶ ἴασις. † Πάσῃ
φυλακῇ τήρει σὴν καρδίαν, † ἐκ γὰρ
24 τούτων ἔξοδοι ζωῆς. † Περίελε σεαυτοῦ
σκολιὸν στόμα, † καὶ ἄδικα χείλη (θ) μακρὰν
25 ἀπὸ σοῦ ἄπωσαι. † Οἱ ὀφθαλμοί σου
ὀρθὰ βλεπέτωσαν, † τὰ δὲ βλέφαρά σου νευέτω
26 δίκαια. † Ὀρθὰς τροχιὰς ποίει σοῖς
27 ποσί, † καὶ τὰς ὁδούς σου κατεύθυνε. † Μὴ
ἐκκλίνῃς εἰς τὰ δεξιά, μηδὲ εἰς τὰ ἀριστερά,
† ἀπόστρεψον δὲ σὸν πόδα ἀπὸ
ὁδοῦ κακῆς· † ὁδοὺς γὰρ τὰς ἐκ δεξιῶν
οἶδεν ὁ Θεός, † διεστραμμέναι δέ εἰσιν αἱ
ἐξ ἀριστερῶν. † αὐτὸς δὲ ὀρθὰς ποιήσει τὰς
τροχιάς σου, † τὰς δὲ πορείας σου ἐν εἰρήνῃ
προάξει.

In quocunq; loco caſtrametati fuerint; 15
ne ſupervenias illuc: declina
autem ab eis, & (q) abſcede. Non 16
enim ſomnum capient, niſi malefecerint:
ablatus eſt ſomnus (r) eorum,
& non dormiunt. Hi enim e- 17
dunt (ſ) eſcas impietatis: (t) vino
autem iniquo inebriantur. Viæ au- 18
tem juſtorum ſimiliter, ut lux fulgent:
(u) procedunt, et illuminant,
donec (x) dirigat ſe dies. Viæ autẽ 19
impiorum tenebroſæ: non nôrunt
quomodò (y) offendunt. Fili, meo e- 20
loquio attende: & meis verbis (z)
appone aurem tuam. ut non (ω) 21
derelinquant te fontes tui: cuſtodi
eos in corde. Vita enim eſt in- 22
venientibus eos, & omni carni
ſanitas. (aa) Omni cuſtodiâ 23
ſerva cor tuum: ex his enim
(bb) exitus vitæ. (cc) Au- 24
fer à te (dd) pravum os: &
injuſta labia longè à te (ee) propelle.
Oculi (ff) tui rectâ vi- 25
deant, palpebræ tuæ annuant
juſta. (gg) Rectas orbitas fac 26
tuis pedibus: & vias tuas (hh)
dirige. Ne declines in dextera, 27
neque in ſiniſtra: & averte pe-
dem tuum à via mala. Vias
enim quæ à dextris, novit De-
us: perverſæ autem ſunt, quæ
à ſiniſtris. Ipſe autem rectas faciet
orbitas tuas: & greſſus tuos
in pace promovebit.

MS. A. (δ) ἀπ' αὐτῶν, οὐ κοιμῶνται. (ε) κατορθώσῃ (ζ) ἐν σῇ καρδίᾳ.
(η) σαρκὶ αὐτοῦ ἴασις. (θ) ἀπὸ σοῦ μακρὰν ἄπωσον.

ΚΕΦ. ε'.

1 † Υἱὲ, ἐμῇ σοφίᾳ πρόσεχε, † ἐμοῖς δὲ
2 λόγοις παράβαλλε σὸν οὖς, † Ἵνα φυλάξῃς
ἔννοιαν ἀγαθήν· (α) † αἴσθησις δὲ ἐμῶν
χειλέων (β) ἐντέλλεταί σοι. † μὴ πρόσεχε
3 φαύλῃ γυναικί. † Μέλι γὰρ ἀποστάζει
ἀπὸ χειλέων γυναικὸς πόρνης, † ἣ πρὸς
4 καιρὸν λιπαίνει σὸν φάρυγγα, † (ϛ) Ὕστερον
μέντοι πικρότερον χολῆς εὑρήσεις, † καὶ
5 ἠκονημένον μᾶλλον μαχαίρας διστόμου. † Τῆς
γὰρ ἀφροσύνης οἱ πόδες κατάγουσι τοὺς
χρωμένους αὐτῇ μετὰ θανάτου εἰς τὸν ᾅδην,
6 † τὰ δὲ ἴχνη αὐτῆς οὐκ ἐρείδεται. † Ὁδοὺς
γὰρ ζωῆς οὐκ ἐπέρχεται, † σφαλεραὶ δὲ αἱ
7 τροχιαὶ αὐτῆς, καὶ οὐκ (δ) εὔγνωστοι. † Νῦν
οὖν υἱὲ ἄκουέ μου, † καὶ μὴ ἀκύρους (ε) ποιήσεις
8 ἐμοὺς λόγους. † Μακρὰν ποίησον ἀπ' αὐτῆς
σὴν ὁδόν· † μὴ ἐγγίσῃς πρὸς θύραις
9 οἴκων αὐτῆς, † Ἵνα μὴ πρόῃ ἄλλοις ζωήν
10 σου, † καὶ σὸν βίον ἀνελεήμοσιν· † (ζ) Ἵνα
μὴ πλησθῶσιν ἀλλότριοι σῆς ἰσχύος, † οἱ δὲ
σοὶ πόνοι εἰς οἴκους ἀλλοτρίων (η) ἔλθωσι·
11 † Καὶ μεταμεληθήσῃ ἐπ' ἐσχάτων, † ἡνίκα
ἂν κατατριβῶσι σάρκες σώματός σου, † καὶ
12 ἐρεῖς, Πῶς ἐμίσησα παιδείαν, † καὶ ἐλέγχους
ἐξέκλινεν ἡ καρδία μου;

CAP. V.

Fili, meæ ſapientiæ attende: & 1
(a) meis ſermonibus appone aurem
tuam; ut cuſtodias (b) cogitati- 2
*onem bonam. * Senſus autem meorum*
labiorum mandat tibi. Noli
intendere fallaci mulieri. Mel e- 3
nim deſtillat à labiis mulieris (c)
fornicariæ: (d) quæ ad temp⁹ impinguat
fauces tuas: Poſteà verò (e) 4
amariorem felle invenies, & acu-
tam magis gladio bicipiti. Im- 5
prudentiæ enim pedes deducunt
utentes eâ (f) cum morte ad in-
fernum: & veſtigia ejus non fir-
mantur. Vias enim vitæ non in- 6
greditur: lubricæ autem (g) or-
bitæ ejus, & non benè veſtigabi-
les. Nunc igitur, fili, audi me: & 7
(h) ne irritos facias ſermones me-
os. Longè fac ab ea viam tuam: 8
ne appropinques ad januas domo-
rum ejus: ut non (i) prodat aliis 9
vitam tuam, & (k) ætatem tuam
immitibus: ut non impleantur a- 10
lieni fortitudine tuã, & labores
tui in domos (l) alienorum veniant:
Et (m) pœnitebit te in (n) noviſ- 11
ſimis, quando contritæ fuerint car-
nes corporis tui: et dices; Quomodò 12
odio habui diſciplinam, et increpa-
tiones (o) devitavit cor meum?

MS. A. (α) αἴσθησιν (β) ἐντέλλομαί σοι. (ϛ) ὕστερον δὲ πικρότερον (δ) * εὔγνωστοι. (ε)
ποιήσῃς (ζ) Ἵνα πλησθῶσιν (η) εἰσέλθωσιν, καὶ μὴ μεταμεληθῇς ἐπ' ἐσχάτων,

תרגום TARGUM.

15 אֲרֵשׁ וְלָא תֶעְבַּר עִמְּהוֹן סְטֵי וַעֲבַר מִנְּהוֹן׃ לָא דְמָכִין עַד מָה דְּמַבְאֲשִׁין וּפְרִידָא
16 17 שִׁנְתְּהוֹן עַד מָה דְּעָבְדִין תַּקְלָא׃ דְּמֵיכַלְתְּהוֹן מֵיכַלְתָּא דְרַשִׁיעֵי וְחַמְרָא דַחֲטוֹפַיָּא
18 שָׁתְיָן׃ וְאָרְחָא דְצַדִּיקֵי כִּנְהוֹרָא דְמַזְהַר וְאָזֵל נַהֲרֵיהּ עַד מָה דְתַקִּין יוֹמָא׃ וְאָרְחָא
16 20 דְרַשִׁיעֵי חֲבִירָא וְלָא יָדְעִין בְּמָנָא מִתְתַּקְלִין׃ בְּרִי לְמִלַּי אֲצֵית וּלְמַאמְרַי צְלֵי
21 22 אוּדְנָךְ׃ לָא נֵזְלָן בְּעַיְנָךְ נַטְרִנּוּן בְּגַוֵּיהּ דְּלִבָּךְ׃ מְטוּל דְּחַיֵּי אִנּוּן לְמַן דְּמַשְׁכַּח לְהוֹן
23 וּלְכוּלָּא בִשְׂרֵיהּ מַאְסֵי׃ מִכָּל זְהוֹרָא נְטַר לִבָּךְ מְטוּל דְּמִנֵּיהּ הוּא מַפָּקְנָא דְחַיֵּי׃
24 25 אַעְבַּר מִנָּךְ עִקּוּמָא דְפוּמָא וְעַקְתָא דְסִפְוָתָא אַרְחֵק מִנָּךְ׃ עַיְנָךְ בְּתְרִיצוּתָא נֵאוֹרָן
26 וְתִמְּרָיךְ נִתְרְצוּן לְקוּבְלָךְ׃ אַעְבַּר רִגְלָךְ מִשְּׁבִילֵי בִישֵׁי וְכֻלְּהוֹן אָרְחָתָךְ מְתַקְּנָן׃ לָא
27 תִסְטֵי לְיָמִינָא וְלִשְׂמָאלָא אַעְבַּר רִגְלָךְ מִן בִּישְׁתָא׃

ה

1 בְּרִי לְחָכְמְתִי צִיְּרַת לְבִיּוּנִי צְלֵי אֻדְנָךְ׃ דְּתִזְדְּהַר בְּתַרְעִיתָא וְדַעְתָּא שִׂפְוָתָךְ נִנְטְרָן׃
2 3 מְטוּל דְּכַבְרִיתָא מְנַטְּפָן שִׂפְוָתָא דְנוּכְרֵיתָא וּשְׁעִיעַ מִן מִשְׁחָא חִכָּהּ׃ וְאַחֲרִיתָהּ
4 מְרִירָא הֵיךְ גִּידָא חֲרִיפָא מִן סַיְפָא דִתְרֵין פּוּמִין׃ רַגְלָהּ נָחְתָן לְמוֹתָא שְׁיוֹל
5 6 הַלְכָתְהָא מְסַמְּכָן׃ בְּאָרְחָא דְחַיֵּי לָא דָרְכָא מְטַלְטְלִין שְׁבִילָהָא וְלָא יָדְעָה׃
7 8 וְהַשְׁתָּא בְנַיָּא שְׁמַעוּן לִי וְלָא תִסְטוּן מִן מֵימְרֵיהּ דְּפוּמִי׃ אַרְחֵק מִנָּהּ אָרְחָךְ וְלָא
9 תִקְרֵב לְתַרְעָא דְבֵיתָהּ׃ דְּלָא תִתֵּן לְאָחֳרָנֵי חֵילָךְ וּשְׁנָיךְ לְנוּכְרָאִין׃ דְּלָא נִשְׂבְּעוּן
10 11 נוּכְרָאֵי חֵילָךְ וְלֵעוּתָךְ תֵּעוֹל לְבֵיתָא דְאָחֳרָנֵי׃ וְתִנְהוֹם בְּסוֹפָךְ עַד מָה דְיִגְמַר
12 בִּשְׂרָךְ וְגוּשְׁמָךְ׃ וְתֵימַר הֵיכְנָא סְנֵית מַרְדּוּתָא וּמַכְסָנוּתָא אַשְׁלֵי לִבִּי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Recede, nec tranſeas cum eis: declina, & tranſi ab eis. Quoniam non 15
dormiunt, donec malefaciant, nec ſolvitur ſomnus eorum, donec ponant 16
ſcandalum. Quoniam cibus eorum, cibus eſt impiorum, & vinum rapto- 17
rum bibunt. Via autem juſtorum quaſi lux ſplendens, vadítque lux ejus 18
uſque ad perfectum diem. Via autem impiorum tenebroſa: neſciúntque 19
in quo offendunt. Fili mi auſculta ſermones meos, & ad verba mea incli- 20
na aurem tuam. Ne recedant ab oculis tuis; cuſtodi ea in medio cordis 21
tui. Quoniam vita ſunt illi qui invenit ea: omni carni ejus ſanitas. Ab 22
omni monitione cuſtodi cor tuum, quoniam ab ipſo exitus vitæ. Tranſ- 23
fer à te os pravum; detractionem labiorum longè fac à te. Oculi tui 24
recta videant, & palpebræ tuæ dirigantur contra te. Transfer pedem tu- 25
um à ſemitis malis, & omnes viæ tuæ dirigentur. Ne declines ad dexte- 26
ram, neque ad ſiniſtram: transfer pedem tuum à malo. 27

CAP. V.

Fili mi ſapientiæ meæ attende, ad intelligentiam meam inclina aurem 1
tuam. Ut admonitus ſis in conſilio, & ſcientiam labia tua conſervent. 2
Quoniam favum diſtillant labia extraneæ, & lenius oleo eſt guttur ejus. 3
Noviſſimum autem illius amarum, ſicut abſinthium, acutius gladio anci- 4
piti. Pedes ejus deſcendunt ad mortem: ad infernum greſſus ejus per- 5
veniunt. In via vitæ non ambulat: inſtabiles ſunt ſemitæ ejus, & neſcit. 6
Et nunc filii audite me, & ne declinetis à verbo oris mei. Longè fac ab 7
ea viam tuam, & ne appropinques portæ domus ejus. Ut non des aliis 8
virtutem tuam, & annos tuos alienis. Ne ſatientur extranei viribus tuis, 9
& laborem tuum introducas in domum alienam. Et gemas in noviſſimo 10
tuo, donec conſumpta fuerit caro tua & corpus tuum. Et dices: Quo- 11
modo odi diſciplinam, & eruditionem execratum eſt cor meum! 12

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

15 * ܘܒܐܬܪܐ ܕܫܪܝܢ ܠܐ ܬܥܒܪ ܒܗ. ܐܠܐ ܣܛܝ ܘܥܒܪ ܡܢܗ. *ܠܐ ܓܝܪ ܕܡܟܝܢ. ܥܕܡܐ ܕܥܒܕܝܢ
16 ܒܝܫܬܐ. ܘܥܒܪܐ ܫܢܬܗܘܢ ܥܕܡܐ ܕܥܒܕܝܢ ܨܒܝܢܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܡܐܟܘܠܬܗܘܢ.
17 ܡܐܟܘܠܬܐ ܗܝ ܕܥܘܠܐ. ܘܚܡܪܐ ܕܢܟܠܐ ܫܬܝܢ. * ܐܘܪܚܐ ܕܝܢ ܕܙܕܝܩܐ ܐܝܟ ܢܘܗܪܐ ܡܢܗܪܐ. ܘܐܙܠܐ
18 ܢܘܗܪܗ ܥܕܡܐ ܕܩܐܡ ܝܘܡܐ. * ܐܘܪܚܐ ܕܝܢ ܕܪܫܝܥܐ ܚܫܘܟܐ ܗܝ. ܘܠܐ ܝܕܥܝܢ ܒܡܢܐ ܡܬܬܩܠܝܢ.
19 * ܒܪܝ. ܨܘܬ ܠܡܠܝ. ܘܠܡܐܡܪܝ ܐܪܟܢ ܐܕܢܟ. * ܠܐ ܢܬܒܣܪܘܢ ܒܥܝܢܝܟ. ܐܠܐ ܛܪ ܐܢܘܢ ܒܓܘܗ ܕܠܒܟ.
20 * ܡܛܠ ܕܚܝܐ ܐܢܘܢ ܠܡܢ ܕܡܫܟܚ ܠܗܘܢ. ܘܒܣܪܗ ܟܠܗ ܡܣܬܪܐ. * ܒܟܠ ܢܛܘܪ ܛܪ ܠܒܟ.
21 ܡܛܠ ܕܡܢܗ ܗܘ ܡܦܩܢܐ ܕܚܝܐ. * ܐܥܒܪ ܡܢܟ ܦܘܡܐ ܥܡܝܩܐ. ܘܪܢܝܐ ܕܢܟܠܐ. ܐܪܚܩ ܡܢ
22 ܣܦܘܬܟ. * ܥܝܢܝܟ ܬܚܙܝܢ ܬܪܝܨܘܬܐ. ܘܥܦܥܦܝܟ ܢܬܪܨܘܢ ܩܕܡܝܟ. * ܐܥܒܪ ܪܓܠܟ ܡܢ
23 ܫܒܝܠܐ ܒܝܫܐ. ܘܟܠܗܝܢ ܐܘܪܚܬܟ ܢܬܩܢܢ. * ܠܐ ܬܣܛܐ ܠܝܡܝܢܐ ܘܠܣܡܠܐ. ܐܠܐ ܐܥܒܪ
24 ܪܓܠܟ ܡܢ ܒܝܫܬܐ.
25 * ܩܦܠܐܘܢ * ܗ *
26 * ܒܪܝ. ܨܘܬ ܠܚܟܡܬܝ. ܘܠܡܐܡܪܝ
27 ܐܪܟܢ ܐܕܢܟ. * ܕܬܛܪ ܡܠܟܐ ܘܝܕܥܬܐ ܣܦܘܬܟ ܢܛܪܢ. * ܡܛܠ ܕܕܒܫܐ ܗܘ ܡܛܦܢ
1 ܣܦܘܬܗ ܕܢܘܟܪܝܬܐ. ܘܪܟܝܟܝܢ ܡܢ ܡܫܚܐ ܡܠܝܗ. * ܘܚܪܬܗܝܢ ܡܢ ܓܕܐ ܡܪܝܪܢ. ܚܪܝܦܐ
2 ܗܝ ܓܝܪ ܡܢ ܣܦܣܪܐ ܕܬܪܝܢ ܦܘܡܝܗ. * ܘܪܓܠܝܗ ܡܚܬܢ ܠܡܘܬܐ. ܫܝܘܠ ܡܣܡܟܐ
3 ܡܗܠܟܬܗ. * ܘܠܐ ܪܕܝܐ ܒܐܘܪܚܐ ܕܚܝܐ. ܛܥܝܢ ܓܝܪ ܫܒܝܠܝܗ. ܘܠܐ ܝܕܝܥܢ. * ܡܛܠ
4 ܗܢܐ. ܒܢܝ ܫܡܥܘܢܝ. ܘܠܐ ܬܣܛܘܢ ܡܢ ܡܐܡܪܐ ܕܦܘܡܝ. * ܐܪܚܩ ܡܢܗ ܐܘܪܚܟ. ܘܠܐ ܬܬܩܪܒ
5 ܠܬܪܥܐ ܕܒܝܬܗ. * ܕܠܐ ܬܬܠ ܠܐܚܪܢܐ ܚܝܠܟ. ܘܫܢܝܟ ܠܐܝܠܝܢ ܕܠܐ ܡܪܚܡܝܢ. * ܘܢܣܒܥܘܢ
6 ܢܘܟܪܝܐ ܚܝܠܟ. ܘܠܥܡܠܟ ܬܥܠ ܠܒܝܬܐ ܢܘܟܪܝܐ. * ܘܬܬܘܐ ܢܦܫܟ. ܟܕ ܢܣܦ
7 ܒܣܪܐ ܕܦܓܪܟ. * ܘܬܐܡܪ ܕܠܡܢܐ ܣܢܝܬ ܡܪܕܘܬܐ. ܘܡܟܣܢܘܬܐ ܐܣܠܝ ܠܒܝ.

Et per locum ubi morantur, ne tranſeas: ſed 15 diverte, & prætergredere illũ. Non enim dor- 16 miunt, quoad committant ſcelus: & recedit ſomnus eorum, quouſque exequantur voluntatem ſuam. Quoniam cibus eorum, cibus eſt 17 iniquitatis: & vinũ fraudis bibunt. Via verò 18 juſtorũ, quaſi lumen coruſcat, & progreditur lux ejus donec invaleſcat dies. Iter autẽ im- 19 piorum tenebroſũ eſt, & ignorant in quid impingant. Fili mi, auſculta verba mea, & ſer- 20 moni meo inclina aurem tuam. Ne vileſcant 21 in oculis tuis, ſed cuſtodi ea in penetralibus cordis tui. Quoniam vita ſunt ei qui repererit 22 illa, & carnem ſuam totam curat. Cum omni 23 cautela cuſtodi cor tuũ, quia ab ipſo eſt origo vitæ. Remove à te os profundum, & cogita- 24 tionem fraudulentã aliena à labiis tuis. Ocu- 25 li tui æquitatem reſpiciant, & palpebræ tuæ dirigant *viam tuam* ante te. Averte pedem 26 tuum à ſemitis pravis, & omnes viæ tuæ confirmabuntur. Ne declines dextrorſum aut ſi- 27 niſtrorſum, ſed amove pedem tuum à malo.

CAP. V.

Fili mi, auſculta ſapientiam meam, & ſer- 1 moni meo præbe aurem tuam: Ut cautè ſer- 2 ves conſilium, & ſcientiam labia tua cuſtodiant. Quia mel ſtillant labia extraneæ, & le- 3 niora ſunt oleo verba ejus, At finis eorum 4 abſinthio amariora. Acutior eſt enim gladio 5 duarum acierum, Et pedes ejus deducunt ad mortem. Infernus paſſus ejus fulcit, Et non 6 graditur in terra vitæ; vagæ ſunt enim ſemitæ ejus, & ignotæ. Itaque filii audite me, & ne 7 declinetis ab eloquio oris mei. Longè fac ab 8 ea viam tuam, & ne accedas ad oſtium domûs ejus: Ut non des aliis robur tuum, & annos 9 tuos iis qui non ſunt miſericordes: Et ſaturen- 10 tur exteri virib⁹ tuis, & laborẽ tuũ inferas in domũ alienam: Et in ſenectute tua pœniteat 11 animã tuã, cùm conſumpta fuerit caro corporis tui; Et dicas, Ad quid, eheu, odio habui eru- 12 ditionẽ, & increpationem ſprevit cor meum?

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

15 * في اي موضع نزلوا معسكرين لا تذهب اليه * ولا تحضر فيه * احج عنهم واستبذل صعقهم *
16 * فانهم ما ينامون ان لم يعملوا الشر * قد انتزع نومهم فما ينامون * لان الذين ياكلون طعام
17 النفاق يسكرون الخمر المتعدي الشريعة * فاما طرق المقسطين بهذه الصورة تتلالا بالنور
18 ويستضيون الي ان يقوم النهار * واما سبل المنافقين مظلمة فما يعلمون كيف يعثرون *
19 * يا بني اصغ الي قولي * ولتستلم اذنك كلماتي * حتي لا تنقص ينابيعك * احفظها في قلبك *
20 * فان حياة للذين يصادفونها * وشفاء لكل بشر * بكافة التحفظ احفظ قلبك * فان منه مخارج
21 الحياة * انزع منك الفم الملتوي * وابعد منك الشفتين الظالمتين بعيدا * وعيناك فلتبصر
22 امورا مستوية * واجفانك فلتومي اشاراتها مقسطة * واجعل لرجليك طرقا مقومة * وقوم
23 طرايقك * لا تجنحن الي الميامن ولا المياسر واردد رجلك من الطريق الردي * فان الله قد
24 عرف الطرق التي من الميامن * لان المناهج التي من المياسر معوجة هي * فاجعل انت طرايقك
25 مقومة * ومسالكك طرق لها في السلامة *
26 * الفصل الخامس *
27 * يا بني اصغ الي حكمتي * واجعل في سامعتيك اقوالي * لتحفظك ذكرا صالحا * فاوصي لك حس
1 شفتي * لا تصغ الي امراة طالحة * فان العسل يقطر من شفتي الامراة الزانية * يدسم حنكك
2 مدة يسيرة * ثم تجده اخيرا اشد مرارة من العلقم * ومرهفا اكثر من سيف ذي فمين *
3 * لان ارجل الغباوة تحدر الذين يستعملونها * وتحطهم بعد الموت الي الجحيم * واثارك ما تثبت *
4 * مناهجها خطرة * وليس معروفة سريعا * والان يا بني اسمع مني * ولا تنقض اقوالي *
5 * اجعل طريقك منها بعيدة * لا تدن الي ابواب منزلها * لئلا تدفع حياتك الي غيرك *
6 وعمرك الي من لا يرحمك * لئلا تشبع الغرباء من قوتك * وتدخل اتعابك الي منازل اجنبية *
7 * وتندم في اواخرك * حين تنسحق لحمان جسمك * فتقول كيف مقت الادب * وجنح قلبي
8 عن التوبيخات *

Quemcunque locum inhabitaverint tur- 15 *matim collecti, ne adeas, & in eo ne adſis. Declina ab eis, & profanum reputa clamorem eorum.* *Non enim dormiunt niſi* 16 *commiſerint malum. Jam ſublatus eſt ſomnus eorum, nec dormiunt: Quia qui* 17 *comedunt cibum impietatis, inebriantur vino tranſgrediente legem. At verò via* 18 *juſtorum hâc formâ ſplendeſcent luce, & fulgebunt donec erigatur dies. At ſemitæ* 19 *impiorum tenebroſæ ſunt, & neſciunt quomodo impingant. Fili mi, auſculta ſer-* 20 *monem meum, & percipiat auris tua verba mea,* *Ut ne deficiant fontes tui. Cu-* 21 *ſtodi eam in corde tuo: Quia eſt vita* 22 *omnibus invenientibus eam, & ſanitas univerſæ carni ſuæ. Omni cautelâ ſerva* 23 *cor tuum, quia ex ipſo ſunt origines vitæ. Depone à te os perverſum, & remove à te* 24 *labia iniqua procul. Et oculi tui videant* 25 *res æquas, & palpebræ tuæ annuant ſigna ſua juſta. Et ſtatue pedibus tuis vias* 26 *rectas, & dirige vias tuas. Ne declines* 27 *ad dexteras, nec ad ſiniſtras: & retrahe pedem tuum à ſemita mala. Deus enim novit vias quæ à dextris ſunt: quoniam viæ quæ ſunt à ſiniſtris, ſunt diſtortæ. Tu igitur ſtatue vias tuas rectas, & greſſus tuos dirige ad illas in pace.*

CAP. V.

Filii mi, attende ad ſapientiam meam, 1 *& colloca in auribus tuis ſermones meos, ut ſervare te faciant monitum bo-* 2 *num; nam te monebo prudentiam labiorum meorum. Ne præbeas aures mulieri improbæ,* *Quia mel ſtillat de labiis mu-* 3 *lieris fornicariæ: demulcet palatum tuum brevi tempore, Demum invenies illud a-* 4 *marum pluſquam abſinthium, & acutum magiſquam gladium ancipitem. Pedes enim imprudentiæ præcipitant il-* 5 *los qui eâ utuntur, & deprimunt ipſos poſt mortem ad infernum: & veſtigia tua non ſubſiſtent. Viæ ejus ſunt pericu-* 6 *loſæ, & non illico perceptibiles. Itaque* 7 *fili mi, acquieſce mihi, & ne violes ſermones meos. Fac viam tuam procul ab* 8 *ea: ne accedas ad januas domûs ejus, Ne* 9 *fortè tradas vitam tuam alteri, & ætatem tuam illi qui non miſeretur tui: Ne* 10 *fortè ſaturentur extranei viribus tuis, & ingrediantur labores tui habitacula aliena: Et te pœniteat in noviſſimis tuis,* 11 *dum conterentur carnes corporis tui, Di-* 12 *caſque; Quomodo deſpexi diſciplinam, & declinavit cor meum à correptionibus?*

משלי : ו

non me docentibus & : me docentium *voce in* *audivi* non Et
וְלֹא־שָׁמַעְתִּי בְּקוֹל מוֹרָי וּלְמְלַמְּדַי לֹא־ 13
: malo omni in *fui parum Quasi* ? meam aurem inclinavi
הִטִּיתִי אָזְנִי׃ כִּמְעַט הָיִיתִי בְכָל־רָע 14
; tua cisterna de *aquas* Bibe .*cœtus* & , ecclesiæ medio in
בְּתוֹךְ קָהָל וְעֵדָה׃ שְׁתֵה־מַיִם מִבּוֹרֶךָ 15
: foras tui fontes *Dispergantur* .tui putei medio de fluenta &
וְנוֹזְלִים מִתּוֹךְ בְּאֵרֶךָ׃ יָפֻצוּ מַעְיְנֹתֶיךָ חוּצָה 16
non & ; tibi soli tibi Sint .aquarum rivi plateis in
בָּרְחֹבוֹת פַּלְגֵי־מָיִם׃ יִהְיוּ־לְךָ לְבַדֶּךָ וְאֵין 17
uxore de lætare & ; benedicta tua vena Sit .tecum alienis
לְזָרִים אִתָּךְ׃ יְהִי־מְקוֹרְךָ בָרוּךְ וּשְׂמַח מֵאֵשֶׁת 18
ejus ubera , gratiæ ibix & , amorum Cerva .*tuarum adolescentiarum*
נְעוּרֶךָ׃ אַיֶּלֶת אֲהָבִים וְיַעֲלַת חֵן דַּדֶּיהָ 19
: jugiter *errabis* ejus amore in : tempore omni in te inebrient
יְרַוֻּךָ בְכָל־עֵת בְּאַהֲבָתָהּ תִּשְׁגֶּה תָמִיד׃
? extraneæ sinum *amplexaberis &* ; *extranea in* mi fili *errabis* quid ut Et
וְלָמָּה תִשְׁגֶּה בְנִי בְזָרָה וּתְחַבֵּק חֵק נָכְרִיָּה׃ 20
ejus *orbitas* omnes & ; viri viæ DOMINI oculis coram Quia
כִּי נֹכַח עֵינֵי יְהוָה דַּרְכֵי־אִישׁ וְכָל־מַעְגְּלֹתָיו 21
funibus *in* & : impium *eum* capient suæ Iniquitates .*ponderans*
מְפַלֵּס׃ עֲוֺנוֹתָיו יִלְכְּדֻנוֹ אֶת־הָרָשָׁע וּבְחַבְלֵי 22
multitudine in & ; *eruditione non in* morietur Ipse .tenebitur sui peccati
חַטָּאתוֹ יִתָּמֵךְ׃ הוּא יָמוּת בְּאֵין מוּסָר וּבְרֹב 23
.errabit suæ stultitiæ
אִוַּלְתּוֹ יִשְׁגֶּה׃

CAP. VI. ו

.*tuas volas* alieno defixisti : tuo *sodali* spopondisti si ,mi Fili
בְּנִי אִם־עָרַבְתָּ לְרֵעֶךָ תָּקַעְתָּ לַזָּר כַּפֶּיךָ׃ 1
.tui oris eloquiis in es captus ; tui oris verbis in es Illaqueatus
נוֹקַשְׁתָּ בְאִמְרֵי־פִיךָ נִלְכַּדְתָּ בְּאִמְרֵי־פִיךָ׃ 2
: tui *socii volam* in venisti quia , te erue & ,mi fili nunc hoc Fac
עֲשֵׂה זֹאת אֵיפוֹא בְּנִי וְהִנָּצֵל כִּי בָאתָ בְכַף־רֵעֶךָ 3
des Ne .tuos *sodales* robora & ; te *conculcandum præbe* , vade
לֵךְ הִתְרַפֵּס וּרְהַב רֵעֶיךָ׃ אַל־תִּתֵּן 4
te Erue .tuis palpebris dormitationem & ; tuis oculis somnum
שֵׁנָה לְעֵינֶיךָ וּתְנוּמָה לְעַפְעַפֶּיךָ׃ הִנָּצֵל 5
Vade .aucupis manu de avis sicut & ; manu de cerva tanquam
כִּצְבִי מִיָּד וּכְצִפּוֹר מִיַּד יָקוּשׁ׃ לֵךְ־ 6
Cui .*esto* sapiens & , ejus vias vide ; piger formicam ad
אֶל־נְמָלָה עָצֵל רְאֵה דְרָכֶיהָ וַחֲכָם׃ אֲשֶׁר 7
æstate in Parabit .dominus *&* , præfectus , *gubernator* ei non
אֵין־לָהּ קָצִין שֹׁטֵר וּמֹשֵׁל׃ תָּכִין בַּקַּיִץ 8
Usquequo .suam escam messe in congregat ; suum *panem*
לַחְמָהּ אָגְרָה בַקָּצִיר מַאֲכָלָהּ׃ עַד־מָתַי 9
, *somnorum Parum* ? tuo somno à surges quando ? *jacebis* piger
עָצֵל תִּשְׁכָּב מָתַי תָּקוּם מִשְּׁנָתֶךָ׃ מְעַט שֵׁנוֹת 10
.dormiendum ad manuum *complicationis parum* ; *dormitationum parum*
מְעַט תְּנוּמוֹת מְעַט חִבֻּק יָדַיִם לִשְׁכָּב׃
vir tanquam tuus defectus & ; tua *paupertas* viator tanquam veniet Et
וּבָא־כִמְהַלֵּךְ רֵאשֶׁךָ וּמַחְסֹרְךָ כְּאִישׁ 11
.*clypei*
מָגֵן׃

Versio VULG. LAT.

13 Nec audivi vocem docentium
me, & magistris non inclinavi
14 aurem meã? Penè fui in omni
malo, in medio ecclesiæ &
15 synagogæ. Bibe aquam de cisterna tua, et fluenta putei tui:
16 Deriventur fontes tui foràs, &
in plateis aquas tuas divide.
17 Habeto eas solus, nec sint alieni
18 participes tui. Sit vena
tua benedicta, & lætare cum
muliere adolescentiæ tuæ:
19 Cerva charissima, & gratissimus hinnulus: ubera ejus inebrient
te in omni tempore, in
amore ejus delectare jugiter.
20 Quarè seducêris, fili mi, ab aliena, & fovêris in sinu alterius?
21 Respicit Dominus vias hominis, & omnes gressus ejus considerat.
22 Iniquitates suæ capiunt impium, & funibus peccatorum suorũ constringitur.
23 Ipse morietur, quia non habuit disciplinam, & in multitudine stultitiæ suæ decipietur.

CAP. VI.

1 Fili mi, si spoponderis pro
amico tuo, defixisti apud ex-
2 traneum manum tuam, Illaqueatus es verbis oris tui, &
captus propriis sermonibus.
3 Fac ergò quod dico, fili mi, &
temetipsum libera: quia incidisti in manum proximi tui:
Discurre, festina, suscita amicum tuum:
4 Ne dederis somnum oculis tuis, nec dormi-
5 tent palpebræ tuæ. Eruere
quasi damula de manu, & quasi
6 avis de manu aucupis. Vade
ad formicam, ô piger, & considera vias ejus, & disce sa-
7 pientiam: Quæ cùm non habeat ducem, nec præcepto-
8 rem, nec principem, Parat in
æstate cibum sibi, & congregat
9 in messe quod comedat. Usquequò, piger, dormies? quando consurges è somno tuo?
10 Paululùm dormies, paululùm
dormitabis, paululùm con-
11 seres manus, ut dormias: Et
veniet tibi quasi viator, egestas, & pauperies quasi vir armatus. Si verò impiger fueris,
veniet ut fons messis tua, &
egestas longè fugiet à te.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

13 † Οὐκ ἤκουον φωνὴν παιδεύοντός με καὶ διδάσκοντός με, † οὐδὲ παρέβαλλον τὸ οὖς μου. †
14 Παρ' ὀλίγον ἐγενόμην ἐν παντὶ (θ) κακῷ, † ἐν
15 μέσῳ ἐκκλησίας καὶ συναγωγῆς. † Πῖνε ὕδατα ἀπὸ σῶν ἀγγείων, † καὶ ἀπὸ σῶν φρεάτων
16 πηγῆς. † (ι) Μὴ ὑπερεκχείσθω σοι ὕδατα ἐκ τῆς σῆς πηγῆς, † εἰς δὲ σὰς πλατείας
17 διαπορευέσθω τὰ σὰ ὕδατα. † Ἔστω σοι μόνῳ ὑπάρχοντα, † καὶ μηδεὶς ἀλλότριος μετασχέτω σοι.
18 † Ἡ πηγή σου τοῦ ὕδατος ἔστω σοι ἰδία, † καὶ συνευφραίνου μετὰ γυναικὸς τῆς
19 ἐκ νεότητός σου. † Ἔλαφος φιλίας καὶ πῶλος σῶν χαρίτων ὁμιλείτω σοι, † ἡ δὲ ἰδία ἡγείσθω σου καὶ συνέστω σοι ἐν παντὶ καιρῷ· † ἐν γὰρ (κ) τῇ ταύτης φιλίᾳ συμπεριφερόμενος,
20 πολλοστὸς ἔσῃ. † Μὴ πολὺς ἴσθι πρὸς ἀλλοτρίαν, † μηδὲ συνέχου ἀγκάλαις
21 (λ) τῆς μὴ ἰδίας. † Ἐνώπιον γάρ εἰσι τῶν τοῦ θεοῦ ὀφθαλμῶν ὁδοὶ ἀνδρός, † εἰς δὲ (μ) πάσας
22 τὰς τροχιὰς αὐτοῦ σκοπεύει. † Παρανομίαι ἄνδρα ἀγρεύουσι, † σειραῖς δὲ τῶν ἑαυτοῦ ἁμαρτιῶν
23 ἕκαστος σφίγγεται. † Οὗτος τελευτᾷ μετὰ ἀπαιδεύτων, † ἐκ δὲ πλήθους τῆς ἑαυτοῦ βιότητος (ν) ἐξερρίφη, † καὶ ἀπώλετο (ξ) δι' ἀφροσύνην.

MS. A. (θ) κακῷ μου, ἐμμέσῳ (ι) Ὑπερεκχείσθω σοι τὰ ὕδατα (κ) ταύτῃ τῇ φιλίᾳ (λ) ταῖς μὴ ἰδίαις. (μ) σὰς τροχιὰς αὐτοῦ σκοπεύει. (ν) ἐξερίφη, (ξ) διὰ

ΚΕΦ. ϛ'.

1 † Υἱὲ ἐὰν (α) ἐγγυήσῃ σὸν φίλον, † παρα-
2 δώσεις σὴν χεῖρα ἐχθρῷ. † Παγὶς γὰρ ἰσχυρὰ (β) ἀνδρὶ τὰ ἴδια χείλη, † καὶ ἁλίσκεται
3 χείλεσιν ἰδίου στόματος. † Ποίει υἱὲ ἃ ἐγώ σοι ἐντέλλομαι, καὶ σῴζου· † ἥκεις γὰρ εἰς χεῖρας κακῶν διὰ σὸν φίλον. † Ἴθι μὴ ἐκλυόμενος, † παρόξυνε δὲ καὶ τὸν φίλον σου ὃν
4 ἐνεγγυήσω. Μὴ δῷς ὕπνον σοῖς ὄμμασι, † μη-
5 δὲ ἐπινυστάξῃς σοῖς βλεφάροις, † Ἵνα σῴζῃ ὥσπερ δορκὰς ἐκ βρόχων, † καὶ ὥσπερ ὄρνεον
6 ἐκ παγίδος. † Ἴθι πρὸς τὸν μύρμηκα ὦ ὀκνηρέ, † καὶ ζήλωσον ἰδὼν τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ,
7 † καὶ γενοῦ ἐκείνου σοφώτερος. † (γ) Ἐκείνῳ γὰρ γεωργίου μὴ ὑπάρχοντος, † μηδὲ τὸν ἀναγκάζοντα ἔχων, † μηδὲ
8 ὑπὸ δεσπότην ὤν, † Ἑτοιμάζεται θέρους τὴν τροφήν, † πολλήν τε ἐν τῷ ἀμητῷ ποιεῖται τὴν παράθεσιν. † Ἢ πορεύθητι πρὸς τὴν μέλισσαν, † καὶ μάθε ὡς ἐργάτις ἐστί, † τήν τε ἐργασίαν ὡς σεμνὴν ποιεῖται. † ἧς τοὺς πόνους βασιλεῖς καὶ ἰδιῶται πρὸς (δ) ὑγίειαν προσφέρονται. † ποθεινὴ δέ ἐστι πᾶσι καὶ ἐπίδοξος, † καίπερ οὖσα τῇ ῥώμῃ ἀσθενής, † τὴν σοφίαν τιμήσασα
9 προήχθη. † Ἕως τίνος ὀκνηρὲ κατάκεισαι; † πότε δὲ ἐξ ὕπνου ἐγερθήσῃ; †
10 Ὀλίγον μὲν ὑπνοῖς, ὀλίγον δὲ κάθησαι, μικρὸν δὲ νυστάζεις, † ὀλίγον δὲ ἐναγκα-
11 λίζῃ χερσὶ στήθη. † Εἶτ' ἐμπαραγίνεταί σοι ὥσπερ κακὸς ὁδοιπόρος ἡ πενία, † καὶ ἡ ἔνδεια ὥσπερ ἀγαθὸς δρομεύς. † ἐὰν δὲ ἄοκνος ἧς, (ε) ἥξει ὥσπερ πηγὴ ὁ ἀμητός σου· † ἡ δὲ ἔνδεια, ὥσπερ κακὸς (ζ) δρομεὺς ἀπαυτομολήσει.

Non audiebam vocem (p) corripientis me, & docentiũ me, neq; (q) ad- 13
bibebam aurem meam. (r) Penè 14
fui in omni malo, in medio Ecclesiæ, & synagogæ. Bibe aquas 15
(s) de tuis vasis, & de (t) puteorum tuorum fonte: (u) Non 16
supereffundantur tibi aquæ extra tuum fontem, & in tuas plateas pertranseant aquæ tuæ.
Sint tibi soli possessæ: & nemo 17
alienus particeps sit tibi. Fons a- 18
quæ tuæ sit tibi proprius; & jocundare cum uxore, quæ à (x) juventute tua. Cervus amicitiæ, & 19
(y) pullus tuarũ gratiarũ confabuletur tecũ, & (z) propria ducat te, & adsit tibi in omni tempore. In hujus enim amicitia conversatus diuturnus eris. Ne multus 20
sis ad alienam, neque contineâris ulnis nõ propriæ. Sunt enim (ω) co- 21
ram Dei oculis viæ viri: & in omnes (aa) orbitas ejus speculatur. (bb) Iniquitates virum ca- 22
piunt: & (cc) catenis suorum peccatorum unusquisque (dd) constringitur. Hic moritur (ee) 23
cum iis qui non habent disciplinam, & ex multitudine (ff) vitæ suæ dejectus est, & periit propter imprudentiam.

CAP. VI.

Fili, si spoponderis (a) amicum 1
tuum; (b) trades manum tuam inimico. (c) Laqueus enim fortis 2
viro propria labia: & (d) capitur labiis proprii oris. Fac, fili, 3
quæ ego tibi mando, & salvare: venisti enim in manus malorum propter tuum amicum. (e) Esto non remissus, (f) stimula autem (g) & amicum tuum, quem spopondisti. Ne dederis (h) somnũ ocu- 4
lis tuis, (i) neq; indormites pal-
pebris tuis; ut salveris tanquàm 5
damula è laqueis, & tanquàm avis è (k) reti. (l) Vade ad for- 6
micam, ô piger, & æmulare videns vias ejus: & esto illâ sapientior. Nam cùm ei non sit a- 7
gellus, neque habeat (m) qui cogat, neque sub domino sit; Parat 8
æstate alimentum, & (n) multam in messe facit acervationem. Aut vade ad apem, & disce quomodò operaria est: operationem quoque quàm venerabilem (o) facit: cujus labores reges, & idiotæ, ad sanitatem afferunt. Appetibilis autem est omnibus, & clara, etiam cùm sit robore infirma, sapientiam honorans evecta est. (p)
Usquequò, piger, (q) jaces? quan- 9
do autem è somno (r) excitaberis? Paulùm quidem dormis, pau- 10
lùm autem sedes, parùm autem dormitas, paulùm autẽ (s) amplecteris manibus pectora: Deindè (t) 11
supervenit tibi, tanquã malus viator, paupertas, & egestas (u) tanquã bonus cursor. (x) Si autem impiger fueris, veniet tanquàm fons messis tua: egestas autem tanquàm malus cursor, aufugiet.

MS. A. (α) ἐγγύῃ (β) τὰ ἴδια χείλη ἀνδρί, (γ) Ἐκείνου (δ) ὑγίαν φέρονται. (ε) ἥξει σοι ὥσπερ (ζ) ἀνὴρ αὐτομολήσει.

תרגום TARGUM.*

ולא שמעית קלא דמרותי ולמלפני לא צלית אדני : עד כליל הוית לי בכל בישין 13 14
בגו כנשתא ועדתא : אשתה מיא מן גובך ורדיא מן בירך : נשפעון מעינך לברא 15
ובפתיי טיפי דמיא : יהוון לך לחודך ונוכראי לא נשתתפון עמך : יהוי מבועך בריך 16 17
וחדי מן אתת טליותך : איילתא דרחמותא ודיצותא דחסדא הונא אלף בכל זמן 18
וברחמותא תגרם תדירא : ולמה תשרגג ברי בנוכריתא אוף לא תחבק עובה 19 20
דאחריתא : מטול דקדם עינוי דאלהא אנון ארחתיה דגברא וכולהון שבילוי גלן 21
קדמוי : חובוי דרשיעא קמטין ליה ובחבלי דחטוי נתפכך : הוא ימות בלא מרדותא 22 23
ובסוגאי דשטיותיה נטעי :

ו

ברי אין ערבת לחברך אשלימתא לנוכראה ידך : אתצידתא במאמרא דפומך 1
אתאחדתא במאמרא דפומך : עביד היכנא בני ואתפצא מטול דנפלת ביד דחברך 2
אזיל גרג הביל חברך : לא תתן שנתא לעינך ונימתא לגביניך : דתתפצי היך טביא מן 3 4
נשבא והיך צפרא מן פוחא : אתדמא לשומשמנא עטלא חמי ארחתהון ואתחכם : 5 6
דלית לה חצדא היך אף לא סרכא ושליטא : מתקנא בקיטא לחמה וגבשא בחצדא 7
מיכלה : עד מה לאימת אנת דמיך אנת עטלא ולאימת קימת מן שנתך : קליל 8 9
שנתא קליל נומתא קליל תחבק ידך למדמכא : ותיתי ותדרוך מסכנותך וחוסרנך 10 11
היך גברא כשרא :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et non audivi vocem doctorum meorum, & magistris meis non in- 13
clinavi aurem meam. Penitus *fui mihimet in omnibus malis*, in me- 14
dio ecclesiæ & congregationis. Bibe aquam de cisterna tua, & flu- 15
enta de puteo tuo. Redundabunt fontes tui foris, & in plateis rivi aqua- 16
rum. Erunt tibi soli, & extranei non participabunt tecum. Erit fons 17
tuus benedictus: & lætare cum uxore adolescentiæ tuæ. Cerva amoris 18
& exultatio gratiæ: rationem disce in omni tempore, & in dilectionem 19
ejus incumbe semper. Et quare seduceris fili mi in aliena? neque etiam 20
amplexaberis sinum extraneæ. Quoniam in conspectu Dei sunt viæ vi- 21
ri, & omnes semitæ ejus manifestæ sunt coram eo. Peccata sua com- 22
prehendunt impium, & in funibus peccatorum suorum constringitur.
Ipse morietur absque disciplina, & in multitudine stultitiæ suæ errabit. 23

CAP. VI.

Fili mi si spoponderis pro amico tuo, promisisti solvere extraneo manu 1
tua; Illaqueatus es verbis oris tui: captus es sermonibus oris tui. Fac 2
hoc fili mi, & liberare: quia incidisti in manum proximi tui; vade susci- 3
ta velociter amicum tuum. Ne des somnum oculis tuis, neque dormitati- 4
onem palpebris tuis. Ut evadas quasi damula de pedica, & sicut avis de 5
laqueo. Similis esto formicæ, piger; vide vias ejus, & sapiens esto. Quæ 6
non habet messem, sicut nec ducem, neque dominatorem; Præparat in 7
æstate cibum suum, & coacervat in messe escam sibi. Usquequo piger tu 8
dormis, & quando consurges de somno tuo? Parum somni [*erit tibi*,] 9
& parum dormitationis, paululum complicabis manus tuas ad dormien- 10
dum. Et veniet & incedet egestas tua, & indigentia tua, sicut vir rectus. 11

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

13 * ܘܠܐ ܫܡܥܬ ܠܩܠܐ ܕܡܠܦܢܝ. ܘܠܡܫܬܥܝܢܝ ܠܐ ܐܪܟܢܬ ܐܕܢܝ. * ܟܒܪ ܩܠܝܠ ܗܘܐ ܕܗܘܝܬ ܒ
14 15 ܟܠ ܒܝܫܢ ܒܟܢܘܫܬܐ ܘܒܥܕܬܐ. * ܐܫܬܝ ܡܝܐ ܡܢ ܓܘܒܟ. ܘܪܕܝܐ ܡܢ ܡܒܘܥܟ. * ܘܢܫܬܦܟܘܢ
16 17 ܡܝܟ ܒܫܘܩܝܟ. ܘܒܫܘܩܝܟ ܢܪܕܘܢ. * ܘܢܗܘܘܢ ܠܟ ܒܠܚܘܕܝܟ. ܘܢܘܟܪܝܐ ܠܐ ܢܫܬܘܬܦܘܢ
18 19 ܥܡܟ. * ܘܢܗܘܐ ܡܒܘܥܟ ܡܒܪܟ. ܘܚܕܝ ܥܡ ܐܢܬܬܐ ܕܛܠܝܘܬܟ. * ܐܝܠܐ ܕܪܚܡܬܐ. ܘܝܥܠܐ
20 ܕܪܚܡܬܐ. ܘܐܘܪܚܬܗ ܝܠܦ ܒܟܠܙܒܢ. ܘܒܪܚܡܬܗ ܪܥܝ. * ܘܠܐ ܬܛܥܐ ܒܪܝ ܒܢܘܟܪܝܬܐ. ܘܠܐ
21 ܬܓܦܘܦ ܒܥܘܒܐ ܕܢܘܟܪܝܬܐ. * ܡܛܠ ܕܩܕܡ ܥܝܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܐܘܪܚܬܗ ܕܓܒܪܐ.
22 ܘܟܠܗܘܢ ܫܒܝܠܘܗܝ ܓܠܝܢ ܩܕܡܘܗܝ. * ܒܣܘܪܚܢܘܗܝ ܢܬܐܚܕ ܥܘܠܐ. ܘܒܚܒܠܐ ܕܚܛܗܘܗܝ
23 ܢܬܚܒܫ. * ܗܘ ܢܡܘܬ ܕܠܐ ܡܪܕܘܬܐ. ܘܒܣܘܓܐ ܕܣܟܠܘܬܗ ܢܬܛܥܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܘ *

1 ܒܪܝ. ܐܢ ܥܪܒܬ ܠܚܒܪܟ. ܐܫܠܡܬ ܐܝܕܝܟ
2 3 ܠܢܘܟܪܝܐ. * ܐܬܬܨܝܕܬ ܒܡܡܠܠ ܦܘܡܟ: ܘܐܬܬܚܕܬ ܒܡܡܠܠ ܕܣܦܘܬܟ. * ܥܒܕ ܗܟܢܐ
ܒܪܝ. ܘܐܬܦܨܝ. ܡܛܠ ܕܢܦܠܬ ܒܐܝܕܝ ܒܥܠܕܒܒܟ ܡܛܠ ܚܒܪܟ. ܙܠ ܘܐܠܨ ܠܚܒܪܟ
4 5 ܕܥܪܒܬ ܠܗ. * ܘܠܐ ܬܬܠ ܫܢܬܐ ܠܥܝܢܝܟ. ܘܠܐ ܢܘܡܬܐ ܠܓܒܝܢܝܟ. * ܕܬܬܦܨܐ ܐܝܟ
6 ܛܒܝܐ ܡܢ ܢܫܒܐ. ܘܐܝܟ ܨܦܪܐ ܡܢ ܦܚܐ. * ܐܬܕܡܐ ܠܫܘܫܡܢܐ. ܘܚܙܝ ܐܘܪܚܬܗ.
7 8 ܘܝܠܦ ܕܠܝܬ ܠܗ ܚܨܕܐ. * ܘܠܝܬ ܥܠܝܗ ܫܠܝܛܐ. ܘܠܐ ܡܢ ܕܕܚܩ ܠܗ. * ܘܡܛܝܒܐ
9 ܠܗ ܡܢ ܩܝܛܐ ܠܚܡܗ. ܘܟܢܫܐ ܒܚܨܕܐ ܡܐܟܘܠܬܗ. * ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܬܕܡܟ ܐܝܟ ܚܒܢܢܐ.
10 ܘܐܡܬܝ ܡܢ ܫܢܬܟ ܬܩܘܡ. * ܩܠܝܠ ܬܕܡܟ. ܘܩܠܝܠ ܬܬܢܡܢܡ. ܘܩܠܝܠ ܬܣܝܡ ܐܝܕܝܟ ܥܠ
11 ܚܕܝܟ. * ܘܬܐܬܐ ܥܠܝܟ ܡܣܟܢܘܬܐ. ܘܬܕܪܟܟ ܚܣܝܪܘܬܐ. ܐܝܟ ܓܒܪܐ ܛܘܒܬܢܐ ܓܒܪܐ ܣܟܠܐ.

Et non audivi vocem docentium me, & hortantibus 13
me non præbui aurem meam? Parum 14
abfuit quin verſatus ſim in omnibus malis
in congregatione, & in eccleſia. Bibe 15
aquas de puteo tuo, & fluenta de fonte tuo.
Et effundantur aquæ tuæ per plateas tuas, & 16
in compitis tuis fluant: Sintque tibi ſoli, & 17
alieni non participent tecum. Et erit benedictus 18
fons tuus; & lætare cum muliere adoleſcentiæ
tuæ, Cervo amoris, & ibice amoris: 19
Vias ejus diſce in omni tempore, & in
amore ejus paſcere: Et ne ſeducaris fili mi, 20
ob extraneã, neve amplectaris ſinũ extraneæ.
Quoniam coram oculis ſunt Dñi viæ viri, & 21
omnes ſemitæ ejꝰ detectæ corã eo. In delictis 22
ſuis capietur iniquus, & funibus peccatorum
ſuorum vincietur. Ipſe morietur ineruditus, 23
& in multitudine erroris ſui decipietur.

CAP. VI.

Fili mi, ſi ſpopondiſti pro amico tuo, tradidiſti 1
manum tuã alienis: Irretitus es ſermone 2
oris tui, & captus es eloquio labiorũ tuorum.
Fac ita fili mi, & temetipſum libera. Quandoquidem 3
propter amicũ tuum incidiſti in manus
inimici tui, ſolicita ergò amicũ tuum pro
quo fidejuſſiſti, Et ne concedas ſomnũ oculis 4
tuis, neque dormitationem ſuperciliis tuis: Ut 5
libereris quaſi cervꝰ à plagis, & velut avis à
laqueo. Imitare formicam, & conſidera vias 6
ejus: et diſce quòd non ſit ei meſſis, Nec ſit 7
ſuper eam præfectus, nec qui ſolicitet eam,
Attamen parat ſibi ab æſtate panem ſuum, et 8
congregat in meſſe eſcã ſuam. Uſquequo dormies 9
piger? ecquando è ſomno tuo ſurges?
Parum dormies, parum ſomni capies, et parũ 10
pones manum tuam ſupra pectus tuum: Ingruétque 11
in te paupertas, et aſſequetur te egeſtas
quaſi vir fortunatus, homo ſtultus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

13 14 * ما سمعت صوت من كان يؤدبني ويعلمني * ولا وعيته في أذني * في مدة يسيرة حصلت في كافة
15 16 السوء * في وسط الكنيسة والجمع * اشرب المياه من أوانيك * ومن ابيار ينبوعك * ولتنسكب لك
17 المياه من ينبوعك * ولتسلك مياهك في شوارعك * ولتكن لك وحدك ملكا * ولا يشاركك فيها
18 19 أحد غريب * ينبوعك الذي للماء فليكن لك خصوصا * وافرح مع امرأة حداثتك * وليعانقك
أيلة محبتك * ومهر نعمتك التي لك * فلتعد لك وتقترن بك في كل وقت * لأن في انقيادك إلى
20 مودتها تصير كثير * لا تصغ إلى المرأة الغريبة * ولا تمض إليها * ولا تلامس ساعدي امرأة
21 22 ليست امرأتك * لأن طرق الرجل أمام عيني الله هي * وهو يراقب طرائقه كلها * الأفعال المتجاوزة
23 السريعة تقتنص الإنسان * وكل أحد يربط بحبائل خطاياه تجرما * هذا لأنه توفي مع الذين
لا أدب لهم * فألقي من كثرة تعمقه * وهلك من أجل غباوته *

* الفصل السادس *

1 2 * يا بني إن ضمنت صديقك * فقد أسلمت يدك إلى عدوك * لأن فخا قويا للإنسان شفتاه *
3 ويوقع بشفتي فمه * يا بني اعمل ما أوصيك به تسلم * لأنك حصلت في أيدي الطالحين من
4 أجل صديقك * اذهب غير متضجر * أخرج صديقك الذي تعزم تضمنه * لا تعط عينيك
5 نوما * ولا تنقبض بأجفانك * لتخلص كتخلص الغزال من الوهق * وكانفلات الطائر من الفخ *
6 7 * أيها العاجز اذهب إلى النملة * وإذا رأيتها فماثل طرقها * وصر أوفر منها حكمة * لأن تلك
8 إذ ليست لها فلاحة * ولا لها من يضطرها * ولا هي تحت أمر سيد يلزمها * تستعد منذ الحصاد
طعامها * وبالحصاد تصنع ذخيرة عظيمة * أو اذهب إلى النحلة واعرف أنها مثل الفاعل هي
تعمل صناعتها طرفة عجيبة * وأتعابها تحمل إلى الملوك * والعامة يستعملونها لحفظ الصحة * وهي
عند جميع الناس مأثورة مشرفة * مع أنها ضعيفة في قوتها فقد فاقت * لأنها أكرمت بالحكمة
9 10 وفضلت * أيها العاجز إلى متى تضطجع طريحا * متى تنهض من النوم * تنام قليلا * وتجلس
11 قليلا * وتتناعس قليلا * وتعانق بيديك صدرك يسيرا * ثم ماذا يوافيك * العوز كمسافر ردي *
والفاقة كفيج حثيث السعي * وإن كنت غير عاجز فسيجي حصادك كفيض الينبوع * وينصرف الفاقة عنك كإنسان ردي *

Non audivi vocem ejus qui me erudiebat 13
meque docebat, & non retinui eam
in aure mea? Brevi tempore deveni in 14
omnem miſeriam, in medio Eccleſiæ, &
ſynagogæ. Bibe aquas de vaſis tuis, & 15
de puteis fontis tui: Et fundantur tibi 16
aquæ de ſcatebra tua, & fluant aquæ
tuæ per vicos tuos: Et ſint tibi ſoli poſſeſſio, 17
& ne communicet tecum in illis
ullus externus. Fons aquæ tuus, ſit tibi 18
peculiaris, & lætare cum uxore adoleſcentiæ
tuæ: Et amplexetur te cerva amoris 19
tui, & binnulus gratiæ tuæ, qui tuus
eſt; ipſa ſit tibi parata, & juncta ſit tibi
omni tempore: quia aſſentiendo amori
ejus, fiet multus. Ne attendas ad mulierem 20
extraneam, nec eam adeas, & ne
attrectes brachia mulieris quæ non ſit
uxor tua: Quia viæ viri coram oculis 21
Dei ſunt, ipſeque obſervat vias
ejus omnes. Opera tranſgredientia legem 22
venantur hominem, & unuſquiſque
ligabitur funibus peccatorum ſuorum
ſtrictè. Hic quia mortuus eſt cum iis qui 23
ſunt ſine diſciplina, dejectus eſt ob multitudinem
machinationum ſuarum, &
periit ob ſuam ſtultitiam.

CAP. VI.

Fili mi, ſi ſpopondiſti pro amico tuo, 1
jam tradidiſti manum tuam inimico
tuo: Quia ſunt laqueus validus homini 2
labia ſua, & illaqueatur labiis oris
ſui. Fili mi, fac quod mando tibi, 3
& ſalvus eris. Quandoquidem offendiſti
in manus improborum propter amicum
tuum, abi impiger, pete amicum
tuum pro quo decernis ſpondere. Ne 4
des oculis tuis ſomnum, & ne levi ſomno
capiaris in palpebris tuis: Ut evadas 5
ſicut evadit cervus è reti, & ſicut
effugit avis è laqueo. O piger, vade 6
ad formicam: & poſtquam videris eam,
imitare vias ejus, & eſto amplioris
ſapientiæ quam ipſa. Hæc enim cùm non 7
habeat arva, nec habeat qui eam cogat,
neque ſit ſub imperio domini qui adigat
eam, Parat à tempore meſſis cibum 8
ſuum, & in meſſe cogit annonam ingentem.
Aut vade ad Apem, & ſcias
eam velut operarium fabricare opus ſuum
arte mirabili: & labores ejus deferuntur
ad reges, & vulgus iis utitur
ad tuendam ſanitatem: eſtque apud
omnes homines amabilis & laudanda:
etiamſi debilis ſit viribus, tamen antecellit,
quia commendatur in ſapientia, &
præſtans eſt. O piger, uſquequò jacebis 9
proſtratus? quandonam ſurges è ſomno?
Dormis paululùm, & ſedes paululùm, 10
& dormitas paululùm, & amplecteris
manibus tuis pectus tuum paululùm:
Tum quid adveniet tibi? egeſtas 11
velut viator peſſimus, et paupertas quaſi
curſor velox in ambulando. Quòd ſi fueris
impiger, adveniet meſſis tua quaſi inundatio
fontis, et recedet paupertas à te
quaſi homo peſſimus.

משלי : ז

.otis perverſitate ambulans ; iniquitatis vir Belijahal Homo
אדם בליעל איש און הולך עקשות פה : 12
.ſuis digitis in docens ; ſuis pedibus in loquens , ſuis oculis in Annuens
קרץ בעינו מלל ברגלו מרה באצבעתיו : 13
; tempore omni in malum fabricans , ejus corde in Perverſitates
תהפכות בלבו חרש רע בכל־עת 14
ſubitò : ejus exitium veniet extemplò Ideo .mittet contentiones
מדנים ישלח : על־כן פתאם יבוא אידו פתע 15
ſeptem & ; Dominus odivit illa Sex .ſanitas non & , conteretur
ישבר ואין מרפא : שש־הנה שנא יהוה ושבע 16
manus & ; fallacem linguam , ſublimes Oculos .ejus animæ abominatio
תועבות נפשו : עינים רמות לשון שקר וידים 17
: iniquitatis cogitationes fabricans Cor .innocentis ſanguinē effundentes
שפכות דם־נקי : לב חרש מחשבות און 18
: falſitatis teſtis mendacia Efflabit .malum ad currere feſtinantes pedes
רגלים ממהרות לרוץ לרעה : יפיח כזבים עד שקר 19
; tui patris præceptum mi fili Conſerva .fratres inter diſſidia mittens &
ומשלח מדנים בין אחים : נצר בני מצות אביך 20
: ſemper tuo corde ſuper ea Liga .tuæ matris legem dimittas ne &
ואל־תטש תורת אמך : קשרם על־לבך תמיד 21
, te jacendo in , te deducet , te ambulando In .tuis gutturibus ſuper ea vinci
ענדם על־גרגרתך : בהתהלכך תנחה אתך בשכבך 22
lucerna Quia .te alloquetur ipſa, fueris expergefact° & : te ſuper cuſtodiet
תשמר עליך והקיצות היא תשיחך : כי נר 23
.eruditionis increpationes vitarum via & : lux lex & , mandatum
מצוה ותורה אור ודרך חיים תוכחות מוסר :
.extraneæ linguæ lenitate à : mala muliere à te cuſtodiendum Ad
לשמרך מאשת רע מחלקת לשון נכריה : 24
te capiat non & ; tuo corde in ej° pulchritudinem concupiſcas Ne
אל־תחמד יפיה בלבבך ואל־תקחך 25
ad uſque meretricem mulierem propter Quia .ſuis palpebris in
בעפעפיה : כי בעד־אשה זונה עד־ 26
.venabitur precioſam animam viri mulier & : panis tortam
ככר לחם ואשת איש נפש יקרה תצוד :
non ejus veſtes & ; ſuo ſinu in ignem vir accipiet Nunquid
היחתה איש אש בחיקו ובגדיו לא 27
ejus pedes & ; prunas ſuper vir ambulabit Si ? comburentur
תשרפנה : אם־יהלך איש על־הגחלים ורגליו 28
mundabitur non ; ſui ſocii uxorem ad ingrediens Sic ? adurentur non
לא תכוינה : כן הבא אל־אשת רעהו לא ינקה 29
; fuerit furatus cùm furem ſpernent Non .eam in tangens omnis
כל־הנגע בה : לא־יבוזו לגנב כי יגנוב 30
: ſeptuplum reddet inventus Et .eſurierit cùm , ſuam animā implendum ad
למלא נפשו כי ירעב : ונמצא ישלם שבעתים 31
deficit , mulierem Adulterans .dabit ſuæ domus ſubſtantiam omnem
את־כל־הון ביתו יתן : נאף אשה חסר־ 32
Plagam .illud faciet ipſe ſuam animam corrumpens , corde
לב משחית נפשו הוא יעשנה : נגע־ 33
.delebitur non ejus opprobrium & ; inveniet ignominiam &
וקלון ימצא וחרפתו לא תמחה :
.vindictæ die in parcet non & ; viri excandeſcentia zelus Quia
כי־קנאה חמת־גבר ולא יחמול ביום נקם : 34
cùm , volet non & ; propitiationis omnis facies accipiet Non
לא־ישא פני כל־כפר ולא־יאבה כי 35
.munus multiplicaveris
תרבה־שחד :

CAP. VII. ז

.tecum abdes mea præcepta & ; meos ſermones cuſtodi , mi Fili
בני שמר אמרי ומצותי תצפן אתך : 1

Verſio VULG. LAT.

12 Homo apoſtata, vir inutilis,
13 graditur ore perverſo, Annuit oculis, terit pede, digito loqui-
14 tur, Pravo corde machinatur malū, & omni tempore jurgia
15 ſeminat. Huic extemplò veniet perditio ſua, & ſubitò conteretur, nec habebit ultra me-
16 dicinam. Sex ſunt, quæ odit Dominus, & ſeptimum dete-
17 ſtatur anima ejus: Oculos ſublimes, linguam mendacem, manus effundentes innoxium ſanguinem,
18 Cor machinans cogitationes peſſimas, pedes veloces ad currendum in malum,
19 Proferentem mendacia teſtem fallacem, & eum qui ſeminat
20 inter fratres diſcordias. Conſerva, fili mi, præcepta patris tui, & ne dimittas legem ma-
21 tris tuæ. Liga ea in corde tuo jugiter, et circumda gutturi tuo.
22 Cùm ambulaveris, gradiantur tecum: cùm dormieris, cuſtodiant te, & evigilans loquere
23 cum eis. Quia mandatum lucerna eſt, & lex lux, & via vitæ
24 increpatio diſciplinæ: Ut cuſtodiant te à muliere mala, & à
25 blanda lingua extraneæ. Non concupiſcat pulchritudinem ejus cor tuum, nec capiaris nu-
26 tibus illius: Pretium enim ſcorti vix eſt unius panis: mulier autem viri pretioſam animam
27 capit. Numquid poteſt homo abſcondere ignem in ſinu ſuo, ut veſtimenta illius non arde-
28 ant? Aut ambulare ſuper prunas, ut non comburantur plan-
29 tæ ejus? Sic qui ingreditur ad mulierem proximi ſui, non erit mundus cum tetigerit eam.
30 Non grandis eſt culpa, cùm quis furatus fuerit: furatur e-
31 nim ut eſurientem impleat animam: Deprehenſus quoque reddet ſeptuplum, & omnem ſubſtantiam domûs ſuæ tradet.
32 Qui autem adulter eſt, propter cordis inopiam perdet animā ſuam:
33 Turpitudinem & ignominiam congregat ſibi, & opprobrium illius non delebitur:
34 Quia zelus & furor viri non
35 parcet in die vindictæ, Nec acquieſcet cujuſquam precibus, nec ſuſcipiet pro redemptione dona plurima.

CAP. VII.

1 Fili mi, cuſtodi ſermones meos, & præcepta mea reconde tibi. Fili,

Verſio GRÆCA. LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

12 † Ἀνὴρ ἄφρων καὶ παράνομος πορεύεται ὁδοὺς
13 οὐκ ἀγαθάς. † Ὁ δ' αὐτὸς ἐννεύει ὀφθαλ-
μῷ, σημαίνει δὲ ποδί, † διδάσκει δὲ ἐννεύμα-
14 σι δακτύλων. † Διεστραμμένη (η) καρδία τε-
κταίνεται κακά, † ἐν παντὶ καιρῷ ὁ τοιοῦτος
15 ταραχὰς συνίστησι πόλει. † (θ) Διὰ τοῦτο
ἐξάπινης ἔρχεται ἡ ἀπώλεια αὐτοῦ, † διακο-
16 πὴ καὶ συντριβὴ ἀνίατος. † Ὅτι χαίρει πᾶ-
σιν οἷς μισεῖ (ι) ὁ Θεός, † συντρίβεται δὲ (ʹ) δι'
17 ἀκαθαρσίαν ψυχῆς. † Ὀφθαλμὸς ὑβριστοῦ,
γλῶσσα ἄδικος, † χεῖρες ἐκχέουσαι αἷμα
18 (κ) δικαίου, † Καὶ καρδία τεκταινομένη λο-
γισμοὺς κακούς, καὶ πόδες ἐπισπεύδοντες κακο-
19 ποιεῖν. † Ἐκκαίει ψευδῆ μάρτυς ἄδικος,
† καὶ ἐπιπέμπει κρίσεις ἀναμέσον ἀδελφῶν.
20 † (λ) Υἱὲ φύλασσε νόμους πατρός σου, † καὶ μὴ
21 ἀπώσῃ θεσμοὺς μητρός σου. † Ἄφαψαι δὲ
αὐτοὺς ἐπὶ σῇ ψυχῇ διαπαντός, † καὶ ἐγκλοί-
22 ωσαι περὶ σῷ τραχήλῳ. † Ἡνίκα ἂν περιπα-
τῇς, ἐπάγου αὐτὸν καὶ μετὰ σοῦ ἔστω, † ὡς δ'
ἂν καθεύδῃς, φυλασσέτω σε, † ἵνα ἐγειρομέ-
23 νῳ (μ) συλλαλῇ σοι. † Ὅτι λύχνος ἐντολὴ
νόμου καὶ φῶς, † (ν) ὁδὸς ζωῆς, καὶ ἔλεγχος
24 καὶ παιδεία, † Τοῦ διαφυλάσσειν σε ἀπὸ γυναι-
κὸς ὑπάνδρου, † καὶ ἀπὸ διαβολῆς γλώσσης
25 ἀλλοτρίας. † Μή σε νικήσῃ κάλλους ἐπιθυμία,
μηδὲ ἀγρευθῇς σοῖς ὀφθαλμοῖς, † μηδὲ
(ξ) συναρπασθῇς ἀπὸ τῶν αὐτῆς βλεφάρων. †
26 Τιμὴ γὰρ πόρνης ὅση καὶ ἑνὸς ἄρτου, † γυνὴ δὲ
27 ἀνδρῶν τιμίας ψυχὰς ἀγρεύει. † Ἀποδήσει
τις πῦρ ἐν κόλπῳ, τὰ δὲ ἱμάτια οὐ κατακαύ-
28 σει; † Ἢ περιπατήσει τις ἐπ' ἀνθράκων
29 πυρός, τοὺς δὲ πόδας οὐ κατακαύσει; † Οὕ-
τως ὁ εἰσελθὼν πρὸς γυναῖκα ὕπανδρον, †
οὐκ (ξ) ἀθωωθήσεται, οὐδὲ πᾶς ὁ ἁπτόμενος
30 αὐτῆς. † Οὐ θαυμαστὸν ἐὰν (ο) ἁλῷ τις κλέ-
πτων, † κλέπτει γὰρ ἵνα (π) ἐμπλήσῃ τὴν ψυχὴν
31 πεινῶν. † Ἐὰν δὲ ἁλῷ, ἀποτίσει ἑπταπλάσια,
† καὶ πάντα τὰ ὑπάρχοντα αὐτοῦ δοὺς ῥύσεται
32 ἑαυτόν. † Ὁ δὲ μοιχὸς δι' ἔνδειαν φρενῶν †
33 ἀπώλειαν τῇ ψυχῇ αὐτοῦ περιποιεῖται, † Ὀ-
δύνας τε καὶ ἀτιμίας ὑποφέρει, † τὸ δὲ ὄνειδος
34 αὐτοῦ οὐκ ἐξαλειφθήσεται εἰς τὸν αἰῶνα. † Με-
στὸς γὰρ ζήλου θυμὸς ἀνδρὸς αὐτῆς, † οὐ φείσε-
35 ται ἐν ἡμέρᾳ κρίσεως. † Οὐκ ἀνταλλάξεται οὐ-
θενὸς λύτρον τὴν ἔχθραν, † (ρ) οὐδὲ μὴ διαλυ-
θῇ πολλῶν δώρων.

Vir inſipiens & iniquus ambu- 12
lat (y) vias non bonas. Ipſe au- 13
tem innuit (z) oculo, (ω) ſignifi-
cat autem pede, (aa) docet autem
nutibus digitorum. (bb) Perver- 14
ſum cor fabricatur mala: in omni
tempore, qui talis eſt, (cc) turbati-
ones affert civitati. Propter hoc 15
(dd) extemplò venit perditio i-
pſius, interciſio, & contritio inſa-
nabilis. Quoniam gaudet omni- 16
bus, quæ odit (ee) Deus: (ff) con-
teritur autem propter immundi-
tiam animæ. Oculus (gg) contu- 17
melioſi, lingua injuſta, manus ef-
fundentes ſanguinē (hh) juſti, Et 18
cor fabricans cogitationes ma-
las, & pedes (ii) feſtinantes ad
malefaciendum. (kk) Accendit 19
falſa teſtis injuſtus: & immittit
(ll) judicia inter fratres. Fili, cu- 20
ſtodi leges patris tui; et ne expel-
las jura matris tuæ. Liga (mm) 21
autem ea ſuper (nn) animam tu-
am ſemper, & (oo) quaſi torquē
circunda circa tuum collum.
Quandocunque ambulaveris; 22
(pp) adducito eā, & tecum ſit:
& quandocunq; dormieris; cu-
ſtodiat te, ut (qq) expergefacto
colloquatur tibi. Quoniam lucer- 23
na mandatum (rr) legis, & lumē
via vitæ, & (ſſ) correptio, et diſ-
ciplina, Ad conſervandum te à 24
muliere (tt) nupta, (vv) & à ca-
lumnia linguæ alienæ. (xx) Non 25
te vincat formæ concupiſcentia:
neq; (yy) capiaris tuis oculis, neq;
abripiaris ab ejus palpebris. Pre- 26
tium enim meretricis, quantum
& unius panis: mulier autem
virorum pretioſas animas capit.
(zz) Alligabit quis ignem in ſi- 27
nu, veſtes autē non comburet?
Aut ambulabit quis ſuper pru- 28
nas ignis, & pedes non combu-
ret? Sic qui intrat ad mulierem 29
(ωω) nuptam, non erit innoxius,
neq; omnis tangens eam. Non 30
(aaa) mirum, ſi deprehendatur
furans: furatur enim, ut imple-
at animam (b) eſuriens: Si autē 31
deprehenſus fuerit; reddet ſeptu-
pla, & omnem ſubſtantiam ſuam
dans liberabit ſeipſum. Adulte- 32
rans (c) autem propter inopiam
cordis perditionem animæ ſuæ
acquirit, (d) Ac dolores, & ig- 33
nominias ſuſtinet: & oppro-
brium ejus non delebitur in ſeculum. Plenus enim zeli furor viri 34
ejus non parcet in die (e) judicii. Non (f) commutabit ullâ red- 35
emptione inimicitiam: neq; diſſolvetur (g) multis donis.

MS. A. (η) δὲ καρδία (θ) Διὰ δὲ τοῦτο (ι) ὁ κύριος, (ʹ) διὰ (κ) δίκαιον, (λ) Φύλασσε υἱὲ (μ) συλλαλήσῃ (ν) καὶ ὁδὸς ζωῆς, ἔλεγχος (ξ) συναρπάσῃς (ξ) ἀθωωθήσεται, (ο) τίς ἁλῷ (π) ἐμπλήσῃ ψυχὴν πεινῶσαν. (ρ) οὐδὲ μὴ διὰ πολλῶν δώρων.

ΚΕΦ. ζʹ.

1 † Υἱὲ φύλασσε ἐμοὺς λόγους, † τὰς δὲ ἐμὰς ἐντολὰς κρύψον παρὰ σεαυτῷ. † Υἱὲ τίμα τὸν κύριον καὶ ἰσχύσεις, † πλὴν δὲ αὐτοῦ μὴ φοβοῦ ἄλλον.

CAP. VII.

Fili, cuſtodi meos ſermones: & mea mandata reconde apud teipſum. (a) Fili, honora Dominum, & valebis: præter eum autem ne timeas alterum. 1

תרגום TARGUM.

בר נש טלומא גברא עולא מהלך בעקימות פומיה : רמז בעינוי ותכס ברגלוי ורמז 12
באצבעתיה : ומתהפך בלביה וחשל בישתא בכל זמן תגרי רמי : מטול הכנא 13 14
מן שליא ניתי תבריה ומן שליא נתבר ולא תהוי ליה אסיותא : שית אנון דסני 15 16
אלהא ובשבע אסלית נפשיה : עיני רמתא ולישנא דשקרא וידי דשפכן דמא זכי : 17
לבא דחשל מחשבתא רעתא ורגלי דמסתרהבן למרהט לבישתא : סהדא דשקרא 18 19
דמלל כדבותא ומן דרמי תגרי בין אחי : טור ברי פוקדנא דאבוך ולא תטעי 20
מנימוסא דאמך : קטורנון בלבך תדירא וכרוך אנון בצורך : במיזלך תתדבר עמך 21 22
במדמכך תתנטר עלך ותתער היא תהוי רציך : מטול שרגא הוא פוקדנא ונימוסא 23
נהורא ואורחא דחיי מכסנותא ומרדותא : דתנטרך מן אתתא בישתא ומן שעיעותא 24
דלישנא דנוכריתא : לא תרוג שופרה בלבבך ולא תשרגנגך בגביניתהא : מטול 25 26
דדמיא מלתא דזניתא היך גרצתא דלחמא ואתת גברא נפשא יקירתא צידא : דלמא 27
סיב בר נשא נורא בעוביה ולבושיה לא יקיד : אי דלמא מהלך גברא עלוי גומרי 28
ורגלוי לא מתכוין : הכנא מה דעאל על אתת חבריה למגור עמה לא נזכה כל 29
מן דקריב בה : לא למתדמרו לגנבא דגנב דתשבע נפשיה מטול דכפן : ומן 30 31
דמשתכח פריע חד בשבעה וכוליה מולא דביתיה יהיב : מן דגיר באתתא חסר 32
דרעינא ומן דבעי די יחבל נפשיה הוא עבד לה : מכתשי וצערי יארע וחסודיה לא 33
מטעי : מטול דטננא חמתא דגברא ולא חיס ביומא דפורענא : ולא נסב באפיה 34 35
דכל דיהב ליה מוהבא ולא מתפס כד תסגא שוחדה :

ז ברי נטר מימרי ופקודי תטשי גבך : 1

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Homo calumniator, vir iniquus graditur perverſo ore. Annuit oculis 12
ſuis, & terit pedibus ſuis, & indicat digitis ſuis. Et perverſus eſt in corde 13
ſuo, & cogitat malum, in omni tempore jurgia ſpargit. Propterea ſubitò 14
veniet interitus ejus, & ſubitò conteretur, & non erit ei medicina. Sex 15
ſunt quæ odit Deus, & ſeptimum deteſtatur anima ejus. Oculos ſublimes 16
& linguam mendacem, & manus effundentes ſanguinem innocentem. 17
Cor quod cogitat cogitationes peſſimas, & pedes feſtinantes ad curren- 18
dum in malum. Teſtem falſum qui loquitur mendacium, & qui mittit jur- 19
gia inter fratres. Cuſtodi fili mi præcepta patris tui, & ne aber- 20
res à lege matris tuæ. Liga ea in corde tuo ſemper, & alliga ea 21
collo tuo. Cùm ambulaveris, deducet te; & cum dormieris, cu- 22
ſtodiet te; & ſi evigilaveris, ipſa erit meditatio tua. Quia manda- 23
tum eſt lucerna, & lex lux, & via vitæ correptio & diſciplina. Ut 24
cuſtodiant te à muliere mala, & à lenitate linguæ extraneæ. Non concupi- 25
ſces pulchritudinem ejus in corde tuo, ne ſeducat te palpebris ſuis. Quo- 26
niam ſimilis eſt oratio meretricis tortæ panis: & uxor viri precioſam ani-
mam venatur. Nunquid poteſt homo ponere ignem in ſinu ſuo, & veſti- 27
mentum ejus non ſuccendatur? Aut poteſt ambulare aliquis ſuper pru- 28
nas, & pedes ejus non comburantur? Sic eſt qui ingreditur ad uxorem 29
proximi ſui, ut rem habeat cum ea, non erit innoxius omnis qui tetige-
rit eam. Non eſt quod miremur furem qui furatur ut ſatiet animam ſu- 30
am cùm eſurit. Et qui inventus fuerit reddet ſeptuplum, & omnem ſub- 31
ſtantiam domus ſuæ dabit. Qui adulteratur cum uxore, indiget intellectu; 32
& qui quærit perdere animam ſuam, ipſe facit illud. Plaga & ignominia 33
accidet ei, & opprobrium ejus non recedat. Quoniam zelus eſt ira viri, 34
nec parcet in die vindictæ. Neque accipiet faciem ejus qui dat ei do- 35
num, neque contentus erit quamvis multiplices munera.

CAP. VII.

Fili mi cuſtodi verba mea, & præcepta mea abſconde apud te. 1

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

12 13 *ܓܒܪܐ ܥܘܠܐ ܡܗܠܟ ܒܥܩܡܬܐ. *ܪܡܙ ܒܥܝܢܘܗܝ. ܘܢܩܫ ܒܪܓܠܗ. ܘܪܡܙ ܒܨܒܥܬܗ.
14 *ܘܡܬܗܦܟ ܒܠܒܗ. ܘܚܫܠ ܒܝ̈ܫܬܐ ܒܟܠ ܙܒܢ. ܘܡܓܪܐ ܚܪ̈ܝܢܐ ܒܝܬ ܬܪܝܢ. *ܡܛܠܗܢܐ ܡܢ
15 16 ܫܠܝܐ ܢܐܬܐ ܬܒܪܗ. ܘܡܢ ܫܠܝܐ ܢܬܬܒܪ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗ ܐܣܝܘܬܐ. * ܫܬ ܐܢܝܢ ܕܣܢܐ ܡܪܝܐ.
17 18 ܘܫܒܥ ܕܡܣܠܝܐ ܠܢܦܫܗ. *ܥܝܢܐ ܪܡܬܐ. ܘܠܫܢܐ ܕܓܠܐ. ܘܐܝ̈ܕܝܐ ܕܐܫܕ ܕܡܐ ܙܟܝܐ. *ܘܠܒܐ
19 ܕܡܬܚܫܒ ܡܚܫ̈ܒܬܐ ܒܝ̈ܫܬܐ. ܘܪ̈ܓܠܐ ܕܡܣܪܗܒܢ ܠܡܪܗܛ ܠܒܝܫܬܐ. * ܘܣܗܕܐ ܕܓܠܐ
20 ܕܡܡܠܠ ܕܓܠܘܬܐ. ܘܡܪܡܐ ܚܪ̈ܝܢܐ ܒܝܬ ܐܚ̈ܐ. *ܛܪ ܒܪܝ ܦܘܩܕܢܐ ܕܐܒܘܟ. ܘܠܐ ܬܫܒܘܩ ܢܡܘܣܐ ܕܐܡܟ.
21 *ܩܛܘܪ ܐܢܘܢ ܒܠܒܟ ܐܡܝܢܐܝܬ. ܘܥܒܘܟ ܐܢܘܢ ܥܠ ܨܘܪܟ. *ܘܡܐ ܕܡܗܠܟ ܐܢܬ. ܐܘܩܦ ܐܢܘܢ
22 ܥܡܟ. ܘܢܗܘܘܢ ܥܡܟ. ܛܪ ܐܢܘܢ ܕܢܛܪܘܢܟ. ܘܡܐ ܕܐܬܬܥܝܪܬ. ܗܢܘܢ ܢܗܘܘܢ ܠܟ ܪܢܝܐ.
23 24 *ܡܛܠ ܕܫܪܓܐ ܗܘ ܦܘܩܕܢܐ. ܘܢܡܘܣܐ ܢܘܗܪܐ. ܘܐܘܪܚܐ ܕܚܝ̈ܐ ܡܟܣܢܘܬܐ ܘܡܪܕܘܬܐ. *ܕܢܛܪܘܢܟ
25 ܡܢ ܐܢܬܬܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܡܢ ܥܘܠܐ ܕܠܫܢܐ ܢܘܟܪܝܬܐ. *ܠܐ ܬܪܓ ܫܘܦܪܗ ܒܠܒܟ. ܘܠܐ
26 ܬܬܨܝܕ ܒܥܝ̈ܢܝܗ. ܘܠܐ ܢܫܒܝܘܟ ܒܥܦ̈ܥܦܝܗ. *ܕܕܡܝܐ ܗܝ ܐܢܬܬܐ ܙܢܝܬܐ. ܐܝܟ ܦܬܘܬܐ ܗܝ
27 ܕܠܚܡܐ. ܘܐܢܬܬ ܓܒܪܐ. ܢܦܫܐ ܝܩܝܪܬܐ ܨܝܕܐ. *ܕܠܡܐ ܣܐܡ ܓܒܪܐ ܢܘܪܐ ܒܥܘܒܗ.
28 ܘܠܒܘܫܘܗܝ ܠܐ ܡܘܩܕ. * ܐܘ ܕܡܗܠܟ ܓܒܪܐ ܥܠ ܓܘܡܪܐ ܕܢܘܪܐ. ܘܪ̈ܓܠܘܗܝ ܠܐ
29 30 ܡܬܟܘܝܢ. *ܗܟܢܐ ܗܘ ܡܢ ܕܥܐܠ ܠܘܬ ܐܢܬܬ ܚܒܪܗ. ܘܡܩܪܒ ܠܗ. ܠܐ ܢܙܕܟܐ. *ܠܐ ܬܗܪܐ ܕܡܫܬܟܚ ܓܢܒܐ
31 ܕܓܢܒ ܓܝܪ ܕܢܣܒܥ ܢܦܫܗ ܕܟܦܢܐ. *ܘܐܢ ܡܫܬܟܚ ܓܢܒܐ. ܦܪܥ ܫܒܥܐ
32 ܥܦ̈ܝܦܝܢ. ܘܟܠܗ ܩܢܝܢܐ ܕܒܝܬܗ ܢܬܠ. *ܕܓܐܪ ܕܝܢ ܒܐܢܬܬܐ. ܚܣܝܪ ܪܥܝܢܐ ܗܘ: ܘܡܚܒܠ
33 ܢܦܫܗ. *ܘܗܘ ܥܒܕ ܕܢܦܓܥ ܒܗ ܨܥܪܐ. ܘܢܕܪܟܝܘܗܝ. ܘܚܣܕܗ ܠܐ ܢܬܛܥܐ. *ܡܛܠ ܕܡܠܝܐ
34 35 ܛܢܢܐ ܕܓܒܪܐ: ܘܠܐ ܚܐܣ ܒܝܘܡܐ ܕܦܘܪܥܢܐ. *ܘܠܐ ܢܣܒ ܐܦ̈ܐ ܕܩܘܪܒܢܐ.
1 ܘܠܐ ܡܫܬܐܠ ܒܫܘܚܕܐ ܣܓܝܐܐ. *ܩܦܠܐܘܢ *ܙ* *ܒܪܝ. ܛܪ ܡܠ̈ܝ. ܘܦܘܩܕ̈ܢܝ ܐܛܫܐ ܠܘܬܟ.

Vir ſceleſtus ambulat in detrectatione: Nictat 12
oculis ſuis, et pulſat pede ſuo, & innuit digitis 13
ſuis, Agitátque in corde ſuo, & machinatur 14
mala in omni tempore, & jurgia excitat inter
duos. Propterea ex improviſo veniet exitiũ 15
ejus, & repentè conteretur, & non erit ei ſanitas.
Sex ſunt quæ odit Dñs, et ſeptimũ abominata 16
eſt anima ejꝰ: Oculũ ſublimem, & linguam 17
mendacẽ, et manꝰ effundentes ſanguinẽ
innocentẽ, Et cor moliens conſilia fraudis, 18
& pedem celerẽ ad currendũ in malũ, Et teſtẽ 19
mendacẽ, qui loquitur falſitatẽ, & ſerentẽ
diſſidia inter fratres. Cuſtodi fili mi præceptũ 20
patris tui, & ne obliviſcaris legẽ matris tuæ.
Infige ea cordi tuo ſemp, & circunda illa collo 21
tuo. Et cùm ambulas, fac adhæreant tibi, 22
tecúmque ſint. Serva illa, ut te ſervent: cúmq,
evigilaveris, ipſa ſint tibi meditatio. Lucerna 23
eſt enim mandatũ, & lex lux : via verò vitæ,
objurgatio & diſciplina: Ut cuſtodiat te à 24
muliere improba, & à criminatione linguæ
mulieris extraneæ: Et non concupiſcas pulchritudinem 25
ejus in corde tuo, neque capteris
oculis ejꝰ, nec te prædetur palpebris ſuis. Nã 26
comparatio mulieris fornicariæ, eſt inſtar placentæ
panis: & uxor viri animã pretioſã venatur.
Num ponit quis ignẽ in ſinu ſuo, & veſtes 27
ſuas non comburit? An verò incedit quis 28
ſuper prunas ignis, & pedes ejus non uſtulantur?
Ita qui ingreditur ad uxorẽ ſocii ſui, & 29
tangit eã, non juſtificabitur. Non mirandũ eſt 30
aliquẽ deprehẽdi furantẽ, furatur enim ut ſatiet
animã ſuã eſurientẽ. Et ſi deprehendatur 31
furans, rependet ſeptuplũ, et omnẽ ſupellectilẽ
domûs ſuæ dabit. Qui autẽ adulteratur cum 32
muliere, expers judicii eſt, & depravat animã
ſuã: Et ipſemet efficit ut tangat eũ ignominia 33
& aſſequatur illũ, & opprobriũ ejꝰ oblivioni
minimè tradatur. Nam quia furor mariti plenꝰ 34
eſt zelotypiã, non parcet in die retributionis,
Nec rationem habebit oblationis, neque 35
placabitur quantunvis magno munere.

CAP. VII.

Fili mi, cuſtodi verba mea, & præcepta 1
mea reconde in corde tuo.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

12 13 *الانسان الغبي المتعدي السريعة يسلك طريقا ليست صالحة* فهذا يغمز بعينيه* ويدل برجله*
14 ويعلم باشارات اصابعه* بقلبه الملتوي ينشي الاسواء* فمن هذه سجيته في كل وقت ينهض
15 في المدينة هيوجا مقلقة* ولهذا السبب سيوافي هلاكه باسراع* يقطع جرمه وهشما لا شفاء له*
16 17 *لانه يسر بجميع الاشياء التي يمقتها الله* من اجل نجاسة النفس* تنسحق عين المتعظم*
18 ولسان الظالم* والايدي السافكة دما عدلا* والقلب المنشي افكار ردية* والارجل المسارعة الى
19 20 افعال الشر* الشاهد الظالم يحترق بكذبه* ويسير الى وسط الاخوة محاكات* يا بني احفظ
21 22 شرايع ابيك* ولا تبعد فرايض امك* علقها على نفسك كل حين* وتقلد بها على عنقك* اين
ما مشيت استصحبها* ولتكن معك* ومتى ما رقدت فلتحفظك* لكيما اذا نهضت تخاطبك*
23 24 *لان وصية الشريعة سراج* وطريق حياة وتوبيخ وتاديب* لتحفظك من امراة ذات رجل* ومن
25 وشاية اللسان الغريب* لا تغلبنك شهوة الجمال* ولا تقتنص بعينيك* ولا تخطفك جفونها*
26 27 *فان قيمة الزانية مقدارها خبز واحد* المراة تصطاد نفوس الرجال الكريمة* ايربط احد في
28 29 حضنه نارا وما تحترق ثيابه* ام يمشي احد على جمر النار وما تحترق رجلاه* هكذا من يدخل
30 الى امراة ذات رجل ما يتبرا* ولا كل من يلمسها* وليس مستعجبا ان صيد من سرق* لانه
31 انما يسرق ليشبع نفسا جايعة* فان قبض عليه يؤدي سبعة اضعاف ما سرق* ويعطي جميع
32 33 ما يملكه ليخلص نفسه* فاما الفاسق فمن اجل نزارة فطنته يستصنع لنفسه هلاكا* ويتكبد
34 اوجاعا وهوانا* وعاره لن يمحى الى الابد* لان غضب رجلها موعب غيرة* فما يرثي له في
35 يوم القضاء* ولا يفادي العداوة بنوع من انواع الفداء* ولا تحلها الهدايا الجزيلة*

* الفصل السابع *

1 *يا بني احفظ اقوالي* ووصاياي اخباها عندك* يا بني اكرم الرب فيتايد ويقويك*
ولا تخافن آخر غير اكثر منه*

Homo ſtolidus tranſgrediens legẽ, ambulat 12
viam non rectam: Idemq; innuit oculo 13
ſuo, & indicat pede ſuo, & ſignificat ſignis
digitorum ſuorum: In corde ſuo perverſo 14
machinatur mala, & ob hanc ſuam
conſuetudinem, ſingulis momentis excitat
in urbe ſeditiones turbulentas. Et hac de 15
cauſa adveniet perditio ejus cum feſtinatione,
abſcindetur exciſione & fracturâ in- 16
ſanabili. Quia delectatur omnibus rebus
quas abominatur Deus. Ob immunditiam
animæ Conteretur oculus ſuperbi, & 17
lingua tyranni, & manus effundentes ſanguinem
juſtum, Et cor machinans cogi- 18
tationes malas, & pedes veloces ad operandum
malum. Teſtis iniquus inceditur 19
ſuo mendacio, & inducit in medium
fratrum lites. Fili mi, cuſtodi leges patris 20
tui, & ne rejicias præcepta matris tuæ.
Appende ea ſuper animam tuam jugiter, 21
& iis circunda collum tuum. Ubicunq; 22
ambulaveris, comitare illa, & ſint tecum:
cúmque cubueris te cuſtodiant, ut cùm
ſurrexeris converſentur tecum. Quoni- 23
am mandatum legis lucerna eſt, & via
vitæ, & correptio ac diſciplina. Ut cuſto- 24
diant te à muliere habente virum, & à
calumnia linguæ alienæ. Non te vincat 25
concupiſcentia pulchritudinis, & ne capiaris
oculis tuis, nec te rapiant palpebræ
ejus: Quia pretii meretricis valor eſt pa- 26
nis unius: mulier venatur animas virorum
pretioſas. Nunquid alligat quis ſinui 27
ſuo ignem, & non comburuntur veſtimenta
ejus? Aut ambulat quis ſuper carbones 28
ignis, & non uruntur pedes ejus? Sic 29
qui ingreditur ad mulierem habentem virum,
non juſtificabitur, neq; ullus qui eam
tangit. Nec mirum eſt ſi capiatur qui 30
furatur: ſiquidem ipſe furatur ut ſaturet
animam eſurientem. Imò ſi captus fue- 31
rit, ſolvet ſeptuplum ejus quod furatus
eſt: & dabit omne quod poſſidet, ut liberet
animam ſuam. At verò adulter, ob exigui- 32
tatem judicii ſui, aſtruit animæ ſuæ
interitum. Et ſuffert dolores & deſpecti- 33
onem, & opprobrium ejus non delebitur in
æternum. Nam furor mariti ejus refertus 34
eſt zelo, ideoque non parcet ei in die ju-
dicii, Nec commutabit inimicitiam ullo 35
genere ex generibus commutationum, neq;
diſſolvent eam munera plurima.

CAP. VII.

Fili mi, ſerva ſermones meos, & præcepta 1
mea abſconde apud te. Fili mi,
honora Dominum, & confortaberis, &
corroborabit te: & ne timeas alium præter
eum, magis ipſo.

משלי: ח

nigredinem tanquam meam legem & ; vive & , mea præcepta Cuſtodi
2 שְׁמֹר מִצְוֹתַי וֶחְיֵה וְתוֹרָתִי כְּאִישׁוֹן
.tui cordis tabula *ſuper* ea ſcribe ;tuis digitis *ſuper* ea Liga .tuorũ oculorũ
3 עֵינֶיךָ׃ קָשְׁרֵם עַל־אֶצְבְּעֹתֶיךָ כָּתְבֵם עַל־לוּחַ לִבֶּךָ׃
.*vocabis* intelligentiam *notam* & : tu mea Soror , ſapientiæ Dic
4 אֱמֹר לַחָכְמָה אֲחֹתִי אָתְּ וּמֹדָע לַבִּינָה תִקְרָא׃
ſuos ſermones , extranea ab ; aliena muliere à te *cuſtodiendum Ad*
5 לִשְׁמָרְךָ מֵאִשָּׁה זָרָה מִנָּכְרִיָּה אֲמָרֶיהָ
.proſpexi *meum cancellum per* ; meæ domus *feneſtra in Quia* .*lenificavit*
6 הֶחֱלִיקָה׃ כִּי בְּחַלּוֹן בֵּיתִי בְּעַד אֶשְׁנַבִּי נִשְׁקָפְתִּי׃
.corde *carentem* juvenem *filiis in* conſideravi *: ſimplicibus in* vidi Et
7 וָאֵרֶא בַפְּתָאיִם אָבִינָה בַבָּנִים נַעַר חֲסַר־לֵב׃
.gradiebatur ejus domus *via* & ,ej⁹ angulum apud *platea in* Tranſeuntem
8 עֹבֵר בַּשּׁוּק אֵצֶל פִּנָּהּ וְדֶרֶךְ בֵּיתָהּ יִצְעָד׃
.caligine & , noctis nigredine in ; diei veſpera in , crepuſculo In
9 בְּנֶשֶׁף־בְּעֶרֶב יוֹם בְּאִישׁוֹן לַיְלָה וַאֲפֵלָה׃
.corde *ſervata &* , *meretricis* ornatu ; ejus occurſum in mulier ecce Et
10 וְהִנֵּה אִשָּׁה לִקְרָאתוֹ שִׁית זוֹנָה וּנְצֻרַת לֵב׃
.ejus pedes *habitabunt* non ſua domo in ; *declinans &* , *ipſa* Tumultuoſa
11 הֹמִיָּה הִיא וְסֹרָרֶת בְּבֵיתָהּ לֹא־יִשְׁכְּנוּ רַגְלֶיהָ׃
.*inſidiabitur* angulum omnem juxta & ; plateis in *vice* , *vico in* *Vice*
12 פַּעַם ׀ בַּחוּץ פַּעַם בָּרְחֹבוֹת וְאֵצֶל כָּל־פִּנָּה תֶאֱרֹב׃
: ei dixit & , *ſuas facies* roboravit :eũ eſt oſculata & ,eũ *in* apprehendit Et
13 וְהֶחֱזִיקָה בּוֹ וְנָשְׁקָה לּוֹ הֵעֵזָה פָנֶיהָ וַתֹּאמַר לוֹ׃
Idcirco .mea vota reddidi hodie *: me ſuper* pacificorum Victimæ
14 זִבְחֵי שְׁלָמִים עָלָי הַיּוֹם שִׁלַּמְתִּי נְדָרָי׃ 15 עַל־כֵּן
.te inveni & ,*tuas facies mane quærendum ad* : tui occurſum in ſum egreſſa
יָצָאתִי לִקְרָאתֶךָ לְשַׁחֵר פָּנֶיךָ וָאֶמְצָאֶךָּ׃
.Ægyptio fune *meiſis* ; meum lectum *adornavi Tapetibus*
16 מַרְבַדִּים רָבַדְתִּי עַרְשִׂי חֲטֻבוֹת אֵטוּן מִצְרָיִם׃
, Veni .cinnamomo & , aloë , myrrha , meum cubile *Perfudi*
17 נַפְתִּי מִשְׁכָּבִי מֹר אֲהָלִים וְקִנָּמוֹן׃ 18 לְכָה
.amoribus *in* collætemur ; manè uſque amoribus inebriemur
נִרְוֶה דֹדִים עַד־הַבֹּקֶר נִתְעַלְּסָה בָּאֳהָבִים׃
Ligamen .*longinquo* à via in abiit : ſua domo in vir non Quia
19 כִּי אֵין הָאִישׁ בְּבֵיתוֹ הָלַךְ בְּדֶרֶךְ מֵרָחוֹק׃ 20 צְרוֹר
.ſuam domum veniet *temporis ſtatuti* diem ad : ſua manu in tulit argenti
הַכֶּסֶף לָקַח בְּיָדוֹ לְיוֹם הַכֵּסֶא יָבֹא בֵיתוֹ׃
ſuorum labiorũ lenitate *in : ſuæ captationis* multitudine *in* eũ fecit Declinare
21 הִטַּתּוּ בְּרֹב לִקְחָהּ בְּחֵלֶק שְׂפָתֶיהָ
: *veniet lanienam* ad bos veluti , ſtatim eam poſt *Vadens* .eum compulit
22 תַּדִּיחֶנּוּ׃ הוֹלֵךְ אַחֲרֶיהָ פִּתְאֹם כְּשׁוֹר אֶל־טָבַח יָבֹא
ſagitta ſcindat Donec .ſtulti caſtigationem ad compes ſicut &
וּכְעֶכֶס אֶל־מוּסַר אֱוִיל׃ 23 עַד יְפַלַּח חֵץ
ſuâ animâ *ii* quòd *novit non* & : laqueum ad *avem feſtinare ut* ,ejus jecur
כְּבֵדוֹ כְּמַהֵר צִפּוֹר אֶל־פָּח וְלֹא־יָדַע כִּי־בְנַפְשׁוֹ
.mei oris eloquiis attendite & ; mihi parete , filii nunc Et .*ipſe*
24 הוּא׃ וְעַתָּה בָנִים שִׁמְעוּ־לִי וְהַקְשִׁיבוּ לְאִמְרֵי־פִי׃
.ejus ſemitis in erres ne : tuum cor ejus vias ad declinet Ne
25 אַל־יֵשְׂטְ אֶל־דְּרָכֶיהָ לִבֶּךָ אַל־תֵּתַע בִּנְתִיבוֹתֶיהָ׃
.ejus occiſi omnes fortes & , fecit cadere *vulneratos* multos Nam
26 כִּי־רַבִּים חֲלָלִים הִפִּילָה וַעֲצֻמִים כָּל־הֲרֻגֶיהָ׃
.mortis *penetralia* ad deſcendentes : ejus domus *ſepulchri* Viæ
27 דַּרְכֵי שְׁאוֹל בֵּיתָהּ יֹרְדוֹת אֶל־חַדְרֵי־מָוֶת׃

CAP. VIII. ח

? ſuam vocem *dabit* intelligentia & ; *clamabit* ſapientia Nonne
1 הֲלֹא־חָכְמָה תִקְרָא וּתְבוּנָה תִּתֵּן קוֹלָהּ׃

Verſio VULG. LAT.

2 Serva mandata mea; & vives:
& legem meam quaſi pupillam
3 oculi tui: Liga eam in digitis
tuis, ſcribe illam in tabulis
4 cordis tui. Dic ſapientiæ, Soror
mea es: & prudentiam
5 voca amicam tuam, Ut cuſtodiat
te à muliere extranea, &
ab aliena, quæ verba ſua dulcia
6 facit. De feneſtra enim
domûs meæ per cancellos
7 proſpexi, Et video parvulos,
conſidero vecordem juvenem,
8 Qui tranſit per plateam juxta
angulum, & prope viam domûs
9 illius, graditur In obſcuro,
adveſperaſcente die, in
noctis tenebris, & caligine.
10 Et ecce occurrit illi mulier ornatu
meretricio, præparata ad
capiendas animas: garrula &
11 vaga, Quietis impatiens, nec
valens in domo conſiſtere pedibus
12 ſuis, Nunc foris, nunc
in plateis, nunc juxta angulos
13 inſidians. Apprehenſúmque
deoſculatur juvenem, & procaci
vultu blanditur, dicens;
14 Victimas pro ſalute vovi, hodiè
15 reddidi vota mea. Idcircò
egreſſa ſum in occurſum tuum,
deſiderans te videre, &
16 reperi. Intexui funibus lectulum
meum, ſtravi tapetibus
17 pictis ex Ægypto. Aſperſi cubile
meum myrrhâ, & aloe,
18 & cinnamomo. Veni, inebriemur
uberibus, & fruamur cupitis
amplexibus, donec illuceſcat
19 dies: Non eſt enim vir
in domo ſua, abiit viâ longiſſimâ.
20 Sacculum pecuniæ ſecum
tulit: in die plenæ lunæ
reverſurus eſt in domum ſuam.
21 Irretivit eum multis ſermonibus,
& blanditiis labiorum
22 protraxit illum. Statim eam
ſequitur quaſi bos ductus ad
victimam, & quaſi agnus laſciviens,
& ignorans quòd ad
23 vincula ſtultus trahatur, Donec
transfigat ſagitta jecur
ejus: velut ſi avis feſtinet ad
laqueum, & neſcit quòd de
periculo animæ illius agitur.
24 Nunc ergò, fili mi, audi me,
25 & attende verbis oris mei. Ne
abſtrahatur in viis illius mens
tua: neque decipiaris ſemitis
26 ejus. Multos enim vulneratos
dejecit, & fortiſſimi quique
27 interfecti ſunt ab ea. Viæ
inferi domus ejus, penetrantes
in interiora mortis.

CAP. VIII.

1 NUmquid non ſapientia clamitat, & prudentia dat vocem ſuam?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

2 † Φύλαξον ἐμὰς ἐντολὰς καὶ βιώσῃς,
† τοὺς δὲ ἐμοὺς λόγους ὥσπερ κόρας ὀμμάτων.
3 † (α) Περίθου δὲ αὐτοὺς σοῖς
δακτύλοις, † ἐπίγραψον δὲ ἐπὶ τὸ πλάτος
4 τῆς καρδίας σου. † Εἶπον τὴν σοφίαν
σὴν ἀδελφὴν εἶναι, † τὴν δὲ φρόνησιν γνώριμον
5 περιποίησαι σεαυτῷ· Ἵνα σε τηρήσῃ
ἀπὸ γυναικὸς ἀλλοτρίας καὶ πονηρᾶς, †
ἐάν σε λόγοις τοῖς πρὸς χάριν ἐμβάλληται.
6 † Ἀπὸ γὰρ θυρίδος ἐκ τοῦ οἴκου αὐτῆς εἰς
7 τὰς πλατείας παρακύπτουσα, Ὃν ἂν ἴδῃ τῶν
ἀφρόνων τέκνων νεανίαν ἐνδεῆ φρενῶν, †
8 Παραπορευόμενον παρὰ γωνίαν ἐν διόδοις
9 οἴκων αὐτῆς, † καὶ λαλοῦντα Ἐν σκότει ἑσπερινῷ,
† ἡνίκα ἂν ἡσυχία νυκτερινὴ καὶ
10 (β) γνοφώδης, † Ἡ δὲ γυνὴ συναντᾷ αὐτῷ,
εἶδος ἔχουσα πορνικόν, † ἣ ποιεῖ νέων ἐξίπτασθαι
καρδίας. † ἀνεπτερωμένη δέ ἐστι
11 καὶ ἄσωτος, † Ἐν οἴκῳ δὲ οὐχ ἡσυχάζουσιν
12 οἱ πόδες αὐτῆς. † Χρόνον γάρ τινα ἔξω
ῥέμβεται, † χρόνον δὲ ἐν πλατείαις παρὰ
13 πᾶσαν γωνίαν ἐνεδρεύει. † Εἶτα ἐπιλαβομένη
ἐφίλησεν αὐτόν, † ἀναιδεῖ δὲ προσώπῳ
14 προσεῖπεν αὐτῷ, † Θυσία εἰρηνική
μοι ἐστί, † Σήμερον ἀποδίδωμι τὰς εὐχάς
15 μου. † Ἕνεκα τούτου ἐξῆλθον εἰς συνάντησίν
(γ) σοι, † ποθοῦσα τὸ σὸν πρόσωπον,
16 εὕρηκά σε. † Κειρίαις τέτακα
τὴν κλίνην μου, † ἀμφιτάποις δὲ ἔστρωκα
17 τοῖς ἀπ' Αἰγύπτου. † Διέρραγκα τὴν
κοίτην μου (δ) κροκίνῳ, † τὸν δὲ οἶκόν
18 μου κινναμώμῳ. † Ἐλθὲ, καὶ ἀπολαύσωμεν
φιλίας ἕως ὄρθρου, † δεῦρο καὶ ἐγκυλισθῶμεν
19 ἔρωτι. † Οὐ γὰρ πάρεστιν ὁ
ἀνήρ μου ἐν οἴκῳ, † πεπόρευται δὲ ὁδὸν
20 μακράν, † Ἔνδεσμον ἀργυρίου λαβὼν
ἐν χειρὶ αὐτοῦ, † δι' ἡμερῶν πολλῶν
21 ἐπανήξει εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ. † Ἀπεπλάνησε
δὲ αὐτὸν πολλῇ ὁμιλίᾳ, βρόχοις †
τοῖς ἀπὸ χειλέων ἐξώκειλεν αὐτόν. †
22 Ὁ δὲ ἐπηκολούθησεν αὐτῇ (ε) κεπφωθείς·
† ὥσπερ δὲ βοῦς ἐπὶ σφαγὴν ἄγεται, †
23 καὶ ὥσπερ κύων ἐπὶ δεσμοὺς, † Ἢ ὡς ἔλαφος
τοξεύματι πεπληγὼς εἰς τὸ ἧπαρ. †
σπεύδει δὲ ὥσπερ ὄρνεον εἰς παγίδα, † οὐκ
24 εἰδὼς ὅτι περὶ ψυχῆς τρέχει. † Νῦν οὖν
υἱὲ ἄκουέ μου, † καὶ πρόσεχε (ζ) ῥήμασι στόματός
25 μου. † Μὴ ἐκκλινάτω εἰς τὰς ὁδοὺς
26 αὐτῆς ἡ καρδία (η) σου, † Πολλοὺς γὰρ
τρώσασα καταβέβληκε, † καὶ ἀναρίθμητοί
27 εἰσιν οὓς πεφόνευκεν. † Ὁδοὶ ᾅδου ὁ οἶκος
αὐτῆς, † κατάγουσαι (θ) εἰς τὰ ταμεῖα τοῦ θανάτου.

MS. A. (α) Περίθου* αὐτοῖς σοῖς δακτύλοις, (β) γνόφος, (γ)* μου, (δ) κρόκῳ, (ε) κεπφωθεὶς· (ζ) ῥῆσιν (η) σου, † καὶ μὴ πλανηθῇς ἐν ἀτραποῖς αὐτ. Πολλοὺς (θ) εἰς ταμιεῖα

ΚΕΦ. η'.

1 † Σὺ τὴν σοφίαν κηρύξεις, ἵνα φρόνησίς σοι ὑπακούσῃ.

Cuſtodi mea mandata (& (b) vives,) & meos ſermones 2
tanquàm pupillas oculorum.
(c) Circumpone autem illos 3
tuis digitis: inſcribe autem ſuper
latitudinem (d) cordis tui. Dic 4
ſapientiam (e) tuam ſororem
eſſe: & (f) prudentiam notam
redde tibi: ut te ſervet 5
à muliere aliena, & mala;
(g) ſi te ſermonibus, qui ad gratiam,
adorta fuerit. De feneſtra 6
enim è domo ſua in plateas proſpiciens,
Quemcunque viderit 7
inſipientum filiorum adoleſcentem
inopem cordis, Prætereuntem 8
(h) juxta angulum in tranſitibus
domorum ſuarum, & loquentem
In tenebris veſpertinis, 9
ſimulac quies nocturna, & caliginoſa;
Et verò mulier occurrit 10
ei, (i) ſpeciem habens meretriciam,
quæ facit juvenum volare
corda: (k) vaga autem eſt, &
(l) luxurioſa, Et in domo non 11
quieſcunt pedes ejus. Interdum 12
enim foràs circumvertitur: interdum
verò in plateis apud omnem
angulum inſidiatur. Deinde apprehendens 13
oſculata eſt eum, & (m)
impudenti facie alloquitur eum;
Sacrificium pacificum mihi eſt, 14
hodiè reddo vota mea. Hâc ex 15
cauſa progreſſa ſum obviàm tibi,
deſiderans tuam faciem inveni te.
(n) Inſtitis texui lectum meum: & 16
(o) tapetibus ab Ægypto ſtravi.
(p) Aſperſi cubile meum croco, 17
& domum meam cinnamomo.
Veni, & (q) fruamur amicitiâ 18
uſque in diluculum: Veni, &
(r) colluctemur cupidine. Non 19
enim adeſt vir meus in domo, abiit
autem viam longam, (ſ) Involucro 20
pecuniæ accepto in manu
ſua: (t) per dies multos redibit
in domum ſuam. (u) Seduxit 21
autem eum multâ (x) colloquutione,
& laqueis qui ex labiis, (y)
attraxit eum. Ipſe autem obſequutus 22
eſt ei (z) infatuatus: & tanquàm
bos ad mactationem agitur,
& tanquàm canis (ω) ad vincula,
Aut tanquàm cervus ſagittâ 23
(aa) vulneratus in jecore. Feſtinat
autem tanquàm avis in laqueum,
neſciens, quia pro anima
currit. Nunc igitur, fili, audi me, 24
& intende verbis oris mei. Non 25
declinet in vias ejus cor (bb) tuum.
Multos enim vulnerando 26
dejecit: et (cc) innumerabiles ſunt,
quos trucidavit. Via inferorum 27
domus ejus, deducentes in ſeceſſus
mortis.

CAP. VIII.

Tu (a) ſapientiam prædicabis, 1
ut prudentia tibi obediat.

תרגום TARGUM.

2 נְטַר פִּקּוּדַי וֶחְיֵה וְנִימוֹסַי הֵיךְ בַּבְתָּא דְעַיְנָא׃ קְטוֹר אִנּוּן עַל אֶצְבְּעָתָךְ כְּתוֹב אִנּוּן עַל
3 לוּחַ דְּלִבָּךְ׃ 4 אֱמַר לְחָכְמְתָא אֲחָתִי אַנְתְּ וּמוֹדַעְתָּא קְרִי לְבִיוּנְתָּא׃ דְּנִנְטְרָךְ מִן אִתְּתָא
5 חִילוֹנִיתָא וּמִן נוּכְרֵיתָא דְּשַׁעְיָן מִלְּהָא׃ מְטוּל דְּמִן כַּוְיָא וְעַרְתָּא דְבֵיתִי אַדְקֵית וּמִן
6 חַרַכִּין דְּדִירָא׃ 7 וַחֲזֵית בְּשַׁבְרֵי וְאִסְתַּכְּלֵית בְּטַלָאֵי וְתַמְהֵית בְּחַסִּיר רַעְיוֹנָא׃ עָבֵר
8 בְּשׁוּקָא לְקֳבֵל פִּנְּתָא וּבְאָרְחָא דְבֵיתָא מְהַלֵּךְ׃ 9 בְּרַמְשָׁא בְּמַעֲרַב יוֹמָא בַּחֲשׁוֹכָא
10 דְּלֵילְיָא וּבַחֲכִירָה׃ וְהָא אִתְּתָא לְאוּרְעֵיהּ בְּאַסְכֵּמָא דְזָנִיתָא דְּמַפְרְדָא לִבָּא דְעוּלֵימֵי׃
11 וּמַרְדְּתָא הִיא וּפְרִידְתָּא בְּבֵיתָא לָא שָׁכְנָן רִגְלָהָא׃ 12 בְּעִדָּנָא בְּשׁוּקֵי בְּעִדָּנָא בִּשְׁקָקֵי
13 וְלִקְבֵל כָּל פִּנְּתָה דְּיָאֵיָא כְּמְנָא׃ וְאַתְקְפַת בֵּיהּ וְנַשְּׁקָתֵיהּ וְאַחְצִיפַת אַפָּהָא וַאֲמַרַת לֵיהּ׃
14 דִּבְחֵי דְקֻרְבָּנֵי עֲלַי יוֹמָנָא שַׁלְמֵית נִדְרַי׃ 15 מְטוּל הָכְנָא נִפְקֵית לְאוּרְעָךְ דְּמַפְכָּא הֲוֵית
16 לְרַגְשָׁא וַאֲמַרִית אֲדַבְּרִנָּךְ׃ בְּתַשְׁוִיתָא שַׁוֵּית עַרְסִי וּבְקִרְמָא קִרְמְתָא מִצְרָאָה׃
17 רַסֵּית עַל עַרְסִי מוֹרָא וְכוּרְקְמָא וְקוּנָמָא׃ 18 תָּא נִתְבַּסַּם בְּרַחְמְתָא עַד צַפְרָא וְנֶעֱסַק
19 חַד לְחַד בִּרְגְּנָתָא׃ דְּגַבְרָא לֵית הוּא בְּבֵיתָא אֲזַל בְּאוֹרַח רְחִיקָא׃ 20 צְרָרָא דְכַסְפָּא
21 נְסַב בִּידֵיהּ וּלְיוֹמָא דְעִדָּא אָתֵי לְבֵיתֵיהּ׃ וְאַטְעֲיָתֵיהּ בְּסוּגְיָא דְמִלְּהָא וּבְשַׁעְיוּתָא
22 דְסִפְוָתָהָא תְּפַתֵּיהּ׃ וְהוּא אָזֵל בַּתְרָהָא שְׁלָיְאִית הֵיךְ תּוֹרָא דְאָזֵיל לְוָת טַבָּחָא וְהֵיךְ
23 כַּלְבָּא לְאַסּוּרָא׃ וְהֵיךְ אַיְלָא דְּמַפְרִיחַ גִּירָא בְּכַבְדֵּיהּ וּמִסְתַּרְהַב הֵיךְ צִפְּרָא לְוָת פּוּחָא
24 וְלָא יָדַע דִּלְמוֹתָא דְנַפְשֵׁיהּ אָזֵיל׃ וְהַשְׁתָּא בְנַיָּא שְׁמַעוּן לִי וַאֲצִיתוּ לְמֵימְרֵי דְפוּמִי׃
25 לָא יִסְטֵי לִבָּךְ לְאָרְחָתָהָא וְלָא תִטְעֵי בִּשְׁבִילָהָא׃ 26 מְטוּל דְּסַגִּיעֵי קְטִילַיָּא אַפֵּלַת
27 וְעַשִּׁינִין כּוּלְּהוֹן קְטִילָהָא׃ אָרְחָתָא דִשְׁיוֹל בֵּיתָהּ נָחֲתָן לְקִיטוֹנֵי דְקִבְרָא׃

ח

1 מְטוּל הָכְנָא חָכְמְתָא תִקְרָא וּבִיוּנָה תְּרִמֵי קָלָהּ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Cuſtodi præcepta mea, & vive; & leges meas ſicut pupillam oculi tui. 2
Liga ea ſuper digitos tuos; ſcribe ea ſuper tabula cordis tui. Dic ſapientiæ: 3
Soror mea es: & cognatam voca prudentiam. Ut cuſtodiat te 4
à muliere extranea, & ab aliena, cujus blandi ſunt ſermones. Quoniam 5
per feneſtras parvas domus meæ proſpexi, & per cancellos habitaculi. 6
Et vidi inſipientes, & conſideravi juvenes, & admiratus ſum deficientem 7
intellectu, Tranſeuntem per plateam contra angulum, & via domus 8
ejus ambulantem; Veſperi, in occaſu diei, in tenebris noctis, & in 9
caligine. Et ecce mulier in occurſum ejus in ornatu meretricis, quæ aufert 10
cor juvenum. Prævaricatríxque eſt & vaga: in domo ſua non morantur 11
pedes ejus. Nunc foris, nunc in plateis, & contra omnem angulum 12
opportunum inſidiatur. Et apprehendit eum & oſculatur illum, 13
& impudenti facie dicit ei: Sacrificia oblationum [*habeo*] ſuper me: hodie 14
reddidi vota mea. Propterea egreſſa ſum in occurſum tuum, quippe 15
me vertens ad quærendam ſocietatem; & dixeram me te adducturam.
In ſtratis poſui lectulum meum, & in tapetibus pictis de Ægypto. 16
Aſperſi cubile meum myrrha & aloë & cinnamomo. Veni jucundemur 17
amoribus uſque manè, & mutuò adhæreamus deſideriis. Non eſt enim 18
vir in domo ſua; abiit in via longinqua. Sacculum argenti tulit in 19
manu ſua, & in die congregationis veniet ad domum ſuam. Seduxit itaque 20
eum in multitudine verborum ſuorum, & in blanditie labiorum 21
ſuorum decepit eum. Et ipſe vadit poſt eam confeſtim ſicut bos qui vadit 22
ad macellum, & ſicut canis ad vinculum. Et ſicut cervus in cujus jecur 23
volat ſagitta, & feſtinat ſicut *paſſer* ad laqueum, & neſcit quòd tendat
ad mortem animæ ſuæ. Et nunc filii audite me, & auſcultate verba 24
oris mei. Ne deflectat cor tuum ad vias ejus, nec decipiaris in ſemitis 25
illius. Quoniam multos interfectos dejecit, & fortes ſunt omnes interfecti 26
ejus. Viæ inferni eſt domus ejus, deſcendentes ad cubicula ſepulturæ. 27

CAP. VIII.

PRopterea ſapientia clamat, & prudentia elevat vocem ſuam. 1

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

2 * ܛܪ ܦܘܩܕܢܝ ܘܚܝܝ. ܘܢܡܘܣܝ ܐܝܟ ܒܒܬܐ ܕܥܝܢܐ.* ܩܛܘܪ ܐܢܘܢ ܒܨܘܪܟ. ܘܟܬܘܒ ܐܢܘܢ
3 4 ܥܠ ܠܘܚܐ ܕܠܒܟ.* ܘܐܡܪ ܠܚܟܡܬܐ ܚܬܝ ܐܢܬܝ. ܘܠܣܘܟܠܐ ܩܪܝ ܡܝܕܥܐ.* ܕܬܛܪܟ
5 ܡܢ ܐܢܬܬܐ ܢܘܟܪܝܬܐ ܕܡܫܥܒܕܢ ܡܠܝܗ.* ܡܛܠ ܕܡܢ ܟܘܬܐ ܕܒܝܬܗ ܘܡܢ ܟܘܫܟܪܝܗ
6 7 ܕܘܩܬ.* ܘܚܙܬ ܛܠܝܐ. ܘܐܣܬܟܠܬ ܥܠܝܡܐ ܘܚܣܝܪܝ ܪܥܝܢܐ.* ܕܥܒܪܝܢ ܒܫܘܩܐ. ܘܠܘܬ ܓܒܐ
8 9 ܕܙܘܝܬܐ ܕܫܒܝܠܝ ܒܝܬܗ.* ܒܪܡܫܐ ܡܥܪܒ ܫܡܫܐ : ܒܚܫܘܟܐ ܕܠܠܝܐ ܘܒܥܪܦܠܐ.
10 * ܘܢܦܩܬ ܐܢܬܬܐ ܠܐܘܪܥܗ ܒܐܣܟܡܐ ܕܙܢܝܬܐ. ܕܡܦܪܚܐ ܠܒܘܬܐ ܕܥܠܝܡܐ.* ܘܡܦܪܚܢܝܬܐ
11 12 ܘܦܚܙܬܐ. ܘܒܒܝܬܗ ܠܐ ܫܠܝܢ ܪܓܠܝܗ.* ܐܠܐ ܙܒܢܝܢ ܠܒܪ ܗܘܝܢ. ܘܙܒܢܝܢ ܒܫܘܩܐ
13 ܘܒܙܘܝܬܐ ܟܡܢܐ.* ܘܐܚܕܬܗ ܘܢܫܩܬܗ. ܘܒܐܦܝܗ ܚܨܝܦܬܐ ܘܐܡܪܐ ܠܗ.* ܕܒܚܐ ܐܝܬ ܠܝ
14 15 ܫܠܡܐ. ܝܘܡܢܐ ܦܪܥܬ ܢܕܪܝ.* ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܦܩܬ ܠܐܘܪܥܟ. ܕܪܓܝܓܐ ܗܘܝܬ ܠܡܚܙܝܟ.
16 ܘܐܫܟܚܬܟ.* ܒܬܫܡܝܫܬܐ ܦܪܣܬ ܥܪܣܝ. ܘܟܣܝܬܗ ܒܡܪܒܕܐ ܡܨܪܝܐ.* ܘܙܠܚܬ ܠܗ ܥܪܣܝ
17 18 ܡܘܪܐ ܘܥܘܕܐ ܘܩܘܢܡܐ.* ܬܐ ܢܬܦܢܩ ܒܪܚܡܬܐ ܥܕܡܐ ܠܨܦܪܐ. ܘܢܬܚܒܩ ܚܕ ܥܡ
19 ܚܕ ܒܪܓܝܓܬܐ.* ܠܐ ܗܘܐ ܓܒܪܝ ܒܒܝܬܐ. ܐܙܠ ܠܗ ܒܐܘܪܚܐ ܪܚܝܩܬܐ.* ܘܨܪܪܐ ܕܟܣܦܐ ܢܣܒ
20 21 ܒܐܝܕܗ. ܘܠܝܘܡܬܐ ܗܘ ܣܓܝܐܐ ܐܬܐ ܠܒܝܬܗ.* ܘܐܛܥܝܬܗ ܒܣܘܓܐܐ ܕܡܠܝܗ. ܘܒܫܘܥܒܕ
22 ܣܦܘܬܗ ܐܓܪܬܗ.* ܘܗܘ ܐܙܠ ܗܘܐ ܒܬܪܗ ܐܝܟ ܛܠܝܐ. ܘܐܝܟ ܬܘܪܐ ܕܐܙܠ ܠܢܟܣܬܐ
23 ܘܐܝܟ ܟܠܒܐ ܠܐܣܘܪܐ.* ܘܐܝܟ ܐܝܠܐ ܕܡܚܝܐ ܓܐܪܐ ܒܟܒܕܗ. ܘܡܣܪܗܒ ܐܝܟ
24 ܦܪܚܬܐ ܠܦܚܐ. ܘܠܐ ܝܕܥ ܕܠܡܘܬܐ ܗܘ ܕܢܦܫܗ ܐܙܠ.* ܡܛܠ ܗܢܐ ܒܢܝ ܫܡܥܘܢܝ. ܘܨܘܬܘ
25 ܠܡܠܐ ܕܦܘܡܝ.* ܠܐ ܢܣܛܐ ܠܒܟ ܠܐܘܪܚܬܗ. ܘܠܐ ܬܛܥܐ ܒܫܒܝܠܝܗ.* ܡܛܠ
26 27 ܕܣܘܓܐܐ ܕܩܛܝܠܐ ܐܪܡܝܬ. ܘܚܣܝܢܝܢ ܟܠܗܘܢ ܡܩܛܠܢܝܗ.* ܐܘܪܚܬܐ ܕܒܝܬܗ. ܐܘܪܚܬܐ ܐܝܢܝܢ
ܕܫܝܘܠ. ܕܢܚܬܢ ܠܬܘܢܝ ܕܡܘܬܐ.

* ܫܠܡ * ܙ *

1 * ܡܛܠ ܗܢܐ ܠܚܟܡܬܐ ܐܟܪܙ. ܘܣܘܟܠܐ ܢܥܢܝܟ.

Serva mandata mea, & vives, & leges meas 2
ceu pupillam oculi. Alligato ea collo tuo, et 3
inſcribito illa tabulis cordis tui. Et dicito 4
ſapientiæ, Soror mea tu es: & prudentiam
vocato intellectum: Ut cuſtodiat te à mu- 5
liere peregrina, cujus adulatoria ſunt verba.
Nam de feneſtra domûs ſuæ, & de cancellis 6
proſpexit, Viditque pueros, & contemplata 7
eſt adoleſcentes, & expertes judicio, Præter- 8
euntes per plateam, & ad latus angulorum
ſemitarum domûs ſuæ, Veſpere, ad occaſum 9
ſolis, in tenebris nocturnis & in caligine: Et 10
egreſſa eſt mulier in occurſũ ejus, ornatu me-
retricio, divellens cor juvenum, Petulans ac 11
laſciviens, cujus pedes domi ſuæ non quie-
ſcunt, Sed modò foras vagantur, & modò in 12
plateis & angulis inſidiatur. Et apprehendit 13
eum, & deoſculata eſt illum, & procaci vultu
dixit ei, Victimæ ſunt pacificæ, hodiè reddi- 14
di vota mea. Propterea egreſſa ſum in occur- 15
ſum tuum, quoniam optabam te videre, & in-
veni te. Stragulo inſtruxi lectum meum, & 16
ſtromatibus Ægyptiis operui: Et aſperſi cu- 17
bile meum myrrhâ, & aloe, & cynnamomo.
Veni oblectemur amore in craſtinum uſque, 18
& amplectamur alter alterũ cum delectatio-
ne. Non eſt enim domi vir meus, abiit in viã 19
longinquam. Et ligamen argenti ſumpſit ma- 20
nu ſuâ, & poſt dies multos venturus eſt in do-
mum ſuam. Igitur ſeduxit eum copiâ verbo- 21
rum ſuorum, & blanditiis labiorũ ſuorum al-
lexit eum ad ſe. Et ipſe abiit poſt eam quaſi 22
infans, & quaſi bos vadens ad lanienã, & ve-
lut canis ad vinculum, Et tanquã cervus cu- 23
jus jecur transfixum eſt ſagittâ: & feſtinat ve-
lut animal alatum ad laqueum, & ignorat ad
mortẽ animæ ſuæ ſe pergere. Nunc ergò filii 24
audite me, & attendite verbis oris mei. Ne 25
flectatur cor tuum ad vias ejus, neque oberres
in ſemitis ejus. Quia copiam occiſorũ pro- 26
ſtravit, & *quidem* fortiſſimi ſunt omnes quos
necavit. Viæ domûs ejus, viæ ſunt inferi, 27
deſcendentes ad penetralia mortis.

CAP. VIII.

PRopterea ſapientiam altâ voce inclama, 1
& intelligentia reſpondebit tibi.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

2 3 * احفظ وصاياي فتحيا * واقوالي كحدقتي عينيك * اجعلها في اصابعك * واكتبها في عرض
4 5 قلبك * قل للحكمة ان تكون اختك * واصطنع الفطنة لنفسك اخص ممن تعرفه * لتحفظك من
6 امراة غريبة وخبيثة * ان طارحتك باقوال تختلسك بحسنها * لانها من نافذة بيتها تتلبث
7 8 مستشرفة الي الشوارع * فمن تبصره من الاولاد الجهال شابا ماشيا ينقص عقلين * عند عطفة
9 10 موارد بيتها متكلما * في الظلام المسائي حين يكون السكوت الليلي والقتامي * تلتقيه الامراة
11 متخذة نوعا ريائيا التي تجعل قلوب الاحداث طائرة * لانها مستطيرة ونهمة * ورجلاها ما يسكنان
12 13 في منزلها * تطمح مدة ما خارج بيتها * تكمن حينا في الشوارع عند كل زاوية * ثم اذا تناولته
14 15 قبلته وناجته بوقاحة وجه * هذه ذبيحة سلامية عندي * اليوم اقضي نذوري * لهذا خرجت
16 الي استقبالك تابعة الي وجهك فوجدتك * قد شددت سريري بقمط الكتان * وفرشته بالمطارح
17 واللحف التي من مصر * قد نضحت على مضجعي الزعفران * ورششت بيتي بقصب الذرير *
18 19 * هلم نتمتع بمتع المحبة الي السحر * تعال نتقلب بعشق * فان رجلي ليس في المنزل حاضرا *
20 قد ذهب في طريق بعيدة * واخذ بيده صرة دراهم * بعد ايام كثيرة يعود الي منزله *
21 22 * فاستطلته بالحديث الكثير المتصل * وادهشته بالمواثق من شفتيها * فاستطار لشي فارغ *
23 وتبعها كثور يساق الي الذبح * او مثل كلب يساق الي الساجور * او مثل ايل مجروح في
24 كبده بسهم رشقه * يسارع كالطائر الي الفخ * غير عالم انه في هلاك نفسه يسعي * فالان يا
25 بني اسمعني * واصغ الي اقوال فمي * لا يجنحن قلبك الي طرقها * ولا تظلن في مناهجها *
26 27 * فانها قد جرحت كثيرين وافترستهم * ولم يحص عدد الذين قتلتهم * بيتها هو طرق
الجحيم * تحدر الي مطابق الموت *

* الفصل الثامن *

1 * انت تشدد بالحكمة لتعطيك الفطنة *

Cuſtodi manda'a mea, & vives, & ſer- 2
mones meos quaſi pupillam oculorum tu-
orum. Pone eos in digitis tuis, & ſcribe eos 3
in meditullio cordis tui. Dic ſapientiæ ut 4
ſit ſoror tua, & fac prudentiam animæ
tuæ magis familiarem quocunque tibi no-
to. Ut cuſtodiat te à muliere aliena & 5
malignâ, ſi jaculetur in te ſermones qui te
furentur venuſtate ſuâ. Nam de feneſtra 6
domûs ſuæ cunctatur proſpiciens in pla-
teas: Et quem viderit de pueris ſtultis ju- 7
venem ambulantem, carentem prudentiâ,
Prope flexum viarum domûs ſuæ, loquen- 8
tem: In tenebris veſpertinis dum fuerit ſi- 9
lentium nocturnum & tenebroſum, Oc- 10
currit ei mulier ſpeciẽ præ ſe ferens emen-
titam, quæ facit corda juvenum volantia.
Quoniam ipſa volatica eſt & libidinoſa, 11
& pedes ejus non conſiſtunt domi ſuæ:
Egreditur aliquantiſper extra domum ſu- 12
am, inſidiatur aliquandiu in vicis propè
quemlibet angulum. Denique cùm tenue- 13
rit illum, deoſculatur eum, & alloquitur
illum petulanti vultu, dicens; En 14
victimam pacificam habeo, hodiè impleo
vota mea. Propterea egreſſa ſum in occur- 15
ſum tuum, excupiens vultum tuum, &
inveni te. Jam ſtrinxi lectum meum vin- 16
culis lineis, ſtravique illum ſtragulis &
tegminibus quæ ſunt ex Ægypto: Aſperſi 17
cubile meum croco, & aſperſi domum me-
am calamis cinnamomi. Veni, fruamur vo- 18
luptatibus amoris uſque ad matutinum:
veni, convolutemur amanter. Nam vir me- 19
us non adeſt domi, jam abiit viam lon-
ginquam, Et manu ſuâ ſumpſit ſacculum 20
pecuniæ, poſt multos dies revertetur ad do-
micilium ſuum. Decepit ergò eum ſermone 21
multo et contexto, et ſtupefecit eum la-
queis labiorum ſuorum. Avolavitq; ob rẽ 22
inanem, et ſecutus eſt eam quaſi bos du-
ctus ad occiſionem, vel quaſi canis qui du-
citur ad ſtipitẽ, Aut veluti cervus vulne- 23
ratus in jecore ſagittâ, eâq; transverbera-
tus: feſtinat quaſi volucris ad laqueum, ig-
norans ſe ad interitum animæ ſuæ perge- 24
re. Modò, fili mi, audi me, et attende ver-
ba oris mei. Nullo modo inclines cor tuũ 25
ad ſemitas ejus, et nullo modo decipiaris
in viis ejus. Quoniam ſauciavit multos, 26
et deprædata eſt eos, neq; recenſetur nume-
rus illorum quos enecavit. Domus ejus 27
ſunt viæ gehennæ, deducentes ad clauſtra
mortis.

CAP. VIII.

TU confortare in ſapientia, ut tribuat 1
tibi prudentiam:

משלי׃ ח

.*conſtituta* ſemitarum *domum* : viam ſupra excelſorum *capite* In
2 בְּרֹאשׁ־מְרֹמִים עֲלֵי־דָרֶךְ בֵּית נְתִיבוֹת נִצָּבָה׃
.*præconizabit* oſtiorum *ingreſſum* : civitatis *os ad* , portarum *manum* Ad
3 לְיַד־שְׁעָרִים לְפִי־קָרֶת מְבוֹא פְתָחִים תָּרֹנָּה׃
.*hominis* filios ad mea vox & ; *clamabo* viri vos Ad
4 אֲלֵיכֶם אִישִׁים אֶקְרָא וְקוֹלִי אֶל־בְּנֵי אָדָם׃
,Audite .corde intelligite ſtulti & ; aſtutiam ſimplices Intelligite
5 6 הָבִינוּ פְתָאיִם עָרְמָה וּכְסִילִים הָבִינוּ לֵב׃ שִׁמְעוּ
.*rectitudines* meorū labiorum apertio & : loquar *eximia* quoniam
כִּי־נְגִידִים אֲדַבֵּר וּמִפְתַּח שְׂפָתַי מֵישָׁרִים׃
abominatio & ; meum palatum loquetur veritatem Quia
7 כִּי־אֱמֶת יֶהְגֶּה חִכִּי וְתוֹעֲבַת
non : mei oris eloquia omnia juſtitia In .impietas meorū labiorū
8 שְׂפָתַי רֶשַׁע׃ בְּצֶדֶק כָּל־אִמְרֵי־פִי אֵין
; intelligenti recta ipſa Univerſa .*obliquum &* , pravum eis in
9 בָּהֶם נִפְתָּל וְעִקֵּשׁ׃ כֻּלָּם נְכֹחִים לַמֵּבִין
,meam eruditionem Accipite .ſcientiam invenientibus recta &
10 וִישָׁרִים לְמֹצְאֵי דָעַת׃ קְחוּ־מוּסָרִי
ſapientia *bona* Quia .*electo auro præ* ſcientiam & : argentū non &
11 וְאַל־כָּסֶף וְדַעַת מֵחָרוּץ נִבְחָר׃ כִּי־טוֹבָה חָכְמָה
Ego .*ea in* æquabuntur non *voluntates omnes* & ; margaritis *præ*
12 מִפְּנִינִים וְכָל־חֲפָצִים לֹא יִשְׁווּ־בָהּ׃ אֲנִי
.*inveniam* cogitationum ſcientiam & ; aſtutia habitavi ſapientia
חָכְמָה שָׁכַנְתִּי עָרְמָה וְדַעַת מְזִמּוֹת אֶמְצָא׃
viam & ,*elationem* &,ſuperbiam :malum habere odio DOMINI Timor
13 יִרְאַת יְהוָה שְׂנֹאת רָע גֵּאָה וְגָאוֹן וְדֶרֶךְ
ego : *eſſentia* & ,conſilium *Mihi* .odivi *perverſitatum* os & , malam
14 רָע וּפִי תַהְפֻּכוֹת שָׂנֵאתִי׃ לִי־עֵצָה וְתוּשִׁיָּה אֲנִי
. *conſules* & ; regnabunt reges me *In* .fortitudo *mihi* ,intelligentia
15 בִּינָה לִי גְבוּרָה׃ בִּי מְלָכִים יִמְלֹכוּ וְרוֹזְנִים
; principatum habebunt principes me *In* .juſtitiam decernent
16 יְחֹקְקוּ צֶדֶק׃ בִּי שָׂרִים יָשֹׂרוּ
; diligam me diligentes Ego .*terræ judices* omnes *magnifici* &
17 וּנְדִיבִים כָּל־שֹׁפְטֵי אָרֶץ׃ אֲנִי אֹהֲבַי אֵהָב
: mecum gloria & ,*Opulentia* .me invenient ,me *diluculò* quærentes &
18 וּמְשַׁחֲרַי יִמְצָאֻנְנִי׃ עֹשֶׁר־וְכָבוֹד אִתִּי
, auro *præ* meus fructus *Bonus* .juſtitia & , *durabilis* ſubſtantia
19 הוֹן עָתֵק וּצְדָקָה׃ טוֹב פִּרְיִי מֵחָרוּץ
ſemita In .electo argento *præ* meus *proventus* & ; obrizo *præ* &
20 וּמִפָּז וּתְבוּאָתִי מִכֶּסֶף נִבְחָר׃ בְּאֹרַח
.judicii ſemitarum medio in ; faciam ambulare juſtitiæ
צְדָקָה אֲהַלֵּךְ בְּתוֹךְ נְתִיבוֹת מִשְׁפָּט׃
.replebo eorum theſauros & : *eſt* me diligentes *faciendum hæreditare Ad*
21 לְהַנְחִיל אֹהֲבַי יֵשׁ וְאֹצְרֹתֵיהֶם אֲמַלֵּא׃
ſua opera ante : ſuæ viæ principium , me *acquiſivit* DOMINUS
22 יְהוָה קָנָנִי רֵאשִׁית דַּרְכּוֹ קֶדֶם מִפְעָלָיו
initiis ab capite à , habui principatum ſeculo A .*tunc* ex
23 מֵאָז׃ מֵעוֹלָם נִסַּכְתִּי מֵרֹאשׁ מִקַּדְמֵי־
fontes *non in* ; ſum formata voragines *non In* .*terræ*
24 אָרֶץ׃ בְּאֵין־תְּהֹמוֹת חוֹלָלְתִּי בְּאֵין מַעְיָנוֹת
facies ad ; eſſent *defixi* montes Antequàm .aquis *aggravata loca*
25 נִכְבַּדֵּי־מָיִם׃ בְּטֶרֶם הָרִים הָטְבָּעוּ לִפְנֵי
; plateas & ,terram *fecerat non Adhuc* .ſum formata *collium*
26 גְּבָעוֹת חוֹלָלְתִּי׃ עַד־לֹא עָשָׂה אֶרֶץ וְחוּצוֹת
.orbis *pulverum caput* &
וְרֹאשׁ עַפְרוֹת תֵּבֵל׃

Verſio VULG. LAT.

2 In ſummis excelſiſque verticibus
ſupra viam, in mediis
3 ſemitis ſtans, Juxta portas civitatis
in ipſis foribꝰ loquitur,
4 dicens; O viri, ad vos clamito,
& vox mea ad filios hominum.
5 Intelligite parvuli aſtutiam,
& inſipientes animadvertite.
6 Audite, quoniam de
rebus magnis locutura ſum: &
aperientur labia mea, ut recta
7 prædicent. Veritatem meditabitur
guttur meum, & labia
8 mea deteſtabuntur impiū. Juſti
ſunt omnes ſermones mei, non
eſt in eis pravum quid, neque
9 perverſum. Recti ſunt intelligentibus,
& æqui invenientibus
10 ſcientiam. Accipite diſciplinam
meam, et non pecuniam:
doctrinam magis, quàm
11 aurum eligite. Melior eſt enim
ſapientia cunctis pretioſiſſimis
: et omne deſiderabile ei
12 non poteſt comparari. Ego ſapientia
habito in conſilio, et
eruditis interſum cogitationibus.
13 Timor Domini odit malum
: arrogantiam, et ſuperbiam,
et viam pravam, et os bilingue
14 deteſtor. Meum eſt conſilium,
et æquitas, mea eſt prudentia,
15 mea eſt fortitudo. Per
me reges regnant, et legum
conditores juſta decernunt :
16 Per me principes imperant, et
potentes decernunt juſtitiam.
17 Ego diligentes me diligo: et
qui manè vigilant ad me, invenient
18 me. Mecum ſunt divitiæ,
& gloria, opes ſuperbæ, et
19 juſtitia. Melior eſt enim fructus
meus auro, & lapide pretioſo,
& genimina mea argento
20 electo. In viis juſtitiæ ambulo,
in medio ſemitarum judicii,
21 Ut ditem diligentes me,
et theſauros eorum repleam.
22 Dominꝰ poſſedit me in initio
viarum ſuarum, antequàm
quidquam faceret à principio.
23 Ab æterno ordinata ſum,
& ex antiquis antequàm terra
24 fieret. Nondum erant abyſſi,
et ego jam concepta eram :
necdum fontes aquarum erumperant:
25 Necdum montes gravi
mole conſtiterant : ante
26 colles ego parturiebar : Adhuc
terram non fecerat, et
flumina, et cardines orbis terræ.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

2 † Ἐπὶ γὰρ τῶν ὑψηλῶν ἄκρων ἐστὶν, † ἀνὰ-
3 μέσον δὲ τῶν τρίβων ἕστηκε. † Παρὰ γὰρ
πύλαις δυναστῶν παρεδρεύει, † ἐν δὲ εἰσόδοις
4 ὑμνεῖται. † Ὑμᾶς ὦ ἄνθρωποι παρακαλῶ,
† καὶ προΐεμαι ἐμὴν φωνὴν υἱοῖς
5 ἀνθρώπων. † Νοήσατε ἄκακοι πανουργίαν,
† οἱ δὲ ἀπαίδευτοι ἔνθεσθε καρδίαν.
6 † Εἰσακούσατέ μου, σεμνὰ γὰρ ἐρῶ, †
7 καὶ (α) ἀνοίσω ἀπὸ χειλέων ὀρθά. † Ὅτι ἀλήθειαν
μελετήσει ὁ φάρυγξ μου, † ἐβδελυγμένα
δὲ ἐναντίον ἐμοῦ χείλη ψευδῆ.
8 † Μετὰ δικαιοσύνης πάντα τὰ (β) ῥήματα
τοῦ στόματός μου, † οὐδὲν (γ) ἑαυτοῖς
9 σκολιὸν οὐδὲ (δ) στραγγαλιῶδες. † Πάντα
ἐνώπια τοῖς συνιοῦσι, † καὶ ὀρθὰ τοῖς
10 εὑρίσκουσι γνῶσιν. † Λάβετε παιδείαν καὶ
μὴ ἀργύριον, † καὶ γνῶσιν ὑπὲρ χρυσίον
11 δεδοκιμασμένον. (ε) † Κρείσσων γὰρ σοφία
λίθων πολυτελῶν, † πᾶν δὲ τίμιον οὐκ ἄξιον
12 αὐτῆς ἐστιν. † Ἐγὼ ἡ σοφία κατεσκήνωσα
βουλὴν † καὶ γνῶσιν, καὶ ἔννοιαν ἐγὼ
13 ἐπεκαλεσάμην. † Φόβος κυρίου μισεῖ ἀδικίαν,
† ὕβριν τε καὶ ὑπερηφανίαν καὶ ὁδοὺς
πονηρῶν· † μεμίσηκα δὲ ἐγὼ διεστραμμένας
14 ὁδοὺς κακῶν. † Ἐμὴ βουλὴ καὶ ἀσφάλεια,
15 † ἐμὴ φρόνησις, ἐμὴ δὲ ἰσχύς. † Δι'
ἐμοῦ βασιλεῖς βασιλεύουσι, † καὶ οἱ δυνάσται
16 γράφουσι δικαιοσύνην. † Δι' ἐμοῦ μεγιστᾶνες
μεγαλύνονται, † καὶ τύραννοι δι' ἐμοῦ
17 κρατοῦσι γῆς. † Ἐγὼ τοὺς ἐμὲ φιλοῦντας ἀγαπῶ,
† οἱ δὲ ἐμὲ ζητοῦντες (ζ) εὑρήσουσι.
18 Πλοῦτος καὶ δόξα ἐμοὶ ὑπάρχει, † καὶ
19 κτῆσις πολλῶν καὶ δικαιοσύνη. † Βέλτιον
ἐμὲ καρπίζεσθαι ὑπὲρ χρυσίον καὶ λίθον
τίμιον (η), † τὰ δὲ ἐμὰ γεννήματα κρείσσω
20 ἀργυρίου ἐκλεκτοῦ. † Ἐν ὁδοῖς δικαιοσύνης
περιπατῶ, † καὶ ἀναμέσον τρίβων (θ) δικαιώματος
21 ἀναστρέφομαι· † Ἵνα μερίσω τοῖς
ἐμὲ ἀγαπῶσιν ὕπαρξιν, καὶ τοὺς θησαυροὺς
αὐτῶν ἐμπλήσω ἀγαθῶν. † ἐὰν ἀναγγείλω
ὑμῖν τὰ καθ' ἡμέραν γινόμενα, μνημονεύσω
22 τὰ ἐξ αἰῶνος ἀριθμῆσαι. † Κύριος
ἔκτισέ με ἀρχὴν ὁδῶν αὐτοῦ εἰς ἔργα αὐτοῦ,
23 † Πρὸ τοῦ αἰῶνος ἐθεμελίωσέ με, † (ι) ἐν
24 ἀρχῇ πρὸ τοῦ τὴν γῆν ποιῆσαι, † Καὶ
πρὸ τοῦ τὰς ἀβύσσους ποιῆσαι, † πρὸ τοῦ
25 προελθεῖν τὰς πηγὰς τῶν ὑδάτων. † Πρὸ
τοῦ ὄρη ἑδρασθῆναι, † πρὸ δὲ πάντων
26 βουνῶν, γεννᾷ με. † Κύριος ἐποίησε
χώρας καὶ ἀοικήτους, † καὶ ἄκρα οἰκούμενα
τῆς (κ) ὑπ' οὐρανῶν.

Nam ſuper excelſas ſummitates 2
eſt, & inter medium ſemitarum
ſtetit. Apud portas enim po- 3
tentum aſſidet, (b) & in introitibus
canitur : Vos ô homines ad- 4
voco, & profero meam vocem filiis
hominum. Intelligite ſimpli- 5
ces aſtutiam : & qui non habetis
diſciplinam, (c)apponite cor. Ex- 6
audite me : (d)præclara enim dicam,
& proferam è labiis recta :
Quoniam veritatem meditabitur 7
guttur meum : abominata autem
coram me labia mendacia. Cùm 8
juſtitia omnia verba oris mei : nihil
(e) ipſis pravum, neque (f)
tortuoſum. Omnia (g) præſen- 9
tia intelligentibus, & recta invenientibus
ſcientiam. Accipite di- 10
ſciplinam, & non argentum, &
ſcientiam ſuper aurum probatum.
Melior enim ſapientia lapidibus 11
(h) pretioſis : omne autem pretioſum
non eſt illâ dignum. Ego 12
ſapientia inhabitavi (i) conſilium,
& ſcientiam, & (k) cogitationem
ego invocavi. Timor 13
Domini odit (l) injuſtitiam, &
contumeliam, & ſuperbiam, &
vias malorum : (m) odi autem
ego perverſas vias malorum. Me- 14
um eſt conſilium, (n) & ſecuritas,
mea prudentia, & mea(o)fortitudo.
Per me reges regnant, 15
& dynaſtæ (p) ſcribunt juſtitiam.
Per me (q) magnates magnifican- 16
tur : (r) & tyranni per me tenent
terram. Ego me amantes diligo : 17
& quærentes me (ſ) invenient.
Divitiæ, & gloria (t) mihi eſt, 18
& (u) poſſeſſio multorum, & juſtitia.
(x) Melius me pro fructu 19
percipere ſuper aurum, & lapidem
pretioſum : & mea genimina meliora
argento electo. In viis (y) 20
juſtitiæ ambulo, et inter ſemitas
juſtificationis verſor : ut (z)di- 21
ſtribuam amantibus me ſubſtantiam,
**et theſauros eorum impleam*
bonis. Si (ω) annuntiavero vobis,
quæ in diem fiunt : memor ero,
quæ à ſeculo, numerare. (aa)
Dominus condidit me initium vi- 22
arum ſuarum in opera ſua : Ante 23
ſeculum fundavit me, in principio,
antequàm terram faceret, Et 24
antequàm abyſſos conſtitueret,
priuſquàm procederent fontes aquarum.
Antequàm montes collo- 25
carentur, et ante omnes colles (bb)
generat me. Dominus (cc) fe- 26
cit regiones, et inhabitabiles, et
ſummitates habitatas ejus quæ ſub
cælo.

MS. A. (α) ἀνοίγω (β) κείματα (γ) ἐν αὐτοῖς (δ) στραγγαλῶδες. (ε)† ἀνταναιρεῖσθαι ἔθνησιν χρυσίου καὶ ἀργυρίου. Κρείσσων (ζ) εὑρήσουσιν χάριν. Πλοῦτος (η) πολὺν, τὰ δὲ ἐμὰ γεννήματα κρεῖσσον ἀργυρίου (θ) δικαιοσύνης (ι) πρὸ τοῦ τὴν γῆν ποιῆσαι, (κ) ὑπ' οὐρανόν.

תרגום TARGUM.

2 בריש רמתא על ארחא איתה וביני שבילי קימא : ועל תרעי בפומא דקריא
3 ובמעלנא דתרעי משתבחא ואמרה : לכון גברי קרינא וקלי על בני נשא : אתביני 4
5 שברי ערימותא ושטיי נסתכלון בלבהון : שמעו מטול דשרירותא ממללא אנא 6
וממלל פומי תריצותא : מטול דקושטא דנא פומי וריחוקא דשפותי רשעא : 7
8 ובצדקותא אנון כל מימרי פומי ולית בהון פתולא ועקומא : וכולן גלין לאנש 9
דמתבין ותריצין לאלין דצבאין בידיעתא : קבילו מרדותא ולא כספא וגבו לכון 10
11 ידיעתא מן דהבא סנינא : מטול דטבא חכמתא מן כיפי טבתא וכל מדעם
12 לא פחי לה : אנא חכמתא דרית ערימותא ידיעתא ותרעיתא משכחא אנא :
13 דחלתא דיי סניא בישתא גאותא ורמותא וארחא בישתא ופומה הפיכא סניא אנא :
14 די לי היא תרעיתא ומלכנא וביונא וגבורתא : מטול אנא מלכי מלכין ושליטי 15
16 אנא משחא בצדקותא : מטול אנא רברבני מתרברבין וסרכי כלהון דיני דתריצותא :
17 אנא רחמא רחמי ואלין דמקדמין לי ישכחנני : עתרא ויקרא דילי ממונא ומולא 18
וצדקתא : טבין פריי מן דהבא סנינא ומן דהבא אובריזין ועללתי מן סניא גביא : 19
20 בארחתא דצדקתא מהלכא אנא בגו שבילי דדינא : דאורית לרחמי שניא סגיאתא 21
22 וסימתהון אמלא : אלהא בראני בריש בריתיה ומן קדם עובדוי מן ריש : ומן
23 קדם עלמא אתתקנית מן רישיה מן קדם דתהוי ארעא : עד לא נהוון 24
25 תהומי אתילידית ועד דלא נהוון מעיני עשוני דמיא : קדים עד לא נטבעון
26 טורי וקדם רמתא אתבנית : עד לא עבד ארעא ונחלי וריש עפרא דתבל :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

In capite collium prope viam conſiſtit, & in medio ſemitarum ſtat. Et 2
in foribus in introitu civitatis, & in ingreſſu portarum canit & dicit. 3
Ad vos ô viri clamito, & vox mea ad filios hominum. Intelligite in- 4
ſipientes aſtutiam, & ſtulti intelligant in cordibus ſuis. Audite quo- 5
niam *certa* loquor, & eloquium oris mei rectum. Quoniam verita- 6
tem meditatur os meum, & abominantur labia mea impietatem. In 7
juſtitia enim ſunt omnes ſermones oris mei, neque eſt in eis pravum, 8
nec perverſum. Omnes verò ſunt manifeſti viro intelligenti, & re- 9
cti his qui expetunt ſcientiam. Suſcipite diſciplinam meam, & non 10
argentum ; & colligite vobis ſcientiam magis quàm aurum conflatum.
Quoniam melior eſt ſapientia lapidibus pretioſis, & nihil eſt 11
quod ei comparetur. Ego ſapientia *habitavi* aſtutiam : & ſcientiam 12
& conſilium invenio. Timor Domini odit malum, ſuperbiam, 13
et elationem, et viam malam, & os perverſum odio habui. Me- 14
um eſt conſilium, & cogitatio, & intelligentia & fortitudo. Per 15
me reges regnant, & potentes ungo juſtitia. Per me princi- 16
pes imperant, & duces, omnes judices in rectitudine. Ego 17
diligentes me diligo, & qui manè conſurgunt ad me, invenient me. 18
Divitiæ & gloria mea ſunt, opes & ſubſtantiæ, & juſtitia. Melio- 19
res ſunt fructus mei auro conflato, & auro obrizo ; & proventus me-
us magis quàm argentum electum. In via juſtitiæ ambulo, in medio 20
ſemitarum judicii. Ut hæreditare faciam diligentes me annos multos, 21
& cellaria eorum impleam. Dominus creavit me in principio creaturæ 22
ſuæ, & ante opera ſua ab initio. Ante ſeculum præparata ſum, ab 23
initio antequàm eſſet terra. Et antequàm eſſent abyſſi genita ſum, & 24
antequàm eſſent fontes, moles aquarum. Antequàm montes defixi eſ- 25
ſent, & ante colles condita ſum. Antequàm faceret terram & flu- 26
mina, & verticem pulveris orbis.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

2 * ܥܠ ܪܝܫ ܪ̈ܡܬܐ ܓܝܪ ܩܝܡܐ ܚܟܡܬܐ. ܘܒܝܬ ܐܘܪ̈ܚܬܐ ܘܥܠ ܝܕ ܫܒܝ̈ܠܐ ܩܝܡܐ. * ܘܥܠ
3 ܬܪ̈ܥܐ ܒܦܘܡܗ ܩܥܝܐ. ܘܒܡܥܠܢ̈ܝܗܘܢ ܕܬܪ̈ܥܐ ܕܡܕ̈ܝܢܬܐ ܡܬܚܙܝܐ. ܘܐܡܪܐ. * ܠܟܘܢ ܓܒܪ̈ܐ
4 ܩܪܐ ܐܢܐ. ܘܩܠܝ ܠܘܬ ܒܢ̈ܝ ܐܢܫܐ. * ܕܢܣܬܟܠܘܢ ܫܒܪ̈ܐ ܥܪܝܡܘܬܐ. ܘܚܣܝܪ̈ܝ ܪܥܝܢܐ
5 ܢܪܢܘܢ ܒܠܒܗܘܢ. * ܫܡܥܘܢܝ. ܡܛܠ ܕܫܪܝܪܬܐ ܗܘ ܡܡܠܠ ܐܢܐ. ܘܡܦܬܚܢܘܬ ܦܘܡܝ
6 ܬܪܝܨܘܬܐ. * ܫܪܝܪܬܐ ܗܘ ܓܝܪ ܪܢܐ ܦܘܡܝ. ܘܡܣܠܝܢ ܩܕܡܝ ܣܦܘ̈ܬܐ ܕܓܠܐ. * ܘܟܐܢܘܬܐ
7 8 ܐܝܬܝܗܝܢ ܟܠܗܝܢ ܡ̈ܠܝ ܦܘܡܝ. ܘܠܝܬ ܒܗܝܢ ܥܩܡܬܐ ܘܡܥܩܡܬܐ. * ܘܟܠܗܝܢ ܓܠܝ̈ܢ ܐܝܬܝܗܝܢ
9 ܠܐܝܢܐ ܕܡܣܬܟܠ ܒܗܝܢ. ܘܬܪ̈ܝܨܢ ܐܝܬܝܗܝܢ ܠܐܝܢܐ ܕܨܒܐ ܠܡܕܥܗܝܢ. * ܩܒܠܘ ܡܪܕܘܬܐ ܘܠܐ
10 ܣܐܡܐ. ܘܓܒܘ ܠܟܘܢ ܝܕܥܬܐ ܝܬܝܪ ܡܢ ܕܗܒܐ ܦܪܝܫܐ. * ܡܛܠ ܕܛܒܐ ܗܝ ܚܟܡܬܐ. ܡܢ
11 ܕܗܒܐ ܦܪܝܫܐ. ܘܡܢ ܟܐܦ̈ܐ ܛܒ̈ܬܐ. ܘܟܠܡܕܡ ܠܐ ܫܘܐ ܠܗ. * ܐܢܐ ܚܟܡܬܐ ܒܪܝܬ
12 ܥܪܝܡܘܬܐ. ܘܝܕܥܬܐ ܘܡܠܟܐ ܐܢܐ ܩܢܐ. * ܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܣܢܝܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܫܘܒܗܪܐ
13 ܘܪܡܘܬܐ ܘܐܘܪܚܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܦܘܡܐ ܗܦܝܟܐ ܣܢܐ ܐܢܐ. * ܕܝܠܝ ܗܘ ܡܠܟܐ ܘܝܘܠܦܢܐ.
14 ܕܝܠܝ ܗܝ ܣܘܟܠܬܢܘܬܐ. ܘܕܝܠܝ ܗܝ ܓܢܒܪܘܬܐ. * ܡܛܠܬܝ ܡܠܟ̈ܐ ܡܡܠܟܝܢ. ܘܫܠܝܛ̈ܢܐ ܟܬܒܝܢ
15 ܙܕܝܩܘܬܐ. * ܡܛܠܬܝ ܪ̈ܘܪܒܢܐ ܡܫܬܠܛܝܢ. ܘܪ̈ܘܪܒܢܐ ܘܟܠܗܘܢ ܕܝ̈ܢܐ ܕܬܪܝܨܘܬܐ. * ܐܢܐ ܪ̈ܚܡܝ
16 17 ܐܢܐ ܪܚܡ. ܘܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܠܝ ܢܫܟܚܘܢܢܝ. * ܥܘܬܪܐ ܘܐܝܩܪܐ ܕܝܠܝ ܗܘ. ܘܩܢܝܢܐ ܥܬܝܩܐ
18 ܘܙܕܝܩܘܬܐ. * ܘܦܐܪ̈ܝ ܛܒܝܢ ܡܢ ܕܗܒܐ ܦܪܝܫܐ. ܘܥܠܠ̈ܬܝ ܡܢ ܣܐܡܐ ܓܒܝܐ. * ܒܐܘܪܚܐ
19 20 ܕܙܕܝܩܘܬܐ ܡܗܠܟ ܐܢܐ. ܘܒܝܬ ܫܒܝ̈ܠܐ ܕܕܝܢܐ. * ܕܐܘܪܬ ܠܪ̈ܚܡܝ ܣܒܪܐ. ܘܣܝ̈ܡܬܗܘܢ ܐܡܠܐ.
21 22 * ܡܪܝܐ ܒܪܝܢܝ ܒܪܝܫ ܒܪܝܬܗ. ܩܕܡ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܥܒ̈ܕܘܗܝ. * ܘܩܕܡ ܡܢ ܥܠܡܐ ܐܫܬܐܣܢܝ.
23 24 ܘܡܢ ܪܫܝܬܐ. ܘܩܕܡ ܡܢ ܕܢܥܒܕ ܐܪܥܐ. * ܥܕܠܐ ܢܗܘܘܢ ܬܗܘ̈ܡܐ ܐܬܝܠܕܬ. ܘܥܕܠܐ ܢܗܘܘܢ
25 26 ܡ̈ܝܐ ܒܡܒܘ̈ܥܐ. * ܘܥܕܠܐ ܢܬܩܢܘܢ ܛܘܪ̈ܐ. ܘܩܕܡ ܪ̈ܡܬܐ ܐܬܒܛܢܬ. * ܥܕܠܐ ܢܥܒܕ ܐܪܥܐ ܘܢܚ̈ܠܐ. ܘܪܫܐ ܕܥܦܪܗ ܕܬܒܝܠ.

* Super verticem collium enim adſtat ſapien- 2
tia, & inter vias & juxta ſemitas manet,
Et ad januas ore ſuo clamitat, & in aditibus 3
portarum urbium ſe oſtentat, ac dicit, Vos 4
viri appello ego, & vox mea ad filios homi-
num: Ut intelligant parvuli aſtutiam, & 5
expertes judicio cognoſcant in corde ſuo.
Audite me, quia verum loquar, & apertio 6
oris mei æquitas. Veritatem enim con- 7
templatur os meum, & abominanda ſunt co-
ram me labia mendacia. Juſtitia ſunt omnia 8
verba oris mei, et non eſt in eis obliquitas, aut
perverſitas. Et omnia aperta ſunt ei qui perci- 9
pit ea, et recta ſunt ei qui ea ſcire cupit. Acci- 10
pite diſciplinam, & non argentum: & eligite
vobis ſcientiã præ auro puro: Quoniam præ- 11
ſtantior eſt ſapientia auro puro, & lapillis o-
ptimis, & nihil eſt illi comparandum. Ego ſa- 12
pientia creavi aſtutiam, & ſcientiã atque con-
ſilium ego poſſideo. Timor Dñi odit mala, & 13
faſtum, & ſuperbiam, & viam malam, & os per-
verſum ego deteſtor. Meum eſt conſilium, & 14
doctrina, mea eſt prudentia, & mea fortitudo.
Propter me reges regnant, & principes edi- 15
cunt juſtitiã. Per me præſides præſunt, & ma- 16
gnates omnéſque judices æquitatis. Ego de- 17
ligo diligentes me: & qui quærũt me, inveni-
ent me. Divitiæ & honor, meus eſt, & opes 18
antiquæ, atque juſtitia. Et fructus mei meli- 19
ores ſunt auro puro, & proventus mei argen-
to electo. Per iter juſtitiæ incedo, & in me- 20
dio ſemitarum judicii: Ut hæredes faciã di- 21
ligentes me, ſpei: & eorum theſauros impleã.
Dominus creavit me initio creaturæ ſuæ, ante 22
omnia opera ſua, Et ante ſecula condidit me, 23
& ab initio, & antequam faceret terrã. An- 24
tequam eſſent abyſſi, genita ſum, & antequam
eſſent aquæ in fontibus. Et antequam firma- 25
ti eſſent montes, & ante colles concepta ſum,
Antequàm faceret terram & torrentes, & 26
primum pulverem orbis.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

2 3 * فانها في السواهق العالية هي * وقد وقفت في وسط الطرقات * لانها تكمن عند ابواب
4 5 المقتدرين وفي المداخل تمدح * اليكم ايها الناس اتضرع والى بني الناس ارفع صوتي * يا ذوي
6 الدعة تفهموا تدربا * ويا من لا ادبا لهم ضعوا قلبكم فيه * اسمعوني فاني اقول الفاظا شريفة *
7 وابدي من شفتي اقوالا مستوية * لان حلقي يهذ صدقا والشفاه الكذوبة مرفوضة امامي *
8 9 * وكل اقوال فمي بعدل * وليس فيها صعب ولا معوج * كلها مستوية عند الذين يفهمونها *
10 ومستقيمة عند الذين قد وجدوها علما * خذوا ادبا ولا تتخذوا فضة * تسلموا معرفة افضل من
11 الذهب الابريز * اذ محسوسات الذهب النقي تدرس * والحكمة افضل من الجواهر الجزيلة
12 ثمنها وكل كريم نفيس ما يساويها * انا الحكمة ساكن في الراي والمشورة * وانا دعوت المعرفة
13 وذكر المعاد * خشية الرب تمقت الظلم والتعظم والكبرياء وطريق الاشرار * انا قد ابغضت طرق
14 15 الطالحين الملتوية * لي المشورة والتصور لي الفطنة * لي القوة * بي تملك الملوك * ويكتب
16 17 المقتدرون العدل * بي يعظم شان العظماء * وبي يمسك امراء الارض * انا احب الذين يحبونني *
18 19 والذين يطلبونني يجدونني * عندي الغنا والمجد * واقتناء الفوايد الكثيرة والعدل * فاقتطفوني
20 وخذوني افضل من الذهب والجوهر الكريم * فان غلاتي افضل من الذهب المنتخب * انا في
21 طريق العدل اسلك * وفي وسط مناهج العدل اتصرف * لكيما اودع الذين يحبونني قنية دايمة *
22 واملا كنوزهم من الخيرات * ان بدات اخبركم بالصايرات كل يوم * اتذكر الامور التي
23 اعدها منذ الدهر * الرب خلقني بدو طرقه في اعماله قبل الدهر * اسسني في البدي * قبل
24 25 ان تصنع الارض * وقبل ان تخلق اللجج * قبل ان تنبع عيون المياه * وقبل ان يوطد
26 الجبال * وقبل التلول كلها صنعني * الرب صنع كورا غير مسكونة * وسواهق مسكونة
للبرية التي تحت السماء *

Quia in palatiis ſublimibus quandoque 2
ſtat, & ipſa eſt in medio viarum: Quia 3
inſidiatur ad januas potentium, & in
aditibus canit, dicens; Vos O homines 4
oro, & ad filios hominum extollo vo-
cem meam. O ſimplices, intelligite eru- 5
ditionem: & O qui non habetis diſcipli-
nam, apponite corda veſtra ad eam.
Audite me, quia pronuntio eloquia no- 6
bilia, & profero è labiis meis ſermones
rectos. Quoniam guttur meum medita- 7
tur veritatem, & labia mendacia ſunt
abominanda coram me: Et omnia ver- 8
ba oris mei in juſtitia, & non eſt in eis
arduum neque perverſum: Omnia ipſa 9
plana ſunt apud eos qui intelligunt ea, &
recta apud eos qui jam invenerunt ea per
doctrinam. Comparate diſciplinam, & 10
ne comparetis argentum: recipite do-
ctrinam potiùs quàm aurum obrizum.
Nam ſenſibilia auri puri teruntur, ſapi- 11
entia verò præſtantior eſt gemmis plurimi
pretii, & omne pretioſum excellens non
æquatur illi. Ego ſapientia habito in co- 12
gitatione & conſilio, & ego advoco ſci-
entiam & memoriam finis. Timor Do- 13
mini odio habet iniquitatem, & glori-
am, & ſuperbiam, & viam iniquorum:
ego jam odi vias improborum perverſas.
Meum eſt conſilium & imaginatio: 14
mea eſt prudentia, mea potentia. Per me 15
regnant reges, & ſcribunt potentes juſti-
tiam. Per me magnificatur fama magna- 16
tum, & à me pendent principes terræ.
Ego diligo eos qui me diligunt: & qui 17
me quærunt, me invenient. Apud me 18
ſunt opes, & gloria, & acquiſitio uti-
litatum multarum, et juſtitia. Quare 19
colligite me, et accipite me potiùs quàm
aurum et gemmas pretioſas: quoniam
fruges meæ ſunt præſtantiores auro electo.
Ego per viam juſtitiæ incedo, et in me- 20
dio viarum juſtitiæ converſor. Ut credam 21
iis qui me amant, poſſeſſionem æternam,
et impleam theſauros eorum bonis. Si 22
incipiam exponere vobis quæ fiunt ſin-
gulis diebus, memorare res quas præpa-
ravit à ſeculis, Dominus creavit me ini-
tium viarum ſuarum in operibus ſuis an-
te ſeculum. Fundavit me in principio, 23
antequàm terra fieret, Et antequam cre- 24
arentur abyſſi, antequam erumperent
fontes aquarum, Et antequam firmaret 25
montes, et ante colles omnes fecit me.
Dominus fecit regiones inhabitatas, et 26
ædes habitatas pro creatura quæ eſt ſub
cælo.

מִשְׁלֵי : ט

ſuper circulum deſcribendo in : ego ibi , cœlos ipſum parando In
27 בַּהֲכִינוֹ שָׁמַיִם שָׁם אָנִי בְּחֻקוֹ חוּג עַל־
: deſuper æthera ipſum roborando In .voraginis faciebus
28 פְּנֵי תְהוֹם׃ בְּאַמְּצוֹ שְׁחָקִים מִמָּעַל
,ſuum ſtatutum mari ipſum ponendo In .voraginis fontes fortificando in
29 בַּעֲזוֹז עִינוֹת תְּהוֹם׃ בְּשׂוּמוֹ לַיָּם חֻקּוֹ
fundamenta ipſum conſtituendo in : ſuum os tranſirent non aquæ &
וּמַיִם לֹא יַעַבְרוּ־פִיו בְּחוּקוֹ מוֹסְדֵי
, deliciæ eram & , nutricius eum apud eram Et .terræ
30 אָרֶץ׃ וָאֶהְיֶה אֶצְלוֹ אָמוֹן וָאֶהְיֶה שַׁעֲשֻׁעִים
orbe in Ludens .tempore omni in eo coram ludens : die , die
31 יוֹם יוֹם מְשַׂחֶקֶת לְפָנָיו בְּכָל־עֵת׃ מְשַׂחֶקֶת בְּתֵבֵל
nunc Et .hominum filiis cum meæ delectationes & ;ejus terræ
32 אַרְצוֹ וְשַׁעֲשֻׁעַי אֶת־בְּנֵי אָדָם׃ וְעַתָּה
Audite .cuſtodierint meas vias beati & : mihi audite filii
33 בָנִים שִׁמְעוּ־לִי וְאַשְׁרֵי דְּרָכַי יִשְׁמֹרוּ׃ שִׁמְעוּ
Beatitudines .feriamini ne & ;eſtote ſapientes & , eruditionem
34 מוּסָר וַחֲכָמוּ וְאַל־תִּפְרָעוּ׃ אַשְׁרֵי
;die , die meas fores ſuper vigilando mihi audientis hominis
אָדָם שֹׁמֵעַ לִי לִשְׁקֹד עַל־דַּלְתֹתַי יוֹם יוֹם
,me inveniens Quoniam : meorum oſtiorum poſtes cuſtodiendo
35 לִשְׁמֹר מְזוּזֹת פְּתָחָי׃ כִּי מֹצְאִי
,me in peccans Et .DOMINO à voluntatem educet & ; vitas invenit
36 מָצָא חַיִּים וַיָּפֶק רָצוֹן מֵיְהוָה׃ וְחֹטְאִי
.mortem dilexerunt ,me habentes odio omnes : ſuæ animæ eſt injurius
חֹמֵס נַפְשׁוֹ כָּל־מְשַׂנְאַי אָהֲבוּ מָוֶת׃

CAP. IX. ט

.ſeptem ſuas columnas excidit ; ſuam domum ædificavit Sapientiæ
1 חָכְמוֹת בָּנְתָה בֵיתָהּ חָצְבָה עַמּוּדֶיהָ שִׁבְעָה׃
diſpoſuit etiam : ſuum vinum miſcuit , ſuam victimam Immolavit
2 טָבְחָה טִבְחָהּ מָסְכָה יֵינָהּ אַף עָרְכָה
alti ſuper clamabit , ſuas puellas Miſit .ſuam menſam
3 שֻׁלְחָנָהּ׃ שָׁלְחָה נַעֲרֹתֶיהָ תִקְרָא עַל־גַּפֵּי
carenti : huc declinet , ſimplex Quiſquis .civitatis excelſorum
4 מְרֹמֵי קָרֶת׃ מִי־פֶתִי יָסֻר הֵנָּה חֲסַר־
bibite & ; meo pane in comedite , Ite : ei dixit corde
5 לֵב אָמְרָה לּוֹ׃ לְכוּ לַחֲמוּ בְלַחֲמִי וּשְׁתוּ
incedite & : vivite & , ſimplices Relinquite .miſcui , vino in
6 בְּיַיִן מָסָכְתִּי׃ עִזְבוּ פְתָאיִם וִחְיוּ וְאִשְׁרוּ
ſibi accipiens , deriſorem Corripiens .intelligentiæ via in
7 בְּדֶרֶךְ בִּינָה׃ יֹסֵר לֵץ לֹקֵחַ לוֹ
increpes Ne .ejus maculam , impium increpans & : ignominiam
8 קָלוֹן וּמוֹכִיחַ לְרָשָׁע מוּמוֹ׃ אַל־תּוֹכַח
.te diliget & , ſapientem increpa : te habeat odio fortè ne , deriſorem
לֵץ פֶּן־יִשְׂנָאֶךָּ הוֹכַח לְחָכָם וְיֶאֱהָבֶךָּ׃
, juſtum ſcire fac : amplius erit ſapiens & , ſapienti Da
9 תֵּן לְחָכָם וְיֶחְכַּם עוֹד הוֹדַע לְצַדִּיק
;DOMINI timor ſapientiæ Principium .doctrinam addet &
10 וְיוֹסֶף לֶקַח׃ תְּחִלַּת חָכְמָה יִרְאַת יְהוָה
multiplicabuntur me in Nam .intelligentia ſanctorum ſcientia &
11 וְדַעַת קְדֹשִׁים בִּינָה׃ כִּי־בִי יִרְבּוּ
, ſapiens fueris Si .vitæ anni tibi addentur & : tui dies
12 יָמֶיךָ וְיוֹסִיפוּ לְּךָ שְׁנוֹת חַיִּים׃ אִם־חָכַמְתָּ
.portabis tu ſolus , illuſiſti & : tibi eris ſapiens
חָכַמְתָּ לָּךְ וְלַצְתָּ לְבַדְּךָ תִשָּׂא׃

Verſio VULG. LAT.

27 Quando præparabat cœlos,
aderam : quando certâ lege, &
28 gyro vallabat abyſſos: Quando æthera firmabat ſurſum,
& librabat fontes aquarum :
29 Quando circumdabat mari
terminum ſuum , & legem
ponebat aquis, ne tranſirent
fines ſuos quando appendebat
30 fundamenta terræ. Cum eo
eram cuncta componens : &
delectabar per ſingulos dies,
ludens coram eo omni tem-
31 pore; Ludens in orbe terrarum : & deliciæ meæ, eſſe cum
32 filiis hominum. Nunc ergò
filii audite me : Beati , qui
33 cuſtodiunt vias meas. Audite
diſciplinam, & eſtote ſapientes , & nolite abjicere eam.
34 Beatus homo qui audit me, &
qui vigilat ad fores meas quotidiè , & obſervat ad poſtes
35 oſtii mei. Qui me invenerit,
inveniet vitam, & hauriet ſa-
36 lutem à Domino : Qui autem
in me pecaverit, lædet animam ſuam. Omnes, qui me
oderunt, diligunt mortem.

CAP. IX.

1 SApientia ædificavit ſibi
domum, excîdit columnas ſe-
2 ptem. Immolavit victimas
ſuas, miſcuit vinum, & propo-
3 ſuit menſam ſuam. Miſit ancillas ſuas ut vocarent ad arcē ,
4 & ad mœnia civitatis ; Si
quis eſt parvulus, veniat ad
me. Et inſipientibus locuta
5 eſt ; Venite, comedite panem
meum, & bibite vinum quod
6 miſcui vobis. Relinquite infantiam, & vivite, & ambu-
7 late per vias prudentiæ. Qui
erudit deriſorem , ipſe injuriam ſibi facit : & qui arguit
impium , ſibi maculam gene-
8 rat. Noli arguere deriſorem,
ne oderit te. Argue ſapien-
9 tem, & diliget te. Da ſapienti occaſionem , & addetur
ei ſapientia. Doce juſtum, &
10 feſtinabit accipere. Principium ſapientiæ, timor Domini : & ſcientia Sanctorum,
11 prudentia. Per me enim multiplicabuntur dies tui, & ad-
12 dentur tibi anni vitæ. Si ſapiens fueris, tibimetipſi eris :
ſi autem illuſor, ſolus portabis malum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

27 † Ἡνίκα ἡτοίμαζε τὸν οὐρανὸν, συμπαρήμην
αὐτῷ, † καὶ ὅτε ἀφώριζε τὸν ἑαυτοῦ θρόνον
28 ἐπ᾽ ἀνέμων, † (λ) Καὶ ὡς ἰσχυρὰ ἐποίει
τὰ ἄνω νέφη, † καὶ ὡς ἀσφαλεῖς ἐτίθει πηγὰς
29 τῆς ὑπ᾽ οὐρανὸν, (μ) † Καὶ ὡς ἰσχυρὰ
30 ἐποίει τὰ (ν) θεμέλια τῆς γῆς, † Ἤμην
παρ᾽ αὐτῷ ἁρμόζουσα· † ἐγὼ ἤμην ᾗ
προσέχαιρεν· † καθ᾽ ἡμέραν δὲ εὐφραινόμην
ἐν προσώπῳ αὐτοῦ ἐν παντὶ καιρῷ, †
31 Ὅτε (ξ) ἐνευφραίνετο τὴν οἰκουμένην συντελέσας, † καὶ (ξ) ἐνευφραίνετο ἐν υἱοῖς ἀν-
32 θρώπων. † Νῦν οὖν υἱὲ ἄκουέ μου, (π) †
μακάριος ἀνὴρ ὃς εἰσακούσεταί μου, † καὶ
ἄνθρωπος ὃς τὰς ἐμὰς ὁδοὺς φυλάξει,
34 Ἀγρυπνῶν ἐπ᾽ ἐμαῖς θύραις καθ᾽ ἡμέραν,
35 † τηρῶν σταθμοὺς ἐμῶν εἰσόδων. † Αἱ γὰρ
ἔξοδοί μου, ἔξοδοι ζωῆς, † καὶ ἑτοιμάζεται
36 θέλησις παρὰ κυρίου. † Οἱ δὲ (ρ) ἁμαρτάνοντες εἰς ἐμὲ, ἀσεβοῦσιν εἰς τὰς ἑαυτῶν ψυχὰς, † καὶ οἱ μισοῦντές με ἀγαπῶσι
θάνατον.

ΚΕΦ. θ΄.

1 † Ἡ Σοφία ᾠκοδόμησεν ἑαυτῇ οἶκον, †
2 καὶ ὑπήρεισε στύλους ἑπτά. † Ἔσφαξε τὰ ἑαυτῆς θύματα, † ἐκέρασεν εἰς κρατῆρα
τὸν ἑαυτῆς οἶνον, † καὶ ἡτοιμάσατο τὴν ἑ-
3 αυτῆς τράπεζαν. † Ἀπέστειλε τοὺς ἑαυτῆς
δούλους, † Συγκαλοῦσα μετὰ ὑψηλοῦ κηρύγ-
4 ματος ἐπὶ κρατῆρα, λέγουσα, † Ὅς ἐστιν
ἄφρων, ἐκκλινάτω πρὸς μέ· † καὶ τοῖς ἐν-
5 δεέσι φρενῶν εἶπεν, † Ἔλθατε, φάγετε
τῶν ἐμῶν ἄρτων, † καὶ πίετε οἶνον ὃν ἐκέ-
6 ρασα ὑμῖν. † Ἀπολείπετε ἀφροσύνην, ἵνα
εἰς τὸν αἰῶνα βασιλεύσητε· † καὶ ζητήσατε φρόνησιν (α), † καὶ κατορθώσατε ἐν γνώ-
7 σει σύνεσιν. † Ὁ παιδεύων κακοὺς λήψεται ἑαυτῷ ἀτιμίαν· † ἐλέγχων δὲ τὸν ἀ-
8 σεβῆ μωμήσεται ἑαυτόν. † Μὴ ἔλεγχε
κακοὺς, ἵνα μὴ (*) μισήσωσί σε, † ἔλεγχε σο-
9 φὸν, καὶ ἀγαπήσει (β) σε. † Δίδου σοφῷ
ἀφορμὴν, καὶ σοφώτερος ἔσται· † (γ) γνώριζε δικαίῳ, καὶ προσθήσει τοῦ δέχεσθαι. †
10 Ἀρχὴ σοφίας φόβος κυρίου, † καὶ βουλὴ
ἁγίων σύνεσις· † (δ) τὸ γὰρ γνῶναι νό-
11 μον, διανοίας ἐστὶν ἀγαθῆς. † Τούτῳ γὰρ τῷ
τρόπῳ πολὺν (ε) ζήσεις χρόνον, † καὶ προσ-
12 τεθήσεταί σοι ἔτη (*) ζωῆς σου. † Υἱὲ ἐὰν
σοφὸς γένῃ σεαυτῷ, σοφὸς ἔσῃ καὶ (*) τοῖς
πλησίον· † ἐὰν δὲ κακὸς ἀποβῇς, μόνος ἂν
ἀντλήσεις κακά. † ὃς ἐρείδεται ἐπὶ ψεύδεσιν, οὗτος (*) ποιμαίνει ἀνέμους, † ὁ δ᾽ αὐτὸς
διώξεται ὄρνεα πετόμενα· † ἀπέλιπε γὰρ
ὁδοὺς τοῦ ἑαυτοῦ ἀμπελῶνος, † τοὺς δὲ ἄξονας τοῦ ἰδίου γεωργίου πεπλάνηται. † διαπορεύεται δὲ δι᾽ ἀνύδρου ἐρήμου, † καὶ γῆν
διατεταγμένην ἐν διψώδεσι, † συνάγει δὲ
χερσὶν ἀκαρπίαν.

Cùm pararet cælum, aderam illi, 27
& cùm ſecerneret ſuam (dd) ſedem ſuper ventos, Et cùm vali- 28
das faceret deſuper (ee) nubes, &
(ff) cùm confirmatos ponebat fontes ejus quæ ſub cælo, (gg) Et 29
quando fortia faciebat fundamenta terræ, Eram penes illum (hh) 30
diſponens : ego eram, cui adgaudebat. Quotidiè autem (ii) jocundabar in facie ejus in omni
tempore, Cùm lætaretur orbe per- 31
fecto, & lætaretur in filiis hominum. Nunc igitur fili, (kk) au- 32
di me, Beatus vir, qui exaudiet
me, & homo, qui meas vias cuſtodiet, Vigilans ad meas fores 34
quotidiè, (ll) ſervans limina meorum introituum. (mm) Egreſ- 35
ſiones enim meæ, egreſſiones vitæ,
(nn) & paratur voluntas à Domino. Qui autem peccant in me, 36
(oo) impiè agunt in ſuas ipſorum
animas : & qui oderunt me, diligunt mortem.

CAP. IX.

SApientia ædificavit ſibi do- 1
mum, & (a) ſubdidit columnas
ſeptem : (b) Mactavit hoſtias ſu- 2
as : miſcuit in cratera vinum ſuum ; & (c) paravit ſuam men-
ſam : Miſit (d) ſervos ſuos, con- 3
vocans (e) cum excelſa prædicatione ad crateram, dicens ; Qui 4
eſt (f) inſipiens , declinet ad me:
Et egentibus ſenſu dixit ; Veni- 5
te, edite de meis panibus, & bibite vinum, quod miſcui vobis. (g)
Derelinquite ſtultitiam, ut in ſe- 6
culum regnetis : & quærite prudentiam, & (h) corrigite in ſcientia intelligentiam. Qui erudit 7
malos , accipiet ſibi ignominiam:
& arguens impium, maculabit (i)
*ſeipſum. * Non arguas malos,* 8
ne odio habeant te : corripe ſapi-
entem, & diliget te. Da ſapien- 9
ti occaſionem , & ſapientior erit :
notifica juſto , & addet ad recipiendum. Initium ſapientiæ timor 10
Domini, & conſilium Sanctorum
intelligentia. Cognoſcere enim legem, mentis eſt bonæ: Hoc enim 11
modo multum vives tempus, &
adjicientur tibi anni vitæ tuæ. Fili, 12
ſi ſapiens fueris tibi, ſapiens eris &
proximis: ſi (k) autem malus evaſeris , ſolus (l) utiquè hauries mala. Qui fidens eſt in falſis , hic paſcit ventos : idem autem ipſe ſequetur aves volantes : deſeruit enim vias vineæ ſuæ; ſemitis verò agelli ſui erravit : ingreditur autem per avia loca , atque arida, & terram deſtinatam in ſitim : contrahit autem manibus infructuoſa.

MS. A. (λ) Ἡνίκα ἰσχυρὰ ἐποίει (μ) † Ἐν τῷ τιθέναι τῇ θαλάσσῃ ἀκριβασμὸν αὐτοῦ, † καὶ ὕδατα οὐ παρελεύσονται στόματος αὐτοῦ, Καὶ ἰσχυρὰ (ν) * θελήματα (ξ) ηὐφραίνετο (ο) ἐνηυφραίνετο (π) † καὶ μακάριοι οἱ ὁδούς μου φυλάσσοντες † ἀκούσατε σοφίαν, καὶ σοφίσθητε, καὶ μὴ ἀποφραγῆτε, Μακάριος ἀνὴρ (ρ) εἰς ἐμὲ ἁμαρτάνοντες,
Κεφ. θ΄. MS. A. (α) ἵνα βιώσητε, καὶ κατορθώσατε (*) μισῶσίν (β) σε, † ἄσοφον καὶ μισήσει σε. Δίδου (γ) γνώριζε δὲ (δ) τὸ δὲ (ε) ζήσῃ (*) ζωῆς. (*) τῷ πλησίον· (*) ποιμανεῖ

תרגום TARGUM.

27 כד אתקין שמיא תמן הוית ועד חן חונתא על אפי תהומא : וכד אגרים עגני מלעיל
28 29 וכד אעשין מעיני תהומא : וכד שם לימא תחומיה ומיא לא עברין ליה שם שתאסיא
30 דארעא : והוית בצדוי מהימנתא וכדשבוחין הוית כל יומא ויומא וחדיא אנא קדמוי
31 32 בכל זמן : חדיא הוית בתבל ארעיה ושבוחי בבני נשא : והשתא בניא שמעון לי
33 וטובוי למן דנטר אורחתי : שמעו מרדותא ואתחכמו ולא תרשון : טובוי לבר נשא
34 35 דשמעלי ונשקוד על אסקופתי בכל יומא ויומא למנטר ספי דתרעי : מטול מן
36 דמשכח לי משכח חיי ותהוי ליה רעותא מן קדם אלהא : ומן דחטי עלי מחבל נפשיה
וכולהון שנאי רחמי למותא :

ט

1 2 חכמתא בנת ביתא ועתדת ביה שבעא עמודין : ונכסת נכסתה ומזגת חמרה וסדררת
3 פתורתה : ושדרת טליתהא דתקרין על גיב רמתא עשינתא דנצירן : מן דשבר
4 5 נאתא לותי וחסיר רעינא אמרת ליה : אתו אכולו לחמי ואשתו חמרא דמזגית :
6 שבוקו מנכון חסירות רעיונכון וחיו והליכו בארחא דביונא : דרדי ממיקנא ונסיב
7 8 ליה צערא ומכסנותא לרשיעא מומא הוא ליה : לא תכוס לממקנא דלא נסניך
9 10 אכים לחכימא דנרחמך : אלף לחכימא ויתחכם תוב אודע לצדיקא ויוסף מנדעא :
11 שרוי דחכמתא דחלתיה דאלהא וידיעתא דקדישי ביונא : מטול דבדה נסגין
12 יומתך ויוספון לך שניא דחיי : אין חכימת לנפשך חכימת ואם תהוי ממיק
בלחודיך תטען :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quando præparabat cœlos, ibi eram ; & quando vallabat gyro ſuper fa- 27
ciem abyſſi. Quando condenſabat nubes deſuper, & quando roborabat 28
fontes abyſſi. Quando ponebat mari terminum ſuum, ut aquæ non per- 29
tranſirent eum, ponebat fundamenta terræ. Et eram in latere ejus nutri- 30
ta, & *quaſi laudes fui* per ſingulos dies, & lætabar ego coram eo in
omni tempore. Lætata ſum in orbe terræ ejus, & laudes meæ in filiis ho- 31
minum. Et nunc filii audite me, & beatus qui cuſtodit vias meas. Au- 32
dite diſciplinam, & eſtote ſapientes, & non *deſeratis* eam. Beatus fili- 33
us hominis qui audit me, & vigilat ad limina mea quotidie, ut cuſtodi- 34
at poſtes portarum mearum. Quoniam qui invenit me, inveniet vitam, 35
& habebit beneplacitum à facie Dei. Qui autem peccat in me, diſperdit 36
animam ſuam ; & omnes odientes me, diligunt mortem.

CAP. IX.

SApientia ædificat domum ſuam, & ſtatuit in ea ſeptem columnas. Et 1
immolavit victimam ſuam, & miſcuit vinum ſuum, & ordinavit men- 2
ſam ſuam. Miſitq; puellas ſuas ut vocarent in altitudine collium validorum 3
munitorum. Quis eſt inſipiens veniat ad me, & indigenti intellectu 4
dicit: Venite comedite panem meum, & bibite vinum quod miſcui. 5
Dimittite à vobis indigentiam intellectus veſtri, & vivite, & ambulate 6
in via prudentiæ. Qui erudit deriſorem, accipit ſibi ignominiam; & cor- 7
reptio impii, macula eſt ipſi. Ne corripias deriſorem, ne oderit te ; 8
argue ſapientem, ut diligat te. Doce ſapientem, & ſapientior erit ampli- 9
ùs ; oſtende juſto, & addet ſcientiam. Initium ſapientiæ timor Dei, & 10
ſcientia ſanctorum intelligentia. Quoniam per *eam* multi erunt dies tui, 11
& addentur tibi anni vitæ. Si ſapiens es, tibimet ſapiens es ; & ſi deri- 12
ſor fueris, ſolus portabis.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

27 28 * ܟܕ ܡܬܩܢ ܫܡܝܐ ܥܡܗ ܗܘܝܬ. ܘܟܕ ܣܡ ܚܘܓܐ ܥܠ ܐܦܝ ܬܗܘܡܐ. * ܘܟܕ ܐܚܣܢ
29 ܥܢܢܐ ܡܢ ܠܥܠ. ܘܟܕ ܐܚܣܢ ܡܒܘܥܐ ܕܬܗܘܡܐ. * ܟܕ ܣܡ ܢܡܘܣܐ ܠܝܡܐ. ܘܡܝܐ ܠܐ
30 ܢܥܒܪܘܢ ܦܘܡܗ. ܘܟܕ ܣܡ ܫܬܐܣܘܗܝ ܕܐܪܥܐ. ܥܡܗ ܡܬܩܢܢܐ ܗܘܝܬ. * ܒܝ ܚܕܐ ܗܘܐ
31 ܟܠܝܘܡ. ܘܒܟܠܙܒܢ ܩܕܡܘܗܝ ܚܕܝܐ ܗܘܝܬ. * ܚܕܝܐ ܗܘܝܬ ܒܬܐܒܝܠ ܕܐܪܥܗ. ܘܡܫܬܒܗܪܐ
32 ܗܘܝܬ ܒܒܢܝܢܫܐ. * ܘܗܫܐ ܒܢܝ ܫܡܥܘܢܝ. ܛܘܒܘܗܝ ܠܓܒܪܐ ܕܢܛܪ ܐܘܪܚܬܝ. * ܫܡܥܘ
33 34 ܡܪܕܘܬܐ ܘܐܬܚܟܡܘ. ܘܠܐ ܬܛܥܘܢ. * ܛܘܒܘܗܝ ܠܒܪܢܫܐ ܕܫܡܥ ܠܝ. ܘܫܩܕ ܥܠ ܬܪܥܝ
35 ܟܠܝܘܡ. ܘܢܛܪ ܣܩܘܦܬܐ ܕܬܪܥܝ. * ܡܛܠ ܕܡܦܩܢܝ ܡܦܩܢܐ ܕܚܝܐ. ܘܢܦܩ
36 ܪܚܡܐ ܡܢ ܡܪܝܐ. * ܘܐܝܠܝܢ ܕܚܛܝܢ ܒܝ. ܢܦܫܗܘܢ ܚܒܠܝܢ. ܘܟܠܗܘܢ ܣܢܐܝ ܪܚܡܐ ܐܢܘܢ
1 ܕܡܘܬܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܛ * ܚܟܡܬܐ ܒܢܬ ܒܝܬܐ. ܘܐܩܝܡܬ ܒܗ ܫܒܥܐ ܥܡܘܕܝܢ.
2 * ܘܢܟܣܬ ܢܟܣܬܗ. ܘܡܙܓܬ ܚܡܪܗ. ܘܛܝܒܬ ܦܬܘܪܗ. * ܘܫܕܪܬ ܥܠܝܡܝܗ ܕܢܩܪܘܢ ܥܠ
3 4 ܪܡܬܐ ܘܢܐܡܪܘܢ. * ܡܢܘ ܕܫܒܪ ܢܐܬܐ ܠܘܬܝ. ܘܕܚܣܝܪ ܪܥܝܢܐ ܐܡܠܠ ܥܡܗ. * ܬܘ ܐܟܘܠܘ ܡܢ
5 6 ܠܚܡܝ. ܘܐܫܬܘ ܡܢ ܚܡܪܐ ܕܡܙܓܬ. * ܘܐܪܦܘ ܡܢܟܘܢ ܚܣܝܪܘܬ ܪܥܝܢܟܘܢ. ܘܚܝܘ. ܘܐܘܪܚܐ
7 ܬܪܝܨܬܐ ܐܬܪܥܘ. * ܡܪܕܘܬܐ ܠܒܝܫܐ. ܨܘܚܪܐ ܩܢܝܐ ܠܗ. ܘܡܟܣ ܠܥܘܠܐ ܡܘܡܗ. * ܠܐ ܬܟܣ
8 ܠܒܝܫܐ ܕܠܐ ܢܣܢܝܟ. ܐܠܐ ܐܟܣ ܠܚܟܝܡܐ ܕܢܪܚܡܟ. * ܗܒ ܐܦܬܐ ܠܚܟܝܡܐ. ܕܢܘܣܦ ܢܬܚܟܡ.
9 ܘܐܠܦ ܠܙܕܝܩܐ. ܘܢܘܣܦ ܠܡܠܦܢܘܬܗ. * ܪܫ ܚܟܡܬܐ ܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܝܕܥܬܐ ܕܩܕܝܫܐ
10 ܣܘܟܠܐ. * ܡܛܠ ܕܒܗ ܢܣܓܘܢ ܝܘܡܝܟ. ܘܢܬܬܘܣܦܘܢ ܠܟ ܫܢܝ ܚܝܐ. * ܒܪܝ. ܐܢ ܚܟܝܡ
11 ܐܢܬ. ܠܢܦܫܟ ܚܟܝܡ ܐܢܬ ܘܠܚܒܪܝܟ. ܘܐܢ ܗܘܝܬ ܒܝܫ. ܒܠܚܘܕܝܟ ܬܕܠܐ ܒܝܫܬܟ.
12 ܐܝܢܐ ܕܪܕܐ ܒܕܓܠܘܬܐ. ܪܥܐ ܪܘܚܐ. ܘܪܕܦ ܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܫܒܩ ܓܝܪ ܐܘܪܚܐ ܕܟܪܡܗ. ܘܛܥܐ
ܫܒܝܠܐ ܕܦܘܠܚܢܗ. ܠܡܪܗܛ ܒܡܕܒܪܐ ܕܠܐ ܡܝܐ. ܘܡܢ ܐܘܪܚܐ ܕܕܫܝܫܐ ܛܥܐ ܒܐܬܪܐ ܕܨܗܝܐ. ܘܗܘ ܢܟܢܫ ܠܐ ܡܕܡ.

Quando firmabat cœlos, cum eo eram: & quando conſtituit circulum ſuper faciē voraginū. 27 Cùm firmaret nubes supernè, cúmque firmaret fontes abyſſorū. 28 Quando poſuit legē mari, & aquis ne excederent os ejus: & cùm ſtatuit fundamenta terræ, cum eo componebā. 29 In me delectabatur quotidie, & jugiter corā eo lætabar. 30 Delectabar in orbe terræ ejus, & gloriabar in filiis hominū. 31 Nunc filii audite me, Beatus qui cuſtodit vias meas. 32 Aud.te diſciplinam, & eſte ſapientes & non aberrabitis. 33 Beatus homo qui me audierit, & excubaverit ad fores meas quotidie, & obſervaverit limina januarū mearū, 34 Nam egreſſus mei, egreſſus ſunt vitæ: & eliciet favorem à Dño. 35 Qui autē peccant in me, animā ſuam lædunt: & omnes oſores mei, amici ſunt mortis. 36

CAP. IX.

SApientia ædificavit domū, erexitque in ea ſeptem columnas. 1 Et mactavit victimā ſuam, miſcuítque vinum ſuum, & inſtruxit menſas ſuas, 2 Ac miſit ſervos ſuos, ut clamarent ſuper colles ac dicerent, 3 Qui eſt parvulus veniat ad me, & cujus mancū eſt judicium, & alloquar eum. 4 Venite, comedite de pane meo, & bibite de vino meo ꝙ miſcui: 5 Et deponite à vobis defectum judicii veſtri, & vivite: et viam rectā cogitate. 6 Diſciplina maligno conciliat infamiam, et arguit impium macula ſua. 7 Ne corripias improbum, ne te oderit: ſed corripe ſapientem, ut diligat te. 8 Da occaſionem ſapienti, ut ampliùs ſapiat: et doce juſtum, ut augeat doctrinam ſuam. 9 Initium ſapientiæ, timor Domini: et ſcientia juſti, intellectus. 10 Quoniam per eam multiplicabuntur dies tui, et adjicientur tibi dies vitæ 11 Fili mi ſi ſapiens es, animæ tuæ ſapiens es et amicis tuis: ſin autem fueris mal⁹, tu ſolus hauries ipſa mala tua. 12 Qui procedit mendaciter, paſcit ventos et abigit volucres cœli; deſeruit enim viam vineæ ſuæ, et oblitus eſt ſemitæ miniſterii ſui, ut currat per deſertum inaquoſum: et ab ea *via* quæ trita eſt vagatur per *locum* ſitibundum: et is quidem colliget nihil.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

27 28 * حين سوى السماء كنت معه حاضرا * ولما افرد عرشه فوق الرياح * حين صنع الغيوم التي في
29 30 العلاء قوية * ولما جعل الينابيع التي تحت السماء وثيقة * وضع اساس الارض قوية راسخة * كنت
31 عنده ناظمة * انا كنت الذي يسر بي كل يوم * كنت افرح بوجهه كل وقت * لما فرح اذ كمل
32 ابتداع المسكونة * واستبشر بابناء الناس * فالان يا بني اسمعني * فمغبوط الرجل الذي يسمعني
33 34 والانسان الذي يحفظ طرقي * * اذ يسهر كل يوم على ابوابي * ويحفظ اوزان مداخلي * لان
35 36 مخارجي مخارج الحياة * ومن الرب يستفيد ايراثها * فالذين يخطئون الي انما ينافقون ويذنبون
الى نفسهم * والذين يبغضوني يحبون الموت *

* الفصل التاسع *

1 2 * الحكمة ابتنت لها بيتا * وسندته بسبع اساطين * وذبحت ضحاياها * ومزجت في كاس خمرها *
3 4 وسوت مايدتها * وارسلت عبيدها داعية بنداء عال الى كاسها قايلة * من كان لا فطنة له
5 فليجنح الي * وقالت للذين اراؤهم ناقصة * هلموا كلوا من اخبازي * واشربوا الخمر التي مزجتها
6 لكم * اتركوا الغباوة لتملكوا الى الابد * واطلبوا الفطنة لتعيشوا * وتقومون في معرفتكم
7 8 فهماء * من يادب الاردياء سياخذ لذاته هوانا * ومن يوبخ المنافق يخدع العيب لذاته * لا
9 توبخ الاردياء لئلا يمقتوك * وبخ حكيما فيحبك * لا تبكت من لا حكمة له فيمقتك * اعط الحكيم
10 حكمة فيكون اوفر حكمة * عرف الصديق حكمة فيزيد قبوله * مبدا الحكمة مخافة الرب *
11 وراي المقسطين فهما * والذهن الصالح هو ان تعرف الشريعة * لانك بهذه الحال تعيش زمانا
12 طويلا * وتتزايد بذلك سنين الحياة * يا بني ان تكن حكيما فلتكون حكيما لنفسك ولرفقائك *
وان تزرع رديا فستعرف الاسواء وحدك * فمن يثق بالكاذب فذاك يراعي الرياح * ومثل هذا
يجاري طيورا طايرة * لانه ترك طريق كرمه * وضل في سبل فلاحة * وسلك في قفر لا ماء
فيه * وارضا برية في حزب العطاش * يجمع بيديه ما لا ثمرا له *

Dum ſtabiliret cœlos, præſens cum eo eram, & dum ſeponeret thronum ſuum ſuper ventos. 27 *Dum faceret nubes quæ ſunt in excelſo, firmas: & dum faceret fontes qui ſub cælo ſunt, ſtabiles:* 28 *Faceretq; fundamenta terræ ſtabilia ac firma,* 29 *Eram apud ipſum componens.* 30 *Ego eram is in quo lætabatur per ſingulos dies, gaudebam in facie ipſius ſingulis momentis:* 31 *Quando gaviſus eſt poſt abſolutam formationem orbis terrarum, & delectatus eſt in filiis hominum.* 32 *Nunc fili mi, audi me: beatus eſt enim vir qui audit me, & homo qui cuſtodit vias meas,* 33 34 *Vigilans quotidie ad fores meas, & cuſtodiens menſuras liminum meorum.* 35 *Quoniā fores meæ ſunt fores vitæ, & à Domino conſequetur poſſeſſionem ejus.* 36 *Qui autem peccant contra me, certè iniquitatem committunt, & delinquunt in animam ſuam: & qui me oderunt, diligunt mortem.*

CAP. IX.

SApientia ædificavit ſibi domū, et fulcivit eam ſeptem columnis. 1 2 *Et mactavit victimas ſuas, & miſcuit in calice vinum ſuū, et diſpoſuit menſā ſuā,* 3 *Et miſit ſervos ſuos, vocans alto clamore ad calicem ſuum, dicens;* 4 *Qui eſt ſine prudentia, declinet ad me. Dixítque iis quibus deeſt conſilium;* 5 *Venite, edite de panibus meis, & bibite vinum quod miſcui vobis.* 6 *Derelinquite imprudentiam, ut regnetis in æternum: & petite prudentiam, ut vivatis et perſiſtatis in doctrina veſtra intelligentes.* 7 *Qui erudit malos, acquirit ſibi opprobrium: & qui corripit iniquum, parat ſibi ignominiam.* 8 *Ne reprehendas malos, ne te odio proſequantur: corripe ſapientem: & amabit te. Ne redarguas eum cui non eſt ſapientia, quia te odio habebit.* 9 *Da ſapienti occaſionem, & erit ſapientior: doce juſtum ſapientiam, & augebitur acceptio ejus.* 10 *Initium ſapientiæ, timor Domini: & mens juſtorum prudentia: & memoria bona eſt, ut ſcias legem.* 11 *Quoniam hoc modo vives longum tempus, & augebuntur tibi anni vitæ.* 12 *Fili mi, ſi fueris ſapiens, tibimet ſapiens eris & ſodalibus tuis: & ſi feras malum, experieris calamitates ſolus. Qui autem fidit mendaci, ipſe obſervat ventos: & qui talis eſt, currit poſt volucres volantes. Is enim dereliquit viam vineæ ſuæ, et eberravit in ſemitis arvi, & ambulavit per deſertum inaquoſum, & terram deſertam cum turba ſitientum: colliget manibus ſuis quod caret fructibus.*

מִשְׁלֵי : ט

super circulum describendo in : ego ibi , cœlos ipsum parando In
27 בַּהֲכִינוֹ שָׁמַיִם שָׁם אָנִי בְּחוּקוֹ חוּג עַל־
: desuper æthera ipsum roborando In .voraginis faciebus
28 פְּנֵי תְהוֹם : בְּאַמְּצוֹ שְׁחָקִים מִמָּעַל
,suum statutum mari ipsum ponendo In .voraginis fontes fortificando in
29 בַּעֲזוֹז עִינוֹת תְּהוֹם : בְּשׂוּמוֹ לַיָּם חֻקּוֹ
fundamenta ipsum constituendo in : suum os transirent non aquæ &
וּמַיִם לֹא יַעַבְרוּ־פִיו בְּחוּקוֹ מוֹסְדֵי
, deliciæ eram & , nutricius eum apud eram Et .terræ
30 אָרֶץ : וָאֶהְיֶה אֶצְלוֹ אָמוֹן וָאֶהְיֶה שַׁעֲשֻׁעִים
orbe in Ludens .tempore omni in eo coram ludens : die , die
31 יוֹם יוֹם מְשַׂחֶקֶת לְפָנָיו בְּכָל־עֵת : מְשַׂחֶקֶת בְּתֵבֵל
nunc Et .hominum filiis cum meæ delectationes & ;ejus terræ
32 אַרְצוֹ וְשַׁעֲשֻׁעַי אֶת־בְּנֵי אָדָם : וְעַתָּה
Audite .custodierint meas vias beati & : mihi audite filii
33 בָנִים שִׁמְעוּ־לִי וְאַשְׁרֵי דְּרָכַי יִשְׁמֹרוּ : שִׁמְעוּ
Beatitudines .feriamini ne & ;estote sapientes & , eruditionem
34 מוּסָר וַחֲכָמוּ וְאַל־תִּפְרָעוּ : אַשְׁרֵי
;die , die meas fores super vigilando mihi audientis hominis
אָדָם שֹׁמֵעַ לִי לִשְׁקֹד עַל־דַּלְתֹתַי יוֹם יוֹם
,me inveniens Quoniam : meorum ostiorum postes custodiendo
35 לִשְׁמֹר מְזוּזֹת פְּתָחָי : כִּי מֹצְאִי
,me in peccans Et .DOMINO à voluntatem educet & ;vitas invenit
36 מָצָא חַיִּים וַיָּפֶק רָצוֹן מֵיְהוָה : וְחֹטְאִי
.mortem dilexerunt ,me habentes odio omnes : suæ animæ est injurius
חֹמֵס נַפְשׁוֹ כָּל־מְשַׂנְאַי אָהֲבוּ מָוֶת :

CAP. IX. ט

.septem suas columnas excîdit ;suam domum ædificavit Sapientiæ
1 חָכְמוֹת בָּנְתָה בֵיתָהּ חָצְבָה עַמּוּדֶיהָ שִׁבְעָה :
disposuit etiam : suum vinum miscuit , suam victimam Immolavit
2 טָבְחָה טִבְחָהּ מָסְכָה יֵינָהּ אַף עָרְכָה
ales super clamabit , suas puellas Misit .suam mensam
3 שֻׁלְחָנָהּ : שָׁלְחָה נַעֲרֹתֶיהָ תִקְרָא עַל־גַּפֵּי
carenti : huc declinet , simplex Quisquis .civitatis excelsorum
4 מְרֹמֵי קָרֶת : מִי־פֶתִי יָסֻר הֵנָּה חֲסַר־
bibite & ;meo pane in comedite , Ite : ei dixit corde
5 לֵב אָמְרָה לּוֹ : לְכוּ לַחֲמוּ בְלַחְמִי וּשְׁתוּ
incedite & : vivite & , simplices Relinquite .miscui , vino in
6 בְּיַיִן מָסָכְתִּי : עִזְבוּ פְתָאיִם וִחְיוּ וְאִשְׁרוּ
sibi accipiens , derisorem Corripiens .intelligentiæ via in
7 בְּדֶרֶךְ בִּינָה : יֹסֵר לֵץ לֹקֵחַ לוֹ
increpes Ne .ejus maculam , impium increpans & : ignominiam
8 קָלוֹן וּמוֹכִיחַ לְרָשָׁע מוּמוֹ : אַל־תּוֹכַח
.te diliget & , sapientem increpa : te habeat odio fortè ne , derisorem
לֵץ פֶּן־יִשְׂנָאֶךָּ הוֹכַח לְחָכָם וְיֶאֱהָבֶךָּ :
, justum scire fac : amplius erit sapiens & , sapienti Da
9 תֵּן לְחָכָם וְיֶחְכַּם־עוֹד הוֹדַע לְצַדִּיק
;DOMINI timor sapientiæ Principium .doctrinam addet &
10 וְיוֹסֶף לֶקַח : תְּחִלַּת חָכְמָה יִרְאַת יְהוָה
multiplicabuntur me in Nam .intelligentia sanctorum scientia &
11 וְדַעַת קְדֹשִׁים בִּינָה : כִּי־בִי יִרְבּוּ
, sapiens fueris Si .vitæ anni tibi addentur & : tui dies
12 יָמֶיךָ וְיוֹסִיפוּ לְּךָ שְׁנוֹת חַיִּים : אִם־חָכַמְתָּ
.portabis tu solus , illusisti & : tibi eris sapiens
חָכַמְתָּ לָּךְ וְלַצְתָּ לְבַדְּךָ תִשָּׂא :

Versio VULG. LAT.

27 Quando præparabat cœlos, aderam : quando certâ lege, & gyro vallabat abyssos: 28 Quando æthera firmabat sursum, & librabat fontes aquarum : 29 Quando circumdabat mari terminum suum, & legem ponebat aquis, ne transirent fines suos quando appendebat 30 fundamenta terræ. Cum eo eram cuncta componens : & delectabar per singulos dies, ludens coram eo omni tem- 31 pore ; Ludens in orbe terrarum : & deliciæ meæ, esse cum 32 filiis hominum. Nunc ergò filii audite me : Beati, qui 33 custodiunt vias meas. Audite disciplinam, & estote sapientes , & nolite abjicere eam. 34 Beatus homo qui audit me,& qui vigilat ad fores meas quotidiè, & observat ad postes 35 ostii mei. Qui me invenerit, inveniet vitam, & hauriet sa- 36 lutem à Domino : Qui autem in me peccaverit, lædet animam suam. Omnes, qui me oderunt, diligunt mortem.

CAP. IX.

1 Sapientia ædificavit sibi domum, excîdit columnas se- 2 ptem. Immolavit victimas suas,miscuit vinum, & propo- 3 suit mensam suam. Misit ancillas suas ut vocarent ad arcē, 4 & ad mœnia civitatis ; Si quis est parvulus, veniat ad me. Et insipientibus locuta 5 est ; Venite, comedite panem meum, & bibite vinum quod 6 miscui vobis. Relinquite infantiam, & vivite, & ambu- 7 late per vias prudentiæ. Qui erudit derisorem , ipse injuriam sibi facit : & qui arguit impium, sibi maculam gene- 8 rat. Noli arguere derisorem, ne oderit te. Argue sapien- 9 tem, & diliget te. Da sapienti occasionem, & addetur ei sapientia. Doce justum, & 10 festinabit accipere. Principium sapientiæ, timor Domini : & scientia Sanctorum, 11 prudentia. Per me enim multiplicabuntur dies tui, & ad- 12 dentur tibi anni vitæ. Si sapiens fueris, tibimetipsi eris : si autem illusor, solus portabis malum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

27 † Ἡνίκα ἡτοίμαζε τὸν οὐρανὸν, συμπαρήμην αὐτῷ, † ϗ ὅτε ἀφώριζε τὸν ἑαυτοῦ θρόνον ἐπ' ἀνέμων, 28 † (λ) Καὶ ὡς ἰσχυρὰ ἐποίει τὰ ἄνω νέφη, † ϗ ὡς ἀσφαλεῖς ἐτίθει πηγὰς τῆς ὑπ' οὐρανὸν, (μ) † Καὶ ὡς ἰσχυρὰ 29 ἐποίει τὰ (ν) θεμέλια τῆς γῆς, † Ἤμην 30 παρ' αὐτῷ ἁρμόζουσα· † ἐγὼ ἤμην ᾗ προσέχαιρεν· † καθ' ἡμέραν δὲ εὐφραινόμην ἐν προσώπῳ αὐτοῦ ἐν παντὶ καιρῷ, † 31 Ὅτε (ξ) εὐφραίνετο τὴν οἰκουμένην συντελέσας, † ϗ (ξ) εὐφραίνετο ἐν υἱοῖς ἀνθρώπων. 32 † Νῦν οὖν υἱὲ ἄκουέ μου, (π) † μακάριος ἀνὴρ ὃς εἰσακούσεταί μου, † ϗ ἄνθρωπος ὃς τὰς ἐμὰς ὁδοὺς φυλάξει, 34 Ἀγρυπνῶν ἐπ' ἐμαῖς θύραις καθ' ἡμέραν, 35 † τηρῶν σταθμοὺς ἐμῶν εἰσόδων. † Αἱ γὰρ ἔξοδοί μου, ἔξοδοι ζωῆς, † ϗ ἑτοιμάζεται 36 θέλησις παρὰ κυρίου. † Οἱ δὲ (ρ) ἁμαρτάνοντες εἰς ἐμὲ, ἀσεβοῦσιν εἰς τὰς ἑαυτῶν ψυχὰς, † ϗ οἱ μισοῦντές με ἀγαπῶσι θάνατον.

Cùm pararet cælum, aderam illi, 27 & cùm secerneret suam (dd) sedem super ventos, Et cùm vali- 28 das faceret desupèr (ee) nubes, & (ff) cùm confirmatos ponebat fontes ejus quæ sub cælo, (gg) Et 29 quando fortia faciebat fundamenta terræ, Eram penes illum (hh) 30 disponens : ego eram, cui adgaudebat. Quotidiè autem (ii) jocundabar in facie ejus in omni tempore, Cùm lætaretur orbe per- 31 fecto, & lætaretur in filiis hominum. Nunc igitur fili, (kk) au- 32 di me, Beatus vir, qui exaudiet me, & homo, qui meas vias custodiet, Vigilans ad meas fores 34 quotidiè, (ll) servans limina meorum introituum. (mm) Egres- 35 siones enim meæ, egressiones vitæ, (nn) & paratur voluntas à Domino. Qui autem peccant in me, 36 (oo) impiè agunt in suas ipsorum animas : & qui oderunt me, diligunt mortem.

ΚΕΦ. θ'.

1 † Ἡ Σοφία ᾠκοδόμησεν ἑαυτῇ οἶκον, † 2 ϗ ὑπήρεισε στύλοις ἑπτά. † Ἔσφαξε τὰ ἑαυτῆς θύματα, † ἐκέρασεν εἰς κρατῆρα τὸν ἑαυτῆς οἶνον, † ϗ ἡτοιμάσατο τὴν ἑ- 3 αυτῆς τράπεζαν. † Ἀπέστειλε τοὺς ἑαυτῆς δούλους, † Συγκαλοῦσα μετ' ὑψηλοῦ κηρύγ- 4 ματος ἐπὶ κρατῆρα, λέγουσα, † Ὅς ἐστιν ἄφρων, ἐκκλινάτω πρός με· † ϗ τοῖς ἐν- 5 δεέσι φρενῶν εἶπεν, † Ἔλθατε, φάγετε τῶν ἐμῶν ἄρτων, † ϗ πίετε οἶνον ὃν ἐκέ- 6 ρασα ὑμῖν. † Ἀπολείπετε ἀφροσύνην, ἵνα εἰς τὸν αἰῶνα βασιλεύσητε· † ϗ ζητήσατε φρόνησιν (α), † ϗ κατορθώσατε ἐν γνώ- 7 σει σύνεσιν. † Ὁ παιδεύων κακοὺς λήψεται ἑαυτῷ ἀτιμίαν· † ἐλέγχων δὲ τὸν ἀ- 8 σεβῆ μωμήσεται ἑαυτόν. † Μὴ ἔλεγχε κακοὺς, ἵνα μὴ (ʹ) μισήσωσί σε, † ἔλεγχε σο- 9 φὸν, ϗ ἀγαπήσει (β) σε. † Δίδου σοφῷ ἀφορμὴν, ϗ σοφώτερος ἔσται· † (γ) γνώριζε δικαίῳ, ϗ προσθήσει τοῦ δέχεσθαι. † 10 Ἀρχὴ σοφίας φόβος κυρίου, † ϗ βουλὴ ἁγίων σύνεσις· † (δ) τὸ γὰρ γνῶναι νό- 11 μον, διανοίας ἐστὶν ἀγαθῆς. † Τούτῳ γὰρ τῷ τρόπῳ πολὺν (ε) ζήσεις χρόνον, † ϗ προστεθήσεταί σοι ἔτη (ʺ) ζωῆς σου. † Υἱὲ ἐὰν 12 σοφὸς γένῃ σεαυτῷ, σοφὸς ἔσῃ ϗ (ʺ) τοῖς πλησίον· † ἐὰν δὲ κακὸς ἀποβῇς, μόνος ἂν ἀντλήσεις κακά. † Ὃς ἐρείδεται ἐπὶ ψεύδεσιν, οὗτος (ʺ) ποιμαίνει ἀνέμους, † ὁ δ' αὐτὸς διώξεται ὄρνεα πετόμενα· † ἀπέλιπε γὰρ ὁδοὺς τοῦ ἑαυτοῦ ἀμπελῶνος, † τοὺς δὲ ἄξονας τοῦ ἰδίου γεωργίου πεπλάνηται. † Διαπορεύεται δὲ δι' ἀνύδρου ἐρήμου, † ϗ γῆν διατεταγμένην ἐν διψώδεσι, † συνάγει δὲ χερσὶν ἀκαρπίαν.

CAP. IX.

Sapientia ædificavit sibi do- 1 mum, & (a) subdidit columnas septem : (b) Mactavit hostias su- 2 as : miscuit in cratera vinum suum ; & (c) paravit suam mensam : Misit (d) servos suos, con- 3 vocans (e) cum excelsa prædicatione ad crateram, dicens ; Qui 4 est (f) insipiens , declinet ad me: Et egentibus sensu dixit ; Veni- 5 te, edite de meis panibus, & bibite vinum, quod miscui vobis. (g) Derelinquite stultitiam, ut in se- 6 culum regnetis : & quærite prudentiam, & (h) corrigite in scientia intelligentiam. Qui erudit 7 malos , accipiet sibi ignominiam: & arguens impium, maculabit (i) seipsum. * Non arguas malos, 8 ne odio habeant te : corripe sapientem, & diliget te. Da sapien- 9 ti occasionem , & sapientior erit : notifica justo , & addet ad recipiendum. Initium sapientiæ timor 10 Domini, & consilium Sanctorum intelligentia. Cognoscere enim legem, mentis est bonæ: Hoc enim 11 modo multum vives tempus, & adjicientur tibi anni vitæ tuæ. Fili, 12 si sapiens fueris tibi, sapiens eris & proximis: si (k) autem malus evaseris , solus (l) utiquè hauries mala. Qui fidens est in falsis, hic pascit ventos : idem autem ipse sequetur aves volantes : deseruit enim vias vineæ suæ; semitis verò agelli sui erravit : ingreditur autem per avia loca ,atque arida, & terram destinatam in sitim : contrahit autem manibus infructuosa.

MS. A. (λ) Ἡνίκα ἰσχυρὰ ἐποίει (μ) † Ἐν τῷ τιθέναι τῇ θαλάσσῃ ἀκριβασμὸν αὐτοῦ, † ϗ ὕδατα οὐ παρελεύσονται στόματος αὐτοῦ, Καὶ ἰσχυρὰ (ν) * θελήματα (ξ) ηὐφραίνετο (ο) ἐνηυφραίνετο (π) † ϗ μακάριοι οἱ ὁδούς μου φυλάσσοντες † ἀκούσατε σοφίαν, ϗ σοφίσθητε, ϗ μὴ ἀποφραγῆτε, Μακάριος ἀνὴρ (ρ) εἰς ἐμὲ ἁμαρτάνοντες,
Κεφ. θ'. MS. A. (α) ἵνα βιώσητε, ϗ κατορθώσατε (ʹ) μισῶσίν (β) σε, † ἄσοφον ϗ μισήσει σε. Δίδου (γ) γνώριζε δὲ (δ) τὸ δὲ (ε) ζήσῃ (ʺ) ζωῆς. (ʺ) τῷ πλησίον· (ʺ) ποιμανεῖ

תרגום TARGUM.

27 כד אתקין שמיא תמן הוית ועד חג חוגתא על אפי תהומא : וכד אנרים ענני מלעיל 28
29 וכד אעשין מעיני תהומא : וכד שם לימא תחומיה ומיא לא עברין ליה שם שתאסיא
30 דארעא : והוית בצדוי מהימנתא וכדשבוחין הוית כל יומא ויומא וחדיא אנא קדמוי
31 בכל זמן : חדיא הוית בתבל ארעיה ושבוחי בבני נשא : והשתא בניא שמעון לי 32
33 וטובוי למן דנטר אורחתי : שמעו מרדותא ואתחכמו ולא תרשון : טובוי לבר נשא
34 דשמע לי ונשקוד על אסקופתי בכל יומא ויומא למנטר ספי דתרעי : מטול מן 35
36 דמשכח לי משכח חיי ותהוי ליה רעותא מן קדם אלהא : ומן דחטי עלי מחבל נפשיה
וכולהון שנאי רחמי למותא :

ט

1 חכמתא בנת ביתא ועתדת ביה שבעא עמודין : ונכסת נכסתה ומזגת חמרה וסדרת 2
3 פתורתה : ושדרת טליתהא דתקרין על גיב רמתא עשינתא דנצירן : מן דשבר
4 נאתא לותי וחסיר רעינא אמרת ליה : אתו אכולו לחמי ואשתו חמרא דמזגית : 5
6 שבוקו מנכון חסירות רעיונכון וחיו והליכו בארחא דביונא : דרדי ממיקנא ונסיב
7 ליה צערא ומכסנותא לרשיעא מומא הוא ליה : לא תכוס לממיקנא דלא נסנך 8
9 אכים לחכימא דנרחמך : אלף לחכימא ויתחכם תוב אודע לצדיקא ויוסף מנדעא : 10
11 שרוי דחכמתא דחלתיה דאלהא וידיעתא דקדישי ביונא : מטול דבדה נסגון
12 יומתך ויוספון לך שניא דחיי : אין חכימת לנפשך חכימת ואם תהוי ממיק
בלחודיך תטען :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Quando præparabat cœlos, ibi eram ; & quando vallabat gyro super fa- 27 ciem abyssi. Quando condensabat nubes desuper, & quando roborabat 28 fontes abyssi. Quando ponebat mari terminum suum, ut aquæ non per- 29 transirent eum, ponebat fundamenta terræ. Et eram in latere ejus nutri- 30 ta, & quasi laudes fui per singulos dies, & lætabar ego coram eo in omni tempore. Lætata sum in orbe terræ ejus, & laudes meæ in filiis ho- 31 minum. Et nunc filii audite me, & beatus qui custodit vias meas. Au- 32 dite disciplinam, & estote sapientes, & non deseratis eam. Beatus fili- 33 us hominis qui audit me, & vigilat ad limina mea quotidie, ut custodi- 34 at postes portarum mearum. Quoniam qui invenit me, inveniet vitam, 35 & habebit beneplacitum à facie Dei. Qui autem peccat in me, disperdit 36 animam suam ; & omnes odientes me, diligunt mortem.

CAP. IX.

Sapientia ædificat domum suam, & statuit in ea septem columnas. Et 1 immolavit victimam suam, & miscuit vinum suum, & ordinavit men- 2 sam suam. Misitque puellas suas ut vocarent in altitudine collium validorum 3 munitorum. Quis est insipiens veniat ad me, & indigenti intellectu 4 dicit ; Venite comedite panem meum, & bibite vinum quod miscui. 5 Dimittite à vobis indigentiam intellectus vestri, & vivite, & ambulate 6 in via prudentiæ. Qui erudit derisorem, accipit sibi ignominiam ; & cor- 7 reptio impii, macula est ipsi. Ne corripias derisorem, ne oderit te ; 8 argue sapientem, ut diligat te. Doce sapientem, & sapientior erit ampli- 9 ùs ; ostende justo, & addet scientiam. Initium sapientiæ timor Dei, & 10 scientia sanctorum intelligentia. Quoniam per eam multi erunt dies tui, 11 & addentur tibi anni vitæ. Si sapiens es, tibimet sapiens es ; & si deri- 12 sor fueris, solus portabis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

27 * ܟܕ ܡܬܩܢ ܫܡܝܐ. ܥܡܗ ܗܘܝܬ. ܘܟܕ ܥܒܕ ܚܘܓܐ ܠܐ ܐܦܝ ܬܗܘܡܐ. * ܘܟܕ ܐܥܒܝ
28 ܥܢܢܐ ܡܢ ܠܥܠ. ܘܟܕ ܐܥܫܢ ܡܒܘܥܐ ܕܬܗܘܡܐ. * ܟܕ ܣܡ ܢܡܘܣܐ ܠܝܡܐ. ܘܡܝܐ ܠܐ 29
ܢܥܒܪܘܢ ܦܘܡܗ. ܘܟܕ ܥܒܕ ܫܬܐܣܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܥܡܗ ܡܬܩܢܐ ܗܘܝܬ. * ܒܝ ܚܕܝܐ ܗܘܐ 30
ܟܠܝܘܡ. ܘܡܒܣܡܐ ܩܕܡܘܗܝ ܒܟܠܙܒܢ. * ܚܕܝܐ ܗܘܝܬ ܒܬܐܒܝܠ ܐܪܥܗ. ܘܡܬܒܣܡܐ 31
ܗܘܝܬ ܒܒܢܝܢܫܐ. * ܘܗܫܐ ܒܢܝܐ ܫܡܥܘܢܝ. ܛܘܒܘܗܝ ܠܓܒܪܐ ܕܢܛܪ ܐܘܪܚܬܝ. * ܫܡܥܘ 32
33 ܡܪܕܘܬܐ ܘܚܟܝܡܘ. ܘܠܐ ܬܛܥܘܢ. * ܛܘܒܘܗܝ ܠܓܒܪܐ ܕܫܡܥ ܠܝ. ܘܫܩܕ ܥܠ ܬܪܥܝ
34 ܒܟܠܝܘܡ. ܘܢܛܪ ܣܘܦܐ ܕܬܪܥܝ. * ܡܛܠ ܕܡܦܩܢܝ ܡܦܩܢܐ ܐܢܘܢ ܕܚܝܐ. ܘܡܦܩ 35
36 ܪܚܡܐ ܡܢ ܡܪܝܐ. * ܘܐܝܠܝܢ ܕܚܛܝܢ ܒܝ. ܡܚܒܠܝܢ ܢܦܫܗܘܢ. ܘܟܠܗܘܢ ܣܢܐܝ ܪܚܡܝ
ܕܡܘܬܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܛ * ܚܟܡܬܐ ܒܢܬ ܒܝܬܐ. ܘܐܩܝܡܬ ܒܗ ܥܡܘܕܐ ܫܒܥܐ. 1
2 * ܘܢܟܣܬ ܢܟܣܬܗ. ܘܡܙܓܬ ܚܡܪܗ. ܘܬܩܢܬ ܦܬܘܪܗ. * ܘܫܕܪܬ ܥܒܕܝܗ ܕܢܩܪܘܢ ܥܠ
3 ܪܡܬܐ ܘܢܐܡܪܘܢ. * ܡܢ ܕܝܠܘܕ ܢܐܬܐ ܠܘܬܝ. ܘܕܚܣܝܪ ܕܝܢܗ ܐܡܠܠ ܥܡܗ. * ܬܘ ܐܟܘܠܘ ܡܢ 4
5 ܠܚܡܝ. ܘܐܫܬܘ ܡܢ ܚܡܪܐ ܕܡܙܓܬ. * ܘܫܒܘ ܡܢܟܘܢ ܚܘܣܪܢܐ ܕܕܝܢܟܘܢ. ܘܚܝܘ. ܘܐܘܪܚܐ 6
7 ܬܪܝܨܬܐ ܐܬܪܥܘ. * ܡܪܕܘܬܐ ܠܒܝܫܐ. ܩܢܝܐ ܠܗ ܨܥܪܐ. ܘܡܟܣ ܠܥܘܠܐ ܡܘܡܗ. * ܠܐ ܬܟܣ
8 ܠܒܝܫܐ ܕܠܐ ܢܣܢܝܟ. ܐܠܐ ܐܟܣ ܠܚܟܝܡܐ ܕܢܪܚܡܟ. * ܗܒ ܐܦܬܐ ܠܚܟܝܡܐ. ܕܢܘܣܦ ܢܬܚܟܡ. 9
10 ܘܐܠܦ ܠܙܕܝܩܐ. ܘܢܘܣܦ ܠܡܠܦܢܘܬܗ. * ܪܝܫ ܚܟܡܬܐ ܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܝܕܥܬܐ ܕܙܕܝܩܐ
11 ܣܘܟܠܐ. * ܡܛܠ ܕܒܗ ܢܣܓܘܢ ܝܘܡܝܟ. ܘܢܬܬܘܣܦܢ ܠܟ ܫܢܝܐ ܕܚܝܐ. * ܒܪܝ. ܐܢ ܚܟܝܡ
12 ܐܢܬ. ܠܢܦܫܟ ܚܟܝܡ ܐܢܬ ܘܠܚܒܪܝܟ. ܘܐܢ ܬܗܘܐ ܒܝܫ. ܠܒܠܚܘܕܝܟ ܬܫܬܐ ܒܝܫܬܟ.
ܐܝܢܐ ܕܡܬܬܟܝܠ ܥܠ ܕܓܠܘܬܐ. ܗܘ ܪܥܐ ܪܘܚܐ. ܘܪܕܦ ܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܫܒܩ ܓܝܪ ܐܘܪܚܐ ܕܟܪܡܗ. ܘܛܥܐ
ܫܒܝܠܐ ܕܬܫܡܫܬܗ. ܘܪܗܛ ܒܡܕܒܪܐ ܕܠܐ ܡܝܐ. ܘܡܢ ܐܘܪܚܐ ܕܕܫܝܫܐ ܛܥܐ ܒܐܬܪܐ ܨܗܝܐ. ܘܗܘ ܢܟܢܫ ܠܐ ܡܕܡ.

27 Quando firmabat cœlos, cum eo eram: & quando conſtituit circulum ſuper faciē voraginū. 28 Cùm firmaret nubes supernè, cúmque firmaret fontes abyſſorū. 29 Quando poſuit legē mari, & aquis ne excederent os ejus: & cùm ſtatuit fundamenta terræ, cum eo componebā. 30 In me delectabatur quotidie, & jugiter corā eo lætabar. 31 Delectabar in orbe terræ ejus, & gloriabar in filiis hominū. 32 Nunc filii audite me, Beatus qui cuſtodit vias meas. 33 Audite diſciplinam, & eſte ſapientes & non aberrabitis. 34 Beatus homo qui me audierit, & excubaverit ad fores meas quotidie, & obſervaverit limina januarū mearū, 35 Nam egreſſus mei, egreſſus ſunt vitæ: & eliciet favorem à Dño. 36 Qui autē peccant in me, animā ſuam lædunt: & omnes oſores mei, amici ſunt mortis.

CAP. IX.

1 SApientia ædificavit domū, erexitque in ea ſeptem columnas. 2 Et mactavit victimā ſuam, miſcuitque vinum ſuum, & inſtruxit menſas ſuas, 3 Ac miſit ſervos ſuos, ut clamarent ſuper colles ac dicerent, 4 Qui eſt parvulus veniat ad me, & cujus mancū eſt judicium, & alloquar eum. 5 Venite, comedite de pane meo, & bibite de vino meo ꝙ miſcui: 6 Et deponite à vobis defectum judicii veſtri, & vivite: et viam rectā cogitate. 7 Diſciplina maligno conciliat infamiam, et arguit impium macula ſua. 8 Ne corripias improbum, ne te oderit: ſed corripe ſapientem, ut diligat te. 9 Da occaſionem ſapienti, ut ampliùs ſapiat: et doce juſtum, ut augeat doctrinam ſuam. 10 Initium ſapientiæ, timor Domini: et ſcientia juſti, intellectus. 11 Quoniam per eam multiplicabuntur dies tui, et adjicientur tibi dies vitæ 12 Fili mi ſi ſapiens es, animæ tuæ ſapiens es et amicis tuis: ſin autem fueris mal⁹, tu ſolus hauries ipſa mala tua. Qui procedit mendaciter, paſcit ventos et abigit volucres cœli; deſeruit enim viam vineæ ſuæ, et oblitus eſt ſemitæ miniſterii ſui, ut currat per deſertum inaquoſum: et ab ea *via* quæ trita eſt vagatur per *locum* ſitibundum: et is quidem colliget nihil.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

27 * حين سوى السماء كنت معه حاضرا * ولما افرد عرشه فوق الرياح * حين صنع الغيوم التي في 28
29 العلاء قوية * ولما جعل الينابيع التي تحت السماء وثيقة * وصنع اساس الارض قوية راسخة * كنت 30
31 عنده ناظمة * انا كنت الذي يسر بي كل يوم * كنت افرح بوجهه كل وقت * لما فرح اذ كمل
32 ابتداع المسكونة * واستبشر بابناء الناس * فالان يا بني اسمعني * فمغبوط الرجل الذي يسمعني
33 34 والانسان الذي يحفظ طرقي * * اذ يسهر كل يوم على ابوابي * ويحفظ اوزان مداخلي * لان
35 36 مخارجي مخارج الحياة * ومن الرب يستفيد ايرادها * فالذين يخطئون الي انما ينافقون ويذنبون
الى نفسهم * والذين يمقتوني يحبون الموت *

* الفصل التاسع *

1 2 * الحكمة ابتنت لها بيتا * وسندته بسبع اساطين * وذبحت ضحاياها * ومزجت في كاس خمرها *
3 4 وسوت مايدتها * وارسلت عبيدها داعية بنداء عال الى كاسها قايلة * من كان لا فطنة له
5 فليجنح الي * وقالت للذين اراؤهم ناقصة * هلموا كلوا من اخبازي * واشربوا الخمر التي مزجتها
6 لكم * اتركوا الغباوة لتملكوا الى الابد * واطلبوا الفطنة لتعيشوا * وتقومون في معرفتكم
7 8 فقهاء * من يادب الاردياء سياخذ لذاته هوانا * ومن يوبخ المنافق يخترع العيب لذاته * لا
9 توبخ الاردياء لئلا يمقتوك * وبخ حكيما فيحبك * لا تبكت من لا حكمة له فيمقتك * اعط الحكيم
10 حجة فيكون اوفر حكمة * عرف الصديق حكمة فيزيد قبوله * مبدا الحكمة مخافة الرب *
11 وراي المقسطين فقها * والذهن الصالح هو ان تعرف الشريعة * لانك بهذه الحال تعيش زمانا
12 طويلا * وتتزايد بذلك سنين الحياة * يا بني ان تكن حكيما فلتكون حكيما لنفسك ولرفقايك *
وان بررت رديا فستعرف الاسواء وحدك * فمن يثق بالكاذب فذاك يراعي الرياح * ومثل هذا
يجاري طيورا طايرة * لانه ترك طريق كرمه * وضل في سبل فلاحه * وسلك في قفر لا ماء
فيه * وارضا برية في حزب العطاش * يجمع بيديه ما لا ثمرا له *

27 * *Dum ſtabiliret cœlos, præſens cum eo eram, & dum ſeponeret thronum ſuum ſuper ventos.* 28 *Dum faceret nubes quæ ſunt in excelſo, firmas: & dum faceret fontes qui ſub cœlo ſunt, ſtabiles:* 29 *Faceretq; fundamenta terræ ſtabilia ac firma,* 30 *Eram apud ipſum componens. Ego eram is in quo lætabatur per ſingulos dies, gaudebam in facie ipſius ſingulis momentis:* 31 *Quando gaviſus eſt poſt abſolutam formationem orbis terrarum, & delectatus eſt in filiis hominum.* 32 *Nunc fili mi, audi me: beatus eſt enim vir qui audit me, & homo qui cuſtodit vias meas,* 33 34 *Vigilans quotidie ad fores meas, & cuſtodiens menſuras liminum meorum.* 35 *Quoniā fores meæ ſunt fores vitæ, & à Domino conſequetur poſſeſſionem ejus.* 36 *Qui autem peccant contra me, certè iniquitatem committunt, & delinquunt in animam ſuam: & qui me oderunt, diligunt mortem.*

CAP. IX.

1 S*Apientia ædificavit ſibi domū, et fulcivit eam ſeptem columnis.* 2 *Et mactavit victimas ſuas, & miſcuit in calice vinum ſuū, et diſpoſuit menſā ſuā,* 3 *Et miſit ſervos ſuos, vocans alto clamore ad calicem ſuum, dicens;* 4 *Qui eſt ſine prudentia, declinet ad me. Dixitque iis quibus deeſt conſilium;* 5 *Venite, edite de panibus meis, & bibite vinum quod miſcui vobis.* 6 *Derelinquite imprudentiam, ut regnetis in æternum: & petite prudentiam, ut vivatis et perſiſtatis in doctrina veſtra intelligentes.* 7 *Qui erudit malos, acquirit ſibi opprobrium: & qui corripit iniquum, parat ſibi ignominiam.* 8 *Ne reprehendas malos, ne te odio proſequantur: corripe ſapientem: & amabit te. Ne redarguas eum cui non eſt ſapientia, quia te odio habebit.* 9 *Da ſapienti occaſionem, & erit ſapientior: doce juſtum ſapientiam, & augebitur acceptio ejus.* 10 *Initium ſapientiæ, timor Domini: & mens juſtorum prudentia: & memoria bona eſt, ut ſcias legem.* 11 *Quoniam hoc modo vives longum tempus, & augebuntur tibi anni vitæ.* 12 *Fili mi, ſi fueris ſapiens, tibimet ſapiens eris & ſodalibus tuis: & ſi feras malum, experieris calamitates ſolus. Qui autem fidit mendaci, ipſe obſervat ventos: & qui talis eſt, currit poſt volucres volantes. Is enim dereliquit viam vineæ ſuæ, et oberravit in ſemitis arvi, & ambulavit per deſertum inaquoſum, & terram deſertam cum turba ſitientum: colliget manibus ſuis quod caret fructibus.*

משלי : י

.quicquam *novit* *non* & ,*ſimplicitatis* *tumultuans* *ſtultitiæ* Mulier
13 אשת כסילות הומיה פתיות ובל־ידעה מה :
.civitatis *excelſorum* *ſolium* ſuper ; ſuæ domus oſtium ad *ſedit* Et
14 וישבה לפתח ביתה על־כסא מרמי קרת :
.ſuas ſemitas *dirigentes* : viam tranſeuntes *ad* *clamandum* Ad
15 לקרא לעברי דרך המישרים ארחותם :
dixit & ,corde *carenti* & : huc declinet , ſimplex Quiſquis
16 מי־פתי יסר הנה וחסר־לב ואמרה
abſconditorum panis & ; *dulceſcent* *ſubductæ* *furto* Aquæ : ei
17 לו : מים־גנובים ימתקו ולחם סתרים
: ibi *manes* quòd cognovit non *Et* .*erit jucundus*
18 ינעם : ולא־ידע כי־רפאים שם
.*ejus* invitati *ſepulchri* profundis in
בעמקי שאול קראיה :

CAP. X. י

filius & ; patrem *lætificabit* ſapiens Filius .Selomoh Parabolæ
1 משלי שלמה בן חכם ישמח־אב ובן
theſauri proderunt Non .ſuæ matris *mæſtitia* ſtultus
2 כסיל תוגת אמו : לא־יועילו אוצרות
faciet eſurire Non .morte à eruet juſtitia *&* : *impietatis*
3 רשע וצדקה תציל ממות : לא־ירעיב
.expellet *impiorum* pravitatem & ; juſti animam DOMINUS
יהוה נפש צדיק והות רשעים יהדף :
.ditabit ſolicitorum manus & ; *doli* *vola* *faciens* Pauperem
4 ראש עשה כף־רמיה ויד חרוצים תעשיר :
, meſſe in *ſtertens* : intelligens filius , æſtate in *Congregans*
5 אגר בקיץ בן משכיל נרדם בקציר
os & : juſti caput *in* Benedictiones .confundens filius
6 בן מביש : ברכות לראש צדיק ופי
: benedictionem in juſti Memoria .*injuriam* operiet impiorum
7 רשעים יכסה חמס : זכר צדיק לברכה
ſuſcipiet corde Sapiens .putreſcet impiorum nomen &
8 ושם רשעים ירקב : חכם־לב יקח
, *integritate* *in* *Ambulans* .*præcipitabitur* *labiis* ſtultus & ; præcepta
9 מצות ואויל שפתים ילבט : הולך בתום
Annuens .*innoteſcet* ſuas vias depravans & : confidenter *ibit*
10 ילך בטח ומעקש דרכיו יודע : קרץ
.*præcipitabitur* *labiis* ſtultus & ; dolorem dabit , oculo
עין יתן עצבת ואויל שפתים ילבט :
.*rapinam* operiet impiorum os & ; juſti os *vitarum* Vena
11 מקור חיים פי צדיק ופי רשעים יכסה חמס :
prævaricationes omnes *ſuper* & ; *contentiones* *ſuſcitabit* Odium
12 שנאה תעורר מדנים ועל כל־פשעים
invenietur intelligentis labiis In .charitas *operiet*
13 תכסה אהבה : בשפתי נבון תמצא
Sapientes .corde *carentis* corpori virga & : ſapientia
14 חכמה ושבט לגו חסר־לב : חכמים
.propinqua contritio ſtulti os & ; ſcientiam abſcondent
יצפנו־דעת ופי אויל מחתה קרבה :
exhauſtorum contritio : ejus fortitudinis urbs divitis *Affluentia*
15 הון עשיר קרית עזו מחתת דלים
impii *proventus* : *vitas* ad juſti Opus .eorum egeſtas
16 רישם : פעלת־צדיק לחיים תבואת רשע
.peccatum ad
לחטאת :

Verſio VULG. LAT.

13 Mulier ſtulta & clamoſa, ple-
náq; illecebris, & nihil omni-
14 no ſciens, Sedet in foribus
domûs ſuæ ſuper ſellam in
15 excelſo urbis loco, Ut voca-
ret tranſeuntes per viam, &
16 pergentes itinere ſuo; Qui eſt
parvulus, declinet ad me. Et
17 vecordi locuta eſt; Aquæ fur-
tivæ dulciores ſunt, & panis
18 abſconditus ſuavior. Et igno-
ravit quòd ibi ſint gigantes, &
in profundis inferni convivæ
ejus.

Parabolæ SALOMONIS.

CAP. X.

1 Filius ſapiens lætificat patrē:
filius verò ſtultus mœſtitia eſt
2 matris ſuæ. Nil proderunt
theſauri impietatis: juſtitia
3 verò liberabit à morte. Non
affliget Dominus fame ani-
mam juſti, & inſidias impio-
4 rum ſubvertet. Egeſtatem
operata eſt manus remiſſa:
manus autem fortium divitias
parat. Qui nititur mendaciis,
hic paſcit ventos: idem au-
tem ipſe ſequitur aves volan-
5 tes. Qui congregat in meſſe,
filius ſapiens eſt: qui autem
ſtertit æſtate, filius confuſio-
6 nis. Benedictio Domini ſu-
per caput juſti: os autem im-
7 piorum operit iniquitas. Me-
moria juſti cum laudibus: &
nomen impiorum putreſcet.
8 Sapiens corde præcepta ſuſ-
cipit: ſtultus cæditur labiis.
9 Qui ambulat ſimpliciter, am-
bulat confidenter: qui autem
depravat vias ſuas, manifeſtus
10 erit. Qui annuit oculo, dabit
dolorem: & ſtultus labiis ver-
11 berabitur. Vena vitæ, os juſti:
& os impiorum operit iniqui-
12 tatem. Odium ſuſcitat rixas:
& univerſa delicta operit cha-
13 ritas. In labiis ſapientis in-
venitur ſapientia: & vir-
ga in dorſo ejus qui indiget
14 corde. Sapientes abſcondunt
ſcientiam: os autem ſtulti
15 confuſioni proximum eſt. Sub-
ſtantia divitis, urbs fortitu-
dinis ejus: pavor pauperum,
16 egeſtas eorum. Opus juſti ad
vitam: fructus autem impii
ad peccatum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

13 † Γυνὴ ἄφρων καὶ θρασεῖα ἐνδεὴς ψωμοῦ γίνεται, † ἣ οὐκ ἐπίσταται αἰσχύνην. † 14 Ἐκάθισεν ἐπὶ θύραις τοῦ ἑαυτῆς οἴκου, † ἐπὶ δίφρου (ζ) ἐμφανῶς ἐν πλατείαις, 15 † Προσκαλουμένη τοὺς (η) παριόντας † καὶ κατευθύνοντας ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν· † 16 † Ὃς ἐστιν ὑμῶν ἀφρονέστατος, ἐκκλινάτω πρός μέ· † (θ) καὶ τοῖς ἐνδεέσι φρονήσεως παρακελεύομαι, λέγουσα, 17 † Ἄρτων κρυφίων ἡδέως ἅψασθε, † καὶ ὕδατος κλοπῆς γλυκεροῦ. 18 † Ὁ δὲ οὐκ οἶδεν ὅτι γηγενεῖς παρ' αὐτῇ ὄλλυνται, † καὶ ἐπὶ (ι) πέταυρον ᾅδου συναντᾷ. † ἀλλὰ ἀποπήδησον, μὴ (ʹ) χρονίσῃς ἐν τῷ τόπῳ, † μηδὲ (κ) ἐπιστήσῃς τὸ σὸν ὄμμα πρὸς αὐτήν, † οὕτως γὰρ διαβήσῃ ὕδωρ ἀλλότριον. (λ) † ἀπὸ δὲ ὕδατος ἀλλοτρίου ἀπόσχου, † καὶ ἀπὸ πηγῆς ἀλλοτρίας μὴ πίῃς, † ἵνα πολὺν (μ) ζήσῃς χρόνον, † προστεθῇ δέ σοι ἔτη ζωῆς.

13 (m) *Mulier inſipiens, & audax, indiga buccellæ fit, quæ non novit pudorem:* 14 *Sedet in foribus ſuæ domûs, ſuper ſellam palàm in plateis,* 15 *Advocans prætereuntes, & eos qui rectâ pergunt in viis ſuis;* 16 *Qui eſt veſtrûm inſipientiſſimus, divertat ad me: & indigentibus ſapientiâ præcipio, dicens;* 17 *Panes occultos libenter attingite, & aquam furti (n) dulcem.* 18 *Ipſe autem non novit, quia (o) terrigenæ apud eam pereunt, & in (p) profundum inferni occurrit. Sed reſili ne moreris in loco, neque injicias oculum tuum ad eam: ita enim tranſibis aquam (q) alienam. Ab aqua autem aliena abſtine te: & de fonte alieno ne biberis: ut longum vivas tempus, adjiciantur etiam tibi anni vitæ.*

MS. A. (ζ) ἐμφανῶς (η) παριόντας ὁδόν, καὶ (θ) ἐνδεέσι δὲ φρονήσεως (ι) πέτευρον (ʹ) ἐγχρονίσῃς (κ) ἐπιστῇς (λ) † καὶ ὑπερβήσῃ ποταμὸν ἀλλότριον. ἀπὸ (μ) ζήσῃ

ΚΕΦ. ι'.

1 † Υἱὸς σοφὸς εὐφραίνει πατέρα, † υἱὸς δὲ ἄφρων λύπη τῇ μητρί. 2 † Οὐκ ὠφελήσουσι θησαυροὶ ἀνόμους, † δικαιοσύνη δὲ ῥύσεται ἐκ θανάτου. 3 † Οὐ λιμοκτονήσει κύριος ψυχὴν δικαίαν, † ζωὴν δὲ ἀσεβῶν ἀνατρέψει. 4 † Πενία ἄνδρα ταπεινοῖ, † χεῖρες δὲ ἀνδρείων πλουτίζουσιν. † Υἱὸς πεπαιδευμένος σοφὸς ἔσται, † τῷ δὲ ἄφρονι διακόνῳ χρήσεται. 5 † Διεσώθη ἀπὸ καύματος υἱὸς νοήμων, † ἀνεμόφθορος δὲ γίνεται ἐν ἀμητῷ υἱὸς παράνομος. 6 † Εὐλογία κυρίου (α) ἐπὶ κεφαλὴν δικαίου, † στόμα δὲ ἀσεβῶν καλύψει 7 πένθος ἄωρον. † Μνήμη δικαίων μετ' ἐγκωμίων, † ὄνομα δὲ ἀσεβοῦς σβέννυται. 8 † Σοφὸς καρδίᾳ δέξεται ἐντολάς, † ὁ δὲ ἄστεγος χείλεσι σκολιάζων ὑποσκελισθήσεται. 9 † Ὃς πορεύεται ἁπλῶς, πορεύεται πεποιθώς· † ὁ δὲ διαστρέφων τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ, γνωσθήσεται. 10 † Ὁ ἐννεύων ὀφθαλμοῖς μετὰ δόλου, συνάγει ἀνδράσι λύπας· † ὁ δὲ ἐλέγχων μετὰ παρρησίας, 11 εἰρηνοποιεῖ. † Πηγὴ ζωῆς ἐν χειρὶ δικαίου, † στόμα δὲ ἀσεβοῦς καλύψει 12 ἀπώλεια. † Μῖσος ἐγείρει νεῖκος, † πάντας δὲ τοὺς μὴ φιλονεικοῦντας καλύπτει 13 φιλία. † Ὃς ἐκ χειλέων προφέρει σοφίαν, † ῥάβδῳ τύπτει ἄνδρα ἀκάρδιον. 14 † Σοφοὶ κρύψουσιν αἴσθησιν, † στόμα 15 δὲ προπετοῦς ἐγγίζει συντριβῇ. † Κτῆσις πλουσίων πόλις ὀχυρά, † συντριβὴ 16 δὲ ἀσεβῶν πενία. † Ἔργα δικαίων ζωὴν ποιεῖ, † καρποὶ δὲ ἀσεβῶν ἁμαρτίας.

MS. A. (α) ἐπὶ κεφαλῆς

CAP. X.

1 *Filius (a) ſapiens lætificat patrem: filius verò ſtultus mæſtitia matri.* 2 *Non proderunt theſauri iniquis: juſtitia autem liberabit à morte.* 3 *Non (b) occidet Dominus fame animam juſtam: viam autem impiorum evertet.* 4 *Paupertas virum humiliat: manus autem fortium ditant. (c) Filius eruditus ſapiens erit: imprudente autem miniſtro utetur:* 5 *(d) Incolumis evaſit ab æſtu filius intelligens; corruptus autem à vento fit in meſſe filius (e) iniquus.* 6 *Benedictio Domini ſuper caput juſti: os autem impiorum operiet (f) luctum intempeſtivum.* 7 *Memoria juſtorum (g) cum encomiis: nomen autem impii (h) extinguitur.* 8 *Sapiens corde ſuſcipiet mandata: qui autem non eſt tectus labiis, (i) perverſè agens ſupplantabitur.* 9 *Qui ambulat (k) ſimpliciter, ambulat fidens: qui autem (l) diſtorquet vias ſuas, cognoſcetur.* 10 *Qui innuit oculis cum dolo, congregat viris mœrores: qui autem arguit cum libertate, pacificat.* 11 *Fons vitæ in (m) manu juſti: os autem impii operiet perditio.* 12 *Odium ſuſcitat (n) contentionem: omnes autem (o) non contentioſos operit amicitia.* 13 *(p) Qui è labiis profert ſapientiam, (q) virgâ percutit virum excordem.* 14 *(r) Sapientes occultabunt ſenſum: os autem temerarii appropinquat contritioni.* 15 *Poſſeſſio divitum civitas (ſ) munita: (t) contritio autem impiorum paupertas.* 16 *Opera juſtorum vitam faciunt: (u) fructus autem impiorum (x) peccata.*

תרגום TARGUM.

13 14 אתתא סכלתא ופרידתא שברתה ולא ידעה טבתא : ויתבה על תרע ביתא על־
15 כורסיא רמא ועשינא : וקריא לעברי ארחא דתריצי אורחתהון : מטול מן דשבר
16 17 נאתא לותה וחסיר רעינא ואמרה ליה : מיא גנוביא חלין ולחמא דטישורא בסימא :
18 ולא ידע דגוברי אפלת תמן ובעמקי דשיול כל דמזמנין לדה :

י

1 2 מתלוי דשלמה בר חכימא נחדי אבוי וברא סכלא מחמץ לאמיה : לא מותרין
3 אוצרי דרשיעא וצדקתא מפציא מן מותא בישא : לא מכפן אלהא נפשיה דצדיקא
4 וקנינא דרשיעי נסחוף : מסכנותא ממככא לגברא רמיא וידא דכשרא מעתרא
5 להון : דפליח בקיטא ברא סוכלתנא הוא ודדמיך בחצדא ברא הוא מבהתנא :
6 7 ברכתא תהוין על רישי דצדיקיא ובפומהון דרשיעי נכסי חטופא : דוכרנא דצדיקי
8 ברכתא ושמא דרשיעי נדעך : דחכים לביה יקבל פוקדנא וסכלא בשפותיה
9 10 מתאחד : דמהלך בתמימותא ניזל בסעדא ודמעקמן אורחתיה נתידע : דרמז
11 בעינוהי יהב כאבא וסליף בשפותיה מתאחד : מבועא דחיי פומא דצדיקי ופומהון
12 דרשיעי נכסא חטופא : סניאתא תגרג תגרי ועל כלהון סורחני מכסא רחמותא :
13 14 בשפותי דסוכלתנא תשתכח חכמתא ושבטא לפגרא דחסר רעינא : חכימי נטשון
15 ידיעתא ופומיה דשטיא קריב : קנינא דעתירא כרכא דעושניה
16 ושציא דמסכנא צריכותהון : עובדי דצדיקא לחיי עללתיה דרשיעא
לחטותא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Mulier ſtulta & vaga, inſipiens, & neſcit bonum. Et habitat in porta 13
domus ſuæ, ſuper ſellam elevatam & firmam. Et vocat tranſeuntes per 14
viam, quorum viæ rectæ ſunt. Ut inſipiens veniat ad eam, & indi- 15
genti intellectu dicit: Aquæ furtivæ dulces ſunt, & panis abſconditus 16
ſuavis. Et neſcit quoniam gigantes dejicit ibi, & in profundis inferni 17
omnes qui invitati ſunt ab ea. 18

CAP. X.

Parabolæ Salomonis. Filius ſapiens lætificat patrem ſuum, & filius 1
ſtultus mæſtitia eſt matri ſuæ. Non proſunt theſauri *impii*, & ju- 2
ſtitia liberat à morte mala. Non facit eſurire Dominus animam juſti, & 3
ſubſtantiam impiorum expellet. Paupertas attenuat virum doloſum, 4
& manus recti divitias parat ſibi, Qui operatur in æſtate, filius pru- 5
dens eſt; & qui dormit in meſſe, filius eſt confuſionis. Benedictiones 6
erunt ſuper capita juſtorum, & in ore impiorum operitur rapina. Me- 7
moria juſtorum benedictio erit, & nomen impiorum extinguetur. Sa- 8
piens corde ſuſcipiet præcepta, & ſtultus labiis ſuis capietur. Qui am- 9
bulat in perfectione, ambulat in ſpe, & qui pervertit vias ſuas, notus
erit. Qui annuit oculis ſuis, dabit triſtitiam, & perverſus labiis ſuis 10
comprehendetur. Fons vitæ, os juſtorum, & os impiorum *injuriam* te- 11
git. Odium incitat rixas, at univerſa delicta operit charitas. In labi- 12
is prudentis invenitur ſapientia, & virga corpori ejus qui indiget in- 13
tellectu. Sapientes abſcondunt ſcientiam, & ori ſtultorum conſumptio 14
proxima. Subſtantia divitis civitas eſt *roboris* ejus, & *conſumptio* pau- 15
perum neceſſitas eorum. Opera juſti ad vitam, fructus [*autem*] impii 16
ad peccatum.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

13 14 ܐܢܬܬܐ ܣܟܠܬܐ ܘܕܚܝܫܬܐ ܡܦܬܝܢܝܬܐ. * ܝܬܒܐ ܥܠ ܬܪܥܐ ܕܒܝܬܗ. ܥܠ ܟܘܪܣܝܐ ܪܡܐ. * ܘܩܪܝܐ
15 ܠܥܒܪܝ ܐܘܪܚܐ. ܕܬܪܝܨܢ ܐܘܪܚܬܗܘܢ. ܘܐܡܪܐ. * ܡܢܘ ܕܫܒܪ ܢܐܬܐ ܠܘܬܝ. ܘܕܚܣܝܪ ܪܥܝܢܗ
16 17 ܘܐܡܪܐ ܠܗ. * ܡܝܐ ܓܢܝܒܐ ܚܠܝܢ. ܘܠܚܡܐ ܡܛܫܝܐ ܒܣܝܡ. * ܘܠܐ ܝܕܥ ܕܓܢܒܪܐ ܠܘܬܗ
18 ܐܒܕܝܢ. ܘܒܥܘܡܩܗ ܕܫܝܘܠ. ܟܠ ܕܡܙܕܡܢܝܢ ܠܗ. ܐܠܐ ܥܪܘܩ. ܘܠܐ ܬܬܘܚܪ ܒܐܬܪܐ ܗܘ. ܘܠܐ
ܬܪܡܐ ܒܗ ܥܝܢܝܟ. ܗܟܢܐ ܓܝܪ ܬܥܒܪ ܡܝܐ ܢܘܟܪܝܐ. ܘܢܗܪܘܬܐ ܢܘܟܪܝܐ. ܬܥܒܪ. ܘܬܦܠܛ ܡܢ
ܡܝܐ ܢܘܟܪܝܐ. ܘܡܢ ܡܝܐ ܢܘܟܪܝܐ ܠܐ ܬܫܬܐ. ܐܝܟ ܕܢܣܓܘܢ ܝܘܡܬܐ ܘܫܢܝܐ ܕܚܝܐ
ܢܬܬܘܣܦܘܢ ܠܟ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝ *

1 * ܒܪܐ ܚܟܝܡܐ. ܡܚܕܐ ܠܐܒܘܗܝ.
2 ܘܒܪܐ ܣܟܠܐ. ܡܚܫܐ ܠܐܡܗ. * ܠܐ ܡܘܬܪܐ ܣܝܡܬܐ ܕܥܘܠܐ. ܙܕܝܩܘܬܐ ܕܝܢ ܡܦܨܝܐ
3 ܡܢ ܡܘܬܐ. * ܠܐ ܓܝܪ ܡܟܦܢ ܡܪܝܐ ܢܦܫܗ ܕܙܕܝܩܐ. ܘܩܢܝܢܐ ܕܥܘܠܐ ܡܗܦܟ. * ܡܣܟܢܘܬܐ
4 ܡܡܟܟܐ ܠܓܒܪܐ. ܐܝܕܝܐ ܕܝܢ ܕܚܪܝܦܐ ܡܥܬܪܢ. * ܕܟܢܫ ܒܩܝܛܐ. ܒܪܐ ܗܘ ܡܣܬܟܠܢܐ.
5 ܘܕܕܡܟ ܒܚܨܕܐ. ܒܪܐ ܗܘ ܡܒܗܬܢܐ. * ܒܘܪܟܬܐ ܥܠ ܪܫܗ ܕܙܕܝܩܐ. ܘܦܘܡܗܘܢ ܕܥܘܠܐ
6 ܢܟܣܐ ܚܘܠܐ. * ܥܘܗܕܢܗ ܕܙܕܝܩܐ ܠܒܘܪܟܬܐ. ܫܡܐ ܕܝܢ ܕܥܘܠܐ ܢܕܥܟ. * ܕܚܟܝܡ ܒܠܒܗ
7 8 ܢܩܒܠ ܦܘܩܕܢܐ. ܘܕܣܟܠܢ ܣܦܘܬܗ ܡܬܬܩܠ. * ܕܡܗܠܟ ܒܬܡܝܡܘܬܐ. ܐܙܠ ܒܬܘܟܠܢܐ.
9 ܘܕܡܥܩܡ ܐܘܪܚܬܗ. ܡܬܝܕܥ. * ܕܪܡܙ ܒܥܝܢܘܗܝ ܒܢܟܠܐ. ܝܗܒ ܟܐܒܐ. ܘܕܡܟܣ
10 ܒܓܠܐ. ܥܒܕ ܫܠܡܐ. * ܡܒܘܥܐ ܕܚܝܐ. ܦܘܡܗ ܕܙܕܝܩܐ. ܘܦܘܡܗܘܢ ܕܥܘܠܐ ܢܟܣܐ
11 ܚܘܠܐ. * ܣܢܐܬܐ ܡܥܝܪܐ ܕܝܢܐ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܥܘܠܐ ܬܟܣܐ ܒܗܬܬܐ. * ܡܢ ܕܡܦܩ ܚܟܡܬܐ ܡܢ ܣܦܘܬܗ
12 13 ܒܫܒܛܐ. ܢܡܚܐ ܠܓܒܪܐ ܕܚܣܝܪ ܪܥܝܢܐ. * ܚܟܝܡܐ ܢܛܫܘܢ ܝܕܥܬܐ. ܘܦܘܡܐ
14 ܕܡܣܪܗܒܐ ܩܪܝܒ ܗܘ ܠܬܒܪܐ. * ܩܢܝܢܐ ܕܥܬܝܪܐ ܩܘܪܝܐ ܥܫܝܢܬܐ. ܘܬܒܪܐ ܕܡܣܟܢܐ
15 ܡܣܟܢܘܬܗܘܢ. * ܥܒܕܗ ܕܙܕܝܩܐ ܠܚܝܐ. ܘܥܠܠܬܗ ܕܥܘܠܐ ܠܚܛܗܐ.
16

Mulier expers judicii adulatrix, 13 Affidet oſtio 14 domûs ſuæ in ſede ſublimi: 15 Vocátque tranſeuntes viam, quorum rectæ ſunt ſemitæ, & ait; 16 Qui parvulus eſt, veniat ad me, & cujus mancum eſt judicium, & dicam ei; 17 Aquæ furtivæ, dulces ſunt: & panis abſconditus jucundus. 18 Et neſcit quòd gigantes apud eam pereunt, & in profundo inferni, omnes invitati ab ea. Verùm exili, & ne morêris in loco illo, neque figas in eum oculos tuos. Sic enim pertranſibis aquas alieuas, & fluvios extraneos evades, & effugies aquas alienas. Et ex aquis alienis ne bibas, ut copia dierum & anni vitæ addantur tibi.

CAP. X.

1 Filius ſapiens lætificat patrem ſuum: at filius inſipiens pudori eſt matri ſuæ. 2 Non eſt utilitas in theſauris iniqui: juſtitia verò liberat à morte. 3 Non enim fame affligit Dominus animam juſti, at opes impiorum evertit. 4 Paupertas deprimit virũ: manus autem ſolertium ditant. 5 Qui operatur in æſtate, filius eſt prudens: at qui dormit in meſſe, filius eſt confundens. 6 Benedictio erit ſuper caput juſti: os autem impiorum operiet impietas. 7 Memoria juſti, ad benedictioné: nomen autem iniquorum extinguetur. 8 Qui ſapiens eſt corde, ſuſcipit præceptum: & cujus ſtulta ſunt labia, decipitur. 9 Qui ambulat ſimpliciter, incedit confidenter: cujus autem obliquæ ſunt viæ, deprehendetur. 10 Annuens oculis ſuis cum fraude, affert dolorem: & qui corripit palàm, operatur ſalutem. 11 Fons vitæ, os juſti: os autem iniquorum tegit iniquitas. 12 Odium excitabit litem, & omnes iniquos operiet confuſio. 13 Qui è labiis ſuis profert ſapientiam, virgâ percutit virum expertem judicio. 14 Sapientes abſcondunt ſcientiam: & os temerarium, proximum eſt ruinæ. 15 Opes divitum, urbes munitæ: contritio autem pauperũ, egeſtas eorum. 16 Opus juſti, ad vitam: proventus autem impii, ad peccatum.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

13 14 * المراة الجاهلة الجسور تحصل في عوز من الخير * وما تعرف خجلا * فربما جلست على ابواب
15 16 منزلها على كرسي في الشوارع ظاهرا * مستدعية المجتازين المتقومة طريقهم * من هو فيكم
17 جزيل الغباوة فليجنح الي * واوعزت الي من رايه ناقص قايلة * لامسوا الخيرات الخفية بالتذاذ *
18 وماء السرقة الحلو * فمن يسمعها ما قد علم ان الارضيين منها يهلكون * وانه سيصدم مقنص
الهاوية * لاكن اطفر وانبا لا تلبث في ذلك الموضع * ولا تنصبن عينك نحوها * فانك هكذا
تعبر الماء الغريب وتطيق قطع النهر الاجنبي * ابتعد من الماء الغريب * ولا تشربن من عين
ليست لك * لتعيش زمانا طويلا وتتزايد لك سنو الحياة *

* الفصل العاشر *

1 2 * الابن الحكيم يسر اباه * والابن الغبي يحزن امه * كنوز الاموال ما تنفع الاثمة * والعدل ينجي
3 4 من الموت * الرب لن يقتل بالجوع نفسا عادلة * ويحطم حياة المنافقين * الفقر يذل الانسان *
5 ايادي الشجعان تستغني * الابن المتادب سيكون حكيما * والجاهل يستعمل خادما * الابن اللبيب
6 يتخلص من الحر * الابن المتجاوز الشريعة يكون في الحصاد باليا بريح السوء * بركة الرب على
7 راس ذي العدل * فم المنافقين يعطي نوحا لا حد له * ذكر المقسطين يمدح * واسم المنافق
8 9 يخمد * القلب الحكيم يقبل الوصايا * ومن لا غطاء على شفتيه يعرقل من المعوجات * من
10 يسلك بلا تصنع ساذجا يسلك واثقا * من يعكس طرقه ستعرف حاله * من يغمز بعينيه بغش
11 يجمع للرجال احزانا * ومن يوبخ بمجاهرة يصطنع سلامة * عين الحياة في يد المقسط * وفم
12 المنافقين يحجبه الهلاك * البغضة تنهض عليه * كافة الذين لا يماحكون تغشاهم الصداقة *
13 14 * من يبدي من شفتيه حكمة يضرب بعصا رجلا لا قلب له * الحكماء يكتمون الحس * وفم
15 16 الحسود يصادفه الهشم * قنية الاغنياء مدينة حصينة * والفقر يهشم المنافقين * اعمال المقسطين
تصنع الحياة * وغلات المنافقين خطية *

13 Mulier ſtulta, procax, incidet in penuriam opum, & non novit pudorem. 14 Et quandoque ſedet ad fores domûs ſuæ ſuper ſedem in plateis publicè, 15 Vocans tranſeuntes, quorum via recta eſt, dicens; *16 Qui inter vos ſtoliditate præſtat, declinet ad me. Et propoſuit iis qui mente ſunt expertes, dicens; 17 Attrectate bona occulta, cum delectatione, & aquam furti dulcem. 18 Qui verò acquieſcit illi, nondum novit quòd terreſtres per eã pereunt: & is impinget in laqueum inferni. At verò fuge proſiliens: ne moreris eo in loco: & nullo modo extollas oculum tuum verſùs eam. Atque hoc quidem modo tranſibis aquam alienam, & valebis tranſilire flumen peregrinum. Recede ab aqua aliena, & ne bibas de fonte non tuo, ut vivas longum tempus, & augeantur tibi anni vitæ.*

CAP. X.

1 Filius ſapiens lætificat patrem ſuum: & filius inſipiens contriſtat matrem ſuam. 2 Theſauri pecuniarum non proſunt iniquis: & juſtitia liberat à morte. 3 Nullo modo occîdet Dominus fame animam juſtam: ſed confringet vitam ſceleſtorum. 4 Paupertas deprimet hominem: manus fortium diteſcunt. 5 Filius morigeratus erit ſapiens: & ſtultus adhibebitur in ſervum. Filius prudens liberabitur ab æſtu: filius tranſgrediens legem, peribit in meſſe vento uredinis. 6 Benedictio Domini ſuper caput juſti: ori iniquorum dabitur gemitus ſine termino. 7 Memoria juſtorum laudabitur: & nomen ſceleſti tabeſcet. 8 Cor ſapiens recipit monita: & qui non habet operculum ſuper labiis ſuis, implicabitur obliquitatibus. 9 Qui incedit abſque artificio ſimplex, incedit ſecurus: qui pervertit vias ſuas, deprehendetur qualitas ejus. 10 Qui annuit oculis ſuis cum fraude, congerit hominibus afflictiones: qui autem corripit in aperto, operatur ſalutem. 11 Fons vitæ in manu juſti: & os iniquorum velabit interitus, 12 & odium excitabitur in illud. Omnes qui non præcipitant ſeſe, operiet amor. 13 Qui profert de labiis ſuis ſapientiam, percutit virgâ virum excordem. 14 Sapientes abſcondunt prudentiam: & ori invidi occurrit fractio. 15 Poſſeſſio divitum, civitas munita: & egeſtas conteret impios. 16 Operæ juſtorum gignunt vitam: & fructus ſceleſtorum, peccatum.

משלי : יא

,increpationem *deferens* & : correctionem cuſtodiens *vitæ* ad Semita
17 אֹרַח לְחַיִּים שׁוֹמֵר מוּסָר וְעוֹזֵב תּוֹכַחַת
,*inſamiam* proferens & : *falſitatis labiis* odium *Operiens* .*faciens errare*
18 מַתְעֶה׃ מְכַסֶּה שִׂנְאָה שִׂפְתֵי־שָׁקֶר וּמוֹצִא דִבָּה
:prævaricatio *ceſſabit* non verborum multitudine In .ſtultus *ipſe*
19 הוּא כְסִיל׃ בְּרֹב דְּבָרִים לֹא יֶחְדַּל־פָּשַׁע
lingua electum Argentum .intelligens ,ſua labia prohibens &
20 וְחֹשֵׂךְ שְׂפָתָיו מַשְׂכִּיל׃ כֶּסֶף נִבְחָר לְשׁוֹן
paſcent juſti Labia .*parum ut* impiorum cor : juſti
21 צַדִּיק לֵב רְשָׁעִים כִּמְעָט׃ שִׂפְתֵי צַדִּיק יִרְעוּ
Benedictio .morientur cordis defectu in ſtulti & ;multos
22 רַבִּים וֶאֱוִילִים בַּחֲסַר־לֵב יָמוּתוּ׃ בִּרְכַּת
.ſecum dolorem *adjiciet* non & ;*ditabit ipſa* Domini
יְהוָה הִיא תַעֲשִׁיר וְלֹא יוֹסִף עֶצֶב עִמָּהּ׃
viro ſapientia & ;*ſcelus* facere ſtulto ridere Veluti
23 כִּשְׂחוֹק לִכְסִיל עֲשׂוֹת זִמָּה וְחָכְמָה לְאִישׁ
deſiderium & ;ei veniet *ipſa impii Formido* .intelligentia
24 תְּבוּנָה׃ מְגוֹרַת רָשָׁע הִיא תְבוֹאֶנּוּ וְתַאֲוַת
juſtus & : impius non *&* ,turbinis tranſire Sicut .dabit *juſtorum*
25 צַדִּיקִים יִתֵּן׃ כַּעֲבוֹר סוּפָה וְאֵין רָשָׁע וְצַדִּיק
fumus ſicut & ,dentibus acetum Sicut .*ſeculi* fundamentum
26 יְסוֹד עוֹלָם׃ כַּחֹמֶץ לַשִּׁנַּיִם וְכֶעָשָׁן
apponet Domini Timor .illum mittentibus piger ſic oculis
27 לָעֵינַיִם כֵּן הֶעָצֵל לְשֹׁלְחָיו׃ יִרְאַת יְהוָה תּוֹסִיף
juſtorum Expectatio .breviabuntur impiorum anni & : dies
28 יָמִים וּשְׁנוֹת רְשָׁעִים תִּקְצֹרְנָה׃ תּוֹחֶלֶת צַדִּיקִים
via perfecto Fortitudo .peribit impiorum ſpes & : lætitia
29 שִׂמְחָה וְתִקְוַת רְשָׁעִים תֹּאבֵד׃ מָעוֹז לַתֹּם דֶּרֶךְ
ſeculum in Juſtus .iniquitatem operantibus *contritio* & ;Domini
30 יְהוָה וּמְחִתָּה לְפֹעֲלֵי אָוֶן׃ צַדִּיק לְעוֹלָם
juſti Os .*terram* habitabunt non impii & :*nutabit* non
31 בַּל־יִמּוֹט וּרְשָׁעִים לֹא יִשְׁכְּנוּ־אָרֶץ׃ פִּי צַדִּיק
juſti Labia .ſuccidetur *perverſitatum* lingua & ;ſapientiam *propagabit*
32 יָנוּב חָכְמָה וּלְשׁוֹן תַּהְפֻּכוֹת תִּכָּרֵת׃ שִׂפְתֵי צַדִּיק
.*perverſitates* impiorum os & : *voluntatem ſcient*
יֵדְעוּן רָצוֹן וּפִי רְשָׁעִים תַּהְפֻּכוֹת׃

CAP. XI. יא

perfectus lapis & : DOMINI abominatio *doli* *Bilances*
1 מֹאזְנֵי מִרְמָה תּוֹעֲבַת יְהוָה וְאֶבֶן שְׁלֵמָה
cum & ;ignominia venit & ,ſuperbia Venit .ejus voluntas
2 רְצוֹנוֹ׃ בָּא זָדוֹן וַיָּבֹא קָלוֹן וְאֶת־
perverſitas & ;eos ducet rectorum *Integritas* .ſapientia *modeſtis*
3 צְנוּעִים חָכְמָה׃ תֻּמַּת יְשָׁרִים תַּנְחֵם וְסֶלֶף
die in *affluentia proderit* Non .eos *devaſtabit prævaricatorum*
4 בֹּגְדִים וְשַׁדֵּם׃ לֹא־יוֹעִיל הוֹן בְּיוֹם
integri Juſtitia .morte à eruet juſtitia & : iræ
5 עֶבְרָה וּצְדָקָה תַּצִּיל מִמָּוֶת׃ צִדְקַת תָּמִים
Juſtitia .impius corruet *ſua impietate in* & ;ejus viam diriget
6 תְּיַשֵּׁר דַּרְכּוֹ וּבְרִשְׁעָתוֹ יִפֹּל רָשָׁע׃ צִדְקַת
.capientur prævaricatores *pravitate in* & : eos eruet rectorum
יְשָׁרִים תַּצִּילֵם וּבְהַוַּת בֹּגְדִים יִלָּכֵדוּ׃
expectatio & : ſpes peribit ,*impium hominem moriendo In*
7 בְּמוֹת אָדָם רָשָׁע תֹּאבַד תִּקְוָה וְתוֹחֶלֶת
veniet & : eſt liberatus anguſtia de Juſtus .*periit roborum*
8 אוֹנִים אָבָדָה׃ צַדִּיק מִצָּרָה נֶחֱלָץ וַיָּבֹא
ſcientia in & : ſuum *ſodalem* corrumpet *hypocrita* ore In .*eo pro* impius
9 רָשָׁע תַּחְתָּיו׃ בְּפֶה חָנֵף יַשְׁחִת רֵעֵהוּ וּבְדַעַת
.eruentur juſti
צַדִּיקִים יֵחָלֵצוּ׃

Verſio VULG. LAT.

17 Via vitæ, cuſtodienti diſciplinam: qui autem increpationes relinquit, errat. 18 Abſcondunt odiũ labia mendacia: qui profert contumeliã, inſipiens eſt. 19 In multiloquio non deerit peccatum: qui autem moderatur labia ſua, prudentiſſimus eſt. 20 Argentum electum, lingua juſti: cor autem impiorum pro nihilo. 21 Labia juſti erudiunt plurimos: qui autem indocti ſunt, in cordis egeſtate morientur. 22 Benedictio Domini divites facit, nec ſociabitur eis afflictio. 23 Quaſi per riſum ſtultus operatur ſcelus: ſapientia autem eſt viro prudentia. 24 Quod timet impius, veniet ſuper eum: deſiderium ſuum juſtis dabitur. 25 Quaſi tempeſtas tranſiens non erit impius: juſtus autem quaſi fundamentum ſempiternum. 26 Sicut acetum dentibus, & fumus oculis, ſic piger his qui miſerunt eum. 27 Timor Domini apponet dies: & anni impiorum breviabuntur. 28 Expectatio juſtorum lætitia: ſpes autem impiorum peribit. 29 Fortitudo ſimplicis via Domini: & pavor his, qui operantur malum. 30 Juſtus in æternum non commovebitur: impii autem non habitabunt 31 ſuper terram. Os juſti parturiet ſapientiam: lingua pravorum peribit. 32 Labia juſti conſiderant placita: & os impiorum perverſa.

CAP. XI.

1 STatera doloſa, abominatio eſt apud Dominum: & pondus æquum, voluntas ejus. 2 Ubi fuerit ſuperbia, ibi erit & contumelia: ubi autem eſt humilitas, ibi & ſapientia. 3 Simplicitas juſtorum diriget eos: & ſupplantatio perverſorum vaſtabit illos. 4 Non proderunt divitiæ in die ultionis: juſtitia autem liberabit à morte. 5 Juſtitia ſimplicis diriget viam ejus: & in impietate ſua corruet impius. 6 Juſtitia rectorum liberabit eos: & in inſidiis ſuis capientur iniqui. 7 Mortuo homine impio, nulla erit ultrà ſpes: & expectatio ſolicitorũ peribit. 8 Juſtus de anguſtia liberatᵒ eſt: 9 & tradetur impius pro eo. Simulator ore decipit amicum ſuum: juſti autem liberabuntur ſcientiâ.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

17 †(β) Ὁδοὺς δικαίας ζωῆς φυλάσσει παιδεία, † παιδεία δὲ ἀνεξέλεγκτος πλανᾶται. 18 † Καλύπτουσιν ἔχθραν χείλη δίκαια, † οἱ δὲ ἐκφέροντες λοιδορείας ἀφρονέστατοί εἰσιν. 19 † Ἐκ πολυλογίας οὐκ (γ) ἐκφεύξῃ ἁμαρτίαν, φειδόμενος δὲ χειλέων, νοήμων ἔσῃ. 20 † Ἄργυρος (δ) πεπυρωμένος γλῶσσα δικαίου, καρδία δὲ ἀσεβοῦς ἐκλείψει. 21 † Χείλη δικαίων ἐπίσταται ὑψηλά, † οἱ δὲ ἄφρονες ἐν ἐνδείᾳ τελευτῶσιν. 22 † Εὐλογία κυρίου ἐπὶ (ε) κεφαλὴν δικαίου, αὕτη πλουτίζει, † καὶ οὐ μὴ προστεθῇ αὐτῇ λύπη ἐν καρδίᾳ. 23 † Ἐν γέλωτι ἄφρων πράσσει κακά, † ἡ 24 δὲ σοφία ἀνδρὶ τίκτει φρόνησιν. † Ἐν ἀπωλείᾳ ἀσεβὴς περιφέρεται, (ζ) † ἐπιθυμία δὲ δικαίου δεκτή. 25 (η) † Παραπορευομένης καταιγίδος ἀφανίζεται (ʾ) ἀσεβής, † δίκαιος δὲ ἐκκλίνας σώζεται εἰς τὸν 26 αἰῶνα. † Ὥσπερ ὄμφαξ ὀδοῦσι (θ) βλαβερὸν, καὶ καπνὸς ὄμμασιν, † οὕτως παρανο- 27 μία τοῖς χρωμένοις αὐτῇ. † Φόβος κυρίου προστίθησιν ἡμέρας, † ἔτη δὲ ἀ- 28 σεβῶν ὀλιγωθήσεται. † Ἐγχρονίζει δικαίοις εὐφροσύνη, † ἐλπὶς δὲ ἀσεβῶν (ι) 29 ἀπόλλυται. † Ὀχύρωμα ὁσίου φόβος κυρίου, † συντριβὴ δὲ τοῖς ἐργαζομένοις 30 κακά. † Δίκαιος (κ) εἰς τὸν αἰῶνα οὐκ ἐνδώσει, † ἀσεβεῖς δὲ οὐκ οἰκήσουσι γῆν. 31 † Στόμα δικαίου ἀποστάζει σοφίαν, † 32 γλῶσσα δὲ ἀδίκου ἐξολεῖται. † Χείλη ἀνδρῶν δικαίων ἀποστάζει χάριτας, † στόμα δὲ ἀσεβῶν ἀποστρέφεται.

17 (y) *Vias juſtas vitæ cuſtodit diſciplina: (ʒ) diſciplina autem carens increpatione errat.* 18 *Operiunt inimicitiam labia (ω) juſta: qui autem proferunt (aa) contumelias, inſipientiſſimi ſunt.* 19 *Ex multiloquentia non (bb) effugies peccatum: parcens autem labiis ſenſatus eris.* 20 *Argentum igne (cc) examinatum, lingua juſti: cor autem impii (dd) deficiet.* 21 *Labia juſtorum ſciunt (ee) excelſa: inſipientes autem in (ff) egeſtate moriuntur.* 22 *Benedictio Domini ſuper caput juſti: hæc ditat, & non adjicietur ei triſtitia in corde.* 23 *In (gg) riſu inſipiens agit mala: ſapientia autem viro parit prudentiam.* 24 *In perditione impius circumfertur: deſiderium autem juſti acceptabile.* 25 *Prætereunte procellâ deletur impius: juſtus autem (hh) declinans ſalvatur in ſeculum.* 26 *Sicut uva acerba dentibus noxia, & fumus oculis; ſic iniquitas eis qui utuntur eâ.* 27 *Timor Domini addit dies: anni autem impiorum minuentur.* 28 *(ii) Immoratur juſtis lætitia: ſpes autem impiorum perit.* 29 *(kk) Munitio ſancti, timor Domini: (ll) contritio autem operantibus mala.* 30 *Juſtus in ſeculum non (mm) nutabit: impii autem non habitabunt terram.* 31 *Os juſti deſtillat ſapientiam: lingua autem injuſti peribit.* 32 *Labia virorum juſtorum (nn) deſtillant gratias: os autem impiorum (oo) pervertit.*

MS.A. (β) Ὁδοὺς ζωῆς φυλάσσει (γ) ἐκφεύξεται ἁμαρτία, (δ) *πεπυρωμένος (ε) κεφαλῆς δικαίου, καὶ οὐ μὴ προστεθῇ (ζ) † δουλεύσει δὲ ἄφρων φρονίμῳ, ἐπιθυμία (η) † καρδία δὲ ἀσεβοῦς ἐκλείψει· Παραπορευομένης (ʾ) ὁ ἀσεβής, (θ) βλαβερὸς, (ι) ὄλλυται. (κ) τὸν αἰῶνα

ΚΕΦ. ιαʹ.

1 † Ζυγοὶ δόλιοι βδέλυγμα ἐνώπιον κυρίου, † στάθμιον δὲ δίκαιον δεκτὸν αὐτῷ. 2 † Οὗ ἐὰν εἰσέλθῃ ὕβρις, ἐκεῖ καὶ ἀτιμία· † στόμα δὲ ταπεινῶν μελετᾷ σοφίαν. (α) † Ἀποθανὼν δίκαιος ἔλιπε μεταμέλον, † πρόχειρος δὲ γίνεται καὶ ἐπίχαρτος ἀσεβῶν ἀπώλεια. 5 † Δικαιοσύνη(¨) ἀμώμους ὀρθοτομεῖ ὁδοὺς, † ἀσέβεια δὲ περιπίπτει ἀδικίᾳ. 6 † Δικαιοσύνη ἀνδρῶν ὀρθῶν (ᶜ) ῥύεται αὐτοὺς, † τῇ δὲ (β) ἀπωλείᾳ αὐτῶν ἁλίσκονται παράνομοι. 7 † Τελευτήσαντος ἀνδρὸς δικαίου, οὐκ ὄλλυται ἐλπίς, † τὸ δὲ καύχημα τῶν ἀσεβῶν 8 ὄλλυται. † Δίκαιος ἐκ θήρας (γ) ἐκδύνει, † ἀντ᾽ αὐτοῦ δὲ παραδίδοται ὁ ἀσεβής. 9 † Ἐν στόματι ἀσεβῶν παγὶς πολίταις, † αἴσθησις δὲ δικαίων εὔοδος.

CAP. XI.

1 *STateræ (a) doloſæ, abominatio coram Domino: pondus autem (b) juſtum acceptum ei.* 2 *Quocunque intraverit contumelia; illuc & ignominia: (c) os autem humilium meditatur ſapientiam. Moriens juſtus reliquit pœnitentiam: facilis autem fit, & iucundus impiorum interitus.* 5 *Juſtitia (d) immaculatas dirigit vias: impietas autem (e) incidit in injuſtitiam.* 6 *Juſtitia virorum (f) rectorum liberat eos: ſuâ autem (g) perditione capiuntur iniqui.* 7 *Mortuo viro juſto non perit ſpes: (h) gloriatio autem impiorum perit.* 8 *Juſtus è (i) captura exit:* 9 *Pro eo autem traditur impius. In (k) ore impiorum laqueus civibus: (l) ſenſus autem juſtorum proſperè procedens.*

MS. A. (α) † Τελειότης εὐθείων ὁδηγήσει αὐτοὺς, † καὶ ὑποσκελισμὸς 3 ἀθετούντων προνομεύσει αὐτούς. † Οὐκ ὠφελήσει ὑπάρχοντα ἐν ἡμέρᾳ 4 θυμοῦ, † καὶ δικαιοσύνη ῥύσεται ἀπὸ θανάτου. Ἀποθανὼν (¨) ἀμώμους (ᶜ) ῥύσεται (β) ἀβουλείᾳ ἁλίσκονται παράνομοι. (γ) δύνει,

תרגום TARGUM.

17 אורח דחיי נטרי מרדותא ודשבק מכסנותא תעי׃ מכמין בעל דבבא ספותא
18 19 דשקרא ומפיק טבא הוא סכלא׃ בסוגאה דמלי לא פסק חובא ודחשך שפותיה
20 שוכלתנא׃ סאמא נביא לשניה דצדיקא ולבא דרשיעי מחתא׃ שפותא דצדיקי
21 22 רעין סגיאי ושטיי בחסירות רעינא נמותון׃ ברכתא דאלהא היא מעתרא ולא
23 24 נוסיף כיבא עמה׃ כד גחך סכלא עבד עבידתא וחכמתא לגברא דמתבין׃ חריצותא
25 דרשיעא היא אתיא ליה ורגנתא דצדיקיא תתיהב להון׃ היך דיעבר עלעלא היכנא
26 נעבר רשיעא וצדיקא שתאסיא בעלמא׃ היך חומצא לשני וכתננא לעיני היכנא
27 שליחא עטלא למשלחוי׃ דחלתיה דאלהא תוסף יומתא ושני דרשיעי נוערן׃
28 29 סברהון דצדיקי חדותא וסברא דרשיעי נאבד׃ מעשנא לתמימי אורחיה דאלהא ושציא
30 נהוי לאלין דעבדין עותא׃ צדיק לעלם לא נזוע ורשיעי לא יתועדון בארעא׃
31 32 פומיה דצדיקא מועי חכמתא ולישנא דהפיכו נתפסק׃ שפותיה דצדיקא ידעון צביונא
ופומהון דרשיעי מהפיך׃
יא
1 מסחתא דנכלא מרחקתיה דאלהא וכמתקלא תריצא צביוניה׃ היך דעלא זידונתא
2 3 עלל צערא ולאלין דצניעין חכמתא׃ תמימותא דתריצי תדבר אנון ונטלטלון בזווי
4 6 ונדכנון׃ לא מהני שקרא ביומא דרוגזא וצדקתא מפלטא מן מותא בישא׃ צדקתא
5 דתריצי תפצי אנון ובזווי בשלומהון מתאחדין׃ צדקתהון דתמימי תתרץ אורחתיה
7 8 וברשעיה נפל רשיעא׃ כד מית גברא רשיעא יוביד סבריה וסבורהון דאלין דעבדין
9 עאתא ייבד׃ צדיקא מן עקתא אשתיזב על ביש תחותוהי׃ נכלא בפומיה מחביל
חבריה וצדיקי בידיעתהון משתיזבין׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

17 Via vitæ cuſtodit diſciplinam, & qui relinquit increpationem, errat. 18 Inſidiatur inimicus labiis mendacii, & qui profert detractionem ſtultus eſt. 19 In multitudine verborum non ceſſat peccatum; & qui prohibet labia ſua, prudens eſt. 20 Argentum *electum* lingua juſti, & cor impiorum contritio eſt. 21 Labia juſtorum placant plurimos, & ſtulti in indigentia intellectus morientur. 22 Benedictio Dei divites facit, & non addetur dolor cum ea. 23 Quando ridet ſtultus, operatur *facinus*; & ſapientia eſt viro prudenti. 24 Quod timet impius, eveniet ei; & deſiderium juſtorum dabitur eis. 25 Sicut tranſit turbo, ſic tranſibit impius; juſtus autem eſt fundamentum in ſeculo. 26 Sicut acetum dentibus, & ſicut fumus oculis, ſic eſt nuntius piger his qui miſerunt eum. 27 Timor Dei addet dies, & anni impiorum breviabuntur. 28 Spes juſtorum lætitia, & ſpes impiorum peribit. 29 Fortitudo ſimplicibus via Dei, & conſumptio eſt his qui faciunt iniquitatem. 30 Juſtus in æternum non commovebitur, & impii non *congregabuntur* in terra. 31 Os juſtorum *profert* ſapientiam, & lingua perverſa deficiet. 32 Labia juſti cognoſcent beneplacitum, & os impiorum pervertit.

CAP. XI.

1 STatera doloſa abominatio eſt Dei,ᵃ & *ſicut pondus rectum* voluntas ejus. 2 Ingrediente ſuperbia venit ignominia: at eſt humilibus ſapientia. 3 Simplicitas rectorum diriget eos, & pervertent direptores, tunc conteret eos. 4 Non prodeſt mendacium in die iræ, & juſtitia liberat à morte mala. 6 Juſtitia rectorum eruet eos, et direptores in retributione ſua capientur. 5 Juſtitia ſimplicis rectam facit viam ejus, & in impietate ſua corruet impius. 7 Quando moritur vir impius perit ſpes ejus, et ſpes illorum qui faciunt iniquitatem peribit. 8 Juſtus de anguſtia liberatur, et ingreditur impius pro eo. 9 Ore doloſus nocet amico ſuo, et juſti in ſcientia ſua liberantur.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

17 * ܐܘܪܚܐ ܕܚܝܐ. ܢܛܪܐ ܡܪܕܘܬܐ. ܘܕܣܢܐ ܡܟܣܢܘܬܐ. ܫܛܝܐ ܗܘ. * ܡܟܣܝܢ ܒܢܟܠ ܒܥܠܕܒܒܘܬܐ
18 ܣܦܘܬܐ ܕܥܘܠܐ. ܘܕܡܦܩ ܠܘܫܐ ܣܟܠܐ. ܣܓܝ ܫܛܝܐ ܗܘ. * ܒܣܘܓܐܐ ܕܡܠܐ ܠܐ ܡܬܦܨܐ ܥܘܠܐ.
19 ܘܕܚܣܟ ܣܦܘܬܗ. ܡܣܬܟܠ. * ܣܐܡܐ ܓܒܝܐ ܠܫܢܗ ܕܙܕܝܩܐ. ܘܠܒܐ ܕܥܘܠܐ. ܡܪܪܬܐ ܗܘ. 20
21 * ܣܦܘܬܗ ܕܙܕܝܩܐ ܣܓܝ ܡܒܣܡܢ. ܘܫܛܝܐ ܒܚܣܝܪܘܬ ܪܥܝܢܗܘܢ ܢܡܘܬܘܢ. * ܒܘܪܟܬܗ
22 ܕܡܪܝܐ. ܡܥܬܪܐ. ܘܟܐܒܐ ܠܐ ܢܗܘܐ ܥܡܗ. * ܫܛܝܐ ܟܕ ܓܚܟ. ܥܒܕ ܒܝܫܬܐ. ܘܚܟܡܬܐ
23 ܠܓܒܪܐ. ܣܘܟܠܗ. * ܥܘܠܐ ܠܐܒܕܢܐ ܡܬܢܓܕ. ܘܣܒܪܐ ܡܬܝܗܒܐ ܠܙܕܝܩܐ. * ܐܝܟ ܕܥܒܪ
24 25 ܥܠܥܠܐ ܥܓܠ. ܗܟܢܐ ܢܐܒܕ ܥܘܠܐ ܘܠܐ ܢܫܬܟܚ. ܙܕܝܩܐ ܕܝܢ ܢܬܩܝܡܘܢ ܫܬܐܣܘܗܝ
ܠܥܠܡ. * ܐܝܟ ܕܒܣܪܐ ܠܫܢܐ ܢܟܝܢ. ܘܬܢܢܐ ܠܥܝܢܐ. ܗܟܢܐ ܢܟܐ ܥܘܠܐ ܠܥܒܘܕܘܗܝ. 26
* ܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܬܘܣܦ ܝܘܡܬܐ. ܘܫܢܝܗܘܢ ܕܥܘܠܐ ܢܬܒܨܪܢ. * ܣܒܪܗܘܢ ܕܙܕܝܩܐ ܒܚܕܘܬܐ. 27
28 ܘܣܒܪܐ ܕܥܘܠܐ ܢܐܒܕ. * ܡܥܫܢܐ ܐܘܪܚܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܫܡܠܝܐ. ܘܬܒܪܐ ܠܥܒܕܝ ܥܘܠܐ. 29
* ܙܕܝܩܐ ܠܥܠܡ ܠܐ ܢܙܘܥ. ܘܥܘܠܐ ܠܐ ܢܥܡܪܘܢ ܒܐܪܥܐ. * ܦܘܡܗ ܕܙܕܝܩܐ ܡܡܠܠ ܚܟܡܬܐ. 30
31 ܘܠܫܢܐ ܗܦܝܟܐ ܢܬܦܣܩ. * ܣܦܘܬܗ ܕܙܕܝܩܐ ܝܕܥܢ ܛܝܒܘܬܐ. ܘܦܘܡܗܘܢ ܕܥܘܠܐ. 32
ܗܦܟܬܐ. * ܦܬܓܡܐ * ܝܐ * ܡܣܐܬܐ ܕܢܟܠܐ ܡܣܠܝܐ ܠܡܪܝܐ. ܘܡܬܩܠܐ 1
2 ܫܠܡܐ ܪܥܐ. * ܐܝܟܐ ܕܥܐܠܐ ܨܥܪܐ. ܬܡܢ ܥܐܠܐ ܨܥܪܐ. ܘܠܡܟܝܟܐ ܚܟܡܬܐ. * ܣܒܪܐ ܕܬܪܝܨܐ
3 ܢܬܒܢܐ. ܘܪܡܘܬܐ ܕܥܘܠܐ ܬܬܣܚܦ. * ܠܐ ܡܘܬܪܐ ܩܢܝܢܐ ܒܝܘܡܐ ܕܪܘܓܙܐ. ܙܕܝܩܘܬܐ ܕܝܢ 4
ܡܦܨܝܐ ܡܢ ܡܘܬܐ. * ܙܕܝܩܘܬܗ ܕܬܡܝܡܐ ܬܬܪܝܨ ܐܘܪܚܗ. ܘܒܥܘܠܗ ܢܦܠ ܥܘܠܐ. 5
6 * ܙܕܝܩܘܬܗܘܢ ܕܬܪܝܨܐ ܬܦܨܐ ܐܢܘܢ. ܘܥܘܠܐ ܒܥܘܠܗܘܢ ܢܬܐܚܕܘܢ. * ܟܕ ܡܐܬ ܓܒܪܐ
7 ܥܘܠܐ. ܐܒܕ ܣܒܪܗ. ܘܣܒܪܗܘܢ ܕܒܝܫܐ ܐܒܕ. * ܙܕܝܩܐ ܡܢ ܐܘܠܨܢܐ ܢܬܦܨܐ. ܘܢܥܘܠ 8
ܥܘܠܐ ܚܠܦܘܗܝ. * ܥܘܠܐ ܒܦܘܡܗ ܡܚܒܠ ܠܚܒܪܗ. ܘܙܕܝܩܐ ܒܝܕܥܬܐ ܢܬܥܫܢܘܢ. 9

Via vitæ cuſtodit diſciplinam: & qui odit objurgationem, ſtultus eſt. 17
Abſcondunt inſidioſè inimicitiam labia impiorum: & qui profert maledictionem, inſipiens eſt. 18
In affluentia verborum non liberatur iniquus: qui autem coërcet labia ſua, prudens eſt. 19
Argentum electum, lingua juſti: cor autem ſceleratorum fel eſt. 20
Labia juſti valdè benigna ſunt: ſtulti autem in inſipientia ſua morientur. 21
Benedictio Domini ditat, & dolor non erit cum ea. 22
Stultus cùm ridet, operatur malum: & ſapientia viro, intellectus ejus. 23
Impius ad interitũ trahitur: & ſpes datur juſtis. 24
Quemadmodũ repentè præterit tempeſtas, ſic peribit impius & non reperietur: juſti autem fundamenta locabuntur in æternum. 25
Sicut uvæ acerbæ dentibus nocent, & fumus oculis, ita nocet impietas operantibus eam. 26
Timor Domini adjiciet dies, anni verò iniquorum minuentur. 27
Spes juſtorum, cum lætitia: & ſpes impiorum peribit. 28
Corroborat via Domini integros, & conterit operantes iniquitatem. 29
Juſtus in æternum non movebitur: & facinoroſi non habitabunt in terra. 30
Os juſti loquitur ſapientiam: & lingua perverſa excindetur. 31
Labia juſtorum agnoſcunt beneficium: os verò ſceleſtorum, perverſitates. 32

CAP. XI.

BIlances doloſas abominatur Dominus: & ponderibus juſtis oblectatur. 1
Ubi intrat obſcœnitas, intrat ignominia: humilibus autem ſapientia. 2
Spes juſtorum aſtruetur: & ſuperbia nefariorum deſtruetur. 3
Non proderunt divitiæ in die iræ: juſtitia verò liberabit à morte. 4
Æquitas integri diriget viam ejus: & in impietate ſua corruet impius. 5
Juſtitia rectorum ſalvabit illos: at iniqui iniquitate ſuâ capientur. 6
Cùm moritur vir impius, perit ſpes ejus; & ſpes malignorum peribit. 7
Juſtus ab anguſtia liberabitur, & ſubintrabit impius pro eo. 8
Impius ore ſuo corrumpit ſocium ſuum: at juſti per ſcientiam confirmabuntur. 9

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

17 18 * طرق الحياة يحفظها الادب * والادب الذي لا يوبخ يضل * السفاه الظالمة تغشي صاحبها
19 عداوة * الذين يبرزون الفريات اوليك اغبياء كثيرا * من كثر الكلام لم يفلت من الخطية *
20 21 ومن يشفق علي شفتيه يكون لبيبا * فضة مخبرة لسان مقسط * وقلب المنافق يبلي * شفاه
22 المقسطين تعرف العليات * والاغبياء يموتون في الفاقة * بركة الرب علي راس المقسط هذا بعينه *
23 وما يضاف اليه حزن في القلب * الغبي بلسانه يعمل الاسواء * والحكمة تنتج الانسان فطنة *
24 25 * المنافق يتردد في الهلاك * شهوة المقسط مقبولة * في عبور الزوبعة يبيد المنافق * والمقسط اذا
26 حايد يسلم الي الابد * كما ان الحصرم ضار للاضراس والدخان للعينين * كذلك تجاوز الشريعة
27 28 ضارا لمن يستصحبه * خشية الموت تزيد اياما * وسنو المنافقين تتناقص * السرور يداوم
29 المقسطين * ورجاء المنافقين يهلك * حصن البار مخافة الرب * والتهشيم لعاملي الاسواء *
30 31 * المقسط ما يتراخي مدا الدهر * والمنافقون لن يسكنون الارض * فم المقسط يقطر حكمة *
32 ولسان الظالم يجتاح * شفاه الناس المقسطين تقطر نعما * وفم المنافقين يعوج مالوفا *

* الفصل الحادي عشر *

1 2 * الموازين الغاشة مرذولة قدام الرب * والمعيار المقسط مقبولا عنده * حيث ما يدخل التعظم فهناك
3 الهوان * وفم المتواضعين يهذ حكمة * كمال المتقومين في الخير يرشدهم * وتعرقل الجايرين يستاسرهم *
4 * النعم والاموال ما تنفع في يوم الغضب * والعدل ينجي من الموت * المقسط اذا مات خلف تندما
5 عليه * وهلاك المنافقين يصير به مسارعة وشماتة * العدل يمهد ويقوم طرقا لا عيب فيها * والنفاق
6 يتهور فيه الظلم * عدل الناس المتقومين ينجيهم * والعادلون عن الشريعة يوخذون بعدمهم
7 8 المشاورة * اذا توفي الرجل المقسط لن يهلك رجاوه * وفخر المنافقين يضمحل * المقسط يفلت من
9 الغمص * ويسلم المنافق عوضه * في فم المنافقين فخ لاهل المدينة * وحسن المقسطين رجاء لهم ويسرا *

Vias vitæ cuſtodit diſciplina: & diſciplina quæ non corripit, in errorem inducit. 17
Labia iniqua operiunt illa habentem inimicitiâ: qui promunt mendacia, ipſi ſunt inſipientes valdè. 18
Qui multiplicat verba, non evadit peccatum; & qui parcit labiis ſuis, eſt prudens. 19
Argentum probatum, lingua juſta: & cor impii marceſcet. 20
Labia juſtorum docent ſublimia: inſipientes autem morientur in egeſtate. 21
Benedictio Domini ſuper caput juſti hujuſmetipſius, nec comitabitur eum mœror in corde. 22
Inſipiens linguâ ſuâ operatur mala: & ſapientia generat homini intelligentiam. 23
Iniquus verſatur in interitu: deſiderium juſti eſt acceptum. 24
In tranſitu turbinis peribit impius: juſtus autem cùm declinaverit, ſervabitur in æternum. 25
Sicut uva acerba eſt infenſa dentibus, & fumus oculis; ſic tranſgreſſio legis nocet ei qui amat illam. 26
Timor mortis auget dies: & anni impiorum diminuentur. 27
Lætitia perſeverat cum juſtis: & ſpes iniquorum peribit. 28
Arx juſti, timor Domini; & fractio, operantibus iniquitates. 29
Juſtus non relaxabitur in æternum, impii verò non habitabunt terram. 30
Os juſti ſtillat ſapientiam, & lingua impii eradicabitur. 31
Labia hominum juſtorum ſtillant delitias, & os iniquorum pervertetur inſaniens. 32

CAP. XI.

STateræ doloſæ ſunt abominandæ coram Domino, & menſura juſta eſt accepta apud eum. 1
Quocunque ingreditur ſuperbia, ibi eſt deſpectus, os verò humilium meditabitur ſapientiam. 2
Perfectio rectorum in bono, diriget eos: & perverſitas tranſgreſſorum mancipabit eos. 3
Delectationes & opes non proderunt in die furoris: juſtitia autem liberabit à morte. 4
Juſtus cùm moritur, relinquit poſt ſe lamentationem ſuper ſeipſum; in interitu verò iniquorum erit feſtinatio & lætitia. 5
Juſtitia ſternit ac dirigit vias immaculatas; & in impietatem præcipitabitur iniquus. 6
Juſtitia hominum rectorum liberabit eos; & tranſgredientes legem capientur propter carentiam conſilii. 7
Cùm obierit vir juſtus, nullo modo peribit ſpes ejus; & gloria iniquorum diſſipabitur. 8
Juſtus effugiet laqueum, & tradetur iniquus pro eo. 9
In ore iniquorum laqueus eſt incolis urbis; at benefacta juſtorum ſpes eſt ipſis ac facilitas.

משלי : יא

impiis pereundo in & ; civitas exultabit juſtorum bonitate In
10 בטוב צדיקים תעלץ קריה ובאבד רשעים
ore in & ; civitas exaltabitur rectorum benedictione In .ovatio
11 רנה׃ בברכת ישרים תרום קרת ובפי
; corde carens ſuum ſocium Deſpicit .ſubvertetur impiorum
12 רשעים תהרס׃ בז־לרעהו חסר־לב
revelans delator Ambulans .tacebit prudentiarum vir &
13 ואיש תבונות יחריש׃ הולך רכיל מגלה־
non In .verbum operiens ſpiritu fidelis & : ſecretum
14 סוד ונאמן־רוח מכסה דבר׃ באין
.conſiliarii multitudine in ſalus & : populus corruet , induſtriæ
תחבלות יפל־עם ותשועה ברב יועץ׃
odiens & : extraneo fidejuſſerit cùm , conteretur Contritione
15 רע ירוע כי־ערב זר ושנא
fortes & ; gloriam aſſequetur gratiæ Mulier .fidens , ſtipulantes
16 תוקעים בוטח׃ אשת חן תתמך כבוד ועריצים
; miſericordiæ vir , ſuæ animæ Retribuens .opulentiam adipiſcentur
17 יתמכו־עשר׃ גמל נפשו איש חסד
opus faciens Impius .crudelis , ſuam carnem turbans &
18 ועכר שארו אכזרי׃ רשע עשה פעלת־
juſtitia Sic .veritatis merces juſtitiam ſeminanti & : mendax
19 שקר וזרע צדקה שכר אמת׃ כן־צדקה
DOMINI Abominatio .ſuam mortem ad ,malum ſequens & , vitas ad
20 לחיים ומרדף רעה למותו׃ תועבת יהוה
manum ad Manus .via perfecti ejus beneplacitum & ; corde perverſi
21 עקשי־לב ורצונו תמימי דרך׃ יד ליד
Inauris - .evaſit juſtorum ſemen & : malus impunis erit non
22 לא־ינקה רע וזרע צדיקים נמלט׃ נזם
.diſcretionem declinans & , pulchra mulier : porci nare in aurea
זהב באף חזיר אשה יפה וסרת טעם׃
, impiorum præſtolatio : bonum tantummodo juſtorum Deſiderium
23 תאות צדיקים אך־טוב תקות רשעים
prohibens & : amplius additur & , diſpergens Eſt .penetrans furor
24 עברה׃ יש מפזר ונוסף עוד וחשך
benedictionis Anima .defectum ad veruntamen , rectitudine à
25 מישר אך־למחסור׃ נפש־ברכה
Prohibenti .pluvia ipſe etiam , inebrians & : impinguabitur
26 תדשן ומרוה גם־הוא יורא׃ מנע
.frangentis capiti benedictio & ; populus ei maledicent , frumentum
בר יקבהו לאום וברכה לראש משביר׃
, malum quærens & : placitum quæret , bonum manè Quærens
27 שחר טוב יבקש רצון ודרש רעה
: corruet ipſe , ſua opulentia in Fidens .ei veniet
28 תבואנו׃ בוטח בעשרו הוא יפל
, ſuam domum Conturbans .germinabunt juſti folium tanquã &
29 וכעלה צדיקים יפרחו׃ עכר ביתו
.corde ſapienti ſtultus ſervus & ; ventum accipiet hæreditatem
ינחל־רוח ועבד אויל לחכם־לב׃
.ſapiens animas ſuſcipiens & : vitarum lignum juſti Fructus
30 פרי צדיק עץ חיים ולקח נפשות חכם׃
, impio quia etiam ; reddetur terra in juſto En
31 הן צדיק בארץ ישלם אף כי־רשע
? peccanti &
וחוטא׃

Verſio VULG. LAT.

10 In bonis juſtorum exultabit
civitas : & in perditione impiorum
11 erit laudatio. Benedictione
juſtorum exaltabitur
civitas : & ore impiorum ſubvertetur.
12 Qui deſpicit amicum
ſuum, indigens corde eſt:
vir autem prudens tacebit.
13 Qui ambulat fraudulenter, revelat
arcana:qui autem fidelis
eſt animi, celat amici commiſſum.
14 Ubi non eſt gubernator,
populus corruet : ſalus autem,
15 ubi multa conſilia. Affligetur
malo, qui fidem facit pro extraneo:
qui autem cavet laqueos,
16 ſecurus erit. Mulier gratioſa
inveniet gloriã : & robuſti habebunt
17 divitias. Benefacit animæ
ſuæ vir miſericors : qui
autem crudelis eſt, etiam propinquos
18 abjicit. Impius facit
opus inſtabile : ſeminanti autem
juſtitiam merces fidelis.
19 Clementia præparat vitam: &
20 ſectatio malorum mortem.Abominabile
Domino cor pravum
: & voluntas ejus in iis,
21 qui ſimpliciter ambulant. Manus
in manu non erit innocens
malus : ſemen autem juſtorum
22 ſalvabitur. Circulus aureus
in naribus ſuis,mulier pulchra
23 & fatua. Deſiderium juſtorum
omne bonum eſt : præſtolatio
24 impiorum furor. Alii
dividunt propria, & ditiores
fiunt : alii rapiunt non ſua, &
25 ſemper in egeſtate ſunt. Anima,
quæ benedicit, impinguabitur
: & qui inebriat, ipſe
26 quoque inebriabitur. Qui abſcondit
frumenta, maledicetur
in populis : benedictio autem
ſuper caput vendentium.
27 Benè conſurgit diluculò qui
quærit bona : qui autem inveſtigator
malorum eſt, opprimetur
28 ab eis. Qui confidit in
divitiis ſuis, corruet : juſti autem
quaſi virens folium germinabunt.
29 Qui conturbat domum
ſuam, poſſidebit ventos:
& qui ſtultus eſt, ſerviet ſapienti.
30 Fructus juſti lignum vitæ
: & qui ſuſcipit animas, ſapiens
31 eſt. Si juſtus in terra recipit,
quantò magis impius &
peccator.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

10 † Ἐν ἀγαθοῖς δικαίων κατώρθωσε πόλις,
(δ) † στόματι δὲ ἀσεβῶν κατεσκάφη.
12 † Μυκτηρίζει πολίτας ἐνδεὴς φρενῶν,
† ἀνὴρ δὲ φρόνιμος ἡσυχίαν ἄγει.
13 † Ἀνὴρ δίγλωσσος ἀποκαλύπτει βουλὰς
ἐν συνεδρίῳ, † πιστὸς δὲ πνοῇ κρύπτει
14 πράγματα. † Οἷς μὴ ὑπάρχει κυβέρνησις,
πίπτουσιν ὥσπερ φύλλα, † σωτηρία δὲ ὑπάρχει
15 ἐν πολλῇ βουλῇ. † Πονηρὸς κακοποιεῖ
ὅταν συμμίξῃ δικαίῳ, † μισεῖ δὲ ἦχον
16 ἀσφαλείας. † Γυνὴ εὐχάριστος ἐγείρει
ἀνδρὶ δόξαν, † θρόνος δὲ ἀτιμίας γυνὴ
μισοῦσα δίκαια. † πλούτου ὀκνηροὶ
ἐνδεεῖς γίνονται, † οἱ δὲ ἀνδρεῖοι ἐρείδονται
17 πλούτῳ. † Τῇ ψυχῇ αὐτοῦ ἀγαθὸν
ποιεῖ ἀνὴρ ἐλεήμων, † ἐξολλύει δὲ αὐτοῦ
18 σῶμα ὁ ἀνελεήμων. † Ἀσεβὴς ποιεῖ
ἔργα ἄδικα, † σπέρμα δὲ δικαίων μισθὸς
19 ἀληθείας. † Υἱὸς δίκαιος γεννᾶται εἰς
ζωήν, † διωγμὸς δὲ ἀσεβοῦς εἰς θάνατον.
20 † Βδέλυγμα κυρίῳ διεστραμμέναι
ὁδοί, † προσδεκτοὶ δὲ αὐτῷ πάντες ἄμωμοι
21 ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν. † Χειρὶ χεῖρας
ἐμβαλὼν ἀδίκως οὐκ ἀτιμώρητος
ἔσται, † ὁ δὲ σπείρων δικαιοσύνην λήψεται
22 μισθὸν (ε)πιστόν. † Ὥσπερ ἐνώτιον
ἐν ῥινὶ ὑός, † οὕτως γυναικὶ κακόφρονι
23 κάλλος. † Ἐπιθυμία δικαίων πᾶσα ἀγαθή,
† ἐλπὶς δὲ ἀσεβῶν ἀπολεῖται. †
24 Εἰσίν, οἳ τὰ ἴδια σπείροντες πλείονα
ποιοῦσιν· † εἰσὶ δὲ καὶ οἳ συνάγοντες ἐλαττονοῦνται.
25 † Ψυχὴ (ζ) εὐλογουμένη
πᾶσα ἁπλῆ, † ἀνὴρ δὲ θυμώδης οὐκ εὐσχήμων.
26 † Ὁ συνέχων σῖτον ὑπολείποιτο
αὐτὸν τοῖς ἔθνεσιν, † εὐλογία δὲ εἰς
27 κεφαλὴν τοῦ μεταδιδόντος. † Τεκταινόμενος
ἀγαθὰ ζητεῖ χάριν ἀγαθήν, ἐκζητοῦντα
δὲ κακὰ καταλήψεται αὐτόν.
28 † Ὁ πεποιθὼς ἐπὶ πλούτῳ οὗτος πεσεῖται,
† ὁ δὲ ἀντιλαμβανόμενος δικαίων οὗτος
29 ἀνατελεῖ. † Ὁ μὴ συμπεριφερόμενος τῷ
ἑαυτοῦ οἴκῳ, κληρονομήσει ἄνεμον, † δουλεύσει
30 δὲ ἄφρων φρονίμῳ. † Ἐκ καρποῦ
δικαιοσύνης φύεται δένδρον ζωῆς,
† ἀφαιροῦνται δὲ ἄωροι ψυχαὶ παρανόμων.
31 † Εἰ ὁ μὲν δίκαιος μόλις
σώζεται, ὁ ἀσεβὴς καὶ ἁμαρτωλὸς ποῦ
φανεῖται;

In bonis juſtorum (m) benè ſe 10
geſſit civitas : ore autem impiorum (n) diruta eſt. (o) Subſannat 12
cives indigens corde : vir
autem prudens ſilentium ducit.
Vir (p) bilinguis revelat (q) conſilia 13
in conſeſſu : fidelis autem (r)
ſpiritu (ſ) abſcondit res. (t) Quibus 14
non eſt gubernatio , cadunt
tanquàm folia : ſalus autem eſt
in (u) multo conſilio. Malus malefacit, 15
(x) cùm commiſtus fuerit
juſto : (y) odit autem ſonum
*ſecuritatis. Mulier * gratioſa* 16
ſuſcitat viro gloriam : thronus
autem ignominiæ, mulier odio habens
juſta. Divitiarum pigri fiunt
indigi : (z) fortes autem nituntur
divitiis. Animæ ſuæ (ω) 17
bonum facit vir miſericors: (aa)
perdit autem ſuũ ipſius corpꝰ immiſericors.
Impius facit opera 18
injuſta : ſemen autem juſtorum
merces veritatis. Filius juſtus gignitur 19
ad vitam : (bb) perſequutio
autem impii ad mortem. Abominatio 20
Domino (cc) perverſæ
viæ: (dd) accepti autem ei
omnes immaculati in viis ſuis.
Manu manus (ee) injiciens injuſtè, 21
non impunitus (ff) erit : qui
(gg) autem ſeminat juſtitiam, accipiet
mercedem fidelem. Sicut 22
(hh) inauris in naribus porcæ ;
ſic mulieri malè prudenti pulchritudo.
Deſiderium juſtorum omne, 23
bonum : ſpes autem impiorum
(ii) peribit. Sunt, qui propria 24
(kk) ſeminantes, plura faciunt.
Sunt autem, & qui (ll)
congregantes minuuntur. Anima 25
benedicta, (mm) omnis ſimplex :
(nn) vir autem animoſus inhoneſtus
eſt. Qui (oo) continet frumentum, 26
relinquat illud (pp) nationibus:
benedictio autem in ejus
capite, (qq) qui communicat.
(rr) Fabricans bona, quærit 27
gratiam bonam : exquirentem autem
mala comprehendent eum. Fidens 28
in divitiis, hic cadet : qui
autem inhæret juſtis, hic (ſſ) germinabit.
Qui (tt) non converſatur 29
domi ſuæ, hæreditabit ventum
: ſerviet autem imprudens
prudenti. (vv) De fructu juſtitiæ 30
naſcitur arbor vitæ : auferuntur
autem intempeſtivæ animæ
iniquorum. Si juſtus quidem 31
vix ſalvatur : impius, & peccator
ubi parebunt ?

MS. A. (δ) † καὶ ἐν ἀπωλείᾳ ἀσεβῶν ἀγαλλίαμα. † Ἐν εὐλογίᾳ εὐθείων 11
ὑψωθήσεται πόλις, στόμασιν δὲ ἀσεβῶν (ε) πιστῶν (ζ) ηὐλογημένη

תרגום TARGUM.

10 11 בטבתהון דצדיקי תדוץ קריתהון וביובדנא דרשיעי חדותא׃ בברכתהון דצדיקי
12 תתרורם מדנתא ובפומהון דרשיעי תתעקר׃ דשט לחבריה חסיר רעינא הוא וגברא
13 14 דמתבין שתיק׃ אכל קרצא גלי רזא ודמהימן ברוחיה מכסי מלתא׃ באתרא
15 דלית מדברא נפל עמא ופורקנא ייתי בסוגעא דמלכתנותא׃ בישא מבאיש בצדיקא
16 מטול דהוא ערב חלוני וסני לאלין דסימין סברהון באלהא׃ אתתא חסידתא פלגא
17 איקרא ועשיני דהטין בתר עותרא׃ פריע טבתא לנפשיה גברא חסידא ודמובד
18 גושמיה נכוריא׃ רשיעא עבד עובדא דשקרא ודזריע לצדקתא קושטיה הוא
19 20 אגריה׃ היכנא מן דעבד צדקתא לחיי נטיר ודרדף בישתא נטיר למותא׃ מרחק
21 אלהא לעקימי לבא וצבי באלין דתמימין׃ דמושיט אידא על חבריה לא מודכי מן
22 בישתא וזרעא דצדיקי מתפרק׃ קדשיה דדהבא בנחירי דחזירתא היכנא אתתא
23 24 דשפירא וסרי טעמא׃ רגתא דצדיקי בטבתא וסבורא דרשיעי ברוגזא׃ אית
25 דפרד ומוסיף תוב יחשיך מן תריצותא חוסרנא לידה׃ נפשא דברכתא תדהן ומן
26 דמאלף אף הוא יליף׃ מן דכלא עבורא באולצנא נשבקוניה לבעלי דבבוי
27 וברכתא תהוי לאנשא דמזבן׃ דמקדים טבתא בעי צבינא ותבע בישתא אתיא
28 29 עלוי׃ דמסבר בעותריה הוא נפל ואיך טרפא צדיקי מפרחין׃ עכר ביתיה
30 ירית פחתא וסכלא יהוי עבדא לחכים לבא׃ פרוי דצדיקא אילנא דחיי
31 ומקבלנותא דנפשי חכמתא׃ הן צדיקא בארעא מתחסן ורשיעי וחטאי סיפין מן
ארעא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

In bonis juſtorum lætabitur civitas eorum, & in perditione impiorum lætitia 10
erit. Benedictione rectorum exaltabitur provincia, & ore impiorum 11
ſubvertetur. Qui deſpicit amicum ſuum, indigens intellectu eſt, & 12
vir prudens tacebit. Qui accuſator eſt revelat ſecretum , & qui fidelis 13
eſt in ſpiritu ſuo celat ſermonem. In loco ubi non eſt gubernator, corruit 14
populus : ſalus autem continget in multitudine conſilii. Malus malè 15
agit contra juſtum, eo quod fidejuſſor ſtetit pro extraneo, & odit eos
qui collocant ſpem ſuam in Deo. Mulier gratioſa dividit gloriam, & robuſti 16
currunt poſt divitias. Retribuit bonum *animæ ſuæ* vir benignus : 17
& qui perdit corpus ſuum, crudelis eſt. Impius facit opera iniquitatis : 18
& qui ſeminat in juſtitia, veritas ejus erit merces ipſius. Sicut qui facit 19
juſtitiam ſervatur ad vitam, ſic qui ſequitur malum, ſervatur ad mortem.
Abominatur Deus pravos corde, & vult illos qui ſimplices ſunt. 20
Qui extendit manum ſuam contra ſocium ſuum, non erit innoxius à malo, 21
& ſemen juſtorum ſalvum erit. Sicut circulus aureus in naribus porci, 22
ſic eſt mulier pulchra & fœtido ſenſu. Deſiderium juſtorum ad bonum 23
eſt, & expectatio impiorum ad iram. Eſt qui diſpergit , & rurſus 24
additur ei, & indigentia erit ei qui recedit à rectitudine. Anima benedicta 25
impinguabitur ; & qui docet, etiam ipſe diſcet. Qui prohibet 26
frumentum, in fame relinquet illud inimicis ſuis, & benedictio erit ei qui
vendit. Qui conſurget diluculo ad bonum, quærit beneplacitum : & 27
qui quærit malum, veniet ſuper eum. Qui ſperat in divitiis ſuis, ipſe 28
corruet : & ſicut folium juſti germinabunt. Qui conturbat domum 29
ſuam, poſſidebit ventum, & ſtultus erit ſervus ſapientis corde. Fructus 30
juſti arbor vitæ, & *ſuſceptio* animarum eſt ſapientia. Ecce juſtus 31
in terra roboratur : impii autem et peccatores de terra conſumentur.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

10 * ܒܛܝܒܘܬܗܘܢ ܕܙܕܝܩܐ ܬܬܥܫܢ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܒܐܒܕܢܗܘܢ ܕܥܘܠܐ ܬܕܘܨ. * ܒܒܘܪܟܬܗܘܢ
11 12 ܕܬܪܝܨܐ ܬܬܬܪܝܡ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܒܦܘܡܗܘܢ ܕܥܘܠܐ ܬܬܗܦܟ. * ܕܡܫܝܛ ܠܚܒܪܗ. ܚܣܝܪ ܪܥܝܢܐ
13 ܗܘ. ܘܓܒܪܐ ܣܟܘܠܬܢܐ ܫܬܝܩ ܥܡܪ. * ܐܟܠ ܩܪܨܐ ܡܓܠܐ ܐܪܙܐ. ܘܕܡܗܝܡܢ ܒܪܘܚܗ. ܡܟܣܐ
14 ܡܠܬܐ. * ܥܡܐ ܕܡܕܒܪܢܐ ܠܝܬ ܠܗ. ܢܦܠ. ܘܦܘܪܩܢܗ ܒܡܠܟܐ ܣܓܝܐܐ. * ܒܝܫܐ
15 16 ܡܥܒܕ ܥܡ ܙܕܝܩܐ ܒܝܫܬܐ. ܡܛܠ ܕܣܢܐ ܠܡܣܟܝܢ ܠܣܒܪܐ. * ܐܢܬܬܐ ܡܪܚܡܢܝܬܐ.
ܡܣܡܟܐ ܐܝܩܪܐ ܠܓܒܪܐ. ܟܘܪܣܝܐ ܕܝܢ ܕܨܥܪܐ. ܐܢܬܬܐ ܣܢܝܬ ܩܘܫܬܐ. ܚܒܢܢܐ ܐܦ
17 ܒܥܘܬܪܗܘܢ ܗܘܝܢ ܚܣܝܪܝܢ. ܘܥܫܝܢܐ ܡܣܡܟܝܢ ܝܕܥܬܐ. * ܓܒܪܐ ܛܒܐ. ܝܗܒ ܠܢܦܫܗ
18 ܥܘܣܩܐ ܛܒܐ. ܘܡܘܒܕ ܦܓܪܗ ܓܒܪܐ ܕܠܐ ܡܪܚܡ. * ܥܘܠܐ ܥܒܕ ܥܒܕܐ ܕܢܟܠܐ. ܘܕܙܪܥ
19 20 ܙܕܝܩܘܬܐ. ܦܘܪܥܢܐ ܗܘ ܕܩܘܫܬܐ. * ܒܪܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ ܠܚܝܐ. ܘܕܪܕܦ ܒܝܫܬܐ. ܠܡܘܬܐ. * ܡܣܬܠܕ
21 ܡܪܝܐ ܠܥܡܝܩܝ ܠܒܐ. ܘܨܒܐ ܒܐܝܠܝܢ ܕܠܐ ܡܘܡ ܐܝܬ ܒܐܘܪܚܗܘܢ. * ܕܦܫܛ ܐܝܕܗ ܥܠ ܚܒܪܗ.
22 ܠܐ ܢܙܕܟܐ ܡܢ ܒܝܫܬܐ. ܘܙܪܥܐ ܕܙܕܝܩܐ ܢܬܦܨܐ. * ܐܝܟ ܩܕܫܐ ܕܕܗܒܐ ܒܚܢܝܪܗ ܕܚܙܝܪܬܐ. ܗܟܢܐ
23 ܗܝ ܐܢܬܬܐ ܫܦܝܪܬܐ ܘܣܪܝܚܐ ܒܛܥܡܐ. * ܪܓܬܐ ܕܙܕܝܩܐ ܒܛܒܬܐ. ܘܣܒܪܗܘܢ ܕܥܘܠܐ ܪܘܓܙܐ.
24 25 * ܐܝܬ ܕܙܪܥ ܕܝܠܗ. ܘܡܘܣܦ ܣܓܝ. ܘܐܝܬ ܕܟܢܫ ܕܠܐ ܕܝܠܗ. ܘܒܨܝܪ ܗܘ ܠܗ. * ܢܦܫܐ
26 ܡܒܪܟܬܐ ܬܬܪܘܐ. ܘܕܠܝܛ ܬܘܒ ܢܬܠܛ. * ܕܟܠܐ ܥܒܘܪܐ ܒܥܘܠܨܢܐ. ܢܫܒܩܝܘܗܝ
27 ܠܒܥܠܕܒܒܘܗܝ. ܘܒܘܪܟܬܐ ܥܠ ܪܫܗ ܕܡܙܒܢ. * ܕܒܥܐ ܛܒܬܐ. ܒܥܐ ܪܚܡܐ.
28 ܘܕܒܥܐ ܒܝܫܬܐ. ܬܐܬܐ ܠܗ. * ܕܬܟܝܠ ܥܠ ܥܘܬܪܗ. ܢܦܠ. ܘܙܕܝܩܐ ܐܝܟ ܛܪܦܐ ܢܥܒܒܘܢ.
29 * ܕܒܢܐ ܒܝܬܗ ܒܢܟܠܐ. ܢܫܒܘܩ ܠܒܢܘܗܝ ܬܢܚܬܐ. ܘܕܠܐ ܟܢܫ ܒܒܝܬܗ. ܢܦܠܓ
30 ܠܒܢܘܗܝ ܪܘܚܐ. ܘܣܟܠܐ ܢܗܘܐ ܥܒܕܐ ܠܚܟܝܡܐ. * ܦܐܪܘܗܝ ܕܙܕܝܩܐ. ܐܝܠܢܐ ܕܚܝܐ.
31 ܘܡܬܚܛܦܢ ܢܦܫܬܐ ܕܥܘܠܐ. * ܐܢ ܙܕܝܩܐ ܒܥܘܠܨܢ ܚܝܐ. ܪܫܝܥܐ ܘܚܛܝܐ ܐܝܟܐ ܢܬܩܝܡ.

In probitate juſtorum roborabitur civitas : 10
& in interitu impiorũ exultabit. Benedicti- 11
one rectorũ erigetur civitas: & ore impiorũ
ſubvertetur. Qui deſpicit ſociũ ſuũ, demens 12
eſt: & vir prudens in ſilentio habitat. Dela- 13
tor revelat ſecretum: at qui fidelis eſt animo,
tegit ſermonẽ. Populus cui gubernator non 14
eſt, corruet:& ſalus ipſius in conſilio multo.
Improbus malum operatur, cùm occurrit 15
juſto, quoniã odit expectantes ſpem. Mulier 16
gratioſa fulcit gloriam viri : ſedes autẽ con-
tumeliæ,mulier odio habens veritatem. Pigri
etiam cum divitiis ſuis erunt inopes : at ani-
moſi ſuſtentabunt ſcientiam. Vir probus lo- 17
cat animæ fœnora optima:perdit autem cor-
pus ſuum vir qui non miſeretur. Impius facit 18
opera fraudis : at ſerentis juſtitiã, æquitas e-
rit merces. Filius juſtitiæ,ad vitam: & qui o- 19
peratur nequitiã, ad mortẽ. Abhorret Dñs à 20
profundis corde:et delectatur iis qui ſine ma-
cula ſunt in via. Qui extendit manum ſuã in 21
ſocium ſuum, non erit inſons mali: & ſemen
juſtorũ ſalvabitur. Quale eſt monile aureum 22
in rictu ſuis, talis eſt mulier pulchra & fœti-
da ſapore. Deſiderium juſtorum,circa bona: 23
& ſpes injuſtorum eſt ira. Eſt qui proprium 24
ſerit, & multum cogit proventum:eſtque qui
non proprium colligit, & tamen parum ha-
bet. Anima benedicta impinguabitur : & 25
maledictus, adhuc maledicetur. Qui denegat 26
frumentum in anguſtia, relinquet illud ini-
micis ſuis: & benedictio erit ſuper caput ejꝰ
qui vendit. Qui quærit bonum, quærit favo- 27
rem : & qui quærit malum, adveniet ei. Qui 28
fidit opibus ſuis, corruet : & juſti velut folia
germinabunt. Qui domum fraudibus ædifi- 29
cat, relinquet liberis ſuis gemitus : & qui
non accumulat in domo ſua, diſtribuet liberis
ſuis ventum. Et ſtultus erit ſervus ſapienti.
Fructus juſti, arbor vitæ : diſſipabuntur au- 30
tem animæ impiorum. Si juſtus vix vivit, 31
impius & peccator ubi conſiſtet?

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

10 * بصالحات المقسطين تصطلح المدينة * وبافواه المنافقين تهدم وتحفر * وفي هلاك المنافقين
11 12 ابتهاج * ببركة المستقيمين يعلوا شان المدينة * بفزع اهل المدينة نقص اراوهم * والانسان
13 المتعمق العقل يستصحب السكوت * الانسان المثني اللسان يعلن الاراء في الجمع * ونسمة
14 الثقة تكتم الامر * من ليس لهم تدبير يسقطون كسقوط الورقة * والخلاص هو في المشاورة
15 16 الجزيلة * الخبيث يعمل الشر اذا خالط مقسطا * ويبغض ذكر التحصن * المراة الشكور
تنهض لرجلها شرفا * وكرسي الهوان المراة الماقتة المعدلات * العاجزون ذوو الغناء
17 يصيرون معسرين * وذوو الشهامة يتوطدون في الثروة * بنفسه يعمل الخير الانسان الرحوم *
18 19 * المنافق يعمل اعمالا ظالمة * ونسل المقسطين يعمل ثواب الحق * الابن المقسط يولد للحياة *
20 وركض المنافق يجري الى الموت * رذالة عند الرب الطريق الملتوية * وجميع الذين لا عيب
21 في مناهجهم مقبولون عنده * ومن يلقي يدا في يد ظلما لن يكون غير معاقب * ومن
22 يزرع عدلا ياخذ ثوابا امينا * مثل القرط في انف خنزير * كذلك الحسن في امراة تمييزها
23 24 رديء * شهوة المقسطين كلها صالحة * ورجا المنافقين يهلك * يكون قوم يزرعون
ويبذرون الاشياء التي لهم فيحصل لهم اكثر منها * وقوم يكونون يجمعون فينقص حالهم
25 26 ويعسرون * كل نفس مباركة بسيطة * والرجل الغضوب ليس شكله حسنا * ومن يجمع الحنطة
27 يخلفها للامم * والبركة تحل على راس المعطي السخي * العامل الصالحات يلتمس نعمة
28 صالحة * والمبتغي الطالحات ستدركه * الواثق بالغناء والمدل به هذا يسقط * ومن يعضد
29 30 المقسطين يشرق نوره * من لا يتصرف حسنا في منزله يرث رياحا * والغبي يخدم العاقل * من ثمر
31 العدل ينبع شجرة الحياة * ونفوس العادلين عن الشريعة تعتزل قبل حدها * فان كان المقسط
بالجهد يخلص * فالخاطي والمنافق اين يظهر *

Per bona opera juſtorum inſtauratur civi- 10
tas : & per ora iniquorum deſtruitur &
effoditur : & in interitu iniquorum hila-
ritas. Per benedictionem rectorum exal- 11
tabitur fama urbis : in timore civium de-
fecerunt conſilia ſua. Et homo profundi 12
intellectûs amat ſilentium. Homo bilin- 13
guis revelat conſilia in congregatione : &
ſpiritus ſtabilis occultat rem. Qui non 14
habent providentiam cadent, ut cadit fo-
lium : & ſalus eſt in conſilio multo.
Sceleſtus committit malum cùm conver- 15
ſatur cum juſto, & odit memoriam cir-
cunſpectionis. Mulier gratioſa ſuſcitat ſuo 16
viro gloriam : & ſedes deſpectionis, mu-
lier peroſa juſtitias. Pigri poſſidentes di-
vitias evadent pauperes: & ſolertes con-
firmabuntur in opulentia. Animæ ſuæ be- 17
nefacit homo miſericors. Impius facit ope- 18
ra iniqua : & progenies juſtorum facit
præmium veritatis. Filius juſtus gignitur 19
ad vitam : & paſſus iniqui currit ad
mortem. Abominatio eſt apud Dominum 20
via perverſa : & omnes, in quorum viis
non eſt culpa, ſunt accepti apud ipſum. Et 21
qui tradit manum manui iniquè, nullo
modo erit impunis : & qui ſeminat ju-
ſtitiam, accipiet mercedem ſecuram. Uti 22
inauris in naſo porcæ, ſic eſt pulchri-
tudo in muliere minimè circunſpecta.
Deſiderium juſtorum totum eſt rectum, 23
& ſpes impiorum peribit. Sunt homines 24
qui ſerunt ac ſpargunt res ſuas, & ac-
quirunt, plures iis : & ſunt homines qui
colligunt, & deficit conditio illorum, &
in paupertatem rediguntur. Omnis ani- 25
ma benedicta ſimplex eſt : & viri ira-
cundi conſuetudo non eſt bona. Et qui 26
congregat triticum, relinquet illud gen-
tibus : & benedictio deſcendet ſuper
caput donantis, liberalis. Faciens recta, 27
cupit gratiam bonam : & optans iniqui-
tates, apprehendent eum. Tenax in opi- 28
bus & avarus in iis, hic cadet : & qui
auxiliatur juſtis, ejus lumen ſplendeſcet.
Qui non benè incedit domi ſuæ, poſſide- 29
bit ventos : & inſipiens ſerviet prudenti.
De fructu juſtitiæ naſcetur arbor vitæ : 30
& animæ declinantium à lege, ſepa-
rabuntur ante terminum ſuum. Si 31
juſtus cum difficultate ſalvatur, igi-
tur peccator, & iniquus ubi appare-
bit?

מִשְׁלֵי ׃ יב

CAP. XII. יב

,increpationem *odiens* & ; ſcientiam *diligens* , correctionem *Diligens*
1 אֹהֵב מוּסָר אֹהֵב דָּעַת וְשׂוֹנֵא תוֹכַחַת
machinationum virum & : Domino à *benevolentiam* educet Bonus .inſipiens
2 בָּעַר׃ טוֹב יָפִיק רָצוֹן מֵיְהוָה וְאִישׁ מְזִמּוֹת
juſtorum radix & : impietate in homo ſtabilis erit Non .*reum peraget*
3 יַרְשִׁיעַ׃ לֹא־יִכּוֹן אָדָם בְּרֶשַׁע וְשֹׁרֶשׁ צַדִּיקִים
putredo velut & ; ſui *mariti* corona *virtutis* Mulier .commovebitur non
4 בַּל־יִמּוֹט׃ אֵשֶׁת חַיִל עֲטֶרֶת בַּעְלָהּ וּכְרָקָב
: judicium juſtorum Cogitationes .*afficiens pudore* ejus oſſibus in
5 בְּעַצְמוֹתָיו מְבִישָׁה׃ מַחְשְׁבוֹת צַדִּיקִים מִשְׁפָּט
inſidiari impiorum Verba .*dolus* impiorum *callida* conſilia
6 תַּחְבֻּלוֹת רְשָׁעִים מִרְמָה׃ דִּבְרֵי רְשָׁעִים אֱרָב־
: *ipſi* non & , impios *Vertendo* .*eos* eruet rectorum os & ; ſanguini
7 דָּם וּפִי יְשָׁרִים יַצִּילֵם׃ הָפוֹךְ רְשָׁעִים וְאֵינָם
laudabitur *ipſius intellectus os Ad* .ſtabit juſtorum domus &
8 וּבֵית צַדִּיקִים יַעֲמֹד׃ לְפִי שִׂכְלוֹ יְהֻלַּל־
,*deſpectus Bonus* .contemptum in erit corde perverſus & : vir
9 אִישׁ וְנַעֲוֵה־לֵב יִהְיֶה לָבוּז׃ טוֹב נִקְלֶה
juſtus *Cognoſcens* .pane *carente* & , ſe *glorificante præ* : *ſibiipſi* ſervus &
10 וְעֶבֶד לוֹ מִמְּתַכַּבֵּד וַחֲסַר־לָחֶם׃ יוֹדֵעַ צַדִּיק
Colens ,*crudelis* impiorum miſerationes & : ſui jumenti *animam*
11 נֶפֶשׁ בְּהֶמְתּוֹ וְרַחֲמֵי רְשָׁעִים אַכְזָרִי׃ עֹבֵד
.corde *carens* , vacuos *ſequens* & : pane ſaturabitur ,ſuam *humum*
אַדְמָתוֹ יִשְׂבַּע־לָחֶם וּמְרַדֵּף רֵיקִים חֲסַר־לֵב׃
.dabit juſtorum radix & ; malorum rete impius Deſideravit
12 חָמַד רָשָׁע מְצוֹד רָעִים וְשֹׁרֶשׁ צַדִּיקִים יִתֵּן׃
angustia de egredietur & : *malus* laqueus labiorum *prævaricatione In*
13 בְּפֶשַׁע שְׂפָתַיִם מוֹקֵשׁ רָע וַיֵּצֵא מִצָּרָה
retributionem & : bono ſaturabitur viri oris fructu De .juſtus
14 צַדִּיק׃ מִפְּרִי פִי־אִישׁ יִשְׂבַּע־טוֹב וּגְמוּל
; ejus oculis in recta ſtulti Via .ei reddet hominis manuum
15 יְדֵי־אָדָם יָשׁוּב לוֹ׃ דֶּרֶךְ אֱוִיל יָשָׁר בְּעֵינָיו
: *ejus* ira cognoſcetur die in Stulti .ſapiens conſilio *audiens* &
16 וְשֹׁמֵעַ לְעֵצָה חָכָם׃ אֱוִיל בַּיּוֹם יִוָּדַע כַּעְסוֹ
annunciabit ,veritatem *Effabit* .callidus ,ignominiam *operiens* &
17 וְכֹסֶה קָלוֹן עָרוּם׃ יָפִיחַ אֱמוּנָה יַגִּיד
confeſſiones *ut effutiens* Eſt .dolum ,*falſitatum* teſtis & ; juſtitiam
18 צֶדֶק וְעֵד שְׁקָרִים מִרְמָה׃ יֵשׁ בּוֹטֶה כְּמַדְקְרוֹת
erit firmum *veritatis* Labium .ſanitas ſapientum lingua & : gladii
19 חָרֶב וּלְשׁוֹן חֲכָמִים מַרְפֵּא׃ שְׂפַת־אֱמֶת תִּכּוֹן
Dolus .*falſitatis linguam faciam quieſcere perpetuò* & : perpetuum in
20 לָעַד וְעַד־אַרְגִּיעָה לְשׁוֹן שָׁקֶר׃ מִרְמָה
Non .lætitia ,*pacis conſiliariis* & ; malum *fabricantium* corde in
21 בְּלֶב־חֹרְשֵׁי רָע וּלְיֹעֲצֵי שָׁלוֹם שִׂמְחָה׃ לֹא־
.malo ſunt repleti impii & : iniquitas omnis juſto accidet
יְאֻנֶּה לַצַּדִּיק כָּל־אָוֶן וּרְשָׁעִים מָלְאוּ רָע׃
, veritatem *facientes &* ; *falſitatis* labia Domini Abominatio
22 תּוֹעֲבַת יְהוָה שִׂפְתֵי־שָׁקֶר וְעֹשֵׂי אֱמוּנָה
ſtultorum cor & ; ſcientiam *operiens* callidus Homo .ejus voluntas
23 רְצוֹנוֹ׃ אָדָם עָרוּם כֹּסֶה דָּעַת וְלֵב כְּסִילִים
doloſa & ; dominabitur ſolicitorum Manus .ſtultitiam *prædicabit*
24 יִקְרָא אִוֶּלֶת׃ יַד־חָרוּצִים תִּמְשׁוֹל וּרְמִיָּה
.*tributum in* erit
תִּהְיֶה לָמַס׃

Verſio VUL.LAT.

CAP. XII.

1 Qui diligit diſciplinam,diligit ſcientiam : qui autem
odit increpationes , inſipiens
2 eſt. Qui bonus eſt,hauriet gratiam à Domino : qui autem
confidit in cogitationibus
3 ſuis, impiè agit. Non roborabitur homo ex impietate : &
radix juſtorum non commo-
4 vebitur. Mulier diligens, corona eſt viro ſuo : & putredo
in oſſibus ej⁹, quæ confuſione
5 res dignas gerit. Cogitationes
juſtorum judicia : & conſilia
6 impiorum fraudulenta. Verba
impiorum inſidiantur ſanguini : os juſtorum liberabit eos.
7 Verte impios, & non erunt :
domus autem juſtorum per-
8 manebit. Doctrinâ ſuâ noſcetur vir : qui autem vanus &
excors eſt , patebit contem-
9 ptui. Melior eſt pauper & ſufficiens ſibi, quàm glorioſus &
10 indigens pane. Novit juſtus
jumentorum ſuorum animas :
viſcera autem impiorum cru-
11 delia. Qui operatur terram
ſuam, ſatiabitur panibus : qui
autem ſectatur otium, ſtultiſſimus eſt. Qui ſuavis eſt in vini demorationibus , in ſuis
munitionibus relinquit con-
12 tumeliam. Deſiderium impii
munimentum eſt peſſimorū :
radix autem juſtorū proficiet.
13 Propter peccata labiorum ruina proximat malo:effugiet au-
14 tem juſtus de anguſtia.De fructu oris ſui unuſquiſque replebitur bonis, & juxta opera
manuū ſuarum retribuetur ei.
15 Via ſtulti recta in oculis ejus :
qui autem ſapiens eſt, audit
16 conſilia. Fatuus ſtatim indicat
iram ſuam:qui autem diſſimu-
17 lat injuriam, callidus eſt. Qui
ꝙ novit loquitur, index juſtitiæ eſt : qui autem mentitur,
18 teſtis eſt fraudulentus. Eſt qui
promittit,& quaſi gladio pungitur conſcientiæ:lingua autē
19 ſapientiū ſanitas eſt. Labium
veritatis firmū erit in perpetuū : qui autē teſtis eſt repentinus, concinnat linguā men-
20 dacii.Dolus in corde cogitantiū mala : qui autē pacis ineunt conſilia, ſequitur eos
21 gaudiū.Non contriſtabit juſtū
quidquid ei acciderit : impii
22 autem replebuntur malo.Abominatio eſt Dn̄o labia mendacia:qui autē fideliter agunt,
23 placent ei. Homo verſutus ce-
24 lat ſcientiam : & cor inſipientium provocat ſtultitiam. Manus fortium
dominabitur : quæ autem remiſſa eſt, tributis ſerviet.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. ιβ'.

1 † Ὁ ἀγαπῶν παιδείαν, ἀγαπᾷ αἴσθησιν·
2 † ὁ δὲ μισῶν ἐλέγχους, ἄφρων. † Κρείσσων
ὁ εὑρὼν χάριν παρὰ κυρίῳ, † ἀνὴρ δὲ πα-
3 ράνομος παρασιωπηθήσεται. † Οὐ κατορθώσει ἄνθρωπος ἐξ ἀνόμου, † αἱ δὲ ῥί-
4 ζαι τῶν δικαίων οὐκ ἐξαρθήσονται. † Γυνὴ
ἀνδρεία στέφανος τῷ ἀνδρὶ αὐτῆς, † ὥσπερ δὲ ἐν ξύλῳ σκώληξ, οὕτως ἄνδρα ἀ-
5 πόλλυσι γυνὴ κακοποιός. † Λογισμοὶ δικαίων κρίματα, † κυβερνῶσι δὲ ἀσεβεῖς
6 δόλους. † Λόγοι ἀσεβῶν δόλιοι, † στόμα δὲ
7 ὀρθῶν ῥύσεται αὐτούς. † Οὗ ἐὰν στραφῇ ὁ
ἀσεβὴς, ἀφανίζεται, † οἶκοι δὲ δικαίων
8 παραμένουσι. † Στόμα συνετοῦ ἐγκωμιάζεται ὑπὸ ἀνδρὸς, † νωθροκάρδιος δὲ
9 μυκτηρίζεται. † Κρείσσων ἀνὴρ ἐν ἀτιμίᾳ
δουλεύων ἑαυτῷ, † ἢ τιμὴν ἑαυτῷ περιτιθεὶς,
10 καὶ προσδεόμενος (α) ἄρτου. † Δίκαιος
οἰκτείρει ψυχὰς κτηνῶν αὐτοῦ, † τὰ δὲ
11 σπλάγχνα τῶν ἀσεβῶν ἀνελεήμονα. † Ὁ
ἐργαζόμενος τὴν ἑαυτοῦ γῆν, ἐμπλησθήσεται
ἄρτων, † οἱ δὲ διώκοντες μάταια, ἐνδεεῖς
φρενῶν. † ὅς ἐστιν ἡδὺς ἐν οἴνων διατριβαῖς, † ἐν τοῖς ἑαυτοῦ ὀχυρώμασι καταλεί-
12 ψει ἀτιμίαν. † Ἐπιθυμίαι ἀσεβῶν κακαὶ,
† αἱ δὲ ῥίζαι τῶν εὐσεβῶν ἐν ὀχυρώμασι.
13 † Δι' (β) ἁμαρτίαν χειλέων ἐμπίπτει εἰς
παγίδας ἁμαρτωλὸς, † ἐκφεύγει δὲ ἐξ αὐτῶν δίκαιος. † ὁ βλέπων λεῖα ἐλεηθήσεται, † ὁ δὲ συναντῶν ἐν πύλαις ἐκθλίψει
14 ψυχάς. † Ἀπὸ καρπῶν στόματος ψυχὴ
ἀνδρὸς πλησθήσεται ἀγαθῶν, † ἀνταπόδο-
15 μα δὲ χειλέων αὐτοῦ δοθήσεται αὐτῷ. † Ὁδοὶ ἀφρόνων ὀρθαὶ ἐνώπιον αὐτῶν, † εἰσα-
16 κούει δὲ συμβουλίας σοφός. † Ἄφρων αὐθημερὸν ἐξαγγέλλει ὀργὴν αὐτοῦ, † κρύπτει δὲ
17 τὴν ἑαυτοῦ (γ) ἀτιμίαν ἀνὴρ πανοῦργος. † Ἐπιδεικνυμένην πίστιν ἀπαγγέλλει δίκαιος,
18 † ὁ δὲ μάρτυς τῶν ἀδίκων δόλιος. † Εἰσὶν οἳ
λέγοντες τιτρώσκουσι, (δ) μάχαιραι· † γλῶσ-
19 σαι δὲ σοφῶν ἰῶνται. † Χείλη ἀληθινὰ
κατορθοῖ μαρτυρίαν, † μάρτυς δὲ ταχὺς
20 γλῶσσαν ἔχει ἄδικον. † Δόλος ἐν καρδίᾳ
τεκταινομένου κακὰ, † οἱ δὲ βουλόμενοι εἰρή-
21 νην εὐφρανθήσονται. † Οὐκ ἀρέσει τῷ δικαίῳ οὐδὲν ἄδικον, † οἱ δὲ ἀσεβεῖς πλησθή-
22 σονται κακῶν. † Βδέλυγμα κυρίῳ χείλη ψευδῆ, † ὁ δὲ ποιῶν πίστεις δεκτὸς παρ'
23 αὐτῷ. † Ἀνὴρ συνετὸς θρόνος αἰσθήσεως,
† καρδία δὲ ἀφρόνων συναντήσεται ἀραῖς.
24 † Χεὶρ ἐκλεκτῶν κρατήσει (ε) εὐχερῶς,
† δόλιοι δὲ ἔσονται (ζ) ἐν προνομῇ.

CAP. XII.

Qui diligit diſciplinam, (a) diligit ſenſum : qui autem odit increpationes, inſipiens. (b) Melior, qui invenit gratiam à Domino : vir autem iniquus tacebitur. 1 2
Non (c) proſperabitur homo ex iniquo: radices autem (d) juſtorum non auferentur. 3
Mulier (e) fortis, corona viro ſuo : ſicut autem (f) in ligno vermis, ſic virum diſperdit mulier malefica. 4
Cogitationes juſtorum judicia: (g) gubernant autem impii dolos. 5
Verba impiorum (h) doloſa : os autem (i) rectorum liberabit eos. 6
Quocunque ſe verterit impius, deletur ; domus autem juſtorum permanent. 7
(k) Os intelligentis laudatur à viro : ſocors autem (l) ſubſannatur. 8
Melior vir in (m) vilitate ſerviens ſibi, quàm (n) honorem ſibi circumponens, & egens pane. 9
Juſtus (o) miſeratur animas jumentorum ſuorum : (p) viſcera autem impiorum immiſericordia. 10
Qui operatur ſuam terram, replebitur panibus : (q) qui autem ſequuntur vana, indigentes corde. Qui eſt jucundus in vinorum converſationibus; in ſuis munitionibus relinquet ignominiam. 11
Cupiditates impiorum malæ: radices autem (r) piorum in munitionibus. 12
Propter peccatum labiorum incidit in laqueos peccator: effugit autem ex eis juſtus. (ſ) Qui videt levia, miſericordiâ dignus habebitur: qui autem occurrit in portis, vexabit animas. 13
De fructibus oris anima viri implebitur bonis : (t) & retributio labiorum ejus dabitur ei. 14
Viæ inſipientum rectæ coram ipſis; (u) exaudit autem conſilia ſapiens. 15
Imprudens eâdem die (x) enuntiat iram ſuam: (y) abſcondit autē inhonoratione ſuā vir aſtutus. 16
(z) Planam fidem annuntiat juſtus : (ω) teſtis autem injuſtorum doloſus. 17
(aa) Sunt, qui dicentes vulnerant, enſes : linguæ autem ſapientum ſanant. 18
Labia veracia (bb) dirigunt teſtimonium : teſtis autem (cc) citus linguam habet injuſtam. 19
Dolus in corde (dd) fabricantis mala : qui autem (ee) volunt pacem, (ff) lætabuntur. 20
Non placebit juſto quicquam injuſtum : impii autem implebuntur malis. 21
Abominatio Domino labia mendacia : qui autem facit fides; (gg) acceptus apud eum. 22
Vir (hh) intelligens, (ii) thronus ſenſûs : cor autem inſipientum (kk) occurret execrationibus. 23
Manus (ll) electorum dominabitur facilè : doloſi autem erunt in (mm) direptionem. 24

MS.A. (α) ἄρτων. Οἰκτείρει δίκαιος (β) ἁμαρτίας (γ) ἀτιμίαν πανοῦργος. (δ) μάχαιραν· (ε) ἐχθρῶν, (ζ) εἰς προνομήν.

תרגום TARGUM.

יב

1 2 מן דרחם מרדותא רחם ידיעתא וסני מכסנותא בורא הוא ׃ טב מן דקביל רעותיה
3 דאלהא וגברא רשיעא רעיעא תרעיתיה ׃ לא נתקן בר נשא ברשעא ועקרהון
4 דצדיקי לא נווע ׃ אתתא כשרתא כלילא לבעלה ואנתתא בישתא היך מלטיתא
5 בקיסא היכנא מיבדא גרמוי דגברה ׃ מחשבתהון דצדיקי דינא מדברנותא
6 דרשיעי רמיותא ׃ מלי דרשיעי כמנין לדמא ופומהון דתריצי מפצי להון ׃
7 8 נתהפכון רשיעי ולא נשתכחון וביתהון דצדיקי יקום ׃ גברא משתבח בפומא
9 דסוכלתנותיה וחסיר רעינא יהוי לשטותא ׃ טב הוא זלילא ועבדי אית ליה מן הוא
10 דמתיקר וחסיר לחמא ׃ ידיע צדיקא נפשא דבעיריה ורחמיהון דרשיעי נכוריותא ׃
11 12 דפלח בארעיה יסבע לחמא ודרדף בתר סריקותא חסר רעינא הוא ׃ ראג רשיעא
13 מצודתא בישתא ועקרהון דצדיקי נתקים ׃ בחובא דשפותא מתקל בישא ופליט צדיקא
14 מן עקתא ׃ גברא מן פרי פומיה ישבע טבתא וכל בר נש היך עובד אידוי מתפריע ׃
15 16 ארחיה דסכלא תריצא באפוי ודשמע לעיצתא חכימא הוא ׃ שטיא כד יומיה
17 מודע רוגזיה וערים מכסי צעריה ׃ מן דמסהיד הימנותא נתני צדיקותא וסהד
18 19 דשקרא רמאה הוא ׃ אית דאמריה ספסירא רגשא ולישנא דחכימי מאסיה ׃ שפותא
20 דקשטא תתקן לעלם וסהדא מסתרהב בלישנא דשקרא ׃ רמיותא בלבהון דחשלין
21 בישתא ולאלין דיעצין שלמא חדותא תהוי ׃ לא שפיר לצדיקא כל מדעם דעאתא
22 ורשיעי מלין בישתא ׃ מרחקתיה דאלהא ספותיה דשקרא ובאלין דעבדין הימנותא
23 24 מתרעי ׃ בר נש ערימא מכסה ידיעתא ולבהון דסכלי סני ידיעתא ׃ אידא דתקיפי
תשלט ורמאי יהון למסא ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XII.

Qui diligit diſciplinam, diligit ſcientiam : & qui odit increpationem, 1
inſipiens eſt. Bonus eſt qui ſuſcipit voluntatem à Deo , & viri impii 2
infringitur conſilium. Non dirigetur filius hominis in impietate , radix 3
autem juſtorum non commovebitur. Mulier honeſta corona eſt viri ſui, 4
& mulier mala ſicut putredo in ligno, ſic diſperdit oſſa viri ſui. Cogi- 5
tationes juſtorum, judicium ; & ſolertia impiorum fraus eſt. Verba im- 6
piorum inſidiantur ſanguini, & os rectorum liberat eos. Subvertuntur 7
impii, & non inveniuntur ; domus autem juſtorum permanebit. Vir lau- 8
datur juxta intellectum ejus , & indigens intelligentia erit in contem-
ptum. Melior eſt abjectus qui habet ſervos,quàm ille qui glorioſus eſt & 9
indiget pane. Novit juſtus animam jumenti ſui ; & miſerationes impi- 10
orum, crudelitas. Qui operatur terram ſuam ſatiabitur pane : & qui 11
ſectatur vacua,indigens intellectu eſt. Deſiderat impius rete mali, radix 12
autem juſtorum permanebit. Propter peccatum labiorum corruit ma- 13
lus,& liberatur juſtus de anguſtia. Vir de fructibus oris ſui ſatiabitur 14
bono, & omni homini retribuetur juxta *opus* manuum ſuarum. Via ſtul- 15
ti recta eſt in conſpectu ejus : & qui audit conſilium, ſapiens eſt. Stul- 16
tus importunè iram ſuam oſtendit : callidus autem celat ignominiam ſu-
am. Qui atteſtatur veritatem, narrat juſtitiam,*& teſtis falſus doloſus* eſt. 17
Eſt cujus ſermo [*eſt quaſi*] *gladius tumultuoſus*,& lingua ſapientum ſa- 18
nat. Labium veritatis dirigetur in ſeculum , & feſtinus lingua teſtis fal- 19
ſitatis eſt. Dolus eſt in corde eorum qui cogitant malum,& gaudium erit 20
iis qui conſilium pacis ineunt. Non decet juſtum aliquid iniquitatis,impii 21
autem replentur malo. Abominatio Dei eſt labium mendacii : & qui 22
fideliter agunt placent ei. Filius hominis aſtutus operit ſcientiam, & 23
cor ſtultorum repetit ſcientiam. Manus fortium dominabitur, & doloſi 24
erunt in tributum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܒ *
1 ܕܪܚܡ ܡܪܕܘܬܐ ܪܚܡ ܝܕܥܬܐ. ܘܕܣܢܐ ܡܟܣܢܘܬܐ ܣܟܠ
2 ܗܘ. * ܢܫܟܚ ܛܝܒܘܬܐ ܓܒܪܐ ܕܢܛܪ ܪܥܝܢܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܓܒܪܐ ܥܘܠܐ ܢܬܚܝܒ. * ܠܐ ܢܬܩܢ ܒܪܢܫܐ
3 4 ܒܪܫܝܥܘܬܗ. ܘܥܩܪܐ ܕܙܕܝܩܐ ܠܐ ܢܙܘܥ. * ܐܢܬܬܐ ܚܝܠܬܢܝܬܐ ܟܠܝܠܐ ܗܝ ܕܒܥܠܗ. ܘܐܝܟ ܩܠܡܬܐ
5 ܘܐܟܠ ܒܩܝܣܐ. ܗܟܢܐ ܡܘܒܕܐ ܠܓܒܪܐ ܐܢܬܬܐ ܒܝܫܬܐ. * ܡܚܫܒܬܗܘܢ ܕܙܕܝܩܐ
6 ܕܝܢܐ. ܘܡܘܬܒܗܘܢ ܕܥܘܠܐ ܢܟܠܐ. * ܡܠܐ ܕܥܘܠܐ ܡܟܡܢܝܢ ܠܕܡܐ. ܘܦܘܡܗܘܢ ܕܬܪܝܨܐ ܡܦܨܐ
7 8 ܠܗܘܢ. * ܢܬܗܦܟܘܢ ܥܘܠܐ ܘܠܐ ܢܫܬܟܚܘܢ. ܘܒܝܬܐ ܕܙܕܝܩܐ ܢܬܩܝܡ. * ܠܦܘܡܗ
9 ܕܡܗܘܢܐ ܢܫܒܚܘܢ ܒܢܝ ܐܢܫܐ. ܘܕܚܣܝܪ ܪܥܝܢܐ ܢܬܒܣܐ. * ܛܒ ܗܘ ܓܒܪܐ
10 ܡܣܟܢܐ ܕܡܦܠܚ ܢܦܫܗ. ܛܒ ܡܢ ܗܘ ܕܡܫܬܒܗܪ ܘܚܣܝܪ ܠܠܚܡܐ. * ܙܕܝܩܐ ܝܕܥ ܡܢ
11 ܢܦܫܐ ܕܒܥܝܪܗ. ܘܪܚܡܐ ܕܥܘܠܐ ܐܟܙܪܝܝܢ. * ܕܦܠܚ ܐܪܥܐ ܢܣܒܥ ܠܚܡܐ. ܘܕܪܕܦ ܠܗ ܒܬܪ
12 13 ܣܪܝܩܘܬܐ ܚܣܝܪ ܪܥܝܢܐ ܗܘ. * ܪܓܬ ܥܘܠܐ ܠܡܥܒܕ ܒܝܫܬܐ. ܘܥܩܪܐ ܕܙܕܝܩܐ ܢܥܒܒ. * ܒܚܘܠܐ
14 ܕܣܦܘܬܗ ܡܬܬܚܕ ܒܝܫܐ. ܘܦܠܛ ܙܕܝܩܐ ܡܢ ܐܘܠܨܢܐ. * ܓܒܪܐ ܛܒܐ ܡܢ ܦܐܪܐ ܕܦܘܡܗ
15 ܢܣܒܥ. ܘܟܠ ܐܢܫ ܐܝܟ ܥܒܕܐ ܕܐܝܕܘܗܝ ܡܬܦܪܥ. * ܐܘܪܚܗ ܕܣܟܠܐ ܫܦܝܪܐ ܗܝ ܒܥܝܢܘܗܝ.
16 ܘܕܫܡܥ ܠܡܠܟܐ ܚܟܝܡܐ ܗܘ. * ܣܟܠܐ ܒܝܘܡܗ ܡܘܕܥ ܪܘܓܙܗ. ܘܚܪܝܦܐ ܡܟܣܐ
17 18 ܨܥܪܗ. * ܡܫܬܥܐ ܙܕܝܩܐ ܗܝܡܢܘܬܐ ܓܠܝܬܐ. ܘܣܗܕܐ ܕܥܘܠܐ ܢܟܘܠܬܢ ܗܘ. * ܐܝܬ ܕܐܡܪܝܢ
19 ܕܡܚܪܒܐ ܕܩܪܐ. ܠܫܢܐ ܕܝܢ ܕܚܟܝܡܐ ܡܐܣܐ. * ܣܦܘܬܐ ܕܫܪܪܐ ܬܪܝܨܢ. ܘܣܗܕܐ ܡܣܪܗܒܐ
20 ܠܫܢܗ ܗܘ ܥܘܠܐ. * ܢܟܠܐ ܒܠܒܗ ܕܒܝܫܐ ܡܥܠܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܠܐܝܠܝܢ ܕܡܬܡܠܟܝܢ ܫܠܡܐ.
21 ܬܗܘܐ ܠܗܘܢ ܚܕܘܬܐ. * ܠܐ ܢܫܦܪ ܠܓܒܪܐ ܙܕܝܩܐ ܡܕܡ ܕܢܟܠܐ. ܘܥܘܠܐ ܡܠܝܢ ܒܝܫܬܐ.
22 * ܣܦܘܬܐ ܕܟܕܒܐ ܡܣܠܝܢ ܠܡܪܝܐ. ܘܨܒܐ ܒܥܒܕܝ ܗܝܡܢܘܬܐ. * ܓܒܪܐ ܚܪܝܦܐ
23 24 ܟܘܪܣܝܐ ܗܘ ܕܝܕܥܬܐ. ܘܠܒܐ ܕܣܟܠܐ ܩܪܐ ܠܒܝܫܬܐ. * ܐܝܕܐ ܕܚܝܠܬܢܐ ܬܫܠܛ. ܘܢܟܝܠܐ ܢܗܘܘܢ ܠܡܕܐܬܐ.

CAP. XII.

Qui diligit increpationem, diligit ſcientiā 1
: & qui odit increpationē, ſtult’ eſt.
Bene cedet viro cuſtodienti volūtatē Dñi: at 2
vir iniquus condemnabitur. Non firmabitur 3
homo ex impietate ſua : & radix juſti non
movebitur. Mulier virtute prædita, corona 4
eſt mariti ſui : & qualis eſt caries ac vermis
in ligno, ſic perdit virum mulier nefaria.
Cogitationes juſtorū judiciū: & converſatio 5
impiorū, fraus. Verba ſceleſtorū inſidiantur 6
ſanguini : & os juſtorū liberat eos. Subvertentur 7
impii, & non invenientur: domus autem
juſtorū perdurabit. Os prudens laudabunt 8
homines : & qui expers eſt judicio, deſpicietur.
Melior eſt vir pauper miniſtrans 9
ſibiipſi, melior *inquam* eo qui gloriatur, &
indiget pane. Juſtus agnoſcit animā jumenti 10
ſui:at impiorū clauſa ſunt viſcera. Qui colit 11
terrā, ſaturabitur pane: & qui currit poſt vanitatē,
demens eſt. Exoptat impius patrare 12
facinus : & radix juſtorū germinabit. In iniquitate 13
labiorū ſuorū capitur malign’:effugit
autē juſt’ ex anguſtia. Vir prob’ fructib’ oris 14
ſui ſaturabitur : & cuiq; homini juxta opus
manuū ſuarū rependetur. Via deſipientis, bona 15
eſt in oculis ſuis: & qui obtemperat conſilio,
ſapiens eſt. Stultus eâdē die declarat 16
irā ſuā : at prudens tegit opprobriū ſuū. Fidelitatē 17
manifeſtam loquitur juſtus : & teſtis
iniquitatis, fraudulent’ eſt. Sunt qui dicunt, 18
Gladius transfodit, lingua verò ſapientū ſanat.
Labia veracia recta ſunt: & teſtis temerarii 19
lingua eſt iniqua. Dolus in corde maligni 20
ſtruit malitiam: & iis qui conſulunt paci, erit
gaudiū. Non convenit viro juſto quidquam 21
fraudis: impii autē pleni ſūt nequitiis. Labia 22
mendacia abominatur Dñs : delectatur autem
iis qui agunt fideliter. Homo cautus, 23
ſedes eſt ſcientiæ : et cor ſtultorum advocat
nequitiam. Manus fortium dominabitur : 24
et fraudulenti erunt ſub tributo.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

1 * الفصل الثاني عشر * من يحب الأدب يحب الحس * ومن يبغض التوبيخات
2 فذاك جاهل * من وجد عند الرب نعمة فذلك الفاضل * والإنسان المتجاوز الشريعة سيعرض عنه *
3 4 * الإنسان ما يقوم من قبل من لا شريعة له * وأصول المقسطين لن تقتلع * المرأة الشهمة
5 إكليل لرجلها * بمنزلة الدودة في الخشب هكذا تهلك الرجل امرأة تعمل السوء * أفكار
6 المقسطين حكومات * والمنافقون يدبرون الغشوش * أقوال المنافقين غاشة * وفم المقومين
7 8 ينجيهم * إلى حيث ما اتجه المنافق ولفت يبيد ويهلك * ومنازل المقسطين تبقى ثابتة * فم
9 الفقيه تمدحه الناس * والناكل القلب يستهزأ به * الإنسان الذي في خطر خامل يخدم ذاته *
10 أفضل ممن يجعل لنفسه كرامة وهو يحتاج خبزا * المقسط يتراءف على أنفس بهائمه * وجوانح أحشاء
11 المنافقين لا رحمة لها * من فلح أرضه يمتلئ من الأخباز * والذين يجارون غرورات الأباطيل
12 آراؤهم ناقصة * من يكون متلذذ في حانات الخمور سيجد في حصونه هوانا * شهوات المنافقين
13 سيئة * وأصول العابدين المؤمنين في صيانة * الخاطئ من أجل خطايا شفتيه يسقط في الفخاخ *
والمقسط يفلت منها * من يبصر بصرا مستقيما سيرحم * ومن يلتقي في الأبواب يغم النفوس *
14 15 * من ثمر الفم يمتلئ نفس الإنسان خيرات * وسيعطى مكافاة شفتيه * طرق الجهال مستوية
16 أمامهم * والحكيم يستمع المشورة * الجاهل من يومه يخبر بغيظه * والماكر يكتم إهانته *
17 18 * المقسط يعد ويخبر بأمانة مستوضحة * وشاهد الظلم غاش يكون * قوم يقولون إنهم يجرحون
19 بالسيف * وألسن حكماء تصد * الشفوات الصادقة تثقف الشهادة * والشاهد العجول له
20 21 لسان ظالم * الغش في القلب ينشئ الطالحات * والذين يؤثرون السلامة يفرحون * ما يرتضي
22 المقسط ظلما * ولا صنفا واحدا منه * والمنافقون يستوعبون من الأسواء * الشفة الكذوبة رذالة
23 عند الرب ومن يعمل الصدق مقبول عنده * الإنسان الفقيه كرسي الحس * وقلب الأغبياء
24 يلقاه اللعنات * يد المختارين تمسك بسهولة * والدغلون يكونون للأسر *

PSAL. XII.

*Qui amat diſciplinam, amat prudentiam: 1
& qui odit correptiones, ipſe eſt ſtultus.
Qui invenit apud Dominum gratiam, 2
ipſe eſt virtute præditus: & vir tranſgrediens
legem avertet ſe ab eo. Homo non 3
corrigitur beneficio non habentis legem :
& radices juſtorum nullo modo eradicabuntur.
Mulier prudens, corona eſt 4
viro ſuo : ſicut vermis in ligno, ſic perdit
virum mulier quæ malū committit. Cogitationes 5
juſtorum , judicia : & impii
diſponent fraudes. Verba iniquorum, fraudulenta 6
: & os rectorum liberabit eos.
Quocunq; abierit iniquus & ſeſe verterit, 7
peribit & perdetur : domicilia verò
juſtorum manebunt firma. Os doctoris 8
laudabunt homines: & timidus corde deridebitur.
Homo qui in ſtatu miſero inſervit 9
ſibi ipſi, præſtantior eſt eo qui facit
animæ honorem, cùm ipſe egeat pane.
Juſtus miſeretur animarū jumentorum 10
ſuorū: & latera viſcerum impiorū nullā
habent miſericordiā. Qui operatur terrā 11
ſuā, implebitur panibus: & qui currunt
poſt dæmones falſitatum, mentes eorū deficientes
ſunt. Qui oblectatur in tabernis
vinariis, inveniet in finibus ſuis opprobrium.
Deſideria iniquorum ſunt mala: & 12
radices piorum fideliū, in cuſtodia. Peccator 13
ob peccata labiorū ſuorū cadet in laqueos
: & juſtus effugiet eos. Qui inſpicit
inſpectionem rectam, miſericordiam
conſequitur : & qui obvius eſt in portis,
contriſtat animas. De fructu oris implebitur 14
hominis anima bonis, & dabitur ei retributio
laborū ſuorū. Viæ ſtultorum 15
æque ſunt apud ipſos : & ſapiens audit
conſiliū. Stultus eodem die declarat iram 16
ſuam : & callidus abſcondit contemptū
ſuū. Juſtus enumerat & enarrat fide apertā 17
: & teſtis iniquitatis, fraudulentus
eſt. Sunt quidā qui dicunt ſe ſanciaturos 18
gladio : at linguæ ſapientum ſe opponunt.
Labia veracia efficax reddunt teſtimonium 19
: & teſtis temerarius habet linguam
iniquam. Fraus in corde producit improba 20
: & qui eligunt pacem , gaudebunt.
Non vult juſtus iniquitatem, nec ullam 21
ſpeciem ejus : & iniqui integrè capientur
à malis. Labium mendax, abominatio eſt 22
apud Dominum : qui autem facit veritatem,
eſt acceptus apud eum. Homo doctus, 23
ſedes prudentiæ : cordi autem
inſipientium occurrent maledictiones.
Manus electorum capiet cum facilitate : 24
& fraudulenti erunt in mancipationem.*

משלי : יג

bonum verbum & : illud *incurvabit* viri corde in *Solicitudo*
דאגה בלב־איש ישחנה ודבר טוב 25
impiorum via & : juſtus ſuo *ſocio præ* *Abundans* .illud lætificabit
ישמחנה : יתר מרעהו צדיק ודרך רשעים 26
affluentia & : ſuam venationem *fraudulentus* aduret Non .eos faciet errare
תתעם : לא־יחרך רמיה צידו והון־ 27
ſemita via & ; *vitæ* juſtitiæ ſemita In .*ſeduli* *precioſa* hominis
אדם יקר חרוץ : בארח־צדקה חיים ודרך נתיבה 28
.mors non
אל־מות :

CAP. XIII. יג

audivit non deluſor & : patris eruditionem ſapiens Filius
בן חכם מוסר אב ולץ לא־שמע 1
anima & : *bonum* comedit viri oris fructu De .increpationem
גערה : מפרי פי־איש יאכל טוב ונפש 2
: ſuam animam *ſervans* ,ſuum os *Cuſtodiens* .*injuriam* prævaricatorum
בגדים חמס : נצר פיו שמר נפשו 3
ipſius animæ non & ,*Concupiſcens* .*ei* contritio ſua labia aperienti
פשק שפתיו מחתה־לו : מתאוה ואין נפשו 4
falſitatis Verbum .impinguabitur ſolicitorum anima & : *pigri*
עצל ונפש חרצים תדשן : דבר־שקר 5
.afficiet pudore & ,*fœtere* faciet impius & : juſtus habebit odio
ישנא צדיק ורשע יבאיש ויחפיר :
pervertet impietas & : via perfectum cuſtodiet Juſtitia
צדקה תצר תם־דרך ורשעה תסלף 6
ubertas & ,ſe *depauperans* : *omne* non & ,ſe *ditans* Eſt .*peccatum*
חטאת : יש מתעשר ואין כל מתרושש והון 7
non pauper & : ejus *opulentia* viri animæ Redemptio .*multa*
רב : כפר נפש־איש עשרו ורש לא־ 8
lucerna & : *lætificabit* juſtorum Lux .increpationem audivit
שמע גערה : אור־צדיקים ישמח ונר 9
cum & : litem dabit *ſuperbia in* Verè .extinguetur impiorum
רשעים ידעך : רק־בזדון יתן מצה ואת־ 10
congregans & : *minuetur* vanitate ex *Affluentia* .ſapientia *conſultis*
נועצים חכמה : הון מהבל ימעט וקבץ 11
infirmitas *protracta* Spes .multiplicabit *manum* *ad uſque*
על־יד ירבה : תוחלת ממשכה מחלה־ 12
Contemnens .veniens deſiderium *vitarum* lignum & : cordis
לב ועץ חיים תאוה באה : בז 13
.*compenſabitur* *ipſe* ,præceptum *timens &* : *ei* corrumpetur *rem*
לדבר יחבל לו וירא מצוה הוא ישלם :
laqueis à recedendum ad ; *vitarum* vena ſapienti Lex
תורת חכם מקור חיים לסור ממקשי 14
prævaricatorum via & : gratiam dabit bonus Intellectus .mortis
מות : שכל טוב יתן־חן ודרך בגדים 15
pandet ſtultus & ; ſcientia *in* faciet callidus Omnis .dura
איתן : כל־ערום יעשה בדעת וכסיל יפרש 16
veritatum legatus & : malum in cadet impius Nuncius .ſtultitiam
אולת : מלאך רשע יפל ברע וציר אמונים 17
.ſanitas
מרפא :

Verſio VULG. LAT.

25 Mœror in corde viri humiliabit illum, & ſermone bono 26 lætificabitur. Qui negligit damnum propter amicum, juſtus eſt : iter autem impiorum decipiet eos. 27 Non inveniet fraudulentus lucrum : & ſubſtantia hominis erit au28ri pretium. In ſemita juſtitiæ, vita : iter autem devium ducit ad mortem.

CAP. XIII.

1 Filius ſapiens, doctrina patris : qui autem illuſor eſt, 2 non audit cùm arguitur. De fructu oris ſui homo ſatiabitur bonis : anima autem præ3varicatorum iniqua. Qui cuſtodit os ſuum, cuſtodit animam ſuam : qui autem inconſideratus eſt ad loquen4dum, ſentiet mala. Vult & non vult piger : anima autem operantium impinguabitur. 5 Verbum mendax juſtus deteſtabitur : impius autem con6fundit, & confundetur. Juſtitia cuſtodit innocentis viam : impietas autem peccatorem 7 ſupplantat. Eſt quaſi dives, cùm nihil habeat : & eſt quaſi pauper, cùm in multis divitiis 8 ſit. Redemptio animæ viri, divitiæ ſuæ : qui autem pauper eſt, increpationem non ſuſti9net. Lux juſtorum lætificat : lucerna autem impiorum extin10guetur. Inter ſuperbos ſemper jurgia ſunt : qui autem agunt omnia cum conſilio, re11guntur ſapientiâ. Subſtantia feſtinata minuetur : quæ autem paulatìm colligitur manu, 12 multiplicabitur. Spes quæ differtur, affligit animam : lignum vitæ deſiderium veni13ens. Qui detrahit alicui rei, ipſe ſe in futurum obligat : qui autem timet præceptum, in pace verſabitur. Animæ doloſæ errant in peccatis : juſti autem miſericordes ſunt, & 14 miſerantur. Lex ſapientis fons vitæ, ut declinet à ruina mor15tis. Doctrina bona dabit gratiam : in itinere contemptorum 16 vorago. Aſtutus omnia agit cum conſilio : qui autem fatuus eſt, aperit ſtultitiam. 17 Nuntius impii cadet in malum : legatus autem fidelis, ſanitas.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

25 † Φοβερὸς λόγος καρδίαν ταράσσει ἀνδρὸς δικαίου, † ἀγγελία δὲ ἀγαθὴ (ζ) εὐφραίνει αὐτόν. 26 † Ἐπιγνώμων δίκαιος ἑαυτοῦ φίλος ἔσται, † (η) ἁμαρτάνοντας δὲ καταδιώξεται κακά, † ἡ δὲ ὁδὸς τῶν ἀσεβῶν πλανήσει αὐτούς. 27 † Οὐκ ἐπιτεύξεται δόλιος θήρας, † κτῆμα δὲ τίμιον ἀνὴρ καθαρός. 28 † Ἐν ὁδοῖς δικαιοσύνης ζωή, † ὁδοὶ δὲ μνησικάκων εἰς θάνατον.

25 (nn) *Terribilis ſermo cor turbat viri juſti : nuntiatio autem bona lætificat eum.* 26 *(oo) Cognitor juſtus, ſuiipſius (pp) amicus erit : eos autem qui peccant, perſequentur mala : & via impiorum ſeducet eos.* 27 *Non conſequetur doloſus venationes : poſſeſſio autem pretioſa vir mundus.* 28 *In viis juſtitiæ vita : viæ autem eorum, qui memores ſunt injuriarum, in mortem.*

MS. A. (ζ) εὐφρανεῖ (η) αἱ δὲ γνῶμαι τῶν ἀσεβῶν ἀνεπιεικεῖς. ἁμαρτάνοντας καταδιώξεται

ΚΕΦ. ιγʹ.

1 † Υἱὸς πανοῦργος ὑπήκοος πατρί, † υἱὸς δὲ 2 ἀνήκοος ἐν ἀπωλείᾳ. † (α) Ἀπὸ καρπῶν δικαιοσύνης φάγεται ἀγαθός, † ψυχαὶ 3 δὲ παρανόμων ὀλοῦνται ἄωροι. † Ὃς φυλάσσει τὸ ἑαυτοῦ στόμα τηρεῖ τὴν ἑαυτοῦ ψυχήν, † ὁ δὲ προπετὴς χείλεσιν πτοήσει ἑαυτόν. 4 † Ἐν ἐπιθυμίαις ἐστὶ πᾶς ἀεργός, † χεῖρες 5 δὲ ἀνδρείων ἐν ἐπιμελείᾳ. † Λόγον ἄδικον μισεῖ δίκαιος, † ἀσεβὴς δὲ αἰσχύνεται, 7 καὶ οὐκ ἕξει παρρησίαν. (β) † Εἰσὶν οἱ πλουτίζοντες ἑαυτοὺς μηδὲν ἔχοντες, † καὶ εἰσὶν οἱ 8 ταπεινοῦντες ἑαυτοὺς ἐν πολλῷ πλούτῳ. † Λύτρον ἀνδρὸς ψυχῆς ὁ ἴδιος πλοῦτος, † πτω9χὸς δὲ οὐχ ὑφίσταται ἀπειλήν. † Φῶς δικαίοις διαπαντός, † φῶς δὲ ἀσεβῶν σβέννυται. † ψυχαὶ δόλιαι πλανῶνται ἐν ἁμαρτίαις, † δίκαιοι δὲ οἰκτείρουσι καὶ ἐλεοῦσι. 10 † Κακὸς μεθ' ὕβρεως πράσσει κακά, † οἱ δὲ 11 ἑαυτῶν ἐπιγνώμονες σοφοί. † Ὕπαρξις ἐπισπουδαζομένη μετὰ ἀνομίας, ἐλάσσων γίνεται, † ὁ δὲ συνάγων ἑαυτῷ μετ' εὐσεβείας πληθυνθήσεται. † δίκαιος οἰκτείρει 12 καὶ κιχρᾷ. † Κρείσσων ἐναρχόμενος (γ) βοηθῶν καρδίᾳ, † τοῦ ἐπαγγελλομένου καὶ εἰς ἐλπίδα ἄγοντος· † δένδρον γὰρ ζωῆς, 13 ἐπιθυμία (δ) ἀγαθή. † Ὃς καταφρονεῖ πράγματος, καταφρονηθήσεται ὑπ' αὐτοῦ· † ὁ δὲ φοβούμενος ἐντολήν, οὗτος ὑγιαίνει. † υἱῷ δολίῳ οὐδὲν ἔσται ἀγαθόν, † οἰκέτῃ δὲ σοφῷ εὔοδοι ἔσονται πράξεις, † καὶ κατευ14θυνθήσεται ἡ ὁδὸς αὐτοῦ. † Νόμος σοφοῦ πηγὴ ζωῆς, † ὁ δὲ ἄνους ὑπὸ παγίδος 15 θανεῖται. † Σύνεσις ἀγαθὴ δίδωσι χάριν, † τὸ δὲ γνῶναι νόμον διανοίας ἐστὶν ἀγαθῆς, † ὁδοὶ δὲ καταφρονούντων ἐν ἀπω16λείᾳ. † Πᾶς πανοῦργος πράσσει μετὰ γνώσεως, † ὁ δὲ ἄφρων ἐξεπέτασεν ἑαυτοῦ κα17κίαν. † Βασιλεὺς θρασὺς ἐμπεσεῖται εἰς κακά, † ἄγγελος δὲ σοφὸς ῥύσεται αὐτόν.

CAP. XIII.

1 *Filius (a) aſtutus, obediens patri : filius autem inobediens in* 2 *perditione. De fructibus juſtitiæ comedet bonus : animæ autem iniquorum (b) peribunt immaturæ.* 3 *Qui cuſtodit ſuum os, ſervat ſuam animam : & qui temerarius eſt labiis, (c) terrebit ſeipſum.* 4 *In deſideriis eſt (d) omnis otioſus : manus autem fortium in (e) ſedulitate.* 5 *Verbum injuſtum odit juſtus : impius autem confunditur, & (f) non habebit libertatem loquendi.* 7 *Sunt qui ditant ſe, nihil habentes : & ſunt (g) qui humiliant ſe in multis divitiis.* 8 *(h) Redemptio animæ viri propriæ divitiæ : inops autem (i) non ſuſtinet comminationem.* 9 *Lux juſtis perpetuò : lux autem impiorum extinguitur. Animæ doloſæ errant in peccatis : juſti autem miſerantur, & miſerentur.* 10 *(k) Malus cum contumelia agit mala : qui autem (l) ſuiipſorum cognitores, ſapientes.* 11 *Subſtantia (m) feſtinata cum iniquitate, minor fit : congregans autem ſibi cum pietate multiplicabitur. (n) Juſtus miſeretur, & commodat.* 12 *Melior, qui incipit auxiliari corde, eo qui promittit, & in ſpem adducit : arbor enim vitæ deſiderium bonum.* 13 *Contemnens rem, (o) contemnetur ex ea : timens autem mandatum, hic (p) ſanus eſt. Filio doloſo nullum erit bonum : famulo autem ſapienti proſperè procedent actiones, & dirigetur via ejus.* 14 *Lex ſapientis fons vitæ : (q) demens autem ſub laqueo morietur.* 15 *Intellectus bonus dat gratiam : noſcere autem legem, mentis eſt bonæ : viæ autem contemnentium, in perditione.* 16 *Omnis aſtutus agit cum ſcientia : inſipiens autem expandit (r) ſuam nequitiam :* 17 *(ſ) Rex audax incidit in mala : nuntius autem (t) ſapiens liberabit eum.*

MS. A. (α) Ἀπὸ καρποῦ (β) † δικαιοσύνη φυλάσσει ἀκάκους ὁδῷ, 6 † τοὺς δὲ ἀσεβεῖς φαύλους ποιεῖ ἁμαρτία. Εἰσὶν οἱ πλουτίζουσιν (γ) βοηθεῖν (δ) *κακή.

תרגום TARGUM.

25 מלתא דחילתא בלביה דגברא מדחלא ומליא טביא מחדין ליה : טב מן חבריה
26 צדיקא וארחהון דרשיעי מטעי להון : לא נסתקבל צידא לגברא נכילא ומוליה 27
28 דבר אנש דהבא יקירא : בארחא דצדיקא חיי ואורח דעותנא
למותא :

יג

1 בר חכימא מקבל מרדותא דאבא וברא ממקנא לא מקבל בעתא : גברא 2
3 מן פרי פומיה נסבע טבתא ונפשהון דבוזוי תתחטף : דנטר פומיה מזדהר בנפשיה
4 ופתח שפותיה סינו שציא אית ליה : מתרגרגא נפשיה דעטלא מדעם ולא
5 מיתי לה ונפשהון דתקיפי תדהן : מלתא דשקרא סני צדיקא ורשיעא נבהרת
6 ונחפר : צדקתא תנטור לאלין דתמימין בארחתהון ורשיעא מטלטל בחטוהי :
7 אית דמעתר נפשיה ולית כל מדעם וממסכן נפשיה ומוליה סגיאה : אית 8
9 ליה פורקנא דנפשיה דגברא עותריה ומסכנא לא מקבל בעתא : נוהרא דצדיקי
10 נרוז ושרגא דרשיעי נדעך : לחוד בזדנותא אתיא מצותא ואלין דמתמלכין חכימי
11 אנון : מולא מן עולא דמריה יזער ודמכנש ויהב למסכנא יסגי ממוניה : מן 12
13 דמשדי למעדריה טב מן דתלי בסברא ואילנא דחיי רגתא מיתא : דבזי על מלתא
14 נתחבל מנה ודדחל מפוקדנא משתלם טבתא : נימוסא דחכימא מבועי דחיי
15 למסטי מן פחא דמותא : שכלא טבא יהיב חסדא וארחא תקיפא דבוזוי תיבד : 16
17 כל ערימא עבידתיה מדעתא וסכלא פרס ליה לשטיותא : שליחא בישא יפל בבישתא
ואזגדא מהימנא אסיא הוא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Verbum timoris in corde viri terrorem gignit, & verba bona lætificant 25 illum. Melior eſt juſtus ſocio ſuo, & via impiorum decipit eos. 26 Non obviam fiet venatio viro doloſo, 27 & ſubſtantia hominis erit aurum precioſum. 28 In via juſti vita eſt, & iter *perverſi* in mortem.

CAP. XIII.

Filius ſapiens ſuſcipit doctrinam patris : ſed filius deriſor non ſuſcipit 1 objurgationem. Unuſquiſque de fructibus oris ſui ſatiabitur bono ; 2 anima autem prædonum *rapietur*. Qui cuſtodit os ſuum, cavet animæ 3 ſuæ : et qui aperit labia ſua, *multa conſumptio* imminet ei. Deſiderat 4 anima pigri aliquid, et non obvenit ei : et anima fortium impinguabitur. Verbum mendacii deteſtatur juſtus, impius autem confundetur et 5 erubeſcet. Juſtitia cuſtodiet eos qui ſimplices ſunt in via ſua ; impius au6tem inſtabilis erit propter peccata ſua. Eſt qui divitem facit ſemet7ipſum, et nihil habet ; et eſt qui pauperem facit animam ſuam, et habet ſubſtantiam multam. Redemptio animæ cujúſque ſunt divitiæ ſuæ, pau8per autem non recipit increpationem. Lux juſtorum exultabit, et lucerna 9 impiorum extinguetur. Attamen in ſuperbia venit contentio : et hi 10 qui conſilium ineunt, ſapientes ſunt. Opulentia iniquitate poſſeſſoris 11 acquiſita minuetur : et qui congregat et dat pauperi, multiplicabit pecuniam ſuam. Melior eſt qui projicit ſarculum ſuum illo qui pendit 12 in ſpe : et arbor vitæ adducit deſiderium. Qui contemnit verbum, de13trimentum patietur ab eo ; et qui timet præceptum, penſabitur bono. 14 Lex ſapientis fons vitæ, ad declinandum à laqueo mortis. Intelle15ctus bonus dat gratiam, et via fortis direptorum peribit. Omnis callidi 16 opus eſt ex ſcientia, et ſtultus ſibi expandit ſtultitiam ſuam. Nuncius 17 impius cadet in malum, et legatus fidelis medicina eſt.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܡܠܬܐ ܕܚܝܠܬܐ ܠܒܗ ܕܓܒܪܐ ܡܕܠܚܐ. ܘܡܠܬܐ ܛܒܬܐ ܡܚܕܝܐ ܠܗ. * ܙܕܝܩܐ ܡܠܟ 25
ܡܠܟܐ ܛܒܐ ܠܪܚܡܘܗܝ. ܘܐܘܪܚܗܘܢ ܕܥܘܠܐ ܬܛܥܐ ܐܢܘܢ. * ܠܐ ܢܫܟܚ ܨܝܕܐ ܠܓܒܪܐ 26 27
ܢܟܝܠܐ. ܘܩܢܝܢܐ ܝܩܝܪܐ ܓܒܪܐ ܓܒܝܐ. * ܒܐܘܪܚܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ ܚܝܐ. ܘܐܘܪܚܐ ܕܚܡܬܢܐ ܠܡܘܬܐ. 28
ܡܩܠܝܢ. * ܝܓ * * ܒܪܐ ܚܟܝܡܐ ܡܫܬܡܥ ܠܐܒܘܗܝ. ܘܒܪܐ ܒܝܫܐ ܠܐ ܡܩܒܠ 1
ܟܘܐܐ ܢܐܒܕ. * ܓܒܪܐ ܛܒܐ ܡܢ ܦܐܪܐ ܕܦܘܡܗ ܢܣܒܥ. ܘܢܦܫܬܗܘܢ ܕܥܘܠܐ ܢܐܒܕܢ. 2
* ܕܢܛܪ ܦܘܡܗ ܢܛܪ ܢܦܫܗ. ܘܕܦܬܚ ܣܦܘܬܗ ܡܛܝܒ ܬܒܪܐ ܠܢܦܫܗ. * ܒܟܠܥܕܢ 3 4
ܒܪܓܝܓܬܐ ܗܘܐ ܓܒܪܐ ܕܥܒܕܐ ܠܐ ܥܒܕ. ܘܢܦܫܐ ܕܚܝܠܬܢܐ ܬܬܕܫܢ. * ܙܕܝܩܐ ܣܢܐ ܡܠܬܐ 5
ܕܫܘܩܪܐ. ܘܥܘܠܐ ܢܒܗܬ ܘܢܚܦܪ. * ܙܕܝܩܘܬܐ ܢܛܪܐ ܠܐܝܠܝܢ ܕܬܡܝܡܝܢ ܒܐܘܪܚܗܘܢ. ܘܚܛܝܐ 6
ܬܗܦܟܝܘܗܝ ܚܛܝܬܗ. * ܐܝܬ ܕܡܬܥܬܪܝܢ ܢܦܫܗܘܢ. ܘܡܕܡ ܠܝܬ ܠܗܘܢ. ܘܐܝܬ ܕܡܬܡܣܟܢܝܢ 7
ܢܦܫܗܘܢ. ܘܩܢܝܢܐ ܣܓܝܐܐ. * ܦܘܪܩܢܐ ܕܢܦܫܗ ܕܓܒܪܐ ܥܘܬܪܗ. ܘܡܣܟܢܐ ܠܐ ܡܩܒܠ ܟܐܐ. 8
* ܢܘܗܪܐ ܕܙܕܝܩܐ ܢܚܕܐ. ܘܫܪܓܐ ܕܥܘܠܐ ܢܕܥܟ. * ܓܒܪܐ ܒܝܫܐ ܒܨܥܪܐ ܥܒܕ ܒܝܫܬܐ. ܘܐܝܠܝܢ 9 10
ܕܡܬܡܠܟܝܢ. ܚܟܝܡܐ ܐܢܘܢ. * ܩܢܝܢܐ ܕܡܢ ܥܘܠܐ ܢܒܨܪ. ܘܕܡܬܟܢܫ ܒܙܕܝܩܘܬܐ ܢܣܓܐ. 11
* ܛܒ ܗܘ ܓܒܪܐ ܕܫܪܐ ܠܡܥܕܪܘ. ܛܒ ܡܢ ܗܘ ܕܬܠܐ ܒܣܒܪܐ. ܘܐܝܠܢܐ ܕܚܝܐ ܡܝܬܝܐ 12
ܣܒܪܐ. * ܕܡܒܣܐ ܠܡܠܬܐ ܢܬܚܒܠ ܡܢܗ. ܘܕܕܚܠ ܡܢ ܦܘܩܕܢܐ ܢܬܦܨܐ. 13
ܠܓܒܪܐ ܢܟܝܠܐ ܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗ ܛܒܬܐ. ܘܠܓܒܪܐ ܚܟܝܡܐ ܕܬܪܝܨܝܢ ܥܒܕܘܗܝ. ܘܐ
ܘܪܚܗ ܬܛܘܒ ܠܥܬܝܕ. * ܢܡܘܣܐ ܕܚܟܝܡܐ ܡܒܘܥܐ ܗܘ ܕܚܝܐ: ܠܐܝܠܝܢ ܕܦܠܛܝܢ ܡܢ 14
ܦܚܐ ܕܡܘܬܐ. ܣܘܟܠܐ ܛܒܐ ܝܗܒ ܛܝܒܘܬܐ. ܘܐܘܪܚܐ ܕܥܘܠܐ ܠܐܒܕܢܐ. * ܟܠ ܕܥܒܕ ܚܪܝܦܐ 15 16
ܒܝܕܥܬܐ. ܘܣܟܠܐ ܡܦܪܣ ܫܛܝܘܬܐ. * ܐܝܙܓܕܐ ܥܘܠܐ ܢܦܠ ܒܒܝܫܬܐ. ܘܐܝܙܓܕܐ 17
ܡܗܝܡܢܐ ܐܣܝܐ ܗܘ.

Verbum terribile, cor viri conturbat : & 25
verbū placidū exhilarat illud. Juſtus conſulit 26
conſiliū bonū amico ſuo : & via impiorum
ſeducet eos. Non occurret venatio viro 27
doloſo : & poſſeſſio pretioſa, homo electus.
In via juſtitiæ, vita : & via iracundorum, ad 28
mortem.

CAP. XIII.

Filius ſapiens obtemperat patri ſuo : & filius 1
nequā qui non recipit objurgationem,
peribit. Vir prob' fructib' oris ſui ſatiabitur: 2
& animæ impiorū peribunt. Qui cuſtodit os 3
ſuum, tuetur animā ſuā : & qui aperit labia
ſua, parat contritionem animæ ſuæ. Semper 4
in concupiſcentiis verſatur homo qui opus
non operatur : at anima fortiū impinguabitur.
Juſtus odit verbū falſitatis : & iniquus 5
erubeſcet & pudefiet. Juſtitia cuſtodiet eum
qui integer eſt in via ſua : & peccatorē perdet 6
peccatū ſuū. Sunt qui divites ſe ſimulāt, 7
cùm nihil habeant : & eſt qui pauperem ſe
fingit, cùm poſſideat multū. Salus animæ viri, 8
opulentia ſua : & pauper non recipit increpationem.
Lux juſtorū hilareſcet : & lucerna 9
impiorū extinguetur. Homo nequam, 10
cum opprobrio committit ſcel' : & ii qui conſilio
utuntur, ſapientes ſunt. Opes ex iniquitate 11
partæ, imminuentur : quæ verò congeſtæ
ſunt cum juſtitia, augeſcent. Melior eſt homo 12
qui incipit auxiliari, melior, *inquam*, eo
qui ſuſpendit ſpem : et arborē vitæ affert ſpes.
Qui negligit verbum, evertetur ab eo : & qui 13
timet præceptū, ſalvabitur. Viro doloſo nulla
erit proſperitas : & viri ſapientis, cuj' rectæ
ſunt actiones, via quoq; ad *fœlicem* exitū
perducetur. Lex ſapientiæ, fons eſt vitæ iis 14
qui devitant laqueos mortis. Intellect' bon' 15
conciliat gratiā : et via impiorum, in interitum.
Quidquid operatur ſagax, ſcitè *agit* : at 16
ſtultus loquitur vana. Legatus perfidus incidet 17
in malum : et legatus fidelis, medicus eſt.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* الكلام المجزع يقلق قلب الانسان المقسط * والبشارة الصالحة تسر * المقسط يكون عارفا 25 26
صديقه * وعزايم المنافقين ليست وديعة * الخاطيون تطردهم شرورهم * وطريق المنافقين تضلهم *
* الغاش لن ينال صيدا * والرجل الطاهر قنيته كريمة * في طرق العدل حياة * وطرق 27 28
الحقودين الي الموت موردة * * الفصل الثالث عشر * * الابن المدرب مطيع 1
لابيه * والابن العاصي يحصل في الهلاك * من ثمرات العدل ياكل الصالح * ونفوس العادلين 2
عن السريعة تهلك في غير اوقاتها * من يحفظ فمه يصون نفسه * والجسور بشفتيه يدهش نفسه * 3
في الشهوات يكون كل من لا يعمل * وايادي ذوي الشهامة بالاهتمام * الكلام الظلم يبغضه 4 5
المقسط * والمنافق يستحيي وما يكون له دالة * العدل يحفظ ذوي الدعة في طريقهم * والخطية 6
تجعل المنافقين طالحين * يكون قوم يعدون انفسهم * ولا شيا لهم * ويكون قوم يذلون انفسهم 7
في ثروة جزيلة * فداء نفس الانسان غناه * والمسكين ما يقاوم وعيدا * النور للمقسطين كل 8 9
حين * وضوء المنافقين ينطفي * الانفس الغاشة تضل في الخطايا * والمقسطون يتراءفون
ويرحمون * الطالح بتعظمه يعمل الاسواء * والذين يعرفون انفسهم حكماء * النعمة المحروص 10 11
عليها بظلم تصير منتقصة * ومن يجمع لنفسه بتدبير جميل يتكاثر ماله * المقسط يتراءف 12
ويقرض * من يبتدي بمعروف يعين به القلب * لا فضل من الواعد به والسابق الي الامل *
لان شجرة الحياة الشهوة الصالحة * من يهون بامر يهون به ذاك الامر * ومن يرهب الوصية هذا 13
يعافي * الابن الغاش لن يكون له شي صالح * والعبد الحكيم ستكون له طرايق اعماله ميسرة
ويقوم طرقه * شريعة الحكيم عين حياة * ومن لا عقل له يقتله الفخ * الفقه الصالح يمنح 14 15
منه * والذهن الصالح ان تعرف الشريعة * طرق المتهاونين في الهلاك * كل مدرب يعمل بمعرفة * 16
والغبي قد بسط رذيلته وطيرها * الملك الجسور يسقط في الاسواء * الرسول الامين ينجيه * 17

*Sermo formidabilis conturbat cor hominis 25
juſti : & nuntium fauſtum lætificat.
Juſtus eſt cognoſcens amicum ſuum : 26
& intentiones iniquorum non ſunt pacificæ.
Peccatores expellentur à malis ſuis,
& iter impiorum decipiet eos. Fraudulentus 27
non obtinebit venationem : viri autem
puri poſſeſſio pretioſa eſt. In itineribus 28
juſtitiæ, vita : & itinera iracundorum ad
mortem ducunt.*

CAP. XIII.

*Filius morigeratus eſt obediens patri 1
ſuo: & filius rebellis incidet in interitū.
De fructibus juſtitiæ edet probus : animæ 2
autem prætereuntium legem, peribunt
extra tempora ſua. Qui cuſtodit os 3
ſuum, ſervat animam ſuam : temerarius
autem labiis ſuis conturbat animam ſuam.
In libidinibus eſt omnis qui non operatur: 4
& manus prudentiam habentis, in ſolicitudine.
Verba iniqua odit juſtus: iniquus 5
autem confundetur, nec habebit fiduciam.
Juſtitia cuſtodit manſuetos in 6
via eorum : peccatum verò facit iniquos
improbos. Sunt quidam qui ditant ſeipſos, 7
et nihil habēt: et ſunt quidā qui deprimūt
ſeipſos in multis divitiis. Redemptio animæ 8
viri, divitiæ ſuæ: et pauper non reſiſtit
minis. Lux eſt juſtis omni tēpore: & lumē 9
iniquorum extinguetur. Animæ doloſæ
peribunt in peccatis : juſti autem miſerebuntur
& miſereſcent. Improbus in ſua 10
ſuperbia operatur mala : qui autem ſeipſos
cognoſcunt, ſunt ſapientes. Opes 11
quæ avidè quæruntur cum iniquitate,
deficient : qui autem congregat animæ
ſuæ cum conſilio bono, multiplicabitur
ejus ſubſtantia. Juſtus miſeretur, & 12
commodat : qui facit beneficium, juvat eo
cor. Nulla gratia promittenti illud, &
ducenti ad ſpem : quia arbor vitæ, deſiderium
bonum. Qui negligit præceptum, 13
ipſe negligetur ab illo præcepto : & qui
timet mandatum, liberabitur. Filius
fraudulentus non habebit ullam rem bonam :
& ſervo ſapienti erunt viæ operum
ipſius faciles, & dirigentur viæ ejus.
Lex ſapientis, fons vitæ, & qui 14
eſt ſine intellectu, occidet eum laqueus.
Doctrina recta dat gratiam, & memoria 15
bona eſt ut ſciatur lex : viæ negligentium
in interitum. Omnis aſtutus facit cum 16
ſcientia : & inſipiens jam extendit vitium
ſuum, & avolare fecit illud. Nuntius 17
præceps cadet in mala : legatus fidelis, ſalus.*

מִשְׁלֵי : יד

,increpationem *custodiens &* : *eruditionem deserenti* ignominia & ,Paupertas
18 רֵישׁ וְקָלוֹן פּוֹרֵעַ מוּסָר וְשֹׁמֵר תּוֹכַחַת
abominatio & : animæ dulcescet *existens* Desiderium .glorificabitur
19 יְכֻבָּד : תַּאֲוָה נִהְיָה תֶּעֱרַב לְנָפֶשׁ וְתוֹעֲבַת
: erit sapiens ,sapientibus cum *Ambulans* .malo à recedere stultorum
20 כְּסִילִים סוּר מֵרָע : הֹלֵךְ אֶת־חֲכָמִים יֶחְכָּם
: malum sequetur Peccatores .conteretur ,*stultos pascens &*
21 וְרֹעֶה כְסִילִים יֵרוֹעַ : חַטָּאִים תְּרַדֵּף רָעָה
filios faciet hæreditare Bonus .bonum reddet justis &
22 וְאֶת־צַדִּיקִים יְשַׁלֶּם־טוֹב : טוֹב יַנְחִיל בְּנֵי־
cibus Multus .peccantis *facultas* justo *recondita* & : filiorum
23 בָנִים וְצָפוּן לַצַּדִּיק חֵיל חוֹטֵא : רָב־אֹכֶל
Prohibens .judicio sine concisus est & : *pauperum sulcatione*
24 נִיר רָאשִׁים וְיֵשׁ נִסְפֶּה בְּלֹא מִשְׁפָּט : חוֹשֵׂךְ
ei diluculo quæsivit eum diligens & : suum filium *odiens* , suam virgam
שִׁבְטוֹ שׂוֹנֵא בְנוֹ וְאֹהֲבוֹ שִׁחֲרוֹ
venter & : suæ animæ saturitatem ad *comedens* Justus .correctionem
25 מוּסָר : צַדִּיק אֹכֵל לְשֹׂבַע נַפְשׁוֹ וּבֶטֶן
.*egebit* impiorum
רְשָׁעִים תֶּחְסָר :

CAP. XIV. יד

suis manibus *in stultitia* & : suam domum ædificavit *mulierum Sapientes*
1 חַכְמוֹת נָשִׁים בָּנְתָה בֵיתָהּ וְאִוֶּלֶת בְּיָדֶיהָ
: Dominum *timens* , sua rectitudine in *Ambulans* .eam destruet
2 תֶּהֶרְסֶנּוּ : הוֹלֵךְ בְּיָשְׁרוֹ יְרֵא יְהוָה
baculus stulti ore In .eum *spernens* ,suis viis perversus *&*
3 וּנְלוֹז דְּרָכָיו בּוֹזֵהוּ : בְּפִי־אֱוִיל חֹטֶר
, *bobus non In* .eos custodient sapientum labia & : superbiæ
4 גַּאֲוָה וְשִׂפְתֵי חֲכָמִים תִּשְׁמוּרֵם : בְּאֵין אֲלָפִים
.bovis potentia in *proventuum* multitudo & : *mundum* præsepe
אֵבוּס בָּר וְרָב־תְּבוּאוֹת בְּכֹחַ שׁוֹר :
testis mendacia *efflabit* & : mentietur non *veritatum* Testis
5 עֵד אֱמוּנִים לֹא יְכַזֵּב וְיָפִיחַ כְּזָבִים עֵד
intelligenti scientia & : non & ,sapientiam irrisor Quæsivit .*falsitatis*
6 שָׁקֶר : בִּקֶּשׁ לֵץ חָכְמָה וָאָיִן וְדַעַת לְנָבוֹן
nescies & : stulto viro cum *eminus* Vade .levis
7 נָקָל : לֵךְ מִנֶּגֶד לְאִישׁ כְּסִיל וּבַל־יָדַעְתָּ
: suam viam intelligere callidi Sapientia .scientiæ labia
8 שִׂפְתֵי־דָעַת : חָכְמַת עָרוּם הָבִין דַּרְכּוֹ
: *delictum palliabit quisque Stultorum* .dolus stultorum stultitia &
9 וְאִוֶּלֶת כְּסִילִים מִרְמָה : אֱוִלִים יָלִיץ אָשָׁם
amaritudinem *cognoscens* Cor .*benevolentia* rectos inter &
10 וּבֵין יְשָׁרִים רָצוֹן : לֵב יוֹדֵעַ מָרַּת
Domus .alienus miscebitur non ipsius lætitia in & : suæ animæ
11 נַפְשׁוֹ וּבְשִׂמְחָתוֹ לֹא־יִתְעָרַב זָר : בֵּית
via Est .*florebit* rectorum *tentorium &* : delebitur impiorum
12 רְשָׁעִים יִשָּׁמֵד וְאֹהֶל יְשָׁרִים יַפְרִיחַ : יֵשׁ דֶּרֶךְ
Etiam .mortis viæ ejus novissimum & ; *viri facies ad* recta
13 יָשָׁר לִפְנֵי־אִישׁ וְאַחֲרִיתָהּ דַּרְכֵי־מָוֶת : גַּם־
.tristitia lætitiæ *ejus* novissimum & ; cor dolebit *videndo* in
בִּשְׂחֹק יִכְאַב־לֵב וְאַחֲרִיתָהּ שִׂמְחָה תוּגָה :
vir eo *desuper* & : corde aversus saturabitur suis viis De
14 מִדְּרָכָיו יִשְׂבַּע סוּג לֵב וּמֵעָלָיו אִישׁ
intelliget callidus & : verbo omni credet Simplex .bonus
15 טוֹב : פֶּתִי יַאֲמִין לְכָל־דָּבָר וְעָרוּם יָבִין
stultus *&* : malo à *recedens &* , *timens* Sapiens .suum gressum *ad*
16 לַאֲשֻׁרוֹ : חָכָם יָרֵא וְסָר מֵרָע וּכְסִיל
.*fidens &* , *irascens*
מִתְעַבֵּר וּבוֹטֵחַ :

Versio VULG. LAT.

18 Egestas, & ignominia ei, qui
deserit disciplinam : qui autem
acquiescit arguenti, glorificabitur.
19 Desiderium si compleatur, delectat animam:
detestantur stulti eos, qui fugiunt
20 mala. Qui cum sapientibus gradıtur, sapiens erit :
amicus stultorum similis efficietur.
21 Peccatores persequitur
malum : & justis retribuentur
22 bona. Bonus relinquit
hæredes filios, & nepotes : &
custoditur justo substantia
23 peccatoris. Multi cibi in novalibus
patrum : & aliis congregantur
24 absque judicio. Qui
parcit virgæ, odit filiũ suum :
qui autem diligit illum, instanter
25 erudit. Justus comedit,
& replet animam suam: venter
autem impiorum insaturabilis.

CAP. XIV.

1 SApiens mulier ædificat domum
suam : insipiens extructam
quoque manibus de-
2 struet. Ambulans recto itinere,
& timens Deum, despicitur
ab eo, qui infami gra-
3 ditur viâ. In ore stulti virga
superbiæ : labia autem sapi-
4 entium custodiunt eos. Ubi
non sunt boves, præsepe vacuum
est : ubi autem plurimæ
segetes, ibi manifesta est for-
5 titudo bovis. Testis fidelis
non mentitur : profert autem
6 mendaciũ dolosus testis. Quærit
derisor sapientiam, & non
invenit : doctrina prudentiũ
7 facilis. Vade contra virum
stultum, & nescit labia pru-
8 dentiæ. Sapientia callidi est intelligere
viam suam : & imprudentia
stultorum errans.
9 Stultus illudet peccatum, &
inter justos morabitur gratia.
10 Cor quod novit amaritudinẽ
animæ suæ, in gaudio ejus non
11 miscebitur extraneus. Domus
impiorũ delebitur : tabernacula
verò justorum germina-
12 bunt. Est via, quæ videtur homini
justa : novissima autem
13 ejus deducunt ad mortem. Risus
dolore miscebitur, & extrema
gaudii luctus occupat.
14 Viis suis replebitur stultus, &
15 super eũ erit vir bonus. Innocens
credit omni verbo : astutus
considerat gressus suos.
Filio doloso nihil erit boni :
servo autem sapienti prosperi
erunt actus, & dirigetur via e-
16 jus. Sapiens timet, et declinat à
malo: stult' transilit et confidit.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

18 † Πενίαν καὶ ἀτιμίαν ἀφαιρεῖται παιδεία,
† ὁ δὲ φυλάσσων ἐλέγχους δοξασθήσεται. †
19 Ἐπιθυμίαι εὐσεβῶν ἡδύνουσι ψυχήν, †
ἔργα δὲ ἀσεβῶν μακρὰν ἀπὸ γνώσεως. †
20 (δ) Συμπορευόμενος σοφοῖς σοφὸς (ε)
ἔσῃ, † ὁ δὲ συμπορευόμενος ἄφροσι γνωσθήσεται.
21 † Ἁμαρτάνοντας καταδιώξεται
κακά, † τοὺς δὲ δικαίους καταλήψεται ἀ-
22 γαθά. † (ζ) Ἀγαθὸς ἀνὴρ κληρονομήσει υἱοὺς
υἱῶν, † θησαυρίζεται δὲ δικαίοις πλοῦ-
23 τος ἀσεβῶν. † Δίκαιοι ποιήσουσιν ἐν
πλούτῳ ἔτη πολλά, † ἄδικοι δὲ ἀπολοῦνται
24 συντόμως. † Ὃς φείδεται τῆς βακτηρίας,
μισεῖ τὸν υἱὸν αὐτοῦ, † ὁ δὲ ἀγαπῶν
25 ἐπιμελῶς παιδεύει. † Δίκαιος ἔσθων
ἐμπιπλᾷ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, † ψυχαὶ δὲ
ἀσεβῶν ἐνδεεῖς.

MS. A. (δ) Ὁ συμπορευόμενος (ε) ἔσται, ὁ δὲ συμπορευόμενος (ζ) Ὁ ἀγαθὸς

ΚΕΦ. ιδʹ.

1 † ΣΟφαὶ γυναῖκες ᾠκοδόμησαν οἴκους, ἡ
δὲ ἄφρων (α) κατέσκαψε ταῖς χερσὶν
2 αὐτῆς. † Ὁ πορευόμενος ὀρθῶς φοβεῖται
τὸν κύριον, † ὁ δὲ σκολιάζων ταῖς ὁδοῖς
3 αὐτοῦ ἀτιμασθήσεται. † Ἐκ στόματος ἀφρόνων
βακτηρία ὕβρεως, † χείλη δὲ σο-
4 φῶν (β) φυλάσσει αὐτούς. † Οὗ μή εἰσι
βόες, φάτναι καθαραί· † οὗ δὲ πολλὰ
5 γεννήματα, φανερὰ βοὸς ἰσχύς. † Μάρτυς
πιστὸς οὐ ψεύδεται, † ἐκκαίει δὲ ψευδῆ
6 μάρτυς ἄδικος. † Ζητήσεις σοφίαν παρὰ
κακοῖς καὶ οὐχ εὑρήσεις, † αἴσθησις δὲ
7 παρὰ φρονίμοις εὐχερής. † Πάντα ἐναντία
ἀνδρὶ ἄφρονι, † ὅπλα δὲ αἰσθήσεως
8 χείλη σοφά. † Σοφία πανούργων ἐπιγνώσεται
τὰς ὁδοὺς αὐτῶν, † ἄνοια δὲ ἀφρόνων
9 ἐν πλάνῃ. † Οἰκίαι (ᵃ) παρανόμων ὀφειλήσουσι
καθαρισμόν, † οἰκίαι δὲ δικαίων
10 δεκταί. † Καρδία ἀνδρὸς αἰσθητική,
λυπηρὰ ψυχὴ αὐτοῦ, † ὅταν δὲ εὐφραίνηται,
11 οὐκ ἐπιμίγνυται (γ) ὕβρει. † Οἰκίαι ἀσεβῶν
ἀφανισθήσονται, † σκηναὶ δὲ κατορ-
12 θούντων στήσονται. † Ἔστιν ὁδὸς ἣ δοκεῖ
(δ) παρὰ ἀνθρώποις ὀρθὴ εἶναι, † τὰ δὲ
τελευταῖα (ε) αὐτῆς ἔρχεται εἰς πυθ-
13 μένα ᾅδου. † Ἐν εὐφροσύναις οὐ προσμίγνυται
λύπη, † τελευταῖα δὲ (ζ) χαρὰ
14 εἰς πένθος ἔρχεται. † Τῶν ἑαυτοῦ ὁδῶν πλησθήσεται
θρασυκάρδιος, † ἀπὸ δὲ τῶν δια-
15 νοημάτων αὐτοῦ ἀνὴρ ἀγαθός. † Ἄκακος
πιστεύει παντὶ λόγῳ, † πανοῦργος δὲ ἔρ-
16 χεται εἰς μετάνοιαν. † Σοφὸς φοβηθεὶς
ἐξέκλινεν ἀπὸ κακοῦ, † ὁ δὲ ἄφρων ἑαυτῷ
πεποιθὼς μίγνυται ἀνόμῳ.

MS. A. (α) κατέστρεψεν (β) φυλάξει (ᵃ) ἀφρόνων (γ) ὕβρειν. (δ) ὀρθὴ εἶναι παρὰ ἀνθρώποις, (ε) αὐτοῦ (ζ) χαρᾶς

(u) Paupertatem, & ignominiam 18
aufert disciplina : qui autem
custodit increpationes, glorificabi-
tur. Desideria (x) piorum de- 19
lectant animam : (y) opera autem
impiorum longè à scientia. (z)
Ambulans cum sapientibus, sa- 20
piens eris : & qui (&) ambulat
cum insipientibus, (aa) agnosce-
tur. Eos qui peccant, persequen- 21
tur mala : justos autem compre-
hendent bona. Bonus vir (bb) hæ- 22
reditare faciet filios filiorum: (cc)
thesaurizantur autem justis, di-
vitiæ impiorum. Justi facient in 23
divitiis annos multos : injusti au-
tem peribunt brevi. Qui parcit 24
** baculo, odit filium suum : qui*
autem diligit, (dd) diligenter
erudit. Justus comedens (ee) im- 25
plet animam suam : (ff) animæ
autem impiorum egenæ.

CAP. XIV.

SApientes mulieres ædificârunt 1
domos: imprudens autem demoli-
ta est suis manibus. Qui ambu- 2
lat (a) rectè, timet Dominum:
qui autem tortuosè incedit viis su-
is, afficietur ignominiâ. Ex o- 3
re imprudentum (b) baculi con-
tumeliæ : labia autem sapientum
** custodiunt ipsos. Ubi (c) non* 4
sunt boves, præsepia munda:
ubi autem multa genimina, mani-
festa bovis virtus. Testis fidelis 5
non mentitur : (d) accendit au-
tem falsa testis injustus. (e) Quæ- 6
res sapientiam apud malos, &
non invenies : (f) sensus autem
apud prudentes (g) facilis. O- 7
mnia contraria viro imprudenti :
(h) arma autem sensûs, labia sa-
pientia. Sapientia astutorum cog- 8
noscet vias ipsorum; dementia
autem imprudentum in (i) errore.
(k) Domus iniquorum debe- 9
bunt mundationem: domus au-
tem justorum acceptabiles. Cor 10
viri sensitivum, (l) tristis anima
ejus : (m) quando autem læta-
bitur, non miscetur contumeliæ.
Domus impiorum delebuntur : ta- 11
bernacula autem rectè agentium
stabunt. Est via, quæ videtur a- 12
pud homines recta esse : (n) no-
vissima autem ejus vadunt in (o)
fundum inferni. In (p) lætitiis 13
non admiscetur tristitia: (q) no-
vissimè autem gaudium in luctum
vadit. Suis (r) itineribus saturabi- 14
tur temerarius : & de cogitatio-
nibus suis vir bonus. (s) Sim- 15
plex credit omni verbo : astutus
autem vadit in pœnitentiam. (t)
Sapiens timens declinavit à malo: 16
imprudens autem sibi fidens mi-
scetur iniquo.

תרגום TARGUM.

18 מסכנא ומן ליה צערא מריש מרדותא ודמזדהר במכסנותא מתיקר : רגתא דיאיא
19 תבסם נפשא ומרחקתא דסכלי פריקא מן ידיעתא : דמהלך עם חכימי נתחכם 20
21 ודמחבר לסכלי נבאש ליה : לחטאי תרדף בישתא וצדיקי ישתלמון טבתא : גברא 22
טבא מורית לבני בנוהי ומתנטר לצדיקא עותריה דחטאה : רבא אכיל ארע למסכנא 23
24 ואית גברא מתנגד בלא דינא : דחשך שבטיה סני בריה ודרחם ליה מקדם ליה
25 מרדותא : צדיקא אכל ושבעא נפשיה וכריסא דרשיעי תחסר :

יד

1 חכימתא דנשיא בניא ביתא ושטיתא בידהא עקרא לה : דמהלך בתריצותא דחל 2
מן קדם אלהא ודעשיק באורחתיה שאט ליה : בפומיה דשטיא זקתא דצערא 3
ושפותהון דחכימי נטרן אנון : אתר דלית תורא דכין אורותא וסונעא דעללתא 4
בחיליה דתורא : סהדא מהימנא לא מכזב ודממלל כדבותא סהדא רגלא הוא : בעי 5
ממיקנא חכמתא ולית וידיעתא למן דמתבין זלילא : אזל בארחא אחריתא מן 6 7
קדם סכלא דלית בשפותיה ידיעתא : חכמתא דערימא ביונא דארחה בשטיותא 8
דסכלי רמיותא : כסילי מתלין בחטאה ובינת תריצי רעותא : לבא ידיע מרירותא 9
דנפשיה ובחדותיה לא מתערב נוכראה : ביתא דרשיעי ישתצי ומשכנא דתריצי 10 11
מפריח : אית אורחא דסברין בני נשא דתריצא היא וסופה אורחא דמותא : אף 12
בגוחכא נכאב לבא וסופה דחדותא חפוצא : מן אורחתיה נסבע מן דמריח לביה 13 14
וגברא טבא נסבע מן דחלתיה : שברא מהימן לכל מלי ועדימא מתבין לטבתיה : 15
16 חכימא דחיל ומסטא מן בישתא וסכלא מתחלט בסכלותא ומסביר בה :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Pauper & qui ignominiosus est deserit disciplinam : & qui cau- 18
tus est in redargutione , honoratur. Desiderium honestum suave 19
est animæ, & abominatio stultorum *recedit* à *scientia*. Qui ambu- 20
lat cum sapientibus, sapiens erit ; & qui habet societatem cum stul-
tis, malum erit ei. Peccatores persequetur malum : justis vero retribu- 21
entur bona. Vir bonus hæreditare facit filios filiorum suorum, & ser- 22
vantur justo divitiæ peccatoris. Multus cibus evenit pauperi, & est qui 23
præter jus mortem oppetit. Qui prohibet virgam suam, odit filium su- 24
um ; & qui diligit illum , manè quæret ei eruditionem. Justus comedit 25
& satiatur anima ejus, & venter impiorum indigebit.

PSAL. XIV.

QUæ sapiens est in mulieribus , ædificat domum suam ; & stulta mani- 1
bus destruit eam. Qui ambulat in rectitudine , timet Deum ; & qui 2
calumniator est in via sua, contemnit eum. In ore stulti virga *tribulati-* 3
onis : & labia sapientum custodiunt eos. Ubi non sunt boves , præsepia 4
munda sunt, & multitudo frugum in fortitudine bovis. Testis fidelis non 5
mentitur ; & qui loquitur mendacium , testis detractor est. Quærit de- 6
risor sapientiam , & non adest ; & scientia prudenti vilescit. Vade per 7
viam aliam à facie stulti, quia in labiis ejus non est scientia. Sapientia 8
callidi intelligentia est viæ suæ : *in* stultitia stultorum *fraus* [*est.*] Stulti 9
ponunt comparationes in peccato , & inter rectos est beneplacitum.
Cor novit amaritudinem animæ suæ, & in gaudio ejus non miscebitur ex- 10
traneus. Domus impiorum destruetur , & tabernaculum rectorum ger- 11
minabit. Est via quam putant filii hominis esse rectam ; & finis ejus est 12
via mortis. Etiam in risu dolet cor , & finis lætitiæ mœror. Viis 13
suis satiabitur qui est evanidus corde suo, & vir bonus satiabitur timore 14
suo. Insipiens credit omni verbo, & callidus attendit ad bonum suum. 15
Sapiens timet & declinat à malo : & stultus fervet in stultitia, & confidit 16
in ea.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

18 * ܡܣܟܢܘܬܐ ܘܨܥܪܐ ܡܒܛܠܝܢ ܡܪܕܘܬܐ. ܘܕܢܛܪ ܡܟܣܢܘܬܐ ܢܫܬܒܚ. * ܪܓܬܐ ܢܨܝܚܬܐ
19 ܢܒܣܡ ܢܦܫܐ. ܘܛܢܦܘܬܐ ܕܪ̈ܫܝܥܐ ܦܪܝܩܐ ܗܝ ܡܢ ܝܕܥܬܐ. * ܕܡܗܠܟ ܥܡ ܚܟܝܡܐ. ܢܗܘܐ
20 ܚܟܝܡ. ܘܕܡܗܠܟ ܥܡ ܣܟܠܐ ܢܬܒܐܫ ܠܗ. * ܠܚܛܝܐ ܪܕܦܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܠܙܕܝܩܐ ܢܫܬܠܡܘܢ
21 ܛܒ̈ܬܐ. * ܓܒܪܐ ܛܒܐ ܡܘܪܬ ܝܪ̈ܬܘܬܐ ܠܒ̈ܢܝ ܒܢܘ̈ܗܝ. ܘܡܬܢܛܪ ܠܙܕܝܩܐ ܥܘܬܪܗ ܕܚܛܝܐ.
22 * ܐܝܠܝܢ ܕܠܐ ܚܙܘ ܠܒܝܬ ܡܥܡܪܐ. ܫܢܝ̈ܐ ܣܓܝܐ̈ܐ ܐܘܒܕܘ ܥܘܬܪܐ. ܘܐܢܫܝܢ ܐܘܒܕܘ ܠܓܡܪܐܝܬ.
23 * ܟܠ ܕܚܐܣ ܥܠ ܫܒܛܗ. ܣܢܐ ܠܒܪܗ. ܘܕܪܚܡ ܠܒܪܗ. ܡܚܦܛܐܝܬ ܪܕܐ ܠܗ. * ܙܕܝܩܐ
24 ܐܟܠ. ܘܣܒܥ ܢܦܫܗ. ܘܟܪܣܐ ܕܪ̈ܫܝܥܐ ܬܚܣܪ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܝܕ * * ܐܢܬܬܐ ܚܟܝܡܬܐ
25 ܒܢܬ ܒܝܬܐ. ܘܣܟܠܬܐ ܒܐܝ̈ܕܝܗ ܣܚܦܬܗ. * ܕܡܗܠܟ ܒܬܪܝܨܘܬܐ. ܕܚܠ ܡܢ ܡܪܝܐ.
1 ܘܕܡܥܩܡ ܒܐܘܪܚܬܗ. ܢܫܛ ܠܗ. * ܒܦܘܡܗ ܕܣܟܠܐ ܚܘܛܪܐ ܕܨܥܪܐ. ܘܣܦܘܬܗܘܢ ܕܚܟܝ̈ܡܐ
2 ܢܛܪ̈ܢ ܠܗܘܢ. * ܐܝܟܐ ܕܠܝܬ ܬܘܪܐ. ܐܘܪܘܝܐ ܕܟܝܐ. ܘܣܓܝܐ̈ܐ ܥܠ̈ܠܬܐ ܒܚܝܠܗ ܕܬܘܪܐ. * ܣܗܕܐ
3 ܡܗܝܡܢܐ ܠܐ ܡܬܟܕܒ. ܘܕܡܡܠܠ ܕܓܠܘ̈ܬܐ. ܣܗܕܐ ܗܘ ܕܓܠܐ. * ܒܥܐ ܒܝܫܐ ܚܟܡܬܐ. ܘܠܐ
4 ܢܫܟܚܝܗ. ܘܝܕܥܬܐ ܠܡܣܟܠܢܐ ܡܫܬܟܚܐ. * ܠܓܒܪܐ ܣܟܠܐ. ܟܠܡܕܡ ܣܩܘܒܠܐ ܗܘ ܠܗ.
5 ܘܙܝܢܐ ܕܝܕܥܬܐ. ܣܦܘܬܐ ܕܚܟܝ̈ܡܐ. * ܚܪܝܦܐ. ܒܚܟܡܬܗ ܡܣܬܟܠ ܐܘܪܚܗ. ܘܐܘܪܚܐ
6 ܕܣܟܠܐ ܒܛܥܝܘܬܐ. * ܒ̈ܬܝܗܘܢ ܕܪ̈ܫܝܥܐ ܚܝܒܝܢ ܠܡܬܪܥܝܘ. ܘܒ̈ܬܝܗܘܢ ܕܙܕܝ̈ܩܐ ܡܬܪ̈ܥܝܢ.
7 * ܣܟܠܐ ܥܒܕܝܢ ܚܛܗ̈ܐ. ܘܒ̈ܢܝ ܙܕܝ̈ܩܐ ܪܥܝܢܐ. * ܠܒܐ ܚܟܝܡܐ. ܟܪܝܘܬܐ ܗܝ ܠܢܦܫܗ.
8 ܘܒܚܕܘܬܗ ܠܐ ܢܬܚܠܛ ܢܘܟܪܝܐ. ܒܝܬܐ ܕܪ̈ܫܝܥܐ ܢܐܒܕ. ܘܡܫܟܢܐ ܕܬܪ̈ܝܨܐ ܢܕܘܨ. * ܐܝܬ ܐܘܪܚܐ
9 ܕܣܒܪܝܢ ܒܢܝ̈ܢܫܐ ܕܬܪܝܨܐ ܗܝ. ܘܫܒ̈ܝܠܝܗ ܫܒ̈ܝܠܐ ܐܢܝܢ ܕܡܘܬܐ. * ܐܦ ܒܓܘܚܟܐ. ܢܬܟܐܒ
10 ܠܒܐ. ܘܚܪܬܐ ܕܚܕܘܬܗ. ܟܪܝܘܬܐ. * ܡܢ ܐܘܪ̈ܚܬܗ ܢܣܒܥ ܡܢ ܕܡܪܚ ܒܠܒܗ. ܘܓܒܪܐ ܛܒܐ
11 ܢܣܒܥ ܡܢ ܕܚܠܬܐ ܕܢܦܫܗ. * ܛܠܝܐ ܡܗܝܡܢ ܠܟܠ ܡܠܐ. ܘܚܪܝܦܐ ܦܪܫ ܛܒ ܡܢ
12 ܒܝܫ. * ܚܟܝܡܐ ܕܚܠ. ܘܣܛܐ ܡܢ ܒܝܫܬܐ. ܘܣܟܠܐ. ܡܬܚܠܛ ܒܗ. ܡܬܬܟܠܢܐܝܬ.

Paupertas & ignominia deſtrunt diſciplinā: 18
& qui obſervat objurgationem, laudabitur.
Deſideriū honeſtū, delectabit animā: & ob- 19
ſcœnitas impiorū remota eſt à ſcientia. Qui 20
graditur cum ſapiente, erit ſapiens : & qui
ambulat cum ſtulto, malo afficietur. Peccato- 21
rem perſequetur calamitas : at juſti addicen-
tur bonis. Vir probus hæreditatem relinquet 22
filiis filiorū ſuorū : & aſſervantur juſto divi-
tiæ peccatoris. Ii qui non viderunt habitati- 23
onē, annorum multorum ſpatio amiſerunt di-
vitias: imò quidam penitùs amiſerunt. Qui- 24
cunque parcit virgæ ſuæ, odit filium ſuum:
qui verò diligit filium ſuum, ſedulò corripit 25
eum. Juſtus comedit, & ſaturatur anima ipſi-
us : & venter impiorum egebit.

CAP. XIV.

Mulier ſapiens ædificabit domū : & ſtulta 1
manibus ſuis deſtruit eam. Qui ambulat in 2
rectitudine, timet Dn̄m: & qui perverſus eſt
in itinere ſuo, contemnit illū. In ore ſtulti, 3
ſtimulus & ignominia: & labia ſapientū ſer-
vabunt eos. Ubi non ſunt boves, vacua ſunt 4
præſepia: & copia proventuū, ex fortitudine
bovis. Teſtis verax non arguitur mendacio: 5
& qui loquitur mendacium, teſtis eſt falſus.
Malignus quærit ſapientiam, & non inve- 6
niet eam : & ſcientia à prudente invenitur.
Viro ſtulto omnia contraria ſunt: & armatu- 7
ra ſcientiæ, labia ſapientū. Cautus, ſapientiâ 8
ſuá intelligit viā ſuam: & iter ſtultorū, in er-
rore. Dom⁹ impiorū æquo jure poſtulant e- 9
vacuationē: domus autē juſtorum, gratæ. Stul- 10
ti operantur peccata: et filii juſtorum, bene-
placitum. Cor prudens, mœror eſt ſibimet- 11
ipſi: et in gaudio ejus, non ſe immiſcebit ali-
enus. Domus impiorū peribit : et habitaculū
rectorū exultabit. Eſt via quā putant homines 12
rectā eſſe: at ſemitæ illius, ſemitæ ſunt mortis.
Etiam in riſu dolebit cor : et finis gaudii ej⁹, 13
triſtitia. De viis ſuis ſatiabitur qui audax eſt 14
in corde ſuo : et vir bonus ſaturabitur timore
animæ ſuæ. Puer credit omni verbo: et cau- 15
tus diſcernit bonum à malo. Sapiens timet, 16
et deflectit à pravitate : et ſtultus immiſcet ſe
illi confidenter.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

18 19 * الادب ينزع الفقر والهوان * ومن يحفظ التوبيخات يشرف * شهوات المومنين حسنا تلذذ
20 النفس * واعمال المنافقين بعيدة من المعرفة * من يماشي الحكماء يكون حكيما ومن يمشي
21 22 طايحا مع الجهال سيعرف بهم * الخاطيون تطردهم شرورهم والمقسطون تدركهم الخيرات * الانسان
23 الصالح يرث ابناء البنين وثروة المنافقين تكثر للصديقين * المقسطون يعيشون في الغناء
24 سنين كثيرة * والظالمون يهلكون سريعا * من يشفق على عصاه يمقت ابنه * ومن يحب ابنه
25 يودبه باهتمام * المقسط اذا اكل يشبع نفسه * وانفس المنافقين محتاجة معسرة *
1 * الفصل الرابع عشر * * النساء الحكيمات ابتنوا المنازل * والمراة الجاهلة تخربها
2 3 بيدها وتحفرها * السالك مستقيما يتقي الرب * ومن يعوج طرقه يهان * من فم الجهال تبرز
4 عصا الشتيمة * وشفاه الحكماء تحفظهم * موضع لا يكون بقر فالمعالف نظيفة * وحيث
5 الغلات الكثيرة فقوة البقر ظاهرة * الشاهد الصدوق لن يكذب * والشاهد الظالم يحترق
6 7 بالكذب * تطلب عند الاشرار حكمة فلا تجدها * والحس عند ذوي الفطنة ميسر وجوده * كافة
8 الاشياء مضادة للانسان الجاهل * وسلاح الحس الشفاه الحكيمة * حكمة المدبرين تعرف
9 بطرايقهم * وشفاه الاغبياء في الضلالة * منازل العادلين عن الشريعة تستوجب الانهدام *
10 ومنازل المقسطين مقبولة * قلب الرجل الحساس نفسه حزينة * واذا فرح فما يخالطه تعظم *
11 12 * منازل المنافقين تجتاح وتبيد * ومساكن المستقيمين تبقى ثابتة * تكون طريق يظنها الناس
13 انها مستوية * واواخرها تفضي الى اعماق الجحيم * الافراح لا يختلط فيها حزن * واواخرها تفضي
14 15 النوح * الجسور القلب يمتلي من طرقه * والانسان الصالح يشبع من افعاله * الساذج الوديع
16 يصدق كل كلام * والمدرب يجي الى التوبة * الحكيم اذا خشي جنح عن الشر * والجاهل متوكل
على ذاته * وبتوكله على ذاته يخالط الاثيم *

Diſciplina aufert paupertatem & contemptum : & qui cuſtodit correptiones, 18
glorificabitur. Deſideria fidelium optimè delectant animum : opera autem impiorū 19
remota ſunt à ſcientia. Qui ambulat cum ſapientibus, ſapiens erit : & qui ſuperbè 20
incedit cum ſtultis, denominabitur ab eis. Peccatores expellent mala ſua : & 21
juſtos apprehendent bona. Homo probus hæreditatem dividet filiis filiorum : & 22
opulentia impiorum multiplicabitur pro juſtis. Juſti vivent in divitiis multos an- 23
nos : impii autem peribunt ſubitò. Qui 24
parcit virgæ ſuæ, odit filium ſuum, & qui amat filium ſuum, caſtigat eum cum
ſolicitudine. Juſtus cùm comederit, ſatiabitur anima ejus : & animæ ſceleſtorum erunt egentes & inopes. 25

CAP. XIV.

Mulieres prudentes ædificant domos: mulier autem fatua deſtruit eas manu 1
ſuâ & effodit eas. Incedens rectà, timet 2
Dominum : qui autem pervertit vias ſuas, vilipendetur. De ore ſtultorum e- 3
greditur virga contumeliæ : & labia ſapientum cuſtodiunt eos. Ubi non ſunt 4
boves, præſepia ſunt munda : & ubi ſunt ſegetes multæ, ibi fortitudo boum eſt ma-
nifeſta. Teſtis fidelis non mentitur: & te- 5
ſtis iniquus comburitur in mendacio.
Quæres apud improbos ſapientiā, & non 6
invenies eā : & ſenſum apud prudentes facile eſt invenire. Omnes res contrariæ 7
ſunt homini ſtulto : & arma prudentiæ, labia ſapientiæ. Sapientia callidorum 8
cognoſcitur à viis eorum : & labia imprudentum, in errore. Domus prætereun- 9
tium legem merentur deſtructionem : & domicilia juſtorum ſunt grata. Cordis vi- 10
ri ſenſati animus triſtis eſt : & cùm gaudet, non commiſcetur ei ſuperbia. Ha- 11
bitacula iniquorum deſtruentur & peribunt : habitacula autem rectorum manebunt ſtabilia. Eſt via quam putant 12
homines eſſe planam, & noviſſima ejus exterminant ad profunda inferni. Gau- 13
dia non miſcentur mœrore, & extrema eorum expellunt luctū. Audax corde im- 14
plebitur viis ſuis : & homo probus ſatiabitur operibus ſuis. Simplex manſuetus cre- 15
dit omni verbo : & eruditus veniet ad pœnitentiam. Sapiens cùm timet, declinat 16
à malo: ſtultus autem fidit ſibiipſi, & ob fiduciam ſuam in ſeipſo, converſatur cum ſceleſto.

משלי : יד

.odietur machinationum vir & : stultitiam faciet naribus Brevis

17 קצר־אפים יעשה אולת ואיש מזמות ישנא :

sibi coronam imponent callidi & : stultitiam simplices acceperunt Hæreditate

18 נחלו פתאים אולת וערומים יכתרו

super impii & : bonis coram mali sunt Incurvati .scientiam

19 דעת : שחו רעים לפני טובים ורשעים על־

diligentes & : pauper erit odioſus suo socio Etiam .justi portas

20 שערי צדיק : גם־לרעהו ישנא רש ואהבי

miſereſcens & : peccans ,ſuum ſocium Spernens .multi divitem

21 עשיר רבים : בז־לרעהו חוטא ומחונן

? malum fabricantes errabunt Nónne .ejus beatitudines ,modeſtorum

22 ענוים אשריו : הלוא יתעו חרשי רע

labore omni In .bonum cogitantibus veritas & ,miſericordia &

23 וחסד ואמת חרשי טוב : בכל־עצב

Corona .defectum ad verè labiorum verbum & : augmentum erit

24 יהיה מותר ודבר־שפתים אך־למחסור : עטרת

Fatuitas .ſtultitia ſtultorum ſtultitia : eorum opulentia ſapientum

25 חכמים עשרם אולת כסילים אולת : מציל

timore In .dolus mendacia efflabit & : veritatis teſtis animas

26 נפשות עד אמת ויפח כזבים מרמה : ביראת

Timor .tutela erit ejus filiis & : fortitudinis fiducia Domini

27 יהוה מבטח־עז ולבניו יהיה מחסה : יראת

.mortis laqueis à recedendum ad : vitarum vena Domini

יהוה מקור חיים לסור ממקשי מות :

populi conſumptione in & : regis decor populi multitudine In

28 ברב־עם הדרת־מלך ובאפס לאם

brevis & : intelligentia multus naribus Longus .rectoris contritio

29 מחתת רזון : ארך אפים רב־תבונה וקצר

: ſanum cor carnium Vitæ .ſtultitiam exaltans ſpiritu

30 רוח מרים אולת : חיי בשרים לב מרפא

exprobravit ,tenuem Opprimens .invidia oſſium putredo &

31 ורקב עצמות קנאה : עשק דל חרף

ſua malitia In .egeni miſereſcens ,eum honorans & : ejus factorem

32 עשהו ומכבדו חנן אביון : ברעתו

corde In .juſtus ſua morte in ſperans & : impius expelletur

33 ידחה רשע וחסה במותו צדיק : בלב

.cognoſcetur ſtultorum interiori in & : ſapientia requieſcet intelligentis

נבון תנוח חכמה ובקרב כסילים תודע :

.peccatum populorum miſericordia & : gentem exaltabit Juſtitia

34 צדקה תרומם־גוי וחסד לאמים חטאת :

erit ejus ira & : intelligentem ſervum ad regis Benevolentia

35 רצון־מלך לעבד משכיל ועברתו תהיה

.confundens

מביש :

CAP. XV. טו

.furorem faciet aſcendere doloris verbum & : iram avertet mollis Reſponſio

1 מענה־רך ישיב חמה ודבר־עצב יעלה־אף :

eructabit ſtultorum os & : ſcientiam reddet bonam ſapientum Lingua

2 לשון חכמים תיטיב דעת ופי כסילים יביע

,malos ſpeculantes Domini oculi loco omni In .ſtultitiam

3 אולת : בכל־מקום עיני יהוה צפות רעים

ea in perverſitas & : vitarum lignum linguæ Remiſſio .bonos &

4 וטובים : מרפא לשון עץ חיים וסלף בה

cuſtodiens & : ſui patris correctionem reſpuet Stultus .ſpiritu in contritio

5 שבר ברוח : אויל ינאץ מוסר אביו ושמר

.aſtutus efficietur ,increpationem

תוכחת יערם :

Verſio VULG. LAT.

17 Impatiens operabitur ſtultitiam : & vir verſutus odioſus 18 eſt. Poſſidebunt parvuli ſtultitiam, & expectabunt aſtuti 19 ſcientiam. Jacebunt mali ante bonos : & impii ante por- 20 tas juſtorum. Etiam proximo ſuo pauper odioſus erit : ami- 21 ci verò divitum multi. Qui deſpicit proximum ſuum, peccat: qui autem miſeretur pauperis, beatus erit. Qui credit in Domino, miſericordiam 22 diligit. Errant qui operantur malum : miſericordia & ve- 23 ritas præparant bona. In omni opere erit abundántia : ubi autem verba ſunt plurima, ibi frequenter egeſtas. 24 Corona ſapientium, divitiæ eorum : fatuitas ſtultorum, 25 imprudentia. Liberat animas teſtis fidelis : & profert men- 26 dacia verſipellis. In timore Domini fiducia fortitudinis, 27 & filiis ejus erit ſpes. Timor Domini fons vitæ, ut decli- 28 nent à ruina mortis. In multitudine populi dignitas regis: & in paucitate plebis ignomi- 29 nia principis. Qui patiens eſt, multâ gubernatur prudentiâ: qui autem impatiens eſt, ex- 30 altat ſtultitiam ſuam. Vita carnium, ſanitas cordis : pu- 31 tredo oſſium, invidia. Qui calumniatur egentem, exprobrat factori ejus : honorat autem eum, qui miſeretur 32 pauperis. In malitia ſua expelletur impius : ſperat au- 33 tem juſtus in morte ſua. In corde prudentis requieſcit ſapientia, & indoctos quoſque 34 erudiet. Juſtitia elevat gentem : miſeros autem facit 35 populos peccatum. Accept' eſt regi miniſter intelligens : iracundiā ejus inutilis ſuſtinebit.

CAP. XV.

1 RESponſio mollis frangit iram : ſermo durus ſuſcitat fu- 2 rorem. Lingua ſapientium ornat ſcientiam : os fatuorum e- 3 bullit ſtultitiam. In omni loco oculi Domini contemplantur 4 bonos & malos. Lingua placabilis, lignum vitæ: quæ autem immoderata eſt, conteret ſpiri- 5 tum. Stultus irridet diſciplinā patris ſui : qui autem cuſtodit increpationes, aſtutior fiet. In abundanti juſtitia virtus maxima eſt : cogitationes autem impiorum eradicabuntur.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

17 † Ὀξύθυμος πράσσει μετὰ ἀβουλίας, † 18 ἀνὴρ δὲ φρόνιμος πολλὰ ὑποφέρει. † Μεριοῦνται ἄφρονες κακίαν, † οἱ δὲ πανοῦρ- 19 γοι κρατήσουσιν αἰσθήσεως. † Ὀλισθήσουσι κακοὶ ἔναντι ἀγαθῶν, † καὶ ἀσεβεῖς θερα- 20 πεύσουσι θύρας δικαίων. † Φίλοι (η) μισήσουσι φίλους πτωχούς, † φίλοι δὲ πλουσίων 21 πολλοί. † Ὁ ἀτιμάζων πένητας ἁμαρτάνει, 22 † ἐλεῶν δὲ πτωχοὺς (θ) μακαριστός. † Πλανώμενοι τεκταίνουσι κακά, † ἔλεον δὲ καὶ ἀλήθειαν τεκταίνουσιν ἀγαθοί. † οὐκ ἐπίστανται ἔλεον καὶ πίστιν τέκτονες κακῶν, † ἐλεημοσύναι δὲ καὶ πίστεις παρὰ τέκτοσιν ἀ- 23 γαθοῖς. † Ἐν παντὶ μεριμνῶντι ἔνεστι περισσόν, † ὁ δὲ ἡδὺς καὶ ἀνάλγητος ἐν ἐν- 24 δείᾳ ἔσται. † Στέφανος σοφῶν πανοῦργος, † ἡ δὲ διατριβὴ ἀφρόνων κακή. † 25 Ῥύσεται ἐκ κακῶν ψυχὴν μάρτυς πιστός, 26 † ἐκκαίει δὲ ψευδῆ δόλιος. † Ἐν φόβῳ κυρίου ἐλπὶς ἰσχύος, † τοῖς δὲ τέκνοις 27 αὐτοῦ καταλείψει ἔρεισμα. † Πρόσταγμα κυρίου πηγὴ ζωῆς, † ποιεῖ δὲ ἐκκλίνειν ἐκ 28 παγίδος θανάτου. † Ἐν πολλῷ ἔθνει δόξα βασιλέως, † ἐν δὲ ἐκλείψει λαοῦ συν- 29 τριβὴ δυνάστου. † Μακρόθυμος ἀνὴρ πολὺς ἐν φρονήσει, † ὁ δὲ ὀλιγόψυχος ἰσχυ- 30 ρῶς ἄφρων. † Πραΰθυμος ἀνὴρ καρδίας ἰατρός, † σὴς δὲ ὀστέων καρδία αἰσθητική. † 31 Ὁ συκοφαντῶν πένητα παροξύνει τὸν ποιήσαντα αὐτόν, † ὁ δὲ τιμῶν αὐτὸν (ι) ἐ- 32 λεεῖ πτωχόν. † Ἐν κακίᾳ αὐτοῦ ἀπωσθήσεται ἀσεβής, † ὁ δὲ πεποιθὼς τῇ ἑαυ- 33 τοῦ ὁσιότητι δίκαιος. † Ἐν καρδίᾳ ἀγαθῇ ἀνδρὸς σοφία, † ἐν δὲ καρδίᾳ ἀφρόνων οὐ 34 διαγινώσκεται. Δικαιοσύνη ὑψοῖ ἔθνος, 35 † ἐλασσονοῦσι δὲ φυλὰς ἁμαρτίαι. † Δεκτὸς βασιλεῖ ὑπηρέτης νοήμων, † τῇ δὲ ἑαυτοῦ εὐστροφίᾳ ἀφαιρεῖται ἀτιμίαν.

17 *(v) Impatiens agit cum temeritate : vir autem (x) prudens multa ſuffert.* 18 *(y) Divident imprudentes (z) malum : aſtuti autem (ω) tenebunt ſenſum.* 19 *Labentur mali coram bonis : & impii colent portas juſtorum.* 20 *Amici odio habebunt amicos mendicos : amici autem divitum multi.* 21 *Qui inhonorat pauperes, peccat : qui autem miſeretur mendicorum, beatiſſimus.* 22 *(aa) Errantes fabricantur mala: miſericordiam autem & veritatem fabricantur boni. Non ſciunt miſericordiam & fidem fabricatores malorum : eleemoſynæ autem & fides apud fabricatores bonos.* 23 *In omni ſolicito ineſt abundantia : dulcis autem & carens dolore in egeſtate erit.* 24 *Corona ſapientum (bb) aſtutus: (cc) converſatio autem imprudentum mala.* 25 *(dd) Liberabit de malis animam teſtis fidelis : accendit autem falſa doloſus.* 26 *In timore Domini ſpes fortitudinis : filiis autem ſuis relinquet (ee) firmamentum.* 27 *(ff) Præceptum Domini fons vitæ : facit autem declinare de (gg) laqueo mortis.* 28 *(hh) In multa gente gloria regis: in (ii) defectu autem populi contritio principis.* 29 *Longanimis vir, multus in prudentia : (kk) puſillanimis autem, (ll) valde imprudens.* 30 *Manſuetus vir, cordis medicus : tinea autem oſſium (mm) cor ſenſitivum.* 31 *(nn) Qui calumniatur pauperem, irritat eum, qui fecit illum : (oo) qui autem honorat illum, miſeretur inopis.* 32 *In malitia ſua (pp) repelletur impius : qui (qq) autem fidit ſuæ ſanctitati, juſtus.* 33 *In corde (rr) bono viri ſapientia: in corde autem imprudentum (ſſ) non dignoſcitur.* 34 *Juſtitia exaltat gentem : (tt) minuunt autē tribus peccata, (uu)* 35 *Acceptus regi miniſter intelligens : (xx) ſuâ autem agilitate aufert ignominiam.*

MS. A. (η) μισήσωσιν (θ) μακάριος ἔσται. (ι) ἐλεᾷ

ΚΕΦ. ιε'.

1 † ὈΡγὴ ἀπόλλυσι καὶ φρονίμους, † ἀπόκρισις δὲ ὑποπίπτουσα ἀποστρέφει θυμόν, † λόγος δὲ λυπηρὸς ἐγείρει ὀργάς. † 2 † Γλῶσσα σοφῶν καλὰ ἐπίσταται, † στόμα δὲ 3 ἀφρόνων ἀναγγελεῖ κακά. † Ἐν παντὶ τόπῳ ὀφθαλμοὶ κυρίου σκοπεύουσι κακούς τε 4 καὶ ἀγαθούς. † Ἴασις γλώσσης δένδρον ζωῆς, † ὁ δὲ συντηρῶν αὐτὴν πλησθήσεται πνεύ- 5 ματος. † Ἄφρων μυκτηρίζει παιδείαν πατρός, † ὁ δὲ φυλάσσων ἐντολάς, πανουργότερος. † ἐν πλεοναζούσῃ δικαιοσύνῃ ἰσχὺς πολλή, † οἱ δὲ ἀσεβεῖς (α) ὁλόρριζοι ἐκ γῆς ἀπολοῦνται.

MS.A. (α) ὁλόρριζοι ἐκ γῆς ὀλοῦνται.

CAP. XV.

1 *IRa (a) perdit & prudentes : reſponſio autem (b) ſubmiſſa avertit furorem : ſermo autem (c) triſtis ſuſcitat iras.* 2 *Lingua ſapientum bona novit, & os ſtultorum (d) pronuntiat mala.* 3 *In omni loco oculi Domini ſpeculantur & (e) bonos, & malos.* 4 *(f) Sanitas linguæ arbor vitæ, qui (g) conſervat eam, implebitur ſpiritu.* 5 *Imprudens (h) ſubſannat diſciplinam patris, qui autem cuſtodit (i) mandata, aſtutior. In abundanti juſtitia fortitudo multa, (k) impii autē radicitùs de terra peribunt.*

תרגום TARGUM.

17 מן דכריא רוחיה מתחשיב שטיא וסניא לגברא דאריכא תרעיתיה : ירתון שברי
18 שטיותא וכלילהון דערימאי ידיעתא : נפלו בישי קדם טבי ורשיעי נתדון
19 בתרעיא דצדיקי : אף לחבריה סני מסכנא ורחמי דעתירא סגיעין : חטיא שאט
20 לחבריה ומן דיהיב למסכנא טובוהי : הלא תעין דחשלים בישתא וחסדא וקשוט
21 חשלין טבי : בכל מן דאצפא לך יהוי לך יותרנא וספותא יתירתא לחוסרנא :
22 כלילא דחכימי עותרהון ושבהורהון דסכלי שטיותהון : מפצא נפשא סהדא
23 דקושטא ודמלל כדבותא רמיא הוא : דחלתיה דאלהא סברא דעשנא ולבנוי
24 נהוי תוכלן : דחלתא דאלהא מבועא דחיי לדמסטי מן פחא דמותא : בסוגעא
25 דעמא הדריה דמלכא והיך דבציר עמא מתחבר פרנסיה : מן דנגידא רוחיה
26 סגיעא ביוניה ומן דכריה רוחיה מסני שטיותא : דמפליג חמתא דלביה אסיא
27 הוא דבסריה והיך מלטיתא בקיסא הכין קנאתא בגרמי : דעשק למסכנא חסודא
28 עביד לבריה ודמרחם עליבא יקריה : בבישותיה מסתחף רשיעא ודתכל דמאית
29 צדיקא הוא : בלבא דמתבין תשרי חכמתא ובגויהון דסכלי שטיותא תתידע :
30 צדקתא תרורם אומא וחסודא דעמי חטהי : רעותיה דמלכא בעבדא סוכלתנא
31 ובסורחניה יבהתון :
32
33
34
35

טו

1 מלתא רכיכתא מהפכא חמתא ומלתא דעויזא מסקא רוגזא : לישנא דחכימי משפר
2 ידיעתא ופומהון דסכלי נביע שטיותא : בכל אתר עינוי דיי חמין בבישי ובטבי :
3 אסיותא דלישנא אילנא דחיי הוא ודאכל מן פירוהי נשבע : שטיא מסלי מרדותא
4 דאבוי ודמזדהר במכסנותא ערימא הוא :
5

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

17 Qui præceps eſt in ſpiritu ſuo, reputatur ſtultus, & odio proſequitur differentem conſilium ſuum. 18 Hæreditabunt inſipientes ſtultitiam, & corona aſtutorum eſt ſcientia. 19 Corruunt impii coram bonis, & impii obſtupeſcunt in portis juſtorum. 20 Et ſocio ſuo odioſus eſt pauper, & amici divitis multi ſunt. 21 Contemnit ſocium ſuum peccator : & qui dat pauperi, beatus eſt. 22 *Nónne* errant qui cogitant malum : miſericordia autem & veritas erit his qui cogitant bona. 23 In omni quod ſollicitum te facit, erit tibi commodum, & labia ſuperflua in egeſtate erunt. 24 Corona ſapientum divitiæ eorum, & decus ſtultorum ſtultitia illorum. 25 Liberat animas teſtis veritatis, & qui loquitur mendacium, doloſus eſt. 26 Timor Dei eſt fiducia fortitudinis, & filiis ejus erit protectio. 27 Timor Dei eſt fons vitæ, ad declinandum à laqueo mortis. 28 In multitudine populi decor eſt regis : & quando minuitur populus, conteritur gubernator ejus. 29 Qui longanimis eſt, multæ prudentiæ eſt ; & qui præceps eſt in ſpiritu ſuo, multiplicat ſtultitiam. 30 Qui dividit iram cordis ſui, medicina eſt carni ejus : & ſicut putredo in ligno eſt, ſic & invidia in oſſibus. 31 Qui opprimit pauperem, opprobium facit *creatori ſuo* ; & qui miſeretur patientis injuriam, ipſum honorat. 32 In malitia ſua repellitur impius, & qui ſperat quòd ſit moriturus, juſtus eſt. 33 In corde intelligentis moratur ſapientia, & in medio ſtultorum cognoſcitur ſtultitia. 34 Juſtitia exaltat gentem, & opprobrium populi peccatum eſt. 35 Voluntas regis in ſervo intelligenti eſt, & in offenſa ejus confundetur.

CAP. XV.

1 SErmo mollis avertit iram, & ſermo durus ſuſcitat furorem. 2 Lingua ſapientum ornat ſcientiam, & os ſtultorum eructat ſtultitiam. 3 In omni loco oculi Domini vident bonos & malos. 4 Medicina linguæ eſt lignum vitæ; & qui comedit ex eo, de fructibus ejus ſatiabitur. 5 Stultus reprobat diſciplinam patris ſui : & qui ſibi cavet ejus increpatione, callidus eſt.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA

17 18 * ܡܥܓܠ. ܟܠ ܕܥܒܕ ܠܐ ܡܬܡܠܟ. ܘܓܒܪܐ ܚܟܝܡܐ ܡܣܝܒ. * ܝܪܬܝܢ ܣܟܠܐ ܫܛܝܘܬܐ. ܘܥܪܝܡܐ
19 ܡܦܠܓܝܢ ܝܕܥܬܐ. * ܢܬܟܦܘܢ ܒܝܫܐ ܩܕܡ ܛܒܐ. ܘܥܘܠܐ ܢܐܬܘܢ ܠܬܪܥܐ ܕܙܕܝܩܐ. * ܐܦ
20 21 ܠܚܒܪܘܗܝ ܣܢܐ ܡܣܟܢܐ. ܘܪܚܡܘܗܝ ܕܥܬܝܪܐ ܣܓܝܐܝܢ. * ܕܡܒܣܐ ܠܚܒܪܗ ܚܛܐ.
ܘܕܡܪܚܡ ܥܠ ܡܣܟܢܐ ܛܘܒܘܗܝ. * ܛܥܝܢ ܓܝܪ ܕܥܒܕܝܢ ܒܝܫܬܐ. ܘܡܪܚܡܢܐ ܘܙܕܝܩܐ
22 ܥܒܕܝܢ ܟܠܗܝܢ ܛܒܬܐ. ܥܒܕܝ ܒܝܫܬܐ. ܛܝܒܘܬܐ ܘܗܝܡܢܘܬܐ ܠܐ ܢܣܬܟܠܘܢ. ܡܪܚܡܢܘܬܐ
23 ܕܝܢ ܘܗܝܡܢܘܬܐ. ܥܡ ܥܒܕܝ ܛܒܬܐ ܗܝ. * ܒܟܠ ܕܪܕܦ ܐܢܫ. ܚܕܐ ܗܝ ܕܡܘܬܪܐ. ܘܡܟܝܟܐ
ܕܝܬܒ ܒܡܕܝܪܗ. ܢܝܚܐ ܘܡܒܣܡܐ ܢܗܘܐ. ܟܠ ܟܐܒ. ܡܪܝܐ ܡܐܣܐ. ܘܡܡܠܠܐ ܕܣܦܘܬܗܘܢ
24 ܕܥܘܠܐ. ܡܚܣܪ ܠܗܘܢ. * ܟܠܝܠܐ ܕܚܟܝܡܐ. ܥܘܬܪܗܘܢ. ܘܗܘܦܟܐ ܕܣܟܠܐ. ܫܛܝܘܬܗܘܢ.
25 26 * ܡܦܨܐ ܢܦܫܬܐ. ܣܗܕܐ ܕܩܘܫܬܐ. ܘܡܡܠܠ ܢܟܠܐ ܣܗܕܐ ܕܓܠܐ. * ܒܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܣܒܪܐ
27 ܚܣܝܢܐ. ܘܠܒܢܘܗܝ ܢܗܘܐ ܡܣܬܪܢܐ. * ܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܡܒܘܥܐ ܗܝ ܕܚܝܐ. ܠܡܥܒܪ
28 ܕܢܦܩܘܢ ܡܢ ܦܚܐ ܕܡܘܬܐ. * ܒܥܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܗܕܝܪ ܡܠܟܐ. ܘܒܬܘܒܪܗ ܕܥܡܐ. ܡܬܬܒܪ
29 30 ܡܠܟܐ. * ܕܢܓܝܪ ܪܘܚܗ. ܣܓܝ ܚܟܝܡ. ܘܕܟܪܝܐ ܪܘܚܗ. ܛܒ ܣܟܠ. * ܕܡܟܒܫ ܚܡܬܗ.
31 ܐܣܝܐ ܗܘ ܕܠܒܗ. ܘܫܘܬܐ ܕܓܪܡܐ. ܛܢܢܐ ܗܘ. * ܕܥܨܐ ܠܡܣܟܢܐ ܒܥܛ ܒܥܛ. ܡܪܓܙ
32 ܠܥܒܘܕܗ. ܘܕܡܝܩܪ ܠܡܪܝܐ. ܡܪܚܡ ܥܠ ܡܣܟܢܐ. * ܒܒܝܫܘܬܗ. ܡܬܡܣܚܦ ܥܘܠܐ.
33 ܘܕܬܟܝܠ ܕܠܝܬ ܠܗ ܚܛܗܐ. ܙܕܝܩ ܗܘ. * ܒܠܒܐ ܕܟܐܢܐ ܬܫܪܐ ܚܟܡܬܐ. ܘܒܠܒܐ ܕܣܟܠܐ
34 35 ܠܐ ܡܬܝܕܥܐ. * ܙܕܝܩܘܬܐ ܬܪܝܡ ܠܥܡܐ. ܘܡܒܨܪܝܢ ܠܐܡܘܬܐ ܚܛܗܐ. * ܨܒܝܢܗ ܕܡܠܟܐ. ܒܥܒܕܐ
ܡܣܬܟܠܢܐ. ܘܒܚܟܡܬܐ ܕܢܦܫܗ. ܡܬܡܣܚܦ ܥܘܠܐ. ܘܕܬܟܝܠ ܕܠܝܬ ܠܗ ܚܛܗܐ.
ܙܕܝܩ ܗܘ. ܘܪܘܓܙܐ ܐܦ ܠܚܟܝܡܐ ܡܘܒܕ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܛܘ *

1 2 * ܡܠܬܐ ܪܟܝܟܬܐ ܡܗܦܟܐ ܚܡܬܐ. ܘܡܠܬܐ ܩܫܝܬܐ ܡܥܝܪܐ ܪܘܓܙܐ. * ܠܫܢܐ ܕܚܟܝܡܐ
3 ܡܨܒܬ ܝܕܥܬܐ. ܘܦܘܡܐ ܕܣܟܠܐ ܢܒܥ ܠܘܛܬܐ. * ܒܟܠ ܐܬܪ ܥܝܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܚܝܪܢ
4 ܒܛܒܐ ܘܒܒܝܫܐ. * ܐܣܝܘܬܐ ܕܠܫܢܐ. ܐܝܠܢܐ ܗܘ ܕܚܝܐ. ܘܐܟܠ ܡܢ ܦܐܪܘܗܝ. ܢܣܒܥ
5 ܡܢܗ. * ܣܟܠܐ ܡܒܙܚ ܠܡܪܕܘܬܐ ܕܐܒܘܗܝ. ܘܕܥܪܝܡ ܢܛܪ ܡܪܕܘܬܐ.

Præceps, quæcunque operatur, inconſultò agit: & vir ſapiens, cunctabundus eſt. 17 Hæreditariò acquirunt ſtulti inſipientiam: & cauti dividunt ſcientiam. 18 Procident mali coram bonis: & ſceleſti venient ad portam juſti. 19 Etiam ſociis ſuis exoſus eſt pauper: & amici divitis, multi ſunt. 20 Qui contemnit ſocium ſuum, peccat: & qui miſeretur pauperis, beatus. 21 Iniqui errant committentes flagitia: miſericordes verò atque juſti operantur quælibet bona. 22 Perpetrantes mala, miſericordiam & fidem non intelligent: clementia autem et fides eſt cum operantibus bona. In omnibus rebus ad quas contendis, una eſt utilis: qui humilis eſt *conditionis* in habitaculo ſuo, tranquillus ac jucundus erit. 23 Omnem dolorem ſanat Dominus: & ſermo labiorum *hominum* nefariorũ jacturam afferet eis. Corona ſapientum, divitiæ eorum: & mores ſtultorum, dementia illorum. 24 Liberat animas teſtis veritatis: & loquitur dolum teſtis mendax. 25 Timor Domini, ſpes magna: et filiis ſuis erit protector. 26 Timor Domini fons eſt vitæ iis qui devitant laqueos mortis. 27 In populo copioſo magnificus eſt rex: & in exitio populi frangitur rex. 28 Qui longanimis eſt, admodum ſapiens eſt: at qui impatiens eſt, valdè ſtultus eſt. 29 Qui temperat iram ſuam, medicus eſt cordis ſui: & caries oſſium zelus eſt. 30 Qui tractat pauperem aſperè ac durè, irritat factorem ejus; et qui veneratur Dominum, miſeretur egenorum. 31 In malitia ſua deſtruitur iniquus: et qui confidit ſe non habere peccata, juſtus eſt. 32 In corde juſtorum habitabit ſapientia: et in corde ſtultorum non agnoſcetur. 33 Juſtitia exaltabit gentem: et extenuant populos peccata. 34 Oblectatio regis, in ſervo prudente: et in ſapientia animæ ſuæ corruit impius. 35 Qui confidit ſe non habere peccata, juſtus eſt: ira autem etiam ſapientes perdit.

CAP. XV.

VErbum mite, avertit furorem: at ſermo aſper, concitat iram. 1 Lingua ſapientum ornat ſcientiam: et os ſtultorum eructat maledictionem. 2 In omni loco oculi Domini intuentur bonos et malos. 3 Sanitas linguæ, arbor eſt vitæ: et qui comedit de fructibus ejus, ſaturabitur ex ea. 4 Stultus irridet caſtigationem patris ſui: et qui callidus eſt, cuſtodit correctionem. 5

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

17 18 * الحاد الغضب يعمل بلا مشاورة * والرجل الدقيق العقل يحتمل نوايب كثيرة * الاغبياء
19 يتقاسمون الرذيلة * والمكرة يمسكون الحس * الاشرار يزلقون لدى الصالحين * والمنافقون
20 يخدمون لدى ابواب المقسطين * الاصدقاء يمقتون للاصدقاء المساكين * واصدقاء
21 22 الاغنياء كثيرون * من يهين الفقراء يخطي * ومن يرحم المساكين مطوب * الظالمون
المستظلمون يهندسون المساوي * والصالحون يصطنعون رحمة وحقا * المبدعون الاسواء لن يعرفوا
23 الرحمة والامانة * والصدقة والامانة عند الصانعين الصالحات * في جميع ما يهتم به يوجد
24 شي واحد صالح * والمتلذذ ومن لا يتوجع سيكون في الفاقة * اكليل الحكماء المكر * ومحال
25 26 الاغبياء رديء * الشاهد الصادق ينجي النفس من الاسواء * والغاش يحرقها في الكذب * في
27 تقوي الرب القوة * ومتخذها يخلف لاولاده قاعدة * امر الرب عين الحياة * يجعل فاعلها ان ينجو
28 29 من فخ الموت * شرف الملك بالامة الكثيرة * وهشيم المقتدر يفني الشعب * الانسان المتمهل
30 يكون جزيل الحظ في دقة العقل * والشاتم جاهل قوي * الانسان الوديع الغضب طبيب
31 القلوب * وسوس العظام القلب الحساس * من يبغي على فقير يغيظ من خلقه * ومن يكرمه
32 33 يرحم المسكين * المنافق يبعد برذيلته * والواثق ببره عدل * في القلب الصالح حكمة
34 35 الانسان * ولن تعرف في قلب الجاهل * العدل يعطي الامة * والخطايا تنقص القبايل * الخادم
اللبيب مقبول عند الملك * ويحسن تصرفه ينزع الهوان * الفصل الخامس عشر *

1 2 * الغيظ يهلك العقلاء * والمجاوبة المنحطة ترد الغضب * الكلمة الجازمة تنهض شمايل
3 4 الغيظ * وفم الاغبياء يخبر بالاسواء * عينا الرب في كل مكان ترقب الطالحين والصالحين * شفا اللسان شجرة الحياة *
5 ومن يصونه ويحفظه يمتلي روحا * الولد الغبي يستهزئ بتاديب ابيه * ومن يحفظ وصاياه فذاك متوافر الدربة *

Promptus ad iram, operatur abſque conſilio: vir autem acutus ingenio ſuſtinet viciſſitudines multas. 17 *Impudentes dividunt inter ſe vitium: & callidi tenent ſenſum.* 18 *Mali lapſabunt propè bonos: & iniqui ſervient prope januas juſtorum.* 19 *Amici odio habent amicos pauperes: amici verò divitum ſunt multi.* 20 *Qui vilipendit pauperes, peccat: & qui miſeretur pauperum eſt beatus.* 21 *Scelerati perverſi architectantur mala: recti verò faciunt miſericordiam & veritatem. Architecti malorum nullo modo cognoſcunt miſericordiam & fidelitatem: & eleemoſyna atque fidelitas, apud facientes bona.* 22 *In omnibus in quibus cura impenditur, invenitur res una bona: & voluptuoſus, & qui non vexatur, erit in egeſtate.* 23 *Corona ſapientum, aſtutia: & fraus imprudentum, peſſima.* 24 *Teſtis verax liberat animam à malis: & doloſus comburit eam mendacio.* 25 *In timore Domini, fortitudo: & qui ſibi eam vindicat, relinquet filiis ſuis baſim.* 26 *Imperium Domini, fons vitæ, faciens exequentem illud declinare à laqueo mortis.* 27 *Gloria regis in gente multa: & laceratio potentis diſſipat populum.* 28 *Vir longanimis erit multæ fortunæ per acumen ingenii: & conviciator eſt valdè ſtultus.* 29 *Homo mitis in ira, medicus eſt cordium: & tinea oſſium, cor odio plenum.* 30 *Qui opprimit pauperem, irritat creatorem ejus: & qui honorat eum, miſeretur pauperis.* 31 *Iniquus expelletur in ſuo vitio: & conſtans in ſua rectitudine, juſtus eſt.* 32 *In corde probo, ſapientia hominis: & nullo pacto cognoſcetur in corde ſtulti.* 33 *Juſtitia protegit gentem: & peccata diminuunt nationes.* 34 *Miniſter cordatus gratus eſt apud regem: & optimâ ſe gerendi ratione demit contemptum.* 35

CAP. XV.

IRa perdit prudentes: & reſponſio humilis avertit furorem. 1 *Verbum dirimens concitat malignitates iræ: & os inſipientium narrat mala.* 2 *Oculi Domini in omni loco explorant improbos & probos.* 3 *Sanitas linguæ, arbor vitæ: & qui ſervat eam & cuſtodit eam, implebitur tranquillitate.* 4 *Filius impudens deridet diſciplinam patris ſui: & qui cuſtodit præcepta ejus, is præſtat peritia.* 5

משלי : טו

.conturbatur impii proventu in & : multa fortitudo justi Domo
בֵּית צַדִּיק חֹסֶן רָב וּבִתְבוּאַת רָשָׁע נֶעְכָּרֶת׃ 6
stultorum cor & : scientiam spargent sapientum Labia
שִׂפְתֵי חֲכָמִים יְזָרוּ דָעַת וְלֵב כְּסִילִים 7
: DOMINI abominatio impiorum Sacrificium .sic non
לֹא־כֵן׃ זֶבַח רְשָׁעִים תּוֹעֲבַת יְהוָה 8
DOMINI Abominatio .ejus voluntas rectorum oratio &
וּתְפִלַּת יְשָׁרִים רְצוֹנוֹ׃ תּוֹעֲבַת יְהוָה 9
mala Correptio .diliget , justitiam sequentem & : impii via
דֶּרֶךְ רָשָׁע וּמְרַדֵּף צְדָקָה יֶאֱהָב׃ מוּסָר רָע 10
, Infernus .morietur , increpationem *odiens* : semitam relinquenti
לְעֹזֵב אֹרַח שׂוֹנֵא תוֹכַחַת יָמוּת׃ שְׁאוֹל 11
filiorum corda *quia etiam* : DOMINO coram perditio &
וַאֲבַדּוֹן נֶגֶד יְהוָה אַף כִּי־לִבּוֹת בְּנֵי־
sapientes ad : se increpantem illusor amabit Non ? hominum
אָדָם׃ לֹא־יֶאֱהַב לֵץ הוֹכֵחַ לוֹ אֶל־חֲכָמִים 12
cordis *dolore in &* : *facies bonificabit* lætum Cor .ibit non
לֹא יֵלֵךְ׃ לֵב שָׂמֵחַ יֵיטִב פָּנִים וּבְעַצְּבַת־לֵב 13
os & : scientiam quæret intelligens Cor *.confractum* spiritus
רוּחַ נְכֵאָה׃ לֵב נָבוֹן יְבַקֶּשׁ־דָּעַת וּפְנֵי 14
: mali *afflicti* dies Omnes *.stultitia* pascetur stultorum
כְּסִילִים יִרְעֶה אִוֶּלֶת׃ כָּל־יְמֵי עָנִי רָעִים 15
timore *in* parum *Bonum .juge convivium* corde *bonus* &
וְטוֹב לֵב מִשְׁתֶּה תָמִיד׃ טוֹב־מְעַט בְּיִרְאַת 16
Bonum .eo in *tumultus &* , *multo thesauro præ* ; DOMINI
יְהוָה מֵאוֹצָר רָב וּמְהוּמָה בוֹ׃ טוֹב 17
odium & , *saginato bove præ* ; *ibi* dilectio & , oleris *viaticum*
אֲרֻחַת יָרָק וְאַהֲבָה שָׁם מִשּׁוֹר אָבוּס וְשִׂנְאָה־
longus & : contentionem excitabit excandescentiæ Vir .eo in
בוֹ׃ אִישׁ חֵמָה יְגָרֶה מָדוֹן וְאֶרֶךְ 18
sepes velut pigri Via *.litem* faciet quiescere *naribus*
אַפַּיִם יַשְׁקִיט רִיב׃ דֶּרֶךְ עָצֵל כִּמְשֻׂכַת 19
sapiens Filius *.strata* rectorum semita & : *spinæ*
חֵדֶק וְאֹרַח יְשָׁרִים סְלֻלָה׃ בֵּן חָכָם 20
.suam matrem *despiciens* homo stultus & : patrem lætificabit
יְשַׂמַּח אָב וּכְסִיל אָדָם בּוֹזֶה אִמּוֹ׃
intelligentiæ vir & : corde *carenti* lætitia Stultitia
אִוֶּלֶת שִׂמְחָה לַחֲסַר־לֵב וְאִישׁ תְּבוּנָה 21
; *secreto non in* cogitationes *infringere* *.ambulando* seipsum diriget
יְיַשֶּׁר־לָכֶת׃ הָפֵר מַחֲשָׁבוֹת בְּאֵין סוֹד 22
viro Lætitia *.stabit* consiliariorum multitudine *in &*
וּבְרֹב יוֹעֲצִים תָּקוּם׃ שִׂמְחָה לָאִישׁ 23
quàm suo tempore in verbum & : sui oris responsione in
בְּמַעֲנֵה־פִיו וְדָבָר בְּעִתּוֹ מַה־
pro : intelligentem *supra vitarum* Via .bonum
טוֹב׃ אֹרַח חַיִּים לְמַעְלָה לְמַשְׂכִּיל לְמַעַן 24
demolietur superborum Domum .inferiori inferno ab *declinare*
סוּר מִשְּׁאוֹל מָטָּה׃ בֵּית גֵּאִים יִסַּח 25
Abominatio .viduæ terminum statuet & : DOMINUS
יְהוָה וְיַצֵּב גְּבוּל אַלְמָנָה׃ תּוֹעֲבַת 26
.jucunditatis eloquia munda & : mali cogitationes DOMINI
יְהוָה מַחְשְׁבוֹת רָע וּטְהוֹרִים אִמְרֵי־נֹעַם׃
, dona *habens odio & : concupiscentiam appetens* suam domum *Turbans*
עֹכֵר בֵּיתוֹ בּוֹצֵעַ בָּצַע וְשׂוֹנֵא מַתָּנֹת 27
os & : respondendum *ad* meditabitur justi Cor .vivet
יִחְיֶה׃ לֵב צַדִּיק יֶהְגֶּה לַעֲנוֹת וּפִי 28
.mala *eructabit* impiorum
רְשָׁעִים יַבִּיעַ רָעוֹת׃

Versio VULG. LAT.

6 Domûs justi plurima fortitudo : & in fructibus impii con-
7 turbatio. Labia sapientium disseminabunt scientiam : cor
8 stultorum dissimile erit. Victimæ impiorum abominabiles Domino : vota justorum pla-
9 cabilia. Abominatio est Domino via impii : qui sequitur
10 justitiam, diligitur ab eo. Doctrina mala deserenti viam vitæ : qui increpationes odit,
11 morietur. Infernus, & perditio coram Domino : quantò magis corda filiorum homi-
12 num ? Non amat pestilens eum, qui se corripit : nec ad
13 sapientes graditur. Cor gaudens exhilarat faciem: in mœrore animi dejicitur spiritus.
14 Cor sapientis quærit doctrinam : & os stultorum pascitur
15 imperitiâ. Omnes dies pauperis, mali : secura mens quasi
16 juge convivium. Melius est parum cum timore Domini, quàm thesauri magni & insa-
17 tiabiles. Melius est vocari ad olera cum charitate, quàm ad vitulum saginatum cum odio.
18 Vir iracundus provocat rixas: qui patiens est, mitigat susci-
19 tatas. Iter pigrorum quasi sepes spinarum : via justorum
20 absque offendiculo. Filius sapiens lætificat patrem : & stultus homo despicit matrem
21 suam. Stultitia gaudium stulto: & vir prudens dirigit gres-
22 sus suos. Dissipantur cogitationes ubi non est consilium : ubi verò sunt plures
23 consiliarii, confirmantur. Lætatur homo in sententia oris sui : & sermo opportunus est
24 optimus. Semita vitæ super eruditum, ut declinet de in-
25 ferno novissimo. Domum superborum demolietur Dominus : & firmos faciet termi-
26 nos viduæ. Abominatio Domini cogitationes malæ : & purus sermo pulcherrimus fir-
27 mabitur ab eo. Conturbat domum suam qui sectatur avaritiam : qui autem odit munera, vivet. Per misericordiam & fidem purgantur peccata : per timorem autem Domini declinat omnis à ma-
28 lo. Mens justi meditatur obedientiam : os impiorum redundat malis.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

6 † Οἴκοις δικαίων ἰσχὺς πολλή, † καρποὶ
7 δὲ ἀσεβῶν ἀπολοῦνται. † Χείλη σοφῶν δέδεται αἰσθήσει, † καρδίαι δὲ ἀφρόνων οὐκ
8 ἀσφαλεῖς. † Θυσίαι ἀσεβῶν βδέλυγμα κυρίῳ, † εὐχαὶ δὲ κατευθυνόντων δεκταὶ
9 παρ' αὐτῷ. † Βδέλυγμα κυρίῳ ὁδοὶ ἀσεβοῦς, † διώκοντας δὲ δικαιοσύνην ἀγαπᾷ.
10 † Παιδεία ἀκάκου γνωρίζεται ὑπὸ τῶν παριόντων, † οἱ δὲ μισοῦντες ἐλέγχους
11 τελευτῶσιν αἰσχρῶς. † Ἅδης καὶ ἀπώλεια φανερὰ παρὰ τῷ κυρίῳ· † πῶς οὐχὶ καὶ
12 αἱ καρδίαι τῶν ἀνθρώπων; † Οὐκ ἀγαπήσει ἀπαίδευτος τοὺς ἐλέγχοντας αὐτόν,
13 † μετὰ δὲ σοφῶν οὐχ ὁμιλήσει. † Καρδίας εὐφραινομένης πρόσωπον θάλλει, † ἐν δὲ
14 λύπαις (β) οὔσης σκυθρωπάζει. † Καρδία ὀρθὴ ζητεῖ αἴσθησιν, † στόμα δὲ ἀ-
15 παιδεύτων γνώσεται κακά. † Πάντα τὸν χρόνον οἱ ὀφθαλμοὶ τῶν κακῶν προσδέχονται κακά, † οἱ δὲ ἀγαθοὶ ἡσυχάζουσι
16 διαπαντός. † (γ) Κρεῖσσον μικρὰ μερὶς μετὰ φόβου κυρίου, † ἢ θησαυροὶ μεγάλοι
17 μετὰ ἀφοβίας. † Κρείσσων (δ) ξενισμὸς μετὰ λαχάνων πρὸς φιλίαν καὶ χάριν, † ἢ πα-
18 ράθεσις μόσχων (ε) μετὰ ἔχθρας. † Ἀνὴρ θυμώδης παρασκευάζει μάχας· † μακρόθυμος δὲ καὶ τὴν μέλλουσαν καταπραΰνει. † μακρόθυμος ἀνὴρ κατασβέσει κρίσεις, † ὁ δὲ ἀ-
19 σεβὴς ἐγείρει μᾶλλον. † Ὁδοὶ ἀεργῶν ἐστρωμέναι ἀκάνθαις, † αἱ δὲ τῶν ἀνδρείων
20 τετριμμέναι. † Υἱὸς σοφὸς εὐφραίνει πατέρα, † υἱὸς δὲ ἄφρων μυκτηρίζει μητέρα
21 αὐτοῦ. † Ἀνοήτου τρίβοι ἐνδεεῖς φρενῶν, † ἀνὴρ δὲ φρόνιμος κατευθύνων πορεύε-
22 ται. † Ὑπερτίθενται λογισμοὺς οἱ μὴ τιμῶντες συνέδρια, † ἐν δὲ καρδίαις βου-
23 λευομένων μένει βουλή. † Οὐ μὴ ὑπακούσῃ ὁ κακὸς αὐτῇ, † οὐδὲ μὴ εἴπῃ καί-
24 ριόν τι καὶ καλὸν τῷ κοινῷ. † Ὁδοὶ ζωῆς διανοήματα συνετοῦ, † ἵνα ἐκκλίνας
25 ἐκ τοῦ ᾅδου σωθῇ. † Οἴκους ὑβριστῶν κατασπᾷ κύριος, † ἐστήρισε δὲ ὅριον χήρας.
26 † Βδέλυγμα κυρίῳ λογισμὸς ἄδικος,
27 † ἁγνῶν δὲ ῥήσεις σεμναί. † Ἐξόλλυσιν ἑαυτὸν ὁ δωρολήπτης, † ὁ δὲ μισῶν δώρων λήψεις σώζεται. † ἐλεημοσύναις καὶ πίστεσιν ἀποκαθαίρονται ἁμαρτίαι, † τῷ δὲ φόβῳ κυρίου ἐκκλίνει πᾶς ἀπὸ κακοῦ.
28 † Καρδίαι δικαίων μελετῶσι πίστεις, † στόμα δὲ ἀσεβῶν ἀποκρίνεται κακά. † δεκταὶ παρὰ κυρίῳ ὁδοὶ ἀνθρώπων δικαίων, † διὰ δὲ αὐτῶν καὶ οἱ ἐχθροὶ φίλοι γίνονται.

Domibus justorum fortitudo multa : fructus autem impiorum peribunt. 6
Labia sapientum (l) alligata sunt sensu : corda autem imprudentum non (m) secura. 7
Sacrificia impiorum abominatio Domino : vota autem (n) rectè ambulantium (o) accepta apud eum. 8
Abominatio Domino viæ impii : sequentes autem justitiam diligit. 9
Disciplina (p) innocentis cognoscitur à prætereuntibus : qui autem oderunt correptiones, (q) moriuntur turpiter. 10
Infernus, & perditio (r) manifesta apud Dominum : quomodò non & corda hominum? 11
Non diliget (s) indisciplinatus castigantes se : cum sapientibus autem non conversabitur. 12
(t) Cordis læti facies floret : in tristitiis autem positi mœsta est. 13
Cor rectum quærit sensum : os autem indisciplinatorum (u) cognoscet mala. 14
(x) Omni tempore oculi malorum suscipiunt mala : boni autem quiescunt semper. 15
Melius parva pars cum timore Domini, quàm thesauri magni sine timore. 16
Melior hospitalitas cum (y) oleribus ad amicitiam & gratiam, quàm (z) appositio vitulorum cum inimicitia. 17
Vir animosus (ω) parat rixas : longanimis autem & eam, quæ futura erat, mitigat. Longanimis vir extinguet judicia : impius autem suscitat magis. 18
Viæ (aa) otiosorum stratæ spinis : (bb) fortium verò tritæ. 19
Filius sapiens lætificat patrem : filius autem imprudens (cc) subsannat matrem suam. 20
(dd) Dementis semitæ, indigentes corde : vir autem prudens rectà tendens vadit. 21
(ee) Differunt cogitationes, qui non honorant consessus: (ff) in cordibus autem consultantium manet consilium. 22
Non obediet malus illi: neque dicet opportunum quid, & bonum communi. 23
Viæ vitæ, excogitationes intelligentis ; ut declinans ex inferno salvetur. 24
Domos contumeliosorum diruit Dominus : firmavit autem terminum viduæ. 25
Abominatio Domino, cogitatio injusta: (gg) purorum autem eloquia honesta. 26
(hh) Disperdit seipsum (ii) acceptor munerum : qui autem odit munerum acceptiones, salvatur. (kk) Eleemosynis, & fide purgantur peccata : timore autem Domini declinat omnis à malo. 27
Corda justorum meditantur fides: os autem impiorum respondet mala. Accepta apud Dominum viæ hominum justorum : per ipsos autem & inimici fiunt amici. 28

MS. A. (β) οὖσα (γ) Κρίσσων (δ) ξενισμὸς λαχάνων (ε) μετ' ἔχθρας.

תרגום TARGUM.

בְּבֵיתָא דְצַדִּיקָא סַגִּי חֵילָא וַעֲלַלְתְּהוֹן דְרַשִׁיעֵי תִתְעֲכַר׃ שִׂפְוָתֵיהּ דְחַכִּימֵי מוֹדְעִין 6
מַנְדְּעָא וְלִבְּהוֹן דְסַכְלֵי לָא כֵן׃ דִבְחֵיהוֹן דְרַשִׁיעֵי מְרַחַקְתֵּיהּ דֶאֱלָהָא וּבִצְלוֹתְהוֹן 7 8
דִתְרִיצֵי מִתְרְעֵי׃ מְרַחֵק אֱלָהָא אוֹרְחֵיהּ דְרַשִׁיעָא וּדְרָדֵף צִדְקְתָא נַתְרְחֵם׃ 9
מַרְדּוּתָא דְבִישָׁא מַטְעְיָא אוֹרְחֵיהּ וּמַן דְסָנֵי מַכְסְנוּתָא יְמוּת׃ שְׁיוֹל וְאוֹבְדָנָא קֳדָם 10 11
אֱלָהָא אַף לִבֵּי בַר נָשָׁא׃ לָא רָחֵם מְמִיקְנָא לְמַן דְמַכְסֵן לֵיהּ וּלְוַת חַכִּימֵי לָא אָזֵל׃ 12
לִבָּא חָדְיָא מַשְׁפִּיר אַפֵּי וּבְכֵיבָא דְלִבָּא רוּחָא מְמַכְּתָא׃ לִבָּא דְמִתְבַּיַּן בָּעֵי 13
יְדִיעֲתָא וּפוּמְהוֹן דְסַכְלֵי שַׁטְיוּתָא׃ כָּל יוֹמֵי דְמִסְכֵּנָא בִּישִׁין וּמַן דְטָב לִבֵּיהּ מַשְׁקְיָא 14 15
תְדִירָא׃ טָב קָלִיל בִּדְחַלְתֵּיהּ דֶאֱלָהָא מִן סִימָתָא רַבְרְבָתָא וְעָאתָא בְהֵן׃ 16
טָבָא שֵׁרוּתָא דְיַרְקָא וְרַחֲמוּתָא תַמָּן מִן תּוֹרֵי מְפַטְּמֵי בְּסַנְיְאֲתָא׃ גַּבְרָא חֶמְתָנָא 17 18
מְגָרֵי תִגְרָא וּנְגִיד רוּחָא מַרְעֵךְ חַרְיָה׃ אוֹרְחֵיהוֹן דְעַטְלֵי קַרְצוּבֵי וְכוּבֵי וְאוֹרְחָא 19
דִתְרִיצֵי שַׁפְיָא׃ בְּרָא חַכִּימָא יַחְדֵי לַאֲבוּי וּבְרָא סַכְלָא מְשִׁיט אִמֵּיהּ׃ שַׁטְיוּתָא 20
חֶדְוְתָא הִיא לַחֲסִיר לִבָּא וְגַבְרָא דְמִתְבַּיַּן תְּרִיצוּת מְהַלֵּךְ׃ בְּטוּלָא דְמַחְשְׁבָתָא הֵיךְ 21 22
דְלֵית רָזָא וּבְסוּגְעָא דְאִלֵּין דְמִתְמַלְּכִין עֵצְתָא תְקוּם׃ חֶדְוְתָא לְגַבְרָא בְּמִלְּתָא 23
דְפוּמֵיהּ וּמִלְּתָא בְעִדָּנָא סְנוּ טָבָא׃ אָרְחָא דְחַיֵּי מֵעַלְיָא לְסוּכְלְתָנָא דְנִסְטֵא 24
מִן שְׁיוֹל תַּחְתִּיתָא׃ בֵּיתָא דְגֵיוְתָנָא נַסְתַּר אֱלָהָא וְיַעְתַּד תְּחוּמָא דְאַרְמַלְתָּא׃ 25
מְרַחַקְתֵּיהּ דֶאֱלָהָא מַחְשַׁבְתָּא דְבִישְׁתָא וְדַכְיָן מִלֵּי בְסִימָתָא׃ מוֹבִיד בֵּיתֵיהּ מְכַנֵּשׁ 26 27
מָמוֹן דִשְׁקַר וּדְסָנֵי מוֹהֲבִיתָא דְמַגָּן יְחֵי׃ לִבָּא דְצַדִּיקָא רָנֵן בְּהֵימָנוּתָא וּפוּמְהוֹן 28
דְרַשִׁיעֵי מַבִּיעַ בִּישָׁתָא׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

In domo justi virtus maxima est, & fructus impiorum conturbabitur. 6
Labia sapientum notam faciunt scientiam, & cor stultorum non est ita. 7
Sacrificia stultorum abominatio est Dei, & in oratione rectorum placa- 8
bitur. Abominatur Deus viam impii ; & qui sequitur justitiam, diligetur. 9
Disciplina mali hominis errare facit viam suam ; & qui odit increpatio- 10
nem, morietur. Infernus & perditio coram Deo, quanto magis corda fi- 11
liorum hominis ! Non diligit derisor eum qui se corripit, & ad sapientes 12
non graditur. Cor gaudens exhilarat faciem, & in dolore cordis spiritus 13
dejicitur. Cor intelligentis quærit scientiam, & os stultorum stultitiam. 14
Omnes dies pauperis, mali sunt ; & cujus hilaris est animus, convivium 15
est continuum. Melius est parum in timore Dei, quàm thesauri *magni*, in 16
quibus est turbatio. Melius est prandium oleris ubi est charitas, quàm 17
boves pingues cum odio. Vir iracundiæ provocat rixas : & qui longani- 18
mis est, extinguit litem. *Via* pigrorum tribuli & spinæ ; & via rectorum 19
trita est. Filius sapiens lætificat patrem, & stultus homo contemnit ma- 20
trem suam. Stultitia gaudium est carenti corde, et vir prudens rectè 21
graditur. Dissipantur cogitationes ubi non est secretum ; & in multitu- 22
dine consiliariorum, consilium confirmatur. Gaudium est viro in verbo 23
oris sui, & verbum in tempore suo valde bonum est. Semita vitæ est sur- 24
sum intelligenti, ut declinet ab inferno inferiori. Domum superborum 25
demolietur Deus, et statuet terminum viduæ. Abominatio est Dei cogi- 26
tatio maligna, et puri sermones suaves sunt. Perdit domum suam, qui 27
congregat mammonam iniquitatis : et qui odit munus gratis, vivet. Cor 28
justi meditatur in fide, et os impiorum eructat malum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

6 * ܒܒܝܬܗ ܕܙܕܝܩܐ ܣܓܝ ܚܝܠܐ. ܘܥܠܠܬܗܘܢ ܕܥܘܠܐ ܢܐܒܕܢ. * ܣܦܘܬܐ ܕܚܟܝܡܐ
7 ܡܡܠܠܢ ܝܕܥܬܐ. ܘܠܒܘܬܐ ܕܣܟܠܐ ܠܐ ܬܪܝܨܢ. * ܕܒܚܐ ܕܥܘܠܐ ܡܣܠܝܐ ܠܡܪܝܐ. ܘܨܠܘܬܐ ܕܬܪܝܨܐ 8
9 ܪܥܝܐ ܠܗ. * ܐܘܪܚܐ ܕܥܘܠܐ ܡܣܠܝܐ ܠܡܪܝܐ. ܘܪܚܡ ܠܐܝܢܐ ܕܪܕܦ ܙܕܝܩܘܬܐ. * ܡܪܕܘܬܐ ܕܐܝܠܝܢ 10
ܕܠܐ ܝܕܥܝܢ ܥܘܠܐ. ܓܠܝܐ ܗܝ. ܘܣܢܝܢ ܕܡܟܣܢܘܬܐ ܢܡܘܬܘܢ. * ܫܝܘܠ ܘܐܒܕܢܐ 11
ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܐܢܘܢ. ܐܦ ܠܒܘܬܐ ܕܒܢܝܢܫܐ. * ܠܐ ܪܚܡ ܒܝܫܐ. ܠܡܢ ܕܡܟܣ ܠܗ. ܘܥܡ 12
ܚܟܝܡܐ ܠܐ ܡܗܠܟ. * ܠܒܐ ܚܕܝܐ ܡܫܦܪ ܦܓܪܐ. ܘܠܒܐ ܟܪܝܐ ܡܟܪܐ ܪܘܚܐ. 13
* ܠܒܐ ܕܟܐܢܐ ܒܥܐ ܝܕܥܬܐ. ܘܦܘܡܐ ܕܥܘܠܐ ܡܡܠܠ ܒܝܫܬܐ. * ܟܠܗܘܢ ܝܘܡܬܗ 14 15
ܕܡܣܟܢܐ. ܒܝܫܝܢ. ܘܡܟܝܟܐ ܫܠܝܢ ܒܟܠܙܒܢ. * ܛܒ ܠܡܕܚܠ ܩܠܝܠ ܠܡܪܝܐ: ܛܒ 16
ܡܢ ܣܝܡܬܐ ܪܘܪܒܬܐ ܕܥܘܠܐ. * ܛܒܐ ܗܝ ܫܪܘܬܐ ܕܝܪܩܐ ܘܚܘܒܐ ܕܫܡܐ: ܛܒ ܡܢ ܬܘܪܐ 17
ܡܦܛܡܐ ܒܣܢܐܬܐ. * ܓܒܪܐ ܚܡܬܢܐ ܡܓܪܓ ܚܪܝܢܐ. ܘܓܒܪܐ ܢܓܝܪ ܪܘܚܐ ܥܕ ܠܐ ܗܘܐ 18
ܡܕܥܟ ܠܗ. * ܐܘܪܚܬܗܘܢ ܕܚܒܢܢܐ ܡܠܝܢ ܟܘܒܐ. ܘܐܘܪܚܬܗܘܢ ܕܬܪܝܨܐ ܦܫܝܩܢ. * ܒܪܐ 19 20
ܚܟܝܡܐ ܡܚܕܐ ܠܐܒܘܗܝ. ܘܒܪܐ ܣܟܠܐ ܚܣܕܐ ܗܘ ܠܐܡܗ. * ܓܒܪܐ ܕܣܟܠ ܚܣܝܪ ܠܒܐ ܗܘ. 21
ܘܓܒܪܐ ܣܘܟܠܬܢܐ ܠܬܪܝܨܘܬܐ ܡܗܠܟ. * ܡܒܛܠܝܢ ܡܚܫܒܬܐ ܐܝܠܝܢ ܕܡܝܩܪܝܢ ܟܢܘܫܬܐ. 22
ܘܒܣܘܓܐܐ ܕܡܠܟܐ ܡܠܟܐ ܬܩܘܡ. * ܚܕܘܬܐ ܠܓܒܪܐ ܡܠܬܐ ܕܦܘܡܗ. ܘܡܡܠܠ 23
ܒܙܒܢܗ. ܫܦܝܪ ܠܗ. * ܐܘܪܚܐ ܕܚܝܐ ܡܣܩܬܐ ܗܝ ܠܣܘܟܠܬܢܐ: ܕܢܣܛܐ ܡܢ ܫܝܘܠ 24
ܬܚܬܝܬܐ. * ܒܝܬܐ ܕܫܒܗܪܢܐ ܥܩܪ ܡܪܝܐ. ܘܡܩܝܡ ܬܚܘܡܐ ܕܐܪܡܠܬܐ. * ܡܣܠܝܢ 25 26
ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܡܚܫܒܬܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܕܟܝܢ ܡܠܐ ܒܣܝܡܬܐ. * ܡܘܒܕ ܢܦܫܗ ܐܝܢܐ 27
ܕܡܩܒܠ ܫܘܚܕܐ. ܘܕܣܢܐ ܠܡܣܒ ܫܘܚܕܐ ܢܚܐ. * ܠܒܗ ܕܙܕܝܩܐ ܪܢܐ ܒܗܝܡܢܘܬܐ. 28
ܘܦܘܡܐ ܕܥܘܠܐ ܡܒܥ ܒܝܫܬܐ.

In domo juſti multiplicantur opes: & proventus impiorum peribunt. 6 Labia ſapientum 7 loquuntur ſcientiam: & corda ſtultorum non ſunt recta. Sacrificia impiorum abomi- 8 nabitur Dominus: at oratio juſtorum grata eſt ei. Viam impiorum execratur Dominus: 9 & diligit eum qui operatur juſtitiam. Diſci- 10 plina eorum qui non nôrunt iniquitatem, aperta eſt: & qui odio habent objurgationem, morientur. Infernus & perditio coram 11 Domino ſunt: & multò magis corda hominum. Non amat malignus corripientem ſe, 12 & cum ſapientibus non ambulat. Cor hila- 13 re exornat corpus: & cor triſte affligit ſpiritum. Cor juſtorum expetit ſcientiam: & os 14 iniquorum loquitur nequitias. Omnes dies 15 pauperis, mali ſunt: mites autem tranquilli ſunt omni tempore. Melius eſt parumper 16 timere Dominum, melius *inquam* theſauris ingentibus impiorum. Præſtantius eſt con- 17 vivium ex oleribus, & amor *boni* nominis: præſtantius tauris ſaginatis cum odio. Vir 18 iracundus excitat contentionem; at vir longanimis, antequam oriatur extinguit illam. Viæ pigrorum plenæ ſunt ſentibus; et viæ 19 rectorum, complanatæ. Filius ſapiens exhi- 20 larat patrem ſuum; et filius inſipiens opprobrium eſt matris ſuæ. Vir ſtultus expers eſt 21 cordis; et vir prudens rectè incedit. Diri- 22 munt ſuſpiciones qui venerantur concilium, et in multitudine conſiliariorum firmum erit. Gaudium viri, ſermo oris ſui; et loquenti 23 opportunè, bonum eſt. Via vitæ aſcenſus eſt 24 prudenti, ut deflectat ab inferno imo. Do- 25 mum ſuperborum extirpat Dominus; & terminum viduarum firmat. Abominandæ ſunt 26 coram Domino cogitationes pravæ; at pura ſunt verba jucunda. Perdit animam ſuam 27 qui recipit munus; & qui recuſat accipere donum, vivet. Cor juſti meditatur fidem; 28 et os iniquorum effutit mala.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

6 * في العدل المتكاثر قوة جزيلة * والمنافقون يجتاحون من الارض بجملة اصلهم * في منازل المقسطين
7 قوة جزيلة * وثمرات المنافقين تهلك * شفاه الحكماء مربوطة بالحس وقلوب الاغبياء ليست
8 9 مصونة * * ضحايا المنافقين رذالة عند الرب * وهو يحب الطالبين العدل * ادب ذوي الدعة
10 11 يعرفه المختارون * والماقتون التوبيخ يموتون ميتة مستقبحة * الجحيم والهلاك ظاهران عند الرب *
12 فكيف ولا تكون قلوب الناس ظاهرة عنده * الغير مؤدب لم يحب من يوبخه * ولا يخاطب
13 14 الحكماء * القلب المسرور ينمي بشاشة الوجه * واذا حصل في الغموم يقطبه * القلب المقوم
15 يبتغي الحس * وفم من ليسوا مؤدبين يعرف الاسواء * مدى الزمان كله اعين الطالحين تقبل
16 الاسواء * والصالحين كل حين يسكنون * نصيب صغير بمخافة الرب افضل من كنوز
17 كثيرة مع عدم مخافته * ضيافة ببقول بالصداقة والانعام افضل من تقديم عجول بمعاداة *
18 * الانسان الغضوب ينشي خصومات * والطويل الاناة يسكن العتيدة ان تكون * الانسان
19 المهمل يخمد الخصومات * والمنافق ينهضها * اكثر طرق الذين لا يعملون مفروشة بانواع
20 الشوك * ومناهج المستحكمين ممهدة * الابن الحكيم يسر اباه * والابن الجاهل يستهزئ بامه *
21 22 * سبل السفيه في اقفار الروايات * والرجل الحازم العقل يسلك مقوما * الذين لا يكرمون الجموع
23 يجورون افكارهم * وفي قلوب المشاورين تثبت المشورة * والطالح ما يطيعها * ولا يقول شيا جيدا ولا
24 خطرا في الراي الشامل * طرايق الحياة روايات الفقيه حقا * اذا جنح عن الهاوية يخلصه الرب *
25 26 * الرب يقتلع منازل المتعظمين وقد وطد تخم الارملة * الفكر الظالم رذالة عند الرب * والفاظ
27 الطاهرين شريفة * من ياخذ الهدايا يهلك ذاته * ومن يمقت اخذ الهدايا يخلص * الصدقات
28 والامانات تهذب من الخطايا ويمحقن اثارها * وبخشية الرب يجنح الانسان عن الشر * قلوب
المقسطين تتلوا وتهذ في صنوف الامانة * وفم المنافقين يجاوب بالاسواء * طرق الناس المقسطين
عند الرب * لان بها يصير الاعداء اصدقاء *

In juſtitia multa, fortitudo copioſa: iniqui autem evellentur è terra cum univerſa radice ſua. In domibus juſtorum robur multum: & fructus impiorum peribunt. 6 *Labia ſapientum ligata ſunt prudentiâ: & corda inſipientium non ſunt cuſtodita.* 7 *Victimæ impiorum ſunt abominatio apud Dominum: & ipſe diligit quærentes juſtitiam.* 8 9 *Diſciplinam manſueti nôrunt electi: & odientes correptionem obibunt obitu turpi.* 10 *Gehenna & interitus ſunt manifeſta apud Dominum: quomodo ergò non erunt etiam corda hominum manifeſta apud ipſum? Immorigeratus non* 11 *amat eum qui corripit ipſum, neque verſatur cum ſapientibus.* 12 *Cor lætum nutrit hilaritatem vultûs: cùm autem verſatur in mœroribus, triſtem reddit illum.* 13 *Cor rectum quærit prudentiam: & os eorum qui non ſunt morigerati, cognoſcit mala.* 14 *Toto temporis intervallo oculi improborum recipient mala: proborum autem omni momento quieſcunt.* 15 *Sors parva cum timore Domini, præſtantior eſt theſauris multis cum carentia timoris ejus.* 16 *Convivium cum oleribus cum charitate & gratiâ, præſtantius eſt oblatione vitulorum cum inimicitia.* 17 *Homo iracundus alit jurgia: & lònganimis ſedat imminentia. Vir patiens ſedat lites: & iniquus ſuſcitat eas.* 18 *Pleræque viæ eorum qui non operantur, ſunt ſtratæ generibus ſpinarum: viæ autem fortium planæ ſunt.* 19 *Filius ſapiens exhilarat patrem ſuum: et filius ſtultus deridet matrem ſuam.* 20 *Itinera ſtulti, in deſertis opinionum: & vir præditus judicio incedit rectâ.* 21 *Qui non honorant concilia, omittunt illorum cogitationes: & in cordibus conſiliariorum manebit conſilium; At injuſtus non obedit illi, nec dicit quicquam boni neque fauſti mente ſanâ.* 22 23 *Semitæ vitæ ſunt opiniones eruditi verè: cùm declinaverit ab inferno, liberabit eum Dominus.* 24 *Dominus eradicabit domos ſuperborum: & jam confirmavit terminos viduæ.* 25 *Cogitatio iniqua abominatio eſt apud Dominum: & eloquia mundorum, præclara.* 26 *Qui ſumit munera, perdit ſeipſum: & qui odit ſumptionem munerum, ſalvabitur.* 27 *Miſericordiæ & fidelitates corrigunt à peccatis, & exterminant veſtigia eorum: & per timorem Domini devitat homo malitiam.* *Corda juſtorum contemplantur & meditantur genera fidelitatis: & os iniquorum profert malignitates. Semitæ hominum juſtorum, apud Dominum: quia per ipſas inimici fiunt amici.* 28

מִשְׁלֵי : יו

.audiet justorum orationem & : impiis ab Dominus Longinquus
רָחוֹק יְהוָה מֵרְשָׁעִים וּתְפִלַּת צַדִּיקִים יִשְׁמָע׃ 29
Auris .os impinguabit bona *auditio* : cor lætificabit oculorum Lux
30 מְאוֹר־עֵינַיִם יְשַׂמַּח־לֵב שְׁמוּעָה טוֹבָה תְּדַשֶּׁן־עָצֶם׃ אֹזֶן 31
.commorabitur sapientum *interiori in* ; *vitarum* increpationem *audiens*
שֹׁמַעַת תּוֹכַחַת חַיִּים בְּקֶרֶב חֲכָמִים תָּלִין׃
possidens increpationem *audiens &* :suam animam *spernens eruditionem* Negligens
32 פּוֹרֵעַ מוּסָר מוֹאֵס נַפְשׁוֹ וְשׁוֹמֵעַ תּוֹכַחַת קוֹנֶה
.*modestia* gloriam ante & : sapientiæ eruditio Domini Timor .cor
33 לֵּב׃ יִרְאַת יְהוָה מוּסַר חָכְמָה וְלִפְנֵי כָבוֹד עֲנָוָה׃

CAP. XVI. יו

Omnes .linguæ responsio Domino à & : cordis *dispositiones* Hominis
1 לְאָדָם מַעַרְכֵי־לֵב וּמֵיְהוָה מַעֲנֵה לָשׁוֹן׃ כָּל־ 2
.Dominus spiritus *ponderans &* : suis oculis in mundæ viri viæ
דַּרְכֵי־אִישׁ זַךְ בְּעֵינָיו וְתֹכֵן רוּחוֹת יְהוָה׃
.tuæ cogitationes firmabuntur & : tua opera Dominum ad Volve
3 גֹּל אֶל־יְהוָה מַעֲשֶׂיךָ וְיִכֹּנוּ מַחְשְׁבֹתֶיךָ׃
diem ad impium etiam & : se propter Dominus est operatus Omnia
4 כֹּל פָּעַל יְהוָה לַמַּעֲנֵהוּ וְגַם־רָשָׁע לְיוֹם
manus : corde elatus omnis Domini Abominatio .malam
5 רָעָה׃ תּוֹעֲבַת יְהוָה כָּל־גְּבַהּ־לֵב יָד
:iniquitas *expiabitur* veritate & ,misericordia In .erit *innocens* non *manum ad*
6 לְיָד לֹא יִנָּקֶה׃ בְּחֶסֶד וֶאֱמֶת יְכֻפַּר עָוֹן
vias Dominum volendo In .malo à *recedere* Domini timore in &
7 וּבְיִרְאַת יְהוָה סוּר מֵרָע׃ בִּרְצוֹת יְהוָה דַּרְכֵי־
parum *Bonum* .eo cum *pacificabit* ejus inimicos Etiam ; viri
8 אִישׁ גַּם־אוֹיְבָיו יַשְׁלִם אִתּוֹ׃ טוֹב מְעַט
Cor .judicio absque *proventuum multitudine præ* ; justitia *in*
9 בִּצְדָקָה מֵרֹב תְּבוּאוֹת בְּלֹא מִשְׁפָּט׃ לֵב
.ejus gressum *parabit* Dominus & :suam viam cogitabit hominis
אָדָם יְחַשֵּׁב דַּרְכּוֹ וַיהוָה יָכִין צַעֲדוֹ׃
.ejus os *prævaricabitur* non judicio in : regis labiis *super* Divinatio
10 קֶסֶם עַל־שִׂפְתֵי־מֶלֶךְ בְּמִשְׁפָּט לֹא יִמְעַל־פִּיו׃
omnes ejus opus : Domino judicii bilances & , Statera
11 פֶּלֶס וּמֹאזְנֵי מִשְׁפָּט לַיהוָה מַעֲשֵׂהוּ כָּל־
quia : impietatem facere regum Abominatio .*marsupii lapides*
12 אַבְנֵי־כִיס׃ תּוֹעֲבַת מְלָכִים עֲשׂוֹת רֶשַׁע כִּי
labia regum Benevolentia .solium firmabitur justitia in
13 בִצְדָקָה יִכּוֹן כִּסֵּא׃ רְצוֹן מְלָכִים שִׂפְתֵי־
legati regis Ira .diliget recta loquentem & : *justitiæ*
14 צֶדֶק וְדֹבֵר יְשָׁרִים יֶאֱהָב׃ חֲמַת־מֶלֶךְ מַלְאֲכֵי־
regis *facierum luce In* .illam *expiabit* sapiens vir & : mortis
15 מָוֶת וְאִישׁ חָכָם יְכַפְּרֶנָּה׃ בְּאוֹר־פְּנֵי־מֶלֶךְ
Acquirere .pluviæ serotinæ nubes *ut* ejus benevolentia & : *vitæ*
16 חַיִּים וּרְצוֹנוֹ כְּעָב מַלְקוֹשׁ׃ קְנֹה־
intelligentiam acquirere & : *puro auro præ bonum* quàm sapientiam
חָכְמָה מַה־טּוֹב מֵחָרוּץ וּקְנוֹת בִּינָה
custodiens : malo à declinare rectorum via *Strata* .*argento præ electum*
17 נִבְחָר מִכָּסֶף׃ מְסִלַּת יְשָׁרִים סוּר מֵרָע שֹׁמֵר
.suam viam *servans* , suam animam
נַפְשׁוֹ נֹצֵר דַּרְכּוֹ׃ חצי
.spiritus elatio ruinam ante & : superbia contritionem Ante
18 לִפְנֵי־שֶׁבֶר גָּאוֹן וְלִפְנֵי כִשָּׁלוֹן גֹּבַהּ רוּחַ׃
cum *spolium* dividere *præ* ; *mansuetis* cum spiritu humiliari *Bonum*
19 טוֹב שְׁפַל־רוּחַ אֶת־עֲנָיִים מֵחַלֵּק שָׁלָל אֶת־
confidens & : bonum inveniet , *verbum super* Intelligens .superbis
20 גֵּאִים׃ מַשְׂכִּיל עַל־דָּבָר יִמְצָא־טוֹב וּבוֹטֵחַ
.*ejus beatitudines* , Domino in
בַּיהוָה אַשְׁרָיו׃

Versio VULG. LAT.

29 Longè est Dominus ab impiis: & orationes justorũ exaudiet. 30 Lux oculorum lætificat animã: 31 fama bona impinguat ossa. Auris, quæ audit increpationes vitæ, in medio sapientiũ commorabitur. 32 Qui abjicit disciplinam, despicit animam suam: qui autem acquiescit increpationibus, possessor est cordis. 33 Timor Domini, disciplina sapientiæ: & gloriam præcedit humilitas.

CAP. XVI.

1 Hominis est animam præparare: & Domini gubernare 2 linguam. Omnes viæ hominis patent oculis ejus: spirituum 3 ponderator est Dominus. Revela Domino opera tua, & di4rigentur cogitationes tuæ. Universa propter semetipsum operatus est Dominus; impium 5 quoque ad diem malum. Abominatio Domini est omnis arrogans: etiam si manus ad manum fuerit, non est innocens. Initium viæ bonæ, facere justitiam: accepta est autem apud Deum magis, quàm immolare 6 hostias. Misericordiâ & veritate redimitur iniquitas: & in timore Domini declinatur à 7 malo. Cùm placuerint Domino viæ hominis, inimicos quoque ejus convertet ad pacem. 8 Melius est parum cum justitia, quàm multi fructus cum iniqui9tate. Cor hominis disponit viam suam: sed Domini est di10rigere gressus ejus. Divinatio in labiis regis, in judicio non 11 errabit os ejus. Pondus & statera judicia Domini sunt: & opera ejus omnes lapides saccu12li. Abominabiles regi qui agunt impié: quoniam justitiâ 13 firmatur solium. Voluntas regum labia justa: qui recta lo14quitur, diligetur. Indignatio regis, nuntii mortis: & vir sa15piens placabit eam. In hilaritate vultûs regis, vita: & clementia ejus quasi imber sero16tinus. Posside sapientiam, quia auro melior est: & acquire prudentiam, quia preti17osior est argento. Semita justorum declinat mala: custos animæ suæ servat viam suam. 18 Contritionem præcedit superbia: & ante ruinam exaltatur 19 spiritus. Melius est humiliari cum mitibus, quàm dividere 20 spolia cum superbis. Eruditus in verbo reperiet bona: & qui sperat in Domino, beatus est.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

29 † Μακρὰν ἀπέχει ὁ θεὸς ἀπὸ ἀσεβῶν, † εὐχαῖς δὲ δικαίων ἐπακούει. † κρείσσων ὀλίγη λῆψις μετὰ δικαιοσύνης, † ἢ πολλὰ γεννήματα μετὰ ἀδικίας.

ΚΕΦ. ιϛ'.

† ΚΑρδία ἀνδρὸς λογιζέσθω δίκαια, † ἵνα ὑπὸ τοῦ θεοῦ διορθωθῇ τὰ διαβήματα 30 αὐτοῦ. † Θεωρῶν ὀφθαλμὸς καλὰ εὐφραίνει καρδίαν, † φήμη δὲ ἀγαθὴ πιαίνει ὀστᾶ. 32 † Ὃς ἀπωθεῖται παιδείαν, μισεῖ ἑαυτόν, † ὁ δὲ τηρῶν ἐλέγχους, ἀγαπᾷ ψυχὴν αὐτοῦ. 33 † Φόβος κυρίου παιδεία καὶ σοφία, † καὶ ἀρχὴ (α) δόξης ἀποκριθήσεται αὐτῇ. † Πάντα τὰ ἔργα τοῦ ταπεινοῦ φανερὰ παρὰ τῷ θεῷ, † οἱ δὲ ἀσεβεῖς ἐν ἡμέρᾳ κακῇ ὀλοῦνται. 5 † Ἀκάθαρτος παρὰ (*) θεῷ πᾶς ὑψηλοκάρδιος, † χειρὶ δὲ χεῖρας ἐμβαλὼν ἀδίκως οὐκ (β) ἀθωωθήσεται. † ἀρχὴ ὁδοῦ ἀγαθῆς τὸ ποιεῖν τὰ δίκαια, † δεκτὰ δὲ παρὰ θεῷ μᾶλλον ἢ θύειν θυσίας. † ὁ ζητῶν τὸν κύριον εὑρήσει γνῶσιν μετὰ δικαιοσύνης, † οἱ δὲ ὀρθῶς ζητοῦντες αὐτὸν, εὑρήσουσιν εἰρήνην. † Πάντα τὰ ἔργα (γ) τοῦ κυρίου μετὰ δικαιοσύνης, † φυλάσσεται δὲ ὁ 10 ἀσεβὴς εἰς ἡμέραν κακήν. † Μαντεῖον ἐπὶ χείλεσι βασιλέως, † ἐν δὲ κρίσει οὐ μὴ 11 πλανηθῇ τὸ στόμα αὐτοῦ. † Ῥοπὴ ζυγοῦ δικαιοσύνη (δ) παρὰ κυρίῳ, † τὰ δὲ ἔργα αὐ12τοῦ στάθμια δίκαια. † Βδέλυγμα βασιλεῖ ὁ ποιῶν κακά, † μετὰ γὰρ δικαιοσύνης ἑτοι13μάζεται θρόνος ἀρχῆς. † Δεκτὰ βασιλεῖ χείλη δίκαια, † λόγους δὲ ὀρθοὺς ἀγαπᾷ. 14 † Θυμὸς βασιλέως ἄγγελος θανάτου, † ἀνὴρ 15 δὲ σοφὸς ἐξιλάσεται αὐτόν. † Ἐν φωτὶ ζωῆς υἱὸς βασιλέως, † οἱ δὲ προσδεκτοὶ 16 αὐτῷ ὥσπερ νέφος ὄψιμον. † Νοσσιαὶ σοφίας αἱρετώτεραι (ε) χρυσίου, † νοσσιαὶ δὲ φρονήσεως αἱρετώτεραι ὑπὲρ ἀργύριον. 17 † Τρίβοι ζωῆς ἐκκλίνουσιν ἀπὸ κακῶν, † μῆκος δὲ βίου ὁδοὶ δικαιοσύνης. † ὁ δεχόμενος παιδείαν ἐν ἀγαθοῖς ἔσται, † ὁ δὲ φυλάσσων ἐλέγχους σοφισθήσεται. † ὃς φυλάσσει τὰς ἑαυτοῦ ὁδοὺς, τηρεῖ τὴν ἑαυτοῦ ψυχήν. † ἀγαπῶν δὲ ζωὴν αὐτοῦ, φείσεται στό18ματος αὐτοῦ. † Πρὸ συντριβῆς ἡγεῖται ὕβρις, † πρὸ δὲ πτώματος κακοφροσύνη. 19 † Κρείσσων (ζ) πραΰθυμος μετὰ ταπεινώσεως, † ἢ ὃς διαιρεῖται σκῦλα (η) μετὰ ὑβρι20στῶν. † Συνετὸς ἐν πράγμασιν εὑρετὴς ἀγαθῶν, † πεποιθὼς δὲ (θ) ἐπὶ θεῷ μακάριος.

Longè abest Deus ab impiis: preces autem justorum exaudiet. Melior parva acceptio cum justitia, quàm multa genimina cum (ll) injustitia. 29

CAP. XVI.

Cor viri cogitet justa, (a) ut à Deo dirigantur gressus ejus. (b) Spectans oculus pulchra lætificat cor: fama autem bona (c) impinguat ossa. 30 *Qui expellit disciplinam, odit seipsum: qui autem servat correptiones, diligit animam suam.* 32 *Timor Domini disciplina, & sapientia: (d) & principium gloriæ respondebit ei.* 33 *(e) Omnia opera humilis manifesta apud Deum: impii autem in die mala peribunt. Immund* apud Deum omnis sublimis corde: manu autem manus (f) inferens injustè, non erit innocens.* 5 *(g) Initium viæ bonæ facere justa: accepta autem sunt apud Deum magis, quàm immolare hostias. Qui quærit Dominum, inveniet scientiam cum justitia: & qui rectè quærunt eum, invenient pacem. Omnia opera Domini cum justitia, servatur autem impius in diem malam. Divinatio in labiis regis: in judicio autem non (h) errabit os ejus.* 10 *(i) Momentum stateræ justitia apud Dominum: opera autem ejus (k) pondera justa.* 11 *Abominatio regi is, qui facit mala: nam (l) cum justitia paratur solium principatûs.* 12 *(m) Accepta regi labia justa: sermones autem rectos diligit.* 13 *Furor regis, nuntius mortis: vir autem sapiens placabit eum.* 14 *In lumine (n) vitæ filius regis: (o) qui autem valdè accepti sunt ei, tanquàm nubilum serotinum.* 15 *Nidi sapientiæ magis eligendi auro: & nidi prudentiæ sunt magis eligendi super argentum.* 16 *Semitæ vitæ declinant à malis: longitudo autem vitæ, viæ justitiæ. Qui suscipit disciplinam, in bonis erit: qui autem custodit correptiones, sapiens fiet. (p) Qui custodit vias suas, servat suam animam: & qui diligit vitam (q) suam, parcet ori suo.* 17 *(r) Ante contritionem præcedit contumelia: & ante ruinam mala cogitatio.* 18 *Melior mansuetus cum humiliatione, quàm qui dividit spolia cum (s) contumeliosis.* 19 *Intelligens in negotiis, inventor bonorum: & qui fidit in Deo, beatissimus.* 20

MS.A. (α) δόξης αὐτοῦ ἀποκριθήσεται αὐτῷ. † προσπορεύεται * ταπεινὸς δόξα. Πάντα τὰ ἔργα (*) τῷ θεῷ (β) ἀθωωθήσεται. (γ) κυρίου (δ) παρὰ κυρίου, (ε) χρυσίῳ, (ζ) πρόθυμος (η) μετὰ ὕβρεως. (θ) ἐπὶ κυρίῳ

תרגום TARGUM.

רחיק הוא אלהא מרשיעי וצלותהון דצדיקי ישמע : נהורא דעיני מחדי לבא שומעתא 29
30 טבא מדהנא גרמא : אודנא דשמעא מכסנותא דחיי בינת דחכימי תבות : מריש 31
32 מרדותא מסלי נפשיה ודשמע מכסנותא דחיי קני חוכמתא : דחלתיה דיי מרדותא
33 דחוכמתא ומן דמתיקר יהוי ענון :
יו
1 מן בר נש תרעיתא דלבא ומן יי ממללא דלישנא : כלהון ארחתיה דגברא דכין אנון
2 בעינוי ואלהא מתקן ארחתיה : גלי לאלהא עובדך ומתקנן מחשבתך : כלהון עובדין 3
4 דאלהא לאלין דמשתמעין ליה ורשיעא ליומא בישא : מרחקתיה דאלהא כל דרם
5 בלביה מן בישתא לא נדכי : בטיבותא וקושטא מתכפר סורחנא ודחלתיה דאלהא 6
7 מסטי מן בישתא : כד אתרעי אלהא בארחתיה דגברא ואף לבעלי דבבוי משלים ליה : 8
9 טב קליל בצדקתא מן סגיעא דעללתא דלא בדינא : לביה דבר נשא מחשב ארחתיה
10 ואלהא מתקן הלכתיה : קסמא על ספותיה דמלכא ובדינא לא נדגול פומיה : רגיא 11
12 ומסחא דתריצותא מן קדם אלהא ועובדוי כולהון מתקלי דקושטא : מרחקתיה
13 דמלכין דעבדין רשעא מטול דבצדקותא תקין כורסיא : רעותיה דמלכא ספותא
14 דצדקתא ומלתא דתריצי רחם : חמתיה דמלכא מלאכי דמותא אנון וגברא חכימא
15 נדעכניה : בנהורא דפרצופיה דמלכא חיי וצביוניה היך עננא בברירותא : דקני 16
17 חכמתא טבא ליה מן דהבא סנינא ודקני ביונא טב מן סניא נביא : שבילא דתריצי
18 מסטי מן בישתא ודמזהר נפשיה נטר ארחתיה : קדם תברא גיותנותא וקדם תקלא רמת
19 רוחא : טב הוא שפל רוח וענוא מן הוא דמפליג עדיתא עם גיותני : דמסתכל במלתא 20
ישכיח טבתא ודמסבר באלהא טובוהי :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Longè est Deus ab impiis, & orationem justorum exaudiet. Lux oculo- 29 rum lætificat cor: fama bona impinguat ossa. Auris quæ audit increpatio- 30 nem vitæ, in medio sapientum commorabitur. Qui deserit disciplinam, 31 aversatur animam suam: & qui audit increpationem vitæ, possidet sa- 32 pientiam. Timor Domini disciplina sapientiæ: & qui gloriosus est, sit 33 humilis.

CAP. XVI.

AB homine est consilium cordis, & à Domino sermo linguæ. Omnes 1 viæ viri mundæ sunt in oculis ejus, & Deus dirigit vias ejus. Revela 2 Deo opera tua, & dirigentur cogitationes tuæ. Omnia opera Dei sunt 3 pro his qui obediunt ei, & impius servatur in diem malum. Abominatio 4 Dei est omnis elatus corde: à malo non mundabitur. In benignitate & 5 veritate expiatur iniquitas: & timor Dei [*est*] *avertere* à malo. Quan- 6 do vult Deus viam viri, inimicos quoque ejus pacificos reddit ei. Melius 7 est parum in justitia, quàm multi fructus absque judicio. Cor filii hominis 8 cogitat viam suam, & Deus dirigit gressum ejus. Divinatio in labiis re- 9 gis, & in judicio non mentitur os ejus. Pondus & statera recta à facie 10 Dei est, & opera ejus omnia pondera veritatis. Abominatio sunt regibus 11 ii qui operantur iniquitatem, quoniam in justitia dirigitur solium. Vo- 12 luntas regis labia justitiæ, & verbum rectorum diligit. Indignatio regis 13 angeli mortis sunt, & vir sapiens restinguet eam. In luce vultus regis est 14 vita, & voluntas ejus quasi nubes in serenitate. Qui possidet sapientiam, 15 melior est ei auro conflato; & qui possidet prudentiam melior est argento 16 lecto. Semita rectorum est declinare à malo; & qui cavet animæ suæ, 17 servat viam suam. Ante interitum venit superbia, & ante ruinam eleva- 18 tur spiritus. Melior est humilis spiritu & mansuetus, quàm ille qui divi- 19 dit spolia cum superbis. Qui contemplatur in verbo, inveniet bona; & 20 qui sperat in Deo, beatus est.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

29 * ܪܚܝܩ ܗܘ ܡܪܝܐ ܡܢ ܥܘܠܐ. ܘܨܠܘܬܐ ܕܙܕܝܩܐ ܫܡܥ. * ܢܘܗܪܐ ܕܥܝܢܐ. ܡܚܕܐ ܠܒܐ.
30 ܘܠܒܐ ܛܒܐ. ܡܫܡܢ ܓܪܡܐ. * ܐܕܢܐ ܕܫܡܥܐ ܡܟܣܢܘܬܐ ܕܚܝܐ. ܒܝܢܝ ܚܟܝܡܐ ܬܒܘܬ.
31 * ܕܡܣܠܐ ܡܪܕܘܬܐ. ܤܢܐ ܢܦܫܗ. ܘܕܫܡܥ ܡܟܣܢܘܬܐ. ܩܢܐ ܚܟܡܬܐ. * ܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ
32 33 ܡܪܕܘܬܐ ܗܝ ܕܚܝܐ. ܘܫܘܒܚܗ ܕܡܟܝܟܐ ܐܙܠ ܩܕܡܘܗܝ.
* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܘ *

1 * ܡܢ ܒܪܢܫܐ ܬܪܥܝܬܐ ܕܠܒܐ. ܘܡܢ ܡܪܝܐ ܡܡܠܠܐ ܕܠܫܢܐ. * ܟܠܗܝܢ ܐܘܪܚܬܗ ܕܓܒܪܐ.
2 ܕܟܝܢ ܐܝܟ ܒܥܝܢܝ ܢܦܫܗ. ܘܡܪܝܐ ܡܬܩܢ ܐܘܪܚܬܗ. * ܓܠܝ ܠܡܪܝܐ ܥܒܕܝܟ. ܘܢܬܩܢ
3 ܡܚܫܒܬܟ. * ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܠܐܝܠܝܢ ܕܡܫܬܡܥܝܢ ܠܗ. ܘܥܘܠܐ ܢܬܢܛܪ
4 ܠܝܘܡܐ ܒܝܫܐ. * ܛܡܐ ܗܘ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܟܠ ܕܪܡ ܒܠܒܗ. ܘܕܡܘܫܛ ܐܝܕܗ ܥܠ ܚܒܪܗ.
5 ܠܐ ܢܬܚܤܐ ܡܢ ܒܝܫܬܐ. * ܒܛܝܒܘܬܐ ܘܒܩܘܫܬܐ. ܡܫܬܒܩܝܢ ܚܛܗܐ. ܘܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ
6 ܡܤܛܝܐ ܡܢ ܒܝܫܬܐ. * ܒܨܒܝܢܗ ܕܡܪܝܐ ܐܘܪܚܬܗ ܕܓܒܪܐ. ܐܦ ܠܒܥܠܕܒܒܘܗܝ
7 ܢܦܪܘܥ. * ܛܒ ܗܘ ܩܠܝܠ ܒܙܕܝܩܘܬܐ: ܡܢ ܣܓܝܐܘܬܐ ܕܥܠܠܬܐ ܕܠܐ ܕܝܢܐ. * ܠܒܗ ܕܒܪܢܫܐ
8 9 ܡܬܚܫܒ ܐܘܪܚܬܗ. ܘܡܪܝܐ ܡܬܩܢ ܗܠܟܬܗ. * ܩܘܤܡܐ ܥܠ ܤܦܘܬܗ ܕܡܠܟܐ. ܘܒܕܝܢܐ ܠܐ
10 ܢܛܥܐ ܦܘܡܗ. * ܒܡܬܩܠܐ ܕܡܤܐܬܐ ܕܝܢܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܥܒܕܘܗܝ ܟܠܗܘܢ. ܡܬܩܠܐ ܕܩܘܫܬܐ.
11 * ܡܣܠܝܢ ܐܢܘܢ ܡܠܟܐ ܕܥܒܕܝܢ ܥܘܠܐ. ܡܛܠ ܕܒܙܕܝܩܘܬܐ ܗܘ ܡܬܩܢ ܟܘܪܤܝܐ. * ܘܨܒܝܢܗ
12 13 ܕܡܠܟܐ. ܤܦܘܬܗ ܕܙܕܝܩܐ. ܘܡܠܬܐ ܕܬܪܝܨܐ ܪܚܡ. * ܚܡܬܗ ܕܡܠܟܐ. ܡܠܐܟܐ ܐܢܘܢ ܕܡܘܬܐ.
14 ܘܓܒܪܐ ܚܟܝܡܐ ܢܕܥܟܝܘܗ. * ܒܢܘܗܪܐ ܕܦܪܨܘܦܗ ܕܡܠܟܐ. ܚܝܐ. ܘܪܚܡܬܗ. ܐܝܟ ܥܢܢܐ
15 ܕܥܪܘܒܬܐ. * ܕܩܢܐ ܚܟܡܬܐ. ܛܒܐ ܗܝ ܠܗ ܡܢ ܕܗܒܐ. ܘܕܩܢܐ ܣܘܟܠܐ. ܡܝܬܪ ܗܘ ܠܗ ܡܢ
16 ܤܐܡܐ. * ܫܒܝܠܐ ܕܬܪܝܨܐ ܡܤܛܝܐ ܡܢ ܒܝܫܬܐ. ܘܕܙܗܝܪ ܒܢܦܫܗ. ܢܛܪ ܐܘܪܚܗ. * ܩܕܡ ܬܒܪܐ.
17 18 ܨܥܪܐ. ܘܩܕܡ ܟܘܪܗܢܐ ܪܘܡܐ ܕܪܘܚܐ. * ܛܒ ܗܘ ܡܟܝܟ ܪܘܚܐ ܘܡܟܝܟ ܥܝܢܐ. ܡܢ ܗܘ ܕܡܦܠܓ
19 ܒܙܬܐ ܥܡ ܓܢܒܪܐ. * ܕܡܤܬܟܠ ܡܠܬܐ. ܡܫܟܚ ܛܒܬܐ. ܘܕܬܟܝܠ ܥܠ ܡܪܝܐ ܛܘܒܘܗܝ.
20

Procul abeſt Dominus ab impiis : & orationem juſtorum exaudit. 29 Lux oculorum delectat 30 cor : & cor bonum impinguat oſſa. Auris 31 quæ audit increpationem vitæ, inter ſapientes commorabitur. Qui deſpicit objurgationem, 32 odit animam ſuam : qui autem acquieſcit diſciplinæ, poſſidebit ſapientiam. Timor 33 Domini, doctrina eſt vitæ : & gloria humilis præcedit eum.

CAP. XVI.

AB homine cogitatio cordis, & à Domino 1 ſermo linguæ. Omnes viæ viri mundæ ſunt 2 in oculis ſuis: & Dominus diſponit vias ejus. Revela Domino opera tua, & diſponet cogi- 3 tationes tuas. Univerſa opera Domini ſunt 4 propter eos qui obediunt illi : & impius ſervatur ad diem malum. Immundus eſt coram 5 Domino omnis elatus corde : & qui extendit manum ſuam contra ſocium ſuum, non expiabitur à malo. Per bonitatem & juſtitiam re- 6 mittitur iniquitas: et timor Domini declinare facit à malo. In beneplacito Domini, viæ viri, 7 et inimicis quoque ſuis rependet. Melius eſt 8 parum cum juſtitia, quàm copia frugum abſq; judicio. Cor hominis cogitat vias ſuas : et 9 Dominus diſponit greſſus ejus. Divinatio ſu- 10 per labia regis, et in judicio non errabit os ejus. In pondere ſtateræ, judicium Domini, 11 et opera ejus omnia, pondera ſunt juſtitiæ. Execrabiles ſunt reges qui committunt ini- 12 quitatem, juſtitiâ enim firmatur ſolium. Vo- 13 luntas regis, labia juſti, et verbum rectorum diligit. Ira regis, nuntii ſunt mortis, vir au- 14 tem ſapiens extinguet eam. In ſplendore vul- 15 tûs regis, vita, et gratia illius tanquam nubes ſerotina. Poſſidenti ſapientiam, melior eſt ei 16 quàm aurum, et poſſidenti intelligentiam, præſtantior eſt ei quàm argentum. Semita 17 rectorum vitare facit malum, et qui cautus eſt in anima ſua, cuſtodit viam ſuam. Ante 18 fractionem, ignominia, et ante morbum, elatio ſpiritûs. Melior eſt humilis ſpiritu et hu- 19 milis oculis, eo qui partitur ſpolia cũ potentibus. Qui percipit verbum, reperiet bona, 20 et qui fretus eſt Domino, beatus.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

29 * الله يبتعد بعد البعد من المنافقين * ويستجيب صلوات الصديقين * كسب قليل بعدل
30 افضل من غلات كثيرة بظلم * قلب الانسان فليهذ روايات مقسطة * حتى يقوم الله خطواته *
31 العين اذا ابصرت بخصات جيدة تسر القلب * والبشارة الصالحة تدسم الاعظام * من يطرح
32 الادب يمقت نفسه * ومن يحفظ التوبيخات يحب نفسه * خشية الرب ادب وحكمة * ومبدأ الشرف
33 يجاوبها * والمجد يسلك قدام المتواضعين *

الفصل السادس عشر *

1 * اعمال المتواضع كلها طاهرة امام الله * والمنافقون يهلكون في يوم سوء ** * كل مستعلي
5 القلب نجس عند الله * من يطرح يدا في يد ظالم لن يتبرأ الطايلة * مبدأ الطريق الصالح
6 افتعال المعدلات * وهي مقبولة عند الله اكثر من تضحية الذبايح * من يلتمس الرب يجد
7 المعرفة مع العدل * الذين يبتغونه ابتغاء مستويا يجدون السلامة * اعمال الرب كلها بعدل *
8 9 والمنافق يخبا ليوم شرير * معرفة الخاطر في شفتي الملك * فما يضل فمه في القضاء * رجحان
10 11 الميزان عدل عند الرب * واعماله مثاقيل عدله * من يعمل الاسواء مرذول عند الرب * لان
12 كرسي رياسته مسوم بالعدل * الشفاه المقسطة عند الملك * فهو يحب الاقوال القويمة *
13 * غضب الملك رسول الموت * والانسان الحكيم يستعطفه * ابن الملك في نور الحياة *
14 15 والمقبلون عنده كسحابة مسايية * فراخ الحكمة عالية مأثورة اكثر من الذهب * فراخ
16 الفطنة مأثورة رفيعة اكثر من الفضة * سبل الحياة تستميل من الاسواء * وطرق العدل
17 تفيد طول العمر من يقبل ادبا سيكون في الخيرات * ومن يحفظ التوبيخات سيحكم *
من يحفظ طرقه يصون نفسه * ومن يحب حياته يشفق على فمه * التعظم يتقدم قبل التهشم
18 وسوء التمييز يسقط قبل السقوط * الوديع الغضب بتواضعه افضل من الذي يوزع الغنايم
19 بتعظم * الفقيه في الامور واجد الصالحات * والمتوكل على الرب مغبوط *
20

Deus recedit diſtantia diſtantiarum ab impiis, & exaudit orationes proborum. 29 *Lucrum parvum cum juſtitia, præſtantius* 30 *eſt frugibus multis cum iniquitate. Cor hominis cogitet cogitationes juſtas, ut dirigat Deus greſſus ejus. Oculus, cùm in-* 31 *tuetur inſpectiones bonas, lætificat cor : & nuntium bonum impinguat oſſa. Qui* 32 *rejicit diſciplinam, odit animam ſuam : & qui ſervat correptiones, amat animam ſuam. Timor Domini, diſciplina ac ſapi-* 33 *entia : & initium gloriæ reſpondebit ei : & honor incedet ante humiles.*

CAP. XVI.

OPera humilis omnia, munda ſunt coram Deo : et ſceleſti peribunt in die mala. 1 *Omnis elatus corde, immundus eſt apud* 5 *Deum. Qui injecerit manum in manum tyranni, non effugiet poteſtatem. Initium* 6 *viæ bonæ, operatio æquitatum : ſuntque acceptæ apud Deum pluſquàm mactatio victimarum. Qui quærit Dominum, in-* 7 *veniet ſcientiam cum æquitate. Qui quæ-* 8 *runt eum inquiſitione rectâ, invenient ſalutem. Opera Domini cuncta, cum juſti-* 9 *tia : impius ſervatur ad diem malum. Cognitio intentionis, in labiis regis : neque* 10 *errabit os ejus in judicio. Exuberantia* 11 *ſtateræ, juſtitia eſt apud Dominum : & opera ejus, pondera juſtitiæ ipſius. Qui* 12 *committit ſcelera, execrabilis eſt apud Dominum : quia ſolium principatûs ejus eſt firmatum in æquitate. Labia juſta, a-* 13 *pud regem : nam ipſe diligit ſermones rectos. Ira regis nuntius eſt mortis : &* 14 *homo ſapiens devitabit eam. Filius re-* 15 *gis, in ſplendore vitæ : & accepti apud illum, ſunt veluti nubes veſpertina. Ger-* 16 *mina ſapientiæ, excelſa, electa magis quàm aurum : germina prudentiæ, electa, ſublimia plus quàm argentum. Semitæ vitæ* 17 *declinant à nequitiis : & viæ æquitatis important longitudinem ætatis. Qui recipit diſciplinam, erit in bonis : & qui cuſtodit correptiones, ſapiens fit. Qui obſervat vias ſuas, ſervat animam ſuam : & qui amat vitam ſuam, parcit ori ſuo. Superbia præcedit confractionem : & ma-* 18 *lè conſiderans corruet ante ruinam. Qui* 19 *mitis eſt in ira, in humilitate ſua præſtantior eſt eo qui dividit ſpolia cum ſuperbia. Prudens in negotiis, inveniet bo-* 20 *na : & confidens in Domino, fœlix.*

מִשְׁלֵי : יז

addet labiorum dulcedo & : intelligens vocabitur corde Sapienti
21 לַחֲכַם־לֵב יִקָּרֵא נָבוֹן וּמֶתֶק שְׂפָתַיִם יֹסִיף
ſtultorum eruditio & : ea præditi intelligentia vitarum Vena .doctrinam
22 לֶקַח׃ מְקוֹר חַיִּים שֵׂכֶל בְּעָלָיו וּמוּסַר אֱוִלִים
ſuis labiis ſuper & ; ſuum os prudens reddet ſapientis Cor .ſtultitia
23 אִוֶּלֶת׃ לֵב חָכָם יַשְׂכִּיל פִּיהוּ וְעַל־שְׂפָתָיו
dulcis : jucunditatis eloquia mellis Favus .doctrinam addet
24 יֹסִיף לֶקַח׃ צוּף־דְּבַשׁ אִמְרֵי־נֹעַם מָתוֹק
: viri facies ad recta via Eſt .oſſi medela & , animæ
25 לַנֶּפֶשׁ וּמַרְפֵּא לָעָצֶם׃ יֵשׁ דֶּרֶךְ יָשָׁר לִפְנֵי־אִישׁ
laboravit laborantis Anima .mortis viæ ejus noviſſimum &
26 וְאַחֲרִיתָהּ דַּרְכֵי־מָוֶת׃ נֶפֶשׁ עָמֵל עָמְלָה
: malum fodiens Belijahal Vir .ſuum os eum ſuper ſe inflexit quia ; ſibi
27 לּוֹ כִּי־אָכַף עָלָיו פִּיהוּ׃ אִישׁ בְּלִיַּעַל כֹּרֶה רָעָה
mittet perverſitatum Vir .ardens ignis ut ſuis labiis ſuper &
28 וְעַל־שְׂפָתָיו כְּאֵשׁ צָרָבֶת׃ אִישׁ תַּהְפֻּכוֹת יְשַׁלַּח
ſeducet violentiæ Vir .ducem dividens ſuſurrator & : contentionem
29 מָדוֹן וְנִרְגָּן מַפְרִיד אַלּוּף׃ אִישׁ חָמָס יְפַתֶּה
Claudens .bona non via in eum ambulare faciet & : ſuum ſocium
30 רֵעֵהוּ וְהוֹלִיכוֹ בְּדֶרֶךְ לֹא־טוֹב׃ עֹצֶה
perfecit ſuis labiis annuens : perverſitates cogitandum ad ſuos oculos
עֵינָיו לַחְשֹׁב תַּהְפֻּכוֹת קֹרֵץ שְׂפָתָיו כִּלָּה
.invenietur juſtitiæ via in : canicies gloriæ Diadema .malum
31 רָעָה׃ עֲטֶרֶת תִּפְאֶרֶת שֵׂיבָה בְּדֶרֶךְ צְדָקָה תִּמָּצֵא׃
capiente præ ,ſuum ſpiritum in dominans & ; forti præ naribus longus Bonus
32 טוֹב אֶרֶךְ אַפַּיִם מִגִּבּוֹר וּמֹשֵׁל בְּרוּחוֹ מִלֹּכֵד
omne Domino à & : ſors projicitur ſinum In .urbem
33 עִיר׃ בַּחֵיק יוּטַל אֶת־הַגּוֹרָל וּמֵיְהוָה כָּל־
.ejus judicium
מִשְׁפָּטוֹ׃

CAP. XVII. יז

plena domo præ ; ea in tranquillitas & , ſicca buccella Bona
1 טוֹב פַּת חֲרֵבָה וְשַׁלְוָה־בָהּ מִבַּיִת מָלֵא
filium in dominabitur intelligens Servus .jurgii victimis
2 זִבְחֵי־רִיב׃ עֶבֶד־מַשְׂכִּיל יִמְשֹׁל בְּבֵן
Conflatorium .hæreditatem dividet fratrum medio in & ; confundentem
3 מֵבִישׁ וּבְתוֹךְ אַחִים יַחֲלֹק נַחֲלָה׃ מַצְרֵף
Malus .Dominus corda probans & ; auro caminus & , argento
4 לַכֶּסֶף וְכוּר לַזָּהָב וּבֹחֵן לִבּוֹת יְהוָה׃ מֵרַע
lingua ſuper auſcultans falſitas : iniquitatis labio ſuper attendens
מַקְשִׁיב עַל־שְׂפַת־אָוֶן שֶׁקֶר מֵזִין עַל־לְשׁוֹן
: ejus factorem affecit probris ,pauperem Subſannans .pravitatum
5 הַוֹּת׃ לֹעֵג לָרָשׁ חֵרֵף עֹשֵׂהוּ
filii ſenum Diadema .impunis erit non ,contritione in lætans
6 שָׂמֵחַ לְאֵיד לֹא יִנָּקֶה׃ עֲטֶרֶת זְקֵנִים בְּנֵי
ſtulto decorum Non .eorum patres filiorum gloria & : filiorum
7 בָנִים וְתִפְאֶרֶת בָּנִים אֲבוֹתָם׃ לֹא־נָאוָה לְנָבָל
Lapis ? falſitatis labium liberali quia etiam : dignitatis labium
8 שְׂפַת יֶתֶר אַף כִּי־לְנָדִיב שְׂפַת־שָׁקֶר׃ אֶבֶן־
, reſpexerit quod omne ad : ejus patroni oculis in munus gratiæ
חֵן הַשֹּׁחַד בְּעֵינֵי בְעָלָיו אֶל־כָּל־אֲשֶׁר יִפְנֶה
.aget prudenter
יַשְׂכִּיל׃

Verſio VULG. LAT.

21 Qui ſapiens eſt corde, appellabitur prudens : & qui dulcis eloquio, majora percipiet.
22 Fons vitæ eruditio poſſidentis : doctrina ſtultorum, fa-
23 tuitas. Cor ſapientis erudiet os ejus : & labiis ejus ad-
24 det gratiam. Favus mellis, compoſita verba : dulcedo a-
25 nimæ, ſanitas oſſium. Eſt via quæ videtur homini recta : & noviſſima ejus ducunt ad mor-
26 tem. Anima laborantis laborat ſibi, quia compulit eum
27 os ſuum. Vir impius fodit malum, & in labiis ejus i-
28 gnis ardeſcit. Homo perverſus ſuſcitat lites : & ver-
29 boſus ſeparat principes. Vir iniquus lactat amicum ſuum : & ducit eum per viam non
30 bonam. Qui attonitis oculis cogitat prava, mordens labia ſua perficit malum.
31 Corona dignitatis ſenectus, quæ in viis juſtitiæ reperi-
32 etur. Melior eſt patiens viro forti : & qui dominatur animo ſuo, expugnatore ur-
33 bium. Sortes mittuntur in ſinum, ſed à Domino temperantur.

CAP. XVII.

1 MElior eſt buccella ſicca cum gaudio, quàm domus ple-
2 na victimis cum jurgio. Servus ſapiens dominabitur filiis ſtultis, & inter fratres hære-
3 ditatem dividet. Sicut igne probatur argentum, & aurum camino : ita corda probat
4 Dominus. Malus obedit linguæ iniquæ, & fallax obtem-
5 perat labiis mendacibus. Qui deſpicit pauperem, exprobrat factori ejus : & qui ruinâ lætatur alterius, non erit impu-
6 nitus. Corona ſenum filii filiorum : & gloria filiorum
7 patres eorum. Non decent ſtultum verba compoſita ; nec principem labium mentiens.
8 Gemma gratiſſima, expectatio præſtolantis : quocunque ſe vertit, prudenter intelligit.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cùm Tranſlatione LATINA.

21 † Τοὺς σοφοὺς καὶ συνετοὺς φαύλους καλοῦσιν, † οἱ δὲ γλυκεῖς ἐν λόγῳ (ι) πλείονα ἀκού-
22 σονται. † Πηγὴ ζωῆς ἔννοια τοῖς κεκτη-
23 μένοις, † παιδεία δὲ ἀφρόνων κακή. † Καρδία σοφοῦ νοήσει τὰ ἀπὸ τοῦ ἰδίου στόματος, † ἐπὶ δὲ χείλεσι φορέσει ἐπιγνωμοσύνην.
24 † Κηρία μέλιτος λόγοι καλοί, † γλύκασμα
25 δὲ (κ) αὐτοῦ ἴασις ψυχῆς. † Εἰσὶν ὁδοὶ δοκοῦσαι εἶναι ὀρθαὶ ἀνδρί, † τὰ μέντοι τελευταῖα αὐτῶν βλέπει εἰς πυθμένα ᾅδου.
26 † Ἀνὴρ ἐν πόνοις πονεῖ ἑαυτῷ, † καὶ ἐκ-
27 βιάζεται (λ) τὴν ἀπώλειαν ἑαυτοῦ. † Ὁ μέντοι σκολιὸς ἐπὶ τῷ ἑαυτοῦ στόματι φορεῖ τὴν ἀπώλειαν. † ἀνὴρ ἄφρων ὀρύσσει ἑαυτῷ κακά, † ἐπὶ δὲ τῶν ἑαυτοῦ χειλέων
28 (μ) θησαυρίζει πῦρ. † Ἀνὴρ σκολιὸς διαπέμπεται κακά, † καὶ λαμπτῆρα δόλου (ν) πυρσεύσει κακοῖς, † καὶ διαχωρίζει
29 φίλους. † Ἀνὴρ παράνομος ἀποπειρᾶται φίλων, † καὶ ἀπάγει αὐτοὺς ὁδοὺς οὐκ ἀγα-
30 θάς. † (ξ) Στηρίζων δὲ ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ διαλογίζεται διεστραμμένα, † ὁρίζει δὲ τοῖς χείλεσιν αὐτοῦ πάντα τὰ κακά· † οὗτος
31 κάμινός ἐστι (ο) κακίας. † Στέφανος καυχήσεως γῆρας, † ἐν δὲ ὁδοῖς δικαιοσύνης
32 εὑρίσκεται. † Κρείσσων ἀνὴρ μακρόθυμος ἰσχυροῦ, (π) † ὁ δὲ κρατῶν ὀργῆς κρείσσων
33 (ρ) καταλαμβανομένου πόλιν. † Εἰς κόλπους ἐπέρχεται πάντα τοῖς ἀδίκοις, † παρὰ δὲ κυρίου πάντα τὰ δίκαια.

MS.A. (ι) πλεῖον ἀκούονται. (κ) αὐτῶν (λ) ἑαυτοῦ τὴν ἀπώλειαν. (μ) ὀρύσσει πῦρ. (ν) πυρσεύει (ξ) Στηρίζων ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ λογίζεται (ο) κακῶν. (π) † καὶ ἀνὴρ φρόνησιν ἔχων γεωργίου μεγάλου, ὁ δὲ κρατῶν (ρ) τοῦ καταλαμβανομένου πόλιν.

(ι) Sapientes, & intelligentes vocant malos : dulces autem in ſermone plura audient. Fons vitæ, 21 22
(υ) cogitatio poſſidentibus : (χ) diſciplina autem imprudentum mala.
Cor ſapientis cogitabit, quæ ab ore 23
proprio : & in labiis (ψ) portabit doctrinam. Favi (ζ) mellis ſermo- 24
nes boni : (ω) dulcedo autem ejus ſanitas animæ. Sunt viæ, quæ vi- 25
dentur eſſe rectæ homini : attamen noviſſima eorum ſpectant in fundum inferni. (aa) Vir in laboribus 26
laborat ſibi, & vim facit in interitum ſuum. (bb) Perverſus in ore 27
ſuo portat perditionem : vir (cc) imprudens fodit ſibi mala : & in
labiis ſuis (dd) ignem condit. Vir 28
perverſus (ee) tranſmittit mala : (ff) et face doli accendet malis, & disjungit amicos. Vir iniquus (gg) 29
palpat amicos : & abducit eos per vias non bonas. (hh) Qui au- 30
tem obfirmat oculos ſuos ; cogitat (ii) perverſa, (kk) & ſtatuit labiis ſuis omnia mala : hic fornax eſt
mali. Corona gloriationis ſenectus : 31
& in viis juſtitiæ invenitur. Me- 32
lior vir (ll) longanimis forti : & qui continet iracundiam, melior eſt, quàm qui urbem capit. In ſi- 33
nus veniunt omnia (mm) injuſtis : à Domino autem omnia juſta.

ΚΕΦ. ιζ'.

1 † ΚΡείσσων ψωμὸς μεθ' ἡδονῆς ἐν εἰρήνῃ, † ἢ (α) οἶκος πολλῶν ἀγαθῶν καὶ ἀ-
2 δίκων θυμάτων μετὰ μάχης. † Οἰκέτης νοήμων κρατήσει δεσποτῶν ἀφρόνων, † ἐν
3 δὲ ἀδελφοῖς διελεῖται μέρη. † Ὥσπερ δοκιμάζεται ἐν καμίνῳ ἄργυρος καὶ χρυσός, † οὕτως ἐκλεκταὶ καρδίαι (β) παρὰ κυ-
4 ρίῳ. † Κακὸς ὑπακούει γλώσσης παρανόμων, † δίκαιος δὲ οὐ προσέχει χείλεσι
5 ψευδέσιν. (γ) † Ὁ καταγελῶν πτωχοῦ παροξύνει τὸν ποιήσαντα αὐτόν, † ὁ δὲ ἐπιχαίρων ἀπολλυμένῳ οὐκ (δ) ἀθωωθήσεται, † ὁ δὲ (ε) ἐπισπλαγχνιζόμενος
6 ἐλεηθήσεται. † Στέφανος γερόντων τέκνα τέκνων, † καύχημα δὲ τέκνων πατέρες αὐτῶν. (ζ) † τοῦ πιστοῦ ὅλος ὁ κόσμος τῶν χρημάτων, † τοῦ δὲ ἀπίστου οὐδὲ ὀβολός.
7 † Οὐχ ἁρμόσει ἄφρονι χείλη πιστά, † οὐδὲ
8 δικαίῳ χείλη ψευδῆ. † Μισθὸς χαρίτων (η) παιδεία τοῖς χρωμένοις, † οὗ δ' ἂν ἐπιστρέψῃ εὐοδωθήσεται.

CAP. XVII.
MElior buccella (a) cum vo- 1
luptate in pace, quàm (b) domus multorum bonorum, & injuſtarum victimarum cum jurgio. Servus 2
intelligens reget (c) dominos ſtultos : in fratribus autem (d) dividet partes. Sicut probatur in cami- 3
no argentum, & aurum ; ita (e) electa corda apud Dominum. Ma- 4
lus obedit linguæ iniquorum : (f) juſtus autem non intendit labiis mendacibus. Qui irridet inopem, 5
(g) irritat eum qui fecit illum : qui autem lætatur pereunte, non erit innocens : ille autem, cujus viſcera commoventur, miſericordiam conſequetur. Corona ſenum 6
filii filiorum ; (h) gloriatio autem filiorum patres eorum. (i) Ejus, qui fidelis eſt, totus mundus divitiarum : illius autem, qui infidelis eſt, neque obolus. Non (k) con- 7
gruent imprudenti labia fidelia, (l) neq; juſto (m) labia mendacia.
(n) Merces gratiarum, diſciplina 8
iis, qui utuntur : quocunque ſe verterit, proſperabitur.

MS.A. (α) οἶκος πλήρης πολλῶν (β) παρὰ θεῷ. (γ) τοῦ πιστοῦ ὅλος ὁ κόσμος τῶν χρημάτων, τοῦ δὲ ἀπίστου οὐδὲ ὀβολός. Ὁ *καταγγέλλων (δ) ἀθωωθήσεται, (ε) σπλαγχνιζόμενος (ζ) Οὐχ ἁρμόσει ἄφρονι χείλη πιστά, οὐδὲ δικαίῳ χείλη ψευδῆ. Μισθὸς (η) ἡ παιδεία

תרגום TARGUM.

21 חכים לבא יתקרי סוכלתנא ודחלין שפותיה מוסיף אולפנא : מבוע דחיי סוכלא
22 23 דמריה ומרדותא דשטיי שטיותא : לבא דחכימא מסתכל פומיה ובשפותוהי
24 מוסיף אולפנא : כבריתא דדובשא מאמרא דבוסמא חליותא דנפשא ואסותא
25 לגרמי : אית ארחא דמתחזיא בעיני בני נשא דתריצא היא וסופא ארחתא דמותא
26 27 אנון : נפש דלעיא לעותא תסובר דמן פומא אתי לה כיפא : גברא טלומא
28 חפר בישתא ובשפותיה נורא יהבה זליקי : גברא מהפכנא ינרי תגרי וחרתנא
29 מעריק רחמיה : גברא חטופא משרגג חבריה מוביל ליה בארחא דלא שפירא :
30 31 רמז בעינוי וחשב הפכתא גוים בשפותיה וגמר בישתא : כלילא דשבהירא
32 סיבותא בארחא דצדקתא משתכחא : טב נגיד אפי רוחא מן גברא ודמכביש
33 נפשיה טב מן הוא דאחד מדינתא : בעובא דעצתא נפלה פצתא ומן אלהא
נפק דיניה :

יז

1 טבא היא לחמא שרבתא ושלותא בה מן ביתא דמלי דבחי דדינא : עבדא
2 3 סוכלתנא ישתלט בברא מבהתנא ובינת אחי נפלג ירותתא : צרפא נקי לסאמא
4 וכורא לדהבא ואלהא בדיק לביא : גברא בישא צית לספותא דעאתא שקרא
5 ודגלותא על לישנא דעאתא : דמצדי במסכנא מרגז לבריה ודחדי לחברא
6 7 דחבריה לא מודכי : כלילא דסבי בני בניא ושבהורהון דבניא אבהתהון : לא יאי
8 לטפשא שפתא יתרתא אף לא לשליטא שפתא דשקרא : כיפא דשוחדא חסידא
היא באפי מאן דשקל לה לכל אתר דמתפני שכולא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Sapiens corde vocatur intelligens ; & qui dulcis eſt labiis ſuis, addit 21
diſciplinam. Fons vitæ intellectus *poſſidentis*, & diſciplina ſtultorum ſtul- 22
titia. Cor ſapientis erudit os ipſius, & in labiis ſuis adjicit doctrinam. 23
Favus mellis verbum ſuave, dulcedo animæ & medicina oſſium. Eſt via 24
quæ videtur in oculis filiorum hominum recta : & finis ejus ſunt viæ mor- 25
tis. Anima laborantis laborem ſuſtinebit ; quia ex ore ſuo veniet ei hu- 26
miliatio. Vir calumniator fodit malum, & in labiis ejus ignis dat ſcin- 27
tillas. Vir perverſus concitat lites, & *litigioſus* divellit à ſe amicum ſuum. 28
Vir raptor lactat amicum ſuum, & ducit eum per viam non bonam. Qui 29
annuit oculis ſuis & cogitat perverſa, *minans* labiis ſuis perficit malum. 30
Corona pulchritudinis eſt ſenectus, in via juſtitiæ invenitur. Melior eſt 31
lentus ira animi quàm fortis : & qui dominatur ſibiipſi, magis quàm 32
ille qui capit provinciam. In ſinum conſilii cadit ſors, & à Deo egredi- 33
tur judicium ejus.

CAP. XVII.

MElior eſt panis ſiccus cum tranquillitate, quàm domus plena victimis 1
jurgii. Servus prudens dominabitur filio impudenti, & inter fratres di- 2
videt hæreditatem. Conflatorium purum eſt ad argentum, & caminus ad 3
aurum, & Deus ſcrutatur corda. Vir malus auſcultat labia iniqua : falſi- 4
tas & *mendacium* in lingua perverſa. Qui deridet pauperem, provocat iram 5
creatoris ſui ; & qui lætatur in interitu ſocii ſui, non erit innocens. Co- 6
rona ſenum filii filiorum, & pulchritudo filiorum patres eorum. Non de- 7
cet inſipientem labium exceſſivum, neque principem labium mendacii.
Lapis muneris gratia eſt in oculis ejus qui tollit eum : ad omnem locum 8
quò ſe vertit, prudenter agit.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܚܟܝܡ ܠܒܐ. ܝܕܥ ܣܘܟܠܐ. ܘܕܚܠܝܢ ܣܦܘ̈ܬܗ. ܡܘܣܦ ܝܘܠܦܢܐ. * ܡܒܘܥܐ 21 22
ܕܚܝ̈ܐ. ܣܘܟܠܐ ܗܘ ܠܐܝܠܝܢ ܕܝܕܥܝܢ ܠܗ. ܘܡܪܕܘܬܐ ܕܣܟ̈ܠܐ. ܣܟܠܘܬܐ ܗܝ. * ܚܟܝܡܐ. ܠܒܗ 23
ܡܐܡܪܐ ܕܦܘܡܗ. ܘܥܠ ܣܦܘ̈ܬܗ. ܡܘܣܦ ܝܘܠܦܢܐ. * ܟܘܪܬܐ ܕܕܒܫܐ. ܡܐܡܪܗ 24
ܕܚܟܝܡܐ. ܘܚܠܐ ܗܝ ܠܢܦܫܗ ܘܐܣܝܘܬܐ ܗܝ ܠܓܪ̈ܡܘܗܝ. * ܐܝܬ ܐܘܪܚܐ ܕܡܬܚܙܝܐ 25
ܕܬܪܝܨܐ. ܘܚܪܬܗ ܗܝ ܠܫܒܝ̈ܠܐ ܕܡܘܬܐ. * ܢܦܫܐ ܕܥܡܠܢܝܬܐ
ܥܡܠܐ ܠܗ̇. ܘܡܢ ܦܘܡܗ ܕܝܠܗ ܢܦܩ ܬܒܪܗ. * ܓܒܪܐ ܥܘܠܐ ܫܩܠ ܒܝܫܬܐ. 26
ܘܥܠ ܣܦܘ̈ܬܗ ܝܩܕܐ ܢܘܪܐ. * ܓܒܪܐ ܥܘܠܐ ܡܓܪܐ ܕܝܢܐ. ܘܣܪܝܩܐ ܪܕܦ ܪ̈ܚܡܘܗܝ. 27
ܓܒܪܐ ܥܘܠܐ ܡܦܬܐ ܠܚܒܪܗ. ܘܡܘܒܠ ܠܗ ܒܐܘܪܚܐ ܕܠܐ ܛܒܐ. * ܘܪܡܙ ܒܥܝ̈ܢܘܗܝ 28
* ܘܡܬܚܫܒ ܗܦܟܬܐ. ܘܡܬܪܢܐ ܒܣܦܘ̈ܬܗ. ܘܡܫܡܠܐ ܒܝܫܬܐ. * ܟܠܝܠܐ ܕܫܘܒܚܐ 29 30
ܣܝܒܘܬܐ. ܘܒܐܘܪܚܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ ܡܫܬܒܚܐ. * ܛܒ ܗܘ ܢܓܝܪ ܪܘܚܐ ܡܢ ܓܢܒܪܐ. ܘܕܟܒܫ 31
ܢܦܫܗ ܡܢ ܗܘ ܕܐܚܝܕ ܡܕܝܢܬܐ. * ܒܥܘܒܐ ܕܢܟܠܐ ܢܦܠ ܦܣܗ. ܘܡܢ ܡܪܝܐ 32
ܢܦܩ ܕܝܢܗ. 33
* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܙ *
* ܛܒ ܗܘ ܠܚܡܐ ܝܒܝܫܐ ܒܫܠܝܐ. 1
ܛܒ ܡܢ ܒܝܬܐ ܕܡܠܐ ܕܒܚܐ ܕܕܝܢܐ. * ܥܒܕܐ ܚܟܝܡܐ ܢܫܠܛ ܒܒܪܐ ܡܒܗܬܢܐ. ܘܒܝܢܝ 2
ܐܚ̈ܐ ܢܦܠܓ ܝܘܪܬܢܐ. * ܨܘܪܦܐ ܒܚܐ ܠܣܐܡܐ. ܘܟܘܪܐ ܠܕܗܒܐ. ܘܡܪܝܐ ܒܚܪ ܠܒܘ̈ܬܐ. 3
* ܓܒܪܐ ܒܝܫܐ ܨܐܬ ܠܣܦܘ̈ܬܐ ܕܢܟܠܐ. ܘܙܕܝܩܐ ܠܐ ܫܡܥ ܠܠܫܢܐ ܕܒܝܫܬܐ. * ܕܡܒܙܚ ܠ 4 5
ܡܣܟܢܐ. ܡܪܓܙ ܠܒܪܘܝܗ. ܘܕܚܕܐ ܒܬܒܪܐ ܠܐ ܢܙܕܟܐ. * ܟܠܝܠܐ ܕܣ̈ܒܐ. ܒܢܝ̈ ܒܢܝ̈ܗܘܢ. 6
ܘܫܘܒܚܐ ܕܒܢ̈ܝܐ. ܐܒܗ̈ܝܗܘܢ. * ܠܐ ܝܐܝܐ ܠܣܟܠܐ. ܣܦܬܐ ܡܗܝܡܢܬܐ. ܘܐܦܠܐ ܠܙܕܝܩܐ 7
ܣܦܬܐ ܕܟܕܒܐ. * ܟܐܦܐ ܕܛܝܒܘܬܐ. ܫܦܝܪܐ ܗܝ ܒܥܝ̈ܢܝ ܕܩܢܝܢ ܠܗ̇. ܘܠܟܠ ܐܝܟܐ 8
ܕܡܬܦܢܝܐ. ܣܘܟܠܐ ܗܝ.

Sapiens corde novit intelligentiam: & is cujus dulcia ſunt labia, auget doctrinam. 21
Vena eſt vitæ intellectus iis qui nôrunt illũ, & diſciplina ſtultorũ, inſipientia. 22
Cor ſapiens noſcit ſermonem oris ſui: & labiis ſuis addit doctrinam. 23
Favus mellis, dictũ ſapientis: & dulcis eſt animæ ejus, & ſanitas oſſib' ipſius. 24
Eſt via quæ videtur oculis hominũ eſſe recta: attamen ſemitæ ejus, ſemitæ ſunt mortis. 25
Anima dolens, ſibi dolet: & ex ore ſui ipſius procedit interitus ejus. 26
Vir ſceleratus aſtruit malum: & ex ore ejus ardeſcit ignis. 27
Vir iniquus excitat litem: & vanus perſequitur amicos ſuos. 28
Vir perverſus adulatur ſocio ſuo, & ducit eum per viam haud bonam: 29
Innuit etiam oculis ſuis, & meditatur perverſitates: & cogitat labiis: ſuis, & malum perficit. 30
Diadema gloriæ, ſenectus: & in via juſtitiæ celebratur. 31
Præſtantior eſt longanimis gigante: & qui domat animum ſuum, eo qui dominatur urbi. 32
In ſinum doloſi cadet ſors ejus: & à Domino egredietur judicium ejus. 33

CAP. XVII.

Melior eſt panis ſiccus cum quiete, melior *inqnam* domo plenâ victimis contentioſis. 1
Servus prudens dominabitur filio pudefacienti, & inter fratres dividet hæreditatem. 2
Conflatorium probat argentum, & fornax aurum: Dominus autem cor explorat. 3
Vir malignus auſcultat labia doloſorum: juſtus autem non obedit linguæ flagitioſorum. 4
Qui deridet pauperem, irritat creatorem ejus: & qui lætatur pernicie, non erit impunis. 5
Corona ſenum, filii filiorum ſunt: & gloria filiorũ, parentes eorum. 6
Non decet ſtultum, labium fidele: neque juſtum, labium mendax. 7
Lapillus gratiæ pulcher eſt in oculis habentis eum: & quoquò ſe vertit *lapillus ille*, prudentia eſt. 8

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

21 * الحكماء والفقهاء يسموهم صالحين * ومن يكون حلوا في كلامه يسمعون منه * اكثر التفكر 22
في المعاد عين حياة لمن يقتنيه * وادب الاغبياء ردي * قلب الحكيم يفهم الالفاظ البارزة 23
من فمه * وفي شفتيه يحمل جمهور المعرفة * الاقوال الجيدة شهد العسل * وحلاوتها شفاء النفس * 24
25 * تكون طرقا يظنها الانسان جيدة مستوية * واواخرها تصير الى اعماق الجحيم * الانسان 26
بالاتعاب يتعب ذاته ويقسر هلاكه * من يكون ملتويا يحمل هلاكه في فمه * الانسان 27
الجاهل يحفر لنفسه المساوي * وفي شفتيه يكنز النار * الانسان الملتوي يبعث الشرور * 28
ويشعل الغش يحرق الاشرار ويفرق بين الاصدقاء * الرجل المجاوز الشريعة يجرب اصدقاءه * 29
ويسوقهم الى طرق ليست صالحة * من يصلب عينيه يفتكر افكارا معوجة * ويحد بشفتيه 30
جميع الاسواء ويميزها * فذاك هو اتون الشر * الشيخوخة اكليل الفخر * وانما توجد في طرق 31
العدل * الرجل المتمهل افضل من الرجل القوي * والانسان الذي له فطنة افضل من 32
فلاحة عظيمة * ومن يمسك غيظه افضل ممن ياخذ مدينة ويملكها * الظالمون جميع الاشياء 33
توافي الى حضونهم * ومن الله كل الامور المقسطة *

* الفصل السابع عشر *

* خبز بليد في سلامة وامن لافضل من منزل موعب خبزات كثيرة وضحايا ظالمة بخصومة * 1
* العبد اللبيب يمسك السادة الاغبياء * وبين الاخوة يقسم الانصبة * كما تختبر الفضة والذهب 2 3
في الكور * هكذا تختبر القلوب المختارة عند الرب * الطالح يطيع السن العادلين عن 4
الشريعة * والمقسط لن يصغي الى الشفوات الكاذبة * جميع عالم الاموال للمومن * وليس لمن
لا ايمان له ولا فلس * من يضحك على المسكين يغيظ من خلقه * ومن يشمت بالهالك لن 5
يتزكا ولا يتبرا * والمحسن يرحم * اكليل الشيوخ اولاد الاولاد * وفخر الاولاد اباوهم * الشفوات 6 7
الصادقة ما تلايم الجاهل * ولا الشفوات الكاذبة توافق الصديق * ثواب النعم للذين 8
يستعملونه * لان صاحبه ايما التفت يتيسر امره *

Sapientes & eruditos appellabunt optimos: & qui fuerit dulcis in ſermone ſuo, obtemperabunt illi. 21
Frequentiſſima conſideratio finis, fons eſt vitæ poſſidenti illam: & diſciplina inſipientium peſſima eſt. 22
Cor ſapientis intelligit eloquia prodeuntia ex ore ſuo; & in labiis ſuis portat præſtantiſſimum ſcientiæ. 23
Sermones probi, favus mellis: & dulcedo eorum, ſanitas animæ. 24
Sunt viæ quas homo exiſtimat bonas & rectas, at extrema illarum reſpiciunt profunda inferni. 25
Homo laboribus fatigat ſe ipſum, & vi evocat perditionem ſuam. Qui fuerit perverſus, portabit interitum ſuum in ore ſuo. 26
Homo ſtultus fodit animæ ſuæ mala, & in labiis ſuis theſaurizat ignem. 27
Homo perverſus ſuſcitat mala: & fax fraudis comburit malos, et ſeparat inter amicos. 28
Homo transgreſſor legis ſuffuratur amicos ſuos, & ducit eos ad vias non bonas. 29
Qui indurat oculos ſuos, cogitat cogitationes perverſas, & acuit labiis ſuis omnes nequitias, & diſcernit illas: is eſt fornax malitiæ. 30
Senectus eſt corona gloriæ, & quidem reperitur in viis juſtitiæ. 31
Vir longanimis, præſtantior eſt viro forti: & homo cui eſt prudentia, præſtantior eſt proſperitate maximâ. Et qui cohibet iram ſuam, præſtantior eſt eo qui capit urbem, & poſſidet illam. 32
Ad iniquorum ſinus omnes res veniunt: & à Deo, omnes res juſtæ. 33

CAP. XVII.

Panis vetuſtus cum pace & ſecuritate, certè melior eſt domo confertâ panibus multis & victimis iniquis cum rixa. 1
Servus prudens cohibebit dominos ſtultos, & inter fratres dividet ſortes. 2
Quemadmodum probatur argentum et aurum in fornace, ſic probantur corda electa apud Dominum. 3
Sceleſtus obtemperat linguis declinantium à lege: juſtus autem non intendit ad labia mendacia. Totus mundus divitiarum, fideli: ei verò cui non eſt fides, nec obolus quidem. 4
Qui irridet pauperem, irritat creatorem ejus: & qui lætatur de pernicie, non juſtificabitur, neque innoxius erit: & miſericors miſericordiam conſequetur. 5
Corona ſenum, filii filiorum: & gloria filiorum, parentes eorum. 6
Labia veridica non conveniunt ſtulto, neque labia mendacia competunt juſto. 7
Præmium beneficiorum, iis qui utuntur ipſo: quoniam qui præditus eſt illo, quocunque ſe verterit, planum inveniet negotium ſuum. 8

משלי : יח

, verbo in iterans & ; amorem quærens , prævaricationem Tegens
9 מְכַסֶּה פֶּשַׁע מְבַקֵּשׁ אַהֲבָה וְשֹׁנֶה בְדָבָר
percutere præ ; intelligentem in increpatio Descendet .ducem separans
10 מַפְרִיד אַלּוּף׃ תֵּחַת גְּעָרָה בְמֵבִין מֵהַכּוֹת
nuncius & : malum quæret rebellio Profectò .centies stultum
11 כְּסִיל מֵאָה׃ אַךְ מְרִי יְבַקֶּשׁ־רָע וּמַלְאָךְ
; virum in orbatum ursum Occurrere .eum in mittetur crudelis
12 אַכְזָרִי יְשֻׁלַּח־בּוֹ׃ פָּגוֹשׁ דֹּב שַׁכּוּל בְּאִישׁ
pro malum Reddens .sua stultitia in stultum non &
13 וְאַל־כְּסִיל בְּאִוַּלְתּוֹ׃ מֵשִׁיב רָעָה תַּחַת
, aquas Aperiens .ejus domo de malum recedet non : bono
14 טוֹבָה לֹא־תָמִישׁ רָעָה מִבֵּיתוֹ׃ פּוֹטֵר מַיִם
.dimitte , lis misceatur antequàm & ; contentionis principium
רֵאשִׁית מָדוֹן וְלִפְנֵי הִתְגַּלַּע הָרִיב נְטוֹשׁ׃
abominatio ; justum faciens iniquum & , impium Justificans
15 מַצְדִּיק רָשָׁע וּמַרְשִׁיעַ צַדִּיק תּוֹעֲבַת
pretium hoc quid Ut .ipsi ambo etiam DOMINI
16 יְהוָה גַּם־שְׁנֵיהֶם׃ לָמָּה־זֶּה מְחִיר
? non cor & , sapientiam acquirendum ad ; stulti manu in
בְּיַד־כְּסִיל לִקְנוֹת חָכְמָה וְלֶב־אָיִן׃
angustiam ad frater & : amicus diligens tempore omni In
17 בְּכָל־עֵת אֹהֵב הָרֵעַ וְאָח לְצָרָה
spondens : volam percutiens corde carens Homo .nascetur
18 יִוָּלֵד׃ אָדָם חֲסַר־לֵב תּוֹקֵעַ כָּף עֹרֵב
, prævaricationem Diligens .sui amici facies ad sponsionem
19 עֲרֻבָּה לִפְנֵי רֵעֵהוּ׃ אֹהֵב פֶּשַׁע
.contritionem quærens , suum ostium elevans : litem diligens
אֹהֵב מַצָּה מַגְבִּיהַּ פִּתְחוֹ מְבַקֶּשׁ־שָׁבֶר׃
, sua lingua in se vertens & : bonum inveniet non corde Perversus
20 עִקֶּשׁ־לֵב לֹא יִמְצָא־טוֹב וְנֶהְפָּךְ בִּלְשׁוֹנוֹ
non & : sibi tristitiam ad , stultum Generans .malum in cadet
21 יִפּוֹל בְּרָעָה׃ יֹלֵד כְּסִיל לְתוּגָה לוֹ וְלֹא
: medicina benefaciet lætum Cor .stulti pater lætabitur
22 יִשְׂמַח אֲבִי נָבָל׃ לֵב שָׂמֵחַ יֵיטִב גֵּהָה
impius sinu è Munus .os exsiccabit contritus spiritus &
23 וְרוּחַ נְכֵאָה תְּיַבֶּשׁ־גָּרֶם׃ שֹׁחַד מֵחֵק רָשָׁע
faciebus Cum .judicii semitas pervertendum ad ; capiet
24 יִקָּח לְהַטּוֹת אָרְחוֹת מִשְׁפָּט׃ אֶת־פְּנֵי
Ira .terræ extremo in stulti oculi & : sapientia intelligentis
25 מֵבִין חָכְמָה וְעֵינֵי כְסִיל בִּקְצֵה־אָרֶץ׃ כַּעַס
multare Etiam .suæ genetrici amaritudo & ; stultus filius suo patri
26 לְאָבִיו בֵּן כְּסִיל וּמֶמֶר לְיוֹלַדְתּוֹ׃ גַּם עֲנוֹשׁ
.rectitudinem super magnificos percutere : bonum non , justum
לַצַּדִּיק לֹא־טוֹב לְהַכּוֹת נְדִיבִים עַל־יֹשֶׁר׃
vir spiritu preciosus : scientiam sciens , sua eloquia Prohibens
27 חוֹשֵׂךְ אֲמָרָיו יוֹדֵעַ דָּעַת וְקַר־רוּחַ אִישׁ
: reputabitur sapiens tacens stultus Etiam .intelligentiæ
28 תְּבוּנָה׃ גַּם אֱוִיל מַחֲרִישׁ חָכָם יֵחָשֵׁב
.intelligens , sua labia obturans
אֹטֵם שְׂפָתָיו נָבוֹן׃

CAP. XVIII. יח

.se miscebit existentia omni in ; separatus quæret desiderium Ad
1 לְתַאֲוָה יְבַקֵּשׁ נִפְרָד בְּכָל־תּוּשִׁיָּה יִתְגַּלָּע׃
se manifestando in quin ; intelligentia in stultus volet Non
2 לֹא־יַחְפֹּץ כְּסִיל בִּתְבוּנָה כִּי אִם־בְּהִתְגַּלּוֹת
.ejus cor
לִבּוֹ׃

Verſio VULG. LAT.

9 Qui celat delictum, quærit amicitias: qui altero ſermone repetit, ſeparat fœderatos. 10 Plus proficit correptio apud prudentem, quàm centum plagæ apud ſtultum. 11 Semper jurgia quærit malus: angelus autem crudelis mittetur contra eum. 12 Expedit magis urſæ occurrere raptis fœtibus, quàm fatuo confidenti in ſtultitia ſua. 13 Qui reddit mala pro bonis, non recedet malum de 14 domo ejus. Qui dimittit aquam, caput eſt jurgiorum: & antequàm patiatur contumeliam, judicium deſerit. 15 Qui juſtificat impium, et qui condemnat juſtum, abominabilis eſt 16 uterq; apud Deum. Quid prodeſt ſtulto habere divitias, cùm ſapientiam emere non poſſit? Qui altam facit domum ſuam, quærit ruinam: & qui evitat 17 diſcere, incidet in mala. Omni tempore diligit qui amicus eſt: & frater in anguſtiis compro- 18 batur. Stult⁹ homo plaudet manibus, cùm ſpoponderit pro a- 19 mico ſuo. Qui meditatur diſcordias, diligit rixas: & qui exaltat oſtium, quærit ruinam. 20 Qui perverſi cordis eſt, non inveniet bonum: & qui vertit 21 linguam, incidet in malũ. Natus eſt ſtultus in ignominiam ſuam: ſed nec pater in fatuo læ- 22 tabitur. Animus gaudens ætatem floridam facit: ſpiritus tri- 23 ſtis exiccat oſſa. Munera de ſinu impius accipit, ut perver- 24 tat ſemitas judicii. In facie prudentis lucet ſapientia: oculi 25 ſtultorum in finibus terræ. Ira patris, filius ſtultus: & dolor 26 matris quæ genuit eum. Non eſt bonum, damnum inferre juſto: nec percutere principẽ, 27 qui recta judicat. Qui moderatur ſermones ſuos, doctus & prudens eſt: & pretioſi ſpiri- 28 tûs vir eruditus. Stultus quoq; ſi tacuerit, ſapiens reputabitur: & ſi compreſſerit labia ſua, intelligens.

CAP. XVIII.

1 Occaſiones quærit qui vult recedere ab amico: omni tem- 2 pore erit exprobrabilis. Non recipit ſtultus verba prudentiæ: niſi ea dixeris quæ verſantur in corde ejus.

Verſio GRÆC. LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

9 † Ὃς κρύπτει ἀδικήματα ζητεῖ φιλίαν, † ὃς δὲ μισεῖ κρύπτειν διΐστησι φίλους καὶ οἰ- 10 κείους. † Συντρίβει ἀπειλὴ καρδίαν φρονίμου, † ἄφρων δὲ μαστιγωθεὶς οὐκ αἰσθάνεται. 11 † Ἀντιλογίας ἐγείρει πᾶς κακός, † ὁ δὲ κύριος ἄγγελον ἀνελεήμονα ἐκπέμψει αὐτῷ. 12 † Ἐμπεσεῖται μέριμνα ἀνδρὶ νοήμονι, 13 † οἱ δὲ ἄφρονες διαλογιοῦνται κακά. † Ὃς ἀποδίδωσι κακὰ ἀντὶ ἀγαθῶν, † οὐ κινη- 14 θήσεται κακὰ (ϑ) ἐκ τοῦ οἴκου αὐτοῦ. † Ἐξουσίαν δίδωσι λόγοις ἀρχὴ δικαιοσύνης, † προηγεῖται δὲ τῆς ἐνδείας στάσις καὶ μά- 15 χη. † Ὃς δίκαιον κρίνει τὸν ἄδικον, ἄδικον δὲ τὸν δίκαιον, † ἀκάθαρτος καὶ βδε- 16 λυκτὸς παρὰ θεῷ. † Ἱνατί ὑπῆρξε χρήματα ἄφρονι; † κτήσασθαι (ι) γὰρ σοφίαν ἀκάρδιος οὐ δυνήσεται. † Ὃς ὑψηλὸν ποιεῖ τὸν ἑαυτοῦ οἶκον, ζητεῖ συντριβήν· † ὁ δὲ σκολιάζων τοῦ μαθεῖν, ἐμπεσεῖται 17 εἰς κακά. † Εἰς πάντα καιρὸν φίλος ὑπαρχέτω σοι, † ἀδελφοὶ δὲ ἐν ἀνάγκαις χρήσιμοι ἔστωσαν, † τούτου γὰρ χάριν γεννῶν- 18 ται. † Ἀνὴρ ἄφρων ἐπικροτεῖ καὶ ἐπιχαίρει ἑαυτῷ, † ὡς καὶ ὁ ἐγγυώμενος ἐγγύῃ 19 (κ) τῶν ἑαυτοῦ φίλων. † Φιλαμαρτήμων 20 (λ) χαίρει μάχαις, † Ὁ δὲ σκληροκάρδιος οὐ συναντᾷ ἀγαθοῖς. † ἀνὴρ εὐμετάβολος γλώσσῃ ἐμπεσεῖται εἰς κακά, 21 † Καρδία δὲ ἄφρονος ὀδύνη τῷ κεκτημένῳ αὐτήν. † οὐκ εὐφραίνεται πατὴρ ἐφ᾽ υἱῷ ἀπαιδεύτῳ, † υἱὸς δὲ φρόνιμος (ʺ) 22 εὐφραίνει μητέρα αὐτοῦ. † Καρδία εὐφραινομένη εὐεκτεῖν ποιεῖ, † ἀνδρὸς δὲ λυπη- 23 ροῦ ξηραίνεται τὰ ὀστᾶ. † Λαμβάνοντος δῶρα (μ) ἀδίκως ἐν κόλποις οὐ κατευοδοῦνται ὁδοί, † ἀσεβὴς δὲ ἐκκλίνει ὁδοὺς δικαιοσύ- 24 νης. † Πρόσωπον συνετὸν ἀνδρὸς σοφοῦ, † οἱ δὲ ὀφθαλμοὶ τοῦ ἄφρονος ἐπ᾽ ἄκρα 25 γῆς. † Ὀργὴ πατρὶ υἱὸς ἄφρων, † καὶ ὀ- 26 δύνη τῇ τεκούσῃ (¨) αὐτόν. † Ζημιοῦν ἄνδρα δίκαιον οὐ καλόν, † οὐδὲ ὅσιον ἐπιβουλεύειν 27 δυνάσταις δικαίοις. † Ὃς φείδεται ῥῆμα προέσθαι σκληρόν, ἐπιγνώμων, † μακρό- 28 θυμος δὲ ἀνὴρ φρόνιμος. † Ἀνοήτῳ (ν) ἐπερωτήσαντι σοφίαν σοφία λογισθήσεται, † ἐνεὸν δέ τις ἑαυτὸν ποιήσας, δόξει φρόνιμος εἶναι.

9 Qui celat injuſtè facta, quærit amicitiam: (o) qui autem odit celare, dividit amicos, & dome- 10 ſticos. (p) Conterunt minæ cor prudentis: imprudens autem fla- 11 gellatus non ſentit. (q) Contradictiones ſuſcitat omnis malus: Dominus autem angelum (r) immiſe- 12 ricordem emittet ei. (ſ) Incidet ſolicitudo viro intelligenti: imprudentes autem excogitabunt 13 mala. Qui reddit mala pro bonis; non movebuntur mala è domo e- 14 jus. (t) Poteſtatem dat ſermonib⁹ principium juſtitiæ: præcedit autem egeſtatem contentio, & jur- 15 gium. Qui juſtum judicat eum, qui injuſtus, injuſtum autem eum, qui juſtus; (u) immundus, & 16 abominabilis apud Deum. ut quid ſunt divitiæ imprudenti? acquirere enim ſapientiam excors non poterit. Qui excelſam facit ſuam domum, quærit contritionem: qui autem tortuoſè accedit ad diſcendum, (x) incidet in mala. 17 In omne (y) tempus amicus ſit tibi: fratres autem in neceſſitatibus utiles ſint: hujus enim rei 18 gratiâ naſcuntur. Vir imprudens (z) plaudit, & congaudet ſibi, cùm etiam ſpondens ſpoponderit 19 (ω) ſuos ipſius amicos. Amans 20 peccata gaudet (aa) rixis: Et (bb) durus corde non occurrit bonis. Vir facilè mutabilis linguâ, 21 incidet in mala: Cor autem imprudentis, dolor poſſidenti illud. Non lætatur pater ſuper (cc) filio indiſciplinato: filius autem pru- 22 dens lætificat matrem ſuam. Cor lætum facit (dd) benè habere: (ee) viri autem triſtis ſiccantur 23 oſſa. Accipientis munera (ff) injuſtè in ſinibus non proſperantur viæ: impius autem declinat vias 24 juſtitiæ. (gg) Vultus intelligens viri ſapientis: oculi autem im- 25 prudentis ad extrema terræ. Ira patri filius imprudens: (hh) & 26 dolor ei, quæ peperit ipſum. Damnum inferre viro juſto, non bonũ: neque fas inſidiari (ii) principi- 27 bus juſtis. Qui parcit verbum promere durum, (kk) benè ſentiens: longanimis autem vir 28 prudens. Dementi interroganti (ll) ſapientiam ſapientia reputabitur: (mm) mutum autem quis ſe faciens, videbitur prudens eſſe.

MS.A. (ϑ) * εἰς τοὺς οἴκους αὐτοῦ. (ι) δὲ σοφίας (κ) τὸν ἑαυτοῦ φίλον. (λ) * χαίρει (ʺ) εὐφρανεῖ (μ) ἐν κόλπῳ ἀδίκως (¨) αὐτοῦ (ν) ἐπερωτήσαντι σοφία λογισθήσεται,

ΚΕΦ. ιη.

1 † Προφάσεις ζητεῖ ἀνὴρ βουλόμενος χωρίζεσθαι ἀπὸ φίλων, † ἐν παντὶ δὲ καιρῷ ἐπονείδιστος ἔσται. 2 † Οὐ χρείαν ἔχει σοφίας ἐνδεὴς φρενῶν, μᾶλλον γὰρ (ʺ) ἄγεται ἀφροσύνῃ. MS.A. (ʺ) ἀγάγεται

CAP. XVIII.

1 Occaſiones (a) quærit vir, qui vult recedere ab amicis: in omni autem tempore erit exprobrabilis. 2 Non (b) opus habet ſapientiâ is, qui indiget corde: magis enim ducitur inſipientiâ.

תרגום TARGUM.

9 דמכסי חובה בעי רחמותא ודשני מלתא מפרק רחמא : עלא בעתא במן דמתבין
10 11 טב מן דלממחי לסכלא מאה חוטרין : ברם גברא מרירא בעי בישתא ומלאכא
12 נוכריא ישתדר עליה : פגיע דוב ורתיתא בגברא חכימא לא מתזיע וסכלא
13 בשטיותיה נפל : דפריע בישתא חלף טבתא לא תפסוק בישתא מן ביתיה :
14 15 אשד דמא היך מיא מגרי תגרי וקדם קדיא אטעי דינא : דמזכיה לרשיעא ומחיב
16 לצדיקא מרחקתיה דאלהא אף תרויהון : למה דין אולא ליה תגרותא לסכלא
17 דלית ליה לבא וחכמתא : בכל עדן גברא רחים הוא ואחא לעקתא מתיליד :
18 19 בר נש חסיר רעינא משלם ידיה וערב ערבותא על חבריה : דרחם חובא רחם
20 מצותא ומורים תרעיה בעי תברא : מן דעקים לביה לא משכח טבתא ודמתהפך
21 בלשניה נפל בבישתא : דמוליד סכלא חמוצא דיליה ולא חדי אבוי דטפשא :
22 23 לבא חדיא משפיר גופא ורוחא דכיכתא מיבשא גרמא : שוחדא מן עובא יסב
24 רשיעא למצלי ארחא דדינא : אפוי דסוכלתנא חדין בחכמתא ועינוי דסכלא
25 26 בעומקא דארעא : ברא סכלא מכביד אבוי וממרמיר לאמיה : למתך לצדיקא
27 לא שפיר אף לא לממחי צדיקיא דאמרין תריצותא : דחשך מלוי ידיע ידיעתא
28 ודמכיכא רוחיה גברא דמתבין : ואף שטיא דשתק חכימא הוא מתחשב ודכלי
שפותיה מתבין :

יח

1 2 רגתא בעי פהיא ובכל מלכנא מצטדי : לא צבי סכלא בסוכלתנא אלא
בשטיותא פהי לביה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

9 Qui celat delictum, quærit amicitiam; & qui repetit ſermonem, ſe- 10 parat amicum. Penetrat increpatio intelligentem magis quàm per- 11 cutere ſtultum centies virgis. Verùm vir amarus quærit malum, & an- 12 gelus crudelis mittetur contra eum. Occurrit urſus & terror viro ſa- 13 pienti, non commovetur: & ſtultus in ſtultitia ſua cadit. Qui reddet 14 malum pro bono, non recedet malum de domo ejus. Qui effundit ſanguinem ſicut aquam, concitat jurgia: & antequàm exardeſcat *dimitte* 15 *litem*. Qui juſtificat impium, & qui condemnat juſtum, uterque eſt 16 abominandus Deo. Ad quid prodeſt negotiatio ſtulto, qui non habet 17 cor neque ſcientiam? In omni tempore ſocius diligit, & frater ad 18 tempus anguſtiæ natus eſt. Filius hominis indigens intellectu pangit 19 manum ſuam, & ſpondit fidejuſſionem pro amico ſuo. Qui diligit peccatum, diligit rixam: & qui exaltat portam ſuam, quærit interitum. 20 Qui pravus eſt corde ſuo, non inveniet bonum: & qui perverſus eſt in 21 lingua ſua, corruet in malum. Qui generat ſtultum, mœſtitia erit ei, & 22 non lætabitur pater inſipientis. Cor gaudens pulchrum facit corpus, 23 & ſpiritus triſtis exſiccat oſſa. Munus de ſinu capiet impius, ut declinet 24 à via judicii. Vultus prudentis hilaris eſt in ſapientia, & oculi ſtulto- 25 rum in profundis terræ. Filius ſtultus exaſperat patrem ſuum, & ex- 26 acerbat matrem ſuam. Multare juſtum non eſt bonum, neque percutere 27 juſtos qui dicunt recta. Qui prohibet ſermones ſuos, ſcit ſcientiam: & 28 qui humilis eſt ſpiritu ſuo, vir intelligens eſt. Stultus quoque ſi tacuerit, ſapiens reputabitur: & qui compreſſerit labia ſua, intelligens.

CAP. XVIII.

1 Deſiderium quærit ſeparatus, & omne conſilium deridet. 2 Non vult ſtultus intelligentiam, ſed in ſtultitia immoratur ejus animus.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

9 * ܕܡܟܣܐ ܥܘܠܐ. ܒܥܐ ܪܚܡܘܬܐ. ܘܕܣܢܐ ܠܡܟܣܢܘܬܗ. ܡܢ ܪܚܡܐ ܘܡܥܡܪܢܐ ܦܪܝܫ.
10 * ܟܘܫܦܐ ܫܚܩ ܠܠܒܗ ܕܚܟܝܡܐ. ܘܡܚܘܬܐ ܩܒܠ ܡܚܘܬܐ ܣܟܠܐ. ܘܠܐ ܪܓܫ. * ܓܒܪܐ
11 ܚܪܝܢܐ. ܒܥܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܡܫܬܕܪ ܥܠܘܗܝ ܡܠܐܟܐ ܕܠܝܬ ܪܚܡܝܢ ܒܗ. * ܢܦܠܐ ܙܘܥܐ
12 ܘܙܘܥܬܐ ܥܠ ܓܒܪܐ ܚܟܝܡܐ. ܘܥܠ ܣܟܠܐ ܡܛܠ ܣܟܠܘܬܗ. * ܕܦܪܥ ܒܝܫܬܐ ܚܠܦ ܛܒܬܐ. ܠܐ
13 ܬܥܢܕ ܒܝܫܬܐ ܡܢ ܒܝܬܗ. * ܘܕܐܫܕ ܕܡܐ. ܕܝܢܐ ܡܥܝܪ ܩܕܡ ܫܠܝܛܐ. * ܕܡܙܟܐ
14 ܠܥܘܠܐ. ܘܡܚܝܒ ܠܙܕܝܩܐ. ܛܢܦܐ ܗܘ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. * ܠܡܢܐ ܦܐܐ ܠܗ ܩܢܝܢܐ ܠܣܟܠܐ:
15 ܕܠܝܬ ܠܗ ܠܒܐ ܠܡܩܢܐ ܚܟܡܬܐ. * ܒܟܠܙܒܢ ܪܚܡܐ. ܪܚܡ ܗܘ. ܘܐܚܐ ܠܐܘܠܨܢܐ
16 ܡܬܝܠܕ. * ܓܒܪܐ ܣܟܠܐ ܡܩܦܚ ܐܝܕܗ. ܕܥܪܒ ܠܚܒܪܗ ܥܪܒܘܬܐ. * ܕܪܚܡ ܥܘܠܐ. ܪܚܡ
17 ܢܟܠܐ ܘܚܪܝܢܐ. ܘܕܡܪܝܡ ܬܪܥܗ. ܒܥܐ ܬܒܪܐ ܠܢܦܫܗ. * ܕܥܩܝܡ ܠܒܗ ܠܐ ܡܫܟܚ
18 ܛܒܬܐ. ܘܕܡܗܦܟ ܠܫܢܗ. ܢܦܠ ܒܒܝܫܬܐ. * ܕܡܘܠܕ ܣܟܠܐ. ܠܒܗܬܬܐ ܕܢܦܫܗ. ܘܠܐ
19 ܚܕܐ ܒܗ ܐܒܘܗܝ. * ܠܒܐ ܚܕܝܐ ܡܫܦܪ ܓܘܫܡܐ. ܘܪܘܚܐ ܕܟܪܝܐ ܡܝܒܫܐ ܓܪܡܐ. * ܡܢ
20 ܢܣܒ ܫܘܚܕܐ. ܥܘܠܐ ܗܘ. ܡܛܠ ܕܡܥܩܡ ܐܘܪܚܐ ܕܕܝܢܐ. * ܐܦܘܗܝ ܕܡܬܒܝܢܢܐ ܚܙܝܢ ܚܟܡܬܐ.
21 ܘܥܝܢܘܗܝ ܕܣܟܠܐ ܒܥܘܡܩܝܗ ܕܐܪܥܐ. * ܡܪܓܙ ܠܐܒܘܗܝ ܒܪܐ ܣܟܠܐ. ܘܡܡܪܪ ܠܝܠܕܬܗ.
22 * ܠܡܚܣܪܘ ܠܙܕܝܩܐ. ܠܐ ܫܦܝܪ. ܐܦܠܐ ܠܡܡܚܐ ܠܙܕܝܩܐ ܕܡܡܠܠܝܢ ܬܪܝܨܬܐ. * ܕܚܣܟ ܡܠܘܗܝ.
23 ܝܕܥ ܝܕܥܬܐ. ܘܢܓܝܪ ܪܘܚܗ. ܓܒܪܐ ܗܘ ܚܟܝܡܐ. * ܣܟܠܐ ܕܫܬܩ. ܐܝܟ ܚܟܝܡܐ
24 ܡܬܚܫܒ. ܘܕܐܚܕ ܣܦܘܬܗ. ܣܘܟܠܬܢܐ ܡܬܚܫܒ.
25
26
27
28

* ܦܬܓܡܐ * ܝܚ *

1 * ܘܒܫܬܝܩܘܬܗ. ܪܢܐ ܪܓܝܓܬܐ. ܘܡܡܝܩ
2 ܡܪܕܘܬܐ ܛܒܬܐ. * ܣܟܠܐ ܠܐ ܪܓܐ ܒܚܟܡܬܐ. ܡܛܠ ܕܪܢܐ ܠܒܗ ܒܣܟܠܘܬܐ.

* Qui tegit delictum, quærit amicitiam: & qui renuit corripere, ab amico & hoſpite ſeparatur. 9
Minæ conteruht cor ſapientis: & pro increpatione vapulabit ſtultus, nec ſentiet. 10
Vir litigioſus quærit malum: quapropter mittetur in eum angelus in quo non eſt miſericordia. 11
Cadet cogitatio & terror in virum ſapientem, & in ſtultum ob inſipientiam ſuam. 12
Qui rependit malum pro bono, non recedet malum de domo ipſius. 13
Et qui effundit ſanguinem, litem concitat apud præfectum. 14
Qui juſtificat impium, & damnat juſtum, abominabilis eſt apud Dominum. 15
Ad quid prodeſt poſſeſſio ſtulto qui non habet cor ad poſſidendam ſapientiam? 16
Amicus quocunque tempore amicus eſt, & frater ad anguſtiam naſcitur. 17
Homo ſtultus dat manum ſuam, ſpondens pro ſocio ſuo ſponſionem. 18
Qui diligit iniquitatem, diligit fraudem & jurgium: & qui exaltat oſtium ſuum, quærit fractioné animæ ſuæ. 19
Is cujus cor obtrectans eſt, non inveniet bonũ: & qui pervertit linguã ſuã, cadet in malum. 20
Qui generat ſtultũ, ad ignominiã animæ ſuæ *generat illum*: neq; lætabitur in eo pater ipſius. 21
Cor hilare exornat corpus: ſpiritus autem dolens exſiccat oſſa. 22
Qui munus accipit, iniquus eſt: depravat enim viam judicii. 23
Vultus prudentis intuetur ſapientiam: oculi verò inſipientis profunda terræ. 24
Laceſſit iram patris ſui filius ſtultus, & irritat genitricẽ ſuam. 25
Inferre damnum juſto non decet, nec etiã percutere juſtos qui recta loquuntur. 26
Qui cohibet ſermones ſuos, novit ſcientiam: & qui longanimis eſt, vir ſapiens eſt. 27
Sultus ſilens, quaſi ſapiens cenſebitur: et is cujus labia ſunt taciturna, prudens reputabitur: 28

CAP. XVIII.

In ſilentio autem ſuo meditatur concupiſcentiam, & deridet documentum bonum. 1
Stultus non oblectatur ſapientiâ, quoniam meditatur cor ejus inſipientiam. 2

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

9 * من يكتم الظلامات يبتغي صداقة * ومن يمقت كتمانها يفرق بين الاصدقاء والمنازل * قلب
10 الدقيق العقل يسحقه الوعيد * والجاهل اذا جلد لن يحس * كل شرير ينهض المقاومة 11
والمحاوبة * والرب يرسل اليه ملاكا غير رحوم * الهم يسقط على الرجل اللبيب * والاغبياء يفكرون 12
في الاسواء * من يكافي عوض الصالحات طالحات ما تنصرف الاسواء من منزله * ابتداء العدل 13 14
يمنح الاقوال سلطانا * والمقاومة والخصومة تتقد من قبل الفقر والفاقة * نجس ومرذول عند الله 15
من يحكم الظلم عدلا والعدل ظلما * لم صارت للغبي اموالا * لان من لا قلب له لن 16
يستطيع يقتني حكمة * من يجعل منزله شاهقا يلتمس هشما * ومن يستصعب ان يتعلم يسقط
في الاسواء * في كل زمان فليكن لك صديقا * وليكن لك في الشدايد اخوة نافعون * لانهم 17
لهذا الحال ولدوا * الرجل الغبي يصدم ذاته * ويشمت مثل الكفيل الذي يضمن صديقه * 18
* المحب الخطية يحب الخصايم * والقاسي القلب ما يلقي الخيرات * الانسان الذي لسانه سريع 19 20
التغيير والتنقل يسقط في الاسواء * القلب الغبي يولم من اقتناه * الاب ما يسر بابن لا ادبا له * 21
والابن العاقل يفرح امه * القلب المسرور ينشي التودد والتعطف * والرجل الحزين تجف اعظامه * 22
* من ياخذ الهدايا في حجره ظلم * لن تتيسر طرقه * والمنافق يحيد من طرق العدل * وجه الرجل 23 24
الحكيم دونهم * وعينا الجاهل الى قواصي الارض باصرتان * الابن الغبي غيظ لابيه * ووجعا للتي 25
ولدته * ليس حسنا ان يخسر انسان ظلما شيا * وامرا بارا ان يعتال على صديقين ذوي 26
اقتدار * من يشفق ويمتنع ان ينبز كلمة صعبة فذاك عالما * الرجل المتمهل حازم العقل * 27
* ومن لا فهما له اذا سال عن حكمة يحسب له ذلك حكمة * من يجعل ذاته اصم يستشعر عاقلا * 28

* الفصل الثامن عشر *

1 * الرجل المويثر ان يفارق اصدقاءه يلتمس حججا * وفي كل
2 وقت يكون معيرا * ومن اراوه معسرة لا حاجة به الى الحكمة * لان العباوة تسوقه اكثر *

Qui celat delicta, cupit amicitiam: & qui odit abſconſionem eorum, ſeparat inter amicos & domos. 9
Cor ſubtilis ingenii conterent minæ: & ſtultus, etiamſi vapulet, non percipit. 10
Omnis iniquus ſuſcitat jurgium & litem, & Dominus mittet ad eum angelum non miſericordem. 11
Cura cadit ſuper virum cordatum: & ſtulti cogitant nequitias. 12
Qui retribuit pro bonis mala, non recedent mala de domo ipſius. 13
Initium juſtitiæ tribuit ſermonibus authoritatem: & lis atque jurgium exardeſcunt propter paupertatem & egeſtatem. 14
Abominabilis eſt ac deſpectus apud Deum, qui in judicio declarat iniquum juſtum, & juſtum iniquum. 15
Quarè factæ ſunt inſipienti divitiæ? quandoquidem qui excors eſt, non poteſt poſſidere ſapientiam. Qui facit domum ſuam ſublimem, quærit fractionem: & qui difficultatem facit diſcendi, incidet in mala. 16
In omni tempore ſit tibi amicus: & ſint tibi in anguſtiis fratres utiles, quoniam ad hanc conditionem nati ſunt. 17
Homo ſtultus collidit ſeipſum, & de eo geſtietur ut de fidejuſſore qui ſpondet pro amico ſuo. 18
Amans peccatum, diligit rixas: & durus corde, non inveniet bona. 19
Homo, cujus lingua velox eſt ad mutationem & variationem, incidet in mala. 20
Cor imprudens cruciat eum qui poſſidet illud. Pater non gaudebit filio immorigerato: & filius prudens lætificat matrem ſuam. 21
Cor hilare nutrit amicitiam, & ſocietatem: & hominis triſtis exſiccantur oſſa. 22
Qui ſuſcipit munera in ſinu ſuo, iniquitatem commiſit, haudquaquam explanabuntur viæ ejus: & impius declinat à via iniquitatis. 23
Vultus viri ſapientis ſuper hos eſt: & oculi inſipientis ad fines terræ aſpiciunt. 24
Filius inſipiens, ira patri ſuo: & dolor ei quæ genuit illum. 25
Non eſt bonum jacturam inferre homini iniquè ulla in re: neque res eſt juſta circumvenire juſtos potentes. 26
Qui parcit, & cohibet ſe quin proferat verbum aſperum, is eſt doctus. Vir longanimis, firmus eſt judicio. 27
Et qui non habet intellectum, cùm interrogaverit de ſapientia, reputabitur hoc illi ſapientia. Qui facit ſeipſum mutum, cenſebitur prudens. 28

CAP. XVIII.

Vir cupiens ſeparare ſe ab amicis ſuis quærit occaſiones: & in omni tempore erit vituperabilis. 1
Et qui habet opiniones difficiles, non eget ſapientiâ: quia ſtultitia ducit illum magis. 2

משלי : יח

ignominia cum &: contemptu etiam venit , impium veniendo In
3 בְּבוֹא־רָשָׁע בָּא גַם־בּוּז וְעִם־קָלוֹן
ſaturiens torrens : viri oris verba profundæ Aquæ .opprobrium
4 חֶרְפָּה׃ מַיִם עֲמֻקִּים דִּבְרֵי פִי־אִישׁ נַחַל נֹבֵעַ
: bonum non , impii facies Accipere .ſapientiæ vena
5 מְקוֹר חָכְמָה׃ שְׂאֵת פְּנֵי־רָשָׁע לֹא־טוֹב
venient ſtulti Labia .judicio in juſtum pervertendum ad
6 לְהַטּוֹת צַדִּיק בַּמִּשְׁפָּט׃ שִׂפְתֵי כְסִיל יָבֹאוּ
contritio ſtulti Os .vocabit percuſſiones ad ejus os & :litem in
7 בְרִיב וּפִיו לְמַהֲלֻמוֹת יִקְרָא׃ פִּי־כְסִיל מְחִתָּה־
ſuſurratoris Verba .ſuæ animæ laqueus ejus labia & : ſibi
8 לוֹ וּשְׂפָתָיו מוֹקֵשׁ נַפְשׁוֹ׃ דִּבְרֵי נִרְגָּן
ſe remittens Etiam .ventris penetralia deſcenderunt ipſa & : lenientia ut
9 כְּמִתְלַהֲמִים וְהֵם יָרְדוּ חַדְרֵי־בָטֶן׃ גַּם מִתְרַפֶּה
fortitudinis Turris .corrumpenti patrono ipſe frater : ſuo opere in
10 בִמְלַאכְתּוֹ אָח הוּא לְבַעַל מַשְׁחִית׃ מִגְדַּל־עֹז
divitis Abundantia .exaltabitur & ,juſtus curret ipſam in:Domini nomen
11 שֵׁם יְהוָה בּוֹ־יָרוּץ צַדִּיק וְנִשְׂגָּב׃ הוֹן עָשִׁיר
.ejus imaginatione in elevatus murus ſicut &;ejus fortitudinis urbs
קִרְיַת עֻזּוֹ וּכְחוֹמָה נִשְׂגָּבָה בְּמַשְׂכִּתוֹ׃
.manſuetudo gloriam ante & : viri cor elevabitur contritionem Ante
12 לִפְנֵי־שֶׁבֶר יִגְבַּהּ לֵב־אִישׁ וְלִפְנֵי כָבוֹד עֲנָוָה׃
.pudor & ,ei ipſa ſtultitia ; audiat antequam verbum Reddens
13 מֵשִׁיב דָּבָר בְּטֶרֶם יִשְׁמָע אִוֶּלֶת הִיא־לוֹ וּכְלִמָּה׃
quis , contritum ſpiritum & : ejus infirmitatem ſufferet viri Spiritus
14 רוּחַ אִישׁ יְכַלְכֵּל מַחֲלֵהוּ וְרוּחַ נְכֵאָה מִי
ſapientum auris & : ſcientiam acquiret intelligens Cor ? eum feret
15 יִשָּׂאֶנָּה׃ לֵב נָבוֹן יִקְנֶה־דָּעַת וְאֹזֶן חֲכָמִים
magnates ante & :ei faciet dilatare hominis Donum .ſcientiam quæret
16 תְּבַקֶּשׁ־דָּעַת׃ מַתָּן אָדָם יַרְחִיב לוֹ וְלִפְנֵי גְדֹלִים
, ejus ſocius veniet & ; ſua lite in primus Juſtus .eum ducet
17 יַנְחֶנּוּ׃ צַדִּיק הָרִאשׁוֹן בְּרִיבוֹ וּבָא רֵעֵהוּ
fortes inter & : ſors faciet ceſſare Contentiones .eum inveſtigabit &
18 וַחֲקָרוֹ׃ מִדְיָנִים יַשְׁבִּית הַגּוֹרָל וּבֵין עֲצוּמִים
vectis ſicut contentiones & : forti civitate præ rebellans Frater .dividet
19 יַפְרִיד׃ אָח נִפְשָׁע מִקִּרְיַת־עֹז וּמִדְוָנִים כִּבְרִיחַ
proventu : ejus venter ſatiabitur viri oris fructu De .palatii
20 אַרְמוֹן׃ מִפְּרִי פִי־אִישׁ תִּשְׂבַּע בִּטְנוֹ תְּבוּאַת
; linguæ manu in vitæ & Mors .ſaturabitur ſuorum labiorum
21 שְׂפָתָיו יִשְׂבָּע׃ מָוֶת וְחַיִּים בְּיַד־לָשׁוֹן
: bonum invenit ,uxorem Invenit .ejus fructum comedet eam diligens &
22 וְאֹהֲבֶיהָ יֹאכַל פִּרְיָהּ׃ מָצָא אִשָּׁה מָצָא טוֹב
: pauper loquetur Deprecationibus .Domino à benevolentiam educet &
23 וַיָּפֶק רָצוֹן מֵיְהוָה׃ תַּחֲנוּנִים יְדַבֶּר־רָשׁ
: ſe præſtandum ſociabilem ad amicorum Vir .fortia reſpondebit dives &
24 וְעָשִׁיר יַעֲנֶה עַזּוֹת׃ אִישׁ רֵעִים לְהִתְרֹעֵעַ
.fratre præ adhærens amans eſt &
וְיֵשׁ אֹהֵב דָּבֵק מֵאָח׃

CAP. XIX. יט

ipſe & , ſuis labiis perverſo præ: ſua integritate in ambulans pauper Bonus
1 טוֹב רָשׁ הוֹלֵךְ בְּתֻמּוֹ מֵעִקֵּשׁ שְׂפָתָיו וְהוּא
feſtinus & : bonum non animæ ſcientia abſque Etiam .ſtultus
2 כְסִיל׃ גַּם בְּלֹא־דַעַת נֶפֶשׁ לֹא־טוֹב וְאָץ
: ejus viam pervertet hominis Stultitia .peccans pedibus in
3 בְּרַגְלַיִם חוֹטֵא׃ אִוֶּלֶת אָדָם תְּסַלֵּף דַּרְכּוֹ
: multos amicos addet Copia .ejus cor ſæviet Dominum ſuper &
4 וְעַל־יְהוָה יִזְעַף לִבּוֹ׃ הוֹן יֹסִיף רֵעִים רַבִּים
.ſeparabitur ſuo amico ab tenuis &
וְדָל מֵרֵעֵהוּ יִפָּרֵד׃

Verſio VUL. LAT.

3 Impius,cùm in profundum venerit peccatorum, contemnit:
ſed ſequitur eum ignominia et
4 opprobrium. Aqua profunda
verba ex ore viri : & torrens
5 redundans fons ſapientiæ. Accipere
perſonam impii non eſt
bonum, ut declines à veritate
6 judicii. Labia ſtulti miſcent ſe
rixis : & os ejus jurgia provocat.
7 Os ſtulti contritio ejus :
& labia ipſius, ruina animæ ejus.
8 Verba bilinguis,quaſi ſimplicia:
& ipſa perveniunt uſq;
ad interiora ventris. Pigrum
dejicit timor:animæ autem effœminatorū
9 eſurient. Qui mollis
& diſſolutꝰ eſt in opere ſuo,
frater eſt ſua opera diſſipantis.
10 Turris fortiſſima, nomen Domini :
ad ipſum currit juſtus,et
11 exaltabitur. Subſtantia divitis
urbs roboris ejus, & quaſi murus
validus circumdans eum.
12 Antequàm conteratur, exaltatur
cor hominis : & antequàm
13 glorificetur, humiliatur. Qui
priùs reſpondet quàm audiat,
ſtultum ſe eſſe demonſtrat, &
14 confuſione dignum. Spiritus
viri ſuſtentat imbecillitatem
ſuam : ſpiritū verò ad iraſcendum
facilem quis poterit ſuſti-
15 nere? Cor prudens poſſidebit
ſcientiam : & auris ſapientium
16 quærit doctrinam. Donum
hominis dilatat viam ejus, &
ante principes ſpatiū ei facit.
17 Juſtus, prior eſt accuſator ſuî:
venit amicus ejus, & inveſtigabit
18 eum. Contradictiones
comprimit ſors, & inter po-
19 tentes quoque dijudicat. Frater,
qui adjuvatur à fratre,quaſi
civitas firma : & judicia quaſi
20 vectes urbium. De fructu oris
viri replebitur venter ejus : &
genimina labiorum ipſius ſatu-
21 rabunt eum. Mors, & vita in
manu linguæ:qui diligūt eam,
22 comedent fructus ejus. Qui
invenit mulierem bonam, invenit
bonum : & hauriet jucunditatem
à Domino. Qui expellit
mulierem bonam,expellit
bonū:qui autem tenet adulteram,
ſtultus eſt & impius.
23 Cum obſecrationibus loquetur
pauper : & dives effabitur
24 rigidé. Vir amabilis ad ſocietatem,
magis amicus erit,quàm
frater.

CAP. XIX.

1 MElior eſt pauper, qui ambulat
in ſimplicitate ſua,quàm
dives torquens labia ſua,& in-
2 ſipiēs.Ubi non eſt ſcientia ani-
3 mæ,non eſt bonū:& qui feſtinꝰ eſt pedibus,offendet. Stultitia hominis ſupplantat greſſꝰ ejus:& contra
4 Deū fervet animo ſuo. Divitiæ addunt amicos plurimos: à paupere autē & hi,quos habuit,ſeparantur.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

3 † Ὅταν ἔλθῃ ἀσεβὴς εἰς βάθος κακῶν,
καταφρονεῖ, † ἐπέρχεται δὲ αὐτῷ ἀτιμία καὶ
4 ὄνειδος. † Ὕδωρ βαθὺ λόγος ἐν καρδίᾳ
ἀνδρός, † ποταμὸς δὲ ἀναπηδύει καὶ πηγὴ
5 ζωῆς. † Θαυμάσαι πρόσωπον ἀσεβοῦς οὐ καλόν,
† οὐδὲ ὅσιον ἐκκλίνειν τὸ δίκαιον ἐν κρί-
6 σει. † Χείλη ἄφρονος ἄγουσιν (α) αὐτὸν εἰς
κακά, † τὸ δὲ στόμα αὐτοῦ τὸ θρασὺ θάνατον
7 ἐπικαλεῖται. † Στόμα ἄφρονος συντριβὴ αὐτῷ,
† τὰ δὲ χείλη αὐτοῦ παγὶς τῇ ψυχῇ αὐτοῦ.
8 † Ὀκνηροὺς καταβάλλει φόβος, † ψυχαὶ δὲ
9 ἀνδρογύνων πεινάσουσιν. † Ὁ μὴ ἰώμενος
(β) αὐτὸν ἐν τοῖς ἔργοις αὐτοῦ, † ἀδελφός
10 ἐστι τοῦ λυμαινομένου ἑαυτόν. † Ἐκ μεγαλωσύνης
ἰσχύος ὄνομα κυρίου. † αὐτῷ δὲ προσ-
11 δραμόντες δίκαιοι ὑψοῦνται. † Ὕπαρξις
πλουσίου ἀνδρὸς πόλις ὀχυρά, † ἡ δὲ δόξα αὐ-
12 τῆς μέγα (γ) ἐπισκιάζει. † Πρὸ συντριβῆς
ὑψοῦται καρδία ἀνδρός, καὶ πρὸ δόξης ταπεινοῦται.
13 † Ὃς ἀποκρίνεται λόγον πρὶν ἀκοῦσαι,
† ἀφροσύνη (δ) αὐτῷ ἐστι καὶ ὄνειδος.
14 † Θυμὸν ἀνδρὸς πραΰνει θεράπων φρόνιμος,
15 † ὀλιγόψυχον δὲ ἄνδρα τίς ὑποίσει; † Καρδία
φρονίμου κτᾶται αἴσθησιν, † ὦτα δὲ σο-
16 φῶν ζητεῖ ἔννοιαν. † Δόμα ἀνθρώπου (ε) ἐμπλατύνει
αὐτόν, † καὶ παρὰ δυνάσταις καθι-
17 ζάνει αὐτόν. † Δίκαιος ἑαυτοῦ κατήγορος
ἐν πρωτολογίᾳ, † ὡς δ' ἂν ἐπιβάλῃ ὁ ἀντίδι-
18 κος ἐλέγχεται. † Ἀντιλογίας παύει σιγη-
19 ρός, † ἐν δὲ (ζ) δυναστείαις ὁρίζει. † Ἀδελ-
φὸς ὑπὸ ἀδελφοῦ βοηθούμενος, † ὡς πόλις
ὀχυρὰ καὶ ὑψηλή, † ἰσχύει δὲ ὥσπερ τεθεμελι-
20 ωμένον βασίλειον. † (η) Ἀπὸ καρπῶν στόματος
ἀνὴρ πίμπλησι κοιλίαν αὐτοῦ, † ἀπὸ δὲ
21 καρπῶν χειλέων αὐτοῦ ἐμπλησθήσεται. † Θάνατος
(θ) καὶ ζωὴ ἐν χειρὶ γλώσσης, † οἱ δὲ
κρατοῦντες αὐτῆς ἔδονται τοὺς καρποὺς αὐτῆς.
22 † Ὃς εὗρε γυναῖκα ἀγαθήν, εὗρε χάριτας,
† ἔλαβεν δὲ (ι) παρὰ θεοῦ ἱλαρότητα. † ὃς ἐκβάλλει
γυναῖκα ἀγαθήν, ἐκβάλλει τὰ ἀγαθά,
† ὁ δὲ κατέχων μοιχαλίδα, ἄφρων καὶ
3 ἀσεβής. † Ἀφροσύνη ἀνδρὸς λυμαίνεται
τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ, † τὸν δὲ θεὸν αἰτιᾶται
τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ.

Cùm (c) venerit impius in profundum malorum, contemnit: ſupervenit autem ei inhonoratio, & 3
opprobrium. Aqua profunda, ſermo in (d) corde viri : flumen autem (e) ſcaturit, & (f) fons (g) 4
vitæ. (h) Mirari perſonam impii, non bonum : neque ſanctum declinare juſtum in judicio. Labia 5 6
ſtulti ducunt eum (i) in mala, & os ejus audax mortem invocat. Os imprudentis, (k) contritio ei : labia autem ejus (l) laqueus animæ 7
ejus. Pigros dejicit timor : animæ autem effœminatorum eſurient. 8
(m) Qui non medetur ſibi in operibus ſuis, frater eſt perdentis ſeipſum. 9
Ex (n) magnificentia fortitudinis, nomen Domini : (o) ei autem accurrentes juſti exaltantur. 10
Subſtantia divitis viri, urbs (p) munita : gloria autem ejus magnoperè obumbrat. 11
(q) Ante contritionem exaltatur cor viri : & (r) ante gloriam humiliatur. 12
Qui reſpondet verbum, priuſquàm audiat; imprudentia ei eſt, & opprobrium. 13
(ſ) Furorem viri mitigat ſervus prudens : (t) puſillanimem autem virum quis ſuſtinebit? 14
Cor prudentis (u) poſſidet ſenſum : aures autem ſapientum quærunt (x) cogitationem. 15
Donum hominis dilatat eum : & apud principes ſedere facit eum. 16
Juſtus ſuî eſt accuſator (y) in principio ſermonis : cùm verò adjecerit adverſarius, arguitur. 17
Contradictiones ſedat (z) taciturnus ; & in potentatibus (ω) definit. 18
(aa) Frater à fratre adjutus, tanquam urbs munita, & excelſa: (bb) invaleſcit autem, tanquam fundatum regnum. 19
De fructibus oris vir implet ventrem ſuum : (cc) & de fructibus labiorum ſuorum implebitur. 20
Mors & vita in manu linguæ: qui autem (dd) continent eam, comedent fructus ejus. 21
Qui invenit mulierem (ee) bonam, invenit gratias: & accepit à Deo (ff) hilaritatem. Qui ejicit mulierem bonam, ejicit bona: qui autem tenet adulteram, ſtultus & impius. 22
Imprudentia viri (gg) vaſtat vias ejus : (hh) Deum autem accuſat corde ſuo. 3

MS.A. (α) αὐτὰ (β) ἑαυτὸν (γ) ἐπισκιάσει. (δ) αὐτῷ, αὐτῷ ἐστιν (ε) ἐνπλατύνει (ζ) δυνάσταις (η) Ἀπὸ καρποῦ (θ) ζωῆς (ι) παρὰ κυρίου

ΚΕΦ. ιθʹ.

4 † Πλοῦτος προστίθησι φίλους πολλούς, † ὁ δὲ πτωχὸς καὶ ἀπὸ τοῦ ὑπάρχοντος φίλου λείπεται.

CAP. XIX.

DIvitiæ addunt amicos multos : inops autem & ab amico, qui erat, (a) deſeritur. 4

תרגום TARGUM.

3 כַּד אָתֵי רַשִׁיעָא בְּשַׁטְיוּתָא יָיתֵי וּבְצַעֲרָא וּבְחִסוּרָא׃ מַיָּא עֲמִיקֵי פּוּמֵיהּ דְּגַבְרָא נַחְלָא
4 5 דְּנָבֵיעַ מַבּוּעַ דְּחָכְמְתָא׃ לְמִסַּב אַפֵּי לְרַשִׁיעָא לָא שַׁפִּיר אַף לָא לְמִצְלֵי דִּינָא לְצַדִּיקָא׃
6 סִפְוָתֵיהּ דְּסַכְלָא מַיְתָן לֵיהּ לְדִינָא וּפוּמֵיהּ מַסְטֵי לֵיהּ לְחַרְתָּא׃ פּוּמֵיהּ דְּסַכְלָא שַׁצְיָא
7 8 הוּא לֵיהּ וְסִפְוָתֵיהּ פַּחָא אִנּוּן לְנַפְשֵׁיהּ׃ מִלּוֹי דְּשׁוּגְשָׁא מַרְכְּנָן לֵיהּ וּמַחֲתָן לֵיהּ לְעוּמֶק
9 דִּשְׁיוֹל׃ וְאַף דְּמִתְרַפֵּא בַּעֲבִידְתֵיהּ חַבְרָא הוּא לְגַבְרָא מְחַבְּלָנָא׃ מַגְדְּלָא דְּעוּשְׁנָא
10 11 שְׁמֵיהּ דֶּאֱלָהָא וּבֵיהּ נִרְהַט צַדִּיקָא וְנִתְּרִים בֵּיהּ׃ מָולֵיהּ דְּעַתִּירָא קִרְיְתָא דְּעוּשְׁנֵיהּ
11 12 וּכְשׁוּרָה יְרוּם מַשְׁרֵיהּ׃ קֳדָם תַּבְרָא יִתְרוֹרַם לִבֵּיהּ דְּגַבְרָא וְקֳדָם יְקָרָא עִנְוְתָנוּתָא׃
13 14 מַחֲזִיר פִּתְגָּמָא עַד לָא שָׁמֵיעַ שַׁטְיוּתָא לֵיהּ וּבַהֲתְתָא׃ רוּחֵיהּ דְּגַבְרָא תְּסוֹבַר בַּרְהָנֵיהּ
15 וְרוּחָא מְכַכְתָּא מַן נִטְעֲנֵיהּ׃ לִבָּא דְּמִתְבַּיַּן נִקְנָא יְדִיעֲתָא וְאֻדְנָא דְּחַכִּימֵי תִּבְעֵי מַנְדְּעָא׃
16 17 מוֹהַבְתֵיהּ דְּבַר נָשָׁא מַרְוְחָא לֵיהּ וְקֳדָם רַבְרְבֵי מְקִימָא לֵיהּ׃ זַכַּי הֲוָה קַדְמָאָה בְּדִינֵיהּ
18 וְאָתָא חַבְרֵיהּ וְנָצִיחַ לֵיהּ׃ תִּגְרֵי מְבַטְּלָא פִּצְתָא וּבֵינָת תַּקִּיפֵי פָּרְשָׁא׃ אַחָא דְּמִתְעֲוֵי
19 20 מִן אֲחוּי הֵיךְ קִרְיְתָא עֲשִׁנְתָּא וְאַחֲדָא הֵיךְ סוּכְּרָא דְּחוּסְנָא׃ מִן פְּרִי פּוּמֵיהּ דְּגַבְרָא תִּסְבַּע
21 כַּרְסֵיהּ וּמִן עֲלַלְתָּא דְּסִפְוָתֵיהּ נִסְבַּע׃ מוֹתָא וְחַיֵּי בִּידָא דְּלִישָּׁנָא וּדְרָחֵם לֵיהּ נֵיכוּל מִן
22 23 פֵּרוֹי׃ דְּמַשְׁכַּח אִתְּתָא טָבְאָתָא מַשְׁכַּח וּמְקַבֵּל רְעוּתֵיהּ מִן אֱלָהָא׃ תַּחֲנוּנֵי נְמַלֵּל מִסְכֵּנָא
24 וְעַתִּירָא נְמַלֵּל עַשִּׁינָתָא׃ אִית חַבְרֵי דְּמִתְחַבְּרִין וְאִית רְחָמָא דָּבֵק מִן אָח׃

יט

1 2 טָב מִסְכֵּינָא דִּמְהַלֵּךְ בִּתְמִימוּתָא מִן הוּא דִּמְעַקְּמָן אָרְחָתֵיהּ וְהוּא סְכַל׃ מַן דְּלָא
3 יָדִיעַ נַפְשֵׁיהּ לָא שַׁפִּיר לֵיהּ וּדְקַלִּיל בְּרִגְלוֹי לְבִישְׁתָּא חַטְיָא הוּא׃ שַׁטְיוּתָא דְּבַר
4 נָשָׁא מְטַלְטְלָא אָרְחָתֵיהּ וְעַל אֱלָהָא מִתְרְעֵם לִבֵּיהּ׃ מָולָא מוֹסִיף חַבְרֵי סַגִּיעֵי וּמִסְכֵּנָא
פָּרֵישׁ חַבְרֵיהּ מִנֵּיהּ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quando venit impius in ſtultitia, venit & in ignominia & opprobrio. 3
Aquæ profundæ os viri, torrens redundans fons ſapientiæ. Accipere fa- 4
ciem impii non eſt bonum, neque declinare à judicio contra juſtum. Labia 5
ſtulti adducunt eum in judicium, & os ejus *pervertit* eum ad rixam. Os 6
ſtulti *perniciei* eſt ei, & labia ejus laquei ſunt animæ ejus. Verba ſuſurro- 7
nis *proſternent* illum, & deducent illum in profundum inferni. Is quoq; 8
qui remiſſus eſt in opere ſuo, ſocius eſt viri diſſipantis. Turris fortitudinis 9
nomen Dei ; in ea autem curret juſtus, & exaltabitur in ipſa. Subſtantia 10
divitis urbs fortitudinis ejus, & quaſi murus elevatum eſt habitaculum 11
ejus. Ante interitum exaltatur cor hominis, & ante gloriam eſt humili- 12
tas. Qui reſpondet verbum anteaquàm audiat, ſtultitia eſt ei & confuſio. 13
Spiritus viri ſuſtentat infirmitatem ipſius : & ſpiritum demiſſum quis 14
poterit ſuſtinere? Cor intelligentis poſſidebit ſcientiam, & auris ſapien- 15
tum quæret notitiam. Donum filii hominis dilatat eum , & ante princi- 16
pes ſuſtentat illum. Juſtus eſt primus in judicio ſuo, & venit ſocius ejus 17
& vincit eum. Contentiones abrogat ſors , & inter fortes dirimit. Fra- 18
ter qui deficit à fratre ſuo,quaſi civitas fortis , & clauſa quaſi repagulo 19
forti. De fructu oris viri ſatiabitur venter ejus, & de genimine labiorum 20
ſuorum ſatiabitur. Mors et vita in manu linguæ : et qui diligit eam, com- 21
edet de fructibus ejus. Qui invenit mulierem, invenit bonum, et ſuſcipit 22
voluntatem ſuam à Deo. Deprecationes loquetur pauper, et dives loque- 23
tur rigida. Sunt ſocii qui aſſociantur, et amicus adhærens magis quàm 24
frater.

CAP. XIX.

MElior eſt pauper qui ambulat in ſimplicitate, quàm ille qui pervertit 1
vias ſuas, et ipſe eſt ſtultus. Qui neſcit animam ſuam, non eſt ei bonum : 2
et qui velox eſt pedibus ſuis in malum, peccator eſt. Stultitia filii homi- 3
nis inſtabilem facit viam ipſius, et contra Deum murmurat cor ejus. Di- 4
vitiæ adducunt amicos plurimos : à paupere autem ſocius ejus ſeparatur.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

3 * ܘܡܐ ܕܐܬܐ ܥܘܠܐ ܠܥܘܡܩܐ ܕܒܝܫܬܐ. ܢܐܬܐ ܥܠܘܗܝ ܫܛܝܘܬܐ ܘܥܘܠܐ ܘܨܥܪܐ ܘܚܣܕܐ. * ܡܝܐ
4 5 ܥܡܝܩܐ ܡܠܐ ܦܘܡܗ ܕܓܒܪܐ. ܘܢܚܠܐ ܕܪܕܐ. ܡܒܘܥܐ ܕܚܟܡܬܐ. * ܠܡܣܒ ܒܐܦܐ
6 ܕܥܘܠܐ ܠܐ ܫܦܝܪ. ܐܦܠܐ ܠܡܨܠܝܘ ܕܝܢܐ ܕܙܕܝܩܐ. * ܣܦܘܬܗ ܕܣܟܠܐ ܥܐܠܢ ܠܕܝܢܐ. ܘܦܘܡܗ
7 ܡܩܪܒ ܠܗ ܠܡܘܬܐ. * ܦܘܡܗ ܕܣܟܠܐ ܬܒܪܐ ܗܘ ܠܢܦܫܗ. ܘܒܣܦܘܬܗ ܨܐܕ ܢܦܫܗ.
8 9 * ܡܠܘܗܝ ܕܚܒܢܢܐ ܪܡܝܢ ܠܗ ܒܒܝܫܬܐ. ܘܗܢܝܢ ܡܚܬܝܢ ܠܗ ܠܬܘܢܝ ܫܝܘܠ. * ܘܐܝܢܐ
10 ܕܡܪܦܐ ܐܝܕܘܗܝ ܒܥܒܕܗ. ܐܚܘܗܝ ܗܘ ܕܓܒܪܐ ܡܚܒܠܢܐ. * ܡܓܕܠܐ ܗܘ ܥܫܝܢܐ ܫܡܗ
11 ܕܡܪܝܐ. ܘܠܗ ܪܗܛ ܙܕܝܩܐ ܘܡܬܥܫܢ. * ܐܝܩܪܐ ܘܥܘܬܪܐ ܡܕܝܢܬܐ ܕܥܘܫܢܗ. ܘܫܘܪܐ
12 13 ܥܫܝܢܐ ܡܥܡܪܗ. * ܩܕܡ ܬܒܪܐ ܢܬܪܝܡ ܠܒܗ ܕܓܒܪܐ. ܘܩܕܡ ܐܝܩܪܐ ܡܘܟܟܐ. * ܕܡܦܢܐ
14 ܦܬܓܡܐ ܥܕܠܐ ܢܫܡܥ. ܣܟܠܐ ܗܘ ܘܡܣܬܚܦܪ. * ܪܘܚܗ ܕܓܒܪܐ ܡܣܝܒܪܐ ܚܫܗ. ܘܪܘܚܐ
15 ܡܟܪܝܬܐ. ܡܢ ܢܣܝܒܪܝܗ. * ܠܒܐ ܠܡܝܢܐ ܩܢܐ ܚܟܡܬܐ. ܘܐܕܢܐ ܚܟܝܡܬܐ ܡܨܝܬܐ ܝܕܥܬܐ.
16 17 * ܡܘܗܒܬܐ ܕܒܪܢܫܐ ܡܪܘܚܐ ܠܗ. ܘܩܕܡ ܪܘܪܒܢܐ ܡܩܝܡܐ ܠܗ. * ܙܟܝ ܗܘ ܒܪܢܫܐ
18 19 ܒܕܝܢܗ. ܘܡܐ ܕܐܬܐ ܚܒܪܗ. ܒܨܐ ܠܗ. * ܦܣܐ ܫܪܐ ܚܪܝܢܐ. ܘܒܝܢܝ ܥܫܝܢܐ ܦܪܫܐ. * ܐܚܐ
20 ܕܡܬܥܕܪ ܡܢ ܐܚܘܗܝ. ܐܝܟ ܡܕܝܢܬܐ ܡܢ ܫܘܪܗ. ܘܐܚܝܕܘܗܝ ܐܝܟ ܡܘܟܠܐ ܕܒܝܪܬܐ. * ܡܢ
21 ܦܐܪܐ ܦܘܡܗ ܕܓܒܪܐ. ܢܣܒܥ ܟܪܣܗ. ܘܡܥܠܠܬܐ ܕܣܦܘܬܗ ܢܣܒܥ. * ܡܘܬܐ ܘܚܝܐ ܒܝܕ
22 ܠܫܢܐ ܗܘ. ܘܕܪܚܡ ܠܗ ܢܐܟܘܠ ܡܢ ܦܐܪܘܗܝ. * ܕܡܫܟܚ ܐܢܬܬܐ ܛܒܬܐ. ܡܫܟܚ
ܛܒܬܐ. ܘܡܩܒܠ ܪܚܡܐ ܡܢ ܡܪܝܐ. ܘܕܡܦܩ ܐܢܬܬܐ ܛܒܬܐ. ܡܦܩ ܛܒܬܐ ܡܢ ܒܝܬܗ.
23 24 * ܡܣܟܢܐ ܡܡܠܠ ܒܢܝܚܬܐ. ܘܥܬܝܪܐ ܡܡܠܠ ܥܫܝܢܬܐ. * ܐܝܬ ܪܚܡܐ ܕܪܚܡܐ ܐܢܘܢ. ܘܐܝܬ
ܪܚܡܐ ܕܢܩܦ ܝܬܝܪ ܡܢ ܐܚܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܝܛ *
1 * ܛܒ ܗܘ ܡܣܟܢܐ ܕܡܗܠܟ
2 ܒܬܡܝܡܘܬܐ. ܝܬܝܪ ܡܢ ܥܬܝܪܐ ܕܡܥܩܡܢ ܐܘܪܚܬܗ. * ܡܢ ܕܠܐ ܚܙܐ ܢܦܫܗ ܠܐ ܫܦܝܪ
3 ܠܗ. ܘܕܡܪܗܒ ܒܪܓܠܘܗܝ. ܚܛܐ. * ܣܟܠܘܬܗ ܕܓܒܪܐ ܡܥܩܡܐ ܐܘܪܚܬܗ. ܘܥܠ ܡܪܝܐ
4 ܡܬܪܥܡ ܒܠܒܗ. * ܥܘܬܪܐ ܡܘܣܦ ܪܚܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܡܣܟܢܐ ܦܪܝܫ ܡܢ ܪܚܡܘܗܝ.

Cúmque devenerit impius ad imum malo- 3
lorum, veniet ſuper eum ſtultitia & iniquitas
& contumelia & opprobrium. Aquæ pro- 4
fundæ, verba oris viri: & fluvius decurrens,
fons ſapientiæ. Vereri vultum impii, non eſt 5
bonum: neque reflectere judicium adverſùs
juſtum. Labia ſtulti ingrediuntur in litem, et 6
os ejus perducit eum ad mortem. Os impru- 7
dentis fractio eſt animæ: & labiis ſuis vena-
tur animam ſuam. Verba ſocordis injiciunt 8
eum in malum: ipſáque deprimunt eum in
penetralia inferni. Et qui remittit manus 9
ſuas in opere ſuo, frater eſt viri deſtruentis.
Turris eſt munita nomen Domini, & ad eam 10
accurret juſtus & fortis. Honor & divitiæ, 11
urbs fortitudinis ejus: & intra murum for-
tiſſimum, habitaculum ejus. Ante contritio- 12
nem extolletur cor viri: & ante honorem
depreſſio. Qui reſponſum reddit antequam 13
audiat, ſtultus eſt & ignominioſus. Spiritus 14
viri tolerat paſſionem ſuam: ſpiritum verò
dolentem quis ferat? Cor firmum poſſidet 15
ſapientiam: & auris ſapiens auſcultat ſcien-
tiam. Munera hominis dilatant ei, & ante 16
magnates ſiſtunt eum. Innocens eſt homo in 17
lite propria: at cùm venit ſocius ejus indi-
cat illi. Sors dirimit litem, & inter potentes 18
dividit. Frater qui adjuvatur à fratre ſuo, in- 19
ſtar urbis ab arce ſua, cujus repagula ſunt vel-
uti ſeræ arcis. De fructibus oris viri ſatiabi- 20
tur venter ejus, & frugibus labiorum ſuorum
ſaturabitur. Mors & vita in linguæ poteſtate 21
ſunt: & qui diligit eam, veſcetur fructibus
ejus. Qui invenit uxorem bonam, invenit bo- 22
num, & impetrat gratiam à Domino: & qui
expellit uxoré boná, expellit bonum è domo
ſua. Pauper loquitur mollia: dives autem lo- 23
quitur grandia. Sunt amici qui amici ſunt: & 24
eſt amicus qui firmiùs hæret quàm frater.

CAP. XIX.

Melior eſt pauper qui ambulat in inte- 1
gritate, quàm dives cujus perverſæ ſunt viæ.
Qui non noſcit ſeipſum, malè cedet ei: & 2
qui celer eſt pedibus ſuis, peccabit. Sultitia 3
viri depravat vias ejus, & contra Dominum
ſuccenſet in corde ſuo. Opes addunt ami- 4
cos plurimos: pauper autem ſeparatur ab
amicis ſuis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

3 4 * اذا افضى المنافق الى قعر الاسواء يتهاون * ويوافيه هوان وعار * ماء عميق الكلام في قلب
5 الرجل * ونهر يتدفق فيضه * وعين حياة * ليس حسنا ان يستعجب وجه المنافق * ولا بارا ان
6 يميل العدل في القضاء * شفاه الجاهل تسوقه الى الاسواء * وفم المتهجم يستدعي الموت *
7 8 * فم الغبي يهشمه * وشفتاه فخا لنفسه * العاجزون يصرعهم الخوف * وانفس الطالبين المتواجدين
9 10 جايعة * من لا يشفي ذاته بافعاله فذاك اخو من يفسد ذاته * اسم الرب من عظمة قوته *
11 والمقسطون باحضارهم اليه يستعليون * وجود ثروة الانسان مدينة حصينة * وشرفها يجللها
12 13 عظما * تعالي قلب الرجل لتهشمه * ويذل قبل شرفه * من يجاوب كلاما قبل ان يسمع * فذلك
14 غباوة له وعار * غضب الرجل يسكنه غلام عاقل * والانسان الصغير النفس من ذا يحمله *
15 16 * قلب الحازم العقل يستفيد حسا * واذان الحكماء تطلب معقولا وذكرا * عطية الانسان توسع
17 جاهه * وتجلسه مع المقتدرين * المقسط يثلب ذاته في بدء كلامه * كما ان المقاوم من خطر
18 19 بباله يوبخه * المقسط يسكن المجاوبة * ويفرج لها في ذوي الاقتدار * اخا يعينه اخوه كمدينة
20 حصينة وشاهقة * ويحصل في القوة كقوة ملك موسس * الانسان من ثمر فمه يملأ جوفه *
21 ومن اثمار شفتيه يشبع ويملي * الموت والحياة في يد اللسان * والذين يمسكونه ياكلون
22 ثمرته * من وجد امراة صالحة * فقد وجد الخيرات * وقد اخذ من الله امارات الطلاقة
والاستبشار * من يخرج من منزله امراة صالحة يخرج الخيرات * ومن يمسك فاسقة فذاك غبي
ومنافق *

* الفصل التاسع عشر *

3 4 * غباوة الرجل تفسد طرايقه * وفي قلبه يلوم الله * الغنا يزيد صاحبه اصدقاء كثيرين *
والمسكين يخيب ومن صديقه المختص به *

Cùm tetigerit impius ima nequitiarum, de- 3
ſpicietur, & conſequentur eum contem-
ptus & infamia. Aqua profunda, ſermo 4
in corde viri, & flumen cujus redundat
eluvies, & fons vitæ. Non eſt bonum aſ- 5
ſentari vultui impii, neque rectum tor-
quere juſtitiam in judicio. Labia inſipien- 6
tis ducunt illum ad mala: & os temera-
rii accerſit mortem. Os ſtulti frangit eum: 7
& labia ejus, laqueus animæ ipſius. Pi- 8
gros proſternet pavor: & animæ avido-
rum & ambitioſorum ſunt eſurientes.
Qui non ſanat ſeipſum operibus ſuis, ipſe 9
eſt frater ejus qui corrumpit ſeipſum. No- 10
men Domini ex magnitudine roboris ejus
eſt: & juſti accurrendo ad ipſum, exal-
tabuntur. Abundantia divitiarum homi- 11
nis, urbs fortis: & magnificentia earum
glorificat illum ſummoperè. Superbia cor- 12
dis hominis, in fractionem ipſius: & hu-
miliabitur ante exaltationem ſuam. Re- 13
ſpondenti verba antequam audiat, id im-
prudentiæ eſt ipſi atque ignominiæ. Iram 14
viri ſedabit puer prudens: & hominem
puſillanimem quis ſuſtinebit? Cor firmi 15
judicii poſſidet ſenſum: & aures ſapien-
tum quærunt prudentiam & monitum.
Donum hominis amplificat dignitatem i- 16
pſius, & ſedere facit eum cum potenti-
bus. Juſtus accuſat ſeipſum in exordio 17
ſermonis ſui: quemadmodum pertinax,
quicunque ſibi in mentem venerit, arguit.
Juſtus comprimit objectionem, & relaxat 18
illam inter potentes. Frater quem adju- 19
vat frater ſuus, eſt veluti urbs munita et
alta: & acquiret fortitudinem, quaſi
fortitudinem regis fundati. Homo de 20
fructu oris ſui implebit ventrem ſuum: et
de fructibus labiorum ſuorum ſaturabi-
tur, & replebitur. Mors & vita, in 21
manu linguæ: & qui cohibent illam,
comedent fructus ejus. Qui invenit mu- 22
lierem probam, invenit bona: & jam ac-
cepit à Deo ſigna hilaritatis & lætitiæ.
Qui expellit è domo ſua mulierem pro-
bam, expellit bona: et qui tenet adulte-
ram, hic ſtultus eſt & ſceleſtus.

Deſiderantur duo poſtremi verſus hujus capitis, & duo primi ſequentis.

CAP. XIX.

IMprudentia viri corrumpit vias ejus: 3
& in corde ſuo accuſat Deum. Divitiæ 4
addunt domino ſuo multos amicos: et pau-
per fruſtratur etiam amico ſibi præcipuo.

משלי: יט

.evadet non , mendacia effabit & : impunis erit non falſitatum Teſtis
עֵד שְׁקָרִים לֹא יִנָּקֶה וְיָפִיחַ כְּזָבִים לֹא יִמָּלֵט׃ 5
.boni viro amicus quivis & :liberalis facies precabuntur Multi
רַבִּים יְחַלּוּ פְנֵי־נָדִיב וְכָל־־הָרֵעַ לְאִישׁ מַתָּן׃ 6
ſe elongaverunt ejus ſodales quia etiam, eum oderunt pauperis fratres Omnes
כָּל אֲחֵי־רָשׁ׀ שְׂנֵאֻהוּ אַף כִּי מְרֵעֵהוּ רָחֲקוּ 7
diligens , cor Poſſidens ? ipſa non dicta ſequens : eo ab
מִמֶּנּוּ מְרַדֵּף אֲמָרִים לֹא־הֵמָּה׃ קֹנֶה־לֵּב אֹהֵב 8
.bonum inveniendum ad , intelligentiam cuſtodiens : ſuam animam
נַפְשׁוֹ שֹׁמֵר תְּבוּנָה לִמְצֹא־־־טוֹב׃
.peribit , mendacia effabit & : erit impunis non falſitatum Teſtis
עֵד שְׁקָרִים לֹא יִנָּקֶה וְיָפִיחַ כְּזָבִים יֹאבֵד׃ 9
dominari ſervum quia etiam : delectatio ſtulto decora eſt Non
לֹא־־נָאוֶה לִכְסִיל תַּעֲנוּג אַף כִּי־לְעֶבֶד׀ מְשֹׁל 10
ejus gloria & : ſuam narem prolongavit hominis Intellectus ? principes in
בְּשָׂרִים׃ שֵׂכֶל אָדָם הֶאֱרִיךְ אַפּוֹ וְתִפְאַרְתּוֹ 11
: regis ſævitia catuli veluti Rugitus .prævaricationem ſuper tranſire
עֲבֹר עַל־־־פָּשַׁע׃ נַהַם כַּכְּפִיר זַעַף מֶלֶךְ 12
filius ſuæ patri Contritiones .ejus benevolentia herbam ſuper ros ſicut &
וּכְטַל עַל־עֵשֶׂב רְצוֹנוֹ׃ הַוֹּת לְאָבִיו בֵּן 13
copia & ,Domus .mulieris contentiones continuans ſtillatio & : ſtultus
כְּסִיל וְדֶלֶף טֹרֵד מִדְיְנֵי אִשָּׁה׃ בַּיִת וָהוֹן 14
Pigredo .intelligens mulier Domino à & : patrum hæreditas
נַחֲלַת אָבוֹת וּמֵיְהוָה אִשָּׁה מַשְׂכָּלֶת׃ עַצְלָה 15
Cuſtodiens .fameſcet fraudulenta anima & : ſoporem faciet cadere
תַּפִּיל תַּרְדֵּמָה וְנֶפֶשׁ רְמִיָּה תִרְעָב׃ שֹׁמֵר 16
.morietur , ſuas vias contemnens : ſuam animam cuſtodiens , mandatum
מִצְוָה שֹׁמֵר נַפְשׁוֹ בּוֹזֵה דְרָכָיו יוּמָת׃
.ei reddet ejus retributionem & : tenuis miſereſcens ,Domino Mutuans
מַלְוֵה יְהוָה חוֹנֵן דָּל וּגְמֻלוֹ יְשַׁלֶּם־לוֹ׃ 17
ne ejus fremitum ad & : ſpes eſt quia : tuum filium Caſtiga
יַסֵּר בִּנְךָ כִּי־יֵשׁ תִּקְוָה וְאֶל־הֲמִיתוֹ אַל־ 18
quia : mulctam ferens ira Magnus :tuam animam eleves
תִּשָּׂא נַפְשֶׁךָ׃ גְּרָל־חֵמָה נֹשֵׂא עֹנֶשׁ כִּי 19
ſuſcipe & , conſilium Audi .addes adhuc & , erueris ſi
אִם־תַּצִּיל וְעוֹד תּוֹסִף׃ שְׁמַע עֵצָה וְקַבֵּל 20
cogitationes Multæ .tuo noviſſimo in ſis ſapiens ut ; correctionem
מוּסָר לְמַעַן תֶּחְכַּם בְּאַחֲרִיתֶךָ׃ רַבּוֹת מַחֲשָׁבוֹת 21
Deſiderium ſtabit ipſum Domini conſilium & : viri corde in
בְּלֶב־אִישׁ וַעֲצַת יְהוָה הִיא תָקוּם׃ תַּאֲוַת 22
Timor .mendacii viro præ pauper bonus & :ejus miſericordia hominis
אָדָם חַסְדּוֹ וְטוֹב רָשׁ מֵאִישׁ כָּזָב׃ יִרְאַת 23
.malo viſitabitur non ,commorabitur ſatur & : vitæ ad Domini
יְהוָה לְחַיִּים וְשָׂבֵעַ יָלִין בַּל־־יִפָּקֶד רָע׃
ſuum os ad etiam : axilla in ſuam manum piger Abſcondit
טָמַן עָצֵל יָדוֹ בַּצַּלָּחַת גַּם־־אֶל־פִּיהוּ 24
: efficietur aſtutus ſimplex & , percuſſeris Deriſorem .eam reducet non
לֹא יְשִׁיבֶנָּה׃ לֵץ תַּכֶּה וּפֶתִי יַעְרִם 25
Expilans .ſcientiam intelliget ,intelligentem increpaverit &
וְהוֹכִיחַ לְנָבוֹן יָבִין דָּעַת׃ מְשַׁדֶּד־־ 26
.faciens erubeſcere & , afficiens pudore filius ; matrem fugabit , patrem
אָב יַבְרִיחַ אֵם בֵּן מֵבִישׁ וּמַחְפִּיר׃
eloquiis ab errandum ad : eruditionem audire mi fili Ceſſa
חֲדַל־־בְּנִי לִשְׁמֹעַ מוּסָר לִשְׁגוֹת מֵאִמְרֵי־־ 27
impiorum os & ; judicium deridebit Belijahal Teſtis .ſcientiæ
דָעַת׃ עֵד בְּלִיַּעַל יָלִיץ מִשְׁפָּט וּפִי רְשָׁעִים 28
percuſſiones & : judicia deluſoribus ſunt Parata .iniquitatem deglutiet
יְבַלַּע־־אָוֶן׃ נָכוֹנוּ לַלֵּצִים שְׁפָטִים וּמַהֲלֻמוֹת 29
.ſtultorum corpori
לְגֵו כְּסִילִים׃

Verſio VULG. LAT.

5 Teſtis falſus non erit impuni-
tus: & qui mendacia loquitur,
6 non effugiet. Multi colunt p-
ſonam potentis, & amici ſunt
7 dona tribuentis. Fratres ho-
minis pauperis oderunt eum :
inſuper & amici procul receſ-
ſerunt ab eo. Qui tantùm ver-
8 ba ſectatur, nihil habebit: Qui
autem poſſeſſor eſt mentis, di-
ligit animam ſuam, & cuſtos
9 prudentiæ inveniet bona. Fal-
ſus teſtis non erit impunitus: et
qui loquitur mendacia, peri-
10 bit. Non decent ſtultum deli-
ciæ, nec ſervum dominari prin-
11 cipibus. Doctrina viri per
patientiam noſcitur : & glo-
ria ejus eſt iniqua prætergre-
12 di. Sicut fremitus leonis, ita
& regis ira : & ſicut ros ſuper
herbam, ita & hilaritas ejus.
13 Dolor patris, filius ſtultus : &
tecta jugiter perſtillantia, liti-
14 gioſa mulier. Domus, & di-
vitiæ dantur à parentibus : à
Domino autem propriè uxor
15 prudens. Pigredo immittit ſo-
porem, & anima diſſoluta eſu-
16 riet. Qui cuſtodit mandatũ,
cuſtodit animam ſuam: qui au-
tem negligit viam ſuam, mor-
17 tificabitur. Fœneratur Do-
mino qui miſeretur pauperis :
& viciſſitudinem ſuam reddet
18 ei. Erudi filiũ tuum, ne deſpe-
res : ad interfectionem autem
ejus ne ponas animam tuam.
19 Qui impatiens eſt, ſuſtinebit
damnum : & cùm rapuerit, a-
20 liud apponet. Audi conſilium,
& ſuſcipe diſciplinam, ut ſis
21 ſapiens in noviſſimis tuis. Mul-
tæ cogitationes in corde viri :
voluntas autẽ Domini perma-
22 nebit. Homo indigens miſe-
ricors eſt: et melior eſt pauper,
23 quàm vir mendax. Timor Do-
mini ad vitam: et in plenitudi-
ne commorabitur, abſque vi-
24 ſitatione peſſima. Abſcondit
piger manum ſuam ſub aſcella,
nec ad os ſuum applicat eam.
25 Peſtilente flagellato ſtultus ſa-
pientior erit : ſi autem corri-
pueris ſapientem, intelliget di-
26 ſciplinam. Qui affligit patrẽ,
& fugat matrem, ignominioſus
27 eſt & infœlix. Non ceſſes, fili,
audire doctrinam, nec ignores
28 ſermones ſcientiæ. Teſtis ini-
quus deridet judicium : & os
impiorum devorat iniquita-
29 tem. Parata ſunt deriſoribus
judicia: & mallei percutientes
ſtultorum corporibus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

5 † Μάρτυς ψευδὴς οὐκ ἀτιμώρητος ἔσται, † ὁ
6 δὲ ἐγκαλῶν ἀδίκως οὐ διαφεύξεται. † Πολλοὶ
θεραπεύουσι πρόσωπα βασιλέων, † (α) πᾶς
7 δὲ ὁ κακὸς γίνεται (β) ὄνειδος ἀνδρί. † Πᾶς
ὃς ἀδελφὸν πτωχὸν μισεῖ, καὶ φιλίας μακρὰν
ἔσται. † ἔννοια ἀγαθὴ τοῖς εἰδόσιν αὐτὴν ἐγ-
γιεῖ, † ἀνὴρ δὲ φρόνιμος εὑρήσει αὐτήν.
† ὁ πολλὰ κακοποιῶν τελεσιουργεῖ κακίαν,
8 † ὃς δὲ ἐρεθίζει λόγους, οὐ σωθήσεται. † Ὁ
κτώμενος φρόνησιν ἀγαπᾷ ἑαυτόν, † ὃς δὲ
9 φυλάσσει φρόνησιν, εὑρήσει ἀγαθά. † Μάρ-
τυς ψευδὴς οὐκ ἀτιμώρητος ἔσται, † ὃς δ'
ἂν ἐκκαύσῃ κακίαν, ἀπολεῖται ὑπ' αὐτῆς.
10 † Οὐ συμφέρει ἄφρονι τρυφή, † καὶ ἐὰν
11 οἰκέτης ἄρξηται μεθ' ὕβρεως δυναστεύειν. † Ἐ-
λεήμων ἀνὴρ μακροθυμεῖ, † τὸ δὲ καύχημα
12 αὐτοῦ ἐπέρχεται παρανόμοις. † Βασιλέως
ἀπειλὴ ὁμοία βρυγμῷ λέοντος, † ὥσπερ δὲ
δρόσος ἐπὶ χόρτῳ, οὕτως τὸ ἱλαρὸν αὐτοῦ.
13 † Αἰσχύνη πατρὶ υἱὸς ἄφρων, (γ) † οὐχ ἁ-
14 γναὶ εὐχαὶ ἀπὸ μισθώματος ἑταίρας. † Οἶ-
κον καὶ ὕπαρξιν (δ) μερίζουσι πατέρες παι-
σί, † παρὰ δὲ κυρίου ἁρμόζεται γυνὴ ἀν-
15 δρί. † Δειλία κατέχει ἀνδρόγυνον, † ψυ-
16 χὴ δὲ ἀεργοῦ πεινάσει. † Ὃς φυλάσσει ἐντο-
λήν, τηρεῖ τὴν ἑαυτοῦ ψυχήν· † ὁ δὲ κατα-
17 φρονῶν τῶν ἑαυτοῦ ὁδῶν, ἀπολεῖται. † Δα-
νείζει θεῷ ὁ ἐλεῶν πτωχόν, † κατὰ δὲ τὸ
18 δόμα αὐτοῦ ἀνταποδώσει αὐτῷ. † Παίδευε
υἱόν σου, οὕτως γὰρ ἔσται εὔελπις, † εἰς δὲ
19 ὕβριν μὴ ἐπαίρου τῇ ψυχῇ σου. † Κακό-
φρων ἀνὴρ πολλὰ ζημιωθήσεται, † ἐὰν δὲ
λοιμεύηται, καὶ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ προσθήσει.
20 † Ἄκουε υἱὲ παιδείαν πατρός σου, † ἵνα σο-
21 φὸς γένῃ ἐπ' ἐσχάτων σου. † Πολλοὶ λο-
γισμοὶ ἐν καρδίᾳ ἀνδρός, † ἡ δὲ βουλὴ τοῦ
22 κυρίου εἰς τὸν αἰῶνα μένει. † Καρπὸς ἀνδρὶ
ἐλεημοσύνη, † κρείσσων δὲ πτωχὸς δίκαιος
23 ἢ πλούσιος (ε) ψευδής. † Φόβος κυρίου
εἰς ζωὴν ἀνδρί, † ὁ δὲ ἄφοβος αὐλισθή-
σεται ἐν τόποις, οὗ οὐκ ἐπισκοπεῖται γνῶσις.
24 † Ὁ ἐγκρύπτων εἰς τὸν κόλπον αὐτοῦ χεῖ-
ρας ἀδίκως, † οὐδὲ τῷ στόματι οὐ μὴ (ζ) προσ-
25 ενέγκῃ αὐτάς. † Λοιμοῦ μαστιγουμένου ἄ-
φρων πανουργότερος (η) γίνεται, † ἐὰν δὲ
ἐλέγχῃς ἄνδρα φρόνιμον, νοήσει αἴσθησιν.
26 † Ὁ ἀτιμάζων πατέρα καὶ ἀπωθούμενος μη-
τέρα αὐτοῦ, καταισχυνθήσεται καὶ ἐπονείδιστος
27 ἔσται. † Υἱὸς ἀπολειπόμενος φυλάξαι παι-
δείαν πατρός, μελετήσει ῥήσεις κακάς.
28 † Ὁ ἐγγυώμενος παῖδα ἄφρονα, (θ) καθυ-
βρίζει δικαίωμα, † στόμα δὲ ἀσεβῶν καταπί-
29 εται κρίσεις. † Ἑτοιμάζονται ἀκολάστοις μά-
στιγες, † καὶ τιμωρίαι ὁμοίως ἄφροσιν.

Teſtis falſus (b) non impunitus e- 5
rit: & qui accuſat iniquè, (c) non
effugiet. Multi colunt facies re- 6
gum : (d) omnis autem malus ſit
opprobrium viro. Omnis qui fra- 7
trem inopem odit ; etiam ab ami-
citia longè erit. Cogitatio bona ſci-
entibus eam appropinquabit : &
vir prudens inveniet eam. Multa
malefaciens, perficit malitiam: qui
autem (e) contendit verbis, non
ſalvabitur. Qui poſſidet (f) pru- 8
dentiam, diligit ſeipſum : qui
autem cuſtodit prudentiam, inve-
niet bona. Teſtis falſus non impu- 9
nitus erit : qui autem accenderit
malum, peribit ab eo. Non (g) 10
conferunt imprudenti deliciæ, (h)
& ſi famulus incipiat cum contu-
melia dominari. (i) Miſericors 11
vir longanimis eſt ; (k) gloriatio
autem ejus ſupervenit iniquis. Re- 12
gis comminatio ſimilis (l) fremitui
leonis : tanquam autem ros ſuper
herbam, ſic (m) hilaritas ejus.
(n) Confuſio patri filius impru- 13
dens ; (o) non pura vota de mer-
cede meretricis. Domum & ſub- 14
ſtantiam dividunt patres pueris :
à Domino autem aptatur mulier
(p) viro. (q) Pavor detinet effœ- 15
minatum : anima autem otioſi e-
ſuriet. Qui cuſtodit mandatum, 16
ſervat ſuam animam : qui autem
negligit ſuas vias, peribit. Fœne- 17
rat Deo qui miſeretur pauperis :
(r) ſecundùm datum autem ejus
retribuet ei. Erudi filium tuum : 18
ſic enim erit bonæ ſpei : (ſ) ad
contumeliam autem ne eleveris a-
nimo tuo. (t) Malè cogitans vir 19
multa damna patietur : (u) ſi au-
tem corruperit ; & animam ſuam
addet. (x) Audi, fili, diſciplinam 20
patris tui; ut ſapiens ſis in noviſ-
ſimis tuis. Multæ cogitationes in 21
corde viri : conſilium autem Do-
mini in ſeculum manet. Fructus 22
viro miſericordia : melior autem
pauper juſtus, quàm mendax di-
ves. Timor Domini ad vitam viro: 23
(y) carens autem timore, morabitur
in locis, ubi non conſideratur ſci-
entia. Qui abſcondit in (z) ſi- 24
num ſuum manus injuſtè ; neque
ori quidem (ω) admovebit eas.
Peſtilente flagellato (aa) ſtultus 25
aſtutior fit : ſi autem corripueris
virum prudentem, cogitabit (bb)
ſenſum. Qui inhonorat patrem, 26
& (cc) expellit matrem ſuam ;
confundetur, & exprobrabilis erit.
(dd) Filius omittens cuſtodire di- 27
ſciplinam patris, meditabitur e-
loquia mala. Qui (ee) ſpondet 28
puerum imprudentem ; (ff)
contumeliâ afficiet juſtificationem : os autem impiorum (gg) devorabit judicia.
Parantur (hh) intemperantibus flagella (ii) & ſupplicia ſimiliter imprudentibus. 29

MS.A. (α) πᾶς δὲ κακὸς (β) ἄδικος ἀνδρί. (γ) καὶ ὀδύνη τῇ τεκούσῃ αὐτοῦ, οὐχ ἁγναὶ (δ) μερίζουσιν (ε) ψευδής. (ζ) προσαγάγῃ αὐτάς. (η) ἔσται, (θ) καθυβρίζει

תרגום TARGUM.

סָהֲדָא דְשִׁקְרָא לָא נִזְדְּכֵי וּדְמוֹעֵי כַּדְּבוּתָא לָא נִתְמְלֵט׃ סַגִּיעֵי דִּמְשַׁמְּשִׁין קֳדָם רַבָּא 5
וּדְלָבִישִׁין יָהֵיב מוֹהַבְתָּא׃ כֻּלְּהוֹן רַחֲמוֹי דְּמִסְכֵּנָא סָנְיָן לֵיהּ וְאַף חַבְרוֹי רַחְקִין מִנֵּיהּ 6 7
אֵיכָא דְּטָרֵיךְ בְּמִלּוֹי לָא שְׁרִיר׃ קָנֵי לִבָּא טָבָא רָחֵם נַפְשֵׁיהּ נָטַר בִּיוּנָא מַשְׁכַּח טָבְתָא׃ 8
סָהֲדָא דְשִׁקְרָא לָא נִזְדְּכֵא וּדְמוֹעֵי כַּדְּבוּתָא נֵאבַד׃ לָא יָאֵי לְסַכְלָא פִּנּוּקָא אַף לָא 9 10
לְעַבְדָּא דְּנִשְׁתַּלֵּט בְּרַבְרְבָנִין׃ שַׂכְלֵיהּ דְּבַר נָשָׁא נְגִידוּת אוּרְחֵיהּ וְשִׁבְהוֹרֵיהּ חוֹבָא׃ 11
נְהֵם הֵיךְ אַרְיָא זַעְפֵיהּ דְּמַלְכָּא וְהֵיךְ טַלָּא עַל עִסְבָּא רַעֲוָתֵיהּ׃ בַּר סַכְלָא קָשֵׁה 12 13
הוּא לַאֲבוּי הֵיךְ קַרְסֵי וְהֵיךְ דִּלְפָא דְּדָלֵיף תִּגְרֵי דְאִתְּתָא׃ בֵּיתָא וּמָוְלָא וִירוּתְתָא הוּא 14
דַּאֲבָהָן וּמִן אֱלָהָא מִתְמַסְרָא אִתְּתָא לְגַבְרָא׃ עַטְלוּתָא יָהֲבָא שִׁנְתָא וְנַפְשָׁא רְמִיתָא 15
תִּכְפַּן׃ דְּנָטַר פּוּקְדָנָא נָטַר נַפְשֵׁיהּ וּדְמֵשִׁיט אוֹרְחָתֵיהּ יְמוּת׃ מַן דְּבָעֵי דְּנוּיף לֵאלָהָא 16 17
מִתְרַחֵם עַל מִסְכֵּנָא וּפוּרְעָנוּתָא טָבְתָא מְשַׁלֵּם לֵיהּ׃ רְדִי בְּרָךְ מְטוּל דְּאִית סְכוּיָא 18
וּלְמִיתוּתֵיהּ לָא תְּרִים נַפְשָׁךְ׃ גַּבְרָא חֶמְתָנָא מְקַבֵּל תְּבָא וְכַמָּה דְּמִתְעַלֵּי עַל טוֹעֲנֵיהּ 19
מוֹסִיף׃ שְׁמַע עֵיצְתָא וְקַבֵּל מַרְדּוּתָא מְטוּל דְּתִתְחַכַּם בְּסוֹפָךְ׃ סַגִּיעָן מַחְשְׁבָתָא 20 21
בְּלִבֵּיהּ דְּגַבְרָא וְעֵצְתָא דֶאלָהָא הִיא תְּקוּם׃ רַגְתֵיהּ דְּבַר נָשָׁא חַסְדֵיהּ וְטָב מִסְכֵּנָא 22
מִן גַּבְרָא כַּדָּבָא׃ דַּחַלְתֵיהּ דֶאלָהָא לְחַיֵּי וּמַן דְּשָׂבֵיעַ מִנֵּיהּ נְבוּת וְלָא נִפְקוּד בִּישְׁתָא׃ 23
עַטְלָא דְּמַטְשֵׁי יְדֵיהּ בְּשַׁחְתֵיהּ אַף לָא לְפוּמֵיהּ מְקָרֵב לֵיהּ׃ לִמְמַקְנָא תִּמְחֵי 24 25
וְשַׁבְרָא מִתְעָרֵם וְאַכֵּיס לְסוּכְלְתָן דְּנִתְבַּיַּין יְדִיעְתָא׃ דְּבָזֵז לַאֲבוּי וּמַעֲרִיק לְאִמֵּיהּ בְּרָא 26
הוּא מְבַהֲתָנָא וּמְחַפְרָנָא׃ פְּרַשׁ בְּרִי וּשְׁמַע מַרְדּוּתָא וְלָא תִשְׁגֵא מִן מֵאמְרֵי דְפוּמִי׃ 27
סָהֲדָא דִּנְלָאֵה מַמִּיק בְּדִינֵיהּ וּפוּמְהוֹן דְּרַשִׁיעֵי מַפֵּיק עָוְלְתָא׃ מִתַּקְנִין לְמַמְקְנֵי 28 29
דִּינֵי וּמַחְתָּא לְגַשְׁמֵיהוֹן דְּסַכְלֵי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Teſtis falſus non erit innocens : & qui loquitur mendacium, non libera- 5
bitur. Multi ſunt qui miniſtrant coram principe, & malis dat munera. 6
Omnes amici pauperis oderunt eum, inſuper ſocii ejus recedunt ab eo : 7
ubi *eſt* qui *inſectatur* verbis ſuis, nihil erit eis *firmum*. Qui poſſidet cor 8
bonum, diligit animam ſuam : qui cuſtodit prudentiam ; inveniet bonum.
Teſtis falſus non erit innocens : & qui loquitur mendacium, peribit. 9
Non decent ſtultum deliciæ, neque ſervum dominari cum principibus. 10
Intellectus hominis eſt differre furorem ſuum, & pulchritudo ejus [*præ-* 11
tergredi] iniquitatem. Fremit ſicut leo ira regis, & ſicut ros ſuper 12
herbam voluntas ejus. Filius ſtultus gravis eſt patri ſuo ſicut acida : & 13
ſicut ſtillicidium quod diſtillat, litigia mulieris. Domus & ſubſtantia & 14
hæreditas [*ſunt*] à parentibus, & à Deo traditur mulier viro. Pigredo 15
mittit ſomnum, & anima doloſa eſuriet. Qui cuſtodit mandatum, cuſto- 16
dit animam ſuam : & qui ſpernit viam ſuam, morietur. Qui quærit com- 17
modare Deo, miſeretur pauperis, & *retributionem bonam reddit* ei. Erudi 18
filium tuum, quoniam eſt ſpes: & ad mortem ejus ne attollas animam tuam.
Vir iracundus ſuſcipit pœnam, & quando exaltatur, ſuper onus ſuum 19
addit. Audi conſilium & ſuſcipe diſciplinam, ut ſapiens ſis in fine tuo. 20
Multæ cogitationes in corde *viri:* conſilium autem Dei ipſum permanebit. 21
Deſiderium filii hominis miſericordia ejus, & melior eſt pauper quàm 22
vir mendax. Timor Dei eſt ad vitam ; & qui ſatiatur ab eo, pernoctabit, 23
nec viſitabitur à malo. Piger abſcondit manum ſuam ſub aſcella ſua, 24
neque ad os ſuum applicat eam. Percute deriſorem, & inſipens aſtutior 25
fiet . & corripe prudentem, ut intelligat ſcientiam. Qui deridet patrem 26
ſuum & fugat matrem ſuam, filius eſt ignominioſus & confuſione dignus. 27
Creſce fili mi & audi diſciplinam, & non erres à verbis oris *mei*. Teſtis 28
iniquus deridet judicium, & os impiorum profert iniquitatem. Parantur 29
deriſoribus judicia ; & verbera corporibus *ſtultorum*.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

5 6 * ܣܗܕܐ ܕܓܠܐ ܠܐ ܢܬܚܣܐ. ܘܕܡܡܠܠ ܕܓܠܘܬܐ ܠܐ ܢܬܦܨܐ. * ܣܓܝܐܐ ܕܡܫܡܫܝܢ ܩܕܡ
ܪܒܐ. ܘܡܪܫܝܥܐ ܝܗܒ ܡܘܗܒܬܐ. * ܟܠܗܘܢ ܐܚܘܗܝ ܕܡܣܟܢܐ ܣܢܝܢ ܠܗ. ܘܐܦ
7 ܪ̈ܚܡܘܗܝ ܡܬܪܚܩܝܢ ܡܢܗ. * ܐܝܢܐ ܕܡܦܪܟ ܒܡܠܘܗܝ. ܠܐ ܫܪܝܪ. ܘܕܩܢܐ ܚܟܡܬܐ. ܪܚܡ
8 ܢܦܫܗ. * ܕܢܛܪ ܗܝܡܢܘܬܐ. ܡܫܟܚ ܛܒܬܐ. ܘܣܗܕܐ ܕܓܠܐ ܠܐ ܢܬܚܣܐ. ܘܕܡܡܠܠ
9 ܕܓܠܐ ܢܐܒܕ. * ܠܐ ܝܐܐ ܠܣܟܠܐ ܦܘܢܩܐ. ܘܐܦܠܐ ܠܥܒܕܐ ܕܢܫܠܛ ܒܪܘܪܒܢܐ. * ܡܕܥܗ
10 11 ܕܓܒܪܐ ܢܓܝܪܘܬ ܪܘܚܗ ܗܝ. ܘܫܘܒܚܗ ܡܥܒܪ ܥܘܠܐ. * ܢܗܡ ܐܝܟ ܐܪܝܐ. ܪܘܓܙܗ
12 ܕܡܠܟܐ. ܘܐܝܟ ܛܠܐ ܥܠ ܥܣܒܐ. ܪܥܝܢܗ. * ܟܘܠܬܐ ܗܘ ܠܐܒܐ ܒܪܐ ܣܟܠܐ. ܘܐܝܟ ܕܠܦܐ
13 ܕܢܛܦ. ܪ̈ܢܝܢܗ ܕܐܢܬܬܐ. * ܒܝܬܐ ܘܩܢܝܢܐ ܝܪܬܘܬܐ ܗܘ ܕܐܒܐ. ܘܡܢ ܡܪܝܐ ܗܘ ܡܬܡܟܪܐ
14 ܐܢܬܬܐ ܠܓܒܪܐ. * ܢܘܡܬܐ ܝܠܕܐ ܫܢܬܐ. ܘܢܦܫܐ ܪܡܬܐ ܬܟܦܢ. * ܕܢܛܪ ܦܘܩܕܢܐ ܡܛܪ ܗܘ
15 16 ܠܢܦܫܗ. ܘܕܡܫܝܛ ܐܘܪܚܬܗ. ܢܡܘܬ. * ܕܡܬܩܪܒ ܠܡܪܝܐ. ܡܪܚܡ ܥܠ ܡܣܟܢܐ.
17 ܘܐܝܟ ܥܒܕܘܗܝ ܡܩܒܠ ܦܘܪܥܢܐ. * ܪܕܝ ܒܪܟ. ܡܛܠ ܕܐܝܬ ܣܒܪܐ. ܘܒܨܥܪܗ ܠܐ ܬܪܡܐ ܢܦܫܟ.
18 * ܓܒܪܐ ܚܡܬܢܐ. ܡܩܒܠ ܚܘܣܪܢܐ. ܘܟܡܐ ܕܡܣܟܠ. ܡܘܣܦ ܥܠ ܡܘܒܠܗ. * ܫܡܥ ܡܠܟܐ
19 20 ܘܩܒܠ ܡܪܕܘܬܐ. ܐܝܟ ܕܬܬܚܟܡ ܒܐܘܪܚܬܟ. * ܣܓܝܐܢ ܡܚܫܒܬܐ ܒܠܒܗ ܕܓܒܪܐ. ܘܬܪܥܝܬܐ
21 ܕܡܪܝܐ ܬܬܩܝܡ. * ܪܓܬܗ ܕܒܪܢܫܐ ܛܝܒܘܬܗ. ܛܒ ܗܘ ܡܣܟܢܐ. ܡܢ ܓܒܪܐ ܥܬܝܪܐ ܕܡܕܓܠ.
22 * ܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܠܚܝܐ. ܘܡܢ ܕܣܒܥ ܡܢܗ ܢܒܘܬ. ܘܠܐ ܢܬܦܩܕ ܒܒܝܫܬܐ. * ܚܒܢܢܐ ܕܡܛܫܐ
23 24 ܐܝܕܘܗܝ ܒܥܘܒܗ. ܐܦܠܐ ܠܦܘܡܗ ܢܩܪܒ ܐܢܝܢ. * ܟܕ ܡܬܢܓܕ ܡܪܝܚܐ. ܚܟܝܡܐ ܡܬܥܪܝܢ.
25 ܘܐܢ ܬܟܣ ܠܚܟܝܡܐ. ܡܣܬܟܠ ܝܕܥܬܐ. * ܕܡܨܥܪ ܠܐܒܘܗܝ. ܘܡܥܝܩ ܠܐܡܗ. ܒܪܐ ܗܘ ܡܒܗܬܢܐ
26 ܘܡܚܣܕܢܐ. * ܦܘܫ ܒܪܝ. ܘܫܡܥ ܡܪܕܘܬܐ. ܘܠܐ ܬܛܥܐ ܡܐܡܪܐ ܕܝܕܥܬܐ. * ܣܗܕܐ ܥܘܠܐ ܡܫܪܪ
27 28 ܕܝܢܐ. ܘܦܘܡܗ ܕܥܘܠܐ ܡܒܠܥ ܠܗ. * ܡܛܝܒܝܢ ܟ̈ܐܒܐ ܠܐܝܠܝܢ ܕܡܫܪܪܝܢ ܕܝܢܐ. ܘܡܚܘܬܐ ܠܥܡܐ ܣܟܠܐ.
29

Teſtis mendax non erit impunis: & qui loqui- 5
tur mendaciũ, non evadet. Multi ſunt qui mi- 6
niſtrant apud principem, et flagitioſis largitur
munera. Omnes fratres pauperis oderũt illũ: 7
quin etiam amici ejus recedunt ab ipſo. Qui 8
detrectat verbis ſuis, non eſt verax: & qui poſ-
ſidet ſapientiã, diligit animã ſuã. Qui ſervat 9
fidẽ inveniet bonũ: et teſtis falſus non impunè
feret: et qui loquitur falſum, peribit. Non con- 10
venit ſtulto voluptas, neque ſervo dominari
magnatibꝰ. Prudentia viri, longanimitas ejus 11
eſt: et gloria ejꝰ amovet iniquitatẽ. Fremit ceu 12
leo ira regis: et ut ros ſuper herbã, benevolen-
tia ejꝰ. Ignominia eſt patri filiꝰ ſtultꝰ: et ut plu- 13
via in domũ ſtillans, angor mulieris. Domꝰ & 14
opes hæreditas ſunt paterna: à Dño autẽ ma-
ritatur uxor viro. Dormitatio parit ſomnũ: & 15
animꝰ elatus fame laborabit. Qui ſervat præ- 16
ceptũ, cavet animæ ſuæ, qui autẽ negligit vias
ſuas, occidetur. Qui Dño adhæret, miſeretur 17
pauperũ, & ſecundùm opera ſua præmiũ ac-
cipiet. Erudi filiũ tuũ, quoniã adhuc ſpes eſt: 18
et ignominiæ ejꝰ ne proſternas animã tuã. Ho- 19
mo iracundus damna percipiet: & quò magis
delinquit, ſarcinã ſuã auget. Audi conſiliũ, & 20
complectere caſtigationẽ, ut ſapias in viis tu-
is. Plurimæ ſunt cogitationes in corde viri: at 21
conſiliũ Dñi firmũ erit. Deſideriũ hominis, 22
beneficiũ ſuũ. Melior eſt pauper homine di-
viti fallaci. Timor Dñi, ad vitã: & quicunq; 23
ſatiabitur illo, pernoctabit, & non viſitabit
malũ. Piger qui abſcondit manꝰ ſuas in ſinu 24
ſuo, neq; ad os quidẽ ſuũ admovebit eas. Dum 25
flagellatur facinoroſus, ſapiens cautus evadit;
& ſapientẽ ſi corripias, intelligit ſcientiã. Qui 26
deſpicit patrem ſuũ, & affligit matrem ſuã, fi-
lius eſt ignominiã ac dedecus afferens. Cun- 27
ctare fili mi, & audi diſciplinã, & ne oblivi-
ſcaris ſermonẽ ſcientiæ. Teſtis iniquus robur 28
addit liti: & ore ſuo ſceleſtus immergetur.
Parati ſunt dolores his qui fovent litem, & 29
plaga populo ſtulto.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

5 6 * الشاهد الكذوب لن يكون غير معاقب * ومن يستعدي وهو ظالم فما ينفلت * كثيرون
7 يخدمون وجوه الملوك * وكل ردي يصير للانسان عارا * كل من يمقت اخا مسكينا فذاك بعيدا
من الصداقة * الذكري الصالحة تصاقب الذين يعرفونها * والرجل الحازم العقل يصادفها *
8 * من يعمل ظلامات كثيرة يتم عمل الرذيلة * ومن يعاجل الاقوال لن يسلم * المقتني فطنة
9 يحب ذاته * ومن يحفظها بفطن يجد الخيرات * الشاهد الكذوب لن يكون غير معاقب ومن
10 11 يضرم شرا سيهلكه * التنعم لن يوافق الجاهل * وان كان عبدا فسيبتدي يتجبر بتعاظم * الانسان
12 الرحوم يمهل * وفخره سيوافي لدى العادلين عن الشريعة * وعيد الملك يضاهي زئير
13 الاسد * وكالندى على العشب كذلك طلاقته * الابن الجاهل خزيا لابيه * ونذورا من اجرة زانية
14 ليست طاهرة * الاباء يقسمون لابنائهم منزلهم ونعمهم * ومن قبل الرب تقرن الامراة بالرجل *
15 16 * الجبانة تمسك البطال المسترخي * ونفس من لا يعمل شيا تجوع * من يحفظ وصيته يصون
17 نفسه * ومن يتهاون بطرقه يهلك * من يرحم مسكينا يقرض الله * وسيكافيه على قدر عطيته *
18 19 * ادب ابنك فان رجاه هكذا يكون حسنا * ولا ترفع نفسك بالتعظم * الرجل الردي التمييز
20 سيخسر اشياء كثيرة * فان شيت فانه يضيف اليها ونفسه * اسمع يا بني ادب ابيك * لتصير في
21 22 اواخرك حكيما * افكارا كثيرة في قلب الانسان * وراي الرب يبقى الى الابد * الصدقة ثمر
23 الانسان مسكين مقسط افضل من موسر كذوب * خشية الرب في الانسان حياة * ومن لا تقوى
24 فيه سيسكن في مواضع لا يسارقها معرفة * من يخبي يديه في حضنه ظلم * فما يقدمها
25 ولا الى فمه * الغبي اذا ادبه الجوع وجلده يكون اوفر دربة * ان وبخت رجلا عاقلا سيفيد
26 27 حسا * من يهين اباه ويدفع امه يستخزي * ويكون بذلك ملقيا * الابن المتخلف عن حفظ
28 29 ادب ابيه يدرس الفاظا ردية * من يتكفل بعبد جاهل يتضمن الواجب * فم المنافقين
يبتلع الانصاف * والسياط معدة للفساق * وكذلك العقوبات مسومة للجهال *

Teſtis mendax non erit impunitus: & qui 5
aggreſſor eſt & impius, non evadet.
Multi ſerviunt vultibus regum: & o- 6
mnis nequitia fiet homini ignominia.
Quicunque odit fratrem pauperem, is eſt 7
remotus à charitate. Fama bona occurrit
iis qui illam noſcunt: & vir firmus judi-
cio reperiet illam. Qui perpetrat ſcelera 8
multa, complet opus abominationis: &
qui præcipitat ſermones, non ſalvabitur.
Poſſidens prudentiam, diligit ſemetipſum:
& qui eam ſervat cautè, inveniet bona.
Teſtis mendoſus non erit impunitus: & 9
qui accendit malum, perdetur ab eo. De- 10
litiæ non conveniunt ſtulto: & ſi fue-
rit ſervus, incipiet ſe reficere cum arro-
gantia. Homo clemens, longanimis eſt: 11
& gloria ejus deveniet uſque ad de-
clinantes à lege. Minæ regis ſimiles 12
ſunt rugitui leonis: & velut ros ſu-
per herbam, ſic ſerenitas illius. Filius 13
ſtultus pudori eſt patri ſuo: & vota
ex mercede fornicariæ, non ſunt pu-
ra. Patres dividunt filiis ſuis domum 14
ſuam & opes ſuas: & à Domino
jungitur mulier cum viro. Timiditas 15
detinet otioſum & ignavum: & ani-
ma ejus qui non operatur quidquam,
eſuriet. Qui ſervat mandatum, cu- 16
ſtodit animam ſuam: & qui negligit
vias ſuas, interibit. Qui miſeretur 17
pauperis, commodat Deo: & retri-
buet ei juxta datum ejus. Erudi fi- 18
lium tuum, quoniam ſpes illius hoc
pacto erit bona: & ne extollatur a-
nima tua cum ſuperbia. Homo malè 19
circumſpectus amittet res multas: ſi
voluerit, apponet illis etiam animam
ſuam. Audi O fili mi, diſciplinam 20
patris tui, ut evadas in noviſſimis tuis
ſapiens. Cogitationes multæ in corde 21
hominis: & conſilium Domini manet
in æternum. Eleemoſyna, fructus ho- 22
minis. Pauper juſtus præſtantior eſt di-
vite mendaci. Timor Domini in ho- 23
mine, vita: & is quo non eſt reli-
gio, habitabit in locis ad quæ non ac-
cedit ſcientia. Qui condit manus ſuas 24
in ſinu ſuo, perverſus eſt, & non ap-
proximabit illas ne quidem ad os ſuum.
Stultus, cùm fame correptus ac fla- 25
gellatus fuerit, evadet ſagacior. Si cor-
ripias virum prudentem, acquiret ſen-
ſum. Qui deſpicit patrem ſuum, & 26
abjicit matrem ſuam, confundetur, &
erit propter hoc abjectus. Filius poſt- 27
ponens cuſtodiam diſciplinæ patris ſui,
ſtudet eloquiis pravis. Qui ſpondet 23
pro ſervo ſtulto, obligat ſe debito.
Os iniquorum deglutit juſtitiam: & 29
lora ſunt parata flagitioſis: & ſimiliter
tormenta ſunt indubitata inſipientibus.

משלי : כ

CAP. XX. כ

.erit sapiens non ,eo in *errans* omnis & : sechar *tumultuans* , vinum *Derisor*
1 לץ היין המה שכר וכל־שגה בו לא יחכם׃
.suam animam *peccans ei succensens* :regis terror leunculi tanquam Rugitus
2 נהם ככפיר אימת מלך מתעברו חוטא נפשו׃
hiemẽ Propter.se miscebit stultus omnis &:lite à *considere* viro Gloria
3 4 כבוד לאיש שבת מריב וכל־אויל יתגלע׃ מחרף
consilium *profundæ Aquæ* .non &,*messe in postulabit* : arabit non piger
5 עצל לא־יחרש ישאל בקציר ואין׃ מים עמקים עצה
vocabit hominis *Multitudo* .illud hauriet *intelligentiæ vir* & : viri corde in
6 בלב־איש ואיש תבונה ידלנה׃ רב־אדם יקרא
sua *integritate* in *Ambulãs*?inveniet quis *veritatum* virũ &:*suæ misericordiæ* virũ
7 איש חסדו ואיש אמונים מי ימצא׃ מתהלך בתמו
dispergens;judicii soliũ super *sedens* Rex .eum post ejus filii beati ;*justus*
8 צדיק אשרי בניו אחריו׃ מלך יושב על־כסא־דין מזרה
sum mundus?meum cor Mundavi , *dicet* Quis .malum omne suis oculis in
9 בעיניו כל־רע׃ מי־יאמר זכיתי לבי טהרתי
etiam Domini abominatio ; *ephah & ephah* ,*lapis & Lapis* ? meo peccato à
10 מחטאתי׃ אבן ואבן איפה ואיפה תועבת יהוה גם־
utrùm &,mundũ utrùm;puer cognoscetur suis *studiis* in Etiam .*ipsa* ambo
11 שניהם׃ גם במעלליו יתנכר־נער אם־זך ואם־
etiam fecit Dominus;videntẽ oculum &,audientẽ Aurem .ejus opus rectũ
12 ישר פעלו׃ אזן שמעת ועין ראה יהוה עשה גם־
,tuos oculos aperi:efficiaris pauꝑ fortè ne,somnũ diligas Ne .*ipsa ambo*
13 שניהם׃ אל־תאהב שנה פן־תורש פקח עיניך
tunc *sibi abiens* & : emptor dicet ,malum,Malum .pane teipsum satura
14 שבע־לחם׃ רע רע יאמר הקונה ואזל לו אז
labia preciosum vas &:margaritarũ multitudo & ,aurũ Est .se jactabit
15 יתהלל׃ יש זהב ורב־פנינים וכלי יקר שפתי־
pro & : extraneo fidejussit quia , ejus vestimentum Tolle .scientiæ
16 דעת׃ לקח־בגדו כי־ערב זר ובעד
postea & : *falsitatis* panis viro est Suavis .illud tolle pignus in extraneis
17 נכרים חבלהו׃ ערב לאיש לחם שקר ואחר
industriis in &:*firmabitur* consilio in Cogitationes.calculo ejus os implebitur
18 ימלא־פיהו חצץ׃ מחשבות בעצה תכון ובתחבלות
pellicienti & : *delator vadens* ,secretum *Revelans* .bellum fac
19 עשה מלחמה׃ גולה־סוד הולך רכיל ולפתה
,suam matrem &,suum patrem Maledicentis .te miscebis non *suis labiis*
20 שפתיו לא תתערב׃ מקלל אביו ואמו
festinans Hæreditas .*tenebrositatis nigrore* in *ejus* lucerna extinguetur
21 ידעך נרו באישון חשך׃ נחלה מבהלת
Reddam , dicas Ne .*benedicetur* non ejus *novissimum* & : principio in
22 בראשונה ואחריתה לא תברך׃ אל־תאמר אשלמה־
Domini Abominatio .te faciet salvum & , Dominum expecta : malum
23 רע קוה ליהוה וישע לך׃ תועבת יהוה
: viri gressus Domino A .*bonum non doli bilances & : lapis & lapis*
24 אבן ואבן ומאזני מרמה לא־טוב׃ מיהוה מצעדי־גבר
devorabit hominis Laqueus ? suam viam intelliget quomodo homo &
25 ואדם מה־יבין דרכו׃ מוקש אדם ילע
rex impios *Spargens* .inquirere vota post & : *sanctitatem*
26 קדש ואחר נדרים לבקר׃ מזרה רשעים מלך
mens Domini Lucerna .rotam eos super faciet redire & : sapiens
27 חכם וישב עליהם אופן׃ נר יהוה נשמת
veritas & Misericordia .ventris *penetralia* omnia *investigans* ;hominis
28 אדם חפש כל־חדרי־בטן׃ חסד ואמת
Gloria .suum solium misericordia *in* fulcit & : regem custodient
29 יצרו־מלך וסעד בחסד כסאו׃ תפארת
.canicies , senum decor & ; eorum fortitudo juvenum
בחורים כחם והדר זקנים שיבה׃

Versio VULG. LAT.

CAP. XX.

1 Luxuriosa res, vinum, & tumultuosa ebrietas: quicunque his delectatur, non erit sapiens. 2 Sicut rugitus leonis, ita & terror regis: qui provocat eum, peccat in animam suam. 3 Honor est homini, qui separat à contentionibus: omnes autem stulti miscentur contumeliis. 4 Propter frigus piger arare noluit: mendicabit ergò æstate, & non dabitur illi. 5 Sicut aqua profunda, sic consilium in corde viri: sed homo sapiẽs exhauriet illud. 6 Multi homines misericordes vocantur: virum autem fidelem quis inveniet? 7 Justus, qui ambulat in simplicitate sua, beatos post se filios derelinquet. 8 Rex, qui sedet in solio judicii, dissipat omne malum intuitu suo. 9 Quis potest dicere; Mundum est cor meum, purus sum à peccato? 10 Pondus & pondus, mensura & mensura: utrumque abominabile est apud Deum. 11 Ex studiis suis intelligitur puer, si munda & recta sint opera ejus. 12 Aurẽ audientem, & oculum videntem, Dominus fecit utrumque. 13 Noli diligere somnum, ne te egestas opprimat: aperi oculos tuos, & saturare panibus. 14 Malum est, malum est, dicit omnis emptor: & cùm recesserit, tunc gloriabitur. 15 Est aurum, & multitudo gemmarum: & vas pretiosum labia scientiæ. 16 Tolle vestimentum ejus, qui fidejussor extitit alieni, & pro extraneis aufert pignus ab eo. 17 Suavis est homini panis mendacii: & posteà implebitur os ejus calculo. 18 Cogitationes consiliis roborantur: & gubernaculis tractanda sunt bella. 19 Ei, qui revelat mysteria, & ambulat fraudulenter, & dilatat labia sua, ne commiscearis. 20 Qui maledicit patri suo, & matri, extinguetur lucerna ejus in mediis tenebris. 21 Hæreditas, ad quam festinatur in principio, in novissimo benedictione carebit. 22 Ne dicas; Reddam malum: exspecta Dñm, & liberabit te. 23 Abominatio est apud Dominum pondus & pondus: statera dolosa non est bona. 24 A Domino diriguntur gressus viri: quis autem hominum intelligere 25 potest viam suam? Ruina est homini devorare Sanctos, & post vota retractare. 26 Dissipat impios rex sapiens, & incurvat super eos fornicem. 27 Lucerna Domini spiraculum hominis, quæ investigat omnia secreta ventris. 28 Misericordia & veritas custodiunt regem, & roboratur clementiâ thronus ejus. 29 Exultatio juvenum, fortitudo eorum: & dignitas senum, canities.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cùm Translatione LATINA.

ΚΕΦ. κʹ.

1 † Ἀκόλαστον οἶνος, καὶ ὑβριστικὸν μέθη, (α) † πᾶς δὲ ἄφρων τοιούτοις συμπλέκεται. 2 † Οὐ διαφέρει ἀπειλὴ βασιλέως θυμοῦ λέοντος, ὁ δὲ παροξύνων (¹) αὐτὸν ἁμαρτάνει εἰς τὴν 3 ἑαυτοῦ ψυχήν. † Δόξα ἀνδρὶ ἀποστρέφεσθαι λοιδορίας, † πᾶς δὲ ἄφρων τοιούτοις συμπλέκεται. 4 † Ὀνειδιζόμενος ὀκνηρὸς οὐκ αἰσχύνεται, ὡσαύτως καὶ ὁ δανειζόμενος σῖτον ἐν ἀμητῷ. 5 † Ὕδωρ βαθὺ βουλὴ ἐν καρδίᾳ ἀνδρός, † ἀνὴρ δὲ φρόνιμος ἐξαντλήσει αὐτήν. 6 † Μέγα ἄνθρωπος, καὶ τίμιον ἀνὴρ ἐλεήμων, 7 † ἄνδρα δὲ πιστὸν ἔργον εὑρεῖν. † Ὃς ἀναστρέφεται ἄμωμος ἐν δικαιοσύνῃ, μακαρίους 8 τοὺς παῖδας αὐτοῦ καταλείψει. † (β) Ὅταν βασιλεὺς δίκαιος καθίσῃ ἐπὶ θρόνου, † οὐκ ἐναντιοῦται ἐν ὀφθαλμοῖς αὐτοῦ πᾶν πονηρόν. 9 † Τίς καυχήσεται ἁγνὴν ἔχειν τὴν καρδίαν; † ἢ τίς παρρησιάσεται καθαρὸς εἶναι ἀπὸ ἁμαρτιῶν; 20 † Κακολογοῦντος πατέρα ἢ μητέρα, σβεσθήσεται λαμπτήρ, † αἱ δὲ κόραι τῶν 21 ὀφθαλμῶν αὐτοῦ ὄψονται σκότος. † Μερὶς ἐπισπουδαζομένη ἐν πρώτοις, † ἐν τοῖς τε22 λευταίοις οὐκ εὐλογηθήσεται. † Μὴ εἴπῃς, Τίσομαι τὸν ἐχθρόν, † (¨) ἀλλ' ὑπόμεινον τὸν κύριον ἵνα σοι βοηθήσῃ. 10 † Στάθμιον μέγα καὶ μικρόν, καὶ μέτρα δισσά, ἀκάθαρτα ἐνώπιον κυρίου καὶ ἀμφότερα, † καὶ ὁ ποιῶν αὐτά. 11 Ἐν τοῖς ἐπιτηδεύμασιν αὐτοῦ συμποδισθήσεται † νεανίσκος μετὰ ὁσίου, καὶ εὐθεῖα 12 ἡ ὁδὸς αὐτοῦ. † Οὖς ἀκούει, καὶ ὀφθαλμὸς 13 ὁρᾷ, † κυρίου ἔργα καὶ ἀμφότερα. † Μὴ ἀγάπα καταλαλεῖν, ἵνα μὴ ἐξαρθῇς, † (γ) διάνοιξον τοὺς ὀφθαλμούς σου, καὶ ἐμπλήσθητι 23 ἄρτων. † Βδέλυγμα κυρίῳ δισσὸν στάθμιον, † καὶ ζυγὸς δόλιος οὐ καλὸν ἐνώπιον αὐ24 τοῦ. † Παρὰ κυρίου εὐθύνεται (δ) τὰ διαβήματα ἀνδρί, † θνητὸς δὲ πῶς ἂν νοήσαι τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ; 25 † Παγὶς ἀνδρὶ ταχύ τι τῶν ἰδίων ἁγιάσαι, † μετὰ γὰρ τὸ εὔξα26 σθαι μετανοεῖν γίνεται. † Λικμήτωρ ἀσεβῶν βασιλεὺς σοφός, † καὶ ἐπιβαλεῖ αὐτοῖς 27 τροχόν. † Φῶς κυρίου πνοὴ ἀνθρώπων, † (ε) 28 ὃς ἐρευνᾷ ταμιεῖα κοιλίας. † Ἐλεημοσύνη καὶ ἀλήθεια φυλακὴ βασιλεῖ, † καὶ περικυκλώσουσιν ἐν δικαιοσύνῃ τὸν θρόνον αὐτοῦ. 29 † Κόσμος νεανίαις σοφία, † δόξα δὲ πρεσβυτέρων πολιαί.

CAP. XX.

Prodigum (a) est vinum, & contumeliosa ebrietas: (b) omnis autem imprudens talibus complicatur. 1
Non differt comminatio regis à (c) furore leonis: qui autem (d) irritat eum, peccat in suam ipsius animam. 2
Gloria viro (e) aversari contumeliam: omnis autem imprudens (f) talibus complicatur. 3
(g) Exprobratus piger non confunditur: similiter & qui fœnore accipit frumentum in messe. 4
Aqua profunda consilium in corde viri: vir autem prudens exhauriet illud. 5
(h) Magnum homo, & pretiosum vir misericors: hominem autem (i) fidelem opus est invenire. 6
Qui conversatur sine vituperatione in justitia; beatos (k) filios suos relinquet. 7
Cùm rex justus sederit super thronum; (l) non adversatur in oculis ejus omne malum. 8
Quis gloriatur castum se habere cor? aut quis (m) gloriabitur mundum se esse à peccatis. 9
(n) Maledicentis patrem aut matrem, extinguetur fax: pupillæ autem oculorum ejus (o) videbunt tenebras. 20
(p) Pars festinata in primis, in novissimis non benedicetur. 21
Ne dixeris, (q) ulciscar inimicum: sed sustine Dominum, ut tibi auxilio sit. 22
Pondus magnum, & pusillum, & mensuræ duplices, immunda sunt apud Dominum (r), & utraque, & qui facit ea. 10
In adinventionibus suis compedietur adolescens: cum sancto, & recta via ejus. 11
Auris audit, & oculus videt: Domini opera & utraque. 12
Noli diligere (s) detrahere: ne extollaris. (t) Aperi oculos tuos, & implere panibus. 13
Abominatio Domino duplex pondus: & statera dolosa non bonum coram eo. 23
A Domino diriguntur gressus viro: mortalis autem quomodò cogitaverit vias suas? 24
(u) Laqueus viro citò quid ex propriis sanctificare: posteà enim, quàm voverit, evenerit pœnitere. 25
Ventilator impiorum rex sapiens: & immittet illis (x) rotam. 26
(y) Lux Domini, (z) spiraculum hominum, qui scrutatur secreta ventris. 27
Misericordia, & veritas, (ω) tutela regi, & circuibunt in justitia sedem ejus. 28
Ornatus adolescentibus (aa) sapientia: (bb) gloria autem seniorum (cc) canities. 29

MS.A. (α) † πᾶς δὲ ὁ συμμενόμενος οὐκ ἔσται σοφός, πᾶς δὲ ἄφρων (¹) ἑαυτὸν (β) Ὅταν καθίσῃ βασιλεὺς δίκαιος ἐπὶ (¨) ἀλλὰ (γ) διάνοιξον δὲ τοὺς (δ) διαβήματα (ε) ἡ λύχνος ὃς

תרגום TARGUM.

כ

ממקנא הוא חמרא ורויתא שכרא וכל דשגי ביה לא נתחכם׃ נהם היך אריא אימתא 1
דמלכא ומן דמחמית ליה חטי על נפשיה׃ יקרא הוא לגברא דיתיב דלא דינא וכל דשטי 2 3
מצטדי׃ מתחסד עטלא לא שתיק ושאל בחצדא וליתּ׃ מיא עמיקי עצתא בלבא 4 5
דגברא וגברא דמתבין נדלנה׃ סוגעא דבני נשא מתקרין גברי מרחמני וגברא מהימנא 6
מנו משכח׃ דמהלך בתמימותיה צדיקא הוא וטוביהון לבנוהי בתרוהי׃ מלכא דיתיב 7 8
על כורסיא דדינא מבזר מן קדמוהי כלהון בישתא׃ מן דיימר זכי הוא לבי ואדכיית 9
מחובתי׃ מתקלא ומתקלא כילא וכילא מרחקין אנון קדם אלהא אף תרויהון׃ אוף 10 11
בעובדוהי מתידע טליא אין דכי ואין תריצן עובדוהי׃ אדנא דשמעא ועינא דחזיא אלהא 12
אברי תרויהון׃ לא תרחם שנתא דלמא תתמסכן פתח עינך ושבע לחמא׃ חברא 13 14
לחבריה נאמר דקנית והידין נשתבח ונימר׃ דאית דהבא וסוגעא דכיפי טבתא ומני 15
דיקרא ושפותא דידיעתא׃ נסב לבושיה מטול דעריב לחילוני ועל אפי נוכריתא 16
משכניה׃ עריב לגברא בלחמא דגלא ובתר הידין נתמלא פומיה חצצא׃ מחשבתא 17 18
בעצתא תתקן ובמדברנותא מתעבד קרבא׃ דגלי רזא אכל קורצא ולמן דמשרגג 19
בשפותיה לא תתחלט׃ דליט לאבוי ולאמיה נדעך שרגיה איך אתונא דחשוכא׃ ירותתא 20
דמסרהבא בקדמיתא ובסופא לא תתבריך׃ לא תימר אשלם בישתא סכא לאלהא 21 22
ויפרקך׃ מרחקין אינון קדם אלהא מתקלא ומתקלא ומסחתא דרמיותא לא שפיר 23
קדמוי׃ מן קדם יי הלכתיה דגברא ובר נשא לא מתבין ארחתיה׃ פחא הוא לגברא 24 25
דנדר לקודשא ובתר הכי חדיא ליה נפשיה׃ מבדר לרשיעי מלכא חכימא ומהפך 26
עליהון גלגלא׃ שרגא דאלהא נשמתא דבני נשא ובציא כלהון גויא דכריסא׃ חסדא 27 28
וקושטא נטרין למלכא ומתקן בחסדא כורסיה׃ שבהורא דעולימא חוקפהון ושבחא דסבי סיבתא׃ 29

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAP. XX.

Derisoria res est vinum, & inebriat sicera: & omnis qui erraverit 1
in ea, non erit sapiens. Rugit sicut leo terror regis: & qui provocat eum, 2
peccat in animam suam. Gloria est viro qui supersedet à contentione; 3
& omnis qui stultus est, deridet. *Probrum* sustinet piger, & non tacet: 4
& petet in messe, & non habebit. Aquæ profundæ consilium in corde 5
viri, & vir intelligens exhauriet illud. Multi filii hominis vocantur viri 6
misericordes: virum autem fidelem quis inveniet? Qui ambulat in sim- 7
plicitate sua, justus est, & beati erunt filii ejus post eum. Rex qui sedet 8
in solio judicii, dissipat à facie sua omnes impios. Quis dicet: Mundum 9
est cor meum, & purus sum à peccato meo? Pondus & pondus, mensura 10
& mensura, abominabile est utrúnque coram Deo. Etiam in operibus 11
suis cognoscitur puer, an munda & recta sint opera ejus. Auris quæ audit, 12
& oculus qui videt, Deus creavit utrúnque. Ne diligas somnum, ne fortè 13
pauper fias: aperi oculos tuos, & saturare pane. Socius ad socium dicit 14
quòd emit, & tune gloriatur, & dicit. Est aurum & multitudo gemma- 15
rum bonarum, & vasa preciosa & labia scientiæ. Tolle vestimentum 16
ejus qui fidejussor stetit pro alieno, & pro extranea pignora eum. Sua- 17
vis est homini panis mendax, & posteà replebitur os ejus calculo. Cogi- 18
tationes consilio diriguntur, & gubernaculo fit bellum. Qui revelat se- 19
cretum, delator est: & ei qui allicit labiis suis ne commiscearis. Qui 20
male dicit patri suo & matri suæ, extinguetur lucerna ejus sicut caligo tene-
brarum. Hæreditas ad quam festinatur in principio, in fine non bene- 21
dicetur. Ne dicas, Reddam malum: spera in Deo, & salvabit te. Abo- 22
minabile est coram Deo pondus & pondus: & mensura dolosa non placet 23
coram eo. A facie Domini gressus viri, & filius hominis non intelligit 24
vias suas. Laqueus est homini qui devovit sanctuario, & posteà *gaudet si-* 25
bi anima ipsius. Dispergit impios rex sapiens, & volvit super eos rotam. 26
Lucerna Dei spiraculum filiorum hominis: & scrutatur omnia interiora 27
ventris. Misericordia & veritas custodient regem, et præparatur in cle- 28
mentia solium ejus. Decus juvenum fortitudo eorum, et 29
laus senum canicies.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 * ܩܦܠܐܘܢ * ܟ * * ܚܡܝܪ ܗܘ ܚܡܪܐ ܘܪܘܝܘܬܐ ܡܨܥܪܢܝܬܐ. ܘܟܠ ܕܡܫܬܪܚ ܒܗ
2 ܠܐ ܗܘܐ ܚܟܝܡ. * ܢܗܡܐ ܐܝܟ ܐܪܝܐ. ܪܘܓܙܗ ܕܡܠܟܐ. ܘܡܢ ܕܡܚܡܬ ܠܗ. ܚܛܐ ܥܠ ܢܦܫܗ.
3 4 * ܬܫܒܘܚܬܗ ܕܓܒܪܐ. ܡܐ ܕܡܪܚܩ ܚܪܝܢܐ. ܘܟܠ ܕܣܟܠ ܡܒܙܚ. * ܡܬܚܣܕ ܚܒܢܢܐ
5 ܘܠܐ ܫܬܩ. ܘܡܫܐܠ ܒܚܨܕܐ. ܘܡܝܐ ܠܝܬ. * ܥܡܝܩܐ ܡܠܬܐ ܒܠܒܗ ܕܡܠܟܐ. ܘܓܒܪܐ ܚܟܝܡܐ
6 ܢܕܠܝܗ. * ܣܓܝܐܐ ܕܒܢܝܢܫܐ ܡܬܩܪܝܢ ܓܒܪܐ ܡܪܚܡܢܐ. ܓܒܪܐ ܕܝܢ ܡܗܝܡܢܐ ܡܢܘ
7 ܡܫܟܚ. * ܙܕܝܩܐ ܕܡܗܠܟ ܒܬܡܝܡܘܬܐ. ܛܘܒܝܗܘܢ ܠܒܢܘܗܝ ܡܢ ܒܬܪܗ. * ܡܠܟܐ
8 9 ܕܝܬܒ ܥܠ ܟܘܪܣܝܐ ܕܕܝܢܐ. ܘܡܬܒܕܪܝܢ ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ ܟܠܗܘܢ ܒܝܫܬܐ. * ܡܢ ܢܐܡܪ ܕܙܟܐ
10 ܗܘ ܠܒܝ. ܘܐܬܕܟܝܬ ܡܢ ܚܛܗܐ. * ܡܬܩܠܐ ܘܡܬܩܠܐ. ܘܟܝܠܐ ܘܟܝܠܬܐ. ܡܣܠܝܢ ܬܪܝܗܘܢ
11 ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܐܟܚܕܐ. * ܐܦ ܒܥܒܕܘܗܝ ܡܬܒܚܪ ܛܠܝܐ. ܐܢ ܕܟܐ ܗܘ. ܘܐܢ ܬܪܝܨܝܢ ܥܒܕܘܗܝ.
12 13 * ܐܕܢܐ ܕܫܡܥܐ. ܘܥܝܢܐ ܕܚܙܝܐ. ܡܪܝܐ ܥܒܕ ܐܢܝܢ. * ܠܐ ܬܪܚܡ ܫܢܬܐ. ܕܠܐ ܬܬܡܣܟܢ. ܐܠܐ ܦܬܚ
14 ܥܝܢܝܟ ܘܣܒܥ ܠܚܡܐ. * ܢܐܡܪ ܚܒܪܐ ܠܚܒܪܗ ܕܩܢܝܬ. ܘܗܝܕܝܢ ܢܫܬܒܗܪ. * ܘܢܐܡܪ
15 16 ܕܐܝܬ ܕܗܒܐ ܘܣܘܓܐܐ ܕܟܐܦܐ ܛܒܬܐ. ܘܡܐܢܐ ܝܩܝܪܐ. ܘܣܦܘܬܐ ܕܝܕܥܬܐ. * ܢܣܒܘ ܡܪܛܘܛܗ
17 ܡܢ ܕܥܪܒ ܠܢܘܟܪܝܐ. ܘܡܛܠ ܢܘܟܪܝܐ ܢܣܒܘ ܡܫܟܢܘܢܗ. * ܥܪܒ ܠܓܒܪܐ ܠܠܚܡܐ
18 ܕܟܕܒܐ. ܘܒܬܪܟܢ ܢܬܡܠܐ ܦܘܡܗ ܚܨܨܐ. * ܡܚܫܒܬܐ ܒܡܠܟܐ ܡܬܩܝܡܐ. ܘܒܚܪܝܢܐ
19 ܡܬܥܒܕ ܩܪܒܐ. * ܕܓܠܐ ܐܪܙܐ ܒܥܠܕܒܒܐ. ܘܥܡ ܡܢ ܕܦܬܝܚܢ ܣܦܘܬܗ. ܠܐ ܬܬܚܠܛ.
20 21 * ܕܠܛ ܠܐܒܘܗܝ ܘܠܐܡܗ. ܢܕܥܟ ܫܪܓܗ. ܐܝܟ ܒܒܬܐ ܚܫܘܟܬܐ. * ܝܪܬܘܬܐ ܕܡܣܪܗܒܐ
22 ܒܫܘܪܝܗ. ܒܚܪܬܗ ܠܐ ܡܬܒܪܟܐ. * ܠܐ ܬܐܡܪ ܕܐܦܪܘܥ ܒܝܫܬܐ. ܐܠܐ ܣܟܝ ܠܡܪܝܐ ܕܢܦܪܩܟ.
23 24 * ܛܢܦܢ ܐܢܝܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܡܬܩܠܐ ܘܡܬܩܠܐ. ܘܡܣܐܬܐ ܕܢܟܠܐ ܠܐ ܫܦܝܪܢ. * ܡܢ ܩܕܡ
25 ܡܪܝܐ ܡܬܬܩܢܝܢ ܗܠܟܬܗ ܕܓܒܪܐ. ܘܐܢܫ ܡܢܘ ܕܢܬܩܢ ܐܘܪܚܗ. * ܦܚܐ ܗܘ ܠܒܪܢܫܐ
26 ܕܢܕܪ ܠܡܩܕܫܐ. ܘܒܬܪ ܕܢܕܪ. ܢܗܦܘܟ ܒܗ ܢܦܫܗ. * ܡܒܕܪ ܠܪܫܝܥܐ. ܡܠܟܐ
27 ܚܟܝܡܐ ܘܡܗܦܟ ܥܠܝܗܘܢ ܓܝܓܠܐ. * ܫܪܓܗ ܕܡܪܝܐ. ܢܫܡܬܐ ܗܝ ܠܒܢܝܢܫܐ.
28 ܘܒܨܐ ܟܠܗܘܢ ܬܘܢܝ ܟܪܣܐ. * ܛܝܒܘܬܐ ܘܩܘܫܬܐ. ܢܛܪܢ ܠܡܠܟܐ. ܘܒܛܝܒܘܬܐ
29 ܡܫܬܪܪ ܟܘܪܣܝܗ. * ܬܫܒܘܚܬܐ ܕܥܠܝܡܐ. ܚܝܠܗܘܢ. ܘܗܕܪܐ ܕܩܫܝܫܐ. ܣܝܒܘܬܐ.

CAP. XX.

Potens eſt vinum, et ebrietas infamis: et 1 quicunque luxuriatur in ea, non eſt ſapiens. Fremit ceu leo ira regis: & quiſquis ad iram 2 provocat eum, peccat in animâ ſuam. Gloria 3 viri eſt cùm amovet contentionem: & quicunq; ſtultus eſt, irridet. Probris afficitur pi- 4 ger, attamen non ſilet: & mendicabit tempore meſſis, nec erunt aquæ. Profundum eſt ver- 5 bum in corde regis: at vir ſapiens exhauriet illud. Plerique homines vocantur viri miſeri- 6 cordes: virum autem fidelem quis inveniat? Juſti ambulantis in integritate, fœlices erunt 7 filii poſt ipſum. Rege ſedente ſuper ſolio ju- 8 dicii, diſſipantur à conſpectu ejus univerſa mala. Quis dicat, Innocens eſt cor meum, & 9 mundatꝰ ſum à peccatis? Pondꝰ & pondus, & 10 menſura ac menſura, abominanda ſunt utraq; apud Dn̄m. Etiam puer ex ſuis actionibꝰ de- 11 prehenditur an purus ſit, & num recta ſunt opera ejus. Aurem quæ audit, & oculum qui 12 videt, Dominus fecit utrumque. Ne diligas 13 ſomnū, ne ad paupertatē redigaris: ſed aperi oculos tuos, ut ſatieris pane. Amicus dicat 14 ſocio ſuo, Poſſedi: ac tunc glorietur. Dicat 15 etiam, Adeſt aurū, & copia lapidum optimorū, & vaſa pretioſa, & labia ſcientiæ. Abſtu- 16 lerunt palliū ab eo qui ſpondet pro alieno, et propter alienū acceperunt pignus ejus. Fide- 17 juſſor extitit homini pro pane fallaci: et demū implebitur os ejus calculis. Conſilium cogi- 18 tatione ſtabilitur, et ex provocatione fit prælium. Qui revelat ſecretum, inimicus eſt: et 19 cum eo cujus præpropera ſunt labia, ne commiſcearis. Qui maledixerit patri ſuo et matri 20 ſuæ, hujꝰ lucerna extinguetur velut pupilla tenebroſa. Hæreditas præcipitata in principio, 21 in fine haud benedicetur. Ne dicas, Rependā 22 malū: ſed expecta Dn̄m ut liberet te. Abomi- 23 nabilia ſunt apud Dn̄m pondera diverſa, et bilances fraudulentæ non ſunt bonæ. A con- 24 ſpectu Dn̄i firmantur greſſus viri: ecquis enim eſt homo qui diſponat viam ſuam? Laqueus 25 eſt homini vovere ſanctuario, et poſtquam voverit retractare ſeſe. Diſſipat impios rex 26 prudens, et vertit ſuper eos rotam. Lucerna 27 Domini halitus eſt hominibus, et ſcrutatur cuncta penetralia ventris. Beneficentia et 28 veritas cuſtodiunt regem: at beneficentiâ munitur ſolium ejus. Decus juvenum, robur 29 eorum: et nitor ſeniorum, canities.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 * الفصل العشرون * كل من يلهج بالنبيذ النهم والسكر الفاضح فليس ذلك
2 حكيما * وعند الملك لا فرق بينه وبين غضب السبع * فمن يغيظه انما يخطي الى نفسه *
3 4 * شرف الرجل ان يرجع عن الشتيمة * وكل جاهل يتشبك بمثل هذه الاشياء * الكسلان اذا
5 عير فما يخجل * وبهذه الصورة من يقترض حنطة في الحصاد * الراي في قلب الرجل ماء
6 عميق * والانسان الدقيق العقل يستقيه * الانسان الرحوم رجلا عظيما وكريما * والانسان الامين
7 8 يجد عملا * من يتصرف في العدل بلا عيب يخلف اولاده مغبوطين * الملك العدل اذا جلس
9 على كرسيه فلن يتصادد في عينيه كل خبث * من يفتخر ان له قلبا طاهرا * ام من يجاهر
20 بانه نقي من الخطايا * من يسي خطابه لابيه او لامه ينطفي مصباحه * وحدقتا عينيه
21 22 تنظران ظلمة * الحظ المحروص عليه في المبادي ما يحمد امره في الاواخر * لا تقولن اعذب
10 العدو بل اصبر للرب يعينك * معيار صغير وكبير ومكاييل مثناه نجسه قدام الرب كلها *
11 12 * ومن يعملها من صنايعه سيعتاق بها * الشاب مع البار طريقه مقومة * الاذن تسمع والعين
13 تبصر فهما * وافعالهما كلتاهما اعمال الله * لا تحب ان تغتاب احدا لئلا تقتلع * افتح عينيك
23 24 وتملا من الخيرات * رذالة عند الرب المعيار المثني * والميزان الغاش ليس امامه محمودا * من
25 الرب تقوم خطوات الرجل * فالمايت كيف يفهم طرقه * فخر الرجل ان يقدس شيا من الذي
26 له سريعا * لانه بعد ان ينذر يتنقف ان يندم * الملك الحكيم ذاري المنافقين * وسبب لهم
27 28 طردا * نور الرب نسمة الناس * او سراج يفتش مخازن الجوف * الصدقة والصدق حفظا للملك *
29 ويحوطان في كرسيه بالعدل * الحكمة زينة للشباب * والشيب شرف الشيوخ *

CAP. XX.

Quicunque indulget vino immoderato, 1 *& ebrietati inhoneſtæ, is non eſt ſapiens. Minæ regis non diſcrepant à furore leo-* 2 *nis: & qui irritat eum, ſanè peccat in animam ſuam. Præſtantia viri eſt ut* 3 *retrahat ſe à contumeliis: & omnis ſtultus irretitur ſimilibus hiſce rebus. Igna-* 4 *vus, cùm vituperatur, non erubeſcit: & hujuſcemodi eſt qui mutuatur frumentum in meſſe. Cogitatio in corde hominis, a-* 5 *qua profunda: & homo acuti ingenii exhauriet illam. Homo miſericors, vir* 6 *magnus & honeſtus: & homo fidelis inveniet occupationem. Qui ſe gerit cum* 7 *juſtitia inculpatè, relinquet filios ſuos fœlices. Rex juſtus, cùm ſederit ſuper* 8 *throno ſuo, non opponetur oculis ejus omne malum. Quis glorietur ſe habere* 9 *cor mundum? aut quis publicet ſe eſſe purum à peccatis?*

Verſ. 10. 11. 12. & 13. habentur poſt verſ. 22. Reliqui deſiderantur.

Qui iniquè ſe gerit cum patre ſuo aut 20 *matre ſuâ, extinguetur lucerna ejus: & pupillæ oculorum ejus videbunt tenebras. Sors avidè expetita in principiis, non lau-* 21 *dabitur negotium ejus in extremis. Ne* 22 *dicas, Cruciabo inimicum: ſed expecta Dominum, auxiliabitur tibi. Pondus par-* 10 *vum & magnum, & menſuræ duplices, abominabiles ſunt coram Domino omnes: Et qui talia exercuerit in arte ſua, impe-* 11 *dietur in illis. Adoleſcentis via cum juſto, recta eſt. Auris audit, & oculus vi-* 12 *det ad intelligendum: & actiones utriuſque, opera Dei. Ne ames decipere* 13 *quemquam, ne eradiceris: aperi oculos tuos, ut impleâre bonis. Abominatio eſt apud* 23 *Dominum menſura duplex: & ante ſtateram fallacem non eſt laus. A Domino* 24 *diriguntur greſſus hominis: mortalis verò quomodo intelliget vias ſuas? Gloria* 25 *viri eſt ut ſanctificet aliquid ex his quæ habet, citò: quoniam poſteaquam voverit, incipiet pœnitere. Rex ſapiens, diſſipa-* 26 *tor eſt iniquorum, & cauſat iis exilium. Lumen Domini halitus eſt hominum, aut* 27 *lucerna inveſtigans cellas ventris. Elee-* 28 *moſyna & veritas, cuſtodia regis: & firmant ſolium ejus in æquitate. Sapientia,* 29 *ornatus juvenum: & canities, magnificentia ſenum.*

.ventris interioribus plagæ & : malo in *deterſio* vulneris Livores

30 חַבֻּרוֹת פֶּצַע תַּמְרִיק בְּרָע וּמַכּוֹת חַדְרֵי־בָטֶן׃

CAP. XXI. כא

quod omne *ſuper* : Domini manu in regis cor ,aquarum *Pelagi*

1 פַּלְגֵי־מַיִם לֶב־מֶלֶךְ בְּיַד־יְהוָה עַל־כָּל־אֲשֶׁר

: ejus oculis in recta viri via Omnis .illud inclinabit , voluerit

2 יַחְפֹּץ יַטֶּנּוּ׃ כָּל־דֶּרֶךְ אִישׁ יָשָׁר בְּעֵינָיו

electum : judicium & ,juſtitiam Facere .Dominus corda *ponderans* &

3 וְתֹכֵן לִבּוֹת יְהוָה׃ עֲשֹׂה צְדָקָה וּמִשְׁפָּט נִבְחָר

novale : cordis latitudo & ,oculorum Exaltatio .*ſacrificio præ* Domino

4 לַיהוָה מִזָּבַח׃ רוּם־עֵינַיִם וּרְחַב־לֵב נִר

: ſuperabundantiam ad verè ſoliciti Cogitationes .peccatum,impiorum

5 רְשָׁעִים חַטָּאת׃ מַחְשְׁבוֹת חָרוּץ אַךְ־לְמוֹתָר

lingua in theſaurorum *Opus* .defectum ad verè *feſtinus* omnis &

6 וְכָל־אָץ אַךְ־לְמַחְסוֹר׃ פֹּעַל אֹצָרוֹת בִּלְשׁוֹן

impiorum *Rapina* .mortem *quærentes* , *expulſa vanitas* : *falſitatis*

7 שָׁקֶר הֶבֶל נִדָּף מְבַקְשֵׁי־מָוֶת׃ שֹׁד־רְשָׁעִים

via eſt Inverſa .judicium facere renuerunt quia : eos *terrebit*

8 יְגוֹרֵם כִּי מֵאֲנוּ לַעֲשׂוֹת מִשְׁפָּט׃ הֲפַכְפַּךְ דֶּרֶךְ

habitare Melius .*ejus* opus rectum mundi & : alieni & , viri

9 אִישׁ וָזָר וְזַךְ* יָשָׁר פָּעֳלוֹ׃ טוֹב לָשֶׁבֶת

.*ſocietatis* domo & , *contentionum* muliere *præ* ; tecti angulo *ſuper*

עַל־פִּנַּת־גָּג מֵאֵשֶׁת מִדוֹנִים וּבֵית חָבֶר׃

ejus oculis in erit gratus non : malum deſideravit impii Anima

10 נֶפֶשׁ רָשָׁע אִוְּתָה־רָע לֹא־יֻחַן בְּעֵינָיו

: ſimplex efficietur ſapiens , deriſorem *mulctando In* .ejus amicus

11 רֵעֵהוּ׃ בַּעְנָשׁ־לֵץ יֶחְכַּם־פֶּתִי

juſtus *Intelligens* .ſcientiam accipiet , *ſapientem ad intelligendo in* &

12 וּבְהַשְׂכִּיל לְחָכָם יִקַּח־דָּעַת׃ מַשְׂכִּיל צַדִּיק

ſuam aurem *Obturans* .malum ad impios *pervertens* : impii *domum ad*

13 לְבֵית רָשָׁע מְסַלֵּף רְשָׁעִים לָרָע׃ אֹטֵם אָזְנוֹ

.exaudietur non & ,clamabit ipſe etiam : *tenuis* clamore à

מִזַּעֲקַת־דָּל גַּם־הוּא יִקְרָא וְלֹא יֵעָנֶה׃

iram ſinu in munus & ; furorem teget abſcondito in Donum

14 מַתָּן בַּסֵּתֶר יִכְפֶּה־אָף וְשֹׁחַד בַּחֵק חֵמָה

contritio & : judicium facere juſto Lætitia .fortem

15 עַזָּה׃ שִׂמְחָה לַצַּדִּיק עֲשׂוֹת מִשְׁפָּט וּמְחִתָּה

; intellectus via de *errans* Homo .iniquitatem operantibus

16 לְפֹעֲלֵי אָוֶן׃ אָדָם תּוֹעֶה מִדֶּרֶךְ הַשְׂכֵּל

: lætitiam *diligens defectus* Vir .requieſcet *manium concione* in

17 בִּקְהַל רְפָאִים יָנוּחַ׃ אִישׁ מַחְסוֹר אֹהֵב שִׂמְחָה

juſto Propitiatio .ditabitur non ,*oleum* & , vinum *diligens*

18 אֹהֵב יַיִן־וָשֶׁמֶן לֹא יַעֲשִׁיר׃ כֹּפֶר לַצַּדִּיק

terra in habitare *Bonum* .prævaricator rectis pro & : impius

19 רָשָׁע וְתַחַת יְשָׁרִים בּוֹגֵד׃ טוֹב שֶׁבֶת בְּאֶרֶץ

,deſiderabilis Theſaurus .*iracundiæ & contentionum* muliere *præ* ; deſerti

20 מִדְבָּר מֵאֵשֶׁת מִדוֹנִים וָכָעַס׃ אוֹצָר ׀ נֶחְמָד

.eum *deglutiet* homo ſtultus & : ſapientis habitaculo in *oleum* &

וָשֶׁמֶן בִּנְוֵה חָכָם וּכְסִיל אָדָם יְבַלְּעֶנּוּ׃

, juſtitiam , vitam inveniet ; miſericordiam & , juſtitiam *Sequens*

21 רֹדֵף צְדָקָה וָחָסֶד יִמְצָא חַיִּים צְדָקָה

faciet deſcendere & : ſapiens aſcendit fortium Civitatem .gloriam &

22 וְכָבוֹד׃ עִיר גִּבֹּרִים עָלָה חָכָם וַיֹּרֶד

cuſtodiens ; ſuam linguam & , ſuum os *Cuſtodiens* .fiduciæ robur

23 עֹז מִבְטֶחָה׃ שֹׁמֵר פִּיו וּלְשׁוֹנוֹ שֹׁמֵר

.ſuam animam anguſtiis ab

מִצָּרוֹת נַפְשׁוֹ׃

Verſio VULG. LAT.

30 Livor vulneris abſterget mala : & plagæ in ſecretioribus ventris.

CAP. XXI.

1 Sicut diviſiones aquarum, ita cor regis in manu Domini : quocunque voluerit inclinabit
2 illud. Omnis via viri recta ſibi videtur : appendit autem cor-
3 da Dominus. Facere miſericordiam & judicium, magis placet Domino, quàm victimæ.
4 Exaltatio oculorum eſt dilatatio cordis : lucerna impiorum
5 peccatum. Cogitationes robuſti ſemper in abundantia : omnis autem piger ſemper in
6 egeſtate eſt. Qui congregat theſauros linguâ mendacii, vanus & excors eſt, & impinge-
7 tur ad laqueos mortis. Rapinæ impiorum detrahent eos, quia noluerunt facere judici-
8 um. Perverſa via viri, aliena eſt : qui autem mundus eſt, re-
9 ctum opus ejus. Melius eſt ſedere in angulo domatis, quàm cum muliere litigioſa, & in
10 domo communi. Anima impii deſiderat malum, non miſere-
11 bitur proximo ſuo. Mulctato peſtilente ſapientior erit parvulus : & ſi ſectetur ſapientem,
12 ſumet ſcientiam. Excogitat juſtus de domo impii, ut detra-
13 hat impios à malo. Qui obturat aurem ſuam ad clamorem pauperis, & ipſe clamabit, &
14 non exaudietur. Munus abſconditum extinguit iras, & donum in ſinu indignationem
15 maximam. Gaudium juſto eſt facere judicium, & pavor ope-
16 rantibus iniquitatem. Vir, qui erraverit à via doctrinæ, in cœtu gigantum commorabi-
17 tur. Qui diligit epulas, in egeſtate erit : qui amat vinum, &
18 pinguia, non ditabitur. Pro juſto datur impius : & pro re-
19 ctis iniquus. Melius eſt habitare in terra deſerta, quàm cum muliere rixoſa & iracun-
20 da. Theſaurus deſiderabilis, & oleum in habitaculo juſti : et imprudens homo diſſipabit il-
21 lud. Qui ſequitur juſtitiam & miſericordiam, inveniet vi-
22 tam, juſtitiam, & gloriam. Civitatem fortium aſcendit ſapiens, & deſtruxit robur fiduciæ
23 ejus. Qui cuſtodit os ſuum, & linguam ſuam, cuſtodit ab anguſtiis animam ſuam.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

30 † Ὑπώπια καὶ συντρίμματα συναντᾷ κακοῖς, πληγαὶ δὲ εἰς ταμιεῖα κοιλίας.

ΚΕΦ. κα΄.

1 † Ὥσπερ ὁρμὴ ὕδατος, οὕτως καρδία
βασιλέως ἐν χειρὶ Θεοῦ, † (α) οὗ ἐὰν θέλων
2 νεῦσαι ἐκεῖ ἔκλινεν αὐτήν. † Πᾶς ἀνὴρ
φαίνεται ἑαυτῷ δίκαιος, † κατευθύνει δὲ καρδίας
3 κύριος. † Ποιεῖν δίκαια καὶ ἀληθεύειν,
† ἀρεστὰ παρὰ Θεῷ μᾶλλον ἢ θυσιῶν αἷμα.
4 † Μεγαλόφρων (β) ἐν ὕβρει θρασυκάρδιος,
6 † λαμπτὴρ δὲ ἀσεβῶν (γ) ἁμαρτία. † Ὁ ἐνεργῶν
θησαυρίσματα γλώσσῃ ψευδεῖ, † μάταια
διώκει (δ) ἐπὶ παγίδας θανάτου.
7 † Ὄλεθρος ἀσεβέσιν ἐπιξενωθήσεται,
8 † οὐ γὰρ βούλονται πράσσειν τὰ δίκαια. † Πρὸς
τοὺς σκολιοὺς σκολιὰς ὁδοὺς (ε) ἀποστέλλει ὁ
Θεός, † ἁγνὰ γὰρ καὶ ὀρθὰ τὰ ἔργα αὐτοῦ.
9 † (ζ) Κρεῖσσον οἰκεῖν ἐπὶ γωνίας ὑπαίθρου,
† ἢ ἐν κεκονιαμένοις μετὰ ἀδικίας καὶ ἐν οἴκῳ
10 κοινῷ. † Ψυχὴ ἀσεβοῦς οὐκ ἐλεηθήσεται
11 ὑπ᾽ οὐδενὸς τῶν ἀνθρώπων. † Ζημιουμένου
ἀκολάστου πανουργότερος γίνεται ὁ ἄκακος, † Συνιῶν δὲ Σοφὸς δέξεται γνῶσιν.
12 † Συνιεῖ δίκαιος καρδίας ἀσεβῶν, † καὶ
13 φαυλίζει ἀσεβεῖς ἐν κακοῖς. † Ὃς φράσσει
τὰ ὦτα αὐτοῦ τοῦ μὴ (η) ἐπακοῦσαι ἀσθενοῦς,
† καὶ αὐτὸς ἐπικαλέσεται, καὶ οὐκ ἔσται ὁ εἰσ-
14 ακούων. † Δόσις λάθριος ἀνατρέπει ὀργάς,
† δώρων δὲ ὁ φειδόμενος θυμὸν ἐγείρει ἰσχυρόν.
15 † Εὐφροσύνη δικαίων ποιεῖν κρίμα,
† ὅσιος δὲ ἀκάθαρτος παρὰ κακούργοις.
16 † Ἀνὴρ πλανώμενος ἐξ ὁδοῦ δικαιοσύνης, ἐν Συναγωγῇ γιγάντων ἀναπαύσε-
17 ται. † Ἀνὴρ ἐνδεὴς ἀγαπᾷ εὐφροσύνην,
18 † φιλῶν οἶνον καὶ ἔλαιον εἰς πλοῦτον· † Πε-
19 ρικάθαρμα δὲ δικαίου ἄνομος. † Κρεῖσσον
οἰκεῖν ἐν τῇ ἐρήμῳ, † ἢ μετὰ γυναικὸς μαχίμου
20 καὶ γλωσσώδους καὶ ὀργίλου. † Θησαυρὸς ἐπιθυμητὸς ἀναπαύσεται ἐπὶ στόματος Σοφοῦ, † ἄφρονες δὲ ἄνδρες καταπίονται
21 αὐτόν. † Ὁδὸς δικαιοσύνης καὶ ἐλεημοσύνης εὑρήσει ζωὴν καὶ δόξαν.
22 † Πόλεις ὀχυρὰς ἐπέβη Σοφός, † καὶ καθεῖλε τὸ ὀχύρωμα ἐφ᾽ ᾧ ἐπεποίθει-
23 σαν οἱ ἀσεβεῖς. † Ὃς φυλάσσει τὸ στόμα αὐτοῦ καὶ τὴν γλῶσσαν, διατηρεῖ
ἐκ θλίψεως τὴν ψυχὴν αὐτοῦ.

(dd) Livores, & contritiones (ee) occurrunt malis : plagæ autem in ſecreta ventris. 30

CAP. XXI.

Sicut impetus aquæ ; ita cor 1
regis in manu Dei : quocunque
(a) voluerit innuere, illuc inclinavit illud. Omnis vir videtur 2
ſibi juſtus : (b) dirigit autem corda Dominus. Facere juſta, & ve- 3
racem eſſe, placita apud Deum
magis, quàm hoſtiarum ſanguis.
Magna ſapiens, in contumelia au- 4
dax corde : fax autem impiorum,
(c) peccatum. Qui (d) operatur 6
theſauros linguâ mendaci, vana
ſectatur (e) in laqueos mortis.
(f) Perditio impiis hoſpitio ſuſci- 7
pietur : non enim volunt agere
juſta. Ad perverſos perverſas 8
vias mittit Deus: munda enim &
recta opera ejus. Melius habitare 9
*ſuper angulum * ſub divo, (g)*
quàm in calce litis cum iniquitate, & in domo communi. (h)
Anima impii non conſequetur mi- 10
ſericordiam ab ullo hominum.
Mulctato intemperante (i) aſtutior 11
fit ſimplex : intelligens autem ſa-
piens, ſuſcipiet ſcientiam. Intel- 12
ligit juſtus (k) corda impiorum :
& (l) vilipendit impios in malis.
Qui obturat aures ſuas, ne audiat 13
imbecillum ; & ipſe (m) invocabit, & non erit, qui exaudiat.
Munus occultum (n) avertit iras : 14
muneribus autem qui parcit, furorem ſuſcitat fortem. Lætitia ju- 15
ſtorum facere judicium : (o) ſanctus autem immundus eſt apud
malos. Vir errans à via juſtitiæ, 16
in ſynagoga (p) gigantum requieſcet. Vir (q) egenus amat læti- 17
tiam, diligens vinum, & oleum,
(r) ad divitias : (ſ) Circumpur- 18
gatio autem juſti (t) iniquus. Me- 19
lius habitare in deſerto, quàm
cum muliere rixoſa, & linguoſa,
& (u) iracunda. Theſaurus deſide- 20
rabilis requieſcet ſuper os ſapientis : imprudentes autem viri (x)
devorabunt illum. (y) Via juſti- 21
tiæ, & miſericordiæ (z) inveniet
vitam, & gloriam. (ω) Civitates 22
munitas ingreſſus eſt ſapiens : &
diruit munitionem, in qua confidebant impii. Qui cuſtodit os 23
ſuum, & linguam ; conſervat de
tribulatione animam ſuam.

MS.A. (α) οὗ δ᾽ ἂν θέλων νεύσῃ ἔκλινεν αὐτήν. (β) ἐφ᾽ ὕβρει (γ) ἁμαρτίαι. (δ) καὶ ἔρχεται ἐπὶ παγίδας (ε) ἀποστελεῖ (ζ) *Κρίσσων (η) ὑπακοῦσαι

תרגום TARGUM.

30 שוחני ופורעתא פגעו בבישא ומחותא בגויה דכריסא׃

כא

1 היך טיפי דמיא לביה דמלכא באידוי דאלהא ולאתר דצבי נרכן ליה׃ כלהון אורחתיה
2 דגברא תריצן אנון באפוי ואלהא מתקן לביה׃ מן דעבד צדקתא ודינא מתרעי 3
4 ביה אלהא מן דבחא׃ רמות עיני ובעי לבא ושרגא דרשיעי לחטאה׃ מחשבתא 5
6 דנבין ליותרנא ורגלא דמסרהבא לחוסרנא׃ מעבדנותא דסימתא בלישנא דשקרא
7 ויתחבלון ויתנתרון אלין דבעין למותא׃ רכונא דרשיעי יעלנון ולא צבין דיעבדון דינא׃
8 דהפך ארחיה דגברא הוא נוכראה ודדכי תריצן עובדוהי׃ טב למיתב על קרנא דאגרא 9
10 מן אתתא תגרניתא וביתא טרקא׃ נפשיה דרשיעא רגנא בישתא ולא מתרחם בעינוי
11 חבריה׃ בתכיה דממקנא נחכם שברא ובסוכלתנותיה דחכימא יסב ידיעתא׃ מסתכל 12
13 צדיקא בביתיה דרשיעא ומטלטל רשיעיא בבישתא׃ דמסכר אדניה דלא נשמע
14 לצוחתיה דמסכנא אף נקרא לאלהא ולא נתעני׃ מוהבא בטישא מרעכא רוגזא ושוחדא
15 בעובא חמתא עשנתא׃ חדותא דצדיקא למעבד דינא ושציא לאלין דעבדין עאתא׃ בר 16
17 נשא דתעי מן אורחא דסכולא עם בני ארעא נתתנח׃ גברא די חסר ליה ורחם חדותא
18 ורחים חמרא ובסמא לא נעתר׃ שלחופיה דצדיקא רשיעא ושלחופי דתריצי בזוזי׃
19 טב למתב בארע מדברא מן אתתא תגרניתא ומרגזניתא׃ סימתא רגנתא ומשחא 20
21 בדיריה דחכימא וסכלא דבני נשא נבלעינון׃ דרדיף צדקתא וחסדא ישכח חיי וצדקתא
22 ויקרא׃ למדנתא דגברי סליק חכימא ואחית עושנא דסברא׃ דנטר פומיה ולישניה 23
נטר מן עקתא נפשיה׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Pavores & plagæ occurrunt malo, & *ictus* in interioribus ventris. 30

CAP. XXI.

Sicut rivuli aquarum, ita cor regis in manibus Dei, & quocunque vult 1
inclinat illud. Omnes viæ viri rectæ ſunt in conſpectu ejus ; dirigit autem 2
cor ejus Deus. Qui facit juſtitiam & judicium, complacet ſibi in illo Deus 3
magis quàm in ſacrificio. Exaltatio oculorum, & tumor cordis, & lu- 4
cerna impiorum peccatum. Cogitationes collectæ ad abundantiam, & 5
pes feſtinus ad egeſtatem [*tendit.*] Opera cellariorum in lingua menda- 6
cii, & diſſipabuntur ; & evellentur illi qui quærunt mortem. *Ruina* 7
impiorum tollet eos, quoniam non *voluerunt facere* judicium. Qui 8
pervertit viam alicujus, extraneus eſt : & qui mundus eſt, recta ſunt
opera ejus. Melius eſt ſedere in angulo tecti, quàm cum muliere litigioſa, 9
& in domo communi. Anima impii deſiderat malũ, & non miſericordiam 10
conſequetur in oculis ejus ſocius ejus. Per mulctam deriſoris ſapientior 11
fiet inſipiens, & in intellectu ſapientis aſſumet ſcientiam. Contemplatur 12
juſtus domum impii, & transfert impios in malum. Qui obturat aurem 13
ſuam ne audiat clamorem pauperis, vocabit quoque Deum, & non exau-
dietur. Munus in abſcondito extinguit iram, & munus in ſinu indignatio- 14
nem fortem. Lætitia eſt juſto facere judicium, & *perditio* iis qui faciunt 15
iniquitatem. Filius hominis qui errat à via intellectus, cum filiis terræ 16
commorabitur. Vir qui egenus eſt & diligit lætitiam, diligítque vinum 17
& unguentum, non ditabitur. In commutatione juſti [*tradetur*] impius, 18
& pro rectis direptores. Melius eſt habitare in terra deſerti, quàm cum 19
muliere litigioſa & rixoſa. Argentum deſiderabile, & oleum in habita- 20
culo ſapientis ; & ſtultus filiorum hominis diſſipabit illud. Qui ſequi- 21
tur juſtitiam & miſericordiam, inveniet vitam, et juſtitiam, et gloriam. 22
Civitatem fortium aſcendit ſapiens, et detrahit robur fiduciæ ejus. Qui 23
cuſtodit os ſuum et linguam ſuam, cuſtodit ab anguſtia animam ſuam.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

30 * ܚܒܘܪܐ ܘܡܚܘܬܐ ܦܓܥܘ ܒܒܝܫܐ܂ ܘܡܚܘܬܐ ܠܬܘܢܝ ܕܟܪܣܗܘܢ܂

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܐ *

1 * ܐܝܟ ܐܦܩܐ ܕܡܝܐ܆ ܠܒܗ ܕܡܠܟܐ ܒܐܝܕܘܗܝ ܕܐܠܗܐ܂ ܘܠܐܝܟܐ ܕܨܒܐ ܡܨܠܐ ܠܗ܂ * ܟܠܗܘܢ
2 ܐܘܪܚܬܗ ܕܓܒܪܐ܂ ܬܪܝܨܢ ܒܥܝܢܘܗܝ ܕܢܦܫܗ܂ ܘܡܪܝܐ ܡܬܩܢ ܠܒܐ܂ * ܡܢ ܕܥܒܕ ܙܕܝܩܘܬܐ
3 ܘܕܝܢܐ܆ ܓܒܐ ܗܘ ܠܡܪܝܐ ܡܢ ܕܒܚܬܐ܂ * ܪܘܡܐ ܕܥܝܢܐ ܘܦܬܝܘܬܐ ܕܠܒܐ: ܘܫܪܓܐ ܕܥܘܠܐ
4 ܚܛܝܬܐ܂ * ܡܚܫܒܬܗ ܕܓܒܝܐ ܡܗܝܡܢܢ܂ ܘܕܒܝܫܐ ܡܚܒܠܢ܂ * ܡܬܚܪܝܢܘܬܐ ܕܣܝܡܬܐ
5 ܒܠܫܢܐ ܕܓܠܬܐ܂ ܘܠܚܒܠܐ ܢܬܗܦܟܘܢ܆ ܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܡܘܬܐ܂ * ܬܒܪܐ ܕܥܘܠܐ ܢܐܬܐ ܥܠܝܗܘܢ܆
6 7 ܡܛܠ ܕܠܐ ܨܒܘ ܠܡܥܒܕ ܕܝܢܐ܂ * ܕܡܥܩܡ ܐܘܪܚܗ܆ ܓܒܪܐ ܗܘ ܢܘܟܪܝܐ܂ ܘܕܕܟܐ܆ ܬܪܝܨܝܢ
8 ܥܒܕܘܗܝ܂ * ܛܒ ܠܡܬܒ ܒܩܪܢܐ ܕܐܓܪܐ܆ ܡܢ ܕܠܡܥܡܪ ܥܡ ܐܢܬܬܐ ܚܪܝܢܬܐ܂ * ܢܦܫܗ
9 10 ܕܥܘܠܐ ܠܐ ܡܬܚܙܝܐ ܒܥܝܢܝ ܚܒܪܘܗܝ܂ * ܘܒܬܘܒܠܗ ܕܒܝܫܐ܆ ܡܬܚܟܡ ܦܬܝܐ܂ ܚܟܝܡܐ
11 ܒܡܪܟܢܘܬܗ܆ ܡܩܒܠ ܝܕܥܬܐ܂ * ܘܡܣܬܟܠ ܙܕܝܩܐ ܠܒܗܘܢ ܕܥܘܠܐ܂ ܘܕܚܩ ܠܥܘܠܐ
12 ܠܒܝܫܬܐ܂ * ܘܡܢ ܕܣܟܪ ܐܕܢܘܗܝ ܕܠܐ ܢܫܡܥ ܠܡܣܟܢܐ܂ ܐܦ ܗܘ ܢܩܪܐ ܠܐܠܗܐ܆ ܘܠܐ ܢܥܢܝܘܗܝ܂
13 * ܡܘܗܒܬܐ ܕܒܛܘܫܝܐ ܡܦܢܝܐ ܪܘܓܙܐ܂ ܘܕܚܣ ܒܡܘܗܒܬܐ܆ ܡܥܝܪ ܪܘܓܙܐ܂ * ܚܕܘܬܗ ܕܙܕܝܩܐ
14 15 ܥܒܕܐ ܕܝܢܐ܂ ܘܬܒܪܐ ܠܥܒܕܝ ܥܘܠܐ܂ * ܓܒܪܐ ܕܛܥܐ ܡܢ ܐܘܪܚܐ ܕܣܘܟܠܐ܆ ܥܡ ܒܢܝ ܐܪܥܐ
16 17 18 ܢܬܬܢܚ܂ * ܓܒܪܐ ܕܡܣܟܢ ܠܗ: ܘܪܚܡ ܚܕܘܬܐ ܘܚܡܪܐ ܘܦܘܢܩܐ܆ ܠܐ ܢܬܥܬܪ܂ * ܐܬܚܠܦܘܗܝ
19 ܕܙܕܝܩܐ܂ ܥܘܠܐ܂ ܘܚܠܦ ܬܪܝܨܐ ܕܓܠܐ܂ * ܛܒ ܠܡܥܡܪ ܒܐܪܥܐ ܡܕܒܪܐ܂ ܡܢ ܕܠܡܥܡܪ ܥܡ
20 ܐܢܬܬܐ ܚܪܝܢܬܐ ܘܡܪܓܙܢܝܬܐ܂ * ܣܝܡܬܐ ܪܓܝܓܬܐ܆ ܘܡܫܚܐ ܕܒܪܐ܂ ܚܟܡܬܐ܂ ܘܣܘܟܠܐ
21 ܕܒܢܝܢܫܐ ܢܒܠܥܝܘܗܝ܂ * ܕܪܕܦ ܙܕܝܩܘܬܐ ܘܛܝܒܘܬܐ܂ ܡܫܟܚ ܚܝܐ܂ ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܘܫܘܒܚܐ܂
22 23 * ܠܡܕܝܢܬܐ ܕܓܢܒܪܐ ܣܠܩ ܚܟܝܡܐ: ܘܟܒܫ ܚܣܢܐ ܕܬܘܟܠܢܗ܂ * ܕܢܛܪ ܦܘܡܗ
ܘܠܫܢܗ܆ ܢܛܪ ܢܦܫܗ ܡܢ ܐܘܠܨܢܐ܂

* Contritio atque ſupplicium occurrerunt flagitioſis: & plaga ad intima ventris eorum. 30

CAP. XXI.

Ut rivus aquarum, cor regis in manibus 1 Dei: & quocunque vult inclinat illud. Omnes 2 viæ viri rectæ ſunt in oculis ſuis: Dominus autem cor diſponit. Qui facit juſtitiam 3 & judicium, gratior eſt Domino quàm victima. Altitudo oculorum, & latitudo 4 cordis, & lucerna impiorum, peccatum. Cogitationes electi, fideles: & maligni, 5 pernicioſæ. Comparatio theſauri, linguâ 6 mendaci: & ad exitium deturbabuntur quicunque mortem quærunt. Contritio 7 impiorum veniet in ipſos, eò quòd noluerint facere judicium. Qui pervertit viam 8 ſuam, vir eſt alienus: qui verò purus eſt, recta ſunt opera ejus. Præſtat ſedere in cornu 9 tecti, quàm habitare cum muliere rixoſa. Animus impii non videtur in oculis ſociorum 10 ejus. Et ex detrimento maligni ſapiens 11 redditur *qui* ſimplex *eſt*. Prudens in conſilio ſuo, amplectitur ſcientiam: Et juſtus 12 intelligit cor impiorum, & impellit impios ad malum. Qui obturat aures ſuas quominus 13 audiat pauperem, ipſe quoque clamabit ad Deum, & non exaudietur. Munus clandeſtinum 14 removet iram: & qui parcus eſt in dando, ſuſcitat indignationem. Gaudium 15 juſti generat judiciũ, & conterit facinoroſos. Homo qui aberrat à via prudentiæ, cum filiis 16 terræ gemet. Homo egenus qui indulget 17 lætitiæ, vino, & lautitiis, non diteſcet. Permutatio juſti, impius: & pro recto, mendax. 18 Melius eſt verſari in terra deſerta, 19 quàm habitare cum muliere rixoſa & irritante. Theſaurus expetibilis & unguentum 20 diſperſum, ſapientia: & prudentia hominum deglutiet eum. Qui quærit juſtitiam, & bonitatem, 21 inveniet vitam, & juſtitiam, & gloriam. Ad urbem gigantum aſcendit ſapiens, 22 & ſubjugavit arcem fiduciæ ejus. Qui 23 cuſtodit os & linguam ſuam, ſervat animam ſuam à calamitate.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

30 * المعابات والهشمات تلتقي الاشرار * والجرحات في خزاين جوفهم *

* الفصل الحادي والعشرون *

1 * بمنزلة نهضة الماء هكذا قلب الملك في يد الله * ايما شاء ان يومي اماله الي هناك * كل انسان
2 يظهر عند ذاته مقسطا * والرب يثقف القلوب * شيان عند الله مرضيان * ان يعمل الانسان اعمالا
3 مقسطة * وان يصدق * وهما افضل من دم الذبايح * المتعظم الراي بالتعظم قلبه متهجم * مصباح
4 المنافقين الخطيه ** من يعمل خزاين بلسان كاذب تجازي باطلا * ويجي الي فخاخ الموت * الهلاك
6 7 يلصق بالمنافقين * لانهم ما يوثرون ان يعملوا اعمالا وامورا عدلة * الله يرسل طرقا صعبة الي
8 الصعبين الملتويين * لان اعماله طاهرة مستقيمة * السكنى في زاوية تحت الهوي افضل من
9 السكنى في مجالس مبيضة بظلم وفي منزل جديد * نفس المنافق ما يرحمها احد من الناس *
10 11 * اذا خسر الفاسق المجدف يصير ذو الدعة اوفر دربة * الحكيم اذا تفقه يقبل علما * المقسط
12 يفهم ويعرف قلوب المنافقين * ويطلح المنافقين بمساويهم * كل من يسد اذنيه ليلا يسمع
13 الضعفاء * فذاك يستغيث ولا يكون من يسمعه * الهدية الخفية تحل مخايل الغيظ * ومن يشفق
14 على الهدايا ينهض غيظا قويا * سرور المقسطين يصنع انصافا * والبار عند العاملين الاسواء
15 نجس * الرجل الضال عن طريق العدل يستريح في مجمع الجبابرة * الانسان المعسر المحتاج يحب
16 17 السرور * ويوثر الزيت والخمر ليستغني * الاثيم قمامة المقسط * السكنى في القفر افضل من
18 19 السكنى مع امراة مخاصمة ملسنة غضوبة * كنز مشتهي يستريح في فم الحكيم * والناس
20 الاغبياء يبتلعونه * طريقة العدل والصداقة تصاحب الحياة والشرف * الحكيم ارتكب مدنا
21 22 حصينة * وهدم الحصن الذي توكل عليه المنافقون * من يحفظ فمه ولسانه * يصون من
23 الغم نفسه *

Opprobria & fractura occurrent perverſis, & perturbationes in cellis ventris eorum. 30

CAP. XXI.

Sicut elevatio aquæ, ita cor regis in 1 *manu Dei, quocumque voluerit innuere, inclinat illud eó. Omnis homo videtur* 2 *ſibi ipſi juſtus: & Dominus confirmat corda. Duo ſunt apud Deum grata: ut* 3 *faciat homo opera juſta, & ut verax ſit: & utraque ſunt præſtantiora ſanguine victimarum. Superbus cogitatione, in ſu-* 4 *perbia cor ejus præceps eſt: lucerna impiorum, peccatum.*

Deeſt. verſ. 5.

Qui facit theſauros linguâ mendaci, mer- 6 *ces ejus erit vanitas, & veniet ad laqueos mortis. Interitus inhæret impiis,* 7 *quia non eligunt facere opera & negotia recta. Deus mittit vias aſperas duris* 8 *& perverſis: quia opera ejus pura ſunt ac recta. Habitare in angulo ſub dio, me-* 9 *lius eſt quàm habitare in domibus dealbatis, cum ſcelere, & in domicilio novo. Animæ impii non miſeretur ullus homi-* 10 *num. Cùm damnum ſuſtinet impius* 11 *blaſphemus, manſuetus fit cautior. Sapiens, cùm docebitur, accipiet doctrinam. Juſtus intelligit, & agnoſcet corda im-* 12 *piorum: & perverſè agunt impii in iniquitatibus ſuis. Quicunque obturat* 13 *aures ſuas ne audiat infirmos, hic clamabit, & non erit qui audiat illum. Munus ſecretum avertit vi-* 14 *res furoris: & qui parcit muneribus, ſuſcitat iram potentem. Gaudium juſto-* 15 *rum operatur æquitatem: & innocens, apud operantes mala immundus eſt. Vir* 16 *aberrans à via juſtitiæ, quieſcet in cœtu gigantum. Homo pauper egenus, amat* 17 *hilaritatem, & eligit oleum & vinum, ut diteſcat. Sceleſtus ſordes eſt juſti. Ha-* 18 19 *bitare in deſerto melius eſt quàm habitare cum muliere litigioſa, linguoſâ, iracundâ. Theſaurus optabilis quieſcit in ore* 20 *ſapientis: homines autem ſtulti deglutiunt illum. Via æquitatis & charitatis* 21 *comitatur vitam & magnificentiam. Sa-* 22 *piens conſcendit urbes munitas, & deſtruit arcem in qua confiſi ſunt impii. Qui cuſtodit os ſuum & linguam ſuam,* 23 *ſervat ab angore animam ſuam.*

משלי: כב

.ſuperbiæ ira in *faciens* : ejus nomen deriſor , *arrogans* , Superbus
24 זֵד יָהִיר לֵץ שְׁמוֹ עוֹשֶׂה בְּעֶבְרַת זָדוֹן׃
.facere ejus manus renuerunt quia : eum interficiet pigri Deſiderium
25 תַּאֲוַת עָצֵל תְּמִיתֶנּוּ כִּי־מֵאֲנוּ יָדָיו לַעֲשׂוֹת׃
non & , tribuet juſtus & : concupiſcentiam *concupivit* die Tota
26 כָּל־הַיּוֹם הִתְאַוָּה תַאֲוָה וְצַדִּיק יִתֵּן וְלֹא
quia etiam ; abominatio impiorum Sacrificium .prohibebit
27 יַחְשֹׂךְ׃ זֶבַח רְשָׁעִים תּוֹעֵבָה אַף כִּי־
: peribit *mendaciorum* Teſtis .illud attulerit *mala cogitatione in*
28 בְזִמָּה יְבִיאֶנּוּ׃ עֵד־כְּזָבִים יֹאבֵד
impius vir Roboravit .loquetur *finem in audiens* vir &
29 וְאִישׁ שׁוֹמֵעַ לָנֶצַח יְדַבֵּר׃ הֵעֵז אִישׁ רָשָׁע
,ſapientia Non .ſuam viam *parabit* ipſe rectus & *: ſuis faciebus in*
30 בְּפָנָיו וְיָשָׁר הוּא יָכִין דַּרְכּוֹ׃ אֵין חָכְמָה
Equus .DOMINUM contra conſilium nec ; intelligentia neque
31 וְאֵין תְּבוּנָה וְאֵין עֵצָה לְנֶגֶד יְהוָה׃ סוּס
.ſalus DOMINI *&* ; belli diem ad paratus
מוּכָן לְיוֹם מִלְחָמָה וְלַיהוָה הַתְּשׁוּעָה׃

CAP. XXII. כב

auro præ & , argento præ : multa opulentia præ nomen Eligibilius
1 נִבְחָר שֵׁם מֵעֹשֶׁר רָב מִכֶּסֶף וּמִזָּהָב
faciens : ſibi obviaverunt pauper & Dives .bona gratia
2 חֵן טוֹב׃ עָשִׁיר וָרָשׁ נִפְגָּשׁוּ עֹשֵׂה
:ſe abſcondit & ,malum vidit Callidus .DOMINUS ipſos omnes
3 כֻּלָּם יְהוָה׃ עָרוּם רָאָה רָעָה וְיִסָּתֵר
Propter *.mulctabuntur* & , ſunt tranſgreſſi ſimplices &
4 וּפְתָיִים עָבְרוּ וְנֶעֱנָשׁוּ׃ עֵקֶב
.vitæ & , gloria & , *opulentia* : DOMINI timor *manſuetudinem*
עֲנָוָה יִרְאַת יְהוָה עֹשֶׁר וְכָבוֹד וְחַיִּים׃
,ſuam animam *cuſtodiens* : perverſi via in laquei , Spinæ
5 צִנִּים פַּחִים בְּדֶרֶךְ עִקֵּשׁ שׁוֹמֵר נַפְשׁוֹ
: ſuæ viæ *os ſuper* puerum *Initia* .eis ab ſe elongabit
6 יִרְחַק מֵהֶם׃ חֲנֹךְ לַנַּעַר עַל־פִּי דַרְכּוֹ
Dives .ea ab recedet non , ſenuerit cùm etiam
7 גַּם כִּי־יַזְקִין לֹא־יָסוּר מִמֶּנָּה׃ עָשִׁיר
Seminans *.commodanti viro mutuans ſervus* & : dominabitur *pauperes in*
8 בְּרָשִׁים יִמְשׁוֹל וְעֶבֶד לֹוֶה לְאִישׁ מַלְוֶה׃ זוֹרֵעַ
.conſumet ejus iræ virga & *: calamitatem* metet iniquitatem
עַוְלָה יִקְצוֹר־אָוֶן וְשֵׁבֶט עֶבְרָתוֹ יִכְלֶה׃
.tenui ſuo pane de dedit quia ; benedicetur ipſe , *oculus Bonus*
9 טוֹב־עַיִן הוּא יְבֹרָךְ כִּי־נָתַן מִלַּחְמוֹ לַדָּל׃
, judicium ceſſabit & : contentio egredietur & , deriſorem Ejice
10 גָּרֵשׁ לֵץ וְיֵצֵא מָדוֹן וְיִשְׁבֹּת דִּין
, ejus labiorum *gratia* , cordis munditiam *Diligens* .ignominia &
11 וְקָלוֹן׃ אֹהֵב טְהָר־לֵב חֵן שְׂפָתָיו
: ſcientiam cuſtodierunt DOMINI Oculi .rex ejus amicus
12 רֵעֵהוּ מֶלֶךְ׃ עֵינֵי יְהוָה נָצְרוּ דָעַת
Leo : piger Dixit .prævaricatoris verba pervertet &
13 וַיְסַלֵּף דִּבְרֵי בֹגֵד׃ אָמַר עָצֵל אֲרִי
profunda Fovea .occidar platearum medio in *: vico in*
14 בַחוּץ בְּתוֹךְ רְחֹבוֹת אֵרָצֵחַ׃ שׁוּחָה עֲמֻקָּה
Stultitia .illuc cadet DOMINUS *infenſus cui* : alienarum os
15 פִּי זָרוֹת זְעוּם יְהוָה יִפָּל־שָׁם׃ אִוֶּלֶת
eam faciet elongare correctionis virga : pueri corde in colligata
קְשׁוּרָה בְלֶב־נָעַר שֵׁבֶט מוּסָר יַרְחִיקֶנָּה
.eo ab
מִמֶּנּוּ׃

Verſio VULG. LAT.

24 Superbus & arrogans vocatur
indoctus, qui in ira operatur
25 ſuperbiam. Deſideria occîdunt
pigrum: noluerunt enim
quidquam manus ejus operari:
26 Totâ die concupiſcit &
deſiderat: qui autem juſtus
eſt, tribuet, & non ceſſabit.
27 Hoſtiæ impiorum abominabiles,
quia offeruntur ex ſcelere.
28 Teſtis mendax peribit: vir
obediens loquetur victoriam.
29 Vir impius procaciter obfirmat
vultum ſuum: qui autem
rectus eſt, corrigit viam
30 ſuam. Non eſt ſapientia,
non eſt prudentia, non
eſt conſilium contra Dominum.
31 Equus paratur ad diem
belli: Dominus autem ſalutem
tribuit.

CAP. XXII.

1 MElius eſt nomen bonum,
quàm divitiæ multæ: ſup argentũ
2 & aurũ gratia bona. Dives
& pauper obviaverunt ſibi:
utriuſq; operator eſt Dñs.
3 Callidus vidit malum, & abſcondit
ſe: innocens pertranſiit,
4 & afflictus eſt damno. Finis
modeſtiæ timor Dñi, divitiæ
5 et gloria et vita. Arma et
gladii in via perverſi: cuſtos
autem animæ ſuæ longè recedit
6 ab eis. Proverbiũ eſt; Adoleſcens
juxta viam ſuam, etiam
cùm ſenuerit, non recedet
7 ab ea. Dives pauperibus
imperat: et qui accipit
mutuum, ſervus eſt fœnerantis.
8 Qui ſeminat iniquitatem,
metet mala, et virga iræ
9 ſuæ conſummabitur. Qui pronus
eſt ad miſericordiam, benedicetur:
de panibus enim
ſuis dedit pauperi. Victoriam
et honorem acquiret qui dat
munera: animam autem aufert
10 accipientium. Ejice deriſorẽ,
& exibit cum eo jurgium, ceſſabúntque
cauſæ & contumeliæ.
11 Qui diligit cordis munditiam,
propter gratiam labiorum
ſuorum habebit amicum
12 regem. Oculi Dñi cuſtodiunt
ſcientiam: & ſupplantantur
13 verba iniqui. Dicit piger;
Leo eſt foris, in medio
platearum occidendus ſum.
14 Fovea profunda os alienæ:
cui iratus eſt Dominus, incidet
15 in eam. Stultitia colligata
eſt in corde pueri, & virga
diſciplinæ fugabit eam.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

24 † Θρασὺς καὶ αὐθάδης καὶ ἀλαζὼν λοιμὸς
καλεῖται, † ὃς δὲ μνησικακεῖ παράνομος.
25 † Ἐπιθυμίαι ὀκνηρὸν (') ἀποκτείνουσιν, † οὐ
γὰρ προαιροῦνται αἱ χεῖρες αὐτοῦ ποιεῖν
26 τι. Ἀσεβὴς ἐπιθυμεῖ ὅλην τὴν ἡμέραν ἐπιθυμίας κακάς, † ὁ δὲ δίκαιος
27 ἐλεᾷ καὶ οἰκτείρει ἀφειδῶς. † Θυσίαι ἀσεβῶν βδέλυγμα κυρίῳ, † καὶ γὰρ παρανόμως
28 προσφέρουσιν αὐτάς. † Μάρτυς ψευδὴς ἀπολεῖται, † ἀνὴρ δὲ ὑπήκοος φυλασσόμενος
29 λαλήσει. † Ἀσεβὴς ἀνὴρ ἀναιδῶς ὑφίσταται προσώπῳ, † ὁ δὲ (") εὐθὺς
30 αὐτὸς συνιεῖ τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ. † Οὐκ ἔστι σοφία, οὐκ ἔστιν ἀνδρεία, † οὐκ ἔστι βουλὴ
31 πρὸς τὸν ἀσεβῆ. † Ἵππος ἑτοιμάζεται εἰς ἡμέραν πολέμου, † παρὰ δὲ
κυρίου ἡ βοήθεια.

MS. A. (') ἀποκτενοῦσιν (") εὐθὴς

ΚΕΦ. κβʹ.

1 † ΑἹρετώτερον ὄνομα καλὸν ἢ πλοῦτος
πολύς, † ὑπὲρ δὲ ἀργύριον καὶ χρυσίον χάρις
2 ἀγαθή. † Πλούσιος καὶ πτωχὸς συνήντησαν
ἀλλήλοις, † ἀμφοτέρους δὲ ὁ κύριος
3 ἐποίησε. † Πανοῦργος ἰδὼν πονηρὸν
τιμωρούμενον κραταιῶς αὐτὸς παιδεύεται,
† οἱ δὲ ἄφρονες παρελθόντες ἐζημιώθησαν.
4 † Γενεὰ σοφίας φόβος κυρίου, † καὶ πλοῦτος,
5 καὶ δόξα, καὶ ζωή. † Τρίβολοι καὶ παγίδες
ἐν ὁδοῖς σκολιαῖς, † ὁ δὲ φυλάσσων
7 τὴν ἑαυτοῦ ψυχὴν ἀφέξεται αὐτῶν. † Πλούσιοι
πτωχῶν ἄρξουσι, † καὶ οἰκέται ἰδίοις
8 δεσπόταις δανειοῦσιν. † Ὁ σπείρων φαῦλα
θερίσει κακά, † πληγὴν δὲ ἔργων αὐτοῦ
συντελέσει. † ἄνδρα ἱλαρὸν καὶ δότην εὐλογεῖ
ὁ θεός, † ματαιότητα δὲ ἔργων
9 αὐτοῦ συντελέσει. † Ὁ ἐλεῶν πτωχὸν αὐτὸς
διατραφήσεται, † τῶν γὰρ ἑαυτοῦ ἄρτων
(ˢ) ἔδωκεν τῷ πτωχῷ. † νίκην καὶ τιμὴν
περιποιεῖται ὁ δῶρα (α) δούς, † τὴν μέντοι
10 ψυχὴν ἀφαιρεῖται τῶν κεκτημένων. † Ἔκβαλε
ἐκ συνεδρίου λοιμόν, καὶ συνεξελεύσεται
αὐτῷ νεῖκος, † ὅταν γὰρ καθίσῃ
11 ἐν συνεδρίῳ πάντας ἀτιμάζει. † Ἀγαπᾷ
κύριος ὁσίας καρδίας, † δεκτοὶ δὲ αὐτῷ
πάντες ἄμωμοι. † χείλεσι ποιμαίνει
12 βασιλεύς. † Οἱ δὲ ὀφθαλμοὶ κυρίου (β)
διατηροῦσιν αἴσθησιν, † φαυλίζει δὲ λόγους
13 παράνομος. † Προφασίζεται, καὶ λέγει
ὀκνηρός, † Λέων ἐν ταῖς ὁδοῖς, ἐν δὲ ταῖς πλατείαις
14 φονευταί. † Βόθρος βαθὺς στόμα παρανόμου,
† ὁ δὲ μισηθεὶς ὑπὸ κυρίου ἐμπεσεῖται
εἰς αὐτόν. † εἰσὶν ὁδοὶ κακαὶ ἐνώπιον
ἀνδρός, † καὶ οὐκ ἀγαπᾷ τοῦ ἀποστρέψαι
ἀπ᾽ αὐτῶν, † ἀποστρέφειν δὲ δεῖ ἀπὸ ὁδοῦ
15 σκολιᾶς καὶ κακῆς. † Ἄνοια ἐξῆπται
(γ) καρδίας νέου, † ῥάβδος δὲ καὶ παιδεία
μακρὰν ἀπ᾽ αὐτοῦ.

(aa) Audax, & arrogans, & 24
oſtentator, peſtilens vocatur: (bb)
qui autem injuriarum memor eſt,
iniquus. (cc) Deſideria pigrum 25
interficiunt: non enim eligunt
manus ejus facere quicquam. Impius 26
concupiſcit totâ die concupiſcentias
malas: juſtus autem
(dd) miſeretur, & miſeratur non
parcè. Hoſtiæ impiorum abominatio 27
Domino: (ee) etenim iniquè
offerunt eas. Teſtis falſus 28
peribit: vir autem obediens (ff)
cuſtoditus loquetur. (gg) Impius 29
vir impudenter ſubſiſtit facie:
rectus autem ipſe (hh) intelliget
vias ſuas. Non eſt ſapientia, non 30
eſt fortitudo, non eſt conſilium
(ii) apud impium. Equus paratur 31
ad diem belli: à Domino autem
auxilium.

CAP. XXII.

ELigibilius (a) nomen bonum, 1
quàm divitiæ multæ: ſuper argentum
verò, & aurum gratia
bona. Dives, & pauper obviaverunt 2
ſibi: utroſque autem Dominus
fecit. Callidus (b) videns malignum 3
punitum, valdè ipſe eruditur:
imprudentes autem prætereuntes
damno affecti ſunt. (c)
Progenies ſapientiæ timor Domini, 4
& divitiæ, & gloria, & vita.
Tribuli & laquei in viis perverſis: 5
qui autem cuſtodit animam
ſuam, (d) abſtinebit ab eis. Divites 7
pauperibus imperabunt: (e) et
famuli propriis dominis fœnerabunt.
Qui (f) ſeminat mala, 8
metet mala: plagam autem operum
ſuorum conſummabit. Virum
hilarem, & datorem (g) benedicit
Deus: vanitatem verò
operum ejus conſummabit. Qui 9
miſeretur pauperis, ipſe enutrietur:
de ſuis enim panibus dedit
pauperi. (h) Victoriam, & honorem
acquirit, qui dat munera: &
animam quidem aufert poſſidentium.
Ejice è conſeſſu (i) peſtilentem, 10
& exibit ſimul cum eo (k)
jurgium: nam cùm ſederit in
conſeſſu, omnes inhonorat. Diligit 11
Dominus (l) ſancta corda:
accepti autem ſunt ei omnes (m)
immaculati. (n) Labiis paſcit rex:
Oculi autem Domini conſervant 12
(o) ſenſum: vilipendit autem
verba iniquus. Excuſationem affert, 13
et dicit piger; Leo in viis,
& in plateis (p) ſicarii. Fovea 14
profunda os iniqui: qui autem
odio habetur à Dño*, incidet*
in (q) illam. Sunt viæ malæ coram
viro: & non diligit reverti
ab eis: avertere autem ſe oportet
à via perverſa, & mala.
Dementia (r) pendet è corde juvenis: 15
virga autem, & diſciplina
longè ab eo.

MS. A. (ˢ) δέδωκεν (α) διδούς, (β) διατηρήσουσιν (γ) καρδίᾳ νέου,

תרגום TARGUM.

24 ממקנא מריחא וידנא שמיה עבד חרינא בזידנותיה׃ רגתא דעטלא ממיתא ליה
25 26 דלא צבין אידין דעבדין עבדתא׃ כל יומא ראג רגתא וצדיקא יהב ולא מחשך׃
27 28 דבחא דרשיעי מרחק הוא מטול דבעברתא מיתי ליה׃ סהדא דכדבותא יאבד
29 וגברא שמועא שריראית ממלל׃ מחציף אפוי גברא רשיעא ותריצא הוא מתקן
30 31 אורחיה׃ לית חכמתא ולית ביונא ולית עצתא היך דאלהא׃ סוסיא מתקן ליומא
דקרבא ולאלהא הוא פורקנא׃

כב

1 שמא טבא אתבחר מן עותרא סגיעא ומכספא ומן דהבא שפיר חסדא׃ עתירא
2 3 ומסכנא פגען חד בחד ותרויהון אלהא ברא אנון׃ ערימא חזי בישתא ומטשי ושברי
4 עברין וחסרין אנון׃ עקבא דענותנותא דחלתא דיי עותרא ויקרא וחיי׃ נשבא
5 6 בארחא עקמתא ומן דנטר נפשיה ירחק מנהון׃ אדרכיה לטליא לקבל אורחיה
7 דלא כד נסוב נסטי מניה׃ עתירא במסכני נשתלט ועבדא יוזיף לגברא מוזפנא׃
8 9 דזריע עולא נחצד עאתא ושבטא דחרוניה נגמור׃ מן דטבא הוא עיניה הוא
10 נתברך מטול דיהיב מן לחמיה למסכינא׃ תרך לממקנא ואפיק לתגרנא ויבטל
11 12 דינא וצערא׃ רחם אלהא דכי לבא ובחסדא דשפותיה יתחבר למלכא׃ עינוי
13 דאלהא נטרן ידיעתא ומטלטל מליהון דבזוזי׃ עטלא אמר בחבינותיה אריא
14 אית לברא ובינת שוקי מתקטלנא׃ גומצא עמיקתא פומה דנוכריתא ומן דמרגיז
15 קדם אלהא נפל תמן׃ שטיותא קטירא בלביה דטליא שבטא דמרדותא נרחקיה
מניה׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Deriſor, tumidus, ſuperbus, eſt nomen ejus, faciens iram ſuperbia ſua. 24
Deſiderium pigri interficit eum, eò quòd nolunt manus ejus facere opus. 25
Tota die deſiderio deſiderat, & juſtus tribuit, & non parcit. Sacrificium 26
impiorum abominabile eſt, quia *in* ſcelere offerunt illud. Teſtis menda- 27
cii peribit, & vir bene audiens rectè loquetur. Impudens facie vir im- 28
pius eſt, & rectus ipſe præparat viam ſuam. Non eſt ſapientia neque in- 29
telligentia neque conſilium ſicut Dei. Equus paratur in diem belli, ſed à 30
Deo eſt ſalus. 31

CAP. XXII.

ELectum eſt nomen bonum magis quàm divitiæ multæ: & argento 1
& auro melior eſt gratia. Dives & pauper obviaverunt ſibi mutuò, & 2
ambos creavit Deus. Callidus vidit malum & abſcondit ſe, & inſipi- 3
entes tranſierunt & *damnum paſſi ſunt*. Merces manſuetudinis eſt timor 4
Domini, divitiæ & gloria & vita. Pedica [*et laquei*] in via perverſa: & qui 5
cuſtodit animam ſuam, elongabit ſe ab eis. *Deduc* adoleſcentem juxta 6
viam ſuam, ut cùm ſenuerit non declinet ab ea. Dives dominatur in pau- 7
peres, & qui accipit mutuum, ſervus eſt fœnerantis viri. Qui ſeminat 8
injuſtitiam metet iniquitatem, & virga iræ ipſius conſummabitur. Qui 9
bonum oculum habet, ipſe benedicetur; quoniam dedit de pane ſuo
pauperi. Ejice deriſorem, & expelle contentioſum, et ceſſabit jurgium 10
et ignominia. Diligit Deus mundum corde, et in gratia labiorum ſuo- 11
rum ſocius erit regis. Oculi Dei cuſtodiunt ſcientiam, et protudit ver- 12
ba prædonum. Dicit piger in ſocordia ſua: Leo eſt foris, et in medio vi- 13
arum occidar. Fovea profunda os extranearum, et qui provocat Deum, 14
eò incidet. Stultitia ligata eſt in corde pueri: virga diſciplinæ elongabit 15
eam ab eo.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

24 * ܡܪܚܐ ܕܪܒ ܫܡܗ . ܥܒܕ ܥܘܠܐ ܒܪܘܓܙܗ. * ܪܓܬܗ ܕܚܒܝܢܐ ܩܛܠܐ ܠܗ. ܡܛܠ
25 26 ܕܠܐ ܨܒܐ ܕܢܥܒܕܢ ܐܝܕܘܗܝ ܥܒܕܐ. * ܘܟܠܗ ܝܘܡܐ ܪܓܐ ܪܓܬܐ. ܙܕܝܩܐ ܝܗܒ ܘܠܐ ܚܐܣ.
27 28 * ܘܕܒܚܐ ܕܥܘܠܐ ܛܡܐ ܗܘ. ܡܛܠ ܕܒܥܘܠܐ ܡܩܪܒܝܢ ܠܗ. * ܣܗܕܐ ܕܓܠܐ ܢܐܒܕ. ܘܓܒܪܐ
29 ܡܫܬܡܥܢܐ ܙܗܝܪܐܝܬ ܡܡܠܠ. * ܚܨܝܦ ܐܦܘܗܝ ܕܓܒܪܐ ܥܘܠܐ. ܘܬܪܝܨܐ ܕܐܘܪܚܗ ܗܘ . ܡܬܩܢ
30 31 ܐܘܪܚܬܐ ܕܢܦܫܗ. * ܠܝܬ ܚܟܡܬܐ. ܘܠܐ ܣܘܟܠܐ. ܘܠܐ ܡܠܟܐ ܐܝܟ ܕܡܪܝܐ. * ܣܘܣܝܐ
ܡܬܛܝܒ ܠܝܘܡܐ ܕܩܪܒܐ . ܘܕܡܪܝܐ ܗܘ ܦܘܪܩܢܐ. * ܫܠܡܘ * ܟܐ *

1 2 * ܡܓܒܝ ܗܘ ܫܡܐ ܛܒܐ ܡܢ ܥܘܬܪܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܛܝܒܘܬܐ ܡܫܒܚܐ ܡܢ ܕܗܒܐ ܘܡܢ ܣܐܡܐ. * ܥܬܝܪܐ
3 ܘܡܣܟܢܐ ܦܓܥܘ ܚܕ ܒܚܕ. ܘܠܬܪܘܝܗܘܢ ܡܪܝܐ ܥܒܕ. * ܥܪܝܡܐ ܚܙܐ ܒܝܫܐ ܕܡܬܢܓܕ:
4 ܘܡܬܪܕܐ ܛܒ. ܣܟܠܐ ܕܝܢ ܥܒܪܘ ܠܘܬܗ ܘܐܬܚܣܪܘ. * ܫܘܠܡܗ ܕܡܟܝܟܘܬܐ ܕܚܠܬܗ
5 ܕܡܪܝܐ: ܘܥܘܬܪܐ. ܘܐܝܩܪܐ. ܘܚܝܐ. * ܢܫܒܐ ܘܦܚܐ. ܕܐܘܪܚܐ ܥܩܡܬܐ. ܘܡܢ ܕܢܛܪ ܢܦܫܗ
6 ܢܬܪܚܩ ܡܢܗܘܢ. * ܕܡܪܕܐ ܠܛܠܝܐ ܠܦܘܡܗ ܕܐܘܪܚܐ . ܐܦܢ ܢܣܒ ܠܐ ܢܣܛܐ ܡܢܗ.
7 8 * ܥܬܝܪܐ ܢܫܬܠܛ ܒܗ ܡܣܟܢܐ. ܘܥܒܕܐ ܢܘܙܦ ܠܡܢ ܕܡܘܙܦ ܗܘܐ ܠܗ. * ܕܙܪܥ ܥܘܠܐ
9 ܢܚܨܘܕ ܒܝܫܬܐ. ܘܫܒܛܐ ܕܪܘܓܙܗ ܢܫܬܠܡ. * ܡܢ ܕܛܒܐ ܥܝܢܗ ܗܘ ܢܬܒܪܟ. ܡܛܠ ܕܝܗܒ
10 ܡܢ ܠܚܡܗ ܠܡܣܟܢܐ. * ܐܘܒܕ ܠܒܝܫܐ. ܘܐܦܩ ܠܚܪܝܢܐ. ܘܒܛܠ ܕܝܢܐ ܘܨܥܪܐ. ܕܠܐ ܟܕ ܢܬܒ
11 ܒܟܢܘܫܬܐ . ܢܒܗܬܟܘܢ ܟܠܟܘܢ. * ܪܚܡ ܠܐܠܗܐ ܐܝܢܐ ܕܕܟܐ ܒܠܒܗ. ܘܡܪܚܡ ܥܠ ܣܦܘܬܐ
12 13 ܕܪܚܡܘܗܝ ܕܡܠܟܐ. * ܥܝܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܢܛܪܢ ܝܕܥܬܐ. ܘܡܘܒܕܢ ܡܠܐ ܕܕܓܠܐ. * ܐܡܪ ܚܒܝܢܐ
14 ܟܕ ܡܫܬܕܪ. ܐܪܝܐ ܒܐܘܪܚܐ. ܘܗܐ ܩܛܠܐ ܒܫܘܩܐ. * ܓܘܡܬܐ ܥܡܝܩܬܐ. ܦܘܡܗ ܕܢܘܟܪܝܬܐ. ܘܐܝܢܐ
15 ܕܪܓܙ ܒܗ ܡܪܝܐ. ܢܦܠ ܠܗ. * ܫܛܝܘܬܐ ܡܦܪܕܐ ܠܒܐ ܕܛܠܝܐ. ܘܫܒܛܐ ܕܡܪܕܘܬܐ
ܡܪܚܩܐ ܡܢܗ.

Audax cujus magnum eſt nomen, committit 24
ſcelus in ira ſua. Deſiderium pigri interficit 25
eum, quia non vult ut exerceant manus ſuæ
ullum opus: Et totâ die flagrat cupiditate. 26
Juſtus largitur, nec parcit: Sacrificium verò 27
impiorum immundum eſt, quoniam cum iniquitate
afferunt illud. Teſtis mendax peri- 28
bit: & vir auſcultans rectè loquetur. Impu- 29
dens eſt vultus viri flagitioſi: qui autem rectus
eſt, diſponit vias proprias. Non eſt ſapientia, 30
neque intelligentia, neque conſilium ſimile
Domini. Equus paratur ad diem belli: Do- 31
mini autem eſt ſalus.

CAP. XXII.

PRæſtantius eſt nomen *bonum*, quàm divitiæ 1
multæ: & melior eſt benignitas, quàm aurum
& argentum. Dives & pauper obviaverunt 2
ſibi: utrumque verò Dñs fecit. Cautus vidit 3
malignum vapulare, & magnopere eruditus
eſt: ſtulti verò tranſierunt prope eum, & jacturam
paſſi ſunt. Finis humilitatis, timor 4
Domini, & opes, & honor, & vita. Retia & 5
laquei, i.: via difficili: qui autem ſervat animā
ſuam, recedet ab eis. Qui corripit puerum 6
ad os viæ, etiamſi conſenuerit non aberrabit
ab ea. Diviti dominabitur pauper, & ſer- 7
vus fœnerabitur ei qui fœnerabatur illi.
Qui ſerit iniquitatem, metet flagitium: & 8
baculus iræ ejus abſumetur. Qui boni eſt 9
oculi, is benedicetur, quia tribuit de pane
ſuo pauperi. Perde facinoroſum, & ejice 10
rixoſum, & extermina litem atque contumeliam:
ut non cùm ſederit in concilio, probro
vos omnes afficiat. Diligit Deum qui- 11
cunque purus eſt in corde ſuo, & miſeretur
labiis amicorum regis. Oculi Domini ob- 12
ſervant ſcientiam, & perdunt ſermones mendaces.
Dicit piger quando legatur, Leo eſt 13
in via, & ecce cædes in plateis. Fovea pro- 14
funda, os alienæ: & is cui Dominus iraſci-
tur, cadet in eam. Stultitia divellit cor 15
adoleſcentis, & virga diſciplinæ remota eſt
ab eo.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

24 25 * المتهجم والعاتي والزاهي يسمي فساد * ومن يحقد فذاك متجاوز السنة * الشهوات يقتلن
26 الكسلان * لان يديه لن تؤثر ان تعملا شيا * المنافق يشتهي طول النهار شهوات ردية * والمقسط
27 يرحم ويتراءف بلا اشفاق * ضحايا المنافقين رذالة عند الرب * لانهم يقربونها براي عادل عن
28 29 الشريعة * الشاهد الكذوب يهلك * والانسان المطيع يتكلم محفوظا * الرجل المنافق ينتصب
30 بوجه لا استحياء له * والمقوم هو يفهم طرايقه * ما يوجد شهامة * ما يكون مشورة عند المنافق
31 * الفرس يستعد ليوم القتال * ومن الله المعونة * الفصل الثاني والعشرون *
1 2 * الاسم المحمود ارفع قدرا من الغنى الجزيل * والنعمة الصالحة افضل من الفضة والذهب * الغني
3 والمسكين لقي احدهما الآخر * وكلاهما الرب خلقهما * المتادب اذا ابصر شريرا معاقبا يتادب
4 5 تاديبا اصلا * والاغبياء لما اجتازوا خسروا * جبل الحكمة تقوى الرب وثروة ومجد وحياة * في الطريق
7 المعوجة الصعبة قرطب وفخاخ * ومن يحفظ نفسه يتفلت منها ** المساكين يرأسون الموسرين *
8 والعبيد يقرضون ساداتهم * من يزرع الطالحات يحصد السيئات ويتمم ضربة اعماله * الله يحب
9 الرجل الطلق الوجه والسخي * ويكمل اباطيل اعماله * من يرحم المسكين ذاك يقات * لانه اعطا
10 المسكين من اعماله * من يعط الهدية يستصنع ظفرا واكراما * وينزع نفسه مما اقتناها * اخرج
11 الفساد من المجمع فتخرج معه الغلبة * لانه اذا جلس في المجمع يهين الجماعة * الرب يحب القلوب
12 البارة * وجميع الذين لا عيب فيهم مقبولين عنده * الملك يرعى الشعب بشفتيه * وعينا الرب
13 ترصد الحس وترذل الاقوال العادلة عن الشريعة * الكسلان يحتج فيقول الاسد في الطرقات والقتلة
14 في الشوارع * هوة عميقة فم المتعدي الشريعة * ومن يمقته الرب يسقط فيها * يكون طرقا ردية
15 امام الانسان وما يحب ان يرجع منها * فينبغي له ان يرجع من الطريقة الملتوية والردية * السفاهة
يشعلها قلب الشاب * اذا كان العصا والادب بعيدا منه *

Præceps, & protervus, & ſuperbus vocatur corruptela: & qui iraſcitur, is eſt 24
tranſgreſſor legis. Appetitus occidunt pi- 25
grum, quoniam manus ejus non eligunt
facere quidquam. Impius concupiſcit to- 26
tâ die deſideria prava: & juſtus miſe-
retur & miſereſcit abſque parſimoniâ.
Sacrificia impiorum, deſpectio apud Do- 27
minum: quoniam offerunt illa mente a-
lienâ à lege. Teſtis mendax peribit: & 28
homo obediens loquitur cautè. Vir im- 29
pius erigit ſeſe vultu impudenti: &
rectus, ipſe intelligit vias ſuas. Non in- 30
venitur ſagacitas, non eſt conſilium
apud impium. Equus paratur ad diem 31
belli: & à Deo auxilium.

CAP. XXII.

NOmen laudabile altioris eſt digni- 1
tatis quàm divitiæ multæ: & gratia bo-
na, pretioſior argento & auro. Dives 2
& pauper offenderunt alter alterum: &
utroſque Dominus creavit. Expertus 3
cùm videt ſceleſtum cruciatum, eruditur
eruditione firmâ: ſtulti autem cùm tranſ-
eunt, detrimento afficiuntur. Finis ſa- 4
pientiæ, timor Domini, & opes, &
gloria, & vita. In itinere obliquo, aſpe- 5
ro, dumi & laquei: & qui cuſtodit
animam ſuam, liberabitur ab ipſis.

Deeſt. Verſ. 6.

Pauperes dominabuntur divitibus: & 7
ſervi fœnerabuntur dominis ſuis. Qui 8
ſeminabit nequitias, metet mala, & com-
plebit flagellum operum ſuorum. Deus
diligit virum hilarem vultu & libera-
lem, & perficit vanitates operationum il-
lius. Qui miſeretur pauperis, ipſe nutrie- 9
tur, quia dedit pauperi de operibus ſuis.
Qui dat munus, parat ſibi proſperitatem
& honorem: & eruit animam ſuam ab
eo quod poſſidet illam. Educ corrupto- 10
rem è congregatione, & exibit cum eo
calamitas: quoniam cùm ſederit in con-
gregatione, vilipendet cœtum. Dominus 11
amat corda innocentia: et omnes in qui-
bus non eſt vitium, accepti ſunt apud eum.
Rex paſcit populum labiis ſuis: et oculi 12
Domini obſervant ſenſum, et aſpernan-
tur ſermones declinantes à lege. Piger 13
excuſat ſe, et ait, Leo eſt in viis, et oc-
ciſio in plateis. Præcipitium profundum, eſt 14
tranſgredientis legē: et is quem odit Do-
min⁹, incidet in illud. Sunt viæ pravæ co-
ram homine, et non cupit recedere ab i-
pſis: decet tamen illum revocare ſe à via
obliqua et prava. Stultitiam accendet 15
cor juvenis, cùm fuerit baculus et diſci-
plina longè ab illo.

מִשְׁלֵי : כג

Inclina .defectũ ad verè ,diviti *dans : ſibi multiplicandũ ad,tenuĩ Extorquens*
16 17 עֹשֵׁק דָּל לְהַרְבּוֹת לוֹ נֹתֵן לְעָשִׁיר אַךְ־לְמַחְסוֹר׃ הַט
.meã ſcientiã ad *pones* tuũ cor & : ſapientũ verba. audi & ,tuã aurem
אָזְנְךָ וּשְׁמַע דִּבְרֵי חֲכָמִים וְלִבְּךָ תָּשִׁית לְדַעְתִּי׃
pariter dirigentur : tuo *ventre* in eã cuſtodieris ſi , delectabilis Quia
18 כִּי־נָעִים כִּי־תִשְׁמְרֵם בְּבִטְנֶךָ יִכֹּנוּ יַחְדָּו
te feci ſcire *: tuam fiduciam* Domino in *exiſtendum Ad* .tuis labiis *ſuper*
19 עַל־שְׂפָתֶיךָ׃ לִהְיוֹת בַּיהוָה מִבְטַחֶךָ הוֹדַעְתִּיךָ
, conſiliis in *, terna* tibi ſcripſi Nonne .tu etiam hodie
20 הַיּוֹם אַף־אָתָּה׃ הֲלֹא כָתַבְתִּי לְךָ שָׁלִשִׁים בְּמֹעֵצוֹת
: veritatis eloquiorum *certitudinem* te *faciendum ſcire Ad* ? ſcientia &
21 וָדָעַת׃ לְהוֹדִיעֲךָ קֹשְׁטְ אִמְרֵי אֱמֶת
,tenuem diripias Ne ? te timentibus veritatis eloquia *referendum* ad
22 לְהָשִׁיב אֲמָרִים אֱמֶת לְשֹׁלְחֶיךָ׃ אַל־תִּגְזָל־דָּל
Dominus Quia .porta in *afflictum* conteras ne & *: ipſe tenuis* quia
23 כִּי דַל־הוּא וְאַל־תְּדַכֵּא עָנִי בַשָּׁעַר׃ כִּי־יְהוָה
Ne .animam *eorum configentium configet* & : eorum *litem litigabit*
24 יָרִיב רִיבָם וְקָבַע אֶת־קֹבְעֵיהֶם נָפֶשׁ׃ אַל־
.congrediaris ne *excandeſcentiarum* viro cum & *;naſi auctori aſſocieris*
תִּתְרַע אֶת־בַּעַל אָף וְאֶת־אִישׁ חֵמוֹת לֹא תָבוֹא׃
Ne .tuæ animæ laqueum capias & ; ejus ſemitas diſcas fortè Ne
25 26 פֶּן־תֶּאֱלַף אָרְחֹתָו וְלָקַחְתָּ מוֹקֵשׁ לְנַפְשֶׁךָ׃ אַל־
non Si *.debita fidejubentibus in ; volam percutientibus in* ſis
27 תְּהִי בְתֹקְעֵי־כָף בַּעֹרְבִים מַשָּׁאוֹת׃ אִם־אֵין־
? te ſubter *de* tuum *cubile* tollet quid ut ; reddendum ad tibi
לְךָ לְשַׁלֵּם לָמָּה יִקַּח מִשְׁכָּבְךָ מִתַּחְתֶּיךָ׃
.tui patres fecerunt quem *; ſeculi* terminum *retroagas* Ne
28 אַל־תַּסֵּג גְּבוּל עוֹלָם אֲשֶׁר עָשׂוּ אֲבוֹתֶיךָ׃
: ſtatuetur regum facies ad ? ſuo opere in velocem virum Vidiſti
29 חָזִיתָ אִישׁ מָהִיר בִּמְלַאכְתּוֹ לִפְנֵי־מְלָכִים יִתְיַצָּב
.tenebroſorum facies ad ſtatuetur non
בַּל־יִתְיַצֵּב לִפְנֵי חֲשֻׁכִּים׃

CAP. XXIII. כג

conſiderabis conſiderando *; dominatore* cum comedendum ad ſederis Cùm
1 כִּי־תֵשֵׁב לִלְחוֹם אֶת־מוֹשֵׁל בִּין תָּבִין
compos ſi *: tua fauce* in cultrum pones Et *.tuas facies ad* quod
2 אֶת־אֲשֶׁר לְפָנֶיךָ׃ וְשַׂמְתָּ שַׂכִּין בְּלֹעֶךָ אִם־בַּעַל
panis hoc & : ejus *ſapidos cibos* concupiſcas Ne *.tu animæ*
3 נֶפֶשׁ אָתָּה׃ אַל־תִּתְאָו לְמַטְעַמּוֹתָיו וְהוּא לֶחֶם
.ceſſa tua intelligentia ab *: diteſcendum ad* labores Ne *.mendaciorum*
4 כְּזָבִים׃ אַל־תִּיגַע לְהַעֲשִׁיר מִבִּינָתְךָ חֲדָל׃
faciendo quia *, ipſum non & ? illud in* tuos oculos *facies volare An*
5 הֲתָעִיף עֵינֶיךָ בּוֹ וְאֵינֶנּוּ כִּי עָשֹׂה
Ne .cœlos in *volabit aquila ſicut* : alas ſibi *faciet*
6 יַעֲשֶׂה־לּוֹ כְנָפַיִם כְּנֶשֶׁר וְעָיף הַשָּׁמָיִם׃ אַל־
.ejus *ſapidos cibos ad* concupiſcas ne & *: oculi mali* panem comedas
תִּלְחַם אֶת־לֶחֶם רַע עָיִן וְאַל־תִּתְאָו לְמַטְעַמֹּתָיו׃
dicet , bibe & comede *: hoc* ſic *,ſua anima in* æſtimavit ſicut Quoniã
7 כִּי כְּמוֹ שָׁעַר בְּנַפְשׁוֹ כֶּן־הוּא אֱכוֹל וּשְׁתֵה יֹאמַר
: eam evomes ,comediſti tuam Buccellam .tecum non ejus cor & : tibi
8 לָךְ וְלִבּוֹ בַּל־עִמָּךְ׃ פִּתְּךָ־אָכַלְתָּ תְקִיאֶנָּה
; loquaris ne ſtulti auribus In *.jucunda* tua verba *corrumpes &*
9 וְשִׁחַתָּ דְּבָרֶיךָ הַנְּעִימִים׃ בְּאָזְנֵי כְסִיל אַל־תְּדַבֵּר
loco moveas Ne .tuorum eloquiorum intellectum contemnet quia
10 כִּי־יָבוּז לְשֵׂכֶל מִלֶּיךָ׃ אַל־תַּסֵּג
illorũ redemptor Quia .introeas ne pupillorũ *agros* in & *: ſeculi* terminũ
11 גְּבוּל עוֹלָם וּבִשְׂדֵי יְתוֹמִים אַל־תָּבֹא׃ כִּי־גֹאֲלָם
.tecum *eorum litem litigabit* ipſe : fortis
חָזָק הוּא־יָרִיב אֶת־רִיבָם אִתָּךְ׃

Verſio VULG. LAT.

16 Qui calumniatur pauperem,ut
augeat divitias ſuas,dabit ipſe
17 ditiori,& egebit. Inclina aurem
tuam,& audi verba ſapientium:
appone autem cor ad
18 doctrinam meã. Quæ pulchra
erit tibi, cùm ſervaveris eam
in ventre tuo,& redundabit in
19 labiis tuis. Ut ſit in Domino
fiducia tua, undè & oſtendi eam
20 tibi hodié. Ecce deſcripſi
eam tibi tripliciter, in cogitationibus
21 & ſcientiâ : Ut oſtenderem
tibi firmitatem, &
eloquia veritatis , reſpondere
ex his illis qui miſerunt te.
22 Non facias violentiam pauperi,
quia pauper eſt:neque conteras
23 egenũ in porta:Quia judicabit
Dñs cauſã ej⁹,& configet
eos,qui confixerũt animã
24 ejus. Noli eſſe amicus homini
iracundo, neque ambules cum
25 viro furioſo: Ne fortè diſcas
ſemitas ejus, & ſumas ſcandalum
26 animæ tuæ. Noli eſſe cum
his, qui defigunt manus ſuas,
& qui vades ſe offerunt pro
27 debitis : Si enim non habes
undè reſtituas, quid cauſæ eſt
ut tollat operimentum de cubili
28 tuo ? Ne tranſgrediaris
terminos antiquos,quos poſuerũt
29 patres tui. Vidiſti virũ velocẽ
in opere ſuo ?corã regib⁹
ſtabit, nec erit ante ignobiles.

CAP. XXIII.

1 Quando ſederis ut comedas
cum principe, diligenter
attende quæ appoſita ſunt ante
2 faciem tuam : Et ſtatue cultrum
in gutture tuo, ſi tamen
habes in poteſtate animam tu-
3 am,Ne deſideres de cibis ejus,
4 in quo eſt panis mendacii.Noli
laborare ut diteris: ſed pru-
5 dentiæ tuæ pone modum. Ne
erigas oculos tuos ad opes ,
quas non potes habere : quia
facient ſibi pennas quaſi aquilæ,
& volabunt in cœlum.
6 Ne comedas cum homine invido,
& ne deſideres cibos e-
7 jus: Quoniam in ſimilitudinem
arioli & conjectoris, æſtimat
quod ignorat. Comede
& bibe,dicet tibi : et mens
8 ejus non eſt tecum. Cibos,
quos comederas, evomes: et
perdes pulchros ſermones tu-
9 os. In auribus inſipientium ne
loquaris: quia deſpicient do-
10 ctrinam eloquii tui. Ne attingas
parvulorum terminos : et
agrum pupillorum ne introe-
11 as: Propinquus enim illorum
fortis eſt:et ipſe judicabit contra
te cauſam illorum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

16 † Ὁ συκοφαντῶν πένητα, † πολλὰ ποιεῖ τὰ
ἑαυτοῦ (δ), † δίδωσι δὲ πλουσίῳ ἐπ' ἐλάσσονι.
17 † Λόγοις σοφῶν (¨) παράβαλλε σὸν οὖς, καὶ ἄκουε
ἐμὸν λόγον, † τὴν δὲ σὴν καρδίαν ἐπίστησον,
18 ἵνα γνῷς, Ὅτι καλοί εἰσιν. † καὶ ἐὰν
ἐμβάλῃς αὐτοὺς εἰς τὴν καρδίαν σου, † εὐ-
19 φρανοῦσί σε ἅμα ἐπὶ σοῖς χείλεσι· † Ἵνα σου
γένηται ἐπὶ κύριον ἡ ἐλπὶς, καὶ γνωρίσῃ σοι
20 τὴν (ε) ὁδόν σου. † Καὶ σὺ δὲ ἀπόγραψαι αὐτὰ
σεαυτῷ τρισσῶς, † εἰς βουλὴν καὶ γνῶσιν
21 ἐπὶ τὸ πλάτος τῆς καρδίας σου. † Διδάσκω
οὖν σε ἀληθῆ λόγον, καὶ γνῶσιν (¨) ἀγαθὴν
ὑπακούειν, † τοῦ (ζ) ἀποκρίνεσθαί σε λόγους
ἀληθείας τοῖς προβαλλομένοις (η) σοι. †
22 Μὴ ἀποβιάζου πένητα, πτωχὸς γάρ ἐστι, †
23 καὶ μὴ ἀτιμάσῃς ἀσθενῆ ἐν πύλαις. † Ὁ γὰρ
κύριος κρινεῖ (θ) αὐτοῦ τὴν κρίσιν, καὶ ῥύσῃ
24 σὴν ἄσυλον ψυχήν. † Μὴ ἴσθι ἑταῖρος ἀνδρὶ
θυμώδει, † φίλῳ δὲ ὀργίλῳ μὴ συναυλίζου·
25 † Μή ποτε μάθῃς τῶν ὁδῶν αὐτοῦ,
26 καὶ λάβῃς βρόχους τῇ σῇ ψυχῇ. † Μὴ δίδου
σεαυτὸν εἰς ἐγγύην αἰσχυνόμενος πρόσωπον·
27 † Ἐὰν γὰρ μὴ (ι) ἔχῃ πόθεν ἀποτίσῃ,
† λήψονται τὸ στρῶμα τὸ ὑπὸ τὰς
28 πλευράς σου. † Μὴ μέταιρε ὅρια αἰώνια,
29 ἃ ἔθεντο οἱ πατέρες σου. † Ὁρατικὸν ἄνδρα
καὶ ὀξὺν ἐν τοῖς ἔργοις αὐτοῦ † βασιλεῦσι
δεῖ παρεστάναι, † καὶ μὴ παρεστάναι ἀνδράσι
νωθροῖς.

MS. A. (δ) κακὰ, δίδωσιν (¨) παράβαλλε (ε) ὁδὸν αὐτοῦ. (¨) ἀγαθῆ (ζ) ἀποκρίνασθαί σε λόγοις (η) σε. (θ) ἑαυτοῦ τὴν δίκην, (ι) ἔχῃς πόθεν ἀποτίσῃς,

Qui calumniatur pauperem, multa facit (ſ) ſua : dat autem diviti (t) ad minus. 16
Sermonibus ſapientum admove aurem tuam, & audi meum ſermonum, & cor tuum firma,ut cognoſcas : 17
Quia boni ſunt. Et ſi immiſeris eos in cor tuum, (v) ædificabunt te ſimul in tuis labiis : 18
Ut tua fiat ſuper Dominum ſpes, & notam tibi faciat viam (x)tuam. 19
Et tu verò deſcribe (y) ea tibi tripliciter in conſilio, & ſcientia ſuper latitudinem cordis tui. 20
Doceo igitur te verũ ſermonẽ,& ſcientiã bonã obaudire ; (z) ut reſpondeas ſermones veritatis his qui proponunt tibi. 21
Non (aa) facias violentiam pauperi, inops enim eſt ; neque inhonores imbecillum in portis: (aa) 22
Dominus enim judicabit ejus judicium : & erues tuam animam tutam. 23
Noli (bb) eſſe ſodalis viro furioſo : neque cum amico iracundo cohabites : 24
Ne fortè diſcas vias ejus, & accipias (cc) laqueos animæ tuæ. 25
Ne dederis te in fidejuſſionem, reveritus faciem : 26
Si enim non habueris,unde ſolvas; tollent ſtratum, quod ſub coſtis tuis. 27
Noli transferre terminos æternos, quos poſuerunt patres tui. 28
Pervidentem virum, & acutum in operibus ſuis oportet regibus aſſiſtere, & non aſſiſtere (dd) viris ſocordibus. 29

ΚΕΦ. κγ'.

1 † ἘΑν καθίσῃς δειπνεῖν ἐπὶ τραπέζης
δυνάστου, † νοητῶς νόει τὰ παρατιθέμενά
2 σοι. † Καὶ ἐπίβαλλε τὴν χεῖρά σου, εἰδὼς
ὅτι τοιαῦτά σε δεῖ παρασκευάσαι. † εἰ δὲ
3 ἀπληστότερος εἶ, † Μὴ ἐπιθύμει τῶν ἐδεσμάτων
αὐτοῦ, † ταῦτα γὰρ ἔχεται ζωῆς
4 ψευδοῦς. † Μὴ παρεκτείνου πένης ὢν πλου-
5 σίῳ, † τῇ δὲ σῇ ἐννοίᾳ ἀπόσχου. † Ἐὰν ἐπιστήσῃς
τὸ σὸν ὄμμα πρὸς αὐτὸν, οὐδαμοῦ
φανεῖται· † κατεσκεύασται γὰρ αὐτῷ
πτέρυγες ὥσπερ ἀετοῦ, † καὶ ὑποστρέφει εἰς τὸν
6 οἶκον τοῦ προεστηκότος αὐτοῦ. † Μὴ συνδείπνει
ἀνδρὶ βασκάνῳ, † μηδὲ ἐπιθύμει
7 τῶν βρωμάτων αὐτοῦ, † Ὃν τρόπον γὰρ εἴ τις
καταπίοι τρίχα, † οὕτως ἐσθίει καὶ πίνει. †
μηδὲ πρὸς σὲ εἰσαγάγῃς αὐτὸν, καὶ φάγῃς
8 τὸν ψωμόν σου μετ' αὐτοῦ, † Ἐξεμέσει γὰρ
αὐτὸν, καὶ λυμανεῖται τοὺς λόγους σου τοὺς
9 καλούς. † Εἰς ὦτα ἄφρονος μηδὲν λέγε,
† μήποτε μυκτηρίσῃ τοὺς συνετοὺς λόγους σου.
10 † Μὴ μεταθῇς ὅρια αἰώνια, (α) † εἰς δὲ
11 κτῆμα ὀρφανῶν μὴ εἰσέλθῃς· † Ὁ γὰρ λυτρούμενος
αὐτοὺς κύριος, κραταιός ἐστι, † καὶ
κρινεῖ τὴν κρίσιν αὐτῶν μετὰ σοῦ.

MS. A. (α) ἃ ἔθεντο οἱ πατέρες σου, εἰς δὲ κτῆμα

CAP. XXIII.

Si ſederis cœnare ad menſam potentis ; (a) ſapienter intellige, quæ apponuntur tibi. 1
Et (b) mitte manum tuam, ſciens, quòd oportet te talia præparare. Si autem inſatiabilis es ; 2
Noli concupiſcere eſcas ejus : hæc (c) enim obtinent vitam falſam. 3
Ne (d) extendas te, cùm ſis pauper, ad divitem : tuâ autem conſideratione abſtine. 4
Si intenderis oculum tuum erga eum ; nuſquã apparebit: paratæ enim ſunt ei alæ, tanquàm aquilæ, (e) & revertit in domum præſidis ſui. 5
Ne cœnes unà cum viro (f) invido, neque concupiſcas (g) eſcas ejus: 6
Quemadmodùm enim (h) ſi quis deglutiat pilum ; ſic comedit, & bibit. Neque ad te introducas eum, & comedas buccellam tuam cum eo : 7
Evomet enim illam, & (i) contaminabit ſermones tuos bonos. 8
In aures imprudentis noli quicquam dicere: ne fortè irrideat (k) ſapientes ſermones tuos. 9
Ne (l) tranſponas terminos æternos : & in poſſeſſionem orphanorum ne ingrediaris. 10
(m) Qui enim redimit eos Dominus, validus eſt, & judicabit judicium eorum tecum. 11

תרגום TARGUM.

16 17 דְעָשִׁק לְמִסְכֵּנָא מַסְגֵי לֵיהּ בִּישְׁתָּא וּדְיָהֵב לְעַתִּירָא חוּסְרָנָא הוּא לֵיהּ׃ בְּרִי צְלֵי
18 אֶדְנָךְ וּשְׁמַע מִלֵּי דְחַכִּימֵי וְלִבָּךְ שִׂים לְיִדִיעְתִי׃ מְטוּל דְּבַסִּימִין נְטַר אִנּוּן בְּכַרְסָךְ
19 וְנִתְקְנוּן אֵיךְ חֲדָא עַל סִפְוָתָךְ׃ דִּנְהֱוֵי בֵּאלָהָא סִבְרָךְ וְאוֹדַעְתָּךְ יוֹמָנָא הָדָא
20 21 אַף אַנְתְּ׃ וְהָא כְתַבִית אִנּוּן לָךְ עַל תְּלָתָא זִמְנִין בְּעֵצְתָא וִידִיעְתָא׃ לְאוֹדָעוּתָךְ
22 קוּשְׁטָא וּמִלֵּי דְתְרִיצוּתָא דְתַהֲפִיךְ מִלְּתָא דְקוּשְׁטָא לִמְשַׁדְּרָיךְ׃ לָא תְנוּל לְמִסְכֵּנָא
23 מְטוּל דְּמִסְכֵּנָא הוּא וְלָא תְמַכֵּיךְ עַנְיָא בְּתַרְעָא׃ מְטוּל דֶּאלָהָא דָאֵין דִּינְהוֹן וּמִתְפְּרַע
24 פּוּרְעָנוּתְהוֹן דְּנַפְשְׁהוֹן׃ לָא תִתְחַבַּר עִם מָרֵי מְרִירוּתָא וְעִם גַּבְרָא חֶמְתָנָא לָא תֵעוֹל׃
25 26 דְּלָא תֵילַף אָרְחָתֵיהּ וְתַשְׁכַּח פַּחָא לְנַפְשָׁךְ׃ לָא תֶהֱוֵי מְשַׁלֵּם אִידָךְ בַּעֲרָבוּתָא עַל
27 חַבְרָךְ׃ אִם לֵית לָךְ דְּפָרַע נָסְבִין תְּשַׁוְיָתָךְ מִתְּחוֹתָךְ׃ לָא תַשְׁנֵי תְּחוּמָא דְמִן עָלְמָא
28 29 דַּעֲבַדוּ אֲבָהָתָךְ׃ אִין חֲזֵיתָא גַּבְרָא דִמְהִי בַּעֲבִידְתֵיהּ קֳדָם מַלְכֵי נְקוּם וְלָא נְקוּם
קֳדָם חֲשׁוֹכֵי׃

כג

1 אִין יָתְבַתְּ לְמֵיכַל עִם שַׁלִּיטֵי אִתְבַּיַּן בְּמוֹ דְּשִׂים קֳדָמָךְ׃ וְתְשִׂים סַכִּינָא בְּלוֹעָךְ אִין מָרָא
2 3 דְּנַפְשָׁךְ אַתְּ׃ לָא תִתְרַגַּג לְבִשּׁוּלוֹי וְהִנּוּן מֵיכוֹלְתָא דְכַדָּבוּתָא׃ לָא תִקְרַב לְעַתִּירָא אֶלָּא
4 בְּבִיוּנְתָךְ פְּרַק מִנֵּיהּ׃ אִין תִּצַּר עֵינָךְ בֵּיהּ לָא מִתְחֲזֵי לָךְ מְטוּל דְּמֶעְבַּד עָבֵד לֵיהּ גַּפְּתָא הֵיךְ
5 6 נִשְׁרָא דְטָיֵס בִּשְׁמַיָּא׃ לָא תֵיכוּל עִם גַּבְרָא דְבִישָׁא עֵינֵיהּ וְלָא תִתְרַגַּג לְבִשּׁוּלוֹי׃
7 מְטוּל דְּאֵיךְ תַּרְעָא רָמָא הָכֵן הוּא רָם בְּנַפְשֵׁיהּ אֱכוֹל וְאִשְׁתִּי אָמַר לָךְ וְלִבֵּיהּ נְכִיל
8 צְדָךְ׃ וְלַחְמָא דַאֲכַלְתָּא מְתִיבַתְּ לֵיהּ וּמְחַבְּלַת מִלָּךְ דְּבַסִּימָן׃ בְּאֶדְנֵי דְסַכְלָא לָא תְמַלֵּל
9 10 מְטוּל דְּשָׁיֵט לְסָכוּלָא דְמִלָּךְ׃ לָא תַשְׁנֵי תְחוּמָא דְמִן עָלְמָא וּבְחֶלְקָא דְיַתְמֵי לָא
11 תֵעוֹל׃ מְטוּל דִּי פָרוֹקְהוֹן תַּקִּיף וְהוּא נְדוּן יַת דִּינְהוֹן עִמָּךְ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Qui calumniatur pauperem, multiplicat ſibi malum : & qui dat diviti, 16
egeſtas erit ei. Fili mi inclina aurem tuam, & audi verba ſapientum, & 17
cor tuum pone ad ſcientiam meam. Quoniam dulcia ſunt, cuſtodi ea in 18
ventre tuo, & dirigantur ſimul in labiis tuis. Ut ſit in Deo fiducia tua,& 19
oſtendam tibi hodie,*etiam tibi*. Et ecce ea *ſcripſi* tibi in tribus vicibus, in 20
conſiliis & ſcientia. Ut oſtendam tibi veritatem, & verba recta,ut referas 21
verba veritatis illis qui mittunt te. Ne deprædéris pauperem quia pauper 22
eſt, neque conteras egenum in porta. Quoniam Deus judicat cauſam eo- 23
rum, & ulciſcitur injuriam animæ eorum [*illatam*] Non commiſcearis 24
cum viro bilioſo, & cum viro iracundo ne ingrediaris. Ne fortè diſcas 25
ſemitas ejus, & invenias laqueum animæ tuæ. Ne pepigeris manum tuam 26
in fidejuſſione pro ſocio tuo. Si non habueris unde reſtituas, tolletur ſtra- 27
tum tuum de ſub te. Ne mutes terminum qui à ſeculo eſt, quem fecerunt 28
patres tui. Si vidiſti virum qui velox eſt in opere ſuo, coram regibus ſta- 29
bit, non ſtabit coram pauperibus.

CAP. XXIII.

Si aſſederis ut comedas cum principibus, attende ad ea quæ apponuntur 1
coram te. Et pones cultrum in gutture tuo, ſi animæ tuæ dominus fueris. 2
Ne deſideres obſonia ejus, quæ ſunt cibaria mendacii. Ne accedas ad di- 3
vitem, ſed in intelligentia tua recede ab eo. Si alligaveris oculos tuos in 4
eum, non comparebit tibi ; quoniam faciens faciet ſibi alas ſicut aquila
quæ volat in cœlum. Ne comedas cum viro qui habet oculum nequam,ne- 5
que deſideres pulmenta ejus. Quoniam ſicut porta erigitur, ſic elevatur 6
in anima ſua. Comede & bibe, dicet tibi, & cor ejus doloſum eſt apud 7
te.Panem autem quem comediſti, evomes; & perdes ſermones tuos ſua- 8
ves. In auribus ſtulti ne loquaris; quoniam ſpernet intelligentiam verbo- 9
rum tuorum. Ne mutes terminum qui à ſeculo eſt : & in agro pupillorum 10
ne ingrediaris. Quoniam redemptor eorum fortis eſt, & ipſe judicabit 11
cauſam eorum contra te.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

16 17 * ܕܐܢܣ ܠܡܣܟܢܐ. ܡܣܓܐ ܒܝܫܬܗ. ܘܕܝܗܒ ܠܥܬܝܪܐ. ܚܘܣܪܢܐ ܗܘ ܠܢܦܫܗ. * ܪܟܢ
18 ܐܕܢܟ. ܘܫܡܥ ܡܠܐ ܕܚܟܝܡܐ. ܘܣܝܡ ܠܒܟ ܠܝܕܥܬܝ. * ܡܛܠ ܕܒܣܝܡܝܢ ܐܢܝܢ. ܛܪ ܐܢܝܢ
19 ܒܟܪܣܟ. ܘܢܬܩܢܢ ܐܟܚܕܐ ܥܠ ܣܦܘܬܟ. * ܕܢܗܘܐ ܬܘܟܠܟ ܥܠ ܡܪܝܐ. ܐܘܕܥܬܟ ܝܘܡܢܐ.
20 21 * ܘܗܐ ܟܬܒܬ ܐܢܝܢ ܠܟ. ܬܠܬ ܙܒܢܝܢ. * ܕܐܘܕܥܟ ܡܠܟܐ ܘܝܕܥܬܐ. ܘܫܠܝܐ ܘܡܠܐ
22 ܕܩܘܫܬܐ. ܕܬܦܢܐ ܡܠܬܐ ܕܩܘܫܬܐ. ܠܡܢ ܕܫܕܪܟ. * ܠܐ ܬܛܠܘܡ ܠܡܣܟܢܐ. ܡܛܠ ܕܡܣܟܝܢ
23 ܗܘ. ܘܠܐ ܬܡܟܟ ܠܒܝܫܐ ܒܬܪܥܐ. * ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܕܐܢ ܕܝܢܗܘܢ. ܘܡܬܦܪܥ ܠܡܥܠܒܢܐ
24 25 ܒܢܦܫܗܘܢ. * ܠܐ ܬܗܘܐ ܪܚܡܐ ܠܓܒܪܐ ܚܡܬܢܐ. ܘܥܡ ܓܒܪܐ ܕܡܠܐ ܚܡܬܐ. ܠܐ ܬܥܘܠ. * ܕܠܐ
26 ܬܐܠܦ ܡܢ ܢܡܘܣܘܗܝ. ܘܬܫܟܚ ܬܘܩܠܬܐ ܠܢܦܫܟ. * ܠܐ ܬܬܠ ܢܦܫܟ ܠܥܪܒܢܘܬܐ.
27 ܟܕ ܒܗܬ ܐܢܬ ܡܢ ܦܪܨܘܦܐ. * ܐܢ ܠܝܬ ܠܟ ܡܢ ܐܝܟܐ ܕܬܦܪܘܥ. ܢܫܩܠܘܢ ܡܫܟܒܟ ܡܢ
28 29 ܠܬܚܬܝܟ. * ܠܐ ܬܫܢܐ ܬܚܘܡܐ ܕܡܢ ܥܠܡ. ܕܐܣܝܡܘ ܐܒܗܝܟ. * ܐܢ ܚܙܝܬ ܓܒܪܐ ܕܡܣܪܗܒ
1 ܒܥܒܕܘܗܝ. ܩܕܡ ܡܠܟܐ ܢܩܘܡ. ܘܠܐ ܢܩܘܡ ܩܕܡ ܚܫܘܟܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܟܓ * ܐܢ ܬܬܒ ܐܝܟ
2 ܠܡܣܥܕܘ ܩܕܡ ܫܠܝܛܐ. ܐܣܬܟܠ ܡܕܡ ܕܣܝܡ ܩܕܡܝܟ. * ܕܠܐ ܬܣܝܡ ܣܟܝܢܐ ܠܦܘܡܟ.
3 ܐܢ ܐܝܬ ܓܒܪܐ ܕܢܦܝܫ. * ܠܐ ܬܐܪܓ ܡܢ ܡܐܟܘܠܬܗ. ܡܛܠ ܕܠܚܡܗ. ܠܚܡܐ ܗܘ
4 5 ܕܕܓܠܘܬܐ. * ܠܐ ܬܬܩܪܒ ܠܥܬܝܪܐ. ܐܠܐ ܒܣܘܟܠܐ ܕܝܠܟ ܦܪܘܩ ܡܢܗ. * ܐܢ ܬܪܡܐ ܥܝܢܝܟ ܒܗ.
6 ܠܐ ܡܬܚܙܐ ܠܟ. ܡܛܠ ܕܥܒܕ ܠܗ ܓܦܐ ܐܝܟ ܕܢܫܪܐ. ܘܦܪܚ ܠܫܡܝܐ. * ܠܐ ܬܠܥܘܣ ܥܡ ܓܒܪܐ
7 ܚܣܘܡܐ. ܘܠܐ ܬܐܪܓ ܡܢ ܡܐܟܘܠܬܗ. * ܐܝܟܢܐ ܓܝܪ ܕܢܒܠܘܥ ܣܥܪܐ. ܗܟܢܐ ܐܟܠ ܐܢܬ
8 ܘܫܬܐ ܥܡܗ. ܘܠܒܗ ܠܐ ܗܘܐ ܥܡܟ. * ܘܠܚܡܐ ܕܐܟܠ ܐܢܬ. ܡܬܦܠܛ ܐܢܬ ܠܗ.
9 ܘܡܚܒܠ ܐܢܬ ܡܠܝܟ ܒܣܝܡܬܐ. * ܩܕܡ ܣܟܠܐ ܠܐ ܬܡܠܠ. ܡܛܠ ܕܢܫܛ ܠܡܠܝܟ.
10 11 * ܠܐ ܬܫܢܐ ܬܚܘܡܐ ܕܡܢ ܥܠܡ. ܘܒܚܩܠܐ ܕܝܬܡܐ ܠܐ ܬܥܘܠ. * ܡܛܠ ܕܦܪܘܩܗܘܢ ܥܫܝܢ ܗܘ. ܘܗܘ ܢܕܘܢ ܕܝܢܗܘܢ.

Qui pauperem lædit, auget malum ſuum : & 16
qui diviti largitur, jactura eſt animæ ejus.
Admove aurem tuam, & audi verba ſapientum 17
, & appone cor tuum ad ſcientiam
meam. Quandoquidem jucunda ſunt, recon- 18
de ea in ventrem tuum, & parentur ſimul
ſuper labia tua. Ut ſit in Domino fiducia 19
tua notum feci tibi hodiè. Et ecce ſcripſi 20
hæc tibi tertiâ vice : Ut indicarem tibi 21
conſilium & ſcientiam, tranquillitatem, &
verba veritatis : ut reſpondeas verbum veritatis
ei qui te miſit. Ne lædas pauperem quòd 22
pauper ſit : & ne deprimas inopem in porta.
Dominus enim judicat cauſam eorum, & 23
compenſabitur oppreſſio *illata* animæ eorum.
Ne ſis amicus homini iracundo, & cum viro 24
pleno furoris ne ingrediaris : Ne fortè diſcas 25
leges ejus, & invenias offendiculum animæ
tuæ. Ne tradas animam tuam ſponſioni, 26
veritus perſonam. Nam ſi nihil habeas 27
unde reddas, auferent ſtratum tuum ſubtus
te. Ne dimoveas terminum perennem quem 28
definierunt patres tui. Si videas virum promptum 29
in opere ſuo, coram regibus ſtabit : non
autem ſtabit coram obſcuris.

CAP. XXIII.

Cùm ſedes cœnaturus coram præfecto, ad- 1
verte quòd ante te poſitum eſt : Ne fortè ponas 2
cultrũ in os tuum. Si adſit vir nobilis, Ne 3
exoptes de cibo ejus : quia panis ejus, panis eſt
mendacii. Ne accedas ad divitem, ſed cum 4
prudentia recede ab eo. Nam ſi defigas oculum 5
tuum in eo, non cernetur à te : quoniam
efficit ſibi alas velut aquilæ, & avolat in cœlum.
Ne cœnes cum homine avido, neque 6
deſideres de cibo ejus. Ut enim ſi quis clavam 7
deglutiret, ſic ederes ac biberes cum eo,
& cor ejus nequaquam eſſet erga te : Et panem 8
quem comederes, evomeres : & contaminares
verba tua jucunda. Coram ſtulto ne loquaris, 9
quia ſpernet verba tua. Ne loco moveas 10
terminũ antiquum, & in agro pupillorũ
ne anticipes. Siquidem vindex eorum potens 11
eſt, & ipſe judicabit cauſam eorum.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

16 17 *من يبغ فقيرا يصنع شرورا كثيرة *ومن يعطي الغني يتناقص حاله *ابذل اذنك للاقوال
18 الحكمة *واسمع اقوالي وانصب قلبك ليتعلم انها محمودة *فان جعلتها في قلبك فرحتك في
19 20 شفتيك معا *ليكون توكلك على الرب ويعرفك طريقه *فاكتبها انت لنفسك مثلثة للراي
21 والمعرفة على عرض قلبك *فاعلمك كلاما صادقا وتطيع معرفة صالحة *لتجاوب اقوالا صادقة
22 23 للذين يحضرون عندك *لا تغصبن فقيرا فانه مسكين *ولا تهون بعليل في احزانه *فان الرب
24 يحكم حكمه ويفتدي نفسك غير مسلوبة *لا تعرفن رفيقا لرجل غضوب *ولا تساكنن صديقا
25 26 سخوطا *لئلا تتعلم طرايقه فتاخذ لنفسك وهقا *لا تبذلن ذاتك لكفالة *اذ تخجل من
27 28 وجه انسان *لان ان لم تكن لك جهة تقضي منها *ياخذون الفراش التي تحت جنبيك *لا
29 تغيرن حدودا ابدية وضعها اباؤك *الرجل العالم والجاد في افعاله يجب ان يمثل بحضرة الملوك *
ولا يقف بحضرة رجال ضعفاء خاملين *

الفصل الثالث والعشرون

1 2 *ان جلست لتتعشى لدى مايدة ذي اقتدار فتامل الموضوعات امامك تاملا عقليا *وامدد
3 يدك عالما انك نظير تلك يجب عليك ان تصلح *وان كنت جزيل السن فلا تشتهين اطعمته *
4 لانها حاملة في المعيشة الكاذبة *اذا كنت فقيرا فلا تمد بسطتك الى موسر *وامتنع منه في
5 فكرك *فان نصبت اليه عينك فما يظهر البتة *لان قد اصلحت له اجنحة كالنسر *ويرجع الى
6 7 المنزل الواقف به *لا تتعش مع رجل حسود *ولا تشتهين اطعمته *وكمن يبلع الشعر هذا *
8 9 كل واشرب ولا تداخله الى عندك وتاكل معه خبزك *لانه يتقياه *ويفسد اقوالك الحسنة *لا
10 تقولن شيا في اذني الجاهل *لئلا يستهزي باقوالك الفقهية *لا تنقلن حدودا ابدية *ولا تدخلن
11 على اقطاع اليتاما *لان الرب الفادي اياهم هو عزيز *ويحكم حكومتهم معك *

Qui opprimit pauperem, committit mala 16
multa : & qui dat diviti, minorabitur
conditio ejus. Prabe aurem tuam 17
eloquiis ſapientibus, et audi ſermones
meos, & erige cor tuum ad agnoſcendum
eos eſſe laudabiles. Si enim poſueris eos 18
in corde tuo, lætificabunt te in labiis tuis
ſimul. Ut ſit fiducia tua in Domino, & 19
notificet tibi viam ſuam. Itaque ſcribe 20
illos tu animæ tuæ tripliciter ad conſilium
& doctrinam, ſuper latitudine cordis tui.
Nam docebo te verba vera, & feres fructus 21
ſcientiæ bonæ, ut reſpondeas ſermones
veraces iis qui aderunt tibi. Ne irrites 22
pauperem, quoniam miſer eſt : &
ne aſpernêris infirmum in afflictionibus
ſuis. Nam Dominus judicabit judicium ejus, 23
& liberabit animam tuam quin rapiatur.
Ne agnoſcaris ſocius hominis iracundi : 24
& ne cohabites cum amico furibundo,
Ne diſcas vias ejus & ſumas animæ 25
tuæ laqueum. Ne permutes te ipſum 26
pro ſponſione, erubeſcens vultum hominis :
Quoniam ſi non habueris modum 27
liberandi te ab illa, tollent ſtratum quod
eſt ſub lateribus tuis. Ne mutes terminos 28
æternos, quos poſuerunt patres tui. Vir 29
peritus & velox in actionibus ſuis, convenit
verſetur coram regibus, & non ſtet
coram viris debilibus & abjectis.

CAP. XXIII.

Si ſederis ad cœnandum ad menſam 1
potentis, conſidera quæ ſunt appoſita coram
te conſideratione prudenti : Et extende 2
manum tuam, ſciens te ſimilia illis
debere parare. Et licèt fueris immoderatæ 3
aviditatis, ne appetas cibos ejus, quia portant
alimentum mendax. Si fueris pauper, 4
ne extendas latitudinem tuam ad opulentum,
et cohibe te ab illo in cogitatione tua.
Nam ſi defixeris in eo oculum tuum, non 5
videbitur unquam : quia aptatæ ſunt illi
alæ velut aquilæ, & redibit ad domicilium
in quo ſtat. Ne cœnes cum viro invido, 6
& ne appetas cibos ejus. Nam velut 7
is qui deglutit pilos eſt, iſte. Comede &
bibe, & ne introducas illum ad te, &
comedas cum eo panem tuum : Quia evomet 8
illum, & corrumpet ſermones tuos
pulchros. Ne dicas quicquam in auribus 9
ignari, ne irrideat eloquia tua docta. Ne 10
transferas limites æternos, & ne aggrediaris
terminos pupillorum : Quoniam Dominus 11
redemptor eorum, eſt fortiſſimus, et
judicabit judicium illorum tecum.

משלי: כד

.ſcientiæ eloquia ad tuas aures & ; tuum cor eruditionem ad fac Ingredi
12 הָבִיאָה לַמּוּסָר לִבֶּךָ וְאָזְנֶךָ לְאִמְרֵי־דָעַת׃
,virga in eum percuſſeris *cum* : correctionem puero à prohibeas Ne
13 אַל־תִּמְנַע מִנַּעַר מוּסָר כִּי־תַכֶּנּוּ בַשֵּׁבֶט
ejus animam & ; eum percuties virga in Tu .morietur non
14 לֹא יָמוּת׃ אַתָּה בַּשֵּׁבֶט תַּכֶּנּוּ וְנַפְשׁוֹ
lætabitur ; tuum cor fuerit ſapiens ſi ,mi Fili .erues inferno ab
15 מִשְּׁאוֹל תַּצִּיל׃ בְּנִי אִם־חָכַם לִבֶּךָ יִשְׂמַח
loquendo in ; mei renes exultabunt Et .ego etiam , meum cor
16 לִבִּי גַם־אָנִי׃ וְתַעְלֹזְנָה כִלְיוֹתָי בְּדַבֵּר
: peccatores *in* tuum cor æmuletur Ne .*rectitudines* tua labia
17 שְׂפָתֶיךָ מֵישָׁרִים׃ אַל־יְקַנֵּא לִבְּךָ בַּחַטָּאִים
ſi Quia .die tota DOMINI timore in *quinimò*
18 כִּי אִם־בְּיִרְאַת יְהוָה כָּל־הַיּוֹם׃ כִּי אִם־
,mi fili tu Audi .ſuccidetur non tua ſpes & ; *noviſſimum* eſt
19 יֵשׁ אַחֲרִית וְתִקְוָתְךָ לֹא תִכָּרֵת׃ שְׁמַע־אַתָּה בְנִי
Ne .tuum cor *via in* *progredi* fac & : *eſto* ſapiens &
20 וַחֲכָם וְאַשֵּׁר בַּדֶּרֶךְ לִבֶּךָ׃ אַל־
.*ſibi* carnis comeſſatoribus *in* : vini potatoribus *in* ſis
תְּהִי בְסֹבְאֵי־יָיִן בְּזֹלְלֵי בָשָׂר לָמוֹ׃
.dormitatio induere faciet *ſciſſuras* & ; *efficietur pauper* edax & ,bibax Quia
21 כִּי־סֹבֵא וְזוֹלֵל יִוָּרֵשׁ וּקְרָעִים תַּלְבִּישׁ נוּמָה׃
, ſenuerit cùm ,contemnas ne & : te genuit ipſe , tuo patri *Audi*
22 שְׁמַע לְאָבִיךָ זֶה יְלָדֶךָ וְאַל־תָּבוּז כִּי־זָקְנָה
, ſapientiam ; vendas ne & , eme Veritatem .tuam matrem
23 אִמֶּךָ׃ אֱמֶת קְנֵה וְאַל־תִּמְכֹּר חָכְמָה
pater exultabit Exultando .intelligentiam & , eruditionem &
24 וּמוּסָר וּבִינָה׃ גּוֹל יָגוּל אֲבִי
Lætabitur .eo in lætabitur *&* , ſapientem generans : juſti
25 צַדִּיק יוֹלֵד חָכָם וְיִשְׂמַח־בּוֹ׃ יִשְׂמַח־
mi fili Præbe .tua genitrix exultabit & : tua mater & ,tuus pater
26 אָבִיךָ וְאִמֶּךָ וְתָגֵל יוֹלַדְתֶּךָ׃ תְּנָה בְנִי
profunda fovea Quia .cuſtodiant meas vias tui oculi & : mihi tuũ cor
27 לִבְּךָ לִי וְעֵינֶיךָ דְּרָכַי תִּרְצֶנָה׃ כִּי־שׁוּחָה עֲמֻקָּה
prædæ tanquam ipſa Etiam .aliena anguſtus puteus & ; meretrix
28 זוֹנָה וּבְאֵר צָרָה נָכְרִיָּה׃ אַף־הִיא כְּחֶתֶף
, væ Cui .addet hominibus in prævaricatores & : inſidiabitur
29 תֶּאֱרֹב וּבוֹגְדִים בְּאָדָם תּוֹסִף׃ לְמִי אוֹי
? gratis vulnera cui , *murmur* cui , rixæ cui , *egeſtas* cui
לְמִי אֲבוֹי לְמִי מִדְיָנִים לְמִי־שִׂיחַ לְמִי פְּצָעִים חִנָּם
ingredientibus : vino *ſuper* Morantibus ? oculorum rubor cui
30 לְמִי חַכְלִלוּת עֵינָיִם׃ לַמְאַחֲרִים עַל־הַיָּיִן לַבָּאִים
, *rubuerit cùm* vinum intuearis Ne .*mixturam* quærendum ad
31 לַחְקֹר מִמְסָךְ׃ אַל־תֵּרֶא יַיִן כִּי יִתְאַדָּם
.*rectitudinibus in* ibit , ſuum *oculum* calice in dederit cùm
כִּי־יִתֵּן בַּכִּיס עֵינוֹ יִתְהַלֵּךְ בְּמֵישָׁרִים׃
tui Oculi .*punget* regulus velut & ; mordebit ſerpens ſicut ſuo Noviſſimo
32 אַחֲרִיתוֹ כְּנָחָשׁ יִשָּׁךְ וּכְצִפְעֹנִי יַפְרִשׁ׃ עֵינֶיךָ
33 eris Et .perverſa *loquetur* tuum cor & ; extraneas videbunt
34 יִרְאוּ זָרוֹת וְלִבְּךָ יְדַבֵּר תַּהְפֻּכוֹת׃ וְהָיִיתָ
.*rudentis* capite in *jacens* ſicut & ; maris corde in *jacens* veluti
כְּשֹׁכֵב בְּלֶב־יָם וּכְשֹׁכֵב בְּרֹאשׁ חִבֵּל׃
quando ,cognovi non ,me concuſſerunt : ægrotavi non ,me Verberaverunt
35 הִכּוּנִי בַל־חָלִיתִי הֲלָמוּנִי בַּל־יָדָעְתִּי מָתַי
.adhuc illud quæram , addam ? evigilabo
אָקִיץ אוֹסִיף אֲבַקְשֶׁנּוּ עוֹד׃

CAP. XXIV. כד

.eis cum *exiſtendum ad* deſideres ne & : *malitiæ* homines *in* æmuleris Ne
1 אַל־תְּקַנֵּא בְּאַנְשֵׁי רָעָה וְאַל־תִּתְאָו לִהְיוֹת אִתָּם׃

Verſio VULG. LAT.

12 Ingrediatur ad doctrinam cor tuum, & aures tuæ ad verba 13 ſcientiæ. Noli ſubtrahere à puero diſciplinam: ſi enim percuſſeris eum virgâ, non morietur. 14 Tu virgâ percuties eum: & animam ejus de inferno liberabis. 15 Fili mi, ſi ſapiens fuerit animus tuus, gaudebit tecum cor meum; 16 Et exultabunt renes mei, cùm locuta fuerint rectum labia tua. 17 Non æmuletur cor tuum peccatores: ſed in timore Domini eſto totâ die: 18 Quia habebis ſpem in noviſſimo, & præſtolatio tua non auferetur. 19 Audi, fili mi, & eſto ſapiens: & dirige in via animum tuum. 20 Noli eſſe in conviviis potatorum, nec in comeſſationibus eorum: qui carnes ad veſcendum conferunt: 21 Quia vacantes potibus, & dantes ſymbola conſumentur, & veſtietur pannis dormitatio. 22 Audi patrem tuum, qui genuit te: & ne contemnas cùm ſenuerit mater tua. 23 Veritatem eme, & noli vendere ſapientiam, & doctrinam, & intelligentiam. 24 Exultat gaudio pater juſti: qui ſapientem genuit, lætabitur in eo. 25 Gaudeat pater tuus, & mater tua, 26 & exultet quæ genuit te. Præbe, fili mi, cor tuum mihi: & oculi tui vias meas cuſtodiant. 27 Fovea enim profunda eſt meretrix: & puteus anguſtus, aliena. 28 Inſidiatur in via quaſi latro, & quos incautos viderit, 29 interficiet. Cui væ? cujus patri væ? cui rixæ? cui foveæ? cui ſine cauſa vulnera? cui ſuffuſio oculorum? 30 Nónne his, qui commorantur in vino, & ſtudent calicibus epotandis? 31 Ne intuearis vinum quando flaveſcit, cùm ſplenduerit in vitro color ejus: ingreditur blandè, 32 Sed in noviſſimo mordebit ut coluber, & ſicut regulus venena diffundet. 33 Oculi tui videbunt extraneas, & cor tuum loquetur perverſa. 34 Et eris ſicut dormiens in medio mari, & quaſi ſopitus gubernator, amiſſo clavo: 35 Et dices; Verberaverunt me, ſed non dolui: traxerunt me, & ego non ſenſi: quando evigilabo, & rurſus vina reperiam?

CAP. XXIV.

1 NE æmuleris viros malos, nec deſideres eſſe cum eis:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

12 † Δὸς εἰς παιδείαν τὴν καρδίαν σου, † τὰ δὲ ὦτά σου ἑτοίμασον λόγοις αἰσθήσεως. 13 † Μὴ ἀπόσχῃ νήπιον (β) παιδεύειν, † ὅτι ἐὰν πατάξῃς αὐτὸν ῥάβδῳ, οὐ μὴ ἀποθάνῃ. 14 † Σὺ μὲν γὰρ πατάξεις αὐτὸν ῥάβδῳ, † τὴν δὲ ψυχὴν αὐτοῦ ἐκ θανάτου ῥύσῃ. 15 † Υἱὲ, ἐὰν σοφὴ γένηταί σου ἡ καρδία, † εὐφρανεῖς καὶ τὴν ἐμὴν καρδίαν, 16 † Καὶ (α) ἐνδιατρίψει λόγοις τὰ σὰ χείλη † πρὸς τὰ ἐμὰ χείλη, ἐὰν ὀρθὰ ὦσι. 17 † Μὴ ζηλούτω ἡ καρδία σου ἁμαρτωλοὺς, † ἀλλὰ ἐν φόβῳ κυρίου ἴσθι ὅλην τὴν ἡμέραν. 18 † Ἐὰν γὰρ τηρήσῃς αὐτὰ, ἔσται σοι (γ) ἔκγονα, † ἡ δὲ ἐλπίς σου οὐκ ἀποστήσεται. 19 † Ἄκουε υἱὲ, καὶ σοφὸς γίνου, † καὶ κατεύθυνε ἐννοίας σῆς καρδίας. 20 † Μὴ ἴσθι οἰνοπότης, † μηδὲ ἐκτείνου συμβολαῖς, κρεῶν τε ἀγορασμοῖς. 21 † Πᾶς γὰρ μέθυσος καὶ πορνοκόπος πτωχεύσει, † καὶ ἐνδύσεται διεῤῥηγμένα καὶ ῥακώδη πᾶς ὑπνώδης. 22 † Ἄκουε υἱὲ πατρὸς τοῦ γεννήσαντός σε, † καὶ μὴ καταφρόνει ὅτι γεγήρακέ σου ἡ μήτηρ. 24 † Καλῶς ἐκτρέφει πατὴρ δίκαιος, † ἐπὶ δὲ υἱῷ σοφῷ εὐφραίνεται ἡ ψυχὴ αὐτοῦ. 25 † Εὐφραινέσθω ὁ πατὴρ καὶ ἡ μήτηρ ἐπὶ σοὶ, † καὶ χαιρέτω ἡ τεκοῦσά σε. 26 † Δός μοι υἱὲ σὴν καρδίαν, † οἱ δὲ σοὶ ὀφθαλμοὶ ἐμὰς ὁδοὺς τηρείτωσαν. 27 † Πίθος γὰρ τετρημένος ἐστὶν ἀλλότριος οἶκος, καὶ φρέαρ στενὸν ἀλλότριον. 28 † (ϛ) Οὗτος γὰρ συντόμως ἀπολεῖται, † καὶ 29 πᾶς παράνομος ἀναλωθήσεται. † Τίνι οὐαί; τίνι θόρυβος; τίνι κρίσεις; (δ) τίνι δὲ ἀηδίαι καὶ λέσχαι; † τίνι συντρίμματα διακενῆς; † τίνος (ε) πελιδνοὶ οἱ ὀφθαλμοί; 30 † Οὐ τῶν ἐγχρονιζόντων ἐν οἴνοις; † οὐ τῶν ἰχνευόντων ποῦ πότοι γίνονται; † μὴ μεθύσκεσθε (ζ) ἐν οἴνοις, ἀλλὰ ὁμιλεῖτε ἀνθρώποις δικαίοις; † καὶ ὁμιλεῖτε ἐν περιπάτοις. † ἐὰν γὰρ εἰς τὰς φιάλας καὶ (η) τὰ ποτήρια δῷς τοὺς ὀφθαλμούς σου, † ὕστερον περιπατήσεις γυμνότερος ὑπέρου. 32 Τὸ δὲ ἔσχατον ὥσπερ ὑπὸ ὄφεως πεπληγὼς ἐκτείνεται, † καὶ ὥσπερ ὑπὸ κεράστου 33 διαχεῖται αὐτῷ ὁ ἰός. † Οἱ ὀφθαλμοί σου ὅταν ἴδωσιν ἀλλοτρίαν, † τὸ στόμα σου 34 τότε λαλήσει σκολιά. † Καὶ κατακείσῃ ὥσπερ ἐν καρδίᾳ θαλάσσης, † καὶ ὥσπερ κυ-35 βερνήτης ἐν πολλῷ κλύδωνι. † Ἐρεῖς δὲ, Τύπτουσίν με καὶ οὐκ ἐπόνεσα, † καὶ ἐνέπαιξάν μοι, ἐγὼ δὲ οὐκ ᾔδειν· † πότε ὄρθρος ἔσται, ἵνα ἐλθὼν ζητήσω μεθ' ὧν συνελεύσομαι;

MS. A. (β) παιδεύων, (α) ἐνδιατρίψῃ (γ) ἔγγονα, (ϛ) Οὕτως (δ) τίνι ἀηδίαι (ε) πέλειοι ὀφθαλμοί; (ζ) οἴνῳ, (η) εἰς τὰ ποτήρια

ΚΕΦ. κδ'.

1 † ΥἹὲ, μὴ ζηλώσῃς κακοὺς ἄνδρας, † μηδὲ ἐπιθυμήσῃς εἶναι μετ' αὐτῶν.

Da in diſciplinam cor tuum: aures autem tuas adhibe ſermonibus (n) ſenſûs. 12 *Ne deſtiteris parvulum emendare: quoniam, ſi percuſſeris eum virgâ, non morietur.* 13 *Nam tu quidem percuties eum virgâ: animã autem ejus è morte erues.* 14 *Fili, ſi ſapiens fuerit tuum cor; lætificabis & meum cor.* 15 *(o) Et immorabuntur ſermonibus tua labia ad mea labia; ſi recta fuerint.* 16 *Non æmuletur cor tuum peccatores: ſed in timore Domini eſto totâ die.* 17 *Nam ſi ſervaveris ea, erunt tibi nepotes: ſpes autem tua (p) non recedet.* 18 *Audi, fili, & ſapiens eſto, & dirige (q) cogitationes cordis tui.* 19 *Ne fueris bibax vini, neque extendas te (r) ad ſymbolas, & carnium emptiones.* 20 *Omnis enim ebrius, (ſ) et ſcortator mendicabit; & induetur diſruptis & laceris omnis ſomnolentus.* 21 *Audi, fili, patrem, qui genuit te: & non contemnas, quoniam ſenuit (t) mater tua.* 22 *Benè educat pater juſtus: & in filio ſapiente lætatur anima ejus.* 24 *Lætetur pater, & mater ſuper te, & gaudeat quæ peperit te.* 25 *Da mihi, fili, cor tuum; & oculi tui meas vias (u) ſervent.* 26 *(x) Dolium enim perforatum eſt aliena domus, & puteus anguſtus, (y) alienus.* 27 *Hic enim brevi peribit, & (z) omnis iniquus abſumetur.* 28 *Cui væ? cui tumultus? cui judicia? cui autem moleſtiæ, & tricæ? cui contritiones (&) ſupervacuæ? (aa) cui lucidi oculi?* 29 *Nónne immorantium in vinis? (bb) nónne veſtigantium, ubi compotationes fiant? Nolite inebriari in vinis; ſed converſamini cum hominibus juſtis, & converſamini in locis deambulationis. Nam ſi in phialas, & pocula dederis oculos tuos; poſteà ambulabis nudior piſtillo:* 30 *Noviſſimè autem tanquàm à ſerpente percuſſus extenditur, & tanquàm à ceraſte diffunditur ei venenum.* 32 *Oculi tui cum viderint alienam; os tuum tunc loquetur (cc) perverſa,* 33 *Et (dd) jacebis tanquàm in corde maris, & tanquàm gubernator in multa tempeſtate.* 34 *Dices autem; (ee) Feriunt me, & non dolui: & (ff) illuſerunt mihi, ego autem non ſenſi: (gg) quando erit diluculum, ut vadens quæram quibuſcum conveniam?* 35

CAP. XXIV.

FIli, ne æmuleris malos viros: nec deſideres eſſe cum eis. 1

תרגום TARGUM.

12 אֲעוּל לִבָּךְ לְמַרְדוּתָא וְאֻדְנָךְ לְמֵימְרֵי דִידִיעֲתָא׃ לָא תִמְנַע מִן טַלְיָא מַרְדוּתָא מְטוּל דְּאִין
13 14 מְחַיַּת לֵיהּ בְּשִׁבְטָא לָא מָאֵת׃ אַנְתְּ בְּשִׁבְטָא מְחַיַּת לֵיהּ וְנַפְשֵׁיהּ מְפַלְּטַתְּ מִן שְׁיוֹל׃
15 בְּרִי אִם חַכִּים לִבָּךְ אַף אֲנָא חָדֵי אֲנָא בְלִבִּי׃ וְנִרְוְזָן כָּלְיָתַי כַּד יְמַלְּלוּן סִפְוָתַי תְּרִיצָתָא׃
16 17 לָא נִטַּן לִבָּךְ בְּחַטָּאֵי אֶלָּא בִדְחַלְתָּא דַאלָהָא כָּל יוֹמָא׃ מְטוּל דִּתְהֱוֵי לָךְ אַחֲרִיתָא טָבְתָא
18 וְסִבּוּיָךְ לָא נִגְמַר׃ שְׁמַע אַנְתְּ בְּרִי וְאִתְחַכַּם וְתָרֵץ לִבָּךְ לְאָרְחָא׃ לָא תֶהֱוֵי בְּאִלֵּין
19 20 דַּאֲסִיטוּן בְּבִשְׂרָא וּבְאִלֵּין דְּרָוְיָן חַמְרָא׃ מְטוּל דְּרָוֵי וְאָסִיט מִתְמַסְכֵּן וּבִזְעָתָא נִלְבֵּשׁ
21 22 נְיוֹמָא׃ קַבֵּל מִן אֲבוּךְ דֵּין יַלְדָךְ וְלָא תְשׁוּט מְטוּל דְּסִיבַת אִמָּךְ׃ קוּשְׁטָא קְנֵי וְלָא
23 תְזַבֵּן חָכְמְתָא וּמַרְדוּתָא וּבִיוּנָא׃ מֵדוּץ נְדוּץ אֲבוּי דְצַדִּיקָא וּמַן דְמוֹלִיד חַכִּימָא נֶחֱדֵי
24 25 בֵּיהּ׃ יֶחֱדֵי אֲבוּךְ וְאִמָּךְ וְתֵדוּץ תּוֹלַדְתָּךְ׃ הַב לִי בְּרִי לִבָּךְ וְעַיְנָךְ תִנְטְרָן אָרְחָתָי׃ מְטוּל
26 27 דְּגוּמְצָא עֲמִיקָא זַנִּיתָא וּבֵירָא דְעָקָא נוּכְרִיתָא׃ וְהֵיךְ מְטָרֵף עַיְנָהָא כְּמָנָא וְצָאֵד אַבְנָא
28 שַׁבְרֵי׃ לְמַנְוַי לְמַן דֵּיוָא וּלְמַן תִּגְרֵי וּלְמַן שׁוּחָא וּלְמַן פּוּדְעָתָא מַגָּן וּלְמַן סוּמְקָנוּת
29 30 עַיְנוֹי׃ לְהָלֵין דִמְוַחֲרִין עַל חַמְרָא וְאָזְלִין וּמְעַקְּבָא בֵית מִזְגָא׃ לָא תֶחֱמֵי חַמְרָא
31 דְּסָמוֹק וְיָהֵב בְּכָסָא עַיְנֵיהּ וּמְהַלֵּךְ תְּרִיצָאִית׃ וְאַחֲרִיתָא הֵיךְ חִוְיָא נָכֵת וּכְחוּרְמָנָא
32 33 דְּפָרֵיחַ׃ וְיֶחֱזוּן עַיְנָךְ בְּנֻכְרִיתָא וְלִבָּךְ יְמַלֵּל תַּהְפּוּכְתָא׃ וְתֶהֱוֵי הֵיךְ דְּשָׁכֵב בְּלִבֵּיהּ
34 דְּיַמָּא וְהֵיךְ מַלָּחָא דְּדָמֵךְ בְּאִלְפָא׃ וְתֵימַר מְחוּנִי וְלָא אִכְרְהֵית וּבַזּוּנִי וְלָא יָדְעֵית
35 לְאֵימַת אֶתְּעִיר וְאוֹסִיף וְאֶבְעֵנֵיהּ עוֹד׃

כד

1 לָא תִטַּן בְּמָרֵי בִישְׁתָּא וְלָא תִתְרַגַּג לְמֶהֱוֵי עִמְּהוֹן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Introduc ad doctrinam cor tuum, & aurem tuam ad verba ſcientiæ. 12 Ne prohibeas à puero diſciplinam; quoniam ſi percuſſeris eum virga, non 13 morietur. Tu percuſſiſti eum virga, & animam ejus ab inferno liberâſti. 14 Fili mi, ſi ſapiens eſt cor tuum, lætabor ego in corde meo. 15 Et exultabunt renes mei, cùm labia *mea* loquuta fuerint recta. 16 Ne æmuletur cor tuum peccatores, ſed in timore Dei tota die. 17 Ut ſint noviſſima tua bona, & ſpes tua non conſumetur. 18 Audi tu fili mi, & eſto ſapiens, & dirige cor tuum in via. 19 Ne ſis inter eos qui comeſſantur carnem, nec inter illos qui inebriantur vino. 20 Quoniam qui ebrius eſt & vorax, inopia afficietur, & pannis ruptis veſtietur dormitatio. 21 Acquieſce patri tuo qui genuit te: & ne contemnas cùm ſenuerit mater tua. 22 Poſſide veritatem, & ne vendas ſapientiam, & diſciplinam & intelligentiam. 23 Exultando exultabit pater juſti, & qui genuit ſapientem, lætabitur in eo. 24 Lætabitur pater tuus & mater tua, & exultabit quæ peperit te. 25 Pone fili mi cor tuum ad me, & oculi tui cuſtodiant vias meas. 26 Quoniam fovea profunda eſt meretrix, & puteus anguſtus extranea. 27 Et ſicut [*fera*] rapiens oculis inſidiatur, & venatur filios inſipientes. 28 Cui væ? cui *dolor?* & cui rixæ? & cui *loquacitas?* & cui vulnera ſine cauſa? & cui *rubedo* oculorum? 29 His qui commorantur in vino, & iis qui vadunt, & inveſtigant domum mixtionis. 30 Ne intuearis vinum cùm rubuerit, cùm poſuerit in calice colorem ſuum, & ingreditur rectè. 31 Noviſſimum autem ejus ſicut coluber mordet, & ſicut aſpis quæ volat. 32 Et videbunt oculi tui extranea, & cor tuum loquetur perverſa. 33 Et eris ſicut dormiens in corde maris, & ſicut nauta qui dormit in navi. 34 Et dices: Percuſſerunt me, & non dolui; & diripuerunt me, & neſcivi: quando evigilabo, et rurſus addam quærere illud? 35

CAP. XXIV.

NE æmuleris viros malos, neque deſideres eſſe cum eis. 1

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

12 * ܐܥܠ ܠܒܟ ܠܡܪܕܘܬܐ. ܘܐܕܢܝܟ ܠܡܐܡܪܐ ܕܝܕܥܬܐ. * ܠܐ ܬܟܠܐ ܡܪܕܘܬܐ ܡܢ ܛܠܝܐ. ܡܛܠ ܕܐܢ
13 ܡܚܐ ܐܢܬ ܠܗ ܠܐ ܡܐܬ. * ܐܢܬ ܓܝܪ ܡܚܐ ܐܢܬ ܠܗ ܒܫܒܛܐ. ܘܢܦܫܗ ܡܢ ܫܝܘܠ ܡܦܨܐ
14 ܐܢܬ. * ܒܪܝ. ܐܢ ܚܟܝܡ ܠܒܟ. ܐܦ ܠܒܝ ܢܚܕܐ. * ܘܢܪܘܙܢ ܟܘܠܝܬܝ. ܡܐ ܕܡܡܠܠܢ
15 16 ܣܦܘܬܟ ܬܪܝܨܬܐ. * ܠܐ ܢܛܢ ܠܒܟ ܒܚܛܝܐ. ܐܠܐ ܒܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܟܠܝܘܡ. * ܢܗܘܐ ܠܟ
17 18 ܚܪܬܐ. ܘܣܒܪܟ. ܠܐ ܢܐܒܕ. * ܫܡܥ ܒܪܝ ܘܗܘܝ ܚܟܝܡ. ܘܬܪܘܨ ܡܠܟܝ ܒܠܒܟ. * ܠܐ ܬܗܘܐ
19 20 ܪܘܝܐ ܒܚܡܪܐ. ܘܠܐ ܬܗܘܐ ܙܠܝܠ ܒܒܣܪܐ. * ܡܛܠ ܕܪܘܝܐ ܒܚܡܪܐ. ܘܙܠܝܠ ܒܒܣܪܐ. ܢܒܐܫ.
21 ܘܕܡܘܟ. ܢܠܒܫ ܡܪܒܥܐ. * ܫܡܥ ܠܐܒܘܟ ܕܐܘܠܕܟ. ܘܠܐ ܬܒܣܐ ܥܠ ܣܝܒܘܬܗ ܕܐܡܟ. * ܩܘܫܬܐ
22 23 ܩܢܝ. ܘܠܐ ܬܙܒܢ ܚܟܡܬܐ ܘܣܘܟܠܐ ܘܡܪܕܘܬܐ. * ܚܕܘ ܢܚܕܐ ܘܢܪܘܙ ܐܒܘܗܝ ܕܙܕܝܩܐ. ܘܢܘܠܕ ܚܟܝܡܐ.
24 ܘܢܚܕܐ ܒܗ ܐܒܘܗܝ. * ܘܢܚܕܘܢ ܒܟ ܐܒܘܟ ܘܐܡܟ. ܘܬܪܘܙ ܝܠܕܬܟ. * ܗܒ ܠܝ ܒܪܝ. ܠܒܟ.
25 26 ܘܥܝܢܝܟ. ܐܘܪܚܬܝ ܢܛܪܢ. * ܫܘܚܬܐ ܗܝ ܓܝܪ ܥܡܝܩܬܐ ܙܢܝܬܐ. ܘܓܘܒܐ ܕܐܘܠܨܢܐ. ܢܘܟܪܝܬܐ.
27 * ܘܡܚܕܐ ܡܚܒܠܐ. ܘܒܢܝܢܫܐ ܣܓܝܐܐ ܥܘܠܐ ܬܘܣܦ. * ܠܡܢ ܘܝ. ܘܠܡܢ ܕܘܘܢܐ. ܘܠܡܢ
28 29 ܕܝܢܐ. ܘܠܡܢ ܒܝܫܬܐ. ܘܠܡܢ ܡܚܘܬܐ ܕܡܓܢ. ܘܠܡܢ ܡܩܒܠ ܥܝܢܘܗܝ. * ܐܠܐ ܕܪܡܟܝܢ
30 ܘܡܥܣܪܝܢ ܒܚܡܪܐ. ܘܡܒܨܝܢ ܐܝܟܐ ܕܐܝܬ ܒܝܬ ܡܫܬܝܐ. ܠܐ ܬܗܘܐ ܪܘܝܐ ܒܚܡܪܐ. ܐܠܐ ܡܠܠ
ܥܡ ܐܢܫܐ ܙܕܝܩܐ. ܘܗܘܝ ܡܗܠܟ ܥܡܗܘܢ ܘܡܡܠܠ. * ܠܐ ܬܚܘܪ ܒܚܡܪܐ ܕܣܡܩ
31 ܥܝܢܗ ܒܟܣܐ. ܐܠܐ ܪܢܝ ܒܟܐܢܘܬܐ. * ܡܛܠ ܕܫܘܠܡܗ ܕܚܡܪܐ ܐܝܟ ܡܚܘܬܐ ܗܝ ܕܚܘܝܐ. ܘܐܝܟ
32 ܣܪܡܢܐ ܕܦܪܚ. * ܥܝܢܝܟ ܡܐ ܕܚܙܝܢ ܢܘܟܪܝܬܐ. ܗܝܕܝܢ ܠܒܟ ܡܡܠܠ ܗܦܟܬܐ.
33 * ܘܬܗܘܐ ܐܝܟ ܡܢ ܕܫܟܒ ܒܠܒܗ ܕܝܡܐ. ܘܐܝܟ ܡܠܚܐ ܒܥܠܥܠܐ ܪܒܐ. * ܘܬܐܡܪ
34 35 ܕܡܚܐܘܢܝ ܘܠܐ ܐܪܓܫܬ. ܘܡܒܙܚܝܢ ܗܘܘ ܒܝ ܘܠܐ ܝܕܥܬ ܗܘܝܬ. ܐܡܬܝ ܐܬܬܥܝܪ. ܘܐܙܠ ܐܒܥܝܗ.

* ܫܠܡ * ܟܓ *

1 * ܠܐ ܬܛܢ ܒܓܒܪܐ ܒܝܫܐ. ܘܠܐ ܬܪܓ ܠܡܗܘܐ ܥܡܗܘܢ.

Ingere cor tuum in diſciplinam, & aures tu- 12
as in eloquium ſcientiæ. Ne ſubtrahas diſci- 13
plinam à puero, quoniam ſi percuſſeris eum;
non morietur. Tu enim percuties eum virgâ, 14
& animam ejus ab inferis eripies. Fili mi, ſi 15
fuerit ſapiens cor tuũ, etiam cor meũ gaude-
bit. Exultabunt quoque renes mei, cùm la- 16
bia tua rectitudinẽ loquentur. Ne æmuletur 17
cor tuũ peccatores, ſed timorem Domini quo-
tidie : Ut ſit tibi finis *laudabilis*, & ſpes tua 18
non pereat. Audi fili mi, & eſto ſapiens, & 19
dirige conſiliũ meũ in corde tuo. Ne ſis ebri- 20
oſus in vino, neque ſis intemperans in carne.
Quoniam qui ebrioſus eſt in vino & intem- 21
perans in carne, peribit: & dormitabund' in-
duetur *rudibus* pannis. Audi patrem tuum 22
qui te genuit, & ne ſpernas ſenectutem ma-
tris tuæ. Veritatem compara, & ne vendas 23
ſapientiam et prudentiam atque diſciplinam.
Exultabit & geſtiet pater juſti: & generabit 24
ſapientem, & lætabitur in eo pater ſuus: Læ- 25
tabuntur etiam in te pater tuus materq; tua,
& exultabit genitrix tua. Da mihi fili mi, cor 26
tuũ: & oculi tui vias meas obſervent. Fovea 27
enim profunda eſt meretrix, & puteus angu-
ſtiæ, aliena, Et ſtatim enecat: hominéſq; per- 28
multi ſcel' adaugent. Cui væ? & cui pertur- 29
batio? cui contentio? cui mala? cui vulnera
ſine cauſa? & cujuſnam lividi ſunt oculi: Niſi 30
eorum qui inſtant vino, & inquirunt ubi ſit
convivium? Ne ſis ebrioſus in vino ſed con-
fabulare cum hominibus juſtis, cum iis ambu-
la, & cum iis loquere. Ne intendas oculos 31
tuos in vinũ, cuj' ocul' rutilat in calice, ſed
meditare juſtitiam. Nam finis vini ſimilis eſt 32
percuſſioni ſerpentis, & ſerpenti diro volan-
ti. Cùm conſideraverint oculi tui alienam, 33
tunc cor tuũ loquetur perverſa: Eriſq; velut 34
is qui recumbit in corde maris, & velut nau-
ta in ſumma tempeſtate: Diceſque, Percuſſe- 35
runt me, nec ſenſi: illudebant mihi, & non
percipiebam: quando expergiſcar, et ibo quæ-
ſitum illam?

CAP. XXIIII.

NE æmuleris viros nefarios, neque cupias 1
eſſe cum eis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

12 * ابذل قلبك للادب * واعد اذنيك لاقوال الحس * لا تمتنع من تاديب الطفل * لانك ان ضربته
13 بعصا ما يموت * فان ضربته بعصا فتخلص نفسه من الموت * يا بني ان كان قلبك حكيما
14 15 سيفرح قلبي * وتحول شفتيك في الاقوال بازاء شفتي * اذا كانت مستقيمة * لا تشابهن قلبك
16 17 الخطاة * بل اسلك في خشية الله كل اليوم * فانك ان حفظت هذه سيكون لك اولادا * ورجاوك
18 لن ينتزع منك * اسمع يا بني وكن حكيما * وقوم افكار قلبك * لا تعرفن شروبا للخمر * ولا
19 20 تطلبن المشورات في ابتياع اللحوم * فان كل سكير وملازم تعب الزناء يفتقر * وكل نوام يلبس
21 اطمارا مخرقة وخلقة * اسمع يا بني من الاب الذي ولدك ولا تتهاون لان قد عجزت امك * * الاب
22 24 المقسط يربي حسنا * ونفسه تسر بالابن الحكيم * فليفرح بك ابوك الذي ولدك * ولتسر بك امك
25 التي ولدتك * يا بني اعط قلبك * واذناك وعيناك فلتحفظ طرقي * بيت غيرك هو خابية مكسورة *
26 27 وبير ضيق اجنبي * وهذا يسقط سريعا * لمن الويل * على من الهيج * لمن الخصومات * لمن الخسرات *
28 29 لمن الهذيانات * لمن الهشمات الفاجية * لمن الاعين المكمدة * اليست للذين يدومون في شرب
30 النبيذ * اليست للذين يفحصون اين تصير دعوات الشرب * لا تسكروا بالخمر * بل خاطبوا رجال
مقسطين * وفاوضوهم في اوقات مشيهم * لانك ان بذلت عينيك لمعاينة البرك والطاسات * فستمشي
31 اخيرا مجردا تحت الهواء * ونهاية امره تمتد كجريح قد لدغته حية * وكمن قد سكبت الافعى
32 سمها فيه * عيناك اذا رات غريبة * حينئذ يتكلم فمك اقوالا ملتوية صعبة * وتنطرح كطريح
33 34 في قلب البحر * وكمدبر يحصل في شدة من الامواج كثير * فتقول ضربوني وما وجعني ذلك *
35 ولعبوا بي فما عرفت انا * متى تكون البكور حتى اذا جاءت الشمس ان اذهب معها *

* الفصل الرابع والعشرون *

1 * يا بني لا تصاحبن الناس الاشرار * ولا تشتهين ان تكون معهم *

Præbe cor tuum diſciplinæ, & præpara 12
aures tuas ſermonibus ſenſûs. Ne abſti- 13
neas à correctione pueri, quia ſi percuſſe-
ris eum baculo, non morietur. Imò ſi per- 14
cuſſeris eum baculo, ſalvabis animam ipſi-
us à morte. Fili mi, ſi fuerit cor tuum ſa- 15
piens, lætabitur cor meum. Et verſabis 16
labia tua per eloquia, ſicuti labia mea, ſi
fuerint recta. Ne aſſimiles cor tuum pec- 17
catoribus, ſed ambula in timore Domini
tota die. Nam ſi cuſtodieris hæc, erunt tibi 18
filii, & ſpes tua non auferetur à te. Audi 19
fili mi, & eſto ſapiens, & dirige cogita-
tiones cordis tui. Ne agnoſcas bibacem 20
vini, & ne petas conſilia in aviditate car-
nium. Nam omnis ebrioſus, & adhærens 21
ſordibus luxuriæ, paupereſcet : & omnis
ſomnolentus induetur pannis ſciſſis ac la-
ceris. Audi O fili mi, patrem qui te 22
genuit : et ne ſis piger, jam enim ſenuit
mater tua.

Deſideratur verſ. 23.

Pater juſtus educat benè, & anima ejus 24
lætabitur in filio ſapiente. Gaudeat igitur 25
de te pater tuus qui te generavit, &
exultet in te mater tua quæ te genuit.
O fili mi, præbe cor tuum : & aures tuæ 26
atque oculi tui cuſtodiant vias meas.
Domus aliena eſt lagena fracta : & pu- 27
teus anguſtus, exterus : Et iſte cadet citò. 28
Cui væ? ſuper quem furiæ? cui lites? 29
cui miſeriæ? cui deliria? cui ruina im-
petuoſæ? cuinam oculi decolores? Nónne 30
iis qui inſiſtunt potui vini? nónne iis qui
ſciſcitantur ubi fiant convivia potûs?
Ne inebriemini vino, ſed converſamini
cum viris juſtis, & colloquimini cum eis,
temporibus deambulationis eorum. Quo- 31
niam ſi dedas oculos tuos ad inſpiciendos
lacus & crateres, incedes tandem nudus
ſub dio: Et in fine ſucceſſûs ejus vini 32
proſterneris quaſi vulneratus, quem mo-
mordit ſerpens, & velut is in quem ef-
fudit vipera venenum ſuum. Cùm oculi 33
tui viderint peregrinam, tunc loquetur
os tuum ſermones perverſos, duros : Et 34
ſuccumbes veluti projectus in cor maris,
& velut gubernator exiſtens in vehe-
mentia procellarum multa : Diceſque, 35
Percuſſerunt me, & non dolui : & illu-
ſerunt mihi, & ignoravi ego : quando-
nam erit matutinum, ut cùm venerit, ten-
tem abire cum illa?

CAP. XXIV.

O Fili mi, ne imiteris homines iniquos, 1
& ne cupias eſſe cum eis.

מִשְׁלֵי : כד

.loquentur eorum labia *laborem* & ; eorum cor meditabitur rapinam Quia

כִּי־שֹׁד יֶהְגֶּה לִבָּם וְעָמָל שִׂפְתֵיהֶם תְּדַבֵּרְנָה׃ 2

ſcientia in Et .ſtabilietur intelligentia *in* &:domus ædificabitur ſapientia In

בְּחָכְמָה יִבָּנֶה בָּיִת וּבִתְבוּנָה יִתְכּוֹנָן׃ וּבְדַעַת 3 4

ſapiens Vir *.jucunda & ,precioſa copia omni* ,replebuntur *penetralia*

חֲדָרִים יִמָּלְאוּ כָּל־הוֹן יָקָר וְנָעִים׃ גֶּבֶר־חָכָם 5

induſtriis in Quia *.potentiam roborans ſcientiæ* vir & : fortitudine in

בַּעוֹז וְאִישׁ־דַּעַת מְאַמֶּץ־כֹּחַ׃ כִּי בְתַחְבֻּלוֹת 6

Excelſæ .conſiliarii multitudine in ſalus & : bellum tibi facies

תַּעֲשֶׂה־לְּךָ מִלְחָמָה וּתְשׁוּעָה בְּרֹב יוֹעֵץ׃ רָאמוֹת 7

Cogitantem .ſuum os aperiet non porta in : ſapientiæ ſtulto

לֶאֱוִיל חָכְמוֹת בַּשַּׁעַר לֹא יִפְתַּח־פִּיהוּ׃ מְחַשֵּׁב 8

mala Cogitatio .vocabunt *malarum cogitationum patronum* eum : malefacere

לְהָרֵעַ לוֹ בַּעַל־מְזִמּוֹת יִקְרָאוּ׃ זִמַּת 9

die in fuiſti Remiſſus .deriſor homini abominatio & : peccatum *ſtultitiæ*

אִוֶּלֶת חַטָּאת וְתוֹעֲבַת לְאָדָם לֵץ׃ הִתְרַפִּיתָ בְּיוֹם 10

nutantes & :mortem ad *captos* Erue .tua fortitudo anguſta : anguſtiæ

צָרָה צַר כֹּחֶכָה׃ הַצֵּל לְקֻחִים לַמָּוֶת וּמָטִים 11

,hunc novimus non En ,dixeris *Cùm* ? prohibebis *ſi* ,occiſionem ad

לַהֶרֶג אִם־תַּחְשׂוֹךְ׃ כִּי־תֹאמַר הֵן לֹא־יָדַעְנוּ זֶה 12

ipſe ,tuam animam *cuſtodiens* & ? intelliget ipſe ,corda *ponderans* nónne

הֲלֹא־תֹכֵן לִבּוֹת הוּא־יָבִין וְנֹצֵר נַפְשְׁךָ הוּא

mi fili Comede ? ſuum opus ſecundùm homini reddétque : cognoſcet

יֵדָע וְהֵשִׁיב לְאָדָם כְּפָעֳלוֹ׃ אֱכָל־בְּנִי 13

ſcientia Sic .tuo palato *ſuper* dulce favum & : bonum quia , mel

דְבַשׁ כִּי טוֹב וְנֹפֶת מָתוֹק עַל־חִכֶּךָ׃ כֵּן ׀ דְּעֶה 14

tua expectatio & *: noviſſimum eſt & ,inveniſti ſi* ; tuæ animæ ſapientiæ

חָכְמָה לְנַפְשֶׁךָ אִם־מָצָאתָ וְיֵשׁ אַחֲרִית וְתִקְוָתְךָ

nec ; juſti habitaculo impie inſidieris Ne .excidetur non

לֹא תִכָּרֵת׃ אַל־תֶּאֱרֹב רָשָׁע לִנְוֵה צַדִּיק אַל־ 15

impii & ; ſurget & ,juſtus cadet ſepties Quia .ejus accubitum *vaſtes*

תְּשַׁדֵּד רִבְצוֹ׃ כִּי שֶׁבַע ׀ יִפּוֹל צַדִּיק וָקָם וּרְשָׁעִים 16

,cū impingendo in & : læteris ne *,tuū inimicum cadendo In* .malum in corruent

יִכָּשְׁלוּ בְרָעָה׃ בִּנְפֹל אוֹיִבְךָ אַל־תִּשְׂמָח וּבִכָּשְׁלוֹ 17

malum & , Dominus videat fortè Ne .tuum cor exultet ne

אַל־יָגֵל לִבֶּךָ׃ פֶּן־יִרְאֶה יְהוָה וְרַע 18

:malignis *in ſuccenſeas* Ne *.ſuam narem eo deſuper* avertat & : ejus oculis in

בְּעֵינָיו וְהֵשִׁיב מֵעָלָיו אַפּוֹ׃ אַל־תִּתְחַר בַּמְּרֵעִים 19

: maligno noviſſimum erit non Quia .impios *in* æmuleris ne

אַל־תְּקַנֵּא בָּרְשָׁעִים׃ כִּי ׀ לֹא־תִהְיֶה אַחֲרִית לָרָע 20

: regem & ,mi fili Dominum Time .extinguetur impiorum lucerna

נֵר רְשָׁעִים יִדְעָךְ׃ יְרָא־אֶת־יְהוָה בְּנִי וָמֶלֶךְ 21

:corū *exitium* conſurget repente Quoniam .te miſceas ne iterantibus cum

עִם־שׁוֹנִים אַל־תִּתְעָרָב׃ כִּי־פִתְאֹם יָקוּם אֵידָם 22

:ſapientibus hæc Etiam *? ſciens* quis *eorum* amborum contritionem &

וּפִיד שְׁנֵיהֶם מִי יוֹדֵעַ׃ גַּם־אֵלֶּה לַחֲכָמִים 23

, impio Dicenti .bonum non ,judicio in *facies* Cognoſcere

הַכֵּר־פָּנִים בְּמִשְׁפָּט בַּל־טוֹב׃ אֹמֵר ׀ לְרָשָׁע 24

.nationes eum deteſtabuntur : populi *ei* maledicent , *tu* Juſtus

צַדִּיק אַתָּה יִקְּבֻהוּ עַמִּים יִזְעָמוּהוּ לְאֻמִּים׃

.bona benedictio *ingredietur* eos ſuper & *: erit jucundus* increpantibus Et

וְלַמּוֹכִיחִים יִנְעָם וַעֲלֵיהֶם תָּבוֹא בִרְכַּת־טוֹב׃ 25

Præpara .recta verba *reſpondens* : oſculabitur Labia

שְׂפָתַיִם יִשָּׁק מֵשִׁיב דְּבָרִים נְכֹחִים׃ הָכֵן 26 27

ædificabis & poſtea *: tibi* agro in illud præpara & ,tuum opus *vico in*

בַּחוּץ ׀ מְלַאכְתֶּךָ וְעַתְּדָהּ בַּשָּׂדֶה לָךְ אַחַר וּבָנִיתָ

pellicies numquid & : tuum *ſocium in gratis* teſtis ſis Ne .tuam domum

בֵיתֶךָ׃ אַל־תְּהִי עֵד־חִנָּם בְּרֵעֶךָ וַהֲפִתִּיתָ 28

faciam ſic ,mihi fecit Quemadmodum , dicas Ne .tuis labiis in

בִּשְׂפָתֶיךָ׃ אַל־תֹּאמַר כַּאֲשֶׁר עָשָׂה־לִי כֵּן אֶעֱשֶׂה־ 29

.ſuum opus ſecundùm viro reddam : ei

לּוֹ אָשִׁיב לָאִישׁ כְּפָעֳלוֹ׃

Verſio VULG. LAT.

2 Quia rapinas meditatur mens eorum, & fraudes labia eorum loquuntur. 3 Sapientiâ ædificabitur domus, & prudentiâ roborabitur. 4 In doctrina replebuntur cellaria, univerſâ ſubſtantiâ pretioſâ & pulcherrimâ. 5 Vir ſapiens, fortis eſt: & vir doctus, robuſtus & validus. 6 Quia cum diſpoſitione initur bellum: & erit ſalus ubi multa conſilia ſunt. 7 Excelſa ſtulto ſapientia, in porta non aperiet os ſuum. 8 Qui cogitat mala facere, ſtultus vocabitur. 9 Cogitatio ſtulti peccatum eſt: & abominatio hominum detractor. 10 Si deſperaveris laſſus in die anguſtiæ; imminuetur fortitudo tua. 11 Erue eos, qui ducuntur ad mortem: & qui trahuntur ad interitum, liberare ne ceſſes. 12 Si dixeris; Vires non ſuppetunt: qui inſpector eſt cordis, ipſe intelligit, & ſervatorem animæ tuæ nihil fallit, reddétque homini juxta opera ſua. 13 Comede, fili mi, mel, quia bonum eſt, & favum dulciſſimum gutturi tuo. 14 Sic & doctrina ſapientiæ animæ tuæ: quam cùm inveneris, habebis in noviſſimis ſpem, & ſpes tua non peribit. 15 Ne inſidieris, & quæras impietatē in domo juſti, neque vaſtes requiem ejus. 16 Septies enim cadet juſtꝰ, & reſurget: impii autē corruent in malum. 17 Cùm ceciderit inimicus tuꝰ, ne gaudeas, & in ruina ejus ne exultet cor tuum: 18 Ne fortè videat Dñs, & diſpliceat ei, & auferat ab eo iram ſuam. 19 Ne contendas cum peſſimis, 20 nec æmuleris impios: Quoniā non habent futurorū ſpē mali: & lucerna impiorum extinguetur. 21 Time Dominum, fili mi, & regem: & cum detractoribus non commiſcearis: 22 Quoniam repentè conſurget perditio eorum: & ruinam utriuſque quis novit? 23 Hæc quoque ſapientibus: Cognoſcere perſonam in judicio non eſt bonum. 24 Qui dicunt impio; Juſtus es: maledicent eis populi, & deteſtabuntur eos tribus. 25 Qui arguunt eū, laudabuntur: & ſuper ipſos veniet benedictio. 26 Labia deoſculabitur, qui recta verba reſpondet. 27 Præpara foris opus tuum, & diligenter exerce agrum tuum: ut poſteà ædifices domum tuam. 28 Ne ſis teſtis fruſtrà contra proximū tuū: nec lactes quemquā labiis tuis. 29 Ne dicas; Quomodò fecit mihi, ſic faciā ei: reddam unicuiq; ſecundùm opus ſuum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

2 †Ψευδῆ γὰρ μελετᾷ ἡ καρδία αὐτῶν, †καὶ πόνους τὰ χείλη αὐτῶν λαλεῖ. 3 †Μετὰ σοφίας οἰκοδομεῖται οἶκος, †καὶ μετὰ συνέσεως ἀνορθοῦται. 4 †Μετὰ αἰσθήσεως (α) ἐμπίμπλανται ταμιεῖα †ἐκ παντὸς πλούτου τιμίου καὶ καλοῦ. 5 †Κρείσσων σοφὸς ἰσχυροῦ, †καὶ ἀνὴρ φρόνησιν ἔχων γεωργίου μεγάλου. 6 †Μετὰ κυβερνήσεως γίνεται πόλεμος, †βοήθεια δὲ μετὰ καρδίας βουλευτικῆς. 7 †Σοφία καὶ ἔννοια ἀγαθὴ ἐν πύλαις σοφῶν· †Σοφοὶ οὐκ ἐκκλίνουσιν ἐκ στόματος κυρίου, †ἀλλὰ λογίζονται ἐν συνεδρίοις. 9 †ἀπαιδεύτοις συναντᾷ θάνατος, †Ἀποθνήσκει δὲ ἄφρων ἐν ἁμαρτίαις. †(β) ἀκαθαρσία δὲ ἀνδρὶ λοιμῷ, 10 Ἐμμολυνθήσεται† ἐν ἡμέρᾳ κακῇ, καὶ ἐν ἡμέρᾳ θλίψεως ἕως ἂν ἐκλίπῃ. 11 †Ῥῦσαι ἀγομένους εἰς θάνατον, †καὶ (γ) ἐκπρίου κτεινομένους, μὴ φείσῃ. 12 †Ἐὰν δὲ εἴπῃς, Οὐκ οἶδα τοῦτον· †γίνωσκε, ὅτι (δ) κύριος καρδίας πάντων γινώσκει· καὶ ὁ πλάσας πνοὴν πᾶσιν, αὐτὸς οἶδε πάντα, ὃς ἀποδίδωσιν ἑκάστῳ κατὰ τὰ ἔργα αὐτοῦ. 13 †Φάγε μέλι υἱὲ, ἀγαθὸν γὰρ κηρίον, †ἵνα γλυκανθῇ σου ὁ φάρυγξ. 14 †Οὕτως αἰσθήσῃ (ε) σοφίαν τῇ σῇ ψυχῇ· †ἐὰν γὰρ εὕρῃς, ἔσται καλὴ ἡ τελευτή σου, καὶ ἐλπίς σε οὐκ ἐγκαταλείψει. 15 †Μὴ προσαγάγῃς ἀσεβῆ νομῇ δικαίων, †μηδὲ ἀπατηθῇς χορτασίᾳ κοιλίας. 16 †Ἑπτάκις γὰρ πεσεῖται (*) δίκαιος καὶ ἀναστήσεται, †οἱ δὲ ἀσεβεῖς ἀσθενήσουσιν ἐν κακοῖς. 17 †Ἐὰν πέσῃ ὁ ἐχθρός σου, μὴ ἐπιχαρῇς αὐτῷ, †ἐν δὲ τῷ ὑποσκελίσματι αὐτοῦ μὴ ἐπαίρου. 18 †Ὅτι ὄψεται κύριος καὶ οὐκ ἀρέσει αὐτῷ, 19 †καὶ ἀποστρέψει τὸν θυμὸν αὐτοῦ ἀπ᾽ αὐτοῦ. †Μὴ χαῖρε ἐπὶ κακοποιοῖς, †μηδὲ ζήλου ἁμαρτωλούς. 20 †Οὐ γὰρ μὴ γένηται ἔκγονα (*) πονηρῷ, 21 †λαμπτὴρ δὲ ἀσεβῶν σβεσθήσεται. †Φοβοῦ τὸν θεὸν υἱὲ καὶ βασιλέα, †καὶ (*) μηθ᾽ ἑτέρῳ αὐτῶν ἀπειθήσῃς. 22 †Ἐξαίφνης γὰρ τίσονται τοὺς ἀσεβεῖς, †τὰς δὲ τιμωρίας ἀμφοτέρων τίς γνώσεται;

27 Cap. 29. †Λόγον φυλασσόμενος υἱὸς ἀπωλείας ἐκτὸς ἔσται, [†δεχόμενος δὲ ἐδέξατο αὐτόν. †μηδὲν ψεῦδος ἀπὸ γλώσσης (ζ) βασιλεῖ λεγέσθω, †καὶ οὐδὲν ψεῦδος ἀπὸ γλώσσης αὐτοῦ οὐ μὴ ἐξέλθῃ. †μάχαιρα γλῶσσα βασιλέως καὶ οὐ σαρκίνη, †ὃς δ᾽ ἂν παραδοθῇ, συντριβήσεται. †ἐὰν γὰρ ὀξυνθῇ ὁ θυμὸς αὐτοῦ, †σὺν νεύροις (η) ἀνθρώπους ἀναλίσκει, καὶ ὀστᾶ ἀνθρώπων κατατρώγει, †καὶ συγκαίει ὥσπερ φλὸξ, †ὥστε ἄβρωτα εἶναι νεοσσοῖς ἀετῶν. †(θ) τοὺς ἐμοὺς λόγους υἱὲ φοβήθητι, †καὶ δεξάμενος αὐτοὺς μετανόει.] Cap. 30.

1 2 †Τάδε λέγει ὁ ἀνὴρ τοῖς πιστεύουσι θεῷ, καὶ παύομαι. †Ἀφρονέστατος γάρ εἰμι (*) ἁπάντων ἀνθρώπων, †καὶ φρόνησις (ι) ἀνθρώπων οὐκ ἔστιν ἐν ἐμοί. 3 †Θεὸς δεδίδαχέ με σοφίαν, καὶ γνῶσιν (κ) ἁγίων ἔγνωκα. 4 †Τίς ἀνέβη εἰς τὸν οὐρανὸν καὶ κατέβη; †τίς συνήγαγεν ἀνέμους ἐν κόλπῳ;

2 Falſa enim meditatur cor eorū: & labores labia eorum loquuntur. 3 Cū ſapientia ædificatur domus: & cū intellectu erigitur. 4 Cum (a) ſenſu implentur cellaria ex omnibus divitiis pretioſis, & bonis. 5 Melior ſapiens forti, & vir prudentiam habens (b) agro magno. 6 Cum ratione gubernandi fit bellum: (c) auxilium autem cum corde conſilium habente. 7 Sapientia, & cogitatio bona in portis ſapientum: ſapientes non declinant (d) ab ore Domini: ſed cogitant in conſeſſibus. 9 Indiſciplinatu occurrit mors: (e) Moritur autem imprudens in peccatis. (f) Immunditia autem viro peſtilenti, 10 (g) Inquinabitur in die mala, & in die tribulationis, quoadusque deficiat. 11 (h) Libera eos, qui ducuntur ad mortem, & (i) redime eos, qui interficiuntur, ne parcas. 12 Si autem dixeris, Neſcio hunc; ſcito, (k) quoniam Dominus corda omnium noſcit: & (l) qui figuravit ſpiritum omnibꝰ, ipſe novit omnia, qui reddit unicuique ſecundùm opera ejus. 13 Comede mel, fili: bonus enim eſt favus, ut dulceſcat guttur tuum. 14 Sic ſenties ſapientiam animo tuo: ſi enim inveneris; erit bonus obitus tuus, & ſpes te non deſeret. 15 (m) Noli applicare impium ad (n) paſcua juſtorum: neque ſeducaris ſaturitate ventris. 16 Septies enim cadet juſtus, & reſurget: impii autem infirmabuntur in malis. 17 Si ceciderit inimicus tuus, nè gaudeas ſuper eum: & in ſupplicatione ejus nè (o) extollaris: 18 (p) Quoniam videbit Dominus, & non placebit ei: & avertet (q) indignationem ſuam ab eo. 19 (r) Ne gaudeas in malefactoribus; (ſ) neque æmuleris peccatores. 20 Non enim fient poſteri maligno: (t) fax autem impiorum extinguetur. 21 Time Deum, fili, & regem: & neutri eorum (u) ſis inobediens: 22 Subitò enim ulciſcentur impios: ſupplicia autem utrorumq; quis cognoſcet? Cap. 29. 27 (x) Verbū cuſtodiens filiꝰ extra perditionē erit: [excipiens autē excepit illud. Nihil falſi de ore regi dicatur, & nihil falſi ex lingua ipſius exeat. Gladius lingua regis, & non carnea: quicunq; autem traditus fuerit, conteretur. Si enim irritatus fuerit furor ejus; cum nervis homines abſumit, & oſſa hominum devorat, & comburit tanquàm flamma, ita ut ſint inepta eſui pullis aquilarū. Mea verba, fili, timeto, & ſuſcipiens ea pœnitentiam age.] Cap. 30. 1 2 (y) Hæc dicit vir (z) credentibꝰ Deo, & quieſco. (ω) Inſipientiſſimus enim ſum omnium hominumꝰ & prudentia (aa) hominum non eſt in me. 3 Deus docuit me ſapientiam, & ſcientiam Sanctorum cognovi. 4 Quis aſcendit in cœlum, (b) & deſcendit? (c) quis congregavit ventos in ſinu?

MS. A. (α) ἐμπίπλανται (β) ἀκαθαρσία ἀνδρὶ (γ) ἐκπρίω (δ) ὁ κύριος (ε) σοφίας (*) ὁ δίκαιος (*) πονηρῶν, (*) μηδ᾽ (ζ) βασιλέως (η) ἀνθρώπου (θ) τοὺς δὲ ἐμοὺς (*) πάντων (ι) ἀνθρώπου (κ) ἀνθρώπων

תרגום TARGUM.

2 מטול דכונא רגן לבהון ועולא שפותהון ממללן׃ בחכמתא מתבני ביתא ובביונא

3 4 מתקין׃ ובידיעתא קיטוני מתמלין כל מולא יקירא ובסימא׃ טב גבר חכימא מן עשינא

5 6 וגברא דידיעתא מן הוא דזריז בחיליה׃ מטול במדברנותא תעבד לך קרבא ופורקנא

7 בסוגעא דמלכנא׃ מתרעם שטיא בחכמתא ובתרעי לא פתח פומיה׃ מן דחשב

8 9 למבאשא נקרון ליה מרי תרעיתא בישתא׃ תרעיתא דשטיא חטאה ומרחקתא דבר

10 נשא חכימא ממקנותא׃ אין תתרפי ביומא דעקתא מתתעיק חילך׃ פצא לאלין

11 12 דמתנסבין למותא ומתדברין לקטלא חסוך׃ ואין תימר דלא ידענא דא הלא תרעיתא

13 דלבא אלהא בצי ודנטר נפשך הוא ידע ופרע לבר נשא היך עובדוי׃ ברי אכול דובשא

14 מטול דטב וכבריתא דחילא על חכך׃ היכנא אתחכם בנפשך דאין משכחת קדמיתא

15 אתיא אחריתא דטבא מנה וסכויך לא נגמר׃ לא תכמן רשיעא לדיריה דצדיקא ולא

16 תרכין בית משריה׃ מטול דשובעא זמנין נפל צדיקא וקאי ורשיעי מתתקלין בבישתא׃

17 18 במפלותיה דבעל דבבא לא תחדי וכד יתקל בבישתא ידוץ לבך׃ דלא יבאש באפוי

19 דאלהא כד יחזה ויהפך רוגזיה מניה׃ לא תתחסם בבישיא ולא תטן ברשיעיא׃

20 21 מטול דלא הויא אחריתא טבא לבישי ושרגהון דרשיעי נדעך׃ דחל מן אלהא ברי

22 ומן מלכא ועם שטיי לא תתחלט׃ מטול דבשליא אתי תברהון וסופא דשניהון מן

23 24 ידיע׃ אף הלין לחכימי אמרנא למסב אפי בדינא לא שפיר׃ דימר לרשיעא צדיק אנת

25 ילוטוניה עממי ויברוניה אומתא׃ ולמכסני יבסם ועליהון תיתא ברכתא טבתא׃

26 27 שפותהון נשקו דאלין דמהפכין מלי תריצתא׃ אתקן לברא עבדתך ועתדה לך

28 29 בחקלא ובתר כן בני ביתך׃ לא תהוי סהדא דגלא בחברך ותשרגג בשפותך׃ לא תימר היך דעבד לי כן אעבד ליה ואהפך ליה היך עובדוי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

2 Quoniā *ruinā* meditatur cor eorū, & iniquitatē labia eorū loquuntur. 3 In ſapientia ædificatur domꝰ, & in prudentia præparatur. 4 Et in ſcientia replebūtur cellaria oīi ſubſtātia precioſa & ſuavi. 5 Melior eſt vir ſapiens robuſto, & vir ſcientiæ magis quā ille qui accinctus eſt fortitudine ſua. 6 Quoniā in gubernaculis facies tibi bellū, ſalꝰ autē erit in multitudine conſilii. 7 Murmurat ſtultꝰ adverſus ſapientiā, et in portis non aperit os ſuū. 8 Qui cogitat malefacere, vocabunt eum habentem aſtutiam peſſimam. 9 Aſtutia ſtulti peccatum eſt, & abominatio viri ſapientis deriſor. 10 Si remiſſus fueris, in die tribulationis arctabitur fortitudo tua. 11 Redime eos qui capiuntur ad mortem, & illos qui ducuntur ad interfectionem prohibe. 12 Et ſi dixeris: Non novimus *hoc; nónne* cogitationes cordis ſcrutatur Deus, et qui cuſtodit animam tuam, ipſe ſcit, & reddet filio hominis juxta opera ſua? 13 Comede fili mi mel, quoniam bonum eſt; & favum quoniam dulcis eſt gutturi tuo. 14 Sic ſapiens eſto in anima tua: quod ſi inveniſti, primis venient noviſſima meliora, et ſpes tua non conſumetur. 15 Ne inſidieris impie habitaculo juſti, neque projicias domum habitationis ejus. 16 Quoniam ſepties cadet juſtus et reſurget, et impii corruent in malum. 17 Cùm ceciderit inimicus tuus, ne læteris; 18 & cùm corruerit in malum, [*ne*] exultet cor tuum. Ne fortè diſpliceat in conſpectu Dei cùm viderit, et avertat ab eo iram ſuam. 19 Ne imiteris peſſimos neq; æmuleris impios. 20 Quoniam non erunt noviſſima bona peſſimis, et lucerna impiorū extinguetur. 21 Time Deum fili mi, et regē; et cum ſtultis ne commiſcearis. 22 Quoniā repentè veniet interitus eorum: et calamitatē amborum quis ſcit? 23 Hæc quoq; ſapientibus dico: Accipere perſonam in judicio, non eſt bonū. 24 *Qui dicit* impio, Juſtus es tu; maledicent eum populi, & deteſtabuntur eum nationes. 25 Corripientibus autē ſuave erit, et ſuꝑ eos veniet benedictio bona. 26 Oſculabuntur labia eorū qui reſpondent verba recta. 27 Præpara foris opus tuum, & ſtatue illud tibi in agro, et poſtea ædifica domū tuā. 28 Ne ſis teſtis *mendax* adverſus ſociū tuū, neq; decipias labiis tuis. 29 Nec dicas: Sicut fecit mihi, ſic faciā ei, et reddam ei juxta opera ejus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione *LATINA*.

2 * ܡܛܠ ܕܒܝܫܬܐ ܗܘ ܪܢܐ ܠܒܗܘܢ. ܘܥܘܠܐ ܡܡܠܠܢ ܣܦܘܬܗܘܢ. * ܒܚܟܡܬܐ ܡܬܒܢܝܐ
3 4 ܒܝܬܐ. ܘܒܣܘܟܠܐ ܡܬܩܢ ܓܡܝܪܐܝܬ. * ܘܒܝܕܥܬܐ ܡܬܡܠܝܢ ܬܘܢܐ. ܟܠ ܩܢܝܢܐ ܘܝܩܪܐ
5 6 ܘܒܣܝܡܘܬܐ. * ܛܒ ܗܘ ܚܟܝܡܐ ܡܢ ܥܫܝܢܐ. ܘܓܒܪܐ ܕܝܕܥܬܐ ܡܢ ܡܚܝܠ ܚܝܠܐ. * ܒܙܘܥܐ
7 ܡܬܥܒܕ ܩܪܒܐ. ܘܦܘܪܩܢܐ ܒܣܓܝܐܘܬ ܡܠܟܐ. * ܚܟܡܬܐ ܪܡܝܐ ܠܣܟܠܐ. ܘܒܬܪܥܐ ܠܐ
8 ܢܦܬܚ ܦܘܡܗ. * ܕܡܬܚܫܒ ܠܡܒܐܫܘ. ܓܒܪܐ ܒܥܘܠܐ ܡܬܩܪܐ. * ܡܚܫܒܬܗ ܕܣܟܠܐ
9 10 ܚܛܝܬܐ ܗܝ. ܘܛܢܦܘܬܐ ܕܒܢܝܢܫܐ ܒܝܫܬܐ. * ܘܠܥܘܠܐ ܒܝܫܬܐ ܬܕܒܪ ܐܢܘܢ ܒܝܘܡܐ ܕܐܘܠܨܢܐ.
11 * ܦܨܐ ܠܐܝܠܝܢ ܕܡܬܕܒܪܝܢ ܠܡܘܬܐ. ܘܠܡܦܪܩ ܠܐܝܠܝܢ ܕܡܬܐܚܕܝܢ ܠܩܛܠܐ. ܠܐ ܬܚܘܣ. * ܘܐܢ
12 ܬܐܡܪ ܕܠܐ ܝܕܥ ܐܢܐ. ܕܥ ܕܐܠܗܐ ܡܚܫܒܬܐ ܕܠܒܐ ܗܘ ܒܨܐ. ܘܢܛܪܗ ܕܢܦܫܟ. ܗܘ ܝܕܥ. ܘܦܪܥ
13 ܠܒܢܝܢܫܐ ܐܝܟ ܥܒܕܘܗܝ. * ܐܟܘܠ ܒܪܝ ܕܒܫܐ ܡܛܠ ܕܛܒ ܗܘ. ܘܟܘܪܬܐ ܚܠܝܬܐ ܠܚܟܟ.
14 * ܗܟܢܐ ܐܦ ܬܫܟܚ ܚܟܡܬܐ ܠܢܦܫܟ. ܘܬܗܘܐ ܠܟ ܚܪܬܐ. ܘܣܒܪܟ ܠܐ ܢܦܣܘܩ. * ܠܐ ܬܟܡܢ
15 16 ܥܘܠܐ ܒܒܝܬܗ ܕܙܕܝܩܐ. ܘܠܐ ܬܒܙܘܙ ܡܫܪܝܬܗ. * ܡܛܠ ܕܫܒܥ ܙܒܢܝܢ ܢܦܠ ܙܕܝܩܐ ܘܩܐܡ.
17 ܘܪܫܝܥܐ ܒܒܝܫܬܐ ܢܬܬܩܠܘܢ. * ܟܕ ܢܦܠ ܒܥܠܕܒܒܟ. ܠܐ ܬܚܕܐ. ܘܟܕ ܢܬܬܩܠ
18 19 ܠܐ ܢܕܘܨ ܠܒܟ. * ܕܠܡܐ ܢܚܙܐ ܡܪܝܐ. ܘܢܬܒܐܫ ܒܥܝܢܘܗܝ. ܘܢܗܦܘܟ ܪܘܓܙܗ ܡܢܗ. * ܠܐ
20 ܬܬܚܡܬ ܒܒܝܫܐ. ܘܠܐ ܬܛܢ ܒܥܘܠܐ. * ܡܛܠ ܕܠܒܝܫܐ ܠܐ ܗܘܝܐ ܚܪܬܐ. ܫܪܓܐ ܕܪܫܝܥܐ ܢܕܥܟ.
21 22 ܕܚܠ ܠܡܪܝܐ ܒܪܝ. ܘܬܡܠܘܟ. ܘܥܡ ܫܛܝܐ ܠܐ ܬܬܚܠܛ. * ܡܛܠ ܕܡܢ ܫܠܝܐ ܢܐܬܐ
23 ܬܒܪܗܘܢ. ܘܫܘܠܡܐ ܕܫܢܝܗܘܢ ܡܢܘ ܝܕܥ. * ܗܠܝܢ ܠܚܟܝܡܐ ܐܡܪ ܐܢܐ. ܠܡܣܒ ܒܐܦܐ
24 ܒܕܝܢܐ ܠܐ ܫܦܝܪ. * ܐܦ ܠܐ ܠܡܐܡܪ ܠܚܛܝܐ ܕܙܕܝܩ ܐܢܬ. ܕܢܠܘܛܘܢܗ ܥܡܡܐ ܘܢܚܣܕܘܢܗ
25 26 ܐܡܘܬܐ. * ܘܠܡܟܣܢܐ ܢܬܒܣܡܘܢ. ܘܥܠܝܗܘܢ ܬܐܬܐ ܒܘܪܟܬܐ ܛܒܬܐ. * ܘܣܦܘܬܐ ܢܢܫܩܘܢ
27 ܕܐܝܠܝܢ ܕܡܟܣܝܢ. * ܛܝܒ ܒܫܘܩܐ ܥܒܕܝܟ. ܘܬܩܢ ܒܚܩܠܟ. ܘܡܢ ܒܬܪܟܢ ܬܒܢܐ ܒܝܬܟ.
28 29 * ܠܐ ܬܗܘܐ ܣܗܕܐ ܕܫܘܩܪܐ ܥܠ ܚܒܪܟ. ܘܠܐ ܬܦܬܟܝܘܗܝ ܒܣܦܘܬܟ. * ܘܠܐ ܬܐܡܪ ܕܐܥܒܕ ܠܗ
ܐܝܟ ܕܥܒܕ ܠܝ. ܘܐܦܪܘܥܝܘܗܝ ܐܝܟ ܥܒܕܘܗܝ.

Nam ſcelus meditatur cor eorum, & iniquitatem 2
loquuntur labia eorum. Sapientiâ 3
conſtruitur domus, & prudentiâ perfectè
diſponitur : Et ſcientiâ implentur cellaria 4
omnigenis opibus, honore, ac ſuavitate. Sapiens 5
præſtantior eſt forti, & vir ſcientificus
pollente viribus. Commotione inſtituitur 6
bellum : ſalus autem, multitudine conſilii.
Sapientia dejicit ſtultú, & in porta non aperiet 7
os ſuum. Qui meditatur malè agere, 8
vir ſceleratus appellatur. Cogitatio ſtulti 9
peccatum eſt : & abominatio hominis,malum.
Sceleratos autem calamitas reget in 10
die tribulationis. Libera eos qui rapiuntur 11
ad mortem : & redimere eos qui detinentur
ad necem ne parcas. Quòd ſi dicas, Non 12
novi, ſcias quòd cogitationem cordis Deus
ſcrutatur, & obſervator animæ tuæ ipſe novit,
reddétque homini juxta opera ſua.Comede 13
fili mi mel, quia bonum eſt, & favus dulcis
in palato tuo. Talem quoque experiêris 14
ſapientiam animæ tuæ, erítque tibi finis, &
ſpes tua non excindetur. Ne inſidioſè ſtruas 15
iniquitatem in domo juſti, & ne diripias habitationem
ejus. Nam ſeptem vicibus cadit 16
juſtus, & reſurgit:impii verò in malo deſtruentur.
Cùm ceciderit inimicus tuus, ne læteris: 17
cúmque deſtruetur,ne exultet cor tuum:
Ne fortè videat Dominus & diſpliceat in oculis 18
ejus, avertátque iram ſuam ab illo. Ne 19
invideas malis,nec æmuleris nefarios. Malis 20
enim non erit finis,& lucerna nefariorum extinguetur.
Time fili mi Dominum, ut regnes 21
: & cum ſtultis ne commiſcearis. Nam 22
ſubitò veniet contritio eorum, & terminum
annorum eorum quis novit ? Hæc ſapientibus 23
dico. Rationem habere perſonarum in
judicio, non eſt bonum : Neque dicere ſcelesto, 24
Juſtus es : huic *enim* maledicent populi,
& contumeliis afficient gentes. Qui autem 25
corripiunt,delectabuntur, & ſuper ipſos
veniet benedictio bona : Et labia deoſculabuntur 25
eorum qui arguunt. Para in platea 27
opera tua, & diſpone in agro tuo, & poſtea
ædificabis domum tuam. Ne ſis teſtis falſus 28
contra proximum tuum, & ne comminuas
eum labiis tuis. Nec dicas,Faciam illi quemadmodum 29
fecit mihi, & rependam ei ſecundùm
opera ſua.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

2 3 * فإن قلبهم يتلوا أمور كاذبة * وشفاههم تتكلم دواعي الأتعاب * المنزل بالحكمة يبني *
4 5 وبالفهم يقوم * وبالحس تمتلي خزاينه من كل ثروة كريمة ونفيسة * الحكيم أفضل من
6 القوي * والرجل الحاوي فطنة أفضل من فلاحة عظيمة * بتدبير يصير القتال * والمعرفة تصير
7 8 بقلب ذي مشورة * الحكمة وذكر المعاد صالحة في أبواب الحكماء * الحكماء ما يزيغون عن
9 شريعة الرب * بل يفكرون فيها في الجموع والمجالس * الموت يلقي من لا أدب لهم * والغبي
10 يموت في خطاياه * النجاسة للرجل أن يتدنس بالفساد في اليوم السيء * وفي يوم الاغتمام إلى أن
11 12 يفني * أنقذ المسوقين إلى الموت * ولا تشح أن تبتاع مقتولين * فإن قلت ما عرفت هذا
فاعلم أن الرب يعرف قلوب الكل * والخالق النسمة لكافة البرايا ذلك قد عرف الكافة * وهو
13 الذي يقضي لكل أحد نظير أعماله * يا بني كل عسلا * فإن الشهد صالح * فيحلي حلقك *
14 * فهكذا تحس بالحكمة في نفسك * لأنك إن وجدتها ستكون وفاتك حميدة * وما يتركك الرجاء *
15 16 * لا تقتادن منافقا إلى مرعى المقسطين * ولا يطغينك شبع الجوف * فإن المقسط يسقط سبع
17 مرات وينهض * والمنافقون يضعفون في الشرور * إن يسقط عدوك فلا تشمت به * ولا ترفع ذهنك
18 19 وتعرقله * فإن الرب يرى ذلك فما يرضيه * ويرد عنه غضبه * لا تسر بالعاملين الأسواء * ولا
20 21 تشابهن الخطاة * فلا تصير ولدا للأشرار * ومصباح المنافقين ينطفي * يا بني اتق الله وارهب
22 الملك * ولا تخالفن أحدا منهما * لأن المنافقين يعذبون بغتة * ومن يعرف فروق تعاذيبهم *
ابن الهلاك إذا حفظ كلاما يكون خارجا عنه * وإنما قبله قبولا فقط * فلا يقولن للملك
شيا من لسانه كاذبا * فإن ما يخرج من لسانه لفظا كاذبا *

Quoniam cor eorum meditatur negotia 2
mendacia, & labia ipſorum loquuntur
ærumnas laborum. Domicilium ſapientiâ 3
ædificatur, & prudentiâ dirigitur. Et 4
ſenſu implentur cellaria ejus cunctis opibus
pretioſis ac nobilibus. Sapiens præſtantior 5
eſt forti : & vir poſſidens doctrinam
nobilior eſt fœlicitate maximâ.
Cùm ductu fit pugna, & ſcientia fit in 6
corde habente conſilium. Sapientia & memoria 7
finis, bona ſunt in portis ſapientum.
Sapientes non aberrant à lege Domini 8
: ſed cogitant de illa in congregationibus
& conſeſſibus.Mors dejiciet eos qui 9
diſciplinam non habent : & ſtultus morietur
in peccatis ſuis. Immunditia viri eſt 10
maculare ſe corruptione in die mala & in
die triſtitiæ,donec pereat. Redime ductos 11
ad mortem, & ne parcas emere occiſos.
Quòd ſi dicas, Non novi hoc, ſcito quòd 12
Dominus novit corda omnium : & qui
creavit ſpiritum cunctis creaturis, ipſe
jam novit omnia, & ipſe eſt qui decernit
unicuique ſecundùm opera ſua.
O fili mi, comede mel, quia favus bonus 13
eſt, & dulcorabitur guttur tuum :
Et ſic ſenties ſapientiam in anima tua. 14
Nam ſi inveneris illam, erit obitus tuus
glorioſus, & non deſtituet te ſpes. Ne 15
ducas impium ad paſcuam juſtorum, &
ne ſeducat te ſaturitas ventris. Nam 16
juſtus cadet ſeptem vicibus, & eriget
ſe : & impii infirmabuntur in malis.
Si ceciderit inimicus tuus, ne læteris 17
de illo, & ne extollas mentem tuam
& illaquees eum. Nam Dominus videbit 18
hoc, & non placebit ei, & avertet
ab illo furorem ſuum. Ne gaudeas 19
in operantibus mala, & ne imiteris peccatores.
Non enim erit proles improbis, 20
& lucerna impiorum extinguetur.
O fili mi, time Deum, & metue regem, 21
& ne contravenias ulli eorum.
Quoniam ſceleſti cruciabuntur ſubitò, 22
& quis novit ſpecies cruciatuum eorum ?
Filius perditionis, ſi cuſtodierit
ſermonem, erit exemptus ex ea : at
verò ſuſcipit eum ſuſceptione tantùm.
Ne dicat regi quidquam is cujus lingua
mendax eſt ; non enim promit è lingua
ſua ſermonem falſum.

משלי: כה

.corde carentis hominis vineam super & : transivi pigri hominis agrum Super
עַל־שְׂדֵה אִישׁ־עָצֵל עָבַרְתִּי וְעַל־כֶּרֶם אָדָם חֲסַר־לֵב׃ 30
: cardui ejus facies operuerant , urticæ ipsum totum ascendit ecce Et
וְהִנֵּה עָלָה כֻלּוֹ קִמְּשֹׂנִים כָּסּוּ פָנָיו חֲרֻלִּים 31
posui , ego vidi Et .erat destructa ejus lapidum maceria &
וְגֶדֶר אֲבָנָיו נֶהֱרָסָה׃ וָאֶחֱזֶה אָנֹכִי אָשִׁית 32
parum , somniorum Parum .eruditionem accepi , vidi : meum cor
לִבִּי רָאִיתִי לָקַחְתִּי מוּסָר׃ מְעַט שֵׁנוֹת מְעַט 33
veniet Et .jacendum ad manuum complicationis parum : dormitationum
תְּנוּמוֹת מְעַט חִבֻּק יָדַיִם לִשְׁכָּב׃ וּבָא־ 34
.clypei vir tanquam tui defectus & : tua paupertas viator
מִתְהַלֵּךְ רֵישֶׁךָ וּמַחְסֹרֶיךָ כְּאִישׁ מָגֵן׃

CAP. XXV. כה

Chizchijah viri transtulerunt quas : Selomoh parabolæ hæ Etiam
גַּם־אֵלֶּה מִשְׁלֵי שְׁלֹמֹה אֲשֶׁר הֶעְתִּיקוּ אַנְשֵׁי חִזְקִיָּה 1
gloria & : verbum celare Dei Gloria .Jehudah regis
מֶלֶךְ־יְהוּדָה׃ כְּבֹד אֱלֹהִים הַסְתֵּר דָּבָר וּכְבֹד 2
terræ & , altitudine in Cœlorum .verbum investigare regum
מְלָכִים חֲקֹר דָּבָר׃ שָׁמַיִם לָרוּם וָאָרֶץ 3
Remove .investigatio non regum cordis & : profunditate in
לָעֹמֶק וְלֵב מְלָכִים אֵין חֵקֶר׃ הָגוֹ 4
impium Remove .vas conflanti egredietur & : argento de scorias
סִיגִים מִכָּסֶף וַיֵּצֵא לַצֹּרֵף כֶּלִי׃ הָגוֹ רָשָׁע 5
te decorum ostendas Ne .ejus soliũ justitia in firmabitur & : regis facies ad
לִפְנֵי־מֶלֶךְ וְיִכּוֹן בַּצֶּדֶק כִּסְאוֹ׃ אַל־תִּתְהַדַּר 6
melius Quia .steteris ne magnorum loco in & : regis facies ad
לִפְנֵי־מֶלֶךְ וּבִמְקוֹם גְּדֹלִים אַל־תַּעֲמֹד׃ כִּי טוֹב 7
viderunt quem : magnifici facies ad te demittere præ , huc ascende , tibi dicere
אֲמָר־לְךָ עֲלֵה הֵנָּה מֵהַשְׁפִּילְךָ לִפְנֵי נָדִיב אֲשֶׁר רָאוּ
aliquid fortè ne , citò litigandum ad egrediaris Ne .tui oculi
עֵינֶיךָ׃ אַל־תֵּצֵא לָרִב מַהֵר פֶּן מַה־ 8
.tuum socium te afficiendo pudore in : ejus novissimo in facias
תַּעֲשֶׂה בְּאַחֲרִיתָהּ בְּהַכְלִים אֹתְךָ רֵעֶךָ׃
.reveles ne alterius secretum & : tuo amico cum litiga tuum Litigium
רִיבְךָ רִיב אֶת־רֵעֶךָ וְסוֹד אַחֵר אַל־תְּגָל׃ 9
.revertatur non tua infamia & : audiens te afficiat probris fortè Ne
פֶּן־יְחַסֶּדְךָ שֹׁמֵעַ וְדִבָּתְךָ לֹא תָשׁוּב׃ 10
.suis rotis super dictum verbum : argenti transparentibus thecis in auri Poma
תַּפּוּחֵי זָהָב בְּמַשְׂכִּיּוֹת כָּסֶף דָּבָר דָּבֻר עַל־אָפְנָיו׃ 11
.audiente aure super sapiens arguens : obrizi ornamentũ & , auri Inauris
נֶזֶם זָהָב וַחֲלִי־כָתֶם מוֹכִיחַ חָכָם עַל־אֹזֶן שֹׁמָעַת׃ 12
:illum mittentibus fidelis legatus , messis die in nivis frigus Sicut
כְּצִנַּת־שֶׁלֶג בְּיוֹם קָצִיר צִיר נֶאֱמָן לְשֹׁלְחָיו 13
:non pluvia & , ventus & , Vapores .faciet reverti sui domini animam &
וְנֶפֶשׁ אֲדֹנָיו יָשִׁיב׃ נְשִׂיאִים וְרוּחַ וְגֶשֶׁם אָיִן 14
persuadebitur narium longitudine In .falsitatis dono in se jactans vir
אִישׁ מִתְהַלֵּל בְּמַתַּת־שָׁקֶר׃ בְּאֹרֶךְ אַפַּיִם יְפֻתֶּה 15
, invenisti Mel .os confringet mollis lingua & : gubernator
קָצִין וְלָשׁוֹן רַכָּה תִּשְׁבָּר־גָּרֶם׃ דְּבַשׁ מָצָאתָ 16
fac Rarum .illud evomas & , eo satieris fortè ne : tuam sufficientiam comede
אֱכֹל דַּיֶּךָּ פֶּן־תִּשְׂבָּעֶנּוּ וַהֲקֵאתוֹ׃ הֹקַר 17
.te habeat odio & , te satietur fortè ne : tui socii domo à tuum pedem
רַגְלְךָ מִבֵּית רֵעֶךָ פֶּן־יִשְׂבָּעֲךָ וּשְׂנֵאֶךָ׃
suum socium in respondens vir : acuta sagitta & , gladius & , Dispergens
מֵפִיץ וְחֶרֶב וְחֵץ שָׁנוּן אִישׁ עֹנֶה בְרֵעֵהוּ 18
.falsitatis testimonium
עֵד שָׁקֶר׃

Versio VULG. LAT.

30 Per agrũ hominis pigri transivi, & per vineam viri stulti: 31 Et ecce totum repleverant urticæ, & operuerant superficiem ejus spinæ, & maceria lapidũ destructa erat. 32 Quod cũ vidissem, posui in corde meo, & exemplo didici disciplinã. 33 Parùm, inquam, dormies, modicũ dormitabis, pauxillùm manus conseres, ut quiescas: 34 Et veniet tibi quasi cursor egestas, & mendicitas quasi vir armatus.

CAP. XXV.

1 HÆ quoq; parabolæ Salomonis, quas transtulerant viri Ezechiæ regis Juda. 2 Gloria Dei est celare verbũ, & gloria regum investigare sermonem. 3 Cœlũ sursũ, & terra deorsũ, 4 & cor regũ inscrutabile. Aufer rubiginẽ de argento, & egredietur vas purissimũ. 5 Aufer impietatem de vultu regis, & firmabitur justitiâ thron⁹ ej⁹. 6 Ne glorios⁹ appareas corã rege, & in loco magnorũ ne steteris. 7 Meli⁹ est enim ut dicatur tibi, Ascende huc; quàm ut humilieris corã principe. 8 Quæ viderunt oculi tui, ne proferas in jurgio citò: ne posteà emendare non possis, cùm dehonestaveris amicũ tuũ. 9 Causam tuã tracta cũ amico tuo, & secretũ extraneo ne reveles: 10 Ne fortè insultet tibi cùm audierit, & exprobrare non cesset. Gratia & amicitia liberant: quas tibi serva, ne exprobrabilis fias. 11 Mala aurea in lectis argenteis, qui loquitur verbũ 12 in tempore suo. Inauris aurea, & margaritũ fulgens, qui arguit sapientẽ, & aurem obedientẽ. 13 Sicut frigus nivis in die messis, ita legat⁹ fidelis ei, qui misit eũ, animã ipsius requiescere facit. 14 Nubes, & ventus, & pluviæ non sequentes, vir gloriosus, & promissa non complens. 15 Patientiâ lenietur princeps, & lingua mollis confringet duritiã. 16 Mel invenisti, comede ꝙ sufficit tibi, ne fortè satiat⁹ evomas illud. 17 Subtrahe pedem tuũ de domo proximi tui, ne quando satiatus oderit te. 18 Jaculum, & gladius, & sagitta acuta, homo qui loquitur contra proximum suum falsum testimonium.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

† Τίς συνέστρεψε ὕδωρ ἐν ἱματίῳ; † τίς ἐκράτησε πάντων τῶν ἄκρων τῆς γῆς; † τί ὄνομα αὐτῷ; (λ) ἢ τί ὄνομα τοῖς τέκνοις 5 αὐτοῦ; † Πάντες γὰρ λόγοι Θεοῦ πεπυρωμένοι, (μ) † ὑπερασπίζει δὲ αὐτὸς τῶν εὐλαβουμένων 6 αὐτόν. † Μὴ προσθῇς τοῖς λόγοις αὐτοῦ, ἵνα 7 μὴ ἐλέγξῃ σε καὶ ψευδὴς γένῃ. † Δύο αἰτοῦμαι παρὰ σοῦ, † μὴ ἀφέλῃς μου χάριν πρὸ 8 τοῦ ἀποθανεῖν με. † Μάταιον λόγον καὶ ψευδῆ μακράν μου ποίησον, πλοῦτον δὲ καὶ πενίαν μή μοι δῷς, † σύνταξον δέ μοι (ν) τὰ 9 δέοντα καὶ τὰ αὐτάρκη· † Ἵνα μὴ πλησθεὶς ψευδὴς γένωμαι, καὶ εἴπω, Τίς με ὁρᾷ; † ἢ πενηθεὶς κλέψω, καὶ ὀμόσω τὸ ὄνομα τοῦ 10 Θεοῦ. † Μὴ παραδῷς οἰκέτην εἰς χεῖρας δεσπότου, † μή ποτε καταράσηταί σε καὶ ἀ- 11 φανισθῇς. † Ἔκγονον κακὸν πατέρα κατα- 12 ρᾶται, † τὴν δὲ μητέρα οὐκ εὐλογεῖ. † Ἔκγονον κακὸν δίκαιον ἑαυτὸν κρίνει, † τὴν (ˆ) δ' 13 ἔξοδον αὐτοῦ οὐκ ἀπένιψεν. † Ἔκγονον κακὸν ὑψηλοὺς ὀφθαλμοὺς ἔχει, † τοῖς δὲ βλεφάροις 14 αὐτοῦ ἐπαίρεται. † Ἔκγονον κακὸν μαχαίρας τοὺς ὀδόντας ἔχει, † καὶ τὰς μύλας, (ξ) τομίδας, ὥστε ἀναλίσκειν καὶ κατεσθίειν τοὺς ταπεινοὺς ἀπὸ τῆς γῆς, † καὶ τοὺς πένητας αὐτῶν 23 ἐξ ἀνθρώπων. Cap. 24. † Ταῦτα δὲ λέγω ὑμῖν τοῖς σοφοῖς ἐπιγινώσκειν. † (ο) 24 αἰδεῖσθαι πρόσωπον ἐν κρίσει οὐ καλόν. † Ὁ εἰπὼν τὸν ἀσεβῆ, Δίκαιός ἐστιν, † ἐπικατάρατος λαοῖς ἔσται καὶ μισητὸς εἰς ἔθνη. 25 † Οἱ δὲ ἐλέγχοντες βελτίους φανοῦνται, † ἐπ' 26 αὐτοὺς δὲ ἥξει (π) εὐλογία. † Χείλη δὲ φιλή- 27 σουσιν ἀποκρινόμενα λόγους (ρ) ἀγαθούς. † Ἑτοίμαζε εἰς τὴν ἔξοδον τὰ ἔργα σου, † καὶ παρασκευάζου εἰς τὸν ἀγρὸν, † καὶ πορεύου καθόπισθέν μου, † καὶ ἀνοικοδομήσεις τὸν οἶκόν 28 σου. † Μὴ ἴσθι ψευδὴς μάρτυς ἐπὶ σὸν πο- 29 λίτην, † μηδὲ πλατύνου σοῖς χείλεσι. † Μὴ εἴπῃς, Ὃν τρόπον ἐχρήσατό μοι, χρήσομαι αὐτῷ, † τίσομαι δὲ αὐτὸν ἅ με ἠδίκη- 30 σεν. † Ὥσπερ γεώργιον ἀνὴρ ἄφρων, † καὶ ὥσπερ ἀμπελὼν ἄνθρωπος ἐνδεὴς φρενῶν. 31 † Ἐὰν ἀφῇς αὐτὸν, χερσωθήσεται † καὶ χορτομανήσει ὅλος, καὶ γίνεται ἐκλελειμμένος, † οἱ δὲ φραγμοὶ τῶν λίθων αὐτοῦ κατασκά- 32 πτονται. † Ὕστερον ἐγὼ μετενόησα, † ἐπέβλε- 33 ψα τοῦ ἐκλέξασθαι παιδείαν. † Ὀλίγον νυστάζω, ὀλίγον δὲ καθυπνῶ, † ὀλίγον δὲ ἐν- 34 αγκαλίζομαι χερσὶ στήθη. † Ἐὰν δὲ τοῦτο ποιῇς, ἥξει προπορευομένη ἡ πενία σου, † καὶ (σ) ἡ ἔνδειά σου ὥσπερ ἀγαθὸς δρομεύς.

15 Cap. 30. † Τῇ βδέλλῃ (τ) τρεῖς θυγατέρες ἦσαν ἀγαπήσει ἀγαπώμεναι, † καὶ αἱ (υ) τρεῖς αὗται οὐκ (φ) ἐνεπίμπλασαν αὐτήν, † καὶ ἡ τετάρ- 16 τη οὐκ ἠρκέσθη εἰπεῖν, Ἱκανόν. † Ἅδης καὶ ἔρως γυναικὸς, † (χ) καὶ γῆ οὐκ ἐμπιπλαμένη ὕδατος, † καὶ ὕδωρ καὶ πῦρ οὐ μὴ εἴπωσιν, 17 Ἀρκεῖ. † Ὀφθαλμὸν καταγελῶντα πατρὸς, † καὶ ἀτιμάζοντα γῆρας μητρὸς, † (ψ) ἐκκόψαισαν αὐτὸν κόρακες ἐκ τῶν φαράγγων, † καὶ καταφάγοισαν αὐτὸν νεοσσοὶ ἀετῶν.

Quis (d) convertit aquam in vestimento? (e) quis tenuit omnia extrema terræ? quod nomen ei? aut quod nomen (f) filiis ejus? 5 (g) Omnia enim verba Dei ignita: (h) protegit autem ipse eos, qui 6 (i) reverentur ipsum. Ne addas verbis ejus, ut non arguat te, & 7 fias mendax. Duo peto à te; nè (k) auferas à me gratiam, ante- 8 quàm ego moriar. (l) Vanum verbum, & mendax longè fac à me: divitias autem, & paupertatem nè dederis mibi: (m) constitue autem mihi, quæ sunt necessaria, & 9 sufficientia: Ne saturatus (n) mendax fiam, & dicam, Quis me videt? aut (o) egens furer, & per- 10 jurem nomen Dei. Ne (p) tradas famulum in manus domini, nè quando maledicat te, (q) & de- 11 learis. Filius malus patrem maledicit, & matrem non benedicit. 12 (r) Filius malus justum se judicat: 13 exitum verò suũ non lavit. Filius malus sublimes oculos habet, pal- 14 pebris autem suis extollitur. Filius mal⁹ gladios dentes habet, & cultros molas, ut consumat, & (s) comedat (t) humiles de terra, & pauperes eorum ex hominibus. 23 Cap. 24. Hæc (u) autem dico vobis sapientibus (x) cognoscere. E- 24 rubescere personam in judicio non est bonum: Qui dicit impium, Justus est; maledictus populis erit, 25 & odibilis in gentibus: Qui autem arguunt, meliores parebunt: in ipsos autem veniet benedictio. (y) 26 Labia autem deosculabuntur, quæ 27 respondent verba bona. Præpara (z) in egressu opera tua, & præparare in agro, & vade post me, & ædificabis domum tuam. (ω) 28 Non sis falsus testis in tuum civem, neque (aaa) dilateris tuis la- 29 biis. Nè dixeris; Quemadmodum usus est me, utar eo: ulciscar autem eum de injuriis, quibus me 30 affecit. (b) Tanquàm ager, vir imprudens: & tanquàm vinea, ho- 31 mo egens sensu. Si dimiseris eum, desertus fiet, & sylvescet totus, & fit derelictus: sepes au- 32 tem lapidum ejus defodientur. Novissimè ego egi pœnitentiam: respexi (c) ut eligerem disciplinam. 33 Paululùm (d) dormito, paululùm autem somnum capio: paululùm verò amplexor manibus (e) pecto- 34 ra. Si autem hoc feceris; veniet procedens paupertas tua, & egestas tua tanquàm bonus cursor.

15 Cap. 30. (f) Sanguisugæ (g) tres filiæ erant dilectione dilectæ, & (h) tres ipsæ non saturaverunt eam: & quartæ non (i) suffecit 16 dicere, Satis est: Infernus, & (k) amor mulieris, & terra quæ non satiatur aquâ, & aqua & ignis 17 (l) non dicent, Satis est. Oculum, qui irridet patrem, & qui despicit senectutem matris, effodiant eum corvi de (m) convallibus, & comedant eum pulli aquilarum.

MS. A. (λ) ἢ τοῖς τέκνοις αὐτοῦ; ἵνα γνῷς. Πάντες λόγοι (μ) ὑπερασπίσει (ν) πάντα τὰ δέοντα καὶ αὐτάρκη· (ˆ) δὲ (ξ) σμίδας, ὥστε ἀναλίσκειν τοὺς ταπεινοὺς ἀπὸ τῆς γῆς, (ο) αἰδεῖσθαι πρόσωπον οὐ καλὸν ἐν κρίσει. (π) εὐλογία ἀγαθή. (ρ) Σοφούς. (σ) ἡ ἔνδεια ὥσπερ (τ) τρεῖς (υ) τρεῖς (φ) ἐνεπίμπλασαν (χ) καὶ τάρταρος, καὶ γῆ (ψ) ἐκκολάψαισαν

תרגום TARGUM.

30 על חקלי דגברא עטלא עברית ועל כרמיה דבר נשא חסר רעינא: והא סליק כליה יערי 31
וכסיו אפוי חורלי וסינא דכיפוי אתעקר: וחזית אנא ושמית לבי וחמית וקבלית מרדותא: 32
33 קליל תנום קליל תדמוך קליל תשים ידיך על חדיך ותדמוך: ותיתי ותדרכך מסכנותא 34
וצריכותא היך גברא טבלרא:

כה

1 אף אלין מתלוי דשלמה עמיקי דכתבו רחמוי דחזקיה מלכא דיהודה: יקרא דאלהא 2
3 מן דמטשי מלתא ויקרא דמלכי מן דבצי מלתא: שמיא רמין וארעא עמיקא ולבא
4 דמלכי לא מתבצי: גבו סולאנא מן סימא דנפוק מן מן צרפא: נתטריד רשיעא מן קדם 5
6 מלכא ויתקן בצדקתא כורסיה: לא תשתבהר קדם מלכא ובדוכתא דרברבי לא
7 תקום: מטול דטב דנימר לך סק הכא מן דמשפילך קדם שליטא מן דחזין עינך: 8
9 לא תפוק בדינא מסרהבאית דלא תדון באחריתא כד יחמיץ יתך חברך: דינך דון
10 עם חברך באחריתא ורזא אוחרנא לא תגלי: דלא נחסדך מן דשמע וטיבך לא הפיך:
11 חזורי דדהבא בנגודי דסמא מלתא דמלל פסיארת: קדשי דדהבא ומני דזמרגדא 12
13 מכסנותא דחכימא על אודנא דשמעא: איך קרירותא דתלגא ביומא דחצדא היכנא
14 אונגדא מהימנא למשדרוי ונפשיה דמריה מהפך: ליומא דעננא ורוחא דמטרא לאית
15 מדמי גברא דמשתבהר במהובתא דשקרא: בנגידותא דרוחא משתרגג רשאנא ומלתא
16 רכיכתא תברא גרמא: דבשא משכחת אכול סופקנך דלא תשבע ותתיבניה: כלה 17
18 רגלך מן ביתיה דרחמך דלא נסבעך ומסנך: איך פריעא וסיפא וגירא שנינא גברא
דמסהד על חבריה סהדותא דשקרא:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Per agrum viri pigri transivi, & per vineam filii hominis indigentis intel- 30
ligentia. Et ecce pullulavit tota sylva, & operuerunt superficiem ejus spi- 31
næ, & maceria lapidum ejus destructa erat. Et vidi ego & posui cor me- 32
um, & vidi & suscepi disciplinam. Parum dormitabis, & parum dormi- 33
es, parum applicabis manus tuas ad pectus tuum ut dormias. Et veniet et 34
procedet paupertas tua, & indigentia quasi vir scutatus.

CAP. XXV.

HÆ quoque sunt parabolæ Salomonis profundæ, quas scripserunt amici 1
Ezechiæ regis Juda. Gloria Dei qui celat verbum, at gloria regum qui in- 2
vestigat sermonem. Cœli sunt excelsi & terra profunda, & cor regum 3
investigabile. Colligite scoriam de argento, ut egrediatur vas à confla- 4
torio. Ejiciatur impius à facie regis, & præparabitur in justitia solium ejus. 5
Ne splendidus sis in conspectu regis, et in sede principum ne stes. Quoniam 6
melius est ut dicat tibi, Ascende huc; quàm ut dejiciat te coram dominato- 7
re, quem viderunt oculi tui. Ne egrediaris ad jurgium citò, ut non con- 8
tendas posteà quando exasperaverit te amicus tuus. Causam tuam judica 9
cum socio tuo in novissimo, et secretum alterius ne reveles. Ut non expro- 10
bret tibi qui audierit, et famam tuam non pervertat. Mala aurea cum cæ- 11
laturis argenteis, qui loquitur verbum opportunè. Inauris aurea, et vasa 12
smaragdina, correptio sapientis in aurem audientem. Sicut frigus nivis in 13
die messis, sic est legatus fidelis his qui miserunt eum, et animam domini
sui reficit. Diei nubium et venti in quo non est pluvia, similis est vir qui 14
gloriatur in dono falsitatis. In patientia spiritus lactatur princeps, et ver- 15
bum molle confringit os. Mel invenisti, comede quod tibi sufficit, ne sati- 16
atus evomas illud. Prohibe pedem tuum à domo socii tui, ne satietur et 17
oderit te. Sicut malleus et gladius et sagitta acuta, sic est vir qui testifi- 18
catur contra proximum suum testimonium falsum.

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

30 * ܥܠ ܚܩܠܗ ܕܓܒܪܐ ܚܒܢܢܐ ܥܒܪܬ. ܘܥܠ ܟܪܡܗ ܕܒܪܢܫܐ ܚܣܝܪ ܠܒܐ. *ܘܗܐ ܟܠܗ
31 ܐܣܠܩ ܟܘܒܐ. ܘܚܦܝܗ ܐܦܘܗܝ ܚܘܠܕܐ. ܘܣܝܓܘܗܝ ܕܟܐܦܐ ܐܬܦܫܚܘ. * ܘܚܙܝܬ ܐܢܐ.
32 ܘܣܡܬܗ ܒܠܒܝ: ܘܩܒܠܬ ܡܪܕܘܬܐ. * ܘܐܢ ܩܠܝܠ ܬܕܡܟ: ܘܩܠܝܠ ܬܬܢܡܢܡ ܐܢܬ.
33 ܘܩܠܝܠ ܬܣܝܡ ܐܝܕܟ ܥܠ ܚܕܝܟ: * ܬܐܬܐ ܥܠܝܟ ܡܣܟܢܘܬܐ. ܘܢܕܪܟܟ ܚܘܣܪܢܐ
34 ܐܝܟ ܓܒܪܐ ܡܗܠܟܢܐ.

* ܫܠܡܘ ܡܬܠܐ ܕܫܠܝܡܘܢ *

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܗ *

1 * ܘܐܦ ܗܠܝܢ ܡܬܠܘܗܝ ܕܫܠܝܡܘܢ ܥܡܝܩܐ. ܕܟܬܒܘ ܪܚܡܘܗܝ ܕܚܙܩܝܐ ܡܠܟܐ
2 ܕܝܗܘܕܐ. * ܫܘܒܚܗ ܕܐܠܗܐ ܡܢ ܕܡܛܫܐ ܡܠܬܐ. ܘܫܘܒܚܗ ܕܡܠܟܐ ܡܢ ܕܒܨܐ
3 ܡܠܬܐ. * ܫܡܝܐ ܪܡܝܢ. ܘܐܪܥܐ ܥܡܝܩܐ. ܘܠܒܗ ܕܡܠܟܐ ܠܐ ܡܬܒܨܐ. * ܓܪܘܦ ܣܘܐܓܐ
4 ܡܢ ܣܐܡܐ ܕܢܦܘܩ ܡܐܢܐ ܟܠܗ ܕܟܐ. *ܬܬܒܕܪ ܥܘܠܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. ܘܢܬܬܩܢ ܟܘܪܣܝܗ
5 ܒܙܕܝܩܘܬܐ. * ܠܐ ܬܫܬܒܗܪ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. ܘܒܕܘܟܬܐ ܕܪܘܪܒܢܐ ܠܐ ܬܩܘܡ. * ܛܒ ܗܘ ܓܝܪ
6 ܕܢܐܡܪ ܠܟ. ܐܬܩܪܒ ܠܥܠ. ܡܢ ܕܢܡܟܟܟ. ܩܕܡ ܫܠܝܛܐ. ܡܕܡ ܕܚܙܝ ܥܝܢܝܟ. ܗܘ
7 ܐܡܪ. * ܘܠܐ ܬܦܘܩ ܠܚܪܝܢܐ ܒܥܓܠ. ܕܠܐ ܟܕ ܬܬܚܪܐ ܢܚܣܕܘܢܟ ܪܚܡܝܟ. * ܕܝܢܟ
8 ܕܘܢ ܥܡ ܚܒܪܟ. ܘܪܐܙܐ ܕܢܘܟܪܝܐ ܠܐ ܬܓܠܐ. * ܕܠܐ ܢܚܣܕܟ ܫܡܘܥܐ. ܘܢܬܪܥܘܢ ܥܠܝܟ ܣܓܝܐܐ.
9 * ܬܦܘܚܐ ܕܕܗܒܐ ܒܡܐܢܐ ܕܣܐܡܐ. ܗܟܢܐ ܡܠܬܐ ܕܒܙܒܢܗ. * ܩܕܫܐ ܕܕܗܒܐ ܘܣܪܕܐ ܛܒܐ.
10 ܗܟܢܐ ܡܟܣܢܘܬܐ ܕܚܟܝܡܐ ܠܐܕܢܐ ܕܫܡܥܐ. * ܐܝܟ ܩܪܝܪܘܬܐ ܕܬܠܓܐ ܒܝܘܡܐ ܕܚܨܕܐ.
11 ܗܟܢܐ ܫܠܝܚܐ ܡܗܝܡܢܐ ܠܡܫܕܪܢܘܗܝ: ܘܢܦܫܐ ܕܡܪܘܗܝ ܡܢܝܚ.
12 * ܐܝܟ ܕܡܢ ܥܢܢܐ ܘܪܘܚܐ ܡܛܪܐ ܠܐ ܢܚܬ. ܗܟܢܐ ܗܘ ܓܒܪܐ ܕܡܫܬܒܗܪ ܒܡܘܗܒܬܐ
13 ܕܓܠܐ. * ܒܢܓܝܪܘܬ ܪܘܚܐ ܡܬܦܝܣ ܫܠܝܛܐ. ܘܠܫܢܐ ܪܟܝܟܐ ܬܒܪ ܓܪܡܐ. * ܕܒܫܐ
14 ܕܐܫܟܚܬ ܐܟܘܠ ܐܝܟ ܣܦܩܘܬܟ. ܕܠܐ ܟܕ ܬܣܒܥ ܬܬܦܠܛܝܘܗܝ.
15 * ܠܐ ܬܣܓܐ ܪܓܠܟ ܠܒܝܬܗ ܕܚܒܪܟ.
16 ܕܠܐ ܢܣܒܥܟ ܘܢܣܢܝܟ.
17 * ܐܝܟ ܦܘܠܣܐ ܘܣܝܦܐ ܘܓܐܪܐ ܕܚܪܝܦ. ܗܟܢܐ ܗܘ ܓܒܪܐ ܕܣܗܕ ܣܗܕܘܬܐ ܕܓܠܐ
18 ܥܠ ܚܒܪܗ.

Prope agrum hominis pigri tranſivi, & prope vineam hominis excordis: 30 Et aſcendens 31 tota repleta eſt dumis, & operuerant ſuperficiem ejus talpæ, & ſepes ejus lapideæ dirutæ erant. Id ego vidi, & repoſui in corde 32 meo, & eruditionem accepi. Si enim 33 paululum dormiſcas, & paululùm dormias, & paululùm ponas manum tuam ſuper pectus tuum, Præcedet te paupertas, & apprehendet 34 te inopia ceu vir tabellarius.

Finis Proverbiorum Salomonis.

CAP. XXV.

HÆc etiam ſunt proverbia Salomonis profunda, 1 conſcripta ab amicis Ezeciæ regis Juda. Gloria Dei, qui celat verbum: at gloria 2 regis, qui ſcrutatur verbum. Cœli ſunt 3 ſublimes, terra profunda, & cor regis non perveſtigatur. Seligite ſcoriam ab argento, 4 ut exeat vas purgatum. Diſſipentur iniqui 5 à conſpectu regis, & firmabitur ſolium ejus in juſtitia. Ne glorieris coram rege, & in loco 6 magnatum ne ſteteris. Præſtat enim ut 7 dicat tibi. Accede ſuperiùs, potius quàm ut te humiliet. Coram præfecto, quod viderunt oculi tui, illud dicito. Et ne exeas ad litigandum 8 citó: ne cùm litigaveris, tandem te vituperent amici tui. Cauſam tuam age cum 9 ſocio tuo, & arcanum alienum ne reveles: Ne fortè is qui te audit, te vituperet, & cogitent 10 de te multi: Malum aureū in calice argenteo, 11 qui profert verbum *tempeſtivé*. *Ut* 12 inauris aure⁹ & hyacinthus optimus, ita objurgatio ſapientū auri obtemperantiū. Quemadmodū 13 cùm deſcendit nix in die meſſis, temperat æſtum: ſic fidus legat⁹ mittentibus eū, & animam dominorū ſuorum reſtaurat. Ut nubibus 14 ventiſque præſentibus nulla eſt pluvia, eodem modo homo qui ſe jactat de donis falſis. Longanimitate pellicit princeps, & lingua 15 molli frangit oſſa. Mel cùm repereris, 16 ſufficientiā tuā comede: ne cùm ſatiat⁹ fueris evomas illud. Ne ſit frequens pes tu⁹ ad domum 17 amici tui: ne te ſatiat⁹ oderit te. Qualis 18 eſt clava, gladi⁹, & ſagitta acuminata: talis eſt homo qui reddit teſtimonium falſum contra proximum ſuum.

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

لسان الملك سيف لحمي من دفع اليه يسحقه * لانه اذا احتد غضبه يفني الناس مع اعضايهم
وياكل عظام الناس * ثم يحرقها كاحراق لهيب النار * حتي يصير طعاما لفراخ النسور * يا بني
ارهب اقوالي واذا قبلتها لا تندم * هذه الاقوال يقولها الانسان للذين يصدقون الله ويكفوا *

* الفصل الثلثون *

2 * الا انني اوفر غباوة من جميع الناس * وليست في فطنة الناس * الله علمني حكمة وعرفت معرفة
3 القديسين * من صعد الي السماء ونزل * من جمع الرياح في حضنه * من حقن الماء وجمعه في ثوبه *
4 من مسك كافة اطراف الارض وغاياتها * ما اسمه وما اسم والده * اقوال الله كلها محماه ممتحنة * وهو
5 يعضد المتورعين منه * لا تزيدن في اقواله شيا * ليلا يوبخك وتصير كاذبا * ثنتين اطلب منك *
6 فلا تمنع عني المنة بهما قبل وفاتي * الكلام الباطل والكاذب اجعله بعيدا مني * وغنا وفقرا لا
7 تعطني * بل رتب لي ما احتاجه واكتفي به * لكيلا استغني فاصير كذوبا واقول من يراني * او
8 افتقر فاسرق واحلف باسم الله * لا تدفعن عبدا الي يدي سيده * لكيلا يلعنك فتبيد * الولد
9 الردي يلعن اباه * وما يبارك منه * الولد الردي يعتقد نفسه مقسطا * وما يستعفي لشخوصه *
10 * الولد الردي له عينان هايلتان ويرفع جفونه * الولد الردي اسنانه سيوف واضراسه فوس
11 قواطع * حتي انه يبيد الضعفاء من الارض وياكلهم والفقراء من الناس ** هذه الاقوال اقولها
12 لكم ايها الحكماء فهمكم * ليس محمودا محاباة وجه احد في القضاء * من يقول ان المنافق عدل
13 هو سيكون عند الشعوب ملعونا وفي الامم ممقوتا * والذين يوبخون يظهرون مفضلين * والبركة
14 الصالحة توافيهم * ويصافحون الشفوات التي تجاوب اقوالا صالحة * سو اعمالك للانصراف
23 والشخوص * وتاهب في الحقل * واذهب وراي * فتعيد ابنية منزلك * ولا تعرف شاهدا كاذبا
24 على مدينتك * ولا تعرض شفتيك *
25
26
27
28

Lingua regis gladius eſt carneus; qui ſe objecerit illi, conteret eum: quoniam cùm exacuetur furor ejus, perdet homines cum membris eorum, & comedet oſſa hominum, tùm comburet illa quaſi incendio flammæ ignis: ita ut fiant eſca pullis aquilarum. O fili mi, time eloquia mea, & cum acceperis ea, non te pœnitebit. Hujuſmodi ſermones dicit homo iis qui credunt in Deum, & ſeſe retraxerunt.

Reliquos huj⁹ capitis verſiculos reperies poſt ver. 14. ſequentis. c. 30.

CAP. XXX.

AT verò ego ſum ſtultiſſimus omnium 2 hominum, & non eſt in me intellectus hominum. Deus docuit me ſapientiam, 3 & ſcivi ſcientiam ſanctorum. Quis aſcendit ad cœlum, & deſcendit? 4 Quis collegit ventos in ſinu ſuo? Quis concluſit aquam, & congregavit illam in veſte ſua? Quis tenuit univerſas extremitates terræ, & fines ejus? Quodnam eſt nomen ejus, & quodnam nomen genitoris illius? Eloquia Dei cuncta ignita, 5 probata: & ipſe corroborat timentes ſe. Ne addas ſermonibus ejus quicquam, ne 6 te arguat, & fias mendax. Duo peto à te, 7 ne deneges mihi conceſſionem eorum ante obitum meum. Sermonem vanum & mendacem 8 longè fac à me: & divitias ac paupertatem ne des mihi; ſed diſpone mihi id cujus egeo, & contentus ero. Ne forte 9 diteſcam, & evadam mendax, & dicam, Quis me videbit? Aut pauper fiam, & furer, & jurem per nomen Dei. Ne 10 tradas ſervum in manus domini ſui, ne maledicat tibi, & pereas. Filius improbus 11 maledicit patri ſuo, & non benedicetur ab illo. Filius nequam credit ſe eſſe juſtū, 12 et non animadvertit propter ſuperbiam ſuam. Filius iniquus habet oculos formidabiles, 13 et extollit palpebras ſuas. Dentes 14 filii mali, enſes: et molares ejus, ſecures ſcindentes; ad hoc ut perdat infirmos de terra, et comedat eos, et pauperes ex hominibus. Cap. 24. verſ. 23.

Hos ſermones dico vobis, O ſapientes, 23 ut doceam vos. Non eſt laudabilis acceptio vultûs ullius in judicio. Qui ait 24 ſceleſtum eſſe juſtum, erit apud populos maledictus, et inter gentes odioſus. Qui 25 autem arguunt apparebunt virtuoſi, et benedictio bona veniet illis. Et honorabunt 26 labia, quæ reſpondent eloquia bona. Diſpone 27 opera tua ad diſceſſum, et profectionem: et præpara te in agro, et abi poſt me, et reædificabis 28 domum tuam. Et ne præficias teſtem falſum ſuper civitatem tuam: et ne expones labia tua.

משלי : כו

die in prævaricatoris fiducia : *luxatus* pes & , confractus Dens
19 שן רעה ורגל מועדת מבטח בוגד ביום
:nether ſuper acetum ,frigoris die in veſtimentum *Removens* .anguſtiæ
20 צרה: מעדה־בגד ביום קרה חמץ על־נתר
,te habens odio eſurierit Si .*malo corde ſuper* canticis in cantans &
21 ושר בשרים על לב־רע: אם־רעב שנאך
prunas Quia .aquam ei propina ,ſitiverit ſi & : pane illum ciba
22 האכילהו לחם ואם־צמא השקהו מים: כי גחלים
Ventus .tibi reddet DOMINUS & : ejus caput ſuper *capiens* tu
23 אתה חתה על־ראשו ויהוה ישלם־לך: רוח
.*occultationis* linguam *conturbatæ* facies & : pluviam *parturiet* aquilo
צפון תחולל גשם ופנים נזעמים לשון סתר:
.*ſocietatis* domo &,*contentionum* muliere *præ* :tecti angulo *ſuper* ſedere Melius
24 טוב שבת על־פנת־גג מאשת מדינים ובית חבר:
.longinqua terra è bonus auditus & : *laſſa anima ſuper* frigidæ Aquæ
25 מים קרים על־נפש עיפה ושמועה טובה מארץ מרחק:
.*impii facies ad* lapſus juſtus : corrupta *vena & conculcatus* Fons
26 מעין נרפש ומקור משחת צדיק מט לפני רשע:
.gloria illorũ gloriæ inveſtigatio & :bonũ non *multiplicando* mel Comedere
27 אכל דבש הרבות לא־טוב וחקר כבדם כבוד:
.*ſuo* ſpiritui *clauſtrum* non cujus vir : *murus non* dirupta Urbs
28 עיר פרוצה אין חומה איש אשר אין מעצר לרוחו:

CAP. XXVI. כו

ſtulto *decens* non ſic : meſſe in pluvia ſicut & , æſtate in nix Sicut
1 כשלג בקיץ וכמטר בקציר כן לא־נאוה לכסיל
maledictio ſic : volare hirundinis ſicut , vagari avis Sicut .gloria
2 כבוד: כצפור לנוד כדרור לעוף כן קללת
corpori virga & : aſino *frænum* , equo Flagellum .veniet non gratis
3 חנם לא תבא: שוט לסוס מתג לחמור ושבט לגו
: ejus ſtultitiam ſecundùm ſtulto reſpondeas Ne .ſtultorum
4 כסילים: אל־תען כסיל כאולתו
: ejꝰ ſtultitiã ſecundũ ſtulto Reſponde .tu etiam ei adæqueris fortè ne
5 פן־תשוה־לו גם־אתה: ענה כסיל כאולתו
rapinam , pedes *Decurtans* .ſuis oculis in ſapiens ſit fortè ne
6 פן־יהיה חכם בעיניו: מקצה רגלים חמס
: *claudo à coxas Elevate* .ſtulti *manu in* verba *mittens* : bibens
7 שתה שלח דברים ביד־כסיל: דליו שקים מפסח
: *lapidum cumulo* in lapidem *ligare* Sicut .ſtultorum ore in parabola &
8 ומשל בפי כסילים: כצרור אבן במרגמה
: ebrii manu in aſcendit Spina .gloriam ſtulto *dans* ſic
9 כן־נותן לכסיל כבוד: חוח עלה ביד־שכור
dans mercedẽ & : omnia *formans* Magnus .ſtultorum ore in parabola &
10 ומשל בפי כסילים: רב מחולל־כל ושכר
revertens canis Sicut .tranſgreſſoribus *dans* mercedem & , ſtulto
11 כסיל ושכר עברים: ככלב שב
.*ſua ſtultitia in iterans* ſtultus : ſuum vomitum *ſuper*
על־קאו כסיל שונה באולתו:

Verſio VUL. LAT.

19 Dens putridus,& pes laſſꝰ, qui
ſperat ſuper infideli in die an-
20 guſtiæ, Et amittit pallium in
die frigoris. Acetum in nitro,
qui cantat carmina cordi peſ-
ſimo. Sicut tinea veſtimento,
& vermis ligno : ita triſtitia
21 viri nocet cordi. Si eſurierit
inimicus tuus, ciba illũ : ſi ſi-
22 tierit, da ei aquã bibere: Pru-
nas enim congregabis ſup ca-
put ejus, & Dñs reddet tibi.
23 Ventꝰ Aquilo diſſipat pluvias,
& facies triſtis linguã detra-
24 hentẽ. Melius eſt ſedere in an-
gulo domatis , quàm cũ muli-
ere litigioſa, & in domo com-
25 muni. Aqua frigida animæ ſi-
tienti,& nuntius bonus de ter-
26 ra longinqua. Fons turbatus
pede, & vena corrupta, juſtus
27 cadens corã impio. Sicut qui
mel multũ comedit, non eſt ei
bonũ: ſic qui ſcrutator eſt ma-
jeſtatis, opprimetur à gloria.
28 Sicut urbs patens & abſq; mu-
rorum ambitu, ita vir qui non
poteſt in loquendo cohibere
ſpiritum ſuum.

CAP. XXVI.

1 QUomodò nix in æſtate, &
pluviæ in meſſe : ſic indecens
2 eſt ſtulto gloria. Sicut avis ad
alia tranſvolans,& paſſer quò
libet vadens: ſic maledictum
fruſtrà prolatum in quempiã
3 ſuperveniet. Flagellum equo,
& camꝰ aſino,& virga in dor-
4 ſo imprudentium. Ne reſpon-
deas ſtulto juxta ſtultitiã ſuã,
5 ne efficiaris ei ſimilis. Reſpon-
de ſtulto juxta ſtultitiã ſuam,
ne ſibi ſapiens eſſe videatur.
6 Claudus pedibus, & iniqui-
tatẽ bibens, qui mittit verba ꝑ
7 nuntiũ ſtultũ. Quomodò pul-
chras fruſtrà habet claudus ti-
bias : ſic indecens eſt in ore
8 ſtultorum parabola. Sicut qui
mittit lapidẽ in acervũ Mer-
curii: ita qui tribuit inſipienti
9 honorẽ. Quomodò ſi ſpina na-
ſcatur in manu temulenti : ſic
10 parabola in ore ſtultorũ. Judi-
ciũ determinat cauſas : & qui
imponit ſtulto ſilentiũ, iras mi-
11 tigat. Sicut canis, qui revertitur
ad vomitum ſuum, ſic impru-
dens, qui iterat ſtultitiã ſuam.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

18 †Τρία δέ ἐστιν ἀδύνατά μοι νοῆσαι, †καὶ τὸ
19 τέταρτον οὐκ ἐπιγινώσκω· †Ἴχνη ἀετοῦ πε-
τομένου, †καὶ ὁδοὺς ὄφεως ἐπὶ πέτρας, †καὶ
τρίβους νηὸς ποντοπορούσης, †καὶ ὁδοὺς ἀνδρὸς
20 ἐν νεότητι. †Τοιαύτη ὁδὸς γυναικὸς μοι-
χαλίδος, †ἣ ὅτ' ἂν πράξῃ ἀπονιψαμέ-
21 νη, οὐδέν φησι πεπραχέναι ἄτοπον. †Διὰ
τριῶν σείεται ἡ γῆ, †τὸ δὲ τέταρτον οὐ δύ-
22 ναται φέρειν· †Ἐὰν οἰκέτης βασιλεύσῃ, †
23 καὶ ἄφρων πλησθῇ σιτίων, †Καὶ οἰκέτις ἐὰν
ἐκβάλῃ τὴν ἑαυτῆς κυρίαν, †καὶ μισητὴ γυνὴ
24 ἐὰν τύχῃ ἀνδρὸς ἀγαθοῦ. †(ω) Τέσσαρα
δὲ ἐλάχιστα ἐπὶ τῆς γῆς, †ταῦτα δέ ἐστι σο-
25 φώτερα τῶν σοφῶν. †Οἱ μύρμηκες οἷς μή
ἐστιν ἰσχύς, †καὶ ἑτοιμάζονται θέρους τὴν τροφήν.
26 †Καὶ οἱ χοιρογρύλλιοι ἔθνος οὐκ ἰσχυρόν, †οἳ
ἐποιήσαντο ἐν πέτραις τοὺς ἑαυτῶν οἴκους.
27 †Ἀβασίλευτόν ἐστιν ἡ ἀκρίς, †(α) καὶ στρα-
τεύει ἀφ' ἑνὸς κελεύσματος εὐτάκτως. †
28 Καὶ καλαβώτης χερσὶν ἐρειδόμενος, καὶ εὐ-
άλωτος ὤν, †κατοικεῖ ἐν ὀχυρώμασι (β)
29 βασιλέων. †Τρία δέ ἐστιν ἃ εὐόδως (γ) πο-
ρεύεται, †καὶ τέταρτον ὃ καλῶς διαβαίνει·
30 †Σκύμνος λέοντος ἰσχυρότερος κτηνῶν,
†ὃς οὐκ ἀποστρέφεται, οὐδὲ (δ) καταπτήσσει κτῆ-
31 νος· †Καὶ ἀλέκτωρ (ε) ἐμπεριπατῶν θη-
λείαις εὔψυχος, †καὶ τράγος ἡγούμενος αἰ-
πολίου, †καὶ βασιλεὺς δημηγορῶν ἐν ἔθνει.
32 †Ἐὰν πρόῃ σεαυτὸν (ζ) ἐν εὐφροσύνῃ, †καὶ
ἐκτείνῃς τὴν χεῖρά σου μετὰ μάχης, ἀτιμασθή-
33 σῃ. †Ἄμελγε γάλα, καὶ ἔσται βούτυρον· †ἐὰν
δὲ ἐκπιέζῃς μυκτῆρας ἐξελεύσεται αἷμα·
†ἐὰν δὲ ἐξέλκῃς λόγους, ἐξελεύσονται κρί-
1 σεις καὶ μάχαι. Cap. 31. †Οἱ ἐμοὶ
λόγοι εἴρηνται ὑπὸ θεοῦ, †βασιλέως χρημα-
2 τισμός, ὃν ἐπαίδευσεν ἡ μήτηρ αὐτοῦ. †Τί
τέκνον τηρήσεις; τί; ῥήσεις θεοῦ· †πρωτο-
γενὲς σοὶ λέγω υἱέ. †τί τέκνον ἐμῆς κοιλί-
3 ας; †τί τέκνον ἐμῶν εὐχῶν; †Μὴ δῷς (η)
γυναιξὶ σὸν πλοῦτον, †καὶ τὸν σὸν νοῦν καὶ βί-
ον εἰς ὑστεροβουλίαν. †μετὰ βουλῆς πάντα ποί-
ει, †μετὰ βουλῆς οἰνοπότει. †οἱ δυνάσται θυ-
5 μώδεις εἰσίν, (θ) Οἶνον δὲ μὴ πινέτωσαν· †ἵνα
μὴ πιόντες ἐπιλάθωνται τῆς σοφίας, †καὶ ὀρ-
θὰ (ι) κρῖναι οὐ μὴ δύνωνται τοὺς ἀσθενεῖς. †
6 Δίδοτε μέθην τοῖς ἐν λύπαις, †καὶ οἶνον
7 πίνειν τοῖς ἐν ὀδύναις, †Ἵνα ἐπιλάθωνται
τῆς πενίας, †καὶ τῶν πόνων μὴ μνησθῶσιν ἔτι.
8 †Ἄνοιγε σὸν στόμα λόγῳ θεοῦ, †καὶ κρίνε
9 πάντας ὑγιῶς. †Ἄνοιγε σὸν στόμα καὶ κρίνε
δικαίως, †διάκρινε δὲ πένητα καὶ ἀσθενῆ.

Tria ſunt (n) impoſſibilia mihi in- 18
telligere,& quartum non agnoſco:
Veſtigia aquilæ (o) volantis, & 19
(p) vias ſerpentis in petra,et ſemi-
tas navis navigantis, & (q) vias
viri in juventute. Talis eſt via mu- 20
lieris adulteræ, (r) quandocunque
egerit, lota nihil inquit feciſſe ab-
ſurdum. Per tria concutitur terra, 21
(ſ) quartum autẽ ferre non poteſt:
Si famulꝰ regnet,& imprudens ſa- 22
turatus fuerit cibis, Et famula ſi 23
ejecerit ſuam ipſius dominam, &
(t) odibilis mulier ſi ſortita fuerit
virum bonum. Quatuor autẽ mi- 24
nima ſuper terram: hæc autem ſunt
(u) ſapientiora ſapientibꝰ: Formicæ, 25
quibus non eſt fortitudo,& parant
æſtate cibum : Et (x) chærogrylli 26
gens non fortis, qui (y) fecerunt in
petris domos ſuas: Sine rege eſt lo- 27
custa,& pergit in acie ab una juſ-
ſione (z) ordinatè : Et calabotes 28
manibus (ω) innitens,& captu faci-
lis, habitat in (aaa) munitionibus
regum. Tria autem ſunt quæ pro- 29
ſperè vadunt, & quartũ (b) quod
benè incedit: Catulus leonis fortior 30
beſtiis, qui non avertitur, neque
horret (c) beſtiã: Et gallus (d) con- 31
ſcendens fœminas alacer: & hircꝰ
ducens gregem: & rex qui concio-
natur in gente. Si profuderis (e) te 32
in lætitia, et (f) extenderis manum
tuam cum rixa; inhonoraberis.
Mulge lac, et erit butyrũ: ſi (g) au- 33
tẽ expreſſeris nares, exibit ſanguis:
ſi autem extraxeris ſermones; ex-
ibunt lites, & rixæ. Cap. 31.
(h) Verba mea dicta ſunt à Deo, 1
(i) regis admonitio, quem erudivit
mater ſua. Quid, fili, ſervabis? 2
quid? dictiones Dei: primogenite,
tibi dico, fili: quid, fili mei ventris?
quid, fili mearum orationum? Ne 3
dederis mulieribus (k) tuas diviti-
as,& mentem tuam & (l) vitam
(m) in ſeram conſilii mutationem.
Cum conſilio omnia fac: cum conſi-
lio vinum pota. Potentes iracundi
ſunt, (n) Vinum autẽ non bibant; 5
ne bibentes obliviſcãtur ſapientiæ,
& (o) recta judicare non poſſint
imbecillos. Date inebriamentũ iis 6
(p) qui in mœroribus, & vinum
bibere iis qui in doloribus; ut 7
obliviſcantur paupertatis, (q) &
laborum non recordentur ultrà.
Aperi os tuum (r) verbo Dei, & 8
(ſ) judica omnes integrè. Aperi 9
os tuum & judica juſtè: dijudica
autem (t) pauperem (u) & im-
becillum.

ΚΕΦ. κε'.

1 †Αὗται αἱ (α) παιδεῖαι Σαλωμῶντος αἱ ἀδιάκριτοι, ἃς ἐξεγράψαντο οἱ φίλοι Ἐζεκίου τοῦ βασι-
2 3 λέως τῆς Ἰουδαίας. †Δόξα θεοῦ κρύπτει λόγον, †δόξα δὲ βασιλέως τιμᾷ (β) πράγματα. †Οὐρανὸς
4 ὑψηλός, γῆ δὲ βαθεῖα, †καρδία δὲ βασιλέως ἀνεξέλεγκτος. †(γ) Τύπτε ἀδόκιμον ἀργύριον, †καὶ
5 καθαρισθήσεται καθαρὸν ἅπαν. †Κτεῖνε ἀσεβεῖς ἐκ προσώπου βασιλέως, †καὶ κατορθώσει ἐν δικαιο-
6 σύνῃ ὁ θρόνος αὐτοῦ. †Μὴ ἀλαζονεύου ἐνώπιον βασιλέως, †μηδὲ ἐν τόποις δυναστῶν ὑφίστασο.
7 †Κρεῖσσον (δ) γάρ σοι τὸ ῥηθῆναι, Ἀνάβαινε πρὸς μέ, †ἢ ταπεινῶσαί σε ἐν προσώπῳ
8 δυνάστου. †Ἃ εἶδον οἱ ὀφθαλμοί σου λέγε. †μὴ πρόπιπτε εἰς μάχην ταχέως, †ἵνα μὴ με-
ταμεληθῇς ἐπ' ἐσχάτων. †ἡνίκα (ε) ἄν σε ὀνειδίσῃ (ε) ὁ σὸς φίλος,

CAP. XXV.

HÆ (a) ſunt diſciplinæ Salomonis indiſtinctæ, quas deſcripſerunt ami- 1
ci Ezeciæ regis Judææ. Gloria Dei celat verbum : gloria autem regis 2
(b) honorat res. Cœlum excelſum, terra autem (c) profunda: Cor au- 3
tem regis (d) quod redargui non poteſt. (e) Percute argentum impro- 4
batum,& mundabitur mundum totum. (f) Interfice impios à facie regis; 5
& (g) rectè procedet in juſtitia thronus ejus. Ne glorioſè te oſtentes 6
coram rege: neque in locis principum (h) ſteteris. Melius enim tibi 7
dici, Aſcende ad me, quàm humiliare te in facie potentis. (i) Quæ vi- 8
derunt oculi tui, dic: ne procurras ad jurgium citò; ut non te pœniteat
in noviſſimis. Cùm te exprobraverit amicus tuus;

MS.A. (ω) Τέσσαρα δέ ἐστιν ἐλάχιστα (α) καὶ ἐκστρατεύει (β) βασιλέως. (γ) πορεύονται, καὶ τὸ τέταρτόν (δ) καταπλήσσει (ε) ἐνπεριπατῶν (ζ) εἰς εὐφροσύνην, (η) γυναιξίν σου (θ) Οἶ-
νον μὴ (ι) κρίνειν   Κεφ. κε'. MS.A. (α) παροιμίαι Σολομῶντος (β) πράγματα. (γ) Κρύπτε (δ) γὰρ τὸ ῥηθῆναί σοι, (ε) δ' ἂν (ε) ὁ φίλος,

תרגום TARGUM.

19 איך שנא בישתא ורגלא מועדא היכנא סבריה דבוזוא ביומא דעקתא: דשקל מרטוטא
20 מן חבריה ביום דקרתא היך הו דרמי חילא על נתרא ומצרף ללבא כיבא היך ססא
21 למנא ואיך מלטיתא בקיסא היכנא בריותא מחרה לביה דגברא : אין כפן סנאך
22 אוכליה לחמא ואין צחי אשקי מיא : מטול דגומרי דנורא חתי אנת על רישיה ואלהא
23 נשלמיה לך: רוחא גרביתא בטנא מטרא היכנא אפי בנסתא ולישנא מטשיא : טב
24 25 למתב על קרנא דאגרא מן דלמעמד עם אתתא תגרניתא וביתא טרקא: מיא קרירי על
26 נפשא משלהתא היכנא שמועתא טבתא מן ארעא רחיקתא : היך דסכר אניש מעינא
27 ומבועא מחבל צדיקא דנפל קדם רשיעא: למיכל דובשא סגי לא שפיר אף לא למבציא
28 מלי מיקרתא: היך קרתא דתריעא ולא אית לה שורא היכנא גברא דלא מעצר רוחיה:

כו

1 2 איך תלגא בקיטא והיך מטרא בחצדא היכנא לא יאי לסכלא יקרא : היך צפרא דטאס
3 והיך פרחתא דפרחא היכנא לוטתא דמגן לא תעול : שוטא לסוסא ומגלבא לחמרא
4 ושבטא לגושמהון דסכלי : לא תתל פתגמא לסכלא היך שטיותא דלא תדמי ליה אף
5 6 אנת : אלא מלל עם שטיא בחכימותך דלא נסבר בנפשיה דחכימא הוא : מן דרהטא
7 ברגלוי שתי חטופא מן דמשדר מלי ביד סכלא : אין תתל הלכתא לחגירא תקבל
8 מלתא מן פומיה דסכלא: היך נקצא דטסא בקלעא היכנא מן דעבד יקרא לסכלא :
9 10 כובא סלק בידא דרויא ושטיותא בפומיה דסכלא : סגי חיש בשריה דסכלא ורויא עבר
11 ימא : היך כלבא דהפך על תיוביה היכנא סכלא דתני בסכלותיה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Sicut dens malus & pes lapſus, ſic erit ſpes deprædatoris in die anguſtiæ. 19
Qui tollit pallium à ſocio ſuo in die frigoris, eſt ſicut ille qui projicit ace- 20
tum ſuper nitrum : & probat cor dolor, ſicut *tinea veſtem*; & ſicut *putredo*
in ligno, ſic ſtoliditas irritat cor hominis. Si eſurierit inimicus tuus, ci- 21
ba illum pane : & ſi ſitit; da ei bibendam aquam. Quoniam prunas 22
ignis tu congeris ſuper caput ejus, & Deus retribuet tibi. Ventus Aqui- 23
lo concipit pluviam, ſic facies irati & lingua abſcondita. Melius eſt ſedere 24
in angulo tecti, quàm ſtare cum muliere litigioſa, & in domo communi.
Sicut aquæ frigidæ animæ laſſæ, ſic eſt nuncium bonum de terra longinqua. 25
Sicut qui obturat fontem,& corrumpit venam ; ſic eſt juſtus cadens co- 26
ram impio. Comedere multum mellis non eſt bonum, neque ſcrutari 27
verba glorioſa. Sicut civitas quæ eſt diruta & non habet murum, ſic eſt 28
vir qui non poteſt cohibere ſpiritum ſuum.

CAP. XXVI.

SIcut nix in æſtate,& ſicut pluvia in meſſe, ſic indecens eſt ſtulto gloria. 1
Sicut paſſer qui volat, & ſicut volucris quæ volat, ſic maledictio non fru- 2
ſtrà veniet. Flagellum equo, & ſtimulus aſino, & virga corporibus ſtul- 3
torum. Ne reſpondeas verbum ſtulto juxta ſtultitiam [*ſuam,*] ne ſis ei 4
ſimilis etiam tu. Sed loquere cum ſtulto in ſapientia tua, ne exiſtimet ſe- 5
ipſum ſapientem. Qui currit pedibus ſuis bibens iniquitatem, ſic eſt qui 6
mittit verba per manum ſtulti. Si dederis ambulationem claudo, ſuſcipies 7
verbum ab ore ſtulti. Sicut fragmentum laminæ in funda, ſic eſt qui tribu- 8
it ſtulto honorem. Spina aſcendit in manu ebrii, & ſtultitia in ore ſtul- 9
ti. Multum dolet caro ſtulti, & ebrius tranſit mare. Sicut canis qui re- 10
vertitur ad vomitum ſuum, ſic eſt ſtultus qui iterat ſtultitiam ſuam. 11

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܝܟ ܫܢܐ ܕܫܚܝܩܐ܂ ܘܐܝܟ ܪܓܠܐ ܡܫܬܪܝܐ܂ ܗܟܢܐ ܗܘ ܬܘܟܠܢܗ ܕܥܘܠܐ ܒܝܘܡܐ ܕܐܘܠܨܢܐ܂ 19
* ܡܢ ܕܫܩܠ ܡܪܛܘܛܐ ܡܢ ܚܒܪܗ ܒܝܘܡܐ ܕܩܪܝܪܐ܂ ܐܝܟ ܗܘ ܗܘ ܕܪܡܐ ܚܠܐ ܥܠ ܡܬܪܐ܂ 20
ܘܡܥܝܩ ܠܠܒܐ ܟܪܝܐ܂ ܐܝܟ ܣܣܐ ܠܡܐܢܐ܂ ܘܐܝܟ ܬܘܠܥܬܐ ܠܩܝܣܐ܂ ܗܟܢܐ ܟܪܝܘܬܐ
ܡܥܝܩܐ ܠܠܒܗ ܕܓܒܪܐ܂ * ܐܢ ܟܦܢ ܒܥܠܕܒܒܟ ܐܘܟܠܝܗܝ܂ ܘܐܢ ܨܗܐ ܐܫܩܝܗܝ܂ * ܘܟܕ 21
ܗܠܝܢ ܬܥܒܕ ܠܗ܂ ܓܘܡܪܐ ܕܢܘܪܐ ܬܟܢܫ ܥܠ ܪܫܗ܂ ܘܡܪܝܐ ܦܪܥ ܠܟ܂* ܐܝܟ ܪܘܚܐ 22 23
ܓܪܒܝܝܐ ܕܡܘܠܕܐ ܡܛܪܐ܂ ܗܟܢܐ ܐܦܐ ܒܝܫܬܐ ܘܠܫܢܐ ܡܛܫܝܐ܂ * ܛܒ ܠܡܥܡܪ ܥܠ 24
ܩܪܢܐ ܕܐܓܪܐ܂ ܡܢ ܕܠܡܥܡܪ ܥܡ ܐܢܬܬܐ ܚܪܝܢܐ܂ ܘܒܒܝܬܐ ܕܦܠܓܘܬܐ܂ * ܐܝܟ ܡܝܐ ܕܩܪܝܪܐ 25
ܡܘܪܐ ܠܢܦܫܐ ܨܗܝܬܐ܂ ܗܟܢܐ ܗܝ ܣܒܪܬܐ ܛܒܬܐ ܕܐܬܝܐ ܡܢ ܐܪܥܐ ܪܚܝܩܬܐ܂ * ܐܝܟ ܕܣܟܪ 26
ܐܢܫ ܡܒܘܥܐ܂ ܘܡܚܒܠ ܡܒܘܥܐ ܕܡܝܐ܂ ܗܟܢܐ ܗܘ ܙܕܝܩܐ ܕܢܦܠ ܩܕܡ ܪܫܝܥܐ܂
* ܠܡܐܟܠ ܕܒܫܐ ܣܓܝ܂ ܠܐ ܫܦܝܪ܂ ܘܐܦܠܐ ܠܡܒܨܝܘ ܡܠܐ ܡܫܒܚܬܐ܂ * ܐܝܟ ܡܕܝܢܬܐ 27 28
ܦܪܝܟܬܐ ܕܠܝܬ ܠܗ ܫܘܪܐ܂ ܗܟܢܐ ܗܘ ܓܒܪܐ ܕܠܐ ܢܓܝܪ ܪܘܚܗ܂

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܘ *

* ܐܝܟ ܬܠܓܐ ܒܩܝܛܐ܂ ܘܐܝܟ ܡܛܪܐ ܒܚܨܕܐ܂ ܗܟܢܐ ܠܐ 1
ܝܐܐ ܐܝܩܪܐ ܠܣܟܠܐ܂ * ܐܝܟ ܨܦܪܐ ܘܦܪܚܬܐ ܕܦܪܚܝܢ ܒܐܐܪ܂ ܗܟܢܐ ܠܘܛܬܐ ܣܪܝܩܬܐ 2
ܦܪܚܐ܂ * ܫܘܛܐ ܠܣܘܣܝܐ܂ ܘܡܥܩܬܐ ܠܚܡܪܐ܂ ܗܟܢܐ ܐܦ ܡܥܩܬܐ ܠܓܒܪܐ ܣܟܠܐ܂ * ܠܐ ܬܬܠ 3
ܦܬܓܡܐ ܠܣܟܠܐ ܐܝܟ ܣܟܠܘܬܗ܂ ܕܠܐ ܐܦ ܐܢܬ ܬܬܕܡܐ ܠܗ܂ * ܐܠܐ ܡܠܠ ܥܡ ܣܟܠܐ ܐܝܟ 4 5
ܚܟܡܬܟ܂ ܕܠܐ ܢܚܫܘܒ ܒܢܦܫܗ ܕܚܟܝܡ ܗܘ܂ * ܡܢ ܬܚܝܬ ܪܓܠܘܗܝ ܫܬܐ ܥܘܠܐ܂ ܡܢ 6
ܕܡܫܕܪ ܡܠܬܐ ܒܝܕ ܣܟܠܐ܂ * ܐܢ ܬܫܟܚ ܠܡܦܢܝܘ ܗܠܟܬܐ ܠܚܓܝܪܐ܂ ܬܣܒ ܡܠܬܐ ܡܢ ܦܘܡܗ 7
ܕܣܟܠܐ܂ * ܐܝܟ ܟܐܦܐ ܒܩܠܥܐ܂ ܗܟܢܐ ܡܢ ܕܡܫܒܚ ܠܣܟܠܐ܂ * ܚܘܚܐ ܢܒܥܘ ܒܐܝܕܗ 8 9
ܕܪܘܝܐ܂ ܘܫܛܝܘܬܐ ܒܦܘܡܗ ܕܣܟܠܐ܂ * ܣܓܝ ܚܫ ܒܣܪܗ ܕܣܟܠܐ܂ ܘܪܘܝܐ ܥܒܪ ܝܡܐ܂ 10
* ܐܝܟ ܟܠܒܐ ܕܗܦܟ ܥܠ ܬܝܘܒܗ܂ ܗܟܢܐ ܗܘ ܣܟܠܐ ܕܡܬܢܐ ܒܣܟܠܘܬܗ܂ 11

Ut dens putridus & pes luxatus, ita eſt fiducia mendacis in die anguſtiæ. 19 Qui aufert pallium à proximo ſuo in die frigoris, 20 ſimilis eſt ei qui perfundit acetum ſuper chordam *arcûs*, & angit cor dolens. Ut tinea veſtem, & ut caries ligna: ita mœror lædit cor viri. Si famelicus ſit inimicus tuus, 21 ciba eum: & ſi ſitibundus, pota eum. Cúmque 22 talia præſtiteris illi, carbones ignis congeres ſuper caput illius, & Dominus rependet tibi, Quemadmodum ventus Aquilonaris 23 generat pluviam, ita vultus malus & lingua occulta. Satius eſt degere ſuper cornu 24 tecti, quàm degere cum muliere rixoſa, & in domo contentionum. Quales ſunt aquæ 25 frigidæ animæ ſitienti, tale eſt nuntium bonum veniens è terra longinqua. Ut ſi 26 quis obturet fontem, ſcatebram aquarum corrumpit: ejuſmodi eſt juſtus cùm cadit coram impio. Comedere mel nimium, non 27 eſt bonum: nec etiam diſquirere verba faſtuoſa. Sicut urbs aperta carens mœnibus, 28 ita eſt vir minimè longanimis.

CAP. XXVI.

Ut nix in æſtate, & imber in meſſe, ſic 1 ſtultum non decet honor. Quemadmodum 2 avis & animal pennatum per aëra volant, ſic errat maledictio vana. Flagellum equo, 3 & ſtimulus aſino: ita quoque ſtimulus homini ſtulto. Ne des reſponſum ſtulto ſe- 4 cundùm ſtultitiam ejus, ne tu quoque ſimilis ei fias: Imò loquere cum ſtulto ſecundùm 5 ſapientiam tuam, ne arbitretur in ſe ipſo ſapientem ſe eſſe. De ſub pede ſuo bibit ini- 6 quitatem is qui mittit verbum per ſtultum. Si reddere queas greſſum claudo, impetra- 7 bis verbum ab ore ſtulti. Ut lapis in funda, 8 ſic qui laudat ſtultum. Spinæ germinârunt 9 in manu ebrioſi, & inſipientia in ore ſtulti. Multum patitur caro ſtulti, & ebrioſus traje- 10 cit mare. Ut canis rediens ad vomitum 11 ſuum, ita eſt ſtultus delirans in ſtultitia ſua.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

29 30 *لا تقل نظير ما عمل معي أعمل معه * أعاقبه على ما ظلمني * الرجل الجاهل كالفلاحة * والانسان
31 الناقص الراي كالكرم * ان تركته صار بورا * ويشعب فيه الحشيش كله * ويصير مطرحا *
32 33 ويهدم جداراته من حجارتها * انا تندمت * اخيرا اعرضت عن اختيار الادب * لبثت انا ناعس
34 قليلا * وانا نوم قليلا * واعانق بيدي صدري قليلا * ان عملت انت هذا فسيوافي فقرك مبادرا *
15 واعسارك كالساعي السابق وروده ** العلقة كان لها ثلثة بنات محبوبات تحبهن كثيرا *
16 وهولاء الثلثة ما اشبعتها * والرابعة لم تكفها ان تقول حسبي كفاني * وهن الجحيم * وعشق
17 المراة * والارض القفرة التي لم تشبع مطرا * والماء والنار لم يقولوا يكفي * العين الضاحكة
18 على ابيها والمهينة شيخوخة امها * تقورها الغربان من مخارجها * وتاكلها فراخ النسور * ثلثة
19 اشياء هي لم يمكنني افهمها * والرابع لست اعرفه * اثر النسر الطاير * وطرق الحية على الصخر
20 الاملس * ومسالك المركب السائر في البحر * وطرايق الانسان في حداثته * بهذه الصورة طريق
21 الامراة الفاسقة التي اذا فعلت فعلها تغتسل وتقول اني ما عملت شيا قبيحا * بثلثة امور تهتز
22 الارض * والرابع ما يمكنها احتماله * العبد ان سمح ان يتملك * والجاهل اذا تملا من الاطعمة
23 24 واصناف النعم * والعبدة اذا اخرجت مولاتها * والامراة المقيتة ان حصلت لرجل صالح * اربعة
25 اشياء فهي حقيرة في الارض * وهي اوفر حكمة من الحكماء * النمل اللواتي لا قوة لهن
26 ويستعدون منذ الصيف طعامهن * والقنافذ امة ليست قوية * وقد جعلوا منازلهم في الصخور
27 28 * والجراد هولاء لا ملكا لهم * ويعسكرن امن واحدة بحسن ترتيب * والعنكبوت يتسند بيديه *
29 وهو غير مصيد * ويسكن في قصور الملوك * ثلثة اشياء هي تمشي مشيا حسنا * والرابع
يعبر عبورا مليحا *

Ne dicas, Sicuti egit mecum, agam cum illo; cruciabo eum pro eo quòd malè me habuit. 29 *Vir inſipiens eſt velut arvum, &* 30 *homo carens judicio tanquam vinea.* *Si* 31 *illam deſtituas, fiet deſerta, & invadet illam herba totam: fietque abjecta, & corruent muri ejus ab lapidibus ſuis.* *Ego* 32 *percuſſi pectus meũ, tandem declinavi ab electione diſciplinæ:* *Occupavi me in dor-* 33 *miendo parùm, & dormitando aliquantùm, & amplectendo manibus meis pectus meum, parumper.* *Si feceris tu idem,* 34 *adveniet paupertas tua citò, & inopia tua veluti curſor cujus præproperans eſt adventus.*

Ex cap. 30. verſ. 15.

Sanguiſuga habebat tres filias dilectas 15 *quas amabat multũ, & has tres non ſatiavit, & quartæ non ſatis fecit ita ut diceret, Satis eſt, ſufficit mihi.* *Sunt autem in-* 16 *fernus, & amor mulieris, & terra ſterilis quæ non ſatiatur pluviâ, & aqua atque ignis non dicunt, Sufficit.* *Oculũ irridentem* 17 *patrẽ ſuũ, et contemnentem ſenectutẽ matris ſuæ, eruent corvi ab originibus ſuis, & comedent eũ pulli aquilarũ.* *Tria ſunt quæ* 18 *non potui intelligere, & quartũ non novi:* *Veſtigia aquilæ volantis, & vias ſerpentis* 19 *ſuper petram lævem, & curſus navis ſulcantis mare, & vias hominis in juventute ſua.* *Hujus ſimilitudinis eſt mulier adul-* 20 *tera, quæ poſtquã egit opus ſuum, lavat ſe & ait, Non feci quidquam turpe.* *Tribus* 21 *in rebus quaſſatur terra, quartam verò nequit ſuſtinere.* *In ſervo, ſi permittatur* 22 *ut dominetur: & ſtulto, cùm repletus fuerit cibo, & generibus deliciarum: &* *ſerva cùm ejecerit dominam ſuam:* 23 *Et in muliere odioſa, ſi contigerit viro bono.* *Quatuor res ſunt viles in* 24 *terra, & ipſæ ſunt ſapientiores ſapientibus.* *Formicæ, quæ non habent vi-* 25 *res, & parant ab æſtate eſcam ſuam.* *Hiſtrices, gens eſt minimè fortis, &* 26 *tamen ponunt domicilia ſua in petris:* *Et locuſtæ, hæ non habent regem, ta-* 27 *men in exercitu ſuo, res earum, & modus illarum eſt cum pulchra diſpoſitione.* *Et aranea nititur manibus ſuis,* 28 *eſtque non lædens, & habitat in palatiis regum.* *Tria ſunt quæ gradiuntur* 29 *inceſſu pulchro, & quartum tranſit tranſitu eleganti:*

משלי : כו

.eo de quàm stulto spes : suis oculis in sapientem virum Vidisti
12 ראית איש חכם בעיניו תקוה לכסיל ממנו :
Janua .plateas inter Leo : via in *Pardus* : piger Dixit
13 14 אמר עצל שחל בדרך ארי בין הרחבות : הדלת
piger Abscondit .suo lectulo *super* piger & : suo cardine *super volvetur*
15 תסוב על־צירה ועצל על־מטתו : טמן עצל
Sapientior .suum os ad eā reducere *laboravit* : sinu in suā manum
16 ידו בצלחת נלאה להשיבה אל־פיו : חכם
.*exaltum* consilium *referentes* septem *quàm* : suis oculis in piger
עצל בעיניו משבעה משיבי טעם :
.*sibi non litem super trāseundo se ingerens, transiens* :canis aures *in Apprehendens*
17 מחזיק באזני־כלב עבר מתעבר על־ריב לא־לו :
fraudavit vir Sic .mortem &, sagittas, scintillas *jaciens insaniens* Sicut
18 19 כמתלהלה הירה זקים חצים ומות : כן־איש רמה
lignorum consumptione In ? ego ridens Nonne : dicet & : suū *socium*
20 את־רעהו ואמר הלא־משחק אני : באפס עצים
Carbo .contentio silebit *susurrone non in &* : ignis extinguetur
21 תכבה־אש ובאין נרגן ישתק מדון : פחם
.litem succendendū ad *contentionum* vir & : ignem ad ligna & ,prunas ad
לגחלים ועצים לאש ואיש מדינים לחרחר־ריב :
.ventris *penetralia descenderunt* ipsa & : *lenientia* veluti susurronis Verba
22 דברי נרגן כמתלהמים והם ירדו חדרי־בטן :
, *ardentia* labia : testam super obductum *scoriarum* Argentum
23 כסף סיגים מצפה על־חרש שפתים דלקים
suo interiori in & , *habens odio agnoscetur* suis labiis In .malum cor &
24 ולב־רע : בשפתיו ינכר שונא ובקרבו
: *eum in* crediderisne , suam vocem *gratificabit* Cùm .dolum ponet
25 ישית מרמה : כי־יחנן קולו אל־תאמן־בו
odium se Operiet .illius corde in abominationes septem quoniam
26 כי שבע תועבות בלבו : תכסה שנאה
, foveam *Fodiens* .*concione* in ejus malitia erit manifesta : *desolatione* in
27 במשאון תגלה רעתו בקהל : כרה שחת
Lingua .revertetur eum ad , lapidem *volvens* & : cadet eam in
28 בה יפול וגולל אבן אליו תשוב : לשון־
.expulsionem faciet blandum os & : *suos contritos* habebit odio *falsitatis*
שקר ישנא דכיו ופה חלק יעשה מדחה :

CAP. XXVII. כז

.dies sit paritur* quid *scies non* quia : crastino die in te laudes Ne
1 אל־תתהלל ביום מחר כי לא־תדע מה־ילד יום :
.tua labia non & , extraneus : tuum os non & , alienus te Laudet
2 יהללך זר ולא־פיך נכרי ואל־שפתיך :
.*ipsis ambobus præ gravis* stulti ira & : arenæ pondus & *lapidis* Gravitas
3 כבד אבן ונטל החול וכעס אויל כבד משניהם :
? invidiæ facies ad stabit quis & : *nasi inundatio & excandescentiæ* Crudelitas
4 אכזריות חמה ושטף אף ומי יעמד לפני קנאה :
Fidelia .absconditus amor quàm : manifesta increpatio *Bona*
5 6 טובה תוכחת מגלה מאהבה מסתרת : נאמנים
Anima .habentis odio oscula *crebra* & : diligentis vulnera
7 פצעי אוהב ונעתרות נשיקות שונא : נפש
.dulce amarum omne famelicæ animæ & : favum calcabit saturata
שבעה תבוס נפת ונפש רעבה כל־מר מתוק :
.suo loco à *vagans* vir sic : suo nido à *vagans* avis Sicut
8 כצפור נודדת מן־קנה כן איש נודד ממקומו :
sui amici dulcedo & : cor *lætificabit* suffimentum & , Unguentum
9 שמן וקטרת ישמח־לב ומתק רעהו
.animæ *consilio* à
מעצת־נפש :

Versio VUL. LAT.

12 Vidisti hominē sapientem sibi
videri ? magis illo spem habe-
13 bit insipiens. Dicit piger ; Leo
est in via, & leæna in itineri-
14 bus : Sicut ostium vertitur in
cardine suo, ita piger in lectu-
15 lo suo. Abscondit piger ma-
num sub ascella sua, & laborat
si ad os suum eam converterit.
16 Sapientior sibi piger videtur
septē viris loquentibꝰ senten-
17 tias. Sicut qui apprehendit au-
ribus canem, sic qui transit im-
patiens, & commiscetur rixæ
18 alterius. Sicut noxius est qui
mittit sagittas, & lanceas in
19 mortē: Ita vir qui fraudulenter
nocet amico suo: & cùm fuerit
deprehensus, dicit ; Ludens fe-
20 ci. Cùm defecerint ligna, ex-
tinguetur ignis : & susurrone
subtracto, jurgia conquiescent.
21 Sicut carbones ad prunas, & li-
gna ad ignē, sic homo iracun-
22 dus suscitat rixas. Verba su-
surronis quasi simplicia, & ipsa
perveniunt ad intima ventris,
23 Quomodò si argento sordido
ornare velis vas fictile, sic labia
tumentia cum pessimo corde
24 sociata. Labiis suis intelligi-
tur inimicus, cùm in corde tra-
25 ctaverit dolos. Quando sub-
miserit vocem suā, ne credide-
ris ei: quoniam septē nequitiæ
26 sunt in corde illius. Qui operit
odiū fraudulenter, revelabitur
27 malitia ejus in concilio. Qui
fodit foveā, incidet in eam: &
qui volvit lapidem, revertetur
28 ad eū. Lingua fallax non amat
veritatē: et os lubricū operatur
ruinas.

CAP. XXVII.

1 NE glorieris in crastinum,
ignorans quid superventura
2 pariat dies. Laudet te alienus,
& non os tuum ; extraneus, &
3 non labia tua. Grave est sa-
xum, & onerosa arena : sed
4 ira stulti utroque gravior. Ira
non habet misericordiam, nec
erumpens furor : & impetum
concitati ferre quis poterit ?
5 Melior est manifesta correptio,
6 quàm amor absconditus. Me-
liora sunt vulnera diligentis,
quàm fraudulenta oscula odi-
7 entis. Anima saturata calcabit
favum : & anima esuriens etiā
8 amarum pro dulci sumet. Sicut
avis transmigrans de nido suo,
sic vir qui derelinquit locum
9 suū. Unguento & variis odori-
bꝰ delectatur cor: et bonis ami-
ci consiliis anima dulcoratur.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

9 † Ἀναχώρει εἰς τὰ ὀπίσω· μὴ καταφρόνει,
10 † Μή σε ὀνειδίσῃ ὁ φίλος, † ἡ δὲ μάχη
σου καὶ ἡ ἔχθρα οὐκ ἀπέσται, (*)ἀλλὰ ἔσται σοι
ἴση θανάτῳ. † χάρις καὶ φιλία ἐλευθεροῖ,
† ἃς τήρησον σεαυτῷ, ἵνα μὴ ἐπονείδιστος
γένῃ, † ἀλλὰ φύλαξον τὰς ὁδούς σου εὐ-
11 συναλλάκτως. † Μῆλον (ζ) χρυσοῦν ἐν ὁρ-
12 μίσκῳ σαρδίου, οὕτως εἰπεῖν λόγον. † Εἰς
ἐνώτιον (η) χρυσοῦν καὶ σάρδιον πολυτελὲς
δέδεται, † λόγος σοφὸς εἰς εὐήκοον οὖς.
13 † Ὥσπερ ἔξοδος χιόνος ἐν ἀμητῷ κατὰ
καῦμα ὠφελεῖ, † οὕτως ἄγγελος πιστὸς
τοὺς ἀποστείλαντας αὐτόν· † ψυχὰς γὰρ τῶν
14 αὐτῷ χρωμένων ὠφελεῖ. † Ὥσπερ ἄνεμοι καὶ
νέφη καὶ ὑετοὶ, (θ) ἐπιφανέστατα, † οὕτως (ι)
15 ὁ καυχώμενος ἐπὶ δόσει ψευδεῖ. † Ἐν μα-
κροθυμίᾳ εὐοδία βασιλεῦσι, † γλῶσσα δὲ
16 μαλακὴ συντρίβει ὀστᾶ. † Μέλι εὑρὼν φάγε
τὸ ἱκανὸν, † μή ποτε πλησθεὶς ἐξεμέσῃς.
17 † Σπάνιον εἴσαγε σὸν πόδα πρὸς (*)σεαυ-
τοῦ φίλον, † μή ποτε πλησθείς σου (*)μισήσῃ
18 σε. † Ῥόπαλον καὶ μάχαιρα καὶ τόξευμα (κ)
ἀκιδωτὸν, † οὕτως καὶ (λ) ἀνὴρ ὁ καταμαρ-
τυρῶν (μ) τοῦ φίλου αὐτοῦ μαρτυρίαν ψευδῆ.
19 (*)† Ὁδὸς κακοῦ καὶ ποὺς παρανόμου ὀλεῖται ἐν
20 ἡμέρᾳ κακῇ. † Ὥσπερ ὄξος ἕλκει ἀσύμ-
φορον, † οὕτως προσπεσὸν πάθος (ν) ἐν σώ-
ματι καρδίαν λυπεῖ. † ὥσπερ (ξ) σὴς ἐν
ἱματίῳ καὶ σκώληξ ξύλῳ, † οὕτως λύπη ἀν-
21 δρὸς βλάπτει καρδίαν. † Ἐὰν πεινᾷ ὁ ἐ-
χθρός σου, (ο) ψώμιζε αὐτὸν, † ἐὰν διψᾷ,
22 πότιζε αὐτόν. † Τοῦτο γὰρ ποιῶν (π) ἄνθρα-
κας πυρὸς σωρεύσεις ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ,
† ὁ δὲ κύριος (ρ) ἀνταποδώσει σοι ἀγαθά.
23 † Ἄνεμος Βορέας ἐξεγείρει νέφη, † πρόσ-
24 ωπον δὲ ἀναιδὲς γλῶσσαν ἐρεθίζει. † Κρεῖσ-
σον οἰκεῖν ἐπὶ γωνίας δώματος, † ἢ μετὰ γυ-
25 ναικὸς λοιδόρου ἐν οἰκίᾳ κοινῇ. † Ὥσπερ
ὕδωρ ψυχρὸν ψυχῇ διψώσῃ προσηνὲς, † οὕ-
τως ἀγγελία ἀγαθὴ ἐκ γῆς μακρόθεν. †
26 Ὥσπερ εἴ τις πηγὴν φράσσοι καὶ ὕδατος ἔξ-
οδον λυμαίνοιτο, † οὕτως ἄκοσμον δίκαιον
27 πεπτωκέναι ἐνώπιον ἀσεβοῦς. † Ἐσθίειν μέλι
πολὺ οὐ καλὸν, † τιμᾷν δὲ χρὴ λόγους ἐνδό-
28 ξους. † Ὥσπερ πόλις τὰ τείχη καταβεβλη-
μένη καὶ ἀτείχιστος, † οὕτως ἀνὴρ ὃς οὐ μετὰ
βουλῆς τι πράσσει.

ΚΕΦ. κϛʹ.

1 † ὭΣπερ δρόσος ἐν ἀμητῷ, καὶ ὥσπερ
ὑετὸς ἐν θέρει, † οὕτως οὐκ ἔστιν ἄφρονι τι-
2 μή. † Ὥσπερ ὄρνεα (α) πέταται καὶ στρουθοὶ,
† οὕτως ἀρὰ ματαία οὐκ ἐπελεύσεται οὐδε-
3 νί. † Ὥσπερ μάστιξ ἵππῳ καὶ κέντρον ὄνῳ, †
4 οὕτως ῥάβδος ἔθνει παρανόμῳ. † Μὴ ἀπο-
κρίνου ἄφρονι (*) πρὸς τὴν ἐκείνου ἀφροσύνην,
5 † ἵνα μὴ ὅμοιος γένῃ αὐτῷ. † Ἀλλὰ ἀπο-
κρίνου ἄφρονι (β) κατὰ τὴν ἀφροσύνην αὐ-
τοῦ, † ἵνα μὴ φαίνηται σοφὸς παρ' ἑαυτῷ.
6 † (γ) Ἐκ τῶν ὁδῶν ἑαυτοῦ ὄνειδος ποιεῖται
† ὁ ἀποστείλας δι' ἀγγέλου ἄφρονος λόγον.
7 8 † Ἀφελοῦ πορείαν σκελῶν, καὶ παρανομίαν ἐκ στόματος ἀφρόνων. † Ὃς ἀποδεσμεύει λίθον ἐν σφενδό-
9 νῃ, † ὅμοιός ἐστι τῷ διδόντι ἄφρονι δόξαν. † Ἄκανθαι φύονται ἐν χειρὶ (δ) μεθύσου, † δουλεία δὲ ἐν χει-
ρὶ τῶν ἀφρόνων.

(k) Recede in posteriora : nè con- 9
temnas : Nè te quidem exprobret 10
amicus, (l) rixa autem tua, & in-
imicitia non aberit, sed erit tibi
æqualis morti. Gratia & amici-
tia liberat : quas serva tibi, ne ex-
probrabilis fias : sed custodi vias
tuas compositè. Malum aureum 11
(m) in monili sardii, sic (n) dice-
re verbum. (o) In auream inaurē 12
etiam sardium pretiosum ligatum
est ; sermo sapiens in aurem obe-
dientē. Sicut exitus nivis in mes- 13
se (p) per æstum prodest ; sic nun-
tius fidelis iis qui miserunt eū: ani-
mas enim eorum, qui ipso utuntur,
juvat. Sicut venti, & nubes, & 14
pluviæ, (q) clarissima ; sic qui glo-
riatur super dono (r) falso. In lon- 15
ganimitate prosperitas regibus: lin-
gua autem (s) mollis conterit os-
sa. Mel inveniens comede quod 16
sufficit ; nè fortè repletus evomas.
(t) Rarum introduc pedem tuum 17
ad tuum amicum : nè fortè satia-
tus te, oderit te. Clava, & gladi- 18
us, & sagitta (u) acuta : sic &
vir, qui contra amicum suum di-
cit falsum testimonium. (x) Via 19
mali, & pes iniqui, peribit in die
mala. (y) Sicut acetum trahit in- 20
utile ; sic accidens passio in corpo-
re cor contristat. Sicut (z) tinea
in vestimento, & vermis ligno; ita
tristitia viri lædit cor. Si esurie- 21
rit inimicus tuus, ciba illum : Si
sitit, potum da illi : Hoc enim fa- 22
ciens, carbones ignis congeres su-
per caput ejus: Dominus autem re-
tribuet tibi bona. Ventus Aquilo 23
(ω) suscitat nubes : facies autem
imprudens linguam irritat. Me- 24
lius habitare super angulum do-
matis, quàm cum muliere contu-
meliosa, in domo communi. Sicut 25
aqua frigida animæ sitienti blāda;
sic nuntius bonus de terra longin-
qua. Sicut, si quis fontem obstru- 26
at, & aquæ exitum disperdat ; sic
indecens est justum cecidisse corā
impio. Comedere mel multum, nō 27
bonum : (aa) honorare autem o-
portet sermones gloriosos. Sicut 28
urbs muros dejectos habens, &
non murata ; sic vir, qui non cum
consilio quid agit.

CAP. XXVI.

Quomodò ros in messe, & quo- 1
modò pluvia in æstate ; sic (a) non
est insipienti honor. Sicut aves 2
avolant, & passeres ; sic (b) ma-
ledictum vanum non superveniet
ulli. Sicut (c) flagellum equo, & 3
stimulus asino ; sic virga genti (d)
iniquæ. Noli respondere impru- 4
denti ad imprudentiam ejus, nè
similis ei fias : Sed responde stul- 5
to (e) ad stultitiam ejus : ut non
videatur sapiens apud se. Ex (f) 6
viis suis opprobrium facit, qui
misit verbum per nuntium impru-
dentem. (g) Aufer gressum cru- 7
rum, (h) & iniquitatem ex ore
imprudentum. Qui alligat lapidem in funda, 8
similis est ei, qui dat imprudenti gloriam. Spinæ 9
nascuntur in manu temulenti, servitus autem in
manu imprudentum.

MS. A. (*) ἀπ' (ζ) χρύσεον (η) χρυσοῦν σάρδιον (θ) ἐπιφανέστατοι, (ι) οἱ καυχώμενοι (*) τοῦ σεαυτοῦ (*) μισήσει (κ) *ἀκηλίδωτον, (λ) ὁ ἀνὴρ (μ) κατὰ τοῦ φίλου ἑαυτοῦ (*) Ὁδοὺς (ν) σώματι
(ξ) σὴς ἱματίῳ (ο) τρέφε αὐτὸν, (π) πυρὸς ἄνθρακας σωρεύσεις (ρ) ἀνταποδιδώσει Κεφ. κϛʹ. MS. A. (α) πέτανται (*) κατὰ τὴν (β) πρὸς τὴν (γ) Ἐκ τῶν ἑαυτοῦ ὁδῶν (δ) τοῦ μεθύσου,

תרגום TARGUM.

12 אין הויתא גברא דחכים בעיני נפשיה סכלא טב מניה : אמר עטלא שחלא בארחא
13 14 אריא בינת שוקי : היך תרעא דמכרך על צירתה היכנא עטלא על ערסיה : עטלא מטשי
15 אידיה בשחתא לעי דנהפכיה לפומיה : עטלא חכים בעינוי טב מן שובעא דיהבי טעמא :
16 17 דלכד באדנוי דכלבא נצי ומתנצי על דינא דלא דיליה : איך הוא דמתחת דפשט גירי
18 שניני דמותא : היכנא גברא דמרמי בחבריה ואמר מנחך גחכית : היכנא דלית קיסי
19 20 דעכא נורא והיכנא דלית שגושא ישתק תגרא : טרטקל לגומרי וקיסי לנורא וגברא
21 תגרנא מחרה כהותא : מלוי דשגושא מרכנן ליה והנון נחתן לגוה דכרסא : היך כספא
22 23 מסליא דקרים על חספא היכנא שפותא דדלקן ולבא בישא : מן שפותיה מתידע סנאה
24 ובגויה סאם רמיותא : ואין מחנן בקליה לא תהימן ביה מטול דשבע בישתא אית
25 26 בלביה : דמכסה סנואתא במורסתא תתגלי בישתיה בכנשתא : דחפר גומצא ביה נפול
27 28 ודמערגל כיפא עלוי הפכא : לישנא דשקרא סני ארחתא דקושטא ופומה דפליג עבד
תרכונתא :

כז

1 לא תשתבהר ביומא דלמחר דלא ידעת מנא יליד יומא : נשבחנך חילוני ולא פומך
2 3 נוכראה ולא שפותך : יקירא כיפא ונטול חלא ורוגזיה דשטיא יקיר מן תרויהון :
4 נכוריותא היא חימתא וחיפא היא רוגזא ומנו קאים קדם קנאתא : טבתא מכסנותא
5 6 דמגליא מן רחמותא דמטשיא : שפירן אנון פודעתיה דרחמא ובישן נושקתא דסנאה :
7 נפשא דשבעא דישא כבריתא ונפשא דכפנא כל מידם דמריר חלי לדה : היך צפרא
8 9 דמשנא מן קנא היכנא הוא גברא דמשני דוכתיה : משחא ובוסמא דמחדין לבא היכנא
גברא דמבסים לחבריה בתרעיתא דנפשיה :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Si vidisti virum qui sapiens est apud semetipsum, melior est illo stultus. 12
Dicit piger : Leæna est in via, leo est in plateis. Sicut ostium vertitur in 13
cardine suo, sic piger in lectulo suo. Piger abscondit manum suam sub 14
ascella, & laborat ut ad os suum convertat eam. Piger sapiens est 15
in oculis suis magis quàm septem reddentes rationem. Sicut ille qui ap- 16
prehendit aures canis, sic est ille qui contendit, & rixatur in causa quæ non 17
est sua. Sicut ille qui dejiciens se, emittit sagittas acutas mortis ; Sic est 18
vir qui fraudulenter agit in socium suum, & dicit : Ludens ludebam.. Ubi 19
non sunt ligna, extinguitur ignis : & ubi non est susurro, conquiescit 20
jurgium. Carbones ad prunas, & ligna ad ignem, & vir ligitiosus in- 21
cendit rixam. Verba susurronis *prosternunt* eū, & ipsa descendunt ad inte- 22
riora ventris. Sicut argentum fæculentum quo opertum est vas fictile ; sic 23
labia incensa, & cor pessimum. Labiis suis cognoscitur inimicus, & in in- 24
terioribus suis reponit fraudulentiam. Si deprecatus fuerit voce sua, non 25
credes ei ; quoniam septem mala sunt in corde ejus. Qui operit odium in 26
contritione, revelabitur malitia ejus in concilio. Qui fodit foveam, inci- 27
det in eam : & qui volvit lapidem, vertetur in eum. Lingua fallax odit 28
vias veritatis, & os bifidum operatur ruinam.

CAP. XXVII.

NE glorieris in diem crastinum, quia nescis quid paritura sit hodierna 1
dies. Laudet te extraneus & non os tuum ; alienus, & non labia tua. 2
Gravis est lapis, & ponderosa arena, & ira stulti gravior ambobus. Cru- 3
delitas est ira, & inundatio est furor : & quis stabit coram zelo ? Melior 4
est correptio manifesta quàm amor absconditus. Pulchra sunt vulnera di- 5
ligentis, & mala oscula odientis. Anima saturata calcat favum, & animæ 6
esurienti quicquid amarum est, dulce est. Sicut passer qui mutatur de ni- 7
do suo, sic est vir qui mutat locum suum. Sicut oleum & aromata lætificant 8
cor, sic vir suavis est amico suo in consilio animæ suæ. 9

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

12 ܐܢ ܚܙܝܬ ܓܒܪܐ ܕܚܟܝܡ ܒܥܝ̈ܢܘܗܝ ܢܦܫܗ ܀ ܛܦܫܐ ܣܓܝ ܝܬܝܪ ܡܢܗ ܀ * ܐܡܪ ܚܒܢܢܐ
13 14 ܟܕ ܡܫܬܕܪ. ܐܪܝܐ ܒܐܘܪܚܐ ܀ ܘܐܪܝܐ ܒܝܬ ܫܘܩܐ. * ܐܝܟ ܬܪܥܐ ܕܡܬܗܦܟ ܥܠ ܨܝܪܗ ܀ ܗܟܢܐ ܚܒܢܢܐ
15 ܡܬܗܦܟ ܒܥܪܣܗ. * ܚܒܢܢܐ ܕܡܛܫܐ ܐܝ̈ܕܘܗܝ ܒܥܘܒܗ ܀ ܠܐܐ ܕܢܩܪܒ ܐܢܝܢ
16 ܠܦܘܡܗ. * ܚܒܢܢܐ ܚܟܝܡ ܒܥܝ̈ܢܘܗܝ ܢܦܫܗ ܀ ܝܬܝܪ ܡܢ ܫܒܥܐ ܕܡܦܢܝܢ ܛܥܡܐ. * ܕܡܬܚܪܐ
17 18 ܥܡ ܕܠܐ ܕܝܠܗ ܀ ܐܝܟ ܗܘ ܗܘ ܕܐܚܝܕ ܐܕ̈ܢܘܗܝ ܕܟܠܒܐ. * ܐܝܟ ܕܐܢܫܐ ܕܡܫܬܒܗܪܝܢ ܡܫܕܝܢ ܡ̈ܠܐ
19 ܐܝܟ ܓܐܪ̈ܐ ܚܪ̈ܝܦܐ ܕܡܘܬܐ. * ܗܟܢܐ ܗܘ ܓܒܪܐ ܕܡܛܥܐ ܠܚܒܪܗ. ܘܡܐ ܕܐܬܬܚܕ ܐܡܪ.
20 ܡܓܚܟܘ ܓܚܟܬ. * ܟܕ ܠܝܬ ܩܝ̈ܣܐ. ܕܥܟܐ ܢܘܪܐ. ܘܐܝܟܐ ܕܠܝܬ ܦܠܘܓܐ. ܫܠܝܐ ܚܪܝܢܐ.
21 22 * ܦܚܡ̈ܐ ܠܓܘܡܪ̈ܐ. ܘܩܝ̈ܣܐ ܠܢܘܪܐ. ܘܓܒܪܐ ܪܛܢܐ. ܡܓܪܐ ܚܪܝܢܐ. * ܡ̈ܠܘܗܝ ܕܪܛܢܐ
23 ܡܫܓܫܝܢ ܀ ܘܢܚܬܝܢ ܠܬܘܢ̈ܝ ܟܪܣܐ. * ܐܝܟ ܣܐܡܐ ܕܡܚܦܝܐ ܚܨܦܐ ܥܠ ܚܨܒܐ ܀ ܗܟܢܐ ܣܦܘ̈ܬܐ
24 25 ܝܩܝ̈ܕܬܐ ܘܠܒܐ ܒܝܫܐ. * ܡܢ ܣܦܘ̈ܬܗ ܡܬܝܕܥ ܣܢܝܐ. ܘܒܓܘܗ ܣܐܡ ܢܟܠܐ. * ܐܢ
26 ܢܡܟܟ ܩܠܗ ܀ ܠܐ ܬܗܝܡܢܝܘܗܝ. ܡܛܠ ܕܫܒܥ ܒܝ̈ܫܢ ܐܝܬ ܒܓܘܗ. * ܕܡܟܣܐ ܣܢܐܬܐ
27 ܒܠܒܗ. ܬܬܓܠܐ ܒܝܫܘܬܗ ܒܟܢܫܐ. * ܕܚܦܪ ܓܘܡܨܐ ܢܦܠ ܒܗ. ܘܕܡܥܓܠ ܟܐܦܐ
28 ܥܠܘܗܝ ܬܬܗܦܟ. * ܠܫܢܐ ܕܓܠܐ ܣܢܐ ܩܘܫܬܐ. ܘܦܘܡܐ ܡܕܓܠܐ. ܥܒܕ ܫܓܘܫܝܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܙ *

1 ܠܐ ܬܫܬܒܗܪ ܒܝܘܡܐ ܕܡܚܪ. ܠܐ ܓܝܪ ܝܕܥ ܐܢܬ ܡܢܐ ܢܐܠܕ.
2 3 * ܢܫܒܚܟ ܢܘܟܪܝܐ. ܘܠܐ ܦܘܡܟ. ܘܐܚܪܢܐ. ܘܠܐ ܣܦܘ̈ܬܟ. * ܝܩܝܪܐ ܟܐܦܐ. ܘܝܩܝܪ ܚܠܐ. ܘܪܘܓܙܗ
4 ܕܣܟܠܐ ܝܩܝܪ ܡܢ ܬܪ̈ܝܗܘܢ. * ܡܪܝܪܐ ܗܝ ܚܡܬܐ. ܘܫܘܛܦܐ ܪܘܓܙܐ. ܘܡܢܘ ܢܩܘܡ ܩܕܡ ܚܣܡܐ.
5 6 * ܛܒܐ ܗܝ ܡܟܣܢܘܬܐ ܕܓܠܝܐ. ܡܢ ܪܚܡܬܐ ܕܡܛܫܝܐ. * ܡܗܝܡܢܢ ܡܚܘ̈ܬܗ ܕܪܚܡܐ. ܡܢ
7 ܢܫܩܬܗ ܕܒܥܠܕܒܒܐ. * ܢܦܫܐ ܕܣܒܝܥܐ. ܕܝܫܐ ܟܘܪܬܐ ܕܕܒܫܐ. ܘܢܦܫܐ ܕܟܦܢܐ. ܐܦ ܡܪ̈ܝܪܬܐ
8 9 ܚܠܝ̈ܢ ܠܗ. * ܐܝܟ ܨܦܪܐ ܕܡܫܢܝܐ ܩܢܗ. ܗܟܢܐ ܗܘ ܓܒܪܐ ܕܢܐܕ ܡܢ ܐܬܪܗ. * ܐܝܟ
ܡܫܚܐ ܘܒܣ̈ܡܐ ܕܡܒܣܡܝܢ ܠܠܒܐ. ܗܟܢܐ ܗܘ ܡܢ ܕܡܒܣܡ ܠܚܒܪܗ ܒܡܠܟܐ ܕܢܦܫܗ.

Si videris hominem ſapientem in oculis ſuis, 12
ſtultus multò præſtantior eſt illo. Dicit pi- 13
ger quando mittitur, Leo eſt in via, & leo
inter plateas. Sicut oſtium vertitur ſuper 14
cardine ſuo, ſic piger volutatur in lecto ſuo.
Piger qui abſcondit manus ſuas in ſinu ſuo, 15
laborabit in perducendis illis ad os ſuum.
Piger ſapiens ſibi videtur pluſquam ſeptem 16
reddentes ſaporem. Qui ſagax eſt in lite 17
non propria, ſimilis eſt ei qui tenet aures ca-
nis. Quemadmodum arrogantes jactant 18
verba quaſi tela mortis acuta, Sic eſt vir 19
decipiens proximum ſuum: cúmque depre-
henditur, inquit, Jocans jocabar. Cùm de- 20
ſunt ligna, extinguitur ignis: & ubi non ad-
eſt ſeditioſus, ſilet contentio. Crates car- 21
bonibus, & ligna igni: Vir autem ſuſurro,
concitat jurgium. Verba ſuſurronis per- 22
turbant, & deſcendunt in penetralia cordis.
Ut argentum vile obductum teſtæ, ſic labia 23
ardentia, & cor malum. Ex labiis ſuis di- 24
gnoſcitur oſor, & in præcordiis ſuis tendit
inſidias. Etiamſi demittat vocem ſuam, ne 25
credas ei: quoniam ſeptem nequitiæ ſunt in
viſceribus ejus. Qui tegit odium in corde 26
ſuo, revelabitur malitia ejus in cœtu. Qui 27
fodit foveam, incidet in eam: & qui pro-
volvit ſaxum, recidet in illum. Lingua men- 28
dax odit veritatem, & os detrectans generat
tumultum.

CAP. XXVII.

NE glorieris in diem craſtinum: ignoras 1
enim quid pariat. Laudet te alienus, & 2
non os tuum: alius, & non labia tua. One- 3
roſum eſt ſaxum, & gravis arena: at ira ſtul-
ti gravior utroque. Impudentia eſt ira, & 4
impetus, furor: at quis conſiſtat coram æmu-
latione? Melior eſt correptio aperta, quàm 5
dilectio occulta. Meliores ſunt plagæ ami- 6
ci, quàm oſcula inimici. Anima ſatura con- 7
culcat favum: animæ autem eſurienti, etiam
amara, dulcia ſunt. Sicut avis quæ transfert 8
nidum ſuum, ſic vir qui movetur de loco
ſuo. Ut unguentum & aromata cor exhila- 9
rant: ejuſmodi eſt qui recreat proximum
ſuum conſilio proprio.

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

30 31 * شبل الاسد هو اوفر قوة من البهائم * ما يلتفت ولا يجزع من بهيمة * والديك اذا مشا بين
32 الاناث من الدجاج بطيبة النفس * والتيس المتقدم القطيع * والملك يخطب في جموع الامم * ان
33 بذلت ذاتك للشرور ومددت يدك بخصومة ستهان بك وتهمي * احلب لبنا فيكون منه زبدا *
فان عصرت المنخرين يعصر منهما دما * ان استجذبت اقوالا ستنشي حكومات وخصومات *
اقوالي مقولة من الله *

* الفصل الحادي والثلثون *

1 2 * تصدير قول الملك الذي ادبته امه * يا ولدي ماذا حفظت * ماذا هي اقوالي يا بني * اقول
3 لك كلاما قبل كونه * وماذا هو يا ولد جوفي * ما هو يا ولد نذوري * لا تعط ثروتك لامراة *
4 ولا تمح عقلك وعمرك لعدم المشورة * اعمل كل اعمالك بمشاورة * بمشاورة اشرب الخمر * الكبراء
5 والمقتدرون هم غصون بورقه * فلا يشربن خمرا * لكي لا اذا شربوا ينسون الحكمة * وما يمكنهم
6 يحكمون للضعفاء احكاما مستوية * امنحوا سكرا للذين في الغموم * واعطوا شرب الخمر للذين في
7 الاوجاع والضيقات * ليتناسوا الفقر ولن يذكروا الاتعاب ايضا * افتح فمك لكلام الله واحكم
8 للكافة حكومة معافاة * افتح فمك واحكم مقسطا * واحكم للفقير والضعيف *

* تجز بعون الله تعالي وحسن توفيقه امثال سليمان ومواعظه المملك على بني
اسرائيل * ويتلوها اداب المستعجم تلخيصها *

* بسم الله القديم الازلي *

* الفصل الخامس والعشرون *

1 * اداب سليمان ابن داوود المستعجم تلخيصها التي استكتبها اصدقاء حزقيا ملك يهودا *
2 3 * مجد الله يكتم القول * ومجد الملك يكرم الامر * السماء عالية والارض عميقة * وقلب الملك
4 5 غير مروض * اضرب الفضة المغشوشة فتصفي نقاء كاملا * اقتل المنافقين من وجه الملك *
فيقوم كرسيه بالحق والعدل *

Catulus leonis eſt fortiſſimus animantium: 30
non convertitur, neque timet animal ul-
lum. Et gallus, cùm deambulat inter fœ- 31
minas gallinas cum hilaritate animi. Et
hircus præcedens gregem. Et rex collo-
quens inter cœtus populorum. Si tradi- 32
deris te ipſum vitiis, & extenderis ma-
num tuam ad rixam, contemnêris, & hu-
miliaberis. Emunge lac, & fiet ex eo buty- 33
rum: quòd ſi compreſſeris nares, elicietur
ex eis ſanguis, ſi attraxeris verba, exci-
tabis judicia & contentiones. Sermones
mei ſunt dicti à Deo.

CAP. XXXI.

RElatio ſermonis Regis quem erudivit 1
mater ſua. O fili mi, quid didiciſti? quæ- 2
nam ſunt eloquia mea, O fili mi? dicam
tibi ſermonem antequàm ſi. Ecquinam eſt,
O partus uteri mei? quinam eſt, O nate
votorum meorum? Ne des opes tuas mu- 3
lieri: & ne tradas ingenium tuum &
ætatem tuam ob defectum conſilii. Fac
omnia opera tua cum conſilio: cum conſi-
lio bibe vinum. Magnates & potentes 4
ſunt arbor cum foliis ſuis: Ne igitur bibant
vinum, Ne cum biberint obliviſcantur 5
ſapientiæ, nec poſſint judicare imbecillibus
judicia recta. Date quod inebriat iis qui 6
ſunt in mœroribus, & tribuite potum vini
iis qui ſunt in doloribus & anguſtiis: ut 7
obliviſcantur inopiæ, & non recordentur
laborum ampliùs. Aperi os tuum verbis
Dei, & judica omnibus judicium ſanum.
Aperi os tuum, & judica juſtè: & ju- 8
dica pauperi, & imbecilli.

Cæteros verſiculos reperies ad
calcem cap. 29.

Expleta ſunt, Excelſi Dei ope ejuſ-
que optimâ providentiâ, Prover-
bia & monita Salomonis, qui
regnavit ſuper filios Iſrael. Se-
quuntur Eruditiones ipſius dif-
ficiles explanatu.

IN NOMINE DEI ÆTERNI,
SEMPITERNI.

CAP. XXV.

Diſciplina Salomonis filii David, cujus ex- 1
poſitio eſt valdè difficilis, quam ſcri-
pſerunt amici Ezeciæ regis Juda.

GLoria Dei celat ſermonem, & gloria 2
regis præſtat rebus honorem. Cœlum eſt 3
ſublime, & terra profunda, & cor regis
minimè domitum. Percute argentum ſor- 4
didum, & purificabitur purificatione per-
fectâ. Occide iniquos de facie regis, & 5
erigetur ſedes ejus in veritate & juſtitia.

מִשְׁלֵי׃ כח

tui fratris domum & ,derelinquas ne tui patris amicum & ,tuũ Amicum
10 רֵעֲךָ וְרֵעֶה אָבִיךָ אַל־תַּעֲזֹב וּבֵית אָחִיךָ
frater quàm ,propinquus vicinus *bonus* : *tui exitii* die in ingrediaris ne
אַל־תָּבוֹא בְּיוֹם אֵידֶךָ טוֹב שָׁכֵן קָרוֹב מֵאָח
respondebo & : meum cor lætifica & ,mi fili sapiens Sis .longinquus
11 רָחוֹק׃ חֲכַם בְּנִי וְשַׂמַּח לִבִּי וְאָשִׁיבָה
: se abscondit ,malum vidit Callidus .verbum me afficienti probris
12 חֹרְפִי דָבָר׃ עָרוּם רָאָה רָעָה נִסְתָּר
fidejussit quia,ejꝰ vestimentũ Tolle .sunt *condemnati* ,transierunt simplices
13 פְּתָאִים עָבְרוּ נֶעֱנָשׁוּ׃ קַח־בִּגְדוֹ כִּי־עָרַב
suo *socio Benedicens* .ejus pignus cape extranea pro & : extraneo
14 זָר וּבְעַד נָכְרִיָּה חַבְלֵהוּ׃ מְבָרֵךְ רֵעֵהוּ
.ei reputabitur maledictio , *manicando* mane *in* grandi voce *in*
בְּקוֹל גָּדוֹל בַּבֹּקֶר הַשְׁכֵּים קְלָלָה תֵּחָשֶׁב לוֹ׃
.*est æquata contentionum* mulier & : *imbris* die in assidua Stillatio
15 דֶּלֶף טוֹרֵד בְּיוֹם סַגְרִיר וְאֵשֶׁת מִדוֹנִים נִשְׁתָּוָה׃
.clamabit *ejus dexteræ oleum* & : ventum abscondit , eam *Abscondentes*
16 צֹפְנֶיהָ צָפַן־רוּחַ וְשֶׁמֶן יְמִינוֹ יִקְרָא׃
,ficum *Servans* .sui amici *facies* acuet vir & : acuetur ferro *in* Ferrum
17 בַּרְזֶל בְּבַרְזֶל יָחַד וְאִישׁ יַחַד פְּנֵי־רֵעֵהוּ׃ נֹצֵר תְּאֵנָה
18 .glorificabitur suum dominum *custodiens* & : ejus fructum comedet
יֹאכַל פִּרְיָהּ וְשֹׁמֵר אֲדֹנָיו יְכֻבָּד׃
Sepulchrum .homini hominis cor sic : *faciebus* facies *aquis* Sicut
19 כַּמַּיִם הַפָּנִים לַפָּנִים כֵּן לֵב־הָאָדָם לָאָדָם׃ שְׁאוֹל
20 .saturabuntur non hominum oculi & : saturabuntur non perditio &
וַאֲבַדֹּה לֹא תִשְׂבַּעְנָה וְעֵינֵי הָאָדָם לֹא תִשְׂבַּעְנָה׃
.eum laudantis *ori vir &* : *auro* caminus & , *argento* Conflatorium
21 מַצְרֵף לַכֶּסֶף וְכוּר לַזָּהָב וְאִישׁ לְפִי מַהֲלָלוֹ׃
contusorum triticorum medio in , mortario in stultum contuderis Si
22 אִם־תִּכְתּוֹשׁ אֶת־הָאֱוִיל בַּמַּכְתֵּשׁ בְּתוֹךְ הָרִיפוֹת
agnoscas Agnoscendo .ejus stultitia eo *desuper* recedet non , pistillo *in*
23 בַּעֱלִי לֹא־תָסוּר מֵעָלָיו אִוַּלְתּוֹ׃ יָדֹעַ תֵּדַע
seculum in non Quia .greges ad tuum cor pone : tui pecoris *facies*
24 פְּנֵי צֹאנֶךָ שִׁית לִבְּךָ לַעֲדָרִים׃ כִּי לֹא לְעוֹלָם
est Revelata ? generationem &,generatione in corona *an &* : *fortitudo*
25 חֹסֶן וְאִם־נֵזֶר לְדוֹר דוֹר׃ גָּלָה
Oves .montium herbæ *sunt collectæ* & : germen *apparuit* & , herba
26 חָצִיר וְנִרְאָה־דֶשֶׁא וְנֶאֶסְפוּ עִשְּׂבוֹת הָרִים׃ כְּבָשִׂים
caprarum *lactis sufficientia* Et .hirci agri preciũ & : *tuas vestes ad*
27 לִלְבוּשֶׁךָ וּמְחִיר שָׂדֶה עַתּוּדִים׃ וְדֵי חֲלֵב עִזִּים
.tuis puellis *vitas* & : tuæ domus *panem* in ,tuum *panem* in
לְלַחְמְךָ לְלֶחֶם בֵּיתֶךָ וְחַיִּים לְנַעֲרוֹתֶיךָ׃

CAP. XXVIII. כח

.*fidet* leunculꝰ veluti justi & : *impius* ,persequens non &,Fugerunt
1 נָסוּ וְאֵין־רֹדֵף רָשָׁע וְצַדִּיקִים כִּכְפִיר יִבְטָח׃
sciente intelligente homine in & : ejus principes multi terræ *prævaricatione* In
2 בְּפֶשַׁע אֶרֶץ רַבִּים שָׂרֶיהָ וּבְאָדָם מֵבִין יֹדֵעַ
non & ,*trahens* pluvia : pauperes *opprimens* & ,pauper Vir .*prolongabit sic*
3 כֵּן יַאֲרִיךְ׃ גֶּבֶר רָשׁ וְעֹשֵׁק דַּלִּים מָטָר סֹחֵף וְאֵין
: impium laudabunt legem Derelinquentes .panis
4 לָחֶם׃ עֹזְבֵי תוֹרָה יְהַלְלוּ רָשָׁע
non mali Viri .eis *in miscebunt litem* legem custodientes &
5 וְשֹׁמְרֵי תוֹרָה יִתְגָּרוּ בָם׃ אַנְשֵׁי־רָע לֹא־
.omnia intelligent DOMINUM quærentes *&* : judicium intelligent
יָבִינוּ מִשְׁפָּט וּמְבַקְשֵׁי יְהוָה יָבִינוּ כֹל׃
, viis perversus quàm : sua *integritate in ambulans* pauper *Bonus*
6 טוֹב־רָשׁ הוֹלֵךְ בְּתֻמּוֹ מֵעִקֵּשׁ דְּרָכַיִם
.dives ipse &
וְהוּא עָשִׁיר׃

Versio VULG.LAT.

10 Amicũ tuũ,& amicũ patris tui ne dimiseris : & domũ fratris tui ne ingrediaris in die afflictionis tuæ. Melior est vicinus 11 juxtà,quàm frater procul. Stude sapientiæ,fili mi, & lætifica cor meũ, ut possis exprobranti 12 respondere sermonem. Astutꝰ videns malum,absconditus est: parvuli transeuntes sustinue-13 runt dispendia. Tolle vestimentum ejus,qui spopondit pro extraneo : & pro alienis, aufer 14 ei pignꝰ. Qui benedicit proximo suo voce grandi, de nocte consurgens maledicenti similis 15 erit. Tecta perstillantia in die frigoris, & litigiosa mulier 16 comparantur. Qui retinet eã, quasi qui ventũ teneat, & oleũ 17 dexteræ suæ vocabit. Ferrum ferro exacuitur, & homo exa-18 cuit faciem amici sui. Qui servat ficũ,comedet fructus ejus : & qui custos est dñi sui, glori-19 ficabitur. Quomodò in aquis resplendent vultus prospicientium, sic corda hominũ mani-20 festa sunt prudentibꝰ. Infernus & perditio nunquam implentur : similiter & oculi hominũ 21 insatiabiles. Quomodò probatur in conflatorio argentũ, & in fornace aurũ : sic probatur homo ore laudantis. Cor iniqui inquirit mala,cor autem 22 rectum inquirit scientiam. Si contuderis stultũ in pila quasi ptisanas feriente desupèr pilo, non auferetur ab eo stultitia e-23 jus. Diligenter agnosce vultũ pecoris tui, tuósq; greges con-24 sidera : Non enim habebis jugiter potestatẽ : sed corona tribuetur in generationem & ge-25 nerationem. Aperta sunt prata, & apparuerũt herbæ virentes, & collecta sunt fœna de 26 montibus. Agni ad vestimentũ tuum : & hœdi, ad agri pretiũ. 27 Sufficiat tibi lac caprarũ in cibos tuos, & in necessaria domꝰ tuæ,& ad victum ancillis tuis.

CAP. XXVIII.

1 Fugit impius, nemine persequente : justꝰ autẽ quasi leo con-2 fidens,absq; terrore erit. Propter peccata terræ multi principes ejꝰ : & propter hominis sapientiam, & horum scientiã quæ dicuntur, vita ducis lon-3 gior erit. Vir pauper calumnians pauperes, similis est imbri vehementi, in quo paratur fa-4 mes. Qui derelinquunt legẽ, laudant impium : qui custodiunt, succenduntur contra eum. 5 Viri mali non cogitant judicium : qui autem inquirunt Dominum, animadvertunt omnia.
6 Melior est pauper ambulans in simplicitate sua,quàm dives in pravis itineribus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

10 † Πολλὰ χειμάζεται πᾶσα σὰρξ ἀφρόνων, 11 † Συντρίβεται γὰρ ἡ ἔκστασις αὐτῶν. † Ὥσπερ κύων ὅταν ἐπέλθῃ (ε) ἐπὶ τὸν ἑαυτοῦ ἔμετον καὶ μισητὸς γένηται, † οὕτως ἄφρων τῇ ἑαυτοῦ κακίᾳ ἀναστρέψας ἐπὶ τὴν ἑαυτοῦ ἁμαρτίαν. † Ἔστιν αἰσχύνη ἐπάγουσα ἁμαρτίαν, † καί ἐστιν αἰσχύνη δόξα καὶ χάρις. 12 † Εἶδον ἄνδρα (ζ) δόξαντα παρ' αὐτῷ σοφὸν εἶναι, † ἐλπίδα μέντοι ἔσχε (η) μᾶλλον ἄφρων αὐτοῦ. 13 † Λέγει ὀκνηρὸς ἀποστελλόμενος εἰς ὁδὸν, Λέων ἐν ταῖς ὁδοῖς, ἐν δὲ ταῖς πλατείαις φονευταί. 14 † Ὥσπερ θύρα στρέφεται ἐπὶ (θ) τοῦ στρόφιγγος, † οὕτως ὀκνηρὸς ἐπὶ τῆς κλίνης αὐτοῦ. 15 † Κρύψας ὀκνηρὸς τὴν χεῖρα ἐν τῷ κόλπῳ αὐτοῦ, (ι) οὐ δυνήσεται ἐπενεγκεῖν (κ) ἐπὶ στόμα. 16 † Σοφώτερος (λ) ἑαυτῷ ὀκνηρὸς φαίνεται, † τοῦ ἐν πλησμονῇ ἀποκομίζοντος ἀγγελίαν. 17 † Ὥσπερ ὁ κρατῶν κέρκου κυνὸς, 18 † οὕτως ὁ προεστὼς ἀλλοτρίας κρίσεως. † Ὥσπερ οἱ ἰώμενοι προβάλλουσι λόγους εἰς ἀνθρώπους, † ὁ δὲ ἀπαντήσας τῷ λόγῳ πρῶτος ὑποσκελισθήσεται· 19 † Οὕτως πάντες οἱ ἐνεδρεύοντες τοὺς ἑαυτῶν φίλους, † ὅταν (μ) δὲ ὀφθῶσι, λέγουσιν, Ὅτι παίζων ἔπραξα. 20 † Ἐν πολλοῖς ξύλοις θάλλει πῦρ, † ὅπου δὲ οὐκ ἔστι (ν) δίθυμος, ἡσυχάζει μάχη. 21 † Ἐσχάρα ἄνθραξι καὶ ξύλα πυρὶ, † ἀνὴρ δὲ 22 λοίδορος εἰς ταραχὴν μάχης. † Λόγοι κερκώπων μαλακοὶ, † οὗτοι δὲ τύπτουσιν εἰς ταμιεῖα 23 σπλάγχνων. † Ἀργύριον διδόμενον μετὰ δόλου, † ὥσπερ ὄστρακον ἡγητέον. † Χείλη 24 λεῖα καρδίαν καλύπτει λυπηράν. † Χείλεσι πάντα ἐπινεύει (ξ) ἀποκλαιόμενος ἐχθρὸς, † ἐν δὲ τῇ καρδίᾳ τεκταίνεται δόλους. 25 † Ἐάν σου δέηται ὁ ἐχθρὸς μεγάλῃ τῇ φωνῇ, (ο) μὴ πεισθῇς, † ἑπτὰ γάρ εἰσι πονηρίαι (π) ἐν τῇ ψυχῇ αὐτοῦ. 26 † Ὁ κρύπτων ἔχθραν συνίστησι δόλον, † ἐκκαλύπτει δὲ τὰς ἑαυτοῦ ἁμαρτίας εὔγνωστος (ρ) ἐν συνεδρίοις. 27 † Ὁ ὀρύσσων βόθρον τῷ πλησίον, ἐμπεσεῖται εἰς αὐτόν· † ὁ δὲ κυλίων λίθον, ἐφ' ἑαυτὸν 28 κυλίει. † Γλῶσσα ψευδὴς μισεῖ ἀλήθειαν, † στόμα δὲ ἄστεγον ποιεῖ ἀκαταστασίας.

*Multis procellis jactatur omnis caro imprudentum: (i) conteritur enim ecstasis eorum. Sicut canis cùm redierit ad suum vomitum, & odibilis efficitur; sic (k) imprudens suâ malitiâ revertens ad peccatum suum. (l) Est confusio adducens peccatum: & est confusio gloria, & gratia. Vidi virum, qui videtur apud se sapiens esse; spem quidem habet magis insipiens eo. Dicit piger missus ad viam; Leo in viis, & in plateis sicarii. Sicut janua vertitur (m) super cardinem, ita piger super lectum suum. Abscondens piger manum in (n) sinu suo, (o) non poterit mittere ad os. Sapientior sibi piger videtur (p) eo qui in satietate refert nuntium. Sicut qui tenet (q) caudam canis; sic qui præsidet alieno judicio. Sicut qui (r) curantur, projiciunt verba in homines; qui autem occurrit verbo, primus supplantabitur: Sic omnes qui (s) insidiantur suis amicis: cùm autem (t) visi fuerint, dicunt; Quia ludens feci. In (u) multis lignis germinat ignis: ubi autem non est (x) dissentiens, quiescit rixa. Craticula carbonibus, & ligna igni: vir autem (y) maledicus (z) ad tumultum rixæ. Sermones (ω) assentatorum molles: hi verò (aa) percutiunt in penetralia (bb) viscerum. Argentum datum cum dolo, tanquàm testa reputandum. Labia (cc) lævigata cor occultant (dd) triste. (ee) Labiis omnia annuit deplorans inimicus: in corde autem fabricatur (ff) dolos. Si te rogaverit inimicus * magnâ voce, nè credideris: septem enim sunt nequitiæ in anima ejus. (gg) Qui occultat inimicitiam, componit dolum: revelat autem sua peccata benè notus in consessibus. Qui fodit (hh) foveam proximo, incidet in eam: qui autem volvit lapidem, super seipsum volvit. Lingua mendax odit veritatem: os autem (ii) non tectum facit (kk) ruinas.*

MS.A. (ε) ἐπὶ τὸν ἔμετον αὐτοῦ (ζ) δοξάζοντα παρ' ἑαυτῷ (η) ἄφρων μᾶλλον αὐτοῦ. (θ) τῷ στρόφιγγι, (ι) οὐ δύναται (κ) εἰς τὸ στόμα. (λ) ὀκνηρὸς ἑαυτῷ φαίνεται, (μ) δ' ἐφωραθῶσιν, (ν) ὀξύθυμος, (ξ) ὁ ἀποκλαιόμενος (ο) μὴ πεισθῇς αὐτῷ, (π) ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ. (ρ) ἐν συνεδρίῳ.

ΚΕΦ. κζ'.

1 † Μὴ καυχῶ τὰ εἰς αὔριον, † οὐ γὰρ γινώσκεις τί τέξεται ἡ ἐπιοῦσα. 2 † Ἐγκωμιαζέτω σε (α) ὁ πέλας καὶ μὴ τὸ σὸν στόμα, ἀλλότριος καὶ μὴ τὰ σὰ χείλη. † Βαρὺ λί-3 θος καὶ δυσβάστακτον ἄμμος, † ὀργὴ δὲ 4 ἄφρονος βαρυτέρα ἀμφοτέρων. † Ἀνελεήμων θυμὸς καὶ ὀξεῖα ὀργὴ, † ἀλλ' οὐδὲν ὑφ-5 ίσταται ζῆλος. † Κρείσσους ἔλεγχοι (β) ἀποκεκαλυμμένοι κρυπτομένης φιλίας. † (ϛ) 6 Ἀξιοπιστότερά ἐστι τραύματα φίλου, ἢ ἑκούσια φιλήματα ἐχθροῦ.

CAP. XXVII.

Ne glorieris in iis, quæ in crastinum : non enim cognoscis, quid pariet (a) superveniens. Laudet te vicinus, & non os tuum; (b) alienus, & non tua labia. Gravis est lapis, & vix portabilis arena: sed ira stulti gravior utroque. (c) Crudelis est indignatio, & acuta ira: sed (d) nihil sustinet zelus. Meliores correptiones manifestæ (e) absconditâ amicitiâ. Fideliora sunt vulnera amici, quàm (f) spontanea oscula inimici.

MS.A. (α) τὸ πέλας (β) ἀποκαλυπτόμενοι (ϛ) Ἀξιοπιστότερα τραύματα φίλου,

תרגום TARGUM.

10 חַבְרָךְ וְחַבְרֵיהּ דַּאֲבוּךְ לָא תִשְׁבּוֹק וּבְבֵיתָא דַּאֲחוּךְ לָא תֵעוּל בְּיוֹמָא דְתַבְרָךְ טָב שְׁכְנָא
11 12 קָרִיב מֵאַח רָחִיק׃ אִתְחַכַּם בְּרִי וְחַדִּי לִבִּי וְאַהֲדַר מִלְּתָא לְאִלֵּין דִּמְחַסְּדִין לִי׃ עֲרִימָא חָזָא
13 בִּישְׁתָא וּמִטְּשֵׁי וְשַׁבְרֵי עָבְרִין עֲלָהּ וְחָסְרִין׃ מִתְנְסִיב מַרְטוּטֵיהּ דְּמַן דְּעָרִיב לְנוּכְרָאָה
14 וְעַל אַפֵּי נוּכְרָיָא מַשְׁכְּנֵיהּ׃ דִּמְבָרֵךְ לְחַבְרֵיהּ בְּקָלָא רָמָא בְּצַפְרָא בְּקַדּוּמָא לְוָטְתָא
15 תִּתְחֲשֵׁיב לֵיהּ׃ אֵיךְ דִּלְפָא דְנָטֵיף בְּיוֹמָא דְסַגְרִירָא הֵיכְנָא אִתְּתָא תַּגְרָנִיתָא דְּנָצְיָא׃
16 17 רוּחָא גַּרְבִּיתָא קַשְׁיָא וּבִשְׁמָא דִימִינָא מִתְקַרְיָא׃ פַּרְזְלָא בְּפַרְזְלָא לְטִישׁ וְגַבְרָא לָטֵישׁ
18 19 אַפֵּיהּ דְּחַבְרֵיהּ׃ דְּנָטֵר תֵּינְתָא אָכֵל פֵּירָהָא וּדְזָהִיר בְּמָרֵיהּ נִתְיַקַּר׃ הֵיךְ מַיָּא וְהֵיךְ פַּרְצוּפֵי
20 דְּלָא דָמְיָן חַד לְחַד הֵיכְנָא לִבֵּיהוֹן דִּבְנֵי נָשָׁא לָא דַמְיָן חַד לְחַד׃ שְׁיוֹל וְאַבְדָּנָא לָא סָבְעָן
21 וְעַיְנֵיהּ דְּגַבְרָא לָא סָבְעָן׃ צָרְפָא לְכַסְפָּא וְכוּרָא לְדַהֲבָא וְגַבְרָא מִן פּוּמָא דִּמְשַׁבְּחָנוּי׃
22 אִין מָחֵית לֵיהּ לְשַׁטְיָא בְּמַכְתְּשֵׁי בְּגוֹ סִיעָתָא וּבְאִידְּרָךְ לָא תַעְבִּיר מִנֵּיהּ שַׁטְיוּתֵיהּ׃
23 24 מַה דְּרָעֵי אַנְתְּ דַּע אַפֵּי עָנָךְ וְשִׂים לִבָּךְ עַל קְוָטִין׃ מְטוּל דְּלָא לְעָלַם הוּא אַחְסָנָא אַף שְׁלָם
25 דָּרָא לְדָרָא׃ שְׁוַח עֲמִירָא וְאִתְחֲמֵי דִּתְאָה וְאִתְכְּנֵשׁ עִשְׂבָּא דְטוּרֵי׃ אִמְּרֵי לִלְבוּשָׁךְ וְגַדְיָא
26 27 לְתַגְרוּתָךְ׃ וְסוּפְקָנָא דַּחֲלָבָא דְעִזֵּי לְמֵיכוּלְתָּךְ וּלְמֵיכוּלְתָּא דְבֵיתָךְ וְחַיֵּי לְטַלְיָתָךְ׃

כח

1 עָרְקִין רַשִּׁיעֵי בִּדְלֵית דְּרָדֵיף לְהוֹן וְצַדִּיקֵי הֵיךְ אַרְיָא דְּמִסְתְּכֵי לְמֵיכַלְתֵּיהּ מְסַבְּרִין
2 לְחָכְמְתָא׃ בְּחוֹבֵיהָא דְאַרְעָא סַגִּיעִין רַבְרְבָנָהָא וּבְנֵי נָשָׁא דְּמִתְבַּיְנִין בִּידִיעֲתָא נִגְּדוּן׃
3 גַּבְרָא מִסְכֵּינָא דְּעָשֵׁיק לְמִסְכְּנֵי אֵיךְ מִטְרָא חֲבִיטָא דְּלֵית בֵּיהּ יֻתְרָן׃ דְּשָׁבְקִין נִימוֹסָא
4 5 וּמִשְׁתַּבְּחִין בְּרִשְׁעָא וְאִלֵּין דְּנָטְרִין אוֹרַיְתָא מִתְגָּרִין בְּהוֹן דִּיתוּבוּן׃ בְּנֵי נָשָׁא בִישֵׁי לָא
6 מִתְבַּיְנִין דִּינָא וּדְבָעֵי מִן קֳדָם יְיָ מִתְבַּיְנִין כֻּלְּהוֹן טָבָתָא׃ טָב מִסְכֵּינָא דִּמְהַלֵּךְ
בְּתַמִּימוּתֵיהּ מִן הוּא דִּמְעַקְמָן אָרְחָתֵיהּ וְהוּא עַתִּיר׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

10 Socium tuũ, & sociũ patris tui ne dimittas : & domũ fratris tui ne ingrediaris in die interitus tui. Melior est vicinus propè, quàm frater pro-11 cul. Sapiens esto fili mi, & lætifica cor meum, & respondebo verbum 12 his qui exprobrant mihi. Astutus vidit malum, & abscondit se, & insi-13 pientes transeunt juxta illud, & penuriam sustinent. Tollatur palliũ ejus 14 qui fidejussor stetit pro extraneo, & pro extranea aufer pignus ejus. Qui benedicit socio suo voce alta manè consurgens, maledictio reputabitur 15 illi. Sicut stillicidiũ quod stillat in die pluviæ, sic litigiosa mulier quæ ri-16 xatur. Sicut ventus Aquilonaris gravis est, & unguentum dexteræ ejus 17 vocatur. Ferrum ferro acuitur, & vir exacuit faciem socii sui. Qui cu-18 stodit ficulneam, comedet fructum ejus : & qui observat dominum suum, 19 glorificabitur. Sicut aquæ & sicut vultus qui non sunt similes ad invicem, 20 sic cor filiorũ hominũ non est inter se simile. Infernus & perditio non 21 satiantur, & oculi hominis non saturantur. Conflatoriũ est argento et 22 fornax auro, et vir ex ore laudantiũ eum. Etiamsi percusseris stultũ plagis 23 inter cœtus idque *in area tua*, non transibit ab eo stultitia ejus. Earũ quas 24 pascis cognosce vultũ oviũ tuarum, et pone cor tuum ad greges. Quoniam non in æternum possessio, neq; pax erit à generatione in generationem. 25 Humiliatũ est fœnũ, et apparuit herba, et congregata est herba montiũ. 26 Agni sunt ad vestimentũ tuũ, et hœdi ad negotiationem tuam. Et suffici-27 entia lactis caprarũ in cibũ tuũ, et in cibũ domus tuæ, victúmq; puellis tuis.

CAP. XXVIII.

1 Fugiunt impii nemine persequente eos : justi autem sicut leo qui intendit cibo suo, sperant in sapientiam. In peccato terræ, multi sunt principes 2 ejus, et filii hominũ qui intelligunt scientiam, durabunt. Vir pauper qui 3 calumniatur pauperes, est sicut pluvia vehemens, in qua non est utilitas. 4 Qui relinquunt legem, gloriantur in impietate : et hi qui custodiunt legem, 5 contendent cum eis ut revertantur. Filii hominum impii non intelligunt 6 judicium ; et qui requirunt coram Domino, intelligunt omnia bona. Melior est pauper qui ambulat in simplicitate sua, quàm ille qui perversus est in via sua, et ipse est dives.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

10 * ܪܚܡܟ ܘܪܚܡܗ ܕܐܒܘܟ ܠܐ ܬܫܒܘܩ. ܘܠܒܝܬܗ ܕܐܚܘܟ ܠܐ ܬܐܥܘܠ ܒܝܘܡܐ ܕܬܒܪܟ. ܛܒ
11 ܗܘ ܫܒܒܐ ܕܩܪܝܒ. ܡܢ ܐܚܐ ܕܪܚܝܩ. * ܐܬܚܟܡ ܒܪܝ. ܘܚܕܝ ܠܒܝ. ܘܦܢܝ ܡܢܝ ܚܣܕܐ
12 ܕܡܚܣܕܝܢ ܠܝ. * ܚܪܝܦܐ ܚܙܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܐܬܛܫܝ. ܣܟܠܐ ܕܝܢ ܥܒܪܘ ܥܠܝܗ. ܘܐܬܚܣܪܘ.
13 * ܫܩܘܠ ܡܪܛܘܛܗ ܕܡܢ ܕܥܪܒ ܠܢܘܟܪܝܐ. ܘܡܛܠ ܢܘܟܪܝܐ ܡܫܟܢܘܗܝ. * ܕܡܒܪܟ
14 15 ܠܚܒܪܗ ܒܩܘܒܠ ܛܝܒܘܬܐ. ܒܩܠܐ ܪܡܐ ܀ ܠܐ ܗܘܐ ܦܪܝܫ ܡܢ ܗܘ ܕܠܐܛ. * ܐܝܟ ܕܛܦܐ ܕܢܛܦ
16 ܒܒܝܬܐ ܒܝܘܡܐ ܕܡܛܪܐ ܀ ܗܟܢܐ ܐܝܬܝܗ ܐܢܬܬܐ ܚܪܝܢܬܐ. * ܪܘܚܐ ܓܪܒܝܝܐ. ܩܫܝܐ. ܘܫܡܗ ܕܝܡܝܢܐ
17 18 ܡܬܩܪܐ. * ܦܪܙܠܐ ܒܦܪܙܠܐ ܡܫܚܠܦ. ܘܓܒܪܐ ܡܫܚܠܦ ܦܪܨܘܦܐ ܕܚܒܪܗ. * ܕܢܛܪ ܬܐܬܐ ܢܐܟܘܠ ܡܢ
19 ܦܐܪܘܗܝ. ܘܕܢܛܪ ܠܡܪܗ ܢܫܬܒܚ. * ܐܝܟ ܕܠܐ ܕܡܝܢ ܦܪܨܘܦܐ ܠܦܪܨܘܦܐ ܀ ܗܟܢܐ ܠܐ ܕܡܝܢ
20 ܠܒܘܬܐ ܠܠܒܘܬܐ. * ܫܝܘܠ ܘܐܒܕܢܐ ܠܐ ܣܒܥܝܢ. ܗܟܢܐ ܐܦ ܥܝܢܝܗܘܢ ܕܒܢܝܢܫܐ ܠܐ
21 ܣܒܥܢ. * ܨܪܦܐ ܒܚܢ ܠܣܐܡܐ. ܘܟܘܪܐ ܠܕܗܒܐ. ܘܓܒܪܐ ܡܢ ܦܘܡܐ ܕܡܫܒܚܢܘܗܝ.
22 ܠܒܐ ܕܥܘܠܐ ܒܥܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܠܒܐ ܕܟܐܢܐ ܝܕܥܬܐ. * ܐܢ ܡܚܐ ܐܢܬ ܠܗ ܠܣܟܠܐ ܒܝܬ
23 ܟܢܘܫܝܐ. ܡܕܡ ܠܐ ܡܘܬܪ ܐܢܬ ܠܗ. ܘܠܐ ܡܥܒܪ ܐܢܬ ܫܛܝܘܬܗ. * ܡܐ ܕܪܥܐ ܐܢܬ ܕܥ
24 ܐܦܐ ܕܥܢܟ. ܘܣܝܡ ܠܒܟ ܥܠ ܡܪܥܝܬܟ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܐ ܠܥܠܡ ܩܢܝܢܐ. ܘܠܐ ܘܐܠ ܥܠܡܐ
25 26 ܠܕܪܐ. * ܢܥܒ ܥܣܒܐ. ܘܐܬܚܙܝ ܕܬܐܐ. ܘܐܬܟܢܫ ܥܣܒܐ ܕܛܘܪܐ. * ܐܡܪܐ ܠܠܒܘܫܟ. ܘܓܕܝܐ
27 ܠܡܐܟܘܠܬܟ. * ܘܚܠܒܐ ܕܥܙܐ ܠܡܐܟܘܠܬܟ. ܘܡܐܟܘܠܬܐ ܕܒܝܬܟ.

1 * ܩܦܠܐܘܢ * ܟܚ * ܥܪܩܝܢ ܥܘܠܐ ܟܕ ܠܝܬ ܕܪܕܦ ܠܗܘܢ. ܘܙܕܝܩܐ ܐܝܟ
2 ܐܪܝܐ ܢܬܬܟܠܘܢ. * ܡܛܠ ܚܘܒܐ ܕܐܪܥܐ ܣܓܝܐܝܢ ܫܠܝܛܢܝܗ. ܘܒܢܝܢܫܐ ܙܕܝܩܐ ܕܝܕܥܝܢ
3 ܟܐܢܘܬܐ. ܢܓܪܘܢ. * ܓܒܪܐ ܡܣܟܢܐ ܕܛܠܡ ܠܡܣܟܢܐ. ܐܝܟ ܡܛܪܐ ܣܚܝܦܐ ܕܠܝܬ ܒܗ
4 ܝܘܬܪܢܐ. * ܐܝܠܝܢ ܕܫܒܩܝܢ ܢܡܘܣܐ. ܡܫܬܒܗܪܝܢ ܒܥܘܠܐ. ܘܐܝܠܝܢ ܕܢܛܪܝܢ ܢܡܘܣܐ ܀
5 ܡܫܬܒܗܪܝܢ ܢܦܫܗܘܢ. * ܓܒܪܐ ܒܝܫܐ. ܠܐ ܡܣܬܟܠܝܢ ܕܝܢܐ. ܘܕܒܥܝܢ ܠܡܪܝܐ. ܝܕܥܝܢ
6 ܟܠܗܝܢ ܛܒܬܐ. * ܡܣܟܢܐ ܡܗܠܟ ܒܬܡܝܡܘܬܐ. ܘܥܬܝܪܐ. ܡܥܩܡܢ ܐܘܪܚܬܗ.

* Amicum tuum & amicum patris tui ne deſeras : 10
& domū fratris tui ne ingrediaris in
die adverſitatis tuæ. Melior eſt vicinꝰ propinquꝰ,
quam frater procul abſens. Sapiens eſto 11
fili mi, & lætifica cor meū, & averte à me improperiū
exprobrantiū mihi. Cautus videns 12
malū, abſcondit ſe : ſtulti verò tranſierunt
prope illud, & detrimentū paſſi ſunt. Eripietur 13
pallium ejꝰ qui ſpondet pro alieno, et propter
extraneū, pignꝰ ejꝰ. Qui benedicit proximū 14
ſuū cum aſſentatione elatâ voce, non differt
ab eo qui maledicit. Ut pluvia *in domum* 15
perſtillans in die imbris, talis eſt mulier litigioſa.
Ventus Aquilonaris aſper eſt, & Dexteri 16
nomine vocitatur. Ferrū ferrū expolit, 17
& homo expolit faciē proximi ſui. Qui ſervat 18
ficū, comedet de fructibꝰ ejꝰ : & qui cautè
cuſtodit dñm ſuū, honorabitur, Quemadmodū 19
non ſunt ſimiles vultꝰ vultibꝰ, ita differentia
ſunt corda à cordibꝰ. Infernꝰ et perditio 20
nunquā ſatiantur : eodē quoq; modo oculus
hominū eſt inſatiabilis. Conflatoriū probat 21
argentum, et fornax aurū : homo verò ore
laudantiū eum *exploratur*. Cor ſceleſtorum
quærit malū : et cor juſtorū, ſcientiā. Etiamſi 22
percutias ſtultū in medio cœtu, nullū tamen
ei afferes emolumentū, nec abſtrahes dementiā
ejꝰ. Cum paſcis, agnoſce faciem pecoris 23
tui, appone cor tuū ad gregē tuū : Non enim 24
perpetua erit poſſeſſio, neq; convenit ſeculū
cum ſeculo. Germinavit fœnū, et apparuit 25
gramen, et collecta eſt herba montiū. Agni 26
ad veſtitū tuū : et hœdi ad eſcā tuā : Lac etiā 27
caprarū, in cibū tuum, et cibum domûs tuæ.

CAP. XXVIII.

Fugient impii nemine eos perſequente : juſti 1
verò tanquā leo confident. Ob iniquitatem 2
terræ multiplicantur principes ejus :
homines autem juſti qui nôrunt æquitatem,
prorogabunt *dies ſuos*. Homo pauper qui 3
decipit pauperem, ſimilis eſt pluviæ præcipiti
in qua nulla eſt utilitas. Qui deſerunt legem, 4
glorientur de iniquitate : qui verò legē
cuſtodiunt, magnificant ſeipſos. Homines 5
mali non intelligunt judicium : qui autem
Dominum quærunt, nôrunt omnia bona.
Pauper ambulat in ſimplicitate : divitis autem 6
viæ, diſtortæ.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

6 7 * لا تزدهين امام الملك * لا تقف امام المقتدرين * فان الافضل ان يقال لك اصعد الي *
8 واحسن من اهانتك بحضرة الرئيس * قل ما رايته عيناك * ولا تسقطن في الخصومة سريعا *
9 10 لئلا تندم في اواخرك * متى عيرك صديقك لا تتهاون ان تنصرف الي ورائك * لئلا يكون
صديقك يعيرك فما تبتعد خصومتك وعداوتك بل تكون عندك نظير الموت * المنة
والصداقة حريان * فاحفظهما لنفسك لئلا تكون معيرا * لكن احفظ طرايقك بحسن انعطاف *
11 12 * مثل تفاحة ذهب في مخنقة من الزبرجد * هكذا سبيلك ان تقول كلامك * الكلام الحكيم
13 في اذن سريعة الاستماع * كقرط ذهب يعلق فيه زبرجده جزيلة قيمتها * بمنزلة خروج الثلج
في الحصاد ينفع اشتعار الحر * كذلك الرسول الامين ينفع من ارسله * لان ينفع نفوس الذين
14 يستصحبونه * كما ان الرياح والغيوم والامطار واضح ظهورها * كذلك المفتخرون بالمنحة
15 16 الكاذبة * بتمهل يكون حسن المسير عند الملوك * واللسان الرخو يهشم العظام * اذا وجدت
17 عسلا كل ما يكفيك * لئلا تمتلئ منه فتتقياه * ادخل رجلك الي عند صديقك دخولا نزرا
18 يسيرا * لئلا يشبع منك فيمقتك * مثل العصا والسيف والسهم الحاد نصله * هكذا الانسان
19 الذي يشهد على صديقه شهادة كاذبة * طريق الشرير ورجل متجاوز السنة يهلك في
20 اليوم السيي * كما ان الخل لن يوافق القرحة * هكذا من يسقط بجسمه في الم ما يوافقه ان يغم
21 قلبه * كفعل السوس في الثوب والدود في الخشب * هكذا حزن الانسان يضر قلبه * ان يجع
22 عدوك فاطعمه * وان يعطش فاسقه * فانك ان فعلت ذلك انما تجمع جمر نار على راسه * والرب
23 24 يجازيك بالصالحات * الريح الجنوبي ينهض السحاب * والوجه الوقاح يخرس اللسان * السكنى في
زاوية في بيت افضل من السكني في بيت جديد مع امراة فارقة ثلابة *

* *Ne glorieris coram rege, ne ſtes coram* 6
potentibus : Quoniam præſtat ut dicatur 7
tibi, Aſcende ad me, & melius quàm
ut vilipendaris in præſentia principis.
Dic quæ viderunt oculi tui, Et ne ruas 8
in altercationem citò, ne te pœniteat
in noviſſimis tuis. Cùm te arguerit amicus 9
tuus, ne negligas retrocedere :
Ne fortè amicus tuus te arguat, & 10
tamen non recedat lis tua & inimicitia
tua, ſed ſit apud te inſtar mortis. Gratia
& amicitia ſunt duæ res nobiliſſimæ :
ſerva eas animæ tuæ, ne ſis probroſus :
quin potius cuſtodi vias tuas in optima
converſatione. Sicut malum aureum in torque 11
ſmaragdino, ſic ſit modus tuus in
* *dicendis verbis tuis. Sermo ſapiens in* 12
aure veloci ad audiendum, eſt velut
inauris aurea cui appenditur ſmaragdus
multi pretii. Quemadmodum exitus nivis 13
in meſſe prodeſt vehementiæ caloris,
ſic legatus fidelis prodeſt ei qui mittit
illum : prodeſt enim animabus eorum
qui eo utuntur. Ut ventorum & nubium 14
atque pluviarum patens eſt exitus, ſic qui
ſe jactant de dono mendaci. In patientia 15
conſiſtit recta vivendi ratio apud
reges, lingua mollis confringit oſſa. Cùm 16
inveneris mel, comede quod tibi ſufficit :
ne eo repletus, evomas illud. Introduc 17
pedem tuum ad amicum tuum ingreſſu
raro & parum frequenti, ne ſatietur te
& odio te habeat. Qualis eſt fuſtis, & 18
gladius, & telum acutæ cuſpidis : talis
eſt homo qui teſtatur contra amicum ſuum
teſtimonium falſum. Via maligni, & 19
homo tranſgrediens legem, peribit in die
malo. Sicut acetum non convenit ulceri, 20
ſic ei qui in corpore ſuo incidit in paſſionem,
non convenit contriſtare cor ſuū.
Qualis eſt effectus tineæ in indumento,
& vermis in ligno : ſic triſtitia hominis
officit cordi ſuo. Si eſurierit inimicus 21
tuus, ciba eum : & ſi ſitierit, pota eum.
Nam ſi id feceris, certè congregabis carbones 22
ignis ſuper caput ejus, & Dominus
retribuet tibi bona. Ventus Meridionalis 23
excitat nubes : & vultus procax obmuteſcere
facit linguam. Inhabitare 24
angulum in quacunque domo, melius eſt,
quàm habitare in domo nova cum muliere
calumniatrice & murmuratrice.

משלי : כח

afficit pudore ,comedones paſcens & : intelligens filius ,legem Cuſtodiens
7 נוֹצֵר תּוֹרָה בֵּן מֵבִין וְרֹעֶה זוֹלְלִים יַכְלִים
: augmento & , uſura in ſuam copiam Multiplicans .ſuum patrem
8 אָבִיו׃ מַרְבֶּה הוֹנוֹ בְּנֶשֶׁךְ וּבְתַרְבִּית
ſuam aurem Removens .eam congregabit , tenuium miſereſcendum ad
9 לְחוֹנֵן דַּלִּים יִקְבְּצֶנּוּ׃ מֵסִיר אָזְנוֹ
faciens Errare .abominatio ejus oratio etiam : legem audiendo ab
10 מִשְּׁמֹעַ תּוֹרָה גַּם־תְּפִלָּתוֹ תּוֹעֵבָה׃ מַשְׁגֶּה
integri & : cadet ipſe ejus foveam in ,malam viam in rectos
יְשָׁרִים בְּדֶרֶךְ רָע בִּשְׁחוּתוֹ הוּא־יִפּוֹל וּתְמִימִים
: dives vir ſuis oculis in Sapiens .bonum accipient hæreditate
11 יִנְחֲלוּ־טוֹב׃ חָכָם בְּעֵינָיו אִישׁ עָשִׁיר
multa juſtos exultando In .eum ſcrutabitur intelligens tenuis &
12 וְדַל מֵבִין יַחְקְרֶנּוּ׃ בַּעֲלֹץ צַדִּיקִים רַבָּה
Tegens .homo inveſtigabitur , impios ſurgendo in & : gloria
13 תִפְאָרֶת וּבְקוּם רְשָׁעִים יְחֻפַּשׂ אָדָם׃ מְכַסֶּה
relinquens & , confitens & : proſperabitur non ſuas prævaricationes
פְּשָׁעָיו לֹא יַצְלִיחַ וּמוֹדֶה וְעֹזֵב
indurans & : ſemper paventis hominis Beatitudines .conſequetur miſericordiam
14 יְרֻחָם׃ אַשְׁרֵי אָדָם מְפַחֵד תָּמִיד וּמַקְשֶׁה
dominans : avidus urſus & ,rugiens Leo .malum in cadet ſuum cor
15 לִבּוֹ יִפּוֹל בְּרָעָה׃ אֲרִי־נֹהֵם וְדֹב שׁוֹקֵק מוֹשֵׁל
multus & ,intelligentiis carens Dux .tenui populo ſuper impius
16 רָשָׁע עַל עַם־דָּל׃ נָגִיד חֲסַר תְּבוּנוֹת וְרַב
Homo .dies prolongabit cupiditatem odiens : oppreſſionibus
17 מַעֲשַׁקּוֹת שֹׂנֵא בֶצַע יַאֲרִיךְ יָמִים׃ אָדָם
apprehendant ne ,fugiet ciſternam ad uſque : animæ ſanguine in oppreſſor
עָשֻׁק בְּדַם־נָפֶשׁ עַד־בּוֹר יָנוּס אַל־יִתְמְכוּ־
cadet viis perverſus & : erit ſalvus ,integer Ambulans .eum in
18 בוֹ׃ הוֹלֵךְ תָּמִים יִוָּשֵׁעַ וְנֶעְקַשׁ דְּרָכַיִם יִפּוֹל
ſequens & : pane ſaturabitur ſuam humum Colens .una in
19 בְּאֶחָת׃ עֹבֵד אַדְמָתוֹ יִשְׂבַּע־לָחֶם וּמְרַדֵּף
: benedictionibus multus veritatum Vir .egeſtate ſaturabitur vacuos
20 רֵיקִים יִשְׂבַּע־רִישׁ׃ אִישׁ אֱמוּנוֹת רַב־בְּרָכוֹת
non facies Cognoſcere .impunis erit non ditandum ad feſtinans &
21 וְאָץ לְהַעֲשִׁיר לֹא יִנָּקֶה׃ הַכֵּר־פָּנִים לֹא־
Feſtinus .vir prævaricabitur panis buccellam ſuper & : bonum
22 טוֹב וְעַל־פַּת־לֶחֶם יִפְשַׁע־גָּבֶר׃ נִבְהָל
.ei veniet defectus quòd ſciet non & : oculi mali vir copiam ad
לַהוֹן אִישׁ רַע עָיִן וְלֹא־יֵדַע כִּי־חֶסֶר יְבֹאֶנּוּ׃
.lingua leniente præ inveniet gratiam : me poſt hominem Arguens
23 מוֹכִיחַ אָדָם אַחֲרַי חֵן יִמְצָא מִמַּחֲלִיק לָשׁוֹן׃
: prævaricatio non , dicens & , ſuam matrem & , ſuum patrem Rapiens
24 גּוֹזֵל אָבִיו וְאִמּוֹ וְאֹמֵר אֵין־פָּשַׁע
miſcebit animo Latus .corrumpentis viri ipſe ſocius
25 חָבֵר הוּא לְאִישׁ מַשְׁחִית׃ רְחַב־נֶפֶשׁ יְגָרֶה
ſuo corde in Fidens .impinguabitur ,DOMINO ſuper fidens & : litem
26 מָדוֹן וּבֹטֵחַ עַל־יְהוָה יְדֻשָּׁן׃ בּוֹטֵחַ בְּלִבּוֹ
Danti .evadet ipſe ſapientia in ambulans & : ſtultus ipſe
27 הוּא כְסִיל וְהוֹלֵךְ בְּחָכְמָה הוּא יִמָּלֵט׃ נוֹתֵן
multitudo , ſuos oculos abſcondenti & : defectus non , pauperi
לָרָשׁ אֵין מַחְסוֹר וּמַעְלִים עֵינָיו רַב־
ces pereundo in & : homo ſe abſcondet , impios ſurgendo In .maledictionum
28 מְאֵרוֹת׃ בְּקוּם רְשָׁעִים יִסָּתֵר אָדָם וּבְאָבְדָם
.juſti multiplicabuntur
יִרְבּוּ צַדִּיקִים׃

Verſio VULG. LAT.

7 Qui cuſtodit legē, filiꝰ ſapiens
eſt : qui autē comeſſatores pa-
8 ſcit, confundit patrē ſuū. Qui
coacervat divitias uſuris &
fœnore, liberali in pauperes
9 congregat eas. Qui declinat
aures ſuas ne audiat legē, ora-
10 tio ejus erit execrabilis. Qui
decipit juſtos in via mala, in
interitu ſuo corruet: & ſim-
plices poſſidebunt bona ejus.
11 Sapiens ſibi videtur vir dives:
pauꝑ autē prudens ſcrutabitur
12 eum. In exultatione juſtorum
multa gloria eſt : regnantibus
13 impiis ruinæ hominum. Qui
abſcondit ſcelera ſua, non di-
rigetur : qui autē confeſſꝰ fue-
rit, & reliquerit ea, miſericor-
14 diam conſequetur. Beatꝰ ho-
mo, qui ſemꝑ eſt pavidꝰ : qui
verò mentis eſt duræ, corruet
15 in malū. Leo rugiens, & urſus
eſuriens, princeps impius ſuꝑ
16 populū pauperē. Dux indigens
prudentiâ, multos opprimet
per calumniam : qui autē odit
avaritiā, longi fient dies ejus.
17 Hominem, qui calumniatur a-
nimæ ſanguinē, ſi uſq; ad lacū
18 fugerit, nemo ſuſtinet. Qui am-
bulat ſimpliciter, ſalvus erit :
qui perverſis graditur viis,
19 concidet ſemel. Qui operatur
terrā ſuā, ſatiabitur panibus :
qui autē ſectatur otium, re-
20 plebitur egeſtate. Vir fidelis
multū laudabitur : qui autem
feſtinat ditari, non erit inno-
21 cens. Qui cognoſcit in judicio
faciē, non benefacit: iſte et pro
buccella panis deſerit verita-
22 tem. Vir, qui feſtinat ditari, &
aliis invidet, ignorat ꝙ egeſtas
23 ſuperveniet ei. Qui corripit
hominē, gratiā poſteà inveniet
apud eū, magis quā ille, qui ꝑ
linguæ blandimenta decipit.
24 Qui ſubtrahit aliquid à patre
ſuo, & à matre : & dicit hoc
non eſſe peccatum, particeps
25 homicidæ eſt. Qui ſe jactat, &
dilatat, jurgia concitat : qui
verò ſperat in Dn̄o, ſanabitur.
26 Qui confidit in corde ſuo,
ſtultꝰ eſt: qui autē graditur ſa-
27 pienter, ipſe ſalvabitur. Qui
dat pauperi, non indigebit :
qui deſpicit deprecantē, ſuſti-
28 nebit penuriā. Cū ſurrexerint
impii, abſcondentur homines:
cùm illi perierint, multiplica-
buntur juſti.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

7 † Ψυχὴ ἐν πλησμονῇ οὖσα κηρίοις ἐμπαίζει,
† ψυχῇ δὲ ἐνδεεῖ καὶ τὰ πικρὰ (γ) γλυκέα φαί-
8 νεται. † Ὥσπερ (δ) ὅταν ὄρνεον καταπετασθῇ
ἐκ τῆς ἰδίας νοσσιᾶς, † οὕτως ἄνθρωπος δου-
λοῦται ὅταν ἀποξενωθῇ ἐκ τῶν ἰδίων τόπων.
9 † Μύροις καὶ οἴνοις καὶ θυμιάμασι τέρπεται
καρδία, † καταῤῥήγνυται δὲ ὑπὸ συμπτω-
10 μάτων ψυχή. † Φίλον σὸν (ε) ἢ φίλον πα-
τρῷον μὴ ἐγκαταλίπῃς, † εἰς δὲ τὸν οἶκον τοῦ
ἀδελφοῦ σου μὴ εἰσέλθῃς ἀτυχῶν. † (ζ) κρείσ-
σων φίλος ἐγγὺς, ἢ ἀδελφὸς μακρὰν οἰκῶν.
11 † Σοφὸς γίνου υἱὲ, ἵνα (η) σου εὐφραίνηται ἡ
καρδία, † καὶ ἀπόστρεψον ἀπὸ σοῦ ἐπονειδίστους
12 λόγους. † Πανοῦργος κακῶν ἐπερχομένων
ἀπεκρύβη, † ἄφρονες δὲ (θ) ἐπελθόντες ζημί-
13 αν τίσουσιν. † Ἀφελοῦ τὸ ἱμάτιον αὐτοῦ,
παρῆλθε γὰρ † ὑβριστὴς, ὅστις τὰ ἀλλότρια (ι)
14 λυμαίνεται. † Ὃς ἂν εὐλογῇ φίλον τοπρωῒ
μεγάλῃ τῇ φωνῇ, † καταρωμένου οὐδὲν διαφέ-
15 ρειν δόξει. † Σταγόνες ἐκβάλλουσιν ἄνθρωπον
ἐν ἡμέρᾳ χειμερινῇ ἐκ τοῦ οἴκου αὐτοῦ, † ὡσαύ-
16 τως καὶ γυνὴ λοίδορος ἐκ τοῦ ἰδίου οἴκου. † Βο-
ρέας σκληρὸς ἄνεμος, † ὀνόματι δὲ ἐπιδέ-
17 ξιος καλεῖται. † Σίδηρος σίδηρον ὀξύνει,
18 † ἀνὴρ δὲ παροξύνει πρόσωπον ἑταίρου. † Ὃς
φυτεύει συκῆν φάγεται τοὺς καρποὺς αὐτῆς,
† ὃς δὲ φυλάσσει τὸν ἑαυτοῦ κύριον, τιμηθήσεται.
19 † Ὥσπερ οὐχ ὅμοια πρόσωπα προσώποις,
† οὕτως οὐδὲ αἱ (κ) διάνοιαι τῶν ἀνθρώπων.
20 † Ἅδης καὶ ἀπώλεια οὐκ (λ) ἐμπίμπλανται, †
ὡσαύτως καὶ οἱ ὀφθαλμοὶ τῶν ἀνθρώπων ἄπλη-
στοι. † βδέλυγμα κυρίῳ στηρίζων ὀφθαλμὸν,
21 † καὶ οἱ ἀπαίδευτοι ἀκρατεῖς γλώσσῃ. † Δοκί-
μιον ἀργυρίῳ καὶ (μ) χρυσῷ πύρωσις, † ἀνὴρ
δὲ δοκιμάζεται διὰ στόματος ἐγκωμιαζόντων
αὐτόν. † καρδία ἀνόμου ἐκζητεῖ κακὰ,
22 † καρδία δὲ (ν) * εὐθὴς ζητεῖ γνῶσιν. † Ἐὰν
μαστιγοῖς (ξ) ἄφρονα ἐν μέσῳ (ʹ) συνεδρίου ἀ-
τιμάζων, † οὐ μὴ περιέλῃς τὴν ἀφροσύνην αὐτοῦ.
23 † Γνωστῶς ἐπιγνώσῃ ψυχὰς ποιμνίου σου, † καὶ (ʺ)
24 ἐπιστήσεις καρδίαν σου σαῖς ἀγέλαις. Ὅτι (ο)
οὐκ εἰς τὸν αἰῶνα ἀνδρὶ κράτος καὶ ἰσχὺς, † οὐ-
δὲ παραδίδωσιν (π) ἐκ γενεᾶς εἰς γενεάν. †
25 Ἐπιμελοῦ τῶν ἐν τῷ πεδίῳ (ϛ) χλωρῶν, καὶ κερεῖς
26 (ρ) πόαν, † καὶ σύναγε χόρτον ὀρεινὸν, Ἵνα ἔ-
χῃς πρόβατα εἰς ἱματισμόν· † τίμα πεδίον,
27 ἵνα ὦσί σοι ἄρνες. † Υἱὲ παρ' ἐμοῦ ἔχεις ῥή-
σεις ἰσχυρὰς εἰς τὴν ζωήν σου, καὶ εἰς τὴν
ζωὴν σῶν θεραπόντων.

ΚΕΦ. κη´.

1 † Φεύγει ἀσεβὴς μηδενὸς διώκοντος, † δί-
2 καιος δὲ ὥσπερ λέων πέποιθε. † Δι' ἁμαρ-
τίας ἀσεβῶν κρίσεις ἐγείρονται, † ἀνὴρ
3 δὲ πανοῦργος κατασβέσει αὐτάς. † Ἀν-
δρεῖος ἐν ἀσεβείαις συκοφαντεῖ πτω-
χούς. † ὥσπερ ὑετὸς λάβρος καὶ ἀνωφε-
4 λὴς, † Οὕτως οἱ ἐγκαταλείποντες τὸν νό-
μον ἐγκωμιάζουσιν ἀσέβειαν, † οἱ δὲ ἀγαπῶντες τὸν νόμον, περιβάλλουσιν ἑαυτοῖς τεῖχος.
5 † Ἄνδρες κακοὶ οὐ συνήσουσι κρίμα, † οἱ δὲ ζητοῦντες τὸν κύριον συνήσουσιν ἐν παντί.
6 † Κρείσσων πτωχὸς πορευόμενος ἐν ἀληθείᾳ, πλουσίου ψευδοῦς. † Φυλάσσει νόμον υἱὸς
7 συνετὸς, † ὃς δὲ ποιμαίνει ἀσωτίαν ἀτιμάζει (α) πατέρα.

Anima, quæ in ſaturitate eſt, favū 7
illudit: animæ autem (g) egenti etiā
amara dulcia videtur. Sicut cū a- 8
vis devolaverit è proprio nido; ſic
homo ſervus fit, (h) cùm peregrina-
tus fuerit è propriis locis. Unguen- 9
tis, & vinis, & odoramentis dele-
ctatur cor : (i) diſrumpitur autem
à calamitatibus anima. Amicum 10
tuum, vel amicū paternum ne dere-
liqueris : in domum autem fratris
tui ne ingrediaris (k) improſperè a-
gens. Melior (l) amicus, qui propè,
quàm frater procul habitans. Sapi- 11
ens eſto, fili, ut lætetur cor tuum, et
(m) averte à te exprobrabiles ſer-
mones. Aſtutus malis ſupervenien- 12
tibus abſcondit ſe: imprudentes au-
tem ſupervenientes damnū (n) pa-
tientur. (o) Aufer veſtimentum ejꝰ: 13
(p) præteriit enim injurioſus, (q)
qui quidem aliena vaſtat. Qui be- 14
nedixerit amicū manè (r) grandi
voce; à maledicente nihil differre
videbitur. Stillicidia ejiciunt ho- 15
minē in die hyemali de domo ſua :
ſimiliter & mulier (ſ) maledica de
propria domo. (t) Aquilo durus 16
ventus, nomine autē dexter voca-
tur. Ferrum acuit ferrum: vir au- 17
tem exacuit faciem amici. (u) Qui 18
plantat ficum, comedet fructus ejꝰ :
qui autem cuſtodit ſuum dominū,
honorificabitur. Sicut non ſimiles 19
facies faciebus; ita neque (x) cogi-
tationes hominū. Infernus, & per- 20
ditio non implentur: ſimiliter & o-
culi hominum inſatiabiles. Abomi-
natio Domino obfirmans oculos, &
indiſciplinati incontinentes linguâ.
Probatio argento, & auro (y) igni- 21
tio: vir autem probatur per os lau-
dantium eum. Cor iniqui exquirit
mala: cor autem rectum quærit ſci-
entiam. (z) Si flagellaveris impru- 22
dētē in medio conſeſſꝰ inhonorā;
non auferes imprudentiā ejus. (ω)
Evidenter cognoſces (aa) animas 23
gregis tui : (bb) & applicabis cor
tuum tuis armentis: Quoniam non 24
in ſeculū viro robur, et fortitudo:
neque tradit ex generatione in ge-
nerationem. Adhibe curam his quæ 25
in campo ſunt, (cc) viridibus, et at-
tondebis herbam, & congrega fœ-
num æſtivum, ut habeas oves in 26
veſtimentū: cole campū, ut ſint ti-
*bi * agni. Fili, à me habes verba* 27
fortia ad vitam tuam, & ad (dd)
vitam miniſtrorum tuorum.

CAP. XXVIII.

Fugit impius nemine perſequen- 1
te: juſtus autē tanquā leo, confidit.
Propter peccata impiorum (a) ju- 2
dicia ſuſcitantur: vir autem aſtu-
tus extinguet ea. (b) Fortis in im- 3
pietatibus calumniatur pauperes :
tanquā pluvia (c) vehemens, & in-
utilis, Sic (d) qui derelinquentes legem, laudant impietatem: qui autē 4
diligunt legem, circundant ſibi murum. Viri mali non intelligent judi- 5
cium: quærentes autem Dominum intelligent in (e) omni. Melior eſt 6
pauper (f) vadens in veritate, divite mendaci. Cuſtodit legem filius in- 7
telligens: (g) qui autem paſcit luxuriam, inhonorat patrem.

Κεφ. κζ´. MS.A. (γ) γλυκεῖα (δ) ὄρνεον ὅταν καταπετασθῇ (ε) καὶ φίλον (ζ) κρεῖσσον (η) εὐφραίνηταί σου ἡ καρδία, (θ) ἐλθόντες (ι) λοιμένεται. (κ) καρδίαι (λ) ἐνπίπλανται, (μ) χρυσίῳ (ν) εὐθὴς ἐκζητεῖ γνῶσιν. (ξ) τὸν ἄφρονα (ʹ) συνεδρίῳ (ʺ) ἐπιστήσῃς (ο) οὐ τὸν αἰῶνα (π) εἰς γενεὰς καὶ γενεάς. (ϛ) χλωρῷ, (ρ) ποιὰν καὶ συνάγαγε χόρτον Κεφ. κη´. MS.A. (α) πατέρα αὐτοῦ.

תרגום TARGUM.

7 דנטר אוריתא ברא הוא דמתבין ודמתחבר לזוללי מחמץ אבוי : דמסגיע מוליה 8
9 בנוכתתא וברביתא למן דמרחם על מסכני מכנשיה : דמסכיר אדניה דלא נשמע
10 אוריתא אף צלותיה מרחקא היא : דמשני תריצי בארחא בישתא בגומצא הוא נפל
11 ושלימי ותמימי נרתון טבתא : גברא עתירא חכים הוא בעינוי ומסכנא סוכלתנא
12 13 בסר ליה : כד יחדון צדיקיא סגיעא שבהורא ובקומא דרשיעי מבצי בר נשא : דמכסה
14 חובוי לא נצלח ודמודי חטוי ושבק נרחם עלוי אלהא : טובוהי דבר נשא דמדליח
15 לביה תדירא ומן דמקשי לביה נפל בבישתא : אריא נהם ודובא מצריח על
16 רשיעא דמשתליט על עמא מסכנא : שליטא חסיר הוינא סגיען עושקוי ואנא דשני
17 טולמיא נגרון יומוי : בר נשא דחשש בדמא דנפשא עד גובא נערוק לא נצורוניה :
18 19 דמהלך בתמימותא נתפרק ודמעקמן ארחתיה נפול בחדא : דפלח בארעיה
20 נסבע לחמא ודרדף סריקותא נסבע מסכנותא : גברא מהימנא סגיען בורכתיה
21 ודרהט בעולה דנעתר לא מודכי : מסב באפי לא טב ועל פתתא דלחמא נחוב
22 23 גברא : דמסתרהב למולא גברא דביש עיניה ולא ידע דחוסרנא אתי עלוי : דמכס
24 לבר נשא קדמוי חסדא נשכח טב מן הוא דמפלג בלישן : דגזל לאבוי ולאמיה
25 ואמר לית חובא חברא הוא לגברא מחבלנא : גברא רהב מגרג תגרי ודמסבר באלהא
26 27 נדהון : דתכל על ליביה סכלא הוא ודמהלך בחכימותא נתחמי מן ביש : דיהב
28 למסכנא לא נחסר ליה ודמחמי עיניה מן מסכנא סגיען לוטתיה : בקומא דרשיעי
מתטשי בר נשא ובאבדיהון נסגון צדיקי :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Qui cuſtodit legem, filius intelligens eſt : & qui ſocius eſt comeſſatorum, 7
exaſperat patrem ſuum. Qui multiplicat ſubſtantiam ſuam in uſura & 8
fœnore, ei qui miſeretur pauperum congregat eam. Qui obturat aurem 9
ſuam ne audiat legem, oratio ejus erit abominabilis. Qui errare facit 10
rectos in via mala, in foveam cadet : perfecti autem & immaculati hære-
ditabunt bona. Vir dives ſapiens ſibi videtur, & pauper prudens con- 11
temnit eum. Quando lætantur juſti, multa eſt pulchritudo : & cùm con- 12
ſurgunt impii, inveſtigatur filius hominis. Qui abſcondit ſcelera ſua, non 13
dirigetur : & qui confeſſus fuerit peccata ſua, & reliquerit, miſerebitur
ejus Deus. Beatus filius hominis, cujus cor eſt ſemper pavidum : & qui 14
indurat cor ſuum, corruet in malum. Leo rugit & urſus clamat propter 15
impium qui dominatur ſuper populum pauperem. Dominatoris indigen- 16
tis prudentia multæ ſunt oppreſſiones : & qui odit calumnias, prolonga-
buntur dies ejus. Filius hominis qui ſolicitus eſt de ſanguine animæ, ſi 17
uſque ad lacum fugerit, non comprehendent eum. Qui ambulat in ſimpli- 18
citate, ſalvus erit : & cujus perverſæ ſunt viæ, corruet ſemel. Qui opera- 19
tur ſuam terram, ſatiabitur pane : & qui ſectatur otium, ſatiabitur pauper-
tate. Viri fidelis multæ ſunt benedictiones ; & qui cucurrerit in iniqui- 20
tate ut ditetur, non erit innocens. Accipere faciem non eſt bonum, & pro 21
buccella panis peccabit vir. Qui feſtinat ad [*acquirendam*] ſubſtantiam, 22
vir eſt oculi nequam, & neſcit quòd egeſtas veniat ſuper eum. Qui cor- 23
ripit filium hominis coram eo, gratiam bonam inveniet magis quàm ille
qui bifidus eſt lingua. Qui deprædatur patrem ſuum & matrem ſuam, & 24
dicit quòd non eſt peccatum, ſocius eſt viri diſſipantis. Vir arrogans con- 25
citat jurgia : & qui ſperat in Deo, impinguabitur. Qui confidit in corde 26
ſuo, ſtultus eſt ; & qui ambulat in ſapientia, protegetur à malo. Qui dat 27
pauperi, non indigebit : & qui prohibet oculum ſuum à paupere, multæ
erunt maledictiones ejus. Cùm conſurgunt impii, abſconditur homo : 28
& cùm pereunt, multiplicantur juſti.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

7 8 * ܕܢܛܪ ܢܡܘܣܐ ܒܪܐ ܗܘ ܡܣܬܟܠܢܐ. ܘܕܪܕܦ ܣܪܝܩܘܬܐ ܡܒܗܬ ܠܐܒܘܗܝ. * ܕܡܣܓܐ
9 ܩܢܝܢܗ ܡܢ ܪܒܝܬܐ ܘܡܢ ܬܪܒܝܬܐ .· ܢܫܒܩܝܘܗܝ ܠܡܢ ܕܡܪܚܡ ܥܠ ܡܣܟܢܐ. * ܕܡܣܟܪ
10 ܐܕܢܘܗܝ ܕܠܐ ܢܫܡܥ ܢܡܘܣܐ .· ܐܦ ܨܠܘܬܗ ܡܣܠܝܐ ܗܝ. * ܕܡܛܥܐ ܠܬܪܝܨܐ ܒܐܘܪܚܐ ܒܝܫܬܐ .·
11 ܒܓܘܡܨܐ ܢܦܠ. ܘܬܡܝܡܐ ܢܐܪܬܘܢ ܛܒܬܐ. * ܥܬܝܪܐ ܚܟܝܡܐ .· ܚܟܝܡ ܒܥܝܢܝ ܢܦܫܗ.
12 ܘܡܣܟܢܐ ܡܣܬܟܠܢܐ. ܒܣܪ ܒܗ. * ܒܥܘܫܢܐ ܕܙܕܝܩܐ. ܣܓܝܐ ܬܫܒܘܚܬܐ. ܘܒܡܩܡܬ
13 ܪܫܝܥܐ ܡܬܡܟܟܐ. * ܕܡܟܣܐ ܥܘܠܗ .· ܠܐ ܢܨܠܚ. ܘܕܡܘܕܐ ܚܛܗܘܗܝ
14 ܘܫܒܩ ܠܗܘܢ .· ܡܬܪܚܡ ܠܘܬܗ ܐܠܗܐ. * ܛܘܒܘܗܝ ܠܓܒܪܐ ܕܕܚܠ ܒܟܠܙܒܢ.
15 ܘܕܡܩܫܐ ܠܒܗ .· ܢܦܠ ܒܒܝܫܬܐ. * ܐܪܝܐ ܢܗܡ. ܘܕܒܐ ܢܘܚܬ ܩܠܐ. ܕܫܠܛ ܥܘܠܐ
16 ܥܠ ܥܡܐ ܡܣܟܢܐ. * ܪܝܫܐ ܕܚܣܝܪ ܪܥܝܢܐ. ܣܓܝܐܢ ܬܘܠܒܘܗܝ. ܘܕܣܢܐ ܥܘܠܐ ܢܓܪܘܢ
17 ܝܘܡܘܗܝ .· * ܓܒܪܐ ܕܫܦܝܟ ܕܡܐ ܕܢܦܫܐ .· ܥܕܡܐ ܠܓܒܝܐ ܢܥܪܘܩ. ܘܠܐ
18 ܢܥܕܪܘܢܗ. * ܕܡܗܠܟ ܕܠܐ ܡܘܡ ܢܬܦܨܐ. ܘܕܡܥܩܡ ܐܘܪܚܬܗ. ܢܦܠ ܒܓܘܡܨܐ.
19 * ܕܦܠܚ ܐܪܥܐ ܢܣܒܥ ܠܚܡܐ. ܘܕܪܕܦ ܣܪܝܩܘܬܐ .· ܢܣܒܥ ܡܣܟܢܘܬܐ.
20 21 * ܓܒܪܐ ܡܗܝܡܢܐ. ܣܓܝܐܢ ܒܘܪܟܬܗ. ܘܒܝܫܐ ܒܥܘܠܗ ܠܐ ܢܙܕܟܐ. * ܓܒܪܐ
22 ܕܢܣܒ ܒܐܦܐ .· ܠܐ ܫܦܝܪ. ܡܛܠ ܦܬܐ ܕܠܚܡܐ. ܡܫܠܡ ܓܒܪܐ. * ܡܣܬܪܗܒ ܠܡܥܬܪ
23 ܓܒܪܐ ܕܒܝܫܐ ܥܝܢܗ. ܘܠܐ ܝܕܥ ܕܚܘܣܪܢܐ ܐܬܐ ܠܗ. * ܕܡܟܣ ܠܒܪܢܫܐ .· ܢܫܟܚ ܛܝܒܘܬܐ:
24 ܝܬܝܪ ܡܢ ܗܘ ܕܡܦܠܓ ܒܠܫܢܗ. * ܕܚܛܦ ܡܢ ܐܒܘܗܝ ܘܡܢ ܐܡܗ .· ܘܐܡܪ ܕܠܝܬ ܠܝ
25 ܚܛܗܐ .· ܫܘܬܦܐ ܗܘ ܕܓܒܪܐ ܥܘܠܐ. * ܓܒܪܐ ܪܥܒܬܢܐ. ܡܓܪܐ ܚܪܝܢܐ. ܘܕܬܟܝܠ ܥܠ
26 ܡܪܝܐ ܢܬܕܫܢ. * ܕܬܟܝܠ ܥܠ ܠܒܗ. ܣܟܠܐ ܗܘ. ܘܕܡܗܠܟ ܒܬܡܝܡܘܬܐ. ܢܬܦܨܐ.
27 * ܕܝܗܒ ܠܡܣܟܢܐ ܠܐ ܢܚܣܪ ܠܗ. ܘܕܡܗܦܟ ܥܝܢܘܗܝ ܡܢ ܡܣܟܢܐ ܣܓܝܐܢ ܠܘܛܬܗ.
28 * ܒܡܩܡܬ ܪܫܝܥܐ ܢܬܛܫܐ ܒܪܢܫܐ. ܘܒܡܘܒܕܢܗܘܢ. ܢܣܓܘܢ ܙܕܝܩܐ.

Qui legem ſervat, filius eſt prudens : qui ve- 7
rò colit vanitatem, pudore afficit patrem ſu-
um. Qui fœnore & uſurâ ſuas auget opes, re- 8
linquet eas illi qui miſeretur pauperum. Qui 9
occludit aures ſuas quominùs audiat legem,
ejus quoque precatio abominanda eſt. Qui 10
ſeducit rectum in viam malam, in foveam in-
cidet : integri verò hæreditate conſequen-
tur bona. Vir dives ſapiens eſt in oculis ſuis: 11
pauper autem prudens contemnit eum. In 12
fortitudine juſtorum augetur gloria : at cùm
exurgunt iniqui, minuitur. Homo qui celat 13
facinus ſuum, non proſperabitur : ejus au-
tem qui fatetur peccata ſua, & ab iis digredi-
tur, miſerebitur Deus. Beatus homo qui ti- 14
met omni tempore ; qui autem obdurat cor
ſuum, corruet in malum. Leo rugiit & urſus 15
edidit vocem, quòd dominatus ſit impius po-
pulo pauperi. Principis mente carentis mul- 16
tæ erunt jacturæ : ejus autem qui fraudem o-
dit, prorogabuntur dies. Homo conſcius ſan- 17
guinis animæ, ad electos uſque confugiet, &
non auxiliabuntur ei. Qui ambulat ſine vi- 18
tio, ſalvabitur : cujꝰ autem pravæ ſunt viæ,
incidet in foveam. Qui colit humum, ſatia- 19
bitur pane: qui autem currit poſt vanitatem,
ſatiabitur paupertate. Viri fidelis plurimæ 20
ſunt benedictiones : malignus autem, in ſce-
lere ſuo non erit impunis. Homo qui perſo- 21
nam reſpicit, nequam eſt : nam propter fru-
ſtum panis prodet hominem. Properat dite- 22
ſcere vir cujus malus eſt oculus, & ignorat
jacturam ſibi imminere. Qui corripit ho- 23
minem, nanciſcetur gratiam potiùs quàm is,
qui diviſus eſt in linguâ ſuâ. Qui rapit *ali-* 24
quid à patre ſuo matréque ſuâ, & ait, Non
eſt mihi peccatum, conſors eſt hominis ini-
qui. Vir avidus excitat contentionem : at 25
qui fretus eſt Domino, pingueſcet. Qui fi- 26
dit cordi ſuo ſtultus eſt : qui autem ambulat
in integritate, ſalvabitur. Qui largitur pau- 27
peri, non indigebit : qui verò deflectit ocu-
los ſuos à paupere, multiplicabitur ejus ma-
ledictio. Cùm ſteterint impii, deliteſcet ho- 28
mo : cum verò perierint, multiplicabuntur
juſti.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

25 26 * كما ان الماء البارد لذيذ للنفس الظامية * كذلك البشارة الصالحة من ارض بعيدة * كما ان
مستقبحا ان يسد احد عينا او يفسد منبع ماء * كذلك مستقطعا ان يسقط المقسط امام
27 28 المنافق * اكل العسل كثيرا ليس محمودا * والحاجة ماسة ان تكرم الاقوال الشريفة * مثل
مدينة اسوارها مهدومة وهي بلا سور * كذلك الانسان الذي يعمل شيا بلا مشاورة *

* الفصل السادس والعشرون *

1 2 * مثل الندى في الحصاد وكالمطر في الصيف * كذلك ليست للجاهل كرامة * مثل طيور
3 وعصافير تطاير * كذلك اللعنة الباطلة توافي الى احد * مثل المقرعة للفرس والمنخس للحمار *
4 5 كذلك العصا لامة متجاوزة السنة * لا تجاوبن غبيا بنظير غباوته * لئلا تصير شبيها به * بل
6 جاوب الغبي نحو غباوته * لئلا يظهر عند نفسه حكيما * من يرسل كلاما مع رسول جاهل يقتني
7 8 تعييرا من طرايقه * اسرع سلوك الساقين وتجاوز الشريعة من فم الاغبياء * من يربط
9 حجرا في مقلاع يضاهي من يعطي الغبي شرفا * الاشواك تنبت في يد السكير ودواعي
10 العبودية في يد الاغبياء * كل حسن الاغبياء يشنى عليها باشياء كثيرة * لان شخصهم كسر
11 لهم * مثل الكلب الذي يعود الى قيئه فيصير ممقوتا * كذلك الغبي برذيلته يعاود الى خطيته *
12 يكون خجل يجلب خطية * ويكون خجل يسوق شرفا ونعمة * رايت رجلا مستشعرا عند
13 ذاته انه حكيم * بل كان قد اتخذ املا سفيها لنفسه * العاجز اذا ارسل الى طريق يقول * في
14 الطريق السبع وفي الشوارع القتلة * مثل الباب ينعطف الى معطفه ويرجع كذلك الكسلان
15 16 يتقلب في سريره * العاجز اذا خبا يده في عبه ما يمكنه يقدمها الى فمه * العاجز يستوضح
17 عند ذاته متوافر الحكمة * اكثر من الاخذ في شبعه بشارة * كمثل من يمسك ذنب كلب *
كذلك من يتقدم في حكومة ليست له *

ut aqua frigida jucunda eſt animæ ſiti- 25
bunde, ſic eſt nuntium bonum de ter-
ra longinqua. Quemadmodum turpe 26
eſt ut intercludat quis fontem, aut cor-
rumpat fluentum aquæ : ſic eſt intolera-
bile ut cadat juſtus coram impio. Come- 27
ſtio mellis nimia, non eſt laudabilis : &
neceſſitas requirit ut honorentur ſermones
præclari. Sicut urbs cujus mœnia ſunt 28
diruta, & eſt ſine muro : ſic eſt homo,
qui aliquid agit abſque conſilio.

CAP. XXVI.

V*elut ros in meſſe, & velut pluvia in* 1
æſtate : ſic non eſt ſtulto honor. Sicut vo- 2
latilia & aves volantes, ſic maledictio
vana ſuperveniet alicui. Sicut ferula e- 3
quo, & ſtimulus aſino : ſic virga genti
tranſgredienti legem. Ne reſpondeas in- 4
ſipienti ſecundùm inſipientiam ejus, ne
fias ſimilis illi. Imò reſponde inſipienti 5
ſecundùm inſipientiam ejus, ne videatur
ſibi ſapiens. Qui mittit ſermonem per 6
nuntium ſtultum, acquiret opprobrium è
moribus ejus. Aufer inceſſum miſero- 7
rii, & elabetur lex de ore ſtultorum. Qui 8
alligat lapidem fundæ, ſimilis eſt ei qui
tribuit inſipienti honorem. Spinæ naſcun- 9
tur in manu ebrioſi : & miſeriæ ſervitu-
tis in manu ſtultorum. Omnis pulchritudo 10
impiorum odio habebitur multis in rebus,
quia aſpectus illorum eſt ipſis fractio.
Uti canis qui revertitur ad vomitum 11
ſuum, & redditur abominandus : ſic im-
prudens in ſuo vitio revertitur ad pec-
catum ſuũ. Eſt verecundia quæ affert pec-
catum : & eſt verecundia quæ affert glo-
riam & gratiam. Vidiſti virum exiſti- 12
mantē apud ſemetipſū ſe eſſe ſapientem,
is potiꝰ præſumit ſpem arrogantem de ſe.
Piger, cùm mittitur in viam, dicit, Eſt 13
in via leo, & in plateis internecio. Sic- 14
ut oſtium vertitur ad cardinem ſuum &
revertitur, ſic piger volvitur in lecto ſuo.
Piger, cùm abſconderit manum ſuam in 15
ſinu ſuo, non poterit approximare eam
ori ſuo. Piger ſibi videtur ſapientior 16
magis quàm is qui accipit in ſaturitate
ſua bonum *nuntium, Sicut qui tenet* 17
caudam canis, ſic eſt qui ſe offert in lite
non ſua.

משלי : כט

CAP. XXIX. כט

.sanitas non &,conteretur repente,cervicem *indurans increpationum* Vir
1 איש תוכחות מקשה־ערף פתע ישבר ואין מרפא׃
gemet , *impium dominando in* & : populus lætabitur , *justos multiplicari In*
2 ברבות צדיקים ישמח העם ובמשל רשע יאנח
pascens & : suum patrem lætificabit sapientiam *diligens* Vir .populus
3 עם׃ איש־אהב חכמה ישמח אביו ורעה
vir & : terram faciet stare judicio in Rex .substantiam perdet , scorta
4 זונות יאבד־הון׃ מלך במשפט יעמיד ארץ ואיש
expandens rete ,suo *socio super leniens* Vir .eam diruet , *oblationum*
5 תרומות יהרסנה׃ גבר מחליק על־רעהו רשת פורש
justus & : laqueus malus viri *prævaricatione In* .ejus pedibus *super*
6 על־פעמיו׃ בפשע איש רע מוקש וצדיק
impius *: tenuium* judicium justus *Cognoscens* .lætabitur & ,*dicet præconia*
7 ירון ושמח׃ ידע צדיק דין דלים רשע
: civitatem illaqueabunt *irrisionis Viri* .scientiam intelliget non
8 לא־יבין דעת׃ אנשי לצון יפיחו קריה
viro cum *subiens judicium* sapiens Vir .*nasum* avertent sapientes &
9 וחכמים ישיבו אף׃ איש־חכם נשפט את־איש
sanguinum Viri .requies non & ,ridebit & ,irascetur & : stulto
10 אויל ורגז ושחק ואין נחת׃ אנשי דמים
Totum .ejus animam quærent recti & : perfectum habebunt odio
11 ישנאו־תם וישרים יבקשו נפשו׃ כל־
.eum *sedabit* posterum in sapiens & : stultus proferet suum spiritum
רוחו יוציא כסיל וחכם באחור ישבחנה׃
.impii ejus ministri omnes : *falsitatis* verbo *super attendente Dominante*
12 משל מקשיב על־דבר־שקר כל־משרתיו רשעים׃
oculos illuminans : sibi obviaverunt *contritionum* vir & Pauper
13 רש ואיש תככים נפגשו מאיר עיני
ej⁹ thronus *: tenues* veritate in *judicans* Rex .Dominus *ipsorum* amborū
14 שניהם יהוה׃ מלך שופט באמת דלים כסאו
puer & : sapientiam tribuet increpatio & Virga .firmabitur *perpetuum* in
15 לעד יכון׃ שבט ותוכחת יתן חכמה ונער
multiplicabitur *impios multiplicari In* .suā matrem *afficiens* pudore dimissus
16 משלח מביש אמו׃ ברבות רשעים ירבה־
Corripe .videbunt eorum ruinam *in* justi & : prævaricatio
17 פשע וצדיקים במפלתם יראו׃ יסר
.tuæ animæ delicias dabit & : te faciet requiescere & , tuum filium
בנך ויניחך ויתן מעדנים לנפשך׃
ipse beatus , legem custodiens & : populus *feriabitur* , *visione non In*
18 באין חזון יפרע עם ושמר תורה אשרהו׃
.*respondens* non & ,intelliget quia : servus erudietur non verbis *In*
19 בדברים לא־יוסר עבד כי־יבין ואין מענה׃
.illo *præ* stulto spes : suis verbis in velocem virum Vidisti
20 חזית איש אץ בדבריו תקוה לכסיל ממנו׃
erit suo novissimo *&* : suum servum pueritia à delicatè *Nutriens*
21 מפנק מנער עבדו ואחריתו יהיה
multus excandescentiæ auctor & : litem miscebit *naris* Vir .filius
22 מנון׃ איש־אף יגרה מדון ובעל חמה רב־
spiritu *humilis* & : eum humiliabit hominis Superbia .*prævaricatione*
23 פשע׃ גאות אדם תשפילנו ושפל־רוח
execrationem : suam animam *odiens* fure cum *Partiens* .*gloriam assequetur*
24 יתמך כבוד׃ חולק עם־גנב שונא נפשו אלה
fidens & : laqueum *dabit* hominis *Tremor* .annunciabit non & , audiet
25 ישמע ולא יגיד׃ חרדת אדם יתן מוקש ובוטח
: dominantis *facies quærentes* Multi .elevabitur Domino *in*
26 ביהוה ישגב׃ רבים מבקשים פני־מושל
: *iniquitatis* vir—justorum Abominatio .*viri* judicium Domino à &
27 ומיהוה משפט־איש׃ תועבת צדיקים איש עול
.via rectus impii abominatio &
ותועבת רשע ישר־דרך׃

Versio VUL. LAT.

CAP. XXIX.

1 VIro, qui corripientē durâ cervice contemnit, repentinus ei superveniet interitus: & eū
2 sanitas non sequetur. In multiplicatione justorum lætabitur vulg⁹: cùm impii sumpserint
3 principatū, gemet popul⁹. Vir qui amat sapientiam, lætificat patrē suū: qui autē nutrit scor-
4 ta, perdet substantiā. Rex justus erigit terrā, vir avar⁹ destruet
5 eā. Homo, qui blandis fictisq; sermonib⁹ loquitur amico suo,
6 rete expandit gressib⁹ ej⁹. Peccantē virū iniquū involvet laque⁹: & just⁹ laudabit atq; gau-
7 debit. Novit just⁹ causā pauperū: impi⁹ ignorat scientiā.
8 Homines pestilentes dissipant civitatē: sapientes verò aver-
9 tunt furorē. Vir sapiens, si cū stulto contenderit, sive irascatur, sive rideat, nō inveniet re-
10 quiem. Viri sanguinū oderunt simplicem: justi autē quærunt
11 animā ej⁹. Totū spiritū suum profert stult⁹: sapiens differt, et
12 reservat in posterū. Princeps qui libenter audit verba mendacii, omnes ministros habet
13 impios. Paup et creditor obviaverūt sibi: utriusq; illumina-
14 tor est Dn̄s. Rex qui judicat in veritate pauperes, thron⁹ ej⁹
15 in æternum firmabitur. Virga atq; correptio tribuit sapientiā: puer autē, qui dimittitur voluntati suæ, confundit matrē
16 suā. In multiplicatione impiorū multiplicabuntur scelera: et
17 justi ruinas eorū videbunt. Erudi filiū tuū, & refrigerabit te, & dabit delicias animæ tuæ.
18 Cùm prophetia defecerit, dissipabitur popul⁹: qui verò cu-
19 stodit legē, beat⁹ est. Serv⁹ verbis non potest erudiri: quia ꝙ dicis intelligit, & respondere
20 contemnit. Vidisti hominē velocē ad loquendū? stultitia magis speranda est, quā illi⁹ cor-
21 reptio. Qui delicatè à pueritia nutrit servū suū, posteà sentiet
22 eū contumacē. Vir iracundus provocat rixas: & qui ad indignandū facilis est, erit ad
23 peccandū proclivior. Superbū sequitur humilitas: & humilē
24 spiritu suscipiet gloria. Qui cū fure participat, odit animam suā: adjurantē audit, & non in-
25 dicat. Qui timet hominē, citò corruet: qui sperat in Dn̄o, sub-
26 levabitur. Multi requirūt faciē principis: & judiciū à Dn̄o e-
27 greditur singulorū. Abominātur justi virū impiū: & abominantur impii eos, qui in recta sunt via. Verbum custodiens filius, extra perditionem erit.

Versio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

8 † Ὁ πληθύνων τὸν πλοῦτον αὐτοῦ μετὰ τόκων καὶ
πλεονασμῶν, † τῷ (†) ἐλεῶντι πτωχοὺς συνάγει αὐτόν.
9 † Ὁ ἐκκλίνων τὸ οὖς αὐτοῦ (β)
μὴ εἰσακοῦσαι νόμου, † καὶ αὐτὸς τὴν προσευχὴν
10 αὐτοῦ ἐβδέλυκται. Ὃς πλανᾷ εὐθεῖς ἐν
ὁδῷ κακῇ, † εἰς διαφθορὰν αὐτὸς ἐμπεσεῖται,
† οἱ δὲ ἄνομοι διελεύσονται ἀγαθά, † καὶ οὐκ εἰσελεύσονται
11 εἰς αὐτά. † Σοφὸς παρ' ἑαυτῷ ἀνὴρ
πλούσιος, † πένης δὲ νοήμων καταγνώσεται αὐτοῦ.
12 † Διὰ βοήθειαν δικαίων πολλὴ γίνεται δόξα,
† ἐν δὲ τόποις ἀσεβῶν ἁλίσκονται ἄνθρωποι.
13 † Ὁ ἐπικαλύπτων ἀσέβειαν ἑαυτοῦ οὐκ
εὐοδωθήσεται, † ὁ δὲ ἐξηγούμενος ἐλέγχους
14 ἀγαπηθήσεται. † Μακάριος ἀνὴρ ὃς καταπτήσσει πάντα δι' εὐλάβειαν, † ὁ δὲ σκληρὸς
15 τὴν καρδίαν ἐμπεσεῖται κακοῖς. † Λέων πεινῶν
καὶ λύκος διψῶν, † ὃς τυραννεῖ, πτωχὸς ὤν,
16 ἔθνους πενιχροῦ. † Βασιλεὺς ἐνδεὴς προσόδων
μέγας συκοφάντης, † ὁ δὲ μισῶν ἀδικίαν μακρὸν
17 χρόνον ζήσεται. † Ἄνδρα τὸν ἐν αἰτίᾳ φόνου
ὁ ἐγγυώμενος, † φυγὰς ἔσται καὶ οὐκ ἐν ἀσφαλείᾳ.
† Παίδευε υἱὸν καὶ ἀγαπήσει σε, † καὶ
δώσει κόσμον τῇ σῇ ψυχῇ, † οὐ μὴ (") ὑπακούσει
18 ἔθνει παρανόμῳ. † Ὁ πορευόμενος δικαίως
βεβοήθηται, † ὁ δὲ σκολιαῖς ὁδοῖς πορευόμενος
19 ἐμπλακήσεται. † Ὁ ἐργαζόμενος τὴν ἑαυτοῦ
γῆν πλησθήσεται ἄρτων, † ὁ δὲ διώκων
20 σχολὴν πλησθήσεται πενίας. † Ἀνὴρ (γ)
ἀξιόπιστος πολλὰ εὐλογηθήσεται, † ὁ δὲ κακὸς
21 οὐκ ἀτιμώρητος ἔσται. † Ὃς οὐκ αἰσχύνεται
πρόσωπα δικαίων, οὐκ ἀγαθός, † ὁ τοιοῦτος
22 ψωμοῦ ἄρτου ἀποδώσεται ἄνδρα. † Σπεύδει
πλουτεῖν ἀνὴρ βάσκανος, † καὶ οὐκ οἶδεν ὅτι
23 ἐλεήμων κρατήσει αὐτοῦ. † Ὁ ἐλέγχων ἀνθρώπου
ὁδούς, χάριτας ἕξει μᾶλλον τοῦ γλωσσοχαριτοῦντος.
24 † Ὃς (δ) ἀποβάλλεται πατέρα
ἢ μητέρα, καὶ δοκεῖ μὴ ἁμαρτάνειν, † οὗτος
25 κοινωνός ἐστιν ἀνδρὸς ἀσεβοῦς. † (ε) Ἄπληστος
ἀνὴρ κρίνει εἰκῇ, † ὃς δὲ πέποιθεν ἐπὶ Κύριον,
26 ἐν ἐπιμελείᾳ ἔσται. † Ὃς πέποιθε θρασείᾳ
καρδίᾳ, ὁ τοιοῦτος ἄφρων, † ὃς δὲ πορεύεται
27 σοφίᾳ, σωθήσεται. † Ὃς δίδωσι πτωχοῖς οὐκ
ἐνδεηθήσεται, † ὃς δὲ ἀποστρέφει τὸν ὀφθαλμὸν
28 αὐτοῦ, ἐν πολλῇ ἀπορίᾳ ἔσται. † Ἐν τόποις
ἀσεβῶν στένουσι δίκαιοι, † ἐν δὲ τῇ ἐκείνων
ἀπωλείᾳ πληθυνθήσονται δίκαιοι.

Qui multiplicat divitias suas cū 8
usuris, & excrescentiis; ei (h) qui
miseretur inopum, congregat eas.
Qui declinat aurem suam, ne exaudiat 9
legem; & ipse orationē suā
(i) abominabilem fecit. Qui seducit 10
rectos in viam malam, in corruptionem
ipse incidet: iniqui autem
(k) transibunt bona, & non ingredientur
in ea. Sapiens apud se 11
vir dives: pauper autem intelligens
(l) condemnabit eum. Per auxilium 12
justorum multa fit gloria: in locis
autem impiorum capiuntur homines.
Qui cooperit impietatem 13
suam, non prosperabitur: qui autē
(m) narrat redargutiones, (n) diligetur.
Beatus vir, qui (o) veretur 14
omnia per metū: durus autem corde
incidet malis. Leo esuriens, & 15
lupus sitiens, qui, cùm inops sit, tyrannide
dominatur genti pauperi.
(p) Rex egens proventuum, (q) magnus 16
sycophanta: qui autē odit injustitiam,
longum (r) tempus vivet.
Virum, qui in causa mortis, spondens, 17
profugus erit, & non in securitate.
Erudi filium, (s) & diliget
te, & dabit ornatum animæ tuæ,
non obediet genti iniquæ. Qui ambulat 18
(t) justè, adjutus est: qui autem
perversis viis vadit, implicabitur.
Qui operatur suam terram, 19
implebitur panibus: qui autem sectatur
(u) otium, implebitur paupertate.
Vir (x) fidelis multa benedicetur: 20
(y) malus autem non impunitus erit.
Qui non reveretur facies 21
justorum, non bonus: qui talis
est, buccellâ panis vendet virum.
Festinat ditescere vir (z) invidus: 22
& non novit, quia (ω) misericors
obtinebit eum. Qui corripit hominis 23
vias, gratias reportabit magis
(aa) eo, qui linguâ gratificatur.
(bb) Qui abjicit patrē vel matrē, 24
& videtur non peccare; hic (cc)
consors est viri impii. (dd) Infidelis 25
vir judicat temerè: qui autem
confidit super Dominum, in cura
diligenti erit. Qui confidit (ee) audaciâ 26
cordis, talis est imprudens:
qui autē ambulat sapientiâ, salvabitur.
Qui dat pauperibus, non egebit: 27
qui autem avertit oculum
suum, (ff) in multa penuria erit.
In locis impiorum (gg) gemunt justi: in illorum autem perditione abundabunt justi. 28

MS. A. (†) ἐλεοῦντι (β) τοῦ μὴ εἰσακοῦσαι (") ὑπακούσῃ (γ) ἀξιοπιστότερος (δ) ἀποσιάζεται (ε) Ἄπληστος

ΚΕΦ. κθʹ.

1 † ΚΡείσσων ἀνὴρ ἐλέγχων ἀνδρὸς σκληροτραχήλου,
† ἐξαπίνης γὰρ φλεγομένου αὐτοῦ οὐκ (†)
2 ἔστιν ἴασις. † (α) Ἐγκωμιαζομένων δικαίων
εὐφρανθήσονται λαοί, † ἀρχόντων δὲ ἀσεβῶν
3 στένουσιν ἄνδρες. † Ἀνδρὸς φιλοῦντος σοφίαν
εὐφραίνεται (") πατὴρ αὐτοῦ, † ὃς δὲ ποιμαίνει
4 πόρνας ἀπολεῖ πλοῦτον. † Βασιλεὺς δίκαιος
ἀνίστησι χώραν, † ἀνὴρ δὲ παράνομος κατασκάπτει.
5 † Ὃς παρασκευάζεται ἐπὶ πρόσωπον
τοῦ ἑαυτοῦ φίλου δίκτυον, † περιβάλλει
6 αὐτὸ τοῖς ἑαυτοῦ ποσίν. † Ἁμαρτάνοντι ἀνδρὶ
μεγάλη παγίς, † δίκαιος δὲ ἐν χαρᾷ
(β) καὶ ἐν εὐφροσύνῃ ἔσται.

MS.A. (†) ἔσται (α) Ἐγκωμιαζομένου δὲ δικαίου (") ὁ πατὴρ (β) καὶ εὐφροσύνῃ

CAP. XXIX.

Melior vir (a) correptionū, viro duræ cervicis: repentè enim (b) 1
ardente eo non est medela. (c) Dum 2
laudantur justi, lætabuntur populi:
imperantibus autem impiis, gemunt
viri. Viri amantis sapientiam, 3
lætatur pater ejus: qui autem
(d) pascit meretrices, disperdet
divitias. Rex justus erigit regionem: 4
vir autem iniquus (e)
destruit. Qui præparat ad faciem 5
sui amici rete: (f) illud circundat
suis pedibus. (g) Peccanti viro 6
magnus laqueus: justus autem in
gaudio, & in lætitia erit.

תרגום TARGUM.

כט

1 גברא דלא מקבל מכסנותא ומקשי קדליה בעגלא נתתבר ולא תהוי ליה אסו׃ בסוגעא 2
3 צדיקי חדי עמא ובשולטנא דרשיעי נתאנח עמא׃ גברא דרחם חכמתא נחדי אבוי
4 ודמתחבר בזניותא מוביד מוליה׃ מלכא בדינא נוקים ארעא וגברא עולא עקר לה׃ 5
6 גברא דמתפלג על חבריה מצדתא פרס על הלכתיה׃ גברא בישא בחוביה מתציד
7 וצדיקא דיץ וחדי׃ ידע צדיקא דינהון דמסכני ורשיעי לא מתבינין ידיעתא׃ גברא 8
9 ממקני ממללין כדבא וחכימי מהפכין רוגזא׃ גברא חכימא דאין עם גברא שטיא ורגז
10 וחאך ולא מתתבר׃ גברי דאשדין דמא סנין תמימותא ותריצי בעין לה׃ כולה 11
12 חומתיה מפיק סכלא וחכימא ברעינא מאכרה׃ שליטא דצאית מלי דשקרא כלהון
13 משמשנוי רשיעי׃ מסכנא וגברא מצעיא פגיעו חד בחד ואלהא מנהיר עינוי דתרויהון׃
14 מלכא דדאן בקושטא למסכני כורסיה לעלם תקין׃ שבטא ומכסנותא יהבין 15
16 חכמתא וטליא דלא מקבל בעתא מבהית אמיה׃ בסוגעא דרשיעי חובא נסגי וצדיקיא
17 יחמון במפלתהון׃ רדי בברך ויניחך ויתן תפנוקי לנפשך׃ בסוגעא דעולאי מתתרע 18
19 עמא ודנטר אוריתא טובוהי׃ במלי לא מתרדי עבדא דידע גיר ולא בליע׃ אין חזיתא גברא
20 דמערקלין מלוי סבויא דטב הוא סכלא מניה׃ מתפנק מן טליותיה לעבדא נהוי 21
22 ובאחריתיה יהי מנסח׃ גברא רגזנא מגרג תגרי וגברא חמתנא סגיעין חובוי׃ רמותא
23 דבר נשא תשפלניה ומן דמכיכא רוחיה נפלג יקרא׃ דפלג עם גנבא סני נפשיה נפסק 24
25 מומתא ולא מודה׃ טלומיא דבר נשא עבדא ליה תקולתא ודמסבר באלהא נעשן׃
26 סגיעי דבעין אפי דשליטא ומן קדם אלהא דיניה דגברא׃ מרחקתא דצדיקי 27
גברא עולה ומרחקתא דרשיעי גברא דתריצי ארחתיה׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAP. XXIX.

VIr qui non recipit correptionem, & indurat cervicem suam, citò conte- 1
retur, & non erit ei medicina. In multitudine justorū, lætatur populus; & in 2
dominio impiorum gemet populus. Vir qui amat sapientiam, lætificabit pa- 3
trem suum: & qui adhæret meretrici, perdet substantiā suam. Rex in judicio 4
stabilit terram; & vir iniquus dissipat eam. Vir qui dividitur à socio suo, 5
rete expandit gressibus ejus. Vir malus in peccato suo capitur, & justus ex- 6
ultat & gaudet. Novit justus judicium pauperum, impii autem non intelli- 7
gunt scientiam. Viri derisores loquuntur mendacium, & sapientes avertunt 8
furorem. Vir sapiens contendens cum viro stulto, sive irascatur sive rideat, 9
non conteritur. Viri qui effundunt sanguinem, oderunt simplicitatem: 10
recti autem quærunt eam. Omnem furorem suum profert stultus, & sapi- 11
ens in prudentia reprimit. Princeps qui auscultat verba mendacii, omnes 12
ministri ejus sunt impii. Pauper & mediocris fortunæ homo obviaverunt 13
sibi invicem, & Deus illuminat oculos amborum. Rex qui judicat in veri- 14
tate pauperes, thronus ejus in æternum dirigetur. Virga & correptio præ- 15
bent sapientiam, & puer qui non recipit correptionem, confundit matrem
suam. In multitudine impiorum peccatum multiplicatur, & justi videbunt 16
ruinas eorum. Erudi filium tuum, & requiescere te faciet, & dabit deli- 17
cias animæ tuæ. In multitudine iniquorum dissipatur populus: & qui cu- 18
stodit legem, beatus est. Verbis non eruditur servus; cognoscit *enim*, nec 19
patitur. Si vidisti virum velocem in verbis suis, melior est spes de stulto 20
quàm de illo. Qui deliciis indulget à pueritia sua, servus evadet: & ad 21
extremum evertetur. Vir iracundus concitat rixam, & viri furiosi multa 22
sunt peccata. Elatio filii hominis humiliat eum: & qui summissus est spi- 23
ritu, dividit gloriam. Qui dividit cum fure, odit animam suam: jusjurandū 24
defertur ei, & non confitebitur. Calumnia filii hominis accersit ei offen- 25
diculū: & qui sperat in Deo, roborabitur. Multi sunt qui quærunt faciem 26
principis, & à facie Dei judicium viri. Abominatio justorum est vir ini- 27
quus, & abominatio impiorum est vir cujus viæ sunt rectæ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܛ *

* ܓܒܪܐ ܕܠܐ ܡܩܒܠ ܡܟܣܢܘܬܐ. ܘܩܫܐ ܩܕܠܗ. ܒܥܓܠ ܢܬܬܒܪ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗ ܐܣܝܘܬܐ. 1
* ܒܣܘܓܐܐ ܕܙܕܝܩܐ ܣܓܐ ܥܡܐ. ܘܒܫܘܠܛܢܐ ܕܥܘܠܐ ܡܬܬܢܚ ܥܡܐ. * ܓܒܪܐ ܕܪܚܡ 2 3
ܚܟܡܬܐ ܢܚܕܐ ܠܐܒܘܗܝ. ܘܕܪܥܐ ܙܢܝܬܐ ܢܘܒܕ ܩܢܝܢܗ. * ܡܠܟܐ ܒܕܝܢܐ ܡܩܝܡ ܐܪܥܐ. 4
ܘܥܘܠܐ ܡܣܟܢ ܠܗ. * ܓܒܪܐ ܕܡܬܦܠܓ ܥܠ ܚܒܪܗ. ܡܨܝܕܬܐ ܦܪܣ ܠܗ ܠܗܠܟܬܗ. 5
* ܓܒܪܐ ܚܛܝܐ ܒܚܘܒܘܗܝ ܡܬܬܨܝܕ. ܘܙܕܝܩܐ ܢܫܒܚ ܘܢܚܕܐ. * ܙܕܝܩܐ ܝܕܥ ܕܝܢܐ 6 7
ܕܡܣܟܢܐ. ܘܥܘܠܐ ܠܐ ܡܣܬܟܠ ܝܕܥܬܐ. * ܓܒܪܐ ܡܒܙܚܢܐ ܡܘܩܕܝܢ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܚܟܝܡܐ 8
ܡܗܦܟܝܢ ܪܘܓܙܐ. * ܓܒܪܐ ܚܟܝܡܐ ܕܐܢ ܥܡ ܓܒܪܐ ܣܟܠܐ. ܘܪܓܙ ܘܓܚܟ. ܘܠܐ ܡܬܚܡܬ. 9
* ܓܒܪܐ ܐܫܘܕܝ ܕܡܐ ܣܢܝܢ ܠܬܡܝܡܐ. ܘܙܕܝܩܐ ܪܚܡܝܢ ܠܗ. * ܟܠܗ ܚܡܬܗ ܡܦܩ ܣܟܠܐ 10 11
ܘܚܟܝܡܐ ܒܪܥܝܢܗ ܡܬܒܩܐ. * ܫܠܝܛܐ ܕܫܡܥ ܡܠܬܐ ܕܕܓܠܘܬܐ. ܟܠܗܘܢ ܡܫܡܫܢܘܗܝ 12
ܥܘܠܝܢ ܐܢܘܢ. * ܡܣܟܢܐ ܘܡܬܕܠܝܠܐ. ܦܓܥܘ ܚܕ ܒܚܕ. ܘܡܪܝܐ ܡܢܗܪ ܥܝܢܝ ܬܪܝܗܘܢ. 13
* ܡܠܟܐ ܕܕܐܢ ܒܩܘܫܬܐ. ܟܘܪܣܝܗ ܒܕܝܢܐ ܢܬܩܢ. * ܫܒܛܐ ܘܡܟܣܢܘܬܐ ܝܗܒܝܢ ܚܟܡܬܐ. 14 15
ܘܛܠܝܐ ܕܠܐ ܪܕܐ. ܡܒܗܬ ܠܐܡܗ. * ܒܣܘܓܐܗܘܢ ܕܥܘܠܐ. ܣܓܐ ܚܘܠܐ. ܘܙܕܝܩܐ ܢܚܕܘܢ 16
ܒܡܦܘܠܬܗܘܢ. * ܪܕܝ ܒܪܟ ܘܢܢܝܚܟ. ܘܢܬܠ ܒܘܣܡܐ ܠܢܦܫܟ. * ܒܣܘܓܐܐ ܕܥܘܠܐ ܡܬܒܕܪ ܥܡܐ. 17 18
ܘܕܢܛܪ ܢܡܘܣܐ ܛܘܒܘܗܝ. * ܒܡܠܐ ܠܐ ܡܬܪܕܐ ܥܒܕܐ. ܡܛܠ ܕܝܕܥ ܕܠܐ ܡܬܢܓܕ. * ܐܢ ܚܙܝܬ ܓܒܪܐ 19 20
ܕܡܣܪܗܒ ܒܡܠܘܗܝ. ܕܥ ܕܛܒ ܗܘ ܡܢܗ ܣܟܠܐ. * ܕܡܬܦܢܩ ܡܢ ܛܠܝܘܬܗ. ܥܒܕܐ 21
ܢܗܘܐ. ܘܒܚܪܬܗ ܢܬܐܢܚ. * ܓܒܪܐ ܚܡܬܢܐ ܡܓܪܐ ܕܝܢܐ. ܘܓܒܪܐ ܪܘܓܙܢܐ ܡܣܓܐ 22
ܚܘܠܐ. * ܪܡܘܬܗ ܕܓܒܪܐ ܬܡܟܟܝܘܗܝ. ܘܡܟܝܟܘܬܗ ܬܣܓܐ ܠܗ ܐܝܩܪܐ. * ܕܦܠܓ ܥܡ 23 24
ܓܢܒܐ. ܣܢܐ ܢܦܫܗ. ܘܦܣܩܝܢ ܥܠܘܗܝ ܡܘܡܬܐ. ܘܠܐ ܡܘܕܐ. * ܥܘܠܗ ܕܓܒܪܐ. ܥܒܕ 25
ܠܗ ܬܘܩܠܬܐ. ܘܕܬܟܝܠ ܥܠ ܡܪܝܐ ܢܬܪܘܪܒ. * ܣܓܝܐܐ ܕܒܥܝܢ ܐܦܝ ܫܠܝܛܐ. ܘܡܢ ܡܪܝܐ ܗܘ ܢܦܩ 26
ܕܝܢܗ ܕܓܒܪܐ. * ܡܣܠܝ ܗܘ ܠܙܕܝܩܐ ܓܒܪܐ ܥܘܠܐ. ܘܐܘܪܚܐ ܬܪܝܨܬܐ. ܡܣܠܝܐ ܗܝ ܠܥܘܠܐ. 27

CAP. XXIX.

HOmo qui non accipit correctionem, eſt- 1
que duræ cervicis, brevi conteretur, nec erit
illi medela. In multitudine juſtorum creſcit 2
populus: & ſub dominio impiorum ingemi-
ſcit populus. Vir qui amat ſapientiam, exhi- 3
larabit patrem ſuum: qui autem paſcitur in
ſcortatione, perdet facultates ſuas. Rex judi- 4
cio terrâ erigit: at impius in egeſtatem redi-
git illam. Homo qui anceps eſt erga proxi- 5
mum ſuum, rete expandit greſſibus ejus. Ho- 6
mo facinoroſus, crimine ſuo capietur: juſtus
autem canet & gaudebit. Juſtus enim novit 7
judicium pauperum: impius autem non per-
cipit ſcientiam. Homines irriſores incendunt 8
urbes: at ſapientes repellunt iram. Vir ſapi- 9
ens contendit cum viro ſtulto, & iraſcitur, ac
ridet, nec *tamen* ſuccenſet. Viri effuſores ſan- 10
guinis oderunt pium: juſti verò diligunt eum.
Totam iram ſuam profert ſtultus: ſapiens au- 11
tem mente ſuâ pervolvit. Princeps qui audi- 12
tum præbet verbo mendaci, hujus miniſtri o-
mnes iniqui ſunt. Pauper & dolens occurre- 13
runt invicē, & Dñs illuſtrat oculos utriuſque.
Rex qui judicat in veritate, hujus thronus in 14
judicio firmabitur. Virga & objurgatio dant 15
ſapientiam: puer autem ineruditus pudefacit
matrem ſuam. In multitudine impiorum cre- 16
ſcit impietas: & juſti lætabuntur in ruina i-
pſorum. Erudi filium tuum, & is requiem & 17
delicias afferet animæ tuæ. In multitudine im- 18
piorum diſrumpitur populus: & qui cuſtodit
legem, beatus. Verbis non corrigitur ſervus: 19
novit enim ſe non vapulaturū. Si videas ho- 20
minem præcipitem in verbis ſuis, ſcito illo
meliorem eſſe ſtultum. Qui deliciis indulget 21
à pueritia ſua, ſervus erit, & in noviſſimo
ſuo ſuſpirabit. Homo iracundus provocat 22
litem: & homo indignabundus multiplicat
iniquitatem. Superbia hominis deprimet 23
eum, & humilitas illius honorem augebit ei.
Qui cum fure partitur, odit animam ſuam: 24
& decernent in eum juramenta, nec fatebi-
tur. Iniquitas viri componit ei offendicu- 25
lum: at qui Domino fidit, magnificabitur.
Multi ſunt qui ambiunt vultum principis: à 26
Domino autem egreditur judiciū viri. Abo- 27
minandus eſt apud juſtum vir iniquus: & via
recta abominabilis eſt apud iniquos.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* مثل الذين القوا ان يطرحوا الاقوال لدى الناس * ومن يلقي الكلام اولا يتعرقل به * 18
* هكذا جميع الذين يكمنون لاصدقايهم * متى ما سوهدوا يقولون انما عملت هذا مازحا * 19
* بالحطب الكثير يحسن وقيد النار وحيث لا يوجد ذو غضب تسكن الخصومة * الاسكار 20 21
للخمر * والحطب في النار والرجل الفارق لتحريك الخصومة * اقوال الملاقين والخادعين لينة * 22
وهذه تضرب بواطن الحشاء * فضة تعطى بغش يجب ان تحسب كالخزف * الشفاه المستقيمة 23
تسر قلبا حزينا * العدو المتباكي بشفتيه يومي الى كل شي * وفي قلبه يخترع صنوف الغش * 24
* ان تضرع اليك العدو بصوت عظيم فلا تذعن له * فان في نفسه سبعة شرور * من يخفي 25 26
عداوة يبتدع غشا * والنفس العالم يستر خطاياه في الجماعة * من يحفر لقريبه حفرا يسقط 27
فيها * ومن يدحرج حجرا على نفسه يدحرجها * اللسان الكذوب يمقت الصدق * وفما لا 28
غطاء عليه يصنع جوالب الهيج والشغب *

* Quemadmodum qui ſeſe præcipitant in 18
profundendo ſermones coram hominibus,
& qui effundit ſermonem prior, implica-
tur in eo: Ita ſunt omnes qui inſidi- 19
antur amicis ſuis: dum deprehenduntur,
dicunt; Certè id feci jocans. In multis 20
lignis optimè ardet ignis: & ubi non adeſt
iracundus, ſedatur altercatio. Scurrilitas 21
eſt vini, & ligna in igne, & vir litigio-
ſus ad excitationem contentionis. Ser- 22
mones adulantium & decipientium, mol-
les: & hi percutiunt interna viſcerum.
Argentum quod datur cum fraude, de- 23
bet exiſtimari quaſi teſta. Labia recta
lætificant cor triſte. Inimicus lacbryma- 24
bundus, labiis ſuis annuit ad omnia: et
in corde ſuo excogitat genera fraudum.
Si ſupplicaverit tibi inimicus altâ voce, 25
ne obedias illi: quia in anima ejus
ſunt ſeptem nequitiæ. Qui celat odi- 26
um, architectatur dolum: & qui ex-
cellens eſt in doctrina, operit peccata
ſua in concilio. Qui fodit proximo 27
ſuo foveam, cadet in illam: & qui
volvit lapidem, ſuper animam ſuam il-
lum volvit. Lingua mendax odit ve- 28
ritatem: & os quod non habet oper-
culum ſuper ſe, producit clamores tu-
multûs & ſeditionis.

* الفصل السابع والعشرون *

* لا تفتخر بما في الغد * فانك ما تعلم ماذا ينتجه اليوم الوارد * فليمدحك قريبك لا فمك * 1 2
وليقرظك غيرك ولا شفتاك * الحجر الثقيل والرمل الصعب حمله اثقل غيظ منهما جميعا * 3
* الجاهل الغضب لا يرحم * والغيظ حاد * لكن الغيرة لن يثبت لديها احد * توبيخات 4 5
مكشوفة ظاهرة افضل من صداقة مكتومة * جراحات الصديق اوثق من قبلات العدو 6
الاختيارية * النفس التي في الشبع تثلبها اربابها * والنفس التي في الضيقة تستبين لها الاشياء 7
المرة حلوة * مثل الطاير اذا طار من عشه * هكذا الانسان يستخدم ويستعبد اذا تغرب من 8
مواضعه * القلب يطرب بالطيوب والخمور والبخورات * والنفس تعرفها السقطات * 9

CAP. XXVII.

NE glorieris de eo quod futurum eſt 1
in craſtino, quia neſcis quid pariat dies
ventura. Laudet te proximus tuus, non 2
os tuum: & celebret te alius, & non
labia tua. Saxo gravi, & arenâ porta- 3
tu difficili, utroque ſimul gravior eſt ira.
Stultus furibundus non miſeretur, & ira 4
eſt acuta: at prope zelum nemo conſiſte-
re poteſt. Correptiones manifeſtæ & a- 5
pertæ, ſunt præſtantiores amicitiâ occul-
tâ. Vulnera amici ſunt tutiora oſculis 6
inimici voluntariis. Anima quæ eſt in 7
ſaturitate, deridet dominos ſuos: &
animæ quæ eſt in anguſtia, res amaræ
dulces videbuntur. Sicut volucre cùm 8
volaverit de nido ſuo, ſic homo ad-
hibebitur in ſervitutem & ſubjectionem,
cùm diſceſſerit è locis ſuis. Cor gaudet 9
aromatibus, & vinis, & odoramentis:
& animam diſcernunt caſus.

משלי : ל

CAP. XXX.

: Ithiel ad vir dixit *Aſſumptionem* .Jache filii Aghur Verba
1 דברי אגור בן־יקה המשא נאם הגבר לאיתיאל
intelligentia non & *: viro præ ego ſtolidus* Quia .Uchal & , Ithiel ad
2 לאיתיאל ואכל: כי בער אנכי מאיש ולא־בינת
ſanctorum ſcientiam & ,ſapientiam didici non Et .mihi hominum
3 אדם לי: ולא־למדתי חכמה ודעת קדשים
ventum *collegit* Quis ? deſcendit & , cœlum aſcendit Quis *.noſcam*
4 אדע: מי עלה־שמים וירד מי אסף־רוח
omnes ſtatuit quis ? veſtimento in aquas ligavit Quis ? ſuis pugillis in
בחפניו מי צרר־מים בשמלה מי הקים כל־
? noveris quòd ,ejus filii nomen quod & ,ejus nomen quod ? terræ *fines*
אפסי־ארץ מה־שמו ומה־שם־בנו כי תדע:
Ne .eo in *fidentibus ipſe* clypeus : purgatus Dei ſermo Omnis
5 6 כל־אמרת אלוה צרופה מגן הוא לחסים בו: אל־
Duo *.ſis* mendax & ,te *m* increpet fortè ne : ejus verbis *ſuper* addas
7 תוסף על־דבריו פן־יוכיח בך ונכזבת: שתים
,Vanitatem .moriar antequàm ,me à prohibeas ne : te à poſtulavi
8 שאלתי מאתך אל־תמנע ממני בטרם אמות: שוא
dederis ne *opulentiam* & ,paupertatem : me à elonga *mendax verbum &*
ודבר־כזב הרחק ממני ראש ועשר אל־תתן־
, mentiar & , ſatier fortè Ne *.mei ſtatuti panem mihi da prædam* : mihi
9 לי הטריפני לחם חקי: פן אשבע וכחשתי
apprehendā & ,furer &,efficiar pauper fortè ne & ? Dominus quis : dicam &
ואמרתי מי יהוה ופן־אורש וגנבתי ותפשתי
fortè ne : *ſuum dominum ad* ſervum *lingua crimineris* Ne .mei Dei nomen
10 שם אלהי: אל־תלשן עבד אל־אדנו פן־
& : maledicet ſuo patri Generatio .delinquas & ,tibi maledicat
11 יקללך ואשמת: דור אביו יקלל ואת־
ſua ſorde à & : ſuis oculis in munda Generatio .benedicet non ſuæ matri
12 אמו לא יברך: דור טהור בעיניו ומצאתו
ejus palpebræ & *: ejus* oculi ſunt excelſi cujus Generatio .lota eſt non
13 לא רחץ: דור מה־רמו עיניו ועפעפיו
,ejus molares cultri & , *ejus dentes gladii* Generatio .ſunt elevatæ
14 ינשאו: דור חרבות שניו ומאכלות מתלעתיו
Halucah .homine ab egenos & : terra è *afflictos comedendum ad*
15 לאכל עניים מארץ ואביונים מאדם: לעלוקה
quatuor : ſaturabuntur non *iſta Tria .da* , *da* filiæ duæ
שתי בנות הב הב שלוש הנה לא תשבענה ארבע
non terra , *vulvæ conſtrictio* & ,Sepulchrum *.abundantia dixerunt* non
16 לא־אמרו הון: שאול ועצר רחם ארץ לא־
ſubſannaverit Oculum *.abundantia* dixit non ignis & : aquis ſatiata eſt
17 שבעה מים ואש לא־אמרה הון: עין תלעג
corvi *eum* effodiant ,matris obedientiam *ad* contempſerit & , patrem
לאב ותבוז ליקהת אם יקרוה ערבי־
ſunt abſcondita *ipſa* Tria .aquilæ filii eum comedant & : torrentis
18 נחל ויאכלוה בני־נשר: שלשה המה נפלאו
viam , cœlis in aquilæ Viam *.ea* novi non quatuor & : me à
19 ממני וארבעה לא ידעתים: דרך הנשר בשמים דרך
viri viam & ,maris corde in navis viam ,petram ſuper ſerpentis
נחש עלי צור דרך־אניה בלב־ים ודרך גבר
,ſuum os terſit & ,comedit ,*adulteranth* mulieris via Sic *.puella* in
20 בעלמה: כן דרך אשה מנאפת אכלה ומחתה פיה
eſt commota tria Propter .iniquitatem ſum operata Non : dixit &
21 ואמרה לא־פעלתי און: תחת שלוש רגזה
cùm ſervum Propter .ſuſtinere *poterit* non quatuor propter & : terra
22 ארץ ותחת ארבע לא־תוכל שאת: תחת עבד כי
exoſam Propter .pane fuerit ſaturatus cùm ſtultum & ,regnaverit
23 ימלוך ונבל כי ישבע־לחם: תחת שנואה
Quatuor .ſuæ *heræ* fuerit hæres cùm ancillam & : fuerit maritata cùm
24 כי תבעל ושפחה כי־תירש גברתה: ארבעה
.edocta ſapienter ſapientia ipſa & : terræ minima *ipſa*
הם קטני־ארץ והמה חכמים מחכמים:

Verſio VUL.LAT.

CAP. XXX.

1 VErba Congregantis filii
Vomentis. Viſio, quā locutus eſt
vir, cū quo eſt Deus, & qui Deo
ſecū morante confortatus, ait;
2 Stultiſſimus ſū virorū, & ſapien-
3 tia hominū nō eſt mecū. Non
didici ſapientiā, & non novi
4 ſcientiā Sanctorū. Quis aſcen-
dit in cœlū atq; deſcēdit? quis
continuit ſpiritū in manibus
ſuis? quis colligavit aquas
quaſi in veſtimento? quis ſu-
ſcitavit omnes terminos ter-
ræ? quod nomen eſt ejus, & quod
5 nomen filii ejus, ſi nôſti? Omnis
ſermo Dei ignitus, clypeus eſt
6 ſperantibus in ſe: Ne addas
quidquā verbis illius, & argua-
7 ris, inveniariſq; mendax. Duo
rogavi te, ne deneges mihi an-
8 tequā moriar. Vanitatē, et ver-
ba mēdacia lōgè fac à me. Mē-
dicitatē, & divitias ne dederis
mihi: tribue tantū victui meo
9 neceſſaria: Ne fortè ſatiatus il-
liciar ad negādū, et dicā; Quis
eſt Dñs? aut egeſtate compulſus
furer, & perjurem nomen Dei
10 mei. Ne accuſes ſervū ad do-
minū ſuū, ne fortè maledicat
11 tibi, & corruas. Generatio,
quæ patri ſuo maledicit, et quæ
12 matri ſuæ non benedicit. Ge-
neratio, quæ ſibi munda vide-
tur, & tamē nō eſt lota à ſor-
13 dibus ſuis. Generatio, cujus excel-
ſi ſūt oculi, et palpebræ ejus in
14 alta ſurrectæ. Generatio, quæ
pro dentibus gladios habet, &
commandit molaribus ſuis, ut
comedat inopes de terra, &
15 pauperes ex hominibus. Sangui-
ſugæ duæ ſunt filiæ, dicentes;
Affer, affer. Tria ſunt inſatu-
rabilia: & quartū, quod nunquā
16 dicit; Sufficit. Infernus, & os
vulvæ, & terra, quæ non ſati-
atur aquâ: ignis verò nun-
17 quā dicit, Sufficit. Oculum,
qui ſubſannat patrem, & qui
deſpicit partū matris ſuæ, ef-
fodiant eū corvi de torrenti-
bus, & comedant eū filii aqui-
18 læ. Tria ſunt difficilia mihi,
19 & quartū penitùs ignoro. Viā
aquilæ in cœlo, viam colubri
ſuper petrā, viā navis in medio
mari, & viā viri in adoleſcen-
20 tia. Talis eſt via mulieris adul-
teræ, quæ comedit, & tergens
os ſuū dicit; Non ſum operata
21 malū. Per tria movetur terra,
& quartū nō poteſt ſuſtinere:
22 Per ſervū cū regnaverit: per ſtul-
23 tū cū ſaturatus fuerit cibo: Per
odioſā mulierē cū in matrimo-
nio fuerit aſſumpta: & per an-
cillā cū fuerit hæres dominæ
24 ſuæ. Quatuor ſūt minima ter-
ræ, et ipſa ſūt ſapientiora ſa-
pientibus:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

7 †Ἐπίσταται δίκαιος κρίνειν πενιχροῖς, †ὁ δὲ
ἀσεβὴς οὐ (γ) νοεῖ γνῶσιν, †καὶ πτωχῷ οὐχ ὑ-
8 πάρχει νοῦς ἐπιγνώμων. †Ἄνδρες (ʼ) ἄνομοι
ἐξέκαυσαν πόλιν, †σοφοὶ δὲ ἀπέστρεψαν ὀρ-
9 γήν. †Ἀνὴρ σοφὸς κρινεῖ ἔθνη; †ἀνὴρ δὲ
φαῦλος ὀργιζόμενος καταγελᾶται καὶ οὐ κα-
10 ταπτήσσει. †Ἄνδρες αἱμάτων μέτοχοι (δ) μι-
σοῦσιν ὅσιον, †οἱ δὲ εὐθεῖς ἐκζητήσουσι ψυ-
11 χὴν αὐτοῦ. †Ὅλον τὸν θυμὸν αὐτοῦ ἐκφέρει ἄ-
12 φρων, †σοφὸς δὲ ταμιεύεται κατὰ μέρος. †Βασι-
λέως ὑπακούοντος λόγον ἄδικον, †πάντες
13 οἱ ὑπ' αὐτὸν παράνομοι. †Δανειστοῦ καὶ (ε)
χρεωφειλέτου ἀλλήλοις συνελθόντων, ἐπισκο-
14 πὴν (ζ) ἀμφοτέρων ποιεῖται ὁ κύριος. †Βα-
σιλέως ἐν ἀληθείᾳ κρίνοντος πτωχούς, †ὁ
θρόνος αὐτοῦ εἰς μαρτύριον κατασταθήσεται.
15 †Πληγαὶ καὶ ἔλεγχοι διδόασι σοφίαν, †παῖς
16 δὲ πλανώμενος αἰσχύνει γονεῖς αὐτοῦ. Πολ-
λῶν ὄντων ἀσεβῶν πολλαὶ γίνονται ἁμαρτίαι,
†οἱ δὲ δίκαιοι ἐκείνων πιπτόντων κατάφοβοι
17 γίνονται. †Παίδευε υἱόν σου, καὶ ἀναπαύσει
18 σε, †καὶ δώσει κόσμον τῇ ψυχῇ σου. †Οὐ μὴ
(ς) ὑπάρξῃ ἐξηγητὴς ἔθνει παρανόμῳ, †ὁ
19 δὲ φυλάσσων τὸν νόμον μακαριστός. †Λόγοις οὐ
παιδευθήσεται οἰκέτης σκληρός, †ἐὰν γὰρ καὶ
(η) νοήσῃ, ἀλλ' οὐχ ὑπακούσεται. †Ἐὰν ἴδῃς
20 ἄνδρα ταχὺν ἐν λόγοις, †γίνωσκε ὅτι ἐλ-
21 πίδα ἔχει μᾶλλον ὁ ἄφρων αὐτοῦ. †Ὃς κα-
τασπαταλᾷ ἐκ παιδός, οἰκέτης ἔσται, †ἔσχα-
22 τον δὲ ὀδυνηθήσεται ἐφ' ἑαυτῷ. †Ἀνὴρ θυ-
μώδης (θ) ἐγείρει νεῖκος, †ἀνὴρ δὲ ὀργίλος
23 ἐξώρυξεν (ι) ἁμαρτίαν. †Ὕβρις ἄνδρα τα-
πεινοῖ, †τοὺς δὲ ταπεινόφρονας ἐρείδει δόξῃ
24 κύριος. †Ὃς μερίζεται κλέπτῃ, μισεῖ τὴν ἑαυ-
τοῦ ψυχήν· †ἐὰν δὲ ὅρκου προτεθέντος ἀκού-
25 σαντες μὴ ἀναγγείλωσι, φοβηθέντες καὶ αἰ-
σχυνθέντες ἀνθρώπους (κ) ὑπεσκελίσθησαν, †ὁ
δὲ πεποιθὼς (λ) ἐπὶ κυρίῳ εὐφρανθήσεται. †
ἀσέβεια ἀνδρὶ δίδωσι σφάλμα, †(μ) ὃς δὲ
26 πέποιθεν ἐπὶ τῷ δεσπότῃ σωθήσεται. †Πολ-
λοὶ θεραπεύουσι πρόσωπα ἡγουμένων, †παρὰ
27 δὲ κυρίου γίνεται τὸ δίκαιον ἀνδρί. †Βδέλυγ-
μα δίκαιος ἀνὴρ ἀνδρὶ ἀδίκῳ, †βδέλυγ-
μα δὲ ἀνόμῳ κατευθύνουσα ὁδός. Cap. 31.
10 †Γυναῖκα ἀνδρείαν τίς εὑρήσει; †τιμιωτέρα
11 δέ ἐστι λίθων πολυτελῶν ἡ τοιαύτη. †Θαρσεῖ
(ν) ἐπ' αὐτῇ ἡ καρδία τοῦ ἀνδρὸς αὐτῆς· †
ἡ τοιαύτη καλῶν σκύλων οὐκ ἀπορήσει. †
12 Ἐνεργεῖ γὰρ τῷ ἀνδρὶ (ξ) εἰς ἀγαθὰ πάντα
13 τὸν βίον. †Μηρυομένη ἔρια καὶ λινόν, ἐποίησεν
14 (ο) εὔχρηστον ταῖς χερσὶν αὐτῆς. †(π) Ἐγένετο
ὡσεὶ ναῦς ἐμπορευομένη μακρόθεν, †συνά-
15 γει (ρ) δὲ αὐτῇ τὸν βίον. Καὶ ἀνίσταται ἐκ νυ-
κτῶν, †καὶ ἔδωκε βρώματα τῷ οἴκῳ, †καὶ ἔργα
16 ταῖς θεραπαίναις. †Θεωρήσασα γεώργιον ἐ-
πρίατο, †ἀπὸ δὲ καρπῶν χειρῶν αὐτῆς κατεφύ-
17 τευσε κτῆμα. †Ἀναζωσαμένη ἰσχυρῶς τὴν ὀσφὺν
αὐτῆς †ἤρεισε τοὺς βραχίονας αὐτῆς εἰς ἔργον.

Novit juſtus judicare pauperibus: 7
impius autem (b) non cogitat ſcien-
tiam: & inopi non ineſt mens cog-
noſcens. Viri (i) iniqui (k) exuſſe- 8
runt civitatē: ſapientes autem a-
verterunt irā. Vir ſapiens judica- 9
bit gentes: vir autem nequam ſuc-
cenſens deridetur, & non terret.
Viri ſanguinū participes odio ha- 10
bent ſanctum: recti autem (l) ex-
quirent animam ejus. Totam iram 11
ſuam profert inſipiens: ſapiens au-
tem (m) diſpenſat per partem. Re- 12
ge exaudiente verbum injuſtum,
omnes, (n) qui ſub eo, iniqui. Fœ- 13
neratore & debitore (o) invicèm
concurrentibus, (p) viſitationem u-
triuſq; facit Dominus. Regis in ve- 14
ritate judicantis pauperes, ſedes
ejus in (q) teſtimonium conſtituē-
tur. Plagæ & correptiones dant 15
ſapientiam: (r) puer autem errrans
confundit (ſ) parentes ſuos. Cùm 16
multi ſunt impii, multa fiunt pec-
cata: juſti autem illis cadentibus
timidi fiunt. Erudi filium tuum: et 17
requiem dabit tibi, & dabit (t) or-
natum animæ tuæ. (v) Non erit 18
enarrator genti iniquæ: cuſtodiens
autem legem beatiſſimus. Verbis nō 19
erudietur famulus durus: nam etſi
intellexerit; ſed non obediet. Si vi- 20
deas virum velocem in verbis; cog-
noſce, quia ſpem habet magìs inſi-
piens eo. Qui deliciatur à puero, 21
famulus erit: noviſſimè autem (x)
dolebit ſuper ſe. Vir indignabun- 22
dus (y) ſuſcitat contentionem; &
vir iracundus effodit peccatū. (z)
Contumelia virum humiliat: (ω) 23
humiliter autem ſentientes firmat
gloriā Dominus. Qui participat (aa) 24
furi, odit ſuam animam: ſi autem
juramentum propoſitum audientes
non annuntiaverunt, Timentes, & 25
reveriti homines (b) ſupplantati
ſunt: qui autem confidit in Do-
mino, lætabitur. Impietas viro dat
prolapſionem: qui autem confidit in
Domino, ſalvabitur. Multi colunt 26
facies Ducum: à Domino autem fit
juſtum viro. Abominatio* juſtus vir 27
viro injuſto: abominatio autē ini-
quo rectè pergens via. (c) Cap. 31.
Mulierē fortē quis inveniet? pre- 10
tioſior autē eſt lapidibus pretioſis,
quæ talis eſt. Confidit ſuper eam 11
cor viri ejus: quæ talis eſt, pulchris
(d) ſpoliis non egebit. Operatur e- 12
nim viro (e) ad bona omni vitâ:
(f) Filans lanas & linū, fecit (g) 13
quod utile eſt manibus ſuis. Facta 14
eſt tanquā navis mercaturam ex-
ercens de longè: congregat (h) au-
tem hac vitam. Et ſurrexit de (i) 15
noctibus, & dedit (k) eſcas do-
mui, & opera ancillis. Conſiderans 16
agrum emit: & de fructibus ma-
nuum ſuarum plantavit poſſeſſi-
onem. Præcincta fortiter (l) lumbū 17
ſuum, (m) firmavit brachia ſua
ad opus.

MS.A. (γ) συνήσει (ʼ) λοιμοὶ (δ) ζητήσουσιν ὅσιον, (ε) χρεοφιλέτου ἀλλή-
λων (ζ) ποιεῖται ἀμφοτέρων ὁ κύριος. (ς) ὑπάρξει (η) νοήσῃ, οὐχ ὑπακούσεται.
(θ) ὀρύσσει νεῖκος, (ι) ἁμαρτίας. (κ) ὑποσκελισθήσονται, (λ) ἐπὶ κύριον (μ) ὁ
δὲ πεποιθὼς (ν) ἐπ' αὐτὴν (ξ) ἀγαθὸν καὶ οὐ κακὸν πάντα τὸν βίον. (ο) εὔ-
χρηστα (π) Ἐγένετο δὲ ὡσεὶ ναῦς ἐμπορευομένη (ρ) ἃ ἑαυτῆς τὴν πλοῦτον.

תרגום TARGUM.

ל

1 מלוי דאגור בר יקה דקביל נביותא ואמר גברא לאיתיאל לאיתיאל ואוכל: מטול 2
דבורא דבני נשא אנא ולא אית בי ביונא דבני נשא: ולא יליפית חכמתא ולא ידעית 3
ידיעתא דקדישי: מן סלק לשמיא ונחת ומן אחד רוחא בחפנוי ומן צר מיא בשושיפא 4
ומן אקים בריתא דארעא מן שמיה ומן שום בריה אין ידעת: כלהון מימרוי דאלהא 5
צריפן ומסיע לאלין דמתרחצין בידה: לא תוסף על מלוי דלא יכסנך ותתכדב: תרתין 6 7
שאלית מנך לא תכלי מני עד לא אמות: דגלתא ומלתא כדבותא ארחק מני מסכנותא 8
ועותרא לא תתן לי זוני לחמא מסתי: דלא אשבע ואכפר ואימר מנו אלהא ודלא 9
אתמסכן ואגנוב ואחלל שמיה דאלהא: לא תלשן עבדא למריה דלא נצערנך 10
ותתחיב: דרא דאבוהי נצער ולאמיה לא נברך: דרא דדכי בעינוי ומצאתיה לא 11 12
אשתזג: דרא דרמו עינוי וגבינוי מנטלין: דרא דספסרי אנון שנוהי וחריפי אנון ניבוי 13
למיכל מסכני מארעא ולעליבי מן בני נשא: לעלוקא תרתין בנן הב הב תלת אנון 14 15
דלא שבען וארבע דלא אמרן מסתא: שיול ואחדת רחמי וארעא לא שבעא מיא ונורא 16
לא אמרה מסתא: עינא דמצדיא לאב ושיטא קשישותא דאמא נחצוניה עורבי 17
דנחלא ויסמון יתיה בני נשרא: תלת אנון דגניזן מני וארבע דלא ידעית אנון: ארחא 18
דנשרא בשמיא ואורחיה דחויא על שועא ואורחא דאלפא בלביה דימא וארחא דגברא 19
בעלמתא: היכנא ארחא דאתתא גירתא אכלה ומכפרה פמה ואמרה לא עבדית 20
מדעם דעאתא: תחות תלת רגזא ארעא ותחות ארבע לא יכלא למסברא: תחות 21 22
עבדא כד נמלוך וטפשא דישבע לחמא: תחות שנואתא דהויא לגברא ואמתא די 23
ירתה לרבונתה: ארבעא אנון דזעירין בארעא והנון חכימין ומחכמין: 24

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XXX.

VErba Agur filii Jachæ, qui ſuſcepit prophetiam, & dixit vir ad Ithiel, 1
Ithiel, & Uchal. Quoniam inſipientiſſimus ego ſum hominum, & non eſt 2
mihi intelligentia filiorum hominum. Et non didici ſapientiam, nec ſcivi 3
ſcientiā ſanctorum. Quis aſcendit in cœlum & deſcendit? & quis tenuit 4
ventum in pugillis ſuis? & quis ligavit aquas in pallio? & quis ſtatuit
terminos terræ? quod eſt nomen ejus, aut quod eſt nomen filii ejus, ſi nô-
ſti? Omnes ſermones Dei ſunt conflati, & auxiliatur eis qui confidunt in 5
eo. Ne addas ad verba ejus, ut non arguat te, & inveniaris mendax. Duo pe- 6
tivi à te, ne prohibeas à me antequàm moriar. Detractionem & verbum 7
mendacii longè fac à me, mendicitatem & divitias ne des mihi, enutri me 8
pane ſufficienti mihi. Ne cùm ſatiatus fuero, negem & dicam: Quis eſt 9
Deus? & ne paupertate compulſus furer, & violem nomen Dei. Ne accuſes 10
ſervū apud dñm ſuum, ne fortè maledicat tibi, & reus peragaris. Eſt gene- 11
ratio quæ patri ſuo maledicit, & matri ſuæ non benedicit. Generatio quæ 12
munda eſt in oculis ſuis, & à ſordibus ſuis non eſt lota. Generatio cujus ex- 13
celſi ſunt oculi, & palpebræ elevatæ. Generatio cujus dentes ſunt [*ſicut*] gla- 14
dii, & molares [*ut*] cultri, ad comedendū pauperes de terra, & afflictos ex fi-
liis hominum. Sanguiſugæ duæ ſunt filiæ, [*dicentes*] *Da, da:* tres ſunt quæ non 15
ſatiantur, et quatuor quæ nunquā dicunt, Sufficit. Infernus et conſtricta vulva, 16
& terra non ſatiatur aqua: & ignis nunquā dicit, Sufficit. Oculus qui ſub- 17
ſannat patrē, & deſpicit ſenectutē matris, diffident eum corvi torrentis, *&*
excæcabunt eum filii aquilæ. Tria ſunt abſcondita mihi, & quatuor quæ non 18
ſcio. Viam aquilæ in cœlo, viam colubri ſuper petra, & viam navis in cor- 19
de maris, et viam viri in virgine. Sic eſt via mulieris adulteræ, quæ comedit 20
et tergit os ſuum, et dicit: Non ſum operata aliquid iniqui. Per tria com- 21
movetur terra, et quartum non poteſt ſuſtinere. Propter ſervum cùm reg- 22
naverit, et propter inſipientem qui ſaturatur pane. Propter odioſam quæ 23
fuit viro, et ancillam quæ fuerit hæres dominæ ſuæ. Quatuor ſunt minima 24
in terra, et ſunt ſapientia & erudita.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠ *

1 * ܡ̈ܠܘܗܝ ܕܐܓܘܪ ܒܪ ܝܩܐ : ܕܩܒܠ ܢܒܝܘܬܐ . ܘܐܬܚܝܠ . ܘܐܡܪ ܠܐܝܬܐܝܠ . * ܡܛܠ
2 ܕܣܟܠ ܗ̱ܘ ܕܝܢܝ : ܘܗܘܢܐ ܕܒܢ̈ܝܢܫܐ ܠܝܬ ܒܝ :* ܘܠܐ ܝܕܥܬ ܚܟܡܬܐ : ܘܠܐ ܝܠܦܬ ܝܕܥܬܐ
3 ܕܩܕܝ̈ܫܐ .* ܐܡܪ ܠܝ . ܡܢܘ ܣܠܩ ܠܫܡܝܐ . ܘܢܚܬ . ܘܡܢܘ ܐܚܕ ܪܘܚܐ ܒܚܘܦܢܘܗܝ . ܘܡܢܘ ܨܪ
4 ܡܝܐ ܒܣܘܕܪܐ . ܘܡܢܘ ܐܩܝܡ ܟܠܗܘܢ ܣܘܦܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ . ܡܢܘ ܫܡܗ . ܘܡܢܘ ܫܡܗ ܕܒܪܗ . ܐܢ
5 6 ܝܕܥ ܐܢ̱ܬ . * ܟܠܗܘܢ ܡܐܡܪ̈ܘܗܝ ܕܐܠܗܐ ܓܒܝܢ . ܘܡܣܡܟ ܠܐܝܠܝܢ ܕܬܟܝܠܝܢ ܥܠܘܗܝ . * ܠܐ
7 ܬܘܣܦ ܥܠ ܡ̈ܠܘܗܝ . ܕܠܐ ܢܟܣܝܟ . ܘܬܬܟܕܒ . * ܬܪ̈ܬܝܢ ܫܐܠܬ ܡܢܟ . ܠܐ ܬܟܠܐ ܡܢܝ ܥܕܡܐ ܕܐܡܘܬ .
8 * ܐܪܚܩ ܡܢܝ ܣܪܝܩܘܬܐ . ܘܡܠܬܐ ܕܟܕܒܘܬܐ . ܘܡܣܟܢܘܬܐ ܘܥܘܬܪܐ ܠܐ ܬܬܠ ܠܝ . ܐܠܐ ܗܒ ܠܝ ܡܘܬܒܐ
9 ܡܣܦܩܢܝ . * ܕܠܐ ܐܣܒܥ ܘܐܟܦܘܪ . ܘܐܡܪ ܡܢܘ ܡܪܝܐ . ܘܕܠܐ ܐܬܡܣܟܢ ܘܐܓܢܘܒ . ܘܐܝܡܐ ܒܫܡܗ
10 ܕܐܠܗܝ . * ܠܐ ܬܫܠܡ ܥܒܕܐ ܠܡܪܘܗܝ . ܕܠܐ ܢܠܘܛܟ ܘܬܬܚܝܒ . * ܕܪܐ ܕܠܐܒܗ̈ܘܗܝ ܡܨܥܪ .
11 12 ܘܠܐܡܗ ܠܐ ܡܒܪܟ . * ܕܪܐ ܕܕܟܐ ܒܥܝ̈ܢܘܗܝ . ܘܡܢ ܨܘܐܗ ܠܐ ܐܬܚܠܠ . * ܕܪܐ ܕܪܡܢ ܥܝ̈ܢܘܗܝ .
13 14 ܘܡܪܝܡܝܢ ܥܦܥܦܘܗܝ . * ܕܪܐ ܕܣܦܣܝܪ̈ܐ ܫܢ̈ܘܗܝ . ܘܣܟܝ̈ܢܐ ܟܟ̈ܘܗܝ . ܠܡܐܟܠ
15 ܡܣ̈ܟܢܐ ܕܐܪܥܐ . ܘܒܨܝܪ̈ܐ ܕܒܢ̈ܝܢܫܐ . * ܠܥܠܘܩܐ ܬܠܬ ܒܢ̈ܢ ܗ̈ܘܝ ܠܗ̇ ܚܒ̈ܝܒܢ . ܬܠܬ ܐܝܬܝܢ
16 ܕܠܐ ܣܒ̈ܥܢ . ܘܕܪܒܝܥܝܬܐ ܠܐ ܐܡܪܐ ܕܣܘ . * ܫܝܘܠ . ܘܐܚܝܕܐ ܕܪ̈ܚܡܐ . ܘܐܪܥܐ ܠܐ ܣܒܥܐ ܡܝܐ . ܘܢܘܪܐ ܠܐ
17 ܐܡܪܐ ܕܣܘ . * ܥܝܢܐ ܕܓܚܟܐ ܥܠ ܐܒܘܗ̇ . ܘܡܫܝܛܐ ܣܝܒܘܬܐ ܕܐܡܗ̇ . ܢܚܨܘܢܝܗ̇ ܥܘܪ̈ܒܐ ܕܢܚܠܐ .
18 19 ܘܢܐܟܠܘܢܝܗ̇ ܒܢ̈ܝ ܢܫܪܐ . * ܬܠܬ ܐܝܬܝܢ ܕܡܛܫܝܢ ܡܢܝ . ܘܪܒܝܥܝܬܐ ܠܐ ܝܕܥ ܐܢܐ . * ܐܘܪܚܗ ܕܢܫܪܐ
ܒܫܡܝܐ . ܘܐܘܪܚܗ ܕܚܘܝܐ ܥܠ ܫܘܥܐ . ܘܐܘܪܚܗ ܕܐܠܦܐ ܒܠܒܗ ܕܝܡܐ . ܘܐܘܪܚܗ ܕܓܒܪܐ
20 ܒܛܠܝܘܬܗ . * ܗܟܢܐ ܗܝ ܐܘܪܚܗ̇ ܕܐܢܬܬܐ ܓܝܪܬܐ . ܐܟܠܐ ܘܡܟܦܪܐ ܦܘܡܗ̇ . ܘܐܡܪܐ . ܡܕܡ ܠܐ
21 ܥܒܕܬ . * ܡܢ ܬܚܝܬ ܬܠܬ ܙܝܥܐ ܐܪܥܐ . ܘܡܢ ܬܚܝܬ ܐܪܒܥ ܠܐ ܡܫܟܚܐ ܠܡܣܝܒܪܘ . * ܡܢ ܬܚܝܬ ܥܒܕܐ ܟܕ
22 23 ܢܡܠܟ . ܘܡܢ ܬܚܝܬ ܣܟܠܐ ܕܣܒܥ ܠܚܡܐ . * ܘܡܢ ܬܚܝܬ ܣܢܝܬܐ ܕܗܘܬ ܠܓܒܪܐ . ܘܡܢ ܬܚܝܬ ܐܡܬܐ
24 ܕܡܦܩܐ ܠܡܪܬܗ̇ . * ܐܪܒܥ ܐܝܬܝܢ ܕܙܥܘܪܝܢ ܒܐܪܥܐ . ܘܚܟܝܡܢ ܡܢ ܚܟܝ̈ܡܐ .

CAP. XXX.

SErmones Agur filii Jaci qui conſequutꝰ eſt 1
prophetiã,& vires acquiſivit,dixitq; ad Ata-
liel ; Quandoquidẽ mancũ eſt judiciũ meũ, 2
nec eſt in me prudentia humana, Nec novi 3
ſapientiã,neq; didici ſcientiã ſanctorũ: Dici- 4
to mihi, Quis aſcendit in cœlũ,& deſcendit?
quis continuit ſpiritũ volis ſuis? quis colliga-
vit aquas in linteo? & quis conſtituit omnes
terminos terræ? Quodnã eſt nomẽ ejꝰ, & ꝙ
nomen filii ejꝰ,ſi nôſti? Univerſa dicta Dei e- 5
lecta ſũt,ipſeq; fulcit eos qui confidũt in illo.
Nil addas verbis ejꝰ,ne te corripiat,& argua- 6
ris mendacio. Duo abs te poſtulavi,ne dene- 7
ges mihi antequã moriar. Amove à me vani- 8
tatẽ et ſermonẽ mendacẽ,et paupertatẽ ac di-
vitias ne dederis mihi,*ſed* concede mihi habi-
tationẽ pro ſufficiẽtia mea: Ne fortè ſatiatꝰ ne- 9
gẽ,ac dicã; Quis eſt Dñs? aut ne in pauperta-
tẽ redactꝰ furer, & jurẽ ꝑ nomẽ Dei mei. Ne 10
tradas ſervũ heris ejꝰ,ne tibi maledicat,& ſis
obnoxiꝰ Generationi quæ parentes ſuos con- 11
tumeliis afficit, & matri ſuæ non benedicit.
Generationi quæ munda eſt in oculis ſuis, & 12
tamen à ſordibꝰ ſuis non lavit ſe. Generatio- 13
ni quæ cùm elatos habet oculos,palpebras ſu-
as attollit. Generationi cujus dentes gladii 14
ſunt,et cultri canini ejꝰ,ut devorent pauperes
terræ & inopes ex hominibꝰ. Sanguiſuga tres 15
habebat filias dilectas: tres *inquam*,ſunt quæ
non ſatiantur,& quarta nequaquã dicit, Satis 16
eſt: Infernus,et cujꝰ conſtricta ſunt viſcera,&
terra non ſaturatur aquis,& ignis nunquã di-
cit, Sufficit. Oculum qui ridet patrem ſuum, 17
& ſpernit ſenectutem matris ſuæ, eruent cor-
vi vallis, & devorabunt pulli aquilæ. Tria 18
ſunt quæ me latent,& quartũ ignoro: Viã a- 19
quilæ in cœlo, & viã ſerpentis ſupra petrã,
& viã navis in corde maris, & viam viri in
adoleſcentia ſua. Ejuſmodi eſt via mulieris 20
adulteræ: comedit, & extergit os ſuum, ac
dicit, Nihil feci. Sub tribus contremiſcit 21
terra, et ſub quatuor nequit ſuſtinere: Sub 22
ſervo cùm regnârit,ſub ſtulto qui ſatiatur pa-
ne: Sub odioſa *muliere* quæ nubit viro, et 23
ſub ancilla quæ ejicit dominam ſuam. Qua-
tuor ſunt minima ſuper terram, eaque ſapi-
entiora ſapientibus.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

10 * صديقك او صديق ابيك لا تهمله * ولا تدخلن الي منزل اخيك جزافا * صديق قريب
11 مصاقب بيتك افضل من اخ يسكن بعيدا * يا بني صر حكيما ليفرح قلبك * واردد عنك
12 اقوال المعيرين * المدرب يختفي في موافاة المساوي * والاغبياء اذا وافتهم يتكبدون خسارة *
13 14 * من يفسد ما ليس له تنزع ثوبه * فقد عبر المتعظم * من يبارك صديقه بالغداة بصوت
15 عظيم * اعتقده انه لا فرق بينه وبين من يلعنه * نقط الوكف تخرج الرجل في اليوم
16 الشتوي من منزله * وكذلك الامراة القارفة الشتامة تخرج الرجل من بيته * الشمال ريح
17 18 صعبة * وباسم تلقب يمينية * الحديد يحد الحديد * والانسان يحد وجه رفيقه * من نصب تينة
19 ياكل اثمارها * ومن حفظ صاحبه اكرم * كما ان الوجوه ما تشابه الوجوه * كذلك اذهان
20 الناس ما تتشابه * الجحيم والهلاك ما يشبعان * بهذه الصورة اعين الناس ما تشبع ولا تمتلي *
21 رذالة عند الرب تصليب العين * والذين لا ادبا لهم ما يمسكون لسانهم * الاحماء اختبار
الفضة والذهب وامتحانهما * والانسان يمتحن بفم الذين يمدحونه * قلب المتعدي الشريعة
22 يلتمس الشر * والقلب المقوم يطلب علما * ان جلدت الغبي في وسط الجماعة واهنته * فما
23 24 تنزع بذلك غباوته * اعرف نفوس رعيتك معرفة بليغة * وثبت قلبك على قطعانك * فان
25 العز والاقتدار ليسا للانسان مدى الدهر * ولا تدفع من جيل الي جيل * اهتم بانواع الحشيش
26 27 التي في البقعة * فيكثر حشيشا * واجمع حشيشا جبليا * ليكون لك غنم للبوس * اكرم الرياض
ليكون لك خراف * يا بني لك مني اقوالا قوية لحياتك ولحياة من يخدمك *
1 * الفصل الثامن والعشرون * * المنافق يهرب من غير ان يكده احد * والمقسط مثل
2 كالاسد * من اجل خطايا المنافقين صارت الحكومات * والرجل المدرب يخمدها *

Amicum tuum aut amicum patris tui ne 10
contemnas: & ne ingrediaris habitacu-
culum fratris tui, gratis. Amicus proxi-
mus propinquus domui tuæ, eſt melior
fratre habitante procul. Fili mi, eſto 11
ſapiens, ut gaudeat cor tuum: & aver-
te à te verba infamiæ. Cautus abſcondit 12
ſe in adventu malorum: & inſipientes,
cùm advenerint eis, ſuſtinebunt jacturã.
Qui deterit quod non eſt ſuum, aufere- 13
tur veſtis ejus: jam enim exceſſit ſuper-
bum. Qui benedicit amico ſuo in matu- 14
tino, voce ingenti, crede nullam eſſe dif-
ferentiam inter illum & inter eum qui
maledicit ipſi. Guttæ perſtillationis edu- 15
cunt virum è domo ſua in die pluvio:
ſic mulier litigioſa calumniatrix educit
virum de domo ejus. Septentrio eſt ven- 16
tus aſper, & nomine appellatur Dexter.
Ferrum acuit ferrum, & homo acuit fa- 17
ciem ſocii ſui. Qui plantat ficum, edet 18
fructus ejus: & qui cuſtodit amicum
ſuum, honorabitur. Sicut vultus non ſunt 19
ſimiles vultibus, ſic mentes hominum non
aſſimilantur. Infernus & perditio non 20
ſatiantur: hoc modo oculi hominum
non ſatiantur nec implentur. Abomina-
tio eſt apud Dominum durities oculi
(i. impudentia) *& qui non habent di-*
ſciplinam, non cohibent linguam ſuam.
Excandefactio eſt experimentum argenti 21
& auri, & probatio utriuſque: & homo
comprobatur ore eorum qui laudant eũ.
Cor prævaricantis legem, quærit malũ:
& cor rectum inveſtigat ſcientiam. Si 22
flagellaveris inſipientem in medio concilii
& deſpexeris eum, non auferes ob hoc
ſtultitiam ejus. Cognoſce animos gregis 23
tui cognitione perfectã, & confirma cor
tuum ſuper greges tuos. Quia gloria & 24
poteſtas non erunt homini in ſeculum, ne-
que concedentur à progenie ad proge-
niem. Cura omnigenis herbas quæ ſunt 25
in campo, & redundabit fœno: Et collige 26
herbam montanam, ut ſint tibi pecudes ad
indumentum. In pretio habeas prata, ut 27
ſint tibi agni. Fili mi, habes à me ſer-
mones potentes pro vita tua & vita eo-
rum qui tibi miniſtrant.

CAP. XXVIII.

IMpius fugit abſque eo quòd vexet eum 1
quiſquam: & juſtus nixus eſt quaſi leo.
Ob peccata impiorum enatæ ſunt lites: & 2
vir cautus ſedat illas.

Cuniculi .ſuum panem æſtate in præparaverunt &,fortis non populus Formicæ
25 26 הַנְּמָלִים עַם לֹא־עָז וַיָּכִינוּ בַקַּיִץ לַחְמָם׃ שְׁפַנִּים
: locuſtæ non Rex .ſuã domũ petra in ponent & , *robuſtus* non populus
27 עַם לֹא־עָצוּם וַיָּשִׂימוּ בַסֶּלַע בֵּיתָם׃ מֶלֶךְ אֵין לָאַרְבֶּה
ædibus in *ipſa &* : *tractabit* manib⁹ in *Aranea* .*ipſum totũ dimidians* egredietur &
28 וַיֵּצֵא חֹצֵץ כֻּלּוֹ׃ שְׂמָמִית בְּיָדַיִם תְּתַפֵּשׂ וְהִיא בְּהֵיכְלֵי
.*ire* *bonificantia* quatuor & : *inceſſum bonificantia* *ipſa* Tria .regis
29 מֶלֶךְ׃ שְׁלֹשָׁה הֵמָּה מֵיטִיבֵי צָעַד וְאַרְבָּעָה מֵיטִבֵי לָכֶת׃
, lumbos Accinctus .*omnis faciebus* à revertetur non & : *animali in* fortis Leo
30 31 לַיִשׁ גִּבּוֹר בַּבְּהֵמָה וְלֹא־יָשׁוּב מִפְּנֵי־כֹל׃ זַרְזִיר מָתְנַיִם
ſi & : te *elevando in* egiſti ſtultè Si .eo cum Alcum rex & : hircus vel
32 אוֹ־תָיִשׁ וּמֶלֶךְ אַלְקוּם עִמּוֹ׃ אִם־נָבַלְתָּ בְהִתְנַשֵּׂא וְאִם־
,butyrum *educet* lactis emulſor Quia .os ad manum ,cogitâſti *malum*
33 זַמּוֹתָ יָד לְפֶה׃ כִּי מִיץ חָלָב יוֹצִיא חֶמְאָה
.litem *educet* furorum emunctor & : ſanguinem *educet* naris emunctor &
וּמִיץ־אַף יוֹצִיא דָם וּמִיץ אַפַּיִם יוֹצִיא רִיב׃

CAP. XXXI. לא

quid &,mi fili Quid.ſua mater eũ erudivit qua *aſſumptio* :regis Lemuel Verba
1 2 דִּבְרֵי לְמוּאֵל מֶלֶךְ מַשָּׂא אֲשֶׁר־יִסְּרַתּוּ אִמּוֹ׃ מַה־בְּרִי וּמַה־
:tuã *facultatẽ* mulieribus dederis Ne .meorũ votorũ fili quid & :mei uteri fili
3 בַּר־בִּטְנִי וּמֶה בַּר־נְדָרָי׃ אַל־תִּתֵּן לַנָּשִׁים חֵילֶךָ
regibus *ne* , Lemuel *regibus* Ne .reges delendũ ad tuas vias &
4 וּדְרָכֶיךָ לַמְחוֹת מְלָכִין׃ אַל לַמְלָכִים לְמוֹאֵל אַל לַמְלָכִים
:ſtatuti obliviſcatur &,bibat fortè Ne .ſechar *ubi gubernatoribus* & :vinũ bibere
5 שְׁתוֹ־יָיִן וּלְרוֹזְנִים אוֹ שֵׁכָר׃ פֶּן־יִשְׁתֶּה וְיִשְׁכַּח מְחֻקָּק
amaris vinum & :pereunti ſechar Date .*afflicti* filiorũ omniũ judiciũ mutet &
6 וִישַׁנֶּה דִּין כָּל־בְּנֵי־עֹנִי׃ תְּנוּ־שֵׁכָר לְאוֹבֵד וְיַיִן לְמָרֵי
recordetur non ſui laboris & :ſuæ egeſtatis obliviſcatur & ,Bibat .animo
7 נָפֶשׁ׃ יִשְׁתֶּה וְיִשְׁכַּח רִישׁוֹ וַעֲמָלוֹ לֹא יִזְכָּר־
.Aperi .*tranſitus* filiorũ omniũ judiciũ ad : muto tuũ os Aperi .amplius
8 עוֹד׃ פְּתַח־פִּיךָ לְאִלֵּם אֶל־דִּין כָּל־בְּנֵי חֲלוֹף׃ פְּתַח־
9 quis *virtutis* Mulierem .egeni & ,*afflicti* judiciũ & : juſtitiã judica ,tuũ os
10 פִּיךָ שְׁפָט־צֶדֶק וְדִין עָנִי וְאֶבְיוֹן׃ אֵשֶׁת־חַיִל מִי
:ſui *mariti* cor ea in Confidit .ejus *merces* margaritis à diſtans & ? inveniet
11 יִמְצָא וְרָחֹק מִפְּנִינִים מִכְרָהּ׃ בָּטַח בָּהּ לֵב בַּעְלָהּ
diebus omnibus :malum non & bonum ei Retribuit .indigebit non *ſpolio* &
12 וְשָׁלָל לֹא יֶחְסָר׃ גְּמָלַתְהוּ טוֹב וְלֹא־רָע כֹּל יְמֵי
.*ſuarũ volarum voluntate in* fecit & : *lina* & ,lanam Quæſivit .*ſuarũ vitarum*
13 חַיֶּיהָ׃ דָּרְשָׁה צֶמֶר וּפִשְׁתִּים וַתַּעַשׂ בְּחֵפֶץ כַּפֶּיהָ׃
ſurrexit Et .ſuum panem adducet longe de : *circueuntis* naves velut Fuit
14 15 הָיְתָה כָּאֳנִיּוֹת סוֹחֵר מִמֶּרְחָק תָּבִיא לַחְמָהּ׃ וַתָּקָם
Cogitavit .ſuis puellis *ſtatutum* & :ſuæ *domui prædam* deditque ,nocte adhuc *in*
16 בְּעוֹד לַיְלָה וַתִּתֵּן טֶרֶף לְבֵיתָהּ וְחֹק לְנַעֲרֹתֶיהָ׃ זָמְמָה
Accinxit .vineam plantavit ſuarum *volarum* fructu de :eum accepit & ,agrum
17 שָׂדֶה וַתִּקָּחֵהוּ מִפְּרִי כַפֶּיהָ נָטְעָה כָּרֶם׃ חָגְרָה
.ſua brachia roboravit & ,ſuos lumbos fortitudine *in*
בְעוֹז מָתְנֶיהָ וַתְּאַמֵּץ זְרוֹעֹתֶיהָ׃

Verſio VULG. LAT.

25 Formicæ, popul⁹ infirm⁹, qui præ-
26 parat in meſſe cibũ ſibi: Lepuſculus, plebs invalida, qui collocat in
27 petra cubile ſuũ: Regẽ locuſta non habet,& egreditur univerſa ꝑ tur-
28 mas ſuas : Stellio manib⁹ nititur,
29 & moratur in ædibus regis. Tria ſunt,quæ benè gradiuntur,& quar-
30 tum, ꝙ incedit fœliciter: Leo fortiſſim⁹ beſtiarũ, ad nulli⁹ pavebit
31 occurſũ : Gall⁹ ſuccinct⁹ lumbos : & aries:nec eſt rex, qui reſiſtat ei.
32 Eſt qui ſtult⁹ apparuit poſtquã elevatus eſt in ſublime : ſi enim intellexiſſet, ori ſuo impoſuiſſet manũ.
33 Qui autẽ fortiter premit ubera ad eliciendũ lac, exprimit butyrũ: & qui vehemẽter emungit, elicit ſanguinẽ: & qui provocat iras,producit diſcordias.

CAP. XXXI.

1 VErba Lamuelis regis.Viſio, quâ
2 erudivit eũ mater ſua.Quid dilecte mi,quid dilecte uteri mei,quid
3 dilecte votorũ meorũ ? Ne dederis mulierib⁹ ſubſtantiã tuã,& divitias
4 tuas ad delendos reges.Noli regibus, O Lamuel, noli regibus dare vinũ : quia nullum ſecretũ eſt ubi
5 regnat ebrietas. Et ne fortè bibant, & obliviſcantur judiciorum, & mutent cauſam filiorũ pauperis.
6 Date ſicerã mœrentib⁹, & vinum
7 his qui amaro ſunt animo: Bibant, & obliviſcantur egeſtatis ſuæ, & doloris ſui non recordentur am-
8 pliùs.Aperi os tuũ muto, & cauſis omnium filiorũ qui pertranſeunt :
9 Aperi os tuũ , decerne ꝙ juſtũ eſt, & judica inopem & pauperem.
10 Mulierẽ fortẽ quis inveniet? pro-
11 cul, & de ultimis finib⁹ pretiũ ej⁹. Confidit in ea cor viri ſui,& ſpoliis
12 non indigebit. Reddet ei bonum,& non malũ,omnib⁹ diebus vitæ ſuæ.
13 Quæſivit lanã & linũ, & operata
14 eſt conſilio manuũ ſuarũ. Facta eſt quaſi navis inſtitoris,de longè por-
15 tans panẽ ſuũ.Et de nocte ſurrexit, deditq; prædã domeſticis ſuis, &
16 cibaria ancillis ſuis. Conſideravit agrũ,& emit eũ : de fructu manuũ
17 ſuarum plantavit vineam. Accinxit fortitudine lumbos ſuos, & roboravit brachium ſuum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

18 †(σ)Καὶ ἐγεύσατο ὅτι καλόν ἐστι τὸ ἐργάζεσθαι, † καὶ οὐκ ἀποσβέννυται (τ)ὁ λύχνος αὐτῆς ὅλην τὴν νύκτα.
19 †Τοὺς πήχεις αὐτῆς ἐκτείνει ἐπὶ τὰ συμφέροντα, †(υ) τὰς δὲ χεῖρας αὐτῆς ἐρείδει
20 εἰς ἄτρακτον. †Χεῖρας δὲ αὐτῆς διήνοιξε πένητι, † καρπὸν δὲ ἐξέτεινε πτωχῷ.
21 † Οὐ (ϛ) φροντίζει τῶν ἐν οἴκῳ ὁ ἀνὴρ αὐτῆς, †ὅταν που χρονίζῃ, † πάντες γὰρ οἱ παρ' αὐτῆς (φ) ἐνδεδυμένοι εἰσί. †
22 † Διϲσὰς χλαίνας ἐποίησε τῷ ἀνδρὶ αὐτῆς, †ἐκ δὲ βύσσου καὶ πορφύρας ἑαυτῇ ἐνδύματα.
23 † Περίβλεπτος δὲ γίνεται (χ) ὁ ἀνὴρ αὐτῆς ἐν πύλαις, †ἡνίκα ἂν καθίσῃ ἐν συνεδρίῳ μετὰ τῶν
24 (ψ) γερόντων κατοίκων τῆς γῆς. †Σινδόνας ἐποίησε καὶ ἀπέδοτο † (ω) περιζώματα τοῖς Χαναναίοις. (α) † στόμα αὐτῆς διήνοιξε προσεχόντως καὶ ἐννόμως, † καὶ τάξιν ἐστείλατο τῇ γλώσσῃ
25 (ϛ)αὐτῆς. † Ἰσχὺν καὶ εὐπρέπειαν ἐνεδύσατο, † καὶ εὐφράνθη ἐν ἡμέραις ἐσχά-
27 ταις. † Στεγναὶ διατριβαὶ οἴκων αὐτῆς, †Σῖτα δὲ ὀκνηρὰ οὐκ ἔφαγε. † (β)
26 Τὸ στόμα δὲ ἀνοίγει σοφῶς καὶ νομο-
28 θέσμως. † Ἡ δὲ ἐλεημοσύνη αὐτῆς ἀνέστησε τὰ τέκνα αὐτῆς, καὶ ἐπλούτησαν, †καὶ ὁ ἀνὴρ αὐτῆς ᾔνεσεν αὐτήν. †
29 Πολλαὶ θυγατέρες ἐκτήσαντο πλοῦτον, † πολλαὶ ἐποίησαν (γ)δύναμιν, † σὺ δὲ ὑπέρκεισαι, (δ) ὑπερῇρας πά-
30 σας. † Ψευδεῖς ἀρέσκειαι, καὶ μάταιον κάλλος γυναικός, γυνὴ γὰρ συνετὴ εὐλογεῖται, φόβον δὲ κυρίου αὕτη αἰνείτω.
31 † Δότε αὐτῇ ἀπὸ καρπῶν χειλέων αὐτῆς, † καὶ αἰνείσθω ἐν πύλαις ὁ ἀνὴρ αὐτῆς.

MSA. (σ) Ἐγεύσατο δὲ (τ) ὅλην τὴν νύκτα ὁ λύχνος αὐτῆς. Τὰς χεῖρας αὐτῆς (υ) τοὺς δὲ πήχεις (ϛ) φροντίζῃ (φ) ἐνδιδύσκονται. (χ) ἐν πύλαις ὁ ἀνὴρ αὐτῆς, (ψ) πρεσβυτέρων τῆς γῆς. (ω) περιζώματα δὲ (α) Ἰσχὺν καὶ εὐπρέπειαν ἐνεδύσατο, καὶ ηὐφράνθη ἐν ἡμέραις ἐσχάταις. στόμα αὐτῆς (ϛ) αὐτῆς. Στεγναὶ (β) Στόμα δὲ αὐτῆς ἀνοίγει (γ) δυνατά, (δ) καὶ ὑπερῆρας πάσας.

MS. A. Παροιμίαι Σολομῶντος.

Et guſtavit quia bonum eſt (x) operari,& non extinguitur lucerna ejus totam noctem. 18
Cubitos ſuos extendit ad (o) utilia, & manus ſuas (p) firmat ad fuſum. 19
Manus autẽ ſuas aperuit pauperi, & palmam extendit inopi. 20
Non eſt ſolicit⁹ de iis,quæ in domo,vir ej⁹, ſicubi moratus fuerit. Omnes enim qui ab ea,(q)induti ſunt. 21
Duplices (r) veſtes fecit viro ſuo,de byſſo autem & purpura ſibi indumenta: 22
(ſ)Conſpicuus autem fit vir ejus in portis; quandocunq; ſederit in conſeſſu cum (t) ſenibus habitatoribus terræ. 23
Sindonas fecit, & vendidit (u)cingula Chananæis. Os ſuum aperuit (x) attentè, & legitimè,& (y)ordinẽ poſuit linguæ ſuæ. 24
Fortitudinem & decorem induit, (z)et lætata eſt in diebus noviſſimis. 25
(ω) Conſtrictæ manſiones domorum ejus : (aa) cibos autẽ pigros non manducavit. 27
Os autem aperit ſapienter, & congruenter legibus : 26
Eleemoſyna autem (b) ejus (c) ſuſcitavit filios ejus, (d) & ditati ſunt, & vir ej⁹ laudavit eam. 28
Multæ filiæ (e) acquiſierunt divitias, multæ fecerunt virtutem: tu autem emines, ſupergreſſa es univerſas. 29
Fallaces gratiæ, & vana pulchritudo mulieris: mulier enim (f) intelligens benedicitur : timorem autem Domini iſta laudet. 30
Date ei de fructibus (g) labiorum ejus (h)& laudetur in portis vir ejus. 31

תרגום TARGUM.

25 26 שומשמני לא עשין עמהון ומתקנין בקיטא מיכלהון : וחנסי דעמהון לא תקיף ועבדין
27 28 להון ביתא בקתרי : וקמצי דמלכא לית להון ומתכנשין כלהון כחדא : ואקמתא
29 דמסכבה בידין ועמרא בביתא דמלכי : תלתא אנון דשפירן הליכתהון וארבעא דשפיר
30 31 מהלכין : אריא גבר בבעירא ולא הפיך מן כל מדעם : ואכבא דמזרזו בינת תרנגולי
32 ותישא דאזל בית גיורא ומלכא דקאם וממלל בית עממיה : לא תתרורם דלא תטפש
33 ולא תושיט אידך לפומך : דמן דמיצא חלבא נפקא חמאתא ומן כבושא דרגזא נפוק
דמא ומן חריינא דאפי נפוק דינא : לא
1 2 מלוהי דלמואל מלכא נביותא ומרדותא דרדתיה אמיה ואמרת ליה : וי ברי ווי בר
3 כרסי ווי בר נדרי : לא תתן לנשי חילך וארחתך לבנת מלכין : אזדהר מן מלכי למואל
4 5 מן מלכי דשתין חמרא ומן שלטוני דשתין שכרא : לא תשתי ותטעי הונך ותשנה
6 דינהון דכלהון בני עניי : הבון שכרא לאבלי וחמרא למרירי נפשא : ונשתון ונטעון
7 8 מסכינתהון ושחקיהון לא נוכרון תוב : פתח פומך להלין דלא מסטו דין ודון לכלהון
9 10 בני עולי : פתח פומך ודון צדקתא ודון לעניי ולעליבי : אתתא כשרתא מנו ישכח
11 יקירא היא מן כיפי טבתא טימהא : דתכל עלה לביה דבעלה ולא מתבזא ולא חסרא :
12 13 פרעתיה טבתא ולא בישתא כל יומי חייהא : תבעת עמרא וכתנא ועבדת היך צביינא
14 דאידה : והות היך אלפת דתגרא דמן רחיק מיתיא מכלותא : וקמת בליליא ויהבת
15 16 מזונה לביתה ופולחנא לטליתהא : ואתחשבת בתרעיתא ונסבת חקלא ומן פרי
17 דידהא נצבת כרמא : ואסרת בעושנא חרצהא וזרזת דרעהא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Formicæ quarum populus non eſt fortis, & præparant in æſtate cibum ſuũ. 25
Et cuniculi quorum populus non eſt fortis, & faciunt ſibi domos in petris. 26
Et locuſtæ quæ non habent regem,& congregantur omnes in unum. Et ara- 27
nea manibus tegumenta facit, & ſtat in domo regum. Tria ſunt quorum 28
greſſus pulchri ſunt,& quatuor quæ pulchrè gradiuntur. Leo fortiſſimus 29
in animalibus,& non fugatur à quoquàm. Et gallus ſuccinctus inter gal- 30
linas,& hircus ſylveſtris qui vadit in domũ peregrini, & rex qui ſtat & lo- 31
quitur in domo populi ſui. Ne te extollas, ne ſis inſipiens, neque extendas 32
manũ tuam ad os tuum. Quia qui exprimit lac, elicit butyrum : & de ex- 33
preſſione furoris exit ſanguis, & de naribus vultus exit contentio.

CAP. XXXI.

VErba Lamuelis regis : Prophetia & eruditio, qua erudivit eum mater 1
ſua, & dixit ei : Væ fili mi, *&* væ fili uteri mei, *&* væ fili votorũ meorũ. 2
Ne dederis mulierib⁹ fortitudinem tuam,& vias tuas filiabus regum. Ob- 3
ſerva te à regibus Lamuel, à regib⁹ qui bibunt vinum,& à potentibus qui 4
bibunt ſiceram. Ne fortè bibas & pervertas rationẽ tuã, & mutes judicia 5
omniũ filiorũ pauperum. Date ſiceram lugentib⁹, & vinum his qui amaro 6
ſunt animo.Ut bibant & obliviſcantur egeſtatis ſuæ, & detritarũ veſtium 7
non recordentur amplius. Aperi os tuũ his qui non pervertunt judiciũ,& 8
judica omnes filios perverſorũ. Aperi os tuũ,& judica juſtitiam,& jus red- 9
de pauperib⁹,& injuriã patientib⁹. ALEPH. Mulierẽ bonã quis inveniet? 10
pretioſior eſt lapidibus optimis *æſtimatio ejus*. BETH. Confidit in ea cor 11
viri ſui,& non ſpoliatur neque indiget. GIMEL. Reddet ei bonum & non 12
malum omnib⁹ diebus vitæ ſuæ. DALETH. Quæſivit lanam et linam, et 13
operata eſt juxta voluntatẽ manuum ſuarũ. HE. Et facta eſt ſicut navis mer- 14
catoris,cuj⁹ è longinquo affertur cib⁹. VAU. Et ſurrexit in nocte,et dedit eſ- 15
cam domui ſuæ,et penſum ancillis ſuis. ZAIN. Et cogitavit in conſilio,et ac- 16
cepit agrum,et de fructib⁹ manuum ſuarum plantavit vineã. HETH. Et ſuc- 17
cingit fortitudine lumbos ſuos,et accingit brachia ſua.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

3 4 * المستجع بالنفاقات يبغي المساكين * مثل المطر الشديد هطله والذي لا ينفع * هكذا
الذين يهملون الشريعة ويمدحون النفاق * والذين يحبون الشريعة يصطنعون لانفسهم سورا *
5 6 * الناس الاشرار ما يفقهون الانصاف * والطالبون الرب يفقهونه في كل شي * المسكين السالك
7 في الصدق افضل من موسر كذوب * الابن الفقيه يحفظ الشريعة * من يراعي الاسراف يهين
8 9 اباه * من يكثر ثروته بكثرة الربا والاستكثار * انما يجمعه لمن يرحم المساكين * من
يميل اذنه لئلا يسمع الشرائع فذلك سيرذل صلاته *

Audax in impietatibus,opprimit pauperes. 3
Veluti pluvia cujus vehemens eſt caſus, & quæ nihil prodeſt : ſic ſunt qui negligunt legem, & laudant impietatem. Et qui amant legem , conficiunt animabus ſuis mœnia. 4
Homines mali non intelligunt æquitatatem : & quærentes Dominum intelligunt eam omnibus in rebus. 5
Pauper incedens in veritate, præſtantior eſt divite mendaci. 6
Filius ſapiens ſervat legem : qui aſſentatur prodigis, deſpicit patrem ſuum. 7
Qui multiplicat opes ſuas multitudine uſuræ & multiplicationis, certè colligit illas ei qui miſeretur pauperum. 8
Qui avertit aurem ſuam ne audiat leges , hujus deſpicietur oratio. 9

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

25 * ܫܘܫܡܢܐ ܕܚܝܠܐ ܠܝܬ ܠܗܘܢ. ܘܡܛܝܒܝܢ ܡܢ ܩܝܛܐ ܠܚܡܗܘܢ. * ܘܛܦܣܐ
26 ܕܟܪܝܗܝܢ ܒܚܝܠܐ. ܘܥܒܕܝܢ ܒܬܗܘܢ ܒܟܐܦܐ. * ܘܩܡܨܐ ܕܡܠܟܐ ܠܝܬ ܠܗܘܢ.
27 ܘܡܬܟܢܫܝܢ ܟܠܗܘܢ ܐܟܚܕܐ. * ܘܥܩܡܬܐ ܕܡܣܬܡܟܐ ܒܐܝܕܝܗ. ܘܥܡܪܐ ܒܗܝܟܠܐ ܕܡܠܟܐ.
28 * ܬܠܬܐ ܐܢܝܢ ܕܬܪܝܨܝܢ ܗܠܟܬܗܘܢ. ܘܐܪܒܥܐ ܫܦܝܪ ܡܗܠܟ. * ܓܘܪܝܐ ܕܐܪܝܐ ܚܣܝܢ ܗܘ
29 ܡܢ ܟܠܗ ܚܝܘܬܐ. ܘܠܐ ܕܚܠ. ܘܠܐ ܗܦܟ ܡܢ ܩܕܡ ܟܠܗ ܚܝܘܬܐ. * ܘܬܪܢܓܠܐ ܕܡܬܓܐܐ ܒܝܢܬ
30 ܬܪܢܓܘܠܬܐ. ܘܕܟܪܐ ܕܡܕܒܪ ܒܪܫ ܥܢܐ. ܘܡܠܟܐ ܕܡܡܠܠ ܒܝܬ ܥܡܡܐ. * ܠܐ ܬܪܓ ܕܠܐ ܬܒܗܬ.
31 ܘܠܐ ܬܘܫܛ ܐܝܕܟ ܠܦܘܡܟ ܒܢܟܠܐ. * ܡܢ ܫܘܡܢܗ ܕܚܠܒܐ ܢܦܩ ܚܡܐܬܐ. ܘܐܢ ܬܥܨܪ
32 ܐܝܕܟ ܥܠ ܚܛܐ ܢܦܩ ܕܡܐ. ܗܟܢܐ ܡܢ ܚܪܝܢܐ ܕܐܦܐ ܢܦܩ ܕܝܢܐ. * ܦܣܘܩܐ̈ * ܠܓ *
33
1 * ܡܠܘܗܝ ܕܡܘܐܝܠ ܡܠܟܐ ܢܒܝܐ. ܕܪܕܝܬܗ ܐܡܗ ܘܐܡܪܐ ܠܗ. * ܗܐ ܒܪܝ.. ܘܗܐ ܒܪ ܟܪܣܝ.
2 ܘܗܐ ܒܪ ܢܕܪܝ. * ܠܐ ܬܬܠ ܠܢܫܐ ܚܝܠܟ. ܘܐܘܪܚܬܟ ܠܡܐܟܘܠܬܐ ܕܡܠܟܐ. * ܡܢ ܡܠܟܐ ܡܘܐܝܠ.
3 ܐܙܕܗܪ. ܡܢ ܡܠܟܐ ܕܫܬܝܢ ܚܡܪܐ. ܘܡܢ ܫܠܝܛܢܐ ܕܫܬܝܢ ܫܟܪܐ. * ܕܠܐ ܬܫܬܐ. ܘܬܛܥܐ
4 ܠܡܦܫܩܢܐ. ܘܬܛܥܐ ܕܝܢܐ ܕܟܠܗܘܢ ܒܢܝ ܡܣܟܢܐ. * ܐܬܝܗܒ ܫܟܪܐ ܠܕܟܐܒܝܢ. ܘܚܡܪܐ
5 ܠܡܪܝܪܝ ܢܦܫܐ. * ܕܢܫܬܘܢ. ܘܢܛܥܘܢ ܟܐܒܝܗܘܢ. ܘܥܡܠܗܘܢ ܬܘܒ ܠܐ ܢܬܕܟܪܘܢ. * ܦܬܚ
6 ܦܘܡܟ ܒܡܠܬܐ ܕܩܘܫܬܐ. ܘܕܘܢ ܠܟܠܗܘܢ ܒܢܝ ܥܘܠܐ. * ܦܬܚ ܦܘܡܟ ܒܕܝܢܐ ܟܐܢܐ.
7 ܘܕܘܢ ܠܡܣܟܢܐ ܘܠܒܝܫܐ. * ܐܢܬܬܐ ܚܝܠܬܢܝܬܐ ܡܢܘ ܢܫܟܚ. ܝܩܝܪܐ ܗܝ ܓܝܪ ܡܢ ܟܐܦܐ
8 ܛܒܬܐ. ܕܠܝܬ ܠܗܝܢ ܛܝܡܐ. * ܘܬܟܝܠ ܠܗ ܠܒܗ ܕܒܥܠܗ. ܘܩܢܝܢܐ ܠܐ ܢܚܣܪ ܠܗ.
9 * ܦܪܥܐ ܠܗ ܛܒܬܐ ܘܠܐ ܒܝܫܬܐ. ܟܠܗܘܢ ܝܘܡܬܐ ܕܚܝܘܗܝ. * ܒܥܬ ܥܡܪܐ
10 ܘܟܬܢܐ. ܘܥܒܕܝ ܐܝܕܝܗ ܐܝܟ ܨܒܝܢܗ. * ܗܘܬ ܐܝܟ ܐܠܦܐ ܕܬܓܪܐ. ܕܡܢ ܪܘܚܩܐ
11 ܡܝܬܝܐ ܠܚܡܗ. * ܘܩܝܡܐ ܒܠܠܝܐ. ܘܝܗܒܐ ܡܐܟܘܠܬܐ ܠܒܢܝ ܒܝܬܗ. ܘܥܒܕܐ
12 ܠܥܠܝܡܬܗ. * ܘܚܙܬ ܚܩܠܐ ܘܙܒܢܬܗ. ܘܡܢ ܦܐܪܐ ܕܐܝܕܝܗ ܢܨܒܬ ܟܪܡܐ.
13 * ܘܐܣܪܬ ܚܨܝܗ ܒܥܘܫܢܐ. ܘܐܥܫܢܬ ܕܪܥܝܗ.
14
15
16
17

Formicæ, quibus nullus est robur, attamen parant ab æstate panem suum: Cuniculi qui sunt infirmi robore, attamen componunt sibi domos in petris: Locustæ, quæ regem non habent, omnes tamen simul congregantur: Et stellio, qui serpit manibus suis, & habitat in ædibus regum. Tria sunt quorũ gressus recti sunt, & quartum bellè incedit. Catulus leonis fortissimus est omnium belluarum, non expavescit, nec terga vertit ulli bestiæ: Gallus superbè se circumagens inter gallinas: Aries incedens in fronte gregis: & rex loquens inter populos. Ne concupiscas, ne probro afficiaris: & ne extendas manum tuam ad os tuum cum dolo. De pinguedine lactis egreditur butyrum, & si comprimas manum tuam super frumentum, emanabit sanguis: pari modo ex pertinacia vultûs procedit contentio. 25 26 27 28 29 30 31 32 33

CAP. XXXI.

Sermones Muel regis prophetæ, quem erudiens mater sua, dixit ad eum; Heu fili mi, heu fili uteri mei, heu fili votorũ meorum. Ne dederis robur tuũ mulieribus, & vias tuas in cibos regũ. A regibus, ô Muel, caveto: à regibus *inquam* qui bibunt vinum, & principibus qui bibunt siceram: Ne fortè bibas, & obliviscaris Expositoris *legis*, & oblivioni tradas causam omnium filiorum pauperum. Conceditur sicera mœstis, & vinum iis qui amaro sunt animo: Ut bibant, & obliviscantur dolorum suorum, et calamitatum suarum ultrà non recordentur. Aperi os tuum in verbo veritatis, et judica omnes filios impiorum: Aperi os tuum in judicio justo, & judica pauperes ac inopes. Mulierem sedulam quis inveniat? pretiosior quidem est lapidibus optimis quibus non est pretium. Et fretum est illi cor mariti ejus, unde et materiam ei deesse non est passus. Ipsa rependit illi bona et non mala, cunctis diebus vitæ suæ. Quæsivit lanam et linum, et operatæ sunt manus ejus pro arbitrio suo. Facta est quasi navis mercatoris, cujus merces è longinquo veniunt. Et surgens noctu dedit escam domesticis suis, et operam ancillis suis. Et consideravit arvum, et emit illud: et de fructibus manuum suarum plantavit vineam: Et accinxit fortiter lumbos suos, et roboravit brachia sua. 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

10 * من يضل المستقيمين في طريقة رديه * فذاك سيسقط في الفساد والدمار * والعادلون عن
11 السريعة يجوزهم الخيرات وما يدخلون فيها * الانسان الموسر حكيم عند نفسه * والفقير اللبيب
12 يلوم ذاته * من اجل معونة المقسطين يصير مجد كبير * والناس يفنون في اماكن المنافقين *
13 * من يكتم نفاقه ما تتيسر مذاهبه * من يشهر نفاقه وتوبيخه يجب * مغبوط الانسان الذي
14 يخشى كل شي من اجل الورع * والقاسي القلب يسقط في الاسواء * سبع جايع وذيب صايم
15 من يغصب المسكين * ويكون من امة فقير * الملك الذي ارتفاعات امواله مقترعة
16 باع عظيم * ومن يبغض الظلم يعيش زمانا طويلا * من يطمن رجلا في علة قتل * سيكون
17 هاربا ولا يكون في امن واطمانينة * ادب ابنك فيحبك ويمنح نفسك زينة * لا تطيعن امة
18 متعدية السريعة * السالك مقسطا فقد عين * والسالك في طرق ملتوية صعبة يكون مشتبكا
19 بها * من يعمل ارضه سيمتلي من الاخباز * ومن يطلب الفراغ والبطالة يمتلي فقرا * الانسان
20 الموقن المامون يبارك ببركات كثيرة * والردي ما يكون غير معاقب * ومن هذه سجيته
21 يسلم انسانا بكسرة خبز * الرجل الحسود يحرص ان يستغني * وما قد علم ان الرحوم يمسكه *
22 * من يوبخ طرايق الانسان له ايادي * ومنح اكثر ممن يلاطفه بخطابه * من يغتصب اباه
23 وامه ويظن انه ما يخطي بذلك * فذاك شريك الرجل المنافق * الرجل الذي ما يشبع
24 يدين باطلا * ومن قد توكل على الرب سيكون مهتما به * من توكل على قلب متهجم فذاك
25 جاهلا * ومن يسلك بحكمة يخلص * من يعطي المساكين ما يحوج الى احد * ومن يرد عينيه
26 عنهم سيكون في ضيقة كثيرة * في مواضع المنافقين يضيق حال المقسطين * وفي هلاك
27 اوليك يتكاثر للمقسطين حظهم *
28

Qui seducit rectos per viam malam, is cadit in corruptionem & interitum; & declinantes à lege effugient bona, & non ingredientur in ea. Vir dives est sapiens apud semetipsum: & pauper prudens accusat seipsum. Propter auxilium justorum fiet gloria multa: & homines peribunt in locis iniquorum. Qui celat impietatem suam, non erunt planæ viæ ejus. Qui promulgat impietatem suam, etiam correptio ejus licebit. Beatus homo qui omnia timet propter pietatem. Et durus corde cadet in mala. Leo famelicus, & lupus aggrediens, qui irritat pauperem: eritque de gente egena. Rex cujus sublimitates pecuniarum sunt sorte projectæ, est oppressor maximus: qui autem odit oppressionem, vivet longum tempus. Qui securitatem præstat viro in occasione homicidii, erit profugus, & non erit in securitate ac tranquillitate. Erudi filium tuum, & amabit te, dabisque animæ tuæ ornamentum. Ne obtemperes genti transgredienti legem. Ambulans justè, jam prædestinatus est: & incedens per tramites perversos, arduos, implicabitur in iis. Qui operatur terram suam, implebitur panibus: & qui expetit cessationem & otium, replebitur egestate. Homo securus, fidelis, benedicetur benedictionibus multis: & sceleratus non erit impunis; Et qui talis est naturæ, tradit hominem pro fragmento panis. Vir invidus inhiat ditari, & nescit quòd misericors detinet eum. Qui corripit vias hominis, acquirit plus gratiæ & donorum quàm is qui blanditur illi sermone suo. Qui vim infert patri suo aut matri suæ, & putat se in hoc non peccare, hic particeps est viri nefarii. Homo qui non satiatur, judicat temerè: & qui confisus est in Domino, curæ habebitur illius. Qui confidit in corde præcipiti, is desipiens est: & qui incedit sapienter, salvabitur. Qui dat pauperibus, nemine indigebit: & qui avertit oculum suum ab eis, erit in angustia maxima. In locis impiorum miser erit status justorum: & in interitu eorum multiplicabitur sors justorum. 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28

משלי : לא

.ej' lucerna nocte in extinguetur non:ej' *circuitio* bona quòd Gustavit
18 טָעֲמָה כִּי־טוֹב סַחְרָהּ לֹא־יִכְבֶּה בַלַּיְלָה נֵרָהּ׃
.colum apprehenderunt ejus *volæ* &:vertibulum ad misit suas Manus
19 יָדֶיהָ שִׁלְּחָה בַכִּישׁוֹר וְכַפֶּיהָ תָּמְכוּ פָלֶךְ׃
.egenum ad *misit* suas manus & : *afflictum* ad extendit suam *Volam*
20 כַּפָּהּ פָּרְשָׂה לֶעָנִי וְיָדֶיהָ שִׁלְּחָה לָאֶבְיוֹן׃
.*coccinis* vestita ej' *domus* omnis quia :nive à suæ *domui* timebit Non
21 לֹא־תִירָא לְבֵיתָהּ מִשָּׁלֶג כִּי כָל־בֵּיתָהּ לָבֻשׁ שָׁנִים׃
.ejus indumentum purpura &, byssus : sibi fecit *Tapetia*
22 מַרְבַדִּים עָשְׂתָה־לָּהּ שֵׁשׁ וְאַרְגָּמָן לְבוּשָׁהּ׃
.terræ senioribus cum *ipsum sedendo in : ejus maritus* portis in Notus
23 נוֹדָע בַּשְּׁעָרִים בַּעְלָהּ בְּשִׁבְתּוֹ עִם־זִקְנֵי־אָרֶץ׃
.negociatori tradidit cingulum & : vendidit & , fecit *Sindonem*
24 סָדִין עָשְׂתָה וַתִּמְכֹּר וַחֲגוֹר נָתְנָה לַכְּנַעֲנִי׃
.novissimo die in ridebit & : ejus indumentum decor &,Fortitudo
25 עֹז־וְהָדָר לְבוּשָׁהּ וַתִּשְׂחַק לְיוֹם אַחֲרוֹן׃
.ejus lingua *super misericordiæ* lex & : *sapientia in* aperuit suum Os
26 פִּיהָ פָּתְחָה בְחָכְמָה וְתוֹרַת־חֶסֶד עַל־לְשׁוֹנָהּ׃
.*edet* non pigritiæ panem & : suæ domus vias *Speculans*
27 צוֹפִיָּה הֲלִיכוֹת בֵּיתָהּ וְלֶחֶם עַצְלוּת לֹא תֹאכֵל׃
, ejus *maritus* : eam *beatificaverunt* & , ejus filii Surrexerunt
28 קָמוּ בָנֶיהָ וַיְאַשְּׁרוּהָ בַּעְלָהּ
ascendisti tu & : *virtutem* fecerunt filiæ Multæ .eam laudavit &
29 וַיְהַלְלָהּ׃ רַבּוֹת בָּנוֹת עָשׂוּ חָיִל וְאַתְּ עָלִית
: pulchritudo *vanitas* & , gratia *Falsitas* .*ipsas* universas super
30 עַל־כֻּלָּנָה׃ שֶׁקֶר הַחֵן וְהֶבֶל הַיֹּפִי
ei Date .laudabitur ipsa , Domini timor mulier
31 אִשָּׁה יִרְאַת־יְהוָה הִיא תִתְהַלָּל׃ תְּנוּ־לָהּ
.ejus opera portis in eam laudent &:suarum manuum fructu de
מִפְּרִי יָדֶיהָ וִיהַלְלוּהָ בַשְּׁעָרִים מַעֲשֶׂיהָ׃

Versio VUL. LAT.

18 Gustavit & vidit quia bona est negotiatio ejus: non extinguetur in nocte lucerna ejus. 19 Manum suam misit ad fortia, & digiti ejus apprehenderunt fusum. 20 Manum suam aperuit inopi, & palmas suas extendit ad pauperem. 21 Non timebit domui suæ à frigoribus nivis : omnes enim domestici ejus vestiti sunt duplicibus. 22 Stragulatam vestem fecit sibi : byssus & purpura indumentum ejus. 23 Nobilis in portis vir ej', quando sederit cum senatoribus terræ. 24 Sindonem fecit, & vendidit, & cingulum tradidit Chananæo. 25 Fortitudo & decor indumentum ejus, & ridebit in die novissimo. 26 Os suum aperuit sapientiæ, & lex clementiæ in lingua ejus. 27 Consideravit semitas domûs suæ, & panem otiosa non comedit. 28 Surrexerũt filii ejus, & beatissimam prædicaverunt; vir ejus, & laudavit eam. 29 Multæ filiæ congregaverunt divitias: tu supergressa es universas. 30 Fallax gratia, & vana est pulchritudo : mulier timens Dominum, ipsa laudabitur. 31 Date ei de fructu manuum suarum: & laudent eam in portis opera ejus.

תרגום Targum. Par. Chald.

18 וטעמת מטול דטבתא תגרותה ולא דעך
19 בליליא שרגה : ידהא פשטא בכונשרא
20 וידהא לבכין מעולא : ידה פשטא לעניא
21 ודרעיה מושטא לעליבי : לא ידחלון בני
ביתיה מן תלגא מטול דכלהון בני ביתיה
22 לבישין הוו זהוריתא : תשויתא עבדת לה
23 בוצא וארגונא לבושה : ידיע הוה בינת
מדינתא בעלה כד יתיב הוא עם סבי
24 ארעא : פתנא עבדת וזבנת וזונרא יהבת
25 לכנענאה : עושנא והדרה לבושה ונחכא
26 ביומא אחריתא : פומה פתחת בחכמתא
27 ונימוסא דחסדא על לישנה : וגלין
ארחתא דביתה ולחמא חבִינְנוּת לא
28 אכלה: קמו בנהא ויהבון לה טובא בעלה
29 ומשבחה : סגיען בנתא דקניי עתרא ואת
30 עבדת על כלהין: מטול דשקרא הוא חנא
וסריק הוא שופרא אתתא דדחלתיה
31 דאלהא היא משתבחא : הבו לה מן פרי
דידהא ונשבחונה עובדהא בתרעי :

Chald. Versio Latina.

TETH. Et gustavit quoniam bona est negotiatio sua, & non extinguetur in nocte lucerna ejus. 18
JOD. Manum suam extendit ad vertibulum, & manus ejus tenuerunt fusum. 19
CAPH. Manum suam extendit ad inopem, & brachia sua misit injuriam patientib'. 20
LAMED. Non timebunt filii domus ejus à nive, quoniã omnes domestici ej' vestiti sunt coccineis. 21
MEM. Strata fecit sibi : byssus & purpura indumentum ejus. 22
NUN. Notus est in provinciis marit' ejus, quando sederit cum senioribus terræ. 23
SAMECH. Sindonem fecit, & vendidit, & cingulum tradidit mercatori. 24
AIN. Fortitudo & decor indumentum ejus, & ridebit in die novissimo. 25
PHE. Os suum aperuit in sapientia, & lex gratiæ in lingua ejus. 26
SADIC. Manifestæ sunt viæ domus ejus, & panem pigredinis non comedit. 27
COPH. Surrexerunt filii ejus, & beatitudinem illi dederunt: vir ejus & laudavit eam. 28
RES. Multæ filiæ possederunt divitias, sed tu superâsti universas. 29
SIN. Quoniam fallax est gratia, & vana pulchritudo : Mulier timens Deum, ipsa laudatur. 30
THAU. Date ei de fructibus manuum suarum, & laudent eam opera sua in portis. 31

FINIS PROVERBIORUM.

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* الفصل التاسع والعشرون *

1 * الانسان الموبخ افضل من الانسان الغليظ العنق * لانه اذا تلهب بغتة فليس له شفا *
2 * المقسطون اذا مدحوا الشعوب يسرون * والمنافقون اذا ترأسوا ضاقت بالناس امورهم *
3 4 * الانسان اذا احب الحكمة يسر اباه * ومن يراعي الزواني يضيع ثروته * الملك العدل
5 يقيم شان البلدة * والرجل المتعدي السنة ينقضها ويخربها * من يصلح شبكة لدى
6 وجه صديقه * تحصل فيها رجلاه * في اقتران الانسان الخطية فخا عظيما * والمقسط يكون
7 في الفرح والسرور * المقسط يعرف ان يحكم في احقر الاشياء * والمنافق ما يفقه علما *
8 والمسكين لن يوجد عنده عقل عالم * الناس المفسدون احرقوا مدينتهم * والحكماء
9 استعادوا الغيظ * الانسان الحكيم يحكم للامم * والرجل الطالح اذا اغتاظ يضحك
10 عليه * فما يجزع ولا يتوقي * الناس المشاركون الدماء يمقتون المقسط * والمستقيمون يطلبون
11 12 نفسه * الجاهل يخرج جميع غضبه * والحكيم يخبوه في كل جهة * الملك اذا اطاع كلاما
13 ظالما * فجميع الذين تحت يده عادلون عن الشريعة * المقرض والغريم اذا اجتمع احدهما
14 مع الاخر * فالرب يتفقد احوالهما كليهما * الملك اذا حكم للمساكين بالحق * فقد
15 انتصب كرسيه للشهادة * الجراحات والتوبيخات يمنحان حكمة * والصبي الضال يخزي
16 والديه * اذا كان المنافقون كثيرين صارت خطايا كثيرة * والمقسطون اذا سقط اوليك
17 18 صاروا متخوفين * ادب ابنك فيحبك * ويمنح نفسك زينة * في امة متجاوزة السنة لن
19 يوجد مفسر * ومن يحفظ الشريعة مغبوط * العبد الفظ ما يودب بالاقوال * لانه ان فهم
20 لكنه ما يطيع * اذا رايت انسانا في اقواله عجولا * فاعلم ان الجاهل له رجاء اكثر
21 منه * من يتدلل ويبطر منذ صبايه * سيكون عبدا ويتالم على نفسه اخيرا *
22 23 * الرجل الغضوب ينفذ طفرا * والانسان السخوط يفتح مناسي الخطايا * التعظم يذلل
24 الانسان * والمتواضعين القلب يقول لهم الرب ما يتربا به * من يقاسم السارق يمقت
نفسه * واذا حضرت اليمين اذا سمعوا بها ما يعترفون *

CAP. XXIX.

Homo corrigibilis excellentior est homine duræ cervicis : quia cùm repentè succensus fuerit, nullam habebit sanitatem. 1 *Justi cùm laudantur, populi gaudent : impii verò cùm principatum obtinuerint, fastidio sunt hominibus res eorum.* 2 *Homo, cùm amaverit sapientiam, lætificat patrem suum : & qui indulget scortis, perdet opes suas.* 3 *Rex justus erigit famam patriæ : & vir prævaricator legis, destruit eam & devastat illam.* 4 *Qui parat rete coram facie amici sui, eo capientur pedes ejus.* 5 *In adhæsione hominis peccato, laqueus ingens : justus autem erit in gaudio & exultatione.* 6 *Justus novit judicare in rebus vilissimis : impius autem non intelligit doctrinam : & apud pauperem non invenitur intellectus sciens.* 7 *Homines corruptores combusserunt civitatem suam: & sapientes detestantur furorem.* 8 *Homo sapiens judicabit populis : & vir improbus, cùm iratus fuerit, irridebitur : attamen nec veretur, nec sibi cavet.* 9 *Homines participes sanguinum, odio habent justum : recti autem quærunt animam ejus.* 10 *Stultus profert totam iram suam : at sapiens abscondit eam in omni occasione.* 11 *Rex cùm consentit sermoni iniquo, omnes ii qui sunt sub manu ejus, transgressores sunt legis.* 12 *Fœnerator & debitor dum alter cum altero conveniunt, Dominus visitat conditiones amborum.* 13 *Rex cùm judicaverit pauperibus in veritate, erigetur sedes ejus in testimonium.* 14 *Vulnera & correptiones tribuunt sapientiam : & filius perditus confundit genitores suos.* 15 *Cùm impii sunt multi, fiunt peccata multa : justi verò, cùm ceciderint illi, fiunt pavidi.* 16 *Erudi filium tuum, & amabit te, & dabit animæ tuæ ornamentum.* 17 *In gente transgrediente legem, nullo modo invenietur Interpres : & qui custodit legem, beatus.* 18 *Servus dyscolus non eruditur sermonibus : quia quanquam intelligat, tamen non obedit.* 19 *Cùm videris hominem in sermonibus suis præcipitem, scito stulti majorem esse spem quàm illius.* 20 *Qui mollitur, & delicate nutritur à pueritia sua, erit servus; & dolebit super animam suam postremò.* 21 *Homo iracundus permeare facit irruptionem : & homo indignabundus aperit fomites peccatorum.* 22 *Superbia humiliat hominem : & humilibus corde Dominus res dicit quibus corroborat.* 23 *Qui partitur cum fure, odit animam suam : & cùm adest jusjurandum, audientes illud non fatentur.* 24

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

18 * ܘܛܥܡܬ ܕܛܒܐ ܗܝ ܬܐܓܘܪܬܗ. ܘܠܐ ܕܥܟ ܗܘܐ ܫܪܓܗ ܠܠܝܐ ܟܠܗ. * ܘܐܘܫܛܬ ܐܝܕܝܗ
19
20 ܠܡܥܒܕܘܬܐ. ܘܕܪܥܝܗ ܠܡܥܙܠܐ. * ܐܝܕܝܗ ܦܫܛܬ ܠܡܣܟܢܐ. ܘܕܪܥܝܗ ܐܘܫܛܬ
21 ܠܒܨܝܪܐ. * ܘܠܐ ܕܚܠܝܢ ܗܘܘ ܒܢܝ ܒܝܬܗ ܡܢ ܬܠܓܐ. ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ ܠܒܝܫܝܢ
22 ܗܘܘ ܙܚܘܪܝܬܐ. * ܫܘܝܬܐ ܥܒܕܬ ܠܗ. ܘܠܒܘܫܐ ܕܒܘܨܐ ܘܐܪܓܘܢܐ. * ܝܕܝܥ ܗܘܐ ܒܥܠܗ
23
24 ܒܝܢܬ ܡܕܝܢܬܐ. ܟܕ ܝܬܒ ܗܘܐ ܒܝܢܬ ܣܒܐ ܕܐܪܥܐ. * ܣܕܝܢܐ ܥܒܕܬ ܘܙܒܢܬ. ܘܐܣܪܐ
25 ܝܗܒܬ ܠܟܢܥܢܝܐ. * ܚܝܠܐ ܘܗܕܪܐ ܠܒܘܫܗ. ܘܚܕܝܐ ܒܝܘܡܐ ܐܚܪܝܐ.
26 * ܦܘܡܗ ܦܬܚܬ ܒܚܟܡܬܐ. ܘܢܡܘܣܐ ܕܪܚܡܐ ܥܠ ܠܫܢܗ. * ܘܦܬܝܚܢ ܐܘܪܚܬܐ
27
28 ܕܒܝܬܗ. ܠܚܡܗ ܒܚܒܢܢܘܬܐ ܠܐ ܐܟܠܬ. * ܩܡܘ ܒܢܝܗ ܘܛܘܒܘ ܠܗ ܛܘܒܐ.
29 ܘܒܥܠܗ ܫܒܚܗ. * ܘܣܓܝܐܐ ܕܒܢܬܗ ܩܢܝ ܥܘܬܪܐ. ܘܐܢܬܝ ܥܠܝܬܝ ܥܠ ܟܠܗܝܢ.
30 * ܕܓܠ ܗܘ ܫܘܦܪܐ. ܘܣܪܝܩ ܗܘ ܫܘܦܪܐ. ܘܐܢܬܬܐ ܕܕܚܠܐ ܡܢ ܡܪܝܐ. ܗܝ ܡܫܬܒܚܐ.
31 * ܗܒܘ ܠܗ ܡܢ ܦܐܪܐ ܕܐܝܕܝܗ. ܘܢܫܒܚܘܢܗ ܥܒܕܝܗ ܒܬܪܥܐ.

* ܫܠܡ ܟܬܒܐ ܕܡܬܠܘܗܝ ܕܫܠܝܡܘܢ ܒܪ ܕܘܝܕ ܡܠܟܐ ܕܐܝܣܪܝܠ.
ܕܗܘܝܢ ܦܬܓܡܘܗܝ ܐܠܦܐ ܘܬܡܢܐ ܡܐܐ ܘܫܬܝܢ ܘܬܠܬܐ *

Et guſtavit bonam eſſe negotiationem ſuam: 18
& non extinguebatur lucerna ejus totâ nocte. 19
Et brachia ſua extendit cum ſolertia, manuſq; ſuas ad fuſum. Manus ſuas extendit pauperi- 20
bus, & brachia ſua protendit ad inopes. Et 21
non metuebant domeſtici ejus nivem, quia omnes veſtiti erant croceis. Stratum ſibi fe- 22
cit, & indumenta byſſina atque purpurea. 23
Celebris erat maritus ejus inter urbes, dum ſederet inter ſeniores terræ. Linteum 24
fecit, ac vendidit: & cingulum tradidit Chananæis. Fortitudo & decus veſtimentũ ejus, 25
& gaudebit in die poſtremo. Os ſuum aperuit cum ſapientia, & lex miſericordiæ ſuper 26
linguâ ejus. Et apertæ ſunt viæ domûs ejus: 27
panem ſuum ignaviter non comedit. Surrexerunt filii ejus, & tribuerunt ei beatitudi- 28
nem: maritus quoq; ejus laudavit eam. Complures etiam filiæ ejus poſſederunt divitias: 29
Tu verò omnes excelluiſti. Fallax eſt decor, & 30
vana pulchritudo: & mulier quæ Dominum timet, ipſa laudabitur. Date ei de fructibus 31
manuum ſuarum, & glorificent eam opera ejus in porta.

Finis Libri Proverbiorum Salomonis filii David regis Iſrael, complectentis verſus mille octingentos ſexaginta tres.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

25 فتعرقلوا اذا اتقوا الناس وخجلوا منهم * ومن توكل على الرب سيفرح * النفاق يمنح الانسان
26 غلطا وزللا * ومن توكل على سيده يسلم * كثيرون يخدمون امام وجوه الرؤساء والمدبرين * ومن
27 الرب يصير العدل للانسان * الانسان المقسط رذالة عند الرجل الظالم * والطريقة المقومة
10 رذالة عند الحايد عن السنة * الامراة الفهمة من يجدها * من هذه سجيتها هي اكرم من
11 الحجار والجواهر النفيسة * قلب رجلها واثق بها * من هذه صورتها ما تعوزها الذخاير الجليلة *
12 لانها تعمل برجلها طول عمرها الخير لا الشر * تمد يدها الى الصوف والكتان * واذا سرحتهما
13
14 عملت بيديها اعمالا نافعة * وصارت كمركب اتجر فافاد من بلدة بعيدة * وجمعت ثروتها *
15 وقامت منذ الليالي * ومنحت اهل منزلها اطعمة واعمالا لخادميها * لما رات فلاحة ابتاعتها * ومن
16
17 اعمال يديها نصبت فيه * حقوها متزر سديدا * ومدت يديها الى الصوف * وذاقت ان العمل
18 جيد هو * فما تطفي طول الليل سراجها * مدت باعها الى الاعمال الموافقة * وحرصت يديها الى
19
20 المغزل * ومنحت يديها الى الفقير * ومدت ثمرها الى المسكين * رجلها ما يهتم في الذين بمنزله
21
22 ان ابطاء في موضع ما * جماعة الذين عندها قد البستهم كسوتهم * وعملت لرجلها حلة
23 مبطنة * وعملت لها ملابس من القرمز والبرفير * فصار رجلها مشارا اليه في الابواب * واذا جلس
24 في الجمع مع الشيوخ الساكنين الارض * عملت سباني وباعتها لاهل بصرى * وميازر وباعتها
26 للكنعانيين * فتحت فمها باصغاء * ووعي سنة الكلام * وجعلت للسانها ترتيبا * وتسربلت
25
27 قوة وحسن بهاء * وفرحت في الايام الاخيرة * مسالك منزلها ضيقة * ما اكلت اغذية عاجزة *
28 فتحت فمها بالحكمة وباستراع سنة المنطق * وصدقتها انهضت اولادها فاستغنوا * ورجلها سبحها
29 ومدحها * بنات كثيرات ملكن الغناء * وكثيرات صنعن قوة * وانت استعليت عليهن *
30 وارتفعت اكثر منهن كلهن * فلن توجد فيك مرضيات كاذبة * وجمال امراة باطلا * لان
31 الامراة ذات الفهم تبارك * فلتسبحها مخافة الرب * اعطوها من اثمار شفتيها * وليسبح في
الابواب رجلها *

* نجزت بعون الله تعالى وحسن توفيقه اداب سليمان المستعجم تلخيصها *
التي استكتبها اصدقاء حزقيا ملك يهوذا *

* والسبح لله دايما ابدا *

Quæ implicati ſunt dum timuerunt homines, & reveriti ſunt eos: qui autem 25
confiderit in Domino, gaudebit. Impietas cauſat homini errorem & lapſum: & qui confidit in Domino ſuo, ſalvabitur.
Multi miniſtrant coram faciebus Princi- 26
pum & gubernatorum: & à Domino æquitas fiet homini. Vir juſtus, abomina- 27
tio apud virum iniquum: & via recta, execratio apud declinantem à lege.

Ex Cap. 31.

Mulierem prudentem quis inveniat? cu- 10
jus enim conditio talis eſt, pretioſior eſt lapidibus & gemmis eximiis. Cor viri ejus 11
tutum eſt in ea. Ei quæ iſtiuſmodi eſt, non deerunt theſauri præclari. Nam exercet 12
in virum ſuum totâ ætate ſuâ bonum, non malum. Extendit manum ſuam ad la- 13
nam & linum: & cùm texuerit ea, componit manibus ſuis opera utilia. Fa- 14
ctáque eſt quaſi navis quæ mercata eſt, & lucrum attulit è regione longinqua; & congregavit opes ſuas. Et ſurrexit 15
de noctibus, & dedit domeſticis ſuis cibos, & exercitia miniſtris ſuis. Quan- 16
do vidit agrum, emit eum: & de operibus manuum ſuarum plantavit poſſeſſio-
nem. Lumbus ejus eſt accinctus fortiter, 17
& extendit manus ſuas ad lanam, & guſtavit laborem eſſe bonum: quapropter non extinguit totâ nocte lucernam ſuam.
Extendit brachium ſuum ad opera oppor- 18
tuna. Et ſolicitavit manus ſuas ad fu- 19
ſum. Et aperuit manus ſuas inopi, & 20
porrexit fructum ſuum pauperi. Vir 21
ejus non eſt ſolicitus de iis qui ſunt domi ſuæ, ſi demoretur aliquo in loco: cætus enim eorum qui ſunt apud ipſam, jam induit eos veſtibus eorum. Fecitque vi- 22
ro ſuo veſtes duplices, & fecit ſibi indumenta ex byſſo & purpurâ. Unde vir 23
ejus digito oſtendebatur in portis, & dum ſederet in concilio cum ſenibus habitantibus terram. Fecit mantilia, & vendi- 24
dit eâ incolis Boſra: (urbs eſt in Meſopotamia) *& ſyndones, vendidit que illas Chananæis.*

verſ. 25. poſtponitur. 26.

Aperuit os ſuum cum attentione, & juxta 26
ſenſum regulæ ſermonis: & conſtituit linguæ ſuæ ordinem. Et amicta eſt for- 25
titudine & decore claritatis: & gaviſa eſt in diebus ultimis. Semitæ domûs e- 27
jus ſunt arctæ: non manducavit cibos otioſa. Aperuit os ſuum cum ſapientia & ad normam legis ſermonis. Et eleemoſy- 28
na ejus erexit filios ſuos, & ditati ſunt: & vir ejus laudavit eam, & celebravit illam. Filiæ multæ poſſederunt divitias, 29
& multæ fecerunt potentiam: at tu ſuperâſti eas, & elevata es plus iis omnibus.
Handquaquam reperiuntur in te gratiæ 30
falſæ, & formoſitas mulieris fruſtrà: quia mulier intellectu prædita benedicetur & ſanè laudabit eam timor Domini. Date 31
ei de fructibus labiorum ſuorum, & laudetur in portis vir ejus.

Completa eſt, excelſo Deo juvante, rectéque diſponente, Diſciplina Salomonis, cujus expoſitio eſt valdè ardua, quámque ſcripſerunt amici Ezeciæ Regis Juda.

Et laus Deo perennis ac ſempiterna.

ספר קהלת ׃ א

CAP. I. א

,vanitatum Vanitas .Jeruſalaim in regis David filii Choheleth ,Verba
1 דִּבְרֵי קֹהֶלֶת בֶּן־דָּוִד מֶלֶךְ בִּירוּשָׁלִָם׃ הֲבֵל הֲבָלִים
2 utilitatis Quid .vanitas omnia vanitatum vanitas : Choheleth dixit
3 אָמַר קֹהֶלֶת הֲבֵל הֲבָלִים הַכֹּל הָבֶל׃ מַה־יִּתְרוֹן
Generatio ?ſole ſub *laborabit* quo ,ſuo labore omni *in* ,homini
4 לָאָדָם בְּכָל־עֲמָלוֹ שֶׁיַּעֲמֹל תַּחַת הַשָּׁמֶשׁ׃ דּוֹר
,ſol orietur Et .*ſtans* ſeculum in terra &,*veniens* generatio & ,*vadens*
5 הֹלֵךְ וְדוֹר בָּא וְהָאָרֶץ לְעוֹלָם עֹמָדֶת׃ וְזָרַח הַשֶּׁמֶשׁ
.*ibi ipſe oriens anhelus* ſuum locum ad & ,ſol *ingredietur* &
וּבָא הַשָּׁמֶשׁ וְאֶל־מְקוֹמוֹ שׁוֹאֵף זוֹרֵחַ הוּא שָׁם׃
vadens,circuiens,circuiens:aquilonem ad *circuiens* & ,*auſtrum* ad *Vadens*
6 הוֹלֵךְ אֶל־דָּרוֹם וְסוֹבֵב אֶל־צָפוֹן סוֹבֵב ׀ סֹבֵב הוֹלֵךְ
flumina Omnia .ſpiritus revertitur ſuos circuitus *ſuper* & ,ſpiritus
7 הָרוּחַ וְעַל־סְבִיבֹתָיו שָׁב הָרוּחַ׃ כָּל־הַנְּחָלִים
flumina *quò* locum Ad .*plenum ipſum* non mare & ,mare ad *euntia*
הֹלְכִים אֶל־הַיָּם וְהַיָּם אֵינֶנּוּ מָלֵא אֶל־מְקוֹם שֶׁהַנְּחָלִים
non *laborioſa verba Omnia .eundum ad revertentia ipſa illuc euntia*
8 הֹלְכִים שָׁם הֵם שָׁבִים לָלָכֶת׃ כָּל־הַדְּבָרִים יְגֵעִים לֹא־
implebitur nec , videndo oculus *ſatiabitur* non : eloqui vir *poterit*
יוּכַל אִישׁ לְדַבֵּר לֹא־תִשְׂבַּע עַיִן לִרְאוֹת וְלֹא־תִמָּלֵא
,eſt factũ quod *quid* & ,erit *quod ipſum* fuit quod *Quid* .audiendo *ab* auris
9 אֹזֶן מִשְּׁמֹעַ׃ מַה־שֶּׁהָיָה הוּא שֶׁיִּהְיֶה וּמַה־שֶּׁנַּעֲשָׂה
verbum Eſt .ſole ſub novum *omne non* & : fiet *quod idipſum*
10 הוּא שֶׁיֵּעָשֶׂה וְאֵין כָּל־חָדָשׁ תַּחַת הַשָּׁמֶשׁ׃ יֵשׁ דָּבָר
fuit quod ſeculis in fuit Jam ? *ipſum* novum hoc vide : *dicat quod*
שֶׁיֹּאמַר רְאֵה־זֶה חָדָשׁ הוּא כְּבָר הָיָה לְעֹלָמִים אֲשֶׁר הָיָה
,erunt qui,poſteriorum etiam & , priorum memoria Non .nos ante
11 מִלְּפָנֵנוּ׃ אֵין זִכְרוֹן לָרִאשֹׁנִים וְגַם לָאַחֲרֹנִים שֶׁיִּהְיוּ
Choheleth Ego .*poſterum in* erunt qui cum ,memoria *eis* erit non
12 לֹא־יִהְיֶה לָהֶם זִכָּרוֹן עִם שֶׁיִּהְיוּ לָאַחֲרֹנָה׃ אֲנִי קֹהֶלֶת
meum cor dedi Et .Jeruſalaim in Iſrael ſuper rex fui
13 הָיִיתִי מֶלֶךְ עַל־יִשְׂרָאֵל בִּירוּשָׁלִָם׃ וְנָתַתִּי אֶת־לִבִּי
eſt factum quod omne *ſuper*,ſapientia in inveſtigandũ ad & quærendũ ad
לִדְרוֹשׁ וְלָתוּר בַּחָכְמָה עַל כָּל־אֲשֶׁר נַעֲשָׂה
Adam filiis Deus dedit malam *negotiationẽ* Hanc .cœlo ſub
תַּחַת הַשָּׁמָיִם הוּא ׀ עִנְיַן רָע נָתַן אֱלֹהִים לִבְנֵי הָאָדָם
ſub *ſunt facta* quæ opera omnia Vidi .ea in ſe *affligendum ad*
14 לַעֲנוֹת בּוֹ׃ רָאִיתִי אֶת־כָּל־הַמַּעֲשִׂים שֶׁנַּעֲשׂוּ תַּחַת
.ſpiritus *paſsio* & , vanitas univerſa ecce & : ſole
הַשָּׁמֶשׁ וְהִנֵּה הַכֹּל הֶבֶל וּרְעוּת רוּחַ׃

Verſio VUL. LAT.

ECCLESIASTES,

Qui ab Hebræis

COHELETH appellatur.

CAP. I.

1 VErba Eccleſiaſtæ, filii Da-
2 vid, regis Jeruſalẽ. Vanitas va-
nitatum, dixit Eccleſiaſtes: va-
nitas vanitatũ, & omnia vani-
3 tas. Quid habet amplius homo
de univerſo labore ſuo, quo la-
4 borat ſub Sole? Generatio præ-
terit, & generatio advenit: ter-
5 ra autẽ in æternum ſtat. Oritur
Sol, & occidit, & ad locũ ſuum
revertitur: ibique renaſcens,
6 Gyrat per Meridiẽ, & flectitur
ad Aquilonẽ: luſtrans univerſa
in circuitu pergit ſpiritus, &
7 in circulos ſuos revertitur. O-
mnia flumina intrant in mare,
& mare non redundat: ad lo-
cũ, unde exeunt flumina, rever-
8 tuntur ut iterùm fluant. Cun-
ctæ res difficiles: non poteſt eas
homo explicare ſermone. Non
ſaturatur oculus viſu, nec auris
9 auditu impletur. Quid eſt quod
fuit? ipſum ꝙ futurum eſt: quid
eſt ꝙ factũ eſt? ipſum ꝙ facien-
10 dum eſt. Nihil ſub Sole novũ,
nec valet quiſquã dicere; Ecce
hoc recens eſt: jam enim præ-
ceſſit in ſeculis, quæ fuerũt an-
11 te nos. Non eſt priorũ memo-
ria: ſed nec eorũ quidem, quæ
poſteà futura ſunt, erit recor-
datio apud eos, qui futuri ſunt
12 in noviſſimo. Ego Eccleſiaſtes
13 fui rex Iſrael in Jeruſalem, Et
propoſui in animo meo quære-
re & inveſtigare ſapienter de
omnibus, quæ fiunt ſub Sole.
Hanc occupationẽ peſſimã de-
dit Deus filiis hominũ, ut occu-
14 parẽtur in ea. Vidi cuncta, quæ
fiunt ſub Sole: et ecce univerſa
vanitas, & afflictio ſpiritûs.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ἘΚΚΛΗΣΙΑΣΤΗ´Σ.

ΚΕΦ. α´.

1 † Ῥήματα Ἐκκλησιαστοῦ υἱοῦ Δαυὶδ βασι-
2 λέως Ἰσραὴλ ἐν Ἱερουσαλήμ. † Ματαιότης
ματαιοτήτων εἶπεν ὁ Ἐκκλησιαστής, † ματαιό-
3 της ματαιοτήτων, τὰ πάντα ματαιότης. † Τίς
περίσσεια τῷ ἀνθρώπῳ † ἐν παντὶ μόχθῳ αὐ-
4 τοῦ ᾧ μοχθεῖ ὑπὸ τὸν ἥλιον; † Γενεὰ πορεύεται
καὶ γενεὰ ἔρχεται, † καὶ ἡ γῆ εἰς τὸν αἰῶνα ἕστηκε.
5 † Καὶ ἀνατέλλει ὁ ἥλιος καὶ δύνει ὁ ἥλιος καὶ
εἰς τὸν τόπον αὐτοῦ ἕλκει· † (α) αὐτὸς ἀνατέλ-
6 λων ἐκεῖ Πορεύεται πρὸς Νότον, † καὶ κυ-
κλοῖ (β) πρὸς Βορρᾶν· † κυκλοῖ κυκλῶν πο-
ρεύεται τὸ πνεῦμα, καὶ ἐπὶ κύκλους αὐτοῦ ἐπιστρέ-
7 φει τὸ πνεῦμα. † Πάντες οἱ χείμαῤῥοι πο-
ρεύονται εἰς τὴν θάλασσαν, † καὶ ἡ θάλασσα οὐκ
(γ) ἔστιν ἐμπιμπλαμένη· † (δ) εἰς τὸν τόπον οὗ
οἱ χείμαῤῥοι πορεύονται, † ἐκεῖ αὐτοὶ ἐπιστρέ-
8 φουσι τοῦ πορευθῆναι. † Πάντες οἱ λόγοι ἔγκο-
ποι, † οὐ δυνήσεται ἀνὴρ τοῦ λαλεῖν· † (ε) καὶ οὐ πλη-
σθήσεται ὀφθαλμὸς τοῦ ὁρᾷν, † καὶ οὐ πληρωθήσεται
9 οὖς ἀπὸ ἀκροάσεως. † Τί τὸ γεγονός; αὐτὸ
τὸ γενησόμενον· † καὶ τί τὸ πεποιημένον; αὐτὸ
10 τὸ ποιηθησόμενον. † Καὶ οὐκ ἔστι πᾶν πρόσφα-
τον ὑπὸ τὸν ἥλιον. † ὃς λαλήσει καὶ ἐρεῖ, Ἴδε
τοῦτο καινόν ἐστιν; † ἤδη (ϛ) γέγονεν ἐν τοῖς αἰ-
ῶσι † τοῖς γενομένοις ἀπὸ ἔμπροσθεν ἡμῶν.
11 † Οὐκ ἔστι μνήμη τοῖς πρώτοις, † καί γε
τοῖς ἐσχάτοις γενομένοις (ζ) οὐκ ἔσται αὐτῶν
μνήμη † μετὰ τῶν (¨) γενησομένων εἰς τὴν ἐσχάτην.
12 † Ἐγὼ Ἐκκλησιαστὴς ἐγενόμην † βασιλεὺς
13 ἐπὶ Ἰσραὴλ ἐν Ἱερουσαλήμ. † Καὶ ἔδωκα τὴν
καρδίαν μου τοῦ ἐκζητῆσαι † καὶ τοῦ κατασκέψα-
σθαι ἐν τῇ Σοφίᾳ περὶ πάντων † τῶν (η) γινομέ-
νων ὑπὸ τὸν οὐρανόν, † ὅτι περισπασμὸν πονη-
ρὸν ἔδωκεν ὁ Θεὸς τοῖς υἱοῖς (θ) τῶν ἀνθρώπων
14 τοῦ περισπᾶσθαι ἐν αὐτῷ. † Εἶδον σύμπαντα τὰ
ποιήματα τὰ πεποιημένα ὑπὸ τὸν ἥλιον· † καὶ
ἰδοὺ τὰ πάντα ματαιότης καὶ προαίρεσις πνεύματος.

MS.A. Ἐκκλησιαστής. (α) ἀνατέλλων αὐτὸς (β) πρὸς Βορρᾶ, (γ) ἔσται ἐμπιπλαμένη· (δ) εἰς τόπον οὗ (ε) καὶ οὐκ ἐμπλησθήσεται (ϛ) γέγονεν τοῖς (ζ) οὐκ ἔστιν (¨) γεννηθησομένων, (η) γενομένων (θ) τοῦ ἀνθρώπου

ECCLESIASTES.

CAP. I.

VErba Eccleſiaſtæ, filii David, 1
regis (a) Iſrael in Hieruſalem. (b)
Vanitas vanitatum, dixit Eccleſi- 2
aſtes, vanitas vanitatũ, omnia
vanitas. (c) Quid ſupereſt homini 3
in omni (d) labore ſuo, quo laborat
ſub Sole? Generatio vadit, et gene- 4
ratio venit, & terra (e) in ſeculum
ſtat. Et oritur Sol, & occidit Sol, 5
et ad locum ſuum (f) ducit: oriens
ipſe ibi, (g) Vadit ad Auſtrum, & 6
gyrat ad Aquilonem: (h) gyrat gy-
rans vadit ſpiritus, & in circulos
ſuos revertitur ſpiritus. Omnes 7
torrentes vadunt in mare, & ma-
re (i) non eſt impletum. Ad locum,
(k) quo torrentes eunt, illuc ipſi
revertuntur ad eundum. Omnes 8
ſermones (l) graves, (m) non pote-
rit vir loqui. Et non ſatiabitur ocu-
lus videndo: & non implebitur au-
ris ex auditu. Quid eſt quod fuit? 9
ipſum quod (n) futurũ eſt. Et quid
eſt quod factũ ~~eſt?~~ ipſum (o) quod
faciendum eſt. Et non eſt omne (p) 10
recens ſub Sole. (q) Quis loque-
tur ac dicet, Vide, hoc novum eſt?
jam fuit in ſeculis, quæ fuerunt
ante nos. Non eſt memoria primis: 11
& quidem noviſſimis, cùm facta
fuerint, non erit (r) eorũ memoria
(ſ) cum eis qui futuri ſunt in no-
viſſimo. Ego Eccleſiaſtes fui rex 12
ſuper Iſrael in Hieruſalem: Et (t) 13
dedi cor meum ad inquirendum, et
(u) conſiderandum in ſapientia de
omnibus quæ fiunt ſub cœlo. (x)
Quoniam diſtentionem malam
dedit Deus filiis hominum; ut di-
ſtendantur in ea. Vidi univerſa o- 14
pera, quæ facta ſunt ſub Sole: &
ecce omnia (y) vanitas, & (z)
præſumptio ſpiritûs.

תרגום TARGUM.

א

1 פִּתְגָמֵי נְבוּאָה דְאִתְנַבָּא קֹהֶלֶת הוּא שְׁלֹמֹה בַר דָּוִד מַלְכָּא דַהֲוָה בִירוּשְׁלֶם׃ כַּד חֲזָא
2 שְׁלֹמֹה מַלְכָּא דְיִשְׂרָאֵל בְּרוּחַ נְבוּאָה יַת מַלְכוּת רְחַבְעָם בְּרֵיהּ דַּעֲתִיד לְאִתְפַּלְגָא עִם
יָרָבְעָם בַּר נְבָט וְיַת יְרוּשְׁלֶם וּבֵית מוּקְדְשָׁא דְאִנּוּן עֲתִידִין לְמֶחֱרַב וְיַת עַמָּא בְנֵי יִשְׂרָאֵל
דִּי אִנּוּן עֲתִידִין לְמִגְלֵי אֲמַר בְּמֵימְרֵיהּ הֲבֵל הֲבָלַיָּא עָלְמָא הָדֵין הֲבֵל הֲבָלַיָּא כָּל מַה
3 דִּטְרַחִית אֲנָא וְדָוִד אַבָּא כּוּלָּא הֲבָלוּ׃ מַה מוֹתַר אִית לֶאֱנָשׁ בָּתַר דִּי מוֹת מִן כָּל טוּרְחֵיהּ
דְּהוּא טָרַח תְּחוֹת שִׁמְשָׁא בְּעָלְמָא הָדֵין אֱלָהֵן לְמֶעְסַק בְּאוֹרַיְתָא לְקַבָּלָא אֲגַר שְׁלִים
4 לְעָלְמָא דְאָתֵי קֳדָם מָרֵי עָלְמָא׃ אֲמַר שְׁלֹמֹה מַלְכָּא בְּרוּחַ נְבוּאָה דָּרָא טָבָא דְצַדִּיקַיָּא
דְּאָזַל מִן עָלְמָא בְּגִין חוֹבֵי דָרָא בִישָׁא דְרַשִׁיעַיָּא דַעֲתִידִין לְמֵיתֵי בַּתְרֵיהוֹן וְאַרְעָא לְעָלְמֵי
5 עָלְמִין קַיְמָא לְסוֹבָרָא פּוּרְעָנוּתָא דְאָתֵי עַל עָלְמָא בְּגִין חוֹבֵיהוֹן דִּבְנֵי אֱנָשָׁא׃ וְדָנַח
שִׁמְשָׁא בִּימָמָא מִן סְטַר מַדִּנְחָא וְעָיֵיל שִׁמְשָׁא לִסְטַר מַעְרְבָא בְּלֵילְיָא וּלְאַתְרֵיהּ שָׁחִיף
6 וְאָזֵל אוֹרַח תְּהוֹמָא וְדָנַח לִמְחַר מִן אֲתַר דְּהוּא נָח מִתַּמָּן מֵאִתְמָלֵי׃ אָזֵל כָּל סְטַר דָּרוֹמָא
בִּימָמָא וּמְחַוֵּר לִסְטַר צִפּוּנָא בְּלֵילְיָא אוֹרַח תְּהוֹמָא מְחַזֵּר מַחֲזֵר וְאָזֵל לְרוּחַ עִבַּר דָּרוֹמָא
בִּתְקוּפַת נִיסָן וְתַמּוּז וְעַל סַחֲרָנוּהִי תָּיֵב לְרוּחַ עִבַּר צִפּוּנָא בִּתְקוּפַת תִּשְׁרִי וְטֵבֵת נָפֵק
7 מֵחַרְכֵּי מַדִּנְחָא בְּצַפְרָא וְעָיֵיל לְחַרְכֵּי מַעְרְבָא בְּרַמְשָׁא׃ כָּל נַחְלַיָּא וּמַבּוּעֵי מַיָּא אָזְלִין
וְנָגְדִין לְמֵי אוֹקְיָנוֹס דִּמְסַחַר לְעָלְמָא כְּגוּשְׁפַּנְקָא וְאוֹקְיָנוֹס לֵיתוֹהִי מִתְמְלֵי וּלְאַתַר
8 דְּנַחְלַיָּא אָזְלִין וְנָגְדִין תַּמָּן אִנּוּן תָּיְבִין לְמֵיזַל מִצִּנּוֹרֵי תְהוֹמָא׃ כָּל פִּתְגָמַיָּא דַעֲתִידִין לְמֶהֱוֵי
בְּעָלְמָא אִשְׁתַּלְהִיאוּ בְהוֹן נְבִיַּיָּא קַדְמָאִין וְלָא יְכִילוּ לְמַשְׁכַּח סוֹפֵיהוֹן בְּרַם הָכִי לֵית לֵיהּ
רְשׁוּ לִגְבַר לְמַלָּלָא בֵיהּ דַּעֲתִיד לְמֵיתֵי בַּתְרוֹהִי וְלָא יְכִילָא עֵינָא לְמֶחֱזֵי כָּל מָה דַעֲתִיד
לְמֶהֱוֵי בְעָלְמָא וְלָא יְכִילָא אוּדְנָא לְאִתְמְלָאָה מִלְּמִשְׁמַע כָּל פִּתְגָמֵי כָּל דָּיְרֵי אַרְעָא׃
9 מַה דַּהֲוָת מִן קַדְמַת דְּנָא הוּא עֲתִיד לְמֶהֱוֵי בָתַר כֵּן וּמָה דְאִתְעֲבֵד מִן קַדְמַת דְּנָא הוּא
עֲתִיד לְאִתְעֲבָדָא עַד סוֹף כָּל דָּרַיָּא עָלְמָא וְלֵית כְּלוּם פִּתְגָם חֲדַת בְּעָלְמָא הָדֵין תְּחוֹת
10 שִׁמְשָׁא׃ אִית פִּתְגָם דְּיֵימַר אֱנָשׁ חֲזֵי דֵּין פִּתְגָם חֲדַת הוּא הָא כְבַר הֲוָה לְעָלְמִין בְּיוֹמֵי דָרַיָּא
11 דִּי הֲווֹ לְקַדְמָנָא׃ לֵית דָּכְרָנָא לְדָרַיָּא קַדְמָאִין וְאַף לְבַתְרָאִין דַּעֲתִידִין לְמֶהֱוֵי לָא יְהֵי לְהוֹן
12 דָּכְרָנָא עִם דָּרַיָּא דִיהוֹן בְּיוֹמֵי מַלְכָּא מְשִׁיחָא׃ כַּד הֲוָה שְׁלֹמֹה מַלְכָּא יָתֵב עַל כּוּרְסֵי
מַלְכוּתֵיהּ אִתְגַּבַּהּ לִבֵּיהּ לַחֲדָא עַל עֻתְרֵיהּ וַעֲבַר עַל מֵימְרָא דַייָ וּכְנַשׁ סוּסָוָן וּרְתִיכִין
וּפָרָשִׁין סַגִּיאִין וּצְבַר כַּסְפָּא וְדַהֲבָא לַחֲדָא וְאִתְחַתַּן בְּעַמְמִין נוּכְרָאִין מִן יַד תְּקִיף רוּגְזָא
דַייָ עֲלוֹהִי וּטְרַד יָתֵיהּ מִן כּוּרְסֵי מַלְכוּתֵיהּ בְּכֵן אֲמַר שְׁלֹמֹה אֲנָא קֹהֶלֶת דַּהֲוֵי שְׁמֵיהּ
13 שְׁלֹמֹה מִתְקְרֵי מִן קַדְמַת דְּנָא הֲוֵיתִי מַלְכָּא עַל יִשְׂרָאֵל בִּירוּשְׁלֶם׃ וּמְסָרֵית יָת לִבִּי
לְמִתְבַּע אוּלְפָן מִן קֳדָם יְיָ בִּזְמַן דְּאִתְגְּלֵי לִי בְגִבְעוֹן לְאַלָּלוּתִי וּלְמִשְׁאַל יָתִי מָה אֲנָא צָבֵי
מִנֵּיהּ וַאֲנָא לָא תְבַעִית מִנֵּיהּ אֱלָהֵן חוּכְמְתָא לְמִידַע בֵּין טַב לְבִישׁ וְסוּכְלְתָנוּ עַל כָּל מַה
דְּאִתְעֲבַד תְּחוֹת שִׁמְשָׁא בְּעָלְמָא הָדֵין וַחֲזֵית כָּל עוּבָדֵי בְנֵי אֱנָשָׁא חַיָּבָא נְגָן בִּישׁ דִּי יְהַב
14 יְיָ לִבְנֵי אֱנָשָׁא לְאִסְתַּגְּפָא בֵיהּ׃ חֲזֵיתִי יַת כָּל עוּבָדֵי בְנֵי אֱנָשָׁא דִּי אִתְעֲבִידוּ תְּחוֹת שִׁמְשָׁא
בְּעָלְמָא הָדֵין וְהָא כוּלָּא הֲבָלָא וּתְבִירוּת רוּחָא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAPUT I.

VErba *prophetiæ, quæ vaticinatus eſt Eccleſiaſtes* (ipſe eſt Selomoh) 1
filii David regis qui fuit in Jeruſalem. *Cum videret Selomoh rex Iſrael per* 2
ſpiritum propheticum, regnum Roboam filii ſui diviſum iri cum Jeroboam
filio Nebat, Jeruſalem etiam domumq; ſanctuarii deſtructũ iri, & populum
filiorum Iſrael exulaturum, dixit in verbo ſuo: Vanitas vanitatum ſeculum
hoc: vanitas vanitatum omne quod laboravi *ego, & David pater meus*;
omnino vanitas. Quid reliquum eſt homini poſtquàm mortuus fuerit, de 3
omni labore ſuo, quem ipſe laboravit ſub ſole in hoc ſeculo? *niſi ut det ope-*
ram legi ad accipiendum præmium perfectum in ſeculo venturo coram do-
mino mundi. Dixit Selomoh rex per ſpiritum propheticum, felix generatio 4
juſtorum, quæ abiit de mundo, propter peccata generationis malæ impiorum,
qui venturi ſunt poſt eos; & terra in ſecula ſeculorum ſtat, *ad ſuſtinen-*
dum vindictam venturam ſuper mundum cauſa delictorum filiorum homi-
nis. Oritur ſol in die ex latere Orientis, & ingreditur ſol in latus Occi- 5
dentis in nocte, & ad locum ſuum *paulatim proripit ſe*, & ambulat per vi-
am abyſſi, & oriturus eſt cras ex loco unde ipſe ortus eſt heri. Perambulat 6
omne latus Meridiei *in die*, & redit ad latus Aquilonis *in nocte* via abyſſi:
gyrat, circuit, & ambulat *ad ventum plagæ Auſtralis in revolutione Niſan*
& Tammuz, & per circuitus ſuos revertitur *ad ventum plagæ Borealis in*
revolutione Tiſri & Tebeth: egreditur carceres Orientis manè, & ingredi-
tur cancellos Occidentis veſperi. Omnia flumina & ſcaturigines aquarum 7
vadunt & fluunt in mare Oceanum, quod circuit mundum *inſtar annuli*, &
Oceanus non impletur: & ad eundem locum quò flumina vadunt & fluunt,
ipſa redeunt, ut vadant per meatus abyſſi. In omnibꝰ verbis quæ parata ſunt 8
ut fiant in ſeculo, defatigati ſunt prophetæ antiqui, & non potuerunt inve-
nire fines eorum: verùm utique non eſt facultas viro ut loquatur quod ven-
turum eſt poſt ſe, & non poteſt oculus videre omne quod futurum eſt ut ac-
cidat in mundo, & non poteſt auris impleri audiendo verba omnium inco-
larum terræ. Id quod fuit ab antiquo, ipſum futurum eſt poſthac: & id quod 9
factum eſt ab antiquo, ipſum futurum eſt ut fiat uſque ad finem omnium ge-
nerationum ſeculi: & non eſt ulla res nova in ſeculo hoc ſub ſole. Eſt res 10
de qua dicat homo, Vide, hæc res nova eſt, ecce antè fuit in ſeculo in die-
bus generationum, quæ fuerunt ante nos. Non eſt memoria generationibus 11
prioribus, & etiam poſteris qui futuri ſunt, non erit illis memoria cum ge-
nerationibus quæ erunt in diebus regis Chriſti. *Cùm Selomoh rex ſederet* 12
ſuper ſolium regni ſui, extulit ſe cor ejus valde ob divitias ſuas, & tranſ-
greſſus eſt verbum Domini, collegitque equos & currus & equites quam-
plurimos; accumulavit etiam argentum et aurum abundanter & contraxit
affinitatem cum populis alienis: eveſtigiò invaluit ira Domini in eum, ac
deturbavit eum de ſolio regni ſui: tunc dixit Selomoh, Ego Eccleſiaſtes, 13
Selomonis nomine dictus antehac, fui rex ſuper Iſrael in Jeruſalem. Et tra-
didi cor meum ad inveſtigandam doctrinam à Domino, *tempore quo ap-*
paruit mihi in Gibeon, ut exploraret me, & petere potuiſſem quicquid vel-
lem ab eo: at ego nihil aliud poſtulavi ab eo niſi ſapientiam, ad diſcernen-
dum inter bonum & malum, & intellectum de omni quod factum eſt ſub
ſole in mundo hoc: & vidi quòd omnia facta filiorum hominis obnoxia
ſint negotio malo, quod dedit Dominꝰ filiis hominis, ut affligerentur in eo.
Vidi omnia facta filiorum hominis quæ fiunt ſub ſole in mundo hoc: & 14
ecce omne vanitas & confractio ſpiritûs.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܟܬܒܐ ܕܩܘܗܠܬ ܕܗܘ ܫܠܝܡܘܢ ܒܪ ܕܘܝܕ ܡܠܟܐ ܕܐܝܣܪܝܠ *

* ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

1 * ܡܠܝܗܘܢ ܕܩܘܗܠܬ ܒܪ ܕܘܝܕ ܡܠܟܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. * ܗܒܠ ܗܒܠܝܢ. ܐܡܪ
2 ܩܘܗܠܬ ܗܒܠ ܗܒܠܝܢ. ܟܠ ܡܕܡ ܗܒܠܐ. * ܡܢܐ ܝܘܬܪܢܐ ܠܒܪܢܫܐ. ܒܟܠ 3
ܥܡܠܗ ܕܗܘ ܥܡܠ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. * ܕܪܐ ܐܙܠ ܘܕܪܐ ܐܬܐ. ܘܐܪܥܐ ܠܥܠܡ ܩܝܡܐ. 4
* ܕܢܚ ܫܡܫܐ. ܘܥܪܒ ܫܡܫܐ. ܘܠܐܬܪ ܕܕܢܚ ܗܘ ܐܦ. ܘܬܡܢ ܬܘܒ ܢܕܢܚ. 5
* ܐܙܠ ܠܬܝܡܢܐ. ܘܡܬܟܪܟ ܠܓܪܒܝܐ. ܡܬܟܪܟܐ ܡܬܟܪܟ ܘܐܙܠ ܪܘܚܐ. ܘܥܠ ܚܘܕܪܝܗ 6
ܬܐܒ ܪܘܚܐ. * ܟܠ ܢܚܠܐ ܪܕܝܢ ܠܝܡܐ. ܘܝܡܐ ܠܐ ܡܬܡܠܐ. ܠܐܬܪ ܕܪܕܝܢ ܢܚܠܐ. ܠܬܡܢ 7
ܗܢܘܢ ܬܝܒܝܢ ܠܡܐܙܠ. * ܟܠܗܘܢ ܡܠܐ ܠܐܝܢ. ܠܐ ܢܫܟܚ ܓܒܪܐ ܠܡܡܠܠܘ. 8
ܘܠܐ ܣܒܥܐ ܥܝܢܐ ܠܡܚܙܐ. ܘܠܐ ܡܬܡܠܝܐ ܐܕܢܐ ܠܡܫܡܥܘ. * ܡܐ ܕܗܘܐ. ܗܘ ܗܘܐ. ܘܡܐ 9
ܕܐܬܥܒܕ. ܗܘ ܡܬܥܒܕ. ܘܠܝܬ ܡܕܡ ܚܕܬ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. * ܟܠ ܕܢܡܠܠ 10
ܘܢܐܡܪ. ܚܙܝ ܗܢܐ ܚܕܬ ܗܘ. ܟܒܪ ܗܘܐ ܡܢ ܥܠܡܐ ܕܡܢ ܩܕܡܝܢ. * ܠܝܬ 11
ܕܘܟܪܢܐ ܠܩܕܡܝܐ. ܘܐܦ ܠܐܚܪܝܐ ܕܗܘܝܢ. ܠܝܬ ܠܗܘܢ ܕܘܟܪܢܐ: ܥܡ ܐܝܠܝܢ
ܕܗܘܝܢ ܠܐܚܪܬܐ. * ܐܢܐ ܩܘܗܠܬ ܗܘܝܬ ܡܠܟܐ ܥܠ ܐܝܣܪܝܠ. ܒܐܘܪܫܠܡ. 12
* ܘܝܗܒܬ ܠܒܝ ܠܡܒܥܐ ܘܠܡܬܒܩܝܘ ܒܚܟܡܬܐ. ܥܠ ܟܠ ܕܐܬܥܒܕ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. 13
ܥܢܝܢܐ ܒܝܫܐ ܝܗܒ ܡܪܝܐ ܠܒܢܝܢܫܐ. ܕܢܬܥܢܘܢ ܒܗ. * ܚܙܝܬ ܟܠ ܥܒܕܐ ܕܐܬܥܒܕ 14
ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. ܘܗܐ ܟܠ ܡܕܡ ܗܒܠܐ. ܘܬܘܙܝܥ ܪܘܚܐ.

LIBER
COHELETH,
Nempè Salomonis filii Davidis
Regis Iſrael.

CAPUT I.

Sermones Coheleth filii David Regis Jeruſalem. 1 Vanitas vanitatum, ait Coheleth: 2 vanitas vanitatum: omnia vanitas. Quod 3 emolumentum eſt homini ex omni labore quo laborat ſub ſole? Ætas præterit, & 4 ætas ſuccedit: terra autem in æternũ perſtat. Oritur ſol, & occidit ſol: & ad locum ubi oritur, 5 idem revertitur, ut inde rurſus oriatur: Pergit ad Auſtrum, & flectitur ad Aquilonem. 6 In orbem circumagitur permeátq; ventus, & ad circulos ſuos remeat ventus. Omnes 7 torrentes exonerant ſeſe in mare, attamen mare non impletur. Ad locum *enim* quò defluunt torrentes, eodem ipſi revertuntur, ut *iterum* fluant. Omnes ſermones fatigantur, 8 homo non ſaturabitur loquendo, neque ſaturatur oculus videndo, nec impletur auris audiendo. Quod fuit, ipſum eſt: & quod factũ 9 eſt, ipſum fit: nec eſt quicquam novum ſub ſole. Quicquid loquentes dixerimus, Vide, 10 hoc novum eſt, forte fuit à ſeculis quæ nos præceſſerunt. Non eſt antiquorum memoria, 11 neque poſterorum qui extant, ulla erit memoria apud eos qui poſtmodum futuri ſunt. Ego Coheleth fui rex ſuper Iſrael in Jeruſalem. 12 Et tradidi cor meum ad exquirendam & 13 contemplandam ſapientiam de omni re quæ facta eſt ſub ſole. Curam ærumnoſam dedit Dominus hominibus, ut occuparentur in ea. Perſpexi omne opus quod factum eſt ſub 14 ſole: & ecce omnia vanitas & perturbatio ſpiritûs.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بسم الله الخالق الرازق *

* كتاب الجامعة * اقوال الجامع ابن داوود *

* الفصل الاول *

*باطلة الاباطيل قال الجامع سليمان بن داوود * باطلة الاباطيل * كافة الاشياء باطلة * 2
* ما الفضل للانسان في جميع تعبه الذي يتعب فيه تحت الشمس * جيل يمضي 3 4
وجيل يجي * والارض الي الابد هي * ويشرق الشمس وتغيب الشمس وينجذب الي 5
موضعها * اذا اشرقت هناك * تذهب الي القبلة وتدور الي الشمال * تدور جايلة فتمضي 6
الرياح * والي دورانها تعود الرياح * الاودية كلها تذهب الي البحر والبحر ما يحصل ممتليا * 7
الي المكان الذي تمضي اليه الاودية اليه تعود نفسها * فتذهب الاقوال كلها منقطعة * 8
ما يستطيع الانسان الا يتكلم * والعين ما تشبع من النظر * والاذن ما تمتلي من
السماع * ما الامر الكاين المكون نفسه * وما هو الشي الصاير المصنوع نفسه * وكل ليس 9
يحدث تحت الشمس * لم يقدر احد ان يتكلم او يقول ابصر هذا الشي فانه جديد 10
هو * وقد صار فيما سلف في الدهور الصايرة قبلنا * ولن يوجد ذكرا للدهور الاولة 11
ولا للصايرة اخيرا * يعني للمكونة ما يكون لها ذكرا بعد الحكومة اخيرا *
* انا الجامع صرت ملكا على اسراييل باورشليم * وبذلت قلبي ان يبتغي ويتامل 12 13
بحكمة على جميع الكاينات تحت السماء * فان الله اعطا ابناء الناس تعلبا ليتشاغلوا
به * وعرفت في جميع الصنايع المصنوعة تحت الشمس * فاذا هي كلها باطلة واختيار 14
الروح *

IN NOMINE DEI
Creatoris, Largitoris.
LIBER
COLLECTANEORUM,
Hoc eſt,
SENTENTIÆ Collectoris,
filii David.

CAP. I.

Vanitas vaniſſima, inquit Collector Solomon filius David, vanitas vaniſſima: res omnes vanæ ſunt. 2 *Quid reſidui habet homo ex toto labore ſuo, quo ſub ſole contendit?* 3 *Ætas præterit, ætáſque ſuccedit: & terra æternùm perſtat.* 4 *Oritúrque ſol, & occidit ſol, ſeſeque recipit in locum ſuum: & cùm illic ortus eſt,* 5 *Pergit ad Meridiem, tum flectitur ad Septentrionem. In gyrum errantes abeunt venti, & ad revolutionem ſuam redeunt venti.* 6 *Torrentes omnes in mare ſe recipiunt, mare tamen non invenitur plenum: ad locum in quem ſe recipiunt torrentes, ad eundem ipſimet recurrunt.* 7 *Et verò ſermones omnes deficientes pereunt, non poteſt homo quin loquatur, & oculus non ſatiatur videndo, neque auris impletur audiendo.* 8 *Quænam eſt res præſens? eadem quæ extitit. Et quænam eſt res quæ fit? eadem quæ facta fuit, nihil eſt ſub ſole novum.* 9 *Nemo poteſt pronuntiare aut dicere, Vide hoc, quia novum eſt: nam fortaſſe fuit olim ſeculis quæ nos præceſſerunt.* 10 *Neque enim reperitur memoria ſeculorum præcedentium, neque poſthac ſuccedentium. Hoc eſt, hujus creaturæ non erit memoria poſt judicium in fine.* 11 *Ego Collector fui rex ſuper Iſrael Jeroſolymis.* 12 *Et prodidi cor meum ut expeteret & contemplaretur ſapienter quæcunque fiunt ſub cœlo: (Deus enim dedit filiis hominum negotium perplexum quo ſe occupent.)* 13 *Et cognovi omnia opera quæ fiunt ſub ſole, & ecce omnia ſunt inania, & appetitus ſpontaneus animi.* 14

.numerari poterit non defectus & :dirigi poterit non Perversum
מעות לא־יוכל לתקן וחסרון לא־יוכל להמנות׃ 15
,feci magnificare ecce Ego : dicendo ,meo corde cum ego ſum Locutus
16 דברתי אני עם־לבי לאמר אני הנה הגדלתי
ſuper meas facies ad fuit qui omnem ſuper ſapientiam addidi &
והוספתי חכמה על כל־אשר־היה לפני על־
dedi Et .ſcientiæ & ,ſapientiæ *multum* vidit meum cor & : Jeruſalaim
17 ירושלם ולבי ראה הרבה חכמה ודעת׃ ואתנה
: ſtultitiam & ,inſanias , ſcientiam & ,ſapientiam ſciendum ad meum cor
לבי לדעת חכמה ודעת הוללות ושכלות
multitudine in Quia .ſpiritus *confractio ipſum* hoc etiam quod agnovi
18 ידעתי שגם־זה הוא רעיון רוח׃ כי ברב
.dolorem *addet* ſcientiam *addet* & :ira multa ſapientiæ
חכמה רב־כעס ויוסיף דעת יוסיף מכאוב׃

CAP. II. ב

vide & , lætitia in te *tentabo* nunc Vade:meo corde in *ego* Dixi
1 אמרתי אני בלבי לכה־נא אנסכה בשמחה וראה
: *inſane* , dixi Riſui .vanitas hoc etiam ecce & : bonum *in*
2 בטוב והנה גם־הוא הבל׃ לשחוק אמרתי מהולל
vinū in *trahendū ad* meo corde in Inveſtigavi ? *faciens hoc* quid , lætitiæ &
3 ולשמחה מה־זה עשה׃ תרתי בלבי למשוך ביין
,ſtultitiā *in apprehendendū ad* &,ſapientia in *ducens* meum cor & :meā carnem
את־בשרי ולבי נהג בחכמה ולאחז בסכלות
ſub faciant quod , Adam filiorum bonum *hoc ubi* viderem donec
עד אשר־אראה אי־זה טוב לבני האדם אשר יעשו תחת
mihi ædificavi:mea opera Magnificavi.eorū vitæ dierum numero , cœlis
4 השמים מספר ימי חייהם׃ הגדלתי מעשי בניתי לי
: paradiſos & ,hortos mihi Feci .vineas mihi plantavi , domos
5 בתים נטעתי לי כרמים׃ עשיתי לי גנות ופרדסים
,aquarum piſcinas mihi Feci .fructus omnis *lignum* eis in plantavi &
6 ונטעתי בהם עץ כל־פרי׃ עשיתי לי ברכות מים
, ſervos Acquiſivi .*ligna* germinantem ſylvam illis *ab irrigandum ad*
7 להשקות מהם יער צומח עצים׃ קניתי עבדים
multa pecoris & ,bovis acquiſitio etiam:mihi *fuit* domus filii & ,ancillas &
ושפחות ובני־בית היה לי גם מקנה בקר וצאן הרבה
Coacervavi .Jeruſalaim in *meas facies ad* fuerunt qui omnib⁹ præ mihi *fuit*
8 היה לי מכל שהיו לפני בירושלם׃ כנסתי
mihi feci : provinciarum & ,regum *peculium* &,aurum & argentū etiā mihi
לי גם־כסף וזהב וסגלת מלכים והמדינות עשיתי לי
.*captivas & ,captivam ,hominis* filiorum delicias & ,*cantatrices & ,cantores*
שרים ושרות ותענגות בני האדם שדה ושדות׃
.Jeruſalai in *meas facies ad fuit qui omni* præ ſum auct⁹ &,ſum magnificat⁹ &
9 וגדלתי והוספתי מכל שהיה לפני בירושלם
non mei oculi poſtulaverūt quæ omnia Et .*mihi* ſtetit mea ſapientia inſup
10 אף חכמתי עמדה לי׃ וכל אשר שאלו עיני לא
meū cor nam : lætitia omni ab meum cor prohibui nec : eis *ab ſubſtraxi*
אצלתי מהם לא־מנעתי את־לבי מכל־שמחה כי־לבי
.meo labore omni de mea pars fuit hoc &,meo labore omni de eſt lætatum
שמח מכל־עמלי וזה־היה חלקי מכל־עמלי׃

VERS. VULG. LAT.

15 Perverſi difficilè corriguntur, & ſtultorū infinitus eſt numerus. 16 Locutus ſum in corde meo, dicens; Ecce magn⁹ effect⁹ſum, & præceſſi omnes ſapientiâ, qui fuerūt ante me in Jeruſalē: & mens mea contemplata eſt 17 multa ſapienter, & didici. Dedíque cor meū ut ſcirē prudentiam atque doctrinā, errorésq; & ſtultitiā: & agnovi quod in his quoque eſſet labor, & afflictio 18 ſpirit⁹: Eò quod in multa ſapientia, multa ſit indignatio: & qui addit ſcientiā, addit & laborē.

CAP. II.

1 Dixi ego in corde meo; Vadam, & affluā deliciis, & fruar bonis. Et vidi quòd hoc quoq; 2 eſſet vanitas. Riſū reputavi errorē: & gaudio dixi; Quid fruſtrà deciperis? 3 Cogitavi in corde meo abſtrahere à vino carnem meā, ut animū meū transferrē ad ſapientiā, devitarémq; ſtultitiam, donec viderem quid eſſet utile filiis hominum : quo facto opus eſt ſub Sole numero 4 dierum vitæ ſuæ. Magnificavi opera mea, ædificavi mihi do- 5 mos, & plantavi vineas, Feci hortos, & pomaria, & conſevi 6 ea cuncti generis arborib⁹, Et extruxi mihi piſcinas aquarū, ut irrigarē ſylvā lignorū ger- 7 minantiū, Poſſedi ſervos & ancillas, multámq; familiā habui, armenta quoque, & magnos ovium greges, ultra omnes qui fuerunt ante me in Jeruſalem: 8 Coacervavi mihi argentum, & aurū, & ſubſtantias regum, ac provinciarū : feci mihi cantores, & cantatrices, & delicias filiorū hominū, ſcyphos & urceos in miniſterio ad vina fun- 9 denda: Et ſupergreſſ⁹ſum opibus omnes, qui ante me fuerūt in Jeruſalem: ſapientia quoque 10 perſeveravit mecū. Et omnia, quæ deſideraverunt oculi mei, non negavi eis : nec prohibui cor meum, quin omni voluptate frueretur, & oblectaret ſe in his, quæ præparaveram : & hanc ratus ſum partem meam, ſi uterer labore meo.

Verſio GRÆC. LXX. Interp. Cum Tranſ. LAT.

15 † Διεστραμμένον οὐ δυνήσεται (ι) ἐπικοσμηθῆναι, † καὶ ὑστέρημα οὐ δυνήσεται (κ) ἀριθμηθῆναι. 16 † Ἐλάλησα ἐγὼ (λ) ἐν καρδίᾳ μου, τοῦ λέγειν, † (μ) Ἰδοὺ ἐγὼ ἐμεγαλύνθην, † καὶ προσέθηκα σοφίαν ἐπὶ πᾶσιν † οἳ ἐγένοντο ἔμπροσθέν 17 μου ἐν Ἱερουσαλήμ. † (ν) Καὶ ἔδωκα καρδίαν μου τοῦ γνῶναι σοφίαν καὶ γνῶσιν. † καὶ καρδία μου εἶδεν πολλά, σοφίαν καὶ γνῶσιν, † παραβολὰς καὶ ἐπιστήμην. (ξ) ἔγνων ἐγὼ † ὅτι καί γε τοῦτό 18 ἐστι προαίρεσις πνεύματος. † Ὅτι ἐν πλήθει σοφίας πλῆθος γνώσεως, † καὶ ὁ (ο) προστιθεὶς γνῶσιν, προσθήσει ἄλγημα.

MS.A. (ι) τοῦ κοσμηθῆναι, (κ) τοῦ ἀριθμηθῆναι. (λ) ἐν τῇ καρδίᾳ (μ) Ἐγὼ ἰδοὺ (ν) Καὶ καρδία μου ἴδεν πολλά, σοφίαν καὶ γνῶσιν. καὶ ἔδωκα καρδίαν μου τοῦ γνῶναι σοφίαν καὶ γνῶσιν, παραβολὰς (ξ) ἔγνων ὅτι καί γε (ο) * προστιθεὶς γνῶσιν,

ΚΕΦ. β'.

1 † Εἶπον ἐγὼ ἐν καρδίᾳ μου, Δεῦρο δὴ πειράσω σε ἐν εὐφροσύνῃ, καὶ ἴδε ἐν ἀγαθῷ· † καὶ ἰδοὺ 2 καί γε τοῦτο ματαιότης. † Τῷ γέλωτι εἶπα Περιφοράν, † καὶ τῇ εὐφροσύνῃ, Τί τοῦτο ποιεῖς; 3 † Καὶ κατεσκεψάμην εἰ ἡ καρδία μου † ἑλκύσει ὡς οἶνον τὴν σάρκα μου, † καὶ καρδία μου ὡδήγησε ἐν σοφίᾳ, † καὶ τοῦ κρατῆσαι (α) ἐπ' εὐφροσύνην, † ἕως οὗ ἴδω ποῖον τὸ ἀγαθὸν τοῖς υἱοῖς (β) τῶν ἀνθρώπων, ὃ ποιήσουσιν ὑπὸ τὸν ἥλιον, 4 † ἀριθμὸν ἡμερῶν ζωῆς αὐτῶν. † Ἐμεγάλυνα ποίημά μου, † ᾠκοδόμησά μοι οἴκους, † ἐφύτευσά 5 μοι ἀμπελῶνας, † Ἐποίησά μοι κήπους καὶ παραδείσους, † καὶ ἐφύτευσα ἐν αὐτοῖς ξύλον πᾶν 6 καρποῦ. † Ἐποίησά μοι κολυμβήθρας ὑδάτων † τοῦ ποτίσαι ἀπ' αὐτῶν δρυμὸν βλαστῶντα ξύ- 7 λα. † Ἐκτησάμην δούλους καὶ παιδίσκας, † καὶ οἰκογενεῖς ἐγένοντό μοι, † καί γε κτῆσις βουκολίου καὶ ποιμνίου πολλὴ ἐγένετό μοι † ὑπὲρ πάντας τοὺς γενομένους ἔμπροσθέν μου ἐν Ἱερουσαλήμ. 8 † Συνήγαγόν μοι καί γε ἀργύριον καί γε χρυσίον, † καὶ περιουσιασμοὺς βασιλέων καὶ τῶν χωρῶν. † ἐποίησά μοι ᾄδοντας καὶ ᾀδούσας, † καὶ ἐντρυφήματα υἱῶν (γ) ἀνθρώπων, † (δ) οἰνοχόον καὶ 9 οἰνοχόας. † Καὶ ἐμεγαλύνθην καὶ προσέθηκα † παρὰ πάντας τοὺς (ε) γενομένους ἔμπροσθέν μου ἐν Ἱερουσαλήμ, † καί γε σοφία μου ἐστάθη μοι. 10 † Καὶ πᾶν ὃ ᾔτησαν οἱ ὀφθαλμοί μου, (ζ) οὐκ ἀφεῖλον ἀπ' αὐτῶν· † οὐκ ἀπεκώλυσα τὴν καρδίαν μου ἀπὸ πάσης (η) εὐφροσύνης μου, † ὅτι καρδία μου εὐφράνθη ἐν παντὶ μόχθῳ μου· † καὶ τοῦτο ἐγένετο μερίς μου ἀπὸ παντὸς μόχθου μου. MS.A. (α) ἐπ' εὐφροσύνῃ, (β) τοῦ ἀνθρώπου, (γ) τοῦ ἀνθρώπου, (δ) οἰνοχόους καὶ (ε) γενομένους ἔνπροσθέν μου (ζ) οὐχ ὑφεῖλον (η) εὐφροσύνης, ὅτι καρδία

15 Perverſum non poterit adornari : & (ω) imminutio non poterit numerari. 16 Loquutus ſum ego (aa) in corde meo, dicens: Ecce ego magnificatus ſum, et (bb) adjeci ſapientiā ſuper omnes, qui fuerunt ante me in Hieruſalem: (cc) 17 Et dedi cor meum, ut noſcerem ſapientiam, et ſcientiam. Et cor meum vidit multa, ſapientiam, & ſcientiam, (dd) parabolas, & ſcientiam. Cognovi ego, quia (ee) et hoc eſt præſumptio ſpiritūs. 18 Quia in multitudine ſapientiæ multitudo (ff) cognitionis: & qui apponit ſcientiam, apponit (gg) dolorē.

CAP. II.

1 Dixi ego in corde meo; Veni nūc, tentabo te in lætitia, & vide in bono: & ecce etiam hoc (a) vanitas. 2 Riſui dixi (b) Circumlationem, et jucunditati, Quid (c) hoc facis? 3 (d) Et conſideravi, ſi cor meum trahet tanquam vinum carnem meā: & cor meū (e) deduxit in ſapientia, & (f) ut obtinerē lætitiam; donec viderē, quid ſit (g) bonum filiis hominum, quod facient ſub Sole, numero dierū vitæ ſuæ. 4 (h) Magnificavi opus meum, ædificavi mihi domos, plantavi mihi vineas, 5 Feci mihi hortos, & pomaria, & plantavi in illis lignum (i) omne fructūs. 6 Feci mihi (k) piſcinas aquarū ad irrigandum ex eis ſaltū germinantem ligna. 7 Mercatus ſum ſervos, & ancillas : et vernaculi fuerunt mihi : & quidem poſſeſſio armenti, & oviū, multa fuit mihi ſuper omnes qui fuerunt ante me in Hieruſalem. 8 (l) Congregavi mihi etiam argentum, etiam aurū, & (m) opes regum, et provinciarum. Feci mihi cantores, et cantatrices, et (n) delicias filiorū hominū, (o) miniſtrū vini et vinī miniſtras. 9 Et (p) magnificatus ſum, et adjeci (q) ſuper omnes, qui fuerunt ab ante me in Hieruſalem : & quidem ſapientia mea (r) adſtitit mihi. 10 Et omne, quod (ſ) poſtulaverunt oculi mei ; non abſtuli ab eis. Non prohibui cor meum ab omni lætitia mea : quia cor meum lætatum eſt in (t) omni labore meo. Et hoc fuit portio mea ex omni labore meo.

תרגום TARGUM.

15 גבר די סריכן אורחתיה בעלמא הדין ומית בהון ולא הדר בתיובתא לית ליה רשו
לאתקנא בתר מותיה וגבר חסר מן אוריתא ופקודיא בחיוהי בתר מותיה לית ליה רשו
16 לאתמנאה עם צדיקיא בגנתא דעדן׃ מללית אנא בהרהור לבי למימר אנא הא אסגיתי
ואוספית חוכמתא על כל חכימיא די הוו קדמי בירושלם ולבי חזא סגיאות חוכמתא
17 ומנדעא׃ ויהבית לבבי למדע חוכמתא וחולחלתא דמלכותא ומנדעא וסוכלתנו בחנית
18 למדע דאף דין הוא תבירות רוחא לגבר דמשתדל למשכח יתהון׃ ארום גבר דמסגי
חכמתא כד ייחוב ולא יתב בתיובתא מסגי רגיז קדם יי ודמוסיף מנדעא וימות
בטליותיה מוסיף כאיב לבא לקריבוי׃

ב

1 אמרית אנא בלבי איזל כען הכא ואבחין בחדוא ואחזי בטוב עלמא הדין וכדו מטא עלי
2 צערא וסגופא אמרית במימריה הא אף דין הוא הבלו׃ לחוכא אמרית בעדן צערא
3 ליצנותא הוא ולחדוא מה הנאה אית לגבר די עבדנה׃ אללית בלבי לנגדא בבית
משתיא דחמרא ית בסרי ולבי דבר בחוכמתא ולאחדא בשטות עולמיא עד די בחנית
וחזית איזין מנהון טב לבני אנשא דיעבדון עד דאנון קימין בעלמא הדין תחות שמיא
4 מנין יומי חייהון׃ אסגיתי עובדין טבין דירושלם בניתי לי בתין בית מוקדשא לכפרא
על ישראל ובית מקירת מלכא ואדרון ואולם ובית דינא אבנין פסילן דתמן יתבין
חכימיא ודינין ית דינא עבדית כורסיא דשן דפילא למותב מלכותא אנציבית לי ביבנה
כל קבל כרמין דענבא למשתי חמרא אנא ורבני סנהדרין ואף לנסכא חמר חדת ועתיק
5 על מדבחא׃ עבדית לי גנת שקין ופרדסין ודרעית תמן כל מיני עסבין מנהון לצרוך
מיכלא ומנהון לצרוך משתיא ומנהון לצרוך אסותא כל מיני עסבי בוסמין נציבית בהון
אילני סרק וכל אילני בוסמין דאיתיאו לותי טלני ומזיקי מן הנדקא וכל אילן דעבד פרין
6 ותחומיה מן שור קרתא דבירושלם על כיף מיא דשילוח׃ בחנית בית משקיא דמיא
אידין חזי לאשקאה אילניא ועסבין ועבדית לי פרקטנין דמיא מנהון אפילו חורשא די
7 מרבי קיסין לאשקאה׃ קניתי עבדין ואמהן מבניהון דחם ושאר עממין נוכראין ונדברין
די ממנן על מזונא דביתי הוו לי לפרנסא יתי וית אנשי ביתי תרי עסר ירחי שתא וחד
לפרנסותי בירחא דעבורא אף קנין תורין ועאן הוה לי יתיר מכל דריא די הוו קדמי
8 בירושלם׃ כנשית לי אף אוצרין כסף ודהב דאפילו מתקלין ומואזנין דקשוט עבדית
מן דהב טב וסגולי מלכין ופלכין אתיהיבו לי לכרגא עבדית בבית מוקדשא זיני זמרא
לזמרא בהון ליואי על קורבניא וקתרוסין ואבובין לזמרא בהון זמריא וזמריתא בבית
משתיא דחמרא ותפנוקי בני אנשא ודימסיא ובי בנין מרזבין דשדין מיא פשורי ומרזבין
9 דשדין מיא חמימי׃ ואסגיתי טובא ואוספית עתרא מן כל דריא די הוו קדמי בירושלם
10 ברם חכמתי קמת לי והיא סיעת יתי׃ וכל מה דבעו מני רבני סנהדרין לדכאה ולסאבא
לזכאה ולחיבא לא כליתי מנהון פשר מליא ולא מנעית ית לבבי מן כל חדות אוריתא
ארום הוה לי פנאי די לבבי בדח בחכמתא די אתיהיבת לי מן קדם יי מן כל אנשא וחדית
בה יתיר מכל טרחותי ודין הוה חולקי טב דאזדמן לי לקבלא עלוהי אגר שלים לעלמא דאתי מכל טרחותי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

15 Vir cujus viæ *perverſæ* ſunt in hoc ſeculo, & moritur in eis, nec revertitur ad pœnitentiam, non eſt illi facultas corrigendi ſe poſt mortem ſuam: & vir deficiens *à* Lege & præceptis in vita ſua, poſt mortem ſuam non eſt illi facultas ut numeretur cū juſtis in paradiſo. 16 Locut⁹ ſum ego in cogitatione cordis mei, dicendo: Ego *ecce* auxi & addidi ſapientiam ſuper omnes ſapientes qui fuerunt ante me in Jeruſalem, & cor meum vidit magnitudinem ſapientiæ & ſcientiæ. 17 Et dedi cor meum ut cognoſcerē ſapientiam & agitationē regni, & ſcientiam & intelligentiam probavi ad ſciendum: quin etiam hoc ipſum fractio ſpirit⁹ viro qui ſolicitus eſt ad inveniendum ea. 18 Namq; vir qui multiplicat ſapientiam, quando peccat, & non convertitur ad pœnitentiam, multiplicat indignationē à Dño: & qui addit ſcientiam & moritur in pueritia ſua, addit dolorē cordis propinquis ſuis.

CAP. II.

1 Dixi ego in corde meo: Veni nunc huc & tentabo lætitiam, & videbo bona ſeculi huj⁹: & cumprimum advenit ſup me anguſtia & afflictio, dixi in dicto *ejus*, Ecce etiā hoc vanitas. 2 De riſu dixi in tempore anguſtiæ meæ, Deriſio eſt ipſe: & gaudio; Quid emolumenti eſt viro qui fecerit illud? 3 Exploravi in corde meo ad protrahendum in domo *convivii* vini carnem meam, & cor meum duxit [*me*] in ſapientia, ut apprehenderē ſtultitiā juvenum, quoad tentarē & viderem quale ex illis bonum eſſet filiis hominis ut faciant quandiu ipſi manēt in hoc ſeculo, ſub *cœlo*, numero dierum vitæ ſuæ. 4 Multiplicavi opera bona in Jeruſalem, ædificavi mihi domos; *domū ſanctuarii ad expiandum peccata Iſrael, & domum refrigerii regis, & conclave, & porticum, & domum judicii de lapidibus dolatis, ubi ſedent ſapientes & exercent judicaturam; feci ſolium ex ebore pro ſeſſione regia*: plantavi mihi *in Jabne è regione* vineas *uvarum ut biberemus vinum, ego & magiſtri Zzanhedrin, atq; ad libandum vinum novum & vetus ſuper altare*. 5 Feci mihi hortos irriguos & paradiſos: & ſeminavi ibi omnia genera herbarum; *partim ad uſum cibi, & partim ad uſum potus, & partim ad uſum medicinæ: omnis generis herbas aromaticas plantavi in illis, arbores ſteriles & omnes arbores aromatum, quas attulerunt mihi lemures ac ſpiritus noxii ex India, & omnem arborem fructiferam: fuitq; terminus ejus à muro urbis, qui eſt in Jeruſalem, ad ripam aquarum Siloahh.* 6 *Exploravi conceptaculum aquarum, quali opus eſt ad irrigandas arbores & herbas*: & feci mihi piſcinas aquarum ad irrigandum ex eis etiā ſylvā quæ alit ligna. 7 Emi ſervos & ancillas *de filiis Cham, & reliquis alienigenis*; & diſpenſatores qui præpoſiti eſſent victui dom⁹ meæ, fuerunt mihi ad alendum me & homines domus meæ *duodecim menſibus anni, præterea unus, qui id muneris haberet in menſe emboliſmico*: etiā poſſeſſio boum & ovium fuit mihi, pluſquàm omnib⁹ habitatoribus qui fuerunt ante me in Jeruſalē. 8 Congregavi mihi etiā theſauros argenti & auri, *ut vel ipſa pondera & lances juſtitiæ facerem ex auro bono*; & theſauri regum & regionum dati ſunt mihi in tributo: feci in domo ſanctuarii inſtrumēta muſices, *ut pſallerent iis Levitæ inter ſacrificandum, & citharas & tibias* ut canerent in illis cantores & cantatrices *in domo convivii vini*, & delicias filiorum hominis; *thermas etiam & balnea* [*habentia*] ſiphones qui effunderent aquas tepidas, & ſiphones qui effunderent aquas calidas. 9 Et multiplicavi bonum, & auxi divitias præ omnibus habitatorib⁹ qui fuerunt ante me in Jeruſalē: verùm ſapientia mea manebat mihi, & ipſa auxiliabatur mihi. 10 Et in omnibus quæ quæſierunt ex me magiſtri Zzanhedrin, *ad pronunciandum de mundo vel immundo, ad juſtificandum vel ad condemnandum*, non inhibui ab eis ſolutionem ſermonum, & non prohibui cor meum ab omni lætitia Legis, quoniam fuit mihi inclinatio cordis mei exultans in ſapientia quæ data erat mihi à Dño, præ *omni homine*, & lætatus ſum in ea ex omni labore meo: & hæc ipſa fuit pars mea bona, quæ ſtatuta fuit mihi ad accipiendū ſup eā præmium perfectum in ſeculo venturo ex omni labore meo.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

15 16 * ܡܥܩܡܐ ܠܐ ܡܫܟܚ ܠܡܬܩܢܘ. ܘܚܣܝܪܐ ܠܐ ܡܫܟܚ ܠܡܬܡܢܝܘ. * ܡܠܠܬ ܐܢܐ ܥܡ
ܠܒܝ. ܘܐܡܪܬ. ܐܢܐ ܗܐ ܪܒܝܬ. ܘܐܘܣܦܬ ܚܟܡܬܐ. ܥܠ ܟܠ ܕܗܘܘ ܩܕܡܝ ܒܐܘܪܫܠܡ.
17 ܘܠܒܝ ܚܙܐ ܣܘܓܐܐ ܕܚܟܡܬܐ ܘܝܕܥܬܐ. * ܘܝܗܒܬ ܠܒܝ ܠܡܕܥ ܚܟܡܬܐ ܘܝܕܥܬܐ.
18 ܘܡܬܠܐ ܘܡܣܬܟܠܢܘܬܐ. ܘܝܕܥܬ ܕܐܦ ܗܢܐ. ܬܘܪܦܐ ܗܘ ܕܪܘܚܐ. * ܡܛܠ
ܕܥܡ ܣܘܓܐܐ ܕܚܟܡܬܐ. ܣܘܓܐܐ ܕܪܘܓܙܐ. ܘܕܡܘܣܦ ܝܕܥܬܐ. ܡܘܣܦ ܟܐܒܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܒ *

1 * ܐܡܪܬ ܐܢܐ ܒܠܒܝ: ܬܐ ܐܢܣܝܟ ܒܚܕܘܬܐ. ܘܚܙܝ ܛܒܬܐ. ܘܗܐ ܐܦ ܗܢܐ ܗܒܠܐ.
2 3 * ܠܓܘܚܟܐ ܐܡܪܬ. ܡܢܐ ܗܘܝܐ. ܘܠܚܕܘܬܐ ܡܢܐ ܥܒܕܐ. * ܙܢܝܬ ܒܠܒܝ ܠܡܬܒܣܡܘ
ܒܚܡܪܐ ܒܣܪܝ. ܘܗܦܟܬ ܐܢܐ ܕܐܪܦܐ ܠܗ ܠܒܝ. ܘܠܒܝ ܕܒܪ ܒܚܟܡܬܐ. ܘܐܚܝܕ
ܒܣܘܟܠܢܘܬܐ. ܥܕܡܐ ܕܐܚܙܐ ܐܝܢܐ ܛܒ ܠܒܢܝܢܫܐ ܕܢܥܒܕܘܢ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ: ܡܢܝܢ
4 5 ܝܘܡܝ ܚܝܝܗܘܢ. * ܐܣܓܝܬ ܠܝ ܥܒܕܐ. ܒܢܝܬ ܠܝ ܒܬܐ. ܢܨܒܬ ܠܝ ܟܪܡܐ. * ܥܒܕܬ
6 ܠܝ ܓܢܐ ܘܦܪܕܝܣܐ. ܘܢܨܒܬ ܒܗܘܢ ܐܝܠܢܐ ܕܟܠ ܦܐܪܐ. * ܥܒܕܬ ܠܝ ܡܥܝܢܬܐ
7 ܕܡܝܐ. ܠܡܫܩܝܘ ܡܢܗܘܢ ܥܒܐ ܕܡܦܪܥ ܐܝܠܢܐ. * ܩܢܝܬ ܠܝ ܥܒܕܐ ܘܐܡܗܬܐ.
ܘܒܢܝ ܒܝܬܐ. ܗܘܘ ܠܝ ܣܓܝܐܐ. ܘܐܦ ܩܢܝܢܐ ܕܬܘܪܐ ܘܕܥܢܐ. ܣܓܝ ܗܘܐ ܠܝ. ܡܢ ܟܠ
8 ܕܗܘܘ ܩܕܡܝ ܒܐܘܪܫܠܡ. * ܟܢܫܬ ܠܝ ܐܦ ܟܣܦܐ ܘܕܗܒܐ. ܘܩܢܝܢܐ ܕܡܠܟܐ
ܘܕܡܕܝܢܬܐ. ܥܒܕܬ ܠܝ ܡܙܡܪܢܐ ܘܡܙܡܪܢܝܬܐ. ܘܡܦܢܩܢܘܬܐ ܒܒܢܝܢܫܐ. ܥܒܕܬ
9 ܠܝ ܡܫܩܝܢܐ ܘܡܫܩܝܢܝܬܐ. * ܘܪܒܝܬ ܘܐܘܣܦܬ. ܝܬܝܪ ܡܢ ܟܠ ܕܗܘܘ ܩܕܡܝ ܒܐܘܪܫܠܡ. ܘܐܦ
10 ܚܟܡܬܝ ܩܡܬ ܠܝ. * ܘܟܠ ܕܫܐܠ ܥܝܢܝ. ܠܐ ܟܠܝܬ ܡܢܗܘܢ. ܘܠܐ ܟܠܝܬ ܠܒܝ. ܡܢ
ܟܠ ܚܕܘܐ. ܡܛܠ ܕܠܒܝ ܚܕܐ ܒܟܠ ܥܡܠܝ. ܘܗܕܐ ܗܘܬ ܡܢܬܝ. ܡܢ ܟܠܗ ܥܡܠܝ.

Rebellis dirigi nequit, & imperfectum nequit 15
numerari. Locutus ſum ego cum corde meo, 16
dicens, En ego magnificatus ſum, & comparavi mihi ſapientiã ultra omnes qui me præceſſerunt in Jeruſalem, viditq; cor meum multitudinẽ ſapientiæ ac ſcientiæ. Et adjeci men- 17
tem meam ad cognoſcendã ſapientiam & ſcientiam, & proverbia, atque prudentiam: & intellexi hoc etiam eſſe perturbationem ſpiritûs. Nam cum multitudine ſapientiæ *con-* 18
juncta eſt multitudo indignationis: & qui comparat *ſibi* ſcientiam, comparat dolorem.

CAP. II.

DIxi ego cordi meo, Veni ut tentem te gau- 1
dio, & experire bonum: at ecce, hoc etiam
vanitas. Riſui dixi, Quæ utilitas? & gaudio, 2
Quid agis? Cogitavi mecum ipſe exhilarare 3
vino carnem meam: & verti me ad remittendum cor meum, (interim meditante corde meo ſapientiam, & hærente prudentiæ) donec viderem quid ſit melius hominibus facere ſub ſole, numero dierum vitæ ſuæ. Mul- 4
tiplicavi mihi opera, ædificavi mihi domos,
plantavi mihi vineas. Feci mihi hortos & 5
viridaria, & plantavi in eis arbores omnigeni fructûs. Feci mihi piſcinas aquarum, 6
ut irrigarem ex eis ſylvam germinantem, atq;
arbores. Poſſedi mihi ſervos & ancillas, & 7
domeſticos habui permultos: armenta quoq; boum ac pecudum plura mihi fuêre, quàm omnibus qui me præceſſerunt in Jeruſalem.
Congeſſi etiam mihi argentum & aurum, & 8
opes regum ac urbium. Feci mihi cantores & cantatrices, & delitias in filiis hominum. Feci mihi pincernas & propinatrices. Et magni- 9
ficatus ſum & crevi plus omnib⁹ qui ante me fuerunt in Jeruſalem: quin & ſapientia mea
perſeveravit. Quicquid etiam expetiverunt 10
oculi mei non denegavi eis, nec prohibui cor meum ab ulla voluptate; nam cor meum lætatum eſt in cunctis laboribus meis: atque hæc fuit ſors mea ex omni meo labore.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

15 16 * فالمعوج ما يمكن أن يزين * والنقص ما يمكن أن يحصى * أنا تكلمت في قلبي لأقول *
هاأنذا قد عظم شأني أكثر من جميع الذين كانوا تقدموني بأورشليم * وازددت حكمة في كل
17 شيء أكثر من الذين تقدموني بأورشليم * وعرف قلبي حكمة جزيلة وعلما كثيرا * وسلمت
قلبي ليتعلم الحكمة والعلم * وعرفت الأمثال الواعظة والصناعة * مع أن هذا العمري هو اختيار
18 الروح * لأن في تكاثر الحكمة تكاثر العلم * ومن يزداد علما يزداد وجعا *

* الفصل الثاني *

1 * أنا قلت في قلبي هلم حتى أختبرك في السرور وأبصرك في الحظ الصالح * وإذا هذا
2 3 باطل * قلت للضحك ما سبب نهوضك * وللسرور لم صنعت هذا * وتأملت قلبي أن
كان يجتذب بشري كاجتذاب الخمر * فأرشدني قلبي الي الحكمة والي مسك السرور بها * الي أن
حصلت أعرف ما هو الشيء الصالح عند أبناء الناس الذي يعملونه تحت الشمس عدد
4 5 أيام حياتهم * فعظمت صناعتي * وابتنيت لي منازل * نصبت لي كروما * صنعت لي بساتين
6 وجنان * وغرست فيها شجرا مثمرا من كل نوع * عملت لي برك أمياه لأصنع بها غيضة
7 أشجار الغروس * اقتنيت عبيدا وجواري * وصاروا أبناء جنس داريه * وصارت لي قنية
8 قطعان بقر وغنم كثير * أكثر من جميع الذين كانوا تقدموني بأورشليم * جمعت لي مع
هذا فضة وذهبا وطرايف الملوك والبلدان * اصطنعت لي مغنين ومغنيات في النعيم مع
9 أبناء الناس * وسقاة وساقيات * فعظم شأني وازداد حالي أكثر من الذين سلف تقدمهم
10 أيضا بأورشليم أجمعين * ومع هذا ثبتت حكمتي عندي * وسائر ما طلبته عيناي
ما حجبت منه * وما منعت قلبي من كافة السرور * لأن قلبي فرح بكل تعبي * وصار هذا
حظي من جميع تعبي *

Etenim contortum non poteſt reconcin- 15
nari, & defectus non poteſt numerari.
Locutus ego ſum in corde meo ut dice- 16
rem, Ecce magnificata eſt gloria mea pluſquam omnium qui me præceſſerant in Jeruſalem, & ſapientiam in omni re majorem ſum adeptus præ omnibus qui me præceſſerunt in Jeruſalem, ſcivitque cor meum ſapientiam plurimam, & ſcientiam copioſiſſimam. Dedi etiam 17
cor meum ut addiſceret ſapientiam & ſcientiam, & didici proverbia cohortatoria & artem; licèt hoc quidem ſit libera ſpiritûs voluntas. Nam creſcen- 18
te ſapientiâ, creſcit ſcientia: & qui ſcientiam acquirit, dolorem acquirit.

CAP. II.

DIxi ego mecum ipſe, Age, experiar 1
te gaudio, & oſtendam tibi ſortem bonam, at ecce hoc vanum eſt. Riſui dixi, Quæ 2
cauſa elationis tuæ? & gaudio, Cur
id feciſti? Et cor meum perpendi, num 3
ita traheret carnem meam, ut vinum trahere conſuevit: direxit me autem cor meum ad ſapientiam & ad perſeverantem delectationem in ipſa, donec aſſequerer notitiam optimæ penes filios hominum rei, quam agant ſub ſole numero dierum vitæ ſuæ. Igitur opus meum magnifica- 4
vi, & extruxi mihi ædes, vineas conſevi mihi: Paravi mihi hortos & loca 5
amœna, omniſque generis arbores frugiferas in iis conſevi: Feci mihi piſcinas 6
aquarum, ut in iis aptarem nemus arborum omnium plantarum: Poſſedi 7
ſervos & ancillas, factique ſunt vernaculi domûs meæ: fuit etiam mihi ampla poſſeſſio armentorum boum & ovium, amplior quàm omnibus qui me præceſſerant in Jeruſalem. Præthereà coa- 8
cervavi mihi argentum & aurum, & pulcherrima quæque regum atque regionum. Comparavi mihi cantores & cantatrices, inter delitias cum filiis hominum: necnon viros ac mulieres potum præbentes. Demum magnificata eſt glo- 9
ria mea, & conditio mea aucta eſt pluſquam omnium qui me præceſſerunt in Jeruſalem: & ad hæc permanſit apud me ſapientia mea. Et omni re quam 10
poſtulârunt oculi mei, non ſum fruſtratus, neque prohibui cor meum omni gaudio: quoniam cor meum fruitum eſt cunctis laboribus meis: atque hoc fuit pars mea ex omnibus laboribus meis.

קהלת: ב

laborem ad &,meæ manus fecerant quæ mea opera omnia *in* *ego* respexi Et
11 ופניתי אני בכל־מעשי שעשו ידי ובעמל
non &,spirit⁹ *pastio* &,vanitas universa ecce & :faciendum ad laboravi quo
שעמלתי לעשות והנה הכל הבל ורעות רוח ואין
,insanias &,sapientiam *videndum ad ego* respexi Et .sole sub *reliquum*
12 יתרון תחת השמש׃ ופניתי אני לראות חכמה והוללות
quod ,regem post est venturus qui,homo quid Nam .stultitiā &
וסכלות כי מה האדם שיבוא אחרי המלך את אשר־
supra sapientiæ præstantia est quòd *ego* vidi Et ? *ipsum* fecerunt .jam
13 כבר עשוהו׃ וראיתי אני שיש יתרון לחכמה מן־
ejus oculi Sapientis .*tenebrositate præ lucis excellentia* sicut :*stultitiam*
14 הסכלות כיתרון האור מן־החשך׃ החכם עיניו
,ego etiam cognovi Et .*ambulans tenebrositate in* stultus & ,ejus capite in
בראשו והכסיל בחשך הולך וידעתי גם־אני
:meo corde in *ego* Dixique .ipsis omnibus eveniet unus eventus quòd
15 שמקרה אחד יקרה את־כלם׃ ואמרתי אני בלבי
ego sapui quid ut &,mihi eveniet *ego* etiam *stulti eventum secundùm*
כמקרה הכסיל גם־אני יקרני ולמה חכמתי אני
.vanitas hoc etiam quòd ,meo corde in sum locutus Et?*excellentius* tunc
אז יתר ודברתי בלבי שגם־זה הבל׃
jam quod eo in :seculum in stulto cum sapientis memoria non Quia
16 כי אין זכרון לחכם עם־הכסיל לעולם בשכבר
cum sapiens morietur quomodo &,*est oblitum omne venientium dierum*
הימים הבאים הכל נשכח ואיך ימות החכם עם־
opus *me super* malum quia ,*vitas* odi Et ? stulto
17 הכסיל׃ ושנאתי את־החיים כי רע עלי המעשה
.spiritus *pastio* & ,vanitas omnia quia :sole sub fit quod
שנעשה תחת השמש כי־הכל הבל ורעות רוח׃
:sole sub *laborans ego* quo,meum laborem omnem *ego* odi Et
18 ושנאתי אני את־כל־עמלי שאני עמל תחת השמש
sap ens utrū *sciens* quis Et .me post erit qui,homini illum dimittam quia
19 שאניחנו לאדם שיהיה אחרי׃ ומי יודע החכם
,laboravi quo meo labore omni *in habebit auctoritatē* &?stult⁹ vel sit futurus
יהיה או סכל וישלט בכל־עמלי שעמלתי
ego sum versus Et .vanitas hoc etiam :sole sub essem sapiens quo &
20 ושחכמתי תחת השמש גם־זה הבל׃ וסבותי אני
sub laboravi quo,laborem omnem super:meum cor *faciendū* desperare *ad*
ליאש את־לבי על כל־העמל שעמלתי תחת
,scientia *in* & ,sapientia in *ejus* labor cujus homo est Nam .sole
21 השמש׃ כי־יש אדם שעמלו בחכמה ובדעת
:suam partē *ei* dabit,ea in laboravit non qui ,homini & :rectitudine in &
ובכשרון ולאדם שלא עמל־בו יתננו חלקו
homini *existens* quid Quia .magnum malum &,vanitas hoc etiam
22 גם־זה הבל ורעה רבה׃ כי מה־הוה לאדם
sub *laborans ipse* quo ,sui cordis *contritione* & ,suo labore universo *in*
בכל־עמלו וברעיון לבו שהוא עמל תחת
etiam ,ejus *negotium* ira & ,dolores ejus dies omnes Quia ? sole
23 השמש׃ כי כל־ימיו מכאבים וכעס ענינו גם־
.*ipsum* vanitas hoc etiam :ejus cor *jacuit* non nocte in
בלילה לא־שכב לבו גם־זה הבל הוא׃

Versio VULG. LAT.

11 Cúmque me convertissem ad
universa opera, quæ fecerant
manus meæ, & ad labores, in
quibus frustrà sudaveram, vi-
di in omnibus vanitatem &
afflictionē animi, & nihil per-
12 manere sub Sole. Transivi ad
contemplandam sapientiam,
erroresque & stultitiā: (quid
est, inquam, homo, ut sequi pos-
13 sit regem Factorem suum?) Et
vidi quòd tantùm præcederet
sapientia stultitiam, quantùm
14 differt lux à tenebris. Sapientis
oculi in capite ejus: stultus in
tenebris ambulat: & didici quòd
unus utriusque esset interitus.
15 Et dixi in corde meo; Si unus
& stulti & meus occasus erit,
quid mihi prodest quòd majo-
rem sapientiæ dedi operam?
Locutúsque cùm mente mea,
animadverti quòd hoc quoque
16 esset vanitas. Non enim erit
memoria sapientis similiter ut
stulti in perpetuum, & futura
tempora oblivione cuncta pa-
riter operient: moritur doctus
17 similiter ut indoct⁹. Et idcircò
tæduit me vitæ meæ, videntem
mala universa esse sub Sole, &
cuncta vanitatem & afflictio-
18 nem spiritûs. Rursus detestat⁹
sum omnem industriam meam,
quâ sub Sole studiosissimè la-
boravi, habiturus hæredē post
19 me, Quem ignoro, utrùm sa-
piens an stultus futurus sit, et
dominabitur in laborib⁹ meis,
quibus desudavi & solicit⁹ fui:
& est quidquam tam vanum?
20 Unde cessavi, renuntiavítq; cor
meū ultrà laborare sub Sole.
21 Nam cùm alius laboret in sa-
pientia, & doctrina, & soli-
citudine, homini otioso quæ-
sita dimittit: & hoc ergò, va-
22 nitas, & magnū malum. Quid
enim proderit homini de uni-
verso labore suo, & afflictio-
ne spiritûs, quâ sub Sole cru-
23 ciatus est? Cuncti dies ejus
doloribus & ærumnis pleni
sunt, nec per noctem mente
requiescit: & hoc nónne va-
nitas est?

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

11 † Καὶ ἐπέβλεψα ἐγὼ ἐν πᾶσι (θ) ποιήμασί
μου † οἷς ἐποίησαν αἱ χεῖρές μου, † καὶ (ι) ἐν μό-
χθῳ ᾧ ἐμόχθησα τοῦ ποιεῖν, † καὶ ἰδοὺ τὰ πάν-
τα ματαιότης καὶ προαίρεσις πνεύματος, † καὶ
12 οὐκ ἔστι περίσσεια ὑπὸ τὸν ἥλιον. † Καὶ ἐπέβλε-
ψα ἐγὼ τοῦ ἰδεῖν σοφίαν † καὶ (κ) παραφορὰν
καὶ ἀφροσύνην, † ὅτι τίς (λ) ἄνθρωπος ὃς
ἐπελεύσεται ὀπίσω τῆς βουλῆς; † τὰ ὅσα (μ)
13 ἐποίησεν αὐτήν. † Καὶ εἶδον ἐγὼ ὅτι ἐστὶ
περίσσεια † τῇ σοφίᾳ ὑπὲρ τὴν ἀφροσύνην,
† ὡς περίσσεια τοῦ φωτὸς ὑπὲρ τὸ σκότος.
14 † Τοῦ σοφοῦ οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ ἐν κεφαλῇ αὐ-
τοῦ, † καὶ ὁ ἄφρων ἐν σκότει πορεύεται. † καὶ
ἔγνων καί γε ἐγὼ ὅτι συνάντημα ἓν † συναν-
15 τήσεται τοῖς πᾶσιν αὐτοῖς. † Καὶ εἶπα ἐγὼ
ἐν καρδίᾳ μου, † Ὡς συνάντημα τοῦ ἄφρονος
† καί γε ἐμοὶ συναντήσεταί μοι, † καὶ ἱνατί
ἐσοφισάμην † (ν) ἐγώ; περισσὸν ἐλάλησα ἐν
καρδίᾳ (ξ) μου, † Ὅτι καί γε τοῦτο ματαιό-
της, † διότι ὁ ἄφρων ἐκ περισσεύματος λα-
16 λεῖ. † Ὅτι οὐκ ἔστιν ἡ μνήμη τοῦ σοφοῦ μετὰ τοῦ
ἄφρονος (ο) εἰς τὸν αἰῶνα, † καθότι ἤδη (π)
αἱ ἡμέραι ἐρχόμεναι τὰ πάντα ἐπελήσθη· † καὶ
πῶς ἀποθανεῖται ὁ σοφὸς μετὰ τοῦ ἄφρονος;
17 † Καὶ ἐμίσησα σὺν τὴν ζωήν· † ὅτι πονηρὸν ἐπ'
ἐμὲ τὸ ποίημα † τὸ πεποιημένον ὑπὸ τὸν ἥλι-
ον, † ὅτι (ρ) πάντα ματαιότης καὶ προαίρεσις
18 πνεύματος. † Καὶ ἐμίσησα ἐγὼ σύμπαντα
μόχθον μου † ὃν ἐγὼ (σ) κοπιῶ ὑπὸ τὸν ἥλιον,
† ὅτι ἀφίω αὐτὸν τῷ ἀνθρώπῳ (τ) τῷ γινομένῳ
19 μετ' ἐμέ. † Καὶ τίς (υ) εἶδεν εἰ σοφὸς ἔσται ἢ
ἄφρων; † καὶ εἰ ἐξουσιάζεται ἐν παντὶ μόχθῳ
μου, † ᾧ ἐμόχθησα καὶ ᾧ ἐσοφισάμην ὑπὸ τὸν
20 ἥλιον; † καί γε τοῦτο ματαιότης. † Καὶ ἐπέ-
στρεψα ἐγὼ τοῦ ἀποτάξασθαι (φ) τὴν καρδίαν
μου † ἐν παντὶ μόχθῳ μου ᾧ ἐμόχθησα ὑπὸ τὸν
21 ἥλιον· † Ὅτι ἐστὶν ἄνθρωπος, ὅτι μόχθος αὐ-
τοῦ † ἐν σοφίᾳ καὶ ἐν γνώσει καὶ ἐν ἀνδρίᾳ· † (χ)
καὶ ἄνθρωπος ᾧ οὐκ ἐμόχθησεν ἐν αὐτῷ † δώσει
(ψ) αὐτῷ μερίδα αὐτοῦ. † καί γε τοῦτο ματαιότης
22 καὶ πονηρία μεγάλη, † Ὅτι γίνεται (ω) ἐν τῷ
ἀνθρώπῳ ἐν παντὶ μόχθῳ αὐτοῦ † καὶ ἐν προ-
αιρέσει καρδίας αὐτοῦ † ᾧ αὐτὸς μοχθεῖ ὑπὸ
23 τὸν ἥλιον. † Ὅτι πᾶσαι αἱ ἡμέραι αὐτοῦ † ἀλ-
γημάτων καὶ θυμοῦ περισπασμὸς αὐτοῦ, † καί γε
ἐν νυκτὶ οὐ κοιμᾶται ἡ καρδία αὐτοῦ. † καί
γε τοῦτο ματαιότης ἐστίν.

Et respexi ego ad omnia opera mea, 11
quæ fecerunt manus meæ, (u) et in
laborem, quo laboraveram facien-
do. Et ecce omnia (x) vanitas, et
voluntas spiritûs: & non est
abundantia sub Sole. Et respexi e- 12
go, ut viderem sapientiam, & (y)
errorem, & (z) stultitiam; quia quis
est homo (&) qui ingredietur post
consiliū? (aa) ea, quæ fecerūt ipsū.
Et vidi ego, quia abundātia est sa- 13
pientiæ super (bb) stultitiā, sicut ab-
undantia lucis super tenebras. Sa- 14
pientis oculi ejus in capite ejus: &
stultus in tenebris ambulat. Et cog-
novi etiā ego, quia (cc) event⁹ un⁹
eveniet omnibus eis. Et dixi ego in 15
corde meo; Sicut eventus stulti, ita
& mihi eveniet mihi: *& ut quid*
(dd) sapiēs fact⁹ sū ego? (ee) Abū-
danter locutus sum in corde meo,
Quoniā hoc quoque vanitas: (ff)
quoniā insipiens ex abundantia lo-
quitur: Quia non est memoria sa- 16
pientis cū stulto in æternū, eò (gg)
quòd jam dies supervenientes, uni-
versa oblivio operuit: & quomodò
morietur sapiens cum stulto? Et o- 17
divi quidē vitā; quia (hh) malum
super me opus, quod factum est sub
Sole, quia omnia vanitas, & præ-
sumptio spirit⁹. Et odivi ego omnē 18
laborem meū, quem ego laboro sub
Sole: quia dimitto illū homini, (ii)
qui fit post me. Et quis novit, utrū 19
sapiens sit, vel stult⁹? & (kk) an
potestatem habeat in omni labore
meo, (ll) quo laboravi, & quo sa-
piens fact⁹ sum sub Sole? Etiā hoc
vanitas. Et (mm) convers⁹ sū ego, 20
ut (nn) renuntiarem cordi meo in
omni labore meo, quo laboravi sub
Sole: Quia est homo, (oo) quia labor 21
ejus est in sapientia, & in scientia,
et in (pp) virtute: (qq) et homo, cui
non laboravit in eo, dabit illi partē
suam. Et quidē hoc vanitas, et ne-
quitia magna, (rr) Quoniam fit in 22
homine in omni labore suo, & in
voluntate cordis sui, quo ipse la-
borat sub Sole: Quia omnes dies e- 23
jus (ss) dolorum, & (tt) iracundiæ
distentio ejus: & quidem in nocte
non dormit cor ejus. Sed & hoc
vanitas est.

MS.A. (θ) τοῖς ποιήμασίν μου (ι) ἐν μόχθῳ μου ᾧ (κ) περιφορὰν (λ) ἄνθρωπος ἐπελεύσεται (μ) ἐποίησεν (ν) ἐγὼ τότε περισσὸν (ξ) μου, διότι ἄφρων ἐκ περισσεύματος λαλεῖ, Ὅτι καί γε τοῦτο ματαιότης. Ὅτι οὐκ ἔστιν μνήμη (ο) εἰς αἰῶνα, (π) τὰς ἡμέρας τὰς ἐπερχομένας (ρ) τὰ πάντα (σ) μοχθῶ (τ) τῷ γενησομένῳ (υ) οἶδεν εἰ (φ) τῇ καρδίᾳ μου ἐπὶ παντὶ τῷ μόχθῳ ᾧ (χ) καὶ ἄνθρωπος οὐκ ἐμόχθησεν (ψ) αὐτὸν (ω) τῷ ἀνθρώπῳ

תרגום TARGUM.

11 ואסתכלית אנא בכל עובדי די עבדו ידי ובטורחתי די טרחית למעבד והא כולא הבלו
ותבירות רוחא ולית מותר בהון תחות שמשא בעלמא הדין אלהן אית לי אגר שלים
12 על עובדי טבא לעלמא דאתי׃ ואסתכלית למחזי חוכמתא וחלחולתא דמלכותא
וסוכלתנו ארום מה הנאה אית לגבר לצלאה בתר גזירת מלכא ובתר פורענותא הא
13 כבר אתגזרת עלוהי ואתעבידת ליה׃ וחזית אנא ברוח נבואה דאית מותר לחוכמתא
14 מן שטותא יתיר כמותר נהור יומא מן חשוך ליליא׃ חכימא מסתכל ברישא מה דעתיד
למהוי בסוף ומצלי ומבטל גזירתא בישתא מן עלמא ושטיא בחשוכא אזל וידעית אף
אנא דאי לא מצלי חכימא ומבטל גזירתא בישתא מן עלמא כד ייתי פורענותא בעלמא
15 אירעון חד יארע ית כולהון׃ ואמרית אנא בלבבי כארעון שאול בר קיש אנא מלכא
דסט בסטותיה ולא נטר תפקדתא דאתפקד על עמלק ואתנטלת מניה מלכותא אף
אנא יערענני ולמה דין חכימית אנא בכן יתיר מניה ומללית אנא בלבי דאף דין הבלו
16 ולית אלהן גזירת מימרא דיי׃ ארום לית דכרנא לחכימא עם שטיא לעלמא דאתי
ובתר מיתת גברא מה דהוה כבר ביומוהי כד ייתון יומיא דעתידין למהוי בתרוהי
17 כולא אשתכח ואיכדין יימרון בני אנשא דהיא סופא דצדיקיא כסופא דחייבא׃ וסניתי
אנא ית כל חיין בישין ארום ביש עלי עובדא בישא די אתעביד על בני אנשא תחות
18 שמשא בעלמא הדין ארום כולא הבלו ותבירות רוחא׃ וסניתי אנא ית כל טרחותי די
טרחית תחות שמשא בעלמא הדין בגין דאשבקניה לרחבעם ברי דאתי בתרי וייתי
19 ירבעם עבדיה ויסב מן ידוי עשרתי שבטיא ויחסין פלגות מלכותא׃ ומן ידע החכים יהא
או טפש מלכא דעתיד למהוי בתרי וישלט בכל טרחותי די טרחית בעלמא הדין ובכל
מה דאתקנית בחוכמתי תחות שמשא בעלמא הדין ותהית בלבי ותבית למימר אף ית
20 דין הבלו׃ וחזרית אנא ליאשא ית לבי על כל טורחא די טרחית למקני ודחכמית לתקנא
21 תחות שמיא בעלמא הדין׃ ארום אית גבר די טורחיה בחוכמתא ובסוכלתנו ובצדקו
וימות בלא ולד ולגבר דלא טרח ביה יתנניה למהוי חולקיה אף דין הבלו ובישתא
22 רבתא׃ ארום מה הנאה אית ליה לגבר טורחיה ובתבירות לביה די הוא טרח תחות
23 שמשא בעלמא הדין׃ ארום כל יומוהי כאיבין ותקיף רוגזיה עניניה אף בליליא לא
דמיך מן הרהורי לביה אף דין הבלו הוא׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et contemplatus sum ego in omnibus operibus meis quæ fecerant manus 11
meæ, & in labore quem laboraveram ad faciendum: & ecce omnia vani-
tas & confractio spiritus, & nihil est reliqui in eis sub Sole in seculo hoc,
sed manet me præmium integrum pro operibus meis bonis in seculo venturo.
Et animadverti ego ad videndum sapientiam & commotionem regni, & 12
intelligentiam: nam quæ utilitas est viro ut oret post decretum regis &
post ultionem, cùm ecce jam statutum sit super eum & factum sit ei? Et 13
vidi ego in spiritu prophetiæ, quòd *longè* plus dignitatis sit sapientiæ,
quàm stultitiæ; sicut excellentior est lux diei tenebris noctis. Sapiens con- 14
templatur in principio id quod futurū est in fine, *& orat & avertit decreta*
mala à mundo; & stult⁹ in tenebris ambulat: & cognovi etiam ego quòd *si*
non oret sapiens, ut avertat decreta mala à mundo, cùm venerit pœna in
mundum accidens unum accidet omnibus illis. Et dixi ego in corde meo, 15
Juxta accidens *Saul filii Kis, mihi (rex ille declinavit perversè, nec ser-*
vavit mandatum quod acceperat de Amalek, quapropter regno privatus
est) etiam mihi accidet, & ad quidnam sapiens fui ego sic magis quàm
ille? & locutus sum in corde meo, quod etiam hoc vanitas, *& nihil est*
nisi decretum verbi Domini. Nam non est memoria sapientis cum stulto in 16
seculo venturo, & post mortem viri id quod fuit jam in diebus ejus, cùm
venerint dies qui futuri sunt post eum, omne invenietur: & quomodo di-
cent filii hominis quòd futurus sit finis justi sicut finis peccatoris? Et odi 17
omnem vitam malam, quia malum contra me est, opus malum *quod fit*
contra filios hominis *sub sole* in seculo hoc, quia omnia vanitas & con-
fractio spiritus. Et odi ego omnem laborem meum quem laboravi sub Sole 18
in seculo hoc, propterea quod relinquam eum Rehabgham filio meo qui
veniet post me, *venietque servus ejus Jerabgham & auferet è manibus*
ejus decem tribus, & obtinebit dimidium regni. Et quis novit an sapiens 19
erit an stultus rex qui futurus est post me, et dominabitur in omni labore
meo quem laboravi *in seculo hoc*, & omni eo quod acquisivi in sapientia
mea sub Sole in seculo hoc: & obstupui in corde meo, & rursus dixi:
Etiam hoc vanitas. Et reversus sum ego ut facerem desperare cor meum 20
super omnem laborem quem laboravi ad acquirendum; & quod sapiens
fuerim ad præparandum sub *cælo* in seculo hoc. Quia est vir cujus labor 21
fit in sapientia, & in intelligentia & in justitia, & morietur absque liberis;
& viro qui non laboravit in illo, dabit illud ut sit pars ejus. Etiam hoc
vanitas & malum magnum. Etenim quæ utilitas est in viro [*in omni*] labore 22
suo & in confractione cordis sui, quo ille laborat sub Sole in seculo hoc?
Etenim omnes dies ejus molesti, & *fortem reddit indignationem ejus* nego- 23
tium ejus: etiam noctu non dormit præ solicitudinibus cordis sui: etiam
hoc vanitas est.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܚܙܝܬ ܐܢܐ ܒܟܠ ܥܒܕ̈ܐ ܕܥܒܕ̈ܝ ܐܝܕܝ̈ ܀ ܘܒܟܠ ܥܡܠܐ ܕܥܡܠܬ ܠܡܥܒܕܘ. ܘܗܐ 11
ܟܠܡܕܡ ܗܒܠܐ ܘܬܘܠܦ ܪܘܚܐ. ܘܠܝܬ ܝܘܬܪܢܐ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. * ܘܚܙܝܬ ܐܢܐ 12
ܠܡܚܙܐ ܚܟܡܬܐ. ܘܡܥܒܪܢܘܬܐ. ܘܣܟܠܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܡܢܘ ܒܪܢܫܐ ܕܢܥܘܠ
ܒܬܪ ܡܠܟܐ ܒܕܝܢܐ ܀ ܟܡܐ ܠܡ ܥܡ ܥܒܘܕܗ. * ܘܚܙܝܬ ܕܐܝܬ ܝܘܬܪܢ ܠܚܟܡܬܐ. ܝܬܝܪ 13
ܡܢ ܣܟܠܘܬܐ ܀ ܐܝܟ ܕܝܬܝܪ ܢܘܗܪܐ ܡܢ ܚܫܘܟܐ. * ܚܟܝܡܐ ܥܝ̈ܢܘܗܝ ܒܪܫܗ. ܘܣܟܠܐ 14
ܒܚܫܘܟܐ ܐܙܠ. ܘܝܕܥܬ ܕܓܕܫܐ ܚܕ ܓܕܫ ܠܟܠܗܘܢ. * ܘܐܡܪܬ ܐܢܐ ܒܠܒܝ. ܕܐܝܟ 15
ܓܕܫܐ ܕܣܟܠܐ. ܐܦ ܠܝ ܢܓܕܫ ܀ ܘܠܡܢܐ ܚܟܡܬ ܐܢܐ ܝܬܝܪܐܝܬ. ܘܡܠܠܬ
ܒܠܒܝ. ܕܐܦ ܗܢܐ ܗܒܠܐ ܗܘ. * ܡܛܠ ܕܣܟܠܐ ܡܢ ܝܬܝܪ ܡܡܠܠ. ܡܛܠ 16
ܕܠܝܬ ܕܘܟܪܢܐ ܠܚܟܝܡܐ ܥܡ ܣܟܠܐ ܠܥܠܡ. ܐܝܟ ܝܘܡܬܐ ܕܡܢ ܩܕܡ ܐܬܘ. ܘܟܠ
ܡܬܛܥܐ. ܘܐܝܟܢܐ ܡܐܬ ܚܟܝܡܐ ܥܡ ܣܟܠܐ. * ܘܣܢܝܬ ܐܢܐ ܠܚܝ̈ܐ. ܡܛܠ ܕܒܝܫ 17
ܠܝ ܥܒܕܐ ܕܐܬܥܒܕ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. ܡܛܠ ܕܟܠܡܕܡ ܗܒܠܐ ܘܬܘܠܦ ܪܘܚܐ. * ܘܣܢܝܬ 18
ܐܢܐ ܠܟܠ ܥܡܠܝ. ܕܐܢܐ ܥܡܠܬ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. ܡܛܠ ܕܫܒܩ ܐܢܐ ܠܗ. ܠܒܪܢܫܐ
ܕܗܘܐ ܒܬܪܝ. * ܘܡܢ ܝܕܥ. ܐܢ ܚܟܝܡܐ ܢܗܘܐ ܀ ܐܘ ܣܟܠܐ. ܘܢܫܠܛ ܒܟܠܗ ܥܡܠܝ 19
ܕܐܢܐ ܥܡܠܬ. ܘܕܐܬܚܟܡܬ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. ܘܐܦ ܗܢܐ ܗܒܠܐ. * ܘܗܦܟܬ ܐܢܐ 20
ܠܡܦܫܗ ܠܒܝ ܀ ܥܠ ܟܠ ܥܡܠܐ ܕܥܡܠܬ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. * ܡܛܠ ܕܐܝܬ ܒܪܢܫܐ. 21
ܕܥܡܠܗ ܒܚܟܡܬܐ ܘܒܝܕܥܬܐ. ܘܒܟܫܝܪܘܬܐ. ܘܠܒܪܢܫܐ ܕܠܐ ܥܡܠ ܒܗ ܀ ܢܬܠ
ܠܗ ܡܢܬܗ. ܘܐܦ ܗܢܐ ܗܒܠܐ ܘܒܝܫܬܐ ܪܒܬܐ. * ܕܡܢܐ ܗܘܐ ܠܒܪܢܫܐ ܒܟܠܗ 22
ܥܡܠܗ. ܘܒܪܥܝܢܐ ܕܠܒܗ. ܕܗܘ ܥܡܠ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. * ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ ܝܘܡܬܗ ܀ 23
ܟܐܒܐ ܘܪܘܓܙܐ. ܥܢܝܢܗ. ܘܐܦ ܒܠܠܝܐ ܠܐ ܫܠܐ ܠܒܗ. ܘܐܦ ܗܢܐ ܗܒܠܐ.

Prætereà conſideravi ego omne opus quod 11
egerant manus meæ, & omnem laborem in
quo exercendo fatigatus fueram : ſed ecce
omnia vanitas & perturbatio ſpiritûs, nec
ullum eſt emolumentum ſub ſole. Et re- 12
ſpexi ut conſiderarem ſapientiam & tranſ-
greſſionem atque ſtultitiam : quid enim eſt
homo, ut ingrediatur poſt regem in judi-
cium, ac multò magis cum factore ſuo ? Et 13
deprehendi tantò præſtantiorem eſſe ſapien-
tiam ſtultitiâ, quantò præclarius eſt lumen
tenebris. Sapientis oculi ſunt in capite 14
ipſius : ſtultus autem in tenebris incedit. Præ-
tereà cognovi idem accidens omnibus eve-
nire. Et dixi ego in corde meo, Si caſus 15
idem ſtulti, mihi etiam contingat, quorſum
igitur majorem ego ſapientiam acquirerem ?
Et pronuntiavi in corde meo, quòd hoc et-
iam ſit vanitas. Quoniam ſtultus abundè 16
loquitur: quoniam ſapienti non erit memoria
cum ſtulto in æternum; non ſecus ac dies jam-
pridem reverſi, utque omnia traduntur obli-
vioni, & quemadmodum moritur ſapiens cum
ſtulto. Quapropter odi vitam, quoniam diſ- 17
plicet mihi opus quod factum eſt ſub ſole :
quandoquidem omnia ſunt inanitas, & animi
moleſtia. Odi quoque omnem laborem meũ 18
quo me fatigavi ſub ſole, quòd ſim relicturus
illum homini qui poſt me erit. Quis autem ſcit 19
utrùm ſapiens futurus ſit, an ſtultus ? & tamen
potietur omnium laborum meorum in quibus
ego deſudavi, quæque induſtriâ meâ acquiſi-
vi ſub ſole: & hoc etiam eſt inanitas. Qua- 20
propter reverſus ſum ut relaxarem cor meum
pro omni labore quem laboravi ſub ſole. In- 21
venitur namque homo cujus labor *inſumitur*
in ſapientia, & ſcientiâ, atque ſolertiâ, & ſor-
tem ſuam tradit homini minimè laboranti in
illa : & hoc etiam vanitas eſt & ſumma mi-
ſeria. Quid enim reſultat homini ex omni 22
labore ſuo, & placito cordis ſui, quo fatiga-
tur ſub ſole ? Nam cunctis diebus ſuis occu- 23
patio ipſius dolor eſt atque indignatio, & ne
nocte quidem quieſcit cor ejus : & hoc et-
iam vanitas.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ونظرت انا في جميع صنايعي التي صنعتها يداي * وفي تعبي الذي تعبته في 11
افتعالها * فاذاها كلها باطلة واختيار الروح * ولن يوجد فيها فضلة تحت الشمس *
* وتبصرت انا لانظر الي الحكمة وحركة دور الزمان والغباوة * لان اي انسان ينقاد 12
وراء المشورة فيعرف ما عمله الناس بها * فعلمت انا ان الحكمة لها مثل فضل على 13
الغباوة كما يفضل فضل النور على الظلمة * الحكيم عيناه في راسه * والغبي يسلك في 14
الظلمة * وعلمت انا ان لقيا واحدة تلتقيهم كلهم * فقلت انا في قلبي * مثل لقيا 15
الغبي * وكذلك تلتقيني * فلم تحكمت * حينيذ تكلمت في قلبي فضلة * لان
الغبي من فضلة قلبه يتكلم * ولعمري ان هذا باطل * لان لن يوجد ذكر الحكيم 16
مع الغبي * فابغضت الحياة كلها معا * لان الصناعة المعمولة تحت الشمس رديه على * 17
لان كل الاشياء باطلة واختيار الروح * فابغضت انا جميع تعبي الذي اتعبه انا تحت 18
الشمس * لاني اتركه للانسان الصاير بعدي * ومن قد علم ان كان يكون 19
حكيما او غبيا * وان كان يستولي على تعبي كله الذي تعبته وتحكمت فيه
تحت الشمس * ولعمري ان هذا باطل * وعاودت انا ازهد بقلبي في كافة تعبي 20
الذي تعبت فيه تحت الشمس * ان يكون انسان يحصل تعبه في الحكمة وفي العلم 21
وفي الشجاعة * ويكون انسان ما تعب في هذا يعطيه حصته * وهذا لعمري فباطل وشر
عظيم * لان ماذا يصير للانسان في جميع تعبه واختيار قلبه كما يتعب هو تحت الشمس * 22
* لان كافة ايامه بغلبة موعب من الاوجاع والغضب * ومع هذا فقلبه ما ينام في الليل * 23
وهذا لعمري باطل *

Deinde reſpexi ego cuncta opera mea 11
quæ fecerant manus meæ, meumque
laborem quem tuleram in iis agendis,
& ecce omnia vana ſunt & animi
libitum, nec ullum reperitur in eis emo-
lumentum ſub ſole. Reſpexi etiam ut 12
contemplarer ſapientiam, & motum re-
volutionis temporum, atque dementiam,
quis enim mortalium ſequatur conſili-
um, ac ſciat quæ fecerint homines per
illud ? Et cognovi quòd ſapientia tan- 13
tùm dignitate præſtat dementiæ, quan-
tùm lucis præſtantia tenebris antecel-
lit. Sapientis oculi ſunt in capite ipſi- 14
us, ſtolidus verò ambulat in tenebris.
Sciens autem ego quòd idem caſus
omnibus contingat, Dixi apud mei- 15
pſum, Juxta caſum dementis, ita mihi
continget, cur ergò ſapiens evaſi ?
Tunc abundanter ſum locutus in corde
meo (ſtolidus enim ex abundantia cor-
dis ſui loquitur) & hoc quidem va-
num eſt : Non enim reperietur me- 16
moria ſapientis cum ſtolido. Qua- 17
propter totam pariter odi vitam, quo-
niam laborioſum eſt mihi opus quod
fit ſub ſole : quandoquidem res omnes
vanæ ſunt, & placitum ſpiritûs.
Et odi omnem laborem meum cui deſu- 18
do ſub ſole, quia relicturus ſum cum
homini poſt me futuro, Et quis novit 19
utrùm ſapiens futurus ſit, an ſtolidus ?
Quòd ſi dominaturus eſt in omnem la-
borem meum cui deſudavi & indu-
ſtriosè ſtudui ſub ſole, certè hoc vaniſ-
ſimum eſt. Quare converſus ego re- 20
nuntiavi in corde meo omni labori quo
fatigatus fueram ſub ſole : Siquidem 21
eſt homo qui laborem ſuum acquirit
per ſapientiam, per ſcientiam, perque
generoſitatem : eſtque homo qui non la-
boravit in hoc, cui dabit ſortem ſuam :
atque id quidem vanum eſt, ac ſum-
mum malum. Quid enim provenit ho- 22
mini ex labore ſuo & placito cor-
dis ſui, quandiu ipſe laborat ſub ſole ?
Nam cunctis diebus ſuis, moleſtis 23
detinetur negotiis, & doloribus & indi-
gnatione plenus ; & adhæc cor ejus non
dormit noctu : & hoc ſanè vanum
eſt ;

קהלת : ג

ſuæ animæ oſtendat & ,bibat & ,comedat quòd ,homine in bonum Non
24 אֵין־טוֹב בָּאָדָם שֶׁיֹּאכַל וְשָׁתָה וְהֶרְאָה אֶת־נַפְשׁוֹ
Dei manu de quòd *ego* vidi hoc etiam : ſuo labore *in* bonum
טוֹב בַּעֲמָלוֹ גַּם־זֹה רָאִיתִי אָנִי כִּי מִיַּד הָאֱלֹהִים
Quia *?me præ extra ſentiet* quis & ,comedet quis Quia .*illud*
25 26 הִיא : כִּי מִי יֹאכַל וּמִי יָחוּשׁ חוּץ מִמֶּנִּי : כִּי
: lætitiam &,ſcientiam & ,ſapientiam dedit ,*ejus facies ad* bonus qui homini
לְאָדָם שֶׁטּוֹב לְפָנָיו נָתַן חָכְמָה וְדַעַת וְשִׂמְחָה
dandum ad *congregandum ad &,colligendum ad negotium* dedit peccatori &
וְלַחוֹטֶא נָתַן עִנְיָן לֶאֱסֹף וְלִכְנוֹס לָתֵת
.ſpiritus *paſtio* & , vanitas hoc etiam : *Dei facies ad* bono
לְטוֹב לִפְנֵי הָאֱלֹהִים גַּם־זֶה הֶבֶל וּרְעוּת רוּחַ :

CAP. III. ג

.cœlis ſub *voluntati* omni tempus &,determinatũ tempus Omnibus
לַכֹּל זְמָן וְעֵת לְכָל־חֵפֶץ תַּחַת הַשָּׁמָיִם : 1
evellendi tempꝰ &,plantandi tempꝰ :moriendi tempꝰ &,naſcendi Tempus
2 עֵת לָלֶדֶת וְעֵת לָמוּת עֵת לָטַעַת וְעֵת לַעֲקוֹר
.*irrumpendi* tempus : medendi tempus & ,occidendi Tempus .plantatum
3 נָטוּעַ : עֵת לַהֲרוֹג וְעֵת לִרְפּוֹא עֵת לִפְרוֹץ
.*plangendi* tempus,ridendi tempus & ,flendi Tempus .ædificandi tempus &
4 וְעֵת לִבְנוֹת : עֵת לִבְכּוֹת וְעֵת לִשְׂחוֹק עֵת סְפוֹד
.*acervandi* tempus & , lapides projiciendi Tempus .ſaltandi tempus &
5 וְעֵת רְקוֹד : עֵת לְהַשְׁלִיךְ אֲבָנִים וְעֵת כְּנוֹס
.amplectendo ab ſe elongandi tempus &,amplexandi tempus : lapides
אֲבָנִים עֵת לַחֲבוֹק וְעֵת לִרְחֹק מֵחַבֵּק :
projiciendi tẽpus &,cuſtodiendi tẽpus :perdendi tẽpus &,quærẽdi Tempus
6 עֵת לְבַקֵּשׁ וְעֵת לְאַבֵּד עֵת לִשְׁמוֹר וְעֵת לְהַשְׁלִיךְ :
.loquendi tempus & ,tacendi tempus :ſuendi tempus &,ſcindendi Tempus
7 עֵת לִקְרוֹעַ וְעֵת לִתְפּוֹר עֵת לַחֲשׁוֹת וְעֵת לְדַבֵּר :
.pacis tempus & ,belli tempus :habendi odio tẽpus &,diligẽdi Tẽpus
8 עֵת לֶאֱהֹב וְעֵת לִשְׂנֹא עֵת מִלְחָמָה וְעֵת שָׁלוֹם :
,*negotium* vidi *? laborans* ipſe quo in *facientis præſtantia Quæ*
9 10 מַה־יִּתְרוֹן הָעוֹשֶׂה בַּאֲשֶׁר הוּא עָמֵל : רָאִיתִי אֶת־הָעִנְיָן
Omne .ea in ſe *affligendũ ad* hominum filiis Deus dedit *quod*
11 אֲשֶׁר נָתַן אֱלֹהִים לִבְנֵי הָאָדָם לַעֲנוֹת בּוֹ : אֶת־הַכֹּל
eorum corde in dedit *ſeculum* Etiam .ſuo tempore in pulchrum fecit
עָשָׂה יָפֶה בְעִתּוֹ גַּם אֶת־הָעֹלָם נָתַן בְּלִבָּם
fecit quod opus homo inveniret non *quòd propter*
מִבְּלִי אֲשֶׁר לֹא־יִמְצָא הָאָדָם אֶת־הַמַּעֲשֶׂה אֲשֶׁר־עָשָׂה
: eis in *bonum* non quòd Novi .finem ad uſque *&* *capite* à Deus
12 הָאֱלֹהִים מֵרֹאשׁ וְעַד־סוֹף : יָדַעְתִּי כִּי אֵין טוֹב בָּם
homo omnis etiam Et .*ſuis vitis* in bonum facere & , lætari *quin*
13 כִּי אִם־לִשְׂמוֹחַ וְלַעֲשׂוֹת טוֹב בְּחַיָּיו : וְגַם כָּל־הָאָדָם
.*ipſum* Dei donũ,ſuo labore omni *in* bonũ videat&,bibat&,cõedat quòd
שֶׁיֹּאכַל וְשָׁתָה וְרָאָה טוֹב בְּכָל־עֲמָלוֹ מַתַּת אֱלֹהִים הִיא :

Verſio VUL. LAT.

24 Nónne meliꝰ eſt comedere &
bibere, & oſtendere animæ
ſuæ bona de laboribꝰ ſuis? &
25 hoc de manu Dei eſt. Quis ita
devorabit, & deliciis affluet
26 ut ego? Homini bono in conſpectu
ſuo dedit Deꝰ ſapientiam,
& ſcientiã, & lætitiam:
peccatori autem dedit afflictionem,
& curã ſuperfluã,ut addat,
& congreget, & tradat ei
qui placuit Deo : ſed & hoc
vanitas eſt, & caſſa ſolicitudo
mentis.

CAP. III.

1 OMnia tempus habent, &
ſuis ſpatiis tranſeunt univerſa
2 ſub cœlo. Tempus naſcendi,
& tempus moriendi. Tempus
plantandi, & tempꝰ evellendi
3 ꝙ plantatum eſt. Tempus occidendi,
& tempus ſanandi.
Tempus deſtruendi, & tempꝰ
4 ædificandi. Tempus flendi, &
tempꝰ ridẽdi. Tempꝰ plangendi,
5 & tempꝰ ſaltandi. Tempus
ſpargendi lapides, & tempus
colligendi. Tempꝰ amplexandi,
& tempꝰ longe fieri ab amplexibꝰ.
6 Tempꝰ acquirendi,&
tempꝰ perdendi. Tempꝰ cuſtodiendi,
& tempus abjiciendi.
7 Tempus ſcindendi, & tempus
conſuendi. Tempus tacendi, &
8 tempus loquendi. Tempꝰ dilectionis,
et tempꝰ odii. Tempꝰ
9 belli, & tempꝰ pacis. Quid habet
ampliùs homo de labore
10 ſuo? Vidi afflictionẽ, quã dedit
Deꝰ filiis hominũ, ut diſten-
11 dantur in ea. Cuncta fecit bona
in tempore ſuo, & mundũ tradidit
diſputationi eorũ, ut non
inveniat homo opꝰ, ꝙ operatꝰ
eſt Deꝰ ab initio uſq; ad finẽ.
12 Et cognovi ꝙ non eſſet meliꝰ
niſi lætari, & facere benè in
13 vita ſua. Omnis enim homo,
qui comedit & bibit, & videt
bonum de labore ſuo, hoc donum
Dei eſt.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

24 †Οὐκ ἔστιν ἀγαθὸν ἀνθρώπῳ, (α)ὃ φάγεται ϗ ὃ
πίεται †ϗ ὃ δείξει τῇ ψυχῇ αὐτοῦ ἀγαθὸν ἐν
μόχθῳ αὐτοῦ. †καί γε τοῦτο εἶδον ἐγὼ ὅτι ἀπὸ
25 χειρὸς τοῦ θεοῦ ἐστιν. †Ὅτι τίς φάγεται ϗ τίς πίεται
26 πάρεξ αὐτοῦ; †Ὅτι τῷ ἀνθρώπῳ τῷ ἀγαθῷ
πρὸ προσώπου αὐτοῦ †ἔδωκεν σοφίαν ϗ γνῶσιν
ϗ εὐφροσύνην, †ϗ τῷ ἁμαρτάνοντι ἔδωκεν
περισπασμὸν †τοῦ προσθεῖναι ϗ τοῦ συναγαγεῖν,
†τοῦ δοῦναι τῷ ἀγαθῷ πρὸ προσώπου τοῦ θεοῦ. †
ὅτι καί γε τοῦτο ματαιότης ϗ προαίρεσις πνεύματος.

ΚΕΦ. γʹ.

1 †ΤΟῖς πᾶσιν ὁ χρόνος, †ϗ καιρὸς τῷ παντὶ
2 πράγματι ὑπὸ τὸν οὐρανόν. Καιρὸς τοῦ
τεκεῖν †ϗ καιρὸς τοῦ ἀποθανεῖν, †καιρὸς τοῦ
φυτεῦσαι ϗ καιρὸς τοῦ ἐκτῖλαι τὸ πεφυτευμένον,
3 †Καιρὸς τοῦ ἀποκτεῖναι ϗ καιρὸς τοῦ ἰάσασθαι,
†καιρὸς τοῦ καθελεῖν ϗ καιρὸς (α)τοῦ οἰκοδομεῖν,
4 †Καιρὸς τοῦ κλαῦσαι ϗ καιρὸς τοῦ γελάσαι,
†καιρὸς τοῦ κόψασθαι, ϗ καιρὸς τοῦ ὀρχήσασθαι,
5 †Καιρὸς τοῦ βαλεῖν λίθους ϗ καιρὸς τοῦ
συναγαγεῖν λίθους, †καιρὸς τοῦ περιλαβεῖν ϗ
καιρὸς τοῦ μακρυνθῆναι (β)ἀπὸ περιλήψεως,
6 †Καιρὸς τοῦ ζητῆσαι ϗ καιρὸς τοῦ ἀπολέσαι, †
†καιρὸς τοῦ φυλάξαι ϗ καιρὸς τοῦ ἐκβαλεῖν, †
7 Καιρὸς τοῦ ῥῆξαι ϗ καιρὸς τοῦ ῥάψαι, †καιρὸς
8 τοῦ σιγᾶν ϗ καιρὸς τοῦ λαλεῖν. †Καιρὸς τοῦ φιλῆσαι
ϗ καιρὸς τοῦ μισῆσαι, †καιρὸς πολέμου
9 ϗ καιρὸς εἰρήνης. †Τίς περισσεία τοῦ ποιοῦντος
10 ἐν οἷς αὐτὸς μοχθεῖ; †Εἶδον (γ)σὺν πάντα
τὸν περισπασμὸν, ὃν ἔδωκεν ὁ θεὸς †τοῖς υἱοῖς
(δ)τῶν ἀνθρώπων τοῦ περισπᾶσθαι ἐν αὐτῷ.†
11 (ε)Τὰ σύμπαντα ἃ ἐποίησε καλὰ ἐν καιρῷ αὐτοῦ.
†καί γε (ζ) σύμπαντα τὸν αἰῶνα ἔδωκεν ἐν
καρδίᾳ αὐτῶν, †ὅπως μὴ εὕρῃ ὁ ἄνθρωπος τὸ
ποίημα ὃ ἐποίησεν ὁ θεὸς †ἀπ' ἀρχῆς ϗ μέχρι
12 τέλους. †Ἔγνων ὅτι οὐκ ἔστιν ἀγαθὸν ἐν αὐτοῖς,
†εἰ μὴ τοῦ εὐφρανθῆναι ϗ τοῦ ποιεῖν ἀγαθὸν
13 ἐν ζωῇ αὐτοῦ. †Καί γε (θ) πᾶς ὁ ἄνθρωπος ὃς φάγεται ϗ πίεται, †ϗ ἴδῃ ἀγαθὸν
ἐν παντὶ μόχθῳ αὐτοῦ, †(ι)δόμα θεοῦ ἐστιν.

MS. A. (α) ὃς φάγεται ϗ πίεται Κεφ. γʹ. MS. A. (α) τοῦ οἰκοδομῆσαι, (β) ἀπὸ περιλήμματος, (γ) σὺν τὸν πειρασμὸν, (δ) τοῦ ἀνθρώπου (ε) Σύμπαντα ἃ (ζ) σὺν τὸν αἰῶνα (η) αὐτοῦ, (θ) πᾶς ἄνθρωπος (ι) τοῦτο δόμα

Non eſt bonũ homini,(vv)quod cõedet,& quod bibet,& quod oſtendet 24
animæ ſuæ bonũ (xx) in labore ſuo.
Et quidem hoc vidi ego,quia de manu
Dei eſt. Quis enim comedet,& 25
quis (yy)bibet ſine illo? (zz)Quoniã 26
homini bono corã ſe dedit ſapientiã,
& ſcientiã,et lætitiã:et peccanti dedit
(ωω)ſolicitudinẽ,ut (aaa)augeat
& congreget ad dandũ bono ante faciem
Dei. Quoniam & hoc vanitas,
& præſumptio ſpiritũs.

CAP. III.

OMnibꝰ (a)tempꝰ eſt,& tempus 1
(b)omni rei ſub cœlo.Tempus pariendi, 2
& tempꝰ moriendi: tempus plantandi,
& tempus (c)evellendi, quod
plantatum eſt: Tempus occidendi,& 3
tempus ſanandi:tempus deſtruendi,et
tempus ædificandi.Tempus flendi,& 4
tempus ridendi:tempus plangendi,&
tempus ſaltandi: Tempus (d)mittendi 5
lapides,& tempus colligendi lapides
: tempus amplexandi,& tempus
longè fieri ab(e)amplexu: Tempꝰ acquirendi, 6
& tempus perdendi: tempꝰ
cuſtodiendi, & tempus projiciendi :
Tempꝰ ſcindendi,et tempus conſuendi: 7
tempus tacendi,& tempus loquendi:
Tempus(f)amandi,& tempus odiendi: 8
tempus belli, & tempus pacis.
Quæ abundantia eſt facientis,in 9
quibus ipſe laborat? Vidi omnem diſtentionẽ, 10
quã dedit Deus filiis hominũ,
ut diſtendantur in ea. Univerſa, 11
quæ fecit(g)bona in tempore ſuo. Et
quidẽ(h)omne ſeculũ dedit in corde
eorũ,ut (i) non inveniat homo opus,
quod fecit Deus ab initio,(k)& uſque
in finẽ.Cognovi,quia non eſt bonum 12
in eis niſi lætari,& facere bonũ
in vita ſua.Et quidẽ omnis homo qui 13
comedet, & bibet, & viderit bonũ
in omni labore ſuo, donum Dei eſt.

תרגום TARGUM.

24 לית דשפיר באנשא אלהין די ייכול וישתי ויחוי ית נפשיה טב קדם בני אנשא למעבד ית
פקודיא למהך באורחן דתקנן קדמוהי בגין דיוטיב ליה מן טורחיה אף דין חזית אנא דגבר
25 מצלח בעלמא הדין מן ידא דיי הוא דאתגזר למהוי עלוהי : ארום מן הוא די עסק בפתגמי
26 אוריתא ומן הוא גברא דאית ליה חששא מן יום דינא רבא דעתיד למיתי בר מני : ארום
לאנש דתקנן עובדוהי קדם יי יהב חוכמתא ומנדעא בעלמא הדין וחדוא עם צדיקיא
לעלמא דאתי ולגברא חיבא יהב נגין ביש למכנש ממון ולמצבר קנין סגי למהוי מתנסיב
מניה ולמהוי מתיהיב לגבר דשפיר קדם יי אף דין הבלו הוא לחיבא ותבירות רוחא :

ג

1 לכל גבר ייתי זמנא ועדנא לכל עסקא תחות שמיא : עדן בחיר למילד בנין ובנן ועדן בחיר
2 לקטלא בנין מסרבין ומרגזין לקטלותהון באבנין על מימר דיניא עדן בחיר למנצב אילן
3 ועדן בחיר לשרשא אילן נציב : עדן בחיר לקטלא בקרבא ועדן בחיר לאספאה שכיב מרע
4 עדן בחיר לפרכא בנינא ועדן בחיר למבני חורבנא : עדן למבכי על שכיבא ועדן בחיר
5 למחדי בחוכא ועדן בחיר למספדא על קטילא ועדן בחיר לטפזא בהלולא : עדן בחיר
לפקחא דגור אבנין ועדן בחיר למצבר אבנין לבנינא ועדן בחיר לגפפא אתתא ועדן בחיר
6 לרחקא מגפפא בשבעת יומי אבלא : עדן בחיר למתבע נכסיא ועדן בחיר למיבד נכסיא עדן
7 בחיר למנטר עסקא ועדן בחיר למשדי עסקא בימא בעדן נחשולא רבא : עדן בחיר למבזע
לבושא על שכיבא ועדן בחיר דלאחטא בזיעא עדן בחיר למשתק מלצלאה ועדן בחיר
8 למללא פתגמי מצותא : עדן בחיר לרחמא חד לחבריה ועדן בחיר למסני לגבר חיבא עדן
9 בחיר לאגחא קרבא ועדן בחיר למעבד שלמא : מה מותר אית לגבר פלח די הוא טרח
10 למעבד אוצרין ולמכנש ממון אלולי מסתיע במולא דלעילא : חזית ית גנן אסורין
11 ופורענותא די יהב יי לבני אנשא די אנון רשיעין לסגפותהון בידה : אמר שלמה מלכא
ברוח נבואה ית כולא עבד יי שפיר בעדניה דחויא דהות מצותא דהות ביומי ירבעם בר
נבט למהוי ביומי שבע בר בכרי ואתעכבת והות ביומי ירבעם בר נבט דאלו הות ביומי
שבע בר בכרי לא הות מתבני בית מוקדשא על עסק עגלין דדהב די עבד ירבעם חיבא
ושואנון חד בביתאל וחד בדן ומני פרוזבין על שבילא ופסקו עולי רגלאין ובגין כן
אתעכבת עד די יתבני בית מוקדשא בגין דלא יעכבון ישראל למבני יתיה אף ית שמא
דהות כתיב ומפרש על אבן שתיא כסי מנהון דאשתמודע קדמוהי יצרא בישא די בלבהון
דאלו הוה מסיר ביד אנשי הוה משמש בידה ומשכח בגוה מה דעתיד למהוי בסוף יומיא
עד עלמי עלמיא ואוף יום מותא כסי מנהון בדיל דלא יהודע לגבר מן רישא מה דעתיד
12 למיתי בסופא : אמר שלמה מלכא ברוח נבואה ידעית ארום לית טב בהון בבני אנשא
13 ארום אלהין למחדי בחדות אורייתא ולמעבד טב ביומי חיוהי : ואוף כל אנש דייכול וישתי
ויחזי טב ביומוי ויחסין לבנוי בעדן מותיה כל טרחותיה מתנן דאתיהיבא ליה מן קדם
יי הוא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Non eſt quod pulchrũ appareat in homine, niſi ut comedat & bibat, & videre 24
faciat animã ſuã bona ante filios hominis, exequendo mandata [*Domini*]
& ambulando in viis quæ rectæ ſunt corã eo, ut benefiat ei ex labore
ſuo : etiam hoc vidi ego, quòd vir qui proſperatur in ſeculo hoc, de manu
Dñi ſit, *quod hoc decretum eſt futurum de eo.* Etenim quis eſt ille qui det 25
operã verbis Legis, & quis ille vir cui ſit ſolicitudo de die judicii magni
qui venturꝰ eſt, præter me? Etenim homini cujꝰ opera recta ſunt ante Dominũ, 26
dedit ſapientiã & ſcientiã in ſeculo hoc, & lætitiã cũ juſtis in ſeculo
venturo: & viro peccatori dedit negotia mala ad cõgregandũ mammonã,
& ad acervandã poſſeſſionẽ multã, ut auferatur ab eo, & detur viro pulchriori
[*ipſo*] ante Dñm: etiã hoc vanitas *eſt peccatori* & cõfractio ſpiritus.

CAP. III.

OMni viro veniet tempꝰ, & opportunitas omni negotio ſub cœlo. Tem- 1
pus electũ ad generandũ filios *& filias*, & tempꝰ electũ ad occidendũ filios 2
nequã & irritantes, *interficiendo eos lapidibus ex ſententia judicum*: tempꝰ
electũ ad plantandũ arborẽ, & tempꝰ electũ ad evellendũ arborẽ plantatã.
Tempꝰ idoneũ ad occidendũ *in bello*, & tẽpus idoneũ ad curandũ cubantẽ 3
ægrotũ : tẽpus idoneũ ad diruendũ ædificiũ, & tẽpus idoneũ ad ædificandũ
diruta. Tẽpus ad lugendũ ſup jacentẽ, et tẽpus idoneũ ad lætandũ in luſu: 4
tẽpus idoneũ ad lamentandũ ſup occiſum, & tẽpus idoneũ ad *ſaltandum*
in lætitia. Tempus idoneũ ad disjiciendũ cumulũ lapidũ, & tẽpus idoneũ 5
ad cõgregandũ lapides ad ædificiũ : tẽpus idoneũ ad amplexandũ uxorẽ,
& tẽpus idoneũ ad elongandũ ab amplexu, *in ſeptẽ diebus luctus*. Tempus 6
idoneũ ad quærendas divitias, & tẽpus idoneũ ad perdendas opes: tempꝰ
idoneũ ad cuſtodiendã rem, et tempꝰ idoneũ ad effundendam rem in mare
in tẽpore tẽpeſtatis magnæ. Tempꝰ idoneũ ad lacerandũ veſtimentum *pro* 7
mortuo, & tẽpus idoneum ad conſuendã ſciſſurã : tempus idoneum ad tacendum
ab orando, & tẽpus idoneum ad eloquenda verba cõtroverſiæ. Tẽpus 8
idoneum ut unus amet ſocium ſuum, & tẽpus idoneum ut odio habeat virum
peccatorẽ: tẽpus idoneum ad ineundum bellum, & tẽpus idoneum ad
faciendã pacem. Quid reliqui eſt viro ſervienti qui laborat ad faciendum 9
theſauros, & ad congregandũ mammonã, niſi adjuvetur *providẽtiã* deſup?
Vidi negotium caſtigationum, & vindictam quàm dedit Dñs filiis hominis 10
qui ſunt improbi ut affligantur in eo. *Dixit Selomoh rex per ſpiritum* 11
prophetiæ, Univerſum fecit Dominus pulchrum in tempore ſuo: *oportuiſſet*
enim ut illud diſſidium, quod evenit in diebus Jeroboam filii Nebat, eveniret
in diebus Seba filii Bichri, ſed dilatum eſt ut accideret in diebus Jeroboam
filii Nebat; nam ſi fuiſſet in diebus Seba filii Bichri, haud ædificata fuiſſet
domus ſanctuarii, propter vitulos aureos quos fecit Jeroboam impius, & collocavit
eos unum in Bethel & alterum in Dan, ſtatutis cuſtodibus ſuper via
ut ceſſarent aſcendentes ad feſta; propterea retardatum eſt donec ædificaretur
domus ſanctuarii, ne impedirent Iſrael quo minus ædificarent eam.
Nomen etiam, quod erat inſcriptum & explicatum in lapide fundamenti,
celavit ab eis; manifeſtũ ſiquidẽ erat in cõſpectu illiꝰ ingeniũ pravum quod
in corde illorũ, ſi traditum fuiſſet in manum hominum, uſurũ eo fuiſſe, &
ejꝰ ope inventurũ quod futurum eſt in fine dierum in ſecula ſeculorum: diẽ
deniq; mortis occultavit ab illis, ne innoteſcat viro à principio quid *venturum*
fit in fine. *Dixit Selomoh rex per ſpiritum prophetiæ.* Cognovi quòd 12
non eſt bonum in illis, in filiis [*inquam*] hominis, niſi ut delectentur in delectatione
Legis, & faciant bonum in diebus vitæ ſuæ. Et etiam omnis homo 13
ut comedat & bibat & videat bonũ in diebus ſuis, & hæreditate tradat filiis
ſuis in tẽpore mortis ſuæ omnẽ laborẽ ſuum: donum quod datum eſt ei, à facie Domini eſt.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܠܝܬ ܕܛܒ ܠܒܪܢܫܐ . ܐܠܐ ܕܢܐܟܘܠ ܘܢܫܬܐ. ܘܢܚܘܐ ܠܢܦܫܗ ܛܒܬܐ 24
ܒܥܡܠܗ. ܘܐܦ ܗܕܐ ܚܙܝܬ. ܕܡܢ ܐܝܕܐ ܗܝ ܕܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܕܡܢܘ ܢܐܟܘܠ 25
ܘܡܢܘ ܢܫܬܐ ܠܒܪ ܡܢܗ. * ܡܛܠ ܕܠܒܪܢܫܐ ܕܛܒ ܩܕܡܘܗܝ ܝܗܒ 26
ܚܟܡܬܐ ܘܝܕܥܬܐ ܘܚܕܘܬܐ : ܘܠܚܛܝܐ ܝܗܒ ܥܢܝܢܐ. ܠܡܘܣܦܘ ܘܠܡܟܢܫܘ .
ܘܠܡܬܠ ܠܕܛܒ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܐܦ ܗܢܐ ܗܒܠܐ ܘܬܘܙܦܐ ܕܪܘܚܐ.

Non eſt quod proficiat homini, niſi edere 24
ac bibere, & oſtendere animæ ſuæ bonum
de labore ſuo : & hoc etiam deprehendi
eſſe de manu Domini. Quis enim comedat, 25
& quis bibat præter ipſum? Nam homini 26
qui probus eſt in conſpectu ſuo, largitur Deus ſapientiam, & ſcientiam, ac lætitiam : peccatoribus autem dat curam augendi & coacervandi, dandíque ei qui bonus eſt coram Domino : atque hoc etiam vanitas eſt, & animi perturbatio.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܓ *

CAP. III.

* ܠܟܠ ܡܕܡ ܙܒܢܐ. ܘܙܒܢܐ ܠܟܠ ܨܒܘ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. * ܙܒܢܐ ܠܡܝܠܕ . ܘܙܒܢܐ 1 2
ܠܡܡܬ. ܙܒܢܐ ܠܡܢܨܒ . ܘܙܒܢܐ ܠܡܥܩܪ ܢܨܒܬܐ. * ܙܒܢܐ ܠܡܩܛܠ . ܘܙܒܢܐ 3
ܠܡܚܝܘ. ܙܒܢܐ ܠܡܣܚܦ . ܘܙܒܢܐ ܠܡܒܢܐ. * ܙܒܢܐ ܠܡܒܟܐ . ܘܙܒܢܐ 4
ܠܡܓܚܟ. ܙܒܢܐ ܠܡܪܩܕܘ . ܘܙܒܢܐ ܠܡܙܦܢܘ. * ܙܒܢܐ ܠܡܫܕܝܘ ܟܐܦܐ . 5
ܘܙܒܢܐ ܠܡܟܢܫܘ ܟܐܦܐ. ܙܒܢܐ ܠܡܓܦܦ . ܘܙܒܢܐ ܠܡܪܚܩܘ ܡܢ ܓܘܦܦܐ.
* ܙܒܢܐ ܠܡܘܒܕܘ . ܘܙܒܢܐ ܠܡܒܥܐ. ܙܒܢܐ ܠܡܐܣܪ . ܘܙܒܢܐ ܠܡܫܪܐ. * ܙܒܢܐ 6 7
ܠܡܨܪܐ . ܘܙܒܢܐ ܠܡܚܝܛ. ܙܒܢܐ ܠܡܫܬܩ . ܘܙܒܢܐ ܠܡܡܠܠܘ. * ܙܒܢܐ ܠܡܪܚܡ . 8
ܘܙܒܢܐ ܠܡܣܢܐ. ܙܒܢܐ ܕܩܪܒܐ . ܘܙܒܢܐ ܕܫܠܡܐ. * ܡܢܐ ܝܘܬܪܢܐ ܠܥܒܘܕܐ. ܕܗܘ 9
ܥܡܠ: * ܚܙܝܬ ܥܢܝܢܐ. ܕܝܗܒ ܡܪܝܐ ܠܒܢܝܢܫܐ ܠܡܬܥܢܝܘ ܒܗ : * ܠܟܠ 10
ܕܥܒܕ. ܕܫܦܝܪ ܒܙܒܢܗ. ܘܐܦ ܠܥܠܡܐ. ܝܗܒ ܒܠܒܗܘܢ. ܐܝܟ ܕܠܐ ܢܫܟܚ ܒܪܢܫܐ 11
ܥܒܕܐ ܕܥܒܕ ܡܪܝܐ. ܡܢ ܪܫܝܬܐ ܘܥܕܡܐ ܠܚܪܬܐ. * ܘܝܕܥܬ ܕܠܝܬ ܕܛܒ ܒܗܘܢ. 12
ܐܠܐ ܠܡܚܕܐ ܘܠܡܥܒܕ ܛܒܬܐ ܒܚܝܘܗܝ. * ܘܐܦ ܟܠ ܐܢܫ ܕܢܐܟܘܠ ܘܢܫܬܐ . 13
ܘܢܚܙܐ ܛܒܬܐ ܒܟܠ ܥܡܠܗ . ܡܘܗܒܬܐ ܗܝ ܕܡܪܝܐ.

Omnibus rebus eſt tempus, & cuncta negotia 1
tempus habent ſub ſole. Tempus naſcendi, 2
& tempus moriendi : tempus plantandi,
& tempus evellendi plantatum :
Tempus occidendi, & tempus ſervandi vitam 3
: tempus deſtruendi, & tempus ædificandi
: Tempus flendi, & tempus ridendi 4
: tempus plangendi, & tempus ſaltandi.
Tempus projiciendi lapides, & tempus colligendi 5
lapides : tempus amplexandi, &
tempus recedendi ab amplexu. Tempus 6
amittendi, & tempus quærendi : tempus
ligandi, & tempus ſolvendi : Tempus 7
lacerandi, & tempus conſuendi : tempus
tacendi, & tempus loquendi. Tempus amandi, 8
& tempus odiendi : tempus belli,
& tempus pacis. Et quæ utilitas in opere 9
in quo ipſe deſudat? Vidi occupationem 10
quam Dominus dedit hominibus, ut occuparentur
in ea : Quicquid agit, bonum 11
eſſe in tempore ſuo : & mundum indidiſſe
cordi eorum, ut non inveniat homo opus
quod egit Dominus ab initio uſque ad finem.
Et percepi non eſſe ipſis melius, 12
quàm lætari & benefacere in vita ſua. Imò 13
etiam quicunque comedit ac bibit, fruitúrque
bono ex omni labore ſuo, donum eſt
Domini.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ولن يوجد للإنسان شيئاً صالحاً سوي ما يأكل ويشرب وما يراه لنفسه صالحاً في تعبه * 24
ومع هذا عرفت أنا هذا أنه من يد الله هو * لأن من يأكل ومن يشرب حلوا منه * 25
* لأنه منح الإنسان الصالح * وأورد لذي وجهه حكمة وسرورا * وأعطا لمن يخطي 26
تعلبا ليزداد ويجمع ليعطي ذلك للصالح أمام وجه الله * وهذا لعمري فباطل واختيار
الروح *

Nec invenitur homini quicquam boni, 24
præter id quod comedit ac bibit, & bonum
quod ſibi experitur in labore ſuo :
inſuper deprehendi ego id eſſe de manu
Dei. Quis enim eſurus eſt, & quis 25
bibiturus præter ipſum? Nam ipſe dat 26
homini probo, & affert in conſpectum
ejus ſapientiam & gaudium : ei verò
qui peccat, negotium dat moleſtum, ut
acquirat congeratque, quatenus tradat
illud ei qui probus eſt in conſpectu
Dei : quod ſanè vanum eſt, & animi
placitum.

* الفصل الثالث *

CAP. III.

* للكل الزمان * ولكل أمر تحت السماء أوان * للولادة وقت وللوفاة وقت * وللاقتلاع 1 2
الغروس وقت وللاغتراس وقت * للقتل أوان وللمداواة أوان * للنقض وقت وللابتناء وقت * 3
* للبكاء أوان وللضحك أوان * للانتحاب وقت وللرقص وقت * لرمي الحجارة وقت 4 5
وجمع الحجارة وقت * للاعتناق وقت وللافتراق وقت * للطلب وقت وللاضاعة وقت * 6
للحفظ وقت وللاخراج وقت * للتمزيق أوان وللخياطة أوان * للصمت وقت وللكلام وقت * 7
* للمودة أوان وللمقت أوان * وقت للحرب ووقت للصلح والسلم * ما فضل من يعمل 8 9
في الأشياء التي يتعب فيها * وعرفت كل الأشياء والتعلب الذي منحه الله لأبناء 10
الناس ليتشاغلوا به * فكل الأشياء التي صنعها عرفت أنها حسنة في وقتها * 11
ومع هذا أعطي معرفة ذلك مع الدهر في قلبهم * ليلا يجد الإنسان التي صنعها الله منذ
البدء والي النجاز * وعرفت أن ليس فيها صالحا * سوي أن يفرح وأن يعمل في حياته 12
عملا صالحا * مع أن الإنسان كلما يأكله ويشربه * ويري صالحا في جميع تعبه هذا 13
عطية الله هو *

Omnibus eſt tempus, & res quælibet 1
quæ ſub cœlo eſt, tempus habet. Eſt 2
nativitati tempus, tempus & morti :
evulſio plantarum tempeſtatem habet,
& plantatio tempeſtatem : Et occiſioni 3
tempus, & medelæ tempus : demolitioni
tempus, & extructioni tempus :
Fletui tempus, & riſui tempus : luctui 4
tempus, & tripudio tempus : Projectioni 5
lapidum tempus, & collectioni lapidum
tempus : amplexationi tempus,
& ſeparationi tempus : Acquiſitioni 6
tempus, & jacturæ tempus : conſervationi
tempus, & expulſioni tempus :
Lacerationi tempus, & ſuturæ tempus : 7
ſilentio tempus, & ſermoni tempus :
Amori tempus, & odio tempus : tempus 8
eſt bello, tempus & paci atque concordiæ.
Quid habet reſidui is qui operatur, 9
ex rebus in quibus fatigatur?
Aſſecutus ſum etiam cognitionem omnium 10
rerum, & moleſti negotii quod
dedit Deus filiis hominum, ut diſtineantur
in eo. Omnes enim res quas condidit, 11
novi pulchras eſſe ſuo tempore.
Et præterea indidit notitiam hujus rei
unà cum ſeculo in cor illorum, ne reperiat
homo quæ fecit Deus ab initio
uſque ad finem. Et didici quòd non ſit 12
in rebus illis bonum, niſi ut lætetur, &
ut exerceat in vita ſua opus bonum.
Præterquam quòd quicquid comedit homo 13
ac bibit, & commodum experitur
in cuncto labore ſuo, hoc donum Dei
eſt.

קהלת : ד

:ſeculum in erit ipſum ,Deus faciet quod omne quòd Novi
14 יָדַעְתִּי כִּי כָּל־אֲשֶׁר יַעֲשֶׂה הָאֱלֹהִים הוּא יִהְיֶה לְעוֹלָם
,fecit Deus & : diminuendū non eo ab & ,addendū non illud ſuper
עָלָיו אֵין לְהוֹסִיף וּמִמֶּנּוּ אֵין לִגְרֹעַ וְהָאֱלֹהִים עָשָׂה
fore quod & ,ipſum jam fuit Quod .ejꝰ faciebus à timeant ut
15 שֶׁיִּרְאוּ מִלְּפָנָיו׃ מַה־שֶּׁהָיָה כְּבָר הוּא וַאֲשֶׁר לִהְיוֹת
ſub vidi adhuc Et :conſequutum requiret Deus & : fuit jam
16 כְּבָר הָיָה וְהָאֱלֹהִים יְבַקֵּשׁ אֶת־נִרְדָּף׃ וְעוֹד רָאִיתִי תַּחַת
ibi ,juſtitiæ locum & ,impietas ibi ,judicii locum ,ſole
הַשֶּׁמֶשׁ מְקוֹם הַמִּשְׁפָּט שָׁמָּה הָרֶשַׁע וּמְקוֹם הַצֶּדֶק שָׁמָּה
impium & Juſtum ,meo corde in ego Dixi .impietas
17 הָרָשַׁע׃ אָמַרְתִּי אֲנִי בְּלִבִּי אֶת־הַצַּדִּיק וְאֶת־הָרָשָׁע
opus omne ſuper & voluntati omni tēpus quia : Deus judicabit
יִשְׁפֹּט הָאֱלֹהִים כִּי־עֵת לְכָל־חֵפֶץ וְעַל כָּל־הַמַּעֲשֶׂה
Adam filiorum verbum Super ,meo corde in ego Dixi .ibi
18 שָׁם׃ אָמַרְתִּי אֲנִי בְּלִבִּי עַל־דִּבְרַת בְּנֵי הָאָדָם
.ſibi ipſi animal ipſi quòd videndum ad & : Deus eos purgandos ad
לְבָרָם הָאֱלֹהִים וְלִרְאוֹת שֶׁהֶם־בְּהֵמָה הֵמָּה לָהֶם׃
: eis unus eventus & ,animalis eventus & , Adam filiorū eventus Quia
19 כִּי מִקְרֶה בְנֵי־הָאָדָם וּמִקְרֶה הַבְּהֵמָה וּמִקְרֶה אֶחָד לָהֶם
hominis præſtantia &:omnibꝰ unus ſpiritꝰ &,illum mori ſic ,iſtud mori ſicut
כְּמוֹת זֶה כֵּן מוֹת זֶה וְרוּחַ אֶחָד לַכֹּל וּמוֹתַר הָאָדָם
: unum locum ad vadens Omne .vanitas omnia quia ,nulla animali præ
20 מִן־הַבְּהֵמָה אָיִן כִּי הַכֹּל הָבֶל׃ הַכֹּל הוֹלֵךְ אֶל־מָקוֹם אֶחָד
ſciens Quis .pulverem ad revertens omne & ,pulvere ex fuit omne
21 הַכֹּל הָיָה מִן־הֶעָפָר וְהַכֹּל שָׁב אֶל־הֶעָפָר׃ מִי יוֹדֵעַ
jumenti ſpiritus & ; ſurſum ipſe aſcendens hominum filiorum ſpiritus
רוּחַ בְּנֵי הָאָדָם הָעֹלָה הִיא לְמָעְלָה וְרוּחַ הַבְּהֵמָה
,bonum non quòd vidi Et ?terram ſubtus ipſe deſcendens
22 הַיֹּרֶדֶת הִיא לְמַטָּה לָאָרֶץ׃ וְרָאִיתִי כִּי אֵין טוֹב
: ejus pars illud quia ; ſuis operibus in homo lætetur quòd quàm
מֵאֲשֶׁר יִשְׂמַח הָאָדָם בְּמַעֲשָׂיו כִּי־הוּא חֶלְקוֹ
? eum poſt erit quod illud in videndum ad eum adducet quis quia
כִּי מִי יְבִיאֶנּוּ לִרְאוֹת בְּמֶה שֶׁיִּהְיֶה אַחֲרָיו׃

CAP. IV. ד

fiunt qui oppreſſos omnes vidi & , ego ſum cōverſus Et
1 וְשַׁבְתִּי אֲנִי וָאֶרְאֶה אֶת־כָּל־הָעֲשֻׁקִים אֲשֶׁר נַעֲשִׂים
,conſolator eis non &,oppreſſorum lachryma ecce & : ſole ſub
תַּחַת הַשָּׁמֶשׁ וְהִנֵּה דִּמְעַת הָעֲשֻׁקִים וְאֵין לָהֶם מְנַחֵם
ego laudans Et .conſolator eis non &,potentia eos opprimentiū manu de &
2 וּמִיַּד עֹשְׁקֵיהֶם כֹּחַ וְאֵין לָהֶם מְנַחֵם׃ וְשַׁבֵּחַ אֲנִי
vivi ipſi qui , vivos ſuprà,ſunt mortui jam qui mortuos
אֶת־הַמֵּתִים שֶׁכְּבָר מֵתוּ מִן־הַחַיִּים אֲשֶׁר הֵמָּה חַיִּים
qui ,fuit non adhuc uſque qui ipſis ambobus præ bonum Et .uſque huc
3 עֲדֶנָה׃ וְטוֹב מִשְּׁנֵיהֶם אֵת אֲשֶׁר־עֲדֶן לֹא הָיָה אֲשֶׁר
.ſole ſub fit quod ,malum opus vidit non
לֹא־רָאָה אֶת־הַמַּעֲשֶׂה הָרָע אֲשֶׁר נַעֲשָׂה תַּחַת הַשָּׁמֶשׁ׃

Verſio VULG. LAT.

14 Didici quòd omnia opera, quæ
fecit Deꝰ, perſeverent in per-
petuū: non poſſumꝰ eis quid-
quā addere, nec auferre, quæ
15 fecit Deus ut timeatur. Quod
factum eſt, ipſum permanet:
quæ futura ſunt, jam fuerunt:
16 & Deus inſtaurat ꝙ abiit. Vi-
di ſub Sole in loco judicii im-
pietatem, & in loco juſtitiæ
17 iniquitatem. Et dixi in corde
meo; Juſtū & impiū judicabit
Deus, & tempus omnis rei
18 tunc erit. Dixi in corde meo
de filiis hominum, Ut proba-
ret eos Deus, & oſtenderet ſi-
19 miles eſſe beſtiis. Idcircò unꝰ
interitꝰ eſt hominis & jumen-
torum, & æqua utriuſque con-
ditio: ſicut moritur homo,
ſic & illa moriuntur: ſimi-
liter ſpirant omnia, & nihil
habet homo jumento am-
plius: cuncta ſubjacent va-
20 nitati, Et omnia pergunt ad
unum locum: de terra facta
ſunt, & in terram pariter re-
21 vertuntur. Quis novit ſi ſpiri-
tus filiorum Adam aſcendat
ſurſum, & ſi ſpiritus jumen-
22 torum deſcendat deorſum? Et
deprehendi nihil eſſe melius
quàm lætari hominem in ope-
re ſuo, & hanc eſſe partem
illius. Quis enim eum ad-
ducet, ut poſt ſe futura cog-
noſcat?

CAP. IV.

1 VErti me ad alia, & vidi ca-
lumnias, quæ ſub Sole gerun-
tur, & lachrymas innocenti-
um, & neminem conſolatorē:
nec poſſe reſiſtere eorum vi-
olentiæ, cunctorum auxilio
2 deſtitutos. Et laudavi magis
3 mortuos, quam viventes: Et
fœliciorem utroque judicavi,
qui necdum natus eſt, nec vi-
dit mala quæ ſub Sole fiunt.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

14 † Ἔγνων ὅτι πάντα ὅσα ἐποίησεν ὁ Θεὸς,
† αὐτὰ ἔσται εἰς τὸν αἰῶνα, † (κ)ἐπ' αὐτῷ οὐκ
ἔστι προσθεῖναι, † ϗ (λ)ἀπ' αὐτοῦ οὐκ ἔστιν ἀφ-
ελεῖν· † ϗ ὁ Θεὸς ἐποίησεν, ἵνα φοβηθῶ-
15 σιν ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ. † Τὸ (μ) γινόμενον,
ἤδη ἐστί, † ϗ ὅσα τοῦ γίνεσθαι, ἤδη γέγονε,
16 † ϗ ὁ Θεὸς ζητήσει τὸν διωκόμενον. † Καὶ ἔτι
εἶδον ὑπὸ τὸν ἥλιον † τόπον τῆς κρίσεως, ἐκεῖ
ὁ ἀσεβής· † ϗ τόπον (ν) τοῦ δικαίου, ἐκεῖ ὁ
17 εὐσεβής. † (ξ) Καὶ εἶπα ἐγὼ ἐν καρδίᾳ μου, †
Σὺν τὸν δίκαιον ϗ σὺν τὸν ἀσεβῆ κρινεῖ ὁ Θε-
ὸς, † ὅτι καιρὸς τῷ παντὶ πράγματι, † ϗ
18 (ο) ἐπὶ παντὶ τῷ ποιήματι † ἐκεῖ. Εἶπα ἐ-
γὼ ἐν καρδίᾳ μου, † περὶ λαλιᾶς υἱῶν τοῦ ἀν-
θρώπου, Ὅτι διακρινεῖ αὐτοὺς ὁ Θεὸς, † ϗ (*)
19 τοῦ δεῖξαι ὅτι αὐτοὶ κτήνη εἰσί. † Καί γε αὐ-
τοῖς συνάντημα υἱῶν τοῦ ἀνθρώπου, † ϗ συν-
άντημα τοῦ κτήνους, συνάντημα ἓν αὐτοῖς.
† ὡς ὁ θάνατος τούτου, (π) οὕτως ϗ ὁ θάνα-
τος τούτου· † ϗ πνεῦμα ἓν τοῖς πᾶσιν· † ϗ
τί ἐπερίσσευσεν ὁ ἄνθρωπος παρὰ τὸ κτῆ-
νος; † οὐδέν· ὅτι (ρ) πάντα ματαιότης.
20 † Τὰ πάντα (σ) εἰς τόπον ἕνα, † τὰ πάν-
τα ἐγένετο ἀπὸ τοῦ χοὸς, † ϗ τὰ πάντα ἐπι-
21 στρέψει εἰς τὸν χοῦν. † Καὶ τίς (τ) εἶδεν πνεῦ-
μα υἱῶν τοῦ ἀνθρώπου, † εἰ ἀναβαίνει αὐτὸ
(υ) ἄνω; † ϗ τὸ πνεῦμα τοῦ κτήνους, εἰ κα-
22 ταβαίνει αὐτὸ κάτω (φ) εἰς γῆν; † Καὶ
εἶδον ὅτι οὐκ ἔστιν ἀγαθὸν † εἰ μὴ ὃ εὐφραν-
θήσεται (*) ὁ ἄνθρωπος ἐν ποιήμασιν αὐτοῦ, †
ὅτι αὐτὸ μερὶς αὐτοῦ· † ὅτι τίς ἄξει αὐτὸν τοῦ
ἰδεῖν ἐν (χ) ᾧ ἐὰν γένηται μετ' αὐτόν;

MS. A. (κ) ἐπ' αὐτῷ (λ) ἀπ' αὐτοῦ (μ) γινώμενον, (ν) τῶν δικαίων, (ξ) Ἐκεῖ εἶ-
πον ἐγὼ (ο) ἐπὶ παντὶ ποιήματι (*) τοῦτο (π) οὕτως ὁ θάνατος (ρ) τὰ πάντα
(σ) πορεύεται εἰς τόπον ἕνα, (τ) οἶδεν τὸ πνεῦμα (υ) εἰς ἄνω; ϗ πνεῦμα
(φ) εἰς τὴν γῆν; (*) ἄνθρωπος (χ) ᾧ ἂν γένηται

ΚΕΦ. δʹ.

1 † ΚΑὶ ἐπέστρεψα ἐγὼ, ϗ εἶδον † συμπά-
σας τὰς συκοφαντίας τὰς γινομένας ὑπὸ τὸν
ἥλιον· † ϗ ἰδοὺ δάκρυον τῶν συκοφαντουμέ-
νων, † ϗ οὐκ ἔστιν αὐτοῖς παρακαλῶν, † ϗ ἀπὸ
χειρὸς συκοφαντούντων (α) αὐτοῖς ἰσχὺς, † ϗ
2 οὐκ ἔστιν αὐτοῖς (β) παρακαλῶν. † Καὶ ἐπῄνεσα
ἐγὼ (ϛ) σύμπαντας τοὺς τεθνηκότας † τοὺς ἤδη
ἀποθανόντας ὑπὲρ τοὺς ζῶντας, † ὅσοι αὐτοὶ
3 ζῶσιν ἕως τοῦ νῦν. † Καὶ ἀγαθὸς ὑπὲρ τοὺς
δύο τούτους † ὅστις οὔπω ἐγένετο, † ὃς οὐκ εἶδε
(δ) σὺν πᾶν τὸ ποίημα τὸ πονηρὸν τὸ πε-
ποιημένον ὑπὸ τὸν ἥλιον.

MS. A. (α) αὐτοὺς (β) ὁ παρακαλῶν. (ϛ) σὺν τοὺς τεθνηκότας (δ) σὺν τὸ ποίημα

Cognovi, quia omnia quæ fecit De- 14
us, ipſa (l) erunt in æternum. Su-
per illud non poteſt adjici, & ab
illo non poteſt auferri. Et Deus fe-
cit, ut timeant à facie ejus. Quod 15
fuit, jam eſt: & quæ futura ſunt,
jam fuerunt. Et Deus quæret (m)
eum, qui perſequutionem patitur.
Et adhuc vidi ſub Sole locum ju- 16
dicii, illic impius: & locum juſti,
(n) illic pius. Et dixi ego in cor- 17
de meo; (o) Juſtum & impium ju-
dicabit Deus: quia tempus eſt (p)
omni rei, & ſuper omne factū ibi.
Dixi ego in corde meo de loquela 18
filiorum hominis: (q) Quia ſepa-
rabit illos Deus, & ut oſtendat,
quia ipſi jumenta ſunt. (r) Et qui- 19
dem eis eventus filiorum hominis,
& eventus pecoris, eventus unus
eis. Sicut mors hujus; ita & mors
illius: & (ſ) ſpiritus unus omni-
bus: & quid abundavit homo à
pecore? nihil: quia omnia vani-
tas. Omnia ad locum (t) unum: 20
omnia facta ſunt de (v) pulvere,
& omnia revertentur in pulve-
rem. Et quis novit ſpiritus filio- 21
rum hominis, ſi aſcendat ipſe ſur-
ſum? & ſpiritus pecoris, ſi de-
ſcendat ipſe deorſum in terram?
Et vidi, quia non eſt bonum, niſi 22
quòd lætetur homo in operibus ſu-
is: quia hæc eſt pars ejus. Quis
(x) enim adducet eum, ut videat
in illud, quod futurum eſt poſt
ipſum?

CAP. IV.

ET converti me ego, & vidi u- 1
niverſas (a) calumnias quæ (b) fa-
ctæ ſunt ſub Sole. Et ecce (c) la-
chryma eorū, qui calumnias ſuſti-
nent: & non eſt qui (d) conſo-
letur eos: & de manu calumnian-
tium eos, fortitudo; & non eſt eis
conſolator. Et (e) laudavi ego (f) 2
omnes mortuos, qui jam mortui
ſunt, ſuper viventes, quicunque
ipſi vivunt uſq; nunc. Et bonus ſu- 3
per hos duos, qui nondùm (g) factꝰ
eſt, qui non vidit (h) omne opus
malum, quod factum eſt ſub Sole.

תרגום TARGUM.

14 ידעית ברוח נבואה ארום כל די יעבד יי בעלמא בין טב לביש מדאתגזר מפומיה הוא
יהא לעלם עלוהי לית רשו לגבר לאוספא ומניה לית רשו לגבר לבצרא ובעדן די ייתי
15 פורענותא בעלמא יי הוא דעבד בגין די ידחלון בני אנשא מן קדמוהי : מה דהוות מן
קדמת דנא הא כבר הוא דאתי מה דעתיד למהוי בסוף יומיא הא כבר הוה וליום רבא
16 דעתיד יי למתבע חשוכא ומסכינא מן ידוהי דרשיעא דרדף ליה : ועוד חזית תחות
שמשא בעלמא הדין אתר בית דינא דדייני שקרא תמן יחובון לזכאה למפק חיבא
בדיניה ואתר דמשתכח תמן גבר זכי תמן משתכח גברא חיבא למשלט ביה בגין חובי
17 דרא בישא : אמרית אנא בלבי ית זכאה וית חיבא ידין יי ביום דינא רבא ארום עדן
18 מתעבד לכל עסקא ועל כל עובדא דעבדו בעלמא הדין אתדרונון תמן : אמרית אנא
בלבי על עסק בני אנשא דייתון עליהון מכתשין ומרעין בישין בגין לנסאיהון ובגין
למבחניהון עבד יי למחזי אין תיבין בתיובתא ישתבק להון ויתסון ורשיעיא די אנון
19 כבעירא לא תיבין בגין כן אנון מתוכחין בהון לאבאשא להון : ארום ארעון אנשא
חיבא וארעון בעירא מסאבא ארעון חד לכולהון והיכמה דתמות בעירא מסאבא כן
ימות דין דלא תאב בתיובתא קדם מותיה ונשמת רוח תרויהון כחדא אתדן לכל גין
ושארות גברא חיבא מן בעירא מסאבא מדעם בין תרויהון אלהן בית קבורתא ארום
20 כולא הבלו : כולא אזלין לאתר חד כל דיירי ארעא אתבריאו מן עפרא וכד ימותון
21 כולהון עתידין למתוב לעפרא : מן הוא חכימא דידע אין רוח נשמתא בני אנשא
22 הסלקא היא לעילא לרקיעא ורוח נשמתא דבעירא הנחתא היא לרע לארעא : וחזית
ארום לית טב בעלמא הדין מדיחדי אנש בעובדוי טבין וייכול וישתי ויוטיב לביה
ארום הוא חולקיה טב בעלמא הדין למקני ביה עלמא דאתי דלא יימר אנש בלביה
למה דין אנא מבזבז ממונא למעבד צדקתא טב לי דאשבקניה לברי בתראי או אתזן
מניה בעדן סיבתי ארום מן הוא דיעלניה למחזי מה דעתיד למהוי בתרוי :

ד

1 ותבית אנא וחזית ית כל אניסין דאתעבידו לצדיקיא בעלמא הדין תחות שמיא מן יד
דוחקיהון ולית די מליל להון תנחומין ולית למפרקהון מן יד דאנסיהון בתקוף ידא
2 ובחילא ולית די ינחים להון : ושבחית אנא ית שכיבא דהא כבר מיתו ולא חזוי
פורענותא דאתי בעלמא בתר מותיהון יתיר מן חייא די אנון קימין בעלמא הדין בעקא
3 עד כען : ושפיר מן תרויהון ית דעוד כען לא הוה ולא אתברי די לא חזא ית עובדא
בישא דאתעבד בעלמא הדין תחות שמשא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Cognovi in ſpiritu prophetiæ quod omne quod faciet Dominus in ſeculo 14
inter bonum & malum, *poſtquam decretum eſt ex ore ejus*, id erit in ſe-
culum: ſuper ipſum non eſt facultas cuiquam addere, & ex eo non eſt fa-
cultas alicui detrahere: & in tempore quo veniet ultio in ſeculo, Do-
minus ipſe eſt qui fecit, ut timeant filii hominis à conſpectu ejus. Id quod 15
fuit ab initio, *ecce* jam eſt quod venit; & id quod futurum eſt ut fiat in fine
dierum, *ecce* jam fuit, & in die [*judicii*] magni futurum eſt ut Dominus re-
quirat obſcurum & pauperem de manibus improbi qui perſecutus fuerit
eum. Et adhuc vidi ſub Sole, in ſeculo hoc locum domus judicii; in 16
quo judices mendacii condemnant innocentem, ut exeat reus in judicio
ſuo, & locum in quo invenitur vir innocens; ibidem invenitur vir pec-
cator, ut imperet ei propter peccata generationis malæ. Dixi ego in cor- 17
de meo, Innocentem & peccatorem judicabit Dominus in die judicii ma-
gni, quoniam tempus præfinitum eſt omni cauſæ: & propter omne opus
quod fecerint in ſeculo hoc judicabuntur ibi. Dixi ego in corde meo ſu- 18
per cauſam filiorum hominis quòd venient ſuper eos percuſſiones & mor-
bi mali ad tentandum eos & ad probandum eos: [*hæc*] fecit Dominus ut
videat; ſi revertentur ad pœnitentiam, dimittetur illis & ſanabuntur. Sed
improbi qui ut jumentum non convertuntur, propterea illi arguuntur *illis*
nocendo eis. Quoniam eventus hominis *peccatoris* & eventus jumenti *im-* 19
mundi, eventus unus omnibus illis: & ecce quemadmodum moritur ju-
mentum *immundum*, ſic moritur is qui non convertitur ad pœnitentiam
ante mortem ſuam, & ſpiraculum ſpiritus utriúſque ſimul judicabitur in
omni negotio: & reſiduum viri *peccatoris* præ jumento *immundo* non eſt
quicquid inter utrúmque, niſi domus ſepulchri, quia omnia vanitas.
Omnia eunt ad locum unum: omnes habitatores ſeculi creati ſunt ex pul- 20
vere: et quando mortui fuerint omnes illi futuri ſunt ut convertantur in
pulverem. Quis ſapiens qui novit an ſpiritus animæ filiorum hominis aſ- 21
cendat ipſe ſupra firmamentum, & ſpiritus animæ jumenti deſcendat ipſe
ſubtus terram? Et vidi quòd non eſt melius in ſeculo hoc, quàm ut gaude- 22
at homo in operibus ſuis bonis, & comedat & bibat & bene habeat cor
ejus: namque hæc eſt pars ejus bona in ſeculo hoc ad acquirendum in ea
ſeculum venturum: *ne dicat quiſquam in corde ſuo, Cur ego prodigo fa-*
cultates meas præſtando eleemoſynam? ſatius eſſet mihi ut recondam eas fi-
lio meo poſt me, vel ut alar eis in tempore ſenectutis meæ; nam quis eſt ille
qui introducet eum ad videndum id quod futurum eſt ut fiat poſt eum?

CAP. IV.

ET redii ego & vidi omnes calumnias quæ factæ ſunt juſtis qui oppri- 1
muntur in ſeculo hoc ſub *cœlo* à manu oppreſſorum ipſorum, & non eſt
qui loquatur illis conſolationes, & non eſt qui vindicet eos de manu mo-
leſtantium eos in fortitudine manus & in virtute, & non eſt qui conſoletur
eos. Et laudavi ego jacentes qui ecce jam mortui fuerunt, qui non vide- 2
runt ultionem quæ venit in ſeculum poſt mortem ſuam magis quàm vivos
qui vixerunt *in mundo hoc* in moleſtia uſque nunc. Et præſtantior utriſque 3
is eſt qui haſtenus nondum fuit, nec creatus eſt, quòd non viderit opera mala quæ facta ſunt in mundo hoc ſub Sole.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

14 ܝܕܥܬ ܕܟܠ ܕܥܒܕ ܡܪܝܐ. ܗܘ ܢܗܘܐ ܠܥܠܡ. ܠܝܬ ܠܗ ܠܡܘܣܦܘ. *
15 ܘܡܢܗ ܠܝܬ ܠܡܒܨܪܘ. ܘܡܪܝܐ ܥܒܕ ܕܢܕܚܠܘܢ ܡܢܗ. * ܡܕܡ ܕܗܘܐ ܡܢ ܟܕܘ
ܐܝܬܘܗܝ. ܘܡܕܡ ܕܥܬܝܕ ܕܢܗܘܐ. ܡܢ ܩܕܝܡ ܗܘܐ. ܘܐܠܗܐ ܢܒܥܐ ܠܡܪܕܦܐ ܕܡܬܪܕܦ.
16 ܬܘܒ ܚܙܝܬ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. ܐܬܪ ܕܕܝܢܐ ܬܡܢ ܪܘܫܥܐ. ܘܐܬܪ ܕܙܕܝܩܘܬܐ ܬܡܢ ܥܘܠܐ. *
17 ܘܐܡܪܬ ܐܢܐ ܒܠܒܝ. ܠܙܕܝܩܐ ܘܠܪܫܝܥܐ ܢܕܘܢ ܐܠܗܐ ܕܝܢ. ܡܛܠ ܕܙܒܢܐ *
18 ܠܟܠ ܨܒܘ. ܘܥܠ ܟܠ ܥܒܕܐ ܬܡܢ. * ܐܡܪܬ ܐܢܐ ܒܠܒܝ. ܥܠ ܡܡܠܠܐ ܕܒܢܝ̈ ܐܢܫܐ.
19 ܕܒܪܐ ܐܢܘܢ ܐܠܗܐ. ܘܠܡܚܘܝܘ ܕܐܝܬܝܗܘܢ ܐܝܟ ܒܥܝܪܐ ܐܢܘܢ. * ܠܗܘܢ ܡܛܠ ܦܓܥܐ
ܕܒܢܝ̈ ܐܢܫܐ ܘܦܓܥܐ ܕܒܥܝܪܐ. ܦܓܥܐ ܚܕ. ܦܓܥ ܠܟܠܗܘܢ. ܐܝܟ ܡܘܬܗ ܕܗܢܐ ܗܟܢܐ.
ܡܘܬܗ ܕܗܘ. ܘܪܘܚܐ ܚܕܐ ܠܟܠܗܘܢ. ܘܡܘܬܪܢܘܬܐ ܕܒܪܢܫܐ ܡܢ ܒܥܝܪܐ ܠܝܬ.
20 ܡܛܠ ܕܟܠܡܕܡ ܣܪܝܩ. * ܟܠ ܐܙܠ ܠܐܬܪ ܚܕ. ܟܠ ܗܘܐ ܡܢ ܥܦܪܐ. ܘܟܠ ܗܦܟ
21 ܠܥܦܪܐ. * ܘܡܢܘ ܝܕܥ ܪܘܚܐ ܕܒܢܝ̈ ܐܢܫܐ ܣܠܩܐ ܠܥܠ. ܘܪܘܚܐ ܕܒܥܝܪܐ. ܢܚܬܐ ܗܝ
22 ܠܬܚܬ ܠܐܪܥܐ. * ܘܚܙܝܬ ܕܠܝܬ ܛܒ ܡܢ ܗܠܝܢ. ܐܠܐ ܕܢܚܕܐ ܐܢܫ ܒܥܒܕܘܗܝ. ܡܛܠ
ܕܗܝ ܗܝ ܡܢܬܗ. ܡܛܠ ܕܡܢܘ ܢܝܬܝܘܗܝ ܠܡܚܙܐ. ܒܡܐ ܕܢܗܘܐ ܡܢ ܒܬܪܗ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܕ *

1 ܘܗܦܟܬ ܐܢܐ ܘܚܙܝܬ ܠܗ ܠܟܠ ܥܘܠܐ ܕܡܬܥܒܕܝܢ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. ܘܗܐ ܕܡܥܐ *
ܕܥܫܝܩܐ. ܘܠܝܬ ܠܗܘܢ ܡܒܝܐܢܐ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܥܠܘܒܝܗܘܢ. ܚܝܠܐ. ܘܠܝܬ ܠܗܘܢ
2 ܡܥܕܪܢܐ. * ܘܫܒܚܬ ܐܢܐ ܠܡܝ̈ܬܐ ܕܟܒܪ ܡܝܬܘ. ܡܢ ܚܝ̈ܐ ܕܐܝܬܝܗܘܢ ܚܝܝܢ ܥܕܡܐ
3 ܠܗܫܐ. * ܛܒ ܕܝܢ ܡܢ ܬܪܝܗܘܢ. ܡܢ ܕܥܕܟܝܠ ܠܐ ܗܘܐ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܚܙܐ
ܥܒܕܐ ܒܝܫܐ ܕܡܬܥܒܕ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ.

* Novi quòd quicquid Dominus condidit, 14
hoc manebit in æternum, nihil illi addendo,
nihílque ab eo detrahendo : & Dominus effecit
ut ipſum formident. Quod fuit jampridem, 15
eſt : & quicquid erit, multò jam
antè fuit. Et Deus requiret vexatum qui
propellitur. Prætereà vidi ſub ſole ubi judicium 16
eſſe debuerat, ibi impietatem *regnare* :
& ubi juſtitia, ibi iniquitatem. Quapropter 17
dixi apud meipſum, Juſtum & impium
judicabit Deus : tempus enim omni
negotio omníque facto tunc erit. Dixi 18
ego in corde meo, more loquens hominum,
Creavit illos Deus : & ut oſtenderet
eos ſimiles eſſe jumentis, Contingit eis 19
caſus hominum & caſus jumentorum : idem
caſus omnibus contingit. Ut moritur iſte,
ſic moritur ille : idémque ſpiritus omnibus
ineſt, nec præſtat homo jumento, quia cuncta
ſunt vanitas. Omnia tendunt ad locum 20
unum : omnia facta ſunt ex pulvere, & omnia
in pulverem revertuntur. Et quis 21
ſciat an ſpiritus hominum ſurſum aſcendat,
ſpiritus autem jumentorum deorſum
in terram deſcendat ? Igitur deprehendi 22
nihil melius eſſe penes eos, quàm ut fruatur
homo operibus ſuis, quum ea ſit ſit pars ipſius.
Quis enim adducet eum ut ſpectet
quicquid poſt ipſum futurum eſt ?

CAP. IV.

PRæterea converſus conſideravi oppreſſiones 1
omnes quæ fiunt ſub ſole ; & ecce lachrymæ
oppreſſorum, nec adeſt qui ſublevet
eos de manu opprimentium eos :
violentia, nec habent auxiliatorem. Unde 2
laudavi mortuos qui quidem mortui ſunt,
præ vivis qui adhuc vivunt. His autem utriuſque 3
beatior eſt qui nondum fuit, quia
non vidit actiones peſſimas quæ fiunt ſub
ſole.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

14 * وعرفت أن كل البرايا التي خلقها الله تكون الي الأبد على ترتيبها وحالها * ولن يمكن
15 أن يزاد فيها ولا ينقص منها * والله صنع ليرهبوا من وجهه * الأمر الكاين انه موجود *
16 وكلما سيكون انه قد كان ومضى * والله يبتغي المطلوب أي ما يسعى في أثره * وعرفت
أيضا تحت الشمس موضع الحكومة فهناك الكافر * وموضع الصديق وهناك المؤمن *
17 * فقلت أنا في قلبي * إن الله يحاكم المقسط بالسواء ويحاكم المنافق بالسواء * لأن لكل
18 أمر ولكل صناعة وقت * فقلت أنا في قلبي عن كلام بني الإنسان * إن الله يحاكمهم
19 وليريهم أنهم بهايم هم * وذلك إن عندهم لقيا بني الإنسان ولقيا البهيمة لقيا واحد عندهم *
فيظنون أن مثل موت الإنسان هذه كذلك موت هذه * وروح واحدة للكل * وما فضل
20 الإنسان على البهيمة لا شي * لأن كل الأشياء باطلة * والكل يذهب الي موضع واحد * الكل
21 صار من التراب والكل يرجع الي التراب * ومن قد عرف ان كان روح ابن الإنسان نفسه
22 يصعد الي فوق * وإن كان روح البهيمة نفسه ينزل الي أسفل الأرض * وعرفت أن ليس أمرا صالحا
سوي ما يفرح به الإنسان في أعماله * فإن ذلك حظه * لأن من يقتاده ليري ماذا يصير
بعده فيما يخلفه *

* الفصل الرابع *

1 * والتفتّ أنا فرأيت المباغي الصايرة تحت الشمس كلها معا * وها دموع المظلومين ولن
2 يوجد لهم معزي * والقوة صادرة من يد الذين بغوهم ولن يوجد لهم معزي * فمدحت
أنا مع الذين ماتوا الذين توفوا الآن * أكثر من الأحياء * من كان منهم يعيش كما هو
3 الآن * والصالح أكثر من هذين الفريقين من لم يولد * الذي ما عرف الشر من افتعال
صناعته المصنوعة تحت الشمس *

Didici etiam creaturas omnes quas condidit Deus, in eodem ordine & conditione perpetuò manſuras, nec eſſe poſſibile quicquam his addi, aut ex his detrahi : Deumque effeciſſe ut timeant à conſpectu ipſius. 14
Quod fuit, ipſum quidem exiſtit : & quicquid erit, jam fuit ac præteriit. Et Deus poſtulat quod requiritur, hoc eſt, quod ejus veſtigia ſequitur. 15
Novi prætcrea ſub ſole locum judicii, ibique eſt infidelis & : locum juſti, ibique fidelis. 16
Quare dixi in corde meo, Deus quidem juſtum ex æquo judicat, & impium ex æquo judicat : omnis enim res & quodlibet nogotium tempeſtatem habet. 17
Dixi ego in corde meo hominum verbis, Deus judicabit illos, & oſtendet eis quòd ſint belluæ. 18
Nam apud ipſos caſus hominum & caſus jumenti idem eſt apud ipſos, & arbitrantur qualis eſt mors hujus hominis, talem eſſe mortem illius, eundemque ſpiritum omnibus ineſſe, nec hominem præſtare jumento ullo modo, quandoquidem res omnes vanæ ſunt ; 19
Et omnia in unum locum redire, omnia facta eſſe ex pulvere, & omnia in pulverem redigenda. 20
Et quis novit utrùm ſpiritus ipſe hominis ſurſum aſcendat, & an ſpiritus ipſe jumenti in ima terræ deſcendat ? 21
Et cognovi rem aliam non eſſe bonam, præter eam quâ quis perfruitur in operibus ſuis : hæc enim eſt pars ipſius, nam quis ducet eum ad videndum quid fiet poſt ſe de his quæ relinquit ? 22

CAP. IV.

DEinde converti me, vidique omnes ſimul oppreſſiones quæ fiunt ſub ſole : & ecce lacbrymas oppreſſorum, nec invenitur eis conſolator : & violentiam prodeuntem de manu opprimentium, nec reperitur eis conſolator. 1
Quare laudavi ego ſimul cum his qui mortui ſunt, eos qui defuncti ſunt modò, magis quàm vivos, eum ſcilicet qui vivit ut ſit modò. 2
Et fœlicior his ambobus eſt qui natus non eſt, qui non eſt expertus malum ex operatione actionis ſuæ quæ committitur ſub ſole. 3

קהלת : ד

ipſa quod , operis *rectitudinē* omnem &,laborē omnem *ego* vidi Et
4 וְרָאִיתִי אֲנִי אֶת־כָּל־עָמָל וְאֵת כָּל־כִּשְׁרוֹן הַמַּעֲשֶׂה כִּי הִיא
Stultus .ſpiritus *paſtio* & ,vanitas hoc etiam *:ſuo ſocio à viri* invidia
קִנְאַת־אִישׁ מֵרֵעֵהוּ גַּם־זֶה הֶבֶל וּרְעוּת רוּחַ׃ 5 הַכְּסִיל
,requie volæ plenitudo *Bona* .ſuam carnem *comedens* &,ſuas manꝰ *complicans*
חֹבֵק אֶת־יָדָיו וְאֹכֵל אֶת־בְּשָׂרוֹ׃ 6 טוֹב מְלֹא כַף נָחַת
, *ego* ſum converſus Et .ſpiritus *paſtione* &,labore *pugillorum* plenitudo quàm
מִמְּלֹא חָפְנַיִם עָמָל וּרְעוּת רוּחַ׃ 7 וְשַׁבְתִּי אֲנִי
,filius etiam,ſecundus non & ,unus Eſt .ſole ſub vanitatem vidi &
וָאֶרְאֶה הֶבֶל תַּחַת הַשָּׁמֶשׁ׃ 8 יֵשׁ אֶחָד וְאֵין שֵׁנִי גַּם בֵּן
ſatiabitur non ejꝰ *oculus* etiam ,ejꝰ laboris *omnis* finis non & ,ei non frater &
וָאָח אֵין־לוֹ וְאֵין קֵץ לְכָל־עֲמָלוֹ גַּם־עֵינָיו לֹא־תִשְׂבַּע
hoc etiam ? bono à meā animā *faciens* deficere &,*laborans* ego cui &:*opulentia*
עֹשֶׁר וּלְמִי אֲנִי עָמֵל וּמְחַסֵּר אֶת־נַפְשִׁי מִטּוֹבָה גַּם־זֶה
eſt quia : unus quàm duo Meliores .*ipſum malū negociū* &,vanitas
הֶבֶל וְעִנְיַן רָע הוּא׃ 9 טוֹבִים הַשְּׁנַיִם מִן־הָאֶחָד אֲשֶׁר יֵשׁ־
faciet ſtare unus ceciderit ſi Quia .eorū *labore in* bona merces eis
לָהֶם שָׂכָר טוֹב בַּעֲמָלָם׃ 10 כִּי אִם־יִפֹּלוּ הָאֶחָד יָקִים אֶת־
.eū ſublevandū ad ſecundꝰ *non &* ,ceciderit cùm uni *illi* væ &:ſuū ſociū
חֲבֵרוֹ וְאִילוֹ הָאֶחָד שֶׁיִּפּוֹל וְאֵין שֵׁנִי לַהֲקִימוֹ׃
ſi Et ? calor erit quomodo uni & :eis erit calor &,duo *jacuerint* ſi Etiā
11 גַּם אִם־יִשְׁכְּבוּ שְׁנַיִם וְחַם לָהֶם וּלְאֶחָד אֵיךְ יֵחָם׃ 12 וְאִם־
non triplicatum filum & :eū contra ſtabunt duo ,unus ei prævaluerit
יִתְקְפוֹ הָאֶחָד הַשְּׁנַיִם יַעַמְדוּ נֶגְדּוֹ וְהַחוּט הַמְשֻׁלָּשׁ לֹא
,ſtulto &,ſene rege *præ*:ſapiēs & pauper *gnatus* Melior.rumpetur *feſtinātia in*
בִמְהֵרָה יִנָּתֵק׃ 13 טוֹב יֶלֶד מִסְכֵּן וְחָכָם מִמֶּלֶךְ זָקֵן וּכְסִיל
eſt egreſſus vinctorum domo è Quia .adhuc *moneri novit non* qui
אֲשֶׁר לֹא־יָדַע לְהִזָּהֵר עוֹד׃ 14 כִּי־מִבֵּית הָסוּרִים יָצָא
cunctos Vidi .pauper eſt natus ſuo regno in etiā quia ;*regnandū* ad
לִמְלֹךְ כִּי גַּם בְּמַלְכוּתוֹ נוֹלַד רָשׁ׃ 15 רָאִיתִי אֶת־כָּל־
qui , ſecundo *gnato* cum , ſole ſub ambulantes viventes
הַחַיִּים הַמְהַלְּכִים תַּחַת הַשָּׁמֶשׁ עִם הַיֶּלֶד הַשֵּׁנִי אֲשֶׁר
coram facies ad fuit qui omni ,populo omni finis Non .eo pro ſtabit
יַעֲמֹד תַּחְתָּיו׃ 16 אֵין־קֵץ לְכָל־הָעָם לְכֹל אֲשֶׁר־הָיָה לִפְנֵיהֶם
contritio &,vanitas hoc etiam quia :eo in lætabūtur non poſteri *etiam*
גַּם הָאַחֲרוֹנִים לֹא יִשְׂמְחוּ־בוֹ כִּי־גַם־זֶה הֶבֶל וְרַעְיוֹן
propinquꝰ & : Dei domum ad *ibis* quando ,tuū pedē Cuſtodi .ſpiritꝰ
רוּחַ׃ 17 שְׁמֹר רַגְלְךָ כַּאֲשֶׁר תֵּלֵךְ אֶל־בֵּית הָאֱלֹהִים וְקָרוֹב
malum facere ſe ſcientes ipſi non quia :ſacrificiū *ſtultos dare præ* audiendū ad
לִשְׁמֹעַ מִתֵּת הַכְּסִילִים זָבַח כִּי־אֵינָם יוֹדְעִים לַעֲשׂוֹת רָע׃

Verſio VUL. LAT.

4 Rurſū contemplatꝰ ſum omnes labores hominū, & induſtrias animadverti patere invidiæ proximi : & in hoc ergò vanitas, & cura ſuperflua eſt. 5 Stultꝰ complicat manꝰ ſuas, & comedit carnes ſuas, dicens; 6 Melior eſt pugillus cum requie, quàm plena utraque manꝰ cum labore, & afflictione animi. 7 Conſiderans reperi & aliā vanitatē 8 ſub Sole: Unꝰ eſt, & ſecundum non habet, non filium, non fratrē, & tamen laborare non ceſſat, nec ſatiantur oculi ejꝰ divitiis : nec recogitat, dicens; Cui laboro, & fraudo animā meam bonis? in hoc quoq; vanitas eſt, & afflictio peſſima. 9 Meliꝰ eſt ergò duos eſſe ſimul, quā unū: habent enim emolumentū ſocietatis ſuæ: 10 Si unꝰ ceciderit, ab altero fulcietur. Væ ſoli : quia cùm ceciderit, non habet ſublevantem ſe. 11 Et ſi dormierint duo, fovebuntur mutuó : unus quomodò calefiet? 12 Et ſi quiſpiā prævaluerit contra unum, duo reſiſtunt ei: funiculꝰ triplex difficilè rumpitur, 13 Melior eſt puer pauper & ſapiens, rege ſene & ſtulto, qui neſcit prævidere in poſterū. 14 Quòd de carcere catenìſque interdū quis egrediatur ad regnū: & aliꝰ natꝰ in regno, 15 inopiā conſumatur. Vidi cunctos viventes, qui ambulāt ſub Sole cum adoleſcente ſecūdo , 16 qui conſurget pro eo. Infinitus numerus eſt populi omniū, qui fuerūt ante eū: et qui poſteà futuri ſunt, non lætabuntur in eo: ſed & hoc vanitas & afflictio ſpiritꝰ. 17 Cuſtodi pedē tuum ingrediens domū Dei, & appropinqua ut audias. Multò enim melior eſt obedientia, quàm ſtultorum victimæ, qui neſciunt quid faciunt mali.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

4 †Καὶ εἶδον ἐγὼ σύμπαντα τὸν μόχθον, †καὶ σύμπασαν ἀνδρίαν τοῦ ποιήματος, †ὅτι αὐτὸ ζῆλος ἀνδρὸς ἀπὸ τοῦ ἑταίρου αὐτοῦ. †καί γε τοῦτο ματαιότης καὶ προαίρεσις πνεύματος. 5 † (ε) Ὁ ἄφρων περιέβαλε τὰς χεῖρας αὐτοῦ, †καὶ ἔφαγεν τὰς σάρκας αὐτοῦ. 6 †Ἀγαθὸν πλήρωμα δρακὸς ἀναπαύσεως †ὑπὲρ πληρώματα δύο δρακῶν μόχθου †καὶ προαιρέσεως πνεύματος. 7 †Καὶ ἐπέστρεψα ἐγὼ, καὶ εἶδον ματαιότητα ὑπὸ τὸν ἥλιον. 8 †Ἔστιν εἷς, καὶ οὐκ ἔστι δεύτερος· †καί γε υἱὸς καί γε ἀδελφὸς οὐκ ἔστιν αὐτῷ· †καὶ οὐκ ἔστι περασμὸς τῷ παντὶ μόχθῳ αὐτοῦ· †καί γε ὀφθαλμὸς αὐτοῦ οὐκ (ζ) ἐμπίμπλαται πλούτου. †καὶ τίνι ἐγὼ μοχθῶ, †καὶ στερίσκω τὴν ψυχήν μου ἀπὸ ἀγαθωσύνης; †καί γε τοῦτο ματαιότης καὶ (η) περισπασμὸς πονηρός ἐστι. 9 †Ἀγαθοὶ οἱ δύο ὑπὲρ τὸν ἕνα, †οἷς ἐστιν αὐτοῖς μισθὸς ἀγαθὸς ἐν μόχθῳ αὐτῶν. 10 †Ὅτι ἐὰν πέσωσιν, ὁ εἷς (ʹ) ἐγερεῖ τὸν μέτοχον αὐτοῦ· †καὶ οὐαὶ αὐτῷ τῷ ἑνὶ, ὅταν πέσῃ †καὶ μὴ ᾖ δεύτερος (θ) ἐγεῖραι αὐτόν. 11 †Καί γε ἐὰν κοιμηθῶσιν (ι) δύο, καὶ θέρμη αὐτοῖς, †καὶ ὁ εἷς πῶς θερμανθῇ; 12 †Καὶ ἐὰν ἐπικραταιωθῇ ὁ εἷς, †οἱ δύο στήσονται κατέναντι αὐτοῦ, †καὶ τὸ σπαρτίον τὸ ἔντριτον οὐ ταχέως ἀπορραγήσεται. 13 †Ἀγαθὸς παῖς πένης καὶ σοφὸς †ὑπὲρ βασιλέα πρεσβύτερον καὶ ἄφρονα, †ὃς οὐκ ἔγνω τοῦ προσέχειν ἔτι. 14 †Ὅτι ἐξ οἴκου τῶν (κ) δεσμίων ἐξελεύσεται τοῦ βασιλεῦσαι, †ὅτι καί γε ἐν βασιλείᾳ αὐτοῦ ἐγεννήθη πένης. 15 Εἶδον σύμπαντας τοὺς ζῶντας †τοὺς περιπατοῦντας ὑπὸ τὸν ἥλιον †μετὰ τοῦ νεανίσκου τοῦ δευτέρου, †ὃς (λ) στήσεται ἀντ' αὐτοῦ. 16 †Οὐκ ἔστι περασμὸς τῷ παντὶ λαῷ, †τοῖς πᾶσιν (μ) οἳ ἐγένοντο ἔμπροσθεν αὐτῶν· †καί γε οἱ ἔσχατοι οὐκ εὐφρανθήσονται (ν) ἐπ' αὐτῷ. †ὅτι καί γε τοῦτο ματαιότης καὶ προαίρεσις πνεύματος. 17 †Φύλαξον τὸν πόδα σου, (ξ) ἐν ᾧ ἐὰν πορεύῃ εἰς οἶκον τοῦ θεοῦ. †καὶ ἐγγὺς τοῦ ἀκούειν, †ὑπὲρ δόμα τῶν ἀφρόνων θυσία σου, †ὅτι οὐκ εἰσὶν εἰδότες τοῦ ποιῆσαι κακόν.

MS.A. (ε) Ἄφρων περιέλαβεν (ζ) ἐνπίπλαται (η) πειρασμὸς (ʹ) ἐγείρει (θ) τοῦ ἐγεῖραι (ι) οἱ δύο, (κ) δεσμίων ἐξελεύσεται βασιλεῦσαι (λ) ἀναστήσεται (μ) ὅσοι ἐγένοντο (ν) ἐν αὐτῷ. (ξ) ἐν ᾧ ἂν πορεύῃ εἰς τὸν οἶκον

4 *Et vidi ego univerſum laborē, & ſimul (i) omnē virtutē operis: quia (k) ipſū æmulatio viri à ſodali ejus. Et quidē hoc vanitas, et præſumpio ſpiritꝰ.* 5 *Stultꝰ (l) complexꝰ eſt manꝰ ſuas, & comedit carnes ſuas.* 6 *Bona plenitudo pugilli (m) requietis ſuper (n) plenitudines duorum pugillorū laboris, & præſumptionis ſpiritûs.* 7 *Et (o) converſꝰ ſum ego, & vidi vanitatē ſub Sole.* 8 *Eſt unꝰ & (p) non eſt ſecundꝰ: & quidē filius, & frater non eſt ei: nec eſt (q) finis omni labori ejus. Et quidē oculꝰ ejus non ſatiatur divitiis. Et cui ego laboro, & fraudo animā meā (r) bonitate? Sed & hoc vanitas, & (ſ) diſtentio peſſima eſt.* 9 *(t) Boni duo ſuper unum, quibus eſt eis merces bona in labore ſuo :* 10 *Quia ſi ceciderint, unꝰ eriget (u) participem ſuum. Et væ ipſi uni, cùm ceciderit, & (x) non fuerit ſecundꝰ, qui erigat eum.* 11 *Et quidē, ſi dormient duo; etiam calor erit illis: & unꝰ quomodò calefiet ?* 12 *Et ſi (y) invaluerit unus, duo ſtabunt adverſꝰ eū: & funiculꝰ (z) triplex non citò rumpetur.* 13 *Bonus eſt puer pauper & ſapiens, ſuper regē ſeniorē & ſtultū, (ω) qui neſcit providere in poſterū.* 14 *(aa) Quoniā de domo vinctorum egredietur, ut regnet: quia etiā in regno ſuo factꝰ eſt pauper.* 15 *Vidi univerſos viventes, qui ambulant ſub Sole, (bb) cum adoleſcente ſecundo, qui * ſtabit pro illo.* 16 *Non eſt finis omni (cc) populo, univerſis qui fuerunt ante illos. Et quidē noviſſimi non lætabuntur in eo. Sed & hoc vanitas, & præſūptio ſpiritꝰ.* 17 *Cuſtodi pedē tuū, cùm vadis in domum Dei, & (dd) propinquus ad audiendum. Super donum inſipientium, ſacrificiū tuum : quia neſciunt, quòd faciunt (ee) malum.*

תרגום TARGUM.

4 וחזית אנא ית כל טורחא וית כל אוטבות עובדא די עבדין בני אנשא ארום היא קנאתא
דקני גבר לחבריה למעבד כותיה דמקני ליה למעבד טבא כותיה מימרא דשמיא יוטיב
ליה ודמקני ליה לביש למעבד כבישתיה מימרא דשמיא יבאיש ליה ואף דין הבלו לחיבא
ותבירות רוחא : 5 שטיא אזל ומנפף ית ידוי בקיטא ולא צבי למטרח ובסתוא ייכול ית כל
מה דאית ליה ואפילו כסו מעל משך בסריה : 6 טב לגבר מלי חפני מיכלא בהנית נפש ובלא
גזילא וחטופין מן תרין חפנין מלין מיכלא בגזילא וחטופין ועתיד לשלמא בדינא בטורחא
ובתבירות רוחא : 7 ותבית אנא וחזית הבלו דאתגזר למהוי בעלמא הדין תחות שמשא : 8 אית
גבר יחידא ולית תנין בר מניה אף ברא ואף אחא לית ליה למירת ית נכסוי ולית סוף לכל
טורחיה ואף עיניה לא תכול למסבע עתריה ולא יימר בלביה למא דנן אנא טרח ומחסר
ית נפשי מטיבותא אקום כען ואעבד מניה צדקתא ואחדי בעלמא הדין עם בני אנשא
ולעלמא דאתי עם צדיקיא אף דין הבלו ועין ביש הוא : 9 טבין תרין צדיקיא בדרא יתיר מן
חדא ואנון די דברין במולא ומשתמעין מליהון די אית להון אגר טב לעלמא דאתי
בטורחהון די טרחו לסוברא ית דריהון : 10 ארום אלהן אין יפול חד מנהון על ערסא וישכוב
מרע חדא יקים ית חבריה בצלותיה דאלו חד דהוא זכי בלחודוהי בדריה די יפול על
ערסיה וישכוב מרע לית ליה בדריה חבר תנין לצלאה עלוהי אלהן בזכותיה יקום
ממרעיה : 11 אף אין דמכן תרין גבר ואתתיה ושחין להון בסתוא ולחד איכדין ישחן : 12 ואין
יקום גבר רשיעא ותקיפא בדרא ועובדוהי מקלקלין ומסתקפין לאיתאה פורענותא
בעלמא קימין תרין צדיקיא לקבליה ומבטלין פורענותא בזכותיהון וכמה יאון תלתא
צדיקיא דהנון בדרא ושלם ביניהון כתכא דמגדלא תלת תלת נימין לא בבהילו אתנתק :
13 טב הוא אברהם די הוא רביא מסכין והות ביה רוח נבואה מן קדם יי ואשתמודע ליה מריה
במהויה בר תלת שנין ולא צבי למפלח לטעותא יתיר מן נמרוד רשיעא דהוה מלכא סיב
טפש ומן בגלל דלא צבי אברהם למפלח לטעותא רמוהי לגו אתון נורא יקדתא ואתרחיש
ליה נסא מן רבוני עלמא ושזביה מתמן ואפילו מן בתר הכי לא הוית מנדעא בנמרוד
לאזדהרא עוד בדיל דלא למפלח לטעותא דהוא פלח מן לקדמין : 14 ארום מן גניסת פלחי
טעותא נפק אברהם ומלך על ארעא דכנענאי ארום אף ביומי מלכותיה דאברהם אתעביד
נמרוד מסכינא בעלמא : 15 אמר שלמה מלכא ברוח נבואה מן קדם יי חזית ית כל חייא דאזלין
בטפשיהון לסרבא על רחבעם ברי תחות שמיא ומפלגין ליה ית מלכותא לאתיהבא
לירבעם בר נבט ברם שבטא דבנימן ויהודה הוה לבהון שלים עם רביא הוא רחבעם ברי
דהוה תנין למלכותי דיקום וימלוך באתר אחסנתיה בירושלם : 16 לית סוף לכל עמא בית
ישראל לכל צדיקיא דהוה מדבר קדמיהון ברם הנון יעטוהי בחוכמתא למקל נירא
מעלויהון ובטפשותיה אזל ואתיעט עם עולמא והנון יעטוהי בטפשותא ליקרא ניר
מלכותא על עמא בית ישראל ושבק מלכת סביא ואזל במלכת בתראי ברם הנון בתראי
תוהו בתר כן לא חדו בידיה ואנון גרמו עלוהי לאסתפקא למהוי מתפלגין מניה עשרתי
שבטיא ומלוך עלויהון ירבעם חיבא אמרית אף דין הבלו לרחבעם ברי ותבירות רוח
לדיליה : 17 אנת בר נשא טר רגלך בעדן דתיזל לבית מוקדשא דיי לצלאה דלא תהך תמן מלא
חובין קדם עד לא תתוב ותהי מקריב אודנך לקבלא אולפן אוריתא מן כהניא וחכימיא ולא
תהא כטפשיא דמקרבין קורבנא על חוביהון ולא תיבין מן עובדיהון בישיא דאחידן
בידיהון וליתוהי מקבל ברעוא ארום ליתיהון ידעין למעבד בהון בין טב לביש :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

4 Et vidi ego omnē laborē & omnē directionē operis ꝙ fecerūt filii hominis, quòd ſit æmulatio qua æmulatur vir ſociū ſuū ad faciendū ſicut ille; *qui æmulatur eū, ut faciat bonū ſicut ille, verbū cœleſte benefaciet ei; qui verò æmulatur malum, ad faciendū juxta malū ipſius, verbū cœleſte malis afficiet illum:* & etiā hoc vanitas eſt *peccatori* & confractio ſpiritꝰ. 5 Stultꝰ vadit & cōplicat manꝰ ſuas in æſtate & non vult laborare, & in hyeme comedet quicquid eſt ipſi, & etiā operimentū *de pelle* carnis ſuæ. 6 Melius eſt viro implementū volæ [*unius*] cibi in quiete animæ & ſine direptione et rapinis, quàm duæ volæ plenæ cibo in direptione & rapinis : *nam perſoluturꝰ eſt in judicio cum moleſtia & confractione ſpiritus.* 7 Et redii ego & vidi vanitatē quæ decreta eſt ut ſit in ſeculo *hoc* ſub Sole. 8 Eſt vir unicꝰ, & nō eſt ſecundꝰ præter eū, neq; etiā filiū neq; fratrē habet ad hæreditandū facultates ejus, & nō eſt finis omnibꝰ laboribꝰ ejꝰ; etiā oculꝰ ejus nō poteſt ſatiari divitiis: nec dicit in corde ſuo, Ad quidnā ego laboro & defraudo animā meā bonis? *ſurgam nunc & faciā ex iis eleemoſynam, ut gaudeā in hoc ſeculo cum filiis hominis, & in ſeculo futuro cum juſtis:* etiā hoc vanitas & negotium malū eſt. 9 Meliores ſunt duo juſti in generatione, quàm unꝰ, *qui quidē agūt feliciter & audiuntur verba eorū*; quia eſt illis merces bona in ſeculo venturo in laboribꝰ ſuis, quos laboraverunt ad ſuſtentandū generationē ſuā. 10 Nā ſi ceciderit unꝰ ex eis ſuper lectū & cubaverit ægrotans, alter ſurgere faciet ſociū ſuū oratione ſua: *quòd* ſi unꝰ innocēs ſolꝰ fuerit in generatione ſua, *qui* decidet ſup lectū & cubabit ægrotans, nō erit illi in generatione ſua ſociꝰ ſecundꝰ ad orandū ſup eū : ſed in puritate ſua ſurget ex ægritudine ſua. 11 Etiam ſi dormierint duo, vir et uxor ejꝰ, et calor eis erit in hyeme : ſed unꝰ quomodo calefiet? 12 Et ſi ſurrexerit vir improbꝰ & robuſtꝰ in generatione, & opera ejꝰ corrupta, & occaſionē afferentia ad provocandā ultionē in ſeculo; ſtantes duo juſti adverſus eū, ceſſare faciēt ultionem merito ſuo : & quanto cōgruentius tres juſti qui fuerint in generatione, & pax inter eos, ſicut catena quæ contorta eſt ternis funibus, non feſtinanter convelletur. 13 Major *erat Abraham* qui *puer erat* pauper, et *inerat* in eo ſpiritꝰ *prophetiæ* ab-ante Dn̄m, *& innotuit illi Dominꝰ ejꝰ cū tertiū annū nondū exceſſerat, neq; voluit cultū præſtare idolis,* quàm *Nimrod impiꝰ qui* rex *erat* ſenex et ſtultꝰ ; *cùm enim nollet Abraham cultū præſtare idolis, projecerunt eum in fornacē ignis ardētis, ſed editū eſt ei miraculū à Domino mūdi, & eripuit eū indè*: et ultra hæc *quidē* nō *erat* cognitio *in Nimrod* ut *admoneretur* amplius *quo minꝰ coleret idola, quæ coluiſſet antea.* 14 Etenim de *ſtirpe idololatrarū* exivit *Abrahā* et regnavit ſup terrā *Chananæorū*: etenim in diebꝰ regni ipſiꝰ *Abrahā*, factꝰ eſt *Nimrod* pauper in ſeculo. 15 *Dixit Selomoh rex in ſpiritu prophetiæ à cōſpectu Domini*; Vidi omnes vivētes qui ambulāt *in ſtultitia ſua ad rebellandū in Roboā filiū meū ſub cœlo, & dividunt ei regnū ad dandum Jeroboā filio Nebat : veruntamē tribꝰ Benjamin & Jehudah corde integro fuerūt* cum puero *Roboā filio meo, qui fuit ſecundꝰ regno meo*, qui ſurrexerit et regnârit in loco hæreditatis ſuæ *in Jeruſalem*. 16 Nō eſt finis omnis populi *domꝰ Iſrael, omnium juſtorū quibꝰ ductor* fuit ante illos: *illi quidem cōſuluerunt ei ſapienter, ut alleviaret illis jugum, at in ſtultitia ſua abiens cōſuluit juvenes, qui cōſilium dederunt ei ſtolidum, ut aggravaret jugum regni ſuper populum domus Iſrael, & relicto cōſilio ſeniorum, ſecutꝰ eſt cōſilium poſteriorum: ſed & ipſi poſteriores attoniti fuerunt, nec poſtea gaviſi ſunt in eo, cum ipſi auctores fuiſſent ei, ut occaſionē daret ut decē tribꝰ deſciſcerent ab eo, & regnaret ſuper eas Jeroboā peccator. Dixi* etiā hoc vanitas *eſt Roboā filio meo*, & cōfractio ſpiritus *ſuis*. 17 Tu fili hominis cuſtodi pedes tuos in tēpore quo ieris in domum ſanctuarii *Domini* ad orandum, ne venias eò plenꝰ peccatis quoad cōvertaris: & eſto ad movens aurē tuam ad excipiendā doctrinā Legis à Sacerdotibꝰ et ſapientibꝰ, et ne fueris ut ſtulti qui offerunt munus pro peccatis ſuis, & nō cōvertuntur ab operibꝰ *ſuis* malis quæ apprehendunt manibꝰ ſuis, et *ipſe non accipit* in beneplacito, quia ipſi neſciunt facere in eis inter bonum et malum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܚܙܝܬ ܐܢܐ ܟܠ ܥܡܠܐ ܘܟܠ ܟܘܫܪܐ ܕܥܒܕܐ. ܡܛܠ ܕܛܢܢܗ ܕܓܒܪܐ ܡܢ ܚܒܪܗ. 4
ܐܦ ܗܢܐ ܗܒܠܐ ܘܡܬܦܪܥܢܘܬܐ ܕܪܘܚܐ. * ܣܟܠܐ ܡܚܒܩ ܐܝܕܘܗܝ. ܘܐܟܠ ܒܣܪܗ. * ܛܒ 5 6
ܡܠܐ ܚܘܦܢܐ ܢܝܚܐ. ܡܢ ܡܠܐ ܚܘܦܢܝ̈ ܥܡܠܐ ܘܡܬܦܪܥܢܘܬܐ ܕܪܘܚܐ. * ܘܗܦܟܬ ܐܢܐ 7
ܘܚܙܝܬ ܗܒܠܐ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. * ܐܝܬ ܚܕ. ܘܠܝܬ ܠܗ ܬܪܝܢ. ܘܒܪܐ ܘܐܚܐ ܠܝܬ ܠܗ. 8
ܘܠܝܬ ܣܟܐ ܠܟܠܗ ܥܡܠܗ. ܐܦ ܥܝܢܗ ܠܐ ܣܒܥܐ ܥܘܬܪܐ. ܘܠܡܢ ܐܢܐ ܥܡܠ.
ܘܡܚܣܪ ܢܦܫܝ ܡܢ ܛܒܬܐ. ܐܦ ܗܢܐ ܗܒܠܐ ܗܘ. ܘܥܢܝܢܐ ܒܝܫܐ. * ܛܒܝܢ 9
ܬܪܝܢ ܡܢ ܚܕ. ܕܐܝܬ ܠܗܘܢ ܐܓܪܐ ܛܒܐ ܒܥܡܠܗܘܢ. * ܕܐܢ ܢܦܠܘܢ܆ ܚܕ. ܡܩܝܡ 10
ܠܚܒܪܗ. ܘܝ ܠܗ ܠܚܕ. ܕܐܢ ܢܦܠ. ܠܝܬ ܡܢ ܕܢܩܝܡܝܘܗܝ. * ܘܐܢ ܢܫܟܒܘܢ ܬܪܝܢ. 11
ܢܫܚܢܘܢ. ܘܚܕ. ܐܝܟܢ ܢܫܚܢ. * ܘܐܢ ܢܬܩܦ ܚܕ. ܬܪܝܗܘܢ ܢܩܘܡܘܢ ܠܘܩܒܠܗ. 12
ܘܚܘܛܐ ܕܡܬܠܬ. ܠܐ ܒܥܓܠ ܡܬܦܣܩ. * ܛܒ ܛܠܝܐ ܕܡܣܟܢ ܘܚܟܝܡ. ܡܢ 13
ܡܠܟܐ ܣܒܐ ܕܣܟܠ. ܘܠܐ ܝܕܥ ܠܡܙܕܗܪܘ ܬܘܒ. * ܡܛܠ ܕܡܢ ܒܝܬ ܐܣܝܪܐ ܢܦܩ 14
ܠܡܡܠܟܘ. ܡܛܠ ܕܐܦ ܒܡܠܟܘܬܗ ܐܬܝܠܕ ܡܣܟܢܐ. * ܚܙܝܬ ܐܢܐ ܟܠܗܘܢ ܚܝ̈ܐ 15
ܕܡܗܠܟܝܢ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. ܥܡ ܛܠܝܐ ܬܢܝܢܐ ܕܢܩܘܡ ܚܠܦܘܗܝ. * ܘܠܝܬ 16
ܣܟܐ ܠܟܠܗ ܥܡܐ. ܠܟܠܗܘܢ ܕܗܘܘ ܩܕܡܝܗܘܢ. ܘܐܦ ܐܚܪ̈ܝܐ ܠܐ ܢܚܕܘܢ ܒܗ. ܡܛܠ ܕܐܦ
ܗܢܐ ܗܒܠܐ ܘܡܬܦܪܥܢܘܬܐ ܕܪܘܚܐ. * ܛܪ ܪܓܠܟ ܡܐ ܕܐܙܠ ܐܢܬ ܠܒܝܬܗ ܕܐܠܗܐ. ܘܩܪܘܒ 17
ܠܡܫܡܥ. ܛܒ ܡܢ ܡܘܗܒܬܐ ܕܕܒܚ̈ܐ ܕܣܟܠ̈ܐ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܝܕܥܝܢ
ܠܡܥܒܕ ܛܒܬܐ.

Conſideravi quoque labores omnes, cunctáſque 4
in operando proſperitates; quòd
hominis æmulatio fit à ſocio ſuo: atque
hoc etiam vanitas eſt, & animi perturbatio.
Stultus amplexatur manus ſuas, devorátque 5
carnem ſuam, *dicens*; Pleno pugillo 6
requies, melior eſt quàm plenis volis labore
& animi moleſtiâ. Converſus etiam contemplatus 7
ſum vanitatem ſub ſole. Eſt unus 8
quiſpiam, nec habet ſecundum; & filium
aut fratrem non habet: attamen nullus eſt
omnium laborum ejus finis, imò nec ſaturatur
oculus ejus divitiis. Cuinam ego laboro,
& fraudo meipſum bono? & hoc etiam vanitas
eſt, & cura peſſima. Meliores ſunt duo 9
quàm unus, quoniam eſt eis præmium bonum
in labore ſuo. Nam ſi ceciderint, alter 10
ſocium ſuum eriget. Væ ſoli, quia ſi ceciderit,
non adeſt qui eum erigat. Præterea ſi duo 11
ſimul cubent, calefient: unus autem quomodo
caleſcat? Et ſi quis inſultet, ambo reſiſtent 12
ei: denique filum triplicatum haud citò
rumpitur. Præſtantior eſt puer egenus & 13
ſapiens, rege ſene qui ſtultus eſt, ac neſcit ampliùs
eſſe cautus. Quoniam è carcere prodit 14
ad regnandũ, & quoniã in regno quoq; ſuo
natus eſt pauper. Vidi ego cunctos viventes 15
qui ambulant ſub ſole, comitari juvenem ſecundum
qui loco ipſius ſurrecturus eſt. Neque 16
terminus eſt omni populo, omnibus *inquam*
qui præceſſerunt eum: imò nec poſteri lætabuntur
in eo: nam hoc vanitas eſt & animi
moleſtia. Cuſtodi pedem tuum, quum pergis 17
ad domum Dei, & accede ad audiendum:
præſtantius *hoc* eſt victimis quas offerunt
ſtulti; quoniam ignorant agere quod bonum
eſt.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وعرفت انا جميع التعب وكافة شجاعة الصناعة * ان الحسد دابه للانسان من رفيقه 4
يكون * وهذا لعمري فباطل واختيار الروح * الغبي قد تناول يديه واكل لحمانه * 5
* ملو كف راحة صالح اكثر من ملو كفين تعبا واختيار الروح * وانعطفت انا فرايت 6 7
الاباطيل تحت الشمس * يوجد واحدا ولن يوجد ثان وذلك ابن * ومع هذا ليس له اخ * 8
وليس في جميع تعبه تعلب * ومع هذا ان عينه لن تشبع من الغنا * ولمن اتعب
انا واعدم نفسي الصلاح * وهذا لعمري فباطل وتعلب شرير هو * الاثنان صالحان 9
خير من الواحد * اذ لهما ثواب صالح في تعبهما * لانهما ان سقطا فالواحد ينهض 10
شريكه * والويل للواحد نفسه اذا سقط ولا يكون له ثان ينهضه * وان رقدا اثنان 11
يكون لهما دفاء وحرارة * والواحد كيف يسخن * وان تايد الواحد فالاثنان يقومان 12
مقابلة * والخيط المثلث ما ينسحب سريعا * صبي فقير وحكيم صالح افضل من 13
ملك شيخ وغبي * ما قد عرف ان يصغي الي ذاته ايضا * وانه من منزل المقتدرين 14
يخرج ليملك * ومع هذا فانه صار في ملكه فقيرا * عرفت جميع الاحياء معا * 15
السالكين تحت الشمس بعد الشاب الثاني من يقوم بدلا منه * وليس التعلب لجميع 16
الشعب * وكان لجميع الذين تقدموا قبلهم * ولعمري ان الاخرين لم يسروا به * وذلك
ان هذا باطلا واختيار الروح * احفظ قدمك في الوقت الذي تذهب فيه الي بيت الله * 17
وصاقب القريب للاستماع * ولتكن ضحيتك افضل من عطية الجهال * لانهم ليسوا
عارفين ان يعملوا حسنا *

Deprehendi quoque omnem laborem & 4
omnem in agendo ſolertiam; quòd ipſa
quoque hominis invidia fit à ſocio:
& hoc quidem vanum eſt, & placitum
ſpiritûs. Stolidus captis ſuis manibus, 5
comedit carnes ſuas. Vola 6
quiete plena, potior eſt duabus volis
labore & animi placito refertis. Præterea 7
converſus ego vidi vanitates ſub
ſole. Adeſt unus, nec invenitur ſecundus 8
nempe filius, adhæc non habet
fratrem; & tamen nullo frangitur labore;
quódque magis eſt, oculus ejus
haudquaquam ſaturatur divitiis. At
cuinam laboro, & meipſum bono defraudo?
atque id quidem vaniſſimum
eſt & negotium peſſimum. Duo, boni 9
ſunt, meliores uno: quandoquidem habent
mercedem bonam in dolore ſuo.
Nam ſi cadant, alter ſocium ſuum erigit. 10
Væ autem uni ſoli quum ceciderit,
nec adſit illi ſecundus qui erigat
eum. Et, ſi duo cubent, foventur 11
& calfiunt: unus autem quomodo
calfiet? Et, ſi unus quiſpiam *invaleſcat,* 12
duo ſtabunt adversùs eum:
& verò filum triplicatum haud citò
rumpitur. Puer pauper ac ſapiens bonus 13
eſt, præſtantior rege ſene ac ſtolido,
qui neſcit ampliùs ſibi conſulere.
Tum quia hic ex ædibus potentium egreditur 14
ad regnum ſuſcipiendum: tum
etiam quòd in regno ſuo pauper eveniat.
Omnes ſimul vivos deprehendi ſub ſole 15
incedentes poſt juvenem ſecundum
qui hujus loco ſurrecturus eſt. Et 16
negotium non ſolùm *univerſo populo*
faceſſitur, ſed fuit omnibus qui præceſſerunt
eos, & ne poſteri quidem
lætabuntur in eo: quia nimirum hoc
vanum eſt, & placitum ſpiritûs. Obſerva 17
pedem tuum quo tempore adieris
domum Dei, & accede ad eum
qui proximus eſt ad audiendum: ſitque
ſacrificium tuum præclarius munere
ſtultorum; hi enim neſciunt utrùm
benefaciant.

קֹהֶלֶת: ה

CAP. V. ה

facies ad verbum proferre acceleret ne tuũ cor &, tuo ore ſuper feſtines Ne
1 אַל־תְּבַהֵל עַל־פִּיךָ וְלִבְּךָ אַל־יְמַהֵר לְהוֹצִיא דָבָר לִפְנֵי
idcirco : terrã ſuper tu & , cœlis in Deus quia : Dei
הָאֱלֹהִים כִּי הָאֱלֹהִים בַּשָּׁמַיִם וְאַתָּה עַל־הָאָרֶץ עַל־כֵּן
: negotii multitudine in ſomnium veniens Quia .pauca tua verba ſint
2 יִהְיוּ דְבָרֶיךָ מְעַטִּים: כִּי בָּא הַחֲלוֹם בְּרֹב עִנְיָן
, Deo votum voveris Quum .verborũ multitudine in ſtulti vox &
3 וְקוֹל כְּסִיל בְּרֹב דְּבָרִים: כַּאֲשֶׁר תִּדֹּר נֶדֶר לֵאלֹהִים
Quæ : ſtultis in voluntas non quia : illud reddere tardes ne
אַל־תְּאַחֵר לְשַׁלְּמוֹ כִּי אֵין חֵפֶץ בַּכְּסִילִים אֵת אֲשֶׁר־
non & ,voveas quod quàm ,voveas non quòd Melius .redde , voveris
4 תִּדֹּר שַׁלֵּם: טוֹב אֲשֶׁר לֹא־תִדֹּר מִשֶּׁתִּדּוֹר וְלֹא
ne & ,tuã carnem faciendũ peccare ad tuum os des Ne .reddas
5 תְשַׁלֵּם: אַל־תִּתֵּן אֶת־פִּיךָ לַחֲטִיא אֶת־בְּשָׂרֶךָ וְאַל־
Deus iraſcetur quid Ut .iſtud error quia , angeli facies ad dicas
תֹּאמַר לִפְנֵי הַמַּלְאָךְ כִּי שְׁגָגָה הִיא לָמָּה יִקְצֹף הָאֱלֹהִים
multitudine in Quia ?tuarũ manuũ opus diſſipabit &,tuã vocẽ propter
6 עַל־קוֹלֶךָ וְחִבֵּל אֶת־מַעֲשֵׂה יָדֶיךָ: כִּי בְרֹב
.time Deum ſed : multum verba & ,vanitates &,ſomniorum
חֲלֹמוֹת וַהֲבָלִים וּדְבָרִים הַרְבֵּה כִּי אֶת־הָאֱלֹהִים יְרָא:
,provincia in videris juſtitiæ & ,judicii rapinam &,pauperis oppreſſionẽ Si
7 אִם־עֹשֶׁק רָשׁ וְגֵזֶל מִשְׁפָּט וָצֶדֶק תִּרְאֶה בַמְּדִינָה
,cuſtodiens excelſum deſuper excelſus quia : voluntate ſuper mireris no
אַל־תִּתְמַהּ עַל־הַחֵפֶץ כִּי גָבֹהַּ מֵעַל גָּבֹהַּ שֹׁמֵר
agro rex : ipſa omnib⁹ in terræ præſtantia Et .eos ſuper excelſi &
8 וּגְבֹהִים עֲלֵיהֶם: וְיִתְרוֹן אֶרֶץ בַּכֹּל הִיא מֶלֶךְ לְשָׂדֶה
multitudine in diligens qui &,argento ſatiabitur non argentũ Diligens .ſervus fit
9 נֶעֱבָד: אֹהֵב כֶּסֶף לֹא־יִשְׂבַּע כֶּסֶף וּמִי־אֹהֵב בֶּהָמוֹן
ſunt multiplicati ,bonum multiplicando In .vanitas hoc etiam :fructus non
10 לֹא תְבוּאָה גַּם־זֶה הָבֶל: בִּרְבוֹת הַטּוֹבָה רַבּוּ
?ejus oculorum videre quinimo ,ſuis dominis rectum quid & : illud comedẽtes
אוֹכְלֶיהָ וּמַה־כִּשְׁרוֹן לִבְעָלֶיהָ כִּי אִם־רְאִית עֵינָיו:
· comedat multum ſive ,parum ſive , operantis ſomnus Dulcis
11 מְתוּקָה שְׁנַת הָעֹבֵד אִם־מְעַט וְאִם־הַרְבֵּה יֹאכֵל
infirmitas mala Eſt .dormire ei permittens ipſa non divitis ſaturitas &
12 וְהַשָּׂבָע לֶעָשִׁיר אֵינֶנּוּ מַנִּיחַ לוֹ לִישׁוֹן: יֵשׁ רָעָה חוֹלָה
.ſuum malũ in ſuis dominis cuſtodita opulentia , ſole ſub vidi
רָאִיתִי תַּחַת הַשָּׁמֶשׁ עֹשֶׁר שָׁמוּר לִבְעָלָיו לְרָעָתוֹ:
non &,filium genuit & : mala occupatione in ipſa opulentia periit Et
13 וְאָבַד הָעֹשֶׁר הַהוּא בְּעִנְיַן רָע וְהוֹלִיד בֵּן וְאֵין
ſuæ matris utero ex eſt egreſſus Quemadmodum .quicquam ejus manu in
14 בְּיָדוֹ מְאוּמָה: כַּאֲשֶׁר יָצָא מִבֶּטֶן אִמּוֹ
portabit non quicquam & : venit quòd ſecũdũ eundum ad revertetur ,nudus
עָרוֹם יָשׁוּב לָלֶכֶת כְּשֶׁבָּא וּמְאוּמָה לֹא־יִשָּׂא
.ſua manu in ducat quod ,ſuo labore in
בַעֲמָלוֹ שֶׁיֹּלֵךְ בְּיָדוֹ:

Verſio VUL. LAT.

CAP. V.

1 NE temerè quid loquaris,
neque cor tuum ſit velox ad
proferendum ſermonẽ coram
Deo. Deus enim in cœlo, &
tu ſuper terram : idcircò ſint
2 pauci ſermones tui. Multas cu-
ras ſequuntur ſomnia, & in
multis ſermonibus invenietur
3 ſtultitia. Si quid voviſti Deo,
ne moreris reddere : diſplicet
enim ei infidelis & ſtulta prò-
miſſio : ſed quodcunque vove-
4 ris, redde : Multóque melius
eſt non vovere, quàm poſt vo-
tum promiſſa non reddere.
5 Ne dederis os tuum ut pecca-
re facias carnem tuam : neque
dicas coram angelo, Non eſt
providentia : ne fortè iratus
De⁹ contra ſermones tuos, diſ-
ſipet cuncta opera manuũ tua-
6 rum. Ubi multa ſunt ſomnia,
plurimæ ſunt vanitates, & ſer-
mones innumeri : tu verò Deũ
7 time. Si videris calumnias ege-
norum, & violenta judicia, &
ſubverti juſtitiam in provincia,
non mireris ſuper hoc negotio:
quia excelſo excelſior eſt alius,
& ſuper hos quoque eminen-
8 tiores ſunt alii. Et inſupèr u-
niverſæ terræ rex imperat ſer-
9 vienti. Avarus non implebitur
pecuniâ : & qui amat divitias,
fructum non capiet ex eis : &
10 hoc ergò vanitas. Ubi multæ
ſunt opes, multi & qui come-
dunt eas. Et quid prodeſt poſ-
ſeſſori, niſi quòd cernit divitias
11 oculis ſuis? Dulcis eſt ſomnus
operanti, ſive parùm, ſive mul-
tùm comedat : ſaturitas autem
divitis non ſinit eum dormire.
12 Eſt & alia infirmitas peſſima,
quam vidi ſub Sole : divitiæ
conſervatæ in malum domini
13 ſui. Pereunt enim in afflictio-
ne peſſima : generavit filium,
qui in ſumma egeſtate erit.
14 Sicut egreſſus eſt nudus de u-
tero matris ſuæ, ſic revertetur,
& nihil auferet ſecum de la-
bore ſuo.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. ε'.

1 †ΜΗ' σπεῦδε ἐπὶ στόματί σου, † καὶ καρδία
σου μὴ (α) ταχυνάτω † τοῦ ἐξενέγκαι λόγον πρὸ
προσώπου τοῦ θεοῦ· † ὅτι ὁ θεὸς ἐν τῷ (β) οὐρανῷ
ἄνω, καὶ σὺ ἐπὶ τῆς γῆς· † (γ) διὰ τοῦτο ἔστωσαν
2 οἱ λόγοι σου ὀλίγοι. † Ὅτι παραγίνεται ἐνύπνιον
ἐν πλήθει πειρασμοῦ, † καὶ φωνὴ ἄφρονος ἐν πλή-
3 θει λόγων. † Καθὼς (ᵍ) εὔξῃ εὐχὴν τῷ θεῷ, † μὴ
χρονίσῃς τοῦ ἀποδοῦναι αὐτήν· † ὅτι οὐκ ἔστι θέ-
λημα ἐν ἄφροσι. † σὺ οὖν ὅσα (δ) ἐὰν εὔξῃ, ἀπό-
4 δος. † Ἀγαθὸν τὸ μὴ εὔξασθαί σε, † ἢ τὸ εὔ-
5 ξασθαί σε καὶ μὴ ἀποδοῦναι. † Μὴ δῷς τὸ στό-
μα σου τοῦ (ε) ἐξαμαρτῆσαι τὴν σάρκα σου, † καὶ μὴ
εἴπῃς πρὸ προσώπου τοῦ θεοῦ, Ὅτι ἄγνοιά ἐστιν·
† ἵνα μὴ ὀργισθῇ ὁ θεὸς ἐπὶ φωνῇ σου, † καὶ δια-
6 φθείρῃ τὰ ποιήματα χειρῶν σου. † Ὅτι ἐν πλή-
θει ἐνυπνίων καὶ ματαιοτήτων καὶ λόγων πολ-
7 λῶν, † ὅτι (ζ) σὺ τὸν θεὸν φοβοῦ. † Ἐὰν συκοφαν-
τίαν πένητος καὶ ἁρπαγὴν κρίματος καὶ δικαιο-
σύνης ἴδῃς ἐν χώρᾳ, † μὴ θαυμάσῃς ἐπὶ τῷ
πράγματι· † Ὅτι ὑψηλὸς ἐπάνω ὑψηλοῦ (η)
8 φυλάξαι, † καὶ ὑψηλοὶ (θ) ἐπ' αὐτοῖς. Καὶ πε-
ρισσεία γῆς † ἐπὶ παντί ἐστι, βασιλεὺς τοῦ ἀγροῦ
9 εἰργασμένου. † Ἀγαπῶν ἀργύριον οὐ πλησθήσεται
ἀργυρίου· † καὶ τίς ἠγάπησεν ἐν πλήθει (ι) αὐτῶν
10 γέννημα; † καί γε τοῦτο ματαιότης. † Ἐν πλήθει
ἀγαθωσύνης ἐπληθύνθησαν (κ) ἔσθοντες αὐτήν·
† καὶ τί ἀνδρεία τῷ παρ' αὐτῆς; † ὅτι ἀρχὴ τοῦ ὁ-
11 ρᾷν ὀφθαλμοῖς αὐτοῦ. † Γλυκὺς ὕπνος τοῦ δού-
λου † εἰ ὀλίγον καὶ εἰ πολὺ φάγεται, † καὶ τῷ ἐμπλη-
σθέντι τοῦ πλουτῆσαι, † οὐκ ἔστιν ἀφίων αὐτὸν τοῦ ὑ-
12 πνῶσαι. † Ἔστιν ἀρρωστία ἣν εἶδον ὑπὸ τὸν ἥλι-
ον, † πλοῦτον φυλασσόμενον τῷ παρ' αὐτοῦ εἰς
13 κακίαν (λ) αὐτῷ, † Καὶ ἀπολεῖται ὁ πλοῦτος ἐκεῖ-
νος ἐν περισπασμῷ (μ) πονηρῷ, † καὶ ἐγέννησεν
14 υἱόν, καὶ οὐκ ἔστιν ἐν χειρὶ αὐτοῦ οὐδέν. † Καθὼς ἐξ-
ῆλθεν ἀπὸ γαστρὸς μητρὸς αὐτοῦ γυμνός, † ἐπι-
στρέψει τοῦ πορευθῆναι ὡς ἥκει, † καὶ (ν) οὐδὲν οὐ
λήψεται ἐν μόχθῳ αὐτοῦ, † ἵνα πορευθῇ ἐν
χειρὶ αὐτοῦ.

MS. A. (α) ταχυνέτω (β) οὐρανῷ, καὶ σὺ (γ) ἐπὶ τέλος (ᵍ) ἂν εὔξῃ (δ) ἂν (ε) ἐξαμαρτεῖν (ζ) σὺν τὸν θεὸν (η) φυλάσσει, (θ) ἐπ' αὐτ. (ι) αὐτοῦ γέννημα; (κ) οἱ ἔσθοντες (λ) αὐτοῦ, (μ) αὐτοῦ, καὶ (ν) οὐδὲν λήμψεται

CAP. V.

Noli (a) feſtinare in ore tuo: & 1
cor tuũ non feſtinet ad proferendum
verbũ in conſpectu Dei: quia Deus in
cœlo ſurſùm, & tu ſuper (a) terrã.
(c) Propter hoc ſint verba tua pauca:
Quia (d) advenit ſomniũ, in multi- 2
tudine ſolicitudinis: & vox ſtulti in
*multiplicatione ſermonum. * Prout*
voveris votum Deo; nè moreris red- 3
dere illud : quia (e) non eſt voluntas
in inſipientibus. Tu igitur quæcunq;
voveris, redde. (f) Bonũ eſt nõ vove- 4
re te, quàm vovere te, & non red-
dere. Non des os tuũ, (g) ut peccare 5
facias carnẽ tuam : & nè dixeris in
conſpectu (h) Dei, Quia (i) ignorantia
eſt; ne iraſcatur Deus ſuper vocem
tuam, & (k) diſperdat opera manuũ
tuarum. Quia in multitudine ſomni- 6
orum, (l) & vanitatum, & verborũ
plurimorũ: (m) quarè tu Deũ time.
Si calumniã pauperis, (n) & direpti- 7
onẽ judicii, & juſtitiæ videris in re-
gione, nè mireris ſuper negotio: quia
excelſus ſuper excelſum (o) ad cuſto-
diendum, & (p) excelſi ſuper eos. (q)
Et præſtantia terræ in omni eſt, rex 8
agri culti. Qui diligit argentũ, non 9
implebitur argento: (r) & quis dile-
xit in multitudine eorum fructũ? ſed
et hoc vanitas. In multitudine (ſ) bo- 10
nitatis multiplicati ſunt, qui comedũt
eam. Et (t) quid fortitudo ei, qui ab
ea? (v) quia principiũ videre oculis
ſuis. Dulcis ſomnus ſervi, ſive paulu- 11
lum, & ſive multùm comederit: &
(x) ei, qui ſaturatus eſt diteſcendo,
non eſt dimittens eũ dormire. Eſt (y) 12
languor, quẽ vidi ſub Sole, (z) divi-
tias cuſtoditas ei, qui ab eis, in malũ
ei: Et (aa) peribunt divitiæ illæ in diſ- 13
tentione peſſima. Et genuit filiũ, &
nõ eſt in manu ej⁹ quicquã. Sicut ex- 14
ivit de utero matris ſuæ nud⁹; rever-
tetur, ut eat, ſicut venit: & nihil acci-
piet in labore ſuo, ut (bb) eat in ma-
nu ſua.

תרגום TARGUM.

ה

1 לא תבהל על מימרך לשבשא ית מלי פומך ולבך לא יוחי לאפקא ממלל בעדן דאית מצלי
מן קדם יי ארום יי שליט על כל עלמא ויתיב על כורסיה יקריה בשמי מרומא ואנת יתב על
2 ארעא בגין כן יהון מלי פומך קלילן : ארום היכמה דאתי חלמא על הרהורי לבא וסגיאות
3 קל שטיא בסגיאות פתגמין בטילין : בעדן דתדר נדרא קדם יי לא תעכב לשלמותיה ארום
בגין כן לית רעוא דיי בטפשיא מן בגלל דמעכבין נדריהון ולא משלמין ואנת ית די תנדר
4 שלם : טב לך די לא תנדר מן די תנדר ולא תשלם : לא תנבל ית מימרא דפומך למגרם דין
5 גהנם עלי בסרך וביום דינא רבא לא תכול למימר קדם מלאכא אכזריא דרדי בך ארום
שלותא היא למה דין יתקף רוגזא דיי על קל מימרך דאתאמר בגנותא ויחבל ית עובדי
6 ידך : ארום בסגיאות חלמין דנביאי שקרא והבלין דבעלי חרשין ומלין סגיאין דרשיעיא
לא תהימין ארום חכימיא צדיקיא תהי משמש ומנהון תתבע אולפן ומן קדם יי תהי דחיל :
7 אין אניסות מסכנין וגזלתא וצדקתא תחמי בקרתא לא תתמה בלבך למימר איכדין רעותא
דיי על כל אלין ארום על שמי מרומא נטיר עובדי בני אנשא בין טב לבישתא ומן קדמוי
8 משתלחין גוברין גינין ותקיפין למרדי ברשיעיא ולמהוידהון מתמנן רבנין עליהון : ומותר
שבח פולחנות ארעא על כולא היא דבעדן דמרדין בני מלכותא ומלכא מתיהב בפצחיהון
מן קדמיהון אין לית ליה עבור למיכל ההוא מלכא לגבר פלח בחקלא מתעבד עבד
9 משתעבד : גבר תגר די רחים למקני כסף ומרי פרגמטיא לא ישבע למצבור כסף ומן די
רחים למכנוש ממון יתיר לית ליה שבח בעלמא דאתי אין לא יעבד מניה צדקתא בדיל
10 דלית ליה אגר עלל למיכל אף דין הבלו : בזמן דסגי טבותא בעלמא סגיאן אוף בני אנשא
דייכלונה ומה הנאה אית למרהא דיצברנה אין לא יעביד מנה טיבותא בגין די יחזי
11 בעלמא דאתי יהבית אגרהא בעינוי : בסימת דמיכת גברא די פלח למרי עלמא בלב שלים
ואית ליה ניחא על בית קבורתיה אין זעירות שנין יחי אין סגיאות שנין בתר דפלח למרי
עלמא בעלמא הדין לעלמא דאתי אגר עובדי ידוי יחסין וחוכמת אוריתא דיי לגבר דעתיר
בחוכמתא היכמה דמעסק בה בעלמא הדין ואשתדל באולפנא כדין תנוח עלוהי על בית
קבורתיה ולא תשבקניה בלחודוהי היכמה דלא שבקת אתתא לגבריה בלחודוהי לדמכא:
12 אית בישותא מרעיתא חמית בעלמא הדין תחות שמשא ולית ליה אסו גבר דיכנוש עתרא
ולא עבד מניה טב ולסוף יומיא ההוא עתרא נטיר ליה לאבאשא ליה לעלמא דאתי :
13 וההוא עתרא די ישבק לבריה בתר מותיה יהובד על דקנא ליה בגין ביש ולא יתקים ביד
14 בריה די אוליד ולא אשתאר ליה בידוי מדעם : היכמה די נפק ממעי אמיה ערטילי בלא כסו
ובלא מדעם טב כדין יתוב למיזל לבית קבורתיה חסיר מן זכותא היכמא די אתא בעלמא
הדין ומדעם אגר טב לא יקבל בטורחיה לסוברא עמיה לעלמא דהוא אזיל למהוי
לזכו בידיה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. V.

NOn accelerabis ſuper dictum tuum ut confundas eloquia oris tui, & 1
cor tuum non feſtinabit proferre loquelã in tempore quo tu oras ante Do-
minũ : namq; Dñs imperat ſup omnẽ mundum, & ſedet ſup ſolium gloriæ
in cœlis altiſſimis, & tu ſedes ſup terrã : propterea erunt verba oris tui mo-
dica. Ecce enim quẽadmodum venit ſomnium ſup cogitationes cordis, ſic 2
multitudo vocis ſtulti in multitudine verborum otioſorum. In tẽpore quo 3
voveris votum ante Dominum, ne tardes exolvere illud : quoniã propterea
nõ eſt beneplacitum *Domini* in ſtultis quòd differant vota ſua, *& non exol-*
vunt : & tu quod voveris exolvito. Melius eſt tibi ut non voveas, quàm ut 4
voveas & non exolvas. Ne cõjicias dictum oris tui ut cauſam adferas ju- 5
dicii gehennæ ſup carnẽ tuã, & in die judicii magni non poteris dicere an-
te angelum crudelẽ qui poteſtatẽ exercebit in te quod ignorantia fuerat :
ad quidnã roborabitur indignatio Domini ſup *vocem eloquii tui* ꝙ dictum
fuerit incongruè, & corrumpet opera manus tuæ? Etenim in multitudine 6
ſomniorum Prophetarum mendacii, & vanitatibus auctorum incantatio-
num, & loquelis multis improborum non credes: verùm ſapientib⁹ *juſtis*
miniſtrabis, & ex eis quæres doctrinam, & à cõſpectu Domini timebis. Si 7
violentiam *pauperum*, & *direptiones* [*judicii*] & juſtitiæ videris in civitate,
ne admireris in corde tuo; quomodo voluntas Domini ſit ſup omnia hæc:
quia [*Deus potens*] ſup cœlos altiſſimos obſervat opera filiorum hominis
tam bona quàm mala: & à facie ejus mittuntur viri magnifici & robuſti,
ut poteſtatẽ exerceant in improbos, & ut ſint præpoſiti magiſtratus ſuper
eos. Et excellentia laudis culturæ terræ ſuper omnia eſt, quod in tempore 8
quo rebellant filii regni, & rex datur in villas *eorum* à facie eorum, ſi non
eſt ipſi frumentum ad comedendum, ipſe idem rex viro culturã in agro fa-
cienti ſerviens ſervus efficitur. Vir negotiator qui amabit *acquirere ar-* 9
gentum, & mercator non ſaturabitur cumulando argentum : & qui amave-
rit congregare divitias copioſiores, non eſt ei laus in ſeculo venturo, niſi
fecerit ex eis eleemoſynam : propterea quod non eſt ei merces proventus
ad comedendum : etiam hoc vanitas. Quando multiplicatur bonum in 10
ſeculo, multiplicantur etiã filii hominum qui comedant illud : & quæ uti-
litas eſt domino ej⁹ qui cõgregabit illud; niſi fecerit ex eo bonum; ut vi-
deat in ſeculo venturo retributionẽ mercedis in oculis ſuis? Suavis ſom- 11
nus viri qui colit Dominum mundi *corde integro*, & eſt ei quies in domo
ſepulchri ej⁹, ſive paucos annos vixerit ſive multos poſtquàm ſervivit dño
mundi in ſeculo hoc, ad ſeculum venturum mercedem operum manuũ ſua-
rum hæreditabit: & ſapientia Legis Dñi erit viro diviti in ſapientia : ecce
quẽadmodum ſtuduit in ea in ſeculo hoc, & ſollicitus fuit in doctrina, ſic
requieſcet ſup eum in domo ſepulchri ejus, & non deſeret eum ſolum, quẽ-
admodũ non ſinit uxor virum ſuũ ut dormiat ſolus. Eſt malus morb⁹ [*quẽ*] 12
vidi in ſeculo hoc ſub Sole, & nõ eſt in eo ſanitas: vir qui cõgregat diviti-
as, & nõ facit ex eis *bonum*: in finẽ dierum ille ſibi divitias cuſtodit ut cõ-
triſtent eum in ſeculum venturum. Et illæ divitiæ quas relinquet filio ſuo 13
poſt mortẽ ſuã peribunt, eo quòd comparaverit eas negotio malo: & non
permanebunt in manu filii ſui quẽ genuit: nec reſiduum erit illi in manu
ejus quicquam. Quẽadmodum exiit de utero matris ſuæ nudus abſq; *ope-* 14
rimento & abſque omni bono, ſic revertetur ad eundum in domum ſepul-
turæ ſuæ indigens merito, quẽadmodum venit in ſeculũ hoc, nequicquam
mercedis bonæ excipiet in labore ſuo, ut tollat ſecum in ſeculum ad quod
ipſe vadit, *ut ſit in meritum in manu ejus.*

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܩܦܠܐܘܢ * ܗ *

* ܠܐ ܬܬܗܪܗܒ ܒܦܘܡܟ܂ ܘܠܒܟ. ܠܐ ܢܬܗܪܗܒ ܠܡܦܩܘ ܡܠܬܐ ܩܕܡ ܐܠܗܐ. 1
ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܒܫܡܝܐ. ܘܐܢܬ ܒܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܗܘܘܢ ܦܬܓܡܝܟ ܙܥܘܪܝܢ.
* ܡܛܠ ܕܐܬܐ ܚܠܡܐ ܒܣܘܓܐܐ ܕܨܒܝܢܐ ܀ ܘܩܠܗ ܕܣܟܠܐ ܒܣܘܓܐܐ ܕܦܬܓܡܐ. 2
* ܐܡܬܝ ܕܢܕܪ ܐܢܬ ܢܕܪܐ ܠܐܠܗܐ ܀ ܠܐ ܬܫܘܚܪ ܠܡܦܪܥܘܬܗ. ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܨܒܝܢܐ 3
ܒܣܟܠܐ. ܐܢܬ ܕܝܢ܂ ܡܕܡ ܕܢܕܪ ܐܢܬ ܦܪܘܥ. * ܛܒ ܗܘ ܕܠܐ ܬܢܕܪ ܀ ܡܢ ܕܬܢܕܪ ܘܠܐ 4
ܬܦܪܘܥ. * ܠܐ ܬܬܠ ܦܘܡܟ. ܠܡܚܛܝܘ ܠܒܣܪܟ. ܘܠܐ ܬܐܡܪ ܩܕܡ ܐܠܗܐ. ܕܫܘܚܠܦ ܗܘ. 5
ܕܠܡܐ ܢܪܓܙ ܐܠܗܐ ܥܠ ܩܠܟ. ܘܢܚܒܠ ܥܒܕܐ ܕܐܝܕܝܟ. * ܡܛܠ ܕܒܣܘܓܐܐ 6
ܕܚܠܡܐ ܘܗܒܠܐ : ܘܦܬܓܡܐ ܣܓܝܐܐ ܕܛܘܥܝܝ. ܐܢܬ ܠܐܠܗܐ ܕܚܠ. * ܐܢ ܥܘܠܨܢܐ 7
ܕܡܣܟܢܐ : ܘܓܙܠܐ ܘܕܝܢܐ ܬܚܙܐ ܒܡܕܝܢܬܐ ܀ ܠܐ ܬܬܕܡܪ ܥܠ ܨܒܝܢܐ. ܡܛܠ
ܕܪܡܐ ܠܥܠ ܡܢ ܪܡܐ ܢܛܪ. ܘܪܡܐ ܥܠܝܗܘܢ. * ܘܝܘܬܪܢܐ ܕܐܪܥܐ ܒܟܠ ܗܘ. ܡܠܟܐ 8
ܠܚܩܠܐ ܡܦܠܚ. * ܘܕܪܚܡ ܟܣܦܐ ܠܐ ܢܣܒܥ ܟܣܦܐ. ܘܕܪܚܡ ܡܡܘܢܐ. ܠܐ 9
ܢܗܢܝܘܗܝ. ܘܐܦ ܗܢܐ ܗܒܠܐ. * ܒܣܘܓܐܐ ܕܛܒܬܐ ܣܓܝܘ ܐܟܘܠܝܗ. ܘܡܢܐ ܗܘܬ 10
ܥܕܪܢܐ ܠܡܪܝܗ̇. ܐܠܐ ܐܢ ܚܙܬܐ ܕܥܝܢܘܗܝ. * ܚܠܝܐ ܫܢܬܐ ܕܦܠܚܐ ܀ ܐܢ 11
ܙܥܘܪ ܘܐܢ ܣܓܝ ܢܐܟܘܠ ܀ ܠܥܬܝܪܐ ܕܝܢ ܣܒܥܐ ܠܐ ܫܒܩ ܠܗ ܠܡܕܡܟ. * ܐܝܬ ܟܘܪܗܢܐ 12
ܒܝܫܐ ܕܚܙܝܬ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. ܥܘܬܪܐ ܕܢܛܝܪ ܠܡܪܗ ܠܒܝܫܬܗ. * ܘܐܒܕ 13
ܥܘܬܪܐ ܗܘ ܀ ܒܥܢܝܢܐ ܒܝܫܐ. ܘܐܘܠܕ ܒܪܐ. ܘܠܐ ܐܝܬ ܡܕܡ ܒܐܝܕܗ. * ܐܝܟܢܐ ܕܢܦܩ ܡܢ 14
ܟܪܣܐ ܕܐܡܗ ܀ ܥܪܛܠܝܐ ܢܗܦܘܟ ܠܡܐܙܠ ܐܝܟ ܕܐܬܐ. ܘܡܕܡ ܠܐ ܢܣܒ ܒܥܡܠܗ.
ܕܢܐܙܠ ܒܐܝܕܗ.

CAP. V.

NE feſtines ore tuo, & cor tuum non ſit 1
velox ad promendum ſermonem coram Deo:
Deus enim in cœlo eſt, & tu in terra : quocirca
pauci ſint ſermones tui. Nam ex 2
multa cura provenit ſomnium, & vox ſtulti
ex multis ſermonibus. Quum votum Deo 3
voveris, ne differas illud ſolvere : ſtultus
enim non eſt gratus : tu verò quod voves
perſolve. Melius eſt te non vovere, quàm 4
vovere nec perſolvere. Ne committas ut os 5
tuum occaſionem peccandi præbeat carni tuæ.
Et ne dicas coram Deo, Error eſt : ne
fortè iraſcatur Deus voci tuæ, deſtruatque
opus manuum tuarum. Quandoquidem in 6
multitudine ſomniorum cùm vanitates inſunt,
tum multi ſermones erronei, tu Deum
time. Si pauperum oppreſſionem, & rapinam 7
atque jurgium videris in civitate, hanc
ob rem ne obſtupeſcas : quoniam excelſus
excelſum obſervat, & utrique præſunt excelſiores.
Hæreditas terræ cuique eſt inſita: 8
rex agrum coli curat. Et qui amat argentum, 9
non ſaturabitur argento : & qui amat
mammonam, haud fruetur illo : atque hoc
etiam vanitas eſt. Creſcentibus opibus, 10
creſcunt qui comedant illas. Et in quo ſunt
utiles domino ſuo opes, præterquàm aſpectui
oculorum ejus ? Dulcis eſt ſomnus agricultori, 11
ſive parùm ſive multùm comedat : diviti
autem ſaturitas non concedit dormire.
Eſt morbus acerrimus quem vidi ſub ſole. 12
Divitias, *ſcilicet* aſſervari domino ſuo in exitium
ejus : Et perire divitias illas in occupatione 13
peſſima : generavit enim filium, qui nihil
habet in manu ſua. Quemadmodum 14
egreſſus eſt è ventre matris ſuæ, nudus iterum
abit ut venerat nec quicquam reportat
ex labore ſuo, quod abeat in manu ipſius.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* الفصل الخامس *

* لا تسارعن بفمك * ولا يعجلن قلبك ان يقرب كلمة امام الله * فان الله في السماء 1
وانت في الارض * ولتكن في هذا اقوالك قليلة * فان المنام يجي بكثرة امتحان * وصوت 2
الغبي يجي بكثرة الاقوال * كما يجب انك اذا تنذر لله نذرا لا تتباطي ان تقضيه * 3
لان ليست مسرة الله في الاغبياء * جميع ما تنذر انت فاقضيه * فالاصلح الا تنذر * 4
من ان تنذر ولا تقضي * لا تدع فمك ان يخطي الى بشرتك * ولا تقولن ان امام وجه 5
الله عدم معرفة * لئلا يسخط الله على غباوتك ويفسد صنايع يديك * فانها في كثرة 6
المنامات والاباطيل والاقوال الخبيثة * اتق الله * ان رايت في البلد بغي على فقير واختلاس 7
الانصاف والعدل * ولا تعجبن من الامر * فان العلي يحفظك فوق الامر العالي * والمستغلون 8
على فضلة الارض وما فيها * في كل امر يوجد لهم ملك للصقع المعمول * من يحب الفضة 9
ما يشبع من الفضة * ومن احب غلته في كثرتها ما يشبع * وهذا لعمري باطل * في 10
كثرة الخير يتكاثر الذين ياكلونه * وما السهامة التي فيه * لان للاعين انفسها ابتداء
ان تبصر * نوم العبد حلو ان عرض ان ياكل قليلا او كثيرا والشره في الاستغناء ما يهمله 11
شرهه ان ينام * قد يكون شرها قد عرفته تحت الشمس * ثروة محفوظة عند صاحبها 12
لشر له * فهلك تلك الثروة في تعب رديء * واولد ابنا وليس في يده شي * كما خرج من 13 14
بطن امه عاريا يعاود ان يمضي كما جاء * ولن ياخذ شي من تعبه ليذهب حاملة بيده *

CAP. V.

NE feſtines ore tuo, & ne præproperes 1
cor tuum ad offerendum verbum
coram Deo; quoniam Deus eſt cœlo, tu
verò humi : & ſint ob hoc ſermones tui
pauci. Nam ſomnium provenit ex nimia 2
perquiſitione, & vox ſtolidi provenit
e multitudine verborum. Quemadmodum 3
oportet ut cùm votum Deo
voveris, minimè cuncteris in eo perſolvendo,
(non enim oblectatur Deus ſtolidis)
ità *quicquid tu voveris, perſolve.*
Nam conſultius eſt te non vovere, quàm 4
vovere, & non perſolvere. Ne conceſſeris 5
ori tuo peccare in carnem tuam. Et ne
dicas, In conſpectu Dei eſt ignorantia, ne
ſuccenſeat Deus imprudentiæ tuæ, & 6
marceſcant opera manuum tuarũ: Quandoquidem
ſita ſunt in multitudine ſomniorum, & vanitatum, atque ſermonum
pravorum. Deum time. Siquando videris 7
in regione oppreſſionem pauperis, &
furtum judicii atque juſtitiæ, ne rem mirêris
: nam Excelſus te tuebitur ſuper negotium
ſublime. Et verò præpoſiti emolumento 8
terræ & his quæ in ea ſunt, in
rebus omnibus, regem habeat ſoli quod eſt
elaboratum. Qui amat argentum, non ſatiabitur 9
argento : & qui amat ſuum proventum
in abundantia ſua, non ſaturabitur
: & hoc ſanè vanum eſt. Dum augeſcunt 10
bona, augentur qui comedant
illa. Ad quid igitur induſtria quæ
adhibetur *in eis ? nam oculi quidem*
ipſi habent initium videndi. Servi ſomnus 11
eſt jucundus, ſive parùm ſive multùm
edere contingat : avidum autem in acquirendis
opibus, aviditas ſua dormire
non ſinit. Eſt interdum aviditas quam 12
deprehendi ſub ſole, Divitiæ penes dominũ
ſuũ reconditæ in propriã perniciem.
Peribunt enim illæ divitiæ peſſima cum 13
moleſtia, & quem genuit filius nihil habebit
in manu ſua. Sicuti nudus prodiit 14
ex utero matris ſuæ, iterum abibit
ut venerat, nec quicquam ſumet ex labore
ſuo ut diſcedat geſtans illud manu ſuâ.

קהלת : ו

præſtantiæ quid Et .ibit ſic ,venit quo pacto omni ,doloroſum malum hoc etiā Et
15 וגם־זה רעה חולה כל־עמת שבא כן ילך ומה־יתרון
:comedet tenebra in ſuis diebus cunctis Etiam ?ventū in laboravit quòd ,ei
16 לו שיעמל לרוח: גם כל־ימיו בחשך יאכל
ego vidi quod Ecce .furore & ,ſua infirmitate & ,multa ira &
17 וכעס הרבה וחליו וקצף: הנה אשר־ראיתי אני
omni in bonum videre & ,bibere & ,comedere ,pulchrum quod ,bonum
טוב אשר־יפה לאכול ולשתות ולראות טובה בכל־
,ſuarū vitarum dierum numero ,ſole ſub laborabit quo ,ſuo labore
עמלו ׀ שיעמל תחת־השמש מספר ימי־חיו
,homo omnis Etiam .ejus pars iſtud quia : Deus ei dedit quos
18 אשר־נתן־לו האלהים כי־הוא חלקו: גם כל־האדם
,ei dedit facultatē & opes & ,opulentiam Deus ei dedit cui
אשר נתן־לו האלהים עשר ונכסים והשליטו
:ſuo labore in lætandum ad & ,ſuam partem tollendum ad & ,eo ex edendum ad
לאכל ממנו ולשאת את־חלקו ולשמח בעמלו
dierum recordabitur multum non Quia .iſtud Dei donum hoc
19 זה מתת אלהים היא: כי לא הרבה יזכר את־ימי
.ejus cordis lætitia in reſpondens Deus quia : ſuæ vitæ
חייו כי האלהים מענה בשמחת לבו:

CAP. VI. ו

hominem ſuper ipſum multū & ,ſole ſub vidi quod malum Eſt
1 יש רעה אשר ראיתי תחת השמש ורבה היא על־האדם:
ipſi non & ,gloriā & ,opes & ,opulentiam Deus ei dedit cui Vir
2 איש אשר יתן־לו האלהים עשר ונכסים וכבוד ואיננו
ei poteſtatem dabit non & : deſiderabit quæ omnibus ex ejus animæ deficiens
חסר לנפשו ׀ מכל אשר־יתאוה ולא־ישליטנו
vanitas hoc illud comedet extraneus vir ſed ,eo ex comedendi Deus
האלהים לאכל ממנו כי איש נכרי יאכלנו זה הבל
multos annos & ,centum vir genuerit Si .ipſum mala infirmitas &
3 וחלי רע הוא: אם־יוליד איש מאה ושנים רבות
ſaturata fuerit non ejꝰ anima &,ejꝰ annorū dies fuerit quod multū &,vixerit
יחיה ורב שיהיו ימי־שניו ונפשו לא־תשבע
illo præ bonum dixi :ei fuerit non ſepultura etiam & ,bono de
מן־הטובה וגם־קבורה לא־היתה לו אמרתי טוב ממנו
tenebroſitate in & : ibit tenebroſitatem in & ,venit vanum in Quia .abortivum
4 הנפל: כי־בהבל בא ובחשך ילך ובחשך
requies,cognoverit non & ,viderit non ſolem Etiam .operietur ejus nomen
5 שמו יכסה: גם־שמש לא־ראה ולא ידע נחת
bonum & ,vicibus duabꝰ annos mille vixerit ſi Et .illi quàm huic
6 לזה מזה: ואלו חיה אלף שנים פעמים וטובה
labor Omnis ?vadens omnis unum locum ad nonne : viderit non
7 לא ראה הלא אל־מקום אחד הכל הולך: כל־עמל
?inſipientem quid Quia .implebitur non anima etiam & : ejus os ob hominis
8 האדם לפיהו וגם־הנפש לא תמלא: כי מה־יותר
?vitis coram pergere ſcienti afflicto Quid ?ſtulto quàm ſapienti
לחכם מן־הכסיל מה־לעני יודע להלך נגד החיים:

Verſio VUL. LAT.

15 Miſerabilis prorſus infirmitas: quo modo venit, ſic revertetur. Quid ergò prodeſt ei ꝙ laboravit in ventū? 16 Cunctis diebꝰ vitæ ſuæ comedit in tenebris & in curis multis, & in ærumna atq; triſtitia. 17 Hoc itaq; viſum eſt mihi bonū, ut comedat quis, & bibat, & fruatur lætitiā ex labore ſuo, quo laboravit ipſe ſub Sole, numero dierū vitæ ſuæ, quos dedit ei Deus: & hæc eſt pars illiꝰ. 18 Et omni homini, cui dedit Deꝰ divitias, atque ſubſtantiam, poteſtatémq; ei tribuit ut comedat ex eis, & fruatur parte ſuâ, & lætetur de labore ſuo: hoc eſt donū Dei. 19 Non enim ſatis recordabitur dierū vitæ ſuæ, eò quòd Deus occupet deliciis cor ejus.

CAP. VI.

1 Eſt & aliud malū, quod vidi ſub Sole, & quidē frequens apud homines: 2 Vir, cui dedit Deꝰ divitias, & ſubſtantiā, & honorē, & nihil deeſt animæ ſuæ, ex omnibꝰ quæ deſiderat: nec tribuit ei poteſtatē Deꝰ ut comedat ex eo, ſed homo extraneus vorabit illud: hoc vanitas, & miſeria magna eſt. 3 Si genuerit quiſpiā centū liberos, & vixerit multos annos, & plures dies ætatis habuerit, & anima illius non utatur bonis ſubſtantiæ ſuæ, ſepulturâque careat: de hoc ego pronuntio, quòd melior illo ſit abortivus. 4 Fruſtrà enim venit, & pergit ad tenebras, & oblivione delebitur nomen ejus. 5 Non vidit Solē, neque cognovit diſtantiā 6 boni & mali: Etiam ſi duobus millibus annis vixerit, & non fuerit perfruitus bonis: nónne ad unū locū properant omnia? 7 Omnis labor hominis in ore ejꝰ: ſed anima ejꝰ non implebitur. 8 Quid habet amplius ſapiens à ſtulto? & quid pauper, niſi ut pergat illuc, ubi eſt vita?

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Trarſlatione LATINA.

15 † Καί γε τοῦτο πονηρὰ ἀρρωστία· † ὥσπερ γὰρ παρεγένετο, οὕτως καὶ ἀπελεύσεται. † καὶ τίς ἡ περισσεία αὐτοῦ ἣ μοχθεῖ εἰς ἄνεμον; 16 † Καί γε πᾶσαι αἱ ἡμέραι αὐτοῦ ἐν σκότει, καὶ ἐν πένθει, † καὶ θυμῷ πολλῷ, καὶ ἀρρωστίᾳ, καὶ χόλῳ. 17 † Ἰδοὺ εἶδον ἐγὼ (ξ) ἀγαθὸν, ὅ ἐστι καλὸν, † τοῦ φαγεῖν καὶ τοῦ πιεῖν † καὶ τοῦ ἰδεῖν ἀγαθωσύνην † ἐν παντὶ μόχθῳ αὐτοῦ, ᾧ ἐὰν (ο) μοχθῇ ὑπὸ τὸν ἥλιον † ἀριθμὸν ἡμερῶν ζωῆς αὐτοῦ † ὧν ἔδωκεν αὐτῷ ὁ θεὸς, ὅτι αὐτὸ μερὶς αὐτοῦ. 18 † Καί γε πᾶς ἄνθρωπος ᾧ ἔδωκεν αὐτῷ ὁ θεὸς † πλοῦτον καὶ ὑπάρχοντα, καὶ ἐξουσίασεν (π) αὐτῷ φαγεῖν ἀπ' αὐτοῦ, καὶ λαβεῖν τὸ μέρος αὐτοῦ, † καὶ τοῦ εὐφρανθῆναι ἐν μόχθῳ αὐτοῦ, † τοῦτο δόμα θεοῦ ἐστιν. 19 Ὅτι οὐ (ρ) πολλὰ μνησθήσεται τὰς ἡμέρας τῆς ζωῆς αὐτοῦ, † ὅτι ὁ θεὸς περισπᾷ αὐτὸν ἐν εὐφροσύνῃ καρδίας αὐτοῦ.

ΚΕΦ. ϛʹ.

1 † Ἔστι πονηρία ἣν εἶδον ὑπὸ τὸν ἥλιον, † καὶ 2 πολλή ἐστι (ʺ) ὑπὸ τὸν ἄνθρωπον. † Ἀνὴρ ᾧ δώσει αὐτῷ ὁ θεὸς πλοῦτον καὶ ὑπάρχοντα καὶ δόξαν, † καὶ οὐκ ἔστιν ὑστερῶν τῇ ψυχῇ αὐτοῦ (α) ἀπὸ πάντων ὧν ἐπιθυμήσει, † καὶ οὐκ ἐξουσιάσει αὐτῷ ὁ θεὸς (β) τοῦ φαγεῖν ἀπ' αὐτοῦ, ὅτι ἀνὴρ ξένος φάγεται (γ) αὐτόν. † τοῦτο 3 ματαιότης καὶ ἀρρωστία πονηρά ἐστι. † Ἐὰν γεννήσῃ ἀνὴρ ἑκατὸν, καὶ ἔτη πολλὰ ζήσεται, † καὶ πλῆθος ὅ, τι ἔσονται αἱ ἡμέραι ἐτῶν αὐτοῦ, † (δ) καὶ ψυχὴ αὐτοῦ οὐ πλησθήσεται ἀπὸ τῆς ἀγαθωσύνης, † καί γε ταφὴ οὐκ ἐγένετο αὐτῷ, † εἶπα, Ἀγαθὸν ὑπὲρ αὐτὸν τὸ 4 ἔκτρωμα. † Ὅτι ἐν ματαιότητι ἦλθε, καὶ ἐν σκότει πορεύεται, † καὶ ἐν σκότει ὄνομα αὐτοῦ 5 καλυφθήσεται. † Καί γε ἥλιον οὐκ εἶδεν, καὶ οὐκ ἔγνω † ἀναπαύσεις, τούτῳ ὑπὲρ τοῦτον. 6 † Καὶ (ʺ) ἔζησεν χιλίων ἐτῶν καθόδους, † καὶ ἀγαθωσύνην οὐκ εἶδεν, † μὴ οὐκ εἰς τόπον ἕνα 7 (ε) πορεύεται τὰ πάντα; † Πᾶς μόχθος (ζ) ἀνθρώπου εἰς στόμα αὐτοῦ, † (η) καί γε ἡ ψυχὴ 8 οὐ πληρωθήσεται. † (ʹ) Ὅτι περισσεία τῷ σοφῷ ὑπὲρ τὸν ἄφρονα, † διότι ὁ πένης οἶδε πορευθῆναι κατέναντι τῆς ζωῆς.

15 *Sed & hoc languor peſſimus. Sicut enim advenit; ita & abibit. Et (cc) quæ abundantia ejus, quâ laborat in ventum?* 16 *Et quidem (dd) omnes dies ejus in tenebris, & in luctu, & iracundia multa, & languore, et inſania.* 17 *(ee) Ecce ego vidi bonū, quod eſt pulchrū, comedere, & bibere, et cernere bonitatē in omni labore ſuo, quocunq; laboraverit ſub Sole, (ff) numero dierum vitæ ſuæ, quos dedit ei Deus: hoc quippe eſt pars ejus.* 18 *(gg) Et quidem omnis homo, cui dedit ei Deꝰ divitias, et ſubſtantiā, conceſſitq; ei ut veſceretur ex eis, (hh) & tolleret partē ſuam, & lætaretur in labore ſuo; hoc Dei donum eſt.* 19 *Non enim multùm recordabitur dierum vitæ ſuæ, quia Deus (ii) occupat eum in lætitia cordis ejus.*

CAP. VI.

1 *Eſt malum quod vidi ſub Sole:* 2 *& multum eſt (a) ſub homine: Vir, cui dabit ei Deus divitias, & ſubſtantiam, & gloriam: & (b) non eſt deficiens animâ ſuâ ex omnibꝰ quæ deſiderabit: et non (c) dabit ei Deus poteſtatē, ut mãducaret ex eo; quia vir alienus comedet illud. Hoc vanitas eſt, et languor peſſimus.* 3 *Si genuerit vir (d) centum, et annis multis vixerit, & (e) multitudo quæcunque fuerint dies annorū ejus, et anima ejus non (f) repleatur ex (g) bonitate, nec ſepultura fuerit illi; dixi, Bonū ſuper eum abortivū.* 4 *In vanitate quippe venit, & in tenebris vadit, et in tenebris nomen ejus abſcondetur.* 5 *Et quidē Solem non vidit, (h) nec cognovit requietes huic ſuper hunc.* 6 *Et (i) vixit mille annorum reditus, et bonitatem non vidit; nonne ad locū unū vadunt omnia?* 7 *Omnis labor hominis in ore ipſius: & quidē anima non implebitur.* 8 *(k) Quoniam abundantia ſapienti ſuper inſipientem, (l) eò quòd pauper novit ire ad faciem vitæ.*

Κεφ. εʹ. MS. A. (ξ) ἀγαθόν ἐστιν καλὸν τοῦ φαγεῖν (ο) μοχθήσῃ (π) αὐτὸν τοῦ φαγεῖν (ρ) πολλάς Κεφ. ϛʹ. MS. A. (ʺ) ἐπὶ τὸν (α) ἀπὸ παντὸς οὗ ἐπιθυμεῖ, (β) φαγεῖν (γ) αὐτά καί γε τοῦτο (δ) καὶ ἡ ψυχὴ αὐτοῦ οὐκ ἐμπλησθήσεται ἀπὸ ἀγαθωσύνης, (ʺ) εἰ ἔζησεν (ε) τὰ πάντα πορεύσεται; (ζ) τοῦ ἀνθρώπου (η) καί γε ψυχὴ (ʹ) Ὅτι τίς περισσεία

תרגום TARGUM.

15 ואף דא בישתא מרעיתא ולית לה אסו דכל קבל אתא לעלמא הדין חסיר מן זכותא כדין ייזל לעלמא ההוא ומה מותר הוה ליה די טרח לקבלת רוחיה: 16 אף כל יומוהי בחשוכא שרא בדיל דלחמוהי בלחודוהי טעם ובנסיס סגי חזי ובמרעין ורגיז הוו חיוהי: 17 והא די חזית אנא טבא הוא לבני אנשא ודשפיר להון למעבד בעלמא הדין דייכלון וישתון מן טורחותהון בדיל דלא לאושטא ידא באניסא וחטוף ולמטר פתגמי אוריתא ולמחן עניי נכסא מן בגלל דיחזון טבתא בכל טורחותהון די טרחו בעלמא הדין תחות שמשא מנין יומי חיוהי דגבר די יהב ליה יי במוליה ארום הוא חולקיה ולית אחורן בר מניה: 18 אוף כל אנש דיהב ליה יי עותר ונכסין ואשלטיה יי למיכל מניה בעלמא הדין ולמעבד מניה צדקתא ולקבלא אגר שלים לעלמא דאתי ולמבדח בטורחיה עם צדיקיא הא דא מתנא דאתיהיבת ליה במוליה מן קדם יי הוא: 19 ארום לא יומין סגיאין חיי אנש די ידכר ית יומי חיוהי כמה מנהון עתידין למהוי טבין וכמה מנהון עתידין למהוי בישן מטול דלא אתמסר לבני אנשא ארום מן קדם יי אתגזר עלוהי כמה יומין אסתגיף וכמה יומין יהי בחדות לביה:

ו

1 אית בישתא דחזית בעלמא הדין תחות שמשא ורבתא היא על בני אנשא: 2 גבר דיהב ליה יי במוליה עותר ויקר ונכסין וליתוהי מחסר לנפשיה מכל די יתרעי ולא אשלטיה יי על חובתיה למטעם מניה אלהין ימות בלא ולד ולא חס קריביה לאחסנותיה להא ארום אנתתיה תהא מתנסבא לגבר חילוני ויחסנניה וייכלנה כל דין גרמו ליה חובוהי דלא עבד מניה מדעם טב ואתהפך עותריה למהוי ליה להבלו ולמרעא בישא: 3 אין יוליד גבר מאה בנין ושנין סגיאין יחי ובשלטנותא ורבנותא הוא די יהון יומי שנוהי ונפשיה לא שבעת מן טבתא דהות ליה על די רחים על עותריה ולא קנא מניה שמא טבא אף בית קבורתא לא הות מזמנא ליה אמרית אנא במימרי דטב מניה שלילא דלא חזא עלמא הדין: 4 ארום בהבלו אתא בעלמא הדין ובחשוכא שמיה מתחפי מן בגלל דלית ליה זכותא ושום טב לא קנא למהוי מדכר: 5 ואף נהור אוריתא לא חמא ולא ידע בין טב לביש למבחן בין עלמא הדין לעלמא דאתי: 6 ואלולי הוו יומי חיוהי דגברא תרין אלפין שנין ובאוריתא לא עסיק ודינא וצדקתא לא עבד בשבועת מימרא דיי דביום מותיה נחתא נפשיה לגהנם לאתר חד דכל חיבא אזלין תמן: 7 כל טורח דגברא בדיל מזון פומיה הוא טרח ועל מימר פומא דיי מיתין ואף נפשא דאנש לא תשבע מכלא ומשתיא: 8 ארום מה מותרא אית לחכימא בעלמא הדין יתיר מן שטיא בגין דרא בישא דלא מתקבל עלויהון ומה אית ליה הוא נברא עניא למעבד אלהן למעסק באוריתא דיי בגין די ינדע היכדין למהך עתיד למהך לכל קבל צדיקיא בגנתא דעדן:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

15 Et etiam hic malus morbus cui nec ſanitas eſt: quia omnino quemadmodum venit in ſeculū hoc *indigens merito*, ſic ibit ad ſeculū *illud*: & quid reliqui eſt ei quòd laboraverit ut *caliget ſpiritus ejus?* 16 Etiam omnes dies ſuos in tenebris habitat ut panē ſuum ſolꝰ deguſtet: & in furore multo *videt*, & in ægrotationibꝰ & indignatione fuit vita ejꝰ. 17 Et ecce quod vidi ego bonū eſſe filiis hominum & pulchrum illis ut faciant in ſeculo hoc: ut comedant & bibant ex labore ſuo, ita ut non extendant manum in violentiam & rapinam, ſed cuſtodiant verba Legis, & ut miſereantur pauperū, propterea videant bonum in omni labore ſuo quo laboraverint in ſeculo hoc ſub Sole numero dierū vitæ hominis quē dederit ei *Dominꝰ in providentia ſua:* etenim hæc pars ejꝰ eſt, *nec aliud ab hoc.* 18 Etiā omnis homo cui dederit Dominꝰ divitias & facultates, & præpoſuerit eum Dn̄s, ut comedat ex eis in ſeculo hoc, & ut faciat ex eis eleemoſynā, & ut accipiat mercedē perfectam in ſeculū venturū; & ut lætetur in labore ſuo cum juſtis: ecce hoc donū quod datū eſt illi *in ſortem ſuam*, à Dn̄o eſt. 19 Etenim non dies multi vitæ hominis ſunt ut recordetur dierū vitæ ſuæ quotnam ex eis futuri ſint boni, & quotnam ex eis futuri ſint mali, propterea quòd non eſt traditū filio hominis: quia à Dn̄o decretū eſt ſuper eum quot diebꝰ affligetur, & quot diebus vivet in gaudio cordis ſui.

CAP. VI.

1 Eſt malum quod vidi ſub Sole in ſeculo hoc, & magnum illud eſt ſuper filios hominis. 2 Vir cui dedit Dn̄s *in ſortem ſuam* divitias & gloriam facultatum, & nihil deficit animæ ejꝰ ex omnibꝰ quæ voluit: ſed non dedit poteſtatem ei Dominus ob peccatū ſuum ut guſtaret ex eis: ſed morietur abſque liberis, & non miſertus eſt proximi ſui ut hæredem eum ſibi conſtitueret: etenim uxor ejꝰ tradetur viro alieno, qui hæreditabit eas & comedet ipſas: omnis hujus rei cauſa peccata ſua illi fuerunt, quòd non fecerit ex illis quicquam boni, & converſæ ſunt divitiæ ejꝰ ut eſſent ei in vanitatem & in ægritudinem malam. 3 Si genuerit vir centū filios, & annos multos vixerit, & in imperio & magiſtratu totidem fuerint dies *annorum* ejꝰ, & anima ejꝰ non ſatiata fuerit bono quod erat ei, eò quòd abſtinuit à divitiis ſuis, & non acquiſivit ex illis nomen bonū, etiámq; domꝰ ſepulturæ non fuerit præparata illi, dixi *ego in verbo meo* quòd melior eſt eo abortivꝰ qui non vidit ſeculū hoc. 4 Etenim in vanitate venit in ſeculū hoc, & in obſcuritate nomen ejꝰ obvolvetur; *eò quòd non ſit ei meritū, neque nomen bonum acquiſierit, ut eſſet in memoria.* 5 Etiam lucem Legis non vidit, & non cognovit inter bonū & malum, & ad dijudicandū inter ſeculū hoc & ſeculū alterū. 6 Et tametſi fuerint dies vitæ viri duo millia annorū, & in Lege non ſtuduerit, & judiciū & juſtitiam non fecerit, in juramento dicti Dn̄i quod [*fuerit*] in die mortis ejꝰ, anima ejꝰ deſcendet ad gehennam ad locū unū quò omnes peccatores eunt. 7 Omnē laborem vir propter cibū oris ſui ipſe laborat, & in dicto oris Dn̄i *moriuntur*, & etiam anima hominis non ſatiabitur cibo & potu. 8 Etenim quid ampliꝰ eſt *ſapienti* in ſeculo hoc quàm *ſtulto, propter generationem malā, quod non acceptus ſit apud eos?* & quid eſt ipſi *viro* pauperi, niſi ut ſtudeat in *Lege* Dn̄i, ut cognoſcat quomodo *eundo* futurū ſit ut eat omninò corā juſtis in paradiſū Gheden?

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܘܐܦ ܗܢܐ ܟܘܪܗܢܐ ܒܝܫܐ. ܐܝܟܢܐ ܓܝܪ ܕܐܬܐ . ܗܟܢܐ ܐܙܠ. ܘܡܢܐ ܡܘܬܪܢܐ 15
ܒܟܠ ܕܥܡܠ ܠܪܘܚܐ. * ܘܐܦ ܟܠܗ ܝܘܡܬܗ. ܒܚܫܘܟܐ ܐܟܠ. ܘܒܪܘܓܙܐ ܣܓܝܐܐ 16
ܘܒܚܡܬܐ ܘܒܟܐܒܐ . ܘܒܟܘܪܗܢܐ. * ܗܢܐ ܚܙܝܬ ܕܛܒܐ ܐܢܐ ܩܘܗܠܬ. ܢܐܐ ܗܘ 17
ܘܫܦܝܪ ܠܡܐܟܠ ܘܠܡܫܬܐ. ܘܠܡܚܙܐ ܛܒܬܐ. ܒܟܠܗ ܥܡܠܗ ܕܥܡܠ ܬܚܝܬ
ܫܡܫܐ : ܡܢܝܢ ܝܘܡܬܐ ܕܚܝܘܗܝ ܕܝܗܒ ܠܗ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܗܘܝܘ ܡܢܬܗ.
* ܘܐܦ ܟܠܢܫ ܕܢܬܠ ܠܗ ܡܪܝܐ ܥܘܬܪܐ ܘܢܟܣܐ . ܘܐܫܠܛܗ ܠܡܐܟܠ ܡܢܗܘܢ . 18
ܘܠܡܫܩܠ ܡܢܬܗ : ܘܠܡܚܕܐ ܒܥܡܠܗ . ܐܦ ܗܕܐ ܡܘܗܒܬܐ ܗܝ ܕܐܠܗܐ.
* ܡܛܠ ܕܠܐ ܣܓܝ ܢܥܗܕ ܝܘܡܬܐ ܕܚܝܘܗܝ. ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܡܥܢܐ ܠܗ. ܒܚܕܘܬܐ 19
ܕܠܒܗ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܘ *

* ܐܝܬ ܒܝܫܬܐ ܕܚܙܝܬ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ . ܘܣܓܝܐܐ ܗܝ ܥܠ ܒܢܝܢܫܐ. * ܓܒܪܐ 1 2
ܕܢܬܠ ܠܗ ܐܠܗܐ ܥܘܬܪܐ ܘܢܟܣܐ ܘܐܝܩܪܐ . ܘܠܐ ܚܣܝܪ ܠܢܦܫܗ ܡܕܡ ܡܢ ܟܠ ܡܐ
ܕܪܓܝܓ . ܘܠܐ ܐܫܠܛܗ ܐܠܗܐ ܠܡܐܟܠ ܡܢܗ . ܐܠܐ ܓܒܪ ܢܘܟܪܝ ܢܐܟܠܝܘܗܝ ܡܢ
ܒܬܪܗ . ܗܢܐ. ܗܒܠܐ ܘܟܘܪܗܢܐ ܗܘ. * ܐܢ ܢܘܠܕ ܓܒܪܐ ܡܐܐ . ܘܫܢܝܐ ܣܓܝܐܐ 3
ܢܚܐ . ܘܢܣܓܘܢ ܝܘܡܬܐ ܕܫܢܘܗܝ . ܘܢܦܫܗ ܠܐ ܬܣܒܥ ܡܢ ܛܒܬܐ . ܘܐܦ ܩܒܘܪܐ
ܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗ . ܐܡܪܢܐ ܕܛܒ ܗܘ ܡܢܗ ܢܦܠܐ. * ܡܛܠ ܕܒܗܒܠܐ ܐܬܐ . ܘܒܚܫܘܟܐ ܐܙܠ 4
ܘܒܚܫܘܟܐ ܫܡܗ ܢܬܟܣܐ. * ܐܦ ܫܡܫܐ ܠܐ ܚܙܐ ܘܠܐ ܝܕܥ. ܢܝܚ ܠܗܢܐ ܛܒ ܡܢ ܕܠܗܢܐ. 5
* ܘܐܠܘ ܚܝܐ ܐܠܦ ܫܢܝܢ ܕܐܬܥܝܦ ܐܦܝܢ. ܘܛܒܬܐ ܠܐ ܚܙܐ : ܕܟܠܡܐ ܠܐ ܗܘܐ ܠܚܕ ܐܬܪܐ 6
ܐܙܠ ܟܠ. * ܟܠ ܕܥܡܠ ܐܢܫܐ ܠܦܘܡܗ. ܘܢܦܫܗ ܠܐ ܡܠܝܐ. * ܡܛܠ ܕܐܝܬ ܡܘܬܪܢܐ 7 8
ܠܚܟܝܡܐ ܡܢ ܕܣܟܠܐ. ܠܡܢܐ . ܕܡܣܟܢܐ ܝܕܥ ܠܡܪܕܐ ܚܝܐ.

Atque hic etiam morbus peſſimus eſt : nam 15
uti venerat, ſic abiit : & quod operæpreti-
um eſt in omnibus quæ vento laboravit?
Quin etiam cunctis diebus ſuis in tenebris 15
comedit, & in ira magna, & in furore, ac
moleſtiâ, & ægritudine. Hæc eſt res quam 17
vidi ego Coheleth, Bonum eſt atque deco-
rum edere ac bibere, & bono frui in omni
ſuo labore quo *quis* ſub ſole deſudat, nume-
ro dierum vitæ ſuæ, quos concedit illi Do-
minus : quoniam hæc eſt portio ipſius.
Etiam, cuicunque dederit Dominus diviti- 18
as atque facultates, & copiam fecerit ei com-
edendi ex ipſis, & percipendi partem ſu-
am, & fruendi labore ſuo : hoc quoque do-
num Dei eſt. Non enim admodum recorda- 19
bitur dierum vitæ ſuæ : quia Deus occupat
illum in lætitia cordis ejus.

CAP. VI.

Eſt miſeria quam vidi ſub ſole, & fre- 1
quens eſt apud homines. Vir cui largitur 2
Deus divitias & facultates atque honorem,
nec deeſt animæ ſuæ quicquam ex omnibus
quæ expetit, nec tamen tribuit ei poteſtatem
Deus comedendi ex iis, ſed homo extraneus
vorabit eas poſt ipſum : hoc vanitas eſt, ac
morbus. Si progenuerit quis centum *libe-* 3
ros, & plurimos vixerit annos, & multipli-
centur dies annorum ejus, animus autem
ejus non ſaturetur bonis, adeoque ſepul-
chrum non habeat : dico abortivum potio-
ris eſſe conditionis quàm iſte. Is enim in va- 4
num prodiit, & in tenebras abibit, tenebriſq;
nomen ejus occultabitur ; Imò nec ſolem 5
aſpexit, nec agnovit. Tolerabilius eſt iſti quàm
illi, Etiamſi vixerit annis bis mille, bonis au- 6
tem non ſit fruitus. Nonne *enim* unum in lo-
cum tendūt omnia? Quicquid laborioſè con- 7
tendit homo, propter os ejus eſt : anima ta-
men ipſius haud expletur. Quia plus utili- 8
tatis eſt ſapienti quàm ſtulto. Quare? quo-
niam pauper ſcit vitam ſectari.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* وَذَلِكَ إِنَّ هٰذَا سُقْمًا رَدِيًّا * لِأَنَّهُ كَمَا جَآءَ كَذَلِكَ يَنْصَرِفُ * وَمَا فَضْلَةُ ٱلَّذِي يَتْعَبُ فِيهِ لِلرِّيَاحِ * 15
* وَمَعَ ذَلِكَ جَمِيعُ أَيَّامِهِ لِلظَّلَامِ وَٱلنَّوْحِ وَٱلْغَضَبِ ٱلْكَثِيرِ وَٱلسُّقْمِ وَٱلْمُرِّ * فَهَذَا ٱلشَّيْ 16 17
ٱلَّذِي عَرَفْتُهُ أَنَا صَالِحًا لِلَّذِي هُوَ جَيِّدًا * أَنْ يَأْكُلَ وَيَشْرَبَ وَيُبْصِرَ ٱلصَّلَاحَ فِي جَمِيعِ
تَعَبِهِ ٱلَّذِي يَتْعَبُ فِيهِ تَحْتَ ٱلشَّمْسِ * وَيُرَاعِي عَدَدَ أَيَّامِ حَيَاتِهِ ٱلَّتِي مَنَحَهُ ٱللّٰهُ إِيَّاهَا * لِأَنَّ
ذَاكَ حَظُّهُ * وَلَعَمْرِي أَنْ كُلَّ إِنْسَانٍ أَعْطَاهُ ٱللّٰهُ ثَرْوَةً وَمَالًا * وَسَلَّطَهُ عَلَيْهَا لِيَأْكُلَ مِنْهَا 18
وَيَأْخُذَ حَظَّهُ وَيُسَرَّ بِتَعَبِهِ * هٰذَا عَطِيَّةُ ٱللّٰهِ هُوَ * لِأَنَّ أَيَّامَ حَيَاتِهِ لَمْ يَذْكُرْ كَثِيرًا * لِأَنَّ 19
ٱللّٰهَ يَجْتَذِبُهُ فِي سُرُورِ قَلْبِهِ *

Nimirum morbus eſt hic peſſimus; quia 15
prout venerat, ſic abibit : & quid
proderit id in quo laborat ventis? Et 16
adhæc omnes dies ejus conſumpti ſunt
tenebris, & luctu, & indignatione mul-
tâ, morbo, atque amaritudine. En igi- 17
tur quod cognovi bonum eſſe ei qui pro-
bus eſt, Edere ac bibere, & videre bo-
num in omni ſuo labore quo fatigatur
ſub ſole, & arridere numero dierum
ætatis ſuæ, quos dedit ei Deus : quan-
doquidem hæc eſt pars ipſius. Et 18
quidem quoties concedit Deus homini
divitias & opes, & dat illi poteſta-
tem comedendi ex ipſis, & ſumendi
partem ſuam, ac fruendi labore ſuo :
hoc Divini muneris eſt. Non enim 19
frequenter recordatur dierum vitæ ſuæ,
quia Deus trahit illum in hilaritate
cordis ipſius.

* ٱلْفَصْلُ ٱلسَّادِسُ *

* يَكُونُ شَرٌّ قَدْ عَرَفْتُهُ تَحْتَ ٱلشَّمْسِ * وَهُوَ كَثِيرٌ تَحْتَ ٱلسَّمَآءِ * إِنْسَانٌ يُعْطِيهِ ٱللّٰهُ ثَرْوَةً 1 2
وَقِنْيَةً وَشَرَفًا * وَلَيْسَ لِنَفْسِهِ إِعْوَازٌ مِنْ كُلِّ مَا يَشْتَهِي * وَمَا يُسَلِّطُهُ ٱللّٰهُ أَنْ يَأْكُلَ مِنْهُ
لَكِنْ إِنْسَانٌ غَرِيبٌ يَأْكُلُهُ * وَلَعَمْرِي إِنَّ هٰذَا بَاطِلٌ وَسُقْمٌ خَبِيثٌ هُوَ * إِنْ وَلَدَ ٱلْإِنْسَانُ 3
مِائَةً * وَعَاشَ سِنِينَ كَثِيرَةً * وَكَانَتْ أَيَّامُ حَيَاتِهِ كَثِيرَةً * وَمَا تَشْبَعُ نَفْسُهُ مِنَ ٱلْخَيْرِ *
وَمَعَ ذَلِكَ مَا صَارَ لَهُ مِنْ ذَاكَ قَبْرٌ * قُلْتُ أَنَا أَنَّ ٱلسِّقْطَ صَالِحٌ أَفْضَلُ مِنْهُ * لِأَنَّهُ جَآءَ 4
بِٱلْبَاطِلِ وَسَيَمْضِي إِلَى ٱلظُّلْمَةِ * وَسَيُغَطِّي ٱسْمَهُ بِٱلظُّلْمَةِ * مَعَ أَنَّهُ مَا رَأَى شَمْسًا وَلَا يَعْرِفُهَا * 5
فَلِهٰذَا رَاحَةٌ أَكْثَرُ مِنْ هٰذَا * وَإِنْ عَاشَ جُمَلَ أُلُوفِ سِنِينَ وَمَا عَرَفَ خَيْرًا * وَلَيْسَ إِلَى 6
مَوْضِعٍ وَاحِدٍ يَذْهَبُ ٱلْكُلُّ * كُلُّ تَعَبِ ٱلْإِنْسَانِ لِفَمِهِ * وَنَفْسُهُ مَا تَمْتَلِي * لِأَنَّ ٱلْحَكِيمَ لَهُ 7
فَضْلٌ أَكْثَرُ مِنَ ٱلْغَبِيِّ * لِأَنَّ ٱلْفَقِيرَ قَدْ عَرَفَ ٱلسُّلُوكَ أَمَامَ ٱلْحَيَاةِ * 8

CAP. VI.

Eſt malum quod cognovi ſub ſole, 1
& illud quidem frequens ſub cœ-
lo. Eſt homo cui Deus tribuit divi- 2
tias, poſſeſſionem, atque honorem,
nec eſt ejus animæ penuria ullius
rei quam exoptat : & tamen non
præbet ei Deus facultatem edendi ex
illis, ſed homo alienus comedet eas :
& reverà hoc vanum eſt, & mor-
bus pernicioſus. Si gignat quis cen- 3
tum, & annos vivat permultos,
ſintque dies ætatis ejus plurimi, non
tamen ſatietur ejus anima bonis, &
adhæc non fiat ei ex illis ſepulchrum;
ego pronuntio abortivum ipſo meliorem
ac præſtantiorem eſſe. Nam is venit 4
in vanum, & in tenebras abibit, te-
nebriſque tegetur nomen ejus : Præter 5
quam quòd nec ſolem vidit, nec agnovit
eum. Itaque major eſt illi quies quàm
iſti. Et quamvis pluribus annorum 6
millibus vixerit, bonum autem non
cognoverit, nonne ad eundem locum
omnia ſe recipiunt? Totus labor ho- 7
minis pro ipſius eſt ore, animus ta-
men ejus non impletur. Etenim ſa- 8
piens inſulſo præſtantior eſt, quia pau-
per novit obviàm ire vitæ.

קהלת : ז

.ſpiritus *paſtio* &,vanitas hoc etiam :*animā ire præ* oculorū viſio *Bona*
טוֹב מַרְאֵה עֵינַיִם מֵהֲלָךְ־נָפֶשׁ גַּם־זֶה הֶבֶל וּרְעוּת רוּחַ : 9
: homo *ipſe* quod *notum* &,ej⁹ nomen eſt vocatū jam fuerit Quicquid
מַה־שֶּׁהָיָה כְּבָר נִקְרָא שְׁמוֹ וְנוֹדָע אֲשֶׁר־הוּא אָדָם 10
verborum eſt Quia .ſe *præ fortis* qui *eo* cum judicare *poterit non* &
וְלֹא־יוּכַל לָדִין עִם שֶׁהַתַּקִּיף מִמֶּנּוּ : כִּי יֵשׁ־דְּבָרִים 11
? homini *præſtantius* quid : vanitatem *multiplicantium multum*
הַרְבֵּה מַרְבִּים הָבֶל מַה־יֹּתֵר לָאָדָם :

CAP. VII. ז

vitarum dierum numero *vitis* in homini bonum quid *ſciens* quis Quia
כִּי מִי־יוֹדֵעַ מַה־טּוֹב לָאָדָם בַּחַיִּים מִסְפַּר יְמֵי־חַיֵּי 1
quid ,homini indicabit quis quia ?umbrā tanquā *eos perfecit &*,ſuæ vanitatis
הֶבְלוֹ וְיַעֲשֵׂם כַּצֵּל אֲשֶׁר מִי־יַגִּיד לָאָדָם מַה־
dies & :bonū *oleū* quàm nomen Melius ? ſole ſub eum poſt erit
יִּהְיֶה אַחֲרָיו תַּחַת הַשָּׁמֶשׁ : טוֹב שֵׁם מִשֶּׁמֶן טוֹב וְיוֹם 2
ire quàm ,luctus domum ad ire *Bonum .ejus naſci* dies quàm ,mortis
הַמָּוֶת מִיּוֹם הִוָּלְדוֹ : טוֹב לָלֶכֶת אֶל־בֵּית־אֵבֶל מִלֶּכֶת 3
dabit vivens & :hominis omnis finis *ipſum* quod eo *in* :convivii domū ad
אֶל־בֵּית מִשְׁתֶּה בַּאֲשֶׁר הוּא סוֹף כָּל־הָאָדָם וְהַחַי יִתֵּן
erit jucundū *facierum triſtitia in* quia , riſu *præ* ira *Bona* .ſuū cor *ad*
אֶל־לִבּוֹ : טוֹב כַּעַס מִשְּׂחוֹק כִּי־בְרֹעַ פָּנִים יִיטַב 4
.lætitiæ domo in ſtultorum cor & : luctus domo in ſapientū Cor .cor
לֵב : לֵב חֲכָמִים בְּבֵית אֵבֶל וְלֵב כְּסִילִים בְּבֵית שִׂמְחָה : 5
.ſtultorum canticū *audiens vir* quàm :ſapientis increpationē audire Melius
טוֹב לִשְׁמֹעַ גַּעֲרַת חָכָם מֵאִישׁ שֹׁמֵעַ שִׁיר כְּסִילִים : 6
hoc etiam : ſtulti riſus ſic , olla ſub ſpinarum *vox* ſicut Quia
כִּי כְקוֹל הַסִּירִים תַּחַת הַסִּיר כֵּן שְׂחֹק הַכְּסִיל גַּם־זֶה 7
.donum cor perdet &:ſapientē faciet inſanire oppreſſio Quia.vanitas
הָבֶל : כִּי הָעֹשֶׁק יְהוֹלֵל חָכָם וִיאַבֵּד אֶת־לֵב מַתָּנָה : 8
elat⁹ quàm,ſpiritu *longus* melior:ej⁹ principiū quàm,*verbi noviſſimum Melius*
טוֹב אַחֲרִית דָּבָר מֵרֵאשִׁיתוֹ טוֹב אֶרֶךְ־רוּחַ מִגְּבַהּ־ 9
ſtultorum ſinu in ira quia:iraſcēdū ad tuo ſpiritu in feſtines Ne .ſpiritu
רוּחַ : אַל־תְּבַהֵל בְּרוּחֲךָ לִכְעוֹס כִּי כַעַס בְּחֵיק כְּסִילִים 10
boni fuerunt priores dies quod ,fuit quid ,dicas Ne.requieſcet
יָנוּחַ : אַל־תֹּאמַר מֶה הָיָה שֶׁהַיָּמִים הָרִאשֹׁנִים הָיוּ טוֹבִים 11
cum ſapientia Bona .hoc ſup interrogâſti ſapiētia ex non quia:iſtis *præ*
מֵאֵלֶּה כִּי לֹא מֵחָכְמָה שָׁאַלְתָּ עַל־זֶה : טוֹבָה חָכְמָה עִם־ 12
umbra in ,ſapientiæ umbra in Quia .ſolem videntib⁹ magis &:hæreditate
נַחֲלָה וְיֹתֵר לְרֹאֵי הַשָּׁמֶשׁ : כִּי בְּצֵל הַחָכְמָה בְּצֵל 13
Vide .*ſuos patronos* vivificabit *ſapientiæ ſcientiæ præſtantia &*:argenti
הַכֶּסֶף וְיִתְרוֹן דַּעַת הַחָכְמָה תְּחַיֶּה בְעָלֶיהָ : רְאֵה אֶת־ 14
?ipſe *depravaverit* quem dirigere *poterit* quis quia : Dei opus
מַעֲשֵׂה הָאֱלֹהִים כִּי מִי יוּכַל לְתַקֵּן אֵת אֲשֶׁר עִוְּתוֹ :

Verſio VUL. LAT.

9 Melius eſt videre quod cupias, quàm deſiderare quod neſcias: ſed & hoc vanitas eſt, & præ-10 ſumptio ſpiritûs. Qui futurus eſt, jam vocatum eſt nomen ejus: & ſcitur quòd homo ſit, & non poſſit contra fortiorem 11 ſe in judicio contendere. Verba ſunt plurima, multámq; in diſputando habentia vanitatē.

CAP. VII.

1 Quid neceſſe eſt homini majora ſe quærere, cū ignoret quid conducat ſibi in vita ſua, numero dierū peregrinationis ſuæ, & tempore quo velut umbra præterit? Aut quis ei poterit indicare quid poſt eum futu-2 rum ſub Sole ſit? Meli⁹ eſt nomen bonū, quā unguenta pretioſa, et dies mortis die nativi-3 tatis. Meli⁹ eſt ire ad domū luctûs, quā ad domū cōvivii: in illa enim finis cunctorū admonetur hominū, & vivens cogitat 4 quid futurū ſit. Melior eſt ira riſu: quia per triſtitiā vultûs, cor-5 rigitur anim⁹ delinquentis. Cor ſapientiū ubi triſtitia eſt, et cor 6 ſtultorū ubi lætitia. Meli⁹ eſt à ſapiente corripi, quā ſtultorū 7 adulatione decipi. Quia ſicut ſonit⁹ ſpinarū ardentium ſub olla, ſic riſus ſtulti: ſed & hoc 8 vanitas. Calumnia conturbat ſapientē, & perdet robur cor-9 dis illi⁹. Melior eſt finis orationis, quā principiū. Melior eſt 10 patiens arrogante. Ne ſis velox ad iraſcendū: quia ira in ſinu 11 ſtulti requieſcit. Ne dicas; Quid putas cauſæ eſt, quòd priora tempora meliora fuêre quàm nunc ſunt? ſtulta enim eſt hu-12 juſcemodi interrogatio. Utilior eſt ſapientia cum divitiis, & magis prodeſt videntib⁹ Solē. 13 Sicut enim protegit ſapientia, ſic protegit pecunia: hoc autē 14 plus habet eruditio & ſapientia, quòd vitam tribuunt poſſeſſori ſuo. Conſidera opera Dei, quòd nemo poſſit corrigere quem ille deſpexerit.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

9 † Ἀγαθὸν ὅραμα ὀφθαλμῶν ὑπὲρ πορευόμενον ψυχῇ. καί γε τοῦτο ματαιότης καὶ προαίρεσις 10 πνεύματος. †(η) Εἴ τι ἐγένετο, ἤδη (ϑ) κέκληται ὄνομα αὐτοῦ, † καὶ ἐγνώσθη ὅ ἐστιν ἄνθρωπος, † καὶ οὐ δυνήσεται (ι) κριθῆναι μετὰ τοῦ ἰσχυροτέρου ὑπὲρ αὐτόν. 11 † Ὅτι εἰσὶν λόγοι πολλοὶ πληθύνοντες ματαιότητα.

ΚΕΦ. ζ'.

1 † Τί περισσὸν τῷ ἀνθρώπῳ; ὅτι τίς οἶδεν (α) ἀγαθὸν τῷ ἀνθρώπῳ ἐν τῇ (β) ζωῇ, † ἀριθμὸν (γ) ζωῆς ἡμερῶν ματαιότητος αὐτοῦ; καὶ ἐποίησεν (δ) αὐτὰ ἐν σκιᾷ. † ὅτι τίς ἀπαγγελεῖ τῷ ἀνθρώπῳ, τί ἔσται ὀπίσω αὐτοῦ ὑπὸ τὸν ἥλιον; (ε) 2 † Ἀγαθὸν ὄνομα ὑπὲρ ἔλαιον ἀγαθὸν, † καὶ ἡμέρα τοῦ θανάτου ὑπὲρ ἡμέραν (ζ) γενέσεως. 3 † Ἀγαθὸν πορευθῆναι εἰς οἶκον πένθους † ἢ ὅτι πορευθῆναι εἰς οἶκον πότου· † καθότι τοῦτο (η) τέλος παντὸς ἀνθρώπου, † καὶ ὁ ζῶν δώσει ἀγαθὸν (ϑ) εἰς καρδίαν αὐτοῦ. 4 † Ἀγαθὸν θυμὸς ὑπὲρ γέλωτα, † ὅτι ἐν κακίᾳ προσώπου ἀγαθυνθήσεται καρδία. 5 † Καρδία σοφῶν ἐν οἴκῳ πένθους, † καὶ καρδία ἀφρόνων ἐν οἴκῳ εὐφροσύνης. 6 † Ἀγαθὸν τὸ ἀκοῦσαι ἐπιτίμησιν σοφοῦ † ὑπὲρ ἄνδρα ἀκούοντα ᾆσμα ἀφρόνων. 7 † (ι) Ὡς φωνὴ ἀκανθῶν ὑπὸ τὸν λέβητα, † οὕτως (κ) γέλως τῶν ἀφρόνων. † καί γε τοῦτο ματαιότης. 8 † Ὅτι ἡ συκοφαντία περιφέρει σοφὸν, † καὶ (λ) ἀπόλλυσι τὴν καρδίαν εὐγενείας αὐτοῦ. 9 † Ἀγαθὴ ἐσχάτη λόγων ὑπὲρ ἀρχὴν αὐτοῦ, † ἀγαθὸν μακρόθυμος ὑπὲρ ὑψηλὸν πνεύματι. 10 † Μὴ σπεύσῃς ἐν πνεύματί σου τοῦ θυμοῦσθαι, † ὅτι θυμὸς ἐν κόλπῳ ἀφρόνων ἀναπαύσεται. 11 † Μὴ εἴπῃς, Τί ἐγένετο, ὅτι αἱ ἡμέραι (μ) αἱ πρότεραι ἦσαν ἀγαθαὶ ὑπὲρ ταύτας; † ὅτι οὐκ ἐν σοφίᾳ ἐπηρώτησας περὶ τούτου. 12 † Ἀγαθὴ σοφία μετὰ (ν) κληρονομίας, † καὶ περισσεία τοῖς θεωροῦσι τὸν ἥλιον. 13 Ὅτι ἐν σκιᾷ αὐτῆς ἡ σοφία ὡς σκιὰ (") ἀργυρίου, † καὶ περισσεία γνώσεως τῆς σοφίας 14 † ζωοποιήσει τὸν παρ' αὐτῆς. † Ἴδε τὰ ποιήματα τοῦ Θεοῦ, † ὅτι τίς δυνήσεται (ξ) κοσμῆσαι † ὃν ἂν ὁ Θεὸς διαστρέψῃ αὐτόν;

Κεφ. ε'. MS. A. (η) Ἢ τι (ϑ) κέκληκεν (ι) τοῦ κριθῆναι μετὰ τοῦ ἰσχυροῦ Κεφ. ζ'. MS. A. (α) τί ἀγαθὸν (β) ζωῇ αὐτοῦ, (γ) ἡμερῶν ζωῆς (δ) αὐτὰς (ε) † καὶ καθὼς ἐστι τίς ἀπαγγελεῖ αὐτῷ; Ἀγαθὸν (ζ) γενέσεως αὐτοῦ. (η) τὸ τέλος (ϑ) ἐν καρδίᾳ αὐτοῦ. (ι) Ὅτι ὡς φωνὴ τῶν ἀκανθῶν (κ) ὁ γέλως ὁ τῶν ἀφρόνων. (λ) ἀπολλύει (μ) αἱ πρότεραι (ν) κληροδοσίας, (") τοῦ ἀργυρίου, (ξ) τοῦ κοσμῆσαι

(m)Bonum eſt aſpect⁹ oculorū ſuper ambulantem animā. Hoc etiā vanitas, et præſumptio ſpirit⁹. 9 *Si(n)quid fuit, jam vocatū eſt nomē ej⁹, et cognitū, quod eſt homo, et non poterit judicari cum (o)fortiore ſuper ſe.* 10 *Quia ſunt verba multa multiplicātia vanitatē.* 11

CAP. VII.

Quid pl⁹ homini? Quis enim cognovit(a)bonū homini in vita? numerū dierū vitæ vanitatis ej⁹, et(b)fecit ea in umbra? Quia, quis annuntiabit homini, quid erit poſt eum ſub Sole? 1 *Bonū eſt nomē(c)ſuper oleū bonū, et dies mortis ſuper diem nativitatis.* 2 *Bonum ire ad domū luctûs, quā ire ad domū convivii, eò quòd hic eſt finis omnis hominis: & qui vivit, dabit(d) bonum ad cor ſuū.* 3 *Bonū eſt ira ſuper riſum; quia in(e)malo vultûs fiet bonum cor.* 4 *Cor ſapientū in domo luct⁹, & cor inſipientū in domo lætitiæ.* 5 *Bonum eſt audire increpationē ſapientis ſuper virū audientē carmē ſtultorū.* 6 *(f)Sicut vox ſpinarum ſub olla; ita riſ⁹ ſtultorū. Etiā hoc vanitas:* 7 *Quoniā calumnia(g)circumfert ſapientē, et perdit(h)cor vigoris ejus.* 8 *(i)Bonū eſt noviſſimum ſermonum ſuper principiū ejus. Bonū eſt longanimus ſuper (k)excelſum ſpiritu.* 9 *Ne feſtines(l)in ſpiritu tuo iraſci: (m)quia furor in ſinu ſtultorū requieſcet.* 10 *Ne dixeris; (n) Quid factū eſt, quia dies priores erāt boni ſuper hos? (o) quia non in ſapientia interrogâſti de hoc.* 11 *Bona eſt ſapientia cum hæreditate, et ampli⁹ videntib⁹ Solē:* 12 *(p) Quia in umbra ej⁹ ſapientia, ſicut umbra argenti: & (q) abundantia ſcientiæ ſapientiæ vivificabit eum qui ab ea.* 13 *(r) Vide opera Dei: quoniam quis poterit adornare, quem Deus perverterit eum?* 14

תרגום TARGUM.

טב לגברא למחדי על עלמא דאתי ליה ולמעבד צדקתא ולמחמי אגר טב על עובדוי ליום 9
דינא רבא מן די יזיל לעלמא ההוא בסיגוף נפש ברם דין לגברא חייבא הבלו ותבירות
רוחא : מה דהוה בעלמא הא כבר אתקרי שמיה ואשתמודע לבני אנשא מן יומא דהוה 10
אדם קדמאה וכולא גזירת מימרא דיי היא ולית רשו לגברא למקם בדינא עם מרי עלמא
דתקיף מניה : ארום אין פתגמין סגיאין דמסגין הבלו בעלמא מה מותר אית לגבר 11
דמתעסק בהון :

ז

ארום מן הוא די ינדע מה יוטיב לאנשא בעלמא הדין אלהן למעסק באוריתא די אנון חיי 1
עלמא וכל מנין יומי חיי הבלו די יחי בעדן מותיה אנון חשיבין בעינוי כטללא דמן הוא די
חוי לאנשא מה דעתיד למהוי באפוהי בעלמא הדין תחות שמשא : טב שמא טבא דיקנון 2
צדיקיא בעלמא הדין יתיר ממשחא דרבותא דהוה מתרבי על ריש מלכיא וכהניא ויומא
דישכב גבר ויפטר לבית קבורתא בשום טב ובזכותא מן יומא די אתיליד רשיעא בעלמא :
טב למיזל לגבר אבלא לנחמותיה מלמיזל לבית משתיא דחמרא דמתלעבין די בבית 3
אבלא תמן הוא סוף כל אנשא למיזל די על כולהון אתגזרת גזרת מותא ומן בגלל דיהך
לבית אבלא גברא צדיקא יתב ויתן ללביה מלי דמותא ואין אית בידיה מדעם ביש ישבקניה
ויתוב בתיובתא קדם מרי עלמא : טב רגיז דרגז מרי עלמא על צדיקיא בעלמא הדין מן 4
חוכא די הוא מחייך עם רשיעא ארום בבאשות אפי שכנתא אתי בצורתא ופורענותא
בעלמא בגין לאוטבא לב צדיקיא ויצלון קדם מרי עלמא דהוא מרחם עליהון : לבהון 5
דחכימיא אנן על חורבן בית מוקדשא ועצב על גלות בית ישראל ולב שטין בחדות בירת
ליצנותהון אכלין ושתן ומתפנקין ולא יתיבון על לבהון סגוף אחיהון : טב למתב במדרש 6
בית אולפנא ולמשמע נזוף גבר חכימא באוריתא מגבר דאזיל למשמע קל טבלא דשטין :
ארום כקל קבלת כובין דמתוקדין תחות דודא כדין קל חוכא דשטיא אוף דין הבלו : ארום 7 8
אניסא יהתל בחכימא בגין דלא אזיל באורחתיה ומהובד במלוי בישיא ית חוכמת לב
חכימא דאתיהיבת לה במתנא מן שמיא : טב סוף עסקא מן שרויה דבשרויה לא אשתמודע 9
לגבר מה דעתיד למהוי בסופיה אלהן סוף מלתא טב אשתמודע לגבר דטב הוא וטב מן
קדם יי גבר די שליט ברוחיה ומכבש יצריה מגבר דאזיל בנסות רוחיה : ובעדן דתיתי עלך 10
אוכחתא מן שמיא לא תבהל בנפשך למרתח ולמימר פתגמי סרבנותא כלפי שמיא ארום
אין אנת סבל ישתבק לך ואין את מסרב ומרתח דע ארום רתחא בעטף שטין יניח עד כדין
דיהובד יתהון : ובעדן עשקך לא תימר מה דהות קדמת דנא טב בעלמא דיומין קדמאין 11
הוו טבין ואנשי דרא ההוא הוו שפירי עובדא יתיר מן אלין בגין כן טבא הוה מטי להון ואנת
לא על חוכמתא שאלתא על דנא : טבתא חוכמתא דאוריתא עם אחסנת ממונא ויתיר לגבר 12
למהוי מדבר בענותנותא עם גוברין דיירי ארעא דחזן טב וביש תחות שמשא בעלמא הדין :
ארום היכמה דמסתתר גברא בטלל חוכמתא היכדין מסתתר בטלל כספא בעדן די עבד 13
מניה צדקתא ומותר מנדעא חוכמתא דאוריתא תחיי ית מרהא מבית קבורתא לעלמא
דאתי : הוי מסתכל ית עובדא דיי וגבורתיה די עבד ית סמיא ית גבנא יחגירא למהויהון 14
פרישן בעלמא ארום מן הוא די יכיל לתקנא ית חד מנהון אלהן מרי עלמא די עותיה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

9 Melius eſt viro ut lætetur ſuper *ſeculo venturo* ipſi, & ut faciat juſtitiam, & ut videat mercedem *bonam* operum ſuorum in die judicii magni, quàm ut eat ad ſeculum illud in afflictione animæ: verùm hoc vanitas eſt viro peccatori, & confractio ſpiritus. 10 Id quod fuit in mundo, ecce jam vocatum fuit nomen ejus & cognitum filiis hominis à die quo fuit Adam antiquus, *eſtq; totum decretum verbi Domini*; & non eſt facultas viro conſiſtendi in judicio cum Domino mundi, qui fortior eſt illo. 11 Etenim *ſi* res multæ ſunt quæ multiplicant vanitatem in mundo: quæ adjectio eſt viro qui ſtuduerit in eis?

CAP. VII.

1 Quis enim eſt qui noverit quid proderit homini in ſeculo hoc, niſi ut ſtudeat in Lege, quòd ipſa vita ſeculi; & omnis numerus dierū vitæ vanitatis ejus quos vixerit, in tempore mortis ſuæ illi reputentur *in oculis ej⁹* ut umbra: nam quis indicabit homini quid futurum eſt ut fiat *coram eo* in ſeculo hoc ſub Sole? 2 Melius eſt nomen bonum quod comparabunt juſti in ſeculo hoc, quàm unguentum unctionis quod fuerit inunctum ſuper capita regum & Sacerdotum: & dies quo jacebit vir & emittetur in domum ſepulchri cum nomine bono atque juſtitia, quàm dies quo *natus* eſt improb⁹ in mundo. 3 Melius eſt ire *ad virum lugentem* ad *conſolandum eum*, quàm ire in domum convivii vini ſubſannatorum: quod in domo luctus ſit finis omnis hominis ut eat; ſiquidem ſuper omnes illos decreta eſt ſententia mortis: propterea qui iverit ad domum luctus, vir juſtus ſedebit & ponet in corde ſuo loquelas mortis: & ſi eſt in *manu ipſius* quicquam mali, deponet illud, & convertetur in pœnitentiam *coram Domino mundi*. 4 Melior eſt indignatio qua indignabitur Domin⁹ mundi adverſus juſtos in ſeculo hoc, quàm riſus quo ille deridet *improbum*: dum enim contriſtatur vult⁹ majeſtatis, venit penuria & vindicta in ſeculum ad beandum cor juſtorum qui orabunt ante Dñm mundi, & ipſe miſerebitur ipſorum. 5 Cor ſapientum *mœret propter vaſtationem domus ſanctuarii, &* dolet *propter exilium domus Iſrael*; & cor ſtultorum eſt in lætitia domus deriſionis: comedunt & bibunt & delitiantur, & non revolvunt ſuper cor ſuū afflictionem fratrum ſuorum. 6 Melius eſt *ſedere in ſchola domus doctrinæ, &* audire increpationem viri ſapientis in Lege, quàm ſi quis eat ad audiendam vocem *tympani* ſtultorum. 7 Etenim ſicut vox clamoris ſpinarum quæ comburuntur ſub olla, ſic vox riſus ſtultorū: etiam hoc vanitas. 8 Etenim violentia decipiet ſapientem *quò non ambulet in via ſua*, & perdet per eloquia mala ſapientiam cordis *ſapientis*, quæ data fuerit ei dono cœlit⁹. 9 Melior eſt finis negotii quā initiū ej⁹; quod in principio ej⁹ non notū eſt viro quid futurum eſt ut fiat in fine ej⁹, *ſed finis rei bon⁹ innoteſcit viro quòd bonus eſt*: & melior eſt ante Dñm vir qui imperat ſpiritui ſuo & ſubigit concupiſcentiā ſuā, quā vir qui ambulat in tumore ſpirit⁹ *ſui*. 10 Et in tempore quo veniet ſuper te correctio de cœlis, ne feſtines in anima tua ut incaleſcas, & dicas verba contumaciæ contra cœlū: etenim ſi tu ſuſtinens fueris, remittetur tibi, et ſi tu exacerbaveris & incalueris, ſcito quòd furor in ſinu ſtultorū quieſcet, quoad perire faciat eos. 11 Et in tempore moleſtiæ tuæ ne dicas, *Quod fuit antehac bonū in mundo*, quòd dies antiqui fuerunt boni, & homines generationis illi⁹ fuerunt pulchriores opere quā hi: ideò bonū contigit eis, & tu non ex ſapientia quæſiſti ſuper hoc. 12 Bona eſt ſapientia Legis cum hæreditate *divitiarū*: ſed longè meli⁹ eſt ut vir *verſetur* in manſuetudine cum viris habitatorib⁹ terræ qui viderunt bonū & malū ſub Sole in ſeculo hoc. 13 Etenim quemadmodū cuſtoditur vir in umbra ſapientiæ, ſic cuſtoditur in umbra argenti in tempore quo facit ex eo eleemoſynam: & augmentū cognitionis ſapientiæ vivificabit dñm ſuū *è ſepulchro ad ſeculum futurū*. 14 Contemplare op⁹ Domini et fortitudinē ejus, qui fecit cæcum, *gibboſū* & claudum, ut ſint mirabilia in ſeculo: etenim quis eſt qui poterit dirigere unum ex illis, niſi Dominus mundi qui curvavit eum?

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܛܒ ܚܙܘܐ ܕܥܝܢܐ. ܡܢ ܡܗܠܟܢܐ ܕܢܦܫܐ. ܐܦ ܗܢܐ ܗܒܠܐ ܘܫܘܓܫܐ ܕܢܦܫܐ. * ܡܕܡ 9
ܕܗܘܐ. ܡܢ ܩܕܝܡ ܐܬܩܪܝ ܫܡܗ. ܘܐܬܝܕܥ ܕܗܘ ܒܪܢܫܐ. ܘܠܐ ܡܫܟܚ ܠܡܕܢ ܥܡ ܡܢ 10
ܕܐܚܝܢ ܡܢܗ. * ܡܛܠ ܕܐܝܬ ܡܠܐ ܣܓܝܐܐ ܕܡܣܓܝܢ ܗܒܠܐ. 11

* ܩܦܠܐܘܢ * ܙ *

* ܡܢܐ ܡܘܬܪܢܐ ܠܒܪܢܫܐ. ܡܛܠ ܕܡܢܘ ܝܕܥ ܡܢܐ ܛܒ ܠܒܪܢܫܐ ܒܚܝܘܗܝ . ܡܢܝܢ 1
ܝܘܡܝ ܚܝܐ ܕܗܒܠܗ. ܘܥܒܪܘ ܐܝܟ ܛܠܠܐ. ܡܢܘ ܢܚܘܐ ܠܒܪܢܫܐ ܡܢܐ ܢܗܘܐ
ܡܢ ܒܬܪܗ . ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. * ܛܒ ܫܡܐ ܛܒܐ. ܡܢ ܡܫܚܐ ܛܒܐ. ܘܝܘܡܐ ܕܡܘܬܐ. 2
ܛܒ ܡܢ ܝܘܡܐ ܕܡܘܠܕܗ. * ܛܒ ܠܡܐܙܠ ܠܒܝܬ ܐܒܠܐ. ܡܢ ܠܡܐܙܠ ܠܒܝܬ 3
ܡܫܬܝܐ. ܡܛܠ ܕܗܢܐ ܗܘ ܚܪܬܐ ܕܟܠܗܘܢ ܒܢܝܢܫܐ. ܘܕܚܝ ܢܬܠ ܛܒܬܐ ܠܠܒܗ.
* ܛܒ ܪܘܓܙܐ ܡܢ ܓܘܚܟܐ. ܡܛܠ ܕܒܟܡܝܪܘܬ ܐܦܐ ܢܛܐܒ ܠܒܐ. * ܠܒܐ ܕܚܟܝܡܐ 4
ܒܒܝܬ ܐܒܠܐ. ܘܠܒܐ ܕܣܟܠܐ ܒܒܝܬ ܚܕܘܬܐ. * ܛܒ ܠܡܫܡܥ ܟܐܬܐ ܕܚܟܝܡܐ. ܡܢ 5 6
ܓܒܪܐ ܕܫܡܥ ܙܡܪܐ ܕܣܟܠܐ. * ܡܛܠ ܕܐܝܟ ܩܠܐ ܕܟܘܒܐ ܬܚܝܬ ܩܕܪܐ. ܗܟܢܐ 7
ܓܘܚܟܗܘܢ ܕܣܟܠܐ. ܐܦ ܗܢܐ ܗܒܠܐ. * ܡܛܠ ܕܥܫܘܩܝܐ ܡܗܠܟ ܠܚܟܝܡܐ. 8
ܘܡܘܒܕܐ ܠܠܒܐ ܡܘܗܒܬܐ. * ܛܒܐ ܗܝ ܐܚܪܝܬܗ ܕܡܠܬܐ. ܡܢ ܫܘܪܝܗ ܘܛܒܐ 9
ܢܓܝܪܘܬ ܪܘܚܐ. ܡܢ ܪܡܘܬ ܪܘܚܐ. * ܠܐ ܬܬܒܗܠ ܒܪܘܚܟ ܠܡܪܓܙ. ܡܛܠ ܕܪܘܓܙܐ 10
ܒܥܘܒܐ ܕܣܟܠܐ ܢܫܪܐ. * ܠܐ ܬܐܡܪ. ܡܢܐ ܗܘܐ : ܕܝܘܡܬܐ ܩܕܡܝܐ ܛܒܝܢ ܗܘܘ ܡܢ 11
ܗܠܝܢ . ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܐ ܒܚܟܡܬܐ ܫܐܠܬ ܥܠ ܗܠܝܢ. * ܛܒܐ ܗܝ ܚܟܡܬܐ ܡܢ 12
ܡܐܢܝ ܙܝܢܐ. ܘܝܬܝܪ. ܠܚܙܝ ܫܡܫܐ. * ܡܛܠ ܕܐܝܟ ܛܠܠܐ ܕܚܟܡܬܐ. ܐܝܟ ܛܠܠܐ ܕܟܣܦܐ. 13
ܘܝܘܬܪܢܐ ܕܝܕܥܬܐ ܕܚܟܡܬܐ ܢܚܐ ܡܪܗ. * ܚܙܝ ܠܥܒܕܐ ܕܐܠܗܐ. ܡܛܠ ܕܡܢܘ 14
ܡܫܟܚ ܠܡܬܩܢܘ ܠܡܢ ܕܡܥܘܬ ܗܘ.

9 Melior eſt aſpectus oculorum, quàm inceſſus voluntarius : at hoc etiam vanitas eſt, & animi turbatio. 10 Quod extitit, jam olim vocatum eſt nomen ejus, & cognitum eſt quòd ſit homo, nec poſſit judicio contendere cum potentiore ſe. 11 Multa ſunt enim verba quæ augent vanitatem.

CAP. VII.

1 Quod emolumentum eſt homini ? quis enim ſcit quid utile ſit homini in vita ſua numero dierum vaniſſimæ ætatis ſuæ ? hi enim velut ùmbra prætereunt. Quis indicabit homini quid futurum ſit poſt eum ſub ſole ? 2 Melior eſt fama bona quàm unguentum optimum, & dies mortis melior eſt die nativitatis. 3 Melius eſt adire locum luctûs, quàm adire locum convivii : is enim eſt finis omnium hominum : & qui vivit, bona præſtabit cordi ſuo. 4 Melior eſt indignatio riſu : quia ſeveritate vultûs ſerenum redditur cor. 5 Cor ſapientum inter luctum *verſatur* : cor autem ſtultorum inter gaudia. 6 Melius eſt audire correptionem ſapientum, quàm ut quis audiat cantionem ſtultorum : 7 Qualis enim eſt ſonitus ſpinarum ſub olla, talis eſt riſus ſtultorum : At hoc etiam vanitas eſt : 8 Quia calumnia perdit ſapientes, & munere cor peſſundatur. 9 Melior eſt finis ſermonis, quàm exordium ejus. Et melior eſt longanimitas arrogantiâ. 10 Ne præcipiti ſis animo ad ſuccenſendum : quoniam ira in ſtultorum ſinu requieſcet. 11 Ne dicas, Quì factum eſt ut priſtini dies meliores eſſent quàm iſti ? non enim ſapienter hæc percontaris. 12 Melior eſt ſapientia inſtrumentis bellicis, ac multò magis ſolem videntibus. 13 Nam umbra ſapientiæ ſimilis eſt umbræ pecuniæ : at abundantia cognitionis ſapientiæ vitam tribuet domino ſuo. 14 Conſidera opus Dei : quis enim poſſit ſtabilire eum qui perturbatus eſt ?

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* العين ذات النظر صالحة افضل من النفس الماضية * ومع ذلك فهذا باطل واختيار الروح * 9
* ان كان شيا فقد سمي اسمه وعرف انه انسان * ولن يمكنه ان يحتكم مع قوي افضل 10
منه * لان يكون اقوال كثيرة تكثر الاباطيل * 11

* الفصل السابع *

* ما الفضل للانسان * لان من قد عرف ما هو الاصلح للانسان في حياته * عدد ايام حياته 1
بطالته فاجازها بالظل * لان من يخبر الانسان ماذا يكون خلفه تحت الشمس * اسم الصالح 2
افضل من طيب صالح * ويوم الموت هو للانسان اخير من يوم مولده * لصالح المضي الى 3
بيت النوح افضل من الذهوب الى مجلس الشرب * بما ان هذا غاية كل انسان * والحي
يعطي قلبه صلاحا * الغضب صالح افضل من الضحك * لان بسر الوجه يطيب القلب * 4
* قلب الحكماء في بيت النوح * وقلب الجهال في منزل السرور * استماع انتهار الحكيم 5 6
افضل من انسان يسمع غناء الجهال * لان كصوت الشوك تحت الطنجير كذلك ضحك 7
الاغبياء * ولعمري هذا باطل * لان البغي يدهش راي الحكيم * ويحل قلب قوته * انتهاء 8 9
الكلام صالح افضل من ابتدايه * المتمهل صالح افضل من المستعلي بروح الهوان *
* لا تسارع ان تغضب بروحك * فان الغضب في حضن الاغبياء يستروح * لا تقل ماذا صار 10 11
وماذا اصابني * لان الايام السالفة كانت صالحة افضل من هذه الايام * فانهم ما سالوا عن
هذه بحكمة * الحكمة صالحة مع بذل حظها * وفضلها نافع للذين يبصرون الشمس * لان 12 13
الحكمة في ظلها كظل الفضة * فضل معرفة الحكمة يحيي من اقتبس منها * ابصر صنايع 14
الله * لان من يمكنه يزين من يعكسه الله *

9 *Oculus circumſpectus bonus eſt, præſtantior animâ celeri: nihilominus hoc vanum eſt, & placitum ſpiritûs.* 10 *Si quid extat, jam eſt impoſitum nomen ejus, & innotuit quòd homo ſit, nec valeat judicio contendere cum potente præſtantiore ſe.* 11 *Nam permulti ſunt ſermones qui multiplicant vanitates.*

CAP. VII.

1 *Quid prodeſt homini ? quis enim novit quid magis conducat homini in vita ſua? numerum dierum ætatis ſuæ,* imò verò *vanitatis ſuæ, tranſegit in umbra : nam quis referet homini quid futurum ſit poſt ipſum ſub ſole ?* 2 *Nomen bonum excellentius eſt unguento optimo : & dies mortis melior eſt homini quàm dies nativitatis ejus.* 3 *Bonum quidem eſt ire ad domum luctûs, melius quàm ire ad conſeſſum potationis ; quoniam hoc, finis eſt omnis hominis ; & qui vivus eſt, bono imbuit cor ſuum.* 4 *Melior eſt indignatio quàm riſus, quia per triſtitiam vultûs cor hilareſcit.* 5 *Cor ſapientum eſt in domo luctûs, & cor ſtultorum in domo gaudii.* 6 *Audire objurgationem ſapientis, præſtantius eſt homine qui audit concentum ſtultorum.* 7 *Nam ut crepitus ſpinarum ſub olla, ita eſt riſus ſtultorum : & hoc quidem vanum eſt.* 8 *Oppreſſio namq; pervertit mentem ſapientis, & diſſolvit cor fortitudinis ejus.* 9 *Finis ſermonis melior eſt principio ejus. Longanimis præſtantior eſt eo qui è ſpiritu deſpectionis ſuperbit.* 10 *Ne feſtines iraſci in animo tuo, quoniam ira in ſtolidorum ſinu requieſcit.* 11 *Ne dicas, Quid factum eſt, & quid accidit mihi? nam dies præteriti meliores erant diebus præſentibus : quia inſipienter hoc ſciſcitarentur.* 12 *Bona eſt ſapientia cum beneficio ſuæ ſortis, ejuſque præſtantia prodeſt his qui vident ſolem.* 13 *Nam eſſe in ſapientiæ umbra, idem eſt ac eſſe in umbra pecuniæ : præſtantia cognitionis ſapientiæ tribuit illi vitam, qui utilitatem ex ea percipit.* 14 *Inſpice opera Dei; nam quis poſſit concinnare quem Deus perverterit ?*

contra hoc Etiam .vide mala die in &,bono ſis eſto bono die In
15 ביום טובה היה בטוב וביום רעה ראה גם את זה לעמת
eum poſt homo inveniret non *quod verbum ſuper* , Deus fecit hoc
זה עשה האלהים על דברת שלא ימצא האדם אחריו
periens juſtus Eſt .meæ vanitatis dieb⁹ in vidi Omnia .quicquam
16 מאומה: את הכל ראיתי בימי הבלי יש צדיק אבד
,multùm juſtus ſis Ne.ſua malitia in ,plongās impi⁹ eſt &,ſua juſtitia in
17 בצדקו ויש רשע מאריך ברעתו: אל תהי צדיק הרבה
ne &,multū *improbus ſis* Ne ?deſolaberis quid ut *:abundāter* ſapiens ſis ne &
18 ואל תתחכם יותר למה תשומם: אל תרשע הרבה ואל
apprehēdas quòd Bonū ?tuo tempore non in morieris quid ut :ſtultus ſis
19 תהי סכל למה תמות בלא עתך: טוב אשר תאחז
Deum *timens quia* :tuā manū facias quieſcere ne hoc ab etiā & ,hoc *in*
בזה וגם מזה אל תנח את ידך כי ירא אלהים
, *potentibus* decem *præ* :ſapientē roborabit Sapientia .*hæc omnia* egredietur
20 יצא את כלם: החכמה תעז לחכם מעשרה שליטים
faciat qui : terra in juſtus non homo Quia .civitate in fuerunt qui
21 אשר היו בעיר: כי אדם אין צדיק בארץ אשר יעשה
des ne ,*loquentur* quæ verbis omnib⁹ Etiā .peccet non & ,bonū
22 טוב ולא יחטא: גם לכל הדברים אשר ידברו אל תתן
etiam Quia .tibi maledicentē tuū ſervū audias non ut :tuum cor
לבך אשר לא תשמע את עבדך מקללך: כי גם
Omne .aliis maledixiſti tu etiam quod :tuū cor novit multis vicibus
23 פעמים רבות ידע לבך אשר גם את קללת אחרים: כל
.me à eſt elongata ipſa & :ero Sapiens : dixi ,ſapientia in tentavi *hoc*
24 זה נסיתי בחכמה אמרתי אחכמה והיא רחוקה ממני:
ego Circuivi *illud* inveniet quis ,pfundū profundū & *:fuit quod illud* Remotū
25 רחוק מה שהיה ועמק עמק מי ימצאנו: סבותי אני
26 *:ſupputationē* & ,ſapientiā *quærendū* & ,*inveſtigandū ad &* ,*ſciendū ad* meū cor &
ולבי לדעת ולתור ובקש חכמה וחשבון
amarā ego inveniens Et.*inſaniarum* fatuitatē &,ſtultitiæ impietatē *ſciendū ad &*
27 ולדעת רשע כסל והסכלות הוללות. ומוצא אני מר
,ejus cor *retia* & ,*decipulæ* *ipſa* quia ,mulierem morte *præ*
ממות את האשה אשר היא מצודים וחרמים לבה
peccans & ,illa ab evadet *Dei* *facies ad* bonus :ejus manus vincula
אסורים ידיה: טוב לפני האלהים ימלט ממנה וחוטא
,alteram *ad* unam :Choheleth dixit ,inveni hoc ,Vide .ea *in* capietur
28 ילכד בה: ראה זה מצאתי אמרה קהלת אחת לאחת
.inveni non &,mea anima quæſivit adhuc Quam .*computationē inveniendū ad*
29 למצא חשבון: אשר עוד בקשה נפשי ולא מצאתי
.inveni non his omnib⁹ in mulierē &,inveni mille ex unū Hominē
אדם אחד מאלף מצאתי ואשה בכל אלה לא מצאתי:
Deus fecit quod ,inveni hoc *vide* Tantummodo
30 לבד ראה זה מצאתי אשר עשה האלהים את
.multas *computationes* inquiſierunt ipſi & : rectum hominem
האדם ישר והמה בקשו חשבנות רבים:

Verſio VUL. LAT.

15 In die bona fruere bonis, et malā diē præcave : ſicut enim hanc, ſic & illā fecit De⁹, ut nō inveniat homo contra eū juſtas 16 querimonias. Hæc quoq; vidi in dieb⁹ vanitatis meæ : Juſtus perit in juſtitia ſua , & impius multo vivit tempore in malitia 17 ſua. Noli eſſe juſt⁹ multúm: neque plus ſapias quā neceſſe eſt, 18 ne obſtupeſcas. Ne impiè agas multúm : & noli eſſe ſtult⁹, ne moriaris in tempore non tuo. 19 Bonū eſt te ſuſtentare juſtū, ſed & ab illo ne ſubtrahas manū tuā : quia qui timet Deū, nihil 20 negligit. Sapientia confortavit ſapientē ſup decē principes 21 civitatis. Non eſt enim homo juſt⁹ in terra, qui faciat bonū, 22 & non peccet. Sed & cunctis ſermonib⁹, qui dicuntur, ne accōmodes cor tuū: ne fortè audias ſervū tuū maledicentē ti- 23 bi. Scit enim conſcientia tua, quia & tu crebrò maledixiſti 24 aliis. Cūcta tentavi in ſapientia. Dixi, Sapiēs efficiar: et ipſa 25 longi⁹ receſſit à me Multò magis quā erat: et alta profundi- 26 tas, quis inveniet eā? Luſtravi univerſa animo meo, ut ſcirē, et cōſiderarē, & quærerē ſapientiā, et rationē: et ut cognoſcerē impietatē ſtulti, et errorē 27 imprudentiū : Et inveni amariorē morte mulierem, quæ laque⁹ venatorū eſt, et ſagena cor ej⁹, vincula ſunt man⁹ illi⁹: qui placet Deo, effugiet illam: qui autē peccator eſt, capietur ab 28 illa. Ecce hoc inveni, dixit Eccleſiaſtes, unū & alterū, ut in- 29 venirem rationem, Quā adhuc quærit anima mea, et nō inveni. Virū de mille unū reperi, mulierē ex omnib⁹ nō inveni. 30 Solūmodò hoc inveni, ꝙ fecerit De⁹ hominē rectū, et ipſe ſe infinitis miſcuerit quæſtionib⁹.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

15 †Ἐν ἡμέρᾳ ἀγαθωσύνης ζῆθι ἐν ἀγαθῷ, ϗ ἴδε ἐν ἡμέρᾳ κακίας. †ἴδε, καί γε (ο) σὺν τούτῳ σύμφωνος τοῦτο †ἐποίησεν ὁ θεὸς περὶ λαλιᾶς, †ἵνα μὴ εὕρῃ ἄνθρωπος ὀπίσω αὐτοῦ (π) οὐδέν. 16 †Σύμπαντα εἶδον ἐν ἡμέραις ματαιότητός μου· †ἔστι δίκαιος (ϙ) ἀπολλύμενος ἐν δικαίῳ αὐτοῦ, †καί ἐστιν ἀσεβὴς μένων ἐν κακίᾳ αὐτοῦ. 17 †Μὴ γίνου δίκαιος πολύ, †(ρ) μηδὲ σοφίζου 18 περισσά, μή ποτε ἐκπλαγῇς. †Μὴ ἀσεβήσῃς πολύ, ϗ μὴ γίνου σκληρός, ἵνα μὴ ἀποθάνῃς ἐν 19 οὐ καιρῷ σου. †Ἀγαθὸν τὸ ἀντέχεσθαί σε ἐν τούτῳ, †καί γε ἀπὸ τούτου μὴ μιάνῃς τὴν χεῖρά σου, †ὅτι (σ) φοβουμένοις τὸν θεὸν ἐξελεύσεται τὰ 20 πάντα. †Ἡ σοφία βοηθήσει τῷ σοφῷ †ὑπὲρ δέκα ἐξουσιάζοντας τοὺς ὄντας ἐν τῇ πόλει. 21 †Ὅτι ἄνθρωπος οὐκ ἔστι δίκαιος ἐν τῇ γῇ, †ὃς 22 ποιήσει ἀγαθὸν ϗ οὐχ ἁμαρτήσεται. †Καί γε εἰς πάντας λόγους οὓς (τ) λαλήσουσιν ἀσεβεῖς, †μὴ θῇς καρδίαν σου, †ὅπως μὴ ἀκούσῃς τοῦ 23 δούλου σου καταρωμένου σε. †Ὅτι πλειστάκις πονηρεύσεταί σε, †ϗ καθόδους πολλὰς κακώσει καρδίαν σου, †ὅτι ὡς καί γε σὺ κατηράσω ἑτέ- 24 ρους. †Πάντα ταῦτα ἐπείρασα (υ) ἐν σοφίᾳ. †εἶπα, σοφισθήσομαι· †ϗ αὕτη ἐμακρύνθη 25 ἀπ' ἐμοῦ Μακρὰν ὑπὲρ ὃ ἦν, †ϗ βαθὺ βά- 26 θος, τίς εὑρήσει αὐτό; †Ἐκύκλωσα ἐγὼ ϗ ἡ καρδία μου τοῦ γνῶναι †ϗ τοῦ κατασκέψασθαι ϗ τοῦ ζητῆσαι σοφίαν ϗ ψῆφον, †ϗ τοῦ γνῶναι ἀσεβοῦς ἀφροσύνην †ϗ ὀχληρίαν ϗ (φ) περιφο- 27 ράν. †Καὶ εὑρίσκω ἐγὼ (χ) αὐτὴν, ϗ ἐρῶ πικρότερον ὑπὲρ θάνατον †σὺν τὴν γυναῖκα ἥτις ἐστὶ (ψ) θήρευμα, †ϗ σαγῆναι καρδία αὐτῆς, †δεσμὸς εἰς χεῖρας αὐτῆς. †ἀγαθὸς πρὸ προσώπου τοῦ θεοῦ ἐξαιρεθήσεται ἀπ' αὐτῆς, †ϗ ἁμαρτάνων συλληφθήσεται ἐν αὐτῇ. † 28 †Ἴδε τοῦτο εὗρον, εἶπεν ὁ Ἐκκλησιαστής· † 29 μία τῇ μιᾷ τοῦ εὑρεῖν λογισμὸν, †Ὃν (ω) ἐπεζήτησεν ἡ ψυχή μου, ϗ οὐχ εὗρον· †ϗ ἄνθρωπον ἕνα ἀπὸ χιλίων εὗρον, †ϗ γυναῖκα ἐν 30 πᾶσι τούτοις οὐχ εὗρον. †Πλὴν ἴδε τοῦτο εὗρον, ὃ ἐποίησεν (α) ὁ θεὸς †σὺν τὸν ἄνθρωπον (β) εὐθῆ· †ϗ αὐτοὶ ἐζήτησαν λογισμοὺς πολλούς.

In die bonitatis (ſ) vive in bono & (t) vide in die mali, vide. Et quidem (v) huic congruenter iſtud fecit De⁹ de loquela, ut nō inveniat homo poſt eum quicquā. 16 *Omnia vidi in diebus vanitatis meæ. Eſt juſtus periens in (x) juſto ſuo: & eſt impius (y) manens in malitia ſua.* 17 *Noli eſſe juſtus (z) multū, & noli (&) argumentari pluſquā oportet: nequādo obſtupeſcas.* 18 *Nè impiè agas multū, & noli eſſe dur⁹; ne moriaris in tempore non tuo.* 19 *Bonum eſt inhærere te in hoc: & quidē ab hoc (aa) ne contamines manū tuam: quoniā (bb) timentib⁹ Deū egredientur omnia.* 20 *Sapientia (cc) adjuvabit ſapientē ſuper decem poteſtatem habentes, qui ſint in civitate:* 21 *Quia homo non eſt juſtus in terra, qui faciet bonum, & non peccabit.* 22 *Et quidē (dd) in omnes ſermones, quos loquentur impii, nè poſueris cor tuū; ut non audias ſervū tuum (ee) maledicentē tibi.* 23 *Etenim frequenter (ff) malignabitur in te, & multis modis malè afficiet cor tuū, nempè quia etiam tu (gg) maledixiſti aliis.* 24 *Omnia hæc tentavi in (hh) ſapiētia. (ii) Dixi, Sapiens efficiar : & ipſa elongata eſt à me (kk)* 25 *Longè ſuper id, quod erā: et alta profunditas: (ll) quis inveniet eā?* 26 *(mm) Circuivi ego, & cor meū, ut cognoſcerē, & (nn) conſiderarē, et quærerem ſapientiā & (oo) numerū, & ut cognoſcerem impii ſtultitiā, & turbulentiā, & (pp) circumlationem.* 27 *Et invenio ego eā, & dicā amariorem ſuper mortem mulierem, quæ laqueus venatorum eſt, & ſagenæ cor ejus, vinculum in (qq) manibus ejus. (rr) Bonus coram Deo, eruetur ab ea: (ſſ) et qui peccat, capietur in illa.* 28 *Ecce hoc inveni, dixit Eccleſiaſtes: (tt) una ad unam, ut invenirem rationē, Quam quæſivit anima mea: & non inveni.* 29 *Et hominem unum de mille inveni: & mulierem in omnibus his non inveni.* 30 *(vv) Solummodò ecce hoc inveni; quòd fecit Deus hominē rectum: & ipſi (xx) quæſierunt cogitationes multas.*

MS.A. (ο) τοῦτο σύμφωνον τοῦτο (π) μηδέν. (ϙ) ἀπολλύμενος (ρ) ϗ μὴ (σ) ὁ φοβούμενος (τ) λαλήσουσιν, μὴ θῇς (υ) ἐν τῇ σοφίᾳ. (φ) περιφοράν. (χ) αὐτὴν πικρότερον ὑπὲρ θάνατον (ψ) θηρεύματα, (ω) ἐζήτησεν (α) ὁ κύριος (β) *εὐθῆ·

תרגום TARGUM.

15 ביום דיוטיב לך יי תהי אף אנת בטיבותא ותיטב לכל עלמא בגין דלא ייתי עלך יומא בישא
חזי ואסתכל ואף ית דין כל קבל דין עבד יי בגין לאוכחא אנשי עלמא מן בגלל דלא ישכח
16 אנש בתרוהי מדעם ביש לעלמא ההוא: ית כולא חזית ביומי הבלותי דמן קדם יי מתגזרין
טב וביש למהוי בעלמא על עסק מזליא דאתבריאו בהון בני אנשא דאית גבר זכי אבד
בצדקותיה בעלמא הדין וזכותיה מנטרא ליה לעלמא דאתי ואית גבר חיב דמאריך יומין
בחובוהי וחושבן עובדוהי בישיא נטרין ליה לעלמא דאתי לאתפרע מניה ביום דינא רבא:
17 לא תהי זכי יתיר בעדן דאתחיב חיבא קטול בבית דינך בדיל לחיסא עלוהי דלא למקטליה
ולא תתחכם בכן יתיר חוכמת רשיעיא דקימין בדרך ולא תאלף אורחתהון למה דין תצדי
18 ית אורחתך: לא תהך בתר הרהור לבך לאתחיבא סגי ולא תרחק אורחך מן אולפן
אוריתא דיי למהוי שטיא למה אנת גרם מותא לנפשך ויתקצרון שני חייך לממת עד דלא
19 מטא זמנך לממת: טב דתאחד בעסקי עלמא הדין לגמול טובא לנפשך באורח תגריא ואף
מדין ספר אוריתא לא תשבוק חולקך ארום גבר דחיל מן קדם יי נפק ית די חובת כולהון:
20 וחוכמת יוסף בר יעקב אסתיעת עלוהי לחכימותיה כל קבל עשרתי אחוהי צדיקיא
דשלטין בדחלתא דיי ולא שלט בהון יצרא בישא בעדן דהוו יהיבין בקרתא דמצרים ולא
21 קטלו ית יוסף אחוהון דהוה מצער להון בזמנא ההוא בקל מלוי: ארום לית גבר זכי בארעא
די יעבד טב כל יומוהי ולא יחוב קדם יי אבל גברא די יחוב קדם יי חמי ליה למהדר
22 בתיובתא עד דלא ימות: אוף כל מליא דימללון לך רשיעיא לא תמסור לבך לקבלותהון
23 דלא ייתון יומין די תשמעית עבדך דילוט לך ולית לך חילא לאשתיזבא מן ידוי: ארום
חזי לך למצדק ית דינא בזמן די ילוט לך גבר דלית דכותך דאף זמנין סגיאין ידע לבך
24 דאוף אנת הויתא לטי גוברין אוחרנין: כל די אמרית בחנית בחוכמתא אמרית במימרי
25 אחכום אף כל חוכמת אוריתא והיא רחיקת מני: הא כבר אתרחק מבני נשא למידע כל
מה דהוה מן יומי עלמא ורז יום מותא ורז יום דייתי מלכא משיחא מן הוא דישכחניה
26 בחוכמתא: חזרית אנא לחשבא בלבי ולמדע ולאללא ולמתבע חוכמתא וחושבן אגר
עובדוי דצדיקיא ולמידע פורענותא חובא דשטיא וסוכלתנו חולחולתא דמלכותא:
27 ואשכחית אנא פתגם דמריר על אנש יתיר מן מריר יום מותא ית אתתא דהיא עבדת עקין
סגיאין לבעלה ומצדתן ותקלן בלבא כפיתן ידהא בדיל דלא למפלח בהן תקין קדם יי
גבר די יפטיר יתה בגט פטורין ומשתזיב מנה וחיבא קדם יי גבר דיסבנה ואתלכד
28 בזנותהא: חזי דין עובדא דאשכחית אמרה קהלת דמתקרי שלמה מלכא דישראל כוונית
29 מזליא חדא עם חברתה למשכח חשבון בני אנשא מה יהא בסופהון: אית פתגם אוחרן
דעוד תבעת נפשי ולא אשכחית גבר שלים וזכי בלא חבולא מן יומי אדם עד די אתיליד
אברהם צדיקא די אשתכח מהימן וזכי בין אלף מלכין דאתכנשו למעבד מגדלא בבבל
30 ואתתא דבכל אלין נשיהון דמלכיא כשרה לא אשכחית: לחוד חזי דין אשכחית די עבד
יי אדם קדמאה תקין קדמוי וזכי וחויא וחוה אנהו אטעיו למיכל מן פירא דאילנא דאכלין
פירוי חכימין למידע בין טב לביש וגרמו לאסתקפא עלוהי יום מותא ולכל דירי ארעא
ואנון תבעו למשכח חשבונין סגיאין בגין לאיתאה מחתא על דירי ארעא:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

15 In die quo benefecerit tibi Dn̄s, eſto etiam tu in bonitate, & benefac toti mundo, ut non veniat ſuper te dies malus : vide & contemplare ; etiam hoc è regione hujus fecit Dn̄s ut corripiat homines mundi : ideo ut non inveniat homo poſt ſe quicquam mali in ſeculo hoc. 16 Omnia vidi in diebus vanitatis meæ, quòd à conſpectu Dn̄i decernuntur bonū & malum ut ſint in mundo, *ratione ſyderum quibus producti ſunt homines* : quoniam innocens perit in innocentia ſua in ſeculo hoc, & meritum ejus cuſtoditur illi in ſeculum venturum : & eſt vir peccator prolongans dies in peccatis ſuis, & computatio operū ejus malorū cuſtoditur ei ad ſeculū venturum, ut puniatur in die judicii magni. 17 Ne ſis juſtus nimium in tempore quo reus eſt peccator mortis *in domo judicii tua* ; ut clementer agas erga eum, non occidens eum ; nec ſapiens fias ſic amplius *ſapientiā* improborum *qui ſtant in via*, & ne diſcas vias eorum : ad quidnam pervertes viam tuam ? 18 Ne eas poſt *cogitationē* cordis tui ad peccandum multū, & ne elonges viā tuā *à doctrina* Legis *Domini*, ut ſis ſtultus: ad quidnam tu cauſam affers mortis animæ tuæ, *ut abbrevientur anni vitæ tuæ, ad moriendū* cùm nondum pervenerit tempus tuum moriendi ? 19 Bonum eſt te adjungi negotiis mundi hujus, ut retribuas beneficentiā animæ tuæ in via negotiatorum, & etiam ab hoc libro Legis ne dimittas partē tuā: etenim qui timet Dominum, *evadit omne delictū* illorum. 20 Et ſapientia *Joſeph filii Jaacob auxiliata eſt ei, reddendo illum ſapientē præ omnibus decem fratribus ejus juſtis ; qui rexerunt in timore Domini, neq; imperavit illis concupiſcentia mala, tempore quo fuerunt dati in urbe Ægypti, nec occiderant Joſeph fratrem ſuū, qui mœrore affecit ipſos tempore iſto voce verborū ſuorū.* 21 Quoniā non eſt vir innocens in terra qui faciat bonum omnibus diebus *ſuis*, & non peccet ante Dn̄m: *viro verò qui peccaverit ante Dominum, convenit ut revertatur pœnitentiā antequam moriatur. Etiam* 22 ad omnia verba quæ loquentur tibi impii ne tradas cor tuum ut accipias ea, ne veniant dies ut audias ſervum tuum maledicentē tibi, *& non ſit tibi facultas evadendi è manibus ipſius.* 23 Etenim animadverte tibi ut juſtifices judicium in tempore quo maledixerit tibi vir qui non fuerit ſicut tu; quia etiā perſæpe *novit cor tuum* quòd tu quoq; maledixeris viris aliis. 24 Omne hoc quod dixi, probavi in ſapientia : dixi in dicto 25 meo, Sapiā *etiā* omnē ſapientiā Legis, & ipſa elongata eſt à me. Ecce jam pridē elongatū eſt à filiis hominis, ut ſciant omne quod fuit à dieb⁹ ſeculi, & ſecretū diei mortis, & ſecretū diei quo veniet rex Chriſtus: quis eſt ille qui inveniet illud in ſapientia? 26 Reverſus ſum ego ad cogitandum in corde meo, & ad cognoſcendū, & inveſtigandū, & ad inquirendum ſapientiā & æſtimationē mercedis operum juſtorum, & ad cognoſcendā ultionē peccati ſtultorum, & intelligentiā immutationis regni. 27 Inveni autem ego rem quæ amara eſt ſuper hominē magis quàm amaritudo diei mortis, uxorē quæ facit moleſtias multas viro ſuo: et retia et offendicula ſunt in corde ejus, ligatæq; manus ejus, [*ſic*] ut non *operetur eis*: acceptus corā Dn̄o [*erit*] vir qui dimiſerit eam libello repudii ſéque liberaverit ab ea: peccator verò eſt in conſpectu Dn̄i vir qui acceperit eā, et capietur in fornicatione ejus. 28 Aſpice hoc opus quod inveni, dixit Eccleſiaſtes, *qui vocatur Selomoh rex Iſrael*, contuli ſydera unū cum altero, ut invenirē computationē filiorū hominū, et quid erit in extremis eorū. 29 Eſt res alia quam adhuc quæſivit anima mea, et non inveni virum perfectum et innocentē abſq; corruptione à dieb⁹ Adam; *donec naſceretur Abraham juſtus, qui inventus eſt fidelis & integer inter mille reges, qui convenerūt ad moliendā turrim Babel*: et mulierē in omnibus his *uxoribus regum ſicut Sarah* non inveni. 30 Tantummodo vide, hoc inveni, quod fecit Dn̄s hominē primū, rectum ante ſe et innocentē ; *at ſerpens & Eva ipſum ſeduxerunt, ad comedendum de fructibus arboris, cujus qui comederint fructus, facultatē obtinent diſcernendi inter bonum & malum ; & cauſam præbuerunt, ut ingrueret in eum dies mortis, & in omnes incolas terræ* : et ipſi quæſierunt ut invenirent computationes multas, *ad inducendum plagam ſuper habitatores terræ.*

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

15 ܒܝܘܡܐ ܕܛܒܬܐ ܗܘܝ ܒܛܒ. ܘܒܝܘܡܐ ܕܒܝܫܬܐ ܚܙܝ ܢܦܫܟ. ܐܦ ܗܢܐ ܠܘܩܒܠ
ܗܢܐ ܥܒܕ ܐܠܗܐ. ܡܛܠ ܡܠܬܐ ܕܠܐ ܢܫܟܚ ܒܪܢܫܐ ܡܕܡ ܒܬܪܗ. * ܟܠ ܡܕܡ
16 ܚܙܝܬ ܒܝܘܡܝ ܗܒܠܝ. ܐܝܬ ܙܕܝܩܐ ܕܐܒܕ ܒܙܕܝܩܘܬܗ. ܘܐܝܬ ܪܫܝܥܐ. ܕܐܓܪ
17 ܒܒܝܫܘܬܗ. * ܠܐ ܬܗܘܐ ܙܕܝܩ ܛܒ ܀ ܘܠܐ ܬܬܚܟܡ ܝܬܝܪ. ܕܠܐ ܬܬܕܡܪ. * ܠܐ ܬܪܫܥ
18 ܛܒ ܀ ܕܠܐ ܬܣܬܢܐ ܛܒ. ܠܐ ܬܗܘܐ ܣܟܠ ܀ ܕܠܐ ܬܡܘܬ ܕܠܐ ܒܙܒܢܟ. * ܛܒ ܕܬܐܚܘܕ
19 ܒܗܢܐ ܀ ܘܐܦ ܡܢ ܗܘ ܠܐ ܬܪܦܐ ܐܝܕܟ. ܡܛܠ ܕܕܚܠ ܠܐܠܗܐ ܀ ܢܦܩ ܠܟܠܗܘܢ.
20 * ܚܟܡܬܐ ܡܥܫܢܐ ܠܚܟܝܡܐ ܀ ܝܬܝܪ ܡܢ ܥܣܪܐ ܫܠܝܛܝܢ ܕܐܝܬ ܒܡܕܝܢܬܐ. * ܡܛܠ
21 ܕܠܝܬ ܓܒܪܐ ܙܕܝܩܐ ܒܐܪܥܐ: ܕܥܒܕ ܛܒ ܘܠܐ ܢܚܛܐ. * ܘܐܦ ܠܟܠ ܦܬܓܡܝܢ ܕܢܡܠܠܘܢ
22 ܪܫܝܥܐ ܀ ܠܐ ܬܬܠ ܠܒܟ. ܠܐ ܬܫܡܥ ܠܥܒܕܟ ܕܡܨܚܐ ܠܟ. * ܡܛܠ ܕܐܦ ܙܒܢܝܢ ܣܓܝܐܢ
23 ܝܕܥ ܠܒܟ. ܕܐܦ ܐܢܬ ܨܚܝܬ ܠܐܚܪܢܐ. * ܟܠܗܝܢ ܗܠܝܢ ܢܣܝܬ ܒܚܟܡܬܐ. ܐܡܪܬ
24 ܕܐܬܚܟܡ. ܘܗܝ ܪܚܝܩܐ ܡܢܝ * ܝܬܝܪ ܡܢ ܕܗܘܐ ܪܚܝܩܐ. ܘܥܡܝܩܐ ܥܡܝܩܬܐ
25 ܡܢܘ ܢܫܟܚܝܗ̇. * ܐܬܦܢܝܬ ܐܢܐ ܘܠܒܝ ܠܡܕܥ ܘܠܡܒܨܐ. ܘܠܡܒܥܐ ܚܟܡܬܐ
26 ܘܚܘܫܒܢܐ. ܘܠܡܕܥ ܪܫܥܗ ܕܣܟܠܐ. ܘܣܟܠܘܬܐ ܘܡܫܬܓܪܢܘܬܐ. * ܘܡܫܟܚܢܐ
27 ܕܡܪܝܪܐ ܡܢ ܡܘܬܐ ܐܢܬܬܐ. ܕܗܝ ܨܝܕܐ ܗܝ. ܘܡܨܝܕܬܐ ܠܒܗ̇. ܐܣܘܪܐ ܐܝܕܝܗ̇. ܡܢ
ܕܛܒ ܩܕܡ ܐܠܗܐ. ܢܬܦܨܐ ܡܢܗ̇. ܘܕܚܛܐ ܢܬܐܚܕ ܒܗ̇. * ܚܙܝ ܗܢܐ
28 ܕܐܫܟܚܬ. ܐܡܪ ܩܘܗܠܬ. ܚܕܐ ܠܚܕܐ. ܠܡܫܟܚܘ ܚܘܫܒܢܐ. * ܘܥܘܕ ܟܠܗ̇
29 ܒܥܬ ܢܦܫܝ. ܘܠܐ ܐܫܟܚܬ. ܓܒܪܐ ܚܕ ܡܢ ܐܠܦܐ ܐܫܟܚܬ. ܘܐܢܬܬܐ ܒܟܠܗܝܢ ܠܐ
30 ܐܫܟܚܬ. * ܒܪܡ ܚܙܝ ܗܢܐ ܕܐܫܟܚܬ. ܕܥܒܕ ܐܠܗܐ ܠܒܪܢܫܐ ܬܪܝܨܐ ܀ ܘܗܢܘܢ
ܒܥܘ ܚܘܫܒܢܐ ܣܓܝܐܐ.

In die proſperitatis eſto jucundus ; & in die 15
calamitatis conſidera teipſum : nimirum, unum
oppoſuit alteri Deus, eam ob cauſam ut
nihil inveniat homo quod queratur de ipſo
Deo. Omnia vidi in diebus vanitatis meæ. 16
Eſt juſtus qui pereat in juſtitia ſua, & eſt impius
qui diu manet in facinoribus ſuis.
Ne ſis nimis juſtus, & plus æquo ne ſapias, 17
ut ne obſtupeſcas. Ne ſis impius immodicè, 18
ne nimiùm exoſus reddaris. Ne ſis ſtolidus,
ne præter tempus tuum moriaris. Bonum eſt 19
ut hoc teneas, & ab illo quoque manum
ne remittas : nam qui Deum timet, utrique
inhæret. Sapientia corroborat ſapientem 20
pluſquam decem potentes qui ſunt in
urbe. Non eſt enim quiſquam juſtus in terra, 21
qui faciat bonum, & non peccet. Præterea 22
cunctis ſermonibus quos impii loquentur,
ne adjicias animum. Servum tuum contumeliis
te afficientem ne audias : Novit enim 23
cor tuum quòd tu quoque ſæpenumero alios
contumeliis affeceris. Hæc omnia tentavi 24
per ſapientiam. Dixi, Sapientiam acquiram,
ipſa tamen remota eſt me Pluſquam 25
ſit ipſa diſtantia ; & *verò* imum profundum
quis reperiat ? Obivi ego & cor 26
meum, ut ſcirem, & viſitarem atque perquirerem
ſapientiam & rationem, & ut ſcirem
impietatem ſtulti, & ſtultitiam ac prævaricationem.
Deprehendi autem morte 27
amariorem eſſe mulierem , quòd ipſa ſit
laqueus, rete cor ejus, vincula manus ejus.
Qui bonus eſt coram Deo , effugiet eam :
qui autem peccat , capietur ab illa. Adverte, 28
hoc eſt quod deprehendi , ait Coheleth
: ſingulæ res *perpendendæ* , ut inveniantur
rationes. Et quæſivit adhuc anima 29
mea, ſed non reperi. Hominem inter mille
unum reperi : mulierem autem inter cunctas
non inveni. Verùm adverte hoc quod 30
inveni, quòd Deus homines rectos fecerit ,
ipſi verò cogitationes plurimas quæſierint.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

15 * في يوم الخير عش في الخير * وتبصر في يوم الشر * ابصر مع ذاك ان هذا قد صنعه
16 الله من اجل ان الكلام موافق لهذا * لكيلا يجد الانسان ولا يصادف وراه شيا * وعرفت
مع الاشياء كلها في ايام بطالتي * ان يكون مقسط مهلكا بعدله * ويكون منافق
17 نايبا بشره * لا تكون مقسطا كثيرا * ولا تحاكمن حكما زايدا * لا تداهن فتنافق
18
19 كثيرا * ولا تكن فظا قاسيا * لئلا تموت في غير وقتك * امر صالح ان تمسك بهذا
الوعظ وتعتصم به * ومع ذاك لا تيبس يدك من هذا * فان المتقي الله يخرج من جميع
20 الاشياء مبريا * الحكمة تعين الحكيم اكثر من العشرة المسلطين في المدينة لمعونة
21 اهلها * لان انسان صديق لن يوجد في الارض يعمل صلاحا ولا يخطي * ومع هذا
22 لا تصغين قلبك في جميع الاقوال التي يتكلمها المنافقون * لئلا يسمع عبدك فيلعنك *
23 * لانه يتيسر عليك مرارا كثيرة * ويضر قلبك دفعات كثيرة * كما لعنت انت اخرين *
24 * هذه كلها اختبرتها بالحكمة * فقلت احكم في افادة الحكمة فابتعدت هي مني
25 كثيرا * ابعد مما كانت هي نازحة * فمن يجد قعر عمقها * جلت انا وقلبي لاعرف
26 ولاتامل ولابتغي الحكمة والعلم * ولاعرف غباوة المنافق واحزانه وانتقال رايه * فوجدت
27 انا الغباوة اشد مرارة من الموت * مع المراة التي هي حاوية * قلبها مقانص وشباك * وفي
يديها قيد * فالصالح امام وجه الله يستنقذ منها * ومن يخطي يقتنص بها * قال الجامع 28
انظر قد وجدت هذا * واحدة بواحدة قايست لاجد الفكر * الذي طلبته نفسي * فما 29
وجدته * فوجدت انسانا واحدا من الوف اناس * وفي كافة هولاي النساء ما وجدت امراة *
30 * بل انني ابصرت اني وجدت هذا الذي صنع الله * الانسان معه مقوما فطلبوا هم
افكارا كثيرة *

* *In die proſperitatis proſperè vivito, & contemplare diem adverſitatis. Conſidera præterea quòd Deus rem iſtam fecerit eò quòd ſermo ſit eidem rei conſentaneus, ut nihil inveniat homo, nihilq; poſt ipſum offendat.* 15
Cum rebus omnibus didici quoq; in diebus vanitatis meæ, eſſe juſtum qui pereat in juſtitia ſua, & eſſe impium qui perduret in pravitate ſua. 16
Ne ſis nimiùm juſtus, nec nimiam ſapientiam oſtentes. 17
Ne ſis nimiùm fraudulentus ac impius, nevè ſis dyſcolus atque crudelis, ne præter tuum tempus moriaris. 18
Optima res eſt monitum hoc tenere illúdque complecti, ita tamen ut manus tua ab eo minimè torpeſcat : nam qui Deum timet, incolumis evadet ab omnibus rebus. 19
Sapientia plus juvat ſapientem, quàm decem præfecti urbis cives juvent. 20
Non enim reperitur in terra quiſquam juſtus, qui faciat bonum & non peccet. 21
Præterea mentem tuam ne adhibeas omnibus verbis quæ impii loquuntur, ne audiat ſervus tuus, & maledicat tibi : 22
Nam frequenter inſultabit tibi, & crebris vicibus nocebit cordi tuo, quemadmodum tu aliis maledixiſti. 23
Hæc omnia per ſapientiam expertus, dixi, Sapiens evadam beneficio ſapientiæ : verùm ipſa multùm receſſit à me, 24
Longiùs quàm eſſet remota : nam quis inveniat imum profundum illius? 25
Luſtravi ego & mens mea, ut ſcirem, & contemplarer, atque expoſcerem ſapientiam & doctrinam, & cognoſcerem ſtoliditatem impii, angores ejus, & mobilitatem animi ipſius : 26
Et inveni ego ſtoliditatem eſſe morte amariorem, unà cum muliere quæ eſt poſſidens, cujus cor laquei ſunt ac retia, & compedes in manibus ejus : ſed qui probus eſt ante conſpectum Dei, liberatur ab ea : qui verò peccat, capitur ab ea. 27
Dixit Collector, Vide, hoc inveni; rem unam cum altera comparavi, ut invenirem impietatem. 28
Quam quæſivit anima mea; ſed minimè inveni. Inveni autem hominem unum è millibus hominum, at inter omnes has mulieres, non inveni mulierem. 29
Sed equidem vidi hoc me reperiſſe quòd fecit Deus, hominem ſcilicet erga ſe rectum: ipſi verò homines cogitationes plurimas quæſierint. 30

קהלת : ח

? verbi interpretationem *sciens* quis & , sapiens ut Quis
1 מִי כְּהֶחָכָם וּמִי יוֹדֵעַ פֵּשֶׁר דָּבָר
CAP. VIII. ח
.mutabitur ejꝰ *facierũ* fortitudo &: ejꝰ *facies* faciet lucere hominis Sapientia
חָכְמַת אָדָם תָּאִיר פָּנָיו וְעֹז פָּנָיו יְשֻׁנֶּא׃
Ne .Dei juramenti verbum *super* &, *observa* regis os Ego
2 אֲנִי פִּי־מֶלֶךְ שְׁמֹר וְעַל דִּבְרַת שְׁבוּעַת אֱלֹהִים׃ אַל־
3 quod omne quia :*malo verbo* in stes ne ;*abibis ejus faciebꝰ* à festinꝰ sis
תִּבָּהֵל מִפָּנָיו תֵּלֵךְ אַל־תַּעֲמֹד בְּדָבָר רָע כִּי כָּל־אֲשֶׁר
quid : ei dicet quis & : *imperium* regis verbum *quo In* .faciet voluerit
4 יַחְפֹּץ יַעֲשֶׂה׃ בַּאֲשֶׁר דְּבַר־מֶלֶךְ שִׁלְטוֹן וּמִי יֹאמַר־לוֹ מַה־
judiciũ &,tempꝰ & :*malũ verbũ* cognoscet non,præceptũ *Custodiens* ? *facies*
5 תַּעֲשֶׂה׃ שׁוֹמֵר מִצְוָה לֹא יֵדַע דָּבָר רָע וְעֵת וּמִשְׁפָּט
quia :judiciũ & ,tempus est *voluntati* omni Quia .sapientis cor cognoscet
6 יֵדַע לֵב חָכָם׃ כִּי לְכָל־חֵפֶץ יֵשׁ עֵת וּמִשְׁפָּט כִּי־
:est futurum quod *sciens ipse non* Quia .eum super multum hominis malum
7 רָעַת הָאָדָם רַבָּה עָלָיו׃ כִּי־אֵינֶנּוּ יֹדֵעַ מַה־שֶּׁיִּהְיֶה
,spiritũ in *imperans* homo *Non* ? ei indicabit quis ,erit quando nam
8 כִּי כַּאֲשֶׁר יִהְיֶה מִי יַגִּיד לוֹ׃ אֵין אָדָם שַׁלִּיט בָּרוּחַ
dimissio nec ,mortis die in potestas nec ,spiritũ *prohibendum ad*
לִכְלוֹא אֶת־הָרוּחַ וְאֵין שִׁלְטוֹן בְּיוֹם הַמָּוֶת וְאֵין מִשְׁלַחַת
hoc Omne .*ejus patronos* impietas eruet neque : prælio in
9 בַּמִּלְחָמָה וְלֹא־יְמַלֵּט רֶשַׁע אֶת־בְּעָלָיו׃ אֶת־כָּל־זֶה
sub fit quod *factum* omne ad meũ cor *dare* & , vidi
רָאִיתִי וְנָתוֹן אֶת־לִבִּי לְכָל־מַעֲשֶׂה אֲשֶׁר נַעֲשָׂה תַּחַת
tunc Et .sibi malũ in hominẽ in homo est dominatus quo tempore : sole
10 הַשָּׁמֶשׁ עֵת אֲשֶׁר שָׁלַט הָאָדָם בְּאָדָם לְרַע לוֹ׃ וּבְכֵן
,*ambulabunt* sancto loco à & venerunt *&* ,sepultos impios vidi
רָאִיתִי רְשָׁעִים קְבֻרִים וָבָאוּ וּמִמְּקוֹם קָדוֹשׁ יְהַלֵּכוּ
Quia .vanitas hoc etiam:fecerant *sic* qua civitate in tradetur oblivioni *&*
11 וְיִשְׁתַּכְּחוּ בָעִיר אֲשֶׁר כֵּן־עָשׂוּ גַּם־זֶה הָבֶל׃ אֲשֶׁר
cor est plenum ideo : citò *mali facti sententia* fit non
אֵין־נַעֲשָׂה פִתְגָם מַעֲשֵׂה הָרָעָה מְהֵרָה עַל־כֵּן מָלֵא לֵב
malum *faciens* peccans Quoniã :malũ faciendũ ad eis in hominis filiorũ
12 בְּנֵי־הָאָדָם בָּהֶם לַעֲשׂוֹת רָע׃ אֲשֶׁר חֹטֶא עֹשֶׂה רָע
timentibꝰ bonũ erit quòd *ego sciens* etiam quia :ei *prolongans* &,centies
מְאַת וּמַאֲרִיךְ לוֹ כִּי גַּם־יוֹדֵעַ אָנִי אֲשֶׁר יִהְיֶה־טּוֹב לְיִרְאֵי
,impio erit non bonum Et .ejus *faciebus à timebunt* qui , Deum
13 הָאֱלֹהִים אֲשֶׁר יִירְאוּ מִלְּפָנָיו׃ וְטוֹב לֹא־יִהְיֶה לָרָשָׁע
.Dei *faciebus à timens ipse* non qui umbra tanquã:dies ꝓlongabit nõ &
וְלֹא־יַאֲרִיךְ יָמִים כַּצֵּל אֲשֶׁר אֵינֶנּוּ יָרֵא מִלִּפְנֵי אֱלֹהִים׃
quòd justi sunt quia : terram super fit quæ vanitas Est
14 יֶשׁ־הֶבֶל אֲשֶׁר נַעֲשָׂה עַל־הָאָרֶץ אֲשֶׁר יֵשׁ צַדִּיקִים אֲשֶׁר
pertingens quòd impii sunt & : impiorum opus *secundùm eos ad pertingens*
מַגִּיעַ אֲלֵהֶם כְּמַעֲשֵׂה הָרְשָׁעִים וְיֵשׁ רְשָׁעִים שֶׁמַּגִּיעַ
.vanitas hoc etiam quòd dixi : justorum opus *secundùm eos ad*
אֲלֵהֶם כְּמַעֲשֵׂה הַצַּדִּיקִים אָמַרְתִּי שֶׁגַּם־זֶה הָבֶל׃

Versio VUL. LAT.

Quis talis ut sapiens est? & quis cognovit solutionẽ verbi?

CAP. VIII.

1 SApientia hominis lucet in
vultu ejꝰ, & potentissimꝰ faciẽ
2 illiꝰ commutabit. Ego os regis
observo, et præcepta juramenti
3 Dei. Ne festines recedere à
facie ejꝰ, neq; permaneas in opere
malo : quia omne, ꝙ voluerit,
4 faciet: Et sermo illiꝰ potestate
plenꝰ est : nec dicere ei
quisquã potest, Quarè ita facis?
5 Qui custodit præceptũ, nõ
experietur quidquã mali. Tempus
& responsionẽ cor sapientis
6 intelligit. Omni negotio
tempꝰ est, & opportunitas, &
7 multa hominis afflictio : Quia
ignorat præterita, et futura nullo
8 scire potest nuntio. Non est
in hominis potestate prohibere
spiritũ, nec habet potestatẽ in
die mortis, nec sinitur quiescere
ingruente bello, neq; salvabit
9 impietas impium. Omnia
hæc consideravi, & dedi cor
meũ in cunctis operibꝰ, quæ fiunt
sub Sole. Interdũ dominatur
homo homini in malũ suũ.
10 Vidi impios sepultos: qui etiã
cùm adhuc viverent, in loco
sancto erant, & laudabantur in
civitate quasi justorũ operũ:
11 sed & hoc vanitas est. Etenim
quia non profertur citò contra
malos sententia, absq; timore
ullo filii hominum perpetrant
12 mala. Attamẽ peccator ex eo ꝙ
centies facit malũ, & ꝑ patientiã
sustentatur, ego cognovi
ꝙ erit bonũ timẽtibꝰ Deũ, qui
13 verẽtur faciẽ ejꝰ. Non sit bonũ
impio, nec prolongentur dies
ejus, sed quasi umbra transeant
14 qui non timent faciẽ Dñi. Est
& alia vanitas, quæ fit sup terram
: sunt justi, quibus mala
proveniunt, quasi opera egerint
impiorũ : & sunt impii,
qui ita securi sunt, quasi justorum
facta habeant: sed & hoc
vanissimum judico.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

†Τίς οἶδε σοφοὺς, καὶ τίς οἶδε λύσιν ῥήματος;

ΚΕΦ. η'.

1 †Σοφία ἀνθρώπου φωτιεῖ (α) πρόσωπον
αὐτοῦ, †καὶ ἀναιδὴς προσώπῳ αὐτοῦ μισηθήσεται.
2 †Στόμα βασιλέως φύλαξον, †καὶ περὶ λόγου
3 (β) ὅρκου Θεοῦ Μὴ σπουδάσῃς, †ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ
πορεύσῃ· †μὴ στῇς ἐν λόγῳ πονηρῷ, †ὅτι πᾶν
4 (γ) ὃ ἐὰν θελήσῃ ποιήσει, †Καθὼς βασιλεὺς
(δ) ἐξουσιάζων, †καὶ τίς ἐρεῖ αὐτῷ, Τί (ε) ποιεῖς;
5 †Ὁ φυλάσσων ἐντολὴν, οὐ γνώσεται ῥῆμα πονηρὸν,
†καὶ καιρὸν κρίσεως γινώσκει καρδία σοφοῦ.
6 †Ὅτι παντὶ πράγματι ἔστι καιρὸς καὶ κρίσις,
7 †ὅτι γνῶσις τοῦ ἀνθρώπου πολλὴ ἐπ' αὐτόν. †Ὅτι
οὐκ ἔστι γινώσκων τί τὸ ἐσόμενον, †ὅτι καθὼς ἔσται,
8 τίς ἀναγγελεῖ (ζ) αὐτῷ; †Οὐκ ἔστιν ἄνθρωπος
ἐξουσιάζων ἐν πνεύματι, †τοῦ κωλῦσαι
σὺν τὸ πνεῦμα· †καὶ οὐκ ἔστιν (η) ἐξουσία ἐν ἡμέρᾳ
θανάτου, †καὶ οὐκ ἔστιν ἀποστολὴ ἐν ἡμέρᾳ
πολέμου, †καὶ οὐ διασώσει ἀσέβεια τὸν παρ' αὐτῆς.
9 †Καὶ (θ) σύμπαν τοῦτο εἶδον, καὶ ἔδωκα τὴν καρδίαν
μου (ι) εἰς πᾶν τὸ ποίημα ὃ πεποίηται ὑπὸ
τὸν ἥλιον, †τὰ ὅσα (κ) ἐξουσιάσατο ὁ ἄνθρωπος
10 †ἐν ἀνθρώπῳ τοῦ κακῶσαι αὐτόν. †Καὶ
τότε εἶδον ἀσεβεῖς εἰς τάφους εἰσαχθέντας, καὶ
ἐκ τοῦ ἁγίου· †καὶ ἐπορεύθησαν καὶ ἐπῃνέθησαν ἐν τῇ
πόλει, ὅτι οὕτως ἐποίησαν. †καί γε τοῦτο ματαιότης.
11 †Ὅτι οὐκ ἔστι γινομένη ἀντίρρησις †ἀπὸ τῶν
(λ) ποιούντων τὸ πονηρὸν ταχὺ, †διὰ τοῦτο ἐπληροφορήθη
καρδία υἱῶν τοῦ ἀνθρώπου ἐν αὐτοῖς
12 τοῦ ποιῆσαι τὸ πονηρόν. †Ὃς ἥμαρτεν ἐποίησε
τὸ πονηρὸν †ἀπὸ τότε καὶ ἀπὸ μακρότητος
αὐτῶν· †(μ) ὅτι καὶ γινώσκω ἐγὼ, †(ν) ὅτι
ἔστιν ἀγαθὸν τοῖς φοβουμένοις τὸν Θεὸν, †ὅπως
13 φοβῶνται ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ. †Καὶ ἀγαθὸν οὐκ
ἔσται τῷ ἀσεβεῖ, †καὶ οὐ μακρυνεῖ ἡμέρας ἐν
σκιᾷ, †ὃς οὐκ ἔστι φοβούμενος ἀπὸ προσώπου τοῦ
14 Θεοῦ. †Ἔστι ματαιότης ἣ πεποίηται ἐπὶ τῆς γῆς, †
ὅτι εἰσὶ δίκαιοι, (ξ) ὅτι φθάνει ἐπ' αὐτοὺς ὡς
ποίημα τῶν ἀσεβῶν, †καί εἰσιν ἀσεβεῖς, ὅτι (ο)
φθάνει πρὸς αὐτοὺς ὡς ποίημα τῶν δικαίων. †εἶπα, Ὅτι καί γε τοῦτο ματαιότης.

MS. A. (α) πρόσωπον, καὶ ἀναιδὴς (β) ὅρκου Μὴ σπουδάσῃς, (γ) ὃ ἂν θελήσει (δ) ἐξουσιάζων λαλεῖ, καὶ τίς (ε) ποιήσεις; (ζ) αὐτοῖς; (η) ἐξουσιάζων ἡμέρας θανάτου, (θ) σύνπαν (ι) εἰς πᾶν ποίημα (κ) ἐξουσιάζεται (λ) ποιούντων πονηρὸν (μ) ὅτι καί γε (ν) ὅτι ἔσται (ξ) ὅτι φθάνγει πρὸς αὐτοὺς (ο) φθάννει

Quis novit (yy) sapientes, & quis novit solutionem verbi?

CAP. VIII.

SApientia hominis illuminabit 1
vultum ejus: & (a) imprudens vultu
suo odietur. Os (b) regis custodi; et (c) 2
de verbo juramenti Dei Nè festines, 3
à facie ejꝰ ambulabis; nè stes in verbo
malo: quoniam omne quod voluerit,
faciet, * Sicut rex potestatem habens* 4
: & quis dicet ei, Quid facis?
Qui custodit mandatũ, (d) non cognoscet 5
verbum malũ: & tempus (e)
judiciũ cognoscit cor sapientis : (f)
Quia omni negotio est tempꝰ, & judiciũ: 6
(g) quia scientia hominis multa
super eũ: (h) Quia nõ est qui cognoscat, 7
quid futurum sit : sicut enim
erit, quis annuntiabit ei? Non est 8
homo potestatem habens in spiritũ, ut
prohibeat spiritũ: et nõ est potestas in
die mortis: & non est (i) emissio in die
belli: & non salvabit impietas (k) eũ,
qui ab ea. Et omne hoc vidi: et dedi 9
cor meũ in omne opus, quod factum
est sub Sole, (l) quæ pro potestate fecit
homo in hominẽ, ut affligeret eũ.
Et tunc vidi impios in sepulchra introductos, 10
& de (m) Sancto: & iverunt,
& laudati sunt in civitate, quia
sic fecerant. Etiam hoc vanitas (n)
Quia nõ est facta contradictio à facientibus 11
malũ citò; (o) deò repletũ
est cor filiorũ hominis in eis, ut faciant
malum. Qui peccavit, fecit malũ 12
ex tunc, & ex longitudine eorũ.
Quarè, & cognosco ego, quia est bonũ
timentibꝰ Deũ, ut timeant à facie
ejꝰ. Et bonum non erit impio, & non 13
prolongabit dies in (p) umbra, qui nõ
est timens à facie Dei. (q) Est vanitas, 14
quæ facta est super terram, quia
sunt justi, (r) quia venit super eos,
quasi factum impiorum: & sunt impii,
quia venit ad eos quasi factum
justorum: dixi, Quia hoc etiam (s)
vanitas est.

תרגום TARGUM.

ח

1 מן הוא חכימא דיכיל למקם קבל חוכמתא דיי ולמדע פשר מליא בנביאיא חוכמתא
דגבר חכים תנהר זיו אפוהי ביני צדיקיא וחציף אפין מתחלפן כל אורחתיה מטב לביש:
2 הוי זהיר ית פומך על גזירת מלכא למטר מה די פקדנך ועל עסק מומתא דיי אזדהר
3 ולא תימי בשום מימריה על מגן: ובעדן רוגזא דיי לא תנוח לצלאה קדמוהי אתבהל
קדמוהי אזיל וצלי ותבעי רחמין מניה בגין דלא תקום בפתגם ביש ארום רבון כל עלמיא
4 דיי כל די יצבי יעבד: בתר דאתגזירת מימרא דמלכא דשליט על כל עלמא מתעבדא
5 בבהלו ומן הוא גברא דמחי בידיה ויימר ליה מה עבדתא: גבר די נטר פקודיא דיי
לא ינדע מדעם ביש לעלמא דאתי ועדן צלותא ודין וקשוט אשתמודע בלב חכימיא:
6 ארום לכל עסקא אית עדן טב וביש ועל דין קשוט אתדן כל עלמא וכד אתגזר מן קדם
7 יי למהוי פורענותא בעלמא על חובת אנשין עבדי בישא דסגיאן עליהון: ארום ליתוי
חכים מה דעתיד למהוי בסופיה עלוהי ארום בעדן די יהי רעוא מן קדם יי לאבאשא ליה
8 מן הוא די חוי ליה: לית אנש דישלוט ברוח נשמתא למנע ית נשמתא דחיי בגין דלא
יפסוק מן גופא דאנשא ולית שלטונא ביום מותא לשיזבא גבר לחבריה ולית מני זינא
9 מסיען בקרבא ולא ישזיב חובא ית מרוהי ביום דינא רבא: ית כל דין חזית די הוה בעלמא
הדין ויהבית ית לבבי למדע ית כל עובדא דאתעבד בעלמא הדין תחות שמשא בעדן די
10 ישלוט אנש באנש לאבאשא ליה: ובקושטא חזית חיביא דאתקברו ואשתיציאו מעלמא
מאתר קדיש דצדיקיא שרין תמן דאזלו לאתוקדא בגהנם ואתנשין מבין יתבי קרתא
11 והיכמה דעבדו אתעבד להון אף דין הבלו: ומן בגלל דלית מתעבד פתגם ביש
פורענות רשיעא בפריע על עובדיהון בישיא בגין כן אתמלי לבא דבני אנשא בהון
12 למעבד ביש בעלמא הדין: ובזמן דחייבא יעביד ביש מאה שנין ומן קדם יי אתיהיבת
ליה ארכא בגין דיתוב ארום אתגלי ליה ברוח קודשא וידעית אנא דיהי טב לעלמא דאתי
13 לדחליא דיי דדחלין מן קדמוהי ועבדין רעותיה: וטב לא יהי לרשיעא ולא יהי ליה
ארכא לעלמא דאתי ובעלמא הדין יתקטעון יומי חיוהי יערקון ויחלפון כטלל בגין
14 דליתוהי דחיל מן קדם יי: אית הבלו דאתגזר למהוי מתעבד על אפי ארעא דאית
צדיקיא דמטי להון ביש כאלו אנון עבדין כעובדי חיביא ואית חיבין דמטי להון כאלו
אנון עבדין כעובדי צדיקיא וחזית ברוח קודשא דבישא דמטי לצדיקיא בעלמא הדין לא
על חוביהון אלהן למנבי מנהון חובא קלילא למהוי אגרהון שלים לעלמא דאתי וטב
דמטי לחיביא בעלמא הדין לא על זכותהון אלא למפרע להון אגרא על זכותיה קלילא
דעבדו למהויהון אכלין אגרא בעלמא הדין ולהובדיהון חולקהון לעלמא דאתי אמרית
במימרי דאף דין הבלו:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAP. VIII.

QUis est sapiens qui possit consistere adversꝰ sapientiã Dñi, & scire *solutionẽ* 1
eloquiorũ in *prophetis?* Sapientia viri sapientis illustrat splendorẽ
faciei ejꝰ inter justos: & impudens facie, immutantur *omnes* viæ ejꝰ de bono
in malum. Custodi os tuũ super sententiã regis, ut observes quod jusserit 2
tibi, & super negotiũ juramenti Dñi cautꝰ esto, & ne jures in nomine dicti
ejus in vanum. Et in tempore indignationis Domini ne cesses orare 3
ante eum : territus à facie ejus, vade & ora, & quære misericordias
ab eo, ut non insistas in re mala : etenim Dominus *omnium seculorum*
DOMINUS quod voluerit faciet. Postquàm decretum est 4
dictum regis qui imperat super *totum* mundum, fit in celeritate : &
quis est vir qui percutiet manum ejus, & dicet ei, Quid fecisti? Vir qui 5
custodit præcepta Dñi, non cognoscet quicquam mali in seculo venturo,
& tempꝰ orationis & *judicii &* veritatis cognoscitur in corde *sapientum*.
Etenim omni negotio est tempus bonũ & malũ, & juxta judiciũ veritatis 6
judicatur universus mundꝰ, & quando decernitur ante Dñm ut fiat ultio in
mundo ob peccatũ hominũ facientiũ malum, quòd *multa sunt* in *eis*. Etenim 7
non est qui sciat quidnã sit futurũ ut fiat in extremo ejꝰ super ipsum :
in tempore enim quo erit voluntas à conspectu Dñi ut male sit ei, quis est
qui nuntiabit ei? Non est vir qui imperet spiritui animæ, ut prohibeat 8
animã vitalem ne *deficiat* à corpore hominis, & non est imperator in die
mortis, ut eripiat quisquam sociũ suũ, neq; vasa armorũ auxiliantur in prælio,
neque eripiet impietas dominũ suũ in die judicii magni. Omne hoc 9
vidi quod fuit in mundo, & dedi cor meũ ad cognoscendũ omne opꝰ quod
fit in mundo hoc sub Sole in tempore quo imperat homo homini ad malefaciendum
ei. Et in veritate vidi peccatores qui sepulti sunt & exterminati 10
de mundo de loco sancto ubi justi habitant, & abierunt ut comburantur
in gehennã, & oblivioni traditi sunt inter habitatores urbis : & ecce sicut
fecerunt, factũ est eis: etiã hoc vanitas. Et ideo quòd non fit verbũ ultionis 11
improborũ velocissimè super opera eorũ mala, propterea plenũ est cor filiorũ
hominis ad faciendũ malũ in mundo hoc. Et in tempore quo peccator 12
fecerit malũ centum annis, & à Dño datur ei spatiũ ut convertatur, etenim
revelatũ est *ei* in spiritu sancto, & scio ego quòd erit bonum in seculo
futuro timentibꝰ Dñm qui timent eũ, & faciunt voluntatẽ ejꝰ. Bene non 13
erit improbo, neque erit ei longitudo in seculo venturo, & in seculo hoc
præscindentur dies vitæ ejꝰ; fugient & succidentur velut umbra, quia non
ipse timet Dñm. Est vanitas quæ constituta est ut fiat super faciem terræ : 14
Sunt justi quibus accidit malũ, ac si illi facerent opera peccatorũ ; et sunt
peccatores quibꝰ contingit [*bonum,*] ac si illi facerent opera justorũ : et vidi
in spiritu sancto quia malum quod accidit justis in seculo hoc, non est
propter peccata eorũ, sed ad removendum ex eis culpam levem, ut sit merces
eorum integra in seculo venturo: et bonum quod contingit peccatoribus
in seculo hoc, non est *propter meritum* eorum, sed ad retribuendum eis
mercedem meriti levis quod fecerunt, ut comedant mercedem suam in seculo
hoc, et ut perdant partem suam in seculo venturo : dixi in dicto meo
quòd etiam hoc esset vanitas.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܚ *

1 * ܡܢܘ ܐܝܟ ܚܟܝܡܐ. ܘܡܢ ܝܕܥ ܦܘܫܩܗ ܕܡܠܬܐ. ܚܟܡܬܗ ܕܓܒܪܐ. ܐܢܗܪ ܐܦܘܗܝ.
2 ܘܚܨܝܦ ܐܦܘܗܝ ܢܣܬܢܐ. * ܦܘܡܗ ܕܡܠܟܐ ܛܪ. ܘܥܠ ܡܠܬܐ ܡܘܡܬܐ ܕܐܠܗܐ
3 ܠܐ ܬܬܒܗܠ. * ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ ܐܙܠ. ܘܠܐ ܬܩܘܡ ܒܦܬܓܡܐ ܒܝܫܐ. ܡܛܠ ܕܟܠ ܕܨܒܐ
4 ܥܒܕ. * ܐܝܟܢܐ ܕܡܡܠܠ ܡܠܟܐ. ܫܠܝܛ. ܘܡܢܘ ܢܐܡܪ ܠܗ. ܡܢܐ ܥܒܕ ܐܢܬ.
5 * ܕܢܛܪ ܦܘܩܕܢܐ. ܠܐ ܢܕܥ ܡܠܬܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܙܒܢܐ ܘܕܝܢܐ. ܝܕܥ ܠܒܗ ܕܚܟܝܡܐ.
6 * ܡܛܠ ܕܠܟܠ ܨܒܘ ܐܝܬ ܙܒܢܐ ܘܕܝܢܐ. ܡܛܠ ܕܒܝܫܬܗ ܕܒܪܢܫܐ. ܣܓܝܐܐ ܠܘܬܗ.
7 * ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܕܝܕܥ ܡܕܡ ܕܗܘܐ. ܘܡܕܡ ܕܥܬܝܕ ܠܡܗܘܐ ܡܢ ܒܬܪܗ. ܡܢܘ ܡܚܘܐ ܠܗ.
8 * ܠܝܬ ܓܒܪܐ ܕܫܠܝܛ ܒܪܘܚܐ. ܠܡܟܠܐ ܪܘܚܐ. ܘܠܝܬ ܫܘܠܛܢܐ ܒܝܘܡܐ ܕܡܘܬܐ. ܘܠܝܬ
9 ܦܘܠܚܢܐ ܒܝܘܡܐ ܕܩܪܒܐ. ܘܠܐ ܡܦܨܝܐ ܪܫܥܐ ܠܡܪܘܗܝ. * ܘܐܦ ܠܗ ܠܟܠ ܗܢܐ ܚܙܝܬ.
ܘܝܗܒܬ ܠܠܒܝ ܠܟܠ ܥܒܕܐ ܕܡܬܥܒܕ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. ܘܙܒܢܐ ܕܐܫܬܠܛ
10 ܒܪܢܫܐ ܒܒܪܢܫܐ. ܠܡܒܐܫܘ ܠܗ. * ܘܗܝܕܝܢ ܚܙܝܬ ܪܫܝܥܐ ܕܩܒܝܪܝܢ ܘܬܦܢܝܢ. ܘܡܢ ܐܬܪܐ
11 ܕܩܘܕܫܐ ܐܙܠܘ. ܘܐܬܛܥܝܘ ܒܡܕܝܢܬܐ. ܕܗܟܢܐ ܥܒܕܘ. ܘܐܦ ܗܢܐ ܗܒܠܐ. * ܡܛܠ ܕܠܐ
ܡܬܥܒܕ ܦܬܓܡܐ ܡܢ ܥܒܕܝ ܒܝܫܬܐ ܥܓܠ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܬܡܠܝ ܠܒܐ ܕܒܢܝܢܫܐ
12 ܒܗܘܢ. ܠܡܥܒܕ ܒܝܫ. * ܡܢ ܕܚܛܐ. ܥܒܕ ܒܝܫܬܐ ܡܐܐ. ܘܡܘܪܟ ܠܗ. ܘܐܦ ܝܕܥ ܐܢܐ ܕܢܗܘܐ
13 ܛܒ ܠܕܚܠܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܕܕܚܠܝܢ ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ. * ܘܠܪܫܝܥܐ ܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗ ܛܒܬܐ. ܘܠܐ ܢܘܪܟ
14 ܝܘܡܬܐ. ܐܝܟ ܛܠܠܐ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܕܚܠ ܗܘܐ ܡܢ ܩܕܡ ܐܠܗܐ. * ܐܝܬ ܗܒܠܐ ܕܡܬܥܒܕ ܥܠ
ܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܐܝܬ ܙܕܝܩܐ. ܕܡܛܝܐ ܠܗܘܢ ܐܝܟ ܥܒܕܐ ܕܪܫܝܥܐ. ܘܐܝܬ ܪܫܝܥܐ. ܕܡܛܝܐ
ܠܗܘܢ ܐܝܟ ܥܒܕܐ ܕܙܕܝܩܐ. ܘܐܡܪܬ. ܕܐܦ ܗܢܐ ܗܒܠܐ.

CAP. VIII.

Quis eſt ſapienti ſimilis ? & quis novit in- 1
terpretationem verbi ? Sapientia viri illuſtrat
vultum ejus : qui autem procacis eſt vultûs,
odio habebitur. Os regis obſerva; & ad pro- 2
ferendum juramentum Dei ne feſtines. Ab 3
ejus conſpectu recede, neque perſiſtas in re
mala: quicquid enim libuerit ei, faciet. Quo- 4
modocunque rex loquatur, permiſſum eſt ei,
& quis dicat illi, Quid agis ? Qui ſervat man- 5
datum, neſcit rem malam. Et tempus ac rati-
onem novit cor ſapientis : Nam res quælibet 6
opportunitatem habet ac rationem. Multa
namque miſeria accidit homini. Quoniam 7
ignorat quid evenerit ; & quid eventurum ſit
ei poſt ipſum, quis indicet illi? Neque eſt qui 8
dominetur vento, ut ventum prohibeat : nec
eſt dominium in diē mortis, nec evaſio in die
certaminis, neque ſalvabit impietas dominos
ſuos. Hoc etiam totum conſideravi, & appli- 9
cui animũ meũ ad cognoſcendum omne opus
quod geritur ſub ſole, & tempus quo homo
dominat⁹ eſt homini ut noceret ei. Tunc etiã 10
vidi impios ſepultos redire : & *quamvis* è
loco ſanctitatis receſſerint, nihilominus ob-
livioni traditum eſſe in urbibus quòd talia fe-
cerint : at hoc etiam vanitas. Quia non illi- 11
co ſumitur vindicta à facinoroſis, propterea
roboratur animus hominum intra ipſos ad
perpetrandum ſcelus. Qui peccat, centum 12
mala committit, attamen prorogat illi *pœ-
nam Deus*. Scio etiam quòd bonum obve-
niet timentibus Dominum, qui eum reveren-
tur. Impio autem non erit bonum, neque 13
prorogabit dies, non ſecus ac umbra : quia
Deum non reveretur. Eſt vanitas quæ uſu
venit ſuper terram : Sunt videlicet juſti qui- 14
bus obtingit quaſi *facerent* opera impio-
rum : & ſunt impii quibus obtingit quaſi
facerent opera juſtorum : atque dixi, Hoc
vanitas eſt.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الثامن *

1 * من قد عرف الحكماء ومن قد عرف تلخيص القول * حكمة الانسان تنير وجهه * ومن
2 لا حياء له يمقت وجهه * احفظ فم الملك * ولا تعجل في قسم ذكر الله * فمن من وجهه
3 عصي لا يثبت في كلام خبيث * فان كلما يشاوه يعمله * يتكلم كملك ذي سلطان *
4 فمن يقول ماذا صنعت * من يحفظ وصيته لن يعرف قولا خبيثا * وقلب الحكيم يعرف
5 وقت الحكومة * لان لكل امر يوجد وقت وحكم * لان لن يوجد من يعرف * لان معرفة
6 الانسان كثيرة عليه * لان لن يوجد من يعرف الموقع * لان من يخبره بالامر كما يكون *
7 * لن يوجد انسان له سلطان في الروح ليمنع الروح * ولم يوجد ذو سلطان يعمل به في
8 يوم الموت * وقيل في موضع آخر * ولن يوجد من يتسلط في يوم الموت على امر * ولن
9 يوجد رسالة في يوم الحرب * والنفاق ما يسلم من ينال منه * وعرفت هذا مع كل شي *
وبذلت قلبي الى كل صناعة تعمل تحت الشمس * من الاشياء التي تسلط عليها الانسان
10 ليضره ويوذيه * وحينئذ رايت منافقين يدخلون ومن قبل القديس الى القبور * وذهبوا
11 ومدحوا في المدينة انهم هكذا عملوا * وهذا لعمري باطل * لان العاملين الشر لم يصر
منهم مقاومة الخطاب سريعا * فلهذا تمكن قلب بني الانسان في ذاتهم على افتعال الشر *
12 * من اخطاء فقد عمل الشر منذ ذاك الحين ومنذ طول مدته * ومع ذاك انا اعرف ان
13 المتقين الله يكون لهم صلاحا ليرهبوا من وجهه * والمنافق لن يكون له خيرا * ولا من
14 لا يكون خايفا من وجه الله ما يطيل ايامه * فتكون كانها في ظل * ويكون امر باطل
يعمل في الارض * ان يوجد صديقون يبلغ اليهم مثل صناعة المنافقين * ويوجد منافقون
يبلغ اليهم مثل صناعة المقسطين * فقلت بتحقيق ان هذا باطل *

CAP. VIII.

Quis cognovit ſapientes ; & quis 1
novit ſermonis interpretationem ? ſapi-
entia hominis lucidum reddit vultum
ejus ; & qui caret pudore, odioſum
reddit vultum ſuum. Obſerva os re- 2
gis, & ne ſis præceps in jurando men-
tionem Dei. Nam qui diſcedit è con- 3
ſpectu illius, non permanebit in ſermo-
ne malo : quoniam quicquid voluerit,
faciet. Loquetur ut rex poteſtate præ 4
ditus, & quis dicet ; Quid feciſti ?
Qui ſervat præceptum, haudquaquam 5
experietur ſermonem malum. Et cor
ſapientis novit opportunitatem ſapientiæ:
Quia cuilibet rei invenitur opportunitas 6
& judicium : quia non reperitur qui
ſciat : quia ſcientia hominis multa eſt
ſuper ipſum : Quia non reperitur qui 7
ſciat futurum : quis enim ipſi rem in-
dicabit quomodo ſit futura ? Nemo 8
reperitur qui poteſtatem habeat in ven-
tum, ut impediat ventum : neque re-
peritur qui polleat poteſtate quam ex-
erceat in diem mortis, (vel, ut alibi di-
citur, neque reperitur qui poteſtatem
habeat imperandi diei mortis :) neque re-
peritur emiſſio in die belli : neque im-
pietas incolumem ſervabit eum qui ex
ipſa facultates *acquirit. Hoc etiam cum* 9
rebus omnibus cognovi. Præterea cor
meum adjeci ad omnem actum qui ſub
ſole exercetur, ex iis rebus quibus homo
dominatur in propriũ damnum ac nocu-
mentum. Et tunc vidi impios ingre- 10
dientes adeò è conſpectu ſancti in ſe-
pulchra, & abiiſſe, ac laudatos fuiſſe
in urbe quòd ita geſſerint : atque id
quidem vanum eſt. Etenim quia ſcele- 11
ſtorum actionibus haud prompta ſit op-
poſitio, iccirco obfirmatum eſt cor filio-
rum hominum intra ipſos in perpetran-
do ſcelere. Qui peccat; facinus com- 12
mittit ex eo tempore & diuturna mo-
ra ipſi conceſſa. *Adhac novi ego quòd*
timentibus Deum proſperè ſuccedet, ut
eum vereantur. Impio autem non benè 13
ſuccedet ; neque is qui Deum non ve-
retur, prorogabit dies ſuos ; ſed erunt
acſi eſſent in umbra. Eſt etiam res 14
inanis quæ fit in terra : Reperiuntur, vi-
delicet juſti quibus obtingit ſecundùm
opus impiorum : & reperiuntur impii
quibus obtingit ſecundùm opus juſto-
rum : unde dixi, Reverà hoc va-
num eſt.

קהלת : ט

ſub homini bonum non quòd , lætitiam ego laudavi Et
וְשִׁבַּחְתִּי אֲנִי אֶת־הַשִּׂמְחָה אֲשֶׁר אֵין־טוֹב לָאָדָם תַּחַת 15
cum comitabitur hoc & : lætari & , bibere & , comedere quim , ſole
הַשֶּׁמֶשׁ כִּי אִם־לֶאֱכֹל וְלִשְׁתּוֹת וְלִשְׂמוֹחַ וְהוּא יִלְוֶנּוּ
ſub Deus ei dedit quos , ſuarum vitarum diebus , ſuo labore in
בַעֲמָלוֹ יְמֵי חַיָּיו אֲשֶׁר־נָתַן־לוֹ הָאֱלֹהִים תַּחַת
, ſapientiam ſciendum ad meum cor dedi Quemadmodum . ſole
הַשָּׁמֶשׁ׃ כַּאֲשֶׁר נָתַתִּי אֶת־לִבִּי לָדַעַת חָכְמָה 16
die in etiam quòd : terram ſuper fit quod negotium videndum ad &
וְלִרְאוֹת אֶת־הָעִנְיָן אֲשֶׁר נַעֲשָׂה עַל־הָאָרֶץ כִּי גַם בַּיּוֹם
omne vidi Et . videns ipſe non ſuis oculis in ſomnum nocte in &
וּבַלַּיְלָה שֵׁנָה בְּעֵינָיו אֵינֶנּוּ רֹאֶה׃ וְרָאִיתִי אֶת־כָּל־ 17
opus invenire homo poterit non quòd Dei opus
מַעֲשֵׂה הָאֱלֹהִים כִּי לֹא יוּכַל הָאָדָם לִמְצוֹא אֶת־הַמַּעֲשֶׂה
, homo laborabit quod propter : ſole ſub fit quod
אֲשֶׁר נַעֲשָׂה תַחַת־הַשֶּׁמֶשׁ בְּשֶׁל אֲשֶׁר יַעֲמֹל הָאָדָם
non , ſcire ſapiens dixerit ſi etiam & : inveniet non & , quærendũ ad
לְבַקֵּשׁ וְלֹא יִמְצָא וְגַם אִם־יֹאמַר הֶחָכָם לָדַעַת לֹא
. invenire poterit
יוּכַל לִמְצֹא׃

CAP. IX. ט

. hoc omne declarandum ad & , meo corde in dedi hoc omne Quia
כִּי אֶת־כָּל־זֶה נָתַתִּי אֶל־לִבִּי וְלָבוּר אֶת־כָּל־זֶה 1
etiam : Dei manu in eorum ſervitia & , ſapientes & , juſti Quia
אֲשֶׁר הַצַּדִּיקִים וְהַחֲכָמִים וַעֲבָדֵיהֶם בְּיַד הָאֱלֹהִים גַּם־
Omnia . eorum facies ad omnia , homo ſciens non odium etiam , amorem
אַהֲבָה גַם־שִׂנְאָה אֵין יוֹדֵעַ הָאָדָם הַכֹּל לִפְנֵיהֶם׃ הַכֹּל 2
, mundo & , bono , impio & juſto unus eventus omnibus ſicut
כַּאֲשֶׁר לַכֹּל מִקְרֶה אֶחָד לַצַּדִּיק וְלָרָשָׁע לַטּוֹב וְלַטָּהוֹר
, peccator ſic , bon' ſicut : ſacrificãs ipſe non qui ei & , ſacrificanti & , immũdo &
וְלַטָּמֵא וְלַזֹּבֵחַ וְלַאֲשֶׁר אֵינֶנּוּ זֹבֵחַ כַּטּוֹב כַּחֹטֶא
quod omni in malum Hoc . timens juramentum qui ſicut , jurans
הַנִּשְׁבָּע כַּאֲשֶׁר שְׁבוּעָה יָרֵא׃ זֶה רָע בְּכֹל אֲשֶׁר־ 3
cor etiam & : omnibus unus eventus quòd , ſole ſub fit
נַעֲשָׂה תַּחַת הַשֶּׁמֶשׁ כִּי־מִקְרֶה אֶחָד לַכֹּל וְגַם לֵב
, eorum vitis in , eorum corde in inſaniæ & , malo eſt plenum hominis filiorum
בְּנֵי־הָאָדָם מָלֵא־רָע וְהוֹלֵלוֹת בִּלְבָבָם בְּחַיֵּיהֶם
, viventes omnes ad eligatur quiſquis Quia . mortuos ad hoc poſt &
וְאַחֲרָיו אֶל־הַמֵּתִים׃ כִּי־מִי אֲשֶׁר יְבֻחַר אֶל כָּל־הַחַיִּים 4
Nam . mortuo leone præ bonus ipſe vivus canis quia : ſpes eſt
יֵשׁ בִּטָּחוֹן כִּי־לְכֶלֶב חַי הוּא טוֹב מִן־הָאַרְיֵה הַמֵּת׃ כִּי 5
ſcientes ipſi non mortui & : ſunt morituri quòd , ſcientes viventes
הַחַיִּים יוֹדְעִים שֶׁיָּמֻתוּ וְהַמֵּתִים אֵינָם יוֹדְעִים
. eorũ memoria eſt tradita oblivioni quia : merces eis ultrà non & , quicquam
מְאוּמָה וְאֵין־עוֹד לָהֶם שָׂכָר כִּי נִשְׁכַּח זִכְרָם׃
: periit jam eorum invidia etiam , eorum odium etiam , eorum amor Etiã
גַּם אַהֲבָתָם גַּם־שִׂנְאָתָם גַּם־קִנְאָתָם כְּבָר אָבָדָה 6
. ſole ſub fit quod omni in ſeculũ in ultrà eis non pars &
וְחֵלֶק אֵין לָהֶם עוֹד לְעוֹלָם בְּכֹל אֲשֶׁר־נַעֲשָׂה תַּחַת הַשָּׁמֶשׁ׃

Verſio VUL. LAT.

15 Laudavi igitur lætitiam, quòd non eſſet homini bonum ſub Sole, niſi quòd comederet, & biberet, atque gauderet: & hoc ſolum ſecũ auferret de labore ſuo, in diebus vitæ ſuæ, quos
16 dedit ei Deus ſub Sole. Et appoſui cor meum ut ſcirem ſapientiã, & intelligerem diſtentionẽ quæ verſatur in terra: eſt homo, qui diebus & noctibus
17 ſomnum non capit oculis. Et intellexi, quòd omnium operum Dei nullã poſſit homo invenire rationẽ, eorum quæ fiunt ſub Sole: & quantò pl' laboraverit ad quærendum, tantò minùs inveniat: etiam ſi dixerit ſapiens ſe nôſſe, non poterit reperire.

CAP. IX.

1 Omnia hæc tractavi in corde meo, ut curioſè intelligerẽ: Sunt juſti atque ſapientes, & opera eorum in manu Dei: Et tamen neſcit homo, utrùm a-
2 more an odio dignus ſit: Sed omnia in futurũ ſervantur incerta, eò quòd univerſa æquè eveniãt juſto & impio, bono & malo, mundo & immundo, immolanti victimas, & ſacrificia contemnenti: ſicut bonus, ſic et peccator: ut perjurus, ita & ille
3 qui verum dejerat. Hoc eſt peſſimũ inter omnia, quæ ſub Sole fiunt, quia eadem cunctis eveniunt, unde et corda filiorũ hominum implentur malitiã, & contemptu in vita ſua, & poſt hæc ad inferos deducentur.
4 Nemo eſt qui ſemper vivat, & qui hujus rei habeat fiduciam: melior eſt canis vivus leone
5 mortuo. Viventes enim ſciunt ſe eſſe morituros, mortui verò nihil noverũt ampliùs, nec habent ultrà mercedẽ: quia oblivioni tradita eſt memoria eo-
6 rum. Amor quoque, & odiũ, et invidiæ ſimul perierũt, nec habent partẽ in hoc ſeculo, & in opere quod ſub Sole geritur.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

15 † Καὶ ἐπῄνεσα ἐγὼ σὺν τὴν εὐφροσύνην, † ὅτι οὐκ ἔστιν ἀγαθὸν τῷ ἀνθρώπῳ ὑπὸ τὸν ἥλιον, † ὅτι εἰ μὴ (π) φαγεῖν καὶ τοῦ πιεῖν καὶ τοῦ εὐφρανθῆναι· † καὶ αὐτὸ συμπροσέσται αὐτῷ ἐν μόχθῳ αὐτοῦ † ἡμέρας ζωῆς αὐτοῦ, (ρ)
16 ὅσας ἔδωκεν αὐτῷ ὁ Θεὸς ὑπὸ τὸν ἥλιον. † Ἐν οἷς ἔδωκα τὴν καρδίαν μου τοῦ γνῶναι τὴν σοφίαν, † καὶ τοῦ ἰδεῖν (σ) τὸν περισπασμὸν τὸν πεποιημένον ἐπὶ τῆς γῆς, † ὅτι καὶ ἐν ἡμέρᾳ καὶ ἐν νυκτὶ † ὕπνον (τ) ὀφθαλμοῖς αὐτοῦ οὐκ ἔστι
17 βλέπων. † Καὶ εἶδον σύμπαντα τὰ ποιήματα τοῦ Θεοῦ, † ὅτι οὐ δυνήσεται ἄνθρωπος τοῦ εὑρεῖν † σὺν τὸ ποίημα τὸ πεποιημένον ὑπὸ τὸν ἥλιον· † (υ) ὅσα ἂν μοχθήσῃ ἄνθρωπος τοῦ ζητῆσαι, καὶ οὐχ εὑρήσει. † καί γε ὅσα ἂν εἴπῃ (φ) σοφὸς τοῦ γνῶναι, † οὐ δυνήσεται τοῦ εὑρεῖν. † ὅτι σύμπαν τοῦτο ἔδωκα (χ) εἰς καρδίαν μου, † καὶ καρδία μου σύμπαν εἶδε τοῦτο.

ΚΕΦ. Θ'.

1 † (α) ΩΣ οἱ δίκαιοι καὶ οἱ σοφοὶ καὶ αἱ ἐργασίαι αὐτῶν ἐν χειρὶ τοῦ Θεοῦ, † καί γε ἀγάπην καί γε μῖσος οὐκ ἔστιν εἰδὼς ὁ ἄνθρωπος·
2 † τὰ πάντα πρὸ προσώπου αὐτῶν, † Ματαιότης ἐν τοῖς πᾶσιν. † Συνάντημα ἓν τῷ δικαίῳ καὶ τῷ ἀσεβεῖ, τῷ ἀγαθῷ καὶ τῷ κακῷ, † (β) καὶ τῷ καθαρῷ καὶ τῷ ἀκαθάρτῳ, † καὶ τῷ θυσιάζοντι καὶ τῷ μὴ θυσιάζοντι· † ὡς ὁ ἀγαθὸς ὡς ὁ ἁμαρτάνων, † ὡς ὁ ὀμνύων
3 καθὼς ὁ τὸν ὅρκον φοβούμενος. † Τοῦτο (γ) πονηρὸν ἐν παντὶ πεποιημένῳ ὑπὸ τὸν ἥλιον, † ὅτι συνάντημα ἓν τοῖς πᾶσιν. † καί γε καρδία υἱῶν τοῦ ἀνθρώπου ἐπληρώθη πονηροῦ· † καὶ περιφέρεια ἐν καρδίᾳ αὐτῶν ἐν ζωῇ αὐτῶν,
4 † καὶ ὀπίσω αὐτῶν πρὸς τοὺς νεκρούς. † Ὅτι τίς ὃς κοινωνεῖ πρὸς πάντας τοὺς ζῶντας; † ἔστιν ἐλπίς, ὅτι ὁ κύων ὁ ζῶν αὐτὸς ἀγα-
5 θὸς † ὑπὲρ τὸν λέοντα τὸν νεκρόν. † Ὅτι οἱ ζῶντες γνώσονται ὅτι ἀποθανοῦνται, † καὶ οἱ νεκροὶ οὐκ εἰσὶ γινώσκοντες οὐδέν· καὶ οὐκ ἔστιν αὐτοῖς ἔτι μισθός, † ὅτι (δ) ἐπελήσθη ἡ
6 μνήμη αὐτῶν. † Καί γε ἀγάπη αὐτῶν, καί γε μῖσος αὐτῶν, † καί γε ζῆλος αὐτῶν ἤδη ἀπώλετο· † (ε) καί γε μερὶς οὐκ ἔστιν αὐτοῖς ἔτι (ζ) εἰς τὸν αἰῶνα † ἐν παντὶ τῷ πεποιημένῳ ὑπὸ τὸν ἥλιον.

Et laudavi ego lætitiam: quia non eſt bonum homini ſub Sole, niſi comedere, & bibere, & lætari. (ι) Et ipſum ſimul aderit ei in labore ejus diebus vitæ ejus, quos dedit ei Deus ſub Sole. In 15 16
(κ) quibus dedi cor meum, ut cognoſcerem ſapientiam, & viderem (ξ) diſtentionem, quæ facta eſt ſuper terram: quia & in die & in nocte ſomnum oculis ſuis non eſt videns. (ψ) Et vidi 17
omnia opera Dei, quia non poterit homo invenire opus quod factum eſt ſub Sole: quæcunque laborabit homo quærere, & non inveniet. Etiam quæcunq; dixerit ſapiens cognoſcere; non poterit invenire. Quarè omne hoc dedi in corde meo: & (ζ) cor meum omne vidit hoc.

CAP. IX.

Quomodò juſti, & ſapientes 1
et operationes eorum in manu Dei, (a) & quidem charitatem, & quidem odium non eſt cognoſcens homo: omnia ante faciem eorum. (b)
Vanitas in omnibus. Eventus unus 2
juſto, & impio, bono, & malo, & mundo, & immundo, & ſacrificanti, & non ſacrificanti. Sic 3
bonus, ut peccator: ſic jurans, ſicut juramentum timens. Hoc eſt peſſimum in (c) omni, quod factum eſt ſub Sole; quia eventus unus omnibus. Et quidem cor filiorum hominis repletum eſt malo: & (d) circumlatio in corde eorum in vita eorum; & (e) poſt hæc ad mortuos: Quia quis eſt qui cõ- 4
municet in omnes viventes? Eſt ſpes, quoniam (f) canis vivens ipſe bonus ſuper leonem mortuum.
Quia viventes ſcient, quòd morientur: & mortui non ſunt cognoſcentes quicquam: & non eſt eis ampliùs merces: in oblivionem 5
enim venit memoria eorum. Etiam 6
dilectio eorum, etiam odium eorum, etiam zelus eorum jam periit: etiam pars non eſt eis ultrà in ſeculum in omni, quod factum eſt ſub Sole.

MS.A. (π) τοῦ φαγεῖν (ρ) ἃς ἔδωκεν (σ) τὸν πειρασμὸν (τ) ἐν ὀφθαλμοῖς αὐτοῦ οὐκ ἔστιν βλέπων. (υ) ὅσα ἐὰν ποιήσῃ (φ) ὁ σοφὸς (χ) εἰς τὴν καρδίαν

Κεφ. θ'. MS.A. (α) Ὅτι οἱ δίκαιοι (β) τῷ καθαρῷ (γ) τὸ πονηρὸν (δ) *ἐπλήσθη (ε) καὶ μερὶς (ζ) εἰς αἰῶνα

תרגום TARGUM.

15 וְשַׁבַּחִית אֲנָא יַת חֶדְוַת אוֹרַיְתָא אֲרוּם לֵית טָב לֶאֱנָשׁ בְּעָלְמָא הָדֵין תְּחוֹת שִׁמְשָׁא אֲרוּם
אֱלָהֵן לְמֵיכַל וּלְמִשְׁתֵּי וּלְמֶחְדֵי בְּטוּרְחֵיהּ וּבְחוּלָקֵיהּ דְּאִתְיְהִיב לֵיהּ מִן שְׁמַיָּא וְלָא יוֹשִׁיט
יְדֵיהּ בַּחֲטוּפִין וַאֲנִיסָא וְהוּא יַלְוְנֵיהּ לִשְׁלָם לְעָלְמָא הַהוּא וִיקַבֵּל אֲגַר שְׁלִים עַל טוּרְחֵיהּ
16 דִּי טָרַח בִּשְׁלֵמוּתָא כָּל יוֹמֵי חַיּוֹהִי דִּיהַב לֵיהּ יְיָ בְּעָלְמָא הָדֵין תְּחוֹת שִׁמְשָׁא׃ כְּמָא דִי
יְהָבִית יַת לִבִּי לְמִנְדַּע חוּכְמַת אוֹרַיְתָא וּלְמֶחֱזֵי יַת עִנְיָן דְּאִתְעֲבִיד עַל אַרְעָא אֲרוּם אַף
חַכִּימָא דִּיצָבֵי לְמֶעְסַק בְּאוֹרַיְתָא וּלְאַשְׁכָּחָא חוּכְמְתָא טוּרְחָא הֲוָה לֵיהּ אֲרוּם אַף בִּימָמָא
17 לָא יְנוּחַ וּבְלֵילְיָא שֵׁינְתָא בְּעֵינוֹהִי לָא חָזֵי׃ וַחֲזֵית אֲנָא יַת כָּל עוֹבַד גְּבוּרְתָא דַייָ אֲרוּם
דְּחִילָא הוּא וְלֵית לֵיהּ רְשׁוּ לֶאֱנָשׁ לְאַשְׁכָּחָא יַת עוֹבַד גְּבוּרְתָא דַייָ דְּאִתְעֲבִיד בְּעָלְמָא
הָדֵין תְּחוֹת שִׁמְשָׁא כַּד יִטְרַח אֱנָשׁ לְמִתְבַּע מָה דַּעֲתִיד לְמֶהֱוֵי וְלָא יִשְׁכַּח וְאַף אִם יֵימַר
גְּבַר חַכִּים בְּמֵימְרֵיהּ לְמִנְדַּע מַה דַּעֲתִיד לְמֶהֱוֵי בְּסוֹף יוֹמַיָּא וְלֵית לֵיהּ רְשׁוּ לְמִשְׁכַּח׃

ט

1 אֲרוּם יַת כָּל דֵּין יְהָבִית עַל לִבִּי וּלְמִבְלוּשׁ יַת כָּל דֵּין דִּי צַדִּיקַיָּא וְחַכִּימַיָּא וְתַלְמִידֵיהוֹן
דְּמִשְׁתַּעְבְּדִין לְהוֹן עַל עֵסֶק אוּלְפַּן אוֹרַיְתָא מְסִירִין בִּידָא דַייָ וּמְנֵיהּ אִתְגְּזַר עַל כָּל עָלְמָא
כָּל מָה דִּיהֵי בְּיוֹמֵיהוֹן אַף רְחִמְתָּא דִּי רַחֲמִנּוּן אַף סְנִיאַתָא דִסְנִנּוּן גְּבַר לֵית נְבִיָּא
2 בְּעָלְמָא דִּי יִנְדַּע מָה דִּיהֵי בֶּאֱנָשָׁא כּוֹלָּא בְּמַזָּלָא אִתְגְּזַר לְמֶהֱוֵי קֳדָמֵיהוֹן׃ כּוֹלָּא בְּמַזָּלַיָּא
תַּלְיָא מִן שְׁמַיָּא אִתְגְּזַר מָה דַּעֲתִיד לְמֶהֱוֵי לְכוֹלָּא אַרְעוֹן חַד לְזַכָּאָה וּלְחַיָּבָא לִדְתַקְּנַן
אוֹרְחָתֵיהּ וּלְמַדְכֵּי נַפְשֵׁיהּ וְלִמְסָאֵב נַפְשֵׁיהּ וּלְמַקְרַב נִכְסַת קוּדְשַׁיָּא וְלִדְלֵיתוֹהִי מַקְרִיב
3 נִכְסַת קוּדְשִׁין כְּחַיָּבָא כִּגְבַר דְּיוֹמֵי לְשִׁקְרָא כִּגְבַר דְּמוֹמָתָא דָּחִיל׃ דֵּין מַזָּל בִּישׁ בְּכָל
עָלְמָא דִּי יִתְעֲבֵד תְּחוֹת שִׁמְשָׁא אֲרוּם אַרְעוֹן חַד לְכוֹלָּא לְכָל דַּיָּרֵי אַרְעָא וְאַף לִבָּא דִּבְנֵי
אֱנָשָׁא אִתְמְלֵי בִּישׁ עַל דָּא וְחוּלְחוּלְתָּא בְּלִבְבְהוֹן כָּל יוֹמֵי חַיֵּיהוֹן וּבָתַר סוֹפוֹהִי דֶאֱנָשָׁא
4 נְטִיר לֵיהּ לְאִתּוֹכָחָא עִם מֵיתַיָּא בְּדִין חַיָּבַיָּא׃ אֲרוּם מַן גַּבְרָא דִּי אִתְחַבַּר לְכָל פִּתְגָּמֵי
אוֹרַיְתָא וּלְמִקְנֵי חַיֵּי עָלְמָא דְאָתֵי אִית לֵיהּ סְבַר אֲרוּם כַּלְבָּא חַיָּא הוּא טָב מִן אַרְיָא דִּי
5 הוּא מִית׃ אֲרוּם צַדִּיקַיָּא יָדְעִין דְּאִין יְחוּבוּן עֲתִידִין לְמֶהֱוֵיהוֹן חֲשִׁיבִין כְּמֵיתַיָּא לְעָלְמָא
דְאָתֵי בְּגִין כֵּן נָטְרִין אוֹרְחָתְהוֹן וְלָא חָיְבִין וְאִין יְחוּבוּן תָּיְבִין בִּתְיוּבְתָּא וְחַיָּבַיָּא לֵיתֵיהוֹן
יָדְעִין מִדַּעַם טָב עַל דְּלָא אוֹטִיבוּ עוֹבָדֵיהוֹן בְּחַיֵּיהוֹן וְלֵיתֵיהוֹן יָדְעִין מִדַּעַם טָב לְעָלְמָא
6 דְאָתֵי וְלֵית לְהוֹן אֲגַר טָב בָּתַר מוֹתְהוֹן אֲרוּם אִתְנְשֵׁי דִּכְרָנְהוֹן מִבֵּינֵי צַדִּיקַיָּא׃ בָּתַר
מוֹתְהוֹן דְּרַשִּׁיעַיָּא לֵית בְּהוֹן צְרוֹךְ אַף רְחִמְתְּהוֹן אַף שִׂנְאַתְהוֹן אַף קִנְאַתְהוֹן הָא כְבַר
הוֹבְדוּן מִן עָלְמָא וְחוּלָק טָב לֵית לְהוֹן עוֹד עִם צַדִּיקַיָּא לְעָלְמָא דְאָתֵי וְלֵית לְהוֹן הֲנָיָה
מִן כָּל מָה דְּאִתְעֲבֵד בְּעָלְמָא הָדֵין תְּחוֹת שִׁמְשָׁא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et laudavi ego gaudium Legis, quia non eſt bonum homini in ſeculo hoc 15
ſub Sole, niſi tantùm comedere & bibere & gaudere *in* labore ſuo, &
pro parte ſua quæ data eſt ei ex cœlo, atq; non extendere manum ſuam in
rapinas & violentiam, & hoc conducet illum in pacem ad ſeculum *illud*,
& accipiet mercedem perfectam pro labore ſuo quo laboravit in integritate
omnibus diebus vitæ ſuæ quos dedit illi Dñs in ſeculo hoc ſub Sole.
Quemadmodum dedi cor meum ad ſciendum ſapientiam Legis, & ad videndum 16
negotium quod fit ſuper terram, etenim ſapiens *etiam* qui vult
ſtudere in Lege, & invenire ſapientiam, labor eſt illi: nam etiam interdiu
non quieſcit, & noctu ſomnum oculis ſuis non videt. Et vidi ego 7
omne opus fortitudinis Dñi, quoniam terribilis eſt: & non eſt facultas homini
inveniendi opus fortitudinis Dñi quod factum eſt in mundo hoc ſub
Sole; quando laboraverit homo ut inquirat id quod futurum eſt ut fiat, non
inveniet: & etiamſi dixerit vir ſapiens in dicto ſuo, ut ſciat id quod futurum
eſt ut fiat in fine dierum, non *licebit* illi invenire.

CAP. IX.

Etenim omnia hæc poſui in corde meo, & ut ſcrutarer omnia hæc. 1
Quod juſti & ſapientes, & diſcipuli eorum qui ſubditi ſunt eis *diſcendæ
legis gratia*, traditi ſunt in manum Dñi: & ab eo decretum eſt *de toto mundo*
omne quod erit in diebus eorum; etiam amor quo dilexerit eos aliquis, &
etiam odiũ quo eos perſecut' fuerit: non eſt *propheta in mundo* qui ſciat id
quod erit homini: omne in providentia decretum eſt ut ſit ante eos. Omne 2
ex *ſyderibus* pendet, ex cœlo decretum eſt quod futurum eſt ut fiat omnib':
eventus unus innocenti & peccatori, ei cujus viæ rectæ ſunt, & purificanti
animam ſuam, & polluenti *animam ſuam*; & offerenti oblationem ſanctitatum,
& ei qui non offert oblationem ſanctitatum: [*ſicut bonus,*] ſic
peccator; *ſicut vir qui jurat in falſum*, *ſic* vir qui juramentum timet.
Hoc *fatum* malum eſt in toto mundo, quod *factum* eſt ſub Sole, quòd 3
eventus eſt omnibus unus, omnibus [*inquam*] habitatorib' terræ, & etiam
cor filiorũ hominũ repletum eſt malo propter hoc, & inſania in corde eorũ
erit omnibus diebus vitæ eorum, & poſt *finem* hominis ſervatur ei ut corripiatur
cum mortuis juxta judicium *peccatorum*. Etenim quis eſt vir qui 4
aſſociabitur omnibus verbis Legis? ad acquirendam vitam ſeculi venturi
eſt illi ſpes: etenim canis vivus melior eſt, quàm leo qui mortuus eſt. Quoniam 5
juſti norunt quod ſi peccaverint, futuri ſunt ut reputentur ut mortui
in ſeculo venturo: propterea cuſtodiunt vias ſuas, & non peccant: quod
ſi peccant, convertuntur in pœnitentia: & peccatores neſciunt quicquam
boni, eò quòd non correxerunt opera ſua in melius in vita ſua, & neſciunt
quicquam boni de ſeculo venturo, & non eſt eis merces bona poſt mortem
eorum: etenim oblivioni data eſt memoria eorum inter juſtos. *Poſt* 6
mortem impiorum nulla eſt in eis utilitas; etiam amor eorum, etiam odium
eorum, invidia quoque, ecce pridem *perierunt* ex mundo, & pars bona
non eſt eis *amplius* cum juſtis in ſeculo venturo, nec eſt eis utilitas ex
omni quod fit in hoc mundo ſub Sole.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

15 * ܘܫܒܚܬ ܐܢܐ ܠܚܕܘܬܐ. ܕܠܝܬ ܛܒ ܠܒܪܢܫܐ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ: ܐܠܐ ܠܡܐܟܠ
ܘܠܡܫܬܐ ܘܠܡܚܕܐ. ܘܗܝ ܬܠܘܐ ܠܗ ܒܥܡܠܗ. ܝܘܡܬܐ ܕܚܝܘܗܝ ܕܝܗܒ ܠܗ ܐܠܗܐ
16 ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܝܗܒܬ ܠܒܝ ܠܡܕܥ ܚܟܡܬܐ. ܘܠܡܚܙܐ ܠܥܢܝܢܐ
17 ܕܡܬܥܒܕ ܥܠ ܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܐܦ ܒܐܝܡܡܐ ܘܒܠܠܝܐ ܫܢܬܐ ܒܥܝܢܘܗܝ ܠܐ ܚܙܐ. * ܘܚܙܝܬ
ܐܢܐ ܟܠ ܥܒܕܘܗܝ ܕܐܠܗܐ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܡܫܟܚ ܒܪܢܫܐ ܠܡܫܟܚܘ ܠܥܒܕܐ ܕܡܬܥܒܕ ܬܚܝܬ
ܫܡܫܐ. ܟܠ ܕܢܥܡܠ ܒܪܢܫܐ ܕܢܒܥܐ. ܠܐ ܢܫܟܚ. ܘܟܠ ܕܢܐܡܪ ܚܟܝܡܐ ܠܡܕܥ. ܠܐ
ܡܫܟܚ ܠܡܫܟܚܘ.

* Quapropter laudavi lætitiam, quòd nil ſit homini melius ſub ſole, quàm edere. & bibere, ac lætari: hoc enim comitatur ipſum ex labore ſuo diebus ætatis ſuæ, quos conceſſit illi Deus ſub ſole. 15 Propterea cor meum appuli ad ſciendam ſapientiam, & inſpiciendam occupationem quâ ſe exercet *homo* ſuper terram: (nam diù noctúque ſomnum in ſuis oculis haud experitur.) 16 Et animadverti omnia opera Dei, quòd invalidus ſit homo ad opus quod actum eſt ſub ſole; quò plus deſudat homo in perquirendo, eò minus aſſequitur: & quicquid ſapiens ſcire proponat, aſſequi minimè poterit. 17

* ܩܦܠܐܘܢ * ܛ *

CAP. IX.

1 * ܡܛܠ ܕܗܢܐ ܟܠܗ ܝܗܒܬ ܒܠܒܝ. ܘܠܒܝ ܚܙܐ ܟܠ ܗܢܐ. ܕܙܕܝܩܐ
ܘܚܟܝܡܐ ܘܥܒܕܝܗܘܢ. ܒܐܝܕܐ ܕܐܠܗܐ. ܐܦ ܪܚܡܬܐ ܐܦ ܣܢܐܬܐ. ܠܐ ܝܕܥ ܒܪܢܫܐ. ܟܠ
2 ܕܩܕܡܝܗܘܢ. ܘܗܒܠܐ. * ܟܠ ܕܐܬܐ ܠܟܠ. ܓܕܫܐ ܚܕ. ܠܙܕܝܩܐ ܘܠܪܫܝܥܐ. ܠܛܒܐ.
ܘܠܒܝܫܐ. ܠܕܟܝܐ ܘܠܛܡܐܐ. ܠܕܡܕܒܚ. ܘܠܕܠܐ ܡܕܒܚ. ܐܝܟ ܛܒܐ. ܐܦ ܚܛܝܐ. ܐܝܟ
3 ܕܝܡܐ. ܐܦ ܗܘ ܕܡܢ ܡܘܡܬܐ ܕܚܠ. * ܗܕܐ ܒܝܫܬܐ. ܒܟܠ ܡܕܡ ܕܡܬܥܒܕ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ.
ܡܛܠ ܕܓܕܫܐ ܚܕ. ܠܟܠܗܘܢ. ܘܐܦ ܠܒܐ ܕܒܢܝܢܫܐ. ܕܡܠܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܦܘܕܐ
4 ܒܝܫܬܐ ܒܠܒܗܘܢ. ܘܒܚܝܝܗܘܢ. ܘܒܬܪܗܘܢ. ܠܘܬ ܡܝܬܐ. * ܟܠ ܕܡܫܬܘܬܦ ܠܟܠ
5 ܚܝܐ. ܐܝܬ ܠܗ ܣܒܪܐ. ܡܛܠ ܕܟܠܒܐ ܚܝܐ. ܛܒ ܗܘ ܡܢ ܐܪܝܐ ܕܡܝܬ. * ܡܛܠ ܕܚܝܐ.
ܝܕܥܝܢ ܕܡܝܬܝܢ. ܘܡܝܬܐ ܠܐ ܝܕܥܝܢ ܡܕܡ. ܘܠܝܬ ܠܗܘܢ ܬܘܒ ܐܓܪܐ. ܡܛܠ ܕܐܬܛܥܝ
6 ܕܘܟܪܢܗܘܢ. * ܐܦ ܪܚܡܬܗܘܢ ܐܦ ܣܢܐܬܗܘܢ. ܘܐܦ ܚܣܡܗܘܢ. ܡܢ ܟܒܪ ܐܒܕ. ܘܡܢܬܐ
ܠܝܬ ܠܗܘܢ ܬܘܒ ܠܥܠܡ. ܒܟܠ ܡܐ ܕܡܬܥܒܕ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ.

* HÆc enim omnia cordi meo indidi, totúmque hoc deprehendit cor meum: Quòd juſti ac ſapientes, & opera eorum ſunt in manu Dei: & amorem pariter ac odium ignorat homo: quicquid ob oculos habet, vanitas eſt. 1 Omnibus uni ſicut alteri par caſus *contingit*, juſtis & impiis, bonis ac malis, puris impuriſque, ſacrificanti & non ſacrificanti; ut probo, ſic peccatori; ut juratori, ſic ei qui à juramentis abhorret. 2 Hoc peſſimum eſt inter omnia quæ uſu veniunt ſub ſole, quia caſus idem omnibus. 3 Quin etiam cor hominum impletum eſt malitiâ, & error improbus *inſidet* in corde vitâque ipſorum, & eorum finis ad mortuos. Quicunque particeps eſt cujuſcunque vitæ, ſpem habet: 4 canis enim vivus, melior eſt leone mortuo. Nam vivi ſciunt ſe morituros: 5 at mortui nihil ſciunt: nec habent ampliùs mercedem, quia oblivione deleta eſt memoria ipſorum: Tum amor, 6 tum odium, tum invidia ipſorum jampridem periit, nec partem habent ampliùs in æternum in iis omnibus quæ fiunt ſub ſole.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

15 * ومدحت انا السرور * لان ليس للانسان تحت الشمس حظا صالحا سوي ما ياكله ويشربه
16 ويسر به * وهذا يمضي معه في تعبه ايام حياته التي منحه الله اياها تحت الشمس * وبذلت
قلبي في الامور لاعرف الحكمة واعاين التقلب المصنوع في الارض * لان صاحبه في النهار
17 والليل ما يري في عينيه نوم * وعرفت كافة صنايع الله * وان ما يمكن احدا ان يجد
الصناعة مع المصنوع تحت الشمس * ومهما يتعب الانسان في ابتغاءها ما يجدها * ومع ذاك
كافة ما يقول الحكيم ليعرف لن يمكن ان يوجد *

* Et laudavi ego lætitiam, quòd non ſit homini ſub ſole ſors fœlix præter id quod comedit ac bibit, & quo fruitur: atque hoc cum eo vadit pro labore ipſius, diebus vitæ ſuæ, quos conceſſit illi Deus ſub ſole. 15 Deinde animum meum ad res adjeci, ut ſcirem ſapientiam, & inſpicerem operoſum negotium quod exercetur in terra: illud enim exercenti, neque die neque nocte aſpicitur ſomnus in oculis ejus. 16 Et cognovi univerſa Dei opera, & quòd nemini poſſibile ſit opus invenire in rebus conditis ſub ſole. 17 Quantumvis laboret homo in his perquirendis, non reperiet illa. Quin etiam quicquid ſcire proponit ſapiens, reperiri nunquam poterit.

* الفصل التاسع *

CAP. IX.

1 * لان هذا كله منحته لقلبي وعرف قلبي هذا كله * ان المقسطين والحكماء بل واعمالهم
في يد الله * والانسان لعمري لن يعرف المحبة ولا البغض * كل شي امام وجوههم باطل *
2 * في جميع امورهم لقيا واحدة للمقسط والمنافق * للصالح والطالح * وللطاهر وللنجس *
ولمن يضحي ولمن لا يضحي * مثل الصالح منا والخاطي * كمن يحلف نظيره من
3 يتقي القسم * هذا امر خبيث في كل مصنوع تحت الشمس * ان لقيا واحدة للكل * ومع
ذلك فقلت ان بني الانسان امتلوا من الراي الخبيث * وفي قلبهم اعوجاج في حياتهم *
4 وما وراهم يتوجه الي الموتي * لان من يشارك الاحياء في كل شي فذلك رجاء مامول * لان الكلب
5 الحي ذاك صالح افضل من سبع مايت * لان الاحياء يعرفون انهم سيموتون * والموتي ليسوا
6 موجودين فما يعرفون شيا * وليس لهم ثواب ايضا * لان قد نسي ذكرهم * ومع ذلك
فمحبتهم وبغضهم وغيرتهم قد هلكت * وليس لهم في جميع المصنوع تحت الشمس نصيب
ايضا الي الابد *

* ID enim totum conceſſi cordi meo, idque totum cognovit cor meum; juſtos ac ſapientes, imò etiam opera eorum in manu Dei eſſe; & hominem quidem nec amorem nec odium ſcire. Omnia in conſpectu eorum vana ſunt. 1 In omnibus eorum negotiis caſus idem accidit juſto & impio, probo & improbo, mundo & immundo; tam ei qui ſacrificat, quàm qui non ſacrificat; ut bono inter nos, ita & peccatori; ſicut ei qui jurat, ſic qui timet jurare. 2 Hæc res eſt peſſima inter omnia ſub ſole condita, quod caſus idem ſit omnibus. 3 Præterea dixi filios hominum plenas eſſe malo animo, & in corde ipſorum obliquitatem ineſſe quandiu vivunt, & quod ab eorum tergo eſt, ad mortuos tendere. Nam communicare aliquem cum vivis in rebus omnibus, res eſt optatæ ſpei: 4 quandoquidem canis ipſe vivus melior eſt leone mortuo. Nam vivi nôrunt ſe morituros: 5 mortui verò non extant, nihilque ſciunt; nec habent ulteriùs præmium, quia oblivioni jam tradita eſt memoria eorum. Quin etiam amor ac odium, & æmulatio ipſorum jam periit, nec ſortem habent ampliùs in æternum in ulla re quæ fit ſub ſole. 6

קהלת: ט

bono i corde in bibe & , tuum panem gaudio in comede , Vade
7 לֵךְ אֱכֹל בְּשִׂמְחָה לַחְמֶךָ וּשְׁתֵה בְלֶב־טוֹב
omni In .tua opera Deus voluit jam quia : tuum vinum
יֵינֶךָ כִּי כְבָר רָצָה הָאֱלֹהִים אֶת־מַעֲשֶׂיךָ׃ בְּכָל־ 8
. tuum caput ſuper oleum & : candida tua veſtimenta ſint tempore
עֵת יִהְיוּ בְגָדֶיךָ לְבָנִים וְשֶׁמֶן עַל־רֹאשְׁךָ
omnibus dilexiſti quam , uxore cum vitas Vide .deficiat non
9 אַל־יֶחְסָר׃ רְאֵה חַיִּים עִם־אִשָּׁה אֲשֶׁר־אָהַבְתָּ כָּל־
ſole ſub tibi dedit quos tuæ vanitatis vitarum diebus
יְמֵי חַיֵּי הֶבְלֶךָ אֲשֶׁר נָתַן־לְךָ תַּחַת הַשֶּׁמֶשׁ
,tuo labore in & :vitis in tua pars hoc quia:tuæ vanitatis diebꝰ omnibus
כֹּל יְמֵי הֶבְלֶךָ כִּי הוּא חֶלְקְךָ בַּחַיִּים וּבַעֲמָלְךָ
invenerit quod Omne .ſole ſub laborans tu quo
10 אֲשֶׁר־אַתָּה עָמֵל תַּחַת הַשָּׁמֶשׁ׃ כֹּל אֲשֶׁר תִּמְצָא
, opus non quia : fac tua virtute in faciendum ad tua manus
יָדְךָ לַעֲשׂוֹת בְּכֹחֲךָ עֲשֵׂה כִּי אֵין מַעֲשֶׂה
.illuc vadens tu quo ſepulchro in ſapiētia &,ſciētia &,cōputatio &
וְחֶשְׁבּוֹן וְדַעַת וְחָכְמָה בִּשְׁאוֹל אֲשֶׁר אַתָּה הֹלֵךְ שָׁמָּה׃
nec , curſus levium non quod , ſole ſub videre &,ſum Cōverſus
11 שַׁבְתִּי וְרָאֹה תַחַת־הַשֶּׁמֶשׁ כִּי לֹא לַקַּלִּים הַמֵּרוֹץ וְלֹא
non etiam & ,panis ſapientium non etiam & , bellum fortium
לַגִּבּוֹרִים הַמִּלְחָמָה וְגַם לֹא לַחֲכָמִים לֶחֶם וְגַם לֹא
occurſus & tempus ſed :gratia ſcientium non etiam & ,opulentia prudentium
לַנְּבֹנִים עֹשֶׁר וְגַם לֹא לַיֹּדְעִים חֵן כִּי־עֵת וָפֶגַע
: ſuum tempus homo ſciet non etiam Quia .ipſis omnibus accidet
12 יִקְרֶה אֶת־כֻּלָּם׃ כִּי גַּם לֹא־יֵדַע הָאָדָם אֶת־עִתּוֹ
;laqueo in captæ aves ſicut &,malo reti in capiuntur qui piſces ſicut
כַּדָּגִים שֶׁנֶּאֱחָזִים בִּמְצוֹדָה רָעָה וְכַצִּפֳּרִים הָאֲחֻזוֹת בַּפָּח
ceciderit quod ſecundum,malo tempore in hominum filii irretiti ipſi ſicut
כָּהֵם יוּקָשִׁים בְּנֵי הָאָדָם לְעֵת רָעָה כְּשֶׁתִּפּוֹל
: ſole ſub ſapientiam vidi hanc Etiam .repente eos ſuper
13 עֲלֵיהֶם פִּתְאֹם׃ גַּם־זֹה רָאִיתִי חָכְמָה תַּחַת הַשָּׁמֶשׁ
venit & : parum ea in virorum & , parva Civitas .me ad ipſa magna &
14 וּגְדוֹלָה הִיא אֵלָי׃ עִיר קְטַנָּה וַאֲנָשִׁים בָּהּ מְעָט וּבָא־
eam ſuper extruxit & , eam circundedit & ,magnus rex eam adverſus
אֵלֶיהָ מֶלֶךְ גָּדוֹל וְסָבַב אֹתָהּ וּבָנָה עָלֶיהָ
, ſapiens pauper vir ea in eſt inventus Et .magnas munitiones
15 מְצוֹדִים גְּדֹלִים׃ וּמָצָא בָהּ אִישׁ מִסְכֵּן חָכָם
eſt recordatus non homo & : ſua ſapientia in urbem ipſe eruit &
וּמִלַּט־הוּא אֶת־הָעִיר בְּחָכְמָתוֹ וְאָדָם לֹא זָכַר
ſapientiam bonam , ego dixi Et .illius pauperis viri
16 אֶת־הָאִישׁ הַמִּסְכֵּן הַהוּא׃ וְאָמַרְתִּי אָנִי טוֹבָה חָכְמָה
.ſtultos in dominantis clamor quam : audiuntur quiete in ſapientum Verba .audita ipſa non ejus verba & , contempta pauperis ſapientia & , fortitudine præ
מִגְּבוּרָה וְחָכְמַת הַמִּסְכֵּן בְּזוּיָה וּדְבָרָיו אֵינָם נִשְׁמָעִים׃ דִּבְרֵי חֲכָמִים בְּנַחַת נִשְׁמָעִים מִזַּעֲקַת מוֹשֵׁל בַּכְּסִילִים׃ 17

Verſio VUL.LAT.

7 Vade ergò & comede in læti-
tia panē tuū, & bibe cum gau-
dio vinū tuū: quia Deo placent
8 opera tua. Omni tempore ſint
veſtimenta tua candida, et oleū
9 de capite tuo non deficiat. Per-
fruere vitā cum uxore, quam di-
ligis, cunctis diebꝰ vitæ inſtabi-
litatis tuæ, qui dati ſunt tibi ſub
Sole omni tempore vanitatis
tuæ: hæc eſt enim pars in vita,
& in labore tuo, quo laboras
10 ſub Sole. Quodcumque facere
poteſt manꝰ tua, inſtanter ope-
rare: quia nec opus, nec ratio,
nec ſapientia, nec ſcientia erūt
apud inferos, quò tu properas.
11 Verti me ad aliud, & vidi ſub
Sole, nec velociū eſſe curſum,
nec fortiū bellum, nec ſapien-
tiū panē, nec doctorū divitias,
nec artificū gratiā, ſed tempus,
12 caſúmque in omnibus. Neſcit
homo finē ſuū: ſed ſicut piſces
capiuntur hamo, & ſicut aves
laqueo comprehenduntur, ſic
capiuntur homines in tempore
malo, cùm eis extemplò ſuper-
13 venerit. Hanc quoq; ſub Sole
vidi ſapientiā, & probavi ma-
14 ximā: Civitas parva, & pauci
in ea viri: venit contra eā rex
magnꝰ, & vallavit eam, extru-
xítque munitiones per gyrum,
15 & perfecta eſt obſidio. Inven-
túſque eſt in ea vir pauper &
ſapiens, & liberavit urbem per
ſapientiam ſuam, & nullus de-
inceps recordatus eſt hominis
16 illius pauperis. Et dicebam
ego, meliorem eſſe ſapientiam
fortitudine: quomodò ergò
ſapientia pauperis contempta
eſt, & verba ejus non ſunt au-
17 dita? Verba ſapientium au-
diuntur in ſilentio, pluſquàm
clamor principis inter ſtultos.

Verſio GRÆC.LXX.Interp.cumTranſLAT.

7 † Δεῦρο φάγε ἐν εὐφροσύνῃ τὸν ἄρτον σου, † καὶ
πίε ἐν καρδίᾳ ἀγαθῇ οἶνόν σου, †(η) ὅτι ἤδη εὐ-
8 δόκησεν ὁ Θεὸς τὰ ποιήματά σου. † Ἐν παντὶ
καιρῷ ἔστωσαν ἱμάτιά σου λευκά, καὶ ἔλαιον (θ)
9 ἐπὶ κεφαλῆς σου μὴ ὑστερησάτω. † Καὶ ἴδε ζωὴν
μετὰ γυναικὸς ἧς ἠγάπησας † πάσας τὰς ἡμέρας
ζωῆς ματαιότητός σου, τὰς δοθείσας σοι ὑπὸ τὸν
ἥλιον, † ὅτι αὐτὸ μερίς σου ἐν τῇ ζωῇ σου, † καὶ
ἐν τῷ μόχθῳ σου (ι) ᾧ σὺ μοχθεῖς ὑπὸ τὸν ἥλι-
10 ον. † Πάντα ὅσα ἂν εὕρῃ ἡ χείρ σου τοῦ ποιῆ-
σαι, ὡς ἡ δύναμίς σου ποίησον, † ὅτι οὐκ ἔστι
ποίημα καὶ λογισμὸς καὶ γνῶσις καὶ σοφία † ἐν
11 ᾅδῃ, ὅπου σὺ πορεύῃ ἐκεῖ. † Ἐπέστρεψα καὶ εἶ-
δον ὑπὸ τὸν ἥλιον, † ὅτι οὐ τοῖς κούφοις ὁ δρόμος,
† καὶ οὐ τοῖς δυνατοῖς ὁ πόλεμος, † καί γε οὐ (κ)
τῷ σοφῷ ἄρτος, † καί γε οὐ τοῖς συνετοῖς (λ)
πλοῦτος, † καί γε οὐ τοῖς γινώσκουσι χάρις, † ὅτι
καιρὸς καὶ ἀπάντημα συναντήσεται (μ) σύμπα-
12 σιν αὐτοῖς. † Ὅτι καί γε καὶ οὐκ ἔγνω ὁ ἄνθρω-
πος τὸν καιρὸν αὐτοῦ, † ὡς οἱ ἰχθύες οἱ θηρευ-
όμενοι ἐν ἀμφιβλήστρῳ κακῷ, † καὶ ὡς ὄρνεα τὰ
θηρευόμενα ἐν παγίδι· † ὡς αὐτὰ παγιδεύ-
ονται οἱ υἱοὶ τοῦ ἀνθρώπου εἰς καιρὸν πονηρόν,
13 † ὅταν ἐπιπέσῃ ἐπ' αὐτοὺς ἄφνω. † Καί γε τοῦ-
το εἶδον σοφίαν ὑπὸ τὸν ἥλιον, † καὶ μεγάλη ἐστὶ
14 πρός με· Πόλις μικρὰ καὶ ἄνδρες ἐν αὐτῇ ὀλί-
γοι, † καὶ ἔλθῃ ἐπ' αὐτὴν βασιλεὺς μέγας καὶ
κυκλώσῃ αὐτήν, † καὶ οἰκοδομήσῃ ἐπ' αὐτὴν
15 χάρακας μεγάλους· † Καὶ εὕρῃ ἐν αὐτῇ ἄνδρα
πένητα (ν) σοφόν, † καὶ διασώσῃ αὐτὸς τὴν πόλιν
ἐν τῇ σοφίᾳ αὐτοῦ, † καὶ ἄνθρωπος οὐκ ἐμνήσθη
16 σὺν τοῦ ἀνδρὸς τοῦ πένητος ἐκείνου. † Καὶ εἶπα
ἐγώ, Ἀγαθὴ σοφία ὑπὲρ δύναμιν· † καὶ σοφία
τοῦ πένητος ἐξουδενωμένη, † (ξ) καὶ οἱ λόγοι
17 αὐτοῦ οὐκ (ο) εἰσακουόμενοι. † Λόγοι σοφῶν ἐν
ἀναπαύσει ἀκούονται † ὑπὲρ κραυγὴν ἐξ-
ουσιαζόντων ἐν ἀφροσύναις.

Veni, comede in letitia panem 7
tuum, & bibe in (g) corde bono
vinum tuum; quoniam jam (h)
complacuerunt Deo opera tua.
In omni tempore ſint veſtimenta 8
tua candida: & oleum ſuper*
caput tuum (i) non deſit. Et (k) 9
vide vitam cum muliere, quam
dilexiſti (l) omnibus diebus vi-
tæ vanitatis tuæ, qui dati ſunt
tibi ſub Sole: quia hoc eſt pars
tua in vita tua, & in labore
tuo, quo tu laboras ſub Sole.
Omnia, quæ (m) invenerit ma- 10
nus tua facere; prout virtus
tua, fac: quia non eſt opus, &
cogitatio, & ſcientia, & ſapi-
entia in inferno, quò tu vadis
illuc. Converti me, & vidi 11
ſub Sole; quoniam non eſt (n)
velocibus curſus, nec potentibus
(o) prælium, nec quidem (p) ſa-
pienti panis, nec quidem intel-
ligentibus divitiæ, nec quidem
ſcientibus gratia: quoniam tem-
pus & eventus (q) occurret o-
mnibus illis. Quia etiam neſcit 12
homo (r) tempus ſuum, quaſi
piſces, qui tenentur in retia-
culo (ſ) malo; & ſicut volu-
cres, quæ capiuntur in laqueo.
Sicut ea, illaqueantur filii (t)
hominis in tempore malo: cùm
ceciderit ſuper ipſos ſubitò.
Etiam hoc vidi, ſapientiam ſub 13
Sole, & magna eſt (u) ad me:
Civitas parva, & viri pauci 14
in ea; & venit ſuper eam rex
magnus, & circundedit eam,
& ædificavit adverſùs eam
(x) aggeres magnos: Et in- 15
venit in ea virum pauperem ſa-
pientem: & ſalvavit hic ci-
vitatem in ſapientia ſua: &
homo non recordatus eſt viri
pauperis illius. Et dixi ego, 16
Bona ſapientia ſuper potentiam: & ſapientia pauperis (y) pro nihilo habita,
& verba ejus non exaudita. Verba ſapientum, (z) in quiete audiuntur ſu- 17
per clamorem eorum, qui poteſtatem habent in ſtultitiis.

MS.A. (η) ὅτι εὐδόκησεν (θ) ἐπὶ κεφαλήν (ι) ᾧ μοχθεῖς (κ) τοῖς σοφοῖς ὁ ἄρτος, (λ) ὁ πλοῦτος, (μ) τοῖς πᾶσιν αὐτοῖς. Καί γε οὐκ ἔγνω (ν) καὶ σοφόν, καὶ διασώσει (ξ) καὶ λόγοι (ο) εἰσὶν ἀκουόμενοι.

תרגום TARGUM.

7 אמר שלמה ברוח נבואה מן קדם יי עתיד מרי עלמא למימר לכל צדיקיא באנפי נפשיה
אזיל טעום בחדוא לחמך דאתותב לך על לחמך די יהבתא לעניא ולחשיכא דהוי כפן
ושתי בלב טב חמרא דאצטנע לך בגן עדן חלף חמרך דמזגתא לעניא וחשיכא דהוי צחי
8 ארום הא כבר אתרעית קדם יי עובדך טבא: בכל עדן יהוון כסותך חורין מן כל סואבות
חובתא ושמא טבא דמתיל למשח רבותא קני בגין די ימטון ברכן על רישך וטיבותך
9 אל יחסר: חזי חיין טבין עם אתתא דרחמתא כל יומי חיי הבלותך די יהב יי לך במולא
בעלמא הדין תחות שמשא ארום היא חולקך בחיין ובטורחותך די אנת טרחתא
10 בעלמא הדין תחות שמשא: כל די מספקא ידך למעבד טיבו וצדקתא עם מסכינא בכל
חילך עבד ארום בתר מותא לית לגבר עובדא וחושבנא ומנדעא וחוכמתא בבית
11 קבורתא דאת אזיל תמן ולא יסיעון לך אלהן עובדין טבין וצדקתא בלחודיהון: אמר
שלמה מלכא כד הויתי יתיב על כורסי מלכותי הוה אסתכלית וחזית בעלמא הדין
תחות שמשא ארום לא גוברין דאנון קלילין כנשרין מסתיען למרהט לאשתיזבא מן
מותא בקרבא ולא גבריא מסתיעין באגחותהון קרבא בגבורתהון ואף לא חכימיא
מסתיעין בחוכמתהון למסבע לחמא בעדן כפנא ואף לא סוכלתנין מסתיעין
בסוכלתנותהון למכנוש עתרא ואף לא ידעי בינה מסתיעין במנדעותהון למשכח
12 רחמין בעיני מלכא ארום עדן וערעיתא במולהון יערע ית כולהון: ארום אף לא
אשתמודע לגבר ית זמניה בין טב לביש מן מה דעתיד למהוי בעלמא ולמיתי עלוי
כנוני ימא דמתאחדין בחכא וכצפרי שמיא דמתאחדין בקולא כותהון מתקלין בני
13 אנשא לזמן בישתא דאתעתדת למהוי נפלא עליהון רגעא חדא משמיא: אף דין חזיתי
14 דהיא חוכמתא בעלמא הדין תחות שמשא ורבתא היא לותי: גוף בר נשא דמתיל
לקרתא זעירתא וגברין גברי חילא זעיר בגוה היכמה דקלילן זכותיה בגו לבא דאנשא
ויעול לות גופא יצרא בישא דמתיל למלך רב תקיף לאתכנעא ואסחר ית לבא למטעי
יתיה ובנא עלוהי אתר למתב על די יצבי לאסטיותיה מן אורחן דתקנן קדם יי לאחדא
15 יתיה במצודין רברבין דגהנם לאדלקותיה שבעזמנין על חובוהי: ואשתכח בגו גוף
יצרא טבא מסכין וחכים ואתגבר עלוהי וכבש יתיה בחוכמתיה ושיזיב ית גופא מן דינא
דגהנם בתוקפיה ובחוכמתיה היכמא דגברא עבד לקרבא משיזיב יתבי קרתא בחוכמת
לבביה ואנש לא דכר בתר כן ליצרא טבא דשיזביה אלהן יימר בלבביה זכאה אנא
16 היכמה דיתבי קרתא ההיא לא דכירו ית עניא ההוא דשיזיב יתהון: ואמרית אנא
במימרי טבא חכמת צדיקיא מכח גבורת רשיעיא דחוכמת צדיקיא וזכותיה משיזבא
ליה ולאנשי דריה ותקוף רשיעא דקאם בתוקפיה דלביה בדיל דלא למהדר בתיובתא
מחבלא ליה בלחודוהי וחוכמת צדיקא ועניא מזדלזלא בעיני רשיעי דריה ובעדן דיוכח
17 יתהון על עובדיהון בישיא ופתגמי אוכחותיה ליתנון מקבלין: מלי דצלותא דחכימיא
בחשי מתקבלין קדם מרי עלמא יתיר מקבלת רשיעא דהוא שליט על שטיין דפגנין ולית מקביל:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Dixit Selomoh in ſpiritu prophetiæ à conſpectu Domini: Futurū eſt ut Do- 7
minus mundi dicat ſingulis juſtis in facie uniuſcujuſque: Vade guſta in læti-
tia panem tuum, qui repoſitus eſt tibi propter panem tuum quem dediſti
pauperi & humili qui erat eſuriens, & bibe in corde jucundo vinum *quod*
reconditum eſt tibi in paradiſo, pro vino tuo quod miſcuiſti pauperi &
humili qui *fuit ſitiens*: ecce enim jam beneplacita fuere ante Dominum
opera tua bona. In omni tempore ſint veſtes tuæ lotæ ab omni contami- 8
natione peccati: & nomen bonum quod aſſimilatur unguento unctionis,
tibi acquire, ut contingant benedictiones ſuper caput tuum, & bonitas
tua non deficiat. Fruere vita bona cum uxore quàm amâſti omnibus diebus 9
vitæ vanitatis tuæ quos dederit tibi Dominus *ex providentia in hoc mundo*
ſub Sole, quia hæc eſt pars tua in vita tua & in labore tuo quo tu laboras in
mundo hoc ſub Sole. Omne quod ſuppeditaverit manꝰ tua ad faciendū *bo-* 10
num & eleemoſynam pauperi, *omnibus viribus tuis* facito: etenim poſt
mortem non eſt viro opus, aut cogitatio vel ſcientia, aut ſapientia in domo
ſepulchri quò tu vadis, & non adjuvabunt te, niſi opera bona & juſtitia tan-
tummodo. *Dixit Selomoh rex, Cum ſederem ſuper ſolium regni mei, tunc* 11
contemplatus ſum & vidi in ſeculo hoc ſub Sole, quòd nec viri qui veloces
fuerint ſicut aquilæ adjuti ſunt currendo ut eriperentur à morte in prælio,
neq; robuſti adjuvantur dum ineunt prælium robore ſuo, nec ſapientes adju-
vantur ſapientia ſua ut ſatientur pane in tempore famis, neq; etiam intelli-
gentes adjuvantur intelligentia ſua ad congregandas divitias, neq; etiam
ſcientes prudentiā juvantur ſcientiis ſuis ad inveniendā gratiā in oculis re-
gis: quoniā tempꝰ & eventꝰ *pro ſorte eorum* accidet omnibꝰ his. Etenim non 12
notū eſt viro tempus ſuum tam bonū quàm malum ex eo quod futurum eſt
in ſeculo & venturū ſuper eū: ſicut piſces maris qui capiuntur *hamo*, & ſic-
ut aves cœlorū quæ comprehenduntur laqueo, ſic illaqueantur filii homi-
nis in tempore mali, quod ruiturū eſt ſuper eos puncto uno cœlitus. Etiam 13
hoc vidi quod eſt ſapientia in ſeculo hoc ſub Sole, & magna quidem eſt ipſa
mihi. Corpus filii hominis quod ſimile eſt civitati parvæ, & viri pollentes 14
exigua virtute in medio ipſiꝰ, ecce cùm leves fuerint juſtitiæ in medio cor-
dis hominis, intrabit in corpus concupiſcentia mala, quæ aſſimilatur regi
magno & robuſto, ad opprimendum, & obſidet cor ut errare faciat illud:
& ædificat in illo locum ad ſedendū ubicunque voluerit, ut declinare faciat
illud à viis quæ rectæ ſūt ante Dñm, ad cōprehendendū illud in retibꝰ maxi-
mis gehennæ ut comburat eū *ſepties* propter peccata ſua. Inventꝰ eſt autē 15
in medio corporis affectꝰ bonꝰ humilis & ſapiens, & prævaluit ſup illud &
ſubjecit illud ſapientia ſua, & eripuit *corpꝰ* à judicio gehennæ robore ſuo
& ſapientia ſua, ſicut vir faciens præliū liberat habitatores urbis ſapientia
cordis ſui, & homo non recordatur poſteà affectus boni qui liberavit eum,
ſed dicit in corde ſuo, Innocens ego ſum, ſicut etiā habitatores urbis illius
non recordati ſunt humilis illius qui liberavit eos. Et dixi ego in dicto meo: 16
Melior eſt ſapientia *juſtorum*, quàm vis fortitudinis *improborum; quòd ſapi-*
entia juſti et meritum ejus liberat eum & homines generationis ejus, cùm
robur impii, qui perſtat in obfirmatione cordis ſui ut non convertatur pœni-
tentiâ, perdat ipſum ſolum: & ſapientia juſti & pauperis vilipenditur in
oculis improborum generationis ejus, & in tempore quo corripit illos pro-
pter opera eorum mala, verba correptionis illius non *ſuſcipiunt*. Verba 17
orationis ſapientum in ſilentio ſuſcipiuntur ante Dominum mundi, magis
quā clamor improbi qui imperat ſtultis clamantibꝰ, & non eſt qui attendat.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܐܬܐ ܐܟܘܠ ܒܚܕܘܬܐ ܠܚܡܟ. ܘܐܫܬܝ ܒܠܒܐ ܛܒܐ ܚܡܪܟ. ܡܛܠ ܕܐܬܪܥܝ ܐܠܗܐ 7
ܒܥܒܕܝܟ. * ܒܟܠܥܕܢ ܢܗܘܘܢ ܡܐܢܝܟ ܚܘܪܝܢ. ܘܡܫܚܐ ܡܢ ܪܫܟ ܠܐ ܢܚܣܪ. 8
* ܘܚܝܝ ܚܝܐ ܥܡ ܐܢܬܬܐ ܕܪܚܡܬ܀ ܟܠܗܘܢ ܝܘܡܝ ܚܝܝ ܗܒܠܟ. ܡܛܠ ܕܗܘ ܗܘ 9
ܡܢܬܟ ܒܚܝܐ܀ ܘܒܥܡܠܟ ܕܥܡܠ ܐܢܬ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. * ܟܠ ܕܡܫܟܚܐ ܐܝܕܟ 10
ܠܡܥܒܕ ܒܚܝܠܟ ܥܒܕ. ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܥܒܕܐ ܘܡܚܫܒܬܐ܀ ܘܝܕܥܬܐ ܘܚܟܡܬܐ܀
ܒܫܝܘܠ ܕܐܢܬ ܐܙܠ ܠܗ. * ܗܦܟܬ ܘܚܙܝܬ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ܀ ܕܠܐ ܠܩܠܝܠܐ 11
ܪܗܛܐ. ܘܠܐ ܠܓܢܒܪܐ ܩܪܒܐ. ܘܠܐ ܠܚܟܝܡܐ ܠܚܡܐ. ܘܠܐ ܠܣܘܟܠܬܢܐ ܥܘܬܪܐ. ܘܠܐ
ܠܡܬܒܝܢܐ ܛܝܒܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܙܒܢܐ ܘܦܓܥܐ ܡܓܕܫ ܠܟܠܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܝܕܥ 12
ܒܪܢܫܐ ܙܒܢܗ. ܐܝܟ ܢܘܢܐ ܕܡܬܐܚܕܝܢ ܒܡܨܝܕܬܐ ܒܝܫܬܐ܀ ܘܐܝܟ ܨܦܪܐ ܕܡܬܐܚܕܝܢ ܒܦܚܐ܀
ܗܟܢܐ ܡܬܬܨܝܕܝܢ ܒܢܝܢܫܐ ܒܙܒܢܐ ܒܝܫܐ ܕܢܦܠ ܥܠܝܗܘܢ ܡܢ ܫܠܝܐ. * ܐܦ ܗܕܐ ܚܙܝܬ 13
ܚܟܡܬܐ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. ܘܪܒܐ ܗܝ ܠܘܬܝ. * ܩܪܝܬܐ ܙܥܘܪܬܐ. ܘܐܢܫܐ ܕܒܗ ܙܥܘܪܝܢ܀ 14
ܘܐܬܐ ܥܠܝܗ ܡܠܟܐ ܪܒܐ ܘܚܕܪܗ. ܘܒܢܐ ܥܠܝܗ ܟܪܟܘܡܐ. * ܘܐܫܬܟܚ ܒܗ ܓܒܪܐ 15
ܡܣܟܢܐ ܚܟܝܡܐ. ܘܦܨܝ ܗܘ ܡܣܟܢܐ ܠܡܕܝܢܬܐ ܒܚܟܡܬܗ. ܘܐܢܫ ܠܐ ܐܬܕܟܪ
ܠܓܒܪܐ ܗܘ ܡܣܟܢܐ. * ܘܐܡܪܬ ܐܢܐ. ܕܛܒܐ ܗܝ ܚܟܡܬܐ ܡܢ ܓܢܒܪܘܬܐ. ܘܚܟܡܬܗ 16
ܕܡܣܟܢܐ ܫܝܛܐ ܗܝ. ܘܡܠܘܗܝ ܠܐ ܡܫܬܡܥܝܢ. * ܘܡܠܝ ܚܟܝܡܐ ܒܢܝܚܐ 17
ܡܫܬܡܥܢ܀ ܡܢ ܩܥܬܐ ܕܫܠܝܛܐ ܒܣܟܠܐ.

Agedum comede cum lætitia panem tuum, 7
& vinum tuum bono animo bibe, quia Deo
placent opera tua. Omni tempore candidæ 8
ſint veſtes tuæ, & unguentum capiti tuo
ne deſit. Et fruere vitâ cum uxore quam diligis, 9
cunctis diebus frivolæ vitæ tuæ: hæc eſt
enim pars tua in vita tua, & in labore tuo quo
ſub ſole fatigaris. Quicquid operari poteſt 10
manus tua, dum polles viribus, facito: quia
nec opus, nec ratio, nec ſcientia, nec ſapientia
eſt in inferno, ad quem tendis. Converſus 11
deprehendi ſub ſole, quòd neque velocium
ſit curſus, neque bellum robuſtorum,
neque ſapientum panis, neque prudentum divitiæ,
neque peritorum gloria: *tum* quia
tempus & fortuna omnibus accidit: Tum 12
quia ignorat homo tempus ſuum. Ut piſces
qui capiuntur ſagenâ improbâ & ut aves quæ
capiuntur laqueo, ita capiuntur homines tempore
infauſto quod extemplò ruit in ipſos.
Hanc etiam vidi ſapientiam ſub ſole, & maxima 13
quidem eſt apud me. Urbs erat parva, & 14
homines in ea pauci: hanc invaſit rex magn⁹,
& obſedit eam, & extruxit adverſùs eam
aggeres: Repertus eſt autem in ea vir pauper 15
ſapiens, qui pauper liberavit ſuâ ſapientiâ
urbem illam; nemo tamen recordatus
eſt viri illius pauperis. Unde dixi ego 16
meliorem eſſe ſapientiam fortitudine, & ſapientiam
pauperis eſſe deſpectam, ejúſque
ſermones minimè audiri: Et verba ſapientum 17
pacatiùs audiri, quam clamorem principis
ſtulti.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* تعال كل خبزك بفرح واشرب خمرك بقلب صالح * فان الله قد ارتضى صنايعك * في 7 8
كل اوان فلتكن ثيابك بيضا * ولا يعوزن راسك زيتا ينصب عليه * وابصر حياتك 9
مع الامراة التي احببتها كافة ايام حياة بطالتك * الايام التي منحها تحت الشمس *
جميع ايام باطلك * فان هذا حظك في حياتك وفي تعبك الذي تتعبه انت تحت
الشمس * كلما عسى تجده يدك * ذاك تعمله اعمل بطبر وقوتك * فان الجحيم ليست فيه 10
صناعة ولا فكر ولا علم ولا حكمة * حيث تمضي انت هناك * التفتت وعرفت تحت الشمس 11
ان السعي ليس للاخفاء * ولا الحرب للاقوياء * ولعمري ولا الخبز للحكماء * لا الغنا للفقهاء * ولا
المنة للعلماء * لان الوقت والالتقاء يلقاهم كلهم * وبالحقيقة فما يعرف الانسان وقته * كالسمك 12
المصيد في شبكة ردية * وكالطير المصيد من فخ * مثل هذا تقتنص ابناء الناس في
وقت خبيث شرير * اذا سقط عليهم بغتة * وهذا لعمري عرفته حكمة تحت الشمس * وهي 13
لدي عظيمة * ان مدينة لطيفة فيها ناس قليل * فوافي اليها ملك عظيم * فاحاط بها وابتنا 14
عليها فصلا برحبة عظيمة * فوجد فيها رجلا حكيما فقيرا * فسلم ذاك المدينة وخلصها 15
بحكمته * ولم يذكر انسان فقه ذلك الرجل الفقير * فقلت انا الحكمة صالحة افضل من 16
القوة * وحكمة الفقير مرفوضة * وكلامه ليست مسموعة * اقوال الحكماء تسمع بنياحة 17
اكثر من هتاف ذوي السلطان في مسارهم *

Veni, comede panem tuum cum hilaritate, & bibe vinum tuum bono animo, quoniam Deus jam approbavit opera tua. 7
Quovis tempore candida ſint veſtimenta tua, neque careat caput tuum oleo ſuper ipſum fundendo. 8
Et fruere vitâ tuâ cum uxore quam diligis, cunctis diebus vitæ vanitatis tuæ, diebus inquam *qui tibi conceſſi ſunt ſub ſole, cunctis diebus vanitatis tuæ; quum hæc ſit portio tua in vita tua, & in labore tuo quo laboras ſub ſole.* 9
Quicquid fortè manui tuæ occurrit agendum, ipſum agito pro virili tuo; nam nulla eſt ars, neque cogitatio, neque ſcientia, neque ſapientia in inferno, quò tu es iturus. 10
Convertens me deprehendi ſub ſole curſum non eſſe levium, neque fortium prælium, imò nec panem quidem ſapientum, nec opes prudentum, nec eruditorum gratiam: quoniam opportunitas & fortuna his omnibus contingit. 11
Et reverà neſcit homo ſuam opportunitatem. Ut piſces reti noxio capti, utque volucres laqueo capti, ſic illaqueantur filii hominum ſiniſtro adverſóque tempore, quum in eos irruit ex improviſo. 12
Et hoc ſanè ſapientiam eſſe deprehendi ſub ſole, eámque apud me maximam: 13
Quòd nimirum *urbs quædam erat elegans, paucis frequens hominibus: ad hanc accedens rex magnus, obſedit eam, & murum adverſùs eam extruxit in vaſtiſſima platea.* 14
Inventus eſt autem in ea vir quidam ſapiens, pauper; atque is urbem eripuit ac liberavit ſuâ ſapientiâ: nemo tamen recordatus eſt prudentiam hominis illius pauperis. 15
Quapropter ego dixi ſapientiam meliorem ac præſtantiorem eſſe robore, ſed ſapientiam pauperis eſſe abjectam, ejúſque verba non audiri. 16
Sermones ſapientum audiuntur majore cum tranquillitate, quàm clamor poteſtate præditorum in conclavi ſuo. 17

.multum bonum perdet unus peccator &:conflictꝰ *vasis præ* sapientia *Bona*
טובה חכמה מכלי קרב וחוטא אחד יאבד טובה הרבה׃ 18

CAP. X. י

preciosum : *pigmentarii unguentum faciet vaporare* ,*faciet* fœtere *mortis* Muscæ
1 זבובי מות יבאיש יביע שמן רוקח יקר
cor &,ejꝰ dexterā ad sapientis Cor .*parum stultitiæ* ,gloria à sapientia à
2 מחכמה מכבוד סכלות מעט׃ לב חכם לימינו ולב
ejꝰ cor ,*ambulans stultus quod secundùm* viā per etiā Et. ipsius sinistrā ad stulti
3 כסיל לשמאלו׃ וגם בדרך כשהסכל הלך לבו
ascēderis dominantis spiritus Si .*ipse* stultus ,omnibꝰ dicit & ,*deficiens*
4 חסר ואמר לכל סכל הוא׃ אם רוח המושל תעלה
peccata Faciet quiescere *sanitas* quia ,dimittas ne tuum locum ,te *super*
עליך מקומך אל־תנח כי מרפא יניח חטאים
egrediens qui error sicut : sole sub vidi malum Est .magna
5 גדולים׃ יש רעה ראיתי תחת השמש כשגגה שיצא
: *multis* excellentiis in *stultitia est Data* .dominantis *faciebus* à
6 מלפני השליט׃ נתן הסכל במרומים רבים
: equos super servos Vidi .sedebunt humilitate in divites &
7 ועשירים בשפל ישבו׃ ראיתי עבדים על־סוסים
,foveam Fodiens .terram super servos tanquam ambulantes principes &
8 ושרים הלכים כעבדים על־הארץ׃ חפר גומץ
faciens Proficisci .serpens eum mordebit sepem dissipans & : incidet eam in
9 בו יפול ופרץ גדר ישכנו נחש׃ מסיע
Si .*eis in periclitabitur* ligna scindens : eis in afficietur dolore ,lapides
10 אבנים יעצב בהם בוקע עצים יסכן בם׃ אם־
:roborabit vires & ,terserit *facies non ipse* & ,ferrum fuerit hebetatū
קהה הברזל והוא לא־פנים קלקל וחילים יגבר
: susurro *non in* serpens mordeat Si .*sapientia* ,*rectificandi præstantia* &
11 ויתרון הכשיר חכמה׃ אם־ישך הנחש בלוא לחש
labia & : *gratia* sapientis oris Verba .linguam habenti *præstantia* non &
12 ואין יתרון לבעל הלשון׃ דברי פי־חכם חן ושפתות
novissimum & : stultitia ejus oris verborum Initium .eum *deglutiet* stulti
13 כסיל תבלענו׃ תחלת דברי־פיהו סכלות ואחרית
sciet non : verba multiplicabit stultus Et .mala insania ejus oris
14 פיהו הוללות רעה׃ והסכל ירבה דברים לא־ידע
? sibi annunciabit quis ,se post erit quod & ,erit *quod* quid homo
האדם מה־שיהיה ואשר יהיה מאחריו מי יגיד לו׃
.civitatē ad pergere *novit non* qui ,eū faciet laborare stultorum Labor
15 עמל הכסילים תיגענו אשר לא־ידע ללכת אל־עיר׃
.*comedent* mane in tui principes & : puer tuus rex *quod* ,terra tibi Væ
16 אי־לך ארץ שמלכך נער ושריך בבקר יאכלו׃

Versio VUL. LAT.

18 Melior est sapientia, quàm arma bellica : & qui in uno peccaverit, multa bona perdet.

CAP. X.

1 Muscæ morientes perdunt suavitatē unguenti. Pretiosior est sapientia & gloria, parvâ et 2 ad tempꝰ stultitiâ. Cor sapientis in dextera ejus, & cor stulti 3 in sinistra illius. Sed & in via stultus ambulans, cùm ipse insipiēs sit, omnes stultos æstimat. 4 Si spiritus potestatem habentis ascenderit super te, locum tuū ne dimiseris : quia curatio faciet cessare peccata maxima. 5 Est malū ꝙ vidi sub Sole, quasi per errorem egrediens à facie 6 principis: Positū stultum in dignitate sublimi, & divites se- 7 dere deorsum. Vidi servos in equis, & principes ambulantes 8 super terram quasi servos. Qui fodit foveam, incidet in eam: & qui dissipat sepem, mordebit eum coluber. 9 Qui transfert lapides, affligetur in eis : & qui scindit ligna, vulnera- 10 bitur ab eis. Si retusum fuerit ferrum, & hoc non ut priùs, sed hebetatum fuerit, multo labore exacuetur, & post industriam sequetur sapien- 11 tia. Si mordeat serpens in silentio, nihil eo minus habet 12 qui occultè detrahit. Verba oris sapientis gratia : & labia insipientis præcipitabunt eū : 13 Initium verborū ejus stultitia, & novissimum oris illius error 14 pessimus. Stultus verba multiplicat. Ignorat homo, quid ante se fuerit: & quid post se futurū sit, quis ei poterit indicare? 15 Labor stultorū affliget eos, qui 16 nesciunt in urbē pergere. Væ tibi terra, cujꝰ rex puer est, & cujꝰ principes manè comedunt.

Vers. GRÆC. LXX. Interp. cum Transl. LAT.

18 † Ἀγαθὴ σοφία ὑπὲρ σκεύη πολέμου· † καὶ ἁμαρτάνων εἷς ἀπολέσει ἀγαθωσύνην πολλήν.

ΚΕΦ. Ι.

1 † Μυῖαι θανατοῦσαι σαπριοῦσι σκευασίαν ἐλαίου ἡδύσματος. † τίμιον ὀλίγον σοφίας 2 ὑπὲρ δόξαν ἀφροσύνης μεγάλην. † Καρδία σοφοῦ εἰς δεξιὸν αὐτοῦ, † καὶ καρδία ἄ- 3 φρονος εἰς ἀριστερὸν αὐτοῦ. † Καί γε ἐν ὁδῷ ὅταν ἄφρων πορεύηται, † καρδία αὐτοῦ ὑστερήσει, † καὶ ἃ λογιεῖται πάντα ἀφροσύνη 4 ἐστίν. Ἐὰν πνεῦμα τοῦ ἐξουσιάζοντος ἀναβῇ ἐπὶ σέ, † τόπον σου μὴ ἀφῇς, † ὅτι ἴαμα κατα- 5 παύσει ἁμαρτίας μεγάλας. † Ἔστι πονηρία ἣν εἶδον ὑπὸ τὸν ἥλιον, † ὡς ἀκούσιον (α) ἐξῆλθεν 6 ἀπὸ προσώπου ἐξουσιάζοντος. † Ἐδόθη ὁ ἄφρων ἐν ὕψεσι μεγάλοις, † καὶ πλούσιοι ἐν τα- 7 πεινῷ καθήσονται. † Εἶδον δούλους ἐφ' ἵππους, † καὶ ἄρχοντας (β) πορευομένους ὡς δούλους ἐπὶ τῆς 8 γῆς. † Ὁ ὀρύσσων βόθρον, (γ) εἰς αὐτὸν ἐμπεσεῖται· † καὶ καθαιροῦντα φραγμόν, δήξεται αὐτὸν 9 ὄφις. † Ἐξαίρων λίθους διαπονηθήσεται ἐν αὐτοῖς· † σχίζων ξύλα κινδυνεύσει ἐν αὐτοῖς. 10 † Ἐὰν ἐκπέσῃ τὸ σιδήριον, † καὶ αὐτὸς πρόσωπον ἐτάραξε· † καὶ δυνάμεις δυναμώσει, † καὶ 11 περισσεία (δ) τῷ ἀνδρὶ οὐ σοφία. † Ἐὰν δάκῃ ὄφις ἐν οὐ ψιθυρισμῷ, † καὶ οὐκ ἔστι περισσεία τῷ 12 ἐπᾴδοντι. † Λόγοι στόματος σοφοῦ χάρις, † καὶ χείλη ἄφρονος (ε) καταποντιοῦσιν αὐτόν. † 13 Ἀρχὴ λόγων στόματος αὐτοῦ ἀφροσύνη, καὶ ἐ- 14 σχάτη στόματος αὐτοῦ περιφέρεια πονηρά. † Καὶ ὁ ἄφρων πληθύνει λόγους. † οὐκ ἔγνω (ζ) ἄνθρωπος τί τὸ γενόμενον, † καὶ τί τὸ ἐσόμενον, † ὅ, 15 τι ὀπίσω αὐτοῦ τίς (ʹ) ἀναγγελεῖ αὐτῷ; † Μόχθος (η) τῶν ἀφρόνων κακώσει αὐτούς, † ὃς 16 οὐκ ἔγνω τοῦ πορευθῆναι εἰς πόλιν. † Οὐαί σοι πόλις ἧς ὁ βασιλεύς σου νεώτερος, † καὶ οἱ ἄρχοντές σου (θ) πρωῒ ἐσθίουσιν.

Bona sapientia super vasa (z) belli: 18 *& peccans unus perdet (aa) bonitatem multam.*

CAP. X.

Muscæ (a) morientes putrefaciunt compositionem olei suavitatis. Pretiosum paululum sapientiæ super gloriā insipientiæ (b) magnā. 1 *Cor sapientis in (c) dextro ejus: &* 2 *cor stulti in sinistro ejus. Etiam in* 3 *via, cùm stultus ambulat; cor ejus (d) deficiet : & (e) quæ cogitabit, omnia stultitia sunt. Si spiritus (f)* 4 *potestatem habentis ascenderit super te, locum tuum ne dimiseris : quia sanitas requiescere faciet peccata magna. Est (g) malum, quod* 5 *vidi sub Sole: (h) quasi non spontaneum exivit à facie potestatem habentis. (i) Datus est stul-* 6 *tus in sublimitatibus magnis : et divites in humili sedebunt. Vidi* 7 *servos in equis, et principes ambulantes quasi servos super terram. Qui fodit (k) foveam, in ipsam in-* 8 *cidet: & qui dissipat sepem, mordebit eum serpens. Qui (l) subtra-* 9 *hit lapides, dolebit in eis: scindens ligna, periclitabitur in eis, (m) Si* 10 *exciderit ferrum, et ipse faciē turbavit. Et fortitudines confortabit, et abundantia viro (n) non sapientia. Si momorderit serpēs in (o) non* 11 *susurro; & (p) non est amplius incantanti. Verba oris sapientis gra-* 12 *tia: & labia insipientis (q) deglutient eū. Initiū verborū* oris *ejus in-* 13 *sipientia, & novissimū oris ejꝰ (r) circumlatio pessima : Et (s) stultus* 14 *multiplicat verba. Ignorat homo quid sit, quod factū est; & quid, quod futurū est, (t) quod post eum, quis annuntiabit ei? Labor (u) stul-* 15 *torum affliget eos, qui (x) nescit ire in civitatem. Væ tibi (y) civitas,* 16 *cujus rex tuus junior, & principes tui manè comedunt.*

MS.A. (α) ὃ ἐξῆλθεν ἀπὸ προσώπου τοῦ ἐξουσιάζοντος. (β) ὡς δούλους πορευομένους (γ) ἐν αὐτῷ ἐμπεσεῖται, καὶ ὁ κυλίων λίθον, ἐφ' ἑαυτὸν κυλίει· καὶ καθαιροῦντα (δ) τοῦ ἀνδρείου σοφία. (ε) καταποντίσουσιν (ζ) ὁ ἄνθρωπος (ʹ) ἀπαγγελεῖ (η) τοῦ ἄφρονος σκοτώσει αὐτόν, (θ) ἐν πρωΐᾳ

תרגום TARGUM.

18 טבא חוכמת חכימת בעדן עקתא יתיר מן מני קרבא בעדן אגיחות קרבא וגברא חיבא
חד דאיתיה בדרא גרם לאובדא טבתא רבתא מן עלמא׃ י
1 ויצרא בישא דשכן על תרעי לבא היכדבובא וגרם מותא בעלמא על דמסרי חכימא
בעדן דחטי ומחבל שמא טבא דהוה דמי מן קדמת דנא למשח רבותא דמבסם
בבוסמנין וכמה יאי ויקיר יתיר מן חוכמתא חכימין ועותר עתירין גבר דטפשותיה זעיר
2 וקליל׃ לבא דחכימיא למקני אוריתא דאתיהיבת ביד ימינא דיי ולבא דשטיא למקני
3 נכסין כסף ודהב׃ ואף באורחא סריכא בעדן דשטיא אזיל לביה חסיר מן חוכמתא ועבד
4 מלין דלא תקנין לאתעובדא וכולא אמרין דשטיא הוא׃ אין רוח דיצרא בישא מתל בך
ומתגבר למסק עלך אתרך טב די הויתא נהיג למקם ביה לא תשבק ארום פתגמי אוריתא
5 אתבריאו אסו בעלמא למשבק ולמנשי מן קדם יי חובין רברבין׃ אית בישתא דחזיא
בעלמא הדין תחות שמשא ומה נזקא בעלמא בפתגמא דשלותא דנפקא מהחצפא על
6 גברא ומן קדם שולטן׃ יהב יי ית שטיא למהוי בריא במזליה ומשמש באצלחותא מן
שמי מרומא וחילותהי גיותנין וסגיאין ועמך בית ישראל משתעבדין תחותוהי בגלותא
7 ומן סגיאות חוביהון עתירי נכסין מתמסכנין ובמכיכותא יתבין ביני עממיא׃ אמר
שלמה מלכא ברוח נבואה חזית עממיא דהוו משתעבדין מן קדמת דנא לעמא בית
ישראל מתגברין ורכבין על סוסון כארכונין ועמא בית ישראל ורברבניהון אזלין
8 היכעבדין על ארעא׃ ענת מדת דינא וכן אמרת אנון גרמו להון כל דא היכמא דגבר
דחפר שוחא בפרשת אורחא אתחייב ביה למפל ואומא די עבר על גזירת מימרא דיי
9 ותקיפו גודרא דעלמא נפלו ביד מלכא רשיעא דנכית להון כחויא׃ אמר שלמה מלכא
נביא גלי קדמי דמנשה בר חזקיהו עתיד למחטי ולמסגד לצלמא דאבנין בגין כן
אתמסר ביד מלכא דאתור וכפתיה בזממין על דבטל פתגמי אוריתא דכתיבין בלוחי
אבנין מן עקריהון בגין כן יצטער בהון ורבשקה אחוהי עתיד למסגד לצלמיא דקיסין
ולמשבק פתגמי אוריתא דאתיהיבן בארונא קיסי דשטי בגין כן עתיד לאתוקדא בנורא
10 על יד מלאכא דיי׃ וכד חובין עמא בית ישראל ויתעבדון שמיא תקיפין כברזלא
מלאחתא מטרא והוא דרא לא צלו קדם יי בגין כן אתקלקל כל עלמא בכפנא וכדו
חיבין ומתכנשין אוכלוסין ומתגברין על יצרהון ומנמנן ברזליהון למבעי רחמין קדם
11 אלהי שמיא אית בהון רעוא על מותר אכשרות חוכמתהון׃ כד מתגרן חיוון קלין לסרקה
ולנזקא בעלמא על חוביהון דבית ישראל דלא עסיקו בפתגמי אוריתא בחשי ואף לית
מותר לגבר אכל קורצין דמשתעי לישן תליתי ארום בישתא דגיהנם עתיד לאתוקדא׃
12 מלי פום גבר חכים דאשתכח בדרא כד אתי פורענותא בעלמא מצלי ומעדי ית
פורענותא ומשכח רחמין קדם יי וסיפותיה דשטיא משתבשן מלין ונופיה ובגין כן כולי
13 עלמא מתמזגין׃ שרוי מלי פומיה שטותא וסוף ממיר פומיה חולהלתא בישא׃ ושטיא 14
מסגי פתגמין סריקין דלית בהון צרוך עד דלא ינדע אנש מה דעתיד למהוי ביומוהי
15 ומה דעתיד למהוי מן סיפיה מן יחוי ליה׃ טרחות שטיא דטרח בשטותא אלהו משלהי
16 ליה על דלא אליף למיזל לקרתא דחכימיא שרי בגוה למתבע מגיה אולפנא׃ וי לך
ארעא דישראל בזמן די ימלוך עלך ירבעם חיבא ויבטל מנך תקרובתא דצפרא
ורברבניך עד דלא יקרבון תמידא דצפרא ייכלון לחמא׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Melior est sapientia [*quæ*] *reddit sapientes* in tempore afflictionis , quàm vasa bellica in tempore ineundi prælii : & vir peccator unus qui est in generatione, occasionem affert ut perdatur bonum magnum ex mundo. 18

CAP. X.

Et concupiscentia mala quæ manet juxta portas cordis, est sicut musca, 1 quòd causam adferat mortis in mundo, adeò ut tradat sapientem in tempore quo peccat , & corrumpat nomen bonum quod simile fuerat antea unguento unctionis suavissimo cum aromatibus : & quanto decentior & preciosior est quàm sapientia sapientū, & quàm divitiæ divitum, vir cujus stultitia exigua & levis est. Cor sapientis incumbit ad acquirendam Legē 2 quæ data est manu dextera Dei, & cor stulti ad acquirendas facultates argenti & auri. Etiam in via perplexa tempore quo stultus ambulat, cor ejus 3 caret sapientia , ita ut faciat verba quæ non decent fieri , & omnes dicunt ipsum esse stultum. Si spiritus concupiscentiæ malæ dominatus in te fuerit, 4 & adeò invaluerit ut super te conscendat, locum tuum bonum, in quo consueveras stare, ne dimittas: etenim verba Legis creata sunt pro medicamine in mundo, ut remittantur atq; oblivioni tradantur à Dño peccata maxima. Est malum ꝙ vidi in seculo hoc sub Sole, *& quantum damni est in mundo* 5 *per* verbum ignorantiæ quod profertur impudens super virum , *etiam* ab imperante. Posuit *Dominus* stultum ut sit *sanus* in felicitate *sua*, & mini- 6 stret in prosperitate ex cœlo alto, & exercitus ejus sint sublimes & multi, & populꝰ *tuus domus Israel* servituti subditus sub eo *in exilio*, & præ multitudine peccatorum suorum divites facultatibus depauperantur, & in humilitate sedent *inter gentes. Dixit Selomoh rex in spiritu prophetico*, Vidi 7 *populos qui subditi fuerant antehac populo domus Israel*, prævalentes & equitantes super equos *sicut principes, & populum domus Israel* & magnates *eorum* ambulantes sicuti servos super terram. *Respondit proprietas judi-* 8 *cii & sic dixit, ipsi accersiverunt sibi omne hoc*, sicut vir qui foderit foveam in bivio itineris, in eam dignus est ut cadat: *& populus* qui *transgressi sunt decretum verbi Domini & dissipaverunt* maceriem *mundi, ceciderunt in manum regis* improbi qui mordet eos *ut* serpens. *Dixit Selomoh rex propheta,* 9 *revelatum est mihi quod Menasseh filius Hizkiahu peccaturus sit & adoraturus statuam lapidum, ideoq; traditus sit in manum regis Assyriæ, qui ligabit eum frænis, eò quod violaverit verba legis quæ inscripta sunt tabulis lapidum ab origine eorum, propterea angustiabitur in illis; & Rabsakeh frater ejus adoraturus est statuas lignorum, & relicturus verba legis, quæ indita est in arcam lignorum sethim, ideò futurū est ut comburatur in igne per manum angeli Domini.* Et cùm peccaverit populus *domus Israel*, 10 *& facti fuerint* cœli duri in modum ferri, ne demittant pluviam: & illa generatio non orat ante Dñm, propterea dissipatꝰ est totꝰ mundus fame: & quando convertuntur & congregantur turbæ & prævalent adversus concupiscentias suas, & *constituunt gubernatores* suos ut postulent misericordiā à Deo cœli, complacet sibi in augmento rectitudinis sapientiæ eorum. 11 Quando excitantur serpentes leves ad *mordendū* & nocendum in mundo, *propter peccata domus Israel quòd operā non posuerint in verbis legis*, in taciturnitate id fit: etiā non est utilitas viro fraudulenter accusanti, ut narret triplici lingua, quoniā in igne gehennæ futurū est ut crematur. Sermonibus 12 oris vir sapiēs qui invenitur in generatione, cū ventura est pœna in mundū, orat & avertit vindictā & invenit misericordias ante Dñm, & labia viri stulti plena sunt increpatione, & propterea totꝰ mundꝰ destruitur. Initiū 13 sermonū oris ejꝰ stultitia, et finis verbi oris ejꝰ amentia *mala*. Et stultꝰ multi- 14 plicat verba inania, in quibꝰ nulla est utilitas, donec cognoscat homo quid futurū sit in diebus suis: & quid futurū sit in fine ejus, quis indicabit illi? Fatigatio stulti qua defatigatur in stultitia, ipsa delassat eū, adeò ut nō 15 discat ire in civitatē intra quam sapiēs habitat ad quærendū ab eo disciplinam. Væ tibi terra *Israel* in tempore quo regnabit sup te Jarabgham peccator, & cessare faciet ex te oblationē matutinā, & magnates tui antequam 16 offerant juge matutinum sacrificium, panem comedent.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܛܒܐ ܗܘ ܚܟܡܬܐ ܡܢ ܡܐܢܝ ܩܪܒܐ. ܘܚܛܝܬܐ ܚܕܐ ܡܘܒܕܐ ܛܒܬܐ ܣܓܝܐܬܐ. 18

* ܦܘܠܓܐ * ܝ *

* ܐܝܟ ܕܒܒܐ ܕܡܝܬܝܢ ܡܣܪܚܝܢ ܡܐܢܐ ܕܡܫܚܐ ܒܣܝܡܐ. ܝܩܝܪܐ ܗܘ ܡܢ ܚܟܡܬܐ 1
ܘܡܢ ܫܘܒܚܐ ܣܓܝܐܐ ܣܟܠܘܬܐ ܙܥܘܪܬܐ. * ܠܒܗ ܕܚܟܝܡܐ ܒܝܡܝܢܗ. 2
ܘܠܒܗ ܕܣܟܠܐ ܒܣܡܠܗ. * ܘܐܦ ܣܟܠܐ ܡܐ ܕܒܐܘܪܚܐ ܡܗܠܟ. ܠܒܗ ܚܣܝܪ. ܘܟܠ 3
ܕܡܬܚܫܒ ܣܟܠܘܬܐ ܗܘ. * ܐܢ ܪܘܚܐ ܕܫܠܝܛܐ ܬܣܩ ܥܠܝܟ. ܐܬܪܟ ܠܐ ܬܫܒܘܩ. 4
ܡܛܠ ܕܐܣܝܘܬܐ ܡܫܪܝܐ ܚܛܗܐ ܣܓܝܐܐ. * ܐܝܬ ܒܝܫܬܐ ܕܚܙܝܬ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. ܐܝܟ 5
ܫܠܝܘܬܐ ܕܢܦܩܐ ܡܢ ܩܕܡ ܫܠܝܛܐ. * ܕܢܬܒ ܣܟܠܐ ܒܪܘܡܐ ܪܒܐ. ܘܥܬܝܪܐ ܒܡܘܟܟܐ 6
ܢܬܒܘܢ. * ܚܙܝܬ ܥܒܕܐ ܥܠ ܪܟܫܐ. ܘܫܠܝܛܢܐ ܕܡܗܠܟܝܢ ܐܝܟ ܥܒܕܐ ܥܠ ܐܪܥܐ. 7
* ܕܚܦܪ ܓܘܡܨܐ ܒܗ ܢܦܠ. ܘܕܬܪܥ ܣܝܓܐ ܢܢܟܬܝܘܗܝ ܚܘܝܐ. * ܕܡܫܩܠ ܟܐܦܐ 8 9
ܢܬܟܪܐ ܒܗܘܢ. ܘܕܡܨܠܚ ܩܝܣܐ. ܢܠܐܐ ܒܗܘܢ. * ܐܢ ܩܗܐ ܦܪܙܠܐ. ܘܗܘ ܐܦܐ ܕܟܝܢ 10
ܘܡܣܓܐ ܩܛܝܠܐ. ܘܝܘܬܪܢܐ ܠܟܫܝܪܐ ܚܟܡܬܐ. * ܐܢ ܢܟܬ ܚܘܝܐ. ܕܠܐ ܒܠܚܘܫܐ 11
ܠܝܬ ܝܘܬܪܢܐ ܠܡܠܚܫܢܐ. * ܡܠܐ ܕܦܘܡܗ ܕܚܟܝܡܐ ܛܝܒܘܬܐ. ܘܣܦܘܬܗ ܕܣܟܠܐ 12
ܡܛܒܥܢ ܠܗ. * ܫܘܪܝܐ ܕܡܠܘܗܝ ܕܦܘܡܗ ܣܟܠܘܬܐ. ܘܚܪܬܐ ܕܦܘܡܗ ܦܘܪܫܢܐ ܒܝܫܐ 13
* ܘܣܟܠܐ ܡܣܓܐ ܡܠܐ. ܠܐ ܝܕܥ ܒܪܢܫܐ ܡܐ ܕܗܘܐ. ܘܡܐ ܕܥܬܝܕ ܕܢܗܘܐ ܡܢ ܒܬܪܗ. ܡܢܘ 14
ܡܚܘܐ ܠܗ. * ܥܡܠܗܘܢ ܕܣܟܠܐ ܡܠܐܐ ܠܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܝܕܥܘ ܠܡܐܙܠ ܠܡܕܝܢܬܐ. 15
* ܘܝ ܠܟܝ ܡܕܝܢܬܐ ܕܡܠܟܟܝ ܛܠܝܐ: ܘܪܘܪܒܢܝܟܝ ܒܨܦܪܐ ܐܟܠܝܢ. 16

Meliorem eſſe ſapientiam inſtrumentis bellicis: & peccatum unum plurima bona deperdere. 18

CAP. X.

UT muſcæ mortuæ fœtidum reddunt vas 1
unguenti ſuavis. Præponderat ſapientiæ &
gloriæ multæ, modica ſtultitia. Cor ſapi- 2
entis eſt in dextera ipſius, cor autem ſtulti
in ſiniſtra ipſius. Imò etiam ſtultus quum 3
per viam graditur, væcors eſt; & quicquid
cogitat, dementia eſt. Si ſpiritus principis 4
efferatur in te, ne deſeras locum tuum: quia
curatio remittit peccata multa. Eſt malum 5
quod vidi ſub ſole quaſi errorem prode-
untem in conſpectum principis: Sedere 6
ſtultum in ſummo faſtigio, divites autem in
humilitate ſedere. Vidi ſervos in equis, & 7
principes quaſi ſervos ſuper terram ambu-
lantes. Qui fodit foſſam, incidet in eam: 8
& qui ſepem aperit, mordebit eum ſerpens.
Qui transfert lapides, dolore circa illos 9
afficietur: & qui findit ligna, laborat in
eis, Si ferrum hebetetur: idémque vultum 10
perturbat, & occiſos multiplicat: at ſapi-
entia gnavis eſt emolumento. Si morde- 11
at coluber, abſque incantatione non eſt in
incantatore emolumentum. Verba oris ſapi- 12
entis, laus: labia verò ſtulti demergunt eum.
Initium verborum oris ejus, ſtultitia: & fi- 13
nis oris illius, dedecus atrox. Sultus etiam 14
verba multiplicat. Neſcit homo quid fuerit,
& quid poſt ipſum futurum ſit, quis indi-
cabit ei? Labor ſtultorum fatigat eos, quia 15
neſciunt urbem adire. Væ tibi civitas cu- 16
jus rex eſt puer, & cujus magnates manè
comedunt.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

18 * الحكمة صالحة افضل من آلات الحرب * واذا اخطا واحدا يهلك صلاحا جزيلا *

* الفصل العشر *

1 * الذباب المايت يعفن ويفسد ظرف زيت طيب * قليل من الحكمة كريم افضل من
2 3 شرف الغباوة الجزيل * قلب الحكيم من يمينه * وقلب الغبي من يساره * ولعمري ان
الغبي اذا مضى في طريق يعوز قلبه * وعدمه النطق في جميع الاشياء غباوة هو *
4 * اذا صعد اليك روح المتسلط فلا تتركن له موضعا * فان الشفا يسكن خطايا عظيمة *
5 * يكون شرور عرفت تحت الشمس * كمن قد خرج بغير اختيار من حضرة وجه المتسلط *
6 7 * اعطي به الغبي في معالي جسيمة * والاغنياء يجلسوا في حال ذليل * رايت عبيدا على
8 الخيل * ورؤساء ماشيين على الارض كالعبيد * من يحفر هوة يسقط فيها * ومن ينقض
9 10 سياجا تلدغه حية * من يرفع حجارة يعذب بها * من يشق حطبا يعطب به * ان
11 سقط الحديد عليه * وهو قد ارعج وجها وايد قوة * والحكمة فضل الشجاع * ان
12 لدغته الحية في مساررة فما يوجد للراقي فضل * اقوال فم الحكيم منة * وشفتا الغبي
13 14 تعرقباه * مبدا اقوال فمه غباوة * ونهاية فمه اعوجاج خبيث * والغبي يكثر اقواله *
15 وما يعلم الانسان ما هو الكاين وما هو العتيد ان يكون * لان من يخبره بما وراه * تعب
16 الاغبياء يتعبهم * الذي ما يعرف السلوك في المدينة * الويل لك ايها المدينة التي
ملكك شاب * ورؤساؤك ياكلون بالغداة *

Sapientia melior eſt inſtrumentis bellicis: & quum quis *unum committit peccatum, jacturam facit multorum bonorum.* 18

CAP. X.

Muſcæ mortuæ mucidum reddunt 1
& corrumpunt vas olei ſuaviſſimi.
Parum ſapientiæ honorabilius eſt quàm
gloria ſtultitiæ multa. Cor ſapientis 2
eſt ad dexteram ipſius, & cor inſipi-
entis ad ſiniſtram ipſius. Et profectò 3
inſipienti, quum per viam incedit, cor
deficiet: & defectus rationis ejus in
rebus omnibus, ſtultitia eſt. Cùm 4
aſcenderit ad te ſpiritus poteſtatem ha-
bentis, ne relinquas ei locum: nam
ſanitas reprimit grandia peccata. Sunt 5
mala quæ deprehendi ſub ſole, quale
eſt ejus qui egreditur invitus è con-
ſpectu principis, Et ejus loco ſuffici- 6
tur ſtultus in ſummis ſublimitatibus,
divitibus interim in humili conditione
ſedentibus. Vidi ſervos in equis, & 7
principes ſuper terram incedentes more
ſervorum. Qui foderit foveam, inci- 8
det in eam: & qui demolitur ma-
ceriam, mordebit eum coluber. Qui 9
lapides erigit, cruciabitur in eis: qui
findit ligna, periclitabitur in illis, Si 10
recidat in eum ferrum, quod & vul-
tum ſegnem reddit, & vires confir-
mat: verùm ſapientia eſt generoſi
hominis emolumentum. Nulla reperi- 11
tur in venefico virtus, ſi mordeat eum
coluber dum ſua profert ſecreta. Elo- 12
quia oris ſapientis, gratia: & labia
ſtulti implicant eum. Exordium ſer- 13
monum oris ejus, inſania; & finis
oris ejus, obliquitas perverſa: Et ta- 14
men ſtultus multiplicat ſermones ſuos.
Neſcit autem homo quid factum ſit,
quidque ſit futurum: quis enim indi-
caret ei quid ſecuturum ſit? Labor 15
ſtultorum vexabit illos, qui neſciunt
ambulare per urbem. Heu tibi civitas, 16
cujus rex eſt adoleſcens; & cujus prin-
cipes manè veſcuntur.

tépore in tui principes & :heroum filius tuus rex quòd ,terra tuæ Beatitudines
17 אַשְׁרֵיךְ אֶרֶץ שֶׁמַּלְכֵּךְ בֶּן־חוֹרִים וְשָׂרַיִךְ בָּעֵת
:contignatio se inclinabit pigritiis In .potatione in non &,fortitudine in comedent
18 יֹאכֵלוּ בִּגְבוּרָה וְלֹא בַשְּׁתִי׃ בַּעֲצַלְתַּיִם יִמַּךְ הַמְּקָרֶה
, panem facientes risum Ad .domus distillabit manuum dejectione in &
19 וּבְשִׁפְלוּת יָדַיִם יִדְלֹף הַבָּיִת׃ לִשְׂחוֹק עֹשִׂים לֶחֶם
tua scientia in Etiam .omnibus respondebit argentũ &:vivos lætificabit vinũ &
20 וְיַיִן יְשַׂמַּח חַיִּים וְהַכֶּסֶף יַעֲנֶה אֶת־הַכֹּל׃ גַּם בְּמַדָּעֲךָ
:divitẽ vilipendas ne tui cubilis penetralibus in & ,vilipendas ne regem
מֶלֶךְ אַל־תְּקַלֵּל וּבְחַדְרֵי מִשְׁכָּבְךָ אַל־תְּקַלֵּל עָשִׁיר
annunciabit alis præditus & ,vocem faciet ire cœlorum avis quia
כִּי עוֹף הַשָּׁמַיִם יוֹלִיךְ אֶת־הַקּוֹל וּבַעַל הַכְּנָפַיִם יַגֵּיד
.verbum
דָּבָר׃

CAP. XI. יא

dierum multitudine in quia : aquarum facies super tuum panem Mitte
1 שַׁלַּח לַחְמְךָ עַל־פְּנֵי הַמָּיִם כִּי־בְרֹב הַיָּמִים
quid scies non quia : octo etiam & ,septem partem Da.illũ invenies
2 תִּמְצָאֶנּוּ׃ תֶּן־חֵלֶק לְשִׁבְעָה וְגַם לִשְׁמוֹנָה כִּי לֹא תֵדַע מַה־
super pluviam , nubes fuerint repletæ Si .terram super mali erit
3 יִּהְיֶה רָעָה עַל־הָאָרֶץ׃ אִם־יִמָּלְאוּ הֶעָבִים גֶּשֶׁם עַל־
loco :aquilone in si &,austrum in lignum ceciderit si Et .evacuabũt terram
הָאָרֶץ יָרִיקוּ וְאִם־יִפּוֹל עֵץ בַּדָּרוֹם וְאִם בַּצָּפוֹן מְקוֹם
videns &:seminabit non,ventum Observans .erit ibi ,lignum ceciderit quo
4 שֶׁיִּפּוֹל הָעֵץ שָׁם יְהוּא׃ שֹׁמֵר רוּחַ לֹא יִזְרָע וְרֹאֶה
,venti via quid sciens tu non Quemadmodum .metet non nubes in
5 בֶעָבִים לֹא יִקְצוֹר׃ כַּאֲשֶׁר אֵינְךָ יוֹדֵעַ מַה־דֶּרֶךְ הָרוּחַ
opus scies non sic :plenæ ventre in ossa sicut
כַּעֲצָמִים בְּבֶטֶן הַמְּלֵאָה כָּכָה לֹא תֵדַע אֶת־מַעֲשֵׂה
,tuum semen semina mane In .omnia faciet qui ,Dei
6 הָאֱלֹהִים אֲשֶׁר יַעֲשֶׂה אֶת־הַכֹּל׃ בַּבֹּקֶר זְרַע אֶת־זַרְעֶךָ
erit rectũ hoc si sciens tu non quia :tuã manũ facias quiescere ne vespera in &
וְלָעֶרֶב אַל־תַּנַּח יָדֶךָ כִּי אֵינְךָ יוֹדֵעַ אֵי זֶה יִכְשַׁר
bonum & :lux est dulcis Et.bona unum sicut ipsa ambo an &,illud vel,hoc an
7 הֲזֶה אוֹ־זֶה וְאִם־שְׁנֵיהֶם כְּאֶחָד טוֹבִים׃ וּמָתוֹק הָאוֹר וְטוֹב
vixerit multis annis si Quia .solem videre oculis
8 לַעֵינַיִם לִרְאוֹת אֶת־הַשָּׁמֶשׁ׃ כִּי אִם־שָׁנִים הַרְבֵּה יִחְיֶה
quia,tenebrositatis dierum recordetur &:fuerit lætatus omnibus his in ,homo
הָאָדָם בְּכֻלָּם יִשְׂמָח וְיִזְכֹּר אֶת־יְמֵי הַחֹשֶׁךְ כִּי־
,tua adolescentia in juvenis Lætare .vanitas ,evenit quicquid ,erunt multum
9 הַרְבֵּה יִהְיוּ כָּל־שֶׁבָּא הָבֶל׃ שְׂמַח בָּחוּר בְּיַלְדוּתֶךָ
,tui cordis viis in ambula &,tuarũ electionũ dieb⁹ in tuũ cor tibi sit bonum &
וִיטִיבְךָ לִבְּךָ בִּימֵי בְחוּרוֹתֶךָ וְהַלֵּךְ בְּדַרְכֵי לִבְּךָ
te adducet hæc omnia propter quòd scito & : tuorum oculorũ aspectu in &
וּבְמַרְאֵה עֵינֶיךָ וְדָע כִּי עַל־כָּל־אֵלֶּה יְבִיאֲךָ
fac transire & , tuo corde à iram amove Et .judicium in Deus
10 הָאֱלֹהִים בַּמִּשְׁפָּט׃ וְהָסֵר כַּעַס מִלִּבֶּךָ וְהַעֲבֵר
.vanitas pubertas & adolescentia quia : tua carne à malitiam
רָעָה מִבְּשָׂרֶךָ כִּי־הַיַּלְדוּת וְהַשַּׁחֲרוּת הָבֶל׃

Versio VUL.LAT.

17 Beata terra,cuj⁹ rex nobilis est, & cuj⁹ principes vescuntur in tempore suo,ad reficiendũ, & non ad luxuriã. 18 In pigritiis humiliabitur contignatio, & in infirmitate manuũ perstillabit domus. 19 In risũ faciunt panẽ,& vinũ ut epulentur viventes:& 20 pecuniæ obediunt omnia. In cogitatione tua regi ne detrahas, & in secreto cubiculi tui ne maledixeris diviti : quia & aves cœli portabunt vocẽ tuã, & qui habet pennas annuntiabit sententiam.

CAP. XI.

1 Mitte panẽ tuũ super transeuntes aquas:quia post tempora multa invenies illũ. 2 Da partem septẽ,necnon & octo:quia ignoras quid futurum sit mali 3 sup terrã. Si repletæ fuerint nubes,imbrẽ sup terrã effundent. Si ceciderit lignũ ad Austrum, aut ad Aquilonẽ, in quocunq; 4 loco ceciderit,ibi erit. Qui observat ventũ, non seminat : & qui considerat nubes, nunquã 5 metet. Quomodò ignoras quæ sit via spiritûs, & quâ ratione compingantur ossa in ventre prægnãtis;sic nescis opera Dei, 6 qui fabricator est omniũ. Manè semina semen tuũ, & vesperè ne cesset man⁹ tua:quia nescis quid magis oriatur,hoc aut illud;& si utrumq; simul,meli⁹ 7 erit. Dulce lumen, & delecta- 8 bile est oculis videre Solẽ. Si annis multis vixerit homo,et in his omnib⁹ lætat⁹ fuerit,meminisse debet tenebrosi temporis, & dierũ multorũ:qui cùm venerint,vanitatis arguentur præ- 9 terita. Lætare ergò juvenis in adolescentia tua,& in bono sit cor tuũ in dieb⁹ juventutis tuæ, & ambula in viis cordis tui,et in intuitu oculorũ tuorum : & scito ꝙ pro omnib⁹ his adducet 10 te Deus in judiciũ. Aufer iram à corde tuo, & amove malitiã à carne tua. Adolescentia enim & voluptas vana sunt.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

17 † Μακαρία σὺ γῆ, ἧς ὁ βασιλεύς σου υἱὸς (ι) ἐλευθέρων, † καὶ οἱ ἄρχοντές σου πρὸς καιρὸν φάγονται ἐν δυνάμει, † καὶ οὐκ αἰσχυνθήσονται. 18 † Ἐν ὀκνηρίαις ταπεινωθήσεται ἡ δόκωσις, † καὶ ἐν ἀργίᾳ χειρῶν (κ) στάξει ἡ οἰκία. 19 Εἰς γέλωτα ποιοῦσιν ἄρτον, † (λ) καὶ οἶνον καὶ ἔλαιον τοῦ εὐφρανθῆναι ζῶντας, † καὶ τοῦ (μ) ἀργυρίου ταπεινώσει ἐπακούσεται τὰ πάντα. 10 † Καί γε ἐν συνειδήσει σου βασιλέα μὴ καταράσῃ, † καὶ ἐν ταμιείοις κοιτώνων σου μὴ καταράσῃ πλούσιον· † ὅτι πετεινὸν τοῦ οὐρανοῦ ἀποίσει τὴν φωνήν σου, † καὶ ὁ (ν) ἔχων τὰς πτέρυγας ἀπαγγελεῖ λόγον σου.

MS.A. (ι) ἐλευθέρου, (κ) στενάξει (λ) καὶ οἶνος εὐφραίνει ζῶντας, (μ) ἀργυρίου ἐπακούσεται σὺν τὰ πάντα. (ν) ἔχων πτέρυγας

17 Beata tu terra,cujus rex tuus,filius ingenuorum,et principes tui ad tẽpus comedent (z)in fortitudine, et (ω)non confundentur. 18 In pigritiis humiliabitur contignatio:& in segnitie manuum stillabit domus. 19 In risu faciunt panẽ,& (aa)vinũ,& oleum ad lætificandũ viventes;& argento (bb)humiliatione obedient omnia. 20 Etiam in conscientia tua regi ne maledixeris:& in penetralib⁹ cubiliũ tuorũ ne(cc)maledixeris diviti: quia volucris cœli auferet vocem tuam: & (dd)habens pennas annuntiabit verbum tuum.

ΚΕΦ. ια΄.

1 † Ἀπόστειλον τὸν ἄρτον σου ἐπὶ πρόσωπον τοῦ ὕδατος, † ὅτι ἐν πλήθει (α) ἡμερῶν εὑρήσεις αὐτόν. 2 † Δὸς μερίδα τοῖς ἑπτά, καί γε τοῖς ὀκτώ, † ὅτι οὐ γινώσκεις τί ἔσται πονηρὸν ἐπὶ τῆς γῆς. 3 † (β) Ἐὰν πληρωθῶσι τὰ νέφη ὑετοῦ, ἐπὶ τῆς γῆς ἐκχέουσιν· † καὶ ἐὰν πέσῃ ξύλον ἐν τῷ Νότῳ, καὶ ἐὰν ἐν τῷ Βορρᾷ, τόπῳ † οὗ 4 πεσεῖται τὸ ξύλον, ἐκεῖ ἔσται. † Τηρῶν ἄνεμον οὐ σπείρει, † καὶ βλέπων ἐν ταῖς νεφέλαις οὐ θερίσει. 5 † Ἐν οἷς οὐκ ἔστι γινώσκων τίς ἡ ὁδὸς τοῦ πνεύματος, † ὡς ὀστᾶ ἐν γαστρὶ (γ) κυοφορούσης, οὕτως οὐ γνώσῃ τὰ ποιήματα τοῦ Θεοῦ, ὅσα ποιήσει τὰ σύμπαντα. 6 (δ) † Ἐν τῷ πρωῒ σπεῖρον τὸ σπέρμα σου, † καὶ ἐν ἑσπέρᾳ μὴ ἀφέτω ἡ χείρ σου, † ὅτι οὐ γινώσκεις ποῖον στοιχήσει, ἢ τοῦτο ἢ τοῦτο, † καὶ ἐὰν τὰ δύο ἐπὶ τὸ αὐτό, (ε) ἀγαθά. 7 † Καὶ γλυκὺ τὸ φῶς, καὶ ἀγαθὸν τοῖς ὀφθαλμοῖς † τοῦ βλέπειν σὺν τὸν ἥλιον. 8 † Ὅτι καὶ ἐὰν ἔτη πολλὰ ζήσεται ὁ ἄνθρωπος, † ἐν πᾶσιν αὐτοῖς εὐφρανθήσεται, † καὶ μνησθήσεται τὰς ἡμέρας τοῦ σκότους, † ὅτι πολλαὶ ἔσονται. † πᾶν τὸ ἐρχόμενον ματαιότης. 9 † Εὐφραίνου νεανίσκε ἐν νεότητί σου, καὶ ἀγαθυνάτω σε ἡ καρδία σου ἐν ἡμέραις νεότητός σου, † καὶ περιπάτει ἐν ὁδοῖς καρδίας σου ἄμωμος † (ζ) καὶ μὴ ἐν ὁράσει ὀφθαλμῶν σου. † καὶ γνῶθι ὅτι ἐπὶ πᾶσι τούτοις ἄξει σε ὁ Θεὸς ἐν κρίσει. 10 † Καὶ ἀπόστησον θυμὸν ἀπὸ καρδίας σου, † (η) καὶ παράγαγε πονηρίαν ἀπὸ σαρκός σου, † ὅτι ἡ νεότης καὶ ἡ ἄνοια ματαιότης.

MS.A. (α) τῶν ἡμερῶν (β) Ἐὰν πληρωθῶσιν (γ) τῆς κυοφορούσης, (δ) Ἐν πρωΐᾳ (ε) ἀγαθόν. (ζ) καὶ ἐν ὁράσει (η) καὶ παράγαγε

CAP. XI.

1 Mitte panem tuũ super faciem aquæ: quia in multitudine dierum invenies illum. 2 Da partem ipsis septem,& quid ẽ ipsis octo: quia non scis,quid futurum malum sit super terrã. 3 Si repletæ fuerint nubes pluviã,super terrã (a)effundunt. Et si ceciderit (b) lignum ad Austrum, &,si ad Aquilonem;loco,ubi ceciderit lignum; (c)ibi erit. 4 Qui observat ventum, non seminat:et qui aspicit nubes, non metet. 5 In (d) quib⁹ nõ est cognoscẽs,quæ sit via spiritûs,sicut ossa in utero prægnãtis;sic non cognosces opera Dei,quæ faciet omnia. 6 In(e)matutino semina semen tuum : & (f)ad vesperũ (g)ne remittat manus tua:quoniam nescis,quid (h)rectè procedet,aut hoc,an illud: & si duo in 7 idipsum; bona. Et dulce lumen,& 8 bonum oculis videre Solem: Quia & si annis multis vixerit homo; in (i) omnibus his lætabitur, & (k) recordabitur dierum tenebrarum, quia multi erunt. Omne veniens est 9 vanitas. Lætare adolescens in juventute tua: & (l) bonum faciat te cor tuum in diebus adolescentiæ tuæ: & ambula in viis cordis tui (m)immaculatus,et non in intuitu oculorum tuorũ. Et scito,quia super omnibus his adducet te Deus in 10 judiciũ. Et repelle irã à corde tuo: & aufer malitiã à carne tua;quia adolescentia & stultitia vanitas est.

תַּרְגּוּם TARGUM.

17 טב ליך ארעא דישראל בעדן די ימלוך עלך חזקיהו בר אחז די הוא מן יחוס בית דוד
מלכא דישראל די הוא גבר תקיף באוריתא ונפק ידי חובת פקודיא ורברבניך בתר
דמקרבין תמידא אכלין לחמא בזמן ארבע שעין מן עמל ידיהון בגבורת אוריתא ולא
18 בחלשות ובסמיות עינא : בחלשות עסק אוריתא ופקודיא מתמסכן גבר מבנין
ובמכיכות תפקדתא דאתפקדת אתתא למנטר מן ריחוק סואבות דמא ולא נטרא
19 מתעבדא דוותא בגו ביתה : לחוכא עבדין צדיקיא לחם לפרנסא עניין כפינין וחמרא
דמזגין לדצחין יהא להון לחדוא לעלמא דאתי וכסף פורקניהון יסהד עליהון זכותא
20 לעלמא ההוא דאתי באנפי כולא : אף במנדעך בחביוני לבך מלכא לא תלוט ובאדרון
בית משכבך לא תלוט חכימא ארום רזיאל מלאכא מכריז בכל יומא מן שמיא על טורא
דחורב ומהלך קליה בכל עלמא ואליהו כהנא רבא אזל ופרח באויר שמיא כנשרא מרי
נפין ומחוי מלין דמתעבדין בטמורתא לכל דיירי ארעא : יא
1 אושיט לחם פרנסותך לעניי דאזלין בספינן על אפי מיא ארום בתר עדן יומין סגיאין
2 תמן תשכח אגריה לעלמא דאתי : הב הולק טב מן זרעא לחקלך בתשרי ולא תתמנע
מלמזרע אף בכסליו ארום לא תנדע מה יהי בישא עלוי ארעא אי חרפי נצחן אי אפלי :
3 אין מתמלין ענניא מטרא עלוי ארעא מערן ית מיהון בגין זכותא דצדיקיא ואין לית זכו
בדרא ההוא בימא ובמדברא נחתין דלא יתהנון מנהון בני אנשא ואי אתגזר מן שמיא
למנפל מלכא ויעטוהי מן שרורותהון מן קדם מימרא דשמיא הוי סובעא וכפנא בדרומא
4 או בצפונא אתר דאתגזר למתקימא ההיא עיטא משתלחא למהוי : גבר דנטיר חרשין
וקוסמין לא יעבד טב לעלם ודמסתכל במוליא לא מגבי אגר ארום חרשין מתילין
5 לרוחא דלא מתפס בידוי דבר נש ומוליא מתילן לענני שמיא דאזלו ולא תיבין : היכמה
דליתך ידע אכדין יהלך רוח נשמתא דחיי בגוף עולמא שלילא דשרי במעינא דאמיה
מעברא והיכמה דלא תנדע או דכר או נוקבא עד זמן דאתיליד הכדין ליתך ידע ית
6 עובדא דיי דעבד בחוכמתא ית כולא : ביומי עולמתך תסב אתתא ותוליד בנין ולעדן
סיבותך לא תשבוק אתת חולקך מלמילד בנין ארום לא אשתמודע לך אידין מנהון
7 אתבחר למהוי טב הדין אי דין אי תרויהון כחדא טבין : ובסים נהורא דאוריתא וטב
לאנהרא עינין חשיכין למחזי יקר אפי שכנתא דעתיד לאנהרא אפי צדיקיא מן זיו
8 שכנתא ולמהוי שופריהון כשמשא : ארום אם יומין סגיאין חיי אנשא בכולהון חזי ליה
למחדי ולמעסק באוריתא דיי יהא דכיר ית יומי חשוכא דמותא ולא יחוב ארום סגיאין
אנון יומיא דישכוב שכיבא בבית קבורתא לקבלא דינא מן שמיא בחיוהי ברחים כל
9 זמן דייתי עלוהי פורענותא על הבלותא די עבד : חדי עולימא ביומי עולימותך ויהי לבך
טב עלך ביומי רביותך ואזל בענותנותא עם אורחי לבך ותהי זהיר בחזיוני עינך ולא
10 תסתכל בביש ואשתמודע לך ארום על כל אלין עתיד יי לאעלותך בדינא : ותעדי רגיז
מלבך ולא תגרום ביש על בסרך ארום עולימות ויומי אוכמות שער הבלו :

PARAPH CHALD. Versio Latina.

17 Bene erit tibi terra *Israel* quo tempore regnabit super te *Hizkiahu filius Achaz, qui est de prosapia domus David regis Israel,quòd sit* vir valens in Lege, *& elapsus è manibus reatus præceptorum*,& magnates tui postquàm obtulerint juge sacrificium,comedent panem *tempore quatuor horarum* ex labore manuum suarum in fortitudine Legis, & non in debilitate & in cæcitate oculorum. 18 In debilitate studii Legis & præceptorum depauperatur vir ab ædificio: & in negligentia præcepti quo mandatum est mulieri ut custodiat se ab abominatione contaminationis sanguinis,et non custodit se, fit tristitia intra domum *ejus*. 19 Ad gaudium faciunt justi panem,ad alendum pauperes esurientes, & vinum quod miscent sitientibus,erit eis in lætitiam in seculo venturo,& argentum redemptionis eorum testabitur pro eis meritum in seculo ipso *venturo* in conspectu omniũ. 20 Etiam in conscientia tua in absconditis cordis tui Regi ne maledicas, & in penetrali domus cubiculi tui ne maledicas *sapienti*: etenim *Raziel* angelus *clamat quotidiè è cœlis super montẽ Horeb, & permeat vox ej⁹ universũ mundũ* ; *& Eliahu sacerdos magn⁹* it volãs in aëre cœli velut aquila alata,& nũtiat sermones qui fiunt in latibulo omnib⁹ habitatorib⁹ terræ.

CAP. XI.

1 Porrige *panẽ alimenti tui* pauperib⁹ qui ambulant in navib⁹ sup facies aquarum, quoniam post temp⁹ dierum multorũ *illic* invenies mercedẽ ejus in seculo venturo. 2 Dato partem bonam ex semine agro tuo in Tisri,et ne cesses seminare etiam in Kasleu: etenim nescies quid erit mali super terram *an præcocia prævalitura sint an serotina*. 3 Si impletæ fuerint nubes pluvia, super terram effundent aquas suas *propter meritum justorũ;si vero nullum fuerit meritum in generatione ista, in mare & in desertum descendunt, ne commodum percipiant ex eis filii hominis* : & si decretum fuerit de cœlo ut cadat rex & consiliarii ejus de principatu eorum, ex auctoritate dicti Domini fiet saturitas aut fames; in Meridiem aut Septentrionem,ubicunq; decretum fuerit ut firmetur illud consilium, mittitur ut fiat. 4 Vir qui observaverit incantatores & ariolos, non faciet bonum in seculo: & qui studet in astris,non congregat mercedem: etenim incantatores assimilantur vento qui non apprehenditur manib⁹ filii hominis, & astra assimilantur nubibus cœli, quæ eunt,& non revertuntur. 5 Quemadmodũ non cognoscis quonam modo ibit spirit⁹ animæ vitæ in corpus infantis abortivi,qui manet in utero matris suæ prægnantis;& quemadmodum non cognosces an mas aut fœmina fuerit, quoad nascatur: sic tu non cognoscis op⁹ Dñi qui facit in sapientia omnia. 6 In die juventutis tuæ accipies uxorem, & gignes filios : & in tempore senectutis tuæ ne dimittas uxorem,quæ est pars tua, quo min⁹ generes filios: etenim non notũ est tibi quisnam ex illis electus sit,ut sit bon⁹ hic an ille,an ambo boni pariter sint futuri. 7 Et dulcis est lux *Legis*,& bona ad illuminandũ oculos caligantes, ut videant gloriã faciei majestatis [*Domini*,] quia futurũ est ut illuminentur facies justorum ex splendore majestatis [*ejus*,] & ut sit pulchritudo eorum ut Solis. 8 Etenim si dies multi vitæ hominis fuerint,in omnib⁹ illis decet eũ gaudere,& studere in lege Dñi: erit memor dierũ tenebrarũ mortis,& non peccabit,quia multi sunt dies quib⁹ jacebit mortu⁹ in domo sepulturæ,[*decetque eum*] suscipere judiciũ à cœlo *in vita sua cũ dilectione* omni tempore quo venerit sup eũ punitio,propter vanitatẽ quam fecit. 9 Lætare puer in dieb⁹ pueritiæ tuæ,& sit cor tuũ bonũ sup te in dieb⁹ adolescentiæ tuæ,& ambulato in humilitate cũ viis cordis tui,et esto caut⁹ in visu oculorũ tuorũ,ut non contempleris malũ,& notum sit tibi quòd propter omnia hæc futurum est ut Dñs introducat te in judicium. 10 Et removebis iracundiam à corde tuo,ne moliaris malum super carnem tuam; etenim adolescentia & dies nigredinis capillorum vanitas.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܛܘܒܝܟܝ ܡܕܝܢܬܐ ܕܡܠܟܟܝ ܒܪ ܚܐܪ̈ܐ ܀ ܘܪܘܪ̈ܒܢܝܟܝ ܒܥܕܢܗܘܢ ܐܟܠܝܢ܀ 17
ܒܓܢܒܪܘܬܐ ܘܠܐ ܒܒܗܬܬܐ. * ܒܡܟܝܟܘܬܐ ܢܬܡܟܟ ܡܛܠܠܐ. ܘܒܡܫܪܝܘܬ ܐܝ̈ܕܝܐ ܢܕܠܦ 18
ܒܝܬܐ. * ܠܓܚܟܐ ܥܒܕܝܢ ܠܚܡܐ ܘܚܡܪܐ ܘܡܫܚܐ ܀ ܕܢܚܕܘܢ ܚ̈ܝܐ. ܘܟܣܦܐ 19
ܡܡܟܟ ܘܡܛܥܐ ܠܗܘܢ. ܠܟܠ. * ܐܦ ܒܡܕܥܟ ܡܠܟܐ ܠܐ ܬܠܘܛ. ܘܒܬܘܢܐ ܕ 20
ܡܫܟܒܟ. ܠܐ ܬܠܘܛ ܠܥܬܝܪܐ. ܡܛܠ ܕܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ ܢܘܒܠ ܩܠܟ ܀ ܘܡܪܐ
ܕܟܢܦܐ ܢܚܘܐ ܦܬܓܡܝܟ.

O te beatam civitatem cujus rex ingenuus 17
eſt, & cujus magnates ſuo tempore comedunt,
ad ſtrenuitatem, & non ad compotandum.
Per pigritiam inclinabitur contignatio, 18
& per remiſſionem manuum perſtillabit
domus. Ad hilaritatem facta ſunt panis & 19
vinum atque oleum, ut viventes exhilarent :
pecunia verò penitùs eos deprimit ac ſeducit.
Ne in mente quidem tua regi maledixeris 20
: & in cubiculo cubilis tui ne maledicas
diviti : nam volucre cœli deferet vocem
tuam, & dominus volucris patefaciet ſermones
tuos.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܐ *

* ܫܕܪ ܠܚܡܟ ܥܠ ܐܦܝ ܡ̈ܝܐ. ܡܛܠ ܕܒܣܘܓܐܐ ܕܝܘܡܬܐ ܬܫܟܚܝܘܗܝ. * ܗܒ 1 2
ܡܢܬܐ ܠܫܒܥܐ ܐܦ ܠܬܡܢܝܐ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܝܕܥ ܐܢܬ ܡܢܐ ܒܝܫܬܐ ܠܗܘܐ ܥܠ ܐܪܥܐ.
* ܐܢ ܢܬܡܠܘܢ ܥܢ̈ܢܐ ܡܛܪܐ ܀ ܥܠ ܐܪܥܐ ܢܪܩܘܢ. ܘܐܢ ܢܦܠ ܩܝܣܐ ܠܬܝܡܢܐ. ܐܘ 3
ܠܐܬܪܐ ܕܓܪܒܝܐ ܀ ܐܬܪ ܕܢܦܠ ܩܝܣܐ ܬܡܢ ܢܗܘܐ. * ܕܢܛܪ ܠܪܘܚܐ ܠܐ ܙܪܥ. 4
ܘܕܚܐܪ ܒܥܢ̈ܢܐ ܠܐ ܚܨܕ ܀ * ܡܛܠ ܕܠܐ ܝܕܥ ܐܢܬ ܡܢܐ ܗܝ ܐܘܪܚܐ ܕܪܘܚܐ. ܐܝܟܢܐ 5
ܓܪܡ̈ܐ ܕܒܛܢܬܐ ܕܒܛܢܐ ܀ ܗܟܢܐ ܠܐ ܝܕܥ ܐܢܬ ܥܒ̈ܕܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܟܠ ܕܥܒܕ. * ܟܠ ܨܦܪ 6
ܙܪܘܥ ܙܪܥܟ. ܘܒܪܡܫܐ ܠܐ ܬܫܒܘܩ ܐܝܕܟ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܝܕܥ ܐܢܬ ܐܝܢܐ ܢܟܫܪ ܀ ܐܘ ܗܢܐ.
ܐܘ ܗܢܐ. ܘܐܢ ܬܪܝܗܘܢ ܐܝܟ ܚܕ ܢܛܒܘܢ. * ܚܠܝܐ ܢܘܗܪܐ ܘܫܦܝܪ ܠܥܝ̈ܢܐ. ܘܡܚܙܐ 7
ܠܚܙܝܢ ܫܡܫܐ. * ܡܛܠ ܕܐܢ ܫܢ̈ܝܢ ܣܓܝ̈ܐܢ ܢܚܐ ܒܪܢܫܐ. ܒܟܠܗܝܢ ܢܚܕܐ. ܘܢܬܕܟܪ 8
ܠܝܘܡ̈ܝ ܚܫܘܟܐ. ܡܛܠ ܕܣܓܝ̈ܐܝܢ ܢܗܘܘܢ. ܟܠ ܕܐܬܐ ܗܒܠܐ. * ܚܕܝ ܒܛܠܝܘܬܟ 9
ܛܠܝܐ ܀ ܘܢܛܐܒ ܠܟ. ܘܗܠܟ ܒܐܘܪܚܬܐ ܕܠܒܟ. ܘܒܚܙܘܐ ܕܥܝ̈ܢܝܟ. ܘܕܥ
ܕܥܠ ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ. ܡܝܬܐ ܠܟ ܡܪܝܐ ܒܕܝܢܐ.

CAP. XI.

Mitte panem tuum ſuper aquarum ſuperficiem, 1
quia poſt multos dies reperies illum.
Da portionem ſeptem, imò octo : quia neſcis 2
quid mali futurum ſit ſuper terram. Si 3
nubes impleantur pluviâ, ſuper terram effundent
eam. Et ſi lignum cadat ad Auſtrum,
aut in plagam Aquilonarem, quocunque ceciderit
lignum, ibi manebit. Qui ventum 4
obſervat, non ſeminabit : & qui ſpectat nubes,
non metet : Quoniam neſcis quæ ſit 5
via venti. Ut enim prægnantem quæ concipit,
ſic ignoras opera Domini omnia quæ facit.
Quolibet mane ſemina ſemen tuum, & 6
veſpere ne remittas manum tuam : neſcis
enim utrum proſperè ſit habiturum, an hoc,
an illud : quòd ſi utrumque ſimul, eò meliora.
Gratum eſt lumen & jucundum oculis, 7
præſertim verò ſolem videntibus. Nam 8
ſi multis annis vivat homo, in illis omnibus
lætetur, & recordetur dierum tenebrarum,
quoniam plurimi erunt : quicquid venturum
eſt, vanitas eſt. In diebus adoleſcentiæ tuæ 9
lætare adoleſcens, & fruere bonis, & ambula
in viis cordis tui, & in aſpectu oculorum
tuorum : at ſcito quòd pro his omnibus
inducet te Dominus in judicium.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* مغبوطة انت ايها الارض الذي ملكك ابن حر * ورؤساؤك ياكلون في وقت الطعام بقوة وما 17
يخجلون * بانواع الكسل يتحنى السقف * وببطالة الايادي يدلف البيت * يصنعون الخبز 18
ضحكا * والخمر يسر الاحياء * وكل الاشياء تذل وتطيع للفضة * ومع هذا لا تلعنن انت في 19 20
سريرتك ملكا * وفي خزاين مساكنك لا تلعنن موسرا * فان طاير السماء يسير صوتك *
وذو الاجنحة يخبر قولك *

Fœlix es tu O terra, cujus rex filius eſt 17
ingenuus, & cujus principes tempore
comeſtionis veſcuntur generosè, nec erubeſcunt.
Variis pigritiæ generibus flectitur 18
laqueare, & otio manuum perſtillat domus.
Panem faciunt riſum, 19
& vinum lætificat viventes : & omnia
ſubjiciuntur & obediunt argento. Præterea 20
ne maledicas tu regi in ſecreto tuo,
& in conclavibus ædium tuarum ne maledicas
diviti : nam volucre cœli perferet
vocem tuam, & alatum renuntiabit
ſermonem tuum.

* الفصل الحادي عشر *

* ارسل خبزك على وجه الماء * فانك ستجده في كثرة الايام * اعط السبعة نصيبا وامنح موفرا 1 2
للثمانية * فانك ما تعرف ماذا يكون على الارض شرير * اذا كلت السحاب المطر سكب 3
على الارض * واذا سقطت خشبة من القبلة واذا سقطت في موضع الشمال * حيث تسقط
الخشبة هناك تكون * من يرصد الرياح ما يزرع * ومن ينظر الى السحب ما يحصد * 4
* الامور التي لم يوجد فيها احد يعرف ما هو طريق الروح * كالعظام في بطن الحبلى 5
كذلك ما تعرف البرايا صنايع الله التي يعملها كلها * من الغدوات ازرع زرعك * وفي المساوات 6
لا تطلق يدك بطالة * فانك ما تعلم ايهما ينبت ويستوا اما ذا واما ذاك * وان ابتدعا
كلاهما معا فذاك حظ صالح * والنور حلو وصالح للعينين لتبصر الشمس معه * لان الانسان 7 8
اذا عاش سنين كثيرة * يسر بها كلها ويتذكر ايام الظلمة * فانها تكون كثيرة * كل امر
وارد باطل * ايها الشاب افرح في حداثتك * وليبتهج قلبك في ايام شبيبتك * وتصرف 9
غير معيب في طرق قلبك * ولا تتصرف في معاينة عينيك * واعلم ان بعد هذه الخطوب
سيحشرك الله الى الدينونة *

CAP. XI.

Mitte panem tuum ſuper aquæ ſuperficiem : 1
quoniam reperies eum inter
multitudinem dierum. Da portionem 2
ſeptem, & octo abundè largire : quia
neſcis quid mali futurum ſit ſuper terram.
Cùm complentur nubes pluviâ, effunditur 3
ſuper terram. Cúmque ceciderit
lignum ab Auſtro, & cùm ceciderit
in plagam Aquilonarem, quocunque ceciderit
lignum, ibi manebit. Qui obſervat 4
ventos, non ſeret : & qui reſpicit ad
nubes, non metet. Res nimirum *ſunt, in* 5
quibus nemo reperitur qui ſciat quænam
ſit via venti. Ut oſſa in utero gravidæ,
ſic ignorant creaturæ opera Dei cuncta
quæ facit. A matutinis horis *ſere ſemen* 6
tuum, & in veſpertinis ne relinquas manum
tuam otioſam : quia neſcis utrùm
naſcetur & adoleſcet, hoc ne, an illud :
quòd ſi utrunque ſimul exoriatur, optima
ſanè fortuna. Porrò lux dulcis eſt 7
& commoda oculis, ut cum ea ſolem videas.
Nam ſi homo multos vivat annos, 8
in omnibus lætetur, & recordetur
dierum tenebrarum (multi ſiquidem
erunt :) res omnis ventura vana eſt.
Heus adoleſcens, lætus eſto in adoleſcentia 9
tua, & exultet cor tuum in
diebus juventutis tuæ, & inculpatus verſare
in viis cordis tui, & ne ambules
in aſpectu oculorum tuorum : &
ſcito quòd poſt ſermones iſtos adiget te
Deus ad judicium.

קהלת: יב

CAP. XII. יב

non quo usque : *tuarum electionum* diebus in tui creatoris memento Et
וּזְכֹר אֶת־בּוֹרְאֶיךָ בִּימֵי בְּחוּרֹתֶיךָ עַד אֲשֶׁר לֹא־ 1
eis in mihi Non ,dicas quibus anni attingant & , mali dies veniant
יָבֹאוּ יְמֵי הָרָעָה וְהִגִּיעוּ שָׁנִים אֲשֶׁר תֹּאמַר אֵין־לִי בָהֶם
, luna & , lux & , sol obtenebrescat *non* Donec .voluntas
חֵפֶץ׃ עַד אֲשֶׁר לֹא־תֶחְשַׁךְ הַשֶּׁמֶשׁ וְהָאוֹר וְהַיָּרֵחַ 2
die In .pluviam post nubes revertantur & : stellæ &
וְהַכּוֹכָבִים וְשָׁבוּ הֶעָבִים אַחַר הַגָּשֶׁם׃ בַּיּוֹם 3
cessabunt & :*virtutis viri pervertentur* &,domus custodes se cōmovebūt qua
שֶׁיָּזֻעוּ שֹׁמְרֵי הַבַּיִת וְהִתְעַוְּתוּ אַנְשֵׁי הֶחָיִל וּבָטְלוּ
.*fenestris in* videntes tenebrescent & ,diminuerunt quia , molares
הַטֹּחֲנוֹת כִּי מִעֵטוּ וְחָשְׁכוּ הָרֹאוֹת בָּאֲרֻבּוֹת׃
cōsurget & : molæ *vocis* humilitate in , platea in *fores* claudentur Et
וְסֻגְּרוּ דְלָתַיִם בַּשּׁוּק בִּשְׁפַל קוֹל הַטַּחֲנָה וְיָקוּם 4
excelso de Etiam .cantici filiæ omnes *incurvabuntur* & ,volucris vocē ad
לְקוֹל הַצִּפּוֹר וְיִשַּׁחוּ כָּל־בְּנוֹת הַשִּׁיר׃ גַּם מִגָּבֹהַּ 5
, *locusta erit oneri & ,amygdalus florebit &* , via in *consternati* &,timebūt
יִרָאוּ וְחַתְחַתִּים בַּדֶּרֶךְ וְיָנֵאץ הַשָּׁקֵד וְיִסְתַּבֵּל הֶחָגָב
, sui seculi domum ad homo *vadens* quoniā : *aviditas dissipabit* &
וְתָפֵר הָאֲבִיּוֹנָה כִּי־הֹלֵךְ הָאָדָם אֶל־בֵּית עוֹלָמוֹ
,argēteus funis elongetur *non* Donec .plangentes platea in circuibūt &
וְסָבְבוּ בַשּׁוּק הַסֹּפְדִים׃ עַד אֲשֶׁר לֹא־יֵרָחֵק חֶבֶל הַכֶּסֶף 6
,*scaturiginem* super hydria conteratur & : aurea lenticula cōfringatur &
וְתָרֻץ גֻּלַּת הַזָּהָב וְתִשָּׁבֶר כַּד עַל־הַמַּבּוּעַ
terram *super* pulvis revertetur *Et* .cisternam ad rota cōfringatur &
וְנָרֹץ הַגַּלְגַּל אֶל־הַבּוֹר׃ וְיָשֹׁב הֶעָפָר עַל־הָאָרֶץ 7
.illum dedit qui , Deum ad revertetur spiritus & : fuit *quod sicut*
כְּשֶׁהָיָה וְהָרוּחַ תָּשׁוּב אֶל־הָאֱלֹהִים אֲשֶׁר נְתָנָהּ׃
fuit quia amplius Et .vanitas omnia ,Choheleth dixit vanitatū Vanitas
הֲבֵל הֲבָלִים אָמַר הַקּוֹהֶלֶת הַכֹּל הָבֶל׃ וְיֹתֵר שֶׁהָיָה 8 9
,fecit auscultare & ,populum scientiam docuit adhuc : sapiens Choheleth
קֹהֶלֶת חָכָם עוֹד לִמַּד־דַּעַת אֶת־הָעָם וְאִזֵּן
invenire Choheleth Quæsivit .*multum* parabolas direxit ,investigavit &
וְחִקֵּר תִּקֵּן מְשָׁלִים הַרְבֵּה׃ בִּקֵּשׁ קֹהֶלֶת לִמְצֹא 10
sapientum Verba .veritatis verba,*rectitudinis* scripturam &:*voluntatis* verba
דִּבְרֵי־חֵפֶץ וְכָתוּב יֹשֶׁר דִּבְרֵי אֱמֶת׃ דִּבְרֵי חֲכָמִים 11
sunt dati ,*collectionum* auctores , plantati clavi tanquā & stimuli tanquam
כַּדָּרְבֹנוֹת וּכְמַשְׂמְרוֹת נְטוּעִים בַּעֲלֵי אֲסֻפּוֹת נִתְּנוּ
libros *facere* .sis monitus mi fili *illis ab* amplius Et .uno pastore à
מֵרֹעֶה אֶחָד׃ וְיֹתֵר מֵהֵמָּה בְּנִי הִזָּהֵר עֲשׂוֹת סְפָרִים 12
verbi Finis .carnis *labor multum lectionis* & : finis non *multum*
הַרְבֵּה אֵין קֵץ וְלַהַג הַרְבֵּה יְגִעַת בָּשָׂר׃ סוֹף דָּבָר 13
quia ,custodi ej⁹ mandata & , time Deum : est auditus omnis
הַכֹּל נִשְׁמָע אֶת־הָאֱלֹהִים יְרָא וְאֶת־מִצְוֹתָיו שְׁמוֹר כִּי־
adducet Deus opus omne Quia .homo omnis hoc
זֶה כָּל־הָאָדָם׃ כִּי אֶת־כָּל־מַעֲשֶׂה הָאֱלֹהִים יָבִא 14
.malum sive ,bonum sive : occultum omne super judicium in
בְּמִשְׁפָּט עַל כָּל־נֶעְלָם אִם־טוֹב וְאִם־רָע׃

Versio VUL. LAT.

CAP. XII.

1 MEmento Creatoris tui in
dieb⁹ juventutis tuæ,antequàm
veniat temp⁹ afflictionis,& appropinquent
anni,de quib⁹ dicas;Non
2 mihi placent : Antequā
tenebrescat Sol,& lumen,
& luna, & stellæ,& revertantur
3 nubes post pluviā:Quando
commovebuntur custodes domûs,
& nutabunt viri fortissimi,
& otiosæ erūt molentes in
minuto numero, & tenebrescent
4 videntes p foramina: Et
claudent ostia in platea,in humilitate
vocis molentis,& consurgent
ad vocem volucris, &
obsurdescent omnes filiæ carminis.
5 Excelsa quoq; timebūt,
& formidabunt in via,florebit
amygdalus, impinguabitur locusta,
& dissipabitur capparis:
quoniam ibit homo in domum
æternitatis suæ,& circuibūt in
6 platea plangentes. Antequàm
rumpatur funiculus argenteus,
& recurrat vitta aurea,& conteratur
hydria super fontē, &
confringatur rota super cisternam,
7 Et revertatur pulvis in
terrā suam unde erat,& spirit⁹
redeat ad Deū,qui dedit illum.
8 Vanitas vanitatū, dixit Ecclesiastes,
9 & omnia vanitas. Cúmque
esset sapientissim⁹ Ecclesiastes,
docuit populū, & enarravit
quæ fecerat:& investigans
composuit parabolas multas.
10 Quæsivit verba utilia, & conscripsit
sermones rectissimos,ac
11 veritate plenos. Verba sapientiū
sicut stimuli, & quasi clavi
in altū defixi, quæ p magistrorum
consiliū data sunt à pastore
12 uno. His ampliùs,fili mi,ne
requiras.Faciēdi plures libros
null⁹ est finis : frequénsq; meditatio,
13 carnis afflictio est: Finē
loquendi pariter omnes audiamus.
Deū time, & mandata ej⁹
observa : hoc est enim omnis
14 homo:Et cuncta,quæ fiunt,adducet
De⁹ in judiciū pro omni
errato,sive bonum, sive malum
illud sit.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

ΚΕΦ. ιβʹ.

1 †ΚΑὶ μνήσθητι τοῦ κτίσαντός σε †ἐν ἡμέραις
νεότητός σου, †(α)ἕως ὅτου μὴ ἔλθωσιν
(β) αἱ ἡμέραι τῆς κακίας, †ϗ φθάσωσιν ἔτη
ἐν οἷς ἐρεῖς, †Οὐκ ἔστι μοι ἐν αὐτοῖς θέλημα.
2 †Ἕως οὗ μὴ σκοτισθῇ ὁ ἥλιος ϗ τὸ
φῶς, †ϗ ἡ σελήνη ϗ οἱ ἀστέρες, †ϗ (γ) ἐπιστρέψωσι
3 τὰ νέφη (δ)ὀπίσω τοῦ ὑετοῦ· †Ἐν
ἡμέρᾳ (ε) ᾗ ἐὰν σαλευθῶσι φύλακες τῆς οἰκίας,
†ϗ διαστραφῶσιν ἄνδρες τῆς δυνάμεως,
†ϗ ἤργησαν αἱ ἀλήθουσαι ὅτι ὠλιγώθησαν,
†ϗ σκοτάσουσιν αἱ βλέπουσαι ἐν ταῖς ὀπαῖς·
4 †Καὶ κλείσουσιν(ζ)θύρας ἐν ἀγορᾷ, †ἐν ἀσθενείᾳ
φωνῆς τῆς ἀληθούσης. †ϗ ἀναστήσεται εἰς
φωνὴν τοῦ στρουθίου, †ϗ ταπεινωθήσονται πᾶσαι
5 αἱ θυγατέρες τοῦ ᾄσματος. †(η)Καὶ εἰς τὸ
ὕψος ὄψονται, ϗ θάμβοι ἐν τῇ ὁδῷ, †ϗ (ʹ)
ἀνθήσῃ τὸ ἀμύγδαλον, †ϗ παχυνθῇ ἡ ἀκρίς,
†ϗ διασκεδασθῇ ἡ κάππαρις, †ὅτι ἐπορεύθη
(θ) ὁ ἄνθρωπος εἰς οἶκον αἰῶνος αὐτοῦ, †ϗ
6 ἐκύκλωσαν ἐν ἀγορᾷ οἱ κοπτόμενοι. †Ἕως ὅτου
μὴ ἀνατραπῇ (ʹ)τὸ σχοινίον τοῦ ἀργυρίου, †ϗ(ι)
συντριβῇ τὸ ἀνθέμιον τοῦ χρυσίου, †ϗ συντριβῇ
(κ)ὑδρία ἐπὶ τῇ γῇ, †ϗ συντροχάσῃ ὁ
7 τροχὸς ἐπὶ τὸν λάκκον, †Καὶ(ʹ)ἐπιστρέψῃ ὁ χοῦς
ἐπὶ τὴν γῆν ὡς ἦν, †ϗ τὸ πνεῦμα(ʹ)ἐπιστρέψῃ
8 πρὸς τὸν θεὸν ὃς ἔδωκεν αὐτό; †Ματαιότης
ματαιοτήτων, εἶπεν ὁ Ἐκκλησιαστής, † τὰ
9 πάντα ματαιότης. †Καὶ περισσὸν ὅτι ἐγένετο
(ʹ) Ἐκκλησιαστὴς σοφός, † (λ)ὅτι ἐδίδαξε
γνῶσιν σὺν τὸν ἄνθρωπον, †ϗ οὖς ἐξιχνιάσεται
10 κόσμιον παραβολῶν. †Πολλὰ ἐζήτησεν Ἐκκλησιαστὴς
†τοῦ εὑρεῖν λόγους θελήματος, †
(μ)ϗ γεγραμμένον εὐθύτητος, λόγους ἀληθείας.
11 †Λόγοι σοφῶν ὡς τὰ βούκεντρα, †ϗ ὡς
ἧλοι (ν)πεφυτευμένοι, †οἳ παρὰ τῶν (ξ) συνθεμάτων
12 ἐδόθησαν †ἐκ ποιμένος ἑνός. Καὶ
περισσὸν ἐξ αὐτῶν †υἱέ μου (ο) φύλαξαι· τοῦ
ποιῆσαι βιβλία πολλά †οὐκ ἔστι περασμός, †ϗ
13 μελέτη πολλὴ κόπωσις σαρκός. †Τέλος λόγου,
τὸ πᾶν ἄκουε· †τὸν θεὸν φοβοῦ, ϗ τὰς ἐντολὰς
αὐτοῦ φύλασσε· †ὅτι τοῦτο πᾶς ὁ ἄνθρωπος.
14 †Ὅτι (π) σύμπαν τὸ ποίημα ὁ θεὸς
ἄξει ἐν κρίσει, ἐν παντὶ παρεωραμένῳ, ἐὰν ἀγαθὸν ϗ ἐὰν πονηρόν.

CAP. XII.

ET memento (a) Creatoris tui in 1
dieb⁹ juventutis tuæ; (b) usquequò
non veniant dies malitiæ, & appropinquent
anni, in quib⁹ dices,
Non est mihi in illis voluntas.
Usquequò non obtenebrescat Sol, et 2
lumen, & Luna, & stellæ: & revertentur
nubes post pluviā. In die 3
quo commoti fuerint custodes domûs,
& (c) perversi fuerint viri
fortitudinis: & (d) cessaverūt molētes,
quoniā imminutæ sunt: et contenebrescēt,
(e) quæ vidēt in foraminib⁹:
Et claudēt ostia in platea, 4
in (f) infirmitate vocis molentis. Et
consurget ad vocē (g) passeris: &
(h) humiliabuntur omnes filiæ
carminis. Et in (i) sublime aspicient; 5
& (k) terrores in via. Et florebit
amygdalū, & impinguabitur
locusta, & (l) dissipabitur capparis:
quoniā ivit homo in domū æternitatis
suæ, & circumierunt in
platea plangentes. (m) Usquequò 6
non evertatur funicul⁹ argenti, &
(n) conteratur vitta auri, & conteratur
hydria super fontē, & (o)
convolvatur rota ad cisternā, Et 7
revertatur pulvis in terram, sicut
erat, & spirit⁹ redeat ad Deū, qui
dedit illū? (p) Vanitas vanitatū, 8
dixit Ecclesiastes, omnia vanitas.
Et (q) ampli⁹, quia factus est Ecclesiastes 9
sapiens, (r) quia docuit
scientiā hominem; (s) & auris
scrutabitur ornatū parabolarum.
Multū (t) quæsivit Ecclesiastes, ut 10
inveniret verba, (u) voluntatis,
scriptū rectitudinis, verba veritatis.
Sermones sapientū tanquàm 11
stimuli, & quasi clavi (x) plantati.
Qui à (y) conciliis, dati sunt à
pastore uno. Et ampliùs ab ipsis, fili 12
mi, (z) cave, faciendi libros multos,
non est finis, & meditatio plurima,
labor est carnis. (ω) Finis 13
verbi, omne audi: Deum time, et
mandata ejus custodi; (aa) hoc est
enim omnis homo: Quia omne (bb) 14
factū De⁹ adducet in judiciū (cc)
in omni contempto, sive bonum, &
sive malum.

MS. A. (α) ἕως οὗ (β) ἡμέραι τῆς κακίας σου, ϗ φθάσωσιν (γ) ἐπιστρέψωσιν
(δ) ὀπίσω ὑετοῦ· (ε) ᾗ ἂν (ζ) θύραν (η) Καί γε ἀπὸ ὕψους (ʹ) ἀνθήσει (θ) ἄνθρωπος
(ʹ) σχοινίον (ι) συνθλιβῇ (κ) ἡ ὑδρεία ἐπὶ τὴν πηγήν, (ʹ) ἐπιστρέψει
(ʹ) ἐπιστρέψῃ (ʹ) ὁ Ἐκκλησιαστὴς (λ) ϗ ὅτι (μ) γεγραμμένον (ν) πεπυρωμένοι,
(ξ) συναγμάτων (ο) φυλάσσου· (π) σύμπαν τὸ ποίημα ἄξει ὁ θεὸς

MS. A. Ἐκκλησιαστής.

תרגום TARGUM.

יב

וּתְהֵי דְכִיר יַת בָּרְיָךְ לְיַקָּרוּתֵיהּ בְּיוֹמֵי רַבְיוּתָךְ עַד דְּלָא יֵיתוּן לְוָתָךְ יוֹמֵי בִישׁוּת וְיִמְטוּן 1
עֲלָךְ שְׁנִין דְּתֵימַר לֵית לִי בְהוֹן רַעֲוָא׃ עַד דְּלָא יִשְׁתַּנֵּי זִיו יְקָרָא דְאַפָּךְ דְּמַתִיל לְשִׁמְשָׁא 2
וּנְהוֹרָא דְעֵינָךְ עַד דְּלָא יִסְתַּמְּיוּן וַהֲדַר לִיסְתָּךְ עַד דְּלָא יִתְקַדְרוּן וּבָבֵי עֵינָךְ דְּמַתִילִין
לְכוֹכְבַיָּא עַד לָא יִתְעַמְמוּן רֵיסֵי עֵינָךְ יְהוֹן זָלְגִין דִּמְעִין כַּעֲנָנִין בָּתַר מִטְרָא׃ בְּיוֹמָא דִי 3
יְזוּעוּן אַרְכּוּבָתָךְ וְיִתְנַקְשׁוּן אֶדְרָעָךְ וְיִתְבַּטְּלוּן כַּכֵּי פוּמָךְ עַד לָא יָכְלִין לְמִלְעַס מֵיכְלָא
וְיִתְעַמְמוּן עֵינָךְ דְּמִסְתַּכְּלִין בַּחֲרַכֵּי רֵישָׁךְ׃ וִיהוֹן רִגְלָךְ כְּבִילָן מִלְּמִפַּק בְּשׁוּקָא וְיַעְדֵּי מִנָּךְ 4
רְעוּת מֵיכְלָא וּתְהֵי מִתְּעַר מִשִּׁנְתָךְ עַל עֵסֶק קָל עוֹפָא כְּאִלּוּ עַל גַּנָּבַיָּא דְאָזְלִין בְּלֵילְיָא
וְיִתְרַפְסוּן סִפְוָתָךְ מִלְּמֵימַר שִׁירְתָא׃ אַף מִן עוֹבָדִין דַּהֲווּ מִן קַדְמַת דְּנָא תְּהֵי דָחִיל 5
לְמִדְכַּר יַתְהוֹן וְנִבְשׁוּשִׁיתָא קַלִּילָא מְתִילָא בְאַנְפֵּי נַפְשָׁךְ לְטוּר רָם בְּעִדָּן מַהֲלָכָךְ
בְּאוֹרְחָא וְתֵצִיץ רֵישׁ שִׁזְרָתָךְ מִן כְּחִישׁוּתָא כְּשִׁגְדָּא וְיִתְנַפְּחוּן אַסְתּוּרֵי רִגְלָךְ וְתִתְמְנַע מִן
מַשְׁכְּנָא אֲרוּם אִתְפְּנֵי אֱנָשָׁא לִמְהָךְ לְבֵית קְבוּרְתֵיהּ וְיִסְחֲרוּן מַלְאֲכַיָּא תָּבְעֵי דִינָךְ
כְּסַפְּדַיָּא דִּמְסַחֲרִין בְּשׁוּקָא לְמִכְתַּב דִּין חוּשְׁבְּנָךְ׃ עַד דִּי לָא יִתְאַלַּם לִישָׁנָךְ מִלְּמַלָּלָא 6
וּתְהֵי רֵעֲיָא מוֹקְרָא דְּרֵישָׁךְ וְתִתְבַּר מְרִירְתָךְ עַל כַּבְדָּךְ וְיִרְהַט גּוּפָךְ בְּגוֹ קִבְרָךְ׃ וְיִתוּב 7
בִּסְרָךְ דְּאִתְבְּרִי מִן עַפְרָא עֲלַוֵי אַרְעָא הֵיכְמָה דַּהֲוָה מִלְּקַדְמִין וְרוּחַ נִשְׁמָתָךְ תְּתִיב לְמֵיקַם
בְּדִינָא קֳדָם יְיָ דִּיהֲבָהּ לָךְ׃ כַּד אִסְתַּכַּל שְׁלֹמֹה מַלְכָּא דְיִשְׂרָאֵל בַּהֲבָלוּ דְעָלְמָא הָדֵין 8
וּבַהֲבָלִין דְּעָבְדִין בְּנֵי אֱנָשָׁא אֲמַר קֹהֶלֶת בְּמֵימְרֵיהּ כּוּלָּא הֲבָלוּ׃ וְיוֹתֵר מִן כָּל בְּנֵי אֱנָשָׁא 9
הֲוָה שְׁלֹמֹה דִי מִתְקְרֵי קֹהֶלֶת חַכִּים וְתוּב הֲוָה מְאַלֵּף מַנְדְּעָא יַת עַמָּא בֵית יִשְׂרָאֵל וַאֲצִית
לְקָל חַכִּימַיָּא וּבְלַשׁ בְּסִפְרֵי חוּכְמְתָא וּבְרוּחַ נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ תַּקִּין סִפְרֵי חוּכְמְתָא
וּמַתְלִין דְּסוּכְלְתָנוּ סַגִּיאִין לַחֲדָא׃ בְּעָא שְׁלֹמֹה מַלְכָּא דְּמִתְקְרֵי קֹהֶלֶת בְּחוּכְמְתֵיהּ לְמֵידַן 10
דִּינִין עַל הִרְהוּרֵי לִבָּא דֶאֱנָשָׁא וּבְלָא סָהֲדִין בְּכֵן אִתְאֲמַר לֵיהּ בְּרוּחַ נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ הָא
כְּבַר אִכְּתִיב בְּסֵפֶר אוֹרַיְתָא עַל יְדוֹהִי דְמֹשֶׁה רַבְּהוֹן דְּיִשְׂרָאֵל תַּקְנִין פִּתְגָמִין וּמְהֵימְנִין
עַל מֵימַר סַהֲדַיָּא יְקוּם פִּתְגָם׃ פִּתְגָמֵי חַכִּימִין מְתִילִין לְזִקְתִין וּלְקִלְשׁוֹנִין דְּאָנְצִין לְאַלָּפָא 11
חוּכְמְתָא לִסְרִיקֵי מַנְדְּעָא הֵיכְמָה דִּמְאַלֵּף זִיקְתָא לְתוֹרְתָא וְרַבָּנֵי סַנְהֶדְרִין מָרֵי הִלְכְתִין
וּמִדְרָשִׁין דְּאִתְיְהִיבוּ עַל יְדוֹי דְמֹשֶׁה נְבִיָּא דְּרָעָא בִּלְחוֹדוֹי יַת עַמָּא בֵית יִשְׂרָאֵל בְּמַדְבְּרָא
בְּמַנָּא וּבְרְגוֹגִין׃ וְיַתִּיר מִנְּהוֹן בְּנִי אִזְדְּהַר לְמֶעְבַּד סִפְרֵי חוּכְמְתָא סַגִּי עַד לֵית סוֹף 12
לְמֶעְסַק בְּפִתְגָמֵי אוֹרַיְתָא וּלְאִסְתַּכָּלָא בְּלֵיאוּת בִּשְׂרָא׃ סוֹף פִּתְגָם דְּאִתְעֲבַד בְּעָלְמָא 13
בִּצְנָעָא כּוּלָּא עָתִיד לְאִתְפַּרְסָמָא וּלְאִשְׁתְּמָעָא לְכָל בְּנֵי אֱנָשָׁא בְּגִין כֵּן יַת מֵימְרָא דַיְיָ הֲוֵי
דָּחִיל וְיַת פִּקּוּדוֹי הֲוֵי נָטֵר דְּלָא לְמֶחֱטֵי בְּסִתְרָא וְאִין תֶּחֱטֵי הֲוֵי זְהִיר לְמֶתַב אֲרוּם כְּדֵין
חָזֵי לְמֶהֱוֵי אוֹרַח כָּל אֱנָשׁ׃ אֲרוּם יַת כָּל עוֹבָדָא יְיָ יַעֵל לְיוֹם דִּינָא רַבָּא וַעֲתִיד לְפַרְסָמָא 14
עַל פִּתְגָם דְּאִתְכַּסֵּי מִן בְּנֵי אֱנָשָׁא אִין טַב וְאִין בִּישׁ׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAP. XII.

ET esto memor creatoris tui, ut glorifices eum in diebus adolescentiæ 1
tuæ, antequàm veniant tibi dies mali, & perveniant super te anni, quibus
dicas, Non est mihi in illis complacentia. Antequàm mutetur splendor 2
gloriæ faciei tuæ, qui assimilatur Soli, & lumen oculorum tuorum
antequàm obcæcetur,& decor maxillarum tuarum antequàm obtenebretur,
& pupillæ oculorū tuorum,qui assimilātur stellis,antequàm extinguantur;
palpebræ oculorū tuorū stillabunt lachrymas,ut nubes post pluviā. In 3
die quo contremiscent coxæ tuæ & concutientur brachia tua & deficient
dentes oris tui antequàm possint masticare cibū,& caligabunt oculi tui qui
vident per cancellos capitis tui. Et erunt pedes tui ligati,ut non prodeant 4
in plateā, & recedet à te appetitus cibi; & excitaberis à somno tuo,causa
vocis aviculæ *acsi à furibus qui grassantur noctu*; & remittentur labia tua
à dicendo cantico. Etiam facta quæ antea fuerunt,timebis, memor eorum; 5
& tumulus levis, similis erit in facie animæ tuæ monti excelso,
tempore quo ieris in via, & germinabit caput spinæ tuæ præ macie sicut
amygdalus, & inflabuntur tali pedum tuorum,& prohibeberis à *tabernaculo*,
etenim declinat homo ad eundum in domum sepulchri sui,& circundabunt
angeli inquisitores judicii tui, ut lamentantes qui circundant per
plateam ad scribendum judicium rationis tuæ. Antequàm obmutescat 6
lingua tua à loquendo, & sit confractus vertex *capitis tui*, & rumpatur
fel tuum super jecur tuum,& decurrat corpus tuū in medium sepulchri tui.
Et redibit caro tua quæ creata est ex pulvere in terram, quemadmodum 7
erat ab antiquo : & spiritus animæ tuæ redibit, ut stet in judicio ante
Dominū qui dedit illū tibi. Quando contemplatus est Selomoh rex Israel 8
vanitatem mundi hujus, & vanitates quas faciunt filii hominum, dixit Ecclesiastes
in verbo suo, Omnia vanitas. Et plus quàm omnes filii hominum 9
fuit Selomoh, qui vocatur Ecclesiastes, sapiens : & *rursus* docuit
scientiam *populum domus* Israel, & attendit voci sapientum, & scrutatus
est libros sapientiæ, *& in spiritu prophetico à Domino composuit libros
sapientiæ*, & parabolas intelligentiæ multas valdè. Quæsivit Selomoh 10
rex, qui vocatur Ecclesiastes, sapientia sua judicare judicia super
cogitationes cordis hominis & sine testibus : propterea dictum fuit
per spiritum prophetiæ à facie Domini, Ecce jam scripta sunt in libro Legis
per manum Mosis magistri Israel rectissima verba & fidelia, in dicto
testium stabit verbum. Verba sapientum assimilantur stimulis & ligonibus, 11
quæ impellunt ad docendum scientiam indigentes scientia, sicut
docet *stimulus* bovem, & magistri *Sanhedrin* ductores viarum *& sermonum*
qui dati sunt per manum Moseh prophetæ, qui pavit solus populum
domus Israel in deserto *manna & cupediis*. Et quod plus est præ illis, 12
fili mi monitus esto, ut facias libros sapientiæ plurimos, adeò ut non sit
finis, & ut studeas verbis Legis, conspiciasque defatigationem carnis.
Finis verbi quod factum est in seculo occultè, totum futurum est ut publicetur 13
atque divulgetur omnibus filiis hominum : propterea verbum Domini
time, & præcepta ejus custodito, ut non pecces in secreto : quod
si peccaveris, circunspectus esto ut te convertas : nam hujusmodi decet
esse viam omnis hominis. Etenim omne factum Dominus adducet in 14
diem judicii magni,& futurum est ut publicetur adversus omnem rem quæ
velata fuerit à filiis hominum, tam bonum quàm malum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

*ܩܦܠܐܘܢ * ܝܒ * ܐܥܒܪ ܪܘܓܙܐ ܡܢ ܠܒܟ. ܘܐܥܒܪ ܒܝܫܬܐ ܡܢ ܒܣܪܟ. 1
ܡܛܠ ܕܛܠܝܘܬܐ ܘܠܐ ܝܕܥܬܐ ܗܒܠܐ. * ܘܐܬܕܟܪ ܠܒܪܘܝܟ ܒܝܘܡܝ ܛܠܝܘܬܟ. ܥܕܠܐ ܢܐܬܘܢ 2
ܝܘܡܬܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܢܡܛܘܢ ܫܢܝܐ ܕܐܡܪ ܕܠܝܬ ܠܝ ܒܗܘܢ ܨܒܝܢܐ. * ܥܕܠܐ ܢܚܫܟ ܫܡܫܐ: 3
ܘܢܘܗܪܐ ܕܣܗܪܐ ܘܕܟܘܟܒܐ. ܘܢܗܦܟܘܢ ܥܢܢܐ ܒܬܪ ܡܛܪܐ. * ܒܝܘܡܐ ܕܢܬܙܝܥܘܢ 4
ܢܛܘܪܝ ܒܝܬܐ: ܘܢܬܥܘܩܘܢ ܓܒܪܝ ܚܝܠܐ. ܘܢܬܒܛܠܢ ܛܚܢܬܐ ܡܛܠ ܕܙܥܪܝ. ܘܢܚܫܟܢ
ܚܙܝܬܐ ܒܟܘܐ. * ܘܢܬܬܚܕܘܢ ܬܪܥܐ ܒܫܘܩܐ. ܒܡܣܟܢܘܬܐ ܕܩܠܐ ܕܛܚܢܬܐ. ܘܢܩܘܡ ܠܩܠܐ 5
ܕܨܦܪܐ. ܘܢܬܡܟܟܢ ܟܠ ܒܢܬ ܙܡܪܐ. * ܘܐܦ ܡܢ ܪܡܐ ܢܕܚܠ. ܘܢܬܪܗܒ ܒܐܘܪܚܬܗ. 6
ܘܢܦܘܩ ܥܠܘܗܝ ܫܘܪܐ. ܘܢܦܪܥ ܫܓܕܐ. ܘܢܬܪܒܐ ܩܡܨܐ. ܘܢܬܦܪܕ ܦܦܪܣ. ܘܬܥܒܪ
ܡܣܟܢܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܐܙܠ ܒܪܢܫܐ ܠܒܝܬ ܥܡܠܗ. ܘܐܬܟܪܟܘ ܒܫܘܩܐ ܡܪܩܕܢܐ. * ܥܕܠܐ 7
ܢܬܦܣܩ ܚܒܠܐ ܕܣܐܡܐ: ܘܢܬܒܪܬ ܚܘܪܐ ܕܕܗܒܐ: ܘܢܬܬܒܪ ܩܘܠܬܐ ܥܠ ܡܒܘܥܐ. ܘܢܪܘܛ
ܓܝܓܠܐ ܥܠ ܓܘܒܐ. * ܘܢܗܦܘܟ ܥܦܪܐ ܠܐܪܥܐ ܐܝܟ ܕܗܘܐ. ܘܪܘܚܐ ܬܗܦܘܟ ܠܘܬ ܡܪܝܐ ܕܝܗܒܗ. 8
ܗܒܠ ܗܒܠܝܢ. ܐܡܪ ܩܘܗܠܬ. ܗܒܠ ܗܒܠܝܢ. ܟܠ ܡܕܡ ܗܒܠܐ. * ܘܝܬܝܪ ܕܗܘܐ 9
ܩܘܗܠܬ ܚܟܝܡܐ. ܕܢܠܦ ܗܘܐ ܝܕܥܬܐ ܠܥܡܐ. ܘܨܬ ܘܥܩܒ. ܘܬܩܢ ܡܬܠܐ ܣܓܝܐܐ. * ܣܓܝ 10 11
ܒܥܐ ܩܘܗܠܬ ܠܡܫܟܚܘ ܡܠܐ ܕܨܒܝܢܐ. ܘܟܬܒ ܒܬܪܝܨܘܬܐ ܡܠܐ ܕܩܘܫܬܐ.
* ܡܠܐ ܕܚܟܝܡܐ ܐܝܟ ܙܩܬܐ. ܘܐܝܟ ܣܟܐ ܕܢܥܝܨܝܢ. ܡܪܝ ܬܪܥܐ ܐܬܝܗܒܘ ܡܢ ܪܥܝܐ ܚܕ. 12
* ܘܝܬܝܪܐܝܬ ܡܢܗܘܢ ܒܪܝ ܐܙܕܗܪ. ܠܡܥܒܕ ܣܦܪܐ ܣܓܝܐܐ. ܠܝܬ ܣܘܦ. ܘܡܡܠܠܐ 13
ܣܓܝܐܐ. ܠܐܘܬܐ ܕܒܣܪܐ. * ܚܪܬܗ ܕܡܠܬܐ ܟܠܗ. ܟܠ ܫܡܥ. ܘܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ 14
ܕܚܠ. ܘܦܘܩܕܢܘܗܝ ܛܪ. ܡܛܠ ܕܗܢܐ. ܕܡܢ ܐܘܡܢܐ ܚܕ ܐܬܝܗܒ ܠܟܠܢܫ. * ܡܛܠ 15
ܕܟܠܗ ܥܒܕܐ. ܡܪܝܐ ܡܝܬܐ ܒܕܝܢܐ. ܥܠ ܟܠ ܕܟܣܐ ܘܓܠܐ. ܐܢ ܛܒ. ܘܐܢ ܒܝܫ.

* ܫܠܡ ܟܬܒܐ ܕܩܘܗܠܬ *

CAP. XII.

AVerte indignationem ab animo tuo, & amove malum à carne tua : nam pueritia & ignorantia ſunt vanitas. Et memor eſto Creatoris tui in diebus adoleſcentiæ tuæ, antequã adveniant dies aſperi, & accedant anñi de quibus dicas, Non delector illis. Antequam tenebreſcat ſol, & ſpendor lunæ atque ſtellarum, & redeant nubes poſt pluviam. Quo die trement cuſtodes domûs, & præditi robore agitabuntur, et ceſſabunt molentes eò quòd in parvum numerum ſint redactæ ; & obſcurabuntur ſpectantes per feneſtras. Et fores claudentur in plateis cum exili ſonitu molentium, ſurgétque ad vocem aviculæ, & deprimentur omnes filiæ cantici : Excelſum quoque metuet, & contremiſcet in viis ſuis, & emerget ſup eum vigilia, & germinabit amygdalus, & creſcet locuſta, & diſſipabitur capparis, & deſinet inopia, eò quòd repetat homo domum laboris ſui, & lugentes in plateis circumibunt. Antequam præcidatur funis argenteus, & comminuatur pomum aureum, & frangatur hydria ad fontem, & rota currat ſuper puteum : Et revertatur pulvis in terram qualis erat, & ſpiritus redeat ad Dominũ qui dedit illum. Vanitas vanitatum, ait Coheleth, vanitas vanitatum, omnia vanitas. Præterea, quia Coheleth fuit ſapientiſſimus adeo ut doceret populum ſcientiam, & auſcultaverit, indicaverit, atque compoſuerit proverbia plurima : Summopere quæſivit Coheleth ut inveniret ſermones jucundos, & in veritate ſcripſit ſermones veritatis. Verba ſapientum ſunt velut aculei, & velut clavi infixi. Præpoſiti liminibus dati ſunt ab uno paſtore : Quare maximè eos, fili mi, caveto. Multos ſcribendi libros nullus eſt finis, & nimius ſermo labor eſt carnis. Summa ſermonis univerſi eſt, Omnia audi, à conſpectu Domini timeto, & præcepta illius ſervato : hoc enim eſt quod ab eodem opifice datum eſt cuilibet homini. Cuncta námque opera Dominus adducet in judicium de quacunque re occulta vel aperta, ſive bona ſive mala.

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15

Libri Coheleth finis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

• الفصل الثاني عشر *

* وابعد الغضب من قلبك • وانزع الشر من بشرتك • فان الحداثة والمأثمة باطل * واذكر 1 2
خالقك في ايام حداثتك • حتى لا توافي ايام شرك • وتصل السنون التي تقول فيها ليست لي
فيها مشية * ما دام لم تظلم الشمس والنور والقمر والنجوم • وتنعطف السحب وراء المطر * في 3 4
اليوم الذي يتزعزع فيه حافظا البيت • يرجع رجال الاقتدار وتبطل الطحانات فان طحنهم
قد بطل • وتتناقص وتظلم الناظرات في الانقاب * ويغلقون الباب في السوق في ضعف صوت 5
الطاحنة • ويقام صوت العصفور • وتتذلل كافة بنات الاغاني * ومع ذلك يبصرون من العلى • 6
ويكون الجزعات في الطريق • ويزهر اللوز • ويسمن الجراد • ويضمحل الكبر • لان الانسان
قد ذهب الى منزل دهره • والمنتحبون قد طافوا في السوق * ما دام لم ينتقض حبل الفضة 7
ويسحق تبرير الذهب • وتنكسر الجرة على العين • ويدور البكرة على الجب * ويعود التراب الى 8
الارض كما كان • ويعود الروح الى الله الذي منحه * قال الجامع باطل الاباطيل • فكل الاشياء 9
باطلة * فضلة زائدة اذا صار الجامع حكيما • وانه علم الانسان معه علما • وتصفح اذنه 10
زينة الامثال * اشياء كثيرة تجشم الجامع ليجد اقوال المشية • ومكتوب الاستقامة • اقوال الحق * 11
* اقوال الحكماء كمناخس البقر وكالمسامير المحماة • الاقوال التي ملكوها من سمات اعمالهم من عند 12
راع واحد • فنالوا زيادة منها * يا بني احفظ هذا • ان تصطنع مصاحف كثيرة فليست لمنفعتها 13
غاية • وفي دراستها الكثيرة تعب للبشر * واخر القول اسمع • جملة الامر اتق الله واحفظ وصاياه • 14
فان كل الانسان ينفعه هذا * لان الله سيحضر كافة صناعته في الحكومة • ليحاكموا في كل امر 15
اهملوا به • ان كان صالحا وان كان رديا * * والحمد لله دائما ابدا *

• تم بعون الله تعالى كتاب الجامعة • لسليمن ابن داوود الذي ملك على بني اسرائيل • وهي باطل الاباطيل •

CAP. XII.

Quin remove iram à corde tuo, et aufer malitiam à carne tua: quoniam adoleſcentia, et iniquitatis operatio vanitas eſt. Et recordare Creatoris tui in diebus adoleſcentiæ tuæ, ne fortè veniant dies calamitatis tuæ, & adveniant anni quibus dicas, Non eſt in eis mihi voluntas. Quandiu ſol et lumen, lunáque et ſtellæ nondum ſunt tenebris occupati, neque recurrunt nubes poſt pluviã. In die qua contremiſcent ambo domûs cuſtodes, retrocedent viri potentes, et ceſſabunt molitrices : ceſſabit ſiquidem molitura earum, & deficient ac tenebreſcent ſpeculantes per foramina. Claudent etiã januas in foro, ad imbecillitatem vocis molitricis, & ſuſcitabitur vox avis, & dejicientur omnes filiæ carminum. Adhæc proſpectabunt ab alto, eruntq; terriculamenta in via, & florebit amygdalus, et pingueſcet locuſta, et capparis evaneſcet: homo namq; ſe recipiet in domiciliũ ævi ſui, et lugentes perluſtrabunt forũ. Tantiſper dũ non retexitur funis argenteus, nec teritur em[...]ſo auri, et frangitur hydria ſecus fontem, & volvitur rota ſuper puteũ. Redeatq; pulvis in terrã quẽadmodũ fuerat, redeatq; ſpiritus ad Deũ qui dederat illũ. Inquit Collector, Vanitas vanitatum, res quidem omnes vanæ ſunt. Et verò immenſi beneficii eſt quòd Collector ſapiens fuerit, et hominem unà ſecũ docuerit ſcientiã, et cõſiderârit auris ejus decus proverbiorũ. Multarũ rerũ ſtudio vacavit Collector, ut inveniret dicta pergrata, et ſcriptũ rectũ, ſermones veritatis. Dicta ſapientum ſunt velut ſtimuli boum, et velut clavi igniti: dicta inquã quæ tradiderunt è veſtigiis operũ ſuorum ab uno paſtore, et ex iis augmentũ ſunt conſecuti. O fili mi, hæc obſerva. Ex plurium librorũ compoſitione nullã conſequi unquã poteris utilitatem: et in frequenti eorũ lectitatione labor ineſt carni. Et ut uno verbo dicã, Audi, ſũma rei hæc eſt: Deũ time, et præcepta ejus obſerva : cuilibet enim homini hoc prodeſt. Nã Deus adiget univerſa opera ſua ad judicium, ut judicentur de quacunque re in qua fuerunt negligentes, ſive bona, ſive mala.

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15

Laus Deo ſempiterna & perpetua.

Auxilio Dei excelſi abſolutus eſt liber Eccleſiaſtis, qui eſt Vanitas vanitatum, à Salomone filio Davidis, qui regnavit ſuper filios Iſrael, conſcriptus.

שיר השירים:א

CAPUT I. א

quod , canticorum Canticum
1 שיר השירים אשר
me Osculetur .Selomoh ipsi
2 לשלמה : ישקני
boni quia : sui oris - osculis ex
מנשיקות פיהו כי־טובים
odorem Ad .vino præ tui amores
3 דדיך מיין : לריח
oleum,optimorũ tuorũ unguentorum
שמניך טובים שמן
ideo : tuum nomen effusum
תורק שמך על־כן
,me Trahe.te dilexerunt adoleſcẽtulæ
4 עלמות אהבוך : משכני
me introduxit : curremus te poſt
אחריך נרוצה הביאני
,exultabimus , ſua penetralia rex
המלך חדריו נגילה
memorabimus , te in lætabimur &
ונשמחה בך נזכירה
rectitudines : vino præ tuos amores
דדיך מיין מישרים
, ego Nigra .te dilexerunt
5 אהבוך : שחורה אני
: Jeruſalaim filiæ , deſiderabilis &
ונאוה בנות ירושלם
cortinæ ſicut , Chedar tentoria ſicut
כאהלי קדר כיריעות
,me reſpiciatis Ne .Selomoh
6 שלמה : אל־תראני
me radiavit quia , fuſca ego quòd
שאני שחרחרת ששופתני
ſunt ſuccenſi meæ matris filii : Sol
השמש בני אמי נחרו־
cuſtodem me poſuerunt , me in
בי שמני נטרה את
,mihi quæ ,meam vineam ; vinearum
הכרמים כרמי שלי
, mihi Nuncia .cuſtodivi non
7 לא נטרתי : הגידה לי
ubi , mea anima dilexit quem
שאהבה נפשי איכה
facias cubare ubi , paſcas
תרעה איכה תרביץ
ero quid ut quia : meridie in
בצהרים שלמה אהיה
greges ſuper ſe operiens veluti
כעטיה על עדרי
cognoveris Niſi ? tuorũ ſodaliũ
8 חבריך : אם־לא תדעי
egredere ; mulieribus in pulchra ô ,tibi
לך היפה בנשים צאי־
paſce & , pecoris veſtigia in tibi
לך בעקבי הצאן ורעי
tabernacula ſuper tuas capellas
את־גדיתיך על משכנות
.paſtorum
הרעים :

תרגום TARGUM.

א

1 שירין ותושבחן די אמר שלמה נביא מלכא דישראל ברוח נבואה קדם רבון כל עלמא יי עסרתי שירתא אתאמרו בעלמא הדין שירא דין משבח מן כולהון שירתא קמיתא אדם בזמן דאשתבק ליה חובתיה ואתא יומא דשבתא ואגן עלוי פתח פומיה ואמר מזמור שיר ליומא דשבתא שירתא תניתא אמר משה עם בנוי דישראל בזמן די בזע להון מרי עלמא ית ימא דסוף פתחו כולהון ואמרו כחדא שירתא דהכדין כתיב בכן שבח משה ובני ישראל שירתא תליתאה אמרו בנוי דישראל בזמן דאתיהיבת להון בארא דמיא דהכדין כתיב בכן שבח ישראל שירתא רביעאה אמר משה נביא כד אתא זמניה למפטר מן עלמא ואוכח בה ית עמא בית ישראל דהכדין כתיב אציתו שמיא ואמלל שירתא חמישאה אמר יהושע בר נון כד אגח קרבא בגבעון וקמו ליה שמשא וסיהרא תלתין ושית שעין ופסקו מלמימר שירתא פתח פומיה איהו ואמר שירתא דהכדין כתיב בכן ישבח יהושע קדם יי שירתא שתיתאה אמרו ברק ודבורה ביומא דמסר יי ית ססרא וית משריתיה ביד בנוי דישראל דהכדין כתיב ושבחת דבורה וברק בר אבינועם שירתא שביעאה אמרה חנה בזמן דאתיהיבת לה בר מן קדם יי דהכדין כתיב וצליאת חנה בנבואה ואמרת שירתא תמיניתא אמר דוד מלכא דישראל על כל נסיא דעבד ליה יי פתח פומיה ואמר שירתא דהכדין כתיב ושבח דוד בנבואה קדם יי שירתא תשיעאה אמר שלמה מלכא דישראל ברוח קודשא קדם רבון כל עלמא יי ושירתא עשיריתא עתידין למימר בני גלותא בעדן דיפקון מגלותא דהכדין כתיב ומפרש על ידוי דישעיה נביא דהכדין כתיב שירא הדין יהא לכון לחדוה בליל אתקדשות חגא דפסחא וחדות לבא כעמא דאזלין לאתחזאה קדם יי תלת זמנין בשתא במיני זמר וקל טבלא למעל לטורא דיי ולמפלח קדם יי תקיפא דישראל :

2 ישקני אמר שלמה נביא בריך שמיה דיי דיהב לן אוריתא על ידוהי דמשה ספרא רבא כתיבא על תרין לוחי אבניא ושתא סדרי משנה ותלמודא בגרסא והוה מתמלל עמן אפין באפין כגבר דנשק לחבריה מן סגיאות חבתא דחביב לן יתיר משבעין עממיא :

3 לריח לקל נסך וגבורתך דעבדת לעמא בית ישראל זעו כל עממיא די שמעו ית שמע גבורתך ואתותך טביא ושמך קדישא אשתמע בכל ארעא דהוה בחיר ממשח רבותא דהוה מתרבי על רישי מלכין וכהנין ובגין כן רחימו צדיקיא למהך בתר אורח טובך בדיל דיחסנון עלמא הדין ועלמא דאתי :

4 משכני כד נפקו עמא דבית ישראל ממצרים הות מדברא שכינת מרי עלמא קדמיהון בעמודא דעננא ביממא ובעמודא דאשתא בליליא אמרו צדיקי דרא ההוא רבון כל עלמא נגדנא בתרך ונהי רהטין בתר אורח טובך וקריב יתן בשפולא דטורא דסיני והב לן ית אוריתך מן בית גנזך דרקיעא ונחדי ונבדח בעסרין ותרתין אתון דמכתבא בהון ונהי דכירין יתהון ונרחם ית אלהותך ונהי מתרחקין מבתר טעות עממיא וכל צדיקיא דעבדין דתקין קדמך יהון דחלין מנך ורחמין ית פקודך :

5 שחורה כד עבדו בית ישראל ית עגלא אתקדרו אפיהון כבנוי דכוש דשרין במשכני קדר וכד תבו בתיובתא ואשתבק להון סגא זיו יקר אפיהון כמלאכיא על דעבדו יריעתא למשכנא ושרת ביניהון שכנתא דיי ומשה רבהון סליק לרקיעא ויהב שלם ביניהון ובין מלכהון :

6 אל אמרת כנשתא דישראל כל קבל עממיא לא תבזון יתי על די אנא קדריתא מנכון על דעבדית כעובדיכון וסגידית לשמשא וסהרא דנביאי שקרא אנון גרמו לאסתקפא תקוף רוגזא דיי עלי ואלפוני למפלח טעותכון ולהלכא בנימוסיכון ולמרי עלמא די הוא אלהי לא פלחית ולא אזלית בנימוסיה ולא נטרית ית פקודוי וית אוריתה :

7 הגידה כד מטא זמניה דמשה נביא למפטר מן עלמא אמר קדם יי גלי קדמי דעמא הדין עתידין למחב ולמהלכא בגלותא כען חוי קדמי איכדין יתפרנסון וישרון ביני עממיא דקשין גזירתהון כחומתא וכשרבי שמשא דטיהרא בתקופת תמוז ולמה דין יהון מטלטלין ביני עדרי בנוי דעשו וישמעאל די משתפין לך טעותהון לחבריא :

8 אם אמר קודשא בריך הוא למשה נביא אבעיא להון למחי גלותא כנשתא דמתילא לריבא שפירתא ודנפשי רחם לה תהא מהלכא באורחיהון דצדיקיא ותהא מסדרא צלותא על פום ברזילהא ומדברי דרהא ותהי מאלפא לבנהא דמתילין לגדיי עזין למהך לבית כנשתא ולבית מדרשא ובההיא זכותא יהוון מתפרנסין בגלותא עד זמן דאשלח מלכא משיחא ויהי מדבר יתהון בניח על משכניהון הוא בית מקדשא דיבני להון דוד ושלמה רעיא דישראל :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAPUT. I.

Cantica & laudes quæ dixit Salomon propheta rex Iſrael per ſpiritum 1
ſanctum coram Domino dominatore totius ſeculi. Decem
cantica dicta fuerunt in ſeculo iſto, & hoc canticum laudabilius
eſt omnibus illis. Primum canticum[*dixit*]Adam in tempore quo
dimiſſum fuit illi peccatum ſuum : & venit dies Sabbati, & protexit
eum : aperuit os ſuum, & dixit pſalmum cantici diei Sabbati.
Canticum ſecundum dixit Moſes cum filiis Iſrael in tempore quo
diviſit eis dominator ſeculi mare carectoſum : aperuerunt omnes [*os
ſuum,*] & dixerunt ſimul canticum : quoniam ſic ſcriptum eſt; Tunc
cecinit Moſes & filii Iſrael. Canticum tertium dixerunt filii Iſrael
in tempore quo datus fuit eis puteus aquæ : ſic enim ſcriptum eſt;
Tunc cecinit Iſrael.Canticum quartum dixit Moſes propheta quando
pervenit tempus ejus ut diſſolveretur ab hoc ſeculo : & increpavit
in eo domum Iſrael : quoniam ſic ſcriptum eſt; Audite cœli, & loquar.
Canticum quintum dixit Joſue filius Nun quando iniit prælium
in Gabaon, & ſteterunt ei Sol & Luna triginta & ſex horis,&
ceſſaverunt dicere canticum : aperuit ille os ſuum, & dixit canticum;
ſic enim ſcriptum eſt : Tunc cecinit Joſue coram Domino. Canticum
ſextum dixerunt Barach & Debora, in die quo tradidit Dominus
Siſaram & exercitum ejus in manum filiorum Iſrael : quoniam ſic
ſcriptum eſt; Et cecinit Debora & Barach filius Abinoem. Canticum
ſeptimum dixit Anna in tempore quo datus fuit ei filius à facie
Domini : ſic enim ſcriptum eſt; Et oravit Anna in prophetia,& dixit.
Canticum octavum dixit David rex Iſrael pro omnibus miraculis
quæ fecit ipſi Dominus : aperuit os ſuum & dixit canticum; quoniam
ſic ſcriptum eſt : Et cecinit David in prophetia coram Dño.
Canticum nonum dixit Salomon rex Iſrael in ſpiritu prophetico coram
Domino dominatore totius ſeculi. Canticum decimum dicturi
ſunt filii captivitatis, quando egreſſi fuerint de captivitate ſua : quoniam
ſic ſcriptum eſt & declaratum per manus Eſaiæ prophetæ; ſic
enim ſcriptum eſt : Canticum iſtud erit vobis in gaudium, ſicut in
nocte qua ſanctificata eſt ſolennitas Paſchæ, & lætitia cordis ſicut populi
qui ambulant ut appareant coram Domino tribus vicibus in anno,
in organis muſicorum & voce tubæ corneæ, ut ingrediantur in
montem Domini, & ut ſerviant coram Deo fortiſſimo Iſrael. Dixit 2
Salomon Propheta : Benedictum nomen Domini, qui dedit nobis
Legem per manum Moſis ſcribæ magni ſcriptam in duabus tabulis lapideis,
& ſex tractatus Miſchnah ac Talmud cum explicatione :
& loquebatur nobiſcum facie ad faciem, ſicut vir qui oſculatur ſocium
ſuum, præ multitudine dilectionis ſuæ, qua dilexit nos magis quã
ſeptuaginta nationes. A voce miraculorum tuorum & potentiæ 3
tuæ quæ feciſti populo tuo domui Iſrael, commoti ſunt omnes populi
qui audierunt famam potentiæ tuæ, & ſignorum tuorum bonorum,
& nomen tuum ſanctum auditum eſt in univerſa terra, quod
eſt electum magis quàm oleum unctionis quo unguntur capita Regum
& Sacerdotum : & ideò dilexerunt juſti ambulare poſt viam bonitatis
tuæ, ut poſſideant ſeculum hoc & ſeculum venturum. Quando 4
egreſſi fuerunt populus domus Iſrael de Ægypto, majeſtas dominatoris
ſeculi erat dux eorum in columna nubis per diem,& in columna
ignis per noctem.Dixerunt juſti illius generationis; Dominator totius
ſeculi,trahe nos poſt te,& curremus poſt viam bonitatis tuæ,& applica
nos ad radices montis Sinai, & da nobis Legem tuam de theſauro
tuo quod eſt in firmamento : & delectabimur & exultabimus
in viginti & duobus characteribus quibus ſcripta eſt, & recordabimur
eorum, & diligemus deitatem tuam, & recedemus ab
idolis populorum ; & omnes juſti qui faciunt quod rectum eſt
coram te, timebunt te, & diligent præcepta tua. Quando fecerunt 5
domus Iſrael vitulum, denigratæ ſunt facies eorum
ſicut filiorum Æthiopiæ qui morantur in tabernaculis Cedar : &
quando egerunt pœnitentiam & dimiſſum fuit eis peccatum, multiplicatus
fuit ſplendor gloriæ vultus eorum,ſicut[*vultus*] angelorum,
eò quòd fecerunt cortinas tabernaculi, & reſedit in medio eorum
majeſtas Domini. Moſes autem magiſter eorum aſcendit ad æthera,
& poſuit pacem inter eos & regem eorum. Dixit cœtus Iſrael coram 6
populis : Nolite me deſpicere eò quòd nigrior vobis ſum, &
quia feci juxta opera veſtra, & adoravi Solem & Lunam, quia prophetæ
falſi fuerunt cauſa ut devolveretur ira furoris Domini
ſuper me, & docuerunt me ut ſervirem idolis veſtris, & ambularem
in inſtitutis veſtris : Domino autem ſeculi, qui eſt
Deus meus, non ſervivi , neque ambulavi in legibus ejus, neque
cuſtodivi præcepta ejus & Legem ejus. Quando pervenit 7
tempus ut Moſes propheta diſſolveretur ab hoc ſeculo ,
dixit coram Domino : Manifeſtum eſt coram me quòd populus
iſte futurus eſt ut peccet, & ut vadat in captivitatem : nunc
autem indica mihi quomodo gubernabuntur , & quomodo
habitabunt inter populos quorum decreta ſunt eis graviora calore
& æſtu Solis in meridie in revolutione Tammuz , &
quare erunt tranſmigrantes inter greges filiorum Eſau & Iſmael,
qui applicant tibi idola ſua pro ſociis. Dixit ſanctus & benedictus 8
Moſi prophetæ: *Si*[*tu*]*poſtules* ut deleatur illis exilium : Synagoga,
quæ comparata eſt puellæ pulcherrimæ, & quam anima
mea diligit, ambulet in viis juſtorum, & ordinet orationem
ſuam in ore præfectorum ſuorum , & deducat generationes
ſuas, & doceat filios ſuos, qui comparantur hœdis caprarum ,
ut ambulent in domum Eccleſiæ & in domum doctrinæ; &
propter illud meritum ſuſtentabuntur in captivitate , donec
mittam eis regem Meſſiam, qui ducat eos in requiem ad tabernaculum
ipſorum , quod eſt domus ſanctuarii , quam ædificabunt
eis David & Salomon paſtores Iſrael.

Versio VULG. LAT.

CANTICUM
CANTICORUM
SALOMONIS,
Quod Hebraicè dicitur
SIR HASIRIM.

CAP. I.

1 OSCULETUR me oſculo oris ſui: quia meliora ſunt ubera tua
2 vino, Fragrantia unguentis optimis. Oleum effuſum nomen tuum: ideò
3 adoleſcentulæ dilexerunt te. Trahe me: poſt te curremus in odorem unguentorum tuorum. Introduxit me rex in cellaria ſua: exultabimus & lætabimur in te, memores uberum tuorum ſuper vinũ:
4 recti diligunt te. Nigra ſum, ſed formoſa, filiæ Jeruſalem, ſicut tabernacula Cedar, ſicut pelles Salomo-
5 nis. Nolite me conſiderare quòd fuſca ſim, quia decoloravit me Sol: filii matris meæ pugnaverunt contra me, poſuerunt me cuſtodẽ in vineis:
6 vineam meam non cuſtodivi. Indica mihi, quem diligit anima mea, ubi paſcas, vbi cubes in meridie, ne vagari incipiam poſt greges ſo-
7 dalium tuorum. Si ignoras te, ò pulcherrima inter mulieres, egredere, & abi poſt veſtigia gregum, & paſce hœdos tuos juxta tabernacula paſtorum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

(*) ἎΣΜΑ.
ΚΕΦ. α΄.

1 † Ἆσμα ᾀσμάτων, ὅ ἐστι (α) Σαλωμών. † Φιλησάτω
με ἀπὸ φιλημάτων στόματος αὐτοῦ· † ὅτι ἀγαθοὶ
2 μαστοί σου ὑπὲρ οἶνον, † Καὶ ὀσμὴ μύρων σου
ὑπὲρ πάντα τὰ ἀρώματα. † μύρον ἐκκενωθὲν ὄνομά
(β) σου· † διὰ τοῦτο νεάνιδες ἠγάπησάν σε, †
3 Εἵλκυσάν σε· † ὀπίσω σου εἰς ὀσμὴν μύρων σου δραμοῦμεν.
† εἰσήνεγκέ με ὁ βασιλεὺς εἰς τὸ (γ) ταμεῖον
αὐτοῦ. † ἀγαλλιασώμεθα καὶ εὐφρανθῶμεν ἐν σοί. †
ἀγαπήσομεν μαστούς σου ὑπὲρ οἶνον· † εὐθύτης ἠγάπησέ
4 σε. † Μέλαινά (δ) εἰμι ἐγὼ καὶ καλὴ θυγατέρες
Ἱερουσαλήμ, † ὡς σκηνώματα Κηδάρ, ὡς
5 δέῤῥεις Σαλωμών. † Μὴ βλέψητέ με ὅτι ἐγώ εἰμι μεμελανωμένη,
† ὅτι παρέβλεψέν με ὁ ἥλιος· † υἱοὶ μητρός
μου ἐμαχέσαντο ἐν ἐμοί, † ἔθεντό με φυλάκισσαν
ἐν ἀμπελῶσιν, † ἀμπελῶνα ἐμὸν οὐκ (ε) ἐφύλαξα.
6 † Ἀπάγγειλόν μοι ὃν ἠγάπησεν ἡ ψυχή
μου, † ποῦ (ϛ) ποιμαίνεις, ποῦ κοιτάζεις ἐν μεσημβρίᾳ,
† μήποτε γένωμαι ὡς περιβαλλομένη ἐπ' ἀγέλαις
7 ἑταίρων σου. † Ἐὰν μὴ γνῷς σεαυτὴν ἡ καλὴ ἐν γυναιξίν,
† ἔξελθε σὺ ἐν πτέρναις τῶν ποιμνίων, †
καὶ ποίμαινε τὰς ἐρίφους σου † ἐπὶ σκηνώμασι τῶν
(ζ) ποιμένων.

MS.A. (*) Ἄσματα ᾀσμάτων. (α) τῷ Σαλωμών. (β) σοι· (γ) ταμιεῖον (δ) εἰμι καὶ καλὴ (ε) ἐφύλαξαν. (ϛ) ποιμανεῖς, (ζ) ποιμνίων σου.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

CANTICUM.
CAP. I.

*Canticum canticorum, quod eſt
(a) Salomon. Oſculetur me (b) ab 1
oſculis oris ſui: quoniam (c)[a] bona
ubera tua ſuper vinum: Et odor 2
unguentorum tuorum ſuper omnia
aromata: oleum* effuſum eſt nomen
tuum. Propterea adoleſcentulæ dilexerunt
te, (d) Traxerunt te: (e) 3
poſt te in odorem unguentorum tuorum
curremus. (f) Introduxit me
rex in cubiculum ſuum. (g) Exultemus,
& lætemur in te: diligemus
ubera tua ſuper vinum; * rectitudo
dilexit te. (h) Nigra ſum ego, & 4
(i) formoſa, [†] filiæ Hieruſalem, ut
tabernacula Cedar, ut (k) pelles Salomonis.
Nolite aſpicere me, quia 5
ego (l) denigrata ſum: [b] quia (m)
deſpexit me Sol. Filii matris meæ
pugnaverunt in (n) me. Poſuerũt me
cuſtodẽ in vineis: vineam meã non
cuſtodivi. Annuntia mihi, quem di- 6
lexit anima mea, ubi paſcis, ubi cubas
in meridie: ne forte [c] efficiar
ſicut (o) adoperta ſuper greges
ſodalium tuorum. [d] Niſi cognoveris 7
te, ô pulchra inter mulieres; egredere
tu in (p) veſtigiis gregum, & paſce hœdos tuos in tabernaculis (q) paſtorum.*

INTERP. ÆTHIOP. [a] jucunda *ſunt* ubera [†] præ filiabus [b] quoniam non me intuitus eſt Sol. [c] efficiar errabunda ſuper [d] Si teipſam non cognoveris,

Verſio ÆTHIOPICA.

ማኅልየ ፡ ማኅልይ ፡ ዘውእቱ ፡
ዘሰሎሞን፡፡

ሏ፡ ይስዕመኒ ፡ በስዕመተ፡አፉሁ፡፡ ሊደ 1
ም ፡ አጥባትኪ ፡ እምወይን፡፡=፡ ወመ 2
ዓዛ ፡ ዕፍረትኪ ፡ እምኵሉ ፡ አፈው፡፡
ዕፍረት ፡ ዘተሠውጠ ፡ ስምከ፡፡ ወበእ
ንተዝ ፡ ደናግል ፡ አፍቀሩከ፡፡=፡ ወሰ 3
ሐበከ ፡ ድኅሬከ፡፡ በመዓዛ ፡ ዕፍረትከ፡
ንረውጽ፡፡ አብአኒ ፡ ንጉሥ ፡ ውስተ፡
ጽርሑ፡፡ ንትፈሣሕ ፡ ወንትሐሠይ ፡ ብ
ከ፡፡ ናፈቅር ፡ አጥባተኪ ፡ እምወይ
ን፡፡ ርቱዕ ፡ አፍቀሮትከ፡፡=፡ ጸሊም፡ 4
አነ ፡ ወሠናይት ፡ እምአዋልደ ፡ ኢየሩሳ
ሌም፡፡ ከመ ፡ ምጽላለተ ፡ ቄደር ፡ ወሐ
ይመታተ ፡ ሰሎሞን፡፡=፡ ኢትርአዩኒ ፡ 5
እስመ ፡ አነ ፡ ጸሊም፡፡ እስመ ፡ ኢደር
እየኒ ፡ ፀሐይ፡፡ ደቂቀ ፡ እምየ ፡ ተበአሱ፡
በእንቲአየ፡፡ አንበሩኒ ፡ ዓቃቢተ ፡ ዐጸደ ፡
ወይን፡፡ ዐጸደ ፡ ወይን ፡ ዘዚአየ ፡ ኢዐቀ
ብኩ፡፡=፡ ንግረኒ ፡ ዘአፍቀረት ፡ ነፍስየ፡፡ 6
አይቴ ፡ ትሬሊ ፡ ወአይቴ ፡ ትሰክብ ፡ ጊ
ዜ ፡ ቀትር፡፡ ከመ ፡ ኢይኩን ፡ እንዘ ፡ ሰ
ንጌጊ ፡ ውስተ ፡ መራእየ ፡ ካልአኒከ፡፡=፡
እመ ፡ ኢያእመርኪ ፡ ርእስኪ ፡ ሠናይት ፡ 7
እምአንስት፡፡ ፃኢ ፡ አንቲ ፡ ውስተ ፡ ሰ
ኰናሆሙ ፡ ለመርዔት፡፡ ወረዐይ ፡ መሐስ
አ ፡ አጣልኪ፡፡ ውስተ ፡ አዕጻዳቲሆሙ ፡
ለኖሎት፡፡=፡

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܠܝܢ ܫܘܒܚܬܐ ܫܘܒ̈ܚܬܐ ܕܝܠܗ ܕܫܠܝܡܘܢ *
* ܟܬܒܐ ܕܡܬܩܪܐ ܥܒܪܐܝܬ. ܫܝܪܬ ܫܝܪܝܢ. ܗܢܘ ܕܝܢ ܬܫܒܘܚܬܐ ܕܬܫܒ̈ܚܬܐ *
* ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *
* ܢܢܫܩܢܝ ܡܢ ܢܘܫܩܬܐ ܕܦܘܡܗ. ܡܛܠ ܕܛܒܝܢ ܪ̈ܚܡܝܟ ܡܢ ܚܡܪܐ. * ܠܪܝܚܐ 2
ܕܒܣ̈ܡܝܟ ܛܒ̈ܐ. ܡܫܚܐ ܕܡܘܪܐ ܫܡܟ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܥܠܝ̈ܡܬܐ ܐܚܒܘܟ. * ܓܪܘܪܝܢܝ 3 4
ܒܬܪܟ ܢܪܗܛ. ܐܥܠܢܝ ܡܠܟܐ ܠܩܝܛܘܢܗ. ܢܚܕܐ ܘܢܪܘܙ ܒܟ. ܢܥܗܕ ܚܘܒܟ ܝܬܝܪ ܡܢ ܚܡܪܐ.
ܘܡܢ ܬܪ̈ܝܨܐ ܪܚܡܬܟ. * ܐܘܟܡܬܐ ܐܢܐ ܘܫܦܝܪܬܐ ܐܢܐ ܒܢܬܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܐܝܟ ܡܫܟܢ̈ܐ ܕܩܕܪ. ܘܐܝܟ 5
ܝܪ̈ܝܥܬܐ ܕܫܠܝܡܘܢ. * ܠܐ ܬܚܘܪܘܢ ܒܝ ܕܐܘܟܡܬܐ ܐܢܐ. ܕܫܡܫܐ ܐܘܟܡܢܝ. ܒܢ̈ܝ ܐܡܝ ܐܬܟܬܫܘ 6
ܥܡܝ. ܣܡܘܢܝ ܢܛܘܪܬܐ ܠܟܪ̈ܡܐ. ܘܟܪܡܝ ܕܝܠܝ ܠܐ ܢܛܪܬ. * ܚܘܝܢܝ ܡܢ ܕܪܚܡܬ ܢܦܫܝ. ܐܝܟܢܐ 7
ܪܥܐ ܐܢܬ. ܘܐܝܟܢܐ ܡܪܒܥ ܐܢܬ ܒܛܗܪܐ. ܕܠܡܐ ܐܗܘܐ ܐܝܟ ܛܥܝܬܐ ܥܠ ܓܙܪ̈ܐ ܕܚܒܪ̈ܝܟ. * ܐܠܐ ܐܢ ܝܕܥܐ 8
ܐܢܬܝ. ܫܦܝܪܬܐ ܒܢ̈ܫܐ. ܦܘܩܝ ܠܟܝ ܒܥܩܒ̈ܬܐ ܕܥܢܐ. ܘܪܥܝ ܓܕ̈ܝܝܟܝ ܒܡܫܟܢ̈ܐ ܕܪ̈ܥܘܬܐ.

Sequitur SAPIENTIA SAPIENTIARUM
ejuſdem Salomonis.

Liber qui vocatur Hebraicè *Sirath Sirin*,
hoc eſt, Canticum Canticorum.

CAP. I.

Osculetur me oſculis oris ſui, quia meliora 2
ſunt viſcera tua vino. Ob odorem unguen- 3
torum tuorum optimorum, oleum myrrhæ eſt
nomen tuum: propterea adoleſcentulæ adamârunt
te. Trahe me, poſt te curremus. In- 4
troducito me rex in cubiculum tuum. Lætabimur
& exultabimus in te; commemorabimus
amorẽ tuum pluſquam vinum, & pluſquã rectos
dilectionẽ tuam. Nigra ſum, at decora fi- 5
liæ Jeruſalẽ, ſicut tentoria Cedar, & ſicut cortinæ
Salomonis. Ne me reſpiciatis ꝙ nigra 6
ſim; nam ſol nigram me reddidit. Filii matris
meæ pugnârunt adverſùm me, poſuerunt me
cuſtodẽ vinearum, & vineã meam non cuſtodivi.
Indicate mihi quem diligit anima mea. 7
Quomodo paſcis, & quomodo cubas in meridie?
ne ſim velut errabunda inter gregẽ arietum
tuorũ. Niſi teipſã noſcas O pulcherrima 8
inter mulieres, veni tibi ꝑ veſtigia pecudũ, &
paſce hœdos tuos in tabernaculis paſtorum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بسم الله القديم الازلي الدايم السرمدي *
* كتاب نشيد الانشاد * وهو تسبحة التسابيح * لسليمان ابن داوود النبي *
* الفصل الاول *
* فليقبلني من قبلات فمه * فان ثدييك صالحان افضل من الخمر * ونسيم طيوبك افضل 2 3
من ساير الطيوب * اسمك دهن طيب مهراق * لهذا احبتك الشباب * تجذبتك من 4
ورايك * الي نسيم طيوبك نحاضر * داخلني الملك الي خزاينه * فلنبتهج ولنفرح بك * فنحب
ثدييك افضل من الخمر * الاستقامة احبتك * يا بنات اورشليم انني سوداء * وجميلة 5
كمساكن قيدار مثل خيم سليمان * لا تنظروا الي لانني سوداء انا * لان الشمس اعرضت 6
عني * ابناء امي تحاربوا في امري * جعلوني في الكروم حافظة * وما حفظوا كرمي * اخبرني 7
يا من احبته نفسي اين ترعي اين تضطجع في الظهر * ليلا اكون كمطروحة في قطعانات 8
غيرك * ايتها الجميلة في النساء ان لم تعرفي ذاتك اخرجي انتي في اعقاب الرعايا * وارعي 9
الجداء التي لك في مساكن الرعا *

IN NOMINE DEI
Æviterni, indeficientis, perpetui,
ſempiterni.

LIBER
CARMINIS CARMINUM,
HOC EST,
CANTICI CANTICORUM,
Salomonis filii Davidis Prophetæ.

CAPUT I.

*OSCULETUR me oſculis oris 2
ſui: nam ubera tua meliora ſunt
vino: Et fragrantia unguentorum tuo- 3
rum excellentior cunctis unguentis. Nomen
tuum oleum ſuave effuſum, iccirco
amârunt te puellæ, Teque traxerunt à 4
tergo tuo. Ad fragrantiam unguentorum
tuorum accurremus. Introduxit me
rex in conclave ſuum ſecretius. Exultemus
& lætemur in te: amamus enim
ubera tua pluſquam vinum. Rectitudo
te dilexit. O filiæ Jeruſalem, nigra qui- 5
dem ſum, at formoſa velut tabernacula
Cedar, ut tentoria Salomonis. Ne me 6
ſpectetis quòd nigra ſum, quia ſol deflexit
à me. Filii matris meæ de re mea
certantes poſuerunt me cuſtodem in vineis,
nec cuſtodierunt vineam meam. In- 7
dica mihi O tu quem diligit anima mea,
ubi paſcas, ubi recubes in meridie, ne
ſim quaſi projecta inter greges non tuos.
O ſpecioſiſſima inter fœminas, ſi teipſam 8
ignoras, egredere tu per veſtigia paſtorum,
& hœdos qui ad te pertinent,
paſce in tabernaculis paſtorum.*

שיר השירים : ב

Parhoh curribus in meæ Equæ
9 לססתי ברכבי פרעה
ſunt *Decoræ* .mea *amica* te aſſimilavi
10 דמיתיך רעיתי : נאוו
tuũ collum ,*murenulis in* tuæ maxillæ
לחייך בתורים צוארך
faciemus *auri Murenulas* .*torquibus in*
11 בחרוזים : תורי זהב נעשה־
.*argenti* punctis cum tibi
לך עם נקדות הכסף :
,ſuo *circuitu* in rex *Uſquequo*
12 עד־שהמלך במסבו
.ſuum odorem dedit mea nardus
נרדי נתן ריחו :
meus dilectus myrrhæ Faſciculus
13 צרור המר ׀ דודי
.cõmorabitur mea ubera inter ,mihi
לי בין שדי ילין :
,mihi meus dilectus Copher Botrus
14 אשכל הכפר דודי לי
pulchra tu Ecce .Hen-ghedi vineis in
15 בכרמי עין גדי : הנך יפה
, pulchra tu ecce : mea amica
רעיתי הנך יפה
pulcher tu Ecce .*columbæ* tui oculi
16 עיניך יונים : הנך יפה
etiam ,*jucundus* etiam ,mi dilecte
דודי אף נעים אף
Tigna .*viridis* noſter lectus
17 ערשנו רעננה : קרות
, *larices* noſtrarum domorum
בתינו ארזים
.*abietes* noſtra laquearia
רחיטנו ברותים :

CAP. II. ב

lilium ,*Saron* roſa Ego
1 אני חבצלת השרון שושנת
inter lilium Sicut .convallium
2 העמקים : כשושנה בין
inter mea amica ſic , ſpinas
החוחים כן רעיתי בין
, ſylvæ *lignis in* malus Sicut .filias
3 הבנות : כתפוח בעצי היער
: filios inter meus dilectus ſic
כן דודי בין הבנים
, ſedi & , concupivi ejus umbra in
בצלו חמדתי וישבתי
.meo palato dulcis ejus fructus &
ופריו מתוק לחכי :
, vini domum *ad* me Introduxit
4 הביאני אל־בית היין
.amor me ſuper ejus vexillum &
ודגלו עלי אהבה :
me *roborate* , *lagenis in* me Fulcite
5 סמכוני באשישות רפדוני
,amore *ægra* quia : malis *in*
בתפוחים כי־חולת אהבה
.*ego*
אני :

תרגום TARGUM.

9 לססתי כד נפקו ישראל ממצרים רדפו פרעה ומשריתיה
בתריהון ברתיכין ובפרשין והות אורח סגירא להון מארבע
סטריהון מן ימינא ושמאלא הוו מדבריא דמליין חיוין קלן ומן
בתריהון הוה פרעה רשיעא ומשריתיה ומן קדמיהון הוה ימא
דסוף מה עבד קודשא בריך הוא אתגלי בכח גבורתיה על ימא
ונגב ית ימא וית טינא לא נגב אמרו רשיעיא וערבלאין
ונוכראין די ביניהון ית מוי דימא יכיל לנגבא וית טינא לא
יכיל לנגבא בהיא שעתא תקף רוגזיה דיי עליהון ובעא
לשנקותהון במוי דימא היכמה דאשתנקו פרעה וחילוותוהי
רתיכוהי ופרשוהי וסוסותוי אלולי משה נביא דפרש ידוי בצלו
קדם יי ואתיב רוגזא דיי מנהון ופתח איהו וצדיקי דרא ית
פומהון ואמרו שירתא ועברו בגו ימא דסוף ביבשתא בגין
10 זכותא דאברהם יצחק ויעקב רחימיא דיי : נאוו כד נפקו
למדברא אמר יי למשה כמה יאי עמא הדין לאתיהבא להון
פתגמי אוריתא ויהון כזממין בליסתהון דלא יעדון מן אורחא
טבא היכמה דלא עדי סוסיא דזממא בליסתיה וכמה יאי
קדלהון לסוברא ניר פקודי ויהי עלויהון כנירא על קדל תורא
11 דהוא חריש בחקלא ומפרנס יתיה וית מריה : תורי בכן
אתאמר למשה סק לרקיעא ואתן לך ית תרין לוחי אבנין
חציבין מספיר כורסי יקרי בהיקן כדהב טב מסדרן בשיטין
כתיבין באצבעי גליף בהון עסרתי דבריא זקיקין יתיר מן כספא
דמזוקק שבע זמנין שבעא דסכום עניינין דמתפרשין בהון
12 ארבעין ותשע אפין ואתננון על ידך לעמא בית ישראל : עד
ועוד דהוה משה רבהון ברקיעא לקבלא ית תרין לוחי אבניא
ואוריתא ותפקדתא קמו רשיעי דרא ההוא ועבדו עגל דדהב
ועירברובין די ביניהון ואסריאו עובדיהון ונפק להון שום ביש
בעלמא דמקדמת דנא הוה נפק ריחיהון נדיף בעלמא ובתר
כן סריאו כנידא ריחיה ביש לחדא ונחת מכתש סגירו על
13 בסרהון : צרור בהיא זמנא אמר יי למשה אזל חות ארום
חבילו עמך פסק מני ואשיצנון בכן תב משה ובעא רחמין מן
קדם יי ודכר יי להון עקדת יצחק דכפתיה אבוי בטור מוריה
על מדבחא ותב יי מן רוגזיה ואשרי שכנתיה ביניהון
14 כמלקדמין : אשכול הא בכן נחת משה ותרין לוחי אבנין
בידוי ובגין חובי ישראל אתיקרו ידוי ונפלו ואתברו בכן אזל
משה ושף ית עגלא ובדר ית עפריה לנחלא ואשקי ית בני
ישראל וקטיל ית כל מן דאתחיב קטול וסליק זמנא תניתא
לרקיעא וצלי קדם יי וכפר על בני ישראל בכן אתפקיד למעבד
משכנא וארונא בהיא זמנא אוחי משה ועבד ית משכנא וית
כל מנוי וית ארונא ושוי בארונא ית תרין לוחין אוחרנין ומני
ית בנוי דאהרן כהניא למקרב קורבנא על מדבחא ולנסכא ית
חמרא על קורבנא ומנן הוה להון חמרא לנסכא הלא אנון
במדברא לא אתר כשר לבית דרע ואף לא תינין ותופנין
ורמונין אלא הוו אזלין לכרמי עין גדי ונסבין מתמן אתכלין
דענבין ועצרין מנהון חמרא ומנסכין יתיה על מדבחא רבעות
15 הינא לאמרא חדא : הנך כד עבדו בני ישראל רעותא דמלכהון
הוא במימריה משבח יתהון בפמליא במלאכיא קדישיא ואמר
כמה יאון עובדך ברתי חביבתי כנשתא דישראל בזמן די אנת עבדא רעותי ועסיקא בפתגמי
אוריתי וכמא תקנין עובדיך ועניניך כגוזלין בני יונתא דמתכשרין לאתקרבא על מדבחא :
16 הנך אתיבת כנשתא דישראל קדם רבון עלמא וכן אמרת כמה יאי שכינת קודשך בעדן די את
שרי ביננא ומקבל ברעוא צלותנא ובעדן די את משרי בפורינא חביבתא ובננא סגין עלוי
17 ארעא ואנחנא פשין וסגין כאילן דנציב על עינא דמיא די עפיה שפיר ואנביה סגי : קורות
אמר שלמה נביא כמה יאי בית מוקדשא דיי דאתבני על ידי מן קיסי גולמש אבל יתיר יהי יאי
בית מוקדשא דעתיד לאתבנאה ביומי מלכא משיחא דכשורוהי יהוין מן ארזין דגנתא דעדן
ושירתוהי יהוין מן ברתי ושגי ושורבני :

ב

1 אני אמרת כנשתא דישראל בעדן דמשרי מרי עלמא שכנתיה ביני אנא מתילא לנרקום רטיב
2 מגנתא דעדן ועובדי יאין כורדא דבמישר גנוניתא דעדן : כשושנה ובעדן די אנא סטיא מן
אורחא דתקנא קדמוי ואיהוא מסלק שכינת קודשיה מני אנא מתילא לורדא דמלבלבא ביני
סלויא דנעיצן עפיהא ובזיען הכדין אנא נעיצא ובזיעא מגזירן בישן בגלותא ביני פלכי עממיא :
3 כתפוח היכמה דיאי ומשבח אתרוגא ביני אילני סרק וכולי עלמא מודעין יתיה כן רבון עלמא
הוה משבח ביני מלאכיא בעדן דאתגלי על טורא דסיני בזמן דיהב אוריתא לעמיה בהיא
שעתא בטלל שכנתיה רגינת למתב ופתגמי דאוריתיה בסימן על מוריני ושכר פקודוי נטרין לי
4 לעלמא דאתי : הביאני אמרת כנשתא דישראל אעל יתי יי לבית מתיבת מדרשא דישראל
דסיני למילף אוריתא מפום משה ספרא רבא וטקס פקודוי קבלית עלי בחבתא ואמרית כל די
5 פקיד יי אעביד ואשמע : סמכוני ובעדן די שמעית ית קליה די מתמלל מגו שלהובית אשתא
זעית ורתעית בתראי מן רתיתא בכן קריבית לות משה ואהרן ואמרית להון קבילו אתון קל
פתגמי דיי מגו אשתא ואעילו יתי לבית מדרשא וסעידו יתי בפתגמי אוריתא די עלויהון אתבסם
עלמא והבו רדידין על צוארי מפשר מליא קדישין דמתיקן על מוריני כתפוחי גנתא דעדן ואהי עסיקא בהון מאים אתסא בהון ארום מרעת חבתא אנא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

9 Quando egreſſi ſunt filii Iſrael de Ægypto, ſecuti ſunt Pharao & exercitus ejus poſt eos in curribus & in equitibus; & erat via clauſa eis à quatuor partibus: à dextris & à ſiniſtris erant deſerta plena ſerpentibus ignitis, & poſt tergum eorum erat Pharao impius & exercitus ejus, & ante eos erat mare carectoſum. Quid fecit ille ſanctus & benedictus? revelatus eſt in virtute potentiæ ſuæ ſuper mare, *& exiccavit mare, at lutum non exiccavit; dixerunt impii & miſcelli & alieni qui inter eos erant, Aquas maris potuit exiccare & lutum non potuit exiccare: ipſa hora excanduit furor Domini in eos, & voluit ſuffocare eos in aquis maris, ſicut* ſuffocatus eſt Pharao & exercitus ejus, & currus & equites, & equi ejus; niſi Moſes propheta extendiſſet manus ſuas in oratione coram Domino, & avertiſſet iram Domini ab ipſis: & aperuerunt ipſe & juſti generationis illius os ſuum, & dixerunt canticum, & tranſierunt in medio maris carectoſi per ſiccum, propter meritum Abrahæ & Iſaac & Jaacob dilectorum Domini. 10 Quando egreſſi ſunt ad deſertum, dixit Dominus ad Moſen: Quàm pulcher eſt populus hic ut dentur eis verba Legis, & ſint ſicut inauris in maxillis eorũ, ut nõ recedant à via bona, ſicut non recedit equus in cujus maxilla eſt frænum: & quã pulchra ſunt dorſa eorum ut ſuſtineant jugum præceptorũ meorum, & ſint ſuper eos ſicut jugum ſuper cervice bovis qui arat in agro, & ſuſtentat ſe & dominum ſuum. 11 Tunc dictum eſt Moſi: Aſcende ad firmamentũ, & dabo tibi duas tabulas lapideas exciſas ex ſapphiro throni gloriæ meæ, & ſplendidas ſicut aurum optimum, ordinatas per lineas, ſcriptas digito meo, in quibus ſculpta ſunt decem verba quæ expurgata ſunt magìs quàm argentum quod expurgatum eſt ſepties ſeptem vicibus, *pro numero rerum expoſitarum in illis quadraginta novem modis*: dabo autem ea per manum tuam populo domûs Iſrael. 12 Dum eſſet Moſes magiſter eorum in firmamento ut ſuſciperet duas tabulas lapideas, & Legem & præcepta: ſurrexerunt impii generationis illi⁹, & fecerũt vitulum aureum unà cum promiſcuis qui erant inter eos, & fœtida fecerunt opera ſua, & egreſſum eſt eis nomen peſſimum in ſeculo, quoniam anteà odor eorum exibat diffuſus per orbem, & poſteà fœtidi facti ſunt ut abſinthium cujus odor quàm peſſimus eſt, *& deſcendit lepra in carnem eorum.* 13 In tempore illo dixit Dominus ad Moſem: Vade & deſcende, quia corrupit ſe populus tuus: dimitte me ut conſumã eos. Tunc reverſus eſt Moſes & quæſivit miſericordiam à facie Domini: & recordatus eſt Dominus inclinationis Iſaac, qui ligatus fuerat à patre ſuo in monte Moriah ſuper altare: & converſus eſt Dominus ab ira ſua, & habitare fecit majeſtatem ſuam in medio eorum ſicut anteà. 14 Tunc enim deſcendit Moſes, & duas tabulas lapideas portabat in manibus ſuis, & propter peccata Iſrael aggravatæ ſunt manus ejus, & ceciderunt [*tabulæ*] & confractæ ſunt: & tunc abiit Moſes & comminuit vitulum, & diſperſit pulverem ejus in fluvium, & potum dedit filiis Iſrael; & occìdit omnes qui erant rei mortis: & aſcendit ſecundò ad firmamentum, & oravit coram Domino, & placavit pro filiis Iſrael. Tunc præceptum eſt ei ut faceret tabernaculum & arcam. In illo tempore feſtinavit Moſes & fecit tabernaculum & omnia vaſa ejus, & arcam, & poſuit in arca duas tabulas alias, & conſtituit filios Aaron ſacerdotes ut offerrent oblationes ſuper altare, & ut libarent vinum ſuper oblationes: & undè erat illis vinum ad libandum? nónne ipſi [*morabantur*] in deſerto loco qui non eſt aptus ad ſeminandum, neque etiam erant ibi ficus, neque vites, neque malogranata? ſed ibant ad vineas Engadi, & accipiebant indè botros uvarum, & exprimebant ex eis vinum, & libabant ex illo ſuper altare quartam partem hin ſuper ſingulos arietes. 15 Quando faciebant filii Iſrael voluntatem regis ſui, ipſe in verbo ſuo laudabat eos in conſiſtorio angelorum ſanctorum, & dicebat: Quàm pulchra ſunt opera tua filia mea dilecta mea congregatio Iſrael, in tempore quo facis voluntatem meam, & laboras in verbis Legis meæ! & quàm recta ſunt opera tua & occupationes tuæ, ſicut pullorum columbæ, qui mundi ſunt ut offerantur ſuper altari meo. 16 Reſpondit cœtus Iſrael corã dominatore ſeculi, & ita ait: Quàm pulchra eſt majeſtas ſanctitatis tuæ! quoniã in tempore quo tu habitas inter nos, & ſuſcipis voluntariè orationes noſtras; & in tempore quo tu habitas in lectulo noſtro dilecto; filii noſtri multi ſunt ſup terrã, & creſcim⁹ & multiplicamur ſicut arbor quæ plantata eſt juxta fontẽ aquarũ, cuj⁹ foliũ pulchrũ eſt, & fruct⁹ ej⁹ mult⁹. 17 Dixit Salomon propheta: Quã pulchra eſt dom⁹ ſanctuarii Dñi quæ ædificata eſt p man⁹ meas ex lignis cedrinis: ſed pulchrior eſt dom⁹ ſanctuarii quæ ædificanda eſt in dieb⁹ regis Meſſiæ, cuj⁹ trabes erunt ex cedris quæ ſunt in paradiſo voluptatis, & tigna ej⁹ erunt ex abietib⁹ & arceuthis & pinis.

CAP. II.

1 Dixit cœt⁹ Iſrael: Tempore quo dominator ſeculi collocat majeſtatẽ ſuã inter me, ego ſimilis ſum lilio viridi ex paradiſo voluptatis, & opera mea pulchra ſunt ſicut roſa quæ eſt in campo horti voluptatis. 2 In tempore autẽ quo ego declino à *via* quæ *recta eſt* corã eo, & ipſe aufert majeſtatẽ ſanctitatis ſuæ à me; ego comparata ſum roſæ quæ germinat inter ſpinas, à quib⁹ perforantur & rumpuntur folia ej⁹: ſic ego ſum compuncta et ſciſſa propter peſſimas impoſitiones in captivitate inter provincias populorũ. 3 Ecce ſicut pulchra eſt et laudabilis mal⁹ citrea inter arbores infructuoſas, et tot⁹ mund⁹ cognoſcit illã; ita dominator ſeculi fuit laudabilis inter angelos in tempore quo revelat⁹ fuit in monte Sinai, quando dedit Legẽ populo ſuo: tunc temporis in umbra majeſtatis ej⁹ deſideravi habitare: et verba Legis ej⁹ dulcia fuerunt gutturi meo, et præmia præceptorum ejus ſervantur mihi in ſeculo venturo. 4 Dixit cœtus Iſrael: Introduxit me Dominus in domũ gymnaſii doctrinæ Iſrael, in montem Sinai, ut diſcerẽ Legẽ ex ore Moſis ſcribæ magni, et vexillũ præceptorum ejus ſuſcepi ſup me in dilectione, et dixi, Omnia quæ præcepit Dñs, faciã et audiã. 5 Et in tempore quo audivi vocẽ ejus qui loquebatur de medio flammæ ignis, commota ſum & contremui retrorſũ præ pavore. Tunc acceſſi ad Moſem & Aaron, & dixi ad eos: Suſcipite vos vocẽ ſermonũ Dñi de medio ignis, & introducite me in domũ doctrinæ, & ſuſtentate me in verbis Legis in quibus ſuave fit ſeculũ; & imponite velamina ſuper cervicẽ meã, interpretationẽ verborũ ſanctorũ quæ dulcia ſunt gutturi meo, ſicut poma paradiſi voluptatis, & laborabo in eis ſi fortè ſanabor ex eis, quia langueo amore.

Verſio VULG. LAT.

8 Equitatui meo in curribus Pharaonis
9 aſſimilavi te, amica mea. Pulchræ
ſunt genæ tuæ ſicut turturis: col-
10 lum tuum ſicut monilia. Murenulas
aureas faciemus tibi, vermiculatas
11 argento. Dum eſſet rex in accubitu
ſuo, nardus mea dedit odorem ſuum.
12 Faſciculus myrrhæ dilectus meus mihi,
inter ubera mea commorabitur.
13 Botrus cypri dilectus meus mihi, in
14 vineis Engaddi. Ecce tu pulchra es,
amica mea, ecce tu pulchra es, oculi
15 tui columbarum. Ecce tu pulcher es,
dilecte mi, & decorus. Lectulus noſter
16 floridus: Tigna domorum noſtrarum
cedrina, laquearia noſtra cypreſſina.

CAP. II.

1 EGo flos campi, & lilium convallium.
2 Sicut lilium inter ſpinas, ſic amica
3 mea inter filias. Sicut malus inter
ligna ſylvarum, ſic dilectus meus inter
filios. Sub umbra illius, quem
deſideraveram, ſedi: & fructus ejus
4 dulcis gutturi meo. Introduxit me in
cellam vinariã, ordinavit in me charitatem.
5 Fulcite me floribus, ſtipate
me malis: quia amore langueo.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

8 † Τῇ ἵππῳ μου (η) ἐν ἅρμασι Φαραὼ † ὡμοίωσά
9 σε ἡ πλησίον μου. † Τί ὡραιώθησαν σιαγόνες
σου (θ) ὡς τρυγόνος, † τράχηλός σου (ι) ὡς ὁρμίσ-
10 κοι; † Ὁμοιώματα χρυσίου ποιήσομέν σοι
11 μετὰ στιγμάτων τοῦ ἀργυρίου, † Ἕως οὗ ὁ βασιλεὺς ἐν
ἀνακλίσει αὐτοῦ. † νάρδος μου ἔδωκεν ὀσμὴν αὐ-
12 τοῦ. † Ἀπόδεσμος τῆς στακτῆς ἀδελφιδός μου ἐμοί,
13 † ἀναμέσον τῶν μαστῶν μου αὐλισθήσεται. † Βότρυς τῆς
κύπρου ἀδελφιδός μου ἐμοί, † ἐν ἀμπελῶσιν Ἐν-
14 γαδδί. † Ἰδοὺ εἶ καλὴ ἡ πλησίον μου, ἰδοὺ εἶ καλή. †
15 (κ) ὀφθαλμοί σου περιστεραί. † Ἰδοὺ εἶ καλὸς (λ) ἀ-
δελφιδός μου, καί γε ὡραῖος † πρὸς κλίνῃ ἡμῶν σύ-
16 σκιος. † Δοκοὶ οἴκων ἡμῶν κέδροι, † φατνώματα ἡ-
μῶν κυπάρισσοι.

MS. A. (η) ἐπ' ἅρμασιν (θ) ὡς * τρυγόνες, (ι) ὡς ὁρμίσκος; (κ) ὀφθαλμός σου (λ) ὁ ἀδελφιδός

ΚΕΦ. β'.

1 † Ἐγὼ ἄνθος τοῦ πεδίου, † κρίνον τῶν κοιλάδων.
2 † Ὡς κρίνον ἐν μέσῳ ἀκανθῶν, † οὕτως ἡ πλησίον
3 μου ἀναμέσον τῶν θυγατέρων. † Ὡς μῆλον ἐν τοῖς
ξύλοις τοῦ δρυμοῦ, † οὕτως ἀδελφιδός μου ἀναμέσον
τῶν υἱῶν. † † ἐν τῇ σκιᾷ αὐτοῦ ἐπεθύμησα, καὶ ἐκά-
θισα, † καὶ καρπὸς αὐτοῦ γλυκὺς ἐν λάρυγγί μου. †
4 Εἰσαγάγετέ με εἰς οἶκον τοῦ οἴνου, † τάξατε ἐπ' ἐμὲ
5 ἀγάπην. † Στηρίσατέ με ἐν μύροις, † (α) στοιβά-
σατέ με ἐν μήλοις, † ὅτι τετρωμένη ἀγάπης
ἐγώ.

MS. A. (α) στοιβάσατε ἐν μήλοις,

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopica, Tranſ. LAT.

(r) Equæ meæ in curribus Pharaonis 8
aſſimilavi te, [e] proxima mea.
Quàm ſpecioſæ factæ ſunt genæ 9
tuæ, tanquam turturis: cervix tua,
ſicut (ſ) redimicula. (t) Similitudines 10
auri [f] faciemus tibi cum (u)
diſtinctionibus argenti, Quoadusq; 11
rex ſit in (x) recubitu ſuo. Nardus
mea dedit (y) odorem ſuum. (z) [g]
Alligamentum guttæ (ω) fratruelis 12
meus mihi: in medio uberum meorum
(aa) [h] demorabitur. Botrus 13
(bb) [i] cyperi fratruelis meus mihi
in vineis (cc) [k] Engaddi. Ecce es 14
(dd) ſpecioſa, [l] proxima mea: ecce
es ſpecioſa. Oculi tui (ee) columbæ.
Ecce es bonus, [m] fraternus meus, 15
& quidem es (ff) ſpecioſus: (gg) ad
cubile noſtrum (hh) umbroſus. Trabes 16
domorum noſtrarum cedri, (ii)
lacunaria noſtra cypreſſi.

CAP. II.

EGo flos campi, (a) [a] lilium 1
convallium: Sicut lilium in medio 2
ſpinarum; ita (b) proxima mea in
medio filiarum. Tanquam (c) malum 3
in lignis ſylvæ; ita (d) [b] fraternus
meus inter medium filiorum. In (e)
umbra ejus concupivi, & ſedi: &
fructꝰ ejus dulcis (f) in faucibꝰ meis.
Introducite me in (g) domum vini: 4
(h) ordinate in me charitatem:
Confirmate me in (i) unguentis: (k) 5
ſtipate me in malis: quia (l) vulnerata
charitatis ego ſum.

Verſio ÆTHIOPICA.

ለፈረስየ ፡ ለሰረገላተ ፡ ፈርዖን፡፡ አስተ 8
ማሰልኩኪ ፡ እንተ ፡ ኀቤየ፡፡=፡ ጥቀ፡ 9
ሐደም ፡ መላትሕኪ ፡ ከመ ፡ መዕንቅ፡፡
ወክሳድኪ ፡ ከመ ፡ እርመስቀስ፡፡=፡ አም 10
ሳለ ፡ ወርቅ ፡ ይገብሩ ፡ ለኪ ፡ ኰሳኵሰ፡
ዘብሩር፡፡=፡ እስከ ፡ ሶበ ፡ ንጉሥ ፡ ያስ 11
ምክ ፡ ቦቱ፡፡ ናርደስ ፡ ወሀበ ፡ መዓዛ
ሁ፡፡=፡ እቍረ ፡ ማየ ፡ ልብን ፡ ዘወልድ፡ 12
እኁየ ፡ ሊተ፡፡ ማእከለ ፡ አጥባትየ ፡ የ
ዓርፍ፡፡=፡ አስካል ፡ ዘጸገየ ፡ ዘወልድ ፡ 13
እኁየ ፡ ሊተ፡፡ ውስተ ፡ ዐጸደ ፡ ወይን፡
ዘበጋዲ፡፡=፡ ነያ ፡ ሠናይት ፡ እንተ ፡ ኀ 14
ቤየ ፡ ነያ ፡ ሠናይት፡፡ አዕይንትኪ ፡ ዘ
ርግብ፡፡=፡ ናሁ ፡ ሠናይ ፡ አንተ ፡ ወል 15
ድ ፡ እኁየ፡፡ አደም ፡ በውስተ ፡ ምስከ
ቢነ ፡ ዘበሕቁ፡፡=፡ ወሞጻሕተ ፡ ቤትነ ፡ 16
ዘአርዝ፡፡ ወመሠአርቲነ ፡ ዘበሕቁ፡፡=፡
CAP. II. አነ፡ጽጌ፡ገደም፡፡ጽጌ፡ጊደም፡ዘ 1
ውስተ፡ቈላት፡፡=፡ ከመ፡ጽጌ ፡ ደንጕላት ፡ 2
በማእከለ፡አስዋክ፡፡ከማሁ ፡ አንቲ ፡ እንተ፡
ኀቤየ ፡ በማእከለ ፡ አዋልድ፡፡=፡ ወከ 3
መ ፡ ኮል ፡ ውስተ ፡ ዕፀወ ፡ ገደም፡፡ ከ
ማሁ ፡ ዘአፈቅር ፡ በማእከለ ፡ አኃው፡፡
ታሕተ ፡ ጽላሎቱ ፡ ፈተውኩ ፡ ወነበር
ኩ፡፡ ወፍሬሁ ፡ ጥዑም ፡ ለጕርዔየ፡፡=፡
አብኡኒ ፡ ቤተ ፡ ወይን፡፡ ገብሩ ፡ ላዕሌ 4
የ ፡ ፍቅረ፡፡=፡ አጽንዑኒ ፡ በዕፍረት፡፡ 5
ሰደቁኒ ፡ በአክዋል ፡ እስመ ፡ ተነደፍኩ፡
በፍቅሩ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [e] amica mea. [f] facient tibi [g] Faſciculus ſtyracis qui ad nepotem meum pertinet & ad me: in [h] acquieſcet. [i] florum nepos meus [k] qui in Gaddi [l] amica mea: [m] nepos meus, jucundus in cubili noſtro cyprino. Trabes *CANT. II.* flos campi, qui eſt in valle: Sicut flos virginum in medio [b] dilectus meus in medio fratrum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

9 10 * ܠܪܟܫܝ ܡܪܟܒܬܗ ܕܦܪܥܘܢ ܕܡܝܬܟܝ ܩܪܝܒܬܝ. * ܫܦܪܝ ܦܟܘܟܝ ܒܓܕܘܠܐ.
11 12 ܘܨܘܪܟܝ ܒܡܢܟܐ. * ܫܪ̈ܓܝܐ ܕܕܗܒܐ ܢܥܒܕ ܠܟܝ ܥܡ ܨܝܪ̈ܐ ܕܣܐܡܐ. * ܥܡ ܡܠܟܐ
13 14 ܒܡܣܬܡܟܗ ܢܪܕܝܢ ܝܗܒ ܪܝܚܗ. * ܨܪܪܐ ܕܡܘܪܐ ܕܪܚܡ ܠܝ. ܒܝܬ ܬܕ̈ܝ ܢܒܘܬ. * ܣܘܓܠܐ
15 ܕܟܘܦܪܐ ܕܕܝ ܒܟܪܡܐ ܕܥܝܢ ܓܕܝ. * ܗܐ ܫܦܝܪܬܝ ܩܪܝܒܬܝ. ܗܐ ܫܦܝܪܬܝ. ܥܝܢܝܟܝ ܕܝܘܢܐ.
16 17 * ܗܐ ܫܦܝܪ ܐܢܬ ܕܕܝ ܐܦ ܒܣܝܡ. ܥܪܣܢ ܪܛܝܒ. * ܩܪ̈ܝܬܐ ܕܒܬܝܢ ܐܪ̈ܙܐ. ܚܘܩ̈ܐ ܕܒܪ̈ܘܬܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܒ *

1 2 * ܐܝܟ ܫܘܫܢܬܐ ܕܒܪ̈ܘܬܐ. ܫܘܫܢܬܐ ܕܥܘܡܩܐ. * ܐܝܟ ܫܘܫܢ̈ܐ ܒܝܬ ܟܘ̈ܒܐ. ܗܟܢܐ
3 ܩܪܝܒܬܝ ܒܝܬ ܒܢ̈ܬܐ. * ܐܝܟ ܚܙܘܪ̈ܐ ܒܩܝ̈ܣܐ ܕܥܒܐ. ܗܟܢܐ ܕܕܝ ܒܝܬ ܒܢ̈ܝܐ.
4 ܒܛܠܠܗ ܐܬܪܓܪܓܬ ܘܝܬܒܬ. ܦܐܪܗ ܒܠܝܠ ܒܚܟܝ. * ܐܥܠܘܢܝ ܠܒܝܬ ܚܡܪܐ. ܣܝܡܘ
5 ܥܠܝ ܚܘܒܐ. * ܣܝܡܘܢܝ ܒܒܘܣܡ̈ܐ. ܣܝܓܘܢܝ ܒܚܙܘܪ̈ܐ. ܡܛܠ ܕܟܪܝܗܬ ܚܘܒܐ ܐܢܐ.

Equæ meæ in curru Pharaonis comparavi te 9
propinqua mea. Venuſtæ ſunt maxillæ tuæ in 10
cincinnis, & collum tuum in murenulis. In- 11
textos torques aureos faciemus tibi, cum laminis
argenteis. Cum rege in accubitu ſuo, 12
nardus odorem ſuum reddidit. Faſciculus eſt 13
myrrhæ qui me diligit, inter mammas meas
pernoctabit. Botrus eſt cypri patruus meus 14
in vinea In-gadh. Ecce formoſa es propin- 15
qua mea, ecce formoſa es; oculi tui, colum- 16
bini. Ecce pulcher es mi patrue, atque ju- 17
cundus. Lectus noſter ſtratus eſt, Trabes do- 18
mûs noſtræ cedrinæ, cinguli cupreſſini.

CAP. II.

QUalis eſt flos abietum & flos vallis; 1
Quales ſunt flores inter ſpinas, talis eſt pro- 2
pinqua mea inter filias. Quales ſunt 3
mali *arbores* inter ligna ſylvæ, talis eſt
patruus meus inter filios. Umbrâ ejus oblectata
ſum, *ſub qua* et ſedi: fructus ejus
dulcis eſt palato meo. Introducite me in cel- 4
lam vinariam, diſponite ſuper me amorem,
Ponite me inter blandimenta, circunſepite 5
me pomis, quia languida ſum amore.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

9 10 * شبهتك يا قريبتي بفرسي في مركبات فرعون * ما أشد بهاء وجنتيك كاليمامة * وعنقك
11 12 كقلادة الجوهر * نستعمل لك تماثيل ذهب تشابهك * بنقط الفضة * الي ان يجي الملك في
13 عودته * البان الذي لي أفاح نسيم طيبه * من رباط الميعة الذي لابن أخي * عندي يستوطن
14 15 فيما بين ثديي * ابن أخي عنقود الزهر في كروم بني جاد * ها انت يا قريبتي جميلة * ها
16 انت حسناء * وعيناك حمامتان * ها انت يا ابن أخي جميل * ومع ذلك علي سريرنا تجليل بهي *
17 * جسور منزلنا أرز * ودفوف سقفنا سربين *

* الفصل الثاني *

1 2 * انا زهر البقعة * وسوسنة الاودية * كالسوسنة بين الاشواك * هكذا قريبتي بين البنات *
3 * كتفاحة في شجر الغيطة * هكذا ابن أخي بين البنين * اشتهيت أستظل بظله وجلست *
4 5 وثمرته حلوة في حلقي * ادخلوني الي بيت الخمر * رتبوا علي المحبة * شددوني بالطيوب *
ارصفوني في التفاح * فاني انا المحبة مجروحة *

Comparavi te O cognata mea, equæ meæ 9
in aurigis Pharaonis. Quàm vehemens 10
eſt nitor genarum tuarum! velut turturis:
& collum tuum velut torques gemmarum.
Adhibebuntur tibi figuræ aureæ 11
ſpeciem tuam referentes, cum punctis argenteis,
Quoad veniat rex in reditu ſuo. 12
Nardus mea exhalavit odorem unguenti
ſui, Ob faſciculum ſtyracis qui pertinet ad 13
nepotem meum. Apud me commorabitur
inter ubera mea. Nepos meus botrus flo- 14
rum in vineis filiorum Gadh. Ecce tu O 15
cognata mea pulchra es, ecce tu formoſa
es, oculi tui duæ columbæ. Ecce tu O 16
mi nepos, formoſus es: & adhæc ſuper
lectum noſtrum, pulcherrimum eſt operimentum:
Trabes domûs noſtræ cedrus, & 17
aſſeres laquearis noſtri cupreſſini.

CAP. II.

EGo ſum flos campi, & liliũ vallium. 1
Quale eſt lilium inter ſpinas, talis eſt co- 2
gnata mea inter filias. Quale eſt pomũ in
arbore ſylvæ, talis nepos meus inter filios. 3
Optavi in umbram ejus me recipere, &
quidem ſedi: & fructus ejus dulcis eſt in
palato meo. Introducite me in cellam vi- 4
nariam, ordinate ſuper me amorem, Con- 5
fortate me ungentis, ſtipate me malis, quoniam
ego dilecta ſaucia ſum.

שיר השירים: ב

,meo capite ſub ejus Læva
6 שמאלו תחת לראשי
.me amplexabitur ejus dextera &
וימינו תחבקני:
filiæ vos Adjuravi
7 השבעתי אתכם בנות
vel ,capreis in Jeruſalaim
ירושלם בצבאות או
,ſuſcitaveritis ſi ; agri cervis in
באילות השדה אם־תעירו
, amorem feceritis evigilare ſi &
ואם־תעוררו את־האהבה
Ecce,mei dilecti Vox .voluerit donec
8 עד שתחפץ: קול דודי הנה־
,montes ſuper tranſiliens venit ipſe
זה בא מדלג על־ההרים
.colles ſuper raptim accurrens
מקפץ על־הגבעות:
vel ,capreæ meus dilectus eſt Similis
9 דומה דודי לצבי או
ſtans iſte en : cervorum hinnulo
לעפר האילים הנה־זה עומד
è proſpiciens,noſtrã parietẽ poſt
אחר כתלנו משגיח מן־
.cancellis è ſeſe prodens ,feneſtris
החלנות מציץ מן־החרכים:
,mihi dixit &,meus dilectus Reſpondit
10 ענה דודי ואמר לי
,mea ſpecioſa ,mea ſocia tibi Surge
קומי לך רעיתי יפתי
:tranſiit hyems ecce Quia .tibi abi &
11 ולכי־לך: כי־הנה הסתו עבר
.ſibi abiit , pertranſivit imber
הגשם חלף הלך לו:
tempus ,terra in ſunt viſi Flores
12 הנצנים נראו בארץ עת
turturis vox & :pertigit cantus
הזמיר הגיע וקול התור
Ficus .noſtra terra in eſt audita
13 נשמע בארצנו: התאנה
vites & , ſuos groſſos protruſit
חנטה פגיה והגפנים
ſurge : odorẽ dederũt minutæ uvæ
סמדר נתנו ריח קומי
abi & ,mea formoſa,mea amica tibi
לכי רעיתי יפתי ולכי־
petræ ſciſſuris in mea Columba .tibi
14 לך: יונתי בחגוי הסלע
mihi oſtende : gradus abſcondito in
בסתר המדרגה הראיני
me audire fac ,tuum aſpectum
את־מראיך השמיעני את־
,dulcis tua vox quia : tuã vocem
קולך כי־קולך ערב
nobis Prehendite .decorus tuꝰ aſpectꝰ &
15 ומראיך נאוה: אחזו־לנו
, parvas vulpes , vulpes
שעלים שעלים קטנים
noſtræ vineæ & :vineas corrumpentes
מחבלים כרמים וכרמינו
ego &,mihi meꝰ Dilectus.minutæ uvæ
16 סמדר: דודי לי ואני
Donec .liliis in paſcens illi
17 לו הרעה בשושנים: עד
: umbræ fugiant & ,dies aſpiret
שיפוח היום ונסו הצללים
vel,capreæ mi dilecte te aſſimila ,circui
סב דמה־לך דודי לצבי או
.Bether mõtes ſuper cervorũ hinnulo
לעפר האילים על־הרי בתר:

תרגום TARGUM.

6 שמאלו כד הוו עמא בית ישראל אזלין במדברא הוו ענני יקרא
מסחרן להון ארבעה מארבע רוחי עלמא בגין דלא ישלוט
בהון עינא בישא וחד מן עלויהון בגין דלא ישלוט בהון שרבא
ושמשא ואוף לא מטרא וברדא וחד מלרע להון די הוה מסובר
יתהון היכמה דמסובר תורבינא ית ינקא בעטפיה וחד הוה
רהט קדמיהון מהלך תלתא יומין למככא טוריא ולמדלי
מישריא וקטיל כל חיון קלן ועקרבין די במדברא והוה מאלל
להון אתר כשר למבת בגין דהוו עסיקין באולפן דאוריתא
דאתיהיבת להון ביד ימינא דיי: 7 השבעתי בתר כן אתאמר
למשה בנבואה ומן קדם יי למשלח אזגדין לאללא ית ארעא
וכדו תבו מלאללא אפיקו שום ביש על ארעא דישראל
ואתעכבו ארבעין שנין במדברא פתח משה בפומיה וכן אמר
אשבעית יתכון כנשתא דישראל ביי צבאות ובתקפי ארעא
דישראל דלא תזידון למסק לארעא דכנען עד דיהא רעוא מן
קדם יי ויסופון כל דרי אנשי קרבא למהת מגו משריתא היכמה
דזדו אחוכון בני אפרים די נפקו תלתין שנין ממצרים עד לא
מטא קצא ונפלו ביד פלשתאי דיתבין בגת וקטלו יתהון אלהין
אוריכו עד זמן ארבעין שנין ובתר כן יעלון בניכון ויחסנון יתה:
8 קול אמר שלמה מלכא בעדן דהוו יתבין עמא בית ישראל
במצרים סליקת קבלתהון לשמי מרומא הא בכן אתגלי יקרא
דיי למשה על טורא דחורב ושדר יתיה במצרים למפרק יתהון
ולאפקא יתהון מגו דחוק מרורת מצרים וטפו על קצא בגין
זכותא דאבהתהון דמתילין לטוריא ושור על זמן שעבודא
מאה ותשעין שנין על צדקתא דאמהתן דמתילן לגלמתא:
9 דומה אמרת כנשתא דישראל בזמן דאתגלי יקרא דיי במצרים
בליליא דפסחא וקטל כל בוכרא רכב על חיזוא קלילא ורהט
כטביא וכאורזלא דאילא ואגן על בתיא די אנן תמן ואתעתד
בתר אשותנא ואשגח מן כותא ואסתכל מן חרכיא וחזא דמא
דנכסא דפסחא ודמא דגזרת מהולתא דחקיק על תרענא וחש
מן שמי מרומא וחמא לעמיה דאכלין ית נכסת חגא טוי נורא
על תמכה ועולשין ופטירין וחס עלן ולא יהב רשותא למלאך
מחבל למחבלא בן: 10 ענה ובעדן צפרא אתיב רחימי ואמר לי
קומי לך כנשתא דישראל רחימתי די מלקדמין ושפירת עובדין
אזילי נפקי מן שעבוד מצראי: 11 כי ארום הא זמן שעבודא דדמי
לסתוא פסק ושניא דאמרית לאברהם בין פלגיא אתקטעו
ומרות מצראי דמתילא למטרא טרידא חלף ואזל ולא תוספון
למחזיהון עוד עד עלמא: 12 הנצנים ומשה ואהרן דמתילו
ללולבי דתמר אתחזו למעבד נסין בארעא דמצרים ועדן קטוף
בוכריא מטא וקל רוחא דקודשא דפורקנא דאמרית לאברהם
אבוכון כבר שמעתון מה דאמרית ליה ואף ית עמא די
ישתעבדון בהון דאן אנא ובתר כן יפקון בקנינא סגיא וכען
צביתי למעבד מה דקיימית ליה במימרי: 13 התאינה כנשתא
דישראל דמתילא לבכורי תאנים פתחת פומה ואמרת שירתא
על ימא דסוף ואף עולימיא ויניקיא שבחו למרי עלמא
בלישנהון מן יד אמר להון מרי עלמא קומי לך כנשתא
דישראל רחמתי ושפרתי אזילי מכא לארעא דקיימית
לאבהתך: 14 יונתי וכדרדף פרעה רשיעא בתר עמא דישראל
הות מתילא כנשתא דישראל ליונתא דסגירא בחגוי טנרא
וחיוא מעיק לה מגיו ונצא מעיק לה מברא הכדין הות כנשתא
דישראל סגירא מארבע סטרוי דעלמא דמן קדמיהון ימא ומן
בתריהון רדיף סנאה ומן תרין סטריהון מדברין דמלין חיון
קלן דנכתין וקטלין בארסיהון ית בני נשא ומן יד פתחת
פומה בצלו קדם יי ונפקת ברת קלא מן שמי מרומא וכן אמרת אנת כנשתא דישראל דמתילא
ליונתא דכיתא ומטמרא בסגור חגוי טנרא ובחביוני דרגתא אחזיני ית חזויך וית עובדיך
דתקנן אשמעיני ית קליך ארום קליך ערב בצלותא בבית מוקדש זעיר וחזויך שפיר בעובדין
טבין: 15 אחזו בתר דעברו ית ימא אתרעמו על מיא ואתא עליהון עמלק רשיעא די נטר להון
דבבו על עסק בכירותא וברכתא די שקל יעקב אבונא מן עשו ואתא לאגחא קרבא בישראל
על דבטלו פתגמי אוריתא והוה עמלק רשיעא גנב מתחות גדפי ענני יקרא נפשתא משבטוי
דדן ומקטל יתהון על דהוה בידיהון פסלי דמיכה בההיא שעתא אתחיבו בית ישראל
דמתילין לכרמא לאתחבלא אלולי צדיקי דרא ההוא דמתילין לבוסם טב: 16 דודי בההיא
שעתא הדרו בתיובתא בכן אתעתד משה נביא וצלי קדם יי ויהושע משומשניה אזדרז ונפק
מתחות גדפי ענני יקרא דיי ועמיה גוברין צדיקיא דדמין בעובדיהון לורדא ואגיחו קרבא
בעמלק ותברו ית עמלק וית עמיה בשמתא דיי וקטלא ותבירא ובפתגם דחרב: 17 עד ובזערות יומיא עבדו בני ישראל ית עגלא דדהבא ואסתלקו ענני יקרא
די מטללין עליהון ואשתארו מפרסמן ואתרוקנו ית תקון זיניהון דחקיק ביה שמא רבא מפרש בשבעין שמהן ובעא יי להובדא יתהון מן עלמא אלולי
דאדכר קדמוי קים דקיים במימריה לאברהם ליצחק וליעקב דהוו קלילין בפולחניה כטביא וכאורזילא דאילא ותקרובתא די קרב אברהם ית יצחק בריה
בטור מוריה ומן קדמת דנא קרב תמן ית קורבניה ופלג יתהון בשוה:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

6 Quando populꝰ domꝰ Iſrael ambulabat p̃ deſertũ,erãt nubes gloriæ circundantes eos, *quatuor* p̃ quatuor ventos mundi *ne prævaleret in eos oculꝰ malꝰ*; *& una ſupra eos* ut non dominaretur in eos æſtus, neque Sol,neque pluvia, neque grando : *& altera infra eos, quæ portabat eos,ſicut portat nutritius infantem in ſinu ſuo*; *alia deniq; præcurrebat eos itinere triũ dierũ ad deprimendos montes & elevandas valles,& interimebat omnes ſerpentes ignitos & ſcorpios in deſerto,& explorabat eis locum idoneũ ad pernoctandũ,propterea quòd occupati erant in doctrina legis, quæ data fuerat eis manu dextera Domini.* 7 Poſt hæc dictum fuit Moſi in prophetia à facie Domini, ut mitteret nuncios ad explorandam terram: & quando reverſi ſunt ab explorando, detraxerunt terræ Iſrael, & demorati ſunt quadraginta annis in deſerto. Aperuit Moſes os ſuum, & ſic ait : Adjuro te eccleſia Iſrael in Domino exercituum, & in fortitudinibus terræ Iſrael, ne ſuperbè contendatis aſcendere ad terram Chanaan,donec ſit voluntas à facie Dñi : & conſumatur tota generatio virorũ bellatorum ut moriantur de medio caſtrorum : ſicut ſuperbierunt fratres veſtri filii Ephraim, qui ex Ægypto egreſſi ſunt triginta annis antequàm perveniſſet finis : & ceciderunt in manum Philiſtinorum qui habitabant in Geth, & occiderunt eos : ſed expectate uſque ad tempus quadraginta annorum, & poſteà ingredientur filii veſtri & poſſidebunt eam. 8 Dixit Salomon rex : In tempore quo habitabat populus domus Iſrael in Ægypto, aſcendit clamor eorũ ad cœlos excelſos : tunc revelata eſt gloria Dñi Moſi ſuper montem Horeb,& miſit eum in Ægyptum ut redimeret eos, & ut educeret eos de oppreſſione ſubjectionis Ægyptiorũ, & abbreviatum eſt tempus præfinitum propter merita patrum qui comparati ſunt montibus: & diminuit de tempore ſervitutis centum nonaginta annos,propter juſtitiam matrũ quæ comparatæ ſunt collibus. 9 Dixit cœtus Iſrael : In tempore quo revelata eſt gloria Dñi in Ægypto in nocte Phaſe, & occidit omnẽ primogenitum ; aſcendit ſuper fulgur velociſſimum, & cucurrit ſicut caprea & ſicut hinnulus cervorũ,& protexit domos in quibꝰ eramus, & ſtetit poſt parietes noſtros, & proſpexit per feneſtras, & aſpexit per cancellos, & vidit ſanguinẽ victimæ Phaſe & ſanguinem circuncisionis qui impreſſus erat in portis noſtris, & contemplatus eſt de cœlis excelſis,& vidit populum ſuum qui comedebat victimam ſolennitatis aſſam igni cum inteſtinis & lactucis agreſtibus & azymis;& pepercit nobis,& non dedit poteſtatem angelo diſſipatori ut diſperderet nos. 10 Et in tempore matutino reſpondit dilectus meus & dixit mihi; Surge tibi ſynagoga Iſrael, dilecta mea ab initio, & pulchra operibus, vade egredere de ſubjectione Ægyptiorum. 11 Quoniam ecce tempus ſubjectionis, quod ſimile eſt hyemi, ceſſavit, & anni quos dixi Abrahæ inter diviſiones, abbreviati ſunt ; & dominiũ Ægyptiorum, quod comparatum eſt pluviæ continuæ, tranſivit & abiit, & non addetis ultrà videre eos uſque in ſeculum. 12 Moſes autem & Aaron qui comparati ſunt ramis palmarum, apparuerunt ut ederent miracula in terra Ægypti : & tempus putationis primogenitorum advenit, & vox Spiritus ſancti & redemptionis quàm dixi Abrahæ patri veſtro : jam enim audiſtis quid dixerim ei ; Et etiam populũ cui ſervituri ſunt judicabo ego, & poſteà egredientur cum ſubſtantia magna : & nunc volo facere quod juravi ei in verbo meo. 13 Cœtus Iſrael qui comparatus eſt præcocibus ficubꝰ,aperuit os ſuũ,& dixit canticũ ſuper mare carectoſũ; & etiam pueri & infantes laudaverunt dominatorem ſeculi linguis ſuis.Illico dixit eis dominator ſeculi : Surge tibi congregatio Iſrael dilecta mea & formoſa mea, vade hinc ad terram quam juravi patribus tuis. 14 Quando perſecutus eſt Pharao impius populum Iſrael, erat cœtus Iſrael ſimilis columbæ quæ clauſa eſt in foraminibus petræ, quam ſerpens coarctat intrinſecus, & accipiter coarctat eam extrinſecus : ſic erat cœtus Iſrael clauſus à quatuor partibus mundi, quoniam ante eos erat mare, & poſt eos perſequebatur hoſtis, & à duobus lateribus eorum erant deſerta plena ſerpentibus ignitis, qui mordebant & occidebant veneno ſuo filios hominum : illico autẽ aperuit os ſuũ in oratione coram Dño, & deſcendit *filia vocis* de cœlis excelſis,& ſic ait : Tu congregatio Iſrael quæ comparata es columbæ mundæ,& occultata es in clauſura foraminũ petræ & in abſconditis graduum, oſtende mihi aſpectum tuum & opera tua recta : fac me audire vocem tuam, quoniam vox tua ſuavis eſt in oratione in domo ſanctuarii modici, & aſpectus tuus pulcher in operibus bonis. 15 Poſtquàm tranſierunt mare, murmuraverunt propter aquas ; & venit contra eos Amalech impius, qui obſervavit eis inimicitiã propter primogenituram & benedictionem quam tulerat Jaacob pater noſter ab Eſau,& venit ut pugnaret contra Iſrael, eò quòd irrita fecerant verba Legis : & Amalech impius furabatur de-ſub alis nubium gloriæ animas de tribu Dan, & occidebat eas *quòd eſſet in manibus eorum ſimulacrum Michah.* In illo tempore condemnatus eſt populus domus Iſrael, qui comparatus eſt vineæ, ut diſperderetur, niſi adfuiſſent juſti generationis illius, qui comparati ſunt optimo aromati. 16 In illo tempore converſi ſunt pœnitentia : tunc ſtetit Moſes propheta & oravit coram Domino; & Joſue miniſter ejus accinctus eſt, & egreſſus eſt de ſub alis nubium gloriæ Domini , & cum eo viri juſti qui ſimiles ſunt roſæ in operibus ſuis, & inierunt prælium contra Amalech, & confregerunt *Amalech* & populum ejus in nomine Domini,qui occîdit & contrivit eos in ore gladii. 17 Et poſt paucos dies fecerunt filii Iſrael vitulum aureum, & ſublatæ ſunt nubes gloriæ quæ obumbrabant eos : & remanſerunt diſcooperti, & exuerunt ornamentum armorum ſuorum in quibus ſculptum erat nomen magnum expoſitum in ſeptuaginta nominibus ; & voluit Dominus diſperdere eos de ſeculo, niſi ſubiiſſet memoria coram eo juramenti ſui quod juravit in verbo ſuo Abraham, Iſaac & Jaacob, qui erant velociſſimi in cultu ejus ſicut caprea & hinnulus cervorum,& etiam oblationis quam obtulit Abraham Iſaac filium ſuum in monte Moriah : & antehac obtulerat illic oblationes ſuas, & diviſerat eas æqualiter.

Verſio VULG. LAT.

6 Læva ejus ſub capite meo, & dextera
7 illius amplexabitur me. Adjuro vos,
filiæ Jeruſalem, per capreas cervóſq;
camporũ, ne ſuſcitetis, neq; evigilare
faciatis dilectam, quoadusq; ipſa velit.
8 Vox dilecti mei, ecce iſte venit ſaliens
in montibus, tranſiliens colles:
9 Similis eſt dilectus meus capreæ, hinnulóque
cervorũ: en ipſe ſtat poſt
parietem noſtrũ, reſpiciens per fenestras,
10 proſpiciens per cancellos. En
dilectus meus loquitur mihi; Surge,
propera, amica mea, columba mea,
11 formoſa mea, & veni. Jam enim
hyems tranſiit, imber abiit, & receſſit.
12 Flores apparuerunt in terra noſtra,
tempus putationis advenit: vox
turturis audita eſt in terra noſtra:
13 Ficus protulit groſſos ſuos: vineæ
florentes dederunt odorem ſuum.
Surge, amica mea, ſpecioſa mea, &
14 veni: Columba mea in foraminibus
petræ, in caverna maceriæ, oſtende
mihi faciem tuam, ſonet vox tua in
auribus meis: vox enim tua dulcis,
15 & facies tua decora. Capite nobis
vulpes parvulas, quæ demoliuntur
16 vineas: nam vinea noſtra floruit. Dilectus
meus mihi, & ego illi, qui
17 paſcitur inter lilia, Donec aſpiret
dies, & inclinentur umbræ. Revertere:
ſimilis eſto, dilecte mi, capreæ,
hinnulóque cervorum ſuper
montes Bether.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

6 † Εὐώνυμος αὐτοῦ ὑπὸ τὴν κεφαλήν μου, † καὶ ἡ δε-
7 ξιὰ αὐτοῦ περιλήψεταί με. † Ὥρκισα ὑμᾶς θυγατέρες
Ἱερουσαλὴμ, † (β) ἐν δυνάμεσι καὶ ἐν ἰσχύσεσι τοῦ
ἀγροῦ· † ἐὰν ἐγείρητε καὶ ἐξεγείρητε τὴν ἀγάπην ἕως
8 οὗ θελήσῃ. † Φωνὴ ἀδελφιδοῦ μου, † ἰδοὺ οὗτος ἥκει πηδῶν
9 ἐπὶ τὰ ὄρη, † διαλλόμενος ἐπὶ τοὺς βουνούς. † Ὅμοιός
ἐστιν ἀδελφιδός μου τῇ δορκάδι † ἢ νεβρῷ ἐλάφων
ἐπὶ τὰ ὄρη Βαιθήλ. † ἰδοὺ οὗτος (γ) ὀπίσω τοῦ
τοίχου ἡμῶν, † παρακύπτων διὰ τῶν θυρίδων, † ἐκκύπτων
10 διὰ τῶν δικτύων. † Ἀποκρίνεται ἀδελφιδός
μου, καὶ λέγει μοι, † Ἀνάστα, ἐλθὲ ἡ πλησίον μου, καλή
11 μου, περιστερά μου. † Ὅτι ἰδοὺ ὁ χειμὼν παρῆλθεν,
12 † ὁ ὑετὸς ἀπῆλθεν, ἐπορεύθη ἑαυτῷ. † Τὰ ἄνθη
ὤφθη ἐν τῇ γῇ, † καιρὸς τῆς τομῆς ἔφθακε, † φωνὴ
13 (δ) τῆς τρυγόνος ἠκούσθη ἐν τῇ γῇ ἡμῶν. † Ἡ συκῆ
ἐξήνεγκεν ὀλύνθους αὐτῆς, † αἱ ἄμπελοι κυπρίζουσιν,
ἔδωκαν ὀσμήν. † ἀνάστα, ἐλθὲ ἡ πλησίον μου,
14 καλή μου, περιστερά μου, † καὶ ἐλθὲ, Σὺ περιστερά μου,
ἐν σκέπῃ τῆς πέτρας, † ἐχόμενα τοῦ προτειχίσματος.
† δεῖξόν μοι τὴν ὄψιν σου, † καὶ ἀκούτισόν με τὴν φωνήν
σου, † ὅτι ἡ φωνή σου ἡδεῖα, καὶ ἡ ὄψις σου ὡραία.
15 Πιάσατε ἡμῖν ἀλώπεκας † μικροὺς ἀφανίζοντας
ἀμπελῶνας· † καὶ αἱ ἄμπελοι ἡμῶν (ε) κυπρίζουσαι.
16 † Ἀδελφιδός μου ἐμοὶ, κἀγὼ αὐτῷ· † ὁ ποιμαίνων
17 ἐν τοῖς κρίνοις, † Ἕως οὗ διαπνεύσῃ (˝) ἡ ἡμέρα,
καὶ κινηθῶσιν αἱ σκιαί. † ἀπόστρεψον, ὁμοιώθητι
σὺ ἀδελφιδέ μου † τῷ δόρκωνι ἢ νεβρῷ ἐλάφων
† ἐπὶ ὄρη κοιλωμάτων.

MS.A. (β) ἐν ταῖς δυνάμεσιν καὶ ἐν ταῖς ἰσχύσεσιν (γ) ἕστηκεν ὀπίσω τοῦ τοίχου (δ) τοῦ τρυγόνος (ε) κυπρίζουσιν. (˝) ἡμέρα,

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

[†] Leva ejꝰ ſub capite meo, et dextera ejus (m) amplectetur me. Adjuravi 6 7
vos, filiæ Hieruſalem, in virtutibus, & in viribus agri; ſi ſuſcitàveritis,
& (n) reſuſcitaveritis [c] *charitatem, (o) quoadusq; velit. Vox* 8
(p) [d] *fraterni mei, ecce hic venit: ſaliens* [e] *ſuper montes, tranſiliens ſuper*
colles. Similis eſt [f] *fraternus* 9
meus capreæ, vel (q) hinnulo cervorum in montibus Bæthel. Ecce (r) hic
[g] *poſt parietem noſtrum, incumbens*
per feneſtras, proſpiciens per retia.
(ſ) Reſpondet fraternus meus, & 10
dicit mihi; Surge, veni, [h] *proxima*
mea, formoſa mea, columba mea:
Quoniã ecce hyems (t) tranſiit, pluvia 11
abiit, receſſit ſibi. Flores viſi ſunt 12
in [i] *terra: tempus (u) ſectionis advenit:*
vox turturis audita eſt in terra noſtra:
Arbor fici (x) produxit 13
germina ſua: (y) vites florent, dederunt
odorem. (z) Surge, veni, proxima
mea, formoſa mea, columba mea,
& veni, Tu columba mea in tegimento 14
petræ juxta promurale.
Oſtende mihi faciem tuam, et auditam
(ω) fac mihi vocem tuam:
quia vox tua ſuavis, et facies tua
ſpecioſa. (aa) Capite nobis vulpes 15
puſillas (bb) exterminantes vineas:
& vineæ noſtræ florentes. [k] *Fraternus* 16
meus mihi, & ego (cc) ei: qui
paſcit in liliis, (dd) Donec reſpiret 17
dies, & (ee) [l] *amoveantur umbræ.*
(ff) Revertere, ſimilis efficere,
[m] *fraterne mi, capræ, vel hinnulo*
cervorum ſuper montes cavitatũ.

Verſio ÆTHIOPICA.

የማኑ ፡ ተሐቅፈኒ ፡ ወፀጋሙ ፡ ታሕተ ፡ ርእስየ፡፡=፡ 6
እመሐልኩክን፡አዋልደ፡ኢየሩሳሌም፡፡ 7
በኃይሉ፡ወበጽንዑ፡ለገደም፡፡እመ፡ተንሥአ፡
ወአንሥአ፡ሙታን፡፡ አፈቅሮ፡እስከ፡እመ፡ፈቀደ፡፡=፡
ቃለ፡ ወልድ፡ እኁየ፡ናሁ፡ውእቱ፡ 8
መጽአ፡፡
ፀ ፡ እንዘ ፡ ይቀንጽ ፡ ማእከለ ፡ አድባር፡፡
ወያንበሰብስ፡ደበ፡አውግር፡፡=፡ይመስል፡ 9
ወልድ፡እኁየ፡ከመ፡ወይጠል፡፡ወከመ፡ወሬዛ፡
ኃያል፡ውስተ፡አድባረ፡ቤቴል፡፡ ናሁ፡ውእቱ፡
ይቀውም፡እንተ፡ድኅሬ፡አረፍት፡፡ ወይኄውጽ፡
እንተ፡መሳክው፡፡ ወይደንን፡ እንተ፡ተድባብ፡፡=፡
ያወሥእ፡ወልድ፡እኁየ፡ወይብለኒ፡፡ 10
ተንሥኢ፡ ወንኢ፡ እንቲአየ፡ ሠናይት፡ ርግብየ፡፡=፡
እስመ፡ናሁ፡ክረምት፡ኀለፈ፡፡ወዝናም፡ 11
ኀለፈ፡ወገብአ፡ለሊሁ፡፡=፡ ጽጌ፡ አስተርእየ፡ 12
በውስተ፡ምድርነ፡፡ጊዜ፡ገሚድ፡በጽሐ፡፡
ቃለ፡ማዕነቅ፡ተሰምዓ፡በውስተ፡ምድርነ፡፡=፡
በለስ፡አውፅአ፡ሠርፀ፡፡ አውያን፡ጸገዩ፡ ወወሀቡ፡ 13
መዓዛ፡፡ተንሥኢ፡ወንዒ፡ቅርብትየ፡፡=፡
እንቲአየ ፡ሠናይት፡ርግብየ፡፡ ውስተ፡ጽላሎት፡ 14
ኰኵሕ፡ቅሩብ፡ጥቅም፡፡አርእየኒ፡ገጽከ፡
ወአስምዓኒ፡ቃለከ፡፡ እስመ፡ቃልከ፡አዳም፡ወገጽከ፡
ሳሕይ፡፡=፡አሕግሩ፡ለነ፡ቈናጽለ፡ንኡሳነ፡ 15
እለ፡ያማስኑ፡፡አጸደ፡ ወይንነ፡ዓጸደ፡ወይንነ፡
ይጽጊ፡፡=፡ ወልድ ፡ እኁየ፡ሊተ፡ ወአነ፡ 16
ሎቱ፡፡ ዘይትረአይ፡ውስተ፡ጽገያት፡፡=፡ እስከ፡ 17
ሶበ፡ ታስተነፍስ፡ዕለት፡ወያንቀለቅሉ፡ ጽላሎት፡፡
ተመየጥ፡ አንተ፡ ወልድ፡እኁየ፡ወተመሰል፡
ወይጠል፡፡ ወከመ፡ወሬዛ፡ ኃያል፡ውስተ፡
አድባረ፡ድኁኃን፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [†] Dextera ejus amplectitur me, & læva [c] Dominum charitatis, [d] nepotis mei, [e] inter montes, adproperans [f] nepos meus [g] ſtans poſt parietem, proſpectans per feneſtras, & recumbens per cacumina. Reſpondet nepos meus, [h] unica mea, [i] terra noſtra: [k] Nepos meus [l] inclinentur umbræ. [m] nepos

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

6 * شماله تحت راسي * ويمينه تتعطف علي * استحلفكن يا بنات اورشليم باقتدارات الحقل 7
وقواته * ان انتم اقمتم واستنهضتم الحبيبة الي ان تشاء هي * صوت ابن اخي * ها هوذا يجي * 8
فيطفر على الجبال * ويقفز على التلال * ابن اخي شبيه بالغزال او بخشف الايل على جبال 9
بيت ايل * ها هو قد وقف ورا حايطنا مستشرفا في النوافذ متطلعا في الشباك * فاجابني 10
ابن اخي وقال * يا قريبتي انهضي وتعالي يا جميلتي وحمامتي * فها الشتي قد عبر * والمطر 11
ذهب وسار الي ذاته * الازهار قد ظهرت في الارض * وقد بلغ اوان القطع * صوت اليمامة 12
سمع في ارضنا * التينة قربت قوتها * الكروم اذا ازهرت منحت نسيم طيبها * انهضي 13
وتعالي يا قريبتي يا جميلتي وحمامتي * وهلمي انتي يا حمامتي * في كنف الصخرة مصاقبة 14
فصيل السور اريني وجهك * واسمعيني صوتك * فان صوتك لذيذ * ووجهك بهي *
* اصطادوا لنا الثعالب الصغار المبيدة الكروم * فتزهر كرومنا * ابن اخي لي وانا له * الذي 15 16
يرعى في السوسن * الي ان تهب النهار وتسير الافيا * ابن اخي ارجع فانت شبيها بالغزال 17
او بخشف الايل المترع على الجبال *

Siniſtra ipſius ſub capite meo, et dextera 6
ipſius flectatur ſuper me. Adjuro 7
vos O filiæ Jeruſalem, per potentias
agri ejuſque virtutes, ne ſuſcitetis,
néve expergefaciatis dilectam, donec
ipſa velit. Vox nepotis mei auditur*: ecce* 8
venit, ſalitque ſuper montes, & ſubſultat
ſuper colles. Nepos meus ſimilis 9
eſt cervo aut hinnulo capreæ ſuper montes
Beth-Il. En ipſe ſtetit poſt noſtrum
parietem, proſpiciens per feneſtellas, proſpectans
per clathrum: Et reſpondens 10
mihi nepos meus ait, O cognata mea ſurge
& veni, O formoſa mea, & columba
mea. Ecce enim hyems jam præteriit, 11
& pluvia abiit, ſeſeque recepit.
Flores jam apparuerunt in terra, jamque 12
adeſt tempus amputandi. Vox turturis
audita eſt in terra noſtra. Fici vigor 13
advenit: vineæ, quòd floruerint, odorem
fragrantiæ ſuæ reddiderunt. Surge
itaque, & veni O cognata mea, O formoſa
mea, & columba mea; Et adveni 14
tu O columba mea, ad latus petræ adjacentis
parieti ſubmœniano oſtende mihi
faciem tuam, & audire me fac
vocem tuam: vox enim tua jucunda
eſt, & facies tua nitida. Venamini 15
nobis vulpes parvas vinearum vaſtatrices,
florebuntque vineæ noſtræ. Nepos 16
meus, meus eſt; & ego illius,
qui paſcit inter lilia. Donec perflet 17
dies, & procedant umbræ. Mi nepos,
revertere: tu enim ſimilis es
cervo aut hinnulo capreæ uberibus paſcuis
ſuper montes gaudenti.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

6 * ܣܡܠܗ ܬܚܝܬ ܪܝܫܝ܂ ܘܝܡܝܢܗ ܬܓܦܦܢܝ܂ * ܐܘܡܝܬܟܝܢ ܐܘ ܒܢܬ ܐܘܪܫܠܡ܂ 7
ܒܛܒܝܐ ܐܘ ܒܐܝܠܐ ܕܚܩܠܐ܂ ܕܠܐ ܬܥܝܪܢ ܘܠܐ ܬܬܥܝܪܢ ܠܗ̇ ܠܪܚܡܬܐ ܥܕܡܐ ܕܬܨܒܐ܂ * ܩܠܗ ܕܕܘܕܝ 8
ܗܐ ܗܢܐ ܐܬܐ܂ ܘܡܫܘܪ ܥܠ ܛܘܪ̈ܐ܂ ܘܡܕܠܓ ܥܠ ܪ̈ܡܬܐ܂ * ܕܡܐ ܕܕܝ ܠܛܒܝܐ܂ ܐܘ ܠܐܝܠܐ ܕܐܝܠ̈ܐ܂ ܗܐ ܗܘ 9
ܩܐܡ ܒܣܬܪ ܫܘܪܢ܂ ܘܡܕܝܩ ܡܢ ܟܘ̈ܐ܂ ܘܡܬܚܙܐ ܡܢ ܚܪ̈ܟܐ܂ * ܥܢܐ ܕܕܝ ܘܐܡܪ ܠܝ܂ ܩܘܡܝ 10
ܠܟܝ ܩܪܝܒܬܝ܂ ܫܦܝܪܬܝ ܘܬܝ ܠܟܝ܂ * ܕܗܐ ܣܬܘܐ ܥܒܪ ܘܐܙܠ ܠܗ܂ * ܘܘܪ̈ܕܐ 11 12
ܐܬܚܙܝܘ ܒܐܪܥܐ܂ ܙܒܢܐ ܕܟܣܚܐ ܡܛܐ܂ ܘܩܠܐ ܕܫܘܦܢܝܢܐ ܐܫܬܡܥ ܒܐܪܥܢ܂ * ܬܐܬܐ ܐܦܩܬ 13
ܦܩܘܥܝܗ̇܂ ܘܓܦܢ̈ܐ ܘܡܦܪ̈ܥܝܢ ܝܗܒܘ ܪܝܚܐ܂ ܩܘܡܝ ܠܟܝ ܫܦܝܪܬܝ ܩܪܝܒܬܝ܂ ܘܬܝ ܠܟܝ
ܝܘܢܬܝ܂ * ܒܢܩܥܬܐ ܕܟܐܦܐ ܘܒܛܘܫܝܐ ܕܫܘܪܐ ܚܘܝܢܝ ܚܙܘܟܝ ܘܐܫܡܥܝܢܝ ܩܠܟܝ܂ ܕܩܠܟܝ 14
ܒܣܝܡ܂ ܘܚܙܘܟܝ ܝܐܐ܂ * ܐܚܘܕܘ ܠܢ ܬܥ̈ܠܐ܂ ܬܥ̈ܠܐ ܙܥܘܪ̈ܐ ܕܡܚܒܠܝܢ ܟܪ̈ܡܐ܂ ܘܟܪ̈ܡܝܢ 15
ܡܦܪ̈ܥܝܢ܂ * ܕܕܝ ܠܝ ܘܐܢܐ ܠܗ܂ ܕܪܥܐ ܒܫܘܫܢ̈ܐ܂ * ܥܕܡܐ ܕܢܦܘܚ ܝܘܡܐ܂ ܘܢܨܠܘܢ 16 17
ܛܠܠ̈ܐ܂ ܗܦܘܟ ܕܡܐ ܠܟ ܕܕܝ ܠܛܒܝܐ ܐܘ ܠܐܝܠܐ ܕܐܝܠ̈ܐ ܥܠ ܛܘܪ̈ܐ ܕܒܣܡ̈ܐ܂

Læva ejus ſub capite meo, & dextera ipſius 6
amplexetur me. Obteſtor vos O filiæ Jeruſa- 7
lem, p capreolos aut p hinnulos agri, ſi excitetis
aut expergefaciatis ipſam dilectã, donec
velit. Vox patrui mei, en iſte eſt qui venit, tri- 8
pudians ſup mõtes, ſaltãs ſup colles. Similis eſt 9
patruꝰ meꝰ capreolo, aut hinnulo cervi: ipſemet
ecce ſtat à tergo parietis noſtri, proſpectans
è feneſtris, & inclinatus à cardinibus.
Reſpondit patruꝰ meꝰ, dixitque mihi, Surge 10
propinqua mea, pulchra mea, & abi tibi.
Quoniã ecce hyems præteriit & abiit. Flores 11 12
apparuerunt in terra, tempꝰ putandi appropinquavit,
& vox turturis audita eſt in terra
noſtra. Ficus protruſit groſſos ſuos, vites & 13
flores vineæ dederũt odorẽ ſuũ. Surge tibi
pulchra mea, propinqua mea; & veni columba
mea. In cavitatibus petræ, & in latibulo 14
maceriæ oſtẽde mihi aſpectũ tuũ, et audire me
fac vocẽ tuã; quia vox tua ſuavis eſt, et aſpectus
tuꝰ decorus. Prehendite nobis vulpes, 15
vulpes *inquam* minutas, corrumpentes vineas,
et *quidem* vineas noſtras florentes. Patruus 16
meus mihi, et ego illi, qui paſcitur in liliis,
Donec refrigeretur dies, et inclinentur umbræ. 17
Convertere, ſimilis eſto mi patrue, capreolo
aut hinnulo cervorũ ſup mõtes aromatũ.

שיר השירים : ג

CAP. III. ג

quæſivi noctibus in meo cubili *Super*
1 עַל־מִשְׁכָּבִי בַּלֵּילוֹת בִּקַּשְׁתִּי
,cum quæſivi : mea anima *dilexit* quem
אֵת שֶׁאָהֲבָה נַפְשִׁי בִּקַּשְׁתִּיו
,nunc Surgam .eum inveni non &
2 וְלֹא מְצָאתִיו׃ אָקוּמָה נָּא
,plateis in ,civitate in circuibo &
וַאֲסוֹבְבָה בָעִיר בַּשְּׁוָקִים
dilexit quem quæram *,latis locis in &*
וּבָרְחֹבוֹת אֲבַקְשָׁה אֵת שֶׁאָהֲבָה
.eum inveni non & ,eũ quæſivi :mea anima
נַפְשִׁי בִּקַּשְׁתִּיו וְלֹא מְצָאתִיו׃
circueuntes cuſtodes me Invenerunt
3 מְצָאוּנִי הַשֹּׁמְרִים הַסֹּבְבִים
mea anima *dilexit* quem *: civitate in*
בָּעִיר אֵת שֶׁאָהֲבָה נַפְשִׁי
tranſiviſſẽ *quòd* paululũ *Tanquã* ? vidiſtis
4 רְאִיתֶם׃ כִּמְעַט שֶׁעָבַרְתִּי
dilexit quem inveni *quo uſque* ,eis ab
מֵהֶם עַד שֶׁמָּצָאתִי אֵת שֶׁאָהֲבָה
non & ,eum apprehendi : mea anima
נַפְשִׁי אֲחַזְתִּיו וְלֹא
eum introducam donec ,eum dimittam
אַרְפֶּנּוּ עַד־שֶׁהֲבֵיאתִיו
conclave ad & ,meæ matris domum *ad*
אֶל־בֵּית אִמִּי וְאֶל־חֶדֶר
filiæ vos Adjuravi .meæ genitricis
5 הוֹרָתִי׃ הִשְׁבַּעְתִּי אֶתְכֶם בְּנוֹת
cervis in vel *,capreis in* Jeruſalaim
יְרוּשָׁלִַם בִּצְבָאוֹת אוֹ בְּאַיְלוֹת
ſi & ,ſuſcitaveritis ſi ;campi
הַשָּׂדֶה אִם־תָּעִירוּ ׀ וְאִם־
donec ,amorem feceritis evigilare
תְּעוֹרְרוּ אֶת־הָאַהֲבָה עַד
è aſcendens iſta Quæ .voluerit
6 שֶׁתֶּחְפָּץ׃ מִי זֹאת עֹלָה מִן־
ſuffita ;fumi columnæ ſicut deſerto
הַמִּדְבָּר כְּתִימְרוֹת עָשָׁן מְקֻטֶּרֶת
pulvere omni ex ,thure & ,myrrha
מֹר וּלְבוֹנָה מִכֹּל אַבְקַת
,Selomoh ipſi qui *ipſiꝰ* lectꝰ En ?pigmẽtarii
7 רוֹכֵל׃ הִנֵּה מִטָּתוֹ שֶׁלִּשְׁלֹמֹה
: eum circum ,potentes ſexaginta
שִׁשִּׁים גִּבֹּרִים סָבִיב לָהּ
apprehenſi ipſi Omnes .Iſrael potentibus ex
8 מִגִּבֹּרֵי יִשְׂרָאֵל׃ כֻּלָּם אֲחֻזֵי
viri : bellum docti *,gladio*
חֶרֶב מְלֻמְּדֵי מִלְחָמָה אִישׁ
pavore à , ſuum femur ſuper *ejus* gladius
חַרְבּוֹ עַל־יְרֵכוֹ מִפַּחַד
ſibi fecit *ſponſarũ Thalamum* .noctibus in
9 בַּלֵּילוֹת׃ אַפִּרְיוֹן עָשָׂה לוֹ
.Lebanon lignis ex Selomoh rex
הַמֶּלֶךְ שְׁלֹמֹה מֵעֲצֵי הַלְּבָנוֹן׃
ejus ſtratum *,argenti* fecit ejus Columnas
10 עַמּוּדָיו עָשָׂה כֶסֶף רְפִידָתוֹ
ejus medium *: purpuræ ejus vehiculum ,auri*
זָהָב מֶרְכָּבוֹ אַרְגָּמָן תּוֹכוֹ
.Jeruſalaim *filiabus à* , amore *ſuccenſum*
רָצוּף אַהֲבָה מִבְּנוֹת יְרוּשָׁלִָם׃
regem *in* Sijon filiæ videte &,Egredimini
11 צְאֶינָה וּרְאֶינָה בְּנוֹת צִיּוֹן בַּמֶּלֶךְ
eum coronavit *quo* *,diademate in* Selomoh
שְׁלֹמֹה בָּעֲטָרָה שֶׁעִטְּרָה־לּוֹ
,ſuæ deſponſationis die in ejus mater
אִמּוֹ בְּיוֹם חֲתֻנָּתוֹ
.ejus cordis lætitiæ die in &
וּבְיוֹם שִׂמְחַת לִבּוֹ׃

תרגום TARGUM.

ג

1 על וכד חזו עמא בית ישראל דאסתלקו ענני יקרא מעלויהון
וכלילא דקודשא דאתיהב להון בסיני אתנטילת מנהון
ואשתארו חשיכין כליליא ובעו ית כלילא דקודשא דאסתלק
2 מנהון ולא אשכחוהי : אקומה אמרין בני ישראל אלין לאלין
נקום וניזול ונסחר למשכן זמנא דפרסיה משה מברא למשריתא
ונתבע אולפן מן קדם יי ושכינת קודשא דאסתלקת מננא
3 וחזרו בקרוין ובפלטיא ובפתיין ולא אשכחו : מצאוני אמרת
כנשתא דישראל אשכחו יתי משה ואהרן וליואי נטרי מטרת
מימרא דמשכן זמנא די מסחרן יתיה חזור חזור ושאלית
להון על עסק שכינת יקרא דיי דאסתלקת מני אתיב משה
ספרא רבא דישראל וכן אמר אסק לשמי מרומא ואצלי קדם
יי מאים יכפר על חוביכון וישרי ית שכנתיה ביניכון כמלקדמין :
4 כמעט כזעיר צבחר הוה ותב יי מתקוף רוגזיה ופקיד למשה
נביא למעבד משכן זמנא וארונא ואשרי שכנתיה בגויה ועמא
בית ישראל הוו מקרבין קורבניהון ועסיקין בפתגמי אורייתא
באדרון בית מדרשא דמשה רבהון ובקטונא דיהושע בר נון
5 משומשניה : השבעתי כד שמעו שבעא אומיא דבני ישראל
עתידין למחסן ית ארעהון קמו כחדא וקציצו ית אילניא
וסתימו ית מבועי מיא וצדיאו ית קרויהון וערקו אמר קודשא
בריך הוא למשה נביא אנא קיימית לאבהתהון דאלין לאעלא
ית בניהון לאחסנא ארעא עבדא חלב ודבש והכדין אנא מעל
ית בניהון לארעא צדיא וריקניא כען אנא מעכב יתהון ארבעין
שנין במדברא ותהי אורייתי מתערבא בנופיהון ומבתר כן אנון
עממין רשיעין יבנון מה דאצדיאו בכן אמר משה לבני ישראל
אשבעית לכון כנשתא דישראל ביי צבאות ובתקיפי ארעא
דישראל דלא תוידון למסק לארעא דכנענאי עד משלם
ארבעין שנין ויהא רעוא מן קדם יי לממסר יתבי ארעא
בידיכון ותעברון ית ירדנא ותהי ארעא כבישא קדמיכון :
6 מי כד סליקו ישראל מן מדברא ועברו ית ירדנא עם יהושע
בר נון אמרו עמי ארעא מה היא דא אומא בחירתא דסלקא מן
מדברא מתנמרא מן קטורת בוסמין וסעידא בזכותיה דאברהם
די פלח וצלי קדם יי בטור מוריה ומתמרקא משח רבותא
בצדקתיה דיצחק די אתעקד באתר בית מוקדשא דמתקרי טור
דלבונתא ומתעבדין לה נסין בחסידותיה דיעקב דאשתדל
עמיה עד מסק קריצתא ואתגבר מניה ואשתזיב הוא ותרי עסר
7 שבטוי : הנה כד בנא שלמה מלכא דישראל ית בית מקדשא
דיי בירושלם אמר יי במימריה כמה יאי בית מוקדשא הדין
דאתבני לי על ידוי דמלכא שלמה בר דוד וכמה יאין כהניא
בעדן דפרסין ידיהון וקימין על דוכניהון ומברכין לעמא בית
ישראל בשתין אתין דמסירין למשה רבהון ובההיא ברכתא
מסחרא להון כשור רם ותקיף ובה מתגברין ומצלחין כל
8 גברי ישראל : כלם וכהניא וליואי וכל שבטיא דישראל כולהון
אחדין בפתגמי אורייתא דמתילין לחרבא ושקלן וטרין בהון
כגברין מאלפי קרבא וכל חד וחד מנהון חתימת מילה על
בסרהון היכמה אתחתימת בבסריה דאברהם ומתגברין בה
כגבר דחרבא חגירא על ירכיה ובגין כן לא דחלין מן מזיקיא
9 וטלני דאזלין בליליא : אפריון היכל קודשא בנא ליה
שלמה מלכא מן אילני זנגבילא ושאגי ושורבני דאיתי מן
10 לבנון וחפא יתיה דהב דכי : עמודיו ובתר די שלם
יתיה שוי בגויה ית ארונא דסהדותא דהוא עמודא דעלמא
ובגויה תרין לוחי אבניא די אצנע תמן משה בחורב דיקירין מן כסף מזוקק ושפירין מן דהב
טב ופריש וטלל מן עלוויה ית פרוכתא דתכלא וארגונא וביני כרוביא די עלוי כפורתא
11 הות שריא שכנתא דיי דשכן שמיה בירושלם מן כל כרכי ארעא דישראל : צאינה כד
אתא שלמה מלכא למעבד ית חנכת בית מוקדשא כרוזא נפק בחיל וכן אמר פוקו וחזו יתבי
פלכיא דארעא דישראל ועמא דציון כתנא ובכלילא דכלילו עמא בית ישראל ית מלכא
שלמה ביום חנוכת בית מוקדשא וחדי בחדות חגא דמטללתא דעבד שלמה מלכא בעדנא
ההיא ית חגא דמטללתא ארבעה עסר יומין :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. III.

ET quando vidit populus domus Iſrael quòd ſublatæ eſ- 1
ſent nubes gloriæ ab eis , & corona ſanctitatis quæ
data fuit eis in Sinai,ablata eſſet ab eis,remanſerunt con-
tenebrati ſicut nox , & quæſierunt coronam ſanctitatis quæ
ſublata fuerat ab eis, & non invenerunt illam. Dixerunt 2
filii Iſrael ad invicem : Surgamus & eamus & circunde-
mus tabernaculum fœderis quod extendit Moſes extra
caſtra, & quæramus doctrinam à facie Domini, & majeſta-
tem ſanctam quæ ſublata eſt à nobis : & circuierunt per
civitates & plateas & per vicos, & non invenerunt eam.
Dixit cœtus Iſrael : Invenerunt me Moſes & Aaron & 3
Levitæ obſervantes cuſtodiam verbi tabernaculi fœderis
qui circuibant illud per gyrum, & interrogavi eos de ma-
jeſtate gloriæ Domini quæ ſublata fuerat à me. Reſpondit
Moſes ſcriba princeps Iſrael, & ſic ait : Aſcendam ad cœ-
los excelſos & orabo coram Domino , ſi fortè placabi-
tur ſuper peccata veſtra, & habitare faciet majeſtatem
ſuam inter vos ſicut olim. Quaſi paulum & modicum fu- 4
it , & reverſus eſt Dominus ab ira furoris ſui , & præce-
pit Dominus Moſi prophetæ ut faceret tabernaculum fœ-
deris & arcam ; & collocavit majeſtatem ſuam in medio
ejus: & populus domus Iſrael offerebant oblationes ſuas,
& navabant operam verbis Legis in cœnaculo domus
doctrinæ Moſis magiſtri eorum , et in cubiculo Joſue filii
Nun miniſtri ejus. Quando audierunt ſeptem populi quòd 5
filii Iſrael poſſeſſuri eſſent terram ipſorum, ſurrexerunt ſi-
mul et ſucciderunt arbores, et obturaverunt fontes aqua-
rum, et deſtruxerunt urbes ſuas et fugerunt. Dixit ille
ſanctus et benedictus Moſi prophetæ : Ego juravi patri-
bus iſtorum me introducturum filios eorum in poſſeſſionem
terræ fluentis lacte & melle, *& nunc ego induco filios eorum*
in terram devaſtatam & vacuam: nunc ego retinebo eos
quadraginta annis in deſerto , & erit Lex mea adſueta
corporibus eorum : & poſteà illi populi impii ædifi-
cabunt quod deſtruxerunt. Tunc dixit Moſes filiis Iſra-
el : Adjuro vos cœtus Iſrael per Dominum exercituum,
& per fortes terræ Iſrael , ne ſuperbè contendatis ut
aſcendatis in terram Chananæorum, donec impleantur qua-
draginta anni, & ſit voluntas coram Domino ut tradat
habitatores terræ in manus veſtras : & tranſibitis Jor-
danem, & erit terra ſubjecta coram vobis. Quando 6
aſcenderunt filii Iſrael de deſerto, & tranſierunt Jorda-
nem cum Joſue filio Nun, dixerunt populi terræ : Quæ
eſt iſta gens electa quæ aſcendit de deſerto, ſuffumigata
ab incenſu aromatum , & adjuta propter meritum Abra-
hæ, qui ſervivit & oravit coram Domino in monte Mo-
riah, & exterſa oleo unctionis propter juſtitiam Iſaac,
qui ligatus fuit in loco domûs ſanctuarii, qui vocatus eſt
Mons thûris : & fiunt ei mirabilia propter miſericordiam
Jaacob , cum quo luctatus eſt uſque ad aſcenſum auroræ,
& prævaluit illi, & liberatus eſt ipſe & duodecim tri-
bus ejus. Quando ædificavit Salomon rex Iſrael domum 7
ſanctuarii Domini in Jeruſalem, dixit Dominus in ver-
bo ſuo : Quàm pulchra eſt domus ſanctuarii hæc quæ
ædificata eſt mihi per manus regis Salomonis filii David!
& quàm pulchri ſunt Sacerdotes in tempore quo exten-
dunt manus ſuas & ſtant in ſuggeſto ſuo,& benedicunt po-
pulo domûs Iſrael *in ſexaginta ſignis quæ tradita ſunt*
Moſi magiſtro eorum ! & illa benedictio circundat eos
ſicut murus excelſus & fortis, & in ea prævalent & pro-
ſperantur omnes fortes Iſrael. Sacerdotes autem & Le- 8
vitæ & omnes tribus Iſrael univerſi apprehendunt verba
Legis,quæ comparantur gladio,& ponderant & agitant ea
ſicut fortes docti in bello, & ſuper unoquoque eorũ ſigna-
ta eſt circunciſio in carne ipſorum , ſicut ſignata fuit in
carne Abrahæ : & prævalent & confortantur in ea ſic-
ut fortis qui accinctus eſt gladio ſuper femur ſuum ; &
ideò non timent à ſpiritibus nocivis & dæmonibus qui
ambulant in nocte. Templum ſanctuarii ædificavit ſibi rex 9
Salomon de lignis cedrinis, & arceuthinis et pinis quæ
adducuntur de Libano , et operuit illud auro puriſſimo.
Et poſtquàm conſummavit illud, poſuit in medio ejus 10
arcam teſtimonii quæ erat columna ſeculi, et in medio
ejus erant duæ tabulæ lapideæ quas repoſuit ibi Moſes
in Horeb, quæ erant precioſiores argento purgato, et
pulchriores auro optimo : et extendit et obumbravit ſu-
per eam velum hyacinthinum et purpureum , et inter
Cherubim, quæ erant ſuper propitiatorium, reſidebat ma-
jeſtas Domini, qui habitare fecit nomen ſuum in Jeru-
ſalem magis quàm in omnibus urbibus terrræ Iſrael. Quan- 11
do venit Salomon rex ut faceret dedicationem do-
mus ſanctuarii, præco egreſſus eſt in fortitudine , et ſic
ait : Egredimini et videte habitatores provinciarum terræ
Iſrael et populus Sion diadema & coronam qua coronaverunt
populus domûs Iſrael regem Salomonem in die dedicatio-
nis domûs ſanctuarii : & lætatus eſt in lætitia ſolenni-
tatis tabernaculorum : *nam* fecit Salomon rex in tempore
illo *ſolennitatem tabernaculorum* quatuordecim diebus.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܓ *

1 *ܥܠ ܡܫܟܒܝ. ܒܠܠܝܘܬܐ. ܒܥܝܬ ܠܕܪܚܡܐ ܢܦܫܝ. ܒܥܝܬܗ ܘܠܐ ܐܫܟܚܬܗ. *ܐܩܘܡ ܗܫ
2 ܘܐܬܟܪܟ ܒܡܕܝܢܬܐ ܒܫܘܩܐ ܘܒܦܠܛܝܬܐ. ܐܒܥܐ ܠܕܪܚܡܐ ܢܦܫܝ. ܒܥܝܬܗ ܘܠܐ ܐܫܟܚܬܗ.

CAP. III.

Super cubile meũ in noctibus quæſivi quem 1
dilexit anima mea : quæſivi eum, nec inveni.
Surgam equidem, circumibo in civitate, in 2
vicis, & in plateis, quæram quem dilexit ani-
ma mea : quæſivi eum, nec inveni.

Verſio VULG. LAT.

CAP. III.

1 IN lectulo meo per noctes quæſivi
quem diligit anima mea : quæſivi
2 illum, & non inveni. Surgam, & circuibo
civitatem: per vicos & plateas
quæram quem diligit anima mea:
3 quæſivi illum, & non inveni. Invenerunt
me vigiles, qui cuſtodiunt civitatem:
Num quem diligit anima mea,
4 vidiſtis? Paululùm cùm pertranſiſſem
eos, inveni quem diligit anima
mea : tenui eum ; nec dimittam, donec
introducā illum in domum matris
meæ, & in cubiculum genitricis
5 meæ. Adjuro vos, filiæ Jeruſalem, per
capreas cervóſque camporum, ne
ſuſcitetis, neque evigilare faciatis
6 dilectam, donec ipſa velit. Quæ eſt
iſta, quæ aſcendit per deſertum, ſicut
virgula fumi ex aromatibus myrrhæ,
& thuris, & univerſi pulveris
7 pigmentarii? En lectulum Salomonis
ſexaginta fortes ambiunt
ex fortiſſimis Iſrael : Omnes te-
8 nentes gladios, & ad bella doctiſſimi
: uniuſcujuſque enſis ſuper
femur ſuum propter timores nocturnos.
9 Ferculum fecit ſibi rex Salomon
10 de lignis Libani : Columnas ejus fecit
argenteas, reclinatorium aureum,
aſcenſum purpureum : media charitate
conſtravit propter filias Jeruſa-
11 lem. Egredimini & videte, filiæ Sion,
regem Salomonem in diademate,
quo coronavit illum mater ſua in
die deſponſationis illius, & in die
lætitiæ cordis ejus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

ΚΕΦ. γʹ.

1 † Ἐπὶ κοίτην μου ἐν νυξὶν, † ἐζήτησα ὃν ἠγάπησεν
ἡ ψυχή μου· † ἐζήτησα αὐτὸν, καὶ οὐχ εὗρον αὐτόν· †
2 ἐκάλεσα αὐτὸν, καὶ οὐχ ὑπήκουσέ μου. † Ἀναστήσομαι
(α) δὴ καὶ κυκλώσω ἐν τῇ πόλει, † ἐν ταῖς ἀγοραῖς, καὶ
ἐν ταῖς πλατείαις, † καὶ ζητήσω ὃν ἠγάπησεν ἡ ψυχή
3 μου· ἐζήτησα αὐτὸν, καὶ οὐχ εὗρον (β) αὐτόν. † Εὕροσάν
με οἱ τηροῦντες, οἱ κυκλοῦντες ἐν τῇ πόλει.
4 † Μὴ ὃν ἠγάπησεν ἡ ψυχή μου, ἴδετε; † Ὡς μικρὸν
ὅτε παρῆλθον ἀπ' αὐτῶν, † ἕως οὗ εὗρον ὃν ἠγάπησεν
ἡ ψυχή μου. † ἐκράτησα αὐτὸν καὶ οὐκ (γ) ἀφῆκα αὐτὸν,
† ἕως οὗ εἰσήγαγον αὐτὸν εἰς οἶκον μητρός μου,
5 † καὶ (δ) εἰς ταμεῖον τῆς συλλαβούσης με. † Ὥρκισα ὑμᾶς
θυγατέρες Ἱερουσαλὴμ † ἐν ταῖς δυνάμεσι, καὶ ἐν ταῖς
ἰσχύσεσι τοῦ ἀγροῦ· † ἐὰν ἐγείρητε καὶ ἐξεγείρητε τὴν ἀγά-
6 πην ἕως ἂν θελήσῃ. † Τίς αὕτη ἡ ἀναβαίνουσα ἀπὸ
τῆς ἐρήμου, † ὡς στελέχη καπνοῦ τεθυμιαμένη † σμύρναν
καὶ λίβανον ἀπὸ πάντων κονιορτῶν μυρεψοῦ;
7 † Ἰδοὺ ἡ κλίνη τοῦ Σαλωμὼν, † ἑξήκοντα δυνατοὶ
8 κύκλῳ αὐτῆς † ἀπὸ δυνατῶν Ἰσραήλ· † Πάντες κατέχοντες
ῥομφαίαν, † δεδιδαγμένοι πόλεμον· † ἀνὴρ
ῥομφαία αὐτοῦ ἐπὶ μηρὸν αὐτοῦ † ἀπὸ θάμβους
9 ἐν νυξί. † Φορεῖον ἐποίησεν ἑαυτῷ ὁ βασιλεὺς
10 Σαλωμὼν † ἀπὸ ξύλων τοῦ Λιβάνου. † Στύλους αὐτοῦ
ἐποίησεν ἀργύρεον, † καὶ ἀνάκλιτον αὐτοῦ χρύσεον·
† ἐπίβασις αὐτοῦ πορφυρᾶ, † ἐντὸς αὐτοῦ λιθόστρωτον,
† ἀγάπην ἀπὸ θυγατέρων Ἱερουσαλήμ. †
11 (ε) Θυγατέρες Σιὼν ἐξέλθατε, καὶ ἴδετε † ἐν τῷ
βασιλεῖ Σαλωμὼν, † ἐν τῷ στεφάνῳ ᾧ ἐστεφάνωσεν
αὐτὸν ἡ μήτηρ αὐτοῦ, † ἐν ἡμέρᾳ νυμφεύσεως αὐτοῦ,
† καὶ ἐν ἡμέρᾳ εὐφροσύνης καρδίας αὐτοῦ.

MS. A. (α, δὴ, κυκλώσω (β) αὐτὸν, † ἐκάλεσα αὐτὸν, καὶ
οὐχ ὑπήκουσέν μου. Εὗρον (γ) ἀφήσω (δ) εἰς ταμεῖον
(ε) Ἐξέλθατε καὶ ἴδετε θυγατέρες Σιὼν ἐν
τῷ βασιλεῖ

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

CAP. III.

IN cubili meo, in [a] noctibus quæſivi, 1
quem dilexit anima mea: quæſivi
eum, & non inveni eum: vocavi
eum, & non obaudivit me. Exurgā 2
nunc: & circuibo in civitate,
in (a) foris, & in plateis, & quæram,
quem dilexit anima mea :
quæſivi eū, & non inveni (b) [b] eū.
Invenerunt me (c) cuſtodes, qui 3
circumeunt in civitate. [c] Nunquid,
quem dilexit anima mea, vidiſtis?
(d) Quàm modicum fuit, 4
cùm tranſivi ab ipſis, quoadusque
inveni, quem dilexit anima mea.
Tenui eum, & non (e) dimiſi eum;
donec introduxi eum in domum
matris meæ, & in (f) cubiculum ejus
quæ concepit me. Adjuravi vos, 5
filiæ Hieruſalem, (g) in virtutibus
& in viribus agri: ſi ſuſcitaveritis,
& exuſcitaveritis [d] charitatem,
quoadusq; velit. Quæ eſt iſta quæ 6
aſcendit è deſerto, tanquā (h) truncus
fumi incenſus myrrham, & thus
ex omnibus (i) pulveribus unguentarii?
Ecce lectus Salomonis: ſexaginta 7
potentes in circuitu ejus ex potentibus
Iſrael, Omnes tenentes [e] 8
gladium, docti bellum: (k) vir, gladius
ejus ſuper femur ejus à (l) pavore
in noctibus. (m) [f] Lectum 9
fecit ſibi rex Salomon ex lignis Libani;
Columnas ejus fecit (n) argentum, 10
& acclinatorium ejus aureū:
aſcenſus ejus purpura: (o) intimum
ejus [g] lapidibus conſtratum, charitatē
à filiab⁹ Hieruſalē. Filiæ Sion, 11
egredimini, & intuemini in regē
Salomon in corona, quâ coronavit
eum mater ejus in die ſponſalium
ejus, & in die jocunditatis cordis
ejus.

Verſio ÆTHIOPICA.

CAP. III. በዐራትየ ፡ ወበለያልየ ። እሓሠ 1
ሠ ፡ ዘአፈቀረት ፡ ነፍስየ ። ኃሠሥክዎ ፡ ወ
ሊረከብክዎ ። ጸዋዕክዎ ፡ ወሊተሰጥወኒ ፨
እትነሣእ ፡ ወእዐውድ ፡ ሀገረ ። ውስተ ፡ መሥ 2
ያጥት ፡ ወመራሕብት ። ወእሓሠሠ ፡ ዘአፈቀ
ረት ፡ ነፍስየ ። ኃሠሥክዎ ፡ ወሊረከብክዎ ፡
ጸዋዕክዎ ፡ ወሊታሰጥወኒ ፨ ረከቡኒ ፡ መ 3
ፀቅብተ ፡ እለ ፡ የዐውዱ ፡ ሀገረ ። ወእቤሎሙ ፡
ረኢክሙኑ ፡ ዘአፈቀረት ፡ ነፍስየ ፨ ንስቲ 4
ተ ፡ ኃሊፍየ ፡ እምኔሆሙ ። ውእተ ፡ ጊዜ ፡ ረከ
ብክዎ ፡ ዘአፈቀረት ፡ ነፍስየ ። እኃዝክዎ ፡ ወ
ሊያኀድጎ ። እስከ ፡ ሶበ ፡ አበእክዎ ፡ ውስተ ፡ ቤ
ተ ፡ እምየ ። ወውስተ ፡ ውሳጥያቲሃ ፡ ለእን
ተ ፡ ኃፀነተኒ ፨ አምሐልኩክን ፡ አዋልደ ፡ 5
ኢየሩሳሌም ። በኃይሉ ፡ ወበጽንዑ ፡ ለገደም ።
እመ ፡ ተንሥአ ፡ ወእንሥአ ፡ ሙታን ። አፈቅ
ሮ ፡ እስከ ፡ አመ ፡ ፈቀደ ፨ መኑ ፡ ይእቲ ፡ ዛ 6
ቲ ፡ እንተ ፡ ተዐርግ ፡ እምገደም ።
ር ፡ ከመ ፡ ሠረፀ ፡ ጢስ ፡ ዕጣንታ ። ከርቤ ፡ ወ
ስኂን ፡ እምኵሉ ፡ ጸበለ ፡ አፈው ፨ ናሁ ፡ 7
ዓራቱ ፡ ለሰሎሞን ። ስሳ ፡ ኃያላን ፡ ዐውደ ፡ እም
ኃያላነ ፡ እስራኤል ፨ ኵሎሙ ፡ እኁዛነ ፡ 8
አስይፍት ፡ ወምሁራነ ፡ ቀትል ። ብእሲ ፡ ብእ
ሲ ፡ ሰይፉ ፡ ዲበ ፡ ሞንቅዕቱ ። በድንጋፄ ፡ ሌሊ
ት ፨ መጸረ ፡ ገብረ ፡ ለርእሱ ፡ ንጉሥ ፡ ሰ 9
ሎሞን ፡ እምዕፀወ ፡ ሊባኖስ ፨ አዕመደ 10
ሁ ፡ ገብረ ፡ ዘብሩር ። ወምስማኩ ፡ ዘወርቅ ።
መንበሩ ፡ ዘሜላት ። ውስጡ ፡ ንጹፍ ፡ በእብነ ፡
ሰንፔር ። አፈቅሮ ፡ እምአዋልደ ፡ ኢየሩሳሉ
ም ፨ ፃእ ፡ ሬእያ ፡ አዋልደ ፡ ኢየሩሳሌ 11
ም ። ለንጉሥ ፡ ሰሎሞን ። በአክሊል ፡ ዘአ
ስተቀጸለቶ ፡ እሙ ። አመ ፡ ዕለተ ፡ መርዓሁ ፡
ወአመ ፡ ፍሥሐ ፡ ልቡ ፨

INTERP. ÆTHIOP. [a] noctibus meis [b] eum: vocavi eum, & non exaudivit me. [c] Et dixi illis, Nunquid [d] virum charitatis, [e] gladios, [f] Palatium fecit [g] lapide Sapphirino conſtratum,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

1 الفصل الثالث * في الليالي على مضجعي طلبت من احببته نفسي * طلبته فما
2 وجدته * دعوته فما اطاعني * فانهض واطوف في المدينة في الاسواق وفي الشوارع * واطلب
3 من احببته نفسي * طلبته فما وجدته * دعوته فما اطاعني * فوجدني الحراس الذين يطوفون
4 في المدينة * فقلت ارايتم من احببته نفسي * فما جاوزتهم الا قليلا حتي وجدت من احببته نفسي *
5 فامسكته وما خليته الي ان ادخلته الي منزل امي والي حجرة من حبلت بي * اقسم عليكن
6 يا بنات اورشليم باقتدارات الحقل وقواته * ان انبهتم او ايقظتم المحبة الي ان تشاء هي * من
هذه الصاعدة من القفر كانها مبخرة باغصان البخور ومر وكندر * من جميع ذرائر العطار *
7 8 ها سرير سليمان * وحوله ستون اقوياء من اقوياء اسرائيل * كلهم ماسكون سيفا * معلمون
9 الحرب * الرجل منهم سيفه على فخذه * من المهاول التي في الليل * سليمن الملك عمل له عمارية
10 من خشب لبنان * فعمل عمدها فضة * ومتكاها ذهب * وجلالها ارجوان * وباطنها مرصع
11 بالجواهر * وتلك محبة من بنات اورشليم * يا بنات صهيون اخرجن وابصرن الي سليمن
الملك * والي الاكليل الذي كللته به امه في يوم تعريسه وفي يوم سرور قلبه *

CAP. III.

IN noctibus ſuper cubili meo quæſivi 1
quem dilexit anima mea : quæſivi eum,
ſed non inveni : vocavi eum, ſed non acquievit
mihi. Surgam igitur, & perluſtrabo 2
urbem, vicos, & plateas, & quæram
quem diligit anima mea. Quæſivi
eum, nec inveni : vocavi eum, nec acquievit
mihi. Offendentibus autem me cuſtodibus 3
qui perluſtrant urbem, dixi, Vidiſtiſne
quem diligit anima mea? Nec 4
niſi paululū iis prætermiſſis, inveni quem
diligit anima mea : eúmque apprehenſum
nequaquam dimiſi, donec introduxiſſem in
domum matris meæ, in promptuarium ejus
quæ me concepit. Adjuro vos ô filiæ Jeruſalem 5
per potentias agri ejuſque virtutes,
ne excitetis néve expergefaciatis dilectam
donec ipſa voluerit. Quæ eſt iſta 6
aſcendens è deſerto acſi eſſet ſuffumigata
ramis incenſi & myrrhæ ac thuris, omnibuſque
pulveribus aromatarii? Ecce lectus 7
Salomonis cui circumſtant ſexaginta
heroes ex heroibus Iſraelis. Omnes gladium 8
tenentes, bellum edocti, quorum
quilibet ſuum habet enſem ſuper femur
ſuum, ob terrores qui noctu contingunt.
Salomon rex fecit ſibi umbraculum ex 9
lignis Libani. Fecitque columnas ejus 10
argenteas, fulcrum autem ipſius aureum
erat, & operimenta ipſius purpurea, pars
autem interior gemmis inſerta : atque id
quidem ob amorem erga filias Jeruſalem.
O filiæ Sion, egredimini, & ſpectate Salomonem 11
regem, & coronam quâ coronavit
eum mater ipſius in die deſponſationis
ejus, & in die lætitiæ cordis illius.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

3 ܐܫܟܚܘܢܝ ܢܛܘܪܐ ܕܡܚܕܪܝܢ ܒܡܕܝܢܬܐ. ܠܡܐ ܠܡܢ ܕܪܚܡܐ ܢܦܫܝ ܚܙܝܬܘܢ. * ܟܡ
4 ܩܠܝܠ ܕܥܒܪܬ ܡܢܗܘܢ܆ ܥܕܡܐ ܕܐܫܟܚܬܗ ܠܡܢ ܕܪܚܡܐ ܢܦܫܝ. ܐܚܕܬܗ ܘܠܐ ܐܪܦܝܬܗ.
ܥܕܡܐ ܕܐܥܠܬܗ ܠܒܝܬܐ ܕܐܡܝ. ܘܠܩܝܛܘܢܐ ܕܝܠܕܬܝ. * ܐܘܡܝܬ ܠܟܝܢ ܒܢܬܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. 5
ܒܛܒܝܐ ܐܘ ܒܐܝܠܐ ܕܚܩܠܐ. ܐܢ ܬܥܝܪܢ ܘܐܢ ܬܬܥܝܪܢ ܠܚܘܒܐ ܥܕܡܐ ܕܢܨܒܐ. * ܡܢ ܗܝ 6
ܗܕܐ ܕܣܠܩܐ ܡܢ ܡܕܒܪܐ. ܐܝܟ ܬܢܢܐ ܕܒܣܡܐ ܕܡܒܣܡܐ ܒܡܘܪܐ ܘܒܠܒܘܢܬܐ: ܡܢ ܟܠ
ܐܒܩܐ ܕܒܣܡܐ. * ܗܐ ܥܪܣܗ ܕܫܠܝܡܘܢ. ܫܬܝܢ ܓܢܒܪܝܢ ܚܕܪܝܢ ܠܗ: ܡܢ ܓܢܒܪܐ 7
ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܟܠܗܘܢ ܐܚܝܕܝ ܣܦܣܪܐ. ܘܡܠܦܝ ܩܪܒܐ. ܓܒܪ ܣܦܣܪܗ ܥܠ ܝܪܟܗ: ܡܢ 8
ܕܚܠܬܐ ܕܠܠܝܐ. * ܦܘܪܝܐ ܥܒܕ ܠܗ ܡܠܟܐ ܫܠܝܡܘܢ. ܡܢ ܩܝܣܐ ܕܠܒܢܢ. 9
* ܥܡܘܕܘܗܝ ܥܒܕ ܕܣܐܡܐ. ܫܘܝܗ ܕܕܗܒܐ. ܬܟܣܝܬܗ ܕܐܪܓܘܢܐ. ܓܘܗ ܪܨܝܦ 10
ܚܘܒܐ ܡܢ ܒܢܬܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. * ܦܘܩܝ ܘܚܙܝ ܒܢܬܐ ܕܨܗܝܘܢ. ܒܡܠܟܐ ܫܠܝܡܘܢ. 11
ܒܟܠܝܠܐ ܕܟܠܠܬܗ ܐܡܗ ܒܝܘܡܐ ܕܡܟܘܪܘܬܗ. ܒܝܘܡܐ ܕܚܕܘܬ ܠܒܗ.

Invenerunt me cuſtodes qui circumeunt in civitate :
Num quem dilexit anima mea, vidiſtis?
Quum aliquantulum proceſſiſſem ab eis 4
donec offendiſſem eum quem dilexit anima
mea, tenui illum, neque dimiſi eum, donec
introduxiſſem illum in domum matris meæ,
& in cubiculum genitricis meæ. Obteſtor 5
vos filiæ Jeruſalem, per capreolos aut per
hinnulos campi, ſi excitetis & ſi expergefacitis
dilectam quoad velit. Quæ eſt iſta quæ 6
aſcēdit à deſerto inſtar ſuffitûs fumi myrrhâ
ac thure conditi, ex omni pulviſculo aromatum?
Ecce lectum Salomonis ſexaginta 7
circundant gigantes è gigantibus Iſraelis,
Omnes gladiatores, & bello exercitati, quiſque 8
gladio ſuo ſuper femur ſuum accinctus
ob timorem noctium. Solium fabricavit 9
ſibi rex Salomon de lignis Libani. Columnas 10
ejus fecit ex argento, ſtratum ejus
ex auro, operimentum ipſius ex purpura;
intima pars ejus ſtrata amore erga filias
Jeruſalem. Egredimini, & conſiderate filiæ 11
Sion regem Salomonem in diademate quo
coronavit eum mater ejus in die ſponſaliorū
ejus, in die lætitiæ cordis ejus.

שִׁיר הַשִּׁירִים׃ ד

CAP. IV. ד

tu ecce , mea amica pulchra tu Ecce
1 הִנָּךְ יָפָה רַעְיָתִי הִנָּךְ
intra *columbæ* tui oculi ,pulchra
יָפָה עֵינַיִךְ יוֹנִים מִבַּעַד
caprarũ grex ut tu' capill' : *tuã comã*
לְצַמָּתֵךְ שַׂעְרֵךְ כְּעֵדֶר הָעִזִּים
.Ghilhad monte de *ſe depilârunt* quæ
שֶׁגָּלְשׁוּ מֵהַר גִּלְעָד׃
, tonſarum grex ut tui Dentes
2 שִׁנַּיִךְ כְּעֵדֶר הַקְּצוּבוֹת
ipſæ oẽs quæ;lavacro de aſcẽderũt quæ
שֶׁעָלוּ מִן־הָרַחְצָה שֶׁכֻּלָּם
.*eis in* non *orba &* , *geminantes*
מַתְאִימוֹת וְשַׁכֻּלָה אֵין בָּהֶם׃
, tua labia coccineum filum Sicut
3 כְּחוּט הַשָּׁנִי שִׂפְתוֹתַיִךְ
fragmen ſicut : decorũ tuũ eloquiũ &
וּמִדְבָּרֵיךְ נָאוֶה כְּפֶלַח
intra *tuum tempus* , punici mali
הָרִמּוֹן רַקָּתֵךְ מִבַּעַד
David turris Sicut .*tuam comam*
4 לְצַמָּתֵךְ׃ כְּמִגְדַּל דָּוִיד
: *acumina celſa in* ædificata ,tuũ collũ
צַוָּארֵךְ בָּנוּי לְתַלְפִּיּוֹת
omnia ,*ea ſuper* ſuſpenſi clypei mille
אֶלֶף הַמָּגֵן תָּלוּי עָלָיו כֹּל
tua ubera Duo .potentium *ſcuta*
5 שִׁלְטֵי הַגִּבּוֹרִים׃ שְׁנֵי שָׁדַיִךְ
;capreæ gemelli hinnuli duo ſicut
כִּשְׁנֵי עֳפָרִים תְּאוֹמֵי צְבִיָּה
Donec .*liliis* in *paſcentes*
6 הָרוֹעִים בַּשּׁוֹשַׁנִּים׃ עַד
: umbræ fugiant & ,dies aſpiret
שֶׁיָּפוּחַ הַיּוֹם וְנָסוּ הַצְּלָלִים
ad & ,myrrhæ montẽ ad mihi ibo
אֵלֶךְ לִי אֶל־הַר הַמּוֹר וְאֶל־
pulchra tu Tota .thuris collem
7 גִּבְעַת הַלְּבוֹנָה׃ כֻּלָּךְ יָפָה
Mecũ .te in non macula &,mea amica
8 רַעְיָתִי וּמוּם אֵין בָּךְ׃ אִתִּי
Lebanon de mecũ ,ſponſa Lebanon de
מִלְּבָנוֹן כַּלָּה אִתִּי מִלְּבָנוֹן
,Amanah *capite* de proſpicies : venies
תָּבוֹאִי תָּשׁוּרִי מֵרֹאשׁ אֲמָנָה
, Chermon & , Senir *capite* de
מֵרֹאשׁ שְׂנִיר וְחֶרְמוֹן
montibus de ,*leænarum* habitaculis de
מִמְּעֹנוֹת אֲרָיוֹת מֵהַרְרֵי
mea ſoror meũ cor Abſtuliſti.*pardorum*
9 נְמֵרִים׃ לִבַּבְתִּנִי אֲחֹתִי
uno *in* meũ cor abſtuliſti : ſponſa
כַלָּה לִבַּבְתִּנִי בְּאַחַד
torque una *in* : tuis oculis ex
מֵעֵינַיִךְ בְּאַחַד עֲנָק
ſunt pulchri Quàm .*tuis cervicibus* de
10 מִצַּוְּרֹנָיִךְ׃ מַה־יָּפוּ
quàm : ſponſa mea ſoror tui amores
דֹדַיִךְ אֲחֹתִי כַלָּה מַה
odor &,*vino præ* tui amores ſunt boni
טֹּבוּ דֹדַיִךְ מִיַּיִן וְרֵיחַ
cunctis præ tuorum unguentorum
שְׁמָנַיִךְ מִכָּל־
ſtillabunt Favum ! aromatibus
11 בְּשָׂמִים׃ נֹפֶת תִּטֹּפְנָה
lac & mel : ſponſa tua labia
שִׂפְתוֹתַיִךְ כַּלָּה דְּבַשׁ וְחָלָב
odor & , tua lingua *ſub*
תַּחַת לְשׁוֹנֵךְ וְרֵיחַ
.Lebanõ odor ſicut tuorũ veſtimẽtorũ
שַׂלְמֹתַיִךְ כְּרֵיחַ לְבָנוֹן׃
: ſponſa mea ſoror *obſeratus* Hortus
12 גַּן נָעוּל אֲחֹתִי כַלָּה
.ſignatus fons , *obſeratus* fons
גַּל נָעוּל מַעְיָן חָתוּם׃

תרגום Targum.

ד

1 הִנָּךְ וּבְהַהוּא יוֹמָא קָרֵב מַלְכָּא שְׁלֹמֹה אֲלַף עֲלָוָן עַל מַדְבְּחָא
וְאִתְקַבַּל בְּרַעֲוָא קוּרְבָּנֵיהּ קֳדָם יְיָ נְפַקַת בַּת קָלָא מִן שְׁמַיָּא וְכֵן
אֲמַרַת כְּמָה יָאָה אַנְתְּ כְּנִשְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל וּכְמָה יָאֵין אִנּוּן רַבְרְבֵי
כְּנִשְׁתָּא וְחַכִּימַיָּא יָתְבֵי סַנְהֶדְרִין דְּאִנּוּן מְנַהֲרִין לְעָלְמָא לְעַמָּא
בֵּית יִשְׂרָאֵל וְדַמְיָן לְגוֹזָלִין בְּנֵי יוֹנְתָא וַאֲפִילוּ שְׁאָר בְּנֵי כְנִשְׁתָּךְ
וְעַמָּא דְאַרְעָא אִנּוּן צַדִּיקִין כִּבְנוֹי דְיַעֲקֹב דִּי לַקִּטוּ אַבְנִין וַעֲבַדוּ
2 גַלְשׁוּשִׁיתָא בְּטוּרָא דְגִלְעָד׃ שִׁנַּיִךְ כְּמָה יָאֵין כַּהֲנַיָּא וְלֵוָאֵי
דִּמְקָרְבִין יַת קוּרְבָּנָךְ וְאָכְלִין בְּסַר קוּדְשָׁא וּמַעְשְׂרָא וַאֲפָרְשׁוּתָא
וְדַכְיָן מִכָּל אוֹנְסָא וְגוּלָא הֵיכְמָה דַהֲווֹ דַכְיָן עֶדְרֵי עָנָא דְיַעֲקֹב
בְּעִדָּן דַּהֲווֹ גְּזִיזִין וְסָלְקָן מִן נַחֲלָא דְיוּבְקָא דְלָא הֲוַת בְּהוֹן אֲנִיסוּתָא
וְגוּלָא וְכוּלְּהוֹן דַּמְיָן דָּא לְדָא וְיָלְדָן תְּיוֹמִין בְּכָל עִדָּן וְעַקְרָא
3 וּמְתַכְּלָא לָא הֲוַת בְּהוֹן׃ כְּחוּט וְשִׂפְווֹי דְכַהֲנָא רַבָּא הֲווֹ בָּעַן
בִּצְלוֹתָא בְּיוֹמָא דְכִפּוּרֵי קֳדָם יְיָ וּמִלּוֹי הֲווֹ מְהַפְּכִין חוֹבֵיהוֹן
דְּיִשְׂרָאֵל דְּדַמְיָן לְחוּט זְהוֹרִיתָא וּמְחַוְּרָן יַתְהוֹן כַּעֲמַר נְקִי וּמַלְכָּא
דִּי הוּא רֵישְׁהוֹן מְלֵי פִּקּוּדַיָּא כְּרִמּוֹנָא בַּר מִן אַמַּרְכְּלַיָּא וְאַרְכוֹנִין
דְּאִנּוּן קְרִיבִין לְמַלְכָּא דִּי אִנּוּן צַדִּיקַיָּא וְלֵית בְּהוֹן מִדַּעַם בִּישׁ׃
4 כְּמִגְדַּל וְרֵישׁ מְתִיבְתָּא דִּי הוּא רַב דִּי לִיךְ חֲסִין בִּזְכוּתָא וְרַב
בְּעוֹבָדִין טָבִין כְּדָוִד מַלְכָּא דְיִשְׂרָאֵל וְעַל מֵימַר פּוּמֵיהּ הֲוָה
מִתְבְּנֵי עָלְמָא וּבְאוּלְפַן דְּאוֹרָיְתָא הֲוָה עָסֵק רְחִיצִין עַמָּא
בֵּית יִשְׂרָאֵל וּמְנַצְּחִין בִּקְרָבָא כְּאִלּוּ אֲחִדִין בִּידֵיהוֹן כָּל מִינֵי
5 זַיְנִין דְּגִבָּרִין׃ שְׁנֵי תְּרֵין פָּרִיקַיִךְ דַּעֲתִידִין לְמִפְרְקִיךְ מָשִׁיחַ בַּר
דָּוִד וּמָשִׁיחַ בַּר אֶפְרַיִם דַּמְיָן לְמשֶׁה וְאַהֲרֹן בְּנֵי יוֹכֶבֶד דְּאִתְמְתִילוּ
לִתְרֵין אוּרְזִילִין תְּיוֹמֵי טַבְיָא וַהֲווֹ רָעָן לְעַמָּא בֵּית יִשְׂרָאֵל
בִּזְכוּתְהוֹן אַרְבְּעִין שְׁנִין בְּמַדְבְּרָא בְּמַנָּא וּבְעוֹפִין פַּטִּימִין וּמֵי
6 בֵּירָא דְמִרְיָם׃ עַד וְכָל זְמַן דַּהֲווֹ בֵּית יִשְׂרָאֵל אֲחִידִין
בִּידֵיהוֹן אוּמָנוּת אֲבָהָתְהוֹן צַדִּיקַיָּא הֲווֹ עָרְקִין מַזִּיקֵי וְטַלְנֵי
וְצַפְרִירֵי וְטִהֲרֵי מִבֵּינֵיהוֹן עַל דַּהֲוָה שְׁכִינַת יְקָרָא דַיְיָ שַׁרְיָא
בְּבֵית מוּקְדְּשָׁא דַּהֲוָה מִתְבְּנֵי בְּטוּר מוֹרִיָּה וְכָל מַזִּיקַיָּא
7 וּמְחַבְּלַיָּא הֲווֹ עָרְקִין מֵרֵיחַ קְטוֹרֶת בּוּסְמִין׃ כֻּלָּךְ וּבִזְמַן דְּעַמָּךְ
בֵּית יִשְׂרָאֵל עָבְדִין רְעוּתֵיהּ דְּמָרֵי עָלְמָא הוּא מְקַלֵּס יַתְהוֹן
בִּשְׁמֵי מְרוֹמָא וְכֵן אֲמַר כּוּלָּךְ שַׁפִּירְתָּא כְּנִשְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל
8 וּמַחְתָּא לֵית בִּיךְ׃ אִתִּי אֲמַר יְיָ בְּמֵימְרֵיהּ עִמִּי תְּהֵי יָתְבָא
כְּנִשְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל דְּדַמְיָא לְנִנְפֵּי דְהִיא צְנִיעָא וְעִמִּי תֵּעֲלוּן
לְבֵית מוּקְדְּשָׁא וִיהוֹן מְקָרְבִין לָךְ דּוֹרוֹן רָאשֵׁי עַמָּא דְיָתְבִין
עַל נְהַר דַּאֲמָנָה וְדַיָּרֵי דְיָתְבִין בְּרֵישׁ טוּר תַּלְגָא וְאוּמַיָּא
דִּי בְחֶרְמוֹן וִיהוֹן מַסְּקִין לָךְ מִסִּין יָתְבֵי כְרַכִּין תַּקִּיפִין דִּי אִנּוּן
גַּבְרִין כְּאַרְיָוָן תִּקְרוֹבְתָּא מִן קִרְוֵי טוּרַיָּא דַּחֲסִינִין מִן נְמֵרִין׃
9 לִבַּבְתִּנִי קְבִיעַ עַל לוּחַ לִבִּי רְחִמְתֵּיךְ אֲחָתִי כְּנִשְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל
דִּמְתִילָא לְנִנְפֵּי דִּי הִיא צְנִיעָא קְבִיעַ עַל לוּחַ לִבִּי חִבַּת
זוּטַר דִּי בֵינָךְ דִּי הוּא צַדִּיקָא כְּחַד מִן רַבָּנֵי סַנְהֶדְרִין וּכְחַד
מִן מַלְכַיָּא דְבֵית יְהוּדָה דַּהֲוַת יְהִיבָא כְּלִילָא דְמַלְכוּתָא
10 עַל צַוְּרֵיהּ׃ מַה כְּמָה שַׁפִּירָן עֲלַי חִבָּתֵיךְ אֲחָתִי כְּנִשְׁתָּא
דְיִשְׂרָאֵל דִּמְתִילָא לְנִנְפֵּיהּ דְּהִיא צְנִיעָא כְּמָה טָבָן עֲלַי
חִבָּתֵיךְ יַתִּיר מִשַּׁבְעִין אוּמַיָּא וְשׁוּם טָב דְּצַדִּיקַיִךְ נְדִיף מִכָּל
11 בּוּסְמָנִין׃ נֹפֶת וּבְעִדָּן דִּמְצַלַּן כַּהֲנַיָּא בַּעֲזָרְתָּא דְקוּדְשָׁא
וְלֶחֱן סִפְוָתְהוֹן יַעֲרַת דּוּבְשָׁא וְלִישָׁנֵךְ נִנְפֵּי צְנִיעָא בְּמַמְלְלוּתֵיךְ
שִׁירִין וְתוּשְׁבְּחָן מְתִיקִין כַּחֲלָב וּדְבַשׁ וְרֵיחַ לְבוּשֵׁי כַהֲנַיִן כְּרֵיחַ
12 אוּלְבָנִין׃ גַּן וּנְשַׁיִךְ דְּמִתְנַסְּבָן לְגוּבְרִין צְנִיעָן כְּנִנְפֵּי צְנִיעָא
וּכְגִנְּתָא דְעֵדֶן דְּלֵית רְשׁוּ לִגְבַר לְמֵעַל לְגַוָּהּ אֱלָהֵן צַדִּיקַיָּא
דְּנַפְשְׁהוֹן מִשְׁתַּלְּחִין לְגַוָּהּ עַל יַד מַלְאֲכַיָּא וּבְתוּלָתַיִךְ טְמִירָן
וּגְנִיזָן בְּאַנְפְּלִין וַחֲתִימָן בְּכֵן כְּמַבּוּעֵי דְמַיִן חַיִּין דִּנְפִיק מִתְּחוֹת
אִילָנָא וּמִתְפָּרַשׁ לְאַרְבַּעַת רֵישֵׁי נַהֲרִין וְאִלְמָלֵי דִּיהוּא
חָתִים בִּשְׁמָא רַבָּא וְקַדִּישָׁא הֲוָה נָפֵק וּמַבַּע וְשָׁטֵף כָּל
עָלְמָא׃

Paraph. Chald. Verſio Latina.

CAP. IV.

Et in illo die obtulit rex Salomon mille holocauſta ſuper altare, & ſuſcepta eſt cum beneplacito oblatio ejus coram Domino: irruit *filia vocis* de cœlis & ſic ait: Quàm pulcher es cœtus Iſrael, & quàm pulchri ſunt principes congregationis & ſapientes habitantes in concilio: quia ipſi ſemper illuminant populum domus Iſrael, & ſimiles ſunt pullis filiis columbæ, & etiam reliqui filii congregationis tuæ & populus terræ ſunt juſti ſicut filii Jaacob, qui collegerunt lapides & fecerunt acervum in monte Galaad. 1

Quàm pulchri ſunt Sacerdotes & Levitæ qui offerunt oblationes tuas, & comedunt carnes ſanctificatas, & decimas & primitias: & mundi ſunt ab omni violentia & rapina, ſicut erant mundi greges ovium Jaacob, in tempore quo tondebantur, & aſcendebant de torrente Jaboc, in quibus non erat violentia & rapina; & omnes ſimiles erant ad invicem, & pariebant gemellos in omni tempore: & ſterilis & orbata non erat in eis. 2

Et labia Sacerdotis magni deprecabantur in oratione in die propitiationis coram Domino, & verba ejus avertebant peccata Iſrael, quæ ſimilia erant vittæ coccineæ, & dealbabant ea ſicut lanam mundam: & rex qui erat princeps eorum plenus erat præceptis ſicut malogranatum, exceptis præpoſitis & principibus qui accedunt ad regem, qui ſunt juſti, in quibus non eſt quicquam mali. 3

Et princeps ſcholæ qui erat magiſter tuus, fortis in juſtitia, & magiſter operum bonorum, ſicut David rex Iſrael, & per verbum oris ejus ædificatum eſt ſeculum: & in doctrina Legis in qua laborabat confidebant populus domus Iſrael, & vincebant in bello, quaſi eſſent tenentes manibus ſuis omnia genera armorum fortium. 4

Duo ſalvatores tui qui te ſalvaturi ſunt, *Meſſias filius David & Meſſias filius Ephraim*, ſimiles ſunt Moſi & Aaron filiis Jocabed, qui comparati ſunt duobus hinnulis gemellis capreæ, & paſcebant populum Iſrael per merita ſua quadraginta annis in deſerto manna & avibus pinguibus & aqua putei Miriam. 5

Et omni tempore quo populus domus Iſrael tenebat manibus ſuis artem patrum ſuorum juſtorum, fugiebant nocentes [*ſpiritus,*] tenebriones & matutini ac meridiani [*dæmones*] de medio eorum, eò quòd majeſtas gloriæ Domini reſidebat in domo ſanctuarii quæ ædificata eſt in monte Moriah, & omnes dæmones & ſpiritus nocentes fugiebant ab odore incenſi aromatum. 6

Et in tempore quo populus *tuus* domus Iſrael faciunt voluntatem dominatoris ſeculi, laudat eos in cœlis excelſis, & ſic dicit: Tota pulchra es congregatio Iſrael, & macula non eſt in te. 7

Dixit Dominus in verbo ſuo: Mecum habitabis cœtus Iſrael, qui ſimilis es ſponſæ honeſtæ, & mecum ingredieris in domum ſanctuarii, & offerent tibi munus principes populi qui habitant ſuper fluvium Amana, & incolæ qui morantur in vertice Montis nivis, & gentes quæ ſunt in Hermon, & offerent tibi tributa habitatores civitatum fortium, qui ſunt robuſti ſicut leones, & munus ab urbibus montium qui ſunt fortiores leopardis. 8

Infixus eſt in tabula cordis mei amor tuus, ſoror mea, cœtus Iſrael, quæ comparata es ſponſæ quæ eſt honeſta: infixa eſt in tabula cordis mei dilectio minimi *inter te* qui eſt juſtus, ſicut unus de principibus concilii, & ſicut unus ex regibus domus Juda ſuper cujus collum poſitum eſt diadema regni. 9

Quàm pulchræ ſunt ſuper me dilectiones tuæ ſoror mea, cœtus Iſrael, quæ comparata es ſponſæ pudicæ! quàm bonæ ſunt ſuper me dilectiones tuæ magis quàm ſeptuaginta nationum: & nomen bonum juſtorum tuorum fragrantius eſt omnibus aromatibus. 10

Et in tempore quo orant Sacerdotes in atrio ſanctuarii, labia eorum ſtillant favum mellis: & lingua tua eſt inſtar ſponſæ honeſtæ in ſermone tuo; cantica & laudes dulces ſicut lac & mel; & odor veſtimentorum Sacerdotum ſicut odor aromatum Libani. 11

Et mulieres tuæ quæ nuptæ ſunt viris, honeſtæ ſunt ſicut ſponſæ honeſtæ; & ſicut hortus voluptatis ad quem nullus vir habet poteſtatem introeundi, niſi juſti, quorum animæ mittuntur illuc per manus angelorum: & virgines tuæ abſconditæ ſunt & reconditæ in penetralibus, & ſignatæ ſunt ſicut fons aquarum viventium qui oritur ſub arbore, & dividitur in quatuor capita fluminum: & niſi eſſet ſignatus in nomine magno & ſancto, egrederetur & flueret & inundaret univerſum mundum. 12

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܕ * ܗܐ ܫܦܝܪܬܝ ܩܪܝܒܬܝ. ܗܐ ܫܦܝܪܬܝ. ܥܝܢܝܟܝ ܕܝܘܢܐ ܠܒܪ: 1
ܡܢ ܫܬܩܟܝ. ܣܥܪܟܝ ܐܝܟ ܓܙܪܐ ܕܥܙܐ ܕܣܠܩ ܡܢ ܛܘܪܐ ܕܓܠܥܕ. * ܫܢܝܟܝ ܐܝܟ ܓܙܪܐ 2
ܕܓܙܝܙܬܐ ܕܣܠܩܝ ܡܢ ܡܣܚܝܬܐ. ܕܟܠܗܝܢ ܡܬܐܡܢ: ܘܥܩܪܬܐ ܠܝܬ ܒܗܝܢ. * ܐܝܟ ܚܘܛܐ 3
ܕܙܚܘܪܝܬܐ ܣܦܘܬܟܝ. ܘܡܡܠܠܟܝ. ܝܐܝܐ ܐܝܟ ܩܠܦܐ ܕܪܘܡܢܐ. * ܨܘܪܟܝ ܡܛܠ ܫܬܩܟܝ. 4
ܐܝܟ ܡܓܕܠܗ ܕܕܘܝܕ. ܨܘܪܟܝ ܒܢܝܐ ܒܟܠܝܠܐ. ܕܐܠܦ ܬܪܣܝܢ ܬܠܝܢ ܒܗ. ܟܠܗ ܫܠܛܐ

CAP. IV.

Ecce pulchra es propinqua mea, ecce pulchra es. Oculi tui columbini, præter ſilentium tuum. Pilus tuus ut grex caprarum, qui aſcendit è monte Gelaad. 1
Dentes tui ut grex tonſarum quæ aſcenderunt è lavacro, quæ univerſæ ſunt gemellos habentes, nullaque eſt inter eas effœta. 2
Ut filum coccineum labia tua: ſermo tuus decorus ut fragmina mali punici. 3
Cervix tua, propter ſilentiũ tuũ, eſt ſicut turris David. Collũ tuũ extructũ cũ balauſtiis, è quo mille pendent clypei, omnes pharetræ 4

Verſio VULG. LAT.

CAP. IV.

1 Quàm pulchra es, amica mea, quã
pulchra es! Oculi tui columbarum,
abſq; eo ꝙ intrinſecꝰ latet. Capilli
tui ſicut greges caprarũ, quæ aſcende-
2 runt de monte Galaad. Dentes tui ſic-
ut greges tonſarũ, quæ aſcenderunt
de lavacro, omnes gemellis fœtibꝰ,
3 & ſterilis non eſt inter eas. Sicut vitta
coccinea, labia tua: & eloquiũ tuũ,
dulce. Sicut fragmen mali punici, ita
genæ tuæ, abſq; eo ꝙ intrinſecꝰ latet.
4 Sicut turris David collũ tuũ, quæ æ-
dificata eſt cũ propugnaculis: mille
clypei pendent ex ea, omnis armatura
5 fortiũ. Duo ubera tua, ſicut duo hin-
nuli capreæ gemelli, qui paſcuntur in
6 liliis, Donec aſpiret dies, et inclinen-
tur umbræ, vadã ad montẽ myrrhæ, et
7 ad collẽ thuris. Tota pulchra es, amica
8 mea, & macula non eſt in te. Veni de
Libano, ſponſa mea, veni de Libano,
veni: coronaberis de capite Amana,
de vertice Sanir & Hermon, de cu-
bilibꝰ leonũ, de montibꝰ pardorum.
9 Vulneràſti cor meũ, ſoror mea ſpon-
ſa, vulneràſti cor meũ in uno oculo-
rum tuorũ, & in uno crine colli tui.
10 Quã pulchræ ſunt mammæ tuæ, ſoror
mea ſponſa! pulchriora ſunt ubera
tua vino, & odor unguentorũ tuorũ
11 ſup omnia aromata. Favus diſtillans
labia tua, ſponſa, mel et lac ſub lingua
tua: & odor veſtimentorũ tuorũ ſic-
12 ut odor thuris. Hortus concluſus
ſoror mea ſponſa, hortus concluſus,
fons ſignatus.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

ΚΕΦ. δ'.

1 † Ἰδοὺ εἶ καλὴ ἡ πλησίον μου, ἰδοὺ εἶ καλή· † ὀφθαλ-
μοί σου περιστεραὶ, † ἐκτὸς τῆς σιωπήσεώς σου· † τρίχω-
μά σου ὡς ἀγέλαι τῶν αἰγῶν, † αἳ ἀπεκαλύφθησαν ἀπὸ
2 τοῦ Γαλαάδ. † Ὀδόντες σου ὡς ἀγέλαι τῶν κεκαρμένων,
† αἳ ἀνέβησαν ἀπὸ τοῦ λουτροῦ, † αἱ πᾶσαι διδυμεύου-
3 σαι, † καὶ ἀτεκνοῦσα οὐκ ἔστιν (α) ἐν αὐταῖς. † Ὡς (β)
σπαρτίον τὸ κόκκινον χείλη σου, † καὶ ἡ λαλιά σου ὡ-
ραία, † ὡς λέπυρον (γ) ῥοᾶς μῆλόν σου † ἐκτὸς τῆς
4 σιωπήσεώς σου. † Ὡς πύργος Δαυὶδ τράχηλός σου,
† ὁ ᾠκοδομημένος εἰς (δ) θαλπιώθ. † χίλιοι θυρεοὶ
κρέμανται ἐπ' αὐτὸν, † πᾶσαι βολίδες τῶν δυνατῶν.
5 † Δύο μαστοί σου ὡς δύο νεβροὶ δίδυμοι δορκάδος
6 † οἱ νεμόμενοι ἐν κρίνοις, † (ε) Ἕως οὗ διαπνεύσῃ ἡ-
μέρα καὶ κινηθῶσιν αἱ σκιαί. † πορεύσομαι ἐμαυτῷ
πρὸς τὸ ὄρος τῆς σμύρνης † καὶ πρὸς τὸν βουνὸν τοῦ λι-
7 βάνου. † Ὅλη καλὴ εἶ ἡ πλησίον μου, καὶ μῶμος οὐκ ἔστιν
8 ἐν σοί. † Δεῦρο ἀπὸ Λιβάνου νύμφη, δεῦρο ἀπὸ
Λιβάνου· † ἐλεύσῃ καὶ διελεύσῃ (ϛ) ἀπὸ ἀρχῆς Πίστεως,
† ἀπὸ κεφαλῆς Σανὶρ καὶ (ζ) Ἑρμὼν, † ἀπὸ μανδρῶν
9 λεόντων, ἀπὸ ὀρέων παρδάλεων. † Ἐκαρδίωσας ἡ-
μᾶς ἀδελφή μου νύμφη, † ἐκαρδίωσας ἡμᾶς (η) ἑνὶ ἀ-
πὸ ὀφθαλμῶν σου, † ἐν μιᾷ ἐνθέματι (ι) τραχήλων σου.
10 † Τί ἐκαλλιώθησαν μαστοί σου ἀδελφή μου, νύμφη;
† τί ἐκαλλιώθησαν μαστοί σου ἀπὸ οἴνου, † καὶ ὀσμὴ ἱματί-
11 ων σου ὑπὲρ πάντα (θ) ἀρώματα; † Κηρίον ἀποστάζουσι
χείλη σου νύμφη· † μέλι καὶ γάλα ὑπὸ τὴν γλῶσσάν
12 σου· † καὶ ὀσμὴ ἱματίων σου, ὡς ὀσμὴ Λιβάνου. Κῆπος
κεκλεισμένος ἀδελφή μου νύμφη, † κῆπος κεκλεισμέ-
νος, πηγὴ ἐσφραγισμένη.

MS.A. (α) ἐν αὐτοῖς. (β) σπαρτίον κόκκινον (γ) τῆς ῥοᾶς (δ) θαλπιώθ. (ε) Ἕως διαπνεύσῃ ἡ ἡμέρα (ϛ) ἀπαρχῆς (ζ) Ἀρμὼν, (η) ἐν * ἀπὸ (ι) τραχήλου (θ) τὰ ἀρώματα;

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

CAP. IV.

Ecce es pulchra, [a] proxima mea, 1
ecce es pulchra. Oculi tui [b] colum-
bæ (a) extra taciturnitatem tuam.
Capillamentum tuum, ſicut greges
caprarum, quæ revelatæ ſunt de [c]
Galaad. Dentes tui, ſicut greges ton- 2
ſarum, quæ aſcenderũt de lavacro:
quæ omnes (b) geminantes, & infœ-
cunda non eſt in eis. Sicut (c) funi- 3
culus coccineus, labia tua, & elo-
quium tuum decorum. Sicut cortex
mali punici, (d) gena tua extra taci-
turnitatem tuam. Sicut turris Da- 4
vid, collum tuum, quæ ædificata eſt
in (e) Thalpioth: mille [d] clypei pen-
dent ſuper eam, omnia jacula poten-
tium. Duo ubera tua, ſicut duo hin- 5
nuli gemelli capreæ, qui paſcuntur
in liliis, (f) Donec aſpiret dies, et a- 6
moveantur umbræ. Ibo mihi ad
montem myrrhæ, & ad (g) collem
thuris. Tota [e] pulchra es, proxima 7
mea, & macula non eſt in te. Veni à 8
Libano ſponſa, veni à Libano: ve-
nies, & tranſibis à principio (h) Fi-
dei, à capite Sanir, & Ermon, à (i)
latibulis leonum, à montibus pardo-
rum: (k) [f] Cor abſtuliſti nobis, ſoror 9
mea ſponſa, cor abſtuliſti nobis (l)
uno ex oculis tuis, in uno (m) orna-
mento cervicũ tuarũ. Quã (n) pul- 10
chra facta ſũt ubera tua, ſoror mea
ſponſa? quàm pulchra facta ſunt u-
bera tua (o) à vino? et odor [g] veſti-
mentorum tuorum ſuper omnia aro-
mata. (p) [h] Favum deſtillant labia 11
tua, ſponſa: mel, & lac ſub lingua
tua: & odor veſtimentorum tuorum, ſicut odor thuris. Hortus concluſus ſoror mea ſponſa; 12
hortus concluſus, fons ſignatus.

Verſio ÆTHIOPICA.

CAP. IV. ነያ:ሠናይት:አንተ:ኀቢየ:ነያ:ሠናይ 1
ት::አዕይንትኪ:ዘርግብ:: ሥዕርትኪ: ከመ:
መርዔተ:አጣሊ:: እለ:ተከሠተ:እምአድባ
ረ:ገለአድ::=፦ ሠነንኪ:ከመ:መራዕይ: እለ: 2
ተቀርጸ::እለ:ወፅአ:እምኅፀብ:: ኵሎን:እ
ለ:ይመንትዋ::ወአልቦ:እምኔሆን:መካን::=፦
ከመ:ፈትሖ:ቀይሕ:ከናፍርኪ:: ወነባብኪ:አ 3
ደም:: ከመ:ቅረፍተ:ሮማን:መላትሒኪ:እን
በለ:አርምሞትኪ::=፦ ወከመ:ማኅፈደ:ደዊ 4
ት:ክሳድኪ:: እለ:ተሐንጸ: ውስተ: ተልፍዮ
ስ::ዐሠርቱ: ምእት: ንዋየ:ሐቅል:ስቁል:ው
ስቴታ::ኵሉኒ:መዋጽፍተ:ኃያላት::=፦ ክል 5
ኤ: አጥባትኪ:ከመ:ክልኤ: ዕጕለ:መንታ:ዘ
ወይጠል:ዘይትረዓይ:ውስተ:ጽጌያት::=፦ እ 6
ስከ:ሶበ: ያስተነፍስ:ዕለት:ወይትሐወስ: ጽላ
ሎት:: አሐውር:ሊትየ:ኀበ:ደብረ:ከርቤ::
ውስተ:አውግረ:ስኂን::=፦ኵለንታኪ:ሠናይ 7
ት: : አልብኪ : ነውረ : ወኢምንተሂ : ሳዕሌ
ከ::=፦ ንዒ:እምሊባኖስ:መርዓት:ንዒ:እም 8
ሊባኖስ:: ንዒ :ወትወጽኢ:እምቅድመ:ሃይማ
ኖት:: ወእምርእሰ:ሳኔር:ወአርሞንኤም::እ
ምግበበ: አናብስት: ወእምአድባረ: አናምር
ት::=፦ አረሳረሳክነ:እኅትየ:መርዓት::አ 9
ረሳረሳክነ:በምዕር :በአዕይንቲኪ:: በአሐ
ቲ:ንብረትኪ:ዘክሳድኪ::=፦ መአድም:አጥ 10
ባትኪ:እኅትየ:መርዓት:: ጥቀ:አደም:አጥባ
ትኪ:እምወይን:: ወማዓዛ : ዕፍረትኪ:እም
ኵሉ:አፈው::=፦ ጸቃውዕ:ይውሕዝ:እም 11
ከናፍርኪ::ሐሊብ: ወመዓር:እምታሕተ:ልሳ
ንኪ::ወጼና:አንፍኪ:ከመ:ጼና:ስኂን::=፦ገነ 12
ት:እፁው:እኅትየ:መርዓት:: ገነት: እፁው:
ወዐዘቅት : ኅትምት::=፦

INTERP. ÆTHIOP. [a] amica mea, [b] columbæ. Capillamentum tuum [c] montibus Galaad. [d] inſtrumenta bellica pendent [e] pulchra es, nec macula neque ejuſmodi quidquam eſt in te. [f] Emolliſti me ſoror mea ſponſa, emolliſti me modò ex oculis tuis, uno ſitu colli tui. [g] unguenti tui ſuper omnia aromata. [h] Favus ſtillat de labiis tuis, lac & mel ſub lingua tua: & odor narium tuarum, ſicut

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 • الفصل الرابع * يا قريبتي ها انت جميلة ها انت حسناء * عيناك حمامتان خلوا من
2 سكوتك * شعرك كقطعان المعزي التي اعتلت من جلعاد * واسنانك كالقطعان المجزورة الصاعدة
3 من الاستحمام * التي هي كلها ذوات توام * وليست فيها ثكلي * شفتاك كالخيط القرمزي * وكلامك
4 لذيذ * وتفاحة خدك كقشر الرمانة * سوي حسن سكوتك * عنقك كبرج داود المبني في تلبيوس *
5 المعلق عليه الف ترس وكافة اسنة المقتدرين * ثدياك كخشفي توم الغزالة اللذان يرعيان في
6 السوسن * الي ان يفرع النهار وتسير الافياء * سامضي معه الي جبل المر والي تل الكندر *
7 8 * كلك جميلة يا قريبتي * وليس فيك معاب * ايها العروس تعالي من لبنان هلمي * من لبنان
تجيين فتعبرين من مبدا الامانة * من راس سانير وحرمون * ومن صير السباع ومن جبل
9 10 النمور * ايها العروس اختي الهبت قلوبنا من جمال عينيك * بقلادة عنقك الواحدة * ايها
العروس اختي ما احسن جمال ثدييك * ثدياك احسن من الخمر * وطيب نسيم ثيابك افضل من
11 جميع الطيوب * ايها العروس شفتاك يقطران شهدا * تحت لسانك عسل ولبن * وطيب نسيم
12 ثيابك كنسيم لبنان * اختي العروس بستان مغلق * جنة مقفلة * عين مختومة *

CAP. IV.

O Cognata mea, ecce tu formoſa es, ecce 1
tu pulchra es. Oculi tui ſunt duæ co-
lumbæ, præter ſilentium tuum. Pili tui
ſicut greges caprarum quæ prodierunt è
Galaad. Et dentes tui ſicut greges tonſi 2
aſcendentes à lotione, quorum omnes
oves ſunt gemellipara, & nulla eſt inter
eas orba. Labia tua ſicut filum coccine- 3
um, & eloquium tuum jucundum: &
mala genæ tuæ ſicut cortex malogranati,
præter decus taciturnitatis tuæ. Collum 4
tuum ſimile eſt turri Davidis ædificatæ in
Talbios, cui ſunt appenſi mille clypei,
omnesq; robuſtorum cuſpides. Ubera tua 5
velut hinnuli gemelli cervæ, qui paſcunt
inter lilia, Donec conficiatur dies, & pro- 6
cedant umbræ. Ibo cum eo ad montem
myrrhæ & ad collem thuris. Tota for- 7
moſa es O cognata mea, & nullum eſt in
te vitium. O ſponſa, veni de Libano, pro- 8
pera; de Libano venies ac tranſibis per ini-
tium Fidei, per caput Sanir & Harmon,
per luſtra leonum, & montem pardorum.
O ſponſa ſoror mea, inflammàſti corda 9
noſtra pulchritudine oculorum tuorum,
altero torque colli tui. Heus ſponſa ſo- 10
ror mea, quàm ſpecioſa eſt pulchritudo
uberum tuorum! Ubera tua ſunt vino
pulchriora, & ſuavitas odoris veſti-
mentorũ tuorum præſtantior cunctis aro-
matibus. Heus ſponſa, labia tua ſtillant 11
favum, ſub lingua tua mel & lac; &
ſuavitas odoris veſtium tuarum velut
fragrantia Libani. Soror mea ſponſa 12
hortus eſt concluſus, viridarium ob-
ſeratum, fons obſignatus.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

5 6 ܕܓܢܒܪ̈ܐ. * ܬܪ̈ܝܢ ܬܕ̈ܝܟܝ. ܐܝܟ ܬܪ̈ܝܢ ܥܘ̈ܙܠܝܢ ܬܐܡ̈ܐ ܕܛܒܝܬܐ. ܕܪ̈ܥܝܢ ܒܫܘ̈ܫܢܐ. * ܥܕ ܢܦܘܚ
7 ܝܘܡܐ. ܘܢܬܪܟܢܘܢ ܛܠ̈ܠܐ. ܙܠܝ ܠܛܘܪܐ ܕܡܘܪܐ ܘܠܪ̈ܡܬܐ ܕܠܒܘܢܬܐ. * ܟܠܟܝ ܫܦܝܪܬܝ
8 ܩܪܝܒܬܝ. ܘܡܘܡܐ ܠܝܬ ܒܟܝ. * ܬܐ ܡܢ ܠܒܢܢ ܚܬܝ ܟܠܬܐ. ܬܐ ܡܢ ܠܒܢܢ. ܬܐܬܝܢ
ܘܬܥܒܪܝܢ ܡܢ ܪܫ ܐܡܢܐ. ܘܡܢ ܪܫ ܣܢܝܪ ܘܚܪܡܘܢ. ܡܢ ܡܪ̈ܒܥܬܐ ܕܐܪ̈ܝܘܬܐ. ܘܡܢ
9 ܛܘܪ̈ܐ ܕܢܡܪ̈ܐ. * ܠܒܒܬܝܢܝ ܚܬܝ ܟܠܬܐ. ܠܒܒܬܝܢܝ. ܒܚܕܐ ܡܢ ܥܝܢ̈ܝܟܝ. ܒܚܕ
10 ܚܒܠܐ ܡܢ ܨܘܪܟܝ. * ܘܡܐ ܫܦܝܪܝܢ ܬܕ̈ܝܟܝ ܚܬܝ ܟܠܬܐ. ܡܐ ܫܦܝܪܝܢ ܬܕ̈ܝܟܝ ܡܢ ܚܡܪܐ.
11 ܘܪܝܚ ܒܣ̈ܡܝܟܝ ܡܢ ܟܠ ܒܣ̈ܡܝܢ. * ܟܘܪܬܐ ܕܕܒܫܐ ܢܛ̈ܦܢ ܣܦܘ̈ܬܟܝ. ܟܠ ܕܒܫܐ
12 ܘܚܠܒܐ ܬܚܝܬ ܣܦܘ̈ܬܟܝ. ܘܪܝܚ ܢܚܬܝܟܝ. ܐܝܟ ܪܝܚ ܠܒܢܢ. * ܓܢܬܐ ܕܐܚܝܕܐ
ܚܬܝ ܟܠܬܐ ܓܢܬܐ ܕܐܚܝܕܐ. ܡܒܘܥܐ ܕܚܬܝܡܐ.

gigantum. Geminæ tuæ mammæ ſunt ve-
luti duo hinnuli gemelli capreorum, paſcẽ-
tes in liliis. Donec remittatur dies, & humi- 6
lientur umbræ, vade *O dilecta*, ad montes
myrrhæ & ad colles thuris. Tota pulchra 7
es propinqua mea, & macula non eſt in te.
Veni de Libano ſoror mea ſponſa, veni de 8
Libano: venias, tranſeaſque ab origine Am-
narum *(i. indigenarũ)* & à vertice Sonir et
Hermon, à cubili leonũ, & à montibus tigri-
um. Roboràſti me ſoror mea ſponſa, roborà- 9
ſti me altero oculorum tuorum, unâ murenu-
lâ colli tui. O quàm pulchræ ſunt mammæ 10
tuæ ſoror mea ſponſa, quàm pulchræ ſunt
mammæ tuæ præ vino, & odor fragrantiarum
tuarum præ cunctis fragrantiis! Favum ſtil- 11
lant labia tua, omne mel & lac ſub labiis tu-
is: & odor indumenti tui ſicut odor Liba-
ni. Hortus clauſus eſt ſoror mea ſponſa, hor- 12
tus clauſus, fons obſignatus.

שיר השירים : ה

,punicorū malorū paradisus tuæ *Propagines*
13 שְׁלָחַיִךְ פַּרְדֵּס רִמּוֹנִים
cum . cyperi : *dulcedinum fructu* cum
עִם פְּרִי מְגָדִים כְּפָרִים עִם־
,*canna* , crocus & ,Nardus .nardis
14 נְרָדִים: נֵרְדְּ וְכַרְכֹּם קָנֶה
: *thuris lignis omnibus* cum cinnamomū &
וְקִנָּמוֹן עִם כָּל־עֲצֵי לְבוֹנָה
omnibus cum , aloes & , myrrha
מֹר וַאֲהָלוֹת עִם כָּל־
hortorum Fons : *aromatum capitibus*
15 רָאשֵׁי בְשָׂמִים: מַעְיַן גַּנִּים
fluentium & ; viventium aquarum puteus
בְּאֵר מַיִם חַיִּים וְנֹזְלִים
veni & ,Aquilo *Excitare* .Lebanon de
16 מִן־לְבָנוֹן: עוּרִי צָפוֹן וּבוֹאִי
fluant , meum hortum perfla , auster
תֵימָן הָפִיחִי גַנִּי יִזְּלוּ
meus dilectus veniat : illius aromata
בְשָׂמָיו יָבֹא דוֹדִי
fructum comedat & , suum hortum ad
לְגַנּוֹ וְיֹאכַל פְּרִי
suarum dulcedinum
מְגָדָיו:

CAP. V. ה

,sponsa mea soror meū hortum in Veni
1 בָּאתִי לְגַנִּי אֲחֹתִי כַלָּה
,meo aromate cum meā myrrham collegi
אָרִיתִי מוֹרִי עִם־בְּשָׂמִי
,meo melle cum meum favum comedi
אָכַלְתִּי יַעְרִי עִם־דִּבְשִׁי
comedite :meo lacte cum meū vinū bibi
שָׁתִיתִי יֵינִי עִם־חֲלָבִי אִכְלוּ
.*dilecti* vos inebriate & , bibite , *socii*
רֵעִים שְׁתוּ וְשִׁכְרוּ דּוֹדִים:
vox : *vigil* meū cor & ,*dormiens* Ego
2 אֲנִי יְשֵׁנָה וְלִבִּי עֵר קוֹל
mihi Aperi , pulsantis mei dilecti
דּוֹדִי דוֹפֵק פִּתְחִי־לִי
, mea columba , mea amica , mea soror
אֲחֹתִי רַעְיָתִי יוֹנָתִי
est plenum meum caput quia ,mea *perfecta*
תַמָּתִי שֶׁרֹּאשִׁי נִמְלָא־
.noctis guttis mei cincinni ; rore
טָל קְוֻצּוֹתַי רְסִיסֵי לָיְלָה:
quomodo ,meā tunicam me Expoliavi
3 פָּשַׁטְתִּי אֶת־כֻּתָּנְתִּי אֵיכָכָה
,meos pedes lavi ? illam induam
אֶלְבָּשֶׁנָּה רָחַצְתִּי אֶת־רַגְלַי
meus Dilectus ? illos inquinabo quomodo
4 אֵיכָכָה אֲטַנְּפֵם: דּוֹדִי
mea viscera & ,*foramine* è suā manū misit
שָׁלַח יָדוֹ מִן־הַחֹר וּמֵעַי
ego Surrexi .*eo super tumultuaverunt*
5 הָמוּ עָלָיו: קַמְתִּי אֲנִי
meæ manus & : meo dilecto aperiendū ad
לִפְתֹּחַ לְדוֹדִי וְיָדַי
myrrham mei digiti &,myrrhā stillaverunt
נָטְפוּ־מוֹר וְאֶצְבְּעֹתַי מוֹר
.*seræ manubria super* transeuntem
עֹבֵר עַל כַּפּוֹת הַמַּנְעוּל:
me' dilectus &,meo dilecto ego Aperui
6 פָּתַחְתִּי אֲנִי לְדוֹדִי וְדוֹדִי
,est egressa mea anima :transierat ,*circuierat*
חָמַק עָבָר נַפְשִׁי יָצְאָה
non & , eum quæsivi , *ipsum loquendo in*
בְדַבְּרוֹ בִּקַּשְׁתִּיהוּ וְלֹא
non & , eum vocavi ; eum inveni
מְצָאתִיהוּ קְרָאתִיו וְלֹא
custodes me Invenerunt .mihi respondit
7 עָנָנִי: מְצָאֻנִי הַשֹּׁמְרִים
,me percusserunt , *civitate in circumeuntes*
הַסֹּבְבִים בָּעִיר הִכּוּנִי
meū pallium tulerunt ; me vulneraverūt
פְצָעוּנִי נָשְׂאוּ אֶת־רְדִידִי
.murorum custodes me *desuper*
מֵעָלַי שֹׁמְרֵי הַחֹמוֹת:

תרגום TARGUM.

13 שלחיך ועולמיך מלין פקודיא הכרמונין ורחימין לנשיהון
וילדן בנין כן צדיקין כותהון וריחיהון מטול הכי כבוסמנין
14 טבין דגנתא דעדן כפורין עם רשקין : נרד רשק ומוריקא
וקנה בוסמא וקנמון עם כל קיסי לבונתא מירא דכיא
15 ואקסיל אלואין עם כל מיני בוסמנין : מעיין ומיא
דשילוח מדברין בניח עם מותר מיין דנגדין מן לבנון
לאשקאה ית ארעא דישראל בנין דאנון עסיקין בפתגמי
אוריתא דמתילין לבירא דמיין חיין ובזכותא דנסוך מיא
דנסכין על מדבחא בבית מקדשא דמתבני בירושלם
16 דמתקרי לבנון : עורי ועל סטר צפונא הוה פתורא ועלוהי
תרי עסר לחמין דאפין ועל סטר דרומא הוית בוצינא
לאנהרא ועל מדבחא הוו מקרבין כהניא קורבנא ומסקין
עלוי קטורת בוסמין כנשתא דישראל אמרת יעול אלהיא
רחימי לבית מקדשא וקבל ברעוא קורבנהון דעמיה :

ה

1 באתי אמר קודשא בריך הוא לעמיה בית ישראל עלית
לבית מקדשי דבנית לי אחיתי כנשתא דישראל דמתילא
לננפי צניעא ואשריתי שכינתי בינך קבלית ית קטורת בוסמיך
דעבדת לשמי שלחית אשתא מן שמיא ואכל ית עלון וית
נכסת קודשיא אתקבל ברעוה קדמי נסוך חמר סומק וחמר
חיור דנסיכו כהניא על מדבחי כען אתו כהניא רחמי פקודי
אכלו מה דמשתאר מן קורבניא ואתפנקו מן טובא דאתעתד
2 לכון : אני בתר כל פתגמיא האלין חבו עמא בית ישראל
ומסר יתהון ביד נבוכדנצר מלכא דבבל ואוביל יתהון בגלותא
והוו דמין בגלותא כגבר דמכא דלא יכיל לאתערא משנתיה
וקל רוחא דקודשא מזהרא להון על יד נביאיא והית עירא
יתהון מדמוך לבהון ענה רבון כל עלמא וכן אמר הדרי
בתיובתא פתחי פומיך ובועי ושבחילי אחתי רחמתי כנשתא
דישראל דמתילא ליונתא בשלימות עובדיך ארום שער רישי
אתמלי מן דמעתיך כגבר דסער רישיה מצטבע מטלא
דשמיא וציצית נורי אתמלי מן טפי עיניך כגבר דציצית
3 נורוהי מלין מטפי מטרא דנחתין בליליא : פשטתי ענת
כנשתא דישראל כל קבל נביאיא הא כבר אעדיתי מני
ניר פקודוי ופלחית לטעות עממיא והכדין יהוין לי אפין
למהדר לותיה אתיב להון מרי עלמא על יד נביאיא ואף
אנא הא כבר סלקית שכנתי מבינך והכדין אהדור ואת
עבדת עובדין בישין ואנא קדשית ית רגלי מסובתך והכדין
4 אטנפנון בינך בעובדיך בישיא : דודי כד אתגלי מן קדם
יי דעמא בית ישראל לא צבן למחרט ולמתב לותיה
אושיט מחת גבורתיה על שבטא דראובן וגד ופלגות שבטא
דמנשה למעברא לירדנא ומסר יתהון ביד סנחריב מלכא
דאתור ואגלי יתהון בלחלח ובחבור נהרי גוזן וקרוי מדי ודבר
מידהון עגלא מתכא דשוי ירבעם חיבא בלשם דן דמתקריא
פמיאס ביומי פקח בר רמליהו וכד שמעת אנא רחמי אתגלגלו
5 עליהון : קמתי וכדו תקפת עלי מחת גבורתא דיי תהירת
על עובדי וכהניא קריבו קרבנא ואסיקו קטורת בוסמין ולא
אתקבל ברעוא ארום מרי עלמא אחד דשי תיובתא
6 באנפי : פתחתי אמרת כנשתא דישראל צביתי למתבע
אולפן מן קדם יי ואיהו סלק שכנתיה מביני ונפשי תאבת
לקל מלוי תבעית שכינת יקריה ולא אשכחית צליתי קדמוהי
7 ואיהו טלל שמיא בענני ולא קבל צלותי : מצאוני אדביקו
לי כשדאי דנטרין אורחתא ומעיקין חזור חזור על קרתא
דירושלם מני קטלו בחרבא ומני אובילו בשביתא נטלו
תגא דמלכותא מעל צוריה דצדקיהו מלכא דיהודה ואובילו
יתיה ברבלא וסימו ית עינוהי עמא דבבל דמעיקין על קרתא
ונטרין ית שוריא :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Juvenes autem tui pleni ſunt præceptis ſicut malogranata, 13
& diligunt uxores ſuas, & generant filios juſtos ſimiles eis :
& ideò odor eorum ſicut aromata optima horti voluptatis,
& ſicut cypri cum nardo. Nardus, & crocus, & calamus 14
aromaticus, & cinnamomum cum omnibus lignis thuris,
myrrha munda & ligna aloes cum omnibus ſpeciebus
laudabilium aromatum. Et aquæ Siloe quæ ducuntur in 15
quiete cum reliquis aquis quæ defluunt de Libano ut irri-
gent terram Iſrael, eò quòd navant operam verbis Legis
quæ comparatur puteo aquarum viventium ; & in juſti-
tia libationis aquarum quæ libantur ſuper altare in do-
mo ſanctuarii quæ ædificata eſt in Jeruſalem, quæ voca-
tur Libanus. Et in latere Aquilonari erat menſa, & ſu- 16
per eam duodecim panes facierum, & in latere Auſtra-
li erat candelabrum ad illuminandum, & ſuper altari
offerebant Sacerdotes oblationes, & adolebant ſuper il-
lo incenſum aromatum. Dixit populus Iſrael : Ingre-
diatur Deus dilectus meus in domum ſanctuarii, & ſuſ-
cipiat voluntariè oblationes populi ſui.

CAP. V.

DIxit ille ſanctus & benedictus populo ſuo domui 1
Iſrael : Ingreſſus ſum domum ſanctuarii mei quam ædi-
ficâſti mihi ſoror mea congregatio Iſrael, quæ compara-
ta es ſponſæ honeſtæ, & habitare feci majeſtatem me-
am in medio tui ; ſuſcepi incenſum aromatum tuorum
quod feciſti nomini meo : miſi ignem de cœlis, qui con-
ſumpſit holocauſta & victimas ſanctificatas ; ſuſcepta eſt
voluntariè coram me libatio vini rubicundi, & vini albi
quod libaverunt Sacerdotes ſuper altare meum. Nunc
autem venite Sacerdotes diligentes præcepta mea, com-
edite quod relictum eſt de oblationibus, & delectami-
ni bonis quæ præparata ſunt vobis. Poſt omnia verba 2
hæc peccaverunt populus domus Iſrael, & tradidit eos
in manus Nabuchodonoſor regis Babylonis, & adduxit
eos in captivitatem : & erant ſimiles in captivitate viro
dormienti, qui non poteſt expergiſci de ſomno ſuo : &
vox Spiritus ſancti admonebat eos per manus Prophe-
tarum, & excitabat eos de ſomno cordis eorum. Reſpon-
dit dominator totius ſeculi, & ſic ait : Convertere ad
pœnitentiam, aperi os tuum & exulta & lauda me ſoror
mea dilecta mea ſynagoga Iſrael, quæ comparata es co-
lumbæ, in perfectione operum tuorum : quoniam capilli
capitis mei pleni ſunt lachrymis tuis, ſicut vir cujus ca-
pilli capitis tinguntur de rore cœli, & cincinnus cæſariei
meæ repletus eſt guttis oculorum tuorum, ſicut vir cujus
cincinnus cæſariei ſuæ plenus eſt guttis pluviæ quæ deſcen-
dunt in nocte. Reſpondit cœtus Iſrael coram Prophetis : 3
Ecce jam abſtuli à me jugum præceptorum ejus, & ſervivi
idolis populorum : quomodo ergo erit mihi facies ut
convertar ad eum ? Reſpondit eis dominator ſeculi per
manum Prophetarum : Ego quoque abſtuli majeſtatem me-
am de medio tui, & quomodo convertar ? tu autem feciſti
opera mala : ego ſanctificavi pedes meos ab immunditiis
tuis, ſed quomodo coinquinabo eos inter te operib' tuis ma-
lis ? Quando manifeſtum fuit coram Domino quòd po- 4
pulus domus Iſrael nolebat pœnitentiam agere, et conver-
ti ad eum, extendit plagam fortitudinis ſuæ contra tribum
Ruben et Gad et dimidiam tribum Menaſſe quæ erat trans
Jordanem, et tradidit eos in manus Sennacherib regis Aſſy-
riorum, qui tranſtulit eos in Lachlach et Chabor fluvios
Gozan, et civitates Medorum, et tulit è manu eorum vi-
tulum conflatilem quem poſuerat Jeroboam impius in
Leſem-dan, quæ vocata eſt Pameias, in diebus Phacee
filii Romeliæ : et quando audivi ego, miſerationes meæ
revolutæ ſunt ſuper eos. Cùm autem prævaluit contra 5
me plaga fortitudinis Domini, obſtupui propter opera
mea : et Sacerdotes obtulerunt oblationes, et adoleve-
runt incenſum aromatum, et non fuit acceptum cum bene-
placito : quoniam dominator ſeculi clauſit portas pœniten-
tiæ in conſpectu meo. Dixit cœtus Iſrael : Volui quære- 6
re doctrinam à facie Domini ; ipſe autem abſtulit majeſta-
tem ſuam de medio mei : et anima mea deſideravit vocem
verborum ejus : quæſivi majeſtatem gloriæ ejus, et non
inveni : oravi coram eo, et ipſe obumbravit cœlos nubibus,
et non ſuſcepit orationem meam. Comprehenderunt me 7
Chaldæi qui cuſtodiebant vias, & obſidebant in circuitu
contra civitatem Jeruſalem ; quoſdam meorum occiderunt
gladio, et quoſdam meorum duxerunt in captivitatem. Tu-
lerunt torquem regium Sedechiæ regis Juda de collo ejus,
et duxerunt eum in Ribla, et excæcaverunt oculos ejus po-
puli Babylonis qui obſidebant civitatem et cuſtodiebant
muros.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

13 * ܡܫܕܪܘܬܟܝ ܦܪܕܝܣܐ ܕܪܘܡܢܐ. ܥܡ ܦܐܪܐ ܕܪ̈ܓܝܓܬܐ. ܟܘܦܪܐ ܥܡ ܢܪܕܝܢ. * ܘܟܘܪܟܡܐ.
14 ܩܢܝܐ ܘܩܘܢܡܘܢ. ܥܡ ܩܝܣܐ ܕܠܒܘܢܬܐ. ܡܘܪܐ ܘܐܠܘܝ. ܥܡ ܟܠ ܪܝܫ ܒܣ̈ܡܐ.
15 * ܡܒܘܥܐ ܕܓ̈ܢܐ. ܒܐܪܐ ܕܡ̈ܝܐ ܚ̈ܝܐ ܕܪܕܝܢ ܡܢ ܠܒܢܢ. * ܐܬܬܥܝܪܝ ܓܪܒܝܐ. ܘܬܐ ܬܝܡܢܐ.
16 ܢܫܒ ܒܓܢܬܝ. ܢܪܕܘܢ ܒܣ̈ܡܝ:

Miſſio tua, paradiſus malorum punicorum, 13
cum fructibus pomorum, cyprus cum nardo,
Et croco; fiſtula, & cinnamomum, cum ligno 14
thurifero, myrrha, & aloë, cum omnibus
præcipuis aromatibus. Fons hortorum, pu- 15
teus aquarum viventium effluentium è Liba-
no. Expergiſcere Aquilo, & veni Auſter, 16
perfla hortum meum, *ut* fluant aromata mea.

Verſio VULG. LAT.

13 Emiſſiones tuæ paradiſus malorũ punicorũ
cũ pomorũ fructibꝰ. Cypri cũ
14 nardo, Nardꝰ & crocꝰ, fiſtula & cinnamomũ
cũ univerſis lignis Libani,
myrrha & aloë cum omnibꝰ primis
15 unguentis. Fons hortorum: puteus aquarũ
viventiũ, quæ fluunt impetu
16 de Libano. Surge Aquilo, & veni
Auſter, perfla hortũ meũ, & fluant
aromata illius.

CAP. V.

1 VEniat dilectꝰ meꝰ in hortũ ſuũ, &
comedat fructũ pomorũ ſuorũ. Veni
in hortũ meũ, ſoror mea ſponſa, meſſui
myrrhã meã cũ aromatibꝰ meis:
comedi favũ cũ melle meo, bibi vinũ
meũ cũ lacte meo: comedite amici,
& bibite, & inebriamini chariſſimi.
2 Ego dormio, & cor meũ vigilat: vox
dilecti mei pulſantis; Aperi mihi
ſoror mea, amica mea, columba mea,
immaculata mea: quia caput meum
plenũ eſt rore, & cincinni mei guttis
3 noctiũ. Expoliavi me tunicâ meâ,
quomodò induar illâ? lavi pedes
4 meos, quomodò inquinabo illos? Dilectꝰ
meꝰ miſit manũ ſuã ꝑ foramẽ, &
venter meꝰ intremuit ad tactũ ejus.
5 Surrexi, ut aperirẽ dilecto meo: manꝰ
meæ ſtillaverũt myrrhã, & digiti mei
6 pleni myrrhâ probatiſſimâ. Peſſulum
oſtii mei aperui dilecto meo: at ille
declinaverat, atq; tranſierat. Anima
mea liquefacta eſt, ut locutꝰ eſt: quæſivi,
et non inveni illũ: vocavi, et non
7 reſpondit mihi. Invenerunt me cuſtodes
qui circumeunt civitatẽ: percuſſerunt
me, et vulneraverunt me:
tulerunt palliũ meum mihi cuſtodes
murorum.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

13 Ἀποστολαί σου (ι) παράδεισος ῥοῶν † μετὰ καρποῦ ἀκροδρύων,
14 † κύπροι μετὰ νάρδων· † Νάρδος καὶ κρόκος,
† κάλαμος καὶ κιννάμωμον, † μετὰ πάντων
ξύλων τοῦ Λιβάνου, † σμύρνα, ἀλώθ, μετὰ πάντων
15 πρώτων μύρων, †(κ) Πηγὴ κήπου, καὶ φρέαρ ὕδατος
16 ζῶντος † καὶ ῥοιζοῦντος ἀπὸ τοῦ Λιβάνου. † Ἐξεγέρθητι
Βοῤῥᾶ, καὶ ἔρχου Νότε, †(λ) καὶ διάπνευσον κῆπόν
μου, † καὶ ῥευσάτωσαν ἀρώματά μου.

MS.A. (ι) παράδεισος μετὰ καρποῦ (κ) Πηγὴ κήπων, φρέαρ (λ) διάπνευσον

ΚΕΦ. ε΄.

1 †ΚΑταβήτω ἀδελφιδός μου εἰς (α) κῆπον αὐτοῦ,
† καὶ φαγέτω καρπὸν ἀκροδρύων αὐτοῦ. † εἰσῆλθον
εἰς κῆπόν μου ἀδελφή μου νύμφη· † ἐτρύγησα
σμύρναν μου μετὰ ἀρωμάτων μου, † ἔφαγον ἄρτον
μου μετὰ μέλιτός μου, † ἔπιον οἶνόν μου μετὰ γάλακτός
μου. † φάγετε (β) πλησίοι καὶ πίετε, καὶ μεθύσθητε
2 ἀδελφοί. † Ἐγὼ καθεύδω, καὶ ἡ καρδία μου ἀγρυπνεῖ.
† φωνὴ ἀδελφιδοῦ μου κρούει ἐπὶ τὴν θύραν,
† Ἄνοιξόν μοι (γ) ἡ πλησίον μου, ἀδελφή μου,
† περιστερά μου, τελεία μου· † ὅτι ἡ κεφαλή μου
ἐπλήσθη δρόσου, † καὶ οἱ βόστρυχοί μου ψεκάδων νυκτός.
3 † Ἐξεδυσάμην τὸν χιτῶνά μου, πῶς (·) ἐνδύσομαι
αὐτόν; † ἐνιψάμην τοὺς πόδας μου, πῶς μολυνῶ
4 αὐτούς; † Ἀδελφιδός μου ἀπέστειλεν χεῖρα αὐτοῦ
ἀπὸ τῆς ὀπῆς, † καὶ ἡ κοιλία μου ἐθροήθη ἐπ' αὐτόν.
5 † Ἀνέστην ἐγὼ ἀνοῖξαι τῷ ἀδελφιδῷ μου,
† (δ) χεῖρές μου ἔσταξαν σμύρναν, † δάκτυλοί μου
6 σμύρναν πλήρη † ἐπὶ χεῖρας τοῦ κλείθρου. † Ἤνοιξα
ἐγὼ τῷ ἀδελφιδῷ μου· † ἀδελφιδός μου παρῆλθε·
† (ε) ψυχή μου ἐξῆλθεν ἐν λόγῳ αὐτοῦ. † ἐζήτησα
αὐτὸν καὶ οὐχ εὗρον αὐτόν, † ἐκάλεσα αὐτὸν καὶ οὐχ (ζ) ὑπήκουσέ μου.
7 † Εὕροσάν με οἱ φύλακες οἱ κυκλοῦντες ἐν
τῇ πόλει, † ἐπάταξάν με, ἐτραυμάτισάν με· † ἦραν
τὸ θέριστρόν μου ἀπ' ἐμοῦ φύλακες τῶν τειχέων.

MS.A. (α) κῆπόν μου, (β) οἱ πλησίον (γ) ἀδελφή μου, ἡ πλησίον μου, περιστερά (·) ἐνδύσωμαι (δ) αἱ χεῖρές μου (ε) ἡ ψυχή μου (ζ) ἐπήκουσέν μου.

Verſio GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

[i] Emiſſiones tuæ paradiſus malorum 13
punicorũ cum fructu (q) nucum.
Cyperi cum nardis, Nardus, & 14
crocus, calamus, et cinnamomũ cũ omnibꝰ
lignis Libani: myrrha, (r) aloth,
cum omnibus primis unguentis. Fons 15
horti, & puteus aquæ viventis, (ſ)
& cum ſtrepitu fluentis è Libano.
Exurge [k] Aquilo, et veni Auſter, 16
& aſpira hortum meum, & (t)
fluant aromata (u) mea.

CAP. V.

DEſcendat [a] fraternus meus in 1
hortum meum: & comedat [b] fructum
(a) nucũ ejus. Introivi in hortum
meum, ſoror mea ſponſa: vindemiavi
myrrham meam cum aromatibus
meis: (b) manducavi panem
meum cum melle meo: bibi vinum
meum cum lacte meo. Comedite [c]
proximi, & bibite, & inebriamini
(c) fratres. Ego dormio, & cor meũ 2
vigilat. Vox fraterni mei pulſat ad
oſtium; Aperi mihi [d] proxima mea,
ſoror mea, columba mea, perfecta
mea. Quia caput meum impletum
eſt rore, & cincinni mei guttis (d)
noctis. Exui tunicam meã: quomodò 3
induã illam? Lavi pedes meos; quomodò
inquinabo illos? [e] Fraternus 4
meus emiſit manum ſuam de proſpectu:
& venter meus conturbatus eſt
ſuper (e) ipſum. Exurrexi ego aperire 5
fraterno meo: manus meæ ſtillaverunt
myrrham; digiti mei myrrhã
plenam ſuper (f) manus peſſuli. Aperui 6
ego [f] fraterno meo: fraternus
meus (g) tranſiit: (h) anima mea egreſſa
eſt in ſermone ejus. Quæſivi
eum, & non inveni eum: vocavi eũ, & non obaudivit me. Invenerunt me cuſtodes, qui [g] 7
circumeunt in civitate; percuſſerunt me, (i) vulneraverunt me; tulerunt (k) [h] theriſtrum
meum à me cuſtodes murorum.

Verſio ÆTHIOPICA.

ፍናው፡ ዚአከ፡፡ ገነት፡ምስለ፡ፍሬ፡ ዐቅማ 13
ኒ፡፡=፡ ቆዕ፡ምስለ፡ናርደስ፡፡ናርደስ፡ወመጽ 14
ርይ፡፡ ቀጺሞት፡ወቀናንሞስ፡፡ምስለ፡ኵሉ፡ዕ
ፀወ፡ሊባኖስ፡፡ ከርቤ፡ወዐልወ፡ምስለ፡ኵሉ፡
መቅድመ፡ዕፍረታት፡፡=፡ ነቅዐ፡ገነት፡ዐዘቅ 15
ተ፡ማየ፡ ሕይወት፡፡ ዘይውሕዝ፡ እምሊባና
ስ፡፡=፡ተንሥእ፡ሰሜን፡ወነዐ፡ደቡብ፡፡ንፈሕ፡ 16
ገነትየ፡፡ ወይትኀዝ፡አፈዋተ፡ዚአየ፡፡=፡
CAP. V. ለይረድ፡ ወልድ፡ እኁየ፡ ውስተ፡ገ 1
ነቱ፡፡ ወይብላዕ፡ እምፍሬ፡ አቅማሂሁ፡፡
ቦእኩ፡ ውስተ፡ገነትየ፡ እኅትየ፡ መርዓት፡፡
አረርኩ፡ከርቤ፡ምስለ፡ አፈዋትየ፡፡ በላዕኩ፡
ኅብስትየ፡ ምስለ፡ መዓርየ፡ ሰተይኩ፡ ወይን
የ፡ ምስለ፡ ሐሊብየ፡፡ በልዑ፡ ካልኣንየ፡ ወ
ጸግቡ፡፡ ወሰክሩ፡ ውሉደ፡ አኃዊየ፡፡=፡ አ 2
ነ፡ነውም፡ ወልብየ፡ ንቅህት፡፡ ቃለ፡ ወልድ፡
እኁየ፡ ይጐድጕድ፡ ኆኅተ፡፡አርኅውኒ፡እኅ
ትየ፡ ካልእትየ፡፡ ርግብየ፡ ፍጽምት፡፡ እስ
መ፡ርእስየ፡ምሉእ፡ጠለ፡፡ ወድምድማየ፡
ነፍነፈ፡ሌሊት፡፡=፡ አውጻእኩ፡ልብስየ፡እፎ 3
ኑ፡እለብሶ፡፡ ተሐፀብኩ፡እግርየ፡እፎኑ፡እጌ
ምኖን፡፡=፡ወልድ፡እኁየ፡ፈነወ፡እዴሁ፡እንተ፡ 4
ስቍረት፡፡ከርሥየ፡ደንገፀት፡ 5 ተንሣእኩ፡
አርኃውክዎ፡ለወልድ፡እኁየ፡፡ እደዊየ፡ውሕ
ዘ፡ከርቤ፡፡ ወአጻብዕየ፡ ከርቤ፡ ምሉእት፡፡
ውስተ፡እደ፡መንስግ፡፡ 6 አነ፡አርኃውክዎ፡ለ
ወልድ፡እኁየ፡፡ወልድ፡እኁየ፡ኃለፈ፡፡ነፍስየ፡
ደንገፀት፡እምቃሉ፡፡ ኃሠሥክዎ፡ወኢረከብ
ክዎ፡፡ጸዋዕክዎ፡ወኢተሰጥወኒ፡፡=፡ ረከቡኒ፡ 7
መዐቅብ፡እለ፡ያዐቅቡ፡ሀገረ፡፡ ዘበጡኒ፡ ወፈ
ቀሩኒ፡፡ነሥኡ፡ግልባብየ፡እምላዕለ፡ርእስየ፡
እለ፡የዐቅቡ፡ቅጽረ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [i] Emiſſio tua hortus cum fructu pomorum, [k] Auſter & veni Aquilo, CAP. V. [a] nepos meus in hortum ejus: [b] fructum pomorum ejus. [c] ſodales mei, & ſaturamini, & inebriamini nepotes mei. [d] ſoror mea, amica mea, columba mea perfecta. [e] Nepos meus emiſit manum ſuam per foramen: venter meus conturbatus eſt. Exurrexi & aperui nepoti meo: [f] nepoti meo: nepos meus tranſiit: anima mea conturbata eſt [g] cuſtodiunt civitatem; [h] velum meum de capite meo qui cuſtodiunt arcem.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

13 * رسايلك بستان ذو ثمر * اطراف الاغصان * ازهار * مع الوان البان والزعفران * وقصب الذرير *
14 ووسط الطيب * مع كافة شجر لبنان * مر وعود * مع جميع اوايل الطيوب * عين بستان * بير
15 الماء الحي الذي يجري من لبنان * انهض يا شمال وهلم يا قبلي * وهبا على بستاني واسكبا طيوبي *
16 الفصل الخامس * لينزل ابن اخي الي بستانه وياكل ثمر فاكهته *
1 * العروس اختي دخلت الي بستاني * اقتطفت المر الذي لي مع طيوبي * اكلت خبزي مع
2 عسلي * شربت خمري مع لبني * كلوا يا اقربايي واشربوا يا اخوتي واسكروا * انا نايم وقلبي
ساهر * صوت ابن اخي يقرع على الباب * افتح لي يا اختي وقريبتي حمامتي كاملتي لان راسي
3 امتلا ندي * وعناقيدي تنضح ليلا * قد خلعت ثوبي فكيف البسه * قد غسلت قدمي
4 فكيف اوسخهما * ابن اخي ارسل يده من الثقب * وجوفي اندهل عليه * قمت انا لافتح لابن
5 اخي * يداي قطرتا مرا * اصابعي مملوة مرا على يدي القفل * فتحت انا لابن اخي *
6 ابن اخي جاز * نفسي خرجت بكلمته * طلبته فما وجدته * دعوته فما اطاعني * وجدني
7 الحراس الذين يطوفون المدينة * فضربوني وجرحوني * حراس الاسوار اخذوا غلالتي مني *

Emiſſiones tuæ hortus frugifer frondes 13
ramorum, flores, Cum generibus nardi 14
& croci, calami cinnamomi, & coſtum
aromaticum, cum univerſis arboribus Libani,
myrrha, & aloë, cũ omnibus præcipuis
aromatibus. Fons horti, puteus aquæ 15
cum murmure decurrit è Libano. Surge 16
O Aquilo, & veni O Auſter, ac perflate
ſuper hortum meum, & effundite aromata
mea;

CAP. V.

UT deſcendat nepos meus in hortum
ſuum, comedatque fructus pomorum ejus.
Sponſa ſoror mea ingreſſa eſt hortum 1
meũ, decerpſit myrrham meã cũ aromatibus
meis; comedit panẽ meũ cũ melle meo,
bibit vinũ meũ cũ lacte meo. Comedite O
propinqui mei, & bibite O fratres mei, ac
inebriamini. Ego dormio, & cor meum 2
vigilat. Vox nepotis mei pulſantis oſtium.
Aperi mihi O ſoror mea, & propinqua
mea, columba mea, perfecta mea: quia
caput meũ repletũ eſt rore, & botri mei
ſtillant noctu. Jam exui tunicã meam, 3
quomodo induam illã? lavi pedes meos,
quomodo coinquinabo eos? Nepos meus 4
immiſit manum ſuam per foramen, &
venter meus obſtupuit ſuper eũ. Surrexi 5
ego ut aperirem nepoti meo; manus meæ
ſtillaverunt myrrhã, digiti mei pleni ſunt
myrrhâ ſecus peſſulum. Aperiente me nepoti 6
meo, nepos meus pertranſierat: anima
mea egreſſa eſt ad ſermonem ipſius. Quæſivi
eum, nec inveni: vocavi illum, &
non acquievit mihi. Invenerunt me cuſtodes 7
qui obeunt urbem, percuſſerunt ac
vulneraverunt me: cuſtodes murorum abſtulerunt
à me pallium meum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

1 * ܩܦܠܐܘܢ * ܗ * ܢܐܬܐ ܐܚܝ ܠܓܢܬܗ. ܘܢܐܟܘܠ ܡܢ ܦܐܪܐ ܕܒܣܝܡܘܗܝ. * ܐܬܝܬ
ܠܓܢܬܝ ܚܬܝ. ܟܠܬܐ ܐܬܝܬ ܠܓܢܬܝ. ܠܩܛܬ ܡܘܪܝ ܥܡ ܒܣܡܝ. ܐܟܠܬ
ܚܠܝܘܬܝ ܥܡ ܕܒܫܝ. ܫܬܝܬ ܚܡܪܝ ܥܡ ܚܠܒܝ. ܐܟܘܠܘ ܚܒܪܝ ܘܐܫܬܘ ܘܪܘܘ ܕܘܕܝ܀
2 ܐܢܐ ܕܡܟܐ ܐܢܐ ܘܠܒܝ ܥܝܪ. ܩܠܗ ܕܕܘܕܝ ܢܩܫ. ܦܬܚܝ ܠܝ ܚܬܝ ܘܪܚܡܬܝ. ܝܘܢܬܝ ܘܫܠܡܬܝ.
3 ܕܪܫܝ ܡܠܐ ܛܠܐ. ܘܦܘܚܬܝ ܢܛܦܐ ܕܠܠܝܐ܀ ܫܠܚܬ ܟܘܬܝܢܝ ܐܝܟܢܐ ܐܠܒܫܝܗ.
4 ܐܫܝܓܬ ܪܓܠܝ ܐܝܟܢܐ ܐܛܢܦ ܐܢܝܢ܀ ܕܘܕܝ ܐܘܫܛ ܐܝܕܗ ܡܢ ܚܘܪܐ. ܘܡܥܝ ܪܬܚܘ ܥܠܘܗܝ܀
5 ܩܡܬ ܐܢܐ ܠܡܦܬܚ ܠܕܘܕܝ. ܘܐܝܕܝ ܢܛܦܬ ܡܘܪܐ. ܘܨܒܥܬܝ ܡܘܪܐ ܥܠ ܐܝܕܐ ܕܢܓܪܐ܀
6 ܦܬܚܬ ܐܢܐ ܠܕܘܕܝ ܘܕܘܕܝ ܥܒܪ ܗܘܐ. ܢܦܫܝ ܢܦܩܬ ܒܡܡܠܠܗ. ܒܥܝܬܗ ܘܠܐ ܐܫܟܚܬܗ.
7 ܩܪܝܬܗ ܘܠܐ ܥܢܢܝ܀ ܐܫܟܚܘܢܝ ܢܛܘܪܐ ܕܡܚܕܪܝܢ ܒܡܕܝܢܬܐ. ܡܚܘܢܝ ܘܦܨܥܘܢܝ.
ܫܩܠܘ ܡܢܝ ܪܕܝܕܝ ܢܛܘܪܐ ܕܫܘܪܐ܀

CAP. V.

VEniat patruꝰ meꝰ ad hortũ ſuũ, & comedat
è fructibꝰ pomorum ſuorũ. Veni *ego* ad 1
hortũ meum ſoror mea: ſponſa, veni *ego* ad
hortũ meũ, myrrham meã legi cum aromatibus
meis, comedi ſuavitatẽ meã cum melle
meo, bibi vinũ meũ cum lacte meo: edite ſodales
mei, bibite, & inebriamini patrui mei.
Ego dormio, & cor meũ vigilat. Vox eſt patrui 2
mei pulſantis. Aperi mihi ſoror mea, propinqua
mea, colũba mea perfecta: ſiquidẽ caput
meũ impletum eſt rore, & cincinni mei
ſtillis nocturnis. Exui tunicã meã, quomodo 3
induerẽ eã? lavi pedes meos, quomodo inquinarẽ
eos? Patruꝰ meꝰ porrexit manũ ſuã 4
è foramine, & viſcera mea eruperunt in eũ.
Surrexi ego ut aperirẽ patruo meo, et manus 5
mea ſtillavit myrrhã, et digiti mei myrrham
ſtillãrunt ſecꝰ ſerã. Aperui ego patruo meo, 6
at patruꝰ meꝰ ſe ſubducens præterierat: anima
mea egreſſa eſt ipſo loquente. Quæſivi eũ, &
non inveni eũ: compellavi eũ, & nõ reſpõdit
mihi. Offenderũt me cuſtodes qui circumeũt
in urbe, percuſſerũt ac vulnerãrũt me; abſtulerũt 7
à me pallium meum cuſtodes mœnium.

שִׁיר הַשִּׁירִים : ו

; Jerusalaim filiæ vos *Adjuravi*
הִשְׁבַּעְתִּי אֶתְכֶם בְּנוֹת יְרוּשָׁלִָם 8
quid ,meum dilectum inveneritis si
אִם־תִּמְצְאוּ אֶת־דּוֹדִי מַה־
ego amore *ægra* quia ? ei *indicabitis*
תַּגִּידוּ לוֹ שֶׁחוֹלַת אַהֲבָה אָנִי׃
pulcherrima ,*dilecto* præ tuus dilectus Quid
מַה־דּוֹדֵךְ מִדּוֹד הַיָּפָה 9
,*dilecto præ* tuus dilectus quid ?*mulieribus in*
בַּנָּשִׁים מַה־דּוֹדֵךְ מִדּוֹד
meus Dilectus ? nos adjurâsti sic quia
שֶׁכָּכָה הִשְׁבַּעְתָּנוּ׃ דּוֹדִי 10
vexillatus , rubicundus & , candidus
צַח וְאָדוֹם דָּגוּל
auri massa ejus Caput .millibus decem à
מֵרְבָבָה׃ רֹאשׁוֹ כֶּתֶם 11
nigri crispi ejus cincinni :*obrizi*
פָּז קְוּצּוֹתָיו תַּלְתַּלִּים שְׁחֹרוֹת
columbæ sicut ejus Oculi .corvus veluti
כָּעוֹרֵב׃ עֵינָיו כְּיוֹנִים 12
se lavantes , aquarum *torrentes* *super*
עַל־אֲפִיקֵי מָיִם רֹחֲצוֹת
.plenitudinem *super* manentes , lacte in
בֶּחָלָב יֹשְׁבוֹת עַל־מִלֵּאת׃
, aromatis sulci linea sicut ejus Maxillæ
לְחָיָו כַּעֲרוּגַת הַבֹּשֶׂם 13
ejus labia : aromatum flores
מִגְדְּלוֹת מֶרְקָחִים שִׂפְתוֹתָיו
.transeuntē myrrham distillantia lilia
שׁוֹשַׁנִּים נֹטְפוֹת מוֹר עֹבֵר׃
pleni , *auri* circuli ejus Manus
יָדָיו גְּלִילֵי זָהָב מְמֻלָּאִים 14
, *choris* *nitor* ,ejus *viscera* : *tharsis in*
בַּתַּרְשִׁישׁ מֵעָיו עֶשֶׁת שֵׁן
columnæ ejus *Coxæ* .sapphiris *obtectus*
מְעֻלֶּפֶת סַפִּירִים׃ שׁוֹקָיו עַמּוּדֵי 15
: obrizi auri bases super fundatæ *marmoris*
שֵׁשׁ מְיֻסָּדִים עַל־אַדְנֵי־פָז
electus , Lebanon ut ejus aspectus
מַרְאֵהוּ כַּלְּבָנוֹן בָּחוּר
,dulcedines ejus Palatum *larices* ut
כָּאֲרָזִים׃ חִכּוֹ מַמְתַקִּים 16
,meus dilectus iste : desideria ipse totus &
וְכֻלּוֹ מַחֲמַדִּים זֶה דוֹדִי
.Jerusalaim filiæ meus *socius* iste &
וְזֶה רֵעִי בְּנוֹת יְרוּשָׁלִָם׃
pulcherrima ,tuus dilectus abiit Quò
אָנָה הָלַךְ דּוֹדֵךְ הַיָּפָה 17
,tuus dilectus *respexit* quò ? *mulieribus in*
בַּנָּשִׁים אָנָה פָּנָה דוֹדֵךְ
? tecum eum quæremus &
וּנְבַקְשֶׁנּוּ עִמָּךְ׃

CAP. VI. ו

,suum hortum ad descendit meus Dilectus
דּוֹדִי יָרַד לְגַנּוֹ 1
pascendū ad :aromatis sulcorum lineas ad
לַעֲרוּגוֹת הַבֹּשֶׂם לִרְעוֹת
.lilia colligendum ad & , hortis in
בַּגַּנִּים וְלִלְקֹט שׁוֹשַׁנִּים׃
,mihi meus dilectus & ,meo dilecto Ego
אֲנִי לְדוֹדִי וְדוֹדִי לִי 2
tu Pulchra .*liliis in* *pascens*
הָרֹעֶה בַּשּׁוֹשַׁנִּים׃ יָפָה אַתְּ 3
decora , Tirsah sicut mea amica
רַעְיָתִי כְתִרְצָה נָאוָה
.*vexillatæ* ut terribilis : Jerusalaim sicut
כִּירוּשָׁלִָם אֲיֻמָּה כַּנִּדְגָּלוֹת׃

תרגום TARGUM.

הִשְׁבַּעְתִּי אֲמַרַת כְּנִשְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל אַשְׁבְּעִית לְכוֹן נְבִיאַיָּא בִּגְזֵירַת 8
מֵימְרָא דַייָ מָאִים אִתְגְּלִיאַת עֲלֵיכוֹן רַחֲמַתְכוֹן חַוִּיאוּ קֳדָמוֹהִי
דִּמְרָעִיתָא מִן חִבַּת רַחֲמוֹהִי אֲנָא : מה עֲנוֹ נְבִיאַיָּא וַאֲמַרוּ 9
לְבֵית יִשְׂרָאֵל אֵידֵין אֱלָהָא אַנְתְּ בָּעְיָא לְמִפְלַח כְּנִשְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל
שַׁפִּרְתָּא מִכָּל עַמְמַיָּא לְאֵידֵין אַנְתְּ צָבְיָא לְמִדְחַל דְּהָכְדֵין קַיֵּימְתְּ
עֲלָנָא : דודי בְּכֵן שְׁרִיאַת כְּנִשְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל לְמִשְׁתָּעֵי בְשִׁבְחָא 10
לְמָרֵי עָלְמָא וְכֵן אֲמַרַת לְהַהוּא אֱלָהָא רְעוּתִי לְמִפְלַח דַּעֲטִיף
בִּימָמָא בְאִצְטְלָא חִוָּר כְּתַלְגָּא וְזִיו יְקָרָא דַייָ דְאַנְפּוֹהִי זָהֲרִין
כְּנוּרָא מִסְּגִיאוּת חוּכְמְתָא וּסְבָרָא דְּהוּא מְחַדַּת שְׁמוּעִין חַדְתִּין
בְּכָל יוֹמָא וַעֲתִיד לְפַרְסָמָנוּן לְעַמֵּיהּ בְּיוֹמָא רַבָּא וְטִקְסֵיהּ עַל
רִבּוֹא רִבְּוָן מַלְאֲכִין דִּמְשַׁמְּשִׁין קֳדָמוֹי : ראשו אוֹרַיְתֵיהּ דִּי הִיא 11
רְגִינָה מִדְּהַב טָב וּפֵירוּשׁ מִלַּיָּא דִבְהוֹן דְּגוֹרִין דְּגוֹרִין טַעֲמִין
וּפִקּוּדִין לְמַן דְּנָטְרִין לְהוֹן חִוָּרִין כְּתַלְגָּא וּדְלָא נָטְרִין יַתְהוֹן
אוּכָּמִין כְּאַנְפֵּי עוֹרְבָא : עיניו עֵינוֹהִי מִסְתַּכְּלִין תְּדִירָא עַל 12
יְרוּשְׁלֵם לְאוֹטָבָא לַהּ וּלְבָרְכָא לַהּ מֵרֵישָׁא דְשַׁתָּא וְעַד סוֹפָא
דְשַׁתָּא כְּיוֹנִין דְּקָיְמִין וּמִסְתַּכְּלִין עַל מַפְּקָנוּת מַיָּא בְּגִין זְכוּתָא
דְיָתְבֵי סַנְהֶדְרִין דְּעָסְקִין בְּאוֹרַיְתָא וּמְנַהֲרִין יַת דִּינָא לְמֶהֱוֵי
שְׁעִיעַ כַּחֲלַב וְיָתְבִין בְּבֵית מֶדְרְשָׁא וּמְתִינִין בְּדִינָא עַד דְּגָמְרִין
לְזַכָּאָה וּלְחַיָּבָא : לחייו תְּרֵין לוּחֵי אַבְנִין דִּיהַב לְעַמֵּיהּ כְּתִיבָן 13
בְּעֶשֶׂר שִׁטִּין דָּמְיָן לְשִׁטֵּי גִּנַּת בּוּסְמָא מַרְבְּיָן דִּקְדּוּקִין וְטַעֲמִין
הֵיכְמָה דְּגִנּוּנִיתָא מַרְבְּיָא בוּסְמִין וְסִפְוָתֵי דְחַכִּימוֹי דְּעָסְקִין
בְּאוֹרַיְתָא וְלָחִין טַעֲמִין בְּכָל סְטַר וּמַאֲמַר פּוּמְהוֹן כְּמֵירָא בְחִירָא׃
ידיו תְּרֵי עֲסַר שִׁבְטִין דְּיַעֲקֹב עַבְדֵּיהּ גְּלִילָן עַל צִיץ כְּלִילָא 14
דִּדְהַבָא דְקוּדְשָׁא גְּלִיפָן עַל תְּרֵי עֲסַר מַרְגָּלְיָתָא עִם תְּלָתָא
אֲבָהָן דְּעָלְמָא אַבְרָהָם יִצְחָק וְיַעֲקֹב רְאוּבֵן גְּלִיף עַל אַחְמַר
שִׁמְעוֹן גְּלִיף עַל עָקִיק לֵוִי גְּלִיף עַל בַּרְקָן וְעַפְרָן יְהוּדָה גְּלִיף
עַל כַּחֲלֵי יִשָּׂשכָר גְּלִיף עַל אִזְמוֹרַד זְבוּלֻן גְּלִיף עַל גִּיהַר דָּן
גְּלִיף עַל בִּרְלָא נַפְתָּלִי גְּלִיף עַל אֶסְפּוֹר גָּד גְּלִיף עַל טַבְאָג אָשֵׁר
גְּלִיף עַל פְּרוּזַג יוֹסֵף גְּלִיף עַל מְרִיבַג בִּנְיָמִין גְּלִיף עַל אַפַּנְטוֹר
דָּמְיָן לִתְרֵי עֲסַר מַזָּלַיָּא נְהִירִין כַּעֲשָׁשִׁית צְחִיחִין בְּעוֹבָדֵיהוֹן כְּשֵׁן
דִּפִיל וּבְהִיקִין כְּשַׁבְזִיזִין : שוקיו וְצַדִּיקַיָּא אִנּוּן עַמּוּדֵי עָלְמָא 15
בְּסִיסָן עַל סַמְכִין דִּדְהַב טָב אִנּוּן פִּתְגָּמַיָּא דְאוֹרַיְתָא דְעָסְקִין
בְּהוֹן וּמוֹכְחִין עַמָּא בֵּית יִשְׂרָאֵל לְמֶעְבַּד רְעוּתֵיהּ וְאִיהוּ מִתְמְלֵי
רַחֲמִין עֲלֵיהוֹן כְּסָבָא וּמְחַוַּר חוֹבֵיהוֹן דְּבֵית יִשְׂרָאֵל כְּתַלְגָּ
וּמִתְעַתַּד לְמֶעְבַּד נִצְחָן וּקְרָבָא בְּעַמְמַיָּא דְּעָבְרִין עַל מֵימְרֵיהּ
כְּעוּלֵם גְּבַר וְחַסִּין כְּגַלְמִשִׁין : חכו מִלֵּי מוֹרִיגוֹי מְתִיקָן 16
כְּדוּבְשָׁא וְכָל פִּקּוּדוֹי רְגִיגָן עַל חַכִּימוֹי מִדְּהַב וּכְסַף דֵּין הוּא
תּוּשְׁבַּחְתֵּיהּ דֶּאֱלָהָא רְחִימִי וְדֵין הוּא תְּקוֹף חוּסְנֵיהּ דְּמָרֵי חַבִּיבִי
נְבִיאַיָּא וּמִתְנַבְּאִין בִּירוּשְׁלֵם : אנה אֲתִיבוּ נְבִיאַיָּא כַּד שְׁמַעוּ וְכֵן 17
אֲמַרוּ תוּשְׁבַּחְתָּא דַייָ מִפּוּם כְּנִשְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל עַל אֵידֵין חוֹבָא
אִסְתַּלַּק מִבֵּינָךְ שְׁכִנְתָּא דַייָ אַתְּ דְּשַׁפִּירָא עוֹבָדָךְ מִכָּל אוּמַיָּא
וּלְאָן אֲתַר אִתְפְּנֵי רְחִימָךְ בְּאִסְתַּלָּקוּתֵיהּ מִמּוּקְדְּשָׁךְ אֲמַרַת
כְּנִשְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל עַל חוֹבִין וּמְרוֹדִין וְאִשְׁתַּדּוּר דִּי הִשְׁתְּכַחוּ בִי
אֲמַרִין נְבִיאַיָּא כְּעַן הֲדָרִי בִתְיוּבְתָּא וּנְקוּם אַנְתְּ וַאֲנַן וּנְצַלֵּי
קֳדָמוֹהִי וְנִבְעֵי רַחֲמִין עִמָּךְ׃

ו

דודי וּמָרֵי עָלְמָא קַבֵּל צְלוֹתְהוֹן בְּרַעֲוָא וּנְחַת לְבָבֶל לְסַנְהֶדְרִין 1
דְּחַכִּימַיָּא וִיהַב רְוָחָא לְעַמֵּיהּ וְאַסְקִנּוּן מִגָּלְוָתְהוֹן עַל יַד כּוֹרֶשׁ
וְעֶזְרָא וּנְחֶמְיָה וּזְרֻבָּבֶל בַּר שְׁאַלְתִּיאֵל וְסָבֵי יְהוּדָאֵי וּבְנוֹ יַת בֵּית
מוּקְדְּשָׁא וּמַנִּיאוּ כָּהֲנַיָּא עַל קוּרְבָּנַיָּא וְלֵוָאֵי עַל מַטְּרַת מֵימְרָא
דְקוּדְשָׁא וּשְׁלַח אֶשָּׁתָא מִן שְׁמַיָּא וְקַבֵּל בְּרַעֲוָא יַת קוּרְבָּנָא וְיַת קְטוֹרֶת בּוּסְמִין וּכְגְבַר
דִּמְפַרְנֵס יַת בְּרֵיהּ רְחִימָא בְּתַפְנוּקִין כֵּן פַּנְקִנּוּן וּכְגְבַר דִּמְנַקֵּב וַרְדִּין מִן מֵישְׁרַיָּא כֵּן כַּנִּשְׁנוּן
מִן בָּבֶל : אני וּבְהַהִיא יוֹמָא אֲנָא פָּלְחָא לְמָרֵי עָלְמָא רְחִימִי וּרְחִימִי אַשְׁרֵי שְׁכִינַת 2
קוּדְשַׁיָּא בֵּינִי וְזָן יָתִי בְּתַפְנוּקִין : יפה אֲמַר יְיָ בְּמֵימְרֵיהּ כְּמָה יָאָה אַתְּ חֲבִיבְתִּי בִּזְמַן דִּצְבוּתִיךְ 3
לְמֶעְבַּד רְעוּתִי שַׁפִּיר בֵּית מוּקְדְּשָׁא דִבְנֵית לִי כְּמַקְדָּשׁ קַדְמַי דִּי בְנָא לִי שְׁלֹמֹה
מַלְכָּא בִּירוּשְׁלֵם וְאֵימְתָךְ עַל כָּל עַמְמַיָּא בְּיוֹמָא דְהַלִּכוּ אַרְבַּע טִקְסָךְ בְּמַדְבְּרָא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Dixit cœtus Iſrael : Adjuro vos Prophetæ per decretum 8
verbi Domini, quòd ſi revelatus fuerit vobis miſericors
veſter, annuncietis coram eo, quòd amore miſerationis ejus
ego langueo. Reſponderunt Prophetæ & dixerunt domui 9
Iſrael : Qualis eſt Deus quem tu vis colere cœtus Iſrael
qui pulcher es ſuper omnes populos ? qualis eſt Deus quem
tu vis timere ; quia ſic adjurâſti nos ? Tunc cœpit cœtus 10
Iſrael narrare laudes dominatoris ſeculi, et ſic ait : Illi Deo
volo ſervire qui amictus eſt per diem ſtola alba ſicut nix : et
ſplendor gloriæ vultus Domini lucet ſicut ignis, propter
multitudinem ſapientiæ et opinionis, quia rumores novos
ipſe innovat quotidie, et futurum eſt ut manifeſtet eos populo
ſuo in die magno, et vexillum ejus erit ſupra mille millia
angelorum qui miniſtrant coram eo. Lex ejus quæ de- 11
ſiderabilior eſt auro obrizo, et interpretatio verborum quæ
in ea ſunt coacervata, et eloquia et præcepta, cuſtodientibus
ea ſunt alba ſicut nix : his autem qui non cuſtodiunt ea, ſunt
nigra ſicut alæ corvi. Oculi ejus contemplantur ſemper Je- 12
ruſalem, ut benefaciat ei et benedicat ei à principio anni
uſque ad finem ejus ; ſicut columbæ quæ ſtant et aſpiciunt
ad exitum aquarum ; propter meritum eorum qui habitant
in concilio qui laborant in Lege, et illuminant judicium ut
ſit lene ſicut lac, et habitant in domo doctrinæ et diſceptant
in judicio donec conſumment ut juſtificent et ut condemnent.
Duæ tabulæ lapideæ quas dedit populo ſuo, ſcriptæ erant 13
decem lineis ſimilibus lineis horti aromatum quæ germinant
acutiſſimos ſenſus & ſuaves, ſicut hortus germinat aromata
: & labia ſapientum qui laborant in Lege, fluunt ſententiis
ex omni parte ; & eloquium oris eorum ſicut myrrha
electa. Et duodecim tribus Jacob ſervi ejus diſpoſitæ erant 14
per circuitum in lamina coronæ aureæ ſanctæ, ſculptæ in duodecim
margaritis cum tribus patribus mundi, Abraham,
Iſaac & Jaacob. Ruben ſculptus erat in lapide Sardio : Simeon
ſculptus erat in lapide Topazio : Levi ſculptus erat in
Sapphiro : Juda ſculptus erat in Carbunculo : Iſſacar
ſculptus erat in Smaragdo : Zabulon ſculptus erat in Jaſpide:
Dan ſculptus erat in Beryllo : Neptalim ſculptus erat in
Agate ; Gad ſculptus erat in Amethyſto : Aſſer ſculptus erat
in Chryſolitho : Joſeph ſculptus erat in Onychino ; Benjamin
ſculptus erat in Ligurio : qui ſimiles erant duodecim
ſignis cæleſtibus, lucidi ſicut lampas, & politi in operibus
ſuis ſicut dentes elephantis, & ſplendentes ſicut gemmæ.
Juſti autem ipſi ſunt columnæ ſeculi ; & baſes ſuper 15
ſuſtentacula auri optimi, ſunt verba Legis in quibus laborant,
& corripiunt populum domus Iſrael ut faciat voluntatem
ejus : & ipſe impletur ſuper eos miſerationibus
ſicut ſenis, & dealbat peccata domus Iſrael ſicut nivem :
& paratus eſt ut faciat victorias *& bellū* contra populos qui
tranſgrediuntur verbum ejus, ſicut juvenis fortis qui robuſtus
eſt ſicut cedri. Verba gutturis ejus dulcia ſunt ſicut 16
mel, & omnia præcepta ejus deſiderabilia ſapientibus ejus
ſuper aurum & argentum. Hæc eſt laus Dei dilecti mei,
& hæc eſt fortitudo virtutis Domini dilecti mei, ô Prophetæ
& prophetantes in Jeruſalem. Reſponderunt Prophetæ 17
cùm audirent laudes Domini ex ore cœtus Iſrael, & ita dixerunt,
Propter quod peccatum ſublata eſt de medio tui majeſtas
Domini, ô tu quæ pulchra es in operibus tuis ſuper
omnes nationes ? & ad quem locum declinavit dilectus tuus
uando elevatus eſt de ſanctuario tuo ? Dixit cœtus Iſrael :
Propter peccata & rebelliones & proditionem quæ inventæ
ſunt in me. Dixerúntque Prophetæ : Nunc convertere ad
pœnitentiam, & ſurgamus tu & nos, & oremus coram eo,
& quæramus miſericordiam tecum.

CAP. VI.

DOminator autem ſeculi ſuſcepit voluntariè orationem 1
eorum, & deſcendit in Babylonem ad concilium ſapientum,
& dedit populo ſuo requiem ; & eduxit eos de captivitate
ipſorum per manum Cyri & Eſdræ & Nehemiæ & Zorobabel
filii Sealthiel, & ſeniorum Judæorum ; & ædificaverunt
domum ſanctuarii, et conſtituerunt ſacerdotes ſuper
oblationes, et Levitas ſuper cuſtodiam verbi ſanctitatis,
et miſit ignem de cœlis, et ſuſcepit voluntariè oblationem,
et incenſum aromatum : et ſicut vir qui nutrit filium ſuum
dilectum in deliciis, ita delicatè nutrivit eos ; et ſicut vir qui
colligit roſas de convallibus, ita congregavit eos de Babylonia.
Et in illo die ego ſervivi domino ſeculi dilecto meo, 2
et dilectus meus habitare fecit majeſtatem ſanctam in medio
mei, et nutrivit me deliciis. Dixit Dominus in verbo ſuo : 3
Quàm pulchra es tu dilecta mea in tempore quo vis facere
voluntatem meam ! pulchra eſt domus ſanctuarii, quam ædificâſti
mihi ſimilem priori [*domui*] ſanctuarii ; quam
ædificavit mihi Salomon rex Jeruſalem ; et terror tuus fuit
ſuper omnes populos in die quo ambulaverunt quatuor vexilla
tua per deſertum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܘܡܝܬܟܝܢ ܒܢܬܗ ܕܐܘܪܫܠܡ܆ ܐܢ ܬܫܟܚܢ ܠܕܕܝ. ܐܡܪܝܢ ܠܗ. ܕܟܪܝܗܐ ܐܢܐ ܕܚܘܒܐ. 8
* ܡܢܘ ܕܕܝܟܝ ܡܢ ܕܕܐ. ܫܦܝܪܬܐ ܒܢܫܐ. ܡܢܘ ܕܕܝܟܝ ܡܢ ܕܕܐ. ܕܗܟܢܐ ܐܘܡܝܬܝܢ. * ܕܕܝ ܚܘܪ 9 10
ܘܣܘܡܩ. ܘܓܒܐ ܡܢ ܪ̈ܒܘܬܐ. * ܪܫܗ ܐܝܟ ܟܐܦܐ ܕܕܗܒܐ. ܦܘܩܠܬܗ ܬܠܝܢ. ܘܐܘܟܡܢ ܐܝܟ 11
ܥܘܪܒܐ. * ܥܝܢܘܗܝ ܐܝܟ ܕܝܘܢܐ ܥܠ ܡܒܘܥܐ ܕܡܝܐ. ܕܫܝܓܢ ܒܚܠܒܐ. ܘܝܬܒܢ ܥܠ ܡܫܡܠܝܘܬܐ. 12

Adjuro vos filiæ Jeruſalem, ſi repereritis pa- 8
truū meū, narrate ei eſſe me amore languidā.
Quis eſt patru' tu' è patruis, pulcherrima in- 9
ter mulieres ? quis eſt patruus tu' è patruis,
quòd ita nos adjurâſti ? Patru' me' candidus 10
eſt ac rubicund', & elect' è myriadib'. Caput 11
ej' ſimile eſt lapidi aureo, cincinni ej' demiſ-
ſi, nigri ut corvi. Oculi ej' ſunt quales colū- 12
barū ſuper rivis aquæ, lacte lotarum, & ſu-
per convenientiâ ſitarum.

Versio VULG. LAT.

8 Adjuro vos, filiæ Jeruſalē, ſi inveneritis dilectū meū, ut nuntietis ei quia
9 amore langueo. Qualis eſt dilect⁹ tu⁹ ex dilecto, ô pulcherrima mulierū? qualis eſt dilect⁹ tu⁹ ex dilecto, quia
10 ſic adjurâſti nos? Dilect⁹ me⁹ candidus & rubicund⁹, elect⁹ ex millibus.
11 Caput ej⁹ aurū optimū: Comæ ej⁹ ſicut elatæ palmarū, nigræ quaſi cor-
12 vus. Oculi ej⁹ ſicut columbæ ſup rivulos aquarū, quæ lacte ſunt lotæ, &
13 reſident juxta fluenta pleniſſima. Genæ illi⁹ ſicut areolæ aromatū conſitæ à pigmentariis. Labia ej⁹ lilia diſtil-
14 lantia myrrhā primā. Man⁹ illi⁹ tornatiles aureæ, plenæ hyacinthis. Venter ejus eburneus, diſtinctus ſap-
15 phiris. Crura illius columnæ marmoreæ, quæ fundatæ ſunt ſuper baſes aureas. Species ej⁹ ut Libani, electus
16 ut cedri. Guttur illius ſuaviſſimum, & totus deſiderabilis: talis eſt dilectus meus, & ipſe eſt amicus meus,
17 filiæ Jeruſalem. Quò abiit dilectus tuus, ô pulcherrima mulierum? quò declinavit dilectus tuus? & quæremus eum tecum.

CAP. VI.

1 DIlectus meus deſcendit in hortū ſuum ad areolam aromatum, ut pa-
2 ſcatur in hortis, & lilia colligat. Ego dilecto meo, & dilectus meus mihi,
3 qui paſcitur inter lilia. Pulchra es amica mea, ſuavis, & decora ſicut Jeruſalem: terribilis ut caſtrorum acies ordinata.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

8 †Ὥρκισα ὑμᾶς θυγατέρες Ἱερουσαλὴμ †ἐν ταῖς δυνάμεσι καὶ ἐν ταῖς ἰσχύσεσι τοῦ ἀγροῦ· †ἐὰν εὕρητε τὸν ἀδελφιδόν μου, τί ἀπαγγείλητε αὐτῷ; †ὅτι τετρωμέ-
9 νη ἀγάπης (η) ἐγώ εἰμι. †Τί ἀδελφιδός σου ἀπὸ ἀδελφιδοῦ, ἡ καλὴ ἐν γυναιξί; †τί ἀδελφιδός σου ἀ-
10 πὸ ἀδελφιδοῦ, ὅτι οὕτως ὥρκισας ἡμᾶς; †Ἀδελφιδός μου λευκὸς καὶ πυῤῥός, †ἐκλελοχισμένος ἀπὸ
11 μυριάδων. †Κεφαλὴ αὐτοῦ χρυσίον (θ) κεφάζ, †βόστρυ-
12 χοι αὐτοῦ ἐλάται, μέλανες ὡς κόραξ. †Ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ ὡς περιστεραὶ ἐπὶ πληρώματα ὑδάτων, †(ι) λελουσμέναι ἐν γάλακτι, †καθήμεναι (κ) ἐπὶ πληρώ-
13 ματα. †Σιαγόνες αὐτοῦ ὡς (λ) φιάλαι τοῦ ἀρώματος φύουσαι μυρεψικά· †χείλη αὐτοῦ κρίνα στάζοντα
14 σμύρναν πλήρη. †Χεῖρες αὐτοῦ τορευταὶ χρυσαῖ πεπληρωμέναι Θαρσίς· †κοιλία αὐτοῦ πυξίον ἐλεφάν-
15 τινον ἐπὶ λίθου σαπφείρου. †Κνῆμαι αὐτοῦ στῦλοι μαρμάρινοι †τεθεμελιωμένοι ἐπὶ βάσεις χρυσᾶς· †εἶ-
16 δος αὐτοῦ ὡς Λίβανος, ἐκλεκτὸς ὡς κέδροι. †Φάρυγξ αὐτοῦ γλυκασμοὶ καὶ ὅλος ἐπιθυμία. †Οὗτος ἀδελφιδός μου καὶ οὗτος πλησίον μου, †θυγατέρες Ἱερου-
17 σαλήμ. †Ποῦ ἀπῆλθεν ὁ ἀδελφιδός σου ἡ καλὴ ἐν γυναιξί; †ποῦ ἀπέβλεψεν ὁ ἀδελφιδός σου; καὶ ζητήσομεν αὐτὸν μετὰ σοῦ.

MS. A. (η) εἰμὶ ἐγώ. (θ) καιφάζ, (ι) λελουμέναι (κ) ἐπὶ πληρώματα ὑδάτων. (λ)* φιάλες

ΚΕΦ. ϛʹ.

1 †ἈΔελφιδός μου κατέβη εἰς (α) κῆπον αὐτοῦ †εἰς φιάλας τοῦ ἀρώματος, †ποιμαίνειν ἐν κήποις, καὶ συλ-
2 λέγειν κρίνα. †Ἐγὼ τῷ ἀδελφιδῷ μου, καὶ (β) ἀδελφι-
3 δός μου ἐμοί, †ὁ ποιμαίνων ἐν τοῖς κρίνοις. †Καλὴ εἶ ἡ πλησίον μου, ὡς εὐδοκία, †ὡραία ὡς Ἱερουσαλήμ, θάμβος ὡς τεταγμέναι.

MS. A. (α) κῆπόν μου (β) ὁ ἀδελφιδός

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſ. LAT.

Adjuravi vos, filiæ Hieruſalem, in 8
virtutib⁹, & virib⁹ agri: ſi inveneritis [i] fraternū meū; quid annuntiabitis ei? Quoniā vulnerata charitatis ego ſum. Quid [k] fraternus 9
tuus à fraterno, pulchra in mulieribus? Quid [l] fratern⁹ tuus à fraterno; quia ſic adjurâſti nos? Fra- 10
tern⁹ me⁹ (l) candid⁹, & rubicund⁹, (m) [n] electus è decē millib⁹. Ca- 11
put ej⁹ aurū (n) Cephaz: cincinni ej⁹ [n] elatæ, nigri tanquàm corv⁹: O- 12
culi ejus, ſicut columbæ [o] ſuper (o) plenitudines aquarū, lotæ in lacte, ſedentes [p] ſuper plenitudines: Ma- 13
xillæ ej⁹, ſicut (p) [q] phialæ aromatis germinantes unguentaria: labia ejus lilia ſtillantia myrrhā (q) plenā: Manus ejus tornatæ [r] aureæ 14
impletæ (r) Tharſis: venter ej⁹ [ſ] pixis eburnea ſuper lapidē ſapphirū:
Crura ejus columnæ (ſ) marmoreæ 15
fundatæ ſuper baſes aureas: [t] ſpecies ej⁹, ut Liban⁹, electus ſicut cedri: Guttur ejus dulcedines: & to- 16
tus deſideriū. Hic [v] fraternus meus, & hic proximus m⁹, filiæ Hieruſalē. Quò (t) abiit [x] fraternus 17
tuus, pulchra in mulieribus? quò reſpexit fraternus tuus? & quæremus eum tecum.

CAP. VI.

FRatern⁹ me⁹ deſcendit in hortū 1
ſuū ad (a) phialas aromatis, (b) paſcere in hortis, et colligere lilia. [a]
Ego fraterno meo, & fratern⁹ meus mihi, (c) qui paſcit in liliis. Pulchra es, proxima 2 3
mea, (d) ſicut beneplacitū, decora ſicut Hieruſalē, (e) [b] pavor, ut ordinatæ.

INTERP. ÆTHIOP. [i] nepotē meū; [k] nepos tu⁹ præ nepote, [l] nepos tu⁹ præ nepote; [m] natus ex millib⁹. [n] penduli, nigri [o] juxta piſcinas aquarū plenarū, [p] juxta piſcinas aquarum plenarum: [q] areola aromatis producens aromatica: [r] auro Tharſis decoratæ: [ſ] turgidus, ſicut ebur ſuper [t] caput ejus, ut [v] nepos meus, & hic dilectus meus, [x] nepos tuus, ut quæramus eum tecum?
CANT. VI. [a] Sicut tu es, ſic ego: amica mea ſicut beneplacitum, [b] terrifica, ſicut procurrens acies.

Verſio ÆTHIOPICA.

8 እምሐልኩክን ፡ አዋልደ ፡ ኢየሩሳሌም ፡፡ በኀ 8
ይሉ ፡ ወበጽንዖ ፡ ለገደም ፡፡ እመ ፡ ረከብክሙ ፡
ለወልድ ፡ እኁየ ፡ ከመ ፡ ታይድዕዎ ፡፡ ከመ ፡ ንድፋ
9 ት ፡ አነ ፡ በፍቅሩ ፡፡=፡ ምንት ፡ ወልድ ፡ እኁኪ ፡ እ 9
ምውሉደ ፡ አኃው ፡ ሠናይት ፡ እምአንስት ፡፡=፡
ዐ ፡ ወምንት ፡ ወልድ ፡ እኁክ ፡ እምውሉደ ፡ እ
10 ኃው ፡ ዘከመዝ ፡ አምሐልክነ ፡፡=፡ እኁየ ፡ ጸ 10
11 ዐዳ ፡ ወቀይሕ ፡፡ ውሉድ ፡ እምእእላፍ ፡፡=፡ ወ 11
ርእሱ ፡ ወርቀ ፡ ቄፋዝ ፡፡ ድምድማሁ ፡ ድሉል ፡
12 ወጸሊም ፡ ከመ ፡ ቋዕ ፡፡=፡ አዕይንቲሁ ፡ ከመ ፡ 12
ርግብ ፡ ውስተ ፡ ምእቃለ ፡ ማይ ፡ ምሉእ ፡፡ ኅፀ
ባት ፡ በሐሊብ ፡ እለ ፡ ይነብሩ ፡ ውስተ ፡ ምዕቃለ ፡
13 ማያት ፡ ምሉእ ፡፡=፡ መላትሒሁ ፡ ከመ ፡ ረ 13
ኄ ፡ አፈው ፡ እለ ፡ ይፈርያ ፡ አፈዋተ ፡፡ ከናፍሪሁ ፡
ጽጌ ፡ እለ ፡ ይውሕዛ ፡ ከርቤ ፡ ፍጹመ ፡፡=፡ እደ 14
14 ዊሁ ፡ ፍሑቃት ፡ እለ ፡ በወርቅ ፡ ስርግዋት ፡ ተር
ሴስ ፡፡ ከርሡ ፡ ሰሌደ ፡ ከመ ፡ ቀርን ፡ ነጊ ፡ ዲበ ፡ እ
15 ብነ ፡ ሰንፔር ፡፡=፡ ቍያጺሁ ፡ አዕማደ ፡ በሌቅ ፡ 15
ሡረራት ፡ ዲበ ፡ መንበረ ፡ ወርቅ ፡፡ ርእሱ ፡ ከመ ፡
ስኒን ፡ ወኅሩይ ፡ ከመ ፡ ቄድሮስ ፡፡=፡ ጕርዔ 16
16 ሁ ፡ መዐርዒር ፡ ወኵሉ ፡ ፍትወት ፡፡ ወልድ ፡ እኁ
የ ፡ ውእቱ ፡ ፋቁርየ ፡፡=፡ አይቴ ፡ ኃለፈ ፡ ወል 17
17 ድ ፡ እኁኪ ፡ ወንኃሥሥ ፡ ምስሌኪ ፡፡=፡

CAP. VI. ወልድ ፡ እኁየ ፡ ወረደ ፡ ውስተ ፡ ገነ 1
ት ፡፡ ወውስተ ፡ አብያተ ፡ አፈው ፡፡ ይርአይ ፡ ዘው
ስተ ፡ ገነት ፡ ወያስተጋብእ ፡ ጽጌያተ ፡፡=፡ ከማ 2
ሁ ፡ አንቲ ፡ እንተ ፡ ኀቤየ ፡ ከመ ፡ ሥምረት ፡፡=፡
አይም ፡ ከመ ፡ ኢየሩሳሌም ፡፡ መደንግፅት ፡ ከመ ፡ 3
ምጽአት ፡፡=፡

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

8 * يا بنات اورسليم استحلفكن باقتدارات الحقل وقواته * اذا وجدتم ابن اخي فاخبروه اني
9 انا المحبة مجرحة * ايتها الجميلة في النساء ما ابن اخيك من ابناء الاخ * ايتها الحسناء في
10 النساء ما هو ابن اخيك من ابناء الاخ لانك استحلفتينا هكذا * ابن اخي ابيض واسمر * منتخب
11 12 من بين ربوات * راسه ذهب كافار * طقايق سبطة سود كسواد الغراب * عيناه كحمامتين
13 على احواض موعبة ماء * مستحمان في اللبن * جالستين على احواض موعبة ماء * خداه كبرك
14 الطيب المونعة طيوب العطر * شفتاه سوسنتان تقطران ندى * مملوتان مرا * يداه
15 مخروطتان * مملوتان ذهب ترسيس * جوفه لوح عاج في جوهر الكاربا والمرجان * ساقاه عمودا
16 رخام موسسان على قاعدة ذهب * نوعه كلبنان * منتخب كالارز * لهاته حلاوة * وكله شهوة * هذا
17 ابن اخي وهذا قريبي يا بنات اورسليم * ايتها الجميلة في النساء اين ذهب ابن اخيك * الى
اين ابصر ابن اخيك فنطلبه معك *

* الفصل السادس *

1 * ابن اخي انحدر الى بستانه الى احواض الطيب *
2 ليرعى في البساتين ويجمع السوسن * انا لابن اخي وابن اخي لي * الذي يرعى في السوسن *
3 * قريبتي جميلة كمسرة المشية بهية كاورسليم * مخوفة كالصفوف المرتبة *

O filiæ Jeruſalem obteſtor vos per potentias agri ejúſque virtutes, quum offenderitis nepotem meum, ſignificate illi quòd 8
ego dilecta ſaucia ſum. O pulcherrima inter mulieres, qualis eſt nepos tuus inter 9
nepotes? O formoſiſſima inter mulieres, qualis eſt nepos tuus inter nepotes, quòd ita nos obteſtaris? Nepos meus candidus 10
eſt ac rufus, electus è myriadibus. Caput 11
ejus aurum purgatiſſimum: cincinni ejus penduli, nigri inſtar nigredinis corvinæ.
Oculi ejus, veluti duæ columbæ ſuper pi- 12
ſcinas aquâ plenas, lacte ſeſe lavantes, inſidentes piſcinis aquâ refertis: Ejus 13
genæ quaſi lacus aromatis producentes fragrantias aromaticas. Labia ejus, duo lilia ſtillantia rorem, plena myrrhâ.
Manus ejus tornatiles, plenæ auro Tarſis. Venter ejus lamina eburnea cum 14
gemmis ſuccini & corallii. Ejus crura 15
duæ columnæ marmoreæ fundatæ ſuper baſim auream. Species ejus ut Libanus, electus ut cedri. Palatum ejus dulciſ- 16
ſimum eſt, totus denique optabiliſſimus. Is eſt nepos meus, atque is eſt propinquus meus, O filiæ Jeruſalem. O pul- 17
cherrima inter mulieres, quò abiit nepos tuus? quò reſpexit nepos tuus, ut tecum perquiramus eum?

CAP. VI.

NEpos meus deſcendit in hortum 1
ſuum ad piſcinas aromatis, ad paſcendum in hortis, & legendum lilia. Ego 2
nepotis mei ſum, & nepos meus mihi, qui paſcitur inter lilia. Propinqua mea 3
formoſa eſt, ſimilis delectationi voluntatis, decora ut Jeruſalem, formidabilis ut acies inſtructa.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

13 * ܦܟܘܗܝ ܐܝܟ ܡܫܪܒܬܐ ܕܒܣܡܐ. ܣܦܘܬܗ ܐܝܟ ܫܘܫܢܐ ܕܢܛܦܢ ܡܘܪܐ ܘܢܪܕܝܢ.
14 * ܐܝܕܘܗܝ ܐܝܟ ܓܘܓܠܐ ܕܕܗܒܐ. ܕܡܠܝܢ ܟܐܦܐ ܕܕܗܒܐ. ܟܪܣܗ ܥܒܕܐ ܕܫܢܐ ܥܠ ܟܘܪܣܝܐ ܕܣܦܝܠܐ.
15 * ܫܩܘܗܝ ܥܡܘܕܐ ܕܫܝܫܐ. ܕܡܫܬܐܣܝܢ ܥܠ ܣܡܟܐ ܕܕܗܒܐ. ܚܕܝܗ ܐܝܟ
16 ܠܒܢܢ. ܓܒܝܐ ܐܝܟ ܐܪܙܐ. * ܚܟܗ ܐܝܟ ܟܘܪܬܐ ܕܚܠܝܐ. ܘܢܚܬܘܗܝ ܪܓܝܓܝܢ. ܗܢܘ
17 ܕܕܝ ܘܗܢܘ ܚܒܪܝ. ܒܢܬܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. * ܠܐܝܟܐ ܐܙܠ ܕܕܟܝ ܫܦܝܪܬܐ ܒܢܫܐ. ܠܐܝܟܐ ܦܢܐ
ܕܕܟܝ. ܘܢܒܥܝܘܗܝ ܥܡܟܝ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܘ *

1 * ܕܕܝ ܢܚܬ ܠܓܢܬܗ. ܠܡܫܪܒܬܐ ܕܒܣܡܐ. ܕܢܪܥܐ ܒܓܢܐ. ܘܢܠܩܘܛ ܫܘܫܢܐ.
2 3 * ܐܢܐ ܠܕܕܝ. ܘܕܕܝ ܠܝ. ܕܪܥܐ ܒܝܬ ܫܘܫܢܐ. * ܫܦܝܪܐ ܐܢܬܝ ܪܚܡܬܝ ܐܝܟ ܨܒܝܢܐ. ܝܐܝܐ ܐܝܟ
ܐܘܪܫܠܡ. ܕܚܝܠܐ ܐܝܟ ܓܒܝܬܐ.

* Maxillæ ejus ut areolæ aromatum. Labia ejus 13
ut lilia myrrham ac nardum ſtillantia. Manus 14
ejus velut orbis aureus refertus lapillis aureis. Venter ejus opificium eburneum ſuper ſedem ſapphirinam. Crura ejus columnæ 15
marmoreæ firmatæ ſuper baſes aureas. Pectus ejus ut Libani: denique lectiſſimus ut cedri.
Palatum ejus ut favi dulciſſimi: & veſtes ejus 16
optabiles. Talis eſt patruus meus, & talis ſocius meus, filiæ Jeruſalem. Quonam abiit pa- 17
truus tuus, pulcherrima inter mulieres? quò ſe vertit patruus tuus, ut quæramus eum tecum.

CAP. VI.

PAtruus meus deſcendit ad hortum ſuum & 1
ad pulvillos aromatum, ut paſcat in hortis, colligátque lilia. Ego patruo meo, & pa- 2
truus meus mihi, qui paſcit in liliis. Pulchra 3
es propinqua mea, ut voluntas, formoſa ut Jeruſalem, terribilis ut electa.

שיר השירים: ז

ipsi quia, *mei regione* è tuos oculos Averte
4 הָסֵבִּי עֵינַיִךְ מִנֶּגְדִּי שֶׁהֵם
grex ſicut tuus pilus : me *efferū reddiderunt*
הִרְהִיבֻנִי שַׂעְרֵךְ כְּעֵדֶר
.Ghilghad de *ſe depilarunt* quæ, caprarū
הָעִזִּים שֶׁגָּלְשׁוּ מִן־הַגִּלְעָד׃
aſcēderūt quæ, oviū grex ſicut tui Dētes
5 שִׁנַּיִךְ כְּעֵדֶר הָרְחֵלִים שֶׁעָלוּ
gemimantes ipſæ omnes quæ : lavacro de
מִן־הָרַחְצָה שֶׁכֻּלָּם מַתְאִימוֹת
fragmen Sicut .*eis in* non *orba* &
6 וְשַׁכֻּלָה אֵין בָּהֶם׃ כְּפֶלַח
.*tuam comam* intra *tuum temp*° punici mali
הָרִמּוֹן רַקָּתֵךְ מִבַּעַד לְצַמָּתֵךְ׃
octoginta & , reginæ *ipſæ* Sexaginta
7 שִׁשִּׁים הֵמָּה מְלָכוֹת וּשְׁמֹנִים
.numerus non adoleſcentularū & *:pellices*
פִּילַגְשִׁים וַעֲלָמוֹת אֵין מִסְפָּר׃
una, mea *perfecta*, mea columba *ipſa* Una
8 אַחַת הִיא יוֹנָתִי תַמָּתִי אַחַת
:ſuæ genitrici *ipſa munda*, ſuæ matri *ipſa*
הִיא לְאִמָּהּ בָּרָה הִיא לְיוֹלַדְתָּהּ
eam dixerunt beatā &, filiæ eam viderunt
רָאוּהָ בָנוֹת וַיְאַשְּׁרוּהָ
.eā laudaverunt & , *pellices* & , reginæ
מְלָכוֹת וּפִילַגְשִׁים וַיְהַלְלוּהָ׃
velut *reſpicitur* iſta Quæ
9 מִי־זֹאת הַנִּשְׁקָפָה כְּמוֹ־
pura , luna ut pulchra ; aurora
שָׁחַר יָפָה כַלְּבָנָה בָּרָה
? *vexillatæ* ut terribilis , ſol ut
כַּחַמָּה אֲיֻמָּה כַּנִּדְגָּלוֹת׃
deſcendi nucis hortum Ad
10 אֶל־גִּנַּת אֱגוֹז יָרַדְתִּי
; convallis *fructus in* videndum ad
לִרְאוֹת בְּאִבֵּי הַנָּחַל
, vitis *gemmuiſſet* an videndum ad
לִרְאוֹת הֲפָרְחָה הַגֶּפֶן
, novi Non .punica mala floruiſſent
11 הֵנֵצוּ הָרִמֹּנִים׃ לֹא יָדַעְתִּי
quadrigæ , me poſuit mea anima
נַפְשִׁי שָׂמַתְנִי מַרְכְּבוֹת
, Revertere .*munifici* mei populi
12 עַמִּי נָדִיב׃ שׁוּבִי
, revertere ; Sulamith revertere
שׁוּבִי הַשּׁוּלַמִּית שׁוּבִי
quid : te *in* intuebimur &, revertere
שׁוּבִי וְנֶחֱזֶה־בָּךְ מַה־
chorum *Sicut* ? Sulamith in videbitis
תֶּחֱזוּ בַּשּׁוּלַמִּית כִּמְחֹלַת
.caſtrorum
הַמַּחֲנָיִם׃

CAP. VII. ז

tui pedes ſunt pulchri Quàm
1 מַה־יָּפוּ פְעָמַיִךְ
! *magnifici* filia calceamentis in
בַּנְּעָלִים בַּת־נָדִיב
ſicut tuorum femorum vertebræ
חַמּוּקֵי יְרֵכַיִךְ כְּמוֹ
.artificis manuum opus , monilia
חֲלָאִים מַעֲשֵׂה יְדֵי אָמָּן׃
non , rotundus crater tuus Umbilicus
2 שָׁרְרֵךְ אַגַּן הַסַּהַר אַל־
tuus venter : temperamento indigebit
יֶחְסַר הַמָּזֶג בִּטְנֵךְ
ſeptus triticorum acervus
עֲרֵמַת חִטִּים סוּגָה
tua ubera Duo .liliis *in*
3 בַּשּׁוֹשַׁנִּים׃ שְׁנֵי שָׁדַיִךְ
gemelli hinnuli duo ſicut
כִּשְׁנֵי עֳפָרִים תָּאֳמֵי
.capreæ
צְבִיָּה׃

תרגום TARGUM.

4 הסבי אסחרי רבניך חכימי כנשתא רבתא חזור חזור לקבלי
די אנון אמלכוני בגלותא וקבעי מדרשא לאולפן אורייתי ושאר
ועטוטיך ועמא דארעא אצדיקו יתי במימר פומהון כבנוי דיעקב
5 דלקטו אבניא ועבדו גלישושיתא בטורא דגלעד: שניך וכהניא
וליואי אכלי קורבניך ומעשר קודשא ואפרשותא דכין מכל
אניסות וגזילות דהוו היכמה דכין עדרי דענא דיעקב בזמן
דסלקן מן נחל יובקא דלא הות בהון אניסא וגזלה וכולהון
דמין דא לדא וילדן תיומין בכל עדן ומתכלא ועקרא לא הות
6 בהון: כפלח ומלכות בית חשמונאי כולהון מלין פקודיא
כרמונא בר מן מתתיה כהנא רבא ובנוהי דאנון צדיקין
7 מכולהון ומקימין פקודיא ופתגמי אורייתא בצהותא: ששים
באדין קמו יונאי וכנשו שתין מלכין מבנוי דעשו מלובשי
שריונין רכבין על סוסון ופרשין ותמנין דוכסין מבנוי דישמעאל
רכבין על פיליא בר מן שאר עממיא ולישניא דלית בהון מנין
ומניאו אלכסנדרוס מלכא עליהון לרישא ואתו לאגחא קרבא
8 לירושלם: אחת ובעדנא ההיא הות כנשתא דישראל דמתילא
ליונתא שלמתא פלחא בלב חד למרהא ואחידא לאורייתא
ועסקא בפתגמי אורייתא בלב שלים ובריין זכוותהא כיומא
דנפקת ממצרים הא בכן נפקו בני חשמונאי ומתתיה וכל עמא
דישראל ואגיחו בהון קרבא ומסר יי יתהון בידהון וכד חזו
יתבי פלכיא אשרו יתהון ומלכות ארעא ושלטוניא וקלסו
9 להון: מי אמרו אומיא כמה זיותנין עובדי עמא הדא בקרצתא
שפירין עולימהא כסיהרא ובריין זכוותהא כשמשא ואימתהא
על כל יתבי ארעא בזמן דהליכו ארבעת טקסהא במדברא:
10 אל אמר מרי עלמא לבית מקדש תנין דאתבני על ידוהי
דכורש אשריתי שכנתי למחמי עובדין טבין דעמי ולמחמי
אלולי פשן וסגן חכימיא דמתילין לגופנא ולבלוביהון מלין
11 עובדין טבין הכרמונין: לא וכדו אתגלי קדם יי די אנון
צדיקין ועסקין באורייתא אמר יי במימריה לא אוסיף למככנון
ואף לא אעבד עמהון גמירא אלהין אמליך בנפשי לאוטבותהון
ולשואה יתהון גיותנין ברתיכי מלכין בגין זכותא דצדיקי
12 דרא דדמין בעובדיהון לאברהם אבוהון: שובי תובי לותי
כנשתא דישראל תובי לירושלם תובי לבית אולפן אורייתא
תובי לקבלא נבואה מן נביאיא די מתנבאין בשום מימרא דיי
ומה טיבכון נביאי שקרא למטעי עמא דירושלם בנבואתכון די
אתון ממללין סטיא על מימרא דיי ולאחלא משרית ישראל
ויהודה:

ז

1 מה אמר שלמה ברוח נבואה מן קדם יי כמה שפירן רגליהון
דישראל כד סלקן לאתחזאה קדם יי תלת זמנין בשתא
בסנדלין דססגונא ומקרבין ית נדריהון וית נדבתהון ובניהון
נפקי ירכיהון יאנן כיוהרין דקביען על כלילא דקודשא דעבד
2 בצלאל אומנא לאהרן כהנא: שררך וריש מתיבתך די
בזכותיה מתפרנסין כל עלמא היכמה דעוברא מתפרנס מן
פרתיה במעינא דאמיה בהיק באורייתא כאונא דסיהרא
במיתיה לדכאה ולסאבא לזכאה ולחיבא ולא חסרין פתגמי
אורייתא תדירא מפומיה היכמה דלא חסרין מוי דנהרא רבא
די נפק מעדן ושבעין חכימין מסחרין יתיה כאדר סגלגל
ואוצריהון מלין מן מעשר קודשא ונדרא ונדבתא דסינו להון
עזרא כהנא וזרובבל וישוע ונחמיה ומרדכי בלשן אנשי
כנשתא רבתא דמתילין לורדין בגין די יהי להון חילא למעסק
3 באורייתא יממם ולליא: שני תרין פריקיך דעתידין למפרקיך
[משיח בר דוד ומשיח בר אפרים] דמין למשה ואהרן בני
יוכבד דמתילן לתרין אורזילין תיומי טביא:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

4 Fac accumbere magiſtros tuos ſapientes, congregatio magna, in circuitu in conſpectu meo; ipſi enim conſulebant me in captivitate, & conſtituebant gymnaſium doctrinæ legis meæ. Reliqui autem magnates tui & populus terræ juſtificaverunt me in verbo oris ſui, ſicut filii Jaacob, qui collegerunt lapides, & fecerunt acervum in monte Galaad. 5 Sacerdotes autem & Levitæ qui comedunt oblationes tuas & decimas ſanctificatas & primitias, mundi ſunt ab omni violentia & rapina, quemadmodum mundi erant greges ovium Jaacob in tempore quo aſcendebant de torrente Jaboc, in quibus non erat violentia nec rapina; & omnes ſimiles erant ad invicem, & pariebant gemellos fœtus in omni tempore: & orbata & ſterilis non erat in eis. 6 Regnum autem domus Haſmenæorum omne plenum eſt præceptis ſicut malogranatum, præter Mathatiam ſacerdotem magnum & filios ejus qui erant juſtiores illis omnibus, & confirmabant præcepta & verba legis in puritate. 7 Tunc ſurrexerunt Græci & congregaverunt ſexaginta reges de filiis Eſau, indutos loricis, aſcendentes ſuper equos, & equites & octoginta duces de filiis Iſmael, aſcendentes ſuper elephantos, præter reliquos populos & linguas quorum non erat numerus; & conſtituerunt Alexandrum regem ſuper eos in principem, & venerunt ut pugarent contra Jeruſalem. 8 Et in illo tempore erat cœtus Iſrael ſimilis columbæ perfectæ, & ſerviebat unanimis domino ſuo, & apprehendebat legem, & laborabat in verbis legis in corde perfecto, & puræ erant juſtitiæ ejus ſicut in die quo egreſſa eſt de Ægypto. Tunc egreſſi ſunt filii Haſmonæorum & Mathatias & omnis populus Iſrael, & pugnaverunt contra eos, & tradidit eos Dominus in manus eorum: & cùm hoc vidiſſent habitatores provinciarum, beatos eos dixerunt, & regna terræ & potentes, & laudaverunt eos. 9 Dixerunt nationes: Quàm ſplendida ſunt opera populi hujus mane! Pulchri ſunt juvenes ejus ſicut luna, & pura ſunt merita ejus ſicut ſol: & terror ejus erat ſuper omnes habitatores terræ, quando ambulabant *quatuor* vexilla ejus per deſertum. 10 Dixit dominator ſeculi: In domo ſanctuarii ſecunda quæ ædificata eſt per manum Cyri, habitare feci majeſtatem meam ut viderem opera bona populi mei; & ut viderem ſi creſcant & multiplicentur ſapientes qui comparantur viti, & ſi germina eorum plena ſint operibus bonis ſicut mala punica. 11 Cùm autem revelatum fuit coram Domino quòd eſſent juſti, & quòd laborarent in lege, dixit Dominus in verbo ſuo: Non addam ultrà humiliare eos, neque faciam cum eis conſumptionem, ſed conſilium inibo in anima mea ut benefaciam eis, et ut ponam eos excelſos in curribus regum propter merita juſtorum generationis illius: qui ſimiles ſunt in operibus ſuis Abrahæ patri ſuo. 12 Revertere ad me cœtus Iſrael: revertere ad Jeruſalem; revertere ad domum doctrinæ legis meæ, revertere ad ſuſcipiendam prophetiam à prophetis qui prophetant in nomine verbi Domini. Quid prodeſt vobis ô prophetæ falſi, ut decipiatis populum qui eſt in Jeruſalem in prophetia veſtra; qua vos loquimini averſionem contra verbum Domini, ut prophanetis caſtra Iſrael, & Juda?

CAP. VII.

1 Dixit Salomon in ſpiritu prophetiæ à facie Domini: Quàm pulchri ſunt pedes Iſrael, quando aſcendunt ut appareant coram Domino tribus vicibus in anno, cum calceamentis taxeis, & offerunt vota ſua & oblationes voluntarias ſuas! & filii eorum qui egreſſi ſunt de femore eorum pulchri ſunt ſicut lapides pretioſi, qui fixi ſunt in corona ſancta, quam fecit Beſeleel artifex Aaron ſacerdoti. 2 Et princeps ſcholæ tuæ per cujus meritum gubernantur omnia ſecula, ſicut fœtus enutritur per umbilicum in utero matris ſuæ, ſplendidus eſt in lege ſicut circulus Lunæ; quando venit ad mundandum, & ad contaminandum, & ad juſtificandum, & ad condemnandum: & non deficiunt verba legis unquam ab ore ejus, ſicut non deficiunt aquæ fluminis magni, quando egreditur de paradiſo, & ſeptuaginta ſapientes circundant eum ſicut aream rotundam, & cellaria eorum plena ſunt decimis ſanctificatis & votivis & ſpontaneis, quas conſtituerunt eis Eſdras ſacerdos, & Zorobabel, & Joſue, & Nehemias, & Mardochæus et Belſan, viri eccleſiæ magnæ, qui comparantur roſis, ut ſit eis virtus ut laborent in lege die ac nocte. 3 *Duo* ſalvatores tui qui te redempturi ſunt, *Meſſias filius David & Meſſias filius Ephraim*, ſimiles ſunt Moſi et Aaron filiis Jocabed qui comparantur duobus hinnulis gemellis capreæ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

4 ܕܚܝܠܐ ܐܝܟ ܡܫܪܝܬܐ. * ܐܗܦܟܝ ܥܝܢܝܟܝ ܡܢ ܠܘܩܒܠܝ. ܕܗܢܘܢ ܐܣܠܝܘܢܝ.
5 ܣܥܪܟܝ ܐܝܟ ܓܙܪܐ ܕܥܙܐ. ܕܣܠܩܝܢ ܡܢ ܛܘܪܐ ܕܓܠܥܕ. * ܫܢܝܟܝ ܐܝܟ ܓܙܪܐ ܕܓܙܝܙܬܐ. ܕܣܠܩܝܢ ܡܢ ܡܣܚܝܬܐ. ܕܟܠܗܝܢ
6 ܡܬܐܡܢ. ܘܥܩܪܬܐ ܠܝܬ ܒܗܝܢ. * ܐܝܟ ܩܠܦܐ ܕܪܘܡܢܐ ܨܘܪܟܝ. ܠܒܪ ܡܢ ܫܬܩܟܝ.
7 8 * ܫܬܝܢ ܐܢܝܢ ܡܠܟܬܐ. ܘܬܡܢܝܢ ܦܠܓܫܐ. ܘܥܠܝܡܬܐ ܕܠܝܬ ܠܗܝܢ ܡܢܝܢܐ. * ܚܕܐ ܗܝ
ܝܘܢܬܝ ܫܠܡܬܐ. ܚܕܐ ܗܝ ܠܐܡܗ. ܓܒܝܬܐ ܗܝ ܠܝܠܕܬܗ. ܚܙܝܢܗ ܒܢܬܐ. ܘܛܘܒܢܗ.
9 ܡܠܟܬܐ ܘܦܠܓܫܬܐ. ܘܫܒܚܢܗ. * ܡܢ ܗܝ ܗܕܐ ܕܡܕܝܩܐ ܐܝܟ ܫܦܪܐ. ܫܦܝܪܐ ܐܝܟ ܣܗܪܐ. ܓܒܝܐ
10 ܐܝܟ ܫܡܫܐ. ܕܚܝܠܐ ܐܝܟ ܓܘܕܐ. * ܠܓܢܬܐ ܕܓܘܙܐ ܢܚܬܬ. ܠܡܚܙܐ ܦܐܪܐ ܕܢܚܠܐ. ܠܡܚܙܐ ܐܢ

4 Averte oculos tuos ex adverſo mei, quoniam ipſi abdicârunt me. Coma tua ſicut grex caprarum aſcendens è monte Gelaad. 5 Dentes tui ſicut grex tonſarum aſcendentium è lavacro, quæ omnes habent gemellos, & nulla eſt inter eas orba. 6 Ut fragmen mali punici cervix tua, præter ſilentium tuum. 7 Sexaginta ſunt reginæ, & octoginta concubinæ, puellæ verò innumeræ. 8 Una eſt columba mea perfecta, una eſt matri ſuæ, & electa genitrici ſuæ. Viderunt eam filiæ, & laudârunt eam: reginæ & concubinæ, & celebrârunt eam. 9 Quæ eſt hæc quæ proſpectat ſicut aurora, formoſa ut luna, pura ut ſol, terribilis ut myriades. 10 Ad hortum nucum deſcendi ad ſpectandum poma convallium, ad videndum num

Verſio VULG. LAT.

4 Averte oculos tuos à me, quia ipſi me
avolare fecerunt. Capilli tui ſicut
grex caprarum, quæ apparuerunt de
5 Galaad. Dentes tui ſicut grex ovium,
quæ aſcenderunt de lavacro, omnes
gemellis fœtibus, & ſterilis non eſt
6 in eis. Sicut cortex mali punici, ſic
7 genæ tuæ abſq; occultis tuis. Sexaginta
ſunt reginæ, & octoginta concubinæ,
& adoleſcentularum non eſt
8 numerus. Una eſt columba mea, perfecta
mea, una eſt matris ſuæ, electa
genitrici ſuæ. Viderunt eam filiæ, &
beatiſſimam prædicaverunt; reginæ
et concubinæ, et laudaverunt eam.
9 Quæ eſt iſta, quæ progreditur quaſi
aurora conſurgens, pulchra ut luna,
electa ut Sol, terribilis ut caſtrorum
10 acies ordinata? Deſcendi in hortum
nucum, ut viderem poma convalliũ,
et inſpicerẽ ſi floruiſſet vinea, et germinâſſent
11 mala punica. Neſcivi: anima
mea conturbavit me propter quadrigas
12 Aminadab. Revertere, revertere,
Sulamitis: revertere, revertere, ut
intueamur te.

CAP. VII.

1 Quid videbis in Sulamite, niſi
choros caſtrorum? Quàm pulchri
ſunt greſſus tui in calceamentis, filia
principis! Juncturæ femorum tuorũ,
ſicut monilia quæ fabricata ſunt manu
2 artificis. Umbilicus tuꝰ crater tornatilis,
nunquam indigens poculis.
Venter tuus ſicut acervus tritici, vallatus
3 liliis. Duo ubera tua ſicut duo
hinnuli gemelli capreæ.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

4 † Ἀπόστρεψον ὀφθαλμούς σου ἀπεναντίον (β) μου, † ὅτι
αὐτοὶ ἀνεπτέρωσάν με. † τρίχωμά σου ὡς ἀγέλαι τῶν
5 αἰγῶν, † αἳ ἀνεφάνησαν ἀπὸ τοῦ Γαλαάδ. † Ὀδόντες
σου ὡς ἀγέλαι τῶν κεκαρμένων, αἳ ἀνέβησαν ἀπὸ τοῦ
λουτροῦ, † αἱ πᾶσαι διδυμεύουσαι, † καὶ ἀτεκνοῦσα οὐκ
ἔστιν (γ) ἐν αὐταῖς· † ὡς σπαρτίον τὸ κόκκινον χείλη
6 σου, † καὶ ἡ λαλιά σου ὡραία. † Ὡς λέπυρον τῆς
7 ῥοᾶς μῆλόν σου † ἐκτὸς τῆς σιωπήσεώς σου. † Ἑξήκοντά
εἰσι βασίλισσαι † καὶ ὀγδοήκοντα παλλακαί, † καὶ
8 νεάνιδες ὧν οὐκ ἔστιν ἀριθμός. † Μία ἐστὶ περιστερά μου,
τελεία μου, † μία ἐστὶ τῇ μητρὶ αὐτῆς, † ἐκλεκτή ἐστι
τῇ τεκούσῃ (δ) αὐτήν. † εἴδοσαν αὐτὴν θυγατέρες καὶ
μακαριοῦσιν αὐτήν † βασίλισσαι, (ε) καί γε παλλακαί,
9 καὶ αἰνέσουσιν αὐτήν. † Τίς αὕτη ἡ (ζ) ἐκκύπτουσα
ὡσεὶ ὄρθρος, † καλὴ ὡς σελήνη, ἐκλεκτὴ
10 ὡς ὁ ἥλιος, † θάμβος ὡς τεταγμέναι; † Εἰς
κῆπον καρύας κατέβην † ἰδεῖν (η) ἐν γεννήμασι
τοῦ χειμάρρου, † ἰδεῖν εἰ ἤνθησεν ἡ ἄμπελος, † (θ)
11 ἐξήνθησαν αἱ ῥοαί. † Ἐκεῖ δώσω τοὺς μαστούς μου σοί.
† οὐκ ἔγνω ἡ ψυχή μου. † ἔθετό με ἅρματα Ἀμιναδάβ.
12 † Ἐπίστρεφε, ἐπίστρεφε ἡ (ι) Σουναμῖτις· † ἐπίστρεφε,
ἐπίστρεφε, καὶ ὀψόμεθα ἐν σοί.

MS.A. (β) ἐμοῦ, (γ) ἐν αὐτοῖς· ὡς σπαρτίον κόκκινον (δ) αὐτῆς. (ε) καὶ παλλακαί, (ζ) ἐγκύπτουσα (η) ἐν γεννήματι (θ) εἰ ἤνθησαν (ι) Σουλαμῖτις·

ΚΕΦ. ζʹ.

1 † Τί ὄψεσθε ἐν τῇ (α) Σουναμίτιδι † ἡ ἐρχομένη
ὡς χοροὶ τῶν παρεμβολῶν; † (β) ὡραιώθησαν διαβήματά
σου ἐν ὑποδήμασί (γ) σου † θύγατερ Ναδάβ·
† ῥυθμοὶ (δ) μηρῶν ὅμοιοι ὁρμίσκοις, † (ε) ἔργον
2 τεχνίτου. † Ὀμφαλός σου κρατὴρ τορευτός, † μὴ ὑστερούμενος
(ζ) κρᾶμα· † κοιλία σου (η) θημωνία σίτου
3 πεφραγμένη ἐν κρίνοις. † Δύο μαστοί σου, ὡς
δύο νεβροὶ δίδυμοι δορκάδος.

MS.A. (α) Σουλαμίτιδι (β) τί ὡραιώθησαν (γ) θύγατερ Ἀμιναδάβ. (δ) μηρῶν σου (ε) ἔργῳ χειρῶν τεχνίτου. (ζ) κράματος· (η) θημωνία

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ. Tranſ. LAT.

Averte oculos tuos è (f) regione 4
mei: quia ipſi avolare fecerunt me.
Capillamentum tuum, ſicut greges
caprarum, quæ (g) apparuerunt [c]
è Galaad. Dentes tui, ſicut greges 5
(h) tonſarum, quæ aſcenderunt de
lavacro, omnes geminantes, & infœcunda
non eſt in eis. Sicut (i) funiculus
coccineus, labia tua, & (k)
eloquium tuum decorum. Sicut cortex 6
mali punici, gena tua (l) extra
taciturnitatem tuam. Sexaginta ſunt 7
reginæ, & octuaginta concubinæ,
& adoleſcentulæ, quarum non eſt
numerus. Una eſt columba mea, perfecta 8
mea, una eſt matri ſuæ, electa
eſt ei, quæ peperit ipſam. Viderunt
eam filiæ, & (m) beatificabunt
eam reginæ, & concubinæ, & laudabunt
eam. Quæ eſt iſta, [d] *quæ* 9
(n) progreditur, ſicut aurora, pulchra
ut Luna, electa ut Sol, (o)
pavor, ut ordinatæ? In hortum 10
nucis [e] *deſcendi (p) videre in geminina*
torrentis, videre ſi floruit
vitis, [f] *effloruerunt mala punica.*
Ibi dabo ubera mea tibi. (q) Non 11
novit anima mea. (r) Poſuit me
currus Aminadab: Convertere, convertere, 12
(ſ) Sunamitis: convertere,
convertere, & (t) videbimus in te.

CAP. VII.

Quid (a) videbitis in [a] *Sunamitide, quæ venit, (b) ſicut chori* 1
caſtrorum? Specioſi facti ſunt greſſus
tui in calceamentis tuis, filia (c)
Nadab: [b] *moduli femorum ſimiles*
torquibus, (d) opus artificis.
umbilicus tuus crater tornatilis, 2
non deficiens miſto: venter tuus (e)
acervus frumenti vallatus in liliis: Duo ubera tua, ſicut duo hinnuli gemelli capreæ: 3

Verſio ÆTHIOPICA.

ሚጢ፡ አዕይንትኪ፡ እምአንጻርየ፡፡ እስመ፡ እማንቱ፡ 4
አስረረኒ፡፡ ሠዕርትኪ፡ ከመ፡ መርዔተ፡
አጣሊ፡፡ እለ፡ ተከሥታ፡ እምአድባረ፡ ገ
ላአድ፡፡፡ ስነንኪ፡ ከመ፡ መራዕይ፡ እለ፡ ተ 5
ቀርጻ፡፡ እለ፡ ወጽአ፡ እምሓጻብ፡፡ ኵሎን፡ እ
ለ፡ ይመንትዋ፡፡ ወአልቦ፡ እምኔሆን፡ መካን፡፡
ከመ፡ ፍሕሶ፡ ቀይሕ፡ ከናፍርኪ፡፡ ወነባብኪ፡
አደም፡፡፡ ከመ፡ ቅርፍተ፡ ሮማን፡ መላትሒ 6
ኪ፡ እንበለ፡ አርምሞትኪ፡፡፡ ስሳ፡ እማንቱ፡ 7
ንግሥታት፡፡ ወሰማንያ፡ ዕቁባት፡፡ አዋልድ፡ እ
ለ፡ አልቦ፡ ኍልቍ፡፡፡ አሐቲ፡ ይእቲ፡ ርግብየ፡ 8
ፍጽምት፡፡ ወአሐቲ፡ ይእቲ፡ ለእማ፡፡ ወኅሪት፡
ይእቲ፡ ለእንተ፡ ወለደታ፡፡ ርእያሃ፡ አዋልድ፡ ወ
አስተብፅዕዋ፡፡ ንግሥታት፡ ወዕቁባት፡ ወደሳ
ሃ፡፡፡ መኑ፡ ይእቲ፡ ዛቲ፡ እንተ፡ ትሔውጽ፡ ከ 9
መ፡ ጎሕ፡፡ ሠናይት፡ ከመ፡ ወርኅ፡፡ ብርህት፡ ከ
መ፡ ፀሐይ፡፡ ድንጉፅ፡ ከመ፡ ሥርዓት፡፡፡ ውስ 10
ተ፡ ገነት፡ ክርካዕ፡ ወረደ፡ ወልድ፡ እኁየ፡፡ ውስ
ተ፡ ዘርአ፡ ሙሕዝ፡ ይርአይ፡ እመ፡ ጸገየ፡ ወይ
ን፡፡ ወእመ፡ ጸገየ፡ ቆዕ፡፡ ወለእመ፡ ፈረየ፡ ሮ
ማን፡፡፡ በህየ፡ እሁበከ፡ አጥባትየ፡ ለከ፡፡ 11
ነፍስየ፡ ኢየአመረት፡፡ ረሰየኒ፡ ሰረገላተ፡ አ
ሚናደብ፡፡፡ ተመየጢ፡ ተመየጢ፡ ሱላማ 12
ጢስ፡፡ ተመየጢ፡ ተመየጢ፡ ወንርአይ፡ ብ
ኪ፡፡፡

CAP. VII. ምንተ፡ ትሬእዩ፡ በእንተ፡ ሰላም፡ ሰ 1
ጣዊት፡፡ እንተ፡ ትሔውጽ፡ እምርሑቅ፡ ከመ፡
ምድብለ፡ ማሕበር፡፡ ጥቀ፡ ሊደም፡ ሑረታትኪ፡
ዘበስን፡ ወለተ፡ ናደብ፡፡ ወንብረተ፡ መናቅዕትኪ፡
ይመስል፡ አርማስቆስ፡ ግብረ፡ እደ፡ ኬንያ፡፡፡
ሓንብርትኪ፡ ከመ፡ ማዕክክ፡ ፍሑቅ፡ ዘሊይዓር 2
ቅ፡ እምቱስሕት፡፡ ከርሠኪ፡ ስውጠ፡ ክርዓ
ይ፡ ወሓጹር፡ በጽጌ፡፡፡ ክልኤ፡ አጥባትኪ፡ 3
ከመ፡ ክልኤ፡ እጕለ፡ መንታ፡ ዘወይጠል፡፡፡

INTERP. ÆTHIOP. [c] de montibus Galaad. [d] quæ proſpectat, [e] deſcendit nepos meus videre [f] & floruerunt cyperi, & ſi fructificârunt mala *CAP. VII.* [a] Shelama Shetavith? tu proſpectas à longè ſicut ordinata congregatio: quàm ſpecioſi ſunt greſſus [b] ſtructura femorum tuorum ſimilis eſt

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

4 * أردّي عينيك من مقابلتي فهما قد طيّراني * شعرك كقطعان المعزى الطاهرة من
5 جلعاد * أسنانك كالقطعان المجزوزة التي قد صعدت من الاستحمام * التي كلّها ذوات توائم
6 وليست فيها ثكلى * شفتاك كالخيط القرمزي * وكلامك لذيذ بهي * وجنتاك ككسر
7 الرمانة سوى جمال سكوتك * الملكات هي ستون * والسراري ثمانون * والشواب هي لا عدد
8 لهن كثيرة * حمامتي وكاملتي واحدة هي * واحدة هي لأمها * منتخبة هي لمن ولدتها *
9 البنات أبصرنها وطوّبنها * ورأتها الملكات والسراري فسبحنها * من هذه المشرفة كمطلع
10 الصبح * جميلة كالقمر * منتخبة كالشمس * مجزعة كالصفوف المرتبة * في بستان الجوز
انحدرت لأنظر إلى غلّة الوادي * لأبصر إن كان الكرم قد أزهر * قد أزهر الرمان * هناك
11 أدفع إليك ثديي * وما عرفت نفسي جعلتني مركبة عميناداب * ارجعي أيتها السومانية *
12 ارجعي ارجعي فننظر إليك *

Deflecte oculos tuos ex adverſo mei, quoniam 4
ipſi me jam abalienârunt. Capilli
tui ſunt ſimiles gregibus caprarum prodeuntium
è Galaad. Dentes tui ſimiles 5
gregibus tonſis qui aſcenderunt è lotione,
quorum oves univerſæ gemelliparæ, nec
eſt inter eas orba. Labia tua ſunt vel- 6
uti filum coccineum, & ſermo tuus jucundus
ac decorus. Genæ tuæ velut cortex
malogranati, præter gratiam ſilentii
tui. Reginæ ſunt ſexaginta, & concu- 7
binæ octoginta, & puellæ plurimæ abſque
numero. Columba mea & perfecta mea 8
una eſt, una eſt matri ſuæ, electa eſt apud
eam quæ genuit illam. Filiæ videntes
eam, beârunt illam: & reginæ atque
concubinæ eam conſpicatæ, laudârunt
eam. Quæ eſt iſta proſpectans vel- 9
ut ortus auroræ, pulchra ut luna, electa
ut ſol, formidabilis ut acies inſtructæ?
Ad hortum nucum deſcendi 10
ut conſiderarem fruges vallis, ut viderem
num vinea jam floruiſſet, jam
floruiſſent malogranata: illic præbebo
tibi ubera mea. At neſcivi: anima 11
mea poſuit me currum Amminadab. Re- 12
vertere O Sumanitis, revertere, revertere,
ut te ſpectemus.

* الفصل السابع *

1 ماذا ترون في السومانية المقبلة كصفوف العساكر * خطواتك بهية في أحذية بنات ناداب *
2 انتظام أجزاء فخذيك يضاهي قلائد الجواهر من أعمال يدي الصانع * سرتك كأس مخروطة
3 لن يعوزها ممزوجا * جوفك عرمة حنطة مسيجة بالسوسن * ثدياك كتوأمي توم الغزالة *

CAP. VII.

Quid vidiſtis in Sumanitide venienti
ut acies exercituum? Greſſus tuus de- 1
corus eſt in calceamentis filiarum Nadab.
Structura partium femorum tuorum
ſimilis eſt torquibus gemmeis fabrefacti,
operâ manuum artificis. Umbilicus tuus 2
calix tornatilis, vino temperato haud indigens.
Venter tuus acervus frumenti
circunſeptus liliis. Geminæ tuæ mam- 3
mæ ut hinnuli gemelli cervæ.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

11 ܦܪܥܬ ܓܦܬܐ. ܘܐܢ ܦܪܥܘ ܪ̈ܘܡܢܐ. * ܠܐ ܝܕܥܬ ܢܦܫܝ. ܣܡܬܢܝ ܒܡܪܟܒܬܐ ܕܥܡܐ
12 ܕܡܬܩܢ. * ܗܦܘܟܝ ܗܦܘܟܝ ܫܝܠܘܡܝܬܐ. ܗܦܘܟܝ ܗܦܘܟܝ ܘܢܚܙܐ ܒܟܝ. * ܩ̈ܠܐ * ܝ̄ *
1 ܡܢܐ ܬܚܙܘܢ ܒܫܝܠܘܡܝܬܐ ܕܢܚܬܐ ܐܝܟ ܚܕܘܬܐ. ܘܐܝܟ ܚܕܘܬܐ ܕܡܫܪܝܬܐ. * ܡܐ ܫܦܝܪܝܢ
ܪ̈ܓܠܝܟܝ ܒܡܣܢ̈ܐ ܒܪܬ ܥܡܐ ܕܡܬܩܢ. ܘܕܡܘܬ ܝܪ̈ܟܝܟܝ ܐܝܟ ܫܪ̈ܐ. ܥܒܕ ܐܝ̈ܕܝ ܐܘܡܢܐ.
2 * ܫܪܟܝ ܐܝܟ ܟܣܐ ܕܚܘܕܪܐ. ܕܠܐ ܚܣܪ ܡܢܗ ܡܙܓܐ. ܟܪܣܟܝ ܐܝܟ ܟܪܘܝܐ ܕܚܛ̈ܐ. ܕܣܝܓ
3 ܒܫܘܫܢ̈ܐ. * ܬܪܝܢ ܬܕ̈ܝܟܝ ܐܝܟ ܬܪܝܢ ܥܘܙܠܝܢ ܬܐܡܐ. ܕܛܒܝܬܐ ܕܪܥܝܢ ܒܫܘܫܢ̈ܐ.

germinâſſet vitis, & num floruiſſent malogranata.
Neſcivit anima mea, poſuit me in curru 11
populi parati. Revertere, revertere Silomitis, 12
revertere, revertere, & intuebimur te.

CAP. VII.

Quid ſpectabitis in Silomitide quæ deſcendit
ſicut chorus, et *quidem* ut chorus caſtrorũ?
Quàm pulchri ſunt pedes tui in calceis, filia 1
parati! & forma femorũ tuorum ut monilia,
opus manuum artificis. Umbilicus tuus lagena 2
rotunda, in qua non deeſt *vinum* mixtũ. Venter
tuus acervus tritici vallatus liliis. Duo 3
ubera tua ſimilia ſunt duobus hinnulis gemellis
capreolorum paſcentibus inter lilia.

oculi: eboris turris ſicut tuum Collum
4 צַוָּארֵךְ כְּמִגְדַּל הַשֵּׁן עֵינַיִךְ
filiæ portam ſuper, Chesbon in piſcinæ
בְּרֵכוֹת בְּחֶשְׁבּוֹן עַל־שַׁעַר בַּת־
, Lebanon turris ſicut tuum naſus: magnatum
רַבִּים אַפֵּךְ כְּמִגְדַּל הַלְּבָנוֹן
tuum Caput . Dammeſec facies ſpeculans
5 צוֹפֶה פְּנֵי דַמָּשֶׂק: רֹאשֵׁךְ
tui capitis coma &, Carmel veluti te ſup
עָלַיִךְ כַּכַּרְמֶל וְדַלַּת רֹאשֵׁךְ
.canalibus in ligatus rex: purpura ſicut
כָּאַרְגָּמָן מֶלֶךְ אָסוּר בָּרְהָטִים:
fuiſti jucunda quàm &, pulchruiſti Quàm
6 מַה־יָּפִית וּמַה־נָּעַמְתְּ
tua ſtatura Iſta ! deliciis in amor
7 אַהֲבָה בַּתַּעֲנוּגִים: זֹאת קוֹמָתֵךְ
tua ubera & , palmæ eſt aſſimilata
דָּמְתָה לְתָמָר וְשָׁדַיִךְ
Aſcendam , Dixi .botris
8 לְאַשְׁכֹּלוֹת: אָמַרְתִּי אֶעֱלֶה
: ejus ramos in apprehendam , palmam in
בְתָמָר אֹחֲזָה בְּסַנְסִנָּיו
botri ſicut tua ubera nunc erunt &
וְיִהְיוּ־נָא שָׁדַיִךְ כְּאֶשְׁכְּלוֹת
.malorum ſicut , tuæ naris odor & , vitis
הַגֶּפֶן וְרֵיחַ אַפֵּךְ כַּתַּפּוּחִים:
vadens optimũ vinũ ſicut tuũ palatũ Et
9 וְחִכֵּךְ כְּיֵין הַטּוֹב הוֹלֵךְ
loqui faciẽs; rectitudines ad, meũ dilectũ ad
לְדוֹדִי לְמֵישָׁרִים דּוֹבֵב
, mei dilecti Ego .dormientium labia
10 שִׂפְתֵי יְשֵׁנִים: אֲנִי לְדוֹדִי
, mi dilecte Veni. ejus deſideriũ me ſuper &
11 וְעָלַי תְּשׁוּקָתוֹ: לְכָה דוֹדִי
commoremur , agrum in egrediamur
נֵצֵא הַשָּׂדֶה נָלִינָה
, vineas ad ſurgamus Manè .villis in
12 בַּכְּפָרִים: נַשְׁכִּימָה לַכְּרָמִים
ſe aperuerit, vitis gemmuerit an videam
נִרְאֶה אִם־פָּרְחָה הַגֶּפֶן פִּתַּח
ibi : punica mala floruerint , parva uva
הַסְּמָדַר הֵנֵצוּ הָרִמּוֹנִים שָׁם
Mandragoræ .tibi meos amores dabo
13 אֶתֵּן אֶת־דֹּדַי לָךְ: הַדּוּדָאִים
noſtris oſtiis ſuper & , odorem dederunt
נָתְנוּ־רֵיחַ וְעַל־פְּתָחֵינוּ
, vetera etiam , nova , delicata omnia
כָּל־מְגָדִים חֲדָשִׁים גַּם־יְשָׁנִים
.tibi abſcondi , mi dilecte
דּוֹדִי צָפַנְתִּי לָךְ:

CAP. VIII. ח

ubera ſugentẽ, mihi fratrẽ ut te det Quis
1 מִי יִתֶּנְךָ כְּאָח לִי יוֹנֵק שְׁדֵי
, platea in te inveniam ? meæ matris
אִמִּי אֶמְצָאֲךָ בַחוּץ
.me contemnant non etiam, te oſculer
אֶשָּׁקְךָ גַּם לֹא־יָבֻזוּ לִי:
domum ad te faciam venire, te Ducam
2 אֶנְהָגְךָ אֲבִיאֲךָ אֶל־בֵּית
te faciam bibere : me docebis , meæ matris
אִמִּי תְּלַמְּדֵנִי אַשְׁקְךָ
[illegible] vino de , conditura vino de
מִיַּיִן הָרֶקַח מֵעֲסִיס
ſub ejus Læva .mei granati mali
3 רִמֹּנִי: שְׂמֹאלוֹ תַּחַת
.me amplexabitur illius dextera &, meo capite
רֹאשִׁי וִימִינוֹ תְּחַבְּקֵנִי:

4 צוארך ואב בית דינא דדאין דינך חסין על עמא לכפתא יתהון
ולמנגד מן די יתחיב בדינא לנגרא כשלמה מלכא דעבד מגדלא
דשן דפיל וכבש ית עמא בית ישראל ואהדר יתהון למרי עלמא
ספריך מלין חוכמתא כפרקטינין דמיא וידעין למנני חושבני
עבורין ומעברין שנין וקבעין רישי ירחין ורישי שנין בתרע בית
סנהדרין רבא ורב בית אבא לבית יהודה דמי לדוד מלכא
דבנא מצדתא דציון די מתקרי מגדלא דלבנן דכל מן דיקום
5 עלוהי יכיל לממני כל מגדלין די בדמשק: ראשך מלכא דאתמני
עלך רישא צדיקא כאליהו נביא דקני קנאתא למרי שמיא וקטל
ית נביאי שקרא בטורא דכרמל ואתיב ית עמא בית ישראל
לדחלתא דיי אלהיא ודלת עמא די אזלין ברישא מכא על די אנון
מסכנין עתידין למלבש ארגונא היכמה די לבש דניאל בקרתא
דבבל ומרדכי בשושן בגין זכותא דאברהם דאמליך מן קדמת
דנא למרי עלמא ובצדקתא דיצחק דכפתיה אבוהי למקרביה
6 ובחסדותא דיעקב דקלף על חוטריא ברהטיא: מה אמר מלכא
שלמה כמה יאה אנת כנישתא דישראל בזמן די תסבולי עליך ית
ניר מלכותי בעדן די אנא מוכח יתיך ביסורין על חוביך ואנת
7 מקבלא יתהון ברחים דמין באנפיך כתפנוקין: זאת ובעדן די
פרסין כהניך ידיהון בצלו ומברכין לאחיהון בית ישראל דדמין
ארבעת ידיהון מתפרשין כלולבי דתמר וקומתהון כדקלא
וקהליך קימין אפין באפין כל קבל כהניא ואפיהון כבישן לארעא
8 כאתכלא דענבין: אמרתי אמר יי במימריה אסק ואנסיה
לדניאל ואחזי אי כהיל למקם בנסיונא הדא היכמה דקם אברהם
דדמי ללולבא בעסרא נסין ובחן אף אנא לחנניה מישאל ועזריה
אי כהלין למקם בנסיוניהון אפרוק בדיל זכותהון לעמא בית
ישראל דמתילן לאתכלין דענבין ושומהון דדניאל חנניא מישאל
ועזריה אשתמע בכל ארעא וריחיהון יהי נדיף כריחא דתפוחין
9 דגנתא דעדן: וחכך אמר דניאל וחברוהי קבלא נקבל עלנא
גזירת מימרא דיי היכמה די קבל עליה אברהם אבונא דמתיל
לחמר עתיק ונהך באורחן דתקנן קדמוהי היכמה דאזלו אליהו
ואלישע נביאיא די בזכותהון קמו מתיא דדמין לגבר דדמיך
וכיחזקאל בר בוזי כהנא דמנבואת פומיה אתערו דמכי מיתיא
10 די בבקעת דורא: אני אמרת ירושלם כל זמן די אנא מהלכא
באורחא דמרי עלמא משרי שכנתיה ביני ועלי מתויה ובעדן די
אנא סטיא מן אורחתיה מסלק שכנתיה מביני ומטלטל יתי ביני
11 עממיא ואנון שלטין בי כגבר דשליט באנתתיה: לכה כד חבו
עמא בית ישראל אגלי יי יתהון בארעא דשעיר חקלי אדום אמרת
כנשתא דישראל בבעו מנך רבון כל עלמא קבל צלותי די אנא
12 מצלא קדמך בקרוי גלותא ובפלכי עממיא: נשכימה אמרין
בני ישראל אלין לאלין נקדים בצפרא ונהך לבית כנשתא ולבית
מדרשא ונבקר בספרא דאוריתא ונחמי אי מטא זמן פורקנא
דעמא בית ישראל דמתילין לגופנא לאתפרקא מגלותהון ונשאל
לחכימיא אתגלי קדם יי כותא דצדיקיא דמלין פקודיא כרמנא
אי מטא קצא למסק לירושלם למתן תמן שבח לאלהא דשמיא
13 ולמקרב עלון ונכסת קודשין: הדודאים וכד יהא רעוא מן קדם
יי למפרק ית עמיה מן גלותא יתאמר למלכא משיחא כבר
שלים קץ גלותא וזכות צדיקיא אתבסם קדמי כריח בלסמון
וחכימי דריא קביען על תרעי מדרשא עסקין בפתגמי ספריא
ופתגמי אוריתא כען קום קבל מלכותא די גניית לך:

ח

1 מי ובההיא זמנא אתגלי מלכא משיחא לכנשתא דישראל ויימרון ליה בני ישראל אתא תהא עמנא
לאח ונסק לירושלם ונהי ינקין עמך טעמי אוריתא היכמה דייניק ינקא בתדיא דאמיה דכל
זמן דהויתי מטלטלא לברא מן ארעי כד הויתי דכירא ית שום אלהא רבא ומסירא נפשי על
2 אלהותיה אף עמי ארעא לא הוו מבזין לי: אנהגך אדברנך מלכא משיחא ואעלנך לבית
מוקדשי ותאלף יתי למדחל מן קדם יי ולמהך באורחתיה ותמן נסעוד סעודתא [דליויתן]
ונשתי חמר עתיק דאצטנע בענבוהי מן יומא דאתברי עלמא ומרמוני פרי דאתעתדו לצדיקיא
3 בגנתא דעדן: שמאלו אמרת כנשתא דישראל אנא בחירתא מכל עממיא די אנא קטרא
תפלין ביד שמאלי וברישי וקביעא מזוזתא בסטר ימינא דדשי תולתא לקבל תיקי דלית
רשו למזיקא לחבלא בי:

4 Judex quoque tuus qui judicat judicium tuum, fortis eſt ſuper populum, ut alliget eos, & ut trahat eos, qui condemnantur in judicio, ad carcerem, ſicut Salomon rex, qui fecit turrim eburneam, & ſubjecit populum domus Iſrael; & convertit eos ad dominatorem ſeculi: ſcribæ tui pleni ſunt ſapientia ſicut piſcinæ aquarum; & ſciunt conſtituere rationes emboliſmorum, & annos intercalant, & ſignant principia annorum & menſium, in porta domus conſilii magni: & princeps familiarum domus Juda ſimilis eſt David regi, qui ædificavit arcem Sion, quæ vocatur Turris Libani; quoniam omnis qui ſteterit in ea, poteſt numerare omnes turres quæ ſunt in Damaſco. 5 Rex qui conſtitutus eſt ſuper te in principem, juſtus eſt ſicut Helias propheta, qui zelo zelatus eſt pro Domino cœli, & occîdit prophetas falſos in monte Carmelo, & convertit populum domus Iſrael ad timorem Domini Dei: & pauperes populi qui ambulabant apud principem hinc & inde, eò quòd egeni ſunt, futurum eſt ut induantur purpura, ſicut indutus eſt Daniel in civitate Babylonis, & Mardochæus in Suſſis, propter meritum Abrahæ, quem regem conſtituit ab initio in dominatorem ſeculi; & propter juſtitiam Iſaac, quem ligavit pater ejus ut offerret eum [*in holocauſtum*;] & propter benignitatem Jaacob, qui decorticavit virgas, [*& poſuit eas*] in canalibus. 6 Dixit Salomon rex: Quàm pulcher es cœtus Iſrael in tempore quo tu portas ſuper te jugum regni mei, in tempore quo ego corripio te infirmitatibus propter peccata tua, & tu ſuſcipis eas in charitate, & videntur tibi quaſi delitiæ! 7 Et in tempore quo Sacerdotes tui extendunt manus ſuas in oratione, & benedicunt fratribus ſuis domui Iſrael, ſimiles ſunt digiti manus eorum extenſi ramis palmarum, & ſtatura eorum eſt ſicut palma, & eccleſia tua ſtat facie ad faciem contra Sacerdotes, & facies eorum inclinatæ ſunt in terram ſicut botri uvarum. 8 Dixit Dñs in verbo ſuo: Aſcendam & tentabo Danielem, & videbo ſi poteſt ſtare in tentatione hac ſicut ſtetit Abraham, qui ſimilis fuit ramo [*palmarum, quem probavi*] decem tentationibus: & probabo ego quoq; Ananiam, Mizael, & Azariam: & ſi poſſunt ſtare in tentationibus ſuis, redimam propter merita eorum populum domus Iſrael, qui comparatus eſt botris uvarum: & nomen Daniel, Ananiæ, Mizael & Azariæ audietur in univerſa terra, & odor eorũ erit fragrans ſicut odor pomorum paradiſi voluptatis. 9 Dixit Daniel & ſocii ejus: Suſcipiendo ſuſcipiemus ſuper nos decretum verbi Dñi, ſicut ſuſcepit ſuper ſe Abraham pater noſter, qui comparatus eſt vino veteri; & ambulabimus in viis quæ rectæ ſunt coram eo, ſicut ambulaverunt Helias & Heliſæus prophetæ, per quorum merita ſurrexerunt mortui, qui ſimiles ſunt viro dormienti: & ſicut Ezechiel filius Buzi Sacerdos, quia in prophetia oris ſui ſuſcitati ſunt dormientes mortui qui erant in campo Dura. 10 Dixit Jeruſalem: In omni tempore quo ego ambulabo in via dominatoris ſeculi, habitare facit majeſtatem ſuam in medio mei, & ad me eſt deſiderium ejus: & in tempore quo ego declino à viis ejus, aufert majeſtatem ſuam à me, & transfert me inter populos: & ipſi dominantur in me ſicut vir qui dominatur uxori ſuæ. 11 Quando peccaverunt populus domus Iſrael, tranſmigrare eos fecit Dñs in terram Seir regionis Idumeæ: dixit cœtus Iſrael, Obſecro te dominator totius ſeculi ſuſcipe orationem meam, qua ego oro coram te in urbibus tranſmigrationis meæ & provinciis populorum. 12 Dixerunt filii Iſrael ad invicem: Surgamus manè, & eamus ad domum eccleſiæ & ad domum examinis, & inveſtigemus in libro Legis, & videamus an pervenerit tempus redemptionis populi domus Iſrael, qui comparatus eſt viti, ut redimatur de captivitate ſua: & interrogemus ſapientes an manifeſta ſit coram Dño juſtitia juſtorum, qui pleni ſunt præceptis ſicut malogranata, & an pervenerit finis ut aſcendamus in Jeruſalem, ut demus ibi laudem Deo cœli, & offeramus holocauſta & victimas ſanctificatas. 13 Et cùm fuerit voluntas à facie Dñi ut redimat populum ſuum de captivitate, dicetur regi Meſſiæ: Jam completus eſt finis captivitatis, & meritum juſtorum ſuave eſt coram me ſicut odor balſami: & ſapientes generationum conſtituti in portis gymnaſii, operam dant verbis Scribarum & verbis Legis: nunc ſurge ſuſcipe regnum quod repoſui tibi.

CAP. VIII.

1 ET in tempore illo revelabitur rex Meſſias cœtui Iſrael, & dicent ei filii Iſrael: Veni, eſto frater noſter, & aſcendamus in Jeruſalem, & ſugemus tecum ſententias Legis, ſicut ſugit infans ubera matris ſuæ: quia omni tempore quo eram extorris extra terram meam, cùm recordabar nominis Dei magni, & tradebam animam meam propter deitatem ejus, etiam populi terrarum non deſpiciebant me. 2 Ducam te rex Meſſias & introducam te in domum ſanctuarii mei, & docebis me timere à facie Domini, & ambulare in viis ejus, & ibi prandebimus prandium *Leviathan*, & bibemus vinum vetus quod reconditum eſt in uvis ſuis à die quo creatum eſt ſeculum, & de malis punicis quæ præparata ſunt juſtis in paradiſo voluptatis. 3 Dixit cœtus Iſrael: Ego electa ſum ſupra omnes populos, quia ego alligo frontalia manui ſiniſtræ meæ, & capiti; chartuláque infixa eſt lateri dextero portæ meæ, cujus tertia pars reſpicit thalamum meum, ut non habeant licentiam dæmones ad nocendum mihi.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

4 * ܨܘܪܟܝ ܐܝܟ ܡܓܕܠܐ ܕܫܢܐ. ܥܝܢܝܟܝ ܐܝܟ ܡܥܝܢܘܬܐ ܕܚܫܒܘܢ. ܥܠ ܬܪܥܐ ܕܒܪܬ ܣܓܝܐܐ. 4
5 ܢܚܝܪܟܝ ܐܝܟ ܡܓܕܠܐ ܕܠܒܢܢ: ܕܚܐܪ ܠܘܩܒܠ ܕܪܡܣܘܩ. * ܪܫܟܝ ܥܠܝܟܝ ܐܝܟ ܟܪܡܠܐ. 5
6 ܘܓܕܝܠܐ ܕܪܫܟܝ. ܐܝܟ ܐܪܓܘܢܐ ܕܡܠܟܐ ܕܐܣܝܪ ܒܪܗܛܐ. * ܡܐ ܫܦܝܪܬܝ. ܘܡܐ ܒܣܝܡܬܝ. ܐܘ 6

4 Collum tuum ſimile turri eburneæ. Oculi tui ſicut piſcinæ Heſbon ad portam filiæ multorum. 5 Naſus tuus ſimilis turri Libani ſpectanti verſùs Damaſcum. Caput tuum ſuper te ſimile eſt Carmelo. Et intexti crines capitis tui, ſicut purpura regis alligata ſtadiis. 6 Quàm pulchra es, quàm jucunda, ô

Verſio VULG. LAT.

4 Collum tuū ſicut turris eburnea. Oculi tui ſicut piſcinæ in Heſebon, quæ
ſunt in porta filiæ multitudinis. Naſus tuus ſicut turris Libani, quæ re-
5 ſpicit contra Damaſcum. Caput tuū
ut Carmelus: & comæ capitis tui, ſicut purpura regis vincta canalibus.
6 Quàm pulchra es, & quā decora, cha-
7 riſſima, in deliciis! Statura tua aſſimilata eſt palmæ, & ubera tua botris.
8 Dixi; Aſcendā in palmā, & apprehendā fruct⁹ ej⁹: & erunt ubera tua ſicut
botri vineæ: et odor oris tui ſicut ma-
9 lorū. Guttur tuū ſicut vinū optimū,
dignum dilecto meo ad potandū, labiiſq; & dentib⁹ illi⁹ ad ruminandū.
10 Ego dilecto meo, & ad me converſio
11 ejus. Veni, dilecte mi, egrediamur in
12 agrum, commoremur in villis. Manè
ſurgamus ad vineas, videamus ſi floruit vinea, ſi flores fruct⁹ parturiunt,
ſi floruerunt mala punica: ibi dabo ti-
13 bi ubera mea. Mandragoræ dederunt
odorem. In portis noſtris omnia poma: nova & vetera, dilecte mi, ſervavi tibi.

CAP. VIII.

1 Quis mihi det te fratrē meū ſugē-
tem ubera matris meæ, ut inveniā te
foris, & deoſculer te, & jam me nemo
2 deſpiciat? Apprehendam te, & ducā
in domū matris meæ: ibi me docebis,
& dabo tibi poculum ex vino condito, & muſtum malorū granatorū me-
3 orum. Læva ejus ſub capite meo, &
dextera illius amplexabitur me.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

4 †(ϑ) Ὁ τράχηλός σου ὡς πύργος ἐλεφάντινος· †(ι)
οἱ ὀφθαλμοί σου ὡς λίμναι ἐν Ἐσεβὼν, †ἐν πύλαις
θυγατρὸς πολλῶν. † μυκτήρ σου, ὡς πύργος τοῦ Λι-
5 βάνου †σκοπεύων πρόσωπον Δαμασκοῦ. † Κεφαλή
σου ἐπὶ σὲ ὡς Κάρμηλος, †καὶ πλόκιον κεφαλῆς σου
ὡς πορφύρα· †βασιλεὺς δεδεμένος ἐν παραδρο-
6 μαῖς. † Τί ὡραιώθης, καὶ τί ἡδύνθης †ἀγάπη; ἐν
7 τρυφαῖς σου † Τοῦτο μέγεθός σου· (κ) ὡμοιώθης τῷ
8 φοίνικι, †καὶ οἱ μαστοί σου τοῖς βότρυσιν. † Εἶπα, Ἀ-
ναβήσομαι (λ) ἐπὶ τῷ φοίνικι, † κρατήσω τῶν ὕψεων
αὐτοῦ· καὶ ἔσονται δὴ μαστοί σου ὡς βότρυες τῆς ἀμπέ-
9 λου, † καὶ ὀσμὴ ῥινός σου ὡς μῆλα, † Καὶ ὁ λάρυγξ
σου ὡς οἶνος (μ) ὁ ἀγαθὸς, †πορευόμενος τῷ ἀδελ-
φιδῷ μου εἰς εὐθύτητα, †ἱκανούμενος (ν) χείλεσί μου
10 καὶ ὀδοῦσιν. † Ἐγὼ τῷ ἀδελφιδῷ μου, † καὶ ἐπ᾽ ἐμὲ
11 ἡ ἐπιστροφὴ αὐτοῦ. † Ἐλθὲ ἀδελφιδέ μου, ἐξέλθω-
12 μεν εἰς ἀγρὸν, †αὐλισθῶμεν ἐν κώμαις. † Ὀρθρίσω-
μεν εἰς ἀμπελῶνας· †ἴδωμεν εἰ ἤνθησεν ἡ ἄμπελος,
† ἤνθησεν ὁ κυπρισμὸς, † ἤνθησαν αἱ ῥοαί· † ἐκεῖ
13 δώσω τοὺς μαστούς μου σοί. † Οἱ (ξ) μανδραγόραι ἔ-
δωκαν ὀσμήν· † καὶ ἐπὶ θύραις (ο) ἡμῶν πάντα ἀκρό-
δρυα †νέα πρὸς παλαιὰ ἀδελφιδέ μου ἐτήρησά σοι.

ΚΕΦ. η'.

1 †Τίς δώη σε ἀδελφιδέ μου θηλάζοντα μαστοὺς
μητρός μου; † εὑροῦσά σε ἔξω φιλήσω σε, † καί γε
2 οὐκ ἐξουδενώσουσί (α) μοι. †Παραλήψομαί σε, εἰσ-
άξω σε εἰς οἶκον μητρός μου † καὶ εἰς (β) ταμεῖον τῆς
συλλαβούσης με· † ποτιῶ σε ἀπὸ οἴνου τοῦ μυρεψι-
3 κοῦ, † ἀπὸ νάματος ῥοῶν μου. † Εὐώνυμος αὐτοῦ
ὑπὸ τὴν κεφαλήν μου, † (γ) καὶ ἡ δεξιὰ αὐτοῦ περι-
λήψεταί με.

MS.A. (ϑ) Τράχηλος (ι) ὀφθαλμοί (κ) ὡμοιώθη (λ) ἐν τῷ φοίνικι, (μ) ἀγαθὸς, (ν) ἐν χείλεσίν μου (ξ)* μανδραγόρες (ο)* ὑμῶν
Κεφ. η'. MS.A. (α) με. (β) ταμιεῖον (γ) καὶ δεξιὰ

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ Tranſ. LAT.

Collum tuum, ſicut turris eburnea : 4
oculi tui, tanquam (f) lagna in Eſebon in portis filiæ (g) multorum. Naris tua, ſicut turris Libani proſpiciens faciē Damaſci. Caput tuum ſu- 5
per te, ſicut Carmelus, (h) & plexus capitis tui, ſicut purpura. Rex ligatus in tranſcurſib⁹. Quàm pulchra, 6
& quàm ſuavis fact⁹ es, charitas, (i) in deliciis tuis ? Hæc (k) [c] ma- 7
gnitudo tua, ſimilis facta es palmæ; et ubera tua botris. Dixi, Aſcendā in 8
palmā, tenebo (l) cacumina ejus : & erunt nunc ubera tua, ſicut botri vitis, & odor naſi tui, ſicut poma : Et 9
guttur tuum, ſicut vinū bonū, (m) [d] vadeo fraterno meo in rectitudinem, (n) ſufficiens labiis meis, & dentibus. Ego fraterno meo, et ſuper 10
me converſio ejus. Veni, [e] fraterne 11
mi, exeamus in agrū, requieſcamus [f] in caſtellis. Diluculò ſurgamus in 12
vineas: Videamus, ſi (o) floruit vitis, [g] floruit propago, (p) floruerūt mala punica. Ibi dabo ubera mea tibi: Mandragoræ dederunt odorē. 13
[h] Et in oſtiis noſtris omnes nuces novis ad veteres, fraterne mi, (q) ſervavi tibi.

CAP. VIII.

Quis det te, (a) [a] fraterne mi, 1
lactentē ubera matris meæ? (b) Inveniens te foris oſculabor te: (c) & quidem non ſpernent me. Aſſumam 2
te, introducam te in domum matris meæ, & in cubiculū ejus, quæ concepit (d) me. Potabo te de vino (e) unguentato, [b] de latice malorum punicorum meorum. [c] Læva ejus 3
ſub capite meo, & dextera illius amplexabitur me.

INTERP. ÆTHIOP. [c] ſtatura tua, ſimilis facta eſt palmæ.... Et tenebo cacumina ejus : & odor naſi tui, ſicut odor thuris. Et facta ſunt ubera tua, ſicut botri vitis : & odor naſi tui, ſicut odor thuris : & guttur tuum, [d] & vadens nepoti meo, & paratum labiis meis & linguæ meæ. Ego nepoti meo, [e] nepos mi, [f] vicinia. [g] & ſi floruit cyprus, & an fructificârunt mala [h] Et in atriis noſtris omnia poma nova juxtà ac vetera, nepos mi, ipſe ſervavi tibi.
CAP. VIII. [a] nepos mi, [b] de potu [c] Dextera illius amplexabitur me, & læva ejus ſub capiti meo.

Verſio ÆTHIOPICA.

ወክሳድኪ ፡ ከመ ፡ ማኅፈደ ፡ ቀርን ፡ ነጌ ። አ 4
ዕይንትኪ ፡ ከመ ፡ ምዕቋለተ ፡ በእሴቦን ፡ በ
አናቅጽ ፡ ወለተ ፡ ብዙኃን ። አንፍኪ ፡ ይመስ
ል ፡ ከመ ፡ ማኅፈደ ፡ ሊባኖስ ። ዘይኔጽር ፡ መ
ንገለ ፡ ገጽ ፡ ደማስቆስ ።=፡ ርእስኪ ፡ ዘዲቤ 5
ኪ ፡ ከመ ፡ ቀርሜሎስ ። ወጽፍሮ ፡ ርእስኪ ፡ ከ
መ ፡ ሜለት ። አሠረ ፡ ንጉሠ ፡ ለረዊጽ ።=፡
ጥቀ ፡ ሠናይኪ ፡ ወጥቀ ፡ አደምኪ ። አፈቅሮ ፡ 6
ለፍግዕኪ ።=፡ ዘቆምኪ ፡ ይመስል ፡ በቀል 7
ተ ።=፡ ወእኀዝ ፡ መልዕልቶ ። ወጼና ፡ አን 8
ፍኪ ፡ ከመ ፡ ጼና ፡ ከኒን ። ወኮነ ፡ አጥባትኪ ፡
ከመ ፡ አስከለ ፡ ወይን ። ወጼና ፡ እንፍኪ ፡ ከ
መ ፡ ጼና ፡ ከኒን ።=፡ ወጕርዔኪ ፡ ከመ ፡ ወ 9
ይን ፡ ሠናይ ። ወእንዘ ፡ የሐውር ፡ ወልድ ፡
እኁየ ። ወእንዘ ፡ ይደሉ ፡ ለከናፍርየ ፡ ወለ
ልሳንየ ።=፡ አነ ፡ ለወልድ ፡ እኁየ ፡ ወኅቤ 10
የ ፡ መግባዒሁ ።=፡ ነዐ ፡ ወልድ ፡ እኁየ ፡ 11
ንፃእ ፡ ሐቅለ ። ወናዕርፍ ፡ ውስተ ፡ አድያ
ም ።=፡ ወንጊሥ ፡ ውስተ ፡ አዕጻደተ ፡ ወ 12
ይን ። ንርአይ ፡ እመ ፡ ጸገየ ፡ ወይን ። ወለ
እመ ፡ ጸገየ ፡ ቆዕ ። ወለእመ ፡ ፈረየ ፡ ሮማ
ን ። በህየ ፡ እሁበከ ፡ ለጥባትየ ፡ ለከ ።=፡
ዕንጕታት ፡ ወሀቡ ፡ ማዕዛ ። ወውስተ ፡ አ 13
ዕጻዲነ ፡ ኵሉ ፡ አቅማሕ ። ምስለ ፡ ሐዲ
ስ ፡ ወብሉይ ። ወልድ ፡ እኁየ ፡ አነ ፡ ዐቀብ
ኩ ፡ ለከ ።=፡
CAP. VIII. መኑ ፡ ይሁበከ ፡ ወልድ ፡ እኁ 1
የ ፡ ትጥቡ ፡ አጥባተ ፡ እምየ ። ወረኪብየ ፡
በአፍአ ፡ እስዕመከ ። ወኢይሜንኑኒ ።=፡
እነሥአከ ፡ ወአበውአከ ፡ ውስተ ፡ ቤተ ፡ እ 2
ምየ ። ወውስተ ፡ ውሳጥያቲሃ ፡ ለእንተ ፡ ሐ
ፀነተኒ ። ወእሰትየከ ፡ እምርሑ ፡ አፈውየ ።
ወእምስቴ ፡ ሮማንየ ።=፡ የማኑ ፡ ተሐቅፈ 3
ኒ ፡ ወጸጋሙ ፡ ታሕተ ፡ ርእስየ ።=፡

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

4 عنقك كبرج العاج * عيناك كالجنان التي باسعون في ابواب بنت المدن * انفك كبرج
5 لبنان يراصد وجه دمشق * راسك غليظ كجبل الكرمل * وشعر راسك كبرفير ملك مربوط
6 7 في الملاعب * ما احسن بهاءك وما الذك * ايها المحبة في نعماتك * فعظم سنك هذا شبيه
8 بالنخلة * وثدياك تضاهي اعذاقها * قلت لاصعدن في النخلة ولامسكن معاليها * وستكون
9 ثدياك كعناقيد الكرمة * ونسيم انفك كنسيم التفاحة * وحنكك كنسيم النبيذ الجيد *
10 ابن اخي ذاهب الي الاستقامة مجريا بسعي واسناني * انا عند ابن اخي * والي عندي تكون
11 12 عودته * يا ابن اخي هلم نخرج الي الحقل * ونستوطن في الضياع * ونبتكر الي الكروم *
13 وننظر ان كان الكرم قد ازهر * ازهر الزهر ازهرت الجبال * هناك ادفع اليك ثديي * اللفاح
مجل نسمه * وكافة اثمار الشجر المباركة على ابوابنا * يا ابن اخي قد حفظت لك الحديثة
1 باراء العتيقة * * الفصل الثامن * * من ذا يعطيك يا ابن اخي
2 ان ترضع ثديي امي * اذ وجدتك خارجا قبلتك * ومع ذاك فلم يزدروا بي * اتناولك
فادخلك الي بيت امي والي حجرة من حبلت بي * فاسقيك من الخمر الطيب ومن ماء
3 رماني * يساره تحت راسي * ويمينه تنعطف علي *

Collum tuum ſicut turris eburnea. Oculi 4
tui veluti viridaria quæ ſunt in Eſepon ad portas filiæ urbium. Naſus tuus ut turris Libani, quæ ſpectat verſùs Damaſcum. Caput tuum craſſum eſt ut mons 5
Carmelus. Et comæ capitis tui veluti purpura regis ligata in foris luſoriis. Quàm 6
pulcher eſt nitor tuus, & quàm jucunda es O dilecta, in deliciis tuis ! Tanta fa- 7
mæ tuæ magnitudo ſimilis eſt palmæ, & mammæ tuæ botros ejus referunt. Dixi, 8
Conſcendam equidem in palmam, & apices ejus prehendam : eruntque mammæ tuæ ſicut botri vitis, & odor naſi tui velut odor pomi, Et palatum tuum quaſi 9
odor vini optimi. Nepos meus pergit ad rectitudinem, vim faciens in labia mea & dentes meos. Ego ſum apud nepotem 10
meum, & ad me erit reverſio ejus. O mi 11
nepos, veni, egrediamur ad agrum, & in ruribus moremur ; Manèque ſurgentes 12
ad vineas, videamus num jam floruerit vinea, flores eruperint, floruerint montes. Illîc præbebo tibi mammas meas. Man- 13
dragoras propter fragrantiam ſuam, omneſque fructus arborum januis noſtris accumbentium, O mi nepos, repoſui tibi, recentes æquè ac veteres.

CAP. VIII.

O Quis tibi det mi nepos, ut ſugas 1
mammas matris meæ ? Cùm te foris invenero, deoſculabor te, nec me tamen deſpicient. Prehendam te, introducámque 2
in domum matris meæ, & in promptuarium ejus quæ me concepit, téque potabo vino ſuaviſſimo & aquâ granatorum meorum. Siniſtra ejus ſub capite meo, & 3
dextera ipſius flectatur ſuper me.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

7 8 ܪܚܡܬܐ. ܒܪܬ ܦܘܢܩܐ * ܘܗܢܐ ܩܘܡܬܟܝ. ܕܡܝܐ ܠܕܩܠܐ. ܘܬܕܝܟܝ ܠܣܓܘܠܐ. * ܐܡܪܬ.
ܐܣܩ ܠܕܩܠܐ. ܘܐܚܘܕ ܒܣܘܟܘܗܝ. ܘܢܗܘܘܢ ܬܕܝܟܝ ܐܝܟ ܣܓܘܠܐ ܕܓܦܢܐ. ܘܪܝܚܐ
9 10 ܕܐܦܝܟܝ ܐܝܟ ܚܙܘܪܐ. * ܘܚܟܟܝ ܐܝܟ ܚܡܪܐ ܛܒܐ. ܕܦܐܐ ܠܕܕܝ ܠܬܪܝܨܘܬܐ. ܘܡܙܝܥ ܣܦܘܬܝ
11 12 ܘܫܢܝ. * ܐܢܐ ܠܕܕܝ ܘܠܘܬܝ ܦܢܝܬܗ. * ܬܐ ܕܕܝ ܢܦܘܩ ܠܚܩܠܐ. ܢܒܘܬ ܒܟܦܪܐ. * ܘܢܩܕܡ
ܠܟܪܡܐ. ܢܚܙܐ ܐܢ ܦܪܥܬ ܓܦܬܐ. ܘܦܩܥܘ ܫܘܫܢܐ. ܘܢܒܥܘ ܪܘܡܢܐ. ܬܡܢ ܐܬܠ ܠܟ ܬܕܝ.
13 * ܝܒܪܘܚܐ ܝܗܒܘ ܪܝܚܐ. ܘܥܠ ܬܪܥܝܢ ܟܠ ܦܐܪܝܢ. ܚܕܬܐ ܘܥܬܝܩܐ. ܕܕܝ ܢܛܪܬ ܠܟ.
1 * [illegible] * ܡܢ ܢܬܠܟ ܐܝܟ ܐܚܐ ܠܝ. ܝܢܩܘ ܬܕܝ ܐܡܪܝ. ܐܫܟܚܟ ܒܫܘܩܐ.
2 ܘܐܢܫܩܟ ܘܠܐ ܢܒܣܘܢ ܒܝ. * ܐܕܒܪܟ ܘܐܥܠܟ ܠܒܝܬ ܐܡܝ. ܘܠܬܘܢܐ ܕܝܠܕܬܝ. ܐܫܩܝܟ ܡܢ
3 ܚܡܪܐ ܒܣܝܡܐ. ܘܡܢ ܚܠܝܘܬܐ ܕܪܘܡܢܝ. * ܣܡܠܗ ܬܚܝܬ ܪܫܝ. ܘܝܡܝܢܗ ܡܓܦܦܐ ܠܝ.

dilecta, filia delitiarū ! Cæterùm hæc ſtatura 7
tua ſimilis eſt palmæ, & ubera tua botris. Dixi, 8
Conſcendā palmā, et apprehendā ramos ejus:
eruntq; ubera tua ut botri vitis, et odor vultûs
tui ut pomorū, Et palatū tuū ut vinū optimū, 9
utile patruo meo ad rectitudinē, agitans labia
mea & dentes meos. Ego patruo meo, ad me 10
regreſſus ej⁹. Veni patrue mi, exeam⁹ ad agrū, 11
pernoctemus in rure; Et manè adeamus vineā, 12
videamus num germinârit vitis, flores emerſerint, & floruerint malogranata : ibi dabo
tibi ubera mea. Mandragoræ ediderunt odo- 13
rem: et propè januas noſtras omnigena poma,
recentia ac vetera, mi patrue, recondi tibi.

CAP. VIII.

Quis te det fratrem mihi (lactârunt ubera 1
mea agnos meos) inveniam te in foro, te
oſculer, nec me contemnant. Ducam te, & 2
introducam in domum matris meæ, & in cubiculum genitricis meæ : potabo te ex vino
meo ſuaviſſimo, & ex dulcedine malogranatorum meorum. Læva ejus ſub capite meo, & dextera ejus amplexetur me. 3

שִׁיר הַשִּׁירִים׃ ח

, Jeruſalaim filiæ .vos Adjuravi
4 הִשְׁבַּעְתִּי אֶתְכֶם בְּנוֹת יְרוּשָׁלָ͏ִם
facietis evigilare cur & ,ſuſcitabitis cur
מַה־תָּעִירוּ וּמַה־תְּעֹרְרוּ אֶת־
. iſta Quæ ? voluerit donec amorem
5 הָאַהֲבָה עַד שֶׁתֶּחְפָּץ׃ מִי זֹאת
ſeſe adjungens , deſerto de aſcendens
עֹלָה מִן־הַמִּדְבָּר מִתְרַפֶּקֶת
malo ſub ? ſuum dilectum ſuper
עַל־דּוֹדָהּ תַּחַת הַתַּפּוּחַ
,tua mater te concepit ibi , te excitavi
עוֹרַרְתִּיךָ שָׁמָּה חִבְּלַתְךָ אִמֶּךָ
me Pone .te genuit parturiit ibi
6 שָׁמָּה חִבְּלָה יְלָדַתְךָ׃ שִׂימֵנִי
ſignaculum ut,tuū cor ſuper ſignaculū ut
כַחוֹתָם עַל־לִבֶּךָ כַּחוֹתָם
mors ut fortis quia,tuum brachium ſuper
עַל־זְרוֹעֶךָ כִּי־עַזָּה כַמָּוֶת
infernus ſicut dura , dilectio
אַהֲבָה קָשָׁה כִשְׁאוֹל
, ignis prunæ ejus prunæ : zelotypia
קִנְאָה רְשָׁפֶיהָ רִשְׁפֵּי אֵשׁ
non multæ Aquæ .Domini flamma
7 שַׁלְהֶבֶתְיָה׃ מַיִם רַבִּים לֹא
,dilectionem extinguere poterunt
יוּכְלוּ לְכַבּוֹת אֶת־הָאַהֲבָה
ſi : illam inundabunt non flumina &
וּנְהָרוֹת לֹא יִשְׁטְפוּהָ אִם־
ſuæ dom⁹ ſubſtantiā omnem vir dederit
יִתֵּן אִישׁ אֶת־כָּל־הוֹן בֵּיתוֹ
.eum contēnent contēnendo,dilectione in
בָּאַהֲבָה בּוֹז יָבוּזוּ לוֹ׃
:ei non ubera &,parvula nobis Soror
8 אָחוֹת לָנוּ קְטַנָּה וְשָׁדַיִם אֵין לָהּ
die in noſtræ ſorori faciemus quid
מַה־נַּעֲשֶׂה לַאֲחֹתֵנוּ בַּיּוֹם
, ipſa murus Si ? ea in ſermo fiet qua
9 שֶׁיְּדֻבַּר־בָּהּ׃ אִם־חוֹמָה הִיא
ſi & : argenti palatium eā ſup ædificem⁹
נִבְנֶה עָלֶיהָ טִירַת כָּסֶף וְאִם־
.cedri tabula eā ſuper muniam⁹ ,ipſa janua
דֶּלֶת הִיא נָצוּר עָלֶיהָ לוּחַ אָרֶז׃
: turres ſicut mea ubera & , murus Ego
10 אֲנִי חוֹמָה וְשָׁדַי כַּמִּגְדָּלוֹת
. reperiens ſicut ejus oculis in fui tunc
אָז הָיִיתִי בְעֵינָיו כְּמוֹצְאֵת
Selomoh ipſi fuit Vinea .pacem
11 שָׁלוֹם׃ כֶּרֶם הָיָה לִשְׁלֹמֹה
vineam tradidit,Hamon Bahal in
בְּבַעַל הָמוֹן נָתַן אֶת־הַכֶּרֶם
ej⁹ fructu in adduceret vir : cuſtodibus
לַנֹּטְרִים אִישׁ יָבִא בְּפִרְיוֹ
, mihi quæ mea Vinea .argenteos mille
12 אֶלֶף כָּסֶף׃ כַּרְמִי שֶׁלִּי
, Selomoh tibi mille : meas facies ad
לְפָנָי הָאֶלֶף לְךָ שְׁלֹמֹה
.ejus fructum cuſtodientibus ducenti &
וּמָאתַיִם לְנֹטְרִים אֶת־פִּרְיוֹ׃
ſocii , hortis in habitans O
13 הַיּוֹשֶׁבֶת בַּגַּנִּים חֲבֵרִים
.me fac audire,tuam vocem ad attendentes
מַקְשִׁיבִים לְקוֹלֵךְ הַשְׁמִיעִנִי׃
tibi aſſimilare & , mi dilecte Fuge
14 בְּרַח דּוֹדִי וּדְמֵה־לְךָ
cervorum hinnulo vel , capreæ
לִצְבִי אוֹ לְעֹפֶר הָאַיָּלִים
.aromatum montes ſuper
עַל הָרֵי בְשָׂמִים׃

TARGUM. תרגום

4 השבעתי יאמר מלכא משיחא משביע אנא עליכון עמי בית
ישראל מה דין אתון מתגרין בעמי ארעא למפק מן גלותא ומה
דין אתון מרדין בחילוותיה דגוג ומגוג אתעכיבו פון זעיר עד
דישיצון עממיא די עלו לאגחא קרבא לירושלם ובתר כן ידכר
לכון מרי עלמא רחמי צדיקיא ויהא רעוא מן קדמוהי למפרקכון׃
5 מי אמר שלמה נביא כד יחון מיתיא עתיד לאתבזעא טור משחא
וכל מיתיא דישראל עתידין למפק מתחותוהי ואפילו צדיקיא
דמיתו בגלותא עתידין למיתי אורח כוכיא מלרע לארעא ונפקין
מן תחות טור משחא ורשיעיא דמיתו ואתקברו בארעא דישראל
עתידין למהויהון רמין היכמה דרמי גבר אבנא באלא בכן יימרון
כל דיירי ארעא מה הוה זכותא דעמא הדין דסלקא מן ארעא רבא
רבבן כיומא דסלקת מן מדברא לארעא דישראל ומתפנקין על
רחמי מרהא כיומא דאתחמת תחות טורא דסיני לקבל ית
אוריתא ובהיא שעתא עתידא ציון דהיא אמן דישראל למילד ית
6 בנהא וירושלם לקבלא ית בני גלותא׃ שימני אמרין בני ישראל
ביומא ההוא לרבוניהון בבעו מנך שוי יתן כגלוף דעזקא על לבך
כגלוף דעזקא על אדרעך דלא נוסיף עוד למהוי גלין ארום תקיפא
כמותא אהבת אלהותך וחסינא כגהנם קנאתא דעמא מקנאן
לן ודבבו דנטרין לן דמיא לגומרין דאשא דגהנם דברא יתיה יי
ביומא תנינא לבריית עלמא לאוקידא ביה פלחי פולחנא נוכראה׃
7 מים אמר מרי עלמא לעמיה בית ישראל אלולי מתכנשין כל
עממיא דמתילן למוי ימא דאנון סגיאין לא יכלין למטפי ית
רחמי מנך ואי מתכנפין כל מלכי ארעא דמתילן למוי דנהרא
דנגדא בתקוף לא יכלין לממחי יתיך מעלמא ואלולי יהב גבר כל
ממון ביתיה למקני חוכמתא בגלותא אנא מהדר ליה כפיל
לעלמא דאתי וכל בזתא דיבזון מן משריתיה דגוג יהי די ליה׃
8 אחות בעדנא ההיא יימרון מלאכי שמיא אלין לאלין אומא חדא
אית לן בארעא וקלילן זכותהא ומלכין ושלטונין לית לה למפק
לאגחא קרבא עם משריתיה דגוג מה נעביד לאחתנא ביומא
9 דמלילו אומיא למסק עלהא לקרבא׃ אם יימר מיכאל רבהון
דישראל אם היא מתעתדא כאושא ביני עממיא ויהבא כספא
למקני יחוד שמיה דמרי עלמא נהי אנא ואתון עם ספריהון סחרין
לה כנדבכין דכספא ולית רשו לעממיא למשלט בה היכמה דלית
רשו לזחלא למשלט בכספא ואפילו אי מסכינא היא מן פקודיא
נבעי רחמין עלהא קדם יי וידכר לה זכות אוריתא דעסקן בירה
ינקיא דכתיבא על לוחא דלבא ומתעתדא לקבל אומיא כארזא׃
10 אני מתיבא כנשתא דישראל ואמרת אנא תקיפא בפתגמי
אוריתא כשורא ובנוי חסינין כמגדלא ובההיא זמנא תהי כנשתא
דישראל משכחא רחמין בעיני מרהא ויהון שאלין בשלמא כל
11 דיירי ארעא׃ כרם אומא חדא סלקת בעדביה דמרי עלמא
דשלמא עמיה דהיא מתילא לכרמא אותיב יתה בירושלם ומסר
יתה ביד מלכיא דבית דוד דיהון נטרין יתה היכמה דאריסא נטר
לכרמא בתר דמית שלמה מלכא דישראל אשתארא בידוי
רחבעם בריה אתא ירבעם בר נבט ופליג עמיה מלכותא ודבר מן
ידוי עסר שבטין על מימר פומיה דאחיה דמן שילה די הוא גברא
12 רבא׃ כרמי כד שמע שלמה מלכא דישראל נבואתיה דאחיה דמן
שילה בעא למקטליה וערק אחיה מן קדם שלמה ואזל למצרים
ובההיא שעתא אתאמר בנבואה למלכא שלמה למהוי איהו
שליט בעסר שבטין כל יומוהי ובתר מותיה יהי שליט בהון
ירבעם בר נבט ותרין שבטין יהודה ובנימן יהי שליט בהון
13 רחבעם בר שלמה׃ היושבת אמר שלמה בסוף נבואתיה עתיד מרי עלמא למימר לכנשתא
דישראל בסוף יומיא את כנשתא דישראל דמתילא לגנתא קלילא ביני אומיא ויתיבא בבית
מדרשא עם חברי סנהדרין ושאר עמא דציתין לקל ריש מתיבתא ואלפין מן פומיה פתגמיה
אשמיעיני אוריתא קל מליך בעדן דאת יתבא לזכאה ולחיבא ואהי מסכים לכל מה די את עבדת׃
14 ברח בההיא שעתא יימרון סבי כנשתא דישראל ערוק לך רחמי מרי עלמא מארעא הדא מסאבא
ותשרי שכנתך בשמי מרומא ובעדן עקתין די אנחנא מצלין קדמך תהי דמי לטביא די בעדן דדמיך
עינא חדא קמיץ ועינא חדא יהי פתיח או כאורזילא דאילא דבעדן דעריק מסתכל בתריה כן אנת
תהא משגח בן ומסתכל בצערן ובסגופן משמי מרומא עד זמן די תתרעי בן ותפרוק יתן ותעל יתן
על טורא דירושלם ותמן יסקון כהניא קדמך קטרת בוסמנין׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Dicet rex Meſſias: Adjuro vos popule mi domus Iſrael, quare 4
contenditis contra populos terrarum ut egrediamini ex capti-
vitate ? & quare vos vultis rebellare contra exercitum Gog
& Magog ? ſuſtinete modicum donec conſumantur populi
qui aſcenderunt ad belligerandum contra Jeruſalem, & poſteà
recordabitur vobis dominator ſeculi miſerationum juſtorum,
& erit voluntas à facie ejus ut liberet vos. Dixit Salomon 5
propheta : Quando reviviſcent mortui, futurum eſt ut ſcin-
datur mons olivarum : & omnes mortui Iſrael egreſſuri ſunt
ex eo ; & etiam juſti qui mortui ſunt in captivitate, venturi
ſunt per viam *cavernarum* ſub terra, & egredientur ex mon-
te olivarum. Futurum eſt autem ut impii qui mortui ſunt &
ſepulti ſunt in terra Iſrael, dejiciantur ſicut lapis quem pro-
jecit homo *ex funda* : tunc dicent omnes habitatores ter-
ræ : Quod eſt meritum populi hujus qui aſcendit de terra in
mille millibus, ſicut in die quo aſcendit de deſerto in terram
Iſrael, & delitiis affluunt propter miſerationes Domini ſui,
ſicut in die qua viſus eſt ſub monte Sinai ut ſuſciperet Legem?
& futurum eſt in illa hora ut Sion, quæ eſt mater Iſrael, pariat
filios ſuos, et Jeruſalem ſuſcipiat filios captivitatis. Dicent 6
filii Iſrael in die illa Domino ſuo : Obſecro te, pone nos
ſicut ſculpturam anuli ſuper cor tuum & ſicut ſculpturam
anuli ſuper brachium tuum, ut non addamus ultrà eſſe
exules : quoniam fortis eſt ſicut mors dilectio deitatis tuæ, &
robuſtus ſicut gehenna zelus populorum qui zelant nos, & in-
imicitia quam reſervant nobis, ſimilis eſt prunis ignis gehen-
næ, quem creavit Deus *die ſecundo creationis mundi* ut ſuc-
cendantur in eo cultores idololatriæ. Dixit dominator ſecu- 7
li populo ſuo domui Iſrael : Quamvis congregentur omnes
populi qui comparati ſunt aquis maris, quæ ſunt multæ, non
poterunt extinguere miſerationes meas à te : & ſi congre-
gati fuerint omnes reges terræ, qui comparati ſunt aquis flu-
minis quod defluit cum impetu, non poterunt evellere te à
ſeculo : & ſi dederit vir omnem pecuniam domus ſuæ ut poſ-
ſideat ſapientiam in captivitate, ego reddam ei duplum in ſe-
culo venturo ; & omnis præda quam deprædabitur de caſtris
Gog, ipſius erit. In illo tempore dicent angeli cœli ad in- 8
vicem : Gens una eſt nobis in terra, & merita ejus levia
ſunt, & reges & dominatores non habet ut egrediantur
ad pugnandum contra exercitum Gog ; quid faciemus ſo-
rori noſtræ in die qua locutæ fuerint nationes, ut aſcendant
contra eam ad bellum ? Dicet Michael princeps Iſrael : Si 9
ipſa ſteterit ſicut fundamentum inter populos, & dederit ar-
gentum ut poſſideat unitatem nominis dominatoris ſeculi,
erimus ego & vos cum ſcribis eorum circundantes eam
ſicut ordines argentei ; & non habebunt poteſtatem populi
ut dominentur in eam, ſicut non eſt poteſtas vermi ut do-
minetur argento : & quamvis ſit egena præceptis, quære-
mus miſerationem propter eam coram Domino, & recor-
dabitur ejus propter meritum Legis in qua laborant pueri,
quæ ſcripta eſt in tabulis cordis : & ſtat contra gentes ſicut
cedrus. Reſpondebit cœtus Iſrael & dicet : Ego fortis ſum 10
in verbis Legis ſicut murus, & filii mei robuſti ſicut tur-
res : & in illo tempore cœtus Iſrael inveniet miſericordi-
am in oculis Domini ſui, & ſalutabunt eum omnes habita-
tores terræ. Gens una aſcendit in ſortem dominatoris ſe- 11
culi, apud quem eſt pax, quæ comparata eſt vineæ : collo-
cavit eam in Jeruſalem, tradidítque eam in manum regum
domus David, ut cuſtodirent eam, ſicut agricola cuſtodit vi-
neam ſuam. Poſtquàm mortuus eſt Salomon rex Iſrael, re-
manſit in manu Roboam filii ejus, & venit Jeroboam fi-
lius Nabat, & diviſit cum eo regnum : & tulit de manu ejus
decem tribus, juxta verbum oris Achiæ Sylonitæ, qui erat
vir magnus. Quando audivit Salomon rex Iſrael pro- 12
phetiam Achiæ Sylonitæ, quæſivit occidere eum : & fugit
Achia à facie Salomonis, & abiit in Ægyptum : & in illo
tempore dictum eſt in prophetia Salomoni regi, quod domi-
naretur decem tribubus omnibus diebus ſuis, & poſt mortem
ſuam dominaretur eis Jeroboam filius Nabat : & duabus
tribubus, videlicet Juda & Benjamin, dominaretur Robo-
am filius Salomonis. Dixit Salomon in fine prophetiæ ſuæ : 13
Dicturus eſt dominator ſeculi cœtui Iſrael in fine dierum :
Tu congregatio Iſrael quæ comparata es horto minimo inter
nationes, & habitas in domo doctrinæ cum ſociis concilii &
reliquis populis qui auſcultant vocem principis ſcholæ, &
diſcunt ab ore ejus verba ejus : audire me fac Legem, vocem
[*ſcilicet*] ſermonum tuorum in tempore quo tu ſedes ad
juſtificandum & ad condemnandum, & aſſentiar omnibus
quæ feceris. In illo tempore dicent ſenes cœtus Iſrael : 14
Fuge tibi dilecte mi dominator ſeculi de terra hac immun-
da, & habitet majeſtas tua in cœlis excelſis : & in tempore
tribulationis quo nos oraverimus coram te, eris ſimilis ca-
preæ, quæ in tempore quo dormit, unus oculus ejus eſt clau-
ſus, & alter oculus eſt apertus : aut ſicut hinnulus cer-
vorum, qui in tempore quò fugit reſpicit poſt ſe : ſic tu
contemplaberis nos, & reſpicies tribulationem noſtram &
afflictionem noſtram de cœlis excelſis, uſque ad tempus quo
beneplacitum erit tibi in nobis, & redimes nos & intro-
duces nos in montem Jeruſalem, & ibi adolebunt Sacerdo-
tes coram te incenſum aromatum.

Finis Canticorum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

*ܐܘܡܝܬܟܝܢ ܒܢܬܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܕܐܢ ܬܥܝܪܢ ܘܐܢ ܬܥܝܪܢ ܠܚܘܒܐ. ܥܕܡܐ ܕܢܨܒܐ. *ܡܢܘ ܗܝ 4 5
ܗܕܐ ܕܣܠܩܐ ܡܢ ܡܕܒܪܐ. ܘܣܡܝܟܐ ܥܠ ܕܕܗ. ܬܚܝܬ ܬܦܘܚܐ ܐܥܝܪܬܟܝ. ܘܬܡܢ ܚܒܠܬܟܝ
ܐܡܟܝ. ܬܡܢ ܚܒܠܬܟܝ ܝܠܕܬܟܝ. *ܣܝܡܝܢܝ ܐܝܟ ܚܬܡܐ ܥܠ ܠܒܟ. ܘܐܝܟ ܚܬܡܐ ܥܠ ܕܪܥܟ. 6

Adjuro vos filiæ Jeruſalem, ſi excitetis & ſi 4
expergefaciatis ipſam dilectam donec velit.
Quæ eſt iſta quæ aſcendit à deſerto innixa 5
patruo ſuo ? ſub malo *arbore* excitavi te, &
ibi enixa eſt te mater tua, ibi te peperit ge-
nitrix tua. Pone me ſigillum ſuper cor tu- 6
um, & velut ſigillum ſuper brachium tuum :

Versio VULG. LAT.

4 Adjuro vos, filiæ Jerusalem, ne suscitetis,
neq; evigilare faciatis dilectam,
5 donec ipsa velit. Quæ est ista, quæ
ascendit de deserto, deliciis affluens,
innixa super dilectum suū? Sub arbore
malo suscitavi te : ibi corrupta est
mater tua, ibi violata est genitrix tua.
6 Pone me ut signaculum super cor tuū,
ut signaculum super brachium tuum:
quia fortis est ut mors dilectio, dura
sicut infernꝰ æmulatio: lampades ejꝰ,
7 lampades ignis atq; flammarū. Aquæ
multæ non potuerunt extinguere charitatem,
nec flumina obruent illam :
si dederit homo omnem substantiam
domûs suæ pro dilectione, quasi nihil
8 despiciet eam. Soror nostra parva, &
ubera non habet: quid facieꝰ sorori
nostræ in die quando alloquenda
9 est? Si murus est, ædificemus super eum
propugnacula argentea: si ostium
est, compingamus illud tabulis cedrinis.
10 Ego murus : & ubera mea sicut
turris, ex quo facta sum corā eo quasi
11 pacem reperiens. Vinea fuit pacifico
in ea, quæ habet populos : tradidit
eam custodibus, vir affert pro fructu
12 ejus mille argenteos. Vinea mea coram
me est. Mille tui pacifici, & ducenti
his, qui custodiunt fructus ejus.
13 Quæ habitas in hortis, amici auscultant:
fac me audire vocem tuam.
14 Fuge, dilecte mi, & assimilare capreæ
hinnulóque cervorum super montes
aromatum.

Versio GRÆC. LXX. Interp.

4 † Ὥρκισα ὑμᾶς θυγατέρες Ἰερουσαλὴμ † (δ) ἐν ταῖς ἰσχύσεσι
τοῦ ἀγροῦ· † (ε) ἐὰν ἐγείρητε καὶ ἐὰν ἐξεγείρητε
5 τὴν ἀγάπην † ἕως ἂν θελήσῃ. † Τίς αὕτη ἡ
ἀναβαίνουσα λελευκανθισμένη, † ἐπιστηριζομένη ἐπὶ
τὸν ἀδελφιδὸν αὐτῆς; † ὑπὸ μῆλον ἐξήγειρά σε·
† ἐκεῖ ὠδίνησέ σε ἡ μήτηρ σου, † ἐκεῖ ὠδίνησέ σε
6 ἡ τεκοῦσά σε. † Θές με ὡς σφραγίδα ἐπὶ τὴν καρδίαν
σου, † ὡς σφραγίδα ἐπὶ τὸν βραχίονά σου· † ὅτι κραταιὰ
ὡς θάνατος ἀγάπη, † (ζ) σκληρὸς ὡς ᾅδης
ζῆλος· † περίπτερα αὐτῆς περίπτερα πυρὸς, φλόγες
7 αὐτῆς. † Ὕδωρ πολὺ οὐ δυνήσεται σβέσαι τὴν ἀγάπην,
† καὶ ποταμοὶ οὐ (η) συγκλύσουσιν αὐτήν. † ἐὰν
δῷ ἀνὴρ (θ) πάντα τὸν βίον αὐτοῦ ἐν τῇ ἀγάπῃ, † ἐξουδενώσει
8 (ι) ἐξουδενώσουσιν αὐτόν. † Ἀδελφὴ ἡμῶν
μικρὰ καὶ μαστοὺς οὐκ ἔχει. † τί ποιήσωμεν τῇ ἀδελφῇ
9 ἡμῶν, † ἐν ἡμέρᾳ ᾗ ἐὰν λαληθῇ ἐν αὐτῇ; † Εἰ τεῖχός
ἐστιν, οἰκοδομήσωμεν ἐπ᾽ αὐτὴν ἐπάλξεις ἀργυρᾶς·
† καὶ εἰ θύρα ἐστὶ, διαγράψωμεν ἐπ᾽ αὐτὴν σανίδα
10 κεδρίνην. † Ἐγὼ τεῖχος, καὶ μαστοί μου ὡς
πύργοι· † ἐγὼ ἤμην ἐν ὀφθαλμοῖς (κ) αὐτῶν ὡς
11 εὑρίσκουσα εἰρήνην. † Ἀμπελὼν ἐγενήθη τῷ Σαλωμὼν
ἐν Βεελαμών· † ἔδωκεν τὸν ἀμπελῶνα αὐτοῦ
τοῖς (λ) τηροῦσιν. ἀνὴρ οἴσει ἐν καρπῷ αὐτοῦ χιλίους
12 ἀργυρίου. † Ἀμπελών μου ἐμὸς ἐνώπιόν μου, † οἱ χίλιοι
Σαλωμὼν, † καὶ οἱ διακόσιοι τοῖς τηροῦσι τὸν
13 καρπὸν αὐτοῦ. † Ὁ καθήμενος ἐν κήποις, ἑταῖροι
14 προσέχοντες † τῇ φωνῇ σου, ἀκούτισόν με. † Φύγε
ἀδελφιδέ μου, καὶ ὁμοιώθητι τῇ δορκάδι, † (μ) ἢ τῷ
νεβρῷ τῶν ἐλάφων ἐπὶ ὄρη τῶν ἀρωμάτων.

MS.A. (δ) ἐν ταῖς δυνάμεσιν, καὶ ἐν ταῖς (ε) τί ἐγείρητε καὶ τί ἐξεγείρητε (ζ) σκληρὸν (η) συγκλύσουσιν (θ) τὸν πάντα βίον (ι) ἐξουδενήσουσιν (κ) αὐτοῦ εὑρίσκουσα (λ) τηροῦσιν ** Ἀμπελών μου (μ) ἢ νεβρῷ ἐλάφων ἐπὶ τὰ ὄρη κοιλωμάτων. MS.A. Ἆσμα ᾀσμάτων.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ. Tranſ. LAT.

Adjuravi vos, filiæ Hierusalē [†] in 4
(f) viribꝰ agri, si suscitaveritis, & si
exuscitaveritis [d] charitatē, quoadusque
volueris. [e] Quæ est ista, 5
quæ (g) ascēdit dealbata, (h) innitēs
super fraternū suum? (i) Sub malo
exuscitavi te. (k) Ibi peperit te mater
tua, [f] ibi peperit te, quæ genuit
te. (l) Pone me ut [g] signaculū super 6
cor tuū, ut signaculū super brachium
tuum. (m) Quia valida, ut
mors, charitas; durus, sicut infernus,
zelꝰ: (n) alæ ejꝰ, alæ ignis, [h] flammæ
ejus. Aqua multa non poterit ex- 7
tinguere [†] charitatem, & flumina
non undabūt eam. Si dederit vir (o)
omne [i] vitā suam (p) in charitate;
contemptu contemnent eum. Soror 8
nostra (q) parva, et ubera non habet.
Quid faciemus sorori nostræ in die,
quā (r) loquetur in ea? Si murus est, 9
[k] ædificemꝰ super eā propugnacula
argentea: et si janua est, (ſ) [l] sculpamus
super eam tabulā cedrinam.
Ego [m] murus, & ubera mea sicut 10
turres. Ego eram in oculis (t) eorum
tanquam inveniens pacem: Vinea 11
facta est Salomoni in (u) Beelamon:
dedit vineam suam iis qui [n] servant.
Vir feret in (x) fructu ejus
mille argenti. Vinea (y) mihi 12
mea in conspectu meo : mille Salomoni,
& (z) ducenti servantibus
fructum ejus. Qui (æ) sedes in hor- 13
tis, amici sunt (aa) intendentes voci
tuæ: vocem tuam insinua mihi. Fu- 14
ge, [o] fraterne mi, & similis esto
capreolæ, aut hinnulo cervorum
super [p] montes (bb) aromatum.

Versio ÆTHIOPICA.

እምሐልኩክን : እዋልደ : ኢየሩሳሌም:: በኃ 4
ይሉ: ወበጽንዑ: ለገደም::ወእመ: ተንሥአ:
ወአንሥአ : ሙታን::አፈቅሮ: እስከ : አመ:
ፈቀደ::=: መኑ: ይእቲ: ዛቲ: እንተ: ትሔ 5
ውጽ : ከመ : ጎሕ::
ፎ: ጽዕዱት : ወብርህት::እንተ : ትትመረጐ
ዝ: በወልድ: እኁሃ::እምኅበ: ኮል: እንሣእ
ኩከ::ወበህየ:ሐመት: ብከ: እምከ: ወሳደት
ከ::=: እንብረኒ:ከመ:ሕልቀት:ውስተ:ልብ 6
ከ::ወከመ: ማዕተብ: ውስተ: መዝራዕትከ::
እስመ:ፍቅር:ከመ:ሞት:ፅንዕት::ወድርክት:
ከመ:ሲኦል:ቅንዓት::ክነፊሃ: ክነፈ: እሳት:ወ
ሳህብ::=: ወማይ:ብዙኅ: ኢይክል: አጥፋ 7
ኦታ:ለፍቅር::ለእመ: ወሀበ: ብእሲ: ብእሲ:
ኵሎ: ንብረቶ : ለፍቅር::መንና : ኢይሜንን
ዋ::=: እኅትነ:ንስቲት: ይእቲ: ወአጥባት: 8
አልባ::መንተ: ንገብር: ለእኅትነ: በዕለተ:አ
መ:ይትናገሩ: ባቲ::=: እመ: አረፍት: ይእ 9
ቲ:ንገብር: ላቲ: ተድባበ: ዘብሩር::እመ: ኆ
ኅት : ይእቲ: ንሕንጽ: ላቲ: ማዕጾ: ዘቄድሮ
ስ::=: አነ:ቅጽር:ወአጥባትየ:ከመ:ማኅፈ 10
ድ::አነ:ወይእቲ: በአዕይንቲሁ: እንተ: እረክ
ብ:ሰላመ::=: ዓጸደ:ወይን:ኮነ:ዘሰሎሞን:በ 11
ብኤላሞን::ወወሀበ:ዓጸደ:ወይን:ለእለ:የዐቅ
ቡ : ፍሬሁ::ብእሲ: ብእሲ: ይሁብ:ፍሬሁ::
በበጊዜሁ:አሠርቱ:ምእት: ብሩረ::=: ዐሠ 12
ርቱ: ምእት:ኮነ: ዘሰሎሞን::ወክሌሌቱ: ም
እት:ለእለ: የዐቅቡ: ፍሬሁ::=: ዘይነብር: 13
ውስተ: ገነት: ካልአን: ይፔእይዎ::ቃለከ: አ
ስምዓኒ::=: ጕየይ: አንተ: ወልድ: እኁየ: 14
ወተመሰሎ: ለወይጠል::ወከመ: ወሬዛ: ኃያል:
ውስተ:አድባረ:ቤቴል::=:

ተፈጸመ::

INTERP. ÆTH. [†] in virtutibus & in [d] hominem quem diligo, [e] Quænam est ista quæ prospicit ut aurora dealbata splendida, innixa super nepotem suum? [f] genitrix tua. [g] ut annulum super [h] & flammæ. [†] charitatem. Si dederit [i] victum suum [k] faciamus ei pinnas argenteas: [l] ædificemus ei [m] arx, & [n] servant fructum ejus. Vir omnis feret fructum ejus, quilibet in tempore suo mille argenti : mille fuerunt Salomoni, [o] tu nepos mi, [p] montes Bethel. Finis

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* أستحلفكن يا بنات اورسليم بقدرات الحقل وقوايه• إن أنتم أقمتم وأقصيتم المحبة إلي أن 4
تشاء هي * من هذه الصاعدة مبيضة• مستندة على ابن أخيها• أقصتك تحت التفاحة• هناك 5
ابتاعتك أمك• تخصصت بك والدتك * ضعني على قلبك كمختم * وعلى ساعديك كخاتم * 6
فان المحبة معترمة كالموت• والغيرة قاسية كالجحيم• بسط أجنحتها كانبساط أجنحة النار• هذا
مقدار لهيب المحبة * فالماء الكثير لن يستطيع يطفي المحبة * والانهار ما تغسل آثارها * 7
ان بذل الانسان كل عمره في المحبة• وانما يحتقرونه احتقارا * الاخت عندنا صغيرة ولا ثديين 8
لها• ماذا نصنع يا ابن اخينا في اليوم الذي نتكلم فيه * فان كانت هي سور فلنبن 9
عليها الواح فضة• وان كانت بابا فلننقش عليها دف ارز * انا سور وثدياي برجان• انا كنت 10
في عينيه واجدة سلامة * صار لسليمن كرم في بعل امون• فدفع كرمه الي نواطير يحفظونه• 11
حمل انسان بثمرته الوفا من الفضة * الكرم الذي لي امامي * الوف لك يا سليمان• والمايتان 12
للذين يحفظون ثمرته * الجالس في البساتين * آخرون يصغون اليه * اسمعيني صوتك * تنح يا 13 14
ابن اخي * وتشبه بالغزال او بخشف الايلة على جبال الطيوب *
* والسبح لله دايما ابدا *

Obtestor vos O filiæ Jerusalem, per poten- 4
tias agri ejúsque virtutes, ne excitetis ne-
vè expergefaciatis dilectam, quoad ipsa
voluerit. Quæ est ista ascendens dealbata, 5
innixa nepoti suo? Excitavi te sub malo
arbore : ibi te destruxit mater tua, te par-
turivit genitrix tua. Imponito me cordi 6
tuo ut sigillum, & brachiis tuis ut annu-
lum : amor enim violentus est ut mors, &
zelotypia crudelis ut infernus : expansio
alarum ejus velut expansio alarum ignis.
Talis est vis flammæ amoris : Nam aqua 7
plurima haudquaquam poterit extinguere
amorem, & flumina haud abluent vesti-
gia ejus. Si prodegerit quis totam ætatem
suam in amore, nihilominus maximo in
contemptu habebunt illum. Soror adest 8
nobis parva, nondum habens mammas,
quid faciemus O nepos noster, in die quā
loquetur? Quòd si ipsa murus est, fabri- 9
cemus super eam laminas argenteas: sin au-
tem sit janua, metiamur super eam asserem
cedrinū. Ego murus sum, & meæ mammæ 10
geminæ turres : facta sum in oculis ejus
inveniens pacem. Possidet Salomon vineā 11
in Baal-amon, deditque vineam suam cu-
stodibus asservandam : quorum quilibet
percepit ex ejus fructu millia numorum
argenteorum. Vinea quæ me attinet, ob 12
oculos est mihi: millia tibi O Salomon, du-
centa verò his qui custodiunt fructum e-
jus. Sedens in hortis, quem alii auscul- 13
tant, audire me fac vocem tuam. Secede 14
O mi nepos, & similis esto cervo aut hin-
nulo capreæ super montes aromatum.

Laus Deo perpetua & infinita.

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

ܡܛܠ ܕܥܫܝܢܐ ܐܝܟ ܡܘܬܐ ܚܘܒܐ. ܘܩܫܝܐ ܐܝܟ ܫܝܘܠ ܛܢܢܐ. ܙܠܝܩܘܗܝ ܙܠܝܩܐ ܕܢܘܪܐ
ܘܫܠܗܒܝܬܐ. * ܡܝܐ ܣܓܝܐܐ ܠܐ ܡܫܟܚܝܢ ܠܡܕܥܟܘ ܠܚܘܒܐ. ܘܢܗܪܘܬܐ ܠܐ ܢܫܛܦܘܢ ܠܗ. 7
ܐܢ ܢܬܠ ܓܒܪܐ ܟܠܗ ܩܢܝܢܐ ܕܒܝܬܗ ܒܚܘܒܐ. ܡܒܣܪܘ ܢܒܣܪܘܢ ܒܗ. * ܚܬܐ ܐܝܬ ܠܢ 8
ܙܥܘܪܬܐ. ܘܬܕܝܐ ܠܝܬ ܠܗ. ܡܢܐ ܢܥܒܕ ܠܚܬܢ. ܒܝܘܡܐ ܕܡܬܡܠܠ ܒܗ. * ܐܢ ܫܘܪܐ ܗܝ 9
ܢܒܢܐ ܥܠܝܗ ܥܠܝܬܐ ܕܣܐܡܐ. ܘܐܢ ܬܪܥܐ ܗܝ. ܢܛܘܪ ܥܠܝܗ ܠܘܚܐ ܕܐܪܙܐ. * ܐܢܐ ܫܘܪܐ. ܘܬܕܝ 10
ܡܓܕܠܐ. ܗܝܕܝܢ ܗܘܝܬ ܒܥܝܢܘܗܝ. ܐܝܟ ܡܫܟܚܬ ܫܠܡܐ. * ܟܪܡܐ ܐܝܬ ܗܘܐ 11
ܠܫܠܝܡܘܢ. ܘܥܒܕ ܦܐܪܐ. ܝܗܒܬ ܟܪܡܐ ܠܢܛܘܪܐ. ܓܒܪܐ ܡܝܬܐ ܒܦܐܪܘܗܝ ܐܠܦܐ
ܕܟܣܦܐ. * ܟܪܡܐ ܕܝܠܝ ܩܕܡܝ. ܐܠܦܐ ܠܟ ܫܠܝܡܘܢ. ܘܡܐܬܝܢ. ܠܢܛܘܪܝ ܦܐܪܐ. 12
* ܐܝܠܝܢ ܕܝܬܒܝܢ ܒܓܢܐ ܘܨܝܬܝܢ ܠܩܠܟ. ܐܫܡܥܝܢܝ. * ܐܬܗܦܟ ܕܕܝ. ܘܕܡܝ ܠܟ 13 14
ܠܛܒܝܐ ܘܠܥܘܠܐ ܕܐܝܠܐ ܥܠ ܛܘܪܝ ܒܣܡܐ.
* ܫܠܡܬ ܚܟܡܬ ܚܟܡܬܐ. ܕܗܝ ܫܝܪܐ ܫܝܪܝܢ *

nam fortis est ut mors amor, & dura sicut in-
fernus zelotypia: radii ejus radii sunt ignis ac
flammæ. Aquæ multæ nequeunt extinguere 7
amorem, & flumina haud abripient illum. Si
quis dederit omnes opes domûs suæ pro amo-
re, planè deridebunt eum. Soror nobis est 8
parva, & ubera non habet; quid faciemus
sorori nostræ in die quo sermo fiet de ipsa?
Si murus est, ædificemus super eam pinnas ar- 9
genteas : sin fuerit janua, compingamus super
eam tabulas cedrinas. Ego murus sum, & ube- 10
ra mea turres : tunc eram in oculis ejus quasi
pacem consecuta. Vineam habebat Salomon 11
fructûs feracissimam : dedi vineā custodibus :
vir obtulit pro fructibus ejus mille argenteos.
Vinea mea coram me est: mille tibi Salomon, 12
& ducenti fructuum custodibus. Eos qui se- 13
dent in hortis, & auscultant vocem tuam, au-
dire me fac. Revertere mi patrue, similis esto 14
capreolo & hinnulo cervorum super montes
aromatum.

Sapientiæ Sapientiarum, hoc est
Cantici canticorum
FINIS.

Notandum hic, Librum Canticorum, quem communiter in octo dividimus Capita, (quæ literis Romanis expreſsimus, verſibus etiam ſecundùm Græcam verſionem appoſitis;) apud Æthiopes, in quinque tantum tmemata diſtingui, quæ figuris numeralibus illorum propriis indicantur.

ESAIAS.

ספר ישעיהו

CAPUT I. א

,Jeruſalaim & Jehudah ſuper vidit quam , Amos filii Jeſahiahu Viſio
1 חֲזוֹן יְשַׁעְיָהוּ בֶן־אָמוֹץ אֲשֶׁר חָזָה עַל־יְהוּדָה וִירוּשָׁלָ͏ִם
regum Jehizchijahu , Achaz , Jotham , Huzzijahu diebus in
בִּימֵי עֻזִּיָּהוּ יוֹתָם אָחָז יְחִזְקִיָּהוּ מַלְכֵי
quoniam , terra percipe auribus & , cœli Audite .Jehudah
2 יְהוּדָה׃ שִׁמְעוּ שָׁמַיִם וְהַאֲזִינִי אֶרֶץ כִּי
ipſi & , exaltavi & ,*magnificavi* Filios :eſt locutus DOMINUS
יְהוָה דִּבֵּר בָּנִים גִּדַּלְתִּי וְרוֹמַמְתִּי וְהֵם
aſinus & , ſuũ poſſeſſorem bos Cognovit .me contra ſunt prævaricati
3 פָּשְׁעוּ בִי׃ יָדַע שׁוֹר קֹנֵהוּ וַחֲמוֹר
.intellexit non meꝰ populus, cognovit non Iſrael : ſui domini præſepe
אֵבוּס בְּעָלָיו יִשְׂרָאֵל לֹא יָדַע עַמִּי לֹא הִתְבּוֹנָן׃
, *malignantium* ſemini , iniquitate gravi populo , peccatrici genti Væ
4 הוֹי ׀ גּוֹי חֹטֵא עַם כֶּבֶד עָוֺן זֶרַע מְרֵעִים
fecerunt iraſci , DOMINUM dereliquerunt : corruptoribus filiis
בָּנִים מַשְׁחִיתִים עָזְבוּ אֶת־יְהוָה נִאֲצוּ
quid *Super* .retrorſum ſe alienaverunt , Iſrael Sanctum
5 אֶת־קְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל נָזֹרוּ אָחוֹר׃ עַל־מֶה
, *ægritudinem* ad caput omne ? *defectionem* addetis , adhuc percutiemini
תֻכּוּ עוֹד תּוֹסִיפוּ סָרָה כָּל־רֹאשׁ לָחֳלִי
,*integritas* eo in non *caput* ad uſque pedis planta A .infirmum cor omne &
6 וְכָל־לֵבָב דַּוָּי׃ מִכַּף־רֶגֶל וְעַד־רֹאשׁ אֵין־בּוֹ מְתֹם
,circumligata nec , ſunt compreſſa non : *recens* plaga & , livor & , vulnus
פֶּצַע וְחַבּוּרָה וּמַכָּה טְרִיָּה לֹא־זֹרוּ וְלֹא חֻבָּשׁוּ
ſuccenſæ veſtræ civitates , deſolata veſtra Terra .oleo in *mollita* nec
7 וְלֹא רֻכְּכָה בַּשָּׁמֶן׃ אַרְצְכֶם שְׁמָמָה עָרֵיכֶם שְׂרֻפוֹת
deſolatio & ; *eam depaſcentes* alieni vobis coram veſtram *humum* : igni
אֵשׁ אַדְמַתְכֶם לְנֶגְדְּכֶם זָרִים אֹכְלִים אֹתָהּ וּשְׁמָמָה
umbraculum ſicut Sijon filia derelinquetur Et .alienorum everſio ſicut
8 כְּמַהְפֵּכַת זָרִים׃ וְנוֹתְרָה בַת־צִיּוֹן כְּסֻכָּה
.*obſeſſa* civitas ſicut , cucumerario in *diverſorium* ſicut ; vinea in
בְכָרֶם כִּמְלוּנָה בְמִקְשָׁה כְּעִיר נְצוּרָה׃
, *parum ut ſuperſtitem* nobis reliquiſſet exercituum DOMINUS Niſi
9 לוּלֵי יְהוָה צְבָאוֹת הוֹתִיר לָנוּ שָׂרִיד כִּמְעָט
Audite .fuiſſemus aſſimilati Hamorah ipſi ,fuiſſemus Sedom ſicut
10 כִּסְדֹם הָיִינוּ לַעֲמֹרָה דָּמִינוּ׃ שִׁמְעוּ
legem percipite auribus ; Sedom *gubernatores* DOMINI verbum
דְבַר־יְהוָה קְצִינֵי סְדֹם הַאֲזִינוּ תּוֹרַת
multitudo mihi quid Ut .Hamorah populus noſtri Dei
11 אֱלֹהֵינוּ עַם עֲמֹרָה׃ לָמָּה־לִּי רֹב־
aſcenſionibus ſum Satur ? DOMINUS *dicet* , veſtrarum victimarum
זִבְחֵיכֶם יֹאמַר יְהוָה שָׂבַעְתִּי עֹלוֹת
agnorum & *juvencorum* ſanguinem & : *pinguium* adipe & , arietum
אֵילִים וְחֵלֶב מְרִיאִים וְדַם פָּרִים וּכְבָשִׂים
; *meis faciebus conſpici* veniretis Cùm .volui non hircorum &
12 וְעַתּוּדִים לֹא חָפָצְתִּי׃ כִּי תָבֹאוּ לֵרָאוֹת פָּנָי
Ne ? mea atria *conculcare* , veſtra manu de hoc quæſivit quis
13 מִי־בִקֵּשׁ זֹאת מִיֶּדְכֶם רְמֹס חֲצֵרָי׃ לֹא
ipſa abominatio ſuffimentum : *mendacii munus* afferre addatis
תוֹסִיפוּ הָבִיא מִנְחַת־שָׁוְא קְטֹרֶת תּוֹעֵבָה הִיא
iniquitatem potero non , *convocationem vocare* , ſabbatum & , *menſem* : mihi
לִי חֹדֶשׁ וְשַׁבָּת קְרֹא מִקְרָא לֹא־אוּכַל אָוֶן
.*retentionem &*
וַעֲצָרָה׃

Verſio VULG. LAT.

PROPHETIA ISAIÆ.

CAP. I.

1 VISIO Iſaiæ filii Amos, quã
vidit ſuper Judã & Jeruſalẽ, in
diebꝰ Oziæ, Joathan, Achaz, &
2 Ezechiæ, regum Juda. Audite
cœli, & auribꝰ percipe terra,
quoniã Dñs locutꝰ eſt. Filios
enutrivi, et exaltavi: ipſi autem
3 ſpreverunt me. Cognovit bos
poſſeſſorem ſuũ, & aſinus præſepe
domini ſui: Iſrael autem
me non cognovit, & populus
4 meus non intellexit. Væ genti
peccatrici, populo gravi iniquitate,
ſemini nequã, filiis ſceleratis:
dereliquerunt Dñm,
blaſphemaverunt Sanctũ Iſrael,
abalienati ſunt retrorſum.
5 Super quo percutiã vos ultrà,
addentes prævaricationem ?
omne caput languidũ, et omne
6 cor mœrens. A planta pedis
uſq; ad verticem, non eſt in eo
ſanitas: vulnꝰ, et livor, et plaga
tumens, non eſt circumligata,
nec curata medicamine, neque
7 fota oleo. Terra veſtra deſerta,
civitates veſtræ ſuccenſæ
igni: regionem veſtram
coram vobis alieni devorant,
& deſolabitur ſicut in
8 vaſtitate hoſtili. Et derelinquetur
filia Sion ut umbraculũ
in vinea, & ſicut tugurium in
cucumerario, & ſicut civitas,
9 quæ vaſtatur. Niſi Dñs exercituum
reliquiſſet nobis ſemen,
quaſi Sodoma fuiſſemꝰ, et quaſi
Gomorrha ſimiles eſſemus.
10 Audite verbum Dñi, principes
Sodomorũ; percipite auribus
legẽ Dei noſtri, populꝰ Gomorrhæ.
11 Quò mihi multitudinem
victimarũ veſtrarũ, dicit Dñs ?
plenꝰ ſum: holocauſta arietũ,
et adipẽ pinguiũ, et ſanguinẽ
vitulorũ, et agnorũ, et hircorũ,
12 nolui. Cùm veniretis ante
conſpectũ meũ, quis quæſivit
hæc de manibꝰ veſtris, ut ambularetis
13 in atriis meis ? Ne
offeratis ultrà ſacrificium fruſtrà:
incenſũ abominatio eſt
mihi. Neomeniã, et ſabbatũ,
et feſtivitates alias non feram,
iniqui ſunt cœtus veſtri:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

(·) ἩΣΑΪ́ΑΣ.

ΚΕΦ. α΄.

1 Ὅρασις ἣν εἶδεν Ἡσαΐας υἱὸς Ἀμώς,
ἣν εἶδε κατὰ τῆς Ἰουδαίας καὶ κατὰ Ἱερουσαλήμ,
ἐν βασιλείᾳ Ὀζίου, καὶ Ἰωάθαμ,
καὶ (α) Ἄχαζ, καὶ Ἐζεκίου, οἳ ἐβασίλευσαν
2 τῆς Ἰουδαίας. Ἄκουε οὐρανέ, καὶ ἐνωτίζου
γῆ, ὅτι κύριος ἐλάλησεν, Υἱοὺς ἐγέννησα
3 καὶ ὕψωσα, αὐτοὶ δέ με ἠθέτησαν. Ἔγνω
βοῦς τὸν κτησάμενον, καὶ ὄνος τὴν
φάτνην τοῦ κυρίου αὐτοῦ· Ἰσραὴλ δέ με
4 οὐκ ἔγνω, καὶ ὁ λαός με οὐ συνῆκεν. Οὐαὶ
ἔθνος ἁμαρτωλόν, λαὸς πλήρης ἁμαρτιῶν,
σπέρμα πονηρόν, υἱοὶ ἄνομοι, (ˀ) ἐγκατελίπατε
τὸν κύριον, καὶ παρωργίσατε τὸν
5 ἅγιον τοῦ Ἰσραήλ. Τί ἔτι πληγῆτε προστιθέντες
ἀνομίαν; πᾶσα κεφαλὴ εἰς πόνον,
6 καὶ πᾶσα καρδία εἰς λύπην· Ἀπὸ
ποδῶν ἕως (β) κεφαλῆς, οὐκ ἔστιν ἐν αὐτῷ
ὁλοκληρία, οὔτε τραῦμα, οὔτε μώλωψ, οὔτε
πληγὴ φλεγμαίνουσα· οὐκ ἔστι μάλαγμα
ἐπιθεῖναι, οὔτε ἔλαιον, οὔτε καταδέσμους.
7 Ἡ γῆ ὑμῶν ἔρημος, αἱ πόλεις ὑμῶν πυρίκαυστοι·
τὴν χώραν ὑμῶν ἐνώπιον ὑμῶν
ἀλλότριοι κατεσθίουσιν αὐτήν, καὶ ἠρήμωται
8 κατεστραμμένη ὑπὸ λαῶν ἀλλοτρίων. Ἐγκαταλειφθήσεται
ἡ θυγάτηρ Σιών, ὡς
σκηνὴ ἐν ἀμπελῶνι, καὶ ὡς ὀπωροφυλάκιον
ἐν (ƨ) σικυηράτῳ, ὡς πόλις πολιορκουμένη.
9 Καὶ εἰ μὴ κύριος Σαβαὼθ ἐγκατέλιπεν
ἡμῖν σπέρμα, ὡς Σόδομα ἂν ἐγενήθημεν,
καὶ ὡς Γόμορρα ἂν (γ) ὡμοιώθημεν.
10 Ἀκούσατε λόγον κυρίου, ἄρχοντες Σοδόμων·
προσέχετε νόμον θεοῦ, λαὸς Γομόρρας.
11 (δ) Τί μοι πλῆθος τῶν θυσιῶν
ὑμῶν, λέγει κύριος; πλήρης εἰμὶ ὁλοκαυτωμάτων
κριῶν, καὶ στέαρ ἀρνῶν καὶ αἷμα
12 ταύρων καὶ τράγων οὐ βούλομαι, Οὐδ᾽
ἂν ἔρχησθε ὀφθῆναί μοι· τίς γὰρ ἐξεζήτησε
ταῦτα ἐκ τῶν χειρῶν ὑμῶν; πατεῖν
13 τὴν αὐλήν μου οὐ προσθήσεσθε. Ἐὰν (ε) φέρητε
σεμίδαλιν, μάταιον θυμίαμα, βδέλυγμά
μοι ἐστί. τὰς νουμηνίας ὑμῶν, καὶ
τὰ σάββατα, καὶ ἡμέραν μεγάλην οὐκ ἀνέχομαι·
νηστείαν, καὶ ἀργίαν,

ESAIAS.

CAP. I.

VISIO, quam vidit Eſaias 1
*filius Amos, quam vidit (a) contra
Judæam, & contra Hieruſalem,
in regno Oziæ, & Joatham,
& Achaz, & Ezeciæ, qui regnaverunt
in Judæa. Audi, cœ-* 2
*lum; & auribus percipe, terra:
quia Dominus locutus eſt; Filios
(b) genui, & exaltavi: ipſi autem
ſpreverunt me. Cognovit bos* 3
*poſſeſſorem, & aſinus præſepe domini
ſui: Iſrael autem me non cognovit:
& populus (c) me non
intellexit. Væ gens peccatrix, po-* 4
*pulus plenus peccatis, ſemen nequam,
filii (d) ſceleſti: dereliquiſtis
Dominum, & ad iracundiam
concitâſtis Sanctum (e) Iſrael.
Quid adhuc percutiamini addentes* 5
*(f) iniquitatem? Omne caput in
labore, & omne cor in mœrore:
A pedibus uſque ad caput, non eſt* 6
*in eo integritas, (g) neque vulnus,
neque livor, neque plaga tumens.
Non eſt (h) malagma imponere,
neque oleum, neque alligaturas.
Terra veſtra deſerta, civita-* 7
*tes veſtræ igne ſuccenſæ. Regionem
veſtram in conſpectu veſtro alieni
devorant eam: & deſolata eſt, ſubverſa
à populis alienis. Derelinque-* 8
*tur filia Sion, ſicut tabernaculum
in vinea, & ſicut pomorum cuſtodia
(i) in cucumerario, ſicut civitas
expugnata. Et, niſi Dominus* 9
*Sabaoth reliquiſſet nobis ſemen;
quaſi Sedoma facti eſſemus, &
quaſi Gomorrha, ſimiles eſſemꝰ. Au-* 10
*dite verbũ Domini, principes Sodomorum:
attendite legi Dei, populus
Gomorrhæ. Quò mihi multitudi-* 11
*nem ſacrificiorum veſtrorum, dicit
Dominus? Plenus ſum holocauſtis
arietum: & adipem agnorum,
& ſanguinem taurorum, & hircorum
(k) nolo: Neque veniatis, ut* 12
*appareatis mihi. Quis enim quæſivit
hæc de manibus veſtris? Calcare
atrium meum non apponetis.
Si afferatis ſimilam; vanum in-* 13
*cenſum, abominatio mihi eſt. Neomenias
veſtras, & ſabbata, & diem
(l) magnum non fero: jejunium,
& otium,*

MS. A. (·) Ἡσαΐας προφήτης. (α) Ἄχας, † (ˀ) ἐγκατελίπετε (β) κεφαλῆς, οὔτε τραῦμα, οὔτε μώλωψ (ƨ) Σικυηράτῳ (γ) ὁμοιώθημεν. (δ) Τί ἐμοὶ (ε) φέρητέ μοι σεμίδαλιν,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

1 נבואת ישעיה בר אמוץ דאתנבי על אנש יהודה ויתבי ירושלם ביומי עזיה יותם אחז
2 יחזקיהו מלכיא דבית יהודה׃ שמעו שמיא דזעו כד יהבית אוריתי לעמי ואציתי ארעא
דאתרגישת מן קדם פתגמי ארי יי מלל עמי בית ישראל קריתי להון בנין חבבתנון
3 ויקרתנון ואנון מרדו במימרי׃ ידע תורא זבניה וחמרא אוריא דמרוהי ישראל לא
4 אליף למדע דחלתי עמי לא אסתכל למתב לאוריתי׃ וי על דאתקריאו עם קדיש וחטו
כנישא בחירא ואסגיאו חובין אתכניאו בזרעא רחימא ואבאישו אתאמר להון בנין
חביבין וחבילו אורחתהון שבקו ית פולחנא דיי קצו בדחלת קדישא דישראל ובדיל
5 עובדיהון בישיא אסתחרו והוו לאחורא׃ לא מסתכלין למימר על מה לקינא עוד
6 מוספין למחטי ולא אמרין מא דין כל ריש מרע וכל לבב דוי׃ משאר עמא ועד רישא
לית בהון דשלים בדחלתי כולהון סרבין ומרדין אתגעלו בחובין כמחא מרססא לא
7 שבקין מורדניהון ולא מחמדין לתיובתא אף לא זכן להון לאגנא עליהון׃ ארעכון
צדיא קרויכון יקידת נור ארעכון לקבליכון עממיא מחסנין יתהא ובחוביהון צדיאת
8 מנכון אתחלפת והות לנוכראין׃ ואשתארת כנשתא דציון כמטללתא בכרמא בתר
9 דקטפוהי כערסל מבתותא במקשיא בתר דאבעיוהי כקרתא דצירין עלה׃ אלולפון
מותר טוביה דיי צבאות אשאר לנא שיזבא ברחמוהי אית עמנא חובין דכאנש סדום
10 פון אבדנא וכיתבי עמורה אשתיצנא׃ קבילו פתגמא דיי שלטוניא דעובדיהון בישין
11 כשלטוני סדום אציתו לאוריתא דאלהנא עמא דעובדיהון דמין לעם עמרה׃ לא רעוא
קדמי בסגיאות נכסת קודשיכון אמר יי שבעית מסת עלות דכרין ותרב פטימין ודם
12 תורין ואמרין ונדין דכאלין לא רעוא קדמי בהון׃ כד אתון אתן לאתחזאה קדמי מן
13 תבע דא מידכון למיתי ולאתדשא עזרתי׃ לא תוספון לאיתאה מנחת אניסא קורבן
מרחק הוא קדמי ירחין ושבין כנישא אתון מתכנשין לא שבקין חוביכון לקבלא
צלותכון בעדן כנישתכון׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAPUT I.

PRophetia Eſaiæ filii Amos, quam prophetavit ſuper viros Juda, & ha- 1
bitatores Jeruſalem in diebus Oziæ, Jotham, Achaz, Ezechiæ, regum do-
mus Juda. Audite cœli, qui commoti eſtis, quando dedi legem meam po- 2
pulo meo; & auſculta terra, quæ contremuiſti à facie Verbi mei, quoni-
am Dominus locutus eſt. Populus meus domus Iſrael, quos vocavi filios,
dilexi eos, & honorificavi eos, & ipſi rebellaverunt in verbum meum.
Cognovit bos emptorem ſuum, & aſinus præſepe domini ſui; Iſrael au- 3
tem non didicit ut ſciret timorem mei: populus meus non intellexit ut
converteretur ad *legem meam*. Væ eis qui vocati ſunt populus ſanctus, & 4
peccaverunt; congregatio electa, & multiplicaverunt delicta: cognomi-
nati ſunt ſemen electum, & malè egerunt; dicti ſunt filii dilecti, & cor-
ruperunt vias ſuas; dereliquerunt cultum Domini; deteſtati ſunt timorem
Sancti Iſrael, & propter opera eorum prava averſi ſunt, & facti ſunt retror-
ſum. Non animadverterunt, dicentes: Propter quid percuſſi ſumus? adhuc 5
addunt peccare, nec dicunt: Quare omne caput languidum; & omne cor
mœrens? A reliquo populo uſque ad principes, non eſt in eis qui perfe- 6
ctus ſit in timore mei: omnes ſunt contumaces, & rebelles; coinquinati
ſunt in peccatis, ſicut plaga ulceroſa; non dimittunt ſuperbias ſuas, nec
deſiderant agere pœnitentiam, neque ſunt in eis juſtitiæ quibus protegan-
tur. Terra veſtra deſerta, civitates veſtræ ſuccenſæ igni: terram veſtram co- 7
ram vobis populi poſſident eam, et propter peccata *eorum* deſerta eſt, *à
vobis* tranſlata eſt ad alienos. Et relinquetur cœtus Sion, ſicut umbraculũ 8
in vinea, poſtquam vindemiarunt eam; ſicut tugurium manens in cucume-
rario poſtquam legerunt cucumeres ab eo; ſicut civitas quæ obſidetur. Niſi 9
ſuperexcedens bonitas Domini exercituum reliquiſſet nobis redemptio-
nem in miſerationibus ſuis; peccata ſunt in nobis propter quæ quaſi viri
Sodomæ periiſſemꝰ, & quaſi habitatores Gomorræ conſumpti eſſemꝰ. Suſci- 10
pite verbum Dñi principes, quorum opera ſunt mala, ſicut principum So-
domæ; auſcultate legem Dei noſtri populi, quorum opera ſimilia ſunt po-
pulo Gomorræ. Non eſt beneplacitum coram me in multitudine victima- 11
rum veſtrarum, dicit Dñs: ſatiatus ſum abundantia holocauſtorum arie-
tum, & adipe pinguium, & ſanguine taurorum, & agnorum, & hircorum:
quia in eis non eſt beneplacitum coram me. Cùm venitis ut appareatis in 12
conſpectu meo, quis quæſivit hoc de manibus veſtris, ut veniatis ad con-
culcanda atria mea? Non addatis ultrà offerre oblationem ex rapina; ſa- 13
crificium abominabile eſt coram me, & neomeniæ & ſabbatha cœtus congregationis
veſtræ, quoniam non relinquitis peccata veſtra, ut exaudiatur oratio veſtra in tempore congregationis veſtræ.

Obſervet lector in verſione Arab. prophetarum, verſiculos plurimos, præſertim in Hieremia, imò alicubi integra ferè capitula, in editione Pariſienſi deſiderari, quæ ex MS. Arab. antiquiſſimo & præſtantiſſimo, quod cum Hebr. plerunque concordat, ſupplevimus : ſupplementa verò uncis includuntur, præfixis hiſce literis, MS. Oxon.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܢܒܝܘܬܗ ܕܐܫܥܝܐ ܒܪ ܐܡܘܨ *
* ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

* ܚܙܘܐ ܕܚܙܐ ܐܫܥܝܐ ܒܪ ܐܡܘܨ. ܕܚܙܐ ܥܠ ܝܗܘܕ ܘܥܠ ܐܘܪܫܠܡ. ܒܝܘܡܝ ܥܘܙܝܐ ܘܝܘܬܡ. 1
ܘܐܚܙ ܘܚܙܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. * ܫܡܥܘ ܫܡܝܐ. ܘܨܘܬܝ ܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܡܠܠ. ܒܢܝܐ 2
ܪܒܝܬ ܘܐܪܝܡܬ. ܘܗܢܘܢ ܐܛܠܡܘ ܒܝ. * ܝܕܥ ܬܘܪܐ ܩܢܝܢܗ. ܘܚܡܪܐ ܐܘܪܝܐ ܕܡܪܗ. 3
ܘܐܝܣܪܐܝܠ ܠܐ ܝܕܥ. ܘܥܡܝ ܠܐ ܐܣܬܟܠ. * ܘܝ ܠܥܡܐ ܚܛܝܐ. ܥܡܐ ܕܡܠܐ ܥܘܠܐ. ܙܪܥܐ 4
ܡܒܐܫܢܐ. ܒܢܝܐ ܡܚܒܠܐ. ܫܒܩܘܗܝ ܠܡܪܝܐ. ܘܐܪܓܙܘ ܠܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ. ܘܗܦܟܘ
ܠܒܣܬܪܗܘܢ. * ܠܡܢܐ ܬܘܒ ܡܬܡܚܝܬܘܢ. ܘܬܘܣܦܘܢ ܠܡܪܕܘܬܐ. ܟܠ ܪܫ ܠܟܐܒܐ. 5
ܘܟܠ ܠܒܐ ܠܟܪܝܘܬܐ. * ܡܢ ܦܣܬܐ ܕܪܓܠܐ ܘܥܕܡܐ ܠܡܘܚܐ. ܠܝܬ ܒܗ ܕܘܟܬܐ ܕܚܠܝܡܐ. 6
ܡܚܘܬܐ ܘܫܘܡܬܐ ܘܡܚܘܬܐ ܕܛܪܝܐ. ܠܐ ܐܬܚܒܫܘ. ܘܐܦܠܐ ܐܬܥܨܒܘ. ܐܦܠܐ ܐܬܪܟܟܘ
ܒܡܫܚܐ. * ܐܪܥܟܘܢ ܚܪܒܐ. ܘܩܘܪܝܟܘܢ ܝܩܝܕܢ ܒܢܘܪܐ. ܐܪܥܟܘܢ ܠܘܩܒܠܟܘܢ ܢܘܟܪܝܐ ܐܟܠܝܢ ܠܗ 7
ܢܘܟܪܝܐ ܘܚܪܒܐ ܐܝܟ ܡܗܦܟܬܐ ܕܢܘܟܪܝܐ. * ܘܐܫܬܒܩܬ ܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. ܐܝܟ ܡܛܠܬܐ ܒܟܪܡܐ. 8
ܘܐܝܟ ܡܛܠܠܐ ܒܡܩܫܘܬܐ. ܘܐܝܟ ܩܪܝܬܐ ܚܒܝܫܬܐ. * ܘܐܠܘܠܐ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܘܬܪ ܠܢ ܫܪܟܐ 9
ܙܥܘܪܐ. ܐܝܟ ܣܕܘܡ ܗܘܝܢ ܗܘܝܢ. ܘܠܥܡܘܪܐ ܡܬܕܡܝܢ ܗܘܝܢ. * ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ 10
ܪ̈ܫܢܐ ܕܣܕܘܡ. ܘܨܘܬܘ ܢܡܘܣܗ ܕܐܠܗܢ ܥܡܐ ܕܥܡܘܪܐ. * ܠܡܢܐ ܗܘܝܢ ܠܝ ܣܘܓܐܐ 11
ܕܕܒܚܝܟܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܣܒܥܬ ܡܢ ܥܠܘܬܐ ܕܕܟܪܐ. ܘܬܪܒܐ ܕܦܛܝܡܐ ܘܕܡܐ ܕܬܘܪܐ. ܘܕܐܡܪܐ
ܘܕܓܕܝܐ. ܠܐ ܨܒܝܬ. * ܡܐ ܕܐܬܝܬܘܢ ܠܡܬܚܙܝܘ ܩܕܡܝ. ܡܢܘ ܒܥܐ ܗܕܐ ܡܢ ܐܝܕܝܟܘܢ. ܠܡܕܫ 12
ܕܪ̈ܬܝ. * ܠܐ ܬܘܣܦܘܢ ܠܡܝܬܝܘ ܠܝ ܩܘܪܒܢܐ ܣܪܝܩܐ. ܒܣܡܐ ܕܡܣܠܝܐ ܗܘ ܠܝ. ܪܝܫ 13
ܝܪܚܐ ܘܫܒܬܐ. ܩܪܝܢ ܟܢܘܫܬܐ. ܠܐ ܐܟܠ ܐܢܐ ܥܘܠܐ ܘܥܨܘܪܝܐ.

PROPHETIA ESAIÆ FILII AMOS.

CAP. I.

VIſio Eſaiæ filii Amos, quam vidit de Ju- 1
da & de Jeruſalem, in diebus Oziæ, Jotham, 2
Ahaz, & Hezeciæ regum Judæ. Audite cœli,
& auſculta terra: nam Dominus loquitur. Fi-
lios enutrivi & exaltavi, ipſi autem perfidè
mecum egerunt. Agnoſcit bos poſſeſſorem 3
ſuum, & aſinus præſepe domini ſui : at Iſrael
non agnoſcit, & popul’ meus non animadver-
tit. Heu gentem peccatricem, gentem ini- 4
quitate gravatam, ſemen facinoroſum : filii
corrupti, dereliquiſtis Dominum, & irritâſtis
Sanctum Iſraelis, & retroceſſiſtis: Quorſum 5
vapularetis ultrà, & ampliùs erudiremini ?
Omne caput dolore, & omne cor mœrore
languet : A planta pedis ad cerebrum uſque 6
non eſt in eo locus ſanus : vulnera, cicatrices,
& plagæ tumentes non fuerunt conſolidata,
nec obligata, nec oleo emollita. Terra veſtra 7
devaſtata, civitates veſtræ igne exuſtæ, terram
veſtram aſpicientibus vobis devorant alieni,
& eſt deſolata veluti ruina ab extraneis *facta*.
Et relicta eſt filia Sion ut tugurium in vinea, 8
ut pergula in cucumerario, & velut urbs obſeſſa.
Et niſi Dominus exercituum reſervâſſet 9
nobis ſuperſtites iſtos, ſicut Sodoma eſſemus,
& Gomorræ compararemur. Audite 10
ſermonem Domini principes Sodomorum, &
aures præbete legi Dei noſtri populo Gomorræ.
Ad quid mihi cedit multitudo ſacrificiorum 11
veſtrorum ? dicit Dominus: ſatur ſum holocauſtis
arietum ; adipe ſaginatorum, & ſanguine
taurorum, agnorum, & hœdorum non
oblector. Cùm ad videndum faciem meam 12
venitis, quis hæc poſtulat è manibus veſtris, ut
conculcetis atria mea ? Ne pergatis afferre 13
mihi oblationes vanas, ſuffitum qui eſt mihi
abominandus : initio menſium & ſabbatho
cœtum convocatis, at non comedo fraude
& coactu *parta*.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بسم الله الرحمن الرحيم *

* بدو نبوة اشعياء النبي بركاته تدوم علينا الى الابد
والى ابد الابدين امين *

* الفصل الاول *   * الاصحاح الاول *

* الرويا التي راها اشعياء ابن اموص * راها على اليهودية واوروشليم * في مملكة عوزيا * 1
ويوثام * واحاز * وحزقيا * الذين ملكوا على اليهودية * اسمعي ايتها السماء * وانصتي ايتها 2
الارض * لان الرب قال ولدت ابناء ورفعتهم وهم غدروا بي * عرف الثور قانيه * والحمار مذود 3
سيده * واسرائيل لم يعرفني * الويل للامة الخاطية * الشعب الممتلي من الخطايا * والنسل 4
الخبيث * الابناء الاثمة * تركتم الرب واغضبتم قدوس اسرائيل * لماذا تضربون ايضا * تزدادون 5
اثما * كل راس لوجع * وكل قلب لحزن * من القدمين الى الراس ليس هو جرح * ولا عقر * 6
ولا ضربة ملتهبة ليس يوضع عليها مرهم * ولا دهن * ولا رباطات * ارضكم تخرب * ومدنكم 7
تحرق بالنار * وكورتكم ياكلها الغرباء امامكم * خربت وقفرت من الغرباء * واهملت ابنة 8
صهيون مثل قبة في كرم * كمنطرة الفاكهة في مقثاة * وكالمدينة المحاصرة * لولا ان رب 9
الجيوش ابقى لنا بقية * لكنا قد صرنا مثل سدوم * وماثلنا اهل عامورا * اسمعوا كلمة الرب 10
يا روساء سدوم * وانصتوا لناموس الله يا شعب عامورا * ما هي كثرة ذبايحكم لي يقول 11
الرب * مملو انا من محرقات الكباش * وشحم الخراف ودم الثيران والتيوس لست اريدها * واذا ما 12
اتيتم لتظهروا لي من ذا طلب هذه من ايديكم * لا تعودوا ان تطوا دياري * ان قدمتم لي 13
سميذا باطلا وبخورا * مرذول هو عندي * روس شهوركم وسبوتكم ويومكم العظيم 14
لست احتملها * صومكم

IN NOMINE DEI
Clementis & Miſericordis.

INITIUM
PROPHETIÆ ESAIÆ
prophetæ, cujus benedictiones perpetuò & ad æterna ſecula ſuper nos maneant. Amen.

CAPUT PRIMUM.
Textus primus.

VISIO quam vidit Eſaia filius 1
Amos, quam inquam vidit de Ju-
dæa & Jeruſalem ſub regno Oziæ, Jo-
thami, Ahazi, & Hezeciæ, qui regnâ-
runt ſuper Judæam. Audi O cœlum, & 2
auſculta O terra, quia Dominus ait ; Fi-
lios genui & evexi, ipſi verò fefelle-
runt me. Cognoſcit bos poſſeſſorem ſu- 3
um, & aſinus præſepe domini ſui ; Iſ-
rael autem non cognovit me. Væ genti 4
peccatrici, populo pleno peccatis, pro-
geniei peſſimæ, filiis ſceleratis : dereli-
quiſtis Dominum, & ad iram provocâ-
ſtis Sanctum Iſraelis. Ad quid verbe- 5
remini ulteriùs ? augeretis impietatem.
Omne caput dolens quidem eſt, & omne
cor mærens. A pedibus ad verticem uſq; 6
non eſt vulnus, neque ulcus, neque plaga
accenſa, cui non ſit impoſitum malagma,
nec oleum, nec faſcia. Terra veſtra va- 7
ſtabitur, urbes veſtræ igne ſuccendentur,
& regionem veſtram devorabunt alieni
coram vobis : vaſtata & deſolata eſt ab
alienis. Et remanſit filia Sion quaſi te- 8
ſtudo in vinea, quaſi cuſtodia pomorum
in cucumerario, & quaſi urbs obſeſſa.
Niſi Dominus exercituum reſervâſſet no- 9
bis reliquias, evaſiſſemus quidem ut
Sodoma, & ſimiles eſſemus genti Go-
morræ. Audite verbum Domini O princi- 10
pes Sodomorum, & auſcultate legem
Dei O populo Gomorræ. Quid eſt multi- 11
tudo ſacrificiorum veſtrorum apud me ?
dicit Dominus : plenus quidem ſum ho-
locauſtis arietum : adipem agnorum, &
ſanguinem taurorum atque hircorum no-
lo. Et quando venitis ut compareatis co- 12
ram me, quiſnam hæc poſtulavit è ma-
nibus veſtris ? Ne ampliùs conculcetis
ædes meas. Etiamſi obtuleritis mihi ſimi- 13
laginem vanam et incenſum, deteſtabile eſt
apud me. Initia menſium veſtrorū, ſabba- 14
tha veſtra, & dies veſter celeberrim’, ſunt
mihi intolerabilia : Jejunium veſtrum,

יְשַׁעְיָה : א

: mea anima *habuit* odio veſtras ſolennitates & veſtras Calendas
14 חָדְשֵׁיכֶם וּמוֹעֲדֵיכֶם שָׂנְאָה נַפְשִׁי
vos expandendo in Et .ſuſtinendo laboravi ,*defatigationem ad me ſuper fuerunt*
15 הָיוּ עָלַי לָטֹרַח נִלְאֵתִי נְשֹׂא׃ וּבְפָרִשְׂכֶם
quando etiam : vobis à meos oculos occultabo , veſtras *volas*
כַּפֵּיכֶם אַעְלִים עֵינַי מִכֶּם גַּם כִּי־
ſanguinibus veſtræ manus *: audiens ego* non , orationem multiplicabitis
תַרְבּוּ תְפִלָּה אֵינֶנִּי שֹׁמֵעַ יְדֵיכֶם דָּמִים
veſtrorũ ſtudiorũ malum removete ,eſtote mundi , vos Lavate .ſunt plenæ
16 מָלֵאוּ׃ רַחֲצוּ הִזַּכּוּ הָסִירוּ רֹעַ מַעַלְלֵיכֶם
Diſcite .malefacere deſinite : meorum oculorum conſpectu de
17 מִנֶּגֶד עֵינָי חִדְלוּ הָרֵעַ׃ לִמְדוּ
, pupillo judicate ,*injuria affectum* dirigite ,judicium quærite ,benefacere
הֵיטֵב דִּרְשׁוּ מִשְׁפָּט אַשְּׁרוּ חָמוֹץ שִׁפְטוּ יָתוֹם
.DOMINUS *dicet* ,nos increpemus &,nunc *Adeſte* .viduæ *litigate*
18 רִיבוּ אַלְמָנָה׃ לְכוּ־נָא וְנִוָּכְחָה יֹאמַר יְהוָה
: albeſcent nix veluti , *coccina* tanquam veſtra peccata fuerint Si
אִם־יִהְיוּ חֲטָאֵיכֶם כַּשָּׁנִים כַּשֶּׁלֶג יַלְבִּינוּ
, *acquieveritis* Si .erunt lana velut,vermiculus tanquam rubra fuerint ſi
19 אִם־יַאְדִּימוּ כַתּוֹלָע כַּצֶּמֶר יִהְיוּ׃ אִם־תֹּאבוּ
, renueritis ſi Et .comedetis terræ bonum , audieritis &
20 וּשְׁמַעְתֶּם טוּב הָאָרֶץ תֹּאכֵלוּ׃ וְאִם־תְּמָאֲנוּ
. DOMINI os quia : devorabimini gladio ,*fueritis rebelles* &
וּמְרִיתֶם חֶרֶב תְּאֻכְּלוּ כִּי פִּי יְהוָה
plena ? fidelis civitas meretrix ut fuit Quomodo .eſt locutum
21 דִּבֵּר׃ אֵיכָה הָיְתָה לְזוֹנָה קִרְיָה נֶאֱמָנָה מְלֵאֲתִי
tuum Argentum .homicidæ nunc & ,ea in eſt morata juſtitia ,judicio
22 מִשְׁפָּט צֶדֶק יָלִין בָּהּ וְעַתָּה מְרַצְּחִים׃ כַּסְפֵּךְ
tui Principes .*aquis in mixtus tuus potus* : ſcorias in *fuit*
23 הָיָה לְסִיגִים סָבְאֵךְ מָהוּל בַּמָּיִם׃ שָׂרַיִךְ
ſequens & , *munus diligens ipſe totus* : furum ſocii & , *contumaces*
סוֹרְרִים וְחַבְרֵי גַּנָּבִים כֻּלּוֹ אֹהֵב שֹׁחַד וְרֹדֵף
ingredietur non viduæ *lis & : judicabunt* non pupillo :retributiones
שַׁלְמֹנִים יָתוֹם לֹא יִשְׁפֹּטוּ וְרִיב אַלְמָנָה לֹא־יָבוֹא
exercituum DOMINUS Dominus dicit Propterea .eos ad
24 אֲלֵיהֶם׃ לָכֵן נְאֻם הָאָדוֹן יְהוָה צְבָאוֹת
me vindicabo & ,meis hoſtibus de conſolabor Heu : Iſrael fortis
אֲבִיר יִשְׂרָאֵל הוֹי אֶנָּחֵם מִצָּרַי וְאִנָּקְמָה
, te ſuper meam manum convertam Et .meis inimicis de
25 מֵאוֹיְבָי׃ וְאָשִׁיבָה יָדִי עָלַיִךְ
.tua ſtanna omnia auferam & ; tuas ſcorias *purificativum ut* repurgabo &
וְאֶצְרֹף כַּבֹּר סִיגָיִךְ וְאָסִירָה כָּל־בְּדִילָיִךְ׃
tuos conſiliarios & , principio in ſicut tuos judices reſtituam Et
26 וְאָשִׁיבָה שֹׁפְטַיִךְ כְּבָרִאשֹׁנָה וְיֹעֲצַיִךְ
, juſtitiæ civitas *tibi vocabitur* poſtea & : initio *in* ſicut
כְּבַתְּחִלָּה אַחֲרֵי־כֵן יִקָּרֵא לָךְ עִיר הַצֶּדֶק
ejus converſi & : redimetur judicio in Sijon .fidelis civitas
27 קִרְיָה נֶאֱמָנָה׃ צִיּוֹן בְּמִשְׁפָּט תִּפָּדֶה וְשָׁבֶיהָ
peccatorum & , prævaricatorum contritio Et .juſtitia in
28 בִּצְדָקָה׃ וְשֶׁבֶר פֹּשְׁעִים וְחַטָּאִים
Quia .conſumentur DOMINUM derelinquentéſque ; pariter
29 יַחְדָּו וְעֹזְבֵי יְהוָה יִכְלוּ׃ כִּי
hortis ab *erubeſcetis* & ; concupiviſtis quas *ulmis ab afficientur* pudore
יֵבֹשׁוּ מֵאֵילִים אֲשֶׁר חֲמַדְתֶּם וְתַחְפְּרוּ מֵהַגַּנּוֹת
.elegiſtis quos
אֲשֶׁר בְּחַרְתֶּם׃

Verſio VULG. LAT.

14 Calendas veſtras, & ſolennitates veſtras, odivit anima
mea: facta ſunt mihi moleſta,
15 laboravi ſuſtinens. Et cùm extenderitis manus veſtras, avertam
oculos meos à vobis: &
cùm multiplicaveritis orationem,
nem, non exaudiã: manus enim
veſtræ ſanguine plenæ ſunt.
16 Lavamini, mundi eſtote, auferte
malũ cogitationum veſtrarum
ab oculis meis: quieſcite
17 agere perverſè, Diſcite
benefacere: quærite judiciũ,
ſubvenite oppreſſo, judicate
18 pupillo, defendite viduã. Et
venite, & arguite me, dicit Dominus:
ſi fuerint peccata veſtra
ut coccinum, quaſi nix dealbabuntur:
& ſi fuerint rubra
quaſi vermiculus, velut lana
19 alba erunt. Si volueritis, & audieritis
me, bona terræ come-
20 detis. Quòd ſi nolueritis, &
me ad iracundiam provocaveritis:
gladius devorabit vos,
quia os Domini locutum eſt.
21 Quomodò facta eſt meretrix
civitas fidelis, plena judicii?
juſtitia habitavit in ea, nunc
22 autem homicidæ. Argentum
tuum verſum eſt in ſcoriam:
vinum tuum miſtum eſt aquâ.
23 Principes tui infideles, ſocii
furũ: omnes diligunt munera,
ſequuntur retributiones. Pupillo
non judicant: & cauſa
viduæ non ingreditur ad illos.
24 Propter hoc ait Dominus Deus
exercituum fortis Iſrael:
Heu, conſolabor ſuper hoſtib⁹
meis, & vindicabor de inimi-
25 cis meis. Et convertam manum
meam ad te, & excoquam
ad purum ſcoriam tuam,
et auferam omne ſtannum
26 tuum. Et reſtituam judices tuos
ut fuerunt priùs, et conſiliarios
tuos ſicut antiquitùs: poſt
hæc vocaberis civitas juſti,
27 urbs fidelis. Sion in judicio
redimetur, et reducent eam in
28 juſtitia: Et conteret ſceleſtos,
et peccatores ſimul: et qui
dereliquerunt Dominum, con-
29 ſumentur. Confundentur enim
ab idolis, quibus ſacrificaverunt:
et erubeſcetis ſuper hortis,
quos elegeratis,

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

14 Καὶ τὰς νεομηνίας ὑμῶν, καὶ τὰς ἑορτὰς ὑμῶν
μισεῖ ἡ ψυχή μου. ἐγενήθητέ μοι εἰς πλησμονήν,
οὐκέτι ἀνήσω τὰς ἁμαρτίας ὑμῶν.
15 Ὅταν (ζ) ἐκτείνητε τὰς χεῖρας, ἀποστρέψω
τοὺς ὀφθαλμούς μου ἀφ᾽ ὑμῶν· καὶ ἐὰν πληθύνητε
τὴν δέησιν, οὐκ εἰσακούσομαι ὑμῶν·
16 αἱ γὰρ χεῖρες ὑμῶν αἵματος πλήρεις. Λούσασθε,
καθαροὶ γένεσθε, ἀφέλετε τὰς πονηρίας
ἀπὸ τῶν ψυχῶν ὑμῶν, ἀπέναντι τῶν
ὀφθαλμῶν μου, παύσασθε ἀπὸ τῶν πονηριῶν
17 ὑμῶν, Μάθετε καλὸν ποιεῖν, ἐκζητήσατε
κρίσιν, ῥύσασθε ἀδικούμενον, κρίνατε
18 ὀρφανῷ, καὶ δικαιώσατε χήραν, Καὶ δεῦτε,
(η) διελεγχθῶμεν, λέγει κύριος. καὶ ἐὰν ὦσιν
αἱ ἁμαρτίαι ὑμῶν ὡς φοινικοῦν, ὡς χιόνα
λευκανῶ. ἐὰν δὲ ὦσιν ὡς κόκκινον, ὡς
19 ἔριον λευκανῶ. Καὶ ἐὰν (θ) θέλητε, καὶ εἰσακούσητέ
μου, τὰ ἀγαθὰ τῆς γῆς φάγεσθε.
20 Ἐὰν δὲ μὴ θέλητε, μηδὲ εἰσακούσητέ μου,
μάχαιρα ὑμᾶς κατέδεται· τὸ γὰρ στόμα κυ-
21 ρίου ἐλάλησε ταῦτα. Πῶς ἐγένετο πόρνη
πόλις πιστὴ Σιὼν πλήρης κρίσεως; ἐν ᾗ δικαιοσύνη
ἐκοιμήθη ἐν αὐτῇ, νῦν δὲ φονευ-
22 ταί. Τὸ ἀργύριον ὑμῶν, ἀδόκιμον· (ι) οἱ
23 κάπηλοί σου μίσγουσι τὸν οἶνον ὕδατι. Οἱ
ἄρχοντές σου ἀπειθοῦσι, κοινωνοὶ κλεπτῶν,
ἀγαπῶντες δῶρα, διώκοντες ἀνταπόδομα,
ὀρφανοῖς οὐ κρίνοντες, καὶ κρίσιν (κ) χηρῶν οὐ
24 προσέχοντες. Διατοῦτο τάδε λέγει (λ) κύριος
ὁ δεσπότης σαβαὼθ, Οὐαὶ οἱ ἰσχύοντες
(μ) Ἰσραήλ· οὐ παύσεται γάρ μου ὁ
θυμὸς ἐν τοῖς ὑπεναντίοις, καὶ κρίσιν ἐκ
25 τῶν ἐχθρῶν μου ποιήσω· Καὶ ἐπάξω τὴν χεῖρά
μου ἐπὶ σὲ, καὶ πυρώσω (ν) εἰς καθαρὸν,
τοὺς δὲ ἀπειθοῦντας ἀπολέσω, καὶ ἀφελῶ πάν-
26 τας ἀνόμους ἀπὸ (ξ) σοῦ. Καὶ ἐπιστήσω τοὺς
κριτάς σου, ὡς τὸ πρότερον, καὶ τοὺς συμβούλους
σου, ὡς τὸ ἀπ᾽ ἀρχῆς· καὶ μετὰ ταῦτα
κληθήσῃ πόλις δικαιοσύνης, μητρόπο-
27 λις πιστὴ Σιών· μετὰ γὰρ κρίματος σωθήσεται
ἡ αἰχμαλωσία αὐτῆς, καὶ μετὰ ἐλεη-
28 μοσύνης. Καὶ συντριβήσονται οἱ ἄνομοι καὶ
οἱ ἁμαρτωλοὶ ἅμα, καὶ οἱ ἐγκαταλείποντες
29 τὸν κύριον συντελεσθήσονται. Διότι (ο) αἰσχυνθήσονται
ἀπὸ τῶν εἰδώλων αὐτῶν, ἃ
αὐτοὶ ἠβούλοντο, καὶ (π) ᾐσχύνθησαν ἐπὶ τοῖς
κήποις, ἃ ἐπεθύμησαν.

Et neomenias veſtras, & ſolennitates veſtras odit anima 14
mea. Facti eſtis mihi in ſatietatem: (m) nequaquàm ultrà di-
mittam peccata veſtra. Cùm extenderitis manus, avertam oculos 15
meos à vobis: & ſi multiplicetis
orationem, non exaudiam vos.
Manus enim veſtræ ſanguine plenæ
ſunt. Lavamini, mundi eſtote, auferte mala ex animabus veſtris ab 16
oculis meis, quieſcite à malitiis ve-
ſtris, Diſcite facere bonũ, quærite 17
judicium, liberate oppreſſum, judicate pupillo, & juſtificate viduã:
Et venite, (n) arguamur, dicit Dominus: & ſi fuerint peccata ve- 18
ſtra, quaſi phœniceum; ſicut nivem
dealbabo: & ſi fuerint, ut coccinum; ſicut lanam dealbabo. Et ſi 19
volueritis & audieritis me; bona
terræ comedetis. Si autem noluer- 20
ritis, neq; exaudieritis me, gladius
devorabit vos. Os enim Domini
loquutum eſt hæc. Quomodò fa- 21
cta eſt meretrix civitas fidelis, (o)
Sion plena judicii? in qua (p) dormivit
juſtitia in ea, nunc autem homicidæ. Argentum veſtrum non 22
probũ: (q) caupones tui miſcẽt vi-
num aquâ: Principes tui (r) inob- 23
edientes ſunt, participes furum,
diligentes munera, ſequentes (ſ) re-
tributionem, pupillis non judi-
cantes, & judicio viduarum non
attendentes. Propterea hæc dicit 24
Dominus dominator Sabaoth; (t)
Væ fortes Iſrael. Non ceſſabit e-
nim furor meus contra (u) adver-
ſarios: & judiciũ de inimicis meis
faciam: Et inducam manum meã 25
ſuper te, & (x) excoquam ad pu-
rum; inobedientes autem perdam,
& auferam omnes prævaricatores
à te. Et imponam judices tuos, ſic- 26
ut priùs, & conſiliarios tuos, ſic-
ut ab initio. Et poſt hæc vocaberis
civitas juſtitiæ, metropolis, fidelis
Sion. Nam cum judicio ſalvabitur 27
captivitas ipſius, & cum miſeri-
cordia. Et conterentur ſceleſti, & 28
pecccatores ſimul: & qui dereli-
querunt Dominum, conſumentur.
Confundentur enim ab idolis ſuis, 29
quæ ipſi volebant: & confuſi ſunt
ſuper hortis, quos concupierunt.

MS.A. (ζ) τὰς χεῖρας ἐκτείνητε πρός με, (η) καὶ διελεγχθῶμεν, (θ) θέλετε, (ι) αἱ πόλεις ὑμῶν πυρίκαυστοι· οἱ κάπηλοί (κ) χήρας (λ) ὁ δεσπότης κύριος σαβαὼθ, (μ) Ἱερουσαλήμ· (ν) σε εἰς καθαρὸν, (ξ) σου, καὶ πάντας ὑπερηφάνους ταπεινώσω. Καὶ ἐπιστήσω (ο) καταισχυνθήσονται ἐπὶ τοῖς εἰδώλοις (π) ἐπαισχυνθήσονται ἐπὶ τοῖς κήποις αὐτῶν,

תַּרְגּוּם יוֹנָתָן Targum JONATHAN.

14 יַרְחֵיכוֹן וּמוֹעֲדֵיכוֹן רְחֵיק מֵימְרִי הֲווֹ קֳדָמַי לְרִיחוּק אַסְגֵּיתִי לְמִשְׁבַּק׃ וְכַד כָּהֲנַיָא פָּרְסִין
15 יְדֵיהוֹן לְצַלָּאָה עֲלֵיכוֹן מְסַלֵּקְנָא אַפֵּי שְׁכִנְתִּי מִנְּכוֹן וְאַף כַּד אַתּוּן מַסְגַּן לְצַלָּאָה לָא רַעֲוָא
16 קֳדָמַי לְקַבָּלָא צְלוֹתְכוֹן מִדִּידֵיכוֹן דַּם זַכַּי מַלְיָן׃ תּוּבוּ לְאוֹרָיְתָא וְאִדַּכּוּ מֵחוֹבֵיכוֹן וְאַעְדּוּ
17 בִּישׁוּת עוֹבָדֵיכוֹן מִקֳּבֵיל מֵימְרִי אִתְמְנַעוּ מִלְּאַבְאָשָׁא׃ אַלִּיפוּ לְאוֹטָבָא תְּבַעוּ דִינָא זַכּוּ
18 דַּאֲנִיס דּוּנוּ דִּין יַתְמָא עֲבִידוּ קְבִילוּ קְבִילַת אַרְמַלְתָּא׃ בְּכֵן כַּד תְּתוּבוּן לְאוֹרַיְתָא תִּבְעוּן
מִן קֳדָמַי וְאַעְבֵּיד בָּעוּתְכוֹן אֲמַר יְיָ אִם יְהוֹן חוֹבֵיכוֹן כִּתִימִין כִּצְבְעוֹנִין כְּתַלְגָּא יְחִוְּרוּן
19 אִם יִסְמְקוּן כִּזְהוֹרִיתָא כַּעֲמַר נְקִי יְהוֹן׃ אִם תֵּיבוּן וּתְקַבְּלוּן לְמֵימְרִי טוּבָא דְאַרְעָא
20 תֵּיכְלוּן׃ וְאִם תְּסָרְבוּן וְלָא תְקַבְּלוּן לְמֵימְרִי בְּחֶרֶב סַנְאָה תִּתְקַטְּלוּן אֲרֵי מֵימְרָא דַייָ
21 גְּזַר כֵּן׃ אֵיכְדֵין תָּבוּ עוֹבָדָהָא לְמֶהֱוֵי כְּטָעִיתָא קַרְתָּא מְהֵימַנְתָּא דַּהֲוַת מַלְיָא עָבְדֵי
22 דִינָא קוּשְׁטָא הֲוָה מִתְעֲבֵיד בָּהּ וּכְעַן אִנּוּן קָטוֹלֵי נַפְשָׁן׃ כַּסְפֵּךְ הֲוָה לִפְסוֹלָא וְחַמְרֵיךְ
23 מְעָרַב בְּמַיָא׃ רַבְרְבַיִךְ מָרְדִין וְשׁוּתָּפִין לְגַנָּבִין כּוּלְּהוֹן רָחֲמִין לְקַבָּלָא שׁוֹחֲדָא
אָמְרִין גְּבַר לְחַבְרֵיהּ עֲבֵיד לִי טָב בְּדִינִי וַאֲשַׁלֵּם לָךְ בְּדִינָךְ דִּין יַתְמָא לָא דָיְנִין
24 וּקְבִילַת אַרְמַלְתָּא לָא עָלַת לִקְדָמֵיהוֹן׃ בְּכֵן אֲמַר רִבּוֹן עָלְמָא יְיָ צְבָאוֹת תַּקִּיפָא דְיִשְׂרָאֵל
קַרְתָּא יְרוּשְׁלֶם אֲנָא עָתִיד לְנַחָמוּתָהּ בְּרַם וַי רַשִׁיעַיָא כַּד אִתְגְּלֵי לְמֶעְבַּד פּוּרְעֲנוּת דִּין
25 מִסַּנְאֵי עַמִּי וְאָתֵיב נִקְמָא לִבְעֵיל דְּבָבִי׃ וַאֲתֵיב מְחַת גְּבוּרְתִּי עֲלָךְ וַאֲבָרֵר כְּמָא דִמְנַקַּן
26 בְּבוֹרִיתָא כָּל רִשְׁעָא וְאַעְדֵּי כָּל חוֹבָךְ׃ וַאֲמַנֵּי בִיךְ דַּיָּנֵי קוּשְׁטָא תַּקְנִין כִּדְבְקַדְמֵיתָא
27 וּמַלְכֵי מִלְכָךְ כַּד מִן אוּלָא וּבָתַר כֵּן יִתְקְרֵי לָךְ קַרְתָּא דְקוּשְׁטָא קַרְתָּא מְהֵימַנְתָּא׃ צִיּוֹן כַּד
28 יִתְעֲבֵד בַּהּ דִּינָא תִּתְפְּרוּק וְדַעֲבַדוּ אוֹרַיְתָא יְתוּבוּן לַהּ בִּזְכוּ׃ וְיִתַּבְּרוּן מָרוֹדִין וְחַיָּבִין
29 כַּחֲדָא וּדְשָׁבְקוּ אוֹרַיְתָא דַייָ יִשְׁתֵּיצוּן׃ אֲרֵי תִתְבַּהֲתוּן מֵאִילָנֵי טַעֲוָתָא דַּחֲמַדְתּוּן
וְתִתְכַּנְעוּן מִגִּנֵּי טַעֲוָתָא דַּאֲתּוּן מִסְתַּיְעִין בְּהוֹן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Neomenias & feſtivitates veſtras deteſtatur Verbum meum, factáque ſunt 14
coram me in abominationem: multiplicavi remittens. Et cùm ſacerdotes 15
extenderint manus ſuas ad orandum pro vobis, auferam majeſtatem
meã à vobis; & cùm multiplicaveritis orationẽ, non eſt voluntas coram
me ad exaudiendã orationẽ veſtram, eò quòd manus veſtræ plenæ ſunt ſanguine
innocentis. Convertimini ad legem meam, & mundamini à pecca- 16
tis veſtris, & auferte malum operationũ veſtrarum à conſpectu Verbi mei:
deſinite malefacere. Diſcite benefacere, quærite judicium, *juſtitiam* vim 17
patientis judicate: judicium pupilli *facite*, audite clamorem viduæ. Cùm 18
converſi fueritis ad legem meam, deprecabimini coram me, & faciam deprecationẽ
veſtrã, dicit Dñs. Si fuerint peccata veſtra maculata quaſi tincturæ,
quaſi nix dealbabuntur: & ſi fuerint rubra ſicut coccinum, ſicut lana
munda erunt. Si volueritis & obedieritis verbo meo, bona terræ come- 19
detis. Et ſi renueritis & non obedieritis verbo meo; gladio inimici in- 20
terficiemini, quia *verbum* Dñi *decrevit* ita. Quomodo converſa eſt ci- 21
vitas fidelis, ut eſſent opera ejus ſicut opera meretricis? quæ erat plena
operantium judiciũ, & veritas fiebat in ea, nunc autẽ ipſi ſunt homicidæ.
Argentum tuũ factum eſt in ſcoriã: vinũ tuũ miſtũ eſt aqua. Principes 22
tui rebelles, & ſocii latronũ; omnes diligunt accipere munera: dicunt 23
unuſquiſq; proximo ſuo: Fac pro me *bonum* in judicio meo, & retribuam
tibi in cauſa tua. Judiciũ pupilli non judicant, & clamor viduæ non ingre-
ditur in conſpectu eorum. Propterea dicit dominator ſeculi Dñs exerci- 24
tuum fortis Iſrael: Civitatem Hieruſalem ego conſolabor; ſed væ impiis
quando revelatus fuero ut faciã ultionẽ judicii de hoſtib⁹ populi mei, &
retribuã vindictam inimicis meis. Et convertã pcuſſionẽ fortitudinis meæ 25
in te, & mundabo, quaſi purificans cum herba borith, *omnem improbitatẽ*,
& auferã *omne peccatũ tuum*. Et conſtituam in te judices veraces ſicut in 26
principio, & conſiliarios tuos ſicut antiquit⁹: & poſtea vocaberis civitas
veritatis, urbs fidelis. Sion autem, cùm factum fuerit in ea judicium, re- 27
dimetur: & qui operati ſunt legem, revertentur ad eam in juſtitia. Et 28
conterentur rebelles & peccatores ſimul: & qui dereliquerunt legem
Domini, conſumentur. Quoniam confundemini à lucis idolorum, quos 29
concupiſtis; & erubeſcetis ab hortis ſimulachrorum, à quibus auxilium quærebatis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

14 ܪ̈ܝܫ ܝܪ̈ܚܝܟܘܢ ܘܡܥܕ̈ܥܕܝܟܘܢ. ܣܢܝܐ ܢܦܫܝ. ܘܗܘܘ ܥܠܝ ܠܡܥܒܕܢܐ. ܐܫܬܠܗܝܬ ܒܣܝܒܪܢܘܬܐ. *ܘܡܐ
15 ܕܦܫܛܝܢ ܐܢܬܘܢ ܐܝ̈ܕܝܟܘܢ. ܐܟܣܐ ܥܝ̈ܢܝ ܡܢܟܘܢ. ܘܐܦ ܐܢ ܬܣܓܘܢ ܨܠܘܬܐ. ܠܐ ܫܡܥ ܐܢܐ. ܐܝ̈ܕܝܟܘܢ
ܡܠܝܢ ܕܡܐ. * ܐܣܚܘ ܘܐܬܕܟܘ. ܘܐܥܒܪܘ ܒܝܫܘܬܐ ܕܥܒ̈ܕܝܟܘܢ ܡܢ ܩܕܡ ܥܝ̈ܢܝ. * ܐܬܟܠܝܘ ܡܢ 16
ܒܝܫܬܐ. ܘܝܠܦܘ ܠܡܥܒܕ ܛܒܬܐ. ܒܥܘ ܕܝܢܐ. ܘܙܕܩܘ ܠܛܠܘܡܐ. ܕܘܢܘ ܝܬܡܐ ܘܬܒܥܘ 17
ܕܝܢܗ̇ ܕܐܪܡܠܬܐ. * ܬܘ ܢܬܟܢܫ ܐܟܚܕܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܢ ܢܗܘܘܢ ܚܛܗ̈ܝܟܘܢ ܐܝܟ ܨܒܥܐ. ܐܝܟ 18
ܬܠܓܐ ܢܬܚܘܪܘܢ. ܘܐܢ ܢܣܡܩܘܢ ܐܝܟ ܙܚܘܪܝܬܐ. ܐܝܟ ܥܡܪܐ ܢܗܘܘܢ. * ܘܐܢ ܬܬܛܦܝܣܘܢ 19
ܘܬܫܡܥܘܢ ܠܝ. ܛܘܒܬܐ ܕܐܪܥܐ ܬܐܟܠܘܢ. * ܘܐܢ ܠܐ ܬܬܛܦܝܣܘܢ ܘܬܡܪܕܘܢ. ܚܪܒܐ 20
ܬܐܟܠܟܘܢ. ܦܘܡܗ ܓܝܪ ܕܡܪܝܐ ܡܠܠ. * ܐܝܟܢܐ ܗܘܬ ܙܢܝܬܐ ܡܕܝܢܬܐ ܡܗܝܡܢܬܐ. 21
ܕܡܠܝܐ ܗܘܬ ܕܝܢܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܒܝܬܐ ܗܘܬ ܒܗ̇. ܘܗܫܐ ܩܛܘ̈ܠܐ. * ܟܣܦܟܝ ܗܘܐ ܣܝܓܐ. ܚܡܪ̈ܢܝܟܝ 22
ܡܡܙܓܝܢ ܒܡܝܐ. * ܪ̈ܘܪܒܢܝܟܝ ܡܪ̈ܘܕܐ ܘܫܘܬܦ̈ܐ ܕܓܢ̈ܒܐ. ܟܠܗܘܢ ܪܚܡܝܢ ܫܘܚܕܐ. 23
ܘܪܗܛܝܢ ܒܬܪ ܦܘܪ̈ܥܢܐ. ܠܝܬܡܐ ܠܐ ܕܝܢܝܢ. ܘܕܝܢܗ̇ ܕܐܪܡܠܬܐ ܠܐ ܥܐܠ ܠܘܬܗܘܢ.
24 * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪܘ̈ܬܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܥܫܝܢܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܝ. ܡܬܒܥܐܢܐ ܡܢ
25 ܣܢ̈ܐܝ. ܘܡܬܦܪܥ ܐܢܐ ܡܢ ܒܥܠܕܒ̈ܒܝ. * ܘܐܗܦܟ ܐܝܕܝ ܥܠܝܟܝ. ܘܐܨܪܘܦ ܡܪ̈ܘܕܝܟܝ
ܠܕܟܝܘ. ܘܐܥܒܪ ܟܠܗܘܢ ܥܘ̈ܠܝܟܝ. * ܘܐܩܝܡ ܕܝ̈ܢܝܟܝ ܐܝܟ ܕܡܢ ܩܕܝܡ. ܘܡܡܠܟ̈ܢܝܟܝ 26
ܐܝܟ ܕܡܢ ܒܪܫܝܬ. ܘܡܢ ܒܬܪܟܢ ܢܬܩܪܐ ܡܕܝܢܬܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ. ܡܕܝܢܬܐ ܕܗܝܡܢܘܬܐ.
27 * ܨܗܝܘܢ ܒܕܝܢܐ ܬܬܦܪܩ. ܘܫܒܝܬܗ̇ ܒܙܕܝܩܘܬܐ. * ܘܬܒܪܐ ܕܥܘ̈ܠܐ ܘܕܚܛ̈ܝܐ ܐܟܚܕܐ. ܘܕܫܒܩܘ
28 29 ܠܡܪܝܐ ܢܫܠܡܘܢ. * ܢܒܗܬܘܢ ܓܝܪ ܡܢ ܦܬܟܪ̈ܐ ܕܨܒܘ. ܘܢܬܟܡܪܘܢ ܡܢ
ܓܢ̈ܬܐ ܕܓܒܘ.

Neomenias & ſolennitates veſtras odit anima 14
mea, ſunt mihi oneri, defeſſus ſum ferendo.
Cùm expandetis manus veſtras, avertam ocu- 15
los meos à vobis : & licèt multiplicetis ora-
tioné, haudquaquam exaudiã. Manus veſtræ
plenæ ſunt ſanguine. Lavate vos, mundate
vos, & amovete malignitates actionum ve- 16
ſtrarum à conſpectu oculorũ meorũ. Deſiſti-
te à ſceleribus, & diſcite benefacere : ſcruta- 17
mini litem, & benefacite oppreſſis : jus dici-
te pupillis, & cauſas viduarũ dirimite : Tum
venite, colloquamur ſimul, dicit Dñs. Nam 18
ſi fuerint peccata veſtra ut coccus, ſicut nix
dealbabuntur: & ſi rubra fuerint ut vermicu-
lus, fient ſicut lana. Si acquieſcatis, & obtem-
peretis mihi, delitias terræ comedetis : Quòd 19
ſi non acquieſcatis, imò repugnetis, gladio 20
devorabimini : os Dñi locutũ eſt. Quomo-
do effecta eſt meretrix urbs fidelis ? quæ ple- 21
na erat judicio, & juſtitia pernoctabat in ea,
jam *facti ſunt* homicidæ. Argentum tuum
deſpectui eſt, caupones tui immiſcent aquam: 22
Principes tui rebelles ſunt, & conſortes fu-
rum; omnes munera diligunt, & feſtini ſunt 23
ad exigendam retributioné : pupillis jus non
dicunt, & cauſa viduarum non ingreditur ad
eos. Propterea ſic dicit Dñs dominorũ po-
tẽs Fortis Iſraelis: Heu, vindictã ſumã ab oſo- 24
ribus meis, & ultionem capiã ab hoſtibus me-
is. Et iterum admovebo manum meam ad te,
& defæcabo rebelles tuos ad puritaté uſque, 25
& auferam ſceleratos tuos omnes : Et reſti-
tuam judices tuos ut antea, & conſiliarios 26
tuos ut antiquitùs : ac poſtea vocaberis urbs
juſtitiæ, & urbs fidelitatis. Sion judicio re-
dimetur, & captivitas ejus juſtitiã. Contri- 27
tio autem ſceleſtorum & peccatorũ ſimul ve- 28
niet, & qui Dñm dereliquerunt, abſumentur.
Pudefient enim de idolis quæ appetiverunt, 29
& erubeſcent de fanis quæ elegerunt :

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

وبطالتكم واعيادكم ابغضها نفسي * وصرتم لي ثقلا * لست منذ الآن احتمل خطاياكم * اذا مددتم ايديكم الي 15
اصرف عيني عنكم * وان اكثرتم الطلبة لست استجيب لكم * لان ايديكم مملوة من الدم *
16 * استحموا وصيروا انقياء * انزعوا الشرور من نفوسكم امام عيني * كفوا عن شروركم *
17 تعلموا ان تصنعوا حسنا * اطلبوا انصافا * انقذوا المظلوم * واحكموا لليتيم * وبرروا الارملة *
18 * وتعالوا نتناظر يقول الرب * فان تكن خطاياكم مثل السواد لابيضها مثل الثلج * وان
19 تكن مثل القرمز لابيضها مثل الصوف النقي * وان شيتم وسمعتم مني * ستاكلون خيرات
20 الارض * وان لا تريدوا ولم تسمعوا مني * سياكلكم السيف * لان فم الرب نطق بهذا *

ferias veſtras, & ſolennitates veſtras odit anima mea; & facti eſtis mihi graves: non ferã deinceps peccata veſtra. Cùm expanderitis ad me man⁹ veſtras, avertã à vobis oculos meos: & quamvis multiplicaveritis preces, haud exaudiam vos; quia manus veſtræ plenæ ſunt ſanguine. Lavamini, & evadite puri: deponite à vobiſmetipſis flagitia coram oculis meis: Abſtinete à ſceleribus veſtris: diſcite benefacere: quærite juſtitiam: vindicate oppreſſũ: jus dicite pupillo, & juſtificate viduam: Tum venite diſceptemus, ait Dominus. Sanè ſi fuerint peccata veſtra fuligini ſimilia, alba reddam illa ſicut nivem; & ſi fuerint cocco ſimilia, alba reddam eã ſicut lanam mundam. Tandem ſi volueritis & acquieveritis mihi, comedetis bona terræ; Sin autem volueritis, nec acquieveritis mihi devorabit vos gladius; quoniam os Domini hæc pronuntiavit.
15 16 17 18 19 20

* القريان فيه تعجب النبي من مدينة ايروسليم وتغيرها * واخبار بما يصيبها ويصيب اهلها *

Lectio in qua continetur admiratio Prophetæ de urbe Jeroſolymorum, ejuſque mutatione, & narratio eorum quæ eventura ſunt illi & civibus ejus.

21 * كيف صارت مدينة صهيون المومنة زانية * المملوة من الانصاف * التي رقد العدل فيها *
22 23 والان اضطجع فيها القاتلون * فضتكم غير نقية * وخماروك يمزجون الخمر بالماء * ورؤساك
عصاة يشاركون اللصوص * ويحبون الرشا * ويستعجلون في المكافاة * ولا يحكمون للايتام *
24 والي قضاء الارامل لا يصغون * لاجل هذا يقول السيد رب الجنود جبار اسرائيل * الويل للاقوياء
25 في آل اسرائيل * لان غضبي لم يكف عن المضادين * وساصنع حكمي باعداي * واطبق
يدي عليك * واحمك للنقاء * واهلك العصاة * واستاصل كل الاثمة منك * ولاذلن المستكبرين *
26 * ولانصبن قضاتك كما كانوا اولا * ومشيريك كما كانوا قديما * وبعد ذلك تدعين مدينة
27 العدل * ام المدن المومنة صهيون * لان بعد الحكم يخلص سبيها بالعدل والرحمة *
28 29 * وسينهشمون الاثمة والخطاة معا * والذين اهملوا الرب يستاصلون * من اجل انهم يخزون
باوثانهم التي ارادوها * ويسقطون ايضا بمنحوتاتهم التي صنعوها * وسيخزون بسياتهم
التي اشتهوها *

Quomodo urbs Sion fidelis evaſit meretrix? in ea quæ plena erat æquitate, in qua cubabat juſtitia, nunc cubant homicidæ. Argentum veſtrum haud purum eſt, caupones tui vinum aquâ permiſcent: Principes tui ſunt contumaces, furum participes, amant munus, retributionem accelerant, non dicunt jus pupillis, & ad litem viduarum non attendunt? Propterea dicit Domin⁹, Domin⁹ exercituum, Fortiſſimus Iſraelis; Væ potentibus inter gentem Iſraeliticam: quoniam ira mea non deſiſtet ab adverſariis, & judicium meum exercebo in hoſtes meos. Manum meam ſuper te claudã, teq; lavabo ad munditiem: perdã rebelles, & omnes impios evellam à te, & humiliabo ſuperbos: Erigam judices tuos ut erant antea, & conſiliarios tuos ut erant olim: et poſt hæc vocaberis urbs æquitatis, mater urbium fidelis Sion. Poſt judicium enim ſalvabitur captivitas ejus per æquitatẽ & miſericordiã: Impii verò & peccatores ſimul frangentur, et qui Dominũ ſpreverunt, extirpabuntur. Quoniam pudore ſuffundentur propter idola ſua quæ amaverunt, & præcipites quoq; ruent propter ſculptilia quæ fecerunt, & pudefient propter iniquitates quas expetiverunt.
21 22 23 24 25 26 27 28 29

ישעיה : ב

aqua cui hortus velut & , *suo folio* defluens *ulmus ut* eritis Quando

30 כִּי תִהְיוּ כְּאֵלָה נֹבֶלֶת עָלֶהָ וּכְגַנָּה אֲשֶׁר־מַיִם

; *favillam in* operator ejus & , *stuppam in* fortis erit Et *ei* non

31 אֵין לָהּ׃ וְהָיָה הֶחָסֹן לִנְעֹרֶת וּפֹעֲלוֹ לְנִיצוֹץ

.*extinguens* non & ,pariter ipsi ambo succendentur &

וּבָעֲרוּ שְׁנֵיהֶם יַחְדָּו וְאֵין מְכַבֶּה׃

CAP. II. ב

Jehudah super , Amos filius Jesahjahu vidit quod Verbum

1 הַדָּבָר אֲשֶׁר חָזָה יְשַׁעְיָהוּ בֶּן־אָמוֹץ עַל־יְהוּדָה

erit præparatus *dierum novissimo* in erit Et .Jerusalaim &

2 וִירוּשָׁלִָם׃ וְהָיָה בְּאַחֲרִית הַיָּמִים נָכוֹן יִהְיֶה

se elevabit & , montium *capite* in DOMINI domus mons

הַר בֵּית־־יְהוָה בְּרֹאשׁ הֶהָרִים וְנִשָּׂא

populi ibunt Et .gentes omnes eum ad confluent & : collibus præ

3 מִגְּבָעוֹת וְנָהֲרוּ אֵלָיו כָּל־הַגּוֹיִם׃ וְהָלְכוּ עַמִּים

domum ad,DOMINI montem ad ascendam* &,*Agite:* dicent & ,multi

רַבִּים וְאָמְרוּ לְכוּ וְנַעֲלֶה אֶל־הַר־־יְהוָה אֶל־בֵּית

ambulabimus & ,*suis viis de* nos docebit & : Jahacob Dei

אֱלֹהֵי יַעֲקֹב וְיֹרֵנוּ מִדְּרָכָיו וְנֵלְכָה

DOMINI verbum & ,lex exibit Sijon de quia : ejus semitis in

בְּאֹרְחֹתָיו כִּי מִצִּיּוֹן תֵּצֵא תוֹרָה וּדְבַר־־יְהוָה

populos arguet & , gentes inter judicabit Et .Jerusalaim de

4 מִירוּשָׁלִָם׃ וְשָׁפַט בֵּין הַגּוֹיִם וְהוֹכִיחַ לְעַמִּים

suas lanceas & , ligones in suos gladios contundent & : multos

רַבִּים וְכִתְּתוּ חַרְבוֹתָם לְאִתִּים וַחֲנִיתוֹתֵיהֶם

non & , gladium gentem contra gens levabit non : falces in

לְמַזְמֵרוֹת לֹא־יִשָּׂא גוֹי אֶל־גּוֹי חֶרֶב וְלֹא־

ambulemus & , *adeste* , Jahacob Domus .bellum ultrà discent

5 יִלְמְדוּ עוֹד מִלְחָמָה׃ בֵּית יַעֲקֹב לְכוּ וְנֵלְכָה

domum ,tuum populum dimisisti Quia .DOMINI lumine in

6 בְּאוֹר יְהוָה׃ כִּי נָטַשְׁתָּה עַמְּךָ בֵּית

natis in & ,Pelistim sicut augures & : *Oriente ab sunt repleti* quia ,Jahacob

יַעֲקֹב כִּי מָלְאוּ מִקֶּדֶם וְעֹנְנִים כַּפְּלִשְׁתִּים וּבְיַלְדֵי

,auro & ,argento ejus terra est repleta Et .fuerunt sufficientes *alienorum*

7 נָכְרִים יַשְׂפִּיקוּ׃ וַתִּמָּלֵא אַרְצוֹ כֶּסֶף וְזָהָב

finis non & , equis ej⁹ terra est repleta & : ej⁹ thesauris finis non &

וְאֵין קֵצֶה לְאֹצְרֹתָיו וַתִּמָּלֵא אַרְצוֹ סוּסִים וְאֵין קֵצֶה

suarũ manuũ Operi .idolis ejus terra est repleta Et .ejus quadrigis

8 לְמַרְכְּבֹתָיו׃ וַתִּמָּלֵא אַרְצוֹ אֱלִילִים לְמַעֲשֵׂה יָדָיו

,homo se incurvavit Et .eorum digiti fecerunt quod ei ,se *incurvabunt*

9 יִשְׁתַּחֲווּ לַאֲשֶׁר עָשׂוּ אֶצְבְּעֹתָיו׃ וַיִּשַּׁח אָדָם

,petram in Ingredere .eis parces non & , vir se humiliavit &

10 וַיִּשְׁפַּל־־אִישׁ וְאַל־תִּשָּׂא לָהֶם׃ בּוֹא בַצּוּר

decore à &,DOMINI formidinis *faciebus* à ; pulvere in te absconde &

וְהִטָּמֵן בֶּעָפָר מִפְּנֵי פַּחַד יְהוָה וּמֵהֲדַר

se incurvabit & ,*humiliabitur* hominis *elationis* Oculi .ejus *excellentiæ*

11 גְּאֹנוֹ׃ עֵינֵי גַּבְהוּת אָדָם שָׁפֵל וְשַׁח

.illa die in ipse solus DOMINUS elevabitur & : hominũ altitudo

רוּם אֲנָשִׁים וְנִשְׂגַּב יְהוָה לְבַדּוֹ בַּיּוֹם הַהוּא׃

,excelsum & superbum omnem super exercituum DOMINI dies Nam

12 כִּי יוֹם לַיהוָה צְבָאוֹת עַל כָּל־גֵּאֶה וָרָם

Lebanon cedros omnes super Et .se humiliabit & elatum omnem super &

13 וְעַל כָּל־נִשָּׂא וְשָׁפֵל׃ וְעַל כָּל־אַרְזֵי הַלְּבָנוֹן

.Basan quercus omnes super & ,elevatas & , sublimes

הָרָמִים וְהַנִּשָּׂאִים וְעַל כָּל־אַלּוֹנֵי הַבָּשָׁן׃

Versio VULG. LAT.

30 Cùm fueritis velut quercus defluentibus foliis, & velut hortus absque aqua. 31 Et erit fortitudo vestra, ut favilla stuppæ, & opus vestrum quasi scintilla: & succendetur utrumque simul, & non erit qui extinguat.

CAP. II.

1 VErbum, quod vidit Isaias, filius Amos, super Juda & Jerusalem. 2 Et erit in novissimis diebus præparatus mons domûs Domini in vertice montium, & elevabitur super colles, & fluent ad eum omnes gentes. 3 Et ibunt populi multi, & dicent; Venite & ascendamus ad montem Domini, & ad domum Dei Jacob, & docebit nos vias suas, & ambulabimus in semitis ejus: quia de Sion exibit lex, & verbum Domini de Jerusalem. 4 Et judicabit Gentes, & arguet populos multos: & conflabunt gladios suos in vomeres, & lanceas suas in falces: non levabit gens contra gentem gladium, nec exercebuntur ultrà ad præliũ. 5 Domus Jacob, venite, & ambulemus in lumine Domini. 6 Projecisti enim populum tuũ, domum Jacob: quia repleti sunt ut olim, & augures habuerunt ut Philisthiim, & pueris alienis adhæserunt. 7 Repleta est terra argento & auro: & non est finis thesaurorum ejus: 8 Et repleta est terra ejus equis: & innumerabiles quadrigæ ejus. Et repleta est terra ejus idolis: opus manuum suarum adoraverunt, quod fecerunt digiti eorum. 9 Et incurvavit se homo, & humiliatus est vir: ne 10 ergò dimittas eis. Ingredere in petram, & abscondere in fossa humo à facie timoris Domini, & à gloria majestatis ejus. 11 Oculi sublimes hominis humiliati sunt, & incurvabitur altitudo virorum: exaltabitur autem Dominus solus in die illa. 12 Quia dies Domini exercituum super omnem superbũ, & excelsum, & super omnem arrogantem: & humiliabitur. 13 Et super omnes cedros Libani sublimes, & erectas, & super omnes quercus Basan.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

30 Ἔσονται γὰρ ὡς τερέβινθος ἀποβεβληκυῖα τὰ φύλλα, καὶ ὡς παράδεισος ὕδωρ μὴ ἔχων. 31 Καὶ ἔσται ἡ ἰσχὺς αὐτῶν ὡς καλάμη στιππύου, καὶ αἱ ἐργασίαι αὐτῶν ὡς (ϛ) σπινθῆρες, καὶ κατακαυθήσονται οἱ ἄνομοι καὶ οἱ ἁμαρτωλοὶ ἅμα, καὶ οὐκ ἔσται ὁ σβέσων.

MS. A. (ϛ) σπινθῆρες πυρὸς,

ΚΕΦ. β'.

1 Ὁ Λόγος ὁ γενόμενος (α) πρὸς Ἡσαΐαν υἱὸν Ἀμὼς περὶ τῆς Ἰουδαίας, καὶ περὶ Ἱερουσαλήμ. 2 Ὅτι ἔσται ἐν ταῖς ἐσχάταις ἡμέραις ἐμφανὲς τὸ ὄρος (*) κυρίου, καὶ ὁ οἶκος τοῦ θεοῦ (β) ἐπ' ἄκρου τῶν ὀρέων, καὶ ὑψωθήσεται ὑπεράνω τῶν βουνῶν, καὶ ἥξουσιν ἐπ' αὐτὸ πάντα τὰ ἔθνη. 3 Καὶ πορεύσονται ἔθνη πολλὰ, καὶ ἐροῦσι, (γ) Δεῦτε καὶ ἀναβῶμεν εἰς τὸ ὄρος (*) κυρίου, καὶ εἰς τὸν οἶκον τοῦ θεοῦ Ἰακὼβ, καὶ ἀναγγελεῖ ἡμῖν τὴν ὁδὸν αὐτοῦ, καὶ πορευσόμεθα ἐν αὐτῇ· ἐκ γὰρ Σιὼν ἐξελεύσεται νόμος, καὶ λόγος κυρίου ἐξ Ἱερουσαλήμ. 4 Καὶ κρινεῖ ἀναμέσον τῶν ἐθνῶν, καὶ (δ) ἐξελέγξει λαὸν πολύν· καὶ συγκόψουσι τὰς μαχαίρας αὐτῶν εἰς ἄροτρα, καὶ τὰς ζιβύνας αὐτῶν εἰς δρέπανα· καὶ οὐ λήψεται (ε) ἔθνος ἐπ' ἔθνος μάχαιραν, καὶ οὐ μὴ μάθωσιν ἔτι πολεμεῖν. 5 Καὶ νῦν ὁ οἶκος (ζ) Ἰακὼβ, δεῦτε πορευθῶμεν τῷ φωτὶ κυρίου· 6 Ἀνῆκε γὰρ τὸν λαὸν αὐτοῦ τὸν οἶκον τοῦ Ἰσραήλ· ὅτι ἐνεπλήσθη ὡς τὸ ἀπ' ἀρχῆς ἡ χώρα αὐτῶν κληδονισμῶν, ὡς ἡ τῶν ἀλλοφύλων, καὶ τέκνα πολλὰ ἀλλόφυλα ἐγενήθη αὐτοῖς. 7 Ἐνεπλήσθη γὰρ ἡ χώρα αὐτῶν ἀργυρίου καὶ χρυσίου, καὶ οὐκ ἦν ἀριθμὸς τῶν θησαυρῶν αὐτῶν· 8 Καὶ ἐνεπλήσθη ἡ γῆ (η) ἵππων, καὶ οὐκ ἦν ἀριθμὸς τῶν ἁρμάτων αὐτῶν. Καὶ ἐνεπλήσθη ἡ γῆ βδελυγμάτων τῶν ἔργων τῶν χειρῶν αὐτῶν, καὶ προσεκύνησαν οἷς ἐποίησαν οἱ δάκτυλοι αὐτῶν. 9 Καὶ ἔκυψεν ἄνθρωπος, καὶ ἐταπεινώθη ἀνήρ, καὶ οὐ μὴ ἀνήσω αὐτούς. 10 Καὶ νῦν (*) εἰσέλθετε εἰς τὰς πέτρας, καὶ κρύπτεσθε εἰς τὴν γῆν ἀπὸ προσώπου τοῦ φόβου κυρίου, καὶ ἀπὸ τῆς δόξης τῆς ἰσχύος αὐτοῦ, ὅταν ἀναστῇ θραῦσαι τὴν γῆν. 11 Οἱ γὰρ ὀφθαλμοὶ κυρίου ὑψηλοί· ὁ δὲ ἄνθρωπος ταπεινός. καὶ ταπεινωθήσεται τὸ ὕψος τῶν ἀνθρώπων, καὶ ὑψωθήσεται κύριος μόνος ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ. 12 Ἡμέρα γὰρ κυρίου Σαβαὼθ ἐπὶ πάντα ὑβριστὴν καὶ ὑπερήφανον, καὶ ἐπὶ πάντα ὑψηλὸν καὶ μετέωρον, καὶ ταπεινωθήσονται. 13 Καὶ ἐπὶ πᾶσαν κέδρον τοῦ Λιβάνου τῶν ὑψηλῶν καὶ μετεώρων, καὶ ἐπὶ πᾶν δένδρον βαλάνου Βασὰν,

MS. A. (α) παρὰ κυρίου πρὸς (*) τοῦ κυρίου (β) ἐπ' ἄκρων (γ) Δεῦτε ἀναβῶμεν (*) τοῦ κυρίου (δ) ἐλέγξει (ε) ἔτι ἔθνος (ζ) τοῦ Ἰακὼβ, (η) αὐτῶν ἵππων, (*) εἰσέλθατε

30 *Erunt enim quasi (γ) terebinthus, quæ abjecit folia, & velut hortus non habens aquam.* 31 *Et erit fortitudo eorum, ut (ζ) stipula stuppæ, & operationes eorum, sicut scintillæ: & comburentur scelesti, & peccatores simul: & non erit, qui extinguat.*

CAP. II.

1 *VErbum, quod factum est ad Esaiam filium Amos (a) de Judæa, & de Hierusalem.* 2 *Quia erit in novissimis diebus manifestus mons Domini, & domus Dei in vertice montium, & elevabitur super colles: & venient ad eum omnes gentes.* 3 *Et ibunt gentes multæ, & dicent; Venite, & ascendamus ad montem Domini, & ad domum Dei Jacob: & annuntiabit nobis viam suam: & ambulabimus in ea. Quia de Sion exibit lex, & verbum Domini de Hierusalem.* 4 *Et judicabit inter gentes, & arguet populum multum. Et contundent gladios suos in aratra, & lanceas suas in falces: & non levabit gens contra gentem gladium, & non discent ultrà bellare.* 5 *Et nunc domus Jacob, venite, ambulemus lumine Domini.* 6 *Dimisit enim populum suum domum Israel: quia repleta est, ut ab initio, regio eorum auguriis, ut ea quæ (b) alienigenarum: & filii multi alienigenæ (c) facti sunt eis.* 7 *Repleta est enim regio eorum argento, & auro: & non fuit numerus thesaurorum eorum.* 8 *Et impleta est terra equis: & non fuit numerus quadrigarum eorum. Et repleta est terra abominationibus operum manuum eorum: & adoraverunt ea, quæ fecerant digiti ipsorum.* 9 *Et procubuit homo, & humiliatus est vir: & non dimittam eos.* 10 *Et nunc ingredimini in petras, & occultamini in terram à facie timoris Domini, & à gloria fortitudinis ejus, quando surrexerit quassare terram.* 11 *Oculi enim Domini sublimes: homo autem humilis. Et humiliabitur altitudo hominum: & exaltabitur Dominus solus in die illa.* 12 *Dies enim Domini Sabaoth super omnem contumeliosum & superbum, et super omnem excelsum & sublimem: & humiliabuntur.* 13 *Et super omnẽ cedrũ Libani excelsarũ, et sublimiũ, et super omnẽ arborẽ glandis Basã:*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

30 אֲרֵי תְהוֹן כְּבוּטְמָא דִּי מִנַּתַּר טַרְפּוֹהִי וּכְגִנַּת שַׁקְיָא דְּמַיִן לֵית לַהּ׃ וִיהֵי תּוּקְפְּהוֹן

31 דְּרַשִׁיעַיָּא כִּנְעוֹרֶת כִּתָּנָא וְעוֹבַד יְדֵיהוֹן כְּנִיצוֹץ נוּרָא כְּמָא דְמִקָּרְבִין דֵּין לִסְטַר דֵּין

וְדָלְקִין תַּרְוֵיהוֹן כַּחֲדָא כֵּן יְסוּפוּן רַשִׁיעַיָּא אִנּוּן וְעוֹבָדֵיהוֹן בִּישַׁיָּא וְלָא יְהֵי עֲלֵיהוֹן חַיִּס׃

ב

1 פִּתְגָם נְבוּאָה דְּאִתְנַבֵּי יְשַׁעְיָה בַּר אָמוֹץ עַל אֱנָשׁ יְהוּדָה וְיָתְבֵי יְרוּשְׁלֶם׃ וִיהֵי בְּסוֹף

2 יוֹמַיָּא מְתַקַּן יְהֵי טוּר בֵּית מַקְדְּשָׁא דַּייָ בְּרֵישׁ טוּרַיָּא וּמִנַּטַּל מֵרָמָתָא וְיִתְפְּנוּן לְמִפְלַח

3 עֲלוֹהִי כָּל מַלְכְוָתָא׃ וִיהָכוּן עַמְמִין סַגִּיאִין וְיֵימְרוּן אֱתוֹ וְנִסַּק לְטוּר בֵּית מַקְדְּשָׁא דַּייָ

לְבֵית שְׁכִינַת אֱלָהֵיהּ דְּיַעֲקֹב וְיַלְפִּנָנָא מֵאוֹרְחָן דְּתַקְנָן קֳדָמוֹהִי וּנְהָךְ בְּאוּלְפַן אוֹרַיְתֵיהּ

4 אֲרֵי מִצִּיּוֹן תִּפּוֹק אוֹרַיְתָא וְאוּלְפַן פִּתְגָּמָא דַּייָ מִירוּשְׁלֶם׃ וִידִין בֵּין מַלְכְוָתָא

וְיוֹכַח לְעַמְמִין סַגִּיאִין וִיעַפְּפוּן סַיְפֵיהוֹן לְסִכִּין וּמוּרְנְיָתֵיהוֹן לְמַגְלִין לָא יִטּוֹל עַם בְּאַפֵּי

5 עַם זֵין וְלָא יִתְאַלְּפוּן עוֹד מִבְּכֵן קְרָבָא׃ יֵימְרוּן דְּבֵית יַעֲקֹב אֱתוֹ וּנְהָךְ בְּאוּלְפַן אוֹרַיְתָא

6 דַּייָ׃ אֲרֵי שְׁבַקְתּוּן דַּחֲלָא תַּקִּיפָא דַּהֲוָה פָּרִיק לְכוֹן דְּבֵית יַעֲקֹב אֲרֵי אִתְמְלִיאַת

7 אַרְעֲכוֹן טַעֲוָן כְּמִלְּקַדְמִין וְעָנְנִין כִּפְלִשְׁתָּאֵי וּבְנִימוֹסֵי עַמְמַיָּא אָזְלִין׃ וְאִתְמְלִיאַת

אַרְעֲהוֹן כְּסַף וּדְהַב וְלֵית סוֹף לְגִנְזוֹהִי וְאִתְמְלִיאַת אַרְעֲהוֹן סוּסָוָן וְלֵית סוֹף לִרְתִיכוֹהִי׃

8 וְאִתְמְלִיאַת אַרְעֲהוֹן טַעֲוָן לְעוֹבָדֵי יְדֵיהוֹן סָגְדִין לִדְאַתְקִינָא אֶצְבְּעָתְהוֹן׃ וְיִמְאַךְ אֱנָשָׁא 9

10 וְיֶחֱלַשׁ תְּקוֹף גַּבְרִין וְלָא תִשְׁבּוֹק לְהוֹן׃ וְיֵעֲלוּן לְמֶעֱרַק בִּמְעָרַק בִּטְנָרָא וּלְאִטַּמָּרָא

11 בְּעַפְרָא מִן קֳדָם דְּחִילָא דַּייָ וּמִזִּיו יְקָרֵיהּ׃ עֵינֵי רָמוּת אֱנָשָׁא יִמְאֲכָן וְיֶחֱלַשׁ תְּקִיף גַּבְרִין

12 וְתַקִּיף יְיָ בִּלְחוֹדוֹהִי בְּעִדָּנָא הַהִיא׃ אֲרֵי יוֹמָא דַעֲתִיד לְמֵיתֵי מִן קֳדָם יְיָ צְבָאוֹת עַל כָּל

13 גֵּוְתָנַיָּא וְרָמֵי לִבָּא וְעַל כָּל תַּקִּיפַיָּא וְיִמְאֲכוּן׃ וְעַל כָּל מַלְכֵי עַמְמַיָּא תַּקִּיפַיָּא וַחֲסִינַיָּא

וְעַל כָּל טוּרָנֵי מְדִינָתָא׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

30 Quia eritis veluti quercus, cujus folia defluunt, & veluti hortus irriguus qui non habet aquam. 31 Et erit fortitudo impiorum sicut stuppa lini, & opus manuum eorum sicut scintilla ignis; quæ cùm applicantur ad invicem, ardent ambo simul: sic consumentur impii, & opera eorum prava, & non erit super eis misericordia.

CAP. II.

1 VErbum prophetiæ, quod prophetavit Esaias filius Amos super viros Juda, & habitatores Jerusalem. 2 Et erit in fine dierum paratus mons domus sanctuarii Domini in capite montium, & elevabitur super colles; & confluent ut serviant super eum, omnia regna. 3 Et ibunt populi multi, & dicent: Venite & ascendamus in montem domus sanctuarii Domini, & in domum majestatis Dei Jacob, & docebit nos vias, quæ rectæ sunt coram eo; & ambulabimus in doctrina legis ejus: quia de Sion exibit lex, & doctrina verbi Domini de Hierusalem. 4 Et judicabit inter regna, & arguet populos multos, & contundent gladios suos in vomeres, & lanceas suas in falces: non levabit populus contra populum arma, neque discent ampliùs prælium. 5 Dicent viri domus Jacob: Venite & ambulemus in doctrina legis Domini. 6 Quia dereliquistis terribilem & fortissimum, qui erat redemptor vester domus Jacob; quia repleta est terra vestra idolis, sicut ab initio; & augures fuerunt sicut Philistim, & in legibus populorum ambulant. 7 Et repleta est terra eorum argento & auro, & non est finis thesaurorum ejus, & repleta est terra eorum equis, & non est finis quadrigarum ejus. 8 Et repleta est terra eorum idolis, *opera* manuum suarum adorant, *quæ* paraverunt digiti eorum. 9 Et humiliabitur homo, & infirmabitur fortitudo virorum: ne dimittas eis. 10 *Et* ingredientur ut fugiant *fugâ* in *petra*, & ut abscondantur in pulvere à facie timoris Dñi, & à splendore gloriæ ejus. 11 Oculi sublimis hominis humiliabuntur, & infirmabitur fortitudo virorum: & erit fortitudo Dominĩ solius in tempore illo. 12 Quia dies venturus est à facie Domini exercituum super omnes superbos & elatos corde: & super omnes fortes, & humiliabuntur. 13 Et super omnes reges populorum fortes & robustos, & super omnes principes provinciarum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

30 * ܡܛܠ ܕܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܒܛܡܬܐ ܕܢܬܪܘ ܛܪܦܝܗ. ܘܐܝܟ ܓܢܬܐ ܕܡܝܐ ܠܝܬ ܠܗ. * ܘܢܗܘܐ
31 ܚܣܝܢܗܘܢ ܠܢܥܘܪܬܐ. ܘܥܒܕܝܗܘܢ ܠܙܠܝܩܐ. ܘܢܐܩܕܘܢ ܬܪܝܗܘܢ ܐܟܚܕܐ. ܘܠܝܬ
ܕܡܕܥܟ.

* ܦܨܠܐ * ܒ *

1 * ܦܬܓܡܐ ܕܚܙܐ ܐܫܥܝܐ ܒܪ ܐܡܘܨ . ܥܠ ܝܗܘܕܐ ܘܥܠ ܐܘܪܫܠܡ. * ܢܗܘܐ ܒܚܪܬܐ ܕܝܘܡܬܐ
2 ܬܪܝܨܐ . ܛܘܪܐ ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܒܪܝܫ ܛܘܪܐ. ܘܪܡ ܡܢ ܪܡܬܐ. ܘܢܚܙܘܢ ܠܗ
ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. * ܘܢܐܙܠܘܢ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ ܘܢܐܡܪܘܢ . ܬܘ ܢܣܩ ܠܛܘܪܗ ܕܡܪܝܐ . 3
ܘܠܒܝܬܗ ܕܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ. ܘܢܚܘܢ ܡܢ ܐܘܪܚܬܗ. ܘܢܗܠܟ ܒܫܒܝܠܘܗܝ. ܡܛܠ ܕܡܢ
ܨܗܝܘܢ ܢܦܘܩ ܢܡܘܣܐ . ܘܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ. * ܘܢܕܘܢ ܒܝܢ ܥܡܡܐ. 4
ܘܢܟܣ ܠܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ ܕܪܚܝܩܐ. ܘܢܦܚܡܘܢ ܣܦܣܝܪܝܗܘܢ ܠܣܟܐ ܕܦܕܢܐ.
ܘܪܘܡܚܝܗܘܢ ܠܡܓܠܐ. ܘܠܐ ܢܣܒ ܥܡܐ ܥܠ ܥܡܐ ܣܦܣܪܐ. ܘܠܐ ܢܠܦܘܢ ܬܘܒ ܩܪܒܐ.
5 * ܒܢܝ ܒܝܬ ܝܥܩܘܒ ܬܘ ܢܗܠܟ ܒܢܘܗܪܗ ܕܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܕܫܒܩܬ ܠܥܡܟ ܒܢܝ ܒܝܬ
6 ܝܥܩܘܒ. ܡܛܠ ܕܐܬܡܠܝܘ ܐܝܟ ܕܡܢ ܩܕܝܡ. ܘܡܕܚܫܝܢ ܐܝܟ ܦܠܫܬܝܐ. ܘܣܓܝܐܐ
ܒܢܝ ܢܘܟܪܝܐ ܐܘܠܕܘ. * ܘܐܬܡܠܝܬ ܐܪܥܗܘܢ ܣܐܡܐ ܘܕܗܒܐ. ܘܠܝܬ ܣܟܐ ܠܣܝܡܬܗܘܢ. 7
ܘܐܬܡܠܝܬ ܐܪܥܗܘܢ ܪܟܫܐ. ܘܠܝܬ ܣܟܐ ܠܡܪܟܒܬܗܘܢ. * ܘܐܬܡܠܝܬ ܐܪܥܗܘܢ 8
ܦܬܟܪܐ. ܠܥܒܕ ܐܝܕܝܗܘܢ ܣܓܕܘ. ܠܕܥܒܕܝ ܨܒܥܬܗܘܢ. * ܘܐܬܡܟܟ ܐܢܫܐ. 9
ܘܐܬܡܫܟ ܓܒܪܐ. ܘܠܐ ܬܫܒܘܩ ܠܗܘܢ. * ܥܘܠܘ ܠܟܐܦܐ. ܘܐܬܛܫܘ ܒܥܦܪܐ. ܡܢ ܩܕܡ 10
ܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܡܢ ܗܕܪܐ ܕܥܘܫܢܗ. * ܥܝܢܝ ܪܡܘܬܐ ܕܐܢܫܐ ܢܡܟܟ. ܘܢܬܡܟܟ ܪܘܡܐ 11
ܕܓܒܪܐ. ܘܢܬܥܠܐ ܡܪܝܐ ܒܠܚܘܕܘܗܝ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. * ܡܛܠ ܕܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܥܠ 12
ܟܠ ܕܡܬܪܘܪܒ ܘܡܬܥܠܐ. ܘܥܠ ܟܠ ܕܡܫܬܒܗܪ ܕܢܬܡܟܟ. * ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܐܪܙܝ 13
ܕܠܒܢܢ. ܪܡܐ ܘܡܫܬܥܠܝܢ. ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܒܠܘܛܐ ܕܒܬܢ.

Quoniam erunt ſicut terebinthus cujus folia 30
defluxêre, & ſicut hortus cui non eſt aqua :
Eritque fortitudo eorum in ſtupam, opera 31
autem eorum in ſcintillas: & ardebunt ambo
ſimul, nemine extinguente.

CAP. II.

SErmo quem vidit Eſaia filius Amos de Ju- 1
da & de Jeruſalem. Erit ultimis diebus 2
mons domûs Domini conſtitutus in vertice
montium, & altior collibus ; cumque ſpe-
ctabunt omnes gentes : Et ibunt multi po- 3
puli dicentes, Venite, aſcendamus ad montem
Domini, & ad Deum Jacobi, ut doceat nos
de viis ſuis, & ambulemus in ſemitis ejus :
quoniam de Sion prodibit lex, & ſermo Do-
mini de Jeruſalem : Et jus dicet inter gen- 4
tes, & arguet populos multos remotos : tun-
déntque gladios ſuos in vomeres aratri, &
lanceas ſuas in falces : & non levabit gens
contra gentem gladium, neque diſcent am-
pliùs bellum. Filii familiâs Jacobi, agite, 5
ambulemus in luce Domini. Nam deſtituiſti 6
populum tuum filios familiâs Jacobi, eò quòd
repleti ſint ut antea, præſtigiis utantur ut Pa-
leſtini, & plurimos exterorum filios educâ-
rint : Repleta ſit terra eorum argento & 7
auro, nec ſit finis theſaurorum eorum : im-
pleta ſit terra eorum equis, & curruum eo-
rum nullus ſit finis : Impleta quoque ſit 8
terra eorum idolis, opus manuum ſuarum ad-
orent, quod fecerunt digiti eorum ; Et hu- 9
miliaverit ſe homo, & vir ſe demiſerit : ne
ergò dimittas eis. Ingredimini in petram, 10
& abſcondite vos in pulvere, propter pa-
vorem Domini, & præ majeſtate fortitudinis
ejus. Oculos hominum elatos humiliabit, 11
& deprimetur ſuperbia viri, & ſolus Domi-
nus magnificabitur in die illa. Nam dies 12
Domini erit ſuper omnem ſeſe jactantem &
efferentem, & ſuper omnem ſuperbientem,
ut deprimatur : Super omnes cedros Li- 13
bani altas & ſublimes, et ſuper quercus
Baiſan :

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

30 * لانهم يصيرون مثل البطمة التي انتثرت اوراقها * ومثل روضة ليس فيها ماء * وتصير
31 قوتهم مثل قصبة المساقة * واعمالهم من شرار النار *

* الفصل الثاني * * الوحي الثاني *

1 * القول الذي صار من قبل الرب الى اشعياء بن اموص * من اجل اليهودية وايروسليم *
2 * انه سيكون في الايام الاخيرة جبل الطاهر * وبيت الله على اطراف الجبال * ويستعلي فوق
3 اعلا التلال * وينطلق اليه كافة الامم * ويسير اليه كثير من الشعوب ويقولون * هلموا بنا
نصعد الى جبل الرب والى بيت اله يعقوب * ويخبرنا طريقه لنسلك فيها * لان من صهيون
4 يخرج الناموس * وكلمة الرب من ايروسلم * ويحكم بين امم كثيرة * ويبكت شعبا كثيرا *
فيقطعون سيوفهم ويصلحونها سككا ويعملون حرابهم مناجل * ولا تحمل امة على امة سيفا *
5 ولا يتعلمون الحرب ايضا * والان يا بيت يعقوب هلموا نسير في نور الرب * لانه خلص شعبه
6 بيت اسرائيل * لان قد امتلى بلده كما كان اولا تطيرا مثل الغرباء * وولد لهم اولاد غرباء
7 كثيرة * لان بلدهم قد امتلات فضة وذهبا * وليس لكنوزهم عدد * وامتلات ارضهم خيلا *
8 وليس لمراكبهم عدد * وامتلات لهم رذالات اعمال ايديهم * وسجدوا لما صنعت اصابعهم
9 * وهان الانسان * واتضع الرجل * ولا اهملهم * الاصحاح الثاني *
10 * فادخلوا الان في الصخور * واخفوا في الارض * من وجه خوف الرب * ومن مجد قوته *
11 اذا قام ليهشم الارض * لان الحاظ العالية * والانسان ذليل * وسيذل ارتفاع البشر * ويتعالى
12 الرب وحده في ذلك اليوم * لان رب الجنود سياتي على كل شاتم ومتعظم * وكل
13 من استعلى وشامخ فيذلون * في كل ارز لبنان المتعالي الشامخ * وعلى كل شجرة
بلوط بيسان *

Quoniam evadent ſicut terebinthus cujus 30
folia defluxerunt, & ſicut hortus in quo
nulla extat aqua : Et evadet robur eorum 31
velut arundo cannabis , & actiones
eorum velut ſcintillæ ignis.

CAPUT. II.

Revelatio ſecunda.

Sermo qui factus eſt à Domino ad 1
Eſaiam filium Amos, de Judæa
& de Jeruſalem.

ERit quidem poſtremis diebus mons Dei 2
purus, & domus Dei ſuper cacumina
montium, & attolletur ſuper editiſſimos
colles : Et confluent ad illum univerſæ 3
gentes, & multi ex populis ad illum ſeſe
recipient dicentes ; Adeſte, aſcendamus ad
montem Domini & ad domum Dei Ja-
cobi, ut ſignificet nobis viam ſuam, qua-
tenus ambulemus in ea: nam è Sion prodi-
bit lex, & verbum Domini è Jeruſalem :
Et jus dicet inter gentes multas, & cor- 4
ripiet populum copioſum : & concîdent
gladios ſuos, & aptabunt eos in vomeres,
& lanceas ſuas component in falces : &
& non feret gens contra gentem gladi-
um, & non diſcent ampliùs bellum. Nunc 5
itaque O domus Jacob, venite, ambulemus
in luce Domini ; Quoniam ipſe liberavit 6
populum ſuum domum Iſraelis: jam enim
repleta eſt regio eorum , ut erat antehac,
augurationibus more exterorum ; & na-
ti ſunt eis filii exteri permulti. Nam regio 7
eorum impleta jam eſt argento & auro,
& theſauris eorum nullus eſt numerus :
impleta eſt terra eorum equis, & curribus
eorum nullus eſt numerus : Denique re- 8
pleta eſt terra eorum abominationibus, o-
peribus ſcilicet manuum eorum; et adora-
verunt quod compoſuêre digiti eorum : 9
Contempſit ſe homo, et humiliavit ſe vir :
attamen non deſtituam eos.

Textus ſecundus.

Nunc ergò ingredimini in petras, et ab- 10
dite vos in terra à facie terroris Domini,
et à gloria roboris ejus , cùm exurget ad
perfringendam terram: Intuitus enim Do- 11
mini ſublimes ſunt, homo verò abjectus.
Et deprimetur celſitudo hominum, et ſo- 12
lus Dominus exaltabitur in die illa. Nam
dies Domini exercituum ventura eſt ſu-
per omnem blaſphemum et arrogantem ;
et quicunque ſuperbierint et extulerint ſe-
ſe, deprimentur. Item ſuper omnes cedros 13
Libani celſiſſimas et elatiſſimas, et ſuper
omnem arborem quercûs Baiſanis :

ישעיה : ג

.elevatos colles omnes super & ,excelsos montes omnes super Et
וְעַל כָּל־הֶהָרִים הָרָמִים וְעַל כָּל־הַגְּבָעוֹת הַנִּשָּׂאוֹת׃ 14
.munitum murum omnem super & ,excelsam turrim omnem super Et
וְעַל כָּל־מִגְדָּל גָּבֹהַּ וְעַל כָּל־חוֹמָה בְצוּרָה׃ 15
.*desiderii prospectura* omnes super & ,Tarsis naves omnes super Et
וְעַל כָּל־אֳנִיּוֹת תַּרְשִׁישׁ וְעַל כָּל־שְׂכִיּוֹת הַחֶמְדָּה׃ 16
: hominum altitudo se humiliabit & ,hominis elatio se incurvabit Et
וְשַׁח גַּבְהוּת הָאָדָם וְשָׁפֵל רוּם אֲנָשִׁים 17
vana Et .illa die in ipse solus DOMINUS elevabitur &
וְנִשְׂגַּב יְהוָה לְבַדּוֹ בַּיּוֹם הַהוּא׃ וְהָאֱלִילִים 18
, petrarum speluncas in introibunt Et .concidet penitus
כָּלִיל יַחֲלֹף׃ וּבָאוּ בִּמְעָרוֹת צֻרִים 19
gloria à & ,DOMINI formidinis *faciebus à* ,*pulveris concavitates* in &
וּבִמְחִלּוֹת עָפָר מִפְּנֵי פַּחַד יְהוָה וּמֵהֲדַר
die In .terram *frangendam ad ipsum surgendo in* ,ejus altitudinis
גְּאוֹנוֹ בְּקוּמוֹ לַעֲרֹץ הָאָרֶץ׃ בַּיּוֹם 20
,*sui auri vana* & ,*sui argenti vana* homo projiciet illa
הַהוּא יַשְׁלִיךְ הָאָדָם אֵת אֱלִילֵי כַסְפּוֹ וְאֵת אֱלִילֵי זְהָבוֹ
.*vespertilionibus &* ,*foveas fodiendum ad se incurvandum ad* sibi fecerunt quæ
אֲשֶׁר עָשׂוּ־לוֹ לְהִשְׁתַּחֲוֹת לַחְפֹּר פֵּרוֹת וְלָעֲטַלֵּפִים׃
faciebus à saxorum *scopulos* in & , petrarum *scissuras in veniendum Ad*
לָבוֹא בְּנִקְרוֹת הַצֻּרִים וּבִסְעִפֵי הַסְּלָעִים מִפְּנֵי 21
ipsum surgendo in ejus altitudinis *decore* à & ,DOMINI formidinis
פַּחַד יְהוָה וּמֵהֲדַר גְּאוֹנוֹ בְּקוּמוֹ
flatus cujus ,homine ab vobis Desinite .terram *frangendam ad*
לַעֲרֹץ הָאָרֶץ׃ חִדְלוּ לָכֶם מִן־הָאָדָם אֲשֶׁר נְשָׁמָה 22
? ipse *reputatur quo in nam* ; *ejus naso in*
בְּאַפּוֹ כִּי־בַמֶּה נֶחְשָׁב הוּא׃

CAP. III. ג

, Jerusalaim à *removens* exercituum Dominus dominator ecce Nam
כִּי הִנֵּה הָאָדוֹן יְהוָה צְבָאוֹת מֵסִיר מִירוּשָׁלַםִ 1
, panis fulcimentum omne , fulcimentum & fulcimentum Jehudah à &
וּמִיהוּדָה מַשְׁעֵן וּמַשְׁעֵנָה כֹּל מִשְׁעַן־לֶחֶם
judicem , *belli* virum & Fortem .aquæ fulcimentum omne &
וְכֹל מִשְׁעַן מָיִם׃ גִּבּוֹר וְאִישׁ מִלְחָמָה שׁוֹפֵט 2
quinquaginta Principem .senem & divinum & , prophetam &
וְנָבִיא וְקֹסֵם וְזָקֵן׃ שַׂר־חֲמִשִּׁים 3
.*eloquii peritum &* ,*ingeniosorum* sapientem & ,consiliarium & ,*faciebus elevatum &*
וּנְשׂוּא פָנִים וְיוֹעֵץ וַחֲכַם חֲרָשִׁים וּנְבוֹן לָחַשׁ׃
.eos in dominabuntur *parvuli* & , eorum principes pueros dabo Et
וְנָתַתִּי נְעָרִים שָׂרֵיהֶם וְתַעֲלוּלִים יִמְשְׁלוּ־בָם׃ 4
puer *superbient* : suũ *socium* in vir & ,virum in vir ,popul⁹ *fuit exactor* Et
וְנִגַּשׂ הָעָם אִישׁ בְּאִישׁ וְאִישׁ בְּרֵעֵהוּ יִרְהֲבוּ הַנַּעַר 5
suũ fratrẽ *in* vir apprehendet Quoniã .*inclytum in contemptus* & ,senem in
בַּזָּקֵן וְהַנִּקְלֶה בַּנִּכְבָּד׃ כִּי־יִתְפֹּשׂ אִישׁ בְּאָחִיו 6
ruina & : nobis eris *gubernator* , tibi Vestimentũ : sui patris *domus*
בֵּית אָבִיו שִׂמְלָה לְכָה קָצִין תִּהְיֶה־לָּנוּ וְהַמַּכְשֵׁלָה
ero Non : *dicendo* ,illa die in *Assumet* .*tua manu* sub hæc
הַזֹּאת תַּחַת יָדֶךָ׃ יִשָּׂא בַיּוֹם הַהוּא לֵאמֹר לֹא־אֶהְיֶה 7
me constituatis Ne .vestimentum nec ,panis non mea domo in & ,*alligans*
חֹבֵשׁ וּבְבֵיתִי אֵין לֶחֶם וְאֵין שִׂמְלָה לֹא תְשִׂימֻנִי
: concidit Jehudah & , Jerusalaim ruit Quia .populi *gubernatorem*
קְצִין עָם׃ כִּי כָשְׁלָה יְרוּשָׁלַםִ וִיהוּדָה נָפָל 8
irritandum ad ,DOMINUM contra eorum *conata* & eorũ lingua quia
כִּי־לְשׁוֹנָם וּמַעַלְלֵיהֶם אֶל־יְהוָה לַמְרוֹת
.ejus gloriæ oculos
עֵנֵי כְבוֹדוֹ׃

Versio VULG. LAT.

14 Et super omnes montes excelsos,
& super omnes colles ele-
15 vatos: Et super omnem turrim
excelsam, & super omnem murum
16 munitum, Et super omnes
naves Tharsis, & super omne
17 quod visu pulchrum est. Et
incurvabitur sublimitas hominum,
& humiliabitur altitudo
virorum, & elevabitur Dominus
18 solus in die illa: Et idola
19 penitùs conterentur: Et introibunt
in speluncas petrarum,
& in voragines terræ, à facie
formidinis Domini, & à gloria
majestatis ejus, cùm surrexerit
20 percutere terram. In die
illa projiciet homo idola argenti
sui, & simulachra auri
sui, quæ fecerat sibi ut adoraret,
talpas & vespertiliones.
21 Et ingredietur scissuras petrarum,
& in cavernas saxorum,
à facie formidinis Domini, &
à gloria majestatis ejus, cùm
surrexerit percutere terram.
22 Quiescite ergò ab homine, cujus
spiritus in naribus ejus est,
quia excelsus reputatus est
ipse.

CAP. III.

1 ECce enim dominator Dominus
exercituum auferet à Jerusalem
& à Juda validum &
fortem, omne robur panis, &
2 omne robur aquæ; Fortem, &
virum bellatorem, judicem, &
prophetam, & ariolum, & senem;
3 Principem super quinquaginta,
& honorabilem vultu,
& consiliarium. & sapientem
de architectis, et prudentem
4 eloquii mystici. Et dabo
pueros principes eorum, et effoeminati
dominabuntur ei.
5 Et irruet populus, vir ad virum,
et unusquisque ad proximum
suum: tumultuabitur puer contra
senem, et ignobilis contra
6 nobilem. Apprehendet enim
vir fratrem suum domesticum
patris sui: Vestimentum tibi
est, princeps esto noster, ruina
7 autem hæc sub manu tua. Respondebit
in die illa, dicens;
Non sum medicus, et in domo
mea non est panis, neque vestimentum:
nolite constituere
8 me principem populi. Ruit enim
Jerusalem, et Judas concidit:
quia lingua eorum et
adinventiones eorum contra
Dominum, ut provocarent oculos
majestatis ejus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

14 Καὶ ἐπὶ (θ) πᾶν ὑψηλὸν ὄρος, καὶ
15 ἐπὶ πάντα βουνὸν ὑψηλὸν, Καὶ ἐπὶ
πάντα πύργον ὑψηλὸν, καὶ ἐπὶ πᾶν τεῖχος
16 ὑψηλὸν, Καὶ ἐπὶ πᾶν πλοῖον θαλάσσης,
καὶ ἐπὶ πᾶσαν θέαν πλοίων κάλλους.
17 Καὶ ταπεινωθήσεται πᾶς ἄνθρωπος,
καὶ πεσεῖται (ι) ὕβρις τῶν ἀνθρώπων,
καὶ ὑψωθήσεται κύριος μόνος ἐν τῇ ἡμέρᾳ
18 ἐκείνῃ. Καὶ τὰ χειροποίητα πάντα κα-
19 ταχρύψουσιν, Εἰσενέγκαντες εἰς τὰ σπήλαια,
καὶ εἰς τὰς σχισμὰς τῶν πετρῶν, καὶ εἰς
τὰς τρώγλας τῆς γῆς ἀπὸ προσώπου τοῦ
φόβου κυρίου, καὶ ἀπὸ τῆς δόξης τῆς ἰσχύος
αὐτοῦ, ὅταν ἀναστῇ θραῦσαι τὴν γῆν.
20 (κ) Τῇ γὰρ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐκβαλεῖ ἄνθρωπος
τὰ βδελύγματα αὐτοῦ τὰ ἀργυρᾶ, καὶ
τὰ χρυσᾶ, (λ) ἃ ἐποίησαν προσκυνεῖν τοῖς
21 ματαίοις, καὶ ταῖς νυκτερίσι, Τοῦ εἰσελθεῖν
εἰς τὰς τρώγλας τῆς στερεᾶς πέτρας,
καὶ εἰς τὰς σχισμὰς τῶν πετρῶν, ἀπὸ προσώπου
τοῦ φόβου κυρίου, καὶ ἀπὸ τῆς δόξης
τῆς ἰσχύος αὐτοῦ, ὅταν ἀναστῇ θραῦσαι τὴν
γῆν.

Et super omnem excelsum mon- 14
tem, & super omnem collem excelsum,
Et super omnem turrim 15
excelsam, & super omnem murum
excelsum, Et super omne navigi- 16
um (d) maris, & super omnē aspectum
pulchritudinis navium. Et 17
humiliabitur omnis homo, & cadet
(e) contumelia hominum: &
exaltabitur Dominus solus in die
illa. Et manufacta omnia abscondent, 18
Inferentes in speluncas, & 19
in scissuras petrarum, & in cavernas
terræ, à facie timoris Domini,
& à gloria fortitudinis ejus, cùm
surrexerit frangere terrã. Die enim 20
illâ ejiciet homo abominationes suas
argenteas, & aureas, quas fecerunt,
ad adorandum (f) vana, &
vespertiliones, Ad intrandum in 21
cavernas firmæ petræ, & in scissuras
petrarum, à facie timoris
Domini, & à gloria fortitudinis
ejus, cùm surrexerit frangere
(g) terram.

MS. A. (θ) πᾶν ὄρος, (ι) ὕψος ἀνθρώπων, (κ) Τῇ ἡμέρᾳ (λ) ἃ
ἐποίησεν

ΚΕΦ. γʹ.

1 ἸΔοὺ δὴ ὁ δεσπότης κύριος Σαβαὼθ
ἀφελεῖ (α) ἀπὸ Ἱερουσαλὴμ καὶ ἀπὸ τῆς
Ἰουδαίας, ἰσχύοντα καὶ ἰσχύουσαν, ἰσχὺν ἄρ-
2 του καὶ ἰσχὺν ὕδατος, Γίγαντα καὶ ἰσχύοντα,
καὶ ἄνθρωπον πολεμιστὴν, καὶ δικαστὴν,
καὶ προφήτην, καὶ στοχαστὴν, καὶ πρεσβύτε-
3 ρον, Καὶ πεντηκόνταρχον, καὶ θαυμαστὸν
σύμβουλον, καὶ σοφὸν ἀρχιτέκτονα, καὶ συν-
4 ετὸν ἀκροατήν. Καὶ ἐπιστήσω νεανίσκους
ἄρχοντας αὐτῶν, καὶ ἐμπαῖκται κυριεύσου-
5 σιν αὐτῶν. Καὶ συμπεσεῖται ὁ λαὸς, ἄνθρωπος
πρὸς ἄνθρωπον, καὶ ἄνθρωπος
πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ· προσκόψει τὸ
παιδίον πρὸς τὸν πρεσβύτην, ὁ ἄτιμος
6 πρὸς τὸν ἔντιμον. Ὅτι ἐπιλήψεται ἄνθρωπος
τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ, ἢ τοῦ οἰκείου τοῦ
πατρὸς αὐτοῦ, λέγων, Ἱμάτιον ἔχεις, ἀρχηγὸς
(β) γενοῦ ἡμῶν, καὶ τὸ βρῶμα τὸ ἐ-
7 μὸν ὑπὸ σὲ ἔστω. Καὶ ἀποκριθεὶς (″) ἐν τῇ
ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐρεῖ, Οὐκ ἔσομαί σου ἀρχηγός·
οὐ γάρ ἐστιν ἐν τῷ οἴκῳ μου ἄρτος,
οὐδὲ ἱμάτιον. οὐκ ἔσομαι ἀρχηγὸς τοῦ λαοῦ
8 τούτου, Ὅτι ἀνεῖται Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἡ Ἰουδαία
συμπέπτωκε, καὶ αἱ γλῶσσαι αὐτῶν
μετὰ ἀνομίας, τὰ πρὸς κύριον ἀπειθοῦντες.

CAP. III.

ECce itaque dominator Dominus 1
Sabaoth aufert de Hierusalem, &
de Judæa, (a) validum, & validam,
robur panis, & robur aquæ,
(b) Gigantē & fortem, & hominē 2
bellatorem, & judicē, & prophetã,
& (c) conjectorem, et presbyterũ,
Et quinquagenarium, & admira- 3
bilem consiliarium, & (d) sapientem
architectum, & (e) prudentem
auditorem. Et imponam 4
adolescentes principes eorum: &
(f) illusores dominabuntur eis.
Et corruet populus, homo ad ho- 5
minem, & homo ad proximum
suum: (g) impinget puer ad senem,
& inhonoratus ad honoratum:
Quia apprehendet homo 6
fratrem suum, vel domesticum patris
sui, dicens; Vestimentum habes:
princeps esto nostrûm: &
(h) cibus meus sub te sit. Et re- 7
spondens in die illa dicet; Non ero
tuus (i) princeps: non enim est in
domo mea panis, neque vestimentum;
non ero princeps populi hujus:
Quia dissoluta est Hierusa- 8
lem, et Judæa concidit, & (k)
linguæ eorum cum iniquitate,
(l) in his, quæ ad Dominum, increduli.

MS. A. (α) ἀπὸ τῆς Ἰουδαίας καὶ ἀπὸ Ἱερουσαλὴμ, (β) ἡμῶν γενοῦ,
(″) ἐρεῖ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, Οὐκ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

וְעַל כָּל טוּרַיָּא רָמַיָּא וְעַל כָּל רָמָתָא מְנַטְּלָתָא׃ וְעַל כָּל דְּיָתְבִין בְּמִגְדַּל רָם וְעַל כָּל דְּשָׁרָן 14 15
בְּשׁוּר כְּרִיךְ׃ וְעַל כָּל דְּיָתְבִין בְּנַסֵּי יַמָּא וְעַל כָּל דְּשָׁרָן בְּבִירָנְיָתָא שַׁפִּירָן׃ וְיִמְאַךְ רָמוּת 16
אֱנָשָׁא וְיֶחֱלַשׁ תְּקוֹף גַּבְרִין וְיִתְקִיף יְיָ בִּלְחוֹדוֹהִי בְּעִדָּנָא הַהִיא׃ וְטַעֲוָתָא גְּמִירָא יְסוּפוּן׃ 17 18
וְיֵעֲלוּן בִּמְעָרַת טִנָּרַיָּא וּבִמְחִלֵּי עַפְרָא מִן קֳדָם דַּחַלְתָּא דַּיְיָ וּמִזִּיו יְקָרֵיהּ בְּאִתְגְּלְיוּתֵיהּ 19
לְמִתְבַּר רַשִׁיעֵי אַרְעָא׃ בְּעִדָּנָא הַהִיא יְרַחֲקוּן בְּנֵי אֱנָשָׁא יַת טַעֲוַת כַּסְפְּהוֹן וְיַת טַעֲוַת 20
דַּהַבְהוֹן דַּעֲבַדוּ לְהוֹן לְמִסְגֵּיד לְטַעֲוָתָא וּלְצַלְמַנַיָּא׃ לְמֵעַל בִּמְעָרַת טִנָּרַיָּא וּבִשְׁקִיפֵי 21
כֵּיפָא מִן קֳדָם דַּחַלְתָּא דַּיְיָ וּמִזִּיו יְקָרֵיהּ בְּאִתְגְּלְיוּתֵיהּ לְמִתְבַּר רַשִׁיעֵי אַרְעָא׃ אִתְמְנַעוּ 22
לְכוֹן מִלְּאִשְׁתַּעְבָּדָא לֶאֱנָשָׁא בְּמֶעְבְּדֵיהּ דְּחִלָּא דְּנִשְׁמַת רוּחַ חַיִּין בְּאַפּוֹהִי אֲרֵי יוֹמָא דֵּין
הוּא קַיָּם וּמְחַר לֵיתוֹהִי וּכְלְמָא חֲשִׁיב הוּא׃

ג

אֲרֵי הָא רִבּוֹן עָלְמָא יְיָ צְבָאוֹת מַעְדֵּי מִירוּשְׁלֶם וּמִיהוּדָה סְמַךְ וּסְעִיד כָּל סְמַךְ מֵיכַל וְכָל 1
סְעִיד מִשְׁתֵּי׃ גִּבָּר וּגְבַר עָבֵיד קְרָב דַּיָּן וְסָפַר וּמִשְׁתְּאַל וְסָב׃ רַב חַמְשִׁין וּנְסַב אַפִּין 2 3
וּמְלִיךְ מִלַּךְ וַאֲמַר וּמִשְׁתְּמַע וְחַכִּים וְסוּכְלְתָן בְּעֵצָה׃ וַאֲמַנֵּי יַנְקַיָּא פַּרְנָסֵיהוֹן וְחַלָּשַׁיָּא 4
יִשְׁלְטוֹן בְּהוֹן׃ וְיִתְגָּרוּן עַמָּא גְּבַר בִּגְבַר וּגְבַר בְּחַבְרֵיהּ יִשְׁלְטוֹן עוּלֵמַיָּא בְּסָבָא וְרָשִׁיט 5
בִּדְיַקִּיר׃ אֲרֵי יֵיחוֹד גְּבַר בְּאַחוּהִי מִזַּרְעִית בֵּית אֲבוּהִי לְמֵימַר כְּסוּ אִית לָךְ רַב תְּהֵי עֲלָנָא 6
וּמַגְבִּיתָא הָדָא תְּהֵי תְחוֹת יְדָךְ׃ יְתִיב בְּעִדָּנָא הַהִיא לְמֵימַר לֵית אֲנָא כָשַׁר לְמֶהֱוֵי רֵישׁ 7
וּבְבֵיתִי לֵית מַה דְּאֵיכוֹל וְלֵית מַה דְּאִתְכַּסֵּי לָא תְמַנּוּנִי רַב בְּרֵישׁ כָּל עַמָּא׃ אֲרֵי אִתְקִילוּ 8
יָתְבֵי יְרוּשְׁלֶם וֶאֱנָשׁ יְהוּדָה גְּלוֹ אֲרֵי מַמְלַל פּוּמְהוֹן וַאֲגַר עוּבָדֵיהוֹן גְּלַן קֳדָם יְיָ וּמַרְגְּזִין
קֳדָם יְקָרֵיהּ׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et sup omnes montes excelsos, & sup omnes colles elevatos. Et sup omnes 14
qui habitant in turre excelsa, & sup omnes qui morantur in muro munito. 15
Et sup omnes qui habitãt in insulis maris, & sup oēs qui morantur in pala- 16
tiis pulcherrimis, Et humiliabitur altitudo hominũ, & infirmabitur fortitu- 17
do virorum, & roborabitur Dñs solus in tempore illo. Et idola penitus de- 18
ficient. Et introibunt in speluncas petrarum, & in cavernas pulveris à fa- 19
cie timoris Domini, & à splendore gloriæ ejus, cùm revelatus fuerit ut
conterat impios terræ. In tempore illo procul abjicient homines idola 20
sua argentea, & idola sua aurea, quæ sibi fecerant, ut adorarent idola &
simulachra. Ut ingrediantur speluncas rupium, *petræque* foramina à facie 21
timoris Domini, & à splendore gloriæ ejus, cùm revelatus fuerit ut con-
terat impios terræ. Cessate vobis ne subjiciamini homini, cùm factus fu- 22
erit terribilis, cujus spiraculum spiritus vitæ in naribus ejus est: quia ho-
diè est vivus & cras non est, & quasi nihilum reputatus est ipse.

CAP. III.

ECce enim dominator seculi Dominus exercituum auferet de Hierusa- 1
lem & de Juda fulcimentum & sustentaculum, omne fulcimentum cibi,
& omnem sustentationem potus. Fortem & virum bellatorem, judicem 2
& scribam, & conjectorem, & senem; Et principem quinquagenarium, 3
& acceptabilem vultus, & consiliarium, & docentem, & audientem, &
sapientem, & prudentem in consilio. Et constituam pueros gubernato- 4
res eorum; & infirmi dominabuntur eis. Et irruet populus vir in vi- 5
rum, & unusquisque in proximum suum; *dominabuntur pueri* contra se-
nem, & ignobilis contra nobilem. Apprehendet enim vir fratrem suum, 6
de cognatione domus patris sui, dicens: Vestimentum tibi est, princeps
esto noster, & potestas hæc erit sub manu tua. Respondebit in tempore il- 7
lo dicens: Non sum sufficiens ut sim princeps, & in domo mea non ha-
beo quod comedam, neque quo operiar; ne constituatis me principem *in*
caput totius populi. Quia offenderunt habitatores Hierusalem, & viri 8
Juda transmigrati sunt, quia eloquium oris sui, & merces operum suorum manifesta sunt coram Domino; provocant enim majestatem ejus.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

14 * ܘܥܠ ܟܠ ܛܘܪ̈ܐ ܕܪ̈ܡܝܢ. ܘܥܠ ܟܠ ܪ̈ܡܬܐ ܕܪ̈ܡܢ. * ܘܥܠ ܟܠ ܡܓܕܠܐ ܕܪ̈ܡܝܢ. ܘܥܠ ܟܠ
15 16 ܫܘܪܐ ܕܚܣܝܢ. * ܘܥܠ ܟܠ ܐܠܦ̈ܐ ܕܬܪܫܝܫ. ܘܥܠ ܟܠ ܚܙܘ̈ܐ ܕܪ̈ܓܬܐ.
17 * ܘܢܬܡܟܟ ܪܘܡܗ ܕܒܪܢܫܐ. ܘܢܬܡܟܟ ܪܘܡܐ ܕܓܒܪܐ. ܘܢܬܥܫܢ ܡܪܝܐ ܒܠܚܘܕܘܗܝ
18 19 ܒܝܘܡܐ ܗܘ. * ܘܦܬܟܪ̈ܐ ܠܓܡܪ ܢܥܒܪܘܢ. * ܘܢܥܠܘܢ ܒܡܥܪ̈ܐ ܕܟܐܦ̈ܐ ܘܒܢܩ̈ܥܐ
ܕܐܪܥܐ. ܡܢ ܩܕܡ ܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܡܢ ܗܕܪܐ ܕܬܘܩܦܗ. ܡܐ ܕܩܐܡ ܠܡܬܒܥܬܘ ܠܐܪܥܐ.
20 * ܒܗܘ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܫܕܘܢ ܒܢܝ̈ܢܫܐ ܦܬܟܪ̈ܐ ܕܕܗܒܐ ܘܕܣܐܡܐ. ܕܥܒܕܘ ܠܗܘܢ. ܠܡܣܓܕ
21 ܠܣܪܝܩܘܬܐ ܘܠܥܛܠܦ̈ܐ. * ܠܡܥܠ ܒܡܥܪ̈ܐ ܕܫܘܥܐ ܘܒܡܥܪ̈ܬܐ ܕܟܐܦ̈ܐ. ܡܢ ܩܕܡ ܕܚܠܬܗ
22 ܕܡܪܝܐ. ܘܡܢ ܗܕܪܐ ܕܬܘܩܦܗ. ܡܐ ܕܩܐܡ ܠܡܬܒܥܬܘ ܠܐܪܥܐ. * ܫܒܘ ܠܟܘܢ ܡܢ ܒܪܢܫܐ
ܕܢܫܡܬܐ ܒܢܚܝܪ̈ܘܗܝ. ܡܛܠ ܕܐܝܟ ܡܢܐ ܚܫܝܒ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܓ *

1 * ܡܛܠ ܕܗܐ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ. ܡܥܒܪ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ ܘܡܢ ܝܗܘܕܐ. ܣܡܘܟܐ ܘܣܡܘܟܬܐ.
2 ܟܠ ܕܣܡܟ ܠܚܡܐ. ܘܟܠ ܕܣܡܟ ܡܝܐ. * ܘܓܢܒܪܐ ܘܓܒܪܐ ܩܪܒܬܢܐ. ܘܕܝܢܐ ܘܢܒܝܐ.
3 ܘܩܣܘܡܐ ܘܩܫܝܫܐ. * ܘܪܝܫ ܚܡܫܝܢ. ܘܗܕܝܪ ܐܦܐ. ܘܡܠܟܐ. ܘܢܓܪܐ ܚܟܝܡܐ.
4 ܘܡܣܬܟܠܢ ܒܡܠܟܐ. * ܘܐܩܝܡ ܛܠܝ̈ܐ ܪ̈ܘܪܒܢܝܗܘܢ. ܘܡܒܙܚܢܐ ܢܫܬܠܛܘܢ ܒܗܘܢ.
5 * ܘܢܦܠ ܥܡܐ ܓܒܪ ܥܠ ܓܒܪ ܓܒܪܐ ܒܚܒܪܗ. ܘܢܬܡܪܚܘܢ ܛܠܝ̈ܐ ܥܠ ܣܒ̈ܐ. ܕܠܐ ܫܡܐ ܘܡܝܩܪ̈ܐ
6 ܠܡܝܩܪ̈ܐ. * ܡܛܠ ܕܢܐܚܘܕ ܓܒܪܐ ܓܒܪܐ ܠܐܚܘܗܝ. ܡܢ ܒܝܬ ܐܒܘܗܝ. ܘܢܐܡܪ ܠܗ.
7 ܢܚܬܐ ܐܝܬ ܠܟ. ܗܘܝ ܠܢ ܪܫܐ. ܘܬܘܩܠܬܐ ܗܕܐ ܬܚܝܬ ܐܝܕܟ. * ܘܢܥܢܐ ܒܗܘ ܝܘܡܐ ܗܘ
8 ܘܢܐܡܪ. ܠܐ ܗܘܐ ܐܢܐ ܪܫܐ. ܕܒܒܝܬܝ ܠܝܬ ܠܚܡܐ. ܘܐܦܠܐ ܬܟܣܝܬܐ. * ܠܐ ܬܥܒܕܘܢܢܝ
ܪܫܐ ܥܠ ܥܡܐ. ܡܛܠ ܕܐܬܬܩܠܬ ܐܘܪܫܠܡ. ܘܝܗܘܕܐ ܢܦܠܬ. ܡܛܠ ܕܠܫܢܗܘܢ
ܘܥܒ̈ܕܝ ܐܝ̈ܕܝܗܘܢ. ܐܡܪܡܪܘ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܥܢܢܐ ܕܐܝܩܪܗ.

Super montes excelſos, & ſuper colles ſublimes: 14 Super omnes turres altas, & 15 ſuper omnes muros munitos: 16 Super omnes naves Tharſis, & ſuper omnes ſpeculas optatiſſimas. 17 Et humiliabitur celſitudo hominis, & altitudo viri deprimetur, & ſolus Dominus exaltabitur in die illa: 18 Idola verò penitùs tranſibunt. 19 Et ingredientur in ſpecus petræ, & in hiatus terræ, propter terrorem Domini, & propter nitorem fortitudinis ejus, cùm ſurrexerit ad domandum terram. 20 Eâdem illâ die abjicient homines idola aurea & argentea quæ fabricaverant ſibi, ut adorarent vanitates & veſpertiliones. 21 Ingrediendo in cavernas petræ & in rupes lapideas, propter pavorem Domini, & propter decorem fortitudinis ejus, cùm ſurrexerit ad domandum terram. 22 Quieſcite ab homine qui halitum habet in naribus ſuis: quanti enim eſt momenti?

CAP. III.

1 NAm ecce Dominus dominorum amoturus eſt à Jeruſalem & à Juda fultorem & fultricem, omnem fulcientem pane, & omnem fulcientem aquâ: 2 Strenuum, & virum bellatorem, judicem, & prophetam, hariolum, & ſenem: 3 Ducem quinquagenarium, honorandi vultûs *virum*, & conſiliarium, fabrum peritum, & ſagacem in conſilio: 4 Et adoleſcentes conſtituam principes eorum, & irriſores imperitabunt eis. 5 Et irruet populus alter in alterum, quiſque in ſocium ſuum: & inſoleſcent juvenes contra ſenes, & ignobiles contra nobiles. 6 Etenim apprehendet unuſquiſpiam fratrem ſuum è domo ſua paterna, & dicet ei; Veſtes habes, eſto princeps noſter; et offendiculum hoc ſub manu tua ſit. 7 Reſpondebit autem eo die, dicétque; Nequaquam ero caput, quia in domo mea nec panis extat, nec operimentum. 8 Ne conſtituatis me principem ſuper populum, quoniam impegit Jeruſalem, et lapſus eſt Juda: nam lingua eorum, et opus manuum eorum exacerbaverunt Dominum et nubem majeſtatis ejus.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

14 15 * وعلى كل جبل عال * وعلى كل آكام مرتفعة * وعلى كل برج شاهق * وعلى كل سور مرتفع *
16 17 * وعلى كل سفن البحر * وعلى كل منظر حسن السفن * ويذل كل انسان * ويسقط ارتفاع البشر *
18 19 ويتعالى الرب وحده في ذلك اليوم * ويخفون جميع ما عملت ايديهم * ويخفونها في المغاير * وفي
سقوف الصخور * وفي انقاب الارض * من وجه خوف الرب ومن مجد قوته * اذا قام ليهشم الارض *
20 * لان في ذلك اليوم يخرج الانسان رذائله من كسب الفضة الذهب * التي اغتصبوها لهم
21 ليسجدوا لها * ومن الاشباح الليلية * ليولجوها في انقاب الصخر الصلد * وفي سقوف الصخور
من وجه خوف الرب * ومن مجد قوته * اذا قام ليهشم الارض *
22 [MS. Oxon. كفوا عن الانسان الذي يتنشق الريح بمنخريه * لانه بماذا اقياس *]

* الفصل الثالث *

* قريان فيه توبيخ النبي للشعب * ونهيه لهم عن التوكل على الانسان *

1 * هاهوذا السيد رب الجنود ينزع من اليهودية ومن اوروشليم القوي والقوية * وقوة الخبز
2 3 وقوة الماء * والجبار والمقتدر * والانسان المحارب * والقاضي والنبي * والعراف والشيخ * ورئيس
4 خمسين * والمشير العجيب * والمهندس الحكيم السامع الفهم * واقيم رؤساءهم احداثا * ويسودون
5 عليهم المستهزئون * ويقع الشعب انسان على انسان وانسان على رفيقه * ويعتو الصبي بالشيخ *
6 والسفيه بالمكرم * لان الرجل منهم يتشبث باخيه او بواحد من بيت ابيه * ويقول له * لك ثوب
7 فكن رئيسا علينا * وليكن طعامي من عندك * فيجيب في ذلك اليوم ويقول * لست اكون
8 رئيسا * لان ليس في بيتي خبز ولا ملبوس * لست اكون على هذا الشعب رئيسا * لان اوروشليم
قد خلت * واليهودية سقطت * والسنتهم تخالف فرائض الله بآثامهم *

Super quoſcunq; montes altiſſimos, & ſuper editiſſimos quoſq; colles. 14 15 *Super omnes turres elatiſſimas, & ſuper omnes muros celſiſſimos:* 16 *Super omnes naves maris, & ſuper omnem aſpectum pulchritudinis navium.* 17 *Et deprimetur omnis homo, & altitudo mortaliũ labetur; ſolus autem Dominus exaltabitur eo die.* 18 *Et abſcondent quæcunq; compoſuerunt manus eorum;* 19 *Abſcondent inquã, illam in antris, in hiatibus petrarum, & in foraminibus terræ à facie terroris Domini, & à majeſtate roboris ejus, cùm exurget ad perrumpendam terram.* 20 *Nam eo die ejicient homines vitia ſua ex acquiſitione argenti atq; auri quæ ſibi congeſſerant ut adorarent ea, & ex phantaſmatibus nocturnis;* 21 *ut indant ea in foramina petræ duriſſimæ, & in hiatus rupium, à facie terroris Domini, & à majeſtate roboris ejus, cùm exurget ad comminuendam terram.*

22 [*Deſiſtite vos ab ipſo homine, cujus halitus eſt in naribus ejus: nam in quo æſtimandus eſt?*]

CAP. III.

Lectio continens commonitionem Prophetæ ad populum, et cohortationem ne ſpem collocent in homine.

1 *ECce Domin9 dominator exercituũ auferet ab Judæa et ab Jeruſalẽ validũ et validam, robur panis & robur aquæ;* 2 *Gigantẽ, & potentẽ, hominemq; bellatorem, judicem, prophetã, divinum, atque ſenem;* 3 *Ducem quinquaginta, conſiliarium admirandum, architectum ſapientem, capacem rationis.* 4 *Et conſtituam principes eorum juvenes, et dominabuntur eis irriſores.* 5 *Irruetq; populus alter in alterum: & homo in ſocium ſuum: et inſoleſcet puer contra ſenem, et ſtolidus contra honeſtum.* 6 *Nam apprehendet quis eorum fratrem ſuum, aut aliquem de domo patris ſui, dicetque ad eum; Veſtem habes, ſis ergò dux noſter, ſitque cibus meus à te.* 7 *At is reſpondebit eâ die, dicetque; Non ero dux, quia non eſt domi meæ panis neque indumentum.* 8 *Non ero dux ſuper hunc populum, quia Jeruſalem jam deſolata eſt, et Judæa corruit, et linguæ eorum adverſantur præceptis divinis ob iniquitates eorum.*

ישעיה: ג

Sedom ſicut ſuum peccatum & , eos *in reſpondit* eorum *facierum* Agnitio
9 הַכָּרַת פְּנֵיהֶם עָנְתָה בָּם וְחַטָּאתָם כִּסְדֹם
reddiderunt quoniam ,eorum animæ Væ .*celârunt* non , nunciaverunt
הִגִּידוּ לֹא כִחֵדוּ אוֹי לְנַפְשָׁם כִּי־גָמְלוּ
fructum quòd , bonus cùm juſto Dicite .malum ſibiipſis
10 לָהֶם רָעָה׃ אִמְרוּ צַדִּיק כִּי־טוֹב כִּי־פְרִי
retributio nam : malum impio Væ .comedent ſuorum *ſtudiorum*
11 מַעַלְלֵיהֶם יֹאכֵלוּ׃ אוֹי לְרָשָׁע רָע כִּי־גְמוּל
, parvulus , *ejus exactores* mei Populi .ei fiet ejus manuum
12 יָדָיו יֵעָשֶׂה לּוֹ׃ עַמִּי נֹגְשָׂיו מְעוֹלֵל
,*errare facientes* ,te *beatificantes* mi Popule .*eum in* ſunt dominatæ mulieres &
וְנָשִׁים מָשְׁלוּ בוֹ עַמִּי מְאַשְּׁרֶיךָ מַתְעִים
,DOMINUS *litigandum* ad *Stans* .*abſorbuerunt* tuarũ ſemitarũ viam &
13 וְדֶרֶךְ אֹרְחֹתֶיךָ בִּלֵּעוּ׃ נִצָּב לָרִיב יְהוָה
judicium ad DOMINUS .populos judicandum ad *ſtans* &
14 וְעֹמֵד לָדִין עַמִּים׃ יְהוָה בְּמִשְׁפָּט
ſuccendiſtis vos Et .ſuis principibus &,ſui populi ſenibus cum veniet
יָבוֹא עִם־זִקְנֵי עַמּוֹ וְשָׂרָיו וְאַתֶּם בִּעַרְתֶּם
contundetis vobis Quid .veſtris domibus in *afflicti* rapina : vineam
15 הַכֶּרֶם גְּזֵלַת הֶעָנִי בְּבָתֵּיכֶם׃ מַלָּכֶם תְּדַכְּאוּ
Dominus dicit , *moletis* *afflictorum* facies & , meum populum
עַמִּי וּפְנֵי עֲנִיִּים תִּטְחָנוּ נְאֻם־אֲדֹנָי
eo Pro : DOMINUS dixit Et ? exercituum *DOMINUS*
16 יְהוִה צְבָאוֹת׃ וַיֹּאמֶר יְהוָה יַעַן
, gutture *extentæ* ambulaverunt & , Sijon filiæ *ſuperbierunt* quòd
כִּי גָבְהוּ בְּנוֹת צִיּוֹן וַתֵּלַכְנָה נְטוּוֹת גָּרוֹן
ſuis pedibus in & , ibant *plaudendo* & ambulando , *oculis* *fallentes* &
וּמְשַׂקְּרוֹת עֵינָיִם הָלוֹךְ וְטָפֹף תֵּלַכְנָה וּבְרַגְלֵיהֶם
filiarum verticem Dominus *inficiet ſcabie* Et .*tinniebant*
17 תְּעַכַּסְנָה׃ וְשִׂפַּח אֲדֹנָי קָדְקֹד בְּנוֹת
die In .deteget earum *pudendum* DOMINUS & , Sijon
18 צִיּוֹן וַיהוָה פָּתְהֵן יְעָרֶה׃ בַּיּוֹם
, *crepidarum* gloriam Dominus faciet recedere illa
הַהוּא יָסִיר אֲדֹנָי אֵת תִּפְאֶרֶת הָעֲכָסִים
, armillas & , *Collaria* .lunulas & , *reticula* &
19 וְהַשְּׁבִיסִים וְהַשַּׂהֲרֹנִים׃ הַנְּטִפוֹת וְהַשֵּׁרוֹת
domus & , *vittas* & , periſcelides & , *Tiaras* .*velamina* &
20 וְהָרְעָלוֹת׃ הַפְּאֵרִים וְהַצְּעָדוֹת וְהַקִּשֻּׁרִים וּבָתֵּי
.naris circulos & Annulos .inaures & *animi*
21 הַנֶּפֶשׁ וְהַלְּחָשִׁים׃ הַטַּבָּעוֹת וְנִזְמֵי הָאָף׃
.crumenas & , *pepla* & , *operimenta* & , *veſtes Mutatorias*
22 הַמַּחֲלָצוֹת וְהַמַּעֲטָפוֹת וְהַמִּטְפָּחוֹת וְהָחֲרִיטִים׃
.*palliola* & , *calyptras* & , ſindones & , Specula
23 הַגִּלְיֹנִים וְהַסְּדִינִים וְהַצְּנִיפוֹת וְהָרְדִידִים׃
, exciſio cingulo pro & , erit *mucus* aromate pro , erit Et
24 וְהָיָה תַחַת בֹּשֶׂם מַק יִהְיֶה וְתַחַת חֲגוֹרָה נִקְפָּה
cingulum faſcia pectorali pro & ,calvitium *calamiſtri* *opere* pro &
וְתַחַת מַעֲשֶׂה מִקְשֶׁה קָרְחָה וְתַחַת פְּתִיגִיל מַחֲגֹרֶת
, cadent gladio in tui Viri .pulchritudine pro *quia* : ſacci
25 שָׂק כִּי־תַחַת יֹפִי׃ מְתַיִךְ בַּחֶרֶב יִפֹּלוּ
,ejus portæ lugebunt & ,plangent Et .prælio in tua fortitudo &
26 וּגְבוּרָתֵךְ בַּמִּלְחָמָה׃ וְאָנוּ וְאָבְלוּ פְּתָחֶיהָ
.ſedebit terra in munda &
וְנִקָּתָה לָאָרֶץ תֵּשֵׁב׃

Verſio VULG. LAT.

9 Agnitio vultûs eorum reſpon-
dit eis : & peccatum ſuum
quaſi Sodoma prædicaverunt,
nec abſconderunt : væ animæ
eorum, quoniam reddita ſunt
10 eis mala. Dicite juſto, Quoniã
benè, quoniam fructũ adin-
ventionum ſuarum comedet.
11 Væ impio in malum : retribu-
tio enim manuum ejus fiet ei.
12 Populum meum exactores ſui
ſpoliaverunt, et mulieres do-
minatæ ſunt eis. Popule meus,
qui te beatum dicunt, ipſi te
decipiunt , & viam greſſuum
13 tuorum diſſipant. Stat ad ju-
dicandum Dominus, & ſtat ad
14 judicandos populos. Dominus
ad judicium veniet cum ſeni-
bus populi ſui, & principibus
ejus : vos enim depaſti eſtis
vineam, & rapina pauperis in
15 domo veſtra. Quarè atteritis
populum meum, & facies pau-
perum commolitis, dicit Do-
16 minus Deus exercituum ? Et
dixit Dominus ; Pro eo quòd
elevatæ ſunt filiæ Sion, & am-
bulaverunt extento collo, &
nutibus oculorum ibant , &
plaudebant, ambulabant pedi-
bus ſuis, & compoſito gradu
17 incedebant : Decalvabit Do-
minus verticem filiarum Si-
on, & Dominus crinem earum
18 nudabit. In die illa auferet
Dominus ornamentum calcea-
19 mentorum, & lunulas, Et tor-
ques, & monilia, & armillas,
20 & mitras, Et diſcriminalia, &
periſcelidas, & murenulas, et
21 olfactoriola , & inaures, Et
annulos, et gemmas in fronte
22 pendentes, Et mutatoria , &
palliola, & linteamina, et acus,
23 Et ſpecula , & ſindones, et
24 vittas, et theriſtra. Et erit pro
ſuavi odore fœtor, et pro zo-
na funiculus, et pro criſpanti
crine calvitiũ, et pro faſcia pe-
25 ctorali cilicium. Pulcherrimi
quoque viri tui gladio cadent,
26 et fortes tui in prælio. Et mœ-
rebunt atque lugebunt portæ
ejus, et deſolata in terra ſe-
debit.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

9 Διότι νῦν ἐταπεινώθη ἡ δόξα αὐτῶν, καὶ
ἡ αἰσχύνη τοῦ προσώπου αὐτῶν ἀντέστη αὐ-
τοῖς· τὴν δὲ ἁμαρτίαν αὐτῶν ὡς Σοδόμων
ἀνήγγειλαν καὶ ἐνεφάνισαν. οὐαὶ τῇ ψυχῇ
αὐτῶν, (γ) διότι βεβούλευνται βουλὴν πονη-
10 ρὰν, καθ' ἑαυτῶν, (δ) Εἰπόντες, Δήσω-
μεν τὸν δίκαιον, ὅτι δύσχρηστος ἡμῖν ἐστι.
τοίνυν τὰ γεννήματα τῶν ἔργων αὐτῶν
11 φάγονται. Οὐαὶ τῷ ἀνόμῳ, πονηρὰ κατὰ τὰ
12 ἔργα τῶν χειρῶν αὐτοῦ συμβήσεται αὐτῷ. Λα-
ός μου, οἱ πράκτορες ὑμῶν καλαμῶνται
ὑμᾶς, καὶ οἱ ἀπαιτοῦντες κυριεύουσιν ὑμῶν.
λαός μου, οἱ μακαρίζοντες ὑμᾶς, πλανῶ-
σιν ὑμᾶς, καὶ (ε) τὸν τρίβον τῶν ποδῶν ὑμῶν
13 ταράσσουσιν. Ἀλλὰ νῦν καταστήσεται εἰς κρί-
σιν κύριος, καὶ στήσει εἰς κρίσιν τὸν λαὸν αὐ-
14 τοῦ. Αὐτὸς κύριος εἰς κρίσιν ἥξει μετὰ τῶν
πρεσβυτέρων τοῦ λαοῦ, καὶ μετὰ τῶν ἀρχόν-
των αὐτοῦ. ὑμεῖς δὲ τί ἐνεπυρίσατε τὸν ἀμ-
πελῶνά μου, καὶ ἡ ἁρπαγὴ τοῦ πτωχοῦ ἐν
15 τοῖς οἴκοις ὑμῶν; Τί ὑμεῖς ἀδικεῖτε τὸν
λαόν μου, καὶ τὸ πρόσωπον τῶν πτωχῶν καται-
16 σχύνετε; Τάδε λέγει κύριος, Ἀνθ' ὧν
ὑψώθησαν αἱ θυγατέρες Σιὼν, καὶ ἐπορεύθη-
σαν ὑψηλῷ τραχήλῳ, (ζ) καὶ ἐν νεύμασιν
ὀφθαλμῶν, καὶ τῇ πορείᾳ τῶν ποδῶν ἅμα
σύρουσαι τοὺς χιτῶνας, καὶ τοῖς ποσὶν ἅμα
17 παίζουσαι, Καὶ ταπεινώσει ὁ θεὸς ἀρχού-
σας θυγατέρας Σιών· καὶ κύριος (η) ἀνακα-
18 λύψει τὸ σχῆμα αὐτῶν Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκεί-
νῃ, καὶ ἀφελεῖ κύριος τὴν δόξαν τοῦ ἱματι-
σμοῦ αὐτῶν, (θ) τὰ ἐμπλόκια, καὶ τοὺς κο-
19 σύμβους, καὶ τοὺς μηνίσκους, Καὶ τὸ κάθε-
μα, καὶ τὸν κόσμον τοῦ προσώπου αὐτῶν, καὶ
(ι) τὴν σύνθεσιν τοῦ κόσμου (κ) τῆς δόξης, καὶ
τοὺς χλιδῶνας, καὶ τὰ ψέλια, καὶ τὸ ἐμ-
πλόκιον, (λ) καὶ τοὺς δακτυλίους, καὶ τὰ περι-
21 δέξια, καὶ τὰ ἐνώτια, Καὶ τὰ περιπόρφυ-
ρα, καὶ τὰ μεσοπόρφυρα, καὶ τὰ ἐπιβλήματα
τὰ κατὰ τὴν οἰκίαν, καὶ τὰ διαφανῆ Λακω-
νικὰ, καὶ τὰ βύσσινα, καὶ τὰ ὑακίνθινα, καὶ
(μ) κόκκινα, καὶ τὴν βύσσον, (ν) σὺν χρυ-
σῷ καὶ ὑακίνθῳ συγκαθυφασμένα, καὶ θέ-
24 ριστρα κατάκλιτα. Καὶ ἔσται ἀντὶ ὀσμῆς (ξ)
ἡδείας, κονιορτός· καὶ ἀντὶ ζώνης, σχοινίῳ
ζώσῃ· καὶ ἀντὶ τοῦ κόσμου τῆς κεφαλῆς τοῦ
χρυσίου, φαλάκρωμα ἕξεις διὰ τὰ ἔργα
σου· καὶ ἀντὶ τοῦ χιτῶνος τοῦ μεσοπορφύρου,
25 περιζώσῃ σάκκον. Καὶ ὁ υἱός σου ὁ κάλλι-
στος ὃν ἀγαπᾷς, μαχαίρᾳ πεσεῖται. καὶ οἱ ἰ-
26 σχύοντες ὑμῶν, μαχαίρᾳ πεσοῦνται. Καὶ τα-
πεινωθήσονται, καὶ πενθήσουσιν αἱ θῆκαι
τοῦ κόσμου ὑμῶν· καὶ καταλειφθήσῃ μόνη, καὶ εἰς τὴν γῆν ἐδαφισθήσῃ.

Quarè nunc humiliata eſt gloria 9
eorum : & confuſio vultûs eorum
reſtitit eis : & peccatum ſuum,
quaſi Sodomorum, annuntiaverunt,
& oſtenderunt. Væ animæ eo-
rum, quoniam conſiliati ſunt con-
ſilium peſſimum contra ſemetipſos,
Dicentes ; Alligemus juſtum , 10
quoniam (m) inutilis eſt nobis. Ita-
que fructus operum ſuorum come-
dent. Væ iniquo : mala ſecundũ 11
opera manuum ejus accident ei.
Popule meus, exactores veſtri ſpo- 12
liant vos, & (n) exigentes domi-
nantur vobis. Popule meus, qui
beatos vos dicunt , decipiunt vos ;
& ſemitam pedum veſtrorum tur-
bant. Sed nunc ſtabit in judicio 13
Dominus, & ſtatuet ad judicium
populum ſuum. Ipſe Dominus ad 14
judicium veniet cum ſenioribus po-
puli, & cum principibus ejus. Vos
autem quarè incendiſtis vineam
meam ? & rapina pauperis in do-
mibus veſtris ? Quarè vos inju- 15
riis afficitis populum meum, & fa-
ciem pauperum confunditis ? Hæc 16
dicit Dominus ; Pro eo, quòd ex-
altatæ ſunt filiæ Sion, & ambula-
verunt collo excelſo, & in nutibus
oculorum, & inceſſu pedum ſimul
trahentes tunicas, & pedibus ſimul
ludentes ; Et humiliabit Deus prin- 17
cipales filias Sion : & Dominus
denudabit habitum earum In die 18
illa : & auferet Dominus gloriam
veſtimenti earum, reticulos , &
cincinnos, & (o) lunulas, Et (p) 19
monile demiſſum, & ornatum faci-
ei eorum, & compoſitionem orna-
tûs gloriæ, & brachialia, & ar-
millas, & reticulum, & annulos, et
dextralia, & inaures, Et prætextas 21
purpureas, et purpuras clavatas, &
indumenta, quæ per domum, &
perſpicua Laconica, et byſſina, et
hyacinthina , et coccinea, &
byſſum cum auro et hyacintho (q)
contexta, et theriſtra (r) accu-
bitoria. Et erit pro odore ſuavi 24
pulvis: et pro zona funiculo cin-
gêris : et pro ornamento capitis
aureo calvitium habebis propter
opera tua : et pro tunica clava-
ta purpuræ circumcingêris ſacco.
Et filius tuus pulcherrimus, quem 25
diligis , gladio cadet : et fortes
veſtri gladio cadent. Et humi- 26
liabuntur , atque lugebunt thecæ
ornatûs veſtri: et relinquêris ſo-
la, et ad terram allidêris.

MS. A. (γ) ὅτι (δ) Εἴπαντες (ε) τὴν τρίβον (ζ) καὶ νεύμασιν (η) ἀποκαλύψεις (θ) καὶ τοὺς κόσμους αὐτῶν, καὶ τὰ ἐμπλόκια, (ι) τὴν* σύνεσιν (κ) τῆς δόξης αὐτῶν, (λ) καὶ τὰ περιδέξια, καὶ τοὺς δακτυλίους, (μ) τὰ κόκκινα, (ν) σὺν χρυσίῳ (ξ) * ἰδίας,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

9 אשתמודעות אפיהון בדינא אסהיד בהון וחטאיהון כסדומאי קבלין ולא מנעין וי
10 לנפשהון ארי גרמו דתיתי להון בישתא: אמרו לצדיקא טוביכון ארי פרי עובדיהון
11 ישתלמון: וי לרשיעיא דעובדיהון בישין ארי גמלא דידיהון יתתב להון: עמי דסרכוהי
12 בזוזהי כמעללי לכרמא וכמרי חובא שליטו ביה: עמי משבחך אטעיוך ואורח שבילך
13 קלקילו: עתיד למדן יי ומתגלי למעבד פורענות דין מן עממיא: יי בדינא יעול ית סבי
14 15 עמא וסרכוהי ואתון אנסתון ית עמי חטוף מסכנא בבתיכון: מה לכון דאתון ממסכנין
16 ית עמי ואפי חשיכיא מבלין אתון ומיתין בדיניהון אמר יי אלהים צבאות: ואמר יי
חלף דאתרברבא בנת ציון ואזלן מרימן צואר ומסרבקן עינין אזלן ובפתהן מקפן
17 18 וברגליהן מרגזן: וישעביד יי יקרת בנת ציון ויי יקרהן יעדי: ביומא ההוא יעדי יי ית
19 תושבחת דמסניא ושביסיא וסבכיא: ענקיא ושירי ידיא וחניסנסיא: כליליא ושירי
20 21 רגליא וקלמסמסיא וקדשיא וחליטתא: עזקתא וטלטוליא: כתוניא ושושיפיא
22 ולבורנקיא ומחכיא: ומחזיתא וקרטסיא וכתריא וכבינתא: ויהי אתר דהואה יהבן
23 24 בוסמין יתמסי ואתר דהואה אסרן פסיקיא יהי רושמין דמחא וחלף אקפורת פתא
גזוז ריש וחלף דהואה מהלכן בגיוה יסרן סקין דא פורענותא תתעביד מנהון ארי
25 טעאה בשופרהון: שפר גברין בחרבא יתקטלון ועבדי נצחניך בקרבא: ויצדון
26 ויסופון תרעי קרוהא ותתרוקין ארעא ותחרוב:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Agnitio enim vultus eorum in judicio teſtificatur contra eos, & peccata 9
eorum quaſi Sodomitæ prædicant, & non deſinunt. Væ animæ eorum,
quoniam ipſi fuerunt cauſa quòd venerit eis malum. Dicite *juſto* : Be- 10
ati eſtis vos ; quia fructus operum ſuorum retribuetur eis. Væ impiis , 11
quorum opera mala ſunt, quia retributio manuum ſuarum reddetur eis.
Populum meum exactores ſui expoliaverunt , quaſi vindemiantes vine- 12
am, & quaſi fœneratores dominati ſunt ei. Popule meus, qui te lau-
dant, decipiunt te ; & viam ſemitæ tuæ diſſipant. Judicaturus eſt Do- 13
minus, & revelabit ſe , ut faciat ultionem judicii in populos. Dominus 14
ad judicium veniet cum ſenioribus populi ſui, & exactoribus ejus : vos
autem diripuiſtis populum meum , rapina pauperis in domibus ve-
ſtris eſt. Quid vobis eſt quòd depauperatis populum meum ; & 15
facies pauperum atteritis, ut in cauſa ſua pereant ? dicit Dominus
Deus exercituum. Et dixit Dominus : Pro eo quod elevatæ ſunt filiæ 16
Sion , & ambulaverunt extento collo, & ſtibio linitis oculis ibant, &
crinibus circumvolutis, & pedibus ſuis provocantes : Proſternet Domi- 17
nus gloriam filiarum Sion, & Dominus gloriam earum auferet. In illo 18
tempore auferet Dominus ornamentum calceamentorum ; & lunulas, & 19
torques , Et monilia, & armillas manuum, & mitras. Et diſcrimina- 20
lia, & armillas pedum , & murenulas , & inaures, & olfactoria. Et 21
annulos, & gemmas. Tunicas & palliola, & linteamina, & acus. Et 22
ſpecula, & ſindones, & coronas, & theriſtra. Et in loco ubi erant aro- 23
mata, tabefactio erit ; & in loco ubi ligabant zonas, erunt ſtigmata per- 24
cuſſionis, & pro circunvoluto crine erit tonſio capitis , & pro eo quòd
ambulabant in ſuperbia, accingentur ſaccis. Hæc vindicta ſumetur ex eis,
quia fornicatæ ſunt in pulchritudine ſua. Pulcherrimi viri tui gladio oc- 25
cidentur, & victores tui in bello. Et deſtruentur & peribunt in porta civitatum ſuarum, & deſolabitur terra & deſerta erit. 26

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܣܒ ܒܐܦ̈ܝܗܘܢ. ܣܗܕ ܒܗܘܢ. ܘܚܛܗ̈ܝܗܘܢ ܐܝܟ ܣܕܘܡ ܚܘܝܘ. ܘܠܐ ܐܬܢܟܦܘ. 9
ܘܝ ܠܢܦܫܗܘܢ. ܕܦܪܥܘ ܠܗܘܢ ܫܘܠܡܐ ܒܝܫܐ. * ܐܡܪܪܘ ܠܙܕܝܩܐ ܛܒ. ܡܛܠܗܢܐ 10
ܦܐܪ̈ܐ ܕܥܒܕ̈ܝܗܘܢ ܢܐܟܠܘܢ. * ܘܝ ܠܪܫܝܥܐ ܒܝܫܐ. ܡܛܠ ܕܥܒܕܐ ܕܐܝ̈ܕܘܗܝ ܡܬܦܪܥ ܠܗ. 11
* ܫܠܝܛ̈ܢܘܗܝ ܕܥܡܝ ܡܥܠܠܝܢ ܠܗ. ܘܢܫ̈ܐ ܫܠܝܛܢ ܒܗ. ܥܡܝ. ܡܛܘܒܢ̈ܝܟ 12
ܐܛܥܝܘܟ. ܘܐܘܪܚܐ ܕܫܒܝ̈ܠܝܟ ܒܠܥܘ. * ܩܐܡ ܠܡܕܢ ܡܪܝܐ. ܘܩܐܡ ܠܡܕܢ ܠܥܡܡܗ. 13
* ܡܪܝܐ ܒܕܝܢܐ ܢܥܘܠ. ܥܡ ܩܫܝ̈ܫܐ ܕܥܡܗ. ܘܥܡ ܪܘܪ̈ܒܢܘܗܝ. ܐܢܬܘܢ 14
ܐܘܩܕܬܘܢ ܟܪܡܝ. ܘܚܛܘܦܝܐ ܕܡܣܟ̈ܢܐ ܒܒ̈ܬܝܟܘܢ. * ܠܡܢܐ ܕܫܝܬܘܢ ܠܥܡܝ. 15
ܘܐܦ̈ܐ ܕܡܣܟ̈ܢܐ ܐܒܗܬܬܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܡܛܠ ܕܐܬܪܝܡ ܒܢ̈ܬ ܨܗܝܘܢ. 16
ܘܗܠܟܢ ܒܨܘܪܐ ܪܡܐ. ܘܡܪܡܙܢ ܒܥܝ̈ܢܐ ܡܗܠܟܢ ܗܘܝ: ܘܡܛܦܛܦܢ ܒܪ̈ܓܠܝܗܝܢ.
ܘܡܪܓܙܢ ܠܡܪܝܐ: ܢܫܦܠ ܡܪܝܐ ܪܫܢܝܬܐ ܕܒܢ̈ܬ ܨܗܝܘܢ. ܘܡܪܝܐ ܐܣܟܡ̈ܝܗܝܢ 17
ܢܦܪܘܥ. * ܒܗܘ ܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܥܒܪ ܡܪܝܐ ܫܘܒܚܐ ܕܢܚܬ̈ܝܗܝܢ. ܘܨܒܬ̈ܗܝܢ. ܘܕܓܕܘ̈ܠܝܗܝܢ. 18
* ܘܫܡܫ̈ܐ ܕܣܥܪ̈ܬܗܝܢ. ܘܒܠܘܪ̈ܝܗܝܢ. ܘܨܕ̈ܥܝܗܝܢ. * ܘܨܒܬܐ ܕܐܦ̈ܝܗܝܢ. 19 20
ܘܩܕ̈ܫܝܗܝܢ ܘܩܘ̈ܠܝܗܝܢ. * ܘܐܡܘܢ̈ܝܗܝܢ ܘܫܪ̈ܝܗܝܢ. * ܘܫܝܪ̈ܝܗܝܢ 21 22
ܘܣܕܝ̈ܢܝܗܝܢ. ܘܡܟܬ̈ܢܝܗܝܢ. ܘܒܘܨܗܝܢ ܘܐܪܓܘ̈ܢܝܗܝܢ. * ܘܬܟܠ̈ܬܗܝܢ 23
ܘܙܚܘ̈ܪܝܗܝܢ ܘܐܣܛܠ̈ܝܬܗܝܢ. ܘܟܠܗ ܟܢܫܐ ܕܨܒ̈ܬܗܝܢ. * ܘܢܗܘܐ ܚܠܦ ܪܝܚܗܝܢ 24
ܒܣܝܡܐ. ܘܚܠܦ ܐܣܪ ܚܨ̈ܝܗܝܢ ܚܒ̈ܠܐ ܢܐܣܪܢ. ܘܚܠܦ ܟܕܘܪܐ. ܦܘܪ̈ܣܬܐ. ܘܚܠܦ
ܐܦܝܩ̈ܝܗܝܢ. ܣܩ̈ܐ ܢܬܟܣܝܢ. ܡܛܠ ܕܢܬܚܒܠ ܫܘܦܪ̈ܗܝܢ. * ܘܓܢܒܪ̈ܝܟܝ 25
ܒܚܪܒܐ ܢܦܠܘܢ. ܘܥܫܝ̈ܢܝܟܝ ܒܩܪܒܐ. * ܘܢܐܠܝܢ ܘܢܬܐܒܠܢ ܬܪ̈ܥܝܗ 26
ܘܙܟܘܬܗ. ܠܐܪܥܐ ܬܦܠ.

Aſſentatio eorum teſtatur contra ipſos, & 9
peccata ſua more Sodomorum patefaciunt,
nec erubeſcunt. Væ animæ eorum, quia comparârunt
ſibi retributionem malam. Juſtum 10
Deum vehementer exacerbârunt, propterea
fructus operum ſuorum comedent. Væ impio 11
perdito, quoniam opus manuum ejus rependetur
ei. Principes populi mei racemant
illum, & mulieres dominium exercent 12
in eum. Populi mi, benefactores tui ſeducunt
te, & viam ſemitarum tuarum conturbant.
Exurget ad judicandum Dominus; 13
exurget inquam, ad judicandum populum
ſuum. Dominus ad judicium ingredietur 14
tam cum ſenibus populi ſui quàm cum principibus
ejus. Vos vineam combuſſiſtis, &
rapina pauperum in domibus veſtris eſt.
Cur læditis populum meum, & facies pau- 15
perum rubore ſuffunditis? ait Dominus potentiſſimus.
Quandoquidem ſuperbiverunt 16
filiæ Sion, & erecto incedunt collo, oculorum
nutibus ambulant, pedibus ſuis tripudiant,
& Dominum provocant ad iram;
Humiliabit Dominus præcipuas inter filias 17
Sion, & Dominus ſexus earum nudabit. Eâ 18
die amovebit Dominus pompam veſtium,
ornamentorum, & comarum illarum; Sphe- 19
rulas capillorum, cryſtallos, & tempora
earum; Ornatum vultûs, inaures, & tor- 20
ques earum; Monilia, & armillas earum; 21
Sericum, ſindones, carbaſa, byſſum, & 22
purpuras earum; Indumenta, hyacinthos, 23
cocca, totum denique faſciculum ornatûs
earum. Eritque loco ſuavis odoris earum, 24
pulvis; loco vittæ lumborum ſuorum, cingulis
accingent ſeſe; loco gemmarum, inciſiones;
& loco hyacinthorum ſuorum,
ſaccis operientur: quoniam corrumpetur
pulchritudo earum. Potentes tui gladio 25
corruent, & robuſtiſſimi tui bello: Plo- 26
rabunt & in luctu ſedebunt portæ ejus,
& victoria ejus in terram decidet.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* مِن أَجْلِ أَنْ تَجِدَهُمْ أَنصَعُ الْآنَ * وَخِزْيُ وُجُوهِهِمْ انتَصَبَ لَهُمْ * إِذَا دَاعُوا خَطِيَّهُمْ مِثْلَ أَهْلِ 9
سَدُوم وَأَشْهَرُوهَا * الْوَيْلُ لِأَنفُسِهِمْ * لِأَنَّهُمْ تَشَاوَرُوا مَشُورِين شِرِّين لِذَوَاتِهِمْ * وَقَالُوا نَرْبِطُ الصِّدِّيقَ 10
لِأَنَّهُ غَيْرُ صَالِحٍ هُوَ لَنَا * فَسَيَأْكُلُونَ الْآنَ غَلَّاتِ أَعْمَالِهِمْ * الْوَيْلُ لِلْأَثِيمِ * فَسَتَعْقِدَنَّ بِهِ شُرُور 11
حَسْبَ أَعْمَالِ يَدَيْهِ * يَا شَعْبِي * الْمُسْرِفُونَ عَلَيْكُمْ يَقْطَعُونَكُمْ * وَالْمُقْتَضُونَ الْحُقُوقَ مِنكُمْ يَسُودُونَ 12
عَلَيْكُمْ * يَا شَعْبِي * الَّذِينَ يَغْبِطُونَكُمْ يُضِلُّونَكُمْ وَيَقْلَعُونَ سُبُلَ أَرْجُلِكُمْ * لَكِنْ سَيَقُومُ الرَّبُّ الْآنَ 13
لِلْمُحَاكَمَةِ * وَيُقِيمُ شَعْبَهُ فِي الْقَضَاءِ * هُوَ الرَّبُّ يَأْتِي لِلْحُكْمِ مَعَ مَشَايِخِ شَعْبِهِ وَمَعَ رُؤَسَائِهِ * وَأَنتُمْ 14
لِمَاذَا أَحْرَقْتُمْ كَرْمِي * وَاخْتِطَافُ الْمَسَاكِينِ فِي بُيُوتِكُمْ * لِمَاذَا أَنتُمْ أَضْرَرْتُمْ بِشَعْبِي * وَوُجُوهَ 15
الْمَسَاكِينِ أَخْزَيْتُمْ *

* قريان فيه توبيخ النبي لسراة نساء بني صهيون *

* هَكَذَا يَقُولُ رَبُّ الْجُيُوشِ * مِن أَجْلِ أَنَّ بَنَاتِ صِهْيُونَ ارْتَفَعْنَ وَمَشَيْنَ بِالرِّقَابِ الْعَالِيَةِ 16
وَغَمْزِ الْعُيُونِ * وَخَفْقِ الْأَرْجُلِ * يَجْرُرْنَ ثِيَابَهُنَّ مَعًا * وَيَلْعَبْنَ بِأَقْدَامِهِنَّ * يُوَاضِعُ اللهُ بَنَاتِ 17
صِهْيُونَ الرَّئِيسَاتِ * وَالرَّبُّ يَكْشِفُ شَكْلَهُنَّ فِي ذَلِكَ الْيَوْمِ * وَيَنزِعُ الرَّبُّ شَرَفَ لِبَاسِهِنَّ * 18
وَزِينَتَهُنَّ * وَضَفَائِرَهُنَّ * وَسَلَاسِلَهُنَّ * وَقَلَائِدَهُنَّ * وَعَصَائِبَهُنَّ * وَزِينَةَ وُجُوهِهِنَّ * 19 20
وَتَرْكِيبَ زِينَةِ شَرَفِهِنَّ * وَأَسَاوِرَهُنَّ * وَحِلَقَهُنَّ * وَمُدَلَّاتِهِنَّ * وَدَمَالِجَهُنَّ * وَخَوَاتِمَهُنَّ * وَأَقْرِطَتَهُنَّ * 21
* وَبَرَاقِعَهُنَّ * وَدِمَقْسَهُنَّ * وَسُدُورَهُنَّ * وَشَدَادَاتِهِنَّ الزَّاهِيَاتِ * وَأُرْجُوَانَهُنَّ * وَيَاقُوتَهُنَّ * وَقِرْمِزَهُنَّ * 22 23
وَأُرْجُوَانَهُنَّ الْمَنسُوجَ بِالذَّهَبِ وَالْيَاقُوتِ * وَجَلَابِيبَهُنَّ الْحِسَانَ * وَيَكُونُ عِوَضَ رِيحِهِنَّ الطَّيِّبِ 24
غُبَارٌ * وَعِوَضَ مَنَاطِقِهِنَّ يُمَنطَقْنَ بِالْحِبَالِ * وَعِوَضَ زِينَةِ رُؤُوسِهِنَّ بِالذَّهَبِ يَكُونُ لَكِ قَرَعٌ *
مِن أَجْلِ أَعْمَالِكِ * وَعِوَضَ سِرْبَالِكِ الدِّمَقْسِ تَتَّزِرِينَ مُسُوحًا * وَابْنُكِ الْحَسَنُ الَّذِي تُحِبِّينَهُ 25
يَسْقُطُ بِالسَّيْفِ * وَأَقْوِيَاؤُكُمْ يَسْقُطُونَ بِالسَّيْفِ وَيُذَلُّونَ * وَتَحْزَنُ أَوْعِيَةُ زِينَتِكُنَّ * وَتَبْقَيْنَ 26
وَحْدَكِ * وَتُضْرَبُ بِكِ الْأَرْضُ *

Nam gloria eorum humiliata nunc eſt, & 9
*verecundia vultuum eorum erexit ſe contra
ipſos; quandoquidem peccatum ſuum
divulgant et prædicant ut Sodomitæ. Væ
animabus eorum, quia conſilium peſſimum
ceperunt ſibimetipſis, Dicentes, Vinciamus* 10
*juſtum, quia incommodus eſt nobis: comedunt
ergò nunc proventus operum ſuorum.
Væ ſcelerato, quoniam adhæreſcent* 11
*ei mala pro portione operum manuum ejus.
O mi popule, qui præſunt vobis, ſuccîdunt* 12
*vos; & qui debita à vobis exigunt, dominantur
in vos. O mi popule, qui vos beant,
ſeducunt vos, & perturbant vias pedum
veſtrorum. Verùm exurget jamjam Do-* 13
*minus ad litem, ſiſtetque populum ſuum
ad judicium. Ipſe Dominus veniet ad li-* 14
*tigandum cum ſenatoribus & principibus
populi ſui: Heus vos, cur incendiſtis
vineam meam, & ſpolium pauperis eſt
domi veſtræ? Cur vos damnum intuliſtis* 15
*populo meo, & vultus pauperum verecundos
reddidiſtis?*

Lectio continens objurgationem Prophetæ ad impudicas mulieres filiorum Sion.

Sic dicit Dominus exercituum, Quia filiæ 16
*Sion efferunt ſeſe, & ambulant porrectis
cervicibus, annuentes oculis, & crepitantes
pedibus, veſtes ſuas ſimul reptant,
ſuiſque veſtigiis ludunt; Deprimet Deus* 17
*filias Sion præcipuas. Nam nudabit Dominus
ſexum earum in illo die; Et auferet* 18
*Dominus luxum veſtitûs earũ, ornamentum,
& intextas earum comas; Torques,* 19
murænulas, & vittas earum, Ornatum fa- 20
*cierum, totamque congeriem ornamenti
ſplendoris earum; Armillas, inaures, ſitu-* 21
las, (ſpecies eſt inaurium,) *amuletorum
pyxides, annulos, inaures, Collaria, pepla,* 22
*vela, & cingulos earum ſumptuoſos,
Purpuram, hyacinthum, coccum, purpu-* 23
*ram auro hyacinthoque contextam, &
ſtragula earum pulcherrima. Et loco ſua-* 24
*vis odoris earum, erit pulvis; & loco cingulorum
earum, cingentur funibus; &
loco ornamenti aurei capitum earum, erunt
tibi porrigines, propter opera tua; & loco
induſii tui ſerici, præcingêris cilicio.
Filius tuus venuſtus quem diligis, gladio* 25
corruet: & robuſti veſtri gladio corru- 26
*ent, ac deprimentur: Et mærebunt vaſa
ornatûs veſtri, manebiſque ſola, teque
percutietur tellus.*

יְשַׁעְיָה : ד ה

CAP. IV. ד

, illa die in unum virum *in* mulieres ſeptem apprehendent Et
1 וְהֶחֱזִיקוּ שֶׁבַע נָשִׁים בְּאִישׁ אֶחָד בַּיּוֹם הַהוּא
, induemur noſtris veſtimentis & ,comedemus noſtrum Panem : dicendo
לֵאמֹר לַחְמֵנוּ נֹאכֵל וְשִׂמְלָתֵנוּ נִלְבָּשׁ
.noſtrū opprobrium *collige* , nos ſuper tuū nomen invocetur tantùm
רַק יִקָּרֵא שִׁמְךָ עָלֵינוּ אֱסֹף חֶרְפָּתֵנוּ׃
fructus & : gloria & decore in Domini germen erit illa die In
2 בַּיּוֹם הַהוּא יִהְיֶה צֶמַח יְהוָה לִצְבִי וּלְכָבוֹד וּפְרִי
relictus erit Et .Iſrael *evaſioni* decore in & ſublimitate in terræ
3 הָאָרֶץ לְגָאוֹן וּלְתִפְאֶרֶת לִפְלֵיטַת יִשְׂרָאֵל׃ וְהָיָה הַנִּשְׁאָר
ſcriptus omnis :ei dicetur Sanctus ,Jeruſalaim in reſiduus & ,Sijon in
בְּצִיּוֹן וְהַנּוֹתָר בִּירוּשָׁלַם קָדוֹשׁ יֵאָמֶר לוֹ כָּל־הַכָּתוּב
,Sijon filiarum *ſordem* Dominus abluet *Si* .Jeruſalaim in *vitis* in
4 לַחַיִּים בִּירוּשָׁלָם׃ אִם רָחַץ אֲדֹנָי אֵת צֹאַת בְּנוֹת־צִיּוֹן
ſpiritu in&,judicii ſpiritu in,ej⁹ *interiori de colluerit* Jeruſalaim *ſanguines* &
וְאֶת־דְּמֵי יְרוּשָׁלַם יָדִיחַ מִקִּרְבָּהּ בְּרוּחַ מִשְׁפָּט וּבְרוּחַ
,Sijon montis *paratum* locum omnem ſuper Dominus creabit Et .ardoris
5 בָּעֵר׃ וּבָרָא יְהוָה עַל כָּל־מְכוֹן הַר־צִיּוֹן
flammæ ignis ſplendorē &,fumū &,diem per nubem ej⁹ *convocationem* ſuper &
וְעַל־מִקְרָאֶהָ עָנָן יוֹמָם וְעָשָׁן וְנֹגַהּ אֵשׁ לֶהָבָה
erit tabernaculum Et .*operimentum* gloriam omnem ſuper nam : *nocte*
6 לָיְלָה כִּי עַל־כָּל־כָּבוֹד חֻפָּה׃ וְסֻכָּה תִּהְיֶה
.pluvia à &,*nimbo à abſconſionē in &*,*confidentiā in* &,æſtu ab *interdiu umbram in*
לְצֵל־יוֹמָם מֵחֹרֶב וּלְמַחְסֶה וּלְמִסְתּוֹר מִזֶּרֶם וּמִמָּטָר׃

CAP. V. ה

fuit Vinea *.ejus vineæ* ,mei dilecti canticum *meo dilecto* nunc Cantabo
1 אָשִׁירָה נָּא לִידִידִי שִׁירַת דּוֹדִי לְכַרְמוֹ כֶּרֶם הָיָה
eā plantavit &,eā *elapidavit* &,eā *fodit* Et .*olei filio cornu* in meo dilecto
2 לִידִידִי בְּקֶרֶן בֶּן־שָׁמֶן׃ וַיְעַזְּקֵהוּ וַיְסַקְּלֵהוּ וַיִּטָּעֵהוּ
torcular etiam & ,ejus medio in turrim ædificavit & , *pulchro palmite*
שֹׂרֵק וַיִּבֶן מִגְדָּל בְּתוֹכוֹ וְגַם־יֶקֶב
.putidas uvas fecit & , uvas *facere* expectavit & : ea in excidit
חָצֵב בּוֹ וַיְקַו לַעֲשׂוֹת עֲנָבִים וַיַּעַשׂ בְּאֻשִׁים׃
me inter nunc judicate , Jehudah vir & ,Jeruſalaim habitator nunc Et
3 וְעַתָּה יוֹשֵׁב יְרוּשָׁלַם וְאִישׁ יְהוּדָה שִׁפְטוּ־נָא בֵּינִי
non & , meæ vineæ ultrà *faciendum* Quid .meam vineam inter &
4 וּבֵין כַּרְמִי׃ מַה־לַּעֲשׂוֹת עוֹד לְכַרְמִי וְלֹא
? *uvas putidas* fecit & , uvas *faciendum ad* expectavi Cur ? ea in feci
עָשִׂיתִי בּוֹ מַדּוּעַ קִוֵּיתִי לַעֲשׂוֹת עֲנָבִים וַיַּעַשׂ בְּאֻשִׁים׃
: meæ vineæ *faciens* ego quid vos nunc faciam ſcire nunc Et
5 וְעַתָּה אוֹדִיעָה־נָּא אֶתְכֶם אֵת אֲשֶׁר־אֲנִי עֹשֶׂה לְכַרְמִי
erit &,ejus maceriam *frangere : conflagrandum* ad erit & ,ejus ſepem *removere*
הָסֵר מְשׂוּכָּתוֹ וְהָיָה לְבָעֵר פָּרֹץ גְּדֵרוֹ וְהָיָה
, *ſarrietur* non &,putabitur non : *vaſtitatem* eam ponam Et .conculcationē in
6 לְמִרְמָס׃ וַאֲשִׁיתֵהוּ בָתָה לֹא יִזָּמֵר וְלֹא יֵעָדֵר
eā ſuper *pluendo à* mandabo nubibus *ſuper* & : *ſentis* & ,vepris aſcendet &
וְעָלָה שָׁמִיר וָשָׁיִת וְעַל הֶעָבִים אֲצַוֶּה מֵהַמְטִיר עָלָיו
vir & , Iſrael domus exercituum Domini vinea Nam .pluviam
7 מָטָר׃ כִּי כֶרֶם יְהוָה צְבָאוֹת בֵּית יִשְׂרָאֵל וְאִישׁ
ecce & , judiciū *ad* expectavit Et : ejus *deliciarum* plantatio Jehudah
יְהוּדָה נְטַע שַׁעֲשׁוּעָיו וַיְקַו לְמִשְׁפָּט וְהִנֵּה
.clamor ecce & , juſtitiam : *vulnus*
מִשְׂפָּח לִצְדָקָה וְהִנֵּה צְעָקָה׃

Verſio VULG. LAT.

CAP. IV.

1 ET apprehendent ſeptē mulieres
virū unū in die illa, dicentes;
Panem noſtrū comedemus,
& veſtimentis noſtris
operiemur: tantummodò invocetur
nomen tuū ſuper nos,
2 aufer opprobriū noſtrū. In die
illa erit germen Dñi in magnificentia
& gloria, & fruct⁹
terræ ſublimis, & exultatio his
qui ſalvati fuerint de Iſrael.
3 Et erit : Omnis qui relictus
fuerit in Sion, & reſiduus in
Jeruſalem, ſanctus vocabitur,
omnis qui ſcript⁹ eſt in vita in
4 Jeruſalē, Si abluerit Dñs ſordes
filiarū Sion, & ſanguinem
Jeruſalē laverit de medio ej⁹,
in ſpiritu judicii, & ſpiritu ardoris.
5 Et creabit Dñs ſuper
omnē locū Montis Sion, et ubi
invocat⁹ eſt, nubē ꝑ diē, & fumum
& ſplendorē ignis flammantis
in nocte : ſuꝑ omnem
6 enim gloriam protectio. Et tabernaculū
erit in umbraculū
diei ab æſtu, & in ſecuritatē,
& abſconſionē à turbine, & à
pluvia.

CAP. V.

1 CAntabo dilecto meo canticū
patruelis mei vineæ ſuæ.
Vinea facta eſt dilecto meo in
2 cornu filio olei. Et ſepivit eā,
& lapides elegit ex illa, &
plantavit eā electā, & ædificavit
turrim in medio ej⁹, & torcular
exeruxit in ea: et expectavit
ut faceret uvas, & fecit labruſcas.
3 Nunc ergò, habitatores
Jeruſalem, & viri Juda, judicate
inter me & vineā meā.
4 Quid eſt ꝙ debui ultrà facere
vineæ meæ, & non feci ei? an
ꝙ expectavi ut faceret uvas,
5 & fecit labruſcas? Et nunc oſtendā
vobis quid ego faciam
vineæ meæ: auferā ſepē ej⁹, &
erit in direptionē: diruā maceriā
ejus, & erit in conculcationē.
6 Et ponā eā deſertā: non
putabitur, & non fodietur: &
aſcendent vepres & ſpinæ: &
nubibus mandabo ne pluant
7 ſuper eā imbrem. Vinea enim
Dñi exercituū, dom⁹ Iſrael eſt:
& vir Juda, germen ej⁹ delectabile:
& expectavi ut faceret
judiciū, & ecce iniquitas;
& juſtitiā, & ecce clamor.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. δʹ.

1 ΚΑὶ ἐπιλήψονται ἑπτὰ γυναῖκες ἀνθρώπου
ἑνὸς, λέγουσαι ; Τὸν ἄρτον ἡμῶν φαγόμεθα,
καὶ τὰ ἱμάτια ἡμῶν περιβαλούμεθα,
πλὴν τὸ ὄνομα τὸ σὸν κεκλήσθω ἐφ'
2 ἡμᾶς, ἄφελε τὸν ὀνειδισμὸν ἡμῶν. Τῇ δὲ
ἡμέρᾳ ἐκείνῃ (α) ἐπιλάμψει ὁ θεὸς ἐν βουλῇ
μετὰ δόξης ἐπὶ τῆς γῆς, τοῦ ὑψῶσαι καὶ
3 δοξάσαι τὸ καταλειφθὲν τοῦ Ἰσραήλ. Καὶ
ἔσται τὸ ὑπολειφθὲν ἐν Σιὼν, καὶ τὸ καταλειφθὲν
ἐν Ἱερουσαλὴμ, ἅγιοι κληθήσονται
πάντες οἱ γραφέντες εἰς ζωὴν ἐν Ἱερουσαλήμ.
4 Ὅτι ἐκπλυνεῖ κύριος τὸν ῥύπον τῶν υἱῶν
καὶ τῶν θυγατέρων Σιὼν, καὶ τὸ αἷμα ἐκκαθαριεῖ
ἐκ μέσου αὐτῶν, ἐν πνεύματι (β) κρίσεως καὶ
5 πνεύματι καύσεως. Καὶ ἥξει, καὶ ἔσται πᾶς τόπος
τοῦ ὄρους Σιὼν, καὶ πάντα τὰ περικύκλῳ
αὐτῆς σκιάσει νεφέλη ἡμέρας, καὶ ὡς καπνοῦ
(γ) καὶ φωτὸς πυρὸς καιομένου νυκτὸς, (δ)
6 καὶ πάσῃ τῇ δόξῃ σκεπασθήσεται. Καὶ ἔσται
εἰς σκιὰν ἀπὸ καύματος, καὶ ἐν σκέπῃ καὶ
(ε) ἐν ἀποκρύφῳ ἀπὸ σκληρότητος καὶ
ὑετοῦ.

MS.A. (α) λάμψει (β) κρίσεως. Καὶ ἥξει, (γ) καὶ ὡς φωτὸς (δ) πάσῃ τῇ δόξῃ κυρίου * παθήσεται. (ε) ἐν ἀποκρύφῳ σκληρότητος

ΚΕΦ. εʹ.

1 * ΑΣω δὴ τῷ ἠγαπημένῳ ᾆσμα τοῦ ἀγαπητοῦ
(α) μου τῷ ἀμπελῶνί μου. ἀμπελὼν
ἐγενήθη τῷ ἠγαπημένῳ, ἐν κέρατι, ἐν τόπῳ
2 πίονι· Καὶ φραγμὸν περιέθηκα, καὶ ἐχαράκωσα,
καὶ ἐφύτευσα ἄμπελον (β) σωρὴκ,
καὶ ᾠκοδόμησα πύργον ἐν μέσῳ αὐτοῦ,
καὶ προλήνιον ὤρυξα ἐν αὐτῷ, καὶ ἔμεινα τοῦ
ποιῆσαι σταφυλὴν, (γ) καὶ ἐποίησεν ἀκάνθας.
3 Καὶ νῦν (δ) οἱ ἐνοικοῦντες ἐν Ἱερουσαλὴμ,
καὶ ἄνθρωπος τοῦ Ἰούδα, κρίνατε
4 ἐν ἐμοὶ καὶ ἀναμέσον τοῦ ἀμπελῶνός μου. Τί
ποιήσω ἔτι τῷ ἀμπελῶνί μου, καὶ οὐκ ἐποίησα
αὐτῷ; διότι ἔμεινα τοῦ ποιῆσαι σταφυλὴν,
5 ἐποίησε δὲ ἀκάνθας. Νῦν δὲ ἀναγγελῶ
ὑμῖν (ε) τί ἐγὼ ποιήσω τῷ ἀμπελῶνί μου.
ἀφελῶ τὸν φραγμὸν αὐτοῦ, καὶ ἔσται εἰς διαρπαγήν.
καὶ καθελῶ τὸν τοῖχον αὐτοῦ, καὶ
6 ἔσται (ζ) εἰς καταπάτημα. Καὶ ἀνήσω τὸν
ἀμπελῶνά μου, καὶ (η) οὐ τμηθῇ, οὐδὲ μὴ σκαφῇ.
καὶ (θ) ἀναβήσονται εἰς αὐτὸν, ὡς εἰς
χέρσον (·) ἄκανθαι· καὶ ταῖς νεφέλαις ἐντελοῦ-
7 μαι, τοῦ μὴ βρέξαι εἰς αὐτὸν ὑετόν. Ὁ γὰρ
ἀμπελὼν κυρίου σαβαὼθ, οἶκος τοῦ (ι) Ἰσραήλ,
καὶ ἄνθρωπος τοῦ Ἰούδα νεόφυτον ἠγαπημένον.
ἔμεινα τοῦ ποιῆσαι κρίσιν, ἐποίησε
δὲ ἀνομίαν, καὶ οὐ δικαιοσύνην, ἀλλὰ
κραυγήν.

MS.A. (α) τῷ ἀμπελῶνί (β) σωρὴχ, (γ) ἐποίησεν δὲ ἀκάνθας. (δ) ἄνθρωπος τοῦ Ἰούδα, καὶ οἱ ἐνοικοῦντες ἐν Ἱερουσαλήμ, κρίνατε (ε) τί ποιήσω (ζ) εἰς διαρπαγήν. (η) οὐ μὴ (θ) ἀναβήσεται (·) ἄκανθα· (ι) Ἰσραήλ ἐστιν,

CAP. IV.

ET apprehendent ſeptem mulieres 1
hominem unum, dicentes; Panem
noſtrum comedemus, & veſtimentis
noſtris operiemur: tantummodò
nomen tuum vocetur ſuper nos: aufer opprobrium noſtrū.
Die autem illâ illuceſcet Deus in 2
conſilio cum gloria ſuper terram, ut
exaltet, & glorificet reſiduum Iſrael.
Et erit, quod reliquum fuerit 3
in Sion, & quod remanſerit in
Hieruſalem, ſancti vocabuntur omnes
ſcripti ad vitam in Hieruſalem.
Abluet enim Dominus ſordem 4
filiorum, & filiarum Sion:
& ſanguinem emundabit de medio
eorum, in ſpiritu judicii, & ſpiritu
combuſtionis. Et veniet, & erit, 5
omnis locus montis Sion, & omnia,
quæ in circuitu ejus ſunt, obumbrabit
nubes per diem, & (a) tanquam
fumo, & luce ignis ardente
per noctem; & omni gloriâ
protegetur. Et erit in umbram ab 6
æſtu, & in protectionem, & in
abſconſionem ab aſperitate &
pluvia.

CAP. V.

CAntabo nunc (a) dilecto canticum 1
(b) dilecti mei vineæ (c) meæ.
(d) Vinea facta eſt dilecto, in cornu,
in loco pingui. Et ſepem circumpoſui, 2
& vallavi, & plantavi
vineam (e) Sorec, & ædificavi
turrim in medio ejus, & torcular
fodi in ea, & expectavi, ut
faceret uvam, & fecit (f) ſpinas.
Et nunc habitatores Hieruſalem, & 3
homo Juda, judicate in me, &
inter vineam meam. Quid faciam 4
ultrà vineæ meæ, & non feci ei?
Quoniam expectavi, ut faceret uvam,
fecit autem ſpinas. Nunc autem 5
annuntiabo vobis, quid ego faciam
vineæ meæ. Auferam ſepem
ejus, & erit in direptionem: &
diruam murum ejus, & erit in
conculcationem. Et dimittam vineam 6
meam, & non putabitur, neque
fodietur: & aſcendent in eam
tanquam in terram incultam
ſpinæ: & nubibus mandabo, ne
pluant in eam imbrem. Vinea enim 7
Domini Sabaoth, domus Iſrael;
& homo Juda, novella plantatio
dilecta. Expectavi, ut faceret
judicium: fecit autem (g) iniquitatem,
& non juſtitiam, ſed
clamorem.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ד

1 וְיִתְקְפָן שְׁבַע נְשִׁין בְּגַבְרָא חַד בְּעִדָּנָא הַהִיא לְמֵימַר מִדִּילָנָא נֵיכוּל וּמִדִּילָנָא נִתְכַּסֵּי
2 לְחוֹד יִתְקְרֵי שְׁמָךְ עֲלָנָא כְּנוֹשׁ חִסוּדָנָא׃ בְּעִדָּנָא הַהוּא יְהֵי מְשִׁיחָא דַיְיָ לְחֶדְוָה וְלִיקָר
3 וְעָבְדֵי אוֹרַיְתָא לְרִבוּ וּלְתוּשְׁבְּחָא לְשֵׁיזָבַת יִשְׂרָאֵל׃ וִיהֵי דְּאִשְׁתְּאַר יְתוּב לְצִיּוֹן וּדְעָבֵד
אוֹרַיְתָא יִתְקַיֵּם בִּירוּשְׁלֶם קַדִּישׁ יִתְאֲמַר לֵיהּ כָּל דִּכְתִיב לְחַיֵּי עָלְמָא יֶחֱזֵי בְּנֶחָמַת
4 יְרוּשְׁלֶם׃ אִם יַעְדֵּי יְיָ יַת תְּאָלַת בְּנַת צִיּוֹן וְיַת אָשְׁדֵי דַם זַכַּי דְּבִירוּשְׁלֶם יְגַלֵּי מִגַּוַּהּ
5 בְּמֵימַר דִּין וּבְמֵימַר גְּמִירָא׃ וְיִבְרֵי יְיָ עַל כָּל מַקְדַּשׁ טוּרָא דְצִיּוֹן וְעַל אֲתַר בֵּית שְׁכִנְתֵּיהּ
עֲנָן יְקָר יְהֵי מַטִּיל עֲלוֹהִי בִּימָמָא וַאֲמִטְתָּא וְזֵהוֹר כְּאֶשָּׁא שַׁלְהוֹבִי בְּלֵילְיָא אֲרֵי יַתִּיר מִן
6 יְקָרָא דַאֲמִיר לְאַיְתָאָה עֲלוֹהִי שְׁכִנְתָּא תְּהֵי מְגִנָּא עֲלוֹהִי בִּגְנוֹן׃ וְעַל יְרוּשְׁלֶם תְּהֵי
מְטַלַּת עֲנָנֵי לְאַטְלָלָא עֲלַהּ בִּימָם מִשְּׁרָב וּלְבֵית סְתַר וְלַאֲגָנָא מִזְּרְמִית וּמִמִּטְרָא׃

ה

1 אֲמַר נְבִיָּא אֲשַׁבַּח כְּעַן לְיִשְׂרָאֵל דִּמְתִיל לְכַרְמָא זַרְעֵיהּ דְּאַבְרָהָם רַחֲמִי תּוּשְׁבַּחַת
רְחָמִי לְכַרְמֵיהּ עַמִּי חֲבִיבִי יִשְׂרָאֵל יְהֵבִית לְהוֹן אַחֲסָנָא בְּטוּר רָם בְּאַרְעָא שְׁמֵינָא׃
2 וְקַדֵּשְׁתִּנוּן וְיַקַּרְתִּנוּן וְקַיֵּמְתִּנוּן כְּמַצַּב גֶּפֶן בְּחִירָא וּבְנֵיתָא מַקְדְּשִׁי בֵּינֵיהוֹן וְאַף מַדְבְּחִי
יְהֵבִית לְכַפָּרָא עַל חֲטָאֵיהוֹן וַאֲמָרִית דְּיַעְבְּדוּן עוֹבָדִין טָבִין קֳדָמַי וְאִנּוּן אַבְאִישׁוּ
3 עוֹבָדֵיהוֹן׃ נְבִיָּא אֲמַר לְהוֹן הָא בֵּית יִשְׂרָאֵל מְרַדוּ מִן אוֹרַיְתָא וְלָא צָבַן לְמֵתַב כְּעַן
4 יָתְבֵי יְרוּשְׁלֶם וֶאֱנָשׁ יְהוּדָה דִּינוּ כְעַן דִּינָא קֳדָמַי מִן עַמִּי׃ מַה טָבָא אֲמָרִית לְמֶעְבַּד עוֹד
לְעַמִּי וְלָא עֲבָדִית לְהוֹן מָא דֵין אֲמָרִית דְּיַעְבְּדוּן עוֹבָדִין טָבִין וְאִנּוּן אַבְאִישׁוּ עוֹבָדֵיהוֹן׃
5 וּכְעַן אֲחַוֵּי כְעַן לְכוֹן יַת דַּאֲנָא עָתִיד לְמֶעְבַּד לְעַמִּי אֲסַלֵּק שְׁכִנְתִּי מִנְּהוֹן וִיהוֹן לְבִזָּא אֶתְרַע
6 בֵּית מַקְדְּשֵׁיהוֹן וִיהוֹן לְדַיָּשׁ׃ וַאֲשַׁוֵּינוּן רְטִישִׁין לָא אִסְתְּעָרוּן וְלָא יִסְתַּמְכוּן וִיהוֹן מְטַלְטְלִין
7 וּשְׁבִיקִין וְעַל נְבִיַּיָא אֲפַקֵּד דְּלָא יִתְנַבּוּן עֲלֵיהוֹן נְבוּאָה׃ אֲרֵי עַמֵּיהּ דַיְיָ צְבָאוֹת בֵּית
יִשְׂרָאֵל וֶאֱנָשׁ יְהוּדָה נִצְבָא דְחֶדְוָתֵיהּ וַאֲמָרִית דְּיַעְבְּדוּן דִּינָא וְהָא אִנּוּן אָנוֹסִין אֲמָרִית
דְּיַעְבְּדוּן זָכוּ וְהָא אִנּוּן מַסְגַּן חוֹבִין׃

PAAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. IV.

ET apprehendent ſeptem mulieres virum unum in tempore illo, dicentes : 1
Panem noſtrum comedemus, & veſtimentis noſtris operiemur, tantummodo
invocetur nomen tuum ſuper nos: aufer opprobrium noſtrum.
In tempore illo erit Chriſtus Domini in gaudiū & gloriam; & factores Legis 2
in magnificentiam, & in laudem, his qui liberati fuerint de Iſrael.
Et qui relictus fuerit, revertetur ad Sion, & factor legis ſuſtentabitur 3
in Jeruſalem. Sanctus vocabitur omnis qui ſcriptus fuerit ad vitam æternam :
videbit conſolationem Jeruſalem. Si abſtulerit Dominus ſordem 4
filiarum Sion, & effundentes ſanguinem innocentem, qui ſunt in Jeruſalem
transmigraverit de medio ejus, in verbo judicii & in verbo conſummationis.
Et creabit Dominus ſuper omne ſanctuarium montis Sion, 5
& ſuper locum domus majeſtatis ſuæ, nubem gloriæ; quæ erit obumbrans
ſuper eum in die, & caliginem ſplendorémque tanquam ignis flammæ in
nocte; quoniam ampliori gloria quàm dixit ut adduceret ſuper eum,
majeſtas ej⁹ erit protegens ſuper eum in protectione. Et ſuper Hieruſalem 6
obumbrabit nubibus, ut ſit umbra ſuper *eam* in die ab æſtu, & in domum
refugii etiam ad protegendum à turbine & à pluvia.

CAP. V.

DIxit propheta : Cantabo nunc Iſraeli, qui comparatus eſt vineæ, ſemini 1
Abrahæ dilecti mei, canticum dilecti mei, vineæ ſuæ. Populus meus
dilectus meus Iſrael, dedi eis hæreditatem in monte excelſo, in terra pingui.
Et ſanctificavi eos, & honorificavi eos, & ſuſtentavi eos, ſicut 2
plantationem vitis electæ; & ædificavi ſanctuarium meum in medio eorum.
Altare quoque meum dedi ad propitiandum ſuper peccata eorum:
& præcepi eis ut facerent opera bona *in conſpectu meo*, & ipſi iniquè egerūt
in operibus ſuis. Propheta dic eis: Ecce domus Iſrael receſſerunt à lege, & 3
nolunt converti. Nunc habitatores Hieruſalem, & viri Juda, judicate nunc
judicium inter me & populum meum. Quod bonum dixi ut facerem populo 4
meo quod non fecerim eis? & cùm præciperem eis ut facerent opera
bona, quare ipſi fecerunt opera mala? Nunc autem annunciabo vobis 5
quod ego facturus ſum populo meo. Tollam majeſtatem meam ab eis,
& erunt in direptionem : conteram domum ſanctuarii eorum, & erunt in
conculcationem. Et ponam eos derelictos : non erit eis ſuſtentaculum nec 6
fulcimentum; & erūt transmigrantes & derelicti. Prophetis quoque mandabo
ne prophetizent ſuper eos prophetiam. Quia populus Dñi exercituum Iſrael eſt, & viri Juda plantatio lætitiæ ejus. *Et* dixi ut facerent judicium & ecce facti 7
ſunt calumniatores; *dixi* ut facerent juſtitiam, & ecce ipſi multiplicant peccata,

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܕ *

* ܘܢܐܚܕܢ ܫܒܥ ܢܫܝܢ ܠܓܒܪܐ ܚܕ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܘܢܐܡܪܢ ܠܗ. ܠܚܡܢ ܢܐܟܘܠ. 1
ܘܢܚܬܢ ܢܠܒܫ. ܠܚܘܕ ܫܡܟ ܢܬܩܪܐ ܥܠܝܢ. ܘܥܒܪ ܚܣܕܢ. * ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. 2
ܢܗܘܐ ܕܢܚܗ ܕܡܪܝܐ. ܠܫܘܒܚܐ ܘܠܐܝܩܪܐ. ܘܦܐܪܐ ܕܐܪܥܐ ܠܪܘܪܒܐ ܘܠܫܘܒܚܐ. ܠܫܪܟܐ
ܕܐܫܬܚܪ ܡܢ ܐܝܣܪܝܠ. * ܘܢܗܘܐ ܡܢ ܕܡܫܬܚܪ ܒܨܗܝܘܢ. ܘܡܢ ܕܡܫܬܚܪ ܒܐܘܪܫܠܡ. ܩܕܝܫܐ 3
ܢܬܩܪܐ. ܟܠ ܕܟܬܝܒ ܒܐܘܪܫܠܡ ܠܚܝܐ. * ܘܢܫܝܓ ܡܪܝܐ ܨܘܐܬܐ ܕܒܢܬ ܨܗܝܘܢ. ܘܕܡܐ ܢܕܝܚ 4
ܡܢ ܓܘܗ̇ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܒܪܘܚܐ ܕܕܝܢܐ. ܘܒܪܘܚܐ ܝܩܝܕܬܐ. * ܘܢܒܪܐ ܡܪܝܐ ܥܠ ܟܠܗ ܡܥܡܪܐ 5
ܠܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ ܥܠ ܚܕܪܝܗ̇. ܥܢܢܐ ܒܐܝܡܡܐ. ܘܬܢܢܐ ܘܙܠܝܩܐ ܕܢܘܪܐ ܒܠܠܝܐ.
ܡܛܠ ܕܥܠ ܟܠ ܐܝܩܪܐ ܢܛܠܠ. * ܘܡܛܠܠܬܐ ܬܗܘܐ ܠܛܠܠܐ ܕܐܝܡܡܐ ܡܢ ܚܘܡܐ. ܘܠܡܣܬܪܘ 6
ܘܠܡܬܛܫܝܘ. ܡܢ ܥܠܥܠܐ ܘܡܢ ܡܛܪܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܗ *

* ܐܫܒܚ ܠܚܒܝܒܝ. ܬܫܒܘܚܬܐ ܕܚܒܝܒܝ ܠܟܪܡܗ. ܟܪܡܐ ܗܘܐ ܠܚܒܝܒܝ. ܒܩܪܢܐ 1
ܕܐܪܥܐ ܫܡܝܢܬܐ. * ܘܦܠܚܗ. ܘܣܝܓܗ ܣܝܓܐ. ܘܢܨܒ ܒܗ ܫܒܘܫܬܐ. ܘܒܢܐ ܡܓܕܠܐ ܒܓܘܗ. 2
ܘܐܦ ܡܥܨܪܬܐ ܚܨܒ ܒܗ. ܘܣܟܝ ܕܬܥܒܕ ܥܢܒܐ. ܘܥܒܕܬ ܚܘܪܒܐ. * ܗܫܐ ܓܒܪܐ ܕܝܗܘܕܐ 3
ܘܥܡܘܪܝܗ̇ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܕܘܢܘ ܒܝܢܝ ܠܟܪܡܝ. * ܡܢܐ ܬܘܒ ܐܠܐ ܗܘܐ ܠܡܥܒܕ ܠܟܪܡܝ 4
ܘܠܐ ܥܒܕܬ ܠܗ. ܕܣܟܝܬ ܕܬܥܒܕ ܥܢܒܐ. ܘܥܒܕܬ ܚܘܪܒܐ. * ܗܫܐ ܐܘܕܥܟܘܢ ܡܕܡ ܕܥܒܕ 5
ܐܢܐ ܠܗ ܠܟܪܡܝ. ܐܥܩܪ ܐܢܐ ܣܝܓܗ ܘܢܗܘܐ ܠܒܙܬܐ. ܘܐܦܪܘܩ ܐܢܐ ܫܘܪܗ ܘܢܗܘܐ
ܠܕܘܫܐ. * ܘܐܥܒܕܝܘܗܝ ܕܢܚܪܒ. ܘܠܐ ܢܬܟܣܚ. ܘܠܐ ܢܬܥܙܩ. ܘܢܣܩܘܢ ܒܗ ܟܘܒܐ 6
ܘܬܪܒܐ. ܘܐܦܩܕ ܠܥܢܢܐ ܕܠܐ ܢܚܬܘܢ ܥܠܘܗܝ ܡܛܪܐ. * ܡܛܠ ܕܟܪܡܗ ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. 7
ܒܝܬܗ ܗܘ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܓܒܪܐ ܕܡܢ ܝܗܘܕܐ. ܢܨܒܬܐ ܚܕܬܐ ܘܚܒܝܒܬܐ. ܣܟܝܬ
ܠܕܝܢܐ. ܘܗܘܐ ܚܛܘܦܝܐ. ܘܠܙܕܝܩܘܬܐ ܘܗܐ ܓܥܬܐ.

CAP. IV.

1 ET apprehendent ſeptem mulieres virum
unum in die illo, dicéntque illi; Panem noſtrum
comedemus, & veſtibus noſtris operiemur
: tantummodo nomen tuum ſuper nos
vocetur, & aufer opprobrium noſtrum. Eodem 2
eo die erit ortus Domini in gloriam &
honorem, & fructus terræ in ſplendorem &
gloriam iis qui ſuperſtites fuerint ex Iſraele.
Et fiet, ut qui reſiduus fuerit in Sion, & qui 3
reſiduus fuerit in Jeruſalem, ſanctus vocetur;
quicunque ſcriptus fuerit, in Jeruſalem, ad
vitam. Et lavabit Dominus ſordes filiarum 4
Sion, & ſanguinem amovebit è medio Jeruſalem
per ſpiritum judicii, & per ſpiritum
ardentem. Et ſuper omnem locum munitum 5
creabit Dominus monti Sionis undequaque
nubem atque fumum interdiu, & fulgorem
flammæ igneæ noctu. Obumbrabit enim gloriam,
Eritque tegimen ad umbram diurnam, 6
quò quis recipere ſe poſſit ab æſtu, tegere ſe,
& cavere à nimbo & ab imbre.

CAP. V.

CAnam dilecto meo. Canticum dilecti mei 1
ad vineam ſuam. Vineam habebat dilectus
meus in cornu loci uberrimi : Coluit eam, 2
ſeptóque cinxit : ſevit in ea palmites, turrim
extruxit in ea, & torcular etiam fecit
in ea : & expectavit ut ederet uvas, at edidit
ſiliquas. Jam viri Judæ, et habitatores Jeruſalem, 3
judicate inter me et vineam meam.
Quid ampliùs oportebat facere vineæ meæ, 4
quod non fecerim; ut exſpectante me ut ederet
uvas, ediderit ſiliquas? Nunc oſtendam 5
vobis quid ſim facturus huic vineæ meæ. Funditùs
evertam turrim ejus, et erit in direptionem
: ſeptum ejus rumpam, et erit in conculcationem
: Et efficiam ut vaſtetur : non putabitur 6
neque excoletur, et germinabunt in
ea ſpinæ et vepres : et præcipiam nubibus ne
pluviam demittant in eam. Nam vinea Dñi 7
potentiſſimi, domus eſt Iſraelitarũ; et viri qui
ex Juda, planta ſunt nova et dilecta : expectavi
judiciũ, et fuit rapina; juſtitiã, at ecce ululatus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الرابع *

* ويتعلق سبع نسوة بانسان واحد قايلات * ناكل خبزنا ونكتسي ثيابنا * ولا نكلف شيا غير ان 1
اسمك يدعي علينا * وانزع عارنا * في ذلك اليوم يشرق الله بمشورة ومجد على الارض * 2
ليرفع ويمجد من بقي من اسرائيل * ويكون من بقي في صهيون ويبقى في ايروسليم * 3
يدعون اطهارا * كل الذين كتبوا للحياة في ايروسليم * لان الرب يغسل دنس بني وبنات 4
صهيون * ويطهر الدم من ايروسليم من بينهم * بروح الانصاف وروح التوقد * وياتي ويكون 5
كل موضع بجبل صهيون وكل ما يحوط بها * يظلله الغمام نهارا * ويستر بكلل مجد مثل دخان *
وضوء نار ملتهب ليلا * ويكون في ظلال من الحر * في ستر وفي خفية من الزوبعة والمطر * 6

* الفصل الخامس *

* قربان يصف فيه النبي حسن صنيع الرب الى بني اسرائيل * واساتهم وخلافهم له * 1
امدح حبيبي * مدح حبيبي لكرمه * كان لحبيبي كرم في زاوية في موضع خصيب * فاحطت 2
به سياجا وحصنته * وغرست فيه كرمة * وبنيت برجا في وسطه * وحفرت فيه معصرة * ورجوت
ان يصنع عنبا فصنع شوكا * والان يا انسان يهودا والسكان في ايروسليم * احكموا بيني وبين 3
كرمي * ماذا اصنع ايضا مع كرمي ولم اصنعه له * من اجل اني رجوت ان يصنع عنبا 4
فصنع شوكا * والان اعلمكم ما اصنع بكرمي * انزع جداره ويصير للاختطاف * واهدم جداره 5
ويصير موطيا * واهمل كرمي فلا يحرث ولا يفلح * فينبت فيه الشوك مثل ارض بور * وامر 6
السحاب ان لا تمطر عليه مطرا * لان كرم رب الجنود هو بيت اسرائيل * وانسان يهودا غرس 7
جديد محبوب * رجوت ان يصنع حكما فصنع اثما * وليس عدلا لكن صراخا *

CAP. IV.

1 *ET prebendent ſeptem mulieres hominem*
unum, dicentes; Comedemus panem
noſtrum, & induemur veſtibus noſtris, nec
ulla in re moleſtæ erimus: tantummodo nomen
tuum vocetur ſuper nos, & aufer
opprobrium noſtrum. In illo die orietur 2
Deus cum conſilio et gloria ſuper terram,
ut extollat & glorificet eos qui reſidui
fuerint ex Iſraele. Et erit, qui reſidui manſerint 3
in Sione, & manſerint in Jeruſalem,
vocabuntur puri; ii omnes qui aſcripti
fuerint ad vitam in Jeruſalem
Abluet enim Dominus ſordes filiorum & 4
filiarum Sionis, & ſanguinem expurgabit
è Jeruſalem de medio eorum, ſpiritu juſtitiæ
& ſpiritu incendii: Quo veniente 5
continget ut quæcunq; loca in monte Sion
exiſtentia, & quæcunque ipſi circunjacentia,
nubibus obumbrentur interdiu,
omniq; gloriâ quaſi fumo tegantur; noctu
verò ſplendore ignis ardentis. Eritque in 6
umbra ab æſtu, ſub tecto & in latibulo à
turbine & imbre.

CAPUT V.

Lectio in qua narrat Prophetá beneficia
Domini erga filios Iſraelis,
et maleficia atque inobedientiam
iſtorum erga illum.

CArmen concinam dilecto meo: Car- 1
men dilecti mei de vinea ſua. Vineam habebat
dilectus meus in angulo quodam, in
loco fertili: Hanc ſepe circundedi & 2
munivi, vites in hac plantavi, turrim in
medio ejus extruxi, torcular in ea effodi;
cúmque ſperarem uvas producturam, ſpinas
produxit. Jam verò O homines Judæ, 3
& qui degitis in Jeruſalem, judicate inter
me & vineam meam. Quid reſtabat 4
agendum vineæ meæ quod non præſtiterim?
ſperabam enim uvas reddituram,
reddidit autem ſpinas. Equidem indicabo 5
vobis quid facturus ſim vineæ meæ.
Auferam ſepem ejus, ut exponatur direptioni;
evertam ſepium ejus, ut pateat conculcationi:
Derelinquam vineam meam, 6
et non coletur neque arabitur, ut ſpinæ
naſcantur in ea quaſi in terra inculta: et
mandabo nubibus ne pluviam demittant
in eam. Nam vinea Domini exercituum eſt 7
domus Iſraelis, et homines Judæ planta
nova et jucunda: ſperabam illam judicium
facturam, fecit autem iniquitatem;
nequaquam juſtitiam, ſed clamorem.

ישעיה : ה

, *agrum in* agrum , *domum in* domum *facientibus pertingere* Væ
הוֹי מַגִּיעֵי בַיִת בְּבַיִת שָׂדֶה בְשָׂדֶה 8
vos soli *constituamini &* , *loci defectum ad usque* ,*facient* appropinquare
יַקְרִיבוּ עַד אֶפֶס מָקוֹם וְהוּשַׁבְתֶּם לְבַדְּכֶם
non Si : exercituum Dominus meis auribus In .terræ *interiori* in
בְּקֶרֶב הָאָרֶץ׃ בְּאָזְנָי יְהוָה צְבָאוֹת אִם־לֹא 9
.habitatore absque *bonæ* & ,grandes ,erunt desolationem in multæ domus
בָּתִּים רַבִּים לְשַׁמָּה יִהְיוּ גְּדֹלִים וְטוֹבִים מֵאֵין יוֹשֵׁב׃
sementis & : unum batum facient , vineæ jugera decem Nam
כִּי עֲשֶׂרֶת צִמְדֵּי־כֶרֶם יַעֲשׂוּ בַּת אֶחָת וְזֶרַע 10
: *sequentur Sechar* , mane *in maturantibus* Væ .Ephah faciet , *Chomer*
חֹמֶר יַעֲשֶׂה אֵיפָה׃ הוֹי מַשְׁכִּימֵי בַבֹּקֶר שֵׁכָר יִרְדֹּפוּ 11
,nebel & ,cithara erit Et .eos *incendet* vinum crepusculum *in morantibus*
מְאַחֲרֵי בַנֶּשֶׁף יַיִן יַדְלִיקֵם׃ וְהָיָה כִנּוֹר וָנֶבֶל 12
Domini opus & : eorum conviviis vinum & ,tibia & ,tympanum
תֹּף וְחָלִיל וָיַיִן מִשְׁתֵּיהֶם וְאֵת פֹּעַל יְהוָה
migravit Propterea .viderunt non ejus manuum opus & ,*respicient* non
לֹא יַבִּיטוּ וּמַעֲשֵׂה יָדָיו לֹא רָאוּ׃ לָכֵן גָּלָה 13
ejus *turba* & , *famis viri* ejus *gloria* & ,scientia *non à* meus populus
עַמִּי מִבְּלִי־דָעַת וּכְבוֹדוֹ מְתֵי רָעָב וַהֲמוֹנוֹ
aperuit & ,*suam animam sepulchrum* dilatavit Propterea .siti aruit
צִחֵה צָמָא׃ לָכֵן הִרְחִיבָה שְּׁאוֹל נַפְשָׁהּ וּפָעֲרָה 14
,ejus *strepitus* &,ejus *turba* &,ejus *decor* descendet & ,*statutum* præter suum os
פִיהָ לִבְלִי־חֹק וְיָרַד הֲדָרָהּ וַהֲמוֹנָהּ וּשְׁאוֹנָהּ
oculi & , vir se humiliabit & ,homo se incurvabit Et .*eo in lætus* &
וְעָלֵז בָּהּ׃ וַיִּשַּׁח אָדָם וַיִּשְׁפַּל־אִישׁ וְעֵינֵי 15
, *judicio in* exercituum Dominus *exaltabitur* Et .se humiliabunt sublimium
גְבֹהִים תִּשְׁפַּלְנָה׃ וַיִּגְבַּהּ יְהוָה צְבָאוֹת בַּמִּשְׁפָּט 16
agni pascentur Et .*justitia in sanctificatus* sanctus Deus &
וְהָאֵל הַקָּדוֹשׁ נִקְדָּשׁ בִּצְדָקָה׃ וְרָעוּ כְבָשִׂים 17
trahentibus Væ .comedent *peregrini medullatorum* deserta &,suũ *ductum* juxta
כְּדָבְרָם וְחָרְבוֹת מֵחִים גָּרִים יֹאכֵלוּ׃ הוֹי מֹשְׁכֵי 18
.peccatum plaustri funibus veluti & ,mendacii funibus in iniquitatem
הֶעָוֺן בְּחַבְלֵי הַשָּׁוְא וְכַעֲבוֹת הָעֲגָלָה חַטָּאָה׃
: videamus ut ,suum opus *festinare faciat* ,Acceleret : Dicentes
הָאֹמְרִים יְמַהֵר יָחִישָׁה מַעֲשֵׂהוּ לְמַעַן נִרְאֶה 19
Væ sciemus & , Israel Sancti consilium veniat & ,appropinquet &
וְתִקְרַב וְתָבוֹאָה עֲצַת קְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל וְנֵדָעָה׃ הוֹי 20
tenebrositatem ponentes : malum bonum & ,bonum malum dicentibus
הָאֹמְרִים לָרַע טוֹב וְלַטּוֹב רָע שָׂמִים חֹשֶׁךְ
dulce & , dulce *in* amarum ponentes : *tenebrositatem* lucem & , lucem
לְאוֹר וְאוֹר לְחֹשֶׁךְ שָׂמִים מַר לְמָתוֹק וּמָתוֹק
suis faciebus coram & ,suis oculis in sapientibus Væ .amarum *in*
לְמָר׃ הוֹי חֲכָמִים בְּעֵינֵיהֶם וְנֶגֶד פְּנֵיהֶם 21
virtutis hominibus & ,vinum bibendum ad *potentibus* Væ .prudentibus
נְבֹנִים׃ הוֹי גִּבּוֹרִים לִשְׁתּוֹת יָיִן וְאַנְשֵׁי־חָיִל 22
justitiam & : *muneris mercede* impium *Justificantibus* .*Sechar* miscendum ad
לִמְסֹךְ שֵׁכָר׃ מַצְדִּיקֵי רָשָׁע עֵקֶב שֹׁחַד וְצִדְקַת 23
linguam stipulam *consumere* sicut Propterea .*eo ab amovebunt* justorum
צַדִּיקִים יָסִירוּ מִמֶּנּוּ׃ לָכֵן כֶּאֱכֹל קַשׁ לְשׁוֹן 24
: erit *mucus* veluti eorum radix : debilitabit flamma *glumam* & , ignis
אֵשׁ וַחֲשַׁשׁ לֶהָבָה יִרְפֶּה שָׁרְשָׁם כַּמָּק יִהְיֶה
Domini legem spreverunt nam : ascendet pulvis sicut ,eorũ *gemma* &
וּפִרְחָם כָּאָבָק יַעֲלֶה כִּי מָאֲסוּ אֵת תּוֹרַת יְהוָה
.contempserunt Israel sancti eloquium & ,exercituum
צְבָאוֹת וְאֵת אִמְרַת קְדוֹשׁ־יִשְׂרָאֵל נִאֵצוּ׃

Versio VUL. LAT.

8 Væ qui conjungitis domum ad domum, et agrum agro copulatis usque ad terminũ loci: numquid habitabitis vos soli in 9 medio terræ? In auribus meis sunt hæc, dicit Dominus exercituum: Nisi domus multæ desertæ fuerint, grandes & pulchræ, 10 absque habitatore. Decem enim jugera vinearũ facient lagunculã unam, & triginta modii sementis facient modios 11 tres. Væ qui consurgitis manè ad ebrietatẽ sectandam, & potandum usque ad vesperam, ut 12 vino æstuetis. Cithara, & lyra, & tympanum, & tibia, & vinum in conviviis vestris: & op⁹ Domini non respicitis, nec opera manuum ejus considera- 13 tis. Propterea captivus ductus est populus meus, quia non habuit scientiam, & nobiles ejus interierunt fame, & multitudo 14 ejus siti exaruit. Propterea dilatavit infernus animam suam, & aperuit os suum absque ullo termino: & descendent fortes ejus, & populus ejus, & sublimes gloriosique ejus, ad eum. 15 Et incurvabitur homo, & humiliabitur vir, & oculi subli- 16 mium deprimentur. Et exaltabitur Dominus exercituum in judicio, & Deus sanctus sancti- 17 ficabitur in justitia. Et pascentur agni juxta ordinem suũ, & deserta in ubertatem versa ad- 18 venæ comedent. Væ qui trahitis iniquitatem in funiculis vanitatis, et quasi vinculũ plaustri 19 peccatum. Qui dicitis; Festinet, & citò veniat opus ejus, ut videamus: & appropiet, et veniat consilium Sancti Israel, et 20 sciemus illud. Væ qui dicitis malum bonum, et bonum malum: ponentes tenebras lucem, et lucem tenebras: ponentes amarũ in dulce, & dulce in a- 21 marum. Væ qui sapientes estis in oculis vestris, et corã vobis- 22 metipsis prudentes. Væ qui potentes estis ad bibendũ vinum, & vires fortes ad miscendam 23 ebrietatẽ. Qui justificatis impium pro muneribus, & justi- 24 tiam justi aufertis ab eo. Propter hoc, sicut devorat stipulã lingua ignis, & calor flammæ exurit; sic radix eorum quasi favilla erit, & germen eorum ut pulvis ascendet. Abjecerunt enim legem Domini exercituũ, et eloquium Sancti Israel blasphemaverunt.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

8 Οὐαὶ οἱ συνάπτοντες οἰκίαν πρὸς οἰκίαν, καὶ ἀγρὸν πρὸς ἀγρὸν ἐγγίζοντες, ἵνα τοῦ πλησίον ἀφέλωνταί τι. μὴ οἰκήσετε μόνοι 9 ἐπὶ τῆς γῆς; Ἠκούσθη γὰρ εἰς τὰ ὦτα κυρίου Σαβαὼθ ταῦτα· ἐὰν γὰρ γένωνται οἰκίαι πολλαί, εἰς ἔρημον ἔσονται μεγάλαι καὶ καλαί, καὶ οὐκ ἔσονται οἱ (κ) ἐνοικοῦντες 10 ἐν αὐταῖς. Οὗ γὰρ ἐργῶνται δέκα ζεύγη βοῶν, ποιήσει κεράμιον ἕν· καὶ ὁ σπείρων 11 ἀρτάβας ἕξ, ποιήσει μέτρα τρία. Οὐαὶ οἱ ἐγειρόμενοι τὸ πρωΐ, καὶ τὸ σίκερα διώκοντες, οἱ μένοντες τὸ ὀψέ. ὁ γὰρ οἶνος αὐτοὺς 12 συγκαύσει. Μετὰ γὰρ κιθάρας καὶ ψαλτηρίου καὶ τυμπάνων καὶ αὐλῶν τὸν οἶνον πίνουσι, τὰ δὲ ἔργα κυρίου οὐκ ἐμβλέπουσι, καὶ 13 τὰ ἔργα τῶν χειρῶν αὐτοῦ οὐ κατανοοῦσι. Τοίνυν αἰχμάλωτος ὁ λαός μου ἐγενήθη, διὰ τὸ μὴ εἰδέναι αὐτοὺς τὸν κύριον· καὶ πλῆθος ἐγενήθη νεκρῶν, διὰ λιμὸν καὶ (λ) δί- 14 ψος ὕδατος. Καὶ ἐπλάτυνεν ὁ ᾅδης τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, καὶ διήνοιξε τὸ στόμα αὐτοῦ, τοῦ μὴ διαλιπεῖν· καὶ καταβήσονται οἱ ἔνδοξοι καὶ οἱ μεγάλοι καὶ οἱ πλούσιοι καὶ οἱ λοιμοὶ αὐ- 15 τῆς. Καὶ ταπεινωθήσεται ἄνθρωπος, καὶ ἀτιμασθήσεται ἀνήρ· καὶ οἱ ὀφθαλμοὶ οἱ με- 16 τέωροι ταπεινωθήσονται. Καὶ ὑψωθήσεται κύριος Σαβαὼθ ἐν κρίματι, καὶ ὁ θεὸς ὁ ἅ- 17 γιος δοξασθήσεται ἐν δικαιοσύνῃ. Καὶ βοσκηθήσονται οἱ διηρπασμένοι ὡς ταῦροι, καὶ τὰς ἐρήμους τῶν ἀπειλημμένων ἄρνες φά- 18 γονται. Οὐαὶ οἱ ἐπισπώμενοι τὰς ἁμαρτίας ὡς σχοινίῳ μακρῷ, καὶ ὡς ζυγοῦ ἱμάντι δα- 19 μάλεως τὰς ἀνομίας· Οἱ λέγοντες, Τὸ τάχος ἐγγισάτω ἃ ποιήσει, ἵνα ἴδωμεν· καὶ (μ) ἐλθάτω ἡ βουλὴ τοῦ (ν) ἁγίου Ἰσραήλ, ἵνα 20 γνῶμεν. Οὐαὶ οἱ λέγοντες τὸ πονηρὸν καλόν, καὶ τὸ καλὸν πονηρόν, οἱ τιθέντες τὸ σκότος φῶς, καὶ τὸ φῶς σκότος, οἱ τιθέντες 21 τὸ πικρὸν γλυκύ, καὶ τὸ γλυκὺ πικρόν. Οὐαὶ οἱ συνετοὶ ἐν ἑαυτοῖς, καὶ ἐνώπιον (ξ) 22 αὐτῶν ἐπιστήμονες. Οὐαὶ οἱ ἰσχύοντες ὑμῶν οἱ (ο) πίνοντες τὸν οἶνον, καὶ οἱ δυνάσται οἱ 23 (π) κεραννύντες τὸ σίκερα, Οἱ δικαιοῦντες τὸν ἀσεβῆ ἕνεκεν δώρων, καὶ τὸ δίκαιον τοῦ 24 δικαίου αἴροντες. Διὰ τοῦτο ὃν τρόπον καυθήσεται καλάμη ὑπὸ ἄνθρακος πυρός, καὶ συγκαυθήσεται ὑπὸ φλογὸς ἀνειμένης, ἡ ῥίζα αὐτῶν ὡς χνοῦς ἔσται, καὶ τὸ ἄνθος αὐτῶν ὡς κονιορτὸς ἀναβήσεται· οὐ γὰρ ἠθέλησαν τὸν νόμον κυρίου Σαβαώθ, ἀλλὰ (ρ) τὸ λόγιον τοῦ ἁγίου Ἰσραὴλ παρώξυναν.

8 *Væ, qui conjungunt domum ad domum, & agrum ad agrum appropinquant, ut à proximo auferãt (b) aliquid. Nunquid habitabitis soli* 9 *super terram? Audita enim sunt hæc in auribus Domini Sabaoth. Nam si fuerint domus multæ; in desertum erunt: magnæ, & pulchræ, & non erunt qui habitent* 10 *in eis. Ubi enim operantur decem juga boum, faciet (i) lagunculam unam: & qui seminat artabas sex,* 11 *faciet mensuras tres. Væ, qui surgunt manè, & (k) siceram sequuntur, qui expectant vesperam. Vinũ* 12 *enim comburet eos. Nam cum cithara, & psalterio, & tympanis, & tibiis, vinum bibunt: opera autem Domini non respiciunt, & opera manuum ejus non considerant.* 13 *Ergò captivus populus meus factus est: eò quòd ipsi non cognoverunt Dominum: & facta est multitudo mortuorum propter famem, & sitim* 14 *aquæ. Et dilatavit infernus animam suam, & aperuit os suum, ut non cesset. Et descendent inclyti, & magni, & divites, & (l) pestilentes ejus:* 15 *Et humiliabitur homo, & dehonorabitur vir: & oculi sublimes humiliabuntur.* 16 *Et exaltabitur Dominus Sabaoth in judicio, & Deus sanctus glorificabitur in justitia:* 17 *Et pascentur direpti, quasi tauri: & deserta eorum, qui capti sunt, agni comedent.* 18 *Væ, qui trahunt peccata quasi funiculo longo, & quasi jugi corrigiâ vitulæ, iniquitates:* 19 *Qui dicunt; Citò appropinquent quæ faciet, ut videamus: & veniat consilium Sancti Israel, ut cognoscamus.* 20 *Væ, qui dicunt malum bonum, & bonum malum; qui ponunt tenebras lucem, & lucem tenebras; qui ponunt amarum dulce, & dulce amarum.* 21 *Væ, qui sunt arguti in semetipsis, & coram semetipsis scientes.* 22 *Væ valentes vestri, qui bibunt vinum, & potentes, qui miscent siceram,* 23 *Qui justificant impium propter munera, & justum justi tollunt.* 24 *Propter hoc, sicut uretur stipula à carbone ignis, & comburetur à flamma (m) resoluta; radix eorum quasi lanugo erit, & flos eorum quasi pulvis ascendet. Non enim voluerunt legem Domini Sabaoth, sed eloquium Sancti Israel irritaverunt.*

MS. A. (κ) ἐνοικοῦντες. Οὗ γὰρ (λ) δίψαν (μ) ἐλθοῖ (ν) ἁγίου, ἵνα γνῶμεν. (ξ) ἑαυτῶν (ο) τὸν οἶνον πίνοντες, (π) κεραννῦντες (ρ) τὸ ἅγιον τοῦ Ἰσραὴλ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

8 וַי דִמְקַפִּין בֵּיתָא עַל בֵּיתָא חֲקַל אוּנְסָא בַּחֲקַלְהוֹן מְקָרְבִין אָמְרִין עַד דְנַחְסִין כָּל אֲתַר
9 וּמְדַמַּן דְיָתְבִין בִּלְחוֹדֵיהוֹן בְּגַוָהּ דְאַרְעָא׃ אֲמַר נְבִיָא בְּאוּדְנַי הֲוֵיתִי שָׁמַע כַּד
אִתְגְּזֵרַת דָא מִן קֳדָם יְיָ צְבָאוֹת אִם לָא בָתִּין סַגִיאִין לְצָדוּ יְהוֹן רַבְרְבִין וְטָבִין מִבְּלִי יָתִיב׃
10 אֲרֵי בְחוֹבָא דְלָא יְהָבוּ מַעְשְׂרַיָא בֵּית עֲשַׂר אֶשְׁכְּרִין דִכְרַם יַעְבְּדוּן בַּיְתָא חֲדָא וּבֵית כּוֹר
11 זְרַע יַעְבֵּיד תְּלַת סָאִין׃ וַי דִמְקַדְמִין בְּצַפְרָא לְמִשְׁתֵּי חֲמַר עַתִּיק רָדְפִין מְאַחֲרִין לְמִפְטַר
12 מְרַמְשִׁין עַל שְׁוֵיהוֹן חֲמַר אוֹנְסִין מַדְלִיק לְהוֹן׃ וַהֲוֵי עַל יְדֵי כִנּוֹר וְנֶבֶל קַתְרוֹס
אַבּוּבָא וְחַמְרָא מִשְׁתֵּיהוֹן וּבְאוֹרַיְתָא דַיְיָ לָא אִסְתַּכַּלוּ וְעוֹבַד גְבוּרְתֵּיהּ לָא חֲזוֹ׃
13 בְּכֵן גְלוֹ עַמִּי מִבְּלִי דַעְתָּא וְיַקִּירֵיהוֹן מִיתוּ בְכַפְנָא וְסַגְיֵהוֹן בִּבְצוֹרְתָא בְּצַחוּתָא׃ בְּכֵן
14 אַפְתִּיאַת שְׁאוֹל נַפְשַׁהּ וּפְתַחַת פּוּמַהּ וְלֵית סוֹף וּנְחַתוּ יַקִּירֵיהוֹן וְסַגְיֵהוֹן וְאִתְרְגוּשְׁתְּהוֹן
15 16 וּדְתַקִּיף בְּהוֹן׃ וְיִמְאַךְ אֱנָשָׁא וְיֶחֱלַשׁ תְּקוֹף גִּבְרִין וְעֵינֵי רָמַיָא יִמְאֲכָן׃ וְתַקִּיף יְיָ צְבָאוֹת
17 בְּדִינָא וֶאֱלָהָא קַדִּישָׁא קַדִּישׁ בִּזְכוּתָא׃ וְיִתְפַּרְנְסוּן צַדִּיקַיָא כְּמָא דַאֲמִיר עֲלֵיהוֹן יִסְגוּן
18 וְנִכְסֵי רַשִׁיעַיָא צַדִּיקַיָא יַחְסְנוּן׃ וַי דִמְשָׁרַן לְמֶחֱטֵי צִבְחַר נָגְדִין חוֹבִין בְּחַבְלֵי לְמָא
19 אוּלִין וְסָגַן עַד דְתַקִּיפִין וְכִגְדִילַת עֶגְלְתָא חוֹבִין׃ דְאָמְרִין אֵימְתַי יוֹחֵי
וְיִגְלֵי פְּרִשְׁתֵּיהּ בְּדִיל דְנֶחֱזֵי וְיִקְרַב וְיֵיתֵי מִלְכֵיהּ דְקַדִּישָׁא דְיִשְׂרָאֵל
20 וְנִדְּעִנֵּיהּ׃ וַי דְאָמְרִין לְרַשִׁיעַיָא דְמַצְלְחִין בְּעָלְמָא הָדֵין אַתּוּן טָבַיָא וּלְעִנְוְתָנַיָא
אָמְרִין אַתּוּן רַשִׁיעַיָא הֲלָא בְּמֵיתֵי נְהוֹרָא לְצַדִּיקַיָא יַחְשׁוֹךְ לְרַשִׁיעַיָא וִיבַסְּמוּן פִּתְגָמֵי
אוֹרַיְתָא לְעָבְדֵיהוֹן וְיֵיתֵי מְרָדָא לְרַשִׁיעַיָא וְיִדְעוּן דִבְסוֹפָא מְרִיר חֶטְאָה
21 22 לְעָבְדֵיהּ׃ וַי דְחַכִּימִין בְּעֵינֵי נַפְשְׁהוֹן וּקְבֵיל אַפֵּיהוֹן סוּכְלְתָנִין׃ וַי דְגִבָּרִין לְמִשְׁתֵּי
23 חֲמַר וְגֻבְרִין מָרֵי נִכְסִין לְאִתְרַוָאָה מִן עַתִּיק׃ מְזַכָּן לֵיהּ לְחַיָּבָא חֲלַף דִמְקַבְּלִין
24 מִנֵּיהּ מָמוֹן דִשְׁקַר וּזְכוּת זַכָּאָה בְּרֶשַׁע מַעְדַּן מִנְּהוֹן׃ בְּכֵן יִתְאַכְלוּן כְּקַשָּׁא
בְּאֶשָּׁתָא וְכַעֲמִירָא בְּשַׁלְהוֹבִיתָא מַסְגַן תּוּקְפְהוֹן כִּשְׁבַּז יְהֵי וּמָמוֹן אוֹנְסֵיהוֹן כְּאַבְקָא
דְפָרַח אֲרֵי קָצוּ בְּאוֹרַיְתָא דַיְיָ צְבָאוֹת וְיָת מֵימַר קַדִּישָׁא דְיִשְׂרָאֵל דְחִיקוּ׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Væ qui conjungunt domum domui, agrum violenter agro suo copulant, 8 & dicunt: Donec possideamus omnem locum: existimantes quòd habitabunt soli in medio terræ. Dixit Propheta: In auribus meis audivi, si- 9 quidem decretum est hoc à facie Domini exercituum, Si non domus multæ in desolationem erunt, grandes & bonæ absque habitatore. Et pro- 10 pter peccatum non solvendi decimas, locus decem jugerum vineæ faciet lagunculam unam, & locus ubi seminatur corus sementis, faciet tria sata. Væ qui consurgunt manè ad bibendum, vinum vetus sectantes, & 11 remorantes discessum vesperi in cubilibus suis: vinum *rapinarum* incendit eos. Et fiunt cum cithara & psalterio, & lyra, & organo, & 12 vino convivia eorum: & in lege Domini non contemplantur, & opus potentiæ ejus non respiciunt. Propterea captivus ductus est populus meus, 13 eò quòd non habuit scientiam, & nobiles eorum pereunt fame, & multitudo eorũ in siccitate & in siti. Propterea dilatavit infernus animam suã, 14 & aperuit os suũ sine fine, & descenderunt nobiles eorum, & multitudo eorũ, et tumultus eorum, & qui fortis est in eis. Et humiliabitur homo, & 15 infirmabitur fortitudo fortium, & oculi sublimes humiliabuntur. Et robo- 16 rabitur Dominus exercituum in judicio, & Deus sanctus sanctificabitur in justitia. Et pascentur justi sicut dictum est de eis, & multiplicabun- 17 tur, & substantias impiorum justi possidebunt. Væ qui incipiunt pusil- 18 lum peccare, trahentes peccata in funiculis vanitatis; augentur & crescunt donec fortiora facta sint, et quasi vinculum plaustri peccata. Qui 19 dicunt: Quando festinabit et revelabitur miraculum ejus ut videamus, et appropiet, et veniat consilium sancti Israel, et sciemus illud? Væ 20 qui dicunt impiis qui prosperantur in seculo hoc; Vos estis boni: et mansuetis dicunt: Vos estis impii. Itaque cùm venerit lux justis, tenebræ *erunt* impiis; dulcia erunt verba legis operantibus ea, et veniet *rebellio* impiis, et scient quia in fine erit amarum peccatum, facientibus illud. Væ sapientibus in oculis mentis suæ, et coram semetipsis pru- 21 dentes. Væ qui potentes sunt ad bibendum vinum, et viri divitiarum, 22 ad inebriandum se vino veteri. Qui justificant impium, eò quòd reci- 23 piunt ab eo mammonam iniquitatis; et justitiam justorum malignè auferunt ab eis. Propterea consumentur sicut stipula in igne, et sicut mani- 24 pulus in flamma, *multiplicant fortitudinem* eorum, quasi ulcus erit, et pecunia rapinæ eorum, sicut favilla quæ volat: quoniam detestati sunt legem Domini Sabaoth, et Verbum sancti Israel *repulerunt*.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܝ ܠܟܘܢ ܕܡܩܪܒܝܢ ܒܝܬܐ ܠܒܝܬܐ : ܘܚܩܠܐ ܒܚܩܠܐ ܡܚܠܛܝܢ . ܕܬܐܚܕܘܢ ܐܬܪܐ ܘܬܬܒܘܢ 8
ܒܠܚܘܕܝܟܘܢ ܥܠ ܐܪܥܐ . * ܒܐܕܢܝ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܫܬܡܥ ܕܒܬܐ ܣܓܝܐܐ 9
ܠܚܘܪܒܐ ܢܗܘܘܢ . ܡܢ ܠܐ ܕܝܬܒ . * ܡܛܠ ܕܥܣܪ ܦܕܢܝܢ ܕܟܪܡܐ . ܚܕܐ ܩܠܬܐ . ܘܙܪܥܐ 10
ܕܟܘܪ ܢܥܒܕ ܣܐܬܐ . * ܘܝ ܠܡܩܕܡܝܢ ܨܦܪܐ ܘܪܗܛܝܢ ܠܫܟܪܐ . ܘܡܘܚܪܝܢ ܠܪܡܫܐ ܘܚܡܪܐ 11
ܡܘܩܕ ܠܗܘܢ . * ܒܟܢܪܐ ܘܒܩܝܬܪܐ . ܘܒܛܒܠܐ ܘܒܙܡܪܐ . ܫܬܝܢ ܚܡܪܐ . ܘܠܥܒܕܘܗܝ 12
ܕܐܠܗܐ ܠܐ ܡܣܬܟܠܝܢ . ܘܠܥܒܕ ܐܝܕܘܗܝ ܠܐ ܚܙܝܢ . * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܫܬܒܝ ܥܡܝ ܡܢ 13
ܠܐ ܝܕܥܬܐ . ܘܣܓܝܐܐ ܡܢܗܘܢ ܡܝܬܘ ܡܢ ܟܦܢܐ . ܘܣܓܝܐܐ ܡܢ ܨܗܝܐ . * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܪܘܚܬ 14
ܫܝܘܠ ܢܦܫܗ . ܘܦܬܚܬ ܦܘܡܗ ܕܠܐ ܣܘܦ . ܘܢܚܬܘܢ ܠܗ . ܡܫܒܚܐ . ܘܡܝܩܪܐ
ܘܥܫܝܢܐ . * ܘܢܬܡܟܟ ܒܪܢܫܐ ܘܢܫܬܦܠ ܓܒܪܐ . ܘܥܝܢܐ ܪܡܬܐ ܢܬܡܟܟܢ . * ܘܢܬܥܠܐ 15 16
ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܒܕܝܢܐ . ܘܐܠܗܐ ܩܕܝܫܐ ܢܬܩܕܫ ܒܙܕܝܩܘܬܐ . * ܘܢܪܥܘܢ ܐܡܪܐ ܒܕܝܠܗܘܢ . 17
ܘܚܪܒܬܐ ܕܐܬܒܢܝ ܓܝܘܪܐ ܢܐܟܠܘܢ . * ܘܝ ܠܡܢܓܕܝܢ ܚܛܗܝܗܘܢ ܐܝܟ ܚܒܠܐ ܐܪܝܟܐ . 18
ܘܐܝܟ ܥܒܘܬܐ ܕܥܓܠܬܐ ܚܛܝܬܗܘܢ . * ܘܐܡܪܝܢ . ܢܣܬܪܗܒ ܡܪܝܐ ܥܒܕܘܗܝ ܕܢܚܙܐ 19
ܐܢܘܢ . ܘܬܬܩܪܒ ܘܬܐܬܐ ܡܠܟܗ ܕܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ . ܘܢܕܥܝܘܗ . * ܘܝ ܠܕܩܪܝܢ ܠܒܝܫܬܐ 20
ܛܒܬܐ ܘܠܛܒܬܐ ܒܝܫܬܐ . ܘܣܝܡܝܢ ܢܘܗܪܐ ܚܫܘܟܐ ܘܚܫܘܟܐ ܢܘܗܪܐ . ܘܣܝܡܝܢ ܡܪܝܪܐ
ܚܠܝܐ ܘܚܠܝܐ ܡܪܝܪܐ . * ܘܝ ܠܚܟܝܡܝܢ ܒܥܝܢܝ ܢܦܫܗܘܢ . ܘܠܘܩܒܠ ܐܦܝܗܘܢ 21
ܣܘܟܠܬܢܝܢ . * ܘܝ ܠܓܢܒܪܐ ܠܡܫܬܐ ܚܡܪܐ . ܘܠܓܒܪܐ ܚܝܠܬܢܐ ܕܡܡܙܓܝܢ ܫܟܪܐ . 22
* ܘܡܙܟܝܢ ܠܚܝܒܐ ܡܛܠ ܫܘܚܕܗ . ܘܙܕܝܩܘܬܗ ܕܙܕܝܩܐ ܡܥܒܪܝܢ ܡܢܗ . * ܡܛܠ ܗܢܐ 23 24
ܐܝܟ ܕܡܬܐܟܠ ܩܫܐ : ܒܠܫܢܐ ܕܢܘܪܐ ܕܝܩܕܐ . ܡܢ ܫܠܗܒܝܬܐ ܕܡܫܬܠܗܒܐ ܢܬܐܟܠܘܢ .
ܘܥܩܪܗܘܢ . ܐܝܟ ܐܒܩܐ ܢܗܘܐ . ܘܦܪܥܗܘܢ . ܐܝܟ ܥܘܪܐ ܢܣܩ . ܠܐ ܕܐܣܠܝܘ ܢܡܘܣܗ ܕܡܪܝܐ
ܚܝܠܬܢܐ : ܘܡܐܡܪܗ ܕܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܐܪܓܙܘ .

8 Væ vobis qui adjungitis domum domui, & agrum agro permiſcetis, ut locum occupetis, & ſoli habitetis in terra. 9 Auribus meis auditus eſt Dominus potens *dicere*, multas domos deſolandas eſſe ob penuriam habitatorum. 10 Nam decem jugera vineæ, lagenam unam; & ſementis cori, ſatum reddent. 11 Væ iis qui ſummo mane ſurgentes, & ad ſiceram accurrentes immorantur ad veſperam uſque, quoad vinum adurat eos. 12 Cum lyris & citharis, tympanis ac ſiſtris vinum potant: opera verò Dei non intelligunt, nec opus manuum ejus contemplantur. 13 Ideò captivus abductus eſt populus meus ob ignorantiam, & multi eorum fame, multi verò ſiti perierunt. 14 Ideò dilatavit infernus ſeipſum, & os ſuum diſtendit in immenſum; & in eum deſcendent glorioſi, honorandi, & fortes: 15 Humiliabitur plebeius, deprimetur nobilis; & oculi elati humiliabuntur: 16 Et exaltabitur Dominus potens in judicio, et Deus ſanctus ſanctificabitur in juſtitia. 17 Et paſcentur agni in his quæ pertinebant ad eos; et ruinas quæ reſtauratæ fuerunt, peregrini devorabunt. 18 Væ iis qui producunt peccata ſua velut funem longum, et ut zonam rotæ peccatum ſuum: 19 Et dicunt; Citò acceleret Dominus opera ſua, ut videamus ea; et accedat veniátque conſilium Sancti Iſraelis, ut agnoſcamus illud. 20 Væ iis qui vocant malum bonum, et bonum malum; ponunt tenebras lucem, et lucem tenebras; et ſtatuunt amarum dulce, et dulce amarum. 21 Væ iis qui ſapientes ſunt in ſuis oculis, et aſpectu ſuo prudentes. 22 Væ iis qui valentes ſunt ad potandum vinum, et viris fortibus qui miſcent ſiceram: 23 Qui abſolvunt reum propter munus ipſius, et innocentiam innocentis abdicant à ſe. 24 Propterea ut abſumitur ſtipula linguâ ignis accenſi, *ſic iſti* flammâ emiſſâ abſumentur: radix eorum ut pulvis erit, et ſurculus eorum ut gluma aſcendet; eò quòd ſpreverint legem Domini potentiſſimi, et ſermonem Sancti Iſraelis irritârint.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الاصحاح الثالث * قريان * * الويل للذين يوصلون بيتا ببيت * ويدنون حقلا بحقل 8
ليستلبوا شي القريب * هل تسكنوا على الارض وحدكم * قد سمع هذا في مسامع رب الجنود * 9
لان اذا صارت لكم منازل كثيرة تصير للخراب * وان تكن عظيمات وحسانا لا يصير فيهن سكان.
* لان المكان الذي يعمل عشرة فدن من البقر يعمل جرة واحدة * والذي يزرع ستة اراديب 10
يستغل ثلاثة اكيال * الويل للذين يقومون بالغداة * ويسعون في طلب المسكر * ويستمدون 11
للمساء * لان الخمر تحرقهم * لانهم يشربون الخمر بالقيثار والمزمار والطبول والزمور * ولا ينظرون 12
اعمال الرب * ولا يتاملون اعمال يديه * الان صار شعبي مسبي من اجل انهم لم يعرفوا الرب * 13
وصارت كثرة الاموات لاجل الجوع وعطش الماء * وعرض الجحيم نفسه وفتح فاه لئلا ينقص * 14
وسينحدر فيه المشرفون والمعظمون * والاغنياء المفسدون * ويتضع الانسان * ويهان الرجل * ويذل 15
الاعين المتعالية * ويرتفع الرب رب الجنود بالحكم * والله القدوس يتمجد بالعدل * ويرعون 16 17
الذين احتفظوا مثل الثيران * وخربات المتهددين الخراف تاكلها * الويل للذين يمدون 18
خطاياهم مثل الحبل الطويل * ومثل نير سير العجلة اثامهم * والقايلون ليدن سريعا ما 19
يصنعه الله بنا * كي ننظر * وليات مشورة قدوس اسرايل * لكي نعرفها * الويل للذين 20
يقولون للشر جيدا وللجيد شرا * الذين يصنعون الظلمة نورا والنور ظلمة * الذين يجعلون
المر حلوا والحلو مرا * الويل للذين هم عند ذواتهم فهماء * وعند ارواحهم عقلاء * الويل 21 22
للاقوياء منكم على شرب الخمر * والمقتدرين الذين يمزجون المسكر * ويزكون المنافق 23
من اجل رشوته * وينزعون حق الصديق * لاجل هذا كما يحترق القصب من جمر النار 24
فيحترقون من اللهيب المحرق * يصير اصلهم مثل التراب * وزهرهم تصعد كالغبار * لانهم
لم يساووا ناموس رب الجيوش * لكنهم اسخطوا كلمة قدوس اسرايل *

Textus tertius. Lectio.

8 *Væ iis qui domum domui annectunt, & agrum agro adjungunt, ut rem proximi rapiant: num ſoli ſuper terram habitaturi eſtis?* 9 *Jam auditum eſt hoc in aurib⁹ Domini exercituum. Nam quantumvis plura fiant vobis domicilia, in ruinam tamen abibunt; & quanvis ampla ſint ac pulchra, nullus tamen erit in illis habitator.* 10 *Locus enim quem decem juga boum arare* conſueverunt, *unicam producet lagenam; & qui ſex erdabbos* (erdabbus eſt menſura capiens centū viginti octo libras) *ſeruerit, colliget tres menſuras.* 11 *Væ iis qui manè ſurgentes ſoliciti ſunt in quærendo* potu *inebriante, ſeſeque protendunt ad veſperam uſque; nam vinum aduret eos.* 12 *Siquidem vinum hauriunt adhibitâ lyrâ, & pſalterio, tympanis, ac tibiis; & non reſpiciunt opera Domini, neq; contemplantur opera manuum ejus.* 13 *In ſumma, factus eſt populus meus captivus, eò quòd non cognoverint* Dominū: *& facta eſt multitudo mortuorum propter famem & aquæ ſitim:* 14 *Et dilatavit infernus ſeipſum, aperuitq; os ſuum ne deficeret; & in eum ruent nobiles, & magnates, divites, atq; corrupti:* 15 *Et humiliabitur homo, & deprimetur vir, & oculi elati demittentur:* 16 *Dominus autem exercituum, Dominus exaltabitur in judicio, & Deus ſanctus glorificabitur in juſtitia.* 17 *Et paſcentur qui reſervati fuerint, more taurorum; & ruinas minacium comedent agni.* 18 *Væ iis qui peccata ſua veluti prolixum funem, & velut jugum tori rotæ iniquitates ſuas producunt;* 19 *Quique dicunt, Adveniant citò quæ facturus eſt nobis Deus, ut videamus illa, & adveniat conſilium Sancti Iſraelis, ut ſciamus illud.* 20 *Væ iis qui malum dicunt bonum, & bonum malum; qui tenebras efficiunt lucem, & lucem tenebras; qui faciunt amarum dulce, et dulce amarum.* 21 *Væ iis qui ſunt apud ſemetipſos ſagaces, et judicio ſuo prudentes.* 22 *Væ audacibus inter vos ad potum vini, et robuſtis miſcentibus potum inebriantem;* 23 *Juſtum declarantibus impium propter munus ejus, jus autem juſti abrogantibus.* 24 *Iccirco quemadmodum comburuntur arundines carbonibus ignis, ſic* iſti *ardenti flammâ comburentur: evadet origo eorum pulveri ſimilis, et flos eorum ut pulviſculus aſcendet. Quia noluerunt legem Domini exercituum, ſed verbum Sancti Iſraelis irritaverunt.*

יְשַׁעְיָה : ו

extendit & ,ſuum populum in DOMINI *naſus* eſt iratus Ideo
25 עַל־כֵּן חָרָה אַף־יְהוָה בְּעַמּוֹ וַיֵּט
, montes contremuerunt & , eum percuſſit & ,eum ſuper ſuam manum
יָדוֹ עָלָיו וַיַּכֵּהוּ וַיִּרְגְּזוּ הֶהָרִים
hoc omni in- , platearum *interiori in ſtercus ſicut* eorũ morticinium fuit &
וַתְּהִי נִבְלָתָם כַּסּוּחָה בְּקֶרֶב חוּצוֹת בְּכָל־זֹאת
elevabit Et .extenta ejus manus adhuc & ,ejus *naſus* eſt averſus non
26 לֹא־שָׁב אַפּוֹ וְעוֹד יָדוֹ נְטוּיָה : וְנָשָׂא־
ecce & , terræ extremo ab ei ſibilabit & , longè à *gentes* in vexillum
נֵס לַגּוֹיִם מֵרָחוֹק וְשָׁרַק לוֹ מִקְצֵה הָאָרֶץ וְהִנֵּה
non : eo in *impingens* non & *laſſus* Non .veniet levis citò
27 מְהֵרָה קַל יָבוֹא : אֵין־עָיֵף וְאֵין־כּוֹשֵׁל בּוֹ לֹא
,ejus lumborum cingulum erit ſolutum neque ,dormiet neque dormitabit
יָנוּם וְלֹא יִישָׁן וְלֹא נִפְתַּח אֵזוֹר חֲלָצָיו
ejus ſagittæ Quia .ejus calceamentorum corrigia rumpetur nec
28 וְלֹא נִתַּק שְׂרוֹךְ נְעָלָיו : אֲשֶׁר חִצָּיו
petra ut ejus equorum ungulæ : extenti ejus arcus omnes & , acutæ
שְׁנוּנִים וְכָל־קַשְּׁתֹתָיו דְּרֻכוֹת פַּרְסוֹת סוּסָיו כַּצַּר
: leonis ut , *ei* Rugitus .tempeſtas tanquam ejus rotæ &,ſunt reputatæ
29 נֶחְשָׁבוּ וְגַלְגִּלָּיו כַּסּוּפָה : שְׁאָגָה לוֹ כַּלָּבִיא
, *ſtolabit* & , prædam tenebit & , fremet & , leonum catuli ut rugiet
וְשָׁאַג כַּכְּפִירִים וְיִנְהֹם וְיֹאחֵז טֶרֶף וְיַפְלִיט
fremitum juxta illa die in eum ſuper fremet Et .*eruens* non &
30 וְאֵין מַצִּיל : וְיִנְהֹם עָלָיו בַּיּוֹם הַהוּא כְּנַהֲמַת־
lux & , anguſtia , *tenebroſitas* ecce & , terram in aſpiciet & , *maris*
יָם וְנִבַּט לָאָרֶץ וְהִנֵּה־חֹשֶׁךְ צַר וָאוֹר
.ſuis defluxionibus in eſt obtenebrata
חָשַׁךְ בַּעֲרִיפֶיהָ :

CAP. VI. ו

ſedentem Dominum vidi & , Huzijahu *regem mori* anno In
1 בִּשְׁנַת־מוֹת הַמֶּלֶךְ עֻזִּיָּהוּ וָאֶרְאֶה אֶת־אֲדֹנָי יֹשֵׁב
.*palatium replentes* ejus fimbriæ &,elevatũ &,excelſum ſolium ſuper
עַל־כִּסֵּא רָם וְנִשָּׂא וְשׁוּלָיו מְלֵאִים אֶת־הַהֵיכָל :
: *uni alæ ſex alæ* Sex .illud ſupra *ſtantes* Seraphim
2 שְׂרָפִים עֹמְדִים מִמַּעַל לוֹ שֵׁשׁ כְּנָפַיִם שֵׁשׁ כְּנָפַיִם לְאֶחָד
duabus in &,ſuos pedes velabat duabus in & , *ſuas facies* velabat duabus in
בִּשְׁתַּיִם יְכַסֶּה פָנָיו וּבִשְׁתַּיִם יְכַסֶּה רַגְלָיו וּבִשְׁתַּיִם
,ſanctus,ſanctus,Sanctus : dicebat & ,*illum ad hic* clamabat Et .volabat
3 יְעוֹפֵף : וְקָרָא זֶה אֶל־זֶה וְאָמַר קָדוֹשׁ קָדוֹשׁ קָדוֹשׁ
ſe moverunt Et .ejus gloria *terræ totius plenitudo* :exercituũ Dominus
4 יְהוָה צְבָאוֹת מְלֹא כָל־הָאָרֶץ כְּבוֹדוֹ : וַיָּנֻעוּ
.fumo eſt repleta domus & , clamantis *voce à liminum frontiſpicia*
אַמּוֹת הַסִּפִּים מִקּוֹל הַקּוֹרֵא וְהַבַּיִת יִמָּלֵא עָשָׁן :
, *ego* labiis pollutus vir quia , tacui quia : mihi Væ : dixi Et
5 וָאֹמַר אוֹי־לִי כִי־נִדְמֵיתִי כִּי אִישׁ טְמֵא־שְׂפָתַיִם אָנֹכִי
regem quia : *habitans ego* labiis polluti populi medio in &
וּבְתוֹךְ עַם־טְמֵא שְׂפָתַיִם אָנֹכִי יֹשֵׁב כִּי אֶת־הַמֶּלֶךְ
de unus me ad volavit Et .mei oculi viderunt exercituum Dominum
6 יְהוָה צְבָאוֹת רָאוּ עֵינָי : וַיָּעָף אֵלַי אֶחָד מִן־
.altari *deſuper* tulerat forcipibus *in* ,carbo ej⁹ manu in & ,Seraphim
הַשְּׂרָפִים וּבְיָדוֹ רִצְפָּה בְּמֶלְקַחַיִם לָקַח מֵעַל הַמִּזְבֵּחַ :
,tua labia *ſuper* hic tetigit Ecce : dixit & ,meũ os *ſuper* fecit tangere Et
7 וַיַּגַּע עַל־פִּי וַיֹּאמֶר הִנֵּה נָגַע זֶה עַל־שְׂפָתֶיךָ
vocem audivi Et .expiabitur tuũ peccatũ &, tua iniquitas recedet &
8 וְסָר עֲוֺנֶךָ וְחַטָּאתְךָ תְּכֻפָּר : וָאֶשְׁמַע אֶת־קוֹל
,ego Ecce : dixi Et ?nobis ibit quis & ,mittam Quem : dicentis Domini
אֲדֹנָי אֹמֵר אֶת־מִי אֶשְׁלַח וּמִי יֵלֶךְ־לָנוּ וָאֹמַר הִנְנִי
.me mitte
שְׁלָחֵנִי :

Verſio VULG. LAT.

25 Ideò iratus eſt furor Domini
in populum ſuum, & extendit
manum ſuam ſuper eum, &
percuſſit eum : & conturbati
ſunt montes,& facta ſunt morticina
eorum, quaſi ſtercus in
medio platearum.In his omnibus
non eſt averſus furor ejus,
ſed adhuc manus ejus extenta.
26 Et elevabit ſignum in nationibus
procul, & ſibilabit ad
eum de finibus terræ : & ecce
27 feſtinus velociter veniet. Non
eſt deficiens, neque laborans
in eo : non dormitabit, neque
dormiet ; neque ſolvetur cingulum
renum ejus, nec rumpetur
corrigia calceamenti ej⁹.
28 Sagittæ ejus acutæ, & omnes
arc⁹ ejus extenti.Ungulæ equorum
ejus ut ſilex, & rotæ ejus
29 quaſi impet⁹ tempeſtatis. Rugitus
ejus ut leonis, rugiet ut
catuli leonum : & frendet, &
tenebit prædam : et amplexabitur,
& non erit qui eruat.
30 Et ſonabit ſuper eum in die
illa ſicut ſonitus maris : aſpiciemus
in terram, & ecce tenebræ
tribulationis,& lux obtenebrata
eſt in caligine ejus.

CAP. VI.

1 IN anno, quo mortu⁹ eſt rex
Ozias, vidi Dominum ſedentem
ſuper ſolium excelſum et
elevatum : & ea quæ ſub ipſo
2 erant, replebant templũ. Seraphim
ſtabant ſuper illud:ſex
alæ uni, et ſex alæ alteri : duabus
velabant faciem ejus, &
duabus velabant pedes ejus,et
3 duab⁹ volabant. Et clamabant
alter ad alterum, & dicebant ;
Sanctus,Sanctus,Sanctus, Dominus
Deus exercituum, plena
4 eſt omnis terra gloriâ ejus. Et
commota ſunt ſuperliminaria
cardinum à voce clamantis,&
5 dom⁹ repleta eſt fumo. Et dixi;
Væ mihi, quia tacui, quia vir
pollutus labiis ego ſum, & in
medio populi polluta labia habentis
ego habito, & regem
Dominum exercituũ vidi
6 oculis meis. Et volavit ad me un⁹
de Seraphim, & in manu ejus
calculus, quem forcipe tulerat
7 de altari. Et tetigit os meum,
et dixit ; Ecce tetigit hoc labia
tua, et auferetur iniquitas tua,
& peccatũ tuum mundabitur.
8 Et audivi vocem Domini dicentis
; Quem mittam?& quis
ibit nobis ? Et dixi ; Ecce ego,
mitte me.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

25 Καὶ ἐθυμώθη ὀργῇ κύριος σαβαὼθ (ς) ἐπὶ τὸν
λαὸν αὐτοῦ, ϗ ἐπέβαλε τὴν (σ) χεῖρα ἐπ'
αὐτούς, ϗ ἐπάταξεν αὐτούς. ϗ παρωξύνθη
τὰ ὄρη, ϗ ἐγενήθη τὰ θνησιμαῖα αὐτῶν
ὡς κοπρία ἐν μέσῳ ὁδοῦ. (τ) ϗ ἐν πᾶσι
τούτοις οὐκ ἀπεστράφη ὁ (υ) θυμὸς αὐτοῦ,
26 ἀλλὰ ἔτι ἡ χεὶρ ὑψηλή. Τοιγαροῦν ἀρεῖ
σύσσημον ἐν τοῖς ἔθνεσι τοῖς μακρὰν,
ϗ συριεῖ (φ) αὐτοὺς ἀπ' ἄκρου τῆς γῆς·
27 ϗ ἰδοὺ ταχὺ κούφως ἔρχονται. (χ) Οὐ πεινάσουσιν,
οὐδὲ κοπιάσουσιν, οὐδὲ νυστάξουσιν,
οὐδὲ κοιμηθήσονται, (ψ) οὐδὲ λύσουσι
τὰς ζώνας αὐτῶν ἀπὸ τῆς ὀσφύος αὐτῶν,
οὐδὲ μὴ ῥαγῶσιν οἱ ἱμάντες τῶν ὑποδημάτων
28 αὐτῶν· Ὧν τὰ βέλη (ς) ὀξέα ἐστὶ, ϗ τὰ
τόξα αὐτῶν ἐντεταμένα· οἱ πόδες τῶν
ἵππων αὐτῶν ὡς στερεὰ πέτρα ἐλογίσθησαν·
οἱ τροχοὶ τῶν ἁρμάτων αὐτῶν ὡς καταιγίς.
29 (ω) Ὀργιῶσιν ὡς λέοντες, ϗ (α) παρέστηκαν
ὡς σκύμνοι λέοντος· ϗ ἐπιλήψεται,
ϗ (β) βοήσει ὡς θηρίον, ϗ ἐκβαλεῖ,
30 ϗ οὐκ ἔσται ὁ (γ) ῥυόμενος αὐτούς. Καὶ
βοήσει δι' αὐτοὺς τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ὡς φωνὴ
θαλάσσης κυμαινούσης· ϗ ἐμβλέψονται
εἰς τὴν γῆν, ϗ ἰδοὺ σκότος σκληρὸν ἐν
τῇ ἀπορίᾳ αὐτῶν.

MS.A. (ς) εἰς τὸν (σ) χεῖρα αὐτοῦ ἐπ' (τ) ἐν πᾶσιν τούτοις (υ) θυμὸς, ἀλλ' ἔτι
(φ) αὐτοῖς (χ) Οὐ κοπιάσουσιν, (ψ) οὐδ' οὐ μὴ (ς) ὀξεῖα (ω) Ὁρμῶσιν (α) παρεστήκασιν
ὡς σκύμνος (β) βοήσεται (γ) ῥυόμενος. Καὶ βοήσεται δι'
αὐτοὺς ἐν τῇ ἡμέρᾳ.

Et indignatus eſt irâ Domin⁹ Sabaoth 25
ſuper populum ſuum,& immiſit
manum ſuam ſuper eos, &
percuſſit eos. Et (n) acerbati ſunt
montes : & facta ſunt morticina
eorum,ſicut ſtercus in medio viæ.
Et in omnibus his non eſt averſus
furor ejus,ſed adhuc (o) manus
excelſa. Ergò levavit ſignũ 26
in nationibus,quæ procul, & ſibilabit
eos ab extremo terræ. Et
ecce citò leviter veniunt. Non eſurient, 27
neq; laborabunt,neq; dormitabunt,
neq; dormient, neq; ſolvent
zonas ſuas à lumbo ſuo: neque
rumpentur corrigiæ calceamentorum
eorum. Quorum ſagittæ 28
acutæ ſunt, & arcus eorum
intenti : pedes equorum eorum,
quaſi ſolida petra reputati ſunt :
rotæ curruum eorum quaſi tempeſtas :
(p) Fremunt ut leones, & 29
aſtiterunt ſicut catuli leonis. Et
apprehendet,& clamabit quaſi fera :
& ejiciet ; & non erit,qui
liberet eos. Et clamabit propter 30
eos die illâ, ſicut vox maris fluctuantis.
Et reſpicient (q) in terram :
& ecce tenebræ duræ in
indigentia eorum.

ΚΕΦ. ς'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο τοῦ ἐνιαυτοῦ οὗ ἀπέθανεν
Ὀζίας ὁ βασιλεὺς, εἶδον τὸν κύριον καθήμενον
ἐπὶ θρόνου ὑψηλοῦ ϗ ἐπηρμένου· καὶ
2 πλήρης ὁ οἶκος τῆς δόξης αὐτοῦ. Καὶ (α) σεραφὶμ
εἱστήκεισαν κύκλῳ αὐτοῦ, ἓξ πτέρυγες
τῷ ἑνὶ, ϗ ἓξ πτέρυγες τῷ ἑνί· ϗ ταῖς μὲν
δυσὶ, κατεκάλυπτον τὸ πρόσωπον· (β) ταῖς
δὲ δυσὶ, κατεκάλυπτον τοὺς πόδας· ϗ ταῖς
3 δυσὶν ἐπέταντο. Καὶ (γ) ἐκέκραγον ἕτερος
πρὸς τὸν ἕτερον, ϗ ἔλεγον, Ἅγιος Ἅγιος
Ἅγιος κύριος σαβαὼθ, πλήρης πᾶσα ἡ
4 γῆ τῆς δόξης αὐτοῦ. Καὶ ἐπήρθη τὸ ὑπέρθυρον
ἀπὸ τῆς φωνῆς ἧς ἐκέκραγον, καὶ
5 ὁ οἶκος (δ) ἐνεπλήσθη καπνοῦ. Καὶ (ε) εἶπον,
Ὦ τάλας ἐγὼ, ὅτι κατανένυγμαι, ὅτι
ἄνθρωπος ὢν, ϗ ἀκάθαρτα χείλη ἔχων,
ἐν μέσῳ λαοῦ ἀκάθαρτα χείλη ἔχοντος ἐγὼ
οἰκῶ, ϗ τὸν βασιλέα κύριον σαβαὼθ εἶδον
6 τοῖς ὀφθαλμοῖς μου. Καὶ ἀπεστάλη πρὸς μὲ
ἓν τῶν σεραφὶμ, ϗ ἐν τῇ χειρὶ εἶχεν (ζ) ἄνθρακα,
ὃν τῇ λαβίδι ἔλαβεν ἀπὸ τοῦ θυσιαστηρίου.
7 Καὶ ἥψατο τοῦ στόματός μου, ϗ εἶπεν,
Ἰδοὺ ἥψατο τοῦτο τῶν χειλέων σου, ϗ ἀφελεῖ
τὰς ἀνομίας σου, ϗ τὰς ἁμαρτίας σου περικαθαριεῖ.
8 Καὶ ἤκουσα τῆς φωνῆς κυρίου λέγοντος,
Τίνα ἀποστείλω, ϗ τίς πορεύσεται πρὸς τὸν
λαὸν τοῦτον; ϗ εἶπα, (η) Ἰδοὺ ἐγώ εἰμι· ἀπόστειλόν με.

MS.A. (α) σεραφεὶν (β) ϗ ταῖς δυσὶ (γ) ἐκέκραγον (δ) ἐπλήσθη (ε) εἶπα,
(ζ) ἄνθρακα πυρὸς, (η) Ἰδοὺ εἰμι ἐγώ·

CAP. VI.

ET factum eſt anno, quo mortuus 1
eſt Ozias rex,vidi Dominum
ſedentem ſuper thronũ excelſum,
& elevatum:(a)& plena domus
gloriâ ej⁹. Et (b) Seraphim ſtabãt 2
in (c) circuitu ejus:ſex alæ uni, et
ſex alæ uni: et duab⁹ quidẽ operiebant
faciẽ,duab⁹ autẽ operiebant
pedes, & duabus volabant. Et 3
clamabat alter ad alterum, &
dicebant, Sanctus, Sanctus, Sanctus
Dominus Sabaoth : plena eſt
omnis terra gloriâ ej⁹. Et elevatũ 4
eſt ſuperliminare à voce, quâ clamabant:
& dom⁹ impleta eſt fumo.
Et dixi ; O miſer ego, quia compunctus 5
ſum : quia homo cùm ſim,
& immunda labia habens,in medio
populi immunda labia habentis
ego habito : & regem Dominum
Sabaoth vidi oculis meis. Et 6
miſſus eſt ad me unus de Seraphim ;
*et in manu habebat * carbonem,*
quem (d) forcipe ſumpſit
de altari, Et tetigit os meũ,et dixit ; 7
Ecce tetigit hoc labia tua :
et auferet iniquitates tuas,et peccata
tua circumpurgabit. Et audivi 8
vocem Domini dicentis ;
Quem mittam, et quis ibit ad populum
hunc ? Et dixi, Ecce ego
ſum : mitte me.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

25 עַל כֵּן תְּקֵיף רוּגְזָא דַיְיָ צְבָאוֹת בְּעַמֵּיהּ וַאֲרֵים מְחַת גְּבוּרְתֵּיהּ עֲלֵיהוֹן כַּד מְחָנוּן וְזָעוּ
טוּרַיָּא וַהֲוָאָה נְבֵלַתְהוֹן מִשְׁגְּרָן כְּסַחִיתָא בְּגוֹ שׁוּקַיָּא בְּכָל דָּא לָא תָבוּ מֵחוֹבֵיהוֹן דִּיתוּב
רוּגְזֵיהּ מִנְּהוֹן וְעַד כְּעַן מַתְקְפִין מֶרְדֵּיהוֹן וְעוֹד מַחֲתֵיהּ עֲתִידָא לְאִתְפְּרַע מִנְּהוֹן : וְיִזְקוֹף 26
אָת לְעַמְמַיָּא מֵרָחִיק וְיִכְלֵי לֵיהּ מִסְּיָפֵי אַרְעָא וְהָא בִּפְרִיעַ מֶלֶךְ בְּמַשְׁרִיתֵיהּ כַּעֲנָנִין קְלִילִין
יֵיתֵי : לֵית דִּמְשַׁלְהֵי וְלֵית דְּמִתְקֵל בֵּיהּ לָא יְנוּם וְלָא יִדְמוּךְ וְלָא יִשְׁתְּרֵי זְרִיז חַרְצֵיהּ וְלָא 27
תִתְפְּסֵיק עַרְקַת מְסָנֵיהּ : דִּי גִירוֹהִי מְחָרְפִין וְכָל קַשְׁתָּתֵיהּ מְתִיחָן פַּרְסַת סוּסָוָתֵיהּ 28
כְּטִנָּרָא תַקִּיפִין וְגַלְגִּלוֹהִי קְלִילִין הָא כְעַלְעוֹלָא : נְהוֹמֵי לֵיהּ כְּאַרְיָא וִינְהוֹם כְּבַר אַרְיָוָן 29
וְיִכְלֵי וְיֵיחוֹד בִּזָּא וִישֵׁיזִיב וְלֵית דְּמַצִּיל : וְיִכְלֵי עֲלוֹהִי בְּעִדָּנָא הַהִיא כְּאִתְרְגוֹשַׁת יַמָּא 30
דְּאִם יִבְעוֹן רַשִׁיעַיָּא סְעִיד מִיָּתְבֵי אַרְעָא עָקָא וּתְבַר אַיְתִי עֲלֵיהוֹן בְּרַם צַדִּיקַיָּא דִיהוֹן
בְּשַׁעְתָּא הַהִיא יִתְכַּסּוּן מִן קֳדָם בִּישְׁתָּא :

ו

1 בְּשַׁתָּא דְּאִתְנְגַע בַּהּ מַלְכָּא עֻזִּיָּה אֲמַר נְבִיָּא חֲזֵיתִי יָת יְקָרָא דַיְיָ שָׁרֵי עַל כּוּרְסֵיהּ רָם
וּמִתְנַטַּל בִּשְׁמֵי מְרוֹמָא וּמִזִּיו יְקָרֵיהּ אִתְמְלֵי הֵיכְלָא : שַׁמָּשִׁין קַדִּישִׁין בְּרוּמָא קֳדָמוֹהִי 2
שִׁתָּא גַּפִּין לְחַד שִׁתָּא גַּפִּין לְחַד בִּתְרֵין מְכַסֵּי אַפּוֹהִי דְּלָא חָזֵי וּבִתְרֵין מְכַסֵּי גְוִיֵּתֵיהּ דְּלָא
מִתַּחְזֵי וּבִתְרֵין מְשַׁמֵּשׁ : וּמְקַבְּלִין דֵּין מִן דֵּין וְאָמְרִין קַדִּישׁ בִּשְׁמֵי מְרוֹמָא עִלָּאָה בֵּית 3
שְׁכִנְתֵּיהּ קַדִּישׁ עַל אַרְעָא עוֹבַד גְּבוּרְתֵּיהּ קַדִּישׁ לְעָלַם וּלְעָלְמֵי עָלְמַיָּא יְיָ צְבָאוֹת מַלְיָא
כָּל אַרְעָא זִיו יְקָרֵיהּ : וְזָעוּ אֵילָוַת סִפֵּי הֵיכְלָא מִקָּל מְמַלְּלָא וּבֵית מַקְדְּשָׁא אִתְמְלֵי אַמִּיטְתָא : 4
וַאֲמָרִית וַי לִי אֲרֵי חֲבֵית אֲרֵי גְבַר חַיָּב לְאוֹכָחָא אֲנָא וּבְגוֹ עַמָּא דִּמְגָעַל בְּחוֹבִין אֲנָא יָתֵיב 5
אֲרֵי יָת יְקָר שְׁכִינַת מֶלֶךְ עָלְמַיָּא יְיָ צְבָאוֹת חֲזָאָה עֵינָי : וְאִשְׁתְּדִי לְוָתִי חַד מִן שַׁמָּשַׁיָּא 6
וּבְפוּמֵּיהּ מַמְלַל דְּקַבֵּיל מִן קֳדָם דִּשְׁכִנְתֵּיהּ עַל כּוּרְסֵי יְקָרָא בִּשְׁמֵי מְרוֹמָא עֵיל מִן
מַדְבְּחָא : וְסַדַּר בְּפוּמִּי וַאֲמַר הָא שַׁוֵּיתִי פִּתְגָּמֵי נְבוּאָתִי בְּפוּמָּךְ וְיַעְדּוֹן חוֹבָךְ וְחֶטְאָךְ 7
יִתְכַּפְּרוּן : וּשְׁמָעִית יָת קָל מֵימְרָא דַיְיָ דַּאֲמַר יָת מַן אֶשְׁלַח לְאִתְנַבָּאָה וּמַן יֵיזִיל לְאַלָּפָא 8
וַאֲמָרִית הָא אֲנָא שְׁלַח יָתִי :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Propterea iratus eſt furor Dñi exercituũ in populũ ſuũ; & levavit plagam 25
fortitudinis ſuæ ſuper eos : quando percuſſit eos, & commoti ſunt montes,
& fuerunt cadavera eorum projecta quaſi ſtercus in medio platearum.
In omnibus his non ſunt converſi à peccatis ſuis, ut averteretur furor
ejus ab eis; ſed adhuc ſcelera eorum invaleſcunt : & rurſus plaga
ejus futura eſt, ut vindictam ſumat ab eis. Et elevabit ſignum in populis à 26
longè, & clamabit ad eum à finibus terræ. Et ecce citò veniet rex cum exercitu
ſuo ſicut nubes leves. Non erit deficiens neque corruens in eo: non 27
dormitabit neque dormiet, neque ſolvetur cingulum lumborum ejus, neque
rumpetur corrigia calceamenti ejus. Cujus ſagittæ acutæ, & omnes arcus 28
ejus extenti: ungulæ equorum ejus ſicut petræ fortiſſimæ, & rotæ ejus veloces
ſicut tempeſtas. Rugitus ejus ſicut leo, rugietq; ſicut filius leonis, & 29
clamabit & apprehendet prædam; & auferet, & non erit qui eruat. Et ſonabit 30
ſuper eum in tempore illo ſicut tumultus maris. Quòd ſi quæſierint
impii auxilium ab habitatorib⁹ terræ, *tribulatione et contritione inducet*
ſup eos. Veruntamen juſti qui erunt in illa hora, protegentur à facie mali.

CAP. VI.

IN anno quo percuſſus eſt rex Ochozias, dixit propheta: Vidi gloriã Dñi 1
habitantem ſup ſoliũ excelſum, et elevatũ in cœlis excelſis, et de ſplendore
gloriæ ejus replebatur templũ. Miniſtri ſancti [*ſtabant*] in excelſo in conſpectu 2
ejus; ſex alæ unicuique; duab⁹ tegebat faciẽ ſuã ut non videret,
& duab⁹ velabat *corpus ſuũ* ut non videretur, et duab⁹ miniſtrabat. Et clamabant 3
alter ad alterũ, & dicebant: Sanct⁹ in cœlis excelſis *altiſſimis*, domo
majeſtatis ej⁹; ſanctus ſuper terra opus potentiæ ej⁹: ſanct⁹ in ſeculũ,
& in ſecula ſeculorũ Dñs exercituũ; plena eſt omnis terra ſplendore gloriæ
ejus. Et commota ſunt ſuperliminaria cardinũ templi à voce loquentis, & 4
dom⁹ ſanctuarii repleta eſt caligine. Et dixi: Væ mihi quia peccavi; quoniam 5
vir peccator ſum ad increpandũ, & in medio populi polluti peccatis
ego habito: quia gloriam majeſtatis regis *ſeculorum*, Dñi exercituũ, viderunt
oculi mei. Et volavit ad me unus de miniſtris, & in ore ej⁹ eloquiũ quod 6
ſuſceperat à facie majeſtatis ej⁹ qui habitat in throno gloriæ in cœlis celſitudinis
ſupra altare. Et diſpoſuit [*verba*] in ore meo, et ait: Ecce poſui verba 7
prophetiæ meæ in ore tuo, et auferentur iniquitates tuæ, et peccata tua dimittentur.
Et audivi vocem verbi Dñi dicentis: Quem mittam ad prophetandũ? 8
et quis ibit *ad docendum*? et dixi: Ecce ego, mitte me.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

25 * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܬܚܡܬ ܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܥܡܗ. ܘܐܪܝܡ ܐܝܕܗ ܥܠܝܗܘܢ. ܘܡܚܐ ܐܢܘܢ.
ܘܪܓܙܘ ܛܘܪܐ. ܘܗܘܘ ܫܠܕܝܗܘܢ ܐܝܟ ܣܝܢܐ ܒܓܘ ܫܘܩܐ. ܘܒܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ ܠܐ ܗܦܟ
26 ܪܘܓܙܗ. ܘܥܕܟܝܠ ܐܝܕܗ ܪܡܐ. * ܘܢܪܝܡ ܐܬܐ ܠܥܡܡܐ ܡܢ ܪܘܚܩܐ. ܘܢܫܪܩ ܠܗܘܢ ܡܢ
27 ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܘܗܐ ܒܥܓܠ ܘܩܠܝܠܐܝܬ ܢܐܬܘܢ. * ܠܐ ܢܠܐܘܢ. ܘܠܐ ܢܬܬܩܠܘܢ. ܘܠܐ
ܢܢܘܡܘܢ. ܘܠܐ ܢܕܡܟܘܢ. ܘܠܐ ܢܫܪܘܢ ܐܣܪ ܚܨܝܗܘܢ. ܘܠܐ ܢܬܦܣܩܘܢ ܥܪ̈ܩܐ ܕܡܣܐܢܝܗܘܢ.
28 * ܓܐܪܝܗܘܢ ܚܪܝܦܝܢ. ܘܩܫܬܬܗܘܢ ܡܬܝܚܢ. ܘܦܪ̈ܣܬܐ ܕܪ̈ܟܫܝܗܘܢ. ܟܐܦܐ ܢܬܚܫܒܢ.
29 ܘܥܓܠܬܗܘܢ. ܐܝܟ ܥܠܥܠܐ. * ܘܢܗܡܬܗܘܢ. ܐܝܟ ܐܪܝܐ ܕܢܗܡ. ܘܐܝܟ ܓܘܪܝܐ ܕܐܪܝܐ ܕܢܗܡ
30 ܘܢܐܚܘܕ ܛܥܝܢܐ. ܘܢܦܨܐ. ܘܠܝܬ ܕܡܦܨܐ. * ܘܢܢܗܡ ܥܠܝܗܘܢ. ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܐܝܟ ܢܗܡܬܗ
ܕܝܡܐ. ܘܢܚܘܪܘܢ ܠܐܪܥܐ. ܘܢܗܘܐ ܚܫܘܟܐ ܘܐܘܠܨܢܐ. ܘܢܘܗܪܐ ܢܚܫܘܟ ܒܥܪܦܠܝܗܘܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܘ̄ *

1 * ܒܫܢܬܐ ܕܡܝܬ ܥܘܙܝܐ ܡܠܟܐ. ܚܙܝܬ ܠܡܪܝܐ ܕܝܬܒ ܥܠ
2 ܟܘܪܣܝܐ ܪܡܐ. ܘܡܥܠܝܐ ܕܫܘܦܠܘܗܝ. ܡܠܐ ܗܝܟܠܗ. * ܘܣܪ̈ܦܐ ܩܝܡܝܢ ܠܥܠ ܡܢܗ.
ܫܬ ܓܦܐ ܓܦܝܢ ܠܚܕ ܡܢܗܘܢ. ܒܬܪܬܝܢ ܡܟܣܝܢ ܦܪ̈ܨܘܦܝܗܘܢ. ܘܒܬܪܬܝܢ ܡܟܣܝܢ
3 ܪ̈ܓܠܝܗܘܢ. ܘܒܬܪܬܝܢ ܦܪܚܝܢ. * ܘܩܪܝܢ ܗܘܘ ܚܕ ܠܚܕ ܘܐܡܪܝܢ. ܩܕܝܫ ܩܕܝܫ ܩܕܝܫ
4 ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܕܡܠܝܐ ܟܠܗ ܐܪܥܐ ܫܘܒܚܗ. * ܘܐܙܝܥܘ ܐܣ̈ܩܘܦܬܐ ܕܬܪ̈ܥܐ ܡܢ ܩܠܐ ܕܩܥܝܢ. ܘܒܝܬܐ
5 ܐܬܡܠܝ ܬܢܢܐ. * ܘܐܡܪܬ. ܘܝ ܠܝ ܕܬܘܝܪ ܐܢܐ. ܡܛܠ ܕܓܒܪܐ ܐܢܐ ܛܡܐ ܣܦܘ̈ܬܐ. ܘܒܝܢܝ ܥܡܐ
6 ܕܛܡܐܝܢ ܣܦܘ̈ܬܗ. ܥܡܪ ܐܢܐ. ܘܠܡܠܟܐ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܚܙܝ ܥܝܢ̈ܝ. * ܘܦܪܚ ܠܘܬܝ ܚܕ
7 ܡܢ ܣܪ̈ܦܐ. ܘܒܐܝܕܗ ܓܘܡܪܬܐ ܕܢܘܪܐ. ܕܒܡܘܠܚܬܐ ܢܣܒ ܡܢ ܡܕܒܚܐ. * ܘܩܪܒ ܠܦܘܡܝ. ܘܐܡܪ
8 ܠܝ. ܗܐ ܩܪܒܬ ܗܕܐ ܠܣܦܘ̈ܬܟ. ܘܢܥܒܪܢ ܥܘ̈ܠܝܟ. ܘܚܛܗ̈ܝܟ ܢܫܬܒܩܘܢ. * ܘܫܡܥܬ
ܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܕܐܡܪ. ܠܡܢ ܐܫܕܪ. ܘܡܢ ܢܐܙܠ. ܘܐܡܪܬ. ܗܐ ܐܢܐ ܫܕܪܝܢܝ.

25 Propterea exarſit ira Dñi contra populum ſuum, & ſublatâ in eos manu ſuâ, percuſſit illos, & contremuerunt montes, fuerúntq; cadavera eorum ut lutum in mediis plateis: his tamen omnibus non eſt averſa ira ejus, ſed adhuc manus ejus eſt elata. 26 Nam attollet ſignũ gentibus è longinquo, & ſibilabit eis ab extremis terræ; quæ ſtatim ac velociter aderunt. 27 Non fatigabuntur, nec impingent: non dormitabunt, neq; dormient: non ſolvent cingulum lumborũ ſuorum, neque rumpentur corrigiæ calceamentorũ earum: 28 Sagittæ earum acutæ, & arcus earum extenti: ungulæ equorum earum ſilicibus, & rotæ earum turbini ſimiles cenſebuntur: 29 Rugitus earum ut leonis rugientis, & ut catuli leonis rugientis, prædã capientis & ſalvam deportantis nemine eripiente. 30 Et fremet in illos eâ die ut fremitu maris: terram intuebuntur, erúntque tenebræ & calamitas, & lux obtenebreſcet præ caligine earum.

CAP. VI.

1 ANno quo mortuus eſt Ozia rex, vidi Dominum ſedentẽ ſuper ſoliũ excelſum; & majeſtate fimbriarum ejꝰ plenum erat templum ipſius: 2 Et Seraphim ſtantes ſuper illud, habentes ſinguli ſenas alas, quarum duabus tegebant facies ſuas, duabus tegebant pedes ſuos, duabus autem volabant: 3 Et clamabant alter ad alterũ, ac dicebant; Sanctus, Sanctus, Sanctus Dominus potentiſſimus, cujus laudibꝰ plena eſt univerſa terra. 4 Et commota ſunt limina portarũ à voce quæ reſonabat, & domꝰ impleta eſt fumo. 5 Quapropter dixi, Væ mihi, ſtupens ſum, quia homo pollutus ſum labiis, et inter populum cujus polluta ſunt labia, habito: & regem Dñm potentiſſimum viderunt oculi mei. 6 Sed advolavit ad me unus ex iis Seraphim manu geſtans carbonem ignitum quem forcipe tulerat ab altari: 7 Tetigítque os meum, & dixit mihi, En tetigit hic labia tua, ut recedat iniquitas tua, & peccata tua dimittantur. 8 Deinde audivi vocem Domini dicentis, Quem mittam? et quis ibit? Cui dixi, En ego, mitte me.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

25 * وغضب رب الجيوش على شعبه * والقى يده عليهم وضربهم * وارتجفت الجبال * وصارت
جثثهم مثل الزبل في وسط الطرق * وفي هذه كلها لم يرد غضبه * لكن يده ايضا عالية *
26 * والآن يرفع علامة للامم البعيدة ويسوقهم من اطراف الارض * وهوذا ياتون سريعا بخفة * لا
27 يجوعون ولا يتعبون ولا ينعسون ولا ينامون * ولا يحلون مناطقهم من حقوهم * ولا ينقطع سيور
28 احذيتهم * هولاء الذين سهامهم حادة وقسيهم موتورة * وحوافر خيلهم حسبوا مثل الصخر
29 الصلد * وبكرات مراكبهم مثل العاصف * يثبون مثل الاسد * ويقعون مثل شبل الاسد *
30 فيدرك ويصرخ مثل السبع ويخرج * ويكون يزار ويصرخ عليهم في ذلك اليوم مثل صوت
البحر المموج * وينظرون الى السماء والى الارض اسفل * واذا الظلمة الصعبة في حيرتهم *

* الفصل السادس * الوحي الثالث *

* قريان فيه الرويا التي راى اشعياء بن اموص من بعد ارتفاع النبوة
عنه بثلاث سنين * وقيل ثلاثين سنة *

1 * وكان في السنة التي مات فيها عوزيا الملك رايت رب الجيوش جالسا على كرسي عال مرتفع *
2 وامتلى البيت من مجده * والسارافيم قياما حوله * ستة اجنحة للواحد * فباثنين يغطون
3 وجوههم * وباثنين يغطون ارجلهم * وباثنين يطيرون * ويصرخ الاخر للاخر ويقول * قدوس
4 قدوس قدوس رب الجنود * كل الارض مملوة من مجده * ورفع ستر الباب من الصوت الذي
5 صرخوا به * والبيت امتلى دخانا * فقلت * واه شقي انا * فاني انا متحير * لاني انسان ولي شفتان
6 نجستان * وانا اسكن في وسط شعب له شفاه نجسة * ورايت بعيني الملك رب الجيوش * وارسل
7 الي واحد من السارافيم * وبيده جمرة نار اخذها بكلبتين من المذبح * ولمس فمي وقال * هوذا
8 هذا لمس شفتيك * فينزع اثامك وينقي خطاياك * وسمعت صوت الرب يقول * من ارسل
ومن يمضي الى هذا الشعب * فقلت هاانذا فارسلني *

25 * *Iccirco irâ incenſus Dominus exercituum in populum ſuum, injecit in eos manum ſuam, & percuſſit eos, tremefacti ſunt montes, & facta ſunt eorum cadavera ceu fimus in medius viis: his tamen omnibus nondum avertit iram ſuam, ſed manus ejus adhuc eſt alta;* 26 *Et mox eriget vexillum gentibus remotis, & adducet eas ab extremitatibus terræ & ecce ventuæ ſunt citò ac velociter:* 27 *Non eſurient, neque fatigabuntur, non dormiſcent, neque dormient, non deponent cingula ſua à lumbis ſuis, neque rumpentur corrigiæ calceorum earum.* 28 *Hi ſunt quorum ſagittæ ſunt acutæ, & arcus tenſi: quorum ungulæ equorum ſaxo duro, & rotæ curruum rapido vento ſimiles videntur:* 29 *Irruunt ut leones, & incubant ut catulus leonis. Ita prædam capiet, & rugiet ut leo, & evadet;* 30 *Et rugiet fremétque contra eos illo die quaſi fremitu maris fluctuantis: & cùm aſpexerint ad cœlum & ad terram deorſum, ecce tenebræ diræ in ſtupore eorum.*

CAP. VI.

Revelatio tertia.

Lectio continens viſionem quam vidit Eſaia filius Amoſi tribus annis, vel (ut alii aſſerunt) triginta annis poſtquam ſublata fuit ab eo prophetia.

1 * *PRæterea contigit anno quo mortuus eſt Ozia rex, ut viderem Dominum exercituum inſidentem ſolio ſublimi et alto, & ædem repletam eſſe gloriâ ipſius:* 2 *Seraphim quoque circunſtantes, quorũ ſinguli ſenas habebant alas, et binis tegebant facies ſuas, binis tegebant pedes ſuos, & binis volabant:* 3 *Et alter ad alterum clamabat, ac dicebat; Sanctus, Sanctus, Sanctus Dominus exercituum: tota terra plena eſt gloriâ ipſius.* 4 *Sublatúmque eſt velum januæ propter vocem quâ clamabant, & ædes repleta eſt fumo.* 5 *Quamobrem dixi, Ah me miſerũ, audax equidem ſum; homo ſum enim pollutis labiis præditus, et habito in medio populi habentis labia polluta: & oculis meis vidi regem Dominum exercituum.* 6 *Sed miſſus ad me fuit unus ex illis Seraphim manu ſuâ ferens carbonem igneum forcipe ex ara correptum:* 7 *Et tetigit os meum, dixítque; Cùm hic tetigerit labia tua, abolentur iniquitates tuæ, & expiantur peccata tua.* 8 *Tum audivi vocem Domini dicentis, Quem mittam? & quis ibit ad populum iſtum? Dixi, Ecce me, me mittito.*

יְשַׁעְיָה: ז

ne & , audiendo Audite : huic populo dices & , Vade : dixit Et
9 וַיֹּאמֶר לֵךְ וְאָמַרְתָּ לָעָם הַזֶּה שִׁמְעוּ שָׁמוֹעַ וְאַל־
cor Impingua .cognoſcatis ne & , videndo videte & ;intelligatis
10 תָּבִינוּ וּרְאוּ רָאוֹ וְאַל־תֵּדָעוּ׃ הַשְׁמֵן לֵב־
videat fortè ne ,obline ejus oculos & ,aggrava ejus aures & ,hujus populi
הָעָם הַזֶּה וְאָזְנָיו הַכְבֵּד וְעֵינָיו הָשַׁע פֶּן־יִרְאֶה
,cõvertatur &,intelligat ſuo corde &,audiat ſuis aurib' in &,ſuis oculis in
בְעֵינָיו וּבְאָזְנָיו יִשְׁמָע וּלְבָבוֹ יָבִין וָשָׁב
Donec : dixit Et ? Domine Uſquequo : dixi Et .ei medeatur &
11 וְרָפָא לוֹ׃ וָאֹמַר עַד־מָתַי אֲדֹנָי וַיֹּאמֶר עַד אֲשֶׁר
, homine abſque domus & ,habitatore non à civitates deſolentur ſi
אִם־שָׁאוּ עָרִים מֵאֵין יוֹשֵׁב וּבָתִּים מֵאֵין אָדָם
Dominus elongabit Et .deſolatione deſoletur humus &
12 וְהָאֲדָמָה תִּשָּׁאֶה שְׁמָמָה׃ וְרִחַק יְהוָה אֶת־
ea in adhuc Et .terræ interiori in derelictam multiplicabit &,hominem
13 הָאָדָם וְרַבָּה הָעֲזוּבָה בְּקֶרֶב הָאָרֶץ׃ וְעוֹד בָּהּ
,quercus ut &,ulmus ſicut:conflagrandum ad erit & convertetur & , decima
עֲשִׂרִיָּה וְשָׁבָה וְהָיְתָה לְבָעֵר כָּאֵלָה וְכָאַלּוֹן
.ejus ſtatio ſanctitatis ſemen ,eis in ſtatio ejectione in quibus
אֲשֶׁר בְּשַׁלֶּכֶת מַצֶּבֶת בָּם זֶרַע קֹדֶשׁ מַצַּבְתָּהּ׃

CAP. VII. ז

, Jehudah regis Huzijahu filii , Jotham filii Achaz diebus in fuit Et
1 וַיְהִי בִּימֵי אָחָז בֶּן־יוֹתָם בֶּן־עֻזִּיָּהוּ מֶלֶךְ יְהוּדָה
rex Remaljahu filius Pechach & ,Aram rex Reſin aſcendit
עָלָה רְצִין מֶלֶךְ־אֲרָם וּפֶקַח בֶּן־רְמַלְיָהוּ מֶלֶךְ־
potuit non & : eam contra prælium in , Jeruſalaim , Iſrael
יִשְׂרָאֵל יְרוּשָׁלַםִ לַמִּלְחָמָה עָלֶיהָ וְלֹא יָכֹל
: dicendo , David domui eſt nunciatum Et .eam ſuper expugnare
2 לְהִלָּחֵם עָלֶיהָ׃ וַיֻּגַּד לְבֵית דָּוִד לֵאמֹר
cor & , ejus cor ſe commovit & , Ephraim ſuper Aram Requievit
נָחָה אֲרָם עַל־אֶפְרָיִם וַיָּנַע לְבָבוֹ וּלְבַב
Dominus dixit Et .venti faciebus à ſylvæ ligna movere ut ,ejus populi
3 עַמּוֹ כְּנוֹעַ עֲצֵי־יַעַר מִפְּנֵי־רוּחַ׃ וַיֹּאמֶר יְהוָה
Sear & ,tu , Achaz occurſum in nunc Egredere : Jeſahjahu ad
אֶל־יְשַׁעְיָהוּ צֵא־נָא לִקְרַאת אָחָז אַתָּה וּשְׁאָר
in ſuperioris piſcinæ aquæductus extremum ad ,tuus filius Jaſub
יָשׁוּב בְּנֶךָ אֶל־קְצֵה תְּעָלַת הַבְּרֵכָה הָעֶלְיוֹנָה אֶל־
: quieſce & ,Obſervare : eum ad dices Et .fullonis agri via ſtrata
4 מְסִלַּת שְׂדֵה כוֹבֵס׃ וְאָמַרְתָּ אֵלָיו הִשָּׁמֵר וְהַשְׁקֵט
titionum caudis duabus à teneréſcat ne tuum cor & , timeas ne
אַל־תִּירָא וּלְבָבְךָ אַל־יֵרַךְ מִשְּׁנֵי זַנְבוֹת הָאוּדִים
.Remaljahu filii & ,Aram & ,Reſin naſi ira in , iſtorum fumigantium
הָעֲשֵׁנִים הָאֵלֶּה בָּחֳרִי־אַף רְצִין וַאֲרָם וּבֶן־רְמַלְיָהוּ׃
filius & ,Ephraim , malum Aram te contra inierit conſilium quòd Eò
5 יַעַן כִּי־יָעַץ עָלֶיךָ אֲרָם רָעָה אֶפְרַיִם וּבֶן־
, eam ſuſcitemus & , Jehudah in Aſcendamus : dicendo ,Remaljahu
6 רְמַלְיָהוּ לֵאמֹר׃ נַעֲלֶה בִיהוּדָה וּנְקִיצֶנָּה
, ejus medio in regem faciamus regnare & ; nos ad eam perrumpamus &
וְנַבְקִעֶנָּה אֵלֵינוּ וְנַמְלִיךְ מֶלֶךְ בְּתוֹכָהּ אֵת
non & ,conſiſtet Non : Dominus Dominus dixit Sic .Tabal filium
7 בֶּן־טָבְאַל׃ כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה לֹא תָקוּם וְלֹא
,Reſin Dammeſec caput & ,Dammeſec Aram caput Etenim .erit
8 תִהְיֶה׃ כִּי רֹאשׁ אֲרָם דַּמֶּשֶׂק וְרֹאשׁ דַּמֶּשֶׂק רְצִין
.populo à Ephraim frangetur , anni quinque & ſexaginta adhuc &
וּבְעוֹד שִׁשִּׁים וְחָמֵשׁ שָׁנָה יֵחַת אֶפְרַיִם מֵעָם׃
: Remaljahu filius Someron caput & , Someron Ephraim caput Et
9 וְרֹאשׁ אֶפְרַיִם שֹׁמְרוֹן וְרֹאשׁ שֹׁמְרוֹן בֶּן־רְמַלְיָהוּ
.fideles eritis non quia credatis non ſi
אִם לֹא תַאֲמִינוּ כִּי לֹא תֵאָמֵנוּ׃

Verſio VULG. LAT.

9 Et dixit; Vade, & dices populo
huic; Audite audientes, &
nolite intelligere: & videte viſionem,
& nolite cognoſcere.
10 Excæca cor populi hujus, &
aures ejus aggrava: & oculos
ejus claude: ne fortè videat
oculis ſuis, & auribus ſuis audiat,
& corde ſuo intelligat, &
11 convertatur, & ſanem eum. Et
dixi; Uſquequò, Domine? Et dixit;
Donec deſolentur civitates
abſque habitatore, & domus
ſine homine, & terra relinquetur
12 deſerta. Et longè
faciet Dominus homines, &
multiplicabitur quæ derelicta
13 fuerat in medio terræ. Et adhuc
in ea decimatio, & convertetur,
& erit in oſtenſionem
ſicut terebinthus, & ſicut quercus,
quæ expandit ramos ſuos:
ſemen ſanctum erit id, quod
ſteterit in ea.

CAP. VII.

1 ET factũ eſt in diebus Achaz
filii Joathan, filii Oziæ regis
Juda, aſcendit Raſin rex Syriæ,
& Phacee filius Romeliæ rex
Iſrael, in Jeruſalem, ad præliandum
contra eam: & non potuerunt
2 debellare eam. Et nuntiaverunt
domui David, dicentes;
Requievit Syria ſuper Ephraim,
& commotum eſt cor
ejus, & cor populi ejus, ſicut
moventur ligna ſylvarũ à facie
3 venti. Et dixit Dominus
ad Iſaiam; Egredere in occurſum
Achaz tu, & qui derelict'
eſt Jaſub filius tuus, ad extremum
aquæductûs piſcinæ ſuperioris
in via Agri fullonis.
4 Et dices ad eum; Vide ut ſileas:
noli timere, & cor tuum ne
formidet à duabus caudis titionum
fumigantium iſtorum in
ira furoris Raſin regis Syriæ, &
5 filii Romeliæ: Eò quòd conſilium
inierit contra te Syria in
malum Ephraim, & filius Romeliæ,
6 dicentes, Aſcendamus
ad Judam, et ſuſcitemus eum,
et avellamus eum ad nos, et
ponamus regem in medio ejus
7 filium Tabeel: Hæc dicit Dominus
Deus; Non ſtabit, et
8 non erit iſtud: Sed caput Syriæ
Damaſcus, et caput Damaſci
Raſin: at adhuc ſexaginta
et quinque anni, et deſinet
9 Ephraim eſſe populus: Et caput
Ephraim Samaria, et caput
Samariæ filius Romeliæ. Si
non crediderítis, non permanebitis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

9 Καὶ εἶπε, Πορεύθητι, καὶ εἶπον τῷ λαῷ τούτῳ,
Ἀκοῇ (θ) ἀκούσετε, καὶ οὐ μὴ συνῆτε,
10 καὶ βλέποντες βλέψετε, καὶ οὐ μὴ ἴδητε. Ἐπαχύνθη
γὰρ ἡ καρδία τοῦ λαοῦ τούτου, καὶ
τοῖς ὠσὶν αὐτῶν βαρέως ἤκουσαν, καὶ τοὺς (ʼ)
ὀφθαλμοὺς ἐκάμμυσαν, μήποτε ἴδωσι τοῖς
ὀφθαλμοῖς, καὶ τοῖς ὠσὶ ἀκούσωσι, καὶ τῇ
καρδίᾳ συνῶσι καὶ ἐπιστρέψωσι, καὶ ἰάσομαι
11 αὐτούς. Καὶ εἶπα, Ἕως πότε κύριε; καὶ εἶπεν,
Ἕως ἂν ἐρημωθῶσι πόλεις παρὰ τὸ μὴ
κατοικεῖσθαι, καὶ οἶκοι παρὰ τὸ μὴ εἶναι ἀνθρώπους,
12 καὶ ἡ γῆ καταλειφθήσεται ἔρημος. Καὶ
μετὰ ταῦτα μακρυνεῖ ὁ θεὸς τοὺς ἀνθρώπους,
καὶ (ι) πληθυνθήσονται οἱ ἐγκαταλειφθέντες
13 ἐπὶ τῆς γῆς, Καὶ ἔτι ἐπ' αὐτῆς ἐστι
τὸ ἐπιδέκατον καὶ πάλιν ἔσται εἰς προνομὴν
ὡς τερέβινθος, καὶ ὡς βάλανος ὅταν (κ)
ἐκπέσῃ ἐκ τῆς θήκης αὐτῆς.

Et dixit, Vade, & dic populo 9
huic, Auditu audietis, et non intelligetis:
& videntes videbitis, &
non perſpicietis: (e) Incraſſatum 10
eſt enim cor populi hujus: & auribus
(f) ſuis graviter audierunt:
& oculos compreſſerunt: ne fortè
videant oculis, & auribus audiant,
& corde intelligant, & convertant
ſe, & (g) ſanabo illos. Et 11
dixi; uſquequò, Domine? Et dixit;
Donec deſolatæ fuerint civitates,
eò quòd non habitentur; & domus,
eò quòd non ſint homines: &
terra derelinquetur deſerta. Et poſt 12
hæc longè faciet Deus homines:
& multiplicabuntur derelicti ſuper
terram: Et adhuc ſuper ipſâ 13
erit decimatio: & rurſum erit in
deprecationem, ſicut terebinthus,
& ſicut glans, cùm exciderit
è theca (b) ſua.

MS.A. (θ) ἀκούσητε, (ʼ) ὀφθαλμοὺς αὐτῶν (ι) οἱ καταλειφθέντες πληθυνθήσονται (κ) ἐκσπασθῇ

ΚΕΦ. ζʹ.

1 ΚΑὶ ἐγένετο ἐν ταῖς ἡμέραις Ἄχαζ τοῦ Ἰωάθαμ
τοῦ υἱοῦ Ὀζίου βασιλέως Ἰούδα, ἀνέβη
(α) Ῥασὶν βασιλεὺς Ἀρὰμ, καὶ Φακεὲ υἱὸς
Ῥομελίου βασιλεὺς Ἰσραὴλ ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ
πολεμῆσαι αὐτὴν, καὶ οὐκ ἠδυνήθησαν
2 πολιορκῆσαι αὐτήν. Καὶ ἀνηγγέλη εἰς τὸν
οἶκον Δαυίδ, (β) λέγων, Συνεφώνησεν Ἀρὰμ
πρὸς τὸν Ἐφραίμ. καὶ ἐξέστη ἡ ψυχὴ
αὐτοῦ, καὶ ἡ ψυχὴ τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, (γ) ὃν
τρόπον ἐν δρυμῷ ξύλον ὑπὸ πνεύματος
3 σαλευθῇ. Καὶ εἶπε κύριος πρὸς Ἡσαΐαν,
Ἔξελθε εἰς συνάντησιν Ἄχαζ σὺ, καὶ ὁ
καταλειφθεὶς Ἰασοὺβ (δ) ὁ υἱός σου, πρὸς
τὴν κολυμβήθραν τῆς ἄνω ὁδοῦ (ε) ἀγροῦ τοῦ
4 κναφέως. Καὶ ἐρεῖς αὐτῷ, Φύλαξαι τοῦ
ἡσυχάσαι, καὶ μὴ φοβοῦ, μηδὲ ἡ ψυχή σου
ἀσθενείτω ἀπὸ τῶν δύο ξύλων τῶν δαλῶν τῶν
καπνιζομένων τούτων· ὅταν γὰρ ὀργὴ τοῦ
θυμοῦ μου γένηται, πάλιν ἰάσομαι. καὶ ὁ
5 υἱὸς τοῦ Ἀρὰμ, καὶ ὁ υἱὸς τοῦ Ῥομελίου, Ὅτι
6 ἐβουλεύσαντο βουλὴν πονηράν (ζ)· Ἀναβησόμεθα
εἰς τὴν Ἰουδαίαν, καὶ συλλαλήσαντες
αὐτοῖς, (η) ἀποστρέψομεν αὐτοὺς πρὸς
ἡμᾶς, καὶ βασιλεύσομεν (θ) αὐτῆς τὸν υἱὸν
7 Ταβεήλ. Τάδε λέγει κύριος σαβαὼθ,
Οὐ μὴ (ι) μείνῃ ἡ βουλὴ αὕτη, οὐδὲ ἔσται,
8 Ἀλλ' ἡ κεφαλὴ Ἀρὰμ, Δαμασκὸς, καὶ ἡ κεφαλὴ
Δαμασκοῦ, (κ) Ῥασίμ. ἀλλ' ἔτι ἑξήκοντα
καὶ πέντε ἐτῶν, ἐκλείψει ἡ βασιλεία
9 Ἐφραὶμ ἀπὸ λαοῦ, καὶ ἡ κεφαλὴ Ἐφραὶμ Σομόρων,
καὶ ἡ κεφαλὴ Σομόρων, υἱὸς τοῦ Ῥομελίου.
καὶ ἐὰν μὴ πιστεύσητε, οὐδὲ μὴ
συνῆτε.

CAP. VII.

ET factum eſt in diebus Achaz 1
filii Joatham, filii Oziæ regis Juda,
aſcendit Raſin rex Aram, &
Phacee filius Romeliæ rex Iſrael,
ſuper Hieruſalem ad oppugnandam
eam: & non potuerunt expugnare
eam. Et annuntiatum eſt 2
in domum David, dicendo;
Conſenſit Aram cum Ephræm.
Et expavit anima ejus, et anima
populi ſui: quomodò in
ſylva lignum à ſpiritu commoveatur.
Et dixit Domin' ad Eſaiam; 3
Egredere in occurſum Achaz, tu,
& qui derelictus eſt Jaſub filius
tuus, ad piſcinam ſuperioris viæ
Agri fullonis. Et dices ei; Obſerva, 4
ut ſileas: & noli timere: neque anima
tua infirmetur à duobus lignis
titionum fumigantium iſtorum.
Cùm enim ira furoris mei
exſtiterit; rurſus ſanabo. Et filius
Aram, & filius Romeliæ,
Quoniam inierunt conſilium (a) 5
peſſimum, (Aſcendamus in Judæam, 6
& colloquentes eis, avertemus
eos ad nos, & faciemus regem
ejus filium Tabeel,) Hæc dicit 7
Dominus Sabaoth; Non ſtabit
conſilium hoc, neque erit: Sed caput 8
Aram, Damaſcus; & caput
Damaſci, Raſim. Sed adhuc ſexaginta
& quinque anni, deficiet
regnum Ephræm de populo, Et 9
caput Ephræm Somoron, & caput
Somoron filius Romeliæ. Et, niſi
credideritis; (b) non intelligetis.

MS.A. (α) Ῥαασσὼν (β) λέγοντες, (γ) ὅταν ὃν τρόπον (δ) ὁ ἀδελφός σου, (ε) τοῦ ἀγροῦ τοῦ γναφέως. (ζ) περὶ σοῦ, λέγοντες, Ἀναβησόμεθα εἰς τὴν Ἰδουμαίαν, (η) ἀποστρέψωμεν (θ) αὐτοῖς (ι) ἐμμείνῃ (κ) Ῥασείν.

תַּרְגּוּם יוֹנָתָן Targum JONATHAN.

9 וַאֲמַר אֱזֵיל וְתֵימַר לְעַמָּא הָדֵין דִּשְׁמְעִין מִשְׁמַע וְלָא מִסְתַּכְּלִין וַחֲזוּ מֶחֱזָא וְלָא יָדְעִין׃
10 טַפֵּשׁ לִבֵּיהּ דְּעַמָּא הָדֵין וְאוּדְנוֹהִי יַקַּר וְעֵינוֹהִי עַמְעֵם דִּלְמָא יֶחֱזוּן בְּעֵינֵיהוֹן וּבְאוּדְנֵיהוֹן
11 יִשְׁמְעוּן וּבְלִבְּהוֹן יִסְתַּכְּלוּ וִיתוּבוּן וְיִשְׁתְּבֵק לְהוֹן׃ וַאֲמָרִית עַד אֵימָתַי יְיָ וַאֲמַר עַד
12 דִּיצְדּוּן קִרְוַיָּא מִבְּלִי יָתֵיב וּבָתַּיָּא מִבְּלִי אֱנָשָׁא וְאַרְעָא תֶּחֱרוּב וְתִצְדֵי׃ וִירַחֵק יְיָ יָת בְּנֵי
13 אֱנָשָׁא וְתִסְגֵּי צַדְיוּתָא בְּגַוַּהּ דְּאַרְעָא׃ וְיִשְׁתַּאֲרוּן בַּהּ חַד מִן עַסְרָא צַדִּיקַיָּא וִיתוּבוּן וִיהוֹן
לְצָרְבָא כְּבוּטְמָא וּכְבַלּוּטָא דִּבְמִתַּר טַרְפֵּיהוֹן דָּמַיִן לְיָבְשִׁין וְעַד כְּעַן אִנּוּן רְטִיבִין לְקַיָּמָא
מִנְּהוֹן זַרְעָא כֵּן גָּלְוָתָא דְּיִשְׂרָאֵל יִתְכַּנְּשׁוּן וִיתוּבוּן לְאַרְעֲהוֹן אֲרֵי זַרְעָא דְּקוּדְשָׁא
נִצְבַתְהוֹן׃

ז

1 וַהֲוָה בְּיוֹמֵי אָחָז בַּר יוֹתָם בַּר עֻזִּיָּה מֶלֶךְ שִׁבְטָא דְּבֵית יְהוּדָה סְלִיק רְצִין מַלְכָּא דַּאֲרָם
וּפֶקַח בַּר רְמַלְיָה מַלְכָּא דְּיִשְׂרָאֵל לִירוּשְׁלֶם לַאֲגָחָא קְרָבָא עֲלַהּ וְלָא יְכִיל לַאֲגָחָא עֲלַהּ׃
2 וְאִתְחֲוָא לְבֵית דָּוִד לְמֵימַר אִתְחַבַּר מַלְכָּא דַּאֲרָם עִם מַלְכָּא דְּיִשְׂרָאֵל לְמֵיתֵי עֲלוֹהִי וְזָע
3 לִבֵּיהּ וְלִבָּא דְּעַמֵּיהּ כְּאִשְׁתְּדָיוּת אִילָנֵי חוּרְשָׁא מִן קֳדָם רוּחָא׃ וַאֲמַר יְיָ לִישַׁעְיָה פּוּק
כְּעַן לִקְדָמוּת אָחָז אַתְּ וּשְׁאָר תַּלְמִידָךְ דְּלָא חֲטוֹ וּדְתָבוּ מֵחֶטְאָה לִסְיָפֵי מוֹבִיקַת בְּרֵיכְתָא
4 עִלָּיְתָא דִּי בִּכְבַשׁ חֲקַל מַשְׁטַח קַצָּרַיָּא׃ וְתֵימַר לֵיהּ אִשְׁתַּמַּר וְנוּחַ לָא תִדְחַל וְלִבָּךְ לָא
יְזוּעַ מִן קֳדָם תְּרֵין מַלְכַיָּא דְּאִנּוּן כְּאוּדַיָּא מְתַנְנַיָּא הָאִלֵּין בִּתְקוֹף רְגַז רְצִין וַאֲרָם וּבַר
5 6 רְמַלְיָה׃ חֲלַף אֲרֵי מְלַךְ עֲלָךְ אֲרָם בִּישָׁא אֶפְרַיִם וּבַר רְמַלְיָהוּ לְמֵימַר׃ נִסַּק בְּאַרְעָא
7 דְּבֵית יְהוּדָה וּנְחַבְּרִנּוּן וּנְשַׁוִּנּוּן עִמָּנָא וְנַמְלִיךְ מַלְכָּא בְּגַוַּהּ יָת מַן דְּכָשַׁר לָנָא׃ כִּדְנַן
8 אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים לָא תְקוּם וְלָא תְהֵי׃ אֲרֵי רֵישׁ אֲרָם דַּמֶּשֶׂק וְרֵישׁ דַּמֶּשֶׂק רְצִין וּבְסוֹף שִׁתִּין
9 וְחָמֵשׁ שְׁנִין יִבְטְלוּן בֵּית יִשְׂרָאֵל מִמַּלְכוּ׃ וְרֵישׁ אֶפְרַיִם שֹׁמְרוֹן וְרֵישׁ שֹׁמְרוֹן בַּר רְמַלְיָה
אִם לָא תְהֵימְנוּן בְּמִלֵּי נְבִיָּא אֲרֵי לָא תִתְקַיְּמוּן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et ait, Vade & dic populo huic, Qui audientes audiunt & non intelli- 9
gunt, & videntes vident & neſciunt. Infatua cor populi hujus, & aures 10
ejus aggrava, & oculos ejus *obſcura*, ne fortè videant oculis ſuis, & auribus
ſuis audiant, & cordibus ſuis intelligant: convertantur, & dimittetur
eis. Et dixi: Uſquequo Domine? Et ait: Donec deſolentur civitates 11
abſque habitatore, & domus abſque homine, & terra deſerta ſit & deſoletur.
Et longè faciet Dominus filios hominis, & multiplicabitur deſolatio 12
in medio terræ. Et *relinquentur* in ea unus ex decem *juſti*: & converten- 13
tur, & erunt in combuſtionem, ſicut terebinthus & ſicut quercus; quæ,
cùm defluunt folia ejus, videntur quaſi aridæ, & adhuc retinent humorem,
ut ex eis ſuſtentetur ſemen: ſic transmigrationes Iſrael congregabuntur &
convertentur in terram *ſuam*, quia ſemen ſanctum eſt plantatio eorum.

CAP. VII,

ET factum eſt in diebus Achaz filii Jotham filii Oziæ regis tribus do- 1
mus Juda; aſcendit Raſin rex Syriæ, & Phechah filius Romeliæ rex Iſrael
in Hieruſalem ad præliandum contra eam, & non potuerunt expugnare
eam. Et nunciaverunt domui David dicentes: Conjunctus eſt rex Syriæ 2
cum rege Iſrael, ut veniat contra eum: & commotum eſt cor ejus & cor
populi ſui ſicut moventur ligna ſylvæ à facie venti. Et dixit Dominus ad 3
Eſaiam: Egredere nunc in occurſum Achaz tu & reliqui diſcipuli tui,
qui non peccaverunt, & qui converſi ſunt à peccato, ad extrema aquæductus
piſcinæ ſuperioris, quæ eſt in via agri extenſionis fullonum. Et 4
dices ei: Cave, et quieſce; ne timeas, et cor tuum ne commoveatur à
facie *duorum* regum iſtorum, qui ſunt quaſi titiones fumantes, in ira furo-
ris Raſin, et Syriæ, et filii Romeliæ. Pro eo quòd conſilium malum inie- 5
runt ſuper te, Syria et Ephraim, et filius Romeliæ, dicentes: Aſcendamus 6
in terram domus Juda, et jungamus et apponamus eos ad nos, et conſtituamus
regem in medio ejus, qui nobis placuerit. Hæc dicit Dñs Deus: Non 7
ſtabit neq; erit. Quia caput Syriæ Damaſcus, et caput Damaſci Raſin, et in 8
fine ſexaginta et quinq; annorum ceſſabit regnum domus Iſrael. Et ca- 9
put Ephraim Samaria, et caput Samariæ filius Romeliæ: ſi non credideritis
verbis prophetæ, neque permanebitis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܡܪ ܠܝ. ܙܠ ܐܡܪ ܠܥܡܐ ܗܢܐ. ܫܡܥܘ ܡܫܡܥ. ܘܠܐ ܬܣܬܟܠܘܢ. ܘܚܙܘ ܡܚܙܐ. ܘܠܐ 9
ܬܕܥܘܢ. * ܐܬܥܒܝ ܠܗ ܓܝܪ ܠܒܗ ܕܥܡܐ ܗܢܐ. ܘܐܕܢܘܗܝ ܐܝܩܪ. ܘܥܝܢܘܗܝ ܛܡܫ. ܕܠܐ ܢܚܙܐ 10
ܒܥܝܢܘܗܝ ܘܢܫܡܥ ܒܐܕܢܘܗܝ. ܘܢܣܬܟܠ ܒܠܒܗ ܘܢܬܘܒ ܘܢܫܬܒܩ ܠܗ. * ܘܐܡܪܬ 11
ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܡܪܝܐ. ܘܐܡܪ. ܥܕܡܐ ܕܢܚܪܒܢ ܩܘܪܝܐ ܡܢ ܕܠܐ ܥܡܘܪܐ. ܘܒܬܐ ܡܢ ܕܠܐ
ܒܪܢܫܐ. ܘܐܪܥܐ ܬܚܪܒ ܘܬܫܬܒܩ. * ܘܢܪܚܩ ܡܪܝܐ ܠܒܢܝܢܫܐ. ܘܬܣܓܐ ܫܒܝܩܘܬܐ ܒܓܘ ܐܪܥܐ. 12
* ܘܢܫܬܚܪܘܢ ܒܗ. ܚܕ ܡܢ ܥܣܪܐ. ܘܢܬܗܦܟܘܢ ܘܢܗܘܘܢ ܠܡܘܩܕܐ. ܐܝܟ ܒܛܡܬܐ. ܘܐܝܟ ܒܠܘܛܐ 13
ܕܢܦܠ ܡܢ ܩܠܦܬܗ. ܙܪܥܗܘ ܩܕܝܫܐ ܢܨܒܬܗ.

Tum dixit mihi, Vade dictum huic populo, 9
Audiendo audite, & ne intelligatis; videndo
videte & ne cognoſcatis. Craſſum enim redditum 10
eſt cor populi hujus, aures ſuas aggravat,
& oculos ſuos oblinit, ne videat oculis
ſuis, & audiat auribus ſuis, corde percipiat,
pœnitentiam agat, & dimittatur ei. Dicenti 11
autem mihi, Quouſque Domine? dixit, Donec
vaſtentur civitates ob penuriam incolarum,
& domus ob penuriam hominum, et terra
vaſtetur ac deſoletur; Expellat Dominus 12
homines, maxima ſit derelictio in terra,
Et ſuperſtites in ea ſit unus è decem, & convertatur, 13
ſitque in incendium, quaſi terebinthus,
& quaſi glans quæ effluxit è caliculo
ſuo: ſemen ſanctum eſt planta ejus.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܙ̄ *

* ܘܗܘܐ ܒܝܘܡܬܗ ܕܐܚܙ ܒܪ ܝܘܬܡ ܒܪ ܥܘܙܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܣܠܩ ܪܨܝܢ ܡܠܟܐ 1
ܕܐܪܡ ܘܦܩܚ ܒܪ ܪܡܠܝܐ ܡܠܟܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܠܐܘܪܫܠܡ. ܠܡܬܟܬܫܘ ܥܡܗ.
ܘܠܐ ܐܫܟܚܘ ܕܢܬܟܬܫܘܢ ܥܡܗ. * ܘܐܬܐܡܪ ܠܒܝܬܗ ܕܕܘܝܕ. ܕܐܫܬܘܝ ܐܪܡ ܥܡ ܐܦܪܝܡ. 2
ܘܙܥ ܠܒܗ. ܘܠܒܐ ܕܥܡܗ. ܐܝܟ ܕܙܐܥܝܢ ܐܝܠܢܐ ܕܥܒܐ ܡܢ ܩܕܡ ܪܘܚܐ.
* ܘܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܐܫܥܝܐ. ܦܘܩ ܠܐܘܪܥܗ ܕܐܚܙ. ܐܢܬ ܘܫܥܪܝܫܘܒ ܒܪܟ. ܠܘܬ ܣܛܪ 3
ܡܥܡܕܐ ܕܒܪܟܬܐ ܥܠܝܬܐ ܕܒܫܒܝܠ ܚܩܠܐ ܕܡܫܝܓܢܐ. * ܘܐܡܪ ܠܗ. ܐܙܕܗܪ. ܘܫܠܝ. ܘܠܐ 4
ܬܕܚܠ. ܘܠܒܟ. ܠܐ ܢܬܪܟ. ܡܢ ܬܪܬܝܢ ܕܘܢܒܝ ܐܘܕܐ ܗܠܝܢ ܕܬܢܢܝܢ. ܡܢ
ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ ܕܪܨܝܢ. ܘܕܒܪ ܪܡܠܝܐ. * * ܕܐܡܪܝܢ. ܢܣܩ ܠܝܗܘܕܐ. ܘܢܚܪܒܝܗ 5 6
ܘܢܚܒܠܝܗ. ܘܢܩܝܡ ܒܗ ܡܠܟܐ ܠܒܪ ܛܒܐܝܠ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. 7
ܠܐ ܬܩܘܡ. ܘܠܐ ܬܗܘܐ. * ܡܛܠ ܕܪܫܐ ܕܐܪܡ ܕܪܡܣܘܩ. ܘܪܫܐ ܕܕܪܡܣܘܩ. ܪܨܝܢ. ܘܥܕ 8
ܫܬܝܢ ܘܚܡܫ ܫܢܝܢ. ܢܬܒܙܥ ܐܦܪܝܡ ܡܢ ܥܡܐ. * ܘܪܫܗ ܕܐܦܪܝܡ ܫܡܪܝܢ. ܘܪܫܗ 9
ܕܫܡܪܝܢ ܒܪ ܪܡܠܝܐ. ܘܐܢ ܠܐ ܬܗܝܡܢܘܢ. ܐܦܠܐ ܬܣܬܟܠܘܢ.

CAP. VII.

Contigit autem diebus Ahazi filii Jothami 1
filii Oziæ regis Judæ, ut aſcendentes Raſan rex
Aram & Pecah filius Romeliæ rex Iſraelis in
Jeruſalem ad oppugnandum eam, non potuerint
expugnare eam. (Quod cùm perlatum 2
fuiſſet ad familiam Davidis, conſpiràſſe *ſcilicet*
Aramum cum Aphremo, tremuit cor
ejus & cor populi ipſius, ut tremere *ſolent* arbores
ſylvæ vento agitatæ.) Quapropter dixit 3
Dominus ad Eſaiam, Egredere obviàm Ahazo,
tu & Sariaſub filius tuus, ad latus lacûs superioris
qui eſt in via agri fullonis; Et dic ei, 4
Cautus eſto, & ſileto; ne timeas; neque formidet
cor tuum ab his duabus caudis titionum
combuſtorum, ab æſtu furoris Raſanis,
& filii Romeliæ, Dicentium, Aſcendamus 5 6
contra Judæam, evertamus, & rumpamus
eam, & regem conſtituamus in ea filium Tebaelis.
Sic dicit Dominus Deus, Non ſubſiſtet 7
id, neque fiet. Nam caput Arami Damaſcus, 8
& caput Damaſci Raſan: & poſt
ſexaginta quinque annos labetur Aphrem è
populo: Et caput Aphrem *erit* Samaria, & 9
caput Samariæ filius Romeliæ: quòd ſi non
creditis, neque intelligetis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

9 * فقال اذهب فقل لهذا الشعب سماعا تسمعون ولا تفهمون * ونظرا تنظرون ولا تبصرون * لان 10
قلب هذا الشعب غلظ * وثقلت اذانهم عن السماع * وغمضوا عيونهم لئلا ينظروا بعيونهم *
ويسمعوا باذانهم * ويفهموا بقلوبهم * ويرجعوا فاشفيهم * فقلت الي متي يا رب * فقال الي ان تقفر 11
المدن من ان لا تسكن * والبيوت من ان لا يكون فيها الناس * والارض تترك خرابا * وبعد 12
ذلك يبعد الله الناس * والذين استبقوا يتكاثرون على الارض * والموجود عليها اذن العشر * 13
ويصير اذن للنهب * ومثل البطمة ومثل البلوطة اذ تسقط من غلافها *

Dixit, Vade, dic populo iſti; Audiendo quidem 9
audietis, at non intelligetis; videndo
videbitis, at non percipietis. Cor enim hujus 10
populi craſſum evaſit, & graves factæ
ſunt aures eorum quominùs audiant, &
oculos ſuos occluſerunt quominùs videant
oculis ſuis, audiant auribus ſuis, & corde
ſuo intelligant, convertantur, & ſanē eos.
Cùmque dixiſſem, Quouſque Domine? 11
Donec, inquit, deſertæ ſint urbes ita ut non
habitentur, & domus ita ut nullus in eis
maneat homo, & terra relinquatur deſerta.
Poſthæc verò amovebit Deus homines; 12
& qui ſuperſtites fuerint, multiplicabuntur
ſuper terram. Quod autem adhuc in 13
ea repericetur decima pars erit: & fiet adhuc
in direptionem, & ut terebinthus, et ut
glans cùm ex acetabulo ſuo defluxerit.

* الفصل السابع * الوحي الرابع *

1 * وكان في ايام احوز بن
يوثام ابن عوزيا ملك يهودا * صعد راصان ملك ارام * وفاقح بن رومليا ملك اسرائيل * الي
2 اورشليم ليحاربها * فلم يستطيعا ان يحاصراها * وخبر في بيت داود قايلين * قد توافق ارام
مع افرام * فضعفت نفسه ونفس شعبه كما يتزعزع عود في الغاب من الريح الشديدة *

3 * الاصحاح الرابع * فقال الرب لاشعيا * اخرج لاستقبال احاز انت وياصوب
4 ابنك الذي بقي لك * الي البركة التي لمصعد طريق حقل القصار * وقل له احتفظ
لتسكن * ولا تخف ولا تضعف نفسك من هذين العودين الذايبين المحترقين * لانه اذ يكن
5 رجز غضبي فاني انا اعود اشفي ايضا * وابن ارام وابن رومليا فانهما تآمرا عليك مشورة
6 شرير قايلين * نصعد الي اليهودية * ونتكلم مع اهلها * ونردهم الينا * ونملك عليها ابن
7 8 طابائيل * هكذا يقول رب الجيوش ضابط الكل لن يثبت هذا الراي ولا يكون * لكن
راس ارام دمشق * وراس دمشق راصان * وبعد خمسة وستين سنة تفني مملكة افرام من
9 الشعب * وراس افرام شومرون وراس شومرون ابن رومليا * وان لم تصدقوا لم تفهموا *

* قريان الميلاد * فيه بشارة النبي لآل داود بميلاد المسيح *

CAP. VII.

Revelatio quarta.

Contigit præterea temporibus Hazi filii 1
Joathami filii Oziæ regis Judæ,
ut Raſan rex Aramæus, & Phacah filius
Romeliæ rex Iſraelis aſcenderent in Jeruſalem
ad expugnandum eam, nec potuerint
obſidere eam. Nunciatum ergò fuit in domo 2
Davidis à quibuſdam dicentibus, Jam
conſpiravit Aramæus cum Aphremo: quarè
debilitatus eſt animus ejus & animus
populi ipſius, ut concuti ſolet lignum in
ſylva à vento rapido.

Textus quartus.

Quamobrem dixit Dominus ad Eſaiam, 3
Egredere in occurſum Ahazi, tu et Jaſub
filius tuus qui tibi ſuperſtes eſt, ad lacum
qui eſt in clivo viæ agri fullonis; Et dices 4
ad eum, Cura ut ſis tranquillus, et ne
metuas, neque molleſcat animus tuus propter
gemina iſta ligna, geminas caudas
combuſtas, quoniam licèt exæſtuat furor
indignationis meæ, ego tamen converſus
iterum ſanabo. Et de filio quidem Arami, 5
et filio Romeliæ qui pernicioſum in te conſilium
inivere dicentes; Aſcendamus in Judæam, 6
incolas ejus alloquamur, reducamus
eos ad nos, et regē conſtituamus ſuper eam
filium Tabaelis; Sic dicit Dominus exercituum 7
omnipotens, Haudquaquam ſubſiſtet
neque ſuccedet ejuſmodi conſilium:
Sed caput Arami Damaſcus, et caput Damaſci 8
Raſan: & poſt annos ſexaginta
quinque regnum Aphremi populo deficiet;
Et caput Aphremi Samaria, & caput Samariæ 9
filius Romeliæ: & niſi credideritis,
non intelligetis.

Lectio Nativitatis, continens annuntiationem prophetæ ad gentem Davidis, de nativitate Chriſti.

ישעיה: ז

Pete : dicendo , Achaz ad loqui **DOMINUS** adjecit Et
10 11 וַיּוֹסֶף יְהוָה דַּבֵּר אֶל־אָחָז לֵאמֹר׃ שְׁאַל־
, *petitionem* profunda : tuo Deo **DOMINO** *cum à* ſignum tibi
לְךָ אוֹת מֵעִם יְהוָה אֱלֹהֶיךָ הַעְמֵק שְׁאָלָה
, petam Non : Achaz dixit Et .excelſum in teipſum eleva vel
12 אוֹ הַגְבֵּהַ לְמָעְלָה׃ וַיֹּאמֶר אָחָז לֹא־אֶשְׁאַל
nunc Audite : dixit Et .**DOMINUM** tentabo non &
13 וְלֹא־אֲנַסֶּה אֶת־יְהוָה׃ וַיֹּאמֶר שִׁמְעוּ־נָא
, homines *fatigare* vobis à parum Nunquid : David domus
בֵּית דָּוִד הַמְעַט מִכֶּם הַלְאוֹת אֲנָשִׁים
Dominus dabit Ideo ? meum Deum etiam labore *afficiatis quòd*
14 כִּי תַלְאוּ גַּם אֶת־אֱלֹהָי׃ לָכֵן יִתֵּן אֲדֹנָי
pariens & , prægnans virgo Ecce : ſignum vobis ipſe
הוּא לָכֶם אוֹת הִנֵּה הָעַלְמָה הָרָה וְיֹלֶדֶת
mel & Butyrum .el--Himmanu ejus nomen vocabis & , filium
15 בֵּן וְקָרָאת שְׁמוֹ עִמָּנוּאֵל׃ חֶמְאָה וּדְבַשׁ
Nam *bono in* eligere & ,*malo in* reprobare *ipſum ſciendum ad* ,comedet
16 יֹאכֵל לְדַעְתּוֹ מָאוֹס בָּרָע וּבָחוֹר בַּטּוֹב׃ כִּי
; *bono in* eligere & , *malo in* reprobare puer ſciat antequam
בְּטֶרֶם יֵדַע הַנַּעַר מָאוֹס בָּרָע וּבָחוֹר בַּטּוֹב
duorum *faciebus* à *faſtidiens* tu quam , *humus* derelinquetur
תֵּעָזֵב הָאֲדָמָה אֲשֶׁר־אַתָּה קָץ מִפְּנֵי שְׁנֵי
ſuper & , te ſuper **DOMINUS** Adducet .ſuorum regum
17 מְלָכֶיהָ׃ יָבִיא יְהוָה עָלֶיךָ וְעַל־
non qui , dies tui patris domum ſuper & , tuum populum
עַמְּךָ וְעַל־בֵּית אָבִיךָ יָמִים אֲשֶׁר לֹא־
regem , Jehudah *deſuper* Ephraim *recedere* die à venerunt
בָאוּ לְמִיּוֹם סוּר־אֶפְרַיִם מֵעַל יְהוּדָה אֵת מֶלֶךְ
DOMINUS ſibilabit illa die in , erit Et .Aſſur
18 אַשּׁוּר׃ וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא יִשְׁרֹק יְהוָה
, api & ; Ægypti fluminum extremo in quæ muſcæ
לַזְּבוּב אֲשֶׁר בִּקְצֵה יְאֹרֵי מִצְרָיִם וְלַדְּבוֹרָה
ipſi omnes requieſcent & ,venient Et .Aſſur terra in quæ
19 אֲשֶׁר בְּאֶרֶץ אַשּׁוּר׃ וּבָאוּ וְנָחוּ כֻלָּם
omnibus in & , petrarum *ſcopulis* in & , *vaſtitatum* torrentibus in
בְּנַחֲלֵי הַבַּתּוֹת וּבִנְקִיקֵי הַסְּלָעִים וּבְכֹל
illa die In .vilibus arboribus univerſis in & , *albis* ſpinis
20 הַנַּעֲצוּצִים וּבְכֹל הַנַּהֲלֹלִים׃ בַּיּוֹם הַהוּא
flumen trans in mercede conducta novacula in Dominus radet
יְגַלַּח אֲדֹנָי בְּתַעַר הַשְּׂכִירָה בְּעֶבְרֵי נָהָר
etiam & , pedum *crinem* & caput , Aſſur rege *in*
בְּמֶלֶךְ אַשּׁוּר אֶת־הָרֹאשׁ וְשַׂעַר הָרַגְלָיִם וְגַם
vivificabit illa die in , erit Et .conſumet barbam
21 אֶת־הַזָּקָן תִּסְפֶּה׃ וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא יְחַיֶּה־
multitudine præ , erit Et .oves duas & , bovis vitulam vir
22 אִישׁ עֶגְלַת בָּקָר וּשְׁתֵּי־צֹאן׃ וְהָיָה מֵרֹב
comedet mel & butyrum nam : butyrum comedet , *lac facere*
עֲשׂוֹת חָלָב יֹאכַל חֶמְאָה כִּי־חֶמְאָה וּדְבַשׁ יֹאכַל
erit illa die in erit Et .terræ *interiori* in *reſiduum* omnis
23 כָּל־הַנּוֹתָר בְּקֶרֶב הָאָרֶץ׃ וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא יִהְיֶה
, *argenteis* mille *in* vites mille *ibi fuerit* quo locus omnis
כָל־מָקוֹם אֲשֶׁר יִהְיֶה־שָּׁם אֶלֶף גֶּפֶן בְּאֶלֶף כָּסֶף
ingredietur arcu *in* & ſagittis *In* .erit *ſentem* in & ,veprem in
24 לַשָּׁמִיר וְלַשַּׁיִת יִהְיֶה׃ בַּחִצִּים וּבַקֶּשֶׁת יָבֹא
montes omnes Et .terra omnis erit *ſentis* & vepris quia : illuc
25 שָׁמָּה כִּי־שָׁמִיר וָשַׁיִת תִּהְיֶה כָל־הָאָרֶץ׃ וְכֹל הֶהָרִים
vepris timor illuc veniet non , ſarrientur ſarculo in qui
אֲשֶׁר בַּמַּעְדֵּר יֵעָדֵרוּן לֹא־תָבוֹא שָׁמָּה יִרְאַת שָׁמִיר
.pecoris conculcationem in & , bovis *miſſionem in* erit *&* , *ſentis* &
וָשַׁיִת וְהָיָה לְמִשְׁלַח שׁוֹר וּלְמִרְמַס שֶׂה׃

Verſio VULG. LAT.

10 Et adjecit Dominus loqui ad
11 Achaz, dicens; Pete tibi ſi-
gnum à Domino Deo tuo in
profundum inferni, ſive in ex-
12 celſum ſuprá. Et dixit Achaz;
Non petam, & non tentabo
13 Dominum. Et dixit, Audite
ergò domus David: Numquid
parum vobis eſt, moleſtos eſſe
hominibus, quia moleſti eſtis
14 & Deo meo? Propter hoc
dabit Dominus ipſe vobis ſi-
gnum. Ecce virgo concipiet,
& pariet filium, & vocabitur
15 nomen ejus Emmanuel. Bu-
tyrum & mel comedet, ut ſciat
reprobare malum, & eligere
16 bonum. Quia antequàm ſciat
puer reprobare malum, & eli-
gere bonum, derelinquetur
terra, quàm tu deteſtaris à fa-
cie duorum regum ſuorum.
17 Adducet Dominus ſuper te, &
ſuper populum tuum, & ſuper
domũ patris tui, dies qui non
venerunt à diebus ſeparatio-
nis Ephraim à Juda cum rege
18 Aſſyriorum. Et erit in die
illa: Sibilabit Dominus muſcæ,
quæ eſt in extremo fluminum
Ægypti, & api, quæ eſt in ter-
19 ra Aſſur, Et venient, & re-
quieſcent omnes in torrenti-
bus vallium, & in cavernis pe-
trarum, & in omnibus frutetis,
20 & in univerſis foraminibus. In
die illa radet Dominus in no-
vacula conducta, in his qui
trans flumen ſunt, in rege Aſ-
ſyriorũ, caput et pilos pedum,
21 & barbam univerſam. Et erit
in die illa: Nutriet homo vac-
22 cam boum & duas oves, Et
præ ubertate lactis comedet
butyrum: butyrum enim &
mel manducabit omnis qui
relictus fuerit in medio ter-
23 ræ. Et erit in die illa: O-
mnis locus ubi fuerint mille
vites, mille argenteis, in ſpi-
24 nas & in vepres erunt. Cum
ſagittis & arcu ingredientur
illuc: vepres enim & ſpinæ
25 erunt in univerſa terra. Et
omnes montes, qui in ſarcu-
lo ſarrientur, non veniet il-
luc terror ſpinarum & vepri-
um, & erit in paſcua bovis,
et in conculcationem peco-
ris.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

10 Καὶ προσέθετο κύριος λαλῆσαι τῷ (ι) Ἄχαζ,
11 λέγων, Αἴτησαι σεαυτῷ σημεῖον παρὰ
12 κυρίου θεοῦ σου εἰς βάθος, ἢ εἰς ὕψος. Καὶ
εἶπεν Ἄχαζ, Οὐ μὴ αἰτήσω, (λ) οὐδὲ μὴ
13 πειράσω κύριον. Καὶ εἶπεν, Ἀκούσατε δὴ
οἶκος Δαυίδ· μὴ μικρὸν ὑμῖν ἀγῶνα παρ-
έχειν ἀνθρώποις, καὶ πῶς κυρίῳ παρέχετε
14 ἀγῶνα; Διατοῦτο δώσει κύριος (μ) αὐ-
τὸς ὑμῖν σημεῖον· ἰδοὺ ἡ παρθένος ἐν γαστρὶ
(ν) λήψεται, καὶ τέξεται υἱὸν, καὶ καλέ-
15 σεις τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ἐμμανουήλ. Βού-
τυρον καὶ μέλι φάγεται πρὶν ἢ γνῶναι αὐτὸν (ξ)
ἢ προελέσθαι πονηρὰ, ἐκλέξασθαι τὸ ἀγαθόν.
16 Διότι πρὶν ἢ γνῶναι τὸ παιδίον ἀγαθὸν ἢ
κακὸν, ἀπειθεῖ πονηρίᾳ, (ο) ἐκλέξασθαι τὸ
ἀγαθόν. καὶ καταλειφθήσεται ἡ γῆ ἣν σὺ
φοβῇ, ἀπὸ προσώπου (π) τῶν δύο βασιλέων.
17 Ἀλλὰ ἐπάξει ὁ θεὸς ἐπὶ σε καὶ ἐπὶ τὸν λαόν
σου καὶ ἐπὶ τὸν οἶκον τοῦ πατρός σου ἡμέρας, αἳ
οὔπω ἥκασιν ἀφ᾽ ἧς ἡμέρας ἀφεῖλεν Ἐφραὶμ
ἀπὸ Ἰούδα τὸν βασιλέα τῶν Ἀσσυρίων.
18 Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ συριεῖ
κύριος μυίαις, ὃ κυριεύσει (ρ) μέρος πο-
ταμοῦ Αἰγύπτου, καὶ τῇ μελίσσῃ, ἥ ἐστιν
19 ἐν χώρᾳ Ἀσσυρίων. Καὶ ἐλεύσονται πάν-
τες (σ) ἐν ταῖς φάραγξι τῆς χώρας, καὶ
ἐν ταῖς τρώγλαις τῶν πετρῶν, καὶ εἰς τὰ
20 σπήλαια, καὶ (τ) εἰς πᾶσαν ῥαγάδα. Ἐν τῇ
ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ξυρήσει κύριος (υ) ἐν τῷ
ξυρῷ τῷ μεμισθωμένῳ πέραν τοῦ ποταμοῦ
βασιλέως Ἀσσυρίων, τὴν κεφαλὴν, καὶ
τὰς τρίχας τῶν ποδῶν, καὶ τὸν πώ-
21 γωνα ἀφελεῖ. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκεί-
νῃ θρέψει ἄνθρωπος δάμαλιν βοῶν, καὶ
22 δύο πρόβατα· Καὶ ἔσται ἀπὸ τοῦ πλεῖστον
(φ) ποιεῖν γάλα, βούτυρον καὶ μέλι φάγε-
23 ται πᾶς ὁ καταλειφθεὶς ἐπὶ τῆς γῆς. Καὶ
ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, πᾶς τόπος οὗ
ἐὰν ὦσι χίλιαι ἄμπελοι χιλίων σίκλων,
εἰς χέρσον ἔσονται, (χ) καὶ εἰς ἄκανθαν.
24 Μετὰ βέλους καὶ τοξεύματος εἰσελεύσονται
ἐκεῖ· ὅτι χέρσος καὶ ἄκανθα ἔσται πᾶσα
25 ἡ γῆ. Καὶ πᾶν ὄρος (ψ) ἠροτριωμένον
ἀροτριωθήσεται. οὐ μὴ ἐπέλθῃ ἐκεῖ φόβος·
ἔσται γὰρ ἀπὸ τῆς χέρσου καὶ ἀκάνθης εἰς βό-
σκημα προβάτου, καὶ (ω) καταπάτημα
βοός.

Et adjecit Dominus loqui ad A- 10
chaz, dicens; Pete tibi ſignum à 11
Domino Deo tuo (c) in profundũ,
ſive in excelſum. Et dixit Achaz; 12
Non petam, neque tentabo Domi-
num. Et dixit; Audite nunc, do- 13
mus David: (d) Nunquid parum
vobis eſt certamen præbere homi-
nibus? & quomodò Domino præ-
betis certamen? Propterea dabit 14
Dominus ipſe vobis ſignũ. Ecce (e)
virgo in utero concipiet, & pariet
filium, & (f) vocabis nomen ejus,
Emmanuel: Butyrum et mel com- 15
edet; antequam ſciat, (g) aut præe-
ligere mala, eligere bonum. Quo- 16
niam antequam cognoſcat puer bo-
num, vel malum; reprobat maliti-
am, eligendo bonum: Et derelin-
quetur terra, quam tu times, à fa-
cie duorum regum. Sed addu- 17
cet Dominus ſuper te, & ſuper
populum tuum, & ſuper domum
patris tui, dies, qui necdum ve-
nerunt; ex qua die abſtulit E-
phræm à Juda, regem Aſſyriorum.
Et erit, in die illa ſibilabit Domi- 18
nus muſcis, (h) qui dominabitur
parti fluminis Ægypti, & api,
quæ eſt in regione Aſſyriorum.
Et venient omnes in convalles 19
regionis, & in cavernas petra-
rum, & in ſpeluncas, & in
omnem (i) fiſſuram. In die illa 20
radet Dominus in novacula (k)
conducta trans flumen (l) regis
Aſſyriorum caput, et pilos pedum,
& barbam auferet: Et erit, in 21
die illa nutriet homo vaccam bo-
um, & duas oves. Et erit, 22
ex plurima potione lactis, buty-
rum & mel comedet omnis relictus
ſuper terram. Et erit in die illa, 23
omnis locus, ubi fuerint mille vi-
tes mille ſiclorum, in deſertum e-
runt, & in ſpinam: Cum ſagitta 24
& arcu ingredientur illuc: quo-
niam deſertũ & ſpina erit omnis
terra: Et omnis mons arando a- 25
rabitur. Non ſuperveniet illuc
timor. Erit enim præ ſolitudine
& ſpina in paſtum ovis, & con-
culcationem bovis.

MS.A. (ι) Ἀχαάζ, (λ) οὐδ᾽ οὐ μὴ (μ) αὐτοῖς (ν) ἕξει, (ξ) προελέσθαι πονηρὰ, ἐκλέξεται τὸ ἀγαθόν, (ο) τοῦ ἐκλέξασθαι (π) αὐτῶν. Ἀλλὰ (ρ) μέρους (σ) καὶ ἀναπαύσονται ἐν ταῖς (τ) ἐπὶ πᾶσαν ῥαγάδα, καὶ ἐν παντὶ ξύλῳ. Ἐν τῇ (υ) τῷ ξυρῷ τῷ μεγάλῳ, καὶ μεμεθυσμένῳ, ὅ ἐστιν πέραν (φ) ποιεῖν (χ) καὶ ἄκανθαν. (ψ) ἀροτριώμενον ἀροτριαθήσεται. καὶ οὐ (ω) εἰς καταπάτημα

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 וְאוֹסִיף נְבִיָא דַיְיָ לְמַלָלָא עִם אָחָז לְמֵימַר׃ שְׁאַל לָךְ אָתָא מִן קֳדָם יְיָ אֱלָהָךְ שְׁאַל
11 12 דִי יִתְעֲבֵד לָךְ נֵס עַל אַרְעָא אוֹ תִתְחֲזֵי לָךְ אָת בִּשְׁמַיָא׃ וַאֲמַר אָחָז לָא אֶשְׁאַל
13 וְלָא אֲנַסֵי קֳדָם יְיָ׃ וַאֲמַר שְׁמַעוּ כְעַן בֵּית דָוִד הַזְעֵיר לְכוֹן דְאַתּוּן מְהַלְאַן יַת נְבִיַיָא אֲרֵי
14 תְהַלוּן אַף יַת פִּתְגָמֵי אֱלָהִי׃ בְּכֵן יִתֵּן יְיָ הוּא לְכוֹן אָתָא הָא עוּלֵימְתָא מְעַדְיָא וְתֵלִיד
15 בַּר וְתִקְרֵי שְׁמֵיהּ עִמָּנוּ אֵל׃ שְׁמַן וּדְבַשׁ יֵיכוּל עַד לָא יְדַע עוּלֵימָא לְרַחָקָא בִישָׁא
16 וּלְקָרָבָא טָבָא׃ אֲרֵי עַד לָא יְדַע עוּלֵימָא לְרַחָקָא בִישָׁא וּלְקָרָבָא טָבָא תִתְרְטִישׁ
17 אַרְעָא דִי אַתְּ מְעִיק מִן קֳדָם תְּרֵין מַלְכָהָא׃ יַיְתֵי יְיָ עֲלָךְ וְעַל עַמָּךְ וְעַל בֵּית אֲבוּךְ
יוֹמִן דְלָא אֲתוֹ לְמִיוֹמָא דְאִתְפְּלִיגוּ בֵית יִשְׂרָאֵל עַל דְבֵית יְהוּדָה יַת מַלְכָּא דְאַתּוּר׃
18 וִיהֵי בְעִדָנָא הַהִיא יַכְלֵי יְיָ לְעַם קִטְרֵי מַשְׁרְיָת גִבָּרַיָא דְסַגִיאִין כִּדְבוֹבַיָא וְיַיְתִנוּן מִסְיָפֵי
אַרְעָא דְמִצְרַיִם וּלְעִזְזֵי מַשְׁרְיָתָא דְאִנוּן תַּקִיפִין כְדַבַּרְיָתָא וְיַיְתִנוּן מִסְיָפֵי אַרְעָא
19 דְאַתּוּר׃ וְיֵיתוּן וְיִשְׁרוּן כּוּלְהוֹן בִּרְחוֹבֵי קִרְוַיָא וּבְשִׁקִיפֵי כֵיפַיָא וּבְכָל מַדְבְּרֵי נַעֲצוּצַיָא
20 וּבְכָל בָּתֵי תוּשְׁבַּחְתָּא׃ בְּעִדָנָא הַהִיא יִקְטוֹל יְיָ בְּהוֹן כְּמָא דְמִתְקְטֵיל בְּחַרְבָּא חֲרִיפָא
בְסַבְבַיָא וּבְמַגְרַיָא בְעִבְרֵי נַהֲרָא בְּמַלְכָּא דְאַתּוּר יַת מַלְכָּא וְיַת מַשִׁרְיָתֵיהּ וְאַף יַת
21 שִׁלְטוֹנַיָא כַּחֲדָא יְשֵׁיצֵי׃ וִיהֵי בְעִדָנָא הַהִיא יְקַיֵים גְבַר עֶגְלַת תּוֹרִין וּתְרֵין עָן׃
22 וִיהֵי מִסְּנִי טוּב מְשַׁח יֵיכוּל שְׁמַן אֲרֵי שְׁמַן וּדְבַשׁ יִתְפַּרְנְסוּן כָּל צַדִיקַיָא דְאִשְׁתָּאֲרוּן בְּגוֹ
23 אַרְעָא׃ וִיהֵי בְעִדָנָא הַהִיא יְהֵי כָּל אֲתַר דִיהוֹן תַּמָן אֶלֶף גוּפְנִין שָׁוְיָן בְּאֶלֶף מָנִין
24 כְּסַף לְהוּבָאִי וּבוּר יְהֵי׃ בְּגִירִין וּבְקַשְׁתָּן יְהָכוּן לְתַמָן אֲרֵי הוּבָאִי וּבוּר תְּהֵי כָל
25 אַרְעָא׃ וְכָל טוּרַיָא דְבֵית יְהוּדָה דִי בְמַעְדֵר יִתְפַּלְחוּן לָא תֵעוּל לְתַמָן דַחֲלַת הוּבָאִי
וּבוּר וִיהֵי לְבֵית אַרְבָּעָה בַקְרָן דְתוֹרִין וּלְבֵית מַשְׁרֵי עֶדְרִין דְעָן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et addidit propheta Domini loqui cum Achaz, dicens: Pete tibi 10
ſignum à facie Domini Dei tui: pete ut fiat tibi miraculum ſuper ter- 11
ram, aut videatur *tibi* ſignum in cœlis. Et dixit Achaz: Non pe- 12
tam, & non tentabo in conſpectu Domini. Et dixit: Audite nunc 13
domus David; Nunquid parum vobis eſt quòd moleſti eſtis prophetis,
quia moleſti eſtis etiam verbis Dei mei? Propterea dabit Dominus vo- 14
bis ſignum: Ecce virgo concipiet, & pariet filium, & vocabit nomen
ejus Emanuel. Butyrum & mel comedet, donec ſciat *puer* reprobare 15
malum, & eligere bonum. Quoniam antequam ſciat puer reprobare 16
malum & eligere bonum, derelinquetur terra, pro qua tu tribulationem
pateris à facie duorum regum ejus. Adducet Dominus ſuper te & ſuper 17
populum tuum, & ſuper domum patris tui, dies, qui non venerunt à
die ſeparationis domus Iſrael à domo Juda cum rege Aſſyriæ. Et erit in 18
tempore illo, clamabit Dominus ad populum accinctum exercitibus
fortium qui multi ſunt ſicut muſcæ; & adducet eos de *finibus terræ*
Ægypti, & exercitus fortes, qui fortes ſunt ſicut apes: & adducet eos
de finibus terræ Aſſyriæ. Et venient & habitabunt omnes in plateis civi- 19
tatum, & in ſciſſuris petrarum, & in omnibus deſertis ubi ſunt carecta, &
in omnibus domibus laudis. In tempore illo occidet illos Dominus, ſicut 20
qui occidunt in gladio acuto, in fuſtibus & in ſerris trans flumen contra
regem Aſſyriæ: regem *& exercitus ſuos*, & etiam potentes ſimul conſu- 21
met. Et erit in tempore illo: Nutriet vir vitulam boum & duas oves. Et 22
erit, præ multitudine bonitatis pinguedinis comedet butyrum; quia butyro
& melle nutrientur omnes juſti qui relicti fuerint in medio terræ. Et erit 23
in tempore illo; Omnis locus in quo fuerint mille vites, quarum precium
erat mille drachmæ argenti, in ſpinas, & vepres erit. Cum ſagittis & arcubꝰ 24
ibũt illuc, quia vepres & ſpinæ erũt in univerſa terra. Et omnes montes *do-* 25
mus Juda, qui in ſarculo coluntur; non veniet illuc timor ſpinarũ et vepri-
um, et erit in locum accubationis boum, et in locum manſionis gregũ oviũ.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

10 11 * ܘܐܘܣܦ ܬܘܒ ܡܪܝܐ ܠܡܡܠܠܘ ܥܡ ܐܚܙ ܠܡܐܡܪ. * ܫܐܠ ܠܟ ܐܬܐ ܡܢ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ. ܒܥܘܡܩܐ ܫܐܠ.
12 13 ܐܘ ܒܪܘܡܐ ܠܥܠ. * ܘܐܡܪ ܐܚܙ ܠܐ ܐܫܐܠ. ܘܠܐ ܐܢܣܐ ܠܡܪܝܐ ܐܠܗܝ. * ܘܐܡܪ. ܫܡܥܘ
ܒܝܬ ܕܘܝܕ.. ܙܥܘܪܐ ܗܝ ܠܟܘܢ. ܕܬܠܐܘܢ ܠܓܒܪܐ: ܐܠܐ ܕܬܠܐܘܢ ܐܦ ܠܐܠܗܝ.
14 * ܡܛܠܗܢܐ. ܢܬܠ ܠܟܘܢ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܐܬܐ. ܗܐ ܒܬܘܠܬܐ ܒܛܢܐ ܘܝܠܕܐ ܒܪܐ.
15 ܘܬܩܪܐ ܫܡܗ ܥܡܢܘܐܝܠ. * ܚܡܐܬܐ ܘܕܒܫܐ ܢܐܟܘܠ. ܕܢܕܥ ܠܡܣܠܝܘ ܒܝܫܬܐ
16 ܘܠܡܓܒܐ ܛܒܬܐ. * ܡܛܠ ܕܥܕܠܐ ܢܕܥ ܛܠܝܐ ܠܡܣܠܝܘ ܒܝܫܬܐ ܘܠܡܓܒܐ ܛܒܬܐ.
17 ܬܫܬܒܩ ܐܪܥܐ ܕܐܢܬ ܡܬܚܡܬ ܡܢ ܩܕܡ ܬܪܝܢ ܡܠܟܝܗ. * ܡܪܝܐ ܢܝܬܐ ܥܠܝܟ. ܘܥܠ
ܥܡܟ ܘܥܠ ܒܝܬ ܐܒܘܟ. ܝܘܡܬܐ ܕܠܐ ܐܬܘ. ܡܢ ܝܘܡܐ ܕܐܥܒܪ ܠܐܦܪܝܡ ܡܢ
18 ܝܗܘܕܐ. ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. * ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ .. ܢܫܪܘܩ ܡܪܝܐ ܠܕܒܒܐ ܕܒܣܘܦܝ
19 ܢܗܪܘܬܐ ܕܡܨܪܝܢ .. ܘܠܕܒܘܪܝܬܐ ܕܒܐܪܥܐ ܕܐܬܘܪ .. * ܘܢܐܬܘܢ ܘܢܫܪܘܢ ܟܠܗܘܢ
20 ܒܢܚܠܐ ܕܝܬܘܬ. ܘܒܢܩܥܐ ܕܟܐܦܐ. ܘܒܦܩܥܬܗܘܢ ܕܟܠܗܝܢ. * ܒܝܘܡܐ ܗܘ .. ܢܓܪܘܥ ܡܪܝܐ
ܒܡܣܦܪܐ ܪܘܝܐ. ܕܒܥܒܪܘܗܝ ܕܢܗܪܐ ܠܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ .. ܡܢ ܪܫܗ ܘܥܕܡܐ ܠܣܥܪܐ
21 ܕܪ̈ܓܠܘܗܝ. ܐܦ ܕܩܢܗ ܢܫܩܘܠ. * ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ .. ܢܪܒܐ ܓܒܪܐ ܥܓܠܬܐ
22 ܕܬܘܪܐ. ܘܬܪܬܝܢ ܥܢܐ. * ܘܢܗܘܐ ܡܢ ܣܘܓܐܐ ܕܚܠܒܐ ܕܥܒܕܢ. ܢܐܟܘܠ ܚܡܐܬܐ.
23 ܡܛܠ ܕܕܒܫܐ ܘܚܡܐܬܐ ܢܐܟܘܠ .. ܟܠ ܡܢ ܕܡܫܬܚܪ ܒܓܘܗ ܕܐܪܥܐ. * ܘܢܗܘܐ
ܒܝܘܡܐ ܗܘ .. ܟܠ ܐܬܪ ܕܢܗܘܐ ܒܗ ܐܠܦ ܓܦܢܝܢ ܩܐܡܝܢ ܒܐܠܦ ܕܟܣܦ.
24 ܠܚܘܚܐ ܘܠܟܘܒܐ ܢܗܘܐ. * ܘܒܓܐܪܐ ܘܒܩܫܬܐ ܢܥܠܘܢ ܠܬܡܢ. ܡܛܠ ܕܚܘܚܐ
25 ܘܟܘܒܐ. ܬܬܡܠܐ ܟܠܗ ܐܪܥܐ. * ܘܟܠܗܘܢ ܛܘܪܐ ܕܡܬܦܠܚܝܢ ܗܘܘ ܒܡܪܥܐ. ܦܠܚܐ
ܢܬܦܠܚܘܢ. ܘܠܐ ܢܥܘܠ ܠܬܡܢ ܕܚܠܬܐ ܕܚܘܚܐ ܘܕܟܘܒܐ. ܘܢܗܘܐ ܡܫܕܪ ܬܘܪܐ.
ܠܒܥܝܪܐ. ܘܕܘܫܐ ܕܥܢܐ ܕܒܥܝܪܐ.

* Tum ſubdidit Dominus dicens ad Ahazum; 10
Pete tibi ſignum à Domino Deo tuo: in 11
imo profundo pete, aut in excelſo ſublimi.
Dixit autem Ahaz, Non petam, neque ten- 12
tabo Dominum Deum meum. Dixit ille, Au- 13
dite domus Davidis: Parva res eſt apud vos
fatigare virum, niſi fatigetis etiam Deum
meum? Propterea dabit vobis Dominus 14
Deus ſignum. Ecce virgo concipiet & pa-
riet filium, & vocabitur nomen ejus Ama-
nuel. Butyrum & mel comedet, ut ſciat ab- 15
horrere à malo & eligere bonum. Nam ante- 16
quam ſciat puer iſte abhorrere à malo & eli-
gere bonum, derelinquetur terra quam tu
deteſtaris cauſâ duorum regum ejus. Domi- 17
nus adducet ſuper te, ſuper populum tuum,
& ſuper domum patris tui, tempora qualia
nunquam venerunt ab eo die quo Aphre-
mum è Judæa tranſtulit rex Athur. Fiet eo- 18
dem tempore ut ſibilante Domino ad muſcas
quæ ſunt ad ripas fluviorum Ægypti, & ad
veſpas quæ ſunt in terra Athur; Veniant & 19
confideant omnes in valle Jathoth, in hiati-
bus petræ, & in rimis quibuſque. Eodem 20
tempore Dominus novaculâ ebriâ trans flu-
vium abradet, regem Athur ab ejus capite
uſque ad pilos pedum ejus; etiam barbam
ejus auferet. Erit etiam eodem tempore, ut 21
nutriente aliquo vitulam bovinam & duas
oves, Contingat ut præ copia lactis quod 22
præbebunt, comedat butyrum: mel enim
ac butyrum comeſturus eſt quicunque ſu-
perſtes manſerit in terra. Fiet etiam eo- 23
dem tempore, ut omnis locus in quo fu-
erint mille vites, *conſtans* mille argenteis;
in vepretum ac ſpinetum vertatur, Ita ut 24
nonniſi cum ſagittis & arcubus ingredian-
tur illuc: nam vepribus ac ſpinis implebi-
tur univerſa terra. Omnes verò montes 25
quos ſulcabat aratrum, ſulcabuntur; nec in-
trabit illuc metus veprium aut ſpinarum,
ſed erunt *ibi* paſcua boum, & locus tritus
à pecudibus.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* وعاد الرب يتكلم مع احاز قايلا * سل لك آية من الرب الهك في العمق او في 10 11
العلو * فقال احاز لا اسال ولا اجرب الرب * قال اسمعوا يا بيت داود * هل صغير 12 13
عندكم ان تمحكوا الناس جهادا * فكيف تمحكون الرب جهادا * لاجل هذا يعطيكم 14
الرب نفسه آية * ها العذري تحبل وتلد ابنا * ويدعون اسمه عمانويل * واكل 15
الزبد والعسل * من قبل ان يعلم ان يرذل الشر يختار الخير * من اجل انه قبل ان 16
يعلم الصبي خيرا او شرا يرذل الشر ليختار الخير * وستبقى الارض التي انت خايف
عليها من وجه هذين الملكين * لكن يجلب الله عليك وعلى شعبك وعلى بيت 17
ابيك اياما لم تات قط * منذ يوم صرف افرام عن يهوذا ملك الموصليين * ويكون 18
في ذلك اليوم يجلب الرب بذباب الذي يسود ناحية نهر مصر * والنحلة التي في بلد
الموصليين * وياتون جميعا ويستريحون في اودية الكهوف * وفي انقبة الصخور * وفي 19
المغاير * وفي كل شعب * وفي كل شجر * في ذلك اليوم يحلق الرب بموسه العظيم الحاد * 20
الذي هو عبر نهر ملك الموصليين * الراس وشعر الرجلين * وينزع لحيته * ويكون 21
في ذلك اليوم يعلف الانسان عجلة من بقر وشاتين * ويكون من ان تصنع لبنا 22
كثيرا ياكل زبدا وعسلا كل من يبقى على الارض * ويكون في ذلك اليوم 23
كل موضع حيث ان يكون فيه الف كرمة بالف مثقال * يصيرن للبور والشوك *
* بسهم وقوس يدخلون هناك * لان بورا وشوكا تصير كل الارض * وكل جبل 24 25
محروث يحرث * ولا ياتي هناك خوف * لان من البور والشوك يصير مرعى الخروف ومربع
البقر *

* *Rurſus allocutus eſt Dominus Ahazum,* 10
dicens; Pete tibi ſignum à Domino 11
Deo tuo, in profundo ſive in excelſo.
Reſpondit Ahaz, Non petam, neque 12
tentabo Dominum. Dixit, Audite O 13
domus Davidis: Num parvi momenti
res eſt apud vos moleſtiam hominibus
præbere? quomodò ergò moleſtiam Do-
mino præbebitis? Propter hoc dat vo- 14
bis ipſemet Dominus ſignum. Ecce vir-
go concipiet parietque filium, & vo-
cabunt nomen ejus Emmanuel. Buty- 15
rum & mel comedet, & antequam
ſciat malum deteſtari, eliget bonum: 16
Priuſquam enim ſciat puer iſte bonum
aut malum, deteſtabitur malum, ut
bonum eligat. Et terra pro qua tu
metuis à conſpectu horum duorum re-
gum, perdurabit quidem; *At adducet* 17
Deus contra te, contra populum tuum,
& contra domum tuam paternam, tem-
pora qualia nunquam evenêre ab eo die
quo Aphremum ab Judæa traduxit rex
Aſſyriorum. Eodem quoque tempore con- 18
tinget, ut adducat Dominus muſcas quæ
vigent ad oram fluminis Ægypti, & a-
pes quæ ſunt in regione Aſſyriorum:
Quæ ſimul venientes conſidebunt in val- 19
libus hujus provinciæ, in foraminibus
petrarum, in ſpeluncis, in omnibus hia-
tibus, & in cunctis arboribus. Eodem 20
tempore Dominus novaculâ ſuâ magnâ
& acutâ, hoc eſt, trans fluviali rege Aſ-
ſyriorum, caput & pilos pedum abra-
det; ejuſque barbam detondebit. Eodem 21
etiam tempore continget, ut nutriat quis
vitulum de bobus & duas oves;
Fietque ut præ multo lacte quod fa- 22
cient, butyrum & mel comedat qui-
cunque reliquus fuerit ſuper terram.
Præterea continget eodem tempore, ut 23
quivis locus in quo fuerint mille vites
mille ſiclis coëmptæ, *vertatur in ſoli-*
tudinem ac ſpinas. Adeóque cum ſa- 24
gitta & arcu ingrediantur illuc; quan-
doquidem in ſolitudinem & ſpinas de-
ſciſcet univerſa terra. Omnis autem 25
mons ad arandum idoneus, arabitur;
nec ullus eò metus accedet: quoniam
ex inculto & ſpinoſo evadet paſcua
agnorum, & locus in quo boves uber-
rimè paſcentur.

ישעיה : ח

CAP. VIII. ח

ſcribe & , grande volumen tibi Tolle : me ad Dominus dixit Et
1 ויאמר יהוה אלי קח־לך גליון גדול וכתב
.prædam acceleravit ſpolium feſtinandum ad : hominis ſtylo in eo in
עליו בחרט אנוש למהר שלל חש בז׃
, ſacerdotem Uriah , fideles teſtes mihi faciam teſtificari Et
2 ואעידה לי עדים נאמנים את אוריה הכהן
, prophetiſſam ad acceſſi Et .Jeberechjahu filium Zecharjahu &
3 ואת־זכריהו בן־יברכיהו׃ ואקרב אל־הנביאה
Voca : me ad Dominus dixit Et .filium peperit & ,concepit &
ותהר ותלד בן ויאמר יהוה אלי קרא
antequam Quia .prædam acceleravit ſpolium Feſtinando : ejus nomen
4 שמו מהר שלל חש בז׃ כי בטרם
, Dammeſec *facultatem* tollet, mea mater & mi pater, vocare puer ſciat
ידע הנער קרא אבי ואמי ישא את־חיל דמשק
Dominus adjecit Et .Aſſur *regis facies ad* Someron *ſpolium* &
5 ואת שלל שמרון לפני מלך אשור׃ ויסף יהוה
iſte populus *reprobavit* quòd eo Pro : dicendo ,adhuc me ad loqui
6 דבר אלי עוד לאמר׃ יען כי מאס העם הזה
filio & , Reſin *cum* gaudium & ,*leniter euntes* , Silloach aquas
את מי השלח ההלכים לאט ומשוש את־רצין ובן־
eos ſuper *faciens* aſcendere Dominus ecce ideo Et .Remaljahu
7 רמליהו׃ ולכן הנה אדני מעלה עליהם
, Aſſur regem , multas & , fortes fluminis aquas
את־מי הנהר העצומים והרבים את־מלך אשור
ibit & ,ejus *decurſus* omnes ſuper aſcendet &,ejus gloriam omnem &
ואת־כל כבודו ועלה על־כל־אפיקיו והלך
, tranſibit & ,inundabit ,Jehudah per tranſibit Et .ejus ripas omnes ſuper
8 על־כל־גדותיו׃ וחלף ביהודה שטף ועבר
plenitudo ,ejus alarum *extenſiones* erit & : pertinget collum ad uſque
עד־צואר יגיע והיה מטות כנפיו מלא־
,conterimini & ,populi Confringimini .el-Himmanu tuæ terræ latitudinis
9 רחב ארצך עמנו אל׃ רעו עמים וחתו
:conterimini & ,vos accingite:terræ longinqui univerſi auribus percipite &
והאזינו כל מרחקי־ארץ התאזרו וחתו
: diſſipabitur & , conſilium Conſiliamini .conteremini & ,vos accingite
10 התאזרו וחתו׃ עצו עצה ותפר
ſic Nam .*el-Himmanu* quia , ſtabit non & , verbum loquimini
11 דברו דבר ולא יקום כי עמנו אל׃ כי כה
eundo ab me erudivit & ,*manus* fortitudine In : me ad Dominus dixit
אמר יהוה אלי בחזקת היד ויסרני מלכת
, conjuratio , dicatis Non .dicendo , hujus populi via in
12 בדרך העם־הזה לאמר׃ לא־תאמרון קשר
ejus timorem & : conjuratio ,iſte populus *dicet* . quæ omnia ad
לכל אשר־יאמר העם הזה קשר ואת־מוראו
ipſum exercituum Dominum .pavebitis non & ,timebitis non
13 לא־תיראו ולא תעריצו׃ את־יהוה צבאות אתו
erit Et .veſter pavor ipſe & , veſter timor ipſe & , ſanctificabitis
14 תקדישו והוא מוראכם והוא מעריצכם׃ והיה
duabus ,offenſionis petram in & ,percuſſionis lapidem in &,*ſanctuarium* in
למקדש ולאבן נגף ולצור מכשול לשני
.Jeruſalaim habitanti rete in & , laqueum in , Iſrael domibus
בתי ישראל לפח ולמוקש ליושב ירושלם׃
, irretientur & ,conterentur & ,cadent & , plurimi his in impingent Et
15 וכשלו בם רבים ונפלו ונשברו ונוקשו
.meis diſcipulis cum legem obſigna , *conteſtationem* Liga .capientur &
16 ונלכדו׃ צור תעודה חתום תורה בלמדי׃

Verſio VULG. LAT.

CAP. VIII.

1 ET dixit Dominus ad me; Sume
tibi librum grandem, &
ſcribe in eo ſtylo hominis; Velociter
ſpolia detrahe, citò prædare.
2 Et adhibui mihi teſtes fideles,
Uriam ſacerdotem, &
Zachariam filium Barachiæ :
3 Et acceſſi ad prophetiſſam, &
concepit, & peperit filium. Et
dixit Dominꝰ ad me; Voca nomen
ejus, Accelera ſpolia detrahere:
4 Feſtina prædari. Quia
antequàm ſciat puer vocare patrem
ſuũ & matrem ſuam, auferetur
fortitudo Damaſci, &
ſpolia Samariæ, corã rege Aſſyriorum.
5 Et adjecit Dominus
6 loqui ad me adhuc, dicens; Pro
eo quòd abjecit populus iſte aquas
Siloë, quæ vadunt cum
ſilentio, & aſſumpſit magis
7 Raſin, & filium Romeliæ: Propter
hoc ecce Dominus adducet
ſuper eos aquas fluminis
fortes & multas, regem Aſſyriorum,
& omnem gloriam ejus
: & aſcendet ſuper omnes
rivos ejus, & fluet ſuper univerſas
8 ripas ejus, Et ibit per
Judam, inundans, & tranſiens
uſque ad collum veniet. Et erit
extenſio alarum ejus, implens
latitudinem terræ tuæ, O Emmanuel.
9 Congregamini populi,
& vincimini, & audite univerſæ
procul terræ : confortamini,
& vincimini, accingite
10 vos & vincimini : Inite conſilium,
& diſſipabitur: loquimini
verbum, & non fiet : quia nobiſcum
11 Deus. Hæc enim ait
Dominus ad me; Sicut in manu
forti erudivit me, ne irem
12 in via populi hujꝰ, dicens; Non
dicatis, Conjuratio: omnia enim
quæ loquitur populus iſte, conjuratio
eſt : & timorem ejus ne
13 timeatis, neque paveatis. Dominum
exercituum ipſum ſanctificate
: ipſe pavor veſter, &
14 ipſe terror veſter. Et erit vobis
in ſanctificationem. In lapidem
autem offenſionis, et in petram
ſcandali, duabus domibus Iſrael,
in laqueum & in ruinam
15 habitantibꝰ Jeruſalem. Et offendent
ex eis plurimi, & cadent,
& conterentur, & irretientur,
16 & capientur. Liga teſtimonium,
ſigna legem in diſcipulis meis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. η'.

1 ΚΑὶ εἶπε κύριος πρὸς μὲ, Λάβε σεαυτῷ
τόμον (α) καινοῦ μεγάλου, καὶ γράψον εἰς αὐτὸν
γραφίδι ἀνθρώπου, Τοῦ ὀξέως προνομὴν
2 ποιῆσαι σκύλων· Πάρεισι γάρ· καὶ μάρτυράς
μοι ποίησον πιστοὺς ἀνθρώπους, τὸν Οὐρίαν καὶ
3 Ζαχαρίαν υἱὸν Βαραχίου. Καὶ (β) προσῆλθον
πρὸς τὴν προφῆτιν, καὶ (γ) ἐν γαστρὶ ἔλαβε,
καὶ ἔτεκεν υἱόν· καὶ εἶπε κύριός μοι, Κάλεσον
τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Ταχέως σκύλευσον, ὀξέως
4 προνόμευσον· Διότι πρὶν ἢ γνῶναι τὸ παιδίον
καλεῖν πατέρα ἢ μητέρα, λήψεται δύναμιν
Δαμασκοῦ, καὶ τὰ σκῦλα Σαμαρείας ἔναντι
5 βασιλέως Ἀσσυρίων. Καὶ προσέθετο
6 κύριος λαλῆσαί μοι ἔτι· Διὰ τὸ μὴ βούλεσθαι
τὸν λαὸν τοῦτον τὸ ὕδωρ τοῦ Σιλωὰμ
τὸ πορευόμενον ἡσυχῆ, ἀλλὰ βούλεσθαι ἔχειν
τὸν (δ) Ῥαασὶν καὶ τὸν υἱὸν Ῥομελίου βασιλέα
7 ἐφ᾽ ὑμῶν, Διὰ τοῦτο ἰδοὺ (ε) κύριος ἀνάγει
ἐφ᾽ ὑμᾶς τὸ ὕδωρ τοῦ ποταμοῦ, τὸ
ἰσχυρὸν καὶ τὸ πολὺ, τὸν βασιλέα τῶν
Ἀσσυρίων, καὶ τὴν δόξαν αὐτοῦ. καὶ ἀναβήσεται
ἐπὶ πᾶσαν φάραγγα ὑμῶν, καὶ περιπατήσει
8 ἐπὶ πᾶν τεῖχος ὑμῶν, Καὶ ἀφελεῖ
ἀπὸ τῆς Ἰουδαίας ἄνθρωπον, ὃς δυνήσεται
κεφαλὴν ἆραι, (ζ) ἢ δυνατὸν συντελέσασθαί
τι· καὶ ἔσται ἡ παρεμβολὴ αὐτοῦ, (η)
ὥστε πληρῶσαι τὸ πλάτος τῆς χώρας σου·
9 μεθ᾽ ἡμῶν ὁ θεός. Γνῶτε ἔθνη καὶ ἡττᾶσθε,
(θ) ἐπακούσατε ἕως ἐσχάτου τῆς γῆς· ἰσχυκότες
ἡττᾶσθε· ἐὰν γὰρ πάλιν ἰσχύσητε, πάλιν
10 ἡττηθήσεσθε. Καὶ ἣν ἂν βουλεύσησθε βουλὴν,
διασκεδάσει κύριος· καὶ (·) λόγον ὃν
ἐὰν λαλήσητε, οὐ μὴ ἐμμείνῃ (ι) ἐν ὑμῖν·
11 ὅτι μεθ᾽ ἡμῶν ὁ θεός. Οὕτω λέγει κύριος,
Τῇ ἰσχυρᾷ χειρὶ ἀπειθοῦσι τῇ πορείᾳ
12 τῆς ὁδοῦ τοῦ λαοῦ τούτου, λέγοντες, Μή
ποτε (κ) εἴπωσι, Σκληρόν· πᾶν γὰρ ὃ ἐὰν
εἴπῃ ὁ λαὸς οὗτος, σκληρόν ἐστι. τὸν δὲ φόβον
αὐτοῦ οὐ μὴ φοβηθῆτε οὐδὲ (λ) μὴ ταραχθῆτε.
13 Κύριον αὐτὸν ἁγιάσατε, καὶ αὐτὸς ἔσται
14 σου φόβος. (μ) Κἂν ἐπ᾽ αὐτῷ πεποιθὼς ἦς,
ἔσται σοι εἰς ἁγίασμα, καὶ οὐχ ὡς
λίθου προσκόμματι (ν) συναντήσεσθε, οὐδὲ
ὡς πέτρας πτώματι. (ξ) οἱ δὲ οἶκοι Ἰακὼβ
ἐν παγίδι, καὶ ἐν κοιλάσματι ἐγκαθήμενοι
15 ἐν Ἱερουσαλήμ. Διὰ τοῦτο ἀδυνατήσουσιν
ἐν αὐτοῖς πολλοὶ, καὶ πεσοῦνται καὶ συντριβήσονται,
καὶ ἐγγιοῦσι, καὶ ἁλώσονται ἄνθρωποι
16 (ο) ἐν ἀσφαλείᾳ. Τότε φανεροὶ ἔσονται
οἱ σφραγιζόμενοι τὸν νόμον (π)
τοῦ μὴ μαθεῖν.

CAP. VIII.

ET dixit Dominus ad me; Sume 1
tibi tomum (a) novi magni : &
ſcribe in eo, hominis ſtylo, ut velociter
deprædationem faciat ſpoliorum.
Adeſt enim: & teſtes mihi 2
fac fideles homines, (b) Uriam, &
Zachariam filium Barachiæ. Et (c) 3
acceſſi ad prophetiſſam; et in utero
concepit, & peperit filium. Et dixit
Dominus mihi; Voca nomen ejus,
Citò ſpolia, velociter deprædare :
Quia, antequàm ſciat puer vocare 4
patrem, aut matrem, tollet virtutem
Damaſci, & ſpolia Samariæ
coram rege Aſſyriorum. Et adjecit 5
Dominus loqui mihi adhuc; 6
Eò quòd populus hic non vult aquam
Siloam, quæ vadit cum ſilentio,
ſed vult habere Raſin, &
filium Romeliæ regem ſuper vos;
Propterea ecce Dominus adducit 7
ſuper vos aquam fluminis fortem,
& multam, regem Aſſyriorum, et
gloriam ejus. Et aſcendet ſuper omnem
convallem veſtram, & (d)
ambulabit ſuper omnem murum
veſtrum : Et auferet de Judæa 8
hominem, qui poſſit caput levare,
aut fortem aliquid facere. Et erunt
caſtra ejus, ut impleant latitudinem
regionis tuæ. Nobiſcum Deus.
(e) Cognoſcite gentes, & vincimini: 9
exaudite uſque ad extremum
terræ : qui prævaluiſtis, vincimini.
Nam ſi rurſus prævalueritis, rurſus
vincemini: Et quodcunq; conſilium 10
conſultaveritis, diſſipabit
Dominus : & verbum, quodcunque
loquuti fueritis, non manebit
in vobis, quia * nobiſcum Deus. Sic 11
dicit Dominus; Forti manu recedunt
ab itinere viæ populi hujus,
dicentes; Ne fortè (f) dicant, Durum. 12
Omne enim quicquid dixerit
populus iſte, * durum eſt. Timorem
autem ejus ne timueritis, neq; conturbemini.
(g) Dominum ipſum 13
ſanctificate : & ipſe erit timor
tuus. Et, ſi in ipſo confiſus fueris, 14
erit tibi in ſanctificationem, &
non, ut lapidi offenſionis occurretis,
neque ut petræ ruin[illegible] Domus
autem Jacob in laqueo, & (h) in
convalle ſedentes in Hieruſalem :
Ideò infirmi erunt in ipſis plurimi, 15
& cadent & conterentur : & appropinquabunt,
& capientur (i)
homines in tuitione. Tunc manifeſti 16
erunt, qui (k) ſignantur, ut
non diſcant legem.

MS.A. (α) χάρτου καινοῦ μεγάλου, (β) προσῆλθεν (γ) ἐν γαστρὶ (δ) Ῥασσὼν (ε) ἀνάγει κύριος (ζ) εἰ δυνατὸν συντελέσαι (η) τὰ πλάτη τῆς χώρας σου· (θ) ἐπακούσατε (·) τὸν λόγον (ι) ὑμῖν· ὅτι μεθ᾽ ἡμῶν κύριος ὁ θεός. Οὕτως λέγει κύριος ὁ θεὸς, (κ) εἴπητε, (λ) οὐδ᾽ οὐ μὴ (μ) Καὶ ἐὰν (ν) συναντήσεσθαι αὐτῷ, (ξ) ὁ δὲ οἶκος (ο) ἐν ἀσφαλείᾳ ὄντες. (π) τοῦ μαθεῖν.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ח

1 ואמר יי לי סב לך לוח רב וכתוב עלוהי כתב מפרש מוחי למבז בזא ולמעדי עדאה׃
2 ואסהיד קדמי סהידין מהימנין ית לוטיא דאמרית לאיתאה בנבואת אוריה כהנא והא
אתו אף כן כל נחמתא דאמרית לאיתאה בנבואת זכריה בר יברכיא אנא עתיד
3 לאיתאה׃ ועלית לות נביאתא ועדיאת וילדת בר ואמר יי לי קרי שמיה מוחי למבז בזא
4 ולמעדי עדאה׃ ארי עד לא ידע עולמא מקרי אבא ואמא ישבי ית נכסי דמשק וית עדאי
5 6 שמרון קדם מלכא דאתור׃ ואוסיף מימרא דיי למללא עמי עוד למימר׃ חלף דקץ
עמא הדין במלכותא דבית דוד דמדבר להון בניח כמי שלוחא דנגדין בניח ואתרעיאו
7 ברצין ובר רמליה׃ בכן הא יי מיתי ומסיק עליהון ית משרית עממיא דסגיאין כמי
נהרא תקיפיא וחסיניא ית מלכא דאתור וית כל משריתיה ויסק על כל פצידוהי ויהך
8 על כל כיפוהי׃ ויעדי בארעא דבית יהודה כנחל מגבר עד ירושלם ימטי ויהי עם
9 משריתיה מלי פתאי ארעך עמנו אל׃ אתחברו עממיא ואתברו ואציתו כל די בסיפי
10 ארעא אתקפו ואתברו אתקפו ואתברו׃ אתמליכו מלך ויעדי מלילו פתגמא ולא
11 יתקים ארי בסעדנא אלהא׃ ארי כדנן אמר יי לי במתקף נבואתא ואלפני מלמהך
12 באורח עמא הדין למימר׃ לא תימרון מרוד לכל דיימר עמא הדין מרוד ולדחלתיה לא
13 תדחלון ועל תוקפיה לא תימרון תקיף׃ ית יי צבאות יתיה תימרון קדיש והוא דחלתכון
14 והוא תוקפכון׃ ואם לא תקבלון ויהי מימריה בכון לפורען ולאבן מחי ולכיף מתקל
לתרין בתי רברבי ישראל לתבר ולתקלא על דאתפליגו על דבית יהודה דיתבין
15 16 בירושלם׃ ויתקלון בהון סגיאין ויפלון ויתברון ויתצדון ויתאחדון׃ נביא טר סהדותא
לא תסהיד בהון ארי לא מקבלין חתום וטמר אוריתא לא צבן דילפון בה׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. VIII.

ET dixit Dominus ad me : Sume tibi tabulam grandem, & ſcribe in ea 1
ſcripturam claram : Feſtina ad prædandum prædam, & auferendum ſpolium.
Et conteſtare coram me teſtibus fidelibus maledictiones quas dixi 2
ut inducerem in *prophetia* Uriæ ſacerdotis : Ecce venerunt. Et etiam
omnes conſolationes, quas dixi *ut adducerem* in prophetia Zachariæ filii
Barachiæ, ego adducturus ſum. Et ingreſſus ſum ad prophetiſſam : & concepit 3
& peperit filium. Et dixit Dominus ad me : Voca nomen ejus ; Feſtina
ad prædandum prædam, & auferendum ſpolium. Quoniam antequam 4
ſciat puer vocare patrem & matrem, capientur ſubſtantiæ Damaſci, &
ſpolia Samariæ, coram rege Aſſyriæ. Et addidit Verbum Domini loqui 5
mecum rurſus dicens. Pro eo quod abjecit populꝰ hic regnum domꝰ David, 6
qui regebat eos in quiete, ſicut aquæ Siloe, quæ defluunt in quiete; & elegerunt
Raſin & filium Romeliæ : Propterea ecce Dñs *adducet* & aſcendere 7
faciet ſuper eos caſtra populorum, quæ magna ſunt ſicut aquæ fluminis
fortes & multæ ; regem Aſſyriæ, & omnem exercitum ejus : & aſcendet
ſuper omnes rivos ejus, & ibit ſuper univerſas ripas ejus. Et tranſibit 8
per terram domus Judæ ſicut torrens inundans : uſque ad Hieruſalem pervenient
: & erit populus exercitus ejus implens plenitudinem terræ tuæ
Emanuel. Congregamini populi & conterimini ; auſcultate omnes qui 9
eſtis in finibus terræ : confortamini & conterimini : confortamini & conterimini.
Inite conſilium & diſſipabitur, loquimini verbum, & non confirmabitur; 10
quia in adjutorium noſtrum eſt Deus. Quia hæc ait Dominus 11
mihi in fortitudine prophetiæ, & docuit me, ne ambularem in via populi
hujus, dicens : Ne dicatis rebellionem, pro omni quod dicit populus hic 12
rebellionem ; & timorem ejus ne timeatis, & fortitudinem ejus ne dicatis
eſſe fortitudinem. Dominum exercituum ipſum dicetis ſanctum ; & 13
ipſe eſt timor veſter, & ipſe eſt fortitudo veſtra. Et ſi non obedieritis, 14
erit verbum ejus vobis in ultionem & in lapidem percutientem, & in petram
ſcandali duabus domibus principum Iſrael, & in interitum & in
ſcandalum his qui diviſi ſunt de domo Juda, & habitantibus in Hieruſalem.
Et offendent in eis multi & cadent, & conterentur, & deſtruentur, & capientur. Propheta ſerva teſtimonium , ne teſtificeris eis quia non obediunt : ſigna & 15 16
abſconde legem, quia non volunt diſcere eam.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܚ *

* ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܣܒ ܠܟ ܓܠܝܘܢܐ ܪܒܐ. ܘܟܬܘܒ ܒܗ ܒܟܬܒܐ ܕܒܪܢܫܐ. 1
ܠܡܣܪܗܒܘ ܫܒܝܐ. ܘܠܡܥܓܠܘ ܒܙܬܐ. * ܘܣܗܕ ܠܝ ܣܗܕܐ ܕܡܗܝܡܢܝܢ. ܠܐܘܪܝܐ ܟܗܢܐ 2
ܘܠܙܟܪܝܐ ܒܪ ܒܪܟܝܐ. * ܘܩܪܒܬ ܠܘܬ ܢܒܝܬܐ. ܘܒܛܢܬ ܘܝܠܕܬ ܒܪܐ. ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. 3
ܩܪܝ ܫܡܗ. ܡܣܪܗܒ ܫܒܝܐ. ܘܥܓܠ ܒܙܬܐ. * ܡܛܠ ܕܥܕܠܐ ܢܕܥ ܛܠܝܐ ܠܡܩܪܐ ܐܒܐ ܘܐܡܐ. 4
ܢܫܩܘܠ ܚܝܠܐ ܕܕܪܡܣܘܩ. ܘܒܙܬܐ ܕܫܡܪܝܢ. ܩܕܡ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. * ܘܐܘܣܦ ܬܘܒ 5
ܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ ܠܝ. * ܚܠܦ ܕܐܣܠܝܘ ܥܡܐ ܗܢܐ. ܡܝܐ ܕܫܝܠܘܚܐ ܕܪܕܝܢ ܒܢܝܚܐ. ܘܚܕܝܘ 6
ܒܪܨܝܢ ܘܒܒܪ ܪܘܡܠܝܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ. ܗܐ ܡܣܩ ܥܠܝܗܘܢ ܡܪܝܐ. ܡܝܐ ܕܢܗܪܐ ܥܫܝܢܐ 7
ܘܣܓܝܐܐ. ܠܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. ܘܠܟܠܗ ܐܝܩܪܗ. ܘܢܣܩ. ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܦܨܝܕܝܗܘܢ. ܘܢܗܠܟ
ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܫܘܪܝܗܘܢ. * ܘܢܥܒܪ ܒܝܗܘܕܐ ܘܢܗܦܘܟ ܘܢܥܒܪ. ܘܥܕܡܐ ܠܨܘܪܐ ܢܡܛܐ. 8
ܘܢܗܘܐ. ܦܪܣܐ ܕܓܦܘܗܝ. ܡܠܐ ܦܬܝܐ ܕܐܪܥܟ ܥܡܢܘܐܝܠ. * ܙܘܥܘ ܥܡܡܐ: 9
ܘܐܬܬܒܪܘ. ܘܨܘܬܘ ܟܠܟܘܢ ܪ̈ܚܝܩܘܗ ܕܐܪܥܐ. ܐܬܚܝܠܘ ܘܐܬܬܒܪܘ. * ܐܬܪܥܝܘ ܬܪܥܝܬܐ 10
ܘܬܬܒܛܠ. ܡܠܠܘ ܡܠܬܐ. ܘܠܐ ܬܬܩܝܡ. ܡܛܠ ܥܡܢܘܐܝܠ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. 11
ܐܝܟ ܡܐ ܕܐܚܝܕ ܐܝܕܐ. ܘܢܗܦܟܢܝ. ܠܐ ܕܐܗܠܟ ܒܐܘܪܚܗ ܕܥܡܐ ܗܢܐ. * ܘܐܡܪ. ܠܐ ܬܐܡܪܘܢ 12
ܡܪܕܐ. ܘܡܢ ܕܚܠܬܗܘܢ ܠܐ ܬܕܚܠܘܢ. ܘܠܐ ܬܙܘܥܘܢ. * ܠܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܩܕܫܘ. ܘܗܘܝܘ 13
ܕܚܠܬܟܘܢ. ܘܗܘܝܘ ܡܫܘܙܒܢܟܘܢ. * ܘܢܗܘܐ ܠܡܩܕܫܐ. ܘܠܟܐܦܐ ܕܡܚܘܬܐ. ܘܠܫܘܥܐ 14
ܕܬܘܩܠܬܐ. ܠܬܪܬܝܗܘܢ ܒ̈ܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܠܦܚ̈ܐ ܘܠܡܨܝ̈ܕܬܐ ܠܥܡܘܪܘܗܝ ܕܐܘܪܫܠܡ.
* ܘܢܬܬܩܠܘܢ ܒܗܘܢ ܣܓܝܐܐ. ܘܢܦܠܘܢ ܘܢܬܬܒܪܘܢ. ܘܢܬܬܨܝܕܘܢ ܘܢܬܐܚܕܘܢ. * ܨܪܘ 15 16
ܣܗܕܘܬܐ. ܘܚܬܘܡܘ ܢܡܘܣܐ.

CAP. VIII.

Et dixit mihi Dominus, Sume tibi volumen magnum, & ſcribe in eo humano ſcribendi more; Ad accelerandam captivitatem, & ſolicitandam prædam. 1
Et adhibe mihi teſtes fideles, Uriam ſacerdotem, & Zachariam filium Barachiæ. 2
Deinde acceſſi ad propheticiſſam, quæ concepit ac peperit filium: & dixit ad me Dominus, Voca nomen ejus, Celer ad captivitatem, & ſolicitus ad prædam: 3
Quia priuſquam nôrit hic puer proferre Aba & Ema, aſportabit opes Damaſci & ſpolia Samariæ ad regem Athur. 4
Rurſus dixit mihi Dominus; 5
Quandoquidem ſpreverunt populus iſte aquas Silohe pacatè fluentes, & Raſane & filio Romeliæ gaudent; 6
Propterea efficiet Dominus ut aſcendant contra iſtos aquæ fluvii copioſæ et ingentes, rex *videlicet* Athur cum tota pompa ſua, qui aſcendet ſuper omnes rivos eorum, & ambulabit ſuper omnes muros eorum, 7
Tranſibit per Judæam, & converret; & tranſiens ad collum uſque pertinget, & expanſio alarũ ejus implebit latitudinem terræ tuæ O Amanuel. 8
Contremiſcite populi, & conterimini; aurem præbete quotquot remotiſſimi eſtis in terra: ſumite animos, & frangimini: 9
Architectamini conſilium, & irritum fiet: loquimini verbum, & non ſubſiſtet propter Amanuelem. 10
Sic dixit mihi Dominus. Quaſi manuum tenens abducat me ne ambulem in via populi hujus. 11
Et dixit, Ne dicatis, Rebellio: & horum terrore ne percellamini, neque expaveſcatis. 12
Dominum potentem ſanctificate; ipſe enim eſt timor veſter, idémque eſt protector veſter. 13
Et *idem* erit in Sanctuarium, & in lapidem percuſſionis, & in ſilicem offendiculi ambabus domibus Iſraelis; in laqueos & retia habitatoribus Jeruſalem: 14
Et multi impingentes corruent & confringentur, irretientur & capientur. 15
Colligate *vos* teſtimonium, & obſignate legem: 16

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الثامن *

* وقال لي الرب خذ لك مدرجا صحيحا صحيفة جديدة كبيرة * واكتب فيها بكتابة انسان * 1
حاد ليصنع نهب الغنائم لانه حضر * واصنع لي شهودا اناسا ثقات * اوريا الكاهن وزكريا 2
ابن برخيا * وتقدمت الى النبية * وحبلت وولدت ابنا * وقال لي الرب * ادع اسمه اغنم 3
بسرعة وانهبوا بجد * من اجل انه من قبل ان يعلم الصبي يدعو ابا او اما * ياخذ قوة 4
دمشق وغنائم السامرة امام ملك الموصليين * وعاد الرب يتكلم معي ايضا * من اجل ان 5 6
هذا الشعب لم يرد ماء سيلوحا الجاري بسكون * لكن يريدوا ان يكون لهم راصان وابن
روملياء ملكا عليهم * من اجل هذا يصعد الرب عليكم ماء النهر القوي الكبير * ملك 7
الموصليين ومجده * فيصعد على كل غدرانكم ويحيط بكل سوركم * وينزع من اليهودية 8
الانسان الذي يستطيع ان يرفع راسا او يمكنه ان يكمل شيا ما * ويكون عسكره حتى
ملء عرض بلدك * الله معنا * اعلموا ايها الامم وانكسروا * اسمعوا الى اخر الارض * 9
اذا تقويتم غلبتم * لانكم ايضا ان تقويتم تغلبون * واية موامرة توامرتم بها يبطلها الرب * 10
واية كلمة تكلمتم بها لا تثبت فيكم * لان الله معنا * هكذا يقول الرب باليد القوية للعصاة 11
في مسلك طريق هذا الشعب * يقول لئلا تقولون صعبا * لان كلما يقوله هذا الشعب هو 12
صعب * فمن خوفهم لا تخافوا ولا تضطربوا * قدسوا الرب وهو يكون خوفكم * واذا توكلت 13
عليه يكون لك عونا * وليس مثل حجر العثرة تستقبلوه * ولا مثل صخر للسقطة * فاما بيت 14
يعقوب في فخ * وفي مصيدة الجلوس في ايروسليم * من اجل هذا تضعف قوة كثيرين 15
فيهم * ويسقطون وينهشمون * ويدنون منهم الناس وينقضون عليهم بوثاق * حينئذ يصيرون 16
ظاهرين الذين يختمون على الناموس لئلا يتعلموها *

CAP. VIII.

Preterea dixit mihi Dominus, Accipe tibi volumen integrum, paginam novam magnam, & ſcribe in ea ſtylo hominis: Inhians ad diripienda ſpolia; adeſt enim. 1
Et adhibe mihi teſtes homines fidos, Uriam ſacerdotem, & Zachariam filium Barachiæ. 2
Tunc acceſſi ad prophetiſſam, quæ concepit peperitque filium dixitque mihi Dominus, Voca nomen ejus, Spolia citò diripe, & avidè prædamini: 3
Nam quum nondum noverit hic puer patrem aut matrem vocare, deferet opulentiam Damaſci & ſpolia Samariæ ad regem Aſſyriorum. 4
Iterum etiam allocutus eſt me Dominus, dicens; 5
Quoniam populus iſte non vult aquam Silohe tranquillè decurrentem, ſed volunt ut Raſan & filius Romeliæ ſit rex ſuper eos; 6
Iccirco immittet Dominus in vos aquam fluminis rapidam ingentem, regem Aſſyriorum & gloriam ejus: qui aſcendens ſuper omnes canales veſtros, totúmque murum veſtrum cingens: 7
Auferet à Judæa eum qui poteſt attollere caput, aut aliquid perficere valet: eritque exercitus ejus talis *ut impleat latitudinem regionis tuæ. Deus nobiſcum ſit.* 8
Scitote hoc *O populi, & conſternamini: audite uſque ad extrema terræ. Etiamſi animos ſumatis, vincemini; etiamſi, inquam animos ſumpſeritis, superabimini:* 9
Et quodcunque conſilium inieritis, irritum faciet illud Dominus: & quemcunque ſermonem locuti fueritis, haud conſtans erit in vobis; quia Deus nobiſcum eſt. 10
Sic dicit Dominus in manu forti ad eos qui ſunt rebelles perambulando in via hujus populi: 11
Dicit, inquam; Ne fortè dicatis, Difficile eſt: quicquid enim dicit populus iſte, Difficile eſt. Metu eorum ne terreamini, neve turbemini. 12
Dominum ſanctificate, & is ſit timor veſter: nam ſi fiduciam in eo collocaveris, præſidio tibi erit; 13
Neque ut in petram offendiculi incidetis in eum, neque ut in ſcopulum exitialem. At verò domus Jacob erit in laqueo, & in tendicula cives Jeroſolymorum. 14
Hac de cauſa remittentur vires multorum inter eos, corruent, & contererentur; & accedentes ad eos homines, diſpergentur adverſùs eos cum vinculis. 15
Tunc fient manifeſti qui legem ſigillo obſerant ne addiſcant eam: 16

יְשַׁעְיָה : ט

domo à *suas facies abscondentem* ,DOMINUM præstolabor Et
17 וְחִכִּיתִי לַיהוָה הַמַּסְתִּיר פָּנָיו מִבֵּית
quos *nati* & ego Ecce .eum expectabo & , Jahacob
18 יַעֲקֹב וְקִוֵּיתִי לוֹ׃ הִנֵּה אָנֹכִי וְהַיְלָדִים אֲשֶׁר
: Israel in portenta *in* & ,signa *in* DOMINUS mihi dedit
נָתַן־לִי יְהוָה לְאֹתוֹת וּלְמוֹפְתִים בְּיִשְׂרָאֵל
.Sijon monte in *habitante* exercituum DOMINO *cum à*
מֵעִם יְהוָה צְבָאוֹת הַשֹּׁכֵן בְּהַר צִיּוֹן׃
ad & ,*pythones ad* Quærite : vos ad dixerint cùm Et
19 וְכִי־יֹאמְרוּ אֲלֵיכֶם דִּרְשׁוּ אֶל־הָאֹבוֹת וְאֶל־
ad populus Nónne :*susurrantes &* ,*garrientes* *sciolos*
הַיִּדְּעֹנִים הַמְצַפְצְפִים וְהַמַּהְגִּים הֲלֹא־עַם אֶל־
, legem *Ad* ?mortuos *ad* vivis pro , requiret *suos deos*
20 אֱלֹהָיו יִדְרֹשׁ בְּעַד הַחַיִּים אֶל־הַמֵּתִים׃ לְתוֹרָה
quo hoc verbum juxta sunt dicturi non si : *contestationem* ad &
וְלִתְעוּדָה אִם־לֹא יֹאמְרוּ כַּדָּבָר הַזֶּה אֲשֶׁר
, erit & : esuriens & ,induratus ipsam per transibit Et *aurora ei non*
21 אֵין־לוֹ שָׁחַר׃ וְעָבַר בָּהּ נִקְשֶׁה וְרָעֵב וְהָיָה
,*suum Deum in* & ,*suum regem in* maledicet & ,irascetur & ,esurierit cum
כִי־יִרְעַב וְהִתְקַצַּף וְקִלֵּל בְּמַלְכּוֹ וּבֵאלֹהָיו
, tribulatio ecce & ,intuebitur terram in Et .sursum respiciet &
22 וּפָנָה לְמָעְלָה׃ וְאֶל־אֶרֶץ יַבִּיט וְהִנֵּה צָרָה
.*impulsus caligine* & ,*coarctationis obtenebratio* , *tenebrositas* &
וַחֲשֵׁכָה מְעוּף צוּקָה וַאֲפֵלָה מְנֻדָּח׃

CAP. IX. ט

primum tempus secundùm ea in coarctatus qui ei , *obtenebratus* non Quia
1 כִּי לֹא מוּעָף לַאֲשֶׁר מוּצָק לָהּ כָּעֵת הָרִאשׁוֹן
postremum & , Naphthali terram & , Zebulun terram *alleviavit*
הֵקַל אַרְצָה זְבֻלוּן וְאַרְצָה נַפְתָּלִי וְהָאַחֲרוֹן
.gentium Ghelil Jarden trans maris viam fecit aggravari
הִכְבִּיד דֶּרֶךְ הַיָּם עֵבֶר הַיַּרְדֵּן גְּלִיל הַגּוֹיִם׃
habitantibus : magnam lucem *viderunt* ,*tenebrositate in ambulantes* Populus
2 הָעָם הַהֹלְכִים בַּחֹשֶׁךְ רָאוּ אוֹר גָּדוֹל יֹשְׁבֵי
Multiplicasti .eos super splenduit lux , mortis umbræ terra in
3 בְּאֶרֶץ צַלְמָוֶת אוֹר נָגַהּ עֲלֵיהֶם׃ הִרְבִּיתָ
tuas facies ad sunt lætati : lætitiam magnificasti *non* , gentem
הַגּוֹי לֹא הִגְדַּלְתָּ הַשִּׂמְחָה שָׂמְחוּ לְפָנֶיךָ
ipsos dividendo in exultabunt quemadmodum , messe in lætitiam secundùm
כְּשִׂמְחַת בַּקָּצִיר כַּאֲשֶׁר יָגִילוּ בְּחַלְּקָם
, ejus humeri virgam & , ejus oneris jugum Nam .*spolium*
4 שָׁלָל׃ כִּי אֶת־עֹל סֻבֳּלוֹ וְאֵת מַטֵּה שִׁכְמוֹ
Quia .Midian diem secundùm ,confregisti ,eo in exactoris sceptrum
5 שֵׁבֶט הַנֹּגֵשׂ בּוֹ הַחִתֹּתָ כְּיוֹם מִדְיָן׃ כִּי
: *sanguinibus in* involutum vestimentum &,*strepitu in confligentis pugna* omnis
כָל־סְאוֹן סֹאֵן בְּרַעַשׁ וְשִׂמְלָה מְגוֹלָלָה בְדָמִים
gnatus Quia .ignis cibus combustionem ad erit &
6 וְהָיְתָה לִשְׂרֵפָה מַאֲכֹלֶת אֵשׁ׃ כִּי־יֶלֶד
,ejus humerum super principatus erit &,nobis est datus filius,nobis est natus
יֻלַּד־לָנוּ בֵּן נִתַּן־לָנוּ וַתְּהִי הַמִּשְׂרָה עַל־שִׁכְמוֹ
pater , fortis ,Deus,consiliarius, Admirabilis,ejus nomen vocabitur &
וַיִּקְרָא שְׁמוֹ פֶּלֶא יוֹעֵץ אֵל גִּבּוֹר אֲבִי־
.pacis princeps,*æternitatis*
עַד שַׂר־שָׁלוֹם׃

Versio VULG. LAT.

17 Et expectabo Dominum, qui abscondit faciem suam à domo Jacob, & præstolabor eum. 18 Ecce ego & pueri mei. quos dedit mihi Dominus in signũ, & in portentum Israel à Domino exercituum, qui habitat 19 in monte Sion. Et cùm dixerint ad vos; Quærite à pythonibus,& à divinis, qui strident in incantationibus suis: Numquid non populus à Deo suo requiret, pro vivis à mortuis? 20 Ad legem magis,& ad testimonium. Quòd si non dixerint juxta verbum hoc, non erit eis 21 matutina lux. Et transibit per eam,corruet,& esuriet:& cùm esurierit, irascetur, & maledicet regi suo,& Deo suo, & su- 22 spiciet sursum. Et ad terram intuebitur,& ecce tribulatio et tenebræ, dissolutio & angustia, & caligo persequens, & non poterit avolare de angustia sua.

CAP. IX.

1 PRimo tempore alleviata est terra Zabulon, & terra Nephthali: et novissimo aggravata est via maris trans Jordanem 2 Galilææ Gentium. Populus, qui ambulabat in tenebris, vidit lucem magnam: habitantibus in regione umbræ mor- 3 tis, lux orta est eis. Multiplicâsti gentem, non magnificâsti lætitiam. Lætabuntur coram te, sicut qui lætantur in messe, sicut exultant victores captâ prædâ, quando dividũt spolia. 4 Jugum enim oneris ejus,et virgam humeri ejus, et sceptrum exactoris ejus superâsti,sicut in 5 die Madian. Quia omnis violenta prædatio cum tumultu,et vestimentum mistum sanguine, erit in combustionem, et cibus 6 ignis. PARVULUS enim NATUS est nobis, et filius datus est nobis, et factus est principatus super humerum ejus: et vocabitur nomen ejus, Admirabilis, consiliarius, Deus, fortis,pater futuri seculi, princeps pacis.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

17 Καὶ ἐρεῖ, Μενῶ τὸν Θεὸν τὸν ἀποστρέψαντα τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἀπὸ τοῦ οἴκου Ἰακώβ, ϗ πε- 18 ποιθὼς ἔσομαι ἐπ᾽ αὐτῷ. Ἰδοὺ ἐγὼ ϗ τὰ παιδία ἅ μοι ἔδωκεν ὁ Θεός. ϗ ἔσται (ρ) σημεῖα ϗ τέρατα (σ) ἐν τῷ οἴκῳ Ἰσραὴλ παρὰ κυρίου Σαβαώθ, ὃς κατοικεῖ ἐν τῷ ὄρει Σι- 19 ών. Καὶ ἐὰν εἴπωσι πρὸς ὑμᾶς, Ζητήσατε τοὺς (τ) ἐγγαστριμύθους, ϗ τοὺς ἀπὸ τῆς γῆς φωνοῦντας, τοὺς κενολογοῦντας, οἳ (υ) ἐκ τῆς κοιλίας φωνοῦσιν· οὐκ ἔθνος πρὸς Θεὸν (φ) αὐτοῦ ἐκζητήσουσι; τί ἐκζητοῦσι περὶ τῶν ζώντων 20 τοὺς νεκρούς; Νόμον γὰρ εἰς βοήθειαν ἔδωκεν, ἵνα εἴπωσιν οὐχ ὡς τὸ ῥῆμα τοῦτο, περὶ οὗ οὐκ 21 ἔστι δῶρα δοῦναι περὶ αὐτοῦ. Καὶ ἥξει ἐφ᾽ ὑμᾶς σκληρὰ λιμός, ϗ ἔσται ὡς ἂν πεινάσητε, λυπηθήσεσθε, ϗ κακῶς ἐρεῖτε τὸν ἄρχοντα ϗ τὰ πάτρια. ϗ ἀναβλέψονται εἰς τὸν 22 οὐρανὸν ἄνω, Καὶ εἰς τὴν γῆν κάτω ἐμβλέψονται· ϗ ἰδοὺ (χ) ἀπορία στενή, ϗ σκότος, θλίψις, ϗ στενοχωρία, καὶ σκότος, ὥστε μὴ βλέπειν. καὶ οὐκ ἀπορηθήσεται ὁ ἐν στενοχωρίᾳ (ψ) ὢν ἕως καιροῦ.

MS.A. (ρ) εἰς σημεῖα (σ) ἐν τῷ Ἰσραὴλ (τ) ἀπὸ τῆς γῆς φωνοῦντας, ϗ τοὺς ἐγγαστριμύθους, (υ) ἀπὸ τῆς κοιλίας (φ) αὐτοῦ τί ἐκζητῶσιν περὶ (χ) θλίψις ϗ στενοχωρία, ϗ σκότος, ἀπορία στενή, ϗ σκότος, (ψ) ἕως καιροῦ.

ΚΕΦ. Θ′.

1 ΤΟῦτο πρῶτον πίε· ταχὺ ποίει χώρα Ζαβουλών, ἡ γῆ Νεφθαλείμ, (α) ϗ οἱ λοιποὶ οἱ τὴν παραλίαν, ϗ πέραν τοῦ Ἰορδάνου Γαλι- 2 λαία τῶν ἐθνῶν (β). Ὁ λαὸς ὁ πορευόμενος ἐν σκότει, ἴδετε φῶς μέγα· οἱ κατοικοῦντες ἐν χώρᾳ (γ) σκιᾷ θανάτου, φῶς λάμψει ἐφ᾽ 3 ὑμᾶς. Τὸ πλεῖστον τοῦ λαοῦ, ὃ κατήγαγες ἐν εὐφροσύνῃ σου· ϗ εὐφρανθήσονται ἐνώπιόν σου, ὡς οἱ εὐφραινόμενοι ἐν ἀμήτῳ, ϗ ὃν τρόπον 4 (δ) οἱ διαιρούμενοι σκῦλα. Διότι (ε) ἀφῄρηται ὁ ζυγὸς ὁ ἐπ᾽ αὐτῶν κείμενος, ϗ ἡ ῥάβδος ἡ ἐπὶ τοῦ τραχήλου αὐτῶν· τὴν γὰρ ῥάβδον τῶν ἀπαιτούντων (ζ) διεσκέδασεν, ὡς τῇ ἡ- 5 μέρᾳ τῇ ἐπὶ Μαδιάμ. Ὅτι πᾶσαν στολὴν ἐπισυνηγμένην δόλῳ, ϗ ἱμάτιον μετὰ καταλλαγῆς ἀποτίσουσι· καὶ θελήσουσιν, εἰ (η) ἐγένον- 6 το πυρίκαυστοι. Ὅτι παιδίον ἐγεννήθη ἡμῖν, υἱὸς ϗ ἐδόθη (θ) ἡμῖν, οὗ ἡ ἀρχὴ ἐγενήθη ἐπὶ τοῦ ὤμου αὐτοῦ, ϗ (ι) καλεῖται τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Μεγάλης βουλῆς (κ) ἄγγελος· ἄξω γὰρ εἰρήνην ἐπὶ τοὺς ἄρχοντας, (λ) ϗ ὑγίειαν αὐτῷ.

MS.A. (α) ὁδὸν θαλάσσης, ϗ οἱ λοιποὶ οἱ τὴν παράλιον κατοικοῦντες, ϗ πέραν (β) τὰ μέρη τῆς Ἰουδαίας. Ὁ λαὸς καθήμενος ἐν σκότει, (γ) ϗ σκιᾷ (δ) εὐφραίνονται οἱ (ε) ἀφαιρεθήσεται (ζ) διεσκέδασεν κύριος, (η) ἐγενήθη ϗ (θ) ὑμῖν, (ι) καλέσει (κ) ἄγγελος, θαυμαστός, σύμβουλος, ἰσχυρός, ἐξουσιαστής, ἄρχων εἰρήνης, πατὴρ τοῦ μέλλοντος αἰῶνος. Ἐγὼ γὰρ ἄξω (λ) εἰρήνην ϗ ὑγίαν

Et dicet; Expectabo Deum, qui avertit faciem suam à domo Jacob: & fidens ero super eum. Ecce ego, & pueri, quos dedit mihi Deus. Et erunt signa, & portenta in domo Israel à Domino Sabaoth, qui habitat in monte Sion. Et, si dixerint ad vos; Quærite ventriloquos, & eos qui de terra loquuntur, vana loquentes, qui de ventre clamitant; nónne gens ad Deum suum exquirent? Quid exquirunt de vivis mortuos? Legem enim in auxilium dedit, ut dicant: non sicut verbum hoc, pro quo non est dare munera pro eo. Et veniet super vos dura fames: & erit, ut esurieritis, contristabimini, et maledicetis principem, & paterna. Et suspicient in cœlum sursum: Et in terram deorsum inspicient: & ecce (l) egestas angusta, & tenebræ, tribulatio, & angustia, & tenebræ, ita ut non sit videre: (m) & non deficiet, qui in angustia fuerit, usque ad tempus. 17 18 19 20 21 22

CAP. IX.

1 *HOc (a) primum bibe, velociter (b) fac; regio Zabulon, terra Nephthalim, & reliqui, qui juxta mare, & trans Jordanem, Galilææ gen-* 2 *tium. Populus, qui ambulabat in tenebris, (c) videte lumen magnum: qui habitatis in regione, (d) umbræ mortis, lumen lucebit super vos:* 3 *Plurima pars populi, (e) quã deduxisti in lætitia (f) tua: & lætabuntur in conspectu tuo, sicut qui lætantur in messe, & sicut hi qui di-* 4 *vidunt spolia: Quia ablatum est jugum, quod supra ipsos erat positum, & virga, quæ super collum eorum. Virgam enim exigentium dissipavit, sicut die, quæ super Ma-* 5 *diam: Quia omnem stolam congregatam dolo, & vestimentum cum commutatione restituent: & cupient, (g) si fiant igne combusti.* 6 *Quia parvulus natus est nobis, filius & datus est nobis, cujus principatus factus est super humerum ejus, & vocatur nomen ejus, (h) Magni consilii angelus. Adducam enim pacem super principes, & sanitatem ei.*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

17 אֲמַר נְבִיָא עַל דָא צַלֵּיתִי קֳדָם יְיָ דַּאֲמַר לְסַלָּקָא שְׁכִנְתֵּיהּ מִדְּבֵית יַעֲקֹב וּבְעֵיתִי מִן
18 קֳדָמוֹהִי׃ הָא עַד דַּאֲנָא קַיָּם וְעוּלֵמַיָּא דִּיהַב לִי יְיָ יִתְקַיְּמוּן בָּנָא אָתִין וּמוֹפְתִין דַּאֲמִירָן
לְמֵיתֵי עַל יִשְׂרָאֵל דְּאִם יֶחֱזוּן וִיתוּבוּן תִּבְטֵל גְּזֵירְתָא דִּי גְזָרָא עֲלֵיהוֹן דְּיִגְלוּן מִלְּאִתְחֲזָאָה
19 קֳדָם יְיָ צְבָאוֹת דִּי שְׁכִנְתֵּיהּ בְּטוּרָא דְצִיּוֹן׃ וַאֲרֵי יֵימְרוּן לְכוֹן עַמְמַיָּא דְּאַתּוּן בֵּינֵיהוֹן תִּבְעוּ
מִן בִּדִּין וּמִן זְכוּרוּ דִּמְנַצְּפִין וְדִמְנַהֲמִין הֲלָא כֵּן אוֹרַח עַמְמַיָּא פָּלְחֵי טַעֲוָתָא עַמָּא מִן
20 טַעֲוָתֵיהּ תָּבְעִין חַיָּא מִן מֵיתַיָּא׃ כְּדֵין תֵּימְרוּן לְהוֹן לְאוֹרַיְתָא דְּאִתְיְהִיבַת לָנָא וּלְסַהֲדוּ
אֲנַחְנָא שָׁמְעִין אֱלָא תִגְלוּן לְבֵינֵי עַמְמַיָּא וְיֵימְרוּן לְכוֹן כְּפִתְגָּמָא הָדֵין מִכְּעַן לֵית לֵיהּ מִן
21 דְּשְׁחַר וְיִבְעֵנֵּיהּ׃ וְיֶעְדֵּי תַּקְלָא בְאַרְעָא וִיהֵי עָקָא וּכְפַן וִיהֵי אֲרֵי יֶחֱזֵי כְּפַן וְסִגּוּף וְיֵילוֹט וְיִבְזֵי
שׁוּם פְּתַכְרֵיהּ וְטַעֲוָתֵיהּ וְיִתְפְּנֵי לְעֵלָּא לְמִבְעֵי פוּרְקָן בָּתַר דְּתִתְחַתֵּם גְּזֵירְתָא וְלָא יִכּוּל׃
22 וְסָעִיד מִיתְבֵי אַרְעָא יִבְעֵי אֲרֵי יֵיתֵי עֲלוֹהִי עָקָא כְּפַן וְשַׁלְהֵוֵי עָקָא קְבַל וּבַדּוּר׃

ט

1 אֲרֵי לָא יִשְׁתַּלְהֵי כָּל דְּיֵיתֵי לְאַעָקָא לְהוֹן כְּעִדָּן קַדְמֵי גְּלוֹ עַם אֲרַע זְבוּלֻן וְעַם אֲרַע
נַפְתָּלִי וּשְׁאָרְהוֹן מֶלֶךְ תַּקִּיף יַגְלֵי עַל דְּלָא אִדְּכַרוּ גְּבוּרַת יַמָּא וְנִסֵּי יַרְדְּנָא קְרָב כְּרַכֵּי
2 עַמְמַיָּא׃ עַמָּא בֵּית יִשְׂרָאֵל דַּהֲווֹ מְהַלְּכִין בְּמִצְרַיִם כִּדְבִקְבָלָא נְפַקוּ לְמֶחֱזֵי נְהוֹר סַגִּי
3 יָתְבִין בְּאַרְעָא טוּלֵימוּתָא נְהוֹרָא אַזְהַר עֲלֵיהוֹן׃ אַסְגֵּיתָא עַמָּא בֵּית יִשְׂרָאֵל לְהוֹן
אַסְגֵּיתָא חֶדְוָא חֲדִיאוּ קֳדָמָךְ כְּחֶדְוַת נָצְחֵי קְרָב כְּמָא דַּהֲווֹ חָדָן בְּפַלְּגוּתְהוֹן בִּזְתָא׃
4 אֲרֵי אַעְדֵּיתָא יַת נִיר מָרְוָתֵיהּ וְיַת שׁוּלְטַן עָקְתֵיהּ שִׁלְטוֹן דַּהֲוָה מְפַלַּח בֵּיהּ אִתְבַּר כְּיוֹם
5 מִדְיָן׃ אֲרֵי כָל מִסַּבְהוֹן וּמִתַּנְהוֹן בְּרֶשַׁע אִתְגְּעַלוּ בְּחוֹבִין הָא כִכְסוּ דִמְלוּשָׁא בִדַם דְּלָא
דְּכָן רִשְׁמֵי כִּתְמָא מִנֵּהּ כֵּן כְּמָא דְּלֵית בֵּיהּ צְרוֹךְ אֱלָהֵן לְאִתּוֹקָדָא בְנוּרָא כֵּן יִתֵּן עֲלֵיהוֹן
6 עַמְמַיָּא דְּתַקִּיפִין כְּאֶשָּׁתָא וְיִקְטְלוּנוּן׃ אָמַר נְבִיָא לְבֵית דָּוִד אֲרֵי רְבֵי אִתְיְלִיד לָנָא בַּר
אִתְיְהַב לָנָא וְקַבֵּיל אוֹרַיְתָא עֲלוֹהִי לְמִטְּרַהּ וְאִתְקְרֵי שְׁמֵיהּ מִן קֳדָם מַפְלִיא עֵצָה אֱלָהָא
גִּבָּרָא קַיָּם לְעָלְמַיָּא מְשִׁיחָא דִּשְׁלָמָא יִסְגֵּי עֲלָנָא בְּיוֹמוֹהִי׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

17 *Dixit propheta*, Pro hoc oravi coram Dño, qui dixit se subducturum majestatem suam de domo Jacob, & deprecatus sum in conspectu ejus. 18 Ecce dum ego vivo & pueri quos dedit mihi Dñs, confirmabuntur in nobis signa & portenta, quæ dicta sunt ut venirent super Israel. Quòd si viderint & conversi fuerint, irrita erit sententia, quæ decreta est super eos ut transmigrent; ne appareant coram Dño exercituum, cujus majestas habitat in monte Sion. 19 Et quando dixerint vobis populi, in quorum medio vos habitatis: Quærite à pythonibus & divinis qui garriunt & gemunt: nonne hæc via est populorum colentium idola? unusquisque populus ab idolo suo requirit, vivi à mortuis. 20 Sic dicetis eis: Legem, quæ data est nobis in testimonium, audivimus. Nisi transmigraveritis inter populos, & dixerint vobis juxta verbum hoc: jam non erit ei qui manè consurgat, & requirat illud. 21 Et transibit corruens in terra, & erit tribulatio & fames. Et erit quando viderit famem & afflictionem, & maledicet & contemnet nomen sacerdotis sui & idoli sui: & respiciet suprà ut quærat salutem, postquam signata est sententia, & non poterit [*obtinere.*] 22 Et auxilium quæret ab habitatoribus terræ, quando venerit super eum tribulatio famis, & *lassitudo* tribulationis, & tenebræ, & dispersio.

CAP. IX.

1 QUoniam non deficiet *omnis* qui veniat ut tribulet eos. Primo tempore transmigraverunt *populus terræ* Zabulon & *populus terræ* Nepthali: & qui remanserint ex eis, rex fortis eos abducet in captivitatem, eò quòd non sunt recordati potentiæ quæ facta est in mari [*rubro.*] & miraculorum [*quæ facta sunt in*] Jordane, & belli civitatum populorum. 2 Populus domus Israel, qui ambulabat in Ægypto sicut in tenebris, egressi sunt ut viderent lumen magnum: habitantibus in terra umbræ mortis, lux orta est eis. 3 Multiplicâsti populum domus Israel, ipsis multiplicâsti lætitiam, lætati sunt coram te sicut lætantur victores prælii, sicut lætantur cùm dividunt spolia. 4 Quoniam *sustulisti* jugum subjectionis ejus, & dominium tribulationis ejus, dominium quo serviebant ei, contritum est sicut in die Madian. 5 Quoniam omnis acceptio & datum eorum est in malitiam. Coinquinati sunt in peccatis, sicut vestimentum quod involutum est in sanguine, cujus maculas fullones non possunt mundare ab eo; & sic ad nihilum valet, nisi ut comburatur igni. Sic *dabit* contra eos *populos*, qui fortes sunt sicut ignis; & occident eos. 6 Dicit propheta domui David, Quoniam parvulus natus est nobis, filius datus est nobis: & suscepit legem super se ut servaret eam: & vocabitur nomen ejus à facie Admirabilis consilii Deus, vir permanens in æternum, Christus, cujus pax multiplicabitur super nos in diebus ejus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

17 * ܒܝܘܠܦܢܝ ܐܣܟܐ ܠܡܪܝܐ ܕܐܗܦܟ ܐܦܘܗܝ ܡܢ ܒܝܬܗ ܕܝܥܩܘܒ ܘܐܣܟܝܘܗܝ. * ܗܐ ܐܢܐ
18 ܘܒܢܝܐ ܕܝܗܒ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܠܐܬܐ ܘܠܬܕܡܪܬܐ ܒܐܝܣܪܝܠ. ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܕܥܡܪ
ܒܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ. * ܘܐܢ ܢܐܡܪܘܢ ܠܟܘܢ. ܕܫܐܠܘ ܡܢ ܐܣܘܬܐ ܘܡܢ ܚܪܫܐ ܕܡܢܨܦܨܦܝܢ 19
ܘܡܗܓܝܢ. ܠܐ ܗܘܐ ܥܡܗ ܕܐܠܗܐ ܐܝܠܝܢ ܕܫܐܠܝܢ ܠܡܝܬܐ ܥܠ ܚܝܐ. * ܠܢܡܘܣܐ 20
ܘܠܣܗܕܘܬܐ. ܕܠܐ ܢܐܡܪܘܢ ܐܝܟ ܡܠܬܐ ܗܕܐ. ܕܠܝܬ ܠܗ ܫܘܚܕܐ. * ܘܢܥܒܪ 21
ܒܗ. ܘܢܩܫܝܗ ܘܢܟܦܢ. ܘܡܐ ܕܟܦܢ ܢܪܓܙ. ܘܢܨܚܐ ܒܡܠܟܗ ܘܒܐܠܗܗ. * ܘܢܚܘܪ 22
ܠܥܠ. ܘܒܐܪܥܐ ܢܚܘܪ. ܘܐܘܠܨܢܐ. ܘܚܫܘܟܐ. ܘܥܩܬܐ ܘܥܡܛܢܐ ܢܕܚܘܢܝܗܝ. ܡܛܠ
ܕܠܐ ܢܥܝܩ ܠܐܝܢܐ ܕܡܥܩ. ܐܝܟ ܕܒܙܒܢܐ ܩܕܡܝܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܛ *

1 * ܣܘܪܗܒܝ ܐܪܥܐ ܕܙܒܘܠܘܢ. ܘܐܪܥܐ ܕܢܦܬܠܝ. ܘܣܓܝ ܫܘܠܛܢܐ. ܐܘܪܚܐ ܕܝܡܐ. ܥܒܪܘܗܝ
2 ܕܝܘܪܕܢܢ ܢܗܪܐ. ܓܠܝܠܐ ܕܥܡܡܐ. * ܥܡܡܐ ܕܡܗܠܟܝܢ ܒܚܫܘܟܐ. ܢܚܙܘܢ ܢܘܗܪܐ ܪܒܐ.
3 ܘܕܝܬܒܝܢ ܒܐܪܥܐ ܕܛܠܠܝ ܡܘܬܐ. ܢܘܗܪܐ ܢܕܢܚ ܥܠܝܗܘܢ. * ܐܣܓܝܬ ܥܡܐ. ܘܠܗ
ܐܪܒܝܬ ܚܕܘܬܐ. ܚܕܝܘ ܩܕܡܝܟ. ܐܝܟ ܗܢܘܢ ܕܚܕܝܢ ܒܚܨܕܐ. ܘܐܝܟ ܗܢܘܢ ܕܪܘܙܝܢ ܡܐ
4 ܕܡܦܠܓܝܢ ܒܙܬܐ. * ܡܛܠ ܕܢܝܪܐ ܕܫܥܒܕܘܬܗܘܢ. ܘܫܒܛܐ ܕܟܬܦܬܗܘܢ. ܘܫܒܛܐ
5 ܕܡܫܥܒܕ ܗܘܐ ܠܗܘܢ. ܬܒܪܬ ܐܝܟ ܝܘܡܐ ܕܡܕܝܢ. * ܡܛܠ ܕܟܠ ܩܠܐ ܕܡܫܬܡܥ
6 ܒܪܘܓܙܐ. ܘܢܚܬܐ ܡܨܒܥܐ ܒܕܡܐ. ܘܗܘܬ ܠܡܘܩܕܐ ܘܠܡܐܟܘܠܬܐ ܕܢܘܪܐ. * ܡܛܠ
ܕܛܠܝܐ ܐܬܝܠܕ ܠܢ. ܘܒܪܐ ܐܬܝܗܒ ܠܢ: ܘܗܘܐ ܫܘܠܛܢܗ ܥܠ ܟܬܦܗ. ܘܐܬܩܪܝ ܫܡܗ
ܬܕܡܪܐ ܘܡܠܟܐ. ܐܠܗܐ ܓܢܒܪܐ ܕܥܠܡܐ. ܫܠܝܛܐ ܕܫܠܡܐ.

* *Ego verò* in doctrina mea expectabo Dominum 17
qui avertit faciem ſuam à familia Jacobi,
eúmque præſtolabor. En ego & filii quos 18
conceſſit mihi Dominus, portento & miraculo
ſumus in Iſraele, à Domino potentiſſimo
qui habitat in monte Sion. Et cùm dixerint 19
vobis, Conſulite hariolos & divinos qui
grunniunt & mugiunt; nequaquam populus
Dei ſunt ii qui mortuos conſulunt de vivis.
Legem & teſtimonium *conſulite*, ut ne proferant 20
hujuſmodi ſermonem, pro quo nullum
dari poteſt munus. Tranſibit per eam, durámque 21
reddet illam, & eſuriet; cúmque eſurierit,
iraſcetur, & blaſphemabit regem ſuum
& Deum ſuum. Surſum vertet *oculos* ſuos, 22
& terram intuebitur; & anguſtia, tenebræ,
calamitas, atque caligo propulſabunt
eum: non enim exagitabit eum qui eſt afflictus,
ut præcedenti tempore.

CAP. IX.

* FEſtinavit terra Zebolon & terra Nephtali, 1
& crevit imperium: via maritima, ulteriores
Jordanis fluminis partes, Galilæa populoſa,
Gentes quæ ambulant in tenebris, videbunt 2
lucem magnam; & ſuper eos qui ſedent in
regione umbræ mortis, lux orietur. Multiplicâſti 3
populum, eíque magnificâſti lætitiam:
lætati ſunt coram te ſicut hi qui lætantur
in meſſe, & ſicut hi qui geſtiunt cùm prædam
partiuntur: Quoniam jugum ſervitutis 4
eorum, & fuſtim humeri eorum, & virgam
quæ opprimebat eos, confregiſti ut diem
Median. Quivis enim ſtrepitus, cum terrore 5
audiebatur, et veſtimentũ ſanguine intinctum
erat, denique abiit in combuſtionem & in
pabulum ignis. Nam puer natus eſt nobis, & 6
filius datus eſt nobis factúmq; eſt imperium
ejus ſuper humerum ipſius, & vocatum eſt
nomen ejus Admiratio, & Conſiliarius, Deus
ſeculorum fortiſſimus, Princeps pacis;

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

17 * ويقول أنتظر الله الذي أصرف وجهه عن بيت يعقوب * وأكون متوكلا عليه * هاأنذا
18 والبنون الذين أعطانيهم الله * ويكون آيات ومعجزات كثيرات في بيت إسرائيل من قبل
19 رب الجيوش الذي يسكن في جبل صهيون * وإن قالوا لكم * اطلبوا الذين يصوتون
من الأرض والخرافات في البطن * الذين يقولون الباطل * إن الذين يصوتون من البطن
20 ليس هم أمة لإلههم * لماذا تسألون الموتى عن الأحياء * لأنه أعطاهم شريعة للمعونة * لكيما
21 يقولوا ليس مثل هذا القول الذي من أجله لن تعطى هدية عنه * وستأتي عليكم
مجاعة صعبة * ويكون إذا ما جعتم أعميتم * وتتكلمون بالردي على رئيسكم وآبائكم *
22 * وينظرون إلى السماء فوق * وينظرون إلى الأرض أسفل * وإذا شدة وضيقة وظلام وضغطة
ضيقة وظلمة حتى لا يبصرون * ولا يحتار من هو كائن في الضيقة إلى زمان أشرب هذا
أولا * أصنع هذا سريعا *

* الفصل التاسع * · * الإصحاح الخامس *

1 * بلد زابلون * أرض نفتاليم * طريق البحر * وبقية قاطني الساحل * وعبر الأردن * جليل الأمم *
2 نواحي اليهودية * الشعب الجالس في الظلمة أبصر نورا عظيما * الساكنون في الكورة وظلال
3 الموت يشرق الضوء عليكم * كثير الشعب الذي أحدرته في سرورك ويفرحون أمامك
4 كالفرحين في البيدر * وكما يفرحون الذين يقتسمون الغنائم * من أجل أن النير الموضوع
عليهم ينزع * والعصا التي على عنقهم * لأن عصا العصاة أبطلها الرب كما كان في يوم
5 مدين * لأن كل حلة مجموعة بالغش وكل ثوب مصالحة سيعيدونه ويتمنون أن لو كانوا محترقين
6 بالنار * لأن صبيا ولد لنا وابنا أعطيناه * الذي صارت رئاسته على منكبيه * ويدعى
اسمه ملاك المشورة العظمى * مشير عجيب * إله قوي * مسلط * رئيس السلامة * أب الدهر
العتيد * لأني أورد سلامة على الرؤساء * سلامة وصحة لهم *

* *Dicétque, Deum expecto qui avertit* 17
faciem ſuam à domo Jacobi, & meam
in ipſo fiduciam colloco; En ego & 18
filii quos dedit mihi Deus. Fient autem
ſigna & prodigia multa in domo Iſraelis,
à Domino exercituum qui degit
in monte Sionis. Quòd ſi dixerint 19
vobis, Sciſcitamini ab iis qui vocem emittunt
è terra & res deliras è ſtomacho,
qui falſa loquuntur; ſanè qui
vocem è ſtomacho emittunt, nequaquam
ſunt gens Dei ſui. Quare mortuos conſuleretis
de vivis? Nam legem dedit 20
eis in auxilium; quominus dicerent,
Nihil par eſt huic ſermoni, pro quo
nullum par *munus offerri* poteſt. *Et* 21
veniet ſuper vos fames acerbiſſima;
fiétque ut cùm eſurietis, cæci evadatis,
& turpia loquamini de principe
veſtro, deque patribus veſtris. Cœlum, 22
aſpicient ſurſum, & vultum demittent
in terram deorſum, & ecce calamitas,
afflictio, tenebræ, & alliſio miſeriis tenebriſque
plena, ita ut non videant. At
non obſtupeſcet quicunque fuerit in calamitate,
uſque ad tempus quo hæc
priùs propinem: exequar hæc quamprimùm.

CAP. IX.

Textus quintus.

R*Egio Zabolonis, terra Nephtalim, via* 1
maris, & reliqui degentes in ora maritima,
ulterior pars Jordanis, Galilæa gentium,
climata Judææ, Populus qui ſedebat 2
in tenebris, vidit lucem magnam;
Qui habitatis in regione, & umbra mortis,
orietur ſplendor ſuper vos. Multitudo 3
populi quem præ tui exultatione
venire feciſti, gaudebunt etiam coram te
ſicut gaudentes in area, & quemadmodum
lætantur qui dividunt ſpolia: Quia jugum 4
eis impoſitum & fuſtis imminens
cervici eorum, auferetur: nam fuſtim rebellium
abolebit Dominus, uti contigit in
die Median. Etenim omnem ſindonem 5
& omnem veſtitum dolo vel pacificè
comparatum reſtituent, & optabunt ea
eſſe igne combuſta. Puer enim natus eſt 6
nobis, & filius datus eſt nobis, cujus dominium
ſuper humeros ejus, & vocabitur
nomen ejus, Angelus conſilii magni,
Conſiliarius admirabilis, Deus fortis, Imperator,
Dominus pacis, Pater futuri ſeculi:
nam allaturus ſum pacem principibus,
pacem & incolumitatem iiſmetipſis.

יְשַׁעְיָה׃ ט

ſuper finis non pacem ad & , principatum multiplicandum Ad
7 לְםַרְבֵּה הַמִּשְׂרָה וּלְשָׁלוֹם אֵין־קֵץ עַל־
, illud parandum ad , ejus regnum ſuper & , David ſolium
כִּסֵּא דָוִד וְעַל־מַמְלַכְתּוֹ לְהָכִין אֹתָהּ
uſque & , *tunc* ex , juſtitia in & judicio in *illud fulciendum ad* &
וּלְסַעֲדָהּ בְּמִשְׁפָּט וּבִצְדָקָה מֵעַתָּה וְעַד־
Verbum .hoc faciet exercituum Domini Zelus.ſeculum in
8 עוֹלָם קִנְאַת יְהוָה צְבָאוֹת תַּעֲשֶׂה־זֹּאת׃ דָּבָר
ſcient Et .Iſrael in cecidit & , Jahacob in Dominus miſit
9 שָׁלַח אֲדֹנָי בְּיַעֲקֹב וְנָפַל בְּיִשְׂרָאֵל׃ וְיָדְעוּ
, ſuperbia in , Someron *habitans* & , Ephraim ipſe omnis populus
הָעָם כֻּלּוֹ אֶפְרַיִם וְיוֹשֵׁב שֹׁמְרוֹן בְּגַאֲוָה
, ceciderunt Lateres : dicendo , cordis magnitudine in &
10 וּבְגֹדֶל לֵבָב לֵאמֹר׃ לְבֵנִים נָפָלוּ
cedros ſed , ſunt ſuccisæ ſycomori : ædificabimus lapide *exciſo* &
וְגָזִית נִבְנֶה שִׁקְמִים גֻּדָּעוּ וַאֲרָזִים
, eum ſuper Reſin hoſtes Dominus elevabit Et .immutabimus
11 נַחֲלִיף׃ וַיְשַׂגֵּב יְהוָה אֶת־צָרֵי רְצִין עָלָיו
Peliſtim & , Oriente ab Aram .commiſcebit ejus inimicos &
12 וְאֶת־אֹיְבָיו יְסַכְסֵךְ׃ אֲרָם מִקֶּדֶם וּפְלִשְׁתִּים
omni In .ore toto in Iſrael devorabunt & ; *retro à*
מֵאָחוֹר וַיֹּאכְלוּ אֶת־יִשְׂרָאֵל בְּכָל־פֶּה בְּכָל־
.extenta ejus manus adhuc ſed , ejus *naſus* eſt averſus non hoc
זֹאת לֹא־שָׁב אַפּוֹ וְעוֹד יָדוֹ נְטוּיָה׃
& , ipſum percutientem ad reverſus eſt non populus &
13 וְהָעָם לֹא־שָׁב עַד־הַמַּכֵּהוּ וְאֶת־
Dominus excidit Et .quæſierunt non exercituum Dominum
14 יְהוָה צְבָאוֹת לֹא דָרָשׁוּ׃ וַיַּכְרֵת יְהוָה
.una die juncum & *curvum* ramum,caudam & caput Iſrael ab
מִיִּשְׂרָאֵל רֹאשׁ וְזָנָב כִּפָּה וְאַגְמוֹן יוֹם אֶחָד׃
docens propheta & : caput ipſe , *faciebus acceptus* & ,Senex
15 זָקֵן וּנְשׂוּא־פָנִים הוּא הָרֹאשׁ וְנָבִיא מוֹרֶה־
populum beatificantes erunt Et .cauda ipſe , mendacium
16 שֶּׁקֶר הוּא הַזָּנָב׃ וַיִּהְיוּ מְאַשְּׁרֵי הָעָם־
Ideo .*abſorpti* ejus beatificati & : facientes errare , iſtum
17 הַזֶּה מַתְעִים וּמְאֻשָּׁרָיו מְבֻלָּעִים׃ עַל־כֵּן
, ejus pupillorum & , Dominus lætabitur non ejus adoleſcentulis ſuper
עַל־בַּחוּרָיו לֹא־יִשְׂמַח אֲדֹנָי וְאֶת־יְתֹמָיו
, *hypocrita ipſe omnis* quia : miſerebitur non ejus viduarum &
וְאֶת־אַלְמְנֹתָיו לֹא יְרַחֵם כִּי כֻלּוֹ חָנֵף
eſt averſus non hoc omni In .ſtultitiam *loquens* os omne &,*malignus* &
וּמֵרַע וְכָל־פֶּה דֹּבֵר נְבָלָה בְּכָל־זֹאת לֹא־שָׁב
eſt ſuccenſa Quia .extenta ejus manus adhuc ſed : ejus *naſus*
18 אַפּוֹ וְעוֹד יָדוֹ נְטוּיָה׃ כִּי־בָעֲרָה
ſuccendetur & : vorabit ſpinam & , veprem ; impietas ignis tanquam
כָאֵשׁ רִשְׁעָה שָׁמִיר וָשַׁיִת תֹּאכֵל וַתִּצַּת
fervida ira In .*fumi altitudine ſe extulerunt* & , ſylvæ *perplexitatibus* in
19 בְּסִבְכֵי הַיַּעַר וַיִּתְאַבְּכוּ גֵּאוּת עָשָׁן׃ בְּעֶבְרַת
eſca tanquam populus fuit & : terra eſt obſcurata exercituum Domini
יְהוָה צְבָאוֹת נֶעְתַּם אָרֶץ וַיְהִי הָעָם כְּמַאֲכֹלֶת
, dexteram ad *ſe ſeparabit* Et .*parcent* non *ſuum fratrem ad* vir : ignis
20 אֵשׁ אִישׁ אֶל־אָחִיו לֹא יַחְמֹלוּ׃ וַיִּגְזֹר עַל־יָמִין
unuſquiſque : *ſaturabuntur* non & , ſiniſtram ad comedet &,eſuriet &
וְרָעֵב וַיֹּאכַל עַל־שְׂמֹאול וְלֹא שָׂבֵעוּ אִישׁ
Ephraim & , Ephraim Menaſſeh .*comedent* ſui brachii carnem
21 בְּשַׂר־זְרֹעוֹ יֹאכֵלוּ׃ מְנַשֶּׁה אֶת־אֶפְרַיִם וְאֶפְרַיִם
eſt averſus non hoc omni in,Jehudah contra ipſi ſimul , Menaſſeh
אֶת־מְנַשֶּׁה יַחְדָּו הֵמָּה עַל־יְהוּדָה בְּכָל־זֹאת לֹא־שָׁב
.extenta ejus manus adhuc ſed,ejus *naſus*
אַפּוֹ וְעוֹד יָדוֹ נְטוּיָה׃

Verſio VULG. LAT.

7 Multiplicabitur ejus imperiũ, & pacis non erit finis: ſuper ſolium David, & ſuper regnum ejus ſedebit: ut confirmet illud, & corroboret in judicio & juſtitia, amodò & uſque in ſempiternum: zelus Domini exer- 8 cituum faciet hoc. Verbum miſit Dominus in Jacob, & ce- 9 cidit in Iſrael. Et ſciet omnis populus Ephraim, & habitantes Samariam, in ſuperbia & magnitudine cordis dicentes; 10 Lateres ceciderunt, ſed quadris lapidibus ædificabimus: ſycomoros ſucciderunt, ſed cedros 11 immutabimus. Et elevabit Dominus hoſtes Raſin ſuper eum, & inimicos ejus in tumulum 12 vertet: Syriam ab Oriente, et Philiſthiim ab Occidente: & devorabunt Iſrael toto ore. In omnibus his non eſt averſus furor ejus, ſed adhuc manus ejus 13 extenta: Et populus non eſt reverſus ad percutientem ſe, et Dominum exercituum non in- 14 quiſierunt. Et diſperdet Dominus ab Iſrael caput & caudam, incurvantem & refrænan- 15 tem, die unâ. Longævus & honorabilis, ipſe eſt caput: & propheta docens mendacium, 16 ipſe eſt cauda. Et erunt, qui beatificant populum iſtum, ſeducentes: & qui beatificantur, 17 præcipitati. Proper hoc ſuper adoleſcentulis ejus non lætabitur Dominus: & pupillorum ejus, & viduarum non miſerebitur: quia omnis hypocrita eſt & nequam, & univerſum os locutum eſt ſtultitiam. In omnibus his non eſt averſus furor ejus, ſed adhuc manus ejus 18 extenta. Succenſa eſt enim quaſi ignis impietas, veprem & ſpinam vorabit: & ſuccendetur in denſitate ſaltûs, & con- 19 volvetur ſuperbia fumi. In ira Domini exercituum conturbata eſt terra, & erit populus quaſi eſca ignis: vir fra- 20 tri ſuo non parcet. Et declinabit ad dexteram, & eſuriet: & comedet ad ſiniſtram, & non ſaturabitur: unuſquiſque carnem brachii ſui vorabit; Manaſſes Ephraim, et Ephraim Manaſſen, ſimul ipſi contra Ju- 21 dam. In omnibus his non eſt averſus furor ejus, ſed adhuc manus ejus extenta.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

7 Μεγάλη ἡ ἀρχὴ αὐτοῦ, ϗ τῆς εἰρήνης αὐτοῦ οὐκ ἔστιν ὅριον· ἐπὶ τὸν θρόνον Δαβὶδ, ϗ τὴν βασιλείαν αὐτοῦ, κατορθῶσαι αὐτὴν, ϗ ἀντιλαβέσθαι (μ) ἐν κρίματι ϗ ἐν δικαιοσύνῃ, ἀπὸ τοῦ νῦν ϗ εἰς τὸν (ν) αἰῶνα. ὁ ζῆλος 8 κυρίου Σαβαὼθ ποιήσει ταῦτα. Θάνατον ἀπέστειλε κύριος ἐπὶ Ἰακὼβ, ϗ ἦλθεν 9 ἐπὶ Ἰσραήλ. Καὶ γνώσονται πᾶς ὁ λαὸς τοῦ Ἐφραὶμ, ϗ οἱ (ξ) καθήμενοι ἐν Σαμαρείᾳ, ἐφ᾽ ὕβρει ϗ ὑψηλῇ καρδίᾳ λέγοντες, 10 Πλίνθοι πεπτώκασιν, ἀλλὰ δεῦτε λαξεύσωμεν λίθους, ϗ (ο) κόψωμεν συκαμίνους ϗ κέδρους, ϗ (˙) οἰκοδομήσωμεν ἑαυτοῖς πύργον. 11 Καὶ ῥάξει ὁ θεὸς τοὺς (π) ἐπανισταμένους ἐπὶ ὄρος Σιὼν ἐπ᾽ αὐτὸν, ϗ τοὺς ἐχθροὺς (ρ) 12 διασκεδάσει. Συρίαν ἀφ᾽ ἡλίου ἀνατολῶν, ϗ τοὺς Ἕλληνας ἀφ᾽ ἡλίου δυσμῶν, τοὺς κατεσθίοντας τὸν Ἰσραὴλ ὅλῳ τῷ στόματι. (σ) ἐπὶ πᾶσι τούτοις οὐκ ἀπεστράφη ὁ θυμὸς, 13 ἀλλ᾽ ἔτι ἡ χεὶρ ὑψηλή. Καὶ ὁ λαὸς οὐκ (¨) ἐπεστράφη, ἕως ἐπλήγη, ϗ τὸν κύριον οὐκ 14 (τ) ἐζήτησαν. Καὶ ἀφεῖλε κύριος ἀπὸ Ἰσραὴλ, κεφαλὴν ϗ οὐρὰν, μέγαν ϗ μικρὸν, 15 ἐν μιᾷ ἡμέρᾳ, Πρεσβύτην, ϗ τοὺς τὰ πρόσωπα θαυμάζοντας, αὕτη ἡ ἀρχή· ϗ προφήτην διδάσκοντα ἄνομα, οὗτος ἡ οὐρά. 16 Καὶ ἔσονται οἱ μακαρίζοντες τὸν λαὸν τοῦτον πλανῶντες, ϗ πλανῶσιν, ὅπως 17 (ᵘ) καταπίνωσιν αὐτούς. Διὰ τοῦτο ἐπὶ τοὺς νεανίσκους (υ) αὐτῶν οὐκ εὐφρανθήσεται ὁ κύριος, ϗ τοὺς ὀρφανοὺς αὐτῶν ϗ τὰς χήρας αὐτῶν οὐκ ἐλεήσει· ὅτι πάντες ἄνομοι ϗ πονηροὶ, ϗ πᾶν στόμα λαλεῖ ἄδικα. ἐπὶ πᾶσι τούτοις οὐκ ἀπεστράφη ὁ θυμὸς, ἀλλ᾽ 18 ἔτι ἡ χεὶρ ὑψηλή. Καὶ καυθήσεται ὡς πῦρ ἡ ἀνομία, ϗ ὡς ἄγρωστις ξηρὰ βρωθήσεται ὑπὸ πυρός· ϗ καυθήσεται ἐν τοῖς δάσεσι τοῦ δρυμοῦ, καὶ συγκαταφάγεται τὰ 19 κύκλῳ τῶν βουνῶν πάντα. Διὰ θυμὸν ὀργῆς κυρίου (φ) συγκέκαυται ἡ γῆ ὅλη. ϗ ἔσται ὁ λαὸς ὡς (χ) κατακεκαυμένος ὑπὸ πυρός. ἄνθρωπος τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ οὐκ ἐλε- 20 ήσει· Ἀλλὰ ἐκκλινεῖ εἰς τὰ δεξιὰ, ὅτι πεινάσει, ϗ φάγεται ἐκ τῶν ἀριστερῶν, ϗ οὐ μὴ ἐμπλησθῇ ἄνθρωπος ἔσθων τὰς σάρκας τοῦ βραχίονος (ψ) αὐτοῦ. φάγεται γὰρ (ω) Μανασσῆς τοῦ Ἐφραὶμ, ϗ Ἐφραὶμ τοῦ (ʺ) Μανασσῆ, ὅτι ἅμα πολιορκήσουσι τὸν Ἰού- 21 δαν. Ἐπὶ τούτοις πᾶσιν οὐκ ἀπεστράφη ὁ θυμὸς, ἀλλ᾽ ἔτι ἡ χεὶρ ὑψηλή.

Magnus principatus illius, & pacis ejus non eſt terminus: ſuper thronum David, & regnum ejus, ut corrigat illud, & auxilietur in judicio, & in juſtitia ex hoc nunc, & in ſeculum. Zelus Domini Sabaoth faciet hæc. (i) Mortem miſit Dominus ſuper Jacob: & venit ſuper Iſrael. Et cognoſcent omnis populus Ephræm, & ſedentes in Samaria, in contumelia & excelſo corde dicentes; Lateres ceciderunt: ſed venite, dolemus lapides, & ſuccidamus ſycomoros, & cedros, & ædificemus nobis turrim. Et allidet Deus eos, qui conſurgunt contra montem Sion, (k) ſuper eum, & (l) inimicos diſſipabit: Syriam à Solis ortu, & Græcos à Solis occaſu, devorantes Iſrael toto ore. In omnibus his non eſt averſus furor: ſed adhuc manus excelſa. Et populus non eſt reverſus; donec percuſſus eſt: & Dominum non quæſierunt. Et (m) abſtulit Dominus ab Iſrael, caput, & caudam, magnum, & parvum, in una die, Senem, & (n) eos qui facies admirantur: (hoc eſt principium:) et prophetam docentem iniqua: (hic eſt cauda.) Et erunt qui beatum dicunt populum iſtum, ſeducentes: et ſeducunt, ut devorent eos. Propter hoc ſuper adoleſcentulis eorum non lætabitur Dominus: & pupillorum eorum, et viduarum eorum non miſerebitur: quoniam omnes iniqui, & nequam; et omne os loquitur injuſta. In omnibus his non eſt averſus (o) furor, ſed adhuc manus excelſa. Et ſuccendetur quaſi ignis, iniquitas: & tanquam gramen ſiccum, vorabitur ab igne: et ſuccendetur in denſitatibus ſaltûs: et devorabit quæ in circuitu collium omnia: Propter furorem iræ Domini combuſta eſt tota terra, & erit populus tanquam combuſtus ab igne. Homo fratris ſui non miſerebitur: Sed declinabit ad dexteram, quia eſuriet: & comedet à ſiniſtris, & non ſaturabitur; homo comedens carnes brachii ſui. Comedet enim Manaſſes Ephræm, et Ephræm Manaſſem: quoniam ſimul oppugnabunt Judam. In his omnibus non eſt averſus furor, ſed adhuc manus excelſa. 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21

MS.A. (μ) αὐτῆς ἐν δικαιοσύνῃ ϗ ἐν κρίματι, ἀπὸ (ν) αἰῶνα χρόνον. (ξ) ἐγκαθήμενοι (ο) ἐκκόψωμεν (˙) ᾠκοδομήσωμεν (π) ἐπανισταμένους ἐπ᾽ ὄρους Σιὼν ἐπ᾽ αὐτοὺς, (ρ) αὐτῶν διασκεδάσει. (σ) ἐπεὶ τούτοις πᾶσιν (¨) ἀπεστράφη, (τ) ἐξεζήτησαν. (ᵘ) καταπίωσιν (υ) οὐκ εὐφρανθήσεται (φ) συγκαυθήσεται (χ) ὑπὸ πυρὸς κατακεκαυμένος. (ψ) τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ. (ω) Μαννασσῆ (ʺ) Μαννασσῆ,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

7 סַגֵי רְבוּ לְעָבְדֵי אוֹרַיְתָא וּלְנָטְרֵי שְׁלָמָא לֵית סוֹף עַל כּוּרְסֵיהּ דָּוִד וְעַל מַלְכוּתֵיהּ לְאַתְקָנָא
8 יָתַהּ וּלְמִבְנָא בְּדִינָא וּבִזְכוּתָא מִכְּעַן וְעַד עָלְמָא בְּמֵימְרָא דַיְיָ צְבָאוֹת תִּתְעֲבֵד דָּא׃ פִּתְגָמָא
9 שְׁלַח יְיָ בְּדְבֵית יַעֲקֹב וְאִשְׁתְּמַע בְּיִשְׂרָאֵל׃ וְאִתְרַבְרַבוּ עַמָּא כּוּלְּהוֹן אֶפְרַיִם וְיָתֵב שָׁמְרוֹן
10 בְּרְבוּ וּבְתְקוֹף לְבָב לְמֵימַר׃ רֵישַׁיָא גְלוֹ וּדְטָבִין מִנְּהוֹן נְמַנֵּי נִכְסַיָא אִתְבְּזַזוּ וּדְשַׁפִּירִין
11 מִנְּהוֹן נִקְנֵי׃ וְתַקֵּיף יְיָ סָנְאָה רְצִין עֲלוֹהִי וְיָת בַּעֲלֵי דְבָבוֹהִי יְעָרֵר׃ אֲרָם מִמַּדִנְחָא
12 וּפְלִשְׁתָּאֵי מִמַּעַרְבָא וּבְזוֹ יָת נִכְסֵי יִשְׂרָאֵל בְּכָל אֲתַר בְּכָל דָּא לָא תָבוּ מֵחוֹבֵיהוֹן דִּיתִיב
13 רוּגְזֵיהּ מִנְּהוֹן וְעַד כְּעַן מַתְקְפִין מֶרְדֵיהוֹן וְעוֹד מַחְתֵיהּ עֲתִידָה לְאִתְפְּרַע מִנְּהוֹן׃ וְעַמָּא
14 לָא תָבוּ לְפוּלְחָן מִן דְּאַיְתֵי עֲלֵיהוֹן מָחָא וְאוּלְפָן מִן קֳדָם יְיָ צְבָאוֹת לָא תְבָעוּ׃ וְשֵׁצֵי יְיָ
15 מִיִּשְׂרָאֵל רֵישׁ וְהֶגְמוֹן שִׁלְטוֹן וְאִטְרוֹן יוֹמָא חָד׃ סָב וּנְסִיב אַפִּין הוּא רֵישָׁא וְסָפַר מַלִּיף
16 17 שְׁקַר הוּא חַלָּשָׁא׃ וַהֲווֹ מְשַׁבְּחֵי עַמָּא הָדֵין מַטְעַן וְרַבְרְבָנוֹהִי מְסַלְעֲמִין׃ עַל כֵּן עַל
עוּלֵמוֹהִי לָא יֶחְדֵי יְיָ וְעַל יַתְמוֹהִי וְעַל אַרְמְלָתוֹהִי לָא יְרַחֵם אֲרֵי כוּלְּהוֹן חֲנֵפִין וּבִישִׁין
וְכָל פּוּמְּהוֹן מְמַלְּלִין שְׁקַר בְּכָל דָּא לָא תָבוּ מֵחוֹבֵיהוֹן דִּיתוּב רוּגְזֵיהּ מִנְּהוֹן וְעַד כְּעַן
18 מַתְקְפִין מֶרְדֵיהוֹן וְעוֹד מָחְתֵיהּ עֲתִידָא לְאִתְפְּרָעָא מִנְּהוֹן׃ אֲרֵי תַדְלֵיק כְּאֶשָּׁתָא פּוּרְעֲנוּת
19 חוֹבֵיהוֹן חַטָּאַיָא וְחַיָּבַיָא תְּשֵׁיצֵי וְתִשְׁלוֹט בִּשְׁאָר עַמָּא וּתְשֵׁיצֵי סַגֵּי מַשְׁרְיָתָא׃ בְּתַעֲבוּר מִן
20 קֳדָם יְיָ צְבָאוֹת הֲרוֹכַת אַרְעָא וַהֲוָה עַמָּא כִּיקֵדַת נוּר גְּבַר עַל אֲחוּהִי לָא חָיְסִין׃ וּבַז מִן
21 דָּרוֹמָא וּכְפֵין וְשֵׁיצֵי מִן צִפּוּנָא וְלָא סְבַע גְּבַר נִכְסֵי קָרִיבֵיהּ יִבְזוּן׃ דְּבֵית מְנַשֶּׁה עִם דְּבֵית
אֶפְרַיִם וּדְבֵית אֶפְרַיִם עִם דְּבֵית מְנַשֶּׁה כַּחֲדָא יִתְחַבְּרוּן לְמֵיתֵי עַל דְּבֵית יְהוּדָה בְּכָל
דָּא לָא תָבוּ מֵחוֹבֵיהוֹן דִּיתוּב רוּגְזֵיהּ מִנְּהוֹן וְעַד כְּעַן מַתְקְפִין מֶרְדֵיהוֹן וְעוֹד מַחְתֵיהּ
עֲתִידָא לְאִתְפְּרַע מִנְּהוֹן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Multiplicabitur magnitudo operantibus legem, & cuſtodientibus pacem, 7 non erit finis, ſuper ſolium David & ſuper regnum ejus: ut ſtabiliat & ædificet illud in judicio & in juſtitia, à modo & uſq; in ſeculum. Verbo Dñi exercituum fiet hoc. Verbum miſit Dñs in domum Jacob, & auditum eſt in 8 Iſrael. Et magnificat⁹ eſt populus omnis, Ephraim & habitator Samariæ, 9 in magnitudine & in fortitudine cordis, dicentes: Principes tranſmigra- 10 runt, & meliores eis conſtituem⁹: ſubſtantiæ direptæ ſunt, & pulchriora his ememus. Et confortabit Dñs hoſtes Raſin ſuper eum, & inimicos ejus 11 excitabit. Syriam ab Oriente, & Philiſtæos ab Occidente; & diripuerunt 12 ſubſtantiam Iſrael in omni loco. In omnib⁹ his non ſunt converſi à peccatis ſuis, ut averteretur ira ejus ab eis: & adhuc retinent ſcelera ſua, & adhuc plaga ej⁹ futura eſt, ut vindictam ſumat ab eis. Et popul⁹ non eſt con- 13 verſus ad cultum Dei, donec adduxit ſuper eos percuſſionem: & doctrinã à facie Dñi exercituũ non quæſierunt. Et diſperdet Dñs ab Iſrael principē & 14 præfectũ, dominatorē, & ſatrapam in die una. Senex & acceptabilis vultu 15 ipſe eſt princeps: & ſcriba docens mendaciũ, ipſe eſt infirm⁹. Et fuerunt 16 laudantes populũ hunc ſeducentes, & principes ejus deglutientes. Propter 17 hoc ſuper adoleſcentulis ejus non lætabitur Dñs; & ſuper pupillis ej⁹ & ſuper viduis ej⁹ non miſerebitur; quia omnes ſunt hypocritæ & maligni: & omne os eorum locutum eſt mendacium. In omnib⁹ his non ſunt converſi à peccatis ſuis, ut avertatur furor ejus ab eis: & adhuc retinent ſcelera ſua, & adhuc plaga ejus futura eſt, ut vindictã ſumat ab eis. Quoniam ſuccenſa 18 eſt quaſi ignis ultio peccatorum eorum: *peccatores &* impios conſumet, & dominabitur in reliquum populũ, & conſumet multitudinem exercituum. Præ ira à facie Dñi exercituum *aduſta* eſt terra, & fuit popul⁹ ſicut incen- 19 dium ignis. Vir ſuper fratrem ſuum non miſerebitur. Et diripiet ab Auſtro, 20 & eſuriet; & conſumet ab Aquilone, & non ſaturabitur: unuſquiſq; ſubſtantiam proximi ſui diripient, Viri domus Manaſſe cum domo Ephraim, 21 & viri domus Ephraim cum domo Manaſſe ſimul jungentur, ut veniant contra domum Juda. In *omni* hoc non ſunt converſi à peccatis ſuis, ut averteretur furor ejus ab eis: & adhuc retinent ſcelera ſua, & adhuc plaga ejus futura eſt, ut vindictam ſumat ex eis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܠܣܘܓܐܐ ܕܫܘܠܛܢܗ ∴ ܘܠܫܠܡܗ ܠܝܬ ܣܟܐ. ܥܠ ܟܘܪܣܝܗ ܕܕܘܝܕ. ܘܥܠ 7
ܡܠܟܘܬܗ. ܕܢܬܩܢܝܗ ܘܢܣܡܟܝܗ ܒܕܝܢܐ ܘܒܙܕܝܩܘܬܐ ∴ ܡܢ ܗܫܐ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ.
ܛܢܢܗ ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܬܥܒܕ ܗܕܐ. * ܦܬܓܡܐ ܫܕܪ ܡܪܝܐ ܒܝܥܩܘܒ. ܘܢܦܠ ܒܐܝܣܪܐܝܠ. 8
* ܘܢܕܥܘܢ ܥܡܡܐ ܟܠܗܘܢ ∴ ܐܦܪܝܡ ܘܥܡܘܪܘܗܝ ܕܫܡܪܝܢ. ܒܫܘܒܗܪܐ ܘܒܪܘܪܒܐ ܕܠܒܐ. 9
ܘܐܡܪܝܢ. * ܠܒܢܐ ܢܦܠܘ. ܘܟܐܦܐ ܢܦܣܘܠ. ܫܩܡܐ ܢܦܣܘܩ. ܘܐܪܙܐ ܢܚܠܦ. * ܘܢܥܫܢ 10 11
ܡܪܝܐ ܠܐܠܘܨܘܗܝ ܕܪܨܝܢ. ܥܠܘܗܝ. ܘܠܒܥܠܕܒܒܘܗܝ. * ܠܐܕܘܡ ܡܢ ܡܕܢܚܐ. 12
ܘܠܦܠܫܬܝܐ ܡܢ ܡܥܪܒܐ. ܘܢܐܟܠܘܢܗ ܠܐܝܣܪܐܝܠ ܒܟܠܗ ܦܘܡܗܘܢ. ܘܒܟܠܗܝܢ
ܗܠܝܢ ܠܐ ܗܦܟ ܪܘܓܙܗ ∴ ܐܠܐ ܬܘܒ ܐܝܕܗ ܪܡܐ. * ܘܥܡܐ ܠܐ ܐܬܦܢܝ ܥܕܡܐ 13
ܕܡܚܝܘ. ܘܠܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܠܐ ܒܥܘ. * ܘܢܘܒܕ ܡܪܝܐ ܡܢ ܐܝܣܪܐܝܠ ∴ ܪܫܐ 14
ܘܕܘܢܒܬܐ. ܒܝܘܡܐ ܚܕ. * ܣܒܐ ܘܢܣܒ ܒܐܦܐ ܗܘܝܘ ܪܫܐ. ܘܢܒܝܐ ܕܡܠܦ 15
ܫܘܩܪܐ. ܗܘܝܘ ܕܘܢܒܬܐ. * ܘܢܗܘܘܢ ܡܬܡܠܟܢܘܗܝ ܕܥܡܐ ܗܢܐ ∴ ܡܛܥܝܢܐ 16
ܘܡܬܒܠܥܝܢ ܒܗ. * ܡܛܠ ܗܢܐ. ܠܐ ܢܚܕܐ ܡܪܝܐ ܥܠ ܥܠܝܡܘܗܝ. ܘܥܠ ܝܬܡܘܗܝ 17
ܘܥܠ ܐܪܡܠܬܗܘܢ ∴ ܠܐ ܢܪܚܡ. ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ ܚܢܦܝܢ ܘܒܝܫܝܢ. ܘܟܠ ܦܘܡ
ܡܡܠܠ ܣܟܠܘܬܐ. ܘܒܟܠܗܝܢ ܗܠܝܢ ܠܐ ܗܦܟ ܪܘܓܙܗ ∴ ܐܠܐ ܬܘܒ ܐܝܕܗ ܪܡܐ.
* ܡܛܠ ܕܝܩܕܬ ܚܛܝܬܐ ܐܝܟ ܢܘܪܐ. ܘܬܐܟܘܠ ܟܘܒܐ ܘܚܘܬܐ. ܘܬܕܠܩ ܒܥܒܝܐ 18
ܕܥܒܐ. ܘܢܬܚܒܟܘܢ ܒܬܢܢܐ ܓܒܝܐ. * ܒܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ∴ ܬܙܘܥ ܐܪܥܐ. ܘܢܗܘܐ 19
ܥܡܐ ܐܝܟ ܗܘ ܕܐܟܠܬܗ ܢܘܪܐ. ܘܓܒܪ ܥܠ ܐܚܘܗܝ ܠܐ ܢܚܘܣ. * ܘܢܓܙܘܪ ܥܠ ܝܡܝܢܗ. 20
ܘܢܟܦܢ. ܘܢܐܟܘܠ ܥܠ ܣܡܠܗ. ܘܠܐ ܢܣܒܥܘܢ ܓܒܪ ܒܣܪܐ ܕܕܪܥܗ. * ܢܐܟܘܠ 21
ܡܢܫܐ ܠܐܦܪܝܡ ∴ ܘܐܦܪܝܡ ܠܡܢܫܐ. ܘܐܟܚܕܐ ܥܠ ܝܗܘܕܐ. ܘܒܟܠܗܝܢ ܗܠܝܢ ܠܐ
ܗܦܟ ܪܘܓܙܗ ∴ ܐܠܐ ܬܘܒ ܐܝܕܗ ܪܡܐ.

Cujus principatûs amplitudini & paci nullus 7
erit terminus ſuper ſolium Davidis & regnũ
ejus, ut ſtabiliat illud fulciátque judicio &
juſtitiâ, è nunc in æternum uſque: zelus
Domini fortiſſimi id præſtabit. Sermonem 8
miſit Dominus in Jacob, & cadet in Iſraelem.
Et ſcient omnes populi, Aphrem, & 9
incolæ Samariæ, cum faſtu & magnitudine
cordis; & dicent, Lateres ponamus, & lapides 10
cædamus, ficus ſylveſtres amputemus,
cedróſque ſubſtituamus. At roborabit Dominus 11
adverſarios & inimicos Raſanis contra
ipſum; Adumæos *videlicet* ab Oriente, 12
& Paleſtinos ab Occidente; & devorabunt
Iſraelem toto ore ſuo: in his tamen omnibus
non avertetur furor ejus, ſed adhuc elata erit
manus ejus: Quia populus non convertetur 13
donec percutiatur, & Dominum fortiſſimum
non quærent. Perdétq; Dominus ex Iſraele 14
caput & caudam eodem die: (Senex 15
& honorabilis vultu, is eſt caput; & propheta
docens falſitatem, is eſt cauda) Et benefactores 16
hujus populi, erunt ſeductores &
immerſores ejus. Propterea non præbebit 17
lætitiam Dominus de juvenibus eorum, &
pupillorum ac viduarum eorum non miſerebitur;
quòd omnes impii ſint ac maligni, &
omne os ſtultitiam loquatur: & cum his
omnibus nequaquam avertetur furor ejus, ſed
adhuc manus ejus erit erecta. Quoniam exarſit 18
peccatum velut ignis, & devorabit vepres
ac ſentes, & comburet ſylvæ ramos, &
fumo irretientur electi. Ex objurgatione 19
Domini potentiſſimi contremiſcet terra, &
evadet populus ut is quem conſumpſit ignis,
& alter alterius haud miſerebitur. Scindet 20
ad dexteram ſuam, tamen eſuriet; comedétque
ad ſiniſtram ſuam, nec tamen ſaturabitur
quiſque carne brachii ſui. Comedet 21
Manaſſes Aphremum, & Aphrem Manaſſem,
& ambo contra Judam *venient*: et cum his
omnibus nequaquam avertetur ira ejus, ſed
adhuc erit elata manus ejus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* رياسته عظيمة * وليس لسلامته حد * على كرسي داود ومملكته * ليقومها ويصعدها 7
بالعدل والانصاف * من الآن والى الابد * غيرة رب الجيوش تفعل هذا *

* قريان البر *

8 * أرسل الرب موتا على يعقوب * وجاء على اسرائيل * وسيعلم كل شعب افرام والجلوس 9
في السامرة * بتعظم وقلب مرتفع يقولون * اللبن يتساقط * لكن هلموا ننحت الحجارة * 10
ونقطع التوت والارز * ونبني لنا بروجا * ويقوي الله القائمين على جبل صهيون وعلى 11
ايروشليم عليهم * ويصرف اعداء يهودا * اهل سورية من مشارق الشمس * واليونانيين 12
من مغارب الشمس * الذين ياكلون شعبي بكل فم * ومع هذه كلها لم يرتد غضبه *
لكن يده ايضا عالية * والشعب لم يرجع حتى ضرب * ولم يطلب رب القوات * وانزع 13 14
الرب من اسرائيل الراس والذنب * الكبير والصغير في يوم واحد * والشيخ والذين 15
يتعجبون بالوجوه * هذه الراس * والنبي الذي يعلم الاثم هو الذنب * ويكون الذين 16
يطوبون هذا الشعب ضالين ومضلين كي يبتلعوه * لاجل هذا ما يسر الله باحداثهم * 17
وايتامهم وارامله * لا يرحم * لانهم كلهم اثمة وخبثاء * وكل فم يتكلم بالمظالم * وفي هذه كلها
لم يرتد غضبه بل يده ايضا عالية * وستضطرم الاثم كالنار * ومثل نجيل يابس يوكل من 18
النار * ويشعلون في غياب الغيضة * وياكل جميع ما يحوط بالتلال * من اجل زجر غضب 19
رب الجيوش احترقت الارض كلها * ويصير الشعب مثل محترق بالنار * ولن يرحم الانسان اخاه *
20 * لكن يجنح الى ميامنه * لانه يجوع * وياكل من مياسره * ولا يشبع الانسان الاكل لحم ذراعه *
21 * لان افرام ياكل منسى * ومنسى ياكل افرام * لانهما يحاصران يهودا معا * وفي هذه كلها لم
يرتد غضبه لكن يده ايضا عالية *

Dominium ejus maximum erit, & pacis 7
ejus nullus erit finis ſuper ſolium &
regnum Davidis, ut dirigat & attollat
illud juſtitiâ & æquitate ex nunc & in
æternum: zelus Domini exercituum factus eſt hoc.

Lectio de juſtitia.

Miſit Dominus mortalitatem in Jacobum, 8
& venit ſuper Iſraelem, Quam 9
etiam experietur totus populus Aphremiticus,
& ſedentes in Samaria, qui ſuperbo
elatóque animo dicunt; Lateres 10
corruent, ſed venite, ſeccemus lapides, &
moros cædamus atque cedros, & ædificamus
nobis turres. Verùm confortabit 11
in eos Deus adverſarios montis Sion
& Jeroſolymorum, Dimittétque hoſtes 12
Judæ, Syros ab oriente ſole, & Græcos ab
occaſu ſolis, qui populum meum omnigeno
ore comedent: his autem omnibus haudquaquam
averſa eſt indignatio ejus, ſed
manus ejus adhuc eſt elata. Populus enim 13
nequaquam fuerit reverſus, nec Dominum
poteſtatum quæſierit, quoad percuſſus
fuerit. Auferétque Dominus ex 14
Iſraele caput & caudam, magnum ac
parvum eodem die: (Senex, & qui facies 15
demirantur, hi ſunt caput: & propheta
qui docet iniquitates, is eſt cauda)
Et erunt qui beant hunc populum, errantes 16
& ſeducentes, ut deglutiant eum.
Propter id ingrati erunt Deo juvenes eorum, 17
& in pupillos & viduas eorum
nullâ utetur clementiâ; quia flagitioſi
ſunt omnes atque ſcelerati, & omne
os loquitur flagitia: his autem omnibus
non ceſſabit ira ejus, ſed manus ejus
adhuc eſt alta. Nam exardeſcet improbitas 18
velut ignis, & veluti fœnum
aridum conſumetur ab igne, & ardebunt
in ſaltibus ſylvæ, & conſumetur quicquid
circunjacet collibus. Propter excandeſcentiam 19
ira Domini exercituum comburetur
tota terra, fiétque populus ut is
qui uſtulatus eſt igne, & nemo in fratrem
ſuum clementiâ utetur; Sed declinabit 20
ad dexteram ſuam, eò quòd eſuriat, &
comedet è ſiniſtra ſua, neque tamen
ſaturabitur homo devorans carnem brachii
ſui. Nam Aphremus devorabit 21
Manaſſen, & Manaſſes devorabit
Aphremum, quoniam obſidebunt Judam
ambo ſimul: his autem omnibus
non ceſſabit ira ejus, ſed manus ejus
adhuc eſt alta.

ישעיה : י

CAP. X. י

.fecerũt ſcribere *laborẽ*,facientib⁹ ſcribere &,*iniquitatis ſtatuta ſtatuentibus* Væ
1 הוֹי הַחֹקְקִים חִקְקֵי־אָוֶן וּמְכַתְּבִים עָמָל כִּתֵּבוּ׃
;mei populi *afflictorũ judiciũ rapiendũ ad &,tenuium* judicium *pervertendum Ad*
2 לְהַטּוֹת מִדִּין דַּלִּים וְלִגְזֹל מִשְׁפַּט עֲנִיֵּי עַמִּי
quid Et .diripiant pupillos & , eorum *ſpolium viduæ exiſtendum ad*
3 לִהְיוֹת אַלְמָנוֹת שְׁלָלָם וְאֶת־יְתוֹמִים יָבֹזּוּ׃ וּמַה־
quem Ad ? veniet longinquo à ,*deſolatione in* & ,viſitationis die in facietis
תַּעֲשׂוּ לְיוֹם פְּקֻדָּה וּלְשׁוֹאָה מִמֶּרְחָק תָּבוֹא עַל־מִי
corruit me Abſque? veſtram gloriã derelinquetis ubi & ? auxilio pro fugietis
4 תָּנוּסוּ לְעֶזְרָה וְאָנָה תַעַזְבוּ כְּבוֹדְכֶם׃ בִּלְתִּי כָרַע
eſt averſus non hoc omni In .*cadent interfectos ſub* & , *vinctum ſub*
תַּחַת אַסִּיר וְתַחַת הֲרוּגִים יִפֹּלוּ בְּכָל־זֹאת לֹא־שָׁב
, mei *naſi* virga Aſſur *Væ* .extenta ejus manus adhuc ſed,ejus *naſus*
5 אַפּוֹ וְעוֹד יָדוֹ נְטוּיָה׃ הוֹי אַשּׁוּר שֵׁבֶט אַפִּי
,eum mittam *hypocritã* gentẽ Ad.mea *indignatio* eorũ manu in ipſa virga &
6 וּמַטֶּה־הוּא בְיָדָם זַעְמִי׃ בְּגוֹי חָנֵף אֲשַׁלְּחֶנּוּ
prædandum ad &,ſpoliũ ſpoliandũ ad,ei mandabo *meæ iræ fervidæ* populũ ſup &
וְעַל־עַם עֶבְרָתִי אֲצַוֶּנּוּ לִשְׁלֹל שָׁלָל וְלָבֹז
non ipſe Et .platearum lutũ ſicut conculcationẽ eũ *ponendũ ad* & ,prædam
7 בַּז וּלְשִׂימוֹ מִרְמָס כְּחֹמֶר חוּצוֹת׃ וְהוּא לֹא־
, *ſuo corde in* perdendum ad ſed :putabit ita non ej⁹ cor & , exiſtimabit ſic
כֵן יְדַמֶּה וּלְבָבוֹ לֹא־כֵן יַחְשֹׁב כִּי לְהַשְׁמִיד בִּלְבָבוֹ
mei principes Nónne:dicet Siquidem.*parum* non gentes excidendum ad &
8 וּלְהַכְרִית גּוֹיִם לֹא מְעָט׃ כִּי יֹאמַר הֲלֹא שָׂרַי
Arphad ſicut *non an* ? Chalno Charchemis ſicut Nónne .reges ſimul
9 יַחְדָּו מְלָכִים׃ הֲלֹא כְּכַרְכְּמִישׁ כַּלְנוֹ אִם־לֹא כְאַרְפַּד
invenit Quemadmodum ? Someron Dammeſec ſicut Nónne ? Chamath
10 חֲמָת אִם־לֹא כְדַמֶּשֶׂק שֹׁמְרוֹן׃ כַּאֲשֶׁר מָצְאָה
, Jeruſalaim à eorum *ſculptilia* & , *vanitatis* regna *ad* mea manus
יָדִי לְמַמְלְכֹת הָאֱלִיל וּפְסִילֵיהֶם מִירוּשָׁלִַם
,ej⁹ *vanitatibus* & , Someron feci quemadmodum Nónne .Someron à &
11 וּמִשֹּׁמְרוֹן׃ הֲלֹא כַּאֲשֶׁר עָשִׂיתִי לְשֹׁמְרוֹן וְלֶאֱלִילֶיהָ
compleverit cùm erit Et ?ejus *doloribus* & , Jeruſalaim faciam ſic
12 כֵּן אֶעֱשֶׂה לִירוּשָׁלִַם וְלַעֲצַבֶּיהָ׃ וְהָיָה כִּי־יְבַצַּע
viſitabo ; Jeruſalaim in &,Sijon monte in ſuum opus omne Dominus
אֲדֹנָי אֶת־כָּל־מַעֲשֵׂהוּ בְּהַר צִיּוֹן וּבִירוּשָׁלִָם אֶפְקֹד
gloriam ſuper & , Aſſur regis cordis magnitudinis fructũ ſuper
עַל־פְּרִי־גֹדֶל לְבַב מֶלֶךְ־אַשּׁוּר וְעַל־תִּפְאֶרֶת
, feci meæ manus fortitudine In :dixit Nam.ejus oculorum altitudinis
13 רוּם עֵינָיו׃ כִּי אָמַר בְּכֹחַ יָדִי עָשִׂיתִי
,populorum terminos feci removere & :*fui prudens* quia,mea ſapientia in &
וּבְחָכְמָתִי כִּי נְבֻנוֹתִי וְאָסִיר גְּבוּלֹת עַמִּים
potens tanquam feci deſcendere & , ſum deprædatus eorum *præparata* &
וַעֲתִידֹתֵיהֶם שׁוֹשֵׂתִי וְאוֹרִיד כַּאבִּיר
, populorum *facultatem ad* mea manus nidũ veluti invenit Et .*ſedentes*
14 יוֹשְׁבִים׃ וַתִּמְצָא כַקֵּן יָדִי לְחֵיל הָעַמִּים
: congregavi ego terram omnem ,derelicta ova *colligere ſecundùm* &
וְכֶאֱסֹף בֵּיצִים עֲזֻבוֹת כָּל־הָאָרֶץ אֲנִי אָסָפְתִּי
.*garriens* & , os *aperiens* & , alam *movens* fuit non &
וְלֹא הָיָה נֹדֵד כָּנָף וּפֹצֶה פֶה וּמְצַפְצֵף׃
ſe magnificabit *an* ? ea *in* incidentem contra ſecuris gloriabitur Nunquid
15 הֲיִתְפָּאֵר הַגַּרְזֶן עַל הַחֹצֵב בּוֹ אִם־יִתְגַּדֵּל
,ipſam exaltantes , *virgam agitare ſecundùm?eam agitantem* contra ſerra
הַמַּשּׂוֹר עַל־מְנִיפוֹ כְּהָנִיף שֵׁבֶט אֶת־מְרִימָיו
.*lignum non baculum exaltare ſecundùm*
כְּהָרִים מַטֶּה לֹא־עֵץ׃

Verſio VUL. LAT.

CAP. X.

1 VÆ qui condunt leges iniquas:
& ſcribentes, injuſtitiam
2 ſcripſerunt: Ut opprimerent
in judicio pauperes, & vim facerent
cauſæ humilium populi
mei: ut eſſent viduæ præda eorum,
& pupillos diriperent.
3 Quid facietis in die viſitationis,
& calamitatis de longè venientis?
ad cujus confugietis
auxilium? & ubi derelinquetis
4 gloriam veſtram, Ne incurvemini
ſub vinculo, & cum interfectis
cadatis? Super omnibus
his non eſt averſ⁹ furor ej⁹, ſed
5 adhuc manus ejus extenta. Væ
Aſſur, virga furoris mei & baculus
ipſe eſt, in manu eorum
6 indignatio mea. Ad gentẽ fallacem
mittam eum, & contra
populum furoris mei mandabo
illi, ut auferat ſpolia, & diripiat
prædam, et ponat illum in
conculcationem quaſi lutum
7 platearum. Ipſe autem non ſic
arbitrabitur, & cor ejus non
ita exiſtimabit: ſed ad conterendum
erit cor ejus, & ad
internecionem gentium non
8 paucarum. Dicet enim;
9 Numquid non principes mei
ſimul reges ſunt? numquid non
ut Charcamis, ſic Calano; &
ut Arphad, ſic Emath? numquid
non ut Damaſcus, ſic Samaria?
10 Quomodò invenit manus
mea regna idoli, ſic & ſimulachra
eorũ de Jeruſalem,
11 & de Samaria. Numquid non
ſicut feci Samariæ & idolis ejus,
ſic faciam Jeruſalem & ſimulachris
12 ejus? Et erit: cùm
impleverit Dominus cuncta
opera ſua in monte Sion, &
in Jeruſalem, viſitabo ſuper
fructum magnifici cordis regis
Aſſur, & ſuper gloriam altitudinis
13 oculorum ejus. Dixit enim;
In fortitudine man⁹ meæ
feci, & in ſapientia mea intellexi:
& abſtuli terminos populorum,
& principes eorum deprædatus
ſum, & detraxi quaſi
potens in ſublimi reſidentes.
14 Et invenit quaſi nidum manus
mea fortitudinem populorum:
& ſicut colliguntur ova, quæ
derelicta ſunt, ſic univerſam
terram ego congregavi: & non
fuit qui moveret pennam, & aperiret
15 os, & ganniret. Numquid
gloriabitur ſecuris contra eum, qui ſecat in ea? aut exaltabitur ſerra contra eum, à quo trahitur? quomodò
ſi elevetur virga contra elevantem ſe, & exaltetur baculus, qui utique lignum eſt.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. ι΄.

1 ΟΥαὶ τοῖς γράφουσι πονηρίαν, γράφοντες
2 γὰρ πονηρίαν γράφουσιν· Ἐκκλίνοντες κρίσιν
πτωχῶν, (α) ἁρπάζοντες κρίμα πενήτων τοῦ
λαοῦ μου, ὥστε εἶναι αὐτοῖς χήραν (β) εἰς διαρπαγὴν,
3 καὶ ὀρφανὸν εἰς προνομήν. Καὶ τί
ποιήσουσιν ἐν τῇ ἡμέρᾳ (γ) τῆς ἐπισκοπῆς; ἡ
γὰρ θλῖψις ὑμῖν πόῤῥωθεν ἥξει· καὶ πρὸς τίνα
καταφεύξεσθε τοῦ βοηθηθῆναι; καὶ ποῦ καταλείψετε
4 τὴν δόξαν ὑμῶν, Τοῦ μὴ ἐμπεσεῖν (δ)
εἰς ἀπαγωγήν; ἐπὶ πᾶσι τούτοις οὐκ ἀπεστράφη
5 (ε) ἡ ὀργὴ, ἀλλ' ἔτι ἡ χεὶρ ὑψηλή. Οὐαὶ
Ἀσσυρίοις, ἡ ῥάβδος τοῦ θυμοῦ μου, (ζ) καὶ
6 ὀργή ἐστιν ἐν ταῖς χερσὶν αὐτῶν. Τὴν ὀργήν
μου εἰς ἔθνος ἄνομον (η) ἀποστελῶ, καὶ τῷ ἐμῷ
λαῷ συντάξω (θ) ποιῆσαι σκῦλα καὶ
προνομὴν, καὶ καταπατεῖν τὰς πόλεις, καὶ θεῖναι
7 αὐτὰς εἰς κονιορτόν. Αὐτὸς δὲ οὐχ οὕτως
ἐνεθυμήθη, καὶ τῇ ψυχῇ οὐχ οὕτως λελόγισται,
ἀλλὰ ἀπαλλάξει ὁ νοῦς αὐτοῦ, καὶ (ι) τοῦ ἔθνη
8 ἐξολοθρεῦσαι οὐκ ὀλίγα. Καὶ ἐὰν εἴπωσιν
9 αὐτῷ, Σὺ μόνος εἶ ἄρχων· Καὶ ἐρεῖ, Οὐκ
ἔλαβον τὴν χώραν τὴν ἐπάνω Βαβυλῶνος καὶ
(κ) Χαλάνης, οὗ ὁ πύργος ᾠκοδομήθη, καὶ
ἔλαβον Ἀραβίαν καὶ Δαμασκὸν καὶ Σαμάρειαν.
10 Ὃν τρόπον ταύτας ἔλαβον (λ), καὶ πάσας
τὰς ἀρχὰς λήψομαι. ὀλολύξατε τὰ γλυπτὰ
11 ἐν Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐν Σαμαρείᾳ. Ὃν τρόπον
γὰρ ἐποίησα Σαμαρείᾳ, καὶ τοῖς χειροποιήτοις
(μ) αὐτῆς, οὕτω ποιήσω καὶ Ἱερουσαλὴμ, καὶ
12 τοῖς εἰδώλοις αὐτῆς. Καὶ ἔσται ὅταν συντελέσῃ
κύριος πάντα ποιῶν ἐν τῷ ὄρει Σιὼν
καὶ (ν) Ἱερουσαλὴμ, ἐπισκέψομαι ἐπὶ τὸν νοῦν
τὸν μέγαν ἐπὶ τὸν ἄρχοντα τῶν Ἀσσυρίων, καὶ
ἐπὶ τὸ ὕψος τῆς δόξης τῶν ὀφθαλμῶν αὐτοῦ.
13 Εἶπε γὰρ, (ξ) Ἐν τῇ ἰσχύϊ ποιήσω, καὶ ἐν τῇ
σοφίᾳ τῆς συνέσεως ἀφελῶ ὅρια ἐθνῶν, καὶ τὴν
14 ἰσχὺν αὐτῶν προνομεύσω. Καὶ σείσω πόλεις
κατοικουμένας, καὶ τὴν οἰκουμένην ὅλην καταλήψομαι
(ο) τῇ χειρὶ ὡς νοσσιὰν, καὶ ὡς
καταλελειμμένα ὠὰ ἀρῶ· καὶ οὐκ ἔστιν ὃς διαφεύξεταί
15 (π) με, ἢ ἀντείπῃ μοι. Μὴ δοξασθήσεται
ἀξίνη ἄνευ τοῦ κόπτοντος ἐν αὐτῇ;
ἢ ὑψωθήσεται πρίων ἄνευ τοῦ ἕλκοντος αὐτόν;
(ρ) ὡς ἄν τις ἄρῃ ῥάβδον ἢ ξύλον. καὶ
οὐχ οὕτως,

MS.A. (α) καὶ ἁρπάζοντες (β) εἰς ἁρπαγὴν, (γ) ἐπισκοπῆς; (δ) εἰς ἐπαγωγήν; καὶ ὑποκάτω τῶν ἀνῃρημένων πεσοῦνται· ἐπὶ τούτοις πᾶσιν οὐκ (ε) θυμὸς, (ζ) καὶ ὀργῆς ἐν ταῖς χερσὶν (η) ἀποστέλλω, (θ) τοῦ ποιῆσαι (ι) τοῦ ἐξολεθρεῦσαι ἔθνη οὐκ ὀλίγα. (κ) Χαλάννη, (λ) ἐν τῇ χειρί μου, καὶ πάσας τὰς χώρας (μ)*αὐτοῖς, οὕτως (ν) ἐν Ἱερουσαλὴμ, ἐπάξει ἐπὶ τὸν νοῦν τὸν μέγαν τὸν ἄρχοντα (ξ) Τῇ ἰσχύϊ ποιήσω, καὶ * τῇ συνέσεως τῆς σοφίας (ο) τῇ χειρί μου (π) μοι, (ρ) ὡσαύτως ἐάν τις

CAP. X.

VÆ ſcribentibus iniquitatem: 1
ſcribentes enim, iniquitatem ſcribunt:
Declinantes judicium inopum, 2
rapientes cauſam pauperum
populi mei; ut ſit ipſis vidua in direptionem,
& pupillus in prædam.
Et quid facient in die viſitationis? 3
Tribulatio enim vobis de longè veniet:
Et ad quem confugietis, ut
auxiliũ conſequamini? Et ubi derelinquetis
gloriam veſtram, ut 4
non incidatis in (a) abductionem?
In omnibus his non eſt averſa ira,
ſed adhuc manus excelſa. Væ Aſſyriis: 5
virga furoris mei, & ira eſt
in manibus eorum. Iram meam in 6
gentem iniquam mittam, & populo
meo præcipiam, ut faciat ſpolia, &
prædam, & conculcet civitates,
& ponat eas in pulverem. Ipſe autem 7
non ſic cogitavit, & animo
non ita arbitratus eſt: ſed abſcedet
mens ejus etiam, ut diſperdat
gentes plurimas. Quòd ſi dixerint 8
ei, Tu ſolus es princeps: Et dicet; 9
Non cepi regionem, quæ eſt ſupra
Babylonem, & Chalanen, ubi
turris ædificata eſt. Cepi autem Arabiam,
& Damaſcum, & Samariam.
Sicut has cepi; ſic omnes principatus 10
capiam. Ululate ſculptilia
in Hieruſalem, & in Samaria. Sicut 11
enim feci Samariæ, & manufactis
ejus; ſic faciam et Hieruſalem,
& idolis ejus. Et erit, cùm conſummaverit 12
Dominus omnia faciens
in monte Sion, & Hieruſalem;
(b) viſitabo ſuper ſenſum magnũ,
ſuper principem Aſſyriorum, et ſuper
altitudinem gloriæ oculorum
ejus. Dixit enim; In fortitudine faciam, 13
& in ſapientia intellectûs
auferam terminos gentium, & fortitudinem
eorum deprædabor: Et 14
concutiam civitates habitatas,
& orbem terræ totum apprehendam
manu quaſi nidum, & quaſi
ova derelicta tollam: & non eſt
qui effugiat me, aut contradicat (c)
mihi. Nunquid glorificabitur ſecuris 15
ſine eo, qui cædit in ipſa? aut
exaltabitur ſerra ſine eo, qui ipſam
trahit? quomodò ſiquis elevet virgam,
aut (d) lignum: & non ſic:

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

1 וַי דְּרָשְׁמִין רִשְׁמִין דְּמֵינַס וּכְתַב דְּלֵיאוּ כָּתְבִין : לְאַסְטָאָה מִדִּין מִסְכְּנִין וּלְמֵינַס מַה דְּרָעַן 2
מְחַשִּׁיבֵי עַמָּא בְּדִינָא לְמֶהֱוֵי אַרְמְלָן עֲדֵיהוֹן וְיַת נִכְסֵי יַתְמַיָּא יִבְזוֹן : וּמַה תַּעְבְּדוּן לְיוֹמָא 3
דְּיִסְעֲרוּן עֲלֵיכוֹן חוֹבֵיכוֹן וּלְרִגּוּשׁ עָקָא מֵרָחִיק יֵיתֵי לְאָן תֶּעֶרְקוּן לְסַעִיד וְהֵיכָא תִשְׁבְּקוּן
4 יְקָרְכוֹן : בְּכֵן בַּר מִן אַרְעֲכוֹן אֲסִירִין תִּתְאַסְרוּן וּבַר מִקִּרְוֵיכוֹן קְטִילִין תִּתְרְמוֹן בְּכָל דָּא
לָא תָבוּ מֵחוֹבֵיהוֹן דִּיתוּב רוּגְזֵיהּ מִנְּהוֹן וְעַד כְּעַן מַתְקְפִין מְרָדֵיהוֹן וְעוֹד מַחְתֵּיהּ עֲתִידָא
5 לְאִתְפְּרַע מִנְּהוֹן : וַי אַתּוּרָאָה שׁוּלְטָן רוּגְזִי וּמַלְאַךְ שְׁלִיחַ מִן קֳדָמַי עֲלֵיהוֹן בִּלְוָט : בִּכְנִשְׁתָּא 6
חֲנִפָּא אֲשַׁלְּחִנֵּיהּ וְעַל עַמָּא דַּעֲבַרוּ עַל אוֹרַיְתָא אֲפַקְּדִנֵּיהּ לְמִבַּז בִּזָּא וּלְמֶעְדֵּי עֲדָאָה
וּלְשַׁוָּיוּתֵיהּ לְדָיִישׁ כְּטִין שׁוּקִין : וְהוּא לָא כֵן מְדַמֵּי וְלִבֵּיהּ לָא כֵן מַחְשִׁיב אֲרֵי לְשֵׁיצָאָה 7
אָמַר בְּלִבֵּיהּ וְלַאֲסָפָא עַמְמִין לָא בְּחָיָס : אֲרֵי יֵמַר הֲלָא כָּל שִׁלְטוֹנַי כַּחֲדָא כְּמַלְכִין 8
חֲשִׁיבִין קֳדָמַי : הֲלָא כְמָא דְּכַרְכְּמִישׁ כְּבִישָׁא קֳדָמַי כֵּן כַּלְנוֹ אִם לָא כְמָא דְּאַרְפַּד מְסִירָא 9
בִּידִי כֵן חֲמָת וּכְמָא דַּעֲבַדִית לְדַמֶּשֶׂק כֵּן אַעְבֵּיד לְשָׁמְרוֹן : כְּמָא דְּאַשְׁכַּחַת יְדִי מַלְכְּוָן 10
דְּפָלְחִין לְטַעֲוָתָא וְצַלְמָנֵיהוֹן מִירוּשְׁלֶם וּמִקַּמְתָא דְּשָׁמְרוֹן : הֲלָא כְּמָא דַּעֲבַדִית לְשָׁמְרוֹן 11
וּלְטַעֲוָתְהָא כֵּן אַעְבֵּיד לִירוּשְׁלֶם וּלְצַלְמָנַיָּא דִּי בָהּ : וִיהֵי אֲרֵי יְשֵׁיצֵי יְיָ לְמֶעְבַּד יַת כָּל 12
דַּאֲמַר בְּטוּרָא דְצִיּוֹן וּבִירוּשְׁלֶם אַסְעַר עַל עוֹבָדֵי רָם לִבָּא דְּמַלְכָּא דְאַתּוּר וְעַל תּוּשְׁבַּחַת
רְמוּת עֵינוֹהִי : אֲרֵי אֲמַר בִּתְקוֹף יְדִי עֲבַדִית וּבְחוּכְמְתִי אֲרֵי סוּכְלְתָן אֲנָא וְאַגְלֵיתִי 13
עַמְמַיָּא מִמְּדִינָא לִמְדִינָא וְקִרְוֵי תוּשְׁבַּחְתְּהוֹן בְּזֵיתִי וְאַחֲתֵית בִּתְקוֹף יַת יָתְבֵי כְרַכִּין
תַּקִּיפִין : וְאַשְׁכַּחַת כְּקִנָּא יְדִי נִכְסֵי עַמְמַיָּא וּכְמִכְנַשׁ בֵּיעִין שְׁבִיקִין כָּל דָּיְרֵי אַרְעָא אֲנָא 14
כְּנִישִׁית וְלָא הֲוָה נְטֵיל מִכָּא וְשָׁדֵי כָא וּפְתַח פּוּמָא וּמְמַלֵּיל מִלָּא : הַאֶפְשַׁר דְּיִשְׁתַּבַּח 15
חוּלֵילָא עַל דְּחָלֵיל בֵּיהּ לְמֵימַר הָא אֲנָא חֲלֵלִית אִם יִתְרַבְרַב מַסְרָא עַל דְּנָגֵיר בָּהּ
לְמֵימַר הֲלָא אֲנָא נְגָרִית כַּאֲרָמָא חוּטְרָא לְמִמְחֵי לָא חוּטְרָא מָחֵי אֱלָהֵן מַן דְּמָחֵי
בֵּיהּ :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. X.

VÆ qui ſignant ſignacula violentiæ, & ſcripturam laboris ſcribunt. 1
Ut evertant à jure pauperes, et vi rapiant id quod maximè volunt pauperes 2
populi mei in judicio: ut ſint viduæ præda eorum; & ſubſtantiam pupillorum
diripiant. Et quid facietis in die qua viſitabuntur ſuper vos peccata 3
veſtra? & in tumultu tribulationis quæ de longè veniet? quò fugietis
ad auxilium? & quomodo relinquetis gloriam veſtram? Propterea 4
extra terram veſtram vinculis vinciemini, & extra civitates veſtras interfecti
projiciemini. In omnibus his non ſunt converſi à peccatis ſuis, ut
averteretur furor ejus ab eis, & adhuc retinent ſcelera ſua: & adhuc plaga
ejus futura eſt, ut vindictam ſumat ab eis. Væ Aſſur dominium furoris 5
mei, & angelus miſſus à facie mea contra eos in maledictionem. Ad cœtum 6
hypocriticũ mittam eum, & ſuper populum qui tranſgreſſi ſunt legem
meam mandabo illi, ut diripiat prædam & auferat ſpolium, & ut ponat
eum in conculcationem quaſi lutum platearum. Et ipſe non ſic exiſtimat, 7
& in corde ſuo non ſic cogitat; ſed ad diſperdendum dicit in corde ſuo,
& ut conſumat populos abſque miſericordia. Dicit enim: Nonne omnes 8
principes mei pariter quaſi reges reputati ſunt coram me? Nonne ſicut 9
Carchamis ſubjecta eſt coram me, ſic Calano? Nonne ſicut Arphat tradita
in manum meam, ſic Hemath? & ſicut feci Damaſco, ſic faciã Samariæ?
Sicut invenit manus mea regna quæ colunt idola, & ſimulachra eorum ex 10
Hieruſalem & *ex ſtatuis Samariæ?* Nonne ſicut feci Samariæ & idolis 11
ejus; ſic faciam Hieruſalem & ſimulachris ejus? Et erit cùm conſummaverit 12
Dñs ut faciat omnia quæ dixit in monte Sion & in Hieruſalem, viſitabo
ſuper opera elati cordis regis Aſſur, & ſuper laudem altitudinis oculorũ
ejus. Dixit enim: In fortitudine manus meæ feci, & in ſapientia mea; 13
quia intelligens ego ſum: & tranſmigrare feci populos de provincia in
provinciã, & civitates laudabiles eorum deprædatus ſum, & detraxi in fortitudine
habitantes in arcibus fortiſſimis. Et invenit quaſi nidum manus 14
mea ſubſtantiam populorum, & ſicut colliguntur ova quæ derelicta ſunt,
omnes habitatores terræ ego ſubjeci; & non fuit qui tolleret hinc &
mitteret illuc, & aperiret os ſuum & loqueretur verbum. Nunquid gloriabitur 15
ſecuris contra eum qui ſcindit in eo; dicens: *Ecce* ego ſcidi: aut
magnificabitur ſerra contra eum à quo trahitur, dicens: Nonne ego ſecavi?
Quando elevatur virga ad percutiendum, non virga percutit, ſed ille qui percutit in ea.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝ̄ *

1 2 * ܘܝ ܠܟܬܒܝܢ ܟܬܒܐ ܕܥܘܠܐ. ܘܟܬܒܝܢ ܥܘܠܐ. * ܠܡܨܠܝܘ ܕܝܢܐ ܕܡܣܟܢܐ. ܘܠܡܚܛܦ ܕܝܢܐ
3 ܕܡܣܟܢܐ ܕܥܡܝ. ܕܢܒܙܘܢ ܠܐܪܡܠܬܐ ܘܝܬܡܐ ܢܒܙܘܢ. * ܡܢܐ ܥܒܕܝܬܘܢ ܠܝܘܡܐ
ܕܦܘܪܥܢܐ. ܘܠܫܘܓܫܐ ܕܡܢ ܪܘܚܩܐ ܐܬܐ. ܠܘܬ ܡܢ ܬܥܪܩܘܢ ܕܬܬܥܕܪܘܢ. ܘܠܘܬ ܡܢ
4 ܬܫܒܩܘܢ ܐܝܩܪܟܘܢ. * ܕܠܐ ܬܬܟܦܘܢ ܬܚܝܬ ܐܣܝܪܐ. ܘܬܚܝܬ ܩܛܝܠܐ ܬܦܠܘܢ. ܘܒܗܠܝܢ
5 ܟܠܗܝܢ ܠܐ ܗܦܟ ܪܘܓܙܗ. ܐܠܐ ܥܘܕ ܐܝܕܗ ܪܡܝܐ. * ܘܝ ܠܐܬܘܪܝܐ ܫܒܛܐ ܕܪܘܓܙܝ ܘܚܘܛܪܐ ܗܘ
6 ܕܐܝܕܝܗܘܢ ܕܡܚܘܬܝ. * ܠܘܬ ܥܡܐ ܚܢܦܐ ܐܫܕܪܝܘܗܝ. ܘܠܘܬ ܥܡܐ ܕܚܡܬܝ ܐܦܩܕܝܘܗܝ.
7 ܠܡܒܙ ܒܙܬܐ. ܘܠܡܓܙ ܓܙܬܐ. ܘܠܡܬܠܘܬܗ ܕܘܫܐ ܐܝܟ ܛܝܢܐ ܕܫܘܩܐ. * ܘܗܘ ܠܐ ܗܟܢܐ
ܡܬܪܥܐ ܠܗ. ܘܠܒܗ ܠܐ ܗܘܐ ܗܟܢܐ ܚܫܒ. ܐܠܐ ܕܢܘܒܕ ܒܠܒܗ. ܘܠܡܫܝܨܘ ܥܡܡܐ
8 9 ܣܓܝܐܐ. * ܡܛܠ ܕܐܡܪ. ܕܗܐ ܪܘܪܒܢܐ ܐܟܚܕܐ ܡܠܟܐ ܐܢܘܢ. * ܗܐ ܐܝܟ ܒܪ ܟܡܘܫ
10 ܟܠܢܘ. ܘܐܝܟ ܐܪܦܕ. ܚܡܬ. ܘܐܝܟ ܕܪܡܣܘܩ ܫܡܪܝܢ. * ܘܐܝܟ ܕܐܫܟܚܬ ܐܝܕܝ ܠܡܠܟܘܬܐ
11 ܕܦܬܟܪܐ ܘܕܓܠܝܦܐ: ܗܟܢܐ ܠܐܘܪܫܠܡ ܘܠܫܡܪܝܢ. * ܘܐܝܟ ܕܥܒܕܬ ܠܫܡܪܝܢ
12 ܘܠܦܬܟܪܝܗ. ܗܟܢܐ ܐܥܒܕ ܠܐܘܪܫܠܡ ܘܠܦܬܟܪܝܗ. * ܘܢܗܘܐ ܡܐ ܕܫܠܡ ܡܪܝܐ
ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܘܗܝ ܒܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ ܘܒܐܘܪܫܠܡ. ܢܣܥܘܪ ܥܠ ܦܐܪܘܗܝ ܕܠܒܐ ܪܒܐ
13 ܕܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. ܘܥܠ ܫܘܒܗܪܐ ܕܪܘܡܐ ܕܥܝܢܘܗܝ. * ܡܛܠ ܕܐܡܪ. ܕܒܚܝܠܐ ܕܐܝܕܝ
ܥܒܕܬ. ܘܒܚܟܡܬܝ. ܕܡܣܬܟܠ ܐܢܐ. ܐܥܒܪܬ ܬܚܘܡܐ ܕܥܡܡܐ. ܘܥܘܬܪܗܘܢ ܒܙܬ.
14 ܘܡܕܝܢܬܐ ܥܡܝܪܬܐ ܟܒܫܬ. * ܘܐܫܟܚܬ ܐܝܟ ܩܢܐ ܐܝܕܝ ܚܝܠܐ
ܕܥܡܡܐ. ܘܐܝܟ ܕܡܬܟܢܫܝܢ ܒܝܥܐ ܫܒܝܩܬܐ. ܟܢܫܬܗ ܠܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܘܠܐ ܗܘܐ
15 ܕܡܢܝܕ ܓܦܐ. ܘܦܬܚ ܦܘܡܗ ܘܡܨܦܨܦ. * ܕܠܡܐ ܡܫܬܒܗܪ ܢܪܓܐ
ܥܠ ܡܢ ܕܦܣܩ ܒܗ. ܐܘ ܡܬܪܘܪܒ ܡܣܪܐ ܥܠ ܡܢ ܕܢܣܪ ܒܗ. ܐܘ ܡܫܬܥܠܐ
ܫܒܛܐ ܥܠ ܡܢ ܕܡܪܝܡ ܠܗ.

CAP. X.

VÆ promulgantibus edicta injuſta, & iniqua 1
ſcribentibus, Ad pervertendum judicium 2
pauperum, & rapiendum jus egenorum populi
mei; ut ſpolient viduas & diripiant pupillos.
Ecquid facturi eſtis in die retributionis, 3
& in perturbatione de longinquo ventura?
ad quem confugietis ut juvemini? &
apud quem relinquetis gloriam veſtram?
Qui ſub vinctis non incurvabimini, ſub occiſis 4
cadetis: his tamen omnibus non avertetur
ira ejus, ſed adhuc manus ejus erecta eſt. Væ; 5
Aſſyrium, qui eſt virga furoris mei, & baculus
eſt plagæ meæ in manu eorum; In populum 6
impium immiſſurus ſum, & in populum
pervicacem poteſtatem tribuam illi prædam
auferendi, & ſpolia diripiendi, & conculcatum
reddendi eum ceu lutum platearum.
Ipſe verò non ita *rem* ſibi fingit, nec ita 7
animo ſuo concipit; ſed perdere animo illi
eſt, & conſumere gentes multas. Dicit enim; 8
Ecce principes omnes, reges ſunt: Ecce ut 9
Bar-chemos, erit Chelio; & ut Rephad, *ſic*
Hemath; & ut Damaſcus, *ſic* Samaria: Et 10
quemadmodum aſſecuta eſt manus mea regna
idolorum & ſculptilium, *ſic* Jeroſolymam &
Samariam: Et quemadmodum feci Samariæ 11
& idolis ejus, ita faciam Jeroſolymæ & idolis
ejus. Deinde futurum eſt, cùm abſolverit 12
Dominus omnia opera ſua in monte Sion
& in Jeruſalem, ut viſitem fructus ſuperbi
animi regis Athur, & inſolentiam celſitudinis
oculorum ejus: Quia dixit, Virtute manûs 13
meæ feci, & ſapientiâ meâ, quòd prudens ſim:
amovi terminos populorum, et opes eorum
diripui, et urbes frequentes edomui: Et aſſecuta 14
eſt ceu nidum manus mea robur gentium,
et ut colliguntur ova derelicta, collegi
totam terram, nec fuit qui alas attolleret,
aut os ſuum aperiret ac pipiret. Num 15
gloriaretur ſecuris contra eum qui eâ cædit?
aut magnificaretur ſerra contra eum qui
eâ ſecat? aut ſuperbiret virga contra eum
qui attollit eam?

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* الفصل العاشر *

* قريان المداين *

1 2 * الويل للذين يكتبون الشر * لانهم اذا كتبوا الشر * انما يكتبونه اذ يميلون عن حكم
المساكين * ويختطفون انصاف فقراء شعبي * حتى تكون الارملة لهم للاختطاف * واليتيم
3 للغنيمة * فماذا يصنعون في يوم المراقبة * لان ضغطهم توافي من البعد * فالى من تهربون
4 لتستغيثوا به * واين تخلفون مجدكم * لئلا تقعوا للاختطاف وتسقطوا تحت المقتولين * وفي
5 هذه كلها لم يرتد غضبه لكن يده ايضا عالية * الويل للموصليين * قضيب غضبي
6 ويجري في ايديهم * ارسل غضبي الى الامة الاثمة * وامر شعبي ان يصنع غنايم ونهبا *
7 ويدوس المدن ويصنعها كالغبار * وهو فلم ير هكذا * ولم يفكر في نفسه هكذا * لكن
8 9 خامر عقله ان يبيد امما ليست قليلة * وان قالوا له * انت وحدك رئيس * فيقول الم
اخذ البلد التي فوق باطل وخاليس حيث بني البرج * واخذت ارابيا ودمشق وسامرة *
10 * هكذا اخذت هولاء بيدي واخذ كل البلدان * ولولي ايها المنحوتات بايروسليم
11 والسامرة * لاني كما عملت بالسامرة وبعمل يديها * هكذا اصنع بايروسليم وباوثانها *
12 * ويكون اذا استكمل الرب كلما يصنعه في جبل صهيون وفي ايروسليم * يجلب الرب على
13 العقل العظيم * على رئيس الموصليين * وعلى ارتفاع شرف عينيه * لانه قال لاعملن
14 بقوة يدي * وبحكمة فمي انزع حدود الامم * وانهب قوتهم * وازلزل المدن العامرة * واتناول
بيدي المسكونة كلها كالعش * وارفعها كالبيض المتروك * وليس من يفلت مني او يراددني *
15 ويفتح فاه ويصاصي * هل يتشرف الفاس من غير قاطع يقطع به * او يرتفع المنشار حلوا
ممن يجذبه * كذلك اذا تناول احد عصا او عودا *

.٦١.

CAP. X.

Lectio de litibus.

VÆ ſcribentibus quod nefas eſt, quoniam 1
cùm nefaria ſcribunt, Profectò 2
ſcribunt ea deflectentes à judicio
pauperum; & rapiunt jus inopum populi
mei: ut ſit illis vidua in rapinam, &
pupillus in prædam. Quid enim facient 3
in die animadverſionis, quandoquidem calamitas
eorum ventura eſt è longinquo?
ad quem fugietis ut opem ejus imploretis?
& ubinam relinquetis gloriam veſtram,
Ne corruatis in rapinam, & ſub interfectis 4
ſuccumbatis? at his omnibus nequaquam
ceſſabit ira ejus, ſed manus ejus adhuc
eſt elevata. Væ Aſſyriis in quorum 5
manibus eſt virga furoris & indignationis
meæ. Immittam furorem meum in 6
gentem iniquam, & præcipiam populo
meo ut prædam & populationem faciat,
urbes conculcet, & ut pulverem deprimat.
Verùm ipſe nec ita ſentit, nec talia 7
apud ſe cogitat; ſed cæcâ mente ſibi
proponit conſumere gentes non paucas.
Quòd ſi dicant ei, Tu ſolus princeps es: 8
Nonne, inquit, regiones cepi quæ ſunt 9
ſuper Batelem, & Chalennis, ubi turris
extructa fuerat; & cepi Arabiam, Damaſcum,
& Samariam? Eodem modo 10
capiam iſtos manu meâ, & occupabo
regiones omnes. Ululate O ſculptilia
in Jeruſalem & Samaria; Quia 11
quemadmodum feci Samariæ & operibus
manuum ejus, ita faciam Jeroſolymæ
& idolis ejus. Futurum eſt 12
autem ut cùm perfecerit Dominus quicquid
facturus eſt in monte Sion &
in Jeruſalem, increpet Dominus mentem
illam magnam, principem Aſſyriorum,
& inſolentem ſuperbiam oculorum ejus:
Quia dixit, Equidem potentiâ manûs 13
meæ agam, & ſapientiâ oris mei auferam
terminos populorum, diripiam opulentiam
eorum, & urbes populoſas
tremefaciam: Et orbem univerſum 14
ceu nidum arripiam manu meâ, tollámque
ſicut ova derelicta, nemine à me evadente,
aut reluctante, aut os ſuum aperiente
ac pipiente. An gloriabitur 15
ſecuris abſque cædente qui eâ cadat?
aut extollet ſe ſerra ſine trahente illam?
& pari modo cùm quis baculum aut lignum arripit?

ſubter &,maciē ejus pinguibꝰ in exercituū Dominꝰ dominator mittet Ideo
16 לָכֵן יְשַׁלַּח הָאָדוֹן אֲדֹנָי צְבָאוֹת בְּמִשְׁמַנָּיו רָזוֹן וְתַחַת
Iſrael lux erit Et .ignis incendiū quaſi incendiū incendet ejꝰ gloriā
17 כְּבֹדוֹ יֵקַד יְקֹד כִּיקוֹד אֵשׁ׃ וְהָיָה אוֹר־יִשְׂרָאֵל
,ejus ſpinam devorabit & ,ardebit & : flammam in ejꝰ ſanctus & ,ignem in
לְאֵשׁ וּקְדוֹשׁוֹ לְלֶהָבָה וּבָעֲרָה וְאָכְלָה שִׁיתוֹ
,anima ab,ejus *Charmel* &,ejus ſylvæ gloriā Et .una die in ejꝰ veprem &
18 וּשְׁמִירוֹ בְּיוֹם אֶחָד׃ וּכְבוֹד יַעְרוֹ וְכַרְמִלּוֹ מִנֶּפֶשׁ
lignum reſiduū Et .*vexilli ferū liqueſcere* ſicut erit &:conſumet carnē ad uſq; &
19 וְעַד־בָּשָׂר יְכַלֶּה וְהָיָה כִּמְסֹס נֹסֵס׃ וּשְׁאָר עֵץ
non ,illa die in erit Et .ea ſcribat puer ut :erunt *numerus* ejus ſylvæ
20 יַעְרוֹ מִסְפָּר יִהְיוּ וְנַעַר יִכְתְּבֵם׃ וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא לֹא־
ſuper inniti ,Jahacob domus *evaſio* & , Iſrael reſiduum ultrà adjiciet
יוֹסִיף עוֹד שְׁאָר יִשְׂרָאֵל וּפְלֵיטַת בֵּית־יַעֲקֹב לְהִשָּׁעֵן עַל־
.veritate in Iſrael Sanctum Dominum ſuper innitetur & :ſe percutientē
מַכֵּהוּ וְנִשְׁעַן עַל־יְהוָה קְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל בֶּאֱמֶת׃
fuerit ſi Quia .fortem Deum ad ,Jahacob reſiduū,convertetur Reſiduū
21 שְׁאָר יָשׁוּב שְׁאָר יַעֲקֹב אֶל־אֵל גִּבּוֹר׃ כִּי אִם־יִהְיֶה
22 conſūmatio:eo *in* convertetur reſiduū,maris arena veluti Iſrael tuꝰ populꝰ
עַמְּךָ יִשְׂרָאֵל כְּחוֹל הַיָּם שְׁאָר יָשׁוּב בּוֹ כִּלָּיוֹן
Dominus Dominꝰ deciſam & conſūmationē Quia .juſtitiam *inundans* deciſa
23 חָרוּץ שׁוֹטֵף צְדָקָה׃ כִּי כָלָה וְנֶחֱרָצָה אֲדֹנָי יְהוִה
Dominus Dn̄s dixit ſic Idcirco .terræ univerſæ *interiori in faciens* exercituū
24 צְבָאוֹת עֹשֶׂה בְּקֶרֶב כָּל־הָאָרֶץ׃ לָכֵן כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה
virga In .Aſſur ab Sijon habitator ,mi populus timeas Ne :exercituum
צְבָאוֹת אַל־תִּירָא עַמִּי יֹשֵׁב צִיּוֹן מֵאַשּׁוּר בַּשֵּׁבֶט
paululū adhuc Nam.Ægypti via in te ſuꝑ levabit ſuū baculū &,te ꝑcutiet
25 יַכֶּכָּה וּמַטֵּהוּ יִשָּׂא־עָלֶיךָ בְּדֶרֶךְ מִצְרָיִם׃ כִּי־עוֹד מְעַט
ſuſcitabit Et .eorū *everſionem* ad meꝰ *naſus* & ,ira conſūmabitur &,paululū
26 מִזְעָר וְכָלָה זַעַם וְאַפִּי עַל־תַּבְלִיתָם׃ וְעוֹרֵר
,Horeb petra in ,Midian plagā juxta flagellū exercituū Dominus eū ſuper
עָלָיו יְהוָה צְבָאוֹת שׁוֹט כְּמַכַּת מִדְיָן בְּצוּר עוֹרֵב
illa die in ,erit Et .Ægypti via in eā elevabit &,mare ſuꝑ ſuā virgā &
27 וּמַטֵּהוּ עַל־הַיָּם וּנְשָׂאוֹ בְּדֶרֶךְ מִצְרָיִם׃ וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא
:tuo collo *deſuper* ejus jugum & ,tuo humero *deſuper* ejus onus removebitur
יָסוּר סֻבֳּלוֹ מֵעַל שִׁכְמֶךָ וְעֻלּוֹ מֵעַל צַוָּארֶךָ
,Migron in tranſivit,Hajath ad Venit .olei *faciebus* à jugum corrūpetur &
28 וְחֻבַּל עֹל מִפְּנֵי־שָׁמֶן׃ בָּא עַל־עַיַּת עָבַר בְּמִגְרוֹן
Ghebah ,*tranſitum* Tranſierunt .ſua inſtrumenta commendabit Michmas in
29 לְמִכְמָשׂ יַפְקִיד כֵּלָיו׃ עָבְרוּ מַעְבָּרָה גֶּבַע
Intona .fugit Saul Ghibhah ,Ramah *contremuit* :pernoctârūt diverſorio
30 מָלוֹן לָנוּ חָרְדָה הָרָמָה גִּבְעַת שָׁאוּל נָסָה׃ צַהֲלִי
ſe Elongavit .Hanathoth pauper,Laiſah *attendere fac* ,Gallim filia tuā vocē
31 קוֹלֵךְ בַּת־גַּלִּים הַקְשִׁיבִי לַיְשָׁה עֲנִיָּה עֲנָתוֹת׃ נָדְדָה
Nob in dies Adhuc *ſe collegerunt fugam ad* Ghebim habitatores,Madmenah
32 מַדְמֵנָה יֹשְׁבֵי הַגֵּבִים הֵעִיזוּ׃ עוֹד הַיּוֹם בְּנֹב
.Jeruſalaim collis ,Sijon domus mons ſuā manum *Agitabit* :ſtandum ad
לַעֲמֹד יְנֹפֵף יָדוֹ הַר בֵּית־צִיּוֹן גִּבְעַת יְרוּשָׁלִָם׃

Verſio VUL. LAT.

16 Propter hoc mittet dominator
Dn̄s exercituū in pinguibꝰ ejꝰ
tenuitatē: & ſubtus gloriam ejus
ſuccenſa ardebit quaſi combuſtio
17 ignis. Et erit lumen Iſrael
in igne, & Sanctis ejus in
flamma: & ſuccendetur, & devorabitur
ſpina ejus, & vepres
18 in die una. Et gloria ſaltꝰ ejꝰ,
& Carmeli ejus, ab anima uſq;
ad carnem conſumetur, & erit
19 terrore profugus. Et reliquiæ
ligni ſaltûs ejus præ paucitate
numerabuntur, & puer ſcribet
20 eos. Et erit in die illa: non adjiciet
reſiduū Iſrael, & hi qui
fugerint de domo Jacob, inniti
ſuꝑ eo qui percutit eos: ſed innitetur
ſuꝑ Dn̄m Sanctū Iſrael
21 in veritate. Reliquiæ convertentur,
reliquiæ, inquā, Jacob
22 ad Deum fortē. Si enim fuerit
populꝰ tuus Iſrael quaſi arena
maris, reliquiæ convertentur
ex eo: conſummatio abbreviata
23 inundabit juſtitiā. Conſummationē
enim et abbreviationem
Dn̄s Deꝰ exercituū faciet
24 in medio omnis terræ. Propter
hoc, hæc dicit Dn̄s Deus exercituū;
Noli timere, populꝰ meꝰ
habitator Sion, ab Aſſur: in virga
ꝑcutiet te, & baculū ſuū levabit
25 ſuꝑ te in via Ægypti. Adhuc
enim paululum modicúmque,
& conſūmabitur indignatio
et furor meꝰ ſuꝑ ſcelꝰ eorū.
26 Et ſuſcitabit ſuꝑ eum Dominꝰ
exercituū flagellū, juxta plagā
Madian in petra Oreb, & virgam
ſuā ſuper mare, & levabit
27 eam in via Ægypti. Et erit in
die illa: Auferetur onus ejꝰ de
humero tuo, & jugū ejꝰ de collo
tuo, et computreſcet jugū à
28 facie olei. Veniet in Aiath,
tranſibit in Magron: apud
Machmas commendabit vaſa
29 ſua. Tranſierunt curſim, Gaba
ſedes noſtra: obſtupuit Rama,
30 Gabaath Saulis fugit. Hinni
voce tuâ filia Gallim, attende
Laiſa, paupercula Anathoth.
31 Migravit Medemena: habitatores
32 Gabim, confortamini. Adhuc dies eſt, ut in Nobe ſtetur: agitabit manum ſuam ſuper montem filiæ Sion, collem Jeruſalem.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

16 Ἀλλὰ ἀποστελεῖ κύριος Σαβαὼθ εἰς τὴν σὴν
τιμὴν ἀτιμίαν, καὶ εἰς τὴν σὴν δόξαν πῦρ καιόμενον
17 καυθήσεται. Καὶ ἔσται τὸ φῶς τοῦ Ἰσραὴλ
(σ)εἰς πῦρ, καὶ ἁγιάσει (τ)αὐτὸν ἐν πυρὶ καιομένῳ,
καὶ φάγεται ὡσεὶ χόρτον τὴν ὕλην. τῇ ἡμέρᾳ
18 ἐκείνῃ Ἀποσβεσθήσεται τὰ ὄρη, (υ) καὶ
οἱ βουνοὶ, καὶ οἱ δρυμοὶ, καὶ καταφάγεται ἀπὸ ψυχῆς
ἕως σαρκῶν. καὶ ἔσται ὁ φεύγων, ὡς ὁ φεύγων
19 ἀπὸ φλογὸς καιομένης. Καὶ οἱ καταλειφθέντες
ἀπ' αὐτῶν (φ) ἀριθμὸς ἔσονται, καὶ
20 παιδίον γράψει αὐτούς. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ
ἐκείνῃ, οὐκέτι προστεθήσεται τὸ καταλειφθὲν
Ἰσραὴλ, καὶ οἱ σωθέντες τοῦ Ἰακὼβ
οὐκέτι μὴ πεποιθότες ὦσιν ἐπὶ τοὺς ἀδικήσαντας
αὐτοὺς, (')ἀλλὰ ἔσονται πεποιθότες ἐπὶ
21 τὸν θεὸν τὸν ἅγιον τοῦ Ἰσραὴλ τῇ ἀληθείᾳ. Καὶ
ἔσται τὸ καταλειφθὲν τοῦ Ἰακὼβ ἐπὶ θεὸν ἰσχύοντα.
22 Καὶ ἐὰν γένηται ὁ λαὸς Ἰσραὴλ ὡς
ἡ ἄμμος τῆς θαλάσσης, τὸ κατάλειμμα (χ)
23 αὐτῶν σωθήσεται. (ψ)Λόγον συντελῶν καὶ συντέμνων
ἐν δικαιοσύνῃ, Ὅτι λόγον συντετμημένον
(ω)κύριος ποιήσει ἐν τῇ οἰκουμένῃ
24 ὅλῃ. Διὰ τοῦτο τάδε λέγει κύριος Σαβαὼθ,
Μὴ φοβοῦ ὁ λαός μου, οἱ κατοικοῦντες ἐν Σιὼν,
ἀπὸ Ἀσσυρίων, ὅτι ἐν ῥάβδῳ πατάξει σε·
πληγὴν γὰρ ἐπάγω ἐπὶ σὲ, τοῦ ἰδεῖν ὁδὸν
25 Αἰγύπτου. Ἔτι γὰρ μικρὸν, καὶ παύσεται ἡ ὀργὴ,
26 ὁ δὲ θυμός μου ἐπὶ τὴν βουλὴν αὐτῶν. Καὶ (α)ἐγερεῖ
ὁ θεὸς ἐπ' αὐτοὺς, κατὰ τὴν πληγὴν (β) Μαδιὰμ
ἐν τόπῳ θλίψεως· καὶ ὁ θυμὸς αὐτοῦ τῇ
ὁδῷ τῇ κατὰ θάλασσαν, εἰς τὴν ὁδὸν τὴν κατ'
27 Αἴγυπτον. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ἀφαιρεθήσεται
ὁ (γ)ζυγὸς αὐτοῦ ἀπὸ τοῦ ὤμου σου,
καὶ ὁ φόβος αὐτοῦ ἀπὸ σοῦ, καὶ καταφθαρήσεται ὁ
28 ζυγὸς ἀπὸ τῶν ὤμων ὑμῶν. Ἥξει γὰρ εἰς τὴν πόλιν
Ἀγγαὶ, καὶ παρελεύσεται εἰς (δ)Μαγγεδὼ,
29 καὶ ἐν Μαχμὰς θήσει τὰ σκεύη αὐτοῦ. Καὶ
παρελεύσεται φάραγγα, καὶ ἥξει εἰς Ἀγγαὶ, φόβος
30 λήψεται Ῥαμὰ, πόλιν Σαοὺλ, φεύξεται. Ἡ
θυγάτηρ Γαλλεὶμ, ἐπακούσεται (ε) Λαϊσὰ, ἐπακούσεται
31 ἐν Ἀναθώθ. (ζ)Καὶ ἐξέστη Μαδεβηνὰ,
32 καὶ οἱ κατοικοῦντες Γιββείρ. Παρακαλεῖτε σήμερον
(η)ἐν ὁδῷ τοῦ μεῖναι, τῇ χειρὶ παρακαλεῖτε
τὸ ὄρος τὴν θυγατέρα Σιὼν, καὶ οἱ βουνοὶ οἱ ἐν Ἱερουσαλήμ.

Sed mittet Dominꝰ Sabaoth in honorem 16
tuū ignominiā: & in gloriā tuā ignē ardentem accendet.
Et erit lumen Iſrael in igne: & 17
(e) ſanctificabit eum in igne ardenti, & comedet, ſicut fœnum,
ſylvā. Die illâ Extinguentur mōtes, 18
& colles, et ſaltus; & devorabit ab anima uſq; ad carnes. Et
erit, qui fugit, quaſi qui fugit à
flamma ardenti: Et reſidui ex eis, 19
numerus erunt: & parvulus ſcribet eos.
Et erit in die illa, non ultrà 20
adjiciet reſiduum Iſrael, &
ſalvati de Jacob non ultrà fidentes
erunt ſuper eos, qui ipſos injuriis
afficiunt, ſed erunt fidentes
ſuper Deū Sanctū Iſrael veritate.
Et erit reſiduum Jacob ſuper Deū 21
fortē. Quòd ſi fuerit populꝰ Iſra- 22
el, quaſi arena maris, reliquiæ eorū
ſalvabuntur. Verbum conſum- 23
mans, & brevians in juſtitia: quoniā
ſermonē breviatū faciet Dominus
in toto orbe terræ. Propter 24
hoc, hæc dicit Dominus Sabaoth;
Noli timere, populꝰ meꝰ, qui habitatis
in Sion, ab Aſſyriis: quia in
virga percutiet te; plagā enim (f)
induco ſuper te, ad videndam viā
Ægypti. Adhuc enim paululum, et 25
ceſſabit ira: furor autē meus ſuper
conſiliū eorū. Et ſuſcitabit Domi- 26
nus ſuper eos ſecundū plagā Madiam
in (g) loco tribulationis: &
furor ejus in via quæ ſuper mare,
in viam quæ ſuper Ægyptum. Et 27
erit, in die illa auferetur jugū ejꝰ
ab humero tuo, & timor ejꝰ à te:
& computreſcet jugū ab humeris
veſtris. Veniet enim in civitatem 28
Angæ, & tranſibit in Maggedo,
& in Machmas ponet vaſa ſua:
Et tranſibit vallē, et veniet in An- 29
gæ: timor apprehendet Rama civitatē
Saul: (h) fugiet Filia Gallim: 30
(i) audietur Laiſa: audietur in Anathoth:
Et obſtupuit Madebena, 31
& habitatores Gibbir. Conſolami- 32
ni hodiè in via, ut maneat. (k)
Manu conſolamini montē, filiam
Sion, & colles, qui in Hieruſalem.

MS.A. (σ) ὡς πῦρ, (τ) αὐτὸ (υ) καὶ οἱ δρυμοὶ, καὶ οἱ βουνοὶ, (φ) ἔσονται ἀριθμὸς, (') ἀλλ' (χ) σωθήσεται. (ψ) Λόγον γὰρ (ω) ποιήσει ὁ θεὸς (α) ἐπεγερεῖ (β) τὴν Μαδιὰμ (γ) φόβος αὐτοῦ ἀπὸ σοῦ, καὶ ὁ ζυγὸς αὐτοῦ ἀπὸ τοῦ ὤμου σου, (δ) Μαγεδδὼ, (ε) ἐν * σα, (ζ) Ἐξέστη (η) ἐν τῇ ὁδῷ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 חלף דאתרברב מלכא דאתור בכן ישלח רבון עלמא יי צבאות ברברבנוהי מחא
17 ותחות מני יקרהון מיקד ייקדון כיקידת אשא : ויהי מריה נהוריה דישראל וקדישיה
מימריה תקיף כאשתא ופתגמוהי כשלהוביתא ויקטול וישיצי שלטונוהי וטורנוהי
18 19 ביומא חד : ויקר סגי משריתיה נפשיהון עם פגריהון ישיצי ויהי תביר ועריק : ושאר
20 עבדי קרביה יסופון למהוי עם דמנין ומלכו חלשא יתחשבון : ויהי בעדנא ההיא לא
יוספון עוד שארא דישראל ושובת בית יעקב לאסתמכא על עממיא דהוו מפלחין בהון
21 ויסתמכון על מימרא דיי קדישא דישראל בקשוט : שאר דלא חטו ודתבו מחטאה
22 שארא דבית יעקב יתובון למפלח קדם אלהא גברא : ארי אם יהי עמך ישראל סגי
כחלא דימא שאר דלא חטו ודתבו מחטאה יתעבדון להון גבורן דמתגברן ומדברן
23 24 בזכו : ארי גמירא ושיצאה יי אלהים צבאות עבד עם כל רשיעי בגו ארעא : בכן כדנן
אמר יי אלהים צבאות לא תדחל עמי יתיב ציון מאתורא בשולטניה ימחנך ומרותיה
25 ירמי עלך כדבאורח מצרים : ארי עוד צבחר כזעיר ויסופון לוטיא מנכון דבית יעקב
26 ורוגזי על עממיא עבדי תבלא לשיצאותהון : וייתי עלוהי יי צבאות מחא כמחת מדין
בשקיף עורב ומרותיה תעדי מנכון כמא דעדת מרות פרעה על ימא ויתעבדן לכון
27 גבורן כדבאורח מצרים : ויהי בעדנא ההיא תעדי מרותיה מנך וניריה מעל צורך
28 ויתברון עממיא מן קדם משיחא : אתא על עית עבר במגרון למכמס ימני רבני
29 משריתיה : גזו עברו ירדנא בגבע בתו להון אתברו יתבי רמתא אנש גבעת שאול
30 31 ערקו : ארימו קלכון אנש בת גלים אציתו דיתבין בליש דדירין בענתות : אתברו
32 אנש מדמנה יתבי גיבים גלו : עד כען יומא רב וסגי עדן ליה למעל הא סנחריב מלכא
דאתור נטל ועבר תלת אונין ודבר עמיה ארבעין אלפין גוספנין דדהב דבני מלכין
קטירי תגא יתבין בהון ודבר עמיה מאתן אלפין אחידי סיפין ורומחין ודבר עמיה מאתן
ושתין אלפין מחצצי גירין גוברין דרהטין קדמוהי מאה אלפין אורכא דמשריתיה
ארבע מאה פרסין צואר סוסותיה ארבעין פרסין מנין משריתיה מאתן ושתין אלפין
רבוא חסר חד וכן אתו על אברהם כד רמו יתיה לגו נורא יקידתא וכן עתידין למיתי עם
גוג ומגוג כד ישלם עלמא קציה למתפרקא משריתא קדמיתא כד עברו בירדנא שתו מיא
דהוו בירדנא משריתא תניתא כד עברו בירדנא דלו עקבי סוסותא ושתו מיא משריתא
תליתאה כד עברו בירדנא חפרו בירין ושתו מיא] אתא וקם בנוב קרית כהניא לקביל
שורא דירושלם ועני ואמר לחילותיה הלא דא היא קרתא ירושלם דעלה ארגישית כל
משריתי ועלה כבשית כל מדינתי הא היא זעירא וחלשא מכל כרכי עממיא דכבשית
בתקוף ידי עלה קם מניד ברישיה מוביל ומיתי בידיה על טור בית מקדשא די בציון
ועל עזרתא דבירושלם :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Pro eo ꝙ magnificatus eſt rex Aſſyriæ; propterea mittet dominator ſeculi 16
Dn̄s exercituū in principes ejꝰ plagā, & ſubtꝰ *vaſa gloriæ* eorū incendio
ſuccendentur, ſicut incendium ignis. Et erit Dn̄s lumen Iſrael, & ſan- 17
ctꝰ ejꝰ, & verbum ejus forte ſicut ignis, & ſermo ejus ſicut flamma; & occidet
& conſumet principes ejꝰ, & ſatrapas ejus in die una. Et gloriam mul- 18
titudinis exercitus ejus, & animas eorum cum corporibꝰ eorum conſumet;
& erit confractus & profugus. Et reliqui bellatores ejus deficient, ut ſit 19
populꝰ pauci numeri; & in regnum infirmum reputabuntur. Et erit in tem- 20
pore illo; Non adjicient ultra reſiduum Iſrael, & qui liberati fuerint de
domo Jacob, inniti ſuper populis, quibus antea ſerviebant: ſed innitentur
ſuper verbo Dn̄i ſancto Iſrael, in veritate. Reliquiæ quæ non peccaverunt, 21
& quæ converſæ fuerunt à peccato, reliquiæ domus Jacob convertentur, ut
ſerviant coram Deo forti. Quoniam ſi fuerit populus tuus Iſrael multus 22
ſicut arena maris, illis reliquiis quæ non peccaverūt, & quæ converſæ ſunt
à peccato, fient magnalia quæ prævalebunt, & ducentur in juſtitia. Quia 23
conſummationē, & conſumptionem Dn̄s Deus exercituum faciet in omnibus
impiis *in medio* terræ. Propterea hæc dicit Dn̄s Deus exercituum: Ne 24
timeas popule meus habitator Sion ab Aſſur. In virga enim ſua percutiet
te, & ſubjectionem ſuam projiciet ſuper te, ſicut in via Ægypti. Quia ad- 25
huc paululū, modicúmque, & deſinent maledictiones à vobis, ô domus Jacob;
& ira mea erit ſuper populos operantes ſcelus, ut conſumantur. Et 26
adducet ſuper eum Dn̄s exercituum plagam Madian in petra Oreb: & ſubjectio
ejus auferetur à vobis, ſicut ablata eſt ſubjectio Pharaonis *ad mare,*
& fient eis magnalia ſicut in via Ægypti. Et erit in tempore illo; auferetur 27
ſubjectio ejus à te, & jugum ejus de collo tuo: & conterentur populi à facie
Chriſti. Venit ſuper Ajat, tranſivit in Magron, apud Machmas conſti- 28
tuet principes exercitus ſui. *Vadârunt* tranſierunt Jordanem; in Gabaa 29
manſionē fecerunt ſibi: contriti ſunt habitatores Rama: viri Gabaa Saulis
fugerunt. Elevate vocem veſtram viri filiæ Galim; auſcultate qui habitatis 30
in Lais; qui moramini in paupercula Anathoth. Contriti ſunt viri Madme- 31
na, habitatores Gabim tranſmigrarunt. Adhuc dies magnus, & multum 32
tempus ei ut ingrediatur. Ecce Senacherib rex Aſſyriorum (*profectus eſt &*
tranſiit tres ſtationes, duxitq; ſecum quadragies mille ſedilia aurea, quibꝰ
filii regum redimiti coronis inſidebant; adduxit etiā ſecū ducenta millia gerentiū
gladios & haſtas, præterea ducenta & ſexaginta millia ſagittariorū,
viros præcurrentes eum centies mille: longitudo caſtrorum ejꝰ quadringentæ
paraſangæ, cervix equitatꝰ ejꝰ quadraginta paraſangæ, numerꝰ copiarū
ejus ducenta & ſexaginta millia myriadum minor uno: & ſic venerunt in
Abraham quando conjecerunt eū in mediū ignis ardentis, ſic etiā venturi
ſunt cum Gog & Magog cum abſolverit mundꝰ terminū ſuū ut liberetur.
Exercitꝰ primꝰ tranſmiſſo Jordane epotaverunt aquas quæ erant in eo, exercitꝰ
ſecundꝰ tranſmiſſo Jordane exhauſerunt veſtigia equorū & biberunt
aquas, exercitꝰ tertiꝰ tranſmiſſo Jordane foderunt puteos & biberunt
aquas.) veniet & ſtabit in Nobe urbe ſacerdotū contra murū Hieruſalem.
Et reſpondet & dicit exercitui ſuo: Hæccinæ eſt illa civitas Hieruſalem,
contra quam congregavi omnia caſtra mea, *& propter quam preſſi omnes*
provincias meas? Ecce ipſa *minor &* infirmior eſt cunctis munitionibꝰ populorū,
quas ſubjeci in fortitudine manus meæ. *Contra eā* ſtabit, commovebit
caput ſuū; inferet & trahet manum ſuam ſuper montem domus ſanctuarii quæ eſt in Sion, & contra atrium quod eſt in Hieruſalem.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

16 * ܡܛܠܗܢܐ ܢܫܕܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ ܥܠ ܡܫܡܢܘܗܝ ܚܒܠܐ. ܘܚܠܦ ܐܝܩܪܗ ܢܐܩܕ
17 ܝܩܕܢܗ. ܐܝܟ ܝܩܕܢܐ ܕܢܘܪܐ. * ܘܢܗܘܐ ܢܘܗܪܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܠܢܘܪܐ. ܘܩܕܝܫܘܗܝ
18 ܠܫܠܗܒܝܬܐ. ܘܬܐܟܘܠ ܘܬܐܩܕ ܟܘܒܘܗܝ ܘܚܘܚܘܗܝ. ܒܝܘܡܐ ܚܕ. * ܘܫܘܦܪܐ ܕܥܒܗ
19 ܘܕܟܪܡܠܗ. ܡܢ ܢܦܫܐ ܘܥܕܡܐ ܠܒܣܪܐ ܢܣܦ. ܘܢܗܘܐ ܐܝܟ ܕܠܐ ܗܘܐ. * ܘܫܪܟܐ ܕܩܝܣܐ
20 ܕܥܒܗ. ܒܡܢܝܢܐ ܢܗܘܘܢ. ܘܛܠܝܐ ܢܟܬܘܒ ܐܢܘܢ. * ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܠܐ ܢܘܣܦ
ܬܘܒ ܫܪܟܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܐܝܠܝܢ ܕܐܫܬܘܙܒܘ ܡܢ ܒܝܬ ܝܥܩܘܒ. ܠܡܬܬܟܠܘ ܥܠ ܡܢ
21 ܕܡܚܐ ܐܢܘܢ. ܐܠܐ ܢܬܬܟܠܘܢ ܒܩܘܫܬܐ ܥܠ ܡܪܝܐ ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܫܪܟܐ ܢܬܦܢܘܢ.
22 ܫܪܟܗ ܕܝܥܩܘܒ. ܠܘܬ ܐܠܗܐ ܓܢܒܪܐ. * ܘܐܢ ܢܗܘܐ. ܥܡܟ ܐܝܣܪܝܠ ܐܝܟ ܚܠܐ ܕܝܡܐ.
23 ܫܪܟܐ ܢܬܦܢܘܢ ܡܢܗܘܢ. ܓܙܪ ܘܦܣܩ. ܘܡܦܢܐ ܒܙܕܝܩܘܬܐ. * ܡܛܠ ܕܫܘܡܠܝܐ
24 ܘܦܣܩܬܐ ܥܒܕ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܠܐ
ܬܕܚܠ ܥܡܝ ܕܥܡܪ ܒܨܗܝܘܢ. ܡܢ ܐܬܘܪܝܐ ܕܡܚܐ ܠܟ ܒܫܒܛܗ. ܘܫܒܛܗ ܡܪܝܡ
25 ܥܠܝܟ ܒܐܘܪܚܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܡܛܠ ܕܥܕ ܩܠܝܠ ܙܒܢ: ܘܢܫܠܡ ܪܘܓܙܐ ܘܚܡܬܐ ܥܠ
26 ܚܒܠܗܘܢ. * ܘܢܥܝܪ ܥܠܘܗܝ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܡܚܘܬܐ. ܐܝܟ ܡܚܘܬܐ ܕܡܕܝܢ ܕܒܛܘܪܐ
27 ܕܚܘܪܒ. ܘܫܒܛܗ ܥܠ ܝܡܐ. ܘܡܘܒܠܗ ܒܐܘܪܚܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܘܢܗܘܐ. ܒܝܘܡܐ ܗܘ.
ܢܥܒܪ ܫܘܥܒܕܗ ܡܢ ܟܬܦܟ. ܘܢܝܪܗ. ܡܢ ܨܘܪܟ. ܘܢܬܚܒܠ ܢܝܪܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܬܡܫܚܢܐ.
28 * ܢܐܬܐ ܠܥܢܬ. ܘܢܥܒܪ ܠܡܓܕܘ. ܘܠܡܟܡܫ ܢܣܝܡ ܡܐܢܘܗܝ. * ܢܥܒܪ ܠܡܥܒܪܬܐ ܕܓܒܥ.
29
30 ܠܒܝܬܒܝܬܢ. ܙܥܬ ܪܡܬܐ. ܘܓܒܥܬܐ ܕܫܐܘܠ ܥܪܩܬ. * ܨܘܚܝ ܒܩܠܟܝ ܒܪܬܐ
31 ܕܓܠܝܡ: ܨܘܬܝ ܠܝܫ. ܘܥܢܝ ܥܢܬܘܬ. * ܐܬܢܣܒܬ ܡܕܡܢܐ. ܘܥܡܘܪܐ ܕܓܒܝܡ
32 ܐܬܚܝܠܘ. * ܥܕܟܝܠ ܝܘܡܐ ܒܢܘܒ ܩܐܡ. ܐܝܕܗ ܢܢܝܦ ܥܠ ܛܘܪܐ ܕܒܪܬ ܨܗܝܘܢ.
ܘܥܠ ܪܡܬܐ ܕܐܘܪܫܠܡ.

Idcirco immittet Dominus Deus fortis in- 16
teritum in pingues ejus, & loco gloriæ ipſi-
us ardebit incendium ejus velut incendium
ignis. Et lux Iſraelis in ignem vertetur, & 17
ſancti ejus in flammam, quæ comburet & de-
vorabit vepres & ſpinas ejus eodem die: Et 18
decor ſylvæ ejus & Charmeli ejus ab anima
ad carnem uſque comſumetur & fiet quaſi
nunquam fuiſſet: Et reliqua ligna ſylvæ 19
ipſius in numerum redigentur *tam exign-
um*, ut puer ſcribere *poſſit* ea. Et fiet tunc 20
temporis, ut non pergat ampliùs reliquus Iſ-
rael & qui evadent è domo Jacobi, inniti eo
qui ſe læſit; ſed æquo jure innitentur Do-
mino ſancto Iſraelis. Reliqui enim conver- 21
tentur, reliquiæ *nimirum* Jacobi, ad Deum
fortiſſimum. Nam tametſi fuerit populus tu- 22
us Iſrael ut arena quæ eſt in mari, *nihilominus*
reſidui convertentur ex eis: præcindet, ſeca-
bit, & convertet cum æquitate: Quoniam fi- 23
nem & compendium facturus eſt Dominus
potens in univerſa terra. Sic dicit Dominus 24
potens, Ne timeas popule mi qui habitas in
Sion, ab Aſſyrio qui te percutit virgâ ſuâ, &
baculum ſuum contra te levat in via Ægypti:
Quoniam intra breviſſimum tempus conſum- 25
mabitur ira & indignatio mea contra cor-
ruptelam eorum: Et concitabit in eum Do- 26
minus fortiſſimus flagellum ſimile cædi Medi-
anitarum in monte Horib, & baculo ſuo
ſuper mare, & oneri ſuo in via Ægypti:
Ac tum temporis fiet ut recedat ſervitus ejus 27
ab humero tuo, & jugum ejus à collo tuo,
& corrumpatur jugum à conſpectu juvenca-
rum. Veniet ad Anath, tranſibit per Ma- 28
geddo, & in Machmas ponet impedimenta
ſua: Trajiciet vadam Gebaa, Beth-baita- 29
nem: trepidabit Rama, et Gebaath Saulis
aufugiet. Hinni voce tuâ filia Ghelliam, au- 30
ſculta Lis, et reſponde Anathoth. Receſſit 31
Marmena, et cives Gubin confortati ſunt.
Adhuc dies in Nob manebit: agitabit ma- 32
num ſuam contra montem filiæ Sionis et con-
tra colles Jeruſalem.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

16 * وليس هكذا * لكن يرسل رب الجيوش الى كرامتك هوانا * والى شرفك نارا متوقدة تحرق *
17 * ويكون نور اسرائيل كالنار ويقدسه بلهيب متوقد * فتلهب وتأكل المادة كالعشب *
18 * في ذلك اليوم تحمد الجبال والتلال والغياض * وتأكل من النفس الى اللحوم * ويكون الهارب
19 كالهارب من اللهيب المتوقد * والذين يبقون منهم يكونون عددا وصبي صغير يكتبهم *
20 * ويكون في ذلك اليوم لا يستزيد من بقي من اسرائيل * والذي خلصوا من يعقوب ليس
يكونون يتوكلون ايضا على الذين ظلموهم * لكن يكونون متوكلين على الله قدوس اسرائيل
21 بالحق * ويكون من يبقى من يعقوب يقبل الى الله الجبار *

* الاصحاح السادس *

22 * وان كان عدد اسرائيل مثل رمل البحر * يخلص منهم النذر * لاني اكمل كلمة واقطعها
23 بالعدل * لان كلمة قاطعة يصنعها الله في المسكونة كلها * من اجل هذا هكذا يقول الرب
24 الاه الجيوش * لا تخف يا شعبي السكان في صهيون من الموصليين لانه يضربك بعصا * لاني
25 انا اجلب عليك ضربة لترى طريق مصر * لانه عن قليل يكف الغضب * وغضبي على
26 مشورتهم * ويثير الله عليهم كضربة مدين في موضع الضغطة * وغضبه في الطريق عند
27 البحر * في الطريق التي عند مصر * ويكون في ذلك اليوم ينزع خوفه عنك ونيره
28 عن عاتقك * ويبيد نيره عن عواتقكم * لانه ياتي الى مدينة انجا * ويجوز الى مجدو وفي
29 مخماس يضع اوعيته * ويعبر الوادي وياتي الى انجا * وياخذ راما الخوف مدينة شاول *
30 * وهرب ابنة غاليم يسمع في ليش * يسمع في عناثوث * ذهلت مادابينا * وسكان جبين
31
32 هزوا اليوم * ليقيموا في الطريق باليد * عزوا الجبل ابنة صهيون وايها الاكام التي
في ايروشليم *

* *Nequaquam fiet ita; ſed mittet Do-* 16
minus exercituum in honorandos tuos
contemptum, & in nobiles tuos ignem
* *ardentem comburentem. Eritque lux* 17
Iſraelis velut ignis, & ſanctificabit
eum flammâ accenſâ, quæ exardeſcet
* *devorabitque herbam virentem ut fœ-*
num. Eo die laudem dicent montes, colles, 18
ſylvæque: & devorabit ab anima ad car-
nes uſque: & qui fugiet, erit velut is qui
fugit flammam ardentem: Et qui ſu- 19
pererunt ex eis, redigentur ad eum *nu-*
merum, ut parvus puer eos conſcribe-
* *re* poſſit. *Eodem die non adjicient ii* 20
qui reſidui fuerint ex Iſraele, & qui
evaſerint ex Jacobo, fidere amplius
iis qui ſe oppreſſerunt; ſed Deo ſan-
cto Iſraelis in rei veritate fident: Et 21
qui ſuperſtites manſerint è Jacobo, re-
cipient ſe ad Deum potentiſſimum.

Textus ſextus.

* *Etiamſi fuerit numerus Iſraelis velut* 22
arena maris, rari tamen *ex eis ſalva-*
buntur. Verbum enim abſolvam, &
juſtè præcindam. Nam verbum præci- 23
ſum faciet Deus in toto orbe. Pro- 24
pterea ſic dicit Dominus *Deus exer-*
cituum; Ne timeas popule mi habitan-
tes in Sion, ab Aſſyriis, quòd te ba-
culo percutiat: ego enim adducam
ſuper te flagellum, ut videas viam
Ægypti. Nam brevi ceſſabit ira, & 25
furor meus erit contra conſilium eorum:
Concitabit enim Deus adversùs illos 26
plagam ſimilem Medianitarum in loco
anguſtiæ, & furori ſuo in via mari
proxima, in via quæ eſt prope Ægy-
ptum. Eodémque die tolletur à te 27
metus ejus, & jugum ejus à collo
tuo, & peribit jugum ejus à cervici-
bus veſtris. Nam venturus eſt uſque 28
ad urbem Angja, deinde tranſiturus
ad Mageddo, & in Mechmas poſitu-
rus vaſa ſua: Flumen trajecturus, 29
tum reverſurus Angjam. Ramam ur-
bem Saulis timor occupabit, Et fu- 30
* *giet filia Gilim: audietur in Lis, au-*
dietur in Anathoth, Obſtupeſcet Ma- 31
dabina. At O habitatores Gebbin, agi-
tate hodiè, Ut permaneatis in via 32
manum: confortate montem filiam
Sionis O bonis collis qui eſtis in Je-
ruſalem.

יְשַׁעְיָה׃ יא

ramum *deramificans* exercituum Dominus dominator Ecce
33 הִנֵּה הָאָדוֹן יְהוָה צְבָאוֹת מְסָעֵף פֻּארָה
.humiliabuntur sublimes & ,succisi statura excelsi & *: terrore cum*
בְּמַעֲרָצָה וְרָמֵי הַקּוֹמָה גְּדֻעִים וְהַגְּבֹהִים יִשְׁפָּלוּ׃
.cadet forti in Lebanon & : ferro in sylvæ *perplexa* succidet Et
34 וְנִקַּף סִבְכֵי הַיַּעַר בַּבַּרְזֶל וְהַלְּבָנוֹן בְּאַדִּיר יִפּוֹל׃

CAP. XI. יא

ejus radicibus de *surculus* & , Isai stirpe de virga egredietur Et
1 וְיָצָא חֹטֶר מִגֵּזַע יִשָׁי וְנֵצֶר מִשָּׁרָשָׁיו
spiritus , DOMINI spiritus eum super requiescet Et .crescet
2 יִפְרֶה׃ וְנָחָה עָלָיו רוּחַ יְהוָה רוּחַ
spiritus , fortitudinis & consilii spiritus , intelligentiæ & sapientiæ
חָכְמָה וּבִינָה רוּחַ עֵצָה וּגְבוּרָה רוּחַ
timore in *ejus* odorari Et .DOMINI timoris & scientiæ
3 דַּעַת וְיִרְאַת יְהוָה׃ וַהֲרִיחוֹ בְּיִרְאַת
neque , judicabit suorum oculorum visionem *ad* nec : DOMINI
יְהוָה וְלֹא־לְמַרְאֵה עֵינָיו יִשְׁפּוֹט וְלֹא־
, *tenues* justitia in judicabit *Et*. .arguet suarum aurium auditum *ad*
4 לְמִשְׁמַע אָזְנָיו יוֹכִיחַ׃ וְשָׁפַט בְּצֶדֶק דַּלִּים
terram percutiet & : terræ mansuetis rectitudine in arguet &
וְהוֹכִיחַ בְּמִישׁוֹר לְעַנְוֵי־אָרֶץ וְהִכָּה־אֶרֶץ
.impium interficiet suorum labiorum spiritu in & , sui oris virga in
בְּשֵׁבֶט פִּיו וּבְרוּחַ שְׂפָתָיו יָמִית רָשָׁע׃
cingulum fides & : ejus lumborum cingulum justitia erit Et
5 וְהָיָה צֶדֶק אֵזוֹר מָתְנָיו וְהָאֱמוּנָה אֵזוֹר
hœdo cum pardus & ,agno cum lupus *hospitabitur* Et .ejus renum
6 חֲלָצָיו׃ וְגָר זְאֵב עִם־כֶּבֶשׂ וְנָמֵר עִם־גְּדִי
puer & , simul pingue pecus & , leonis catulus & vitulus & : accubabit
יִרְבָּץ וְעֵגֶל וּכְפִיר וּמְרִיא יַחְדָּו וְנַעַר
accubabunt , simul pascentur ursa & vacca Et *.eis in ducens* parvus
7 קָטֹן נֹהֵג בָּם׃ וּפָרָה וָדֹב תִּרְעֶינָה יַחְדָּו יִרְבְּצוּ
lactens delectabitur Et .paleam comedet bos sicut leo & : earum nati
8 יַלְדֵיהֶן וְאַרְיֵה כַּבָּקָר יֹאכַל־תֶּבֶן׃ וְשִׁעֲשַׁע יוֹנֵק
ablactatus reguli cavernam super & , aspidis foramen super
עַל־חֻר פָּתֶן וְעַל מְאוּרַת צִפְעוֹנִי גָּמוּל
universo in *corrumpent* non & , *malefacient* Non *.misit* suam manum
9 יָדוֹ הָדָה׃ לֹא־יָרֵעוּ וְלֹא־יַשְׁחִיתוּ בְּכָל־
, DOMINI scientia terra est repleta quia : meæ sanctitatis monte
הַר קָדְשִׁי כִּי־מָלְאָה הָאָרֶץ דֵּעָה אֶת־יְהוָה
, Isai radix , illa die in erit Et .operientes mare aquæ sicut
10 כַּמַּיִם לַיָּם מְכַסִּים׃ וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא שֹׁרֶשׁ יִשַׁי
erit & : quærent gentes illam *ad*, populorum vexillum *in stans* quæ
אֲשֶׁר עֹמֵד לְנֵס עַמִּים אֵלָיו גּוֹיִם יִדְרֹשׁוּ וְהָיְתָה
DOMINUS adjiciet illa die in , erit Et .gloria ejus requies
11 מְנֻחָתוֹ כָּבוֹד׃ וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא יוֹסִיף אֲדֹנָי
quod : sui populi residuum possidendum ad suam manum secundò
שֵׁנִית יָדוֹ לִקְנוֹת אֶת־שְׁאָר עַמּוֹ אֲשֶׁר
, Helam ab & , Chus à & , Pathros à & , Ægypto ab & , Assur ab remanebit
יִשָּׁאֵר מֵאַשּׁוּר וּמִמִּצְרַיִם וּמִפַּתְרוֹס וּמִכּוּשׁ וּמֵעֵילָם
vexillum elevabit Et .maris insulis ab & , Chamath à & , Sinhar à &
12 וּמִשִּׁנְעָר וּמֵחֲמָת וּמֵאִיֵּי הַיָּם׃ וְנָשָׂא נֵס
congregabit Jehudah *dispersas* & , Israel *expulsos colliget &* , gentibus
לַגּוֹיִם וְאָסַף נִדְחֵי יִשְׂרָאֵל וּנְפֻצוֹת יְהוּדָה יְקַבֵּץ
hostes & , Ephraim zelus recedet Et .terræ *alis* quatuor à
13 מֵאַרְבַּע כַּנְפוֹת הָאָרֶץ׃ וְסָרָה קִנְאַת אֶפְרַיִם וְצֹרְרֵי
Jehudah & , Iehudah æmulabitur non Ephraim.excidentur Jehudah
יְהוּדָה יִכָּרֵתוּ אֶפְרַיִם לֹא־יְקַנֵּא אֶת־יְהוּדָה וִיהוּדָה
.Ephraim angustiabit non
לֹא־יָצֹר אֶת־אֶפְרָיִם׃

Versio VULG. LAT.

33 Ecce dominator Dominus
exercituum confringet
lagunculam in terrore, & excelsi
staturâ succidentur, & sublimes
34 humiliabuntur. Et subvertentur
condensa saltûs ferro: &
Libanus cum excelsis cadet.

CAP. XI.

1 ET egredietur virga de
radice Jesse, & flos de radice ejus
2 ascendet. Et requiescet super
eum spiritus Domini; spiritus
sapientiæ, & intellectûs,
spiritus consilii, & fortitudinis,
3 spiritus scientiæ, & pietatis, Et
replebit eum spiritus timoris
Domini. Non secundùm
visionem oculorum judicabit,
neque secundùm auditum aurium
4 arguet: Sed judicabit in
justitia pauperes, & arguet in
æquitate pro mansuetis terræ:
& percutiet terram virgâ oris
sui, & spiritu labiorum suorũ
5 interficiet impium. Et erit
justitia cingulum lumborum ej⁹:
et fides cinctorium renum ejus.
6 Habitabit lupus cum agno: &
pardus cum hœdo accubabit:
vitulus & leo & ovis simul
morabuntur, & puer parvulus
7 minabit eos. Vitulus & ursus
pascentur: simul requiescent
catuli eorum: & leo quasi bos
8 comedet paleas. Et
delectabitur infans ab ubere super
foramine aspidis: & in caverna
reguli, qui ablactatus fuerit,
9 manum suam mittet. Non
nocebunt, & non occîdent in
universo monte sancto meo:
quia repleta est terra scientiâ
Domini, sicut aquæ maris
10 operientes. In die illa, radix Iesse,
qui stat in signum populorum,
ipsum gentes deprecabuntur,
& erit sepulchrum ejus
11 gloriosum. Et erit in die illa:
Adjiciet Dominus secundò
manum suam ad possidendum
residuum populi sui, quod
relinquetur ab Assyriis, & ab
Ægypto, & à Phetros, & ab
Æthiopia, & ab Ælam, & à
Sennaar, & ab Emath, & ab
12 insulis maris. Et levabit signum
in nationes, & congregabit
profugos Israel, et dispersos
Juda colliget à quatuor plagis
13 terræ. Et auferetur zelus
Ephraim, et hostes Juda
peribunt: Ephraim non
æmulabitur Judam, et Judas non
pugnabit contra Ephraim.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

33 (θ) Ἰδοὺ ὁ δεσπότης κύριος Σαβαὼθ
συνταράσσει τοὺς ἐνδόξους μετὰ ἰσχύος, καὶ οἱ
ὑψηλοὶ τῇ ὕβρει συντριβήσονται, καὶ (ι) οἱ
34 ὑψηλοὶ ταπεινωθήσονται, Καὶ πεσοῦνται
ὑψηλοὶ μαχαίρᾳ, ὁ δὲ Λίβανος σὺν τοῖς
ὑψηλοῖς πεσεῖται.

MS.A. (θ) Ἰδοὺ γὰρ (ι) ταπεινωθήσονται οἱ ὑψηλοὶ μαχαίρᾳ.

ΚΕΦ. ια'.

1 ΚΑὶ ἐξελεύσεται ῥάβδος ἐκ τῆς ῥίζης
Ἰεσσαί, καὶ ἄνθος ἐκ τῆς ῥίζης ἀναβήσεται.
2 Καὶ ἀναπαύσεται ἐπ' αὐτὸν πνεῦμα τοῦ
θεοῦ, πνεῦμα σοφίας καὶ συνέσεως,
πνεῦμα βουλῆς καὶ ἰσχύος, πνεῦμα γνώσεως καὶ
3 εὐσεβείας. Ἐμπλήσει αὐτὸν, πνεῦμα
φόβου θεοῦ· οὐ κατὰ τὴν δόξαν κρινεῖ, οὐδὲ κατὰ τὴν
4 λαλιὰν ἐλέγξει, Ἀλλὰ κρινεῖ ταπεινῷ
κρίσιν, καὶ ἐλέγξει τοὺς ταπεινοὺς τῆς γῆς,
καὶ πατάξει γῆν τῷ λόγῳ τοῦ στόματος
αὐτοῦ. καὶ ἐν πνεύματι διὰ χειλέων ἀνελεῖ
5 ἀσεβῆ. Καὶ ἔσται δικαιοσύνῃ ἐζωσμένος τὴν
ὀσφὺν αὐτοῦ, καὶ ἀληθείᾳ (α) εἰλημένος τὰς
6 πλευράς. Καὶ συμβοσκηθήσεται λύκος
μετὰ ἀρνός, καὶ πάρδαλις συναναπαύσεται
ἐρίφῳ, καὶ μοσχάριον καὶ ταῦρος καὶ λέων
ἅμα βοσκηθήσονται, καὶ παιδίον μικρὸν ἄξει
7 αὐτούς. Καὶ βοῦς καὶ ἄρκος ἅμα
βοσκηθήσονται, καὶ ἅμα τὰ παιδία αὐτῶν (β)
ἔσονται· καὶ λέων ὡς βοῦς φάγεται ἄχυρα.
8 Καὶ παιδίον νήπιον (γ) ἐπὶ τρωγλῶν
ἀσπίδων, καὶ ἐπὶ κοίτην ἐκγόνων ἀσπίδων τὴν
9 χεῖρα ἐπιβαλεῖ. Καὶ οὐ μὴ (δ)
κακοποιήσουσιν, οὐδὲ μὴ δύνωνται ἀπολέσαι οὐδένα
ἐπὶ τὸ ὄρος τὸ ἅγιόν μου· ὅτι ἐνεπλήσθη ἡ
σύμπασα τοῦ γνῶναι τὸν κύριον, ὡς ὕδωρ
10 πολὺ κατακαλύψαι θαλάσσας. Καὶ ἔσται
ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἡ ῥίζα τοῦ Ἰεσσαί, καὶ ὁ
ἀνιστάμενος ἄρχειν ἐθνῶν, ἐπ' αὐτῷ
ἔθνη ἐλπιοῦσι, καὶ ἔσται ἡ ἀνάπαυσις αὐτοῦ,
11 τιμή. Καὶ ἔσται (ε) τῇ ἡμέρᾳ· ἐκείνῃ
προσθήσει (ζ) ὁ κύριος τοῦ δεῖξαι τὴν χεῖρα
αὐτοῦ, τοῦ ζηλῶσαι τὸ καταλειφθὲν
ὑπόλοιπον τοῦ λαοῦ, (η) ὃν ἂν καταλειφθῇ (θ) ὑπὸ
τῶν Ἀσσυρίων, καὶ ἀπὸ Αἰγύπτου, (ι) καὶ ἀπὸ
Βαβυλωνίας, καὶ ἀπὸ Αἰθιοπίας, καὶ ἀπὸ
Ἐλαμιτῶν, καὶ ἀπὸ ἡλίου ἀνατολῶν, καὶ ἐξ
12 Ἀραβίας. Καὶ ἀρεῖ σημεῖον εἰς τὰ ἔθνη, καὶ
συνάξει τοὺς ἀπολομένους Ἰσραήλ, καὶ τοὺς
διεσπαρμένους Ἰούδα συνάξει ἐκ τῶν
13 τεσσάρων πτερύγων τῆς γῆς. Καὶ
ἀφαιρεθήσεται (κ) ὁ ζῆλος Ἐφραίμ, καὶ οἱ ἐχθροὶ
Ἰούδα ἀπολοῦνται. Ἐφραὶμ οὐ ζηλώσει Ἰούδαν,
καὶ Ἰούδας οὐ θλίψει Ἐφραίμ.

MS.A. (α) εἰλημμένος (β) βοσκηθήσονται· καὶ λέων καὶ βοῦς ἅμα φάγονται ἄχυρα. (γ) ἐπὶ τρώγλην (δ) κακοποιήσωσιν, οὐδ' οὐ μὴ (ε) ἐν τῇ (ζ) κύριος (η) ὃ ἂν (θ) ἀπὸ τῶν (ι) καὶ Βαβυλωνίας, καὶ Αἰθιοπίας, (κ) ὁ ζυγὸς

Ecce dominator Dominus Sabaoth 33
conturbabit gloriosos cum fortitudine:
& excelsi superbiâ contererentur:
& sublimes humiliabuntur:
Et cadent sublimes gladio: Libanus 34
autem cum excelsis cadet.

CAP. XI.

ET egredietur virga de (a) radice 1
Jesse, & flos de radice ascendet.
Et requiescet super eum spiritus 2
Dei, spiritus sapientiæ, & intellectûs,
spiritus consilii, & fortitudinis:
spiritus scientiæ & pietatis
Replebit eum, spiritus timoris 3
Domini. Non secundùm gloriam
judicabit, neque juxta sermonem
arguet: Sed judicabit humili 4
judicium, & arguet humiles terræ:
& percutiet terram verbo oris
sui: & in spiritu per labia interficiet
impium. Et erit justitiâ cinctus 5
lumbum suum, & veritate
involutus costas. Et simul pascetur 6
lupus cum agno: & pardus simul
accubabit cum hœdo: Et vitulus,
& taurus, & leo simul pascentur,
& puer parvus ducet eos:
Et bos & ursus pascentur simul: 7
& erunt simul catuli eorum: &
leo, quasi bos, comedet paleas. Et 8
puer infans super foramina aspidum,
& in cubile fœtuum aspidum
manum mittet: Et non nocebunt, 9
neque poterunt perdere
quemquam in monte sancto meo:
quia repleta est terra cognitione
Domini, quasi aqua multa cooperiat
maria. Et erit in die illa, radix 10
Jesse, & qui consurgit, ut
princeps sit gentium: in ipso gentes
sperabunt: & erit requies ejus
honor. Et erit die illâ, (b) adjiciet 11
Dominus ostendere manum suam
ad zelandum relictum residuum
populi, quod relictum fuerit ab
Assyriis, & ab Ægypto, & à Babylonia,
& ab Æthiopia, & ab
Elamitis, & à Solis ortu, & ex
Arabia. Et levabit signum in nationes, 12
& congregabit perditos
Israel: & dispersos Judæ colliget
à quatuor alis terræ: Et 13
auferetur zelus Ephræm: &
hostes Juda peribunt. Ephræm
non æmulabitur Judam: & Judas
non tribulabit Ephræm.

תַּרְגּוּם יוֹנָתָן Targum JONATHAN.

33 הָא רִבּוֹן עַלְמָא יְיָ צְבָאוֹת רְמֵי קְטוֹל בְּמַשְׁרְיָתֵיהּ כִּבְעוֹט דְּמִתְבְּעֵיט בְּמַעֲצַרְתָּא וְרָמֵי
34 קוֹמָא יִתְקַטְּפוּן וְתַקִּיפַיָּא יִמְאֲכוּן ׃ וְיִקְטֵיל גִּבָּרֵי מַשְׁרְיָתֵיהּ דְּמִתְגַּבְּרִין כְּבַרְזְלָא וְעָבְדֵי
קְרָבֵיהּ עַל אַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל יִתְרְמוֹן ׃
יא
1 2 וְיִפּוֹק מַלְכָּא מִבְּנוֹהִי דְיִשַׁי וּמְשִׁיחָא מִבְּנֵי בְנוֹהִי יִתְרַבֵּי ׃ וְתִשְׁרֵי עֲלוֹהִי רוּחַ נְבוּאָה מִן
3 קֳדָם יְיָ רוּחַ חוּכְמָא וְסוּכְלְתָנוּ רוּחַ מְלַךְ וּגְבוּרָא רוּחַ מַדַּע וְדַחַלְתָּא דַיְיָ ׃ וִיקָרְבִנֵּיהּ
4 לְדַחַלְתֵּיהּ יְיָ לָא לְחֵיזוּ עֵינוֹהִי יְהֵי דָאֵין וְלָא לְמִשְׁמַע אוּדְנוֹהִי יְהֵי מוֹכַח ׃ וִידִין בִּקְוּשְׁטָא
מִסְכֵּנִין וְיוֹכַח בְּהֵימָנוּתָא מַחֲשִׁיכֵי עַמָּא דְאַרְעָא וְיִמְחֵי חַיָּבֵי אַרְעָא בְּמֵימַר פּוּמֵיהּ
5 וּבְמַמְלַל סִפְוָתֵיהּ יְהֵי מְמִית אַרְמִילוֹס רַשִׁיעָא ׃ וִיהוֹן צַדִּיקַיָּא סְחוֹר סְחוֹר לֵיהּ וְעָבְדֵי
6 הֵימְנוּתָא מִקָּרְבִין לֵיהּ ׃ בְּיוֹמוֹהִי דִמְשִׁיחָא דְיִשְׂרָאֵל יִסְגֵּי שְׁלָמָא בְּאַרְעָא וְיָדוּר דֵּיבָא עִם
אִמְּרָא וְנִמְרָא עִם גַּדְיָא יִשְׁרֵי וְעֶגְלָא וְאַרְיָא וּפַטִּים כַּחֲדָא וְיָנִיק זְעֵיר יְהֵי מְדַבַּר לְהוֹן ׃
7 8 וְתוֹרְתָא וְדֵיבָא יִרְעֲיָן כַּחֲדָא יִשְׁרוֹן בְּנֵיהוֹן וְאַרְיָא כְּתוֹרָא יֵיכוֹל תִּבְנָא ׃ וִיחַיֵּךְ יַנְקָא עַל
9 חוֹר חֵיוֵי פִּתְנָא וְעַל חֵיזוּ גַּלְגְּלֵי עֵינֵי חֵיוֵי חוּרְמָן חֲסִילָא יְדוֹהִי יוֹשִׁיט ׃ לָא יַבְאֲשׁוּן וְלָא
יְחַבְּלוּן בְּכָל טוּרָא דְקוּדְשִׁי אֲרֵי תִתְמְלֵי אַרְעָא לְמַדַּע יָת דַּחַלְתָּא דַיְיָ כְּמַיָּא דְלְיַמָּא חָפַן ׃
10 וִיהֵי בְּעִדָּנָא הַהִיא בַּר בְּרֵיהּ דְּיִשַׁי עָתִיד דִּיקוּם אָת לְעַמְמַיָּא לֵיהּ מַלְכְּוָן יִשְׁתַּמְעוּן וִיהֵי
11 אֲתַר בֵּית מֵישְׁרוֹהִי בִּיקָר ׃ וִיהֵי בְּעִדָּנָא הַהִיא יוֹסִיף יְיָ תִּנְיָנוּת גְּבוּרְתֵּיהּ לְמִפְרוֹק יָת
שְׁאָרָא דְעַמֵּיהּ דְּאִשְׁתְּאַר מֵאַתּוּר וּמִמִּצְרַיִם וּמִפַּתְרוֹס וּמֵהוֹדוּ וּמֵעֵילָם וּמִבָּבֶל וּמֵחֲמָת
12 וּמִנְּגְוָת יַמָּא ׃ וְיִזְקוֹף אָת לְעַמְמַיָּא וִיכְנֵישׁ מְבַדְּרֵי יִשְׂרָאֵל וְגָלְוַת יְהוּדָה יְקָרֵב מֵאַרְבַּע
13 רוּחֵי אַרְעָא ׃ וְתֶעְדֵי קִנְאֲתָא דְבֵית אֶפְרַיִם וּדְמְעִיקִין לְדְבֵית יְהוּדָה יִשְׁתֵּיצוּן דְּבֵית אֶפְרַיִם
לָא יְקַנּוּן בִּדְבֵית יְהוּדָה וּדְבֵית יְהוּדָה לָא יְעִיקוּן לִדְבֵית אֶפְרָיִם ׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Ecce dominator seculi Dñs exercituum projiciet interfectos in castris ejus, 33
sicut cùm uvæ calcantur in torculari. Et excelsi statura succidentur, &
fortes humiliabuntur. Et occidet robustos exercitus ejus, qui fortes sunt sicut 34
ferrum, & bellatores ejus super terram Israel cadent.

CAP. XI.

ET egredietur rex de filiis Jesse, & Christus de filiis filiorum ejus 1
ungetur. Et residebit super eum spirit⁹ prophetiæ à facie Dñi, spiritus sapientiæ 2
& intellect⁹, spiritus consilii & fortitudinis, spirit⁹ scientiæ *&* *timoris* Dñi.
Et applicabit eum *ad timorem suum Dominus* : non secundùm visionem 3
oculorũ suorũ judicabit, neq; secundùm auditũ aurium suarũ arguet. Sed
judicabit in veritate pauperes, & arguet in fide pro egenis populi *terræ*, & 4
percutiet peccatores terræ verbo oris sui, & in eloquio labiorũ suorum
occidet *Armillum* impiũ. Et erunt justi in circuitu ej⁹, & fideles accedent ad 5
eum. In diebus Christi Israel multiplicabitur pax in terra. Et habitabit 6
lupus cum agno, & leopard⁹ cum hœdo commorabitur, & vitul⁹ & leo &
aries pinguis simul erunt : & puer parvulus minabit eos. Et bos & ursus 7
pascentur, simul morabuntur filii eorum, & leo sicut bos comedet paleas.
Et delectabitur infans super foramen aspidis; & super visum conchæ 8
oculorum serpentis reguli, qui ablactat⁹ est mittet manum suam. Non malè 9
facient neque nocebunt in omni monte sancto meo, quia implebitur terra
scientia timoris Dñi, sicut aquæ operiunt mare. Et erit in tempore illo 10
filius filiorum Jesse, qui futurus est ut stet in signum populorum : ipsi regna
obedient, & erit loc⁹ mansionis ejus in gloria. Et erit in tempore illo, 11
adjiciet Dñs secundò per potentiam suam, ut liberet reliquias populi sui quæ
relinquentur de Assur, & de Ægypto, & de Phetros, & de India, & de
Elam, & de Babylonia, & de Emath, & de insulis maris. Et levabit signum 12
populis, & congregabit dispersos Israel, & transmigrationem Juda
applicabit à quatuor ventis terræ. Et auferetur zelus *domus* Ephraim : & qui 13
angustia afficiebant domũ Juda, excidentur : viri dom⁹ Ephraim non
æmulabuntur domũ Juda: & viri domus Juda non angustiabunt domum Ephraim.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܡܫܦܠ ܠܡܫܬܒܗܪܢܐ ܒܥܘܫܢܐ. ܘܪܡܝܢ ܒܩܘܡܬܐ 33
ܢܬܡܟܟܘܢ. ܘܪܡܝܢ ܢܬܡܟܟܘܢ. * ܘܢܦܣܘܩ ܣܘܟܐ ܕܥܒܐ ܒܦܪܙܠܐ. ܘܠܒܢܢ 34
ܒܬܫܒܘܚܬܗ ܢܦܠ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܐ *

* ܘܢܦܘܩ ܫܒܛܐ ܡܢ ܓܘܙܥܗ ܕܐܝܫܝ .· ܘܢܘܪܒܐ ܡܢ ܥܩܪܗ. * ܘܬܬܢܝܚ ܘܬܫܪܐ 1
ܥܠܘܗܝ ܪܘܚܐ ܕܐܠܗܐ. ܪܘܚܐ ܕܚܟܡܬܐ ܘܕܣܘܟܠܐ. ܪܘܚܐ ܕܡܠܟܐ ܘܕܓܢܒܪܘܬܐ. 2
ܪܘܚܐ ܕܝܕܥܬܐ ܘܕܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܢܕܢܚ ܒܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܐܝܟ ܕܚܙܝܢ ܥܝܢܘܗܝ 3
ܢܕܘܢ. ܘܠܐ ܐܝܟ ܕܫܡܥܢ ܐܕܢܘܗܝ ܢܟܘܣ. * ܢܕܘܢ ܒܟܐܢܘܬܐ ܠܡܣܟܢܐ. ܘܢܟܘܣ ܒܬܪܝܨܘܬܐ 4
ܠܡܟܝܟܐ ܕܐܪܥܐ. ܢܡܚܐ ܠܐܪܥܐ ܒܫܒܛܐ ܕܦܘܡܗ .· ܘܒܪܘܚܐ ܕܣܦܘܬܗ ܢܩܛܘܠ 5
ܠܪܫܝܥܐ. ܢܗܘܐ ܙܕܝܩܘܬܐ ܐܣܪ ܚܨܘܗܝ .· ܘܗܝܡܢܘܬܐ ܐܣܘܪܐ ܕܚܨܘܗܝ. * ܢܥܡܪ 6
ܕܐܒܐ ܥܡ ܐܡܪܐ. ܘܢܡܪܐ ܥܡ ܓܕܝܐ ܢܪܒܘܥ. ܘܥܓܠܐ ܘܓܘܪܝܐ ܕܐܪܝܐ ܘܬܘܪܐ ܐܟܚܕܐ
ܢܪܥܘܢ. ܘܛܠܝܐ ܙܥܘܪܐ ܢܕܒܪ ܐܢܘܢ. * ܘܬܘܪܬܐ ܘܕܒܐ ܐܟܚܕܐ ܢܪܥܘܢ. ܘܥܘܠܝܗܝܢ ܐܟܚܕܐ 7
ܢܪܒܥܘܢ. ܐܪܝܐ ܐܝܟ ܬܘܪܐ ܢܐܟܘܠ ܬܒܢܐ. * ܘܢܫܬܥܐ ܝܢܘܩܐ ܒܚܘܪܢܐ. ܘܒܚܘܪܐ 8
ܕܐܣܦܣ ܢܪܡܐ ܐܝܕܗ ܚܣܝܠܐ. * ܘܠܐ ܢܒܐܫܘܢ ܘܠܐ ܢܚܒܠܘܢ ܒܟܠܗ ܛܘܪܐ 9
ܕܩܘܕܫܝ. ܡܛܠ ܕܬܬܡܠܐ ܐܪܥܐ ܝܕܥܬܗ ܕܡܪܝܐ .· ܐܝܟ ܡܝܐ ܕܡܟܣܝܢ ܠܝܡܐ.
* ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ .· ܥܩܪܗ ܕܐܝܫܝ ܕܩܐܡ ܐܬܐ ܠܥܡܡܐ .· ܘܒܗ ܥܡܡܐ 10
ܢܣܟܘܢ. ܘܬܗܘܐ ܢܝܚܬܗ ܐܝܩܪܐ. * ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ .· ܢܘܣܦ ܡܪܝܐ ܐܝܕܗ 11
ܕܢܩܢܐ .· ܫܪܟܐ ܕܥܡܗ ܕܐܫܬܚܪ .· ܡܢ ܐܬܘܪ ܘܡܢ ܡܨܪܝܢ. ܘܡܢ ܦܬܪܘܣ
ܘܡܢ ܟܘܫ. ܘܡܢ ܥܝܠܡ ܘܡܢ ܣܥܝܪ. ܘܡܢ ܚܡܬ ܘܡܢ ܓܙܪܬܐ ܕܝܡܐ. * ܘܢܩܝܡ 12
ܐܬܐ ܠܥܡܡܐ .· ܘܢܟܢܫ ܠܡܛܥܝܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܠܡܒܕܪܐ ܕܝܗܘܕܐ ܢܟܢܫ ܡܢ ܐܪܒܥ 13
ܦܢܝܬܗ ܕܐܪܥܐ: * ܘܢܥܒܪ ܚܣܡܐ. ܡܢ ܐܦܪܝܡ .· ܘܒܥܠܕܒܒܘܗܝ ܕܝܗܘܕܐ ܢܐܒܕܘܢ. ܐܦܪܝܡ
ܠܐ ܢܚܣܡ ܒܝܗܘܕܐ. ܘܝܗܘܕܐ ܠܐ ܢܐܠܘܨ ܠܐܦܪܝܡ.

Ecce Dominus Deus fortis jactabundos cum violentia everſurus eſt, & proceri ſtaturâ humiliabuntur, & elati deprimentur: Sylvæ ramos ferro diſrumpet, & Libanus cum gloria ſua corruet. 33 34

CAP. XI.

Tum prodibit baculus è trunco Iſai, & ſurculus ex ejus ſtirpe expullulabit, Super quo requieſcet & conſidebit ſpiritus Dei, ſpiritus ſapientiæ & intelligentiæ, ſpiritus cogitationis & fortitudinis, ſpiritus ſcientiæ & timoris Domini. Fulgebit timore Domini, nec prout videbunt oculi ejus judicabit, neque prout audient aures ejus arguet. Cum juſtitia judicabit pro pauperibus, & arguet cum æquitate pro egenis terræ. Terram percutiet virgâ oris ſui, & ſpiritu labiorum ſuorum impios morte afficiet. Erit juſtitia cingulum lumborum ejus, & fides zona laterum ejus: Ita ut commoretur lupus cum agno, & pardus cum hœdo cubet; vitulus & catulus leonis & bos ſimul paſcantur, & parvus puer abigat eos: Vacca & urſa ſimul paſcantur, & pulli earum ſimul cubent: leo ſicut bos paleas comedat: Infans colubro ludat, & in foramen aſpidis mittat manum ſuam ablactatus; Et non lædant, neque corrumpant in toto monte ſanctitatis meæ: implebitur enim terra ſcientiâ Domini, ut aquis mare tegentibus. Eo tempore fiet, ut ſtirpem Iſai, quæ ſurget in ſignum populis, exquirant populi; & requies ejus ſit honor. Eodem quoq; tempore fiet, ut adhibeat Dñs ſecundò manum ſuam, ad cogendas reliquias populi ſui quæ remanſerunt, ex Athur, & ex Ægypto, è Patros, ex Æthiopia, ex Ilam, è Seir, ex Hemath, & ex inſulis maris: Et ſignum attollat gentibus, congregetque errabundos Iſraelis, & diſperſos Judæ colligat è quatuor plagis terræ. Recedat invidentia ab Aphremo, & oppreſſores Judæ pereant: Aphrem non invideat Judæ, nec Juda opprimat Aphremum: 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لأن ها السيد رب القدوس يقلق الأشراف بقوة * وينكسر المرتفعون بقوتهم * ويذلون 33
ويخزون * ويسقط المرتفعون بالسيف * ويسقط لبنان مع المرتفعين * 34

* الفصل الحادي عشر *

* ويخرج عصا من أصل إيسي * ويصعد 1
زهر من أصله * ويحل عليها روح الله * روح الحكمة والفهم * روح المشورة والقوة * روح 2
العلم وحسن العبادة * روح خوف الله يملأه * ليس يدين بالشرف * ولا يحسب القول 3
يبكت * لكنه يحكم للذليل بالإنصاف ويبكت أشراف الأرض * ويضرب الأرض 4
بكلمة فيه * وبروح شفتيه يبيد المنافق * ويكون حقوه ممنطقا بالعدل * وجنباه 5
مشدودان بالحق * ويرعى الذئب مع الخروف * والنمر يستريح مع الجدي * والعجل 6
والثور والأسد يرعون جميعا * وغلام صغير يسوقهم * والبقر والدب يرعون معا * 7
ويكون أولادهم جميعا * والأسد مثل الثور يأكل التبن * وصبي طفل في عش 8
الأفاعي * والمفطوم في مضجع أولاد الأفاعي يضع يده * فلا يضرونه * ولا يستطيعون 9
أن يهلكوا ولا واحدا في جبل المقدس * لأن الأرض كلها امتلأت لتعرف الرب مثل ماء
كثير يغشي البحار * ويكون في ذلك اليوم أصل يسي والقائم ليرؤس الأمم * عليه 10
تتوكل الأمم وتكون راحته كرامة * ويكون في ذلك اليوم يريد الرب أن يظهر 11
يده ليغار * ويطلب البقية الباقية من شعبه * التي بقيت إذن من الموصليين * ومن
مصر * ومن بابل * ومن الحبشة * ومن أهل الأهواز * ومن مشارق الشمس * ومن أرابيا *
* ويرفع علامة للأمم * ويجمع الهالكين من إسرائيل * والمتفرقين من يهودا يجمعهم من 12
أربع أجنحة الأرض * وينزع غيرة أفرام * وأعداء يهودا يهلكون * لا يغار أفرام على يهودا * 13
ويهودا لا يضيق على أفرام *

Nam ecce Dominus, Dominus exercituum, nobiles violenter exagitabit; & proceri ſtaturâ frangentur, deprimentur, & mærore conficientur: Alti gladio corruent, & Libanus cum ſuperbis corruet. 33 34

CAP. XI.

Et egredietur virga de radice Jeſſe, & aſcendet flos e radice ejus, Et requieſcet ſuper eum ſpiritus Dei, ſpiritus ſapientiæ & intellectûs, ſpiritus conſilii & fortitudinis, ſpiritus ſcientiæ & rectæ religionis: Spiritus timoris Dei replebit illum: non judicabit ſecundùm nobilitatem, neque ſecundùm dicta arguet: Sed pro humili judicabit cum æquitate, & arguet nobiles terræ: percutiet terram verbo oris ſui, & ſpiritu labiorum ſuorum perdet impium. Erit enim lumbus ejus accinctus juſtitiâ, & latera ejus aſtricta veritate: Et paſcetur lupus cum agno, & pardus cum hædo quieſcet: & vitulus, bos, atque leo ſimul paſcentur, & puer parvus ducet eos: Vacca & urſa unà paſcentur, eruntque catuli earum ſimul: leo ceu bos comedet paleam: Puellulus tenellus in nidum viperarum, & ablactatus in cubile filiorum viperarum immittet manum ſuam, Nec lædent eum, & ne unum quidem extinguere poterunt in monte ſancto: quoniã tota terra implebitur ut agnoſcat Dominum, ut aquis multis conteguntur maria. Et erit in die illa, ut in ſtirpe Jeſſe, & eo qui ſurrecturus eſt ad dominandum in gentes, fiduciam collocent gentes; & quies ejus ſit gloriſſima. Erit etiam in die illa, ut pergat Dominus oſtendere manum ſuam, ad æmulationem; & quærat reliquias populi ſui reſiduas quæ remanſerint adhuc ex Aſſyriis, ex Ægypto, ex Babele, ex Æthiopia, & ex populis Ahuaz (ſunt provinciæ quædam inter Baſeram & Perſidem interjectæ) *ex Orientali plaga ſolis, & ex Arabia. Et elevabit ſignum gentibus, & congregabit errantes ex Iſraele, & diſperſos ex Juda congregabit e quatuor extremitatibus terræ. Auferetur zelus Aphremi, & inimici Judæ peribunt: non invidebit Aphremus Judæ, nec Juda moleſtiam inferet Aphremo:* 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13

filios prædabuntur ſimul : mare ad Peliſtim humerum in volabunt Et
וְעָפוּ בְכָתֵף פְּלִשְׁתִּים יָמָּה יַחְדָּו יָבֹזּוּ אֶת־בְּנֵי־ 14
Hammon filii & ,eorum manus miſſio Moab & Edom : Orientis
קֶדֶם אֱדוֹם וּמוֹאָב מִשְׁלוֹחַ יָדָם וּבְנֵי עַמּוֹן
, Ægypti maris *linguam* Dominus *anathemate delebit* Et .eorũ auditus
מִשְׁמַעְתָּם׃ וְהֶחֱרִים יְהוָֹה אֵת־לְשׁוֹן יַם־מִצְרַיִם 15
: ſui ſpiritus fortitudine in flumen ſuper ſuam manum *agitabit* &
וְהֵנִיף יָדוֹ עַל־הַנָּהָר בַּעְיָם רוּחוֹ
.calceamentis in faciet ambulare & ,flumina ſeptem in ,eum percutiet &
וְהִכָּהוּ לְשִׁבְעָה נְחָלִים וְהִדְרִיךְ בַּנְּעָלִים׃
: Aſſur ab relinquetur qui ,ejus populi reſiduo *ſtrata* via erit Et
וְהָיְתָה מְסִלָּה לִשְׁאָר עַמּוֹ אֲשֶׁר יִשָּׁאֵר מֵאַשּׁוּר 16
terra e *eum aſcendere* die in Iſraeli fuit ſicut
כַּאֲשֶׁר הָיְתָה לְיִשְׂרָאֵל בְּיוֹם עֲלֹתוֹ מֵאֶרֶץ
.Ægypti
מִצְרָיִם׃

CAP. XII. יב

fuiſti acerbatus quia ,Domine tibi Confitebor : illa die in dices Et
וְאָמַרְתָּ בַּיּוֹם הַהוּא אוֹדְךָ יְהוָֹה כִּי אָנַפְתָּ 1
,mea ſalus Deus Ecce .me *conſolaberis* & ,tuus *naſus avertetur* ,*me in*
בִּי יָשֹׁב אַפְּךָ וּתְנַחֲמֵנִי׃ הִנֵּה אֵל יְשׁוּעָתִי 2
,Dominus *Jah canticum* & ,mea fortitudo quia ,pavebo non & confidam
אֶבְטַח וְלֹא אֶפְחָד כִּי עָזִּי וְזִמְרָת יָהּ יְהוָֹה
fontibus de ,gaudio in aquas haurietis Et .*ſalutem in* mihi fuit &
וַיְהִי־לִי לִישׁוּעָה׃ וּשְׁאַבְתֶּם־מַיִם בְּשָׂשׂוֹן מִמַּעַיְנֵי 3
invocate ,Domino Confitemini : illa die in dicetis Et .ſalutis
הַיְשׁוּעָה׃ וַאֲמַרְתֶּם בַּיּוֹם הַהוּא הוֹדוּ לַיהוָֹה קִרְאוּ 4
quoniam mementote : ejus *ſtudia* populis in facite Scire .ejus nomen *in*
בִשְׁמוֹ הוֹדִיעוּ בָעַמִּים עֲלִילֹתָיו הַזְכִּירוּ כִּי
celſitudinem quoniam , Domino Cantate .ejus nomen eſt excelſum
נִשְׂגָּב שְׁמוֹ׃ זַמְּרוּ יְהוָֹה כִּי גֵאוּת 5
præconiza & ,vocem Exalta .terra univerſa in *ipſa nota* : fecit
עָשָׂה מוּדַעַת זֹאת בְּכָל־הָאָרֶץ׃ צַהֲלִי וָרֹנִּי 6
.Iſrael Sanctus *tuo interiori* in magnus quia : Sijon habitatrix
יוֹשֶׁבֶת צִיּוֹן כִּי־גָדוֹל בְּקִרְבֵּךְ קְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל׃

CAP. XIII. יג

Super .Amos filius Jeſahjahu vidit quam ,Babylonis *Onus*
1 מַשָּׂא בָּבֶל אֲשֶׁר חָזָה יְשַׁעְיָהוּ בֶּן־אָמוֹץ׃ עַל־ 2
Agitate .eos ad vocem exaltate ,vexillum elevate *præruptum* montem
הַר־נִשְׁפֶּה שְׂאוּ־נֵס הָרִימוּ קוֹל לָהֶם הָנִיפוּ
:meis ſanctificatis præcepi Ego .munificorum *oſtia* ingrediantur & ,manũ
יָד וְיָבֹאוּ פִּתְחֵי נְדִיבִים׃ אֲנִי צִוֵּיתִי לִמְקֻדָּשָׁי 3
.*meæ celſitudinis* exultantes , *meo naſo* in meos fortes vocavi etiam
גַּם קָרָאתִי גִבּוֹרַי לְאַפִּי עַלִּיזֵי גַּאֲוָתִי׃
ſonitus vox : multi populi *ſimilitudine* montibus in *turbæ* Vox
קוֹל הָמוֹן בֶּהָרִים דְּמוּת עַם־רָב קוֹל שְׁאוֹן 4
viſitans exercituum Dominus ,congregatarum gentium regnorum
מַמְלְכוֹת גּוֹיִם נֶאֱסָפִים יְהוָֹה צְבָאוֹת מְפַקֵּד
: cœli extremo ab procul terra de Venientes .prælii exercitum
צְבָא מִלְחָמָה׃ בָּאִים מֵאֶרֶץ מֶרְחָק מִקְצֵה הַשָּׁמָיִם 5
.terram omnem *corrumpendum* ad ejus *indignationis* vaſa & ,Dominus
יְהוָֹה וּכְלֵי זַעְמוֹ לְחַבֵּל כָּל־הָאָרֶץ׃
Omnipotente ab præda veluti : Domini dies *propinquus* quia , Ululate
הֵילִילוּ כִּי קָרוֹב יוֹם יְהוָֹה כְּשֹׁד מִשַּׁדַּי 6
hominis cor omne & ,*remittentur* manus omnes Idcirco .veniet
יָבוֹא׃ עַל־כֵּן כָּל־יָדַיִם תִּרְפֶּינָה וְכָל־לְבַב אֱנוֹשׁ 7
.liqueſcet
יִמָּס׃

Verſio VULG. LAT.

14 Et volabunt in humeros Philiſthiim per mare, ſimul prædabuntur filios Orientis. Idumæa et Moab præceptũ manûs eorum, & filii Ammon
15 obedientes erunt. Et deſolabit Dominus linguam maris Ægypti, & levabit manum ſuã ſuper flumen, in fortitudine ſpiritûs ſui: & percutiet eum in ſeptem rivis, ita ut tranſe-
16 ant per eum calceati. Et erit via reſiduo populo meo, qui relinquetur ab Aſſyriis: ſicut fuit Iſraeli in die illa, quâ aſcendit de terra Ægypti.

CAP. XII.

1 ET dices in die illa; Confitebor tibi, Domine, quoniam iratus es mihi: converſus eſt furor tuus, & conſolatus es
2 me. Ecce Deus ſalvator meꝰ, fiducialiter agam, & non timebo: quia fortitudo mea, & laus mea Dominus, & factus
3 eſt mihi in ſalutem. Haurietis aquas in gaudio de fontibus
4 ſalvatoris: Et dicetis in die illa; Confitemini Domino, & invocate nomen ejus: notas facite in populis adinventiones ejus: mementote quoniam
5 excelſum eſt nomen ejus. Cantate Domino quoniam magnificè fecit: annuntiate hoc in
6 univerſa terra. Exulta, & lauda habitatio Sion: quia magnus in medio tuî Sanctus Iſrael.

CAP. XIII.

1 ONus Babylonis, quod vi-
2 dit Iſaias filius Amos. Super montem caliginoſum levate ſignum, exaltate vocem, levate manum, & ingrediantur por-
3 tas duces. Ego mandavi ſanctificatis meis, & vocavi fortes meos in ira mea, exultantes in
4 gloria mea. Vox multitudinis in montibus, quaſi populorũ frequentiũ: vox ſonitꝰ regũ, gentium congregatarũ: Dñs exercituum præcepit militiæ
5 belli, Venientibus de terra procul, à ſummitate cœli: Dominus, & vaſa furoris ejus, ut
6 diſperdat omnem terram. Ululate, quia propè eſt dies Dñi: quaſi vaſtitas à Domino ve-
7 niet. Propter hoc, omnes manus diſſolventur, & omne cor hominis contabeſcet,

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

14 Καὶ πετασθήσονται ἐν πλοίοις ἀλλοφύλων· θάλασσαν ἅμα προνομεύσουσι, καὶ τοὺς ἀφ' ἡλίου ἀνατολῶν, καὶ Ἰδουμαίαν, καὶ ἐπὶ Μωὰβ πρῶτον τὰς χεῖρας ἐπιβαλοῦσιν· οἱ δὲ υἱοὶ
15 Ἀμμὼν πρῶτοι ὑπακούσονται. Καὶ ἐρημώσει κύριος τὴν θάλασσαν Αἰγύπτου, καὶ ἐπιβαλεῖ τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἐπὶ τὸν ποταμὸν πνεύματι βιαίῳ· καὶ πατάξει ἑπτὰ φάραγγας, ὥστε
16 διαπορεύεσθαι αὐτὸν ἐν ὑποδήμασι. Καὶ ἔσται (α) δίοδος τῷ καταλειφθέντι μου λαῷ ἐν Αἰγύπτῳ. καὶ ἔσται τῷ Ἰσραὴλ, ὡς ἡ ἡμέρα ὅτε ἐξῆλθεν ἐκ γῆς Αἰγύπτου.

MS.A. (α) ὁδὸς

Et volabunt in navibus alienigenarum: mare ſimul prædabuntur, & eos, qui à Solis ortu, & Idumæam: & ſuper Moab primùm manus mittent. Filii autem Ammon primi obedient. Et (c) deſo- 15
labit Dominus mare Ægypti; & mittet manum ſuam ſuper flumen ſpiritu violento; & percutiet ſeptem valles, ita ut tranſeatur illud in calceamentis. Et erit via re- 16
ſiduo populo meo in Ægypto. Et erit ipſi Iſrael, ſicut dies, quando egreſſus eſt de terra Ægypti.

ΚΕΦ. ιβ'.

1 ΚΑὶ ἐρεῖς ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, (α) Εὐλογῶ σε κύριε, διότι ὠργίσθης μοι, καὶ ἀπέ-
2 στρεψας τὸν θυμόν σου, καὶ ἠλέησάς με. Ἰδοὺ ὁ θεός μου σωτήρ μου, πεποιθὼς ἔσομαι (β) ἐπ' αὐτῷ, καὶ οὐ φοβηθήσομαι· διότι ἡ δόξα μου καὶ ἡ αἴνεσίς μου κύριος, καὶ ἐγένετό μοι
3 εἰς σωτηρίαν. Καὶ (γ) ἀντλήσατε ὕδωρ μετ' εὐφροσύνης ἐκ τῶν πηγῶν τοῦ σωτη-
4 ρίου. Καὶ ἐρεῖς ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, Ὑμνεῖτε κύριον, βοᾶτε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, ἀναγγείλατε ἐν τοῖς ἔθνεσι τὰ ἔνδοξα αὐτοῦ· μιμνήσκεσθε, ὅτι ὑψώθη τὸ ὄνομα
5 αὐτοῦ. Ὑμνήσατε τὸ ὄνομα κυρίου, ὅτι ὑψηλὰ ἐποίησεν· ἀναγγείλατε ταῦτα ἐν
6 πάσῃ τῇ γῇ. Ἀγαλλιᾶσθε, καὶ εὐφραίνεσθε οἱ κατοικοῦντες (δ) Σιὼν, ὅτι ὑψώθη ὁ ἅγιος τοῦ Ἰσραὴλ ἐν μέσῳ (ε) αὐτῆς.

CAP. XII.

ET dices in die illa; (a) Benedico te, Domine, quoniam iratus es mihi, & avertiſti furorem tuum, 1
& miſertus es meî. Ecce Deus meus, ſalvator meus, fidens ero in (b) eo, & non timebo: quoniam gloria mea, & laus mea Dominus: 2
& factus eſt mihi in ſalutem. Et haurite aquam cum lætitia de fontibus ſalutaris. Et dices in illa 3
die; Hymnis celebrate Dominum, clamate nomen ejus, annuntiate in gentibus glorioſa ejus: mementote, quoniam exaltatum eſt 4
nomen ejus. Laudate nomen Domini, quoniam excelſa fecit: an- 5
nuntiate hæc in omni terra: Exultate, & lætamini, qui habitatis 6
Sion: quia exaltatus eſt Sanctus Iſrael in medio ejus.

MS.A. (α) Εὐλογήσω, (β) ἐν αὐτῷ (γ) ἀντλήσεται (δ) ἐν Σιὼν (ε) σου.

ΚΕΦ. ιγ'.

1 ὉΡΑΣΙΣ ἩΝ ΕἾΔΕΝ ἩΣΑΪΑΣ ΥἹῸΣ ἈΜΩ͂Σ, ΚΑΤᾺ ΒΑΒΥΛΩ͂-
2 ΝΟΣ. Ἐπ' ὄρους πεδινοῦ ἄρατε σημεῖον, ὑψώσατε τὴν φωνὴν (α) αὐτοῖς, παρακαλεῖ-
3 τε τῇ χειρὶ, ἀνοίξατε οἱ ἄρχοντες. Ἐγὼ συντάσσω, (β) καὶ ἐγὼ ἄγω αὐτούς. γίγαντες ἔρχονται πληρῶσαι τὸν θυμόν μου
4 χαίροντες ἅμα καὶ ὑβρίζοντες. Φωνὴ ἐθνῶν πολλῶν ἐπὶ τῶν ὀρέων, ὁμοία ἐθνῶν πολλῶν, φωνὴ βασιλέων καὶ ἐθνῶν συνηγμένων. κύριος σαβαὼθ ἐντέταλται ἔθνει
5 ὁπλομάχῳ, Ἔρχεσθαι ἐκ γῆς πόρρωθεν ἀπ' ἄκρου θεμελίου τοῦ οὐρανοῦ, κύριος καὶ οἱ ὁπλομάχοι αὐτοῦ, (γ) καταφθεῖραι πᾶσαν
6 τὴν οἰκουμένην. Ὀλολύζετε, ἐγγὺς γὰρ (δ) ἡμέρα κυρίου, καὶ συντριβὴ παρὰ τοῦ
7 θεοῦ ἥξει. Διὰ τοῦτο (ε) πᾶσα χεὶρ ἐκλυθήσεται, καὶ πᾶσα ψυχὴ ἀνθρώπου δειλιάσει.

CAP. XIII.

VIſio, quam vidit Eſaias, filius Amos, contra Babylonem. Super 1 2
montem campeſtrem levate ſignum, exaltate vocem eis, (a) conſolamini manu, aperite principes. Ego 3
præcipio, & ego adduco (b) eos. (c) Gigantes veniunt implere furorem meum gaudentes ſimul, & contumeliam facientes. Vox gen- 4
tium multarum ſuper montes, ſimilis gentium multarum, vox regum, & gentium congregatarum. Dominus Sabaoth mandavit genti bellicoſæ, ut veniat de terra 5
longinqua à ſummo fundamento cœli, Dominus, & armati bellatores ejus, ad corrumpendum univerſum orbem terræ. Ululate: propè 6
enim dies Domini: & contritio à Deo veniet. Propter hoc omnis ma- 7
nus diſſolvetur, & omnis anima hominis formidabit.

MS.A. (α) ἑαυτοῖς, μὴ φοβεῖσθε, παρακαλεῖτε τῇ ψυχῇ, (β) καὶ * ἐγὼ αὐτούς. ἡγιασμένοι εἰσὶν, καὶ ἐγὼ ἄγω αὐτούς. (γ) τοῦ καταφθεῖραι τὴν οἰκουμένην ὅλην· (δ) ἡ ἡμέρα (ε) πᾶσαι χεῖρες * ἐκλυθήσεται

תרגום יונתן Targum JONATAN.

וְיִתְחַבְּרוּן כְּתַף חַד לְמִמְחֵי פְלִשְׁתָּאֵי דִי בְמַעְרְבָא כַּחֲדָא יְבוּזוּן יָת בְּנֵי מַדְנְחָא בֶּאֱדוֹם 14
ומואב יושטון ידיהון ובני עמון ישתמעון להון : ויבש יי ית לישן ימא דמצרים וירים 15
מחת גבורתיה על פרת במימר נביוהי וימחניה לשבעא נחלין ויהכון ביה בסנדלין :
ותהי אורח כבישא לשארא דעמיה דישתאר מאתוראה כמא דהות לישראל ביום 16
מסקיהון מארעא דמצרים :

יב

ותימר בעדנא ההיא אודי קדמך יי ארי על דחבית קדמך הוה רוגזך עלי וכדו דתבית 1
לאוריתא יתוב רוגזך מני ותרחם עלי : הא על מימר אלהא פורקני אנא רחיץ ולא 2
אזדעזע ארי תוקפי ותושבחתי דחילא יי אמר במימריה והוה לי לפריק : ותקבלון 3
אולפן חדת בחדוא מבחירי צדיקיא : ותימרון בעדנא ההיא אודו קדם יי צלו בשמיה 4
חוו בעממיא עובדוהי אדכרו ארי תקיף שמיה : שבחו קדם יי ארי גבורן עבד גליא דא 5
בכל ארעא : בועי ושבחי כנשתא דציון ארי רבא אמר לאשראה שכנתיה בגויך 6
קדישא דישראל :

יג

מטל כס דלוט לאשקאה ית בבל דאתנבי ישעיה בר אמוץ : על כרכא דיתבא שליוא 1
זקופו אתא ארימו קלא להון אניפו יד וייעלון בתרעהא מתנדבין : אנא פקדית למזמני 2 3
אף ערעית גברי ויתפרעון מנהון רוגזי תוקפי ותושבחתי : קל המון בטוריא דמות עם 4
סגי קל אתרגושת מלכון עממין דמתכנשין יי צבאות ממני משרין בקרבא : אתן 5
מארעא רחיקא מסיפי ארעא יי ומני כס דלוט קדמוהי לחבלא כל רשעי ארעא :
אילילו ארי קריב יומא דעתיד למיתי מן קדם יי כבזא מן קדם שדי ייתי : על 6 7
כן כל ידיא יתרשלון וכל לבא דאנשא יתמסי :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et conjungentur humero uno, ut percutiant Philiſtæos qui ſunt in Occi- 14
dente, ſimul prædabuntur filios Orientis. In Idumæam & Moab extendent
manus ſuas, & filii Ammon obedient eis. Et exſiccabit Dñs linguam maris 15
Ægypti, & elevabit plagam fortitudinis ſuæ ſuper Euphratem, in verbo
prophetarum ſuorum; & percutiet eum in ſeptem torrentes, & ibunt in eo
cum calceamentis. Et erit via ſtrata reliquiis populi ſui qui remanſit de 16
Aſſur, ſicut fuit Iſrael in die quo egreſſi ſunt de terra Ægypti.

CAP. XII.

ET dices in tempore illo: Confitebor corã te, Dñe, quoniã pro eo quòd 1
peccavi corã te, factꝰ eſt furor tuus ſuper me; *cùm verò converſus fuero ad legẽ*: avertetur furor tuꝰ à me, et miſereberis mei. Ecce in verbo Dei ſalutis 2
meæ ego confido, & non commovebor; quia fortitudo mea, & laus mea terribilis Dñs: dixit in verbo ſuo, & fuit mihi in ſalutẽ. Et recipietis doctri- 3
nam novam in gaudio ab electis juſtorũ. Et dicetis in tempore illo: Confi- 4
temini coram Dño, orate in nomine ejus; annunciate inter populos opera
ejꝰ: mementote quia forte eſt nomen ejus. Canite coram Dño, quia magna- 5
lia fecit; & manifeſtũ eſt hoc in univerſa terra. Exulta & lauda congregatio 6
Sion, quia magnus eſt qui dixit, ſe collocaturum majeſtatem ſuam in medio
tui, ſanctus Iſrael.

CAP. XIII.

ONus calicis maledictionis ad propinandum Babyloni, quod prophetavit 1
Eſaias filius Amos. Super civitatem habitantem confidenter, levate ſi- 2
gnũ, elevate vocem eis: agitate manum, & ingrediantur per portas ejus, qui
ſponte ſe offerunt. Ego mandavi præparatis meis; etiam convocavi fortes 3
meos, ut ſumant ex eis ultionem furoris mei, *fortitudinis meæ &* laudis meæ.
Vox multitudinis in montibus, ſimilitudo populi grandis: vox tumultus 4
regnorũ multorum, populi qui congregantur. Dñs exercituũ conſtituit exer-
citus in bello. Venientes de terra longinqua à finibus *terræ*. Dñs, & vaſa 5
calicis maledictionis coram eo, ut diſperdat omnes impios terræ. Ululate, 6
quia propè eſt dies qui venturus eſt à facie Dñi: quaſi præda à facie omni-
potentis veniet. Propterea omnes manus diſſolventur, & omne cor homi- 7
nis tabeſcet.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܢܦܪܚܘܢ ܒܟܬܦܐ ܕܦܠܫܬܝܐ ܥܠ ܝܡܐ. ܘܐܟܚܕܐ ܢܒܙܘܢ ܠܒܢܝ ܡܕܢܚܐ. ܘܒܐܕܘܡ 14
ܘܡܘܐܒ ܢܘܫܛܘܢ ܐܝܕܝܗܘܢ. ܘܒܢܝ ܥܡܘܢ ܢܫܬܡܥܘܢ ܠܗܘܢ. * ܘܢܚܪܒ ܡܪܝܐ ܠܫܢܐ 15
ܕܝܡܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܢܪܝܡ ܐܝܕܗ ܥܠ ܢܗܪܐ ܒܥܘܫܢܐ ܕܪܘܚܗ. ܘܢܡܚܝܘܗܝ ܠܫܒܥܐ
ܢܚܠܝܢ. ܘܢܕܪܟܘܢ ܒܡܣܢܐ. * ܘܢܗܘܐ ܫܒܝܠܐ ܠܫܪܟܐ ܕܥܡܗ ܕܐܫܬܚܪ ܡܢ ܐܬܘܪ. 16
ܐܝܟ ܕܗܘܐ ܠܐܝܣܪܝܠ ܒܝܘܡܐ ܕܣܠܩܘ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܒ *

* ܘܬܐܡܪ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܐܘܕܐ ܠܟ ܡܪܝܐ. ܕܪܓܙܬ ܥܠܝ. ܘܐܗܦܟܬ ܪܘܓܙܟ ܘܒܝܐܬܢܝ. 1
* ܗܐ ܥܠ ܐܠܗܐ ܦܪܘܩܝ ܐܬܬܟܠܬ ܘܠܐ ܐܙܘܥ. ܡܛܠ ܕܬܘܩܦܝ ܘܬܫܒܘܚܬܝ ܡܪܝܐ ܗܘ. 2
ܘܢܗܘܐ ܠܝ ܠܦܘܪܩܢܐ. * ܘܬܕܘܠܘܢ ܡܝܐ ܒܚܕܘܬܐ ܡܢ ܡܒܘܥܐ ܕܦܘܪܩܢܐ. * ܘܬܐܡܪܘܢ 3
ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܐܘܕܘ ܠܡܪܝܐ. ܘܩܪܘ ܒܫܡܗ. ܚܘܘ ܒܥܡܡܐ ܥܒܕܘܗܝ. ܐܬܕܟܪܘ ܕܥܫܝܢ ܗܘ 4
ܫܡܗ. * ܙܡܪܘ ܠܡܪܝܐ ܡܛܠ ܕܬܡܝܗܬܐ ܥܒܕ. ܬܬܝܕܥ ܗܕܐ ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ. * ܕܘܨܝ 5 6
ܘܫܒܚܝ ܥܡܘܪܬܐ ܕܨܗܝܘܢ. ܡܛܠ ܕܪܒ ܗܘ ܕܒܓܘܟܝ ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܓ * * ܡܫܩܠܐ ܕܒܒܠ ܕܚܙܐ ܐܫܥܝܐ * 1

* ܥܠ ܛܘܪܐ ܫܦܝܐ ܐܪܝܡܘ ܐܬܐ. ܐܪܝܡܘ ܩܠܐ ܠܗܘܢ. ܐܢܝܦܘ ܐܝܕܐ. ܢܥܠܘܢ ܒܬܪܥܝܟܝ 2
ܫܠܝܛܢܐ. * ܐܢܐ ܦܩܕܬ ܠܡܩܕܫܝ. ܘܩܪܝܬ ܠܓܢܒܪܐ ܒܪܘܓܙܝ. ܘܡܫܬܒܗܪܝܢ ܒܐܝܩܪܝ. 3
* ܩܠܐ ܕܪܓܫܐ ܒܛܘܪܐ. ܐܝܟ ܕܥܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܩܠܐ ܕܪܓܫܐ ܕܡܠܟܘܬܐ ܕܥܡܡܐ 4
ܕܡܬܟܢܫܝܢ. ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܡܦܩܕ ܚܝܠܐ. * ܡܩܛܠܢܐ ܐܬܝܢ. ܡܢ ܪܘܚܩܐ. ܘܡܢ ܣܘܦܝ 5
ܫܡܝܐ. ܡܪܝܐ. ܘܡܐܢܝ ܪܘܓܙܗ. ܠܡܚܒܠܘ ܠܟܠܗ ܐܪܥܐ. * ܐܝܠܠܘ ܡܛܠ ܕܩܪܝܒ ܗܘ 6
ܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܐܝܟ ܒܙܬܐ ܡܢ ܫܕܝ ܢܐܬܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܟܠܗܝܢ ܐܝܕܝܐ ܢܬܪܦܝܢ. 7
ܘܟܠܗ ܠܒܐ ܕܐܢܫܐ ܢܬܡܣܐ. ܘܢܬܕܠܚܘܢ.

Sed humero Paleſtinorum arent ſecus mare, 14
& ambo ſimul diripiant Orientales: in A-
dumæos & Moabitas extendant manus ſuas,
& Ammonitæ obediant eis. Vaſtabit quoque 15
Dominus linguam (*i. ſinum*) maris quod eſt
in Ægypto, & ſublatâ manu ſuâ contra flu-
men, poteſtate venti ſui percutiet illud in
ſeptem torrentes; ita ut calceis trajiciatur, Pa- 16
teatq; ſemita reliquo populo ſuo qui reliqu°
fuerit ex Athur; quemadmodũ contigit Iſrae-
litis eo die quo aſcenderunt è terra Ægypti.

CAP. XII.

ET dices eo tempore, Gratias ago tibi 1
Domine, quoniam iratus eras mihi, ſed aver-
tiſti iram tuam, & conſolatus es me. En 2
Deo ſalvatore meo fretus ſum, & non ti-
mebo, quoniam præſidium & gloria mea
Dominus eſt, & erit mihi ſaluti. Haurietis 3
aquas cum gaudio de fontibus, ſalutis, Et 4
dicetis eo die, Gratias agite Domino, & in-
vocate nomen ejus, patefacite inter gentes
actiones ejus, mementote magnum eſſe
nomen ejus: Pſallite Domino, quia magni- 5
ficentiam fecit: notũ ſit hoc in tota terra. Ex-
ulta, & laudes dicito habitatrix Sionis, quia 6
magnus eſt qui intra te eſt ſanctus Iſraelis.

CAP. XIII.

Onus Babelis quod vidit Eſaia. 1

Super montes nitidos attollite ſignum, ef- 2
ferte vocem ad illos, annuite manu: prin-
cipes ingrediuntur per portas tuas. Ego præ- 3
cepi *in* Sanctuario meo, & advocavi poten-
tes in ira mea, qui magnificantur decore
meo. Vox tumultûs in monte, quaſi multa- 4
rum gentium: vox tumultûs regnorum
gentium quæ ſe congregant. Dominus poten-
tiſſimus recenſet copias. Bellatores veniunt 5
è longinquo, & ab extremitatibus cœli Do-
minus cum inſtrumentis iræ ſuæ, ad vaſtandã
univerſam terram. Ejulate, quia propinquus 6
eſt dies Domini, & veluti depopulatio ve-
niet ex improviſo. Iccirco manus omnes 7
remittentur, & omne cor mortalium ta-
beſcet, & turbabuntur:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ويطيرون في سفن القبايل الغريبة وينهبون البحر معا * والذين من مشارق الشمس والادومية * 14
ويضعون الايدي على مواب اولا * وبنو عمون الاولون يسمعون * ويخرب الرب بحر مصر * 15
ويضع يده على نهرها بريح عاصفة * ويضرب سبعة اودية في مصر * حتى يجوزوها بالاحذية *
* ويكون مجازا لشعبي المتبقي بمصر * ويكون اسرايل كاليوم الذي خرجوا فيه من ارض مصر * 16

* الفصل الثاني عشر *

* ويقول في ذلك اليوم * اباركك يا رب لانك غضبت علي ورددت غضبك عني ورحمتني * ها 1 2
الهي الرب مخلصي * واتوكل عليه فاخلص به * ولا اخاف من اجل ان الرب مجدي
وتسبيحي * وصار لي مخلصا * واستقوا الماء بسرور من ينابيع الخلاص * ويقول في ذلك اليوم * 3 4
سبحوا الرب * اصرخوا باسمه * اخبروا في الامم عجايبه * تذكروا ان قد رفع اسمه * سبحوا اسم 5
الرب * لانه صنع عاليات * واخبروا بهذا في الارض كلها * ابتهجوا وافرحوا يا ساكني 6
صهيون * لان قدوس اسرايل رفع في وسطها *

* الفصل الثالث عشر * * الوحي الخامس *

* الرويا التي راها اشعيا ابن اموص على بابل * ارفعوا علامة على جبل سهل * اعلوا الصوت 1 2
عندكم ولا تخافوا * هزوا باليد * افتحوا ايها الروساء * وانا امر * لانهم مقدسون * وانا اجلبهم * 3
ياتي الجبابرة ليسكنوا غضبي * يفرحون معا ويتعظمون * صوت امم كثيرة على الجبال 4
شبه امم كثيرة * صوت ملوك وامم كثيرة مجتمعة * ورب الجيوش يامر لامة محاربة لتاتي 5
من الارض من بعيد * من طرف اساس السماء الرب والمحاربون معه * ليبيد كل المسكونة *
ويهلك الخطاة منها * ولولوا لان يوم الرب قريب * والانكسار ياتي من قبل الله * لاجل 6 7
هذا كل يد تنحل * وكل نفس تجزع *

Sed convolantes in navibus nationum 14
exterarum, mare ſimul prædabuntur, &
eos qui ſunt ab oriente ſole, nec non
Idumæos; & manus imponent Moa-
bitis primùm, & Ammonitæ primi
obtemperabunt. Vaſtabitque Dominus 15
mare Ægypti, & manum ſuam imponet
fluvio ejus vento vehementi; percuti-
etque ſeptem torrentes in Ægypto, ita
ut calceati trajiciant eos, Fiatque adi- 16
tus populo meo qui reliquus eſt in
Ægypto: & erunt Iſraelitæ ut in die
illa quâ egreſſi ſunt è terra Ægypti.

CAP. XII.

ITaque dices eo die, Benedico te O Do- 1
mine, quòd iratus ſis mihi, tum averſâ
à me irâ tuâ miſertus ſis mei. Ecce Do- 2
minus ſervator meus eſt; ipſo confi-
dam, & per eum ſervabor, nec timebo;
quoniam Dominus laus mea & carmen
meum eſt, & factus eſt mihi ſervator.
Haurite aquam cum gaudio è fontibus 3
ſalutis. Dices etiam eo tempore, Canite 4
Domino, edite cum clamore nomen e-
jus, prædicate inter gentes glorificatio-
nes ejus, mementote exaltatum jam
eſſe nomen ejus. Laudate nomen Do- 5
mini, quia fecit ſublimia, & prædi-
cate hoc in univerſa terra. Lætamini 6
& gaudete O habitatores Sionis, quia
Sanctus Iſraelis exaltatus eſt in medio
ejus.

CAP. XIII.

Revelatio quinta.

VIſio quam vidit Eſaia filius Amos de 1
Babele. Erigite vexillum ſuper montem 2
apertum: attollite vocem apud vos, &
ne timeatis: agitate manum: aperite O
principes; Ego enim præcipio; quia 3
ſancti ſunt; & ego adduco eos: veni-
ent gigantes ad ſedandam iram meam:
gaudebunt ſimul, & magnificabuntur.
Vox gentium multarum ſuper montem, 4
ſimilis voci multarum gentium: vox re-
gum & multarum gentium congrega-
rum. Dominus enim exercituum præci- 5
pict genti bellatrici ut veniat è terra de
longinquo; ab extremis cœli fundamen-
tis Dominus, & cum eo bellatores, ad
perdendũ totũ orbem terrarũ, & pecca-
tores ex eo delendos. Ululate, quia dies 6
Domini proximus eſt, & fractura ventu-
ra eſt à Deo. Propterea omnis manus diſ- 7
ſolvetur, & omnis anima formidabit:

ישעיה : יג

parturiens veluti , eos tenebunt dolores & *tormina* , terrebuntur Et
8 וְנִבְהָלוּ צִירִים וַחֲבָלִים יֹאחֵזוּן כַּיּוֹלֵדָה
flammarum facies : ſtupebunt ſuum *ſocium* ad *vir* : *cruciabuntur*
יְחִילוּן אִישׁ אֶל־רֵעֵהוּ יִתְמָהוּ פְּנֵי לְהָבִים
, *excandeſcentia* & , crudelis , *veniens* Domini dies Ecce . eorum facies
9 פְּנֵיהֶם׃ הִנֵּה יוֹם־יְהוָה בָּא אַכְזָרִי וְעֶבְרָה
ejus peccatores & ; ſolitudinem in terram *ponendum ad* , *naris* ira &
וַחֲרוֹן אַף לָשׂוּם הָאָרֶץ לְשַׁמָּה וְחַטָּאֶיהָ
non eorum *conſtellationes* & , cœlorum ſtellæ Quoniam . ea ex diſperdat
10 יַשְׁמִיד מִמֶּנָּה׃ כִּי־כוֹכְבֵי הַשָּׁמַיִם וּכְסִילֵיהֶם לֹא
luna & , *ipſum egrediendo in* ſol obſcurabitur : ſuum lumen lucere facient
יָהֵלּוּ אוֹרָם חָשַׁךְ הַשֶּׁמֶשׁ בְּצֵאתוֹ וְיָרֵחַ
, malum orbem ſuper viſitabo Et . ſuum lumen faciet ſplendere non
11 לֹא־יַגִּיהַ אוֹרוֹ׃ וּפָקַדְתִּי עַל־תֵּבֵל רָעָה
, *arrogantium* ſuperbiam ceſſare faciam Et . eorũ iniquitatem impios ſuper &
וְעַל־רְשָׁעִים עֲוֺנָם וְהִשְׁבַּתִּי גְּאוֹן זֵדִים
hominem faciam *Pretioſum* . faciam humiliare *formidabilium* ſuperbiam &
12 וְגַאֲוַת עָרִיצִים אַשְׁפִּיל׃ אוֹקִיר אֱנוֹשׁ
cœlum Idcirco . Ophir *auri maſſa præ* hominem & : *obrizo præ*
13 מִפָּז וְאָדָם מִכֶּתֶם אוֹפִיר׃ עַל־כֵּן שָׁמַיִם
Domini *fervida ira in* : ſuo loco de terra contremiſcet & , faciam movere
אַרְגִּיז וְתִרְעַשׁ הָאָרֶץ מִמְּקוֹמָהּ בְּעֶבְרַת יְהוָה
, *expulſa dama* tanquam erit Et . ejus *naris* iræ *die in* & , exercituum
14 צְבָאוֹת וּבְיוֹם חֲרוֹן אַפּוֹ׃ וְהָיָה כִּצְבִי מֻדָּח
, *reſpiciem* ſuum populum ad unuſquiſque : *congregans* non & , pecus ſicut &
וּכְצֹאן וְאֵין מְקַבֵּץ אִישׁ אֶל־עַמּוֹ יִפְנוּ
: perfodietur , inventus Omnis . fugient ſuam terram ad unuſquiſque &
15 וְאִישׁ אֶל־אַרְצוֹ יָנוּסוּ׃ כָּל־הַנִּמְצָא יִדָּקֵר
allidentur eorum parvuli Et . gladio in cadet *additus* omnis &
16 וְכָל־הַנִּסְפֶּה יִפּוֹל בֶּחָרֶב׃ וְעֹלְלֵיהֶם יְרֻטְּשׁוּ
. violabuntur eorum uxores & , eorum domus diripientur : eorum oculis in
לְעֵינֵיהֶם יִשַּׁסּוּ בָּתֵּיהֶם וּנְשֵׁיהֶם תִּשָּׁגַלְנָה׃
, æſtimabunt non argentum qui , *Madai* eos contra *ſuſcitans* ego Ecce
17 הִנְנִי מֵעִיר עֲלֵיהֶם אֶת־מָדָי אֲשֶׁר־כֶּסֶף לֹא יַחְשֹׁבוּ
fructus & , allident pueros *arcus* Et . *eo in* volent non aurum &
18 וְזָהָב לֹא יַחְפְּצוּ־בוֹ׃ וּקְשָׁתוֹת נְעָרִים תְּרַטַּשְׁנָה וּפְרִי־
. eorum oculus parcet non filiis ſuper , miſerebuntur non ventris
בֶטֶן לֹא יְרַחֵמוּ עַל־בָּנִים לֹא־תָחוּס עֵינָם׃
, Chaldæorum ſuperbiæ gloria , regnorum *decoratio* Babel erit Et
19 וְהָיְתָה בָבֶל צְבִי מַמְלָכוֹת תִּפְאֶרֶת גְּאוֹן כַּשְׂדִּים
Non . Hamorah & Sedom *Dei* ſubverſionẽ ſecundùm
20 כְּמַהְפֵּכַת אֱלֹהִים אֶת־סְדֹם וְאֶת־עֲמֹרָה׃ לֹא־
, generationem in uſque habitabitur nec , *perpetuum* in habitabitur
תֵשֵׁב לָנֶצַח וְלֹא תִשְׁכֹּן עַד־דּוֹר
non paſtores & , Harabs ibi tendet tentorium non & : generationem &
וָדוֹר וְלֹא־יַהֵל שָׁם עֲרָבִי וְרֹעִים לֹא־
replebuntur & , *Tſiim* ibi accubabunt Et . ibi facient accubare
21 יַרְבִּצוּ שָׁם׃ וְרָבְצוּ־שָׁם צִיִּים וּמָלְאוּ
piloſi & , *ululæ* filiæ ibi habitabunt & , furunculis eorum domus
בָתֵּיהֶם אֹחִים וְשָׁכְנוּ שָׁם בְּנוֹת יַעֲנָה וּשְׂעִירִים
dracones & , ejus *viduatis* ædibus in *catti canet alternis* Et . ibi ſaltabunt
22 יְרַקְּדוּ־שָׁם׃ וְעָנָה אִיִּים בְּאַלְמְנוֹתָיו וְתַנִּים
non ejus dies & , ejus tempus *veniendum ad prope* Et . *voluptatis* palatiis in
בְּהֵיכְלֵי עֹנֶג וְקָרוֹב לָבוֹא עִתָּהּ וְיָמֶיהָ לֹא
. protrahentur
יִמָּשֵׁכוּ׃

Verſio VULG. LAT.

8 Et conteretur. Torſiones &
dolores tenebunt, quaſi parturiens,
dolebunt : unuſquiſque
ad proximum ſuum ſtupebit,
facies combuſtæ vultus
9 eorum. Ecce dies Domini veniet,crudelis,
& indignationis
plenus, & iræ, furoriſque, ad
ponendam terram in ſolitudinem,
& peccatores ejus conterendos
10 de ea. Quoniã ſtellæ
cœli, & ſplendor earum, non
expandent lumen ſuum: obtenebratus
eſt Sol in ortu ſuo,
& Luna non ſpendebit in lumine
11 ſuo. Et viſitabo ſuper
orbis mala, & contra impios
iniquitatem eorum, & quieſcere
faciã ſuperbiam infidelium,
et arrogantiam fortium
12 humiliabo. Pretioſior erit vir
auro,& homo mundo obrizo.
13 Super hoc cœlum turbabo :
et movebitur terra de loco
ſuo, propter indignationem
Domini exercituum,et propter
14 diem iræ furoris ejus. Et erit
quaſi damula fugiens, & quaſi
ovis : et non erit qui congreget
: unuſquiſque ad populum
ſuum convertetur, et ſinguli
15 ad terram ſuã fugient. Omnis,
qui inventus fuerit,occidetur:
et omnis, qui ſupervenerit,cadet
16 in gladio. Infantes eorum
allidentur in oculis eorum :
diripientur domus eorum, et
uxores eorum violabuntur.
17 Ecce ego ſuſcitabo ſuper eos
Medos, qui argentum non
quærant, nec aurum velint :
18 Sed ſagittis parvulos interficient,
et lactantibus uteris
non miſerebuntur, et ſuper
19 filios non parcet oculus eorũ.
Et erit Babylon illa glorioſa in
regnis, inclyta ſuperbia Chaldæorum,
ſicut ſubverit Dominus
Sodomam & Gomorrhã.
20 Non habitabitur uſque in finem,
et non fundabitur uſque
ad generationem et generationem
: nec ponet ibi tentoria
Arabs, nec paſtores requieſcent
21 ibi. Sed requieſcent
ibi beſtiæ, et replebuntur domus
eorũ draconib⁹: et habitabunt
ibi ſtruthiones, et piloſi
22 ſaltabunt ibi : Et reſpondebunt
ibi ululæ in ædibus ejus,
et ſirenes in delubris voluptatis.

CAP. XIV.

1 PRopè eſt ut veniat tempus
ejus, & dies ejus non elongabuntur.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

8 (ζ) Ταραχθήσονται οἱ πρέσβεις, ϗ ὠδῖνες
αὐτοὺς ἕξουσιν, ὡς γυναικὸς τικτούσης·
ϗ συμφοράσουσιν ἕτερος πρὸς τὸν ἕτερον,
ϗ ἐκστήσονται, ϗ τὸ πρόσωπον αὐτῶν ὡς
9 φλὸξ μεταβαλοῦσιν. Ἰδοὺ γὰρ ἡμέρα κυρίου
(η) ἔρχεται ἀνίατος, θυμοῦ ϗ ὀργῆς, θεῖναι
τὴν οἰκουμένην ἔρημον, ϗ τοὺς ἁμαρτωλοὺς
10 ἀπολέσαι ἐξ αὐτῆς. Οἱ γὰρ ἀστέρες τοῦ οὐρανοῦ
ϗ ὁ Ὠρίων ϗ πᾶς ὁ κόσμος τοῦ οὐρανοῦ, τὸ
φῶς οὐ δώσουσι· ϗ σκοτισθήσεται τοῦ ἡλίου ἀνατέλλοντος,
ϗ ἡ σελήνη οὐ δώσει τὸ
11 φῶς αὐτῆς. Καὶ ἐντελοῦμαι τῇ οἰκουμένῃ ὅλῃ
κακὰ, ϗ τοῖς ἀσεβέσι τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν·
ϗ ἀπολῶ ὕβριν ἀνόμων, ϗ ὕβριν ὑπερηφάνων
12 ταπεινώσω. Καὶ ἔσονται οἱ καταλελειμμένοι
ἔντιμοι μᾶλλον ἢ τὸ χρυσίον
τὸ ἄπυρον· ϗ (θ) ἄνθρωπος μᾶλλον ἔντιμος
13 ἔσται ἢ ὁ λίθος ὁ (ι) ἐν Σουφίρ. Ὁ γὰρ
οὐρανὸς θυμωθήσεται, ϗ ἡ γῆ σεισθήσεται
ἐκ τῶν θεμελίων αὐτῆς, διὰ θυμὸν ὀργῆς
κυρίου Σαβαώθ, (κ) ἐν τῇ ἡμέρᾳ ᾗ ἂν ἐπέλθῃ
14 ὁ θυμὸς αὐτοῦ. Καὶ ἔσονται οἱ καταλελειμμένοι
ὡς δορκάδιον φεῦγον, ϗ ὡς
πρόβατον πλανώμενον, ϗ οὐκ ἔσται ὁ συνάγων,
ὥστε ἄνθρωπον εἰς τὸν λαὸν αὐτοῦ ἀποστραφῆναι,
ϗ (λ) ἄνθρωπος εἰς τὴν χώραν
15 ἑαυτοῦ διώξεται. Ὃς γὰρ (μ) ἂν ἁλῷ, ἡττηθήσεται,
(ν) ϗ οἵτινες συνηγμένοι εἰσὶ,
16 (ξ) πεσοῦνται μαχαίρᾳ. Καὶ τὰ τέκνα αὐτῶν
(ο) ῥάξουσιν ἐνώπιον αὐτῶν, ϗ τὰς
οἰκίας αὐτῶν προνομεύσουσι, ϗ τὰς γυναῖκας
17 αὐτῶν ἕξουσιν. Ἰδοὺ ἐπεγείρω ὑμῖν
τοὺς Μήδους, (π) οἳ ἀργύριον οὐ λογίζονται,
18 οὐδὲ χρυσίου χρείαν ἔχουσι. Τοξεύματα
νεανίσκων συντρίψουσι, ϗ τὰ τέκνα
ὑμῶν οὐ μὴ (ρ) ἐλεήσωσιν, οὐδὲ ἐπὶ τοῖς
τέκνοις σου φείσονται οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτῶν.
19 Καὶ ἔσται Βαβυλὼν ἣ καλεῖται ἔνδοξος (σ)
ἀπὸ βασιλέως Χαλδαίων, ὃν τρόπον κατέστρεψεν
20 ὁ θεὸς Σόδομα ϗ Γόμορρα· Οὐ
κατοικηθήσεται εἰς τὸν αἰῶνα χρόνον,
οὐδὲ μὴ εἰσέλθωσιν εἰς αὐτὴν διὰ πολλῶν
γενεῶν, οὐδὲ μὴ διέλθωσιν αὐτὴν
Ἄραβες, οὐδὲ ποιμένες οὐ μὴ (τ) ἀναπαύσονται
21 ἐν αὐτῇ. Καὶ ἀναπαύσονται ἐκεῖ
θηρία, ϗ (υ) ἐμπλησθήσονται αἱ οἰκίαι
ἤχου· ϗ ἀναπαύσονται ἐκεῖ σειρῆνες, ϗ
22 δαιμόνια ἐκεῖ (φ) ὀρχήσονται, Καὶ ὀνοκένταυροι
ἐκεῖ κατοικήσουσι, ϗ νοσσοποιήσουσιν
ἐχῖνοι ἐν τοῖς οἴκοις αὐτῶν.

ΚΕΦ. ιδ'.

1 ΤΑχὺ ἔρχεται ϗ οὐ χρονιεῖ.

Turbabuntur legati, & dolores 8
eos tenebunt,quaſi mulieris parturientis :
& condolebunt alter ad
alterum, & ſtupebunt, & faciem
ſuam, quaſi flamma, mutabunt.
Ecce enim dies Domini venit inſanabilis, 9
furoris, & iræ, ad ponendum orbem terræ deſertum,&
peccatores perdendos ex eo. Stellæ 10
enim cœli, & Orion, & omnis
ornatus cœli non dabunt lumen :
& obtenebrabuntur oriente
Sole : & Luna non dabit lumen
ſuum. Et mandabo univerſo orbi 11
terræ mala, & impiis peccata eorum :
& perdam ſuperbiam iniquorum,&
contumeliam ſuperborum
humiliabo. Et erunt, qui derelicti 12
fuerint, honorati magis,
quàm aurum (d) *incoctum : &*
homo magis honoratus erit, quàm
lapis, qui de Suphir. Cœlum enim 13
indignabitur : & terra concutietur
à fundamentis ſuis, propter
furorem iræ Domini Sabaoth, in
die illa, quâ ſupervenerit furor
ejus. Et erunt reſidui, quaſi damula 14
fugiens, & quaſi ovis errans :
& non erit qui congreget:
ita ut homo ad populum ſuum revertatur :
& homo ad regionem
ſuam expelletur. Quicunq; enim 15
deprehenſus fuerit, opprimetur :
&, qui congregati fuerint, cadent
gladio. Et filios eorum allident 16
coram eis,& domos eorum deprædabuntur,
& uxores eorum habebunt.
Ecce ſuſcito vobis Medos, 17
qui argentum non reputant, neque
auro opus habent. Arcus adoleſcentium 18
conterent, & filiorum
veſtrorum non miſerebuntur : neque
ſuper filiis tuis parcent oculi
eorum : Et erit Babylon, quæ 19
vocatur inclyta à rege Chaldæorum,
ſicut ſubvertit Deus Sodomam,&
Gomorrham : Non habitabitur 20
in æternum tempus : neque
ingredientur in eam per multas
generationes : neque permeabunt
eam Arabes, neque paſtores
requieſcent in ea. Et requieſcent 21
illic (e) *beſtiæ : &*
implebuntur domus ſonitu : &
accubabunt ibi ſirenes, & dæmonia
illic ſaltabunt : Et onocentauri 22
illic habitabunt : & nidificabunt
hericii in domibus eorum.

CAP. XIV.

Citò venit, & non (a) *tardabit.* 1

MS.A. (ζ) Καὶ ταραχθήσονται (η) ἀνίατος ἔρχεται, (θ) ὁ ἄνθρωπος (ι) ἐκ (κ) τῇ ἡμέρᾳ (λ) ἄνθρωπον εἰς τὴν χώραν αὐτοῦ διώξαι. (μ) ἐὰν (ν) ϗ ὅσοι (ξ) μαχαίρᾳ πεσοῦνται. (ο) ἐνώπιον αὐτῶν ῥάξουσιν, (π) οἳ οὐ λογίζονται ἀργύριον, οὐδὲ χρυσίον (ρ) ἐλεήσουσιν, (σ) ὑπὸ (τ) ἀναπαύσωνται (υ) πλησθήσονται οἰκίαι (φ) ὀρχηθήσονται,

תרגום יונתן TARGUM JONATHAN.

וְיִתְבַּהֲלוּן עָקָא וְחַבְלִין יֶחְדוּנוּנוּן זִיעַ כְּלֵידְתָא יְזוּעוּן גְּבַר לְחַבְרֵיהּ יִתְמְהוּן אַפֵּי 8
שַׁלְהוֹבִין אַפֵּיהוֹן : הָא יוֹמָא מִן קֳדָם יְיָ עָתִיד לְמֵיתֵי אַכְזָרִי וְתַעֲבוּר וּתְקוֹף 9
רְגַז לְשַׁוָּאָה אַרְעָא לְצָדוּ וְחַיָּבָהָא יְשֵׁיצֵי מִנַּהּ : אֲרֵי כוֹכְבֵי שְׁמַיָּא וּנְפִילֵיהוֹן לָא 10
יְזַהֲרוּן נְהוֹרֵיהוֹן וְקַבֵּל שִׁמְשָׁא בְּמִפְּקֵיהּ וְסִיהֲרָא לָא מַזְהַר נְהוֹרֵיהּ : וְאַסְעַר 11
עַל דָּיְרִין בְּתֵבֵל בִּישְׁתָא וְעַל רַשִׁיעַיָּא חוֹבֵיהוֹן וַאֲבַטֵּיל רְבוּת רַשִׁיעִין וּתְקוֹף
תַּקִּיפִין אַמְאִיךְ : אֲחַבֵּב דָּחֲלַי מִדַּהֲבָא דְמִתְיַקְּרִין מִנֵּיהּ בְּנֵי אֱנָשָׁא וְעָבְדֵי אוֹרַיְתָא 12
מִמַּסְנְנָא דְאוֹפִיר : עַל כֵּן שְׁמַיָּא אֲזִיעַ וּתְזוּעַ אַרְעָא מֵאַתְרָהָא מִן קֳדָם יְיָ צְבָאוֹת 13
וּבְיוֹם תְּקוֹף רוּגְזֵיהּ : וִיהֵי כְּטַבְיָא מְבַדַּר וּכְעָאן וְלֵית דִּמְכַנֵּישׁ גְּבַר לְעַמֵּיהּ 14
יִתְפְּנוּן וּגְבַר לְאַרְעֵיהּ יֶעֶרְקוּן : כָּל דְּיִשְׁתְּכַח בַּהּ יִתְקְטֵל וְכָל דְּיֵיעוֹל לִכְרַכֵּי 15
צִיְרָא יִתְקְטֵל בְּחַרְבָּא : וְעוּלְמֵיהוֹן יִטַּרְפוּן לְעֵינֵיהוֹן יִתְבְּזוּזוּן בָּתֵּיהוֹן וּנְשֵׁיהוֹן 16
יִשְׁתַּכְבָן : הָא אֲנָא מַיְתֵי עֲלֵיהוֹן יָת מָדָי דִּי בְּכַסְפָּא לָא מִטַּקְסִין וְדַהֲבָא לָא 17
מִתְרְעִין בֵּיהּ : וְקַשְׁתָּתְהוֹן עוּלֵמִין יְבַזְּעָן וְעַל וְלַד מְעִין לָא יְרַחֲמוּן עַל בְּנַיָּא 18
לָא תְחוּס עֵינֵיהוֹן : וּתְהֵי בָבֶל דַּהֲוָת מִלְּקַדְמִין חֶדְוַת מַלְכְוָן תּוּשְׁבַּחַת רְבוּת 19
כַּסְדָּאֵי כַּהֲפֵכְתָא דַּהֲפַךְ יְיָ יָת סְדוֹם וְיָת עֲמוֹרָה : לָא תְתֵּב לְעָלַם וְלָא 20
תִשְׁרֵי עַד דָּר וְדָר לָא יִפְרוֹס תַּמָּן עַרְבִי מַשְׁכְּנֵיהּ וְרָעֲוָן לָא יִשְׁרוּן תַּמָּן : וְיִשְׁרוּן 21
תַּמָּן תַּמְוָן וְיִתְמְלוּן בָּתֵּיהוֹן אוֹחִין וְיִשְׁרְיָן תַּמָּן בְּנָת נַעֲמִין וְשֵׁידִין יְחַיְּכוּן תַּמָּן :
וִינַצְּפוּן חֲתוּלִין בִּבִרְנְיָתְהוֹן וְיָרוּדִין בְּבֵית מִשְׁרֵי תַּפְנוּקֵיהוֹן וְקָרִיב לְמֵיתֵי עִדָּן 22
תַּבְרָהּ דְּבָבֶל וְיוֹמָהָא לָא יִתְרַחֲקוּן :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et turbabuntur : tribulatio & dolores apprehendent eos : *tremore* 8
ſicut parturiens contremiſcent : unuſquiſque *ad proximum ſuum obſtupeſcent* :
vultus flammarum[*ſunt*]*facies* eorum. Ecce dies à facie Domini 9
veniet crudelis, & indignatione plenus, & ira furoris, ut ponat terram
in deſolationem, & peccatores conſumat ex ea. Quoniam ſtellæ 10
cœlorum & planetæ eorum ſplendorem ſuum non emittent, obteneſcente
Sole in egreſſu ſuo, & Luna lucem ſuam non diffundente. Et viſitabo 11
ſuper habitatores orbis mala, & ſuper impios peccata eorum :
ceſſare faciam magnitudinem impiorum,& fortitudinem fortium humiliabo.
Diligam timentes me magis quàm aurum quo gloriantur homines; 12
& legis obſervantes plus quàm aurum probatum de Ophir. Propterea 13
commovebo cœlos, & movebitur terra de loco ſuo, à facie Dñi
exercituũ & in die furoris indignationis ejus. Et erit ſicut damula aberrans, 14
& quaſi ovis, & non erit qui congreget. Unuſquiſque ad populum
ſuum reſpiciet,& unuſquiſq; ad terram ſuam fugiet. Et omnis qui inventus 15
fuerit in ea, occidetur : & omnis qui ingredietur in civitates munitas,
occidetur gladio. Et infantes eorum allidentur in oculis eorum : diripientur 16
domus eorum : & uxores eorum concumbentur. Ecce ego inducam 17
ſuper eos Medos qui argento non *coguntur in ordinem* ; neque volunt
aurum. Et arcubus ſuis juvenes perfodient, & ſuper parvulum 18
ventris non miſerebuntur : ſuper filios non parcet oculus eorum. Babylon 19
autem quæ erat ab initio gaudium regnorum, & laus magnitudinis
Chaldæorum, erit ſicut ſubverſio, qua ſubvertit Dominus Sodomam
& Gomorram. Non habitabitur in ſeculum, & non incoletur uſque in 20
generationem & generationem : neque extendet ibi Arabs tabernaculum
ſuum,neque paſtores habitabunt ibi. Sed habitabunt ibi ſimiæ,& implebuntur 21
domus eorum muſtelis, & habitabunt ibi filiæ ſtruthionum,
& dæmones ludent ibi. Et ſaltabunt cati in palatiis eorum,& dracones 22
in domo habitationis delitiarum eorum. Et propè eſt ut veniat tempus
interitus Babylonis, & dies ejus non elongabuntur.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܙܘܥܐ ܘܚܒܠܐ܂ ܐܝܟ ܕܝܠܕܬܐ ܢܐܚܕܘܢ ܐܢܘܢ܂ ܘܢܬܕܡܪܘܢ܂ ܓܒܪ ܒܚܒܪܗ܂ ܘܐܦ̈ܐ 8
ܕܡܫܠܗܒܢ ܐܦ̈ܝܗܘܢ܂ * ܗܐ ܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܬܐ܂ ܕܐܣܝܘܬܐ ܠܝܬ ܠܗ܂ ܐܟܙܪܝܐ ܘܡܚܡܡ 9
ܚܡܬܗ܂ ܕܢܣܝܡܝܗ̇ ܠܐܪܥܐ ܠܚܘܪܒܐ܂ ܘܚܛܝ̈ܐ ܢܘܒܕ ܡܢܗ̇܂ * ܡܛܠ ܕܟܘܟ̈ܒܐ 10
ܕܫܡܝܐ ܘܚܝܠܘܬܗܘܢ܂ ܠܐ ܢܢܗܪܘܢ܂ ܢܚܫܟ ܫܡܫܐ ܒܡܕܢܚܗ܂ ܘܣܗܪܐ ܢܘܗܪܗ ܠܐ ܢܢܗܪ܂
* ܘܐܣܥܘܪ ܒܝܫܬܐ ܥܠ ܬܐܒܝܠ܂ ܘܥܠ ܪ̈ܫܝܥܐ ܥܘܠܗܘܢ܂ ܘܐܒܛܠ ܨܥܪܐ ܕܡܬܪ̈ܘܪܒܢܐ܂ 11
ܘܫܘܒܗܪܐ ܕܥܫܝ̈ܢܐ ܐܡܟܟ܂ * ܐܘܩܪ ܓܒܪܐ ܝܬܝܪ ܡܢ ܕܗܒܐ܂ ܘܐܢܫܐ ܡܢ ܕܗܒܐ ܕܐܘܦܝܪ܂ 12
* ܡܛܠ ܗܢܐ܂ ܫܡܝܐ ܐܪܓܙ܂ ܘܬܙܘܥ ܐܪܥܐ ܡܢ ܕܘܟܬܗ̇܂ ܒܚܡܬܗ ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ܂ 13
ܒܝܘܡܐ ܕܪܘܓܙܐ ܕܚܡܬܗ܂ * ܘܢܗܘܘܢ܂ ܐܝܟ ܛܒܝܐ ܕܥܪܩܝܢ܂ ܘܐܝܟ ܥܢܐ ܕܠܝܬ ܠܗ 14
ܡܟܢܫܢܐ܂ ܐܢܫ ܠܥܡܗ ܢܬܦܢܐ܂ ܘܓܒܪ ܠܐܪܥܗ ܢܥܪܘܩ܂ * ܟܠ ܕܢܫܬܟܚ 15
ܢܬܕܩܪ܂ ܘܟܠ ܕܢܬܠܘܐ ܢܦܠ ܒܚܪܒܐ܂ * ܘܥܘܠܝ̈ܗܘܢ ܢܬܛܪܦܘܢ܂ ܠܥܝܢ̈ܝܗܘܢ܂ 16
ܘܢܬܒܙܘܢ ܒ̈ܬܝܗܘܢ܂ ܘܢܫ̈ܝܗܘܢ ܢܬܛܢܦܢ܂ * ܗܐ ܡܥܝܪ ܐܢܐ ܥܠܝܟܘܢ ܠܡ̈ܕܝܐ܂ 17
ܕܟܣܦܐ ܠܐ ܚܫܝܒ ܠܗܘܢ܂ ܘܕܗܒܐ ܠܐ ܪܓܝܓܝܢ܂ * ܩܫܬܐ ܕܥܠܝܡ̈ܐ ܢܬܬܒܪܢ܂ ܘܥܠ 18
ܦܐܪ̈ܐ ܕܟܪܣܐ ܠܐ ܢܪܚܡܘܢ܂ ܘܥܠ ܒܢ̈ܝܟܘܢ ܠܐ ܬܚܘܣ ܥܝܢ̈ܝܗܘܢ܂ * ܘܬܗܘܐ ܒܒܠ 19
ܫܠܝܛܐ ܕܡܠܟܘܬܐ܂ ܘܫܘܒܗܪܐ ܕܬܫܒܘܚܬܐ ܕܟܠܕ̈ܝܐ܂ ܐܝܟ ܕܗܦܟ ܐܠܗܐ ܠܣܕܘܡ
ܘܠܥܡܘܪܐ܂ * ܠܐ ܬܬܒ ܠܥܠܡ܂ ܘܠܐ ܬܥܡܪ ܠܕܪ ܕܪ̈ܝܢ܂ ܘܠܐ ܢܥܡܪܘܢ ܬܡܢ ܛܝܝ̈ܐ܂ ܘܪ̈ܥܘܬܐ ܠܐ 20
ܢܪܥܘܢ ܬܡܢ܂ * ܐܠܐ ܢܪܒܥܘܢ ܬܡܢ ܚܝܘܬܐ܂ ܘܢܬܡܠܘܢ ܒ̈ܬܝܗܘܢ ܒܬ ܩܠܐ 21
ܘܢܥܡܪܘܢ ܬܡܢ ܒܢ̈ܬ ܝܥܢܐ܂ ܘܫܐ̈ܕܐ ܢܪܩܕܘܢ ܬܡܢ܂ * ܘܢܥܢܘܢ ܝܪ̈ܘܪܐ ܒܐܦܕܢ̈ܝܗܘܢ܂ 22
ܘܬܢ̈ܝܢܐ ܒܗܝܟ̈ܠܐ ܕܦܘܢܩܗܘܢ܂ ܡܛܝ ܗܘ ܙܒܢܗ ܠܡܐܬܐ܂ ܘܝܘܡ̈ܬܗ ܠܐ
ܢܬܡܫܟܘܢ܂

Vertigines & dolores ut parturientis occu- 8
pabunt eos,quiſque proximum ſuum demirabitur,& facies inflammatæ erunt facies eorũ.
Ecce dies Domini veniet, nec erit illi remedium : 9
pervicax & fervens erit ira ejus, ut
terram in ſolitudinem redigat, & peccatores
ejus extinguat ex ea. Nam ſtellæ cœlorum 10
& exercitus eorum non exhibebunt lucem,
obſcurabitur ſol ab exortu ſuo, & lunæ lumen
haud luceſcet. Viſitabo malitiam orbis 11
terrarum, & impiorum iniquitatem : ceſſare
faciam inſolentiam ſuperborum, & faſtum
potentium dejiciam : Virum reddam auro 12
graviorem, & hominem auro Ophirizo.
Propterea cœlum ad iram concitabo, & terra 13
loco ſuo movebitur : Ob increpationem
Domini potentiſſimi *futuram* in die furoris
iræ ejus, Erunt ut cervi fugientes, & ut oves 14
non habentes colligentem : unuſquiſque ad
populum ſuum revertetur, & quilibet in terram
ſuam aufugiet : Quicunque inventus fuerit, 15
confodietur :et quicunque adjunxerit ſeſe,
gladio corruet : Infantes eorum illidentur 16
in conſpectu eorum : domus eorum diripientur,
et mulieres eorum ſtuprabuntur ,
Ecce ego concitaturus ſum in vos Medos, apud 17
quos argentum nullius eſt pretii, et auro
non oblectantur. Arcus juvenum frangentur: 18
et fructuum ventris non miſerebuntur, nec
filiis veſtris parcent oculi eorum. Et Babel 19
robur regnorũ et gloria faſtûs Chaldæorum,
fiet ſimilis Sodomæ et Gomorræ, quas Deus
ſubvertit : Non ſubſiſtet in perpetuum, nec 20
permanebit in ſeculum ſeculorum ; non habitabunt
illic Arabes, et paſtores non paſcent
ibi : Sed cubabunt ibi feræ, et implebuntur 21
domus eorũ echo, habitabunt ibi filiæ
ſtruthionum & dæmones ibi ſaltabunt: Cantabunt 22
ſirenes in palatiis eorũ,et canes ſylveſtres
in ædibus voluptuoſis eorum. Tempus
autem ejus brevi adveniet, et dies ejus non
protrahentur ampliùs.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ويضطرب المشايخ وياخذهم الطلقات مثل امراة تلد * ويتصادمون الاخر مع الاخر * 8
ويبهتون ويصير وجوههم مثل اللهيب * لان ها يوم الرب ياتي * وليس له شفاء * بغضب 9
وسخط * ليصير المسكونة كلها خرابا * ويهلك الخطاة منها * لان نجوم السماء واوريون وكل 10
زينة السماء لا تعطي ضوءها وتظلم الشمس عند طلوعها * والقمر لا يعطي ضوءه *
* الاصحاح السابع * * وامر بالشر على المسكونة كلها والمنافقين 11
بخطاياهم * وابيد عظمة الاثمة * واذل المتعظمين * ويكون الذين استبقوا مكرمين كثيرا 12
اكثر من الذهب المجرب * ويكون الانسان اكرم كثيرا اكثر من الحجر الذي
من الهند * لان السماء تتزعزع * والارض تتزلزل من اساساتها * من سخط غضب رب 13
الجنود * في اليوم الذي ياتي فيه غضبه * ويصير الباقون مثل ظبي هارب * وكمثل 14
خروف ضال * وليس يكون من يجمع * حتى يعود انسان الى شعبه * وانسان الى بلدته
يطلب * لان من يدرك يغلب * والذين هم مجتمعون يسقطون بالسيف * ويقتلون اولادهم 15 16
امامهم * وينهبون بيوتهم * وياخذون نساهم * هوذا انهض عليكم الماديين الذين لا 17
يفكرون في الفضة * وليس لهم حاجة بالذهب * يكسرون سهام الشباب * ولا يرحمون 18
اولادكم * ولا تشفق عيونهم على بنيك * وتصير بابل التي دعيت مشرفة من ملك 19
الكلدانيين * كما قلب الله سدوم وعامورا * ولا تسكن الى الابد * ولا يدخلون اليها 20
الى اجيال كثيرة * ولا تعبر بها الاعراب * ولا تستريح فيها الرعاة * ويستريحون فيها 21
الوحوش * وتمتلي بيوتها من الصدى * وتستريح هناك بنات اوى * وترقص هناك
الجان * وتسكن هناك الغيلان وتفرخ القنافذ في بيوتهم * هذا ياتي سريعا ولم 22
يبطي *

Turbabuntur ſenes, & occupabunt eos 8
dolores ut mulierem parturientem: collident
ſeſe alter cum altero, obſtupeſcent,
& fient vultus eorum ſicut
flamma. Nam ecce dies Domini venturus 9
eſt, nec ulla erit ei medela, cum
ira & furore; ad evertendum univerſum
terrarum orbem, & peccatores ab
eo perdendum. Nam cœli ſydera, o- 10
rion, totuſque cœli ornatus non reddent
lumen ſuum, ſol in ipſo ſuo exortu
obſcurabitur, & luna nequaquam
præbebit lucem ſuam.

Textus ſeptimus.

Malum demum præcipiam contra uni- 11
verſum orbem terrarum, & contra impios
ſua ipſorum flagitia: faſtum iniquorum
perdam, & deprimam ſuperbos
: Et erunt qui reſidui manſerint, ad- 12
modum pretioſi, multò magis quàm
aurum probatum : & erit homo pretioſior
multò quàm lapillus qui ex India
aſportatur. Cœlum enim concutietur, 13
& terra contremiſcet à fundamentis ſuis
propter indignationem iræ Domini exercituum
in die quo ventum eſt ira
ejus. Fientque reſidui tanquam cervus 14
fugiens, & tanquam agnus errans quem
nemo colligit; adeoque redibit quiſque
ad gentem ſuam, & quilibet patriam
ſuam repetet. Nam quicunque depre- 15
henſus fuerit, ſuperabitur ; et qui congregati
fuerint, gladio cadent. Filios 16
eorum interficient in præſentia ipſorum,
domos eorum diripient, et fœminas
eorum abducent. Ecce concitabo 17
adverſùm vos Medos qui nec de
argento cogitant, nec auro indigent.
Hi ſagittas juvenum frangent,non miſe- 18
rebuntur filiorum veſtrorum, nec parcent
oculi eorũ natis tuis. Denique Babel quæ 19
inclyta vocatur à rege Chaldæorum,
fiet ſicut Sodoma et Gomorra,quas Deus
ſubvertit : Non habitabitur in ſecu- 20
lum uſque, nec ingredientur eam ad generationes
multas : non tranſibunt per
eam Arabes, neque requieſcent in ea
paſtores : Imò requieſcent in ea be- 21
ſtiæ, et implebuntur domus ejus ululis
: requieſcent ibi canes ſylveſtres,
et ſaltabunt ibi dæmones : Morabuntur 22
illic hyænæ, et fœtus ſuos gignent hiſtrices
in domibus eorum. Hoc citò
veniet, nec tardabit.

ישעיה : יד

CAP. XIV. יד

, Iſrael in adhuc eliget & ,Jahacob Dominus miſerebitur Nam
1 כִּי יְרַחֵם יְהוָה אֶת־יַעֲקֹב וּבָחַר עוֹד בְּיִשְׂרָאֵל
peregrinus ſe copulabit & : ſuam humum ſuper eos requieſcere faciet &
וְהִנִּיחָם עַל־אַדְמָתָם וְנִלְוָה הַגֵּר
, populi eos tollent Et .Jahacob *domo ſuper* adhærebunt & , eis *ſuper*
2 עֲלֵיהֶם וְנִסְפְּחוּ עַל־בֵּית יַעֲקֹב׃ וּלְקָחוּם עַמִּים
ſuper , Iſrael domus *eos hæreditabunt* & ,ſuum locum ad eos adducent &
וֶהֱבִיאוּם אֶל־מְקוֹמָם וְהִתְנַחֲלוּם בֵּית־יִשְׂרָאֵל עַל
ducentes captivos erunt & : ancillas in & ,ſervos in ,Domini *humo*
אַדְמַת יְהוָה לַעֲבָדִים וְלִשְׁפָחוֹת וְהָיוּ שֹׁבִים
requiem dare die in erit Et .*ſuos exactores in* dominabuntur &,eos *captivantes*
3 לְשֹׁבֵיהֶם וְרָדוּ בְּנֹגְשֵׂיהֶם׃ וְהָיָה בְּיוֹם הָנִיחַ
, dura ſervitute à & ,tuo *tremore* à & ,tuo labore à tibi *Dominum*
יְהוָה לְךָ מֵעָצְבְּךָ וּמֵרָגְזֶךָ וּמִן־הָעֲבֹדָה הַקָּשָׁה
,Babel regem contra iſtam parabolam *levabis* Et .te *in* fuit ſervitum qua
4 אֲשֶׁר עֻבַּד־בָּךְ׃ וְנָשָׂאתָ הַמָּשָׁל הַזֶּה עַל־מֶלֶךְ בָּבֶל
Contrivit ? *aurea penſio deſiit* , *exactor* ceſſavit Quomodo : dices &
5 וְאָמַרְתָּ אֵיךְ שָׁבַת נֹגֵשׂ שָׁבְתָה מַדְהֵבָה׃ שָׁבַר
populos Percutientē .dominantium virgam ,impiorum baculum Dominus
6 יְהוָה מַטֵּה רְשָׁעִים שֵׁבֶט מֹשְׁלִים׃ מַכֶּה עַמִּים
,gentibus furore in dominantem ,*declinatione ſine* percuſſione ,*fervida* ira in
בְּעֶבְרָה מַכַּת בִּלְתִּי סָרָה רֹדֶה בָאַף גּוֹיִם
, terra omnis requievit ,Quievit .prohibuit non paſſum perſecutionem
7 מֻרְדָּף בְּלִי חָשָׂךְ׃ נָחָה שָׁקְטָה כָּל־הָאָרֶץ
;Lebanon cedri ,te de ſunt lætatæ abietes Etiam .*præconium jubilaverunt*
8 פָּצְחוּ רִנָּה׃ גַּם־בְּרוֹשִׁים שָׂמְחוּ לְךָ אַרְזֵי לְבָנוֹן
deorſum Infernus .nos *ſuper ſuccidens* aſcendit non *jacuiſti tunc* ex
9 מֵאָז שָׁכַבְתָּ לֹא־יַעֲלֶה הַכֹּרֵת עָלֵינוּ׃ שְׁאוֹל מִתַּחַת
,*manes* tibi ſuſcitavit ,tui adventus occurſum in ,te propter *contremuit*
רָגְזָה לְךָ לִקְרַאת בּוֹאֶךָ עוֹרֵר לְךָ רְפָאִים
.gentium reges omnes ſuis ſoliis de fecit ſurgere : terræ *hircos* omnes
כָּל־עַתּוּדֵי אָרֶץ הֵקִים מִכִּסְאוֹתָם כֹּל מַלְכֵי גוֹיִם׃
es infirmatus tu Etiam : te ad dicent & ,reſponſa dabunt iſti Omnes
10 כֻּלָּם יַעֲנוּ וְיֹאמְרוּ אֵלֶיךָ גַּם־אַתָּה חֻלֵּיתָ
,tua ſuperbia *infernum* ad eſt *Depreſſa* .es aſſimilatus nobis , nos ſicut
11 כָמוֹנוּ אֵלֵינוּ נִמְשָׁלְתָּ׃ הוּרַד שְׁאוֹל גְּאוֹנֶךָ
te *operientes* & , vermis ſternetur te ſubter : tuorum nablorum *ſtrepitus*
הֶמְיַת נְבָלֶיךָ תַּחְתֶּיךָ יֻצַּע רִמָּה וּמְכַסֶּיךָ
es *reſectus* ? auroræ fili Lucifer cœlo de cecidiſti Quomodo .vermis
12 תּוֹלֵעָה׃ אֵיךְ נָפַלְתָּ מִשָּׁמַיִם הֵילֵל בֶּן־שָׁחַר נִגְדַּעְתָּ
Cœlum :tuo corde in dixiſti tu Et .gentes *ſuper debilitans* terram ad
13 לָאָרֶץ חוֹלֵשׁ עַל־גּוֹיִם׃ וְאַתָּה אָמַרְתָּ בִלְבָבְךָ הַשָּׁמַיִם
monte in ſedebo & :meū ſolium exaltabo Dei ſtellas ſupra ,aſcendam
אֶעֱלֶה מִמַּעַל לְכוֹכְבֵי־אֵל אָרִים כִּסְאִי וְאֵשֵׁב בְּהַר־
ero ſimilis ,nubis *excelſa* ſuper Aſcendam .Aquilonis lateribus in *conventus*
14 מוֹעֵד בְּיַרְכְּתֵי צָפוֹן׃ אֶעֱלֶה עַל־בָּמֳתֵי עָב אֶדַּמֶּה
.*ciſternæ* latera ad ,*depriméris* infernum ad Veruntamen .Altiſſimo
15 לְעֶלְיוֹן׃ אַךְ אֶל־שְׁאוֹל תּוּרָד אֶל־יַרְכְּתֵי־בוֹר׃
tremefaciens vir hic Num *: perpendent* te *ad* :proſpicient te ad ,te Videntes
16 רֹאֶיךָ אֵלֶיךָ יַשְׁגִּיחוּ אֵלֶיךָ יִתְבּוֹנָנוּ הֲזֶה הָאִישׁ מַרְגִּיז
ejus urbes & ,deſertum ſicut orbem Poſuit ? regna *commovens* , terram
17 הָאָרֶץ מַרְעִישׁ מַמְלָכוֹת׃ שָׂם תֵּבֵל כַּמִּדְבָּר וְעָרָיו
,gentium reges Omnes .carcerem aperuit non ejus vinctis ,deſtruxit
18 הָרָס אֲסִירָיו לֹא־פָתַח בָּיְתָה׃ כָּל־מַלְכֵי גוֹיִם
.ſua domo in vir , gloria in *jacuerunt* ,ipſi univerſi
כֻּלָּם שָׁכְבוּ בְכָבוֹד אִישׁ בְּבֵיתוֹ׃

Verſio VULG. LAT.

Miſerebitur enim Domin' Jacob, & eliget adhuc de Iſrael, & requieſcere eos faciet ſup humū ſuā: adjungetur advena ad eos, & adhærebit domui Jacob. 2 Et tenebunt eos populi, & adducent eos in locum ſuū: & poſſidebit eos domus Iſrael ſup terrā Dñi in ſervos & ancillas: & erunt capientes eos qui ſe ceperant, & ſubjicient exactores ſuos. 3 Et erit in die illa: cùm requiem dederit tibi Deus à labore tuo, & à concuſſione tua, & à ſervitute 4 dura, quâ antè ſervîſti: Sumes parabolā iſtā contra regē Babylonis, & dices; Quomodò ceſſavit exactor, quievit tribu- 5 tum? Contrivit Dñs baculū impiorū, virgā dominantium, 6 Cædentem populos in indignatione, plagâ inſanabili, ſubjicientē in furore gentes, per- 7 ſequentem crudeliter. Conquievit & ſiluit omnis terra, 8 gaviſa eſt & exultavit: Abietes quoq; lætatæ ſunt ſup te, & cedri Libani: ex quo dormîſti, non aſcendet qui ſucci- 9 dat nos. Infernus ſubtèr conturbat' eſt in occurſū advent' tui, ſuſcitavit tibi gigantes. Omnes principes terræ ſurrexerunt de ſoliis ſuis, omnes 10 principes nationū. Univerſi reſpondebunt, & dicent tibi; Et tu vulnerat' es ſicut & nos, 11 noſtrî ſimilis effect' es. Detracta eſt ad inferos ſuperbia tua, concidit cadaver tuū: ſubter te ſternetur tinea, & operi- 12 mentū tuū erunt vermes. Quomodò cecidiſti de cœlo, Lucifer, qui manè oriebaris? corruiſti in terrā, qui vulnerabas 13 gentes? Qui dicebas in corde tuo; In cœlū conſcendā, ſup aſtra Dei exaltabo ſoliū meū, ſedebo in monte teſtamenti, in 14 laterib' Aquilonis. Aſcendam ſup altitudinē nubiū, ſimilis 15 ero Altiſſimo. Veruntamen ad infernū detrahêris in profun- 16 dum laci. Qui te viderint, ad te inclinabuntur, tēque proſpicient: Numquid iſte eſt vir, qui conturbavit terrā, qui con- 17 cuſſit regna, Qui poſuit orbē deſertū, & urbes ej' deſtruxit, vinctis ej' non aperuit carce- 18 rem? Omnes reges gentium univerſi dormierunt in gloria, vir in domo ſua.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

καὶ ἐλεήσει κύριος τὸν Ἰακὼβ, καὶ ἐκλέξεται ἔτι τὸν Ἰσραὴλ, καὶ ἀναπαύσονται ἐπὶ τῆς γῆς αὐτῶν, καὶ ὁ γειώρας προστεθήσεται πρὸς αὐτοὺς, καὶ 2 προστεθήσεται (α) πρὸς τὸν οἶκον Ἰακὼβ, Καὶ λήψονται αὐτοὺς ἔθνη, καὶ εἰσάξουσιν εἰς τὸν τόπον αὐτῶν, καὶ κατακληρονομήσουσι, καὶ πληθυνθήσονται ἐπὶ τῆς (β) γῆς εἰς δούλους καὶ δούλας: καὶ ἔσονται αἰχμάλωτοι οἱ αἰχμαλωτεύσαντες αὐτοὺς, καὶ κυριευθήσονται οἱ κυρι- 3 εύσαντες αὐτῶν. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ἀναπαύσει σε (γ) κύριος ἀπὸ τῆς ὀδύνης καὶ τοῦ θυμοῦ σου, (δ) τῆς δουλείας σου 4 τῆς σκληρᾶς, ἧς ἐδούλευσας αὐτοῖς. Καὶ λήψῃ τὸν θρῆνον τοῦτον ἐπὶ τὸν βασιλέα Βαβυλῶνος, (ε) Πῶς ἀναπέπαυται ὁ ἀπαιτῶν, καὶ 5 ἀναπέπαυται ὁ ἐπισπουδαστής; Συνέτριψε (ζ) κύριος τὸν ζυγὸν τῶν ἁμαρτωλῶν, τὸν 6 ζυγὸν τῶν ἀρχόντων. Πατάξας ἔθνος θυμῷ, πληγῇ ἀνιάτῳ, παίων ἔθνος πληγὴν 7 θυμοῦ, ἣ οὐκ ἐφείσατο, Ἀνεπαύσατο πεποι- 8 θώς. πᾶσα ἡ γῆ βοᾷ μετ᾽ εὐφροσύνης, Καὶ τὰ ξύλα τοῦ Λιβάνου (˘) εὐφράνθησαν ἐπὶ σοὶ, καὶ ἡ κέδρος τοῦ Λιβάνου ἀφ᾽ οὗ σὺ κεκοίμησαι, 9 οὐκ ἀνέβη ὁ κόπτων ἡμᾶς. Ὁ ᾅδης κάτωθεν ἐπικράνθη συναντήσας σοι· συνηγέρθησάν σοι πάντες οἱ γίγαντες οἱ ἄρξαντες τῆς γῆς, οἱ ἐγείραντες ἐκ τῶν θρόνων αὐτῶν 10 πάντας βασιλεῖς ἐθνῶν. Πάντες ἀποκριθήσονται, καὶ ἐροῦσί σοι, Καὶ σὺ ἑάλως, ὥσ- 11 περ καὶ ἡμεῖς· ἐν ἡμῖν δὲ κατελογίσθης. Κατέβη (η) εἰς ᾅδου ἡ δόξα σου, ἡ πολλὴ εὐφροσύνη σου· ὑποκάτω σου στρώσουσι σῆψιν, καὶ 12 τὸ κατακάλυμμά σου σκώληξ. Πῶς ἐξέπεσεν ἐκ τοῦ οὐρανοῦ ὁ Ἑωσφόρος ὁ πρωῒ ἀνατέλλων; συνετρίβη εἰς τὴν γῆν ὁ ἀπο- 13 στέλλων πρὸς πάντα τὰ ἔθνη. Σὺ δὲ εἶπας ἐν τῇ διανοίᾳ σου, Εἰς τὸν οὐρανὸν ἀναβήσομαι, ἐπάνω τῶν (θ) ἀστέρων τοῦ οὐρανοῦ θήσω τὸν θρόνον μου, καθιῶ ἐν ὄρει ὑψηλῷ, ἐπὶ τὰ 14 ὄρη τὰ ὑψηλὰ τὰ πρὸς Βοῤῥᾶν. Ἀναβήσομαι ἐπάνω τῶν (ι) νεφῶν, ἔσομαι ὅμοιος 15 τῷ ὑψίστῳ. Νῦν δὲ (κ) εἰς ᾅδην καταβήσῃ, 16 καὶ εἰς τὰ θεμέλια τῆς γῆς. Οἱ ἰδόντες σε (λ) θαυμάσονται ἐπὶ σοὶ, καὶ ἐροῦσιν, Οὗτος ὁ ἄνθρωπος ὁ παροξύνων τὴν γῆν, (μ) ὁ σεί- 17 ων βασιλεῖς, Ὁ θεὶς τὴν οἰκουμένην ὅλην (·) ἔρημον, καὶ τὰς πόλεις αὐτοῦ καθεῖλε, τοὺς ἐν 18 ἐπαγωγῇ οὐκ ἔλυσε. Πάντες οἱ βασιλεῖς τῶν ἐθνῶν ἐκοιμήθησαν ἐν τιμῇ, (ν) ἄνθρωπος ἐν τῷ οἴκῳ αὐτοῦ.

Et miſerebitur Dominus Jacob, & eliget adhuc Iſrael: & requieſcent ſuper terram ſuam: & (b)advena apponetur ad eos: & apponetur ad domum Jacob: 2 *Et aſſument eos gentes, & introducent in locum eorum; & poſſidebunt, & multiplicabuntur ſuper terram, in ſervos, & ſervas: & erunt captivi, qui captivaverant eos, & ſubjicientur dominationi, qui dominati fuerant eis.* 3 *Et erit, in die illa requieſcere te faciet Dominus à dolore, & furore tuo, à ſervitute tua dura, quam ſerviviſti eis.* 4 *Et ſumes lamentationem hanc ſuper regem Babylonis; Quomodò ceſſavit exactor, & ceſſavit ſolicitator?* 5 *Contrivit Dominus jugum peccatorum, jugum principum:* 6 *Percutiens gentem furore, plagâ inſanabili, percutiens gentem plagâ furoris, quæ non pepercit:* 7 *Requievit confidenter omnis terra, clamat cum lætitia:* 8 *Et ligna Libani lætata ſunt ſuper te: & cedrus Libani, ex quo tu dormiviſti, non aſcendit qui cædat nos.* 9 *Infernus ſubter exacerbatus eſt occurrens tibi: conſurrexerunt tibi omnes (c) gigantes, qui principabantur terræ, qui excitabant de ſoliis eorum omnes reges gentium.* 10 *Omnes reſpondebunt, & dicent tibi; Et tu captus es, ſicut & nos: & in nobis reputatus es:* 11 *Deſcendit ad infernum gloria tua, multa lætitia tua: ſubter te ſternent putredinem: & (d) operculum tuum vermis.* 12 *Quomodò cecidit de cælo Lucifer, qui manè oriebatur? Contritus eſt ad terram, qui mittebat ad omnes gentes.* 13 *Tu autem dixeras in mente tua; In cælum aſcendam, ſuper ſydera cæli ponam thronum meum, ſedebo in monte excelſo ſuper montes excelſos, qui ad Aquilonem:* 14 *Aſcendam ſuper nubes: ero ſimilis Altiſſimo.* 15 *Nunc autem in infernum deſcendes, & ad fundamenta terræ.* 16 *Qui vident te, mirabuntur ſuper te, & dicent; Iſte homo, qui irritabat terram, qui concutiebat reges;* 17 *Qui ponebat orbem totum, deſertum, & civitates ejus deſtruxit; &, qui in (e) obductione erant, non ſolvit.* 18 *Omnes reges gentium dormierunt in honore, homo in domo ſua.*

MS. A. (α) ἐπὶ τὸν οἶκον (β) γῆς τοῦ θεοῦ εἰς (γ) ὁ θεὸς ἐκ τῆς ὀδύνης (δ) καὶ τῆς δουλείας τῆς σκληρᾶς, (ε) καὶ ἐρεῖς ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, Πῶς (ζ) ὁ θεὸς (˘) ηὐφράνθησαν (η) δὲ εἰς (θ) ἄστρων (ι) νεφελῶν (κ) εἰς ᾅδου (λ) θαυμάσουσιν (μ) σείων (·) ἔρημον, τοὺς ἐν (ν) ἕκαστος ἐν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

יד

1 ארי ירחם יי על דבית יעקב ויתרעי עוד בישראל וישרנון על ארעהון ויתוספון גיורין
2 עליהון ויסתמכון על בית יעקב: וידברנון עממין ויובלונון לארעהון ויחסנונון בית
ישראל על ארע שכנתא דיי לעבדין ולאמהן ויהון שבין לשוביהון ויפלחון
3 במשעבדיהון: ויהי ביומא דיניח יי לך מצערך וממרותך ומן פולחנא קשיא
4 דאתפלח בך: ותטול מתלא הדין על מלכא דבבל ותימר איכדין בטילת מרות
5 6 משעבדנא סף תקוף חיבא: תבר יי תקוף רשיעין שולטן חיבין: דהוה מחי
7 עממין בתקוף מחא די לא פסיק מפלח בתקוף עממין מפלח ולא מנע: נחת שרוכת
8 כל ארעא יבעו תושבחא: אף שלטונין חדיאו עלך עתירי נכסיא אמרין מעדן דשכבתא
9 לא סליק מחבלא עלנא: שאול מלרע זעת לך לקדמות מיתך אעירת לך גברין כל
10 עתירי נכסיא אקימו מכורסותהון כל מלכי עממיא: כולהון יתיבון ויימרון לך אף
11 את מרעתא כותנא לנא דמיתא: אתחת לשאול יקרך אתרגושת תושבחת זמרך
12 תחותך ישוון רמה ועיל מנך דיחשא: איכדין אתרכנתא מן רומא דהויתא זיותן בנו
בני אנשא ככוכב נוגהא בין כוכביא אתרטשתא לארעא דהויתא קטול בעממיא:
13 ואת אמרת בלבך לרומא אסק עיל מן עמיה דאלהא אשוי כורסי מלכותי ואתב
14 15 בטור זמן בסיפי צפונא: אסק עלוי כל עמא אהי עלאי מכולהון: ברם
16 לשאול תתחת לסיפי גוב בית אבדנא: חזך עלך ידוקון בך יסתכלון ויימרון
17 הדין גברא אזיע ארעא אצדי מלכותא: שוי תבל כמדברא וקרוהי פגר לאסירוהי
18 לא פתח תרעא: כל מלכי עממיא כולהון שכבין ביקר גבר בבית עלמיה:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XIV.

1 Miſerebitur enim Dñs domus Jacob, & eliget adhuc Iſraelem, & habitare faciet eos ſuper terram ſuam; & adjicientur advenæ ad eos, & adhærebunt domui Jacob. 2 Et tollent eos populi, & adducent eos in *terram ſuam*: & poſſidebit eos dom' Iſrael ſuper terram majeſtatis Domini in ſervos & ancillas; & erunt captivantes eos qui captivaverant eos, & ſervient eis illi qui ſubjecerant eos. 3 Et erit in die qua requieſcere faciet Dñs te à tribulatione tua, & à ſubjectione tua, & à ſervitute dura qua antè ſerviviſti. 4 Et tolles parabolam iſtam ſuper regem Babylonis, & dices: Quomodo ceſſavit ſubjectio ſubjiciens nos! defecit fortitudo *peccatoris*! 5 Contrivit Dñs fortitudinem impiorum, dominiū peccatorum. 6 Qui percutiebat populos in furore, *percuſſione* ſine ceſſatione, ſervire faciens in furore populos ſervitute ſine ceſſatione. 7 Conquievit, pacata eſt omnis terra, & exultaverunt in cantico. 8 *Dominatores* quoque lætati ſunt ſuper te: divites in ſubſtantiis dicebant: A tempore quo dormiviſti, non aſcendit diſperdens ſuper nos. 9 Infernus ſubter te commotus eſt in occurſum adventus tui, ſuſcitavit tibi gigantes. Omnes divites in ſubſtantiis ſurrexerunt de ſoliis ſuis omnes reges populorū. 10 Omnes illi reſpondebunt, & dicent tibi: Tu quoque infirmatus es ſicut & nos; aſſimilatus es nobis. 11 Detracta eſt in infernum gloria tua; ſtrepitus laudis muſicæ tuæ: ſubter te ſternent vermes, & ſuper te tinea. 12 Quomodo cecidiſti de excelſo, qui eras ſplendidus inter filios hominum, ſicut ſtella lucens inter ſtellas? projectus es in terram qui occidebas populos. 13 Tu autem dixiſti in corde tuo: In excelſum aſcendam, ſuper populū Dei ponam thronum regni mei, & ſedebo in monte fœderis in finibus Aquilonis. 14 Aſcendam ſuper omnem populum: ero excelſior omnib'. 15 Veruntamen ad infernum detrahêris, ad extremitatem laci dom' perditionis. 16 Qui te viderint, ſuper te contemplabuntur, te proſpicient, & dicent: Nunquid iſte eſt vir qui commovebat terrā, in ſolitudinē redigens regna? 17 Poſuit orbē ſicut deſertū, & civitates ejus deſtruxit: vinctis ejus non aperuit januam. 18 Omnes reges populorum univerſi dormierunt in gloria, unuſquiſque in domo ſeculi ſui.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܕ *
1 ܡܛܠ ܕܡܪܚܡ ܡܪܝܐ ܥܠ ܝܥܩܘܒ .· ܘܡܬܪܥܐ ܬܘܒ
ܠܐܝܣܪܝܠ. ܘܢܫܒܘܩ ܐܢܘܢ ܒܐܪܥܗܘܢ. ܘܢܬܚܒܪܘܢ ܥܡܗܘܢ ܬܘܬܒܐ .· ܘܢܬܢܩܦܘܢ
2 ܥܠ ܒܝܬ ܝܥܩܘܒ. * ܘܢܕܒܪܘܢ ܐܢܘܢ ܥܡܡܐ. ܘܢܥܠܘܢ ܐܢܘܢ ܠܐܬܪܗܘܢ. ܘܢܐܪܬܘܢ ܐܢܘܢ
ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܒܐܪܥܗ ܕܡܪܝܐ. ܠܥܒܕܐ ܘܠܐܡܗܬܐ. ܘܢܗܘܘܢ ܫܒܝܢ ܠܫܒܘܝܗܘܢ .·
3 ܘܢܫܬܠܛܘܢ ܒܡܫܥܒܕܢܝܗܘܢ. * ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܕܢܢܝܚ ܡܪܝܐ. ܡܢ ܟܪܝܘܬܟ ܘܡܢ
4 ܪܘܓܙܟ: ܘܡܢ ܦܘܠܚܢܐ ܩܫܝܐ ܕܐܫܬܥܒܕܬ .· * ܘܬܣܒ ܡܬܠܐ ܗܢܐ ܥܠ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ
5 ܘܬܐܡܪ. ܐܝܟܢܐ ܒܛܠ ܡܫܥܒܕܢܐ. ܘܒܛܠ ܡܫܬܘܥܝܢܐ. * ܬܒܪ ܡܪܝܐ ܫܒܛܐ ܕܪܫܝܥܐ
6 ܘܫܒܛܐ ܕܫܠܝܛܐ: * ܕܡܚܐ ܗܘܐ ܠܥܡܡܐ ܒܚܡܬܐ. ܡܚܘܬܐ ܕܠܐ ܫܠܝܐ. ܘܪܕܐ ܗܘܐ ܒܪܘܓܙܐ
7 ܠܥܡܡܐ. ܘܪܕܦ ܠܗܘܢ. ܕܠܐ ܚܘܣܢ. * ܐܬܬܢܝܚܬ ܘܫܠܝܬ ܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܘܕܝܨܐ ܒܬܫܒܘܚܬܐ.
8 * ܐܦ ܫܘܪܒܝܢܐ ܘܐܪܙܐ ܕܠܒܢܢ. ܚܕܝܘ ܒܟ. ܡܢ ܐܡܬܝ ܕܫܟܒܬ .· ܠܐ ܣܠܩ ܠܘܬܢ ܦܣܘܩܐ.
9 * ܫܝܘܠ ܡܢ ܠܬܚܬ. ܐܬܬܙܝܥܬ ܡܛܠܬܟ ܒܡܥܠܟ. ܐܬܥܝܪܘ ܠܟ ܓܢܒܪܐ. ܘܟܠܗܘܢ
10 ܪܘܪܒܢܐ ܕܐܪܥܐ ܕܐܩܝܡܬ ܡܢ ܟܘܪܣܘܬܗܘܢ .· * ܟܠܗܘܢ ܡܠܟܐ ܕܥܡܡܐ. ܢܥܢܘܢ. ܘܢܐܡܪܘܢ
11 ܠܟ. ܐܦ ܐܢܬ ܐܬܟܪܗܬ ܐܟܘܬܢ. ܘܥܡܢ ܐܫܬܠܡܬ .· * ܘܢܚܬ ܫܘܒܗܪܟ ܠܫܝܘܠ .· ܘܡܝܬ
12 ܟܢܪܟ .· ܬܚܬܝܟ ܢܬܡܟܟ ܪܩܒܐ. ܘܬܟܣܝܬܟ ܬܗܘܐ ܬܘܠܥܬܐ .· * ܐܝܟܢܐ ܢܦܠܬ ܡܢ ܫܡܝܐ.
13 ܐܝܠܠ ܒܨܦܪܐ. ܢܦܠܬ ܒܐܪܥܐ ܡܨܥܪܢܐ ܕܥܡܡܐ. * ܐܢܬ ܐܡܪܬ ܒܠܒܟ. ܕܐܣܩ ܠܫܡܝܐ.
14 ܘܠܥܠ ܡܢ ܟܘܟܒܐ ܕܐܠܗܐ ܐܪܝܡ ܟܘܪܣܝ. ܘܐܬܒ ܒܛܘܪܐ ܪܡܐ ܕܒܫܘܦܝ ܓܪܒܝܐ.
15 * ܘܐܣܩ ܠܥܠ ܡܢ ܥܢܢܐ. ܘܐܕܡܐ ܠܡܪܝܡܐ .· * ܒܪܡ ܠܫܝܘܠ ܬܚܘܬ. ܘܠܫܘܦܝܗ
16 ܓܘܒܐ. * ܟܠ ܚܙܝܟ. ܢܚܝܪܘܢ ܒܟ. ܘܒܟ ܢܬܒܩܘܢ. ܘܢܐܡܪܘܢ .· ܗܢܘ ܓܒܪܐ
17 ܕܡܙܝܥ ܗܘܐ ܐܪܥܐ. ܘܡܪܓܙ ܡܠܟܘܬܐ .· * ܘܣܡ ܬܐܒܝܠ ܐܝܟ ܡܕܒܪܐ .· ܘܩܘܪܝܐ ܦܚܬ.
18 ܘܐܣܝܪܘܗܝ. ܠܐ ܫܪܐ. * ܟܠܗܘܢ ܡܠܟܐ ܕܥܡܡܐ .· ܫܟܒܘ ܒܐܝܩܪܐ ܐܢܫ ܒܒܝܬܗ.

CAP. XIV.

1 Miſerebitur enim Dominus Jacobi, & iterum placabitur Iſráeli, & relinquet eos in terra ipſorum. Rurſus conſociabuntur adversùs eos advenæ, & aggregabuntur contra familiam Jacobi; 2 Abducent eos gentes, & deportabunt in terram ſuam. At poſſidebunt eos Iſraelitæ in terra Domini in ſervos & ancillas, in captivitatem adigent eos qui ſe captivos ducebant, & dominabuntur in eos qui ſe ſervitute premebant. 3 Et fiet eâ die quâ requiem dederit tibi Dominus à mœrore & indignatione tuâ, & à dura ſervitute quâ fueris oppreſſus; 4 Ut aſſumas parabolam hanc de rege Babelis, ac dicas; Quomodo ceſſavit præfectus, ceſſavit & *operis* exactor? 5 Fregit Dominus baculum impii & baculum præfecti, 6 Qui populos obſtinatè cædebat immoderatis verberibus, gentes iracundè caſtigabat, & ſine clementia perſequebatur? 7 Quievit ac ſiluit tota terra, & exultat cum cantico. 8 Quin etiam abietes & cedri Libani de te lætantur *dicentes*, Ab eo tempore quo occubuiſti, nemo aſcendit ad nos cædendum. 9 Infernus deorſum commotus eſt causâ introitûs tui, excitavit contra te gigantes omneſque terræ principes quos propriis ſoliis depuliſti. 10 Omnes reges populorum reſpondebunt dicentque tibi, Etiam tu infirmatus es ſicut nos, & nobiſcum traditus? 11 Faſtus tuus decidit in infernum, & mortua eſt lyra tua? ſubter te ſternitur caries, & operit te vermis? 12 Quomodo de cœlo decidiſti? (ejula in matutino) in terram ruiſti dehoneſtans populos? 13 Tu tecum ipſe dicebas, Aſcendam in cœlum, ſuper ſtellas Dei exaltabo ſolium meum, & ſedebo in monte ſublimi qui *ſitus* eſt in imis partib⁹ Aquilonis. 14 Super celſiſſimas nubes aſcendam, & ſimilis ero Altiſſimo. 15 Verùm in infernum rues, & in profundum foveæ. 16 Omnes te videntes proſpectabunt te, teque contemplantes dicent, Hiccine eſt vir ille qui terram exagitavit, regna conturbavit? 17 Vaſtavit orbem terrarum in modum ſolitudinis, civitates deſtruxit, vinctos ſuos nequaquam ſolvit? 18 Omnes populorum reges occubuerunt cum honore, quiſque domi ſuæ;

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الرابع عشر * ويرحم الرب يعقوب * ويختار ايضا اسرائيل * ويستريحون 1
في ارضهم * والغريب يعود اليهم * ويعود الى بيت يعقوب * وياخذهم الامم ويدخلهم الى 2
موضعهم * ويرثون ويكثرون في ارض الههم * ويصيرون لهم عبيدا واماء * ويصير الذين سبوهم
مسبيين * ويسودون الذين سادوا عليهم * ويكون في ذلك اليوم الذي يريحك الله فيه من 3
وجعك وغضبك وعبوديتك الصعبة التي تعبدت لهم بها * وتاخذون هذا النوح على ملك 4
بابل * وتقول في ذلك اليوم كيف بطل المسلط * وكيف بطل الحريص * الله كسر نير 5
الخطاة ونير الرؤساء * وضرب الامم ضربة بغضبه الذي لا شفاء له * وضرب الامم ضربة 6
غضب * ولم يشفق * واستراح المتوكل عليه * كل الارض تصرخ بسرور * وشجر لبنان 7 8
فرحت بك * وارز لبنان قالت * منذ الوقت الذي فيه انت اضطجعت لم يصعد من
يقطعنا * الجحيم من اسفل تذمر حين استقبلك * وقامت معك جميع الجبابرة الذين ساروا 9
على الارض * القايمون عن كراسيهم * جميع ملوك الامم * وجميعهم يجاوبون ويقولون لك * وانت 10
ضعفت مثلنا * وحسبت فينا * ونزل الى الجحيم مجدك الكثير وسرورك * يفرشون تحتك 11
السوس * وغطاوك دود * كيف سقط من السماء كوكب الصبح المشرق بالغداة انكسر على 12
الارض المرسل الى كل الامم * وانت قلت في قلبك * اصعد الى السماء * وفوق كواكب 13
السماء اضع كرسي * اجلس في جبل عال على الجبال العالية التي نحو الجربياء * واصعد 14
فوق السحب * واكون شبيها بالعلي * والان انحدرت الى الجحيم والى اساسات الارض * 15
* الذين ينظرونك يتعجبون منك * ويقولون هذا الانسان الذي اخذ كل الارض * وزلزل 16
الملوك * وجعل المسكونة كلها خرابا * وهدم المدن * ولم يحل الذين في الاسر * جميع ملوك 17 18
الارض رقدوا بكرامة * وكل واحد من الناس في بيته *

CAP. XIV.

1 *Deinde miſerebitur Dominus Jacobo, & eliget adhuc Iſraëlem, & requieſcent in terra ſua, & advena convertetur ad eos, & revertetur ad domum Jacobi:* 2 *Accipient eos populi, & introducent eos in locum eorum, & hæredes erunt atque multiplicabuntur in terra Dei ſui, fientque eis ſervi & ancillæ: qui captivos abduxerant eos, fient captivi, & dominabuntur in eos qui ſibi dominabantur.* 3 *Et erit eo die quo recreabit te Deus dolore, & indignatione, & durâ tuâ ſervitute quâ ſervieris eis;* 4 *ut aſſumatis cantionem hanc lugubrem de rege Babelis, & dicas eo die; Quomodo ceſſavit præfectus, & quomodo ceſſavit ſolers?* 5 *Deus fregit jugum peccatorum, & jugum principum: percuſſitque in ira ſua gentes plagâ cui nullum eſt medicamen:* 6 *Et percuſſit populos plagâ furoris, nec pepercit.* 7 *Et quievit is qui fretus erat ipſo: tota terra clamat cum jubilo:* 8 *Arbores Libani lætantur de te, & cedri Libani dicunt; A quo tempore jacuiſti, nemo aſcendit ad amputandum nos:* 9 *Infernus ab imo ægrè tulit cùm obvius tibi factus eſt, & ſurrexerunt tecum omnes gigantes qui dominati fuerant ſuper terram, ſurgentes è ſoliis ſuis, omnes* videlicet *reges populorū:* 10 *Et hi omnes reſpondebunt & dicent tibi; Et tu debilis factus es ſicut nos, & annumeratus es inter nos?* 11 *Et deſcendit in infernum gloria tua magna & gaudium tuum? Sternent ſub te tineas, & operimentum tuum erunt vermes.* 12 *Quomodo cecidit è cœlo ſtella matutina mane ſplendeſcens? fractus eſt ſuper terram qui miſſus fuerat contra univerſos populos?* 13 *Tu quidem dixeras in corde tuo, Aſcendam ad cœlum, & ſuper cœli ſydera collocabo ſolium meum, ſedebo in monte ſublimi, ſuper montes excelſos qui ſunt Aquilonem verſùs:* 14 *Nubibus altiùs aſcendam, & ero ſimilis Altiſſimo.* 15 *Nunc autem in infernum deſcendiſti, & in ima terræ fundamenta.* 16 *Qui te viderint, te demirabuntur, ac dicent; Hiccine vir ille eſt qui totum irritavit orbem? reges tremefecit?* 17 *Univerſam terram deſolatam reddidit? urbes deſtruxit? & eos qui in vinculis erant, minimè ſolvit?* 18 *Omnes reges terræ cum honore jacuerunt, & quilibet mortalium domi ſuæ;*

יְשַׁעְיָה : טו

vestimentum tuum ,abominabilis stirps ut tuo sepulchro de es projectus tu. Et
19 וְאַתָּה הָשְׁלַכְתָּ מִקִּבְרְךָ כְּנֵצֶר נִתְעָב לְבֻשׁ
,*cisternæ* lapides ad *descendentium* : gladio *perforatorum* , occisorum
הֲרֻגִים מְטֹעֲנֵי חָרֶב יוֹרְדֵי אֶל־אַבְנֵי־בוֹר
quia : sepultura in eis cum te unies Non .conculcatum cadaver veluti
20 כְּפֶגֶר מוּבָס׃ לֹא־תֵחַד אִתָּם בִּקְבוּרָה כִּי־
seculum in vocabitur non : occidisti tuum populum ,*corrupisti* tuam terram
אַרְצְךָ שִׁחַתָּ עַמְּךָ הָרָגְתָּ לֹא־יִקָּרֵא לְעוֹלָם
:eorũ patrum *iniquitate in occisionem ejus filiis* Præparate .pessimorum semen
21 זֶרַע מְרֵעִים׃ הָכִינוּ לְבָנָיו מַטְבֵּחַ בַּעֲוֺן אֲבוֹתָם
faciei impleant atque ,terram accipiant hæreditate & ,consurgant ne
בַּל־יָקֻמוּ וְיָרְשׁוּ אָרֶץ וּמָלְאוּ פְנֵי־
,exercituum Dominus dicit ,eos contra consurgam Et .*urbibus* orbis
22 תֵבֵל עָרִים׃ וְקַמְתִּי עֲלֵיהֶם נְאֻם יְהוָה צְבָאוֹת
,nepotem & , filium & , *consanguineum* & , nomen Babel de *succidam* &
וְהִכְרַתִּי לְבָבֶל שֵׁם וּשְׁאָר וְנִין וָנֶכֶד
paludes & ,ericii possessionem in eam ponam Et .Dominus dicit
23 נְאֻם־יְהוָה׃ וְשַׂמְתִּיהָ לְמוֹרַשׁ קִפֹּד וְאַגְמֵי־
.exercituum Dominus dicit ,*delendo* scopis in eam scopabo & ,aquarum
מָיִם וְטֵאטֵאתִיהָ בְּמַטְאֲטֵא הַשְׁמֵד נְאֻם יְהוָה צְבָאוֹת׃
quod secundùm non Si : dicendo ,exercituum Dominus Juravit
24 נִשְׁבַּע יְהוָה צְבָאוֹת לֵאמֹר אִם־לֹא כַּאֲשֶׁר
frangendum Ad .stabit ipsum ,consului quod secundùm & ,*fuit* sic ;cogitavi
25 דִּמִּיתִי כֵּן הָיָתָה וְכַאֲשֶׁר יָעַצְתִּי הִיא תָקוּם׃ לִשְׁבֹּר
recedet & : cum conculcabo meis montibus in & ,mea terra in Assur
אַשּׁוּר בְּאַרְצִי וְעַל־הָרַי אֲבוּסֶנּוּ וְסָר
.removebitur ejus humero *desuper* illius onus & ,ejus jugum eis *desuper*
מֵעֲלֵיהֶם עֻלּוֹ וְסֻבֳּלוֹ מֵעַל שִׁכְמוֹ יָסוּר׃
manus hæc & : terram omnem super *consultum* consilium Hoc
26 זֹאת הָעֵצָה הַיְּעוּצָה עַל־כָּל־הָאָרֶץ וְזֹאת הַיָּד
,*consuluit* exercituum Dominus Nam .gentes omnes super extenta
27 הַנְּטוּיָה עַל־כָּל־הַגּוֹיִם׃ כִּי־יְהוָה צְבָאוֹת יָעָץ
? eam faciet redire quis & , extenta ejus manus & ? irritabit quis &
וּמִי יָפֵר וְיָדוֹ הַנְּטוּיָה וּמִי יְשִׁיבֶנָּה׃
Ne *Hoc onus* fuit , Achaz *regem mori* anno In
28 בִּשְׁנַת־מוֹת הַמֶּלֶךְ אָחָז הָיָה הַמַּשָּׂא הַזֶּה׃ אַל־
29 nam : *te percutientis* virga sit confracta quòd ,tu omnis Peleseth læteris
תִּשְׂמְחִי פְלֶשֶׁת כֻּלֵּךְ כִּי נִשְׁבַּר שֵׁבֶט מַכֵּךְ כִּי־
ignitus serpens ejus fructus & , regulus egredietur serpentis radice de
מִשֹּׁרֶשׁ נָחָשׁ יֵצֵא צֶפַע וּפִרְיוֹ שָׂרָף
fiducia in mendici & , *tenuium* primogeniti pascentur Et .volans
30 מְעוֹפֵף׃ וְרָעוּ בְּכוֹרֵי דַלִּים וְאֶבְיוֹנִים לָבֶטַח
tuas reliquias & , tuam radicem fame in faciam interire & , *accubabunt*
יִרְבָּצוּ וְהֵמַתִּי בָרָעָב שָׁרְשֵׁךְ וּשְׁאֵרִיתֵךְ
: tu omnis Peleseth *liquefacta* : civitas clama ,porta Ulula .interficiet
31 יַהֲרֹג׃ הֵילִילִי שַׁעַר זַעֲקִי־עִיר נָמוֹג פְּלֶשֶׁת כֻּלֵּךְ
.suis temporibus in solitarius non & ,*veniens* fumus Aquilone ab nam
כִּי מִצָּפוֹן עָשָׁן בָּא וְאֵין בּוֹדֵד בְּמוֹעָדָיו׃
,Sijon fundavit Dominus quòd ? gentis nunciis respondebitur quid Et
32 וּמַה־יַּעֲנֶה מַלְאֲכֵי־גוֹי כִּי יְהוָה יִסַּד צִיּוֹן
.ejus populi *afflicti confident* ea in &
וּבָהּ יֶחֱסוּ עֲנִיֵּי עַמּוֹ׃

CAP. XV. טו

quia ;succisus ,Moab Har est vastatus nocte in Quia .Moab *Onus*
1 מַשָּׂא מוֹאָב כִּי בְּלֵיל שֻׁדַּד עָר מוֹאָב נִדְמָה כִּי
.succisus ,Moab Chir est vastatus nocte *in*
בְּלֵיל שֻׁדַּד קִיר־מוֹאָב נִדְמָה׃

Versio VULG. LAT.

19 Tu autem projectus es de sepulchro tuo, quasi stirps inutilis pollut⁹, & obvolut⁹ cum his qui interfecti sunt gladio, & descenderunt ad fundamenta laci, quasi cadaver putridũ. 20 Non habebis consortium, neque cum eis in sepultura : tu enim terrã tuã disperdidisti, tu populum tuũ occidisti:non vocabitur in æternum semen 21 pessimorum. Præparate filios ejus occisioni in iniquitate patrum suorum : non consurgent, nec hæreditabunt terrã, neque implebunt faciem or- 22 bis civitatum. Et consurgam super eos, dicit Dominus exercituum : & perdam Babylonis nomen , & reliquias , & germen , & progeniem, dicit 23 Dominus. Et ponam eam in possessionem ericii, & in paludes aquarum , & scopabo eam in scopa terens, dicit Do- 24 minus exercituum. Juravit Dominus exercituum , dicens; Si non, ut putavi, ita erit : & 25 quomodò mente tractavi, Sic eveniet: Ut conteram Assyriũ in terra mea, & in montibus meis conculcem eum : & auferetur ab eis jugum ejus, & onus illius ab humero eorum 26 tolletur. Hoc consilium, quod cogitavi super omnem terrã, & hæc est manus extenta su- 27 per universas gentes. Dominus enim exercituum decrevit : & quis poterit infirmare ? & manus ejus extenta : & quis a- 28 vertet eam ? In anno, quo mortuus est rex Achaz, factum 29 est onus istud : Ne læteris Philisthæa omnis tu, quoniam comminuta est virga percussoris tui : de radice enim colubri egredietur regulus, & semen ejus absorbens volucrem. 30 Et pascentur primogeniti pauperum, & pauperes fiducialiter requiescent : & interire faciam in fame radicem tuam, & reliquias tuas interficiam. 31 Ulula porta , clama civitas : prostrata est Philisthæa omnis: ab Aquilone enim fumus veniet, & non est qui effugiet 32 agmen ejus. Et quid respondebitur nuntiis gentis ? Quia Dñs fundavit Sion, & in ipso sperabunt pauperes populi ej⁹.

CAP. XV.

1 ONus Moab. Quia nocte vastata est Ar Moab , conticuit : quia nocte vastatus est murus Moab, conticuit.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

19 Σὺ δὲ ῥιφήσῃ ἐν τοῖς ὄρεσιν, ὡς νεκρὸς ἐβδελυγμένος, μετὰ πολλῶν τεθνηκότων ἐκκεκεντημένων μαχαίραις, καταβαινόντων εἰς ᾅ- 20 δου. Ὃν τρόπον (ξ) ἱμάτιον ἐν αἵματι πεφυρμένον οὐκ ἔσται καθαρὸν, οὕτως οὐδὲ σὺ ἔσῃ καθαρός. διότι τὴν γῆν μου ἀπώλεσας, καὶ τὸν λαόν μου ἀπέκτεινας· οὐ μὴ μείνῃς εἰς τὸν αἰῶνα χρόνον, σπέρμα πονηρόν. 21 Ἑτοίμασον (ο) τὰ τέκνα σου σφαγῆναι ταῖς ἁμαρτίαις τοῦ πατρὸς (π) αὐτῶν, ἵνα μὴ ἀναστῶσι (ρ) καὶ κληρονομήσωσι τὴν γῆν, καὶ 22 ἐμπλήσωσι τὴν γῆν πολέμων. Καὶ ἐπαναστήσομαι αὐτοῖς, λέγει κύριος σαβαὼθ, καὶ ἀπολῶ αὐτῶν ὄνομα, καὶ κατάλειμμα, καὶ 23 σπέρμα· τάδε λέγει κύριος. Καὶ θήσω τὴν Βαβυλωνίαν ἔρημον, ὥστε κατοικεῖν ἐχίνους, καὶ ἔσται εἰς οὐδέν· καὶ θήσω αὐτὴν πη- 24 λοῦ (σ) βάραθρον εἰς ἀπώλειαν. Τάδε λέγει κύριος σαβαὼθ, Ὃν τρόπον εἴρηκα, 25 οὕτως ἔσται, καὶ ὃν τρόπον βεβούλευμαι, Οὕτως μενεῖ, τοῦ ἀπολέσαι τοὺς Ἀσσυρίους (τ) ἐπὶ τῆς γῆς τῆς ἐμῆς, καὶ ἐπὶ τῶν ὀρέων μου· καὶ ἔσονται εἰς καταπάτημα, καὶ ἀφαιρεθήσεται ἀπ᾽ αὐτῶν ὁ ζυγὸς αὐτῶν, καὶ τὸ κῦδος αὐτῶν ἀπὸ τῶν ὤμων ἀφαιρεθήσεται. 26 Αὕτη ἡ βουλὴ ἣν βεβούλευται κύριος ἐπὶ τὴν (υ) ὅλην οἰκουμένην, καὶ αὕτη ἡ χεὶρ ἡ ὑ- 27 ψηλὴ ἐπὶ πάντα τὰ ἔθνη (φ). Ἃ γὰρ ὁ θεὸς ὁ ἅγιος βεβούλευται, τίς διασκεδάσει; καὶ τὴν χεῖρα (χ) αὐτοῦ τὴν ὑψηλὴν τίς ἀπο- 28 στρέψει; Τοῦ ἔτους οὗ ἀπέθανεν (ψ) ὁ βα- 29 σιλεὺς Ἄχαζ, ἐγενήθη τὸ ῥῆμα τοῦτο. Μὴ εὐφρανθείητε (ω) οἱ ἀλλόφυλοι πάντες, συνετρίβη γὰρ ὁ ζυγὸς τοῦ παίοντος ὑμᾶς· ἐκ γὰρ σπέρματος (α) ὄφεως ἐξελεύσεται (β) ἔκγονα ἀσπίδων, καὶ τὰ ἔκγονα αὐτῶν ἐξελεύσονται ὄφεις 30 (γ) πετάμενοι. Καὶ βοσκηθήσονται πτωχοὶ δι᾽ αὐτοῦ· πτωχοὶ δὲ (δ) ἄνθρωποι ἐπ᾽ εἰρήνης ἀναπαύσονται· ἀνελεῖ δὲ (ε) ἐν λιμῷ τὸ σπέρμα σου, καὶ τὸ κατάλειμμά σου ἀνελεῖ. 31 (ζ) Ὀλολύξατε πύλαι πόλεων, κεκραγέτωσαν πόλεις τεταραγμέναι, οἱ ἀλλόφυλοι πάντες, ὅτι (η) ἀπὸ Βορρᾶ καπνὸς ἔρχεται, 32 καὶ οὐκ ἔστι τοῦ εἶναι. Καὶ τί ἀποκριθήσονται βασιλεῖς ἐθνῶν; ὅτι κύριος ἐθεμελίωσε Σιὼν, καὶ δι᾽ αὐτοῦ σωθήσονται οἱ ταπεινοὶ τοῦ λαοῦ.

Tu autem projectus eris in montibus, sicut (ſ) mortuus abominatus, cum multis mortuis confossis gladio, descendentibus ad in- 19 *fernum.* 20 *Quemadmodum vestimentum in sanguine conspersum non erit mundum; ita neque tu eris mundus. Quoniam terram meam perdidisti, & populum meum interfecisti: non manebis in æternum tempus, semen pessimum.* 21 *Præpara filios tuos, ut occidantur pro peccatis patris eorum, ut non resurgant, neque hæreditent terram, & impleant terram (g) bellis.* 22 *Et consurgam super eos, dicit Dominus Sabaoth, & perdam eorum nomen, & reliquias, & semen: Hæc dicit Dominus.* 23 *Et ponam Babyloniam desertum, ut inhabitent hericii, & erit in nihilum: & ponam eam luti voraginem in perditionem:* 24 *Hæc dicit Dominus Sabaoth, Sicut dixi, ita erit: & sicut consilium cepi;* 25 *Sic manebit, ad perdendum Assyrios super terram meam, & super montes meos. Et erunt in conculcationem: & auferetur ab eis jugum eorum: & gloria eorum ab humeris auferetur.* 26 *Hoc est consilium, quod decrevit Dominus super totum terræ orbem: & hæc manus excelsa super omnes gentes.* 27 *Quæ enim Deus sanctus decrevit; quis dissipabit? & manum ejus excelsam quis avertet?* 28 *Anno, quo mortuus est rex Achaz; factum est verbum hoc:* 29 *Nolite lætari, alienigenæ omnes: contritum est enim jugum percutientis vos. Nam ex semine serpentis egredientur fœtus aspidum: & fœtus eorum egredientur serpentes volantes.* 30 *Et pascentur inopes per eum: inopes autem homines super pacem requiescent: interficiet autem in fame semen tuum, & reliquias tuas interficiet.* 31 *Ululate portæ civitatum: clament urbes turbatæ, alienigenæ omnes: quoniam ab Aquilone fumus venit: & non est, ut sit.* 32 *Et quid respondebunt reges gentium? Quoniam Dominus fundavit Sion: & per ipsum salvabuntur humiles plebis.*

MS.A. (ξ) ἐν αἵματι ἱμάτιον (ο) σφαγῆναι τὰ τέκνα σου (π) σου, (ρ) καὶ τὴν γῆν κληρονομήσωσι, (σ)* βάθρον (τ) ἀπὸ τῆς γῆς τῆς ἐμῆς, καὶ ἀπὸ τῆς (υ) οἰκουμένην ὅλην, (φ) τῆς οἰκουμένης. (χ) τὴν ὑψηλὴν (ψ) Ἄχαζ ὁ βασιλεὺς, (ω) πάντες οἱ ἀλλόφυλοι, (α) ὄφεων (β) ἔγγονα (γ) πετόμενοι. (δ) ἄνδρες ἐπ᾽ εἰρήνης (ε) λιμῷ (ζ) Ὀλολύζετε (η) καπνὸς ἀπὸ Βορρᾶ

ΚΕΦ. ιε'.

ΤΟ (·) ῬΗ͂ΜΑ ΤΟ ΚΑΤΑ ΤΗ͂Σ ΜΩΑΒΙΤΙΔΟΣ.

1 ΝΥκτὸς ἀπολεῖται ἡ Μωαβῖτις, νυκτὸς γὰρ ἀπολεῖται τὸ τεῖχος τῆς Μωαβίτιδος.

MS. A. (·) ὍΡΑΜΑ

CAP. XV.

VERBUM, QUOD CONTRA MOABITIDEM.

1 *NOcte peribit Moabitis: nocte enim peribit murus Moabitidis.*

תרגום יונתן TARGUM JONATHAN.

19 וְאַתְּ אִתְרְכֵנְתָּא מִקִּבְרָךְ כְּחֻט טְמִיר חֲפֵי קְטִילִין מְטַעֲנֵי חֶרֶב נָחֲתִין לְגוֹב אַבְנֵי בֵּית
20 אַבְדָנָא כְּפִגַר מְדַשְׁדָשׁ : לָא תְהֵי כְּחַד מִנְּהוֹן בִּקְבוּרְתָּא אֲרֵי אַרְעָךְ חַבֵּלְתָּא וְעַמָּךְ
21 קְטַלְתָּא לָא יִתְקַיַּם לְעָלַם זֶרַע מַבְאֲשִׁין : אַתְקִינוּ לִבְנֵיהוֹן קְטוֹל בְּחוֹבֵי אֲבָהַתְהוֹן
22 דִּלְמָא יְקוּמוּן וְיַחְסְנוּן אַרְעָא וְיִתְמְלוּן אַפֵּי תֵבֵל בְּעֲלֵי דְבָבוּ : וְאִתְגְּלֵי לְאִתְפְּרָעָא
23 מִנְּהוֹן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת וְאֵשֵׁיצֵי לְבָבֶל שׁוּם וּשְׁאָר וּבַר וּבַר בַּר אֲמַר יְיָ : וַאֲשַׁוֵּינַהּ
לִירוּתַת קוּפְּדִין בֵּית צָדוּ בִּצִּין דְּמַיִן וַאֲהַמְמִנַּהּ כְּמָא דִמְהַמְמִין בִּמְבִינָא וַאֲתַבְּבִנַּהּ
24 לְשֵׁיצָאָה אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת : קַיִּם יְיָ צְבָאוֹת לְמֵימַר אִם לָא כְּמָא דַחֲשִׁיבִית כֵּן תְּהֵי
25 וּכְמָא דְיַעֲצִית הִיא תְקוּם : לְמִתְבַּר אַתּוּרָאָה בְּאַרְעִי וְעַל טוּרֵי עַמִּי אֲדוּשְׁשִׁנֵּיהּ
26 וְתֶעְדֵּי מִנְּהוֹן מַרְוָתֵיהּ וְנִירֵיהּ מֵעַל צַוְרֵיהוֹן יִתְפְּסַק : דָּא מִלְּכָא דִּי מְלִיךְ עַל
27 כָּל יָתְבֵי אַרְעָא וְדָא גְבוּרְתָּא דִּי מְרַמְמָא דְּשַׁלִּיט עַל כָּל מַלְכְוָתָא : אֲרֵי יְיָ צְבָאוֹת
28 מְלַךְ וּמַן יַעְדֵּי וּגְבוּרְתֵּיהּ מְרַמְמָא וְלֵית דִּיתִיבִנֵּיהּ : בְּשַׁתָּא דְמִית מַלְכָּא אָחָז
29 הֲוָה מַטַּל נְבוּאֲתָא הָדָא : לָא תֶחְדוּן פְּלִשְׁתָּאֵי כּוּלְּכוֹן אֲרֵי אִתְּבַר שׁוּלְטָן דַּהֲוָה
מַפְלַח בְּכוֹן אֲרֵי מִבְּנֵי בְנוֹהִי דְּיִשַׁי יִפּוֹק מְשִׁיחָא וִיהוֹן עוֹבָדוֹהִי בְּכוֹן כְּחִיוֵי מַפְרִיחַ :
30 וְיִתְפַּרְנְסוּן חֲשִׁיכֵי עַמָּא וְעִנְוְתָנַיָּא בְּיוֹמוֹהִי לְרוּחְצָן יִשְׁרוֹן וְאֵמִית בְּכַפְנָא בְּנָךְ
31 וּשְׁאָר עַמָּךְ יִקְטוֹל : אֲלִילִי עַל תַּרְעָךְ צַוְחִי עַל קִרְוָךְ אִתְבַּרְתּוּן פְּלִשְׁתָּאֵי כּוּלְּכוֹן
32 אֲרֵי מִצְּפוּנָא פּוּרְעָנוּתָא אָתְיָא וְלֵית דִּמְאַחַר בִּזְמְנוֹהִי : וּמָה יְבַסְּרוּן אִזְגַּדֵּי עַמְמַיָּא אֲרֵי
יְיָ שַׁכְלֵיל צִיּוֹן וּבַהּ יִתְרַחֲצוּן חֲשִׁיכֵי עַמָּא :

טו

1 מַטַּל כָּס דְּלוּט לְאַשְׁקָאָה יַת מוֹאָב אֲרֵי בְּלֵילְיָא אִתְבְּזִיזַת לְחַיַּת מוֹאָב וְאִנּוּן
דְּמִיכִין וּבְלֵילְיָא אִתְכְּבִישׁ כְּרַכָּא דְמוֹאָב וְאִנּוּן דְּרְדִימִין

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Tu autem projectus es de sepulchro tuo, quasi virgultum absconditum, 19
coopertũ interfectis, vulneratis gladio, descendentib⁹ in lacum *lapidum* domus
perditionis, quasi cadaver conculcatum. Non eris sicut unus ex eis in 20
sepulchro; quia terram tuam dissipâsti, & populũ tuum occidisti: non permanebit
in æternum semen malignorum. Præparate filiis eorum occisionem, 21
propter peccata patrum suorũ, ne fortè consurgant & possideant terram;
& impleatur facies orbis inimicis. Et *revelabor*, ut vindictam sumã 22
ex eis, dicit Dñs exercituum: & disperdam de Babylone nomen & reliquias,
& filium, & filium filii, dicit Dñs. Et ponam eam in hæreditatem ericiorum, 23
domum desolationis, paludes aquarum, & scopabo eas, sicut scopis scopatur:
& suscitabo eam, ut disperdam eam, dicit Dñs exercituum. Juravit 24
Dñs exercituum dicens: Si non ut putavi, ita erit; & sicut consilio decrevi,
ita confirmabitur. Ut conteram Assyrium in terra mea, & in montibus populi 25
mei conculcem eum : & auferetur ab eis subjectio ej⁹, & jugum ejus à
cervicibus eorum cessabit. Hoc est consiliũ quod consultum est super *omnes* 26
incolas terræ; & hæc est potentia dominantis, quæ elevata est super omnia
regna. Quoniam Dñs exercituum decrevit consilium, & quis est qui auferat 27
ipsum? & potentia ejus elevata est; at quis eam revocabit? In anno quo mortu⁹ 28
est rex Achaz, factum est onus prophetiæ hujus. Ne lætemini Philistæi 29
universi vos, quia contritum est dominium cui serviebatis. Quoniam de filiis
filiorum Jesse egredietur Christus, & erunt opera ejus in vobis quasi serpens
volans. Et pascentur pauperes populi, & mites in diebus ejus habitabunt 30
confidenter; & occidet fame filios tuos, & residuum populi tui interficiet.
Ulula super portas tuas, clama super civitates tuas : exterminati estis 31
Philistæi omnes vos, quia ab Aquilone malum veniet, & non erit qui moram
faciat in temporibus suis. Et quid annunciabunt nuncii populorum ? 32
quia Dominus fundabit Sion : & in ipsa sperabunt pauperes populi.

CAP. XV.

ONus calicis maledictionis ad propinandum Moab : Quia in nocte 1
diruta est Lehajath Moab ipsis dormientibus, & in nocte subjecta est urbs
Moab ipsis soporatis.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܢܬ ܐܫܬܕܝܬ ܡܢ ܩܒܪܟ. ܐܝܟ ܢܘܪܒܐ ܡܣܠܝܐ. ܒܠܒܘܫܐ ܕܩܛܝܠܐ ܕܡܚܝܢ ܒܣܝܦܐ. 19
ܕܢܚܬܝܢ ܠܟܐܦܐ ܕܓܘܒܐ ܐܝܟ ܦܓܪܐ ܕܡܬܕܝܫ. * ܘܠܐ ܬܚܕܐ ܥܡܗܘܢ ܒܩܒܪܐ. ܡܛܠ ܕܐܪܥܟ 20
ܚܒܠܬ. ܘܥܡܟ ܩܛܠܬ. ܠܐ ܢܩܘܡ ܠܥܠܡ ܙܪܥܐ ܒܝܫܐ. * ܛܝܒܘ ܠܒܢܘܗܝ ܩܛܠܐ 21
ܒܚܘܒܐ ܕܐܒܘܗܘܢ. ܕܠܐ ܢܩܘܡܘܢ ܘܢܐܪܬܘܢ ܐܪܥܐ. ܘܢܡܠܘܢ ܐܦܝ ܬܒܝܠ ܩܪܒܐ. * ܘܐܩܘܡ 22
ܥܠܝܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܘܐܘܒܕ ܫܡܗ ܕܒܒܠ. ܘܙܪܥܗ ܘܓܢܣܗ ܘܫܪܒܬܗ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܐܥܒܕܝܗ ܝܪܬܘܬܐ ܠܩܘܦܕܐ. ܘܐܓܡܐ ܕܡܝܐ. ܘܐܟܢܫܝܗ ܒܡܟܢܫܬܐ ܕܐܒܕܢܐ. 23
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܝܡܐ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܘܐܡܪ. ܕܐܝܟ ܕܐܬܚܫܒܬ. ܗܟܢܐ ܢܗܘܐ. 24
ܘܐܝܟ ܕܐܬܪܥܝܬ ܢܬܩܝܡ. * ܕܐܬܒܪ ܠܐܬܘܪܝܐ ܒܐܪܥܝ. ܘܥܠ ܛܘܪܝ. ܐܕܘܫܝܘܗܝ. ܘܢܥܒܪ 25
ܢܝܪܗ ܡܢܗܘܢ. ܘܫܘܥܒܕܗ ܡܢ ܟܬܦܗܘܢ ܢܥܒܪ. * ܗܢܘ ܬܪܥܝܬܐ ܕܐܬܪܥܝ 26
ܥܠ ܐܪܥܐ ܟܠܗ. ܘܗܕܐ ܗܝ ܐܝܕܐ ܕܐܬܪܝܡܬ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. * ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ 27
ܐܬܪܥܝ. ܡܢܘ ܢܒܛܠ. ܘܐܝܕܗ ܪܡܬܐ ܡܢܘ ܢܗܦܟ. * ܡܫܩܠܐ ܕܦܠܫܬ *
* ܒܫܢܬܐ ܕܡܝܬ ܐܚܙ ܡܠܟܐ. ܗܘܐ ܡܫܩܠܐ ܗܢܐ. * ܠܐ ܬܚܕܝܢ ܦܠܫܬ ܟܠܟܝ. ܡܛܠ 28 29
ܕܐܬܬܒܪ ܫܒܛܐ ܕܡܫܥܒܕܢܝܟܝ. ܡܛܠ ܕܡܢ ܥܩܪܗ ܕܚܘܝܐ. ܢܦܩ ܚܪܫܐ. ܘܦܐܪܘܗܝ
ܚܘܝܐ ܕܦܪܚ. * ܘܢܪܥܘܢ ܒܘܟܪܝ ܡܣܟܢܐ. ܘܚܫܝܟܐ ܠܬܘܟܠܢ ܢܪܒܥܘܢ. ܘܐܡܝܬ 30
ܥܩܪܟܝ ܒܟܦܢܐ. ܘܫܪܟܢܟܝ ܢܬܩܛܠ. * ܐܝܠܠܝ ܡܕܝܢܬܐ. ܩܥܝ ܡܕܝܢܬܐ. 31
ܐܬܕܘܕܬ ܦܠܫܬ ܟܠܗ. ܡܛܠ ܕܡܢ ܓܪܒܝܐ ܬܢܢܐ ܐܬܐ. ܘܠܝܬ ܕܝܚܝܕ ܒܥܐܕܘܗܝ.
* ܘܡܢܐ ܢܥܢܘܢ ܠܡܠܐܟܐ ܕܥܡܡܐ. ܕܡܪܝܐ ܫܬܐܣ ܨܗܝܘܢ. ܘܒܗ ܢܬܛܫܘܢ 32
ܡܣܟܢܐ ܕܥܡܗ.

ܩܦܠܐܘܢ * ܛܘ * ܡܫܩܠܐ ܕܡܘܐܒ *

* ܒܠܠܝܐ ܐܬܒܙܙܬ ܡܕܝܢܬܐ ܕܡܘܐܒ. ܘܐܬܕܡܪܘ. ܒܠܠܝܐ ܐܬܒܙܙܘ ܫܘܪܝܗ ܕܡܘܐܒ. ܘܐܬܕܘܕܘ. 1

Tu verò abjectꝰ es è ſepulchro tuo ut ſurcu- 19
lus abominandꝰ, *ut* veſtimentū occiſorū gla-
dio peremptorū, deſcendentiū ad lapides fo-
veæ ceu cadavera conculcata: Nec ſepulturâ 20
cum iis frueris, quia terrâ tuam corrupiſti, &
populū tuū interfeciſti. Non durabit in æter-
num ſemen malignum: Præparavit *enim* filiis 21
ſuis necem per ſui ipſorum patris iniquitatē,
ne perdurantes terram poſſideant, & ſuperfi-
ciem orbis terrarum bello repleant. Inſurgā 22
in eos, dicit Dominus potentiſſimus; & perdā
nomen Babelis, ſemen, genus, & proſapiam e-
jus, dicit Dominus: Efficiam eam hæreditatē 23
hiſtricibus, & ſtagna aquarum: everrámque
eam ſcopâ perditionis, dicit Dominus poten-
tiſſimus. Juravit Dominus potentiſſimus, & 24
ait; Prout cogitavi, ſic futurum eſt; & prout
decrevi, ſic opere complendū: Contriturū me 25
ſcilicet Aſſyrium in terra mea, & ſuper mon-
tes meos proculcaturum: receſſurum ab eis ju-
gum ipſius, & ſervitutē ejus ab humero ipſo-
rum abſceſſuram. Hoc eſt conſilium quod ſta- 26
tuit contra totam terrā, & hæc eſt manus quæ
elevata eſt contra omnes gentes. Dominus 27
potentiſſimus decrevit, quis irritum faciat? &
manum ejus elatam quis avertat?

Onus Paleſtinæ.

Anno quo mortuꝰ eſt Ahaz rex, fuit onꝰ iſtud: 28
Ne læteris Paleſtina tota, quòd fractus ſit ba- 29
culꝰ ejus qui te ſervitute premebat: nam de ra-
dice colubri naſcitur aſpis, & fœtus ejus eſt
preſter volans. Et paſcentur primogeniti pau- 30
perū, & inopes tranquillè cubabunt: & ene-
cabo radicē tuam fame, & qui reſiduus fuerit
ex te, interficietur. Ulula civitas, exclama civi- 31
tas, conturbata eſt Paleſtina univerſa: quoniā
ab Aquilone venturꝰ eſt fumꝰ, et nemo erit ſin-
gularis in feſtis ejꝰ. Ecquid reſpondebimꝰ An- 32
gelo gentiū? ꝙ Dñs confirmat fundamenta Sio-
nis, & in eam ſe recipient inopes populi ejus.

CAP. XV.

Onus Moab.

NOctu direpta eſt civitas Moab, & admi- 1
rati ſunt: noctu direpti ſunt muri Moab,
& obſtupuerunt,

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وانت تطرح في الامم مثل ميت مرذول مع اموات كثيرين طعنوا بالسيوف ونزلوا الي الجحيم * 19
* لان كما ان الثوب الملطخ بالدم لا يكون نقيا * هكذا وانت لا تكون نقيا * من اجل انك 20
اهلكت ارضي * وقتلت شعبي * فلا تثبت الي الدهر * هي ذرية شرير لتذبح اولادك بخطايا 21
ابيك * لكيلا يقوموا ويرثوا الارض * ويملاوا الارض حروبا * وانهض عليهم يقول رب الجيوش * 22
واهلك اسمهم وبقيتهم وذريتهم * هكذا يقول الرب * واصير بابل تربة حتي تسكنها القنافذ * 23
وتصير الي لا شي * واجعلها جوف طين للهلاك الي الابد * هكذا يقول رب الجيوش * كما قلت 24
هكذا يكون * وكما فكرت هكذا يدوم * لاهلك الموصليين من ارضي ومن جبالي * ويصيرون 25
موطيا * وينزع منهم نيرهم * وتجبرهم من عواتقهم ينزع * هذه الفكرة التي فكرها الرب علي 26
المسكونة كلها * وهذه اليد العالية علي جميع امم المسكونة * لان ما يفكر الله القدوس من 27
يبطله * واليد العالية من يردها *

* الوحي السادس *

* نبوة اشعياء بن اموص في اهل فلسطين *

* في السنة التي مات فيها احاز الملك * صارت هذه الكلمة * 28
لا تفرحوا يا جميع القبايل الغريبة لانه انكسر نير ضاربكم * لان من نسل الحيات تخرج اولاد 29
الافاعي * واولادهن تخرج حيات طيارة * ويرعون مساكين الرب * والناس الفقراء يستريحون 30
في سلامة * ويهلك زرعك بالجوع * وبقاياك تهلك * ولولوا يا ابواب المدن * ولتصرخ المدن القلقة 31
وجميع القبايل الغريبة * لان الدخان ياتي من الجربياء * وليس من يثبت في مراسمه * وبماذا 32
تجيب ملوك الامم * لان الرب اسس صهيون * ومن قبله تخلص متواضعوا الشعب *

* الفصل الخامس عشر * * الوحي السابع * * وهو الاصحاح الثامن *

* نبوة اشعياء بن اموص في مواب * ومدينتها وقراها *

* تهلك الموابية ليلا * لان اسوار الموابية تهلك ليلا * 1

Tu verò ut mortuꝰ abominandꝰ inter ple- 19
bē abjiciēris unà cum multis mortuis qui
gladiis confoſſi deſcenderunt in infernū.
Quemadmodū enim veſtimentū ſanguine 20
oblitum haudquaquā mundum eſt: ſic etiā
tu nequaquā mundus es, qui terram me-
am diruiſti, & populum meum trucidâſti,
propterea non perſiſtes in æternum. Heus 21
generatio ſcelerata, jugulabuntur filii tui
propter peccata patris tui; ne ſurgentes
poſſideant terrā, et præliis terrā impleant.
Inſurgam etiam in eos, dicit Dominus ex- 22
ercituum; et nomen, reliquias, atq; proſapi-
am eorum delebo, ſic dicit Dominus: Et 23
Babelem in tumulum redigā, ita ut habi-
tent in ea hericii, & in nihilum redigatur:
& redigam illā in exitialem cœni foveā
in æternum. Sic ait Dominus exercituum; 24
ut dixi, ita erit, & ut cogitavi, ita fir-
mum erit: Omnino perdam Aſſyrios è terra 25
mea & è montibus meis, fientq; ſcamnū:
& amovebitur ab iſtis jugum illorum, &
faſtus illorū ab humeris iſtorum amovebi-
tur. Hæc eſt cogitatio quam cogitavit Do- 26
minus de toto orbe, & hæc eſt manus ele-
vata ſuper omnes orbis gentes. Nam quod 27
ſtatuit Deus ſanctiſſimus, quis irritum fa-
ciat? & manum elevatam quis com-
peſcat?

Revelatio ſexta.

Prophetia Eſaiæ filii Amos de incolis Paleſtinæ.

Quo anno mortuus eſt rex Ahaz, factum 28
eſt verbum iſtud. Ne lætemini O omnes ex- 29
teræ nationes, quòd ruptum ſit jugum per-
cutientis vos, quoniam è ſtirpe ſerpentum
prodeunt pulli viperarū, & harum pulli
producunt ſerpentes volantes. Paſcentur 30
pauperes Domini, & homines egeni paca-
tè quieſcent: ſemen verò tuum fame per-
ibit, & reliquiæ tuæ interibunt. Ululate O 31
portæ urbium, et exclament urbes inquietæ,
omneſq; nationes peregrinæ; quia fumꝰ ad-
veniet ab Aquilone, nec erit qui perſtet in
veſtigiis ejus. Ecquid reſpondebunt reges 32
gentium, quandoquidē fundavit Dominus
Sionem, et ab ipſo ſalvabuntur humiles
populi?

CAPUT XV.

Revelatio ſeptima.

Textus octavus,

Prophetia Eſaiæ filii Amos de Moabo, & urbe ac oppidis ejus.

Urbs Moabitica noctu peribit, quia 1
mœnia urbis Moabiticæ noctu per-
ibunt.

ישעיה : יו

ſuper & ,Nebo ſuper , fletum ad excelſa Dibon & ,ædem *in* Aſcendit
2 עָלָה הַבַּיִת וְדִיבֹן הַבָּמוֹת לְבֶכִי עַל־נְבוֹ וְעַל
.*reſecta* barba omnis,calvitiũ ejꝰ capitibꝰ cũctis in:ululabit Moab Medba
מֵידְבָא מוֹאָב יְיֵלִיל בְּכָל־רֹאשָׁיו קָרְחָה כָּל־זָקָן גְּרוּעָה׃
ipſa tota ejus plateis in & ,ejus tectis in :*ſacco* ſe accingẽt ejꝰ plateis In
3 בְּחוּצֹתָיו חָגְרוּ שָׂק עַל גַּגֹּתֶיהָ וּבִרְחֹבֹתֶיהָ כֻּלֹּה
, Elhaleh & Cheſbon clamavit Et .fletum in deſcendens ululabit
4 יְיֵלִיל יֹרֵד בַּבֶּכִי׃ וַתִּזְעַק חֶשְׁבּוֹן וְאֶלְעָלֵה
,clamabunt Moab *expediti* ideo : eorũ vox audietur Jahas ad uſque
עַד־יַהַץ נִשְׁמַע קוֹלָם עַל־כֵּן חֲלֻצֵי מוֹאָב יָרִיעוּ
ejus profugi ,clamabit Moab ad meum Cor .ſibi vociferabit ejꝰ anima
5 נַפְשׁוֹ יָרְעָה לוֹ׃ לִבִּי לְמוֹאָב יִזְעָק בְּרִיחֶהָ
fletu in Luchith aſcenſu in quia : triennem vitulam Sohar ad uſque
עַד־צוֹעַר עֶגְלַת שְׁלִשִׁיָּה כִּי מַעֲלֵה הַלּוּחִית בִּבְכִי
.ſuſcitabunt contritionis clamorem Choronaim via quia ,eã in aſcendet
יַעֲלֶה־בּוֹ כִּי דֶּרֶךְ חֹרֹנַיִם זַעֲקַת־שֶׁבֶר יְעֹעֵרוּ׃
defecit , herba aruit *quoniam* ,erunt deſolationes in Nimrim aquæ Nam
6 כִּי־מֵי נִמְרִים מְשַׁמּוֹת יִהְיוּ כִּי־יָבֵשׁ חָצִיר כָּלָה
ſuum depoſitum & ,fecit *reſiduum* Ideo .fuit non viride , germen
7 דֶּשֶׁא יֶרֶק לֹא הָיָה׃ עַל־כֵּן יִתְרָה עָשָׂה וּפְקֻדָּתָם
clamor circuivit Quia .*ea* deferent ſalicum torrentem juxta
8 עַל נַחַל הָעֲרָבִים יִשָּׂאוּם׃ כִּי־הִקִּיפָה הַזְּעָקָה אֶת־
Elim Beer & , ejus ululatus Eglaim ad uſque : Moab terminum
גְּבוּל מוֹאָב עַד־אֶגְלַיִם יִלְלָתָהּ וּבְאֵר אֵילִים
: ſanguine ſunt repletæ Dimon aquæ Quia .ejus ululatus
9 יִלְלָתָהּ׃ כִּי מֵי דִימוֹן מָלְאוּ דָם
, leonem Moab *evaſioni* : addita Dimon ſuper ponam nam
כִּי־אָשִׁית עַל־דִּימוֹן נוֹסָפוֹת לִפְלֵיטַת מוֹאָב אַרְיֵה
humi reſiduo &
וְלִשְׁאֵרִית אֲדָמָה׃

CAP. XVI. יו

filiæ montem ad , deſerti petra de terræ *dominator* Agnum Mittite
1 שִׁלְחוּ־כַר מוֹשֵׁל־אֶרֶץ מִסֶּלַע מִדְבָּרָה אֶל־הַר בַּת־
Moab filiæ erunt , *emiſſi nido vagans* avis ſicut erit Et .Sijon
2 צִיּוֹן׃ וְהָיָה כְעוֹף־נוֹדֵד קֵן מְשֻׁלָּח תִּהְיֶינָה בְּנוֹת מוֹאָב
pone , judicium fac , conſilium Affer .Arnon vada
3 מַעְבָּרֹת לְאַרְנוֹן׃ הָבִיאוּ עֵצָה עֲשׂוּ פְלִילָה שִׁיתִי
vagum : expulſos abſconde : *Meridiei medio in* tuam umbram noctẽ quaſi
כַלַּיִל צִלֵּךְ בְּתוֹךְ צָהֳרָיִם סַתְּרִי נִדָּחִים נוֹדֵד
ſis Moab , mei expulſi te in Habitent *.reveles* ne
4 אַל־תְּגַלִּי׃ יָגוּרוּ בָךְ נִדָּחַי מוֹאָב הֱוִי־
,*vaſtatio* defecit ,expreſſor *finiit* quia : *vaſtatoris faciebus* à eis latibulum
סֵתֶר לָמוֹ מִפְּנֵי שׁוֹדֵד כִּי־אָפֵס הַמֵּץ כָּלָה שֹׁד
miſericordia in præparabitur Et .terra de *conculcans ſunt conſumpti*
5 תַּמּוּ רֹמֵס מִן־הָאָרֶץ׃ וְהוּכַן בַּחֶסֶד
, judicans , David *tentorio* in veritate in illud ſuper ſedebit & ,ſolium
כִּסֵּא וְיָשַׁב עָלָיו בֶּאֱמֶת בְּאֹהֶל דָּוִד שֹׁפֵט
ſuperbiam Audivimus .juſtitiam feſtinans & , judicium quærens &
6 וְדֹרֵשׁ מִשְׁפָּט וּמְהִר צֶדֶק׃ שָׁמַעְנוּ גְאוֹן־
, ejus extollentia & , ejus ſuperbia : valde ſuperbus , Moab
מוֹאָב גֵּא מְאֹד גַּאֲוָתוֹ וּגְאוֹנוֹ
Moab ululabit Idcirco .ejus *mendacia ſic* non ,ejus *iracundia* &
7 וְעֶבְרָתוֹ לֹא־כֵן בַּדָּיו׃ לָכֵן יְיֵלִיל מוֹאָב
,*meditabimini* chareſeth-Chir *fundamenta ob* : ululabit ipſe totus,Moab ad
לְמוֹאָב כֻּלֹּה יְיֵלִיל לַאֲשִׁישֵׁי קִיר־חֲרֶשֶׂת תֶּהְגּוּ
.percuſſi veruntamen
אַךְ־נְכָאִים׃

Verſio VULG. LAT.

2 Aſcendit domus, & Dibon ad
excelſa in planctũ ſuper Nabo,
& ſuper Medaba , Moab ulu-
lavit : in cunctis capitibꝰ ejꝰ
calvitiũ, & omnis barba ra-
3 detur. In triviis ejus accincti
ſunt ſacco : ſup tecta ejus,&
in plateis ejus omnis ululatus
4 deſcendit in fletum. Clamavit
Heſebon, & Eleale, uſq; Jaſa
audita eſt vox eorũ : ſup hoc
expediti Moab ululabunt,ani-
5 ma ejus ululabit ſibi. Cor meũ
ad Moab clamabit, vectes ejus
uſque ad Segor vitulã conter-
nantẽ: per aſcenſũ enim Luith
flens aſcendet, & in via Oro-
naim clamorẽ contritionis le-
6 vabunt. Aquæ enim Nemrim
deſertæ erunt, quia aruit her-
ba , defecit germen , viror
7 omnis interiit Secundùm ma-
gnitudinem operis,& viſitatio
eorũ : ad torrentẽ ſalicũ du-
8 cent eos. Quoniã circuivit cla-
mor terminũ Moab : uſq; ad
Gallim ululatus ejus, & uſque
ad puteum Elim clamor ejus.
9 Quia aquæ Dibon repletæ ſunt
ſanguine : ponam enim ſuper
Dibon additamenta : his qui
fugerint de Moab leonem, &
reliquiis terræ.

CAP. XVI.

1 EMitte agnum, Domine,do-
minatorẽ terræ , de petra de-
2 ſerti ad montem filiæ Sion. Et
erit:Sicut avis fugiens, & pul-
li de nido avolantes , ſic erunt
filiæ Moab in tranſcenſu Ar-
3 non. Ini conſiliũ,coge concili-
um,pone quaſi noctẽ umbram
tuã in meridie : abſconde fu-
gientes, & vagos ne prodas.
4 Habitabunt apud te profugi
mei: Moab eſto latibulũ eorũ
à facie vaſtatoris : finitus eſt
enim pulvis, conſummatus eſt
miſer:defecit qui conculcabat
5 terrã. Et præparabitur in mi-
ſericordia ſolium, & ſedebit
ſup illud in veritate in taber-
naculo David,judicans et quæ-
rens judiciũ,& velociter red-
6 dens ꝙ juſtum eſt. Audivimus
ſuperbiam Moab, ſuperbus eſt
valdè : ſuperbia ejus & arro-
gantia ejꝰ , & indignatio ejus
7 pluſquã fortitudo ejus. Idcir-
cò ululabit Moab ad Moab,
univerſus ululabit : his, qui
lætantur ſuper muros cocti la-
teris, loquimini plagas ſuas.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

2 Λυπεῖσθε ἐφ' (˜)ἑαυτοὺς, ἀπολεῖται γὰρ καὶ (α)
Δηβὼν, οὗ ὁ βωμὸς ὑμῶν. ἐκεῖ ἀναβήσεσθε
κλαίειν, ἐπὶ Ναβαῦ τῆς Μωαβίτιδος. (β)
ὀλολύξατε, ἐπὶ πάσης κεφαλῆς φαλάκρω-
μα, πάντες βραχίονες (γ) κατατετμημέ-
3 νοι. Ἐν ταῖς πλατείαις αὐτῆς περιζώσασθε
σάκκους, καὶ κόπτεσθε ἐπὶ τῶν δωμάτων αὐ-
τῆς, καὶ ἐν ταῖς πλατείαις αὐτῆς, καὶ ἐν ταῖς
ῥύμαις αὐτῆς, πάντες ὀλολύζετε μετὰ κλαυ-
4 θμοῦ. Ὅτι κέκραγεν Ἐσεβὼν καὶ (δ) Ἐλε-
αλὴ, ἕως Ἰασὰ ἠκούσθη ἡ φωνὴ αὐτῶν. διὰ
τοῦτο ἡ ὀσφὺς τῆς Μωαβίτιδος βοᾷ, ἡ ψυ-
5 χὴ αὐτῆς γνώσεται. Ἡ καρδία τῆς Μωαβί-
τιδος βοᾷ (ε) ἐν αὐτῇ ἕως Σηγώρ· δάμα-
λις γάρ ἐστι τριετής. ἐπὶ δὲ τῆς ἀναβάσεως
(ζ) Λουεὶθ, πρὸς σὲ κλαίοντες ἀναβήσον-
ται τῇ ὁδῷ (η) Ἀρωνιείμ· βοᾷ, Σύντριμμα
6 καὶ σεισμός. Τὸ ὕδωρ τῆς (θ) Νεμηρεὶμ ἔ-
ρημον ἔσται, καὶ ὁ χόρτος αὐτῆς ἐκλείψει·
7 χόρτος γὰρ χλωρὸς οὐκ ἔσται. Μὴ καὶ οὕτως
μέλλει σωθῆναι; ἐπάξω γὰρ ἐπὶ τὴν φά-
8 ραγγα Ἄραβας, καὶ λήψονται αὐτήν. Συνῆψε
γὰρ ἡ βοὴ (ι) τὸ ὅριον τῆς Μωαβίτιδος τῆς
(κ) Ἀγαλείμ, καὶ ὀλολυγμὸς αὐτῆς ἕως τοῦ
9 φρέατος τοῦ Αἰλείμ. Τὸ δὲ ὕδωρ τὸ (λ) Δειμὼν
πλησθήσεται αἵματος· ἐπάξω γὰρ ἐπὶ (μ) Δει-
μὼν Ἄραβας, καὶ ἀρῶ τὸ σπέρμα Μωὰβ, καὶ
Ἀριὴλ, καὶ τὸ κατάλοιπον Ἀδαμά.

Contriſtamini ſuper vos ipſos : 2
peribit enim & Debon,ubi eſt a-
ra veſtra. Illuc aſcendetis plora-
re ſuper Nabay Moabitidis. Ulu-
late : ſuper omne caput calviti-
um, omnia brachia diſſecta : In 3
plateis ejus circumcingimini ſac-
cis, & plangite ſuper domos ejus,
& in plateis ejus, & in vicis e-
jus : omnes ululate cum ploratu.
Quoniam clamavit Eſebon, & 4
Elcale : uſque Iaſſa audita eſt
vox eorum. Propter hoc lumbus
Moabitidis clamat : anima ejus
cognoſcet : Cor Moabitidis cla- 5
mat in ſe uſque Segor : vitula e-
nim triennis eſt. Super aſcenſum
autem Luith ad te flentes aſcen-
dent viâ Aroniim : clamat, Con-
tritio, & concuſſio : Aqua Ne- 6
merim deſerta erit, & herba ejus
deficiet : herba enim viridis non
erit. Numquid & ſic ſalvanda 7
eſt ? Inducam enim ſuper vallem
Arabas , & capient eam. Per 8
tigit enim clamor terminum Mo-
abitidis ipſius Agalim, & ulu-
latus ejus uſque ad puteum Elim.
Aqua autem Dimon implebitur 9
ſanguine. Inducam enim ſuper
Dimon Arabas : & tollam ſe-
men Moab,& Ariel,& reſiduum
Adama.

MS. A. (˜) ἑαυτοῖς, (α) Δαιβηδὼν, (β) ὀλολύζετε, (γ) κατατετμημένοι. (δ) ἐλάλησεν ἕως ἠκούσθη ἡ φωνὴ αὐτ. (ε) ἐν ἑαυτῇ (ζ) τῆς * πρὸς σε (η) Ἀδωνιείμ· (θ) Νεμρεὶμ (ι) τὸ ὄρος (κ) Ἀγαλλείμ, (λ) Ῥεμμὼν (μ) Ῥεμμὼν

ΚΕΦ. ιϛ'.

1 ἈΠοστελῶ ὡς ἑρπετὰ ἐπὶ τὴν γῆν. μὴ
πέτρα ἔρημός ἐστι (α) τὸ ὄρος θυγατρὸς Σι-
2 ών; Ἔσῃ γὰρ ὡς πετεινοῦ ἀνιπταμένου (β)
νοσσὸς ἀφῃρημένος, ἔσῃ θυγάτηρ Μωὰβ,
3 ἔπειτα δὲ Ἀρνῶν πλείονα. Βουλεύου, ποίει
τε σκέπην πένθους αὐτῇ διαπαντὸς, ἐν με-
σημβρινῇ σκοτίᾳ φεύγουσιν, ἐξέστησαν· (γ)
4 μὴ ἀχθῇς, Παροικήσουσί σοι οἱ φυγάδες
Μωάβ· (δ) ἔσονται σκέπη ὑμῖν ἀπὸ προσ-
ώπου διώκοντος, ὅτι ἤρθη ἡ συμμαχία
σου. (ε) καὶ ὁ ἄρχων ἀπώλετο ὁ καταπατῶν,
5 (ζ) ἀπὸ τῆς γῆς. Καὶ διορθωθήσεται
(η) μετ' ἐλέους θρόνος, καὶ καθιεῖται ἐπ' αὐτοῦ
μετὰ ἀληθείας ἐν σκηνῇ Δαυὶδ, κρίνων καὶ
6 ἐκζητῶν κρίμα καὶ σπεύδων δικαιοσύνην. Ἠ-
κούσαμεν τὴν ὕβριν Μωὰβ, ὑβριστὴς σφόδρα
τὴν ὑπερηφανίαν (θ) ἐξῆρα. οὐχ οὕτως ἡ
7 μαντεία σου, οὐχ οὕτως. Ὀλολύξει Μωὰβ,
ἐν γὰρ τῇ Μωαβίτιδι πάντες ὀλολύξουσι·
τοῖς κατοικοῦσι δὲ Σεὲθ μελετήσεις, καὶ οὐκ
ἐντραπήσῃ.

CAP. XVI.

MIttam (a) quaſi reptilia ſu- 1
per terram. Numquid petra de-
ſerta eſt mons filiæ Sion ? Eris 2
enim velut avis avolantis pullus
ablatus, (b)eris filia Moab. De-
inde verò Arnon plura Conſulta : 3
& (c) fac tegmen luctûs ipſa
ſemper, in meridianis tenebris fu-
giunt, obſtupuerunt. (d) Ne ab-
ducaris:Accolent tibi profugi Mo- 4
ab : erunt tegmen vobis à facie
(e) perſequentis : quia ſublatum
eſt auxilium tuum, & princeps
periit, qui conculcabat, de terra.
Et (f) dirigetur cum miſericordia 5
thronus,& ſedebit ſuper illum cũ
veritate in tabernaculo David,ju-
dicans,& exquirens judicium,&
accelerans juſtitiam. Audivimus 6
ſuperbiam Moab : contumelioſus
valdè : ſuperbiam (g) ſuſtuli.
Non ſic divinatio tua,non ſic. U- 7
lulabit Moab: in Moabitide enim
omnes plorabunt:(h) habitatoribus
autem Deſeth meditationes: & (i)
non confunderis.

MS. A. (α) τὸ ὄρος Σιών; (β) νεοσσὸς ἀφῃρημένος, θυγάτηρ Μωὰβ, (γ) μὴ ἀπ' ἀρχῆς Παροικήσουσιν οἱ φυγάδες (δ) ἔσονται γὰρ (ε) συνετελέσθη ταλαιπωρία, καὶ ὁ ἄρχων (ζ) ἐπὶ τῆς γῆς. (η) μετὰ ἐλέους (θ) ἐξῆρας.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

2 סְלִיקוּ לְבָתַיָא דְדִיבוֹן לְבָמָתָא לְמִבְכֵּי עַל נְבוֹ וְעַל מֵידְבָא מוֹאֲבָאֵי מְיַלְלִין בְּכָל רֵישֵׁיהוֹן
3 מְרָטָא וּבְכָל דְּקַן גְּלוֹחַ׃ בְּשׁוּקֵיהוֹן יֵסְרוּן סַקִּין עַל אִגָּרֵיהוֹן וּבִרְחוֹבֵיהוֹן כּוּלְּהוֹן מְיַלְלִין
4 מְצַוְּחִין וּבָכָן׃ וּצְוַחוּ יָתְבֵי חֶשְׁבּוֹן וְאֶלְעָלֵה עַד יַהַץ אִשְׁתְּמַע קָלְהוֹן עַל כֵּן מְזָרְזִין מוֹאָב
5 מְיַלְלִין וְעַל נַפְשְׁהוֹן מְצַוְּחִין׃ בְּלִבְּהוֹן מוֹאֲבָאֵי יֵימְרוּן לְמֶעֱרַק עַד צוֹעַר עֶגְלַת תְּלָתוּת
רַבְּתָא אֲרֵי בְּמַסּוּקַת לוּחִית כַּד בָּכָן יִסְקוּן בַּהּ אֲרֵי בְּמַחֲתַת חוֹרוֹנַיִם צְוָחַת תְּבִירֵי קְרָב
6 יְבַסְּרוּן׃ אֲרֵי מֵי נִמְרִים לְצַדּוּ יְהוֹן אֲרֵי יְבֵשׁ עִסְבָּא סָף דִּתְאָה יָרוֹק לָא הֲוָה׃ עַל כֵּן
7 שְׁאָר נִכְסֵיהוֹן יִתְבַּזְזוּן וּתְחוּמְהוֹן דְּעַל יַמָּא מַעַרְבָא יִתְנְסֵיב מִנְּהוֹן׃ אֲרֵי אַקִּיפַת צְוַחְתָּא
8 יָת תְּחוּם מוֹאָב עַד אֶגְלַיִם מְיַלְלִין וּבְאֵר אֵילִים מְצַוְּחִין׃ אֲרֵי מֵי דִימוֹן אִתְמְלִיאוּ דַם
9 קְטוֹלִין אֲרֵי אֱמַנֵּי עַל דִּימוֹן כְּנִישַׁת מַשְׁרְיָן לְשֵׁיזָבַת מוֹאָב מֶלֶךְ בְּמַשְׁרְיָתֵיהּ יִסַּק וּלְמִבַּז
שְׁאָרָא דְאַרְעֲהוֹן׃

יו

1 יְהוֹן מַסְּקֵי מִסִּין לִמְשִׁיחָא דְיִשְׂרָאֵל דִּתְקוֹף עַל דַּהֲווֹ בְּמַדְבְּרָא טוּר כְּנִשְׁתָּא דְצִיּוֹן׃ וִיהֵי
2 כְּעוֹפָא דְאַפְרְחוּהִי מִקִּנֵּיהּ וִיטַלְטְלָן יִתַּפְּקָן וִיהֶוְיָן בְּנָת מוֹאָב מְגִיזָן לְאַרְנוֹן׃
3 אִתְמְלִיכוּ מְלַךְ עֲבִידוּ עֵצָה שַׁוִּיאוּ כְלֵילְיָא טוּלִיךְ בִּימָמָא בְּנוּ טִיהֲרָא טַמַּרִי מְטַלְטְלַיָא
4 וּמְבַדְרַיָא לָא תִקְרְבִין׃ יִתְּתַבוּן בִּיךְ מְטַלְטְלֵי מַלְכוּת מוֹאָב הֲוֵי סִתְרָא לְהוֹן מִן קֳדָם
5 בָּזוּזִין אֲרֵי סָף מְעִיקָא אִשְׁתֵּיצִי בָזוֹזָא סָפוּ כָּל דַּהֲווֹ דָיְשִׁין מִן אַרְעָא׃ בְּכֵן מְשִׁיחָא דְיִשְׂרָאֵל
יִתַּקַּן בְּטוּב כּוּרְסְוֵהִי וְיָתֵיב עֲלוֹהִי בִּקְשׁוֹט בְּקַרְתָּא דְדָוִד דָּאֵין וְתָבַע דִּין וְעָבֵד קְשׁוֹט׃
6 שְׁמַעְנָא רַבְרְבֵי מוֹאָב דְּמִתְגָּאַן לַחֲדָא יַקִּירֵיהוֹן וּמְפַנְּקֵיהוֹן וְגֵיוְתָנוּתְהוֹן לְקֳבֵיל
7 פּוּרְעָנוּתְהוֹן לָא שָׁוְיָא לְהוֹן׃ בְּכֵן מְיַלְלִין מוֹאֲבָאֵי עַל מוֹאֲבָאֵי כּוּלְּהוֹן מְצַוְּחִין וּמְיַלְלִין עַל
אֱנָשׁ כְּרַךְ תּוּקְפְּהוֹן דְּוָן יֵימְרוּן בְּרַם כְּבִישִׁין׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Aſcendite in domos Dibon, in excelſa ad plorandum ſuper Nebo,& ſuper 2
Medaba Moabitæ ululant : in omnibus capitibus ſuis calvitium, & in omni
barba depilatio. Et in vicis ſuis accingentur ſaccis ſuper tecta ſua : & 3
in plateis ſuis omnes ululant, clamant, & plorant. Et clamaverunt habi- 4
tatores Eſſebon & Elcale : uſque Jahats audita eſt vox eorum ; propterea
accincti Moab ululant, ſuper animas ſuas clamant. In cordibus ſuis dicent 5
Moabitæ, ut fugiant uſque ad Segor, vitulam triennem grandem, quo-
niam per aſcenſum Luith in planctu aſcendent eò, quia in deſcenſu
Horonaim clamorem victorum in prælio annunciabunt. Quoniam aquæ 6
Nemrim in deſolationem erunt, quia exiccata eſt herba, *defecit* fœnum ,
viride non fuit Propterea reſiduum ſubſtantiæ eorum diripietur : & ter- 7
minus eorum *qui eſt* ad mare Occidentale tolletur ab eis. Quoniam cir- 8
cuit clamor terminum Moab, uſque Agalim ululant, & in Beerelim cla-
mant. Quoniam aquæ Dimon impletæ ſunt ſanguine occiſorum ; quia con- 9
ſtituã ſup Dimon congregationẽ exercitus. Ad eos qui liberati fuerint de
Moab, aſcendet rex cum exercitu ſuo, & ut diripiat reſiduum terræ eorum.

CAP. XVI.

DEferent tributa Chriſto Iſrael qui fortis eſt ſuper eos , qui erant in 1
deſerto, ad montem cœtus Sion Et erit quaſi tranſmigrans avis, quam ab- 2
egerunt de nido ſuo ; circumductæ erunt filiæ Moab tranſlatæ ad Arnon.
Ini conſilium, fac conſilium : pone quaſi noctem umbram tuam interdiu 3
in meridie : abſconde tranſmigrantes ; diſperſos ne contingatis. Habita- 4
bunt in te profugi, regnum Moab ; eſto eis protectio à facie diripientium ;
quia finitus eſt hoſtis, conſummatus eſt deprædator, defecerunt omnes qui
conculcabant *de terra*. Tunc Chriſto Iſrael præparabitur thronꝰ ejus in bo- 5
no, & ſedebit ſuper eum in veritate, in civitate David, judicans & quæ-
rens judicium,et faciens veritatem. Audivimus principes Moab,qui ſuper- 6
biunt nimis ; inclytos eorum, & delicatos eorum : ſed ſuperbia eorum pro-
pter ultionem eorum, non profuit eis. Propterea ululabunt Moabitæ : ad 7
Moabitas omnes clamabunt, *& ululabunt* ſuper viros civitatis fortitudinis
eorum mœrentes dicent : Subjecti utique ſunt.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܣܠܩܘ ܠܒܝܬܐ ܕܪܝܒܘܢ. ܥܠ ܒܡܘܬܐ ܠܡܒܟܐ. ܥܠ ܢܒܘ ܘܥܠ ܡܝܕܒܐ. ܡܘܐܒ 2
ܢܝܠܠ. ܒܟܠ ܪܫܝܗܘܢ ܩܘܪܚܐ. ܘܟܠ ܕܩܢ ܓܪܝܙܐ. * ܒܫܘܩܘܗܝ ܢܐܣܪܘܢ ܣܩܐ. 3
ܘܥܠ ܐܓܪܐ ܘܒܫܘܩܐ. ܟܠܢܫ ܡܝܠܠ. ܘܢܚܘܬ ܒܒܟܝܐ. * ܐܝܠܠܬ ܚܫܒܘܢ ܘܐܠܥܠܐ. 4
ܘܥܕܡܐ ܠܝܗܨ ܐܫܬܡܥ ܩܠܗܘܢ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܚܨܐ ܕܡܫܬܢܩܘܢ ܕܡܘܐܒ ܢܝܒܒܘܢ.
ܘܢܦܫܗ ܬܩܥܐ ܠܗ. * ܘܠܒܝ ܥܠ ܡܘܐܒ. ܢܝܠܠ ܒܪܘܚܗ ܥܕܡܐ ܠܨܥܪ ܥܓܠܬܐ 5
ܬܠܝܬܝܬܐ. ܡܛܠ ܕܒܡܣܩܬܐ ܕܠܘܚܝܬ ܒܒܟܝܐ ܢܣܩܘܢ ܠܗ. ܘܒܐܘܪܚܐ ܕܚܘܪܢܝܢ ܓܥܬܐ
ܕܬܒܪܐ ܢܪܝܡܘܢ. * ܡܛܠ ܕܡܝܐ ܕܢܡܪܝܢ ܚܪܒܐ ܢܗܘܘܢ. ܡܛܠ ܕܝܒܫ ܚܨܝܪܐ ܘܣܦ ܥܣܒܐ. 6
ܘܝܘܪܩܐ ܠܐ ܗܘܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܡܘܬܪܢܐ ܕܥܒܕ. ܥܒܪ. ܘܦܘܠܚܢܗܘܢ ܥܠ ܢܚܠܐ ܕܥܪܒܝܐ 7
ܢܥܒܪܘܢ. * ܡܛܠ ܕܐܚܕܬ ܓܥܬܐ ܠܬܚܘܡܗ ܕܡܘܐܒ. ܘܥܕܡܐ ܠܓܠܥܡ ܝܠܠܬܗ. 8
ܘܥܕܡܐ ܠܒܐܪܐ ܕܐܠܝܡ ܝܠܠܬܗ. * ܡܛܠ ܕܡܝܐ ܕܪܝܒܘܢ ܐܬܡܠܝܘ ܕܡܐ. ܡܛܠ ܕܐܣܝܡ 9
ܥܠ ܪܝܒܘܢ ܬܘܣܦܬܐ. ܘܐܬܪܢܐ ܥܠ ܐܝܠܝܢ ܕܐܫܬܘܙܒܘ ܡܢ ܡܘܐܒ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܝܘ *
* ܘܥܠ ܫܪܟܐ ܕܐܪܥܐ. ܐܫܕܪ ܒܪܐ ܫܠܝܛܐ ܕܐܪܥܐ. ܡܢ ܟܐܦܐ ܕܡܕܒܪܐ ܠܛܘܪܐ ܕܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. 1
* ܘܢܗܘܐ ܐܝܟ ܦܪܚܬܐ ܕܡܦܪܚܐ ܩܢܗ. ܘܒܢܬܗ ܕܡܘܐܒ.. ܫܒܝܩܢ ܢܗܘܝܢ ܒܡܥܒܪܬܐ 2
ܕܐܪܢܘܢ. * ܐܬܚܫܒܝ ܬܪܥܝܬܐ. ܘܥܒܕܝ ܬܘܟܠܢܐ. ܣܝܡܝ.. ܐܝܟ ܠܠܝܐ ܛܠܠܟܝ ܒܦܠܓܗ ܕܛܗܪܐ. 3
ܟܣܝ ܛܥܝܐ. ܘܡܒܕܪܐ ܠܐ ܬܓܠܝܢ. * ܢܥܡܪܘܢ ܒܟܝ ܡܒܕܪܐ ܕܡܘܐܒ. ܗܘܝ ܠܗܘܢ 4
ܡܛܫܝܢܐ. ܡܢ ܩܕܡ ܒܙܘܙܐ. ܡܛܠ ܕܫܠܡ ܐܒܩܐ. ܘܫܠܡ ܒܙܘܙܐ. ܘܫܠܡ ܕܫܐܫ ܡܢ ܐܪܥܐ.
* ܘܢܬܬܩܢ ܒܛܝܒܘܬܐ ܟܘܪܣܝܐ. ܘܢܬܒ ܥܠܘܗܝ ܒܩܘܫܬܐ ܒܡܫܟܢܗ ܕܕܘܝܕ.. ܕܝܢܐ: 5
ܘܡܥܩܒ ܕܝܢܐ. ܘܡܣܪܗܒ ܙܕܝܩܘܬܐ. * ܫܡܥܢ ܫܘܒܗܪܗ ܕܡܘܐܒ. ܕܐܫܬܒܗܪ ܛܒ. ܫܘܒܗܪܗ 6
ܘܪܘܪܒܘܬܗ. ܘܚܡܬܗ. ܠܐ ܗܘܐ ܗܟܢܐ ܟܡܐ ܕܐܡܪܘ ܥܠܘܗܝ ܢܒܝܘܗܝ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܝܠܠ 7
ܡܘܐܒ. ܘܥܠ ܡܘܐܒ. ܟܠܗ ܢܝܠܠ. ܥܠ ܐܫܝܬܐ ܕܫܘܪܐ ܕܡܬܬܪܥܝܢ. ܐܬܬܢܚܘ. ܐܝܟ ܟܪܝܗܐ.

Aſcenderunt in domum Ribon ſuper excelſa ad flendum: ſuper Nebo & ſuper Madeba ululabit Moab; in omnibus capitibus ejus erit evulſio capillorum, & omnis barba detonſa. 2
In plateis ejus accingent ſe ſaccis, & ſuper tecta & in plateis unuſquiſque ululans deſcendet cum fletu. 3
Ululabit Heſbon & Elala, & uſque ad Soth audietur vox earum. Propterea inguina Moabi ſtrepitabunt, & anima ipſius vociferabit ad ipſum: 4
Et cor meum ſuper Moab ululabit in ſpiritu ſuo uſque ad Soar vitulam triennem; quia per clivum Lohath lugentes aſcendent; & in via Hornim clamorem fractionis edent, 5
Quoniam aquæ Nemrim deficient: quia fœnum areſcet, elanguebit herba, & nullum erit olus; 6
Iccirco quod reſiduum erat, præteribit; & operam eorum ſecus vallem Arabin deportabunt. 7
Nam circundabit ululatus terminum Moabi, & ad Ghelaam uſque erit ululatus ejus, & ad puteum Elim ululatus ejus; 8
Quoniam aquæ Ribonis implebuntur cruore: ponam enim ſuper Ribonem additamentum, & cogitabo de iis qui evaſerint ex Moab. 9

CAP. XVI.

Super reliquam verò terram mittam filium principis terræ, è lapide ſolitudinis ad montem filiæ Sionis. 1
Et is erit ſicut avis quæ migrare facit nidum ſuum, at filiæ Moab derelictæ manebunt in vado Arnonis. 2
Adjice mentem, fac profundam meditationem, pone ſicut noctem umbrā tuam in ipſo meridie, occulta errantes, & diſperſos ne prodas. 3
Commorentur in te diſperſi Moabi, eſto illis perfugium à facie direptoris: nam deſinet pulvis, conſumetur direptor, & conculcator deficiet à terra. 4
Et ſtabilietur ſolium benignitate, ſedebítque ſuper illud in veritate in tabernaculo Davidis, judex & inquirens judiciū, & accelerans juſtitiam. 5
Audivimus jactantiam Moabi, quòd admodum ſe jactârit; arrogantiam, ſuperbiam, & furorem ejus, qualem non prædixerant de eo vates ejus. 6
Propterea ululabit Moab, & de Moabo totuſmet ipſe ululabit: ſuper muri parietibus qui deſtruendi ſunt, gemetis ut ægroti; 7

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* اهربوا عليهم لان قد باد كما ديبون * حيث هيكلكم هناك تصعدون لتبكوا * على نابوا المواببة 2
ولولوا * على كل راس قرع * جميع الاذرعة تقطع * في سوارعها البسوا مسوحا * ونوحوا على 3
اسطحتها وفي رحابها وفي حاراتها باجمعكم ولولوا ببكاء * لان حسبون صرخ وتكلم يصاحي سمع 4
صوتهما * لاجل هذا حقو المواببة يصرخ في ذاته * ونفسها تعلم * وقلب المواببة يصرخ في ذاته 5
الي صاغار * لانها العجلة الثلاث * وعلي المصعد الذي لك يبكون * يصعدون في طريق حرنيم
بخوار وانكسار وزلزلة * ماء نبرين يصير برية * وعشبها يفني * لانه لا يكون عشب اخضر * 6
* وليس هكذا تستانف ان تخلص * لاني اجلب على الوادي الاعراب وياخذونه * لان الصراخ 7 8
جمع حد مواببة جلعام * ورنينهم الي بير اليم * وماء رمون يمتلي دما * لاني اجلب على رمون 9
الاعراب * وانزع لسان مواب واريئيل وبقية اداما * وارسل مثل دبابات على الارض *

* الفصل السادس عشر *

* هل صخر صحراء هو جبل صهيون * لانك تكوني مثل عش منزوع لطائر طاير يا ابنة مواب * 1 2
وبعد هذا يا ارنون فكر بالاكثر * اسمعوا * ظل نوح لها كل حين في وسط الظهيرة * حاروا 3
هاربين في ظلمة * ليس يجوزون بك * هاربوا مواب * لانهم يصيرون لكم سترا من وجه 4
المضطهد * لانه قد انصرعت محاربتك * وانهبت سعوبتك * وباد الرئيس الدايس على الارض *
* ويستقيم الكرسي برحمة * ويجلس عليه بالحق في مسكن داود الحاكم الطالب الانصاف 5
والملتمس العدل * سمعنا بعظمة مواب المتعظم جدا * انصرعت عظمته وكبرياه وحقده * 6
ليس هكذا تنجيمك ليس هكذا * ولولي يا مواب * لان في المواببة جمع المولولين * 7
ولسكان حاذاسات درس *

Dolete de eis, quia jam periit ut aqua Dibonis. Ubi eſt phanum veſtrum, illuc aſcendetis ad flendum: ſuper Nabo Moabiticam ululate, ſuper omne caput erit porrigo, omnia brachia præcidentur. 2
In compitis ejus induimini ciliciis, gemite ſuper tecta ejus, in plateis & regionibus ejus ululate omnes cum fletu. 3
Nam Heſbon exclamavit, & Jiſſa locuta eſt ita ut auditus ſit clamor utriuſque; propterea lumbus Moabiticæ urbis exclamabit in ſemetipſo, & anima illius animadvertet: 4
Et cor Moabiticæ urbis vociferabitur in ſemetipſo ad Sogar, quia hæc eſt vitula trima: & ſuper clivum tuum flebunt: aſcendent per viam Hornim cum murmure, fragore, & tremore. 5
Aqua Nebrin vertetur in ſolitudinem, & ejus herba deficiet; quia non erit herba viridis. 6
At neque hoc modo incipiet liberari; quoniam adducturus ſum Arabes ſuper vallem, & capient eam. 7
Clamor enim congregabit terminos Moabiticæ Gelaam, & tumultus eorum erit uſque ad puteum Elim; 8
Et aqua Remmonis implebitur ſanguine: quoniam contra Remmonem Arabes adducam, & auferam linguam Moabi & Arielis, & reliquias Adamæ; mittamque veluti reptilia ſuper terram. 9

CAP. XVI.

Num petra deſerti eſt mons Sionis? 1
Erit quidem velut excerptus nidus volucris volantis O filia Moabi: 2
& poſt hæc O Arnon ſæpiùs cogita. Audite, umbra ejulatûs eſt apud eam omni tempore, vel ipſo meridie: ſtupore capti ſunt, fugæ ſe dantes in tenebris: non tranſibunt per te. 3
Fugam præbete Moabitis, quoniam ipſi futuri ſunt vobis latibulū à facie perſecutoris: jam enim defecit ars tua bellica, advenit miſeria tua, & periit princeps terram conculcans. 4
Et ſolium clementiâ erigetur, ſedebitq; ſuper illud cum veritate in domo Davidis, judex amans æquitatem & quærens juſtitiam. 5
Audivimus inſolentiam Moabi nimiùm inſoleſcentis: detracta eſt inſolentia, ſuperbia, & obſtinatus furor ejus: nequaquam talis erat horoſcopus tuus, nequaquam talis. 6
Ulula O Moab; quoniam in regione Moabitide erit cœtus ululantium, & incolis Hadaſath contritio: 7

ישעיה : יז

gentium Domini :Sibmah *vitis debilitata* Cheſbon *arva* Quia
כִּי שַׁדְמוֹת חֶשְׁבּוֹן אֻמְלַל גֶּפֶן שִׂבְמָה בַּעֲלֵי גוֹיִם 8
erraverunt ,*contigêre* Jahazer ad uſque ,ejus vites optimas quaſſaverunt
הָלְמוּ שְׂרוּקֶּיהָ עַד־יַעְזֵר נָגָעוּ תָּעוּ
Idcirco .mare tranſierunt , ſe extenderunt ejus *emiſſiones* : deſertum
מִדְבָּר שְׁלֻחֹתֶיהָ נִטְּשׁוּ עָבְרוּ יָם׃ עַל־כֵּן 9
mea lachryma te inebriabo : Sibmah vitis Jahazer fletu in plorabo
אֶבְכֶּה בִּבְכִי יַעְזֵר גֶּפֶן שִׂבְמָה אֲרַיָּוֶךְ דִּמְעָתִי
tuam meſſem ſuper & ,*tuos æſtivos* ſuper quoniam : Elhaleh & , Cheſbon
חֶשְׁבּוֹן וְאֶלְעָלֵה כִּי עַל־קֵיצֵךְ וְעַל־קְצִירֵךְ
, *Charmel* à exultatio & , lætitia *colligetur* Et .cecidit celeuſma
הֵידָד נָפָל׃ וְנֶאֱסַף שִׂמְחָה וָגִיל מִן־הַכַּרְמֶל 10
non torcularibus in vinum : *jubilabit* non ,*ovabit* non vineis in &
וּבַכְּרָמִים לֹא־יְרֻנָּן לֹא יְרֹעָע יַיִן בַּיְקָבִים לֹא־
Moab *ad* mea viſcera Ideo .feci ceſſare *celeuſma* ,calcans calcabit
יִדְרֹךְ הַדֹּרֵךְ הֵידָד הִשְׁבַּתִּי׃ עַל־כֵּן מֵעַי לְמוֹאָב 11
,erit Et .chares-Chir ſuper *meum intimum &* ,*tumultuabuntur cinyra ut*
כַּכִּנּוֹר יֶהֱמוּ וְקִרְבִּי לְקִיר חָרֶשׂ׃ וְהָיָה 12
, excelſum ſuper Moab laboraverit quòd , apparuerit cùm
כִי־נִרְאָה כִּי־נִלְאָה מוֹאָב עַל־הַבָּמָה
.poterit non & , *orandum ad* ſuum ſanctuarium in ingredietur &
וּבָא אֶל־מִקְדָּשׁוֹ לְהִתְפַּלֵּל וְלֹא יוּכָל׃
.*tunc* ex Moab ad DOMINUS eſt locutus quod verbum Hoc
זֶה הַדָּבָר אֲשֶׁר דִּבֶּר יְהוָה אֶל־מוֹאָב מֵאָז׃ 13
annis tribus In : dicendo , DOMINUS eſt locutus nunc Et
וְעַתָּה דִּבֶּר יְהוָה לֵאמֹר בְּשָׁלֹשׁ שָׁנִים 14
omni in Moab gloria *vilipendetur* & , mercenarii annis tanquam
כִּשְׁנֵי שָׂכִיר וְנִקְלָה כְּבוֹד מוֹאָב בְּכֹל
.*copioſum non* , *puſillum* , *parvum reſiduum* & , *multa turba*
הֶהָמוֹן הָרָב וּשְׁאָר מְעַט מִזְעָר לוֹא כַבִּיר׃

CAP. XVII. יז

acervus erit & , civitas *remota* Dammeſec Ecce .Dammeſec *Onus*
מַשָּׂא דַּמָּשֶׂק הִנֵּה דַמֶּשֶׂק מוּסָר מֵעִיר וְהָיְתָה מְעִי 1
, erunt gregibus Haroher civitates Derelictæ .ruinæ
מַפָּלָה׃ עֲזֻבוֹת עָרֵי עֲרֹעֵר לַעֲדָרִים תִּהְיֶינָה 2
, Ephraim ab munitio ceſſabit Et .exterrens non & ,accubabunt &
וְרָבְצוּ וְאֵין מַחֲרִיד׃ וְנִשְׁבַּת מִבְצָר מֵאֶפְרָיִם 3
Iſrael filiorum gloria ſicut : Aram reſiduo & ,Dammeſec à regnum &
וּמַמְלָכָה מִדַּמֶּשֶׂק וּשְׁאָר אֲרָם כִּכְבוֹד בְּנֵי־יִשְׂרָאֵל
illa die in , erit Et .exercituum DOMINUS dixit , erunt
יִהְיוּ נְאֻם־יְהוָה צְבָאוֹת׃ וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא 4
erit Et .macreſcet ejus carnis pinguedo & ,Jahacob gloria attenuabitur
יִדַּל כְּבוֹד יַעֲקֹב וּמִשְׁמַן בְּשָׂרוֹ יֵרָזֶה׃ וְהָיָה 5
, metat ſpicas ejus brachium & , *ſegetis meſſem colligere* ſicut
כֶּאֱסֹף קָצִיר קָמָה וּזְרֹעוֹ שִׁבֳּלִים יִקְצוֹר
relinquentur Et .Rephaim valle in ſpicas *legens* ſicut erit &
וְהָיָה כִּמְלַקֵּט שִׁבֳּלִים בְּעֵמֶק רְפָאִים׃ וְנִשְׁאַר־ 6
capite in granorum trium duorum ,oleæ excuſſio ſicut , racemi eo in
בּוֹ עוֹלֵלֹת כְּנֹקֶף זַיִת שְׁנַיִם שְׁלֹשָׁה גַרְגְּרִים בְּרֹאשׁ
Dominus dixit , frugiferis ejus ramis in quinque , quatuor *verberis*
אָמִיר אַרְבָּעָה חֲמִשָּׁה בִּסְעִפֶיהָ פֹּרִיָּה נְאֻם־יְהוָה
.Iſrael Deus
אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל׃

Verſio VULG. LAT.

8 Quoniam ſuburbana Heſebon deſerta ſunt, & vineam Sabama domini gentium exciderunt: flagella ejus uſque ad Jazer pervenerunt: erraverunt in deſerto, propagines ejus relictæ ſunt, tranſierunt mare. 9 Super hoc plorabo in fletu Jazer vineam Sabama: inebriabo te lachrymâ meâ Heſebon, & Eleale: quoniam ſuper vindemiam tuam, & ſuper meſſem 10 tuam vox calcantium irruit. Et auferetur lætitia & exultatio de Carmelo, & in vineis non exultabit neque jubilabit: vinum in torculari non calcabit qui calcare conſueverat: 11 vocem calcantium abſtuli. Super hoc venter meus ad Moab quaſi cithara ſonabit, & viſcera mea ad murum cocti late- 12 ris. Et erit: cùm apparuerit quòd laboravit Moab ſuper excelſis ſuis, ingredietur ad ſancta ſua ut obſecret, & non 13 valebit. Hoc verbum, quod locut⁹ eſt Dominus ad Moab ex 14 tunc: Et nunc locutus eſt Dominus, dicens; In tribus annis, quaſi anni mercenarii, auferetur gloria Moab ſup omni populo multo, & relinquetur parvus & modicus, nequaquàm multus.

CAP. XVII.

1 ONus Damaſci. Ecce Damaſcus deſinet eſſe civitas, & erit ſicut acervus lapidum in 2 ruina. Derelictæ civitates Aroër gregibus erunt, & requieſcent ibi, & non erit qui 3 exterreat. Et ceſſabit adjutorium ab Ephraim, & regnum à Damaſco: & reliquiæ Syriæ ſicut gloria filiorum Iſrael erunt: dicit Dñs exercituum. 4 Et erit in die illa: attenuabitur gloria Jacob, & pinguedo 5 carnis ejus marceſcet. Et erit ſicut congregans in meſſe ꝗ reſtiterit, & brachium ejus ſpicas leget: & erit ſicut quærens ſpicas in valle Ra- 6 phaim. Et relinquetur in eo ſicut racemus, & ſicut excuſſio oleæ duarum vel trium olivarum in ſummitate rami, ſive quatuor aut quinque in cacuminibus ejus fructus ejus: dicit Dominus Deus Iſrael.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

8 Τὰ πεδία Ἐσεβὼν πενθήσει, ἄμπελος Σεβαμά. καταπίνοντες τὰ ἔθνη, καταπατήσατε τὰς ἀμπέλους αὐτῆς, ἕως Ἰαζήρ. οὐ μὴ συνάψητε, πλανήθητε τὴν ἔρημον, οἱ ἀπεσταλμένοι ἐγκατελείφθησαν, διέβησαν (ι) 9 γὰρ πρὸς τὴν θάλασσαν. Διὰ τοῦτο κλαύσομαι ὡς τὸν κλαυθμὸν Ἰαζὴρ ἄμπελον Σεβαμά. τὰ δένδρα σου κατέβαλεν Ἐσεβὼν (κ) καὶ Ἐλεαλή, ὅτι ἐπὶ τῷ θερισμῷ καὶ ἐπὶ τῷ τρυγητῷ σου καταπατήσω, καὶ πάντα πε- 10 σοῦνται. Καὶ ἀρθήσεται εὐφροσύνη καὶ ἀγαλλίαμα ἐκ τῶν (·) ἀμπελώνων, καὶ ἐν τοῖς ἀμπελῶσί σου οὐ μὴ εὐφρανθήσονται, καὶ οὐ μὴ πατήσουσιν οἶνον εἰς τὰ ὑπολήνια, πέπαυ- 11 ται γάρ. Διὰ τοῦτο ἡ κοιλία μου ἐπὶ Μωὰβ ὡς κιθάρα ἠχήσει, καὶ τὰ ἐντός μου (λ) ὡς 12 τεῖχος ἐνεκαίνισας. Καὶ ἔσται εἰς τὸ ἐντραπῆναί σε, ὅτι ἐκοπίασε Μωὰβ ἐπὶ τοῖς βωμοῖς, καὶ εἰσελεύσεται εἰς τὰ χειροποίητα αὐτῆς, ὥστε προσεύξασθαι, καὶ οὐ μὴ δύνηται 13 ἐξελέσθαι αὐτόν. Τοῦτο τὸ ῥῆμα ὃ ἐλάλησε 14 κύριος ἐπὶ Μωάβ, ὁπότε (μ) ἐλάλησε. Καὶ νῦν λέγω, Ἐν τρισὶν ἔτεσιν ἐτῶν μισθωτοῦ ἀτιμασθήσεται ἡ δόξα Μωὰβ (ν) παντὶ τῷ πλούτῳ τῷ πολλῷ, καὶ καταλειφθήσεται ὀλιγοστός, καὶ οὐκ ἔντιμος.

Campi Eſebon lugebunt: vinea 8 *Sebama. Qui abſorbetis gentes, conculcate vites ejus uſque Jazer. Nolite contingere, oberrate deſertum, qui miſſi eſtis. Derelicti ſunt: tranſierunt enim ad mare. Propter hoc plorabo, quaſi* 9 *ploratum Iazer, vineam Sebama. Arbores tuas dejecit Eſebon, & Eleale: quoniam ſuper meſſem, & ſuper vindemiam tuam conculcabo: & omnia cadent. Et* 10 *tolletur lætitia, & exultatio de vineis: & in vineis tuis non lætabuntur: & non calcabunt vinũ in torcularibus: nam ceſſavit. Pro-* 11 *pter hoc venter meus ſuper Moab, velut cithara, ſonabit: & interiora mea quaſi murum renovâſti. Et erit in confuſionem tu-* 12 *am, quia laboravit Moab in aris, & ingredietur in manufacta ſua, ut deprecetur: & non poterunt eximere eum. Hoc verbum, quod* 13 *locutus eſt ſuper Moab, quando locutus eſt. Et nunc dico; In* 14 *(k) tribus annis annorum mercenarii inhonorabitur gloria Moab omnibus divitiis multis: & relinquetur paucus, & non honoratus.*

MS.A. (ι) γὰρ τὴν ἔρημον. (κ) καὶ ἐλάλησεν, Ἐπὶ τῷ (·) ἀμπελώνων σου, (λ) ὡσεὶ τεῖχος ὃ ἐνεκένισας. Καὶ ἔσται ὡς τὸ ἐντραπῆναί σε, ἐκοπίασεν Μωὰβ (μ) καὶ ἐλάλυσεν. (ν) ἐν παντὶ

ΚΕΦ. ιζʹ.

ΤΟ ῬΗ͂ΜΑ ΤΟ ΚΑΤΑ ΔΑΜΑΣΚΟΥ͂.

1 ἸΔοὺ Δαμασκὸς ἀρθήσεται ἀπὸ πόλεων, καὶ 2 ἔσται εἰς πτῶσιν Καταλελειμμένη εἰς τὸν αἰῶνα, εἰς κοίτην ποιμνίων καὶ ἀνάπαυσιν (α), καὶ 3 οὐκ ἔσται ὁ διώκων. Καὶ οὐκέτι ἔσται ὀχυρὰ τοῦ καταφυγεῖν Ἐφραίμ· καὶ οὐκέτι (β) βασιλεία ἐν Δαμασκῷ, καὶ τὸ λοιπὸν τῶν Σύρων (γ). οὐ γὰρ σὺ βελτίων εἶ τῶν υἱῶν Ἰσραήλ, (δ) τῆς δόξης 4 αὐτῶν. τάδε λέγει κύριος σαβαώθ. Ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔκλειψις (ε) δόξης Ἰακώβ, 5 καὶ τὰ (ϛ) πίονα τῆς δόξης αὐτοῦ σεισθήσεται. Καὶ ἔσται ὃν τρόπον ἐάν τις συναγάγῃ ἀμητὸν ἑστηκότα, καὶ σπέρμα σταχύων (ζ) ἀμήσῃ· καὶ ἔσται ὃν τρόπον ἐάν τις συναγάγῃ στάχυν ἐν 6 φάραγγι στερεᾷ, Καὶ καταλειφθῇ ἐν αὐτῇ καλάμη, ἢ ὡς ῥῶγες ἐλαίας δύο ἢ τρεῖς ἐπ᾽ ἄκρου μετεώρου, ἢ τέσσαρες ἢ πέντε ἐπὶ τῶν κλάδων (η) αὐτῶν καταλειφθῇ. τάδε λέγει κύριος ὁ θεὸς Ἰσραήλ.

CAP. XVII.

VERBUM, QUOD CONTRA DAMASCUM.

ECce Damaſcus (a) tolletur de 1 *civitatibus: & erit in ruinam, Derelicta (b) in ſeculum in cubi-* 2 *le gregum, & requiem, & non erit perſequens: Et non erit ul-* 3 *trà munita (c) ad confugiendum Ephræm: & non ultrà regnum in Damaſco, & reliquum Syrorum. Non enim tu melior es filiis Iſrael, gloriâ eorum. Hæc dicit Dominus Sabaoth; Erit in die illa* 4 *defectio gloriæ Jacob: & pinguia gloriæ ej⁹ concutientur. Et e-* 5 *rit, quomodò ſiquis congreget meſſem ſtantem, & ſemen ſpicarum metat: & erit, quomodò ſiquis congreget ſpicam in valle dura, Et* 6 *relicta in ea fuerit ſtipula: vel, ſicut grana olivæ duo, vel tria in ſummitate excelſa, vel quatuor, aut quinque ſuper ramos earum ſint relicta. Hæc dicit Dominus Deus Iſrael.*

MS. A. (α) βουκολίων, καὶ οὐκ (β) ἔσται βασιλεία (γ) ἀπολεῖται. οὐ (δ) καὶ τῆς δόξης (ε) τῆς δόξης (ϛ) πλείονα τῆς δόξης (ζ) ἐν τῷ βραχίονι αὐτοῦ ἀμήσῃ· (η) αὐτοῦ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

אֲרֵי אִתְבְּזִיזָא מַשְׁרְיַת חֶשְׁבּוֹן אִתְקְטַלָא סִיעַת שִׂבְמָה מַלְכֵי עַמְמַיָא קְטִילוּ שִׁלְטוֹנֵיהוֹן עַד 8
יַעְזֵר מְטוֹ טְעוֹ לְמַדְבְּרָא מְטַלְטְלֵיהוֹן גְּווֹ עֲבַרוּ יַמָא ׃ עַל כֵּן כְּמָא דַאֲיְתֵיתִי מַשְׁרְיָן עַל 9
יַעְזֵר כֵּן אַיְתֵי קָטוֹלִין עַל שִׂבְמָא אֲרַוֵּינִיךְ דִּמְעָתָא חֶשְׁבּוֹן וְאֶלְעָלֵה אֲרֵי עַל חֲצָדִיךְ וְעַל
קִטָפִיךְ בָּזוֹזִין נְפָלוּ ׃ וְיִתְכְּנֵשׁ בִּיעַ וְחֶדְוָה מִן כַּרְמְלָא וּבְכַרְמַיָא לָא יְדוּצוּן וְלָא יְחַיְכוּן 10
וַחֲמַר בְּמַעְצְרַיָא לָא יַעְצְרוּן עָצוֹרִין עֲצוּר אַבְטֵלִית ׃ עַל כֵּן מְעֵיהוֹן דְּמוֹאָבָאֵי כְּכִנָּרָא הָמָן 11
וְלִבְהוֹן עַל אֱנָשׁ כְּרַךְ תּוּקְפֵיהוֹן דָּוָן ׃ וִיהֵי אֲרֵי יֶחֱזֶה אֲרֵי יְלֵאָה מוֹאָב עַל בָּמָתָא וְיֵעוֹל 12
לְבֵית טַעֲוָתֵיהּ לְמִבְעֵי וְלָא יִכּוֹל ׃ דֵּין פִּתְגָמָא דִּי מַלֵּיל יְיָ עַל מוֹאָבָאֵי מִבְּכֵן ׃ וּכְעַן 13
מַלֵּיל יְיָ לְמֵימַר בִּתְלָת שְׁנִין כִּשְׁנֵי אֲגִירָא וְיֵסוּף יְקָרְהוֹן דְּמוֹאָבָאֵי בְּכָל הָמוֹן סַגְיָא וְיִשְׁאַר 14
צִבְחַר כִּזְעֵיר יְסוּף כָּל יְקָרְהוֹן ׃

יז

מַטַל כָּס דִּלְוָט לְאַשְׁקָאָה יַת דַּמֶּשֶׂק הָא דַמֶּשֶׂק מִתְעַדְיָא מִמַּלְכוּ וּתְהֵי לִכְרַךְ מְחַמְרָא ׃ 1
שְׁבִיקָן קִרְוֵיהוֹן חֲרָבוּ לְבֵית מִשְׁרֵי עֶדְרִין דְּעָן יְהוֹן וְיִשְׁרוֹן וְלֵית דְּמָנִיד ׃ וְיִבְטֵל שׁוּלְטָן 2
מֵאֶפְרַיִם וּמַלְכוּ מִדַּמֶּשֶׂק וּשְׁאָר יְחִידָאִין מֵאֲרָם וִיקָרְהוֹן כִּיקָר בְּנֵי יִשְׂרָאֵל יְהוֹן אֲמַר יְיָ 3
צְבָאוֹת ׃ וִיהֵי בְּעִדָּנָא הַהִיא יִמְאַךְ יְקָר יַעֲקֹב וְעוֹתַר יְקָרֵיהּ יִגְלֵי ׃ וִיהֵי כִּמְכַנֵּשׁ חֲצַד 4
קָמָה וּדְרָעֵיהּ שׁוּבְלִין יַחֲצוֹד וִיהֵי כִּמְלַקֵּט שׁוּבְלִין בְּמֵישַׁר גִּבָּרַיָא ׃ וְיִשְׁתַּאֲרוּן בֵּיהּ עוֹלְלִין 5 6
כְּבִיעוּר זֵיתָא תְּרֵין תְּלָתָא נַרְגְּרִין בְּרֵישׁ עַנְפָּא אַרְבְּעָה חַמְשָׁא בְּסוֹכָא מַרְדָא כֵּן יִשְׁתַּאֲרוּן
יְחִידָאִין צַדִּיקַיָא בְּגוֹ עָלְמָא בֵּינֵי מַלְכְוָתָא אֲמַר יְיָ אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quoniam direpta ſunt caſtra Eſſebon, interfecta eſt turba Sebama; reges 8 populorum occiderunt dominatores eorum: uſq; ad Jazer pervenerunt, erraverunt in ſolitudine, profugi eorum transfretaverunt, tranſierunt mare. Propterea ſicut adduxi *exercitus* contra Jazer, ſic adducam occiſores 9 contra Sebama: inebriabo te lachrymis Eſſebon & Eleale, quoniam ſuper meſſem tuam & ſuper vindemiam tuam deprædatores irruerunt. Et retra- 10 hetur lætitia & gaudium de Carmelo; & in vineis non exultabunt neque ridebunt: vinum in torcularibus non calcabunt calcatores: ceſſare feci calcationem vini. Propterea viſcera Moabitarum quaſi cithara ſona- 11 bunt, & corda eorum ſuper homines civitatis fortitudinis ſuæ dolebunt. Et erit cùm viderit quòd laboraverit Moab ſuper excelſa, & ingredietur 12 domum idololatriæ ſuæ ut obſecret, & non valebit. Hoc eſt verbum quòd 13 locutus eſt Dominus ſuper *Moabitas* ex tunc. Et nunc *locutus eſt* Domi- 14 nus, dicens: In tribus annis quaſi anni mercenarii, & deficiet gloria Moabitarum cum omni turba multa: & relinquetur puſillum modicúmque; & finietur omnis gloria eorum.

CAP. XVII.

ONus calicis maledictionis ad propinandum Damaſco. Ecce Damaſcus 1 deſinet eſſe regnum, & erit in civitatem redactam in acervos lapidum. De- 2 relictæ civitates eorum *devaſtabuntur*, in domum manſionis gregum ovium erunt; et habitabunt ibi, & non erit qui exterreat. Et ceſſabit domi- 3 nium ab Ephraim, & regnum à Damaſco, & reliqui ſingulares ex Syria, & gloria eorum quaſi gloria filiorum Iſrael erit, dicit Dñs exercituum. Et erit in tempore illo, humiliabitur gloria Jacob, et divitiæ gloriæ ejus tranſ- 4 migrabuntur. Et erit ſicut congregans in meſſe manipulum, & qui brachio 5 ſuo ſpicas metit; & erit ſicut colligens ſpicas in valle gigantum: Et re- 6 linquentur in eo racemi, ſicut excuſſio olivæ: duo vel tria granula in ſummitate rami, quatuor vel quinque in propagine ejus diſperſa: ſic relinquentur ſolitarii juſti in medio ſeculi inter regna: dicit Dominus Deus Iſrael.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

8 * ܡܛܠ ܕܚܩܠܬܐ ܕܚܫܒܘܢ ܚܪܒ. ܓܦܬܐ ܕܫܒܡܐ ܀ ܓܢܒܪ̈ܐ ܕܥܡ̈ܡܐ ܩܛܥܘ
ܫܒܝܫܬܗ. ܘܥܕܡܐ ܠܝܥܙܝܪ ܡܛܘ. ܘܛܥܘ ܒܡܕܒܪܐ ܫܪ̈ܫܘܗܝ. ܢܦܩܘ ܘܥܒܪܘ ܝܡܐ.
9 * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܒܟܐ ܒܒܟܝܐ ܕܝܥܙܝܪ܆ ܓܦܬܐ ܕܫܒܡܐ. ܐܪܘܝܟܝ ܡܢ ܕܡ̈ܥܝ
ܚܫܒܘܢ܆ ܘܐܠܥܠܐ. ܡܛܠ ܕܥܠ ܚܨܕܟܝ ܘܥܠ ܡܩܛܦܟܝ ܕܝܫܐ ܢܦܠ. * ܘܢܬܒܛܠ 10
ܚܕܘܬܐ ܘܕܘܨܐ ܡܢ ܟܪܡܠ. ܘܒܟܪܡܠ ܠܐ ܢܚܕܘܢ. ܘܠܐ ܢܕܪܟܘܢ ܚܡܪܐ ܒܡܥܨܪ̈ܬܐ. ܘܠܐ ܢܕܘܫ
ܕܝܫܐ. ܡܛܠ ܕܒܛܠܬ ܕܝܫܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܡܥ̈ܝ ܥܠ ܡܘܐܒ ܐܝܟ ܟܢܪܐ ܢܡܠܠ. 11
ܘܓܘܝ ܥܠ ܫܘܪܐ ܕܡܬܬܣܚܦ. * ܘܡܐ ܕܚܙܐ ܕܠܐܝ ܡܘܐܒ ܥܠ ܐܓܘܪܐ܆ ܢܐܬܐ ܠܡܩܕܫܗ 12
ܠܡܨܠܝܘ. ܘܠܐ ܢܫܟܚ. * ܗܢܐ ܦܬܓܡܐ ܡܠܠ ܡܪܝܐ ܥܠ ܡܘܐܒ ܡܢ ܗܝܕܝܢ. * ܘܗܫܐ 13
14 ܡܠܠ ܡܪܝܐ ܘܐܡܪ. ܒܬܠܬ ܫܢܝܢ ܐܝܟ ܫܢܝ̈ ܐܓܝܪܐ ܀ ܢܬܒܣܪ ܐܝܩܪܗ ܕܡܘܐܒ
ܥܠ ܣܘܓܐܐ ܕܥܡܗ. ܘܢܫܬܚܪ܆ ܩܠܝܠ ܙܥܘܪ. ܘܠܐ ܣܓܝ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܙ * ܡܫܩܠܐ ܕܕܪܡܣܘܩ *

1 * ܗܐ ܕܪܡܣܘܩ ܡܬܥܒܪܐ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܬܗܘܐ ܠܚܘܪܒܐ ܘܠܡܦܩܦܩܘܬܐ. * ܘܢܗܘܘܢ
2 ܫܒܝܩܢ ܩܘܪ̈ܝܐ ܕܥܪܘܥܝܪ. ܘܢܗܘܝܢ ܠܥܢܐ ܕܢܪܒܥܘܢ ܒܗܝܢ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܕܡܙܝܥ ܠܗܘܢ.
* ܘܢܬܒܛܠ ܚܘܣܢܐ ܡܢ ܐܦܪܝܡ. ܘܡܠܟܘܬܐ ܡܢ ܕܪܡܣܘܩ. ܘܫܪܟܐ ܕܐܦܪܝܡ ܐܝܟ 3
ܐܝܩܪܐ ܕܒܢ̈ܝ ܐܝܣܪܝܠ ܢܗܘܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. 4
ܢܬܡܟܟ ܐܝܩܪܗ ܕܝܥܩܘܒ. ܘܡܫܡܢܐ ܕܒܣܪܗ ܢܬܪܙܐ. * ܘܢܗܘܐ ܐܝܟ ܗܘ ܕܟܢܫ 5
ܚܨܕܐ ܕܩܝܡܬܐ. ܘܕܪܥܗ ܫܒܠܐ ܢܚܨܘܕ. ܘܢܗܘܐ ܐܝܟ ܗܘ ܕܡܠܩܛ ܫܒܠܐ ܒܥܘܡܩܐ
ܕܓܢܒܪ̈ܐ. * ܘܢܫܬܚܪ ܒܗ܆ ܥܘܠܠܐ ܐܝܟ ܢܦܨܐ ܕܙܝܬܐ. ܬܪܬܝܢ ܬܠܬ ܙܝܬܝܢ܆ ܒܪܝܫ 6
ܣܘܟܐ. ܐܪܒܥܐ ܘܚܡܫܐ ܒܣܘ̈ܟܘܗܝ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ.

Quoniam agri Heſbonis vaſtati ſunt, vitis Sebmæ propagines gigantes populorum amputârunt, & ad Jaazir uſque pervenerunt: at radicum ejus in deſerto cùm eſſent obliti, protenderunt ſeſe ultra mare. 8

Hac de cauſa plangam te planctu Jaazir O vitis Sebmæ, irrigabo te lachrymis tuis O Heſbon & Elaala; quia in meſſem tuam & in vindemiam tuam irruet conculcator: 9

Et ceſſabit gaudium & exultatio à Charmelo, nec lætabuntur in Charmelo: vinum haud expriment in lacu, nec calcabit calcator; quia calcatorem abolebo. 10

Iccircò venter meus de Moabo tanquam lyra loquetur, & inteſtina mea de muro qui deſtruendus eſt. 11

Demum cùm viderit Moab ſe fatigatum ſuper altaribus, veniet ad ſanctuarium ut oret, ſed non poterit. 12

Hujuſmodi ſermonem pronuntiavit Dominus contra Moabum inde ab illo tempore: 13

Nunc autem loquitur Dominus, & ait; Intra tres annos, quales ſunt anni mercenarii, infamiâ notabitur gloria Moabi cauſâ multitudinis populi ſui, quòd paucus admodum, non multus ſit manſurus. 14

CAP. XVII.

Onus Damaſci.

ECce Damaſcus deſinet eſſe civitas, erítque in vaſtitatem & excidium: 1

Et erunt derelictæ civitates Adoiris, & inſervientes gregibus, ut cubent in iis nemine moleſtiam exhibente. 2

Deficiet robur ab Aphremo, & regnum à Damaſco: & reſidui Aphremi ſicut gloria filiorum Iſraelis erunt, dicit Dominus potentiſſimus. 3

Erit etiam in die illa ut attenuetur honor Jacobi, & pinguedo carnis ejus decutiatur. 4

Erítque ſicut is qui ſegetem adhuc ſtantem colligit, cujus brachium ſpicas metit; & erit ſicut is qui ſpicas legit in valle Rephaim. 5

Et remanebit in eo (*Aphremo*) racematio quaſi in olea, quâ excuſſâ duæ vel tres olivæ, aut quatuor vel quinque *remaneant* in ſummo cacumine ramorum ejus; dicit Dominus Deus Iſraelis; 6

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

8 * ولان تخجل حقول حسبون * تحزن كرمة سابامة * تشربها الامم * دوسوا كرماتها الي يعزير ولا
9 تجمعوا * توهوا في البرية ايها المرسلون الذين تبقوا * لانهم جاوزوا البرية * لاجل هذا ابكي
مثل بكاء يعزير كرمة سبما * اشجارك ادركها حسبون * فقال ايضا * على حصادك وعلي قطافك
10 ساذوس ويسقطون جميعا * ويتنزع سرورك وبهجتك من كرومك * وبكرومك لا يسرون * ولا
11 يعصرون خمرا في المعاصر لانهم بادوا * لاجل هذا فوادي على مواب مثل قيثارة تلحن *
12 واحشاي مثل السور الذي جددته * ويكون هذا اذ تخجلين تعبت مواب بالمذابح * وتدخل
13 الي صنعة يديها حتي تصلي * فلا تستطيع ان تخلصه * هذه الكلمة التي تكلم الرب بها على
14 مواب وقالها قديما * والان اقول * في ثلاثة سنين سني الاجير * تهان مجد مواب بكل غناها
الكثير * وتترك قليلة وليس كريمة *

* الفصل السابع عشر * * الوحي الثامن *

* نبوة اشعياء في دمشق *

1 * كها دمشق تنزع من المدن * وتصير للسقطة ومتروكة الي الدهر * مرقدا لقطعان الغنم
2 وراحة لاذواد البقر * ولا يكون مضطهد * وليست تكون حصينة ليهرب افرام هناك * وليس تكون 3
ايضا مملكة في دمشق * وبقية الشاميين تهلك * لانهم لا ينالون كرامة بني اسرائيل ومجدهم *
4 هكذا يقول رب الجيوش * يكون في ذلك اليوم اضمحلال مجد يعقوب * وكثرة شرفه
5 تتزلزل * ويكون كما يجمع واحد الحصاد القايم ويحصد زرع السنبل * ويكون كما
6 يجمع واحد السنبل في واد شديد ويبقي فيه قصبه * او مثل حب زيتونة * اثنان او
ثلاثة على طرف عال * او اربعة او خمسة تترك على اغصانه * هكذا يقول الرب
اله اسرائيل *

Tum quia rubore ſuffundentur arva Hesbonis, mœrore conficietur vitis Sabamæ, bibent eam gentes. Conculcate vites ejus ad Jaazir uſque, & ne colligite eas. Vagamini per deſertum O miſſi qui ſuperſtites eſtis, quia prætergreſſi ſunt deſertum. 8

Hac de re plango ut planctu Jaaziris vitim Sabamæ: arbores tuas apprehendit Hesbon, dixitque præterea, Meſſem tuam & vindemiam tuam conculcabo ita ut ſimul decidant. 9

Et auferetur gaudium tuum & lætitia tua à vineis tuis, ita ut vineis tuis minimè fruantur, nec vinum exprimant in lacubus, eò quòd perierint. 10

Hanc ob rem præcordia mea, cauſâ Moabi, ſunt veluti cithara canens, & viſcera mea veluti murus quem reſtaurâſti. 11

Contingent etiam hoc, ut cùm pudefactus & ſatigatus fueris Moab in altaribus, & ingreſſus ad opus manuum tuarum ut deprecêris, nequeat liberare te. 12

Hoc eſt verbum quod locutus eſt Dominus de Moabo, quódque olim prædixit: 13

Jam verò dico, Intra tres annos, eoſque quidem annos mercenarii, vileſcet gloria Moabi cum univerſa copia divitiarum ejus, quæ paucæ nec pretioſæ relinquentur. 14

CAPUT XVII.

Revelatio octava.

PRophetia Eſaiæ de Damaſco. *Ecce ſanè Damaſcus demetur ex urbibus, eritque in ruinam, & perpetuò derelicta,* 1

Cubile gregibus ovium, & ſtatio armentis boum, nemine abigente. 2

Non erit munita ut eò confugiat Aphrem, nec erit ampliùs regnum in Damaſco, & reſiduum Damaſcenorum peribit; non enim aſſequentur honorem & gloriam filiorum Iſraelis: ſic dicit Dominus exercituum. 3

Evaneſcet eo die gloria Jacob: & multitudo nobilitatis ejus concutietur: 4

Et erit perinde ac ſiquis ſegetem ſtantem colligeret, aut ſpicarum ſemen demeteret: eritque perinde ac ſiquis colligeret ſpicas in dura valle, in qua calami tantùm *remanerent:* 5

Aut veluti baccæ oleæ, duæ vel tres in aliquo ſummo faſtigio, aut quatuor vel quinque in ramis ejus relictæ: ſic dicit Dominus Deus Iſraelis. 6

ישעיה: יח

ad ejus oculi &,suũ factorem ad homo aspiciet illa die In
7 בַּיּוֹם הַהוּא יִשְׁעֶה הָאָדָם עַל־עֹשֵׂהוּ וְעֵינָיו אֶל־
altaria ad aspiciet non Et .respicient Israel Sanctum
8 קְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל תִּרְאֶינָה׃ וְלֹא יִשְׁעֶה אֶל־הַמִּזְבְּחוֹת
,respiciet non ejus digiti fecerunt quod & ,ej⁹ manuum opus
מַעֲשֵׂה יָדָיו וַאֲשֶׁר עָשׂוּ אֶצְבְּעֹתָיו לֹא יִרְאֶה
ej⁹ fortitudinis civitates erunt illa die In .*loca aprica* & ,Lucos &
9 וְהָאֲשֵׁרִים וְהַחַמָּנִים׃ בַּיּוֹם הַהוּא יִהְיוּ עָרֵי מָעֻזּוֹ
filiorũ *faciebus* à dereliquerunt *quæ* ,*verberis* & ,*virgulti* derelictio sicut
כַּעֲזוּבַת הַחֹרֶשׁ וְהָאָמִיר אֲשֶׁר עָזְבוּ מִפְּנֵי בְּנֵי
petræ & ,tuæ salutis Dei es oblita Quia .desolatio erit & ,Israel
10 יִשְׂרָאֵל וְהָיְתָה שְׁמָמָה׃ כִּי שָׁכַחַתְּ אֱלֹהֵי יִשְׁעֵךְ וְצוּר
plantationes plantabis propterea : es recordata non ,tuæ fortitudinis
מָעֻזֵּךְ לֹא זָכָרְתְּ עַל־כֵּן תִּטְּעִי נִטְעֵי
tuam plantationem die In .*illud* seminabis alieni *putamen* & ,*jucunda*
11 נַעֲמָנִים וּזְמֹרַת זָר תִּזְרָעֶנּוּ׃ בְּיוֹם נִטְעֵךְ
messis acervus : facies germinare tuum semen mane in & ,facies crescere
תְּשַׂגְשֵׂגִי וּבַבֹּקֶר זַרְעֵךְ תַּפְרִיחִי נֵד קָצִיר
,multorũ populorũ *turbæ* Væ .desperati doloris & ,*hæreditatis die in*
12 בְּיוֹם נַחֲלָה וּכְאֵב אָנוּשׁ׃ הוֹי הֲמוֹן עַמִּים רַבִּים
aquarum *sonitus* ut nationum *sonitus* & *tumultuabuntur maria tumultuari ut*
כַּהֲמוֹת יַמִּים יֶהֱמָיוּן וּשְׁאוֹן לְאֻמִּים כִּשְׁאוֹן מַיִם
multarum aquarum sonitus sicut Populi .*sonabunt crebrarum*
13 כַּבִּירִים יִשָּׁאוּן׃ לְאֻמִּים כִּשְׁאוֹן מַיִם רַבִּים
passim persecutionem & ,*longè* à fugiet & ,eum *in* increpabit & ,sonabunt
יִשָּׁאוּן וְגָעַר בּוֹ וְנָס מִמֶּרְחָק וְרֻדַּף
.*turbinis facies ad globus* & ,venti *facies ad* montium gluma sicut
כְּמֹץ הָרִים לִפְנֵי־רוּחַ וּכְגַלְגַּל לִפְנֵי סוּפָה׃
hæc ,*ipsa* non mane antequam ,turbatio ecce & *vesperæ* tempore In
14 לְעֵת עֶרֶב וְהִנֵּה בַלָּהָה בְּטֶרֶם בֹּקֶר אֵינֶנּוּ זֶה
.nos diripientium sors & ,nos prædantium pars
חֵלֶק שׁוֹסֵינוּ וְגוֹרָל לְבֹזְזֵינוּ׃

CAP. XVIII. יח

.Ægypti flumina trans quæ alarum umbræ terra Væ
1 הוֹי אֶרֶץ צִלְצַל כְּנָפָיִם אֲשֶׁר מֵעֵבֶר לְנַהֲרֵי־כוּשׁ׃
.aquarum *facies super junci vasis in* & ,legatos mare per Mittens
2 הַשֹּׁלֵחַ בַּיָּם צִירִים וּבִכְלֵי־גֹמֶא עַל־פְּנֵי־מַיִם
populum ad ,expilatam & tractam gentem ad leves nuncii Ite
לְכוּ מַלְאָכִים קַלִּים אֶל־גּוֹי מְמֻשָּׁךְ וּמוֹרָט אֶל־עַם
cujus ,*conculcationis* & ,*lineæ lineæ* gentem ; ultra & ,*ipso* ex terribilẽ
נוֹרָא מִן־הוּא וָהָלְאָה גּוֹי קַו־קָו וּמְבוּסָה אֲשֶׁר־
,terræ incolæ & ,orbis habitatores Omnes .*ejus* terrã flumina diripuerũt
3 בָּזְאוּ נְהָרִים אַרְצוֹ׃ כָּל־יֹשְׁבֵי תֵבֵל וְשֹׁכְנֵי אָרֶץ
.audietis *tubam clangendo in* &,videbitis montib⁹ vexillũ *extollere secundùm*
כִּנְשֹׂא־נֵס הָרִים תִּרְאוּ וְכִתְקֹעַ שׁוֹפָר תִּשְׁמָעוּ׃
considerabo & ,Quiescam : me ad DOMINUS dixit sic Quia
4 כִּי כֹה אָמַר יְהוָה אֵלַי אֶשְׁקוֹטָה וְאַבִּיטָה
æstu in rorida nubes sicut ,*lucem super nitidus calor* sicut,meo *parato* loco in
בִמְכוֹנִי כְּחֹם צַח עֲלֵי־אוֹר כְּעָב טַל בְּחֹם
uva acerba & ,*gemmam consummare juxta* ,messem ante Nam .messis
5 קָצִיר׃ כִּי־לִפְנֵי קָצִיר כְּתָם־פֶּרַח וּבֹסֶר
& ,falcibus *in mallcolos* præcidat & ,flos erit maturescens
גֹּמֵל יִהְיֶה נִצָּה וְכָרַת הַזַּלְזַלִּים בַּמַּזְמֵרוֹת וְאֶת־
.*amputet* ,auferat propagines
הַנְּטִישׁוֹת הֵסִיר הֵתַז׃

Versio VULG. LAT.

7 In die illa inclinabitur homo ad Factorem suum, & oculi ejus ad Sanctum Israel respicient: 8 Et non inclinabitur ad altaria, quæ fecerunt manus ejus: & quæ operati sunt digiti ejus non respiciet, lucos & delubra. 9 In die illa, erunt civitates fortitudinis ej⁹ derelictæ sicut aratra, & segetes quæ derelictæ sunt à facie filiorum Israel, 10 & eris deserta. Quia oblita es Dei Salvatoris tui, et fortis adjutoris tui non es recordata: propterea plantabis plantationem fidelem, et germen 11 alienũ seminabis. In die plantationis tuæ labrusca, et manè semen tuum florebit: ablata est messis in die hæreditatis, et do12lebit graviter. Væ multitudini populorum multorum, ut multitudo maris sonantis: et tumultus turbarum, sicut soni13tus aquarum multarum. Sonabunt populi sicut sonit⁹ aquarum inundantium, & increpabit eum, & fugiet procul: & rapietur sicut pulvis montium à facie venti, & sicut turbo co14ram tempestate. In tempore vespere, & ecce turbatio: in matutino, & non subsistet. Hæc est pars eorum qui vastaverunt nos, & sors diripientium nos.

CAP. XVIII.

1 VÆ terræ cymbalo alarum, quæ est trans flumina Æthio2piæ, Qui mittit in mare legatos, & in vasis papyri super aquas. Ite angeli veloces ad gentem convulsam, et dilaceratã; ad populum terribilem, post quem non est alius; ad gentem expectantem & conculcatam, cujus diripuerunt flumina ter3ram ejus. Omnes habitatores orbis, qui moramini in terra, cùm elevatum fuerit signum in montibus, videbitis, & clan4gorem tubæ audietis: Quia hæc dicit Domin’ ad me; Quiescam, & considerabo in loco meo, sicut meridiana lux clara est, & sicut nubes roris in die 5 messis. Ante messem enim totus effloruit, & immatura perfectio germinabit, & præcidentur ramusculi ejus falcibus: & quæ derelicta fuerint, abscindentur, et excutientur.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

7 Τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ πεποιθὼς ἔσται (θ) ὁ ἄνθρωπος ἐπὶ τῷ ποιήσαντι αὐτὸν, οἱ δὲ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ εἰς τὸν ἅγιον τοῦ Ἰσραὴλ ἐμβλέψονται, 8 Καὶ οὐ μὴ πεποιθότες ὦσιν ἐπὶ τοῖς βωμοῖς, οὐδὲ ἐπὶ τοῖς ἔργοις τῶν χειρῶν αὐτῶν, ἃ ἐποίησαν οἱ δάκτυλοι αὐτῶν, καὶ οὐκ ὄψονται (ι) τὰ δένδρα, οὐδὲ τὰ βδελύγματα αὐτῶν. 9 Τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσονται αἱ πόλεις σου ἐγκαταλελειμμέναι, ὃν τρόπον (κ) κατέλιπον οἱ Ἀμορῥαῖοι καὶ οἱ Εὐαῖοι ἀπὸ προσώπου τῶν υἱῶν Ἰσραήλ· καὶ ἔσονται ἔρημοι, 10 Διότι (λ) κατέλιπες τὸν θεὸν τὸν σωτῆρά σου, καὶ κυρίου τοῦ βοηθοῦ σου οὐκ ἐμνήσθης· διὰ τοῦτο φυτεύσεις φύτευμα ἄπιστον, καὶ σπέρμα ἄπιστον. 11 (μ) Τῇ ἡμέρᾳ ᾗ ἂν φυτεύσῃς, πλανηθήσῃ. τὸ δὲ πρωῒ ἐὰν (ν) σπείρῃς, ἀνθήσει εἰς ἀμητὸν ᾗ ἂν ἡμέρᾳ κληρώσῃ, καὶ (ξ) ὡς πατὴρ ἀνθρώπου κληρώσῃ τοῖς (ο) υἱοῖς σου. 12 Οὐαὶ πλῆθος ἐθνῶν πολλῶν· ὡς θάλασσα κυμαίνουσα, (π) οὕτω ταραχθήσεσθε· καὶ νῶτος ἐθνῶν πολλῶν, ὡς ὕδωρ ἠχήσει. 13 Ὡς ὕδωρ πολὺ ἔθνη πολλὰ, ὡς ὕδατος πολλοῦ βίᾳ (ρ) φερομένου. καὶ ἀποσκορακιεῖ αὐτὸν, καὶ πόῤῥω αὐτὸν διώξεται, ὡς (σ) χνοῦν ἀχύρου λικμώντων ἀπέναντι ἀνέμου, καὶ ὡς κονιορτὸν τροχοῦ καταιγὶς φέρουσα. 14 Πρὸς ἑσπέραν (τ) καὶ ἔσται πένθος, πρὶν ἢ πρωῒ, καὶ οὐκ ἔσται. αὕτη ἡ μερὶς τῶν (υ) προνομευσάντων ὑμᾶς, καὶ κληρονομία τοῖς ὑμᾶς κληρονομήσασιν.

Die illâ fidens erit homo in eo qui fecit eum: oculi autem ejus in Sanctum Israel intuebuntur: 7 *Et non erunt fidentes in aris, neque in operibus manuum suarum, quæ fecerunt digiti ipsorum: & non aspicient arbores, neque abominationes eorum.* 8 *Die illâ erunt civitates tuæ derelictæ, sicut dereliquerunt (d) Amorrhei, & Euæi à facie filiorum Israel: & erunt desertæ,* 9 *Quia dereliquisti Deum Salvatorem tuum, & Domini adjutoris tui non es recordata. Ideò plantabis plantationem infidelem, & semen infidele:* 10 *Quâcunque die plantaveris, errabis. Manè autem si seminaveris; florebit in messem, quâcunque die hæreditaveris: & tanquàm pater hominis, hæreditatem distribues filiis tuis.* 11 *Væ multitudo gentium plurimarum: tanquã mare fluctuans, sic turbabimini: & dorsum gentium multarum, tanquàm aqua, sonabit:* 12 *Tanquàm aqua multa, gentes multæ, quasi aqua multa per vim impulsa. Et (e) exterminabit eum, & longè eum persequetur, tanquàm pulverem paleæ (f) ventilantium coram vento, & quasi pulverem rotæ (g) tempestas impellens.* 13 *Ad vesperam (h) & erit luctus, priusquàm manè: & non erit. Hæc est pars eorum, qui deprædati sunt vos, & hæreditas iis qui hæreditârunt vos.* 14

MS.A. (θ) ἄνθρωπος (ι) τὰ ἄλση αὐτῶν, οὐδὲ τὰ (κ) ἐγκατέλειπον (λ) ἐγκατέλειπες (μ) Τῇ δὲ ἡμέρᾳ (ν) φυτεύσῃς, (ξ) ὥσπερ πατὴρ (ο) υἱοῖς. Οὐαὶ πλῆθος (π) οὕτως (ρ) καταφερομένου. (σ) χνοῦν (τ) ἔσται πένθος, (υ) ὑμᾶς προνομευσάντων, καὶ κληρονομία τῶν ὑμᾶς κληρονομησάντων.

ΚΕΦ. ιη΄.

1 Οὐαὶ γῆς πλοίων πτέρυγες, ἐπέκεινα 2 ποταμῶν Αἰθιοπίας· Ὁ ἀποστέλλων ἐν θαλάσσῃ ὅμηρα, καὶ ἐπιστολὰς βιβλίνας ἐπάνω τοῦ ὕδατος· πορεύσονται γὰρ ἄγγελοι κοῦφοι πρὸς ἔθνος μετέωρον, καὶ ξένον λαὸν καὶ χαλεπόν. (α) τίς αὐτοῦ ἐπέκεινα; ἔθνος ἀνέλπιστον καὶ (β) καταπεπατημένον. νῦν οἱ 3 ποταμοὶ τῆς γῆς πάντες, Ὡς χώρα κατοικουμένη κατοικηθήσεται ἡ χώρα αὐτῶν· ὡσεὶ σημεῖον ἀπὸ ὄρους ἀρθῇ, ὡς σάλπιγγος φωνὴ ἀκουστὸν ἔσται. 4 (γ) Διότι οὕτως (δ) εἶπε κύριός μοι, Ἀσφάλεια ἔσται ἐν τῇ ἐμῇ πόλει, ὡς φῶς καύματος μεσημβρίας, καὶ ὡς νεφέλη δρόσου ἡμέρας ἀμητοῦ ἔσται 5 Πρὸ τοῦ θερισμοῦ, ὅταν συντελεσθῇ ἄνθος, καὶ ὄμφαξ (ε) ἐξανθήσῃ ἄνθος ὀμφακίζουσα· καὶ ἀφελεῖ τὰ βοτρύδια τὰ μικρὰ τοῖς δρεπάνοις, καὶ τὰς κληματίδας ἀφελεῖ, καὶ (ζ) ἀποκόψει,

CAP. XVIII.

VÆ terræ (a) navium alis, trans flumina Æthiopiæ: 1 *(b) Qui mittit in mare obsides, & epistolas biblinas super aquam. Ibunt enim nuntii leves ad gentem excelsam, & peregrinum populum, & pessimum. (c) Quis ultra illum? Gens absque spe, & conculcata. Nunc fluvii terræ omnes,* 2 *Tanquàm regio habitata, habitabitur regio eorum. Quasi signum de monte levabitur: quasi tubæ vox, audibile erit.* 3 *Quia sic dixit Dominus mihi; Securitas erit in civitate mea, sicut lux æstûs in meridie, & sicut nubes roris in die messis erit* 4 *Antè messem; quando consummatus fuerit flos, & uva immatura effloruerit, immaturè florem germinans; & auferet racemulos parvos falcibus, & sarmenta auferet, & abscidet:* 5

MS.A. (α) τί (β) κατεπατημένον νῦν. Νῦν (γ) Ὅτι (δ) εἶπέν μοι κύριος, (ε) ἀνθήσῃ (ζ) κατακόψει,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

בעדנא ההיא יסתמיך אנשא לפולחן עבדיה ועינוהי למימר קדישא דישראל יסכרון׃ 7
ולא יסתמיך על אגוריא עובד ידוהי ודאתקנא אצבעתיה לא יתקים ואשריא וחניסניא׃ 8
בעדנא ההיא יהוין קרוי תוקפיהון כקרך דחריב ואתחסר די אשתבק מן קדם בני 9
ישראל ותהי לצדו׃ ארי שבקת אלהא דפורקניך ודחלת תקיפא די מימריה בסעדיך 10
לא אדכרת בדיל דארת נציבא נצבא בחירא ועובדין מקלקלין אסגית׃ באתר 11
דאתקדשתון למהוי עם תמן קלקלתון עובדיכון ואף כד עלתון לארע בית שכנתי תמן
הוה חזי לכון למפלח שבקתון פולחני ופלחתון לטעותא ארחיקתון תיובתא עד דמטא
יום תברכון בכן הוה כיבכון למפחת נפש׃ וי המון עממין סגיאין די כמהמי ימא המן 12
ואתרגושת מלכון דכאתרגושת מיין תקיפין מתרגשין׃ מלכון דכאתרגושת מיין סגיאין 13
מתרגשין ויזוף ביה ויערוק מרחיק ויתרדף כמוץ טוריא קדם רוחא וכגלגלא קדם
עלעולא׃ לעדן רמשא והא כדלא הוה עד דלא צפרא והא כדליתוהי דין חולק 14
לאנסנא ועדב לבוזנא׃

יח

וי ארעא דאתן לה בספינן מארע רחיקא וקלעיהון פריסן כנשרא דטאס בכנפוהי 1
דמעבר לנהרי הודו׃ דמשלח בימא אזגדין ובדגונין על אפי מיא אזילו אזגדין קלילין 2
לות עמא אניסא ובזיזא לות עמא דתקיף מבכן ולהלא עמא אניסא ובזיזא דבזו עממיא
ארעיה׃ כל דיתבין בתבל ודשרן בארעא כמזקף אתא על טוריא תחזון אתא וכמתקע 3
שופרא תשמעון פורקן׃ ארי כדנן אמר יי לי אניח לעמי ישראל ואשקיט להון ואתרעי 4
ממדור קודשי לאוטבא להון ברכן ונחמן איתי להון בפריע כשחין פצח על שמש כענן
טל בשחין חצד׃ ארי עד לא ימטי זמן חצדא אלנא לאפרחא ובסרא מניה סמדר ויקטול 5
שלטוני עממיא בחרבא וית תקיפיהון יעדי ויעבר׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

In tempore illo innitetur homo cultui factoris sui, & oculi ejus in verbo 7
sancti Israel sperabunt. Et non innitetur altaribus operi manuum suarum, 8
& quæ paraverant digiti ejus, non stabunt luci neque delubra. In tempo- 9
re illo erunt civitates fortitudinis eorum, sicut urbs quæ deserta est, & redacta in acervos lapidum, quæ derelicta est à facie filiorum Israel: & erit
in desolationem. Quia dereliquisti Deum salvatorem tuum: & terribilis 10
& fortis, cujus Verbum est in adjutorium tuum, non es recordata; quia
plantata es plantatione electa, & opera corrupta multiplicâsti. Postquam 11
sanctificati estis ut essetis populus, ibi corrupistis opera vestra: & insuper postquam ingressi estis in terram domus majestatis meæ, ubi decebat servire mihi, reliquistis obsequium meum; & servistis idolis, & detestati estis pœnitentiam. Antequam perveniret dies interitus vestri, tunc fuit
dolor vester in exhalationem animæ. Væ turbæ populorum multorum, 12
qui, sicut sonat mare, sonabunt: & tumultus regnorum, sicut sonitus aquarum fortium, sonabunt. Regna quæ quasi sonitus aquarum *multarum* tu- 13
multuabuntur, *increpabit* ea, & fugient procul, & rapientur sicut stipula
montium ante ventum; & sicut rota coram turbine. In tempore vesperæ, 14
& ecce quasi non sit; antequam sit manè, *& ecce* quasi non sit. Hæc est pars vim facientium nobis, & sors diripientium nos.

CAP. XVIII.

VÆ terræ ad quam veniunt in navibus de terra longinqua, & vela eorum 1
extensa sunt, quasi aquila quæ volat alis suis, quæ est trans flumina Æthi-
opiæ. Quæ mittit in mari nuncios, & in trieribus super faciem aquarum: 2
Ite nuncii veloces ad populum vim patientem & direptum, ad populum, qui jam olim ac deinceps potens fuit, populum oppressum & direptum;
cujus terram diripuerunt populi. Omnes habitatores orbis, & qui moran- 3
tur in terra cùm elevatum fuerit signum super montes, videbitis signum;
& cùm clanxerit tuba, audietis redemptionem. Quia hæc dicit Dominus 4
mihi, Requiescere faciam populum meum Israel: quiescere faciam eos, & complacebit mihi in habitaculo sancto meo, ut benefaciam eis: benedictiones & consolationes adducam eis citò, sicut calor æstuans Sole, sicut
nubes roris in calore messis. Quoniam antequam perveniat tempus messis 5
ut arbor floreat, & uva acerba ex ea erumpat in florem; & occidet principes populorum gladio, & robustos eorum auferet & transferet.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܬܬܟܠ ܐܢܫ ܥܠ ܒܪܘܝܗ. ܘܥܝܢܘܗܝ ܢܚܘܪܢ ܒܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. 7
* ܘܠܐ ܢܬܬܟܠ ܥܠ ܡܕܒܚܐ ܕܥܒܕ ܐܝܕܘܗܝ ܘܥܒܕ ܨܒܥܬܗ. ܘܠܐ ܢܚܙܐ ܦܬܟܪܐ ܘܨܠܡܐ. 8
* ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܗܘܘܢ ܩܘܪܝܐ ܕܥܘܫܢܗ. ܐܝܟ ܓܘܒܐ ܕܚܪܫܐ. ܕܐܫܬܒܩܘ ܡܢ 9
ܩܕܡ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܬܗܘܐ ܠܚܘܒܠܐ. * ܡܛܠ ܕܛܥܝܬܝ ܠܐܠܗܐ ܦܪܘܩܟܝ. ܘܠܬܩܝܦܐ 10
ܡܥܕܪܢܟܝ. ܠܐ ܐܬܕܟܪܬܝ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܬܢܨܒܝܢ ܢܨܒܬܐ ܪܚܝܡܬܐ. ܘܬܙܪܥܝܢ ܫܒܫܬܐ ܢܘܟܪܝܬܐ.
* ܒܝܘܡܐ ܕܬܢܨܒܝܢܗ. ܢܦܘܩ ܗܒܒܗ. ܘܒܨܦܪܐ ܙܪܥܟܝ ܬܦܪܥܝܢ. ܐܝܟ ܢܝܪܐ ܕܩܛܦܐ 11
ܒܝܘܡܐ ܙܥܘܪܐ. ܘܐܝܟ ܟܐܒܐ ܕܐܢܫܐ. * ܘܝ ܠܚܝܠܐ ܕܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܕܐܝܟ ܩܠܐ ܕܝܡܡܐ ܢܦܩ ܩܠܗܘܢ. ܘܐܝܟ 12
ܩܠܐ ܕܥܡܡܐ: ܘܪܘܓܫܐ ܕܥܡܡܐ. ܐܝܟ ܩܠܐ ܕܡܝܐ ܣܓܝܐܐ. * ܢܟܐܐ ܒܗ ܘܢܥܪܘܩ 13
ܠܪܘܚܩܐ. ܘܢܪܗܛ ܐܝܟ ܐܒܩܐ ܕܛܘܪܐ ܩܕܡ ܪܘܚܐ. ܘܐܝܟ ܚܠܐ ܡܢ ܩܕܡ ܥܠܥܠܐ ܒܥܕܢ
ܪܡܫܐ. * ܘܗܐ ܚܛܘܦܝܐ ܥܕ ܠܐ ܢܗܘܐ ܨܦܪܐ. ܘܠܐ ܢܩܘܐ. ܗܢܘ ܦܠܓܗܘܢ ܕܕܝܫܝܢ ܠܢ. ܘܡܢܬܐ 14
ܕܒܙܘܙܝܢ ܠܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܚ *

* ܘܝ ܠܐܪܥܐ ܕܛܠܠܐ ܕܓܦܐ. ܕܡܢ ܥܒܪܐ ܕܢܗܪܘܬܐ ܕܟܘܫ. ܘܡܫܕܪ ܒܝܡܐ ܐܝܙܓܕܐ. 1 2
ܘܒܡܐܢܐ ܕܓܡܐ ܥܠ ܐܦܝ ܡܝܐ. ܐܙܠܘ ܐܝܙܓܕܐ ܩܠܝܠܐ ܠܘܬ ܥܡܐ ܡܥܪܩܐ
ܘܡܚܪܡܐ. ܠܘܬ ܥܡܐ ܕܚܝܠܬܢܐ ܕܡܢܗ ܘܠܗܠ. ܥܡܐ ܕܡܬܕܝܫ ܘܡܬܒܙܙ. ܕܒܙܘ ܢܗܪܘܬܐ
ܐܪܥܗ. * ܟܠܟܘܢ ܥܡܘܪܝ ܬܐܒܝܠ ܘܝܬܒܝ ܐܪܥܐ. ܡܐ ܕܢܬܬܪܝܡ ܐܬܐ ܒܛܘܪܐ ܬܚܙܘܢ. 3
ܘܡܐ ܕܢܩܪܐ ܫܝܦܘܪܐ ܬܫܡܥܘܢ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܐܫܠܐ ܘܐܚܙܐ ܒܡܛܝܒܘܬܝ. 4
ܐܝܟ ܚܘܡܐ ܕܫܚܝܢ ܕܠܐ ܢܘܗܪܐ. ܘܐܝܟ ܥܢܢܐ ܕܛܠܐ ܒܝܘܡܐ ܕܚܨܕܐ. * ܡܛܠ ܕܩܕܡ ܚܨܕܐ 5
ܫܡܠܝ. ܦܪܥ ܦܩܥܐ. ܘܗܘܐ ܒܘܣܪܐ. ܢܨܝܨ. ܘܢܩܛܘܦ ܙܡܘܪܬܐ ܒܡܓܙܬܐ.
ܘܫܒܫܬܐ ܢܥܒܪ ܘܢܦܣܘܩ.

Eodem illo die confidet homo conditori ſuo, & oculi ejus reſpicient ad Sanctum Iſraelis: 7 Non autem confidet aris quas fecerunt manus ſuæ, & digiti ſui compoſuerunt, neque reſpiciet ad idola & numina. 8 Tempore illo civitates munitionis ejus evadent tanquam ciſterna Heres quæ derelicta eſſe fertur à conſpectu filiorum Iſraelis: tandem in corruptionem redigêris. 9 Quandoquidem oblita es Dei Salvatoris tui, & Potentiſſimi roboratoris tui haud meminiſti; propterea plantam decoram plantabis, ſeres eam palmitibus alienis: 10 Die quo plantabis eam, prodibit flos ejus, manè ſemen tuum germinare facies; velut jugum vindemiæ in die brevi, & ſicut dolor hominis. 11 Heu, exercitus populorum multorum quorum ſtrepitus procedit quaſi ſtrepitus marium, & tumultus gentium tanquam fremitus aquarum multarum. 12 Increpet eum, & fugiat procul, curràtque ſicut pulviſculus montium coram vento, & ut feſtuca coram turbine tempore veſpertino, 13 Et ecce abreptio (*i. rapiatur*) antequam ſit aurora, nec diu maneat. Talis eſto portio conculcantis nos, & pars diripientis nos. 14

CAP. XVIII.

VÆ terræ umbræ alarum, quæ eſt trans flumina Cus, 1 Mittenti legatos per mare, & in vaſis junceis ſuper faciem aquarum. Abierunt nuntii celeres ad populum intortum & evulſum: ad populum à quo robur longè diſſitum eſt, populum fœdum & conculcatum, cujus terram flumina diripuerunt. 2 Omnes habitatores orbis qui in terra commoramini, cùm portaverint montes vexillũ, videbitis, & cùm ſonuerit buccina, audietis. 3 Sic enim ait mihi Dñs, Silentium indicito, & conſidera præparationẽ meam (*i. opus ad quod ſum paratus*) ſimilem ardori ferventi ſecus flumen, & ſimilem nubi roris in die meſſis. 4 Nam ante meſſẽ perfecit gemmam, & florem ablactavit; & cùm aderint frondes, luxuriantes falce ſecabit; & palmites tranſiens decutiet. 5

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* في ذلك اليوم يصير الانسان متوكلا على خالقه * وعيناه لقدوس اسرايل تنظران * ولا يصيرون 7 8
متوكلين على المذابح * ولا على اعمال ايديهم التي صنعتها اصابعهم * لكن يصيرون متوكلين
على الرب قدوس اسرايل * ولا ينظرون الى اصنامهم ولا رذايلهم * في ذلك اليوم تصير المدن 9
المتروكة مثل التي تركها الاموراييون والموابيون من وجه بني اسرايل * وتصير خرابا * من 10
اجل انك تركت الاله مخلصك * ولم تذكري الرب معينك * لاجل هذا تغرسين غرسا غير مومن
وزرعا كافرا * في اليوم الذي تغرسي فيه تضلين * اذ زرعت بالغداة يزهر للحصاد في اي 11
يوم ترثيه مثل اب انسان يورث لبنيه * ويل كثرة امم كثيرين مثل بحر مموج * لان هكذا 12
تساقون * وصهيل امم كثيرين مثل ماء كثير * مثل ماء يدوي * امم كثيرين مثل عسف ماء 13
كثير مفسد * يقصيه ويبعدا يطرده مثل تراب التبن المغربل امام الريح * ومثل غبار البكرة
يحمله العاصف عند المساء * ويكون حزن قبل الغداة * ولا يكون بعد * هذا نصيب الذين 14
نهبوكم * وميراث الذين ورثوكم *

* الفصل الثامن عشر * * الاصحاح التاسع *

* نبوة اشعياء في ملك الحبشة الذي استعان به بنو اسرايل وخرج ليعينهم *

ويل اجنحة سفن الارض الى ابعد انهار الحبشة * المرسل في البحر رهاين ورسايل مكتوبة على 1 2
وجه الماء * لانهم مخبرون خفيفون يمضون الى امة عالية وشعب غريب وردي من ابعد منك *
امة غير مرجوة ومداسة * الان جميع انهار هذه الارض مثل كورة مسكونة تسكن * كورتهم 3
مثل علامة من جبل ترفع * مثل صوت بوق يكون مسموعا * لان هكذا قال لي الرب * استيناف 4
يكون في مدينتي * ومثل ضوء حر وسط النهار * ومثل سحابة نداء يوم القطاف * تكون 5
قبل الحصاد * عند ما ينتهي زهر وحصرمه تزهر زهر حصرم * فيقص العناقيد الصغار
بالمناجل * ويقص الاغصان ويقطعها *

* *In illo die collocabit homo fiduciam ſuam in creatore ſuo, & oculi ejus Sanctum Iſraelis intuebuntur:* 7 *Non autem collocabunt ſpem ſuam in altaribus, neq; in operibus manuum ſuarum, quæ fecerunt digiti eorum; ſed collocabunt ſpem ſuam in Domino ſancto Iſraelis, & non ſpectabunt idola ſua nec abominationes ſuas.* 8 *In illo die fient urbes quæ derelictæ ſunt, velut illæ quas dereliquerunt Amoræi & Moabitæ à conſpectu filiorum Iſraelis, fient inquam dirutæ.* 9 *Eò quòd dereliqueris Deum ſervatorem tuum, nec memineris Domini adjutoris tui: idcirco plantabis plantas infideles & ſemen impium.* 10 *Quocunque die plantaveris, errabis: cùm ſeminaveris, manè floreſcet ad meſſem, quocunq; die hæreditate poſſideris illud, ut pater aliquis hæreditatem relinquens filiis ſuis.* 11 *Calamitas multitudinis gentium multarum, ceu mare procelloſum erit: etenim hoc pacto abducemini: & vociferatio multarum gentium ſimilis erit: aquæ frementi, ſimilis aquæ multæ:* 12 *Multæ gentes ut pernicioſa multarum aquarum inundatio. Amovebit eam, & procul expellet eam ut pulviſculum paleæ coram vento cribratæ, & quaſi pulverem rotæ turbine abreptum ſub tempus veſpertinum.* 13 *Erit autem triſtitia ante matutinum, & non erit deinceps. Hæc eſt ſors eorum qui diripuerunt vos, & hæreditas eorum qui facti ſunt hæredes veſtri.* 14

Textus nonus.

CAP. XVIII.

Prophetia Eſaiæ de rege Æthiopiæ, qui opem ſuam implorantibus Iſraelis, egreſſus eſt ut opem ferret eis.

V*Æ alis navium terræ ad remotiſſima Æthiopiæ flumina:* 1 *Mittenti arrhas per mare, & ſuper aquæ ſuperficiem epiſtolas ſcriptas. Quia ſunt nuntii veloces, eant ad gentem ſublimem, populum extraneum & malignum, à te remotiſſimum, gentem inſperandam & conculcatam.* 2 *In ſumma, omnia hujus terræ flumina ut regio habitata habitantur, regio iſtorũ ſimilis eſt vexillo quod attollitur è monte, ſimilis ſono buccinæ qui auditur.* 3 *Nam ita mihi dixit Dominus, Securitas erit in urbe mea: & perinde ac lux caloris in ipſo meridie, & perinde ac nubes roris die vindemiæ,* 4 *Quæ accidit ante meſſem, inſtante jam tempore floris & omphacii producentis florem in uvas agreſtes coaleſcentem; parvos botros falcibus amputabit, & ſecabit exſcindetque ramos,* 5

ישעיה : יט

æſtivabit & , terræ *animali* & ,montium *volucri* ſimul Relinquentur
6 יֵעָזְבוּ יַחְדָּו לְעֵיט הָרִים וּלְבֶהֱמַת הָאָרֶץ וְקָץ
tempore In .hyemabit ea ſuper terræ beſtia omnis & ,*volucris* ea ſuper
7 עָלָיו הָעַיִט וְכָל־בֶּהֱמַת הָאָרֶץ עָלָיו תֶּחֱרָף׃ בָּעֵת
,depilati & tracti populi exercituum Domino munus deferetur illo
הַהִיא יוּבַל־שַׁי לַיהוָה צְבָאוֹת עַם מְמֻשָּׁךְ וּמוֹרָט
,*conculcationis* & ,*lineæ lineæ* gente ,ultrà & ,*ipſo ab* terribili populo à &
וּמֵעַם נוֹרָא מִן־הוּא וָהָלְאָה גּוֹי קַו־קָו וּמְבוּסָה
Domini nominis locum ad ,*ejus* terram flumina diripuerunt cujus
אֲשֶׁר בָּזְאוּ נְהָרִים אַרְצוֹ אֶל־מְקוֹם שֵׁם־יְהוָה
.Sijon montem ,exercituum
צְבָאוֹת הַר־צִיּוֹן׃

CAP. XIX. יט

,levem nubem ſuper equitans Dominus Ecce .Ægypti Onus
1 מַשָּׂא מִצְרָיִם הִנֵּה יְהוָה רֹכֵב עַל־עָב קַל
,ejus *faciebus* à Ægypti *vana* ſe movebunt & ,Ægyptum ingredietur &
וּבָא מִצְרַיִם וְנָעוּ אֱלִילֵי מִצְרַיִם מִפָּנָיו
Ægyptum confundam Et .ejus *interiori* in liquefiet Ægypti cor &
2 וּלְבַב מִצְרַיִם יִמַּס בְּקִרְבּוֹ׃ וְסִכְסַכְתִּי מִצְרַיִם
,ſuum *ſocium* in vir & ,ſuum fratrem in vir pugnabunt & ,Ægypto cum
בְּמִצְרַיִם וְנִלְחֲמוּ אִישׁ־בְּאָחִיו וְאִישׁ בְּרֵעֵהוּ
ſpiritus evacuabitur Et .regnum in regnum ,civitatem in civitas
3 עִיר בְּעִיר מַמְלָכָה בְּמַמְלָכָה׃ וְנָבְקָה רוּחַ־
ad quærent & ,*deglutiam* ejus conſilium & ,ejus *intimo* in Ægypti
מִצְרַיִם בְּקִרְבּוֹ וַעֲצָתוֹ אֲבַלֵּעַ וְדָרְשׁוּ אֶל־
.*ſciolos* ad & ,pythones ad & ,divinos *ad &* ,*vana*
הָאֱלִילִים וְאֶל־הָאִטִּים וְאֶל־הָאֹבוֹת וְאֶל־הַיִּדְּעֹנִים׃
fortis rex & ,*duri* dominorum manu in Ægyptum *concludam* Et
4 וְסִכַּרְתִּי אֶת־מִצְרַיִם בְּיַד אֲדֹנִים קָשֶׁה וּמֶלֶךְ עַז
deficient Et .exercituum Dominus dominator dixit ,*eos in* dominabitur
5 יִמְשָׁל־בָּם נְאֻם הָאָדוֹן יְהוָה צְבָאוֹת׃ וְנִשְּׁתוּ־
facient elongare Et .areſcet & ,exſiccabitur fluvius & ,mari de aquæ
6 מַיִם מֵהַיָּם וְנָהָר יֶחֱרַב וְיָבֵשׁ׃ וְהֶאֱזְנִיחוּ
,calamus :*munitionis* *rivi* ſiccabuntur & ,attenuabuntur ,flumina
נְהָרוֹת דָּלְלוּ וְחָרְבוּ יְאֹרֵי מָצוֹר קָנֶה
omnis & ,*rivi os* juxta rivum juxta Gramineta .excidentur *carectum* &
7 וָסוּף קָמֵלוּ׃ עָרוֹת עַל־יְאוֹר עַל־פִּי יְאוֹר וְכֹל
mœrebunt Et .*ipſum* non & ,propulſabitur ,areſcet rivi ſementis
8 מִזְרַע יְאוֹר יִיבַשׁ נִדַּף וְאֵינֶנּוּ׃ וְאָנוּ
expandẽtes &,hamum rivum in projicientes omnes lugebunt & ,piſcatores
הַדַּיָּגִים וְאָבְלוּ כָּל־מַשְׁלִיכֵי בַיְאוֹר חַכָּה וּפֹרְשֵׂי
afficientur pudore Et .infirmabuntur ,aquarum *faciebus* in rete
9 מִכְמֹרֶת עַל־פְּנֵי־מַיִם אֻמְלָלוּ׃ וּבֹשׁוּ
erunt Et .retia *perforata* texentes & ,pectinata lina operantes
10 עֹבְדֵי פִשְׁתִּים שְׂרִיקוֹת וְאֹרְגִים חוֹרִי׃ וְהָיוּ
,*animæ* ſtagnorum clauſuram *facientes omnes* ,contrita ejus retia
שָׁתֹתֶיהָ מְדֻכָּאִים כָּל־עֹשֵׂי שֶׂכֶר אַגְמֵי־נָפֶשׁ׃
,Parhoh conſiliarii ſapientes ,Sohan principes ſtulti Veruntamen
11 אַךְ־אֱוִלִים שָׂרֵי צֹעַן חַכְמֵי יֹעֲצֵי פַרְעֹה
Filius :Parhoh *ad* dicetis quomodo :infatuatum eſt conſilium
עֵצָה נִבְעָרָה אֵיךְ תֹּאמְרוּ אֶל־פַּרְעֹה בֶּן־
?tui ſapientes nunc *ipſi* Ubi ?*antiquitatis* regum filius ,ego ſapientum
12 חֲכָמִים אֲנִי בֶּן־מַלְכֵי־קֶדֶם׃ אַיָּם אֵפוֹא חֲכָמֶיךָ
exercituum Dominus *conſuluerit* quid *ſciant* & ,tibi nunc *indicent* &
וְיַגִּידוּ נָא לְךָ וְיֵדְעוּ מַה־יָּעַץ יְהוָה צְבָאוֹת
.Ægyptum ſuper
עַל־מִצְרָיִם׃

Verſio VULG. LAT.

6 Et relinquentur ſimul avibus montiũ,& beſtiis terræ: & æſtate perpetuâ erunt ſuper eum volucres, & omnes beſtiæ terræ ſuper illum hyemabunt. 7 In tempore illo, deferetur munus Domino exercituũ à populo divulſo & dilacerato; à populo terribili, poſt quem non fuit alius; à gente expectante, expectante & conculcatâ, cujus diripuerunt flumina terram ejus; ad locũ nominis Domini exercituum, montem Sion.

CAP. XIX.

1 ONus Ægypti. Ecce Domin⁹ aſcendet ſuper nubem levem, & ingredietur Ægyptum, & commovebũtur ſimulachra Ægypti à facie ejus,& cor Ægypti tabeſcet in medio ejus. 2 Et concurrere faciam Ægyptios adverſùs Ægyptios: & pugnabit vir contra fratrem ſuum, & vir contra amicũ ſuum, civitas adverſùs civitatem, regnum adverſùs regnũ. 3 Et dirumpetur ſpiritus Ægypti in viſceribus ejus, & conſilium ejus præcipitabo: & interrogabunt ſimulachra ſua, & divinos ſuos, & pythones, & ariolos. 4 Et tradam Ægyptũ in manu dominorum crudelium, & rex fortis dominabitur eorum, ait Domin⁹ Deus exercituũ. 5 Et areſcet aqua de mari; & fluvius deſolabitur, atque ſiccabitur. 6 Et deficient flumina: attenuabuntur, & ſiccabuntur rivi aggerum. Calamus & juncus marceſcet: 7 Nudabitur alve⁹ rivi à fonte ſuo, & omnis ſementis irrigua ſiccabitur, areſcet, & non erit. 8 Et mœrebunt piſcatores, & lugebunt omnes mittentes in flumen hamum, & expandentes rete ſuper faciẽ aquarũ emarceſcent. 9 Confundentur qui operabantur linum, pectentes et texentes ſubtilia. 10 Et erunt irrigua ej⁹ flaccentia: omnes qui faciebant lacunas ad capiendos piſces. 11 Stulti principes Taneos, ſapientes conſiliarii Pharaonis, dederunt conſilium inſipiens. Quomodò dicetis Pharaoni; Filius ſapientium ego, 12 filius regum antiquorum? Ubi nunc ſunt ſapientes tui? annũtient tibi, & indicent quid cogitaverit Dominus exercituum ſuper Ægyptum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

6 Καὶ καταλείψει ἅμα τοῖς πετεινοῖς τοῦ οὐρανοῦ, καὶ τοῖς θηρίοις τῆς γῆς· καὶ συναχθήσεται ἐπ' αὐτοὺς τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ πάντα τὰ θηρία τῆς γῆς ἐπ' αὐτὸν ἥξει. 7 Ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ ἀνενεχθήσεται δῶρα κυρίῳ Σαβαὼθ ἐκ λαοῦ τεθλιμμένου καὶ τετιλμένου, καὶ ἀπὸ λαοῦ μεγάλου ἀπὸ τοῦ νῦν, καὶ εἰς τὸν αἰῶνα χρόνον· ἔθνος ἐλπίζον καὶ καταπεπατημένον, ὅ ἐστιν ἐν μέρει (η) ποταμοῦ τῆς χώρας αὐτοῦ, εἰς τὸν τόπον οὗ τὸ ὄνομα κυρίου Σαβαὼθ, ὄρος Σιών.

MS.A. (η) τοῦ ποταμοῦ

6 Et relinquet ſimul volatilibus cæli, & beſtiis terræ. Et congregabuntur ſuper eos volatilia cæli: & omnes beſtiæ terræ ſuper eum venient. 7 In tempore illo afferentur munera Domino Sabaoth de populo tribulato, & avulſo, & à populo magno ex hoc nunc, & uſque in æternum tempus: Gens ſperans, & conculcata, quæ eſt in parte fluvii regionis ejus, in locum, ubi nomen Domini Sabaoth, montem Sion.*

ΚΕΦ. ιθʹ.

ὉΡΑΣΙΣ ΑἸΓΥΠΤΟΥ.

1 Ἰδοὺ κύριος κάθηται ἐπὶ νεφέλης κούφης, καὶ ἥξει εἰς Αἴγυπτον, καὶ σεισθήσεται τὰ χειροποίητα Αἰγύπτου ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ. καὶ (α) ἡ καρδία αὐτῶν ἡττηθήσεται ἐν αὐτοῖς. 2 Καὶ ἐπεγερθήσονται Αἰγύπτιοι ἐπ' Αἰγυπτίους, καὶ πολεμήσει ἄνθρωπος τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, καὶ ἄνθρωπος τὸν πλησίον αὐτοῦ, (β) πόλις ἐπὶ πόλιν, καὶ νόμος ἐπὶ νόμον. 3 Καὶ ταραχθήσεται τὸ πνεῦμα τῶν Αἰγυπτίων ἐν αὐτοῖς, καὶ τὴν βουλὴν αὐτῶν διασκεδάσω, καὶ ἐπερωτήσουσι τοὺς θεοὺς αὐτῶν, καὶ τὰ ἀγάλματα αὐτῶν, καὶ τοὺς ἐκ τῆς γῆς φωνοῦντας, καὶ τοὺς (γ) ἐγγαστριμύθους. 4 Καὶ παραδώσω τὴν Αἴγυπτον εἰς χεῖρας ἀνθρώπων, κυρίων σκληρῶν, καὶ βασιλεῖς σκληροὶ κυριεύσουσιν αὐτῶν. τάδε λέγει κύριος Σαβαώθ. 5 Καὶ πίονται οἱ Αἰγύπτιοι ὕδωρ τὸ παρὰ θάλασσαν, 6 ὁ δὲ ποταμὸς ἐκλείψει, καὶ ξηρανθήσεται. Καὶ ἐκλείψουσιν οἱ ποταμοὶ, καὶ αἱ (ʺ) διώρυχες τοῦ ποταμοῦ, καὶ ξηρανθήσεται πᾶσα συναγωγὴ ὕδατος, καὶ ἐν παντὶ ἕλει καλάμου καὶ παπύρου, 7 Καὶ τὸ ἄχι τὸ χλωρὸν πᾶν τὸ κύκλῳ τοῦ ποταμοῦ, καὶ πᾶν τὸ σπειρόμενον διὰ τοῦ ποταμοῦ ξηρανθήσεται ἀνεμόφθορον. 8 Καὶ στενάξουσιν οἱ ἁλιεῖς, καὶ στενάξουσι πάντες οἱ βάλλοντες ἄγκιστρον εἰς τὸν ποταμὸν, καὶ οἱ βάλλοντες σαγήνας, καὶ οἱ ἀμφιβολεῖς πενθήσουσι. 9 Καὶ αἰσχύνη λήψεται τοὺς ἐργαζομένους τὸ λίνον τὸ σχιστὸν, καὶ τοὺς ἐργαζομένους τὴν βύσσον. καὶ ἔσονται οἱ (δ) ἐργαζόμενοι αὐτὰ ἐν ὀδύνῃ, 10 Καὶ πάντες οἱ (ε) ποιοῦντες τὸν ζύθον λυπηθήσονται, καὶ τὰς ψυχὰς πονέσουσι. 11 Καὶ μωροὶ ἔσονται οἱ ἄρχοντες Τάνεως, οἱ σοφοὶ σύμβουλοι τοῦ βασιλέως, ἡ βουλὴ αὐτῶν μωρανθήσεται. πῶς ἐρεῖτε τῷ βασιλεῖ, Υἱοὶ συνετῶν ἡμεῖς, υἱοὶ βασιλέων τῶν ἐξ ἀρχῆς; 12 Ποῦ εἰσι νῦν οἱ σοφοί σου, καὶ ἀναγγειλάτωσάν σοι, καὶ εἰπάτωσαν, Τί βεβούλευται κύριος Σαβαὼθ ἐπ' Αἴγυπτον;

CAP. XIX.

VISIO ÆGYPTI.

1 *Ecce (a) Dominus ſedet ſuper nubem levem, & veniet in Ægyptum, & concutientur manufacta Ægypti à facie ejus: & cor eorum deficiet in ipſis:* 2 *Et (b) incitabuntur Ægyptii ſuper Ægyptios: & oppugnabit homo fratrem ſuum, & homo proximum ſuum, civitas ſuper civitatem, & lex ſuper legem.* 3 *Et (c) turbabitur ſpiritus Ægyptiorum in ipſis: & conſilium eorum diſſipabo. Et interrogabunt deos ſuos, & ſimulachra ſua, & eos, qui de terra vocem edunt, & ventriloquos.* 4 *Et tradam Ægyptum in manus hominum, dominorum durorum: (d) & reges duri dominabuntur eorum. Hæc dicit Dominus Sabaoth.* 5 *Et (e) bibent Ægyptii aquam, quæ juxta mare: Fluvius autem deficiet, & areſcet:* 6 *Et deficient fluvii, & rivi fluvii: & areſcet omnis congregatio aquæ (f) etiam in omni palude calami, & papyri,* 7 *Et (g) Achi viride omne, quod in circuitu fluminis: & omne quod ſeminatur circa fluvium, areſcet à vento corruptum.* 8 *Et gement piſcatores, & gement omnes qui jaciunt hamum in fluvium: & qui jaciunt ſagenas, & qui retia; lugebunt.* 9 *Et confuſio capiet operantes linum fiſſile, & operantes byſſum: & erunt operantes ea in dolore:* 10 *Et omnes qui faciunt zythum, mœrebunt, & animis laborabunt.* 11 *Et ſtulti erunt principes Taneos, ſapientes conſiliarii reges: conſilium eorum infatuabitur. Quomodò dicetis regi, Filii ſapientum nos, filii regum, qui à principio?* 12 *Ubi ſunt nunc ſapientes tui? & annuntient tibi, & dicant, Quid deliberavit Dominus Sabaoth ſuper Ægyptum?*

MS.A. (α) αἱ καρδίαι αὐτῶν ἡττηθήσονται (β) ἐπεγερθήσεται πόλις (γ) ἐγγαστριμύθους, καὶ τοὺς γνώστας. Καὶ παραδώσω Αἴγυπτον (ʺ) διώρυγες (δ) διαλογιζόμενοι (ε) τὸν ζύθον ποιοῦντες

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

6 יִשְׁתַּבְקוּן כַּחֲדָא לְעוֹפָא דְטוּרַיָא וּלְבְעִירָא דְאַרְעָא בְּקִיטָא יְהֵי שָׁרֵי עֲלוֹהִי כָּל עוֹפָא
7 דִשְׁמַיָא וְכָל בְּעִירָא דְאַרְעָא עֲלוֹהִי יַעְבְּדוּן סִתְוָא׃ בְּעִדָּנָא הַהִיא יִתַּיְתֵי תִּקְרֻבְתָּא
לִקְדָם יְיָ צְבָאוֹת לְעַמָּא אֲנִיסָא וּבְזִיזָא וְלֵית עַמָּא דְיִתְקַף מִבְּכֵן וּלְהַלָּא עַמָּא
אֲנִיסָא וּבְזִיזָא דְבָזוּ עַמְמַיָא אַרְעֵיהּ לְאַתְרָא דְאִתְקְרֵי שְׁמָא דַייָ צְבָאוֹת דִשְׁכִנְתֵּיהּ
בְּטוּרָא דְצִיּוֹן׃

יט

1 מַטַל כָּס דִלְוָט לְאַשְׁקָאָה יַת מִצְרָאֵי הָא יְיָ מִתְגְלֵי בַעֲנָן יְקָרֵיהּ לְאִתְפְּרָעָא מִמִּצְרָיִם
2 וְיִתַּבְּרוּ טַעֲוָת מִצְרָאֵי מִן קֳדָמוֹהִי וְלִבָּא דְמִצְרָאֵי יִתְמְסֵי בִּמְעֵיהוֹן׃ וְאֶגְרֵי מִצְרָאֵי בְּמִצְרָאֵי
3 וְיַגִיחוּן קְרָב גְבַר בַּאֲחוּהִי וּגְבַר בְּחַבְרֵיהּ קְרִי בִקְרִי וּמַלְכוּ בְמַלְכוּ׃ וְתִתְמְסֵי רוּחָא
דְמִצְרָאֵי בִּמְעֵיהוֹן וְחַכִּימֵיהוֹן אֲסַלְעֵם וְיִתְבְּעוּן מִן טַעֲוָן וּמִן חָרָשִׁין וּמִבַּדִּין וּמִן זְכוּרוּ׃
4 וְאֶמְסַר יַת מִצְרָאֵי בְּיַד רִבּוֹן קְשֵׁי וּמֶלֶךְ תַּקִיף יִשְׁלוֹט בְּהוֹן אֲמַר רִבּוֹן עָלְמָא יְיָ צְבָאוֹת׃
5 6 וְיִצְדוּן מַיָא מִיַּמָּא וְנַהְרְהוֹן יֶחֱרוּב וְיִיבַשׁ׃ וְיִצְדוּן נַהֲרְוָתְהוֹן וְיִבְשׁוּן וְיֶחֶרְבוּן נַהֲרֵיהוֹן
7 עֲמִיקַיָא קְנֵי וְגוֹמֶא לָא יִסְקוּן׃ וְיִיבַשׁ רוּבֵּיהּ דְנַהֲרָא וִיהֵי בְּכֵיפֵיהּ וְכָל בֵּית מִזְרַע נַהֲרְהוֹן
8 יִיבַשׁ וְיֶחֱרַב וְלָא יִצְמַח׃ וְיִצְדוּן צַיָּדֵי נוּנַיָא וְיִתְאַבְּלוּן כָּל דַהֲווֹ רָמַן בְּנַהֲרָא חַכְּתָא וּפָרְסֵי
9 מְצָדִין עַל אַפֵּי מַיָא יִצְדוּן׃ וְיִבְהֲתוּן פָּלְחֵי כִתָּנָא דִסְרִיקִין וּמָחַן מִנֵיהּ מְצָדָן׃ וִיהֵי אֲתַר
10 11 בֵּית שָׁתֵי מְחָא כְּבִישִׁין אֲתַר דַהֲווֹ עָבְדִין סִכְרָא וְכָנְשִׁין מַיָא גְבַר לְנַפְשֵׁיהּ׃ בְּרַם אִטַּפְּשׁוּ
רַבְרְבֵי טָאנֵס חַכִּימַיָא דְמַלְכוֹהִי לְפַרְעֹה מְלַךְ דְטָעוּ אֵיכְדֵין תֵּימְרוּן לְפַרְעֹה בְּנֵי חַכִּימִין
12 אֲנַחְנָא וְאַתְּ בַּר מַלְכִין דְמִלְקַדְמִין׃ אָן אִנוּן חַכִּימָךְ וִיחַווּן כְּעַן לָךְ וְיִדְעוּן מַה מְלַךְ יְיָ
צְבָאוֹת עַל מִצְרָיִם׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Relinquentur ſimul avibus montium, & beſtiis terræ: & in vere erit habitans ſuper eos omnis avis cœli, & omnes beſtiæ terræ ſuper eos hyemabunt. 6
In tempore illo adducetur munus in conſpectu Domini exercituum à populo vim facienti & direpto, & à populo qui fortis erit ex tunc & deinceps; populo vim patienti, & direpto, cujus terram diripuerunt populi; ad *locum* in *quo* invocatum eſt nomen Domini exercituum, cujus majeſtas habitat in monte Sion. 7

CAP. XIX.

ONus calicis maledictionis ad propinandum Ægyptiis. Ecce Dominus revelabitur in nube gloriæ ſuæ, ut vindictam ſumat de Ægyptiis: & conterentur idola Ægyptiorum à facie ejus, & cor Ægyptiorum tabeſcet in viſceribus eorum. 1
Et concurrere faciam Ægyptios contra Ægyptios, & pugnabit vir contra fratrem ſuum, & vir contra ſocium ſuum: civitas contra civitatem, & regnum contra regnum. 2
Et tabeſcet ſpiritus Ægyptiorum in viſceribus eorum, & ſapientes eorum obſtupefaciam: & requirent ab idolis & à maleficis, & à divinis, & ab ariolis. 3
Et tradam Ægyptios in manu Domini duri, & rex fortis dominabitur eorum; dicit dominator ſeculi, Dñs exercituum. 4
Et deſertæ erunt aquæ maris; & flumen eorum areſcet & ſiccabitur. 5
Et deſolabuntur flumina eorum; ſiccabuntur & areſcent flumina eorum profunda; calamus et juncus non creſcent. 6
Et exiccabitur major pars fluminis; & quod fuerit in ripa ejus, et omnis locus ſementis fluminis eorum ſiccabitur, et areſcet, et non germinabit. 7
Et deſolabuntur piſcatores piſcium; et lugebunt omnes qui mittebant in flumen hamum; et expandentes *retia* ſuper faciem aquarum, deſolabuntur. 8
Et confundentur qui operabantur linum carminatum, et texentes ex eo retia. 9
Et erit locus *texentium texturam* conculcatus, et locus ubi faciebant lacunas, et congregabant aquas unuſquiſq; animæ ſuæ. 10
Veruntamen inſipientes facti ſunt principes Taneos, ſapientes qui dederunt Pharaoni conſilium deceptionis: quomodo dicitis Pharaoni: Filii ſapientum ſumus, et tu filius regum ab initio? 11
Ubi ſunt ſapientes tui ut annuncient nunc tibi, et ſciant quod conſilium inivit Dominus exercituum contra Ægyptum? 12

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

6 * ܘܢܫܬܒܩܘܢ ܐܟܚܕܐ ܠܦܪܚܬܐ ܕܛܘܪܐ. ܘܠܚܝܘܬܐ ܕܐܪܥܐ. ܘܢܬܟܢܫ ܥܠܘܗܝ ܦܪܚܬܐ. ܘܟܠܗ̇
ܚܝܘܬܐ ܕܐܪܥܐ ܬܬܪܓܙ ܥܠܘܗܝ. * ܒܗ ܒܙܒܢܐ ܗܘ. ܢܬܝܬܘܢ ܩܘܪܒܢܐ ܠܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. 7
ܥܡܐ ܡܬܚܫܠܐ ܘܡܬܡܪܛܐ. ܥܡܐ ܕܚܝܠܐ ܪܚܝܩ ܡܢܗ ܘܠܗܠ. ܥܡܐ ܕܡܫܬܘܣ ܘܕܝܫ. ܕܒܙܘ
ܢܗܪܘܬܐ ܐܪܥܗ. ܠܐܬܪܐ ܕܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܠܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ.

* ܦܘܠܓܗ̇ * ܝܛ * ܡܫܩܠܐ ܕܡܨܪܝܢ *

* ܗܐ ܡܪܝܐ ܪܟܝܒ ܥܠ ܥܢܢܐ ܩܠܝܠܬܐ. ܘܥܐܠ ܠܡܨܪܝܢ. ܘܢܙܘܥܘܢ ܦܬܟܪܐ ܕܡܨܪܝܢ 1
ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ. ܘܠܒܗ ܕܡܨܪܝܐ ܢܬܡܣܐ ܒܓܘܗ. * ܘܐܓܪܐ ܡܨܪܝܐ ܒܡܨܪܝܐ. ܘܢܬܟܬܫ 2
ܓܒܪܐ ܥܡ ܐܚܘܗܝ. ܘܓܒܪܐ ܥܡ ܚܒܪܗ. ܡܕܝܢܬܐ ܥܡ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܡܠܟܘܬܐ ܥܡ
ܡܠܟܘܬܐ. * ܘܬܬܦܫܩ ܪܘܚܗ ܕܡܨܪܝܐ ܒܓܘܗ. ܘܬܪܥܝܬܗ ܐܒܠܥ. ܘܢܫܐܠܘܢ ܡܢ 3
ܦܬܟܪܐ ܘܡܢ ܚܪܫܐ. ܘܡܢ ܐܒܐ ܘܡܢ ܝܕܘܥܐ. * ܘܐܫܠܡ ܠܡܨܪܝܐ ܒܐܝܕܐ ܕܡܪܐ 4
ܩܫܝܐ. ܘܡܠܟܐ ܥܫܝܢܐ ܢܫܬܠܛ ܒܗܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܘܢܚܪܒܘܢ ܡܝܐ ܡܢ 5
ܝܡܐ. ܘܢܗܪܐ ܢܚܪܒ ܘܢܝܒܫ. * ܘܢܚܪܒܘܢ ܢܗܪܘܬܐ ܘܢܬܡܟܟܘܢ. ܘܢܚܪܒܘܢ ܢܗܪܘܬܐ 6
ܪܒܪܒܬܐ. ܩܢܝܐ ܘܥܪܒܐ ܘܣܘܦܐ ܢܝܒܫܘܢ. * ܘܟܠܗ ܕܥܠ ܢܗܪܐ ܘܥܠ ܦܘܡܗ ܕܢܗܪܐ. 7
ܘܟܠ ܙܪܥܐ ܕܥܠ ܓܢܒܗ ܕܢܗܪܐ ܢܝܒܫ. ܘܢܬܕܩ ܘܠܐ ܢܫܬܟܚ. * ܘܢܐܒܠܘܢ 8
ܨܝܕܐ. ܘܢܬܐܒܠܘܢ ܟܠܗܘܢ ܕܪܡܝܢ ܚܟܬܐ ܒܢܗܪܐ. ܘܦܪܣܝܢ ܡܨܝܕܬܐ ܥܠ ܐܦܝ ܡܝܐ ܢܬܟܪܗܘܢ.
9 * ܘܢܒܗܬܘܢ ܥܒܕܝ ܟܬܢܐ. ܕܣܪܩܝܢ ܘܙܩܪܝܢ ܠܚܕܘܬܐ. * ܘܢܬܡܟܟܘܢ ܟܠ ܕܥܒܕܝܢ ܫܟܪܐ. 10
ܠܡܫܬܝܐ ܕܢܫܐ. * ܣܟܠܘ ܪܘܪܒܢܐ ܕܨܥܢ. ܚܟܝܡܐ ܕܡܡܠܟܝܢ ܠܦܪܥܘܢ ܡܠܟܐ ܡܠܟܐ 11
ܫܛܝܐ. ܐܝܟܢܐ ܬܐܡܪܘܢ ܠܦܪܥܘܢ ܕܚܟܝܡܐ ܚܢܢ. ܘܒܢܝ ܡܠܟܐ ܩܕܡܝܐ. * ܐܝܟܐ ܐܢܘܢ 12
ܚܟܝܡܝܟ. ܢܚܘܘܢܟ. ܘܢܕܥܘܢ ܡܢܐ ܐܬܪܥܝ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܥܠ ܡܨܪܝܢ.

Et relinquentur ambo volucri montium & beſtiis terræ: & congregabitur adverſùs eum volucre, & omnes beſtiæ terræ indignabuntur in eum. 6 Eodem illo die afferet munera Domino fortiſſimo populus intortus & evulſus, populus à quo fortitudo procul diſtat, populus fœdus & conculcatus; cujus terram diripuerunt flumina; ad locum nominis Domini fortiſſimi, ad montem Sionis. 7

CAP. XIX.

Onus Ægypti.

Ecce Dominus conſceſurus eſt nubes veloces, & ingreſſurus Ægyptum: tunc contremiſcent idola Ægypti à conſpectu ejus, & cor Ægyptii contabeſcet in præcordiis ejus. 1 Concitabo Ægyptium adverſùs Ægyptium, pugnabítque alter in alterum, & quilibet in ſocium ſuum, urbs adverſùs urbem, & regnum adverſùs regnum. 2 Exſcindetur ſpiritus Ægyptii in præcordiis ejus, & conſilium ejus immergam, conſuléntque idola & magos, hariolos ac divinos. 3 Tradam Ægyptios in manum dominorum crudelium, & rex immanis dominabitur in eos, ait Dominus fortiſſimus. 4 Deficient aquæ è mari, & flumen deſtruetur & areſcet. 5 Deficient flumina & exhaurientur, & deſtruentur amnes ingentes, arundo, ſcirpus, ac juncus areſcent. 6 Demum alga quæ ſuper flumen eſt & ad oſtium fluminis, & quicquid ſatum erit ad ripam fluminis, exſiccabitur, tundetúrque ita ut minimè inveniatur. 7 Et flebunt piſcatores, & in luctu verſabuntur qui hamos injiciunt in flumen; quique retia pandunt ſuper aquas, ægritudine laborabunt. 8 Pudefient opifices lini, qui pectunt & texunt ad lætitiam: 9 Et humiliabuntur omnes qui ſiceram conficiunt ad potum humanum. 10 Deſipuerunt magnates Saan, ſapientes illi qui regi Pharaoni conſilia dabant inſana: quomodo dicetis Pharaoni, Sapientes ſumus, & filii regum priſcorum? 11 Ubinam ſunt ſapientes tui? declarent jam tibi, & ſciant quid ſtatuerit Dominus potentiſſimus de Ægypto. 12

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ويتركها لطيور السماء ووحوش الارض * فيجتمع عليهم طيور السماء * وكل وحوش الارض تاتي 6
7 عليه * في ذلك الزمان تقدم قرابين لرب الجيوش من شعب محزون ومضيق * من شعب عظيم
منذ الآن والى الابد * الامة الغير مرجوة والمداسة * التي هي في ناحية نهر كورتها * في الموضع
حيث اسم رب الجيوش دعي * جبل صهيون *

* الفصل التاسع عشر * الوحي التاسع * النبوة على مصر *

* ها الرب جالس على سحابة خفيفة ينزل الى مصر * ويتزلزل صنعة الايدي التي لمصر من 1
2 وجهه * وقلوبهم تذوب فيهم * وتهيج مصريون على مصريين * ويحارب الانسان اخاه والانسان
3 قريبه * وتقوم مدينة على مدينة وناموس على ناموس * ويضطرب روح المصريين فيهم *
4 وابطل مشورتهم * ويسالون الهتهم واصنامهم ومنجميهم من الارض * وعرافيهم ومعارفهم * واودع
مصر الى ايدي اناس سادة صعاب * وملوك صعاب يسودون عليهم * هكذا يقول رب الجيوش *
5 6 * ويشرب المصريون الماء الذي عند البحر * واما النهر فيفنى وييبس * وتفنى الانهار وخلجان
7 النهر * ويجف كل مجمع ماء * وكل غاب القصب * والبردي والعشب الاخضر * وكلما حول النهر *
8 وكل مزدرع من جهة النهر يجف بالريح الفاسد * وينهد الصيادون * وينهد جميع الذين
9 يلقون شبكة في النهر * والذين يلقون صنارة والصيادون يحزنون * واخذ الخزي الذين
يعملون الكتان الممشوط * والذين يعملون الارجوان * ويصير الذين يعملونهم في وجع *
10 11 * وجميع الذين يعملون القفاع يحزنون ويتعبون نفوسهم * ويصير رؤساء صاعن جهالا
مشيروا الملك الحكماء * ويفسد مشورتهم * كيف تقولون للملك نحن بنو الفهماء * بنو
12 الملوك الذين منذ البدو * اين هم الآن حكماؤك * فيخبروك ويقولون ما رواه رب
الجيوش على مصر *

Et relinquet eos volucribus cæli & beſtiis terræ; & congregabuntur ſuper eos volucres cæli, omneſque beſtiæ terræ venient ſuper eos. 6 *Tunc temporis offerentur oblationes Domino exercituũ à populo ærumnoſo & afflicto, à populo magno, ex nunc & in perpetuum, gente inſperatâ & conculcatâ, exiſtente ad la. fluminis regionis ſuæ; in loco ubi nomen Domini exercituum invocatum eſt, nempe monte Sionis.* 7

CAP. XIX.

Revelatio nona.

PRophetia de Aegypto. Ecce Dominus inſidens nubi levi, deſcendet in Ægyptum, & commovebitur opus manuum Aegypti à conſpectu ejus, & corda eorum colliqueſcent in ipſis. 1 *Et irruent Aegyptii in Aegyptios, & oppugnabit quiſque fratrem ſuum, & quiſque proximum ſuum, inſurgetque urbs contra urbem, & lex contra legem.* 2 *Et turbabitur ſpiritus Aegyptiorum intra ipſos, & irritum faciam conſilium eorum, conſulentque deos ſuos, & idola ſua, & aſtrologum ſuum è terra, divinum, & ariolum ſuum.* 3 *Tradamque Aegyptum in manus quorundam dominorum rigidorum, & reges crudeles dominabuntur in eos: ſic dicit Dominus exercituum.* 4 *Et bibent Aegyptii aquam quæ eſt prope mare, ſiquidem flumen deficiet et areſcet,* 5 *Deficientque flumina & rami fluminis, areſcet omnis aquæ congeries, omne arundinetum, carecta, & herba virens;* 6 *Quicquid denique circa flumen eſt, & quicquid ſatum eſt ad oras fluminis, areſcet vento pernicioſo.* 7 *Et ſuſpirabunt piſcatores, & gement omnes qui rete projiciunt in flumen, & qui hamum projiciunt, piſcatores inquam mœrebunt.* 8 *Et pudor occupabit eos qui faciunt linum pexum, & qui faciunt purpuram, horum inquam opifices in dolore verſabuntur.* 9 *Et omnes qui ſportas faciunt, contriſtabuntur, ſeſeque labore conficient:* 10 *Principes Saan prudentes regis conſiliarii, evadent ſtulti, & inſanum fiet conſilium eorum. Quomodo dictitatis regi, Nos ſumus filii prudentum, filii regum qui fuerunt ab initio?* 11 *ubi nunc ſunt ſapientes tui? indicent jam tibi, dicantque quid decreverit Dominus exercituum de Aegypto.* 12

ישעיה׃ כ

fecerũt errare&,Noph principes ſunt *decepti*,Sohan principes ſunt Infatuati
13 נואלו שרי צען נשאו שרי נף והתעו את־
ejus *interiori* in miſcuit DOMINUS .ejus tribuum angulo Ægyptum
14 מצרים פנת שבטיה׃ יהוה מסך בקרבה
ſuo opere omni in Ægyptum fecerunt errare &,perverſitatum ſpiritũ
רוח עועים והתעו את־מצרים בכל־מעשהו
, opus Ægypto erit non Et .ſuo vomitu in *ebrium errare ſecundùm*
15 כהתעות שכור בקיאו׃ ולא־יהיה למצרים מעשה
erit illa die In .juncus & ramus ,cauda& caput fecerit quod
16 אשר יעשה ראש וזנב כפה ואגמון׃ ביום ההוא יהיה
manus *agitationis faciebus à pavebit & contremiſcet* & : mulieres ſicut Ægyptus
מצרים כנשים וחרד ופחד מפני תנופת יד־
erit Et .eam ſuper *agitans* ipſe quam exercituum DOMINI
17 יהוה צבאות אשר־הוא מניף עליו׃ והיתה
fuerit recordatus qui omnis : *tremorem* in Ægypto Jehudah *humus*
אדמת יהודה למצרים לחגא כל אשר יזכיר
quod exercituum DOMINI conſilii *faciebus à* ,*pavebit ſe in* , illius
אתה אליו יפחד מפני עצת יהוה צבאות אשר־
quinque erunt illa die In .eum ſuper *conſulens* ipſe
18 הוא יועץ עליו׃ ביום ההוא יהיו חמש
jurantes & ,*Chenahan labio* loquentes , Ægypti terra in civitates
ערים בארץ מצרים מדברות שפת כנען ונשבעות
.uni dicetur Heres civitas : exercituum DOMINUM per
ליהוה צבאות עיר ההרס יאמר לאחת׃
: Ægypti terræ medio in DOMINO altare erit illa die In
19 ביום ההוא יהיה מזבח ליהוה בתוך ארץ מצרים
, ſignum in erit Et .DOMINO ejus terminum juxta *ſtatua* &
20 ומצבה אצל־גבולה ליהוה׃ והיה לאות
clamabunt nam : Ægypti terra in exercituum DOMINO teſtem in &
ולעד ליהוה צבאות בארץ מצרים כי־יצעקו
, ſervatorem eis mittet & , opprimentium *faciebus* à Dominum ad
אל־יהוה מפני לחצים וישלח להם מושיע
, Ægypto Dominus cognoſcetur Et .eos liberabit & ,magnatem &
21 ורב והצילם׃ ונודע יהוה למצרים
,ſacrificiũ facient & ,illa die in Dominum Ægyptii cognoſcent &
וידעו מצרים את־יהוה ביום ההוא ועבדו זבח
percutiet Et .reddent & ,Domino votum vovebunt & , *munus* &
22 ומנחה ונדרו־נדר ליהוה ושלמו׃ ונגף
ad revertentur & : ſanando & , percutiendo Ægyptum Dominus
יהוה את־מצרים נגף ורפוא ושבו עד־
erit illa die In .eos ſanabit & , eis *erit exorabilis* &,Dominum
23 יהוה ונעתר להם ורפאם׃ ביום ההוא תהיה
, Ægyptum in Aſſur intrabit & , Aſſur ad Ægypto ab *ſtrata* via
מסלה ממצרים אשורה ובא־אשור במצרים
die In .Aſſur ipſi Ægyptii *ſervient* & , Aſſur in Ægyptus &
24 ומצרים באשור ועבדו מצרים את־אשור׃ ביום
benedictio ,Aſſur & , Ægypto tertius Iſrael erit illa
ההוא יהיה ישראל שלישיה למצרים ולאשור ברכה
: dicendo ,exercituum Dominus *ei* benedixit Cui .terræ *interiori* in
25 בקרב הארץ׃ אשר ברכו יהוה צבאות לאמר
, Aſſur mearũ manuum opus & , Ægypti meus populus Benedictus
ברוך עמי מצרים ומעשה ידי אשור
.Iſrael mea hæreditas &
ונחלתי ישראל׃

CAP. XX. כ

rex Sarghon eum *mittendo in* , Aſdod in Tarthan *ingredi* anno In
1 בשנת בא תרתן אשדודה בשלח אתו סרגון מלך
.eam cepit & , Aſdod cum pugnâſſet & , Aſſur
אשור וילחם באשדוד וילכדה׃

Verſio VULG. LAT.

13 Stulti facti ſunt principes Taneos, emarcuerunt principes Mempheos, deceperunt Ægyptum, angulum populorum ejus. 14 Dominus miſcuit in medio ejus ſpiritũ vertiginis : & errare fecerunt Ægyptũ in omni opere ſuo, ſicut errat ebrius & vomens. 15 Et non erit Ægypto opus, quod faciat caput & caudam, incurvantem & refrænantem. 16 In die illa erit Ægyptus quaſi mulieres, & ſtupebunt, & timebunt à facie commotionis manûs Dñi exercituũ, quam ipſe movebit ſup eã. 17 Et erit terra Juda Ægypto in pavorem: omnis qui illiꝰ fuerit recordatꝰ, pavebit à facie conſilii Domini exercituũ, ꝙ ipſe cogitavit ſuper eam. 18 In die illa erunt quinque civitates in terra Ægypti, loquentes linguâ Chanaan, & jurantes ꝑ Dñm exercituũ: Civitas Solis vocabitur una. 19 In die illa erit altare Dñi in medio terræ Ægypti, & titulus Dñi juxta terminũ ejus 20 Erit in ſignũ, & in teſtimoniũ Dño exercituũ in terra Ægypti, Clamabunt enim ad Dominũ à facie tribulantis, & mittet eis ſalvatorem & propugnatorem, qui 21 liberet eos. Et cognoſcetur Dominus ab Ægypto, & cognoſcent Ægyptii Dominum in die illa, & colent eũ in hoſtiis & in muneribus : & vota vovebunt Domino, & ſolvent. 22 Et percutiet Dominus Ægyptum plagâ, & ſanabit eã, & revertentur ad Dominum, & placabitur eis, & ſanabit eos. 23 In die illa erit via de Ægypto in Aſſyrios, & intrabit Aſſyrius Ægyptum, & Ægyptius in Aſſyrios, & ſervient Ægyptii Aſſur. 24 In die illa erit Iſrael tertius Ægyptio & Aſſyrio: benedictio in medio terræ, 25 Cui benedixit Dominus exercituũ, dicens; Benedictus populus meus Ægypti, & opus manuum mearũ Aſſyrio : hæreditas autem mea Iſrael.

CAP. XX.

1 IN anno, quo ingreſſus eſt Tharthan in Azotum, cùm miſiſſet eum Sargon rex Aſſyriorum, & pugnâſſet contra Azotum, & cepiſſet eam.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

13 Ἐξέλιπον οἱ ἄρχοντες Τάνεως, καὶ ὑψώθησαν οἱ ἄρχοντες Μέμφεως, καὶ πλανήσουσιν 14 Αἴγυπτον κατὰ φυλάς. Κύριος γὰρ ἐκέρασεν αὐτοῖς πνεῦμα πλανήσεως, καὶ ἐπλάνησαν Αἴγυπτον ἐν πᾶσι τοῖς ἔργοις αὐτῶν, ὡς 15 πλανᾶται ὁ μεθύων, καὶ ὁ ἐμῶν ἅμα. Καὶ οὐκ ἔσται τοῖς Αἰγυπτίοις ἔργον ὃ ποιήσει κεφαλὴν καὶ (˜) οὐρὰν, καὶ ἀρχὴν καὶ τέλος. 16 Τῇ δὲ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσονται οἱ Αἰγύπτιοι, ὡς γυναῖκες, ἐν φόβῳ καὶ ἐν τρόμῳ ἀπὸ προσώπου τῆς χειρὸς κυρίου Σαβαὼθ, ἣν αὐτὸς ἐπιβαλεῖ αὐτοῖς. 17 Καὶ ἔσται ἡ χώρα τῶν Ἰουδαίων τοῖς Αἰγυπτίοις εἰς φόβητρον· πᾶς (ζ) ὃς ἐὰν ὀνομάσῃ αὐτὴν αὐτοῖς, φοβηθήσονται διὰ τὴν (η) βουλὴν ἣν βεβούλευται κύριος Σαβαὼθ ἐπ' αὐτήν. 18 Τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσονται πέντε πόλεις (θ) ἐν τῷ Αἰγύπτῳ λαλοῦσαι τῇ γλώσσῃ τῇ (ι) Χαναανίτιδι, καὶ (κ) ὀμνύντες τῷ ὀνόματι κυρίου Σαβαὼθ· 19 πόλις ἀσεδὲκ κληθήσεται ἡ μία πόλις. Τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσται (λ) θυσιαστήριον τῷ κυρίῳ ἐν χώρᾳ Αἰγυπτίων, καὶ στήλη πρὸς τὸ ὅριον αὐτῆς τῷ κυρίῳ. 20 Καὶ ἔσται εἰς σημεῖον εἰς τὸν αἰῶνα κυρίῳ ἐν χώρᾳ Αἰγύπτου· ὅτι κεκράξονται πρὸς κύριον διὰ τοὺς θλίβοντας αὐτοὺς, καὶ ἀποστελεῖ αὐτοῖς (μ) ἄνθρωπον ὃς σώσει αὐτοὺς, κρίνων σώσει αὐτούς. 21 Καὶ γνωστὸς ἔσται κύριος τοῖς Αἰγυπτίοις· καὶ γνώσονται οἱ Αἰγύπτιοι τὸν κύριον ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ ποιήσουσι θυσίας, καὶ εὔξονται 22 εὐχὰς τῷ κυρίῳ, καὶ ἀποδώσουσι. Καὶ πατάξει κύριος τοὺς Αἰγυπτίους (ν) πληγῇ, καὶ ἰάσεται αὐτοὺς ἰάσει, καὶ ἐπιστραφήσονται πρὸς κύριον, καὶ (ξ) εἰσακούσεται αὐτῶν, καὶ ἰάσεται 23 (ο) αὐτοὺς ἰάσει. Τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσται (π) ἡ ὁδὸς ἀπὸ Αἰγύπτου πρὸς Ἀσσυρίους, καὶ εἰσελεύσονται Ἀσσύριοι εἰς Αἴγυπτον, καὶ Αἰγύπτιοι πορεύσονται πρὸς Ἀσσυρίους, καὶ δου- 24 λεύσουσιν (ρ) Αἰγύπτιοι τοῖς Ἀσσυρίοις. Τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσται Ἰσραὴλ τρίτος (¨) ἐν τοῖς Αἰγυπτίοις, καὶ ἐν τοῖς Ἀσσυρίοις εὐλογημένος 25 ἐν τῇ γῇ, (σ) Ἣν εὐλόγησε κύριος Σαβαὼθ, λέγων, Εὐλογημένος ὁ λαός μου ὁ ἐν Αἰγύπτῳ, καὶ ὁ ἐν Ἀσσυρίοις, καὶ ἡ κληρονομία μου Ἰσραήλ.

MS. A. (˜) οὐρὰν, ἀρχὴν (ζ) ὃς ἂν (η) βουλὴν κυρίου σαβαὼθ ἣν βεβούλευται κύριος ἐπ' αὐτήν. (θ) ἐν Αἰγύπτῳ (ι) Χανανίτιδι, (κ) ὀμνύουσαι τῷ ὀνόματι κυρίου· πόλις (λ) τὸ θυσιαστήριον (μ) κύριος ἄνθρωπον (ν) πληγῇ μεγάλῃ, (ξ) ἐπακούσεται (ο) αὐτούς. Τῇ ἡμέρᾳ (π) ὁδὸς Αἰγύπτου (ρ) οἱ Αἰγύπτιοι (¨) ἐν τοῖς Ἀσσυρίοις, καὶ ἐν τοῖς Αἰγυπτίοις (σ) Ἣ

ΚΕΦ. κʹ.

1 ΤΟῦ ἔτους (α) ὅτε εἰσῆλθε Ταναθὰν εἰς Ἄζωτον, ἡνίκα ἀπεστάλη ὑπὸ Ἀρνὰ βασιλέως Ἀσσυρίων, καὶ ἐπολέμησε τὴν Ἄζωτον, καὶ (β) ἔλαβεν αὐτήν,

MS. A. (α) οὗ εἰσῆλθεν Νάθαν (β) κατελάβετο

Defecerunt principes Taneos, & exaltati ſunt principes Memphe- 13 os: & decipient Ægyptum per tribus. Dominus enim miſcuit eis ſpiritum ſeductionis : & ſe- 14 duxerunt Ægyptum in omnibus operibus ſuis, ſicut errat ebrius, & vomens ſimul. Et non erit Ægy- 15 ptiis opus, quod faciat caput, & caudam, & principium, & (b) finem. Die autem illâ erunt Æ- 16 gyptii, quaſi mulieres, in timore, & tremore à facie manûs Domini Sabaoth, quam ipſe immittet eis. Et erit regio Judæorum Æ- 17 gyptiis in (i) terrorem. Quicunque nominaverit eam ipſis; timebunt propter conſilium, quod deliberavit Dominus ſuper ipſam. Die 18 illâ erunt quinque civitates in Ægypto loquentes linguâ Chanaanitide, & jurantes nomine Domini Sabaoth. Civitas (k) Aſedec vocabitur una civitas. Die illâ 19 erit altare Domino in regione Ægyptiorum : & titulus ad terminum ejus Domino. Et erit in ſi- 20 gnum in ſeculum Domino in regione Ægypti. Quia clamabunt ad Dominum propter tribulantes eos : & mittet eis hominem, qui ſalvabit eos : judicans ſalvabit eos. Et notus erit Dominus Æ- 21 gyptiis : & cognoſcent Ægyptii Dominum in die illa, & facient ſacrificia, & vovebunt vota Domino, & reddent. Et per- 22 cutiet Dominus Ægyptios plagâ, & ſanabit eos ſanatione. Et convertentur ad Dominum : & exaudiet eos, & ſanabit eos ſanatione. Die illâ erit via ab 23 Ægypto ad Aſſyrios : & ingredientur Aſſyrii in Ægyptum: & ibunt Ægyptii ad Aſſyrios : & ſervient Ægyptii Aſſyriis. Die illâ erit Iſrael tertius in Æ- 24 gyptiis, & in Aſſyriis benedictus in terra, Quam benedixit Do- 25 minus Sabaoth, dicens; Benedictus populus meus, qui in Ægypto, & qui in Aſſyriis, & hæreditas mea Iſrael.

CAP. XX.

ANno, quo ingreſſus eſt Tanathan in Azotum, cùm miſſus eſſet ab Arna rege Aſſyriorum, & oppugnavit Azotum, & cepit eam; 1

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

13 אטפשו רברבי טאנס טעו אנש מפיס אטעיו ית מצראי רבני פלכהא׃ יי רמא ביניהון
14
15 רוח דטעו ואטעיאו ית מצרים בכל עובדיהון כמא דטעי רויא ומשרש בתיוביה׃ ולא
16 יהי למצרים מלכא דמלך ריש והגמון שלטון ואטרון׃ בעדנא ההיא יהון מצראי חלשין
17 כנשין ויזועון ויתברון מן קדם ארמות גבורתא דיי צבאות דהוא מרים עליהון׃ ותהי
ארעא דבית יהודה למצרים לדחלא כל דידכר יתה ליה יזוע מן קדם מלכא דיי צבאות
18 דהוא מליך עליהון׃ בעדנא ההיא יהוין חמש קרוין בארעא דמצרים ממללן ממלל
כנענאה וקימן בשמא דיי צבאות קרתא בית שמש דעתידא למחרב יתאמר היא חדא
19 מנהן׃ בעדנא ההיא יהי מדבחא מתקן קדם יי בגו ארעא דמצרים וקמתא בסטר תחומה
20 קדם יי׃ ויהי לאת ולסהיד קדם יי צבאות בארעא דמצרים ארי יצלון קדם יי מן קדם
21 דחקיהון וישלח להון פריק ודין וישזבנון׃ ותתגלי גבורתא דיי לאוטבא למצראי וידעון
מצראי למדחל מן קדם יי בעדנא ההיא ויפלחון בנכסת קודשין ובקורבנין וינדרון נדרין
22 קדם יי וישלמון׃ וימחי יי ית מצרים מחא ויסנון ויתובון לפולחנא דיי ויקבל צלותהון
23 ויסי יתהון׃ בעדנא ההיא תהי אורח כבישא ממצרים לאתור ויגיחון אתוראי למצראי
24 ומצראי באתוראי ויפלחון מצראי ית אתוראי׃ בעדנא ההיא יהי ישראל תליתאה
25 למצראי ולאתוראי ברכא בגו דארעא׃ דברכיה יי צבאות למימר בריך עמי דאפקית
ממצרים דעל דחבו קדמי אגליתי יתהון לאתור וכדו דתבו מתקרן עמי ואחסנתי
ישראל׃

כ

1 בשתא דאתא תרתן לאשדוד כד שלח יתיה סרגון מלכא דאתור ואגיח קרבא
באשדוד וכבשה׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Inſipientes facti ſunt principes Taneos, erraverunt viri Mempheos : dece- 13
perunt Ægyptios principes provinciarum ejus. Dominus immiſit in eos 14
ſpiritum erroris, & errare fecerunt Ægyptios in omnibus operibus
ſuis; ſicut errat ebrius, & provolvitur in vomitu ſuo. Et non erit Ægy- 15
ptiis rex qui regnet, nec princeps nec ſatrapa, nec præfectus, nec dominator.
In tempore illo erunt Ægyptii infirmi ſicut mulieres, & contremiſcent, 16
& conterentur à facie elevationis potentiæ Domini exercituum, quam
ipſe levabit ſuper eos. Et erit terra domus Judæ Ægypto in pavorem : 17
omnis qui recordatus fuerit illius, contremiſcet à facie conſilii Domini
exercituum, quod ipſe conſuluit contra eos. In *tempore illo* erunt quinque 18
civitates in terra Ægypti, loquentes loquela Chanaan, & jurantes in nomine Domini exercituum. Civitas domus Solis, quæ deſtruenda eſt, dicetur
una ex eis. In tempore illo erit altare præparatum coram Domino in me- 19
dio terræ Ægypti, & titulus in latere termini ejus coram Domino. Et erit 20
in ſignum, & in teſtem coram Domino exercituum in terra Ægypti: quando
oraverint coram Domino à facie eorum qui tribulant eos, & mittet eis ſal-
vatorem & judicem, & liberabit eos. Et revelabitur potentia Domini ut 21
benefaciat Ægyptiis, & ſcient Ægyptii timere à facie Domini in tempore
illo, & colent in hoſtiis ſanctificatis, & in oblationibus, & vovebunt vota
coram Domino, & ſolvent. Et percutiet Dominus Ægyptios percuſſione; 22
& ſanabit eos, & convertentur ad cultum Domini, & ſuſcipiet orationes
eorum, & ſanabit eos. In tempore illo erit via trita de Ægypto in Aſſy- 23
riam : & pugnabunt Aſſyrii contra Ægyptios, & Ægyptii contra Aſſyri-
os, & ſervient Ægyptii Aſſyriis. In tempore illo, erit Iſrael tertius Ægy- 24
ptiis & Aſſyriis; benedictio in medio terræ. Cui benedixit Dominus exer- 25
cituum, dicens : Benedictus populus meus quem eduxi de Ægypto: & quia
peccaverunt coram me, tranſmigrare eos feci in Aſſyriam; & quando converſi ſunt, vocati ſunt populus meus, & hæreditas mea Iſrael.

CAP. XX.

IN anno quo ingreſſus eſt Thartan in Azotum, quando miſit eum Sargon 1
rex Aſſyriæ : & pugnavit contra Azotum, & ſubjecit eam.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

13 * ܐܫܬܛܝܘ ܪܘܪܒܢܐ ܕܨܥܢ. ܐܬܪܘܡܘ ܪܘܪܒܢܐ ܕܡܦܝܣ. ܘܐܛܥܝܘ ܠܡܨܪܝܢ ܒܙܘܝܬܐ ܕܫܒܛܘܗܝ.
14 * ܡܪܝܐ ܡܙܓ ܒܓܘܗ ܪܘܚܐ ܛܥܝܬܐ. ܘܐܛܥܝܘ ܠܡܨܪܝܢ ܒܟܠܗܘܢ ܥܒܕܘܗܝ. ܐܝܟ
ܕܛܥܐ ܪܘܝܐ ܒܬܝܘܒܗ. * ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܡܨܪܝܐ ܓܒܪܐ ܕܢܥܒܕ ܪܫܐ ܘܕܘܢܒܬܐ: ܘܕܘܢܒܬܐ 15
ܘܪܫܐ. * ܒܝܘܡܐ ܗܘ ·. ܢܗܘܐ ܡܨܪܝܐ ܐܝܟ ܢܫܐ. ܘܢܕܚܠ ܘܢܪܬܘܬ ܡܢ ܩܕܡ ܪܘܡܐ ܕܐܝܕܗ 16
ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܕܡܪܝܡ ܥܠܘܗܝ. * ܘܬܗܘܐ ܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕܐ ܠܡܨܪܝܐ. ܠܣܘܪܕܐ. ܘܟܠ 17
ܡܢ ܕܢܥܗܕܝܗ ܠܗ. ܢܬܪܗܒ. ܡܢ ܩܕܡ ܡܠܟܗ ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܕܐܬܪܥܝ ܥܠܘܗܝ.
* ܒܝܘܡܐ ܗܘ ·. ܢܗܘܝܢ ܚܡܫ ܡܕܝܢܢ ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ ·. ܕܡܡܠܠܢ ܒܠܫܢܐ ܟܢܥܢܝܐ ·. 18
ܘܝܡܝܢ ܒܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܘܚܕܐ ܡܢܗܝܢ. ܗܪܣ ܬܬܩܪܐ. * ܒܝܘܡܐ ܗܘ ·. ܢܗܘܐ ܡܕܒܚܐ 19
ܠܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܒܓܘܗ ܕܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܩܝܡܬܐ ܠܡܪܝܐ. ܠܘܬ ܬܚܘܡܝܗ. * ܘܬܗܘܐ 20
ܠܐܬܐ. ܘܠܣܗܕܘܬܐ ܠܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܡܛܠ ܕܢܩܥܘܢ. ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܡܢ
ܩܕܡ ܠܚܘܨܐ ·. ܘܢܫܕܪ ܠܗܘܢ ܦܪܘܩܐ ·. ܘܕܝܢܐ. ܘܢܦܨܐ ܐܢܘܢ. * ܘܢܬܝܕܥ ܡܪܝܐ ܠܡܨܪܝܐ. 21
ܘܢܕܥܘܢܝܗ ܡܨܪܝܐ ܠܡܪܝܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܘܢܩܪܒܘܢ ܕܒܚܐ. ܘܣܡܝܕܐ. ܘܢܕܪܘܢ ܢܕܪܐ ܠܡܪܝܐ.
ܘܢܫܠܡܘܢ. * ܘܢܡܚܐ ܡܪܝܐ ܠܡܨܪܝܐ ܡܚܘܬܐ. ܘܢܐܣܐ ܐܢܘܢ. ܘܢܬܦܢܘܢ ܠܘܬ ܡܪܝܐ ·. 22
ܘܢܥܢܐ ܐܢܘܢ. ܘܢܐܣܐ ܐܢܘܢ. * ܒܝܘܡܐ ܗܘ ·. ܢܗܘܐ ܫܒܝܠܐ ܡܢ ܡܨܪܝܢ ܠܐܬܘܪ. ܘܡܢ 23
ܐܬܘܪ. ܠܡܨܪܝܢ. ܘܢܥܘܠ ܐܬܘܪܝܐ ܠܡܨܪܝܢ. ܘܡܨܪܝܐ. ܠܐܬܘܪ. ܘܢܦܠܚܘܢ ܡܨܪܝܐ ܠܐܬܘܪܝܐ.
* ܒܝܘܡܐ ܗܘ ·. ܢܗܘܐ ܐܝܣܪܝܠ ܚܕ ܡܢ ܬܠܬܐ. ܠܡܨܪܝܐ ܘܠܐܬܘܪܝܐ ܒܘܪܟܬܐ ܒܓܘ 24
ܐܪܥܐ. * ܕܒܪܟܗ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܘܐܡܪ. ܒܪܝܟ ܥܡܝ ܕܒܡܨܪܝܢ. ܘܥܒܕ ܐܝܕܝ ܕܒܐܬܘܪ. 25
ܘܝܪܬܘܬܝ ܐܝܣܪܝܠ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟ *

* ܒܫܢܬܐ ܕܐܬܐ ܬܪܬܢ ܠܐܫܕܘܕ. ܟܕ ܫܕܪܗ ܣܪܓܘܢ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ: ܘܐܬܟܬܫ ܥܡ 1
ܐܫܕܘܕ ܘܟܒܫܗ ·.

13 Inſanierunt magnates Saan, extulerunt ſe magnates Mophis, & errare fecerunt Ægyptum per angulos tribuum ejus. 14 Dominus miſcuit in medio ejus ſpiritum errantem, & errare fecit Ægyptium in cunctis operibus ſuis, ſicut oberrat ebrius in vomitu ſuo: 15 Nec erit Ægyptio vir qui faciat caput vel caudam, caudam vel caput. 16 In illo erit Ægyptius ſimilis mulieribus, timebit ſiquidem ac trepidabit ob elationem manûs Domini potentiſſimi, quam elaturus eſt adverſùs eum. 17 Eritque terra Judæ Ægyptio formidini, ita ut quoties aliquis mentionem ejus fecerit apud ipſum, exhorreſcat; propter conſilium Domini potentiſſimi, quod de ſe ſtatuit. 18 In illo die erunt urbes quinque in terra Ægypti loquentes linguam Chananæam, & jurantes per Dominum potentem: & harum una vocabitur Heres. 19 In die illo erit ara Domino potenti in medio terræ Ægypti, & ſtatua Domino ſecus limites ejus: 20 Eritque in ſignum & teſtimonium Domino potenti in terra Ægypti. Clamabunt enim ad Dominum cauſâ opprimentis, mittétque eis ſervatorem & judicem, & eripiet eos. 21 Et innoteſcet Dominus Ægyptio, & cognoſcent Ægyptii Dominum in die illo, offeréntque victimas et ſimilaginem, vovebunt vota Domino, et exolvent. 22 Itàque Dominus Ægyptios plagâ percutiet, tum ſanabit eos: convertentur ad Dominum, et exaudiet eos, et ſanabit eos. 23 In die illo erit ſemita ex Ægypto in Aſſyriam, et ex Aſſyria in Ægyptum; et ingredietur Aſſyrius Ægyptum, & Ægyptius Aſſyriam, & colent Ægyptii Aſſyrios. 24 In illo die Iſrael unus è tribus, erit benedictioni tam Ægyptiis quàm Aſſyriis in medio terræ: 25 Quoniam ipſi benedixit Dominus omnipotens, & ait; Benedictus populus meus qui eſt in Ægypto, & opus manuum mearum quod eſt in Aſſyria, & hæreditas mea Iſrael.

CAP. XX.

1 ANno quo venit Tharthan in Aſdod, cùm miſiſſet eum Sargon rex Aſſyriæ, oppugnâſſet Aſdod, & cepiſſet eam;

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

13 * فنيت روسا صاعن * وارتفعت روسا منف * ويضلون مصر بقبايلها * لان الرب مزج لهم روح 14
الضلالة * واضل مصر بكل اعمالهم كما يضل السكران * والحاذق معا * ولا يكون للمصريين 15
عمل الذي يصنع راسا وذنبا بدوا وغاية * في ذلك اليوم تصير المصريون مثل النسا في خوف 16
ورعدة * من وجه يد رب الجيوش التي يصنعها عليهم * ويكون بلد اليهود للمصريين مخوفة * 17
وكل من يسميها لهم يخافون * لاجل الراي الذي رواه الرب عليها * في ذلك اليوم تكون خمس 18
مدن بمصر تتكلم باللسان الكنعاني * وتحلف باسم الرب * مدينة عين شمس تدعي مدينة
واحدة * في ذلك اليوم يكون مذبح للرب في كورة المصريين * ونصبة عند حدها للرب * 19
* ويكون علامة الي الدهر للرب في كورة مصر * لانهم يصرخون الي الرب لاجل مخربيهم * فيرسل 20
لهم الرب انسانا الذي يخلصهم * حاكما يخلصهم * ويكون الرب معروفا للمصريين * ويعرفون 21
المصريون الرب في ذلك اليوم * ويصنعون ذبايح * وينذرون نذورا للرب ويوفون * ويضرب الرب 22
المصريين ضربة عظيمة ويشفيهم بشفاية * ويرجعون الي الرب ويستجيب لهم * في ذلك اليوم تكون 23
طريق من مصر الي الموصليين * ويدخل الموصليون الي مصر * والمصريون يذهبون الي
الموصليين * ويتعبد المصريون للموصليين * في ذلك اليوم يكون اسرايل ثالثا في الموصليين 24
وفي المصريين * مبارك في الارض التي باركها رب الجيوش قايلا * مبارك شعبي الذي بمصر 25
والذي في الموصليين * وميراثي اسرايل *

* الفصل العشرون * * الوحي العاشر *

* في السنة الذي دخل فيها طاثان الي اسدود * حين ارسل من قبل ارثا ملك الموصليين 1
وحارب اسدود * واخذها *

13 *Defecerunt principes Saan, amoti ſunt principes Memphis, & ſeducent Ægyptum cum nationibus ejus.* 14 *Nam Dominus miſcebit eis ſpiritum erroris, qui errare faciet Ægyptios in omnibus operibus ſuis quemadmodū errat ebrius, adeoq; ſagaciſſimū quemque:* 15 *Nec erit Ægyptiis ullum opus faciens caput aut caudam, principium aut finem.* 16 *Eo die erunt Ægyptii ſicut mulieres in timore & formidine, propter manum Domini exercituū quam impoſiturus eſt eis.* 17 *Et patria Judæorum ita formidabilis reddetur Ægyptiis, ut quoties aliquis nominaverit eam apud ipſos, expaveſcant propter conſilium quod decrevit Dominus adverſùs eam.* 18 *Eo die erunt urbes quinq; in Ægypto loquentes idioma Chananæum, & jurantes per nomen Domini; urbs Ainſemes vocatur una* harum *urbium.* 19 *Eo die erit altare Domino in regione Ægyptiorum, & ſtatua Domino juxta terminum ejus:* 20 *Eritq; ſignum ſempiternum Domino in regione Ægypti: clamabunt enim ad Dominum ob affligentes ſe, mittetque eis Dominus hominem qui liberet eos, judicem qui eripiat illos.* 21 *Eritque Dominus notus Ægyptiis, & cognoſcent Ægyptii Dominum eo die, facient ſacrificia, vovebunt Domino & perſolvent.* 22 *Percutiet ergò Dominus Ægyptios plagâ magnâ, tū ſanabit eos curatione ſuâ: revertentur ad Dominum, & exaudiet illos.* 23 *Eo die erit iter ex Ægypto ad Aſſyrios, & ingredientur Aſſyrii Ægyptum, & Ægyptii abibunt ad Aſſyrios, & ſervient Ægyptii Aſſyriis.* 24 *Eo die erit Iſrael tertius inter Aſſyrios & Ægyptios,* 25 *Benedictus in terra, cui benedixit Dominus exercituum, dicens, Benedictus populus meus qui eſt in Ægypto, & qui eſt inter Aſſyrios, & hæreditas mea Iſrael.*

CAP. XX.

Revelatio decima.

1 *ANno quo ingreſſus eſt Tathan in Aſdodem (quum ſcilicet miſſus ab Aretha rege Aſſyriorum, oppugnavit Aſdedem & cepit eam)*

ישעיה : כא

filii Jeſahjahu manum per DOMINUS eſt locutus illo tempore In
2 בָּעֵת הַהִיא דִּבֶּר יְהוָה בְּיַד יְשַׁעְיָהוּ בֶן־
,tuis lumbis *deſuper* ſaccum *ſolves* & , Vade :dicendo , Amos
אָמוֹץ לֵאמֹר לֵךְ וּפִתַּחְתָּ הַשַּׂק מֵעַל מָתְנֶיךָ
, nudus eundo ſic fecit & : *tuo pede deſuper ſolves* tuum calceamentũ &
וְנַעַלְךָ תַחֲלֹץ מֵעַל רַגְלֶךָ וַיַּעַשׂ כֵּן הָלֹךְ עָרוֹם
ambulavit Quemadmodũ : DOMINUS Dixitque .diſcalceatus &
3 וְיָחֵף׃ וַיֹּאמֶר יְהוָה כַּאֲשֶׁר הָלַךְ
ſignum annis tribus ; diſcalceatus & , nudus Jeſahjahu meus ſervus
עַבְדִּי יְשַׁעְיָהוּ עָרוֹם וְיָחֵף שָׁלֹשׁ שָׁנִים אוֹת
rex ducet Sic .Æthiopiam ſuper & ,Ægyptum ſuper portentum &
4 וּמוֹפֵת עַל־מִצְרַיִם וְעַל־כּוּשׁ׃ כֵּן יִנְהַג מֶלֶךְ
pueros , Æthiopicam tranſmigrationẽ & ,Ægypti captivitatem Aſſur
אַשּׁוּר אֶת־שְׁבִי מִצְרַיִם וְאֶת־גָּלוּת כּוּשׁ נְעָרִים
.Ægypti *nuditate nate* diſcoopertos & ,diſcalceatum & nudum ,ſenes &
וּזְקֵנִים עָרוֹם וְיָחֵף וַחֲשׂוּפַי שֵׁת עֶרְוַת מִצְרָיִם׃
Ægypto ab & ,ſuo aſpectu Æthiopia ab ,*erubeſcent* & ,confringentur Et
5 וְחַתּוּ וָבֹשׁוּ מִכּוּשׁ מַבָּטָם וּמִן־מִצְרַיִם
Ecce : illa die in hujus inſulæ habitator dicet Et .ſua gloria
6 תִּפְאַרְתָּם׃ וְאָמַר יֹשֵׁב הָאִי הַזֶּה בַּיּוֹם הַהוּא הִנֵּה־
facicbus à *erui ad* ,auxilio pro *illuc* confugimus quò ,noſter aſpect⁹ *ſic*
כֹה מַבָּטֵנוּ אֲשֶׁר־נַסְנוּ שָׁם לְעֶזְרָה לְהִנָּצֵל מִפְּנֵי
? nos evademus quomodo & , Aſſur regis
מֶלֶךְ אַשּׁוּר וְאֵיךְ נִמָּלֵט אֲנָחְנוּ׃

CAP. XXI. כא

deſerto ẽ,tranſeundum ad *Meridie* in turbines Ut .maris deſerti *Onus*
1 מַשָּׂא מִדְבַּר־יָם כְּסוּפוֹת בַּנֶּגֶב לַחֲלוֹף מִמִּדְבָּר
prævaricator:mihi eſt nunciata dura Viſio .formidabili terra de venit
2 בָּא מֵאֶרֶץ נוֹרָאָה׃ חָזוּת קָשָׁה הֻגַּד־לִי הַבּוֹגֵד ׀
: Madai obſide : Helam Aſcende .vaſtator vaſtator & ,prævaricator
בּוֹגֵד וְהַשּׁוֹדֵד ׀ שׁוֹדֵד עֲלִי עֵילָם צוּרִי מָדַי
, dolore mei lumbi ſunt repleti Propterea .feci ceſſare ej⁹ gemitũ omnẽ
3 כָּל־אַנְחָתָה הִשְׁבַּתִּי׃ עַל־כֵּן מָלְאוּ מָתְנַי חַלְחָלָה
:audiendo ab me *Diſtorſi*:parturientis *tormina* ſicut,me apprehẽderunt *tormina*
צִירִים אֲחָזוּנִי כְּצִירֵי יוֹלֵדָה נַעֲוֵיתִי מִשְּׁמֹעַ
crepuſculum : me terruit horror ,meum cor Erravit .*videndo à* fui territus
4 נִבְהַלְתִּי מֵרְאוֹת׃ תָּעָה לְבָבִי פַּלָּצוּת בִּעֲתָתְנִי אֵת נֶשֶׁף
ſpeculando ,menſam Diſponendo .*terrorem* in mihi poſuit *mei amplexus*
5 חִשְׁקִי שָׂם לִי לַחֲרָדָה׃ עָרֹךְ הַשֻּׁלְחָן צָפֹה
.clypeum ungite , principes ſurgite : bibendo comedendo , ſpeculam
הַצָּפִית אָכוֹל שָׁתֹה קוּמוּ הַשָּׂרִים מִשְׁחוּ מָגֵן׃
,ſpeculatorẽ ſtatue ,Vade : DOMINUS me ad dixit ſic Etenim
6 כִּי כֹה אָמַר אֵלַי אֲדֹנָי לֵךְ הַעֲמֵד הַמְצַפֶּה
- currum , equitum par , currum vidit Et .*indicabit* ,viderit qui
7 אֲשֶׁר יִרְאֶה יַגִּיד׃ וְרָאָה רֶכֶב צֶמֶד פָּרָשִׁים רֶכֶב
.attentione multa , attentione attendit Et .cameli currum , aſini
חֲמוֹר רֶכֶב גָּמָל וְהִקְשִׁיב קֶשֶׁב רַב־קָשֶׁב׃
jugiter *ſtans* ego ,mi Domine ,ſpeculam ſuper : Leo clamavit Et
8 וַיִּקְרָא אַרְיֵה עַל־מִצְפֶּה ׀ אֲדֹנָי אָנֹכִי עֹמֵד תָּמִיד
ecce Et .noctibus totis *ſtans* ego meã cuſtodiam ſuper & ,*interdiu*
9 יוֹמָם וְעַל־מִשְׁמַרְתִּי אָנֹכִי נִצָּב כָּל־הַלֵּילוֹת׃ וְהִנֵּה־
: dixit & , reſpondit & : equitum par viri currus venit hic
זֶה בָא רֶכֶב אִישׁ צֶמֶד פָּרָשִׁים וַיַּעַן וַיֹּאמֶר
.terram in contrivit ej⁹ deorum ſculptilia omnia & ,Babel cecidit Cecidit
נָפְלָה נָפְלָה בָּבֶל וְכָל־פְּסִילֵי אֱלֹהֶיהָ שִׁבַּר לָאָרֶץ׃
exercituum DOMINO à audivi quæ :meæ areæ *filius* & mea Tritura
10 מְדֻשָׁתִי וּבֶן־גָּרְנִי אֲשֶׁר שָׁמַעְתִּי מֵאֵת יְהוָה צְבָאוֹת
.vobis annunciavi , Iſrael Deo
אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל הִגַּדְתִּי לָכֶם׃

Verſio VULG. LAT.

2 In tempore illo locutus eſt
Dñs in manu Iſaiæ filii Amos,
dicens ; Vade, & ſolve ſaccũ
de lumbis tuis,& calceamenta
tua tolle de pedibus tuis. Et
fecit ſic , vadens nudus , &
3 diſcalceatus. Et dixit Dñs;Sicut
ambulavit ſervus meus Iſaias
nudus, & diſcalceatus,
trium annorũ ſignum & portentũ
erit ſuꝑ Ægyptũ,& ſuꝑ
4 Æthiopiam : Sic minabit rex
Aſſyriorum captivitatem Ægypti,
& tranſmigrationẽ Æthiopiæ,
juvenũ & ſenum,nudam
& diſcalceatã,diſcoopertis
natibus ad ignominiã Ægypti.
5 Et timebunt, & confundentur
ab Æthiopia ſpe
ſuâ, & ab Ægypto gloriâ ſuâ.
6 Et dicet habitator inſulæ huj⁹
in die illa ; Ecce hæc erat ſpes
noſtra, ad quos confugim⁹ in
auxilium , ut liberarent nos à
facie regis Aſſyriorũ : & quo
modo effugere poterim⁹ nos ?

CAP. XXI.

1 ONus deſerti maris. Sicut
turbines ab Africo veniunt,
de deſerto venit, de terra horribili.
2 Viſio dura nuntiata eſt
mihi : qui incredul⁹ eſt,infideliter
agit : & qui depopulator
eſt,vaſtat. Aſcende Ælam, obſide
Mede : omnẽ gemitũ ejus
3 ceſſare feci. Propter eà repleti
ſunt lumbi mei dolore,anguſtia
poſſedit me ſicut anguſtia
parturientis : corrui cùm audirem,
conturbat⁹ ſum cùm viderem.
4 Emarcuit cor meũ, tenebræ
ſtupefecerunt me : Babylon
dilecta mea poſita eſt
5 mihi in miraculũ. Pone menſam
, contemplare in ſpecula
comedentes & bibentes : ſurgite
principes, arripite clypeum.
6 Hæc enim dixit mihi Dominus
; Vade, & pone ſpeculatorẽ
: & quodcunque viderit
7 annuntiet. Et vidit currũ
duorũ equitũ, aſcenſorem aſini,
& aſcenſorem cameli : &
contemplatus eſt diligenter
8 multo intuitu. Et clamavit
leo ; Super ſpeculã Dñi ego
ſum, ſtans jugiter ꝑ diem : &
ſuper cuſtodiã meã ego ſum,
9 ſtans totis noctib⁹. Ecce iſte
venit aſcenſor vir Bigæ equitum,
& reſpondit , & dixit ;
Cecidit, cecidit Babylon, &
omnia ſculptilia deorum ejus
10 contrita ſunt in terrã. Tritura
mea,& filii areæ meæ, quæ audivi
à Dño exercituum Deo
Iſrael, annuntiavi vobis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

2 Τότε ἐλάλησε κύριος πρὸς (γ) Ἡσαΐαν υἱὸν
Ἀμὼς, λέγων, Πορεύου καὶ ἄφελε τὸν σάκκον
ἀπὸ τῆς ὀσφύος σου, καὶ τὰ σανδάλιά
σου ὑπόλυσαι ἀπὸ τῶν ποδῶν σου, καὶ ποίησον
οὕτως, πορευόμενος γυμνὸς καὶ (˜) ἀνυπόδετος.
3 Καὶ εἶπε κύριος, Ὃν τρόπον πεπόρευται
(δ) ὁ παῖς μου Ἡσαΐας γυμνὸς καὶ ἀνυπόδετος
τρία ἔτη, τρία ἔτη (ε) ἔσται εἰς σημεῖα
καὶ τέρατα τοῖς Αἰγυπτίοις καὶ Αἰθίοψιν·
4 Ὅτι οὕτως ἄξει βασιλεὺς Ἀσσυρίων τὴν αἰχμαλωσίαν
Αἰγύπτου καὶ Αἰθιόπων, νεανίσκους
καὶ πρεσβύτας, γυμνοὺς καὶ ἀνυποδέτους,
ἀνακεκαλυμμένους τὴν αἰσχύνην Αἰγύπτου.
5 Καὶ αἰσχυνθήσονται ἡττηθέντες (ζ) ἐπὶ τοῖς
Αἰθίοψιν, ἐφ' οἷς ἦσαν πεποιθότες οἱ
6 Αἰγύπτιοι, ἦσαν γὰρ αὐτοῖς δόξα. Καὶ
ἐροῦσιν οἱ κατοικοῦντες ἐν τῇ νήσῳ (η) ταύτῃ
ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, Ἰδοὺ ἡμεῖς ἦμεν πεποιθότες
τοῦ φυγεῖν εἰς αὐτοὺς εἰς βοήθειαν, οἳ
οὐκ ἠδύναντο σωθῆναι ἀπὸ βασιλέως Ἀσσυρίων,
καὶ πῶς ἡμεῖς σωθησόμεθα;

Tunc loquutus eſt Dominus ad Eſaiam 2
filium Amos, dicens ; Vade,& aufer ſaccum à lumbo tuo,
& calceamenta tua ſolve de pedibus tuis, & (a) fac ita,vadens
nudus, & diſcalceatus. Et dixit 3
Dominus ; Quomodò ivit puer
meus Eſaias nud⁹,& diſcalceatus
(b) tres annos ; (c) tres anni erunt in ſigna, & prodigia Ægyptiis,
& Æthiopibus : Quoniam 4
ſic ducet rex Aſſyriorum captivitatem Ægypti, & Æthiopum,
juvenes,& ſenes, nudos,&
diſcalceatos, diſcoopertos,confuſionem Ægypti. Et confundentur 5
juſti ſuper Æthiopibus , in
quibus erant fidentes Ægyptii : erant enim eis gloria. Et dicent 6
habitatores inſulæ hujus in die illa; Ecce nos fuimus fidentes ad
fugiendum ad eos in auxilium :
qui non potuerunt ſalvari à rege
Aſſyriorum:& quomodò nos ſalvabimur ?

MS. A. (γ) Ἡσαΐαν, λέγων, (˜) ἀνυπόδητος. (δ) Ἡσαΐας ὁ παῖς μου
(ε) ἔσται σημεῖα (ζ) οἱ Αἰγύπτιοι ἐπὶ (η) ταυτῇ, Ἰδοὺ ἡμεῖς

ΚΕΦ. κα'.

ΤΟ' ὍΡΑΜΑ ΤΗ͂Σ ἘΡΗ'ΜΟΥ.

1 ὩΣ καταιγὶς δι' ἐρήμου διέλθοι, ἐξ ἐρήμου
2 ἐρχομένη ἐκ γῆς φοβερὸν Τὸ ὅραμα,
καὶ σκληρὸν ἀνηγγέλη μοι. ὁ ἀθετῶν ἀθετεῖ,
ὁ ἀνομῶν ἀνομεῖ. ἐπ' ἐμοὶ οἱ Ἐλαμῖται, καὶ
οἱ πρέσβεις τῶν Περσῶν ἐπ' ἐμὲ ἔρχονται·
3 νῦν στενάξω καὶ παρακαλέσω ἐμαυτόν. Διὰ τοῦτο
ἐνεπλήσθη ἡ ὀσφύς μου ἐκλύσεως, καὶ
ὠδῖνες ἔλαβόν με ὡς τὴν τίκτουσαν· ἠδίκησα
(α) τοῦ μὴ ἀκοῦσαι, ἐσπούδασα (β) τοῦ μὴ
4 βλέπειν. Ἡ καρδία μου πλανᾶται, καὶ ἡ ἀνομία
με βαπτίζει, ἡ ψυχή μου ἐφέστηκεν εἰς
5 φόβον. Ἑτοίμασον τὴν τράπεζαν, (γ) φάγετε,
πίετε· ἀναστάντες οἱ ἄρχοντες, ἑτοιμάσατε
6 θυρεοὺς, Ὅτι οὕτως εἶπε (δ) πρός
με κύριος, Βαδίσας σεαυτῷ στῆσον σκοπὸν,
7 καὶ (ε) ὃ ἂν ἴδῃς ἀνάγγειλον. Καὶ εἶδον
ἀναβάτας ἱππεῖς δύο, (ζ) καὶ ἀναβάτην ὄνου,
καὶ ἀναβάτην καμήλου. ἀκρόασαι ἀκρόασιν
8 πολλὴν, Καὶ κάλεσον Οὐρίαν εἰς τὴν (η) σκοπιάν.
κύριος εἶπεν, Ἔστην διαπαντὸς
ἡμέρας, καὶ ἐπὶ τῆς παρεμβολῆς (ϑ) ἐγὼ ἔστην
9 ὅλην τὴν νύκτα, Καὶ ἰδοὺ αὐτὸς ἔρχεται
ἀναβάτης (˜) ξυνωρίδος. καὶ ἀποκριθεὶς εἶπε,
(ι) Πέπτωκε πέπτωκε Βαβυλὼν, καὶ πάντα
τὰ ἀγάλματα αὐτῆς, καὶ τὰ χειροποίητα
10 αὐτῆς συνετρίβησαν εἰς τὴν γῆν. Ἀκούσατε,
οἱ καταλελειμμένοι, (κ) καὶ οἱ ὀδυνώμενοι ἀκούσατε,
ἃ ἤκουσα παρὰ κυρίου σαβαὼθ, ὁ θεὸς
τοῦ Ἰσραὴλ ἀνήγγειλεν ἡμῖν.

CAP. XXI.

VISIO DESERTI.

SIcut tempeſtas per deſertum 1
tranſeat, è deſerto veniens de terra,
terribilis Viſio,& dura annuntiata 2
eſt mihi. (a) Prævaricans prævaricatur, iniquus iniquè
agit. Super me Elamitæ,& legati
Perſarum ſuper me veniunt.
Nunc gemam, & conſolabor meipſum.
Propter hoc impletus eſt 3
lumbus meus diſſolutione : & dolores
apprehenderunt me , ſicut
parturientem : injuſtè egi non audiendo
: ſtudioſè egi, nè viderem.
Cor meum errat: & iniquitas 4
me demergit : anima mea incubuit
in timorem. Para menſam, 5
comedite, bibite : Surgentes principes
parate clypeos : Quia ſic 6
dixit ad me Dominus ; Vadens
tibi ſtatue ſpeculatorem:& quodcunque
videris, annuntia. Et vidi 7
aſcenſores equites duos, &
aſcenſorem aſini, & aſcenſorem
cameli. Auſculta auſcultatione
multâ : Et voca (b) Uriam 8
(c)in ſpeculam: Dominus dixit ;
Steti ſemper die, & ſuper caſtra
ego ſteti totâ nocte : Et ecce ipſe 9
venit aſcenſor bigæ.Et reſpondens
dixit ; Cecidit, cecidit Babylon ,
& omnia ſimulachra ejus,& manufacta
ejus contrita ſunt in terram.
Audite, qui derelicti eſtis, 10
& qui doletis, audite, quæ audivi
à Domino Sabaoth : Deus Iſrael
annuntiavit nobis.

MS.A. (α) τὸ μὴ (β) τὸ μὴ (γ) πίετε, φάγετε· (δ) κύριος πρός με,
(ε) ὃ ἐὰν (ζ) ἀναβάτην (η) σκοπιὰν κυρίου. καὶ εἶπεν, (ϑ) ἕστην (˜) συνωρίδος.
(ι) Πέπτωκεν Βαβυλὼν, (κ) καὶ ὀδυνώμενοι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

2 בעדנא ההיא גזר יי ביד ישעיה בר אמוץ למימר איזיל ותיסר סקא בחרצך ומסנך
3 תשלוף מעל רגלך ועבד כן אזל פתיח ויחיף : ואמר יי כמא דהליך עבדי ישעיה פחיח
4 ויחיף תלת שנין את ומופת על מצראי ועל כושאי : כן ידבר מלכא דאתור ית שבי
5 מצרים וית גלות כוש עולמין וסבין פחיחין ויחפין וגלן עריה קלן מצרים : ויתברון
6 ויבהתון מכוש בית רוחצניהון ומן מצרים תושבחתהון : ויימר יתיב נסא הדין בעדנא
ההיא הכדין הוה בית רוחצנא דהוינא סבירין למערוק לתמן לסעיד לאשתזבא מן
קדם מלכא דאתור עד כדון נפשהון לא שיזיבו ואיכדין נשתזיב אנחנא :

כא

1 מטל משרין דאתין ממדברא כמי ימא דנגדין כעלעולין ואתן באורח דרומא מדברין
2 ואתין ממדברא מארעא דאתעבידא בה חסינין : אמר נביא נבואה קשיא אתחואה לי
אניסיא מתאנסין ובוזזיא מתבזזין סקו עילמאי תקפו מדאי כל דהוו מתאנחין מן קדם
3 מלכא דבבל אניחית להון : על כן אתמליאו חרציהון זיעא דחלא אחדתנון הא כהבלין
4 לילדתא אטפשו מלמשמע טעו מלמחזי : טעה לבהון עקא וביעותין אחדונון אתר בית
5 רוחצניהון הוה להון לתבר : סדרו פתורין אקימו סכואין אכולו שתו קומו רברביא
6 מריקו וצחצחו זינא : ארי כדנן אמר לי יי איזיל אקים סכואה דיחזי יחוי : ויחזי רתך אנש
7 ועמיה זוג פרשים רכב על חמר רכיב על גמלא אמר נביא אצתית אצתא וחזית והא
8 משרין לחדא : אמר נביא קל משרין דאתין בסיטוניהון כאריא ועל סכותא קדם יי אנא
9 קאים תדירא בימממא ועל מטרתי אנא מעתד כל ליליא : והא דין אתא רתך אנש ועמיה
זוג פרשין ואתיב ואמר נפלת ואף עתידא למפל בבל וכל צלמי טעותהא ידקדקין
10 לארעא : מלכין דאו מנין לאגחא קרבא ייתון עלה למבזהא כאכרא דאומן למדש ית
אדרא אמר נביא דשמעית ית קל מימרא דיי צבאות אלהא דישראל חויתי לכון :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

In tempore illo decrevit Dñs per manũ Eſaiæ filii Amos, dicens : Vade & 2
ſolve ſaccum de lumbis tuis,& calciamenta tua diſcalciabis de pedibus tuis:
& fecit ſic; ambulans nudus & diſcalciatus. Et dixit Dñs : Sicut ambulavit 3
ſervus meus Eſaias nudus & diſcalciatus tribus annis in ſignum & portentũ
ſuꝑ Ægyptios, & ſuper Æthiopes: Sic ducet rex Aſſyriæ captivitatẽ 4
Ægypti, & tranſmigrationẽ Æthiopiæ, juvenes & ſenes, nudos & diſcalciatos,
&diſcoopertis pudendis in ignominiã Ægyptiorum. Et conterentur 5
& confundentur ab Æthiopia domo confidentiæ ſuæ, & ab Ægyptiis
laude ſua. Et dicet habitator inſulæ hujus in tempore illo : Ecce hic erat 6
domus confidentiæ noſtræ, ad quem ſperabamus confugere in auxilium, ut
liberaremur à facie regis Aſſyriæ : & ſi iſti adhuc animas ſuas non liberaverunt,
quomodo liberabimur nos ?

CAP. XXI.

ONus exercituũ venientiũ à deſerto, ſicut aquæ maris;decurrentes quaſi 1
turbines, & venientes per viam Auſtri ſeſe proripiunt,& veniunt à deſerto,
de terra in qua facta ſunt terribilia. Dicit propheta, Prophetia dura 2
nunciata eſt mihi. Violenti violentiam inferunt, & direptores diripiunt:
Aſcendite Elamitæ, circuite Medi : & omnes qui gemebãt à facie regis
Babylonis, requieſcere feci eos. Propterea impleti ſunt lumbi eorũ tremore; 3
timor apprehendit eos, ſicut dolores parturientẽ : inſipientes facti ſunt
ne audiant : erraverunt ut non videant. Erravit cor eorũ ;tribulatio & 4
conturbationes apprehenderunt eos, quia domus confidentiæ ſuæ fuit eis
in interitũ. Ordinate menſas, ſtatuite ſpeculas, comedite, bibite, ſurgite 5
principes,tergite et lucida facite arma. Quia hæc dicit mihi Dñs,Vade,conſtitue 6
ſpeculatorẽ; quodcunq; viderit, annuntiet. Et vidit currũ hominis, 7
& cum eo par equitũ :aſcenſorẽ aſini,& aſcenſorẽ cameli. Dixit propheta,
Auſcultavi auſcultatione, & vidi; et ecce,turbæ *ingentes*. Dixit propheta; 8
Vox turmarũ venientiũ cum loricis ſuis ſicut leo; *et* ſuꝑ ſpecula ego ſto coram
Dño ſemꝑ in die,et in cuſtodia mea ego ſto tota nocte. Et ecce iſte venit 9
curr⁹ hominis, et cum eo duo equites: et reſpondit et dixit,Cecidit &
etiã futura eſt ut cadat Babylon, et omnia ſimulachra idolorũ ejus comminuentur
ad terram. Reges qui conſueti ſunt ad ineundũ prælium venient 10
contra eam, ut diripiant eam ſicut plauſtrum artificis ad triturandam aream.
Dicit propheta, Quod audivi, *vocem ſermonis* Domini exercituum Dei Iſrael, annuncio vobis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܒܗܿ ܒܙܒܢܐ ܗܿܘ. ܡܠܠ ܡܪܝܐ ܒܝܕ ܐܫܥܝܐ ܢܒܝܐ ܒܪ ܐܡܘܨ ܘܐܡܪ ܠܗ. ܙܠ ܫܪܝ 2
ܣܩܐ ܡܢ ܚܨܝܟ. ܘܡܣܢܝܟ ܡܢ ܪ̈ܓܠܝܟ. ܘܥܒܕ ܗܟܢܐ. ܘܗܠܟ ܥܪܛܠܝ ܘܚܦܝ. * ܘܐܡܪ 3
ܡܪܝܐ. ܐܝܟܢܐ ܕܗܠܟ ܥܒܕܝ ܐܫܥܝܐ ܥܪܛܠܝ ܘܚܦܝ. ܗܟܢܐ ܢܗܘܘܢ ܐܬܘܬܐ ܘܬܕܡܪ̈ܬܐ
ܠܬܠܬ ܫܢܝܢ. ܥܠ ܡܨܪܝܢ ܘܥܠ ܟܘܫ. * ܗܟܢܐ ܢܕܒܪ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ ܫܒܝܬܐ ܕܡܨܪܝܢ. 4
ܘܫܒܝܬܐ ܕܟܘܫ. ܠܛܠܝ̈ܐ ܘܠܣ̈ܒܐ ܥܪܛܠܝ ܘܚܦܝ. ܘܢܓܠܐ ܨܥܪܗܿ ܕܡܨܪܝܢ.
* ܘܢܬܒܪܘܢ ܘܢܒܗܬܘܢ. ܡܢ ܟܘܫ ܬܘܟܠܢܗܘܢ. ܘܡܢ ܡܨܪܝܢ ܫܘܒܗܪܗܘܢ. * ܘܢܐܡܪ 5 6
ܥܡܘܪܐ ܕܓܙܪܬܐ ܗܕܐ. ܒܝܘܡܐ ܗܿܘ. ܗܐ ܗܢܘ ܬܘܟܠܢ ܕܥܪܩܢ ܠܘܬܗ ܠܡܥܕܪܘܬܐ ܘܠܡܬܦܨܝܘ
ܡܢ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. ܘܐܝܟܢܐ ܢܬܦܨܐ. * ܫܠܡܘ * ܟܐ *

* ܡܫܩܠܐ ܕܡܕܒܪܐ ܕܝܡܐ * ܐܝܟ ܥܠܥܠܐ ܡܢ ܬܝܡܢܐ ܢܬܦܠܛ ܡܢ ܡܕܒܪܐ. ܘܐܬܐ 1
ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܚܝܠܬܐ. * ܚܙܘܐ ܩܫܝܐ ܐܬܚܘܝ ܠܝ. ܛܠܘܡܐ ܛܠܡ. ܘܒܙܘܙܐ ܒܙܐ. ܣܩܝ 2
ܥܝܠܡ ܘܛܘܪ̈ܝ ܡܕܝ. ܘܟܠܗ ܬܢܚܬܗ ܐܫܠܝܗ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܬܡܠܝ ܚܨܝ 3
ܙܘܥܐ. ܘܐܚܕܘܢܝ ܚܒ̈ܠܐ ܐܝܟ ܚܒ̈ܠܐ ܕܝܠܕܬܐ. ܪܬܬ ܕܠܐ ܐܫܡܥ. ܘܐܬܕܠܚܬ ܕܠܐ ܐܚܙܐ.
* ܛܥܐ ܠܒܝ ܘܚܒ̈ܠܐ ܐܒܥܬܘܢܝ. ܘܫܘܦܪܐ ܕܪܓܝܓ ܠܝ. ܗܦܟܘ ܠܝ ܠܙܘܥܬܐ. * ܛܝܒܘ 4 5
ܦܬܘܪܐ. ܕܘܩܘ ܕܘܩܐ. ܐܟܘܠܘ ܘܐܫܬܘ. ܩܘܡܘ ܪܘܪ̈ܒܢܐ: ܡܫܘܚܘ ܡܓܢܐ. * ܡܛܠ 6
ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܙܠ ܐܩܝܡ ܕܘܩܐ. ܕܡܕܡ ܕܚܙܐ ܢܚܘܐ. * ܘܚܙܐ ܪܟܒܐ ܕܬܪܝܢ 7
ܦܪ̈ܫܝܢ. ܕܪܟܝܒ ܚܡܪܐ. ܘܕܪܟܝܒ ܓܡܠܐ. ܘܨܬ ܨܘܬܐ ܣܓܝܐܐ. * ܘܩܪܐ ܕܘܩܐ ܒܐܕܢ̈ܝ ܘܐܡܪ. 8
ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܩܐܡ ܐܢܐ ܐܡܝܢܐܝܬ ܒܐܝܡܡܐ. ܘܥܠ ܡܛܪܬܝ ܩܐܡ ܐܢܐ. ܟܠܗܘܢ ܠܠܝ̈ܐ.
* ܘܗܐ ܐܬܐ ܚܕ ܡܢ ܪܟܒܐ ܕܦܪ̈ܫܐ. ܘܥܢܐ ܘܐܡܪ. ܢܦܠܬ ܢܦܠܬ ܒܒܝܠ. ܘܟܠܗܘܢ 9
ܨܠܡ̈ܝ ܦܬܟܪ̈ܝܗ ܐܬܬܒܪܘ ܠܐܪܥܐ. ܡܢ ܒܨܝܪܘܬ ܚܨܕܐ ܘܡܢ ܒܨܝܪܘܬ ܐܕܪܐ. * ܡܕܡ ܕܫܡܥܬ 10
ܡܢ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܚܘܝܬܟܘܢ.

Eodem illo tempore locutus eſt Dominus 2
per Eſaiam prophetam Amoſi filium, dixítque ad eum; Abi, depone cilicium de lumbis tuis, & calceos tuos de pedibus tuis: fecítque ſic, & inceſſit nudus & diſcalceatus.
Tum dixit Dominus, Quemadmodum inceſſit ſervus meus Eſaia nudus & diſcalceatus, ita fient ſigna & portenta tribus annis ſuper Ægyptum & ſuper Cus. 3
Sic abducet rex Aſſyriæ captivitatem Ægypti, & captivitatem Cus, juvenes ac ſenes nudos & diſcalceatos; & detegetur turpitudo Ægypti: 4
Et frangentur ac pudore afficientur à Cus fiduciâ ſuâ, & ab Ægypto gloriâ ſuâ. 5
Et dicet incola hujus inſulæ eo die, Hiccine eſt ſtatus fiduciæ noſtræ ad quam confugeramus ut haberemus præſidium, & evaderemus à rege Aſſyriæ? nos igitur quomodo ſalvaremur? 6

CAP. XXI.

Onus deſerti maris.

NOn ſecus ac nimbus ab Auſtro advolans è deſerto, & veniens è terra longinqua; 1
Spectrum atrox apparuit nobis: tyrannus opprimens, & prædo diripiens. Aſcende Ilam & montes Mediæ, & omnes gemitus ejus ceſſare faciam. 2
Iccirco repletum eſt dorſum meum tremore, & corripuerunt me caligines quaſi caligines parturientis: contremiſco quò minùs audiam, et conturbor quò minùs videam. 3
Errat cor meum, caligines me terrent, et pulchritudines mihi gratiſſimas vertunt mihi in pavorem. 4
Parate menſas, ſpeculamini ſpeculatores, edite et bibite, Surgite magnates, ungite clypeos: 5
Nam ita dixit mihi Dominus; Vade, conſtitue ſpeculatorem qui quod viderit indicet. 6
Cùm itaque vidiſſet equitatum duorum equitum, unius aſino, alterius camelo inſidentis; cúmque diu auditum intendiſſet, 7
Clamavit ſpeculator in auribus meis, ac dixit; Ego domine, conſiſtam jugiter per diem, et in excubiis meis perſtabo totis noctibus. 8
Interea ecce venit unus ex inequitantibus illis equitibus, et reſpondens dixit; Cecidit, cecidit Babel, et omnes dii ejus ſculptiles confracti ſunt humi, propter penuriam meſſis et propter penuriam aræ. 9
Quod audivi à Domino Deo Iſraelis, nuntiavi vobis. 10

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* حينيذ تكلم ٱلرب مع اشعيا بن عاموص قايلا * امض وانزع عن حقوك مسحك * وحل 2
نعليك عن قدميك * واصنع هكذا * امض عريانا وحافيا * وقال ٱلرب * على نحو ما مضي فتاي 3
اشعيا عريانا وحافيا * ثلاثة سنين تكون علامات وايات للمصريين وللحبش * لان هكذا يسوق 4
ملك ٱلموصليين سبي مصر وشبان ٱلحبش ومشايخهم * عراة وحفاة كاشفين فضيحة مصر *
* ويخزون ويغلبون ٱلمصريون بٱلحبش ٱلتي كانت ٱلمصريون متوكلين عليهم * لانهم كانوا لهم 5
مجدا * ويقول ٱلسكان في هذه ٱلجزيرة في ذلك ٱليوم * هوذا نحن كنا متوكلين ان نلتجي 6
اليهم للمعونة * ٱلذين لم يستطيعوا ان يخلصوا من ملك ٱلموصليين * وكيف نحن نخلص *

* ٱلفصل ٱلحادي وٱلعشرون * * ٱلوحي ٱلحادي عشر * * وهو ٱلاصحاح ٱلعاشر *

* ٱلنبوة في اهل ٱلبرية ٱلقريبة من ٱلبحر * مثل عاصف من برية يجوز من برية ءاتي من 1
ٱلارض * كلمة مخوفة وصعبة تخبر لي * ٱلعاصي يعصي * ٱلاثم ياثم في اهل ٱلاهواز * وشفعاء ٱلفرس 2
الي يقبلون * ٱلان اتنهد واعزي ذاتي * لاجل هذا امتلي حقوي انحلالا * وٱلطلقات اخذتني 3
مثل ٱلوالدة * ظلمت ان لا اسمع * وجزعت ان لا انظر * قلبي يضل * وٱلاثم يغمرني * ونفسي بلغت 4
ٱلخوف * اعدوا ٱلمايدة * كلوا اشربوا * قوموا ايها ٱلرؤساء هيوا ٱلاترسة * لان هذا قال لي ٱلرب * 5 6
اعمد اقم لك ديدبان * وٱلذي تراه اخبر به * وبصر فارسين راكبين * احدهما راكب حمار * 7
وٱلاخر راكب جمل * ليسمعوا اسماعا كثيرا * وادع اوريا لديدبة ٱلرب * وقال * وقفت كل حين 8
اياما * وعلى ٱلمعسكر وقفت انا ٱلليل كله * واذا هو وقف * واقبل راكب من ٱلاثنين واجاب 9
وقال * سقطت بابل ٱلعظمى * وكل اصنامها ومصنوعات ٱلايدي ٱلتي لها انسحقت الي ٱلارض *
* اسمعوا ايها ٱلمتقيون وٱلموجعون اسمعوا * ما سمعت من قبل رب ٱلجيوش اله اسرايل اخبركم * 10

Eo inquam tempore allocutus eſt Dominus Eſaiam filium Amos, dicens; Vade, & exue ſaccum tuum de lumbo tuo, et ſoleas tuas ſolve de pedibus tuis, & hoc modo facito: incede nudus & diſcalceatus.
Tum dixit Dominus, Quemadmodum inceſſit puer meus Eſaia nudus & diſcalceatus, ita tribus annis erunt ſigna & prodigia in Ægyptiis & Æthiopibus. 3
Hoc enim pacto abducet rex Aſſyriorum captivos Ægypti, & juvenes ac ſenes Æthiopum, nudos et diſcalceatos, revelantes turpitudinem Ægypti. 4
Ita pudefacti ſuperabuntur Ægyptii ab Æthiopibus quibus freti erant Ægyptii, quippe qui gloriationi eſſent apud ipſos. 5
Et dicent habitantes in hac inſula eo die, Ecce nos confidebamus fore ut pro auxilio confugeremus ad iſtos qui nequeunt liberare ſe à rege Aſſyriorum, quomodo ergò nos evaderemus? 6

CAP. XXI.

Revelatio undecima.

Textus decimus.

PRophetia de incolis deſerti quod eſt mari proximum. *Ceu turbo de deſerto, permeans è deſerto, veniens è terra,* 1
Verbum formidabile ac prædurum nuntiatur mihi: Rebellis rebellat, et perfidus perfidè agit in gentem Ahuaz, (i. Elamitas:) *patroni Perſarum ad me venient: jam reſpirabo & meipſum conſolabor.* 2
Hac de re impletũ eſt dorſum meũ diſſolutione, et occupaverunt me tormina quaſi parturientem: adeo opprimor ut non audiam, adeo trepido ut non videam. 3
Animus meus errat, ſcelus me debilitat, & anima mea ſuprema terrore percellitur. 4
Sternite menſam, edite, bibite: ſurgite O principes, præparate clypeos. 5
Hoc enim dixit mihi Dominus; Adeſto, ſtatue tibi exploratorem; & quod videris, annuntia. 6
Et vidi duos equites inſidentes, unum inſidentem aſino, alterum inſidentem camelo, ut multa auditu digna narrarent. 7
Voca etiam Uriam ad explorationem Domini: & dixit, Steti indeſinenter per dies aliquot, & ſuper caſtra ſteti ego totâ nocte. 8
Eo ſtante advenit eques unus ex iis duobus, qui reſpondit ac dixit, Corruit Babel illa magna, & omnia ipſius idola & manufacta ipſius comminuta ſunt in terram uſque. 9
Audite O religioſi & dolentes, audite: quod audivi à Domino exercituum, Deo Iſraelis, annuntio vobis. 10

ישעיה: כב

, noĉte de quid Cuſtos : Sehir de *clamans* me ad : Dumah *Onus*
11 מַשָּׂא דּוּמָה אֵלַי קֹרֵא מִשֵּׂעִיר שֹׁמֵר מַה־מִּלַּיְלָה
: nox etiam & mane Venit : cuſtos Dixit ? noĉte de quid cuſtos
12 שֹׁמֵר מַה־מִּלֵּיל׃ אָמַר שֹׁמֵר אָתָא בֹקֶר וְגַם־לַיְלָה
ſaltu In : Harab in *Onus* .venite ,revertimini , quærite *quæretis* ſi
13 אִם תִּבְעָיוּן בְּעָיוּ שֻׁבוּ אֵתָיוּ׃ מַשָּׂא בַּעְרָב בַּיַּעַר
ſitienti occurſum In .Dedanim ſemitæ , morabimini Harab in
14 בַּעְרַב תָּלִינוּ אֹרְחוֹת דְּדָנִים׃ לִקְרַאת צָמֵא
.*vagantem* prævenite ejus pane cum Temah terræ habitatores ,aquæ venite
הֵתָיוּ מָיִם יֹשְׁבֵי אֶרֶץ תֵּימָא בְּלַחְמוֹ קִדְּמוּ נֹדֵד׃
, *expanſi* gladii *faciebus* à ; *evagati ſunt* gladiorum *faciebus* à Quoniam
15 כִּי־מִפְּנֵי חֲרָבוֹת נָדָדוּ מִפְּנֵי חֶרֶב נְטוּשָׁה
ſic Quia .prælii gravitatis *faciebus* à & ,extenti arcus *faciebus* à &
16 וּמִפְּנֵי קֶשֶׁת דְּרוּכָה וּמִפְּנֵי כֹּבֶד מִלְחָמָה׃ כִּי־כֹה
cōſumetur & ,mercenarii anni ſicut ,*anno adhuc* In :me ad Dominus dixit
אָמַר אֲדֹנָי אֵלַי בְּעוֹד שָׁנָה כִּשְׁנֵי שָׂכִיר וְכָלָה
filiorum fortium *arcus numeri* reſiduum Et .Chedar gloria omnis
17 כָּל־כְּבוֹד קֵדָר׃ וּשְׁאָר מִסְפַּר־קֶשֶׁת גִּבֹּרֵי בְּנֵי־
.eſt locutus Iſrael Deus DOMINUS nam : imminuentur Chedar
קֵדָר יִמְעָטוּ כִּי יְהוָה אֱלֹהֵי־יִשְׂרָאֵל דִּבֵּר׃

CAP. XXII. כב

tu omnis aſcendiſti quia , nunc tibi Quid .viſionis vallis *Onus*
1 מַשָּׂא גֵּיא חִזָּיוֹן מַה־לָּךְ אֵפוֹא כִּי־עָלִית כֻּלָּךְ
.læta civitas ,tumultuans urbs , plena *Tumultuationibus* ? teĉta in
2 לַגַּגּוֹת׃ תְּשֻׁאוֹת מְלֵאָה עִיר הוֹמִיָּה קִרְיָה עַלִּיזָה
.bello mortui neque , gladio interfeĉti non tui Interfeĉti
חֲלָלַיִךְ לֹא חַלְלֵי־חֶרֶב וְלֹא מֵתֵי מִלְחָמָה׃
Omnes .ſunt ligati *arcu ab* , ſimul *ſunt vagati* tui *gubernatores* Cunĉti
3 כָּל־קְצִינַיִךְ נָדְדוּ־יַחַד מִקֶּשֶׁת אֻסָּרוּ כָּל־
: dixi Propterea .fugerant *longè* à , pariter ſunt vinĉti *tui* inventi
4 נִמְצָאַיִךְ אֻסְּרוּ יַחְדָּו מֵרָחוֹק בָּרָחוּ׃ עַל־כֵּן אָמַרְתִּי
ſuper me conſolari feſtinetis ne : fletu in me *amarificabo* ,me à *Reſpicite*
שְׁעוּ מִנִּי אֲמָרֵר בַּבֶּכִי אַל־תָּאִיצוּ לְנַחֲמֵנִי עַל־
,conculcationis & ,contritionis dies Quia .mei populi filiæ *vaſtatione*
5 שֹׁד בַּת־עַמִּי׃ כִּי יוֹם מְהוּמָה וּמְבוּסָה
, viſionis Valle in exercituum DOMINO Domino *perplexitatis* &
וּמְבוּכָה לַאדֹנָי יְהוִה צְבָאוֹת בְּגֵיא חִזָּיוֹן
Helam Et .montem ad *clamor* & , parietem *exparietans*
6 מְקַרְקַר קִר וְשׁוֹעַ אֶל־הָהָר׃ וְעֵילָם
.*clypeum denudavit* Chir & , equitum hominis curru in pharetram *tulit*
נָשָׂא אַשְׁפָּה בְּרֶכֶב אָדָם פָּרָשִׁים וְקִיר עֵרָה מָגֵן׃
, equites & , *curru* ſunt repletæ *tuarum vallium electio* , fuit Et
7 וַיְהִי מִבְחַר־עֲמָקַיִךְ מָלְאוּ רָכֶב וְהַפָּרָשִׁים
operimentum diſcooperuit Et .*portam verſus poſuerunt ponendo*
8 שֹׁת שָׁתוּ הַשָּׁעְרָה׃ וַיְגַל אֵת מָסַךְ
.ſylvæ domus *armaturam* ad illa die in reſpexiſti & : Jehudah
יְהוּדָה וַתַּבֵּט בַּיּוֹם הַהוּא אֶל־נֶשֶׁק בֵּית הַיָּעַר׃
: ſunt multiplicatæ quia ; vidiſtis David civitatis ſciſſuras Et
9 וְאֵת בְּקִיעֵי עִיר־דָּוִד רְאִיתֶם כִּי־רָבּוּ
Et .inferioris piſcinæ aquas congregâſtis &
10 וַתְּקַבְּצוּ אֶת־מֵי הַבְּרֵכָה הַתַּחְתּוֹנָה׃ וְאֶת־
muniendum ad domos deſtruxiſtis & ,numerâſtis Jeruſalaim domos
בָּתֵּי יְרוּשָׁלַםִ סְפַרְתֶּם וַתִּתְצוּ הַבָּתִּים לְבַצֵּר
.murum
הַחוֹמָה׃

Verſio VULG. LAT.

11 Onus Duma ad me clamat ex Seir; Cuſtos, quid de noĉte? 12 cuſtos, quid de noĉte? Dixit cuſtos; Venit manè & nox: ſi quæritis, quærite: convertimini, venite. 13 Onus in Arabia. In ſaltu ad veſperam dormietis, in ſemitis Dedanim. 14 Occurrentes ſitienti ferte aquam, qui habitatis terram Auſtri, cum panibus occurrite fugienti. 15 A facie enim gladiorū fugerunt, à facie gladii imminentis, à facie arcûs extenti, à 16 facie gravis prælii: Quoniam hæc dicit Dominus ad me; Adhuc in uno anno, quaſi in anno mercenarii, & auferetur omnis 17 gloria Cedar. Et reliquiæ numeri ſagittariorum fortium de filiis Cedar imminuentur: Dominus enim Deus Iſrael locutus eſt.

CAP. XXII.

1 ONus vallis Viſionis. Quidnam quoque tibi eſt, quia aſcendiſti & tu omnis in teĉta? 2 Clamoris plena, urbs frequēs, civitas exultans: interfeĉti tui, non interfeĉti gladio, nec mor- 3 tui in bello. Cunĉti principes tui fugerunt ſimul: duréque ligati ſunt: omnes qui inventi ſunt, vinĉti ſunt pariter, pro- 4 cul fugerunt. Propterea dixi; Recedite à me, amarè flebo: nolite incumbere ut conſolemini me ſuper vaſtitate filiæ 5 populi mei. Dies enim interfeĉtionis, & conculcationis, & fletuum, Domino Deo exercituum in valle Viſionis: ſcrutans murum, & magnifi- 6 cus ſuper montem. Et Ælam ſumpſit pharetram, currum hominis equitis, & parietem nu- 7 davit clypeus. Et erunt eleĉtæ valles tuæ plenæ quadrigarum, & equites ponent ſedes 8 ſuas in porta. Et revelabitur operimentum Judæ, & videbis in die illa armamentarium do- 9 mûs ſaltûs. Et ſciſſuras civitatis David videbitis, quia multiplicatæ ſunt: & congregâſtis aquas piſcinæ inferioris, 10 Et domos Jeruſalem numerâſtis, et deſtruxiſtis domos ad muniendum murum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

11 ΤΟ' ὍΡΑΜΑ ΤΗ͂Σ ἸΔΟΥΜΑΙ'ΑΣ.

Πρὸς ἐμὲ (λ) καλεῖ παρὰ τοῦ Σηείρ, (μ) Φυλάσσετε ἐπάλξεις. 12 Φυλάσσω τοπρωῒ καὶ τὴν νύκτα. ἐὰν ζητῇς ζήτει, καὶ παρ' ἐμοὶ οἴκει, 13 Ἐν τῷ δρυμῷ ἑσπέρας κοιμηθήσῃ, ἢ ἐν τῇ 14 ὁδῷ Δαιδάν. Εἰς συνάντησιν (ν) διψῶντι ὕδωρ φέρετε οἱ ἐνοικοῦντες ἐν χώρᾳ Θαιμὰν, 15 ἄρτοις συναντᾶτε τοῖς φεύγουσι Διὰ τὸ πλῆθος τῶν (ξ) πεφονευμένων, καὶ διὰ τὸ πλῆθος τῶν πλανωμένων, καὶ διὰ τὸ πλῆθος τῆς μαχαίρας, καὶ διὰ τὸ πλῆθος τῶν τοξευμάτων τῶν διατεταμένων, καὶ διὰ τὸ πλῆθος τῶν πε- 16 πτωκότων ἐν τῷ (ο) πολέμῳ. Διότι οὕτως εἶπέ μοι κύριος, Ἔτι ἐνιαυτὸς ὡς ἐνιαυτὸς μι- 17 σθωτοῦ, ἐκλείψει ἡ δόξα τῶν υἱῶν Κηδὰρ, Καὶ τὸ κατάλοιπον τῶν τοξευμάτων τῶν ἰσχυρῶν υἱῶν Κηδὰρ ἔσται ὀλίγον, (π) ὅτι κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ ἐλάλησεν.

VISIO IDUMÆÆ. 11

Ad me (d) voca de Seir; Cuſtodite propugnacula. Cuſtodio manè, & noĉtu. 12 *Si quæſieris, quære, & apud me (e) habita,* 13 *In ſaltu veſperè dormies, aut in via Dædan.* 14 *In occurſum ſitienti aquam ferte, qui habitatis in regione Thæman; panes obviàm ferte fugientibus,* 15 *Propter multitudinem occiſorum, & propter turbam errantium, & propter multitudinem gladii, & propter multitudinem arcuum intentorum, & propter multitudinem eorum, qui ceciderunt in bello.* 16 *Quia ſic dixit mihi Dominus; Adhuc annus, quaſi annus mercenarii, deficiet gloria filiorum Cedar:* 17 *Et reſiduum arcuum fortium filiorum Cedar erit paucum: quia Dominus Deus Iſrael locutus eſt.*

MS.A. (λ) καλεῖτε (μ) Φυλάξεται (ν) ὕδωρ διψῶντι (ξ) φευγόντων, (ο) παιδίῳ. Ὅτι οὕτως (π) διότι κύριος ἐλάλησεν ὁ θεὸς Ἰσραήλ.

ΚΕΦ. κβ'.

ΤΟ' (α) ῬΗ͂ΜΑ ΤΗ͂Σ ΦΑ'ΡΑΓΓΟΣ ΣΙΩ'Ν.

1 ΤΙ' ἐγένετό σοι (β), ὅτι νῦν ἀνέβητε πάν- 2 τες εἰς δώματα μάταια; Ἐνεπλήσθη ἡ πόλις βοώντων, οἱ τραυματίαι σου οὐ τραυματίαι (γ) ἐν μαχαίραις, οὐδὲ οἱ νεκροί σου νε- 3 κροὶ (˝) πολέμων. Πάντες οἱ ἄρχοντές σου πεφεύγασι, καὶ οἱ ἁλόντες σκληρῶς (¨) δεδεμένοι εἰσὶ, καὶ οἱ ἰσχύοντες ἐν σοὶ πόρρω πεφεύ- 4 γασι. Διὰ τοῦτο εἶπα, Ἄφετέ με, πικρῶς κλαύσομαι· μὴ κατισχύσητε παρακαλεῖν με ἐπὶ τὸ σύντριμμα τῆς θυγατρὸς τοῦ γένους μου, 5 Ὅτι ἡμέρα ταραχῆς καὶ ἀπωλείας καὶ καταπατήματος, καὶ πλάνησις παρὰ κυρίου σαβαώθ. ἐν φάραγγι Σιὼν πλανῶνται, ἀπὸ 6 μικροῦ ἕως μεγάλου πλανῶνται ἐπὶ τὰ ὄρη. Οἱ δὲ Ἐλαμῖται ἔλαβον φαρέτρας, (δ) καὶ ἀναβάται ἄνθρωποι ἐφ' (ε) ἵπποις, καὶ συναγωγὴ παρα- 7 τάξεως. Καὶ ἔσονται αἱ ἐκλεκταὶ φάραγγές σου, πλησθήσονται ἁρμάτων, οἱ δὲ ἱππεῖς 8 ἐμφράξουσι τὰς πύλας σου, Καὶ ἀνακαλύψουσι τὰς πύλας Ἰούδα· καὶ ἐμβλέψονται τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ εἰς τοὺς ἐκλεκτοὺς οἴκους τῆς πό- 9 λεως· Καὶ ἀνακαλύψουσι τὰ κρυπτὰ τῶν οἴκων τῆς ἄκρας Δαυίδ. καὶ εἴδοσαν, ὅτι πλείους εἰσὶ, καὶ ὅτι (ζ) ἀπέστρεψε τὸ ὕδωρ τῆς ἀρ- 10 χαίας κολυμβήθρας εἰς τὴν πόλιν, Καὶ ὅτι καθεῖλοσαν τοὺς οἴκους Ἱερουσαλὴμ εἰς (η) ὀχυρώματα τείχους τῇ πόλει.

CAP. XXII.

VERBUM VALLIS SION.

Quid faĉtum eſt tibi, quia nunc aſcendiſtis omnes in teĉta 1 *vana?* 2 *Impleta eſt civitas clamantium, vulnerati tui non vulnerati in gladiis, neque mortui tui mortui præliorum:* 3 *Omnes principes tui fugerunt, & capti durè ligati ſunt, & fortes in te longè fugerunt.* 4 *Propter hoc dixi; Dimittite me, amarè plorabo: nolite contendere, ut conſolemini me ſuper contritione filiæ generis mei:* 5 *Quoniam dies tumultûs, & perditionis, & conculcationis: & error à Domino Sabaoth. In valle Sion errant, à parvo uſque ad magnum errant ſuper montes.* 6 *(a) Elamitæ autem ſumpſerunt pharetras, & aſcenſores homines ſuper equos, & congregatio aciei.* 7 *Et erunt eleĉtæ valles tuæ, implebuntur curribus, & equites ſtipabunt portas tuas,* 8 *Et revelabunt portas Juda: & inſpicient die illâ in eleĉtas domos civitatis,* 9 *Et revelabunt occulta domorum arcis David. Et viderunt, quia plures ſunt, & quia (b) avertit aquam veteris piſcinæ in civitatem,* 10 *Et quia deſtruxerunt domos Hieruſalem in munitiones muri civitati.*

MS.A. (α) ὍΡΑΜΑ (β) νῦν, ὅτι (γ) μαχαίραις, (˝) πολέμου. (¨) δεδεγμένοι (δ) ἀναβάται (ε) ἵπποις, (ζ) ἀπέστρεψαν (η) ὀχύρωμα τοῦ τείχους

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 מְטַל כָּס דְּלוּט לְאַשְׁקָאָה יַת דּוּמָה עֲלַי אָכְלֵי מִן שְׁמַיָּא נְבִיָּא פְּרֵישׁ לְהוֹן יַת נְבוּאֲתָא
12 נְבִיָּא פְּרֵישׁ לְהוֹן מָה דַּעֲתִיד לְמֵיתֵי : אֲמַר נְבִיָּא אִית אֲגַר לְצַדִּיקַיָּא וְאִית פּוּרְעָנוּת
13 לְרַשִּׁיעַיָּא אִם תְּתִיבִין אַתּוּן תּוּבוּ עַד דְּאַתּוּן יָכְלִין לְמֵתַב : מְטַל כָּס דְּלוּט לְאַשְׁקָאָה יַת
14 עַרְבָאֵי בְּחוּרְשָׁא בְּרַמְשָׁא יְבִיתוּן שְׁיָרַת בְּנֵי דְדָן : לְאַפֵּי צַחְיָא פּוּקוּ נַגְּדִין דְּמַיָּא דְּיָתְבֵי
15 בְּאַרְעָא דָרוֹמָא לַחְמָא דְּאַתּוּן אָכְלִין זַמִּינוּ לִמְעַרְקַיָּא : אֲרֵי מִן קֳדָם קְטוֹל עֲרַקוּ מִן קֳדָם
16 חַרְבָּא שְׁלִיפָא וּמִן קֳדָם קֶשֶׁת מְתִיחָא וּמִן קֳדָם תְּקוֹף קְרָבָא : אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ לִי בְּסוֹף
17 שְׁנַיָּא כִּשְׁנֵי אֲגִירָא וְיָסוּף כָּל יְקָרְהוֹן דַּעֲרָבָאֵי : וּתְקוֹף עָבְדֵי קְרָב גִּבָּרֵי בְּנֵי עֲרָבָאֵי יִזְעֲרוּן
אֲרֵי בְּמֵימְרָא דַּיְיָ אֱלָהָא דְּיִשְׂרָאֵל גְּזִיר כֵּן :

כב

1 מְטַל נְבוּאֲתָא עַל קַרְתָּא דְּיָתְבָא בְּחֵילְתָא דְּאִתְנַבִּיאוּ עֲלַהּ נְבִיַּיָּא מַה לְּכוֹן כְּדוּן אֲרֵי
2 סְלֵקְתּוּן כּוּלְּכוֹן לְאִגָּרַיָּא : מִן קֳדָם אִתְרְגוּשָׁא דְּאִתְמְלִיאַת קַרְתָּא מְשַׁבַּחְתָּא כַּרְכָּא חֲדָאָה
3 קְטִילַיִךְ לָא אִתְקְטִילוּ בְּחַרְבָּא וְאַף בִּקְרָבָא לָא מִיתוּ : כָּל שִׁלְטוֹנַיִךְ אִטַּלְטַלוּ כַּחֲדָא מִן
4 קֳדָם מְתַח קַשְׁתָּא גְּלוֹ כָּל דְּאִשְׁתְּכַח בִּיךְ אִתְקְטַלוּ כַּחֲדָא מֵרְחִיק עֲרַקוּ : עַל כֵּן אֲמָרִית
5 שְׁבוּקוּ מִנִּי אֶבְכֵּי בִּמְרַר לָא תִתְבְּעוּן לְנַחֲמוּתִי עַל תְּבַר כְּנִשְׁתָּא דְעַמִּי : אֲרֵי יוֹם רְגוֹשׁ
וְאִתְּדָשָׁא וּקְטוֹל קֳדָם יְיָ אֱלֹהִים צְבָאוֹת עַל קַרְתָּא דְּיָתְבָא בְּחֵילְתָא דְּאִתְנַבִּיאוּ עֲלַהּ נְבִיַּיָּא
6 מְבַלְּשִׁין בָּתַּיָּא מַקְּפִין מִגְדְּלַיָּא בְּרֵישֵׁי טוּרַיָּא : וְעֵילָמָאֵי נְטַלוּ זַיִן בִּרְתִכָּא אֱנָשׁ וְעִמֵּיהּ זוּג
7 פָּרָשִׁין וְעַל שׁוּר דְּבַקוּ תְּרֵיסִין : וַהֲוָה שְׁפַר מֵישְׁרַךְ אִתְמְלִיאוּ רְתִיכִין וּפָרָשִׁין מְמַנַּן עַל
8 תַּרְעִין : וּגְלֵי יַת מַטְמוֹרִית בֵּית יְהוּדָה וְאִסְתְּכֵי בְּעִדָּנָא הַהִיא עַל זֵין בֵּית גִּנְזֵי מַקְדְּשָׁא :
9 וְיַת פְּלוּגַת קַרְתָּא דְּדָוִד חֲזֵיתוּן אֲרֵי סְגִיאַת וּכְנַשְׁתּוּן יַת עַמָּא לְמֵי בְּרֵכְתָא אַרְעִיתָא : וְיַת
10 בָּתֵּי יְרוּשְׁלֶם מְנִיתוּן וְתָרַעְתּוּן בָּתַּיָּא לְתַקָּפָא שׁוּרָא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Onus calicis malediĉtionis ad propinandum Dumæ. Ad me clamat de cœlis; Propheta ediſſere eis prophetiam, propheta ediſſere illis quod venturum 11 eſt. Dixit propheta, Eſt merces juſtis, & eſt vindiĉta impiis: ſi convertendi 12 eſtis, convertimini dum poteſtis converti. Onus calicis malediĉtionis ad 13 propinandum Arabibus. In ſylva in veſpere *manebūt turbæ* filiorū *Dedan*. In occurſum ſitientis educite *fluenta* aquarum qui habitatis in terra Au- 14 ſtrali: panem quem vos comeditis præparate fugientibus. Quia à facie oc- 15 ciſionis fugerunt, à facie gladii nudati, et à facie arcus extenti, & à facie fortitudinis prælii. Quia hæc dicit Dñs mihi, In fine annorum quaſi anni 16 mercenarii; & conſumetur omnis gloria Arabum. Et *fortitudo* bellatorum 17 fortium *filiorum* Arabum imminuetur, quia in verbo Domini exercituum decretum eſt ita.

CAP. XXII.

ONus prophetiæ ſuper civitate quæ habitat in valle, quam prophetave- 1 runt ſup eam prophetæ. Quidnā vobis eſt hic, quia aſcendiſtis univerſi vos in teĉta? A facie tumultus quo plena erat civitas, laudabilis urbs exultans, 2 interfeĉti tui non ſunt interfeĉti gladio, nec mortui ſunt in bello. Omnes 3 principes tui moti ſunt, ſimul à facie arcus extenti transmigraverunt: omnes qui inventi ſunt in te, occiſi ſunt, ſimul eminus fugerunt. Propterea 4 dixi, Sinite me & amarè flebo, ne quæratis conſolationem meam ſup contritionem cœtus populi mei. Dies enim tumultus et conculcationis, & oc- 5 ciſionis coram Dño Deo exercituum, ſup civitatem quæ habitat in valle, ſuper quam prophetaverunt Prophetæ, ſcrutantes domos & circundantes turres quæ ſunt in cacumine montium. Et Elamitæ tulerunt arma in curru 6 hominis & cum eo duo equites, & ſuper murum adhæſerunt clypei. Et pul- 7 chriora eleĉtæ vallis tuæ impleta ſunt quadrigis, & equites conſtituentur ſuper portas. Et revelabitur operimentum domus Judæ, & proſpicietur in 8 tempore illo ſuper arma theſaurorum ſanĉtuarii. Et diviſionem civitatis 9 David vidiſtis, quia multa fuit; & congregaſtis populum ad aquas piſcinæ inferioris. Et domos Hieruſalem numeraſtis, & confregiſtis domos ad ro- 10 borandum murum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܫܩܠܐ ܕܕܘܡܐ. ܠܝ ܩܪܐ ܡܢ ܣܥܝܪ ܢܛܘܪܐ ܕܠܠܝܐ. * ܐܡܪ ܢܛܘܪܐ ܕܐܬܐ ܨܦܪܐ ܐܦ ܠܠܝܐ. 11
ܐܢ ܒܥܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܒܥܘ. ܘܗܝܕܝܢ ܬܐܬܘܢ. * ܡܫܩܠܐ ܕܥܪܒܝܐ. ܒܪܡܫܐ ܒܥܒܐ ܬܒܘܬܘܢ 12 13
ܒܐܘܪܚܐ ܕܕܪܘܢܝܡ. * ܠܐܘܪܥ ܨܗܝܐ ܐܝܬܘ ܡܝܐ ܥܡܘܪܝ ܐܪܥܐ ܕܬܝܡܢܐ. ܒܠܚܡܟܘܢ 14
ܐܪܥܘ ܠܡܒܕܪܐ. * ܡܛܠ ܕܡܢ ܩܕܡ ܣܝܦܐ ܐܬܒܕܪܘ. ܘܡܢ ܩܕܡ ܣܦܣܪܐ ܕܡܫܝܢܐ. ܘܡܢ 15
ܩܕܡ ܩܫܬܐ ܕܡܬܝܚܐ. ܘܡܢ ܩܕܡ ܚܣܝܢܘܬܐ ܕܩܪܒܐ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. 16
ܒܫܘܠܡܗ ܕܫܢܬܐ ܐܝܟ ܫܢܝܐ ܕܐܓܝܪܐ. ܢܫܘܦ ܟܠܗ ܐܝܩܪܗ ܕܩܕܪ. * ܘܫܪܟܐ ܕܡܢܝܢܐ 17
ܕܩܫܬܐ. ܓܢܒܪܐ ܕܒܢܝ ܩܕܪ. ܢܙܥܪܘܢ. ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܡܠܠ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܒ *

* ܡܫܩܠܐ ܕܢܚܠܐ ܕܚܙܘܢ *

* ܡܢܐ ܐܝܬ ܠܟܝ ܗܫܐ ܕܣܠܩܬܝ ܟܠܟܝ ܠܐܓܪܐ. * ܕܫܓܘܫܝܐ. ܐܠܡܕܝܢܬܐ ܡܠܝܬܐ. ܩܠܐ 1 2
ܐܠܡܕܝܢܬܐ ܡܪܝܡܬܐ ܥܫܝܢܬܐ. ܡܩܛܠܝܟܝ ܠܐ ܗܘܘ ܡܩܛܠܝ ܕܣܝܦܐ. ܐܦܠܐ ܡܝܬܝ ܕܩܪܒܐ.
* ܟܠܗܘܢ ܫܠܝܛܢܝܟܝ ܢܕܘ ܐܟܚܕܐ. ܡܢ ܩܫܬܐ ܐܬܥܟܒܘ. ܘܥܪܩܘ ܠܪܘܚܩܐ. * ܡܛܠ 3 4
ܗܢܐ ܐܡܪܬ. ܫܒܘܩܘܢܝ ܐܬܡܪܡܪ ܒܒܟܝܐ. ܘܠܐ ܬܐܠܨܘܢܝ ܠܡܒܝܐܘܬܢܝ ܥܠ ܬܒܪܐ ܕܒܪܬ
ܥܡܝ. * ܡܛܠ ܕܝܘܡܐ ܕܫܓܘܫܝܐ ܘܕܕܝܫܐ ܘܕܒܟܝܐ: ܠܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ ܒܢܚܠܐ 5
ܕܚܙܘܢ. ܒܨܐ ܫܘܪܐ. ܘܩܥܐ ܥܠ ܛܘܪܐ. * ܘܥܝܠܡ ܫܩܠ ܡܛܪܦܐ ܒܪܟܒܐ ܕܒܢܝܢܫܐ ܦܪܫܐ. 6
ܘܫܘܪܐ ܓܠܐ ܬܪܣܐ. * ܘܢܗܘܘܢ ܓܒܝܐ ܕܥܘܡܩܝܟܝ. ܡܠܝܢ ܡܪܟܒܬܐ. ܘܦܪܫܐ ܢܬܛܟܣܘܢ 7
ܠܘܬ ܬܪܥܐ. * ܘܢܚܘܐ ܢܣܬܟܠ ܝܗܘܕܐ. ܘܬܚܙܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܙܝܢܐ ܕܒܝܬ ܥܒܐ. * ܘܬܪܥܝܬܐ 8
ܕܡܕܝܢܬܐ ܕܕܘܝܕ. ܚܙܝܬܘܢ ܕܣܓܝ. ܘܟܢܫܬܘܢ ܡܝܐ ܕܒܪܟܬܐ ܬܚܬܝܬܐ. * ܘܐܬܟܪܝܬܘܢ 9 10
ܒܬܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܘܣܬܪܬܘܢ ܒܬܐ ܕܐܬܚܣܢܘܢ ܫܘܪܐ.

Onus Dumæ. Me vocavit è Seir cuſtos nocturnus, *Et* dixit cuſtos, Venit aurora, etiam nox: ſi quæſituri eſtis, quærite, tum demum venietis. *Onus Arabiæ.* Veſpere in ſylva pernoctabit in itinere Derunim. Ad occurſum ſitientium afferte aquas O incolæ terræ Auſtralis: cum pane veſtro occurrite diſperſis: Nam à conſpectu gladii diſperſi ſunt, à conſpectu enſis expoliti, à conſpectu arcûs intenti, & à conſpectu atrocitatis belli. Sic enim dixit mihi Dominus, In fine anni, juxta annos mercenarii, deficiet tota gloria Cedar: Et reliquus numerus ſagittariorum, virorũ Cedarenorum imminuetur; quoniam Dominus Deus Iſraelis locutus eſt. 11 12 13 14 15 16 17

CAP. XXII.

Onus vallis Hezjon (i. Viſionis.)

Quid tibi jam eſt, quòd tota aſcendis in tectum? 1 Tumultu plena es civitas? 2 clamore plena es civitas potens? occiſi tui nequaquam ſunt occiſi gladio, nec bello mortui? Omnes principes tui ſimul vacillant? 3 ab *arripiendo* arcu retardantur? & procul fugiunt? Propterea dico, Sinite me fletu cruciari: 4 ne urgeatis ut me conſolemini ſuper fractura filiæ populi mei: Quia dies eſt perturbationis, 5 conculcationis, & fletûs Domino Deo potentiſſimo in valle Hezjon. Scrutatus eſt mœnia, vociferavit ſuper montes; Elamita ſumpſit pharetram cum equitatibus 6 hominum equitum, & muro *inſidentes* deprehenderunt clypeos. Erunt lectiſſimæ valles 7 tuæ plenæ curribus, & equites inſtruent ſeſe ad portas: Juda deprehendet aciem, & 8 videbis eo die arma domûs ſaltûs, Et labefactationes civitatis David. 9 Sat vidiſtis: & congeſſiſtis aquas piſcinæ inferioris, Ut 10 obrueretis domos Jeruſalem; domos evertiſtis, ut muniretis murum;

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

الوحي الثاني عشر *النبوة في ادوم وفي اهل ساعير الذين هم بنو عيسوا* 11
ادعوني من ساعير* احفظوا السراريف* احفظ بالغداة والليل* ان كان تطلب اطلب* 12
النبوة في العرب وبني قيدار وعندي اسكن في الغاب* تضطجع مساء في طريق دادان* 13
لاستقبال العطشان جيبوا ماء ايها السكان في كورة تامان بالخبز استقبلوا الهاربين* لاجل 14 15
كثرة الهاربين* ولاجل كثرة التائهين ولاجل كثرة السيف* ولاجل كثرة القسي الموترة*
ولاجل كثرة الساقطين في الحرب* لان هكذا قال لي الرب* سنة ايضا مثل السنة المسوجرة 16
يفني مجد بني قيدار* وبقية القسي القوية لبني قيدار تكون قليلة* من اجل ان الرب اله 17
اسرائيل تكلم* *الفصل الثاني والعشرون* *الوحي الثالث عشر*
النبوة في اهل وادي صهيون وهي الصحاري حول ايروسليم*
ماذا صار لك الآن لانكم صعدتم جميعا الى الاسطحة الباطلة امتلات المدينة من 1 2
الصارخين* جرحاك ليس جرحا سيف* ولا امواتك اموات حرب* جميع روسائك هربوا* ويكون 3
الساقطون مربوطين بصعوبة* والاقوياء بك فروا بعيدا* لاجل هذا قلت اتركوني ابكي 4
عبران* لستم تقدرون ان تعزوني على انكسار ابنة شعبي* لان يوم القلق والهلاك والوطي* 5
ويضلين من قبل رب الجيوش في وادي صهيون* يضلون من الصغير الى الكبير* يضلون
على الجبال* والاهواريون اخذوا جعابا* اناس راكبون على الخيل ويجمع القتال* ويكون 6 7
اوديتك المختار ممتلي من المراكب* والفرسان يغلقون ابوابك* ويكشفون ابواب يهودا* 8
وينظرون في ذلك اليوم الى البيوت المختارة التي للمدينة* ويكشفون خفايا بيوت طرف داود* 9
ويعلمون انهم كثيرون* وانهم ردوا ماء البركة الاولى الى المدينة* وانهم هدموا بيوت 10
ايروسليم* يحصنون سور المدينة*

Revelatio duodecima.

Prophetia de Edom & de Seir, qui ſunt filii Eſau. 11 *Vocate me de Seir, cuſtodite pinnas. Cave tibi manè & nocte: ſi quæras quære.* 12 Prophetia de Arabibꝰ & filiis Cedar. 13 *Et apud me habita in ſylvis, cubabis veſpere in via Dadhan. Obviàm ſitienti afferte aquam O habitantes* 14 *in regione Theman, cum pane occurrite fugientibus: Propter multitudinem fugientium,* 15 *& propter multitudinem vagantiũ, propter multitudinem gladii, propter multitudinem arcuum intentorum, & propter multitudinem cadentiũ in prælio. Sic enim dixit mihi Dominus, Intra annum, ut annum mercede conducti, deficiet gloria filiorum Cedar: Et reliqui arcus fortes filiorum Cedar, erunt pauci: quia Dominus Deus Iſraelis locutus eſt.* 16 17

CAPUT XXII.

Revelatio decima tertia.

Prophetia de incolis vallis Sion, nempe camporum qui ſunt circa Jeruſalem.

Quid tibi jam accidit, quòd aſcendiſtis omnes in tecta vana? Impleta eſt urbs vociferantibus? Vulnerati tui non ſunt gladio vulnerati, nec mortui tui bello mortui. Omnes tui duces fugerunt, & qui cadent, cum aſperitate vincientur; & qui fortiores erant in te, procul aufugerunt. Propterea dixi, Sinite me flere cum amaritudine, nequaquã poteſtis conſolari me ſuper fractione filiæ populi mei; Eſt enim dies perturbationis, interitûs, & conculcationis: & errabis juſſu Domini exercituum per vallem Sionis, errabunt à minimo ad maximum, errabunt in montibus. Elamitæ ſumpſerunt pharetras, hominis equis inſidentes, & turba bellatorum. Lectiſſimæ valles tuæ plenæ erunt curribus, & equites claudent portas tuas: Detegent portas Judæ, & inſpicient eo die domos electas urbis: Detegentque arcana ædium cognationis Davidicæ. Et cognoſcentes ſe eſſe multos, ſeſeque reduxiſſe aquam piſcinæ prioris ad urbem, Se quoque deſtruxiſſe domos Jeruſalem; munient murum urbis, 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

ישעיה : כג

non & , veteris piscinæ aquis muros duos inter fecistis *lacum* Et
11 וּמִקְוָה עֲשִׂיתֶם בֵּין הַחֹמֹתַיִם לְמֵי הַבְּרֵכָה הַיְשָׁנָה וְלֹא
.vidistis non longè de ej⁹ plasmatorē & , ej⁹ factorē ad suspexistis
הִבַּטְתֶּם אֶל־עֹשֶׂיהָ וְיֹצְרָהּ מֵרָחוֹק לֹא רְאִיתֶם׃
,fletū ad , illa die in exercituum *Dominus* Dominus vocabit Et
12 וַיִּקְרָא אֲדֹנָי יֱהֹוִה צְבָאוֹת בַּיּוֹם הַהוּא לִבְכִי
,gaudium ecce Et .sacci cingulum ad &,calvitium ad & ,planctum ad &
13 וּלְמִסְפֵּד וּלְקָרְחָה וְלַחֲגֹר שָׂק׃ וְהִנֵּה שָׂשׂוֹן
carnem comedendo ,*pecus* jugulando & , *bovem* occidendo , lætitia &
וְשִׂמְחָה הָרֹג בָּקָר וְשָׁחֹט צֹאן אָכֹל בָּשָׂר
.moriemur cras quia : bibendo & comedendo : vinum bibendo &
וְשָׁתוֹת יָיִן אָכוֹל וְשָׁתוֹ כִּי מָחָר נָמוּת׃
iniquitas expiabitur si : exercituū Domini,meis auribus in revelabitur Et
14 וְנִגְלָה בְאָזְנָי יְהוָה צְבָאוֹת אִם־יְכֻפַּר הֶעָוֹן
.exercituum *Dominus* Dominus dixit ,moriamini donec , vobis hæc
הַזֶּה לָכֶם עַד־תְּמֻתוּן אָמַר אֲדֹנָי יֱהֹוִה צְבָאוֹת׃
ad ingredere ,Vade : exercituum *Dominus* Dominus dixit Sic
15 כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהֹוִה צְבָאוֹת לֶךְ־בֹּא אֶל־
: hic tibi Quid : domum super qui , Sebnah ad istum thesaurarium
16 הַסֹּכֵן הַזֶּה עַל־שֶׁבְנָא אֲשֶׁר עַל־הַבָּיִת׃ מַה־לְּךָ פֹה
altitudinem excidens ? sepulchrum hic tibi excidisti quia : hic tibi quis &
וּמִי־לְךָ פֹה כִּי־חָצַבְתָּ לְּךָ פֹּה קָבֶר חֹצְבִי מָרוֹם
Dominus Ecce .sibi tabernaculum petra in *statuens* , suum sepulchrum
17 קִבְרוֹ חֹקְקִי בַסֶּלַע מִשְׁכָּן לוֹ׃ הִנֵּה יְהוָה
Convolvendo .amiciendo te *amiciens* & , *vir* *transportatione te transportans*
18 מְטַלְטֶלְךָ טַלְטֵלָה גָּבֶר וְעֹטְךָ עָטֹה׃ צָנוֹף
,morieris ibi : *manibus* latam terram ad pilā sicut,*convolutione te convolvet*
יִצְנָפְךָ צְנֵפָה כַּדּוּר אֶל־אֶרֶץ רַחֲבַת יָדָיִם שָׁמָּה תָמוּת
.tui Domini domus ignominia , tuæ gloriæ currus ibi &
וְשָׁמָּה מַרְכְּבוֹת כְּבוֹדֶךָ קְלוֹן בֵּית אֲדֹנֶיךָ׃
erit Et .te diruet tuo statu de & ,tua statione de te expellam Et
19 20 וַהֲדַפְתִּיךָ מִמַּצָּבֶךָ וּמִמַּעֲמָדְךָ יֶהֶרְסֶךָ׃ וְהָיָה
.Chilchijahu filium Eljachim meū servū vocabo & , illa die in
בַּיּוֹם הַהוּא וְקָרָאתִי לְעַבְדִּי לְאֶלְיָקִים בֶּן־חִלְקִיָּהוּ׃
tuā potestatē & ,eum confortabo tuo *balteo* & ,tua tunica eum induam Et
21 וְהִלְבַּשְׁתִּיו כֻּתָּנְתֶּךָ וְאַבְנֵטְךָ אֲחַזְּקֶנּוּ וּמֶמְשַׁלְתְּךָ
.Jehudah domui &,Jerusalaim habitatori patrē in erit &:ej⁹ manū in dabo
אֶתֵּן בְּיָדוֹ וְהָיָה לְאָב לְיוֹשֵׁב יְרוּשָׁלִַם וּלְבֵית יְהוּדָה׃
non & ,aperiet & : ej⁹ humerum super David domus clavem dabo Et
22 וְנָתַתִּי מַפְתֵּחַ בֵּית־דָּוִד עַל־שִׁכְמוֹ וּפָתַח וְאֵין
loco in clavum illum figam Et .*aperiens* non & ,claudet & :*claudens*
23 סֹגֵר וְסָגַר וְאֵין פֹּתֵחַ׃ וּתְקַעְתִּיו יָתֵד בְּמָקוֹם
pendebunt Et .sui patris domus gloriæ solium in erit & , stabili
24 נֶאֱמָן וְהָיָה לְכִסֵּא כָבוֹד לְבֵית אָבִיו׃ וְתָלוּ
totius : *fœtus* & *genimina* sui patris domus gloria omnis illū super
עָלָיו כֹּל כְּבוֹד בֵּית־אָבִיו הַצֶּאֱצָאִים וְהַצְּפִעוֹת כֹּל
nablorum instrumenta omnia ad usque & craterarū vasis à ,*parvi vasa*
כְּלֵי הַקָּטָן מִכְּלֵי הָאַגָּנוֹת וְעַד כָּל־כְּלֵי הַנְּבָלִים׃
clavus removebitur ,exercituum Dominus dixit , illa die In
25 בַּיּוֹם הַהוּא נְאֻם יְהוָה צְבָאוֹת תָּמוּשׁ הַיָּתֵד
excidetur & ; cadet & ,excidetur & : stabili loco in fixus
הַתְּקוּעָה בְּמָקוֹם נֶאֱמָן וְנִגְדְּעָה וְנָפְלָה וְנִכְרַת
.est locutus DOMINUS quia ; illum super quod onus
הַמַּשָּׂא אֲשֶׁר־עָלֶיהָ כִּי יְהוָה דִּבֵּר׃

C A P. XXIII. כג

domo de est facta vastatio quia , Tarsis naves Ululate : Sor *Onus*
1 מַשָּׂא צֹר הֵילִילוּ אֳנִיּוֹת תַּרְשִׁישׁ כִּי־שֻׁדַּד מִבַּיִת
.eis est revelatum Chittim terra de : *intrando ab*
מִבּוֹא מֵאֶרֶץ כִּתִּים נִגְלָה־לָמוֹ׃

Versio VUL. LAT.

11 Et lacum fecistis inter duos muros ad aquam piscinæ veteris : & non suspexistis ad eum, qui fecerar eam,et operatorem ejus de longè non vidistis. 12 Et vocabit Domin⁹ Deus exercituum in die illa ad fletum, & ad planctum, ad calvitium, & ad cingulum sacci : 13 Et ecce gaudiū & lætitia, occidere vitulos et jugulare arietes,comedere carnes, & bibere vinum: Comedam⁹, & bibamus : cras enim moriemur. 14 Et revelata est in aurib⁹ meis vox Domini exercituum ; Si dimittetur iniquitas hæc vobis donec moriamini, dicit Domin⁹ Deus exercituū. 15 Hæc dicit Domin⁹ De⁹ exercituum ; Vade, ingredere ad eum qui habitat in tabernaculo, ad Sobnam præpositū templi,& dices ad eum ; 16 Quid tu hîc, aut quasi quis hîc ? quia excidisti tibi hîc sepulchrum, excidisti in excelso memoriale diligenter, in petra tabernaculum tibi. 17 Ecce Domin⁹ asportari te faciet, sicut asportatur gallus gallinaceus, & quasi amictū sic sublevabit 18 te. Coronans coronabit te tribulatione, quasi pilam mittet te in terram latam & spatiosam : ibi morieris, & ibi erit curr⁹ gloriæ tuæ, ignomi- 19 nia dom⁹ Domini tui. Et expellam te de statione tua, & de ministerio tuo deponam te. 20 Et erit in die illa : Vocabo servum meum Eliacim filiū Hel- 21 ciæ, Et induam illum tunicâ tuâ, & cingulo tuo confortabo eum, & potestatem tuam dabo in manu ej⁹ : & erit quasi pater habitantib⁹ Jerusalem,et 22 domui Juda. Et dabo clavem domûs David super humerum ejus : & aperiet, & non erit qui claudat : & claudet, & 23 non erit qui aperiat. Et figam illum paxillum in loco fideli, & erit in solium gloriæ domui 24 patris ej⁹. Et suspendent super eum omnem gloriam domûs patris ejus, vasorū diversa genera, omne vas parvulum, à vasis craterarū usque ad omne 25 vas musicorum. In die illa dicit Domin⁹ exercituū ; Auferetur paxill⁹, qui fixus fuerat in loco fideli : & frangetur, & cadet, & peribit quod pependerat in eo, quia Domin⁹ locutus est.

CAP. XXIII.

1 ON⁹ Tyri. Ululate naves maris: quia vastata est dom⁹, unde venire consueverant : de terra Cethim revelatum est eis.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

11 Καὶ ἐποιήσατε ἑαυτοῖς ὕδωρ ἀναμέσον τῶν δύο (θ)τειχῶν ἐσώτερον τῆς κολυμβήθρας τῆς ἀρχαίας, καὶ οὐκ ἐνεβλέψατε εἰς τὸν ἀπ' ἀρχῆς ποιήσαντα αὐτὴν, καὶ τὸν κτίσαντα αὐτὴν οὐκ εἴδετε. 12 Καὶ ἐκάλεσε (ι) κύριος κύριος Σαβαὼθ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ κλαυθμὸν καὶ κοπετὸν, καὶ ξύρησιν καὶ ζῶσιν σάκκων, 13 Αὐτοὶ δὲ ἐποιήσαντο εὐφροσύνην καὶ ἀγαλλίαμα, σφάζοντες μόσχους, καὶ θύοντες πρόβατα, ὥστε φαγεῖν (κ) κρέατα, καὶ πιεῖν οἶνον, λέγοντες, Φάγωμεν καὶ πίωμεν, αὔριον γὰρ ἀποθνήσκομεν. 14 Καὶ ἀνακεκαλυμμένα ταῦτά ἐστιν ἐν τοῖς ὠσὶ κυρίου Σαβαὼθ, ὅτι οὐκ ἀφεθήσεται ὑμῖν αὕτη ἡ ἁμαρτία, ἕως 15 ἂν ἀποθάνητε. Τάδε λέγει κύριος Σαβαὼθ, Πορεύου εἰς τὸ παστοφόριον, πρὸς Σο- 16 μνᾶν τὸν (λ) ταμίαν, καὶ εἰπὸν αὐτῷ, Τί σὺ ὧδε, καὶ τί σοί ἐστιν ὧδε; ὅτι ἐλατόμησας σεαυτῷ ὧδε μνημεῖον, καὶ ἐποίησας σεαυτῷ ἐν ὑψηλῷ μνημεῖον, καὶ ἔγραψας σεαυτῷ ἐν 17 πέτρᾳ σκηνήν; Ἰδοὺ δὴ κύριος Σαβαὼθ (μ) ἐκβαλεῖ καὶ ἐκτρίψει ἄνδρα, καὶ ἀφελεῖ 18 τὴν στολήν σου Καὶ τὸν στέφανόν σου τὸν ἔνδοξον, καὶ ῥίψει σε εἰς χώραν μεγάλην καὶ ἀμέτρητον, καὶ ἐκεῖ ἀποθανῇ· καὶ θήσει τὸ ἅρμα σου τὸ καλὸν εἰς ἀτιμίαν, καὶ τὸν οἶκον 19 τοῦ ἄρχοντός σου εἰς καταπάτημα. Καὶ ἀφαιρεθήσῃ ἐκ τῆς οἰκονομίας σου καὶ ἐκ τῆς 20 στάσεώς σου. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, (ν) καὶ καλέσω τὸν παῖδά μου Ἐλιακεὶμ τὸν τοῦ 21 Χελκίου. Καὶ ἐνδύσω αὐτὸν τὴν στολήν σου, καὶ τὸν στέφανόν σου δώσω αὐτῷ (ξ) κατὰ κράτος, καὶ τὴν οἰκονομίαν σου δώσω εἰς τὰς χεῖρας αὐτοῦ· καὶ ἔσται ὡς πατὴρ τοῖς ἐνοικοῦσιν ἐν 22 Ἱερουσαλὴμ, καὶ τοῖς ἐνοικοῦσιν ἐν Ἰούδᾳ. Καὶ δώσω τὴν δόξαν Δαυὶδ αὐτῷ, καὶ ἄρξει, καὶ οὐκ ἔσται ὁ ἀντιλέγων· καὶ (ο) δώσω αὐτῷ τὴν κλεῖδα οἴκου Δαυὶδ ἐπὶ τῷ ὤμῳ αὐτοῦ· καὶ ἀνοίξει, καὶ οὐκ ἔσται ὁ (π) ἀποκλείων· καὶ κλείσει, καὶ 23 οὐκ ἔσται ὁ ἀνοίγων. Καὶ στήσω αὐτὸν ἄρχοντα ἐν τόπῳ πιστῷ, καὶ ἔσται εἰς θρόνον δόξης τοῦ 24 οἴκου τοῦ πατρὸς αὐτοῦ. Καὶ ἔσται πεποιθὼς ἐπ' αὐτὸν πᾶς ἔνδοξος ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, ἀπὸ μικροῦ ἕως μεγάλου, καὶ ἔσονται 25 ἐπικρεμάμενοι (ρ) αὐτῷ Τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ. τάδε λέγει κύριος Σαβαὼθ, Κινηθήσεται ὁ ἄνθρωπος ὁ ἐστηριγμένος ἐν τόπῳ πιστῷ, καὶ (σ) ἀφαιρεθήσεται, καὶ πεσεῖται, καὶ ἐξολοθρευθήσεται ἡ δόξα ἡ ἐπ' αὐτὸν, ὅτι κύριος ἐλάλησεν.

MS.A. (θ) τειχέων (ι) κύριος Σαβαὼθ (κ) κρέα, (λ) χαμματαία, (μ) ἐκβαλεῖ (ν) καλέσω (ξ) καὶ τὸ κράτος, (ο) δώσω τὴν κλεῖδα οἴκου Δαυὶδ ἐπὶ τοῦ ὤμου αὐτοῦ· (π) ἀποκλείσων· (ρ) ἐν αὐτῷ ἐν Τῇ (σ) πεσεῖται καὶ ἀφαιρεθήσεται ἡ δόξα ἡ ἐπ' αὐτὸν,

ΚΕΦ. κγʹ.

ΤΟ (*) ῬΗ͂ΜΑ ΤΎΡΟΥ.

1 (α) Ὀλολύξατε πλοῖα Καρχηδόνος, ὅτι ἀπώλετο καὶ οὐκέτι ἔρχονται ἐκ γῆς (β) Κιτιαίων, ἦκται αἰχμάλωτος.

MS.A. (*) ὍΡΑΜΑ (α) Ὀλολύζετε (β) Κητιαίων,

Et fecistis vobis aquam inter duos muros intra piscinam antiquam : & non aspexistis in eum qui à principio fecit eam, & creatorem illius non vidistis. 12 *Et vocavit Dominus, Dominus Sabaoth, in die illa ploratum, & planctum, & rasuram, & cincturam saccorum.* 13 *Ipsi autem fecerunt lætitiam, & exultationem, jugulantes vitulos, & immolantes oves, ad comedendas carnes, & bibendum vinum, dicentes ; Edamus, & bibamus : cras enim morimur.* 14 *Et revelata hæc sunt in auribus Domini Sabaoth : quia non auferetur vobis hoc peccatum, donec mortui sitis.* 15 *Hæc dicit Dominus Sabaoth ; Vade (c) in pastophorium ad Somnam quæstorem : & dic ei ;* 16 *Quid tu hîc ? & quid tibi est hîc ? quia excidisti tibi hîc monumentum, & fecisti tibiipsi in excelso monumentum, & (d) scripsisti tibi in petra tabernaculum ?* 17 *Ecce nunc Dominus Sabaoth ejicit, & conteret virum, & auferet stolam tuam,* 18 *Et coronam tuam gloriosam : & projiciet te in regionem magnam, & immensam ; & ibi morieris : & ponet currum tuum optimum in ignominiam, & domum principis tui in conculcationem :* 19 *Et tolleris de dispensatione tua, & de gradu tuo.* 20 *Et erit in die illa, & vocabo puerum meum Eliacim filium Chelciæ,* 21 *Et induam illum stolâ tuâ, & coronam tuam dabo ei (e) per imperium, & dispensationem tuam dabo in manus ejus. Et erit velut pater habitatoribus Hierusalem, & inhabitantibus in Juda.* 22 *Et dabo gloriam David ei : Et principabitur, & non erit qui contradicat : (f) & dabo ei clavem domûs David super humerum ejus : & aperiet, & non erit qui claudat : & claudet, & non erit qui aperiat.* 23 *Et statuam eum principem in loco fideli : & erit in solium gloriæ domûs patris ejus :* 24 *Et erit confidens super eum omnis gloriosus in domo patris sui à parvo usque ad (g) magnum : & erunt pendentes ab eo* 25 *Die illâ. Hæc dicit Dominus Sabaoth ; Movebitur homo, qui stabilitus fuerat in loco fideli, & tolletur, & cadet, & disperibit gloria, quæ erat super eum : quoniam Dominus loquutus est.*

CAP. XXIII.

VERBUM TYRI.

1 *ULulate naves Carthaginis, quia periit : & non ultrà veniunt de terra Citiæorum : ducta est captiva.*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 ומקויא עבדתון בין שוריא למי ברכתא עתיקתא ולא אסתכלתון בדעבדה ודי בראה
12 מלקדמין לא חזיתון : ואכלי נביא דיי אלהים צבאות ביומא ההוא למבכי ולמספד
13 ולגזוז ריש ולמיסר סקין : והא ביע וחדוה אמרין נקטול תורין ונכס ען ניכול בסר
14 ונשתי חמר ניכול ונשתי מדנמות לא נחי : אמר נביא באודני הויתי שמע כד אתגזר
דא מן קדם יי צבאות אם ישתבק חובא הדין לכון עד די תמותון מותא תנינא אמר יי
15 אלהים צבאות : כדנן אמר יי אלהים צבאות אתא איזיל לות פרנסא הדין לות שבנא
16 די ממנא על ביתא : ותימר ליה מה לך כא ומה לך כדין ארי אתקנית לך כא אתר
17 אתקין ברומא אתריה שוי בכיפא בית מדוריה : הא יי מטלטלך טלטול דגברא ותחפנך
18 בהתא : יעדי מנך ית מצנפתא ויקיפונך בעלי דבב כשור מקף ויגלונך לארעא פתיות
ידיין תמן תמות ולתמן רתיכי יקרך יתובון בקלן על דלא נטרתא יקר בית רבונך :
19 20 ואדחנך ממקומך ומשמושך ימגרנך : ויהי בעדנא ההיא וארבי לעבדי לאליקים בר
21 חלקיה : ואלבשניה כתונך והמינך אזרזניה ושולטנך אתן בידיה ויהי
22 לאב ליתבי ירושלם ולבית יהודה : ואתן מפתח בית מקדשא ושולטן בית דוד בידיה
23 ויפתח ולית דאחיד ויחוד ולית דפתח : ואמנניה אמרכל מהימן משמש באתר קים
24 ויהי לכורסי יקר לבית אבוהי : ויסתמכון עלוהי כל יקירי בית אבוהי בניא ובני בניא
25 מרברביא ועד דעדקיא מכהניא לבשי אפודא ועד בני לוי אחדי נבליא : בעדנא ההיא
אמר יי צבאות יעדי אמרכל מהימן די משמש באתר קים ויתקטיף ויפול ויתבטל מטל
נבואתא די עלוהי ארי במימרא דיי גזר כן :

כג

1 מטל כס דלוט לאשקאה ית צור אילילו נחתי ספיני ימא ארי אתבזיזו מחוזיהון מלמיתי
מארעא כתאי אתי עליהון :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et *lacus* fecistis inter muros aquæ piscinæ veteris, & non respexistis ad fa- 11
ctorem ejus, neq; creatorem ejus ab initio vidistis. Et vocavit propheta Dñi 12
exercituum in die illo ad planctum & ad luctum, & ad calvitium, & ad accingendum saccos. Et ecce gaudium et lætitiam : dicunt, Occidamus boves, 13
& jugulemus oves, comedamus carnes, et bibamus vinum, comedamus & bibamus, quia morituri sumus, non vivemus. Dixit Propheta, In aurib⁹ me- 14
is auditum est, quando decretum est hoc à facie Dñi exercituū ; Si dimittetur peccatum hoc vobis donec moriamini morte secunda, dicit Dñs exercituum. Hæc dicit Dñs exercituū, Veni, & vade ad gubernatorem hunc, ad 15
Sobnam, qui est præpositus domus. Et dices ei, Quid tibi hic ? aut quid tibi 16
in isto loco ? quia præparâsti tibi hîc locum : præparans in excelso locū suum, & ponens in petra domum habitaculi sui. Ecce Dominus transmigrare 17
te faciet transmigratione viri, & operiet te confusione. Auferet à te tiarā, 18
& circundabunt te inimici quasi murū circundatū, & in captivitatē ducent te in locum latū manibus ; ibi morieris : & ibi quadrigæ gloriæ tuæ convertentur in ignominiā, eò quòd non conservâsti gloriā domus Domini tui. Et 19
expellā te de *loco* tuo, & de ministerio tuo *deponet* te. Et erit in tempore 20
illo, & magnificabo servum meum Eliachim filiū Helchiæ. Et induā illū 21
tunica tua, & cingulo tuo accingam eum, & dominiū tuū dabo in manu ejus, et erit in patrē habitatoribus Hierusalem, & domui Juda. Et dabo 22
clavem dom⁹ sanctuarii, & dominiū domus David in manu ejus ; et aperiet, & non erit qui claudat ; et claudet, & non erit qui aperiat. Et consti- 23
tuam eum præpositū fidelem, ministrantē in loco firmissimo, & erit in solium gloriæ domui patris sui. Et innitentur sup eum omnes nobiles domus 24
patris sui, filii et nepotes, à juvenibus usque ad parvulos ; à sacerdotib⁹ indutis Ephod, usque ad filios Levi tenentes organa. In die illo, dicit Do- 25
minus exercituū, Auferetur præposit⁹ fidelis, qui ministrabat in loco firmissimo, et succidetur, & cadet : & irritum erit onus prophetiæ quod est super eum, quoniam in verbo Domini decretum est ita.

C A P. XXIII

ONus prophetiæ calicis maledictionis ad propinandum Tyro. Ululate 1
descendentes in naves maris, quia direptæ sunt provinciæ vestræ ita ut cò aditus non pateat. De terra Cetim venerunt contra eos.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

11 * ܘܡܥܡܪܐ ܥܒܕܬܘܢ. ܒܝܬ ܫܘܪܐ ܠܡܝܐ ܕܒܪܟܬܐ ܥܬܝܩܬܐ. ܘܠܐ ܚܪܝܬܘܢ ܠܥܒܘܕܗ.
12 ܘܠܒܪܘܝܗ ܡܢ ܪܘܚܩܐ ܠܐ ܚܙܝܬܘܢܝܗܝ. * ܘܩܪܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ.
13 ܠܒܟܬܐ: ܘܠܡܪܩܕܐ ܘܠܡܩܪܚܘܬܐ. ܘܠܡܐܣܪ ܕܣܩܐ. * ܘܗܐ ܚܕܘܬܐ ܘܒܣܝܡܘܬܐ. ܢܟܣܐ
ܕܬܘܪܐ ܘܢܟܣܐ ܕܥܢܐ. ܡܐܟܘܠܬܐ ܕܒܣܪܐ ܘܡܫܬܝܐ ܕܚܡܪܐ. ܢܐܟܘܠ ܘܢܫܬܐ ܕܡܚܪ
14 ܢܡܘܬ. * ܘܐܬܓܠܝ ܒܐܕܢܝ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܘܐܡܪ. ܠܐ ܢܫܬܒܩ ܠܟܘܢ ܣܟܠܘܬܐ ܗܕܐ ܥܕܡܐ
15 ܕܬܡܘܬܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܙܠ ܥܘܠ ܠܘܬ ܣܘܟܢ
16 ܗܢܐ. ܠܘܬ ܫܒܢܐ ܪܒ ܒܝܬܐ ܘܐܡܪ ܠܗ. * ܡܢܐ ܠܟ ܗܪܟܐ. ܘܡܢܐ ܐܝܬ ܠܟ ܗܪܟܐ:
17 ܕܢܩܪܬ ܠܟ ܩܒܪܐ ܗܪܟܐ. ܢܩܪ ܒܪܘܡܐ ܩܒܪܗ. ܘܪܫܡ ܒܟܐܦܐ ܡܫܪܝܬܗ. * ܗܐ ܡܪܝܐ ܡܫܕܐ
18 ܫܕܐ ܠܟ ܓܒܪܐ. ܘܡܛܥܝܐ ܢܛܥܝܟ. * ܢܟܪܟܟ ܟܪܘܟܝܐ ܐܝܟ ܟܘܪܐ ܕܐܪܥܐ ܪܘܝܚܬܐ. ܬܡܢ ܬܡܘܬ
19 ܘܬܡܢ ܡܪܟܒܬܐ ܕܐܝܩܪܟ ܨܥܪܐ ܠܒܝܬ ܡܪܟ. * ܘܐܣܚܦܟ ܡܢ ܐܝܩܪܟ.
20 ܘܐܫܩܠܟ ܡܢ ܫܘܠܛܢܟ. * ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܩܪܐ ܠܥܒܕܝ ܠܐܠܝܩܝܡ ܒܪ
21 ܚܠܩܝܐ. * ܘܐܠܒܫܝܘܗܝ ܟܘܬܝܢܟ. ܘܒܐܣܪܟ ܐܚܝܕܝܘܗܝ. ܘܫܘܠܛܢܟ ܐܬܠ ܒܐܝܕܘܗܝ.
22 ܘܢܗܘܐ ܐܒܐ ܠܥܡܘܪܝ ܐܘܪܫܠܡ. ܘܠܒܢܝܐ ܕܒܝܬ ܝܗܘܕܐ. * ܘܐܬܠ ܩܠܝܕܐ ܕܒܝܬ
23 ܕܘܝܕ ܥܠ ܟܬܦܗ. ܘܢܦܬܚ. ܘܠܝܬ ܕܐܚܕ. ܘܢܐܚܘܕ. ܘܠܝܬ ܕܦܬܚ. * ܘܐܩܒܥܝܘܗܝ
24 ܣܟܬܐ ܒܐܬܪܐ ܡܗܝܡܢܐ. ܘܢܗܘܐ ܟܘܪܣܝܐ ܕܐܝܩܪܐ ܠܒܝܬܐ ܕܐܒܘܗܝ. * ܘܢܬܠܘܢ
ܥܠܘܗܝ. ܟܠܗ ܐܝܩܪܐ ܕܒܝܬ ܐܒܘܗܝ ܡܝܩܪܐ ܘܡܫܒܚܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܡܐܢܐ ܙܥܘܪܐ. ܡܢ
25 ܡܐܢܐ ܕܙܡܪܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܡܐܢܐ ܕܟܢܪܐ. * ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܢܬܬܥܩܪ
ܣܟܬܐ ܕܩܒܝܥܐ ܒܐܬܪܐ ܡܗܝܡܢܐ. ܘܬܫܬܚܠܦ ܘܬܦܠ. ܘܢܐܒܕ ܡܘܒܠܐ ܕܗܘܐ
ܥܠܘܗܝ. ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܡܠܠ.

* ܦܘܩܕܢܗ * ܫܠܡ *

* ܡܫܩܠܐ ܕܨܘܪ * * ܐܝܠܠܝ ܐܠܦܐ ܕܬܪܫܝܫ. ܡܛܠ ܕܐܬܒܙܝ 1
ܡܢ ܒܝܬܐ ܡܥܠܢܐ. ܘܡܢ ܐܪܥܐ ܕܟܬܝܡ ܐܬܓܠܝ ܠܢ.

Et aquaductus feciſtis inter murum & aquas piſcinæ veteris; nullã habuiſtis rationem opificis ejus, & conditorẽ ejus ne quidem à longe ſpectâſtis. 11
Cúmque vocaverit Dñs Deus potentiſſimus eo die ad fletum, ad planctus, ad laniatus, & ad cincturam ciliciorum; 12
Ecce voluptatem & gaudium, mactationem boum, & mactationem pecudum, eſum carnium, & potationẽ vini: edamus *dicentes* & bibamus, cras enim moriemur. 13
Delatum eſt hoc ad aures Domini potentis, qui dixit; Nequaquam feretis crimen iſtud uſq; ad mortem, ait Dominus Deus potentiſſimus. 14
Sic dicit Dñs potentiſſimus, Vade ad Sochanem iſtum, ad Sebnam præfectum domûs, & dic ei; 15
Quid hìc agis? & quid tibi eſt hìc, quòd tibi ſepulchrum hìc excideris? O excidens in excelſo ſepulchrũ tuum, & deſignans in petra habitaculum tuum; 16
Ecce Dominus abjiciendo abjiciet te heus vir, & obliviſcendo obliviſcetur tui: 17
Propulſabit *te* violenter ut impulſu ſphæræ in terram vaſtiſſimam: ibi morieris, ibique currus honoris tui erit ignominia domûs heri tui. 18
Deturbabo te ab honore tuo, & abdicabo te dignitate tuâ: 19
Et erit eo die dicit Dominus, ut vocem ſervum meum Eliacim filium Helciæ, 20
Induam eum tunicâ tua, baltheo tuo præcingam eum, tuámque poteſtatem tradam in manus ejus. Is erit pater civibus Jeruſalem & viris domûs Judæ: 21
Imponétq; claves domûs Davidis humero ſuo; & aperiet, nec erit qui claudat; claudet, nec erit qui aperiat. 22
Infigam eum *ut* paxillum in loco firmo, erítq; ſolium honoris domui ſuæ paternæ. 23
Et appendent ei totũ honorem domûs honorandi & glorioſi patris ejus, omneq; inſtrumentũ parvum, ab inſtrumento muſico uſque ad inſtrumentum citharæ. 24
Die illâ, dicit Domin⁹ potentiſſimus, avelletur paxillus iſte infixus in loco firmo, deponetur, & cadet; & peribit onus quod impoſitum erat ei: nam Dominus locutus eſt. 25

CAP. XXIII.

Onus Tyri.

ULulate naves Tharſis, qui ſpoliatus eſt in domo is qui *merces* afferebat, & de terra Chetim apparebat nobis. 1

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

11 * وصنعوا لهم ماء بين سورين داخل البركة الاولي * ولم ينظروا الي الذي صنعها منذ البدء *
12 ولم يعرفوا الرب خالقها * ودعا رب الجيوش في ذلك اليوم بكاء وعويلا ونتفا ولبس مسوح * هولاء
13 صنعوا سرورا وبهجة * ذبحوا عجولا وذبحوا خرافا * حتي ياكلوا لحما ويشربوا خمرا * قايلين
14 ناكل ونشرب لانا غدا نموت * فهذه صارت مكشوفة في مسامع رب الجيوش * لانه لا تترك
15 لكم هذه الخطية حتي تموتوا * هكذا يقول رب الجيوش * امض الي العمارية الي شمنان الخازن
16 وقل له * ما لك هاهنا * وما لك هاهنا تكون * لانك نحت لك هاهنا قبرا * وصنعت لك في المغار
17 المرتفعة جدا * وصنعت لك في الصخر قبة * ها رب الجيوش يخرج ويسوق رجلا * وينزع حلتك
18 وتاجك الممجد * ويلقيك الي كورة بعيدة غير متناهية * وهناك تموت * ويضع مركبك الحسن
19 20 الي هوان * وبيت رئيسك الي الوطي * وينزع من وكالتك ومن درجتك * ويكون في ذلك
21 اليوم ادعو فتاي الياقيم ابن حلكيو * والبسه حلتك * واعطيه تاجك * وعز وكالتك
22 ادفعه في يديه * ويكون مثل اب للسكان باورشليم وللسكان يهودا * واعطي مجد داود له *
23 ويروس ولا يكون مقاوم * واقيمه رئيسا في موضع امين * ويكون لكرسي مجد لبيت ابيه *
24 * ويكون متوكلا عليه كل شريف في بيت ابيه * من الصغير والي الكبير ويكونون
25 متمسكين به * في ذلك اليوم * هكذا يقول رب الجيوش * يتحرك الانسان الثابت في موضع
امين ويسقط * وينزع ويسقط المجد الذي عليه * لان الرب تكلم *

* الفصل الثالث والعشرون * * الوحي الرابع عشر *

* وهو الاصحاح الحادي عشر * * النبوة الي صور وملكها واهلها * ولولوا يا 1
سفن كرسيذونية * لانه هلك وليس ياتي بعد من ارض كيتيا اون * السبي اتي *

* *Faciéntque ſibi aquam inter duos muros intra piſcinam priorem; nullam habentes, rationem ejus qui jamdudum fecerat eam, neque cognoſcentes Dominum creatorem illius.* 11
Et proclamante Domino exercituum eo die fletum, ejulatum, depilationem, & indutum ciliciorum; 12
Hi lætitiam & gaudium celebrârunt, vitulos mactaverunt, & jugulaverunt agnos, ut ederent carnem, & biberent vinum, dicentes; Edamus & bibamus, cras enim morituri ſumus. 13
Revelatum id fuit in auribus Domini exercituum. Profectò nequaquam dimittetur vobis hoc peccatum, donec moriamini. 14
Sic dicit Dominus exercituum, Vade ad ædem, apud Semnen theſaurarium, & dic ei; 15
Quid rei tibi eſt hìc? & quid hìc agis, quòd excideris hìc tibi ſepulchrum, feceris tibi in edita ſpelunca monumentum, & in petra teſtudinem fornicatam *feceris tibi?* 16
Ecce Dominus exercituum egredietur & adducet virum, detrahétque ſtolam tuam & diadema tuum glorioſum. 17
Et ejiciet te in regionem remotiſſimam immenſam, ibique morieris: aurigam tuam pulchram contemptui exponet, & domum principis tui conculcationi. 18
Amoveberis ab officio tuo & à dignitate tua. 19
Et fiet eo die ut vocem puerum meum Eliacimum filium Helcebiæ, 20
Et induam eum ſtolâ tuâ, dem illi diadema tuum, & auctoritatem officii tui tradam in manus ejus: eritque loco patris habitantibus in Jeruſalem & habitantibus in Juda: 21
Illi dabo gloriam Davidis, & imperabit nemine adverſante: 22
Statuam illum principem in loco tuto, eritque ſolium honoris domui ſuæ paternæ. 23
Ipſo freti erunt omnes nobiles domûs ejus paternæ à minimo ad maximum, eique innitentur. 24
In die illo, ſic dicit Dominus exercituum, Homo conſtitutus in loco tuto nutabit cadétque, amovebitur & decidet honor in quo eſt; quoniam Dominus locutus eſt. 25

CAP. XXIII.

Revelatio decima quarta.

Textus undecimus.

PRophetia ad Tyrum, & regem, ac cives ejus. *Ejulate O naves Charſidonæ* (i. Chalcedoniæ) *quia periit, nec ventura eſt deinceps è terra Chitiæ ſarcina, imò venit direptio.* 1

יְשַׁעְיָה: כג

.te repleverunt mare *transiens* , Sidon *circuiens*:insulæ habitatores Silete
2 דֹּמּוּ יֹשְׁבֵי אִי סֹחֵר צִידוֹן עֹבֵר יָם מִלְאוּךְ:
: ejus proventus fluminis meſſis , Sichor ſemen multis aquis in Et
3 וּבְמַיִם רַבִּים זֶרַע שִׁחֹר קְצִיר יְאוֹר תְּבוּאָתָהּ
, mare dixit nam ;Sidon Erubeſce .gentium negotiatio fuit &
4 וַתְּהִי סְחַר גּוֹיִם: בּוֹשִׁי צִידוֹן כִּי אָמַר יָם
non & , peperi non & , parturivi Non : dicendo maris fortitudo
מָעוֹז הַיָּם לֵאמֹר לֹא־חַלְתִּי וְלֹא־יָלַדְתִּי וְלֹא
; Ægyptiis *rumor* *Sicut* — .virgines exaltavi , *electos* enutrivi
5 גִדַּלְתִּי בַחוּרִים רוֹמַמְתִּי בְתוּלוֹת: כַּאֲשֶׁר שֵׁמַע לְמִצְרָיִם
ululate , Tarſis in Tranſite .Sor auditum ſecundùm *torquebuntur*
6 יָחִילוּ כְּשֵׁמַע צֹר: עִבְרוּ תַּרְשִׁישָׁה הֵילִילוּ
quondam diebus à ? *hilaris* vobis hæc Nunquid .inſulæ habitatores
7 יֹשְׁבֵי אִי: הֲזֹאת לָכֶם עַלִּיזָה מִימֵי־קֶדֶם
.peregrinandum ad *longinquo è* ejus pedes eam ducent : ejus antiquitas
קַדְמָתָהּ יֹבִלוּהָ רַגְלֶיהָ מֵרָחוֹק לָגוּר:
ejus negotiatores cujus ? coronantem Sor ſuper hoc conſuluit Quis
8 מִי יָעַץ זֹאת עַל־צֹר הַמַּעֲטִירָה אֲשֶׁר סֹחֲרֶיהָ
,hoc conſuluit exercituum Dñs ? terræ inclyti ejus *mercatores*,principes
9 שָׂרִים כִּנְעָנֶיהָ נִכְבַּדֵּי־אָרֶץ: יְהוָה צְבָאוֹת יְעָצָהּ
inclytos univerſos *vilipendendum ad*,gloriæ omnis ſuperbiam *profanandum ad*
לְחַלֵּל גְּאוֹן כָּל־צְבִי לְהָקֵל כָּל־נִכְבַּדֵּי־
non , Tarſis filiam : *rivum* tanquam tuam terram Tranſi .terræ
10 אָרֶץ: עִבְרִי אַרְצֵךְ כַּיְאֹר בַּת־תַּרְשִׁישׁ אֵין
perterrefecit , mare ſuper extendit ſuam Manum .ultrà *cingulum*
11 מֵזַח עוֹד: יָדוֹ נָטָה עַל־הַיָּם הִרְגִּיז
diſperdendum ad ,negotiatorem *ad* præcepit Dominus .regna
מַמְלָכוֹת יְהוָה צִוָּה אֶל־כְּנַעַן לַשְׁמִד
: *exultandum ad* ultra adjicias Non : dixit Et .ejus fortitudines
12 מָעֻזְנֶיהָ: וַיֹּאמֶר לֹא־תוֹסִיפִי עוֹד לַעְלוֹז
etiam , tranſi , ſurge Chittim ; Sidon filia virgo oppreſſa
הַמְעֻשָּׁקָה בְּתוּלַת בַּת־צִידוֹן כִּתִּיִּים קוּמִי עֲבֹרִי גַּם־
populus iſte , Chaſdim terra En .tibi erit requies non ibi
13 שָׁם לֹא־יָנוּחַ לָךְ: הֵן אֶרֶץ כַּשְׂדִּים זֶה הָעָם
ſuſcitaverunt,ejus arces erexerunt;*deſerticolis* eam fundavit Aſſur , fuit non
לֹא הָיָה אַשּׁוּר יְסָדָהּ לְצִיִּים הֵקִימוּ בַחִינָיו עֹרְרוּ
: Tarſis naves Ululate .ruinam in eam poſuit , ejus ædes
14 אַרְמְנוֹתֶיהָ שָׂמָהּ לְמַפֵּלָה: הֵילִילוּ אֳנִיּוֹת תַּרְשִׁישׁ
, illa die in , erit *Et* .veſtra fortitudo eſt vaſtata quia
15 כִּי שֻׁדַּד מָעֻזְּכֶן: וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא
.unius regis dies ſicut , annis ſeptuaginta Sor tradetur oblivioni &
וְנִשְׁכַּחַת צֹר שִׁבְעִים שָׁנָה כִּימֵי מֶלֶךְ אֶחָד
canticum veluti Sor ipſi erit annorum ſeptuaginta fine *A*
מִקֵּץ שִׁבְעִים שָׁנָה יִהְיֶה לְצֹר כְּשִׁירַת
: tradita oblivioni meretrix civitatem circui,citharam Sume .meretricis
16 הַזּוֹנָה: קְחִי כִנּוֹר סֹבִּי עִיר זוֹנָה נִשְׁכָּחָה
fine à erit Et *memoreris* ut canticum *multiplica* ,*modulando* *benefac*
17 הֵיטִיבִי נַגֵּן הַרְבִּי־שִׁיר לְמַעַן תִּזָּכֵרִי: וְהָיָה מִקֵּץ
revertetur & , Sor Dominus viſitabit annorum ſeptuaginta
שִׁבְעִים שָׁנָה יִפְקֹד יְהוָה אֶת־צֹר וְשָׁבָה
ſuper terræ regnis univerſis cum fornicabitur & ,*ſuum quæſtũ* ad
לְאֶתְנַנָּהּ וְזָנְתָה אֶת־כָּל־מַמְלְכוֹת הָאָרֶץ עַל־
ſanctitas ,ejus *quæſtus* & ,ejus negotiatio erit Et .*humi* *facies*
18 פְּנֵי הָאֲדָמָה: וְהָיָה סַחְרָהּ וְאֶתְנַנָּהּ קֹדֶשׁ
facies ad habitantibus quia : reponetur neque recondetur Non .Domino
לַיהוָה לֹא יֵאָצֵר וְלֹא יֵחָסֵן כִּי לַיֹּשְׁבִים לִפְנֵי
,ſaturitatem ad comedendum ad : ejus negotiatio erit *Domini*
יְהוָה יִהְיֶה סַחְרָהּ לֶאֱכֹל לְשָׂבְעָה
.vetus operimentum in &
וְלִמְכַסֶּה עָתִיק:

Verſio VUL. LAT.

2 Tacete qui habitatis in inſula: negotiatores Sidonis transfretantes mare, repleverunt te. 3 In aquis multis ſemen Nili, meſſis fluminis fruges ejus: & facta eſt negotiatio gentium. 4 Erubeſce Sidon: ait enim mare, fortitudo maris, dicens; Non parturivi, & non peperi, & non enutrivi juvenes, nec ad incrementũ perduxi virgines. 5 Cùm auditum fuerit in Ægypto, dolebunt cùm audierint 6 de Tyro: Tranſite maria, ululate qui habitatis in inſula: 7 Numquid non veſtra hæc eſt, quæ gloriabatur à diebus priſtinis in antiquitate ſua? ducent eam pedes ſui longè ad pere- 8 grinandum. Quis cogitavit hoc ſuper Tyrum quondam coronatam, cujꝰ negotiatores principes, inſtitores ejus inclyti 9 terræ? Dominus exercituum cogitavit hoc, ut detraheret ſuperbiam omnis gloriæ, & ad ignominiam deduceret univer- 10 ſos inclytos terræ. Tranſi terram tuã quaſi flumen, filia maris, non eſt cingulum ultrà tibi. 11 Manum ſuam extendit ſuper mare, conturbavit regna: Dominus mandavit adverſùs Chanaan, ut contereret fortes ejus, 12 Et dixit; Non adjicies ultrà ut glorieris, calumniam ſuſtinens virgo filia Sidonis: in Cethim conſurgẽs transfreta, ibi quoq; 13 non erit requies tibi. Ecce terra Chaldæorum talis populus non fuit, Aſſur fundavit eam: in captivitatem traduxerunt robuſtos ejus, ſuffoderunt domos ejus, poſuerunt eam in 14 ruinam. Ululate naves maris, quia devaſtata eſt fortitudo ve- 15 ſtra. Et erit in die illa: In oblivione eris, O Tyre, ſeptuaginta annis, ſicut dies regis unius: poſt ſeptuaginta autem annos erit Tyro quaſi canticum me- 16 retricis. Sume citharam, circui civitatem, meretrix oblivioni tradita: benè cane, frequenta canticum, ut memoria 17 tuî ſit. Et erit poſt ſeptuaginta annos: Viſitabit Dominus Tyrum, & reducet eam ad mercedes ſuas: & rurſum fornicabitur cum univerſis regnis 18 terræ ſuper faciem terræ. Et erunt negotiationes ejus, & mercedes ejus ſanctificatæ Domino: non condentur, neque reponentur: quia his, qui habitaverint coram Domino, erit negotiatio ejus, ut manducent in ſaturitatem, & veſtiantur uſque ad vetuſtatem.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

2 Τίνι ὅμοιοι γεγόνασιν οἱ ἐνοικοῦντες ἐν τῇ νήσῳ, μετάβολοι (γ) Φοινίκης, διαπερῶντες τὴν θάλασσαν 3 Ἐν ὕδατι πολλῷ, σπέρμα μεταβόλων; ὡς ἀμήτου εἰσφερομένου, οἱ μετάβολοι τῶν ἐθνῶν. 4 Αἰσχύνθητι Σιδὼν, εἶπεν ἡ θάλασσα· ἡ δὲ ἰσχὺς τῆς θαλάσσης εἶπεν, Οὐκ ὤδινον, οὐδὲ ἔτεκον, οὐδὲ ἐξέθρεψα νεανίσκους, οὐδὲ ὕψωσα παρθένους. 5 Ὅταν δὲ ἀκουστὸν γένηται (δ) Αἰγύπτῳ, λήψεται αὐτοὺς ὀδύνη περὶ Τύρου. 6 Ἀπέλθατε εἰς Καρχηδόνα, (ε) ὀλολύξατε 7 οἱ κατοικοῦντες ἐν τῇ νήσῳ ταύτῃ. Οὐχ αὕτη (ζ) ἦν ὑμῶν ἡ ὕβρις ἀπ᾽ ἀρχῆς, πρὶν ἢ 8 παραδοθῆναι αὐτήν; Τίς ταῦτα ἐβούλευσεν ἐπὶ Τύρον; μὴ ἥσσων ἐστὶν, ἢ οὐκ ἰσχύει; οἱ ἔμποροι αὐτῆς ἔνδοξοι ἄρχοντες τῆς γῆς. 9 Κύριος Ϲαβαὼθ ἐβουλεύσατο παραλῦσαι (η) πᾶσαν τὴν ὕβριν τῶν ἐνδόξων, καὶ ἀτιμάσαι πᾶν ἔνδοξον ἐπὶ 10 τῆς γῆς. Ἐργάζου τὴν γῆν σου, καὶ γὰρ 11 πλοῖα οὐκέτι (") ἔρχεται ἐκ Καρχηδόνος. Ἡ δὲ χείρ σου οὐκέτι ἰσχύει κατὰ θάλασσαν, ἡ παροξύνουσα βασιλεῖς. κύριος Ϲαβαὼθ ἐνετείλατο περὶ Χαναὰν ἀπολέσαι αὐτῆς 12 τὴν ἰσχύν. Καὶ ἐροῦσιν, (θ) Οὐκέτι οὐ μὴ προσθῆτε τοῦ ὑβρίζειν καὶ ἀδικεῖν τὴν θυγατέρα (ι) Σιδῶνος. καὶ ἐὰν ἀπέλθῃς εἰς (κ) Κιτιεῖς, οὐδὲ ἐκεῖ (λ) ἀνάπαυσις 13 ἔσται σοι. Καὶ εἰς γῆν Χαλδαίων, καὶ αὕτη ἠρήμωται ἀπὸ τῶν (") Ἀσσυρίων, ὅτι ὁ τοῖ- 14 χος αὐτῆς πέπτωκεν. (μ) Ὀλολύξατε πλοῖα Καρχηδόνος, ὅτι (ν) ἀπόλωλε τὸ 15 ὀχύρωμα ὑμῶν. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καταλειφθήσεται Τύρος ἔτη ἑβδομήκοντα, ὡς χρόνος βασιλέως, ὡς χρόνος ἀνθρώπου. καὶ ἔσται μετὰ ἑβδομήκοντα 16 ἔτη, ἔσται Τύρος ὡς ᾆσμα πόρνης. Λάβε κιθάραν, ῥέμβευσον πόλις πόρνη ἐπιλελησμένη, καλῶς κιθάρισον, πολλὰ ᾆσον, 17 ἵνα σου (ξ) μνεία γένηται. Καὶ ἔσται (ο) μετὰ τὰ ἑβδομήκοντα ἔτη, ἐπισκοπὴν ποιήσει ὁ θεὸς Τύρου, καὶ πάλιν ἀποκατασταθήσεται εἰς τὸ ἀρχαῖον, καὶ ἔσται ἐμπόριον πάσαις ταῖς βασιλείαις τῆς (π) οἰκουμέ- 18 νης ἐπὶ πρόσωπον τῆς γῆς. Καὶ ἔσται αὐτῆς ἡ ἐμπορία καὶ ὁ μισθὸς ἅγιον (˙) κυρίῳ· οὐκ αὐτοῖς συναχθήσεται, ἀλλὰ τοῖς κατοικοῦσιν ἔναντι κυρίου, πᾶσα ἡ ἐμπορία αὐτῆς, φαγεῖν καὶ πιεῖν καὶ ἐμπλησθῆναι, (ρ) καὶ εἰς Ϲυμβολὴν μνημόσυνον ἔναντι κυρίου.

Cui ſimiles facti ſunt habitantes in inſula, negotiatores Phœniciæ, tranſmittentes mare 2 *In aqua multa, ſemen negotiatorum? quaſi meſſis inferatur, negotiatores gentium.* 3 *Erubeſce Sidon, dixit mare: fortitudo autem maris dixit; Non parturivi, neque peperi, neque enutrivi juvenes, neque exaltavi virgines.* 4 *Quando autem auditum fuerit Ægypto; capiet eos dolor pro Tyro.* 5 *Abite in Carthaginem, ululate, qui habitatis in inſula hac.* 6 *Nónne hæc erat ſuperbia veſtra à principio, priuſquàm ipſa (a) traderetur?* 7 *Quis hæc decrevit ſuper Tyrum?* 8 *Nunquid imbecillior eſt, aut non valet? Mercatores ejus glorioſi, principes terræ. Dominus Sabaoth decrevit diſſolvere univerſam ſuperbiam glorioſorum, & inhonorare omne glorioſum ſuper terram.* 9 *Operare terram tuam: etenim naves non ultrà veniunt de Carthagine:* 10 *Manus autem tua non ultrà valet per mare, irritans reges. Dominus Sabaoth mandavit de Chanaan, perdere ejus fortitudinem.* 11 *Et dicent; Non ultrà adjicietis, contumelioſi eſſe, & afficere injuriis filiam Sidonis.* 12 *Quòd ſi abieris ad Citiæos; neque ibi requies erit tibi: Et in terram Chaldæorum; & hæc deſolata eſt ab (b) Aſſyriis: quoniam murus ejus corruit.* 13 *Ululate naves Carthaginis; quoniam periit munitio veſtra.* 14 *Et erit in die illa, derelinquetur Tyrus annos ſeptuaginta, ſicut tempora regis, ſicut tempus hominis. Et erit poſt ſeptuaginta annos, erit Tyrus quaſi canticum meretricis.* 15 *Sume citharam, vagare civitas meretrix oblivioni tradita: bene citharizà, multùm cane, ut tuî memoria ſit.* 16 *Et erit poſt ſeptuaginta annos, viſitationem faciet Deus Tyri: & rurſus reſtituetur in antiquum: & erit emporium omnibus regnis orbis ſuper faciem terræ:* 17 *Et erit ejus negotiatio, & merces ſanctum Domino: non ipſis congregabitur, ſed habitantibus ante Dominum: omnis negotiatio ejus, edere, & bibere, & implere, (c) & in Symbolam, memoriale coram Domino.* 18

MS.A. (γ) Φινίκης, (δ) ἐν Αἰγύπτῳ, (ε) ὀλολύζετε οἱ ἐνοικοῦντες (ζ) ὑμῶν ἦν ἡ ὕβρις ἡ ἀπ᾽ ἀρχῆς, (η) τὴν ὕβριν (") ἔρχονται (θ) Οὐκέτι μὴ προσθῆτε (ι) Σιών. (κ) Κητιεὶμ, (λ) Ϲοι ἀνάπαυσις ἔσται. (") Ἀσσυρίων, οὐδὲ ἐκεῖ Ϲοι ἀνάπαυσις ἔσται, ὅτι ὁ τοῖχος αὐτῆς (μ) Ὀλολύζετε (ν) ἀπώλετο (ξ) ἡ μνία (ο) μετὰ ἑβδομήκοντα (π) οἰκουμένης. Καὶ ἔσται αὐτῆς (˙) τῷ κυρίῳ· (ρ) εἰς Ϲυμβολὴν

תַּרְגּוּם יוֹנָתָן Targum JONATHAN.

2 אִתְּבַרוּ יָתְבֵי נִיסָא תַּגָּרֵי צִידוֹן דַּהֲווֹ עָדְן בְּיַמָּא מַלּוּךְ: דַּהֲוַת מְסַפְּקָא סְחוֹרָא לְעַמְמִין
3 סַגִּיאִין דִּבְחֲצַד כְּנִישַׁת נַהֲרָא עֲלַלְתַּהּ וַהֲוַת סְחוֹרָא לְעַמְמַיָא: בְּהִיתוּ צִידוֹנָאֵי אֲרֵי
4 אֲמַר מַעַרְבָאָה דִּי יָתֵיב בְּתְקוֹף יַמָּא לְמֵימַר לְוַי לָא מַרְעִית לָא אַעְדִּיתִי וְלָא רַבֵּיתִי
5 עוּלֵמִין פַּנְקִית בְּתוּלָן: כְּמָא דִּי שְׁמַעוּ לְמַחְתָּא דִּלְקוֹ מִצְרָאֵי זָעוּ כַּד שְׁמַעוּ צוּרָאֵי:
6 גְּלוֹ לִמְדִינַת יַמָּא אֵילִילוּ יָתְבֵי נִיסָא: הַהֲדָא לְכוֹן תַּקִּיפְתָּא צוֹר מִיּוֹמֵי קֶדֶם
7 מִלְקַדְמִין הֲווֹ מַיְתָן לַהּ תִּקְרוּבְתָּא מֵאֲרַע רְחִיקָא כְּדוֹ לְאִתּוֹתָבָא הָא גַלְיָא: מַן
8 מְלִיךְ דָּא עַל צוֹר דַּהֲוַת מַמְלְכָא מַלְכִין דִּי תַּגָּרָהָא רַבְרְבִין שִׁלְטוֹנָהָא יַקִּירֵי אַרְעָא:
9 יְיָ צְבָאוֹת מַלְכֵהּ לְאַפָּסָא יְקָר כָּל חֶדְוְתָא לְאַקְלָא כָּל יַקִּירֵי אַרְעָא: גְּלִיא
10 מֵאַרְעִיךְ כְּמֵי נַהֲרָא עֲרוֹקִי לִמְדִינַת יַמָּא לֵית תְּקוֹף עוֹד: גְּבוּרְתֵיהּ מְרַמְמָא עַל יַמָּא
11 לְאַזָעָא מַלְכְוָתָא יְיָ פַּקִּיד עַל כְּנַעֲנָאֵי לְשֵׁיצָאָה תּוּקְפְּהָא: וַאֲמַר לָא תוֹסְפוּן עוֹד
12 לְמִתְקַף דַּהֲוֵיתוּן אָנְסִין לְעַמָּא דִּי בְצִידוֹן לְכִתִּים קוּמוּ גְּלוֹ אַף לְתַמָּן לָא יְהֵי
13 לְכוֹן נְיָח: הָא אַרְעָא כַּסְדָּאֵי דֵּין עַמָּא כַּד לָא הֲוָה אַתּוּרָאָה שַׁכְלְלָהּ לְנַגְוָן
14 אֲקִימוּ חֲזוּתְהָא פַּגַּרוּ בִּירָנְיָתְהָא שַׁוְיוּהָא לְדִמְחָמְרָא: אֵילִילוּ נָחְתֵי סְפִינֵי יַמָּא אֲרֵי
15 אִתְבְּזִיזוּ מְחוֹזֵי תוּקְפְּכוֹן: וִיהֵי בְּעִדָּנָא הַהִיא וְתִתְרְחֵיק צוֹר שַׁבְעִין שְׁנִין כְּיוֹמֵי
16 מַלְכָּא חַד מִסּוֹף שַׁבְעִין שְׁנִין יְהֵי לְצוֹר כְּתוּשְׁבַּחַת נַפְּקַת בָּרָא: אִתְחַלַּף יְקָרִיךְ
אִטַּלְטַל לִמְדִינָא קַרְתָּא דִּי הֲוַת כְּנַפְּקַת בָּרָא אִתְרַחֲקַת הֲפוֹכִי כִנָּרִיךְ לְאֶבְלָא וְזֶמָרִיךְ
17 לְאִלְיָא מָאִים יֵעוֹל דְּכְרָנִיךְ: וִיהֵי מִסּוֹף שַׁבְעִין שְׁנִין יֵעוֹל דִּכְרָנָהּ דְּצוֹר קֳדָם יְיָ
18 וְתְתוּב לְאַתְרַהּ וּתְהֵי מְסַפְּקָא סְחוֹרְהָ לְכָל מַלְכְוַת עַמְמַיָא דִּי עַל אַפֵּי אַרְעָא: וִיהֵי
סְחוֹרְתָהּ וַאֲגַרְהָ קוּדְשָׁא קֳדָם יְיָ לָא יִתְאַצַר וְלָא יִתְגְּנִז אֲרֵי לִדְמְשַׁמְשִׁין קֳדָם יְיָ יְהֵי
אַגְרָהּ לְמֵיכַל לְמִסְבַּע וְלִכְסוּ דִּיקָר:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Contriti ſunt habitatores inſulæ, negotiatores Sidon, qui tranſibant mare, 2 repleverunt te. Quæ erat ſufficiens negotiationi multis populis: cujus 3 proventus erat in meſſe congregationis fluminis, & facta eſt negotiatio populorum. Confuſi ſunt Sidonii, quia dixit Occidentalis qui habitat 4 in fortitudine maris, dicens: Utinam non infirmarer, nec conciperem, nec nutrirem juvenes, nec deliciis affluere facerem virgines. Sicut audierunt 5 plagam qua percuſſi ſunt Ægyptii, tremuerunt quando audierunt Tyrii. Migraverunt in provinciã maris. Ululate habitatores inſulæ. Nunquid hæc 6 eſt vobis Tyrus fortiſſima à diebꝰ antiquis, cui ab antiquo afferebant *munus* 7 à terra longinqua? Ecce nunc migravit ut longè habitaret. Quis dedit 8 hoc conſilium contra Tyrum quæ erat conſiliatrix? cujꝰ negotiatores erant principes, & dominatores ejꝰ inclyti terræ. Dñs exercituũ dedit hoc con- 9 ſiliũ, ut violaret gloriam univerſæ lætitiæ, ut in ignominiã deduceret omnes glorioſos terræ. Migra de terra tua quaſi aquæ fluminis; fuge in provinciã 10 maris, non eſt ultrà fortitudo. Potentia ejus elevata eſt ſup mare ad com- 11 movenda regna. Dñs mandavit adverſꝰ *Canaaneũ*, ut diſperderet fortes ejꝰ. Et dixit, Non addetis ultrà roborari, qui vim inferebatis populo qui eſt in 12 Sidon. In Cethim cõſurgite, tranſmigrate: ibi quoq; non erit vobis requies. Ecce terra Chaldæorũ, iſte populꝰ aliquando non erat. Aſſyriꝰ fundavit eã 13 in inſulas: ſtatuerũt ſpeculas ejꝰ, diſſipaverũt palatia ejꝰ, poſuerũt eam in acervos lapidũ. Ululate deſcendentes in naves maris, quoniã *devaſtatæ ſunt* 14 *provinciæ* fortitudinis veſtræ. Et erit in tempore illo, et oblivioni tradetur 15 Tyrus ſeptuaginta annis, ſicut dies regis uniꝰ: & in fine ſeptuaginta annorũ erit Tyro quaſi canticũ meretricis. Mutata eſt gloria tua: migra in aliam 16 provinciam, civitas quæ eras quaſi meretrix oblivioni tradita es: converte citharam tuam in luctũ, & muſicã tuã in lamentationẽ; fortaſſe erit memoria tui. Et erit in fine ſeptuaginta annorũ, ingredietur memoria Tyri co- 17 ram Dño; & revertetur in locũ ſuũ: & erit ſufficiens negotiatio ejꝰ omnibꝰ regnis populorũ quæ ſunt ſup *faciem terræ*. Et erunt negotiatio ejus, & 18 merces ejꝰ ſanctificatæ corã Dño; non theſaurizabuntur nec recondentur; quia his qui miniſtrant corã Dño, erit merces ejꝰ, ut comedant & ſaturentur, & operiantur veſtimentis gloriæ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

2 * ܫܠܘ ܥܡܘܪ̈ܐ ܕܓܙܪ̈ܬܐ܃ ܬܓܪܐ ܕܨܝܕܢ ܕܥܒܪ ܝܡܐ܂ * ܡܬܒܘܟܝ܂ ܒܡܝ̈ܐ ܣܓܝ̈ܐܐ܂
3 ܙܪܥܐ ܕܬܓܪ̈ܐ܂ ܚܨܕܐ ܕܢܗܪܐ ܥܠܠܬܗ ܗܘܬ ܠܥܡܡ̈ܐ܂ * ܒܗܬܝ ܨܝܕܢ܂ ܡܛܠ ܕܐܡܪ 4
ܝܡܐ ܘܥܘܫܢܗ ܕܝܡܐ܂ ܠܐ ܚܒܠܬ ܘܠܐ ܝܠܕܬ܂ ܘܠܐ ܪܒܝܬ ܥܠܝܡ̈ܐ܂ ܘܠܐ ܐܪܝܡܬ ܒܬܘܠܬ̈ܐ܂
5 * ܡܐ ܕܐܫܬܡܥ ܠܡܨܪܝܢ܂ ܢܐܚܕ ܐܢܘܢ ܚܒܠܐ܂ ܐܝܟ ܕܫܡܥܐ ܕܨܘܪ܂ * ܥܒܪܘ ܠܬܪܫܝܫ܂ 6
ܐܝܠܠܘ ܥܡܘܪ̈ܐ ܕܓܙܪ̈ܬܐ܂ * ܗܕܐ ܗܝ ܠܟܘܢ ܥܫܝܢܬܐ ܕܡܢ ܝܘܡ̈ܬܐ ܩܕܡܝ̈ܐ܂ ܩܕܡܝܗ ܢܐܙܠܢ 7
ܪ̈ܓܠܝܗ ܕܬܥܡܪ ܒܐܪܥܐ ܪܚܝܩܬܐ܂ * ܡܢܘ ܐܡܠܟ ܗܠܝܢ ܥܠ ܨܘܪ ܡܟܠܠܬܐ܂ ܕܬܓܪ̈ܝܗ ܪ̈ܘܪܒܢܐ܂ 8
ܘܬܢܓܪ̈ܝܗ ܡܝܩܪ̈ܝ ܐܪܥܐ܂ * ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܬܪܥܝ܂ ܠܡܒܛܠܘ ܫܘܒܗܪܗ ܕܟܠ ܚܝܠܐ܂ 9
ܘܠܡܨܥܪܘ܂ ܟܠܗܘܢ ܡܝܩܪ̈ܝ ܐܪܥܐ܂ * ܥܒܪܝ ܠܐܪܥܟܝ ܐܝܟ ܢܗܪܐ ܒܪܬ ܬܪܫܝܫ܂ ܬܘܒ 10
ܠܝܬ ܕܡܕܚܐ ܠܟܝ܂ * ܐܝܕܗ ܐܪܝܡ ܥܠ ܝܡܐ܂ ܘܐܪܓܙ ܡܠܟܘ̈ܬܐ܂ ܡܪܝܐ ܦܩܕ ܥܠ ܟܢܥܢ 11
ܕܢܘܒܕ ܥܫܝܢܘ̈ܗܝ܂ * ܘܐܡܪ܂ ܠܐ ܬܘܣܦܝܢ ܬܘܒ ܠܡܫܬܒܗܪܘ܂ ܒܬܘܠܬܐ ܡܥܠܒܬܐ ܒܪܬ 12
ܨܝܕܢ܂ ܩܘܡܝ ܥܒܪܝ ܠܟܬܝܡ܂ ܐܦ ܬܡܢ ܠܐ ܢܢܝܚ ܠܟܝ܂ * ܗܐ ܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝ̈ܐ܂ ܗܢܘ 13
ܥܡܐ ܕܠܐ ܗܘܐ ܐܬܘܪܝܐ ܫܕܝܗ ܠܪܘܚܐ܂ ܘܐܩܝܡܘ ܕܘܩ̈ܐ܂ ܒܕܘ ܒܝܪ̈ܢܘܬܗ܂ ܘܥܒܕܘܗ̇
ܠܡܦܘܠܬܐ܂ * ܐܝܠܠܝܢ ܐܠܦ̈ܐ ܕܬܪܫܝܫ܂ ܡܛܠ ܕܐܬܒܙܙ ܫܘܒܗܪܟܝܢ܂ * ܘܢܗܘܐ ܒܗ 14 15
ܒܝܘܡܐ ܗܘ܂ ܬܬܛܥܐ ܨܘܪ܂ ܫܒܥܝܢ ܫܢܝܢ܂ ܐܝܟ ܝܘܡܘ̈ܗܝ ܕܡܠܟܐ ܚܕ܂ ܘܡܢ ܒܬܪ ܫܒܥܝܢ
ܫܢܝܢ܂ ܢܙܡܪܘܢ ܠܨܘܪ ܙܡܝܪܬܐ ܕܙܢܝܬܐ܂ * ܣܒܝ ܟܢܪܐ܂ ܘܐܬܟܪܟܝ ܡܕܝܢܬܐ܂ ܙܢܝܬܐ ܕܐܬܛܥܝܬ܂ 16
ܩܘܫܝ ܫܦܝܪ܂ ܐܣܓܝ ܙܡܪܐ܂ ܕܬܬܕܟܪܝܢ܂ * ܘܢܗܘܐ ܡܢ ܒܬܪ ܫܒܥܝܢ ܫܢܝܢ܂ ܢܣܥܘܪ 17
ܡܪܝܐ ܠܨܘܪ܂ ܘܢܗܦܟܝܗ ܠܐܬܓܪܘܬܗ܂ ܘܬܙܢܐ ܒܟܠܗܝܢ ܡܠܟܘ̈ܬܐ ܕܥܠ ܐܦܝ ܐܪܥܐ܂ * ܘܢܗܘܐ 18
ܐܬܓܪܘܬܗ܂ ܘܐܓܪܗ̇ ܩܘܕܫܐ ܠܡܪܝܐ܂ ܠܐ ܢܬܐܣܢܘܢ ܒܣܝܡܐ܂ ܘܠܐ ܢܬܛܫܘܢ܂ ܐܠܐ
ܠܥܡܘܪ̈ܝܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ܂ ܢܗܘܐ ܐܬܓܪܘܬܗ܂ ܠܡܐܟܠ ܘܠܡܣܒܥ ܘܠܡܟܣܝܘ ܠܣܒ̈ܝܗܘܢ܂

Sile habitator inſulæ, mercator Sidonis qui 2
ſulcas mare, Tu cujus merces ſunt in aquis 3
multis : *nam* proventus ſeminis mercatoris
erit meſſis fluvii, cedet in lucrum gentibus.
Erubeſce Sidon, quia dixit mare & fortitudo 4
maris, Non parturivi, neque peperi, neque
educavi adoleſcentes, neque virgines evexi.
Cùm *id* auditum fuerit ab Ægyptiis, dolores 5
partûs corripient eos, ut cùm audietur à Tyriis. 6
Tranſite ad Tharſis, ululate habitatores inſulæ. 7
Hæccine eſt apud vos illa munita quæ
eſt ab antiquis diebus? ante ipſam ibunt pedes
ejus, ut habitet in *regione* remota. Quis 8
tale conſilium cepit contra Tyrum illam coronatam,
cujus mercatores erant principes,
cujus negotiatores honoratiſſimi terræ? Dominus 9
potentiſſimus decrevit hoc, ad abolendam
gloriam omnis potentiæ, & ignominiâ
afficiendos omnes honoratiſſimos terræ. Remea 10
in terram tuam ceu flumen filia Tharſis,
non eſt ampliùs qui te expellat. Manum ſuam 11
extulit ſuper mare, & irritavit regna: Domin⁹
mandavit contra Chanaan ut perderet robuſtiores
ejus; Et dixit, Ne pergas ampliùs ſuperbire 12
virgo oppreſſa filia Sidonis: Surge,
tranſi in Chetim: nec ibi requiem tibi dabit.
En terrâ Chaldæorum (id eſt populus quem 13
Aſſyrius nonne redegit in ventum?) ſtatuite
ergò exploratores, explorate palatia ejus, & 14
redigite eam in ruinâ. Ululate naves Tharſis 15
quia direptus eſt faſtus veſter. Erit autem eo
die, ut oblivioni tradatur Tyrus ſeptuaginta
annis, juxta dies unius regis; & poſt annos ſeptuaginta
canant Tyro cantilenâ meretricis.
Sume citharâ, & circumi civitatem, O meretrix 16
oblivioni tradita, pulſa jucundè, cantum
multiplica, ut memoria tui renovetur. Erit 17
enim poſt annos ſeptuaginta ut reviſat Dn̄s
Tyrū, & reſtituat eam ad mercaturâ ſuam, &
fornicetur in omnib⁹ regnis quæ extant ſuper
faciē terræ. Tandem verò negotiatio ejus & 18
quæſt⁹ ej⁹ conſecrabuntur Dn̄o: non reponentur
in theſauro, neq; recōdentur, ſed habitantib⁹
corā Dn̄o erit merx ejus, ad comedendū,
ad ſaturandū ſe, & ad operiendum ſenes ſuos.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

2 * بماذا تكون شبيها ايها الساكن في الجزيرة * تجار فينيقية العابرون البحر في ماء كثير *
3 * نسل التجار * تجار الامم مثل قبضة من حزمة حصاد * افتضحي يا صيدا قال البحر وقوة 4
5 البحر قالت لم اطلق ولم الد ولم اربي شبانا * ولم ارفع عذاري * واذ يصير مسموعا في
6 مصر * ياخذهم الوجع من اجل صور * امضوا الى كرسيدونيه * ولولوا ايها السكان في هذه
7 8 الجزيرة * اليس عظمتكم كانت منذ البدو من قبل ان تسلم * من تآمر بهذه على
9 صور هل هي دنية * او لا تقدر تجارها المسرفون روساء الارض * رب الجيوش راى ان يحل كل
10 كبرياء المسرفين * ويهين كل شرف على الارض * اعملي ارضك * لان ليس ياتي بعد سفن
11 من كرسيدونيه * ويدك لا تقوى على البحر ايضا * التي اجزعت ملوكا * رب الجيوش امر من
12 اجل كنعان ان يهلك قوتها * ويقولون لا تعودوا ان تتعظموا وتظلموا ابنة صهيون *
13 وان ذهبت الى كتيم فليس تكون لك هناك راحة * لان حايطها سقط * [MS. Ox. ولكن هذه ارض
الكلدانيين * هذا الشعب الذي اتاك * ليس مثل الموصلي الذي لا يقدر عليك * ويذري
14 ترابك في الريح * ويصيروا قصورك خرابا * ولا شعبه المفتشون الذين فتشوا قصورك] * ولولي يا
15 سفن كرسيدونيه * لان حصنكم هلك * ويكون في ذلك اليوم تترك صور سبعين سنة * مثل
زمن ملك * مثل زمن انسان * ويكون بعد سبعين سنة تصير صور مثل نشيد زانية *
16 * خذي قيثارا وترددي ايتها المدينة الزانية المنسية * فنقري حسنا * انشدي كثيرا *
17 ليكون لك ذكرا * ويكون بعد سبعين سنة يصنع الله تعهد صور * ويعيدها ثانية
18 الى الاول * ويصير متجرا لكل ممالك المسكونة على وجه الارض * ويكون تجارها واجرها
قدسا للرب * وليس تجمع لهم لكن للسكان امام الرب في اورشليم كل تجارها * لياكلوا
ويشربوا ويمتلوا * اعوذجا ذكرا امام الرب *

Cui rei comparaberis O habitator inſulæ? Mercatores Phœniciæ trajicientes 2
mare per aquas multas, Semen mercatorum, mercatores gentium, ſunt ſimiles 3
pugillo è manipulo meſſis excerpto. Pudore ſuffunditor O Saida, inquit mare: 4
& fortitudo maris, Nequaquam parturivi, inquit, neque peperi,
neque educavi juvenes, neque elevavi virgines. Id cùm auditum fuerit in 5
Ægypto, corripiet eos dolor propter Tyrum. Ite Charſedoniam, ejulate O in- 6
cola hujus inſulæ. Nónne faſtus ve- 7
ſter erat ab initio, antequam traditus
eſſet? Quis talia conſultavit adver- 8
ſùs Tyrum? num vilis eſt? an verò impotentes ſunt mercatores ejus nobiliſſimi,
principes terræ? Dominus exercituum 9
arbitratus eſt diſſolvendam eſſe totam nobilium arrogantiam, omnémque faſtum
qui ſuper terram eſt, deprimendum. Cole terram tuam, quia non ſunt deinceps 10
adventuræ naves è Charſedonia: Nec 11
poteſtatem habebit ampliùs ſuper mare manus illa tua quæ reges territabat. Dominus exercituum præcepit de perdenda
fortitudine Chanaan; Ita ut dicant, Ne 12
ſuperbiatis deinceps, & opprimatis filiam Sionis: etiamſi te contuleris ad Chetim,
non erit illic tibi requies, quia murus ejus corruit. [MS. Ox. *Sed iſta terra Chal-* 13
dæorum, iſte populus qui ad te venit, non eſt ſicut Aſſyrius qui tibi non prævaluit:
ſed pulverem tuum in ventum diſperget: & erunt arces tuæ in deſolationem:
neque populus ejus, exploratores qui explorabunt palatia tua.] *Ejulate O naves Char-* 14
ſedoniæ, quia periit munitio veſtra. E- 15
rit autem illo die ut deſtituatur Tyrus annis ſeptuaginta. ut tempore alicujus regis,
ut ætate alicujus hominis: tum erit ut exactis ſeptuaginta annis, fiat Tyrus
ſicut carmen meretricis: Sume cithar- 16
am, & deambula urbs ſcortatrix & oblivioni tradita, citharam benè pulſa, carmina multa canito, ut memoria tua re-
viviſcat. Exactis verò ſeptuaginta an- 17
nis, recordabitur Deus Tyri, & denuò reſtituet eam in priſtinum ſtatum, fiétque
emporium omnibus regnis quæ ſunt ſuper faciem orbis terrarum: Et tam 18
merces quàm quæſtus ejus erunt ſacræ Domino: nequaquam pro ipſis cogentur, ſed pro habitantibus coram Domino in Jeruſalem erunt omnes merces ejus, ut edant, bibant, & ſaturentur; ad exemplar & memoriam coram Domino.

ישעיה: כד

CAP. XXIV. כד

,ejus *faciei depravabit* &:eam *defrugans* &,terram *evacuans* Dominus Ecce
1 הִנֵּה יְהוָה בּוֹקֵק הָאָרֶץ וּבוֹלְקָהּ וְעִוָּה פָנֶיהָ
: ſacerdos ſic , populus ſicut erit Et .ejus habitatores faciet diſpergere &
2 וְהֵפִיץ יֹשְׁבֶיהָ׃ וְהָיָה כָעָם כַּכֹּהֵן
, emens ſicut : ejus *hera* ſic , ancilla ſicut : ejus dominus ſic ,ſervus ſicut
כַּעֶבֶד כַּאדֹנָיו כַּשִּׁפְחָה כַּגְּבִרְתָּהּ כַּקּוֹנֶה
ſic , fœnerator ut : mutuum accipiens ſic,mutuans ſicut : vendens ſic
כַּמּוֹכֵר כַּמַּלְוֶה כַּלֹּוֶה כַּנֹּשֶׁה כַּאֲשֶׁר
: diripietur diripiendo & ,terra evacuabitur Evacuando .*eo ab ferens* fœnus
3 נֹשֶׁא בוֹ׃ הִבּוֹק תִּבּוֹק הָאָרֶץ וְהִבּוֹז תִּבּוֹז
; terra *defluxit* , *Luxit* .hoc verbum eſt locutus Dominus quia
4 כִּי יְהוָה דִּבֶּר אֶת־הַדָּבָר הַזֶּה׃ אָבְלָה נָבְלָה הָאָרֶץ
.terræ populi *elatio* ſunt infirmati : orbis *decidit* , eſt *infirmata*
אֻמְלְלָה נָבְלָה תֵּבֵל אֻמְלָלוּ מְרוֹם עַם־הָאָרֶץ׃
,leges ſunt tranſgreſſi quia *: ſuis incolis ſub hypocriſi eſt uſa* terra Et
5 וְהָאָרֶץ חָנְפָה תַּחַת יֹשְׁבֶיהָ כִּי־עָבְרוּ תוֹרֹת
perjurium Ideo *.ſeculi* fœdus diſſipaverunt ,*ſtatutum* mutaverunt
6 חָלְפוּ חֹק הֵפֵרוּ בְּרִית עוֹלָם׃ עַל־כֵּן אָלָה
ſunt combuſti Ideò .ea in habitantes ſunt deſolati & :terram *comedit*
אָכְלָה אֶרֶץ וַיֶּאְשְׁמוּ יֹשְׁבֵי בָהּ עַל־כֵּן חָרוּ
, *muſtum Luxit .puſillum hominis remanebit* & , terræ habitatores
7 יֹשְׁבֵי אֶרֶץ וְנִשְׁאַר אֱנוֹשׁ מִזְעָר׃ אָבַל תִּירוֹשׁ
Ceſſavit .corde læti omnes ingemuerunt :vitis eſt *infirmata*
8 אֻמְלְלָה־גֶפֶן נֶאֶנְחוּ כָּל־שִׂמְחֵי־לֵב׃ שָׁבַת
gaudium *deſiit* ,exultantium ſonitus *ceſſavit* , tympanorum gaudium
מְשׂוֹשׂ תֻּפִּים חָדַל שְׁאוֹן עַלִּיזִים שָׁבַת מְשׂוֹשׂ
.illam bibentibus ſechar erit amara:vinum bibent non *cantico In* .citharæ
9 כִּנּוֹר׃ בַּשִּׁיר לֹא יִשְׁתּוּ־יָיִן יֵמַר שֵׁכָר לְשֹׁתָיו׃
Clamor *.intrando ab* domus omnis eſt clauſa *: inanitatis* civitas eſt Attrita
10 11 נִשְׁבְּרָה קִרְיַת־תֹּהוּ סֻגַּר כָּל־בַּיִת מִבּוֹא׃ צְוָחָה
migravit , lætitia omnis eſt obtenebrata : plateis in vinum propter
עַל־הַיַּיִן בַּחוּצוֹת עָרְבָה כָּל־שִׂמְחָה גָּלָה
conteretur deſolatione &,ſolitudo urbe in Remanſit .terræ gaudium
12 מְשׂוֹשׂ הָאָרֶץ׃ נִשְׁאַר בָּעִיר שַׁמָּה וּשְׁאִיָּה יֻכַּת־
excuſſio ſicut:populorũ medio in ,terræ *interiori* in erit ſic Quia .porta
13 שָׁעַר׃ כִּי כֹה יִהְיֶה בְּקֶרֶב הָאָרֶץ בְּתוֹךְ הָעַמִּים כְּנֹקֶף
elevabunt Hi .vindemia fuerit *conſummata ſi* racemi ſicut , oleæ
14 זַיִת כְּעוֹלֵלֹת אִם־כָּלָה בָצִיר׃ הֵמָּה יִשְׂאוּ
Ideo *.mari à efferent vocem* Domini *excellentia in,dicent præconia*,ſuam vocem
15 קוֹלָם יָרֹנּוּ בִּגְאוֹן יְהוָה צָהֲלוּ מִיָּם׃ עַל־כֵּן
Dei Domini nomen maris inſulis in;Dominum glorificate vallibus in
בָּאֻרִים כַּבְּדוּ יְהוָה בְּאִיֵּי הַיָּם שֵׁם יְהוָה אֱלֹהֵי
: dixi & , juſto gloriam ,audivimus *cantus* terræ *alâ* Ab .Iſrael
16 יִשְׂרָאֵל׃ מִכְּנַף הָאָרֶץ זְמִרֹת שָׁמַעְנוּ צְבִי לַצַּדִּיק וָאֹמַר
prævaricantes:mihi væ ; mihi meum ſecretum , mihi meum Secretum
רָזִי־לִי רָזִי־לִי אוֹי לִי בֹּגְדִים
.ſunt prævaricati prævaricantes prævaricatione & ,ſunt prævaricati
בָּגָדוּ וּבֶגֶד בּוֹגְדִים בָּגָדוּ׃
, erit Et .terræ habitator te ſuper ,laqueus & ,fovea & ,Formido
17 18 פַּחַד וָפַחַת וָפָח עָלֶיךָ יוֹשֵׁב הָאָרֶץ׃ וְהָיָה
medio de *aſcendens* & :foveam in cadet , fomidinis voce à *fugiens*
הַנָּס מִקּוֹל הַפַּחַד יִפֹּל אֶל־הַפַּחַת וְהָעוֹלֶה מִתּוֹךְ
, aperientur excelſo de cataractæ quia:laqueo *in* capietur , foveæ
הַפַּחַת יִלָּכֵד בַּפָּח כִּי־אֲרֻבּוֹת מִמָּרוֹם נִפְתָּחוּ
.terræ fundamenta contremiſcent &
וַיִּרְעֲשׁוּ מוֹסְדֵי אָרֶץ׃

Verſio VUL. LAT.

CAP. XXIV.

1 ECce Dominꝰ diſſipabit ter-
ram, & nudabit eam, & affli-
get faciem ejus, & diſperget
2 habitatores ejus. Et erit ſicut
populus, ſic ſacerdos : & ſicut
ſervus, ſic dominus ejus : ſicut
ancilla, ſic domina ejus : ſicut
emens, ſic ille qui vendit:ſicut
fœnerator,ſic is qui mutuũ ac-
cipit : ſicut qui repetit, ſic qui
3 debet. Diſſipatione diſſipabi-
tur terra, & direptione præ-
dabitur. Dominus enim locu-
4 tus eſt verbum hoc. Luxit, &
defluxit terra, & infirmata eſt:
defluxit orbis, infirmata eſt al-
5 titudo populi terræ. Et terra
infecta eſt ab habitatoribus
ſuis : quia tranſgreſſi ſunt le-
ges, mutaverunt jus, diſſipa-
verunt fœdus ſempiternum.
6 Propter hoc maledictio vora-
bit terram,& peccabunt habi-
tatores ejus : ideóque inſani-
ent cultores ejus,& relinquen-
7 tur homines pauci. Luxit vin-
demia,infirmata eſt vitis,inge-
muerunt omnes qui lætabantur
8 corde. Ceſſavit gaudium tym-
panorum, quievit ſonitus læ-
tantium, conticuit dulcedo ci-
9 tharæ. Cum cantico non bi-
bent vinum : amara erit potio
10 bibentibꝰ illã. Attrita eſt civi-
tas vanitatis, clauſa eſt omnis
11 domꝰ nullo introeunte. Clamor
erit ſuper vino in plateis : de-
ſerta eſt omnis lætitia : tranſla-
12 tum eſt gaudium terræ. Reli-
cta eſt in urbe ſolitudo, & ca-
13 lamitas opprimet portas. Quia
hæc erũt in medio terræ,in me-
dio populorum : quomodò ſi
paucæ olivæ,quæ remanſerunt,
excutiantur ex olea;& racemi,
14 cùm fuerit finita vindemia. Hi
levabunt vocem ſuam, atque
laudabunt : cùm glorificatus
fuerit Dominꝰ,hinnient de ma-
15 ri. Propter hoc in doctrinis
glorificate Dominum ; in inſu-
lis maris nomen Domini Dei
16 Iſrael. A finibus terræ laudes
audivimus, gloriam juſti. Et
dixi ; Secretum meum mihi,ſe-
cretum meum mihi, væ mihi :
prævaricantes prævaricati ſũt,
& prævaricatione tranſgreſſo-
17 rum prævaricati ſunt. Formi-
do, & fovea, & laqueus ſuper
18 te, qui habitator eſt terræ. Et
erit : Qui fugerit à voce for-
midinis, cadet in foveam : &
qui ſe explicaverit de fovea,te-
nebitur laqueo:quia cataractæ
de excelſis apertæ ſunt,& con-
cutientur fundamenta terræ.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. κδ′.

1 Ἰδοὺ κύριος καταφθείρει τὴν οἰκουμένην, καὶ
ἐρημώσει αὐτὴν, καὶ ἀνακαλύψει τὸ πρόσω-
πον αὐτῆς, καὶ διασπερεῖ τοὺς ἐνοικοῦντας ἐν
2 αὐτῇ. Καὶ ἔσται ὁ λαὸς ὡς (α) ἱερεὺς, καὶ ὁ
παῖς ὡς ὁ κύριος, καὶ ἡ θεράπαινα ὡς ἡ
κυρία· ἔσται ὁ ἀγοράζων ὡς ὁ πωλῶν, (*) ὁ
δανείζων ὡς ὁ δανειζόμενος, καὶ ὁ ὀφείλων
3 ὡς ᾧ ὀφείλει. Φθορᾷ φθαρήσεται ἡ γῆ, καὶ
προνομῇ προνομευθήσεται ἡ γῆ· τὸ γὰρ στό-
4 μα κυρίου ἐλάλησε ταῦτα. Ἐπένθησεν ἡ
γῆ, καὶ ἐφθάρη ἡ οἰκουμένη, (β) ἐπένθησαν οἱ
5 ὑψηλοὶ τῆς γῆς. (γ) Ἡ δὲ γῆ ἠνόμησε διὰ τοὺς
κατοικοῦντας αὐτὴν, διότι (δ) παρήλθο-
σαν τὸν νόμον, καὶ ἤλλαξαν τὰ (ε) προστάγ-
6 ματα διαθήκην αἰώνιον. Διὰ τοῦτο ἀρὰ ἔ-
δεται τὴν γῆν, ὅτι ἡμάρτοσαν οἱ κατοικοῦντες
αὐτήν· διὰ τοῦτο πτωχοὶ ἔσονται οἱ ἐνοικοῦν-
τες ἐν τῇ γῇ, καὶ καταλειφθήσονται ἄνθρω-
7 ποι ὀλίγοι. Πενθήσει οἶνος, πενθήσει
ἄμπελος, στενάξουσι πάντες οἱ εὐφραινόμενοι
8 τὴν ψυχήν. Πέπαυται εὐφροσύνη τυμπάνων,
9 *πέπαυται αὐθάδεια, καὶ πλοῦτος ἀσεβῶν,
πέπαυται φωνὴ κιθάρας. Ἠσχύνθησαν, οὐκ
ἔπιον οἶνον, πικρὸν ἐγένετο τὸ σίκερα
10 τοῖς πίνουσιν. (ζ) Ἠρημώθη πᾶσα πόλις,
11 κλείσει οἰκίαν τοῦ μὴ εἰσελθεῖν. Ὀλολύζετε
περὶ τοῦ οἴνου πανταχῆ, πέπαυται πᾶσα εὐ-
φροσύνη τῆς (η) γῆς, ἀπῆλθεν πᾶσα εὐφρο-
12 σύνη τῆς γῆς. Καὶ καταλειφθήσονται πόλεις
ἔρημοι, καὶ οἶκοι ἐγκαταλελειμμένοι ἀπο-
13 λοῦνται. Ταῦτα πάντα (θ) ἔσονται ἐν τῇ
γῇ ἐν μέσῳ τῶν ἐθνῶν. ὃν τρόπον ἐάν τις
καλαμήσηται ἐλαίαν, οὕτως καλαμήσονται
αὐτούς· καὶ ἐὰν παύσηται ὁ τρυγητὸς,
14 Οὗτοι (ι) βοῇ φωνήσουσιν. οἱ δὲ καταλει-
φθέντες ἐπὶ τῆς γῆς εὐφρανθήσονται ἅμα τῇ
δόξῃ κυρίου, ταραχθήσεται τὸ ὕδωρ τῆς θα-
15 λάσσης. Διὰ τοῦτο ἡ δόξα κυρίου ἐν ταῖς νή-
σοις ἔσται τῆς θαλάσσης, τὸ ὄνομα κυρίου
16 ἔνδοξον ἔσται. Κύριε ὁ θεὸς Ἰσραὴλ ἀπὸ
τῶν πτερύγων τῆς γῆς τέρατα ἠκούσαμεν, ἐλ-
πὶς τῷ εὐσεβεῖ. καὶ ἐροῦσι, Οὐαὶ τοῖς
17 ἀθετοῦσιν, οἱ ἀθετοῦντες τὸν νόμον. Φόβος
καὶ βόθυνος καὶ παγὶς ἐφ᾽ ὑμᾶς τοὺς ἐνοι-
18 κοῦντας ἐπὶ τῆς γῆς. Καὶ ἔσται ὁ φεύγων τὸν
φόβον, ἐμπεσεῖται εἰς τὸν βόθυνον· (κ)
καὶ ὁ ἐκβαίνων ἐκ τοῦ βοθύνου, ἁλώσεται
ὑπὸ τῆς παγίδος· ὅτι θυρίδες ἐκ τοῦ οὐρα-
νοῦ (λ) ἀνεῴχθησαν, καὶ σεισθήσεται τὰ θε-
μέλια τῆς γῆς.

CAP. XXIV.

ECce Dominus diſperdit orbem 1
terræ, & deſolabit eum, & reve-
labit faciem ejus, & (a) diſſemi-
nabit inhabitantes in eo : Et erit 2
populus, ſicut Sacerdos; & puer,
ſicut dominus; & ancilla, ſicut
domina: erit emens, ſicut vendens;
fœnerator, ſicut qui mutuum acci-
pit; & qui debet, ſicut cui debet.
Diſſipatione diſſipabitur terra : & 3
direptione diripietur terra. Os enim
Domini loquutum eſt hæc. Luxit 4
terra, & corruptus eſt orbis : lu-
xerunt excelſi terræ : Ipſa verò 5
impiè egit propter habitatores
ſuos: quia prævaricati ſunt le-
gem, & mutaverunt præcepta, te-
ſtamentum æternum. Propter hoc 6
maledictio devorabit terram; quia
peccaverunt habitatores ejus. Ideò
pauperes erunt habitatores terræ,
& derelinquentur homines pauci.
Lugebit vinum, lugebit vitis, ge- 7
ment omnes lætantes animo: Ceſſa- 8
vit lætitia tympanorum, (b) ceſſa-
vit arrogantia, & opulentia im-
piorum : ceſſavit vox citharæ :
Confuſi ſunt, non biberunt vinum: 9
amara facta eſt ſicera bibentibus:
Deſolata eſt univerſa civitas : 10
claudet domum ad non ingredien-
dum. (c) ululate pro vino ubi- 11
que : ceſſavit omnis lætitia (d)
terræ : abiit omnis lætitia terræ.
Et derelinquentur civitates deſo- 12
latæ : & domus derelictæ peri-
bunt. Hæc omnia erunt in terra 13
in medio gentium. Quomodò ſi-
quis excutiat olivam ; ſic excuti-
ent eos; &, ſi quieſcat vindemia;
Iſti clamore vociferabuntur. Qui 14
autem relicti fuerint ſuper terram,
lætabuntur ſimul cum gloria Do-
mini : (e) conturbabitur aqua
maris. Propterea gloria Domini 15
in inſulis erit maris : nomen Do-
mini glorioſum erit. Domine De- 16
us Iſrael, ab alis terræ (f) portenta
audivimus : ſpes (g) pio. Et di-
cent ; Væ (h) prævaricatoribus,
qui prævaricantur legem : Timor, 17
& fovea, & laqueus ſuper vos,
qui habitatis terram. Et erit qui 18
fugerit timorem , incidet in fove-
am: & qui exierit de fovea, capi-
etur à laqueo. Quia feneſtræ de
(i) cœlo apertæ ſunt : & concu-
tientur fundamenta terræ.

MS.A. (α) ὁ ἱερεὺς, (*) καὶ ὁ (β) καὶ ἐπένθησαν (γ) Ἡ δὲ γῆ ἠνόμησεν (δ) παρέβησαν (ε) προστάγματα κυρίου διαθήκην (ζ) * Ἠρημώθη (η) γῆς. Καὶ καταλειφθήσονται (θ) ἔσται (ι) φωνῇ βοήσονται. (κ) ὁ δὲ (λ) ἠνεῴχθησαν,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

כד

1 הָא יְיָ מְבַיֵז אַרְעָא וּמְסַר לַהּ לְסַנְאָהּ וְתַחְפֵּי בַהֲתָא אַפֵּי רַבְרְבָהָא עַל דַעֲבַרוּ עַל אוֹרַיְתָא
2 וִיבַדַּר יַת דְיָתְבִין בַּהּ׃ וִיהֵי חִילוֹנָאָה כְּכַהֲנָא עַבְדָא כְּרִבּוֹנֵיהּ אַמְתָא כְּמָרְתַהּ זָבְנָא
3 כִּמְזַבְּנָא יָזְפָא כְּמוֹזְפָא רָשָׁא כְּמַן דְרָשֵׁי בֵידֵהּ׃ אִתְבְּזָזָא תִתְבְּזֵז אַרְעָא וְאִתְדְּשָׁא תִתְדָּשׁ
4 אֲרֵי יְיָ מַלֵּל יַת פִּתְגָמָא הָדֵין׃ אִתְאַבְּלַת חֲרוּבַת אַרְעָא צְדִיאַת חֲרוּבַת תֵּבֵל סְפוֹ תְקוֹף
5 עַמָּא דְאַרְעָא׃ וְאַרְעָא חָבַת תְּחוֹת יָתְבָהָא אֲרֵי עֲבַרוּ עַל אוֹרַיְתָא אַבְטִילוּ מוֹעֲדַיָּא
6 אַשְׁנִיאוּ קְיָמָא דִי מִן עָלְמָא׃ עַל כֵּן מִן קֳדָם מוֹמֵי דְשִׁקַר חֲרוּבַת אַרְעָא וּצְדִיאוּ דְיָתְבִין
7 בַּהּ עַל כֵּן סָפוּ יָתְבֵי אַרְעָא וְאִשְׁתְּאַר אֱנָשָׁא כִזְעֵיר׃ אִתְאַבָּלוּ כָל שָׁתֵי חֲמַר אֲרֵי אִתְפְּרִיכוּ
8 גוּפְנַיָּא אִתְאֲנָחוּ כָל חֲדֵי לִבָּא׃ בְּטֵלַת חֶדְוַת תּוּפִּין אִתְמְנַעַת אִתְרְגוֹשַׁת תַּקִּיפִין פְּסֵקַת
9 10 חֶדְוַת כִּנָּרָא׃ עַל יְדֵי זְמָר לָא יִשְׁתּוֹן חֲמַר יֵמַר עַתִּיקָא לְשָׁתוֹהִי׃ אִתְבְּרַת קַרְתְּהוֹן
11 צְדִיאַת אֲחִידוּ כָל בָּתַיָּא מִלְמֵעַל׃ מְצַוְחִין עַל חַמְרָא בְּשׁוּקַיָּא שְׁלֵימַת כָּל חֶדְוְתָא גְלָא
12 13 בִּיעַ מִן אַרְעָא׃ אִשְׁתְּאַר בְּקַרְתָּא צְדוּ וְאִתְרְגוֹשְׁתָּא בְּפִגּוּר תַּרְעִין׃ אֲרֵי כְדֵין יִשְׁתְּאֲרוּן
14 יְחִידָאִין צַדִּיקַיָּא בְּגוֹ אַרְעָא בֵּינֵי מַלְכְוָתָא כְּבִיעוּר זֵיתָא כְּעוֹלְלָן בָּתַר קְטָף׃ אִנּוּן יְרִמוּן
15 קָלֵיהוֹן יְשַׁבְּחוּן בְּמֵימְרָא דַייָ יְבָעוּן כְּמָא דִבְעוֹ עַל גְבוּרָן דְאִתְעֲבִידָא לְהוֹן עַל יַמָּא׃ עַל
כֵּן בְּמֵיתֵי נְהוֹרָא לְצַדִּיקַיָּא יְקָרוּן קֳדָם יְיָ בְּנִיסֵי יַמָּא יְהוֹן מוֹדָן וּמְבָרְכִין שְׁמָא דַייָ אֱלָהָא
16 דְיִשְׂרָאֵל׃ מִבֵּית מַקְדְּשָׁא דְמִתַּמָּן עָתִיד לְמִפַּק חֶדְוָא לְכָל יָתְבֵי אַרְעָא תּוּשְׁבְּחָא
שְׁמַעְנָא לְצַדִּיקַיָּא אֲמַר נְבִיָּא רָז אַגַר לְצַדִּיקַיָּא אִתְחֲזֵי לִי רָז פּוּרְעָנוּת לְרַשִׁיעַיָּא אִתְגְּלֵי
17 לִי וַי לַאֲנוֹסַיָּא דְמִתְאַנְסִין וּלְבוּזוּ בָּזְזִין דְהָא מִתְבַּזִּין׃ דַּחֲלָא וְכוּמְצָא וּמְצָדָא עֲלָךְ יָתֵיב
18 אַרְעָא׃ וִיהֵי דְיֵעֲרוֹק מִן קֳדָם דַּחֲלָא יִפּוֹל לְגוֹ כוּמְצָא וּדְיִסַּק מִגּוֹ כוּמְצָא יִתְאֲחֵד בְּסִרְגְתָא
אֲרֵי גְבוּרָן בִּשְׁמַיָּא אִתְעֲבִידָא וְזָעוּ יְסוֹדֵי אַרְעָא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XXIV.

ECce Dominus diſſipabit terram, & tradet eam inimico; & cooperiet 1
confuſione faciem principum ejus, eò quod tranſgreſſi ſunt legem : & di-
ſperget habitantes in ea. Et erit laicus ſicut ſacerdos,ſervus ſicut dominus 2
ejus, ancilla ſicut domina ejus; emens ſicut qui vendit; mutuans,ſicut ille
qui mutuò accipit; debitor ſicut creditor. Diſſipatione diſſipabitur terra, 3
& conculcatione conculcabitur, quia Dominus locutus eſt verbum hoc.
Luxit & deſolata eſt terra : deſertus eſt, in ſolitudinem redactus eſt orbis : 4
defecit fortitudo populi terræ. Terra autem peccavit ſub habitatoribus 5
ſuis quia tranſgreſſi ſunt Legẽ, & ceſſare fecerunt ſolemnitates;mutaverunt
pactum quod à ſeculo eſt. Ideò propter juramentum mendacii deſerta eſt 6
terra, & deſolati ſunt omnes habitantes in ea : propterea conſumpti ſunt
habitatores terræ, & relinquentur quaſi pauci homines. Luxerunt omnes 7
qui bibebant vinum, quia attritæ ſunt vites : ingemuerunt omnes qui læta-
bantur corde. Ceſſavit gaudium tympanorum, prohibitus eſt tumultus 8
fortium ; ceſſavit gaudium citharæ. Cum inſtrumentis muſicis non bibent 9
vinum : amara eſt ſicera bibentibus eam. Attrita eſt civitas eorum & de- 10
ſerta eſt : clauſæ ſunt omnes domus nullo introeunte. Clamant ſuper vino 11
in viis ; conſummata eſt omnis lætitia ; tranſlatum eſt gaudium à terra. Re- 12
licta eſt in urbe ſolitudo, & tumultus in diſſipatione portarum. Quia nunc 13
relinquentur ſoli juſti in medio terræ, & in medio regnorum, ſicut olivæ
quæ remanent poſt excuſſionem olivarum,& ſicut racemi poſt vindemiam.
Hi levabunt vocem ſuam,& laudabunt *verbum* Domini : exultabunt ſicut 14
exultaverunt ſuper magnalia quæ facta ſunt eis in mari. Ideò cùm venerit 15
lumen juſtis, glorificabunt coram Dño : in inſulis maris, confitebuntur &
benedicent nomini Domini Dei Iſrael. De domo ſanctuarii,unde futurum 16
eſt ut egrediatur gaudium omnibus habitatoribus terræ, laudes audivimus
juſtorum. Dixit Propheta, Secretum, præmium juſtorum monſtratum eſt
mihi : ſecretum,vindicta impiorum revelata eſt mihi. Væ eis qui vim faci-
unt, quia vim patientur ; & direptoribus ,quia ecce diripientur. Timor & 17
fovea, & rete ſuper te habitator terræ. Et erit qui fugerit à facie timoris, 18
cadet in foveam : & qui aſcenderit de medio foveæ, comprehendetur
in rete ; quia magnalia in cœlo facta ſunt, & commota ſunt fundamenta terræ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

1 * ܦܘܠܓܐ * ܟܕ * ܗܐ ܡܪܝܐ ܡܣܚܦ ܠܐܪܥܐ ܘܡܚܪܒ ܠܗ̇. ܘܡܗܦܟ ܐܦܝܗ̇
2 ܘܡܒܕܪ ܠܥܡܘܪܝܗ̇. * ܘܢܗܘܐ ܥܡܐ ܐܝܟ ܟܗܢܐ. ܘܥܒܕܐ ܐܝܟ ܡܪܗ. ܘܐܡܬܐ ܐܝܟ ܡܪܬܗ̇.
3 ܩܢܝܐ ܐܝܟ ܡܙܒܢܢܐ. ܘܡܘܙܦܢܐ ܐܝܟ ܡܬܘܙܦܢܐ. ܐܝܟ ܡܪܐ ܚܘܒܬܐ ܕܚܝܒ ܠܗ. * ܡܬܚܪܒܘ
4 ܬܬܚܪܒ ܐܪܥܐ. ܘܡܬܒܙܙܘ ܬܬܒܙܙ. ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܡܠܠ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ. * ܐܝܠܠܬ ܘܐܬܐܒܠܬ
5 ܐܪܥܐ. ܐܝܠܠܬ ܘܝܬܒܬ ܘܐܬܐܒܠܬ ܬܒܝܠ. ܐܝܠܠܬ ܪܘܡܗ̇ ܕܐܪܥܐ. * ܘܐܪܥܐ ܐܬܕܡܝܬ
6 ܠܥܡܘܪܝܗ̇. ܡܛܠ ܕܥܒܪܘ ܢܡܘܣܐ ܘܫܚܠܦܘ ܦܘܩܕܢܐ. ܘܒܛܠܘ ܩܝܡܐ ܕܠܥܠܡ. * ܡܛܠ
ܗܢܐ ܬܬܐܒܠ ܐܪܥܐ. ܘܢܬܚܝܒܘܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ̇. ܡܛܠܗܢܐ ܢܬܩܛܠܘܢ ܟܠܗܘܢ
7 ܥܡܘܪܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ. ܘܢܫܬܚܪܘܢ ܐܢܫܐ ܩܠܝܠ. * ܢܬܐܒܠ ܚܡܪܐ. ܘܢܝܠܠܘܢ ܓܘܦܢܐ.
8 ܘܢܬܬܢܚܘܢ ܟܠ ܚܕܝ ܠܒܐ. * ܢܒܛܠ ܚܕܘܬܐ ܕܬܦܐ. ܘܢܫܬܘܩ ܩܠܐ ܕܙܡܪܐ. ܢܒܛܠ ܚܕܘܬܐ
9 10 ܘܟܢܪܐ. * ܒܙܡܪܐ ܠܐ ܢܫܬܘܢ ܚܡܪܐ. ܢܡܪ ܫܟܪܐ ܠܫܬܘܗܝ. * ܐܬܒܙܬ ܩܪܝܬܐ ܒܙܬܐ ܘܐܬܐܚܕ
11 ܟܠ ܒܝܬ ܡܢ ܕܥܠ. * ܝܠܠܬܐ ܥܠ ܚܡܪܐ ܒܫܘܩܐ. ܒܛܠܬ ܟܠܗ̇ ܚܕܘܬܐ. ܘܥܒܪ ܕܘܨܐ ܕܐܪܥܐ.
12 13 * ܘܐܫܬܒܩ ܒܡܕܝܢܬܐ ܚܪܒܐ. ܘܫܓܘܫܝܐ ܢܦܩܩ ܬܪܥܝܗ̇. * ܘܗܟܢܐ ܢܗܘܐ ܒܓܘܗ̇ ܕܐܪܥܐ
14 ܒܝܢܝ ܥܡܡܐ. ܐܝܟ ܢܩܦܬܐ ܕܙܝܬܐ. ܘܐܝܟ ܥܘܠܠܬܐ ܡܐ ܕܫܠܡ ܩܛܦܐ. * ܗܢܘܢ
15 ܢܪܝܡܘܢ ܩܠܗܘܢ. ܘܢܫܒܚܘܢ ܒܝܩܪܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܢܨܘܚܘܢ ܡܢ ܝܡܐ. * ܡܛܠܗܢܐ
ܒܬܫܒܘܚܬܐ ܫܒܚܘܗܝ ܠܡܪܝܐ. ܘܒܓܙܪܬܐ ܕܝܡܐ ܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ.
16 * ܡܢ ܣܘܦܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ ܙܡܝܪܬܐ ܫܡܥܢ. ܚܝܠܐ ܕܙܕܝܩܐ ܕܐܡܪ. ܐܪܙܝ ܠܝ. ܐܪܙܝ ܠܝ. ܘܝ ܠܝ. ܥܘܠܐ
17 18 ܥܘܠܘ. ܥܘܠܐ ܥܘܠܘ. * ܕܚܠܬܐ ܘܓܘܡܬܐ: ܘܦܚܐ ܥܠܝܟ ܥܡܘܪܐ ܕܐܪܥܐ. * ܘܡܢ
ܕܢܥܪܘܩ ܡܢ ܩܠܐ ܕܕܚܠܬܐ ܢܦܠ ܒܓܘܡܬܐ. ܘܡܢ ܕܢܦܩ ܡܢ ܓܘ ܓܘܡܬܐ ܢܬܐܚܕ
ܒܦܚܐ. ܡܛܠ ܕܟܘܐ ܡܢ ܡܪܘܡܐ ܐܬܦܬܚܘ. ܘܙܥܘ ܫܬܐܣܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ.

CAP. XXIV.

ECce Dominus vaſtaturus eſt terram & diſ- 1
cerpturus eam, deſtructurus ſuperficiem ejus,
& incolas ejus diſperſurus. Eritq; popul⁹ par 2
ſacerdoti, & ſervus par dño ſuo, & ancilla
par dñæ ſuæ, poſſeſſor par vendenti, mutuò ac-
cipiens par mutuò danti, par creditori is qui
debitor ejus eſt. Planè vaſtabitur terra, & 3
planè diripietur; quia Dñs pronuntiavit hanc
ſententiã. Ejulabit et in luctu verſabitur terra, 4
ejulabit, ſedebit, et lugebit orbis, ejulabit cel-
ſitudo terræ, Et terra ſimilis fiet habitatoribus 5
ſuis. Quia tranſgreſſi ſunt legem, immutave-
runt mandatum, & violaverunt pactum ſem-
piternum; Propterea in luctu verſabitur ter- 6
ra, & condemnabuntur omnes habitatores
ejus: propterea interficientur omnes habita-
tores terræ, & reliqui fient mortales perpauci.
Verſabitur in luctu frumentum, ejulabunt vi- 7
tes, gement omnes læti animo. Ceſſabunt gau- 8
dium, & tympana, ſilebit vox exultationis,
ceſſabunt gaudium & citharæ. Cum cantico 9
non bibent vinũ, amareſcet ſicera bibentibus
eam. Prædâ exhaurietur civitas & clauden- 10
tur omnia cellaria. Querela erit ſuper vino 11
in plateis, ceſſabit omne gaudiũ, et deſinet ex-
ultatio terræ. Remanebit in civitate vaſtitas, 12
& afflictio diſcindet portas ejus. Sic contin- 13
get in medio terræ inter gentes, perinde ac *in*
excuſſione oleæ, & racematione cùm abſolu-
ta fuerit vindemia. Hi vocẽ ſuam efferent, & 14
laudabunt majeſtatẽ Dñi, & hinnient è mari.
Idcircò laude celebrate Dñm, & in inſulis 15
maris nomen Dñi Dei Iſraelis. Ab extre- 16
mitatibus terræ cantica audivimus, fortitu-
dinem juſti dicentis, Secretũ meum eſt, meum
eſt ſecretum. Hei mihi; ſceleſti deliquerunt,
perfidi perfidiã cõmiſerunt. Pavor, & fovea, 17
& laqueus imminent tibi O habitator terræ:
Et quicunque fugerit à voce pavoris, incidet 18
in foveam; & quicunque emerſerit è fovea,
laqueo capietur: nam cataractæ ex alto ape-
rientur, & concutientur fundamenta terræ.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الرابع والعشرون *

1 2 * ها الرب يفسد المسكونة كلها * ويخربها ويكشف وجهها * ويبدد السكان فيها * ويكون
الشعب مثل الكاهن * والعبد مثل السيد * والعبدة مثل السيدة * ويكون المشتري مثل
3 البايع * والمقرض مثل المقترض * والغريم كالذي له عليه الدين * الارض تفسد فسادا *
4 الارض تنهب انتهابا * لان فم الرب تكلم بهذا * حزنت مرتفعوا الارض * والارض اثمت لاجل
5 6 سكانها * من اجل انهم تعدوا ناموس الرب * وبدلوا الاوامر العهد الابدي * من اجل هذا
اللعنة تاكل الارض * لان سكانها اخطاوا * لاجل هذا السكان في الارض يصيرون فقراء * ويبقي
7 8 اناس قليلون * يحزن الخمر * تحزن الكرمة * تتنهد جميع فرحي النفس * انكف فرح
9 الطبول * انكف تعاظم وغني المنافقين * انكف صوت القيثار * حزنوا ولم يشربوا خمرا *
10 11 صار المسكر مرا للشاربين * خربت كل مدينة * يغلق البيت ليلا يدخلوا * ولولوا من
12 اجل الخمر بكل موضع * انكف كل سرور الارض * وبقيت البلاد خرابا * والبيوت المتروكة
13 يهلكون * كل هذه تكون في الارض في وسط الامم * وعلي نحو ما يقتطع واحد زيتونة *
14 هكذا يقتطعونهم * واذا فرغ القطاف * هم بصوت يصرخون * والذين يتركون على الارض
15 يفرحون معا بمجد الرب * يضطرب ماء البحر * لاجل هذا مجد الرب يكون في جزاير البحر *
16 اسم الرب يكون ممجدا * ايها الرب اله اسرايل من اجنحة الارض سمعنا ايات * الرجاء
17 يحسن العبادة * ويقولون * الويل للعصاة الذين يعصون الناموس * خوف وحفر وشرك عليكم
18 ايها السكان في الارض * ويكون الهارب يسقط تحت الخوف في الحفر * والخارج من الحفر
يهلك من الفخ * لان كوا انفتحت من السماء * وتتزلزل اساسات الارض *

CAP. XXIV.

ECce Dominus conſumpturus eſt or- 1
bem univerſum, deſtructurus eum, &
detecturus faciem ejus, & habitantes in
eo diſperſurus. Eritque populus ſicut 2
ſacerdos, & ſervus ſicut dominus, &
ancilla ſicut domina; eritque emptor ſicut
venditor, mutuò dans ſicut mutuò ac-
cipiens, & creditor ſicut is qui debito
eſt illi obſtrictus. Terra penitùs con- 3
ſumenda eſt, terra penitùs eſt diripi-
enda; quoniam os Domini hæc effatum
eſt. Contriſtati ſunt ſublimiores terræ, 4
& terra deliquit propter habitatores
ſuos. Quia prætergreſſi ſunt legem 5
Domini, & immutaverunt præcepta,
nempe fœdus ſempiternum; Iccirco 6
maledictio devorabit terram. Quoniam
habitatores ejus peccaverunt, iccirco
habitantes in terra pauperes evadent,
& remanebunt homines perpauci. Mœ- 7
rebit vinum, mœrebit vinea, ſuſpira-
bunt omnes hilares animo. Ceſſabit 8
gaudium tympanorum, ceſſabit faſtus
& opulentia impiorum, ceſſabit ſonitus
citharæ. Contriſtabuntur, nec bibent 9
vinum, & potus inebrians amarus fiet
bibentibus. Deſtruentur omnes urbes, 10
claudetur domus ne ingrediantur. Ulu- 11
labunt ubique propter vini penuriam,
ceſſabit omne terræ gaudium. Regio 12
manebit deſolata, & domus derelictæ
peribunt. Hæc omnia erunt in terra in 13
medio populorum: & quemadmodum
amputat aliquis oleam, ſic amputabunt
eos. Cùm autem abſoluta fuerit vinde-
mia. Iſti clamorem edent; & qui 14
reliqui manſerint ſuper terram, ſimul
gaudebunt in gloria Domini: agitabi-
tur aqua maris, Iccirco erit gloria 15
Domini in inſulis maris, nomen Domi-
ni erit glorioſum. O Domine Deus Iſ- 16
raelis, ab oris terræ audivimus porten-
ta; ſpes decet ſanæ pietatis virum: &
dicent, Væ rebellibus qui rebellant con-
tra legem. Formido, & fovea, & la- 17
queus ſuper vos O habitantes in terra:
Fiéque ut fugiens, cadat formidine 18
preſſus in foveam; & emergens è fo-
vea, laqueo pereat: quoniam feneſtræ
de cælo aperientur, & commovebuntur
fundamenta terræ:

ישעיה: כה

, terra se dissipavit dissipando , terra se confregit Confringendo
19 רֹעָה הִתְרֹעֲעָה הָאָרֶץ פּוֹר הִתְפּוֹרְרָה אֶרֶץ
, ebrius sicut terra se *movebit Movendo* .terra se *excussit* *nutando*
20 מוֹט הִתְמוֹטְטָה אָרֶץ: נוֹעַ תָּנוּעַ אֶרֶץ כַּשִּׁכּוֹר
, ejus *prævaricatio* eam super erit gravis & : tugurium sicut *vacillabit* &
וְהִתְנוֹדְדָה כַּמְּלוּנָה וְכָבַד עָלֶיהָ פִּשְׁעָהּ
, illa die in erit Et .*surgere* adjiciet non & , corruet &
21 וְנָפְלָה וְלֹא־תוֹסִיף קוּם: וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא
super & , excelso in excelsi exercitum super DOMINUS visitabit
יִפְקֹד יְהוָה עַל־צְבָא הַמָּרוֹם בַּמָּרוֹם וְעַל־
vincti *collectione* *colligentur* Et .*humo* *super* *humi* reges
22 מַלְכֵי הָאֲדָמָה עַל־הָאֲדָמָה: וְאֻסְּפוּ אֲסֵפָה אַסִּיר
dierum multitudine à & : *clausura* in claudentur & , *lacum* in
עַל־בּוֹר וְסֻגְּרוּ עַל־מַסְגֵּר וּמֵרֹב יָמִים
quia : sol afficietur pudore & , luna erubescet Et .visitabuntur
23 יִפָּקֵדוּ: וְחָפְרָה הַלְּבָנָה וּבוֹשָׁה הַחַמָּה כִּי־
, Jerusalaim in & , Sijon monte in exercituum DOMINUS regnavit
מָלַךְ יְהוָה צְבָאוֹת בְּהַר צִיּוֹן וּבִירוּשָׁלַםִ
.gloria suis senibus coram &
וְנֶגֶד זְקֵנָיו כָּבוֹד:

CAP. XXV. כה

, tuo nomini confitebor ,te exaltabo , tu meus Deus DOMINE
1 יְהוָה אֱלֹהַי אַתָּה אֲרוֹמִמְךָ אוֹדֶה שִׁמְךָ
.*firmitas* *veritas* , longe à consilia : *mirabile* fecisti quoniam
כִּי עָשִׂיתָ פֶּלֶא עֵצוֹת מֵרָחוֹק אֱמוּנָה אֹמֶן:
: ruinam in munitam urbem , tumulum in *civitate de* posuisti Quia
2 כִּי שַׂמְתָּ מֵעִיר לַגָּל קִרְיָה בְצוּרָה לְמַפֵּלָה
.reædificabitur non *seculum* in , *civitate à* alienorum palatium
אַרְמוֹן זָרִים מֵעִיר לְעוֹלָם לֹא יִבָּנֶה:
formidabilium gentium civitas : fortis populus te glorificabunt Ideo
3 עַל־כֵּן יְכַבְּדוּךָ עַם־עָז קִרְיַת גּוֹיִם עָרִיצִים
egeno fortitudo , *tenui* fortitudo fuisti Quia .te timebunt
4 יִירָאוּךָ: כִּי־הָיִיתָ מָעוֹז לַדָּל מָעוֹז לָאֶבְיוֹן
spiritus nam : æstu ab umbraculum ,*inundatione ab protectio* : *ei angustia* in
בַּצַּר־לוֹ מַחְסֶה מִזֶּרֶם צֵל מֵחֹרֶב כִּי רוּחַ
sonitum , *siccitate* in æstus Sicut .*parietis* *inundatio* sicut , *formidabilium*
5 עָרִיצִים כְּזֶרֶם קִיר: כְּחֹרֶב בְּצָיוֹן שְׁאוֹן
formidabilium propago , nubis umbra in æstus : humiliabis alienorum
זָרִים תַּכְנִיעַ חֹרֶב בְּצֵל עָב זְמִיר עָרִיצִים
populis omnibus exercituum DOMINUS faciet Et .humiliabitur
6 יַעֲנֶה: וְעָשָׂה יְהוָה צְבָאוֹת לְכָל־הָעַמִּים
pinguium , *fecium* convivium , pinguium convivium , hoc monte in
בָּהָר הַזֶּה מִשְׁתֵּה שְׁמָנִים מִשְׁתֵּה שְׁמָרִים שְׁמָנִים
facies hoc monte in *sorbebit* Et .*colatarum* *fecium* , medullatorum
7 מְמֻחָיִם שְׁמָרִים מְזֻקָּקִים: וּבִלַּע בָּהָר הַזֶּה פְּנֵי־
objectum *velamen &* , populos omnes super operti operimenti
הַלּוֹט הַלּוֹט עַל־כָּל־הָעַמִּים וְהַמַּסֵּכָה הַנְּסוּכָה
delebit & , sempiternum in mortem *Absorbuit* .gentes omnes super
8 עַל־כָּל־הַגּוֹיִם: בִּלַּע הַמָּוֶת לָנֶצַח וּמָחָה
: *faciebus* *omnibus* *desuper* lachrymam *DOMINUS* dominus
אֲדֹנָי יְהוִה דִּמְעָה מֵעַל כָּל־פָּנִים
quia , terra universa *desuper* auferet sui populi opprobrium &
וְחֶרְפַּת עַמּוֹ יָסִיר מֵעַל כָּל־הָאָרֶץ כִּי
noster Deus Ecce , illa die in dicet Et .est locutus DOMINUS
9 יְהוָה דִּבֵּר: וְאָמַר בַּיּוֹם הַהוּא הִנֵּה אֱלֹהֵינוּ
expectavimus DOMINUS Iste.nos servabit &,eum expectavimus : iste
זֶה קִוִּינוּ לוֹ וְיוֹשִׁיעֵנוּ זֶה יְהוָה קִוִּינוּ
.ejus salute in lætabimur & , exultabimus ,eum
לוֹ נָגִילָה וְנִשְׂמְחָה בִּישׁוּעָתוֹ:

Versio VULG. LAT.

19 Confractione confringetur terra, contritione conteretur terra, commotione commovebi-20 tur terra, Agitatione agitabitur terra sicut ebrius, & auferetur quasi tabernaculum unius noctis: & gravabit eam iniquitas sua, & corruet, & non 21 adjiciet ut resurgat. Et erit: In die illa visitabit Dominus super militiam cœli in excelso; & super reges terræ, qui 22 sunt super terram. Et congregabuntur in congregatione unius fascis in lacum,et claudentur ibi in carcere: & post mul-23 tos dies visitabuntur. Et erubescet luna, & confundetur Sol, cùm regnaverit Dominus exercituum in monte Sion,et in Jerusalem, & in conspectu senum suorum fuerit glorificatus.

CAP. XXV.

1 DOmine, Deus meus es tu, exaltabo te, & confitebor nomini tuo: quoniam fecisti mirabilia, cogitationes antiquas 2 fideles. Amen. Quia posuisti civitatem in tumulum, urbem fortem in ruinam,domum alienorum: ut non sit civitas, & in sempiternum non ædifice-3 tur. Super hoc laudabit te populus fortis, civitas gentium 4 robustarum timebit te. Quia factus es fortitudo pauperi,fortitudo egeno in tribulatione sua: spes à turbine, umbraculum ab æstu: spiritus enim robustorũ quasi turbo impellens 5 parietem. Sicut æstus in siti, tumultum alienorum humiliabis: & quasi calore sub nube torrente, propaginem fortium 6 marcescere facies. Et faciet Dominus exercituum omnibus populis in monte hoc convivium pinguium, convivium vindemiæ, pinguium medullatorum, vindemiæ defæcatæ. 7 Et præcipitabit in monte isto faciem vinculi colligati super omnes populos,& telam quam orditus est super omnes natio-8 nes. Præcipitabit mortem in sempiternum: & auferet Dominus Deus lachrymam ab omni facie, & opprobrium populi sui auferet de universa terra: quia Dominus locutus 9 est. Et dicet in die illa; Ecce Deus noster iste, expectavimus eum, & salvabit nos: iste Dominus, sustinuimus eum, exultabimus, & lætabimur in salutari ejus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

19 Ταραχῇ ταραχθήσεται ἡ γῆ, ϗ ἀπορίᾳ 20 ἀπορηθήσεται ἡ γῆ. Ἔκλινεν (μ) ὡς ὁ μεθύων ϗ κραιπαλῶν, ϗ σεισθήσεται ὡς ὀπωροφυλάκιον ἡ γῆ· κατίσχυσε γὰρ ἐπ' αὐτῆς ἡ ἀνομία, ϗ πεσεῖται, ϗ οὐ μὴ δύνηται 21 ἀναστῆναι. Καὶ ἐπάξει ὁ Θεὸς ἐπὶ τὸν κόσμον τοῦ οὐρανοῦ τὴν χεῖρα, ϗ ἐπὶ τοὺς βασι-22 λεῖς τῆς γῆς. Καὶ συνάξουσι (ν) συναγωγὴν αὐτῆς εἰς δεσμωτήριον, ϗ ἀποκλείσουσιν εἰς ὀχύρωμα· διὰ πολλῶν γενεῶν ἐπισκοπὴ 23 ἔσαι αὐτῶν. Καὶ τακήσεται ἡ πλίνθος, ϗ πεσεῖται τὸ τεῖχος· ὅτι βασιλεύσει κύριος (ξ) ἐκ Σιὼν, ϗ ἐξ Ἱερουσαλὴμ, ϗ ἐνώπιον τῶν πρεσβυτέρων δοξασθήσεται.

19 *Turbatione turbabitur terra, & egestate egebit terra.* 20 *(k) Declinavit, sicut ebrius, & plenus crapulæ. Et concutietur, quasi pomorum custodia, terra: invaluit enim super eam iniquitas: & cadet, & non poterit resurgere.* 21 *Et inducet Dominus super ornatum cœli manum, & super reges terræ.* 22 *Et congregabunt congregationem ejus in carcerem, & claudent in munitionem: per multas generationes visitatio erit eorum.* 23 *Et liquefiet later, & cadet (l) murus. Quoniam regnabit (m) Dominus è Sion, & de Hierusalem: & in conspectu seniorum glorificabitur.*

MS.A. (μ) ϗ σεισθήσεται ὡς ὀπωροφυλάκιον ἡ γῆ, ὡς ὁ μεθύων ϗ κραιπαλῶν, ϗ πεσεῖται ϗ οὐ μὴ δύνηται ἀναστῆναι. κατίσχυσεν γὰρ ἐπ' αὐτῆς ἡ ἀνομία. Καὶ ἐπάξει ὁ Θεὸς (ν) ϗ ἀποκλείσουσιν εἰς ὀχύρωμα ϗ εἰς δεσμωτήριον· διὰ πολλῶν (ξ) ἐν Σιὼν, ϗ ἐν Ἱερουσαλὴμ,

ΚΕΦ. κε'.

1 †(¹)Κύριε ὁ Θεὸς δοξάσω σε, †ὑμνήσω τὸ ὄνομά σου, ὅτι ἐποίησας θαυμαστὰ πράγματα, †βουλὴν ἀρχαίαν ἀληθινήν. (α)γένοι-2 το. †Ὅτι ἔθηκας πόλεις εἰς χῶμα, †πόλεις ὀχυρὰς (β) τοῦ μὴ πεσεῖν αὐτῶν τὰ θεμέλια, †τῶν ἀσεβῶν πόλις εἰς τὸν αἰῶνα οὐ μὴ οἰ-3 κοδομηθῇ. †Διὰ τοῦτο εὐλογήσει σε ὁ λαὸς ὁ πτωχὸς, †ϗ πόλεις ἀνθρώπων ἀδικουμέ-4 νων εὐλογήσουσί σε. †Ἐγένου γὰρ πάσῃ πόλει ταπεινῇ βοηθὸς, †ϗ τοῖς ἀθυμήσασι δι' ἔνδειαν σκέπη, †ἀπὸ ἀνθρώπων πονηρῶν ῥύσῃ αὐτούς· †σκέπη διψώντων, ϗ πνεῦμα 5 ἀνθρώπων ἀδικουμένων (γ). †Ὡς ἄνθρωποι ὀλιγόψυχοι διψῶντες ἐν Σιὼν, †ἀπὸ ἀνθρώπων ἀσεβῶν, οἷς ἡμᾶς παρέδω-6 κας. †Καὶ ποιήσει κύριος Σαβαὼθ πᾶσι τοῖς ἔθνεσιν· †ἐπὶ τὸ ὄρος τοῦτο πίονται 7 εὐφροσύνην, πίονται οἶνον. †Χρίσονται μύρον ἐν τῷ ὄρει τούτῳ· †παράδος ταῦτα πάντα τοῖς ἔθνεσιν· †ἡ γὰρ βουλὴ αὕτη ἐπὶ 8 πάντα τὰ ἔθνη. †Κατέπιεν ὁ θάνατος ἰσχύσας, †ϗ πάλιν ἀφεῖλε (δ) κύριος ὁ Θεὸς πᾶν δάκρυον ἀπὸ παντὸς προσώπου· †τὸ ὄνειδος τοῦ λαοῦ ἀφεῖλεν ἀπὸ πάσης τῆς 9 γῆς, †τὸ γὰρ στόμα κυρίου ἐλάλησε. †Καὶ ἐροῦσι (ε) τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, †Ἰδοὺ ὁ Θεὸς ἡμῶν ἐφ' ᾧ ἠλπίζομεν, (ζ) ϗ σώσει ἡμᾶς. οὗτος κύριος, ὑπεμείναμεν αὐτῷ, †ϗ ἠγαλλιώμεθα ϗ εὐφρανθησόμεθα ἐπὶ τῇ σωτηρίᾳ ἡμῶν.

CAP. XXV.

1 *DOmine Deus, glorificabo te, laudabo nomen tuum, quoniam fecisti admirabiles res, consilium antiquum verum. Fiat.* 2 *Quia posuisti civitates in tumulum, civitates munitas, (a)ut non caderent fundamenta earum: impiorum (b) civitas in æternum non ædificabitur.* 3 *Propterea benedicet tibi populus pauper: & civitates hominum injuriam sustinentium (c) benedicent tibi.* 4 *Fuisti enim omni civitati humili auxiliator, et tristibus propter inopiam protectio: ab hominibus pessimis liberabis eos: umbraculum sitientium, & spiritus hominum iniquitatem sustinentium,* 5 *Quasi homines pusillanimes sitientes in Sion ab hominibus impiis, quibus nos (d)tradidisti.* 6 *Et faciet Dominus Sabaoth omnibus gentibus: super montem (e) istum bibent lætitiam, bibent vinum:* 7 *ungentur unguento in monte isto. (f) Trade hæc omnia gentibus. Consilium enim hoc super omnes gentes.* 8 *Devorabit mors prævalens: & rursum abstulit Dominus Deus omnem lachrymam ab omni facie: opprobrium populi abstulit ab omni terra. Os enim Domini loquutum est.* 9 *Et dicent die illâ; Ecce Deus noster, in quo sperabamus, & salvabit nos. Iste Dominus: sustinuimus eum: & exultavimus, & lætati sumus in salute nostra.*

MS.A. (¹) ὨΔΗ'. Κύριε ὁ Θεὸς μου (α) γένοιτο κύριε. (β) τοῦ πεσεῖν (γ) εὐλογήσουσίν σε. Ὡς (δ) ὁ Θεὸς (ε) ἐν τῇ ἡμέρᾳ (ζ) ϗ ἠγαλλιώμεθα ϗ εὐφράνθημεν ἐπὶ τῇ σωτηρίᾳ ἡμῶν. Ὅτι ἀνάπαυσιν δώσει

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

19 מֶזַע תְּזוּעַ אַרְעָא מֵנָד תְּנוּד אַרְעָא פְּרוֹק תִּתְפְּרֵק אַרְעָא: אִשְׁתְּדָאָה תִשְׁתְּדֵי אַרְעָא
20 כְּרַוְיָא וּתְהֵי אָזְלָא וְאָתְיָא כְּעַרְזָלָא וְיִתְקְפוּן עֲלַהּ חוֹבַהָא וְתִפּוֹל וְלָא תוֹסִיף לְמֵקָם:
21 וִיהֵי בְּעִדָּנָא הַהִיא יַסְעַר יְיָ עַל חֵילְוָתָא תוּקְפָּא דְיָתְבִין בְּתוּקְפָּא וְעַל מַלְכֵי בְנֵי אֱנָשָׁא
22 דְּדָיְרִין עַל אַרְעָא: וְיִכְנְשׁוּנוּן מִכְנַשׁ לְבֵית אֲסִירֵי וְיִעַגְּנוּנוּן לְבֵית עַגְנָה וּמִסְּגֵי יוֹמִין
23 יְעוּל דָּכְרָנֵיהוֹן: וְיִבְהֲתוּן דְּפָלְחִין לְסִיהֲרָא וְיִתְכַּנְעוּן דְּסָגְדִין לְשִׁמְשָׁא אֲרֵי תִתְגְּלֵי
גְבוּרְתָּא דַיְיָ צְבָאוֹת בְּטוּרָא דְצִיּוֹן וּבִירוּשְׁלֶם וְקֳדָם סָבֵי עַמֵּיהּ בִּיקָר:

כה

1 יְיָ אֱלָהִי אַתְּ אֲרוֹמְמִנָּךְ אוֹדֵי שְׁמָךְ אֲרֵי עֲבַדְתָּא פְּרִישָׁן מִלְּכִין דַּאֲמַרְתָּא לְאַיְתָאָה
2 מִלְּקַדְמִין בְּכֵן אַיְתֵיתָא וְקַיֵּמְתָּא: אֲרֵי שַׁוִּיתָא קִרְוֵי פַּצְחִין לְגַלִּין כְּרַךְ תַּקִּיף לְדִמְחַמְרָא
3 בֵּית דַּחֲלַת עַמְמַיָּא בְּקַרְתָּא יְרוּשְׁלֶם לְעָלַם לָא יִתְבְּנֵי: עַל כֵּן יְקָרוּן קֳדָמָךְ עַם תַּקִּיף
4 קִרְיַת עַמְמִין חֲסִינִין יִדְחֲלוּן מִן קֳדָמָךְ: אֲרֵי הֲוֵיתָא תְקוֹף לְמִסְכֵּן סְעִיד לַחֲשִׁיךְ בְּעִדָּן
עָקָא כְּמָא דְמִטַּמְּרִין מִן קֳדָם זַרְמִית כְּטַלַּל מִשְּׁרָב כֵּן מִלֵּי רַשִׁיעַיָּא לְצַדִּיקַיָּא כְּזַרְמִית
5 דְּשָׁקְפָא בְּכוֹתֶל: כְּשָׁרָב בְּאַרְעָא צַחְיָא אִתְרְגוּשַׁת תַּקִּיפִין תְּמָאֵיךְ כְּטַלַּל כֵּיף מֵקַר
6 בְּאַרְעָא מְשַׁלְהֲיָא כֵּן נְיָח רְוָחָא לְצַדִּיקַיָּא כַּד יִמָּאֲכוּן רַשִׁיעַיָּא: וְיַעֲבֵיד יְיָ צְבָאוֹת לְכָל
עַמְמַיָּא בְּטוּרָא הָדֵין שֵׁרוּ וְזַמְנָא מְדַמַּן דְּהִיא דִיקָר וּתְהֵי לְהוֹן לִקְלָן מָחָן חֵילָא מָחָן דְּלָא
7 יִשְׁתֵּיזְבוּן מִנְּהוֹן מָחָן דִּיסוּפוּן בְּהוֹן: וְיִסְתַּלְּעֲמוּן בְּטוּרָא הָדֵין אַפֵּי רַבָּא דְרַב עַל כָּל
8 עַמְמַיָּא וְאַפֵּי מַלְכָּא דְשַׁלִּיט עַל כָּל מַלְכְּוָתָא: יִתְנַשׁוּן מוֹתָא לְעָלְמִין וְיִמְחֵי יְיָ אֱלֹהִים
דִּמְעֲתָא מֵעַל כָּל אַפַּיָּא וְחִסּוּדֵי עַמֵּיהּ יַעְדֵי מֵעַל כָּל אַרְעָא אֲרֵי בְּמֵימְרָא דַיְיָ גְּזִיר כֵּן:
9 וְיֵימַר בְּעִדָּנָא הַהִיא הָא אֱלָהַנָא דֵין דִּי סַבַּרְנָא לֵיהּ וְיִפְרְקִנָּנָא דֵין יְיָ דַּהֲוֵינָא מְסַבְּרִין
לְמֵימְרֵיהּ נָבוּעַ וְנֶחְדֵי בְּפוּרְקָנֵיהּ:

sperabamus,& salvabit nos:iste est

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Commotione commovebitur terra, agitatione agitabitur terra; dissolutione dissolvetur terra. 19 Suffossione suffodietur terra sicut ebrius, & erit instabilis quasi lectulus unius noctis: & roborabuntur in ea peccata ejus, & cadet, & non adjiciet ut resurgat. 20 Et erit in tempore illo; visitabit Dñs super *exercitus* fortitudinis *sedentes* in fortitudine: & super reges filiorum hominum qui morantur in terra. 21 Et congregabuntur congregatione in domum vinctorum, & detinebuntur in domo carceris, & post multos dies veniet memoria eorum. 22 Et confundentur qui colunt Lunam, & erubescent qui adorant Solem; quia revelabitur potentia Dñi exercituum in monte Sion, & in Hierusalem, & coram senibus populi sui in gloria. 23

CAP. XXV.

DOmine Deus meus es tu, exaltabo te, confitebor nomini tuo, quia fecisti mirabilia: consilia quæ dixisti ab antiquo ut adduceres, ecce adduxisti, & confirmâsti. 1 Quia posuisti urbes munitas in acervos, civitatem fortem in ruinam; domum deorum populorum in civitate Hierusalem: in sempiternum non ædificabitur. 2 Propterea glorificabunt coram te populus fortis, civitas populorum robustorum timebunt te. 3 Quia fuisti fortitudo pauperi, auxilium inopi in tempore tribulationis: sicut proteguntur à facie turbinis, *ut* umbraculo ab æstu, sic sunt verba impiorum justis, quasi turbo impellens parietem. 4 Sicut æstus in terra sitiente, tumultum robustorum humiliabis: quasi umbra petræ *refrigerii* in terra arida, sic erit requies spatiosa justis, quando humiliabuntur impii. 5 Et faciet Dñs exercituum omnibus populis in monte isto prandium & convivium, & putabunt quòd sit in gloriam, & erit eis in ignominiam, & in plagas *fortes, plagas* ex quibus non liberabuntur, & in quibus deficient. 6 Et præcipitabuntur in monte isto facies principis qui est super omnes populos, & facies regis qui dominatur super omnia regna. 7 Oblivioni tradent mortem in æternum: & delebit Dñs Deus lachrymam ab omni facie, & opprobrium populi sui auferet ab universa terra, quia in verbo Domini decretum est ita. 8 Et dicent in tempore illo, Ecce Deus noster, iste in quem Dñs in cujus verbo sperabamus, exultabimus & lætabimur in salutari ejus. 9

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܙܥ ܬܙܘܥ ܐܪܥܐ. ܘܡܙܠ ܬܙܘܠ ܐܪܥܐ. ܘܡܬܥܬܥܘ ܬܬܥܬܥ ܐܪܥܐ. * ܘܡܕܕ ܬܕܘܕ ܐܪܥܐ 19 20
ܐܝܟ ܪܘܝܐ. ܘܬܢܘܕ ܐܝܟ ܟܪܙܠܐ. ܘܬܬܝܩܪ ܥܠܝܗ ܥܘܠܗ. ܘܬܦܠ. ܘܠܐ ܬܘܣܦ ܠܡܩܡ. * ܘܒܗ 21
ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܣܥܘܪ ܡܪܝܐ ܥܠ ܚܝܠܐ ܕܪܘܡܐ ܒܪܘܡܐ. ܘܥܠ ܡܠܟܐ ܕܐܪܥܐ ܒܐܪܥܐ.
* ܘܢܟܢܫܘܢ ܟܢܘܫܝܐ ܥܠ ܐܣܝܪܐ ܒܓܘܒܐ. ܘܢܬܚܫܒܘܢ ܥܠ ܚܒܝܫܐ. ܘܒܣܘܓܐܐ ܕܝܘܡܬܐ 22
ܢܬܦܩܕܘܢ. * ܘܢܒܗܬ ܣܗܪܐ ܘܢܬܚܦܪ ܫܡܫܐ. ܡܛܠ ܕܐܡܠܟ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܒܛܘܪܐ 23
ܕܨܗܝܘܢ ܘܒܐܘܪܫܠܡ. ܘܩܕܡ ܩܕܝܫܘܗܝ ܢܫܬܒܚ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܕܗܘ *
* ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ ܐܢܬ. ܐܪܡܪܡܟ ܘܐܘܕܐ ܠܫܡܟ. ܕܥܒܕܬ ܬܕܡܘܪܬܐ ܘܬܪܥܝܬܐ ܡܗܝܡܢܬܐ. 1
ܡܢ ܩܕܝܡ. ܐܡܝܢ. * ܡܛܠ ܕܥܒܕܬ ܩܪܝܬܐ ܠܓܠܐ. ܘܩܪܝܬܐ ܥܫܝܢܬܐ ܠܡܦܘܠܬܐ. 2
ܠܗܝܟܠܐ ܕܢܘܟܪܝܐ ܠܥܠܡ. ܡܢ ܩܪܝܬܐ ܢܬܒܢܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܫܒܚܘܢܟ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ. 3
ܘܩܪܝܬܐ ܕܥܡܡܐ ܥܫܝܢܐ. ܢܕܚܠܘܢ ܡܢܟ. * ܡܛܠ ܕܗܘܝܬ ܡܥܫܢܢܐ ܠܡܣܟܢܐ. 4
ܘܡܥܕܪܢܐ ܠܒܝܫܐ. ܒܐܘܠܨܢܗ. ܘܡܛܠܠܐ ܡܢ ܡܛܪܐ. ܘܛܠܠܐ ܡܢ ܚܘܡܐ. * ܡܛܠ ܕܪܘܚܐ 5
ܕܥܫܝܢܐ. ܐܝܟ ܪܘܚܐ ܕܥܠ ܫܘܪܐ. ܘܐܝܟ ܛܠܠܐ ܒܚܘܡܐ. ܫܘܒܗܪܐ ܕܢܘܟܪܝܐ ܢܬܡܟܟ. ܘܢܨܒܐ
ܕܡܬܓܐܝܢ ܢܬܡܟܟ. * ܘܢܥܒܕ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܠܟܠܗܘܢ 6
ܥܡܡܐ ܒܛܘܪܐ ܗܢܐ. ܡܫܬܝܐ ܫܡܝܢܐ. ܘܡܫܬܝܐ ܕܢܛܝܪܐ ܡܫܡܢܐ. ܕܡܚܝܢܢ. ܕܫܡܝܢ ܥܫܝܢܐ
ܘܚܝܠܬܢܐ. * ܘܢܬܒܠܥ ܒܛܘܪܐ ܗܢܐ. ܐܦ ܫܠܝܛܐ ܕܫܠܝܛ ܗܘܐ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. 7
ܘܢܟܣܬܐ ܕܐܬܢܟܣܬ ܥܠ ܐܦܝ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. * ܘܢܬܒܠܥ ܡܘܬܐ ܠܙܟܘ ܠܥܠܡܝܢ. 8
ܘܢܥܒܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ ܕܡܥܬܐ ܡܢ ܟܠ ܐܦܝܢ. ܘܚܣܕܐ ܕܥܡܗ ܢܥܒܪ. ܡܢ ܟܠܗ
ܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܡܠܠ. * ܘܬܐܡܪ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܗܢܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܕܣܟܝܢ ܠܗ 9
ܢܦܪܩܢ. ܗܢܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܕܣܟܝܢ ܠܗ. ܢܪܘܙ ܘܢܚܕܐ ܒܦܘܪܩܢܗ.

* Horrendè contremiſcet terra, graviter agita- 19
bitur terra, atrociter nutabit terra, Vacillans 20
vacillabit terra ſicut ebrius, & evagabitur
ſicut tugurium; ingraveſcet ſuper eam ſcelus
ejus, & cadet, nec ampliùs reſurget. Eodem 21
illo die viſitabit Dñs exercitus excelſi in ex-
celſo, & reges terræ in terra. Et cogent con- 22
cilium adverſùs vinctum in fovea, & cogita-
bunt de carceribus detento, & poſt multos
dies ſalvabuntur. Denique erubeſcet luna, & 23
pudefiet ſol, eò quòd Dñs potentiſſimꝰ regna-
bit in monte Sion & in Jeruſalem, & coram
Sanctis ſuis gloriabitur.

CAP. XXV.

Domine, Deus meus es, te exaltabo & con- 1
fitebor nomini tuo, quòd rem admirandam
& conſilium fidele jampridem feceris, Amen:
Quòd civitatem redegeris in acervũ, & civi- 2
tatem munitam in ruinã: *quòd* phanũ extero-
rum perpetuũ ex *hac* civitate ſit ædificandũ.
Hac de cauſa te celebrabunt populi multi, & 3
civitas populorum fortiũ te venerabuntur:
Quòd fueris protector pauperis, & adjutor 4
inopis in tribulatione ſua, protectio ab imbre,
& umbra ab æſtu. Spiritus enim *hominis* ar-
rogantis ſimilis eſt imbri contra parietem, &
ſimilis umbræ in æſtu. Superbia exterorum 5
humiliabitur, ut æſtus umbrâ nubium: pro-
pago arrogantium humiliabitur. Et faciet 6
Dñs potens inter omnes populos in monte
iſto conviviũ pingue, conviviũ inquam reſer-
vatũ & pingue Vivificatoris noſtri cœleſtis ac
fortiſſimi. Et abſorbebitur etiam in hoc mon- 7
te princeps qui dominabitur in omnes gen-
tes, & victima quæ immolata fuerit pro cun-
ctis gentibus. Et abſorbebitur mors cum vi- 8
ctoria in ſempiternũ: amovebit quoque Dñs
Deus fortis lachrymã ab omnibꝰ faciebus, &
opprobrium populi ſui amovebit ab univerſa
terra: nam Dñs locutus eſt. Et dices eo die, 9
Hic eſt Dominꝰ Deus noſter quem expectaba-
mus, liberabit nos: hic eſt Dominus Deus
noſter quem expectabamus, exultabimus &
lætabimur de ſalute ejus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* تضطرب الارض اضطرابا * وتحير الارض حيرة * مالت الارض * فتزلزل مثل منطر الفاكهة * 19 20
مثل السكران الثمل * ويسقط ولا يستطيع ان يقوم * لان الاثم قوي عليها * ويكون في ذلك 21
اليوم يجلب الله على زينة السماء اليد * وعلى ملوك الارض * فيجمعون ويحبسون في حصن 22
وفي سجن من اجيال كثير * ويكون تعهدهم * ويذوب اللبن * ويسقط السور * يفتضح القمر * 23
وتخزي الشمس * لان الرب يملك في صهيون وفي ايروسليم * ويمجد امام المشايخ *

* الفصل الخامس والعشرون *

* الاصحاح الثاني عشر *

* شكر حزقياء الملك للرب * على ما اوتي على الظفر * قال * ايها الرب الهي احمدك * اسبح اسمك * 1
لانك صنعت امورا عجيبة * ليكن يا رب الراي الاول الصادق * لانك اعطيت مدنا للتراب * 2
مدنا حصينة لتسقط اساساتها * مدن المنافقين لا تبنى الى الابد * لاجل هذا يباركك الشعب 3
المسكين * ومدن الناس المظلومين يباركونك * لانك صرت عونا لكل مدينة ذليلة * وسترا 4
للكئيبين * لاجل القلة من الناس الاشرار تنجيهم يا ستر العطاش * ارواح البشر المظلومين 5
يباركونك * مثل اناس صغيري النفوس عطاش في صهيون * لانك تنجيهم من الناس المنافقين
الذين اسلمتنا اليهم * سموم في ستر سحابة يذل غصن الاقوياء * ويصنع رب الجيوش لكل 6
الامم على هذا الجبل شرابا دسما * شراب قطاف * يشربون سرورا * يشربون خمرا يدهنون دهنا طيبا
في هذا الجبل * ويدفعون في هذا الجبل دفعا * ويبتلع في هذا الجبل * يغطي هذه كلها للامم * 7
لان هذا الراي على كل الامم * قوي الموت وابتلع * وايضا نزع الله كل دمعة من كل وجه * 8
ونزع عار شعبه من كل الارض * لان فم الرب تكلم * ويقولون في ذلك اليوم * ها الهنا الذي 9
توكلنا عليه * فنبتهج به ويخلصنا * هذا الرب رجوناه * نبتهج ونفرح بخلاصنا *

* *Agitatione agitabitur terra, ſtupore ob-* 19
ſtupeſcet terra, nutabit terra, Et agita- 20
bitur ut ſpecula cuſtodum *fructuum,*
ut ebrius temulentus, cadetque, nec
valebit reſurgere, eò quòd iniquitas
prævaluerit ei. Et erit illâ die ut ma- 21
num adhibente Deo contra cœli ornatum
& contra reges terræ, Colligantur & 22
concludantur in arce & in carcere, poſt
æva multa viſitentur, liqueſcant lateres,
& corruant mœnia. Erubeſcet luna, 23
& pudebit ſolem, quia Dominus re-
gnabit in Sion & in Jeruſalem, &
glorificabitur coram ſenioribus.

CAP. XXV.

Textus duodecimus.
Gratiarum actio Hezeciæ regis
ad Dominum pro victoria
quam adeptus eſt.

* *Dixit; O Domine Deus meus, te glo-* 1
rifico; nomen tuum celebro, quòd
res admirandas præſtiteris. Succedat O
Domine conſilium illud priſtinum ve-
rum. Tu enim urbes in pulverem ade- 2
giſti, ut urbes munitæ corruerent à fun-
damentis, urbes impiorum ne reædifica-
rentur in æternum. Propter hoc bene- 3
dicet tibi populus tenuis, & urbes homi-
num oppreſſorum benedicent tibi: Quia 4
præſidio factus es omnibus urbibus abje-
ctis, & protectioni afflictis, propter pau-
citatem ab hominibus flagitioſis liberabis
eos O protectio ſitientium. Spiritus ho- 5
minum oppreſſorum benedicent tibi, utpo-
te hominum puſillanimorum ſitientium in
Sion; eò quòd liberes eos ab hominibus
impiis quibus nos tradideras. Ventus ca-
lidus nube coopertus deprimet ramum po-
tentium. Faciétque Dominus exercituum 6
cunctis gentibus ſuper hunc montem, po-
tum ſuavem, potum vindemiæ: hilarè
bibent, vinum bibent: ungent ſe unguen-
to ſuavi in hoc monte: Dabunt etiam 7
hoc in monte donum, & hoc in monte ab-
ſorbebitur. Hæc omnia gentibus abſcon-
det, quia tale conſilium eſt ſuper omnes
gentes. Invaluit mors, & abſorpta eſt: 8
quin etiam amovit Deus omnem lachrymã
ab omni vultu, amovitque opprobrium
populi ſui à tota terra; quandoquidem os
Domini locutum eſt. Et dicent illâ die, 9
Ecce Deus noſter cui confiſi ſumus, exul-
tabimus in eo, & liberabit nos: hunc Do-
minum ſperavimus, exultabimus & læta-
bimur de ſalute noſtra.

ישעיה : כו

Moab conculcabitur & : isto monte in Domini *manus* requiescet Quia
10 כִּי־תָנוּחַ יַד־יְהוָה בָּהָר הַזֶּה וְנָדוֹשׁ מוֹאָב
suas manus extendet Et *fimo* in *paleam conculcari ut* , eo sub
11 תַּחְתָּיו כְּהִדּוּשׁ מַתְבֵּן בְּמֵי מַדְמֵנָה: וּפֵרַשׂ יָדָיו
humiliabit & : natandum ad natans *extenderet* quemadmodum, ejus medio in
בְּקִרְבּוֹ כַּאֲשֶׁר יְפָרֵשׂ הַשֹּׂחֶה לִשְׂחוֹת וְהִשְׁפִּיל
sublimitatis munitionem Et . suarum manuũ *insidiis* cum ejus altitudinem
12 גַּאֲוָתוֹ עִם אָרְבּוֹת יָדָיו: וּמִבְצַר מִשְׂגַּב
terram in faciet *pertingere* , humiliabit , incurvabit tuorum murorum
חוֹמֹתֶיךָ הֵשַׁח הִשְׁפִּיל הִגִּיעַ לָאָרֶץ
.pulverem ad usque
עַד־עָפָר:

CAP. XXVI. כו

Urbs : Jehudah terra in illud canticum cantabitur illa die In
1 בַּיּוֹם הַהוּא יוּשַׁר הַשִּׁיר־הַזֶּה בְּאֶרֶץ יְהוּדָה עִיר
, portas Aperite . antemurale & muros ponet salutem, nobis fortitudinis
2 עָז־לָנוּ יְשׁוּעָה יָשִׁית חוֹמוֹת וָחֵל: פִּתְחוּ שְׁעָרִים
custodies , *justo Figmento* . veritates custodiens justa gens ingrediatur &
3 וְיָבֹא גוֹי־צַדִּיק שֹׁמֵר אֱמֻנִים: יֵצֶר סָמוּךְ תִּצֹּר
:*perpetuum* in usq; Domino in Fidite . *confisum te in* quia *: pacem* , *pacem*
4 שָׁלוֹם שָׁלוֹם כִּי בְךָ בָּטוּחַ: בִּטְחוּ בַיהוָה עֲדֵי־עַד
, excelsi habitatores incurvabit Quia . seculorum *petra* Domino *Jah* in quia
5 כִּי בְּיָהּ יְהוָה צוּר עוֹלָמִים: כִּי הֵשַׁח יֹשְׁבֵי מָרוֹם
, terram ad usq; eam humiliabit : *eam* humiliabit sublimem civitatem
קִרְיָה נִשְׂגָּבָה יַשְׁפִּילֶנָּה יַשְׁפִּילָהּ עַד־אֶרֶץ
, *afflicti* pedes , pes eam Conculcabit . pulverem ad usq; eam faciet *pertingere*
6 יַגִּיעֶנָּה עַד־עָפָר: תִּרְמְסֶנָּה רָגֶל רַגְלֵי עָנִי
justi *orbitam* rectè : *rectitudines* justo Semita . *tenuium* gressus
7 פַּעֲמֵי דַלִּים: אֹרַח לַצַּדִּיק מֵישָׁרִים יָשָׁר מַעְגַּל צַדִּיק
; *te expectavimus* Domine tuorum judiciorum via Etiam . librabis
8 תְּפַלֵּס: אַף אֹרַח מִשְׁפָּטֶיךָ יְהוָה קִוִּינוּךָ
te desideravi meo Animo . animæ desiderium tui *memoriam* & , tuum nomen *ad*
9 לְשִׁמְךָ וּלְזִכְרְךָ תַּאֲוַת־נָפֶשׁ: נַפְשִׁי אִוִּיתִךָ
quando nam : te *manè* quæram *mei interiori* in meo spiritu etiam , nocte in
בַּלַּיְלָה אַף־רוּחִי בְקִרְבִּי אֲשַׁחֲרֶךָּ כִּי כַּאֲשֶׁר
fiat Gratia . orbis habitatores didicerunt justitiam , terra in tua judicia
10 מִשְׁפָּטֶיךָ לָאָרֶץ צֶדֶק לָמְדוּ יֹשְׁבֵי תֵבֵל: יֻחַן
non & : *aget* inique *rectitudinum* terra in , justitiam *didicit* non , impio
רָשָׁע בַּל־לָמַד צֶדֶק בְּאֶרֶץ נְכֹחוֹת יְעַוֵּל וּבַל־
ne , tua manus est excelsa Domine . Domini sublimitatem videbit
11 יִרְאֶה גֵּאוּת יְהוָה: יְהוָה רָמָה יָדְךָ בַּל־
ignis etiam : *populi zelo* afficientur pudore & , videbunt : videant
יֶחֱזָיוּן יֶחֱזוּ וְיֵבֹשׁוּ קִנְאַת־עָם אַף־אֵשׁ
quia : nobis pacem dispones Domine . *eos comedet* tuos hostes
12 צָרֶיךָ תֹאכְלֵם: יְהוָה תִּשְׁפֹּת שָׁלוֹם לָנוּ כִּי
noster Deus Domine . nobis es operatus nostra opera omnia etiam
13 גַּם כָּל־מַעֲשֵׂינוּ פָּעַלְתָּ לָּנוּ: יְהוָה אֱלֹהֵינוּ
memorabimus , *te in* tantùm : te *præter* domini nobis sunt dominati
בְּעָלוּנוּ אֲדֹנִים זוּלָתֶךָ לְבַד־בְּךָ נַזְכִּיר
propterea : resurgent non *manes* , vivent non Mortui . tuum nomen
14 שְׁמֶךָ: מֵתִים בַּל־יִחְיוּ רְפָאִים בַּל־יָקֻמוּ לָכֵן
. eorum memoriam omnem perdidisti & , eos *delevisti* & visitasti
פָּקַדְתָּ וַתַּשְׁמִידֵם וַתְּאַבֵּד כָּל־זֵכֶר לָמוֹ:
Elongasti . te glorificasti , genti addidisti , Domine genti Addidisti
15 יָסַפְתָּ לַגּוֹי יְהוָה יָסַפְתָּ לַגּוֹי נִכְבָּדְתָּ רִחַקְתָּ
effuderunt : te visitaverũt angustia in Domine . terræ *fines* omnes
16 כָּל־קַצְוֵי־אָרֶץ: יְהוָה בַּצַּר פְּקָדוּךָ צָקוּן
. eis tua correctio , *mussitationem*
לַחַשׁ מוּסָרְךָ לָמוֹ:

Versio VULG. LAT.

10 Quia requiescet manus Domini in monte isto : & triturabitur Moab sub eo, sicuti teruntur paleæ in plaustro. 11 Et extendet manus suas sub eo, sicut extendit natans ad natandum : & humiliabit gloriam ejus cum allisione manuum ejus. 12 Et munimenta sublimium murorum tuorum concident, et humiliabuntur, & detrahentur in terram usque ad pulverem.

CAP. XXVI.

1 IN die illa cantabitur Canticum istud in terra Juda : Urbs fortitudinis nostræ Sion salvator, ponetur in ea murus & antemurale. 2 Aperite portas, & ingrediatur gens justa, custodiens veritatem. 3 Vetus error abiit : servabis pacem ; pacem, quia in te speravimus. 4 Sperâstis in Domino in seculis æternis, in Domino Deo forti in perpetuum. 5 Quia incurvabit habitantes in excelso , civitatem sublimem humiliabit. Humiliabit eam usque ad terram, detrahet eam usque ad pulverem. 6 Conculcabit eam pes, pedes pauperis, gressus egenorum. 7 Semita justi recta est, rectus callis justi ad ambulandum. 8 Et in semita judiciorum tuorũ, Domine, sustinuimus te : nomen tuum, et memoriale tuũ in desiderio animæ. 9 Anima mea desideravit te in nocte : sed & spiritu meo in præcordiis meis de manè vigilabo ad te. Cùm feceris judicia tua in terra, justitiam discent habitatores orbis. 10 Misereamur impio, & non discet justitiam : in terra Sanctorum iniqua gessit, & non videbit gloriam Domini. 11 Domine, exaltetur manꝰ tua, et non videant : videant, & confundantur zelantes populi : & ignis hostes tuos devoret. 12 Domine, dabis pacẽ nobis : omnia enim opera nostra operatus es nobis. 13 Dñe Deus noster, possederũt nos domini absque te, tantùm in te recordemur nominis tui. 14 Morientes non vivant, gigantes non resurgant : propterea visitâsti & contrivisti eos, & perdidisti omnẽ memoriam eorũ. 15 Indulsisti genti, Domine, indulsisti genti : numquid glorificatus es? elongâsti omnes terminos terræ. 16 Domine, in angustia requisierunt te, in tribulatione murmuris doctrina tua eis.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

10 † Ἀνάπαυσιν δώσει ὁ Θεὸς ἐπὶ τὸ ὄρος τοῦτο, † καὶ καταπατηθήσεται ἡ Μωαβῖτις, ὃν τρόπον (η) πατοῦσιν ἅλωνα ἐν ἁμάξαις. 11 † Καὶ ἀνήσει τὰς χεῖρας αὐτοῦ, ὃν τρόπον καὶ αὐτὸς ἐταπείνωσε τοῦ ἀπολέσαι· † καὶ ταπεινώσει τὴν ὕβριν αὐτοῦ, ἐφ' ἃ τὰς χεῖρας ἐπέβαλε. 12 † Καὶ τὸ ὕψος τῆς καταφυγῆς (θ) τοῦ τοίχου ταπεινώσει, καὶ καταβήσεται ἕως τοῦ ἐδάφους.

MS. A. (η) πατῶσιν (θ) τοῦ τοίχου σου

10 Requiem dabit Dominus in monte isto : & conculcabitur (g) Moabitis, quemadmodùm calcant aream in plaustris : 11 Et remittet manus (h) suas, quomodò & ipse humiliavit ad perdendum : & humiliabit superbiam ejus, super quæ manus injecit. 12 Et altitudinem refugii (i) muri humiliabit : et descendet usq; ad pavimentum.

ΚΕΦ. κϛ'.

1 (ᵈ) Τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ᾄσονται τὸ ᾆσμα τοῦτο ἐπὶ γῆς (α) τῆς Ἰουδαίας, † Ἰδοὺ πόλις ἰσχυρὰ, καὶ (β) σωτήριον † θήσει τὸ τεῖχος, καὶ περίτειχος. 2 Ἀνοίξατε πύλας, (γ) εἰσελθέτω λαὸς † φυλάσσων δικαιοσύνην, καὶ φυλάσσων ἀλήθειαν, 3 † Ἀντιλαμβανόμενος ἀληθείας, καὶ φυλάσσων εἰρήνην. † ὅτι ἐπὶ σοὶ (δ) ἐλπίδι 4 Ἤλπισαν κύριε ἕως τοῦ αἰῶνος, † ὁ Θεὸς ὁ μέγας, ὁ αἰώνιος, 5 † Ὃς ταπεινώσας κατήγαγες τοὺς ἐνοικοῦντας ἐν ὑψηλοῖς· † πόλεις ὀχυρὰς καταβαλεῖς, καὶ κατάξεις (ε) ἕως ἐδάφους. 6 Καὶ πατήσουσιν (ζ) αὐτοὺς πόδες πραέων καὶ ταπεινῶν. 7 † Ὁδὸς εὐσεβῶν εὐθεῖα ἐγένετο, (η) ἡ ὁδὸς τῶν εὐσεβῶν καὶ παρεσκευασμένη. 8 † Ἡ γὰρ ὁδὸς κυρίου κρίσις. ἠλπίσαμεν ἐπὶ τῷ ὀνόματί σου, † καὶ ἐπὶ τῇ μνείᾳ Ἣ ἐπιθυμεῖ ἡ ψυχὴ ἡμῶν· 9 (θ) † ἐκ νυκτὸς ὀρθρίζει τὸ πνεῦμά μου πρὸς σὲ ὁ Θεὸς, † διότι φῶς τὰ προστάγματά σου ἐπὶ τῆς γῆς. † δικαιοσύνην μάθετε οἱ ἐνοικοῦντες ἐπὶ τῆς γῆς· 10 Πέπαυται γὰρ ὁ ἀσεβής. † (ι) πᾶς ὃς οὐ μὴ μάθῃ δικαιοσύνην ἐπὶ τῆς γῆς, ἀλήθειαν οὐ μὴ (˘) ποιήσει. † ἀρθήτω ὁ ἀσεβὴς, ἵνα μὴ ἴδῃ τὴν δόξαν κυρίου. 11 † Κύριε ὑψηλός σου ὁ βραχίων, καὶ οὐκ ᾔδεισαν, γνόντες δὲ αἰσχυνθήσονται. † ζῆλος λήψεται λαὸν ἀπαίδευτον, καὶ νῦν πῦρ τοὺς ὑπεναντίους ἔδεται. 12 † Κύριε ὁ Θεὸς ἡμῶν, εἰρήνην δὸς ἡμῖν, πάντα γὰρ ἀπέδωκας ἡμῖν. 13 † Κύριε ὁ Θεὸς ἡμῶν, κτῆσαι ἡμᾶς. † κύριε ἐκτὸς σου ἄλλον οὐκ οἴδαμεν· τὸ ὄνομά σου ὀνομάζομεν. 14 † Οἱ δὲ νεκροὶ ζωὴν οὐ μὴ ἴδωσιν, οὐδὲ ἰατροὶ οὐ μὴ ἀναστήσουσι· † διὰ τοῦτο ἐπήγαγες, καὶ ἀπώλεσας, καὶ ἦρας πᾶν ἄρσεν αὐτῶν. 15 † Πρόσθες αὐτοῖς κακὰ κύριε, πρόσθες κακὰ (κ) τοῖς ἐνδόξοις τῆς γῆς. 16 † Κύριε ἐν θλίψει ἐμνήσθην σου, † ἐν θλίψει μικρᾷ ἡ παιδεία σου ἡμῖν.

CAP. XXVI.

1 DIe illâ (a) cantabunt Canticum istud super terram Judæam : Ecce civitas fortis : & (b) salutare ponet murum, & (c) circummurale. 2 Aperite portas : ingrediatur populus custodiens justitiam, & custodiens veritatem, 3 (d) Apprehendens veritatem, & custodiens pacem : 4 Quoniam in te (e) spe Speraverunt, Domine, usque in sempiternum. 5 Deus magne, æterne, Qui humilians detraxisti eos, qui habitant in excelsis : Civitates munitas destrues, & sternes usque ad pavimentum. 6 Et conculcabunt eos pedes mansuetorum, & (f) humilium. 7 Via piorum recta facta est, & (g) præparata via piorum. 8 Via enim Domini, judicium. Speravimꝰ in nomine tuo, et in memoria, 9 Quâ desiderat anima nostra (h) de nocte : manè consurgit spiritꝰ meꝰ ad te, Deꝰ : quia lux præcepta tua super terrã. Justitiã discite, qui habitatis super terrã. 10 (i) Cessavit enim impiꝰ. (k) Omnis, qui non didicerit justitiam super terram ; veritatem non faciet. Auferatur impius ; ut non videat gloriam Domini. 11 Domine, excelsum est brachium tuum , & nescierunt ; Scientes autem confundentur. Zelus apprehendet populum ineruditum, & nunc ignis adversarios comedet. 12 Domine, Deus noster, pacem da nobis : omnia enim reddidisti nobis. 13 Domine Deus noster, posside nos : Domine, extra te alium nescimus : nomen tuum nominamus. 14 (l) Mortui autem vitam non videbunt , neque medici suscitabunt. Idcirco induxisti, & perdidisti, & tulisti omne (m) masculum eorum. 15 Adde eis (n) mala, Domine, adde mala gloriosis (o) terræ. 16 Domine in tribulatione recordatus sum tuî : in tribulatione parva, disciplina tua nobis.

MS. A. (ᵈ) ᾨΔΗ'. (α) Ἰούδα, λέγοντες, Ἰδοὺ πόλις ὀχυρά, (β) σωτήριον ἡμῖν θήσει τεῖχος, (γ) εἰσελθάτω (δ) Ἤλπισα κύριε (ε) αὐτὰς ἕως τοῦ ἐδάφους. (ζ) αὐτὰς (η) καὶ παρεσκευασμένη ἡ ὁδὸς τῶν εὐσεβῶν. (θ) ᾨΔΗ'. (ι) Οὐ μὴ μάθῃ (˘) ποιήσῃ. (κ) πᾶσιν τοῖς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 ארי תתגלי גבורתא דיי בטורא הדין ויתדשון מואבאי באתרהון כמא דמתדש תבנא
11 בטינא : ויפרס מחת גבורתיה ביניהון כמא דמפריס שיטא לחשט וימאך יקריה עם
12 אשות ידוהי : וכרך תקוף כרכי עממיא יפגר ירמי ימטי לארעא עד עפרא :

כו

1 בעדנא ההיא ישבחון תושבחתא חדתא בארעא דבית יהודה קרית תוקפנא לנא פורקן
2 יתשם על שורהא ורחמין : פתחו תרעיא ויעול עמא זכאה די נטרו אוריתא בלבב שלם :
3 4 בלבב שלם נטרו שלמא יתעבד להון ארי במימרך אתרחיצו : אתרחיצו על
5 מימרא דיי לעלם ולעלמי עלמיא בכן תתפרקון במימר דחילא דיי תקיף עלמיא : ארי
6 אמאיך יתבי רומא קריא תקיפא ימאכנה וירמנה עד ארעא ימטנה עד עפרא : ידושונה
7 רגלין רגלי צדיקיא פרסת עניתניא חשיכי עמא : אורחת צדיקיא כונן אף עבדי אורחת
8 9 צדיקיא תתקן : אף לאורח דינך יי סברנא לשמך ולדכרנך חמדת נפשנא : נפשי
מחמדא לצלאה קדמך בליליא אף רוחי במעי מברכא לך ארי כמא דדינך תקין לארעא
10 קושטא יתאלפין למעבד דדירין בתבל : יהבתא להון ארכא לרשיעיא אם יתובון
לאוריתך ולא תבו כל יומין דהוו קימין יעבדון קשוט על ארעא הוו שקרין אף אנון לא
11 יחזון בתושבחת יקרך יי : יי כד תתגלי בגבורתך לאוטבא לדחלתך לא ינהר לסנאי
12 עמך יחזון רשיעיא ויבהתון פורענות עמא תחפנין אף אשתא לבעלי דבבך תשיצי : יי
13 תתקין שלמא לנא ארי בכל עדן חסכנא מחובנא את עביד עמנא : יי אלהנא שליטו
בנא עממיא למהוי עלנא רבונין בר מנך ברם במימרך אנחנא רחיצין בשמך אנחנא
14 מודן : אנון פלחין למתין דלא יחון לגבריהון דלא יקומון בכן כד תסער עליהון חוביהון
15 ותשיצנון ותוביד כל דכרנהון : אתגליתא לכנשא מבדרי עמך יי אף עתיד את לקרבא
16 גלותהון לאתגלאה בגבורתך לדחקא כל רשיעיא לגהנם : יי בעקא הוו דכירין לדחלתך
בעקתהון הוו מלפין אולפן אוריתך בחשי :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

10 Quia revelabitur potentia Dñi in monte isto, & triturabuntur Moabitæ in loco suo, sicut teruntur paleæ in luto. 11 Et extendet plagã potentiæ suæ inter eos, sicut extendit se natans ad natandũ ; & humiliabit gloriã ejus cum impositione manuũ suarum. 12 Civitatem autem munitam in civitatibꝰ populorum destruet, projiciet eam ; & detrahetur in terram usq; ad pulverem.

CAP. XXVI.

1 IN tempore illo cantabunt canticum *novum* in terra domus Juda : Civitas fortitudinis nostræ, salꝰ ponetur super muros ejꝰ, & miserationes. 2 Aperite portas, & ingredietur populꝰ justus, qui custodit legẽ corde perfecto. 3 In corde perfecto servaverunt pacem : pax fiet eis, quia in verbo tuo confisi sunt. 4 Cõfidite in verbo Dñi in seculũ, & in secula seculorũ : tunc enim salvi eritis in verbo timoris Dñi fortissimi seculorũ. 5 Quia humiliabit habitatores urbis excelsæ & fortissimæ ; humiliabit eã & projiciet eam usq; in terrã : detrahet eã usq; ad pulverem. 6 Conculcabunt eam pedes, pedes justorum, plantæ humilium, pauperũ populi. 7 Semitæ justorũ rectæ sunt : operantes quoq; in via justorũ diriges. 8 Viam quoq; judiciorũ tuorum Dñe speramus : nomen tuũ & memoriale tuum desiderat anima nostra. 9 Anima mea desiderat orare coram te in nocte ; etiã spiritꝰ meus in visceribꝰ meis benedicit te : quia sicut judicia tua diriguntur in terra ; veritatẽ discẽt operari qui habitãt in orbe. 10 Dedisti terminũ impiis, ut converterentur ad legẽ tuam ; & non sunt conversi omnibꝰ diebus quibꝰ vivunt : & ut facerent veritatẽ super terrã, & facti sunt falsarii : ipsi quoq; non videbunt laudem gloriæ tuæ Domine. 11 Dñe quando revelatꝰ fueris in potentia tua, ut benefacias timentibꝰ te ; non erit lumen inimicis populi tui : videbunt impii , & confundentur : vindicta populi tui cooperiet eos ; ignis quoq; inimicos tuos consumet. 12 Dñe ordinabis pacem nobis, quia in omni tempore, quo separati sumꝰ à peccatis nostris, operatꝰ es nobiscũ. 13 Dñe Deus noster, dominati sunt nostri populi ut dominarẽtur sup nos absq; te : veruntamẽ in verbo tuo confidimꝰ, & in nomine tuo nos cõfitemur. 14 Ipsi colũt mortuos qui non vivũt, & gigantes suos qui nõ cõsurgent. Propterea quando visitabis sup eos peccata eorũ, & disperderis eos ; peribit oĩs memoria eorũ. 15 Revelatꝰ es ut cõgregares dispersos populi tui Dñe : futurũ quoq; est ut colligas transmigrationẽ eorũ ; ut appareas in potentia tua, ad projiciẽdos oẽs impios in gehennã. 16 Dñe in tribulatione *erant memores timoris* tui ; in angustia sua docebãt doctrinã legis tuæ tacitè.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܕܬܬܢܝܚ ܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ ܒܛܘܪܐ ܗܢܐ. ܘܢܬܕܝܫ ܡܘܐܒ ܬܚܘܬܘܗܝ .· ܐܝܟ 10
ܕܡܬܕܝܫ ܬܒܢܐ ܒܥܓܠܬܐ. * ܘܢܦܪܘܣ ܐܝܕܘܗܝ ܒܓܘܗ .· ܐܝܟ ܕܡܦܪܣ ܣܚܝܐ 11
ܠܡܣܚܐ. ܘܢܡܟܟ ܠܫܘܒܗܪܗ ܥܡ ܦܫܛܘܬ ܐܝܕܘܗܝ. * ܘܥܫܝܢܐ ܕܥܘܫܢܐ ܕܫܘܪܝܟܝ 12
ܢܡܟܟ ܘܢܫܦܠ ܘܢܚܬܗ ܠܐܪܥܐ ܥܕܡܐ ܠܥܦܪܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܘ *

* ܒܗܘ ܒܝܘܡܐ ܗܘ .· ܢܫܬܒܚ ܬܫܒܘܚܬܐ ܗܕܐ ܒܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕ. ܡܕܝܢܬܐ ܕܐܬܥܫܢ ܦܘܪܩܢܗ .· 1
ܫܘܪܐ ܣܡ ܘܒܪ ܫܘܪܐ. * ܦܬܚܘ ܬܪܥܐ. ܕܢܥܘܠ ܥܡܐ ܙܕܝܩܐ. ܕܢܛܪ ܗܝܡܢܘܬܐ ܕܢܛܪ. 2
ܒܥܫܝܢܐ. * ܫܠܡܐ ܬܛܪ ܠܢ ܡܛܠ ܕܒܟ ܣܒܪܢ ܡܪܝܐ .: ܠܥܠܡܥܠܡܝܢ. * ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ 3 4
ܐܠܗܐ. ܬܩܝܦܐ ܠܥܠܡܝܢ. * ܡܛܠ ܕܢܡܟܟ ܠܥܡܘܪܝ ܒܪܘܡܐ .· ܘܩܪܝܬܐ ܥܫܝܢܬܐ 5
ܢܫܦܠܝܗ ܥܕܡܐ ܠܐܪܥܐ. ܘܢܚܬܝܗ ܥܕܡܐ ܠܥܦܪܐ. * ܬܕܘܫܝܗ ܪܓܠܐ ܕܡܣܟܢܐ. ܘܗܠܟܬܐ 6
ܕܡܣܟܢܐ. * ܫܒܝܠܐ ܬܪܝܨܐ ܠܡܣܟܢܐ. ܘܬܪܝܨܐ ܘܫܦܝܐ ܐܘܪܚܐ ܕܙܕܝܩܐ. * ܐܦ ܠܐܘܪܚܐ ܕܕܝܢܝܟ 7 8
ܡܪܝܐ ܣܟܝܢ. ܠܫܡܟ ܘܠܕܘܟܪܢܟ. ܪܓܬ ܢܦܫܢ. * ܢܦܫܝ ܪܓܬܟ ܒܠܠܝܐ. ܐܦ 9
ܪܘܚܝ ܒܓܘܝ. ܢܩܕܡܟ. ܡܛܠ ܕܐܝܟ ܕܕܝܢܝܟ ܥܠ ܐܪܥܐ .· ܙܕܝܩܘܬܐ ܝܠܦܘ
ܥܡܘܪܝ ܬܒܝܠ. * ܢܬܚܦܐ ܥܘܠܐ. ܕܠܐ ܢܐܠܦ ܙܕܝܩܘܬܐ. ܡܪܕܘܬܐ ܒܐܪܥܐ. ܡܟܪܝܐ. 10
ܘܠܐ ܚܙܘ ܫܘܒܚܗ ܕܡܪܝܐ. * ܡܪܝܐ. ܪܡܘܬܐ ܕܐܝܕܝܟ ܠܐ ܚܙܘ. ܢܚܙܘܢ ܘܢܒܗܬܘܢ 11
ܚܣܡܐ ܕܥܡܐ. ܘܐܝܟ ܢܘܪܐ ܬܐܟܘܠ ܐܢܘܢ ܠܒܥܠܕܒܒܝܟ. * ܡܪܝܐ ܐܬܠ ܠܢ ܫܠܡܐ. ܡܛܠ 12
ܕܐܝܟ ܥܒܕܝܢ ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܬ ܠܢ. * ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ .· ܗܘܘ ܠܢ ܡܪܘܬܐ ܠܒܪ ܡܢܟ. 13
ܠܚܘܕ. ܫܡܟ ܕܝܠܟ ܡܬܕܟܪܝܢ. * ܡܝܬܐ ܠܐ ܢܚܝܘܢ. ܘܓܢܒܪܐ ܠܐ ܡܩܝܡܝܢ. ܡܛܠܗܢܐ 14
ܣܥܪܬ. ܘܒܛܠܬ ܐܢܘܢ. ܘܐܘܒܕܬ ܟܠܗ ܕܘܟܪܢܗܘܢ. * ܐܘܣܦܬ ܡܪܝܐ ܥܠ ܥܡܐ 15
ܐܘܣܦܬ ܥܠ ܥܡܐ. ܐܬܪܚܩܬ ܘܪܚܩܬ ܟܠܗܘܢ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. * ܡܪܝܐ ܒܐܘܠܨܢܐ 16
ܒܥܘܟ. ܘܒܒܝܬ ܐܣܝܪܐ. ܠܚܫܘ ܡܪܕܘܬܟ.

* Nam quieſcet manus Dñi in iſto monte, & 10
triturabitur Moab ſub illo, quemadmodum
plauſtro trituratur palea. Et expandet manus 11
ſuas in medio ejus, quemadmodum expandit
natator ad natandum: & humiliabitur faſtus
ejus ſtatim ad extenſionẽ manuũ illius. Deniq; 12
munitiſſimum robur mœnium tuorum humiliabit, deprimet, perducétque ad terram in
pulverem uſque.

CAP. XXVI.

* IN die illa cantabitur canticum hoc in terra 1
Judæ: Civitas cujus magnificata eſt ſalus, poſuiſtis murũ & propugnaculum; Aperite por- 2
tas *ut* ingrediatur gens juſta fidé conſervans,
conſtanter *inquam* conſervans. Pacem nobis 3
conſerves, quoniam in te Dñe ſemper ſperavimus: Quia Dñs Deus, potens eſt in æternũ. 4
Deprimet enim habitantes in excelſo, & civi- 5
tatẽ munitã dejiciet ad terrã uſque, adigétque
eam in pulverem uſque. Conculcabit eam 6
pes egenorũ & greſſus pauperũ. Semita recta 7
eſt pauperibus, & rectũ ac planũ iter juſtorũ.
Et verò judiciorũ tuorũ Dñe viam expectavi- 8
mus, nomen tuũ & memoriam tui exoptavit
anima noſtra. Anima mea deſiderio tui noctu 9
exarſit, & ſpiritus meus in præcordiis meis
ad te prævertit: quoniam qualia ſunt judicia tua ſuper terram, *talem* juſtitiam didicerunt habitatores orbis. Recedit impius, ne 10
diſcat judicium: caſtigatio *quidem* in terra
corripit, Domini tamen majeſtatem nequaquam conſiderant. Domine, celſitudinem ma- 11
nuum tuarum nequaquam vident: videbunt
& pudefient zelantes in populo: & quaſi camin' conſumes inimicos tuos. Domine, con- 12
ſerves nobis pacem, quandoquidem ſecundùm omnes actus noſtros diſpoſuiſti nobis.
Domine Deus noſter, *alii* præſunt nobis do- 13
mini præter te, attamen nominis tui recordamur. Mortui non tribuunt vitam, neque 14
gigantes ad vitam revocant: idcirco viſitâſti, & poſthabuiſti eos, & memoriam eorum penitùs deleviſti. Addidiſti Domine ſu- 15
per populum, addidiſti ſuper populum; recedens procul amoviſti omnes terminos terræ. 16
Domine in anguſtia requiſiverunt te, & in
carcere ſuſurraverunt correptionem tuam.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لان الله يعطي نياحا على هذا الجبل * ويداس مواب كما يدوسون البيدر بالعجل * وينزل 10 11
يديه كما هو اتضع ليهلك * ويواضع عظمته اذا وضع يديه * وعلو ملجاء سورك 12
يواضعه * وينزل الي التراب *

* الفصل السادس والعشرون *

* في ذلك اليوم يسبحون هذا التسبيح علي ارض اليهودية * قايلين * ها المدينة الحصينة 1
وخلاصنا يضع السور وحول السور * افتحوا الابواب ليدخل الشعب الحافظ العدل والحافظ 2
الحق * المستعين بالحق * وحافظ السلامة * لانا توكلنا عليك يا رب الي الابد * الله العظيم 3 4
الابدي * الذي اذللت وانزلت السكان في المرتفعات * المدن الحصينة هدمتها * وانزلتها 5
الي التراب * وتدوسها ارجل الودعاء والمتواضعين * طريق الصديقين مستقيمة * طريق 6 7
الحسني العبادة مستقيمة * صار طريق الحسني العبادة مستعدا * لان طريق الرب حكم * 8
توكلنا على اسمك وعلي ذكرك الذي اشتهته نفسنا * من الليل تدلج روحي اليك 9
يا الله * من اجل ان اوامرك نور على الارض * تعلموا العدل ايها السكان على الارض *
* لان المنافق انكف * لا يتعلم عدلا على الارض * ولا يصنع حقا * يرفع المنافق 10
لكيلا يعاين مجد الرب * يا رب ذراعك عال ولم يعلموا * واذ يعلمون يخزون * الغيرة تاخذ 11
الشعب الغير متادب * والنار تاكل الان المضادين * ايها الرب الهنا اعطنا السلامة * لانك 12
اعطيتنا كل شي * ايها الرب الهنا اقتنينا * يا رب لم نعرف اخر سواك * باسمك نسمي * 13
* والاموات لا يرون الحيوة * والاطباء لا يقومون * لاجل هذا اجليت واهلكت ورفعت كل ذكر 14
لهم * زدهم يا رب شرا * زد شرفاء الارض شرا * يا رب في الشدة ذكرناك في الضيقة * تاديبك 15 16
لنا قليل *

Dabit enim Deus quietem ſuper hunc mon- 10
tem, & conculcabitur Moab quemadmodum aream plauſtris conculcant. Demit- 11
*tée que manus ſuas eo modo quo ipſe ſe humiliavit ut periret, & ſuperbiam ejus
deprimet ſtatim atque demiſerit manus ſuas: Et celſitudinem refugii muri tui de-* 12
primet, et in pulverem detrudet.

CAP. XXVI.

IN illo die cantabunt canticum iſtud de 1
*regione Judææ, dicentes; Ecce urbs
munita & ſalus noſtra murum poſuit &
muri vallum. Aperite portas, ut ingredia-* 2
tur populus ſervans juſtitiam, ſervans veritatem, Fretus auxilio veritatis, et ſer- 3
vans pacem. In te enim recumbit ſpes noſtra in æternum O Domine. Deus maxi- 4
me, ſempiterne; Qui humiliâſti & de- 5
*turbâſti habitantes in locis ſublimibus,
urbes munitas evertiſti, & ad pulverem
uſque dejeciſti: Ita ut conculcent eam* 6
pedes mitium & humilium. Juſtorum 7
*via recta eſt, via veræ pietatis recta eſt.
Facta eſt autem via veræ pietatis præpa-* 8
*rata, quoniam via Domini judicium eſt.
Confidimus nomini tuo & memoriæ tui
quam expetit anima noſtra. De nocte ſur-* 9
*git ſpiritus meus ad te O Deus, quia mandata tua ſunt lumen ſuper terram. Diſcite juſtitiam O qui ſuper terram habitatis:
Nam impius retraxit ſeſe, nullam diſcet* 10
*juſtitiam ſuper terram, nec faciet veritatem: auferetur impius, ne videat gloriam
Dni. O Domine, excelſum eſt brachium* 11
*tuum, at ignorant: cùm autem noverint,
pudefient; invidia occupabit populum
malè moratum, & ignis mox devorabit
adverſarios. Eja Domine Deus noſter,* 12
*da nobis pacem, quandoquidem omnia
dediſti nobis. O Domine Deus noſter, di-* 13
rime cauſam noſtram: O Domine, neminem alium præter te novimus: nomen tuum invocamus. Mortui non videbunt 14
*vitam, nec medici reſurgent: propterea
extorrem feciſti, perdidiſti, & abſtuliſti
omnem memoriam eorum. Adde illis O* 15
*Domine calamitatem, adde primatibus
terræ calamitatem. O Domine, in tribu-* 16
*latione memores tui ſumus, in anguſtiâ:
animadverſio tua in nos parva eſt.*

יְשַׁעְיָה׃ כו

clamabit , *cruciabitur* *pariendum ad* *appropinquabit* prægnans Sicut
17 כְּמוֹ הָרָה תַּקְרִיב לָלֶדֶת תָּחִיל תִּזְעַק
,Concepimus .Domine *tuis faciebus* à fuimus ſic : ſuis doloribus in
18 בַּחֲבָלֶיהָ כֵּן הָיִינוּ מִפָּנֶיךָ יְהוָה׃ הָרִינוּ
, terra *fit* non ſalutes : ſpiritum peperimus quaſi ,*doluimus*
חַלְנוּ כְּמוֹ יָלַדְנוּ רוּחַ יְשׁוּעֹת בַּל־נַעֲשֶׂה־אֶרֶץ
, tui mortui Vivent .orbis habitatores ceciderunt nec
19 וּבַל־יִפְּלוּ יֹשְׁבֵי תֵבֵל׃ יִחְיוּ מֵתֶיךָ
habitatores *dicite præconia* & Expergiſcimini .reſurgent meum cadaver
נְבֵלָתִי יְקוּמוּן הָקִיצוּ וְרַנְּנוּ שֹׁכְנֵי
.projiciet *manes* terra & ,tuus ros olerum ros quia ,pulveris
עָפָר כִּי טַל אוֹרֹת טַלֶּךָ וָאָרֶץ רְפָאִים תַּפִּיל׃
tuam januam claude & , tua *conclavia in* ingredere , mi popule Vade
20 לֵךְ עַמִּי בֹּא בַחֲדָרֶיךָ וּסְגֹר דְּלָתְיךָ
.ira tranſeat donec ,momentum,paululum *velut* te Abſconde .te ſuper
בַּעֲדֶךָ חֲבִי כִמְעַט־רֶגַע עַד־יַעֲבוֹר־זַעַם׃
iniquitatem *viſitandum ad* , ſuo loco de *egrediens* Dominus ecce Quia
21 כִּי־הִנֵּה יְהוָה יֹצֵא מִמְּקוֹמוֹ לִפְקֹד עֲוֹן
non & ,*ſuos ſanguines* terra revelabit & : eam ſuper terræ habitatoris
יֹשֵׁב־הָאָרֶץ עָלָיו וְגִלְּתָה הָאָרֶץ אֶת־דָּמֶיהָ וְלֹא־
.ſuos interfectos *ſuper* ultrà operiet
תְכַסֶּה עוֹד עַל־הֲרֻגֶיהָ׃

CAP. XXVII. כז

, grandi & , duro ſuo gladio in Dominus viſitabit illa die In
1 בַּיּוֹם הַהוּא יִפְקֹד יְהוָה בְּחַרְבּוֹ הַקָּשָׁה וְהַגְּדוֹלָה
Leviathan *ſuper* & , *vectem* ſerpentem Leviathan *ſuper* , forti &
וְהַחֲזָקָה עַל לִוְיָתָן נָחָשׁ בָּרִחַ וְעַל לִוְיָתָן
die In .mari in qui cetum occidet & : tortuoſum ſerpentem
2 נָחָשׁ עֲקַלָּתוֹן וְהָרַג אֶת־הַתַּנִּין אֲשֶׁר בַּיָּם׃ בַּיּוֹם
, eam *cuſtodiens* Dominus Ego .*ei accinite* ,*rubri vini* vinea : illa
3 הַהוּא כֶּרֶם חֶמֶר עַנּוּ־לָהּ׃ אֲנִי יְהוָה נֹצְרָהּ
nocte , eam *ſuper* viſitet fortè ne : eam faciam rigare momenta ad
לִרְגָעִים אַשְׁקֶנָּה פֶּן יִפְקֹד עָלֶיהָ לַיְלָה
mihi *dabit* quis : mihi non *Excandeſcentia* .eam *cuſtodiam* die &
4 וָיוֹם אֶצֳּרֶנָּה׃ חֵמָה אֵין לִי מִי־יִתְּנֵנִי
eam ſuccendam , ea in progrediar bellum in , *ſentem* , *veprem*
שָׁמִיר שַׁיִת בַּמִּלְחָמָה אֶפְשְׂעָה בָהּ אֲצִיתֶנָּה
; mihi pacem faciat , mea fortitudine in *apprehendat* Aut .pariter
5 יָחַד׃ אוֹ יַחֲזֵק בְּמָעֻזִּי יַעֲשֶׂה שָׁלוֹם לִי
florebit ,Jahacob radicabit *Venientibus* .mihi faciat pacem
6 שָׁלוֹם יַעֲשֶׂה־לִּי׃ הַבָּאִים יַשְׁרֵשׁ יַעֲקֹב יָצִיץ
plagā juxta Nūquid .*proventu* orbis *facies* implebant & : Iſrael *gemmeſcet* &
7 וּפָרַח יִשְׂרָאֵל וּמָלְאוּ פְנֵי־תֵבֵל תְּנוּבָה׃ הַכְּמַכַּת
ejus occiſorum occiſionem ſecundùm *an* ? eum percuſſit eum percutientis
מַכֵּהוּ הִכָּהוּ אִם־כְּהֶרֶג הֲרֻגָיו
removit : eam judicabis *eam emittendo* in , *ſito* In ? eſt occiſus
8 הֹרָג׃ בְּסַאסְּאָה בְּשַׁלְחָהּ תְּרִיבֶנָּה הָגָה
propitiabitur hoc in Idcirco .*euri* *die in* duro ſuo vento in
9 בְּרוּחוֹ הַקָּשָׁה בְּיוֹם קָדִים׃ לָכֵן בְּזֹאת יְכֻפַּר
, ſuum peccatum *removere* fructus omnis hoc & , Jahacob iniquitas
עֲוֹן־יַעֲקֹב וְזֶה כָּל־פְּרִי הָסִר חַטָּאתוֹ
non ,*comminutos* calcis lapides ſicut,altaris lapides omnes *ipſum ponendo in*
בְּשׂוּמוֹ כָּל־אַבְנֵי מִזְבֵּחַ כְּאַבְנֵי־גִר מְנֻפָּצוֹת לֹא־
.*Solis imagines* & , luci ſtabunt
יָקֻמוּ אֲשֵׁרִים וְחַמָּנִים׃

Verſio VULG. LAT.

17 Sicut quæ concipit, cùm appropinquaverit ad partum, dolens clamat in doloribus ſuis: ſic facti ſumus à facie tua, Domine. 18 Concepimus, & quaſi parturivimus, & peperimꝰ ſpiritum: ſalutes non fecimus in terra, ideò non ceciderunt habitatores terræ. 19 Vivent mortui tui, interfecti mei reſurgent: expergiſcimini, & laudate qui habitatis in pulvere: quia ros lucis ros tuus, & terram gigantum detrahes in ruinam. 20 Vade, populus meus, intra in cubicula tua, claude oſtia tua ſuper te, abſcondere modicùm ad momentū, donec pertranſeat indignatio. 21 Ecce enim Dominus egredietur de loco ſuo, ut viſitet iniquitatem habitatoris terræ contra eum: & revelabit terra ſanguinem ſuum, & non operiet ultrà interfectos ſuos.

CAP. XXVII.

1 IN die illa viſitabit Dominus in gladio ſuo duro, & grandi, & forti, ſuper Leviathan ſerpentem vectem, & ſuper Leviathan ſerpentem tortuoſum, & occidet cetum, qui in mari eſt. 2 In die illa vinea meri cantabit 3 ei. Ego Dominus, qui ſervo eam, repentè propinabo ei: ne fortè viſitetur contra eam, nocte & die ſervo eam. 4 Indignatio non eſt mihi: quis dabit me ſpinam & veprem in prælio: gradiar ſuper eam, ſuccendam 5 eam pariter? An potiùs tenebit fortitudinem meam, faciet pacem mihi, pacē faciet mihi? 6 Qui ingrediuntur impetu ad Jacob, florebit & germinabit Iſrael, & implebunt faciem or- 7 bis ſemine. Numquid juxta plagam percutientis ſe percuſſit eum? aut ſicut occidit interfectos ejus, ſic occiſus eſt? 8 In menſura contra menſuram, cùm abjecta fuerit, judicabis eam: meditatus eſt in ſpiritu 9 ſuo duro per diem æſtûs. Idcircò ſuper hoc dimittetur iniquitas domui Jacob: & iſte omnis fructus ut auferatur peccatum ejus, cùm poſuerit omnes lapides altaris ſicut lapides cineris alliſos, non ſtabunt luci & delubra.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

17 † Καὶ ὡς ἡ ὠδίνουσα ἐγγίζει (λ) τεκεῖν, † ἐπὶ τῇ ὠδῖνι αὐτῆς ἐκέκραξεν, † οὕτως ἐγενήθημεν τῷ ἀγαπητῷ σου. 18 † Διὰ τὸν φόβον σου κύριε ἐν γαστρὶ ἐλάβομεν, † καὶ ὠδινήσαμεν, καὶ ἐτέκομεν πνεῦμα σωτηρίας (ʺ) σου, ὃ ἐποιήσαμεν ἐπὶ τῆς γῆς. † (μ) οὐ πεσούμεθα, ἀλλὰ πεσοῦνται πάντες οἱ ἐνοικοῦντες ἐπὶ τῆς γῆς. † (ν) 19 Ἀναστήσονται οἱ νεκροί, καὶ ἐγερθήσονται οἱ ἐν τοῖς μνημείοις, καὶ εὐφρανθήσονται οἱ ἐν τῇ γῇ. † ἡ γὰρ δρόσος ἡ παρὰ σοῦ ἴαμα αὐτοῖς 20 ἐστιν, † ἡ δὲ γῆ τῶν ἀσεβῶν πεσεῖται. † Βάδιζε (ξ) λαός μου, εἴσελθε εἰς τὰ (ο) ταμιεῖά σου, ἀπόκλεισον τὴν θύραν σου, ἀποκρύβηθι μικρὸν ὅσον ὅσον, † ἕως ἂν παρέλθῃ ἡ ὀργὴ 21 κυρίου. Ἰδοὺ γὰρ κύριος ἀπὸ τοῦ ἁγίου ἐπάγει τὴν ὀργὴν ἐπὶ τοὺς ἐνοικοῦντας ἐπὶ τῆς γῆς. καὶ ἀνακαλύψει ἡ γῆ (π) τὸ αἷμα αὐτῆς, καὶ οὐ κατακαλύψει (ρ) τοὺς ἀνῃρημένους.

MS.A. (λ) τοῦ τεκεῖν, καὶ ἐπὶ τῇ * ὠδῖνι (ʺ) σου ἐποιήσαμεν (μ) ἀλλὰ πεσοῦνται οἱ ἐνοικοῦντες (ν) Ἀναστήσονται γὰρ οἱ (ξ) ὁ λαός μου, (ο) ταμιεῖά (π) τὸ στόμα (ρ) ἡ γῆ τοὺς

17 *Et ſicut parturiens appropinquat ad pariendum, in dolore ſuo clamavit; (p) ſic facti ſumus dilecto tuo.* 18 *Propter timorem tuum, Domine, in utero accepimus, & parturivimus, & peperimus ſpiritum ſalutis (q) tuæ, quem fecimus ſuper terram. Non cademus: ſed cadent omnes habitatores terræ.* 19 *(r) Reſurgent mortui, & (ſ) expergiſcentur, qui in monumentis, & lætabuntur, qui ſunt in terra. Ros enim, qui à te, ſanatio eis eſt: terra autem impiorum cadet.* 20 *Vade, populus meus: ingredere in cubicula tua, claude oſtium tuum, abſcondere paululùm quantulumcunque; donec pertranſeat ira Domini.* 21 *Ecce enim Dominꝰ de Sancto inducit iram ſuper habitatores terræ: & revelabit terra ſanguinem ſuum, & non (t) abſcondet interfectos.*

ΚΕΦ. κζʹ.

1 (α) ἘΝ τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐπάξει ὁ θεὸς τὴν μάχαιραν τὴν ἁγίαν, καὶ τὴν μεγάλην, καὶ τὴν ἰσχυρὰν ἐπὶ τὸν δράκοντα ὄφιν φεύγοντα, ἐπὶ τὸν δράκοντα ὄφιν σκολιόν· (β) ἀνελεῖ τὸν 2 δράκοντα. Τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἀμπελὼν καλός, 3 ἐπιθύμημα ἐξάρχειν κατ' αὐτῆς. Ἐγὼ πόλις (γ) ὀχυρά, πόλις πολιορκουμένη, μάτην ποτιῶ αὐτήν· ἁλώσεται γὰρ νυκτός, ἡμέρας δὲ πεσεῖται (δ) τεῖχος. 4 Οὐκ ἔστιν, ἣ οὐκ ἐπελάβετο αὐτῆς. τίς με θήσει φυλάσσειν καλάμην ἐν ἀγρῷ; διὰ τὴν πολεμίαν ταύτην ἠθέτηκα αὐτήν· τοίνυν διὰ τοῦτο ἐποίησε (ε) κύριος πάντα ὅσα συνέταξε. κατακέκαυμαι, 5 Βοήσονται οἱ ἐνοικοῦντες ἐν αὐτῇ, ποιήσωμεν εἰρήνην αὐτῷ, ποιήσωμεν εἰρήνην, 6 Οἱ ἐρχόμενοι τέκνα Ἰακώβ· βλαστήσει καὶ ἐξανθήσει Ἰσραήλ, καὶ ἐμπλησθήσεται 7 ἡ οἰκουμένη τοῦ καρποῦ αὐτοῦ. Μὴ ὡς αὐτὸς ἐπάταξε, καὶ αὐτὸς οὕτως πληγήσεται; καὶ ὡς αὐτὸς ἀνεῖλεν, οὕτως ἀναιρεθήσεται; 8 Μαχόμενος καὶ ὀνειδίζων ἐξαποστελεῖ αὐτούς. οὐ σὺ ἦσθα (ζ) ὁ μελετῶν τῷ πνεύματι τῷ σκληρῷ, ἀνελεῖν αὐτοὺς πνεύματι θυμοῦ; 9 Διὰ τοῦτο ἀφαιρεθήσεται (η) ἀνομία Ἰακώβ, καὶ τοῦτό ἐστιν ἡ εὐλογία αὐτοῦ, ὅταν ἀφέλωμαι (θ) τὴν ἁμαρτίαν αὐτοῦ, ὅταν (ι) θῶσι πάντας τοὺς λίθους τῶν βωμῶν κατακεκομμένους, ὡς κονίαν λεπτήν· καὶ οὐ μὴ μείνῃ τὰ δένδρα αὐτῶν, καὶ τὰ εἴδωλα αὐτῶν ἐκκεκομμένα, ὥσπερ δρυμὸς μακράν.

MS.A. (α) Τῇ ἡμέρᾳ (β) καὶ ἀνελεῖ (γ) ἰσχυρά, (δ) τὸ τεῖχος. Καὶ οὐκ (ε) κύριος ὁ θεὸς (ζ) ὁ μελετῶν (η) ἡ ἀνομία (θ) αὐτοῦ τὴν ἁμαρτίαν, (ι) θῶ

CAP. XXVII.

1 *IN die illa inducet Deus gladiū (a) ſanctum, & magnum, & fortem ſuper draconem colubrum (b) fugientem, ſuper draconem colubrum tortuoſum: occidet (c) draconem.* 2 *Die illo vinea bona, deſiderium (d) cantare ſuper eam.* 3 *Ego civitas munita, civitas quæ oppugnatur: fruſtrà potum dabo illi. Capietur enim nocte: die autem cadet murus.* 4 *Non eſt, quæ non apprehenderit eam. Quis ponet me cuſtodem ſtipulæ in agro? Propter adverſariam hanc repuli eam. Idcirco igitur fecit Dominus omnia, quæ diſpoſuit. Combuſta ſum,* 5 *Clamabunt habitatores ejus: faciamus pacem illi, faciamus pacem,* 6 *Venientes filii Jacob; germinabit, & florebit Iſrael, & implebitur orbis terrarū fructu ejus.* 7 *(e) Non ſicut ipſe percuſſit, & ipſe ſic percutietur: & ſicut ipſe interfecit, ſic interficietur.* 8 *Rixans, et exprobrans emittet eos. Nónne tu eras, qui meditabaris ſpiritu duro interficere eos ſpiritu furoris?* 9 *Proptereà auferetur iniquitas Jacob; & hoc erit benedictio ejus; cùm abſtulero peccatum ejus: quando poſuerint omnes lapides ararum contritos, quaſi cinerem minutum: & non perſeverabunt arbores eorum: & idola eorum ſuccíſa, quaſi lucus (ſ) longè:*

תַּרְגּוּם יוֹנָתָן Targum JONATHAN.

17 כְּמַעְדְּיָא דִמְטָא דִבְעִדָּן מֵילְדַהּ זָיְעָא וּמְצַוְּחָא בְּחֶבְלָהָא כֵּן הֲוֵינָא מִן קֳדָם דְּחַבְנָא
18 קֳדָמָךְ יְיָ׃ אֲחַדְתָּנָא עָקָא כִּמְעַדְּיָא דִּמְטָת עִדָּן מֵילְדַהּ קְלִיל כְּרוּחָא פּוּרְקָן לָא אַיְתִיאוּ
19 אַרְעָא לָא עֲבָדוּ אַף פְּרִישָׁן לָא יָכְלִין לְמֶעְבַּד דְּדָיְרִין בְּתֵבֵל׃ אַתְּ הוּא מְחַיֵּי מֵיתִין
גַּרְמֵי נִבְלָתְהוֹן אַתְּ מְקִים יֵחוּן וִישַׁבְּחוּן קֳדָמָךְ כָּל דַּהֲווֹ רְמַן בְּעַפְרָא אֲרֵי טַל נְהוֹר טַלָּךְ
לְעָבְדֵי אוֹרַיְתָךְ וְרַשִׁיעַיָּא דִּי יְהַבְתָּא לְהוֹן גְּבוּרָא וְאִנּוּן עֲבַרוּ עַל מֵימְרָךְ לְגֵיהִנָּם תִּמְסַר׃
20 אֱזֵיל עַמִּי עֲבֵיד לָךְ עוֹבָדִין טָבִין דְּיַגְנוּן עֲלָךְ בְּעִדָּן עָקָא אִטְּמַר כִּזְעֵיר זְמַן עַד דְּיֶעְדֵּי
21 לְוָט׃ אֲרֵי הָא יְיָ מִתְגְּלֵי מֵאֲתַר שְׁכִנְתֵּיהּ לְאַסְעָרָא חוֹב יָתֵיב אַרְעָא עֲלוֹהִי וּתְגַלֵּי אַרְעָא
עַל דַּם זַכַּי דְּאִתְּשִׁיד בַּהּ וְלָא תְכַסֵּי עוֹד עַל קְטִילָהָא׃

כז

1 בְּעִדָּנָא הַהִיא יַסְעַר יְיָ בְּחַרְבֵּיהּ רַבְּתָא תַּקִּפְתָּא וַחֲסִנְתָּא עַל מַלְכָּא דְּאִתְרַבְרַב כְּפַרְעֹה
מַלְכָּא קַדְמָאָה וְעַל מַלְכָּא דְּאִתְגָּאֵי כְּסַנְחֵרִיב מַלְכָּא תִּנְיָנָא וְיִקְטוֹל יַת מַלְכָּא
2 דְּתַקִּיף כְּתַנִּינָא דִּי בְיַמָּא׃ בְּעִדָּנָא הַהִיא כְּנִשְׁתָּא דְּיִשְׂרָאֵל דְּהִיא כִּכְרַם נְצִיב
3 בְּאַרְעָא טָבָא שַׁבַּחוּ לַהּ׃ אֲנָא יְיָ נָטַר לְהוֹן קְיָם אֲבָהָתְהוֹן וְלָא אֱשֵׁיצִנּוּן אֶלָּא בִּזְמַן
דְּאִנּוּן מַרְגְּזִין קֳדָמַי אֲנָא מַשְׁקֵי לְהוֹן כָּס פּוּרְעָנוּתְהוֹן אִלּוּלֵי חוֹבֵיהוֹן גָּרְמִין לְאִתְפְּרָעָא
4 מִנְּהוֹן כְּבַר לֵילֵי וְיִמָּם מֵימְרִי מַגֵּין עֲלֵיהוֹן׃ הָא גְבוּרָן סַגִּי קֳדָמַי הֲלָא אִם יְשַׁוּוּן
בֵּית יִשְׂרָאֵל אַפֵּיהוֹן לְמֶעְבַּד אוֹרַיְתָא אֶשְׁלַח רוּגְזִי וַחֲמָתִי בְּעַמְמַיָּא דְּמִתְגָּרַן בְּהוֹן
5 וְאֱשֵׁיצִנּוּן כְּמָא דִּמְשֵׁיצֵי אֶשָּׁתָא הוּבָאִי וּבוּר כַּחֲדָא׃ אִם יִתְקְפוּן בְּפִתְגָּמֵי אוֹרַיְתִי
6 אִתְעֲבֵד שְׁלָמָא לְהוֹן מִכְּעַן שְׁלָמָא יִתְעֲבֵד לְהוֹן׃ יִתְכַּנְשׁוּן מִבֵּינֵי גָלְוָתְהוֹן וִיתוּבוּן
לְאַרְעֲהוֹן תַּמָּן יִתִּילְדוּן דְּבֵית יַעֲקֹב יִפְשׁוּן וְיִסְגוּן דְּבֵית יִשְׂרָאֵל וְיִמְלוֹן אַפֵּי תֵבֵל בְּנֵי
7 8 בְנִין׃ הַכְּמַחְתָּא דַּהֲוָה מָחֵי מַחוֹהִי אִם בִּקְטוֹל קְטִילוֹהִי יִתְקְטִיל׃ בִּסְאתָא דַּהֲוֵיתָא כָאֵל
בַּהּ יְכִילוּן לָךְ דַּהֲוֵיתָא שָׁלַח וּמְעִיק לְהוֹן הֲגֵי עֲלֵיהוֹן בְּמִלָּא מַתְקִיף עֲלֵיהוֹן בְּיוֹם לְוָט׃
9 בְּכֵן בְּדָא יִשְׁתַּבְקוּן חוֹבֵי בֵית יַעֲקֹב וְדֵין כָּל עוֹבָדֵי אַסְטְיוּת חוֹבוֹהִי בְּשַׁוְיוּתֵיהּ כָּל אַבְנֵי
אֱגוֹרָא כְּאַבְנֵי גִיר מְנַפְּצָן לָא יִתְקַיְמוּן אֲשֵׁרַיָּא וַחֲנִסְנַסַּיָּא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

17 Sicut prægnans quæ *adveniente* tēpore partꝰ ſui contremiſcit, & clamat in dolore ſuo: ſic fuimꝰ, eò quòd peccavimꝰ coram te Dñe. 18 Apprehendit nos tribulatio quaſi prægnantem *quando attigit tempus* partꝰ ſui; velocem ſalutem, ſicut ventꝰ, non adduxerunt: terram non coluerunt; mirabilia quoq; non poſſunt facere qui habitant in orbe. 19 Tu es qui vivificas mortuos, & oſſa cadaverum eorum tu ſuſcitas. Vivent & laudabunt coram te oēs qui jacent in pulvere; quia ros luminis ros tuus operantibus legem *tuā*: impios autem quibus dediſti potentiam, & ipſi tranſgreſſi ſunt verbum tuum, trades eos in gehennam. 20 Vade popule mi, fac opera bona, quæ protegant te in tempore tribulationis: abſconde te quaſi modico tempore, donec tranſeat maledictio. 21 Quia ecce Dñs revelabitur de loco majeſtatis ſuæ, ut viſitet peccatum *habitatoris* terræ ſuper eam: & revelabit terra ſanguinem innocentem qui effuſus eſt in ea, & non operiet ultrà interfectos ſuos.

CAP. XXVII.

1 IN tempore illo viſitabit Dñs in gladio ſuo grandi & forti, & robuſto ſuper regem qui magnificatꝰ eſt, ſicut Pharao rex primus [*Ægypti,*] & ſuper regem qui elevatus eſt ſicut Senacherib rex ſecundus; & occidet *regem* qui fortis eſt, ſicut draco qui eſt in mari. 2 In tempore illo cœtus Iſrael qui eſt ſicut vinea plantata in terra bona, cantate ei. 3 Ego Dñs ſervo eis pactum patrum ſuorum; & non conſumam eos: ſed in tempore quo irritant coram me, ego propino eis calicem ultionis eorum: ſed peccata eorum ſunt cauſæ ut vindictam ſumam ex eis: tamen in nocte & die verbum meum protegit ſuper eos. 4 Ecce magnalia magna à facie mea facta ſunt: ſed ſi compoſuerit domus Iſrael faciem ſuam, ut operetur ſecundùm legem; mittam irā meam, & furorē meū in populos qui irruebant in eos, & conſumam eos, ſicut conſumit ignis tribulū & ſpinā pariter. 5 Si tenuerint verba Legis, fiet eis pax: poſt hac [*inquam*] pax fiet eis. 6 Congregabuntur de medio tranſmigrationis eorum, & revertentur in terram ſuam: ibi generabunt viri domus Jacob: creſcent & multiplicabuntur viri domus Iſrael; & implebunt faciem orbis filii filiorum. 7 Nunquid juxta plagam qua ipſe percutiebat, percuſſit eum, aut juxta occiſionem interfectorum ejꝰ occiſus eſt? 8 In menſura qua *metiebaris*, metientur *tibi*: qui *mittebas* & *tribulabas* eos: meditatus eſt contra eos ſermonem: confortatus eſt contra eos in die maledictionis. 9 Propterea in hoc dimittentur peccata domus Jacob: & hæc fuit prævaricatio omnium operum eorum, & peccatorum eorum; cum poſuerit oēs lapides altaris quaſi lapides gypſi diſperſos: non ſtabūt luci & delubra.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

ܐܝܟ ܕܒܛܢܬܐ ܕܩܪܝܒܐ ܠܡܐܠܕ : ܘܡܬܚܒܠܐ ܘܡܝܠܠܐ ܒܚܒܠܝܗ̈ . ܗܟܢܐ ܗܘܝܢ ܩܕܡ * 17
ܦܪܨܘܦܟ ܡܪܝܐ : * ܒܛܢܢ ܘܐܬܚܒܠܢ. ܐܝܟ ܗܠܝܢ ܕܝܠܕܢ ܪܘܚܐ. ܦܪܘܩܝܢ ܕܠܐ ܢܐܒܕ ܒܐܪܥܐ. 18
ܘܠܐ ܢܦܠܘܢ ܥܡܘܪܝܗ̇ ܕܬܐܒܝܠ. * ܢܚܘܢ ܡܝ̈ܬܝܟ ܘܦܓܪ̈ܝܗܘܢ ܢܩܘܡܘܢ. ܘܢܬܬܥܝܪܘܢ. 19
ܘܢܫܒܚܘܢ ܫܟܝ̈ܒܝ ܥܦܪܐ. ܡܛܠ ܕܛܠܐ ܕܢܘܗܪܐ ܛܠܟ. ܘܐܪܥܐ ܕܓܢܒܪ̈ܐ ܬܗܦܘܟ.
* ܙܠ ܥܡܝ ܥܘܠ ܠܬܘܢܘܢܝܟ. ܘܐܚܘܕ ܬܪ̈ܥܝܟ ܒܬܪܟ. ܘܐܬܛܫܐ ܩܠܝܠ ܥܕܡܐ ܕܢܥܒܪ 20
ܪܘܓܙܝ. * ܡܛܠ ܕܗܐ ܡܪܝܐ ܢܦܩ ܡܢ ܐܬܪܗ. ܘܣܥܪ ܥܘܠܗ ܕܥܡܘܪܐ ܕܐܪܥܐ ܥܠܘܗܝ. 21
ܘܬܓܠܐ ܐܪܥܐ ܕܡܗ. ܘܠܐ ܬܟܣܐ ܬܘܒ ܥܠ ܩܛܝ̈ܠܝܗ̇.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܙ *

* ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܣܥܘܪ ܡܪܝܐ ܒܣܝܦܗ ܩܫܝܐ ܘܪܒܐ ܘܚܣܝܢܐ. ܥܠ ܠܘܝܬܢ ܚܘܝܐ 1
ܡܪܝܕܐ. ܘܥܠ ܠܘܝܬܢ ܚܘܝܐ ܥܩܠܬܢܐ. ܘܢܩܛܘܠ ܠܬܢܝܢܐ ܕܒܝܡܐ. * ܒܝܘܡܐ ܗܘ. 2
ܟܪܡܐ ܕܚܡܪܐ. ܙܡܪܘ ܠܗ. * ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܢܛܪ ܐܢܐ ܠܗ. ܐܡܝܢܐܝܬ ܐܫܩܝܘܗܝ. ܘܐܣܥܘܪ 3
ܥܠܘܗܝ ܒܠܠܝܐ. ܘܒܐܝܡܡܐ ܐܢܛܪܝܘܗܝ. * ܫܘܪܐ: ܠܝܬ ܠܟ. ܡܢ ܢܬܠ ܒܟ ܟܘܒܐ 4
ܘܗܓܐ. ܒܩܠܝܠ ܐܦܘܚ ܒܗ ܘܐܘܩܕܝܘܗܝ ܐܟܚܕܐ. * ܐܘ ܢܐܚܘܕ ܒܥܫܝܢܘܬܝ. ܘܐܥܒܕ ܠܗ 5
ܫܠܡܐ. ܫܠܡܐ ܐܥܒܕ ܠܗ * ܐܝܠܝܢ ܕܡܢ ܫܪܒܬܗ ܕܝܥܩܘܒ. ܢܦܩܘܢ ܘܢܦܪܥ ܐܝܣܪܝܠ. 6
ܘܢܡܠܘܢ ܐܦܝ̈ ܬܐܒܝܠ ܦܐܪ̈ܐ. * ܐܝܟ ܡܚܘܬܐ ܕܡܚܝܗܝ ܡܚܝܘܗܝ. ܘܐܝܟ ܩܛܠܐ ܕܩܛܠܗ 7
ܡܩܛܠܗ. * ܒܟܝܠܬܐ ܕܟܝܠ ܬܕܘܢܝܘܗܝ. ܒܪܘܚܗ ܩܫܝܬܐ ܒܝܘܡܐ ܫܪܒܐ. 8
* ܡܛܠ ܗܢܐ. ܒܗܕܐ ܢܫܬܒܩ ܥܘܠܗ ܕܝܥܩܘܒ. ܘܒܗܠܝܢ ܟܠܗܘܢ ܦܐܪ̈ܐ ܢܥܒܪ 9
ܚܛܝܬܗ. ܡܐ ܕܣܡ ܟܠܗܝܢ ܟܐܦ̈ܐ ܕܡܕܒܚܐ. ܐܝܟ ܟܐܦ̈ܐ ܕܓܝܪܐ ܕܡܬܦܪܟܢ.
ܘܠܐ ܢܬܩܝܡܘܢ ܐܣܝܪ̈ܐ ܘܦܬܟܪ̈ܐ.

Ut prægnanti mox parituræ, dolenti, & ſuis 17
in doloribus ululanti, ita nobis accidit à conſpectu
tuo Domine : Concepimus & enixi 18
ſumus ut illæ quæ ventos pariunt. Serva nos,
ne pereamus in terra, néve ſuccumbant habitatores
orbis. Reviviſcant mortui tui, & cadavera 19
eorum reſurgant : expergiſcantur, &
laudem canant decumbentes in pulvere; quia
ros tuus, ros eſt luminis : terram verò gigantum
evertes. Age popule mi, intra in penetralia 20
tua, & claude fores tuas poſt te : latita
exiguo tempore, donec prætereat indignatio
mea. Nam ecce Dominus proditurus eſt è 21
loco ſuo, & viſitaturus iniquitatem habitatoris
terræ : detegétque terra ſanguinem ſuum,
nec occultabit ultra interfectos ſuos.

CAP. XXVII.

IN die illa viſitabit Dominus gladio ſuo duro, 1
grandi, & valido Leviathan ſerpentem
pervicaciſſimum, et Leviathan ſerpentem tortuoſum,
& interficiet draconem qui eſt in
mari. In die illa, vineæ vini canite : Ego Dominus 2
cuſtodio eam, ſemper eam irrigabo, viſitabo 3
eam nocte, & interdiu cuſtodiá illam.
Murum nónne habes? quis ergò poſuit in te 4
vepres & ſpinas? brevi flabo in eam, & penitùs
comburam illam. Vel certè teneat fortitudinem 5
meam, ut faciam ei pacem : pacem
faciam ei. Quotquot eſtis de ſtirpe Jacobi, 6
ſcitote quòd folia & flores emiſſurus eſt Iſrael,
& fructibus impleturi ſunt ſuperficiem orbis.
Idem vulnus quod inflixit ei, infliget 7
illi : & eâdem nece quâ extinxit eum, extinguet
illum : Menſurâ quâ menſus eſt, condemnabis 8
eum. Quia cogitavit animo ſuo
duro de die ferventi : Idcirò per hoc dimittetur 9
culpa Jacobi, & per omnes hos fructus
abſcedet peccatum ejus; quum poſuerit
omnes lapides altaris, *&* ut lapides calcis
qui rediguntur in pulverem, ita non conſiſtent
idola nec numina.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* وكمثل المطلقة اذ تعرب لتلد وفي طلقها صرخت * هكذا صرنا لحبيبك * لأجل خوفك يا 17 18
رب احدنا حبلا وطلقنا وولدنا * روح خلاصك صنعناه على الارض * لسنا نسقط لكن تسقط
السكان على الارض * تقوم الاموات ويستيقظ الذين في القبور ويفرح الذي على الارض * لأن 19
الندا الذي من قبلك هو شفا لهم وارض المنافقين تسقط * اعمد يا شعبي * ادخل الى 20
مخدعك * اغلق بابك * واختف قليلا بمقدار الى ان يجوز غضب الرب * لأن ها الرب من 21
الموضع المقدس يورد رجزه على السكان على الارض * ليتعهد اثم السكان على الارض عليهم
هكذا * ويكشف الارض دمها * ولا تستر المقتولين عليها بعد *

* الفصل السابع والعشرون *

* في ذلك اليوم يجلب الله سيفه المقدس العظيم القوي على التنين الحية الهاربة * على 1
التنين الحية الملتوية * ويقتل التنين في ذلك اليوم الذي في البحر كرم جيد * لتبتدي 2
شهوتها منه * انا مدينة حصينة مدينة محاصرة اسقيها باطلا * لانها تندرس ليلا * ويسقط 3
سورها نهارا * لانه ليس يوجد من ياخذها * من يجعلني ان احرس قصبة في حقل * لاجل هذه 4
المحاربة غدرت بها * لاجل هذا الآن صنع الرب الاله كلما عاهد به * احترقت * يصرخون 5
جميع السكان فيها * نصنع معه سلامة * نصنع ايها الواردون سلاما * اولاد يعقوب تنبت * 6
ويزهر اسرائيل * وتمتلي المسكونة من ثمرته * اليس كما هو ضرب وهو هكذا يضرب * 7
وكما هو قتل وهو هكذا يقتل * محارب ومعير يرسلهم * اليس انت كنت الذي تتلوا 8
بروحك الصعب لتقتلهم بروح غضب * لاجل هذا ينتزع اثم يعقوب * وهذه هي بركته 9
اذا نزع خطيته * اذ يصعون جميع حجارة المذبح مكسرة مثل الكلس الدقيق * ولا تثبت
اشجارهم * واوثانهم مكسرة بعيدا مثل الغاب *

Et qualis eſt ea quæ partûs dolores patitur 17
imminente partu, & in ſuis doloribus
clamat; tales facti ſumus ad dilectum
tuum. Præ timore tuo, O Domine, occupavit 18
nos conceptio, parturivimus, & peperimus
: ſpiritum ſalutis tuæ fecimus
ſuper terram : nequaquam càdemus nos,
ſed cadent habitantes ſuper terram. Reſurgent 19
mortui, evigilabunt qui ſunt in
ſepulchris, & lætabuntur qui ſunt ſuper
terram; quia ros qui à te eſt, ſanitati
eſt eis : terra verò ſceleſtorum corruet.
Siſte O popule mi, ingredere in conclave 20
tuum, occlude oſtium tuum, téque parvo
abſconde intervallo, donec pertranſeat ira
Domini. Nam ecce Dominus è loco ſancto 21
adducturus eſt iram ſuam ſuper terricolas,
ut ſcelus terricolarum adverſùs
eos hoc modo viſitet, retegat terra
ſanguinem ſuum, nec ampliùs celet interfectos
ſuper ſe.

CAP. XXVII.

IN illâ die adducet Dominus gladium 1
ſuum ſanctum, grandem, ac potentem
ſuper draconem ſerpentem fugientem, ſuper
draconem tortuoſum. & interficiet eo
die draconem qui eſt in mari vinea quædam 2
bona, ut ab ipſa principium ducat
cupiditas ejus. Ego urbem munitam, urbem 3
obſeſſam fruſtrà irrigo, quoniam obteretur
nocte, & murus ejus cadet in die,
Quoniam non eſt qui capiat eam. Quis 4
me ſtatuat ad cuſtodiendum arundinem
in campo? propter hujuſmodi pugnam decepi
illam : hac de cauſa nunc executus
eſt Dominus Deus quicquid póllicitus fuerat 5
: combuſta eſt. Clamabunt omnes cives
ejus, Conciliemus cum eo pacem, pacem 6
conciliemus O venientes. Filii Jacobi
germinabunt, & florebit Iſrael, &
orbis implebitur fructu ipſius. Annòn 7
quemadmodum iſte percuſſit, eodem ipſe
modo percutietur? et quemadmodum ipſe
interficit, eodem ipſe modo interficietur?
Bellator & convitiator mittet eos : nónne 8
tu is eras qui ſpiritu tuo rigido meditabaris
necem eorum, ſpiritu furoris? Ob 9
id auferetur iniquitas Jacobi, & benedictio
hæc obtinget ei, cùm depoſuerit
peccatum ſuum, cùm omnes lapides altaris
conflatos redegerint in modum calcis
minutiſſimæ, arbores eorum minimè ſubſtiterint,
& idola eorum procul diſrupta
fuerint quemadmodum luci.

ישעיה: כח

derelictum & dimissum habitaculum solitaria munita civitas Nam
10 כִּי עִיר בְּצוּרָה בָּדָד נָוֶה מְשֻׁלָּח וְנֶעֱזָב
consumet &,accubabit ibit & , vitulus pascetur ibi : desertum veluti
כַּמִּדְבָּר שָׁם יִרְעֶה עֵגֶל וְשָׁם יִרְבָּץ וְכִלָּה
venientes mulieres , conterentur ,ejus *messem arescendo In* .ejus ramos
11 סְעִפֶיהָ׃ בִּיבֹשׁ קְצִירָהּ תִּשָּׁבַרְנָה נָשִׁים בָּאוֹת
non Ideo .*ipse* intelligentiarū populus non quia .eam *inflammantes*
מְאִירוֹת אוֹתָהּ כִּי לֹא עַם־בִּינוֹת הוּא עַל־כֵּן לֹא־
die in erit Et.ejus miserebitur non eum *formans* &,eū *faciens* ej⁹ miserebitur
12 יְרַחֲמֶנּוּ עֹשֵׂהוּ וְיֹצְרוֹ לֹא יְחֻנֶּנּוּ׃ וְהָיָה בַּיּוֹם
torrentem ad usque fluminis alveo ab Dominus excutiet , illa
הַהוּא יַחְבֹּט יְהוָה מִשִּׁבֹּלֶת הַנָּהָר עַד־נַחַל
erit Et .Israel filii *unum unum ad* colligemini vos & : Ægypti
13 מִצְרָיִם וְאַתֶּם תְּלֻקְּטוּ לְאַחַד אֶחָד בְּנֵי יִשְׂרָאֵל׃ וְהָיָה
terra in *pereuntes* venient &,magna tuba in clangetur illa die in
בַּיּוֹם הַהוּא יִתָּקַע בְּשׁוֹפָר גָּדוֹל וּבָאוּ הָאֹבְדִים בְּאֶרֶץ
Domino se incurvabunt & : Ægypti terram in expulsi & , Assur
אַשּׁוּר וְהַנִּדָּחִים בְּאֶרֶץ מִצְרָיִם וְהִשְׁתַּחֲווּ לַיהוָה
.Jerusalaim in sanctitatis monte in
בְּהַר הַקֹּדֶשׁ בִּירוּשָׁלִָם׃

CAP. XXVIII. כח

decidenti flori & , Ephraim ebriis , superbiæ coronæ Væ
1 הוֹי עֲטֶרֶת גֵּאוּת שִׁכֹּרֵי אֶפְרַיִם וְצִיץ נֹבֵל
quassatis ; pinguium vallis *caput* super quæ ; ejus gloriæ *ornamento*
צְבִי תִפְאַרְתּוֹ אֲשֶׁר עַל־רֹאשׁ גֵּיא־שְׁמָנִים הֲלוּמֵי
, grandinis *inundatio* sicut , Domino fortis & validus Ecce .vino
2 יָיִן׃ הִנֵּה חָזָק וְאַמִּץ לַאדֹנָי כְּזֶרֶם בָּרָד
deposuit inundantium *crebrarum* aquarum *procella ut* : excisionis turbo
שַׂעַר קָטֶב כְּזֶרֶם מַיִם כַּבִּירִים שֹׁטְפִים הִנִּיחַ
superbiæ corona : calcabuntur pedibus In .*manu in* terram in
3 לָאָרֶץ בְּיָד׃ בְּרַגְלַיִם תֵּרָמַסְנָה עֲטֶרֶת גֵּאוּת
, ejus decoris *ornamentum* decidens flos erit Et .Ephraim *temulentorum*
4 שִׁכּוֹרֵי אֶפְרָיִם׃ וְהָיְתָה צִיצַת נֹבֵל צְבִי תִפְאַרְתּוֹ
; *æstatem* ante præcox ficus sicut ,pinguium vallis *caput* super qui
אֲשֶׁר עַל־רֹאשׁ גֵּיא שְׁמָנִים כְּבִכּוּרָהּ בְּטֶרֶם קַיִץ
.*eam* deglutiet,sua *vola in ipsam adhuc in*,*ipsam* videns viderit quam
אֲשֶׁר יִרְאֶה הָרֹאֶה אוֹתָהּ בְּעוֹדָהּ בְּכַפּוֹ יִבְלָעֶנָּה׃
, *decoris coronam in* exercituum Dominus erit illa die In
5 בַּיּוֹם הַהוּא יִהְיֶה יְהוָה צְבָאוֹת לַעֲטֶרֶת צְבִי
, judicii *spiritum in* Et .sui populi residuo , gloriæ *cidarim in* &
6 וְלִצְפִירַת תִּפְאָרָה לִשְׁאָר עַמּוֹ׃ וּלְרוּחַ מִשְׁפָּט
prælium avertentibus *robur in &* ,*judicium* super sedenti
לַיּוֹשֵׁב עַל־הַמִּשְׁפָּט וְלִגְבוּרָה מְשִׁיבֵי מִלְחָמָה
: erraverunt sechar *in* & ,erraverunt *vino in* ipsi etiam Et .portam ad
7 שָׁעְרָה׃ וְגַם־אֵלֶּה בַּיַּיִן שָׁגוּ וּבַשֵּׁכָר תָּעוּ
: *vino à sunt absorpti* , sechar *in* erraverunt propheta & sacerdos
כֹּהֵן וְנָבִיא שָׁגוּ בַשֵּׁכָר נִבְלְעוּ מִן־הַיַּיִן
.judicio impegerunt , visione in erraverunt , sechar à erraverunt
תָּעוּ מִן־הַשֵּׁכָר שָׁגוּ בָּרֹאֶה פָּקוּ פְּלִילִיָּה׃
.*loco absque* , sorde vomitu sunt repletæ mensæ omnes Quoniam
8 כִּי כָּל־שֻׁלְחָנוֹת מָלְאוּ קִיא צֹאָה בְּלִי מָקוֹם׃
? *auditum* faciet intelligere quem & , scientiam docebit Quem
9 אֶת־מִי יוֹרֶה דֵעָה וְאֶת־מִי יָבִין שְׁמוּעָה
.uberibus ab *avulsos* , lacte à *ablactatos*
גְּמוּלֵי מֵחָלָב עַתִּיקֵי מִשָּׁדָיִם׃

Versio VULG. LAT.

10 Civitas enim munita desolata erit, speciosa relinquetur, & dimittetur quasi desertum : ibi pascetur vitulus, & ibi accubabit, & consumet summitates ejus. 11 In siccitate messes illius conterentur, mulieres venientes, & docentes eam : non est enim populus sapiens, propterea non miserebitur ejus, qui fecit eum ; & qui formavit eum, non parcet ei. 12 Et erit: In die illa percutiet Dominus ab alveo fluminis usque ad torrentem Ægypti, & vos congregabimini unus et unus filii Israel. 13 Et erit: In die illa clangetur in tuba magna, & venient qui perditi fuerant de terra Assyriorū, & qui ejecti erant in terra Ægypti, & adorabunt Dñm in monte sancto in Jerusalem.

CAP. XXVIII.

1 VÆ coronæ superbiæ, ebriis Ephraim, & flori decidenti, gloriæ exultationis ejus, qui erant in vertice vallis pinguissimæ, errantes à vino. 2 Ecce validus & fortis Dominus, sicut impetus grandinis ; turbo confringens, sicut impetus aquarum multarum inundantium, & emissarum super terram spatiosam. 3 Pedibus conculcabitur corona superbiæ ebriorum Ephraim. 4 Et erit flos decidens gloriæ exultationis ejus, qui est super verticem vallis pinguium, quasi temporaneum ante maturitatem autumni : quod cùm aspexerit videns, statim ut manu tenuerit, devorabit illud. 5 In die illa erit Dominus exercituum corona gloriæ, & sertum exultationis residuo 6 populi sui : Et spiritus judicii sedenti super judicium, & fortitudo revertentibus de bello ad portam. 7 Verùm hi quoque præ vino nescierunt, & præ ebrietate erraverunt : sacerdos & propheta nescierunt præ ebrietate, absorpti sunt à vino, erraverunt in ebrietate, nescierunt videntem, ignoraverunt judicium. 8 Omnes enim mensæ repletæ sunt vomitu sordiúmque, ita ut non esset ultrà locus. 9 Quem docebit scientiam ? & quem intelligere faciet auditū? ablactatos à lacte, avulsos ab uberibus.

Versio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

10 Τὸ κατοικούμενον ποίμνιον ἀνειμένον ἔσται, ὡς ποίμνιον καταλελειμμένον· καὶ ἔσται πολὺν χρόνον εἰς βόσκημα, καὶ ἐκεῖ (κ) ἀναπαύσονται ποίμνια. 11 Καὶ μετὰ χρόνον οὐκ ἔσται ἐν αὐτῇ πᾶν χλωρὸν διὰ τὸ ξηρανθῆναι. γυναῖκες ἐρχόμεναι ἀπὸ θέας δεῦτε. οὐ γὰρ λαός ἐστιν ἔχων σύνεσιν, διατοῦτο οὐ μὴ οἰκτειρήσῃ ὁ ποιήσας αὐτοὺς, οὐδὲ ὁ πλάσας αὐτοὺς οὐ μὴ (ι) ἐλεήσῃ. 12 Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, συμφράξει (λ) ὁ θεὸς ἀπὸ τῆς διώρυγος τοῦ ποταμοῦ ἕως Ῥινοκορούρων. ὑμεῖς δὲ συναγάγετε (μ) κατὰ ἕνα τοὺς υἱοὺς Ἰσραήλ. 13 Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, σαλπιοῦσι (ν) τῇ σάλπιγγι τῇ μεγάλῃ, καὶ ἥξουσιν οἱ (ξ) ἀπολόμενοι ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Ἀσσυρίων, καὶ οἱ ἀπολόμενοι ἐν Αἰγύπτῳ, καὶ (ο) προσκυνήσουσι τῷ κυρίῳ ἐπὶ τὸ ὄρος τὸ ἅγιον ἐν Ἱερουσαλήμ.

Habitans grex dimittetur, sicut grex derelictus: & erit multo tempore in pastionem: & ibi requiescent greges. 11 *Et post tempus non erit in ea omne viride; quia exiccatum est. (g) Mulieres venientes à spectaculo venite: non est enim populus habens intelligentiam. Propterea non miserebitur eorum, qui fecit: & qui formavit eos, non parcet.* 12 *Et erit in die illa, (h) concludet Deus à fossa fluminis usq; ad Rhinocoruram. Vos autem congregate singulos filios Israel.* 13 *Et erit in die illa, canēt tubâ magnâ: & venient, qui perierant in regione Assyriorum, &, qui perierant in Ægypto: & adorabunt Dominum super montem sanctum in Hierusalem.*

MS.A. (κ) ἀναπαύσονται. Μετὰ χρόνον οὐκ ἔσται (ι) ἐλεήσει. (λ) κύριος (μ) τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ καθ᾽ ἕνα ἕνα. (ν) ἐν τῇ (ξ) ἀπὸ ἀνατολῶν ἐν τῇ (ο) προσκυνήσωσιν

ΚΕΦ. κη΄.

1 ΟΥαὶ τῷ στεφάνῳ τῆς ὕβρεως, οἱ μισθωτοὶ Ἐφραίμ, τὸ ἄνθος τὸ ἐκπεσὸν ἐκ τῆς δόξης ἐπὶ τῆς κορυφῆς τοῦ ὄρους τοῦ παχέος, οἱ μεθύοντες ἄνευ οἴνου. 2 Ἰδοὺ ἰσχυρὸν καὶ σκληρὸν ὁ θυμὸς κυρίου, ὡς χάλαζα καταφερομένη οὐκ ἔχουσα σκέπην, βίᾳ καταφερομένη· ὡς ὕδατος πολὺ πλῆθος σῦρον χώραν, τῇ γῇ ποιήσει (α) ἀνάπαυμα· ταῖς χερσὶ, 3 Καὶ τοῖς ποσὶ καταπατηθήσεται ὁ στέφανος τῆς ὕβρεως, οἱ μισθωτοὶ τοῦ Ἐφραίμ. 4 Καὶ ἔσται τὸ ἄνθος τὸ ἐκπεσὸν τῆς ἐλπίδος τῆς δόξης, ἐπ᾽ ἄκρου τοῦ ὄρους τοῦ ὑψηλοῦ· ὡς πρόδρομος σύκου, ὁ ἰδὼν αὐτὸ, (β) πρὶν εἰς τὴν χεῖρα αὐτοῦ λαβεῖν (γ) αὐτὸ, θελήσει αὐτὸ καταπιεῖν. 5 Τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσται κύριος σαβαὼθ ὁ στέφανος τῆς ἐλπίδος, ὁ πλακεὶς τῆς δόξης, τῷ καταλειφθέντι (δ) τοῦ λαοῦ. 6 (ε) Καταλειφθήσονται ἐπὶ πνεύματι κρίσεως ἐπὶ κρίσιν, καὶ ἰσχὺν (ζ) κωλυόντων ἀνελεῖν. 7 Οὗτοι γὰρ οἴνῳ (η) πεπλημμελημένοι εἰσίν. ἐπλανήθησαν διὰ τὸ σίκερα, ἱερεὺς καὶ προφήτης ἐξέστησαν (θ) διὰ τὸ σίκερα, κατεπόθησαν διὰ τὸν οἶνον, ἐσείσθησαν ἀπὸ τῆς μέθης (ι), ἐπλανήθησαν· τουτέστι φάσμα. 8 Ἀρὰ ἔδεται ταύτην τὴν βουλὴν, αὕτη γὰρ ἡ βουλὴ (κ) ἕνεκα πλεονεξίας. 9 Τίνι ἀνηγγείλαμεν κακὰ, καὶ τίνι ἀνηγγείλαμεν ἀγγελίαν; οἱ ἀπογεγαλακτισμένοι ἀπὸ γάλακτος, οἱ ἀπεσπασμένοι ἀπὸ μαστοῦ.

CAP. XXVIII.

1 *VÆ coronæ (a) injuriæ, (b) mercenarii Ephræm: flos cadens de gloria super verticē (c) montis pinguis, qui ebrii estis absq; vino.* 2 *Ecce forte & durum furor Dñi, sicut grando, quæ fertur in pronum, non habens tegmen, quæ violenter decidit: sicut aquæ magna multitudo trahens regionem, (d) terræ faciet requiem manibus.* 3 *Et pedibus conculcabitur corona injuriæ, mercenarii Ephræm.* 4 *Et erit flos, qui decidit de spe gloriæ, in summitate montis excelsi: sicut præmatura ficus; quā qui viderit, antequā sumat eā manu suā cupiet eam devorare.* 5 *Die illâ erit Dominus Sabaoth corona gloriæ, quæ compacta est gloriæ, (e) reliquiis populi.* 6 *Relinquentur in spiritu judicii super judicium, & fortitudinem vetantium interficere.* 7 *Isti enim vino (f) deliquerunt, errârunt propter (g) siceram: sacerdos & propheta exciderunt mente propter siceram, absorpti sunt propter vinum, vacillaverunt propter ebrietatem, erraverunt: hoc est (h) phasma.* 8 *Maledictio comedet hoc consilium: siquidem istud consilium propter avaritiam est.* 9 *Cui annuntiavim⁹ mala, et cui annuntiavimus nuntium? qui ablactati sunt à lacte, qui abstracti ab ubere.*

MS.A. (α) ἀνάπαυσιν· (β) πρινὴ (γ) θελήσει (δ) μου λαῷ. (ε) Καὶ καταλειφθήσονται (ζ) κωλύων ἀνελεῖν. (η) πεπλανημένοι εἰσίν. (θ) διὰ τὸν οἶνον, ἐσείσθησαν (ι) τοῦ σίκερα, ἐπλανήθησαν. τοῦτό ἐστιν φάντασμα. (κ) ἕνεκεν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 אֲרֵי קַרְתָּא דַהֲוָת כְּרִיכָא בִּלְחוֹדָהּ תְּתֵב תְּהֵי מְטַלְטְלָא וּשְׁבִיקָא כְּמַדְבְּרָא בָהּ יְגִיחוּן
11 צַדִּיקַיָא וְיִבְזוֹן יַת נִכְסַהָא וִיסוֹפוּן מַשִׁרְיָתְהָא מִלְמִפַּק : יִתְקַצַּר חֵילְהוֹן וְיִבְהֲתוּן
בְּעוֹבָדֵיהוֹן יִתַּבְּרוּן נְשַׁיָא עָלָן לְבֵית דַּחַלְתְּהוֹן וּמַלְפָן יַתְהוֹן אֲרֵי לָא עַם סוּכְלְתָן אִנוּן עַל
12 כֵּן לָא יְרַחֵם עֲלֵיהוֹן דַּעֲבְדִנוּן וּדְבָרְנוּן לָא יָחוּס עֲלֵיהוֹן : וִיהֵי בְּעִדָּנָא הַהִיא יִתְרְמוֹן
קְטִילִין קֳדָם יְיָ מִכֵּיף נַהֲרָא פְרָת עַד נַחֲלָא דְמִצְרַיִם וְאַתּוּן תִּתְקָרְבוּן חַד לִסְטַר חַד בְּנֵי
13 יִשְׂרָאֵל : וִיהֵי בְעִדָּנָא הַהִיא יִתְקַע בְּשׁוֹפְרָא רַבָּא וְיֵיתוּן דִּי גְלוֹ לְאַרְעָא דְאַתּוּר
וּדְאִטַּלְטַלוּ לְאַרְעָא דְמִצְרַיִם וְיִסְגְּדוּן קֳדָם יְיָ בְּטוּרָא דְקוּדְשָׁא בִּירוּשְׁלֶם :

כח

1 וַי דִּי יָהֵיב כִּתְרָא לְגֵיוְתָנָא טַפְשָׁא רַבָּא דְיִשְׂרָאֵל וְיָהֵיב מִצְנֶפְתָּא לְרַשִׁיעַיָּא
דְבֵית מַקְדְּשָׁא תוּשְׁבַּחְתֵּיהּ דִּי עַל רֵישׁ חֵילָא שְׁמֵנָא כְּרְתִישֵׁי חֲמַר :
2 הָא מָחָן תַּקִּיפָן וַחֲסִינָן אָתְיָן מִן קֳדָם יְיָ כְּזַרְמִית בְּרַד כְּעַלְעוֹל רוּחַ כְּזַרְמִית מַיִן
תַּקִּיפִין שָׁטְפִין כֵּן יֵתוֹן עֲלֵיהוֹן עַמְמַיָא וְיַגְלוּנוּן מֵאַרְעֲהוֹן לְאַרְעָא אוֹחֲרִי בְּחוֹבַיָא דִּי
3 בִּידֵיהוֹן : בְּרַגְלִין יִתְדְּרַשׁ כִּתְרָא דְגֵיוְתָנָא טַפְשָׁא רַבָּא דְיִשְׂרָאֵל : וִיהֵי דְיָהֵיב מִצְנֶפְתָּא
4 לְרַשִׁיעַיָּא דְבֵית מַקְדְּשָׁא תוּשְׁבַּחְתֵּיהּ דִּי עַל רֵישׁ חֵילָא שְׁמֵינָא כְּבִכּוּרָא עַד לָא
5 קִיטָא דְאִם יֶחֱזֵי דְחָזֵי יָתַהּ כַּאֲלוּ הִיא בִידֵיהּ יְבַלְעִנַהּ : בְּעִדָּנָא הַהִיא יְהֵי מְשִׁיחָא
6 דַיְיָ צְבָאוֹת לִכְלִילָא דְחֶדְוָא וּלְכֶתֶר דְתוּשְׁבַּחְתָּא לִשְׁאָרָא דְעַמֵּיהּ : לְמֵימַר קְשׁוֹט דִּין
לְדִיתְבִין בְּבֵית דִּינָא לְמֵדַן דִּין דִּקְשׁוֹט וּלְמִתַּן נִצְחָנָא לְדִנָפְקִין לִקְרָבָא לַאֲתָבוּתְהוֹן
7 בִּשְׁלָם לְבָתֵּיהוֹן : וְאַף אִלֵּין בַּחֲמַר רַוּוֹ וּבְעַתִּיקָא אִסְתַּלְעַמוּ כָּהֲנָא וְסָפַר רַוּוֹ מִן
עַתִּיק אִסְתַּלְעַמוּ מִן חֲמַר טְעוֹ מִן עַתִּיק אִתְפְּנִיאוּ בָתַר מֵיכַל בְּסִים טְעוֹ דַיָּנֵיהוֹן :
8 אֲרֵי כָּל פָּתוֹרֵיהוֹן מְלַן מֵיכַל מְגָעַל וּמִשְׁקֵי לֵית לְהוֹן אֲתַר דִּי נְקִי מִן אוֹנַס : לְמַן
9 אִתְיְהִיבַת אוֹרָיְתָא וּמַן אִתְפְּקַד לְמִסְבַּר חוּכְמָא הֲלָא לְבֵית יִשְׂרָאֵל דִּרְחִימִין מִכָּל
עַמְמַיָא וַחֲבִיבִין מִכָּל מַלְכְוָתָא :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

10 Quoniam civitas quæ erat munita, sola manebit, & erit instabilis, & derelicta quasi desertū : illam expugnabunt justi, & diripient substantiā ejus, & consument exercitū ejus ne ultrà crescant. 11 *Diminuetur* exercitus ejus; *et* confundentur in operibus suis, & conterentur: mulieres venientes in domū deorum suorum, docebunt eos, quoniam non est populus sapiens. Propterea non miserebitur eorum qui fecit eos; & qui creavit eos, non parcet eis. 12 Et erit in tempore illo, projicientur interfecti coram Dño à ripa fluminis Euphratis, usque ad torrentem Ægypti ; & vos applicabimini unus ad alterum filii Israel. 13 Et erit in tempore illo, clangetur in tuba magna, & venient qui captivi ducti sunt in terrā Assyriæ, & qui transmigraverunt in terrā Ægypti, & adorabunt coram Domino in monte sancto in Hierusalem.

CAP. XXVIII.

1 VÆ ei qui dat coronam superbo & insipienti principi Israel, & qui dat mitram impiis domus sanctuarii laudis ejus, qui erant in capite vallis pinguissimæ confracti à vino. 2 Ecce *plagæ terribiles & fortes* veniunt à facie Dñi: sicut impet⁹ grandinis, sicut turbo venti, sicut impetus aquarum fortium inundantium, *sic* venient contra eos populi, & transferent eos de terra sua, in terram aliam, propter peccata quæ sunt in manib⁹ eorum. 3 Pedibus conculcabitur corona superbiæ insipientis principis Israel. 4 Qui autē dederit mitram impiis domus sanctuarii laudabilis ejus, quæ est in vertice vallis pinguissimæ; erit sicut præcox ficus ante æstatē: quā quicunque viderit, statim deglutiet; cùm sit in manu sua. 5 In tempore illo erit Christus Dñi exercituū in coronam gaudii, & in diadema laudis residuo populi sui. 6 In verbum veritatis *judicii* habitantib⁹ in *domo* judicii, ut judicent judiciū verū: & ut det victoriā egredientib⁹ ad bellum, & ut reducat eos in pacem in domum suā. 7 Hi quoque vino inebriati sunt, & vino veteri consopiti sunt: sacerdos & scriba inebriati sunt vino veteri: præcipitati sunt mero, erraverunt à vino veteri; declinaverunt ad cibū suave; erraverunt judices ej⁹ 8 Quoniam omnes mensæ eorum plenæ sunt cibo inquinato & sordido: neque est eis locus qui mundus sit à rapina. 9 Cui data est Lex? & cui mandatum est ut intelligeret sapientiam? Nonne domui Israel quæ dilecta est super omnes populos, & amabilis super omnia regna?

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

10 * ܡܛܠ ܕܡܕܝܢܬܐ ܚܣܝܢܬܐ . ܒܠܚܘܕܝܗ ܬܚܪܒ ܘܬܫܬܒܩ. ܘܬܚܪܒ ܐܪܥܐ ܐܝܟ ܡܕܒܪܐ.
ܬܡܢ ܢܪܥܐ ܥܓܠܐ. ܘܬܡܢ ܢܪܥܐ ܘܢܫܬܝܨ ܥܣܒܝܗ. * ܟܕ ܢܝܒܫ ܚܨܕܐ. ܢܬܬܒܪܘܢ ܢܫܐ ܕܐܬܝܢ 11
ܡܢܗܪܢ ܠܗ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܐ ܥܡܐ ܡܣܬܟܠܢܐ. ܡܛܠܗܢܐ ܠܐ ܢܪܚܡ ܥܠܘܗܝ ܥܒܘܕܗ.
12 ܘܓܒܘܠܗ ܠܐ ܢܚܘܣ ܥܠܘܗܝ. * ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ . ܢܫܒܛ ܡܪܝܐ ܡܢ
ܫܒܠܐ ܕܢܗܪܐ . ܥܕܡܐ ܠܢܚܠܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܐܢܬܘܢ ܬܬܠܩܛܘܢ ܚܕ ܚܕ ܒܢܝ
13 ܐܝܣܪܝܠ. * ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ . ܢܬܩܥ ܒܫܝܦܘܪܐ ܪܒܐ. ܘܢܐܬܘܢ ܐܒܝܕܐ ܕܒܐܪܥܐ
ܕܡܨܪܝܢ. ܘܕܐܬܒܕܪܘ ܒܐܪܥܐ ܕܐܬܘܪ . ܘܢܣܓܕܘܢ ܒܐܪܥܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܪܝܐ : ܒܛܘܪܗ
ܩܕܝܫܐ ܒܐܘܪܫܠܡ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܚ *

1 * ܘܝ ܠܟܠܝܠܐ ܓܐܝܐ ܕܪܘܝܐ ܕܐܦܪܝܡ . ܘܠܓܕܠܐ ܡܒܥܪܐ ܚܝܠܐ ܕܫܘܒܚܗ ܕܒܪܫ ܢܚܠܐ
2 ܕܫܡܝܢܐ. ܕܡܬܪܝܣܝܢ ܒܚܡܪܐ. * ܗܐ ܚܝܠܐ ܘܥܘܫܢܐ ܕܡܪܝܐ . ܐܝܟ ܙܪܡܐ ܕܒܪܕܐ ܘܐܝܟ
3 ܥܠܥܠܐ ܕܬܒܪܐ. ܘܐܝܟ ܙܪܡܐ ܕܡܝܐ ܣܓܝܐܐ ܕܫܛܦܝܢ. * ܢܢܝܚ ܠܐܪܥܐ ܒܐܝܕܝܗ. ܘܒܪܓܠܐ
4 ܢܬܕܝܫ ܟܠܝܠܐ ܓܐܝܐ ܕܪܘܝܐ ܕܐܦܪܝܡ. * ܘܢܗܘܐ ܓܕܠܐ ܡܒܥܪܐ. ܚܝܠܐ ܕܫܘܒܚܗ ܕܒܪܫ ܢܚܠܐ
ܕܫܡܝܢܐ. ܐܝܟ ܒܟܘܪܐ ܕܩܕܡ ܩܝܛܐ. ܕܟܕ ܚܙܐ ܚܙܝܐ ܠܗ . ܘܥܕ ܗܘ ܒܐܝܕܗ ܒܠܥ
5 ܠܗ. * ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܗܘܐ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܠܟܠܝܠܐ ܕܚܝܠܐ. ܘܠܓܕܠܐ ܡܫܒܚܐ ܠܫܪܟܐ
6 ܕܥܡܗ. * ܠܪܘܚܐ ܕܕܝܢܐ. ܠܡܢ ܕܝܬܒ ܥܠ ܕܝܢܐ ܘܠܓܢܒܪܘܬܐ. * ܕܡܗܦܟܝܢ ܩܪܒܐ ܡܢ
7 ܬܪܥܐ. ܐܦ ܗܢܘܢ ܒܚܡܪܐ ܛܥܘ ܘܒܫܟܪܐ ܛܥܘ. ܟܗܢܐ ܘܢܒܝܐ ܛܥܘ ܒܫܟܪܐ. ܐܬܒܠܥܘ ܡܢ
8 ܚܡܪܐ. ܙܥܘ ܡܢ ܫܟܪܐ. ܛܥܘ ܒܪܘܝܘܬܐ. ܐܟܠܘ ܐܫܬܓܫܘ. * ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ ܦܬܘܪܐ.
9 ܐܬܡܠܝܘ ܬܝܘܒܐ ܘܨܐܐܬܐ ܡܢ ܣܘܦ ܐܬܪܐ. * ܠܡܢ ܢܠܦ ܝܕܥܬܐ. ܘܠܡܢ ܢܣܟܠ ܫܡܥܬܐ.
ܠܡܫܬܠܚܝܢ ܡܢ ܚܠܒܐ . ܘܦܪܝܫܝܢ ܡܢ ܬܕܝܐ.

* Nam ſola civitas munita deſtruetur & dere- 10
linquetur, & deſolabitur terra quaſi deſertũ :
ibi paſcet vitulus, ibi inquam paſcet, & ab-
ſumet gramina ejus. Areſcente meſſe frangen- 11
tur mulieres venientes ad lumen afferendum
ei. Quia populus eſt minimè prudens; ideo
non miſerebitur ejus conditor ipſius, neque
plaſmator ejus clementiâ utetur erga ipſum.
Sed continget eo die, ut excutiat Dominus ab 12
ariſta fluminis uſque ad torrentem Ægypti, &
vos filii Iſrael, *ut ſpicæ* colligemini alter pe-
nes alterum. Continget eo die, ut clangatur 13
buccina magna, & veniant qui perierant in
terra Ægypti, quique diſperſi fuerant in ter-
ram Aſſyriæ, & in terra Domini Dominum
adorent, in monte ſancto ejus, in Jeru-
ſalem.

CAP. XXVIII.

VÆ diademati ſuperbo Aphremi temulen- 1
ti, & corollæ infami, fortitudini gloriæ ipſius
quæ eſt in capite vallis pinguium, ſtupidis vi-
no. Ecce fortitudo & robur Domini velut 2
nimbus grandinis, ceu turbo confringens, &
velut imber aquarum multarum vaſtantium.
Seda terram manu tuâ, ut pede conculcetur 3
diadema ſuperbum Aphremi temulenti; Et 4
infamis illa corolla, robur ſuperbiæ ejus quæ
eſt in capite vallis pinguium, ſit veluti fructus
ante tempus æſtivum præcox, quem ubi videt,
quicunque viderit eum, dum adhuc eſt in ma-
nu ſua, deglutit. In die illo erit Dominus po- 5
tens pro diademate fortitudinis & corollâ
glorioſâ, reliquo populo ſuo: *Et* pro ſpiritu 6
judicii, ei quæ præſidet judicio & fortitudini.
Qui bellum avertunt à porta, etiam ipſi ob 7
vinum erraverunt, & ob ſiceram erraverunt:
ſacerdotes & prophetæ erraverunt ob ſicerã,
obruti ſunt vino, vacillant propter ſiceram,
errant præ ebrietate, intemperanter come-
dunt. Omnes enim menſæ repletæ ſunt vomi- 8
tu & ſtercore præ loci penuria. Quem do- 9
ceret ſapientiam, & cujus aures imbueret
intelligentiâ? depulſos à lacte, avulſos ab
uberibus.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

10 * القطيع الساكن يكون مسترخيا مثل قطيع متروك * ويكون للرعي زمانا كثيرا وهناك
11 يستريحون * وبعد زمان لا يكون فيها كل خضر من اجل انها تجف * أيتها النسوه الاتيات
من المنظر تعالين * لان الشعب ليس له فهم * لاجل هذا لا يتراف عليهم صانعهم * ولا يرحمهم
12 جابلهم * ويكون في ذلك اليوم يسد الرب من خليج النهر الي انف كورون * وانتم اجمعوا بني
13 اسرايل كل واحد واحد * ويكون في ذلك اليوم يبوقون بالبوق العظيم * وياتون الهالكون في
بلد الموصليين والهالكون بمصر * ويسجدون للرب على جبل المقدس بايروسليم *

* الفصل الثامن والعشرون *

* الاصحاح الثالث عشر *

1 * الويل لاكليل الكبرياء يا اجراء افرام * الزهر البهيه التي سقطت من الشرف على راس الجبل
2 السمين * يا سكارى بغير خمر * ها القوي والصعب غضب الرب مثل برد نازل وليس له وقايه *
3 بعسف ينزل سريعا مثل كثر ماء كثير يجر بلاده * في الارض يضع نياحا * وبيديه
4 ورجليه يداس اكليل الكبرياء يا اجراء افرام * ويكون الزهر الساقطه من رجاء المجد على
طرف الجبل المرتفع * مثل سابق التين الذي ينظر من قبل ان يتناوله بيدك يريد ان
5 يبتلعه * في ذلك اليوم يكون رب الجيوش الاكليل المظفور لرجاء مجد شعبي المتبقي بمصر *
6 7 * ويبقون بروح محاكمه على محاكمه * ويمنع القوه ان تقتل * لان هاولاء هم ضالين
بالخمر * ضلوا لاجل المسكر * الكاهن والنبي بهتوا لاجل الخمر * تزلزلوا من سكر المسكر * ضلوا
8 9 عني وهم * اللعنه تاكل هذه المشوره * لان هذه المشوره من اجل السن * لمن اخبرنا
سرورا * ولمن اخبرنا خيرا ايها المفطومون من اللبن المبعدون من الثدي *

* *Grex ſub tecto habitans evadet fluxus,* 10
tanquam grex derelictus; cedéque in pa-
ſcua longo tempore, & ibi recubabunt:
& aliquo poſt tempore nulla remanebit in
ea viriditas, quippequæ areſcet. Heus 11
mulieres è ſpectaculo venientes, accedite:
nam populus iſte caret intellectu: propter-
eà non miſereſcet eorum conditor ipſo-
rum, neque miſerebitur eorum qui finxit
illos. Erit autem eo die, ut occludat 12
Dominus à brachio fluminis uſque ad pro-
montorium Choronis: vos autem colligite
filios Iſrael ſigillatim. Eritque eodem 13
die, ut cùm clanxerint tubâ magnâ, ve-
niant pereuntes in terra Aſſyriorum &
pereuntes in Ægypto, adorentque Domi-
num ſuper montem illum ſanctum in Je-
ruſalem.

CAP. XXVIII.

Textus decimus tertius.

VÆ coronæ faſtûs, O mercenarii A- 1
phremi, flos decorus qui de ſublimi-
tate decidit ſuper cacumen montis pinguis,
O ebrii ſine vino. Ecce vehemens & 2
ſevera illa Domini ira, ceu grando ruens
contra quam nullum eſt tegumentum,
cum violentia citò decidet velut copia a-
quarum multarum regionem aliquam ab-
ripientium. In terra componet quietem, 3
& manibus ac pedibus ejus conculcabitur
corona faſtûs, O mercenarii Aphremi:
Et flos de ſpe gloriæ decidens ſuper la- 4
tus montis excelſi, erit veluti ficus præco-
ces quas cùm videt quiſpiam, antequam
eas manu decerpat, deglutire vellet. In 5
illa die Dominus exercituum qui eſt co-
rona contexta, erit in ſpem gloriæ populi
mei qui reſiduus eſt in Ægypto. Rema- 6
nebunt autem in ſpiritu jurgii ſuper jur-
gium: & impediet fortitudinem quin oc-
cîdat. Nam iſti ſunt in vino perditi, 7
erraverunt propter potum *inebriantem:*
tam ſacerdos quàm propheta obſtupuerunt
propter vinum, titubârunt ex ebrietate
potûs *inebriantis, ipſi quoque erraverunt à*
me. Maledictio devorabit hujuſmodi 8
conſilium, quia conſilium hoc de ingluvie
eſt. Cuinam indicaremus Letitiam, & 9
cuinam indicaremus bonum, O lacte abdi-
cati, ab ubere disjuncti?

ישעיה: כח

linea,lineam *ad* linea,præceptum *ad* præceptum ,præceptū *ad* præceptū Nam
10 כִּי צַו לָצָו צַו לָצָו קַו לָקָו קַו
lingua in & ,*labii* *blæſitatibus in* Quia .ibi parum ibi parum ,lineā *ad*
לָקָו זְעֵיר שָׁם זְעֵיר שָׁם׃ כִּי בְּלַעֲגֵי שָׂפָה וּבְלָשׁוֹן 11
Hæc *: eos ad* dixit Quos .iſtum populum ad loquetur altera
12 אַחֶרֶת יְדַבֵּר אֶל־הָעָם הַזֶּה׃ אֲשֶׁר אָמַר אֲלֵיהֶם זֹאת
.audire noluerunt & : requies hæc & ,laſſo præſtate requiem ,requies
הַמְּנוּחָה הָנִיחוּ לֶעָיֵף וְזֹאת הַמַּרְגֵּעָה וְלֹא אָבוּא שְׁמוֹעַ׃
,præceptū *ad* præceptū,præceptū *ad* præceptum,Domini verbum eis erit Et
13 וְהָיָה לָהֶם דְּבַר־יְהוָה צַו לָצָו צַו לָצָו
corruant & vadant ut : ibi parum ,ibi parum,*lineā ad linea,lineā ad linea*
קַו לָקָו קַו לָקָו זְעֵיר שָׁם זְעֵיר שָׁם לְמַעַן יֵלְכוּ וְכָשְׁלוּ
verbum audite *Ideò*.capiantur &,illaqueentur &,conterantur &,retrorſum
14 אָחוֹר וְנִשְׁבָּרוּ וְנוֹקְשׁוּ וְנִלְכָּדוּ׃ לָכֵן שִׁמְעוּ דְבַר־
Nam .Jeruſalaim in qui ,hujus populi dominatores,*irriſionis* viri Domini
15 יְהוָה אַנְשֵׁי לָצוֹן מֹשְׁלֵי הָעָם הַזֶּה אֲשֶׁר בִּירוּשָׁלָםִ׃ כִּי
:viſionem fecim' ſepulchro cum &,morte cum fœdus Percuſſimus : dixiſtis
אֲמַרְתֶּם כָּרַתְנוּ בְרִית אֶת־מָוֶת וְעִם־שְׁאוֹל עָשִׂינוּ חֹזֶה
mendaciū poſuim' quia;nobis veniet non tranſierit cùm inundans flagellū
שִׁיט שׁוֹטֵף כִּי־עָבַר לֹא יְבוֹאֵנוּ כִּי שַׂמְנוּ כָזָב
:Domin' Domin' dixit ſic Idcirco.*ſumus* occultati *falſitate* in &,noſtrā ſpem
16 מַחְסֵנוּ וּבַשֶּׁקֶר נִסְתָּרְנוּ׃ לָכֵן כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה
fundamenti ,*precii* anguli ,*arcis* *lapidis* ,*lapidis* Sijon in *fundator* ego Ecce
הִנְנִי יִסַּד בְּצִיּוֹן אָבֶן אֶבֶן בֹּחַן פִּנַּת יִקְרַת מוּסָד
juſtitiam & ,lineæ judicium ponam Et .*feſtinabit* non ,*Credens* ,fundati
17 מוּסָּד הַמַּאֲמִין לֹא יָחִישׁ׃ וְשַׂמְתִּי מִשְׁפָּט לְקָו וּצְדָקָה
aquæ *latibulum* & ,mendacii ſpem grando verret & ,*perpendiculum ad*
לְמִשְׁקָלֶת וְיָעָה בָרָד מַחְסֵה כָזָב וְסֵתֶר מַיִם
cum veſtra viſio & ,morte cum veſtrum fœdus *abolebitur* Et.inundabunt
18 יִשְׁטֹפוּ׃ וְכֻפַּר בְּרִיתְכֶם אֶת־מָוֶת וְחָזוּתְכֶם אֶת־
ei eritis & ,tranſierit cùm inundanti Flagello .ſtabit non ſepulchro
שְׁאוֹל לֹא תָקוּם שׁוֹט שׁוֹטֵף כִּי יַעֲבֹר וִהְיִיתֶם לוֹ
mane in mane in quia ,vos tollet *ipſum tranſire* tēpore A.conculcationē in
19 לְמִרְמָס׃ מִדֵּי עָבְרוֹ יִקַּח אֶתְכֶם כִּי־בַבֹּקֶר בַּבֹּקֶר
.auditum intelligere *commotio* tantum erit Et .nocte in & die in ,tranſibit
יַעֲבֹר בַּיּוֹם וּבַלָּיְלָה וְהָיָה רַק־זְוָעָה הָבִין שְׁמוּעָה׃
, eſt anguſtum operimentum & : ſe extendere *ab* ſtratum eſt brevius Quia
20 כִּי־קָצַר הַמַּצָּע מֵהִשְׂתָּרֵעַ וְהַמַּסֵּכָה צָרָה
valle ſicut ,Dñs ſurget Peraſim monte ſicut Quia .ſe colligere *ſecundùm*
21 כְּהִתְכַּנֵּס׃ כִּי כְהַר־פְּרָצִים יָקוּם יְהוָה כְּעֵמֶק
: ejus opus extraneum ,ſuum opus *faciendum ad* , iraſcetur Ghibhon in
בְּגִבְעוֹן יִרְגָּז לַעֲשׂוֹת מַעֲשֵׂהוּ זָר מַעֲשֵׂהוּ
,vos deludatis ne nunc Et.*ejus operatio extranea : ſuā operationē operandum ad* &
22 וְלַעֲבֹד עֲבֹדָתוֹ נָכְרִיָּה עֲבֹדָתוֹ׃ וְעַתָּה אַל־תִּתְלוֹצָצוּ
.deciſam & conſumptionem quia ,veſtra vincula fortificentur fortè ne
פֶּן־יֶחְזְקוּ מוֹסְרֵיכֶם כִּי־כָלָה וְנֶחֱרָצָה
.terram omnem ſuper exercituum *Domino* Domino à audivi
שָׁמַעְתִּי מֵאֵת אֲדֹנָי יְהוִה צְבָאוֹת עַל־כָּל־הָאָרֶץ׃
.meum eloquium audite & attendite :meā vocē audite &,percipite Aurib'
23 הַאֲזִינוּ וְשִׁמְעוּ קוֹלִי הַקְשִׁיבוּ וְשִׁמְעוּ אִמְרָתִי׃

Verſio VUL. LAT.

10 Quia manda remanda, manda remanda, expecta reexpecta, expecta reexpecta,modicū ibi, 11 modicū ibi. In loquela enim labii,& linguâ alterâ loquetur 12 ad populū iſtū. Cui dixit;Hæc eſt requies mea,reficite laſſū,& hoc eſt meū refrigeriū: & no- 13 luerūt audire. Et erit eis verbū Dñi; Manda remanda, manda remanda, expecta reexpecta, expecta reexpecta,modicū ibi, modicū ibi:ut vadant,& cadāt retrorſū, & conterantur, & il- 14 laqueentur,& capiantur. Propter hoc audite verbū Dñi viri illuſores, qui dominamini ſup populū meū, qui eſt in Jeruſa- 15 lem. Dixiſtis enim;Percuſſim' fœd' cum morte,& cum inferno fecim' pactū. Flagellū inundans cùm tranſierit,non veniet ſup nos:quia poſuim' mendaciū ſpem noſtrā, & mendacio 16 protecti ſum'. Idcircò hæc dicit Dñs De'; Ecce ego mittā in fundamentis Sion lapidē,lapidem probatū,angularē,pretioſū,in fundamento fundatū: qui 17 crediderit,non feſtinet. Et ponam in pondere judiciū, & juſtitiā in menſura:& ſubvertet grando ſpem mendacii:& pro- 18 tectionē aquæ inundabunt. Et delebitur fœdus veſtrum cum morte,& pactū veſtrū cum inferno non ſtabit:flagellū inundans cùm tranſierit,eritis ei in 19 conculcationē. Quandocumq; ptranſierit,tollet vos: quoniā manè diluculò pertranſibit in die & in nocte,& tantūmodò ſola vexatio intellectum dabit 20 auditui. Coanguſtatū eſt enim ſtratum,ita ut alter decidat:& pallium breve utrumque ope- 21 rire non poteſt. Sicut enim in monte diviſionum ſtabit Dñs: ſicut in valle,quæ eſt in Gabaon, iraſcetur: ut faciat opus ſuum, alienum opus ejus: ut operetur opus ſuum, peregri- 22 num eſt opus ejus ab eo. Et nunc nolite illudere, ne fortè conſtringantur vincula veſtra, conſummationem enim & ab- 23 breviationem audivi à Domino Deo exercituum ſuper univerſam terram. Auribus percipite,& audite vocem meam, attendite, & audite eloquium meum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

10 Θλῖψιν ἐπὶ θλῖψιν προσδέχου, ἐλπίδα ἐπ' 11 ἐλπίδι, ἔτι μικρὸν ἔτι μικρόν, Διὰ φαυλισμὸν χειλέων, διὰ γλώσσης ἑτέρας, ὅτι 12 λαλήσουσι τῷ λαῷ τούτῳ, Λέγοντες (λ) αὐτοῖς, Τοῦτο τὸ ἀνάπαυμα τῷ πεινῶντι, ϗ τοῦτο 13 τὸ σύντριμμα· ϗ οὐκ ἠθέλησαν ἀκούειν. Καὶ ἔσται αὐτοῖς τὸ λόγιον (μ) τοῦ θεοῦ, Θλῖψις ἐπὶ θλῖψιν, ἐλπὶς ἐπ' ἐλπίδι, ἔτι μικρὸν ἔτι μικρόν, ἵνα πορεύσωνται ϗ πέσωσιν (ν) ὀπίσω, (ξ) ϗ συντριβήσονται, ϗ κινδυνεύ- 14 σουσι, ϗ ἁλώσονται. Διὰ τοῦτο ἀκούσατε λόγον κυρίου ἄνδρες τεθλιμμένοι, (ο) ϗ οἱ ἄρχοντες τοῦ λαοῦ (π) τούτου τοῦ ἐν Ἱερουσαλήμ. 15 Ὅτι εἴπατε, Ἐποιήσαμεν διαθήκην μετὰ τοῦ ᾅδου, ϗ μετὰ τοῦ θανάτου συνθήκας· καταιγὶς φερομένη ἐὰν παρέλθῃ, οὐ μὴ ἔλθῃ (ρ) ἐφ' ἡμᾶς· ἐθήκαμεν ψεῦδος τὴν ἐλπίδα ἡμῶν, 16 ϗ τῷ ψεύδει σκεπασθησόμεθα. Διὰ τοῦτο (σ) οὕτω λέγει κύριος κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐμβάλλω εἰς τὰ θεμέλια Σιὼν λίθον πολυτελῆ, ἐκλεκτόν, ἀκρογωνιαῖον, ἔντιμον, εἰς τὰ θεμέλια αὐτῆς, ϗ ὁ πιστεύων (τ) οὐ μὴ κα- 17 ταισχυνθῇ. Καὶ θήσω κρίσιν εἰς ἐλπίδα, ἡ δὲ ἐλεημοσύνη μου εἰς σταθμούς, ϗ οἱ πεποιθότες μάτην ψεύδει· ὅτι οὐ μὴ παρέλθῃ ὑμᾶς 18 καταιγίς, Μὴ ϗ ἀφέλῃ ὑμῶν τὴν διαθήκην τοῦ θανάτου, ϗ ἡ ἐλπὶς ὑμῶν ἡ πρὸς τὸν ᾅδην οὐ μὴ ἐμμείνῃ. καταιγὶς φερομένη ἐὰν 19 ἐπέλθῃ, ἔσεσθε αὐτῇ εἰς καταπάτημα. Ὅταν παρέλθῃ, λήψεται ὑμᾶς, πρωῒ πρωῒ παρελεύσεται ἡμέρας, ϗ ἐν νυκτὶ ἔσται ἐλπὶς πο- 20 νηρά. μάθετε ἀκούειν Στενοχωρούμενοι. Οὐ δυνάμεθα μάχεσθαι, αὐτοὶ δὲ ἀσθενοῦμεν τοῦ (υ) 21 ὑμᾶς συναχθῆναι. Ὥσπερ ὄρος ἀσεβῶν ἀναστήσεται (φ) κύριος, ϗ ἔσται ἐν τῇ φάραγγι Γαβαών, μετὰ θυμοῦ ποιήσει τὰ ἔργα αὐτοῦ, πικρίας ἔργον· ὁ δὲ θυμὸς αὐτοῦ ἀλλοτρίως χρήσεται, ϗ (χ) ἡ σαπρία αὐτοῦ ἀλλοτρία. 22 Καὶ ὑμεῖς μὴ εὐφρανθείητε, μηδὲ ἰσχυσάτωσαν ὑμῶν οἱ δεσμοί. διότι συντετελεσμένα ϗ (ψ) συντετμημένα πράγματα ἤκουσα παρὰ κυρίου σαβαώθ, ἃ ποιήσει ἐπὶ πᾶσαν 23 τὴν γῆν. Ἐνωτίζεσθε ϗ (ω) ἀκούετε τῆς φωνῆς μου, προσέχετε ϗ ἀκούετε τοὺς λόγους μου.

Tribulationem ſuper tribulationem 10 *expecta, ſpem ſuper ſpem: adhuc parum, adhuc parum, Propter ir-* 11 *riſionem labiorum,propter linguam alteram: quia loquentur populo huic, Dicentes eis; Hæc eſt requies* 12 *eſurienti,et hæc contritio:et noluerunt audire. Et erit eis ſermo Dei,* 13 *Tribulatio ſuper tribulationē: ſpes ſuper ſpē, adhuc parū,adhuc parū, ut (i) vadant, & cadant retrorſum; & conterentur, & periclitabuntur, & capientur. Propterea* 14 *audite verbum Domini viri tribulati, & principes populi hujus,qui eſt in Hieruſalem: Quia dixiſtis;* 15 *Fecimus teſtamentum cum inferno, & cum morte pacta: tempeſtas irruens ſi pertranſierit; non veniet ſuper nos: poſuimus mendacium ſpem noſtram: & mendacio protegemur. Propterea ſic dicit Domi-* 16 *nus Dominus; Ecce ego immittam in fundamenta Sion lapidem pretioſum,electum, ſummū angularem, honorabilem in fundamenta ejus: & (k)qui crediderit, non confundetur. Et ponam judiciū in ſpem:* 17 *miſericordia autem mea in pondera;& qui confiderunt fruſtrà mendacio: quoniam non tranſibit per vos tempeſtas: Nonne etiā auferet* 18 *teſtamentum* veſtrū *mortis? & ſpes veſtra, quæ erga infernum, non permanebit. (l)Tempeſtas ruens ſi supervenerit; eritis ei in conculcationem: Cùm pertranſierit, tollet* 19 *vos: manè manè tranſibit, die & in nocte erit ſpes peſſima. Diſcite audire, Qui eſtis in tribulatione:* 20 *Non poſſumus pugnare: ipſi autem infirmi ſumus,(m)ut vos congregemini. Sicut mons impiorum,con-* 21 *ſurget Dominus, & erit in valle Gabaon: cum furore faciet opera ſua, amaritudinis opus: & furor ejus alienè utetur, & (n) perditio ejus aliena. Et vos nolite lætari:* 22 *neque confortentur vincula veſtra: Quia conſummatas & abbreviatas res audivi à Domino Sabaoth, quas facturus eſt ſuper omnem terram. Auribus percipite, & au-* 23 *dite vocem meam: attendite, & audite ſermones meos.*

MS. A. (λ) αὐτῷ, (μ) κυρίου τοῦ θεοῦ, (ν) εἰς τὰ ὀπίσω, (ξ) ϗ κινδυνεύσουσι, ϗ συντριβήσονται, ϗ ἁλώσονται. (ο) ϗ ἄρχοντες (π) τούτου ἐν (ρ) ἡμῖν· (σ) οὕτως λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐμβαλῶ (τ) ἐν αὐτῷ οὐ μὴ (υ) ἡμᾶς (φ) ϗ ἔσται (χ) ἡ πικρία (ψ) συντετμημένα (ω) ἀκούσατε

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 אֲרֵי אִתְפַּקַּדוּ לְמֶעְבַּד אוֹרַיְתָא וּמָא דְאִתְפַּקַּדוּ לָא צְבִיאוּ לְמֶעְבַּד וְאִתְנַבִּיאוּ עֲלֵיהוֹן
נְבִיַּיָא דְאִם יְתוּבוּן יִשְׁתְּבֵק לְהוֹן וּלְמִלֵּי נְבִיַּיָא לָא קַבִּילוּ הֲלִיכוּ בִּרְעוּת נַפְשְׁהוֹן וְלָא
חֲמִידוּ לְמֶעְבַּד אוֹרַיְתִי סְבַרוּ דְיִתְקַיַּם לְהוֹן פּוּלְחַן טַעֲוָתָא וְלָא סְבַרוּ לְפוּלְחַן בֵּית
11 מַקְדְּשִׁי כִּזְעֵיר הֲוָה בְעֵינֵיהוֹן בֵּית מַקְדְּשִׁי לְמִפְלַח תַּמָּן כִּזְעֵיר בְּעֵינֵיהוֹן שְׁכִנְתִּי תַמָּן׃ אֲרֵי
בְּשַׁנּוּי מַמְלַל וּבְלִישָׁן תּוֹלְעֲבָא הֲווֹ מְלַעֲגִין לְקֳבֵיל נְבִיַּיָא דְמִתְנַבַּן לְהוֹן עַמָּא הָדֵין׃
12 דַאֲמְרִין לְהוֹן נְבִיַּיָא דֵין בֵּית מַקְדְּשָׁא פְּלַחוּ בֵיהּ וְדָא אַחְסָנַת בֵּית נְיָחָא וְלָא אֲבוֹ לְקַבָּלָא
13 אוּלְפָן׃ דֵין יְהֵי כָּס פּוּרְעֲנוּתְהוֹן עַל דַעֲבַרוּ עַל פִּתְגָמָא דַייָ וְעַל דְאִתְפַּקַּדוּ לְמֶעְבַּד אוֹרַיְתָא
וּמָא דְאִתְפַּקַּדוּ לָא צְבִיאוּ לְמֶעְבַּד בְּכֵן יִתְמַסְרוּן לְעַמְמַיָא דְלָא יְדַעוּ אוֹרַיְתָא עַל דַהֲלִיכוּ
בִּרְעוּת נַפְשְׁהוֹן וְלָא חֲמִידוּ לְמֶעְבַּד רְעוּתִי בְּכֵן יְסַבְּרוּן לְסָעִיד בְּעִדָּן דְאַיְתִי עֲלֵיהוֹן עָקָא
וְלָא יְהֵי לְהוֹן סָעִיד וּסְמִיךְ עַל דַהֲוָה זְעֵיר בְּעֵינֵיהוֹן בֵּית מַקְדְּשִׁי לְמִפְלַח תַּמָּן בְּכֵן
יִשְׁתָּאֲרוּן כִּזְעֵיר בֵּינֵי עַמְמַיָא דִיגְלוּן לְתַמָּן בְּדִיל דִיהָכוּן וְיִתְקְלוּן לַאֲחוֹרָא וְיִתַּבְּרוּן
14 וְיִתְּצְדוּן וְיִתְאַחֲדוּן׃ בְּכֵן קַבִּילוּ פִּתְגָמָא דַייָ גַבְרִין רַשִּׁיעִין שִׁלְטוֹנֵי עַמָּא הָדֵין דִי בִירוּשְׁלֵם׃
15 אֲרֵי אֲמַרְתּוּן גְזַרְנָא קְיָם עִם קְטוֹלָא וְעִם מְחַבְּלָא עֲבַדְנָא שְׁלָמָא מְחַת סָנְאָה אֲרֵי
תֵיתֵי עֲלֵיכוֹן כִּנְחַל מְנַגֵּר דַאֲתוּן אָמְרִין לָא תֵיתֵי עֲלָנָא אֲרֵי שַׁוֵּינָא בִכְדִיב רְחִצָנָנָא וּבְנִין
16 שְׁקָרִין אִטַּמַּרְנָא׃ בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים הָא אֲנָא מְמַנֵּי בְּצִיּוֹן מֶלֶךְ מֶלֶךְ תַּקִּיף גִּבָּר
וְאֵימְתָן אַתְקְפִנֵּיהּ וְאַחְסְנִנֵּיהּ אֲמַר נְבִיָּא וְצַדִּיקַיָּא דְהֵימִנוּ בְאִלֵּין בְּמֵיתֵי עָקָא לָא יִזְדַּעְזְעוּן׃
17 וַאֲשַׁוֵּי דִינָא תְקֵין דְאִטַּמַּרְתּוּן כְּחוּט בִּנְיָנָא וְזָכוּתָא כְאֶבֶן מַשְׁקוֹלְתָּא וְיִדְלַק רוּגְזִי בְרוּחְצָן
18 כַּדְבֵיכוֹן וְעַל דְאִטַּמַּרְתּוּן מִן קֳדָם מְעִיקָא יַתְכוֹן עַמְמַיָא יַגְלוּן׃ וְיִבְטֵיל קְיָמְכוֹן דְעִם
קְטוֹלָא וּשְׁלָמְכוֹן דְעִם מְחַבְּלָא לָא יִתְקַיַּם מְחַת סָנְאָה אֲרֵי תֵיתֵי עֲלֵיכוֹן כִּנְחַל
19 מְנַגֵּר וּתְהוֹן לְהוֹן לְדִישׁ׃ בִּזְמַן מֶעְדּוֹהִי יַגְלֵי יַתְכוֹן אֲרֵי בִצְפַר בִּצְפַר יֶעְדֵּי בִּימָם
20 וּבְלֵילֵי וִיהֵי עַד לָא יִמְטֵי זְמַן לְוָטָא תִסְתַּכְּלוּן בְּמִלֵּי נְבִיַּיָא׃ אֲרֵי יִתְקַצַּר חֵילֵיהוֹן
21 מִשַּׁעְבּוּד תַּקִּיף וְשִׁלְטוֹן מְעִיק יִסְגֵּי מַרְוָא׃ אֲרֵי כְמָא דְזָעוּ טוּרַיָא כַּד אִתְגְּלֵי יְקָרָא
דַייָ בְּיוֹמֵי עוּזִּיָּה מַלְכָּא וּבְנִסִּין דַעֲבַד לִיהוֹשֻׁעַ בְּמֵישַׁר גִּבְעוֹן לְאִתְפְּרַע מֵרַשִׁיעַיָא
דַעֲבַרוּ עַל מֵימְרֵיהּ כֵּן יִתְגְּלֵי לְאִתְפְּרָעָא מֵעָבְדִין עוּבְדִין נוּכְרָאִין עוֹבְדֵיהוֹן
22 וּמִדְפַלְחִין פּוּלְחַן טַעֲוָתָא פּוּלְחַנְהוֹן׃ וּכְעַן לָא תִתְרַשְׁעוּן דִלְמָא יִתְקְפוּן יִסּוּרֵיכוֹן
23 אֲרֵי גְמִירָא וְשֵׁיצָאָה שְׁמָעִית מִן קֳדָם יְיָ אֱלֹהִים צְבָאוֹת עַל כָּל יָתְבֵי אַרְעָא׃ אֲמַר
נְבִיָּא אַצִּיתוּ וּשְׁמַעוּ קָלִי אִתְפְּנוּ וְקַבִּילוּ לְמֵימְרִי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quoniam ipſis mandatum eſt ut operarentur ſecundum legem, & noluerunt facere quod mandatū eſt eis. Prophetaverunt prophetæ ſuper eos ut *ſi* converterentur *remitteretur illis*, & noluerunt obedire verbis prophetarum:ambulaverunt in voluntate animæ ſuæ,& non deſideraverunt operari ſecundùm legem meam:ſperaverunt quòd ſtaret eis cultus idolorum,& non attenderunt cultui domus ſanctuarii mei: quaſi perpuſilla res fuit in oculis eorum dom' ſanctuarii mei,ut ſervirent ibi: quaſi parum fuit in oculis eorum eſſe majeſtatē meam ibi. 10

Quoniam in mutatione loquelæ & in lingua ſubſannationis irridebant contra prophetas qui prophetabant populo huic. 11

Quibus dicebant prophetæ: Hæc eſt domus ſanctuarii, ſervite in ea:& hæc eſt poſſeſſio in qua eſt requies;& noluerunt ſuſcipere diſciplinā. 12

Hic eſt calix vindictæ eorum,pro eo quòd tranſgreſſi ſunt verbū Dñi,& pro eo quòd mandatum eſt eis ut facerent ſecundum legem, & noluerunt facere ꝙ præceptum eſt eis. Propterea tradentur populis qui neſcierunt legem,eò quòd ambulaverunt in voluntate animæ ſuæ;& non deſideraverunt facere voluntatem meam.Propterea ſperabunt *auxilium* in tempore quo inducam ſuper eos tribulationem,& non erit eis auxilium neq; ſuſtentaculū.Quia erat domus ſanctuarii mei modica in oculis eorū ut ſervirent ibi, propterea relinquentur pauci inter populos ad quos tranſmigraverunt,ut ambulent & corruant retrorſū, et conterantur & capiantur,& comprehendantur. 13

Propterea ſuſcipite verbū Domini viri impii qui dominamini populo huic qui eſt in Hieruſalem. 14

Dixiſtis enim: Pepigim' pactum cum morte,& cum diſperdente fecim' pacem:plaga inimici cùm venerit ſuper vos,erit quaſi torrens inundans,de qua dixiſtis:Non veniet ſuper nos,quia poſuim' in mendacio ſpē noſtrā, & in fallaciis abſconditi ſum'. 15

Propterea hæc dicit Dñs: Ecce ego conſtituam in Sion regē,regē fortem,potentem et terribilē:corroborabo eum,& confortabo eum,dicit Propheta. Juſti autē qui crediderint hæc, cùm venerit tribulatio,non commovebuntur. 16

Et ponam judicium *rectum*, propter quod abſconditi eſtis, quaſi funiculū ædificii,& juſtitiā quaſi lapidē perpendiculi. Et ſuccendetur furor meus, propter fiduciā mendaciorum veſtrorum:& pro eo quòd abſconditi eſtis à facie tribulationis,transferent vos populi. 17

Et irritū fiet pactum veſtrū,quod erat cum morte,& pax veſtra quæ erat cum diſperdente,non ſtabit. Plaga inimici cum venerit ſuper vos, erit quaſi torrens inundans, & eritis ei in conculcationē. 18

In tempore tranſitus ſui tranſmigrare faciet vos, quoniam manè diluculò tranſibit,in die & in nocte: & erit antequàm perveniat tempus maledictionis, intelligentes verba prophetarum. 19

Abbreviata eſt enim virtus eorum, præ ſervitute forti; & dominium tribulantis multiplicabit ſubjectionem. 20

Quia ſicut commoti ſunt montes, quando revelata eſt gloria Domini in diebus Oziæ regis,et in miraculis quæ fecit Dominus cum Joſue in valle Gabaon,ut vindictā ſumeret ab impiis qui tranſgreſſi ſunt verbum ejus:ſic revelabitur ut vindictā ſumat ab his qui operantur opera extranea, & colunt cultum idolorum in cultu ſuo. 21

Nunc autem ne impiè agatis,ne forte roborentur vincula veſtra:quia conſummationem & conſumptionem audivi à facie Domini Dei exercituum, ſuper omnes habitatores terræ. 22

Dicit propheta, Auſcultate & audite vocem meam; aſpicite & attendite verbis meis. 23

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

10 * ܡܛܠ ܕܨܐܐ ܠܨܐܐ ܘܨܐܐ ܠܨܐܐ܆ ܘܬܘܩܐ ܠܬܘܩܐ ܘܬܘܩܐ ܠܬܘܩܐ܂
11 ܩܠܝܠ ܠܗܪܟܐ܂ ܘܩܠܝܠ ܠܗܪܟܐ܂ * ܡܛܠ ܕܒܡܡܠܠ ܥܡܝܩܐ܆ ܘܒܠܫܢܐ ܐܚܪܢܐ
12 ܡܡܠܠ ܥܡܗ ܥܡ ܥܡܐ ܗܢܐ܂ * ܕܐܡܪܬ ܠܗܘܢ܆ ܗܕܐ ܢܝܚܬܝ܆ ܐܢܝܚܘ
ܠܡܠܐܝܐ܂ ܘܗܕܐ ܢܝܚܬܐ܂ ܘܠܐ ܨܒܘ ܠܡܫܡܥ܂ * ܘܗܘܐ ܠܗܘܢ܆ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ܂ 13
ܨܐܐ ܠܨܐܐ ܘܨܐܐ ܠܨܐܐ܂ ܘܬܘܩܐ ܠܬܘܩܐ ܘܬܘܩܐ ܠܬܘܩܐ܂ ܩܠܝܠ
ܠܗܪܟܐ ܘܩܠܝܠ ܠܗܪܟܐ܂ ܕܢܐܙܠܘܢ ܘܢܬܬܩܠܘܢ ܠܒܣܬܪܗܘܢ܂ ܘܢܬܬܒܪܘܢ܂
14 ܘܢܬܬܨܝܕܘܢ ܘܢܬܬܚܕܘܢ܂ * ܡܛܠ ܗܢܐ ܫܡܥܘ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܓܒܪܐ ܡܡܝܩܢܐ܂
15 ܘܫܠܝܛܢܘܗܝ ܕܥܡܐ ܗܢܐ ܕܒܐܘܪܫܠܡ܂ * ܡܛܠ ܕܐܡܪܬܘܢ܂ ܕܩܝܡܢ ܩܝܡܐ
ܥܡ ܡܘܬܐ܂ ܘܥܡ ܫܝܘܠ ܚܙܝܢ ܚܙܘܐ܂ ܫܘܛܐ ܕܫܛܘܦܐ ܟܕ ܢܥܒܪ܆ ܠܐ
ܢܐܬܐ ܥܠܝܢ܂ ܡܛܠ ܕܣܡܢ ܒܕܓܠܘܬܐ ܬܘܟܠܢܢ܂ ܘܒܫܘܩܪܐ ܐܬܛܫܝܢ܂
16 * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܆ ܗܐ ܐܢܐ ܡܫܪܪ ܐܢܐ ܒܨܗܝܘܢ ܟܐܦܐ܂
ܟܐܦܐ ܒܚܝܪܬܐ܂ ܒܩܪܢܐ ܝܩܝܪܬܐ܂ ܪܫ ܫܘܪܐ ܕܫܬܐܣܬܐ܂ ܘܡܢ ܕܡܗܝܡܢ ܠܐ ܢܙܘܥ܂
17 * ܘܐܣܝܡ ܕܝܢܐ ܒܟܝܠܬܐ܂ ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܒܡܬܩܠܐ܂ ܘܢܣܚܘܦ ܒܪܕܐ ܣܒܪܐ ܕܕܓܠܘܬܐ܂
18 ܘܠܒܝܬ ܓܘܣܐ ܢܕܒܪܘܢ ܡܝܐ܂ * ܘܢܬܒܛܠ ܩܝܡܟܘܢ ܕܥܡ ܡܘܬܐ܂ ܘܚܙܘܝܟܘܢ ܕܥܡ
ܫܝܘܠ܂ ܠܐ ܢܩܘܡ܂ ܫܘܛܐ ܕܫܛܘܦܐ ܟܕ ܢܥܒܪ܆ ܬܗܘܘܢ ܠܗ ܠܡܕܫܐ܂
19 * ܘܒܙܒܢܐ ܕܢܥܒܪ܆ ܢܕܒܪܟܘܢ܂ ܡܛܠ ܕܒܨܦܪܐ ܒܨܦܪܐ ܢܥܒܪ܆ ܒܐܝܡܡܐ܂ ܘܒܠܠܝܐ
20 ܢܗܘܐ ܙܘܥܐ܂ ܒܠܚܘܕ ܐܣܬܟܠܘ ܫܡܘܥܐ܂ * ܡܛܠ ܕܟܪܝܬ ܡܟܬܐ ܠܡܬܚܦܝܘ܂
21 ܘܬܢܝܬܐ ܐܬܥܨܝܬ ܘܠܐ ܡܣܦܩܐ܂ * ܡܛܠ ܕܒܛܘܪܐ ܒܡܥܠܬܐ ܢܩܘܡ ܡܪܝܐ܂
ܐܝܟ ܒܥܘܡܩܐ ܕܓܒܥܘܢ ܢܪܓܙ܂ ܠܡܥܒܕ ܥܒܕܘܗܝ܂ ܢܘܟܪܝܢ ܥܒܕܘܗܝ܂
22 ܘܠܡܦܠܚ ܦܘܠܚܢܗ܂ ܢܘܟܪܝܐ ܦܘܠܚܢܗ܂ * ܘܗܫܐ ܠܐ ܬܡܝܩܘܢ܂ ܕܠܐ ܢܬܥܫܢܘܢ
ܡܪܕܘܬܟܘܢ܂ ܡܛܠ ܕܫܘܠܡܐ ܘܦܣܩܬܐ ܫܡܥܬ ܡܢ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ܂ ܥܠ
23 ܟܠܗ ܐܪܥܐ܂ * ܨܘܬܘ ܘܫܡܥܘ ܡܐܡܪܝ܂

Nam ſtercus ſuper ſtercore, & ſtercus ſuper 10
ſtercore; vomitus ſuper vomitu; & vomitus ſuper vomitu; partim hûc, partim illûc.
Nam ſermone difficili, & linguâ peregrinâ 11
alloqui *videor* hunc populum: Quoniam 12
dixi eis, Hoc eſt placitum meum, reficite
laſſos, atque hæc eſt requies: ac noluerunt
audire; Imò fuit apud eos verbum Domini 13
ſtercus ſuper ſtercore, & ſtercus ſuper ſtercore; vomitus ſuper vomitu, & vomitus ſuper vomitu; paululùm hûc, paululùm illûc:
ut retrocedentes corruerent in tergum, &
confringerentur, & irretiti caperentur. Pro- 14
pterea audite ſermonem Domini, viri irriſores, principes hujus populi qui eſt in Jeruſalem. Quia dicitis, Pepigimus fœdus cum 15
morte, & cum fovea colloquium habuimus:
extenſio inundationis vaſtantis, cùm tranſierit, non perveniet ad nos: quia collocavimus in mendacio fiduciam noſtram, & in
falſitate perfugium noſtrum: Ideò ſic dicit 16
Dominus, Ecce ego firmaturus ſum in Sion
lapidem, lapidem probatum, in angulo pretioſo, caput parietis fundamentalis: qui crediderit, non pavebit. Et redigam judicium 17
ad menſuram, & juſtitiam ad pondus; &
excutiet grando ſpem fallacem, & perfugium abripient aquæ. Fœdus veſtrum cum 18
morte negabitur; & pactum veſtrum cum
fovea, non ſubſiſtet: flagello vaſtanti, cùm
tranſibit, eritis conculcationi; Et quo tem- 19
pore trãſibit, abripiet vos. In matutino enim,
in matutino *inquam* tranſibit, in die; & in
nocte erit commotio: tantummodo intellige
auditor. Nam telam decurtavit, quin ope- 20
riat eum, & ſtamen redditum eſt anguſtum,
nec ſufficit. Nam in monte, in aditu ſtabit 21
Dominus: ceu vallis Gebeonis iraſcetur:
ad exequendum opera ſua; peregrina erunt
opera ejus: & ad patrandum facinora ſua,
inſolita erunt facinora ejus. Quare ne ridea- 22
tis, ne graviores fiant pœnæ veſtræ: ultimam enim deciſionem audivi à Domino potentiſſimo contra totam terram. Aures præ- 23
bete, & audite dicta mea.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

10 * شدة على شك انتظر * رجاء على رجاء * وايضا قليلا على قليل * لاجل شتمة الشفاه بلسان 11
12 آخر * انهم يكلمون هذا الشعب * قايلين له * هذا النياح للشارب * وهذا الانكسار * ولم
13 يريدوا ان يسمعوا * ويكون لهم قول الرب الاله شدة على شك * رجاء على رجاء * قليل
ايضا وقليل ايضا * حتى يذهبون ويسقطون الى ورايهم * ويصيحون وينكسرون ويهلكوا *
14 * من اجل هذا اسمعوا قول الرب ايها الرجال الكذبون * ورؤساء هذا الشعب الذي
15 بايروسليم * لانكم قلتم صنعنا عهدا مع الجحيم ومع الموت مواثيق * الزوبعة الواردة
16 اذا مرت لا تاتي علينا * لانا وضعنا رجانا كذبا وسترنا بالكذب * لاجل هذا هكذا يقول
الرب الاله * ها انا اضع في اساسات صهيون حجرا كثير الثمن مختارا في راس الزاوية *
17 مكرما في اساساتها * ومن يومن به لا يخزى * واضع حكما في الرجاء ورحمتي للمقادير *
18 والمتوكلون بالكذب باطلا انكم لا تمر بكم الزوبعة * ولا تنزع عهدكم مع الموت *
19 فرجاوكم الذي مع الجحيم لا يثبت * اذ مرت تكونوا لها موطيا * واذا جازت تاخذكم *
لانها بالغداة بالغداة تجوز بكم نهارا * وفي الليل يكون الرجاء الشرير * تعلموا ان تسمعوا
20 ايها المضيعون * انا لا نقدر ان نحارب * ونحن قد ضعفنا لنجتمع * مثل جبل المنافقين 21
يقوم * ويكون في وادي جاباون يغضب يصنع اعماله * اعمال مرارة * وغضبه يستعمل
22 بغريبة * ومرارته غريبة * وانتم لا تفرحوا ولا تقوا رباطاتكم * من اجل اني سمعت من
23 رب الجيوش امورا مكملة ومجزومة يصنعها على كل الارض * انصتوا واسمعوا صوتي *
اصغوا واسمعوا كلماتي *

Afflictionem ſuper afflictionem expecto, 10
*ſpem ſuper ſpem, & pauculum etiam
ſuper pauculum; Propter blaſphemiam* 11
labiorum alienâ linguâ prolatam*: Nam
alloquuntur populum iſtum, Dicentes* 12
*ei; Hæc eſt quies bibacis, cùm hæc
ſit conſternatio: & noluerunt audire.
Hic erit ſermo Domini Dei afflictio ſuper* 13
afflictionem, ſpes ſuper ſpem, breve etiam imò breviſſimum tempus*, ut cant &
cadant ſupini, vexentur, frangantur, ac
pereant. Hac de re audite ſententiam* 14
*Domini, heus viri mendaces & principes hujus populi qui eſt in Jeruſalem.
Quia dixiſtis, Pactum inivimus cum* 15
*inferno, & cum morte fœdera; turbo venturus, cùm tranſierit, non veniet ſuper nos: ſiquidem mendacium
ſtatuimus ſpem noſtram, & mendacio
protexinus nos: Propterea ſic dixit Do-* 16
*minus Deus, Ecce ego ponam in fundamentis Sionis lapidem ſummi pretii,
electum, in capite anguli, venerandum
in fundamentis ejus: & qui crediderit in eum, non erubeſcet. Et po-* 17
*nam judicium in ſpe, & miſericordiam meam ad menſuras; ut qui in
mendacio fruſtrà confidiſtis fore ut nequaquam tranſeat ſuper vos turbo,
Nec dirimat pactum veſtrum cum mor-* 18
te; ſpes veſtra quam in inferno col-
locâſtis *non ſubſiſtat: cùm advenerit*
turbo, *ſitus illi ſcabellum; Et cùm* 19
tranſierit, rapiat vos: nam in matutino, in matutino inquam *tranſibit ſuper vos, interdiu; noctu verò erit ſpes
improba. Diſcite auſcultare O miſeri.
Non enim pugnare poſſumus, & nos* 20
*debiliores jam facti ſumus quàm ut
congregemur. Ut mons impiorum ex-*
urget turbo*, & in valle Gibeonis cum* 21
*furore exercebit opera ſua, opera amariſſima; & furore ſuo utetur inſolito
modo, & amaritudo ejus erit extraordinaria. Vos itaque ne indulgeatis* 22
*lætitiæ, & ne graviora reddatis vincula veſtra: quoniam ego audivi à
Domino exercituum res definitas &
præciſas, quas facturus eſt ſuper univerſam terram. Auſcultate & audite* 23
*vocem meam, facite & acquieſcite
verbis meis.*

ישעיה: כט

,occabit & ,aperiet ? seminandum ad ,arans arabit die tota Nunquid
24 הֲכֹל הַיּוֹם יַחֲרֹשׁ הַחֹרֵשׁ לִזְרֹעַ יְפַתַּח וִישַׂדֵּד
,nigellam disperget & ?ejus *facies* adæquaverit si Nónne ? suam humum
25 אַדְמָתוֹ׃ הֲלוֹא אִם־שִׁוָּה פָנֶיהָ וְהֵפִיץ קֶצַח
, signatum hordeum & ,*princeps* triticum ponet & ,sparget cyminum &
וְכַמֹּן יִזְרֹק וְשָׂם חִטָּה שׂוֹרָה וּשְׂעֹרָה נִסְמָן
.eũ docebit ejus Deus,judicium ad illũ erudiet Et?ejus termino speltam &
26 וְכֻסֶּמֶת גְּבֻלָתוֹ׃ וְיִסְּרוֹ לַמִּשְׁפָּט אֱלֹהָיו יוֹרֶנּוּ׃
cyminum super plaustri rota & ,nigella triturabitur tribula in non Quia
27 כִּי לֹא בֶחָרוּץ יוּדַשׁ קֶצַח וְאוֹפַן עֲגָלָה עַל־כַּמֹּן
.baculo in cyminum.&,nigella excutietur virga in sed : circundabitur
יוּסָּב כִּי בַמַּטֶּה יֵחָבֶט קֶצַח וְכַמֹּן בַּשָּׁבֶט׃
:illum triturabit triturando perpetuum in non quia,comminuetur Panis
28 לֶחֶם יוּדָק כִּי לֹא לָנֶצַח אָדוֹשׁ יְדוּשֶׁנּוּ
.eum comminuet non ejus dentibus & ,ejus plaustri rotam conteret &
וְהָמַם גִּלְגַּל עֶגְלָתוֹ וּפָרָשָׁיו לֹא יְדֻקֶּנּוּ׃
, consilium mirificavit : exivit exercituum Domino *cum* à hoc Etiam
29 גַּם־זֹאת מֵעִם יְהוָה צְבָאוֹת יָצָאָה הִפְלִא עֵצָה
.*essentiam* magnificavit
הִגְדִּיל תּוּשִׁיָּה׃

CAP. XXIX. כט

,annũ super annum Addite.David mansit civitas Ariel Ariel Væ
1 הוֹי אֲרִיאֵל אֲרִיאֵל קִרְיַת חָנָה דָוִד סְפוּ שָׁנָה עַל־שָׁנָה
; luctus & ,planctus erit & , Ariel coangustavi Et.*excervicabuntur agni*
2 חַגִּים יִנְקֹפוּ׃ וַהֲצִיקוֹתִי לַאֲרִיאֵל וְהָיְתָה תַאֲנִיָּה וַאֲנִיָּה
coartabo & : te contra *pila* castrametabor Et .Ariel sicut mihi erit &
3 וְהָיְתָה לִּי כַּאֲרִיאֵל׃ וְחָנִיתִי כַדּוּר עָלָיִךְ וְצַרְתִּי
, te humiliabis Et .munitiones te contra statuam & , *constituta* te *super*
4 עָלַיִךְ מֻצָּב וַהֲקִמֹתִי עָלַיִךְ מְצֻרֹת׃ וְשָׁפַלְתְּ
erit & : tuum eloquium erit humile pulvere è & , loquêris terra de
מֵאֶרֶץ תְּדַבֵּרִי וּמֵעָפָר תִּשַּׁח אִמְרָתֵךְ וְהָיָה
.garriet , tuum eloquium pulvere à & ,tua vox terra de pythonis sicut
כְּאוֹב מֵאֶרֶץ קוֹלֵךְ וּמֵעָפָר אִמְרָתֵךְ תְּצַפְצֵף׃
gluma sicut & : tuorum *alienorum turba* tenuis pulvis sicut erit Et
5 וְהָיָה כְּאָבָק דַּק הֲמוֹן זָרָיִךְ וּכְמֹץ
cum A .subitò *momentum in* erit & , *formidabilium turbs* transiens
6 עֹבֵר הֲמוֹן עָרִיצִים וְהָיָה לְפֶתַע פִּתְאֹם׃ מֵעִם
, concussione in & , tonitruo in visitabitur exercituum Domino
יְהוָה צְבָאוֹת תִּפָּקֵד בְּרַעַם וּבְרַעַשׁ
.*comedentis* ignis flamma & ,tempestate & ,turbine : magna voce &
וְקוֹל גָּדוֹל סוּפָה וּסְעָרָה וְלַהַב אֵשׁ אוֹכֵלָה׃
gentium . omnium *turba* , nocturnæ visionis somnium sicut erit Et
7 וְהָיָה כַּחֲלוֹם חֲזוֹן לַיְלָה הֲמוֹן כָּל־הַגּוֹיִם
, *ejus munitionem* & ,eam *oppugnantes* omnes & : Ariel contra *militantium*
הַצֹּבְאִים עַל־אֲרִיאֵל וְכָל־צֹבֶיהָ וּמְצֹדָתָהּ
, esuriens *somniabit* qui sicut erit Et .eam afficientes angustiis &
8 וְהַמְּצִיקִים לָהּ׃ וְהָיָה כַּאֲשֶׁר יַחֲלֹם הָרָעֵב
quemadmodum &:ej' anima erit vacua &,expergiscetur &,*comedens* ecce &
וְהִנֵּה אוֹכֵל וְהֵקִיץ וְרֵיקָה נַפְשׁוֹ וְכַאֲשֶׁר
,lassus ecce & ,expergiscetur & ,*bibens* ecce & , sitiens *somniabit*
יַחֲלֹם הַצָּמֵא וְהִנֵּה שֹׁתֶה וְהֵקִיץ וְהִנֵּה עָיֵף
militantium , gentium omnium *turba* erit sic : *appetens* ejus anima &
וְנַפְשׁוֹ שׁוֹקֵקָה כֵּן יִהְיֶה הֲמוֹן כָּל־הַגּוֹיִם הַצֹּבְאִים
,*sunt vociferati* ,admiramini & ,estote Tardi .Sijon montem contra
9 עַל־הַר צִיּוֹן׃ הִתְמַהְמְהוּ וּתְמָהוּ הִשְׁתַּעַשְׁעוּ
.Sechar non & ,sunt moti ; vino non & sunt ebrii : *clamaverunt* &
וָשֹׁעוּ שָׁכְרוּ וְלֹא־יַיִן נָעוּ וְלֹא שֵׁכָר׃

Versio VUL. LAT.

24 Numquid totâ die arabit arans
ut serat, proscindet & sarriet
25 humum suam? Nónne cùm
adæquaverit faciem ejus, seret
gith, & cyminum sparget, &
ponet triticum per ordinem,
& hordeum, & milium, & vi-
26 ciam in finibus suis? Et eru-
diet illum in judicio: Deus suus
27 docebit illum. Non enim in
serris triturabitur gith, nec ro-
tà plaustri super cyminum cir-
cuibit: sed in virga excutietur
gith, & cyminum in baculo.
28 Panis autem comminuetur: ve-
rùm non in perpetuum tritu-
rans triturabit illum, neque
vexabit eum rota plaustri, nec
ungulis suis comminuet eum.
29 Et hoc à Dño Deo exercituum
exivit, ut mirabile faceret con-
silium, & magnificaret justitiã.

CAP. XXIX.

1 VÆ Ariel, Ariel civitas, quã
expugnavit David: additus est
annus ad annum: solennitates
2 evolutæ sunt. Et circumvalla-
bo Ariel, & erit tristis & mœ-
rens, & erit mihi quasi Ariel.
3 Et circumdabo quasi sphæram
in circuitu tuo, & jaciam con-
tra te aggerem, & munimen-
ta ponam in obsidionem tuam.
4 Humiliaberis, de terra loquê-
ris, & de humo audietur elo-
quium tuum: & erit quasi py-
thonis de terra vox tua; & de
humo eloquium tuum mussi-
5 tabit. Et erit sicut pulvis te-
nuis multitudo ventilantium
te: & sicut favilla pertransi-
ens multitudo eorum, qui con-
6 tra te prævaluerunt: Eritque
repentè confestim. A Domino
exercituum visitabitur in toni-
truo, & commotione terræ, &
voce magnâ turbinis & tem-
pestatis, & flammæ ignis de-
7 vorantis. Et erit sicut somni-
um visionis nocturnæ multitu-
do omnium gentium, quæ di-
micaverunt contra Ariel, &
omnes qui militaverunt, &
obsederunt, & prævaluerunt
8 adversùs eam. Et sicut somni-
at esuriens, et comedit, cùm
auté fuerit expergefact', vacua
est anima ejus: et sicut somniat
sitiens, et bibit, et postquàm
fuerit expergefactus, lassus ad-
huc sitit, et anima ej' vacua est:
sic erit multitudo omniũ gen-
tiũ, quæ dimicaverunt contra
9 monté Sion. Obstupescite et
admiramini, fluctuate, et vacil-
late: inebriamini, et nõ à vino:
movemini, et non ab ebrietate.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

24 Μὴ ὅλην τὴν ἡμέραν (α) ἀροτριάσει ὁ ἀρο-
τριῶν; ἢ σπόρον προετοιμάσει, πρὶν ἐρ-
15 γάσασθαι τὴν γῆν; (β) Οὐχ ὅταν ὁμαλίσῃ τὸ
πρόσωπον αὐτῆς, τότε σπείρει μικρὸν με-
λάνθιον (γ) ἢ κύμινον, καὶ πάλιν σπείρει πυ-
ρὸν, καὶ κριθὴν, (δ) καὶ κέγχρον, καὶ ζέαν ἐν
16 τοῖς ὁρίοις σου; Καὶ παιδευθήσῃ κρίματι
27 Θεοῦ σου, καὶ εὐφρανθήσῃ. Οὐ γὰρ μετὰ σκλη-
ρότητος καθαίρεται τὸ μελάνθιον, οὐδὲ τρο-
χὸς ἁμάξης περιάξει ἐπὶ τὸ κύμινον· ἀλλὰ
ῥάβδῳ (ε) τινάσσεται τὸ μελάνθιον, τὸ δὲ
28 κύμινον Μετὰ ἄρτου βρωθήσεται. Οὐ γὰρ εἰς τὸν
αἰῶνα (ζ) ἐγώ εἰμι ὑμῖν ὀργισθήσομαι, οὐδὲ
19 φωνὴ τῆς πικρίας μου καταπατήσει ὑμᾶς. Καὶ
ταῦτα παρὰ κυρίου Σαβαὼθ ἐξῆλθε τὰ
τέρατα· βουλεύσασθε, ὑψώσατε ματαίαν
παράκλησιν.

Nunquid totâ die arabit, qui arat? 24
aut sementem præparabit, ante-
quàm operetur terram? Nónne, 25
cùm adæquaverit faciem ej' tunc
seminat parvum (o) melanthium,
aut cyminum, & rursus seminat
triticum, & hordeum, & milium,
& speltam in finibus tuis? Et eru- 26
dieris judicio Dei tui, & lætabe-
ris. Non enim cum duritia munda- 27
tur melanthium, neque rota plau-
stri circuit super cyminum: sed vir-
gâ excutitur melanthium, cymi-
num autem Cum pane comedetur. 28
Neque enim in sempiternum equi-
dem irascar vobis: nec vox ama-
ritudinis meæ conculcabit vos. Et 29
hæc à Domino Sabaoth sunt egres-
sa portenta. Inite consilium: exal-
tate vanam consolationem.

MS.A. (α) μέλλει ὁ ἀροτριῶν ἀροτριᾶν; (β) Καὶ ὅταν ὁμαλίσῃ αὐτῆς τὸ πρόσωπον, πρῶτον σπείρει (γ) καὶ κύμινον, καὶ πάλιν πυρὸν, (δ) καὶ ζέαν ἐν τοῖς (ε) ἐκτινάσσεται (ζ) ἐγὼ ὑμῖν

ΚΕΦ. κθ'.

1 ΟΥαὶ (α) Ἀριὴλ πόλις, ἣν ἐπολέμησε
Δαυίδ. Συναγάγετε (β) γεννήματα ἐνιαυτὸν
(γ) ἐπὶ ἐνιαυτὸν, (ϛ) φάγεσθε, φάγεσθε γὰρ σὺν
2 Μωάβ, Ἐκθλίψω γὰρ Ἀριὴλ· καὶ ἔσται αὐτῆς ἡ ἰ-
3 σχὺς καὶ ὁ πλοῦτος ἐμοί· Καὶ κυκλώσω ὡς Δαυ-
ὶδ ἐπὶ σὲ, καὶ βαλῶ περὶ σὲ χάρακα, καὶ θήσω
4 (δ) περὶ σὲ πύργους, Καὶ ταπεινωθήσονται
(ε) εἰς τὴν γῆν οἱ λόγοι σου, καὶ εἰς τὴν γῆν οἱ
λόγοι σου δύσονται· καὶ (ζ) ἔσονται ὡς οἱ
φωνοῦντες ἐκ τῆς γῆς ἡ φωνή σου, καὶ πρὸς τὸ
5 ἔδαφος ἡ φωνή σου ἀσθενήσει. Καὶ ἔσται ὡς
κονιορτὸς ἀπὸ τροχοῦ ὁ πλοῦτος τῶν ἀσεβῶν,
καὶ ὡς χνοῦς φερόμενος (η) τὸ πλῆθος τῶν
καταδυναστευόντων σε, καὶ ἔσται ὡς στιγμὴ
6 Παραχρῆμα παρὰ κυρίου Σαβαώθ. ἐπισκο-
πὴ γὰρ ἔσται μετὰ (θ) βροντῆς καὶ σεισμοῦ καὶ φω-
νῆς μεγάλης, καταιγὶς φερομένη, καὶ φλὸξ
7 πυρὸς κατεσθίουσα. Καὶ ἔσται ὡς (ι) ἐνυπνι-
αζόμενος καθ' ὕπνους νυκτὸς, ὁ πλοῦτος ἁ-
πάντων τῶν ἐθνῶν, ὅσοι ἐπεστράτευσαν (κ)
ἐπὶ Ἀριὴλ, καὶ πάντες οἱ (λ) στρατευόμενοι
ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, καὶ πάντες οἱ συνηγμένοι
8 ἐπ' αὐτὴν, (μ) καὶ οἱ θλίβοντες αὐτήν. Καὶ
ὡς οἱ ἐν τῷ ὕπνῳ πίνοντες καὶ ἔσθοντες, καὶ
ἐξαναστάντων, μάταιον (ν) τὸ ἐνύπνιον· καὶ
ὃν τρόπον ἐνυπνιάζεται ὁ διψῶν ὡς ὁ πίνων,
καὶ ἐξαναστὰς ἔτι διψᾷ, ἡ δὲ ψυχὴ αὐτοῦ εἰς
κενὸν ἤλπισεν· οὕτως ἔσται ὁ πλοῦτος (ξ) τῶν
ἐθνῶν πάντων, ὅσοι ἐπεστράτευσαν (ο) ἐπὶ
9 τὸ ὄρος Σιών. Ἐκλύθητε καὶ ἔκστητε, καὶ
κραιπαλήσατε οὐκ ἀπὸ σίκερα (π) οὐδὲ ἀπὸ
οἴνου,

CAP. XXIX.

VÆ Ariel (a) civitas, quam 1
expugnavit David. Congregate ge-
nimina, annum super annum: (b)
comedite: comedetis enim cum
Moab: Coangustabo enim Ariel: & 2
erit fortitudo illius, et divitiæ mi-
hi: Et circundabo, sicut David, su- 3
per te: & mittam vallum in cir-
cuitu tuo: & ponam per gyrum tuî
turres: Et humiliabuntur in ter- 4
ram sermones tui: & in terram
occident verba tua. Et (c) erunt,
sicut loquentium de terra, vox tua:
& ad pavimentum vox tua infir-
mabitur. Et erunt sicut pulvis de 5
rota, divitiæ impiorum; & sicut
lanugo, quæ rapitur, multitudo op-
primentium te: eritque, quasi pun-
ctus, Repentè à Domino Sabaoth. 6
Visitatio enim erit cum tonitru, &
commotione, & voce magnâ, tem-
pestas ruens, & flamma ignis de-
vorans. Et erunt, sicut somnians 7
per somnos noctis, divitiæ omnium
gentium, quæ militaverunt contra
Ariel, & omnes, qui pugnabant
contra Hierusalem, & universi,
qui congregati sunt super eam, &
qui affligebant eam. Et sicut qui in 8
somno (d) bibunt, & comedunt,
cúmque surrexerint, vanum est
somnium: & sicut somniat, qui
sitit, quasi bibens, & cùm surre-
xerit, adhuc sitit, & anima ejus
frustrà speravit: sic erunt divitiæ
omnium gentium, quicunque mi-
litaverunt contra montem Sion.
Dissolvimini, & obstupescite, & 9
crapulamini non à sicera, neque à
vino:

MS.A. (α) πόλις Ἀριὴλ ἣν Δαυὶδ ἐπολέμησεν. (β) γεννήματα (γ) ἐπ' (ϛ) φάγεσθε γὰρ σὺν Μωάβ (δ) ἐπὶ σὲ (ε) οἱ λόγοι σου εἰς τὴν γῆν, καὶ εἰς (ζ) ἔσται (η) καὶ ἔσται ὡς στιγμὴ (θ) κραυγῆς (ι) ὁ ἐνυπνιαζόμενος ἐνύπνιον ὁ * πλοῦτος τῶν ἐθνῶν πάντων, (κ) ἐπὶ Ἰσραὴλ, (λ) στρατευσάμενοι (μ) καὶ θλίβοντες αὐτήν. Καὶ ἔσονται ὡς οἱ ἐν ὕπνῳ (ν) αὐτῶν τὸ ἐνύπνιον· (ξ) πάντων τῶν ἐθνῶν, (ο) ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐπὶ τὸ (π) οὐδ'

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

24 בְּכָל עִדָּן מִתְנַבַּן נְבִיַּיָא לְאַלָּפָא מָאִים יִתְפַּתְּחָן אוּדְנֵי חַיָּבַיָּא וִיקַבְּלוּן אוּלְפָּן : הֲלָא אִם
25 יְשַׁוּוֹן בֵּית יִשְׂרָאֵל אַפֵּיהוֹן לְמֶעְבַּד אוֹרַיְתָא וִיתוּב וִיכְנֵישׁ יַתְהוֹן מִבֵּינֵי עַמְמַיָּא דְאִנּוּן
מְבַדְּרִין בֵּינֵיהוֹן הָא כְקִצְחָא וְכִכְמוֹנָא דְמוֹדְרִיק וִיקָרֵיב יַתְהוֹן זַרְעִין לְשִׁבְטֵיהוֹן הָא כְזַרְעֵי
26 חִטִּין עַל בַּיְיר וְסַעֲרִין עַל סוֹסְנִין וְכוּנָתִין עַל תְּחוּמִין : הָא כָל אִלֵּין אוּלְפַּן דְּדִין דִּיְדְעוּן
27 דִּי אֱלָהָא מְחַוֵּי לְהוֹן אוֹרְחָא דְתַקְנָא דִּי יְהָכוּן בַּהּ : אֲרֵי לָא בְמוֹרְגֵי בַרְזְלָא מַדְרְכִין
קִצְחָא וְגַלְגְּלֵי עֶגְלָא עַל כַּמּוֹנָא מְחַזְּרִין אֲרֵי בְחוּטְרָא חָבְטִין קִצְחָא וְכַמּוֹנָא בְמַחְבּוֹטָא :
28 יַת עִבּוּרָא מַדְרְכִין אַף יָתֵיהּ אֲרֵי לָא לְעָלְמָא אַדְרָכָא יַדְרְכוּנֵיהּ וּמְבַלְבֵּל בְּגַלְגְּלֵי עֶגְלְתֵיהּ
29 וּמַפְרִישׁ יַת עִבּוּרָא וּמַפְרַח יַת דּוּקָא : אַף דָּא מִן קֳדָם יְיָ צְבָאוֹת נַפְקָא דְאַתְקִין
עָלְמָא בְמַחְשְׁבַת דַּעְתֵּיהּ רַבְּתָא אַסְגֵּי עוֹבָדֵי בְרֵאשִׁית בְּסַגִּי חוּכְמְתֵיהּ :

כט

1 וַי מַדְבְּחָא מַדְבְּחָא דִּבְנֵי בְקַרְתָּא דִּי שְׁרָא בַהּ דָּוִד מִן קֳדָם כְּנִישַׁת מַשְׁרְיָן דְּמִתְכַּנְשִׁין
2 עֲלַהּ שְׁנָא בִשְׁנָא בְּדַחֲגִין יִבְטְלוּן : וְאָעִיק לְקַרְתָּא דְּמַדְבְּחָא בַהּ וּתְהֵי צַדְיָא וְרֵיקַנְיָא
וּתְהֵי מַקְפָּא קֳדָמַי דַּם קְטִילִין כְּאַקְּפוּת מַדְבְּחָא דַּם נִכְסַת קוּדְשַׁיָּא בְּיוֹמָא דְחַגָּא סְחוֹר
3 סְחוֹר : וְאַשְׁרֵי עֲלַיִךְ מַשְׁרְיָן וְאֶבְנֵי עֲלַיִךְ כַּרְקוֹם וְאֶצְבּוֹר עֲלַיִךְ מְלִיתָא : וְתִמְאֲכִין מֵאַרְעָא 4
5 תְּמַלְּלִין וּמֵעַפְרָא יִנְצְפָן מִלַּיִךְ וִיהֵי כְּאוֹב מֵאַרְעָא קָלִיךְ וּמֵעַפְרָא מִלַּיִךְ יִנְצְפָן : וִיהֵי כְּאָבַק
6 דְּקִיק הֲמוֹן מְבַדְּרַיִךְ וּכְמוֹץ דְּעָדֵי אִתְרְגוֹשַׁת תַּקִּיפִין וִיהֵי בִתְכֵיף אִתְרְגוֹשָׁא : מִן קֳדָם
7 יְיָ צְבָאוֹת תִּתְפַּקֵּיד בְּרַעַם וּבְזִיעַ וְקָל סַגִּי בְעַלְעוֹל וּבְרוּחַ וְשַׁלְהוֹבֵי אֶשָּׁא דִמְשֵׁיצְיָא : וִיהֵי
כְּמֶחְלַם הִרְהוּר לֵילֵי הֲמוֹן כָּל עַמְמַיָּא דְּמִתְכַּנְשִׁין עַל קַרְתָּא דְּמַדְבְּחָא בַהּ וְכָל
8 מַשְׁרְיָתְהוֹן וְחֵילֵיהוֹן וְדִמְעִיקִין לְהוֹן : וִיהֵי כְּמָא דִּי יַחֲלוֹם כַּפְנָא וְהָא אָכֵיל וּמִתְּעַר
וַחֲסִירָא נַפְשֵׁיהּ וּכְמָה דְיַחֲלוֹם צַחְיָא וְהָא שָׁתֵי וּמִתְּעַר וְהָא מְשַׁלְהֵי וְנַפְשֵׁיהּ מְשַׁלְהְיָא
9 כֵּן יְהֵי הֲמוֹן כָּל עַמְמַיָּא דְּמִתְכַּנְשִׁין עַל טוּרָא דְצִיּוֹן : אִתְּרְפוּ שְׁהוּ אִשְׁתַּנִּישׁוּ אִדְוֹמְמוּ
וְאִשְׁתַּמְּמוּ רְווּ וְלָא מִן חֲמַר טְעוּ וְלָא מִן עַתִּיק :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

In omni tempore prophetant prophetæ ad docendum, si fortè aperiantur 24
aures peccatorum, & suscipiant disciplinam. Utique si posuerint domus 25
Israel faciem suam ut operentur secundùm legem; *convertet* & *congregabit*
eos de medio populorũ in quibus dispersi sunt; sicut gith, & sicut cyminũ
quæ dispersa sunt: & applicabit eos per cognationes tribuũ suarũ, sicut *se-*
minatur triticum in *agro inculto*, & hordeũ ad signa, & viciæ ad terminos.
Ecce omnia hæc sunt doctrina *judicii*, quam scire debent, quib' Deus an- 26
nuntiat viam rectam in qua ambulent. Non enim in ferreo tribulo teritur 27
gith, nec rotæ plaustri circunducuntur super cyminũ, sed in virga excuti-
tur gith, & cyminum baculo excussorio. Frumentũ trituratur & ipsum qui- 28
dem; nec tamen in æternũ triturantes triturabunt illud, sed permiscetur
rotis plaustri sui: & [*triturans*] separabit frumentũ, & ventilabit stipu-
las. Hoc quoque à facie Dñi exercituũ exivit, qui aptavit seculum in cogi- 29
tatione scientiæ suæ magnæ; multiplicavit opera in principio in multitu-
dine sapientiæ suæ.

CAP. XXIX.

VÆ altare, altare quod constructum est in civitate in qua mansit Da- 1
vid, propter congregationem exercituum, qui congregantur in ea
per singulos annos: solemnitates abolebuntur. Et tribulabo civitatem 2
in qua est altare, & erit deserta & vacua; & erit coram me circundata
sanguine occisorum, sicut circundatur altare sanguine victimarum san-
ctificatarum in die solemnitatis per circuitum. Et castrametari faciam 3
contra te castra: & construam super te machinam, & congregabo contra
te aggerem. Et humiliaberis, de terra loquêris, & de pulvere garriet elo- 4
quium tuum; & erit quasi pythonis de terra vox tua, & de pulvere verba
tua mussitabunt. Et erit sicut favilla tenuis multitudo dispergentium te; & 5
sicut stipula quæ transit, tumultus fortium; & erit repentè tumultus. A fa- 6
cie Dñi exercituum præcipietur in tonitruo, & in commotione, & voce
grandi, in tempestate & vento, & flamma ignis consumentis. Et erit quasi 7
somnium cogitationis nocturnæ, multitudo omnium populorum, qui con-
gregati sunt contra civitatem, in qua est altare; & omnia castra eorum, &
exercitus eorum, & qui tribulant *eos*. Et erit sicut somniat esuriens, & ecce 8
comedit; & cùm fuerit expergefactus, vacua est anima ejus; & sicut somniat
sitiens, & ecce bibit; & expergiscitur, & ecce lassus est, anima quoque ejus
lassa est: sic erit multitudo omnium populorum, qui congregantur contra
montem Sion. Obstupescite, admiramini, terremini, *cogitabundi estote* & admiramini; inebriamini, & non à vino; aberrate, & non à sicera. 9

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܕܠܡܐ ܝܘܡܐ ܟܠܗ ܢܝܪܐ ܕܒܪ ܐܟܪܐ ܠܡܙܪܥ. ܘܡܪܝܡ ܘܡܟܝܟ ܐܪܥܗ. * ܠܐ ܗܘܐ ܡܐ ܕܐܫܘܝ 24 25
ܐܦܝܗ̈. ܡܙܪܥ ܫܘܢܝܙܐ ܘܟܡܘܢܐ ܙܪܥ. ܘܙܪܥ ܚܛܐ ܘܣܥܪܐ ܘܕܘܚܢܐ ܠܬܚܘܡܘܗܝ.
* ܢܪܕܝܘܗܝ ܒܕܝܢܐ ܐܠܗܐ ܘܢܫܒܚܘܢܗ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܐ ܒܕܝܫܐ ܕܬܘܪܐ ܡܬܕܪܫ ܫܘܢܝܙܐ. 26 27
ܘܐܦܠܐ ܓܝܓܠܐ ܕܥܓܠܬܐ ܥܠ ܟܡܘܢܐ ܡܬܟܪܟ. ܡܛܠ ܕܒܫܒܛܐ ܡܬܚܒܛ ܫܘܢܝܙܐ ܘܟܡܘܢܐ
ܒܡܥܕܪܐ. * ܠܚܡܐ ܕܝܠܢ ܡܬܕܪܫ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܐ ܠܙܟܘܬܐ ܕܫܝܢ ܠܗ ܕܪܫܝܢܢ. 28
ܘܣܘܓܐܐ ܕܓܝܓܠܐ ܕܥܓܠܬܐ ܘܦܪܣܬܗܘܢ ܕܣܘܣܘܬܐ ܢܕܘܫܘܢܗ. * ܘܐܦ ܗܕܐ ܡܢ 29
ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܢܦܩܬ. ܬܕܡܘܪܬܐ ܕܒܪܢܫܐ ܐܘܪܒܬ ܬܪܣܝܬܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܛ *

* ܘܝ ܐܪܝܐܝܠ ܐܪܝܐܝܠ ܡܕܝܢܬܐ ܕܫܪܐ ܕܘܝܕ. ܐܘܣܦ ܫܢܬܐ ܥܠ ܫܢܬܐ. ܥܐܕܐ ܢܬܥܒܕܘܢ. 1
* ܘܐܥܝܩ ܠܐܪܝܐܝܠ. ܘܬܗܘܐ ܬܘܢܚܬܐ ܘܐܘܠܝܬܐ. ܘܬܗܘܐ ܐܝܟ ܐܪܝܐܝܠ. * ܘܐܫܪܐ ܐܝܟ ܟܘܪܐ 2 3
ܥܠܝܟܝ. ܘܐܚܘܪܟܝ ܒܩܛܪܩܘܡܐ. ܘܐܩܝܡ ܥܠܝܟܝ ܡܛܪܬܐ. ܘܬܬܡܟܟܝܢ. * ܘܡܢ ܥܦܪܐ 4
ܬܡܠܠܝܢ. ܘܡܢ ܥܦܪܐ ܢܥܢܘܢ ܡܠܝܟܝ. ܘܢܫܬܡܥ ܩܠܟܝ ܡܢ ܐܪܥܐ ܐܝܟ ܐܘܒܐ. ܘܡܢ
ܥܦܪܐ ܢܨܦܨܦܘܢ ܡܠܝܟܝ. * ܘܢܗܘܐ ܐܝܟ ܐܒܩܐ ܕܩܛܝܢܐ. ܗܡܘܢܐ ܕܕܝܫܝܟܝ. ܘܐܝܟ ܥܘܪܐ ܕܥܒܪ 5
ܗܡܘܢܐ ܕܥܫܝܢܝܟܝ. * ܘܢܗܘܐ ܡܢ ܫܠܝ ܠܫܠܝ ܡܢ ܠܘܬ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܬܬܦܩܕܝ 6
ܒܪܥܡܐ. ܘܒܙܘܥܐ ܘܒܩܠܐ ܪܒܐ. ܘܒܥܠܥܠܐ ܘܒܓܠܓܠܐ. ܘܒܫܠܗܒܝܬܐ ܕܢܘܪܐ ܕܐܟܠܐ.
* ܘܢܗܘܐ ܐܝܟ ܚܠܡܐ ܒܚܙܘܐ ܕܠܠܝܐ. ܗܡܘܢܐ ܕܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܡܬܚܦܛܝܢ ܥܠ ܨܗܝܘܢ. 7
ܘܟܠܗ ܚܝܠܐ ܘܟܢܫܐ ܕܡܥܝܩܝܢ ܠܗ. * ܘܢܗܘܐ ܐܝܟ ܟܦܢܐ ܕܚܙܐ ܒܚܠܡܗ ܕܐܟܠ.. ܘܡܐ 8
ܕܐܬܬܥܝܪ: ܡܫܬܪܚ. ܘܣܦܝܩܐ ܢܦܫܗ. ܘܐܝܟ ܨܗܝܐ ܕܚܙܐ ܒܚܠܡܗ ܕܫܬܐ.. ܘܡܐ ܕܐܬܬܥܝܪ:
ܡܫܬܪܚ. ܘܣܦܝܩܐ ܢܦܫܗ. ܗܟܢܐ ܢܗܘܐ ܗܡܘܢܐ ܕܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܡܬܚܦܛܝܢ ܥܠ ܛܘܪܐ
ܕܨܗܝܘܢ. * ܐܬܕܡܪܘ. ܘܐܬܗܪܘ. ܘܐܫܬܓܫܘ ܘܐܬܟܡܪܘ ܕܪܘܝܬܘܢ. ܠܐ ܡܢ ܚܡܪܐ. ܘܬܘܝܢܬܘܢ. ܠܐ ܡܢ ܫܟܪܐ. 9

Num totâ die *jugum* ducit arator ad ſerendû? 24
elevat ac deprimit tellurem ſuam? An non 25
poſtquàm æquavit ſolum ejus, ſpargit aniſum,
an cyminum ſerit; vel frumentum, aut hordeum,
aut panicum jacit in terminos ejus? Erudiet 26
illum in judicio Deus, tamen laudabit eum.
Neque enim *taurorum* conculcatione trituratur 27
aniſum, neq; circunvolvitur plauſtrû
ſuper cyminum: ſed baculo excutitur aniſum,
& cyminum ſtimulo. Frumentum trituratur 28
in uſum noſtrum: neque enim *quaſi* ad victoriam
triturando trituramus illud, aut multitudine
rotarum plauſtrorum & ungulis conterunt
illud. Etiam hoc à Domino potenti prodiit: 29
mira *hominis* induſtria auxit alimentum.

CAP. XXIX.

HEu Ariel Ariel civitas quam inhabitavit 1
David, adjice annum ad annum, ſolennitates
celebrentur. Equidem vexabo Arielem ita ut 2
ſit gemitus, & ululatus, fiátque ſicut Ariel.
Nam caſtrametabor tanquàm ſphæra adverſùm 3
te, palis anguſtabo te, & excubias contra
te erigam: adeóque dejiciêris, Ut è pulvere 4
loquaris, è pulvere reſonent verba tua, vox
tua audietur è terra ſicut pythonis, & è pulvere
pipiant verba tua. Erit enim ceu pulvis 5
tenuiſſimus multitudo conculcantium te, &
velut gluma tranſiens, multitudo robuſtorum
tuorum. Et ex improviſo mox à Domino potenti 6
viſitaberis terræmotibus, tonitruis, ingenti
fragore, fulgure, turbine, & flammâ ignis
comburentis. Eritq; velut ſomnium in viſione 7
nocturna, multitudo omnium gentium quæ
inſoleſcent in Sionem, omniúmque exercituum
& turbarum quæ divexant eam. Et qualis 8
eſt famelicus qui ſomniat ſe comedere,
cùm autem evigilat, languidus eſt, & vacua
anima ejus: vel qualis eſt ſitibundus qui in
ſomno ſibi videtur bibere, cûm tamen evigilat,
languidus eſt, & vacua anima ejus: talis
erit multitudo cunctarum gentium inſoleſcentium
in montem Sionem. Admiramini & 9
obſtupeſcite, conturbamini & ſtupete qui ebrii
eſtis, ſed non vino, & qui vacillatis, ſed
non ſicerâ:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

24 25 * هل يستانف الحراث ان يحرث النهار كله * او يبذر من قبل ان يهيي الارض * اليس
اذا مهد وجهها حينيذ يزرع سونيزا قليلا او كمونا * وايضا يزرع برا وشعيرا وسوفان في
26 27 حدودك * وتاديبين بحكم الهك وتفرحين * لانه ليس بصعوبة ينقا السونيز * ولا
يكر العجلة تدور على الكمون * لكن بالعصا ينفض السونيز * والكمون مع
28 الخبز يوكل * لانه ليس الى الابد انا اغضب عليكم * ولا صوت مرارتي يدوسكم *
29 * وهذه الايات من قبل رب الجيوش برزت * استوروا * ارفعوا عزا باطلا *
* الفصل التاسع والعشرون *
1 * ويل مدينة اريئيل التي حاربها داود *
2 اجمعوا الغلات سنة لسنة * لانكم تاكلوها مع مواب * لاني اضايق اريئيل * ويصير
3 قوتها وغناها لي * واحيط بك مثل داود * والقي عليك سياجا * واضع عليك بروجا *
4 * ويذل اقوالك الى الارض * والى الارض اقوالك يغوصون * ويصير صوتك مثل الذين
5 يصوتون من الارض * ويضعف صوتك الى التراب * ويكون غنى المنافقين مثل غبار
6 منتثر * ومثل الهباء المحمول * ويكون مثل دقيقة للوقت * من قبل رب الجيوش * لان
التعهد يكون مع رعد وزلزلة وصوت عظيم * عاصف مهول * ولهيب نار ياكل *
7 * ويكون مثل الذي يحلم في المنام * غنا الامم جميعها الذين جيشوا على اسرائيل * وجميع
8 المجيشين على ايروسليم * وجميع المجتمعين عليها ومضايقيها * ويكون مثل الذين يحلمون في
المنام انهم يشربون وياكلون * واذ يقومون منامهم باطل * وعلى نحو ما يحلم العطشان انه يشرب *
9 ويقوم وهو بعطشه ايضا ونفسه ترجت باطلا * هكذا يكون غنا جميع الامم * ايها الذين
عسكروا على ايروسليم وعلى جبل صهيون * احتيروا وتذهلوا وسكرتم ليس من مسكر ولا من خمر *

Nunquid agricola renuit arare totâ 24
die? an verò ſemen jacit priuſquam
tellurem diſponat? Nonne cùm æqua- 25
vit ſuperficiem ejus, tunc ſerit parum
aniſi nigri *vel cymini? Imò ſeret frumentum;*
hordeum, & ſpeltam in terminis
tuis, Et erudieris in judicio Dei 26
tui, & gaudebis: Non enim cum difficultate 27
purgatur aniſum, neque rota
plauſtri ſuper cyminum volvitur, ſed
baculo excutitur aniſum, & cyminum
unà cum pane comeditur. Neque enim 28
in perpetuum iraſcar vobis, neque vox
amaritudinis meæ conculcabit vos. Hæc 29
ſigna à Domino exercituum prodiêre:
conſiliû capite, tollite faſtum inanem.

CAP. XXIX.

VÆ ubi Arieli quam expugnavit 1
David: cogite annonam ab anno in annum;
quia comeſturi eſtis eam cum
Moabo. Nam anguſtaturus ſum Arie- 2
lem, & robur ac divitiæ ejus meæ erunt:
obſidebo te, ut fecit *David, Jaciam* 3
circum te ſeptum, & erigam adverſùs
te propugnacula: Adeo ut humilien- 4
tur ſermones tui ad terram uſque, &
in terram ſermones tui abſtrudantur,
& fiat vox tua ſicut eorum qui clamitant
è terra, & infirmetur vox tua ad
pulverem uſque. Divitiæ impiorum ſint 5
veluti pulvis diſperſus, & veluti gluma
aſportata: Sintq; veluti momentum tem- 6
poris, ex imperio Domini exercituum. Erit
enim hæc viſitatio conjuncta cû tonitruis,
terræmotu, ingenti fragore, turbine
horrendo, & flammâ ignis devorante.
Et ſicut ii qui ſomniat inter dormien- 7
dum, erunt divitiæ cunctarû gentiû quæ
caſtra poſuerint adverſùs Iſraelem,
& omniû acies inſtruentium contra Jeruſalem,
& omniû ſtipatorum adverſùs
eam, & obſidentiû illâ. Erunt inquam 8
velut ii qui inter dormiendum ſomniant
ſe bibere & comedere, cùm autem expergiſcuntur,
ſomnium ſuum falſum eſſe
experiuntur; *vel tanquam ſiticuloſus*
qui ſomniat ſe bibere, tamen evigilat
ſuâ ſiti adhuc laborans, & cum animo
vanâ ſpe lactato: tales erunt divitiæ
cunctarum gentium. O qui acies inſtru- 9
xiſtis contra Jeruſalem & contra montem
Sion, admiratione atq; ſtupore percellemini,
& ebrii eritis, non quidem
potu *inebriante neque vino:*

ישעיה : כט

obſtruxit & , ſoporis ſpiritum Dominus vos ſuper miſcuit Quoniam
10 כִּֽי־נָסַךְ עֲלֵיכֶם יְהוָה רוּחַ תַּרְדֵּמָה וַיְעַצֵּם אֶת־
operuit videntes , veſtra capita & , prophetas : veſtros oculos
עֵינֵיכֶם אֶת־הַנְּבִיאִים וְאֶת־רָאשֵׁיכֶם הַחֹזִים כִּסָּה׃
, ſignati libri verba ſicut , omnium viſio vobis erit Et
11 וַתְּהִי לָכֶם חָזוּת הַכֹּל כְּדִבְרֵי הַסֵּפֶר הֶחָתוּם
nunc Lege : dicendo , librum ſcientem ad eum dabunt quem
אֲשֶׁר־יִתְּנוּ אֹתוֹ אֶל־יוֹדֵעַ הַסֵּפֶר לֵאמֹר קְרָא־נָא
dabitur Et ipſe ſignatus quia , potero non , dicet & : iſtum
12 זֶה וְאָמַר לֹא אוּכַל כִּי חָתוּם הוּא׃ וְנִתַּן
nunc Lege : dicendo librum ſcivit non qui ſuper liber
הַסֵּפֶר עַל אֲשֶׁר לֹא־יָדַע סֵפֶר לֵאמֹר קְרָא־נָא
quòd eo Pro , Dominus dixit Et librum novi non , dicet & : iſtum
13 זֶה וְאָמַר לֹא יָדַעְתִּי סֵפֶר׃ וַיֹּאמֶר אֲדֹנָי יַעַן כִּי
, me honoraverunt ſuis labiis in & , ſuo ore in iſte populus appropinquavit
נִגַּשׁ הָעָם הַזֶּה בְּפִיו וּבִשְׂפָתָיו כִּבְּדוּנִי
mandatum , me eorum timor fuit & : me à ſe elongavit ejus cor &
וְלִבּוֹ רִחַק מִמֶּנִּי וַתְּהִי יִרְאָתָם אֹתִי מִצְוַת
cum mirificandum ad addens ego ecce Ideo . edoctum virorum
14 אֲנָשִׁים מְלֻמָּדָה׃ לָכֵן הִנְנִי יוֹסִף לְהַפְלִיא אֶת־
, ejus ſapientium ſapientia peribit & : miraculum & , mirabile iſto populo
הָעָם־הַזֶּה הַפְלֵא וָפֶלֶא וְאָבְדָה חָכְמַת חֲכָמָיו
profundantibus Væ . ſe abſcondet ejus intelligentium intelligentia &
15 וּבִינַת נְבֹנָיו תִּסְתַּתָּר׃ הוֹי הַמַּעֲמִיקִים
, eorum opera tenebroſitate in ſunt & : conſilium abſcondendum ad Domino à
מֵיהוָה לַסְתִּר עֵצָה וְהָיָה בְמַחְשָׁךְ מַעֲשֵׂיהֶם
veſtra Subverſio ? nos cognoſcens quis & , nos videns Quis : dixerunt &
16 וַיֹּאמְרוּ מִי רֹאֵנוּ וּמִי יוֹדְעֵנוּ׃ הַפְכְּכֶם
: ſuo factori opus dicet Quia . reputabitur figuli lutum ſicut ſi
אִם־כְּחֹמֶר הַיֹּצֵר יֵחָשֵׁב כִּי־יֹאמַר מַעֲשֶׂה לְעֹשֵׂהוּ
Nónne ? intellexit Non : ſuo fictori dixit figmentum & ? me fecit Non
17 לֹא עָשָׂנִי וְיֵצֶר אָמַר לְיֹצְרוֹ לֹא הֵבִין׃ הֲלוֹא־
Charmel & : Charmel in Lebanon convertetur & , puſillum parum adhuc
עוֹד מְעַט מִזְעָר וְשָׁב לְבָנוֹן לַכַּרְמֶל וְהַכַּרְמֶל
ſurdi illa die in audient Et ? reputabitur ſylvam in
18 לַיַּעַר יֵחָשֵׁב׃ וְשָׁמְעוּ בַיּוֹם־הַהוּא הַחֵרְשִׁים
. videbunt cæcorum oculi tenebroſitate de & caligine de & , libri verba
דִּבְרֵי־סֵפֶר וּמֵאֹפֶל וּמֵחֹשֶׁךְ עֵינֵי עִוְרִים תִּרְאֶינָה׃
Sancto in hominum mendici & : lætitiam Domino in mites addent Et
19 וְיָסְפוּ עֲנָוִים בַּיהוָה שִׂמְחָה וְאֶבְיוֹנֵי אָדָם בִּקְדוֹשׁ
, illuſor defecerit & , formidabilis defecerit Cùm . exultabunt Iſrael
20 יִשְׂרָאֵל יָגִילוּ׃ כִּי־אָפֵס עָרִיץ וְכָלָה לֵץ
hominem facientes Peccare . iniquitati invigilantes omnes ſuccidentur &
21 וְנִכְרְתוּ כָּל־שֹׁקְדֵי אָוֶן׃ מַחֲטִיאֵי אָדָם
fecerunt declinare & : tendent laqueos porta in increpanti & , verbo in
בְּדָבָר וְלַמּוֹכִיחַ בַּשַּׁעַר יְקֹשׁוּן וַיַּטּוּ
domum ad Dominus dixit ſic Idcirco . juſtum inanitate in
22 בַתֹּהוּ צַדִּיק׃ לָכֵן כֹּה־אָמַר יְהוָה אֶל־בֵּית
afficietur pudore tunc Non : Abraham redemit qui , Jahacob
יַעֲקֹב אֲשֶׁר פָּדָה אֶת־אַבְרָהָם לֹא־עַתָּה יֵבוֹשׁ
ipſum videndo in Quia . albeſcent ejus facies tunc non & , Jahacob
23 יַעֲקֹב וְלֹא עַתָּה פָּנָיו יֶחֱוָרוּ׃ כִּי בִרְאֹתוֹ
ſanctificabunt , ejus interiori in mearum manuum opus , ſuos natos
יְלָדָיו מַעֲשֵׂה יָדַי בְּקִרְבּוֹ יַקְדִּישׁוּ
Iſrael Deum & , Jahacob ſanctum ſanctificabunt & : meũ nomen
שְׁמִי וְהִקְדִּישׁוּ אֶת־קְדוֹשׁ יַעֲקֹב וְאֶת־אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל
. formidabunt
יַעֲרִיצוּ׃

Verſio VUGL. LAT.

10 Quoniam miſcuit vobis Dñs
ſpiritũ ſoporis, claudet oculos
veſtros, prophetas & principes
veſtros, qui vident viſiones,
11 operiet. Et erit vobis
viſio omnium ſicut verba libri
ſignati, quem cùm dederint
ſcienti literas, dicent; Lege
iſtum: & reſpondebit; Non
12 poſſum, ſignatus eſt enim. Et
dabitur liber neſcienti literas,
dicetúrque ei; Lege: & reſpondebit;
13 Neſcio literas. Et
dixit Dominus; Eò quòd appropinquat
populus iſte ore
ſuo, & labiis ſuis glorificat
me, cor autem ejus longè eſt à
me, & timuerunt me mandato
14 hominum & doctrinis: Ideò
ecce ego addam ut admirationem
faciam populo huic miraculo
grandi & ſtupendo: peribit
enim ſapientia à ſapientibus
ejus, & intellectus prudentium
15 ejus abſcondetur. Væ
qui profundi eſtis corde, ut à
Domino abſcondatis conſilium:
quorum ſunt in tenebris
opera, & dicunt; Quis videt
16 nos, & quis novit nos? Perverſa
eſt hæc veſtra cogitatio:
quaſi ſi lutum contra figulum
cogitet, & dicat opus factori
ſuo, Non feciſti me: & figmentum
dicat fictori ſuo;
17 Non intelligis. Nónne adhuc
in modico & in brevi convertetur
Libanus in Charmel, &
Charmel in ſaltũ reputabitur?
18 Et audient in die illa ſurdi verba
libri, & de tenebris & caligine
19 oculi cæcorũ videbunt. Et
addent mites in Domino lætitiam,
& pauperes homines
in Sancto Iſrael exultabunt:
20 Quoniam defecit qui prævalebat,
conſummatus eſt illuſor,
& ſucciſi ſunt omnes qui
vigilabant ſup iniquitatem:
21 Qui peccare faciebant homines
in verbo, & arguentem
in porta ſupplantabant, & declinaverunt
fruſtrà à juſto.
22 Propter hoc, hæc dicit Dominus
ad domum Jacob, qui
redemit Abraham; Non modò
confundetur Jacob, nec
modò vultus ejus erubeſcet:
23 Sed cùm viderit filios ſuos,
opera manuum mearum, in
medio ſuî ſanctificantes nomen
meum, & ſanctificabunt
Sanctum Jacob, & Deum Iſrael
prædicabunt:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

10 Ὅτι πεπότικεν ὑμᾶς κύριος πνεύματι κατανύξεως, καὶ καμμύσει τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτῶν, καὶ τῶν προφητῶν αὐτῶν, καὶ τῶν ἀρχόντων 11 αὐτῶν, οἱ ὁρῶντες τὰ κρυπτά. (ς) Καὶ ἔσονται ὑμῖν τὰ ῥήματα πάντα ταῦτα, ὡς οἱ λόγοι τοῦ βιβλίου τοῦ ἐσφραγισμένου τούτου, ὃ ἐὰν δῶσιν αὐτὸ ἀνθρώπῳ ἐπισταμένῳ γράμματα, λέγοντες, Ἀνάγνωθι ταῦτα· καὶ ἐρεῖ, Οὐ δύναμαι ἀναγνῶναι, ἐσφράγισται γάρ. 12 Καὶ δοθήσεται τὸ βιβλίον τοῦτο εἰς χεῖρας ἀνθρώπου μὴ ἐπισταμένου γράμματα, καὶ ἐρεῖ αὐτῷ, Ἀνάγνωθι τοῦτο· καὶ ἐρεῖ, Οὐκ ἐπίσταμαι γράμματα. 13 Καὶ εἶπε κύριος, Ἐγγίζει μοι ὁ λαὸς (σ) οὗτος ἐν τῷ στόματι αὐτοῦ, καὶ ἐν τοῖς χείλεσιν αὐτῶν τιμῶσί με, ἡ δὲ καρδία αὐτῶν πόῤῥω ἀπέχει ἀπ᾽ ἐμοῦ· μάτην δὲ σέβονταί με, διδάσκοντες ἐντάλματα 14 ἀνθρώπων καὶ διδασκαλίας. Διὰ τοῦτο ἰδοὺ (τ) προσθήσω τοῦ μεταθεῖναι τὸν λαὸν τοῦτον, καὶ μεταθήσω αὐτοὺς, καὶ ἀπολῶ τὴν σοφίαν τῶν σοφῶν, καὶ τὴν σύνεσιν τῶν συνετῶν κρύψω. 15 Οὐαὶ οἱ βαθέως βουλὴν ποιοῦντες, καὶ οὐ διὰ κυρίου· οὐαὶ οἱ ἐν κρυφῇ βουλὴν ποιοῦντες, καὶ ἔσται ἐν σκότει τὰ ἔργα αὐτῶν· καὶ ἐροῦσι, Τίς (υ) ἑώρακεν ἡμᾶς; καὶ 16 τίς ἡμᾶς γνώσεται, ἢ ἃ ἡμεῖς ποιοῦμεν; Οὐχ ὡς (φ) πηλὸς τοῦ κεραμέως λογισθήσεσθε; μὴ ἐρεῖ τὸ πλάσμα τῷ (χ) πλάσαντι αὐτὸ, Οὐ σύ με ἔπλασας; ἢ τὸ ποίημα τῷ ποιήσαντι, Οὐ συνετῶς με ἐποίησας; 17 Οὐκέτι μικρὸν καὶ μετατεθήσεται ὁ Λίβανος, ὡς τὸ ὄρος τὸ Χέρμελ, καὶ (ψ) τὸ Χέρμελ εἰς δρυμὸν λογισθήσεται; 18 Καὶ ἀκούσονται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ κωφοὶ λόγους βιβλίου, καὶ οἱ ἐν τῷ σκότει, καὶ οἱ ἐν τῇ ὁμίχλῃ· ὀφθαλμοὶ τυφλῶν (ω) ὄψονται, 19 Καὶ ἀγαλλιάσονται πτωχοὶ διὰ κύριον ἐν εὐφροσύνῃ, καὶ οἱ ἀπηλπισμένοι τῶν ἀνθρώπων ἐμπλησθήσονται εὐφροσύνης. 20 Ἐξέλιπεν ἄνομος, καὶ ἀπώλετο ὑπερήφανος, καὶ (*) ἐξωλοθρεύθησαν 21 οἱ ἀνομοῦντες ἐπὶ κακίᾳ, Καὶ οἱ ποιοῦντες ἁμαρτεῖν ἀνθρώπους ἐν λόγῳ. πάντας δὲ τοὺς ἐλέγχοντας ἐν πύλαις πρόσκομμα θήσουσιν, (α) ὅτι ἐπλάγιασαν ἐπ᾽ ἀδίκοις δίκαιον. 22 Διὰ τοῦτο τάδε λέγει κύριος ἐπὶ τὸν οἶκον Ἰακὼβ, ὃν ἀφώρισεν ἐξ Ἀβραὰμ, Οὐ νῦν αἰσχυνθήσεται Ἰακὼβ, οὐδὲ νῦν τὸ 23 πρόσωπον (β) μεταβαλεῖ. Ἀλλ᾽ ὅταν ἴδωσι τὰ τέκνα αὐτῶν τὰ ἔργα μου, δι᾽ ἐμὲ ἁγιάσουσι τὸ ὄνομά μου, καὶ ἁγιάσουσι τὸν ἅγιον Ἰακὼβ, καὶ τὸν θεὸν τοῦ Ἰσραὴλ φοβηθήσονται.

10 Quoniam potavit vos Dominus ſpiritu (e) compunctionis: & claudet oculos eorum, & prophetarum eorum, & principum eorum, qui vident occulta. 11 Et erunt vobis omnia verba hæc, ſicut verba libri ſignati hujus; quem ſi dederint ipſum homini ſcienti literas, dicentes, Lege hæc: & dicet; Non poſſum legere: ſignatus enim eſt. 12 Et dabitur liber hic in manus hominis neſcientis literas, & dicet ei, Lege hunc: & dicet, Neſcio literas. 13 Et ait Dominus; Appropinquat mihi populus iſte ore ſuo; & in labiis ſuis honorant me: cor autem eorum longè abeſt à me. Fruſtrà autem colunt me, docentes hominum præcepta, atque doctrinas. 14 Propterea ecce adjiciam, ut transferam populum iſtum. Et transferam eos: & perdam ſapientiam ſapientum: & prudentiam prudentium (f) abſcondam. 15 Væ, qui profundum conſilium faciunt, & non per Dominum. Væ, qui in occulto conſilium faciunt, et erunt in tenebris opera eorum: & dicent; Quis vidit nos? et quis ſciet nos, vel, quæ nos facimus? 16 Nónne ut lutum figuli reputabimini? Nunquid dicet figmentum fictori ſuo, Non tu me formâſti? aut factura factori, Non ſapienter me feciſti? 17 Nónne adhuc modicum; et transferetur Libanus, ſicut mons Chermel, et Chermel in ſaltum reputabitur? 18 Et audient in die illa ſurdi verba libri: et qui in tenebris, et qui in nebula, oculi cæcorum videbunt: 19 Et lætabuntur inopes propter Dominum in lætitia: et deſperati homines implebuntur lætitiâ. 20 Defecit iniquus, et periit ſuperbus: et exterminati ſunt, qui iniquè agunt in malitia, 21 Et qui faciunt peccare homines in verbo: omnes autem arguentes in portis, offenſionem ponent; quia obliquaverunt pro injuſtis juſtum. 22 Propterea hæc dicit Dominus ſuper domum Jacob, quam ſeparavit ex Abraam: Non confundetur modò Jacob, neque nunc faciem mutabit: 23 Sed, cùm viderint (g) filii eorum opera mea; propter me ſanctificabunt nomen meum, et ſanctificabunt Sanctum ipſius Jacob, et Deum Iſrael timebunt:

MS.A. (ς) Καὶ ἔσονται ὑμῖν πάντα τὰ ῥήματα ταῦτα, (σ) οὗτος τοῖς χείλεσιν (τ) ἐγὼ προσθήσω (υ) ἡμᾶς ἑώρακεν; (φ) ὁ πηλὸς (χ) πλάσαντι, Οὐ σύ με (ψ) τὸ ὄρος τὸ Χέρμελ (ω) βλέψονται, (*) ἐξωλεθρεύθησαν (α) καὶ ἐπλαγίασαν ἐν ἀδίκοις δίκαιον. (β) μεταβαλεῖ Ἰσραήλ.

תרגום יונתן TARGUM JONATHAN.

10 ארי רמא ביניכון יי רוח דטעו ואטמר מנכון ית נביאיא וית ספריא וית מלפיא דהוו
11 מלפין לכון אולפן אוריתא טמר : והות לכון נבואת כולא כפתגמי ספרא דחתים
דאם יתנון יתיה לדידע ספרא למימר קרי כען דין ויימר לית אנא יכיל ארי חתים
12 הוא : ויתיהב ספרא לדלא ידע ספרא למימר קרי כען דין ויימר לית אנא ידע ספרא :
13 ואמר יי חלף דאתרברב עמא הדין בפומהון ובספותהון מיקרין קדמי ולבהון
14 אתרחק מדחלתי והות דחלתהון קדמי כתפקידת גברין מלפין : בכן הא אנא
מוסיף למחי ית עמא הדין מחן מפרשן ותיבד חוכמתא מחכימיהון וסוכלתנותא
15 מסוכלתניהון תטמר : ווי דמדמן לאטמרא עיצא מן קדם יי והוו כדבקבלא עובדיהון
16 ואמרין לית דחזי לנא ולית דידע בעובדנא : הלמהפך עובדיכון אתון בען הא
כמא דטינא ביד פחרא כן אתון חשיבין קדמי האפשר דיימר טינא לעבדיה לא
17 עבדתני ובריתא דתימר לברהא לא חכימת לי : הלא עוד צבחר כזעיר ויתוב לבנן
18 למהוי ככרמלא וכרמלא קרוין סגיאין יתיב : וישמעון בעדנא ההיא דכחרשין מלי
19 ספר ומקביל ומחשוך עיני סמן יחזין : ויוספון מקבלי עולבן במימרא דיי
20 חדוא וחשיכי בני אנשא במימר קדישא דישראל יבעון : ארי סף מעיקא ואשתיצי
21 בוזא וספו כל דהוו משחרין למינס : מחיבין בני אנשא במליהון ולדמוכח
להון בית דינא בתרעא פתגמי אוריתא בען ליה תקלא ואסטיאו בשקר דין זכאין :
22 בכן כדנן אמר יי על בית יעקב דפריק ית אברהם לא מכען יבהתון דבית יעקב ולא
23 מכען אפיהון ישתנון : ארי במחזוהי גבורן דאעביד לבנוהי טבות אברהם לזרעיה
בתרוהי על ארעהון ביניהון יקדשון שמי ויימרון קדיש על קדישא דיעקב ועל
אלהא דישראל יימרון תקיף :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

10 Quoniam immiſit in vos Dñs ſpiritum erroris: & abſcondit à vobis Prophetas & ſcribas: doctores quoque, qui docebant vos doctrinam Legis, abſcondit. 11 Et facta eſt vobis omnis prophetia ſicut verba libri ſignati; quem cùm dederint ſcienti librum, dicentes; Lege nunc iſtum: & dicet; Non poſſum; quia ſignatus eſt. 12 Et dabitur liber neſcienti librum, dicentes; Lege nunc iſtum: & dicet; Neſcio librum. 13 Et dixit Dñs, Pro eo quòd magnificatus eſt populus iſte in ore ſuo; & in labiis ſuis honorificant me; cor autem eorum longè eſt à timore mei, & fuit timor eorum coram me, juxta mandatum virorum docentium. 14 Propterea ecce ego adjiciam, ut percutiam populum hunc percuſſionibus mirabilibus; & peribit ſapientia à ſapientibus eorum, & prudentia prudentium eorum abſcondetur. 15 Væ qui putant abſcondere conſilium à facie Dñi, & ſunt quaſi in tenebris opera eorum; & dicunt, Non eſt qui videat nos, neque qui ſciat opera noſtra. 16 Nunquid pervertere quæritis opera veſtra? ecce ſicut lutum in manu figuli, ſic eſtis reputati coram me. Nunquid poſſibile eſt ut dicat lutum factori ſuo, Non feciſti me? aut creaturam dicere creatori ſuo, Non intelligis me? 17 Ecce adhuc modicum paululum, & vertetur Libanus, ut ſit ſicut Carmelus, & Carmelus civitatibus multis habitabitur. 18 Et audient in tempore illo qui ſunt ſicut ſurdi, verba libri; & de tenebris & caligine oculi cæcorum videbunt. 19 Et addent qui injuriam paſſi ſunt, gaudium in verbo Domini, & pauperes filiorum hominum in verbo ſancti Iſrael exultabunt. 20 Quia finitus eſt tribulator, & conſumptus eſt deprædator, & finiti ſunt omnes qui manè ſurgebant ad diripiendum. 21 Qui condemnant filios hominũ in verbis ſuis; et ei qui corripit eos *(domum judicii)* in porta, verbis legis quærunt offendiculum: & peverterunt in falſitate judicium innocentium. 22 Propterea hæc dicit Dominus ſuper domum Jacob, qui redemit Abraham: Deinceps non confundetur domus Jacob, nec poſthac facies ejᵘˢ mutabuntur. 23 Sed cùm viderit magnalia quæ faciam filiis ſuis, & benignitatem quam promiſi Abrahæ & ſemini ejus poſt eum, ſuper terram ſuam, *inter ſe* ſanctificabunt nomen meum: & dicent, Sanctus eſt ſanctiſſimus Jacob: & Deum Iſrael dicent fortiſſimum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܕܢܣܟ ܥܠܝܗܘܢ ܡܪܝܐ ܪܘܚܐ ܕܫܝܢܬܐ ܀ ܘܚܣܢ ܥܠ ܥܝܢܝܗܘܢ. ܘܥܠ 10
ܢܒܝܐ. ܘܥܠ ܪܫܝܗܘܢ ܕܚܙܝܢ ܟܣܝܬܐ. * ܘܢܗܘܐ ܠܗܘܢ ܚܙܘܐ ܕܟܠܗܘܢ ܀ ܐܝܟ ܡ̈ܠܐ 11
ܕܟܬܒܐ ܕܚܬܝܡ. ܕܐܢ ܢܬܠܘܢܝܗܝ ܠܡܢ ܕܝܕܥ ܣܦܪܐ ܀ ܢܐܡܪܘܢ ܠܗ ܩܪܝ ܗܢܐ ܘܢܐܡܪ.
ܠܐ ܡܫܟܚ ܐܢܐ. ܡܛܠ ܕܚܬܝܡ ܗܘ. * ܘܢܬܠܘܢܗ ܟܬܒܐ ܠܡܢ ܕܠܐ ܝܕܥ ܣܦܪܐ ܀ 12
ܘܢܐܡܪܘܢ ܠܗ ܩܪܝ ܗܢܐ. ܘܢܐܡܪ. ܠܐ ܝܕܥ ܐܢܐ ܣܦܪܐ. * ܘܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܩܪܒ ܥܡܐ 13
ܗܢܐ ܒܦܘܡܗ ܘܒܣܦܘܬܗ ܡܝܩܪ ܠܝ ܀ ܘܠܒܗ ܪܚܝܩ ܡܢܝ : ܘܗܘܬ ܕܚܠܬܗܘܢ ܡܢܝ.
ܡܦܩܘܕܝܬܐ ܘܡܠܦܢܘܬܐ ܕܒܢܝ̈ܢܫܐ ܀ * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ ܡܘܣܦ ܐܢܐ ܠܡܦܪܫܘ ܠܥܡܐ 14
ܗܢܐ ܀ ܒܬܕܡܘܪܬܐ ܘܒܬܗܪܐ. ܘܬܐܒܕ ܚܟܡܬܐ ܕܚܟܝܡܘܗܝ ܀ ܘܣܘܟܠܐ ܕܣܟܘܠܬܢܘܗܝ
ܢܬܛܫܐ. * ܘܝ ܠܗܘܢ ܠܕܡܥܡܩܝܢ ܡܢ ܡܪܝܐ ܠܡܛܫܝܘ ܬܪܥܝܬܐ ܀ ܘܗܘܝ ܒܚܫܘܟܐ 15
ܥܒܕܝܗܘܢ : ܘܐܡܪܝܢ ܡܢܘ ܚܙܐ ܠܢ ܀ ܐܘ ܡܢܘ ܝܕܥ ܠܢ ܡܕܡ ܕܥܒܕܝܢ. * ܐܝܟ ܛܝܢܐ 16
ܕܦܚܪܐ ܡܬܚܫܒܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܕܠܡܐ ܐܡܪ ܥܒܕܐ ܠܥܒܘܕܗ ܠܐ ܥܒܕܬܢܝ ܀ ܐܘ ܓܒܠܐ ܐܡܪ
ܠܓܒܘܠܗ : ܕܠܐ ܒܚܟܡܬܐ ܓܒܠܬܢܝ ܀ * ܗܐ ܥܕ ܩܠܝܠ ܙܒܢ. ܘܢܬܗܦܟ ܠܒܢܢ 17
ܠܟܪܡܠܐ. ܘܟܪܡܠܐ ܠܥܒܐ ܢܬܚܫܒ. * ܘܢܫܡܥܘܢ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܚܪ̈ܫܐ. ܡ̈ܠܐ ܕܟܬܒܐ. 18
ܘܡܢ ܚܫܘܟܐ ܘܡܢ ܥܪܦܠܐ. ܥܝܢ̈ܝ ܣܡܝ̈ܐ ܢܚܙܝܢ. * ܘܢܣܓܘܢ ܡܟܝ̈ܟܐ ܒܡܪܝܐ ܚܕܘܬܐ. 19
ܘܒܢܝ̈ܢܫܐ ܡܣܟ̈ܢܐ ܒܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܢܪܘܙܘܢ. * ܡܛܠ ܕܚܣܪ ܕܝܫܐ ܘܐܬܟܠܝ ܡܡܝܩܢܐ. ܘܐܒܕܘ 20
ܟܠ ܕܒܥܝܢ ܥܘܠܐ. * ܘܡܚܛܝܢ ܠܒܢܝ̈ܢܫܐ ܒܡܠܬܐ. ܘܠܡܟܣܢܐ ܣܝܡܝܢ ܠܗ ܬܘܩܠܬܐ. 21
ܘܠܙܕܝܩܐ ܒܣܘܥܪܢܐ ܕܪܘܫܥܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܀ ܠܒܝܬܗ ܕܝܥܩܘܒ 22
ܕܦܪܩܗ ܠܐܒܪܗܡ. ܠܐ ܡܟܝܠ ܢܒܗܬ ܝܥܩܘܒ. ܘܠܐ ܡܟܝܠ ܢܬܚܦܪܘܢ ܐܦ̈ܘܗܝ. * ܡܐ ܕܚܙܘ 23
ܒܢܘܗܝ ܥܒܕ ܐܝ̈ܕܝ ܀ ܒܓܘܗ ܢܩܕܫܘܢ ܫܡܝ. ܘܢܩܕܫܘܢ ܠܩܕܝܫܐ ܕܝܥܩܘܒ. ܘܠܐܠܗܐ
ܕܐܝܣܪܝܠ ܢܫܒܚܘܢ܀

* Quoniam effudit ſuper eos Dominus ſpiritum 10
ſopore immerſum, qui invaluit ſuper oculos
eorum, ſuper prophetas, & ſuper eorum
principes occulta videntes. Et horum omnium 11
viſio erit in ipſis ſicut verba libri obſignati,
quem cùm obtulerint alicui ſcripturam
ſcienti, & dixerint ei, Lege hoc; reſpondet,
Non poſſum, quia obſignatum eſt:
Vel obtulerint librum alicui legere neſcienti, 12
& dixerint ei, Lege hoc; reſpondet, Neſcio
legere. Et dixit Dominus, Quia populus 13
iſte ore ſuo accedit, & labiis ſuis me honorat;
cor autem ejus remotum eſt à me, &
reverentia quam mihi exhibent, eſt ex præcepto
& documento humano: Iccirco ecce 14
magìs ac magìs *à me* ſejungam populum
iſtum cum admiratione & ſtupore, ita ut pereat
ſapientia ſapientum ejus, & prudentia
prudentum ejus deficiat, Væ iis qui ſe diſtorquent 15
à Domino, ut conſilium *ſuum* occultent,
qui peractis clanculùm operibus ſuis,
dicunt, Quis videt nos? aut quis novit quomodo
verſamur? Vos ut lutum figuli reputamini: 16
nunquid opus factori ſuo dicit,
Non feciſti me? aut figmentum dicit fictori
ſuo, Haud ſapienter me finxiſti? Ecce poſt 17
breve tempus vertetur Libanus in Charmelum,
& Charmelus pro ſylva reputabitur.
Et audient eo die ſurdi verba libri, & è tenebris 18
atque caligine oculi cæcorum videbunt:
Creſcet in Domino gaudium humilium, 19
& homines egeni in Sancto Iſraelis
exultabunt; Quòd defierit conculcator, & 20
defecerit irriſor, & perierint omnes qui excitant
iniquitatem, Quique homines verbis 21
inducunt ad peccatum, *vitia* carpenti ponunt
offendiculum, & juſto *laqueum* tendunt
in tenebris. Propterea ſic dicit Dominus 22
de domo Jacobi, qui ſervavit Abrahamum;
Jam non pudefiet Jacob, nec erubeſcet
ampliùs vultus ejus. Cùm viderint 23
filii ejus opus manuum mearum, in medio
ejus ſanctificabunt nomen meum, ſanctificabunt
Sanctum Jacobi, & Deum Iſraelis magnificabunt.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لان الرب سقاكم روح خشوع * ويغمض عيونهم وانبياءهم ورؤساءهم الذين يرون الخفيات * 10
* ويكون لكم جميع هذه الكلمات مثل كلمات هذا السفر المختوم * الذي اذا دفعوه 11
لانسان خبير بالكتابة يقولون اقرا هذه * فيقول لست اقدر ان اقرا لانه مختوم * ويدفع 12
هذا الكتاب في يد انسان لا يعلم الكتابة ويقول له اقراه * فيقول لست اعرف الكتابة *
* الاصحاح الرابع عشر * فيه توبيخ لبني اسرائيل * * وقال الرب * هذا الشعب 13
يقرب مني بفيه ويكرمني بشفتيه وقلبه يبعد بعيدا عني * ويعبدوني باطلا * ويعلمون وصايا
الناس وتعاليمهم * لاجل هذا هانذا اريد ان ينتقل هذا الشعب * وانقلهم انتقالا * وابيد حكمة 14
حكمائهم واخفي فهم فهمائهم * الويل للذين يصنعون رايا بعمق وليس من قبل الرب * 15
ويل الذين يصنعون رايا في خفية * ويصير اعمالهم في ظلمة * ويقولون من رانا ومن عرفنا *
او ما الذي نصنعه نحن * اليس مثل طين الفاخوري تحسبون * هل الجبلة تقول لجابلها 16
انت ما جبلتني * ام تقول الصنعة للصانع انت ما صنعتني بفهم * اليس بعد قليل ينتقل 17
لبنان مثل جبل الكرمل * وجبل الكرمل يحسب غابة * ويسمعون في ذلك اليوم الصم 18
اقوال الكتاب * والذين في الظلمة والذين في الضباب * اعين العميان تبصرن * ويبتهج 19
المساكين لاجل الرب بسرور * والذين لا رجاء لهم من البشر يمتلون سرورا بقدوس اسرائيل *
* فني الاثيم وهلك المستكبر * واستوصلوا الاثمة بشرهم * والذين يجعلون الناس ان 20 21
يخطوا بالقول * وجميع الذين يبكتون في الابواب * يصنعون عثرا * ويضلون الصديق
بجورهم * لاجل هذا هكذا يقول الرب على بيت يعقوب الذي ميزه من ابراهيم * لا يخزى 22
الان يعقوب * ولا يستحيي الان وجه اسرائيل * لكنهم اذ عاين بنوهم اعمالي * لاجلي يقدسون 23
اسمي * ويقدسون قدوس يعقوب * ويخافون اله اسرائيل *

Sed quia Dominus bibendum præbebit vobis 10
ſpiritum abjectionis, & occludet oculos
tam veſtros quam prophetarum &
principum veſtrorum qui vident occulta;
Et erunt vobis omnia verba iſta, perinde 11
ac verba hujus libri obſignati, quem cùm
obtulerint homini ſcripturæ perito, &
dixerint ei, Lege hæc; reſpondebit,
Nequeo legere, quoniam obſignatus
eſt. Quòd ſi detur liber iſte in manum 12
alicujus literarum imperiti, &
dicatur ei, Lege illum; reſpondebit, Literas
ignoro.

Textus decimus quartus.

Continens reprehenſionem contra filios Iſraelis.

Et dixit Dominus, Populus hic ore ſuo 13
appropinquat ad me, & labiis ſuis me honorat;
cor autem ejus procul abeſt à me,
fictè me adorant, & præcepta atque doctrinas
hominum docent. Hac de cauſa 14
ecce ego populum iſtum migrare volo;
equidem commigratione commigrare faciam
eos, ſapientiam ſapientum eorum
perdam, & prudentiã eorũ prudentium
abſcondam. Væ iis qui profunda conſilia 15
machinantur, at non à Domino: væ iis qui
clandeſtina conſilia machinantur, quorum
actiones fiunt in tenebris, tum dicunt,
Quis vidit nos, & quis novit nos? aut
quid agimus nos? Annon ſicut lutum figuli 16
reputamini? nunquid argillæ *maſſa*
dicit plaſtæ ſuo, Tu non plaſmâſti me?
an opificiũ dicit opifici ſuo, Tu non compoſuiſti
me prudenter? An non poſt exiguum 17
tempus mutabitur Libanus ut mons
Charmelus? & mons Charmelus ceu *ſylva*
reputabitur? Eo die audient ſurda verba 18
hujus libri, & qui in tenebris, quique
in caligine verſantur, imò *cæcorum oculi*
videbunt: Pauperes propter Dominum 19
cum Lætitia geſtient; & ii mortaliũ quibus
nulla ſpes eſt, implebuntur gaudio in
Sancto Iſraelis. Defecit impius, periit 20
ſuperbus, & extirpati ſunt nefarii cum
nequitia ſua: Quicunque faciunt homines 21
peccare verbis, omnes qui reprehendunt
in portis, offendiculum generant, & juſtũ
impietatis ſuæ complicem
reddunt. Propter hoc ſic dicit Domin⁹ de 22
domo Jacobi, quã ſegregavit ex Abrahamo,
Jam non pudefiet Jacob, neque
jam erubeſcet vultus Iſraelis: Sed cùm 23
viderint filii eorũ opera mea, propter me
ſanctificabunt nomẽ meum, ſanctificabunt
Sanctum Jacobi, & verebuntur Deum
Iſraelis:

ישעיה : ל .

.doctrinam diſcent *murmurantes* &, intelligentiam ſpiritu *errantes* ſcient Et
24 וְיָדְעוּ תֹעֵי־רוּחַ בִּינָה וְרוֹגְנִים יִלְמְדוּ־לֶקַח׃

CAP. XXX. ל

,conſilium *faciendum ad* ,Dominus dixit ,declinantibus filiis Væ
1 הוֹי בָּנִים סוֹרְרִים נְאֻם־יְהוָה לַעֲשׂוֹת עֵצָה
pro : *meus ſpiritus* non & ,*fuſionem fundendum ad* & : me ex non &
וְלֹא מִנִּי וְלִנְסֹךְ מַסֵּכָה וְלֹא רוּחִי לְמַעַן
deſcendendum ad Ambulantes .peccatum ſuper peccatum *addere*
2 סְפוֹת חַטָּאת עַל־חַטָּאת׃ הַהֹלְכִים לָרֶדֶת
fortitudine in *ſe roborandum ad* :interrogaverunt non meũ os & ,Ægyptum
מִצְרַיִם וּפִי לֹא שָׁאָלוּ לָעוֹז בְּמָעוֹז
fortitudo vobis erit Et .Ægypti umbra in *protegendum ad* & , Parhoh
3 פַּרְעֹה וְלַחְסוֹת בְּצֵל מִצְרָיִם׃ וְהָיָה לָכֶם מָעוֹז
.ignominiam ad Ægypti umbra in *protectio* & : pudorem ad Parhoh
פַּרְעֹה לְבֹשֶׁת וְהֶחָסוּת בְּצֵל־מִצְרַיִם לִכְלִמָּה׃
.attingent Chanes ejus nuncii & : ejus principes Sohan in fuerunt Nam
4 כִּי־הָיוּ בְצֹעַן שָׂרָיו וּמַלְאָכָיו חָנֵס יַגִּיעוּ׃
nec : eis proderunt non : populum ſuper eſt affectus pudore Omnis
5 כֹּל הִבְאִישׁ עַל־עַם לֹא־יוֹעִילוּ לָמוֹ לֹא
.opprobrium ad etiam & ,pudorem ad ſed : *proficiendum* ad nec ,auxiliũ ad
לְעֵזֶר וְלֹא לְהוֹעִיל כִּי לְבֹשֶׁת וְגַם־לְחֶרְפָּה׃
, leo ; *coarctationis* & , anguſtiæ terra in ,*meridiei* animalium *Onus*
6 מַשָּׂא בַּהֲמוֹת נֶגֶב בְּאֶרֶץ צָרָה וְצוּקָה לָבִיא
humerum ſuper ferent ; volans *ignitus* ſerpens & ,vipera eis ex ,tygris &
וָלַיִשׁ מֵהֶם אֶפְעֶה וְשָׂרָף מְעוֹפֵף יִשְׂאוּ עַל־כֶּתֶף
ſuper ,ſuos theſauros camelorum gibbum ſuper &,ſuas *facultates* pullorum
עֲיָרִים חֵילֵהֶם וְעַל־דַּבֶּשֶׁת גְּמַלִּים אוֹצְרֹתָם עַל־
.auxiliabuntur inaniter & ,vanè Ægyptii Et .*proderunt* non populo
7 עַם לֹא יוֹעִילוּ׃ וּמִצְרַיִם הֶבֶל וָרִיק יַעְזֹרוּ
,ingredere Nunc .*ſedere eos Robur* , hanc *ad* vocavi Ideo
8 לָכֵן קָרָאתִי לָזֹאת רַהַב הֵם שָׁבֶת׃ עַתָּה בּוֹא
die in erit & : illud *exara* libro in & ,eis *cum* tabula in *illud* ſcribe
כָתְבָהּ עַל־לוּחַ אִתָּם וְעַל־סֵפֶר חֻקָּהּ וּתְהִי לְיוֹם
rebellionis populus Quia .ſeculum in uſque *perpetuum* in noviſſimo
9 אַחֲרוֹן לָעַד עַד־עוֹלָם׃ כִּי עַם מְרִי
.Domini legem audire noluerunt filii : mendaces filii , *ipſe*
הוּא בָּנִים כֶּחָשִׁים בָּנִים לֹא־אָבוּ שְׁמוֹעַ תּוֹרַת יְהוָה׃
aſpicietis Non,aſpicientibus & :videbitis Non ,videntibus dixerunt Qui
10 אֲשֶׁר אָמְרוּ לָרֹאִים לֹא תִרְאוּ וְלַחֹזִים לֹא־תֶחֱזוּ־
Recedite .illuſiones videte ,blanda nobis loquimini : recta nobis
11 לָנוּ נְכֹחוֹת דַּבְּרוּ־לָנוּ חֲלָקוֹת חֲזוּ מַהֲתַלּוֹת׃ סוּרוּ
Sanctum *noſtris faciebus* à facite ceſſare : ſemita de declinate , via de
מִנֵּי־דֶרֶךְ הַטּוּ מִנֵּי־אֹרַח הַשְׁבִּיתוּ מִפָּנֵינוּ אֶת־קְדוֹשׁ
vos reprobrare Propter : Iſrael Sanctus dixit ſic Propterea .Iſrael
12 יִשְׂרָאֵל׃ לָכֵן כֹּה אָמַר קְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל יַעַן מָאָסְכֶם
.*eo ſuper* eſtis innixi &,perverſitate &,*extorſione* in ſperâſtis & : hoc *verbo in*
בַּדָּבָר הַזֶּה וַתִּבְטְחוּ בְּעֹשֶׁק וְנָלוֹז וַתִּשָּׁעֲנוּ עָלָיו׃
requiſita , cadens *ruptura* ſicut , hæc iniquitas vobis erit Propterea
13 לָכֵן יִהְיֶה לָכֶם הֶעָוֹן הַזֶּה כְּפֶרֶץ נֹפֵל נִבְעֶה
.*ejus confractio* veniet *momentum ad ſubito* cujus : excelſo muro in
בְּחוֹמָה נִשְׂגָּבָה אֲשֶׁר־פִּתְאֹם לְפֶתַע יָבוֹא שִׁבְרָהּ׃
,conterendo ,figulorum lagenæ contritionem ſecundùm eum conteret Et
14 וּשְׁבָרָהּ כְּשֵׁבֶר נֵבֶל יוֹצְרִים כָּתוּת
capiendum ad teſta ejus fragmento *in* invenietur non & : parcet non
לֹא יַחְמֹל וְלֹא־יִמָּצֵא בִמְכִתָּתוֹ חֶרֶשׂ לַחְתּוֹת
.fovea de aquam hauriendum ad & ,incendio de ignem
אֵשׁ מִיָּקוּד וְלַחְשֹׂף מַיִם מִגֶּבֶא׃

Verſio VULG. LAT.

24 Et ſcient errantes ſpiritu in-
tellectum, et muſſitatores di-
ſcent legem.

CAP. XXX.

1 VÆ filii deſertores, dicit
Domin⁹, ut faceretis conſiliũ,
& non ex me: & ordiremini
telã, & non ꝑ ſpiritũ meũ, ut
adderetis peccatũ ſuꝑ pecca-
2 tũ: Qui ambulatis ut deſcen-
datis in Ægyptũ, & os meũ nõ
interrogâſtis, ſperantes auxiliũ
in fortitudine Pharaonis, &
habentes fiduciã in umbra Æ-
3 gypti. Et erit vobis fortitudo
Pharaonis in confuſionẽ, & fi-
ducia umbræ Ægypti in igno-
4 miniam. Erant enim in Tani
principes tui, & nuntii tui uſq;
5 ad Hanes pervenerũt. Omnes
cõfuſi ſunt ſuꝑ populo, qui eis
prodeſſe non potuit: non fue-
runt in auxiliũ & in aliquam
utilitatẽ, ſed in confuſionẽ &
6 in opprobriũ. On⁹ jumentorũ
Auſtri. In terra tribulationis et
anguſtiæ leæna, & leo ex eis,
vipera, & regulus volans, por-
tantes ſuꝑ humeros jumento-
rũ divitias ſuas, & ſuꝑ gibbũ
camelorũ theſauros ſuos, ad
populũ qui eis prodeſſe non
7 poterit. Ægypt⁹ enim fruſtrà et
vanè auxiliabitur: ideò cla-
mavi ſuꝑ hoc; Superbia tantũ
8 eſt, quieſce. Nunc ergò ingreſſ⁹
ſcribe ei ſuꝑ buxũ, & in libro
diligenter exara illud, et erit in
die noviſſimo in teſtimonium
9 uſq; in æternũ. Popul⁹ enim ad
iracundiã provocans eſt, & fi-
lii mendaces, filii nolentes au-
10 dire legẽ Dei. Qui dicunt vi-
dentibus, Nolite videre: &
aſpicientibus; Nolite aſpi-
cere nobis ea, quæ recta
ſunt: loquimini nobis placen-
11 tia, videte nobis errores. Au-
ferte à me viã, declinate à me
ſemitam, ceſſet à facie noſtra
12 Sanct⁹ Iſrael. Propterea hæc
dicit Sanctus Iſrael; Pro eo ꝙ
reprobâſtis verbũ hoc, & ſpe-
râſtis in calumnia & in tumul-
tu, & innixi eſtis ſuper eo:
13 Propterea erit vobis iniquitas
hæc ſicut interruptio cadens,
& requiſita in muro excelſo,
quoniã ſubitò, dum non ſpera-
14 tur, veniet contritio ej⁹. Et cõ-
minuetur ſicut conteritur la-
gena figuli contritione perva-
lidâ: & nõ invenietur de frag-
mentis ejus teſta, in qua por-
tetur ignicul⁹ de incendio, aut
hauriatur parũ aquæ de fovea.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

24 Καὶ γνώσονται οἱ (γ) πλανώμενοι τῷ πνεύ-
ματι σύνεσιν, οἱ δὲ γογγύζοντες μαθήσονται
ὑπακούειν, καὶ αἱ γλῶσσαι αἱ ψελλίζουσαι
μαθήσονται λαλεῖν εἰρήνην.

MS.A. (γ) τῷ πνεύματι πλανώμενοι σύνεσιν,

ΚΕΦ. λʹ.

1 Οὐαὶ τέκνα ἀποστάται, (α) λέγει κύρι-
ος. ἐποιήσατε βουλὴν (β) οὐ δι' ἐμοῦ, καὶ συν-
θήκας οὐ διὰ τοῦ πνεύματός μου, προσθεῖναι (ᵈ)
2 ἁμαρτίας ἐφ' ἁμαρτίαις. Οἱ πορευόμενοι κατα-
βῆναι εἰς Αἴγυπτον, ἐμὲ δὲ οὐκ ἐπηρώτησαν,
τοῦ βοηθηθῆναι ὑπὸ Φαραώ, καὶ σκεπασθῆναι
3 ὑπὸ Αἰγυπτίων. Ἔσται γὰρ ὑμῖν σκέπη Φα-
ραὼ εἰς αἰσχύνην, καὶ τοῖς πεποιθόσιν ἐπ'
4 Αἴγυπτον ὄνειδος. Ὅτι εἰσὶν ἐν Τάνει
5 ἀρχηγοὶ ἄγγελοι πονηροί. Μάτην κοπιάσουσιν
πρὸς λαόν, ὃς οὐκ ὠφελήσει αὐτοὺς (γ) εἰς
βοήθειαν, ἀλλὰ εἰς αἰσχύνην καὶ ὄνειδος.

6 Η΄ ὍΡΑΣΙΣ ΤΩ͂Ν ΤΕΤΡΑΠΟ΄ΔΩΝ
ΤΩ͂Ν ἘΝ ΤΗ͂ ἘΡΗ΄ΜΩ.

Ἐν τῇ θλίψει καὶ (δ) τῇ στενοχωρίᾳ,
λέων καὶ σκύμνος λέοντος, ἐκεῖθεν καὶ
ἀσπίδες, καὶ ἔκγονα ἀσπίδων πετομένων, οἳ
ἔφερον (ε) ἐπὶ ὄνων καὶ καμήλων τὸν πλοῦτον
αὐτῶν πρὸς ἔθνος, ὃ οὐκ ὠφελήσει (ζ) αὐτούς.
7 Αἰγύπτιοι μάταια καὶ κενὰ ὠφελήσουσιν ὑ-
μᾶς· ἀπάγγειλον αὐτοῖς, Ὅτι ματαία
8 ἡ παράκλησις ὑμῶν αὕτη. Νῦν οὖν καθί-
σας γράψον ἐπὶ πυξίου ταῦτα καὶ εἰς βιβλί-
ον, ὅτι ἔσται εἰς ἡμέρας (η) ταῦτα καιρῶν,
9 καὶ ἕως εἰς τὸν αἰῶνα. Ὅτι (·) ὁ λαὸς ἀπειθής
ἐστι, υἱοὶ ψευδεῖς, οἳ οὐκ ἠβούλοντο ἀκούειν τὸν
10 νόμον τοῦ θεοῦ· Οἱ λέγοντες τοῖς προφήταις,
Μὴ ἀναγγέλλετε ἡμῖν, καὶ τοῖς τὰ ὁρά-
ματα ὁρῶσι, Μὴ λαλεῖτε ἡμῖν, ἀλλὰ ἡμῖν
λαλεῖτε καὶ ἀναγγέλλετε ἡμῖν ἑτέραν πλάνη-
11 σιν, Καὶ ἀποστρέψατε ἡμᾶς ἀπὸ τῆς ὁδοῦ
ταύτης· ἀφέλετε ἀφ' ἡμῶν τὸν τρίβον τοῦ-
τον, καὶ ἀφέλετε ἀφ' ἡμῶν τὸ λόγιον τοῦ
12 Ἰσραήλ. Διὰ τοῦτο (¨) τάδε λέγει ὁ ἅγιος τοῦ
Ἰσραήλ, Ὅτι ἐπειθήσατε τοῖς λόγοις
τούτοις, καὶ ἠλπίσατε ἐπὶ ψεύδει, καὶ ὅτι
ἐγόγγυσας, καὶ πεποιθὼς ἐγένου ἐπὶ τῷ λό-
13 γῳ τούτῳ, Διὰ τοῦτο ἔσται ὑμῖν ἡ ἁμαρτία
αὕτη, ὡς τεῖχος πίπτον παραχρῆμα (θ)
πόλεως ὀχυρᾶς ἑαλωκυίας, ἧς παραχρῆμα
14 πάρεστι τὸ πτῶμα· Καὶ τὸ πτῶμα αὐτῆς
ἔσται ὡς σύντριμμα ἀγγείου ὀστρακίνου, ἐκ κε-
ραμίου (ι) λεπτά, ὥστε μὴ εὑρεῖν ἐν αὐτοῖς
ὄστρακον, ἐν ᾧ πῦρ ἀρεῖς, καὶ ἐν ᾧ ἀποσυ-
ριεῖς ὕδωρ μικρόν.

Et ſciunt, qui errant ſpiritu, intel- 24
ligentiam: & muſſitatores diſcent
obedire, (b) & linguæ balbutientes
diſcent loqui pacem.

CAP. XXX.

VÆ filii deſertores, dicit Do- 1
minus. Feciſtis conſilium, non per
me, & pacta non per ſpiritum me-
um, ut adderetis peccata peccatis:
Qui vadunt deſcendere in Ægy- 2
ptum (me autem non interrogave-
runt;) ut acciperent auxilium à
Pharaone, et protegerentur ab Æ-
gyptiis. Erit enim vobis protectio 3
Pharaonis in confuſionem, & his
qui confidunt in Ægypto, oppro-
briũ. Sunt enim in Tani principes, 4
nuntii peſſimi. Fruſtrà laborabunt 5
ad populum, qui eis non proderit ad
(a) auxilium, ſed ad confuſionem,
& opprobrium.

VISIO QUADRUPEDUM 6
IN DESERTO.

IN tribulatione & anguſtia leo,
& catulus leonis: indè etiam a-
ſpides, & genimina aſpidum vo-
lantium: qui ferebant ſuper aſinos,
& camelos divitias ſuas ad gen-
tem, quæ eis non proderit. Ægyptii 7
inania & vacua proderunt vobis?
Annuntia eis, Quia (b) vana con-
ſolatio veſtra hæc. Nunc igitur ſe- 8
dens ſcribe ſuper (c) buxum hæc,
& in libro: quoniam (d) erunt in
dies hæc tempore, & uſque in æter-
num. Quia populus inobediens 9
eſt, filii mendaces, qui nolunt audi-
re legem Dei: Qui dicunt prophe- 10
tis, Nolite annuntiare nobis: & vi-
dentibus viſiones, Nolite loqui no-
bis: ſed nobis loquimini, & an-
nuntiate nobis alteram ſeductio-
nem; Et avertite nos à via hac: 11
auferte à nobis ſemitam hanc, &
auferte à nobis eloquium Iſrael.
Propterea hæc dicit Sanct⁹ Iſrael; 12
Quia increduli fuiſtis verbis his,
& ſperâſtis in mendacio, & quia
murmurâſti, & fidens fuiſti in
verbo iſto; Propterea erit vobis 13
peccatum hoc, ſicut murus deci-
dens ſubitò civitatis munitæ ca-
ptæ, cujus repentè adeſt ruina:
Et ruina ejus erit, ſicut contritio 14
vaſis teſtacei ex figuli officina, (e)
comminuta, ita ut non inveniatur
in eis teſta, in qua ignem tollas, &
in qua (f) extrahas aquam pu-
ſillam.

MS.A. (α) τάδε λέγει (β) καὶ οὐ δι' ἐμοῦ, (ᵈ)* ἁμαρτίαις ἐφ' ἁμαρτίαις (γ) οὔτε εἰς βοήθειαν, οὔτε εἰς ὠφέλειαν, ἀλλὰ (δ) ἐν τῇ (ε) ἐπ' ὄνων (ζ) αὐτοὺς εἰς βοήθειαν, ἀλλὰ εἰς αἰσχύνην καὶ ὄνειδος. Αἰγύπτιοι (η) καιρῶν ταῦτα, καὶ εἰς τὸν (·) λαὸς (¨) οὕτως λέγει (θ) πόλεως ἑαλωκυίας, (ι) λεπτόν,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

24 וְיִדְעוּן דְּלָא אַלִּיפוּ רוּחַ דְּסוּכְלְתָנוּ וְדַהֲווּ אָמְרִין לֵית כָּל אִלֵּין יְקַבְּלוּן אוּלְפָּן׃

ל

1 וַי בְּנַיָּא מְרוֹדַיָּא אָמַר יְיָ לְמֶעְבַּד עֵיצָה וְלָא מִמֵּימְרִי וּלְאִתְמַלָּכָא מְלַךְ וְלָא שָׁאֲלִין
2 בִּנְבִיַּי בְּדִיל לְאוֹסָפָא חוֹבִין עַל חוֹבֵי נַפְשְׁהוֹן׃ דְּאָזְלִין לְמֵחַת לְמִצְרַיִם וּבְפִתְגָמֵי
3 נְבִיַּי לָא שְׁאִילוּ לְאִתַּקָּפָא בִּתְקוֹף פַּרְעֹה וּלְאִתְרְחָצָא בִּטְלַל מִצְרַיִם׃ וִיהֵי לְכוֹן
4 תְּקוֹף פַּרְעֹה לִבְהַתָּא וְאִתְרְחֲצָנָא בִּטְלַל מִצְרַיִם לְאִתְכְּנָעוּ׃ אֲרֵי הֲווֹ בְטָאנֵיס רַבְרְבוֹהִי
5 וְאִזְגַּדּוֹהִי עַד תַּחְפַּנְחֵס מְטוֹ׃ כּוּלְּהוֹן אָזְלִין לְמִבְהַת לְוַת עַמָּא דְּלָא יְהֲנוּן לְהוֹן
6 לָא לְסָעִיד וְלָא לַהֲנָאָה אֲרֵי לִבְהַתָּא וְאַף לְחִסּוּדִין׃ מַטְּלִין עַל בְּעִירְהוֹן בְּאוֹרַח
דָּרוֹמָא בַּאֲרַע עָקָא וְעִיוּק אֲתַר דְּאַרְיָא בַּר אַרְיָוָן וְחִוְיָן חוּרְמָנִין מְפָרְחִין נָטְלִין עַל
כְּתַף עִילִין נִכְסֵיהוֹן וְעַל חֲטוּרִיאַת גַּמְלִין מָא דִבְאֲצָרֵיהוֹן מוֹבְלִין לְעַם לָא יְהֲנוּן
7 לְהוֹן׃ וּמִצְרָאֵי לְמָא וְרֵיקָנוּ סַעֲדְהוֹן בְּכֵן עֲרָעִית מִנְּהוֹן קְטִילִין וּמְנִין אַיְתֵי עֲלֵיהוֹן׃
8 כְּעַן עוֹל כְּתַב עַל לוּחַ בֵּינֵיהוֹן וְעַל שִׁיטִין דִּסְפַר רְשׁוֹם וּתְהֵי לְיוֹם דִּין לְסַהֲדוּ קֳדָמַי
9 עַד עָלְמָא׃ אֲרֵי עַם סָרְבָן אִנּוּן בְּנַיָּא כַּדִּיבַיָּא בְּנַיָּא לָא אֲבוֹ לְקַבָּלָא אוּלְפַן אוֹרַיְתָא
10 דַּיְיָ׃ דְּאָמְרִין לִנְבִיַּיָּא לָא תִתְנַבּוֹן וּלְמַלְפַיָּא לָא תַּלְּפוּן לָנָא אוּלְפַן אוֹרַיְתָא בְּסִימָן
11 מַלִּילוּ עִמָּנָא אִשְׁתְּעוּ לָנָא שַׁנְיָן׃ אַסְטִיוּנָא מֵאוֹרְחָא דְּתַקְנָא אַבְטִילוּנָא מִמְּסָרְתָא
12 אַרְחִיקוּ מִן קֳדָמָנָא יָת מֵימַר קַדִּישָׁא דְיִשְׂרָאֵל׃ בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר קַדִּישָׁא דְיִשְׂרָאֵל
חֲלַף דְּקַצְתּוּן בְּפִתְגָמָא הָדֵין וְאִתְרְחֵצְתּוּן בְּשִׁקְרָא וּבְאוּנְסָא וְאִסְתְּמַכְתּוּן עֲלוֹהִי׃
13 בְּכֵן יְהֵי לְכוֹן חוֹבָא הָדֵין כִּכְרַךְ דַּחֲרוּב וְאִתְחַמַּר כְּשׁוּר מַתְקַף דִּבְתְכֵיף שְׁלוּ יֵיתֵי
14 תַבְרֵיהּ׃ וְתַבְרַהּ כִּתְבוּר מָן דַּחֲסַף דְּפַחָרָא דִּמְדַקְדַּק לָא בְחַיִס וְלָא מִשְׁתְּכַח בִּדְקוּקֵיהּ
חֲסַף לְמֶחְתֵּי נוּר מִמְּבְעוֹר וּלְמִדְלַח מַיִין מִפְּצִיד׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et ſcient qui non didicerunt ſpiritum intellectus; & qui dicebant, Ni- 24
hil ſunt omnia hæc, ſuſcipient diſciplinam.

CAP. XXX.

VÆ filiis tranſgreſſoribus, dicit Dominus, ut inſtituerent deliberati- 1
onem, & non ex verbo meo; & caperent conſiliũ, & non interrogave-
runt prophetas meos, ut adjicerent peccata peccatis animæ ſuæ. Qui vadunt 2
ut deſcendant in Ægyptum, & verba prophetarum meorum non interroga-
verunt, & ut roborentur in fortitudine Parhonis, & ut confidant in um-
bra Ægypti. Et erit vobis robur Parhonis in confuſionem; & confidentia 3
in umbra Ægypti, in ignominiam. Quia fuerunt in Tanes principes ejus, 4
& nuncii ejus uſque ad Taphnes pervenerunt. Omnes ambulant in 5
confuſionem, ad populum qui non proderit eis, nec in auxilium neque in
utilitatem, ſed in confuſionem & in opprobria. Portant in jumentis ſuis 6
in via Auſtri, in *terra* tribulationis & anguſtiæ; in loco ubi eſt leo & ca-
tulus leonis, & ſerpens, & baſiliſci volantes; portant in humeris pullo-
rum ſubſtantias ſuas, & ſuper gibbum camelorum deferunt quidquid ha-
bent in theſauris ſuis, populo qui non proderit eis. Ægyptiorum autem 7
vanũ & inane eſt auxilium: propterea occurri plurimis ex eis occiſis: arma-
tos inducam ſuper eos. Nunc autem ingredere, ſcribe ſuper tabulam in me- 8
dio eorũ, & in columnis libri ſigna; & erit in die judicii in teſtimonium
coram me uſque in æternũ. Quia populus rebellis eſt & filii mendaces, filii 9
qui noluerunt ſuſcipere doctrinam legis Dñi. Qui dicunt prophetis, Ne 10
prophetetis: & doctoribus, Ne doceatis nos doctrinam legis; loquimini
nobis complacentia, narrate nobis mutationes. Avertite nos à via recta, 11
ceſſare facite nos à ſemita; longè facite à conſpectu noſtro verbum ſancti
Iſrael. Propterea ſic dicit Dñs ſanctus Iſrael, Pro eo quòd deteſtati eſtis 12
verbũ hoc, et ſperaſtis in mendacio, et in rapina, eique innixi eſtis. Pro- 13
pterea erit vobis peccatũ hoc, ſicut civitas quæ deſtructa eſt, & in acervos
redacta, & ſicut murus *robuſtus*, cuj⁹ interit⁹ veniet ſubitò. Et interitus ejus 14
erit ſicut contritio vaſis teſtacei *figuli*, quod comminuitur abſque miſeri-
cordia, ita ut non inveniatur in comminutione ejus teſta ad portandum
ignem de incendio, & ad hauriendam aquam de ciſterna.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

24 * ܘܢܕܥܘܢ ܣܘܟܠܐ ܐܝܠܝܢ ܕܛܥܝܐ ܗܘܬ ܪܘܚܗܘܢ. ܘܣܟ̈ܠܐ ܢܐܠܦܘܢ ܠܡܫܬܡܥܘ.
1 * ܩܦܠܐܘܢ * ܠ * ܘܝ ܠܒ̈ܢܝܐ ܡܪ̈ܘܕܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܥܒܕܘ ܬܪܥܝܬܐ ܘܠܐ
2 ܡܢܝ. ܘܢܣܟܘ ܢܣܟ̈ܐ ܕܠܐ ܡܢ ܪܘܚܝ. ܕܢܘܣܦܘܢ ܚܛ̈ܗܐ ܥܠ ܚܛ̈ܗܐ. * ܕܐܙܠܝܢ ܠܡܚܬ
ܠܡܨܪܝܢ. ܘܦܘܡܝ ܠܐ ܫܐܠܘ. ܠܡܬܥܫܢܘ ܒܥܘܫܢܗ ܕܦܪܥܘܢ. ܘܢܬܟܣܘܢ
3 ܒܡܛܠܬܗ ܕܡܨܪܝܢ. * ܢܗܘܐ ܠܟܘܢ ܥܘܫܢܗ ܕܦܪܥܘܢ ܠܒܗܬܬܐ. ܘܡܛܠܬܐ ܕܡܨܪܝܢ
4 ܠܡܣܬܪܬܐ. * ܡܛܠ ܕܗܘ ܒܨܥܢ. ܘܪ̈ܘܪܒܢܘܗܝ ܘܡܠܐܟ̈ܘܗܝ ܥܘ̈ܠܐ ܢܠܐܘܢ. * ܠܘܬ ܥܡܐ
5 ܕܠܐ ܡܘܬܪ ܠܗܘܢ. ܠܐ ܠܡܥܕܪܢܘ. ܘܠܐ ܠܡܘܬܪܢܘ. ܐܠܐ ܠܒܗܬܬܐ ܘܠܚܣܕܐ. * ܡܫܩܠܐ ܕܚܝ̈ܘܬܐ
ܕܬܝܡܢܐ ܒܐܪܥܐ ܕܐܘܠܨܢܐ ܘܕܥܩܬܐ. ܐܪܝܐ ܘܓܘܪܝܐ ܕܐܪܝܐ: ܘܡܢܗܘܢ ܐܟܕܢܐ ܘܚܘܪܡܢܐ ܦܪܚܐ.
6 ܦܪܚܐ: ܢܫܩܠܘܢ ܥܠ ܚܨܐ ܕܥܝ̈ܠܐ ܩܢܝܢܗܘܢ: ܘܥܠ ܓܒ̈ܐ ܕܓܡ̈ܠܐ ܣܝܡܬܗܘܢ: ܠܘܬ ܥܡܐ
7 ܕܠܐ ܡܘܬܪ ܠܗܘܢ. * ܘܡܨܪ̈ܝܐ ܣܪܝܩܐܝܬ ܘܒܣܪܝܩܘܬܐ ܡܥܕܪܝܢ. ܡܛܠܗܢܐ ܩܪܝܬ
8 ܠܗܘܢ. ܕܣܪܝܩܘܬܐ ܗܝ ܬܘܟܠܟܘܢ ܗܢܐ. * ܡܟܝܠ ܬܐ ܟܬܘܒ ܗܠܝܢ ܥܠ ܠܘܚ̈ܐ ܘܥܠ
9 ܟܬܒܐ ܕܩܝܡܗܘܢ. ܕܢܗܘܐ ܠܚܪܬܐ ܕܝܘܡܬܐ ܠܣܗܕܘܬܐ ܥܕܡܐ ܠܥܠܡ. * ܡܛܠ
10 ܕܥܡܐ ܡܪܡܪܢܐ ܗܘ. ܒܢ̈ܝܐ ܕܓܠܐ. ܒܢ̈ܝܐ ܕܠܐ ܨܒܘ ܠܡܫܡܥ ܢܡܘܣܗ ܕܡܪܝܐ. * ܕܐܡܪܝܢ
ܠܚܙ̈ܝܐ. ܠܐ ܬܚܙܘܢ. ܘܠܢܒ̈ܝܐ. ܠܐ ܬܬܢܒܘܢ ܠܢ ܡܟܣܢܘܬܐ. ܡܠܠܘ ܠܢ ܦܠܓܘܬܐ. ܘܚܙܘ
11 ܠܢ ܕܓܠܘܬܐ. * ܐܣܛܘܢ ܡܢ ܐܘܪܚܐ. ܘܐܥܒܪܘܢ ܡܢ ܫܒܝܠܐ. ܘܒܛܠܘ ܡܢܢ ܠܩܕܝܫܐ
12 ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܡܛܠܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܚܠܦ ܕܐܣܠܝܬܘܢ ܡܠܬܐ
13 ܗܕܐ. ܘܐܬܬܟܠܬܘܢ ܥܠ ܥܘܠܨܢܐ: ܘܪܛܢܬܘܢ ܘܐܬܬܟܠܬܘܢ ܥܠܘܗܝ. * ܡܛܠܗܢܐ ܢܗܘܐ
ܠܟܘܢ ܣܟܠܘܬܐ ܗܕܐ. ܐܝܟ ܬܪܥܐ ܕܢܦܠ. ܘܐܝܟ ܫܘܪܐ ܪܡܐ ܕܡܢ ܫܠܝ ܗܘܐ ܬܒܪܗ.
14 * ܘܬܒܪܗ. ܐܝܟ ܬܒܪܐ ܕܡܐܢܐ ܕܦܚܪܐ ܕܡܬܦܪܦܪ ܕܠܐ ܚܘܣܢ. ܕܠܐ ܡܫܬܟܚ ܒܬܒܪ̈ܘܗܝ ܩܠܦܐ
ܠܡܣܒ ܒܗ ܢܘܪܐ ܡܢ ܝܩܕܬܐ. ܘܠܡܕܠܐ ܒܗ ܡܝܐ ܡܢ ܓܘܒܐ.

Et ſcientiam acquirent ignari quorum ſpiritus 24
errabat, & ſtulti diſcent obtemperare.

CAP. XXX.

VÆ filiis refractariis, dicit Dominus, qui 1
conſilium propoſuêre ſibi, ſed non ex *mente*
mea, & libavêre libationes, ſed non ſecundùm
ſpiritum meum, ut peccata peccatis accumularent
: Qui os meum minimè conſulentes 2
abierunt ut deſcenderent in Ægyptum ad roborandum
ſe robore Pharaonis, & recipiendum
ſe ſub protectionem Ægypti. Cedet vobis 3
robur Pharaonis, in pudorem : & receptus
ſub protectionem Ægypti, in abſtruſionem.
Quoniam ipſe in Soane, & principes 4
ac nuntii ejus impii fatigabuntur Apud populum 5
qui non proderit eis nec ad auxilium
nec ad utilitatem, imò ad ignominiam & opprobrium.
Onus bellnarum Auſtri in terra 6
anguſta & miſera. Leo & catulus leonis, &
inter eos aſpis & præſter volans, deportabunt
ſuper dorſum aſellorum opes ſuas, &
ſuper latera camelorum theſauros ſuos, ad populum
qui non proderit eis. Nam Ægyptii 7
vanum & inutile præſtabunt auxilium : iccirco
proclamo ad eos, Vana eſt hæc fiducia veſtra.
Jam ergò veni, ſcribe hæc in tabulis & 8
in libro fœderis eorum : ut ad poſtremum uſque
diem maneat in teſtimonium ſempiternum.
Eſt enim populus moroſus, filii ſunt 9
mendaces, filii qui noluerunt obedire legi
Domini : Qui dixerunt videntibus, Ne videatis; 10
& prophetis, Ne vaticinemini nobis
correptionem : loquimini nobis diſſidium, &
videte nobis mendacium : Seducite nos à via, 11
abducite nos à ſemitis, & abolete à nobis
Sanctum Iſraelis. Propterea, ſic dicit Domi- 12
nus Sanctus Iſraelis; Quandoquidem ſpreviſtis
verbum hoc, confiſi autem eſtis oppreſſioni,
muſſitâſtis, eique confiſi eſtis : Iccirco 13
erit vobis hoc peccatum ſimile rupturæ *muri*
collapſi, & ſicut murus altus cujus fractura fit
ex improviſo, Et cujus fractura ſimilis eſt fra- 14
cturæ vaſis teſtacei quod ſine clementia *ita*
quaſſatur, ut non reperiatur inter fragmenta
ejus teſtula quâ capi *poſſit* ignis è foco, aut
hauriri aqua è ciſterna.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

24 * ويعرفون الفهم الضالون بالروح والمتذمرون يتعلمون ان يطيعوا * والالسنة المهذارة تتعلم
1 ان تتكلم بالسلامة * الفصل الثلثون * ويل الاولاد المارقة * هكذا
يقول الرب * صنعتم رايا وليس من قبلي * ومواثيق ليس من قبل روحي * لتزدادوا
2 خطايا على خطايا * ايها الذاهبون لينزلوا الى مصر ولم يسالوني * ليستغيثوا بفرعون
3 ويستتروا بالمصريين * انه يكون لكم ستر فرعون خزيا * وعارا للمتوكلين على مصر *
4 5 * لانه يكون بصاعان ملايكة روساء اشرار * يتعبون مع الشعب باطلا * الذي لا
ينفعهم لا للمعونة ولا للمنفعة * لكن للخزي والعار * الوحي الخامس عشر *
6 * ذي الاربع قوايم التي في البرية في الشدة والمضايقة * الاسد وشبل الليث من هناك *
والافاعي واولاد الافاعي الطايرة * الذين يحملون على الحمير والجمال غناهم لامة لا تنفعهم
7 للمعونة لكن للخزي والعار * المصريون ينفعونكم باطلا وفارغا * اخبرهم ان تعزيتكم
8 هذه باطلة * والان اجلس اكتب هذه على لوح وفي كتاب * ان هذه تصير الى ايام زمان
9 والى الابد * لان الشعب عاص هو * بنون كذبة * الذين لم يشاوا ان يسمعوا ناموس
10 الله * القايلون للانبياء لا تخبرونا * وللذين يرون الرويا لا تكلمونا * لكن كلمونا واخبرونا
11 بضلالة اخرى * وارجعوا بنا من هذه الطريق * انزعوا منا هذا السبيل * وانزعوا منا كلمة
12 اسرايل * لاجل هذا هكذا يقول الرب قدوس اسرايل * انكم خالفتم هذه الكلمات
13 وتوكلتم على الكذب * ولانك تذمرت وصرت متوكلا على هذا القول * لاجل هذا تكون
هذه الخطية مثل سور ساقط سريعا لمدينة حصينة منقلبة التي حضرت سقطها سريعا *
14 * ويكون سقطها مثل كسر اناء خزف من فخار رقيق * حتى ان لا تجد فيهم خزفا فيه
نار ترفعه * وفيه ماء قليل تجذبه *

Errantes ſpiritu prudentiam agnoſcent, 24
ſuſurrones obedire diſcent, & linguæ eſſutientes
diſcent pacatè loqui.

CAP. XXX.

HEu miſeros filios deſertores fidei: 1
ſic dicit Dominus, Agitâſtis conſilium
quod non erat ex me, & fœdera quæ non
erant è ſpiritu meo; ut adjiceretis vobis
peccata peccatis. Heus qui me inconſulto, 2
proficiſcimini ut eatis in Ægyptū ad ope
Pharaonis implorandam, & mendicandam
protectionem Ægyptiorum; Erit 3
ſanè vobis protectio Pharaonis in pudorem,
& opprobrium confidentibus Ægypto.
Erunt enim in Sane Angeli, 4
nempè principes ſcelerati, Fruſtrà laborantes 5
apud populum qui nullam afferet
eis opem vel utilitatem, ſed pudorem &
opprobrium:

Revelatio decima quinta.

Populum inquam ſimilem *quadrupedibus* 6
quæ ſunt in deſerto cum infœlicitate &
anguſtia, unde prodière *leo & catulus*
leonis, viperæ & filii viperarū volantiū,
qui aſinis & camelis deferunt opes ſuas
ad gentem quæ non proderit eis ad ſubſidium,
ſed potiùs ad pudorem & ignominiam. 7
Ægyptii in vanū & inaniter proderunt
vobis. Annuntia eis dicens, *Hujuſmodi*
conſolatio veſtra, vana eſt. Jam 8
autem ſede, ſcribe hæc ſuper tabulam &
in libro: nam hæc futura ſunt ad diuturnos
dies, & ad æternitatem; Quia 9
populus hic rebellis eſt, filii mendaces, qui
nolunt acquieſcere legi Dei: Qui di- 10
cunt ad prophetas, Ne annuntietis nobis;
& his qui vident viſiones, Ne nos alloquamini:
ſed loquimini & annuntiate
nobis alium errorem: Revocate nos ab 11
hac via, tollite à nobis hoc inſtitutum,
& auferte à nobis vocabulum Iſraelis.
Hac de cauſa, ſic dicit Dominus Sanctus 12
Iſraelis; Quia his verbis contradixiſtis,
& fiduciam collocâſtis in mendacio; &
quia murmurâſtis & facti eſtis hujuſmodi
ſermone: Iccirco erit vobis 13
peccatum hoc velut jamjam caſura mœnia
urbis munitæ ſubvertendæ, cujus
ruina proximè impendet; Cujus caſus 14
erit ſimilis fragmentis teſtacei vaſis
tenui ex argilla, ita ut inter illa non
reperiatur teſtula quâ vel *ignis tolli,*
vel parum aquæ hauriri poſſit.

ישעיה : ל

; quiete In - : Iſrael ſanctus Dominus Dominus dixit ſic Quia
15 כִּי כֹה־אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה קְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל בְּשׁוּבָה
.veſtra fortitudo erit ſpe in & , quieſcendo In .eritis ſalvi requie &
וָנַחַת תִּוָּשֵׁעוּן בְּהַשְׁקֵט וּבְבִטְחָה תִּהְיֶה גְּבוּרַתְכֶם
.fugiemus equum ſuper ſed ,Nequaquam : dixiſtis Sed .noluiſtis Et
16 וְלֹא אֲבִיתֶם׃ וַתֹּאמְרוּ לֹא־כִי עַל־סוּס נָנוּס
erunt leves Ideo .equitabimus levem ſuper Et .fugietis Ideo
עַל־כֵּן תְּנוּסוּן וְעַל־קַל נִרְכָּב עַל־כֵּן יִקַּלּוּ
faciebus à ,unius increpationis faciebus à una Chilias .vos perſequentes
17 רֹדְפֵיכֶם׃ אֶלֶף אֶחָד מִפְּנֵי גַּעֲרַת אֶחָד מִפְּנֵי
ſuper malus ſicut remaneatis donec ,fugietis quinque increpationis
גַּעֲרַת חֲמִשָּׁה תָּנֻסוּ עַד אִם־נוֹתַרְתֶּם כַּתֹּרֶן עַל־
expectabit propterea Et .collem ſuper vexillum veluti & ,montis capite
18 רֹאשׁ הָהָר וְכַנֵּס עַל־הַגִּבְעָה׃ וְלָכֵן יְחַכֶּה
, ſe exaltabit propterea & , veſtri miſereſcendum ad , DOMINUS
יְהוָה לַחֲנַנְכֶם וְלָכֵן יָרוּם
omnes beati ,Dominus judicii Deus quia : veſtri miſereſcendum ad
לְרַחֶמְכֶם כִּי־אֱלֹהֵי מִשְׁפָּט יְהוָה אַשְׁרֵי כָּל־
: Jeruſalaim in ,ſedebit Sijon in populus Nam .eum expectantes
19 חוֹכֵי לוֹ׃ כִּי־עַם בְּצִיּוֹן יֵשֵׁב בִּירוּשָׁלָםִ
vocem ad tui miſerebitur miſerendo ; plorabis non plorando
בָּכוֹ לֹא־תִבְכֶּה חָנוֹן יָחְנְךָ לְקוֹל
vobis dabit Et .tibi reſpondebit , cum audire ſecundum , tui clamoris
20 זַעֲקֶךָ כְּשָׁמְעָתוֹ עָנָךְ׃ וְנָתַן לָכֶם
avolabit non at : oppreſſionis aquam & ,anguſtiæ panem Dominus
אֲדֹנָי לֶחֶם צָר וּמַיִם לָחַץ וְלֹא־יִכָּנֵף
tuæ aures Et .tuos doctiores videntes tui oculi erunt & : tui doctores ultrà
21 עוֹד מוֹרֶיךָ וְהָיוּ עֵינֶיךָ רֹאוֹת אֶת־מוֹרֶיךָ׃ וְאָזְנֶיךָ
ambulate , via Hæc : dicendo , tuo tergo à verbum audient
תִּשְׁמַעְנָה דָבָר מֵאַחֲרֶיךָ לֵאמֹר זֶה הַדֶּרֶךְ לְכוּ
contaminabitis Et .ſiniſtraveritis cùm & ,dextraveritis cùm ,ea in
22 בוֹ כִּי תַאֲמִינוּ וְכִי תַשְׂמְאִילוּ׃ וְטִמֵּאתֶם אֶת־
.tui auri conflatilis ſuperhumerale & ,tui argenti ſculptilium operimentum
צִפּוּי פְּסִילֵי כַסְפֶּךָ וְאֶת־אֲפֻדַּת מַסֵּכַת זְהָבֶךָ
pluviam dabit Et .ei dices ,egredere : menſtruum ſicut ea Diſperges
23 תִּזְרֵם כְּמוֹ דָוָה צֵא תֹּאמַר לוֹ׃ וְנָתַן מְטַר
fructus panis & : humum ſeminabis quando , tui ſeminis
זַרְעֲךָ אֲשֶׁר־תִּזְרַע אֶת־הָאֲדָמָה וְלֶחֶם תְּבוּאַת
die in tuæ acquiſitiones paſcet : pinguis & ,craſſus erit & ; humi
הָאֲדָמָה וְהָיָה דָשֵׁן וְשָׁמֵן יִרְעֶה מִקְנֶיךָ בַּיּוֹם
,terram operantes pulli & boves Et .latum paſcuum illa
24 הַהוּא כַּר נִרְחָב׃ וְהָאֲלָפִים וְהָעֲיָרִים עֹבְדֵי הָאֲדָמָה
.ventilabro in & , pala in ventilatur quod ,comedent purum migma
בְּלִיל חָמִיץ יֹאכֵלוּ אֲשֶׁר־זֹרֶה בָרַחַת וּבַמִּזְרֶה׃
collem omnem ſuper & ,excelſum montem omnem ſuper erit Et
25 וְהָיָה עַל־כָּל־הַר גָּבֹהַּ וְעַל כָּל־גִּבְעָה
cadendo in ,multæ interfectionis die in ; aquarum deductus rivi ,elevatum
נִשָּׂאָה פְּלָגִים יִבְלֵי־מָיִם בְּיוֹם הֶרֶג רָב בִּנְפֹל
lux & , ſolis lux ſicut lunæ lux erit Et .turres
26 מִגְדָּלִים׃ וְהָיָה אוֹר־הַלְּבָנָה כְּאוֹר הַחַמָּה וְאוֹר
die in : dierum ſeptem lux ſicut ſeptempliciter erit ſolis
הַחַמָּה יִהְיֶה שִׁבְעָתַיִם כְּאוֹר שִׁבְעַת הַיָּמִים בְּיוֹם
ejus plagæ transfoſſionem & ,ſui populi contritionem Dominum alligare
חֲבֹשׁ יְהוָה אֶת־שֶׁבֶר עַמּוֹ וּמַחַץ מַכָּתוֹ
.ſanaverit
יִרְפָּא׃

Verſio VULG. LAT.

15 Quia hæc dicit Dominus Deus
ſanctus Iſrael; Si revertamini
& quieſcatis, ſalvi eritis: in ſilentio
& in ſpe erit fortitudo
16 veſtra. Et noluiſtis: Et dixiſtis;
Nequaquam, ſed ad equos fugiemus
: ideò fugietis. Et ſuper
veloces aſcendemus: ideò
velociores erunt, qui perſequentur
17 vos. Mille homines à
facie terroris unius: & à facie
terroris quinque fugietis, donec
relinquamini quaſi malus
navis in vertice montis, &
quaſi ſignum ſuper collem.
18 Propterea exſpectat Dominus
ut miſereatur veſtrì: & ideò
exaltabitur parcens vobis:
quia Deus judicii Dominus:
beati omnes qui expectant
19 eum. Populus enim Sion habitabit
in Jeruſalem: plorans
nequaquã plorabis, miſerans
miſerebitur tuî: ad vocem
clamoris tui ſtatim ut audierit,
20 reſpondebit tibi. Et dabit vobis
Dñs panem arctũ, & aquã
brevem: & non faciet avolare
à te ultrà doctorẽ tuum:
& erunt oculi tui videntes
21 præceptorem tuum. Et aures
tuæ audient verbũ poſt tergũ
monentis; Hæc eſt via, ambulate
in ea: & non declinetis
neq; ad dexterã, neque ad
22 ſiniſtrã. Et contaminabis laminas
ſculptiliũ argenti tui, &
veſtimentũ conflatilis auri tui,
& diſperges ea ſicut immunditiam
menſtruatæ. Egredere,
23 dices ei; Et dabitur pluvia
ſemini tuo, ubicumque ſeminaveris
in terra: & panis frugum
terræ erit uberrimus, &
pinguis: paſcetur in poſſeſſione
tua in die illo agnus
24 ſpatioſé: Et tauri tui, &
pulli aſinorum, qui operantur
terram, commiſtum migma
comedent ſicut in area
25 ventilatum eſt. Et erunt ſuper
omnem montem excelſum,
& ſuper omnem collem
elevatum, rivi currentium
aquarum, in die interfectionis
multorum cùm ceciderint
26 turres. Et erit lux Lunæ
ſicut lux Solis, & lux Solis
erit ſeptempliciter ſicut lux
ſeptem dierum, in die quâ alligaverit
Dominus vulnus populi
ſui, & percuſſuram plagæ
ejus ſanaverit.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

15 (κ) Οὕτω λέγει κύριος, κύριος ὁ ἅγιος
τοῦ Ἰσραήλ, Ὅταν ἀποστραφεὶς (λ) στενάξῃς,
τότε σωθήσῃ, καὶ γνώσῃ ποῦ ἦσθα, ὅτε
ἐπεποίθεις ἐπὶ τοῖς ματαίοις, ματαία
ἡ ἰσχὺς ὑμῶν ἐγενήθη· καὶ οὐκ ἠβούλεσθε
16 ἀκούειν, (μ) Ἀλλ' εἴπατε, Ἐφ' ἵππων
φευξόμεθα· διὰ τοῦτο φεύξεσθε· (ν) καὶ ἐπὶ
κούφοις ἀναβάται ἐσόμεθα· διὰ τοῦτο κοῦφοι
17 ἔσονται οἱ διώκοντες ὑμᾶς. (ξ) Χίλιοι
διὰ φωνὴν ἑνὸς φεύξονται, καὶ διὰ
φωνὴν πέντε φεύξονται πολλοί, ἕως ἂν
καταλειφθῆτε, ὡς ἱστὸς ἐπ' ὄρους, καὶ
18 ὡς σημαίαν φέρων ἐπὶ βουνοῦ. Καὶ πάλιν
μενεῖ ὁ θεὸς τοῦ οἰκτειρῆσαι ὑμᾶς,
καὶ διὰ τοῦτο ὑψωθήσεται τοῦ ἐλεῆσαι ὑμᾶς·
διότι κριτὴς κύριος ὁ θεὸς (ο) ὑμῶν.
μακάριοι οἱ ἐμμένοντες (π) ἐπ' αὐτῷ.
19 Διότι λαὸς ἅγιος ἐν Σιὼν οἰκήσει· καὶ
Ἱερουσαλὴμ κλαυθμῷ ἔκλαυσεν, Ἐλέησόν
με. (ρ) ἐλεήσει σε, τὴν φωνὴν τῆς
κραυγῆς σου ἡνίκα εἶδεν, ἐπήκουσέ σου.
20 Καὶ δώσει κύριος ὑμῖν ἄρτον θλίψεως,
καὶ ὕδωρ στενόν, καὶ οὐκ ἔτι (σ) μὴ ἐγγίσωσί
σοι οἱ πλανῶντές σε· ὅτι οἱ
ὀφθαλμοί σου ὄψονται τοὺς πλανῶντάς
21 σε, Καὶ τὰ ὦτά σου ἀκούσονται τοὺς
λόγους τῶν ὀπίσω σε πλανησάντων, οἱ
λέγοντες, Αὕτη ἡ ὁδός, πορευθῶμεν ἐν
22 αὐτῇ εἴτε δεξιὰ εἴτε ἀριστερά. Καὶ (τ)
μιανεῖς τὰ εἴδωλα τὰ περιηργυρωμένα,
(υ) καὶ περικεχρυσωμένα λεπτὰ ποιήσῃς,
καὶ λικμήσῃς ὡς ὕδωρ ἀποκαθημένης, καὶ
23 ὡς κόπρον ὤσεις αὐτά. Τότε ἔσται ὁ ὑετὸς
τῷ σπέρματι τῆς γῆς σου, καὶ ὁ
ἄρτος τοῦ (φ) γενήματος τῆς γῆς σου
ἔσται πλησμονὴ καὶ λιπαρός· καὶ βοσκηθήσεταί
σου τὰ κτήνη τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ
24 τόπον πίονα καὶ εὐρύχωρον. Οἱ ταῦροι
ὑμῶν καὶ οἱ βόες οἱ ἐργαζόμενοι τὴν γῆν,
φάγονται ἄχυρα ἀναπεποιημένα ἐν κριθῇ
25 (χ) λελικμημένῃ. Καὶ ἔσται ἐπὶ παντὸς
ὄρους ὑψηλοῦ, καὶ ἐπὶ παντὸς βουνοῦ
μετεώρου ὕδωρ διαπορευόμενον ἐν τῇ
ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ὅταν ἀπόλωνται πολλοί,
26 καὶ ὅταν πέσωσι πύργοι. Καὶ ἔσται τὸ
φῶς τῆς σελήνης ὡς τὸ φῶς τοῦ ἡλίου,
καὶ τὸ φῶς τοῦ ἡλίου ἔσται ἑπταπλάσιον ἐν
τῇ ἡμέρᾳ, ὅταν ἰάσηται κύριος τὸ σύντριμμα
τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, καὶ τὴν ὀδύνην τῆς
πληγῆς σου ἰάσεται.

Sic dicit Dominus, Dominus ſanctus Iſrael; Cùm reverſus 15
ingemueris; tunc ſalvus eris, &
ſcies ubi fueris: quia confidebas
ſuper vanis; vana facta eſt
fortitudo veſtra. Et noluiſtis audire,
Sed dixiſtis; Super equos
fugiemus: (propterea fugietis:) 16
& ſuper levibus aſcenſoribus
(g) erimus: ideò leves erunt,
qui perſequuntur vos. Mille 17
ad vocem unius fugient: &
ad vocem quinque fugient multi:
donec relinquamini, quaſi
malus navis ſuper montem, &
quaſi ſignum ferens ſuper collem.
Et rurſus expectabit Deus, 18
ut miſereatur veſtrì: &
propterea exaltabitur, ut parcat
vobis: quia judex Dominus
Deus (h) veſter. Beati (i) qui
immanent in eo: Quia populus 19
ſanctus in Sion habitabit:
& (k) Hieruſalem ploratu ploravit,
Miſerere meì. Miſerebitur
tuì: (l) vocem clamoris
tui quando vidit; exaudivit
te. Et dabit Dominus vobis panem 20
tribulationis, & aquam anguſtam:
& nequaquam ultrà
appropinquabunt tibi, qui
decipiant te: quia oculi tui
videbunt eos, qui te ſeducebant: 21
Et aures tuæ audient verba poſt
te decipientium, qui dicebant:
Hæc via, ambulemus in ea, ſive
ad dextram, ſive ad ſiniſtram.
Et contaminabis idola deargentata, 22
& deaurata: comminues
ea, & diſperges, ſicut aquam
menſtruatæ: & ſicut ſtercus
abjicies ea. Tunc erit pluvia 23
ſemini terræ tuæ: & panis frugum
terræ tuæ erit abundans,
& pinguis. Et paſcentur jumenta
tua in die illa locum pinguem,
& ſpatioſum. Tauri veſtri, 24
& boves, qui operantur terram,
comedent paleas commiſtas
in hordeo ventilato. Et erit 25
ſuper omnem montem excelſum,
& ſuper omnem collem elevatum
aqua tranſiens in (m) die illa,
cùm perierint multi, & cùm ceciderint
turres. Et erit lumen 25
Lunæ, ſicut lumen Solis, & lumen
Solis erit ſeptuplum in die,
quando ſanaverit Dominus contritionem
populi ſui; & dolorem
plagæ tuæ curabit.

MS. A. (κ) Οὕτως λέγει κύριος ὁ ἅγιος Ἰσραήλ, (λ) στενάξῃ, (μ) Ἀλλὰ εἴπατε, Ἐφ' ἵπποις (ν) καὶ εἴπατε, Ἐπὶ (ξ) Καὶ διὰ φωνὴν ἑνὸς φεύξονται χίλιοι, (ο)* ἡμῶν ἐστιν, καὶ ποῦ καταλείψετε τὴν δόξαν ὑμῶν; μακάριοι πάντες οἱ (π) ἐν αὐτῷ, (ρ) καὶ ἐλεήσει, τὴν φωνὴν (σ) οὐ μὴ (τ) ἐξαρεῖς (υ) καὶ τὰ περικεχρυσωμένα λεπτὰ ποιήσεις. καὶ λικμήσεις (φ) γενήματος (χ) λελικμημένα.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

15 אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים קַדִּישָׁא דְיִשְׂרָאֵל אֲמָרִית דִּי תְתוּבוּן לְאוֹרָיְתָא תְנוּחוּן
16 וְתִתְפָּרְקוּן תִּשְׁקְטוּן וְתִשְׁרוּן לְרוּחֲצָן תְּהוֹן גִּבָּרִין וְלָא אֲבֵיתוּן׃ וַאֲמַרְתּוּן לָא אֱלָהֵן
עַל סוּסְוָתָא נֶעֱרוֹק וְעַל כֵּן תֶּעֶרְקוּן וְעַל קְלִילִין נִרְכּוֹב עַל כֵּן יְהוֹן קַלִּילִין
17 רָדְפֵיכוֹן׃ אַלְפָא חַד מִן קֳדָם מְזוֹפִית חַד מִן קֳדָם מְזוֹפִית חַמְשָׁא תֶּעֶרְקוּן עַד
18 דְּתִשְׁתַּאֲרוּן כִּבְוּעֲרָא עַל רֵישׁ טוּרָא וּכְאָתָא עַל רָמְתָא׃ וּבְכֵן עֲתִיד יְיָ לְמִחַס
עֲלֵיכוֹן וְתַקִּיף הוּא דִּירַחֵם עֲלֵיכוֹן אֲרֵי אֱלָהָא עָבֵיד דִּינָא יְיָ טוּבֵי צַדִּיקַיָּא דִּמְסַבְּרִין
19 לְפוּרְקָנֵיהּ׃ אֲרֵי עַמָּא בְּצִיּוֹן יָתֵיב בִּירוּשְׁלֶם מִבְכָּא לָא תִבְכֵּי רַחְמָא יְרַחֵם עֲלָךְ
20 קָל צְלוֹתָךְ יְקַבֵּיל וְיַעְבֵּיד בָּעוּתָךְ׃ וְיִהַב לְכוֹן יְיָ נִכְסֵי סָנְאָה וּבִזַּת מְעִיקָא וְלָא
יְסַלֵּק עוֹד שְׁכִנְתֵּיהּ מִבֵּית מַקְדְּשָׁא וִיהֶוְיָן עֵינָךְ חָזְיָן יָת שְׁכִנְתִּי בְּבֵית מַקְדְּשָׁא׃
21 וְאוּדְנָךְ יִשְׁמְעוּן פִּתְגָּמָא מִבַּתְרָךְ לְמֵימַר הָדָא אוֹרְחָא דְּתַקְּנָא הַלִּיכוּ בַהּ לָא
22 תִסְטוֹן מִנַּהּ לְיַמִּינָא וְלִסְמָאלָא׃ וּתְסָאֲבוּן יָת חִפּוּי צַלְמֵי כַסְפֵּיכוֹן וְיָת תִּקּוּן
23 מַתְּכַת דַּהֲבְכוֹן תְּרַחֲקוּנוּן כְּמָא דִמְרַחֲקִין יָת טוּמְאַתָא כֵּן תְּרַחֲקוּנִין׃ וְיִתֵּן
מְטַר זַרְעָךְ דִּי תִזְרַע יָת אַרְעָא וְעִבּוּרָא וַעֲלַלְתָא יִסְגֵּי בְּאַרְעָא וִיהֵי פַרְנוּס וְטָב
24 וְיִתְפַּרְנְסוּן צַדִּיקַיָּא מִגִּיתֵיהוֹן בְּעִדָּנָא הַהִיא שְׂמַן רַכִּיכִין וּפַטִּימִין׃ וְתוֹרַיָּא וַחֲמָרַיָּא
25 דִּי מְפַלְּחִין בְּהוֹן יָת אַרְעָא בְּלִיל מְפַטַּם יֵיכְלוּן דִּי דְּרָא בְּרִיחְתָא וּבְמַדְּרָא׃ וִיהֵי
עַל כָּל טוּר רָם וְעַל כָּל רָמָא מְנַטְּלָא פַצִּידִין נַגְדִין מַיִין תַּקְלָא לְמַלְכִין וּלְמַשִׁרְיָתְהוֹן
26 בְּיוֹם קְטוֹל רַב בְּמִפַּל רַבְרְבִין׃ וִיהֵי נְהוֹר סִיהֲרָא כִּנְהוֹר שִׁמְשָׁא וּנְהוֹר שִׁמְשָׁא יְהֵי
עֲתִיד לְאַזְהָרָא עַל חַד תְּלָת מְאָה אַרְבְּעִין וּתְלָתָא כִּנְהוֹר שִׁבְעַת יוֹמַיָּא בְּיוֹמָא דְיָתִיב יְיָ
יָת גָּלוּת עַמֵּיהּ וּמְרַע מַחָתֵיהּ יַסֵּי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quia hæc dicit Dominus Deus ſanctus Iſrael: Dixi, Si converſi fueritis ad 15
legem meam; requieſcetis & redimemini, & quieſcetis, & habitabitis confidenter,
& eritis fortes: & noluiſtis. Et dixiſtis, Non, ſed in equis fugiemus: 16
ideò fugietis; & ſuper veloces equitabimus: ideo veloces erunt perſecutores
veſtri. Mille hominum à facie increpantis unius, à facie increpantis 17
quinque fugietis, donec relinquamini ſicut fax in vertice montis, &
ſicut ſignum ſuper collem. Propterea futurum eſt ut Dominus miſereatur 18
veſtri: & fortis eſt ipſe qui miſerebitur veſtri; quia Deus faciens judicium
Dominus eſt: beati juſti qui ſperant in ſalutare ejus. Quoniam populus in 19
Sion habitabit in Hieruſalem; plorans nequaquam plorabis. Miſeratione
miſerebitur tui, vocem *orationis tuæ* ſuſcipiet, & faciet deprecationem
tuam. Et dabit vobis Dñs ſubſtantias odii, & prædam afflictionis, & non 20
tollet majeſtatem ſuam ultrà de domo ſanctuarii: & erunt oculi tui videntes
majeſtatem *meam* in domo ſanctuarii. Et aures tuæ audient verbum 21
poſt tergum tuum, dicentis: Hæc eſt via recta, ambulate in ea, & ne declinetis
ab ea ad dexteram, neque ad ſiniſtram. Et contaminabitis cooperturam 22
ſimulacrorum argenti veſtri, & ornamentum conflatilis auri veſtri;
abominabimini ea ſicut abominantur immunditiam menſtruatæ: ſic abominabimini
ea. Et dabit pluviam ſeminis tui, quo ſeminabis terram, 23
& frumentum fructus multiplicabitur in terra; & erit nutriens & bonus;
& nutrientur juſti pecoribus ſuis in tempore illo, pinguedine
tenerorum & pinguium. Boves autem et aſini quibus operantur terram, 24
pabulum impinguans comedent, quod eventilatum eſt pala et ventilabro.
Et erunt ſuper omnem montem excelſum, et ſuper omnem collem 25
elevatum rivi currentium aquarum, & erunt in ruinam regibus,
& exercitibus eorum in die occiſionis magnæ; cùm ceciderint
principes. Et erit lux Lunæ ſicut lux Solis, & lux Solis futura eſt ut ſplendeſcat 26
trecenties quadragies ter ſuper lucem ſeptem dierum, in die qua
reducet Dominus captivitatem populi ſui, & infirmitatem plagæ ejus
ſanabit.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

15 * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܡܐ ܕܬܬܘܒܘܢ ܘܬܬܬܢܚܘܢ ܬܬܦܪܩܘܢ.
16 ܘܒܫܠܝܐ ܘܒܣܒܪܐ ܬܗܘܐ ܓܢܒܪܘܬܟܘܢ. ܘܠܐ ܐܨܛܒܝܬܘܢ. * ܘܐܡܪܬܘܢ ܠܐ ܗܟܢܐ. ܐܠܐ
ܥܠ ܪܟܫܐ ܢܪܟܒ. ܘܥܠ ܡܪܗܒܐ ܢܥܪܘܩ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܬܥܪܩܘܢ. ܘܢܗܘܘܢ ܡܪܗܒܝܢ
17 ܪܕܘܦܝܟܘܢ. * ܐܠܦ . ܡܢ ܟܐܬܐ ܕܚܕ. ܘܡܢ ܟܐܬܐ ܕܚܡܫܐ ܬܥܪܩܘܢ. ܥܕܡܐ
18 ܕܬܫܬܚܪܘܢ ܐܝܟ ܥܪܕܐ ܒܪܝܫ ܛܘܪܐ. ܘܐܝܟ ܐܬܐ ܥܠ ܪܡܬܐ. * ܡܛܠ ܕܫܪܐ ܡܪܝܐ
ܠܡܪܚܡܘ ܥܠܝܟܘܢ. ܘܢܬܬܪܝܡ ܠܡܪܚܡܢܘܬܗ ܥܠܝܟܘܢ. ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܗܘ ܕܝܢܐ ܡܪܝܐ.
19 ܘܛܘܒܝܗܘܢ ܠܟܠ ܕܡܣܟܝܢ ܠܗ. * ܡܛܠ ܕܥܡܐ ܒܨܗܝܘܢ ܢܬܒ. ܘܒܐܘܪܫܠܡ
ܡܒܟܐ ܠܐ ܬܒܟܘܢ. ܡܪܚܡܘ ܢܪܚܡ ܥܠ ܩܠܐ ܕܩܥܬܟܘܢ. ܘܡܐ ܕܫܡܥ .
20 ܢܥܢܝܟܘܢ. * ܘܢܬܠ ܠܟܘܢ ܡܪܝܐ ܠܚܡܐ ܒܐܘܠܨܢܐ. ܘܡܝܐ. ܒܐܘܠܨܢܐ. ܘܠܐ
21 ܢܟܢܫ ܬܘܒ ܠܡܛܥܝܢܝܟܘܢ. ܘܢܚܙܝܢ ܥܝܢܝܟܘܢ ܠܡܛܥܝܢܝܟܘܢ. * ܘܐܕܢܝܟܘܢ
ܢܫܡܥܢ ܡܠܬܐ ܡܢ ܒܣܬܪܟܘܢ ܕܐܡܪܐ. ܗܢܘ ܐܘܪܚܐ ܪܕܘ ܒܗ. ܘܠܐ ܬܣܛܘܢ
22 ܠܝܡܝܢܐ ܘܠܣܡܠܐ. * ܘܬܛܢܦܘܢ ܣܐܡܐ ܕܚܦܝܢ ܦܬܟܪܝܟܘܢ. ܘܐܦܘܕܐ
ܕܢܣܟܐ ܕܕܗܒܟܘܢ. ܘܬܕܪܘܢ ܐܢܘܢ. ܐܝܟ ܡܝܐ ܕܣܘܚܬܐ. ܘܐܝܟ ܨܘܐܐ ܬܦܩܘܢ ܐܢܘܢ.
23 * ܘܢܬܝܗܒ ܡܛܪܐ ܠܙܪܥܟܘܢ ܕܬܙܪܥܘܢ ܒܐܪܥܐ. ܘܥܒܘܪܐ ܕܐܪܥܐ. ܢܗܘܐ ܕܗܝܢ
24 ܘܫܡܝܢ. ܘܪܥܝܐ ܕܒܥܝܪܟܘܢ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܒܐܬܪܐ ܦܛܝܢܐ. * ܘܬܘܪܐ ܘܥܓܠܐ ܕܦܠܚܝܢ
25 ܐܪܥܐ. ܟܘܫܐ ܢܩܝܐ ܢܐܟܠܘܢ. ܕܡܕܪܝ ܒܪܦܫܐ ܘܒܡܕܪܘܝܐ. * ܘܢܗܘܘܢ ܥܠ
ܟܠ ܛܘܪ ܪܡ. ܘܥܠ ܟܠ ܪܡܬܐ ܪܡܬܐ. ܢܗܪܐ ܕܡܝܐ ܒܝܘܡܐ ܕܩܛܠܐ ܪܒܐ.
26 ܘܡܐ ܕܢܦܠܘܢ ܡܓܕܠܐ. * ܘܢܗܘܐ ܢܘܗܪܗ ܕܣܗܪܐ. ܐܝܟ ܢܘܗܪܗ ܕܫܡܫܐ. ܘܢܘܗܪܗ
ܕܫܡܫܐ. ܢܗܘܐ ܚܕ ܫܒܥܐ. ܐܝܟ ܢܘܗܪܐ ܕܫܒܥܐ ܝܘܡܝܢ. ܒܝܘܡܐ ܕܢܚܒܘܫ ܡܪܝܐ
ܬܒܪܐ ܕܥܡܗ. ܘܡܚܘܬܐ ܕܡܚܘܬܗ ܢܐܣܐ.

Propterea, ſic dicit Dominus Sanctus Iſraelis, 15
Cùm pœnitentiam egeritis & gemueritis,
liberamini, & in tranquillitate & ſpe
erit fortitudo veſtra; at non acquieviſtis:
Sed dixiſtis, Non ita; equos conſcendemus, 16
& ſuper velocia *jumenta* fugiemus. Iccirco
fugietis, at velociores erunt qui perſequentur
vos. Mille ab increpatione unius, 17
& *omnes* ab increpatione quinque fugietis:
donec remaneatis velut onager in
vertice montis, & velut index ſuper collem.
Incipiet enim Dominus miſereri veſtrûm, 18
& exaltabit ſe ad clementiam erga
vos adhibendam, quia Deus eſt judex Dominus:
proinde beati omnes qui expectant
eum. Nam populus in Sione ſeſſurus 19
eſt, & in Jeruſalem nullatenus flebitis:
miſeratione movebitur ad vocem clamoris
veſtri, & ſtatim ac audierit, exaudiet
vos: Dabitque vobis Dominus panem in 20
anguſtia, & aquam in anguſtia, & non congregabit
ampliùs ſeductores veſtros: ſed
ſpectabunt oculi veſtri *punitionem* ſeductorum
veſtrorum. Et aures veſtræ audient verbum 21
à tergo veſtro dicens, Hæc eſt via, in
hac incedite, & ne digrediamini dextrorſum
aut ſiniſtrorſum. Et polluetis argentum quo tecta 22
ſunt idola veſtra, & ephod fuſilis auri veſtri;
ſpargetis ea velut aquas menſtruatæ, &
veluti ſordes ejicietis ea. Tum dabitur 23
pluvia ſemini veſtro quod in terra ſeretis,
& frumentum terræ ſuave erit ac pingue;
paſcua jumentorum veſtrorum erunt eo die
in loco uberrimo: Boves etiam & juvenci 24
tellurem arantes farraginem mundam comedent,
palâ & ventilabro agitatam. Fietis 25
etiam ut ſuper quemcunque montem excelſum
& ſuper quemcunque collem ſublimem,
fluant rivi aquarum in die cædis magnæ &
cùm corruent turres. Erit præterea lux lunæ 26
quanta lux ſolis, & lux ſolis erit ſeptupla,
ut lux ſeptem dierum; in die quâ Dominus
conſolidaverit fractionem populi ſui,
& dolorem plagæ ejus ſanaverit.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

15 * لان هكذا يقول الرب قدوس اسرايل • اذا رجعت تنهدت * حينيذ تخلص وتعلم كيف
16 كنت لما توكلت على الاباطيل * صارت قوتكم باطلة * ولم تشاوا ان تسمعوا * لكن قلتم
نهرب على الخيل * لاجل هذا تهربون * وتقولون نصير ركابا على الخفيفات * لاجل هذا الان
17 تصير طاردوكم سريعين * وبصوت واحد يهربون الوف * وبصوت خمسة يهرب كثيرون *
18 الي ان تبقون مثل صار على جبل * ومثل حامل علامة على اكمة * ومن بعد يثبت الله
ليتراف عليكم * ولاجل هذا يرتفع ليرحمكم * من اجل ان الرب الهنا حاكم هو *
19 وليبقي مجدكم * مغبوطون جميع الثابتين فيه * من اجل ان الشعب المقدس يسكن في
صهيون * واورشليم اذا بكت بكا ارحمني فيرحمك * حين راي صوت صراخك سمعك *
20 * ويعطيكم خبز شدة وماء ضيقا * ولا يقتربون لك مضلوك بعد * لان عينيك تنظر
21 مضليك * واذنيك تسمع كلمات مضليك من خلف * القايلون هذه الطريق نسير فيها *
22 ان كانت يمينا وان كانت شمالا * وتنزع الاصنام المغشات بالفضة والمغشات بالذهب * وتجعلها
23 سحقا وتذريها مثل ماء الحايض * ومثل الزبل تقصيها * حينيذ المطر يكون لزرع
ارضك * والخبز من غلة ارضك يكون شبعا وخصبا * وترعي بهايمك في ذلك اليوم
24 موضعا دسما ومتسعا * ثيرانكم وبقركم الذي يعملون الارض ياكلون تبنا مخلطا
25 بالشعير معربلا * ويكون على كل جبل عال وعلي كل اكمة مرتفعة ماء يجري في ذلك
26 اليوم • اذا هلك كثيرون واذا سقطت البروج * ويكون نور القمر مثل نور الشمس *
ونور الشمس يكون سبعة اضعاف • في اليوم اذ يشفي الرب انكسار شعبه ويبري
وجع ضربتك *

Sic enim dicit Dominus Sanctus Iſraelis, 15
Cùm converſus ſuſpirabis, tunc ſalvaberis,
& ſcies qualis eras quando
confidebas vanitatibus, Vana facta eſt
fortitudo veſtra, & audire noluiſtis;
Sed dixiſtis, Fugiemus ſuper equos; iccirco 16
fugietis: Dicitis etiam, Levibus
jumentis *vehemur; iccirco jam erunt*
perſecutores veſtri leviſſimi. Et ab unius 17
voce fugient millena, & à voce quinque
fugient quamplurimi, donec maneatis
ut malus navis *ſuper montem, & ut vexillifer*
ſuper collem. Poſtea verò perſiſtet 18
Deus in utendo clementiâ erga vos,
& ideo elevabit ſe ad miſerendum
veſtri, quia Dominus noſter judex eſt, &
ad æternam reddendam gloriam veſtram:
beati omnes qui perſiſtunt in
eo. Nam populus ſanctus habitabit in 19
Sione, & Jeruſalem cùm lacrymas fuderit ac dixerit, *Miſerere mei, miſerebitur*
tui: ſimul atque viderit vocem
clamoris tui, audiet te; Et dabit vobis 20
panem tribulationis & aquam anguſtam,
& non accedent ulteriùs ad te
ſeductores tui, quoniam oculi tui videbunt
ſeductores tuos; Et aures 21
tuæ audient verba ſeductorum tuorum
à tergo dicentium, Hæc eſt via,
ambulemus in ea, ſive ad dexteram
ſit, ſivè ad ſiniſtram. Et auferes idola 22
obtecta argento & obtecta auro,
comminues ea, ſpargeſque velut aquam
patientis menſtruum, & veluti
ſtercus procul amovebis ea. Tunc aderit 23
pluvia ſemini telluris tuæ, & panis
è proventu terræ tuæ erit ad ſaturitatem
& ubertatem: paſcentur pecora
tua eo die locum ſapidum & amplum:
Tauri veſtri, & vaccæ veſtræ 24
quæ terram colunt, comedent paleam
hordeo mixtam vanno expurgatam.
Præterea ſuper omnem montem ſublimem 25
& collem elevatum, aqua decurret
eo die, ubi multi perierint,
& ceciderint turres. Et erit lux lunæ 26
ſicut lux ſolis, lux autem ſolis erit
ſeptupla in die quo curabit Dominus
fracturam populi ſui, & ſanabit dolorem
vulneris tui.

ישעיה : לא

grav:tas &, ejus naſus ardens, longinquo de venit Domini nomen Ecce
27 הִנֵּה שֵׁם־יְהוָה בָּא מִמֶּרְחָק בֹּעֵר אַפּוֹ וְכֹבֶד
ignis tanquam ejus lingua & , ira ſunt repleta ejus labia : oneris
מַשָּׂאָה שְׂפָתָיו מָלְאוּ זַעַם וּלְשׁוֹנוֹ כְּאֵשׁ
collum ad uſque, inundans torrens velut ejus ſpiritus Et .conſumens
28 אֹכָלֶת׃ וְרוּחוֹ כְּנַחַל שׁוֹטֵף עַד־צַוָּאר
faciens errare frænum &, vanitatis cribro in gentes agitandum ad, dimidiabit
יֶחֱצֶה לַהֲנָפָה גוֹיִם בְּנָפַת שָׁוְא וְרֶסֶן מַתְעֶה
ſanctificari nocte ſicut vobis erit Canticum .populorum maxillis in
29 עַל לְחָיֵי עַמִּים׃ הַשִּׁיר יִהְיֶה לָכֶם כְּלֵיל הִתְקַדֶּשׁ־
montem in intrandum ad, tibia cum euntis ſicut cordis lætitia & : ſolennitatem
חָג וְשִׂמְחַת לֵבָב כַּהוֹלֵךְ בֶּחָלִיל לָבוֹא בְהַר־
Dominus faciet audire Et .Iſrael petram ad Domini
30 יְהוָה אֶל־צוּר יִשְׂרָאֵל׃ וְהִשְׁמִיעַ יְהוָה אֶת־
ira in oſtendet ſui brachii deſcenſionem & , ſuæ vocis magnificentiam
הוֹד קוֹלוֹ וְנַחַת זְרוֹעוֹ יַרְאֶה בְּזַעַף
.grandinis lapide &, turbine &, diſperſione, comedentis ignis flamma & , naſi
אַף וְלַהַב אֵשׁ אוֹכֵלָה נֶפֶץ וָזֶרֶם וְאֶבֶן בָּרָד׃
erit Et .percutiet virga in : Aſſur conteretur Domini voce à Quia
31 כִּי־מִקּוֹל יְהוָה יֵחַת אַשּׁוּר בַּשֵּׁבֶט יַכֶּה׃ וְהָיָה 32
Dominus faciet requieſcere quam , fundatæ virgæ tranſitus omnis
כֹּל מַעֲבַר מַטֵּה מוּסָדָה אֲשֶׁר יָנִיחַ יְהוָה
pugnabit agitationis bellis in & : citharis in &, tympanis in eum ſuper
עָלָיו בְּתֻפִּים וּבְכִנֹּרוֹת וּבְמִלְחֲמוֹת תְּנוּפָה נִלְחַם־
regi ipſa etiam , Tophteh heri ab diſpoſita Quia .ea cum
33 בָּהּ׃ כִּי־עָרוּךְ מֵאֶתְמוּל תָּפְתֶּה גַּם־הוּא לַמֶּלֶךְ
ligna & , ignis ejus pyra : dilatavit , fecit profundam : eſt præparata
הוּכָן הֶעְמִיק הִרְחִב מְדֻרָתָהּ אֵשׁ וְעֵצִים
.ea in ardentis ſulphuris torrens ſicut Domini flatus , multum
הַרְבֵּה נִשְׁמַת יְהוָה כְּנַחַל גָּפְרִית בֹּעֲרָה בָּהּ׃

CAP. XXXI. לא

: innitentur equis ſuper & , auxilio pro Ægyptum deſcendentibus Væ
1 הוֹי הַיֹּרְדִים מִצְרַיִם לְעֶזְרָה וְעַל־סוּסִים יִשָּׁעֵנוּ
ſunt prævalidi quia , equitibus in & : multus quia , curru in ſperaverũt &
וַיִּבְטְחוּ עַל־רֶכֶב כִּי רָב וְעַל־פָּרָשִׁים כִּי־עָצְמוּ
Dominum & , Iſrael Sanctum ad reſpexerunt non & , valde
מְאֹד וְלֹא שָׁעוּ עַל־קְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל וְאֶת־יְהוָה
& , malum adduxit & , ſapiens ipſe etiam Et .quæſierunt non
2 לֹא דָרָשׁוּ׃ וְגַם־הוּא חָכָם וַיָּבֵא רָע וְאֶת־
contra &, peſſimorum domum contra ſtetit & : removit non ſua verba
דְּבָרָיו לֹא הֵסִיר וְקָם עַל־בֵּית מְרֵעִים וְעַל־
, Deus non & , homines Ægyptii Et .iniquitatem operantium auxilium
3 עֶזְרַת פֹּעֲלֵי אָוֶן׃ וּמִצְרַיִם אָדָם וְלֹא־אֵל
ſuã manũ inclinabit Dominus Et .ſpiritus non & , caro eorum equi &
וְסוּסֵיהֶם בָּשָׂר וְלֹא־רוּחַ וַיהוָה יַטֶּה יָדוֹ
.deficient ipſi omnes ſimul & , adjutus cadet & , auxiliator corruet &
וְכָשַׁל עוֹזֵר וְנָפַל עָזֻר וְיַחְדָּו כֻּלָּם יִכְלָיוּן׃
, leo rugiet Quemadmodum : me ad Dominus dixit ſic Nam
4 כִּי־כֹה אָמַר־יְהוָה אֵלַי כַּאֲשֶׁר יֶהְגֶּה הָאַרְיֵה
plenitudine eum ſuper conclamabitur quem , ſuã prædam ſuper leonis catulus &
וְהַכְּפִיר עַל־טַרְפּוֹ אֲשֶׁר יִקָּרֵא עָלָיו מְלֹא
non eorum tumultu à & , conſternabitur non eorum voce à , paſtorum
רֹעִים מִקּוֹלָם לֹא יֵחָת וּמֵהֲמוֹנָם לֹא
ſuper militandum ad exercituum Dominus deſcendet ſic : humiliabitur
יַעֲנֶה כֵּן יֵרֵד יְהוָה צְבָאוֹת לִצְבֹּא עַל־
.ejus collem ſuper & , Sijon montem
הַר־צִיּוֹן וְעַל־גִּבְעָתָהּ׃

Verſio VULG. LAT.

27 Ecce nomen Domini venit de longinquo, ardens furor ejus, & gravis ad portandũ : labia ejus repleta ſunt indignatione, & lingua ej' quaſi ignis devorans: 28 Spiritus ejus velut torrens inundans uſque ad mediũ colli, ad perdendas gentes in nihilum, & frænũ erroris, qđ erat in maxillis populorum. 29 Canticũ erit vobis ſicut nox ſanctificatæ ſolennitatis, & lætitia cordis ſicut qui pgit cum tibia, ut intret in montem Dñi ad fortem Iſrael. 30 Et auditam faciet Dominus gloriam vocis ſuæ, & terrorem brachii ſui oſtendet in comminatione furoris, & flammâ ignis devorantis: allidet in turbine, & in lapide grandinis. 31 A voce enim Dñi pavebit Aſſur virgâ pcuſſus. 32 Et erit tranſitus virgæ fundatus, quam requieſcere faciet Dominus ſuper eum in tympanis & citharis: & in bellis præcipuis expugnabit eos. 33 Præparata eſt enim ab heri Topheth, à rege præparata, profunda, & dilatata. Nutrimenta ejus, ignis & ligna multa: flatus Dñi ſicut torrens ſulphuris ſuccendens eam.

CAP. XXXI.

1 VÆ qui deſcendunt in Ægyptum ad auxiliũ, in equis ſperantes, & habentes fiduciam ſuper quadrigis, quia multæ ſunt; & ſuper equitib⁹, quia prævalidi nimis: & non ſunt confiſi ſuper Sanctũ Iſrael, & Dominũ non requiſierunt. 2 Ipſe autem ſapiens adduxit malum, & verba ſua non abſtulit: & conſurget contra domum peſſimorũ, & contra auxilium operantium iniquitatẽ. 3 Ægyptus, homo, & non Deus: & equi eorum, caro, & non ſpiritus: & Dominus inclinabit manum ſuam, & corruet auxiliator, & cadet cui præſtatur auxilium, ſimúlque omnes conſumentur. 4 Quia hæc dicit Dominus ad me; Quomodò ſi rugiat leo & catulus leonis ſuper prædã ſuam, et cùm occurrerit ei multitudo paſtorum, à voce eorum non formidabit, et à multitudine eorum non pavebit: ſic deſcendet Dominus exercituum ut prælietur ſuper montem Sion, et ſuper collem ejus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

27 Ἰδοὺ τὸ ὄνομα κυρίου (ψ) ἔρχεται διὰ χρόνου, καιόμενος (ʺ) θυμός· μετὰ δόξης τὸ λόγιον τῶν χειλέων αὐτοῦ, (ω) λόγιον ὀργῆς πλῆρες, ϗ ἡ ὀργὴ τοῦ θυμοῦ ὡς πῦρ ἔδεται. 28 Καὶ τὸ πνεῦμα αὐτοῦ ὡς ὕδωρ ἐν φάραγγι σῦρον, ἥξει ἕως τοῦ τραχήλου, ϗ διαιρεθήσεται, (α) τοῦ ταράξαι ἔθνη ἐπὶ πλανήσει ματαίᾳ, ϗ διώξεται αὐτοὺς (β) πλάνησις, ϗ λήψεται αὐτοὺς κατὰ πρόσωπον αὐτῶν. 29 Μὴ διαπαντὸς δεῖ ὑμᾶς εὐφραίνεσθαι, ϗ εἰσπορεύεσθαι εἰς τὰ ἅγιά μου διαπαντὸς, ὡσεὶ ἑορτάζοντας, ϗ ὡσεὶ εὐφραινομένους εἰσελθεῖν μετὰ αὐλοῦ (γ) εἰς τὸ ὄρος κυρίου πρὸς τὸν θεὸν τοῦ Ἰσραήλ; 30 Καὶ ἀκουστὴν ποιήσει (δ) κύριος τὴν δόξαν τῆς φωνῆς αὐτοῦ, ϗ τὸν θυμὸν τοῦ βραχίονος αὐτοῦ, δεῖξαι μετὰ θυμοῦ ϗ ὀργῆς, ϗ φλογὸς κατεσθιούσης, κεραυνώσει βιαίως, ϗ ὡς ὕδωρ ϗ χάλαζα συγκαταφερομένη βίᾳ. 31 Διὰ γὰρ (ε) τῆς φωνῆς κυρίου ἡττηθήσονται (ζ) Ἀσσύριοι, τῇ πληγῇ ᾗ ἂν (ʺ) πατάξῃ αὐτούς. 32 Καὶ ἔσται αὐτῷ κυκλόθεν, ὅθεν ἦν (η) αὐτῶν ἡ ἐλπὶς τῆς βοηθείας, ἐφ᾽ ᾗ αὐτὸς ἐπεποίθει, αὐτοὶ μετὰ (θ) τυμπάνων ϗ κιθάρας πολεμήσουσιν αὐτὸν ἐκ μεταβολῆς. 33 (ι) Σὺ γὰρ πρὸ ἡμερῶν ἀπαιτηθήσῃ· (κ) μὴ καὶ σοὶ ἡτοιμάσθη βασιλεύειν; φάραγγα βαθεῖαν, ξύλα κείμενα, πῦρ ϗ ξύλα πολλά, ὁ θυμὸς κυρίου ὡς φάραγξ ὑπὸ θείου καιομένη.

27 Ecce nomen Domini venit poſt (π) tempus: ardens furor cum gloria, eloquium labiorum ejus, eloquium iræ plenum: & ira furoris, ſicut ignis, devorabit: 28 Et ſpiritus ejus ſicut aqua in valle trahens veniet uſque ad collum, & dividetur, ut conturbet gentes ſuper errore vano: & perſequetur eos error, & capiet eos ad faciem ipſorum. 29 Nunquid ſemper oportet vos lætari & ingredi in Sancta mea jugiter, quaſi feſta celebrantes, & quaſi gaudentes ingredi cum tibia in montem Domini ad Deum Iſrael? 30 Et auditam faciet Dominus gloriam vocis ſuæ, & furorem brachii ſui (o) oſtendere; cum furore, & ira, & flamma devorante fulminabit vehementer, & ſicut aqua & grando deſcendens cum vi. 31 Per vocem enim Domini ſuperabuntur Aſſyrii plagâ, quâ percutiet eos. 32 Et erit ei per circuitum, undè erat eorum ſpes auxilii, in qua ipſe confidebat; ipſi cum tympanis, & citharâ pugnabunt contra eum ex commutatione. 33 Tu (p) enim ante dies exigêris. Nunquid & tibi paratum eſt regnare? vallem profundam, ligna poſita, ignem, & ligna multa, furor Domini, ſicut vallis ſulphure ſuccenſa.

MS. A. (ψ) διὰ χρόνου ἔρχεται πολλοῦ, (ʺ) ὁ θυμός· (ω) τὸ λόγιον (α) τοῦ ἔθνη ταράξαι (β) πλάνησεις ματαία, (γ) εἰς τὸν οἶκον τοῦ κυρίου (δ) ὁ θεὸς τὴν (ε) τὴν φωνὴν (ζ) οἱ Ἀσσύριοι, (ʺ) πατάξει (η) αὐτῷ (θ) αὐλῶν ϗ κιθάρας (ι) Οὐ γὰρ σὺ (κ) μὴ ϗ σὺ

ΚΕΦ. λα΄.

1 ΟΥαὶ οἱ καταβαίνοντες εἰς Αἴγυπτον ἐπὶ βοήθειαν, οἱ ἐφ᾽ ἵπποις πεποιθότες ϗ ἐφ᾽ ἅρμασι, ἔστι γὰρ πολλὰ, ϗ ἐφ᾽ ἵπποις πλῆθος σφόδρα· ϗ οὐκ ἦσαν πεποιθότες ἐπὶ τὸν ἅγιον τοῦ Ἰσραὴλ, ϗ (α) τὸν κύριον οὐκ ἐζήτησαν. 2 Καὶ αὐτὸς (β) σοφῶς ἤγαγεν ἐπ᾽ αὐτοὺς κακὰ, ϗ ὁ λόγος αὐτοῦ οὐ μὴ ἀθετηθῇ, ϗ ἐπαναστήσεται ἐπ᾽ οἴκους ἀνθρώπων πονηρῶν, ϗ ἐπὶ τὴν ἐλπίδα αὐτῶν τὴν ματαίαν, 3 Αἰγύπτιον, ἄνθρωπον, ϗ οὐ θεὸν, ἵππων σάρκας, ϗ οὐκ ἔστι βοήθεια. ὁ δὲ κύριος ἐπάξει τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἐπ᾽ αὐτούς· ϗ κοπιάσουσιν οἱ βοηθοῦντες, ϗ ἅμα πάντες ἀπολοῦνται. 4 Ὅτι οὕτως εἶπέ μοι κύριος, Ὃν τρόπον (γ) βοήσῃ ὁ λέων, ἢ ὁ σκύμνος ἐπὶ τῇ θήρᾳ ᾗ ἔλαβε, ϗ κεκράξῃ ἐπ᾽ αὐτῇ, ἕως ἂν ἐμπλησθῇ τὰ ὄρη τῆς φωνῆς αὐτοῦ, ϗ ἡττήθησαν, ϗ τὸ πλῆθος τοῦ θυμοῦ ἐπτοήθησαν, οὕτως καταβήσεται κύριος σαβαὼθ ἐπιστρατεῦσαι ἐπὶ τὸ ὄρος τὸ Σιὼν, (δ) ἐπὶ τὰ ὄρη αὐτῆς.

CAP. XXXI.

1 VÆ, qui deſcendunt in Ægyptum ad auxilium, qui in equis fidentes ſunt, & in curribus: quia multi ſunt, & in equis multitudo magna. Et non fuerunt fidentes ſuper Sanctum Iſrael: & Dominum non requiſierunt. 2 Et ipſe ſapienter adduxit ſuper eos mala: & verbum ejus non fruſtrabitur: & inſurget ſuper domos hominum peſſimorum, & ſuper ſpem eorum vanam, 3 Ægyptium, hominem, & non Deum, equorum carnes, & non eſt auxilium. Dominus autem inducet manum ſuam ſuper eos. Et laborabunt auxiliatores: & ſimul omnes peribunt: 4 Quia ſic dixit mihi Dominus, Quomodò clamabit leo, aut catulus leonis ſuper venatione, quam cepit, & vociferabitur ſuper ea, donec impleantur montes voce ejus, & victi fuerint, & multitudinem furoris expaverint; ſic deſcendet Dominus Sabaoth, ut prælietur ſuper montem Sion, ſuper montes ejus.

MS. A. (α) τὸν θεὸν οὐκ ἐξεζήτησαν (β) σοφὸς (γ) ἐὰν βοήσῃ λέων, (δ) ϗ ἐπὶ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

27 הא שמא דיי מתגלי כמא דאתנביאו עלוהי נבייא מלקדמין תקיף רוגזיה וקשי
28 מלסוברא מן קדמוהי על רשיעיא נפק לוט ומימריה כאשא אכלא : ומימריה
כנחל מגבר עד צואר תקיפין יקטל לארמא עממיא ברמות ריקנו וזמם דטעו בליסת
29 עממיא : תושבחא תהי לכון כליליא דאתקדש ביה חגא וחדות לבא כמא דנגדין
30 בתודתא באבובא למעל בטור קודשא דיי לאתחזאה קדם תקיפא דישראל : וישמע
יי ית זיו קל מימריה ותקוף דרע גבורתיה יגלי בתקוף רגז ושלהובי אשא דמשיצא
31 פסילן בדור וזרמית ואבנין דברד : ארי מקל מימרא דיי מתבר אתוראה די בשולטן
32 מחי : ויהי כל מעבר רברביהון ותקיפיהון די יניח יי פורענות גבורתיה ביניהון
בתופין ובכנורין ישבחון בית ישראל ועל קרבא תקיפא דיתעביד להון בעממיא :
33 ארי מסדרא מן עלמין לקביל חוביהון גהנם אף היא מלך עלמיא אתקנא לעמיקא
ולאפתאא מדורא דאשתא דלקא בה כדבאעין סגיאין מימרא דיי כנחל מגבר
גפרית דלקא בה :

לא

1 וי דנחתין למצרים לסעיד ועל סוסותא מסתמכין ומתרחצין על רתיכיא ארי סגיאין
ועל פרשיא ארי תקיפין לחדא ולא אסתמיכו על מימר קדישא דישראל ואולפן מן
2 קדם יי לא תבעו : ואף הוא בחוכמתיה איתי בישתא על דעבדיה וית פתגמוהי לא
3 בטיל ואקים על בית מבאשין ועל דסעדין לאות שקר : ומצרים אנש ולא רב
וסוסותהון בסר ולא רוח ויי ירים מחת גבורתיה ויתקל סעיד ויפול סעיד וכחדא
4 כולהון ישתיצון : ארי כדנן אמר יי לי כמא דמכלי אריא בר אריון על צדיה דמזדמנין
עלוהי דיר רעין מקלהון לא אתבר ומאתרגושתהון לא מזדעזע כן תתגלי מלכותא
דיי צבאות למשרי על טורא דציון ועל רמתה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

27 Ecce nomen Domini revelabitur ſicut prophetaverunt de eo prophetæ ab antiquo: fortis eſt furor ejus, & gravior quàm ut ferri queat: à facie ejus egreſſa eſt maledictio ſuper impios; & verbum ejus quaſi ignis conſumens. 28 Verbum autem ejus quaſi torrens inundans ad collum uſque, fortes interficiet, ad agitandos populos agitatione vanitatis, & frænum erroris in maxillis populorum. 29 Canticum erit vobis ſicut in nocte, in qua ſanctificata eſt ſolennitas; & lætitia cordis, ſicut qui pergunt in confeſſione & in organo, ut ingrediantur in montem ſanctum Domini; ut appareant coram fortiſſimo Iſrael. 30 Et auditam faciet Dominus gloriam vocis verbi ſui, & fortitudinem brachii potentiæ ſuæ revelabit in ira furoris, & flamma ignis conſumentis *ſculptilia*, alliſione & turbine, & lapidibus grandinis. 31 Quia à voce verbi Domini conteretur Aſſyrius qui cum dominio percutiebat. 32 Et erit omnis tranſitus principum eorum, & fortium eorum, in quibus ponet Dominus ultionem potentiæ ſuæ; in tympanis & citharis laudabit domus Iſrael, propter bellum forte quod pro eis fiet in populis. 33 Quia ordinata eſt gehenna à ſeculis propter peccata eorum. Rex quoque ſeculorum præparavit eam profundam & latam: pyra ignis incenſa eſt in ea, ſicut in lignis multis: Verbum Domini quaſi torrens ſulphuris inundans ſuccendens eam.

CAP. XXXI.

1 VÆ qui deſcendunt in Ægyptum ad auxilium, & in equis innituntur, & confidunt in quadrigis, quia multæ ſunt; & in equitibus, quia validi ſunt nimis: & non innituntur in verbo ſancti Iſrael; & doctrinam à facie Domini non requiſierunt. 2 Ipſe quoque in ſapientia ſua adduxit malum propter *quod fecit*: & verba ſua non fecit irrita, & conſtabilivit contra domum malignorum, & contra adjutores iniquitatis & mendacii. 3 Ægyptii enim homines ſunt, & non principes; & equi eorum caro, & non ſpiritus. Et Dominus levabit plagam potentiæ ſuæ, et corruet auxiliator, et cadet cui præſtatur auxilium, et ſimul omnes conſumentur. 4 Quia hæc dicit Dominus mihi, Sicut clamat leo et catulus leonis ſuper venationem ſuam, contra quem convenit caula paſtorum, à voce eorum non conteretur, et à tumultu eorum non *terrebitur*; ſic revelabitur regnum Domini exercituum *ad caſtrametandum* ſuper montem Sion, et ſuper collem ejus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

27 * ܗܐ ܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܬܐ ܡܢ ܪܘܚܩܐ. ܝܩܝܕ ܪܘܓܙܗ ܘܝܩܝܪ ܡܘܒܠܗ. ܣܦܘܬܗ ܡܠܝܢ
28 ܪܘܓܙܐ. ܘܠܫܢܗ ܐܝܟ ܢܘܪܐ ܕܐܟܠܐ. * ܘܪܘܚܗ ܐܝܟ ܢܚܠܐ ܕܓܪܦ. ܥܕܡܐ ܠܨܘܪܐ ܢܦܣܘܩ.
ܠܡܒܕܪܘ ܥܡܡܐ ܡܛܠ ܛܥܝܘܬܗܘܢ ܣܪܝܩܬܐ. ܘܡܛܠ ܦܓܘܕܐ ܕܡܛܥܝܢܐ ܕܥܠ
29 ܦܟܘܗܝ ܕܥܡܡܐ. * ܬܫܒܘܚܬܐ ܢܗܘܐ ܠܟܘܢ ܐܝܟ ܟܠܝܠܐ ܕܡܬܩܕܫ ܥܐܕܐ. ܘܚܕܘܬ ܠܒܐ
ܐܝܟ ܗܘ ܕܡܗܠܟ ܒܚܕܘܬܐ. ܠܡܐܬܐ ܠܛܘܪܗ ܕܡܪܝܐ. ܠܘܬ ܥܫܝܢܐ ܕܝܥܩܘܒ. * ܘܢܫܡܥ 30
ܡܪܝܐ ܫܘܒܚܐ ܕܩܠܗ. ܘܡܚܘܬܐ ܕܕܪܥܗ ܢܚܘܐ. ܒܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܐ. ܘܒܫܠܗܒܝܬܐ
ܕܢܘܪܐ ܐܟܠܬܐ. ܒܥܠܥܠܐ ܡܙܝܥܢܝܬܐ. ܘܒܟܐܦܐ ܕܒܪܕܐ. * ܡܛܠ ܕܡܢ ܩܕܡ ܫܘܒܚܗ ܕܡܪܝܐ ܢܬܒܪ 31
32 ܐܬܘܪܝܐ. ܘܒܫܒܛܐ ܢܬܡܚܐ. * ܘܢܗܘܐ ܒܟܠܗܘܢ ܥܒܕܘܗܝ. ܫܒܛܐ ܕܡܫܥܒܕܐ ܕܢܣܝܡ
33 ܡܪܝܐ ܥܠܘܗܝ. ܒܛܦܝܐ ܘܒܟܢܪܐ. ܘܒܩܪܒܐ ܥܫܝܢܐ ܢܬܟܬܫ ܥܡܗ. * ܡܛܠ ܕܡܬܛܝܒ
ܡܢ ܩܕܡ ܝܘܡܬܐ ܡܐܟܘܠܬܗ. ܐܦ ܗܝ ܐܬܛܝܒܬ ܠܡܡܠܟ. ܘܥܡܩܬ ܘܐܪܘܝܚܬ ܒܝܬ
ܡܫܪܝܗ. ܩܝܣܐ ܣܓܝܐܐ ܘܢܘܪܐ. ܘܢܫܡܬܗ ܕܡܪܝܐ ܐܝܟ ܢܚܠܐ ܕܟܒܪܝܬܐ ܕܝܩܕܐ ܒܗ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܐ *

1 ܘܝ ܠܐܝܠܝܢ ܕܢܚܬܝܢ ܠܡܨܪܝܢ ܠܡܥܕܪܢܘܬܐ. ܘܥܠ ܪܟܫܐ ܡܬܬܟܠܝܢ.
ܘܡܬܬܟܠܝܢ ܥܠ ܡܪܟܒܬܐ ܣܓܝܐܬܐ. ܘܥܠ ܦܪ̈ܫܐ ܕܥܫܝܢܝܢ ܛܒ. ܘܠܐ ܐܬܬܟܠܘ ܥܠ
2 ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܠܡܪܝܐ ܠܐ ܒܥܘܗ. * ܘܒܚܟܡܬܗ ܐܝܬܝ ܒܝܫܬܐ. ܘܡܠܘܗܝ ܠܐ ܐܥܒܪ.
3 ܘܩܡ ܥܠ ܒܝܬܐ ܕܒܝܫܐ. ܘܥܠ ܡܥܕܪܢܘܬܐ ܕܥܒܕܝ ܥܘܠܐ. * ܘܡܨܪܝܐ ܐܢܫܐ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܗܘܘ
ܐܠܗܐ. ܘܪܟܫܝܗܘܢ ܒܣܪܐ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܗܘܘ ܪܘܚܐ. ܘܡܪܝܐ ܢܪܡܐ ܐܝܕܗ. ܘܢܬܬܩܠ
4 ܡܥܕܪܢܐ. ܘܢܦܠ ܐܦ ܗܘ ܕܡܬܥܕܪ. ܘܟܠܗܘܢ ܐܟܚܕܐ ܢܣܘܦܘܢ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ
ܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܐܝܟ ܕܢܗܡ ܐܪܝܐ ܘܓܘܪܝܐ ܕܐܪܝܐ. ܥܠ ܛܪܦܐ ܕܐܚܕ. ܘܩܥܝܢ ܥܠܘܗܝ
ܣܘܓܐܐ ܕܪܥܘܬܐ. ܘܡܢ ܩܠܗܘܢ ܠܐ ܕܚܠ: ܘܡܢ ܣܘܓܐܗܘܢ ܠܐ ܡܬܬܙܝܥ. ܗܟܢܐ
ܢܚܘܬ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܠܡܬܚܝܠܘ ܥܠ ܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ. ܘܥܠ ܪܡܬܗ.

27 * Ecce nomen Domini venit è longinquo, ardens ira ejus, & glorioſum onus ejus, labia ejus plena ſunt irâ, lingua ejus velut ignis ardeſcens, 28 Et ſpiritus ejus, quaſi torrens abripiens, vel collum obtruncabit: ad exagitandũ populos propter vanum errorem eorum, & propter frænum ducens in errorem, quod eſt ſuper maxillas populorum. 29 Canticum vobis erit corona quæ ſanctificabitur in ſolennitate, & hilaritas cordis, qualis eſt ejus qui hilariter ambulat ut veniat in montem Domini ad Potentiſſimum Jacobi. 30 Et audire faciet Dominus majeſtatem vocis ſuæ, & ictum brachii ſui oſtendet per æſtuantem iram, flammam ignis conſumentem, nimbum quaſſantem, & lapides grandinis. 31 Nam à conſpectu majeſtatis Domini frangetur Aſſyrius, fuſti vapulabit. 32 Et in cunctis operibus ejꝰ aderit virga domans quã Dñs imponet ei: cum tympanis ac citharis, & gravi bello pugnabit adversùs eũ. 33 Quia præparat multis ante diebus cibũ ſuum, ipſa quoque (*Dei majeſtas*) paravit ſe ad regnandum, & in profundum ac latum extendit domiciliũ ſuum: multa adſunt ligna & ignis, & halitus Dñi quaſi torrens ſulphuris ardentis in eo.

CAP. XXXI.

1 VÆ iis qui deſcendunt in Ægyptum ad impetrandum auxilium; innituntur equis, multis curribus & robuſtiſſimis equitibus confidunt; Sancto autẽ Iſraelis minimè confidunt, nec Dominum curant. 2 At is ſapientiâ ſuâ malum inferet, & verba ſua nequaquam revocabit; ſed inſurget contra domum malignorum, & contra auxilium operantium iniquitatem. 3 Et verò Ægyptii homines ſunt, non dii; & equi eorum carnei ſunt, non ſpirituales: quare Domino manum ſuam demittente, deſtruetur is qui præbebit auxilium; & is etiam cui auxilium præbebitur, corruet; omnéſque ſimul conſumentur. 4 Sic enim dixit mihi Dominus, Quemadmodum rugit leo ſeu catulus leonis ſuper id quod prædatus eſt, & conclamantibus in eum multis paſtoribus, eorum clamore minimè terretur, neque multitudinem eorum formidat; ita deſcendet Dominus potentiſſimus ad roborandum ſeſe ſuper monte Sionis & ſuper collibus ejus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الاصحاح الخامس عشر *

27 * ها اسم الرب يجي من زمن كثير * الغضب مشتعل بمجد كلمة شفتيه * كلمة مملوة زجرا *
28 وزجر الغضب ياكل مثل النار * وروحه مثل ماء يجر في واد ياتي الي العنق * ويقسم ليقلق
الامم على الضلالة الباطلة * ويطردهم الضلالة الباطلة * وياخذهم على وجههم * هل ينبغي 29
لكم ان تفرحوا كل حين * وتدخلوا الي مقادسي كل حين * لتدخلوا مثل معيدين ومثل فرحين
30 بزمر الي بيت الرب الي اله اسرايل * ويصنع الله مجد صوته مسموعا * ليظهر غضب ذراعه * بغضب
31 وزجر ولهيب آكل يصعق بصعوبة * ومثل ماء وبرد نازل بعسف * لان الموصليين يغلبون
32 لاجل صوت الرب * بالضربة التي يضربهم بها * ويكون له من حوله * فلهذا كان له رجاء
33 المعونة التي توكل هو عليها * هاولاء مع زمور وقيثار يحاربوه منذ البدو * اليس انت
من قبل ايام ابيت * هل وانت استعديت لتملكي واديا عميقا * حطبا موضوعا * نارا وحطبا
كثيرا * غضب الرب مثل واد موقد من كبريت *

* الفصل الحادي والثلثون * النبوة في الذين انطلق بهم من اليهود الي ارض مصر *

1 * ويل النازلين الي مصر للمعونة * المتوكلون على الخيل والمراكب لانها كثيرة وعلى الخيل
2 كثير جدا * ولم يكونوا متوكلين على قدوس اسرايل * ولم يطلبوا الله * وهو الحكيم جلب
3 عليهم الاسواء * وكلمته لن تخلف * ويقيم على بيوت اناس اشرار وعلى رجايهم الباطل * انسانا
مصريا وليس الها * لحوم خيول وليست هي معونة * والرب يجلب يده عليهم * ويعيون المعينون
4 ويهلكون جميعا معا * لان هكذا قال لي الرب * على نحو ما يصرخ الاسد او الشبل على الفريسة
التي اخذها * ويصرخ عليها الي ان تمتلي الجبال من صوته * ويغلبون ولا يخشون كثرة
الغضب * هكذا ينزل رب الجيوش ليعسكر على جبل صهيون وعلى جبالها *

Textus decimus quintus.

27 *Ecce nomen Domini venturum eſt à tempore multo, ira ardebit in majeſtate verbi labiorum ejus, verbi furore pleni, furor autem iræ devorabit ſicut ignis;* 28 *Et ſpiritus ejus velut aqua trahens in torrente, ad collum uſque perveniens; ſeſeque dividet ut vexet populos propter vanum errorem: perſequetur enim eos vanus error, & occupabit faciem illorum.* 29 *Num decet vos lætari quocunque tempore, & ingredi Sanctuaria mea quocunque tempore? ingredi inquam (ut feſtum agentes, & ut tibiâ lætantes) in ædem Domini, ad Deum Iſraelis?* 30 *Efficiet quoque Deus ut audiatur majeſtas vocis ſuæ, quatenus oſtendat iram brachii ſui; cum indignatione atque furore & flammâ devorante immanem edet ſonitum, & velut aqua violenter cum grandine ruens.* 31 *Nam Aſſyrii conſternabuntur ob vocem Domini, ex ictu quo feriet illos, quique eos undique obſidebit.* 32 *Propter id enim ſperabat auxilium illud cui ipſe confidebat. Hi cum tibiis & citharâ belligerabunt adverſùs eum ab initio.* 33 *Nónne tu multis ab hinc diebus renuiſti? num tu quoque te paraſti ad poſſidendum vallem profundam, ligna diſpoſita, ignem & ligna multa? Ira Domini ſimilis eſt valli ardenti ſulphureæ.*

CAP. XXXI.

Prophetia de Judæis qui abierunt in terram Ægypti,

1 *VÆ deſcendentibus in Ægyptum ad auxilium, fiduciam collocantibus in equis & curribus quòd multi ſint, & in equitum multitudine copioſâ; Sancto autem Iſraelis minimè confidentibus, neq; Deum quærentibus.* 2 *Ipſe verò ſapientiſſimus adducet ſuper eos mala; nam verbum ejus haudquaquam mentietur, ſed conſtituet ſuper domos hominum reproborum, & ſuper vanam ſpem illorum,* 3 *Hominem Ægyptium, non autem Deum, & carnes equorum quæ nullius ſunt adjumenti: Dominus enim admovebit manum ſuam ſuper eos, & fatigabuntur adjutores, & omnes ſimul interibunt.* 4 *Nam ita mihi dixit Dominus, Quemadmodum rugit leo vel leunculus ſuper prædam quam cepit, rugitque ſuper eam donec impleantur montes rugitu ejus, tum demum victoriam reportant, nec timent multitudinem furoris; ita deſcendet Dominus exercituum ad caſtra ponenda ſuper monte Sion & ſuper montibus ejus.*

יְשַׁעְיָה׃ לב

, Jeruſalaim *ſuper* exercituum Dominus proteget ſic ,volantes aves Sicut
5 כְּצִפֳּרִים עָפוֹת כֵּן יָגֵן יְהוָה צְבָאוֹת עַל־יְרוּשָׁלָם
quem ad Convertimini .ſervando & tranſiliendo,liberando & protegendo
6 גָּנוֹן וְהִצִּיל פָּסֹחַ וְהִמְלִיט׃ שׁוּבוּ לַאֲשֶׁר
reprebabunt illa die in Quia .Iſrael filii *defectionem profundaverunt*
7 הֶעְמִיקוּ סָרָה בְּנֵי יִשְׂרָאֵל׃ כִּי בַּיּוֹם הַהוּא יִמְאָסוּן
fecerunt quæ ,*ſui auri* vana & ,*ſui argenti* vana unuſquiſque
אִישׁ אֱלִילֵי כַסְפּוֹ וֶאֱלִילֵי זְהָבוֹ אֲשֶׁר עָשׂוּ
non , gladio in Aſſur cadet Et .peccatum veſtræ manus vobis
8 לָכֶם יְדֵיכֶם חֵטְא׃ וְנָפַל אַשּׁוּר בְּחֶרֶב לֹא־
,gladii *faciebus* à ſibi fugiet & :eum *comedet* hominis non gladius & ,viri
אִישׁ וְחֶרֶב לֹא־אָדָם תֹּאכְלֶנּוּ וְנָס לוֹ מִפְּנֵי־חֶרֶב
, tranſibit timore præ ſuam *rupem* Et .erunt *tributum in* ejus juvenes &
9 וּבַחוּרָיו לָמַס יִהְיוּ׃ וְסַלְעוֹ מִמָּגוֹר יַעֲבוֹר
ei ignis cui , DOMINUS dixit ,ejus principes vexillo à pavebunt &
וְחַתּוּ מִנֵּס שָׂרָיו נְאֻם־יְהוָה אֲשֶׁר־אוּר לוֹ
.Jeruſalaim in *ei* clibanus & , Sijon in
בְּצִיּוֹן וְתַנּוּר לוֹ בִּירוּשָׁלָם׃

CAP. XXXII. לב

.præerunt judicium ad principes & : rex regnabit juſtitiam ad Ecce
1 הֵן לְצֶדֶק יִמְלָךְ־מֶלֶךְ וּלְשָׂרִים לְמִשְׁפָּט יָשֹׂרוּ׃
rivi ſicut *: inundationis abſconſio* & , *venti* latibulum ſicut vir erit Et
2 וְהָיָה־אִישׁ כְּמַחֲבֵא־רוּחַ וְסֵתֶר זֶרֶם כְּפַלְגֵי־
.ſitienti terra in gravis petræ umbra ut ,*ſiccitate* in aquarum
מַיִם בְּצָיוֹן כְּצֵל סֶלַע־כָּבֵד בְּאֶרֶץ עֲיֵפָה׃
audientium aures & : videntium oculi *hallucinabuntur* non Et
3 וְלֹא תִשְׁעֶינָה עֵינֵי רֹאִים וְאָזְנֵי שֹׁמְעִים
lingua & : ſcientiam intelliget *præcipitatorum* cor Et .attendent
4 תִּקְשַׁבְנָה׃ וּלְבַב נִמְהָרִים יָבִין לָדָעַת וּלְשׁוֹן
ſtulto ultrà vocabitur Non .*candida* loqui feſtinabit balborum
5 עִלְּגִים תְּמַהֵר לְדַבֵּר צָחוֹת׃ לֹא־יִקָּרֵא עוֹד לְנָבָל
ſtultitiam ſtultus Nam .dives dicetur non *tenaci* & : liberalis
6 נָדִיב וּלְכִילַי לֹא יֵאָמֵר שׁוֹעַ׃ כִּי נָבָל נְבָלָה
, *hypocriſim faciendum ad* : iniquitatem faciet ejus cor & , loquetur
יְדַבֵּר וְלִבּוֹ יַעֲשֶׂה־אָוֶן לַעֲשׂוֹת חֹנֶף
animam *exinaniendum ad* , errorem DOMINUM contra *loquendum ad* &
וּלְדַבֵּר אֶל־יְהוָה תּוֹעָה לְהָרִיק נֶפֶשׁ
ejus vaſa *tenacis* Et .faciat deficere ſitientis potum & , eſurientis
7 רָעֵב וּמַשְׁקֶה צָמֵא יַחְסִיר׃ וְכֵלַי כֵּלָיו
eloquiis in *afflictos corrumpendum ad conſuluit verſutias* ipſe : mala
רָעִים הוּא זִמּוֹת יָעָץ לְחַבֵּל עֲנִוִּים בְּאִמְרֵי
liberalia liberalis Et .judicio *egenum alloquendum in* & , *falſitatis*
8 שֶׁקֶר וּבְדַבֵּר אֶבְיוֹן מִשְׁפָּט׃ וְנָדִיב נְדִיבוֹת
Mulieres .ſtabit liberalia propter ipſe & : conſuluit
9 יָעָץ וְהוּא עַל־נְדִיבוֹת יָקוּם׃ נָשִׁים
confidentes filiæ ; meam vocem audite , ſurgite *tranquillæ*
שַׁאֲנַנּוֹת קֹמְנָה שְׁמַעְנָה קוֹלִי בָּנוֹת בֹּטְחוֹת
,*turbabimini* anno *ſuper Dies* .meum eloquium percipite auribus
10 הַאְזֵנָּה אִמְרָתִי׃ יָמִים עַל־שָׁנָה תִּרְגַּזְנָה
Pavete .veniet non collectio ,vindemia defecit quia : confidentes
11 בֹּטְחוֹת כִּי כָּלָה בָצִיר אֹסֶף בְּלִי יָבוֹא׃ חִרְדוּ
ſuper *te accinge & ,te nuda & , te exue* ,confidentes *contremiſce* ,*tranquillæ*
שַׁאֲנַנּוֹת רְגָזָה בֹּטְחוֹת פְּשֹׁטָה וְעֹרָה וַחֲגוֹרָה עַל־
ſuper *deſiderii* agros ſuper ,plangentes ubera Super .lumbos
12 חֲלָצָיִם׃ עַל־שָׁדַיִם סֹפְדִים עַל־שְׂדֵי־חֶמֶד עַל־
.fructificantem vitem
גֶּפֶן פֹּרִיָּה׃

Verſio VUL. LAT.

5 Sicut aves volantes, ſic proteget Dominꝰ excercituũ Jeruſalem, protegens & liberans, 6 tranſiens & ſalvans. Convertimini ſicut in profundum receſſeratis filii Iſrael. 7 In die enim illa abjiciet vir idola argenti ſui, & idola auri ſui, quæ fecerunt vobis manus veſtræ 8 in peccatum. Et cadet Aſſur in gladio non viri, & gladius non hominis vorabit eum, & fugiet non à facie gladii: & juvenes ejus vectigales erunt: 9 Et fortitudo ejus à terrore tranſibit, & pavebunt fugientes principes ejus: dixit Dñs; cujus ignis eſt in Sion, & caminus ejus in Jeruſalem.

CAP. XXXII.

1 Ecce in juſtitia regnabit rex, & principes in judicio 2 præerunt. Et erit vir ſicut qui abſconditur à vento, & celat ſe à tempeſtate, ſicut rivi aquarum in ſiti, & umbra petræ prominentis in terra 3 deſerta. Non caligabunt oculi videntium, & aures audientium 4 diligenter auſcultabunt. Et cor ſtultorum intelliget ſcientiam, & lingua balborum 5 velociter loquetur & plané. Non vocabitur ultrà is, qui inſipiens eſt, princeps: neque fraudulentus appellabitur major: 6 Stultus enim fatua loquetur, & cor ejus faciet iniquitatem, ut perficiat ſimulationem, & loquatur ad Dominũ fraudulenter, & vacuam faciat animam eſurientis, & potum 7 ſitienti auferat. Fraudulenti vaſa peſſima ſunt: ipſe enim cogitationes concinnavit ad perdendos mites in ſermone mendacii, cùm loqueretur pauper 8 judicium. Princeps verò ea, quæ digna ſunt principe, cogitabit, & ipſe ſuper duces 9 ſtabit. Mulieres opulentæ ſurgite, & audite vocem meam: filiæ confidentes percipite 10 auribus eloquium meum. Poſt dies enim & annum, vos conturbabimini confitentes: conſummata eſt enim vindemia, collectio ultrà non veniet. 11 Obſtupeſcite opulentæ, conturbamini confidentes: exuite vos, & confundimini, 12 accingite lumbos veſtros. Super ubera plangite, ſuper regione deſiderabili, ſuper vinea fertili.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

5 Ὡς ὄρνεα πετόμενα, οὕτως ὑπερασπιεῖ (ε) κύριος Σαβαὼθ, ὑπὲρ Ἱερουσαλὴμ ὑπερασπιεῖ, καὶ ἐξελεῖται, καὶ περιποιήσεται, καὶ 6 σώσει. Ἐπιστράφητε οἱ τὴν βαθεῖαν βουλὴν (ζ) βουλευόμενοι καὶ (η) ἄνομον, υἱοὶ 7 Ἰσραήλ. Ὅτι τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ (θ) ἀπαρνήσονται οἱ ἄνθρωποι τὰ χειροποίητα αὐτῶν τὰ ἀργυρᾶ, (ι) καὶ τὰ χειροποίητα τὰ χρυσᾶ, ἃ 8 ἐποίησαν αἱ χεῖρες αὐτῶν· Καὶ πεσεῖται Ἀσσούρ. οὐ μάχαιρα ἀνδρὸς, οὐδὲ μάχαιρα ἀνθρώπου καταφάγεται αὐτὸν, καὶ φεύξεται οὐκ ἀπὸ προσώπου (κ) μαχαίρας. οἱ δὲ 9 νεανίσκοι ἔσονται εἰς ἥττημα. Πέτρᾳ γὰρ περιλημφθήσονται ὡς χάρακι, καὶ ἡττηθήσονται, ὁ δὲ φεύγων ἁλώσεται. τάδε λέγει κύριος, Μακάριος ὃς ἔχει ἐν Σιὼν σπέρμα, καὶ οἰκείους ἐν Ἱερουσαλήμ.

5 Sicut aves volantes, ſic proteget Dominus Sabaoth ſuper Hieruſalem, proteget, & eruet, & conſervabit, & ſalvabit. 6 Convertimini, qui profundum conſilium conſultabatis, & iniquum, filii Iſrael. 7 In die enim illa abjicient homines manufacta ſua argentea, & manufacta aurea, quæ fecerant manus eorum: 8 Et cadet Aſſur: non gladius viri, neque gladius hominis vorabit eum: & fugiet non à facie gladii. Juvenes autem erunt in cladem: 9 Petrâ enim circundabuntur, quaſi vallo, & vincentur: qui autem fugerit, capietur. Hæc dicit Dominus; (a) Beatus, (b) qui habet in Sion ſemen, & domeſticos in Hieruſalem.

MS. A. (ε) κύριος ὑπὲρ Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐξελεῖτε (ζ) βουλευσάμενοι (η) ἄνομον. Ὅτι τῇ ἡμέρᾳ (θ) ἀπαρνηθήσονται (ι) καὶ τὰ χρυσᾶ, ἃ (κ) διώκοντος. οἱ δὲ

ΚΕΦ. λϐʹ.

1 Ἰδοὺ γὰρ βασιλεὺς δίκαιος βασιλεύσει, καὶ 2 ἄρχοντες μετὰ κρίσεως ἄρξουσι. Καὶ ἔσται ὁ ἄνθρωπος κρύπτων τοὺς λόγους (α) αὐτοῦ, καὶ κρυβήσεται, ὡς ἀφ' ὕδατος φερομένου· καὶ φανήσεται ἐν Σιὼν ὡς ποταμὸς φερόμενος 3 ἔνδοξος ἐν γῇ διψώσῃ. Καὶ οὐκέτι ἔσονται πεποιθότες ἐπ' ἀνθρώποις, ἀλλὰ τὰ ὦτα 4 (β) ἀκούειν δώσουσι. Καὶ ἡ καρδία τῶν (γ) ἀσθενούντων προσέξει τῷ ἀκούειν, καὶ αἱ γλῶσσαι αἱ ψελλίζουσαι ταχὺ μαθήσονται λαλεῖν 5 εἰρήνην. Καὶ οὐκέτι (δ) μὴ εἴπωσι τῷ μωρῷ ἄρχειν, καὶ οὐκέτι (ε) μὴ εἴπωσιν οἱ ὑπηρέται 6 σου, Σίγα. Ὁ γὰρ μωρὸς μωρὰ λαλήσει, καὶ ἡ καρδία (ζ) αὐτοῦ μάταια νοήσει, τοῦ συντελεῖν ἄνομα, καὶ λαλεῖν πρὸς κύριον πλάνησιν, τοῦ (η) διασπεῖραι ψυχὰς πεινώσας, καὶ τὰς ψυχὰς τὰς διψώσας κενὰς (θ) 7 ποιήσει. Ἡ γὰρ βουλὴ τῶν πονηρῶν ἄνομα (ι) βουλεύσεται, καταφθεῖραι ταπεινοὺς ἐν λόγοις ἀδίκοις, καὶ διασκεδάσαι (κ) λόγους 8 ταπεινῶν ἐν κρίσει. Οἱ δὲ εὐσεβεῖς συνετὰ 9 ἐβουλεύσαντο, καὶ αὕτη ἡ βουλὴ μενεῖ. Γυναῖκες πλούσιαι ἀνάστητε, καὶ ἀκούσατε τῆς φωνῆς μου· θυγατέρες ἐν ἐλπίδι (λ) εἰσακούσατε λόγους 10 μου. Ἡμέρας ἐνιαυτοῦ μνείαν ποιήσασθε ἐν ὀδύνῃ (·) μετ' ἐλπίδος. ἀνήλωται ὁ 11 τρυγητὸς, πέπαυται (μ), οὐκέτι μὴ ἔλθῃ. Ἔκστητε, λυπήθητε αἱ πεποιθυῖαι, ἐκδύσασθε, γυμναὶ γένεσθε, περιζώσασθε (ν) τὰς ὀσφύας, 12 Καὶ ἐπὶ τῶν μαστῶν κόπτεσθε, (ξ) ἀπὸ ἀγροῦ ἐπιθυμήματος, καὶ ἀμπέλου (ο) γεννήματος.

CAP. XXXII.

1 Ecce enim rex juſtus regnabit: & (a) principes cum judicio præerunt. 2 Et (b) erit homo occultans ſermones ſuos, & abſcondetur, quaſi ab aqua, quæ fertur: & apparebit in Sion, ſicut fluvius currens inclytus in terra ſitienti: 3 Et nequaquàm ultrà erunt confidentes in hominibus: ſed aures ad audiendum dabunt: 4 Et cor infirmorum attendet auditui, & linguæ balbutientes citò diſcent loqui pacem, 5 Et nequaquàm ultrà dicent ſtulto, ut princeps ſit, nec ultrà dicent miniſtri tui, Tace. 6 Fatuꝰ enim fatua loquetur, & cor ejus vana intelliget ad perficiendum iniqua, & loquendum ad Dominum errorem, ut diſperdat animas eſurientes, & animas ſitientes vacuas (c) faciet. 7 Conſilium enim peſſimorum iniqua cogitabit, interficere humiles in ſermonibus iniquis, & diſſipare verba humilium in judicio. 8 Pii autem ſapientia cogitârunt: & hoc conſilium permanet. 9 Mulieres divites ſurgite, & audite vocem meam: filiæ in ſpe audite verba mea: 10 (d) Dies anni memoriam facite in dolore cum ſpe. Conſumpta eſt vindemia, (e) ceſſavit, non ultrà veniet: 11 Obſtupeſcite, triſtamini confidentes, exuimini, nudæ fiamini, (f) accingite lumbos, 12 Et ſuper ubera plangite, de agro deſiderii, & vite geniminis.

MS.A. (α) τούτου, (β) δώσουσιν ἀκούειν. (γ) ἀσθενῶν (δ) οὐ μὴ (ε) οὐ μὴ (ζ) αὐτῶν (η) διαφθεῖραι (θ) ποιῆσαι. (ι) βουλεύεται, (κ) λογισμοὺς (λ) ἀκούσατε τοὺς λόγους μου. (·) μετὰ (μ) ὁ σπόρος, καὶ οὐκέτι (ν) σάκκοις τὰς ὀσφύας, (ξ) περὶ ἀγροῦ (ο) γεννήματος.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 כעופא דטאס כן תתגלי גבורתיה דיי צבאות על ירושלם יגין וישיזיב יציל ויעדי : תובו 6
7 לאוריתא ארי אסגיתון למחטי בני ישראל : ארי בעדנא ההיא ירחקון גבר טעות
8 כספהון וטעות דהבהון דעבדו לכון ידיכון חובא : ויפול אתוראה בחרב לא אנש וחרב
לא אנש תשיצניה ויערוק ליה כמן קדם דקטלין בחרבא ועברוהי לתבר יהון :
9 ושלטונוהי מן קדם דחלא יעדון ויתברון מן קדם נסא רברבוהי אמר יי דזהור ליה בציון
לעבדי אוריתא ותנור בעיר ליה דאשא בירושלם לדעברו על מימריה :

לב

1 הא לקושטא ימלוך מלכא וצדיקיא למעבד פורענות דין מן עממיא יתרבון : ויהון 2
צדיקיא דמטמרין מן קדם רשיעיא כמא דמטמרין מן קדם זרמית יתובון ויתרבין
ויתקביל אולפנהון בפריע כפצידי מיא דנגדין בארעא משלהיא כטלל כיף מיקר
3 בארעא משלהיא : ולא יטמטמן עיני צדיקיא ואודני מקבלי אולפן יציתן : ולבב 4
5 מהרהרין יסבר למידע ולישנהון דהוה בלים יוחי למללא בצחצחן : לא יתאמר עוד
6 לרשיעא צדיקא ולדעברו על מימריה לא יתאמר תקיפין : ארי רשיעיא רשעא ממללין
ובלבהון מתעשתין אונס למעבד שקר ולמללא קדם יי סטיא לשלהאה נפש צדיקיא
דמחמדין לאולפנא הא ככפנא ללחמא ופתגמי אוריתא דאנון כמיא בצחיא מרפן
7 לבטלא : ורשיעיא דעובדיהון בישין ואנון על עיצת חטאין מתמלכין לחבלא ענותניא
8 במלי שקר ופתגמי חשיכיא בדינא : וצדיקיא קושטא מתמלכין ואנון על קושטהון
9 יתקימון : מדינן דיתבן שליון קומא שמענא קלי כרכין די שרן לרוחצן אציתא למימרי :
10 יומין עם שנין יזועון די שרן לרוחצן ארי סף עבורא עללא לית למכנש : אתברו דיתבין 11
12 שליון זעו די שרן לרוחצן שלחו ואתערטילו ואסרו על חרצין : על דדין ספדין על חקלי
חמידתא על גופנין טעינין :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

5 Sicut avis quæ volat, ſic revelabitur potentia Dñi exercituũ ſup Jeruſalem; proteget & liberabit, ſalvabit & tranſibit. 6 Convertimini ad legem, quia multũ *peccaſtis filii* Iſrael. 7 Quia in tempore illo projiciet unuſquiſq; idola argenti ſui, & idola auri ſui, quæ fecerunt vobis manus veſtræ in peccatũ. 8 Et cadet Aſſur in gladio non viri, & gladiꝰ non hominis conſumet eum: & fugiet *tanquam* à facie occidentiũ gladio; & robuſti ejus in interitũ erunt. 9 Principes autẽ ejus à facie timoris tranſibunt, & conterentur propter miraculũ principes ejꝰ. Dicit Dñs, cujus ſplendor eſt in Sion facientibus legem; & caminus ignis ardens in Jeruſalem, tranſgredientibus verbũ ejus.

CAP. XXXII.

1 Ecce in veritate regnabit rex; & juſti, ut ſumant juſtã vindictã de populis, 2 in dignitatẽ evehentur. Et erunt juſti qui ſeſe abſcondunt propter impios, ſicut qui abdunt ſeſe à tempeſtate; revertentur & magnificabuntur, & ſuſcipietur citò doctrina eorum, ſicut rivi aquarum decurrentiũ in terra ſitiente: & ſicut umbra petræ gravis in terra arida. 3 Nec claudentur oculi juſtorum: & aures recipientiũ diſciplinã auſcultabunt. 4 Et cor inſipientiũ intelliget ſcientiã, & lingua eorum quæ erat balbutiens, velociter loquetur eleganter. 5 Non *dicetur* amplius *impius juſtus*, & qui tranſgreſſi ſunt verbũ ejus, non dicentur fortes. 6 Quia impii impietatem loquuntur, & in corde ſuo vim cogitant ut faciant iniquũ, & ut loquantur corã Dño errorem, ut laſſam faciant animam juſtorũ, qui non aliter deſiderant doctrinam, quàm famelicus panem; & verba legis, quæ ſunt ſicut aquæ ſitibundo, putant auferre. 7 Impii autem, quorum opera mala ſunt, ipſi in conſilio peccatorũ deliberant diſperdere mites verbis mendacibꝰ, & verba pauperum in judicio. 8 Juſti autem veritatẽ cogitant; & ipſi ſup veritatẽ ſuam conſiſtent. 9 Provinciæ quæ habitamini tranquillè: ſurgite audite vocem meam. 10 Civitates quæ habitamini confidenter, auſcultate verbum meum. Diebus enim cum annis commovebuntur, qui habitant confidenter, quia defecit frumentum, & non ſunt fruges ad colligendum. 11 Contriti ſunt qui habitabant in pace: contremuerunt qui morabantur confidenter: expoliamini & nudamini, & accingite lumbos. 12 Super ubera plangentes, ſuper agros deſiderabiles, ſuper vites oneratas [*fructu*.]

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

5 * ܐܝܟ ܦܪ̈ܚܬܐ ܕܦܪ̈ܚܢ܆ ܗܟܢܐ ܢܓܢ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ. ܢܓܢ ܘܢܦܨܐ܆
6 ܘܢܫܘܙܒ܆ ܘܢܥܕܪ. * ܬܘܒܘ ܒܢ̈ܝ ܐܝܣܪܝܠ܃ ܕܐܥܡܩܬܘܢ ܡܪܕܘܬܐ. * ܡܛܠ ܕܒܝܘܡܐ ܗܘ.
7 ܢܫܝܛܘܢ ܒ̈ܢܝܢܫܐ ܦܬܟܪ̈ܐ ܕܕܗܒܐ ܘܕܣܐܡܐ. ܕܥܒܕ̈ ܠܟܘܢ ܐܝ̈ܕܝܟܘܢ ܠܚܛܗܐ. * ܘܢܦܠ ܐܬܘܪܝܐ
8 ܒܚܪܒܐ. ܚܪܒܐ ܠܐ ܕܓܒܪܐ܆ ܘܚܪܒܐ ܠܐ ܕܓܢ̈ܒܪܐ ܬܐܟܠܝܘܗܝ. ܘܢܥܪܘܩ ܠܗ ܡܢ ܩܕܡ
ܚܪܒܐ. ܘܥܠܝ̈ܡܘܗܝ ܠܬܕܡܘܪܬܐ ܢܗܘܘܢ. * ܘܒܫܘܥܐ ܕܡܥܡܪܗ ܢܥܒܪ. ܘܢܬܒܪܘܢ ܡܢ ܩܕܡ
9 ܐܬܐ ܪܘܪ̈ܒܢܘܗܝ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܢܘܗܪܗ ܒܨܗܝܘܢ. ܘܐܬܘܢܗ ܒܐܘܪܫܠܡ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܒ *

1 * ܗܐ ܒܟܐܢܘܬܐ ܢܡܠܟ ܡܠܟܐ. ܘܪ̈ܘܪܒܢܐ ܒܕܝܢܐ ܢܫܠܛܘܢ. * ܘܢܗܘܐ ܓܒܪܐ܆ ܐܝܟ ܡܛܫܝܐ
2 ܡܢ ܪܘܚܐ. ܘܐܝܟ ܡܛܠܬܐ ܡܢ ܥܠܥܠܐ. ܘܐܝܟ ܢܗܪ̈ܐ ܕܡ̈ܝܐ ܒܨܗܝܐ. ܘܐܝܟ ܛܠܠܐ ܕܟܐܦܐ ܥܫܝܢܬܐ
3 ܒܐܪܥܐ ܡܬܬܙܝܥܢܝܬܐ. * ܘܠܐ ܢܬܛܫܝܢ ܥܝ̈ܢܝܗܘܢ ܕܚܙܝܢ. ܘܐܕ̈ܢܝܗܘܢ ܕܫܡܥܝܢ
4 ܢܨܬܘܢ. * ܘܠܒܐ ܕܣܟܠܐ ܢܣܬܟܠ ܝܕܥܬܐ. ܘܠܫܢܐ ܕܥ̈ܓܠܐ ܢܣܬܪܗܒ ܠܡܡܠܠܘ
5 ܫܠܡܐ. * ܘܠܐ ܢܬܩܪܐ ܬܘܒ ܠܣܟܠܐ ܫܠܝܛܐ. ܘܠܐ ܠܒܝܫܐ ܢܐܡܪܘܢ ܦܪܘܩܐ. * ܡܛܠ
6 ܕܣܟܠܐ ܣܟܠܘܬܐ ܡܡܠܠ. ܘܠܒܗ ܥܒܕ ܥܘܠܐ. ܕܢܥܒܕ ܚܛܝܬܐ ܘܡܡܠܠ ܥܠ ܛܥܝܘܬܐ.
7 ܘܢܣܪܩ ܢܦܫܐ ܕܟܦܢܐ. ܘܡܫܬܝܐ ܕܨܗܝܐ ܢܚܣܪ. * ܒܝܫܝܢ ܐܢܘܢ ܡܐܢ̈ܘܗܝ ܕܣܪܝܩܐ.
ܘܗܘ ܬܪܥܝܬܐ ܡܬܚܫܒ. ܠܡܚܒܠܘ ܡܣܟ̈ܢܐ ܒܡܠ̈ܐ ܕܫܘܩܪܐ. ܘܡܠܬܗ ܕܡܣܟܢܐ
8 ܒܕܝܢܐ. * ܘܓܒܪܐ ܪܒܐ ܪ̈ܘܪܒܬܐ ܡܬܪܥܐ. ܘܗܘ ܥܠ ܪ̈ܘܪܒܬܐ ܢܩܘܡ. * ܢܫ̈ܐ ܥܬܝܪ̈ܬܐ ܩܘܡܝܢ
9 ܫܡܥܝܢ ܩܠܝ. ܒ̈ܢܬܐ ܕܬܟܝ̈ܠܢ. ܨܘܬܝܢ ܡ̈ܠܝ. * ܝܘ̈ܡܬܐ ܒܫܢܬܐ ܬܬܪܓܙܢ ܐܝܠܝܢ ܕܬܟܝܠܢ.
10 ܡܛܠ ܕܫܠܡ ܩܛܦܐ. ܘܟܢܫܐ ܘܠܐ ܐܬܐ. * ܙܘܥܝܢ ܥܬܝܪ̈ܬܐ. ܘܐܬܪܓܙܝܢ ܐܝܠܝܢ ܕܬܟܝܠܢ.
11 ܫܠܚܝܢ ܥܪ̈ܛܠܝܢ. ܘܐܣܘܪܝܢ ܣ̈ܩܐ ܥܠ ܚܨ̈ܝܟܝܢ. * ܘܥܠ ܬ̈ܕܝܐ ܪܩܘܕܝܢ. ܥܠ ܥܣܒܐ ܕܚܩܠܐ ܘܥܠ
12 ܓܦܬܐ ܘܦܐܪ̈ܝܗ.

* Ut aves quæ volant, ſic proteget Dominus 5
potentiſſimus Jeroſolymam, proteget, liberabit,
tuebitur, & adjuvabit. Pœnitentiam 6
agite filii Iſrael, quoniam aggravâſtis
animadverſionem. Nam eo die contemnent 7
homines idola aurea & argentea quæ fabricaverunt
vobis manûs veſtræ in peccatum.
Et cadet Aſſyrius gladio; non virorum quidem 8
gladius, neque gladius gigantum conſumet
eum; fugiet à gladio, & juvenes ejus
erunt in prodigium: In rupe domicilii ſui 9
commorabitur, & conterentur à conſpectu
prodigii principes ejus, dicit Dominus cujus
lux eſt in Sione, & fornax in Jeruſalem.

CAP. XXXII.

ECce juſtè rex, & principes jure dominabuntur: 1
Et erit vir vice latibuli à vento, 2
& vice receptûs à nimbo; ut rivus aquarum
in ſiti, & velût umbra ingentis ſaxi in terra
incommodis agitata. Non obtegentur oculi 3
eorum qui vident, & aures eorum qui audiunt,
auſcultabunt: Cor inſipiens intelliget 4
ſcientiam, & lingua balborum feſtinabit loqui
pacem: Stolidum nequaquam vocabunt 5
deinceps principem, neque *bonis* exhauſtum
vocabunt ſervatorem. Stolidus enim
ſtolida loquitur, & cor ejus fabricat iniquitatem, 6
ut committat impietatem, loquatur
errorem, vacuam reddat animam famelici, &
ſitibundi potum exhauriat. Peſſima ſunt inſtrumenta 7
hominis vacui; nam ipſius cogitatio
tendit ad corrumpendos pauperes ſermone
falſitatis, & cauſam inopis in judicio.
Magnus verò magna molitur, idémque magnis 8
rebus inſiſtit. Mulieres opulentæ, ſurgite, 9
audite vocem meam: filiæ confidentes,
auſcultate verba mea: Diebus anni 10
unius iraſcentur eæ quæ confidunt, quia deficiet
vindemia, collecta *jam* erit, nec adveniet.
Trepidate opulentæ, & iraſcimini 11
quæ confiditis: exuite atque nudate vos,
ciliciis accingite lumbos veſtros: De veſtris 12
uberibus plorate, de gramine campi
déque viti & fructibus ejus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

5 6 * مثل الطيور الطاير هكذا يستر الرب علي ايروسليم * وينقذها ويقتنيها ويخلصها * ارجعوا
7 ايها المفكرون فكرا عميقا * وانما انه في ذلك اليوم ينكر البشر صنايع ايديهم الفضة والذهب
8 التي صنعتها ايديهم * ويسقط الموصلي * لا سيف رجل ولا سيف انسان ياكله * ويهرب ليس
9 من وجه طارد * الشبان يصيرون للهزيمة * لانهم يحوطون بالصخر مثل سياح ويهزمون *
والهارب يهلك * هكذا يقول الرب * مغبوط الذي له في صهيون زرع وخواص في ايروسليم *

* الفصل الثاني والثلثون *

1 2 * لان ها ملك عدل يملك * ورؤساء يروسون بحكم * ويكون الانسان يخفي هذه الكلمات *
3 ويختفي مثل من ماء جار * ويظهر في صهيون مثل نهر جار ممتد في ارض عطشانة * وليس
4 يصيرون بعد متوكلين على الناس * لكن يعطون الاذان ليسمعوا * وقلب الضعفاء يرسخ
5 ليسمع * والالسنة المذرات تتعلم سريعا ان تتكلم بالسلامة * وليس يقولون فيما بعد للجاهل
6 ان يروس * ولا يقولون ايضا خدامك اسكتي * لان الجاهل يتكلم جهلا * وقلبه يصنع باطلا
ليكمل اثما * ويتكلم على الله ضلالا ليفسد نفوسا جايعة * ويجعل النفوس العطشانة خاوية *
7 * لان راي الاشرار يروي اثما ليفسد المتواضعين بالكلمات الظالمة * ويعكس افكار المتواضعين
8 9 في الحكم * فاما الحسني العبادة فيفكرون فهما * فهذه المشورة تدوم * ايتها النسوة الغنيات
10 قمن واسمعن صوتي * يا بنات بالرجاء اسمعوا كلماتي * اصنعوا ذكر يوم سنة * بوجع مع
11 رجاء * باد القطاف * انكف الزرع * وليس ياتي بعد * اذهلن احزن يا متوكلات * تعرين
12 صرن عرايا * منطقن حقاكن مسوحا * ونحن على الثدي * من اجل حقل اللذة
وكرم الغلة *

* *Sicut aves volantes, ita proteget Dominus* 5
Jeroſolymam, liberabit, poſſidebit, ac ſervabit
eam. Revertimini O qui profundam 6
cogitationem meditamini. Et quandoquidem 7
eo die renuntiabunt mortales
opificiis manuum ſuarum argenteis &
aureis quæ conflaverant manus eorum,
Cadet Aſſyrius. Non gladius viri, nec hominis 8
gladius devorabit eum, & fugiet
nemine perſequente: juvenes ad ſtragem
deſtinabuntur; Circumibunt enim petram 9
ſicut errabundi, & profligabuntur; &
profuga peribit. Sic dicit Dominus, Fœlicem
illum qui habuerit in Sione agrum,
& aliquid proprii in Jeruſalem.

CAP. XXXII.

N*Am ecce rex juſtiſſimus regnabit, &* 1
principes cum juſtitia principatum gerent:
Et homo occultabit hæc verba, & abſcondet 2
ſe ut ab aqua rapiente: & apparebit
in Sione quaſi fluvius decurrens
porrigens ſeſe per terram ſitibundam.
Non erunt impoſterùm fidentes hominibus, 3
ſed præbebunt aures ad audiendum;
Animus imbecillium conſtans erit ad audiendum, 4
& linguæ barbaræ brevi diſcent
loqui pacem. Non dicent impoſterùm 5
ſtulto ut principatum gerat, neque dicent
ampliùs ſervitui, Tace. Stultus enim 6
ſtultitiam loquitur, & cor ejus fabricat
vanitatem, ut perficiat flagitium: perversè
loquitur de Deo, ut corrumpat animas
famelicas, & animas ſitibundas reddat
inane. Mens etenim reproborum 7
ſcelus architectatur, ut humiles corrumpat
pravis ſermonibus, & humilium conſilia
pervertat in judicio. At verò ſanæ 8
religionis viri meditantur prudentiam:
atque hujuſmodi conſilium perdurabit.
Heus fœminæ opulentæ, ſurgite, & audite 9
vocem meam: O filiæ confidentes,
audite ſermones meos: Unius diei memoriam 10
anni ſpatio recolite cum dolore atq;
ſpe: Periit vindemia, deſiit ſementis, nec
veniet ampliùs. Obſtupeſcite, dolete O 11
confidentes, deponite veſtes, nudamini, accingite 12
lumbos veſtros ciliciis, Et plangite
ſuper ubera, propter agrum voluptuoſum
& vineam frugiferam.

ישעיה : לג

ſuper quia : aſcendet vepris ſpina mei populi humum Super
13 עַל אַדְמַת עַמִּי קוֹץ שָׁמִיר תַּעֲלֶה כִּי עַל־
palatium Quia .exultantem civitatem , gaudii domos omnes
14 כָּל־בָּתֵּי מָשׂוֹשׂ קִרְיָה עַלִּיזָה׃ כִּי־אַרְמוֹן
pro fuit fortalitium & , altus locus , eſt relicta urbis turba ,eſt dimiſſum
נֻטָּשׁ הֲמוֹן עִיר עֻזָּב עֹפֶל וָבַחַן הָיָה בְעַד
.gregum paſcuum onagrorum gaudium , ſeculum in uſque , ſpeluncis
מְעָרוֹת עַד־עוֹלָם מְשׂוֹשׂ פְּרָאִים מִרְעֵה עֲדָרִים׃
deſertum erit & : excelſo de ſpiritus nos ſuper effundatur Donec
15 עַד־יֵעָרֶה עָלֵינוּ רוּחַ מִמָּרוֹם וְהָיָה מִדְבָּר
habitabit Et .reputabitur ſylvam in Charmel & , Charmel in
16 לַכַּרְמֶל וְכַרְמֶל לַיַּעַר יֵחָשֵׁב׃ וְשָׁכַן
erit Et .ſedebit Charmel in juſtitia & , judicium deſerto in
17 בַּמִּדְבָּר מִשְׁפָּט וּצְדָקָה בַּכַּרְמֶל תֵּשֵׁב׃ וְהָיָה
fiducia & requieſcere juſtitiæ cultus & , pax juſtitiæ opus
מַעֲשֵׂה הַצְּדָקָה שָׁלוֹם וַעֲבֹדַת הַצְּדָקָה הַשְׁקֵט וָבֶטַח
: pacis habitaculo in meus populus habitabit Et .ſeculum in uſque
18 עַד־עוֹלָם׃ וְיָשַׁב עַמִּי בִּנְוֵה שָׁלוֹם
.tranquillis requiebus in & , fiduciarum tabernaculis in &
וּבְמִשְׁכְּנוֹת מִבְטַחִים וּבִמְנוּחֹת שַׁאֲנַנּוֹת׃
ſe humiliabit loco humili in & : ſylva deſcendendo in grandinabit Et
19 וּבָרַד בְּרֶדֶת הַיָּעַר וּבַשִּׁפְלָה תִּשְׁפַּל
pedem mittentes : aquas omnes ſuper ſerentes vos Beati .civitas
20 הָעִיר׃ אַשְׁרֵיכֶם זֹרְעֵי עַל־כָּל־מָיִם מְשַׁלְּחֵי רֶגֶל־
.aſini & bovis
הַשּׁוֹר וְהַחֲמוֹר׃

CAP. XXXIII. לג

non & , prævaricanti & , direptus non tu & prædanti Væ
1 הוֹי שׁוֹדֵד וְאַתָּה לֹא שָׁדוּד וּבוֹגֵד וְלֹא־
: devaſtaberis devaſtans te conſummare Secundùm .te in ſunt prævaricati
בָגְדוּ בָךְ כַּהֲתִמְךָ שׁוֹדֵד תּוּשַּׁד
DOMINE .te in prævaricabuntur , prævaricari te complere ſecundùm
2 כַּנְּלֹתְךָ לִבְגֹּד יִבְגְּדוּ־בָךְ׃ יְהוָה
, matutinis in eorum brachium eſto : expectavimus Te .noſtri miſerere
חָנֵּנוּ לְךָ קִוִּינוּ הֱיֵה זְרֹעָם לַבְּקָרִים
turbæ voce A .anguſtiæ tempore in noſtra ſalus etiam
3 אַף־יְשׁוּעָתֵנוּ בְּעֵת צָרָה׃ מִקּוֹל הָמוֹן
.gentes ſunt diſperſæ tua exaltatione ab , populi ſunt vagati
נָדְדוּ עַמִּים מֵרוֹמְמֻתֶךָ נָפְצוּ גּוֹיִם׃
locuſtarum inceſſus ſicut : bruchi collectione veſtrum ſpolium colligetur Et
4 וְאֻסַּף שְׁלַלְכֶם אֹסֶף הֶחָסִיל כְּמַשַּׁק גֵּבִים
habitans quoniam , DOMINUS eſt Elevatus .eum per incedens
5 שֹׁקֵק בּוֹ׃ נִשְׂגָּב יְהוָה כִּי שֹׁכֵן
veritas erit Et .juſtitia & , judicio Sijon implevit : excelſo
6 מָרוֹם מִלֵּא צִיּוֹן מִשְׁפָּט וּצְדָקָה׃ וְהָיָה אֱמוּנַת
Timor .ſcientia & , ſapientia , ſalutum fortitudo tuorum temporum
עִתֶּיךָ חֹסֶן יְשׁוּעֹת חָכְמַת וָדָעַת יִרְאַת
: foris clamabunt Erelam En .ejus theſaurus ipſe DOMINI
7 יְהוָה הִיא אוֹצָרוֹ׃ הֵן אֶרְאֶלָּם צָעֲקוּ חֻצָה
ceſſavit , viæ ſtratæ ſunt Deſolatæ .flebunt amarè pacis nuncii
8 מַלְאֲכֵי שָׁלוֹם מַר יִבְכָּיוּן׃ נָשַׁמּוּ מְסִלּוֹת שָׁבַת
non , civitates reprobavit , pactum irritavit : ſemitam tranſiens
עֹבֵר אֹרַח הֵפֵר בְּרִית מָאַס עָרִים לֹא
.hominem reputavit
חָשַׁב אֱנוֹשׁ׃

Verſio VULG. LAT.

13 Super humum populi mei ſpi-
næ & vepres aſcendent :
quantò magis ſuper omnes
domos gaudii civitatis exul-
14 tantis ? Domus enim dimiſſa
eſt, multitudo urbis relicta eſt,
tenebræ & palpatio factæ ſunt
ſup ſpeluncas uſq; in æternũ.
Gaudiũ onagrorũ paſcua gre-
15 gum, Donec effundatur ſuper
nos ſpiritus de excelſo: & erit
deſertum in Charmel, et Char-
16 mel in ſaltum reputabitur. Et
habitabit in ſolitudine judi-
cium, & juſtitia in Charmel
17 ſedebit. Et erit opus juſtitiæ
pax, & cultus juſtitiæ ſilenti-
um, & ſecuritas uſque in ſem-
18 piternum. Et ſedebit populus
meus in pulchritudine pacis, et
in tabernaculis fiduciæ, & in
19 requie opulenta. Grando au-
tem in deſcenſione ſaltûs, &
humilitate humiliabitur civi-
20 tas. Beati, qui ſeminatis ſu-
per omnes aquas, immittentes
pedem bovis & aſini.

CAP. XXXIII.

1 VÆ qui prædaris, nónne &
ipſe prædaberis ? & qui ſper-
nis, nónne & ipſe ſpernêris ?
cùm conſummaveris deprædа-
tionem, deprædaberis : cùm
fatigatus deſieris contemnere,
2 contemnêris. Dñe, miſerêre
noſtrì : te enim expectavi-
mus : eſto brachium noſtrum
in manè, & ſalus noſtra in
3 tempore tribulationis. A vo-
ce angeli fugerunt populi, &
ab exaltatione tua diſperſæ
4 ſunt gentes. Et congregabun-
tur ſpolia veſtra ſicut colligi-
tur bruchus, velut cùm foſſæ
5 plenæ fuerint de eo. Magnifi-
catus eſt Dominus, quoniam
habitavit in excelſo : implevit
6 Sion judiciò & juſtitiâ. Et erit
fides in temporibus tuis : di-
vitiæ ſalutis ſapientia & ſci-
entia : timor Domini ipſe eſt
7 theſaurus ejus. Ecce viden-
tes clamabunt foris, angeli
8 pacis amare flebunt. Diſſipa-
tæ ſunt viæ, ceſſavit tranſiens
per ſemitam, irritum factum
eſt pactum, projecit civitates,
non reputavit homines.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

13 Ἡ γῆ τοῦ λαοῦ μου, ἄκανθα καὶ χόρτος ἀ-
ναβήσεται, καὶ ἐκ πάσης οἰκίας εὐφροσύνη
14 ἀρθήσεται. Πόλις πλουσία, οἶκοι ἐγκατα-
λελειμμένοι πλοῦτον πόλεως (π) ἀφήσουσιν,
οἴκους ἐπιθυμήματος. καὶ ἔσονται αἱ κῶμαι
σπήλαια ἕως τοῦ αἰῶνος, εὐφροσύνη ὄνων ἀ-
15 γρίων, βοσκήματα ποιμένων, Ἕως ἂν (ρ)
ἔλθῃ ἐφ' ὑμᾶς πνεῦμα ἀφ' ὑψηλοῦ. καὶ ἔσται
ἔρημος ὁ Χέρμελ, καὶ ὁ Χέρμελ εἰς δρυμὸν
16 λογισθήσεται. Καὶ ἀναπαύσεται ἐν τῇ ἐρή-
μῳ κρίμα, καὶ δικαιοσύνη ἐν τῷ Καρμήλῳ
17 κατοικήσει. Καὶ ἔσται τὰ ἔργα τῆς δικαιο-
σύνης, εἰρήνη. καὶ κρατήσει ἡ δικαιοσύνη ἀ-
νάπαυσιν, καὶ πεποιθότες (σ) ἕως τοῦ αἰῶ-
18 νος, Καὶ κατοικήσει ὁ λαὸς αὐτοῦ ἐν πόλει
εἰρήνης, καὶ ἐνοικήσει πεποιθὼς, καὶ ἀναπαύ-
19 σονται μετὰ πλούτου. Ἡ δὲ χάλαζα (τ) ἐὰν
καταβῇ, οὐκ ἐφ' ὑμᾶς ἥξει. καὶ ἔσονται οἱ ἐν-
οικοῦντες ἐν τοῖς δρυμοῖς πεποιθότες, ὡς
20 οἱ ἐν τῇ πεδινῇ. Μακάριοι οἱ σπείροντες
ἐπὶ πᾶν ὕδωρ, οὗ βοῦς καὶ ὄνος πατεῖ.

(g) *Terra populi mei, ſpina &* 13
fœnum aſcendet : & ex omni
domo lætitia tolletur : Civitas 14
opulenta, domus derelictæ, di-
vitias civitatis dimittent, domos
(h) deſiderii. Et erunt (i) villæ,
ſpeluncæ uſque in ſeculum, læti-
tia aſinorum agreſtium, paſcua
paſtorum; Donec venerit ſuper
vos ſpiritus ab excelſo. Et (k)
Chermel erit deſertum, & Cher-
mel in ſaltum deputabitur. Et
requieſcet in deſerto judicium: & 16
juſtitia in Carmelo habitabit.
Et erunt opera juſtitiæ, pax : & 17
obtinebit juſtitia requiem : & (l)
confidentes uſque in ſeculum : Et 18
habitabit populus ejus in civitate
pacis, & inhabitabit confidenter,
& requieſcent cum divitiis.
Grando autem ſi deſcenderit; non 19
veniet ſuper vos. Et erunt qui
inhabitant in ſylvis, fidentes, ſic-
ut, qui in campeſtri. Beati ſemi-
nantes ſuper omnem aquam, ubi 20
bos, & aſinus calcat.

MS.A. (π) καὶ οἴκους ἐπιθυμητοὺς ἀφήσουσιν, καὶ ἔσονται (ρ) ἐπέλθῃ (σ) ἔσονται ἕως (τ) * ἐὰν ἐὰν

ΚΕΦ. λγʹ.

1 Οὐαὶ τοῖς ταλαιπωροῦσιν ὑμᾶς, ὑμᾶς
δὲ οὐδεὶς ποιεῖ ταλαιπώρους, καὶ ὁ ἀθε-
τῶν (α) ὑμᾶς οὐκ ἀθετεῖ. ἁλώσονται οἱ ἀ-
θετοῦντες, καὶ παραδοθήσονται, καὶ ὡς σὴς
2 (β) ἐφ' ἱματίου, οὕτως ἡττηθήσονται. Κύ-
ριε ἐλέησον ἡμᾶς, ἐπὶ σοὶ γὰρ πεποίθαμεν.
ἐγενήθη τὸ σπέρμα τῶν ἀπειθούντων εἰς ἀ-
πώλειαν, ἡ δὲ σωτηρία ἡμῶν ἐν καιρῷ θλί-
3 ψεως. Διὰ φωνὴν τοῦ (γ) φόβου ἐξέστησαν
λαοὶ ἀπὸ τοῦ φόβου σου, καὶ διεσπάρησαν τὰ
4 ἔθνη. Νῦν δὲ συναχθήσεται τὰ σκῦλα ὑ-
μῶν (δ) μικροῦ καὶ μεγάλου· ὃν τρόπον ἐάν
τις συναγάγῃ ἀκρίδας, οὕτως (ε) ἐμπαί-
5 ξουσιν ὑμῖν. Ἅγιος ὁ θεὸς ὁ κατοικῶν ἐν
(ζ) ὑψηλῷ, ἐνεπλήσθη Σιὼν κρίσεως καὶ δι-
6 καιοσύνης. Ἐν νόμῳ παραδοθήσονται, ἐν
θησαυροῖς ἡ σωτηρία ἡμῶν, ἐκεῖ σοφία καὶ
ἐπιστήμη καὶ εὐσέβεια πρὸς τὸν κύριον· οὗ-
7 τοί εἰσι θησαυροὶ δικαιοσύνης. Ἰδοὺ δὴ ἐν
τῷ φόβῳ ὑμῶν (η) οὗτοι φοβηθήσονται· οὓς
ἐφοβεῖσθε, (θ) βοήσονται ἀφ' ὑμῶν· (ι) ἄγ-
γελοι ἀποσταλήσονται, πικρῶς κλαίοντες, πα-
8 ρακαλοῦντες εἰρήνην. Ἐρημωθήσονται γὰρ
αἱ τούτων ὁδοί· (κ) πέπαυται ὁ φόβος τῶν
ἐθνῶν, καὶ ἡ πρὸς τούτους διαθήκη αἴρεται,
καὶ οὐ μὴ λογίσησθε αὐτοὺς ἀνθρώπους.

CAP. XXXIII.

VÆ, qui vos miſeros faci- 1
unt : vos autem nemo facit miſe-
ros : & qui reprobat vos, non
reprobat. Capientur reprobantes,
& tradentur : & quaſi tinea
in veſtimento, ſic ſuperabuntur.
Domine, miſerere noſtri : in te e- 2
nim confidimus. Factum eſt ſe-
men incredulorum in perditio-
nem : ſalus autem noſtra in tem-
pore tribulationis. Propter vocem
timoris obſtupuerunt populi à ti-
more tuo, & diſperſæ ſunt gen-
tes. Nunc autem congregabuntur
ſpolia veſtra parvi & magni : 4
quomodò ſiquis congreget locu-
ſtas, ſic illudent vobis. Sanctus 5
Deus, qui habitat in excelſo.
Repleta eſt Sion judicio, & juſti-
tiâ : In lege tradentur : in the- 6
ſauris ſalus noſtra : (a) illic ſa-
pientia, & ſcientia, & pietas er-
ga Dominum : iſti ſunt theſauri
ſapientiæ. Ecce nunc in ti- 7
more veſtro ipſi timebunt : quos
timebatis, (b) clamabunt à
vobis : angeli mittentur amarè
flentes, obſecrantes pacem. De- 8
ſolabuntur enim iſtorum viæ :
ceſſavit timor gentium : & te-
ſtamentum, quod erga iſtos, tolli-
tur : & non reputabitis iſtos, ho-
mines.

MS. A. (α) ὑμῖν (β) ἐπὶ (γ) φόβου σου (δ) ἀπὸ μικροῦ (ε) ἐμπαίξονται (ζ) ὑψηλοῖς, (η) αὐτοὶ (θ) φοβηθήσονται (ι) ἄγγελοι γὰρ ἀποσταλήσονται, ἀξιοῦντες εἰρήνην, πικρῶς (κ) πέπαυται γὰρ ὁ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

13 על ארעא דעמי דהובאי ובור תסיק ארי על כל בתי דיץ קרוא תקיפא : ארי בית מקדשא
14 חרוב המון קרויא דהואה פלחין ביה צדיאה בית תקפנא ומטמורנא אתכלש וכרי חרוב
15 וצדי עד זמן אתר דהוה בית חדוא וחידו למלכיא כדו הוה מבז למשרין : כל דנה עד
דייתי לנא רוח מן קדם דשכנתיה בשמי מרומא ויהי מדברא לכרמלא וכרמלא קרוין
16 סגיאין יתיב : וישרון במדברא עבדי דינא ועבדי צדקתא ית כרמלא ייתבון : ויהון עבדי
17
18 צדקתא שלם ומפלחי צדקתא ישקטון וישרון לרוחצן עד עלמיא : ויתיבון עמי
19 במדוריהון שלם ועל ארעהון לרוחצן ובקרויהון שליין : ויחות ברדא ויקטיל משרית
20 עממיא ויצדון ויסופון דיריהון : טוביכון צדיקיא עבדתון לכון עובדין טבין דאתון דמן
לדורעין על שקיא משלחין לאדרכא בתוריא ולמכנש בחמריא :

לג

1 וי דאתי למבז ויתך לא יבזון ודאתי למינס ויתך לא יינסון כד תיתי למבז יבזונך וכד
2 תלאי למינס ינסונך : יי רחים עלנא למימרך סברנא הוי תוקפנא בכל יום אף פורקננא
3 בעדן עקא : מקל המון אתברו עממיא מסגי גבורן אתבדרו מלכותא : ויכנשון בית
4 ישראל נכסי עממיא סנאיהון כמא דכנשין ית זחלא ואזן במאני זינא כמא דאזן בזרקתא :
5 תקיף יי דאשרי שכנתיה בשמי מרומא דאמר לממלי ציון עבדי דין דקשוט וזכו : ויהי
6 מא דאמרתא לאוטבא לדחלתך איתיתא וקימתא בעדניה תקוף ופורקן חוכמתא ומדע
7 לדחליא דיי אוצר טוביה עתיד : הא כד אתגלי להון יצוחון במרד אזגדי עממיא דאזלו
8 לבסרא שלם תבו למהוי בכן במריר נפש : צדיאו כבשיא פסקו עדי אורחא על דאשניאו
קימא אתרחקו מקרויהון לא חשיבו בני אנשא דבישתא אתיא עליהון :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Super terram populi mei: quæ tribulum & ſpinam profert; ſup omnes quo- 13
que domos exultationis civitatis munitæ. Quoniam domus ſanctuarii de- 14
ſtructa eſt, multitudo civitatum quæ in ea colebant, deſerta eſt: domus for-
titudinis noſtræ & refugii noſtri *perveſtigata* eſt, & ſuffoſſa, & deſolata, &
vaſtata uſque ad tempus: locus in quo erat lætitia, & gaudiũ regibus, nunc
factus eſt in direptionem exercitibus. Omnia hæc ſuſtinemus donec veniat 15
nobis reſpiratio à facie ejus, cujus majeſtas eſt in cœlis excelſis. Et erit de-
ſertum in Carmel, & Carmel civitatibus multis habitabitur. Et morabun- 16
tur in deſerto facientes judicium, & facientes juſtitiam in Carmelo habita-
bunt. Et erunt operantes juſtitiam in pace, & colentes juſtitiam quieſcent, 17
& habitabunt confidenter uſque in *ſecula*. Et habitabit popul⁹ meus in ha- 18
bitaculis ſuis pacificè, & in terra ſua confidenter, & in civitatibus ſuis opu-
lentis. Et deſcendet grando, & interficiet caſtra populorum; & deſtruentur 19
& conſumentur habitatores eorum. Beati eſtis vos juſti qui feciſtis opera 20
bona: qui ſimiles eſtis ſeminantibus ſuper irrigua, qui immittunt boves ad
calcandum, & aſinos ad colligendum.

CAP. XXXIII.

VÆ qui venis ad prædandum, nónne & te deprædabuntur ? & qui ve- 1
nis ad diripiendum, nónne & te diripient ? cùm venis ad deprædandum,
vaſtaberis; & cùm fatigatus deſieris diripere, diripient te. Domine miſere- 2
re noſtri; in verbũ tuũ ſperavimus : eſto fortitudo noſtra in omni die, ſalus
quoque noſtra in tempore tribulationis. A voce multitudinis contriti ſunt 3
populi; præ multitudine magnalium diſperſa ſunt regna. Et colligent dom⁹ 4
Iſrael ſubſtantias populorum inimicorum ſuorum, ſicut colligunt bruchum;
& armabuntur armis bellicis, ſicut armantur lorica. Fortis eſt Dominus qui 5
habitare fecit majeſtatem ſuam in cœlis excelſis; qui dixit ſe impleturum
Sion operantibus judicium verum, & juſtitiam. Et ita fit ut ſicut dixeras te 6
benefacturum timentibus te, adducas & confirmes in tempore ſuo, forti-
tudinem & ſalutem, ſapientiam, & ſcientiam : timentibus Dñm, theſaurus
ejus bonus futurus eſt. Ecce quando revelatus *fuerit* eis, clamabunt *con-* 7
tumaciter nuncii populorum; qui ierant ad annunciandam pacem, reverſi ſunt ut plorent in amaritudine animæ. Deſertæ ſunt ſemitæ, ceſſaverunt 8
tranſeuntes viam; eò quòd mutaverunt pactum: longè facti ſunt à civitatibus ſuis; & non cogitant filii hominum quod malum venturum eſt eis.

Verſio *S Y R I A C A* cum Interpretatione *L A T I N A.*

13 * ܘܥܠ ܐܪܥܗ ܕܥܡܝ ܟܘܒܐ ܘܐܛܕܐ ܢܣܩܘܢ. ܘܒܟܠܗܘܢ ܒܬܐ ܕܒܘܣܡܐ. ܘܒܩܪܝܬܐ
14 ܥܫܝܢܬܐ. * ܡܛܠ ܕܗܝܟܠܐ ܐܫܬܒܩ. ܘܚܝܠܐ ܕܩܪܝܬܐ ܐܬܒܛܠ. ܘܫܘܦܪܗܘܢ ܕܒܬܐ ܗܘܐ
15 ܠܡܥܪܐ. ܥܕܡܐ ܠܥܠܡ. ܠܟܘܒܐ. ܘܒܣܝܡܘܬܐ ܠܥܪܕܐ. ܘܪܥܝܐ ܠܥܢܐ ܕܒܥܝܪܐ. * ܥܕܡܐ
ܕܬܐܬܐ ܥܠܝܢ ܪܘܚܐ ܡܢ ܡܪܘܡܐ. ܘܢܗܘܐ ܡܕܒܪܐ ܐܝܟ ܟܪܡܠܐ. ܘܟܪܡܠܐ ܐܝܟ ܚܘܪܫܐ
16 ܢܬܚܫܒ. * ܘܢܫܪܐ ܕܝܢܐ ܒܡܕܒܪܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܒܟܪܡܠܐ ܬܬܝܬܒ. * ܘܢܗܘܐ ܥܒܕܗ 17
18 ܕܙܕܝܩܘܬܐ ܫܠܡܐ. ܘܦܘܠܚܢܗ ܕܙܕܝܩܘܬܐ ܫܠܝܐ. ܘܣܒܪܐ. ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ. * ܘܢܬܒ
19 ܥܡܝ ܒܕܝܪܐ ܕܫܠܡܐ. ܘܒܡܫܟܢܐ ܕܣܒܪܐ. ܘܒܡܥܡܪܐ ܕܬܘܟܠܢܐ. * ܘܒܪܕܐ ܢܚܘܬ ܥܠ
20 ܚܘܪܫܐ. ܘܐܝܟ ܦܩܥܬܐ ܬܬܫܘܐ ܡܕܝܢܬܐ. * ܛܘܒܝܟܘܢ ܕܙܪܥܝܢ ܥܠ ܟܠ ܡܝܐ. ܐܝܟܐ ܕܕܝܫ
ܬܘܪܐ ܘܚܡܪܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܓ *

1 * ܘܝ ܠܒܙܘܙܐ. ܐܢܬܘܢ ܠܐ ܬܒܙܘܢ. ܘܢܟܘܠܐ ܠܐ ܢܟܠ ܒܟܘܢ. ܡܐ ܕܨܒܝܬܘܢ ܠܡܒܙ ܬܬܒܙܘܢ.
2 ܘܡܐ ܕܨܒܝܬܘܢ ܠܡܢܟܠܘ ܢܬܢܟܠ ܒܟܘܢ. * ܡܪܝܐ ܚܘܣ ܥܠܝܢ. ܡܛܠ ܕܥܠܝܟ ܣܒܪܢ. ܗܘܝ
3 ܡܥܕܪܢܢ. ܗܘܝ ܒܨܦܪܐ. ܘܦܪܘܩܢ ܒܥܕܢܐ ܕܐܘܠܨܢܐ. * ܡܢ ܩܠܐ ܕܕܚܠܬܟ ܙܥܘ ܥܡܡܐ.
4 ܘܡܢ ܪܡܘܬܟ ܐܬܒܕܪܘ ܥܡܡܐ. * ܘܡܚܕܐ ܢܬܟܢܫ ܒܙܬܟܘܢ. ܐܝܟ ܟܢܘܫܝܐ ܕܙܚܠܐ. ܘܐܝܟ
5 ܟܢܘܫܝܐ ܕܩܡܨܐ ܕܟܢܝܫ. * ܐܬܬܪܝܡ ܡܪܝܐ ܕܥܡܪ ܒܡܪܘܡܐ. ܘܡܠܝܗ ܠܨܗܝܘܢ ܕܝܢܐ
6 ܘܙܕܝܩܘܬܐ. * ܘܢܗܘܐ ܙܒܢܟ ܗܝܡܢܘܬܐ. ܘܦܘܪܩܢܟ ܒܟܣܝܐ. ܚܟܡܬܐ. ܘܝܕܥܬܐ ܕܚܠܬܗ
7 ܕܡܪܝܐ. ܗܘ ܗܘ ܣܝܡܬܗ. * ܐܢ ܢܬܚܙܐ ܠܗܘܢ. ܢܝܠܠܘܢ ܡܪܝܪܐܝܬ. ܘܡܠܐܟܐ ܕܫܠܡܐ ܢܒܟܘܢ
8 ܡܪܝܪܐܝܬ. * ܚܪܒܘ ܫܒܝܠܐ. ܘܒܛܠܘ ܥܒܪܝ ܐܘܪܚܐ. ܘܐܬܒܛܠ ܩܝܡܐ. ܘܐܫܬܛܝ ܩܘܪܝܐ.
ܘܐܢܫܐ ܠܐ ܐܬܚܫܒܘ.

Super terram populi mei ſpinæ vepréſque 13 naſcentur, & in omnibus ædibus voluptariis, quin & in urbe munita. Nam templum ob- 14 livioni tradetur, civitatis robur deſtituetur, & domus pulcherrimæ vertentur in ſpeluncas, in æternum uſque, in ſpinas & amœnitatem pro onagris, & paſcua pro gregibus pecudum. Donec excitetur ſuper nos ſpiri- 15 tus ab alto, fiat deſertum ut Charmelus, & Charmelus ceu ſylva reputetur: Habitet 16 judicium in deſerto, & juſtitia in Charmelo reddatur. Tunc effectus juſtitiæ erit pax, & 17 opus æquitatis tranquillitas & ſpes in ſeculum ſeculorum: Et reſidebit populus meus 18 in habitatione pacis, in tabernaculo ſpei, & in domicilio fiduciæ. Grando ſuper ſylvam 19 decidet, & in modum planitiei æquabitur urbs. O vos beatos, qui ſeritis ad omnes 20 aquas, ubi graditur bos & aſinus,

CAP. XXXIII.

VÆ diripienti: vos ne diripiatis, & decep- 1 tor nequaquam decipiet vos, cùm volueritis diripere, diripiemini; & cùm volueritis decipere, decipiemini. Domine miſerere 2 noſtrî, quoniam in te eſt fiducia noſtra: eſto adjutor noſter in matutino, & ſalva nos in tempore anguſtiæ. Ab horrenda voce tua 3 titubârunt gentes, & ab eminentia tua diſſipati ſunt populi. Jam colligetur præda ve- 4 ſtra veluti congeries bruchi, & veluti congeries locuſtæ coacervatæ. Exaltavit ſe Do- 5 minus qui habitat in excelſis, & implevit Sionem judicio & juſtitiâ. Et erit tempus tuum 6 fides, & ſalus tua in occulto: ſapientia & ſcientia eſt timor Domini; is eſt theſaurus ejus. Si conſpiciendum ſe præbeat illis, atrociter 7 ululabunt; & nuntii pacis flebunt amarè. Deſolatæ ſunt viæ, deſierunt viatores, ceſſa- 8 vit fœdus, oppida ſpernuntur, & homines nihili æſtimantur.

Verſio *A R A B I C A* cum Interpretatione *L A T I N A.*

13 * ارض شعبي صار شوكا * ويصعد العشب وينزع الفرح من كل بيت المدينة الغنية * بيوت 14
متروكة يتركون غنا المدينة والبيوت المشتهاة * ويصير قراهم مغاير الي الابد * فرح الحمير
15 الوحشية * ومراعي الرعاة * الي ان ياتي عليكم روح من العلو * وتصير البرية كرملا والكرمل
16 يعد غابا * ويستريح الحكم في البرية * والعدل يسكن في الكرمل * ويكون اعمال العدل 17
18 سلامة * ويضبط العدل راحة * ويكونون مطمينين الي الدهر * ويسكن شعبي في مدينة
19 السلامة * ويسكن مطمينا * ويستريحون بغناء * والبرد اذ نزل * لا يمر بكم * ويصير السكان في
20 الغياض مطمينين * مثل الذين في البقعة * مغبوطون الذين يزرعون على كل ماء * ليس ثور
ولا حمار يطاه *

* الفصل الثالث والثلثون *

1 * ويل للذين يسوونكم * وليس احد يجعلكم اشقياء * والمخالف لا يخالفكم * تهلك
2 العصاة ويسلمون * ومثل سوس علي ثوب كذا ينهزمون * يا رب ارحمنا لانا عليك توكلنا *
3 صار زروع العصاة للهلكة * وخلاصنا في زمن الشدة * لاجل صوت خوفك ذهلت
4 الشعوب * ومن خوفك تفرقت الامم * والان يجمع غنايمكم من صغير وكبير * كما يجمع
5 واحد جرادا هكذا يجمعون لكم * قدوس الله الساكن في الاعالي * امتلت صهيون حكما
6 وعدلا * يسلمون بالناموس * خلاصنا في كنوز * تقاك حكمة وفطنة وحسن عبادة عند
الرب * هاولاء هم كنوز العدل *

Terra populi mei redigetur in ſpinas, & 13 herba exorta gaudium amovebit ab omnibus ædibus urbis opulentæ: Domus dere- 14 lictæ manebunt, divitias urbis & ædes optabiles derelinquent, & eorum oppida redigentur in ſpeluncas æternas, in gaudium aſinorum ſylveſtrium, & paſcua paſtorum; Quoadúſque veniat ſuper vos 15 ſpiritus ab excelſo, convertatur ſolitudo in Charmelum, & Charmelus reputetur ſaltus; Quieſcat judicium in ſolitudine, 16 & juſtitia habitet in Charmelo. Tunc 17 opera juſtitiæ erit pax, & æquitas tranquillitatem conſervabit, eruntque ſecuri in perpetuum. Commorabitur populus me- 18 us in urbe pacis, habitabit ſecurus, & inter divitias requieſcent. Grando cùm 19 deciderit, non attinget vos: & degentes in ſylvis, tuti erunt ut ii qui verſantur in planitie. Fœlices qui conſeverint ſecus 10 omnem aquam, ubi nec bos nec aſinus conculcat.

CAP. XXXIII.

VÆ illis qui vexant vos: at nemo red- 1 det vos miſeros: nam refractarius non refragabitur vobis, peribunt rebelles atq; prodentur; & non ſecus ac tineæ ſuper indumentum, ita profligabuntur. O Do- 2 mine, miſerere noſtrî, quoniam tibi confidimus: arva rebellium in exitium abiêre: ſalus autem noſtra facta eſt in tempore calamitoſo. A voce tua formidabi- 3 li obſtupuerunt populi, & tui metu diſſipatæ ſunt gentes: Et mox colligentur 4 ſpolia veſtra à parvo & magno: quemadmodum colligit aliquis locuſtas, ita colligentur vobis. Sanctus eſt Deus ha- 5 bitans in excelſis: impleta eſt Sion judicio & juſtitiâ. Salvabuntur per legem: 6 ſalus noſtra in theſauris eſt: revereri te eſt ſapientia & prudentia, & ſana religio apud Dominum: hi ſunt theſauri juſtitiæ.

* الاصحاح السادس عشر *

* النبوة في ملك الموصل * وظفر ملك بابل به * واخذ ملكه له *

Textus decimus ſextus.

Prophetia de rege Aſſyriæ, quomodo vicerit eum rex Babelis, ejuſque regnum ſibi uſurpaverit.

7 * ها بخوفكم هم يخافون * الذين جعلوهم يخافون منكم * لان رسلا يرسلون يسالون سلامة *
8 يبكون عبرات طالبين سلامة * لان طرق عون يخربون * انكف خوف الامم * ورفع
العهد مع هولاء * ليس يحسبونهم اناسا *

Ecce metu veſtri ipſi pavebunt; ii quos 7 metuebatis, formidabunt vos: nam legatos mittent ad petendam pacem, flebunt amarè flagitantes pacem. Viæ 8 namque ſubſidii perrumpentur, ceſſabit terror gentium, fœdus cum iis frangetur, ne homines quidem cenſebitis eos.

ישעיה : לג

fuit : eſt exciſus ,Lebanon eſt affectus pudore ,terra eſt *infirmata* ,*Luxit*
9 אָבַל אֻמְלְלָה אֶרֶץ הֶחְפִּיר לְבָנוֹן קָמַל הָיָה
,ſurgam Nunc .Charmel & ,Baſan eſt excuſſa & ,deſertum ſicut *Saron*
10 הַשָּׁרוֹן כָּעֲרָבָה וְנֹעֵר בָּשָׁן וְכַרְמֶל׃ עַתָּה אָקוּם
,*ſtramen* Concipietis .me elevabo nunc,me exaltabo nunc :Dominus *dicet*
11 יֹאמַר יְהוָה עַתָּה אֵרוֹמָם עַתָּה אֶנָּשֵׂא׃ תַּהֲרוּ חֲשַׁשׁ
populi erunt Et .vos *comedet* ignis veſter Spiritus .ſtipulam parietis
12 תֵּלְדוּ קַשׁ רוּחֲכֶם אֵשׁ תֹּאכַלְכֶם׃ וְהָיוּ עַמִּים
Audite .comburentur igni in , exciſæ ſpinæ , calcis incendia
13 מִשְׂרְפוֹת שִׂיד קוֹצִים כְּסוּחִים בָּאֵשׁ יִצַּתּוּ׃ שִׁמְעוּ
.meā fortitudinem *propinqui* cognoſcite & , fecerim quæ longinqui
רְחוֹקִים אֲשֶׁר עָשִׂיתִי וּדְעוּ קְרוֹבִים גְּבֻרָתִי׃
habitabit Quis :*hypocritas* tremor *tenuit* ,peccatores Sijon in Formidaverūt
14 פָּחֲדוּ בְצִיּוֹן חַטָּאִים אָחֲזָה רְעָדָה חֲנֵפִים מִי יָגוּר
Perambulans ? *ſeculi incendia* nobis habitabit Quis ?*comedentem ignem* nobis
15 לָנוּ אֵשׁ אוֹכֵלָה מִי־יָגוּר לָנוּ מוֹקְדֵי עוֹלָם׃ הֹלֵךְ
excutiens,oppreſſionum *aviditatē in reprobans* : æquitates *loquens &* , *juſtitias*
צְדָקוֹת וְדֹבֵר מֵישָׁרִים מֹאֵס בְּבֶצַע מַעֲשַׁקּוֹת נֹעֵר
claudens &,*ſanguines audiendo ab* ſuā aurē *obturans*:*munere in fulciēdo à*,ſuas *volas*
כַּפָּיו מִתְּמֹךְ בַּשֹּׁחַד אֹטֵם אָזְנוֹ מִשְּׁמֹעַ דָּמִים וְעֹצֵם
munimenta ,habitabit *excelſa* Ipſe .malum *in videndo à* ſuos oculos
16 עֵינָיו מֵרְאוֹת בְּרָע׃ הוּא מְרוֹמִים יִשְׁכֹּן מְצָדוֹת
Regem .*fideles* ejus aquæ ,eſt datus ejus panis :ejus ſublimitas ſaxorum
17 סְלָעִים מִשְׂגַּבּוֹ לַחְמוֹ נִתָּן מֵימָיו נֶאֱמָנִים׃ מֶלֶךְ
.*diſtantiarum* terram videbunt : tui oculi videbunt *ſua pulchritudine* in
בְּיָפְיוֹ תֶּחֱזֶינָה עֵינֶיךָ תִּרְאֶינָה אֶרֶץ מַרְחַקִּים׃
ubi ? ponderator ubi ? ſcriba Ubi .*terrorem* meditabitur tuū Cor
18 לִבְּךָ יֶהְגֶּה אֵימָה אַיֵּה סֹפֵר אַיֵּה שֹׁקֵל אַיֵּה
populum ,videbis non *roboratum* Populum ? turres numerans
19 סֹפֵר אֶת־הַמִּגְדָּלִים׃ אֶת־עַם נוֹעָז לֹא תִרְאֶה עַם
Vide .intelligentia abſque lingua *blæſum* : *audiendo ab labio profundos*
20 עִמְקֵי שָׂפָה מִשְּׁמוֹעַ נִלְעַג לָשׁוֹן אֵין בִּינָה׃ חֲזֵה
Jeruſalaim videbunt tui Oculi .noſtræ ſolennitatis civitatem Sijon
צִיּוֹן קִרְיַת מוֹעֲדֵנוּ עֵינֶיךָ תִרְאֶינָה יְרוּשָׁלִַם
ejus *paxilli* proficiſcentur nec ,*deponetur* non tentoriū,quietam habitationē
נָוֶה שַׁאֲנָן אֹהֶל בַּל־יִצְעָן בַּל־יִסַּע יְתֵדֹתָיו
ibi *ſi* Quia חצי .rumpentur non ejus funes omnes & ,*æternum* in
21 לָנֶצַח וְכָל־חֲבָלָיו בַּל־יִנָּתֵקוּ׃ הספר כִּי אִם־שָׁם
: *manibus* latorum rivorum ,fluviorum locus ,nobis Dominus *magnificus*
אַדִּיר יְהוָה לָנוּ מְקוֹם־נְהָרִים יְאֹרִים רַחֲבֵי יָדָיִם
.cum tranſeat non magna navis & ,remigii navis eum per *ibit* non
בַּל־תֵּלֶךְ בּוֹ אֳנִי־שַׁיִט וְצִי אַדִּיר לֹא יַעַבְרֶנּוּ׃
Dominus , noſter legifer Dominus , noſter judex Dominus Nam
22 כִּי יְהוָה שֹׁפְטֵנוּ יְהוָה מְחֹקְקֵנוּ יְהוָה
recte *roborabunt* non ,tui funes ſunt Extenſi .nos ſervabit ipſe ,noſter rex
23 מַלְכֵּנוּ הוּא יוֹשִׁיעֵנוּ׃ נִטְּשׁוּ חֲבָלָיִךְ בַּל־יְחַזְּקוּ כֵן־
.*multi ſpolii* præda eſt diviſa tunc : *vexillum* extenderunt non ,ſuū malū
תָּרְנָם בַּל־פָּרְשׂוּ נֵס אָז חֻלַּק עַד־שָׁלָל מַרְבֶּה
: ægrotavi ,habitator dicet non Et .prædam diripuerunt Claudi
24 פִּסְחִים בָּזְזוּ בַז׃ וּבַל־יֹאמַר שָׁכֵן חָלִיתִי
.iniquitate *remiſſus* ea in *habitans* populus
הָעָם הַיֹּשֵׁב בָּהּ נְשֻׂא עָוֺן׃

Verſio VUL. LAT.

9 Luxit,et elanguit terra:confuſ⁹
eſt Libanus,& obſorduit,& factus
eſt Saron ſicut deſertū:&
concuſſa eſt Baſan,& Carmel⁹.
10 Nunc cōſurgā,dicit Dn̄s:nunc
exaltabor, nunc ſublevabor.
11 Concipietis ardorem, parietis
ſtipulā : ſpirit⁹ veſter ut ignis
12 vorabit vos. Et erunt populi
quaſi de incendio cinis, ſpinæ
congregatæ igni comburentur.
13 Audite qui longè eſtis,quæ fecerim,
et cognoſcite vicini fortitudinē
14 meā.Conterriti ſūt in
Sion peccatores, poſſedit tremor
hypocritas : quis poterit
habitare de vobis cum igne devorāte?
quis habitabit ex vobis
15 cum ardorib⁹ ſempiternis? Qui
ambulat in juſtitiis,& loquitur
veritatē,qui projicit avaritiam
ex calumnia, & excutit manus
ſuas ab omni munere,qui obturat
aures ſuas ne audiat ſanguinē,
& claudit oculos ſuos ne videat
16 malū.Iſte in excelſis habitabit,
munimenta ſaxorū ſublimitas
ej⁹:panis ei dat⁹ eſt,aquæ
17 ej⁹ fideles ſunt. Regē in decore
ſuo videbunt oculi ej⁹, cernent
18 terrā de longè. Cor tuū meditabitur
timorē : ubi eſt literatus?
ubi legis verba ponderans?
19 ubi doctor parvulorū? Populū
impudentē non videbis,populū
alti ſermonis:ita ut non poſſis
intelligere diſertitudinē linguæ
ej⁹,in quo nulla eſt ſapientia.
20 Reſpice Sion civitatem ſolennitatis
noſtræ:oculi tui videbunt
Jeruſalē, habitationem
opulentā, tabernaculum ꝙ nequaquā
transferri poterit : nec
auferentur clavi ej⁹ in ſempiternum,
& omnes funiculi ejus
21 non rumpentur: Quia ſolummodò
ibi magnific⁹ eſt Dn̄s noſter:
loc⁹ fluviorū rivi latiſſimi
& patentes:non tranſibit ꝑ eū
navis remigū, neq; trieris magna
22 tranſgredietur eum.Dn̄s enim
judex noſter, Dn̄s legifer
noſter,Dn̄s rex noſter:ipſe ſalvabit
23 nos. Laxati ſunt funiculi
tui,& non prævalebunt:ſic erit
mal⁹ tuus ut dilatare ſignū non
queas. Tunc dividentur ſpolia
prædarū multarū : claudi diripient
24 rapinā. Nec dicet vicin⁹,
Elangui:popul⁹ qui habitat in
ea, auferetur ab eo iniquitas.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

9 Ἐπένθησεν ἡ γῆ, ᾐσχύνθη ὁ Λίβανος, ἕλη
ἐγένετο ὁ Σάρων· φανερὰ ἔσται ἡ Γαλιλαία, καὶ ὁ
10 (λ)Χέρμελ. Νῦν ἀναστήσομαι, λέγει κύριος,
11 νῦν δοξασθήσομαι, νῦν ὑψωθήσομαι, Νῦν ὄψεσθε,
νῦν (μ) αἰσθηθήσεσθε, ματαία ἔσται ἡ ἰσχὺς
τοῦ πνεύματος ὑμῶν· πῦρ (ν) κατέδεται
12 ὑμᾶς. Καὶ ἔσονται ἔθνη κατακεκαυμένα, ὡς ἄκανθα
ἐν ἀγρῷ ἐρριμμένη καὶ κατακεκαυμένη.
13 Ἀκούσονται οἱ πόρρωθεν ἃ ἐποίησα, γνώσονται
14 οἱ ἐγγίζοντες τὴν ἰσχύν μου. Ἀπέστησαν οἱ ἐν Σιὼν
ἄνομοι, λήψεται τρόμος τοὺς ἀσεβεῖς. τίς
ἀναγγελεῖ ὑμῖν, ὅτι πῦρ καίεται; τίς ἀναγγελεῖ
15 ὑμῖν τὸν τόπον τὸν αἰώνιον; Πορευόμενος
ἐν δικαιοσύνῃ, λαλῶν εὐθεῖαν ὁδόν, μισῶν
ἀνομίαν καὶ ἀδικίαν, καὶ τὰς χεῖρας ἀποσειόμενος
ἀπὸ δώρων, βαρύνων τὰ ὦτα, ἵνα μὴ ἀκούσῃ
κρίσιν αἵματος, καμμύων τοὺς ὀφθαλμούς,
16 ἵνα μὴ ἴδῃ ἀδικίαν, Οὗτος οἰκήσει ἐν
ὑψηλῷ σπηλαίῳ πέτρας (ξ) ἰσχυρᾶς· ἄρτος
17 αὐτῷ δοθήσεται, καὶ τὸ ὕδωρ αὐτοῦ πιστόν. Βασιλέα
μετὰ δόξης ὄψεσθε, (ο) οἱ ὀφθαλμοὶ ὑμῶν
18 ὄψονται γῆν πόρρωθεν, Ἡ ψυχὴ ὑμῶν
μελετήσει (π) φόβον· ποῦ εἰσιν οἱ γραμματικοί;
ποῦ εἰσιν οἱ συμβουλεύοντες; ποῦ ἐστιν ὁ ἀριθμῶν
19 τοὺς (ρ) τρεφομένους Μικρὸν καὶ μέγαν λαόν;
ᾧ οὐ (σ) συνεβουλεύσατο, οὐδὲ ᾔδει βαθύφωνον,
ὥστε μὴ ἀκοῦσαι λαὸς πεφαυλισμένος, καὶ
20 οὐκ ἔστι τῷ ἀκούοντι σύνεσις. Ἰδοὺ Σιὼν ἡ πόλις,
τὸ σωτήριον ἡμῶν, οἱ ὀφθαλμοί σου ὄψονται
Ἱερουσαλήμ, πόλις πλουσία, σκηναὶ
αἳ οὐ μὴ σεισθῶσιν, (τ) οὐδὲ μὴ κινηθῶσιν οἱ
πάσσαλοι τῆς σκηνῆς αὐτῆς εἰς τὸν αἰῶνα χρόνον,
οὐδὲ τὰ σχοινία αὐτῆς οὐ μὴ διαρραγῶσιν,
21 Ὅτι τὸ ὄνομα κυρίου μέγα (υ) ὑμῖν. τόπος ὑμῖν
ἔσται, ποταμοὶ καὶ (˙) διώρυχες πλατεῖς καὶ
εὐρύχωροι· οὐ πορεύσῃ ταύτην τὴν ὁδόν, οὐδὲ πορεύσεται
22 πλοῖον ἐλαῦνον. Ὁ γὰρ θεός μου μέγας
ἐστίν· οὐ παρελεύσεταί με κύριος (φ) κριτὴς ἡμῶν,
κύριος ἄρχων ἡμῶν, κύριος βασιλεὺς
23 ἡμῶν, κύριος οὗτος ἡμᾶς σώσει. Ἐρράγησαν τὰ
σχοινία σου, ὅτι οὐκ (χ) ἐνίσχυσαν· ὁ ἱστός σου ἔκλινεν,
οὐ χαλάσει τὰ ἱστία, οὐκ ἀρεῖ σημεῖον, ἕως
οὗ παραδοθῇ εἰς προνομήν. τοίνυν πολλοὶ χωλοὶ
24 προνομὴν (ψ) ποιήσουσι, Καὶ οὐ μὴ (ω) εἴπωσι,
Κοπιῶ, ὁ λαὸς (α) ἐνοικῶν ἐν αὐτοῖς·
ἀφεθῇ γὰρ αὐτοῖς ἡ ἁμαρτία.

Luxit terra, confuſus eſt Libanus, 9
paludes factus eſt Saron, Manifeſta
erit Galilæa, & Chermel. Nunc 10
exurgā, dicit Dominus, nunc glorificabor,
nunc exaltabor, Nunc videbitis, 11
nunc (c) ſentietis: Vana
erit fortitudo ſpiritûs veſtri :
ignis devorabit vos: Et erunt gentes 12
combuſtæ, ſicut ſpina in agro
projecta, & combuſta. Audient, 13
qui longè ſunt, quæ feci : Scient,
qui appropinquant, fortitudinem
meam. Receſſerunt, qui erant in 14
Sion iniqui : apprehendet tremor
impios. Quis annuntiabit vobis,
quia ignis ardet ? Quis annuntiabit
vobis locum æternum ? Qui 15
ambulat in juſtitia, qui loquitur
rectam viam, odit impietatem, &
iniquitatem, & manus excutit à
muneribus, qui obturat aures, ut
non audiat judicium ſanguinis,
claudit oculos, ne videat iniquitatem :
(d) Iſte habitabit in ex- 16
celſa ſpelunca petræ fortiſſimæ.
Panis ei dabitur, & aqua ejus fidelis.
Regem cum gloria videbitis : 17
oculi veſtri videbunt terram
de longè : Anima veſtra meditabitur 18
timorē. ubi ſunt grammatici?
ubi ſunt conſiliatores? ubi eſt,
qui numerat eos, qui (e) nutriuntur?
Parvum & magnum populum, 19
cui non dedit conſilium, neq;
ſciebat profundam vocem habentem;
ita ut non audiret popul⁹ contemptus:
& non eſt audienti intelligentia.
Ecce Sion civitas, ſalutare 20
noſtrum, oculi tui videbunt
Hieruſalem : civitas dives, tabernacula,
quæ non commovebuntur,
neq; movebuntur paxilli tabernaculi
ejus in ſempiternū tempus,
& funiculi ejus non diſrumpentur :
Quia nomen Domini magnū 21
vobis. Locus vobis erit, flumina,
& rivi lati, & ſpatioſi. Non ibis
hanc viam: neq; ibit navis (f) impellens
remigio. Deus enim meus 22
magnus eſt. Non tranſibit me Dominus
judex noſter, Dominus princeps
noſter, Dominus rex noſter :
Dominus ipſe ſalvabit nos. Diſrupti 23
ſunt funiculi tui; quia nō prævaluerunt.
Malus tuus inclinatus
eſt: non demittet vela, non elevabit
ſignum; donec tradatur in direptionem.
Multi igitur claudi
prædam facient, Et non dicent, Laborabo, populus qui habitat in eis: dimittetur 24
enim eis delictum.

MS.A. (λ) Κάρμηλος. (μ) αἰσχυνθήσεσθε, (ν) ὑμᾶς κατέδεται. (ξ) ὀχυρᾶς. (ο) καὶ οἱ ὀφθαλμοὶ (π) φόβον κυρίου. (ρ) συστρεφομένους (σ) συνεβούλευσαν, (τ) οὐδ' οὐ μὴ (υ) ἐστίν. τόπος (˙) διώρυγες (φ) πατήρ, κύριος κριτὴς ἡμῶν, (χ) ἐνίσχυσεν (ψ) ποιήσωσιν, (ω) εἴπῃ, (α) ὁ ἐνοικῶν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

אִתְאַבְּלַת חֲרוּבַת אַרְעָא יְבֵישׁ לִבְנָן נְתַר הֲוָה שָׁרוֹנָא כְּמֵישְׁרָא צְדֵי מַתְנַן וְכַרְמְלָא׃ 9
10 כְּעַן אֶתְגְּלֵי אֲמַר יְיָ כְּעַן אֶתְרוֹמַם כְּעַן אֶתְנַטַּל׃ אִתְעַשְׁתּוּן לְכוֹן עַמְמַיָּא עֻשְׁתּוֹנִין דִּרְשַׁע 11
עֲבַדְתּוּן לְכוֹן עוֹבָדִין בִּישִׁין בְּדִיל עוֹבָדֵיכוֹן בִּישַׁיָּא מֵימְרִי כְּעַלְעוֹלָא לְקַשָּׁא יְשֵׁיצֵי יָתְכוֹן׃
12 וִיהוֹן עַמְמַיָּא יְקִידַת נוּר כּוּבִין מְפַסְּכִין בְּנוּרָא יִתּוֹקְדוּן׃ שְׁמַעוּ צַדִּיקַיָּא דִּנְטַרוּ אוֹרַיְתָא 13
14 מִלְּקַדְמִין מָא דַּעֲבָדִית וּדְעוּ חַיָּבַיָּא דְּתָבוּ לְאוֹרַיְתִי קָרִיב גְּבוּרְתִּי׃ אִתְּבָרוּ בְצִיּוֹן חַיָּבִין
דַּחֲלָא אֲחַדְתִּנּוּן לְרַשִׁיעַיָּא דַּהֲווֹ מְנַנְבִין אוֹרְחָתְהוֹן אָמְרִין מַן יְדוּר לָנָא בְצִיּוֹן דִּבַהּ זֵהוֹר
שְׁכִנְתֵּיהּ כְּאֶשָּׁא אָכְלָא מַן יִתּוֹתַב לָנָא בִירוּשְׁלֶם עֲתִידִין רַשִׁיעַיָּא לְאִתְדָּנָא לְאִתְמַסְרָא
15 לְגֵיהִנָּם יְקֵידוּת עָלַם׃ אֲמַר נְבִיָּא יֶתְבוּן בַּהּ צַדִּיקַיָּא כָּל דִּמְהַלֵּךְ בִּזְכוּ וּמְמַלֵּל כֵּיוָן
מִתְרַחִיק מִמָּמוֹן דִּשְׁקַר מַרְחִיק נַפְשֵׁיהּ מִן אֲנוּסִין מְנַע יְדוֹהִי מִלְּקַבָּלָא שׁוּחֲדָא מְטַמְטֵם
16 אוּדְנֵיהּ מִלְּמִשְׁמַע בְּאַשְׁדֵי דַם זַכַּי וְכָלֵי עֵינוֹהִי מִלְּמֶחֱזֵי בְּעָבְדֵי בִּישׁ׃ הוּא בַּאֲתַר רָם
וּמְנַטַּל יְהֵי בֵית מֵישְׁרוֹהִי בֵּית מַקְדְּשָׁא תִּסְבַּע נַפְשֵׁיהּ מְזוֹנֵיהּ מְסַפַּק מוֹהִי קַיָּמִין
17 כְּמַבּוּעַ דְּמַיִן דְּלָא פָּסְקִין מוֹהִי׃ יָת יְקַר שְׁכִינַת מֶלֶךְ עָלְמַיָּא בְּתוּשְׁבַּחְתֵּיהּ יֶחֶזְיָן
18 עֵינָךְ תִּסְתַּכֵּל וְתֶחֱזֵי בְּנָחֲתֵי אֲרַע גֵּיהִנָּם׃ לִבָּךְ יְחַשּׁוֹב רַבְרְבָן אֵיכָא סָפְרַיָּא אֵיכָא רַבְרְבַיָּא
19 אֵיכָא חָשְׁבַיָּא יֵיתוּן אִם יִכְלוּן לְחֻשְׁבָּא מִנְיַן קְטִילֵי רֵישֵׁי מַשִׁרְיַת גִּבָּרַיָּא׃ יָת מְרוֹת עַם
תַּקִּיף לָא תִכּוּל לְמֶחֱזֵי עַמָּא דַּהֲוָה עֲמִיק מִמַּלָּלְהוֹן מִלְּמִשְׁמַע מְלַעֲגִין בְּלִשָּׁנְהוֹן מַדְלֵית
20 בְּהוֹן סוּכְלְתָנוּ׃ תֶּחֱזֵי בְּמַפַּלְתְּהוֹן צִיּוֹן קִרְיַת זִמְנָנָא עֵינָךְ יֶחֶזְיָן בְּנֶחָמַת יְרוּשְׁלֶם
בְּאַצְלָחוּתָא בִּשְׁלֵוְתָא כְּמַשְׁכְּנָא דְלָא מִתְפָּרַק וְלָא מִשְׁתַּלְּפָן סִכּוֹהִי לְעָלַם וְכָל אַטּוּנוֹהִי
21 לָא יִתְפַּסְקוּן׃ אֲרֵי אֱלָהֵן מִתַּמָּן תִּתְגְּלֵי גְּבוּרְתָּא דַּיְיָ לְאוֹטָבָא לָנָא מֵאֲתַר נָפְקִין נַהֲרִין
22 שָׁטְפִין פְּתִיּוּת יְדִין דְּלָא תֵיזִיל בֵּיהּ סְפִינַת צַיָּדִין וּבוּרְנֵי רַבְּתָא לָא תְעוֹנְנֵיהּ׃ אֲרֵי יְיָ
דַּיָּנַנָא דְּאַפְּקָנָא בִּגְבוּרְתֵּיהּ מִמִּצְרַיִם יְיָ מַלְּפָנָא דִּיהַב לָנָא אוּלְפַן אוֹרַיְתָא מִסִּינַי יְיָ מַלְכָּנָא
23 הוּא יִפְרְקִנָּנָא וְיַעֲבֵיד לָנָא פּוּרְעָנוּת דִּין מִן מַשִּׁרְיַת גּוֹג׃ בְּעִדָּנָא הַהִיא יִתַּבְּרוּן עַמְמַיָּא
מִתּוּקְפְּהוֹן וִיהוֹן דָּמַן לִסְפִינָא דְּאִתְפַּסְקוּ חַבְלָהָא וְלֵית לַהּ תְּקוֹף עַל תּוֹרְנְהוֹן דְּאִתְפְּסִיק
וְלָא אֶפְשַׁר לְמִפְרַס עֲלוֹהִי קְלַע בְּכֵן יִפַּלְגוּן בֵּית יִשְׂרָאֵל נִכְסֵי עַמְמַיָּא סַגִּיאוּת עֲדֵי וּבִז׃
24 וַאֲפִילוּ יִשְׁתַּאֲרוּן בְּהוֹן עַוִּירִין וְחַגִּירִין אַף אִנּוּן יִפַּלְגוּן סַגִּיאוּת עֲדֵי וּבִז׃ וְלָא יֵימְרוּן מִכְּעַן
לְעַמָּא דְּשָׁרַן סְחוֹר סְחוֹר אֲתִיב לִשְׁכִנְתָּא מִלְּוָתְכוֹן אֲתָת עֲלָנָא מְחָת מְרַע עַמָּא בֵית
יִשְׂרָאֵל יִתְכַּנְשׁוּן וִיתוּבוּן לְאַרְעֲהוֹן שְׁבִיק לְחוֹבֵיהוֹן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Luxit & deſerta eſt terra : exiccatus eſt Libanus et evulſus eſt: fuit Saron 9
ſicut vallis; vaſtus eſt Baſſan & Carmelus. Nunc revelabor, Dicit Dn̄s,nunc 10
exaltabor,nunc elevabor. Cogitâſtis vobis populi cogitationes impietatis: 11
feciſtis vobis opera mala ; propter malefacta veſtra Verbū meū diſperdet
vos, ſicut turbo ſtipulā.Et erunt populi incendiū ignis ; [*ut*] ſpinæ exciſæ, 12
igne comburētur. Audite juſti qui ſervâſtis legē ab antiquo, quid fecerim;& 13
ſcitote *peccatores* qui rediſtis ad legē meā : propè enim eſt potentia mea.
Contriti ſunt in Sion peccatores,timor apprehendit impios qui ſuſſurantur 14
vias ſuas.Dicunt,Quis habitabit ex nobis in Sion; ubi eſt ſplendor majeſtatis
ej⁹ ſicut ignis conſumens ? quis habitabit ex nobis in Jeruſalem;ubi impii
judicandi ſunt,tradendi in gehennā incendio ſempiterno ? Dixit propheta, 15
Habitabunt in ea juſti; omnis qui ambulat in juſtitia,& loquitur recta,
& ſeparat ſe à mammon iniquitatis ; elongat animam ſuam à rapinis,
prohibet manū ſuā ab acceptione muneris;& obturat aurē ſuā , ne audiat
effundentes ſanguinē innocentē,& claudit oculos ſuos ne videat operantes
iniquitatē. Ipſe in loco excelſo & elevato habebit domū habitationis ſuæ; 16
in domo ſanctuarii ſaturabitur anima ej⁹; cib⁹ ej⁹ erit ſufficiens ; aquæ ejus
erunt permanentes,ſicut fons aquarū, cuj⁹ aquæ non deficiunt.Gloriā majeſtatis 17
regis ſeculorū in decore ſuo videbunt oculi tui ; aſpicies & videbis
deſcendentes in terrā gehennæ. Cor tuū cogitabit magnalia: ubi ſunt ſcribæ 18
? ubi proceres ? ubi ſunt ſupputatores ? veniant, ſi modò poſſint,numeratum
numerū capitū occiſorū exercit⁹ fortium. Subjectionē populi robuſti 19
non poteris videre; populi qui eſt tam profundæ loquelæ, ut non audias;
balbutientis lingua ſua, quia non eſt in eis intellect⁹. Videbis ruinam eorum 20
tu Sion, civitas ſolemnitatis noſtræ; oculi tui videbunt conſolationē
Jeruſalem,in proſperitate, & opulentia, ſicut tabernaculū cuj⁹ non dimoventur
nec evelluntur paxilli unquā; nec omnes funiculi ej⁹ rumpuntur.
Sed inde revelabitur potentia Dn̄i, ut benè faciat nobis de loco ex quo 21
egrediuntur flumina inundantia lati ſpatii, ꝑ quem non tranſibit navis piſcatorū,
nec trieris magna transfretabit eum. Quoniā Domin⁹ judex noſter, 22
qui eduxit nos in potentia ſua de Ægypto; Domin⁹ doctor noſter, qui dedit
nobis doctrinā legis ex Synai; Dominus rex noſter,ipſe ſalvabit nos, &
faciet nobis vindictā judicii de caſtris Gog. In tempore illo, conterentur 23
populi à fortitudine ſua, & erunt ſimiles navi cuj⁹ funiculi rupti ſunt, &
non habet fortitudinē in malo ſuo,qui ita exciſ⁹ eſt ut non poſſint ſuper eum
extendi vela. Tunc dividet dom⁹ Iſrael ſubſtantias populorū, & multitudinē
prædæ& ſpolii;& quamvis *relicti* ſint in eis cæci & claudi,ipſi quoq;
partientur multitudinē ſpolii & prædæ.Nec deinceps dicēt populo qui moratur 24
in circuitu, *Avertit majeſtatē ſuā* à vobis,venit ſuper nos plaga infirmitatis
: populus enim domus Iſrael congregabitur & revertetur in terram
ſuam, remiſſis eis delictis.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܐܒܠܬ ܘܐܬܡܟܟܬ ܐܪܥܐ. ܘܐܚܦܪ ܠܒܢܢ ܘܒܗܬ. ܗܘܐ ܫܪܘܢ ܐܝܟ ܦܩܥܬܐ. 9
ܣܚܦܬ ܡܬܢܢ ܘܟܪܡܠܐ. * ܗܫܐ ܐܩܘܡ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܫܐ ܐܬܪܘܪܒ. ܘܗܫܐ ܐܫܬܩܠ. 10
* ܘܬܒܛܢܘܢ ܚܫܫܐ ܘܬܐܠܕܘܢ ܩܫܐ. ܒܪܘܚܟܘܢ ܢܘܪܐ ܬܐܟܘܠܟܘܢ. * ܘܢܗܘܘܢ ܥܡܡܐ 11 12
ܝܩܝܕܝܢ ܐܝܟ ܓܝܪܐ. ܘܐܝܟ ܟܘܒܐ ܕܟܢܝܫܝܢ ܒܢܘܪܐ ܢܬܝܩܕܘܢ. * ܫܡܥܘ ܪܚܝܩܐ ܡܕܡ 13
ܕܥܒܕܬ. ܘܕܩܪܝܒܝܢ ܕܥܘ ܓܢܒܪܘܬܝ. * ܙܥܘ ܚܛܝܐ ܒܨܗܝܘܢ. ܘܐܚܕܬ ܪܬܝܬܐ ܠܚܢܦܐ 14
ܡܢܘ ܡܢܟܘܢ ܢܥܡܪ ܥܡ ܢܘܪܐ ܐܟܘܠܬܐ. ܘܡܢܘ ܢܥܡܪ ܥܡ ܝܩܕܢܐ ܕܥܠܡܐ.
* ܕܡܗܠܟ ܒܟܐܢܘܬܐ ܘܡܡܠܠ ܬܪܝܨܬܐ: ܘܣܢܐ ܢܟܠܐ ܘܥܠܘܒܘܬܐ: ܘܢܦܨ ܐܝܕܘܗܝ ܡܢ 15
ܕܢܣܒ ܫܘܚܕܐ: ܘܣܟܪ ܐܕܢܘܗܝ ܕܠܐ ܢܫܡܥ: ܘܡܥܡܨ ܥܝܢܘܗܝ ܕܠܐ ܢܚܙܐ ܒܝܫܬܐ.
* ܗܢܐ ܒܡܪܘܡܐ ܢܥܡܪ. ܘܒܡܥܫܢܐ ܕܫܘܥܐ ܡܛܫܝܗ. ܠܚܡܗ ܢܬܝܗܒ. ܘܡܝܘܗܝ 16
ܡܗܝܡܢܝܢ. * ܠܡܠܟܐ ܒܫܘܦܪܗ ܬܚܙܝܢ ܥܝܢܝܟ ܒܐܪܥܐ ܪܚܝܩܬܐ. ܘܠܒܟ ܢܪܢܐ 17
ܕܚܠܬܐ. * ܐܝܟܘ ܣܦܪܐ. ܐܝܟܘ ܬܩܘܠܐ. ܐܝܟܘ ܕܡܢܐ ܡܓܕܠܐ ܠܥܡܐ ܥܫܝܢܐ. * ܠܐ ܬܚܙܐ 18
ܠܥܡܐ ܕܥܡܝܩ ܫܡܥܗ. ܥܠܓܝ ܠܫܢܐ ܘܠܐ ܡܬܦܗܡܢܐ. * ܚܙܝ ܨܗܝܘܢ ܩܪܝܬܐ ܕܥܐܕܝܢ 19 20
ܘܥܝܢܝܟܝ ܢܚܙܝܢ ܠܐܘܪܫܠܡ ܥܡܪܐ ܫܒܝܥܐ. ܡܫܟܢܐ ܕܠܐ ܢܙܘܥ. ܘܠܐ ܢܬܥܩܪܘܢ ܣܟܝܘܗܝ
ܠܥܠܡ. ܘܟܠܗܘܢ ܚܒܠܘܗܝ ܠܐ ܢܬܦܣܩܘܢ. * ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܫܡܗ ܡܫܒܚ ܠܘܬܢ. 21
ܘܗܘ ܢܗܘܐ ܠܢ ܐܬܪܐ ܢܗܝܪܐ. ܘܢܘܗܪܐ ܘܪܘܝܚܐ ܕܐܝܕܝܐ. ܕܠܐ ܢܫܠܛ ܡܪܘܬܐ ܕܫܠܝܛܐ.
ܘܚܝܠܬܢܐ ܕܢܥܒܪ. ܠܐ ܢܥܒܪ ܒܗ. * ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܕܝܢܢ. ܘܡܪܝܐ ܡܚܩܩܢܢ. 22
ܘܡܪܝܐ ܡܠܟܢ. ܘܗܘܝܘ ܦܪܘܩܢ. * ܐܫܬܪܝܘ ܚܒܠܝܟܝ. ܘܠܐ ܐܬܥܫܢܘ. ܘܐܬܬܙܝܥܘ 23
ܣܘܡܟܝܟܝ. ܘܠܐ ܦܫܛܘ ܐܬܐ ܥܕܡܐ ܕܢܬܦܠܓ ܒܙܬܐ. ܘܣܘܓܐܐ ܕܚܓܝܪܐ ܒܙܘ ܒܙܬܐ.
* ܘܠܐ ܢܐܡܪ ܥܡܘܪܐ. ܕܟܪܝܗ ܐܢܐ. ܥܡܐ ܕܝܬܒ ܒܗ. ܫܩܠ ܚܛܗܐ. 24

Ejulavit, ſedítque in luctu terra : erubuit 9
Libanus & pudefactus eſt : factus eſt Saron
ſimilis planitiei: deſtructꝰ eſt Baiſan & Charmelus.
Nunc ſurgam, dicit Dominus ; nunc 10
exaltabor, nunc extollam me. Spinas concipietis, 11
& feſtucam parietis in ſpiritu veſtro;
ignis devorabit vos : Et ardebunt gentes 12
quaſi calx, & quaſi ſpinæ congeſtæ igne
comburentur. Audite longinqui quod feci, 13
& ſcitote propinqui potentiam meam. Exterriti 14
ſunt peccatores in Sion, & pavor invaſit
impios. Quis noſtrûm habitabit cum
igne devorante ? & quis noſtrûm habitabit
cum *igne* ſecula conſumente ? Qui ambulat 15
juſtè, & rectè loquitur, odit fraudem &
oppreſſionem, excutit manum ſuam ne munus
accipiat, obturat aures ſuas ne audiat;
& claudit oculos ſuos ne videat malum;
Is in excelſo habitabit, & in munitione rupis 16
habitaculum ejus ; hujus panis jam eſt ſuppeditatus
(i. tutus) & aquæ certæ. Regem in 17
pulchritudine ſua videbunt oculi tui in terris
longinquis, & cor tuum timorem addiſcet.
Ubi eſt ſcriba ? ubi ponderator : ubi qui recenſet 18
turres populo potenti? Non reſpiciet 19
ad populũ cujus gravis eſt auditꝰ, lingua balbutiens
& non intelligibilis. Reſpice Sionem 20
civitatem ſolennitatum noſtrarum, &
oculi tui contemplentur Jeruſalem habitationem
opulentam, tabernaculum inconcuſſum
cujus paxilli non evellentur in æternum, cujus
nulli funes diſrumpentur : Quia Dominus, 21
nomen eſt apud nos glorioſum, ipſéque
erit nobis locus lucidus, claritas, & amplitudo
vaſta; ut ne regnet dominiũ *ullius* principis,
& pótens (quiſquis ille fuerit) non
tranſeat per eam. Nam Dominus eſt judex, 22
Dominus interpres, Dominus rex noſter,
idémque ſervator noſter eſt. Laxati ſunt funes 23
tui, non autem obfirmati ; nutaverunt columnæ
tuæ, & non expanderunt vexillum donec
partiti eſſent prædam; & multitudo claudorum
ceperunt captivitatem. Neque dicet 24
incola, Æger ſum : populus habitans in
ea peccatum ſuſcepit.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* حزنت الارض * خزي لبنان صار صارون غياضا * الجليل والكرمل يكونان 9
طاهرين * الآن اقوم قال الرب * الآن اتمجد * الآن ارتفع * الآن تعاينون * الآن تخزون * 10 11
قوة روحكم تصير باطلة * النار تاكلكم * وتصير الامم محترقين مثل شوك في حقل 12
محروق ومحترق * يسمعون الذين من بعيد ما صنعت * يعلمون القرباء بقوتي * تبعد 13 14
الاثمة الذين في صهيون * الخوف ياخذ المنافقين * ويخبركم ان النار تحرق * من
يخبركم بالموضع الابدي * الماشي بالعدل * والمتكلم بالطريق المستقيمة * الباغض 15
الاثم والظلم * وينفض يديه من الرشا * يثقل اذنيه الا يسمع حكم دم * يغمض عينيه
كيلا ينظر ظلما * هذا يسكن في مغار مرتفعة لصخرة قوية * يعطي له خبز 16
وماؤه صدق * ترون ملكا بمجد * وترى عيونكم ارضا من بعيد * نفسكم تتلوا 17
خوفا * اين هم الكتاه * اين هم الذين يفسرون * اين هو الذي يحصي المرددين * شعبا 18 19
صغيرا وكبيرا ليس يرون * ولا يعلم صوتا عميقا * حتى لا يسمع شعب طالح * وليس
يوجد فهم للسامع * ها صهيون المدينة خلاصنا * عيناك تنظران يا اورشليم المدينة 20
الغنية مضارب لا تتزعزع * ولا تتحرك اوتاد مسكنها الي الابد زمانا * ولا تنقطع حبالها * لان 21
اسم الرب عظيم لكم * يكون لكم موضع انهار وخلجان عراض ومتسعة * لا تسلك في
هذه الطريق ولا تسير سفينة مسافرة * لان ربي عظيم هو * ولا يتجاوزني * الرب الاب * الرب 22
حاكمنا * الرب رئيسنا * الرب ملكنا * الرب هو يخلصنا * تمزقت حبالك لانها لم تقو * 23
عمودك مال * ليس يدلي الاطناب ولا يرفع علامة الي ان يسلم للنهب * الآن عرج
كثيرون يصنعون نهبا * ولا يقول الشعب الساكن فيها اتعب * لان الخطية 24
تركت لهم *

Contriſtabitur terra, pudefiet Libanus, 9
verſus eſt Saron in ſaltus, Galilæa &
Charmelus erunt ambo puri. Nunc exurgam, 10
dixit Dominus, nunc glorificabor,
nunc exaltabor : Nunc videbitis, 11
nunc erubeſcetis, fortitudo animi veſtri
erit vana, ignis devorabit vos : Populi 12
comburentur ceu ſpinæ in campo exuſto
& flagranti. Audient qui ſunt à 13
longinquo quid fecerim, agnoſcent propinqui
fortitudinem meam. Abſcedent 14
flagitioſi qui ſunt in Sione, terror impios
corripiet, indicabitque vobis quòd ignis
comburit : quis indicet vobis locum perennem?
Qui ambulat in juſtitia, qui 15
rectâ ratione loquitur, odit iniquitatem
& oppreſſionem, manibus ſuis excutit
munus, aggravat aures ſuas ne audiant
ſententiam ſanguinis, occludit oculos
ſuos ne videat oppreſſionem; Hic 16
habitabit in ſpelunca ſublimi petræ ſolidiſſimæ:
huic dabitur panis, & aqua
ejus certiſſima. Videbitis regem in gloria, 17
& oculi veſtri terram à longè videbunt,
animus veſter meditabitur terrorem.
Ubi ſunt eloquentes? ubi ſunt 18
qui interpretantur ? ubinam eſt qui numeret
attonitos? Populũ parvum aut magnũ 19
nequaquam videbunt : neq; cognoſcet
vocem profundam, quò minùs audiat
populus improbus, nec inveniatur intellectus
apud auditorem. Ecce Sion urbs, 20
ſalus noſtra : oculi tui videbunt O Jeruſalem
opulenta, tentoria intrepida,
quorum pellis paxilli erunt immobiles ad
æternum tempus, quorum funes nunquam
rumpentur, Quia nomen Domini maximum 21
erit apud vos. Erit vobis loco fluminũ
& rivulorum latorum atq; amplorum :
non ambulabit in hac via, neque
permeabit navis impulſa; Quia Dominus 22
meus maximus eſt, & non recedet
à me. Dominus eſt pater, Dominus judex
noſter, Dominus princeps noſter,
Dominus rex noſter, Dominus ipſe liberabit
nos. Diſrupti ſunt funes tui 23
quia debiles erant, columna tua nutavit :
non demittet reſticulas, neque
vexillum eriget, donec tradatur direptioni :
tandem claudi multi facient direptionem :
Neque dicet populus habitans 24
in ea, Feſſus ſum; quia remiſſum
eſt eis peccatum.

ישעיה: לד

CAP. XXXIV. לד

, terra Audiat .attendite populi & , audiendum ad gentes Accedite
1 קִרְבוּ גוֹיִם לִשְׁמֹעַ וּלְאֻמִּים הַקְשִׁיבוּ תִּשְׁמַע הָאָרֶץ
ira Quia .ejus germina omnia & , orbis ; ejus plenitudo &
2 וּמְלֹאָהּ תֵּבֵל וְכָל־צֶאֱצָאֶיהָ׃ כִּי קֶצֶף
univerſum ſuper furor & , gentes omnes ſuper DOMINO
לַיהוָה עַל־כָּל־הַגּוֹיִם וְחֵמָה עַל־כָּל־
.jugulationi eos dedit , eos *delevit internecione* : eorum exercitum
צְבָאָם הֶחֱרִימָם נְתָנָם לַטָּבַח׃
,eorũ fœtor aſcendet eorum cadaveribus & ,projicientur eorũ interfecti Et
3 וְחַלְלֵיהֶם יֻשְׁלָכוּ וּפִגְרֵיהֶם יַעֲלֶה בָאְשָׁם
exercitus omnis *muceſcent* Et .... .eorum *ſanguine à* montes liqueſcent &
4 וְנָמַסּוּ הָרִים מִדָּמָם׃ וְנָמַקּוּ כָּל־צְבָא
, decidet eorũ exercitus omnis &,cœlorum liber ſicut *volventur* & , cœli
הַשָּׁמַיִם וְנָגֹלּוּ כַסֵּפֶר הַשָּׁמָיִם וְכָל־צְבָאָם יִבּוֹל
eſt inebriatus Quia .ficu de *decidens* ſicut & ,vite de folium *defluere ut*
5 כִּנְבֹל עָלֶה מִגֶּפֶן וּכְנֹבֶלֶת מִתְּאֵנָה׃ כִּי־רִוְּתָה
populum ſuper & ,deſcendet Edom ſuper ecce : meus gladius cœlis in
בַשָּׁמַיִם חַרְבִּי הִנֵּה עַל־אֱדוֹם תֵּרֵד וְעַל־עַם
,ſanguine eſt repletus Domini Gladius .judicium ad *mei anathematis*
6 חֶרְמִי לְמִשְׁפָּט׃ חֶרֶב לַיהוָה מָלְאָה דָם
adipe ex , hircorum & ,agnorum ſanguine è ,adipe ex eſt incraſſatus
הֻדַּשְׁנָה מֵחֵלֶב מִדַּם כָּרִים וְעַתּוּדִים מֵחֵלֶב
magna *cædes* & ,Boſrah in DOMINI ſacrificiũ quia :arietum renum
כִּלְיוֹת אֵילִים כִּי זֶבַח לַיהוָה בְּבָצְרָה וְטֶבַח גָּדוֹל
;cum juvenci & , eis cum unicornes deſcendent Et .Edom terra in
7 בְּאֶרֶץ אֱדוֹם׃ וְיָרְדוּ רְאֵמִים עִמָּם וּפָרִים עִם
adipe *ex* eorũ pulvis & ,ſanguine è eorũ terra inebriabitur & : tauris
אַבִּירִים וְרִוְּתָה אַרְצָם מִדָּם וַעֲפָרָם מֵחֵלֶב
,retributionũ annus ,DOMINI ultionis dies Quia .impinguabitur
8 יְדֻשָּׁן׃ כִּי יוֹם נָקָם לַיהוָה שְׁנַת שִׁלּוּמִים
ejꝰ pulvis & ,picem in ejus torrentes convertentur Et .Sijon *rixam* ad
9 לְרִיב צִיּוֹן׃ וְנֶהֶפְכוּ נְחָלֶיהָ לְזֶפֶת וַעֲפָרָהּ
die & Nocte .ardentem picem in ejus terra erit & : ſulphur in
10 לְגָפְרִית וְהָיְתָה אַרְצָהּ לְזֶפֶת בֹּעֵרָה׃ לַיְלָה וְיוֹמָם
generatione à : ejꝰ fumus aſcendet ſeculum in ,extinguetur non
לֹא תִכְבֶּה לְעוֹלָם יַעֲלֶה עֲשָׁנָהּ מִדּוֹר
.eam per tranſiens non ſeculorum ſeculũ in , deſolabitur generationẽ in
לָדוֹר תֶּחֱרָב לְנֵצַח נְצָחִים אֵין עֹבֵר בָּהּ׃
habitabunt corvus & ,*noctua* & ,ericius & ,pelicanus eam poſſidebunt Et
11 וִירֵשׁוּהָ קָאַת וְקִפֹּד וְיַנְשׁוֹף וְעֹרֵב יִשְׁכְּנוּ־
.vacuitatis lapides & , *inanitatis* lineam eam ſuper extendet & : ea in
בָהּ וְנָטָה עָלֶיהָ קַו־תֹהוּ וְאַבְנֵי־בֹהוּ׃
ejus principes omnes & , vocabunt regnum ibi non & ,ejus *Heroes*
12 חֹרֶיהָ וְאֵין־שָׁם מְלוּכָה יִקְרָאוּ וְכָל־שָׂרֶיהָ
carduus & , urtica , ſpinæ ejus *palatia ſcandet* Et .nihil erunt
13 יִהְיוּ אָפֶס׃ וְעָלְתָה אַרְמְנֹתֶיהָ סִירִים קִמּוֹשׂ וָחוֹחַ
ululæ filiabus atrium ,draconũ habitaculũ erit & : ejꝰ munitionibꝰ in
בְּמִבְצָרֶיהָ וְהָיְתָה נְוֵה תַנִּים חָצִיר לִבְנוֹת יַעֲנָה׃
: clamabit ſuum ſocium ad *ſatyrus &* , *felibus cum martes* occurrent Et
14 וּפָגְשׁוּ צִיִּים אֶת־אִיִּים וְשָׂעִיר עַל־רֵעֵהוּ יִקְרָא
.requiem ſibi invenit & , ſtrix *eſt refocillata* ibi veruntamen
אַךְ־שָׁם הִרְגִּיעָה לִּילִית וּמָצְאָה לָהּ מָנוֹחַ׃
fovebit & (,ova) ſcindet & :*ova edidit* & , *Kipoz* nidificavit Ibi
15 שָׁמָּה קִנְּנָה קִפּוֹז וַתְּמַלֵּט וּבָקְעָה וְדָגְרָה
unuſquiſque vultures ſunt congregati ibi Veruntamen .ejus umbra in
בְצִלָּהּ אַךְ־שָׁם נִקְבְּצוּ דַיּוֹת אִשָּׁה
.ſuum ſocium
רְעוּתָהּ׃

Verſio VULG. LAT.

CAP. XXXIV.

1 ACcedite Gentes, & audite,
& populi attendite: audiat terra,
& plenitudo ejus; orbis, &
2 omne germen ejus. Quia indignatio
Domini ſuper omnes
gentes, & furor ſuper univerſam
militiam eorum: interfecit
eos, & dedit eos in occiſionem.
3 Interfecti eorum projicientur,
& de cadaveribus eorum
aſcendet fœtor: tabeſcent
4 montes à ſanguine eorum. Et
tabeſcet omnis militia cœlorum,
& complicabuntur ſicut
liber cœli: & omnis militia eorum
defluet, ſicut defluit foliũ
5 de vinea & de ficu. Quoniã inebriatus
eſt in cœlo gladius
meus: ecce ſuper Idumæam deſcendet,
& ſuper populum interfectionis
meæ, ad judicium.
6 Gladius Domini repletus eſt
ſanguine, incraſſatus eſt adipe,
de ſanguine agnorum, & hircorum,
de ſanguine medullatorum
arietum: victima enim
Domini in Boſra, & interfectio
7 magna in terra Edom. Et deſcendent
unicornes cum eis, &
tauri cum potentibus: inebriabitur
terra eorum ſanguine, et
humus eorum adipe pinguiũ:
8 Quia dies ultionis Domini, annus
retributionũ judicii Sion.
9 Et convertentur torrentes ejus
in picem, & humus ejus in ſulphur:
& erit terra ejus in picem
10 ardentem. Nocte & die
non extinguetur, in ſempiternum
aſcendet fumus ejus: à
generatione in generationem
deſolabitur, in ſecula ſeculorum
non erit tranſiens ꝑ eam.
11 Et poſſidebunt illam onocrotalus
& ericius: ibis & corvus
habitabunt in ea: & extendetur
ſuper eam menſura, ut redigatur
ad nihilum, & perpen-
12 diculum in deſolationem. Nobiles
ejus non erunt ibi: regẽ
potiùs invocabunt, & omnes
principes ejus erunt in nihilũ.
13 Et orientur in domibus ejus
ſpinæ, & urticæ, & paliurus
in munitionibus ejus: & erit
cubile draconum, & paſcua
14 ſtruthionum. Et occurrent dæmonia
onocentauris, & piloſus
clamabit alter ad alterum:
ibi cubavit lamia, & invenit
15 ſibi requiem. Ibi habuit foveam
ericius, & enutrivit catulos,
& circumfodit, & fovit
in umbra ejus: illuc congregati
ſunt milvi, alter ad alterum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. λδʹ.

1 ΠΡοσαγάγετε ἔθνη, ϗ ἀκούσατε ἄρχοντες·
ἀκουσάτω ἡ γῆ, ϗ οἱ (α) ἐν αὐτῇ,
2 ἡ οἰκουμένη, ϗ ὁ λαὸς ὁ ἐν αὐτῇ. Διότι
θυμὸς κυρίου ἐπὶ πάντα τὰ ἔθνη ϗ ὀργὴ
ἐπὶ τὸν ἀριθμὸν αὐτῶν, τοῦ ἀπολέσαι αὐτοὺς,
3 ϗ παραδοῦναι αὐτοὺς εἰς σφαγήν. Οἱ
δὲ τραυματίαι αὐτῶν ῥιφήσονται, ϗ οἱ νεκροί,
ϗ ἀναβήσεται αὐτῶν ἡ ὀσμή, ϗ βραχήσεται
τὰ ὄρη ἀπὸ τοῦ αἵματος (β) αὐτῶν.
4 Καὶ τακήσονται πᾶσαι αἱ δυνάμεις
τῶν οὐρανῶν, ϗ ἑλιγήσεται ὁ οὐρανὸς ὡς βιβλίον,
ϗ πάντα τὰ ἄστρα πεσεῖται ὡς φύλλα
ἐξ ἀμπέλου, ϗ ὡς πίπτει φύλλα ἀπὸ συκῆς.
5 Ἐμεθύσθη ἡ μάχαιρά μου ἐν τῷ οὐρανῷ·
ἰδοὺ ἐπὶ τὴν Ἰδουμαίαν καταβήσεται,
ϗ ἐπὶ τὸν λαὸν τῆς ἀπωλείας μετὰ κρίσεως.
6 Ἡ μάχαιρα (γ) τοῦ κυρίου ἐνεπλήσθη
αἵματος, ἐπαχύνθη ἀπὸ στέατος (δ), ἀπὸ
αἵματος τράγων ϗ ἀμνῶν, ϗ ἀπὸ στέατος
τράγων ϗ κριῶν· ὅτι θυσία (ε) τῷ κυρίῳ
ἐν Βοσὸρ, ϗ σφαγὴ μεγάλη ἐν τῇ Ἰδουμαίᾳ.
7 Καὶ (ζ) συμπεσοῦνται οἱ ἁδροὶ
μετ᾽ αὐτῶν, ϗ οἱ κριοὶ ϗ οἱ ταῦροι, ϗ μεθυσθήσεται
ἡ γῆ ἀπὸ τοῦ αἵματος, ϗ ἀπὸ
8 τοῦ στέατος αὐτῶν ἐμπλησθήσεται. Ἡμέρα
γὰρ κρίσεως κυρίου, ϗ ἐνιαυτὸς ἀνταποδόσεως
9 κρίσεως Σιών. Καὶ στραφήσονται
(η) αἱ φάραγγες αὐτῆς εἰς πίσσαν, ϗ ἡ γῆ
αὐτῆς εἰς θεῖον. ϗ ἔσται (θ) ἡ γῆ αὐτῆς
10 ὡς πίσσα καιομένη Νυκτὸς ϗ ἡμέρας, ϗ
οὐ σβεσθήσεται εἰς τὸν αἰῶνα χρόνον, ϗ ἀναβήσεται
ὁ καπνὸς αὐτῆς ἄνω, εἰς γενεὰς
(ι) αὐτῆς ἐρημωθήσεται, ϗ (κ) εἰς χρόνον
11 πολὺν Ὄρνεα ϗ ἐχῖνοι, ϗ ἴβεις ϗ κόρακες
κατοικήσουσιν ἐν αὐτῇ. ϗ ἐπιβληθήσεται
ἐπ᾽ αὐτὴν σπαρτίον γεωμετρίας ἐρήμου,
ϗ ὀνοκένταυροι οἰκήσουσιν ἐν αὐτῇ.
12 Οἱ ἄρχοντες αὐτῆς οὐκ ἔσονται· οἱ γὰρ
βασιλεῖς (λ), ϗ οἱ μεγιστᾶνες αὐτῆς ἔσονται
13 εἰς ἀπώλειαν. Καὶ (μ) ἀναφύσει
εἰς τὰς πόλεις αὐτῶν (ν) ἀκάνθινα ξύλα, ϗ
εἰς τὰ ὀχυρώματα αὐτῆς· ϗ ἔσται ἐπαύλεις
14 σειρήνων, ϗ αὐλὴ στρουθῶν. Καὶ συναντήσουσι
δαιμόνια ὀνοκενταύροις, ϗ βοήσονται
ἕτερος πρὸς τὸν ἕτερον, ἐκεῖ ἀναπαύσονται
ὀνοκένταυροι, (ξ) εὑρόντες αὐτοῖς
15 ἀνάπαυσιν. Ἐκεῖ ἐνόσσευσεν ἐχῖνος,
ϗ ἔσωσεν ἡ γῆ τὰ παιδία αὐτῆς μετὰ ἀσφαλείας·
ἐκεῖ (ο) συνήντησαν ἔλαφοι ϗ εἶδον
τὰ πρόσωπα ἀλλήλων.

CAP. XXXIV.

ACcedite gentes, & audite 1
principes. Audiat terra, & qui
in ea; orbis terræ, & populus qui
in ea. Quia furor Domini ſuper 2
omnes gentes, & ira ſuper (a)
numerum earum, ad perdendos
eos, & tradendos eos in occiſionem.
Vulnerati autem eorum 3
projicientur, etiam mortui: &
aſcendet eorum (b) odor: &
rigabuntur (c) montes à ſanguine
eorum. Et (d) tabeſcent omnes 4
virtutes cœlorum, & complicabitur
cœlum, ſicut liber: (e) &
omnes ſtellæ cadent, ſicut folia ex
vite, & ſicut cadunt folia de ficu.
Inebriatus eſt gladius meus 5
in cœlo: ecce ſuper Idumæam
deſcendet, & ſuper populum perditionis
cum judicio. Gladius Domini 6
impletus eſt ſanguine: incraſſatus
eſt de adipe, de ſanguine
hircorum, & (f) agnorum, &
de adipe hircorum, & arietum.
Sacrificium enim Domino in Boſor,
& mactatio magna in Idumæa:
Et concident robuſti cum 7
eis, & arietes, & tauri: & inebriabitur
terra ex ſanguine; &
ex adipe eorum implebitur. Dies 8
enim judicii Domini: & annus
retributionis judicii Sion. Et vertentur 9
valles ejus in picem, &
terra ejus in ſulphur: & erit
terra ejus, quaſi pix ardens Nocte, 10
& die, & non extinguetur
in ſempiternum tempus: & aſcendet
fumus ejus ſurſum: in generationes
ſuas deſolabitur: &
in tempus multum Aves, & 11
hericii, & ibes, & corvi habitabunt
in ea. Et immittetur ſuper
eam funiculus geometriæ deſerti:
& onocentauri habitabunt in ea.
Principes ejus non erunt: reges 12
enim & magnates ejus erunt in
perditionem. Et pullulabunt in 13
civitatibus eorum ſpinea ligna,
& in munitionibus ejus: & erit
caulæ (g) ſirenum, & atrium
ſtruthionum: Et occurrent dæmonia 14
onocentauris: & clamabunt
alter ad alterum: illic requieſcent
onocentauri, invenientes
ſibi requiem: Illic nidificavit 15
hericius: & ſalvavit terra filios
ejus cum ſecuritate: ibi occurrerunt
cervi, & viderunt facies
inter ſe:

MS.A. (α) ἐνοικοῦντες ἐν αὐτῇ, (β) αὐτῶν. Καὶ ἑλιγήσεται ὁ οὐρανὸς (γ) κυρίου (δ) ἀρνῶν, ϗ ἀπὸ στέατος τράγων ϗ κριῶν· ὅτι (ε) κυρίῳ ἐν τῇ Βοσὸρ, (ζ) συμπεσοῦνται (η) αὐτῆς αἱ φάραγγες (θ) αὐτῆς ἡ γῆ καιομένη ὡς πίσσα (ι) ἐρημωθήσεται, (κ) κατοικήσονται ἐν αὐτῇ ὄρνεα ϗ ἐχῖνοι, ϗ ἴβεις καὶ κόρακες. ϗ ἐπιβληθήσεται (λ) αὐτῆς, ϗ οἱ ἄρχοντες αὐτῆς, ϗ οἱ μεγιστᾶνες (μ) ἀναφύσει (ν) ἄκανθα, ϗ εἰς (ξ) εὗρον γὰρ (ο) ἔλαφοι συνήντησαν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

לד

1 אִתְקְרָבוּ עַמְמַיָא לְמִשְׁמַע וּמַלְכְוָתָא אֲצִיתוּ תִּשְׁמַע אַרְעָא וּמְלָהָא תֵּבֵל וְכָל דְּדָיְרִין בַּהּ׃
2 אֲרֵי רְגַז מִן קֳדָם יְיָ עַל כָּל עַמְמַיָא וְקַטוֹלָא עַל כָּל מַשְׁרְיָתְהוֹן חַיְבִנּוּן מַסְרִנּוּן לְקִטְלָא׃
3 וְקְטִילֵיהוֹן יִתְרְמוֹן וּפִגְרֵיהוֹן יִסַּק תְּנָנְהוֹן וְיִתְמַסְיָן טוּרַיָא מִדְּמְהוֹן׃ וְיִתְמַסְיָן כָּל חֵילֵי
4 שְׁמַיָא וְיִתְמְחוֹן מִתְּחוֹת שְׁמַיָא כְּמָא דַּאֲמִיר עֲלֵיהוֹן בְּסִפְרָא וְכָל מַשְׁרְיָתֵיהוֹן יְסוּפוּן
5 כְּמִיתַר טְרַף מִגֻּפֶן וּכְנִבְלָא מִתְּאֵנָה׃ אֲרֵי תִּתְגְּלֵי בִשְׁמַיָא חַרְבִּי הָא עַל אֱדוֹם תִּתְגְּלֵי וְעַל
6 עַמָּא דְחַיֵּבִית לְדִינָא׃ חַרְבָּא קֳדָם יְיָ אִתְמְלִיאַת דַּם אִדְהֲנַת מִתְּרַב מִדַּם מַלְכִין וְשִׁלְטוֹנִין
מִתְּרַב כָּלְיָת רַבְרְבִין אֲרֵי קִטְלָא קֳדָם יְיָ בְּבָצְרָא וְנִכְסָא סַגִּיאָה בְּאַרְעָא דֶאֱדוֹם׃
7 וְיִתְקַטְלוּן גִּבָּרִין עִמְּהוֹן וְשִׁלְטוֹנִין עִם טוּרְנִין וְתִרְוֵי אַרְעֲהוֹן מִדְּמְהוֹן וְעַפְרְהוֹן מִתְּרַבְּהוֹן
8 יִדְהַן׃ אֲרֵי יוֹם פּוּרְעָנוּתָא קֳדָם יְיָ שְׁנַת תּוּשְׁלְמָא לְמֶעְבַּד פּוּרְעָנוּת דִּין עוּלְבָּנָא דְצִיּוֹן׃
9 10 וְיִתְהַפְּכוּן נַחֲלָהָא לְזִפְתָּא וְעַפְרַהּ לְגוּפְרִיתָא וּתְהֵי אַרְעָא לְזִפְתָּא בָּעֲרָה׃ לֵילֵי וְיִמָּם לָא
11 תִטְפֵי לְעָלַם יִסַּק תְּנָנַהּ מִדָּר לְדָר תֶּחֱרוּב לְעָלַם עַלְמַיָא לֵית דִּי עָדֵי בַהּ׃ וְיַחְסְנוּנַהּ קָתִין
וְקִפּוֹדִין וְקִפּוֹפִין וְעוֹרְבִין יִשְׁרוֹן בַּהּ וְיִתְנְגִיד עֲלַהּ חוּט דְּחוּרְבָּנָא וּמַשְׁקוֹלְתָּא דְצַדְיוּתָא׃
12 דַּהֲווֹ אָמְרִין בְּנֵי חֵירִין אֲנַחְנָא וְלָא צְבַן לְקַבָּלָא עֲלֵיהוֹן מַלְכוּ וְכָל רַבְרְבָהָא יְהוֹן לִלְמָא׃
13 וְיִסְּקוּן בְּבִירְנְיָתְהָא סִירִין קַרְסוּלִין וְחוּחִין בִּתְקוֹף כְּרַכְּהָא וּתְהֵי מְדוֹר יְרוֹדִין אַתְרָא לְבַת
14 נַעֲמָא׃ וִיעַרְעָן תַּמָּן בַּחֲתוּלִין וְשֵׁידִין חַד עִם חַבְרֵיהּ יְחַיְכוּן בְּרַם תַּמָּן יִשְׁרְיָן לִילִין
15 וְיִשְׁכְּחָן לְהֶן נְיָח׃ תַּמָּן תְּקַנֵּן קוּפְדָא וּתְשַׁיֵּב וְקוֹרְהוֹן יְנַצְּפוּן בְּטוּלָהּ בְּרַם לְתַמָּן
יִתְכַּנְּשׁוּן דַּיָּתָא אִתְּתָא לְוָת חַבְרְתַהּ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XXXIV

ACcedite populi ad audiendum, & regna attendite; audiat terra, & ple- 1
nitudo ejus, orbis & omnes qui habitant in eo. Furor enim à facie Dñi 2
eſt ſuper omnes populos, & occiſio ſuper omnem exercitum eorum: con-
demnavit eos & tradidit eos in occiſionem. Et interfecti eorum projicien- 3
tur, & de cadaveribus eorũ aſcendet fœtor eorum, & colliqueſcent mon-
tes à ſanguine eorum. Et tabeſcent omnes *exercitus* cœlorũ, & delebuntur 4
deſubter cœlũ ſicut dictũ eſt de eis in libro: *Et* omnes exercitus eorũ con-
ſumentur, ſicut defluit foliũ de vite; & ſicut deciduũ de ficulnea. Quia 5
revelatus eſt in cœlo gladius meus; ecce ſuper Idumæam revelatus eſt, &
ſuper populũ quẽ condemnavi in judicio. Gladius enim in conſpectu Dñi 6
repletꝰ eſt ſanguine, impinguatꝰ eſt adipe, ſanguine regũ & dominatorum,
& adipe renum principũ; quoniam occiſio eſt corã Dño in Boſra, & in-
terfectio magna in terra Edom. Et occidentur fortes cum eis, et domi- 7
natores cum ducibus; & inebriabitur eorũ ſanguine ipſorũ terra; & pul-
vis adipe eorũ impinguabitur. Quia dies vindictæ eſt corã Dño, annus re- 8
tributionis ad ſummendam ultionem juſtam injuriæ Sion. Et converten- 9
tur torrentes *ejus* in picem, & pulvis ejus in ſulphur; & erit terra in pi-
cem ardentẽ. Noctes & dies non extinguetur: in æternũ aſcendet fumꝰ ejus; 10
à generatione in generationes deſolabitur: in ſecula ſeculorũ non erit qui
tranſeat per eam. Et poſſidebunt illam cati & ericii; & ululæ, & corvi 11
habitabunt in ea: et extendetur ſuper eam linea deſolationis, & perpendi-
culum deſtructionis. Qui dictitabant, Filii liberi ſumus, & nolebant ſuſci- 12
pere regem ſuper ſe. Et omnes principes ejus erunt in nihilũ. Succreſcent 13
in palatiis ejus ſpinæ, urticæ, & tribuli in munitione civitatis ejus; & erit
habitaculum draconum, & locꝰ *filiæ ſtruthionis*. Et occurrent feræ catis, & 14
dæmones inter ſe colludent: veruntamen ibi manebunt noctuæ, & inveni-
ent ſibi requiẽ. Ibi nidificabit ericius, & pullos excludet, & perdices eorũ 15
garrient in umbra ejꝰ: veruntamẽ ibi congregabuntur milvi alter ad alterũ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܕ * ܐܬܪܐ ܕܕܝܢܐ *

* ܩܪܘܒܘ ܥܡ̈ܡܐ ܠܡܫܡܥ. ܘܨܘܬܘ ܐܡ̈ܘܬܐ: ܬܫܡܥ ܐܪܥܐ ܒܟܠܗ̇. ܬܒܝܠ ܘܟܠܗܘܢ 1
ܥܡܘܪ̈ܝܗ̇. * ܡܛܠ ܕܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ. ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡ̈ܡܐ: ܘܚܡܬܗ ܥܠ ܟܠܗ 2
ܚܝܠܗܘܢ. ܕܢܚܪܒ ܐܢܘܢ. ܘܢܫܠܡ ܐܢܘܢ ܠܩܛܠܐ. * ܘܢܫܬܕܘܢ ܩܛܝ̈ܠܝܗܘܢ. ܘܢܣܩ 3
ܣܪܝܐ ܕܫܠܕ̈ܝܗܘܢ. ܘܢܬܡܣܘܢ ܛܘܪ̈ܐ ܡܢ ܕܡܗܘܢ. * ܘܢܬܡܣܘܢ. ܟܠ ܚܝ̈ܠܘܬܐ ܕܫܡܝܐ. 4
ܘܢܬܟܪܟܘܢ ܫܡܝܐ ܐܝܟ ܟܪܟܐ. ܘܟܠܗ ܚܝܠܗܘܢ ܢܬܪ. ܐܝܟ ܕܢܬܪ ܛܪܦܐ ܡܢ
ܓܦܬܐ. ܘܐܝܟ ܦܓܐ ܡܢ ܬܐܬܐ. * ܡܛܠ ܕܪܘܝܬ ܣܝܦܝ ܒܫܡܝܐ. ܗܐ ܥܠ ܐܕܘܡܝܐ ܢܚܘܬ. 5
ܥܠ ܥܡܐ ܕܐܬܚܝܒ ܒܕܝܢܐ. * ܣܝܦܗ ܕܡܪܝܐ ܡܠܐ ܕܡܐ. ܐܬܦܛܡ ܡܢ ܕܡܐ ܘܡܢ ܬܪܒܐ 6
ܕܦܛܝ̈ܡܐ ܘܕܓܕ̈ܝܐ. ܘܡܢ ܬܪܒܐ ܕܟܘܠܝ̈ܬܐ ܕܕܟܪ̈ܐ. ܡܛܠ ܕܕܒܚܬܐ ܠܡܪܝܐ ܒܒܨܪܐ. ܘܩܛܠܐ
ܪܒܐ ܒܐܪܥܐ ܕܐܕܘܡ. * ܘܢܦܠܘܢ ܥܡܗܘܢ ܪ̈ܐܡܐ. ܘܬܘܪ̈ܐ ܥܡ ܥܓܠܐ. ܘܬܪܘܐ ܐܪܥܐ ܡܢ 7
ܕܡܗܘܢ. ܘܥܦܪܐ ܡܢ ܬܪܒܗܘܢ ܢܬܦܛܡ. * ܡܛܠ ܕܝܘܡܐ ܕܬܒܥܬܐ ܠܡܪܝܐ. ܘܫܢܬܐ 8
ܕܦܘܪܥܢܐ ܠܕܝܢܗ ܕܨܗܝܘܢ. * ܘܢܬܗܦܟܘܢ ܢܚ̈ܠܝܗ̇ ܠܙܦܬܐ. ܘܥܦܪܗ̇ ܠܟܒܪܝܬܐ. ܘܬܗܘܐ 9
ܐܪܥܗ̇ ܙܦܬܐ ܝܩܕܬܐ. * ܘܠܐ ܬܕܥܟ ܒܠܠܝܐ ܘܒܐܝܡܡܐ. ܠܥܠܡ ܢܣܩ ܬܢܢܗ̇. ܘܠܕܪ ܕܪܝܢ 10
ܬܚܪܒ. ܘܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ ܐܢܫ ܠܐ ܢܥܒܪ ܒܗ̇. * ܘܢܐܪܬܘܢܗ̇ ܩܩ̈ܐ ܘܩܘܦ̈ܕܐ. ܘܩܩ̈ܐ ܘܥܘܪ̈ܒܐ 11
ܢܥܡܪܘܢ ܒܗ̇. ܘܢܬܡܬܚ ܥܠܝܗ̇ ܚܘܛܐ ܕܚܘܪܒܐ. ܘܠܐ ܬܗܘܐ ܬܡܢ ܚܕܘܬܐ. * ܘܠܐ ܢܩܪܘܢ 12
ܬܡܢ ܡܠܟܘܬܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܪ̈ܘܪܒܢܝܗ̇ ܠܐܒܕܢܐ. * ܘܢܦܩܘܢ ܟܘ̈ܒܐ ܒܐܦܕܢ̈ܝܗ̇. ܘܚܘܚ̈ܐ 13
ܘܕܪ̈ܕܪܐ ܒܚܘܣܢܗ̇. ܘܬܗܘܐ ܕܝܪܐ ܕܝܪ̈ܘܪܐ. ܘܪܥܝܐ ܠܒܢ̈ܬ ܢܥܡܝܬܐ. * ܘܢܦܓܥܘܢ ܒܗ̇ 14
ܪ̈ܘܚܐ ܒܚ̈ܕܕܐ. ܘܫܐܕܐ ܠܚܒܪܗ ܢܩܪܐ. ܬܡܢ ܬܬܒ ܠܠܝܬܐ. ܘܬܫܟܚ ܠܗ̇ ܢܝܚܐ.
* ܘܬܡܢ ܬܩܢܢ ܩܘܦܕܐ. ܘܬܬܪܦܬ ܘܬܚܦܘܪ. ܘܬܥܒܪ ܒܛܠܠܗ̇. ܘܬܡܢ ܢܬܟܢܫܘܢ ܕܝ̈ܬܐ 15
ܚܕܐ ܥܡ ܚܕܐ.

CAP. XXXIV.

Locus judicii.

ADeſte populi ad audiendum, auſcultate 1
gentes, audiet terra univerſa, orbis & omnes
habitatores ejus : Nam ira Domini eſt 2
contra omnes populos, & indignatio ej' contra
omnem exercitum eorum ; ut trucidet eos,
& tradat eos internecioni. Projicientur confoſſi 3
eorum, malè olebit odor cadaverũ eorum,
& fœtebunt montes ob ſanguinem eorum.
Etiam contabeſcent omnes cœlorum 4
exercitus, & convolventur cœli ut volumen,
& totus exercitus eorum defluet quemadmodum
defluit folium è vite, & ut groſſus è fico.
Inebriabitur enim gladius meus in cœlis, 5
ecce ſuper Adumæos deſcendet, ſuper populum
qui convictus eſt in judicio. Gladius 6
Domini plenus eſt ſanguine, pinguefactus eſt
ſanguine & adipe ſaginatorum & hœdorum,
& adipe renum arietum : nam victima Domino
eſt in Boſar, & cædes magna in terra Adumæorum.
Cum his cadent etiam unicornes, 7
& tauri cum juvencis; adeo ut inebrietur terra
ſanguine eorum, & pulvis adipe eorum
pinguefiat : Quoniam dies eſt ultionis Do- 8
mino, & annus retributionis judici Sionis.
Torrentes ejus in picem convertentur, & pul- 9
vis ejus in ſulphur ; eritque terra ejus pix ardens,
Et non extinguetur noctu neque in- 10
terdiu, ſed perpetuò aſcendet fumus ejus : vaſtabitur
ad æternas generationes, & in ſeculum
ſeculorum nemo per eam tranſibit : Sed 11
occupabunt eam cygni et herinacei, et pelicani
atque corvi habitabunt in ea : et extendetur
ſuper eam filum vaſtitatis, nec erit ibi
gaudium ; Neque nominabunt ibi regnum, 12
quia cuncti principes ejus erunt in exitium.
Naſcentur ſpinæ in palatiis ejus, et cardui at- 13
que tribuli in munitione ejus : et erit habitatio
canum ſylveſtrium, et paſcua pullis ſtruthionum.
Obvios offendent in ea ſpiritus, 14
et dæmon alterum vocabit : ibi reſidebit ſtrix:
inveniétque ſibi quietem : Ibi nidificabit 15
herinaceus, excutiet ſe, effodiet, et penetrabit
in umbram illius : et ibi congregabuntur
milvi alter cum altero :

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الرابع والثلثون *

* اقتربوا ايها الامم * وتسمع الرؤساء * لتسمع الارض والساكنون فيها * المسكونة 1
والشعب الذين فيها * من اجل ان غضب الرب على كل الامم * والرجز على عددهم * 2
ليهلكهم ويسلمهم للذبح * وجرحاهم وامواتهم يطرحون * ويصعد رايحتهم * ويعفن 3
الجبال من دمهم * ويطوي السماء مثل الكتاب * وجميع الكواكب تسقط مثل 4
ورق من كرمة * وكما تسقط ورقة من تينة * سكر سيفي في السماء * ها على ادوم 5
ينزل وعلى شعب الهلاك بحكم * سيف الرب امتلى دما * سمن من شحم الخراف ومن 6
دم التيوس والحملان * ومن شحم التيوس والكباش * لان الذبيحة للرب في بوصور *
والذبح العظيم في الادومية * ويسقط الاغنياء معهم والكباش والثيران * ويسكر الارض 7
من الدم * وتمتلي من شحمهم * لانه يوم حكم الرب * وسنة المكافاة والحكم في 8
صهيون حضر * وترجع اوديتها للكبريت * وتصير ارضها مثل زفت تحترق ليلا ونهارا * 9
* ولا يطفى الى الدهر زمانا * ويصعد دخانها الى فوق الى جبلها * تخرب والى زمن كثير 10
تخرب * ويسكن فيها الطيور والقنافذ والحبارى والغربان * ويلقى عليها خيط مساحة 11
البرية * ويسكن فيها الغيلان * رؤساؤها لا يكونون * لان ملوكها ورؤساءها وعظماءها 12
يصيرون للهلاك * وينبت في مدنها الاشجار الشوكية وفي حصونها * وتصير ماوى لبنات 13
اوى * وحصين للنعام * وتلتقي الجان * والغيلان يلتقون احد مع اخر * هناك تستريح الغيلان * 14
لانهم وجدوا لهم راحة * هناك عشش القنفذ * وخلصت الارض بقاعها بثبت * هناك الايايل 15
يلتقون وينظرون وجوه بعضهم بعضا *

CAP. XXXIV.

ACcedite O gentes, audiant princi- 1
pes, audiat terra & qui habitant in
ea, orbis & populus exiſtens in eo :
Quoniam ira Domini eſt adverſus o- 2
mnes gentes, & furor adverſus numerum
earum ; ut perdat eas, & mactationi
devoveat. Vulnerati & mor- 3
tui earum projicientur, aſcendetque fœtor
eorum, & muceſcent montes ex
eorum ſanguine. Cœlum quoque ut li- 4
ber complicabitur, & omnes ſtellæ decident
ut folia è viti, & quemadmodum
labitur folium è fico. Inebri- 5
atus gladius meus in cœlo, en ſuper
Edom & ſuper populum perditionis
juſtè deſcenſurus eſt. Gladius Domi- 6
ni replebitur ſanguine, pingueſcet
adipe agnorum, & ſanguine hircorum
& arietum, & adipe hircorum & arietum ;
quia ſacrificium Domino erit in
Boſor, & ingens mactatio in Edomæa.
Corruent etiam cum iſtis divites, & 7
arietes, atque tauri ; ita ut inebrietur
terra ſanguine, & impleatur adipe eorum :
Quia dies erit judicii Domini, 8
& annus remunerationis & judicii in
Sion aderit ; Et convertentur in ſul- 9
phur torrentes ejus, & terra ejus evadet
quaſi pix noctu diuque ardens, Et 10
nequaquam extinguenda in æternitatem
temporis, & fumus ejus ſurſum
aſcendet ad montem ipſius. Evertetur,
& ad diuturnum tempus evertetur ;
Et habitabunt in ea volucres, 11
& herinacei, bubones, & corvi : jacietur
ſuper eam filum dimenſionis deſerti,
& habitabunt in ea ſtriges.
Principes ejus non erunt, quia reges 12
ejus, & principes ac magnates ejus
interibunt. Exorientur in urbibus & 13
arcibus ejus, arbores ſpinoſæ ; & erit
receptus canum ſylveſtrium, & caula
ſtruthionum. Dæmones occurrent in- 14
vicem, & ſtriges offendent altera in
alteram. Ibi requieſcent ſtriges, quia
invenient ſibi requiem : Ibi nidifica- 15
bunt herinacei : ſic terra certiſſimè
ſuos eximet campos : ibi cervi ſibi
invicem occurrent, ſeſeque coram videbunt.

ישעיה: לה לו

, defuit non eis ex unum : legite &,Domini libro *deſuper* Requirite
16 דִּרְשׁוּ מֵעַל־סֵפֶר יְהוָה וּקְרָאוּ אַחַת מֵהֵנָּה לֹא נֶעְדָּרָה
, præcepit ipſum meũ os quia *:ſunt deſiderata* non ſuo ſocio unumquodque
אִשָּׁה רְעוּתָהּ לֹא פָקָדוּ כִּי־פִי הוּא צִוָּה
.ſortem eis fecit cadere ipſe Et .ea cógregavit ipſe ej⁹ ſpirit⁹ &
17 וְרוּחוֹ הוּא קִבְּצָן׃ וְהוּא־הִפִּיל לָהֶן גּוֹרָל
:eã poſſidebunt ſeculum in uſque : linea in eis eam diviſit ejus manus Et
וְיָדוֹ חִלְּקַתָּה לָהֶם בַּקָּו עַד־עוֹלָם יִירָשׁוּהָ
.ea in habitabunt generatione &,generatione in
לְדוֹר וָדוֹר יִשְׁכְּנוּ־בָהּ׃

CAP. XXXV. לה

florebit & ,ſolitudo exultabit & *: ſiccitas* & , deſertum *eis in Gaudebunt*
1 יְשֻׂשׂוּם מִדְבָּר וְצִיָּה וְתָגֵל עֲרָבָה וְתִפְרַח
,exultatione etiam exultabit & ,germinabit Germinando .roſa veluti
2 כַּחֲבַצָּלֶת׃ פָּרֹחַ תִּפְרַח וְתָגֵל אַף גִּילַת
ipſi *: Saron &* , *Charmel* decor ,*ei* eſt data Lebanon gloria *:ovando* &
וְרַנֵּן כְּבוֹד הַלְּבָנוֹן נִתַּן־לָהּ הֲדַר הַכַּרְמֶל וְהַשָּׁרוֹן הֵמָּה
manus Confortate .noſtri Dei decorem ,DOMINI gloriam videbunt
3 יִרְאוּ כְבוֹד־יְהוָה הֲדַר אֱלֹהֵינוּ׃ חַזְּקוּ יָדַיִם
, corde *inquietis* Dicite .roborate *labantia* genua & : remiſſas
4 רָפוֹת וּבִרְכַּיִם כֹּשְׁלוֹת אַמֵּצוּ׃ אִמְרוּ לְנִמְהֲרֵי־לֵב
retributio ; veniet *ultio* veſter Deus ecce : timeatis ne ,Confortamini
חִזְקוּ אַל־תִּירָאוּ הִנֵּה אֱלֹהֵיכֶם נָקָם יָבוֹא גְּמוּל
aperientur Tunc .vos faciet ſalvos & , veniet ipſe : Dei
5 אֱלֹהִים הוּא יָבוֹא וְיֹשַׁעֲכֶם׃ אָז תִּפָּקַחְנָה
ſaliet Tunc .patebunt ſurdorum aures & : cæcorum oculi
6 עֵינֵי עִוְרִים וְאָזְנֵי חֵרְשִׁים תִּפָּתַחְנָה׃ אָז יְדַלֵּג
ſunt ſciſſæ quia : muti lingua *præconia dicet* & , claudus cervus ſicut
כָּאַיָּל פִּסֵּחַ וְתָרֹן לְשׁוֹן אִלֵּם כִּי־נִבְקְעוּ
aridus locus erit Et .ſolitudine in flumina & , aquæ deſerto in
7 בַמִּדְבָּר מַיִם וּנְחָלִים בָּעֲרָבָה׃ וְהָיָה הַשָּׁרָב
draconum habitaculo in : aquarum *ſcaturigines in* , *ſitis* & ; ſtagnum in
לַאֲגַם וְצִמָּאוֹן לְמַבּוּעֵי מָיִם בִּנְוֵה תַנִּים
ibi erit Et .junco & , calamo atrium , ejus accubitus
8 רִבְצָהּ חָצִיר לְקָנֶה וָגֹמֶא׃ וְהָיָה־שָׁם
eã tranſibit non *: ei* vocabitur ſanctitatis via & , via & ,*ſtrata* ſemita
מַסְלוּל וָדֶרֶךְ וְדֶרֶךְ הַקֹּדֶשׁ יִקָּרֵא לָהּ לֹא־יַעַבְרֶנּוּ
.errabunt non ſtulti *&* , viam *ambulans* : ipſis *hoc* & , pollutus
טָמֵא וְהוּא־לָמוֹ הֹלֵךְ דֶּרֶךְ וֶאֱוִילִים לֹא יִתְעוּ׃
nec , eam *conſcendet* non *ferarum effractor* & , leo ibi erit Non
9 לֹא־יִהְיֶה שָׁם אַרְיֵה וּפְרִיץ חַיּוֹת בַּל־יַעֲלֶנָּה לֹא
DOMINI redempti Et .redempti ambulabunt & : ibi invenietur
10 תִמָּצֵא שָׁם וְהָלְכוּ גְּאוּלִים׃ וּפְדוּיֵי יְהוָה
:eorũ caput ſuper ſeculi lætitia & ,*præconio in* Sijon venient &,revertẽtur
יְשֻׁבוּן וּבָאוּ צִיּוֹן בְּרִנָּה וְשִׂמְחַת עוֹלָם עַל־רֹאשָׁם
.gemitus & , *mæror* fugient &,apprehendent lætitiam &,gaudium
שָׂשׂוֹן וְשִׂמְחָה יַשִּׂיגוּ וְנָסוּ יָגוֹן וַאֲנָחָה׃

CAP. XXXVI. לו

aſcendit , Chizchijahu regis anno decimo-quarto in fuit Et
1 וַיְהִי בְּאַרְבַּע עֶשְׂרֵה שָׁנָה לַמֶּלֶךְ חִזְקִיָּהוּ עָלָה
, munitas Jehudah civitates omnes contra Aſſur rex Sancherib
סַנְחֵרִיב מֶלֶךְ־אַשּׁוּר עַל כָּל־עָרֵי יְהוּדָה הַבְּצֻרוֹת
.eas cepit &
וַיִּתְפְּשֵׂם׃

Verſio VULG. LAT.

16 Requirite diligenter in libro
Domini, & legite : unum ex
eis non defuit, alter alterum
non quæſivit : quia quod ex
ore meo procedit, ille mandavit,
& ſpiritus ejus ipſe con-
17 gregavit ea. Et ipſe miſit eis
ſortem, & manus ejus diviſit
eam illis in menſuram : uſque
in æternum poſſidebunt eam,
in generationem & generationem
habitabunt in ea.

CAP. XXXV.

1 LÆtabitur deſerta & invia,
& exultabit ſolitudo, & flore-
2 bit quaſi lilium. Germinans
germinabit, & exultabit lætabunda
& laudans : gloria Libani
data eſt ei : decor Carmeli,
& Saron, ipſi videbunt
gloriam Domini & de-
3 corem Dei noſtri. Confortate
manus diſſolutas, & genua
4 debilia roborate. Dicite puſillanimis;
Confortamini, &
nolite timere : ecce Deus veſter
ultionem adducet retributionis
: Deus ipſe veniet, &
5 ſalvabit vos. Tunc aperientur
oculi cæcorũ, & aures ſurdo-
6 rum patebunt. Tunc ſaliet ſicut
cervus claudus, & aperta erit
lingua mutorum : quia ſciſſæ
ſunt in deſerto aquæ, & tor-
7 rentes in ſolitudine. Et quæ
erat arida, erit in ſtagnum, &
ſitiens in fontes aquarum. In
cubilibus, in quibus priùs dracones
habitabant, orietur vi-
8 ror calami & junci. Et erit ibi
ſemita & via, & via ſancta
vocabitur : non tranſibit per
eam pollutus, & hæc erit vobis
directa via, ita ut ſtulti
9 non errent per eam. Non erit
ibi leo, & mala beſtia non
aſcendet per eam, nec invenietur
ibi : & ambulabunt qui
10 liberati fuerint. Et redempti
à Dño convertentur, & venient
in Sion cum laude: & lætitia
ſempiterna ſuper caput
eorum : gaudium & lætitiam
obtinebunt, & fugiet dolor
& gemitus.

CAP. XXXVI.

1 ET factum eſt in quartodecimo
anno regis Ezechiæ,
aſcendit Sennacherib rex Aſſyriorum
ſuper omnes civitates
Juda munitas, & cepit eas.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

16 Ἀριθμῷ παρῆλθον, καὶ μία αὐτῶν οὐκ ἀπώλετο·
ἑτέρα τὴν ἑτέραν οὐκ (π) ἐζήτησαν,
ὅτι ὁ κύριος αὐτοῖς ἐνετείλατο, καὶ
17 τὸ πνεῦμα αὐτοῦ συνήγαγεν (ϛ) αὐτά. Καὶ
αὐτὸς ἐπιβαλεῖ αὐτοῖς κλήρους, καὶ ἡ χεὶρ
αὐτοῦ διεμέρισε βόσκεσθαι· εἰς τὸν αἰῶνα
χρόνον (σ) κληρονομήσετε, γενεὰς γενεῶν
ἀναπαύσονται ἐπ᾽ αὐτῆς.

MS. A. (π) ἐξεζήτησαν, ὅτι κύριος ἐνετείλατο αὐτοῖς, (ϛ) αὐτάς. (σ)
κληρονομήσατε εἰς γενεὰς

Numero tranſierunt, & una ipſarum
non periit : altera alteram
non requiſierunt : quia Dominus
eis mandavit, & ſpiritus ipſius
congregavit ea. Et ipſe mittet e- 17
is ſortes, & manus ejus diſtribuit,
ut paſcantur : in æternum
tempus poſſidebitis : generationes
generationum requieſcent ſuper
eam.

ΚΕΦ. λε'.

1 ΕΥφράνθητι ἔρημος διψῶσα, ἀγαλλιάσθω
2 ἔρημος, καὶ ἀνθείτω ὡς κρίνον. Καὶ ἐξανθήσει
καὶ ἀγαλλιάσεται τὰ ἔρημα τοῦ Ἰορδάνου,
(α) ἡ δόξα τοῦ Λιβάνου ἐδόθη αὐτῇ,
καὶ ἡ τιμὴ τοῦ Καρμήλου, καὶ ὁ λαός μου ὄψεται
τὴν δόξαν κυρίου, καὶ τὸ ὕψος τοῦ θε-
3 οῦ. Ἰσχύσατε χεῖρες ἀνειμέναι, καὶ γόνατα
4 παραλελυμένα. Παρακαλέσατε οἱ ὀλιγόψυχοι
τῇ διανοίᾳ· ἰσχύσατε, μὴ φοβεῖσθε.
ἰδοὺ ὁ θεὸς ἡμῶν κρίσιν (") ἀνταποδίδωσι, καὶ
ἀνταποδώσει, αὐτὸς ἥξει καὶ σώσει ἡμᾶς.
5 Τότε ἀνοιχθήσονται ὀφθαλμοὶ τυφλῶν, καὶ
6 ὦτα κωφῶν ἀκούσονται. Τότε ἁλεῖται ὡς ἔλαφος
ὁ χωλός, (β) τρανὴ δὲ ἔσται γλῶσσα μογιλάλων,
ὅτι ἐρράγη ἐν τῇ ἐρήμῳ ὕδωρ, καὶ
7 φάραγξ ἐν γῇ διψώσῃ· Καὶ (γ) ἔσται ἡ ἄνυδρος
εἰς ἕλη, καὶ εἰς τὴν διψῶσαν γῆν πηγὴ
ὕδατος ἔσται, ἐκεῖ εὐφροσύνη ὀρνέων,
8 ἐπαύλεις καλάμου καὶ ἕλη. (δ) Ἔσται ἐκεῖ ὁδὸς
καθαρά, καὶ ὁδὸς ἁγία κληθήσεται, καὶ
οὐ μὴ παρέλθῃ ἐκεῖ ἀκάθαρτος, οὐδὲ (ε) ἔσται
ἐκεῖ ὁδὸς ἀκάθαρτος· οἱ δὲ διεσπαρμένοι
πορεύσονται ἐπ᾽ αὐτῆς, καὶ οὐ μὴ πλανηθῶσι.
9 Καὶ οὐκ ἔσται ἐκεῖ λέων, οὐδὲ τῶν (ζ) πονηρῶν
θηρίων οὐ μὴ ἀναβῇ (η) εἰς αὐτήν, οὐδὲ μὴ
10 εὑρεθῇ ἐκεῖ, ἀλλὰ πορεύσονται ἐν αὐτῇ λελυτρωμένοι,
καὶ συνηγμένοι διὰ κύριον,
(θ) καὶ ἀποστραφήσονται, καὶ ἥξουσιν εἰς Σιὼν
μετ᾽ εὐφροσύνης, καὶ εὐφροσύνη αἰώνιος ὑπὲρ
κεφαλῆς αὐτῶν· ἐπὶ (ι) γὰρ τῆς κεφαλῆς
αὐτῶν αἴνεσις καὶ ἀγαλλίαμα, καὶ εὐφροσύνη
καταλήψεται αὐτούς, ἀπέδρα ὀδύνη καὶ λύπη
καὶ στεναγμός.

MS.A. (α) καὶ ἡ δόξα (") ἀνταποδώσει (β) καὶ τρανὴ ἔσται (γ) ἡ ἄνυδρος
ἔσται (δ) Ἐκεῖ ἔσται (ε) ἐκεῖ ἔσται (ζ) θηρίων τῶν πονηρῶν (η) ἐπ᾽ αὐτήν,
(θ) ἀποστραφήσονται (ι) γὰρ κεφαλῆς

CAP. XXXV.

LÆtare deſertum ſitiens : ex- 1
ultet ſolitudo, & floreat quaſi lilium.
Et (a) efflorebunt, & ex- 2
ultabunt deſerta Jordanis : gloria
Libani data eſt ei, & (b) honor
Carmeli. Et populus meus videbit
gloriam Domini, & altitudinem
Dei. Confortamini, manus 3
remiſſæ, & genua diſſoluta. Con- 4
ſolamini vos, puſillanimes mente,
confortamini, nolite timere. Ecce
Deus noſter judicium retribuit, &
retribuet : ipſe veniet, & ſalvabit
nos. Tunc aperientur oculi 5
cæcorum, & aures ſurdorum audient.
Tunc ſaliet, ſicut cervus, 6
claudus : expedita autem erit lingua
balborum : quia ſciſſa eſt in
deſerto aqua, & vallis in terra
ſitienti: Et erit inaquoſa in palu- 7
des: & in ſitiente terra fons aquæ
erit ; ibi lætitia avium, (c) caulæ
arundinis, & paludes. Erit ibi 8
via munda, & via ſancta vocabitur
: & non tranſibit illic immundus
: neque erit ibi via immunda
: qui autem diſperſi ſunt;
ibunt ſuper eam, & non errabunt.
Et non erit ibi leo : & mala be- 9
ſtia non aſcendet in eam, neque invenietur
ibi : ſed ambulabunt in
ea Redempti, & congregati per 10
Dominum. Et revertentur, & venient
in Sion cum lætitia: & lætitia
ſempiterna ſuper caput eorum.
Super caput enim eorum laus,
& exultatio, & lætitia apprehendet
eos : fugit dolor, & triſtitia,
& gemitus.

ΚΕΦ. λϛ'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο τοῦ τεσσαρεσκαιδεκάτου ἔτους
βασιλεύοντος Ἐζεκίου, ἀνέβη Σενναχηρεὶμ
βασιλεὺς Ἀσσυρίων ἐπὶ τὰς πόλεις τῆς
Ἰουδαίας τὰς ὀχυράς, καὶ (α) ἔλαβεν αὐτάς.

MS.A. (α) συνέλαβεν αὐτάς.

CAP. XXXVI.

ET factum eſt in quarto & de- 1
cimo anno regnante Ezeciâ, aſcendit
Sennacherim rex Aſſyriorum
ſuper civitates Judææ munitas,
& cepit eas.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 תבעו מעל ספרא דיי ובעו חדא מנהון לא שגת ואתתא לחברתה לא עכיבת ארי
17 במימריה יתכנשן וברעותיה יתקרבן : והוא במימריה רמא להון עדבא וברעותיה
פליג להון בחוטא עד עלמא יחסנונה לדור ודור ישרון בה :

לה

1 יחדון דיתבין במדברא בארעא ציחיא ויבעון דשרן במישרא ויזהרון כשושניא : מדץ
2 ירוצון ויחדון אף ביע וחדוא יקר לבנן יתיהיב להון זיו כרמלא ושרונא בית ישראל
3 דלהון אמרין אלין אנון יחזון יקרא דיי זיו תושבחתא דאלהנא : אמר נביא תקיפו ידין
4 דמרשלן ורכובין דרעלן חסינו : אמרו לדמוחן בלבהון למעבד אוריתא תקפו ולא
תדחלון הא אלהכון למעבד פורענות דין אתגלי מרי גמליא יי הוא יתגלי ויפרקנכון :
5 בכן יתפתחן עיני בית ישראל דאנון כסמן מן אוריתא ואודניהון דכחרשין לקבלא
6 למלי נביא ציתן : בכן במחזהון גלותא דישראל דמתכנשין וסלקן לארעהון הא
כאילין קלילין ולא לאתעכבא וישבח לישנהון דהוה בלים ארי בכן אתבזעו במדברא
7 מיא ונחליא במישרא : ויהי שרובא לאגמין דמין ובית צחונא למבועי מיא אתר דהוה
8 ירודין שרן תמן יסקון קנה וגומא : ויהי תמן כבש אורח ותקון אורחא דקודשא
9 יתקרי לה לא יעדון בה מסאבין ולא יפסקון עדי אורחא ודלא אליפו לא יטעון : לא יהי
10 תמן מלך מבאיש ושלטון מעיק לא יגוזניה ולא ישתכחון תמן ויהכון פריקין : ופריקיא
דיי יתובון ויתכנשון מביני גלותהון ויעלון לציון בתושבחתא וחדות עלם תהי להון
די לא פסקא וענן יקר תהי מטל על רישהון ביע וחדוא ישכחון ויסוף מנהון מבית
ישראל דונא ותינחתא :

לו

1 והוה בארבע עסרי שנין למלכא חזקיה סליק סנחריב מלכא דאתור על כל קרויא
דבית יהודה כריכתא ואחדנון :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Requirite in libro Dñi, & quærite ; unum ex eis non defuit, nec alterum 16
alteri moram affert, quia in verbo ejus congregabuntur : & in *voluntate*
ejus conjungentur. Et ipſe in verbo ſuo miſit eis ſortem ; & in voluntate 17
ſua diviſit eis funiculo; uſque in ſeculum poſſidebunt eam; in generationem
& generationem habitabunt in ea.

CAP. XXXV

EXultabunt qui habitant in deſerto, in terra arida ; & gaudebunt qui 1
morantur in campeſtribus, & ſplendebunt ſicut lilia. Exultantes exultabunt, 2
& gaudebunt exultatione & gaudio. Gloria Libani data eſt eis ; decor
Carmeli & Saron: domus Iſrael quibus dicuntur hæc, ipſi videbunt gloriã
Dñi, decorem laudis Dei noſter. Dixit *Propheta* : Confortate manus diſ- 3
ſolutas, & genua trementia roborate. Dicite feſtinis corde ut operentur 4
ſecundùm legem, Confortamini, et nolite timere : ecce Deus veſter revelatur
ut faciat vindictam judicii : Dñs auctor retributionis ipſe revelabitur &
ſalvabit vos. Tunc aperientur oculi domus Iſrael, qui ſunt quaſi cæci à le- 5
ge ; & aures eorum qui ſunt quaſi ſurdi ad audienda verba prophetarum,
audient. Tunc cùm viderint exules Iſraelitarum congregatos aſcendere 6
in terram ſuam more cervorum velociſſimorum, ita ut non detineantur,
laudabit lingua eorum, quæ erat quaſi muta, quòd *tunc* diſſiſſæ ſint in de-
ſerto aquæ, & torrentes in ſolitudine. Et erit arida in ſtagna aquarum, & 7
locus ſitiens in fontes aquarum. In loco ubi prius dracones habitabant, ibi
multiplicabuntur calamus & juncus. Et erit ibi via trita & recta, Via ſan- 8
cta vocabitur, non tranſibunt per eam immundi, & non deficient uſque in
viam : & qui non didicerint, non errabunt per eam. Non erit ibi rex ma- 9
lefaciens, nec dominator tribulans pertranſibit eam ; imò illic non inve-
nientur : ibúntque redempti. Redempti autem à Dño revertentur & con- 10
gregabuntur de medio captivitatis ſuæ, & venient ad Sion cum laude. Et
lætitia ſempiterna erit eis, quæ nunquam ceſſabit, & nubes gloriæ erit ob-
umbrans ſuper capita eorum: gaudium & lætitiam invenient; & ceſſabit ab
eis, & à domo Iſrael dolor & gemitus.

CAP. XXXVI.

ET factum eſt in decimo quarto anno regis Ezechiæ, aſcendit Senache- 1
rib rex Aſſyriæ ſup omnes civitates domus Judæ munitas, & obtinuit eas.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

16 * ܒܥܘ ܒܟܬܒܗ ܕܡܪܝܐ ܘܩܪܘ. ܕܚܕ ܡܢܗܘܢ ܠܐ ܢܬܛܥܐ. ܘܚܕ ܠܚܒܪܗ ܠܐ ܒܥܐ. ܐܠܐ ܗܘ ܦܩܕ
17 ܒܦܘܡܗ. ܘܪܘܚܗ ܟܢܫܬ ܐܢܘܢ. * ܘܗܘ ܐܪܡܝ ܠܗܘܢ ܦܣܐ. ܘܐܝܕܗ ܦܠܓܬ ܠܗܘܢ
ܡܫܘܚܬܐ. ܕܥܕܡܐ ܠܥܠܡ ܢܐܪܬܘܢܗ. ܘܠܕܪܕܪܝܢ ܢܥܡܪܘܢ ܒܗ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܟܗ *
1 * ܬܚܕܐ ܡܕܒܪܐ ܨܗܝܐ. ܘܬܪܘܙ ܦܩܥܬܐ. ܘܬܦܪܥ ܐܝܟ ܚܒܨܠܬܐ. * ܘܬܪܘܙ ܐܝܟ ܝܥܠܐ. ܘܫܘܒܚܐ
2 ܐܝܩܪܐ ܕܠܒܢܢ ܢܬܝܗܒ ܠܗ. ܘܗܕܪܐ ܕܟܪܡܠܐ ܘܕܫܪܘܢ. ܗܢܘܢ ܢܚܙܘܢ ܐܝܩܪܗ ܕܡܪܝܐ.
ܘܗܕܪܗ ܕܐܠܗܢ. * ܫܠܡܬ ܦܢܝܬܐ ܩܕܡܝܬܐ *
3 * ܐܬܚܝܠܘ ܐܝܕܝܐ ܡܪܦܝܬܐ. ܘܒܘܪܟܐ ܕܡܫܪܝܢ * ܐܬܚܝܠܘ ܐܝܕܝܐ ܕܡܪܦܝܢ ܐܬܬܩܦܘ.
4 ܘܐܡܪܘ ܠܡܚܝܠܝ ܠܒܐ. ܐܬܚܝܠܘ * ܘܠܐ ܬܕܚܠܘܢ. ܗܐ ܐܠܗܟܘܢ
ܢܩܡܬܐ ܐܬܐ. ܐܠܗܐ ܦܪܘܩܐ ܐܬܐ. ܘܦܪܩ ܠܟܘܢ. * ܗܝܕܝܢ ܢܬܦܬܚܢ ܥܝܢܝܗܘܢ ܕܥܘܝܪܐ. 5
ܘܐܕܢܝܗܘܢ ܕܚܪܫܐ ܢܬܦܬܚܢ. * ܗܝܕܝܢ ܢܫܘܪ ܚܓܝܪܐ ܐܝܟ ܐܝܠܐ. ܘܢܬܦܫܩ ܠܫܢܗ ܕܦܩܐ. 6
ܡܛܠ ܕܐܬܒܙܥܘ ܡܝܐ ܒܡܕܒܪܐ. ܘܢܚܠܐ ܒܦܩܥܬܐ. * ܢܗܘܘܢ ܐܓܡܐ ܒܐܪܥܐ ܨܗܝܬܐ. ܘܡܒܘܥܐ 7
ܕܡܝܐ. ܒܗ ܒܕܘܟܬܐ. ܕܪܒܥܝܢ ܒܗ ܬܢܝܢܐ ܥܣܒܐ ܘܩܢܝܐ ܘܓܡܐ. * ܘܢܗܘܐ ܬܡܢ ܫܒܝܠܐ. 8
ܘܐܘܪܚܐ ܩܕܝܫܬܐ ܢܬܩܪܐ. ܘܠܐ ܢܥܒܪ ܒܗ ܛܡܐܐ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܬܡܢ ܐܘܪܚܐ. ܘܣܟܠܐ ܠܐ ܢܛܥܘܢ
ܒܗ. * ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܬܡܢ ܐܪܝܐ. ܘܚܝܘܬܐ ܒܝܫܬܐ ܠܐ ܢܣܩܢ. ܘܠܐ ܢܫܬܟܚܢ ܬܡܢ. * ܘܢܐܙܠܘܢ ܦܪܝܩܐ 9
10 ܦܪܝܩܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܘܢܗܦܟܘܢ ܘܢܐܬܘܢ ܠܨܗܝܘܢ ܒܬܫܒܘܚܬܐ. ܘܚܕܘܬܐ ܕܠܥܠܡ ܢܗܘܐ ܥܠ
ܪܫܝܗܘܢ. ܒܘܣܡܐ ܘܚܕܘܬܐ ܢܕܪܟܘܢ. ܘܢܥܪܩܘܢ ܟܐܒܐ ܘܬܢܚܬܐ.
* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܘ * ܘܗܘܐ ܒܫܢܬܐ ܕܐܪܒܥܣܪܐ ܕܡܠܟܐ ܚܙܩܝܐ. ܣܠܩ 1
ܣܢܚܪܝܒ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ ܥܠ ܟܠܗܝܢ ܩܘܪܝܐ ܚܣܝܢܬܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܟܒܫ ܐܢܝܢ.

(Quærite in libro Domini, & legite; nam ne unum quidem ex iis *quæ ibi narrantur*, omittetur) alter alterum non quæret, ſed ipſe ore ſuo præcipiet, & ſpiritus ejus congregabit illos: Ipſe jaciet eis ſortes, ejuſdémque manus dividet eis menſuras: ut ad æternitatem uſque poſſideant eam, & in generationem generationum habitent in ea. 16 17

CAP. XXXV.

LÆtabitur deſertum ſitibundum, & exultabit planities, & florebit tanquam narciſſus, Et exultabit tanquam capreus: honor Libani glorioſè dabitur ei cum nitore Charmeli & Saronis: hi videbunt majeſtatem Domini, & nitorem Dei noſtri. 1 2

Finis primæ partis.

Admonitio & conſolatio ad imbecilles,
quòd venturus ſit Salvator,
eoſque redempturus.

Confortamini manus remiſſæ, genua tremula confirmamini: Dicite puſillanimis, Roboramini, & ne metuite: ecce De' veſter ultor venturus eſt, Deus ſervator ventur' eſt & redempturus vos. Tunc aperientur oculi cæcorũ, & aures ſurdorũ reſerabuntur: Tunc ſaliet claudus tanquam cervus, & expedita erit lingua muti: quia eruperunt aquæ in deſerto, & torrentes in planitie: Erunt ſtagna in loco deſerto, & fontes aquarũ in locis ſitibundis: naſcetur gramen arundo & juncus in cubili canum ſylveſtriũ. Et erit illic ſemita quæ via ſancta vocabitur, p quam non tranſibit immunditia, nec patebit adit' *iniquitati*: ubi ne ſtulti quidẽ errabunt: Ubi non erit leo, quò feræ pnicioſæ nequaquam aſcendent, nec reperientur illic. Et abibunt redempti, redempti *inquam* à Domino, & reverſi ingredientur in Sionem cum gloria: in æternum erit lætitia ſuper capita eorum, jucunditatem & gaudium aſſequentur, fugiéntque mœrores ac gemitus. 3 4 5 6 7 8 9 10

CAP. XXXVI.

COntigit autẽ anno decimo quarto Hezeciæ regis Judæ, ut invaderet Sanherib rex Aſſyriæ oẽs urbes Judæ munitas, & caperet eas. 1

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

16 * بعث جازوا * وواحد منهم لا يهلك * ولا يطلب الاحد الاخر * لان الرب امرهم * وروحه
17 جمعهم * وهو يصنع لهم حظوظا * وبيده قسمت لهم * ليرعوا الي الدهر زمانا * ترث جيل
الاجيال * ويستريحون عليها * الفصل الخامس والثلثون *
1 * افرحي ايها البرية العطشانة * ولتبتهج البرية * ولتزهر مثل السوسن * تزهر وتفرح بالغاية
2 وتبتهج براري الاردن * فقد اعطي لها شرف لبنان وكرامة الكرمل * وشعبي يعاين مجد الرب
وعلو الله * تحضيض النبي للضعفاء وتقويته لهم * وتبشيره بمجي المسيح *
3 * تقوي ايها الايدي المسترخية والركب المنحلة * تعزوا وقولوا لصغيري الانفس بضميرهم *
4 تقووا لا تخافوا * ها الهنا جازانا انصافا ويجازي * هو ياتي ويخلصنا * حينيذ تفتح اعين العميان *
5 ويسمع اذان الصم * حينيذ يقفز الاعرج مثل الايل * ويصير لسان البكم فصيحا * لان الماء
6 انبعث في البرية * والوادي في ارض عطشانة * ويصير العديمة الماء غابات * وفي الارض العطشانة
7 يكون ينبوع الماء * هناك يكون سرور الطيور ومأوي بنات اوي * وقصب وعواب * ويكون
8 هناك طريق نقية * ويدعي طريق طاهرة * ولا يجوز هناك نجس * ولا يكون هناك ايضا طريق
9 نجسة * المتفرقون يعبرون فيها ولا يضلون * ولا يكون هناك اسد * ولا من الوحوش الخبيثة لا
10 يصعد اليها * ولا يوجد هناك * لكن يسلك فيها المفديون والمجمعون من الرب * وينصرفون
وياتون الي صهيون بسرور وابتهاج * وعلي روسهم سرور ابدي * لان علي روسهم تسبحة
وبهجة * ويتسلمهم السرور * بعد عنهم الوجع والحزن والتنهد *
* الفصل السادس والثلثون * الوحي السادس عشر * وهو الاصحاح السابع عشر *
* ذكر ما اصاب ملك الموصل من الهلاك بصلاة حزقيا الملك *
1 * وكان في السنة الرابعة عشر لحزقيا الملك * صعد سنحاريب ملك الموصليين علي
مدن يهودا الحصينة واخذها *

Magnâ *copiâ tranſibunt, & nullus eorum peribit, nec alter alterum quæret: quia Dominus præcipiet eis, & ſpiritus ejus congregabit illos; Ipſeque ponet eis lineas, & manus ejus diſtribuet illis; ut paſcantur in æternum tempus, poſſideant in æva ſempiterna, & quieſcant ſuper eam.* 16 17

CAP. XXXV.

LÆtare O deſertum aridum, hilareſcat ſolitudo, & floreat velut lilium: Floreant, & præter modum gaudeant & exultent ſolitudines Jordanis; quia data jam eſt eis præſtantia Libani & honor Charmeli, & populus meus videbit gloriam Domini & eminentiam Dei. 1 2

Adhortatio Prophetæ ad languentes, eorumque animatio: & prædictio adventûs Chriſti.

Confirmamini O manus remiſſæ & genua diſſoluta: Conſolamini, & dicite puſillanimis mente, Sumite animos, ne timeatis: ecce Deus noſter ex æquo rependit nobis, ac rependet: ipſe veniet, redimetque nos. Tunc aperient ſe oculi cæcorum, & audient aures ſurdorum: Tunc ſaltabit claudus quaſi cervus, & erit lingua mutorum diſerta: quoniam aqua erupit in deſerto, & fluvius in terra ſitibunda: Quæ caret aquâ, redigetur in ſylvas; & in arida tellure erit aquæ ſcatebra: illic erit volucrum voluptas, & habitatio canum ſylveſtrium, arundines, & junci. Erit etiam ibi via munda, & vocabitur via pura, & non tranſibit illac impurus, nec erit illic deinceps via immunda: diſperſi tranſibunt per eam, & non errabunt. Non erit ibi leo, nec ulla malarum belluarum aſcendet ad eam, aut reperietur ibi: Sed ambulabunt in ea redempti & collecti à Domino, & proficiſcentur pervenientque Sionem cum lætitia & exultatione, & erit ſuper capita eorum gaudium perenne, quia ſuper capita eorum canticum erit ac lætitia, & occupabit eos gaudium, recedet ab eis dolor, triſtitia, & gemitus. 3 4 5 6 7 8 9 10

CAP. XXXVI.

Revelatio decima ſexta.
Textus decimus ſeptimus.
Narratio exitii quod accidit regi Aſſyriæ per orationem Hezeciæ regis.

ET factum eſt anno decimo quarto regis Hezeciæ, ut aſcendens Sanherib rex Aſſyriorum contra urbes Judæ munitas caperet eas. 1

ישעיה : לו

ad Jerusalaim in Lachis de Rabsacheh Assur rex misit Et
2 וישלח מלך־אשור את־רבשקה מלכיש ירושלמה אל־
piscinæ aquæductu in stetit & : gravi virtute in Chizchijahu regem
המלך חזקיהו בחיל כבד ויעמד בתעלת הברכה
Eljachim eum ad est egressus Et .fullonis agri strata via in superioris
3 העליונה במסלת שדה כובס: ויצא אליו אליקים
Joach & , scriba Sebnah & : domum super qui , Chilchijahu filius
בן־חלקיהו אשר על־הבית ושבנא הספר ויואח
Dicite , Rabsacheh eos ad dixit Et .commonefaciens Asaph filius
4 בן־אסף המזכיר: ויאמר אליהם רבשקה אמרו־
, Assur rex magnus rex dixit sic : Chizchijahu ad nunc
נא אל־חזקיהו כה־אמר המלך הגדול מלך אשור
,labiorum verbum certe Dixi ? fidisti cui hæc fiducia Quæ
5 מה הבטחון הזה אשר בטחת: אמרתי אך־דבר שפתים
quia , fidisti quo super nunc : prælium ad fortitudo & , consilium
עצה וגבורה למלחמה עתה על־מי בטחת כי
fracto arundinis fulcro super fidisti Ecce ? me contra rebellâsti
6 מרדת בי: הנה בטחת על־משענת הקנה הרצוץ
ej° volā in intrabit &;eo super vir fuerit innix° cui ; Ægypto super isto
הזה על־מצרים אשר יסמך איש עליו ובא בכפו
.eo super fidentibus omnib° Ægypti rex Parhoh sic : eā perforabit &
ונקבה כן פרעה מלך־מצרים לכל־הבטחים עליו:
iste nonne : fidimus nostro Deo Domino In , me ad dixeris si Et
7 וכי־תאמר אלי אל־יהוה אלהינו בטחנו הלא־הוא
,ejus altaria & ,ejus excelsa Chizchijahu fecit removere cujus
אשר הסיר חזקיהו את־במתיו ואת־מזבחתיו
istius altaris facies Ad : Jerusalaim & , Jehudah ad dixitque
ויאמר ליהודה ולירושלם לפני המזבח הזה
regi meo domino obsecro fidejube nunc Et ? vos incurvabitis
8 תשתחוו: ועתה התערב נא את־אדני המלך
tibi dare potueris si ; equorum duo millia tibi dabo & : Assur
אשור ואתנה לך אלפים סוסים אם־תוכל לתת לך
unius ducis facies vertere facies quomodo Et .eos super equitantes
9 רכבים עליהם: ואיך תשיב את פני פחת אחד
,Ægypto super tibi confidas ut : minimorum mei domini servorum
עבדי אדני הקטנים ותבטח לך על־מצרים
ascendi Domino absque numquid nunc Et ? equites & currum propter
10 לרכב ולפרשים: ועתה המבלעדי יהוה עליתי
ascende : me ad dixit Dominus ? eā corrumpendum ad ,istam terram contra
על־הארץ הזאת להשחיתה יהוה אמר אלי עלה
, Sebnah & , Eljachim dixit Et .eam corrumpe & , istam terram ad
11 אל־הארץ הזאת והשחיתה: ויאמר אליקים ושבנא
, Syriacè tuos servos ad obsecro Loquere : Rabsacheh ad Joach &
ויואח אל־רבשקה דבר־נא אל־עבדיך ארמית
auribus in Jehudaicè nos ad loquaris ne & : nos audientes quia
כי שמעים אנחנו ואל־תדבר אלינו יהודית באזני
,tuū dominū ad Nunquid:Rabsacheh dixit Et .murum super qui ,populi
12 העם אשר על־החמה: ויאמר רבשקה הא־ אדניך
ad nonne ? ista verba loquendū ad, me° domin° me misit te ad &
ואליך שלחני אדני לדבר את־הדברים האלה הלא על־
,sua egesta comedendum ad , muro super sedentes homines
האנשים הישבים על־החמה לאכל את־חראיהם
clamavit &,Rabsacheh stetit Et ? vobiscum suas urinas bibendum ad &
13 ולשתות את־שיניהם עמכם: ויעמד רבשקה ויקרא
magni regis verba Audite :dixit &,Jehudaicè magna voce in
בקול־גדול יהודית ויאמר שמעו את־דברי המלך הגדול
:Chizchijahu vobis imponat Ne , rex dixit Sic .Assur regis
14 מלך אשור: כה אמר המלך אל־ישא לכם חזקיהו
.vos eruere poterit non quia
כי לא־יוכל להציל אתכם:

Versio VULG. LAT.

2 Et misit rex Assyriorū Rabsacen de Lachis in Jerusalem, ad regem Ezechiam in manu gravi, & stetit in aquæductu piscinæ superioris in via Agri 3 fullonis. Et egressus est ad eū Eliacim filius Helciæ, qui erat super domū, & Sobna scriba, & Joahe filius Asaph à com-4 mentariis. Et dixit ad eos Rabsaces, Dicite Ezechiæ; Hæc dicit rex magnus, rex Assyriorum; Quæ est ista fiducia, quâ 5 confidis? Aut quo consilio vel fortitudine rebellare disponis? super quem habes fiduciam, quia recessisti à me? 6 Ecce confidis super baculum arundineum confractū istum, sup Ægyptum: cui si innixus fuerit homo, intrabit in manū ejus, & perforabit eam: sic Pharao rex Ægypti omnibus, 7 qui confidunt in eo. Quòd si responderis mihi; In Domino Deo nostro confidimus: nónne ipse est, cujus abstulit Ezechias excelsa & altaria, & dixit Judæ & Jerusalem; Coram altari isto adorabitis? 8 Et nunc trade te domino meo regi Assyriorum, & dabo tibi duo millia equorum, nec poteris ex te præbere ascenso-9 res eorum. Et quomodò sustinebis faciem judicis unius loci ex servis domini mei minoribus? Quòd si confidis in Ægypto, in quadrigis, & in 10 equitibus: Et nunc numquid sine Domino ascendi ad terrā istam, ut disperderem eam? Dominus dixit ad me; Ascende super terram istam, & dis-11 perde eam. Et dixit Eliacim, & Sobna, & Joahe ad Rabsacen; Loquere ad servos tuos Syrâ linguâ: intelligim° enim: ne loquaris ad nos Judaicè in auribus populi, qui est super 12 murum. Et dixit ad eos Rabsaces; Numquid ad dominum tuum & ad te misit me dominus meus, ut loquerer omnia verba ista, et non potiùs ad viros, qui sedent in muro, ut comedant stercora sua, et bibant urinam pedum suo-13 rum vobiscum? Et stetit Rabsaces, et clamavit voce magnâ Judaicè, et dixit; Audite verba regis magni, regis 14 Assyriorum. Hæc dicit rex; Non seducat vos Ezechias, quia non poterit eruere vos.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

2 Καὶ ἀπέςειλε βασιλεὺς Ἀσσυρίων (β) τὸν Ῥαβσάκην ἐκ Λαχὶς εἰς Ἱερουσαλὴμ πρὸς τὸν βασιλέα Ἐζεκίαν μετὰ δυνάμεως πολλῆς· καὶ ἔςη ἐν τῷ ὑδραγωγῷ τῆς κολυμβήθρας τῆς ἄνω ἐν τῇ ὁδῷ τοῦ ἀγροῦ τοῦ κνα-3 φέως. Καὶ ἐξῆλθε πρὸς αὐτὸν Ἐλιακεὶμ ὁ τοῦ Χελκίου ὁ οἰκονόμος, καὶ Σομνᾶς ὁ γραμματεὺς, καὶ Ἰωὰχ ὁ τοῦ Ἀσὰφ ὁ ὑπομνη-4 ματογράφος. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς (γ) Ῥαβσάκης, Εἴπατε Ἐζεκίᾳ, Τάδε λέγει ὁ βασιλεὺς ὁ μέγας, βασιλεὺς Ἀσσυρίων, Τί πεποιθὼς 5 εἶ; Μὴ ἐν βουλῇ (δ) καὶ λόγοις χειλέων παράταξις γίνεται; καὶ νῦν (ε) ἐπὶ τίνα πέποιθας, 6 ὅτι ἀπειθεῖς μοι; Ἰδοὺ πεποιθὼς εἶ ἐπὶ τὴν ῥάβδον τὴν καλαμίνην τὴν τεθλασμένην ταύτην, ἐπ᾽ Αἴγυπτον. (ζ) ὡς ἂν ἐπιςηριχθῇ ἀνὴρ ἐπ᾽ αὐτὴν, εἰσελεύσεται εἰς τὴν χεῖρα αὐτοῦ, (η) καὶ τρήσει αὐτήν· οὕτως ἐςὶ Φαραὼ βασιλεὺς Αἰγύπτου, καὶ 7 πάντες οἱ πεποιθότες ἐπ᾽ αὐτῷ. Εἰ δὲ λέγετε, Ἐπὶ κύριον τὸν θεὸν ἡμῶν πεποίθα-8 μεν, Νῦν μίχθητε τῷ κυρίῳ μου (θ) τῷ βασιλεῖ Ἀσσυρίων, καὶ δώσω ὑμῖν δισχιλίαν ἵππον, εἰ δυνήσεσθε δοῦναι ἀναβάτας ἐπ᾽ 9 αὐτούς. Καὶ πῶς δύνασθε ἀποςρέψαι (ι) εἰς πρόσωπον τῶν τοπαρχῶν; οἰκέται εἰσὶν, οἱ πεποιθότες ἐπ᾽ Αἰγυπτίοις, εἰς ἵππον καὶ 10 ἀναβάτην. Καὶ νῦν μὴ ἄνευ κυρίου ἀνέβημεν ἐπὶ τὴν χώραν ταύτην πολεμῆσαι (κ) αὐτήν; κύριος εἶπε πρὸς μὲ, Ἀνάβηθι ἐπὶ τὴν γῆν ταύτην, καὶ διάφθειρον αὐτήν. 11 Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν Ἐλιακεὶμ, καὶ Σομνᾶς (λ), καὶ Ἰωὰχ, Λάλησον πρὸς τοὺς παῖδάς σου Συριςί· ἀκούομεν γὰρ ἡμεῖς· καὶ μὴ λάλει πρὸς ἡμᾶς Ἰουδαϊςί. καὶ ἵνατί λαλεῖς εἰς τὰ ὦτα τῶν (˜) ἀνθρώπων ἐπὶ τῷ τεί-12 χει; Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς (μ) Ῥαβσάκης, Μὴ πρὸς τὸν κύριον ὑμῶν ἢ πρὸς ὑμᾶς ἀπέςαλκέ με ὁ κύριός μου, λαλῆσαι τοὺς λόγους τούτους; οὐχὶ πρὸς τοὺς (ν) ἀνθρώπους τοὺς καθημένους ἐπὶ τῷ τείχει, ἵνα φάγωσι κόπρον, καὶ πίωσιν οὖρον μεθ᾽ ὑμῶν ἅμα; 13 Καὶ ἔςη (ξ) Ῥαβσάκης, καὶ ἀνεβόησε φωνῇ μεγάλῃ Ἰουδαϊςὶ, καὶ εἶπεν, Ἀκούσατε τοὺς λόγους τοῦ βασιλέως τοῦ μεγάλου, 14 βασιλέως Ἀσσυρίων. Τάδε λέγει ὁ βασιλεὺς, Μὴ (ο) ἀπατάτω ὑμᾶς Ἐζεκίας λόγοις, (π) οὐ δύνηται ῥύσασθαι ὑμᾶς.

Et misit rex Assyriorum Rabsacen de Laches in Hierusalem ad regem Ezeciam cum virtute multa. Et stetit in aquæ ductu piscinæ superioris in via Agri fullonis. 2 *Et egressus est ad eum Eliacim filius Chelciæ œconomus, & Somnas scriba, & Joach filius Asaph à commentariis.* 3 *Et dixit eis Rabsaces; Dicite Ezeciæ, Hæc dicit rex magnus, rex Assyriorum; Quid fidens es?* 4 *Nunquid in consilio, & sermonibus labiorum prælium fit? Et nunc super quem confidisti, quia inobediens es mihi?* 5 *Ecce fidens es super virgam arundineam confractam istam, super Ægyptum: sicut si innitatur vir super eam, intrabit in manum ejus, & perforabit eam; sic erit Pharao rex Ægypti, & omnes, qui confidunt in eo.* 6 *Sin autem dicitis, super Dominum Deum nostrum (a) confidimus;* 7 *Nunc admiscemini Domino meo regi Assyriorum: & dabo vobis duo millia equorum, si poteritis præbere ascensores super eos.* 8 *Et quomodò potestis avertere in faciem Toparcharum? Servi sunt, qui confiderunt in Ægyptiis, in equum, & ascensorem.* 9 *Et nunc non sine Domino ascendimus super regionem hanc ad oppugnandam eam. Dominus dixit ad me; Ascende super terram istam, & disperde eam.* 10 *Et dixit ad eum Eliacim, & Somnas, & Joach, Loquere ad servos tuos Syriacè: audimus enim nos: & ne loquaris ad nos Judaicè. Et ut quid loqueris in aures hominum, super murum?* 11 *Et dixit ad eos Rabsaces; Nunquid ad dominum vestrum, vel ad vos misit me dominus meus loqui verba hæc? nónne ad homines, qui sedent super murum? ut comedant stercus, & bibant urinam vobiscum simul?* 12 *Et stetit Rabsaces, & exclamavit voce magnâ Judaicè, & dixit; Audite verba regis magni, regis Assyriorum:* 13 *Hæc dicit rex; Non seducat vos Ezecias sermonibus: non poterit eruere vos:* 14

MS. A. (β) Ῥαψάκην ἐκ Λάχεις (γ) Ῥαψάκης (δ) ἢ ἐν λόγοις (ε) ἐπὶ τίνι (ζ) ὃς ἂν ἐπιςηριχθῇ ἐπ᾽ αὐτὴν, (η) οὕτως ἐςὶν (θ) βασιλεῖ (ι) τὸ πρόσωπον τοπάρχου ἑνός; (κ) αὐτήν; * Καὶ εἶπεν πρὸς αὐτὸν (λ) ὁ γραμματεὺς, (˜) ἀνδρῶν καθημένων ἐπὶ (μ) Ῥαψάκης, (ν) ἄνδρας (ξ) Ῥαψάκης, καὶ ἐβόησεν (ο) ὑμᾶς ἀπατάτω (π) οἳ οὐ μὴ δυνήσονται

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

2 ושלח מלכא דאתור ית רב שקה מלכיש לירושלם לות מלכא חזקיה במשרית סגיאן
וקם במזיקת בריכתא עליתא דכביש חקל משטח קצריא: ונפק לותיה אליקים בר 3
חלקיה די ממנא על ביתא ושבנא ספרא ויואח בר אסף די ממנא על דכרניא: ואמר 4
להון רב שקה אמרו כען לחזקיה כדנן אמר מלכא דרבתנא מלכא דאתור מה רוחצנא
הדין דאתרחצתא: אמרית ברם בממלל ספון במלך וגבורא אעביד קרבא כען על מן 5
אתרחצתא ארי מרדתא בי: הא אתרחצתא על סמך קניא רעיעא הדין על פרעה מלכא 6
דמצרים דאם יסתמיך גברא עלוהי ויעול בידיה ויבזעניה כן פרעה מלכא דמצרים לכל
דמתרחצין עלוהי: וארי תימרון לי על מימרא דיי אלהנא אתרחצנא הלא הוא דאעדי 7
חזקיה ית במתוהי וית אגורוהי ואמר לאנש יהודה וליתבי ירושלם קדם מדבחא הדין
תסגדון: וכען אתערב כען עם רבוני מלכא דאתור ואתן לך תרין אלפין סוסון אם תכול 8
למנאה עלך רכבין עליהון: ואיכדין את מדמי לאתבא ית אפי חד משלטוני עבדי 9
רבוני זעריא ואתרחצתא לך על מצרים לרתיכין ולפרשין: וכען הבר מימרא דיי 10
סלקית לארעא הדא לחבלותה יי אמר לי סק על ארעא הדא וחבלה: ואמר אליקים 11
ושבנא ויואח לרב שקה מלל כען עם עבדך ארמית ארי שמעין אנחנא ואל תמלל
עמנא יהודית קדם עמא די על שורא: ואמר רב שקה הלות רבונך ועלך שלחני רבוני 12
למללא ית פתגמיא האלין הלא על גבריא דיתבין על שורא למיכל ית מפקתהון
ולמשתי ית מימי רגליהון בצירא עמכון: וקם רב שקה ואכלי בקל רב יהודית ואמר 13
שמעו ית פתגמי מלכא דרבתנא מלכא דאתור: כדנן אמר מלכא לא יטעי לכון חזקיה 14
ארי לא יכול לשיזבא יתכון:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et misit rex Assyriæ Rabsacen de Lachis in Jerusalem ad regem Ezechiam 2 cum exercitu multo, & stetit in aquæductu piscinæ superioris, in via agri ubi fullones extendunt pannos. Et egressus est ad eum Eliachim filius 3 Elchiæ, qui præpositus erat domus, & Sobna scriba, & Joah filius Asaph à commentariis. Et dixit eis Rabsaces: Dicite nunc Ezechiæ, Hæc dicit 4 rex *magnus* noster rex Assyriæ, Quæ est ista fiducia qua confidis? *Dixi*, 5 Utique in loquela labiorum, in consilio, & in potentia faciam bellum; nunc in quem confidis, ut rebelles contra me? *Ecce* confidis in sustentaculo calami confracti, isto Pharaone rege Ægypti; cui si quis innitatur, 6 intrabit in manum ejus, & perforabit eam; sic Pharao rex Ægypti omnibus qui confidunt in eo. Quòd si dixeritis mihi, In verbo Domini Dei 7 nostri confidimus; nónne ipse est cujus abstulit Ezechias excelsa, & altaria? & dixit viris Judæ, & habitatoribus Jerusalem, Coram altari isto adorabitis? Et nunc commisce te obsecro cum domino meo rege 8 Assyriæ, & dabo tibi duo millia equorum, si poteris tibi constituere sessores super eos. Et quomodo tu putas avertere faciem unius 9 è principibus servis domini mei minimis? & confidis in Ægypto, in curribus & in equitibus. Jam verò, Num sine verbo Domini ascendi 10 contra terram hanc ut disperderem eam? Dominus dixit mihi, Ascende super terram hanc & disperde eam. Et dixit Eliachim & Sobna, & 11 Joach ad Rabsacen, Loquere nunc cum servis tuis Syriacè; intelligimus enim nos: nec loquaris nobiscum Judaicè coram populo qui est super murum. Et dixit Rabsaces, Nunquid ad dominum tuum & 12 ad te misit me dominus meus ut loquar verba hæc? nónne ad viros qui sedent super murum, ut comedant stercora sua, & bibant urinam suam in obsidione vobiscum? Et stetit Rabsaces & clamavit voce magna Judaicè, & ait: Audite verba regis magni, regis Assy- 13 riæ. Hæc dicit rex, Ne seducat vos Ezechrias, quia non poterit 14 liberare vos.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

2 ܘܫܕܪ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ ܡܢ ܠܟܝܫ ܠܪܒ ܫܩܐ . ܠܘܬ ܚܙܩܝܐ ܡܠܟܐ ܠܐܘܪܫܠܡ ܒܚܝܠܐ *
ܣܓܝܐܐ. ܘܩܡ ܒܡܫܩܝܬܐ ܕܒܪܟܬܐ ܥܠܝܬܐ ܕܒܐܘܪܚܐ ܕܚܩܠܐ ܕܩܨܪܐ. * ܘܢܦܩ ܠܘܬܗ 3
ܐܠܝܩܝܡ ܒܪ ܚܠܩܝܐ ܪܒ ܒܝܬܐ. ܘܫܒܢܐ ܣܦܪܐ. ܘܝܘܐܚ ܒܪ ܐܣܦ ܡܥܗܕܢܐ. * ܘܐܡܪ 4
ܠܗܘܢ ܪܒ ܫܩܐ. ܐܡܪܘ ܠܚܙܩܝܐ . ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܠܟܐ ܪܒܐ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. ܡܢܘ
ܬܘܟܠܢܐ ܗܢܐ ܕܬܬܟܝܠ . * ܐܡܪܬ ܕܐܝܬ ܠܝ ܡܡܠܠܐ ܕܣܦܘܬܐ . ܘܡܠܟܐ ܘܓܢܒܪܘܬܐ 5
ܠܩܪܒܐ. ܘܗܫܐ ܥܠ ܡܢ ܬܬܟܝܠܬ ܕܡܪܕܬ ܒܝ . * ܗܐ ܬܬܟܝܠܬ ܥܠ ܫܒܛܐ ܕܩܢܝܐ 6
ܪܥܝܥܐ ܥܠ ܡܨܪܝܢ. ܕܡܐ ܕܐܣܬܡܟ ܓܒܪܐ ܥܠܘܗܝ . ܥܐܠ ܒܐܝܕܗ. ܘܢܩܒܗ̇ ܠܗ.
ܗܟܢܐ ܗܘ ܦܪܥܘܢ ܡܠܟܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܠܟܠܗܘܢ ܕܬܟܝܠܝܢ ܥܠܘܗܝ. * ܘܐܢ ܬܐܡܪ ܠܝ . ܕܥܠ 7
ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܬܟܝܠܝܢܢ . ܡܢܐ ܐܘܬܪ ܚܙܩܝܐ ܕܥܒܪ ܒܥܠܬܐ ܘܡܕܒܚܐ. ܘܐܡܪ ܠܝܗܘܕܐ
ܘܠܐܘܪܫܠܡ. ܕܩܕܡ ܡܕܒܚܐ ܗܢܐ ܬܣܓܕܘܢ. * ܘܗܫܐ ܐܬܚܠܛ ܥܡ ܡܪܝ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. 8
ܘܐܬܠ ܠܟ ܬܪܝܢ ܐܠܦܝܢ ܣܘܣܝܐ. ܐܢ ܬܫܟܚ ܠܟ ܦܪܫܐ. * ܘܐܝܟܢܐ ܡܗܦܟ ܐܢܬ ܐܦܐ ܕܚܕ 9
ܡܢ ܐܚܝܕܐ ܕܥܒܕܘܗܝ ܕܡܪܝ ܙܥܘܪܐ . ܘܬܬܟܝܠ ܥܠ ܡܨܪܝܢ . ܘܥܠ ܡܪܟܒܬܐ . ܘܥܠ
ܦܪܫܐ. * ܘܗܫܐ ܕܠܐ ܡܢ ܡܪܝܐ ܣܠܩܬ ܠܐܪܥܐ ܗܕܐ ܠܡܚܪܒܘܬܗ̇ . ܡܪܝܐ ܐܡܪ 10
ܠܝ ܕܣܩ ܥܠ ܐܪܥܐ ܗܕܐ ܘܐܚܪܒܝܗ̇. * ܘܐܡܪ ܐܠܝܩܝܡ ܘܫܒܢܐ ܘܝܘܐܚ ܠܪܒ ܫܩܐ. 11
ܡܠܠ ܥܡ ܥܒܕܝܟ ܐܪܡܐܝܬ ܡܛܠ ܕܫܡܥܝܢܢ. ܘܠܐ ܬܡܠܠ ܥܡܢ ܝܗܘܕܐܝܬ ܩܕܡ
ܥܡܐ ܕܩܝܡܝܢ ܥܠ ܫܘܪܐ. * ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ ܪܒ ܫܩܐ. ܠܐ ܗܘܐ ܠܘܬܟܘܢ ܘܠܘܬ ܡܪܟܘܢ . 12
ܫܕܪܢܝ ܡܪܝ ܠܡܐܡܪ ܡܠܐ ܗܠܝܢ. ܐܠܐ ܠܘܬ ܓܒܪܐ ܕܝܬܒܝܢ ܥܠ ܫܘܪܐ. ܕܠܐ ܢܐܟܠܘܢ ܚܪܐܝܗܘܢ.
ܘܢܫܬܘܢ ܫܝܢܝܗܘܢ ܥܡܟܘܢ. * ܘܩܡ ܪܒ ܫܩܐ . ܘܩܥܐ ܒܩܠܐ ܪܡܐ ܝܗܘܕܐܝܬ ܘܐܡܪ. 13
ܫܡܥܘ ܡܠܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܪܒܐ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. ܠܐ ܢܛܥܝܟܘܢ 14
ܚܙܩܝܐ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܡܫܟܚ ܠܡܦܨܝܘܬܟܘܢ.

2 Tum rex Aſſyriæ de Lachis miſit Rab-ſacem ad Hezeciam regem, in Jeruſalem, cum numeroſis copiis: qui cùm ſubſtitiſſet in clivo laci ſuperioris, quod eſt in via agri fullonis; 3 Et egreſſus eſſet ad eum Eliacim filius Helciæ præfectus domûs, Sebna ſcriba, & Joah filius Aſaphi à commentariis: 4 Dixit ad eos Rab-ſace, Dicite Hezeciæ, Sic dicit rex maximus, rex Aſſyriæ, Quænam eſt fiducia tanta quâ confidis, 5 Ut dicas ſupereſſe tibi ſermonem labiorum, & mentem, viréſque ad bellandum? cui quæſo confidis, ut in me rebelles? 6 Ecce confidis fulcro arundinis quaſſatæ, *nempe* Ægyptio, quo cùm quis innititur, manum ejus penetrat perforátque: talis eſt Pharaon rex Ægypti omnibus fiduciam in ipſo collocantibus. 7 Quòd ſi dixeris mihi, Domino Deo noſtro confidimus; quid profuit Hezeciæ aboleviſſe altaria & aras, & dixiſſe Judæ & Jeroſolymæ, Coram hoc altari adorabitis? 8 Jam verò commercium habeto cum domino meo rege Aſſyriæ, dabóque tibi duo millia equorum, *& videbo* utrùm habeas equites. 9 Quomodo ergò repelleres faciem unius è nobilioribus inter minimos domini mei ſervos, & confideres Ægyptio, curribus, & equitibus? 10 At nunc, an abſque Domino aſcendi ad terram iſtam ut vaſtarem eam? Dominus quidem mihi dixit ut aſcenderem contra terram iſtam & vaſtarem eam. 11 Dixit Eliacim, Sebna, & Joah ad Rab-ſace, Alloquere ſervos tuos Aramicè, intelligimus enim; neque alloquaris nos Judaicè præſente populo qui adeſt ſuper mœnia. 12 Ait illis Rab-ſace, Nequaquam ad vos & ad dominum veſtrum miſit me dominus meus ad hæc verba proferenda, ſed ad viros qui mœnibus aſſident; ut ne comedant ſtercus ſuum, & bibant urinas ſuas vobiſcum. 13 Itaque ſurgens Rab-ſace, & elatâ voce Judaicè exclamans dixit, Audite verba regis maximi, regis Aſſyriæ. 14 Sic ait rex Aſſyriæ, Ne ſeducat vos Hezecia, non enim poterit eripere vos:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

2 * وأرسل ملك الموصليين ربصاكيس من لاخيس إلى أورشليم إلى حزقيا الملك بجيش
3 عظيم * ووقف في جدول الماء الذي للبركة العليا * في طريق حقل القصار * فخرج إليه
الناقيم الوكيل ابن سلقيا * وصمناص كاتب الجيش * ويواح ابن أصاف كاتب التذاكير *
4 * فقال لهم ربصاكيس * قولوا لحزقيا هكذا يقول الملك العظيم ملك الموصليين * ماذا ترجا *
5 6 * هل بجسور أو بكلام شفتين يكون لك المصاف * والآن على ماذا توكلت أنك تعصيني * ها
توكل على العصي القصبية هذه المكسورة * على مصر * إن الذي يتوكأ عليها تدخل في
7 يده * هكذا يكون فرعون ملك مصر وجميع المتوكلين عليه * وإن قلتم على الرب الإله
8 نحن توكلنا * اختلطوا الآن بسيدنا ملك الموصليين * وأعطي لكم ألفي فرس * إن كنتم
9 تستطيعون أن تعطوا عليها ركابا * فكيف تستطيعون أن تراجعوا وجه رئيس موضع واحد *
10 المتوكلون على المصريين هم عبيد لفرس وراكب * والآن هل بغير أمر من الرب صعدنا
11 إلى هذه الكورة نحاربها * الرب قال لي أصعد إلى هذه الأرض وأفسدها * فقال له الناقيم
وصمناص ويواح * تكلم مع عبيدك بالسريانية * لأنا نحن نسمع ما تقول * ولا تتكلم معنا
12 بالكلدانية * فلماذا تتكلم في آذان الناس الجلوس في السور * فقال ربصاكيس لهم * هل
إلى ربكم أو إليكم أرسلني سيدي لأتكلم هذه الكلمات * أليس إلى الرجال الجلوس
13 على السور * كيلا يأكلوا زبلا ويشربوا إراقة معكم معا * ووقف ربصاكيس وصرخ
بصوت عظيم باليهودية وقال * اسمعوا اسمعوا كلام الملك العظيم ملك الموصليين *
14 * هكذا يقول الملك * لا يخدعكم حزقيا بكلمات * لا يستطيع أن
ينجيكم *

2 *Deinde miſit rex Aſſyriorum Rabſacem è Lachis Jeroſolymam contra Hezeciam regem, ingenti cum exercitu: qui ſubſtitit ad fluxum aquæ piſcinæ ſuperioris, in itinere agri fullonis.* 3 *Et egreſſus eſt ad eum Eliacim œconomus Helciæ filius, & Semnas ſcriba exercitûs, & Joah filius Aſaphi ſcriptor rerum memorabilium.* 4 *Quibus dixit Rabſaces, Dicite ad Hezeciam; Sic dicit rex magnus, rex Aſſyriorum, Quid* 5 *ſperas? Num audaciâ, an verbis labiorum acies eſt inſtruenda tibi? cui rei confidis, quòd contra me rebelles?* 6 *Ecce confidis huic ſcipioni arundineo quaſſato, Ægypto, quo ſi quis innitatur, penetrat manum ipſius: talis eſt Pharaon rex Ægypti, & omnes qui fiduciam collocant in eo.* 7 *Quòd ſi dixeritis, Domino Deo noſtro fidimus;* 8 *Immiſcete jam vos cum domino noſtro rege Aſſyriorum, daboque vobis duo millia equorum, ſi poſſitis ſuppeditare eis equites.* 9 *Quoniam igitur pacto retundere poteſtis faciem principis unius loci? qui fidunt Ægyptiis, ſervi ſunt equi & equitis.* 10 *Jam verò, num abſq; juſſu Domini aſcendimus contra iſtam regionem ut oppugnaremus eam? Dominus dixit mihi, Aſcende contra terram iſtam, eamque corrumpe.* 11 *Dixerunt ad eum Eliacim, Semnas, & Joah; Loquere cum ſervis tuis Syriacè, audimus enim quæ dicturus es; & ne loquaris nobiſcum Chaldaicè: cur enim loquereris in auribus hominum inſidentium muro?* 12 *Reſpondit eis Rabſaces, Num ad dominum veſtrum, aut ad vos miſit me dominus meus, ut loquerer hæc verba? nónne ad viros inſidentes muro? quò minus comedant ſtercus, & urinam bibant unà vobiſcum.* 13 *Tum ſurgens Rabſaces, & magnâ voce exclamans Judaicè dixit, Audite, audite verba magni regis, regis Aſſyriorum.* 14 *Sic dicit rex, Ne decipiat vos Hezecia verbis; non poterit ſalvare vos.*

ישעיה׃ לז

Eruendo :dicendo ,Domino in Chizchijahu vos faciat confidere ne Et
15 וְאַל־יַבְטַח אֶתְכֶם חִזְקִיָּהוּ אֶל־יְהוָה לֵאמֹר הַצֵּל
.Aſſur regis manu in hæc civitas dabitur non :Dominus nos eruet
יַצִּילֵנוּ יְהוָה לֹא תִנָּתֵן הָעִיר הַזֹּאת בְּיַד מֶלֶךְ אַשּׁוּר׃
facite : Aſſur rex dixit ſic quia : Chizchijahu ad audiatis Ne
16 אַל־תִּשְׁמְעוּ אֶל־חִזְקִיָּהוּ כִּי כֹה אָמַר הַמֶּלֶךְ אַשּׁוּר עֲשׂוּ
,ſuam vitem *vir* comedite & ,me ad egredimini & ,benedictionē mecum
אִתִּי בְרָכָה וּצְאוּ אֵלַי וְאִכְלוּ אִישׁ־גַּפְנוֹ
Vſque .ſuæ ciſternæ aquas *vir* bibite & , ſuam ficum *vir* &
17 וְאִישׁ תְּאֵנָתוֹ וּשְׁתוּ אִישׁ מֵי־בוֹרוֹ׃ עַד־
terram ,veſtrā terram ſicut ,terram ad vos tollam & ,*me venire*
בֹּאִי וְלָקַחְתִּי אֶתְכֶם אֶל־אֶרֶץ כְּאַרְצְכֶם אֶרֶץ
vos incitet fortè Ne .vinearum & ,panis terram ,*muſti* & , frumenti
18 דָּגָן וְתִירוֹשׁ אֶרֶץ לֶחֶם וּכְרָמִים׃ פֶּן־יַסִּית אֶתְכֶם
dii eruerunt nunquid :nos eruet DOMINUS :dicendo ,Chizchijahu
חִזְקִיָּהוּ לֵאמֹר יְהוָה יַצִּילֵנוּ הַהִצִּילוּ אֱלֹהֵי
Dii Ubi ? Aſſur regis manu de ſuam terram *vir* gentium
19 הַגּוֹיִם אִישׁ אֶת־אַרְצוֹ מִיַּד מֶלֶךְ אַשּׁוּר׃ אַיֵּה אֱלֹהֵי
eruerunt *quia* & ? Sepharvaim *Dii* ubi , Arphad & ,Chamath
חֲמָת וְאַרְפָּד אַיֵּה אֱלֹהֵי סְפַרְוָיִם וְכִי־הִצִּילוּ אֶת־
, iſtarum terrarum Deos omnes inter Quis ? mea manu de Someron
20 שֹׁמְרוֹן מִיָּדִי׃ מִי בְּכָל־אֱלֹהֵי הָאֲרָצוֹת הָאֵלֶּה
DOMINUS eruet quia :mea manu de ſuam terram eruerint qui
אֲשֶׁר־הִצִּילוּ אֶת־אַרְצָם מִיָּדִי כִּי־יַצִּיל יְהוָה
ei reſponderunt non & ſiluerunt Et ? mea manu de Jeruſalaim
21 אֶת־יְרוּשָׁלַם מִיָּדִי׃ וַיַּחֲרִישׁוּ וְלֹא־עָנוּ אֹתוֹ
.ei reſpondebitis Non : dicendo , *illud* regis præceptum quia : verbum
דָּבָר כִּי־מִצְוַת הַמֶּלֶךְ הִיא לֵאמֹר לֹא תַעֲנֻהוּ׃
,domum ſuper qui , Chilchijahu filius Eljachim eſt ingreſſus Et
22 וַיָּבֹא אֶלְיָקִים בֶּן־חִלְקִיָּהוּ אֲשֶׁר־עַל־הַבַּיִת
Chizchijahu ad *commonefaciens* Aſaph filius Joach & , ſcriba Sebnah &
וְשֶׁבְנָא הַסֹּפֵר וְיוֹאָח בֶּן־אָסָף הַמַּזְכִּיר אֶל־חִזְקִיָּהוּ
.Rabſacheh verba ei *indicaverunt* & : veſtibus ſciſſis
קְרוּעֵי בְגָדִים וַיַּגִּידוּ לוֹ אֵת דִּבְרֵי רַבְשָׁקֵה׃

CAP. XXXVII. לז

: ſua veſtimenta ſcidit &,Chizchijahu *regem audire ſecundùm* fuit Et
1 וַיְהִי כִּשְׁמֹעַ הַמֶּלֶךְ חִזְקִיָּהוּ וַיִּקְרַע אֶת־בְּגָדָיו
miſit Et .DOMINI domum intravit & , ſacco in ſe operuit &
2 וַיִּתְכַּס בַּשָּׂק וַיָּבֹא בֵּית יְהוָה׃ וַיִּשְׁלַח
ſeniores & ,ſcribam Sebnah & ,domum ſuper qui ,Eljachim
אֶת־אֶלְיָקִים אֲשֶׁר־עַל־הַבַּיִת וְאֵת שֶׁבְנָא הַסּוֹפֵר וְאֵת זִקְנֵי
.prophetam Amos filium Jeſahjahu ad , ſaccis in opertos ,ſacerdotum
הַכֹּהֲנִים מִתְכַּסִּים בַּשַּׂקִּים אֶל־יְשַׁעְיָהוּ בֶן־אָמוֹץ הַנָּבִיא׃
, anguſtiæ Dies , Chizchijahu dixit Sic , eum ad dixerunt Et
3 וַיֹּאמְרוּ אֵלָיו כֹּה אָמַר חִזְקִיָּהוּ יוֹם־צָרָה
filii venerunt quia : hæc dies , blaſphemiæ & , increpationis &
וְתוֹכֵחָה וּנְאָצָה הַיּוֹם הַזֶּה כִּי־בָאוּ בָנִים
audiat fortè Si .pariendum ad non virtus & ,*alvi rupturam* ad uſque
4 עַד־מַשְׁבֵּר וְכֹחַ אַיִן לְלֵדָה׃ אוּלַי יִשְׁמַע
rex *cum* miſit quem , Rabſacheh verba tuus Deus Dominus
יְהוָה אֱלֹהֶיךָ אֵת דִּבְרֵי רַבְשָׁקֵה אֲשֶׁר שְׁלָחוֹ מֶלֶךְ־
verbis in arguat &,*viventi Deo exprobrandū ad*,ſuus domin⁹ Aſſur
אַשּׁוּר אֲדֹנָיו לְחָרֵף אֱלֹהִים חַי וְהוֹכִיחַ בַּדְּבָרִים
pro orationem *levabis* & : tuus Deus DOMINUS audivit quæ
אֲשֶׁר שָׁמַע יְהוָה אֱלֹהֶיךָ וְנָשָׂאתָ תְפִלָּה בְּעַד
,Chizchijahu regis ſervi venerunt Et .*reperto* reſiduo
5 הַשְּׁאֵרִית הַנִּמְצָאָה׃ וַיָּבֹאוּ עַבְדֵי הַמֶּלֶךְ חִזְקִיָּהוּ
.Jeſahjahu ad
אֶל־יְשַׁעְיָהוּ׃

Verſio VULG. LAT.

15 Et non vobis tribuat fiduciam Ezechias ſuper Dño, dicens; Eruens liberabit nos Domin⁹, non dabitur civitas iſta in manu regis Aſſyriorū. 16 Nolite audire Ezechiam: hæc enim dicit rex Aſſyriorum; Facite mecum benedictionem, & egredimini ad me, & comedite unuſquiſque vineam ſuam, & unuſquiſque ficum ſuam: et bibite unuſquiſque aquam ciſternæ ſuæ, 17 Donec veniam, & tollam vos ad terram, quæ eſt ut terra veſtra, terram frumenti & vini, terram panum & vinearum. 18 Nec conturbet vos Ezechias, dicens; Dominus liberabit nos. Numquid liberaverunt dii gentium unuſquiſque terram ſuam de manu regis Aſſyriorum? 19 Ubi eſt deus Emath, & Arphad? ubi eſt deus Sepharvaim? numquid liberaverunt 20 Samariam de manu mea? Quis eſt ex omnibus diis terrarum iſtarum, qui eruerit terrā ſuam de manu mea, ut eruat Dominus Jeruſalem de manu mea? 21 Et ſiluerunt, & non reſponderunt ei verbum. Mandaverat enim rex, dicens; Ne reſpon- 22 deatis ei. Et ingreſſus eſt Eliacim filius Helciæ, qui erat ſuper domum, & Sobna ſcriba, & Joahe filius Aſaph à commentariis, ad Ezechiam ſciſſis veſtibus, & nuntiaverunt ei verba Rabſacis.

CAP. XXXVII.

1 ET factum eſt, cùm audiſſet rex Ezechias, ſcidit veſtimenta ſua, & obvolutus eſt ſacco, & intravit in domum Domini. 2 Et miſit Eliacim, qui erat ſuper domum, & Sobnam ſcribam, & ſeniores de ſacerdotibus, opertos ſaccis, ad Iſaiam 3 filium Amos prophetam, Et dixerunt ad eum; Hæc dicit Ezechias; Dies tribulationis, et correptionis, & blaſphemiæ, dies hæc: quia venerunt filii uſque ad partum, & virtus non 4 eſt pariendi. Si quo modo audiat Dominus Deus tuus verba Rabſacis, quem miſit rex Aſſyriorum dominus ſuus ad blaſphemandum Deum viventem, & exprobrandum ſermonibus, quos audivit Dominus Deus tuus: leva ergò orationem pro 5 reliquiis, quæ repertæ ſunt. Et venerunt ſervi regis Ezechiæ ad Iſaiam.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

15 Καὶ μὴ λεγέτω ὑμῖν Ἐζεκίας, ὅτι ῥύσεται ὑμᾶς ὁ θεὸς, ϗ οὐ μὴ παραδοθῇ ἡ πόλις 16 αὕτη ἐν χειρὶ βασιλέως Ἀσσυρίων. Μὴ ἀκούετε Ἐζεκίου. τάδε λέγει ὁ βασιλεὺς Ἀσσυρίων, Εἰ βούλεσθε εὐλογηθῆναι, ἐκπορεύεσθε πρὸς μὲ, καὶ φάγεσθε ἕκαστος τὴν ἄμπελον αὐτοῦ ϗ τὰς συκὰς, ϗ πίεσθε ὕδωρ 17 (ρ) ἐκ τοῦ λάκκου ὑμῶν, Ἕως ἂν ἔλθω, ϗ λάβω ὑμᾶς εἰς γῆν, ὡς ἡ γῆ ὑμῶν, γῆ σί- 18 του ϗ οἴνου ϗ ἄρτων ϗ ἀμπελώνων. Μὴ (σ) ἀπατάτω ὑμᾶς Ἐζεκίας, λέγων, Ὁ θεὸς (τ) ῥύσεται ὑμᾶς. μὴ ἐρρύσαντο οἱ θεοὶ τῶν ἐθνῶν, ἕκαστος τὴν ἑαυτοῦ χώραν 19 ἐκ χειρὸς βασιλέως Ἀσσυρίων; Ποῦ ἐστιν ὁ θεὸς (υ) Ἐμὰθ ϗ Ἀρφάθ; (φ) ϗ ποῦ ὁ θεὸς τῆς πόλεως Ἐπφαρουαίμ; μὴ ἐδύναντο ῥύσασθαι Σαμάρειαν ἐκ χειρός μου; 10 Τίς τῶν θεῶν πάντων τῶν ἐθνῶν (χ) τούτων, ὅστις ἐρρύσατο τὴν γῆν αὐτοῦ (ψ) ἐκ χειρός μου, ὅτι ῥύσεται ὁ θεὸς τὴν Ἱερουσα- 21 λὴμ ἐκ χειρός μου; Καὶ ἐσιώπησαν, ϗ οὐδεὶς ἀπεκρίθη αὐτῷ λόγον, διὰ τὸ προστάξαι 22 τὸν βασιλέα μηδένα ἀποκριθῆναι. Καὶ εἰσῆλθεν Ἐλιακεὶμ ὁ τοῦ Χελκίου, (˜) οἰκονόμος, ϗ Σομνᾶς ὁ γραμματεὺς τῆς δυνάμεως, ϗ Ἰωὰχ ὁ τοῦ Ἀσὰφ ὁ ὑπομνηματογράφος πρὸς Ἐζεκίαν, ἐσχισμένοι τοὺς χιτῶνας, ϗ (ω) ἀνήγγειλαν αὐτῷ τοὺς λόγους (α) Ῥαβσάκου.

MS.A. (ρ) τοῦ λάκκου (σ) ὑμᾶς ἀπατάτω (τ) ὑμῶν ῥύσεται ὑμᾶς. (υ) Αἰμὰρ (φ) καὶ ὁ θεὸς τῆς πόλεως Σεπφαρείμ; (χ) τούτων ἐρρύσατο (ψ) ἐκ τῆς χειρὸς (˜) ὁ οἰκονόμος, (ω) ἀπήγγειλαν (α) Ῥαψάκου.

ΚΕΦ. λζʹ.

1 ΚΑὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἀκοῦσαι τὸν βασιλέα Ἐζεκίαν, ἔσχισε τὰ ἱμάτια, ϗ (α) περιεβάλετο σάκκον, ϗ ἀνέβη εἰς τὸν οἶκον κυ- 2 ρίου. Καὶ ἀπέστειλεν Ἐλιακεὶμ τὸν οἰκονόμον, ϗ Σομνᾶν τὸν γραμματέα, (β) ϗ τοὺς πρεσβυτέρους τῶν ἱερέων περιβεβλημένους σάκκοις, πρὸς Ἡσαΐαν υἱὸν (˜) Ἀμὼς τὸν προ- 3 φήτην. Καὶ εἶπαν αὐτῷ, Τάδε λέγει Ἐζεκίας, Ἡμέρα θλίψεως ϗ ὀνειδισμοῦ ϗ ἐλεγμοῦ ϗ ὀργῆς ἡ σήμερον ἡμέρα, ὅτι ἥκει ἡ ὠδὶν τῇ τικτούσῃ, ἰσχὺν δὲ οὐκ ἔχει τοῦ 4 τεκεῖν. Εἰσακούσαι κύριος ὁ (γ) θεός σου τοὺς λόγους Ῥαβσάκου, οὓς ἀπέστειλε βασιλεὺς Ἀσσυρίων, ὀνειδίζειν θεὸν ζῶντα, ϗ ὀνειδίζειν λόγοις οὓς ἤκουσε κύριος ὁ θεός σου, (δ) ϗ δεηθήσῃ πρὸς κύριόν σου 5 περὶ τῶν καταλελειμμένων τούτων. Καὶ ἦλθον οἱ παῖδες τοῦ βασιλέως (ε) Ἐζεκίου πρὸς Ἡσαΐαν.

MS.A. (α) σάκκον περιεβάλετο, (β) * πρὸς τοὺς (˜) Ἀμμὼς τὸν (γ) θεός σου τοὺς λόγους Ῥαψάκου, οὓς ἀπέστειλεν αὐτὸν βασιλεὺς (δ) περὶ τῶν καταλελιμμένων (ε) πρὸς Ἡσαΐαν.

Neque dicat vobis Ezecias, quia eruet vos Deus, & non tradetur civitas hæc in manu regis Aſſyriorum. Nolite audire Ezeciam. 15 *16 Hæc dicit rex Aſſyriorum; Si vultis benedici, egredimini ad me, & comedite unuſquiſque vitem ſuam, & ficus, & bibite aquam de ciſterna veſtra; Do-* 17 *nec veniam, & tollam vos ad terram: ſicut terra veſtra, terra frumenti, & vini, & panum, & vinearum. Ne ſeducat vos* 18 *Ezecias, dicens; Deus liberabit vos. Nunquid liberaverunt dii gentium unuſquiſque regionem ſuam de manu regis Aſſyriorum? ubi eſt deus Emath, & Arphath?* 19 *& ubi deus civitatis Eppharuæm? Nunquid potuerunt eruere Samariam de manu mea? Quis* 10 *eſt ex omnibus diis gentium iſtarum, qui eruerit terram ſuam de manu mea; quia eruet Deus Hieruſalem de manu mea? Et ſilu-* 21 *erunt: & nemo reſpondit ei verbum: quia mandaverat rex, neminem reſpondere. Et ingreſſus* 22 *eſt Eliacim, filius Chelciæ, œconomus, & Somnas ſcriba virtutis, & Joach filius Aſaph à commentariis ad Ezeciam, ſciſſis tunicis: & nuntiaverunt ei verba Rabſacis.*

CAP. XXXVII.

ET factum eſt, cùm audiſſet rex Ezecias, ſcidit veſtimenta, & obvolutus eſt ſacco, & aſcendit in domum Domini. Et miſit 1 2 *Eliacim œconomum, & Somnam ſcribam, & ſeniores ſacerdotum, opertos ſaccis, ad Eſaiam filium Amos, prophetam. Et dixerunt* 3 *ei, Hæc dicit Ezecias; Dies tribulationis, & opprobrii, & correptionis, & iræ hodierna dies: quia venit dolor parturienti, virtutē autem non habet pariendi. (a) Exaudiat Dominus Deus* 4 *tuus verba Rabſacis, quæ miſit rex Aſſyriorum, ad exprobrandū Deum viventem, et exprobrandum ſermonibus, quos audivit Dominus Deus tuus. Et orabis ad Dominum tuum pro derelictis his. Et venerunt pueri regis Ezeciæ ad Eſaiam.* 5

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

15 וְלָא יְרַחִיץ יָתְכוֹן חִזְקִיָּה עַל מֵימְרָא דַייָ לְמֵימַר שֵׁיזָבָא יְשֵׁיזְבִנָּנָא יְיָ לָא תִתְמְסַר קַרְתָּא
16 הָדָא בְּיַד מַלְכָּא דְאַתּוּר׃ לָא תְקַבְּלוּן מִן חִזְקִיָּה אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר מַלְכָּא דְאַתּוּר עֲבִידוּ עִמִּי
17 שְׁלָמָא וּפוּקוּ לְוָתִי וְאֱכוּלוּ גְּבַר פֵּרֵי גוּפְנוֹהִי וּגְבַר פֵּרֵי תֵינוֹהִי וּשְׁתוֹ גְּבַר מֵי גוֹבֵיהּ׃ עַד
18 מֵיתַאי וְאֶדְבַּר יָתְכוֹן לְאַרְעָא טָבָא כְּאַרְעֲכוֹן אֲרַע עֲבוּר וַחֲמַר אֲרַע חַקְלִין וְכַרְמִין׃ דִּלְמָא
יַטְעֵי יָתְכוֹן חִזְקִיָּה לְמֵימַר יְיָ יְשֵׁיזְבִנָּנָא הֲשֵׁיזִיבָא דַחֲלַת עַמְמַיָּא גְּבַר יָת אַרְעֵיהּ מִיַּד מַלְכָּא
19 20 דְאַתּוּר׃ אָן דַּחֲלַת חֲמָת וְאַרְפַּד אָן דַּחֲלַת סְפַרְוָיִם וַאֲרֵי שֵׁיזִיבוּ יָת שֹׁמְרוֹן מִן יְדִי׃ מַן בְּכָל
דַּחֲלַת מְדִינָתָא הָאִלֵּין דְּשֵׁיזִיבוּ יָת אַרְעֲהוֹן מִן יְדִי אֲרֵי יְשֵׁיזֵיב יְיָ יָת יְרוּשְׁלֵם מִן יְדִי׃
21 22 וּשְׁתִיקוּ וְלָא אֲתִיבוּ יָתֵיהּ פִּתְגָמָא אֲרֵי תַפְקֵידַת מַלְכָּא הִיא לְמֵימַר לָא תְתִיבוּנֵיהּ׃ וַאֲתָא
אֶלְיָקִים בַּר חִלְקִיָּה דִּי מְמַנָּא עַל בֵּיתָא וְשֶׁבְנָא סַפְרָא וְיוֹאָח בַּר אָסָף דִּי מְמַנָּא עַל דָּכְרָנַיָּא
לְוָת חִזְקִיָּה כַּד מְבַזְּעִין לְבוּשֵׁיהוֹן וְחַוִּיאוּ לֵיהּ יָת פִּתְגָמֵי רַב שָׁקֵה׃

לז

1 וַהֲוָה כַּד שְׁמַע מַלְכָּא חִזְקִיָּה וּבְזַע יָת לְבוּשׁוֹהִי וְאִתְכַּסִּי בְסַקָּא וְעַל לְבֵית מַקְדְּשָׁא דַייָ׃
2 וּשְׁלַח יָת אֶלְיָקִים דִּי מְמַנָּא עַל בֵּיתָא וְיָת שֶׁבְנָא סַפְרָא וְיָת סָבֵי כָּהֲנַיָּא כַּד מְכַסַּן סַקַּיָּא
3 לְוָת יְשַׁעְיָה בַּר אָמוֹץ נְבִיָּא׃ וַאֲמַרוּ לֵיהּ כִּדְנַן אֲמַר חִזְקִיָּה יוֹם עָקָא וְחִסּוּדִין וּנְאוֹצָא יוֹמָא
4 הָדֵין אֲרֵי אַקִּיפְתָּנָא עָקָא כְּאִתְּתָא דְיָתְבָא עַל מַתְבְּרָא וְחֵיל לֵית לַהּ לְמֵילַד׃ מָאִים שְׁמִיעַ
קֳדָם יְיָ אֱלָהָךְ יָת פִּתְגָמֵי רַב שָׁקֵה דְשַׁלְחֵיהּ מַלְכָּא דְאַתּוּר רִבּוֹנֵיהּ לְחַסָּדָא עַמָּא דַייָ
קַיָּמָא וְיַעְבֵּיד פּוּרְעָנוּתָא עַל כָּל פִּתְגָמַיָּא דִשְׁמִיעִין קֳדָם אֱלָהָךְ וְתִתְחַנַּן בִּצְלוֹ עַל שְׁאָרָא
5 דְאִשְׁתְּאַר׃ וַאֲתוֹ עַבְדֵי מַלְכָּא חִזְקִיָּה לְוָת יְשַׁעְיָה׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Nec tribuat vobis fiduciam Ezechias in verbo Domini, dicens: Liberando liberabit nos Dñs, & non tradetur civitas iſta in manum regis Aſſyriæ. 15 Nolite obedire Ezechiæ: quia hæc dicit rex Aſſyriæ, Facite mecum pacem, & egredimini ad me, & comedite unuſquiſque fructum vitis ſuæ, & unuſquiſque fructum ficulneæ ſuæ, & bibite unuſquiſque aquam ciſternæ ſuæ. 16 Donec veniam & tollam vos in terram bonam, ſicut terra veſtra eſt, terram frumenti & vini, terram agrorum & vinearum. 17 Et ne fortè ſeducat vos Ezechias, dicens: Dñs liberabit nos. 18 Nunquid potuerunt liberare dii populorum quiſque terram ſuam de manu regis Aſſyriæ? Ubi eſt Deus Emath? & Arphad? ubi eſt Deus Sepharvaim? & quid? Samariam de manu mea eripuerunt? 19 Quinam ſunt inter omnes harum provinciarum deos qui eruerint terram ſuam è manu mea, ut Dñs eripiat è manu mea Jeruſalem? 20 Et tacuerunt, & non reſponderunt ei verbum: quia mandatum regis erat, dicentis: Ne reſpondeatis ei. 21 Et venit Eliachim filius Elchiæ qui præpoſitus erat domus, & Sobna ſcriba, & Joach filius Aſaph, qui conſtitutus erat ſuper memorialia, ad Ezechiam ſciſſis veſtibus, & narraverunt ei verba Rabſacis. 22

CAP. XXXVII.

ET factum eſt cùm audiſſet rex Ezechias, ſcidit veſtimenta ſua, & opertus eſt ſacco, & ingreſſus eſt in domum ſanctuarii Dñi. 1 Et miſit Eliachim præpoſitum domus, & Sobnam ſcribam, et ſeniores ſacerdotum coopertos ſaccis ad Eſaiam filium Amos prophetam. 2 Et dixerunt ei, Hæc dicit Ezechias: Dies tribulationis & opprobrii, & blaſphemiæ eſt dies hæc: quia apprehendit nos tribulatio, ſicut mulierem quæ ſedet ad pariendum, & non eſt ei robur ut pariat. 3 Fortè audientur coram Domino Deo tuo verba Rabſacis; quem miſit rex Aſſyriæ dominus ſuus, ut exprobraret populum Dei vivi, & faciet vindictam propter omnia verba quæ audita ſunt coram Deo tuo. 4 Deprecare ergo in oratione pro reliquiis quæ remanſerunt. Et venerunt ſervi regis Ezechiæ ad Eſaiam. 5

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܠܐ ܢܬܟܠܟܘܢ ܚܙܩܝܐ ܥܠ ܡܪܝܐ : ܘܢܐܡܪ ܕܡܦܨܘ ܡܦܨܐ ܠܢ ܡܪܝܐ : ܘܠܐ ܬܫܬܠܡ ܡܕܝܢܬܐ 15
ܗܕܐ ܒܐܝܕܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. * ܠܐ ܬܫܡܥܘܢ ܠܚܙܩܝܐ. ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܠܟܐ 16
ܕܐܬܘܪ. ܥܒܕܘ ܥܡܝ ܒܘܪܟܬܐ ܘܦܘܩܘ ܠܘܬܝ. ܘܐܟܘܠܘ ܐܢܫ ܓܘܦܢܗ ܘܐܢܫ
ܬܐܢܬܗ. ܘܐܫܬܘ ܐܢܫ ܡܝܐ ܕܓܘܒܗ. * ܥܕܡܐ ܕܐܬܐ ܘܐܕܒܪܟܘܢ ܠܐܪܥܐ ܕܐܟ ܐܪܥܟܘܢ. ܐܪܥܐ 17
ܕܥܒܘܪܐ. ܘܕܡܫܚܐ. ܐܪܥܐ ܕܙܝܬܐ ܘܕܟܪܡܐ. * ܠܐ ܢܛܥܝܟܘܢ ܚܙܩܝܐ ܘܢܐܡܪ ܕܡܪܝܐ ܡܦܨܐ 18
ܠܢ. ܕܠܡܐ ܦܨܝܘ ܐܠܗܘܗܝ ܕܥܡܡܐ. ܐܢܫ ܐܪܥܗ ܡܢ ܐܝܕܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ.
* ܐܝܟܐ ܐܢܘܢ ܐܠܗܐ ܕܚܡܬ ܘܕܐܪܦܕ .: ܘܐܝܟܐ ܐܢܘܢ ܐܠܗܐ ܕܣܦܪܘܝܡ. ܕܠܡܐ . ܦܨܝܘ 19
ܠܫܡܪܝܢ ܡܢ ܐܝܕܝ. * ܡܢܘ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܐܠܗܐ ܕܐܪܥܬܐ ܗܠܝܢ ܦܨܝ ܐܪܥܗ ܡܢ ܐܝܕܝ. 20
ܕܢܦܨܐ ܡܪܝܐ ܠܐܘܪܫܠܡ ܡܢ ܐܝܕܝ. * ܘܫܬܩܘ ܟܠܗܘܢ. ܘܐܢܫ ܠܐ ܝܗܒ ܠܗ ܦܬܓܡܐ. ܡܛܠ 21
ܕܦܩܕ ܡܠܟܐ ܘܐܡܪ. ܠܐ ܬܬܠܘܢ ܠܗ ܦܬܓܡܐ. * ܘܥܠ ܐܠܝܩܝܡ ܒܪ ܚܠܩܝܐ ܪܒܝܬܐ 22
ܘܫܒܢܐ ܣܦܪܐ. ܘܝܘܐܚ ܒܪ ܐܣܦ ܡܥܗܕܢܐ. ܠܘܬ ܚܙܩܝܐ ܟܕ ܡܨܪܝܢ ܢܚܬܝܗܘܢ.
ܘܚܘܝܘܗܝ ܡܠܝܗܘܢ ܕܪܒ ܫܩܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܙ *

* ܘܗܘܐ ܕܟܕ ܫܡܥ ܚܙܩܝܐ ܡܠܟܐ. ܨܪܐ ܢܚܬܘܗܝ. ܘܐܬܟܣܝ ܣܩܐ. ܘܥܠ ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. 1
* ܘܫܕܪ ܠܐܠܝܩܝܡ ܪܒܝܬܐ. ܘܠܫܒܢܐ ܣܦܪܐ. ܘܠܩܫܝܫܐ ܕܟܗܢܐ ܟܕ ܡܟܣܝܢ ܣܩܐ. ܠܘܬ 2
ܐܫܥܝܐ ܢܒܝܐ ܒܪ ܐܡܘܨ. * ܘܐܡܪܘ ܠܗ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܚܙܩܝܐ. ܝܘܡܐ ܕܐܘܠܨܢܐ. 3
ܘܕܡܟܣܢܘܬܐ. ܘܕܪܘܓܙܐ ܝܘܡܢܐ. ܡܛܠ ܕܡܛܝܘ ܚܒܠܐ ܕܒܢܝܐ. ܘܚܝܠܐ ܠܝܬ ܠܡܘܠܕܬܐ.
* ܟܒܪ ܢܫܡܥ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ ܡܠܘܗܝ ܕܪܒ ܫܩܐ. ܕܫܕܪܗ ܡܪܗ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ 4
ܠܡܚܣܕܘ ܠܐܠܗܐ ܚܝܐ. ܘܢܟܣܝܘܗܝ ܥܠ ܡܠܐ ܕܫܡܥ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ. ܘܬܨܠܐ. ܘܬܬܟܫܦ ܥܠ ܫܪܟܐ
ܕܐܫܬܚܪܘ. * ܘܐܬܘ ܥܒܕܘܗܝ ܕܚܙܩܝܐ ܡܠܟܐ. ܠܘܬ ܐܫܥܝܐ. 5

Neque fidere vos jubeat Hezecia Domino, 15
dicátque; Procul dubio liberabit nos Dominus, & non tradetur civitas hæc in manus regis Aſſyriæ. Ne acquieſcatis Hezeciæ: nam 16
ſic ait rex Aſſyriæ, Hâc me gratiâ obſtringite, & ad me exite; ut *ita* comedatis quiſque vites ſuas, & quiſque ficus ſuas, & bibatis quilibet aquas putei ſui; Donec veniam du- 17
cámque vos ad terram ſimilem terræ veſtræ, terram frumenti & olei *feracem*, terram olearum & vinearum. Ne ſeducat vos Hezecia, 18
dicátque; Dominus liberabit nos: An liberaverunt dii gentium quiſque terram ſuam de manibus regis Aſſyriæ? Ubi ſunt dii He- 19
math & Rephad? & ubi ſunt dii Sepharvim? nunquid liberaverunt Samariam de manibus meis? Quis ex omnibus diis terrarum illa- 20
rum eripuit terram ſuam è manibus meis, ut eripiat Dominus Jeroſolymam è manibus meis? Obticuerunt autem, & nemo re- 21
ſpondit ei quicquam, præceperat enim rex & dixerat, Nihil ei reſpondeatis. Itaque 22
Eliacim filius Helciæ præfectus domûs, Sebna ſcriba, & Jojah filius Aſaphi à commentariis, laceris veſtibus ad Hezeciam regreſſi, retulerunt ei verba Rab-ſace.

CAP. XXXVII.

His auditis rex Hezecia, ſcidit veſtimenta 1
ſua, operuit ſe ſacco, & ingreſſus eſt domum
Domini: Miſitque Eliacimum præfectum 2
domûs, & Sebnam ſcribam, atque ſeniores ſacerdotum ſaccis opertos, ad Eſaiam prophetam filium Amos: Qui dixerunt ei, Sic 3
ait Hezecia; Dies anguſtiæ, correptionis, & iræ eſt hodierna dies; inſtantibus enim fœtuum doloribus, non adſunt vires parturienti.
Fortaſſis audiet Dominus Deus tuus verba 4
Rab-ſace, quem miſit rex Aſſyrius dominus ejus ad afficiendum probro Deum viventem, et arguet eum propter verba quæ audivit Dominus Deus tuus: Rogabis etiam & orabis pro reſiduis qui remanent. Quum itaque veniſ- 5
ſent ſervi regis Hezeciæ ad Eſaiam,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ولا يقول لكم حزقيا ان الله ينجيكم * ولا يدفع هذه المدينة في يدي ملك الموصليين * 15
* لا تسمعوا من حزقيا * هكذا يقول ملك الموصليين * ان شيتم ان تخلصوا اخرجوا الي * 16
ويأكل كل واحد من كرمه وتينه ويشرب من جبه * الي ان اتي واخذكم الي ارض مثل 17
ارضكم * ارض القمح والخمر والخبز والكروم * لا يضلكم حزقيا قايلا * الهكم ينجيكم * 18
هل نجت الهة الامم كل واحد كورته من يد ملك الموصليين * اين هو اله اماث 19
وارفاث * اين هو اله مدينة سفارويم * هل قدروا ان ينجوا سامرة من يدي * من 20
من آلهة جميع هاولاء الامم الذي نجا ارضه من يدي * حتى ينجي الله ايروشليم
من يدي * فسكتوا ولم يجاوبه احد بكلمة * لاجل ان الملك امر ان لا 21
يجاوبه احد * ودخل الياقيم الوكيل بن شلكيوا * وصمناص كاتب الجيش * 22
ويواح بن اصاف كاتب التذاكر الي حزقيا ممزقين الثياب * واخبروه بكلام
ربصاكيس *

* الفصل السابع والثلثون *

* وكان عند ما سمع الملك حزقيا * حرق ثيابه ولبس مسحا * وصعد الي بيت الرب * 1
* وارسل الياقيم الوكيل * وصمناص الكاتب * ومشايخ الكهنة * جميعهم لابسي مسوحا * 2
الي اشعياء النبي بن اموص * وقالوا له هكذا يقول حزقيا * يوم الضيق والعار والتوبيخ 3
والغضب هو نهار هذا اليوم * لان الطلق اتي للوالدة * وليس لها قوة لتلد * ليسمع الله 4
ربك كلمات ربصاكيس التي ارسلها ملك الموصليين ليعير الله الحي * وليعيره بالكلمات
التي سمعها الرب الهك * فتطلب الي الرب الهك من اجل الكلمات المتبقية * فاتوا غلمان 5
الملك حزقيا الي اشعياء *

Néve dicat vobis Hezecia, Deus quidem ſalvabit vos, & non tradet hanc 15
urbem in manus regis Aſſyriorum. Ne 16
acquieſcatis Hezeciæ: ſic dicit rex Aſſyriorum; Si cupitis ſalutem, prodite ad me: ſic comedet unuſquiſque de vinea ſua & ficulneis ſuis, bibetque de ciſterna
ſua: uſque dum veniens perducam 17
vos ad regionem ſimilem regioni veſtræ, regionem frumenti & vini, panis & vinearum. Ne vobis imponat Hezecia 18
dicendo, Deus veſter eripiet vos: num eripuêre dii gentium quilibet regionem ſuam è manu regis Aſſyriorum? Ubi- 19
nam eſt deus Amaath & Arphath? ubinam eſt deus urbis Sepharuiim? num potuerunt eripere Samariam de manibus meis? Quis eſt inter deos omnium iſta- 20
rum gentium, qui regionem ſuam eripuerit è manibus meis, ut eripiat Dominus Jeroſolymam de manibus meis? Conti- 21
cuerunt autem, & nemo reſpondit ei ne verbum quidem; quoniam rex præceperat ne quis reſponderet ei. Ingreſſi 22
ſunt ergò Eliacim œconomus Helciæ filius, Semnas ſcriba exercitûs, & Joah Aſaphi filius, ſcriptor rerum memorabilium, ad Hezeciam ſciſſis veſtibus, & indicaverunt ei verba Rabſacis.

CAP. XXXVII.

Quæ cùm audiſſet rex Hezecia, ve- 1
ſtimenta ſua laceravit, & indutus cilicio aſcendit in domū Domini. Interim Elia- 2
cimum œconomum, Semnaſem ſcribam, & ſeniores ſacerdotum, omnes ciliciis indutos miſit ad Eſaiam prophetam filium
Amoſi: Qui dixerunt ei, Sic dicit He- 3
zecia; Dies angoris, ignominiæ, increpationis, & iræ eſt hodiernus dies; nam dolores parturientem occupant, nec ad-
ſunt illi vires ad parturiendum. Au- 4
diat Deus Dominus tuus verba Rabſacis, quæ miſit rex Aſſyriorum ad conviciandum Deo viventi; & contumelioſum reddat eum propter verba quæ audivit Dominus Deus tuus: rogabis itaque Dominum Deum tuum propter
reliqua verba. Cùm ergò veniſſent pu- 5
eri regis Hezeciæ ad Eſaiam,

ישעיה : לז

Sic : *veſtrum dominum ad* dicetis Sic , Jeſahjahu eos ad dixit Et
6 וַיֹּאמֶר אֲלֵיהֶם יְשַׁעְיָהוּ כֹּה תֹאמְרוּן אֶל־אֲדֹנֵיכֶם כֹּה ׀
quibus , audiſti quæ verborum *faciebus* à timeas Ne ,Dominus dixit
אָמַר יְהוָה אַל־תִּירָא מִפְּנֵי הַדְּבָרִים אֲשֶׁר שָׁמַעְתָּ אֲשֶׁר
,ſpiritum eo in *dans* ego Ecce .me Aſſur regis pueri *blaſphemaverunt*
גִּדְּפוּ נַעֲרֵי מֶלֶךְ־אַשּׁוּר אוֹתִי : הִנְנִי נוֹתֵן בּוֹ רוּחַ 7
eum cadere faciam & : ſuam terram in revertetur & ,auditum audiet &
וְשָׁמַע שְׁמוּעָה וְשָׁב אֶל־אַרְצוֹ וְהִפַּלְתִּיו
regem invenit & ,Rabſacheh eſt reverſus Et .ſua terra in gladio in
8 בַּחֶרֶב בְּאַרְצוֹ : וַיָּשָׁב רַבְשָׁקֵה וַיִּמְצָא אֶת־מֶלֶךְ
erat profectus quòd audierat nam : Libnah adverſus præliantem Aſſur
אַשּׁוּר נִלְחָם עַל־לִבְנָה כִּי שָׁמַע כִּי נָסַע
: dicendo , Æthiopiæ rege Tirhacah *ſuper* audivit Et .Lachis de
9 מִלָּכִישׁ : וַיִּשְׁמַע עַל־תִּרְהָקָה מֶלֶךְ־כּוּשׁ לֵאמֹר
ad nuntios miſit & , audivit & : tecum *pugnandum ad* eſt Egreſſus
יָצָא לְהִלָּחֵם אִתָּךְ וַיִּשְׁמַע וַיִּשְׁלַח מַלְאָכִים אֶל־
,Jehudah regem Chizchijahu ad dicetis Sic : dicendo ,Chizchijahu
10 חִזְקִיָּהוּ לֵאמֹר : כֹּה תֹאמְרוּן אֶל־חִזְקִיָּהוּ מֶלֶךְ־יְהוּדָה
: dicendo ,*eo in fidens* tu cui tuus Deus te ſeducat Ne : dicendo
לֵאמֹר אַל־יַשִּׁאֲךָ אֱלֹהֶיךָ אֲשֶׁר אַתָּה בּוֹטֵחַ בּוֹ לֵאמֹר
audiſti tu Ecce .Aſſur regis manu in Jeruſalaim dabitur Non
11 לֹא תִנָּתֵן יְרוּשָׁלַםִ בְּיַד מֶלֶךְ אַשּׁוּר : הִנֵּה ׀ אַתָּה שָׁמַעְתָּ
: eas *anathematizando* , terris omnibus Aſſur reges fecerunt quæ
אֲשֶׁר עָשׂוּ מַלְכֵי אַשּׁוּר לְכָל־הָאֲרָצוֹת לְהַחֲרִימָם
quos ,gentium dii eas eruerunt Nunquid ? eruêris tu &
12 וְאַתָּה תִּנָּצֵל : הַהִצִּילוּ אוֹתָם אֱלֹהֵי הַגּוֹיִם אֲשֶׁר־
filios & ,Reſeph & ,Charan & , Gozan , mei patres *corruperunt*
הִשְׁחִיתוּ אֲבוֹתַי אֶת־גּוֹזָן וְאֶת־חָרָן וְרֶצֶף וּבְנֵי־
, Arpad rex & , Chamath rex Ubi ? Telaſſar in qui Heden
13 עֶדֶן אֲשֶׁר בִּתְלַשָּׂר : אַיֵּה מֶלֶךְ־חֲמָת וּמֶלֶךְ אַרְפָּד
Chizchijahu tulit Et ? Hivvah & ,Henah ,Sepharvaim civitatis rex &
14 וּמֶלֶךְ לָעִיר סְפַרְוָיִם הֵנַע וְעִוָּה : וַיִּקַּח חִזְקִיָּהוּ
domum aſcendit & : *illud* legit & , nuntiorum manu de literas
אֶת־הַסְּפָרִים מִיַּד הַמַּלְאָכִים וַיִּקְרָאֵהוּ וַיַּעַל בֵּית
oravit Et .*Domini facies ad* Chizchijahu *illud* expandit & , Domini
15 יְהוָה וַיִּפְרְשֵׂהוּ חִזְקִיָּהוּ לִפְנֵי יְהוָה : וַיִּתְפַּלֵּל
Deus exercituum Domine : dicendo ,Dominum ad Chizchijahu
16 חִזְקִיָּהוּ אֶל־יְהוָה לֵאמֹר : יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי
omnium tu ſolus Deus *ipſe* tu , Cherubim ſedens , Iſrael
יִשְׂרָאֵל יֹשֵׁב הַכְּרֻבִים אַתָּה־הוּא הָאֱלֹהִים לְבַדְּךָ לְכֹל
.terram & , cœlos feciſti tu : terræ regnorum
מַמְלְכוֹת הָאָרֶץ אַתָּה עָשִׂיתָ אֶת־הַשָּׁמַיִם וְאֶת־הָאָרֶץ :
,tuos oculos Domine aperi , audi & ,tuam aurem Domine Inclina
17 הַטֵּה יְהוָה ׀ אָזְנְךָ וּשְׁמָע פְּקַח יְהוָה עֵינֶךָ
exprobrandū ad miſit qui , Sancherib verba omnia audi & : vide &
וּרְאֵה וּשְׁמַע אֵת כָּל־דִּבְרֵי סַנְחֵרִיב אֲשֶׁר שָׁלַח לְחָרֵף
Aſſur reges vaſtaverunt , Domine , Verè .*viventi Deo*
18 אֱלֹהִים חָי : אָמְנָם יְהוָה הֶחֱרִיבוּ מַלְכֵי אַשּׁוּר אֶת־
: igni in eorum Deos *dando* Et .eorum terram & , terras omnes
19 כָּל־הָאֲרָצוֹת וְאֶת־אַרְצָם : וְנָתֹן אֶת־אֱלֹהֵיהֶם בָּאֵשׁ
,lignum , hominis manuum opus *quinimo* , ipſi dii non nam
כִּי לֹא אֱלֹהִים הֵמָּה כִּי אִם־מַעֲשֵׂה יְדֵי־אָדָם עֵץ
nos fac ſalvos noſter Deus Domine nunc Et .eos perdiderūt & ,lapis &
20 וָאֶבֶן וַיְאַבְּדוּם : וְעַתָּה יְהוָה אֱלֹהֵינוּ הוֹשִׁיעֵנוּ
Dominus tu quòd ,terræ regna omnia cognoſcāt ut :ejꝰ manu de
מִיָּדוֹ וְיֵדְעוּ כָּל־מַמְלְכוֹת הָאָרֶץ כִּי־אַתָּה יְהוָה
: dicendo ,Chizchijahu ad Amos filius Jeſahjahu miſit Et .tu ſolus
21 לְבַדֶּךָ : וַיִּשְׁלַח יְשַׁעְיָהוּ בֶן־אָמוֹץ אֶל־חִזְקִיָּהוּ לֵאמֹר
pro *me ad oráſti* quibus , Iſrael Deus Dominus dixit Sic
כֹּה־אָמַר יְהוָה אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל אֲשֶׁר הִתְפַּלַּלְתָּ אֵלַי אֶל־
.Aſſur rege Sancherib
סַנְחֵרִיב מֶלֶךְ אַשּׁוּר :

Verſio VULG. LAT.

6 Et dixit ad eos Iſaias; Hæc dicetis domino veſtro; Hæc dicit Dominus; Ne timeas à facie verborum, quæ audîſti, quibus blaſphemaverunt pueri regis Aſſyriorum me. 7 Ecce ego dabo ei ſpiritū, & audiet nuntium, & revertetur ad terram ſuam, & corruere eum faciam gladio in terra ſua. 8 Reverſus eſt autem Rabſaces, et invenit regem Aſſyriorum præliantem adverſùs Lobnam. Audierat enim quia profectus eſſet de Lachis, 9 Et audivit de Tharaca rege Æthiopiæ, dicentes; Egreſſus eſt ut pugnet contra te. Quod cùm audîſſet, miſit nuntios ad Ezechiam, dicens; 10 Hæc dicetis Ezechiæ regi Judæ, loquentes; Non te decipiat Deus tuus, in quo tu confidis, dicens; Non dabitur Jeruſalem in manu regis Aſſyriorum. 11 Ecce tu audîſti omnia, quæ fecerunt reges Aſſyriorum omnibus terris, quas ſubverterunt, & tu poteris liberari? 12 Numquid eruerunt eos dii Gentium, quos ſubverterunt patres mei, Gozam, & Haram, et Reſeph, & filios Eden, qui erant in Thalaſſar: 13 Ubi eſt rex Emath, & rex Arphad, et rex urbis, Sepharvaim, Ana, et Ava? 14 Et tulit Ezechias libros de manu nuntiorum, et legit eos, et aſcendit in domum Domini, & expandit eos Ezechias coram Domino. 15 Et oravit Ezechias ad Dominum, dicens; 16 Domine exercituum Deus Iſrael, qui ſedes ſup Cherubim: tu es Deus ſolus omnium regnorū terræ, tu feciſti cœlum et terram. 17 Inclina, Domine, aurem tuam, et audi: aperi, Domine, oculos tuos, & vide: & audi omnia verba Sennacherib, quæ miſit ad blaſphemandum Deum viventem. 18 Verè enim, Domine, deſertas fecerunt reges Aſſyriorum terras, & regiones earum. 19 Et dederunt deos earum igni: non enim erant Dii, ſed opera manuum hominum, lignum et lapis: et comminuerunt eos. 20 Et nunc, Dñe Deus noſter, ſalva nos de manu ejus: et cognoſcant omnia regna terræ, quia tu es Dominus ſolus. 21 Et miſit Iſaias filius Amos ad Ezechiam, dicens; Hæc dicit Dominus Deus Iſrael, Pro quibus rogâſti me de Sennacherib rege Aſſyriorum:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

6 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς Ἡσαΐας, Οὕτως ἐρεῖτε πρὸς τὸν κύριον ὑμῶν, Τάδε λέγει κύριος, Μὴ φοβηθῇς ἀπὸ τῶν λόγων ὧν ἤκουσας, οὓς ὠνείδισάν με οἱ πρέσβεις βασιλέως Ἀσσυρίων. 7 Ἰδοὺ ἐγὼ (ζ) ἐμβάλλω εἰς αὐτὸν πνεῦμα, ϗ ἀκούσας ἀγγελίαν, ἀποστραφήσεται εἰς τὴν χώραν αὐτοῦ, ϗ πεσεῖται μαχαίρᾳ ἐν τῇ γῇ αὐτοῦ. 8 Καὶ ἀπέστρεψε (η) Ῥαβσάκης, ϗ κατέλαβε τὸν βασιλέα Ἀσσυρίων πολιορκοῦντα Λοβνάν· ϗ ἤκουσεν ὅτι ἀπῆρεν ἀπὸ Λαχίς. 9 Καὶ ἐξῆλθε Θαρακὰ βασιλεὺς Αἰθιόπων πολιορκῆσαι αὐτόν. ϗ ἀκούσας ἀπέστρεψε, ϗ (θ) ἀπέστειλεν ἀγγέλους πρὸς Ἐζεκίαν, λέγων, 10 Οὕτως ἐρεῖτε Ἐζεκίᾳ βασιλεῖ τῆς Ἰουδαίας, Μή σε ἀπατάτω ὁ θεός σου, ἐφ᾽ ᾧ (ι) πέποιθας ἐπ᾽ αὐτῷ, λέγων, Οὐ μὴ παραδοθῇ Ἱερουσαλὴμ (κ) ἐν χειρὶ βασιλέως Ἀσσυρίων. 11 (λ) Σὺ οὐκ ἤκουσας ἃ ἐποίησαν βασιλεῖς Ἀσσυρίων, πᾶσαν τὴν γῆν ὡς ἀπώλεσαν; (μ) ϗ σὺ ῥυσθήσῃ; 12 Μὴ ἐῤῥύσαντο αὐτοὺς οἱ θεοὶ τῶν ἐθνῶν, οὓς (ν) ἀπώλεσαν οἱ πατέρες μου, τήν τε Γωζὰν, ϗ Χαῤῥὰν, ϗ (ξ) Ῥαφὲθ, αἵ εἰσιν ἐν χώρᾳ (ο) Θεεμάθ; 13 Ποῦ εἰσι βασιλεῖς Ἐμὰθ; ϗ ποῦ Ἀρφάθ; ϗ ποῦ πόλεως Ἐπφαρουαὶμ, Ἀναγουγάνα; 14 Καὶ ἔλαβεν Ἐζεκίας τὸ βιβλίον παρὰ τῶν ἀγγέλων, (π) ϗ ἀνέγνω αὐτὸ, ϗ ἀνέβη εἰς οἶκον κυρίου, 15 ϗ ἤνοιξεν αὐτὸ ἐναντίον κυρίου. Καὶ προσηύξατο 16 Ἐζεκίας πρὸς κύριον, λέγων, Κύριε Σαβαὼθ ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, ὁ καθήμενος ἐπὶ τῶν χερουβὶμ, Σὺ (ρ) εἶ ὁ θεὸς μόνος πάσης βασιλείας τῆς οἰκουμένης, Σὺ ἐποίησας τὸν οὐρανὸν ϗ τὴν γῆν· 17 (σ) Κλῖνον κύριε τὸ οὖς σου, εἰσάκουσον κύριε, ἄνοιξον κύριε τοὺς ὀφθαλμούς σου, εἴσβλεψον κύριε, ϗ ἴδε τοὺς λόγους Σενναχηρεὶμ, οὓς ἀπέστειλεν ὀνειδίζειν θεὸν ζῶντα. 18 Ἐπ᾽ ἀληθείας γὰρ (τ) κύριε ἠρήμωσαν βασιλεῖς Ἀσσυρίων τὴν οἰκουμένην ὅλην, ϗ τὴν χώραν αὐτῶν, 19 Καὶ (') ἀνέβαλον τὰ εἴδωλα αὐτῶν εἰς τὸ πῦρ· οὐ γὰρ θεοὶ ἦσαν, ἀλλὰ ἔργα χειρῶν ἀνθρώπων, ξύλα ϗ λίθοι· ϗ (υ) ἀπώσαντο αὐτούς. 20 Νῦν δὲ κύριε ὁ θεὸς ἡμῶν σῶσον ἡμᾶς ἐκ χειρὸς (φ) αὐτοῦ, ἵνα γνῷ πᾶσα βασιλεία τῆς γῆς, ὅτι σὺ εἶ (χ) ὁ θεὸς μόνος. 21 Καὶ ἀπεστάλη Ἡσαΐας υἱὸς Ἀμὼς πρὸς Ἐζεκίαν, ϗ εἶπεν αὐτῷ, Τάδε λέγει κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, Ἤκουσα ἃ προσηύξω πρὸς μὲ περὶ Σενναχηρεὶμ βασιλέως Ἀσσυρίων.

6 Et dixit eis Eſaias; Sic dicetis ad dominum veſtrum; Hæc dicit Dominus; Ne timeas à verbis, quæ audîſti; quibus exprobraverunt me legati regis Aſſyriorum. 7 Ecce ego immitto in eum ſpiritum: & audiens nuntium revertetur in regionem ſuam, & cadet gladio in terra ſua. 8 Et revertit Rabſaces, & invenit regem Aſſyriorum oppugnantem Lobnam: & audiverat, quia promoverat de Lachis. 9 Et egreſſus eſt Tharaca rex Æthiopum ad oppugnandum eum. Et audiens revertit, & miſit nuntios ad Ezeciam, dicens; 10 Sic dicetis Ezeciæ regi Judææ; Non te decipiat Deus tuus, in quo confidiſti in eo, dicens; Non tradetur Hieruſalem in manu regis Aſſyriorum. 11 Tu non audîſti, quæ fecerunt reges Aſſyriorum, univerſam terram (b) quomodò diſperdiderunt? & tu liberaberis? 12 Nunquid eruerunt eos dii gentium, quos diſperdiderunt patres mei, Gozan, & Charran, & Rapheth, quæ ſunt in regione Theemath? 13 Ubi ſunt reges Emath? & ubi Arphath, & ubi civitatis Eppharuæm (c) Anagugana? 14 Et accepit Ezecias librum à nuntiis, & legit illum: & aſcendit in domum Domini, & aperuit illum ante Dominum. 15 Et oravit Ezecias ad Dominum, dicens; 16 Dominus Sabaoth Deus Iſrael, qui ſedes ſuper Cherubim, tu es Deus ſolus omnis regni orbis terrarum: tu feciſti cœlum, & terram. 17 Inclina, Domine, aurem tuam; exaudi, Domine; aperi, Domine, oculos tuos: inſpice, Domine, & vide verba Sennacherim, quæ miſit ad exprobrandum Deum viventem. 18 In veritate enim, Domine, deſolaverunt reges Aſſyriorum totum orbem terræ, & regionem eorum, 19 Et injecerunt idola eorum in ignem. Non enim Dii erant, ſed opera manuum hominum, ligna, & lapides: & (d) abjecerunt eos. 20 Nunc autem, Domine Deus noſter, ſalva nos de manu ejus; ut cognoſcat omne regnum terræ, quia tu es Deus ſolus. 21 Et miſſus eſt Eſaias filius Amos ad Ezeciam, & dixit ei; Hæc dicit Dominus Deus Iſrael; Audivi, quæ oráſti ad me de Sennacherim rege Aſſyriorum.

MS.A. (ζ) ἐμβαλῶ (η) Ῥαψάκης, ϗ κατέλαβεν πολιορκοῦντα τὸν βασιλέα Λοβνά· ϗ ἤκουσεν βασιλεὺς Ἀσσυρίων ὅτι ἐξῆλθεν Θαραθὰ (θ) * ἀπέστρεψεν (ι) Σὺ πεποιθὼς εἶ ἐπ᾽ αὐτῷ, (κ) εἰς χεῖρας (λ) Ἢ οὐκ ἤκουσας (μ) Μὴ ἐῤῥύσαντο (ν) οἱ πατέρες μου ἀπώλεσαν, (ξ) Ῥαφεὶς, (ο) Θαιμάδ; Ποῦ εἰσιν οἱ βασιλεῖς Ἀμὰρ ϗ Ἀρφάθ; ϗ πόλεως Σεπφαρεὶμ, Ἀναεγγουγανά; (π) ϗ ἤνοιξεν αὐτὸ ἐναντίον (ρ) θεὸς μόνος εἶ (σ) Εἰσάκουσον κύριε, εἴσβλεψον κύριε, ϗ ἴδε τοὺς λόγους, οὓς ἀπέστειλεν Σενναχηρεὶμ ὀνειδίζειν (τ) ἠρήμωσαν (') ἐνέβαλον (υ) ἀπώλεσαν αὐτούς. Σὺ δὲ κύριε ὁ θεὸς ἡμῶν (φ) αὐτῶν, (χ) θεὸς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

6 וַאֲמַר לְהוֹן יְשַׁעְיָה כְּדֵין תֵּימְרוּן לְרִבּוֹנְכוֹן כִּדְנָן אֲמַר יְיָ לָא תִדְחַל מִן קֳדָם פִּתְגָּמַיָּא דִּי
7 שְׁמַעְתָּא דְּחַסִּדוּ עוּלֵימֵי מַלְכָּא דְאַתּוּר קֳדָמַי : הָא אֲנָא יָהֵיב בֵּיהּ רוּחָא וְיִשְׁמַע בְּסוֹרְתָא
8 וִיתוּב לְאַרְעֵיהּ וְאַפֵּילְנֵיהּ בְּחַרְבָּא בְּאַרְעֵיהּ : וְתָב רַבְשָׁקֵה וְאַשְׁכַּח יָת מַלְכָּא דְאַתּוּר מְגִיחַ
9 קְרָבָא עַל לִבְנָה אֲרֵי שְׁמַע אֲרֵי נְטַל מִלָּכִישׁ : וּשְׁמַע עַל תִּרְהָקָא מַלְכָּא דְכוּשׁ לְמֵימַר
10 נְפַק לְאַגָּחָא קְרָבָא עִמָּךְ וּשְׁמַע וּשְׁלַח אִזְגַּדִּין לְוַת חִזְקִיָּה לְמֵימַר : כְּדֵין תֵּימְרוּן לְחִזְקִיָּהוּ
מֶלֶךְ שִׁבְטָא דְּבֵית יְהוּדָה לְמֵימַר לָא יַטְעֵנָּךְ אֱלָהָךְ דִּי אַתְּ רְחִיץ בֵּיהּ לְמֵימַר לָא תִתְמְסַר
11 יְרוּשְׁלֶם בְּיַד מַלְכָּא דְאַתּוּר : הָא אַתְּ שְׁמַעְתָּא דַּעֲבַדוּ מַלְכֵי אַתּוּר לְכָל מְדִינָתָא
12 לְגַמָּרוּתְהוֹן וְאַתְּ מְדַמֵּי לְאִשְׁתֵּיזָבָא : הֲשֵׁיזָבָא יָתְהוֹן דַּחֲלַת עַמְמַיָּא דְּחַבִּילוּ אֲבָהָתַי יָת
13 גּוֹזָן וְיָת חָרָן וְרֶצֶף וּבְנֵי עֶדֶן דְּבִיתְלַסַּר : אָן מַלְכָּא דַחֲמָת וּמַלְכָּא דְאַרְפָּד וּמַלְכָּא
14 דִּלְקַרְתָּא סְפַרְוָיִם הֲלָא טַלְטְלִנּוּן וְאַגְלִיאִנּוּן : וּנְסֵיב חִזְקִיָּה יָת אִגְּרָתָא מִיַּד אִזְגַּדַּיָּא
15 וּקְרָא חֲדָא מִנְּהוֹן וּסְלִיק לְבֵית מַקְדְּשָׁא דַיְיָ וּפַרְסֵיהּ חִזְקִיָּה קֳדָם יְיָ : וְצַלִּי חִזְקִיָּה קֳדָם
16 יְיָ לְמֵימַר : יְיָ אֱלָהָא צְבָאוֹת אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל דִּשְׁכִנְתֵּיהּ שַׁרְיָא עֵיל מִן כְּרוּבַיָּא אַתְּ הוּא
17 יְיָ וְלֵית בַּר מִנָּךְ לְכֹל מַלְכְּוָת אַרְעָא אַתְּ עֲבַדְתָּ יָת שְׁמַיָּא וְיָת אַרְעָא : גְּלֵי קֳדָמָךְ יְיָ וְדוּן
וּשְׁמִיעַ קֳדָמָךְ יְיָ וְאִתְפְּרַע וַעֲבֵיד פּוּרְעָן עַל כָּל פִּתְגָּמֵי סַנְחֵרִיב דִּשְׁלַח לְחַסָּדָא עַמָּא דַיְיָ
18 19 קַיָּמָא : בְּקוּשְׁטָא יְיָ אַחֲרִיבוּ מַלְכֵי אַתּוּר יָת כָּל מְדִינָתָא וְיָת אַרְעֲהוֹן : וּמוֹקְדִין יָת
טַעֲוָתְהוֹן בְּנוּרָא אֲרֵי לָא טַעֲוָן דְּאִית בְּהוֹן צְרוֹךְ אִנּוּן אֱלָהֵין עוֹבַד יְדֵי אֱנָשָׁא אָעָא וְאַבְנָא
20 וְאַבְדוּנוּן : וּכְעַן יְיָ אֱלָהָנָא פָּרְקָנָא מִן יְדֵיהּ וְיִדְעוּן כָּל מַלְכְּוָת אַרְעָא אֲרֵי אַתְּ יְיָ לֵית בַּר
21 מִנָּךְ : וּשְׁלַח יְשַׁעְיָה בַר אָמוֹץ לְוַת חִזְקִיָּה לְמֵימַר כִּדְנָן אֲמַר יְיָ אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל דִּבְעֵיתָא
מִן קֳדָמַי עַל סַנְחֵרִיב מַלְכָּא דְאַתּוּר :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

6 Et dixit eis Eſaias, Hæc dicetis domino veſtro: Hæc dicit Dñs, Ne timeas à facie verborū quæ audiſti, quibꝰ exprobraverunt pueri regis Aſſyriæ corā me. 7 Ecce ego dabo in eum ſpiritū, & audiet nuntiū, & revertetur in terram ſuā; & cadere eum faciā in gladio in terra ſua. 8 Et reverſus eſt Rabſaces, & invenit regem Aſſyriæ præliantē contra Lobnā; audierat enim profectus eſſet de Lachis. 9 Et audivit de Taracha rege Æthiopiæ dicentes, Egreſſus eſt ut ineat bellū tecum: & audivit, & miſit nuntios ad Ezechiam, dicens. 10 Sic dicetis Ezechiæ regi tribus domꝰ Juda, dicendo: Ne ſeducat te Deus tuus, in quo tu confidis, dicens: Non tradetur Jeruſalem in manū regis Aſſyriorū. 11 Ecce tu audiſti quid fecerint reges Aſſyrii omnibus provinciis ut diſperderent eas, & te evaſurū putas? 12 Nunquid liberaverunt eos dii populorū, quos diſſipaverunt patres mei; Gozan, & Haran, & Reſeph, & filios Eden, qui erant in Thelaſar? 13 Ubi eſt rex Emath & rex Arphad, & rex civitatis Sepharvaim? nónne tranſmigrare fecit eos, & in captivitatem duxit? 14 Et tulit Ezechias epiſtolas de manu nuntiorum, & legit unam ex eis, & aſcendit in domum ſanctuarii Domini; & expandit eam Ezechias coram Domino. 15 Et oravit Ezechias coram Domino: dicens. 16 Domine *Deus* exercituum Deus Iſrael, cujus majeſtas habitat ſuper Cherubim; tu es *Dominus*, & nullus eſt præter te, in omnibus regnis terræ: tu feciſti cœlos & terram. 17 Manifeſtum eſt coram te Domine, & judica; & auditum eſt coram te Domine, & ulciſcere, & fac vindictam ſuper omnia verba Senacherib qui miſit ad exprobrandum populum Dei vivi. 18 Verè Domine deſertas fecerunt reges Aſsyrii omnes provincias & terras earum. 19 Et incenderunt idola earum igni; idola enim ſunt in quibus nulla eſt utilitas, ſed ſunt opera manuum hominum, lignum & lapis, & diſperderunt ea. 20 Et nunc Domine Deus noſter, ſalva nos de manu ejus, & ſcient omnia regna terræ, quia tu es Dominus, & nullus eſt præter te. 21 Et miſit Eſaias filius Amos ad Ezechiam, dicens: Hæc dicit Dominus Deus Iſrael, Quia rogâſti à facie mea ſuper Senacherib regem Aſsyriæ:

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ ܐܫܥܝܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪܘ ܠܡܪܟܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܠܐ ܬܕܚܠ ܡܢ ܡ̈ܠܐ 6
ܕܫܡܥܬ. ܕܓܕܦܘ ܥܠܝ ܛܠܝ̈ܐ ܕܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. * ܗܐ ܝܗܒ ܐܢܐ ܒܗ ܪܘܚܐ. 7
ܘܢܫܡܥ ܫܘܥܐ. ܘܢܗܦܘܟ ܠܐܪܥܗ. ܘܐܪܡܝܘܗܝ ܒܚܪܒܐ ܒܐܪܥܗ. * ܘܗܦܟ ܪܒ ܫܩܐ. 8
ܘܐܫܟܚܗ ܠܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ ܟܕ ܡܬܟܬܫ ܥܠ ܠܒܢܐ. ܟܕ ܫܡܥ ܕܫܩܠ ܡܢ ܠܟܝܫ. * ܘܫܡܥ 9
ܥܠ ܬܪܗܩ ܡܠܟܐ ܕܟܘܫ. ܕܢܦܩ ܠܡܬܟܬܫܘ ܥܡܗ. ܘܫܡܥ. ܘܫܕܪ ܐܝܙܓܕܐ ܠܘܬ ܚܙܩܝܐ.
* ܘܗܟܢܐ ܐܡܪܘ ܠܚܙܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܟܕ ܐܡܪ. ܠܐ ܢܛܥܝܟ ܐܠܗܟ ܕܬܟܝܠ ܐܢܬ 10
ܥܠܘܗܝ. ܘܐܡܪ ܐܢܬ ܕܠܐ ܡܫܬܠܡܐ ܐܘܪܫܠܡ ܒܐܝܕܝܗܘܢ ܕܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. * ܗܐ ܐܢܬ ܫܡܥܬ 11
ܟܠ ܕܥܒܕܘ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ ܠܟܠܗܘܢ ܐܪ̈ܥܬܐ. ܠܡܚܪܒܘܬܗܝܢ. ܘܐܢܬ ܡܬܦܨܐ ܐܢܬ.
* ܕܠܡܐ ܦܨܝܘ ܐܠܗܝ̈ܗܘܢ ܕܥܡ̈ܡܐ ܕܚܪܒܘ ܐܒܗ̈ܝ. ܠܓܘܙܢ. ܘܠܚܪܢ. ܘܠܪܨܦ. ܘܠܒܢ̈ܝ 12
ܥܕܢ. ܕܒܬܠܣܪ. * ܐܝܟܘ ܡܠܟܐ ܕܚܡܬ. ܘܡܠܟܐ ܕܐܪܦܕ. ܘܡܠܟܐ ܕܡܕܝܢܬܐ ܣܦܪܘܝܡ. ܘܗܢܥ 13
ܘܥܘܐ. * ܘܢܣܒ ܚܙܩܝܐ ܐܓܪ̈ܬܐ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܐܝܙܓܕ̈ܐ. ܘܩܪܐ ܐܢܝܢ. ܘܣܠܩ ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. 14
ܘܦܪܣ ܐܢܝܢ ܚܙܩܝܐ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. * ܘܨܠܝ ܚܙܩܝܐ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܐܡܪ. * ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ 15 16
ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܕܝܬܒ ܥܠ ܟܪܘܒܐ. ܐܢܬ ܗܘ ܐܠܗܐ ܒܠܚܘܕܝܟ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܡܠܟܘܬܐ
ܕܐܪܥܐ. ܐܢܬ ܥܒܕܬ ܫܡܝܐ ܘܐܪܥܐ. * ܪܟܢ ܡܪܝܐ ܐܕܢܟ ܘܫܡܥ. ܦܬܚ ܡܪܝܐ ܥܝܢܝܟ 17
ܘܚܙܝ. ܘܫܡܥ ܡ̈ܠܐ ܕܣܢܚܪܝܒ. ܕܫܕܪ ܠܡܚܣܕܘ ܠܐܠܗܐ ܚܝܐ. * ܫܪܝܪܐܝܬ ܡܪܝܐ. 18
ܚܪܒܘ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ ܠܟܠܗܘܢ ܐܪ̈ܥܬܐ. * ܘܐܪܡܝܘ ܐܠܗܝ̈ܗܘܢ ܒܢܘܪܐ. ܡܛܠ 19
ܕܠܐ ܗܘܘ ܐܠܗ̈ܐ. ܐܠܐ ܥܒܕ ܐܝ̈ܕܝܐ ܕܒܢܝ̈ܢܫܐ. ܩܝܣܐ ܘܟܣܦܐ ܘܟܐܦܐ. ܘܐܘܒܕܘ
ܐܢܘܢ. * ܘܗܫܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. ܦܪܘܩܝܢ ܡܢ ܐܝܕܘܗܝ. ܘܢܕܥܘܢ ܟܠܗܘܢ ܡܠܟܘܬܐ 20
ܕܐܪܥܐ. ܕܐܢܬ ܗܘ ܐܠܗܐ ܒܠܚܘܕܝܟ. * ܘܐܫܬܠܚ ܒܪ ܐܡܘܨ ܐܫܥܝܐ ܠܘܬ ܚܙܩܝܐ. 21
ܘܐܡܪ ܠܗ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܟܠ ܕܨܠܝܬ ܩܕܡܝ ܥܠ
ܣܢܚܪܝܒ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. ܫܡܥܬ.

* Dixit eis Eſaia, Sic dicite domino veſtro; Ita 6
dicit Dominus, ne te terreant verba quæ audiſti,
quibus blaſphemârunt coram me nuntii regis Aſſyriæ. Ecce *talem* ei impoſiturus 7
ſum ſpiritum, ut auditâ famâ revertatur in
terram ſuam: & gladio proſternam eum in
terra ſua. Rab-ſace reverſus, invenit regem 8
Aſſyriæ oppugnantem Lebnam (audiverat
enim eum è Lachis profectum; Audiverátq, 9
de Tarhac rege Æthiopiæ, quòd proceſſiſſet
ad pugnandum contra eum) Hoc audito, miſit nuntios ad Hezeciam *hiſce mandatis.* Sic 10
alloquimini Hezeciam regem Judæ, dicendò,
Ne te decipiat Deus tuus cui tu confiſus dicis,
Non tradetur Jeruſalem in manus regis
Aſſyriæ. Ecce tu audîſti quicquid fecerunt 11
reges Aſſyriæ omnibus terris, deſtruentes eas:
& tu eripereris? Num eripuerunt dii gen- 12
tiū quas interfecerunt patres mei, Gozanem,
Haranem, Raſaphum, & incolas Adanis quæ
eſt in Dalaſar? Ubi eſt rex Hemath, rex Re- 13
phad, rex civitatis Sepharvim, Naæ, & Avæ?
Acceptis ergò Hezecia literis de manu lega- 14
torum, iiſque perlectis, aſcendit in domum
Domini, & explicavit eas Hezecia coram
Domino, Oravítque Hezecia coram Domi- 15
no, & ait; Domine potentiſſime, Deus Iſra- 16
elis, ſedens ſuper Cherubim, tu es Deus ſolus
ſuper omnia regna terræ, tu feciſti cœlum ac
terram. Inclina Domine aurem tuam, & au- 17
di; aperi Domine oculos tuos, & vide; audi
inquam verba Sanheribi, qui miſit ad probris afficiendū Deum viventem. Reverà Do- 18
mine, vaſtaverunt reges Aſſyriæ cunctas regiones, Et tam terram quàm deos earum igne 19
combuſſerunt; quia non erant dii, ſed opus
manuum humanarum, ex ligno, argento, aut
lapide, ideo perdiderunt eos. Nunc itaque 20
Domine Deus noſter, eripe nos de manibus
illius, ut cognoſcant omnia regna terræ te
ſolum eſſe Deum. Tunc miſſus eſt Amoſi fi- 21
lius Eſaia ad Hezeciam, & dixit ei: Sic dicit Dominus potentiſſimus, Deus Iſraelis;
Quicquid orâſti me contra Sanheribum regem Aſſyriæ, exaudivi.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* فقال لهم اشعيا * هكذا قولوا لسيدكم * هكذا يقول الرب * لا تخف من الكلمات التي سمعتها * 6
التي عيروني بها رسل ملك الموصليين * ها انا القي حوله ريحا ويسمع خبرا * ويرجع الى 7
كورته ويسقط بالسيف في ارضه * ورجع ربصاكيس وادرك ملك الموصليين محاصرا لبنا * 8
* وسمع ملك الموصليين ان تارانا ملك الحبوش خرج ليحاصره * سمع ورجع * وارسل مخبرين 9
لحزقيا قايلا * قولوا لحزقيا ملك اليهودية * لا يخدعك الهك الذي انت متوكل عليه * قايلا 10
ايروشليم لا تدفع في يد ملك الموصليين * قد سمعت بما صنعت ملوك الموصليين بكل 11
الارض كيف اهلكوها * وانت تنجوا * هل نجتهم الهة الامم الذين اهلكهم ابائي * عوزان 12
وحران وراصاف وعدان التي هي في كورة تامان * اين هي ملوك اماث وارفاث وقرية 13
سفاروييم وناع وعاوا * واخذ حزقيا الكتاب من الرسل وقراه * وصعد الى بيت الرب وفتحه امام 14
الرب * * صلاة حزقيا ملك يهودا * * وصلى حزقيا امام الرب قايلا * يا رب 15 16
الجيوش اله اسرايل الجالس على الساروبيم * انت هو وحدك الاله على كل مملكة في المسكونة *
انت صنعت السماء والارض * امل يا رب سمعك * اسمع يا رب * افتح يا رب الحاظك * اطلع 17
وانظر الكلمات التي ارسلها سنحاريب ملك الموصليين ليعير الله الحي *
* الاصحاح الثامن عشر * * بالحق ان ملوك الموصليين اخربوا المسكونة كلها وكورهم * 18
* ووضعوا اوثانهم بالنار لانها ليست الهة لكن عمل ايدي البشر اخشاب وحجارة * واهلكوهم * 19
* والان انت ايها الرب الهنا خلصنا من يدهم * ليعلم كل مملكة الارض انك انت هو الله 20
وحدك * وارسل اشعيا بن اموص الى حزقيا وقال له * هكذا يقول الرب اله اسرايل * استجبت 21
ما صليت به الي من اجل سنحاريب ملك الموصليين *

* *Ait illis Eſaia, Sic dicite domino veſtro;* 6
*Sic dicit Dominus, Ne timeas ob verba
quæ audîſti, quibus convitiati ſunt mihi
legati regis Aſſyriorum. En circunjecturus* 7
*ſum illi ventum, ut auditâ famâ redeat
in regionem ſuam, & gladio corruat in
terra ſua. Itaque reverſus Rabſaces, aſ-* 8
*ſecutus eſt regem Aſſyriorum obſidentem
Lebnam. Audiens autem rex Aſſyriorum* 9
*quòd Tharatha rex Abiſſinorum prodiiſſet ad obſidendum eum, audiens inquam,
reverſus eſt, miſitque nuntios ad Hezeciam, dicens; Dicite Hezeciæ regi Judææ,* 10
*Ne te decipiat Deus tuus cui tu confidis,
dicens; Jeruſalem nequaquam tradendam
in manum regis Aſſyriorum. Jam audi-* 11
*viſti quid fecerint reges Aſſyriorum toti
terræ, quomodo perdiderint eam: & tu
evaderes? Num dii gentium quas perdi-* 12
*derunt patres mei, liberârunt eas? Gozanem, Harranem, Raſaphum, & Adanem
quæ eſt in regione Thamanitica? Ubinam* 13
ſunt reges Amaathæ, Arphathæ, urbis Sepharuiim, & Niæ, & Avæ? Cúmque ac- 14
*cepiſſet Hezecia epiſtolam à nuntiis & legiſſet eam, aſcendit in domum Domini, &
explicavit eam coram Domino:*

Oratio Hezeciæ regis Judæ.

Oravitque Hezecia Dominum, dicens; 15
O Domine exercituum, Deus Iſraelis, qui 16
*ſedes ſuper Cherubim, tu ſolus Deus
praes omnibus regnis quæ ſunt in orbe
terrarum: tu cœlum terrámque condidiſti. Præbe O Domine auditum tuum,* 17
*audi O Domine; aperi O Domine oculos
tuos, inſpice, & conſidera verba quæ miſit Senharib rex Aſſyriorum ad afficiendum contumeliis Deum viventem.*

Textus decimus octavus.

Verum quidem eſt reges Aſſyriorum de- 18
ſtruxiſſe totum orbem terrarum & regiones earum, Et poſuiſſe idola earum in 19
*ignem (quippe quæ non eſſent dii, ſed opus
manuum mortalium, ligna nimirum lapidé(que) & eas perdidiſſe. Quare tu* 20
*O Domine Deus noſter, libera nos de manu
eorum, ut ſciat totum regnum terræ te ſolum eſſe Deum. Mittens autem Eſaia fi-* 21
*lius Amoſi ad Hezeciam, dixit ei; Sic ait
Dominus Deus Iſraelis, Exaudivi quod à
me rogâſti de Sanheribo rege Aſſyriorum.*

te ſubſannavit , te Deſpexit :eũ ſuꝑ Dñs eſt locutus quod verbum Hoc
22 זֶה הַדָּבָר אֲשֶׁר־דִּבֶּר יְהוָה עָלָיו בָּזָה לְךָ לָעֲגָה לְךָ
Quem .Jeruſalaim filia , movit caput te poſt , Sijon filia virgo
23 בְּתוּלַת בַּת־צִיּוֹן אַחֲרֶיךָ רֹאשׁ הֵנִיעָה בַּת יְרוּשָׁלָםִ: אֶת־מִי
: vocem exaltâſti quem contra &,affeciſti *convitiis* &,affeciſti probris
חֵרַפְתְּ וְגִדַּפְתְּ וְעַל־מִי הֲרִימוֹתָה קּוֹל
manum Per .Iſrael Sanctum contra ? tuos oculos altitudinem levâſti &
24 וַתִּשָּׂא מָרוֹם עֵינֶיךָ אֶל־קְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל: בְּיַד
multitudine In : dixiſti & , Dominum affeciſti probris tuorum ſervorum
עֲבָדֶיךָ חֵרַפְתָּ אֲדֹנָי וַתֹּאמֶר בְּרֹב
ſuccidam & : Lebanon latera,montium altitudinem aſcendi ego *mei currus*
רִכְבִּי אֲנִי עָלִיתִי מְרוֹם הָרִים יַרְכְּתֵי לְבָנוֹן וְאֶכְרֹת
altitudinem introibo & , ejus *abietum electionem* ,ejus cedrorum *ſtaturam*
קוֹמַת אֲרָזָיו מִבְחַר בְּרֹשָׁיו וְאָבוֹא מְרוֹם
, aquas bibi & *excidi* Ego .ejus Carmeli ſaltum ,ejus *extremitatis*
25 קִצּוֹ יַעַר כַּרְמִלּוֹ: אֲנִי קַרְתִּי וְשָׁתִיתִי מָיִם
audiſti Nonne.*munitionis* rivos omnes meorum pedũ planta in ſiccabo &
26 וְאַחְרִב בְּכַף־פְּעָמַי כֹּל יְאֹרֵי מָצוֹר: הֲלוֹא־שָׁמַעְתָּ
nunc *: eam* plaſmavi *&* ,*quondam* diebus à , feci *eam* longe à
לְמֵרָחוֹק אוֹתָהּ עָשִׂיתִי מִימֵי קֶדֶם וִיצַרְתִּיהָ עַתָּה
civitates ,deſtructionum acervos deſolandum ad erit & ,*illam* adduxi
הֲבֵאתִיהָ וּתְהִי לְהַשְׁאוֹת גַּלִּים נִצִּים עָרִים
, ſunt contriti , manu abbreviati earum Habitatoreſque ? munitas
27 בְּצֻרוֹת: וְיֹשְׁבֵיהֶן קִצְרֵי־יָד חַתּוּ
,tectorũ herba,germinis olus & ,agri herba Fuerunt:affecti ſunt pudore &
וָבֹשׁוּ הָיוּ עֵשֶׂב שָׂדֶה וִירַק דֶּשֶׁא חֲצִיר גַּגּוֹת
tuum ingredi & ,*tuum egredi &* ,*tuum ſedere* Et .ſegetem ante uredo &
28 וּשְׁדֵמָה לִפְנֵי קָמָה: וְשִׁבְתְּךָ וְצֵאתְךָ וּבוֹאֲךָ
tuum otium & ,me contra *te iraſci Pro* .me in tuum *iraſci* & , novi
29 יָדָעְתִּי וְאֵת הִתְרַגֶּזְךָ אֵלָי: יַעַן הִתְרַגֶּזְךָ אֵלַי וְשַׁאֲנַנְךָ
meum *frænum &* ,*tua nari* in meum hamum ponam & ,meas aures in aſcendit
עָלָה בְאָזְנָי וְשַׂמְתִּי חַחִי בְּאַפֶּךָ וּמִתְגִּי
tibi hoc Et .*ea in* veniſti *qua* viam per te faciam redire &,tuis labiis in
30 בִּשְׂפָתֶיךָ וַהֲשִׁבֹתִיךָ בַּדֶּרֶךְ אֲשֶׁר־בָּאתָ בָּהּ: וְזֶה־לְּךָ
: repullulans ſecundo anno in & ,*naſcens ſponte* anno *Comedere* : ſignum
הָאוֹת אָכוֹל הַשָּׁנָה סָפִיחַ וּבַשָּׁנָה הַשֵּׁנִית שָׁחִיס
comedite & vineas plantate &,metite &,ſeminate tertio anno in &
וּבַשָּׁנָה הַשְּׁלִישִׁית זִרְעוּ וְקִצְרוּ וְנִטְעוּ כְרָמִים וְאָכוֹל
radicem , *reſiduæ* Jehudah domus evaſio adjiciet Et.earum fructum
31 פִּרְיָם: וְיָסְפָה פְּלֵיטַת בֵּית־יְהוּדָה הַנִּשְׁאָרָה שֹׁרֶשׁ
egreditur Jeruſalaim de Quia .ſurſum fructum faciet & , deorſum
32 לְמָטָּה וְעָשָׂה פְרִי לְמָעְלָה: כִּי מִירוּשָׁלַםִ תֵּצֵא
faciet exercituum Domini *Zelus* .Sijon monte de evaſio & , *reliquum*
שְׁאֵרִית וּפְלֵיטָה מֵהַר צִיּוֹן קִנְאַת יְהוָה צְבָאוֹת תַּעֲשֶׂה־
in introibit Non:Aſſur *regem ad* Dominus dixit ſic Propterea .hoc
33 זֹּאת: לָכֵן כֹּה־אָמַר יְהוָה אֶל־מֶלֶךְ אַשּׁוּר לֹא יָבוֹא אֶל־
,clypeo eã præoccupabit non &:ſagittã ibi jaciet non & , hanc civitatem
הָעִיר הַזֹּאת וְלֹא־יוֹרֶה שָׁם חֵץ וְלֹא־יְקַדְּמֶנָּה מָגֵן
: revertetur *ea in* venit *qua via* In .aggerem eam juxta effundet non &
34 וְלֹא־יִשְׁפֹּךְ עָלֶיהָ סֹלְלָה: בַּדֶּרֶךְ אֲשֶׁר־בָּא בָּהּ יָשׁוּב
ſuper protegam Et.Dominꝰ dixit,ingredietur non hanc civitatem in &
35 וְאֶל־הָעִיר הַזֹּאת לֹא יָבוֹא נְאֻם־יְהוָה: וְגַנּוֹתִי עַל־
.meũ ſervum David propter &,me propter ,eã *ſervandũ ad* ,hanc civitatem
הָעִיר הַזֹּאת לְהוֹשִׁיעָהּ לְמַעֲנִי וּלְמַעַן דָּוִד עַבְדִּי:
centum Aſſur *caſtrametatione in* percuſſit &,Domini angelꝰ eſt egreſſus Et
36 וַיֵּצֵא מַלְאַךְ יְהוָה וַיַּכֶּה בְּמַחֲנֵה אַשּׁוּר מֵאָה
.mortua cadavera *ipſi* omnes ecce & , mane in maturaverunt & : millia quinque & octoginta &
וּשְׁמֹנִים וַחֲמִשָּׁה אָלֶף וַיַּשְׁכִּימוּ בַבֹּקֶר וְהִנֵּה כֻלָּם פְּגָרִים מֵתִים:

Verſio VUL. LAT.

22 Hoc eſt verbũ,ꝙ locutꝰ eſt Dñs
ſuper eum;Deſpexit te,& ſub-
ſannavit te virgo filia Sion :
poſt te caput movit filia Jeru-
23 ſalé. Cui exprobrâſti,& quem
blaſphemâſti, & ſuꝑ quem ex-
altâſti vocẽ, & levâſti altitudi-
nem oculorũ tuorũ? Ad Sanctũ
24 Iſrael. In manu ſervorũ tuorũ
exprobrâſti Dño:& dixiſti ; In
multitudine quadrigarũ mearũ
ego aſcendi altitudinẽ montiũ,
juga Libani:& ſuccidã excelſa
cedrorũ ejus,& electas abietes
illiꝰ,et introibo altitudinẽ ſum-
mitatis ejꝰ, ſaltũ Carmeli ejus.
25 Ego fodi,& bibi aquã,& exic-
cavi veſtigio pedis mei omnes
26 rivos aggerum. Numquid non
audîſti,quæ olim fecerim ei?ex
diebꝰ antiquis ego plaſmavi il-
lud:et nunc adduxi:& factũ eſt
in eradicationẽ colliũ compu-
gnantiũ,& civitatũ munitarũ.
27 Habitatores earũ breviatâ ma-
nu contremuerunt, & confuſi
ſunt:facti ſunt ſicut fœnũ agri,
& gramen paſcuæ,& herba te-
ctorũ,quæ exaruit antequã ma-
28 tureſceret. Habitationẽ tuam,
& egreſſũ tuũ, & introitũ tuũ
cognovi, & inſaniã tuam con-
29 tra me.Cùm fureres adverſùm
me,ſuperbia tua aſcendit in au-
res meas:ponã ergò circulũ in
naribus tuis,& frænũ in labiis
tuis,& reducã te in viam,ꝑ quã
30 veniſti. Tibi autem hoc erit ſi-
gnũ : Comede hoc anno quæ
ſpõte naſcuntur,& in anno ſe-
cundo pomis veſcere : in anno
autẽ tertio ſeminate,& metite,
& plantate vineas,et comedite
31 fructũ earum. Et mittet id, ꝙ
ſalvatũ fuerit de domo Juda,et
ꝙ reliquum eſt, radicẽ deorſũ,
32 & faciet fructũ ſurſum: Quia
de Jeruſalẽ exibunt reliquiæ,et
ſalvatio de monte Sion : zelus
Dñi exercituum faciet iſtud.
33 Propterea hæc dicit Dñs de re-
ge Aſſyriorũ ; Non intrabit ci-
vitatẽ hanc,et non jaciet ibi ſa-
gittã,& non occupabit eã cly-
peus, & non mittet in circuitu
34 ejus aggerẽ. In via quâ venit,
per eam revertetur, & civita-
tem hanc non ingredietur, di-
35 cit Dominus : Et protegam civitatem iſtam, ut ſalvem eam propter me, & propter David ſervum
36 meum. Egreſſus eſt autem Angelus Domini, & percuſſit in caſtris Aſſyriorum centum octoginta
quinque millia. Et ſurrexerunt manè, et ecce omnes, cadavera mortuorum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

22 Οὗτος ὁ λόγος ὃν ἐλάλησε περὶ αὐτοῦ ὁ
θεός, Ἐφαύλισέ σε, καὶ ἐμυκτήρισέ σε παρ-
θένος θυγάτηρ Σιών, ἐπὶ σοὶ κεφαλὴν ἐκί-
23 νησε θυγάτηρ Ἱερουσαλήμ. Τίνα ὠνείδισας
καὶ παρώξυνας; ἢ πρὸς τίνα ὕψωσας τὴν φωνήν
σου; καὶ οὐκ ἦρας εἰς ὕψος τοὺς ὀφθαλμούς σου
24 (χ) πρὸς τὸν ἅγιον τοῦ Ἰσραήλ; Ὅτι δι' ἀγγέ-
λων ὠνείδισας κύριον· σὺ γὰρ εἶπας, Τῷ πλή-
θει τῶν ἁρμάτων ἐγὼ ἀνέβην εἰς ὕψος ὀρέ-
ων, καὶ εἰς τὰ ἔσχατα τοῦ Λιβάνου, καὶ ἔκοψα
τὸ ὕψος τῆς κέδρου αὐτοῦ, καὶ τὸ κάλλος τῆς
κυπαρίσσου, καὶ εἰσῆλθον εἰς ὕψος μέρους τοῦ
25 δρυμοῦ, Καὶ ἔθηκα γέφυραν, καὶ ἠρήμωσα ὕ-
26 δατα καὶ πᾶσαν συναγωγὴν ὕδατος. Οὐ
ταῦτα ἤκουσας πάλαι ἃ ἐγὼ ἐποίησα; ἐξ
(ψ) ἡμερῶν ἀρχαίων συνέταξα, νῦν δὲ ἐπέ-
δειξα ἐξερημῶσαι ἔθνη ἐν ὀχυροῖς, καὶ (ω)
27 οἰκοῦντας ἐν πόλεσιν ὀχυραῖς. Ἀνῆκα τὰς
χεῖρας, καὶ ἐξηράνθησαν, καὶ ἐγένοντο ὡς χόρ-
τος (α) ξηρὸς ἐπὶ δωμάτων, καὶ ὡς ἄγρωστις.
28 Νῦν δὲ τὴν ἀνάπαυσίν σου, καὶ τὴν ἔξοδόν σου,
29 καὶ τὴν εἴσοδόν σου ἐγὼ ἐπίσταμαι. Ὁ δὲ θυ-
μός σου ὃν ἐθυμώθης, καὶ ἡ πικρία σου ἀνέβη
πρὸς μέ, καὶ ἐμβαλῶ φιμὸν εἰς τὴν ῥῖνά σου, καὶ
χαλινὸν εἰς τὰ χείλη σου, καὶ ἀποστρέψω σε
30 τῇ ὁδῷ ᾗ ἦλθες ἐν αὐτῇ. Τοῦτο δέ σοι τὸ
σημεῖον· φάγε τοῦτον τὸν ἐνιαυτὸν ἃ ἔσπαρκας,
(β) τῷ δὲ ἐνιαυτῷ τῷ δευτέρῳ τὸ κατάλειμ-
μα, τῷ δὲ τρίτῳ σπείραντες (γ) ἀμήσατε,
καὶ φυτεύσατε ἀμπελῶνας, καὶ φάγεσθε τὸν καρ-
31 πὸν αὐτῶν. Καὶ ἔσονται οἱ καταλελειμμένοι
ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ, φυήσουσι ῥίζαν κάτω, καὶ ποι-
32 ήσουσι σπέρμα ἄνω· Ὅτι ἐξ Ἱερουσαλὴμ (δ)
ἔσονται οἱ καταλελειμμένοι, καὶ οἱ σωζόμενοι
(ε) ἐξ ὄρους Σιών. ὁ ζῆλος κυρίου σαβαὼθ
33 ποιήσει ταῦτα. Διατοῦτο οὕτως λέγει κύρι-
ος ἐπὶ βασιλέα Ἀσσυρίων, Οὐ μὴ εἰσέλθῃ
εἰς τὴν πόλιν ταύτην, οὐδὲ μὴ βάλῃ ἐπ' αὐ-
τὴν βέλος, οὐδὲ μὴ (ζ) ἐπιβάλῃ ἐπ' αὐτὴν
θυρεόν, (η) οὐδὲ μὴ κυκλώσῃ ἐπ' αὐτὴν χά-
34 ρακα· Ἀλλὰ τῇ ὁδῷ ᾗ ἦλθεν, ἐν αὐτῇ ἀπο-
στραφήσεται, (θ) καὶ εἰς τὴν πόλιν ταύτην οὐ μὴ
35 εἰσέλθῃ· τάδε λέγει κύριος. Ὑπερασπιῶ
ὑπὲρ τῆς πόλεως ταύτης τοῦ σῶσαι αὐτὴν
36 δι' ἐμέ, καὶ διὰ Δαυὶδ τὸν παῖδά μου. Καὶ
ἐξῆλθεν ἄγγελος κυρίου, καὶ ἀνεῖλεν ἐκ τῆς
παρεμβολῆς τῶν Ἀσσυρίων ἑκατὸν (ι) ὀγδο-
ηκονταπέντε χιλιάδας· καὶ (κ) ἀναστάντες
τὸ πρωΐ, εὗρον πάντα τὰ σώματα νεκρά.

MS.A. (χ) εἰς τὸν (ψ) ἀρχαίων ἡμερῶν (ω) ἐνοικοῦντας (α) χλωρὸς (β) καὶ τῷ (γ) ἀμήσητε, (δ) ἐξελεύσονται (ε) ἐπ' ὄρους (ζ) βάλῃ (η) οὐδ' οὐ μὴ (θ) τάδε λέγει κύριος. Ὑπερασπιῶ (ι) καὶ ὀγδοηκονταπέντε (κ) ἐξαναστάντες

Hoc eſt verbum, quod loquutus 22
eſt de eo Deus; Vilipendit te, &
ſubſannavit te, virgo filia Sion:
ſuper te caput movit, filia Hieru-
ſalem. Quem exprobrâſti,& irri- 23
tâſti? aut erga quem exaltâſti vo-
cem tuã? Et non elevâſti in altitu-
dinem oculos tuos ad Sanctum Iſ-
rael? Quia per nuntios exprobrâ- 24
ſti Dominum. Tu enim dixiſti;
Multitudine curruum ego aſcen-
di in altitudinem montium, &
in ultima Libani, & ſuccîdi al-
titudinem cedri ejus, & pulchri-
tudinem cupreſſi, & intravi in
altitudinem partis ſylvæ: Et poſui 25
pontem : & deſolavi aquas, & o-
mnem congregationem aquæ: Non 26
hæc audîſti, olim quæ ego feci? Ex
diebus antiquis conſtitui: nunc au-
tem oſtendi,deſolare gentes in mu-
nitionibus, & habitantes in civi-
tatibus munitis: Remiſi manus:& 27
exaruerunt,et facti ſunt quaſi fœ-
num aridum ſuper tecta, & quaſi
gramen. Nunc autem requiem tu- 28
am,& exitum tuum,& introitum
tuum ego ſcio : Furor autem tuus, 29
quo furis,& amaritudo tua aſcen-
dit ad me: & immittam circulum
in naſum tuum, et frænum in labia
tua:& avertam te viâ,quâ veni-
ſti in ea.Hoc autẽ tibi ſignum.Com- 30
ede hoc anno, quæ ſeminâſti, anno
autem ſecundo (e) reliquias, tertio
autem ſeminantes metite, et plan-
tate vineas, & comedite fructum
earũ.Et erunt derelicti in Judæa, 31
pullulabunt radicem deorſum, et
facient ſemen ſurſum. Quoniam 32
de Hieruſalem (f)erunt relicti, et
ſalvati de monte Sion. Zelus Do-
mini Sabaoth faciet hæc.Propterea 33
ſic dicit Dominus ſuper regem Aſ-
ſyriorum; Non ingredietur in civi-
tatem hanc,neque jaciet in eam ſa-
gittam, neque immittet ſuper eam
ſcutum, neque circundabit ſuper e-
am vallum: Sed viâ,quâ venit,in 34
ea revertetur:et in civitatem hanc
non ingredietur. Hæc dicit Domi-
nus; Protegam pro civitate hac ad 35
ſalvandam eam propter me,et pro-
pter David puerum meum. Et e- 36
greſſus eſt angelus Domini, et oc-
cîdit de caſtris Aſſyriorum centum
octuaginta quinque millia. Et ſur-
gentes manè, invenerunt omnia
corpora mortua.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

22 דֵּין פִּתְגָּמָא דִּי מַלֵּיל יְיָ עֲלוֹהִי מְבַסְרָא עֲלָךְ מְמִיקָא עֲלָךְ מַלְכוּת כְּנִשְׁתָּא דְצִיּוֹן בַּתְרָךְ
23 רֵישֵׁיהוֹן מְנִידִין עַמָּא דְבִירוּשְׁלֶם: יַת מַן חַסַּדְתָּא וְיַת מַן אִתְרַבְרַבְתָּא וְקֳדָם מַן אֲרֵימְתָּא
24 קָלָא וּזְקַפְתָּא לְרוּמָא עֵינָךְ וַאֲמַרְתָּא מִלִּין דְּלָא כַשְׁרִין קֳדָם קַדִּישָׁא דְיִשְׂרָאֵל: בְּיַד עַבְדָּךְ
חַסֵּדְתָּא עַמָּא דַיְיָ וַאֲמַרְתָּא בִּסְגִיאוּת רְתִיכַי אֲנָא סְלֵקִית לִתְקוֹף כְּרַכֵּיהוֹן וְאַף אֵיחוֹד
בֵּית מַקְדְּשְׁהוֹן וְאֶקְטוֹל שְׁפַר גִּבָּרֵיהוֹן מִבְחַר שִׁלְטוֹנֵיהוֹן וְאֶכְבּוֹשׁ קִרְיַת תּוּקְפְּהוֹן וֶאֱשֵׁיצֵי
25 סַגִּי מַשִׁרְיָתְהוֹן: אֲנָא הֲוֵיתִי חָפֵיר גּוּבִּין וְשָׁתֵי מַיִן וּטְפַחִית בְּפַרְסַת רַגְלֵי עַמָּא דְעִמִּי כָּל
26 מֵי נַהֲרִין עֲמִיקִין: הֲלָא שְׁמַעְתָּא מִלְּקַדְמִין מָא עֲבָדִית לְפַרְעֹה מַלְכָּא דְמִצְרַיִם וְאַף
עֲלָךְ אִתְנַבִּיאוּ נְבִיֵּי יִשְׂרָאֵל וְלָא תַבְתָּא וְדָא חֲזָיָא קֳדָמַי מִיּוֹמֵי קֶדֶם לְמֶעְבַּד לָךְ וְאַף
אַתְקֵנְתַּהּ כְּעַן אַיְתֵיתַהּ וְדָא הֲוָת לָךְ לְתַקָּלָא עַל דַּהֲוָאָה קֳדָמָךְ כְּאִתְרְגוֹשַׁת גַּלִּין דִּשְׁחוּ
27 קִרְוִין כְּרִיכָן: וְיָתְבֵיהוֹן אִתְקַצַּר חֵילֵיהוֹן אִתְבָּרוּ וּבְהִיתוּ הֲווֹ כְּעֶשֶׂב חַקְלָא וִירוֹק דִּתְאָה
28 כְּעֶשֶׂב אִגָּרַיָּא דִּשְׁלוֹק עַד לָא מְטָא לְמֶהֱוֵי שׁוּבְלִין: וּמוֹתְבָךְ בְּעֵיצָה וּמַפְּקָךְ לְבָרָא לַאֲגָחָא
29 קְרָבָא וּמֵיתָךְ לְאַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל גְּלֵי קֳדָמַי וְיַת דְּאַרְגֵּזְתָּא קֳדָמַי גְּלֵי: חֲלָף דְּאַרְגֵּזְתָּא עַל
מֵימְרִי וְאִתְרְגוּשְׁתָּךְ סְלִיקַת לִקְדָמַי וַאֲשַׁוֵּי שֵׁירִין בְּלִיסְתָךְ וְזָמָם בְּסִפְוָתָךְ וַאֲתֵיבִנָךְ
30 בְּאוֹרְחָא דַּאֲתֵיתָא בַהּ: וְדֵין לָךְ אָתָא אֱכוֹל בְּשַׁתָּא הָדָא כַתִּין וּבְשַׁתָּא תִנְיֵתָא כַּתְכָּתִין
31 וּבְשַׁתָּא תְלִיתָאָה זְרָעוּ וַחֲצוֹדוּ וְצוּבוּ כַרְמִין וֶאֱכוּלוּ אִבְּהֶן: וְיִסְפוּן מְשֵׁיזְבַיָּא דְבֵית יְהוּדָה
32 דְּאִשְׁתְּאָרוּן כְּאִילָן דִּמְשַׁלַּח שׁוֹרְשׁוֹהִי מִלְּרַע וּמְרִים נוֹפֵיהּ לְעֵלָּא: אֲרֵי מִירוּשְׁלֶם יִפְקוּן
שְׁאָר צַדִּיקַיָּא וְשֵׁיזָבַת מְקַיְּמֵי אוֹרָיְתָא מִטּוּרָא דְצִיּוֹן בְּמֵימְרָא דַיְיָ צְבָאוֹת תִּתְעֲבֵיד דָּא:
33 בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ עַל מַלְכָּא דְאַתּוּר לָא יֵיעוֹל לְקַרְתָּא הָדָא וְלָא יִקְשֵׁת תַּמָּן גִּיר וְלָא
34 יְקַדְּמִנַּהּ בִּתְרֵיסִין וְלָא יִצְבּוֹר עֲלַהּ מְלֵיתָא: בְּאוֹרְחָא דַּאֲתָא בַהּ יְתוּב וּלְקַרְתָּא הָדָא לָא
35 יֵיעוֹל אֲמַר יְיָ: וְאָגֵין עַל קַרְתָּא הָדָא לְמִפְרְקַהּ בְּדִיל מֵימְרִי וּבְדִיל דָּוִד עַבְדִּי: וּנְפַק
36 מַלְאֲכָא דַיְיָ וּקְטַל בְּמַשְׁרִית אַתּוּרָאָה מְאָה וּתְמָנַן וְחַמְשָׁא אַלְפִּין וְאַקְדִּימוּ בְצַפְרָא וְהָא
כּוּלְּהוֹן פִּגְרִין מֵתִין:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Hoc eſt verbũ quod decrevit Dñs ſuꝑ eũ: deſpexit te,*ſubſannavit* te;regnũ 22
cœtus Sion : poſt te capita ſua moverunt, popule qui habitas in Hieruſa-
lem. Cui exprobrâſti,& ſuper quem magnificatꝰ es, & contra quem extu- 23
liſti vocem ? & ſuſtuliſti in excelſum oculos tuos ; & dixiſti verba quæ non
ſunt recta coram ſancto Iſrael ? In manu ſervorum tuorum exprobrâſti po- 24
pulo Dñi, & dixiſti : Cum multitudine quadrigarum mearũ ego aſcendam
in munitionem civitatũ eorum,& inſuper capiam domũ ſanctuarii eorum,
& occidam pulcherrimos inter fortes eorũ,& electos principes eorum, &
ſubjiciam civitatẽ fortitudinis eorũ; & conſumam multitudinem exercitus
eorũ. Ego fodi ciſternas,& bibi aquas;& conculcavi veſtigiis pedũ populi 25
qui mecum eſt,omnes aquas fluminũ profundorũ. Nónne olim audiſti quid 26
fecerim Pharaoni,regi Ægypti?etiã de te prophetaverunt prophetæ Iſrael,
& non egiſti pœnitentiã;& hoc viſum eſt ante me à diebꝰ antiquis,ut face-
rem tibi : & etiã præparavi illud;& nunc adduxi illud : & hoc fuit tibi in
ruinã,eò quòd facta ſint corã te, ſicut tumultꝰ fluctuũ, quo humiliatæ ſunt
civitates munitæ. Et habitatorũ ejus virtꝰ abbreviata eſt, contriti ſunt & 27
confuſi,facti ſunt ſicut herba agri, & ſicut olꝰ viride,quaſi fœnũ tectorum,
quòd *uredine tangitur* antequã perveniat ad ſpicã. Et ſeſſio tua in conſilio, 28
& egreſſus tuꝰ *foras* ad pugnandũ;& introitꝰ tuꝰ in terrã Iſrael manifeſta
ſunt corã me:& quòd provocâris me ad irã,coram me manifeſtũ eſt. Pro eo 29
quòd provocâſti contra verbũ meũ, & tumultꝰ tuus aſcendit in conſpectu
meo;ponam armillas in maxilla tua,& frænũ in labiis tuis,& reducã te per
viam qua veniſti. Et hoc tibi erit ſignũ,Comede hoc anno quæ ſponte na- 30
ſcuntur,& in anno ſecundo ꝙ ex illis renaſcitur;& in anno tertio,ſeminate,
& metite,& plantate vineas,& comedite fructũ eorũ. Et addent qui libe- 31
rati fuerint de domo Juda,& qui remanſerint,ſicut arbor,quæ mittit radices
deorſũ, & elevantur rami ejꝰ ſurſum. Quoniã de Hieruſalem egredientur 32
reliqui juſti,& erepti confirmantes legẽ de monte Sion. In verbo Dñi exer-
cituũ fiet hoc. Propterea hæc dicit Dñs ſuꝑ regẽ Aſſyriæ, Non intrabit ci- 33
vitatẽ hanc, & non jaciet ibi ſagittam, & non occupabit eã clypeis,& non
congeret contra eã aggerẽ. Per viã qua venit,ꝑ eã revertetur;& civitatem 34
hanc non ingredietur,dicit Dñs. Et protegam civitatẽ hanc,ut ſalvem eam 35
propter verbũ meum, & propter David ſervum meum. Et egreſſus eſt an- 36
gelus Dñi , & interfecit in caſtris *Aſſyrii* centum & octoginta quinque
millia ; & ſurrexerunt manè, & ecce omnes erant cadavera mortuorum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܢܐ ܦܬܓܡܐ ܕܐܡܪ ܥܠܘܗܝ ܡܪܝܐ. ܫܛܬܟ ܘܡܒܙܚܐ ܒܟ ܒܬܘܠܬܐ ܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. 22
ܘܡܢܝܕܐ ܪܫܗ ܒܬܪܟ ܒܪܬܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. * ܠܡܢ ܚܣܕܬ ܘܓܕܦܬ. ܘܥܠ ܡܢ ܐܪܝܡܬ ܩܠܟ. 23
ܘܐܪܝܡܬ ܠܪܘܡܐ ܥܝܢܝܟ ܠܘܩܒܠ ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ. * ܘܒܝܕ ܐܝܙܓܕܝܟ ܚܣܕܬ ܠܡܪܝܐ 24
ܘܐܡܪܬ. ܕܒܣܘܓܐܐ ܕܡܪܟܒܬܝ. ܐܢܐ ܐܣܩ ܠܪܘܡܐ ܕܛܘܪܐ. ܘܠܫܩܦܘܗܝ ܕܠܒܢܢ.
ܘܐܦܣܘܩ ܩܘܡܬܐ ܕܐܪܙܘܗܝ. ܘܓܒܝܐ ܕܒܪܘܬܘܗܝ. ܘܐܥܘܠ ܠܪܘܡܐ ܕܣܘܦܗ ܕܚܘܪܫܐ
ܕܟܪܡܠܐ. * ܐܢܐ ܐܚܦܘܪ ܘܐܫܬܐ ܡܝܐ. ܘܐܚܪܒ ܒܦܪܣܬܐ ܕܪܟܫܝ. ܟܠܗܘܢ ܢܗܪܘܬܐ 25
ܪܘܪܒܐ. * ܠܐ ܫܡܥܬ ܡܢ ܪܘܚܩܐ ܕܗܕܐ ܥܒܕܬܗ: ܘܡܢ ܝܘܡܬܐ ܩܕܡܝܐ: ܠܗ ܒܪܝܬܗ. 26
ܘܗܫܐ ܐܝܬܝܬܗ ܕܬܗܘܐ ܠܚܘܪܒܐ ܘܠܬܠܐ: ܐܝܟ ܡܕܝܢܬܐ ܚܣܝܢܬܐ. * ܕܥܡܘܪܝܗܝܢ 27
ܐܪܦܝܘ ܐܝܕܝܗܘܢ ܘܐܬܬܒܪܘ ܘܒܗܬܘ: ܘܗܘܘ ܐܝܟ ܥܣܒܐ ܕܚܩܠܐ ܘܐܝܟ ܝܘܪܩܐ ܕܬܕܐܐ:
ܘܐܝܟ ܫܒܠܐ ܕܐܓܪܐ. ܘܐܝܟ ܚܘܪܦܢܐ ܩܕܡ ܩܝܡܬܐ. * ܡܘܬܒܟ ܘܡܦܩܟ ܘܡܥܠܟ. 28
ܝܕܥ ܐܢܐ. ܘܕܐܬܡܪܚܬ ܥܠܝ. * ܡܛܠ ܕܐܬܡܪܚܬ ܥܠܝ. ܘܓܘܕܦܟ ܣܠܩ ܠܐܕܢܝ. ܐܪܡܐ ܚܟܐ 29
ܒܢܚܝܪܝܟ. ܘܦܓܘܕܐ ܒܣܦܘܬܟ. ܘܐܗܦܟܟ ܒܐܘܪܚܐ ܕܐܬܝܬ ܒܗ. * ܘܗܕܐ ܠܟ ܐܬܐ. ܬܐܟܘܠ 30
ܫܥܝܐ ܗܕܐ ܫܢܬܐ. ܘܫܢܬܐ ܕܐܬܝܐ. ܘܫܢܬܐ ܬܠܝܬܝܬܐ. ܙܪܘܥܘ ܐܢܬܘܢ. ܘܚܨܘܕܘ
ܐܢܬܘܢ. ܘܢܨܒܘ ܐܢܬܘܢ ܟܪܡܐ. ܘܐܟܘܠܘ ܐܢܬܘܢ ܦܐܪܝܗܘܢ. * ܘܢܬܘܣܦܘܢ ܫܪܟܐ ܕܒܝܬ 31
ܝܗܘܕܐ ܕܐܫܬܚܪܘ. ܐܝܟ ܥܩܪܐ ܕܪܡܐ ܠܬܚܬ. ܘܥܒܕ ܦܐܪܐ ܠܥܠ. * ܡܛܠ ܕܡܢ ܐܘܪܫܠܡ. 32
ܢܦܩܘܢ ܫܪܟܢܐ. ܘܫܘܙܒܐ ܡܢ ܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ. ܛܢܢܗ ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܥܒܕ ܗܕܐ.
* ܡܛܠ ܗܢܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܥܠ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. ܠܐ ܢܥܘܠ ܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܘܠܐ ܢܫܕܐ ܬܡܢ 33
ܓܐܪܐ. ܘܠܐ ܢܩܕܡܝܗ ܒܬܪܣܐ. ܘܠܐ ܢܫܕܐ ܥܠܝܗ ܣܘܠܠܐ. * ܐܠܐ ܒܐܘܪܚܐ ܕܐܬܐ ܒܗ. ܢܗܦܘܟ. 34
ܘܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܠܐ ܢܥܘܠ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܐܓܢ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܘܐܦܪܘܩܝܗ. ܡܛܠܬܝ 35
ܘܡܛܠ ܕܘܝܕ ܥܒܕܝ. * ܘܢܦܩ ܡܠܐܟܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܩܛܠ ܒܡܫܪܝܬܗ ܕܐܬܘܪܝܐ. ܡܐܐ 36
ܘܬܡܢܝܢ. ܘܚܡܫܐ ܐܠܦܝܢ. ܘܩܕܡܘ ܒܨܦܪܐ. ܘܗܐ ܟܠܗܘܢ ܦܓܪܐ ܡܝܬܐ.

Hæc eſt ſententia quam protulit in eum Dñs, 22
Contemnit ridétque te virgo filia Sionis, movétque
poſt te caput ſuum filia Jeruſalem.
Quemnam contumeliis & blaſphemiis affeciſti ? 23
& contra quem extuliſti vocem tuam ?
Extuliſti oculos tuos in altũ contra Sanctum
Iſraelis, Et per legatos tuos convitiatus es Domino, 24
& dixiſti, Multitudine curruum meorũ
conſcendam ego ſummitatem montium, & radices
Libani, præcidámque proceras cedros
ejus & lectiſſimas abietes ejus; penetrabo
etiam uſque ad ſummam extremitatem ſaltûs
Charmeli. Ego effodiam ut bibam aquas; 25
nam ungulis equorũ meorũ exiccabo flumina
quæque *vel* maxima. Annon audîſti quòd 26
jampridem fecerim eam, (*i. Jeruſalem,*) & à
priſcis diebus condiderim eam ? & nunc adducerem
eam ut ſit in vaſtam ſolitudinem
inſtar magnarũ urbium illarũ, In quibus cives 27
remittentes manus confracti ſunt et pudore
ſuffuſi; factíque ſunt velut herba campi, ut
olus viride, ut ſpica tecti, & ut folia tritici antequam
in culmũ aſſurgat. Seſſionem tuã, & 28
ingreſſum egreſſúmq; tuũ ego novi, & quòd
inpudenter te geſſeris corã me. Quoniam insolenter 29
egiſti coram me, & blaſphemia tua
aſcendit ad aures meas, injiciam hamum in
nares tuas, & fiſcellã in labia tua, reducámq;
te per viã per quam veniſti. Illud autem eſto 30
tibi *hujus rei* ſignum: comedes anno præſenti
frumentũ ſponte naſcens, anno ſequenti ſponte
renaſcens, anno verò tertio feretis ac metetis,
plantabitis vineas & comedetis fructus
earũ. Et evadent reſidui domûs Judæ qui ſuperfuerint, 31
veluti radix quæ *licèt* ſit infernè
dejecta, ſupernè tamen fructus edit: Nam è Jeruſalem 32
prodibunt reliquiæ, & è monte Sion
eripientur: zelus Dñi potentiſſimi id efficiet.
Propterea ſic dicit Dñs de rege Aſſyriæ; Non 33
eſt ingreſſurus in hanc civitatẽ, neq; jactaturus
huc ſagittã, nec obvius illi venturus cum
clypeis, nec inſidias contra eã poſiturus. Sed 34
per viã quâ venit, per eandẽ reverſurus eſt, &
in civitatẽ iſtã nequaquã ingreſſurus, ait Dñs.
Nam protegam civitatẽ iſtã, & eripiam eam, 35
propter me, & propter Davidem ſervum meum.
Egreſſus itaque angelus Domini trucidavit 36
in caſtris Aſſyrii centum octoginta quinque
millia *hominum*: cúmq; mane prætervertiſſent,
ecce erant omnes cadavera mortua,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* هذا القول الذي تكلم الله به عليه * دحضتك وهزيت بك العذري الابنة صهيون * 22
حركت راسها عليك الابنة اورسليم * لمن عيرت واجدفت * او على من رفعت صوتك ولم 23
ترفع عينيك الى العلى الى قدوس اسرائيل * لان برسل عيرت الرب * لانك قلت انا صعدت 24
بكثرة المراكب الى علو الجبال والى اواخر لبنان * وقطعت ارتفاع ارزه وحسن سروه *
ودخلت الى علو ناحية الغاب * ووضعت جسرا واخربت المياه وكل مجمع ماء * اما سمعت هذه 25 26
قديما التي انا صنعتها منذ الايام الاولى * جلبتها عليك * والان رايت ان اخرب الامم في الحصون
والسكان في المدن الحصينة * وضعت يدي فخربوا * وصاروا مثل عشب يابس على الاسطحة * 27
ومثل نجيل * والان راحتك ومخرجك ومدخلك انا اعرفهم * وغضبك الذي تفكرت به * 28
ومرارتك صعدت الى * واضع حزاما في انفك ولجاما في شفتيك * واردك في الطريق التي جئت 29
فيها * وهذه العلامة لك كل هذه السنة ما زرعت * وفي السنة الثانية البقية * وفي الثالثة ازرعوا 30
واحصدوا * واغرسوا كروما وكلوا ثمرها * ويكون المتبقون في اليهودية يفرعون اصلا 31
اسفل * ويصنعون ثمرا فوق * لان من اورسليم يكون المتبقون * والمخلصون على جبل 32
صهيون * غيرة رب الجيوش تفعل هذه * لاجل هذا هكذا يقول الرب على ملك الموصليين * 33
لا يدخل الى هذه المدينة * ولا يرمي عليها سهما * ولا يلقي عليها ترسا * ولا يخط عليها
سياجا * لكن في الطريق التي جاء فيها يعود * والى هذه المدينة لا يدخل * قال الرب * 34
* واظلل على هذه المدينة لاخلصها من اجلي ومن اجل داود عبدي * وخرج ملك 35 36
الرب وقتل من عسكر الموصليين مائة الف وخمسة وثمانين الفا * فقاموا بالغداة فوجدوا
جميع الاجساد ميتة *

* *Hic eſt ſermo quem de ipſo locutus eſt* 22
Deus: Te dedignatur téque deridet virgo
filia Sion, motat ſuper te caput ſuum filia
Jeruſalem. In quem convitia vomis, ac 23
furis? aut contra quem extollis vocem tuam,
nec attollis oculos tuos in ſublime ad
Sanctum Iſraelis; Quòd per legatos convitia 24
vomis contra Dominum? Ego enim,
inquis, cum aurigarum copia ſuperabo cacumina
montium & extrema Libani, altiſſimas
cedros ejus & pulcherrimas cupreſſos
ejus amputabo, & ad penitiſſimum
ſylvarum latus penetrabo: Pontem ponam, 25
aquas & omnes aquarum congeries
vaſtabo. An non illud jam olim audiviſti, 26
quod ego feci inde à priſcis diebus?
illud adduxi contra te, jámque decrevi
gentes in arcibus deſtruere, & cives in
urbibus munitis. Admovebo manum meam, 27
& deſtruentur, fientque ſicut herba
arida ſuper tecta, & ut folia ſicca. Et 28
nunc, quietem tuam, & tuum exeundi
atque intrandi locum ego cognoſco: et furor
quem meditaris, Nec non fel tuum 29
aſcenderunt ad me. Hamum injiciam in
naſum tuum, & frænum in labia tua, &
reducam te per viam per quam veniſti.
Hoc autem ſit tibi ſignum: Comede hoc 30
anno quod ſerueris, anno ſecundo reſiduum,
tertio verò ſerite & metite, plantate
vineas et comedite fructum earum. Qui 31
reliqui fuerint in Judæa, deorſum radices
emittent, ſurſum verò fructum producent.
Nam ex Jeruſalem erunt reſidui; 32
& qui ſe eripuerint, ſuper montem
Sion: æmulatio Domini exercituum eſt id
effectura. Quapropter ita dicit Dominus 33
de rege Aſſyriorum; Nequaquam ingredietur
hanc urbem, neque ſagittam jaculabitur
in eam; clypeum non jaciet in
eum, neque cinget eam vallo: Sed viâ 34
quâ venit, eâdem redibit: hanc autem
urbem nequaquam ingredietur, ait Dominus.
Nam protegam urbem iſtam, ut 35
eripiam eam propter me & propter Davidem
ſervum meum. Itaque egreſſus 36
angelus Domini trucidavit ex Aſſyriorum
copiis centum millia & octoginta quinque
millia: & manè ſurgentes corpora
omnia mortua repererunt.

ישעיה: לח

habitavit & ,Assur rex Sancherib est reversus &,abiit &,est profectꝰ Et
37 וַיִּסַּע וַיֵּלֶךְ וַיָּשָׁב סַנְחֵרִיב מֶלֶךְ־אַשּׁוּר וַיֵּשֶׁב
, suum Deum Nisroch domo *se incurvante* eo fuit Et .Nineveh in
38 בְּנִינְוֵה׃ וַיְהִי הוּא מִשְׁתַּחֲוֶה בֵּית נִסְרֹךְ אֱלֹהָיו
ipsi & ,gladio in eum percusserunt ejus filii Sareser & , Adramelech &
וְאַדְרַמֶּלֶךְ וְשַׂרְאֶצֶר בָּנָיו הִכֻּהוּ בַחֶרֶב וְהֵמָּה
.eo pro ejus filius Chaddon-Esar regnavit & : Ararath terra evaserunt
נִמְלְטוּ אֶרֶץ אֲרָרָט וַיִּמְלֹךְ אֵסַר־חַדֹּן בְּנוֹ תַּחְתָּיו׃

CAP. XXXVIII. לח

eum ad venit &:moriendum ad Chizchijahu ægrotavit illis diebus In
1 בַּיָּמִים הָהֵם חָלָה חִזְקִיָּהוּ לָמוּת וַיָּבֹא אֵלָיו
,Dominus dixit Sic ,eum ad dixitque ,prophetæ Amos filius Jesahjahu
יְשַׁעְיָהוּ בֶן־אָמוֹץ הַנָּבִיא וַיֹּאמֶר אֵלָיו כֹּה־אָמַר יְהוָה
convertit Et .vives non & , tu *mortuus* quia , tuæ domui præcipe
2 צַו לְבֵיתֶךָ כִּי מֵת אַתָּה וְלֹא תִחְיֶה׃ וַיַּסֵּב
, dixit Et .Dominum ad oravit & : parietem ad *suas facies* Chizchijahu
3 חִזְקִיָּהוּ פָּנָיו אֶל־הַקִּיר וַיִּתְפַּלֵּל אֶל־יְהוָה׃ וַיֹּאמַר
tuas facies ad ambulaverim quod ,quæso memento Domine Obsecro
אָנָּה יְהוָה זְכָר־נָא אֵת אֲשֶׁר הִתְהַלַּכְתִּי לְפָנֶיךָ
flevit & : fecerim tuis oculis in bonum & ,perfecto corde in &,veritate in
בֶּאֱמֶת וּבְלֵב שָׁלֵם וְהַטּוֹב בְּעֵינֶיךָ עָשִׂיתִי וַיֵּבְךְּ
, Jesajahu ad Domini verbum fuit Et .magno fletu Chizchijahu
4 חִזְקִיָּהוּ בְּכִי גָדוֹל׃ וַיְהִי דְּבַר־יְהוָה אֶל־יְשַׁעְיָהוּ
Dominus dixit Sic ,Chizchijahu ad *dices* & , Vade : dicendo
5 לֵאמֹר׃ הָלוֹךְ וְאָמַרְתָּ אֶל־חִזְקִיָּהוּ כֹּה־אָמַר יְהוָה
vidi , tuam orationem audivi : tui patris David Deus
אֱלֹהֵי דָּוִד אָבִיךָ שָׁמַעְתִּי אֶת־תְּפִלָּתֶךָ רָאִיתִי אֶת־
annos quindecim tuis diebus *super addens* ego ecce :*tuam lachrymam*
דִּמְעָתֶךָ הִנְנִי יוֹסִף עַל־יָמֶיךָ חֲמֵשׁ עֶשְׂרֵה שָׁנָה׃
protegam & : hanc civitatem & , te eruam Assur regis *vola* de Et
6 וּמִכַּף מֶלֶךְ־אַשּׁוּר אַצִּילְךָ וְאֵת הָעִיר הַזֹּאת וְגַנּוֹתִי
quod ,Domino à signum tibi hoc Et .hanc civitatem *super*
7 עַל־הָעִיר הַזֹּאת׃ וְזֶה־לְּךָ הָאוֹת מֵאֵת יְהוָה אֲשֶׁר
ego Ecce .est locutus quod hoc verbum Dominus sit facturus
8 יַעֲשֶׂה יְהוָה אֶת־הַדָּבָר הַזֶּה אֲשֶׁר דִּבֵּר׃ הִנְנִי
gradus per descendit quæ graduum umbram *faciens* reverti
מֵשִׁיב אֶת־צֵל הַמַּעֲלוֹת אֲשֶׁר יָרְדָה בְמַעֲלוֹת
sol est reversus & : gradibus decem retrorsum sole in Achaz
אָחָז בַּשֶּׁמֶשׁ אֲחֹרַנִּית עֶשֶׂר מַעֲלוֹת וַתָּשָׁב הַשֶּׁמֶשׁ
Chizchijahu Scriptura .descenderat quos gradus *per* gradibus decem
9 עֶשֶׂר מַעֲלוֹת בַּמַּעֲלוֹת אֲשֶׁר יָרָדָה׃ מִכְתָּב לְחִזְקִיָּהוּ
, dixi Ego.*sua ægritudine de revixisset &,ipsum ægrotando in*,Jehudah regis
10 מֶלֶךְ־יְהוּדָה בַּחֲלֹתוֹ וַיְחִי מֵחָלְיוֹ׃ אֲנִי אָמַרְתִּי
sum privatus : sepulchri portas ad vadam meorum dierum excisione In
בִּדְמִי יָמַי אֵלֵכָה בְּשַׁעֲרֵי שְׁאוֹל פֻּקַּדְתִּי
, *Jah* videbo Non , Dixi .meorum annorum residuo
11 יֶתֶר שְׁנוֹתָי׃ אָמַרְתִּי לֹא־אֶרְאֶה יָהּ
cum ultrà hominem aspiciam non : viventium terra in *Jah*
יָהּ בְּאֶרֶץ הַחַיִּים לֹא־אַבִּיט אָדָם עוֹד עִם־
me à migravit & *est profectus* meus Incolatus .*temporis* habitatoribus
12 יוֹשְׁבֵי חָדֶל׃ דּוֹרִי נִסַּע וְנִגְלָה מִנִּי
attenuatione ab , *meas vitas* texens velut præcidi : pastoris *tentorium* veluti
כְּאֹהֶל רֹעִי קִפַּדְתִּי כָאֹרֵג חַיַּי מִדַּלָּה
Posui .me consumes noctem ad usque die à : me concidet
13 יְבַצְּעֵנִי מִיּוֹם עַד־לַיְלָה תַּשְׁלִימֵנִי׃ שִׁוִּיתִי
die à : mea ossa omnia conterebat sic , leo sicut mane ad usque
עַד־בֹּקֶר כָּאֲרִי כֵּן יְשַׁבֵּר כָּל־עַצְמוֹתָי מִיּוֹם
.me *conficies* noctem ad usque
עַד־לַיְלָה תַּשְׁלִימֵנִי׃

Versio VULG. LAT.

37 Et egressus est, & abiit, & reversus est Sennacherib rex Assyriorum, & habitavit in Ninive. 38 Et factum est, cùm adoraret in templo Nesroch deum suum, Adramelech & Sarasar filii ejus percusserunt eum gladio: fugerúntque in terram Ararat, & regnavit Asarhaddon filius ejus pro eo.

CAP. XXXVIII.

1 IN diebus illis ægrotavit Ezechias usque ad mortem: & introivit ad eum Isaias filiꝰ Amos propheta, & dixit ei; Hæc dicit Dominus; Dispone domui tuæ, quia morieris tu, & non vives. 2 Et convertit Ezechias faciem suam ad parietem, & oravit ad Dominum, 3 Et dixit; Obsecro, Domine, memento, quæso, quomodò ambulaverim coram te in veritate, & in corde perfecto, & quod bonum est in oculis tuis fecerim. Et flevit Ezechias fletu magno. 4 Et factum est verbum Domini ad 5 Isaiam, dicens; Vade, & dic Ezechiæ: Hæc dicit Dominus Deus David patris tui; Audivi orationem tuam, & vidi lachrymas tuas: ecce ego adjiciam super dies tuos quindecim annos: 6 Et de manu regis Assyriorum eruam te, & civitatem istam, & protegam eam. 7 Hoc autem tibi erit signum à Domino, quia faciet Dominus verbum hoc, quod locutus est: 8 Ecce ego reverti faciam umbram linearum, per quas descenderat in horologio Achaz in Sole, retrorsum decem lineis. Et reversus est Sol decem lineis per gradus, quos descenderat. 9 Scriptura Ezechiæ regis Juda cùm ægrotâsset, & convaluisset de infirmitate sua. 10 Ego dixi; In dimidio dierum meorum vadam ad portas inferi. Quæsivi residuum annorum meorum. 11 Dixi; Non videbo Dominum Deum in terra viventium. Non aspiciam hominem ultrà, & habitatorem quietis. 12 Generatio mea ablata est, & convoluta est à me, quasi tabernaculum pastorum. Præcisa est velut à texente, vita mea: dum adhuc ordirer, succîdit me: de manè usque ad vesperam finies me. 13 Sperabã usque ad manè, quasi leo sic contrivit omnia ossa mea: De manè usque ad vesperam finies me:

Versio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

37 Καὶ (λ) ἀπῆλθεν ἀποστραφεὶς Σενναχηρεὶμ βασιλεὺς Ἀσσυρίων, ϗ ᾤκησεν ἐν Νινευῇ. 38 Καὶ ἐν τῷ αὐτὸν προσκυνεῖν (μ) ἐν τῷ οἴκῳ Νασαρὰχ τὸν πάταρχον αὐτοῦ, Ἀδραμέλεχ ϗ (ν) Σαρασὰρ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ ἐπάταξαν αὐτὸν μαχαίραις, αὐτοὶ δὲ διεσώθησαν εἰς Ἀρμενίαν, ϗ ἐβασίλευσεν Ἀσορδὰν ὁ υἱὸς αὐτοῦ ἀντ' αὐτοῦ.

ΚΕΦ. λη'.

1 Ἐγένετο δὲ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, ἐμαλακίσθη Ἐζεκίας ἕως θανάτου. ϗ ἦλθε πρὸς αὐτὸν Ἡσαΐας υἱὸς Ἀμὼς ὁ προφήτης, ϗ εἶπε πρὸς αὐτὸν, Τάδε λέγει κύριος, Τάξαι περὶ τοῦ οἴκου σου, (α) ἀποθνήσκεις γὰρ σύ, 2 ϗ οὐ ζήσῃ. Καὶ ἀπέστρεψεν Ἐζεκίας τὸ πρόσωπον αὐτοῦ πρὸς τὸν τοῖχον, ϗ προσηύξατο 3 πρὸς κύριον, Λέγων, Μνήσθητι κύριε, ὡς ἐπορεύθην ἐνώπιόν σου μετὰ ἀληθείας, ἐν καρδίᾳ ἀληθινῇ, ϗ τὰ ἀρεστὰ ἐνώπιόν σου ἐποίησα. ϗ ἔκλαυσεν Ἐζεκίας κλαυθμῷ 4 μεγάλῳ. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς 5 Ἡσαΐαν, λέγων, (β) Πορεύθητι, ϗ εἰπὸν Ἐζεκίᾳ, Τάδε λέγει κύριος ὁ θεὸς Δαυὶδ τοῦ πατρός σου, Ἤκουσα (γ) τῆς προσευχῆς σου, ϗ εἶδον τὰ δάκρυά σου· ἰδοὺ προστίθημι πρὸς τὸν χρόνον σου (δ) δεκαπέντε ἔτη, 6 Καὶ ἐκ χειρὸς βασιλέως Ἀσσυρίων (ε) ῥύσομαί σε ϗ τὴν πόλιν ταύτην, ϗ ὑπερασπιῶ 7 ὑπὲρ τῆς πόλεως ταύτης. Τοῦτο δέ σοι τὸ σημεῖον παρὰ κυρίου, ὅτι (ζ) ποιήσει ὁ θεὸς 8 τὸ ῥῆμα τοῦτο· Ἰδοὺ (η) ἐγὼ στρέψω τὴν σκιὰν τῶν ἀναβαθμῶν οὓς κατέβη (θ) τοὺς δέκα ἀναβαθμοὺς τοῦ οἴκου τοῦ πατρός σου ὁ ἥλιος, ἀποστρέψω τὸν ἥλιον τοὺς δέκα ἀναβαθμούς. ϗ ἀνέβη ὁ ἥλιος τοὺς δέκα ἀναβαθμοὺς, οὓς κατέβη ἡ σκιά.

9 (*)ΠΡΟΣΕΥΧΗ ἘΖΕΚΙΟΥ ΒΑΣΙΛΕΩΣ ΤΗΣ ἸΟΥΔΑΙΑΣ, ἩΝΙΚΑ ἘΜΑΛΑΚΙΣΘΗ, ΚΑΙ ἈΝΕΣΤΗ ἘΚ ΤΗΣ ΜΑΛΑΚΙΑΣ ΑΥΤΟΥ.

10 † Ἐγὼ εἶπα ἐν τῷ ὕψει τῶν ἡμερῶν (**)μου, Πορεύσομαι ἐν πύλαις ᾅδου, καταλείψω τὰ 11 ἔτη τὰ ἐπίλοιπα. † Εἶπα, Οὐκέτι οὐ μὴ ἴδω τὸ σωτήριον τοῦ θεοῦ (ι) ἐπὶ γῆς ζώντων, † οὐκέτι μὴ ἴδω τὸ σωτήριον τοῦ Ἰσραὴλ ἐπὶ γῆς, οὐκέτι μὴ ἴδω ἄνθρωπον. 12 Ἐξέλιπεν ἐκ τῆς συγγενείας μου, † κατέλιπον (κ) τὸ ἐπίλοιπον τῆς ζωῆς μου, ἐξῆλθε ϗ ἀπῆλθεν ἀπ' ἐμοῦ ὥσπερ (λ) ὁ σκηνὴν καταλύων πήξας· † ὡς ἱστὸς τὸ πνεῦμά μου 13 παρ' ἐμοὶ ἐγένετο, ἐρίθου ἐγγιζούσης ἐκτεμεῖν. † Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ παρεδόθην ἕως πρωῒ ὡς λέοντι, (μ) οὕτως συνέτριψε πάντα τὰ ὀστᾶ μου· † ἀπὸ γὰρ τῆς ἡμέρας ἕως (ν) νυκτὸς παρεδόθην.

37 *Et abiit reversus Sennacherim rex Assyriorum, & habitavit in Nineve:* 38 *Et, cùm ipse adoraret in domo (g) Nasarach patriarchum suum; Adramelech & Sarasar filii ejus percusserunt eum gladiis: ipsi autem salvati sunt in Armeniam: & regnavit Asordon filius ejus pro eo.*

CAP. XXXVIII.

1 *FActum est autem in tempore illo, ægrotavit Ezecias (a) usque ad mortem. Et venit ad eum Esaias filius Amos, propheta, & dixit ad eum; Hæc dicit Dominus; Dispone de domo tua: morieris enim tu, & non vives.* 2 *Et convertit Ezecias faciem suam ad parietem, & oravit ad Dominum,* 3 *Dicens; Memento, Domine, quomodò ambulaverim coram te cum veritate, in corde vero, & placita coram te fecerim. Et ploravit Ezecias ploratione magnâ.* 4 *Et factum est verbum Domini ad Esaiam, dicens;* 5 *Vade, & dic Ezeciæ; Hæc dicit Dominus Deus David patris tui; Audivi orationem tuam, & vidi lachrymas tuas: ecce adjicio ad tempus tuum quindecim annos.* 6 *Et de manu regis Assyriorum eruam te, & civitatem hanc: & protegam super civitatem hanc.* 7 *Hoc autem tibi signum à Domino: quia faciet Deus verbum hoc.* 8 *Ecce ego vertam umbram graduum, quos descendit decem gradꝰ domûs patris tui Sol: redire faciam Solem decem gradꝰ. Et ascendit Sol decẽ gradus quos descenderat umbra.*

9 *(b) ORATIO EZECIÆ REGIS JUDÆÆ, QUANDO LANGUIT, ET SURREXIT DE INFIRMITATE SUA.*

10 *EGo dixi in (c) excelso dierum meorum: (d) Vadam ad portas inferi: relinquam annos residuos.* 11 *Dixi; Nequaquam ultrà videbo salutare Dei in terra viventiũ, nec videbo ultrà salutare Israel sup terrã, nec videbo ultrà (e) hominem.* 12 *Defecit ex cognatione mea: dereliqui residuum vitæ meæ. Exivit, & recessit à me: sicut tabernaculum solvens, qui fixerat: sicut tela, spiritus meus apud me factus est, texente appropinquante ad succidendum.* 13 *In illa die traditus sum usque manè, sicut (f) leoni: sic contrivit omnia ossa mea. A die enim usque ad noctem traditus sum.*

MS.A. (λ) ὑποστραφεὶς ἀπῆλθεν βασιλεὺς Ἀσσυρίων, (μ) ἐν οἴκῳ Ἀσαρὰχ (ν) Σαρασὰ υἱοὶ Κεφ. λη'. MS.A. (α) ὅτι ἀποθνήσκεις σύ, (β) Πορεύου, ϗ εἰπὸν πρὸς Ἐζεκίαν, (γ) τῆς φωνῆς τῆς προσευχῆς σου, (δ) ἔτη δεκαπέντε, (ε) σώσω σε, ϗ ὑπὲρ τῆς πόλεως ταύτης ὑπερασπιῶ. (ζ) ὁ θεὸς ποιήσει (η) στρέψω (θ) ὁ ἥλιος τοὺς δέκα ἀναβαθμοὺς τοῦ οἴκου τοῦ πατρός σου, (*) ὨΔΗ'. (**)μου, Ἐν πύλαις (ι) ἐπὶ τῆς γῆς, οὐκέτι οὐ μὴ ἴδω ἄνθρωπον ἐκ τῆς συγγενείας μου, (κ) τὸ λοιπὸν (λ) ὁ καταλύων σκηνὴν πήξας· τὸ πνεῦμά μου παρ' ἐμοὶ ἐγένετο ὡς ἱστὸς, *ἐρίθου ἐγγιζούσης (μ) οὕτως τὰ ὀστᾶ μου συνέτριψεν· (ν) τῆς νυκτὸς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

37 וּנְטַל וַאֲזַל וְתָב סַנְחֵרִיב מַלְכָּא דְאַתּוּר וִיתֵיב בְּנִינְוֵה׃ וַהֲוָה הוּא סָגִיד בֵּית נִסְרוֹךְ
38 טַעֲוְתֵיהּ וְאַדְרַמֶּלֶךְ וְשַׂרְאֶצֶר בְּנוֹהִי קַטְלוּהִי בְחַרְבָּא וְאִנּוּן אִשְׁתֵּיזִבוּ לַאֲרַע קַרְדּוּ וּמְלַךְ
אֵסַרְחַדּוֹן בְּרֵיהּ תְּחוֹתוֹהִי׃

לח

1 בְּיוֹמַיָּא הָאִנּוּן מְרַע חִזְקִיָּה לִמְמָת וַאֲתָא לְוָתֵיהּ יְשַׁעְיָהוּ בַר אָמוֹץ נְבִיָּא וַאֲמַר לֵיהּ כִּדְנָן
2 אֲמַר יְיָ פַּקֵּד עַל אֱנָשׁ בֵּיתָךְ אֲרֵי מָאֵת אַתְּ וְלָא תֵחֵי מִמַּרְעָךְ׃ וְאַסְחַר חִזְקִיָּהוּ אַפּוֹהִי לְכוֹתֶל
3 בֵּית מַקְדְּשָׁא וְצַלִּי קֳדָם יְיָ׃ וַאֲמַר קַבֵּל בָּעוּתִי יְיָ אִדְכַּר כְּעַן יַת דִּי פְלַחִית קֳדָמָךְ בִּקְשׁוֹט
4 וּבְלֵב שְׁלֵם וּדְתַקִּין בְּעֵינָךְ עֲבָדִית וּבְכָא חִזְקִיָּה בִּכְיָא סַגִּיאָה׃ וַהֲוָה פִּתְגָּמֵי נְבוּאָה מִן
5 קֳדָם יְיָ עִם יְשַׁעְיָה לְמֵימַר׃ אֱזֵיל וְתֵימַר לְחִזְקִיָּה כִּדְנָן אֲמַר יְיָ אֱלָהֵיהּ דְּדָוִד אֲבוּךְ שְׁמִיעַ
6 קֳדָמַי צְלוֹתָךְ גְּלֵיא קֳדָמַי דִּמְעָתָךְ הָא אֲנָא מוֹסִיף עַל יוֹמָךְ חֲמֵשׁ עַסְרֵי שְׁנִין׃ וּמִיַּד מַלְכָּא
7 דְאַתּוּר אֲשֵׁיזְבִנָּךְ וְיַת קַרְתָּא הָדָא וְאָגֵין עַל קַרְתָּא הָדָא׃ וְדֵין לָךְ אָתָא מִן קֳדָם יְיָ דְּיַעְבֵּיד
8 יְיָ יַת פִּתְגָּמָא הָדֵין דִּי מַלֵּיל׃ הָא אֲנָא מְתִיב יַת טוּל אֶבֶן שָׁעַיָּא דִּנְחָתַת בְּמַסְּקָנָא דְאָחָז
9 שִׁמְשָׁא לַאֲחוֹרוֹהִי עֲסַר שָׁעִין וְתָב שִׁמְשָׁא עֲסַר שָׁעִין בְּצוּרַת אֶבֶן שָׁעַיָּא דִּנְחָתַת׃ כְּתַב
אוֹדָאָה עַל נִסָּא דְּאִתְעֲבֵד לְחִזְקִיָּהוּ מֶלֶךְ שִׁבְטָא דְבֵית יְהוּדָה כַּד מְרַע וְאִתְּסֵי מִמַּרְעֵיהּ׃
10 אֲנָא אֲמָרִית בִּדְוָן יוֹמַי אֵהָךְ בְּתַרְעֵי שְׁאוֹל עַל דִּכְרָנִי לְטָב אִתּוֹסַף עַל שְׁנַי׃ אֲמָרִית לָא
11 אֶתְחֲזֵי עוֹד קֳדָם דְּחִילָא דַייָ בְּאַרְעָא בֵּית שְׁכִנְתֵּיהּ דִּי בַהּ אֲרִיכוּת חַיַּיָּא וְלָא אֶפְלַח
קֳדָמוֹהִי עוֹד בְּבֵית מַקְדְּשָׁא דְמִתַּמָּן עֲתִיד לְמִפַּק חֶדְוָא לְכָל יָתְבֵי אַרְעָא מִלְּמֵדַר
12 בִּירוּשְׁלֵם קַרְתָּא דְקוּדְשָׁא מְדוֹרִי פְּסַק׃ מִבְּנֵי דָרִי אִתְנְטִילוּ יוֹמַי אִתְקְצִיצוּ וּגְלוֹ מִנִּי
אִתְכַּפִּילוּ כְּמַשְׁכְּנָא דְרָעֵי אִתְקַפְּדוּ כְּנוֹל גַּרְדָּאִין חַיַּי מִיקַר מַלְכוּתִי אֲנָא גָלֵי יְמָמַי וְלֵילְוָתַי
13 שְׁלִימוּ׃ נַהֲמִית עַד צַפְרָא כְּאַרְיָא דְנָהֵים וְתָבַר גַּרְמֵי חֵיוְתָא כֵּן מִתַּבְּרִין מִן קֳדָם דְּוָנָא
כָּל גַּרְמַי יְמָמַי וְלֵילְוָתַי שְׁלִימוּ׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et profectus est, & abiit; & reversus est Senacherib rex Assyriæ, & habitavit 37
in Ninive. Et factum est cùm adoraret in domo Nesroch idoli sui, 38
Adramelech & Sarasser filii sui occiderunt eum gladio: & ipsi evaserunt
in terram Armeniæ. Et regnavit Assaradon filius ejus pro eo.

CAP. XXXVIII.

IN diebus illis ægrotavit Ezechias usque ad mortem: & venit ad eum 1
Esaias filius Amos, propheta; & dixit ei: Hæc dicit Dñs, Præcipe de viris
domus tuæ, quia morieris, & non vives ab infirmitate tua. Et convertit 2
Ezechias faciem suam ad parietem domꝰ sanctuarii, & oravit coram Dño.
Et ait, Suscipe deprecationẽ meam Dñe; memento obsecro quòd servierim 3
coram te in veritate & in corde perfecto, & quod rectũ est *in oculis tuis* fecerim.
Et flevit Ezechias fletu magno. Et factũ est verbũ prophetiæ à facie 4
Dñi ad Esaiam dicens. Vade, & dices Ezechiæ: Hæc dicit Dñs Deus David 5
patris tui, Audita est coram me oratio tua: notæ sunt coram me lachrymæ
tuæ: ecce ego adjiciam super dies tuos quindecim annos. Et de manu regis 6
Assyriæ eruam te, & civitatẽ istam; & protegam civitatẽ istam. Et hoc erit 7
tibi signum à facie Dñi, quòd faciet Dñs verbũ hoc quod locutꝰ est: Ecce 8
ego reverti faciam umbrã lapidis horarũ, quà descenderat per gradꝰ Achaz
Sol, retrorsum decem horis: & regressus est Sol decem horis in figura lapidis
horarum, quà descenderat. Scriptura confessionis de miraculo quod 9
factũ est Ezechiæ regi tribꝰ Juda, quando ægrotavit & sanatꝰ est ab infirmitate
sua. Ego dixi. In mœrore dierũ meorũ vadam ad portas inferi; & 10
quia recordatꝰ est mei in bonũ, additũ est super annos meos. Dixi, Non apparebo 11
amplius in conspectu terribilis Dñi in terra domꝰ majestatis ejꝰ, in
qua est longitudo vitæ, & non serviam corã eo amplius in domo sanctuarii,
unde futurum est ut egrediatur gaudiũ omnibus habitatoribꝰ terræ; neque
morabor in Jerusalem civitate sancta, habitaculũ meũ succisum est. A filiis 12
generationis meæ ablati sunt dies mei, & succisi sunt, & migraverunt à me;
convoluti sũt quasi tabernaculũ pastoris; præcisa est, quasi tela texentiũ, vita
mea à gloria regni mei, *ego transmigro*: dies mei, & noctes meæ finitæ sunt.
Rugiebã usq; ad manè sicut leo qui rugit & cõfringit ossa animalis; sic con- 13
fringũtur præ dolore omnia ossa mea: dies mei et noctes meæ cõsũmatæ sũt.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

37 * ܘܫܩܠ ܣܢܚܪܝܒ. ܘܢܦܩ ܐܙܠ ܝܬܒ ܒܢܝܢܘܐ. * ܘܟܕ ܣܓܕ ܗܘܐ ܒܒܝܬ ܢܣܪܘܟ
38 ܐܠܗܗ. ܐܕܪܡܠܟ ܘܫܪܐܨܪ ܒܢܘܗܝ ܩܛܠܘܗܝ ܒܣܝܦܐ. ܘܗܢܘܢ ܥܪܩܘ ܠܐܪܥܐ ܕܩܪܕܘ.
ܘܐܡܠܟ ܣܪܚܕܘܡ ܒܪܗ ܚܠܦܘܗܝ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܚ *

1 * ܒܗܘܢ ܒܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ. ܐܬܟܪܗ ܚܙܩܝܐ ܠܡܡܬ. ܘܐܬܐ ܠܘܬܗ ܐܫܥܝܐ ܢܒܝܐ ܒܪ
ܐܡܘܨ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܦܩܘܕ ܥܠ ܒܝܬܟ. ܡܛܠ ܕܡܝܬ ܐܢܬ. ܘܠܐ ܚܝܐ 2
ܐܢܬ. * ܘܐܗܦܟ ܚܙܩܝܐ ܐܦܘܗܝ ܠܫܘܪܐ. ܘܨܠܝ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܘܐܡܪ. * ܐܘ ܡܪܝܐ. 3
ܐܬܕܟܪ ܕܗܠܟܬ ܩܕܡܝܟ ܒܡܗܝܡܢܘܬܐ ܘܒܠܒܐ ܫܠܡܐ. ܘܕܫܦܝܪ ܩܕܡܝܟ ܥܒܕܬ. ܘܒܟܐ
ܚܙܩܝܐ ܒܟܝܐ ܪܒܐ. * ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܫܥܝܐ ܢܒܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܙܠ ܐܡܪ 4 5
ܠܚܙܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗ ܕܕܘܝܕ ܐܒܘܟ. ܫܡܥܬ ܨܠܘܬܟ.
ܘܚܙܝܬ ܕܡܥܝܟ. ܗܐ ܡܘܣܦ ܐܢܐ ܥܠ ܝܘܡܝܟ ܚܡܫܥܣܪܐ ܫܢܝܢ. * ܘܡܢ ܐܝܕܘܗܝ 6
ܕܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. ܐܦܨܝܟ ܘܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܘܐܓܢ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܘܐܦܪܘܩܝܗ. * ܘܗܢܐ ܢܗܘܐ 7
ܠܟ ܐܬܐ ܡܢ ܠܘܬ ܡܪܝܐ. ܕܥܒܕ ܡܪܝܐ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ ܕܐܡܪ. * ܗܐ ܡܗܦܟ ܐܢܐ ܛܠܠܐ 8
ܕܕܪܓܐ ܕܢܚܬ ܒܕܪܓܐ. ܕܐܚܙ ܐܒܘܟ. ܫܡܫܐ ܠܒܣܬܪܗ. ܥܣܪ ܕܪܓܝܢ ܒܕܪܓܐ ܕܢܚܬ.

* ܫܠܡ ܐܫܥܝܐ *

9 * ܟܬܒܐ ܕܚܙܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܟܕ ܐܬܟܪܗ ܘܚܝܐ ܡܢ ܟܘܪܗܢܗ. * ܐܢܐ ܐܡܪܬ ܕܒܦܠܓܘܬ
10 ܝܘܡܝ ܐܙܠ ܠܬܪܥܐ ܕܫܝܘܠ ܫܒܩܬ ܫܪܟܐ ܕܫܢܝ. * ܐܡܪܬ. ܕܠܐ ܐܚܙܐ ܠܡܪܝܐ. ܒܐܪܥܐ ܕܚܝܐ.
11 ܬܘܒ. ܠܐ ܐܚܙܐ ܐܢܫܐ ܥܡ ܥܡܘܪܝ ܚܠܕܐ. * ܕܪܝ ܫܩܠ ܘܥܒܪ ܡܢܝ. ܐܝܟ ܡܫܟܢܐ
12 ܕܪܥܘܬܐ. ܐܬܟܪܟܘ ܐܝܟ ܣܪܘܕܐ ܚܝܝ. ܘܐܝܟ ܢܘܠܐ ܕܡܬܦܣܩ ܒܟܥܒܪܗ. ܡܢ ܝܘܡܡܐ
ܘܥܕܡܐ ܠܠܠܝܐ ܐܫܠܡܬܢܝ. **

* Quare profectus eſt Sanherib, & egreſſus 37 conſedit in Ninive: Dúmque adoraret in æde 38 Neſroch dei ſui, Edramelech, & Sereſar filii ejus gladio peremerunt eum: & his in terram Keredæorum fugientibus, regnavit Serahdom filius ejus poſt ipſum.

CAP. XXXVIII.

Iiſdem illis dieb' cùm ægrotâſſet Hezecia ad 1 mortem, venit ad eum Eſaia propheta filius Amoſi, dixítque ad eum; Sic ait Dominus; Proſpice domui tuæ, quia moriturus es, nec *amplius* victurus. Quapropter Hezecia, vultû 2 ad parietem verſo, precatus eſt Dominum, & ait; Eja Domine, recordare quòd æquo inte- 3 gróque animo coram te ambulârim, & quod rectum coram te erat, geſſerim: flevítque Hezecia fletu magno. Tum fuit ſermo Domini 4 ad Eſaiam prophetam, dicendo; Abi dictum 5 Hezeciæ regi Judæ, Sic dicit Dominus Deus Davidis patris tui; Audivi orationem tuam, & vidi lachrymas tuas: ecce ſuperaddam diebus tuis quindecim annos: De manu quoque 6 regis Aſſyriæ liberabo te & urbem iſtam, protegámque urbem iſtam, & eripiam eam. Atque hoc tibi eſto ſignum à Domino quòd 7 facturus ſit Dominus rem iſtam quam dixit: Ecce reducturus ſum umbram illam graduum, quæ deſcendit per gradus Ahazi patris tui 8 (ſolem *nempe* retrorſum) decem gradibus, per gradus *eoſdem* per quos deſcenderat.

Finis Eſaiæ.

Scriptum Hezeciæ regis Judæ, quando ægrotavit, & è morbo ſuo revixit. 9

Equidem dixeram me in mediis diebus meis 10 abiturum, ad inferni portam relicturum reliquos annos meos, Dixeram non viſurum me 11 Dominum in terra vivorum, & inter habitatores foveæ neminem ampliùs viſurum. Ævû 12 meum migravit & avolavit à me ceu tentorium paſtorum: contracta eſt inſtar vittæ contextæ vita mea, & velut jugum *textorium* mox præcidendum: à die uſque ad noctem tradidiſti me.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

37 * فمضي ورجع سنحاريب ملك الموصليين * وسكن في نينوي * وفيما هو يسجد في
38 بيت ناصاراخ رييس ابايه قتلاه ادراملاخ وصاصار ابناه بالسيف * وتخلصا الي ارمينيه *
وملك ناحردان ابنه عوضه *

* الفصل الثامن والثلثون *

1 * وصار في ذلك الزمان مرض حزقيا الي الموت * فاتي اليه اشعيا النبي ابن اموص وقال
2 له * هكذا يقول الرب * اوص من اجل بيتك لانك تموت ولست تعيش * فرد وجهه الي
3 الحايط * وصلي الي الرب قايلا * اذكر يا رب اني سرت امامك بالحق وبقلب كامل *
4 وصنعت المرضيات امامك * وبكي حزقيا بكاء عظيما * وصارت كلمة الرب الي اشعيا قايلا *
5 * امض وقل لحزقيا * هكذا يقول الرب اله داود ابيك * سمعت صوت صلاتك * ونظرت
6 دموعك * ها ازيد علي زمانك خمسة عشر سنة * ومن يد ملك الموصليين انجيك * واستر
7 8 علي هذه المدينة * وهذه العلامة لك من قبل الرب ان يصنع الله هذه الكلمة * ها انا
ارد في الدرج الذي نزلهم الشمس عشر درجات بيت ابيك * ارد الشمس العشر درجات
التي نزلهم الشمس * وصعدت الشمس العشر درجات التي نزلهم الفي *

9 * صلاة حزقيا ملك يهوذا حين مرض وقام من مرضه *

10 11 * انا قلت في ارتفاع ايامي * امضي في ابواب الجحيم اترك السنين الباقيه * قلت لست
12 انظر بعد خلاص الله علي ارض الاحياء * ولست انظر ايضا انسانا من السكان بها * فنيت من
ذوي جنسي * تركت بقية حياتي * خرجت ومضت مني مثل من حل خيمة نصبها * روحي
13 صارت عندي مثل حايك سداته قريب ان تقطع * في ذلك اليوم اسلمت الي الغداه *
كالاسد هكذا سحق جميع عظامي * من النهار الي الليل اسلمت *

* *Sic abſcedens Senharib rex Aſſyriorum,* 37 *rediit, habitavitque in Ninive: Et dum* 38 *adoraret in domo Naſarachi principis patrum ejus, Adramelech & Saſar filii ejus gladio peremerunt eum, & proripuerunt ſeſe in Armeniam: regnavitque Nachardan filius ejus loco ipſius.*

CAP. XXXVIII.

Contigit prætereà iis temporibus ut 1 *Hezecia ad mortem ægrotaret; quare veniens ad eum Eſaia propheta filius Amoſi, dixit illi; Sic dicit Dominus, Conſule rei familiari tuæ, quia moriturus es, & nequaquam vives. Is itaque conver-* 2 *ſâ ad parietem facie, Dominum precatus eſt dicens, Recordare O Domine* 3 *quòd ambulârim coram te in veritate & corde perfecto, & res tibi gratas egerim: flevitque Hezecia fletu magno. Tunc factum eſt verbum Domini ad* 4 *Eſaiam dicentis, Vade & dic Heze-* 5 *ciæ; Sic dicit Dominus Deus Davidis patris tui, Audivi vocem precationis tuæ, & lachrymas tuas reſpexi: ecce adjecturus ſum ad ætatem tuam quindecim annos; De manu regis Aſſyrio-* 6 *rum aſſerturus te; & hanc urbem protecturus. Atque hoc tibi eſto ſignum* 7 *à Domino, quòd facturus ſit Deus hoc negotium: Ecce ego reducam umbram* 8 *graduum per quos deſcendit ſol, decem gradibus domûs patris tui: ſolem reducam decem gradibus per quos ſol deſcendit: aſcendit ergò ſol decem gradibus, quibus deſcenderat umbra.*

Oratio Hezeciæ regis Judæ, cùm ægrotâſſet & revaluiſſet ex ægritudine ſua. 9

Ego dixi in ademptione dierum meorum, 10 *Adibo portas inferi, relinquam annos reſiduos. Dixi, Nequaquam videbo am-* 11 *pliùs ſalutem Dei ſuper terram vivorum, nec ulteriùs videbo quemquam habitantium in ea. Excidi è cognatis meis,* 12 *reſiduum vitæ meæ reliqui, expiravit & migravit à me, velut is qui tentorium diſſolvit quod erexerat: ſpiritus meus cenſetur apud me tanquam textor cujus ſtamen brevi ſecandum eſt. Eo die ex-* 13 *poſitus fui ad matutinum uſque ut leo, ſic contrivit omnia oſſa mea: à die ad noctem uſque traditus fui.*

ישעיה : לט

erant elevati : columba ut *gemebam* ; garriebam sic ,hirundo grus Sicut
14 כְּסוּס עָגוּר כֵּן אֲצַפְצֵף אֶהְגֶּה כַּיּוֹנָה דַּלּוּ
? loquar Quid *.mihi sponde* ,mihi fecit vim Domine ,excelsum *ad* mei oculi
15 עֵינַי לַמָּרוֹם יְהוָה עָשְׁקָה־לִּי עָרְבֵנִי׃ מָה־אֲדַבֵּר
amaritudine *super* meis annis omnibus *Vagabor* .fecit ipse & ,mihi dixit &
וְאָמַר־לִי וְהוּא עָשָׂה אֶדַּדֶּה כָל־שְׁנוֹתַי עַל־מַר
,mei spiritus *vitæ* eis in omnibus & : vivent eos *super* Domine .meæ animæ
16 נַפְשִׁי׃ אֲדֹנָי עֲלֵיהֶם יִחְיוּ וּלְכָל־בָּהֶן חַיֵּי רוּחִי
:amaritudo,mihi amaritudo pace in Ecce .me vivificabis & ,me sanabis &
17 וְתַחֲלִימֵנִי וְהַחֲיֵנִי׃ הִנֵּה לְשָׁלוֹם מַר־לִי מָר
projecisti quia ,*abolitionis* fovea à meã animam *amore es amplexus tu* Et
וְאַתָּה חָשַׁקְתָּ נַפְשִׁי מִשַּׁחַת בְּלִי כִּי־הִשְׁלַכְתָּ
,tibi confitebitur *sepulchrum* non Quia .mea peccata omnia tuũ tergũ post
18 אַחֲרֵי גֵוְךָ כָּל־חֲטָאָי׃ כִּי לֹא שְׁאוֹל תּוֹדֶךָּ
.tua veritate in *cisternam descendentes* sperabunt nec : te laudabit *mors*
מָוֶת יְהַלְלֶךָּ לֹא־יְשַׂבְּרוּ יוֹרְדֵי־בוֹר אֶל־אֲמִתֶּךָ׃
filiis pater : hodie ego sicut ,tibi confitebitur ipse vivens Vivens
19 חַי חַי הוּא יוֹדֶךָ כָּמוֹנִי הַיּוֹם אָב לְבָנִים
mea modulamina & :me *servandũ ad* Dominus .tuã veritatem *super* faciet notã
20 יוֹדִיעַ אֶל־אֲמִתֶּךָ׃ יְהוָה לְהוֹשִׁיעֵנִי וּנְגִנוֹתַי
Dixitque .Domini domo in nostræ vitæ diebus omnibus *modulabimur*
21 נְנַגֵּן כָּל־יְמֵי חַיֵּינוּ עַל־בֵּית יְהוָה׃ וַיֹּאמֶר
,*inflammationem super cataplasment* & : ficuum massam Tollant : Jesahjahu
יְשַׁעְיָהוּ יִשְׂאוּ דְּבֶלֶת תְּאֵנִים וְיִמְרְחוּ עַל־הַשְּׁחִין
domum ascendam quòd ,signum Quod ,Chizchijahu dixit Et *.vivet &*
22 וְיֶחִי׃ וַיֹּאמֶר חִזְקִיָּהוּ מָה אוֹת כִּי אֶעֱלֶה בֵּית
? Domini
יְהוָה׃

CAP. XXXIX. לט

rex Baladan filius Baladan Merodach misit illo tempore In
1 בָּעֵת הַהִיא שָׁלַח מְרֹדַךְ בַּלְאֲדָן בֶּן־בַּלְאֲדָן מֶלֶךְ־
,ægrotâsset quòd audierat & : Chizchijahu ad munus & , literas Babel
בָּבֶל סְפָרִים וּמִנְחָה אֶל־חִזְקִיָּהוּ וַיִּשְׁמַע כִּי חָלָה
eis ostendit & ,Chizchijahu eis super est lætatus Et .convaluisset &
2 וַיֶּחֱזָק׃ וַיִּשְׂמַח עֲלֵיהֶם חִזְקִיָּהוּ וַיַּרְאֵם אֶת־
& , aromata & ,aurum & ,argentum *,suæ pinacothecæ* domũ
בֵּית נְכֹתֹה אֶת־הַכֶּסֶף וְאֶת־הַזָּהָב וְאֶת־הַבְּשָׂמִים וְאֵת
quod omne & ,suorũ vasorũ domum omnem & ,optimum unguentũ
הַשֶּׁמֶן הַטּוֹב וְאֵת כָּל־בֵּית כֵּלָיו וְאֵת כָּל־אֲשֶׁר
eis ostenderit non quod *verbum* fuit non :suis thesauris in est inventũ
נִמְצָא בְּאוֹצְרֹתָיו לֹא־הָיָה דָבָר אֲשֶׁר לֹא־הֶרְאָם
Jesahjahu introivit Et .sua potestate omni in & ,sua domo in Chizchijahu
3 חִזְקִיָּהוּ בְּבֵיתוֹ וּבְכָל־מֶמְשַׁלְתּוֹ׃ וַיָּבֹא יְשַׁעְיָהוּ
dixerunt Quid *: eum ad* dixit & : Chizchijahu regem ad propheta
הַנָּבִיא אֶל־הַמֶּלֶךְ חִזְקִיָּהוּ וַיֹּאמֶר אֵלָיו מָה אָמְרוּ
terra De,Chizchijahu dixit & ? te ad venerũt unde & , isti viri
הָאֲנָשִׁים הָאֵלֶּה וּמֵאַיִן יָבֹאוּ אֵלֶיךָ וַיֹּאמֶר חִזְקִיָּהוּ מֵאֶרֶץ
?tua domo in viderũt Quid ,dixit Et .Babel de me ad venerũt longinqua
4 רְחוֹקָה בָּאוּ אֵלַי מִבָּבֶל׃ וַיֹּאמֶר מָה רָאוּ בְּבֵיתֶךָ
fuit non : viderunt mea domo in quæ Omnia : Chizchijahu dixit &
וַיֹּאמֶר חִזְקִיָּהוּ אֵת כָּל־אֲשֶׁר בְּבֵיתִי רָאוּ לֹא־הָיָה
Jesahjahu dixit Et .meis thesauris in eis ostenderim non quod *verbum*
5 דָבָר אֲשֶׁר לֹא־הִרְאִיתִים בְּאוֹצְרֹתָי׃ וַיֹּאמֶר יְשַׁעְיָהוּ
dies Ecce .exercituum Domini verbum Audi : Chizchijahu ad
6 אֶל־חִזְקִיָּהוּ שְׁמַע דְּבַר־יְהוָה צְבָאוֹת׃ הִנֵּה יָמִים
tui patres recondertunt quæ &,tua domo in quod omne tolletur &,*venientes*
בָּאִים וְנִשָּׂא כָּל־אֲשֶׁר בְּבֵיתֶךָ וַאֲשֶׁר אָצְרוּ אֲבֹתֶיךָ
.Dominus dixit *verbum remanebit* non : Babel hanc diem ad usque
עַד־הַיּוֹם הַזֶּה בָּבֶל לֹא־יִוָּתֵר דָּבָר אָמַר יְהוָה׃

Versio VUL. LAT.

14 Sicut pullus hirundinis sic clamabo, meditabor ut columba. Attenuati sunt oculi mei, suspicientes in excelsum. Dñe, vim 15 patior, responde pro me. Quid dicã, aut quid respõdebit mihi, cùm ipse fecerit? Recogitabo tibi omnes annos meos in ama- 16 ritudine animæ meæ. Domine, si sic vivitur, & in talibus vita spiritûs mei, corripies me, & 17 vivificabis me. Ecce in pace amaritudo mea amarissima: Tu autem eruisti animã meam ut non periret, projecisti post tergum tuum omnia peccata mea. 18 Quia non infern⁹ confitebitur tibi, neque mors laudabit te : non exspectabunt qui descen- 19 dunt in lacũ, veritatẽ tuã. Vivens vivens ipse confitebitur tibi, sicut & ego hodié : pater filiis notã faciet veritatẽ tuam. 20 Domine, salvum me fac, et psalmos nostros cantabimus cunctis diebus vitæ nostræ in do- 21 mo Domini. Et jussit Isaias ut tollerent massam de ficis, et cataplasmarent super vulnus, & 22 sanaretur. Et dixit Ezechias ; Quod erit signum quia ascendam in domum Domini ?

CAP. XXXIX.

1 IN tempore illo misit Merodach Baladan, fili⁹ Baladan rex Babylonis, libros & munera ad Ezechiã : audierat enim quòd 2 ægrotâsset & convaluisset. Lætatus est autem super eis Ezechias, & ostendit eis cellam aromatum, & argenti, & auri, et odoramentorum, & unguenti optimi, & omnes apothecas supellectilis suæ, & universa quæ inventa sunt in thesauris ejus. Non fuit verbum quod non ostenderet eis Ezechias in domo sua, & in omni potestate 3 sua. Introivit autẽ Isaias propheta ad Ezechiam regem, & dixit ei; Quid dixerunt viri isti, & unde venerũt ad te? Et dixit Ezechias ; De terra longinqua venerunt ad me, de Babylone. 4 Et dixit ; Quid viderunt in domo tua? Et dixit Ezechias ; Omnia quæ in domo mea sunt, viderunt : non fuit res, quam non ostenderim eis in thesau- 5 ris meis. Et dixit Isaias ad Ezechiam ; Audi verbum Dñi exer- 6 cituum. Ecce dies venient, & auferentur omnia, quæ in domo tua sunt, et quæ thesaurizaverunt patres tui usque ad diẽ hanc, in Babylonem : non relinquetur quidquã, dicit Domin⁹.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

14 † Ὡς χελιδὼν, (ˡ) οὕτω φωνήσω, καὶ ὡς περιστερὰ, (ξ) οὕτω μελετῶ· † ἐξέλιπον γάρ μου οἱ ὀφθαλμοὶ τοῦ βλέπειν εἰς τὸ ὕψος τοῦ οὐρανοῦ πρὸς τὸν κύριον, ὃς ἐξείλατό με, καὶ ἀφείλατό μου τὴν ὀδύνην τῆς ψυχῆς. 16 † Κύριε, περὶ αὐτῆς γὰρ ἀνηγγέλη σοι, καὶ ἐξήγειράς μου τὴν πνοὴν, καὶ παρακληθεὶς ἔζησα. 17 † Εἵλου γάρ μου τὴν ψυχὴν, ἵνα μὴ ἀπόληται, καὶ ἀπέρριψας ὀπίσω μου πάσας τὰς (·) ἁμαρτίας. 18 † Οὐ γὰρ οἱ ἐν ᾅδου αἰνέσουσί σε, † οὐδὲ οἱ ἀποθανόντες εὐλογήσουσί σε, † οὐδὲ ἐλπιοῦσιν οἱ ἐν ᾅδου τὴν ἐλεημοσύνην σου. 19 † Οἱ ζῶντες εὐλογήσουσί σε ὃν τρόπον κἀγώ· † ἀπὸ γὰρ τῆς σήμερον παιδία ποιήσω, † ἃ ἀναγγελοῦσι 20 τὴν δικαιοσύνην (ο) σου Θεὲ τῆς σωτηρίας μου, † καὶ οὐ παύσομαι εὐλογῶν σε μετὰ ψαλτηρίου πάσας τὰς ἡμέρας τῆς ζωῆς μου, κατέναντι 21 τοῦ οἴκου τοῦ Θεοῦ. Καὶ εἶπεν Ἡσαΐας πρὸς Ἐζεκίαν, Λάβε παλάθην ἐκ σύκων, καὶ τρῖ- 22 ψον, καὶ κατάπλασαι, καὶ ὑγιὴς ἔσῃ. Καὶ εἶπεν Ἐζεκίας, (π) Τοῦτο σημεῖον πρὸς Ἐζεκίαν, ὅτι ἀναβήσομαι εἰς τὸν οἶκον τοῦ Θεοῦ.

MS.A. (ˡ) οὕτως (ξ) οὕτως μελετήσω· (·) ἁμαρτίας μου. (ο) σου Κύριε τὸν (π) Τοῦτο τὸ σημεῖον, ὅτι ἀναβήσομαι εἰς τὸν οἶκον κυρίου τοῦ Θεοῦ.

14 *Quasi hirundo, sic clamabo ; & quasi columba, sic meditor. Defecerunt enim oculi mei aspiciendo in excelsum cœli ad Dominum, qui eruit me, & abstulit à me dolorem animæ. Domine, de ipsa enim* 16 *annuntiatum est tibi: & suscitâsti spiritum meum: & consolationem accipiens vixi. Eruisti enim ani-* 17 *mam meam, ut non periret: & projecisti post me omnia peccata. Non* 18 *enim qui in inferno, laudabunt te, neque mortui benedicent te, neque sperabunt, qui apud inferos sunt, misericordiam tuam. Viventes be-* 19 *nedicent tibi, sicut & ego. Ab hodiè enim filios faciam, qui annuntiabunt justitiam tuam, Dee sa-* 20 *lutis meæ, & non cessabo benedicens tibi cum psalterio omnibus diebus vitæ meæ in conspectu domûs Dei. Et dixit Esaias ad E-* 21 *zeciam; Sume massam de ficis, & tere, & (g) cataplasma, & sanus eris. Et dixit Ezecias; Hoc signum* 22 *ad Ezeciam, quia ascendam in domum Dei.*

ΚΕΦ. λθ'.

1 ΕΝ τῷ καιρῷ ἐκείνῳ ἀπέστειλε Μαρωδὰχ (α) Βαλαδὰν ὁ υἱὸς τοῦ Βαλαδὰν, ὁ βασιλεὺς τῆς Βαβυλωνίας, ἐπιστολὰς καὶ πρέσβεις καὶ δῶρα Ἐζεκίᾳ· ἤκουσε γὰρ, ὅτι ἐμαλακίσθη 2 ἕως θανάτου, καὶ ἀνέστη. Καὶ ἐχάρη ἐπ' αὐτοῖς Ἐζεκίας (β), καὶ ἔδειξεν αὐτοῖς τὸν οἶκον τοῦ νεχωθᾶ, καὶ (γ) τοῦ ἀργυρίου, καὶ τοῦ χρυσίου, καὶ τῆς στακτῆς, καὶ τῶν θυμιαμάτων, καὶ τοῦ μύρου, καὶ πάντας τοὺς οἴκους τῶν σκευῶν τῆς γάζης, καὶ πάντα ὅσα ἦν ἐν τοῖς θησαυροῖς αὐτοῦ· καὶ οὐκ ἦν οὐθὲν ὃ οὐκ ἔδειξεν (δ) Ἐζεκίας ἐν τῷ οἴκῳ (ε) αὐτοῦ, καὶ ἐν πάσῃ τῇ 3 ἐξουσίᾳ αὐτοῦ. Καὶ ἦλθεν Ἡσαΐας ὁ προφήτης πρὸς τὸν βασιλέα Ἐζεκίαν, καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, Τί λέγουσιν οἱ ἄνθρωποι οὗτοι; καὶ πόθεν ἥκασι πρὸς σέ; καὶ εἶπεν Ἐζεκίας, Ἐκ γῆς πόρρωθεν ἥκασι πρὸς μὲ, ἐκ Βα- 4 βυλῶνος. Καὶ εἶπεν Ἡσαΐας, Τί (ζ) εἴδοσαν ἐν τῷ οἴκῳ σου; καὶ εἶπεν Ἐζεκίας, Πάντα τὰ ἐν τῷ οἴκῳ μου εἴδοσαν, καὶ οὐκ ἔστιν ἐν τῷ οἴκῳ μου ὃ οὐκ εἴδοσαν, ἀλλὰ καὶ 5 τὰ ἐν τοῖς θησαυροῖς μου. Καὶ εἶπεν (η) Ἡσαΐας αὐτῷ, Ἄκουσον τὸν λόγον κυρίου σα- 6 βαώθ. Ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, (θ) καὶ λήψονται πάντα τὰ ἐν τῷ οἴκῳ σου, καὶ ὅσα συνήγαγον οἱ πατέρες σου ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης, εἰς Βαβυλῶνα ἥξει, καὶ (ι) οὐδὲν οὐ μὴ καταλείπωσιν. εἶπε δὲ ὁ Θεὸς,

MS.A. (α) υἱὸς τοῦ Ἀλαδὰν, (β) χαρὰν μεγάλην, (γ) τῆς στακτῆς, καὶ τῶν θυμιαμάτων, καὶ τοῦ μύρου, καὶ τοῦ ἀργυρίου, καὶ τοῦ χρυσίου, καὶ πάντας τοὺς οἴκους (δ) αὐτοῖς Ἐζεκίας (ε) αὐτοῦ. Καὶ ἦλθεν Ἡσαΐας (ζ) ἴδον (η) αὐτῷ Ἡσαΐας, (θ) λέγει κύριος, καὶ (ι) οὐ μὴ καταλείπωσιν οὐδέν. εἶπεν

CAP. XXXIX.

1 *IN tempore illo misit Marodach Baladan filius Baladan rex Babyloniæ, epistolas, & legatos, & munera Ezeciæ : audierat enim quòd ægrotâsset usq; ad mortem,* 2 *& surrexisset. Lætatusque est super eis Ezecias, & ostendit eis domum (a) Nechotha, & argenti, & auri, & stactes, & thymiamatum, & unguenti, & omnes domos vasorum gazæ, & omnia quæcunque erant in thesauris ipsius. Et non fuit quicquam, quod non ostenderit Ezecias, in domo sua, et in omni potestate sua. Et* 3 *venit Esaias propheta ad regem Ezeciam, et dixit ad eum; Quid dicunt homines isti? Et unde venerunt ad te? Et dixit Ezecias; De terra longinqua venerunt ad me, de Babylone. Et dixit Esaias;* 4 *Quid viderunt in domo tua? Et dixit Ezecias, Omnia quæ in domo mea sunt, viderunt: et non est in domo mea, quod non viderint, sed etiam, quæ in thesauris meis. Et dixit Esaias ei ; Audi verbum* 5 *Domini Sabaoth: Ecce dies ve-* 6 *nient, et tollent omnia, quæ in domo tua sunt; et quæcunque congregaverunt patres tui usque ad diem hanc, in Babylonem venient: et nihil relinquent. Dixit autem Deus;*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 כסוסיא דאחיד ומנצף כן נצפירית ונהמית כיונה זקפית עיני דייתי לי רוח מן קדם
15 דשכנתיה בשמי מרומא יי קביל צלותי עביד בעותי : מה אמלל תושבחתא ואימר
קדמוהי והוא אסגי טבון למעבד עמי מה אפלח ואשלים קדמוהי כל שניא דאוסיף על
16 חיי ושיזיב ממריר נפשי : יי על כל מיתיא אמרתא לאחיאה וקדם כולהון אחייתא רוחי
17 ואחייתני וקימתני : הא לעבדי אוריתא סגי שלמא קדמך ואת מיתי מרירא לרשיעיא
בכן כד ידעית יום מותי שפכית דמעתי בצלו קדמך מר לי סגי ואת אתרעיתא בחיי בדיל
18 דלא לחבלא נפשי ארי ארחיקתא מן קדמך כל חטאי : ארי לא דבשאול מודן קדמך
19 מיתיא לא משבחין לך לא מסברין נחתי גוב בית אבדנא לפורקנך : דחי חי יודי קדמך
20 כותי יומא הדין אבהן לבניהון יחוון גבורתך ויודון למימר דכל אלין קשוט : יי
21 למפרקנא אמר ונגון תושבחתיה ננגן כל יומי חינא על בית מקדשא דיי : ואמר ישעיה
22 יסבון דבלת תינין וישורטון על שיחנא ואתסי : ואמר חזקיה מה את ארי אסק לבית
מקדשא דיי :

לט

1 בעדנא ההיא שלח מרודך בלאדן בר בלאדן מלכא דבבל אגרין וקורבנין לות חזקיה
2 כד שמע ארי מרע ואתסי : וחדי עליהון חזקיה ואחזנון ית בית גנזוהי ית כספא וית
דהבא וית בוסמנא וית משחא טבא וית כל בית מנוהי וית כל דאשתכח בגנזוהי לא
3 הוה מדעם דלא אחזינון חזקיה בביתיה ובכל שולטניה : ואתא ישעיה נביא לות
מלכא חזקיה ואמר ליה מה אמרו גבריא האלין ומנן אתו לותך ואמר חזקיה
4 מארעא רחיקא אתו לותי מבבל : ואמר מה חזו בביתך ואמר חזקיה ית כל די בביתי
5 חזו לא הוה מדעם דלא אחזיתנון בגנזי : ואמר ישעיה לחזקיה קביל פתגמא דיי צבאות :
6 הא יומיא אתן ויתנטיל כל די בביתך ודי גנזו אבהתך עד יומא הדין ויתובל לבבל לא
ישתאר מדעם אמר יי :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

14 Sicut hirundo quæ comprehensa est garrit, sic garriebam ; & rugiebam, sicut columba : levavi oculos meos, ut veniret mihi spatium à facie ejus, cujus majestas est in cœlis excelsis. Dñe suscipe orationem meam & fac depre- 15 cationem meam. Quid laudis loquar & dicam coram eo ? *ipse* enim multiplicavit benefacere mihi ? in quo serviam & retribuam coram eo, propter omnes annos quos adjecit super vitam meam ; & liberavit ab amaritudine 16 animã meam? Dñe de omnib⁹ mortuis dixisti te vivificaturum eos : & ante 17 omnes vivificâsti spiritũ meum, sanâsti me & sustentâsti me. Ecce operantib⁹ legem multiplicabitur pax coram te; & tu adducis amaritudinẽ impiis. Propterea quando cognovi diem mortis meæ, fudi lachrymas meas corã te in oratione: amaritudo fuit mihi multa: tu autẽ voluisti vitam meã, ut non 18 disperderes animã meã, quia projecisti à facie tua omnia peccata mea. Non enim mortui, qui habitãt in inferno, confitentur corã te; nec laudant te, neq; 19 sperant descendentes in lacũ perditionis salutare tuũ. Vivens vivens ipse confitebitur coram te, sicut & ego hodie: patres filiis suis annunciabunt po- 20 tentiã tuam, & confitebuntur : dicentes, Quia omnia hæc vera sunt. Dñs dixit se liberaturũ nos : & canticum laudis ej⁹ cantabimus omnib⁹ diebus 21 vitæ nostræ in domo sanctuarii Dñi. Et dixit Esaias, Tollant massam ficuũ, 22 & extendant super scabiem, & sanabitur. Et dixit Ezechias, Quod est signum quòd ascendam in domum sanctuarii Dñi ?

CAP. XXXIX.

1 IN tempore illo misit Merodach Baladan fili⁹ Baladan rex Babylonis epistolas & munera ad Ezechiam, quando audivit quod ægrotâsset, & sanatus 2 fuisset. Et lætat⁹ est sup eis Ezechias, & ostendit eis domũ thesaurorũ suorũ, & argentũ, & aurũ, & aromata, & unguentũ optimũ, & omnem domũ vasorum suorũ, & omnia quæ inventa sunt in thesauris suis : nihil fuit ꝙ non 3 ostenderet eis Ezechias in domo sua, & in omni dominatione sua. Et venit Esaias propheta ad regem Ezechiam: & dixit ei, Quid dixerunt viri isti, & unde venerunt ad te ? Et dixit Ezechias, De terrã longinquã venerunt ad 4 me, de Babylone. Et ait, Quid viderunt in domo tua ? Et dixit Ezechias, Omnia quæ in domo mea sunt, viderunt: nihil fuit quod non ostenderim eis 5 in thesauris meis. Et dixit Esaias ad Ezechiam, Suscipe verbum Dñi exer- 6 cituum. Ecce dies venient, & auferentur omnia quæ in domo tua sunt, & quæ thesaurizaverunt patres tui usque in diem hanc ; & asportabuntur in Babylonem : non relinquetur quicquam, dicit Dominus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܝܟ ܣܢܘܢܝܬܐ ܕܡܨܦܪܐ· ܨܦܪܬ. ܘܐܝܟ ܝܘܢܐ ܢܗܡܬ. ܐܪܝܡܬ ܥܝܢܝ ܠܡܪܘܡܐ. ܡܪܝܐ 14
ܦܪܘܩ· ܘܚܘܣ ܥܠܝ. * ܘܡܢܐ ܐܡܠܠ. ܐܡܪ ܠܝ. ܘܗܘ ܥܒܕ· ܘܐܥܒܪ. ܟܠܗ ܫܢܬܝ. ܥܠ 15
ܡܪܝܪܘܬ ܕܢܦܫܝ· ܡܪܝܐ. ܢܚܘܣ ܥܠܝ. * ܡܛܠ ܗܠܝܢ ܚܝܐ ܕܪܘܚܝ· ܐܚܠܡܢܝ ܘܐܚܝܢܝ. 16
* ܗܐ. ܠܫܠܡܐ ܡܪܪܘ ܠܝ ܡܪܝܪܐ. ܨܒܬ ܠܒܟ ܢܦܫܝ. ܕܠܐ ܬܐܒܕ ܒܚܒܠܐ. ܡܛܠ ܕܐܪܡܝܬ 17
ܒܣܬܪ ܦܓܪܟ. ܟܠܗܘܢ ܚܛܗܝ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܫܝܘܠ ܡܘܕܐ ܠܟ· ܘܠܐ ܡܘܬܐ ܢܫܒܚܟ. 18
ܘܠܐ ܢܣܒܪܘܢ ܗܝܡܢܘܬܟ ܕܢܚܬܝܢ ܠܓܘܒܐ. * ܐܠܐ ܢܘܕܘܢ ܠܟ ܚܝܐ ܐܝܟ ܕܐܢܐ ܝܘܡܢܐ. 19
ܘܐܒܐ ܠܒܢܝܐ. ܢܘܕܥ ܗܝܡܢܘܬܟ. * ܡܪܝܐ ܢܦܪܘܩܢ. ܘܬܫܒܚܬܗ ܢܙܡܪ· ܟܠܗܘܢ 20
ܝܘܡܬܐ ܕܚܝܝܢ. ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܐܡܪ ܚܙܩܝܐ. ܡܢܘ ܐܬܐ ܕܐܣܩ ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. 21
* ܘܐܡܪ ܐܫܥܝܐ. ܢܣܒܘܢ ܕܒܠܬܐ ܕܬܐܢܐ· ܘܢܫܝܦܘܢ ܥܠ ܫܘܚܢܐ. ܘܡܬܐܣܐ. 22
* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܛ * ܒܙܒܢܐ ܗܘ· ܫܕܪ ܡܪܘܕܟ ܒܠܕܢ ܒܪ ܒܠܕܢ ܡܠܟܐ 1
ܕܒܒܠ· ܐܓܪܬܐ ܘܩܘܪܒܢܐ ܠܚܙܩܝܐ. ܡܛܠ ܕܫܡܥ ܕܐܬܟܪܗ· ܘܚܝܐ ܘܐܬܚܠܡ. * ܘܚܕܝ 2
ܒܗܘܢ ܚܙܩܝܐ. ܘܚܘܝ ܐܢܘܢ ܒܝܬ ܓܙܘܗܝ· ܟܣܦܐ ܘܕܗܒܐ. ܘܒܣܡܐ ܘܡܫܚܐ ܛܒܐ.
ܘܒܝܬ ܡܐܢܘܗܝ ܘܟܠ ܕܐܫܬܟܚ ܒܓܙܘܗܝ. ܘܠܐ ܫܒܩ ܡܕܡ ܚܙܩܝܐ ܕܠܐ ܚܘܝ
ܐܢܘܢ: ܒܒܝܬܗ ܘܒܟܠܗ ܫܘܠܛܢܗ. * ܘܐܬܐ ܐܫܥܝܐ ܢܒܝܐ ܠܘܬ ܚܙܩܝܐ ܡܠܟܐ 3
ܘܐܡܪ ܠܗ. ܡܢܐ ܐܡܪܘ ܠܟ ܓܒܪܐ ܗܠܝܢ· ܘܡܢ ܐܝܟܐ ܐܬܘ ܠܘܬܟ. ܘܐܡܪ ܚܙܩܝܐ. ܡܢ
ܐܪܥܐ ܪܚܝܩܬܐ ܕܒܒܠ ܐܬܘ ܠܘܬܝ. * ܘܐܡܪ. ܡܢܐ ܚܙܘ ܒܒܝܬܟ· ܘܐܡܪ ܚܙܩܝܐ. ܟܠ 4
ܕܐܝܬ ܒܒܝܬܝ ܚܙܘ. ܘܠܐ ܫܒܩܬ ܡܕܡ ܒܒܝܬܝ. ܕܠܐ ܚܘܝܬ ܐܢܘܢ. * ܘܐܡܪ ܐܫܥܝܐ 5
ܠܚܙܩܝܐ. ܫܡܥ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ· ܘܡܫܬܩܠ 6
ܟܠ ܕܐܝܬ ܒܒܝܬܟ. ܘܡܕܡ ܕܐܨܢܥܘ ܐܒܗܝܟ ܥܕܡܐ ܠܝܘܡܢܐ. ܠܒܒܠ ܢܐܙܠ. ܘܡܕܡ
ܠܐ ܢܫܬܒܩ ܠܟ· ܐܡܪ ܡܪܝܐ.

Ut hirundo garriens pipiebam, & ut columba 14
gemebam. Extuli in ſublime oculos meos, *&*
dixi, Domine ſerva me, & benignè mecum
utere, Et quid loquar dic mihi: ipſe namque 15
fecit, & amovit totum ſomnum meum. Amaritudinum
animæ miſereatur Dñs; Propter 16
hujuſmodi vitam ſpiritûs mei, ſana me & vivum
me conſerva. Num ad pacem amareſcerent 17
mihi amaritudines? Quare cordi tibi
fuit anima mea, ne tabeſceret in corruptione,
quoniam abjeciſti poſt corpus tuum omnia
peccata mea. Non enim infernus gratias tibi 18
agit, neque mors laudabit te, neque veritatem
tuam prædicabunt ii qui deſcendunt in
foveam: Sed gratias tibi agent vivi, qualis 19
ego ſum hodie; & pater filiis patefaciet fidem
tuam. Dominus liberet nos, ut laudes ejus ca- 20
namus cunctis diebus vitæ noſtræ in domo
Domini. Dixerat autem Hezecia, Quodnam 21
eſt ſignum me aſcenſurum in domû Domini?
Et reſponderat Eſaia, Sumant palatham fi- 22
cuum, appingant ulceri, & ſanabitur.

CAP. XXXIX.

Eo tempore miſit Merodach-beldan filius 1
Beldanis regis Babelis, epiſtolas & munera
ad Hezeciam; audierat enim eum ægrotâſſe,
tum convaluiſſe, ac ſanum eſſe. Quibus He- 2
zecia hilariter exceptis, oſtendit theſaurum
ſuum, argentũ, & aurũ, aromata, unguentum
optimũ, & omnia armamentaria ſua, & quicquid
extabat in theſauris ſuis: nil deniq; omiſit
Hezecia, quod non oſtenderet eis, in domo
ſua & in tota ditione ſua. Venit autem Eſaia 3
propheta ad Hezeciam regem, & dixit ei;
Quid tibi dixerunt homines illi? & unde venerunt
ad te? Cui dixit Hezecia, E terra longinqua
Babelis ad me venerunt. Rurſus di- 4
centi quid viderunt domi tuæ? reſpondit Hezecia,
Quicquid extat domi meæ viderunt: &
nihil omiſi domi meæ, quod non oſtenderim
eis. Tum dixit Eſaia ad Hezeciam, Audi ſer- 5
monem Domini potentiſſimi: Ecce dies venturi
ſunt quibus auferetur quicquid eſt domi 6
tuæ: & theſaurus patrum tuorum, quem ad
hunc uſque diem *condiderunt*, ibit in Babelem,
& nihil tibi relinquetur, ait Dominus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* مثل سنونوه هكذا اصوت * ومثل حمامة هكذا اهدر * لان عيني فنيتا من ان انظر الي علو 14
السماء * نحو الرب الذي خلصني ونزع وجع نفسي [* MS. Ox. وقال لي بمذا اتكلم * وعبر 15
فطير كل رقادي * فعلي مرارة نفسي ينظر الرب فيعافيني منها] * لان يا رب من اجلها 16
اخبرتك * وايقظت نسمتي * تعزيت فعشت * لانك خلصت نفسي لكيلا تهلك * وطرحت وراي 17
كل خطاياي * لان ليس الذين في الجحيم يسبحونك يا رب * ولا الميتون يباركونك * ولا الذين 18
في الجحيم يرجون رحمتك * الاحياء يباركونك مثلي انا * لاني منذ اليوم اصنع اولادا الذين 19
يخبرون بعدلك يا رب خلاصي * ولست اكف مباركا لك بمزمار جميع ايام حياتي امام بيت 20
الرب الهي * الاصحاح التاسع عشر * فقال اشعياء لحزقيا * خذ لك حبة من 21
التين ودقها وتضمد بها * تصير صحيحا * فقال حزقيا * هذه العلامة اني اصعد الي بيت الرب 22
الاله * الفصل التاسع والثلثون * وفي ذلك الزمان ارسل مارودخ ابن 1
بالادان ملك الاعمال البابلية * رسايل وشفعاء وهدايا لحزقيا * لانه مرض حتي الموت وقام *
* ففرح بها حزقيا فرحا عظيما * واراهم بيت ماله * والميعة والبخورات والطيب * والفضة والذهب * 2
وجميع بيوت اواني خزانته * وكل ما كان في ذخايره * ولم يكن شي في بيته وفي سلطانه الا
واطلعهم * فاتي اشعياء النبي الي حزقيا وقال له * ماذا يقولون هولاء الناس * ومن اين اتوا اليك * 3
فقال حزقيا * من ارض بعيدة اتوا الي * من بابل * فقال اشعياء ما راوا في بيتك * وقال حزقيا * 4
راوا كلما في بيتي * ولم يبق في بيتي شي الا وراوه * هكذا وما في ذخايري * فقال له 5
اشعياء * اسمع قول رب الجيوش * ها ايام تاتي يقول الرب وياخذون كلما في بيتك * وما 6
جمعته اباوك الي هذا اليوم يحمل الي بابل * ولا يتركون ولا شيا *

ut hirundo, ſic pipio; & ut columba, 14
ſic gemo: quoniam oculi mei conſumpti
ſunt aſpiciendo in altitudinem cœli, verſùs
Dominum qui eripuit me & abſtulit
dolorem animæ meæ. [MS. Ox. *Et di-* 15
xit mihi, Quid ipſe proferrem: abſtulit,
& amovit ſubitò omnem ſomnum
meum: at in amaritudinem animæ meæ
reſpexit Dominus, & mihi illam levavit.]
Hujus enim cauſâ O Domine te monui, 16
& expergefeciſti auram meam vitalem,
& confortatus revixi: Quandoquidem 17
ſervâſti animam meam ne periret, & à
tergo meo projeciſti omnia peccata mea.
Neque enim qui ſunt in inferis te celebrant 18
O Domine, neque mortui benedicunt
tibi; neque ii qui ſunt in inferis, miſericordiam
tuam ſperant. Vivi te laudant, 19
ut ego: quoniam ab hac impoſterùm die
facturus ſum filios qui tuam prædicabunt
juſtitiam, O Domine ſalutis meæ. Et ego 20
cum pſalterio inceſſanter benedicam tibi
cunctis diebus vitæ meæ ante domum Domini
Dei mei.

Textus decimus nonus.

Dixerat enim Eſaia ad Hezeciam, Sume 21
tibi granum è ficubus (i. ficum unam) *&*
contuſũ ulceri tuo applica, eriſque ſanus.
Dixerátque Hezecia, Hoc eſt ſignum quòd 22
aſcenſurus ſim in domum Domini Dei.

CAP. XXXIX.

Eodem tempore miſit Merodach filius 1
Baladanis rex provinciarum Babylonicarum,
literas, & fauſta precantes, atque
munera, ad Hezeciam: quoniam cùm ægrotâſſet
ad mortem uſque, reſurrexerat. Gavi- 2
ſus eſt autem de iis muneribus & literis
Hezecia gaudio magno, & oſtendit illis
ærarium ſuum, guttam, thus, & odoramenta
ſuaviſſima, argentum & aurum,
omnes cellas vaſorum gazæ ſuæ, & quicquid
erat in theſauris ſuis: nihil denique
fuit domi ſuæ & in ditione ſua, quod
non oſtentârit. Quare veniens Eſaia 3
propheta ad Hezeciam, dixit illi. Quid
dicunt homines iſti? & unde venerunt
ad te? Reſpondit Hezecia, E terra longinqua
venerunt ad me, de Babele. Di- 4
xit rurſus Eſaia, Quid viderunt domi
tuæ? Reſpondit Hezecia, Viderunt quicquid
eſt domi meæ, nihil enim remanſit domi
meæ, quod non viderint: pari modo
quicquid eſt in theſauris meis. Dixit ad eũ
Eſaia, Audi dictũ Domini exercituũ: Ecce 5
dies venient, dicit Dominus, quibus rapient 6
quicquid eſt domi tuæ: et quicquid condiderunt
majores tui ad hanc uſque diem,
aſportabitur in Babelem, nihilque relinquent.

יְשַׁעְיָה׃ מ

erunt & : tollent ,genueris quos , te de exibunt qui tuis filiis de Et
7 וּמִבָּנֶיךָ אֲשֶׁר יֵצְאוּ מִמְּךָ אֲשֶׁר תּוֹלִיד יִקָּחוּ וְהָיוּ
, Jeschajahu ad Chizchijahu dixit Et .Babel regis palatio in Eunuchi
8 סָרִיסִים בְּהֵיכַל מֶלֶךְ בָּבֶל׃ וַיֹּאמֶר חִזְקִיָּהוּ אֶל־יְשַׁעְיָהוּ
, pax erit quia :dixit Et.es locutus quod , Domini verbum Bonum
טוֹב דְּבַר־יְהוָה אֲשֶׁר דִּבַּרְתָּ וַיֹּאמֶר כִּי יִהְיֶה שָׁלוֹם
.meis diebus in veritas &
וֶאֱמֶת בְּיָמָי׃

CAP. XL. מ

Loquimini .vester Deus dicet :meum populum consolamini ,Consolamini
1 נַחֲמוּ נַחֲמוּ עַמִּי יֹאמַר אֱלֹהֵיכֶם׃ דַּבְּרוּ
2 ,ejus militia est completa quod ,eam ad clamate & , Jerusalaim cor ad
עַל־לֵב יְרוּשָׁלַםִ וְקִרְאוּ אֵלֶיהָ כִּי מָלְאָה צְבָאָהּ
Domini manu de suscepit nam :ejus iniquitas est facta placabilis quia
כִּי נִרְצָה עֲוֺנָהּ כִּי לָקְחָה מִיַּד יְהוָה
Complanate ,deserto in clamantis Vox .suis peccatis omnibus *in* duplicia
3 כִּפְלַיִם בְּכָל־חַטֹּאתֶיהָ׃ קוֹל קוֹרֵא בַּמִּדְבָּר פַּנּוּ
Omnis .nostri Dei *stratam semitam* solitudine in facite rectã :Domini viam
4 דֶּרֶךְ יְהוָה יַשְּׁרוּ בָּעֲרָבָה מְסִלָּה לֵאלֹהֵינוּ׃ כָּל־
pravum erit &:se humiliabunt collis &,mons omnis &,se exaltabit vallis
גֶּיא יִנָּשֵׂא וְכָל־הַר וְגִבְעָה יִשְׁפָּלוּ וְהָיָה הֶעָקֹב
: Domini gloria se revelabit Et .planitiem in *prærupta* & , directionem in
5 לְמִישׁוֹר וְהָרְכָסִים לְבִקְעָה׃ וְנִגְלָה כְּבוֹד יְהוָה
, dicentis Vox .est locutum Dñi os quod ,pariter caro omnis *videbunt* &
6 וְרָאוּ כָל־בָּשָׂר יַחְדָּו כִּי פִּי יְהוָה דִּבֵּר׃ קוֹל אֹמֵר
ejꝰ pietas omnis &:herba caro omnis ? clamabo Quid ,dixit & : Clama
קְרָא וְאָמַר מָה אֶקְרָא כָּל־הַבָּשָׂר חָצִיר וְכָל־חַסְדּוֹ
Domini spiritus quia,flos cecidit , herba Aruit .agri flos tanquam
7 כְּצִיץ הַשָּׂדֶה׃ יָבֵשׁ חָצִיר נָבֵל צִיץ כִּי רוּחַ יְהוָה
: flos cecidit , herba Aruit .populus herba vere : eum in sufflavit
8 נָשְׁבָה בּוֹ אָכֵן חָצִיר הָעָם׃ יָבֵשׁ חָצִיר נָבֵל צִיץ
excelsum montem Super .seculum in stabit nostri Dei verbum &
9 וּדְבַר אֱלֹהֵינוּ יָקוּם לְעוֹלָם׃ עַל הַר־גָּבֹהַ
tuam vocem fortitudine in exalta , Sijon evangelizatrix tibi ascende
עֲלִי־לָךְ מְבַשֶּׂרֶת צִיּוֹן הָרִימִי בַכֹּחַ קוֹלֵךְ
,Jehudah civitatibus dic ; timeas ne ,exalta:Jerusalaim evangelizatrix
מְבַשֶּׂרֶת יְרוּשָׁלָםִ הָרִימִי אַל־תִּירָאִי אִמְרִי לְעָרֵי יְהוּדָה
ejꝰ brachiũ & ,veniet forti cum DEUS Dominꝰ Ecce .vester Deus ecce
10 הִנֵּה אֱלֹהֵיכֶם׃ הִנֵּה אֲדֹנָי יְהוִה בְּחָזָק יָבוֹא וּזְרֹעוֹ
pastor Sicut .*ejus facies ad* ejus opus &,eo cum ejꝰ merces ecce : ei *dominans*
11 מֹשְׁלָה לוֹ הִנֵּה שְׂכָרוֹ אִתּוֹ וּפְעֻלָּתוֹ לְפָנָיו׃ כְּרֹעֶה
:portabit suo sinu in &,*agnellos* cõgregabit suo brachio in,pascet suũ gregem
עֶדְרוֹ יִרְעֶה בִּזְרֹעוֹ יְקַבֵּץ טְלָאִים וּבְחֵיקוֹ יִשָּׂא
palmo in cœlos & ,aquas suo pugillo in est mensus Quis .ducet fœtas
12 עָלוֹת יְנַהֵל׃ מִי־מָדַד בְּשָׁעֳלוֹ מַיִם וְשָׁמַיִם בַּזֶּרֶת
statera in appendit & ? terræ pulverem *ternaria* mensura in *continuit* &,*direxit*
תִּכֵּן וְכָל בַּשָּׁלִשׁ עֲפַר הָאָרֶץ וְשָׁקַל בַּפֶּלֶס
vir & :Domini spiritum *instruxit* Quis ? *bilancibus* in colles & ,montes
13 הָרִים וּגְבָעוֹת בְּמֹאזְנָיִם׃ מִי־תִכֵּן אֶת־רוּחַ יְהוָה וְאִישׁ
, eũ instruxit &,est consiliatus quo Cum ? eum *faciet* scire ejus consilium
14 עֲצָתוֹ יוֹדִיעֶנּוּ׃ אֶת־מִי נוֹעָץ וַיְבִינֵהוּ
viam & , scientia eum erudivit & : judicium semita in eum docuit &
וַיְלַמְּדֵהוּ בְּאֹרַח מִשְׁפָּט וַיְלַמְּדֵהוּ דַעַת וְדֶרֶךְ
; *situla à* stilla sicut gentes Ecce ? *eum fecit scire* intelligentiarum
15 תְּבוּנוֹת יוֹדִיעֶנּוּ׃ הֵן גּוֹיִם כְּמַר מִדְּלִי
.*protelabit minutũ ut* insulas ecce : sunt reputatæ *bilãciũ* pulvis tenuis sicut &
וּכְשַׁחַק מֹאזְנַיִם נֶחְשָׁבוּ הֵן אִיִּים כַּדַּק יִטּוֹל׃

Versio VULG. LAT.

7 Et de filiis tuis, qui exibunt de
te, quos genueris, tollent, &
erunt eunuchi in palatio regis
8 Babylonis. Et dixit Ezechias
ad Isaiam; Bonum verbum Domini
quod locutus est. Et dixit;
Fiat tantùm pax & veritas in
diebus meis.

CAP. XL.

1 COnsolamini, consolamini,
popule meus, dicit Deus vester.
2 Loquimini ad cor Jerusalem,
& advocate eam : quoniam
completa est malitia ejꝰ,
dimissa est iniquitas illius: suscepit
de manu Domini duplicia
pro omnibus peccatis suis.
3 Vox clamantis in deserto ; Parate
viam Domini, rectas facite
in solitudine semitas Dei
4 nostri. Omnis vallis exaltabitur,
& omnis mons & collis
humiliabitur, & erunt prava
in directa, et aspera in vias planas.
5 Et revelabitur gloria Domini,
& videbit omnis caro
pariter quòd os Domini locutum
6 est. Vox dicentis; Clama.
Et dixi; Quid clamabo? Omnis
caro fœnum, & omnis gloria
7 ejus quasi flos agri. Exiccatum
est fœnum, & cecidit flos, quia
spiritus Domini sufflavit in eo.
8 Verè fœnũ est populus: Exiccatum
est fœnum, & cecidit
flos : Verbum autem Domini
9 nostri manet in æternum. Super
montem excelsum ascende
tu, qui evangelizas Sion : exalta
in fortitudine vocẽ tuam,
qui evangelizas Jerusalem :
exalta, noli timere. Dic civitatibus
Juda ; Ecce Deus ve-
10 ster : Ecce Dominus Deus in
fortitudine veniet, & brachiũ
ejus dominabitur : ecce merces
ejus cum eo, & opus illius
11 coram illo. Sicut pastor gregem
suum pascet : in brachio
suo congregabit agnos, & in
sinu suo levabit, fœtas ipse
12 portabit. Quis mensus est pugillo
aquas, & cœlos palmo
ponderavit? quis appendit tribus
digitis molem terræ, & libravit
in pondere montes, &
13 colles in statera ? Quis adju-
14 vit spiritum Domini ? aut quis consiliarius ejus fuit, & ostendit illi? Cum quo iniit consilium, & in-
struxit eum, & docuit eum semitã justitiæ, et erudivit eum scientiã, et viam prudentiæ ostendit illi ?
15 Ecce Gentes quasi stilla situlæ, et quasi momentũ stateræ reputatæ sũt: ecce insulæ quasi pulvis exiguꝰ.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

7 Ὅτι καὶ ἀπὸ τῶν τέκνων σου ὧν (κ) γεννήσεις,
λήψονται, καὶ ποιήσουσι σπάδοντας ἐν τῷ οἴκῳ
8 τοῦ βασιλέως τῶν Βαβυλωνίων. Καὶ εἶπεν
Ἐζεκίας (λ) Ἡσαΐᾳ, Ἀγαθὸς ὁ λόγος κυρίου,
ὃν ἐλάλησε· γενέσθω δὴ εἰρήνη καὶ δικαιοσύνη
ἐν ταῖς ἡμέραις μου.

MS. A. (κ) ἐγέννησας, (λ) πρὸς Ἡσαΐαν,

ΚΕΦ. μʹ.

1 ΠΑρακαλεῖτε παρακαλεῖτε τὸν λαόν μου, λέ-
2 γει (α) ὁ θεός. Ἱερεῖς λαλήσατε εἰς τὴν καρδίαν
Ἱερουσαλήμ, παρακαλέσατε αὐτήν, ὅτι
ἐπλήσθη ἡ ταπείνωσις αὐτῆς, λέλυται αὐτῆς
ἡ ἁμαρτία, ὅτι ἐδέξατο ἐκ χειρὸς κυ-
3 ρίου διπλᾶ τὰ ἁμαρτήματα αὐτῆς. Φωνὴ
βοῶντος ἐν τῇ ἐρήμῳ, Ἑτοιμάσατε τὴν ὁδὸν
κυρίου, εὐθείας ποιεῖτε τὰς τρίβους τοῦ θεοῦ
4 ἡμῶν. Πᾶσα φάραγξ πληρωθήσεται, καὶ πᾶν
ὄρος καὶ βουνὸς ταπεινωθήσεται· καὶ ἔσται (β)
πάντα τὰ σκολιὰ εἰς εὐθεῖαν, καὶ ἡ τραχεῖα
5 εἰς (γ) πεδία. Καὶ ὀφθήσεται ἡ δόξα κυρίου,
καὶ ὄψεται πᾶσα σὰρξ τὸ σωτήριον τοῦ θεοῦ,
6 ὅτι κύριος ἐλάλησε. Φωνὴ λέγοντος, Βόησον.
καὶ εἶπα, Τί βοήσω; Πᾶσα σὰρξ χόρτος,
καὶ πᾶσα δόξα ἀνθρώπου ὡς ἄνθος χόρ-
7 του. Ἐξηράνθη ὁ χόρτος, καὶ τὸ ἄνθος ἐξ-
8 έπεσε, Τὸ δὲ ῥῆμα τοῦ θεοῦ ἡμῶν μένει εἰς τὸν
9 αἰῶνα. Ἐπ' ὄρος ὑψηλὸν ἀνάβηθι ὁ εὐαγγελιζόμενος
Σιών, ὕψωσον τῇ ἰσχύϊ τὴν φωνήν
σου ὁ εὐαγγελιζόμενος Ἱερουσαλήμ· ὑψώσατε,
μὴ φοβεῖσθε. εἰπὸν ταῖς πόλεσιν Ἰούδα,
10 Ἰδοὺ ὁ θεὸς ὑμῶν, Ἰδοὺ (δ) κύριος. κύριος
μετὰ ἰσχύος ἔρχεται, καὶ ὁ βραχίων (ε) μετὰ κυ-
ρίας. ἰδοὺ ὁ μισθὸς αὐτοῦ μετ' αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔρ-
11 γον ἐναντίον αὐτοῦ. Ὡς ποιμὴν ποιμανεῖ τὸ
ποίμνιον αὐτοῦ, καὶ τῷ βραχίονι αὐτοῦ συνάξει
ἄρνας, καὶ ἐν γαστρὶ ἐχούσας παρακαλέ-
12 σει. Τίς ἐμέτρησε τῇ χειρὶ τὸ ὕδωρ, καὶ τὸν οὐρανὸν
σπιθαμῇ, καὶ πᾶσαν τὴν γῆν δρακί; τίς
ἔστησε τὰ ὄρη σταθμῷ, καὶ τὰς νάπας ζυγῷ;
13 Τίς ἔγνω νοῦν κυρίου; καὶ τίς (ζ) αὐτοῦ σύμβου-
14 λος ἐγένετο, ὃς (η) συμβιβᾷ αὐτόν; Ἢ
πρὸς τίνα συνεβουλεύσατο, καὶ συνεβίβα-
15 σεν αὐτόν; ἢ τίς ἔδειξεν αὐτῷ κρίσιν; ἢ
ὁδὸν συνέσεως τίς ἔδειξεν αὐτῷ; (θ) Εἰ
πάντα τὰ ἔθνη ὡς σταγὼν ἀπὸ κάδου, καὶ ὡς
ῥοπὴ ζυγοῦ ἐλογίσθησαν, (ι) ὡς σίελος λογισθήσονται;

MS.A. (α) κύριος. (β) τὰ σκολιὰ (γ) ὁδοὺς λείας. (δ) κύριος μετὰ ἰσχύος (ε) αὐτοῦ (ζ) σύμβουλος αὐτοῦ (η) συμβιβάσει (θ) ἢ τίς προέδωκεν αὐτῷ καὶ ἀνταποδοθήσεται αὐτῷ; Εἰ (ι) καὶ ὡσεὶ * ἔλαιον

Quia & de filiis tuis, quos genueris, tollent, & facient spadones in 7
domo regis Babyloniorum. Et dixit 8
Ezecias Esaiæ; Bonum verbũ Domini, quod locutus est: Fiat nunc
pax, & justitia in diebus meis.

CAP. XL.

COnsolamini, consolamini populum meum, dicit Deꝰ. (a) Sacer- 1 2
dotes loquimini ad cor Hierusalem, consolamini eam : quia repleta
est humilitas ejus; solutum est peccatum illius: quia recepit de manu
Domini duplicia peccata sua. Vox 3
clamantis in deserto , Parate viam
Domini: rectas facite semitas Dei
nostri. Omnis vallis implebitur: & 4
omnis mons et collis humiliabitur:
& erunt omnia prava in directã:*
& aspera in campos. Et apparebit 5
gloria Domini : & videbit omnis
caro salutare Dei : quia Dominus
loquutus est. Vox dicentis, Clama. 6
Et dixi, Quid clamabo ? Omnis
caro fœnum, & omnis gloria hominis,
quasi flos fœni. Aruit fœ- 7
num, & flos (b) cecidit: Verbum 8
autem Dei nostri manet in sempiternum.
Super montem excelsum 9
ascende, qui evangelizas Sion ;
exalta in fortitudine vocem
tuam , qui evangelizas Hierusalem:
exaltate, nolite timere: dic
civitatibus Juda; Ecce Deus vester,
Ecce Dominus. Dominus cum 10
virtute venit, & brachium cum
dominatione. Ecce merces ejus
cum eo , & opus in conspectu illius.
Sicut pastor pascet gregem 11
suum, & brachio suo congregabit
agnos, & prægnantes consolabitur.
Quis mensus est manu aquam, & 12
cælum palmo , & omnem terram
pugillo? Quis statuit montes pondere,
et rupes staterã? Quis cogno- 13
vit mentem Domini ; aut quis
consiliarius ejus fuit, qui doceat
eum? Aut cum quo consilium iniit, 14
et instruxit illum? Vel quis ostendit
ei judicium? vel viam intelligentiæ
quis (c) ostendit illi ? Si o- 15
mnes gentes, sicut stilla de situla,
et quasi momentum stateræ reputatæ
sunt, quasi saliva reputabuntur?

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

7 ומבנך דיפקון מנך דתוליד ידברון ויהון רברבין בהיכלא מלכא דבבל׃ ואמר חזקיה
8 לישעיה תקין פתגמא דיי דמללתא ואמר ארי יהי שלם וקשוט ביומי׃

ל

1 נבייא אתנביאו תנחומין על עמי אמר אלהכון׃ מלילו על לבא דירושלם ואתנבו עלה
2 ארי עתידא דתתמלי מעם גלותהא ארי אשתביקו לה חובהא ארי קבילת כס תנחומין
3 מן קדם יי כאלו לקת על חד תרין בכל חטאתהא׃ קל דמכלי במדברא פנו אורח מן
4 קדם עמא דיי כבישו במישרא כבשין קדם כנשתא דאלהנא׃ כל חיליא יראמון וכל
5 טור ורמא ימאכון ויהי כפלא למישרא ובית גדודין לבקעה׃ ויתגלי יקרא דיי ויחזון
6 כל בני בסרא כחדא ארי במימרא דיי גזר כן׃ קל דאמר אתנבי ומתיב ואמר מה אתנבי
7 כל רשיעיא כעשבא וכל תוקפהון כמוצא דחקלא׃ יבש עסבא נתר נציה ארי רוחא מן
8 קדם יי נשבת ביה בכן כעסבא חשיבין רשיעיא בעמא׃ מית רשיעא אבדו עשתונוהי
9 ופתגמא דאלהנא קים לעלמין׃ על טור רם סקו לכון נבייא די מבסרין לציון ארימו
בחילא קלכון די מבסרין לירושלם ארימו לא תדחלון אמרו לקרויא דבית יהודה
10 אתגליאת מלכותא דאלהכון׃ הא יי אלהים בתקוף מתגלי ותקוף דרע גבורתיה שלטא
11 קדמוהי הא אגר עבדי מימריה עמיה דכל עובדיהון גלן קדמוהי׃ כרעיא דעדריה רעי
12 בדרעיה מכניש אמרין ובחיניה מסובר רכיכין מיניקתא בניח מדבר׃ מן אמר אלין
קים אמר ועביד דכל מי עלמא חשיבין קדמוהי כטפא בשעולא ומשחת שמיא כאלו
בזרתא מתקנין ועפרא דארעא כאלו במכילא אתכל וטוריא כאלו מתקל תקילין
13 ורמתא כד במוזניא׃ מן תקין ית רוח קודשא בפום כל נבייא הלא יי וצדיקיא עבדי
14 מימריה פתגמי רעותיה הודענון׃ לדהון דבעו מן קדמוהי אסבר חוכמא ואלפנון אורח
15 דדין ויהב לבניהון אוריתא ואורח דסוכלתנו לבני בניהון הודענון׃ הא עממיא כטפא
מדול וכעיול מוזניא חשיבין הא נגותא כדוקא דפרח׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et de filiis tuis qui exibunt ex te, quos genueris, tollent ; & erunt nutriti 7
in palatio regis Babylonis. Et dixit Ezechias ad Esaiam: Rectum est verbũ 8
Dñi quod locutus es: & dixit, Quia erit pax & veritas in diebus meis.

CAP. XL.

PRophetæ prophetate consolationes super populũ meum, dicit Deꝰ vester. 1
Loquimini ad cor Jerusalem, & prophetate super eam ; quia futurum est ut 2
impleatur populo transmigrationis *ejus*, quia dimittentur ei peccata sua,
quia suscepit calicem consolationũ à facie Dñi, ac si percussa esset dupliciter
pro omnibꝰ peccatis suis. Vox clamantis in deserto, Parate viam *coram* 3
populo Domini, sternite in campestri planitie vias corã cœtu Dei nostri. Oẽs 4
valles elevabuntur, & omnis mons & collis humiliabuntur; & erunt ardua
in planitiẽ, & aspera in campum planum. Et revelabitur gloria Dñi, & vi- 5
debunt omnes filii carnis simul, quia in verbo Dñi decretũ est ita. Vox di- 6
centis, Prophetiza : & respondit & ait, Quid prophetabo ? omnes impii
sunt sicut herba, & omnis fortitudo eorũ sicut stipula agri. Arescit herba & 7
marcescit flos ejus, quia spiritꝰ à facie Dñi sufflavit in eũ: utiq; sicut herba
existimati sunt impii populi. Mortuꝰ est impiꝰ, & perierunt cogitationes 8
ejꝰ. Verbũ autẽ Dei nostri manet in æternũ. Super montẽ excelsum ascen- 9
dite vos Prophetæ qui evangelizatis Sion: extollite in fortitudine vocem
vestram, qui evangelizatis Jerusalem; extollite, ne timeatis : dicite urbibus
domus Judæ, Revelatum est regnũ Dei vestri. Ecce Dñs Deꝰ in fortitudine 10
revelatur, & fortitudo brachii potentiæ suæ dominatur corã eo: ecce merces
facientibus verbum ejꝰ cum eo, quia omnia opera eorũ manifesta sunt
coram eo. Sicut pastor qui pascit gregem suum, & in brachio suo congregat 11
agnos, & in sinu suo portat teneros ; fœtas leniter ducit. Qui dixit hæc, 12
confirmavit ea : & dixit, & fecit ; ante cujꝰ conspectum omnes aquæ seculi
habentur quasi gutta in pugillo, & mensura cœlorum, ac si præparati essent
palmo ; & pulvis terræ, ac si mensuratus esset in mensura ; & montes, ac si
essent ponderati in pondere ; & colles, ac si essent in stateris. Quis direxit 13
spiritũ sanctũ in ore omniũ prophetarũ? Nónne Dñs? & justi faciunt verbũ
ejus, quibꝰ ostendit verba voluntatis suæ. Qui à facie *ejꝰ* quæsierunt, intelli- 14
gere faciã eos sapientiã; & docebo eos viã judicii. Et dedit filiis eorũ legẽ,
& viã intelligẽtiæ filiis filiorũ eorũ ostendit. Ecce populi quasi gutta situlæ, 15
& quasi momentũ bilancis reputati sũt: ecce insulæ quasi favilla quæ volat.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

7 * ܘܡܢ ܒܢܝܟ ܕܢܦܩܘܢ ܡܢܟ ܕܡܘܠܕ ܐܢܬ. ܢܕܒܪܘܢ ܘܢܗܘܘܢ ܡܗܝܡܢܐ ܒܗܝܟܠܗ
8 ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. * ܘܐܡܪ ܚܙܩܝܐ ܠܐܫܥܝܐ. ܫܦܝܪ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܕܐܡܪܬ. ܢܗܘܐ
ܫܠܡܐ ܘܫܪܪܐ ܒܝܘܡܝ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܡ * ܒܝܐܘ ܒܝܐܘ ܠܥܡܝ 1
2 ܐܡܪ ܐܠܗܟܘܢ. * ܡܠܠܘ ܥܠ ܠܒܗ ܕܐܘܪܫܠܡ ܘܩܪܘ ܠܗ. ܡܛܠ ܕܐܬܡܠܝܬ ܚܝܠܐ ܘܪܥܝܬ
3 ܚܛܝܬܗ. ܘܩܒܠܬ ܡܢ ܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ ܐܥܦܐ ܕܟܠܗܘܢ ܚܛܗܝܗ. * ܩܠܐ ܕܩܪܐ ܒܡܕܒܪܐ.
4 ܦܢܘ ܐܘܪܚܐ ܠܡܪܝܐ. ܘܐܬܪܘܨܘ ܒܦܩܥܬܐ ܫܒܝܠܐ ܠܐܠܗܢ. * ܟܠܗܘܢ ܢܚܠܐ ܢܬܡܠܘܢ.
ܘܟܠܗܘܢ ܛܘܪܐ ܘܪܡܬܐ ܢܬܡܟܟܘܢ. ܘܢܗܘܐ ܥܪܡܐ ܠܡܫܪܐ. ܘܐܬܪܐ ܥܣܩܐ ܠܦܩܥܬܐ.
5 * ܘܢܬܓܠܐ ܐܝܩܪܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܢܚܙܘܢܗ ܐܟܚܕܐ ܟܠ ܒܣܪ. ܡܛܠ ܕܦܘܡܗ ܕܡܪܝܐ ܡܠܠ.
6 * ܩܠܐ ܕܐܡܪ. ܩܪܝ. ܘܐܡܪ. ܡܢܐ ܐܩܪܐ. ܟܠ ܒܣܪ ܥܣܒܐ. ܘܟܠܗ ܛܝܒܘܬܗ. ܐܝܟ ܗܘܦܝܐ
7 ܕܚܩܠܐ. * ܝܒܫ ܥܣܒܐ ܘܢܦܠ ܗܘܦܝܐ. ܡܛܠ ܕܪܘܚܗ ܕܡܪܝܐ ܢܫܒܬ ܒܗ. ܗܟܢܐ ܗܘ
8 ܥܣܒܐ ܕܥܡܐ ܗܢܐ. * ܝܒܫ ܥܣܒܐ ܘܢܦܠ ܗܘܦܝܐ. ܘܡܠܬܗ ܕܐܠܗܢ. ܩܝܡܐ
9 ܠܥܠܡ. * ܥܠ ܛܘܪܐ ܪܡܐ ܣܩܝ ܠܟܝ. ܡܣܒܪܢܝܬܐ ܕܨܗܝܘܢ. ܐܪܝܡܝ ܩܠܟܝ ܒܚܝܠܐ.
10 ܡܣܒܪܢܝܬܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܐܪܝܡܝ ܘܠܐ ܬܕܚܠܝܢ. ܐܡܪܝ ܠܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܗܐ ܐܠܗܟܘܢ. * ܗܐ
ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܐܬܐ ܒܥܘܫܢܐ. ܘܕܪܥܗ ܒܚܝܠܐ. ܗܐ ܐܓܪܗ ܥܡܗ. ܘܥܒܕܗ ܩܕܡܘܗܝ.
11 * ܐܝܟ ܪܥܝܐ ܕܪܥܐ ܥܢܗ. ܘܒܕܪܥܗ ܡܟܢܫ ܐܡܪܐ. ܘܒܥܘܒܗ ܫܩܠ ܠܗܘܢ. ܘܡܝܢܩܬܐ
12 ܡܕܒܪ. * ܡܢܘ ܟܠ ܒܫܘܥܠܗ ܡܝܐ. ܘܫܡܝܐ ܡܫܚ ܒܙܪܬܗ. ܘܟܝܠ ܒܚܦܢܗ ܥܦܪܗ
13 ܕܐܪܥܐ. ܘܬܩܠ ܛܘܪܐ ܒܡܬܩܠܐ. ܘܪܡܬܐ ܒܡܣܐܬܐ. * ܡܢܘ ܬܩܢ ܪܘܚܗ ܕܡܪܝܐ. ܐܘ ܡܢܘ ܗܘܐ
14 ܠܗ ܡܠܟ ܡܠܟܐ. * ܠܡܢܘ ܐܬܡܠܟ ܘܐܠܦܗ. ܘܐܦܗܡܗ ܐܘܪܚܐ ܕܕܝܢܐ. ܘܐܠܦܗ
15 ܝܕܥܬܐ. ܘܐܘܪܚܐ ܕܣܘܟܠܐ ܚܘܝܗ. * ܗܐ ܥܡ̈ܡܐ. ܐܝܟ ܢܛܦܬܐ ܡܢ ܩܘܩܐ. ܘܐܝܟ ܡܬܩܠܐ
ܕܡܣܐܬܐ. ܘܓܙܪ̈ܬܐ ܐܝܟ ܕܩܝܩܐ ܢܫܬܕܘܢ.

De filiis etiam tuis qui prodibunt ex te, quos tu geniturus es, abducentur, & erunt eunuchi in palatio regis Babylonici. 7 Dixit Hezecia ad Eſaiam, Optimus eſt ſermo Dñi, quem dixiſti, futuram pacem & veritatem in diebus meis. 8

CAP. XL.

Conſolamini, conſolamini populũ meum, 1 dicit Deus veſter: Recreate animũ Jeroſolymæ, 2 & clamitate ad eam: repleta eſt enim exercitu, oblectata eſt peccato, & accepit de manu Dñi duplum omniũ peccatorũ ſuorũ. Vox 3 clamans in deſerto, Reſtituite viã Domino, & adæquate in ſolitudine ſemitas Deo noſtro. Omnes valles impleantur, omnes montes & 4 colles humilientur, tumidum vertatur in planum, & locus aſper in planitiem: Ut appareat 5 majeſtas Dñi, & videant eam omnis omninò caro; quandoquidem os Dñi locutũ eſt. Vox 6 dicens, Clama: dixit, Quid clamabo? Omnis caro gramen eſt, & omnis decor ejus ſimilis herbæ campi: Exaruit gramen, & emarcuit 7 herba, quia ſpiritus Domini flavit in ipſum. Tale eſt gramen hujus populi: Exareſcit gra- 8 men, & marceſcit herba; verbum autem Dei noſtri eſt perpetuò conſtans. Montes ex- 9 celſos conſcende Sion prædicatrix; attolle vocem tuam validè Jeruſalem prædicatrix; attolle, & ne timeto: dic civitatibus Judæ, Ecce Dominus Deus eſt cum robore venturus, 10 & brachium ejus cum fortitudine: ecce merces ejus cum ipſo eſt, & opus illius ante ipſum; Veluti paſtor qui paſcit gregem ſu- 11 um, & brachio ſuo congregat agnos, ſuoque ſinu portat, lactantes autem nutrit. Quis men- 12 ſus eſt aquas volâ ſuâ, & cœlum dimenſus eſt palmo ſuo? terræ pulverem ſuo menſus eſt pugillo, montes ponderibus expendit & col- 13 les ſtaterâ? Quis direxit ſpiritum Domini? 14 aut quis fuit illi dator conſilii? Quemnam conſuluit ut doceret eum, & intelligendam præberet ei viam judicii, doceret eum ſcientiam, & viam intelligentiæ monſtraret illi? En populi tanquam guttula è cacabo, & ut 15 momentum ſtateræ, & inſulæ ut pulviſculus projicientur.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

7 * وقال الله ان من بنيك الذين ولدتهم ياخذون ويجعلونهم خصيانا في بيت ملك البابليين *
8 * فقال حزقيا لاشعيا القول الذي تكلم به الرب صالح * لتكن السلامة والعدل في ايامي *
1 * الفصل الاربعون *
2 عزوا عزوا شعبي قال الله ايها الكهنة * تكلموا في قلب
ايروسليم * عزوها لان تواضعها كمل * انحلت خطيتها لانها قبلت من يد الرب خطاياها
مضعفة *
* قريان ذكران يوحنا *
3 * صوت صارخ في البرية اعدوا طريق الرب * اصنعوا سبل الهنا مستقيمة * كل واد يمتلي *
4 وكل جبل واكمة يتضع * ويصير جميع المعوجات مستقيمة * والخشنة الي طريق لينة *
5 * ويظهر مجد الرب * ويعاين كل ذي جسد خلاص الله * لان الرب تكلم * صوت قايل اصرخ *
6 فقلت ماذا اصرخ * كل جسد عشب * وكل مجد الانسان مثل زهر عشب [* MS.Ox. ييبس
7 العشب وتساقط الزهر * من اجل ان روح الرب هبت به * هكذي ييبس حشيش هذا الشعب *]
8 * يبس العشب وسقطت الزهر * وكلمة الهنا تدوم الي الابد * على جبل عال اصعد يا مبشر
9 صهيون * ارفع صوتك بقوة يا مبشر ايروسليم * ارفعوا ولا تخافوا * قل لمدن يهودا ها الهنا *
10 * ها الرب يقبل بقوة * وذراعه بسيادة * ها اجرته معه * وعمله قدامه * مثل الراعي الذي
11 يرعي قطيعه * وبذراعه يجمع الخراف * ويعزي الحبالي * من كال الماء بيده * والسماء بشبره *
12 وكل الارض بقبضته * من اقام الجبال بالمثقال * والروابي بالميزان * من علم ايضا ضمير
13 الرب * ومن كان له مشيرا حتي يلقنه * او من استشاره فلقنه * او من اعطاه حكما *
14 او من اظهر له طريق فهم فيعوضه * ان كل الامم مثل نقطة من قادوس * ومثل ميلان
15 الميزان حسبوا * ومثل غاب يحسبون *

Inſuper dixit Deus quòd de filiis tuis quos genuiſti, abducent, & facient eos eunuchos in domo regis Babyloniorum. 7 *Dixit Hezecia ad Eſaiam; Sermo quem locutus eſt Dominus, bonus eſt: ſit tranquillitas & juſtitia in diebus meis.* 8

CAP. XL.

Conſolamini, conſolamini populum meum, dicit Deus, O ſacerdotes: 1 *Loquimini in corde Jeroſolymæ, conſolamini eam: quoniam dejectio ejus ceſſavit, ſolutum eſt peccatum ejus; recepit enim è manu Domini peccata ſua, duplicia.* 2

Lectio commemorationis Johannis.

Vox clamans in deſerto, Parate viam Domini, rectas facite ſemitas Dei noſtri. 3 *Omnis vallis implebitur, omniſque mons & collis humiliabitur; contorta quæque fient recta, & ſalebroſa in viam mollem:* 4 *Et apparebit gloria Domini, & videbit omnis corpore præditus ſalutem Dei; nam Dominus locutus eſt.* 5 *Vox dicens, Clama; & dixi, Quid clamabo? Omne corpus herba eſt, & omnes gloria humana ſimilis eſt flori herbæ:* 6 [MS. Ox. *Areſcit herba, & flos decidit; quia ſpiritus Domini ſufflavit in eum; ita areſcit herba hujuſce populi:*] 7 *Areſcit herba, & flos decidit; verbum autem Dei noſtri manebit in æternum.* 8 *Super montem excelſum aſcende O prædicator Sionis, attolle potentèr vocem tuam O prædicator Jeroſolymæ, attollite* inquam; *& ne timete: dic urbibus Judæ, Ecce Deus noſter:* 9 *Ecce Dominus venturus eſt cum robore, & brachium ejus cum dominio: ecce merces ejus cum ipſo eſt, & opus ejus ante ipſum,* 10 *Ceu paſtor qui paſcit gregem ſuum, & brachio ſuo congregat agnos, & fœtas refocillat.* 11 *Quis menſus eſt aquam manu ſuâ, cœlum palmo ſuo, totamque terram pugillo ſuo? quis montes erexit cum pondere, & colles ſtaterâ?* 12 *Quis etiam novit mentem Domini? & quis fuit conſiliarius ejus, ut doceret eum?* 13 *Aut quem ipſe conſuluit, ut doceret ſe? aut quis dedit illi judicium? aut quis præbuit ei viam prudentiæ, ut rependat illi:* 14 *Quandoquidem cuncti populi tanquam gutta è ſitula, & tanquam præponderatio trutinæ cenſentur, & ut ſylva reputentur?* 15

יְשַׁעְיָה׃ מא

.aſcenſioni ſufficiens non ejus beſtia & *:incendere* ſufficiens non Lebanon Et
16 וּלְבָנוֹן אֵין דֵּי בָּעֵר וְחַיָּתוֹ אֵין דֵּי עוֹלָה׃
.ei ſunt reputatæ inani & nihilo pro:eo coram nihil ſicut gentes Omnes
17 כָּל־הַגּוֹיִם כְּאַיִן נֶגְדּוֹ מֵאֶפֶס וָתֹהוּ נֶחְשְׁבוּ־לוֹ׃
? ei *ordinabitis* ſimilitudinis quid & ? Deum aſſimilabitis *quem ad* Et
18 וְאֶל־מִי תְּדַמְּיוּן אֵל וּמַה־דְּמוּת תַּעַרְכוּ־לוֹ׃
catenas & :illud expandet auro in aurifex & , faber conflavit Sculptile
19 הַפֶּסֶל נָסַךְ חָרָשׁ וְצֹרֵף בַּזָּהָב יְרַקְּעֶנּוּ וּרְתֻקוֹת
: eliget putreſcat non lignum *oblatione Depauperatus .conflans argenti*
20 כֶּסֶף צוֹרֵף׃ הַמְסֻכָּן תְּרוּמָה עֵץ לֹא־יִרְקַב יִבְחָר
.ſe movebit non ſculptile præparandum ad,ei quæret ſapientem artificem
חָרָשׁ חָכָם יְבַקֶּשׁ־לוֹ לְהָכִין פֶּסֶל לֹא יִמּוֹט׃
capite à eſt annuntiatum nonne ? audietis nónne ? ſcietis Nónne
21 הֲלוֹא תֵדְעוּ הֲלוֹא תִשְׁמָעוּ הֲלוֹא הֻגַּד מֵרֹאשׁ
globum ſuper *Sedens* ? terræ fundamenta intelligetis nónne ? vobis
22 לָכֶם הֲלוֹא הֲבִינֹתֶם מוֹסְדוֹת הָאָרֶץ׃ הַיֹּשֵׁב עַל־חוּג
, cœlos *tenue* velut *extendens* : locuſtæ ut , ejus habitatores & , terræ
הָאָרֶץ וְיֹשְׁבֶיהָ כַּחֲגָבִים הַנּוֹטֶה כַדֹּק שָׁמַיִם
gubernatores Dans .habitandum ad *tentorium* ſicut eos expandit &
23 וַיִּמְתָּחֵם כָּאֹהֶל לָשָׁבֶת׃ הַנּוֹתֵן רוֹזְנִים
,ſunt plantati non Etiam .fecit inane velut terræ judices : nihilum in
24 לְאָיִן שֹׁפְטֵי אֶרֶץ כַּתֹּהוּ עָשָׂה׃ אַף בַּל־נִטָּעוּ
: eorum truncum terra in *radicans* non etiam , ſunt ſati neque etiam
אַף בַּל־זֹרָעוּ אַף בַּל־שֹׁרֵשׁ בָּאָרֶץ גִּזְעָם
.eos auferet ſtipulam velut turbo & ; aruerunt & ,eos in flavit inſuper &
וְגַם־נָשַׁף בָּהֶם וַיִּבָשׁוּ וּסְעָרָה כַּקַּשׁ תִּשָּׂאֵם׃
Levate ? Sanctus *dicet* : æquabor & , me *aſſimilabitis quem ad* Et
25 26 וְאֶל־מִי תְדַמְּיוּנִי וְאֶשְׁוֶה יֹאמַר קָדוֹשׁ׃ שְׂאוּ־
educens , hæc creaverit quis videre & ,veſtros oculos excelſum in
מָרוֹם עֵינֵיכֶם וּרְאוּ מִי־בָרָא אֵלֶּה הַמּוֹצִיא
multitudine præ : *vocabit nomine in* ipſa omnia ad :eorū exercitū numero in
בְמִסְפָּר צְבָאָם לְכֻלָּם בְּשֵׁם יִקְרָא מֵרֹב
dices quid Ut .deficiet non *vir* potentia fortis &,fortitudinum
27 אוֹנִים וְאַמִּיץ כֹּחַ אִישׁ לֹא נֶעְדָּר׃ לָמָּה תֹאמַר
, Domino à mea via eſt Abſcondita ? Iſrael loqueris & , Jahacob
יַעֲקֹב וּתְדַבֵּר יִשְׂרָאֵל נִסְתְּרָה דַרְכִּי מֵיְהֹוָה
non an , nôſti Nónne .tranſibit meum judicium meo Deo à &
28 וּמֵאֱלֹהַי מִשְׁפָּטִי יַעֲבוֹר׃ הֲלוֹא יָדַעְתָּ אִם־לֹא
non , terræ *extremitates creans* Dominus *ſeculi* Deus ? audiſti
שָׁמַעְתָּ אֱלֹהֵי עוֹלָם יְהֹוָה בּוֹרֵא קְצוֹת הָאָרֶץ לֹא
Dans .ejus intelligentiæ inveſtigatio non : laborabit nec ,*fatigabitur*
29 יִיעַף וְלֹא יִיגָע אֵין חֵקֶר לִתְבוּנָתוֹ׃ נֹתֵן
Laſſabunturque *multiplicabit* robur , vires non cui &:fortitudinē laſſo
30 לַיָּעֵף כֹּחַ וּלְאֵין אוֹנִים עָצְמָה יַרְבֶּה׃ וְיִעֲפוּ
ſperantes At .*corruent corruendo* electi & : laborabunt & , pueri
31 נְעָרִים וְיִגָעוּ וּבַחוּרִים כָּשׁוֹל יִכָּשֵׁלוּ׃ וְקוֹיֵ
non & current : aquilæ ſicut ala aſcendent ,robur mutabunt , Domino
יְהֹוָה יַחֲלִיפוּ כֹחַ יַעֲלוּ אֵבֶר כַּנְּשָׁרִים יָרוּצוּ וְלֹא
.laſſabuntur non & *ibunt* ; laborabunt
יִיגָעוּ יֵלְכוּ וְלֹא יִיעָפוּ׃

CAP. XLI. מא

,accedant : fortitudinem innovent *nationes &* , *inſulæ me ad* Tacete
1 הַחֲרִישׁוּ אֵלַי אִיִּים וּלְאֻמִּים יַחֲלִיפוּ כֹחַ יִגְּשׁוּ
.accedamus judicium ad pariter ,loquantur tunc
אָז יְדַבֵּרוּ יַחְדָּו לַמִּשְׁפָּט נִקְרָבָה׃

Verſio VUL. LAT.

16 Et Liban⁹ non ſufficiet ad ſuccendendū, et animalia ejus non 17 ſufficient ad holocauſtum. Omnes gentes quaſi non ſint, ſic ſunt coram eo, & quaſi nihilū 18 & inane reputatæ ſunt ei. Cui ergò ſimilem feciſtis Deum? aut quam imaginem ponetis 19 ei? Numquid ſculptile conflavit faber? aut aurifex auro figuravit illud, & laminis argenteis argentarius? 20 Forte lignum et imputribile elegit: artifex ſapiens quærit quomodò ſtatuat ſimulachrum quod non moveatur. 21 Numquid non ſcitis? numquid non audîſtis? numquid non annuntiatū eſt vobis ab initio? Numquid non intel- 22 lexiſtis fundamenta terræ? Qui ſedet ſuper gyrum terræ, & habitatores ejus ſunt quaſi locuſtæ: qui extendit velut nihilū cœlos, et expandit eos, ſicut tabernaculum ad inhabitandū. 23 Qui dat ſecretorū ſcrutatores quaſi non ſint, judices terræ 24 velut inane fecit: Et quidē neque plantat⁹, neq; ſatus, neque radicatus in terra truncus eorum: repentè flavit in eos, & aruerunt, & turbo quaſi ſtipu- 25 lam auferet eos. Et cui aſſimilâſtis me, & adæquâſtis, dicit 26 Sanctus? Levate in excelſum oculos veſtros, & videte quis creavit hæc: qui educit in numero militiam eorū, & omnes ex nomine vocat: præ multitudine fortitudinis & roboris, virtutíſque ejus, neque unum 27 reliquū fuit. Quarè dicis Jacob, & loqueris Iſrael; Abſcondita eſt via mea à Domino, & à Deo meo judiciū meum tranſivit? 28 Numquid neſcis, aut non audîſti? Deus ſempiternus Dn̄s, qui creavit terminos terræ: non deficiet, neque laborabit, nec eſt inveſtigatio ſapientiæ ejus. 29 Qui dat laſſo virtutem: & his, qui non ſunt, fortitudinem & 30 robur multiplicat. Deficient pueri, & laborabunt, & juve- 31 nes in infirmitate cadent. Qui autem ſperant in Domino, mutabunt fortitudinem, aſſument pennas ſicut aquilæ, current & non laborabunt, ambulabunt & non deficient.

CAP. XLI.

1 TAceant ad me inſulæ, & Gentes mutent fortitudinē: accedāt, & tunc loquantur, ſimul ad judicium propinquemus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

16 Ὁ δὲ Λίβανος οὐχ ἱκανὸς εἰς καῦσιν, καὶ πάντα τὰ τετράποδα οὐχ ἱκανὰ εἰς ὁλο- 17 κάρπωσιν. Καὶ πάντα τὰ ἔθνη ὡς οὐδέν εἰσι, 18 καὶ εἰς οὐθὲν ἐλογίσθησαν. Τίνι ὡμοιώσατε κύριον, καὶ τίνι ὁμοιώματι ὡμοιώ- 19 σατε αὐτόν; Μὴ εἰκόνα ἐποίησε τέκτων, ἢ χρυσοχόος χωνεύσας χρυσίον περιεχρύσωσεν αὐτόν; ὁμοίωμα κατεσκεύασεν 20 αὐτόν; Ξύλον γὰρ ἄσηπτον ἐκλέγεται τέκτων, καὶ σοφῶς (κ) ζητήσει πῶς στήσει (λ) εἰκόνα 21 αὐτοῦ, καὶ ἵνα μὴ σαλεύηται. Οὐ γνώσεσθε; οὐκ ἀκούσεσθε; οὐκ ἀνηγγέλη ἐξ ἀρχῆς ὑμῖν; οὐκ 22 ἔγνωτε τὰ θεμέλια τῆς γῆς; Ὁ κατέχων τὸν γῦρον τῆς γῆς, καὶ οἱ ἐνοικοῦντες ἐν αὐτῇ ὡς ἀκρίδες· ὁ στήσας ὡς καμάραν τὸν οὐρα- 23 νόν, καὶ διατείνας ὡς σκηνὴν κατοικεῖν. Ὁ διδοὺς ἄρχοντας (μ) ὡς οὐδὲν ἄρχειν, τὴν δὲ 24 γῆν ὡς οὐδὲν ἐποίησεν. Οὐ γὰρ μὴ (ν) φυτεύσωσιν, οὐδὲ μὴ σπείρωσιν, οὐδὲ μὴ ῥιζωθῇ εἰς τὴν γῆν ἡ ῥίζα αὐτῶν. ἔπνευσεν ἐπ' αὐτούς, καὶ ἐξηράνθησαν, καὶ καταιγὶς ὡς 25 φρύγανα (ξ) λήψεται αὐτούς. Νῦν οὖν τίνι με ὡμοιώσατε, καὶ ὑψωθήσομαι; εἶπεν ὁ ἅ- 26 γιος. Ἀναβλέψατε εἰς (ο) ὕψος τοὺς ὀφθαλμοὺς ὑμῶν, καὶ ἴδετε, τίς κατέδειξε (π) ταῦτα πάντα; ὁ ἐκφέρων (') κατ' ἀριθμὸν τὸν κόσμον αὐτοῦ, (ρ) πάντας ἐπ' ὀνόματι καλέσει ἀπὸ (σ) πολλῆς δόξης, καὶ ἐν κράτει 27 ἰσχύος (τ) αὐτοῦ· οὐδέν σε ἔλαθε. Μὴ γὰρ εἴπῃς Ἰακώβ, καὶ τί ἐλάλησας Ἰσραήλ, Ἀπεκρύβη ἡ ὁδός μου ἀπὸ τοῦ θεοῦ, καὶ ὁ θε- 28 ός μου τὴν κρίσιν ἀφεῖλε, καὶ ἀπέστη; Καὶ νῦν οὐκ ἔγνως; εἰ μὴ ἤκουσας; θεὸς αἰώνιος, (υ) ὁ θεὸς ὁ κατασκευάσας τὰ ἄκρα τῆς γῆς· οὐ πεινάσει, οὐδὲ κοπιάσει, οὐδὲ ἔστιν ἐξεύ- 29 ρεσις τῆς φρονήσεως αὐτοῦ. Διδοὺς τοῖς πει- νῶσιν ἰσχύν, καὶ τοῖς μὴ ὀδυνωμένοις λύπην. 30 Πεινάσουσι γὰρ νεώτεροι, καὶ κοπιάσουσι νεα- 31 νίσκοι, καὶ ἐκλεκτοὶ ἀνίσχυες ἔσονται. Οἱ δὲ ὑπομένοντες τὸν θεόν, ἀλλάξουσιν ἰσχύν, πτεροφυήσουσιν ὡς ἀετοί, δραμοῦνται καὶ οὐ κοπιάσουσι, βαδιοῦνται καὶ οὐ πεινάσουσιν.

16 Libanus autē non ſufficit ad comburendum: & omnia quadrupedia 17 non ſufficiunt ad holocauſtum: Et cunctæ gentes quaſi nihilum ſunt, 18 & in nihilum reputatæ ſunt. Cui ſimilem feciſtis Dominum? & cui 19 ſimulachro aſſimilâſtis eum? Nunquid imaginem fecit faber, aut aurifex fundens aurum circumauravit illum? ſimulachrum apparavit eum? 20 Lignum enim imputribile eligit faber, & ſapienter quæret quomodò ſtatuat imaginem ejus, 21 & ut non moveatur. Nónne ſcietis? nónne audietis? nónne annuntiatum eſt vobis à principio? non cognoviſtis fundamenta terræ? 22 Qui tenet gyrum terræ: & habitatores ejus quaſi locuſtæ. Qui ſtatuit, quaſi cameram, cœlum, & extendit quaſi tabernaculum ad habitandum: 23 Qui dat principes quaſi nihil præeſſe; terram autem quaſi 24 nihil fecit. Siquidem non plantabunt, neque ſerent, nec radicabitur in terram radix eorum. Flavit ſuper eos, & areſacti ſunt: & tempeſtas tanquam ſtipulas tollet eos. 25 Nunc ergò, cui aſſimilâſtis me, & 26 exaltabor? dixit Sanctus. Elevate in excelſum oculos veſtros, & videte, quis oſtendit hæc omnia. Qui educit juxta numerum ornatum ſuum; omnes in nomine vocabit à multa gloria, & in robore fortitudinis (d) ſuæ: nihil te latuit. 27 Non enim dicas Jacob, & quid loquutus es Iſrael; Abſcondita eſt via mea à Deo: & Deus meum ju- 28 dicium abſtulit, & receſſit? Et nunc neſcis, & non audiſti? Deus æternus, Deus, qui apparavit terminos terræ, non eſuriet, nec laborabit: nec eſt inventio prudentiæ e- 29 jus: Qui dat eſurientibus fortitudinem, et non dolentibus mœro- 30 rem. Eſurient enim juvenes, et laborabunt adoleſcentes, et electi in- 31 firmi erunt. Qui autem expectant Deum; mutabunt fortitudinem, aſſument alas, quaſi aquilæ: current, et non laborabunt: gradientur, et non eſurient.

MS.A. (κ) ζητεῖ (λ) αὐτοῦ εἰκόνα, (μ) εἰς οὐδὲν (ν) σπείρουσιν, οὐδὲ μὴ φυτεύσουσιν, (ξ) ἀναλήμψεται (ο) τὸ ὕψος (π) πάντα ταῦτα; (') κατὰ (ρ) πάντα (σ) τῆς πολλῆς (τ) ἰσχύος· οὐδέν σε (υ) θεός

ΚΕΦ. μα'.

1 Ἐγκαινίζεσθε πρός με νῆσοι, οἱ γὰρ ἄρχοντες ἀλλάξουσιν ἰσχύν. ἐγγισάτωσαν καὶ λαλησάτωσαν ἅμα, τότε (α) κρίσιν ἀναγγειλάτωσαν.

MS.A. (α) κρίσεις

CAP. XLI.

1 INnovamini (a) ad me inſulæ: principes enim mutabunt fortitudinem. Appropinquent, et loquantur ſimul: tunc judicium annuntient.

תַּרְגּוּם יוֹנָתָן Targum JONATHAN.

16 וְאִילָנֵי לִבְנָן לָא יִסַפְּקוּן לְאַדְלָקָא וְחֵיוָתָא דְבֵהּ לֵית הִיא כְּמִסַּת לַעֲלָתָא׃ כָּל עַמְמַיָּא
17 18 כְּלְמָא עוֹבָדֵיהוֹן גְּמִירָא וְשֵׁיצָאָה אִנּוּן חֲשִׁיבִין קֳדָמוֹהִי׃ וּלְמַן אַתּוּן מְדַמַּן לְמֵרַן קֳדָם אֵל
19 וּמַה דְּמוּת אַתּוּן מְסַדְּרִין קֳדָמוֹהִי׃ הָא צַלְמָא נַגָּרָא עָבֵיד וְקֵינָאָה בִּדְהַב מְחַפֵּי לֵיהּ
20 וְשַׁלְשְׁלָן דִּכְסַף קֵינָאָה מְאַחֵיד לֵיהּ׃ אוֹרָן בָּרֵי אָעָא דְּלָא אָחֵיד בֵּיהּ רִקְבָא בָּחַר נַגָּר
21 אוּמָן בָּעֵי לֵיהּ לְאַתְקָנָא צְלַם דְּלָא יִצְטְלֵי׃ הֲלָא יְדַעְתּוּן הֲלָא שְׁמַעְתּוּן הֲלָא אִתְחֲוָא מִן
אֲוֹלָא עוֹבַד סִדְרֵי בְרֵאשִׁית לְכוֹן הֲלָא תִסְתַּכְּלוּן לְמִדְחַל קֳדָם מִן דִּבְרָא יְסוֹדֵי אַרְעָא׃
22 דְּאַשְׁרֵי בִּתְקוֹף רוּמָא שְׁכִינַת יְקָרֵיהּ וְכָל יָתְבֵי אַרְעָא חֲשִׁיבִין קֳדָמוֹהִי כְּקַמְצִין דְּמָתַח
23 כִּזְעֵיר שְׁמַיָּא וּפַרְסִנּוּן כְּמַשְׁכַּן יְקָרָא לְבֵית שְׁכִנְתָּא׃ דִּמְסַר שִׁלְטוֹנִין לְחוּלְשָׁא דַּיָּנֵי
24 אַרְעָא כְּלְמָא עֲבֵיד׃ אֲפִילוּ יִפְשׁוּן אֲפִילוּ יִסְגּוּן אֲפִילוּ יִתְרַבּוּן בְּאַרְעָא בְּנֵיהוֹן וְאַף רוּגְזֵיהּ
25 יְשַׁלַּח בְּהוֹן וְיִבַהֲתוּן וּמֵימְרֵיהּ כְּעַלְעוֹלָא לְקַשָּׁא יְדַבַּר יַתְהוֹן׃ וּלְמַן תְּדַמּוּן קֳדָמַי וְתַשְׁווּן
26 יֵימַר קַדִּישָׁא׃ זְקוֹפוּ לְרוּמָא עֵינֵיכוֹן וַחֲזוּ לְמִדְחַל קֳדָם מִן דִּבְרָא אִלֵּין דְּאַפֵּיק בְּמִנְיַן חֵילֵי
27 שְׁמַיָּא לְכוּלְּהוֹן בִּשְׁמְהָן קָרֵי מִסְּגֵי גְבוּרָן וּתְקוֹף חֵיל חַד מִסִּדְרֵיהּ לָא מִתְעַכַּב׃ לְמָה
תֵימַר יַעֲקֹב וּתְמַלֵּל יִשְׂרָאֵל מִטַּמְרָא אָרְחִי מִן קֳדָם יְיָ וּמִן קֳדָם אֱלָהִי דִּינִי יֶעְדֵי׃
28 הֲלָא יְדַעְתָּא אִם לָא שְׁמַעְתָּ אֱלָהּ עָלְמָא יְיָ דִּי בְרָא יְסוֹדֵי אַרְעָא לָא בַעֲמַל וְלָא
29 בְּלֵיאוּ לֵית סוֹף לְסוּכְלְתָנוּתֵיהּ׃ דִּיהַב לְצַדִּיקַיָּא דִּמְשַׁלְהַן לְפִתְגָמֵי אוֹרָיְתָא חוּכְמָא
30 וּדְלֵית לְהוֹן תְּקוֹף נִכְסִין מַסְגֵּי׃ וְיִשְׁתַּלְהוֹן טוּלֵימִין חַיָּבִין וְיִלְאוּן וְרוֹקֵי רַשִׁיעַיָּא
31 אִתְקְלָא יִתְקְלוּן׃ וּדְסַבָּרוּ לְפוּרְקָנָא דַּיְיָ יִתְכַּנְשׁוּן מִבֵּינֵי גָלְוָתְהוֹן וְיוֹסְפוּן חֵיל וְיִתְחַדְּתוּן
לְעוּלֵמְתְהוֹן כִּצְמוּחַ דְּסָלֵיק עַל גַּדְפֵּי נִשְׁרִין יְרַהֲטוּן וְלָא יִלְאוּן יְהָכוּן וְלָא יִשְׁתַּלְהוּן׃

מא

1 אֲצִיתוּ לְמֵימְרִי נְגָוָן וּמַלְכְּוָן יוֹסְפוּן חֵיל יִתְקָרְבוּן בְּכֵן יְמַלְּלוּן כַּחְדָא לְדִינָא נִתְקָרֵב׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

16 Arbores autem Libani non ſufficient ad ſuccendendū, & animalia *quæ ſunt in eo* non ſufficient ad holocauſta. 17 Omnes populi quaſi nihilū, & opera eorum velut conſumptio, & deſtructio habentur coram eo. 18 Quem autem vos putatis contendere poſſe cum Deo? aut quam ſimilitudinem vos ordinatis coram eo? 19 Ecce ſimulacrum facit faber, & aurifex auro operit illud, & catenis argenteis argentari⁹ conjungit illud. 20 *Ornum ſuccidit*, lignum quod putredo non comprehendit eligit: fabrū artificem quærit ſibi ut conſtruat ſimulacrum quod non commoveatur. 21 Nónne cognoviſtis? nunquid non audiſtis? nunquid non annunciatū eſt vobis opus *ordinū creationis* à principio? nunquid non intelligetis timere eum qui creavit fundamenta terræ? 22 Qui habitare facit majeſtatem gloriæ ſuæ in fortitudine excelſa, & omnes habitatores terræ reputati ſunt coram eo quaſi locuſtæ: qui extendit quaſi paululum cœlos, & expandit eos quaſi habitaculum gloriæ domus majeſtatis. 23 Qui tradit principes in infirmitatem; judices terræ quaſi nihilum facit. 24 Quamvis invaleſcant, quamvis creſcant, & quamvis evehantur in terra filii eorum, furorem tamen ſuum mittet in eos, & turbabuntur: & Verbum ejus *auferet* eos velut tempeſtas ſtipulam. 25 Cui autem aſſimilâſtis me, & adæquâſtis; dicit Sanctus. 26 Levate in excelſum oculos veſtros, & videte, ut timeatis coram illo qui creavit hæc; qui educit in numero militiam cœlorum, & omnes nomine ſuo vocat: præ multitudine fortitudinum & robore virtutis nullus impeditur ab ordine ſuo. 27 Quare dicis Jacob & loqueris Iſrael, Abſcondita eſt via mea à facie Dn̄i, & à facie Dei mei judicium meum tranſibit? 28 Nunquid neſcis, aut non audiſti? Deus ſempiternus eſt Dn̄s qui creavit fundamenta terræ, non in labore, neque in defatigatione; non eſt finis intellectui ejus. 29 Qui dat juſtis, qui ad verba legis anhelant, ſapientiam; & eis qui non habent fortitudinem, divitias multiplicat. 30 Et defatigabuntur juvenes peccatores & laborabunt, & juvenes impii corruendo corruent. 31 Qui autem ſperant in ſalutare Dn̄i, congregabuntur de medio captivitatis ſuæ, & addent fortitudinem, & renovabuntur juventuti ſuæ, ſicut germen quod creſcit: ſuper alas aquilarum current, & non laborabunt, ambulabunt & non defatigabuntur.

CAP. XLI.

1 AUſcultate inſulæ verbum meum, & regna addant fortitudinem: accedant, & tunc loquantur, ſimul ad judicium appropinquemus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

16 * ܘܠܒܢܢ ܠܐ ܣܦܩ ܠܗ ܠܝܩܕܐ. ܘܚܝܘܬܗ ܠܐ ܣܦܩܐ ܠܗ ܠܥܠܬܐ. * ܘܟܠܗܘܢ
17 ܥܡܡܐ ܐܝܟ ܠܐ ܡܕܡ ܚܫܝܒܝܢ ܠܗ. ܠܐܒܕܢܐ ܘܠܚܪܒܐ ܚܫܝܒܝܢ ܠܗ. * ܠܡܢ ܕܡܝܬܘܢ
18 ܠܐܠܗܐ .. ܘܠܐܝܢܐ ܕܡܘܬܐ ܕܡܝܬܘܢܝܗ. * ܨܠܡܐ ܗܘ ܕܥܒܕ ܢܓܪܐ .. ܘܩܝܢܝܐ ܒܕܗܒܐ ܚܦܝܗ
19 ܦܪܩܝܗ : ܘܫܫܠܬܐ ܕܣܐܡܐ ܡܨܒܬ ܠܗ .. * ܦܪܫ ܗܘ ܩܝܣܐ ܕܠܐ ܡܬܪܩܒ. ܘܨܒܐ ܢܓܪܐ.
20 ܘܒܚܟܡܬܗ ܓܠܦܗ. ܘܡܬܩܢ ܨܠܡܐ ܕܠܐ ܙܐܥ. * ܠܐ ܝܕܥܬܘܢ. ܘܠܐ ܫܡܥܬܘܢ .. ܘܠܐ ܐܬܐܡܪ
21 ܠܟܘܢ ܡܢ ܕܫܘܪܝܐ. ܘܠܐ ܐܣܬܟܠܬܘܢ ܫܬܐܣܝܗ ܕܐܪܥܐ .. * ܘܡܢ ܕܝܬܒ ܥܠ ܚܘܓܗ
22 ܕܐܪܥܐ .. ܘܥܡܘܪܘܗܝ ܐܝܟ ܩܡܨܐ. ܕܡܬܚ ܫܡܝܐ ܐܝܟ ܟܦܬܐ .. ܘܡܬܚ ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܡܫܟܢܐ
ܠܡܥܡܪܐ. * ܕܝܗܒ ܫܠܝܛܢܐ ܠܐ ܡܕܡ. ܘܕܝܢܐ ܕܐܪܥܐ ܐܝܟ ܕܠܝܬ ܐܢܘܢ. * ܠܐ ܢܬܢܨܒܘܢ ܘܠܐ
23 ܢܙܕܪܥܘܢ. ܘܠܐ ܢܫܪܫܘܢ ܒܐܪܥܐ ܥܩܪܝܗܘܢ. ܢܫܒ ܒܗܘܢ ܘܢܝܒܫܘܢ. ܘܡܥܠܥܠܐ ܢܫܩܘܠ ܐܢܘܢ ܐܝܟ
24 ܚܫܝܫܐ. * ܠܡܢ ܕܡܝܬܘܢܢܝ ܘܐܫܘܐ ܐܝܟ ܠܗ. ܐܡܪ ܩܕܝܫܐ. * ܐܪܝܡܘ ܠܪܘܡܐ ܥܝܢܝܟܘܢ
25 ܠܡܪܘܡܐ .. ܘܚܙܘ ܡܢܘ ܒܪܐ ܗܠܝܢ. ܕܡܦܩ ܒܡܢܝܢܐ ܚܝܠܘܬܗܘܢ .. ܘܠܟܠܗܘܢ ܩܪܐ
26 ܫܡܗܐ. ܡܢ ܣܘܓܐܐ ܕܥܘܫܢܗ. ܘܡܢ ܥܘܫܢܐ ܕܚܝܠܗ ܐܢܫ ܠܐ ܛܥܐ. * ܠܡܢܐ ܡܡܠܠ ܐܢܬ
27 ܝܥܩܘܒ .. ܘܐܡܪ ܐܢܬ ܐܝܣܪܝܠ : ܕܐܛܫܝܬ ܐܘܪܚܝ ܡܢ ܡܪܝܐ .. ܘܕܝܢܝ ܥܒܪ ܡܢ
ܐܠܗܝ. * ܠܐ ܝܕܥܬ. ܘܠܐ ܫܡܥܬ. ܕܐܠܗܐ ܕܥܠܡ ܡܪܝܐ ܗܘ. ܕܒܪܐ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܠܐ
28 ܡܫܬܪܚ ܘܠܐ ܠܐܐ. ܘܠܝܬ ܣܟܐ ܠܣܘܟܠܗ. * ܝܗܒ ܚܝܠܐ ܠܡܫܬܪܚܐ .. ܘܠܡܡܟܟܐ
29 ܓܒܪܐ. ܡܣܓܐ ܚܝܠܐ. * ܢܫܬܪܚܘܢ ܛܠܝܐ ܘܢܠܐܘܢ. ܘܓܒܪܐ ܡܬܒܚܪܐ ܬܘܩܠܐ ܢܬܬܩܠܘܢ.
30 * ܘܐܝܠܝܢ ܕܡܣܟܝܢ ܠܡܪܝܐ ܢܚܠܦܘܢ ܚܝܠܗܘܢ. ܘܢܦܪܚܘܢ ܓܦܐ ܐܝܟ ܕܢܫܪܐ. ܢܪܗܛܘܢ
31 ܘܠܐ ܢܠܐܘܢ. ܢܗܠܟܘܢ ܘܠܐ ܢܫܬܪܚܘܢ.
* ܦܠܓܗ * ܡܐ *

1 * ܫܬܘܩܝܢ ܓܙܪܬܐ .. ܘܥܡܡܐ ܢܚܠܦܘܢ ܚܝܠܐ. ܢܬܩܪܒܘܢ. ܘܗܝܕܝܢ ܢܡܠܠܘܢ. ܘܐܟܚܕܐ
ܠܕܝܢܐ ܢܬܩܪܒܘܢ.

* Libanum dedignatur in pyram, & beſtiam 1
ejus dedignatur in holocauſtum: Omnes 1
populi tanquam nihilum reputantur ab eo,
ad exitium & gladium æſtimantur ab eo.
Cuinam comparatis Deum? & quam ſimi- 18
litudinem tribuitis ei? Eſtne ſimulacrum 19
quod fabrefacit lignarius, quod aurifex ob-
ducit auro, vel cui argentum purum affigit?
Deſtinat enim faber ſeligitque lignum mi- 20
nimè carioſum, ſapientiâ ſuâ cælat illud, ac
tum parat ſimulacrum immobile. An non 21
audiviſtis? an non cognoviſtis? an non dictum
fuit vobis ab initio: an non percipitis fun-
damenta terræ, Et eum qui inſidet globo 22
terræ, cujus habitatores ſunt veluti locuſtæ?
qui cœlos extendit velut teſtudinem, & di-
ſtendit eos ut tentorium ad habitationem?
Qui potentes in nihilum redigit, & judices 23
terræ ac ſi non eſſent? Non plantabunt, 24
neque ſerent, neque radicem in terra fun-
dabunt: flabit in eos, & areſcent, & turbo
ceu ſtipulam abripiet illos. Cùm quo me 25
compararetis ut æqualis ſim ei, dicit Sanctus?
Attollite in ſublime oculos veſtros, & vi- 26
dete quis creaverit hæc: qui certo numero
producit exercitus eorum, & omnibus impo-
nit nomina: quanvis immenſa ſit ipſius ma-
jeſtas, & validiſſima potentia ipſius, nullius
tamen obliviſcitur. Quare loqueris tu Ja- 27
cob, tuque Iſrael dicis; Abſconditæ ſunt viæ
meæ à Domino, & judicium meum remotum
à Deo meo? An non cognoviſti? nonne 28
audiviſti Deum in æternum eſſe Dominum,
qui condidit extremitates orbis; non fatiga-
tur, neque laborat, cujus prudentia nullate-
nus declarari *poteſt*. Suppeditat vires defeſ- 29
ſis, & dolore languentibus auget robur. Fa- 30
tigantur juvenes ac laborant, & adoleſcentes
penitùs impingunt: At qui ſperant in Do- 31
mino, mutabunt vires ſuas, alas emittent ſi-
miles columbinis; current, neque fatigabun-
tur; ambulabunt, neque langueſcent.

CAP. XLI.

* Silete inſulæ, & populi novas reſumant vi- 1
res; accedant, ac tum loquantur, & pariter
ad judicium accedant.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

16 * ولبنان لا يوهل للحريق * وجميع ذوي الاربع قوايم ليس هم اهل للقربان * وجميع الامم
17 هم مثل لا شي * والى لا شي حسبوا *

* توبيخ النبي لشعب بني اسرايل * الذين اتخذوا الاصنام *

18 * فماذا اشبهتم الرب واي شبه شبهتموه * هل بصورة صنعها النجار او سباك سبك ذهبا طلاه *
19 وتمثالا هيأه * لأن النجار انما يختار خشبة لا تسوس * ويطلب بحكمة كيف يقيم له صورة *
20 ولكيلا يتزعزع * اما علمتم * اما سمعتم * اما أخبر لكم منذ البدو * اما عرفتم اساسات الارض *
21 * الماسك بمحيط الارض الرب * والسكان فيها مثل الجراد * الذي اقام السماء مثل القنطر *
22 ومدها مثل القبة لتسكنها * الذي اسلم الرؤساء ليروسوا الى لا شي * وقضاة الارض الى لا
23 شي * لا يزرعون ولا يغرسون * ولا يتأصل في الارض اصلهم * هب عليهم ريح فيبسوا والعاصف
24 يأخذهم كالهشيم * الان ايضا بمن شبهتموني وارتفع * قال القدوس * تطلعوا الان الى العلو
25 بعيونكم * وانظروا من فطر هذه كلها * الذي استخرج زينته بعدد * والجميع دعاهم باسماء *
26 من مجد كثير وعز قوته ما انساه شيا * الان هل تقول يا يعقوب * وماذا تكلمت يا اسرايل *
27 طرقي خفيت على الله * والله ازال قضائي * والان اما عرفت * اما سمعت * الله ابدي * الله الذي
28 هيأ اطراف الارض * لا يجوع ولا يتعب * ولا تفتيش لعلمه * يعطي الجياع قوة * والذين لا
29 يوجعون غما * لأن الاحداث يجوعون * والشبان يتعبون * والمختارون يصيرون غير اقوياء *
30 * والذين يرجون الله يبدلون قوة * ويثبتون اجنحة مثل النسور * يسرعون ولا يعيون *
31 يسلكون ولا يجوعون *

* الفصل الحادي والاربعون *

1 * تجددوا لي ايها الجزاير * لأن الرؤساء يبدلون قوة * ليقتربوا معا حينيذ ليخبروا حكما *

* *Ne Libanus quidem æſtimaretur dignus* 16
ad rogum, neque omnia quadrupedia di-
gna eſſent ad holocauſtum. Omnes gentes 17
ut nihil ſunt, & nihili cenſentur.

Objurgatio Prophetæ ad popu-
lum Iſraeliticum qui idola
ſibi adhibuerat.

Cui rei aſſimilatis Dominum? & cui for- 18
mæ comparatis eum? Nam figuræ quam 19
conſtruit faber lignarius, vel fuſorius qui
fuſo auro obducit illam & in ſimulacrum
aptat? Nam lignarius electo ligno quod 20
cariem non gignit, induſtriè ſatagit quo-
modo componat ſibi figuram, & ne ſit ob-
noxia motationi. Nónne cognoviſtis? 21
nónne audiviſtis? annon ſignificatum vo-
bis eſt à principio? annon cognoviſtis fun-
damenta terræ? Qui tenet & complecti- 22
tur orbem, Dominus eſt; qui verò habi-
tant in eo, ſunt veluti locuſtæ: qui cælum
ut fornicem erexit, illúdque ceu teſtudi-
nem extendit, ut habitaretur: Qui prin- 23
cipes rediget ad dominandum in nihilum,
& judices terræ in nihilum: Non ſeren- 24
tur, neque plantabuntur, neque firmabitur
in humo radix eorum: flabit in eos ven-
tus, & areſient, rapiétque eos turbo ceu
ſtipulam. Jam ergò cui aſſimilatis me ut 25
extollar, ait Sanctus? Reſpicite jam in al- 26
tum oculis veſtris, et contemplamini quis
creaverit hæc omnia: qui produxit orna-
tum ejus in numero, & ſingulis impoſuit
nomina; & nihil plurimam ob gloriam
ſummámque potentiam, effugit memoriam
ejus. Num ergò diceres O Jacob? & 27
quid locutus es O Iſrael? Viæ meæ in-
quis Deum latent, & Deus avertit judi-
cium meum. Nónne quæſo cognoviſti? 28
nónne audiviſti? Deus eſt æternus, Deus
eſt qui diſpoſuit extrema terræ; non eſu-
rit, neque fatigatur, neque ulla eſt perve-
ſtigatio ſcientiæ ipſius: Dat eſurientibus 29
vires; & his qui non patiuntur dolores,
anxietatem. Nam adoleſcentes quidem 30
eſurient, & juvenes fatigabuntur, & ele-
ctiſſimi quique fient infirmi: Sed qui De- 31
um expectant, novas acquirent vires, &
producent alas ut aquilæ: celeres erunt,
& non deficientur viribus; ambulabunt,
& non eſurient.

CAP. XLI.

Renovamini mihi O inſulæ, quia 1
principes immutant vires: ſimul ac-
cedant, tunc litem exponant.

ישעיה: מא

? ſuum pedem ad eum vocabit , juſtitiam oriente ab ſuſcitavit Quis
2 מִי הֵעִיר מִמִּזְרָח צֶדֶק יִקְרָאֵהוּ לְרַגְלוֹ
pulverem ut dabit , faciet dominari reges & , gentes ejus *facies ad* dabit
יִתֵּן לְפָנָיו גּוֹיִם וּמְלָכִים יַרְדְּ יִתֵּן כֶּעָפָר
tranſibit , eos Perſequetur .ejus arcum *propulſam* ſtipulam ut,ejus gladium
3 חַרְבּוֹ כְּקַשׁ נִדָּף קַשְׁתּוֹ׃ יִרְדְּפֵם יַעֲבוֹר
, eſt operatus Quis .ingredietur non ſuis pedibus in ſemitam : pace
4 שָׁלוֹם אֹרַח בְּרַגְלָיו לֹא יָבוֹא׃ מִי־פָעַל
DOMINUS Ego *? capite à* generationes vocans , fecit &
וְעָשָׂה קֹרֵא הַדֹּרוֹת מֵרֹאשׁ אֲנִי יְהוָה
, *inſulæ* Viderunt .ipſe ego noviſſimis cum & , primus
5 רִאשׁוֹן וְאֶת־אַחֲרֹנִים אֲנִי־הוּא׃ רָאוּ אִיִּים
.venerunt & appropinquaverunt : *ſunt attonita* terræ extrema:timuerunt &
וְיִירְאוּ קְצוֹת הָאָרֶץ יֶחֱרָדוּ קָרְבוּ וַיֶּאֱתָיוּן׃
.Confortare , dicet ſuo fratri & : *auxiliabuntur ſuo ſocio* Vir
6 אִישׁ אֶת־רֵעֵהוּ יַעְזֹרוּ וּלְאָחִיו יֹאמַר חֲזָק׃
contuſione cum malleum *lævigantem* aurificem faber confortavit Et
7 וַיְחַזֵּק חָרָשׁ אֶת־צֹרֵף מַחֲלִיק פַּטִּישׁ אֶת־הוֹלֶם
, clavis in ipſum *roboravit &* : *illud bonum juncturam Ad*:dicens , *incudis*
פָּעַם אֹמֵר לַדֶּבֶק טוֹב הוּא וַיְחַזְּקֵהוּ בְמַסְמְרִים
: *te* elegi quem Jahacob ,mi ſerve Iſrael tu Et .moveatur ne
8 לֹא יִמּוֹט׃ וְאַתָּה יִשְׂרָאֵל עַבְדִּי יַעֲקֹב אֲשֶׁר בְּחַרְתִּיךָ
extremis ab *te* apprehendi *Qui* .mei amici Abrahami ſemen
9 זֶרַע אַבְרָהָם אֹהֲבִי׃ אֲשֶׁר הֶחֱזַקְתִּיךָ מִקְצוֹת
: tu meus Servus ,tibi dixi & : te evocavi ejus *ſelectis* à & , terræ
הָאָרֶץ וּמֵאֲצִילֶיהָ קְרָאתִיךָ וָאֹמַר לְךָ עַבְדִּי־אַתָּה
: *ego* tecum quia , timeas Ne .*te reprobavi* non & , te elegi
10 בְּחַרְתִּיךָ וְלֹא מְאַסְתִּיךָ׃ אַל־תִּירָא כִּי־עִמְּךָ אָנִי
inſuper , te roboravi : tuus Deus ego quia , *molleſcas* ne
אַל־תִּשְׁתָּע כִּי־אֲנִי אֱלֹהֶיךָ אִמַּצְתִּיךָ אַף
.meæ juſtitiæ dextera in te ſuſtentavi inſuper , tibi ſum auxiliatus
עֲזַרְתִּיךָ אַף־תְּמַכְתִּיךָ בִּימִין צִדְקִי׃
: te contra *ſuccenſi* omnes erubeſcent & ,afficientur pudore En
11 הֵן יֵבֹשׁוּ וְיִכָּלְמוּ כֹּל הַנֶּחֱרִים בָּךְ
, eos Quæres .*tuæ litis* viri peribunt & , nihil tanquam erunt
12 יִהְיוּ כְאַיִן וְיֹאבְדוּ אַנְשֵׁי רִיבֶךָ׃ תְּבַקְשֵׁם
, nihil tanquam erunt : *tui jurgii* viros , eos invenies non &
וְלֹא תִמְצָאֵם אַנְשֵׁי מַצֻּתֶךָ יִהְיוּ כְאַיִן
DOMINUS ego Quia .*tuæ pugnæ* viri conſumptio quaſi &
13 וּכְאֶפֶס אַנְשֵׁי מִלְחַמְתֶּךָ׃ כִּי אֲנִי יְהוָה
Ne : tibi dicens : tuam dexteram apprehendens tuus Deus
אֱלֹהֶיךָ מַחֲזִיק יְמִינֶךָ הָאֹמֵר לְךָ אַל־
, Jahacob vermis formides Ne .*te adjuvi* ego , timeas
14 תִּירָא אֲנִי עֲזַרְתִּיךָ׃ אַל־תִּירְאִי תּוֹלַעַת יַעֲקֹב
, DOMINUS dixit ,tibi ſum auxiliatus ego :Iſrael *pauci viri*
מְתֵי יִשְׂרָאֵל אֲנִי עֲזַרְתִּיךְ נְאֻם־יְהוָה
,traham *in* te poſui Ecce .Iſrael Sanctus tuus redemptor &
15 וְגֹאֲלֵךְ קְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל׃ הִנֵּה שַׂמְתִּיךְ לְמוֹרַג
, comminues & montes triturabis : ora habentem novam tribulam
חָרוּץ חָדָשׁ בַּעַל פִּיפִיּוֹת תָּדוּשׁ הָרִים וְתָדֹק
; eos tollet ventus & , eos *Sparges* .pones *glumam* ſicut colles &
16 וּגְבָעוֹת כַּמֹּץ תָּשִׂים׃ תִּזְרֵם וְרוּחַ תִּשָּׂאֵם
,DOMINO in exultabis tu & : eos diſperget turbo &
וּסְעָרָה תָּפִיץ אֹתָם וְאַתָּה תָּגִיל בַּיהוָה
quærentes egeni & , *Afflicti* .te laudabis Iſrael Sancto in
17 בִּקְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל תִּתְהַלָּל׃ הָעֲנִיִּים וְהָאֶבְיוֹנִים מְבַקְשִׁים
DOMINUS ego : periit ſiti in eorum lingua:non & , aquas
מַיִם וָאַיִן לְשׁוֹנָם בַּצָּמָא נָשָׁתָּה אֲנִי יְהוָה
.eos derelinquam non Iſrael Deus , eos exaudiam
אֶעֱנֵם אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל לֹא אֶעֶזְבֵם׃

Verſio VULG. LAT.

2 Quis ſuſcitavit ab Oriente juſtum,
vocavit eum ut ſequeretur
ſe ? dabit in conſpectu ejus
gentes,& reges obtinebit:
dabit quaſi pulverem gladio ejus,
ſicut ſtipulam vento raptã
3 arcui ejus. Perſequetur eos,
tranſibit in pace,ſemita in pedibus
4 ejus non apparebit. Quis
hæc operatus eſt, & fecit, vocans
generationes ab exordio?
Ego Dominus, primus & noviſſimus
5 ego ſum. Viderunt inſulæ,
& timuerunt,extrema terræ
obſtupuerunt, appropinquaverunt,
6 & acceſſerunt. Unuſquiſque
proximo ſuo auxiliabitur,
& fratri ſuo dicet;
7 Confortare. Confortavit faber
ærarius percutiens malleo
eum, qui cudebat tunc temporis,
dicens;Glutino bonum eſt:
& confortavit eum clavis, ut
8 non moveretur. Et tu Iſrael
ſerve meus, Jacob quem elegi,
9 ſemen Abraham amici mei: In
quo apprehendi te ab extremis
terræ,et à longinquis ej⁹ vocavi
te, & dixi tibi;Servus meus
es tu, elegi te,& non abjeci te.
10 Ne timeas,quia ego tecũ ſum:
ne declines,quia ego De⁹ tuus:
confortavi te,et auxiliatus ſum
tibi : & ſuſcepit te dextera juſti
11 mei. Ecce confundentur &
erubeſcent omnes,qui pugnant
adverſum te : erunt quaſi non
ſint, & peribunt viri,qui contradicunt
12 tibi. Quæres eos, et
non invenies, viros rebelles
tuos : erunt quaſi non ſint : &
veluti conſumptio , homines
13 bellantes adverſum te. Quia
ego Dominus Deus tuus, apprehendens
manum tuam, dicénſque
tibi ; Ne timeas, ego
14 adjuvi te. Noli timere vermis
Jacob, qui mortui eſtis ex Iſrael
: ego auxiliatus ſum tibi,
dicit Dominus ; & redemptor
15 tuus Sanctus Iſrael. Ego poſui
te quaſi plauſtrum triturans
novum, habens roſtra ſerrantia
: triturabis montes,& comminues
: & colles quaſi pulverem
16 pones. Ventilabis eos,
& ventus tollet, et turbo diſperget
eos : et tu exultabis in
Domino,in Sancto Iſrael lætaberis.
17 Egeni et pauperes quærunt
aquas, et non ſunt : lingua
eorum ſiti aruit. Ego Dominus
exaudiam eos, Deus Iſrael
non derelinquam eos.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

2 Τίς ἐξήγειρεν ἀπὸ ἀνατολῶν δικαιοσύνην,
ἐκάλεσεν αὐτὴν κατὰ πόδας αὐτοῦ, (β) καὶ
πορεύσεται; δώσει ἐναντίον ἐθνῶν, καὶ βασιλεῖς
ἐκστήσει· καὶ δώσει εἰς γῆν τὰς μαχαίρας
αὐτῶν, καὶ ὡς φρύγανα ἐξωσμένα τὰ
3 τόξα αὐτῶν. Καὶ διώξεται αὐτοὺς, (γ) διελεύσεται
ἐν εἰρήνῃ ἡ ὁδὸς τῶν ποδῶν αὐτοῦ.
4 Τίς ἐνήργησε, καὶ ἐποίησε ταῦτα; ἐκάλεσεν
αὐτὴν ὁ καλῶν αὐτὴν ἀπὸ γενεῶν ἀρχῆς.
ἐγὼ θεὸς πρῶτος, καὶ εἰς τὰ ἐπερχόμενα
5 ἐγώ εἰμι. Εἴδοσαν ἔθνη καὶ ἐφοβήθησαν,
τὰ ἄκρα τῆς γῆς ἤγγισαν, καὶ (δ) ἦλθον
6 ἅμα, Κρίνων ἕκαστος τῷ πλησίον, καὶ τῷ
7 ἀδελφῷ βοηθῆσαι· καὶ ἐρεῖ, Ἴσχυσεν ἀνὴρ τέκτων,
καὶ χαλκεὺς τύπτων σφύρῃ, ἅμα ἐλαύνων·
(·) πότε μὲν ἐρεῖ, Σύμβλημα καλόν
ἐστιν, ἰσχύρωσαν αὐτὰ ἐν ἥλοις, θήσουσιν αὐτὰ,
8 καὶ οὐ κινηθήσονται. Σὺ δὲ Ἰσραὴλ παῖς
μου Ἰακὼβ, (ε) καὶ ὃν ἐξελεξάμην, σπέρμα Ἀβραὰμ,
9 ὃν ἠγάπησα· Οὗ ἀντελαβόμην ἀπ'
ἄκρων τῆς γῆς, καὶ ἐκ τῶν σκοπιῶν αὐτῆς
ἐκάλεσά σε, καὶ εἶπά σοι, Παῖς μου εἶ, ἐξελεξάμην
10 σε, καὶ οὐκ ἐγκατέλιπόν σε. Μὴ
φοβοῦ, μετὰ σοῦ γάρ εἰμι, μὴ πλανῶ. ἐγὼ γάρ
εἰμι ὁ θεός σου, ὁ ἐνισχύσας σε, καὶ ἐβοήθησά
σοι, καὶ ἠσφαλισάμην σε τῇ δεξιᾷ τῇ δικαίᾳ
11 μου. Ἰδοὺ αἰσχυνθήσονται καὶ ἐντραπήσονται
πάντες οἱ ἀντικείμενοί σοι, ἔσονται
γὰρ ὡς οὐκ ὄντες, καὶ ἀπολοῦνται πάντες
12 οἱ ἀντίδικοί σου. Ζητήσεις αὐτοὺς, καὶ οὐ μὴ
εὕρῃς τοὺς ἀνθρώπους οἳ παροινήσουσιν εἰς
σέ· ἔσονται γὰρ ὡς οὐκ ὄντες, καὶ οὐκ ἔσονται
13 οἱ ἀντιπολεμοῦντές σε· Ὅτι ἐγὼ ὁ (ζ)
θεός σου, ὁ κρατῶν τῆς δεξιᾶς σου, ὁ λέγων
14 σοι, Μὴ φοβοῦ Ἰακὼβ ὀλιγοστὸς Ἰσραὴλ,
ἐγὼ ἐβοήθησά σοι, λέγει (η) ὁ θεός σου, ὁ
15 λυτρούμενός σε Ἰσραήλ. Ἰδοὺ ἐποίησά σε
ὡς τροχοὺς ἁμάξης ἀλοῶντας καινοὺς (θ)
πριστηροειδεῖς, καὶ ἀλοήσεις ὄρη, καὶ λεπτυνεῖς
16 βουνοὺς, καὶ ὡς (ι) χνοῦν θήσεις, Καὶ λικμήσεις,
καὶ ἄνεμος λήψεται αὐτοὺς, καὶ καταιγὶς διασπερεῖ
αὐτούς. σὺ δὲ εὐφρανθήσῃ ἐν τοῖς
17 ἁγίοις Ἰσραήλ. Καὶ ἀγαλλιάσονται οἱ πτωχοὶ
καὶ οἱ ἐνδεεῖς. ζητήσουσι γὰρ ὕδωρ, καὶ οὐκ
ἔσται, ἡ γλῶσσα αὐτῶν ἀπὸ τῆς δίψης ἐξηράνθη.
ἐγὼ κύριος ὁ θεὸς, ἐγὼ ἐπακούσομαι
ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, καὶ οὐκ ἐγκαταλείψω
αὐτοὺς,

Quis ſuſcitavit de Oriente juſtitiam, 2
vocavit eam ad pedes ſuos;
& vadit? Dabit in conſpectu gentium,
& reges obſtupefaciet : &
dabit in terram gladios eorum,&
ſicut ſtipulas projectas, arcus eorum
: Et perſequetur eos : tranſibit 3
in pace via pedum ejus. Quis 4
operatus eſt,& fecit hæc? vocavit
eam, qui vocat eam, à generationum
principio.Ego Deus primus,et
in ea quæ ventura ſunt , ego ſum.
Viderunt gentes,et timuerunt:termini 5
(b) terræ acceſſerunt, & venerunt
ſimul, Judicans unuſquiſque 6
proximo, & fratri ad auxiliandum:
& dicet ; Prævaluit vir 7
artifex , & ærarius percutiens
malleo,ſimul producens: aliquando
quidem dicet ; (c)Solidatio bona
eſt : confortaverunt ea, in clavis
ponent ea, & non movebuntur.Tu 8
autem Iſrael,puer meus Jacob(d)
& quem elegi, (e)ſemen Abraam,
quem dilexi, Quem aſſumpſi ab 9
extremis terræ, Et à ſummitatibus
ejus vocavi te: & dixi tibi; Puer
meus es:elegi te , et non dereliqui
te: Noli timere, tecum enim ſum: 10
non (f)fallo. Ego enim ſum Deus
tuus, qui confortavi te,et auxiliatus
ſum tibi, et roboravi te dexterâ
juſtâ meâ. Ecce confundentur, 11
et erubeſcent omnes adverſarii tui;
erunt enim quaſi non ſint , et peribunt
omnes inimici tui. Quæres 12
eos, et non invenies , homines qui
inſanient in te. Erunt enim quaſi
non ſint : et non erunt pugnantes
adverſùs te: Quia ego Deus tuus, 13
qui teneo dexteram tuam, qui dico
tibi; Ne timeas (g) Jacob, parvule 14
Iſrael:ego auxiliatus ſum tibi, dicit
Deus tuus,qui redimo te Iſrael.
Ecce feci te, quaſi rotas plauſtri 15
triturantes novas in ſerrarum
modum: et triturabis montes, et
comminues colles , et ut pulverem
pones, Et ventilabis:et ventus auferet 16
eos: et tempeſtas diſperget illos.
Tu autem lætaberis in Sanctis
Iſrael : Et exultabunt pauperes, et 17
inopes. Quærent enim aquam : et
non erit: lingua eorum præ ſiti exaruit.
Ego Dominus Deus, ego exaudiam
Deus Iſrael: et non derelinquam
eos :

MS.A. (β) πορεύσεται; (γ) καὶ διελεύσεται (δ) ἤλθοσαν (·) τότε (ε) ὃν ἐξελεξάμην (ζ) θεὸς ὁ κρατῶν (η) ὁ θεὸς ὁ λυτρούμενος (θ) πριστηροειδεῖς, (ι) χνοῦν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

2 מַן אַיְתִי בְגַלַּאי מִמַּדִּנְחָא אַבְרָהָם בְּחִיר צַדִּיקַיָּא בִקְשׁוֹט קָרְבֵיהּ לְאַתְרֵיהּ מְסַר קֳדָמוֹהִי
עַמְמִין וּמַלְכִין תַּקִּיפִין תְּבַר רְמָא כְעַפְרָא קְטוֹלִין קֳדָם חַרְבֵּיהּ כְּקַשָּׁא רְדוּפִין קֳדָם
3 קַשְׁתֵּיהּ׃ רַדְפִנּוּן עֲדָא שְׁלָם חֵילַת אוֹרַח בְּרַגְלוֹהִי לָא עֲלַת׃ מַן אֲמַר אִלֵּין קַיֵּם אֲמַר
4 וַעֲבִיד וְסַדַּר דָּרַיָּא מִלְּקַדְמִין אֲנָא יְיָ בְּרֵית עָלְמָא מִבְּרֵאשִׁית אַף עָלְמֵי עָלְמַיָּא דִּילִי אִנּוּן
5 בַּר מִנִּי לֵית אֱלָהָא׃ חֲזוֹ נַגְוָתָא וְיִדְחֲלוּן דִּבְסִיפֵי אַרְעָא יְזוּעוּן יִתְקָרְבוּן וְיֵיתוּן׃ גְּבַר יַת
6 חַבְרֵיהּ יְסַעֲדוּן וְלַאֲחוּהִי יֵימַר תַּקִּיף׃ הֲלָא יִבְהֲתוּן בְּעוֹבָדֵיהוֹן דִּמְתַקֵּיף נַגָּרָא עִם קֵינָאָה
7 מָחֵי בְּפַטִּישָׁא עִם דִּמְטַפַּח בְּקוּרְנָסָא זְמַנָא אֲמַר עַל דִּבְקָא תַּקִּין הוּא וּמְתַקֵּיף לֵיהּ
8 בְּמַסְמְרִין דְּלָא יִצְטְלֵי׃ וְאַתְּ יִשְׂרָאֵל עַבְדִּי יַעֲקֹב דְּאִתְרְעֵיתִי בָךְ זַרְעֵיהּ דְּאַבְרָהָם רְחִימִי׃
9 דְּקָרֵיבְתָּךְ מִזַּרְעִית אַרְעָא וּמִמַּלְכְוָתָא בְחַרְתָּךְ וַאֲמָרֵית לָךְ עַבְדִּי אַתְּ אִתְרְעֵיתִי בָךְ וְלָא
10 אֲרַחֵקְנָךְ׃ לָא תִדְחַל אֲרֵי בְסַעְדָךְ מֵימְרִי לָא תִתְּבַר אֲרֵי אֲנָא אֱלָהָךְ אַתְקֵיפְנָךְ אַף אֲסַעֲדִנָּךְ
11 אַף אֲחַדְנָךְ בִּימִין קוּשְׁטִי׃ הָא יִבְהֲתוּן וְיִתְכַּנְעוּן כָּל עַמְמַיָּא דַּהֲווֹ מִתְגָּרִין בָּךְ יְהוֹן כִּלְמָא
12 וְיֵבְדוּן אֱנָשֵׁי דִינָךְ׃ תִּבְעִנּוּן וְלָא תַשְׁכְּחִנּוּן לְאֱנָשֵׁי מַצּוּתָךְ יְהוֹן כִּלְמָא וּכְלָא מִדַּעַם גַּבְרִין
13 דַּהֲווֹ מִתְגָּרִין לְמֶעְבַּד עִמָּךְ קְרָב׃ אֲרֵי אֲנָא יְיָ אֱלָהָךְ מַתְקֵיף יְמִינָךְ דַּאֲמָרֵית לָךְ לָא תִדְחַל
14 מֵימְרִי בְסַעְדָךְ׃ לָא תִדְחֲלוּן שִׁבְטַיָּא דְּבֵית יַעֲקֹב זַרְעִיתָא דְּיִשְׂרָאֵל מֵימְרִי בְסַעְדְּכוֹן אֲמַר
15 יְיָ וּפָרִיקְכוֹן קַדִּישָׁא דְּיִשְׂרָאֵל׃ הָא שַׁוֵּיתִיכוֹן לְמוֹרַג תַּקִּיף חֲדַת מְלֵי סַמְפּוֹרִין תְּקַטֵּיל
16 עַמְמַיָּא וּתְשֵׁיצֵי וּמַלְכְוָתָא כְּמוֹצָא תְשַׁוֵּי׃ תִּדְרִנּוּן וְרוּחָא תִטְלִנּוּן וּמֵימְרֵיהּ כְּעַלְעוֹלָא
17 לְקַשָּׁא יְבַדַּר יַתְהוֹן וְאַתְּ תָבוּעַ בְּמֵימְרָא דַיְיָ בְּקַדִּישָׁא דְּיִשְׂרָאֵל תִּשְׁתַּבַּח׃ עַנְוְתָנַיָּא
וַחֲשִׁיכַיָּא דִּמְחַמְּדִין לְאוּלְפָנָא הָא כְצַחְיָא לְמַיָּא וְלָא מַשְׁכְּחִין רוּחֵיהוֹן בְּסִגּוּפָא מְשַׁלְהֲיָא
אֲנָא יְיָ אֲקַבֵּל צְלוֹתְהוֹן אֱלָהָא דְּיִשְׂרָאֵל לָא אֲרַחֲקִנּוּן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quis adduxit publicè ab Oriente Abrahã,electũ juſtorũ in veritate accivit 2
in locũ ſuũ,tradidit in conſpectu ej⁹ populos,& reges *fortes* contrivit,projecit
quaſi pulverẽ interfectores ante gladiũ ej⁹, & quaſi ſtipulã propulſos
ante arcum ej⁹ ? Perſequebatur eos,tranſivit in pace:virt⁹ itineris in pedes 3
ej⁹ non introivit. Qui dixit hæc,confirmavit ea ; dixit & fecit qui ordinavit 4
generationes à principio. Ego Dñs creavi ſeculũ à principio;etiã ſecula
ſeculorũ mea ſunt,& abſq; me non eſt Deus. Viderunt inſulæ,& timuerunt; 5
& qui in extremis terræ ſunt,contremiſcent,appropinquabunt & venient. 6
Unuſquiſq; proximo ſuo auxiliabitur,& fratri ſuo dicet,Confortare.Nónne 7
confundentur in operib⁹ ſuis?quòd fortificat faber cum aurifice,percutiens
malleo cum eo qui concutit malleolo, demũ dicit, Solidationi aptũ eſt:&
fortificat illud clavis ut non commoveatur.Et tu Iſrael ſerve mi Jacob quem 8
elegi,ſemen Abrahæ dilecti mei : Quem adjunxi de cognationib⁹ terræ, & 9
de regnis elegi te : & dixi tibi, Servus meus es tu,elegi te & non abjiciam
te. Ne timeas,quia in adjutoriũ tuũ erit Verbum meũ : ne frangaris, quoniam 10
ego Deus tu⁹:confortavi te & auxiliat⁹ ſum tibi ; etiam *prehendam* te
dextera veritatis *mea*.Ecce confundentur & erubeſcent oẽs populi qui irruebant 11
in te;erunt quaſi nihilũ,& peribũt viri judicii tui.Quæres eos. & non 12
invenies viros objurgantes adverſũ te;erunt quaſi non ſint,& quaſi nihilũ
viri qui irruebant ut pugnarent contra te. Quoniam ego Dñs Deus tuus, 13
confortans manũ dexteram tuam:qui dico tibi,Ne timeas,quia Verbũ meũ
eſt in adjutorium tuum. Ne timeatis tribus domus Jacob ; cognationes 14
Iſrael ; Verbum meum eſt in auxilium veſtrum, dicit Dñs & redemptor
veſter ſanctus Iſrael. Ecce poſui vos quaſi tribulam fortem novam plenam 15
dentibus:occides populos,& conſumes regna ; quaſi ſtipulam pones eos.
Diſperges eos, & ventus abripiet eos;& Verbum ejus diſperget eos quaſi 16
turbo ſtipulas. Tu autem exultabis in verbo Dñi; & in ſancto Iſrael laudaberis.
Humiles & pauperes qui deſiderant doctrinam ſicut ſitiens aquam, 17
& non inveniunt;ſpiritus eorum in afflictione fatiſcit : ego Dñs ſuſcipiam
orationem eorum, Deus Iſrael non abjiciam eos.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܡܢܘ ܐܥܝܪ ܙܕܝܩܘܬܐ ܡܢ ܡܕܢܚܐ. ܘܩܪܝܗ ܠܪܓܠܗ. ܢܬܟܢܫܘܢ ܩܕܡܘܗܝ ܥܡܡܐ. 2
ܘܡܠܟܐ ܢܬܬܡܗܘܢ. ܢܬܠ ܐܝܟ ܥܦܪܐ ܣܝܦܗ. ܘܐܝܟ ܩܫܐ ܕܡܬܛܪܕ ܩܫܬܗ. * ܢܪܕܘܦ 3
ܐܢܘܢ. ܘܢܥܒܪ ܒܫܠܡܐ. ܘܐܘܪܚܐ ܒܪܓܠܘܗܝ ܠܐ ܢܐܬܐ. * ܡܢܘ ܥܒܕ ܘܣܥܪ. ܡܢ ܩܪܐ ܕܪܐ 4
ܡܢ ܒܪܫܝܬ. ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܩܕܡܝܐ. ܘܐܚܪܝܐ. ܐܢܐ ܐܢܐ. * ܚܙܝܢܝ ܓܙܪܬܐ. ܘܕܚܠܘ 5
ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܕܚܠܘ ܘܩܪܒܘ ܘܐܬܘ. * ܓܒܪ ܠܚܒܪܗ ܢܥܕܪ. ܘܠܐܚܘܗܝ ܢܐܡܪ 6
ܐܬܚܝܠ. * ܢܓܪܐ ܠܨܐܪܐ ܐܡܠܨ ܒܥܘܫܢܐ ܘܡܛܪܩ ܒܡܩܒܐ. ܘܐܡܪ ܥܠ ܕܒܩܐ 7
ܕܫܦܝܪ ܗܘ. ܘܬܩܢܘܗܝ ܒܡܣܡܪܐ. ܕܠܐ ܢܬܬܙܝܥ. * ܘܐܢܬ ܐܝܣܪܝܠ ܥܒܕܝ. ܝܥܩܘܒ 8
ܕܓܒܝܬܟ. ܙܪܥܗ ܕܐܒܪܗܡ ܪܚܡܝ. ܕܐܚܕܬܟ. * ܡܢ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܘܡܢ ܪܘܡܝܗ 9
ܩܪܝܬܟ. ܘܐܡܪܬ ܠܟ. ܥܒܕܝ ܐܢܬ. ܓܒܝܬܟ ܘܠܐ ܐܣܠܝܬܟ. * ܠܐ ܬܕܚܠ. ܡܛܠ 10
ܕܥܡܟ ܐܢܐ. ܘܠܐ ܬܬܪܗܒ. ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܐܠܗܟ. ܐܚܝܠܟ ܐܦ ܐܥܕܪܟ. ܐܦ
ܐܣܡܟܟ ܒܝܡܝܢܐ ܕܙܕܝܩܘܬܝ. * ܢܒܗܬܘܢ ܘܢܬܟܢܥܘܢ. ܟܠܗܘܢ ܕܡܬܚܪܝܢ ܥܡܟ. 11
ܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܠܐ ܡܕܡ. ܘܢܐܒܕܘܢ ܓܒܪܐ ܕܕܝܢܐ ܥܡܟ. * ܬܒܥܐ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܬܫܟܚ ܐܢܘܢ 12
ܠܓܒܪܐ ܕܕܝܢܐ ܥܡܟ. ܢܗܘܘܢ. ܐܝܟ ܕܠܐ ܐܝܬܝܗܘܢ. ܓܒܪܐ ܕܡܬܟܬܫܝܢ ܥܡܟ.
* ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ ܡܚܝܠܢܐ ܕܝܡܝܢܟ. ܘܐܡܪ ܠܟ. ܠܐ ܬܕܚܠ. ܐܢܐ ܐܢܐ 13
ܥܕܘܪܟ. * ܠܐ ܬܕܚܠ ܬܘܠܥܬܐ ܕܝܥܩܘܒ. ܘܡܢܝܢܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܢܐ ܐܢܐ ܥܕܘܪܟ 14
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܦܪܘܩܟ ܩܕܝܫܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܗܐ ܥܒܕܬܟ. ܐܝܟ ܓܠܓܠܐ ܚܕܬܐ ܕܡܕܝܫ 15
ܘܡܕܩ. ܬܕܘܫ ܛܘܪܐ ܘܬܕܩ. ܘܪܡܬܐ ܬܥܒܕ ܐܝܟ ܥܘܪܐ. * ܬܕܪܐ ܐܢܘܢ. ܘܥܠܥܠܐ ܬܒܕܪ 16
ܐܢܘܢ. ܘܐܢܬ ܬܚܕܐ ܒܡܪܝܐ. ܘܒܩܕܝܫܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܬܫܬܒܗܪ. * ܡܣܟܢܐ ܘܚܫܝܟܐ 17
ܕܒܥܝܢ ܡܝܐ. ܘܠܝܬ. ܘܠܫܢܗܘܢ ܒܨܗܝܐ ܝܒܫ. ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܥܢܐ ܐܢܘܢ. ܐܠܗܗ
ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܠܐ ܐܫܒܘܩ ܐܢܘܢ.

Quis excitavit juſtitiam ab Oriente, & vo- 2
cavit eam ad pedem ſuum ? cedant coram eo
populi, & reges obſtupeſcant : ſimilem red-
det pulveri gladium ejus, *(eorum,)* & ſimilem
ſtipulæ labenti arcum ejus. Perſequetur eos, 3
& reſtituet pacem, & viam pedibus ſuis non
introducet. Quis diſpoſuit, ac fecit ? qui 4
ſecula vocavit ab initio : ego ſum Dominus,
primus, & ultimus ego ſum. Viderunt me 5
inſulæ, & timuerunt extrema terræ ; timue-
runt, acceſſerunt, & venerunt. Quiſque ſo- 6
cium ſuum adjuvat, & fratri ſuo dicit ; Forti
ſis animo. Faber lignarius animum dat au- 7
rifici qui malleo tundit ac deſudat, dicítque
de glutine quòd ſit optimum ; & firmant il-
lud clavis, ne moveatur. Itaque Iſrael ſerve 8
meus, Jacob quem elegi, ſemen Abrahæ ami-
ci mei, quod roboravi. Quod ab extremis 9
terræ & editioribus locis ejus vocavi, dixíque
tibi ; Servus meus es, elegi te, nec ſpernam
te : Ne timeas, quia tecum ſum ; & ne ter- 10
rearis, quia ego ſum Deus tuus : corrobora-
bo te, & opem feram tibi, fulciámque te
dexterâ juſtâ meâ. Rubore & ignominiâ 11
perfundentur quìcunque adverſantur tibi, e-
runt ut nihilum & peribunt qui tecum de-
certant. Quæres eos, & non invenies ho- 12
mines illos qui tecum decertant : erunt ac
ſi non eſſent homines illi qui te impugnant ;
Quoniam ego ſum Dominus Deus tuus 13
corroborator dexteræ tuæ. Ne timeas in-
quam, ego ſum adjutor tuus ; Ne timeas 14
vermicule Jacobi, & pedicule Iſraelis ; ego
ſum adjutor tuus, ait Dominus ; & redem-
ptor tuus Sanctus Iſraelis. Ecce te reddidi 15
quaſi plauſtrum novum conterens et commi-
nuens : triturabis montes atque comminues,
et colles quaſi in glumam rediges : Venti- 16
labis eos, et turbo diſperdet illos : tu autem
exultabis in Domino, et in Sancto Iſraelis
gloriaberis, Pauperes et inopes qui quæ- 17
runt aquas, nec adſunt *eis*, quorum lingua ſiti
areſcit ; ego Dominus exaudiam, Deus Iſrae-
lis, nec deſeram eos.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* من اقام من المشارق عدلا * دعاه عند قدميه * فيسير ويعطي امامه الامم * ويحير الملوك * 2
ويعطي للارض سيوفهم * ومثل الهشيم المقصي قسيهم * ويطردهم ويجوز في السلامة طريق 3
قدميه * من فعل وصنع هذا * الذي دعاها من اجيال الدهور * انا الاله الاول والى الاتيات انا 4
هو * رات الامم وخافت * اطراف الارض ذهلت * اقتربوا وجاوا معا * يدين كل واحد قريبه 5 6
وليعين اخاه ويقول تقوى * الرجل النجار والنحاس الضارب بالمطرقة * ياتي معا يقولان * 7
الرفقة جيدة هي * يثبتوهم بمسامير * يضعوهم فلا يتحركون * * الاصحاح العشرون *
* وانت يا اسرايل عبدي * يعقوب الذي اخترته * زرع ابرهيم الذي احببته وعضدته * 8
* من اطراف الارض ومن مراقيها دعوتك فقلت لك * انت عبدي * واخترتك ولست 9
اتركك * لا تخف لاني انا معك * لا تضل اني انا الهك الذي قويتك واعنتك * احرزتك 10
بيميني العادلة * ها يفتضحون ويخجلون جميع الذين يعاندونك * لانهم يصيرون كانهم 11
لم يكونوا * ويهلك جميع خصومك * تطلبهم فلا تجد الناس الذين يخاصمون عليك * 12
يصيرون كانهم لم يكونوا * ولا يكون الذين يحاربونك * لاني انا الهك الماسك 13
بيمينك * القايل لك لا تخف * انا اعنتك * لا تخف يا يعقوب الدودة * اسرايل القليل * انا 14
اعنتك قال الله منقذك قدوس اسرايل * ها جعلتك مثل البكرات الجدد التي للعجلة * 15
شبه المناشير التي تدرس * فتدرس الجبال وتسحق الاكام * وتضعهم مثل التراب * وتطحنهم * 16
والريح تاخذهم * والعاصف يبددهم * وانت تفرح باطهار اسرايل * ويبتهج المساكين * لان 17
المقلين يطلبون الماء ولا يكون لسانهم ييبس من العطش * انا الرب الاله * انا اله اسرايل
اسمعك * ولست اتركك *

Qui excitavit ab Oriente juſtitiam, & 2
vocavit eam ad pedes ſuos, pergit, ex-
ponétque ei gentes, & obſtupefaciet reges,
terræ dabit enſes eorum, & ſicut ſtipu-
pulam expulſam arcus eorum : Perſe- 3
quetur eos, tranſigétque incolumis iter pe-
dum ſuorum. Quis operatus eſt & fe- 4
cit iſtud ? qui vocavit illud ab avis æter-
nis. Ego ſum Deus primus, & ad ventura
ſecula ego ſum. Videntes populi timue- 5
runt, extrema terræ obſtupuerunt ; acceſ-
ſerunt, ſimulque venerunt; Ad judi- 6
candum quiſque proximum ſuum, & au-
xiliandum fratri ſuo, dicens ; Confirmare.
Homo lignarius, & ærarius malleo tun- 7
dens, unà conveniunt et dicunt interdum,
Optima eſt ſocietas : firmant eos clavis, &
collocant eos, ne dimoveantur.

Textus vigeſimus,

At tu O Iſrael ſerve meus, Jacob quem 8
elegi, ſemen Abrahami quem dilexi &
adjuvi. Ab extremitatibus terræ & è 9
ſpeculis ejus vocavi te, dixique tibi ;
Servus meus es, te elegi, nec derelinquam
te : Ne timeto, quia tecum ſum ; ne ab- 10
erres, quia Deus tuus ſum qui vires &
opem tibi præſtiti : dexterâ juſtâ meâ te
cuſtodivi. En erubeſcent & pudefient 11
omnes qui te impugnant, fient enim ac ſi
nunquam fuiſſent, & peribunt omnes ad-
verſarii tui. Quæres homines qui te per- 12
turbant, nec invenies : erunt ac ſi non fuiſ-
ſent, & non ſubſiſtent qui te oppugnant :
Quoniam ego ſum Deus tuus tenens dex- 13
teram tuam, dicens tibi ; Ne timeto, ego
opem feram tibi ; Ne timeto O Jacob 14
vermicule, Iſrael perpauce : ego opem tibi
feram, inquit Deus redemptor tuus, San-
ctus Iſraelis. Ecce reddam te ſimilem 15
rotis novis plauſtri, ſimilem ferris tritu-
rantibus : & triturabis montes, colléſque
comminues : Et in pulverem rediges 16
eos, moles eos, abripiétque eos ventus, &
turbo diſperget illos : tu verò gaudebis in
ſanctis Iſraelis, & exultabunt pauperes :
Quoniam inopes aquam petent, & non 17
areſcet lingua eorum ſiti : ego Dominus
Deus, ego Deus Iſraelis audiam te, &
non derelinquam te ;

ישעיה: מב

: fontes camporum medio in & , flumina *editioribus super* Aperiam
18 אֶפְתַּח עַל־שְׁפָיִים נְהָרוֹת וּבְתוֹךְ בְּקָעוֹת מַעְיָנוֹת
exitus in *siccitatis* terram & ,aquarum stagnum in desertum ponam
אָשִׂים מִדְבָּר לַאֲגַם־מַיִם וְאֶרֶץ צִיָּה לְמוֹצָאֵי
lignum & ,myrtum & , *Sittah* , cedrum *deserto* in Dabo .aquarum
19 מָיִם׃ אֶתֵּן בַּמִּדְבָּר אֶרֶז שִׁטָּה וַהֲדַס וְעֵץ
.pariter buxum & , *sapinum* , abietem deserto in ponam : olivæ
שֶׁמֶן אָשִׂים בָּעֲרָבָה בְּרוֹשׁ תִּדְהָר וּתְאַשּׁוּר יַחְדָּו׃
manus quia pariter intelligant & ,reponant &,sciant &,videant Ut
20 לְמַעַן יִרְאוּ וְיֵדְעוּ וְיָשִׂימוּ וְיַשְׂכִּילוּ יַחְדָּו כִּי יַד־
Appropinquate .illud creavit Israel Sanctus & :·hoc fecit Domini
21 יְהוָה עָשְׂתָה זֹּאת וּקְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל בְּרָאָהּ׃ קָרְבוּ
dicet , *vestra fortia* facite accedere : Dominus *dicet* , *vestram litem*
רִיבְכֶם יֹאמַר יְהוָה הַגִּישׁוּ עֲצֻמוֹתֵיכֶם יֹאמַר
: *accident quæ* nobis nuntient & , Accedant .Jahacob rex
22 מֶלֶךְ יַעֲקֹב׃ יַגִּישׁוּ וְיַגִּידוּ לָנוּ אֵת אֲשֶׁר תִּקְרֶינָה
sciemus &,nostrum cor ponemus & ,nuntiate , *ipsa quid* priora
הָרִאשֹׁנוֹת מָה הֵנָּה הַגִּידוּ וְנָשִׂימָה לִבֵּנוּ וְנֵדְעָה
ventura Annuntiate .nos audire facite *ventura* aut ,eorum *novissimum*
23 אַחֲרִיתָן אוֹ הַבָּאוֹת הַשְׁמִיעֻנוּ׃ הַגִּידוּ הָאֹתִיּוֹת
benefacietis etiam *: vos* Dii quòd sciemus & , posterum in
לְאָחוֹר וְנֵדְעָה כִּי אֱלֹהִים אַתֶּם אַף־תֵּיטִיבוּ
vos Ecce .simul videbimus &,narrabimus & ,malefacietis &
24 וְתָרֵעוּ וְנִשְׁתָּעָה וְנִרְא יַחְדָּו׃ הֵן־אַתֶּם
.vos *in* eliget *abominatio* : nihilo ex vestrum opus &,nihilo ex
מֵאַיִן וּפָעָלְכֶם מֵאָפַע תּוֹעֵבָה יִבְחַר בָּכֶם׃
:meo nomine in vocabit solis ortu ab ; veniet & ,aquilone ab Suscitavi
25 הַעִירוֹתִי מִצָּפוֹן וַיַּאת מִמִּזְרַח־שֶׁמֶשׁ יִקְרָא בִשְׁמִי
.lutum conculcabit figulus sicut & , lutum sicut *magistratus invadet &*
וְיָבֹא סְגָנִים כְּמוֹ־חֹמֶר וּכְמוֹ יוֹצֵר יִרְמָס־טִיט׃
,dicemus & , *faciebus* à & ? sciemus & , *capite* à annuntiavit Quis
26 מִי־הִגִּיד מֵרֹאשׁ וְנֵדָעָה וּמִלְּפָנִים וְנֹאמַר
audiens non etiam ,*audire faciens* non etiam ,*indicans* non verùm ? justus
צַדִּיק אַף אֵין־מַגִּיד אַף אֵין מַשְׁמִיעַ אַף אֵין־שֹׁמֵעַ
Jerusalaim ipsi & : ipsi ecce , ecce ,Sijon ad Primus .vestros sermones
27 אִמְרֵיכֶם׃ רִאשׁוֹן לְצִיּוֹן הִנֵּה הִנָּם וְלִירוּשָׁלִַם
,ipsis ex & , quispiam non & , videbo Et .dabo evangelistam
28 מְבַשֵּׂר אֶתֵּן׃ וְאֵרֶא וְאֵין אִישׁ וּמֵאֵלֶּה
.verbum respondebunt & , eos interrogabo & : consiliator non &
וְאֵין יוֹעֵץ וְאֶשְׁאָלֵם וְיָשִׁיבוּ דָבָר׃
inane & ventus : eorum opera nihil , *iniquitas* ipsi omnes En
29 הֵן כֻּלָּם אָוֶן אֶפֶס מַעֲשֵׂיהֶם רוּחַ וָתֹהוּ
.eorum conflatilia
נִסְכֵּיהֶם׃

CAP. XLII. מב

dedi *: mea anima* *voluit* ,meus electus *: eo in* innitar ,meus servus Ecce
1 הֵן עַבְדִּי אֶתְמָךְ־בּוֹ בְּחִירִי רָצְתָה נַפְשִׁי נָתַתִּי
,clamabit Non .faciet exire gentibus judicium,eum super meū spiritum
2 רוּחִי עָלָיו מִשְׁפָּט לַגּוֹיִם יוֹצִיא׃ לֹא יִצְעַק
Calamum .suam vocem *platea in* faciet audire neque ; elevabit non &
3 וְלֹא יִשָּׂא וְלֹא־יַשְׁמִיעַ בַּחוּץ קוֹלוֹ׃ קָנֶה־
fissum extinguet non *caligans* linum & , conteret non quassatum
רָצוּץ לֹא יִשְׁבּוֹר וּפִשְׁתָּה כֵהָה לֹא יְכַבֶּנָּה
donec,frangetur nec caligabit Non .judicium educet veritatem ad
4 לֶאֱמֶת יוֹצִיא מִשְׁפָּט׃ לֹא יִכְהֶה וְלֹא יָרוּץ עַד־
.expectabunt *insulæ* ejus legem ad & : judicium *terra in* ponat
יָשִׂים בָּאָרֶץ מִשְׁפָּט וּלְתוֹרָתוֹ אִיִּים יְיַחֵילוּ׃

Verſio VULG. LAT.

18 Aperiam in ſupinis collibus
flumina, & in medio campo-
rum fontes : ponam deſertum
in ſtagna aquarum, & terram
19 inviam in rivos aquarum. Da-
bo in ſolitudinem cedrum, &
ſpinam, & myrtum, & lignum
olivæ : ponam in deſerto abi-
etem, ulmum, & buxum ſi-
20 mul : Ut videant, & ſciant, &
recogitent, & intelligant pa-
riter, quia manus Domini fe-
cit hoc, & Sanctus Iſrael crea-
21 vit illud. Propè facite judi-
cium veſtrum, dicit Dominus;
afferte, ſi quid fortè habetis,
22 dixit rex Jacob. Accedant,
& nuntient nobis quæcunque
ventura ſunt : priora quæ fue-
runt nuntiate: & ponemus cor
noſtrum, & ſciemus noviſſima
eorum, & quæ ventura ſunt in-
23 dicate nobis. Annuntiate quæ
ventura ſunt in futurū, & ſcie-
mus quia Dii eſtis vos : benè
quoque aut malè, ſi poteſtis, fa-
cite : & loquamur, & videa-
24 mus ſimul. Ecce, vos eſtis ex
nihilo, & opus veſtrum ex eo
quod non eſt : abominatio eſt
25 qui elegit vos. Suſcitavi ab A-
quilone, & veniet ab Ortu So-
lis : vocabit nomen meum, &
adducet magiſtratus quaſi lutū
& velut plaſtes conculcans hu-
26 mum. Quis annuntiavit ab ex-
ordio ut ſciamus, & à princi-
pio ut dicamus; Juſtus es? non
eſt neque annuntians, neque
prædicens, neque audiens ſer-
27 mones veſtros. Primus ad Sion
dicet; Ecce adſunt, & Jeruſa-
28 lem evangeliſtam dabo. Et vi-
di, & non erat neque ex iſtis
quiſquam qui iniret conſilium,
& interrogatus reſponderet
29 verbum. Ecce omnes injuſti,
& vana opera eorum : ventus
& inane ſimulachra eorum.

CAP. XLII.

1 Ecce ſervus meus, ſuſcipiam
eum: electus meus, complacuit
ſibi in illo anima mea : dedi
ſpiritum meum ſuper eum, ju-
dicium Gentibus proferet.
2 Non clamabit, neque accipiet
perſonam, nec audietur vox e-
3 jus foris. Calamum quaſſatum
non conteret, & linum fumi-
gans non extinguet : in verita-
4 te educet judicium. Non erit
triſtis, neque turbulentus, do-
nec ponat in terra judicium :
& legem ejus inſulæ expecta-
bunt.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

18 Ἀλλὰ ἀνοίξω ἐπὶ τῶν ὀρέων ποταμοὺς, καὶ ἐν
μέσῳ πεδίων πηγάς· ποιήσω τὴν ἔρημον (·) εἰς
ἕλη ὑδάτων, καὶ τὴν διψῶσαν γῆν ἐν ὑδραγω-
19 γοῖς. Θήσω εἰς τὴν ἄνυδρον γῆν, κέδρον
καὶ πύξον, (ι) μυρσίνην καὶ κυπάρισσον, καὶ
20 λεύκην· Ἵνα ἴδωσι καὶ γνῶσι, καὶ ἐννοηθῶσι
καὶ (κ) ἐπιστῶνται ἅμα, ὅτι χεὶρ κυρίου ἐποίη-
σε ταῦτα (λ), καὶ ὁ ἅγιος τοῦ Ἰσραὴλ κατέ-
21 δειξεν. Ἐγγίζει ἡ κρίσις ὑμῶν, λέγει
κύριος ὁ θεός· ἤγγισαν αἱ βουλαὶ ὑμῶν,
22 λέγει ὁ βασιλεὺς Ἰακώβ. Ἐγγισάτωσαν,
καὶ ἀναγγειλάτωσαν ὑμῖν ἃ συμβήσεται, ἢ τὰ
(¨) πρότερον τίνα ἦν, εἴπατε, καὶ ἐπιστήσο-
μεν τὸν νοῦν, καὶ γνωσόμεθα τί τὰ ἔσχατα καὶ
23 τὰ ἐπερχόμενα· εἴπατε ἡμῖν, Ἀναγγείλα-
τε (μ) ἡμῖν τὰ ἐπερχόμενα ἐπ' ἐσχάτου, καὶ
γνωσόμεθα ὅτι θεοί ἐστε. εὖ ποιήσατε καὶ κα-
κώσατε, καὶ θαυμασόμεθα, (ν) καὶ ὀψόμεθα
24 ἅμα Ὅτι πόθεν ἐστὲ ὑμεῖς, καὶ πόθεν ἡ ἐρ-
γασία ὑμῶν. ἐκ γῆς βδέλυγμα ἐξελέξαν-
25 το ὑμᾶς. (ʹ) Ἐγὼ δὲ ἤγειρα τὸν ἀπὸ Βορρᾶ,
καὶ τὸν (ξ) ἀφ' ἡλίου ἀνατολῶν· (ο) κληθήσον-
ται τῷ ὀνόματί μου. ἐρχέσθωσαν ἄρχοντες,
καὶ ὡς πηλὸς κεραμέως, καὶ ὡς κεραμεὺς κα-
ταπατῶν τὸν πηλὸν, (π) οὕτω καταπατηθή-
26 σεσθε. Τίς γὰρ ἀναγγελεῖ τὰ ἐξ ἀρχῆς, ἵνα
γνῶμεν καὶ τὰ ἔμπροσθεν, καὶ ἐροῦμεν ὅτι ἀ-
ληθῆ ἐστιν; οὐκ ἔστιν ὁ προλέγων, (ρ) οὐδὲ ὁ
27 ἀκούων ὑμῶν τοὺς λόγους. Ἀρχὴν Σιὼν δώ-
σω, καὶ Ἱερουσαλὴμ παρακαλέσω (σ) εἰς ὁ-
28 δόν. Ἀπὸ γὰρ τῶν ἐθνῶν, ἰδοὺ (τ) οὐδείς· καὶ
ἀπὸ τῶν εἰδώλων αὐτῶν, οὐκ ἦν ὁ ἀναγγέλ-
λων· καὶ ἐὰν ἐρωτήσω αὐτοὺς, Πόθεν ἐστέ;
29 οὐ μὴ ἀποκριθῶσί μοι. Εἰσὶ γὰρ οἱ ποιοῦν-
τες ὑμᾶς, καὶ μάτην οἱ πλανῶντες ὑμᾶς.

Sed aperiam in montibus flumina, 18
& in medio camporum fontes:
faciam deſertum in paludes aqua-
rum, & ſitientem terram in aquæ-
ductus. Ponam in terram abſque 19
aqua cedrum, & (b) buxum, myr-
tum, & cypariſſum, & populum:
ut videant & ſciant, & cogitent, 20
& noverint ſimul; quia manus
Domini fecit hæc, & Sanctus Iſ-
rael oſtendit. Juxta eſt judicium 21
veſtrum, dicit Dominus Deus: (i)
appropinquaverunt conſilia veſtra,
dicit rex Jacob. Appropinquent, 22
& annuntient vobis, quæ ventura
ſunt, aut priora, quæ erant: dicite, et
apponemꝰ ſenſū: et ſciemꝰ, quæ ſint
noviſſima: & ventura dicite nobis,
Nuntiate nobis, quæ (k) ventura 23
in noviſſimo: & ſciemus, quoniam
Dii eſtis. Benefacite, & malefaci-
te: & admirabimur: & videbi-
mus ſimul, unde ſitis vos, & unde 24
ſit opus veſtrum. De terra abomi-
nationem elegerunt vos. Ego au- 25
tem ſuſcitavi eum, qui ab Aquilo-
ne eſt, & qui ab ortu Solis: voca-
buntur nomine meo. Veniant prin-
cipes; & ſicut lutum figuli, & ſic-
ut figulus conculcans lutum; ſic
conculcabimini. Quis enim annun- 26
tiabit ea quæ à principio ſunt, ut
cognoſcamꝰ ex quæ ad faciē ſunt?
& dicemus, quia vera ſunt? Non
eſt, qui prædicat, neque qui audiat
verba veſtra. Principium Sion da- 27
bo, & Hieruſalem conſolabor in
via. Nam de gentibus ecce nullus 28
eſt; & de idolis ipſorum non erat,
qui annuntiaret: &, ſi interroga-
vero eos, unde eſtis; non reſpon-
debunt mihi. Sunt enim (l) factores 29
veſtri, et fruſtrà, qui ſeducunt vos.

MS.A. (·) εἰς ἕλη, καὶ (ι) καὶ μυρσίνην (κ) * ἐπιστῶνται (λ) πάντα, (¨) πρότερα (μ) τὰ ἐπερχόμενα (ν) Ὅτι πόθεν (ʹ) Ἐγὼ ἤγειρα (ξ) ἀπ' (ο) κληθήσονται (π) οὕτως (ρ) οὐδ' ἀκούων τοὺς λόγους ὑμῶν. (σ) ἐν ὁδῷ. (τ) οὐθείς·

ΚΕΦ. μβ'.

1 Ἰακὼβ ὁ παῖς μου, ἀντιλήψομαι αὐτοῦ·
Ἰσραὴλ ὁ ἐκλεκτός μου, προσεδέξατο αὐ-
τὸν ἡ ψυχή μου, ἔδωκα τὸ πνεῦμά μου ἐπ'
2 αὐτὸν, κρίσιν τοῖς ἔθνεσιν ἐξοίσει. Οὐ (α)
κεκράξεται, οὐδὲ ἀνήσει, οὐδὲ ἀκουσθήσεται
3 ἔξω ἡ φωνὴ αὐτοῦ. Κάλαμον (β) τεθλα-
σμένον οὐ συντρίψει, καὶ λίνον καπνιζόμενον
οὐ σβέσει, ἀλλὰ εἰς ἀλήθειαν ἐξοίσει κρίσιν.
4 Ἀναλάμψει, καὶ οὐ θραυσθήσεται, ἕως ἂν θῇ
ἐπὶ τῆς γῆς κρίσιν, καὶ ἐπὶ τῷ ὀνόματι αὐτοῦ
ἔθνη ἐλπιοῦσιν.

CAP. XLII.

Jacob (a) puer meus, aſſumam e- 1
um: Iſrael electus meus, (b) ſuſcepit
eum anima mea. Dedi ſpiritum
meum ſuper eum: judicium gen-
tibus proferet: Non clamabit, ne- 2
que (c) dimittet, nec audietur fo-
ris vox ejus. Calamum fractum 3
non conteret: & linum (d) fumi-
gans non extinguet: ſed in verita-
te proferet judicium: Splendebit, 4
& non conteretur; donec ponat ſu-
per terram judicium. Et in nomi-
ne ejus gentes ſperabunt.

MS.A. (α) κράξεται, (β) συντεθλασμένον

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

18 אֶקָרֵב גָלְוָתְהוֹן מִבֵּינֵי עַמְמַיָא וְאֶדַבְּרִנוּן בְּאוֹרַח תַּקְנָא וְאֶפְתַּח לְהוֹן עַל נִגְדִין נַהֲרִין וּבְגוֹ
19 מַשְׁרְיָן מַבּוּעִין אֲשַׁוֵי מַדְבְּרָא לַאֲגַמִין דְמַיִן וַאֲרַע בֵּית צַחֲוָנָא לְמַבּוּעֵי מַיָא׃ אֶתֵּן בְּמַדְבְּרָא
20 אַרְזִין שִׁטִּין וַהֲדַסִּין וְאָעִין דִמְשַׁח אֲרַבֵּי בְּמֵישְׁרָא בְּרָוָן מוֹרְנִין וְאֶשְׁכְּרוֹעִין כַּחֲדָא׃ בְּדִיל
דְיֶחֱזוּן וְיִדְעוּן וִישַׁווּן דַחַלְתִּי עַל לִבְּהוֹן וְיִסְתַּכְּלוּן כַּחֲדָא אֲרֵי גְבוּרְתָא דַיְיָ עֲבַדַת דָא
21 וְקַדִּישָׁא דְיִשְׂרָאֵל בְּרָא יָתַהּ׃ קְרִיבוּ דִינְכוֹן אֲמַר יְיָ אַעִילוּ חֶזְוַתְכוֹן אֲמַר מַלְכֵּיהּ דְיַעֲקֹב׃
22 יִתְקָרְבוּן וִיחַווּן לָנָא יָת דְעָרְעָנָנָא קַדְמַיָתָא מָה אִנוּן חֲווֹ וּנְשַׁוֵי לִבָּנָא וְנִדַע סוֹפֵיהוֹן אוֹ
23 דַעֲתִידִין לְמֵיתֵי בַּסְרוֹנָא׃ חֲווֹ דְאָתְיָן לְסוֹפָא וְנֵדַע אִם לְטַעֲוָן דְאִית בְּהוֹן צְרוֹךְ אַתּוּן
24 פָלְחִין אִם יָכְלִין אִנִּין לְאֵיטָבָא וּלְאַבְאָשָׁא וְנִסְתַּכַּל וְנִדוּן כַּחֲדָא׃ הָא אַתּוּן לְמָא
25 וְעוֹבָדֵיכוֹן לָא מִדַּעַם תּוֹעֵיבָא דְאִתְרְעִיתוּן בֵּיהּ לְכוֹן׃ אַיְתֵיתִי בִגְלַאי מַלְכָּא דִתְקִיף מֵרוּחַ
צִפּוּנָא וְיֵיתֵי כְּמִפַּק שִׁמְשָׁא בִגְבוּרְתֵּיהּ מִמַּדְנְחָא אֲגַבְּרִנֵּיהּ בִּשְׁמִי וְיֵיתֵי וְיִדוּשׁ שִׁלְטוֹנֵי
26 עַמְמַיָא כְּמָא דְדָיְשִׁין יָת עַפְרָא וּכְפַחֲרָא דְעָרֵיךְ יָת טִינָא׃ מַן חַוֵי מִן אַוְלָא וְנִדַע וּמִלְקַדְמִין
27 וְנֵימַר קְשׁוֹט אַף לֵית דִי מְחַוֵי אַף לֵית דִמְבַסַּר אַף לֵית דְשָׁמַע לְמִלֵּיכוֹן׃ פִּתְגָמֵי נֶחָמָתָא
28 דְאִתְנַבִּיאוּ נְבִיַּיָא מִלְקַדְמִין עַל צִיוֹן הָא אָתוּ וְלִירוּשְׁלֶם מְבַסַּר אֶתֵּן׃ וּגְלֵי קֳדָמַי וְלֵית גְבַר
29 דְלֵיהּ עוֹבָדִין טָבִין וּמֵאִלֵּין לֵית דְמָלִיךְ מְלַךְ וּשְׁאֶלְתִּנוּן אִם יְתִיבוּן פִּתְגָם׃ הָא כוּלְהוֹן
לְמָא וְלָא מִדַּעַם עוֹבָדֵיהוֹן בִּזָּא וּתְבָרָא עֶשְׁתּוֹנֵיהוֹן׃

מב

1 הָא עַבְדִּי מְשִׁיחָא אֶקָרְבִנֵּיהּ בְּחִירִי דְאִתְרְעֵי בֵיהּ מֵימְרִי אֶתֵּן רוּחָא דְקוּדְשִׁי עֲלוֹהִי דִינִי
2 לְעַמְמִין יְגַלֵּי׃ לָא יִצְוַח וְלָא יַכְלֵי וְלָא יְרִים לְבָרָא קָלֵיהּ׃ עִנְוְתָנַיָא דְאִנוּן דָמַן לְקַנְיָא 3
4 רְעִיעַ לָא יִתַּבְּרוּן וַחֲשִׁיכַיָא דִכְבוּצִין עֲמֵי לָא יִטְפּוּן לִקְשׁוֹטָא יַפֵּיק דִינָא׃ לָא יִלְהֵי וְלָא
יִלְאֵי עַד דְיִתְקֵן בְּאַרְעָא דִינָא וּלְאוֹרָיְתֵיהּ נַגְוָן יְכַתְּרוּן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Congregabo tranſmigrationem eorum de medio populorum ; deducam eos 18
in via recta ; aperiam eis in torrentibus, flumina ; & in mediis caſtris, fon-
tes : ponam deſertum in ſtagna aquarum, & terram ſitientem in ſcaturigi-
nem aquarum. Dabo in ſolitudine cedros & ſethim, & myrtos, & ligna olei ; 19
creſcere faciam in campeſtribus abietes, & ulmos, & buxos ſimul. Ut vide- 20
ant & ſciant, & ponant timorem mei in corde ſuo , & intelligant ſimul
quòd potentia Dñi fecerit hoc, & ſanctus Iſrael creaverit illud. Propè 21
facite judicium veſtrū, dicit Dñs : afferte quod vobis videtur, dicit Rex Ja-
cob. Accedant & indicent nobis quæ accident nobis, & prima quæ fuerunt 22
annuntient ; & ponemus cor noſtrum, & ſciemus finem eorum : aut quæ
ventura ſunt, renuntiate nobis. Annuntiate quæ ventura ſunt tandem, ut 23
ſciamꝰ, num vos colatis idola in quibus ſit utilitas, & num ea poſſint bene-
facere aut malefacere : & attendamus & diſceptemus ſimul. Ecce vos eſtis 24
nihili, & opera veſtra nequicquam; abominatio eſt id quod vobis elegiſtis.
Adducam publicè regem fortem à plaga Aquilonis, & veniet, ſicut egredi- 25
tur Sol ab Oriente, in fortitudine ſua : roborabo eum nomine meo : & ve-
niet, & conculcabit principes populorum ſicut conculcatur pulvis, & ſicut
figulus qui diſponit lutum. Quis annuntiavit ab initio, ut ſciamus ? & jam 26
olim, ut dicamus Verum eſt ? nec eſt enim, qui annuntiet, nec qui indicet,
nec qui audiat ſermones veſtros. Verba conſolationum quæ prophetaverūt 27
prophetæ ab initio ſuper Sion, ecce veniunt : & Jeruſalem evangeliſtam
dabo. Manifeſtum eſt coram me non eſſe quenquam cujus opera ſint bona, 28
neque iſtorum ullum eſſe qui ineat conſilium : & interrogavi eos num re-
ſponderent verbum. Ecce omnes illi ſunt vanitas, & nihili opera eorum : 29
direptio, & interitus cogitata eorum.

CAP. XLII.

Ecce ſervus meus Meſſias ; applicabo eum : dilectus meus in quo ſibi 1
complacuit Verbum meum : dabo ſpiritum ſanctum meum ſuper eum;
judicium meum populis revelabit. Non clamabit, nec vociferabitur, nec 2
elevabit foràs vocem ſuam. *Manſueti*, qui *ſimiles* ſunt *calamo quaſſato*, non 3
confringentur ; & pauperes, qui ſunt quaſi linum obſcurum, non *extin-
guentur* : In veritate adducet judicium. Non erit laſſus, nec laborabit, donec dirigat in terra judicium : & legem ejus inſulæ expectabunt. 4

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

18 * ܐܦܬܚ ܢܗܪܘܬܐ ܒܛܘܪܐ ܘܒܓܘ ܦܩܥܬܐ ܡܒܘܥܐ. ܐܥܒܕ ܡܕܒܪܐ ܠܐܓܡܐ ܕܡܝܐ.
19 ܘܐܪܥܐ ܨܗܝܐ ܠܡܒܘܥܐ ܕܡܝܐ. * ܐܬܠ ܒܡܕܒܪܐ ܐܪܙܐ ܘܫܡܘܪܐ. ܘܐܣܐ ܘܙܝܬܐ
20 ܕܡܫܚܐ. ܐܣܝܡ ܒܦܩܥܬܐ ܫܘܦܝܪܐ ܘܒܪܘܬܐ ܐܟܚܕܐ. * ܕܢܚܙܘܢ ܘܢܕܥܘܢ.
21 ܘܢܣܬܟܠܘܢ ܐܟܚܕܐ. ܕܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ ܥܒܕܬ ܗܕܐ: ܘܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܒܪܗ. * ܩܪܒܘ
22 ܕܝܢܟܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܩܪܒܘ ܬܘܟܠܢܟܘܢ. ܐܡܪ ܡܠܟܗ ܕܝܥܩܘܒ. * ܢܬܩܪܒܘܢ. ܘܢܚܘܘܢ
ܠܢ ܕܓܕܫܢ. ܩܕܡܝܬܐ ܡܢܐ ܐܝܢ ܚܘܘܢܝ. ܘܢܣܝܡ ܠܒܢ. ܘܢܕܥ ܐܚܪܝܬܗܝܢ.
23 ܐܘ ܕܐܬܝܢ ܐܫܡܥܘܢܢ. * ܐܬܘܬܐ ܕܥܬܝܕܢ. ܘܢܕܥ ܕܐܠܗܐ ܐܢܬܘܢ. ܐܦ ܡܛܐܒܝܢ ܐܢܬܘܢ.
24 ܐܦ ܡܒܐܫܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܢܬܡܠܟ. ܘܢܚܙܐ ܐܟܚܕܐ. * ܗܐ ܐܢܬܘܢ ܠܐ ܡܕܡ ܐܢܬܘܢ.
25 ܘܥܒܕܝܟܘܢ ܡܢ ܚܪܒܐ. ܘܛܢܦܘܬܐ ܓܒܐ ܒܟܘܢ. * ܐܥܝܪܬ ܡܢ ܓܪܒܝܐ. ܕܐܬܐ ܡܢ
ܡܕܢܚ ܫܡܫܐ. ܘܢܩܪܐ ܒܫܡܝ. ܘܢܐܬܘܢ ܫܠܝܛܢܐ. ܘܢܬܕܝܫܘܢ. ܐܝܟ ܛܝܢܐ ܕܕܐܫ ܦܚܪܐ.
26 * ܡܢܘ ܕܢܚܘܐ ܡܢ ܪܝܫܐ. ܘܢܕܥ. ܘܢܐܡܪ ܕܙܕܝܩ. ܠܝܬ ܕܡܚܘܐ. ܐܦܠܐ ܕܡܫܡܥ. ܐܦ ܠܐ
27 28 ܕܫܡܥ ܡܠܝܟܘܢ. * ܪܫܝܬܐ ܕܨܗܝܘܢ ܗܠܝܢ ܐܢܝܢ. ܘܠܐܘܪܫܠܡ ܡܣܒܪܢܐ ܐܬܠ. * ܚܙܝܬ
29 ܘܠܝܬ ܐܢܫ ܕܡܬܪܥܐ ܒܗܠܝܢ. ܘܐܫܐܠܝܘܗܝ. ܘܢܬܠܘܢ ܠܝ ܦܬܓܡܐ. * ܗܐ ܟܠܗܘܢ
ܠܐ ܡܕܡ ܐܢܘܢ. ܘܥܒܕܝܗܘܢ ܣܪܝܩܝܢ. ܘܪܘܚܐ ܕܣܪܝܩܘܬܐ ܨܠܡܝܗܘܢ.

* ܦܨܠܐ * ܡܒ *

1 * ܗܐ ܥܒܕܝ ܣܡܟܬܗ. ܘܓܒܝܝ ܕܨܒܬ ܢܦܫܝ. ܝܗܒܬ ܪܘܚܝ ܥܠܘܗܝ. ܕܢܦܩ
2 ܕܝܢܐ ܠܥܡܡܐ. * ܠܐ ܢܩܥܐ ܘܠܐ ܢܪܝܡ. ܘܠܐ ܢܫܡܥ ܩܠܗ ܒܫܘܩܐ. * ܩܢܝܐ ܪܥܝܥܐ
3 4 ܠܐ ܢܬܒܪ. ܘܫܪܓܐ ܕܡܬܛܦܛܦ ܠܐ ܢܕܥܟ. ܒܩܘܫܬܐ ܢܦܩ ܕܝܢܐ. * ܠܐ ܢܫܚܩ. ܘܠܐ
ܢܬܛܦܛܦ. ܥܕܡܐ ܕܢܣܝܡ ܕܝܢܐ ܒܐܪܥܐ. ܘܠܢܡܘܣܗ ܓܙܪܬܐ ܢܣܟܝܢ.

Aperiam fluvios in montibus, & in medio planitierum fontes : vertam desertum in stagna aquarum, & terram sitibundam in scaturigines aquarum : 18 Dabo in solitudine cedros & buxos, myrtum, & arborem oleosam : ponam in planitie abietes decoras pariter : 19 Ut videant, cognoscant, intelligant, simúlque percipiant quòd manus Domini fecerit hoc, & Sanctus Israelis id creârit. 20 Producite judicia vestra, dicit Dominus ; producite opiniones vestras, dicit rex Jacobi. 21 Accedant, indicéntque nobis res futuras : quænam sint præteritæ indicate mihi, ut in animum nostrum indamus, & fines earum addiscamus ; aut venturas enarrate mihi ? 22 Indicia futurarum, ut sciamus vos deos esse, vos etiam benefacere, etiam malefacere : confabulemur, & videamus simul. 23 En vos nihil estis, & opera vestra è gladio, & impuritas sunt electissimi vestrûm. 24 Excitavi ab Aquilone *eum* qui veniet ab ortu solis, & invocabit nomen meum : veniéntque principes, & proculcabuntur sicut argilla quam proculcat figulus. 25 Quis est qui indicet *quæ fuerunt* à principio, ut sciamus & dicamus eum esse justum ? non est qui indicet neque qui narret ; neque qui audiat verba vestra. 26 Primordia Sionis hæc sunt, & Jerosolymæ evangelizantem dabo. 27 Respexi, & nemo est qui de his cogitet, ut interrogem eos & responsum mihi reddant. 28 En omnes nihil sunt, opera eorum vana, & aura inanis actiones eorum. 29

CAP. XLII.

Ecce servum meum suffulsi, & electo meo oblectata est anima mea ; indidi ei spiritum meum, ut proferret judicium gentibus. 1 Non vociferabitur, neque strepitabit, neque audire faciet vocem suam in platea. 2 Arundinem quassatam non franget, et lucernam crepitantem non extinguet : in veritate proferet judicium. 3 Non extinguetur, neque crepitabit, donec ponat judicium in terra : et legem ejus insulæ expectabunt. 4

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

18 * لكن افتح على الجبال انهارا * وفي وسط البقاع ينابيع * اجعل البرية غابات ماء * والارض
19 20 العطشانة في جداول الماء * واصنع في العديمة الماء ارزا وبقسا وءاسة وشربينة وحورا * لكي
21 يروا ويعرفوا ويفهموا ويعلموا معا ان يدا الرب صنعت هذه * وقدوس اسرائيل اظهرها * قربت
22 محاكمتكم قال الرب الاله * قربت افكاركم قال ملك يعقوب * ليقتربوا ويخبرونا ما يتفق * او
23 الاوائل او الاتيات * قولوا شيئا ما * ونتفق العقل ونعرف الاواخر والاتيات * قولوا لنا واخبرونا
24 بآتيات الاواخر * ونعلم انكم الهة انتم * احسنوا واسيئوا * ونتعجب ونرى معا * انكم من اين
25 تكونون انتم ومن اين عملكم * رذلة من الارض اختاركم * وانا اقمت الذي من
الجربياء والذي من مشرق الشمس ويدعون باسمي * ليقتل الرؤساء * ومثل طين الفاخوري
26 ومثل فرموصي يطأ طينا هكذا تطوون * لان من يخبر بما منذ البدو كي نعرف * والتي
27 من قدام * فنعرف انها حقيقة * ليس ثم من سبق قال * ولا من يسمع منكم كلامكم * اعطي
28 صهيون رياسة * واعزي ايروسليم * لان من الامم ولا واحد * ومن اوثانهم ليس من يخبر *
29 وان سألتهم من اين انتم فلا يجيبون * لانهم هم صنعوكم ويضلونكم باطلا *

* الفصل الثاني والاربعون *

* النبوة في السيد المسيح *

1 * يعقوب فتاي اعضده * واسرائيل مختاري قبلته نفسي * اعطي روحي عليه ليخرج الحكم
2 3 للامم * لا يصرخ ولا يصعد ولا يسمع صوته برا * قصبة مرضوضة لا يكسر * وسراجا
4 يطقطق لا يطفي * لكن الى الحق يخرج الحكم * لا يسرف ولا يكسر الى ان يضع
الحكم على الارض * وعلى اسمه تتكل الامم *

Sed aperiam super montes flumina, & in medio convallium fontes : vertam solitudinem in stagna aquarum, & terram siticulosam in flumina aquarum. 18 *Et ponam in terra aquis carente cedrum, buxum, myrtum, pinum, atque populum :* 19 *ut videant, cognoscant, intelligant, & percipiant simul, quòd manus Domini fecerint istud, & Sanctus Israelis id patefecerit.* 20 *Adsit causa vestra, ait Dominus Deus, præstò sint cogitationes vestræ, ait rex Jacobi.* 21 *Accedant, indicéntque nobis quæ contingent ; sive præterita, sive futura : dicite aliquid, ut mentem componamus, & sciamus postrema & ventura.* 22 *Prædicite & indicate nobis exitum futurorum, ut cognoscamus vos Deos esse : benefacite, & nocete ; ut admiremur & videamus pariter.* 23 *Nam unde estis vos, & unde opus vestrum ? abominationem è terra selegit vos.* 24 *Ego verò suscitabo eos qui sunt in Aquilone, & eos qui sunt ad ortum solis, & invocabunt nomen meum ; ut occidantur principes : & velut argilla figuli, & ut fossor lutum conculcans, ita conculcabimini.* 25 *Quis enim indicabit quæ sunt inde à principio, ut cognoscamus ? & quæ à priscis temporibus, ut sciamus ea esse certa ? nemo est etiam qui prædixerit, nec qui audiat à vobis sermones vestros.* 26 *Dabo Sioni principatum, & consolabor Jerusalem :* 27 *Nam ex gentibus nemo quidem, & ex idolis earum nullum est quod prænuntiet : & cùm sciscitaris ab eis, unde estis ? non respondent,* 28 *Quoniam ipsi fecerunt vos, ideò seducent vos inaniter.* 29

CAP. XLII.

Prophetia de Christo Domino.

Jacobum puerum meum sustento, & Israel electus meus gratus est animæ meæ : dabo spiritum meum super ipsum, ut proferat judicium gentibus. 1 *Non clamabit, neque attollet aut audire faciet vocem suam foris.* 2 *Arundinem quassatam non confringet, & lucernam crepitantem non extinguet : sed ad veritatem producet judicium.* 3 *Non debilitabitur, neque frangetur donec ponat judicium super terram, & nomini ejus innitantur populi.* 4

יְשַׁעְיָה : מב

expandens ,eos extendens & ,cœlos creans Dominus Deus dixit Sic
5 כֹּה־אָמַר הָאֵל יְהוָה בּוֹרֵא הַשָּׁמַיִם וְנוֹטֵיהֶם רֹקַע
ſpiritum & ,eam ſuper populo *mentem* dans : ejus germina & ,terram
הָאָרֶץ וְצֶאֱצָאֶיהָ נֹתֵן נְשָׁמָה לָעָם עָלֶיהָ וְרוּחַ
apprehendã & ,juſtitia in te vocavi Dominus Ego .eam per ambulantibus
6 לַהֹלְכִים בָּהּ : אֲנִי יְהוָה קְרָאתִיךָ בְצֶדֶק וְאַחְזֵק
lucem in ,populi fœdus in te dabo & ,te cuſtodiam & : tuam manum *in*
בְּיָדֶךָ וְאֶצָּרְךָ וְאֶתֶּנְךָ לִבְרִית עָם לְאוֹר
,vinctum *clauſura* è *educendum ad* ,cæcos oculos *aperiendum Ad* .gentium
7 גּוֹיִם : לִפְקֹחַ עֵינַיִם עִוְרוֹת לְהוֹצִיא מִמַּסְגֵּר אַסִּיר
: meũ nomen hoc ;Dominus Ego .*tenebroſitate* ſedentes carceris domo è
8 מִבֵּית כֶּלֶא יֹשְׁבֵי חֹשֶׁךְ : אֲנִי יְהוָה הוּא שְׁמִי
.ſculptilibus meam laudem & ;dabo non alteri meam gloriam &
וּכְבוֹדִי לְאַחֵר לֹא־אֶתֵּן וּתְהִלָּתִי לַפְּסִילִים :
antequam ,*indicans* ego nova & : venerunt ecce Priora
9 הָרִאשֹׁנוֹת הִנֵּה־בָאוּ וַחֲדָשׁוֹת אֲנִי מַגִּיד בְּטֶרֶם
;novum canticum Domino Cantate .vos faciam audire *pullulent*
10 תִּצְמַחְנָה אַשְׁמִיעַ אֶתְכֶם : שִׁירוּ לַיהוָה שִׁיר חָדָשׁ
,ejus plenitudo & ,mare deſcendentes : terræ extremo ab ejus laus
תְּהִלָּתוֹ מִקְצֵה הָאָרֶץ יוֹרְדֵי הַיָּם וּמְלֹאוֹ
;ejus civitates & ,deſertum Levabunt .earum habitatores & ,inſulæ
11 אִיִּים וְיֹשְׁבֵיהֶם : יִשְׂאוּ מִדְבָּר וְעָרָיו
capite de ,rupis habitatores *ovabunt* : Chedar habitabit *atria*
חֲצֵרִים תֵּשֵׁב קֵדָר יָרֹנּוּ יֹשְׁבֵי סֶלַע מֵרֹאשׁ
ejus laudem & : gloriam Domino Ponent .clamabunt montium
12 הָרִים יִצְוָחוּ : יָשִׂימוּ לַיהוָה כָּבוֹד וּתְהִלָּתוֹ
vir ſicut ,egredietur fortis ſicut Dominus .nuntiabunt inſulis in
13 בָּאִיִּים יַגִּידוּ : יְהוָה כַּגִּבּוֹר יֵצֵא כְּאִישׁ
ſuper ,*exclamabit* etiam ,vociferabitur : zelum ſuſcitabit *bellorum*
מִלְחָמוֹת יָעִיר קִנְאָה יָרִיעַ אַף־יַצְרִיחַ עַל־
:me continebã ,ſilebam ,*olim ab* Tacebam .prævalebit ſuos inimicos
14 אֹיְבָיו יִתְגַּבָּר : הֶחֱשֵׁיתִי מֵעוֹלָם אַחֲרִישׁ אֶתְאַפָּק
faciam Deſolare .ſimiliter abſorbebo & ,deſolabo ,*ejulabo* parturiens quaſi
15 כַּיּוֹלֵדָה אֶפְעֶה אֶשֹּׁם וְאֶשְׁאַף יָחַד : אַחֲרִיב
ponam & : faciam ſiccare eorum herbam omnem & ,colles & montes
הָרִים וּגְבָעוֹת וְכָל־עֶשְׂבָּם אוֹבִישׁ וְשַׂמְתִּי
cæcos faciam ambulare Et .faciam ſiccare ſtagna & ,inſulas in flumina
16 נְהָרוֹת לָאִיִּים וַאֲגַמִּים אוֹבִישׁ : וְהוֹלַכְתִּי עִוְרִים
: eos calcare faciam ,noverunt non ſemitas per ,noverunt non viam per
בְּדֶרֶךְ לֹא יָדָעוּ בִּנְתִיבוֹת לֹא־יָדְעוּ אַדְרִיכֵם
Hæc .rectum in prava & ,lucem in eos ante *tenebroſitatem* ponam
אָשִׂים מַחְשָׁךְ לִפְנֵיהֶם לָאוֹר וּמַעֲקַשִּׁים לְמִישׁוֹר אֵלֶּה
,retrorſum ſunt Converſi .eos dereliqui non & ,eis feci verba
17 הַדְּבָרִים עֲשִׂיתִם וְלֹא עֲזַבְתִּים : נָסֹגוּ אָחוֹר
,conflatili *dicentes* : ſculptili in *fidentes* confuſione confundentur
יֵבֹשׁוּ בֹשֶׁת הַבֹּטְחִים בַּפָּסֶל הָאֹמְרִים לְמַסֵּכָה
reſpicite cæci & : audite ſurdi O .noſtri dii Vos
18 אַתֶּם אֱלֹהֵינוּ : הַחֵרְשִׁים שְׁמָעוּ וְהַעִוְרִים הַבִּיטוּ
ſurdus & : meus ſervus niſi cæcus Quis .videndum ad
19 לִרְאוֹת : מִי עִוֵּר כִּי אִם־עַבְדִּי וְחֵרֵשׁ
cæcus & ,perfectus ſicut cæcus Quis ? ſum miſſurus meum angelum ſicut
כְּמַלְאָכִי אֶשְׁלָח מִי עִוֵּר כִּמְשֻׁלָּם וְעִוֵּר
aperire : *obſervabis* non & ,multa *Videre* ? Domini ſervus ſicut
20 כְּעֶבֶד יְהוָה : רָאִית רַבּוֹת וְלֹא תִשְׁמֹר פָּקֹחַ
: ſuam juſtitiam propter *voluit* *Dominus* .*audiet* *non* & ,aures
21 אָזְנַיִם וְלֹא יִשְׁמָע : יְהוָה חָפֵץ לְמַעַן צִדְקוֹ
.*illuſtrabit* & ,legem magnificabit
יַגְדִּיל תּוֹרָה וְיַאְדִּיר :

Verſio VULG. LAT.

5 Hæc dicit Dominus Deus, cre-
ans cœlos, & extendens eos:
firmans terram, & quæ germi-
nant ex ea: dans flatũ populo,
qui eſt ſuper eam, & ſpiritum
6 calcantibus eam. Ego Domin⁹
vocavi te in juſtitia, & appre-
hendi manum tuam, & ſervavi
te. Et dedi te in fœdus populi,
7 in lucem Gentium: Ut aperi-
res oculos cæcorum, & educe-
res de concluſione vinctum, de
domo carceris ſedentes in te-
8 nebris. Ego Dominus, hoc eſt
nomen meum: gloriam meam
alteri non dabo, & laudem
9 meam ſculptilibus. Quæ prima
fuerunt, ecce venerunt: nova
quoque ego annuntio: ante-
quàm oriantur, audita vobis
10 faciam. Cantate Domino can-
ticum novum, laus ejus ab ex-
tremis terræ: qui deſcenditis
in mare, & plenitudo ejus; in-
11 ſulæ, & habitatores earũ. Sub-
levetur deſertum, & civitates
ejus: in domibus habitabit Ce-
dar: laudate habitatores Petræ,
de vertice montiũ clamabunt.
12 Ponent Domino gloriam, &
laudem ejus in inſulis nuntia-
13 bunt. Dominus ſicut fortis e-
gredietur, ſicut vir prælitor
ſuſcitabit zelum: vociferabi-
tur, & clamabit: ſuper inimi-
14 cos ſuos confortabitur. Tacui
ſemper, ſilui, patiens fui, ſicut
parturiens loquar: diſſipabo, et
15 abſorbebo ſimul. Deſertos fa-
ciam montes, & colles, & o-
mne gramen eorum exiccabo:
& ponam flumina in inſulas,
16 & ſtagna arefaciam. Et ducam
cæcos in viam, quam neſciunt;
& in ſemitis, quas ignorave-
runt, ambulare eos faciam: po-
nam tenebras coram eis in lu-
cem, & prava in recta: hæc
verba feci eis, et non dereli-
17 qui eos. Converſi ſunt retror-
ſum: confundantur confuſione,
qui confidunt in ſculptili, qui
dicunt conflatili; Vos dii no-
18 ſtri. Surdi audite, et cæci in-
19 tuemini ad videndum. Quis
cæcus, niſi ſervus meus: et ſur-
dus, niſi ad quem nuntios meos
miſi? quis cæcus, niſi qui ve-
nundatus eſt? et quis cæcus,
20 niſi ſervus Domini? Qui vi-
des multa, nónne cuſtodies? qui
apertas habes aures, nónne au-
21 dies? Et Dñs voluit ut ſancti-
ficaret eum: et magnificaret
legem, et extolleret.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

5 Οὕτω λέγει κύριος ὁ θεὸς, ὁ ποιή-
σας τὸν οὐρανὸν, καὶ πήξας αὐτὸν, ὁ στερεώ-
σας τὴν γῆν, καὶ τὰ ἐν αὐτῇ, καὶ (γ) διδοὺς
πνοὴν τῷ λαῷ τῷ ἐπ' αὐτῆς, καὶ πνεῦμα
6 τοῖς πατοῦσιν αὐτήν· Ἐγὼ κύριος ὁ θε-
ὸς ἐκάλεσά σε ἐν δικαιοσύνῃ, καὶ κρατήσω
τῆς χειρός σου, καὶ ἐνισχύσω σε, καὶ ἔδωκά
σε εἰς διαθήκην γένους, εἰς φῶς ἐθνῶν,
7 Ἀνοῖξαι ὀφθαλμοὺς τυφλῶν, ἐξαγαγεῖν ἐκ
δεσμῶν δεδεμένους καὶ ἐξ οἴκου φυλακῆς,
8 (δ) καὶ καθημένους ἐν σκότει. Ἐγὼ κύ-
ριος ὁ θεὸς, τοῦτό μου ἐστὶ τὸ ὄνομα, τὴν δό-
ξαν μου ἑτέρῳ οὐ δώσω, οὐδὲ τὰς ἀρετάς
9 μου τοῖς γλυπτοῖς. Τὰ ἀπ' ἀρχῆς ἰδοὺ ἥ-
κασι, καὶ καινὰ (ε) ἃ ἐγὼ ἀναγγέλλω, καὶ
10 πρὸ τοῦ (ζ) ἀναγγεῖλαι ἐδηλώθη ὑμῖν. Ὑμνή-
σατε τῷ κυρίῳ ὕμνον καινόν· ἡ ἀρχὴ αὐ-
τοῦ, δοξάζετε τὸ ὄνομα αὐτοῦ (η) ἀπ' ἄκρου
τῆς γῆς, οἱ καταβαίνοντες εἰς τὴν θάλασσαν,
καὶ πλέοντες αὐτήν, αἱ νῆσοι, καὶ οἱ κατοι-
11 κοῦντες αὐτάς. Εὐφράνθητι ἔρημος, καὶ αἱ
κῶμαι αὐτῆς, ἐπαύλεις, καὶ οἱ κατοικοῦν-
τες Κηδάρ. εὐφρανθήσονται οἱ κατοικοῦν-
τες πέτραν, ἀπ' ἄκρου τῶν (θ) ὀρέων βοήσουσι,
12 Δώσουσι τῷ θεῷ δόξαν, τὰς ἀρετὰς αὐτοῦ
13 ἐν ταῖς νήσοις ἀναγγελοῦσι. Κύριος ὁ θεὸς
τῶν δυνάμεων ἐξελεύσεται, καὶ συντρίψει πό-
λεμον, ἐπεγερεῖ ζῆλον, καὶ βοήσεται ἐπὶ
14 τοὺς ἐχθροὺς αὐτοῦ μετ' ἰσχύος. Ἐσιώπησα,
μὴ καὶ ἀεὶ σιωπήσομαι καὶ ἀνέξομαι; (ι) ὡς
ἡ τίκτουσα ἐκαρτέρησα, ἐκστήσω καὶ ξηρα-
15 νῶ (κ) ἅμα· Ἐρημώσω ὄρη καὶ βουνοὺς, καὶ
πάντα χόρτον αὐτῶν ξηρανῶ· καὶ θήσω
16 ποταμοὺς εἰς νήσους, καὶ ἕλη ξηρανῶ. Καὶ
ἄξω τυφλοὺς ἐν ὁδῷ ᾗ οὐκ ἔγνωσαν, καὶ τρί-
βους (λ) ἃς οὐκ ᾔδεισαν, πατῆσαι ποιήσω
αὐτούς· ποιήσω αὐτοῖς τὸ σκότος εἰς φῶς,
καὶ τὰ σκολιὰ εἰς εὐθεῖαν. ταῦτα τὰ ῥή-
ματα (μ) ποιήσω καὶ οὐκ ἐγκαταλείψω αὐ-
17 τούς. Αὐτοὶ δὲ ἀπεστράφησαν εἰς τὰ ὀπί-
σω. αἰσχύνθητε αἰσχύνην οἱ πεποιθότες
ἐπὶ τοῖς γλυπτοῖς, οἱ λέγοντες τοῖς χω-
18 νευτοῖς, Ὑμεῖς ἐστε θεοὶ ἡμῶν. Οἱ κωφοὶ
ἀκούσατε, καὶ οἱ τυφλοὶ ἀναβλέψατε ἰδεῖν.
19 Καὶ τίς τυφλὸς ἀλλ' ἢ οἱ παῖδές μου, καὶ
κωφοὶ ἀλλ' ἢ οἱ κυριεύοντες αὐτῶν; καὶ ἐτυ-
20 φλώθησαν οἱ δοῦλοι τοῦ θεοῦ. Εἴδετε πλε-
ονάκις, καὶ οὐκ ἐφυλάξασθε· ἠνοιγμένα τὰ
21 ὦτα, καὶ οὐκ ἠκούσατε. Κύριος ὁ θεὸς ἐβου-
λεύσατο ἵνα δικαιωθῇ, καὶ μεγαλύνῃ
αἴνεσιν.

Sic dicit Dominus Deus, qui fecit 5
cœlum, & defixit illud; qui fir-
mavit terram, & quæ in ea; et qui
dat ſpirationem populo, qui ſuper
eam, & ſpiritum calcantibus eam;
Ego Domin⁹ Deus vocavi te in ju- 6
ſtitia: & tenebo dexteram tuam,
& confortabo te: & dedi te in te-
ſtamentũ (e) generis, in lucem gen-
tium, Ad aperiendum oculos cæco- 7
rum, ad educendum de vinculis
vinctos, & de domo carceris, (f)
& ſedentes in tenebris. Ego Do- 8
minus Deus: hoc meum eſt nomen:
gloriam meam alteri non dabo,
neque virtutes meas ſculptilibus.
Quæ à principio, ecce venerunt, 9
& nova, quæ ego annuntio: &
antequàm annuntientur, manifeſta-
ta ſunt vobis. Canite Domino can- 10
ticum novum: (g) principatus ejus:
glorificate nomen ejus à ſummita-
te terræ; qui deſcendunt in mare, et
navigant illud; inſulæ, & habita-
tores earum. Lætare deſertum, & 11
(h) vici ejus; villæ, & habitatores
Cedar. Lætabuntur, qui habitant
in petra: de ſummitate montium
clamabunt; Dabunt Deo gloriam, 12
virtutes ejus in inſulis nuntiabunt.
Dominus Deus virtutum egredie- 13
tur, & conteret bellum: ſuſcitabit
zelum, & clamabit ſuper inimicos
ſuos cum fortitudine. (i) Tacui: 14
num & ſemper tacebo, et ſuſtine-
bo? Sicut pariens, patienter egi: e-
rumpam, et areſaciam ſimul: Va- 15
ſtabo montes, et colles, et omne
fœnum eorum areſaciam. Et ponam
flumina in inſulas, et paludes ſic-
cabo. Et adducam cæcos in via, 16
quam neſciunt; et ſemitas, quas
ignoraverunt, calcare eos faciam:
faciam eis tenebras in lucem, et
prava in directum. Hæc verba (k)
faciam, et non derelinquam eos.
Ipſi verò converſi ſunt retrorſum. 17
Confundamini confuſione, qui con-
fiditis ſuper ſculptilibus: qui dici-
tis conflatis, Vos eſtis Dii noſtri.
Surdi audite, et cæci ſuſpicite, ut 18
videatis. Et quis eſt cæcus, niſi 19
pueri mei? et ſurdi, niſi qui do-
minantur (l) eorum? Et excæcati
ſunt ſervi Dei. Vidiſtis ſæpe, et 20
non cuſtodiſtis: apertæ ſunt aures,
et non audiſtis. Dominus Deus 21
(m) cogitavit, ut juſtificaretur,
et magnificaret laudem.

MS.A. (γ) δοὺς (δ) καθημένους (ε) ἐγὼ ἀναγγελῶ, (ζ) ἀνατεῖλαι (η) ἐπ' (θ) ὀρέων, Δώσουσιν (ι) ἐκαρτέρησα ὡς ἡ τίκτουσα, (κ) ἅμα.* καὶ θήσω ποταμοὺς (λ) οὓς (μ) ἃ ποιήσω

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 כדנן אמר אלהא עלמא יי דברא שמיא ותלנון שכליל ארעא ודירהא
6 יהב נשמתא לעמא די עלה ורוח לדמהלכין בה : אנא יי רביתך בקשוט
7 ואתקפית בידך ואתקננך ואתננך לקים עם לנהור עממין : לפתחא עיני
בית ישראל דאנון כסמן מן אוריתא לאפקא גלותהון מביני עממיא
דאנון דמן לאסירין ולמפרקהון משיעבוד מלכותא דאנון ענינין כאסירי קבל :
8 אנא יי הוא שמי ויקרי דאתגליתי עליכון לעם אוחרן לא אתן ותושבחתי לפלחי צלמיא :
9 10 קדמיתא הא אתאה וחדתן אנא מחוי עד לא אתין אבסר יתכון : שבחו קדם יי
תושבחתא חדתא אמרו תושבחתיה מסיפי ארעא נחתי ימא ומלאה נגון ויתביהון :
11 ישבח מדברא וקרוין דיתבין ביה פציחין יתבין מדבר ערבאי ישבחון מיתיא כד יפקון
12 מבתי עלמיהון מרישי טוריא ירימון קלהון : ישוון קדם יי יקרא ותושבחתיה בנגון
13 יחוון : יי למעבד גבורן אתגלי למעבד גבורא מתגלי ברגז במלול אף בזיע על בעלי
14 דבבוהי מתגלי בגבורתיה : יהבית להון ארכא מעלמא דאם יתובון לאוריתא
15 ולא תבו כחבלין על ילדתא יתגלי דיני עליהון יצדון ויסופון כחדא : אחריב טורין
16 ורמן וכל עסביהון איביש ואשוי נהרין לנגון ואגמין איביש : ואדבר לבית ישראל
דדמין כסמן באורח דלא ידעו בשבילין דלא אליפו אדרכנון אשוי קבל קדמיהון
17 לנהור וכפלא למישרא אלין פתגמיא אעבדנון ולא ארחיקנון : יסתחרון לאחורא
18 יבהתון בהתא פלחי צלמיא דאמרין לצלם מתכא אתון טעותנא : רשיעיא דאנון
כחרשין הלא אודנין לכון שמעו וחיביא דאנון כסמן הלא עינין לכון אסתכלו וחזו :
19 הלא אם יתובון רשיעיא יתקרון עבדי וחיביא דנביי שלחית עליהון אלא רשיעיא
20 עתידין לאשתלמא פורענות חוביהון ברם אם יתובון יתקרון עבדיא דיי : חזיתון
21 סגיאן ולא נטרתון אתפתחא אודניכון ולא קבילתון אולפן : יי רעי בדיל לזכאותיה
ישראל ירבי לעבדי אוריתיה ויתקיף יתהון :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Hæc dicit Dominus Deus ſeculi, qui creavit cœlos, & appendit eos; fun- 5
davit terram & habitatores ejus; dans ſpiramentum populo qui ſuper ea
eſt; & ſpiritum gradientibus in ea. Ego Dominus magnificavi te in veri- 6
tate, & apprehendi manum tuam, & direxi te, & poſui te in fœdus po-
puli, & in lumen populorum. Ad aperiendos oculos domus Iſrael, qui ſunt 7
quaſi cæci à lege; ut educeres captivitatem eorum de medio populorum;
ubi ſunt ſimiles vinctis: & liberares eos de ſubjectione regnorum, ubi ſunt
detenti quaſi eſſent vincti in obſcuritate. Ego Dominus, hoc eſt nomen me- 8
um; & gloriam meam qua revelatus ſum vobis, populo alteri non dabo,
nec laudem meam cultoribus ſculptilium. Quæ prima fuerunt, ecce vene- 9
runt; nova autem ego annuntio; antequam veniant nuntio vobis. Canta- 10
te coram Domino canticum novum; dicite laudem ejus à finibus terræ; qui
deſcenditis in mare, & plenitudo ejus; inſulæ, & habitatores earum. Lau- 11
dabit deſertum & civitates quæ habitant in eo; Arabes qui habitant in vi-
cis deſerti, laudabunt; & mortui quando egredientur de domo ſeculi ſui, de
capitibus montium levabunt vocem ſuam. Ponent coram Dño gloriam, & 12
laudem ejus in inſulis nuntiabunt. Dominus revelabitur ut faciat magna- 13
lia; ut fortiter agat, prodibit in ira, & ſermone furoris, in tremore con-
tra inimicos ſuos revelabitur in potentia ſua. Dedi eis terminum à ſeculo 14
ut converterentur ad legem, & non ſunt converſi: ſicut dolores ſuper par-
turientem exeretur in eos judicium meum, diſperdentur & conſumen-
tur ſimul. Deſertos faciam montes & colles, & omnem herbam eorum ex- 15
iccabo, & ponam flumina in inſulas, & ſtagna arefaciam. Et ducam *domum* 16
Iſrael qui *ſimiles* ſunt *cæcis*, in via quam neſcierunt; in ſemitis quas non
didicerunt, ducam eos: ponam tenebras coram eis in lucem, & aſpera in
planitiem. Hæc verba faciam eis, & non abjiciam eos. Convertentur re- 17
trorſum, confundentur confuſione colentes ſimulacra; qui dicunt ſimula-
cris conflatilibus, Vos eſtis idola noſtra. Impii qui eſtis quaſi ſurdi, nónne 18
aures habetis? audite: & impii qui eſtis quaſi cæci, nónne oculos habe-
tis? intelligite & videte. Nónne ſi impii convertantur, vocabuntur ſervi 19
mei, & peccatores ad quos miſi prophetas *meos*? Enimvero impiis perſol-
venda erit vindicta peccati ſui: ſi tamen converſi fuerint, vocabuntur ſervi
Domini. Videtis multa, & non cuſtoditis: apertæ ſunt aures veſtræ, & 20
non ſuſcipitis diſciplinam. Dominus voluit ut juſtificaret Iſrael, magni- 21
ficavit factores legis ſuæ, & confortavit eos.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ . ܕܒܪܐ ܫܡܝܐ ܘܡܬܚ ܐܢܘܢ . ܘܫܪܪ ܐܪܥܐ ܘܟܠ ܕܒܗ̇ . 5
ܘܝܗܒ ܢܫܡܬܐ ܠܥܡܐ ܕܥܠܝܗ̇ . ܘܪܘܚܐ ܠܕܡܗܠܟܝܢ ܒܗ̇ . * ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܩܪܝܬܟ ܒܙܕܝܩܘܬܐ . 6
ܘܐܚܕܬ ܒܐܝܕܟ . ܘܚܝܠܬܟ . ܘܝܗܒܬܟ ܠܩܝܡܐ ܠܥܡܐ . ܘܠܢܘܗܪܐ ܠܥܡܡܐ . * ܕܬܦܬܚ ܥܝܢܐ 7
ܕܥܘܝܪ̈ܐ . ܘܬܦܩ ܠܐܣܝܪ̈ܐ ܡܢ ܒܝܬ ܚܒܘܫܝܐ . ܘܡܢ ܒܝܬ ܐܣܝܪ̈ܐ ܕܝܬܒܝܢ ܒܚܫܘܟܐ .
* ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ . ܘܗܢܘ ܫܡܝ . ܘܐܝܩܪܝ ܠܐܚܪܢܐ ܠܐ ܐܬܠ . ܘܐܦ ܠܐ ܬܫܒܘܚܬܝ . ܠܦܬܟܪ̈ܐ . 8
* ܩܕܡܝܬܐ . ܗܐ ܐܬܝ . ܘܚܕ̈ܬܬܐ . ܐܢܐ ܡܚܘܐ . ܘܥܕܠܐ ܢܕܢܚܢ . ܐܫܡܥܬ ܐܢܝܢ ܠܟܘܢ . 9
* ܬܫܒܘܚܬܐ ܕܐܫܥܝܐ * ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ ܬܫܒܘܚܬܐ ܚܕܬܐ . ܬܫܒܘܚܬܗ ܡܢ 10
ܣܘܦܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ . ܢܚܬܝ ܝܡܐ ܘܡܠܝܘܬܗ . ܓܙܪ̈ܬܐ ܘܕܥܡܪܝܢ ܒܗܝܢ . * ܬܚܕܐ ܡܕܒܪܐ ܘܩܘܪܝܗ̇ . 11
ܘܢܗܘܐ ܠܕܪܬܐ ܩܕܪ . ܢܫܒܚܘܢ ܝܬܒܝ ܟܐܦܐ . ܘܡܢ ܪܝܫ ܛܘܪ̈ܐ ܢܩܥܘܢ . * ܘܢܬܠܘܢ 12
ܠܡܪܝܐ ܫܘܒܚܐ . ܘܬܫܒܘܚܬܗ ܒܓܙܪ̈ܬܐ ܢܚܘܘܢ . * ܡܪܝܐ ܐܝܟ ܓܢܒܪܐ ܢܦܘܩ . 13
ܘܐܝܟ ܓܒܪܐ ܩܪܒܬܢܐ ܢܥܝܪ ܚܣܡܐ . ܢܝܒܒ . ܘܢܬܥܫܢ . ܘܢܩܛܘܠ ܠܒܥܠܕܒܒܘ̈ܗܝ .
* ܫܬܩܬ .. ܡܢ ܥܠܡ ܐܫܬܘܩ .. ܚܫܝܬ ܐܝܟ ܝܠܕܬܐ . ܐܬܕܡܪ ܘܐܬܬܗܪ ܐܟܚܕܐ . * ܐܚܪܒ 14 15
ܛܘܪ̈ܐ ܘܪ̈ܡܬܐ . ܘܟܠܗ ܥܣܒܗܘܢ ܐܘܒܫ . ܘܐܥܒܕ ܢܗܪ̈ܘܬܐ ܓܙܪ̈ܬܐ . ܘܐܓܡ̈ܐ ܐܘܒܫ .
* ܐܕܒܪ ܥܘܝܪ̈ܐ ܒܐܘܪܚܐ ܕܠܐ ܝܕܥܝܢ . ܘܒܫܒ̈ܝܠܐ ܕܠܐ ܝܕܥܝܢ ܗܘܘ ܐܗܠܟ ܐܢܘܢ . ܐܥܒܕ ܚܫܘܟܐ 16
ܩܕܡܝܗܘܢ ܢܘܗܪܐ . ܘܥܪܩܘܒܐ ܦܫܝܩܐ . ܗܠܝܢ ܦܬܓܡ̈ܐ ܐܥܒܕ ܠܗܘܢ ܘܠܐ ܐܫܒܘܩ ܐܢܘܢ .
* ܢܗܦܟܘܢ ܠܒܣܬܪܗܘܢ . ܘܢܒܗܬܘܢ ܒܗܬܬܐ . ܐܝܠܝܢ ܕܬܟܝܠܝܢ ܥܠ ܦܬܟܪ̈ܐ . 17
ܘܐܡܪܝܢ ܠܢܣܟܐ . ܕܐܢܬܘܢ ܐܠܗܝܢ . * ܚܪ̈ܫܐ ܫܡܥܘ . ܘܥܘܝܪ̈ܐ ܐܣܬܟܠܘ ܘܚܙܘ . 18
* ܡܢܘ ܥܘܝܪܐ ܐܠܐ ܥܒܕܝ . ܘܚܪܫܐ ܐܝܟ ܡܠܐܟܐ ܕܫܕܪܬ . ܡܢܘ ܥܘܝܪܐ ܐܝܟ ܫܠܝܛܐ . ܘܥܘܝܪܐ 19
ܐܝܟ ܥܒܕܗ ܕܡܪܝܐ . * ܣܓܝ ܚܟܝܬ . ܘܠܐ ܢܛܪܬܘܢ ܐܢܬܘܢ . ܘܦܬܝܚܢ ܐܕܢ̈ܝܟܘܢ ܘܠܐ ܫܡܥܝܢ ܐܢܬܘܢ . 20
* ܡܪܝܐ ܨܒܐ ܡܛܠ ܙܕܝܩܘܬܗ . ܕܢܪܒܐ ܢܡܘܣܐ . ܘܢܫܒܚܝܘܗܝ . 21

5 Sic dicit Dñs Deus qui cœlos creavit & extendit eos, qui terram firmavit & quicquid eſt in ea, indiditque auram populo ſuper eam exiſtenti, & ſpiritum ambulantibus in ea. 6 Ego Dñs vocavi te in juſtitia, tenui manum tuam & corroboravi te, poſuique te fœdus populo & lucem gentibus; 7 Ut aperias oculos cæcorum, & educas vinctos è clauſtro, & è carcere ſedentes in tenebris. 8 Ego ſum Dñs, atque hoc eſt nomẽ meum; honorem enim meum alteri non dabo, neque gloriam meam ſculptilibus. 9 Nova ego indico, & priſca jam evenêre; & antequam apparerent, enarravi vobis.

Canticum Eſaiæ.

10 Cantate Dño canticum novum, laudem ejus ab extremis terræ; deſcendentes in mare, & quicquid eſt in eo, inſulæ & qui degitis in eis: 11 Lætetur ſolitudo & civitates ejus, & in prata vertatur Cedar: canant incolæ petrarum, è vertice montium clament. 12 Tribuant honorem Dño, & laudes ejus annuntient in inſulis. 13 Dñs velut gigas prodibit, & ut vir bellicoſus zelum excitabit, vociferabitur, convaleſcet, & trucidabit inimicos ſuos. 14 Silui *dicens*, num in ſeculum ſilebo? paſſus ſum ut parturiens: admiratione ſimul atque ſtupore perfundam: 15 Vaſtabo montes & colles, omnemque vigorem eorum exſiccabo: fluvios vertam in inſulas, & ſtagna arefaciam: 16 Ducam cœcos per viam quam non noverāt; & per ſemitas quas ignorabant, ambulare faciam eos: vertam tenebras coram eis in lucem, & ſalebroſum complanabo: has res faciam eis, neque derelinquam eos. 17 Agentur retrorſum, & pudore ſuffundentur qui confidunt ſculptilibus, & dicunt fuſilibus, Vos eſtis dii noſtri. 18 Surdi audite, cæci intelligite & videte: 19 Quis eſt cæcus, niſi ſervus meus? & ſurdus ſicut nuntius meus quem miſſurus ſum? quis cœcus ſicut princeps? cœcus inquam, ſicut ſervus Domini? 20 Diu expectavi, at non obſervatis: aperui aures at non auditis. 21 Dominus voluit propter juſtitiam ſuam magnificare legem eamque commendare,

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* هكذا يقول الرب الاه الذي صنع السماء ونصبها * وبسط الارض وما عليها * واعطي نسمة 5
للشعب الذي عليها * وروحا للذين يطوها * انا الرب الاله دعوتك بالبر * وامسك بيدك 6
واقويك * واعطيتك عهدا للاجناس ونورا للامم * لتفتح اعين العميان * وتخرج المربوطين 7
من الرباطات * والجالسين في الظلمة من بيت الحبس * انا الرب الاله * هذا هو اسمي * 8
لا اعطي مجدي لاخر * ولا فضايلي للمنحوتات * ها يسمعون التي منذ البدو والجديدات 9
التي انا اخبر بها * ومن قبل ان اخبر تظهر لكم * سبحوا لله تسبيحا جديدا * رياسته 10
فوق تمجد * اسمه يمجد من طرف الارض * يايها الذين ينزلون الي البحر ويسافرون
فيه * الجزاير والساكنون فيها * افرحي ايتها البرية * وقراها يعطون لله مجدا * تخبر الجزاير 11 12
بفضايله * الرب اله القوات يخرج * ويكسر الحرب * وينهض غيرة * يصول ويصرخ على 13
اعدايه بقوة * صمت منذ دهر * هل دايما اصمت واحتمل * ثبت مثل التي تلد * 14
اخرج واحير وايبس معا * اخرب الجبال والاكام * واجفف كل عشبها * واصنع الانهار جزاير * 15
وايبس الغابات * واقود العميان في الطريق التي ليس يعرفوها * والسبل التي لم يعلموها 16
اجعلهم ان يطوها * اصنع لهم الظلمة نورا والمعوجة مستقيمة * هذه الكلمات التي
اصنعها لهم * ولا اتركهم قال الرب * وهم رجعوا الي خلف * اخزوا خزيا ايها المتوكلون 17
على المنحوتات * القايلون للمسبوكات انتم الهتنا * ايها الصم اسمعوا * وايها العمي 18
تطلعوا لتنظروا * ومن الاعمي الا لعبيدي * والصم الا الذين يسودونهم * وعموا عبيد 19
الله * نظرتم مرارا كثيرة ولم تحفظوا * الاذان مفتوحة ولم تسمعوا * الرب الاله راي ان يبرر 20 21
ويعظم تسبحته وينظروا *

5 *Sic dicit Dominus Deus qui cœlum condidit erexitque, firmavit orbem & quicquid extat in illo, indidit auram vitalem populo ſuper eum exiſtenti, & ſpiritum conculcantibus eum:* 6 *Ego Dominus Deus vocavi te ad juſtitiam exercendam, & tenebo manum tuam, & fortificabo te; daboque te fœdus omnigenis nationibus, & lucem populis:* 7 *ut aperias oculos cæcorum, vinctos educas è vinculis, & ſedentes in tenebris è carcere.* 8 *Ego Dominus Deus (hoc eſt nomen meum) non dabo gloriam meam alteri, neq; excellentias meas ſculptilibus.* 9 *En audient quæ fuerunt inde à principio, & nova quæ ego indicabo; & antequam indicem, apparebunt vobis.* 10 *Canite Deo canticum novum, principatus ejus ſurſum glorificetur, nomen ejus celebretur ab extremo terræ, O qui deſcenditis in mare, & navigatis in eo; inſulæ, & habitantes in eis.* 11 *Gaudeas O deſertum, & oppida ejus dent gloriam Deo.* 12 *Prædicent inſulæ præeminentias ejus.* 13 *Dominus Deus virtutum egredietur, bellum confringet, & excitabit æmulationem, irruet & vociferabitur adverſus hoſtes ſuos potenter.* 14 *Tacui jam diu: num ſemper tacebo, & patiar? conſtans fui ſicut parturiens: egrediar, ſtupefaciam, & arefaciam pariter:* 15 *Montes & colles evertam, & arefaciam omnem herbam eorum: fluvios vertam in inſulas, & arefaciam ſtagna:* 16 *Ducamque cæcos per viam quam non noverunt, & ſemitas quas ignorant, efficiam ut terant: convertam eis tenebras in lucem, & obliqua in recta; hæ ſunt res quas faciam eis, nec deſeram eos, dicit Dominus;* 17 *At ipſi retroceſſerunt. Pudore ſuffundimini O qui fiditis ſculptilibus, qui dicitis fuſilibus, Vos eſtis dii noſtri.* 18 *O ſurdi audite O cæci aſpicite ut videatis.* 19 *Quis eſt autem cæcus, niſi ſervi mei? & ſurdi, niſi qui dominantur eis? obcæcati ſunt ſervi Dei.* 20 *Multis quidem vicibus aſpexiſtis, at non ſervâſtis: apertæ ſunt aures, at non auditis.* 21 *Domino Deo viſum eſt divulgare & magnificare laudem ſuam, quam & viderunt:*

ישעיה : מג

,ipſos omnes *foraminibus in illaquea* direptus & ,paſſus prædā populus ipſe Et
22 והוא עם־בזוז ושסוי הפח בחורים כלם
: *cruens* non & ; rapinam in fuerunt : latitârunt carcerum domibus in &
ובבתי כלאים החבאו היו לבז ואין מציל
percipiet auribus vobis in Quis .Redde , *dicens* non & ,direptionem
23 משסה ואין־אמר השב: מי בכם יאזין
direptionem in dedit Quis ? poſterum in *audiet* & , attendet ? hoc
24 זאת יקשב וישמע לאחור: מי־נתן למשוסה
peccavimus cui : Dominus Nónne ? prædantibus Iſrael & , Jahacob
יעקב וישראל לבזזים הלוא יהוה זו חטאנו
.ejus *lege in audierunt* non & , ambulare ejus viis in noluerunt Et *? ei*
לו ולא־אבו בדרכיו הלוך ולא שמעו בתורתו:
: belli fortitudinem & , ſui *naſi fervorem* eum ſuper effudit *Et*
25 וישפך עליו חמה אפו ועזוז מלחמה
,eum *in* ſuccendit & ; cognovit non & ,circuitu à illum inflammavit &
ותלהטהו מסביב ולא ידע ותבער־בו
.cor ſuper poſuit non &
ולא־ישים על־לב:

CAP. XLIII. מג

tuus formator & ,Jahacob tuus creator Dominus dixit ſic nunc Et
1 ועתה כה־אמר יהוה בראך יעקב ויצרך
mihi : tuum nomen *in* vocavi , te redemi quia , timeas Ne : Iſrael
ישראל אל־תירא כי גאלתיך קראתי בשמך לי־
non ,flumina *per* & ; *ego* tecum , aquas per tranſieris Cùm .tu
2 אתה: כי־תעבר במים אתך אני ובנהרות לא
non flamma & , *adurêris* non ,ignem per ambulaveris cùm : te *inundabunt*
ישטפוך כי־תלך במו־אש לא תכוה ולהבה לא
Iſrael ſanctus tuus Deus Dominus ego Quia .te in ardebit
3 תבער־בך: כי אני יהוה אלהיך קדוש ישראל
.te pro Seba & ,Chus ,Ægyptum *tuā propitiationem* dedi :tuus ſervator
מושיעך נתתי כפרך מצרים כוש וסבא תחתיך:
: te dilexi ego & ,fuiſti glorioſus ,meis oculis in fuiſti pretioſus quo Ex
4 מאשר יקרת בעיני נכבדת ואני אהבתיך
,timeas Ne .tua anima pro populos & , te pro hominem dabo &
5 ואתן אדם תחתיך ולאמים תחת נפשך: אל־תירא
Occidente ab & ,tuum ſemen adducam Oriente ab *: ego* tecum quia
כי־אתך אני ממזרח אביא זרעך וממערב
Affer : prohibeas Ne ,auſtro & : Da ,aquiloni Dicam .te congregabo
6 אקבצך: אמר לצפון תני ולתימן אל־תכלאי הביאי
Omnis .terræ extremo ab meas filias & , longinquo de meos filios
7 בני מרחוק ובנותי מקצה הארץ: כל
,eum formavi : eum creavi meam gloriam ad & ,meo nomine in *vocatus*
הנקרא בשמי ולכבודי בראתיו יצרתיו
, ſurdos & : ſunt oculi & ,*cæcum* populum *Educete* .eum *feci* etiam
8 אף־עשיתיו: הוציא עם־עור ועינים יש וחרשים
colligantur & , ſimul congregentur gentes Omnes .eis aures &
9 ואזנים למו: כל־הגוים נקבצו יחדו ויאספו
? nos facient audire priora & , iſtud annuntiet eos inter quis , populi
לאמים מי בהם יגיד זאת וראשנות ישמיענו
.veritas , dicant & , audiant *&* , evadent juſti & ,ſuos teſtes dent
יתנו עדיהם ויצדקו וישמעו ויאמרו אמת:
ut : elegi quem meus ſervus & ,Dominus dixit ,mei teſtes Vos
10 אתם עדי נאם־יהוה ועבדי אשר בחרתי למען
me ante , ipſe ego quòd ,intelligatis & , mihi credatis & ,ſciatis
תדעו ותאמינו לי ותבינו כי־אני הוא לפני
.erit non me poſt & , Deus formatus eſt non
לא־נוצר אל ואחרי לא יהיה:

Verſio VULG. LAT.

22 Ipſe autem populus direptus, & vaſtatus : laqueus juvenum omnes, & in domibus carcerum abſconditi ſunt: facti ſunt in rapinam, nec eſt qui eruat; in direptionem, nec eſt qui 23 dicat, Redde. Quis eſt in vobis qui audiat hoc, attendat & 24 auſcultet futura? Quis dedit in direptionem Jacob, & Iſrael vaſtantibus? nónne Dñs ipſe, cui peccavimus? Et noluerunt in viis ejus ambulare, & non audierunt legem ejus. 25 Et effudit ſuper eum indignationem furoris ſui, & forte bellum, & combuſſit eum in circuitu, & non cognovit : & ſuccendit eum, & non intellexit.

CAP. XLIII.

1 ET nunc hæc dicit Dominus creans te Jacob, & formans te Iſrael; Noli timere, quia redemi te, et vocavi te nomine 2 tuo: me' es tu. Cùm tranſieris p aquas, tecū ero, & flumina non operient te : cùm ambulaveris in igne, non comburêris, & flamma non ardebit in 3 te : Quia ego Dñs Deus tuus Sanct' Iſrael Salvator tu', dedi propitiationē tuā Ægyptū, 4 Æthiopiā & Saba pro te. Ex quo honorabilis factus es in oculis meis, & glorioſ' : ego dilexi te, & dabo homines pro te, & populos pro anima tua. 5 Noli timere, quia ego tecū ſū: ab Oriente adducā ſemen tuū, et ab Occidente congregabo 6 te. Dicā Aquiloni, Da: et Auſtro, Noli prohibere : affer filios meos de longinquo, et filias meas ab extremis terræ. 7 Et omnem, qui invocat nomen meū, in gloriam meam creavi eum, formavi eum, & feci 8 eum. Educ foràs populū cæcum, et oculos habentem; ſur- 9 dum, et aures ei ſunt. Omnes gentes congregatæ ſunt ſimul, et collectæ ſunt tribus: quis in vobis annuntiet iſtud, et quæ prima ſunt audire nos faciet? dent teſtes eorum, juſtificentur, et audiant, et dicant; Ve- 10 rè. Vos teſtes mei, dicit Dominus, et ſervus meus, quem elegi : ut ſciatis, et credatis mihi, et intelligatis quia ego ipſe ſum. Ante me non eſt formatus Deus, et poſt me non erit.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

22 Καὶ εἶδον, ϗ ἐγένετο ὁ λαὸς πεπρονομευμένος, ϗ διηρπασμένος· ἡ γὰρ παγὶς ἐν τοῖς (ν) ταμείοις πανταχοῦ, ϗ ἐν οἴκοις ἅμα, ὅπου ἔκρυψαν αὐτούς· ἐγένοντο εἰς προνομὴν, ϗ οὐκ ἦν (ξ) ἐξαιρούμενος ἅρπαγμα, ϗ οὐκ ἦν ὁ λέγων, Ἀπόδος. 23 Τίς ἐν ὑμῖν ὃς ἐνωτιεῖται ταῦτα; (˙) εἰσακούσατε εἰς τὰ ἐπερχόμενα. 24 (ο) Οἷς ἔδωκεν εἰς διαρπαγὴν Ἰακὼβ ϗ Ἰσραὴλ τοῖς προνομεύουσιν αὐτόν; οὐχὶ ὁ θεὸς ᾧ ἡμάρτοσαν αὐτῷ, ϗ οὐκ (˝) ἠβούλοντο ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτοῦ πορεύεσθαι, οὐδὲ ἀκούειν τοῦ νόμου αὐτοῦ; 25 Καὶ ἐπήγαγεν ἐπ' αὐτοὺς ὀργὴν θυμοῦ αὐτοῦ, ϗ κατίσχυσεν (π) αὐτοὺς πόλεμος, ϗ οἱ συμφλέγοντες αὐτοὺς κύκλῳ, ϗ οὐκ ἔγνωσαν ἕκαστος αὐτῶν, οὐδὲ ἔθεντο ἐπὶ ψυχήν.

MS.A. (ν) ταμιείοις (ξ) ὁ ἐξορυόμενος (˙) εἰσακούσεται (ο) Τίς ἔδωκεν (˝) ἐβούλοντο (π) ἐπ' αὐτούς

Et vidi; & erat populus vaſtatus, atque direptus. Laqueus enim in cubilibus ubique, & in domibus ſimul, in quibus abſconderunt eos. Facti ſunt in direptionē: et nō erat qui erueret prædā: et non erat qui diceret, Redde. 23 *Quis eſt in vobis, qui hæc auribus percipiat? (n) Exaudite in futura.* 24 *(o) Quib' dedit in direptionē Jacob & Iſrael vaſtantib' eum? Nónne De', cui peccaverunt ei, & noluerunt in viis illius ambulare, neque audire legem ejus?* 25 *Et induxit ſuper eos iram furoris ſui: & prævaluit adverſùs eos bellum, & qui comburebant eos per circuitum. Et non cognoverunt unuſquiſque eorum, nec poſuerunt ſuper animam.* 22

ΚΕΦ. μγ'.

1 ΚΑὶ νῦν οὕτως λέγει κύριος ὁ θεὸς ὁ ποιήσας σε Ἰακὼβ, (α) ϗ ὁ πλάσας σε Ἰσραὴλ, Μὴ φοβοῦ, ὅτι ἐλυτρωσάμην σε, 2 ἐκάλεσά σε τὸ ὄνομά σου· ἐμὸς εἶ σύ. Καὶ ἐὰν διαβαίνῃς δι' ὕδατος, μετὰ σοῦ εἰμι, ϗ ποταμοὶ οὐ συγκλύσουσί σε· ϗ ἐὰν διέλθῃς διὰ πυρὸς, οὐ μὴ κατακαυθῇς, φλὸξ 3 οὐ κατακαύσει σε. Ὅτι ἐγὼ κύριος ὁ θεός σου ὁ ἅγιος Ἰσραὴλ, ὁ σώζων σε· (β) ἐποίησα ἄλλαγμά σου Αἴγυπτον ϗ Αἰθιοπίαν, ϗ Σοήνην ὑπὲρ σοῦ. 4 Ἀφ' οὗ ἔντιμος ἐγένου ἐναντίον (γ) ἐμοῦ, ἐδοξάσθης, (δ) ϗ ἐγώ σε ἠγάπησα, ϗ δώσω ἀνθρώπους (ε) ὑπὲρ σοῦ, ϗ ἄρχοντας ὑπὲρ τῆς κεφαλῆς σου. 5 Μὴ φοβοῦ, ὅτι μετὰ σοῦ εἰμι· ἀπὸ ἀνατολῶν ἄξω τὸ σπέρμα σου, ϗ ἀπὸ 6 δυσμῶν συνάξω σε. Ἐρῶ τῷ Βοῤῥᾷ, Ἄγε, ϗ τῷ Λιβὶ, Μὴ κώλυε· ἄγε τοὺς υἱούς μου ἀπὸ (ζ) τῆς πόῤῥωθεν, ϗ τὰς θυγατέρας 7 μου ἀπ' ἄκρων τῆς γῆς, Πάντας ὅσοι ἐπικέκληνται τῷ ὀνόματί μου· ἐν γὰρ τῇ δόξῃ μου κατεσκεύασα αὐτὸν, (η) ϗ ἔπλασα αὐτὸν, 8 ϗ ἐποίησα αὐτὸν, Καὶ ἐξήγαγον λαὸν τυφλὸν, ϗ ὀφθαλμοί εἰσιν ὡσαύτως τυφλοὶ, 9 ϗ κωφοὶ (θ) τὰ ὦτα ἔχοντες. Πάντα τὰ ἔθνη συνήχθησαν ἅμα, ϗ συναχθήσονται ἄρχοντες ἐξ αὐτῶν. τίς ἀναγγελεῖ ταῦτα; ἢ τὰ ἐξ ἀρχῆς τίς ἀναγγελεῖ ὑμῖν; ἀγαγέτωσαν τοὺς μάρτυρας αὐτῶν ϗ δικαιωθήτωσαν, ϗ (ι) ἀκουσάτωσαν, ϗ εἰπάτωσαν ἀ- 10 ληθῆ. Γένεσθέ μοι μάρτυρες, (κ) ϗ ἐγὼ μάρτυς, λέγει κύριος ὁ θεὸς, ϗ (λ) ὁ παῖς μου ὃν ἐξελεξάμην, ἵνα γνῶτε ϗ πιστεύσητε (μ), ϗ συνῆτε ὅτι ἐγώ εἰμι· ἔμπροσθέν μου οὐκ ἐγένετο ἄλλος θεὸς, ϗ μετ' ἐμὲ οὐκ ἔσται.

C AP. XLIII.

ET nunc ſic dicit Dominus Deus, qui fecit te Jacob, & qui formavit te Iſrael; Noli timere, quoniam redemi te: vocavi te nomine tuo. Meus es tu: 1 *Et, ſi tranſieris per aquam; tecum ſum, et flumina non cooperient te. Et, ſi tranſieris per ignem; non comburêris: flamma non exuret te :* 2 *Quia ego Dominus Deus tuus, Sanctus Iſrael, Salvator tuus. Feci commutationē tuam Ægyptum, et Æthiopiam, et (a) Soënem pro te :* 3 *Ex quo honorabilis factus es in conſpectu meo; glorificatus es, et ego dilexi te: et dabo homines pro te, et principes pro capite tuo.* 4 *Noli timere, quoniam tecum ſum. Ab Oriente adducam ſemen tuum : et ab Occidente congregabo te.* 5 *Dicam Aquiloni, Adduc: et Africo, Noli prohibere: adduc filios meos de terra longinqua, et filias meas à terminis terræ,* 6 *Omnes qui vocantur nomine meo. In gloria enim mea creavi illum, et plaſmavi eum, et feci illum;* 7 *Et eduxi populum cæcum: et oculi ſunt cæci ſimiliter: et ſurdi, qui aures habent.* 8 *Omnes gentes congregatæ ſunt ſimul: et convenient principes ex eis. Quis annuntiabit hæc? aut, quæ à principio ſunt, quis annuntiabit vobis? Adducant teſtes ſuos, et juſtificentur: et audiant, et loquantur vera.* 9 *Eſtote mihi teſtes, et ego teſtis, dicit Dominus Deus, et puer meus, quem elegi; ut ſciatis, et credatis, et intelligatis, quia ego ſum. Ante me non fuit alius Deus : et poſt me non erit.* 10

MS.A. (α) ὁ πλάσας (β) ἐποίησά σου ἄλλαγμα (γ) μου, (δ) κἀγὼ (ε) πολλοὺς ὑπὲρ (ζ) γῆς (η) ϗ ἔπλασα ϗ ἐποίησα (θ) ὦτα (ι) εἰπάτωσαν ἀληθῆ, ϗ ἀκουσάτωσαν. Γένεσθέ (κ) κἀγὼ (λ) ὁ παῖς ὃν (μ) μοι,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

22 והוא עם בזיז ואניס אתחפיאו בהתא עולמין כולהון ובבתי יסורין עגינין הוו לעדי
ולית דמשיזיב לבזא ולית דאמר אתיב: 23 מן בכון יצית דא יקביל ויסבר לסופא:
24 מן מסר לעדי יעקב וישראל לבוזזין הלא יי מן קדם דחבו קדמוהי ולא אבו למהך
באורחן דתקנן קדמוהי ולא קבילו אולפן אוריתיה: 25 ושפך עליהון חימת רוגזיה
ותקוף עבדי קרביה איתי עליהון וקטלו בהון מסחור סחור ולא ידעו ושליטו בהון
ולא שויאו דחלתיה על לבא:

מג

1 וכען כדנן אמר יי דבראך יעקב ודאתקנך ישראל לא תדחל ארי פריקתך רביתך
2 בשמך דילי את: ארי בקדמיתא כד עברתון בימא דסוף מימרי הוה בסעדכון
פרעה ומצראי דסגיאין כמי נהרא לא יכילו לכון ואף בתנינותא כד תהכון לביני
עממיא דתקיפין כאשתא לא יכלון לכון ומלכון דחסינן כשלהוביתא לא ישיצון יתכון:
3 ארי אנא יי אלהך קדישא דישראל פרקך יהבית חליפך מצראי כוש וסבא תחותך:
4 מדאת חביב קדמי אתיקרתא ואנא רחמתך ומסרית עממיא תחותך ומלכותא
5 חלף נפשך: לא תדחל ארי בסעדך מימרי מדנחא איתי בנך וממערבא אקרב
6 גלותך: אמר לצפונא איתא ולדרומא לא תעכב איתו בני מרחיק וגלות עמי מסיפי
7 ארעא: כל דא בדיל אבהתכון צדיקיא דאתקרי שמי עליהון וליקרי בריתינון אתקנית
8 גלותהון אף עבדית להון נסין: דאפיק עמא ממצרים דאנון כסמן ועינין להון וכחרשין
9 ואודנין להון: כל עממיא יתכנשון כחדא ויתקרבון מלכון מן בהון יחוי דא וקדמיתא
10 יבסרוננא יתנון סהדיהון ויזכון וישמעון ויימרון קשוט: אתון סהדין קדמי אמר יי ועבדי
משיחא דאתרעיתי ביה בדיל דתדעון ותהימנון קדמי ותסתכלון ארי אנא הוא
דמלקדמין אף עלמי עלמיא דילי אנון ובר מני לית אלה:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

22 Ipſe autem eſt populus direptus, & vim patiens; operti ſunt confuſione : juvenes ſunt omnes, & carceribus clauſi : facti ſunt in prædam, & non eſt qui eruat; in direptionem, & non eſt qui dicat, Redde. 23 Quis eſt in vobis qui auſcultet hoc, attendat, & intelligat in finem? 24 Quis tradidit in prædam Jacob; & Iſraelem direptoribus? nónne Dñs? eò quòd peccaverunt coram eo, & noluerunt ambulare in viis quæ rectæ ſunt in conſpectu ejus, nec receperunt diſciplinam legis ejus. 25 Et effudit ſuper eum furorem indignationis ſuæ, & fortitudinem bellatorū *ſuorum* adduxit ſuper eos; & occiderunt eos per circuitum, & neſcierunt, & dominationem exercuerunt in eos; & non propoſuerunt animo timorem ejus.

CAP. XLIII.

1 ET nunc hæc dicit Dñs, qui creavit te Jacob; & qui formavit te Iſrael : Ne timeas, quia redemi te : & vocavi te nomine tuo, me' es tu. 2 Quoniam in principio quando tranſiſtis mare carectoſum, Verbum meum fuit in adjutoriū veſtrum. Pharao & Ægyptii qui multi erant ſicut aquæ fluminis, non potuerunt contra vos. Et etiam ſecundò cùm ieritis inter populos qui fortes ſunt ſicut ignis, non prævalebunt contra vos; & regna quæ robuſta ſunt ſicut flamma, non excindent vos. 3 Quia ego Dñs Deus tuus ſanctus Iſrael, qui redemi te, dedi in commutationem tuam Ægyptios, Æthiopiam & Saba pro te. 4 Ex quo dilectus factus es coram me, honorificatus es, & ego dilexi te, & tradidi populos pro te, & regna pro anima tua. 5 Ne timeas, quia in adjutorium tuum erit Verbum meum : ab Oriente adducam filios tuos, & ab Occidente congregabo tranſmigrationem tuam. 6 Dicam Aquiloni, Affer; & Auſtro, Ne moreris: *afferte* filios meos à longè, & exules populi mei ab extremis terræ. 7 Omnia hæc fient propter patres veſtros juſtos, ſuper quos invocatum eſt nomen meum, et in gloriam meam creavi eos. Direxi tranſmigrationem eorum, et etiam feci eis miracula. 8 Qui eduxi populum meū de Ægypto, qui erant ſicut cæci, et habebant oculos; et ſicut ſurdi, et aures habebant. 9 Omnes populi congregentur ſimul, et conveniant regna; quis eorum annuntiabit iſtud? et quæ prima ſunt annuntient nobis; dent teſtes ſuos et juſtificentur; audiant, et dicant verum. 10 Vos teſtes coram me, dicit Dñs, et ſerv' me' Chriſtus quem elegi, ut ſciatis et credatis coram me, & intelligatis quia ego ſum ab initio, et ſecula ſeculorum mea ſunt, et abſque me non eſt Deus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܗܘ ܥܡܐ ܒܙܝܙܐ ܘܕܝܫܐ. ܦܚ̈ܐ ܐܢܘܢ ܟܠܗܘܢ ܥܠܝܡ̈ܐ. ܘܒܒܬ̈ܐ. ܐܣܝܪ̈ܐ ܛܫܝܘ. ܗܘܘ 22
ܠܒܙܬܐ. ܘܠܝܬ ܕܡܦܨܐ. ܘܠܕܝܫܐ. ܘܠܝܬ ܕܡܦܢܐ. * ܡܢܘ ܐܝܬ ܒܟܘܢ ܕܢܫܡܥ ܗܕܐ. 23
ܢܨܘܬ ܘܢܫܡܥ ܠܒܣܬܪ. * ܡܢܘ ܝܗܒ ܠܝܥܩܘܒ ܠܕܝܫܐ: ܘܠܐܝܣܪܝܠ ܠܒܙܬܐ. ܠܐ ܗܘܐ 24
ܡܪܝܐ. ܗܘ ܕܚܛܝܢ ܠܗ. ܘܠܐ ܨܒܝܢ ܠܡܗܠܟܘ ܒܐܘܪܚܬܗ. ܘܠܐ ܫܡܥܢ ܢܡܘܣܗ. * ܐܫܕ 25
ܥܠܝܗܘܢ. ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ. ܘܥܘܫܢܐ ܕܩܪܒܐ. ܘܐܘܩܕ ܐܢܘܢ. ܡܢ ܚܕܪܝܗܘܢ. ܘܠܐ ܝܕܥܘ.
ܘܝܩܕܬ ܒܗܘܢ. ܢܘܪܐ. ܘܠܐ ܐܣܝܡܘ ܥܠ ܠܒܗܘܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܓ *

* ܗܫܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܒܪܟ ܝܥܩܘܒ. ܘܓܒܠܟ ܐܝܣܪܝܠ. ܠܐ ܬܕܚܠ. ܕܦܪܩܬܟ 1
ܘܩܪܝܬܟ ܒܫܡܟ. ܕܕܝܠܝ ܐܢܬ. * ܐܢ ܬܥܒܪ ܒܡܝܐ. ܥܡܟ ܐܢܐ. ܘܢܗܪ̈ܘܬܐ. ܠܐ ܢܫܛܦܢܟ. 2
ܐܢ ܬܗܠܟ ܥܠ ܢܘܪܐ. ܠܐ ܬܬܟܘܐ. ܘܫܠܗܒܝܬܐ ܠܐ ܬܘܩܕܟ. * ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ. 3
ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܦܪܘܩܟ. ܝܗܒܬ ܡܨܪܝܢ ܚܠܦܝܟ. ܘܟܘܫ ܘܣܒܐ. ܚܠܦܝܟ.
* ܡܢ ܕܝܩܝܪ ܐܢܬ ܒܥܝܢܝ ܐܫܬܒܚܬ. ܘܐܢܐ ܐܚܒܬܟ. ܝܗܒܬ ܐܢܫܐ. ܚܠܦܝܟ. 4
ܘܥܡܡ̈ܐ ܚܠܦ ܢܦܫܟ. * ܠܐ ܬܕܚܠ. ܡܛܠ ܕܥܡܟ ܐܢܐ. ܡܢ ܡܕܢܚܐ. ܐܝܬܐ ܙܪܥܟ. ܘܡܢ 5
ܡܥܪܒܐ ܐܟܢܫܟ. * ܐܡܪ ܠܓܪܒܝܐ ܕܗܒ. ܘܠܬܝܡܢܐ. ܕܠܐ ܬܟܠܐ. ܐܝܬܐ ܒܢܝ ܡܢ 6
ܪܘܚܩܐ. ܘܒܢܬܝ ܡܢ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. * ܟܠ ܕܡܬܩܪܐ ܒܫܡܝ. ܠܐܝܩܪܝ ܒܪܝܬܗ. ܘܓܒܠܬܗ 7
ܘܥܒܕܬܗ. * ܐܦܩ ܥܡܐ ܥܘܝܪܐ. ܕܥܝܢ̈ܐ ܐܝܬ ܠܗܘܢ. ܘܕܐܕܢ̈ܐ ܐܝܬ ܠܗܘܢ. ܘܚܪܫܝܢ. 8
* ܟܠܗܘܢ ܥܡܡ̈ܐ ܢܬܟܢܫܘܢ ܐܟܚܕܐ. ܘܢܬܟܢܫܘܢ ܐܡܘܬܐ. ܡܢܘ ܐܝܬ ܒܟܘܢ ܕܢܚܘܐ 9
ܗܕܐ. ܘܩܕܡܝܬܐ ܢܫܡܥܢ. ܢܝܬܘܢ ܣܗܕܝܗܘܢ. ܘܢܙܕܕܩܘܢ. ܘܢܫܡܥܘܢ. ܘܢܐܡܪܘܢ. * ܒܫܪܪܐ 10
ܐܢܬܘܢ ܣܗܕܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܥܒܕܝ ܕܓܒܝܬ. ܘܬܕܥܘܢ. ܘܬܗܝܡܢܘܢ ܒܝ. ܘܬܣܬܟܠܘܢ.
ܕܐܢܐ ܗܘ. ܘܩܕܡܝ. ܠܐ ܐܬܒܪܝ ܐܠܗܐ. ܘܒܬܪܝ. ܠܐ ܢܗܘܐ.

Verùm populus iſte direptus eſt atque proculcatus; laquei ſunt omnes juvenes, & in do- 22
mibus vinctos abſconderunt: facti ſunt in
prædam nemine eripiente, & in conculcationem nemine repellente. Quis eſt inter vos 23
qui hoc audiat? auſcultet adhuc, & aliud audiet: Quis tradidit Jacobum conculcationi, 24
& Iſraelem direptioni? nónne Dominus, eò
quòd peccaverimus in eum, noluerimus ambulare per vias ejus, neque legi ejus obedi-
verimus; Effudit ſuper eos æſtum iræ ſuæ & 25
belli atrocitatem? combuſſit eos undique, &
non perceperunt; ſuccendit eos ignis, & non
adjecerunt animum.

CAP. XLIII.

ITaque ſic dicit Dominus qui te creavit O 1
Jacob, teque formavit O Iſrael; Ne timeto,
quia redemi te, & vocavi te nomine tuo, quia
meus es. Si per mare tranſieris, tecum ſum, 2
& flumina nequaquam converrent te: ſi ambulaveris ſuper ignem, non uſtulaberis, nec
incendet te flamma; Quoniam ego ſum Dominus Deus tuus, Sanctus Iſraelis, redemptor 3
tuus. Tradidi Ægyptum loco tui, & Chus atque Sabam pro te. Eò quòd pretioſus ſis in 4
oculis meis, glorificatus es; & ego amore te
proſecutus, homines pro te dedi, & gentes
pro anima tua. Ne timeto, quia tecum ſum: 5
ab Oriente reducam ſemen tuum, et ab Occidente colligam te: Edicam Aquiloni, Redde; 6
et Meridiei, Ne prohibeas: reducam filios meos è longinquo, et filias meas ab extremis terræ. Quemcunque nomē meū invocantē, in ho- 7
norem meū creavi, formavi, et condidi. Pro- 8
duc populū cæcū quibus ſunt oculi, et quibus
ſunt aures, ſurdi tamen ſunt. Omnes populi 9
congregentur ſimul, congregentur et gentes:
quis eſt inter vos qui hoc indicet, et priſtina
enarret? producant teſtes ſuos, ſeſeque juſtificent, audiant, et loquantur. Reverà vos teſtes 10
mei eſtis, dicit Dñs, et ſervi mei quos elegi: ſcietis, et credetis in me, et intelligetis quòd ego
ſim, et ante me nullus creatus ſit Deus, nec
ullus poſt me futurus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وصار الشعب منهبا ومختطفا * لان الفخ في المخادع بكل موضع وفي البيوت معا * 22
حيث اخفوهم صاروا للنهب وليس من يخلص * خطفة وليس من يقول رد * من فيكم 23
ينصت لهذا ويسمع بالاتيات * من اعطى يعقوب للاختطاف * واسرائيل للذين نهبوه * اليس 24
الله الذي له اخطا ولم يشا ان يسلكوا في طرقه ولا ان يسمعوا ناموسه * فجلب عليهم 25
رجز غضبه * وقوي عليهم الحرب * وحرقوهم حولهم * ولم يعلم كل واحد منهم * ولا وضع
على نفس *

* الفصل الثالث والاربعون * 　 * الاصحاح الحادي والعشرون *

* والان هكذا يقول الرب الاله الذي صنعك يا يعقوب وجبلك يا اسرائيل * لا تخف لاني 1
انقذتك * دعوتك باسمك * وانت لي * فان جزت في الماء فانا معك * والانهار لا يغرقونك * 2
وان عبرت في النار لا تحترق * اللهيب لا يحرقك * لاني انا الرب الهك قدوس اسرائيل 3
مخلصك * ها جعلت فديتك مصر * والحبشة واسوان من اجلك * الذي صرت مكرما 4
امامي * مجدت * وانا احببتك * واعطي اناسا كثيرين عنك * ورؤساء من اجل راسك *
* لا تخف لاني انا معك * من المشارق اتي بزرعك * ومن المغارب اجمعك * اقول للجربياء 5 6
هات * وللعربي لا تمنع * هات ببني من ارض بعيدة وبناتي من طرف الارض * جميع 7
الذين دعوا باسمي لان لمجدي هياته وجبلته وصنعته * واخرجت شعبا اعمي * 8
وهم هكذا عيون عمي وصم ولهم اذان * جميع الامم اجتمعت معا * وتجمع الرؤساء 9
معهم * من يخبر بهذا فيهم * او من يجعل التي منذ القديم مسموعة عندهم * ليحضروا
شهودهم وليتبرروا * وليسمعوا وليقولوا صدقا * كونوا لي شهودا * وانا شاهد يقول الرب 10
الاله * وفتاي الذي اخترته * لتعرفوا وتومنوا بي * وتفهموا اني انا هو الرب * من قبلي لم
يكن الها اخر * وبعدي لا يكون *

Factus enim eſt populus iſte prædatus 22
ac direptus, quia laqueus in penetralibus
eſt, ubique & in domibus pariter; ubicunque abſconditi fuerunt, facti ſunt
in prædam nemine vendicante; direpti
fuerunt nemine dicente, Reſtitue. Quis 23
inter vos hæc auſcultat, & audit ventura? Quis expoſuit Jacobum direptioni, 24
& Iſraelem iis qui diripuerunt eū? nónne
Deus quòd peccaverint in eum, renuentes
ambulare in viis ejus & obtemperare legi
ipſius; Adduxit ſuper eos iram indigna- 25
tionis ſuæ, durumq; bellum excitavit in
eos? & dum qui comburunt eos, cingunt
illos, nemo eorum animadvertit nec animum adjecit.

CAP. XLIII.

Textus vigeſimus primus.

Nunc autem ſic dicit Dominus Deus 1
qui te fecit O Jacob, teque formavit O Iſrael: Ne timeas, quoniam ego redemi
te, impoſui tibi nomen tuum; & tu
meus es. Nam ſi tranſieris per aquam, 2
ego tibi adſum, & flumina non obruent
te: & ſi tranſieris per ignem, nequaquam ureris, flamma non aduret te;
Quoniam ego Dominus Deus tuus Sanctus Iſraelis, ſalvator tuus ſum. Ecce 3
in tui redemptionem expoſui Ægyptum,
& Æthiopiam atque Aſuan loco tui,
Qui factus es honorandus, apud me 4
glorificatus; & ego dilexi te, & exponam plurimos homines pro te, &
principes cauſâ tui. Ne timeas, quo- 5
niam adſum tibi: ab Oriente adducam
ſemen tuum, & ab Occidente congregabo
te: Dicam Aquiloni, Affer; & Auſtro, 6
Ne moveris, adduc filios meos è terra
longinqua, & filias meas ab extremo
terræ, Omnes qui vocantur de nomine 7
meo: nam gloriā meā præparavi formavi,
& feci; Et eduxi populum cæcum, adeoque 8
ſunt oculi cæci, & ſurdi quamvis aures habeant. Omnes gentes cōgregatæ ſunt ſimul, 9
congregabuntur etiam principes cum eis.
Quis hæc nota faciat inter eos? aut quis
ea quæ fuerunt ab antiquo, audita faciat
apud eos? Producant teſtes ſuos, purgentque ſeſe, audiant, & verum dicant.
Eſte mihi teſtes, atque ego teſtis ſum (di- 10
cit Dominus Deus) necnon puer meus
quem elegi: ut ſciatis, & credatis in
me, & intelligatis me eſſe Dominum,
ante me non fuiſſe deum alium, nec
ullum poſt me futurum.

ישעיה : מד

,indicavi Ego .ſervator me præter non & : Dominus ego Ego
11 12 אָנֹכִי אָנֹכִי יְהוָה וְאֵין מִבַּלְעָדַי מוֹשִׁיעַ׃ אָנֹכִי הִגַּדְתִּי
,mei teſtes vos & : alius vobis in non & ,feci audire & , ſervavi &
וְהוֹשַׁעְתִּי וְהִשְׁמַעְתִּי וְאֵין בָּכֶם זָר וְאַתֶּם עֵדַי
non & , ipſe ego *die* à Etiam .Deus ego & ,Dominus dixit
13 נְאֻם־יְהוָה וַאֲנִי־אֵל׃ גַּם־מִיּוֹם אֲנִי הוּא וְאֵין
Dominus dixit Sic ? id avertet quis & ,operabor : *eruens* mea manu de
14 מִיָּדִי מַצִּיל אֶפְעַל וּמִי יְשִׁיבֶנָּה׃ כֹּה־אָמַר יְהוָה
, Babel in *miſi* vos Propter : Iſraëlis ſanctus veſter redemptor
גֹּאַלְכֶם קְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל לְמַעַנְכֶם שִׁלַּחְתִּי בָבֶלָה
.*eorū ovatio* navib⁹ in,Chaſdim &,ipſos univerſos fugitivos feci deſcēdere &
וְהוֹרַדְתִּי בָרִיחִים כֻּלָּם וְכַשְׂדִּים בָּאֳנִיּוֹת רִנָּתָם׃
Sic .veſter rex , Iſrael creans : veſter ſanctus Dominus Ego
15 16 אֲנִי יְהוָה קְדוֹשְׁכֶם בּוֹרֵא יִשְׂרָאֵל מַלְכְּכֶם׃ כֹּה
.ſemitam vehementibus aquis in & : viam mari in *dans* Dominus dixit
אָמַר יְהוָה הַנּוֹתֵן בַּיָּם דָּרֶךְ וּבְמַיִם עַזִּים נְתִיבָה׃
non ,decumbent ſimul : robur & *virtutem* ,equum & currum *Educens*
17 הַמּוֹצִיא רֶכֶב־וָסוּס חַיִל וְעִזּוּז יַחְדָּו יִשְׁכְּבוּ בַּל־
memoriā in revocetis Ne.ſunt extincti linum ſicut,ſunt extincti ;exurgent
18 יָקוּמוּ דָּעֲכוּ כַּפִּשְׁתָּה כָבוּ׃ אַל־תִּזְכְּרוּ
, novum *faciens* ego Ecce .*conſideretis* ne antiqua & : priora
19 רִאשֹׁנוֹת וְקַדְמֹנִיּוֹת אַל־תִּתְבֹּנָנוּ׃ הִנְנִי עֹשֶׂה חֲדָשָׁה
deſerto in ponam Etiam ? illud cognoſcetis nonne ,*germinabit* nunc
עַתָּה תִצְמָח הֲלוֹא תֵדָעוּהָ אַף אָשִׂים בַּמִּדְבָּר
,dracones , agri *fera* me Glorificabit .flumina ſolitudine in , viam
20 דֶּרֶךְ בִּישִׁמוֹן נְהָרוֹת׃ תְּכַבְּדֵנִי חַיַּת הַשָּׂדֶה תַּנִּים
,ſolitudine in flumina ,aquas deſerto in dedi quia : *ululæ* filiæ &
וּבְנוֹת יַעֲנָה כִּי־נָתַתִּי בַמִּדְבָּר מַיִם נְהָרוֹת בִּישִׁמֹן
: mihi formavi iſtum Populum .meo electo ,meo populo potum *dandum ad*
21 לְהַשְׁקוֹת עַמִּי בְחִירִי׃ עַם־זוּ יָצַרְתִּי לִי
laboràſti cùm : Jahacob invocâſti me non Et .narrabunt meam laudem
22 תְּהִלָּתִי יְסַפֵּרוּ׃ וְלֹא־אֹתִי קָרָאתָ יַעֲקֹב כִּי־יָגַעְתָּ
,*tuarum aſcenſionum* pecus mihi adduxiſti Non .Iſrael me in
23 בִּי יִשְׂרָאֵל׃ לֹא־הֵבֵיאתָ לִּי שֵׂה עֹלֹתֶיךָ
nec , *munere* in te feci ſervire non : me honoràſti non tuis victimis &
וּזְבָחֶיךָ לֹא כִבַּדְתָּנִי לֹא הֶעֱבַדְתִּיךָ בְּמִנְחָה וְלֹא
,calamum argento *in* mihi emiſti Non .*thure* in te feci laborare
24 הוֹגַעְתִּיךָ בִּלְבוֹנָה׃ לֹא־קָנִיתָ לִּי בַכֶּסֶף קָנֶה
me feciſti ſervire verùm :me feciſti inebriare non tuarū victimarū adipe &
וְחֵלֶב זְבָחֶיךָ לֹא הִרְוִיתָנִי אַךְ הֶעֱבַדְתַּנִי
ipſe ego , Ego .*tuis iniquitatibus in* me feciſti laborare ,*tuis peccatis in*
25 בְּחַטֹּאותֶיךָ הוֹגַעְתַּנִי בַּעֲוֹנֹתֶיךָ׃ אָנֹכִי אָנֹכִי הוּא
.recordabor non tuorū peccatorū & :me propter tuas prævaricationes *delens*
מֹחֶה פְשָׁעֶיךָ לְמַעֲנִי וְחַטֹּאתֶיךָ לֹא אֶזְכֹּר׃
.te juſtifices ut , tu narra : ſimul *judicemur* ,me fac Memorare
26 הַזְכִּירֵנִי נִשָּׁפְטָה יָחַד סַפֵּר אַתָּה לְמַעַן תִּצְדָּק׃
.me *in* ſunt prævaricati tui interpretes & : peccavit primus tuus Pater
27 אָבִיךָ הָרִאשׁוֹן חָטָא וּמְלִיצֶיךָ פָּשְׁעוּ בִי׃
Iſrael & ,Jahacob *anathema* in dabo & ,ſanctitatis principes *prophanabo* &
28 וַאֲחַלֵּל שָׂרֵי קֹדֶשׁ וְאֶתְּנָה לַחֵרֶם יַעֲקֹב וְיִשְׂרָאֵל
.*convicia* in
לְגִדּוּפִים׃

CAP. XLIV. מד

dixit Sic .*eo in* elegi Iſrael & : mi ſerve Jahacob audi nunc Et
1 2 וְעַתָּה שְׁמַע יַעֲקֹב עַבְדִּי וְיִשְׂרָאֵל בָּחַרְתִּי בוֹ׃ כֹּה־אָמַר
ne : tibi auxiliabitur ,utero ab tuus formator & ,tuus factor Dominus
יְהוָה עֹשֶׂךָ וְיֹצֶרְךָ מִבֶּטֶן יַעְזְרֶךָּ אַל־
.*eo in* elegi recte & ,Jahacob mi ſerve timeas
תִּירָא עַבְדִּי יַעֲקֹב וִישֻׁרוּן בָּחַרְתִּי בוֹ׃

Verſio VUGL. LAT.

11 Ego ſum,ego ſum Dñs,& non
12 eſt abſque me ſalvator. Ego annuntiavi,& ſalvavi : auditū feci, & non fuit in vobis alienus : vos teſtes mei,dicit Dñs,
13 & ego Deus. Et ab initio ego ipſe , & non eſt qui de manu mea eruat : operabor, & quis
14 avertet illud ? Hæc dicit Dñs redemptor veſter, Sanctus Iſrael ; Propter vos miſi in Babylonem , & detraxi vectes univerſos,& Chaldæos in na-
15 vibus ſuis gloriantes. Ego Dominus ſanctus veſter, creans
16 Iſrael rex veſter. Hæc dicit Dñs, qui dedit in mari viam , & in aquis torrentibus ſemi-
17 tam. Qui eduxit quadrigam & equum , agmen & robuſtum : ſimul obdormierunt , nec reſurgent : contriti ſunt quaſi linum, & extincti ſunt.
18 Ne memineritis priorum, &
19 antiqua ne intueamini. Ecce ego facio nova, & nunc orientur, utique cognoſcetis ea: ponam in deſerto viam, & in
20 invio flumina. Glorificabit me beſtia agri , dracones & ſtruthiones : quia dedi in deſerto aquas, flumina in invio , ut darem potum populo meo,
21 electo meo. Populū iſtū formavi mihi,laudem meam nar-
22 rabit. Non me invocâſti, Jacob; nec laborâſti in me,Iſra-
23 el. Non obtuliſti mihi arietē holocauſti tui, & victimis tuis non glorificâſti me : non te ſervire feci in oblatione , nec laborem tibi præbui in thure.
24 Non emiſti mihi argento calamum,et adipe victimarū tuarū non inebriâſti me. Verūtamen ſervire me feciſti in peccatis tuis, præbuiſti mihi laborē in
25 iniquitatibus tuis. Ego ſum, ego ſum ipſe , qui deleo iniquitates tuas propter me, & peccatorū tuorū non recorda-
26 bor. Reduc me in memoriā,& judicemur ſimul:narra ſi quid
27 habes ut juſtificeris. Pater tu⁹ prim⁹ peccavit, & interpretes
28 tui prævaricati ſunt in me. Et contaminavi principes ſanctos , dedi ad internecionem Jacob, & Iſrael in blaſpemiā.

CAP. XLIV.

1 ET nunc audi, Jacob, ſerve
2 me⁹, & Iſrael,quem elegi:Hæc dicit Dñs faciens & formans te,ab utero auxiliator tu⁹; Noli timere, ſerve meus Jacob, et rectiſſime, quem elegi.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

11 Ἐγὼ ὁ θεὸς, καὶ οὐκ ἔστι πάρεξ ἐμοῦ σώζων.
12 (ν) Ἐγὼ ἀνήγγειλα καὶ ἔσωσα, ὠνείδισα καὶ οὐκ ἦν ἐν ὑμῖν ἀλλότριος. ὑμεῖς ἐμοὶ μάρ-
13 τυρες. (ξ) καὶ ἐγὼ κύριος ὁ θεὸς Ἔτι ἀπ' ἀρχῆς, καὶ οὐκ ἔστιν ὁ ἐκ τῶν χειρῶν μου (ο) ὁ ἐξαιρούμενος· ποιήσω, καὶ τίς ἀποστρέψει αὐτό;
14 Οὕτως λέγει κύριος ὁ θεὸς ὁ λυτρούμενος ὑμᾶς, ὁ ἅγιος (π) τοῦ Ἰσραὴλ, Ἕνεκεν ὑμῶν ἀποστελῶ εἰς Βαβυλῶνα, καὶ ἐπεγερῶ (ρ) φεύγοντας πάντας, καὶ Χαλδαῖοι ἐν (σ) πλοί-
15 οις δεθήσονται. Ἐγὼ κύριος ὁ θεὸς ὁ ἅγιος ὑμῶν, ὁ καταδείξας Ἰσραὴλ βασιλέα ὑ-
16 μῶν. Οὕτως λέγει κύριος, ὁ διδοὺς (τ) ἐν θαλάσσῃ ὁδὸν, καὶ ἐν ὕδατι ἰσχυρῷ τρίβον,
17 Ὁ (υ) ἐξαγαγὼν ἅρματα καὶ ἵππον καὶ ὄχλον ἰσχυρόν· (φ) ἀλλ' ἐκοιμήθησαν, καὶ οὐκ ἀναστήσονται, ἐσβέσθησαν ὡς λίνον ἐσβεσμένον.
18 (χ) Μὴ μνημονεύετε τὰ πρῶτα, καὶ τὰ ἀρ-
19 χαῖα μὴ συλλογίζεσθε. (ψ) Ἰδοὺ ἐγὼ ποιῶ καινὰ, ἃ νῦν ἀνατελεῖ, καὶ γνώσεσθε αὐτά· καὶ ποιήσω ἐν τῇ ἐρήμῳ ὁδὸν, καὶ ἐν τῇ ἀνύ-
20 δρῳ ποταμούς. (ω) Εὐλογήσουσί με τὰ θηρία τοῦ ἀγροῦ, σειρῆνες, καὶ θυγατέρες στρουθῶν, ὅτι ἔδωκα ἐν τῇ ἐρήμῳ ὕδωρ, καὶ ποταμοὺς ἐν τῇ ἀνύδρῳ, (α) ποτίσαι τὸ γέ-
21 νος μου τὸ ἐκλεκτὸν, Λαόν μου ὃν περιεποι-
22 ησάμην τὰς ἀρετάς μου διηγεῖσθαι. Οὐ νῦν ἐκάλεσά σε Ἰακὼβ, (β) οὐδὲ κοπιάσαι σε
23 ἐποίησα Ἰσραήλ. Οὐκ (γ) ἤνεγκάς μοι πρόβατά σου τῆς ὁλοκαρπώσεώς σου, οὐδὲ ἐν ταῖς θυσίαις σου ἐδόξασάς με. (δ) οὐκ ἐδούλωσά σε ἐν θυσίαις, οὐδὲ ἔγκοπον ἐποίη-
24 σά σε ἐν λιβάνῳ. Οὐδὲ ἐκτήσω μοι ἀργυρίου (ε) θυσίασμα, οὐδὲ τὸ στέαρ τῶν θυσιῶν σου ἐπεθύμησα· ἀλλὰ ἐν ταῖς ἁμαρτίαις σου
25 (ζ) προέστης μου, καὶ ἐν ταῖς ἀδικίαις σου. Ἐγώ εἰμι ἐγώ εἰμι ὁ ἐξαλείφων τὰς ἀνομίας σου (η) ἕνεκεν ἐμοῦ, καὶ τὰς ἁμαρτίας σου, καὶ
26 οὐ μὴ μνησθήσομαι. Σὺ δὲ μνήσθητι, καὶ κριθῶμεν· λέγε σὺ τὰς ἀνομίας σου πρῶτος,
27 ἵνα δικαιωθῇς. Οἱ πατέρες (θ) ὑμῶν πρῶτοι, καὶ οἱ ἄρχοντες (ι) ὑμῶν ἠνόμησαν εἰς
28 ἐμέ. Καὶ ἐμίαναν οἱ ἄρχοντες τὰ ἅγιά μου· καὶ ἔδωκα ἀπολέσαι Ἰακὼβ, καὶ (κ) Ἰσραὴλ εἰς ὀνειδισμόν.

Ego Deus: *&* non eſt præter me
11 ſalvator. Ego annuntiavi, *&* ſal-
12 vavi: (b) exprobravi, *&* non erat in vobis alienus. Vos mei teſtes; *&* ego Dominus Deus uſque à
13 principio: *&* non eſt, qui de manibus meis eruat. Faciam: *&* quis a-
14 vertet illud? Sic dicit Dominus Deus, qui redimit vos, Sanctus Iſrael; Propter vos mittam in Babylonem: *&* ſuſcitabo (c) fugientes univerſos: *&* Chaldæi in navibus
15 vincientur. Ego Domin⁹ Deus ſanctus veſter, qui oſtendi Iſrael regem veſtrum.
16 Sic dicit Dominus, qui dat in mari viam, *&* in aqua vehementi ſemitam :
17 Qui educit currus, *&* equum, *&* multitudinem robuſtam. Sed dormierunt, *&* non reſurgent: extincti ſunt, quaſi linum extinctum.
18 Nolite meminiſſe priorum : *&* vetera ne recogitetis.
19 Ecce ego facio nova, quæ nunc orientur: *&* cognoſcetis ea: *&* faciam in deſerto viam , *&* in inaquoſo flumina.
20 Benedicent me beſtiæ agri, (d) Sirenes, (e) et filiæ ſtruthionum : quia dedi in deſerto aquam, et flumina in inaquoſo: ut bibere faciam genus meum electum,
21 Populum meum, quem acquiſivi, ut virtutes meas narret.
22 Non nunc vocavi te, Jacob: neque laborare te feci, Iſrael:
23 Non attuliſti mihi oves tuas holocauſti tui: neque in victimis tuis magnificâſti me: (f) nec ſervire te feci in hoſtiis : (g) nec laborem tibi præbui in thure :
24 Nec emiſti mihi argento thymiama: nec adipem hoſtiarum tuarum concupivi. Sed in peccatis tuis ante me (h) ſtetiſti, *&* in iniquitatibus tuis.
25 Ego ſum, ego ſum, qui deleo iniquitates tuas propter me, *&* peccata tua: et non recordabor.
26 Tu verò memento, *&* judicemur. Dic tu (i) iniquitates tuas primus, ut juſtificeris.
27 Patres veſtri primi, et principes veſtri iniquè egerunt in me:
28 Et contaminaverunt principes Sancta mea. Et dedi ut perderem Jacob, et Iſrael in opprobrium.

MS.A. (ν) Ἀνήγγειλα (ξ) κἀγὼ μάρτυς λέγει κύριος ὁ θεὸς (ο) ἐξαιρούμενος· (π) Ἰσραὴλ, (ρ) πάντας φεύγοντας, (σ) κλοιοῖς (τ) ὁδὸν ἐν θαλάσσῃ, (υ) ἐξάγων (φ) ἀλλὰ (χ) Μνημονεύετε (ψ) Ἰδοὺ ποιῶ (ω) Εὐλογήσει (α) ποτιῶ (β) οὐ κοπιάσαι (γ) ἐμοὶ πρόβατα τῆς ὁλοκαρπώσεώς (δ) οὐδὲ ἐδούλωσας ἐν ταῖς θυσίαις σου, (ε) θυμίαμα, οὐδὲ στέαρ (ζ) καὶ ἐν ταῖς ἀδικίαις σου προέστην σου. (η) καὶ οὐ μὴ μνησθήσομαι τὰς ἀδικίας σου. Σὺ δὲ μνήσθητι, (θ) ἡμῶν (ι) αὐτῶν (κ) Ἱερουσαλήμ

ΚΕΦ. μδ'.

1 Νῦν δὲ ἄκουσον (α) Ἰακὼβ ὁ παῖς μου, καὶ
2 Ἰσραὴλ ὃν ἐξελεξάμην. (β) Οὕτω λέγει κύριος ὁ θεὸς ὁ ποιήσας σε, καὶ ὁ πλάσας σε ἐκ κοιλίας, Ἔτι βοηθηθήσῃ· μὴ φοβοῦ παῖς μου Ἰακὼβ, καὶ (γ) ἠγαπημένος Ἰσραὴλ ὃν ἐξελεξάμην.

CAP. XLIV.

Nunc autem audi, Jacob puer 1 meus; et Iſrael, quem elegi. Sic 2 dicit Dominus Deus, qui fecit te, et qui plaſmavit te de ventre; Adhuc habebis auxilium. Noli timere, puer meus Jacob; et (a) dilecte Iſrael, quem elegi.

MS.A (α) παῖς μου Ἰακὼβ, (β) Οὕτως (γ) ὁ ἠγαπημένος

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 12 אֲנָא אֲנָא יְיָ וְלֵית בַּר מִנִּי פָּרִיק׃ אֲנָא חַוֵּיתִי לְאַבְרָהָם אֲבוּכוֹן מָה דַּעֲתִיד לְמֵיתֵי אֲנָא
פָּרְקִית יָתְכוֹן מִמִּצְרַיִם כְּמָא דְקַיֵּימִית לֵיהּ בֵּין בִּתְרַיָּא וַאֲנָא אַשְׁמְעִית יָתְכוֹן אוּלְפַן
אוֹרַיְתִי מִסִּינַי וְעַד אַתּוּן קַיָּמִין וְלֵית בְּכוֹן נוּכְרִי וְאַתּוּן סָהֲדִין קֳדָמַי אֲמַר יְיָ וַאֲנָא אֱלָהָא׃
13 14 אַף מֵעָלְמָא אֲנָא הוּא וְלֵית דְּמִן יְדִי מְשֵׁיזֵיב אַעְבְּדִנַּהּ וְלָא אֲתִיבִנַּהּ׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ
פָּרִיקְכוֹן קַדִּישָׁא דְיִשְׂרָאֵל בְּדִיל חוֹבֵיכוֹן אַגְלֵיתִי יָתְכוֹן לְבָבֶל וְאַחֲתֵית בְּמַשּׁוֹטִין כּוּלְּהוֹן
15 16 וְכַסְדָּאֵי בִּסְפִינֵי תוּשְׁבַּחְתְּהוֹן׃ אֲנָא יְיָ קַדִּישְׁכוֹן דִּבְרֵיתִי לְיִשְׂרָאֵל מַלְכְּכוֹן׃ כִּדְנַן אֲמַר
17 יְיָ דְּאַתְקֵין בְּיַמָּא אוֹרְחָא וּבְמַיִּין תַּקִּיפִין שְׁבִילָא׃ דְּאַפֵּיק רְתִיכִין וְסוּסְוָן מַשִּׁרְיָן וְעַם
18 סַגִּי כַּחֲדָא אִתְבְּלַעוּ וְלָא קָמוּ דְּעִיכוּ כְבוּצָא עֲמֵי טְפוֹ׃ לָא תִדְכְּרוּן קַדְמָיָתָא וּדְמִן
19 אַוְלָא לָא תִסְתַּכְּלוּן׃ הָא אֲנָא עָבֵיד חַדְתָּא וּכְעַן תִּתְגְּלֵי הֲלָא תִדְּעוּנַהּ אַף אֲשַׁוֵּי
20 בְּמַדְבְּרָא אוֹרַח בְּצַדְיוּתָא נַהֲרָן׃ יְיַקְּרוּן קֳדָמַי כַּד אַיְתֵיב מְדִינָן דְּצַדְיָן אֲתַר דַּהֲוָאָה
שָׁרַיִן יְרוֹדִין וּבְנָת נַעֲמִין אֲרֵי יְהַבִית בְּמַדְבְּרָא מַיָּא נַהֲרִין בְּצַדְיוּתָא לְאַשְׁקָאָה גָּלְוַת
21 22 עַמִּי דְּאִתְרְעֵיתִי בֵהּ׃ עַמָּא דֵין אַתְקֵנִית לְפוּלְחָנִי בְּתוּשְׁבְּחָתִי יְהוֹן מִשְׁתָּעַן׃ אֲמִיר
עַל יְדֵי נְבִיַּיָּא וְלָא בְּפוּלְחָנִי עַרְעִיתוּן דְּבֵית יַעֲקֹב אֲרֵי לְאֵיתוֹן בְּאוּלְפַן אוֹרַיְתִי יִשְׂרָאֵל׃
23 לָא אַיְתֵיתָא קֳדָמַי אִמְּרִין לַעֲלָתָא וְנִכְסַת קוּדְשָׁךְ לָא יַקַּרְתָּא קֳדָמַי לָא אַסְגֵּיתִי עֲלָךְ
24 בְּקוּרְבָּנִין וְלָא אַתְקֵיפִית עֲלָךְ בִּלְבוֹנְתָא׃ לָא זְבַנְתָּא קֳדָמַי בִּכְסַף קְנֵי בְסַם וְתָרַב נִכְסַת
25 קוּדְשָׁךְ לָא דְהֵינְתָּא עַל מַדְבְּחִי בְּרַם אַסְגֵּיתָא קֳדָמַי בְּחוֹבָךְ אַתְקֵיפְתָּא קֳדָמַי בַּעֲוָיָתָךְ׃
26 אֲנָא אֲנָא הוּא שָׁבֵיק לְחוֹבָךְ בְּדִיל שְׁמִי וְחֶטְאָךְ לָא יִדְכְּרוּן׃ אֱמַר כְּעַן נִדּוֹן כַּחֲדָא אִשְׁתָּעֵי
27 28 אַתְּ בְּדִיל אִם תִּכּוּל וְתִזְכֵּי׃ אֲבוּךְ קַדְמָאָה חָטָא וּמַלְפָךְ מְרַדוּ בְמֵימְרִי׃ וְאַפֵּיס רַבְרְבֵי
קוּדְשָׁא וְאֶמְסַר לְקַטָּלָא יַעֲקֹב וְיִשְׂרָאֵל לְחִסּוּדִין׃

מד

1 2 וּכְעַן שְׁמַע יַעֲקֹב עַבְדִּי וְיִשְׂרָאֵל דְּאִתְרְעֵיתִי בֵיהּ׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ דַּעֲבָדָךְ וּדְאַתְקְנָךְ מִמְּעִין
יְסַעֲדִנָּךְ לָא תִדְחַל עַבְדִּי יַעֲקֹב וְיִשְׂרָאֵל דְּאִתְרְעֵיתִי בֵיהּ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ego ego Dominus, & non eſt abſque me ſalvator. Ego annuntiavi Abrahæ 11
patri veſtro quæ ventura erant : ego redemi vos *ex Ægypto*, ſicut juravi 12
ei inter diviſiones. Et ego audire vos feci doctrinam legis meæ de Synai ; adhuc permanetis, & non eſt in vobis extraneus: & vos teſtes coram me, dicit Dñs: & ego Deus. A ſeculo etiam ego ſum, & non eſt qui eruat de 13
manu mea : faciam illud, & non avertam illud. Sic dicit Domin⁹ redemptor 14
veſter ſanctus Iſrael : Propter peccata veſtra *tranſtuli vos* in Babylonem, & deſcendere feci in remis univerſos ; & Chaldæos in navibus laudis ſuæ.
Ego Dominus ſanctus veſter, qui creavi Iſraelem, rex veſter. Sic dicit Do- 15
minus qui direxit in mari viam, & in aquis vehementibus ſemitam. Qui 16
eduxit quadrigas & equos, & exercitū, & populum multum: ſimul abſorpti 17
ſunt, & non ſurrexerunt ; extincti ſunt, & ſicut linum extinctum extincti ſunt. Ne memineritis priorum, et quæ ſunt ab antiquo , ne intueamini. 18
Ecce ego facio novum, et nunc revelabitur : utique ſcietis illud: ponā eti- 19
am in ſolitudine viam, in deſerto flumina. Glorificabunt coram me, quan- 20
do convertero provincias deſertas , et locum ubi manebant dracones et filiæ ſtruthionum ; quia dedi in ſolitudine aquas, et flumina in deſerto, ut darem potum *tranſmigrationi populi mei* quem elegi. Populum hunc præ- 21
paravi cultui meo : laudem meam narrabunt. Dictum eſt per manum pro- 22
phetarum, quòd non acceditis ad cultum meum viri domus Jacob : quia laborâſti Iſrael in doctrina legis meæ. Non obtuliſti corā me arietes *in holo-* 23
cauſtum, neque *victimis ſanctis tuis* honorâſti coram me : non multiplicavi ſuper te oblationes, neque gravavi te thure. Non emiſti coram me ar- 24
gento calamum aromaticum, neque adipe victimarum tuarum impinguâſti altare meum. Veruntamen multiplicâſti corām me peccata tua ; et gravâſti me tuis iniquitatibus. Ego, ego ſum ipſe qui dimitto ſcelera tua propter 25
nomen meum, et peccata tua non erunt in memoria. Dic nunc, judicemur 26
ſimul, narra ſi potes ut juſtificeris. Pater tuus primus peccavit; & docto- 27
res tui prævaricati ſunt in Verbum meum. Et profanavi principes ſancti- 28
tatis, & tradidi in occiſionem Jacob, & Iſraelem in opprobria.

CAP. XLIV.

ET nunc audi Jacob ſerve mi, & Iſrael quem elegi. Hæc dicit Dominus 1
qui fecit te, et formavit te, ab utero ſuſtentavit te : Ne timeas ſerve mi Jacob, 2
et Iſrael quem elegi.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

11 * ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ܂ ܘܠܝܬ ܐܚܪܝܢ ܠܒܪ ܡܢܝ. * ܐܢܐ ܚܘܝܬ ܘܦܪܩܬ. ܘܐܫܡܥܬ. ܘܠܝܬ
12
13 ܒܟܘܢ ܢܘܟܪܝܐ. ܘܐܢܬܘܢ ܣܗܕܝ ܐܢܬܘܢ܂ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܢܐ ܐܠܗܐ. * ܘܐܦ ܡܢ ܝܘܡܐ ܩܕܡܝܐ܂ ܐܢܐ
14 ܐܢܐ. ܘܠܝܬ ܕܡܦܨܐ ܡܢ ܐܝܕܝ. ܘܡܕܡ ܕܥܒܕ ܐܢܐ ܡܢܘ ܢܗܦܟܝܘܗܝ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܦܪܘܩܟܘܢ ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܡܛܠܬܟܘܢ ܫܕܪܬ ܠܒܒܠ. ܘܐܚܬܬ ܥܪܘܩܐ ܟܠܗܘܢ.
15 ܘܟܠܕܝܐ ܕܒܐܠܦܐ ܡܫܬܒܗܪܝܢ. * ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܩܕܝܫܟܘܢ. ܕܒܪܝܬ ܠܐܝܣܪܝܠ
16 ܡܠܟܟܘܢ: * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܝܗܒ ܐܘܪܚܐ ܒܝܡܐ. ܘܫܒܝܠܐ ܒܡܝܐ ܥܫܝܢܐ.
17 * ܕܡܦܩ ܡܪܟܒܬܐ ܘܪܟܫܐ ܘܚܝܠܐ ܥܫܝܢܐ. ܘܐܟܚܕܐ ܢܫܟܒܘܢ. ܘܠܐ ܢܩܘܡܘܢ.
18 ܘܢܕܥܟܘܢ ܐܝܟ ܫܪܓܐ ܕܡܬܬܦܬܦ. * ܠܐ ܬܬܕܟܪܘܢ ܩܕܡܝܬܐ. ܘܕܡܢ ܩܕܝܡ ܠܐ ܬܣܬܟܠܘܢ.
19 * ܗܐ ܥܒܕ ܐܢܐ ܚܕܬܐ. ܘܗܫܐ ܬܕܢܚ. ܘܬܕܥܘܢܗ. ܘܐܥܒܕ ܐܘܪܚܐ ܒܡܕܒܪܐ. ܘܢܗܪܘܬܐ
20 ܒܐܝܫܝܡܘܢ. * ܢܫܒܚܘܢܢܝ ܚܝܘܬܐ ܕܕܒܪܐ. ܝܪܘܪܐ ܘܒܢܬ ܢܥܡܝܬܐ. ܡܛܠ ܕܝܗܒܬ ܡܝܐ
21 ܒܡܕܒܪܐ. ܘܢܗܪܘܬܐ ܒܐܝܫܝܡܘܢ. ܕܢܫܬܐ ܥܡܝ ܓܒܝܐ. * ܥܡܐ ܗܢܐ ܕܐܬܩܢܝܬ ܠܝ ܢܫܬܘܢ.
22 * ܠܐ ܗܘܐ ܠܝ ܩܪܝܬ ܝܥܩܘܒ ܕܩܪܝܬܟ ܐܝܣܪܝܠ. * ܠܐ ܐܝܬܝܬ ܠܝ ܐܡܪܐ ܕܥܠܘܬܟ. ܘܒܕܒܚܝܟ
23
24 ܠܐ ܝܩܪܬܢܝ. ܠܐ ܫܥܒܕܬܟ ܒܩܘܪܒܢܐ. ܘܠܐ ܐܠܐܝܬܟ ܒܠܒܘܢܬܐ. * ܠܐ ܙܒܢܬ ܠܝ ܒܟܣܦܐ
ܩܢܝܐ ܕܒܣܡܐ. ܘܬܪܒܐ ܕܕܒܚܝܟ ܠܐ ܐܪܘܝܬܢܝ. ܐܠܐ ܫܥܒܕܬܢܝ ܒܚܛܗܝܟ. ܘܐܠܐܝܬܢܝ
25 ܒܥܘܠܟ. * ܐܢܐ ܐܢܐ ܕܡܥܛܐ ܐܢܐ ܥܘܠܟ ܡܛܠܬܝ. ܘܚܛܗܝܟ ܠܐ ܐܬܕܟܪ. * ܐܬܕܟܪܝܢܝ
26
27 ܢܬܕܝܢ ܐܟܚܕܐ. ܐܡܪ ܕܬܙܕܕܩ. * ܐܒܘܟ ܩܕܡܝܐ ܚܛܐ. ܘܫܠܝܛܢܝܟ ܐܥܠܘ ܒܝ.
28 * ܛܢܦܘ ܪܘܪܒܢܝܟ ܡܩܕܫܐ. ܢܬܠܬ ܠܝܥܩܘܒ ܠܚܪܡܐ. ܘܠܐܝܣܪܝܠ ܠܚܣܕܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܕ *

1 * ܗܫܐ ܫܡܥܢܝ ܝܥܩܘܒ ܥܒܕܝ. ܘܐܝܣܪܝܠ ܕܓܒܝܬܗ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
2 ܕܥܒܕܟ ܘܓܒܠܟ ܒܡܪܒܥܐ. ܘܥܕܪܟ. ܠܐ ܬܕܚܠ ܥܒܕܝ ܝܥܩܘܒ. ܘܐܝܣܪܝܠ ܕܓܒܝܬܗ.

Ego ſum Dominus, nec alius eſt præter me. 11
Ego indicavi, ſervavi, & enarravi, nec eſt 12
inter vos alienus : & vos teſtes mei eſtis, dicit
Dominus, & ego ſum Deus. A primo etiam 13
die ego ſum, nec eſt qui effugiat manus meas :
& quod ego facio, quis reſcindat? Sic di- 14
cit Dominus ſervator veſter, Sanctus Iſrae-
lis; Propter vos miſi Babelem, & adduxi
omnes profugas & Chaldæos qui de navibus
gloriantur. Ego ſum Dominus ſanctus veſter 15
qui creavi Iſraelem, rex veſter. Sic ait Do- 16
minus qui viam præbet in mari, & ſemitam
in aquis multis; Qui ejicit currus & equos, 17
& exercitum ingentem, & ſimul occumbunt,
neque reſurgent, ſed extinguuntur veluti lu-
cerna quæ crepitat. Ne recordemini prio- 18
rum, & quæ ab initio fuerunt, ne perpen-
datis. Ecce facturus ſum rem novam, mox 19
enaſcetur, & cognoſcetis eam : ſternam quo-
que viam in deſerto, & fluvios in Aſimon.
Laudabit me beſtia agri, canes ſylveſtres, & 20
pulli ſtruthionum, quòd aquas dederim in
deſerto, & fluvios in Aſimon, ad hoc ut bi-
beret populus meus electus, Populus iſte, 21
quem elegi mihi, biberent. Me nequaquam 22
invocâſti Jacob quem vocavi Iſraelem : Non 23
attuliſti mihi agnos holocauſtorum tuorum,
& ſacrificiis tuis non honorâſti me : non ſub-
egi te muneribus, nec fatigavi te thure : Non 24
emiſti mihi pecuniâ calamum aromaticum,
nec adipe ſacrificiorum tuorum inebriâſti
me : quin ſubegiſti me peccatis tuis, & ini-
quitate tuâ fatigâſti me. Ego ſum qui deleo 25
iniquitatem tuam, propter me, & peccato-
rum tuorum haud recordabor. Memor ſis 26
mei, judicemur ſimul, dico ut te juſtifices.
Primus *ille* pater tuus peccavit, principes tui 27
fraudulenter mecum egerunt, Prophanârunt 28
magnates tui Sanctuarium : *ideo* expoſui Ja-
cobum anathemati, & Iſraelem ignominiæ.

CAP. XLIV.

IGitur, audi me Jacob ſerve meus, & Iſra- 1
el quem elegi : Sic dicit Dominus qui te fe- 2
cit & formavit in utero, teque adjuvit; Ne
timeto ſerve meus Jacob, & Iſrael quē vocavi:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

11 * أنا هو الله * وليس يوجد من يخلص غيري * أنا أخبرت وخلصت وعبرت * ولم يكن
12
13 فيكم اله غريب * أنتم لي شهود * وأنا الرب الاله أيضا * منذ البدء أنا أنا * وليس يوجد
14 من يستنقذ من يدي * أصنع ومن يرد * هكذا يقول الرب الاله منقذكم قدوس
اسرائيل * من أجلكم أرسل الى بابل وآتي بجميع الهاربين * والكلدانيون يربطون في السفن *
15 * أنا الرب الاله قدوسكم * مطهر اسرائيل * ملككم * هكذا يقول الرب الاله المعطي طريقا
16
17 في البحر * وفي الماء القوي سبيلا * المخرج مركبات وفرسا وجمعا قويا * لكنهم رقدوا ولم يقوموا *
18 طفئوا مثل سراج مطفي * لا تذكروا الاوايل * ولا تفكروا في المبادي * ها أصنع
19
جديدات التي أخبركم بها الآن وتعرفوها * وأجعل في البرية طريقا * وفي العديمة الماء انهارا *
20 * تباركني وحوش الحقل * بنات آوي وبنات النعام * لأني أعطيت في البرية طريقا وانهارا في
21 العديمة الماء * لأسقي جنسي المختار * شعبي الذي اقتنيته ليخبروا بفضايلي * ألست الآن
22
23 دعوتك يا يعقوب * ولا أجعلك أن تتعب يا اسرائيل * أليس لي خراف قربانك * ولم تمجدني
24 بذبائحك * ولم أستعبدك بضحاياك * ولم أجعلك تعبانا للّبان * ولم تقتن لي بخورا بالفضة *
25 ولم أشته شحم ذبائحك * لكن بخطاياك وظلمك وقفت امامك * أنا هو أنا هو الممحي
26 خطاياك ولا أذكرها * وأنت فاذكر ونتحاكم * قل أنت آثامك أولا لكي تتبرر * آباؤكم
27
28 الأولون ورؤساؤكم أثموا الي * والرؤساء نجسوا اقداسي * فأسلمت يعقوب أن يهلك واسرائيل
1 للتعيير * * الفصل الرابع والأربعون * * والآن اسمع يا عبدي يعقوب
2 واسرائيل المحبوب لي الذي أنا اخترته [* MS:Ox. هكذا يقول الرب الذي صنعك وجبلك
في الرحم واعانك * لا خوف عليك يا عبدي يعقوب واسرائيل الذي اصطفيت *]

Ego ſum Deus, nec reperitur qui ſalvet 11
præter me. Ego indicavi, ſalvavi, & 12
declaravi, dum nullus exiſteret inter
vos deus alienus : vos eſtis mihi teſtes,
& ego quoque Dominus Deus. Inde à 13
principio ego ipſe ſum, neque reperitur
qui eripiat è manu mea : operor, & quis
prohibet? Sic dicit Dominus Deus re- 14
demptor veſter, Sanctus Iſraelis; Pro-
pter vos mittam in Babelem, & redu-
cam profugas omnes; Chaldæi verò li-
gabuntur in navibus. Ego Dominus Deus 15
ſanctus veſter emundans Iſraelem, rex
ſum veſter. Sic dicit Dominus Deus qui 16
dat viam in mari, & in aqua vehementi
ſemitam; Qui educit currus & equos, 17
turbamq; robuſtã; attamen occubuerunt,
nec reſurrexerunt, extincti ſunt veluti
lucerna extincta. Priorum ne recorde- 18
mini, & ne cogitetis de præcedentibus :
Ecce facturus ſum res novas, quas jam 19
indicabo vobis, & cognoſcetis: & diſpo-
nam in deſerto viã, & in aquis carente,
flumina. Benedicent mihi belluæ cam- 20
peſtres, canes ſylveſtres, & pulli ſtru-
thionum, quòd dederim in deſerto viã,
& fluvios in terra aquis carente ad præ-
bendũ potum generi meo ſelecto, Populo 21
meo quem poſſedi; quatenus prædicent
excellentias meas. Annon igitur vocavi 22
te O Jacob? neque permiſi ut fatigeris
O Iſrael. Annon mei ſunt agni oblationis 23
tuæ? attamen non glorificâſti me ſacrifi-
ciis tuis; non preſſi te ſervitute in victi-
mis tuis, neque laſſum te reddidi cauſâ
thuris : Non comparâſti mihi thus ar- 24
gento, neque concupivi adipem ſacrificio-
rum tuorum; tamen propter peccatũ tuũ
& perverſitatem tuã ſteti coram te. Ego 25
ſum, ego ſum qui deleo peccata tua, neque
recordor illorũ : Tu autem recordare, & 26
diſceptemus: dic tu primùm culpas tuas,
ut juſtificeris. Primi patres veſtri & 27
principes veſtri peccaverunt in me; Et 28
principes contaminaverunt ſancta mea :
icciřco tradidi Jacobũ ut periret, & Iſ-
raelem contumeliis.

CAP. XLIV.

JAm verò audi O Jacob ſerve mi, et Iſ- 1
rael mihi dilecte quẽ ego elegi: [MS.Ox. 2
Sic dicit Dominus qui fecit te, et in utero
te formavit, qui tibi auxiliatus eſt;
Ne timeas ſerve mi Jacob, & Iſrael
quem elegi:]

ישעיה : מד

effundam : aridam ſuper fluenta & ,ſitientem ſuper aquas effundam Quia
3 כִּי אֶצָּק־מַיִם עַל־צָמֵא וְנֹזְלִים עַל־יַבָּשָׁה אֶצֹּק
.tua germina ſuper meã benedictionem & ,tuũ ſemen ſuper meũ ſpiritum
רוּחִי עַל־זַרְעֶךָ וּבִרְכָתִי עַל־צֶאֱצָאֶיךָ׃
.aquarum rivulos juxta ſalices ſicut : herbam inter *in* germinabunt Et
4 וְצָמְחוּ בְּבֵין חָצִיר כַּעֲרָבִים עַל־יִבְלֵי־מָיִם׃
: Jahacob nomine in invocabit iſte & ,ego Domini ,dicet Iſte
5 זֶה יֹאמַר לַיהוָה אָנִי וְזֶה יִקְרָא בְשֵׁם־יַעֲקֹב
.cognominabit Iſrael nomine in & ,Domino ſua manu ſcribet iſte &
וְזֶה יִכְתֹּב יָדוֹ לַיהוָה וּבְשֵׁם יִשְׂרָאֵל יְכַנֶּה׃
Dominus ejus redemptor & ,Iſrael rex Dominus dixit Sic
6 כֹּה־אָמַר יְהוָה מֶלֶךְ־יִשְׂרָאֵל וְגֹאֲלוֹ יְהוָה
.Deus non me præter & ,noviſſimus ego & ,primus Ego :exercituum
צְבָאוֹת אֲנִי רִאשׁוֹן וַאֲנִי אַחֲרוֹן וּמִבַּלְעָדַי אֵין אֱלֹהִים׃
,mihi illud ordinabit & ,hoc annuntiabit & ,vocabit ego ſicut quis Et
7 וּמִי־כָמוֹנִי יִקְרָא וְיַגִּידֶהָ וְיַעְרְכֶהָ לִי
annuncient ,ſunt ventura quæ & ,*ventura* & : ſeculi populum *me ponere* à
מִשּׂוּמִי עַם־עוֹלָם וְאֹתִיּוֹת וַאֲשֶׁר תָּבֹאנָה יַגִּידוּ
,te feci audire *tunc* ex nonne : formidetis ne & ,timeatis Ne .eis
8 לָמוֹ׃ אַל־תִּפְחֲדוּ וְאַל־תִּרְהוּ הֲלֹא מֵאָז הִשְׁמַעְתִּיךָ
,*petra non &* ? me præter Deus eſt an ? mei teſtes vos & ,annunciavi &
וְהִגַּדְתִּי וְאַתֶּם עֵדָי הֲיֵשׁ אֱלוֹהַּ מִבַּלְעָדַי וְאֵין צוּר
eorũ concupiſcibilia &,*inanitas* ipſi omnes ſculptilis *Formatores ? novi* non
9 בַּל־יָדָעְתִּי׃ יֹצְרֵי־פֶסֶל כֻּלָּם תֹּהוּ וַחֲמוּדֵיהֶם
neque ,videbunt non ipſi eorum teſtes & : proderunt non
בַּל־יוֹעִילוּ וְעֵדֵיהֶם הֵמָּה בַּל־יִרְאוּ וּבַל־
ſculptile & ,Deum *formavit* Quis .confundentur ideo : cognoſcent
10 יֵדְעוּ לְמַעַן יֵבֹשׁוּ׃ מִי־יָצַר אֵל וּפֶסֶל
,afficientur pudore ejus ſocii omnes Ecce *.profuit* nihilum ad *: conflavit*
11 נָסָךְ לְבִלְתִּי הוֹעִיל׃ הֵן כָּל־חֲבֵרָיו יֵבֹשׁוּ
,ſtabunt ,ipſi omnes *congregabuntur* : hominibus ex ipſi artifices &
וְחָרָשִׁים הֵמָּה מֵאָדָם יִתְקַבְּצוּ כֻלָּם יַעֲמֹדוּ
,*dolabram* ferri Faber .ſimul afficientur pudore ,pavebunt
12 יִפְחֲדוּ יֵבֹשׁוּ יָחַד׃ חָרַשׁ בַּרְזֶל מַעֲצָד
illud operabitur & : illud figurabit malleis in & ,*carbone* in operabitur &
וּפָעַל בַּפֶּחָם וּבַמַּקָּבוֹת יִצְּרֵהוּ וַיִּפְעָלֵהוּ
bibit non *: vis* non & famelicus etiam ,ſuæ fortitudinis brachio in
בִּזְרוֹעַ כֹּחוֹ גַּם־רָעֵב וְאֵין כֹּחַ לֹא־שָׁתָה
illud delineabit ,lineam extendit *lignorum* Faber .*eſt defatigatus* & ,aquam
13 מַיִם וַיִּיעָף׃ חָרַשׁ עֵצִים נָטָה קָו יְתָאֲרֵהוּ
: illud deſignabit circino in & ,*aſciis in* illud faciet ,*tincto* filo in
בַשֶּׂרֶד יַעֲשֵׂהוּ בַּמַּקְצֻעוֹת וּבַמְּחוּגָה יְתָאֳרֵהוּ
hominis gloriam ſecundùm ,viri imaginem ſecundùm illud faciet &
וַיַּעֲשֵׂהוּ כְּתַבְנִית אִישׁ כְּתִפְאֶרֶת אָדָם
,*tirzah* tollet & ,cedros ſibi ſuccidendũ Ad .domum inhabitandũ ad
14 לָשֶׁבֶת בָּיִת׃ לִכְרָת־לוֹ אֲרָזִים וַיִּקַּח תִּרְזָה
.*vehet* pluvia & ,*ornum plantavit* : ſylvæ *lignis in ſibi* roborabit &,quercũ &
וְאַלּוֹן וַיְאַמֶּץ־לוֹ בַּעֲצֵי־יָעַר נָטַע אֹרֶן וְגֶשֶׁם יְגַדֵּל׃
etiam ,ſe calefaciet & ,eis ex ſumet & ,comburendum ad homini erit Et
15 וְהָיָה לְאָדָם לְבָעֵר וַיִּקַּח מֵהֶם וַיָּחָם אַף־
,ſe incurvabit & ,Deum operabitur etiam : panem coquet & ,ſuccendet
יַשִּׂיק וְאָפָה לָחֶם אַף־יִפְעַל־אֵל וַיִּשְׁתָּחוּ
in comburet ejus Medium .ei ſe incurvabit & ,ſculptile illud faciet
16 עָשָׂהוּ פֶסֶל וַיִּסְגָּד־לָמוֹ׃ חֶצְיוֹ שָׂרַף בְּמוֹ־
:ſaturabitur & ,aſſaturam aſſabit ,comedet carnem ejus mediũ ſuper ,igni
אֵשׁ עַל־חֶצְיוֹ בָּשָׂר יֹאכֵל יִצְלֶה צָלִי וְיִשְׂבָּע
.focum vidi ,me calefeci ,Euge ,dicet & ,ſe calefaciet etiam
אַף־יָחֹם וְיֹאמַר הֶאָח חַמּוֹתִי רָאִיתִי אוּר׃

Verſio VULG. LAT.

3 Effundam enim aquas ſuper ſitientem,
& fluenta ſuper aridam :
effundam ſpiritum meum
ſuper ſemen tuum, & benedictionem
meam ſuper ſtirpem
4 tuam. Et germinabunt
inter herbas,quaſi ſalices juxta
5 præterfluentes aquas. Iſte dicet ;
Domini ego ſum : & ille
vocabit in nomine Jacob, &
hic ſcribet manu ſuâ ; Domino:
& in nomine Iſrael aſſimilabitur.
6 Hæc dicit Dominus
rex Iſrael, & redemptor ejus
Dominus exercituũ ; Ego primus,
& ego noviſſimus,& abſque
7 me non eſt Deus. Quis ſimilis
meî ? vocet , & annuntiet :
& ordinem exponat mihi,
ex quo conſtitui populum
antiquum : ventura & quæ
futura ſunt annuntient eis.
8 Nolite timere, neque conturbemini
: ex tunc audire te feci,
& annuntiavi: vos eſtis teſtes
mei. Numquid eſt Deus abſque
me,& formator quem ego
9 non noverim ? Plaſtæ idoli omnes
nihil ſunt, & amantiſſima
eorum non proderunt eis.
Ipſi ſunt teſtes eorum, quia nõ
vident, neque intelligunt, ut
10 confundantur. Quis formavit
deum, & ſculptile conflavit
11 ad nihil utile? Ecce omnes
participes ejus confundentur:
fabri enim ſunt ex hominibus:
convenient omnes, ſtabunt &
pavebunt, & confundentur ſimul.
12 Faber ferrarius limâ operatus
eſt: in prunis & in malleis
formavit illud, & operatus
eſt in brachio fortitudinis
ſuæ:eſuriet & deficiet,non bibet
13 aquam, & laſſeſcet. Artifex
lignarius extendit normam,
formavit illud in runcina : fecit
illud in angularibus, & in
circino tornavit illud: & fecit
imaginem viri, quaſi ſpecioſũ
hominem habitantem in domo.
14 Succîdit cedros, tulit ilicem,
& quercum,quæ ſteterat
inter ligna ſaltûs: plantavit pinum,
15 quam pluvia nutrivit. Et
facta eſt hominibus in focum:
ſumpſit ex eis , & calefactus
eſt : & ſuccendit, et coxit panes:
de reliquo autê operatus
eſt deũ,et adoravit: fecit ſculptile,
et curvatus eſt ante illud.
15 Medium ejus combuſſit
igni , et de medio ejus carnes
comêdit : coxit pulmentum,
et ſaturatus eſt, et calefactus
eſt,et dixit ; Vah, calefactus
ſum,vidi focum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

3 Ὅτι ἐγὼ δώσω ὕδωρ ἐν δίψει τοῖς πορευομένοις
ἐν ἀνύδρῳ, ἐπιθήσω τὸ πνεῦμά μου
ἐπὶ τὸ σπέρμα σου, ϗ τὰς εὐλογίας μου
4 ἐπὶ τὰ τέκνα σου, Καὶ ἀνατελοῦσιν (δ)
ὡς ἀναμέσον ὕδατος χόρτος, καὶ ὡς ἰτέα
5 ἐπὶ (*) παραρρέον ὕδωρ. Οὗτος ἐρεῖ, Τοῦ θεοῦ
εἰμι, καὶ οὗτος (ε) βοήσεται ἐπὶ τῷ ὀνόματι
Ἰακώβ· ϗ ἕτερος (ζ) ἐπιγράψει χειρὶ
αὐτοῦ, Τοῦ θεοῦ εἰμι, ϗ ἐπὶ τῷ ὀνόματι Ἰσραὴλ
6 βοήσεται. Οὕτως λέγει ὁ θεὸς ὁ βασιλεὺς
(η) Ἰσραὴλ, ϗ ῥυσάμενος αὐτὸν
θεὸς σαβαὼθ, Ἐγὼ πρῶτος, ϗ ἐγὼ μετὰ
7 ταῦτα· πλὴν ἐμοῦ οὐκ ἔστι θεός. Τίς ὥσπερ
ἐγώ; (θ) στήτω, ϗ καλεσάτω, ϗ ἀναγγειλάτω,
ϗ ἑτοιμασάτω μοι ἀφ' οὗ ἐποίησα
ἄνθρωπον εἰς τὸν αἰῶνα, ϗ τὰ ἐπερχόμενα
πρὸ τοῦ ἐλθεῖν ἀναγγειλάτωσαν ὑμῖν.
8 Μὴ παρακαλύπτεσθε, (ι) μηδὲ πλανᾶσθε·
οὐκ ἀπ' ἀρχῆς ἠνωτίσασθε, ϗ ἀπήγγειλα
ὑμῖν; μάρτυρες ὑμεῖς ἐστε, εἰ ἔστι
9 θεὸς πλὴν ἐμοῦ. Καὶ οὐκ (*) ἤκουσαν τότε οἱ
πλάσσοντες, ϗ (κ) οἱ γλύφοντες, πάντες
μάταιοι, (λ) ποιοῦντες τὰ καταθύμια αὐτῶν,
ἃ οὐκ ὠφελήσει αὐτούς· ἀλλὰ αἰσχυνθήσονται
10 (μ) Οἱ πλάσσοντες θεὸν, ϗ γλύφοντες
11 (ν) πάντες ἀνωφελῆ, Καὶ πάντες
ὅθεν ἐγένοντο ἐξηράνθησαν. ϗ κωφοὶ ἀπὸ
ἀνθρώπων συναχθήτωσαν πάντες, ϗ
(ξ) στησάτωσαν ἅμα· ϗ ἐντραπήτωσαν,
12 ϗ αἰσχυνθήτωσαν ἅμα· Ὅτι ὤξυνε τέκτων
σίδηρον, σκεπάρνῳ εἰργάσατο αὐτὸ,
ϗ ἐν τερέτρῳ (ο) ἔστησεν αὐτὸ, ϗ εἰργάσατο
αὐτὸ ἐν τῷ βραχίονι τῆς ἰσχύος αὐτοῦ,
ϗ πεινάσει, ϗ ἀσθενήσει, ϗ οὐ μὴ πίῃ ὕδωρ.
13 Ἐκλεξάμενος τέκτων ξύλον, ἔστησεν
αὐτὸ ἐν μέτρῳ, ϗ ἐν κόλλῃ ἐρρύθμισεν αὐτὸ,
(π) ϗ ἐποίησεν αὐτὸ ὡς μορφὴν ἀνδρὸς,
ϗ ὡς ὡραιότητα ἀνθρώπου, στῆσαι αὐτὸ
14 ἐν οἴκῳ. (ρ) Ἔκοψε ξύλον ἐκ τοῦ δρυμοῦ,
ὃ ἐφύτευσεν κύριος, (σ) πίτυν, ϗ ὑετὸς
15 ἐμήκυνεν, Ἵνα ᾖ ἀνθρώποις εἰς καῦσιν·
ϗ λαβὼν ἀπ' αὐτοῦ, ἐθερμάνθη, ϗ καύσαντες
ἔπεψαν ἄρτους ἐπ' (τ) αὐτῶν· τὸ
δὲ λοιπὸν (υ) εἰργάσαντο θεοὺς, ϗ προσκυνοῦσιν
16 (φ) αὐτοῖς· Οὗ τὸ ἥμισυ αὐτοῦ κατέκαυσεν
ἐν πυρὶ, (χ) ϗ ἐπὶ τοῦ ἡμίσους αὐτοῦ
ἔπεψεν ἐν τοῖς ἄνθραξιν ἄρτους, ϗ ἐπ'
αὐτοῦ κρέας ὀπτήσας ἔφαγε, ϗ ἐνεπλήσθη, καὶ
θερμανθεὶς εἶπεν, Ἡδύ μοι, ὅτι ἐθερμάνθην,
ϗ εἶδον πῦρ.

Quia ego dabo aquam in ſiti iis, 3
qui ambulant in inaquoſa : imponam
ſpiritum meum ſuper ſemen
tuum, & benedictiones meas ſuper
filios tuos. Et orientur, ut in 4
medio aquæ fœnum, & ſicut ſalix
ſuper præterfluentem aquam.
Iſte dicet, Dei ſum : & iſte clamabit 5
in nomine Jacob : & alius
ſcribet in manu ſua, Dei ſum:
& in nomine Iſrael clamabit. Sic 6
dicit Deus rex Iſrael, & qui eruit
eum, Deus Sabaoth ; Ego primus,
& ego poſt hæc : præter me
non eſt Deus. Quis ſicut ego ? 7
Stet, & vocet , & annuntiet,
& paret mihi, ex quo feci hominem
in ſeculum : & futura, antequàm
veniant, annuntient vobis.
Ne abſcondamini, neque 8
erretis. Nonne à principio auribus
percepiſtis, & annuntiavi
vobis ? Teſtes vos eſtis , ſi eſt
Deus præter me. Et (b) non audierunt 9
tunc, qui formabant, &
ſculpebant,omnes vani, facientes
deſideria ſua, quæ non proderunt
(c) ipſis : ſed confundentur, Qui 10
plaſmant Deum, & omnes ſculpentes
inutilia : Et (d) omnes, 11
unde facti ſunt, exaruerunt, &
ſurdi ex hominibus. Congregentur
omnes, & ſtent ſimul, &
confundantur, & erubeſcant ſimul :
Quoniam acuit faber ferrum, 12
limâ operatus eſt illud, &
in terebro ſtatuit illud, & operatus
eſt illud in brachio fortitudinis
ſuæ : & eſuriet, & infirmus
erit, & non bibet aquam.
Eligens faber lignum, ſtatuit illud 13
in (e) menſura, & in (f)
glutine compoſuit illud, & fecit
ipſum quaſi formam viri, & tanquam
ſpeciem hominis, ad ſtatuendum
illud in domo. (g) Succîdit 14
lignum de ſylva , quod
plantavit Dominus , pinum, &
pluvia produxit in longitudinem,
ut ſit hominibus ad accendendum 15
: & ſumens ex eo,
calefactus eſt: & ſuccendentes coxerunt
panes ſuper ea. Reſiduum
autem fabricati ſunt deos,
& adorant (h) eos : Cujus dimidium 16
ejus combuſſit in igni, &
ſuper dimidium ejus coxit in carbonibus
panes, & ſuper illud aſſans
carnes comêdit, & ſaturatus
eſt, & calefactus dixit ; Suave
mihi, quia calefactus ſum, & vidi
ignem.

MS. A. (δ) ὡσεὶ χόρτος ἀναμέσον ὕδατος, (*) παραρρέον (ε) ἐρεῖ ἐπὶ τῷ ὀνόματι Ἰακώβ· (ζ) ἐπιγράψει, Τοῦ θεοῦ εἰμι, ἐπὶ τῷ ὀνόματι Ἰσραήλ. Οὕτως (η) τοῦ Ἰσραὴλ, ὁ ῥυσάμενος (θ) στήτω, καλεσάτω, ϗ ἑτοιμασάτω (ι) οὐκ ἀπ' ἀρχῆς (*) ἦσαν (κ) γλύφοντες, (λ) οἱ ποιοῦντες (μ) πάντες Οἱ (ν) ἀνωφελῆ, (ξ) στήσονται ἅμα· ἐντραπήτωσαν, (ο) ἔτρησεν αὐτὸ, εἰργάσατο (π) ἐποίησεν (ρ) Ὃ ἔκοψεν (σ) ϗ ὑετὸς (τ) αὐτοῦ· (υ) εἰργάσατο εἰς θεοὺς, (φ) αὐτούς· (χ) καὶ καύσαντες ἔπεψαν ἄρτους ἐπ' αὐτῶν, καὶ ἐπ' αὐτοῦ

תרגום יונתן TARGUM JONATHAN.

3 אֲרֵי כְּמָא דְמִתְיַהֲבִין מַיָא עַל אֲרַע בֵּית צַחֲוָנָא וּמִתְנַגְדִין עַל יַבֶּשְׁתָּא כֵּן אֶתֵּן רוּחַ
4 קוּדְשִׁי עַל בְּנָךְ וּבִרְכָתִי עַל בְּנֵי בְנָךְ׃ וְיִתְרַבּוּן צַדִיקַיָא רַכִּיכִין וּמְפַנְקִין כְּלַבְלְבֵי
5 עֲסַב כְּאִילָן דִמְשַׁלַּח שָׁרְשׁוֹהִי עַל נֶגְדִין דְמַיִין׃ דֵין יֵימַר מִדַחֲלַיָא דַיְיָ אֲנָא וְדֵין
6 יְצַלֵּי בְשׁוּם יַעֲקֹב וְדֵין יְקָרֵיב קוּרְבָּנֵיהּ קֳדָם יְיָ וּבִשְׁמָא דְיִשְׂרָאֵל יִתְקָרֵיב׃ כִּדְנַן
אֲמַר יְיָ מַלְכָּא דְיִשְׂרָאֵל וּפָרְקֵיהּ יְיָ צְבָאוֹת אֲנָא הוּא דְמִלְקַדְמִין אַף עָלְמֵי עָלְמַיָא
7 דִילִי אִנוּן וּבַר מִנִי לֵית אֱלָהּ׃ וּמַן כְּוָתִי דִי עַרְעַנָה וִיחַוֵינָהּ וִיסַדְרִנַהּ קֳדָמַי
8 מִשַׁוְיוּתִי עַמָא דְמִן עָלְמָא וּדְאָתְיָן וְדַעֲתִידִין לְמֵיתֵי יְחַוּוּן לָנָא׃ לָא תִדְחֲלוּן
וְלָא תִתַּבְּרוּן הֲלָא מִכְּבַן בַּסַּרְתָּךְ וְחַוֵיתִי וְאַתּוּן סָהֲדִין קֳדָמַי הַאִית אֱלָהָא בַּר מִנִי
9 וְלֵית דְתַקִּיף אֱלָהֵן דְמִן קֳדָמַי מִתְיְהֵב לֵיהּ תְּקוֹף׃ עָבְדֵי צַלְמַיָא כּוּלְהוֹן לְמָא
וּפָלְחֵיהוֹן דְלָא יַהֲנוּן לְהוֹן וְסָהֲדִין אִנוּן בְּנַפְשָׁתְהוֹן דְלָא חָזָן וְלָא יָדְעִין בְּדִיל דְיִבְהֲתוּן׃
10 11 מַן עֲבַד דַחֲלָא וְצַלְמָא אַתִּיךְ בְּדִיל דְלָא לַהֲנָאָה׃ הָא כָל פָּלְחֵיהוֹן יִבְהֲתוּן וְאוּמָנִין
12 עוֹבְדָנִין מִבְּנֵי אֱנָשָׁא יִתְכַּנְשׁוּן כּוּלְהוֹן יְקוּמוּן יִתַּבְרוּן יִבְהֲתוּן כַּחֲדָא׃ נַפָּחָא מִבַּרְזְלָא
חֲצִינָא עָבֵיד וְנָפַח נוּר בְּשִׁיחוּרִין וּבְמַקוּבִין מַתְקֵיף לֵיהּ וְעָבֵיד לֵיהּ בִּתְקוֹף חֵילֵיהּ
דְאִם יִכְפַּן עַבְדֵיהּ וְלָא יֵיכוּל לָא יְהֵי בֵיהּ חֵיל וְאִם יִצְחֵי וְלָא יִשְׁתֵּי מַיָא יְהֵי מְשַׁלְהֵי׃
13 נַגַּר אָעִין נָפֵיץ בְּחוּטָא מְסַר לֵיהּ בְּמַשְׁקוּלְתָּא מְנַוֵי לֵיהּ בְּאִזְמְלַיָא וּבִנְצוּרִין מְאַחֵד לֵיהּ
14 וְעָבֵיד לֵיהּ כִּדְמוּת גְבַר כְּתוּשְׁבַּחַת אִתְּתָא לְמִתַּב בְּבֵיתָא׃ לְמִקַץ לֵיהּ אַרְזִין וּנְסִיב תְּרַז
15 וּבְלוּט וּמַתְקִיף לֵיהּ בְּאָעֵי חוּרְשָׁא נְצַב אוּרְנָא וּמִטְרָא יְרַבֵּי׃ וַהֲוֵי לֶאֱנָשָׁא לְאַדְלָקָא וּנְסִיב
מִנְהוֹן וּשְׁחֵין אַף אָזֵא וְאָפֵא לְחֵם אַף עָבְדֵיהּ דַחֲלָא וְסָגֵיד אַתְכֵיהּ צַלְמָא וּבָעֵא מִנֵיהּ׃
16 פַּלְגֵיהּ אוֹקִיד בְּנוּרָא עַל פַּלְגֵיהּ בִּסְרָא אָכֵיל טְוָה טְוֵי וּסְבַע אַף שְׁחֵין וַאֲמַר אָח
שְׁחֵינִית חֲזֵיתִי נוּר׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quia ſicut dantur aquæ ſuper terram ſitientem,& fluunt ſuper aridam ; ſic 3
dabo ſpiritum ſanctum meum ſuper filios tuos , & benedictionem meam
ſuper filios filiorum tuorum. Et creſcent juſti & erunt teneri, & delicati 4
ſicut germen herbæ , ſicut arbor quæ mittit radices ſuas juxta fluentes
aquas. Hic dicet,De timentibus Dominum ego ſum ; & hic orabit in 5
nomine Jacob ; & iſte offeret oblationem ſuam coram Domino ; & in nomine
Iſrael applicabitur. Hæc dicit Dominus rex Iſrael, & redemptor 6
ejus Dominus exercituum:Ego ſum ab initio ; *etiam* ſecula ſeculorum mea
ſunt,& abſque me non eſt Deus. Et quis eſt ſicut ego,qui vocet & annuntiet 7
illud , & ordinet illud coram me ? ex quo poſui populum qui à ſeculo
eſt,& quæ ventura ſunt,& futura annuntient nobis. Ne timeatis neque 8
conſternemini ; an non ex illo tempore annuntiavi tibi & indicavi? & vos
teſtes eſtis coram me;num ſit Deus præter me;& num ſit fortis niſi is cui datur
fortitudo à facie mea. Qui ſimulacra faciunt, omnes ſunt vanitas, & 9
colunt ea quæ ſibi non proderunt ; & teſtes ſunt ſibimet quòd non vident
neque intelligunt, eò ut confundantur. Quis fecit deum & ſimulacrum 10
conflavit ad nihil utile ? Ecce omnes cultores eorum confundentur,& artifices 11
operarii ex filiis hominum ; congregentur univerſi, ſtent, conterantur,
confundantur ſimul. Sufflator ex ferro bipennim facit ; & exſufflat ignem 12
in carbonibus : & malleis confirmat illud, & facit illud totis viribus
ſuis : quòd ſi eſurierit qui fecit illud, & non comederit , non erit in
eo virtus ; & ſi ſitierit & non biberit aquas , erit laſſus. Faber lignarius 13
extendit lineam,ſerrat illud perpendiculo, dolat illud *dolabris*, & in
circino format illud ; et facit illud in ſimilitudinem viri, et juxta decorem
mulieris , ut habitet in domo. Ut ſuccidat ſibi cedros, et tulit ilicem 14
et quercum , et apprehendit ſibi ligna in ſaltu : plantavit pinum quam
pluvia nutrit. Et facta eſt homini ad ſuccendendum : et ſumpſit ex *eis* 15
et calefactus eſt ; et etiam ſuccendit et coxit panem. Facit quoque ex
illo deum et adorat conflatile ſimulacrum, et deprecatur illud. Dimidium 16
ejus ſuccendit igni ; ſuper dimidio ejus carnem comedit ; aſſavit
aſſaturam, et ſatiatus eſt : calefactus quoque eſt : et dixit , Vah incalui,
vidi ignem.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܡܛܠ ܕܝܗܒ ܐܢܐ ܡܝܐ ܠܐܬܪܐ ܨܗܝܐ܂ ܘܢܗܪܘܬܐ ܒܝܒܫܐ܂ ܐܫܘܕ ܪܘܚܝ ܥܠ ܙܪܥܟ܂ ܘܒܘܪܟܬܝ 3
ܥܠ ܒܢܝܟ܂ * ܘܢܕܥܘܢ ܡܢ ܒܝܬ ܥܣܒܐ ܐܝܟ ܚܠܦܐ ܕܥܠ ܝܒܠܐ ܕܡܝܐ܂ * ܗܢܐ 4 5
ܢܐܡܪ ܕܡܪܝܐ ܐܢܐ܂ ܘܗܢܐ ܢܩܪܐ ܒܫܡܗ ܕܝܥܩܘܒ܂ ܘܗܢܐ ܢܟܬܘܒ ܐܝܕܗ ܠܡܪܝܐ܀
ܘܒܫܡܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܢܬܟܢܐ܂ * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܠܟܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܘܦܪܘܩܗ܂ ܡܪܝܐ 6
ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ܂ ܐܢܐ ܐܢܐ ܩܕܡܝܐ܂ ܘܐܢܐ ܐܢܐ ܐܚܪܝܐ܂ ܘܠܒܪ ܡܢܝ ܠܝܬ ܐܠܗܐ܂
* ܘܡܢܘ ܕܐܟܘܬܝ܂ ܢܩܪܐ ܘܢܬܛܝܒ ܘܢܚܘܐ܂ ܡܢ ܕܣܡܬ ܥܡܐ ܠܥܠܡ܂ ܘܐܬܘܬܐ ܕܐܬܝܢ 7
ܢܚܘܘܢ܂ * ܠܐ ܬܕܚܠܘܢ ܘܠܐ ܬܬܪܗܒܘܢ܂ ܠܐ ܐܫܡܥܬܟܘܢ ܡܢ ܩܕܝܡ܀ ܘܚܘܝܬܟܘܢ 8
ܘܐܢܬܘܢ ܣܗܕܝ܂ ܕܠܝܬ ܐܠܗܐ ܠܒܪ ܡܢܝ܀ ܘܠܝܬ ܕܥܫܝܢ ܕܠܐ ܝܕܥ ܐܢܐ܂ * ܣܪܝܩܝܢ 9
ܐܢܘܢ܀ ܟܠܗܘܢ ܐܘܡܢܐ ܕܥܒܕܝܢ ܨܠܡܐ܂ ܘܠܝܬ ܝܘܬܪܢܐ ܒܥܒܕܝܗܘܢ ܕܪܓܝܘ ܠܡܥܒܕ܂
ܘܗܢܘܢ ܐܘܡܢܐ ܕܥܒܕܝܢ ܐܢܘܢ܀ ܕܠܐ ܚܙܝܢ܂ ܘܠܐ ܫܡܥܝܢ ܘܠܐ ܝܕܥܝܢ܂ * ܡܛܠ ܗܢܐ 10
ܢܒܗܬܘܢ ܐܝܠܝܢ ܕܥܒܕܝܢ ܐܠܗܐ܂ ܘܢܣܟܝܢ ܢܣܟܐ ܕܠܝܬ ܒܗ ܝܘܬܪܢܐ܂ * ܗܐ ܟܠܗܘܢ 11
ܐܘܡܢܝܗܘܢ܀ ܚܪܝܫܝܢ ܐܢܘܢ ܡܢ ܒܢܝܢܫܐ܂ ܢܬܟܢܫܘܢ ܟܠܗܘܢ܂ ܘܢܩܘܡܘܢ܂ ܘܢܒܗܬܘܢ
ܘܢܬܟܦܪܘܢ ܐܟܚܕܐ܂ * ܕܚܪܦ ܦܪܙܠܐ ܢܓܪܐ܀ ܘܒܡܪܓܐ ܦܣܠܗ܂ ܘܒܐܙܡܠܐ ܓܠܦܗ܂ 12
ܘܥܒܕܗ ܒܚܝܠܐ ܕܕܪܥܗ܂ ܐܦ ܟܦܢ ܐܦ ܨܗܐ ܘܠܐ ܫܬܐ ܡܝܐ ܘܡܬܡܓܪ܂ * ܓܒܐ ܢܓܪܐ 13
ܩܝܣܐ ܘܡܫܚܗ܂ ܘܕܒܩܗ ܒܕܒܩܐ܂ ܘܓܠܦܗ܂ ܘܥܒܕܗ ܕܡܘܬܐ ܕܓܒܪܐ܂ ܐܝܟ
ܫܘܦܪܐ ܕܒܪܢܫܐ܂ * ܘܐܩܝܡܗ ܒܒܝܬܐ ܩܝܣܐ ܕܦܣܩܗ ܡܢ ܥܒܐ܀ ܕܡܛܪܐ ܐܪܒܝܗ܂ 14
ܕܢܗܘܐ ܠܐܢܫܐ ܠܡܘܩܕܐ܂ * ܘܢܣܒܘ ܡܢܗ ܘܫܚܢܘ܂ ܘܐܦܘ ܠܚܡܐ܂ ܘܐܦ ܥܒܕܘ 15
ܐܠܗܐ܂ ܘܣܓܕܘ ܠܗ܂ ܥܒܕܘ ܨܠܡܐ܂ ܘܣܓܕܘ ܠܗ܂ * ܦܠܓܗ ܐܘܩܕܘ 16
ܒܢܘܪܐ܀ ܘܒܣܪܐ ܥܠ ܓܘܡܪܘܗܝ ܛܘܝܘ ܘܐܟܠܘ ܘܣܒܥܘ܂ ܘܐܦ ܫܚܢܘ܂ ܘܐܡܪܘ
ܐܚ ܫܚܢܬ ܘܚܙܝܬ ܢܘܪܐ܂

Quia daturus ſum aquas in loco ſitibundo, & 3
fluenta in arido : effundam ſpiritum meum
ſuper ſemen tuum, & benedictiones meas ſu-
per filios tuos : Et egerminabunt è media 4
herba ſicut ſalix quæ eſt ſecus rivos aquarum.
Hic dicet, Domini ſum ; alius vocabit no- 5
men Jacobi, alius proprium chirographum
Domino ſubſcribet, & Iſraelis nomine ſe
nuncupabit. Sic ait Dominus rex Iſraelis 6
& redemptor ejus, cujus nomen eſt Dominus
potens, Ego ſum primus & ego ſum ultimus, 7
nec ullus eſt Deus præter me. Et quiſquis eſt
mihi ſimilis, clamet, inſtruat ſe & indicet *res*
actas ex quo poſui populum in æternum : &
ſigna ventura indicent. Ne timeatis, neque 8
paveatis, nonne jampridem vobis enarravi,
& indicavi (vos teſtes mei eſtis) quòd nul-
lus ſit Deus præter me, nec ullus extet potens
quem non cognoſcam ? Vani ſunt omnes ar- 9
tifices qui componunt idola, nec ullum eſt
emolumentum in opſiciis quæ fabricare cu-
pierunt ; ipſi enim artifices qui fabricant ea,
teſtantur ea nec videre, nec audire, nec cog-
noſcere. Propterea pudefiant qui deos fa- 10
bricant, & fuſilia ſculpunt in quibus nullum
eſt emolumentum. En omnes eorum fabri 11
muti : (*incenſati*) ſunt præ *cunctis* homini-
bus, congregent ſe omnes, ſtent, erubeſcant,
& pudefiant ſimul. Nam ferrum exacuit fa- 12
ber lignarius, tum dolabrâ complanat illud,
ſcalpro incîdit, & brachii ſui conatu effor-
mat : fami etiam ſitique laborat, aquam
non bibit, & elanguet. Faber lignarius eli- 13
git lignum, ungitque illud, glutine compin-
git, ſculpit, formatque in effigiem virilem,
ſpeciem referens humanam : Tum collocat 14
in æde lignum è ſylva exciſum, quod pluviâ
nutritum fuerat, ut homini inſerviret ad com-
burendum : Ex hoc inquam ſumentes, par- 15
tim calefaciunt *furnum*, & panem coquunt ;
partim fabricant deum, & adorant illum ; for-
mant ſculptile, & adorant illud. Mediam ejus 16
partem igne comburunt, carnem aſſant ad
prunas ejus, comedunt, ſaturantur, atque
etiam calefiunt ; tum dicunt, Euge, calefeci me,
& vidi ignem:

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* اني اعطيكم ماء في العطش السالكين في عدم الماء * واضع روحي على زرعك * 3
وبركاتي على اولادك * فيشرقون مثل عشب وسط الماء * ومثل الصفصاف على الماء الجاري * 4
* هذا يقول لله انا * وهذا يقول باسم يعقوب * وآخر يكتب لله انا باسم اسرايل * هكذا 5 6
يقول الرب الاله ملك اسرايل الذي نجاه * اله الجيوش * انا الاول وانا بعد هذا * وليس
يوجد اله غيري * من مثلي انا ليقف ويدعوا ويخبر ويهيي لي منذ صنعت الانسان 7
الى الابد * وليخبروكم بالاتيات قبل ان تاتي لا يخفوها * اما سمعتم منذ البدو واخبرتكم * 8
وانتم شهود انتم * هل يوجد اله سواي * ولم تسمعوا حينيذ * الجابلون والناحتون 9
كلهم باطلون * يصنعون اختياراتهم التي لا تنفعهم * لكن يخزي جميع الذين 10
يجبلون الها * والناحتون ما لا ينفع * والجميع من حيث صاروا ييبسوا * والصم من 11
الناس * ليجتمعوا جميعا وليقفوا معا * ليخجلوا ويخزوا * لان النجار حد حديدا وعمله 12
بفاس ويقص بمنقار * وعمله بذراع قوته * ويجوع ويضعف ولا يشرب ماء * خشبة اختارها 13
النجار * واقامها بمقدار * وسواها بالغري * وصنعها مثل شكل رجل * ليقيمها مثل بهاء
انسان في بيت * الخشبة التي قطعها من الغيضة * هذه التي غرسها الرب * وطولها المطر 14
كي تكون للناس للحريق * واخذ منها فاصطلى * فاحرقوها وخبزوا خبزا عليها * 15
وبقيتها عملوه الهة وسجدوا لهم * الذي نصفها احرقوه بالنار * فاحرقوه وخبزوا خبزا 16
عليه * وعليه شووا لحما واكلوه * وامتلى واصطلى وقال * لذيذ لي لاني اصطليت
ونظرت النار *

Equidem aquam in ſiti præbebo vobis 3
qui ambulatis in loco aquis carente ,
ponamque ſpiritum meum ſuper ſemen
tuum ; & benedictiones meas ſuper filios
tuos : Adeoque exorientur velut herba 4
in mediis aquis, & ut ſalices ſecus aquam
decurrentem. Alius dicet ; Dei ſum 5
ego : alius dicet, Sub nomine Jacobi :
alius autem ſcribet , Dei ſum ego, ſub
nomine Iſraelis. Sic dicit Dominus 6
Deus rex Iſraelis, qui ſalvavit eum,
Deus exercituum ; Ego ſum primus , &
ego his poſterior , neque reperitur Deus
præter me. Qui ſimilis eſt mihi, ſtet, 7
vocet, annuntiet , diſponatque mihi ex
quo hominem condidi in æternum uſ-
que ; indicentque vobis ventura ante-
quam eveniant, nec celent ea. Annon au- 8
diſtis inde à principio, & ego vobis in-
dicavi? voſque metipſi teſtes eſtis num re-
periatur De⁹ præter me ? at non audiſtis
tunc. Formatores & ſculptores omnes 9
vani ſunt , facientes voluntates ſuas
quæ nihil proſunt eis. Ergò pudefiant 10
omnes qui deum formant, & qui ſcul-
punt rem inutilem, Et omnes ex quo facti 11
ſunt, areſcant , & quidem bruti inter
homines : congregentur omnes, & ſimul
conſiſtant, ut pudefiant & erubeſcant.
Nam faber lignarius acuminato ferro, 12
deum illum ſecuri aptat, tum ſcalpro in-
cîdit, & brachio ſui roboris facit (inte-
rim eſurit, languet, nec bibit aquam) Li- 13
gnum videlicet quod eligit faber ligna-
rius, cum proportione componit, & glu-
tine aptat ; tum reddit illud ſimile fi-
guræ viri, ut ſtatuat illud juxta pul-
chritudinem hominis in æde. Ejus li- 14
gni quod amputavit è ſylva, illius
inquam quod Dominus plantaverat, quod
pluvia longum reddiderat , quatenus
uſus eſſet hominibus ad comburendum ;
Partem accipiens calefacit ſeſe, & com- 15
burentes eam, panem coquunt ſuper eam :
reſiduam verò partem ipſius componunt
in deos, & adorant illos. Cujus dimi- 16
diam partem igne comburunt ; com-
burentes , panem coquunt ad prunas
ejus, carnem aſſant, comeduntque . poſt-
quam ſaturatus eſt , & calefecit ſeſe,
ait ; Jucundum mihi eſt calefeciſſe me &
ignem vidiſſe :

ישעיה : מה

, ei ſe incurvabit : ſuum ſculptile in *fecit* Deum in ejus reſiduum Et
17 וּשְׁאֵרִיתוֹ לְאֵל עָשָׂה לְפִסְלוֹ יִסְגּוֹד־־לוֹ
meus Deus quia , me Libera : dicet & , eum *ad* orabit & , *ſe proſternet* &
וְיִשְׁתַּחוּ וְיִתְפַּלֵּל אֵלָיו וְיֹאמַר הַצִּילֵנִי כִּי אֵלִי
videndo à oblevit quia , intellexerunt neque , cognoverunt Non .tu
18 אָתָּה׃ לֹא יָדְעוּ וְלֹא יָבִינוּ כִּי טַח מֵרְאוֹת
, ſuum cor ad reducet non Et .eorum corda *intelligendo ab* , eorum oculos
19 עֵינֵיהֶם מֵהַשְׂכִּיל לִבֹּתָם׃ וְלֹא־יָשִׁיב אֶל־לִבּוֹ
combuſſi ejus Dimidium : dicendo , intelligentiam neque , ſcientiam nec
וְלֹא דַעַת וְלֹא־תְבוּנָה לֵאמֹר חֶצְיוֹ שָׂרַפְתִּי
, carnem *aſſabo* : panem ejus carbones ſuper coxi etiam & , igni in
בְמוֹ־אֵשׁ וְאַף אָפִיתִי עַל־גֶּחָלָיו לֶחֶם אֶצְלֶה בָשָׂר
ligni *ramo* , faciam abominatione pro ejus reliquum & *: comedam* &
וְאֹכֵל וְיִתְרוֹ לְתוֹעֵבָה אֶעֱשֶׂה לְבוּל עֵץ
non & : eum fecit declinare ſeductum cor , cinerem *Paſcens* .me incurvabo
20 אֶסְגּוֹד׃ רֹעֶה אֵפֶר לֵב הוּתַל הִטָּהוּ וְלֹא־
? mea dextera in mendacium Nonne : dicet nec , ſuam animam liberabit
יַצִּיל אֶת־נַפְשׁוֹ וְלֹא יֹאמַר הֲלוֹא־שֶׁקֶר בִּימִינִי׃
: tu meus ſervus quoniam , Iſrael & , Jahacob horum Memento
21 זְכָר־־אֵלֶּה יַעֲקֹב וְיִשְׂרָאֵל כִּי עַבְדִּי־־אָתָּה
Delevi .mei obliviſcaris ne , Iſrael , *tu mihi* ſervus , te formavi
22 יְצַרְתִּיךָ עֶבֶד־לִי אַתָּה יִשְׂרָאֵל לֹא תִנָּשֵׁנִי׃ מָחִיתִי
, me ad revertere : tua peccata nubem veluti & , *tuas prævaricationes* nubem ut
כָעָב פְּשָׁעֶיךָ וְכֶעָנָן חַטֹּאותֶיךָ שׁוּבָה אֵלַי
jubilate : Dominus fecit quoniam , cœli *Ovate* .te redemi quia
23 כִּי גְאַלְתִּיךָ׃ רָנּוּ שָׁמַיִם כִּי־־עָשָׂה יְהוָה הָרִיעוּ
: ea in *lignum omne* & , ſylva : *præconium* montes clamate , terræ inferiora
תַּחְתִּיּוֹת אֶרֶץ פִּצְחוּ הָרִים רִנָּה יַעַר וְכָל־עֵץ בּוֹ
dixit Sic .gloriabitur Iſrael in & , Jahacob Dominus redemit quoniã
24 כִּי־־גָאַל יְהוָה יַעֲקֹב וּבְיִשְׂרָאֵל יִתְפָּאָר׃ כֹּה־אָמַר
Dominus Ego : utero ex tuus plaſmator & , tuus redemptor Dominus
יְהוָה גֹּאַלֶךָ וְיֹצֶרְךָ מִבָּטֶן אָנֹכִי יְהוָה
, *mecum à* terram expandens , *ego* ſolus cœlos extendens , omnia faciens
עֹשֶׂה כֹּל נֹטֶה שָׁמַיִם לְבַדִּי רֹקַע הָאָרֶץ מִי אִתִּי׃
ſapientes *Convertens* .*faciet* inſanire *divinos* & , *vanidicorum* ſigna *Infringens*
25 מֵפֵר אֹתוֹת בַּדִּים וְקֹסְמִים יְהוֹלֵל מֵשִׁיב חֲכָמִים
, ſui ſervi verbum *Statuens* .*faciet* ſtultam eorum ſcientiam & , retrorſum
26 אָחוֹר וְדַעְתָּם יְסַכֵּל׃ מֵקִים דְּבַר עַבְדּוֹ
; *habitaberis* , Jeruſalaim ad *Dicens* .*perficiet* ſuorum *nuntiorum* conſilium &
וַעֲצַת מַלְאָכָיו יַשְׁלִים הָאֹמֵר לִירוּשָׁלַםִ תּוּשָׁב
Dicens .ſuſcitabo ejus *diruta* & , *ædificabimini* , Jehudah civitates ad &
27 וּלְעָרֵי יְהוּדָה תִּבָּנֶינָה וְחָרְבוֹתֶיהָ אֲקוֹמֵם׃ הָאֹמֵר
, Chores ad *Dicens* .faciam ſiccare tua flumina & : te Sicca , profundo
28 לַצּוּלָה חֳרָבִי וְנַהֲרֹתַיִךְ אוֹבִישׁ׃ הָאֹמֵר לְכוֹרֶשׁ
dicendo & : complebit meam voluntatem omnem & , meus Paſtor
רֹעִי וְכָל־־־חֶפְצִי יַשְׁלִם וְלֵאמֹר
.*fundaberis* , templo & ; *ædificaberis* , Jeruſalaim ipſi
לִירוּשָׁלַםִ תִּבָּנֶה וְהֵיכָל תִּוָּסֵד׃

CAP. XLV. מה

apprehendi cujus , Chores ſuo *Uncto* Dominus dixit Sic
1 כֹּה־אָמַר יְהוָה לִמְשִׁיחוֹ לְכוֹרֶשׁ אֲשֶׁר־הֶחֱזַקְתִּי
regum lumbos & , gentes *ejus facies ad ſternendum ad* , *ejus* dexteram *in*
בִימִינוֹ לְרַד־־לְפָנָיו גּוֹיִם וּמָתְנֵי מְלָכִים
.claudentur non portæ & ; januas *ejus facies ad aperiendũ ad* : diſſolvam
אֲפַתֵּחַ לִפְתֹּחַ לְפָנָיו דְּלָתַיִם וּשְׁעָרִים לֹא יִסָּגֵרוּ׃
æris januas : dirigam tortuoſa & , ibo *tuas facies ad* Ego
2 אֲנִי לְפָנֶיךָ אֵלֵךְ וַהֲדוּרִים אוֹשֶׁר דַּלְתוֹת נְחוּשָׁה
.concidam *ferri* vectes & , conteram
אֲשַׁבֵּר וּבְרִיחֵי בַרְזֶל אֲגַדֵּעַ׃

Verſio VUL. LAT.

17 Reliquum autem ejus deum
fecit & ſculptile ſibi: curvatur
ante illud, & adorat illud, &
obſecrat, dicens; Libera me,
18 quia Deus meus es tu. Neſcierunt,
neque intellexerunt: obliti
enim ſunt ne videant oculi
eorum, & ne intelligant
19 corde ſuo. Non recogitant in
mente ſua, neque cognoſcunt,
neque ſentiunt, ut dicant, Medietatem
ejus combuſſi igni,
& coxi ſuper carbones ejus
panes: coxi carnes & comedi,
& de reliquo ejus idolum
faciam? ante truncum ligni
20 procidam? Pars ejus cinis eſt:
cor inſipiens adoravit illud,
& non liberabit animam ſuã,
neque dicet; Fortè mendacium
21 eſt in dextera mea. Memento
horum, Jacob, & Iſrael,
quoniam ſervus meus es
tu: formavi te, ſervus meus es
tu Iſrael, ne obliviſcaris meî.
22 Delevi ut nubem iniquitates
tuas, & quaſi nebulam peccata
tua: revertere ad me, quoniam
23 redemi te. Laudate cœli, quoniam
miſericordiã fecit Dñs:
jubilate extrema terræ, reſonate
montes laudationem, ſaltus
& omne lignum ej⁹: quoniam
redemit Dñs Jacob, &
24 Iſrael gloriabitur. Hæc dicit
Dñs redemptor tuus, & formator
tuus ex utero; Ego ſum
Dñs, faciens omnia, extendens
cœlos ſolus, ſtabiliens terram,
25 & nullus mecum. Irrita faciens
ſigna divinorũ, & ariolos
in furorem vertens. Convertens
ſapientes retrorſum:
& ſcientiam eorũ ſtultam faciens.
26 Suſcitans verbum ſervi
ſui, & conſiliũ nuntiorum ſuorum
complens. Qui dico Jeruſalem,
Habitaberis: & civitatibus
Juda; Ædificabimini,
& deſerta ejus ſuſcitabo.
27 Qui dico profundo; Deſolare,
& flumina tua arefaciam.
28 Qui dico Cyro; Paſtor meus
es, & omnem voluntatem meã
complebis. Qui dico Jeruſalem,
Ædificaberis: & templo,
Fundaberis.

CAP. XLV.

1 HÆc dicit Dñs chriſto meo
Cyro, cuj⁹ apprehendi dexteram,
ut ſubjiciam ante faciem
ej⁹ gentes, & dorſa regũ vertam,
& aperiã corã eo januas,
2 & portæ non claudentur. Ego
ante te ibo: & glorioſos terræ
humiliabo: portas æreas conteram,
& vectes ferreos confringam.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

17 Τὸ δὲ λοιπὸν ἐποίησεν (ψ) εἰς θεὸν γλυπτὸν,
καὶ προσκυνεῖ (ω), καὶ προσεύχεται λέγων, Ἐξελοῦ
18 με, ὅτι θεός μου εἶ σύ. Οὐκ ἔγνωσαν
φρονῆσαι, ὅτι ἀπημαυρώθησαν τοῦ βλέπειν
τοῖς ὀφθαλμοῖς αὐτῶν, καὶ τοῦ νοῆσαι τῇ καρδίᾳ
19 αὐτῶν. Καὶ οὐκ ἐλογίσατο τῇ (α) ψυχῇ
αὐτοῦ, οὐδὲ (β) ἔγνω τῇ φρονήσει, ὅτι τὸ ἥμισυ
αὐτοῦ κατέκαυσεν ἐν πυρὶ, καὶ ἔπεψεν
ἐπὶ τῶν ἀνθράκων αὐτοῦ ἄρτους, καὶ ὀπτήσας
(˘) κρέα ἔφαγε, καὶ τὸ λοιπὸν αὐτοῦ εἰς βδέλυγμα
20 ἐποίησε, καὶ προσκυνοῦσιν αὐτῷ. (γ) Γνῶτε
ὅτι σποδὸς ἡ καρδία αὐτῶν, καὶ πλανῶνται,
καὶ οὐδεὶς δύναται ἐξελέσθαι τὴν ψυχὴν
αὐτοῦ. Ἴδετε, οὐκ ἐρεῖτε, Ὅτι ψεῦδος ἐν τῇ
21 δεξιᾷ μου. Μνήσθητι ταῦτα Ἰακὼβ καὶ Ἰσραὴλ,
ὅτι παῖς μου εἶ σὺ, ἔπλασά σε παῖδά
μου, καὶ σὺ Ἰσραὴλ μὴ ἐπιλανθάνου μου.
22 Ἰδοὺ γὰρ ἀπήλειψα ὡς νεφέλην τὰς ἀνομίας
σου, καὶ ὡς γνόφον (δ) τὴν ἁμαρτίαν σου. (˘)
23 ἐπιστράφηθι πρὸς μὲ, καὶ λυτρώσομαί σε. Εὐφράνθητε
οὐρανοὶ, ὅτι ἠλέησεν ὁ θεὸς τὸν
Ἰσραήλ· σαλπίσατε (ε) τὰ θεμέλια τῆς
γῆς, βοήσατε ὄρη εὐφροσύνην, οἱ βουνοὶ καὶ
πάντα τὰ ξύλα τὰ ἐν αὐτοῖς, ὅτι (ζ) ἐλυτρώσατο
ὁ θεὸς τὸν Ἰακὼβ, καὶ Ἰσραὴλ δοξασθήσεται.
24 (ˢ) Οὕτω λέγει κύριος ὁ (˙) λυτρούμενός
σε, καὶ πλάσσων σε ἐκ κοιλίας, Ἐγὼ
κύριος ὁ συντελῶν (η) πάντα, ἐξέτεινα
τὸν οὐρανὸν μόνος, καὶ ἐστερέωσα τὴν γῆν.
25 Τίς ἕτερος (θ) διασκεδάσει σημεῖα ἐγγαστριμύθων,
καὶ μαντείας ἀπὸ καρδίας; ἀποστρέφων
φρονίμους εἰς τὰ ὀπίσω, καὶ τὴν βουλὴν
26 αὐτῶν (ι) μωραίνων, Καὶ ἱστῶν ῥῆμα
παιδὸς αὐτοῦ, καὶ τὴν βουλὴν τῶν ἀγγέλων
αὐτοῦ ἀληθεύων· ὁ λέγων (κ) τῇ Ἱερουσαλὴμ,
Κατοικηθήσῃ, καὶ ταῖς πόλεσι τῆς (λ) Ἰδουμαίας,
Οἰκοδομηθήσεσθε, καὶ τὰ ἔρημα
27 αὐτῆς ἀνατελεῖ· Ὁ λέγων τῇ ἀβύσσῳ, Ἐρημωθήσῃ,
28 καὶ τοὺς ποταμούς σου ξηρανῶ. Ὁ
λέγων Κύρῳ φρονεῖν, καὶ πάντα τὰ θελήματά
μου ποιήσει· ὁ λέγων Ἱερουσαλὴμ, Οἰκοδομηθήσῃ,
καὶ τὸν οἶκον τὸν ἅγιόν μου θεμελιώσω.

Reſiduum verò fecit in deum 17
ſculptum: & adorat, & orat, dicens;
Erue me, quia Deus meus
es tu. Neſcierunt ſapere: quia 18
obſcurati ſunt, ne videant oculis
ſuis, & intelligant corde ſuo. Et 19
non cogitavit animo ſuo, neq; cognovit
per prudentiam; quia dimidium
ejus combuſſit in igni, &
combuſſit ſuper carbones ejus panes,
& aſſatas carnes comêdit,
& reſiduum ejus in abominationem
fecit; & adorant eum. Scito, 20
quia cinis cor eorum, & errant,
& nemo poteſt liberare animam
ſuam. Videte: non dicetis,
Quia mendacium in dextera mea.
Memento horum Jacob, & Iſrael; 21
quoniam puer meus es tu: formavi
te puerum meum: & tu Iſrael
ne obliviſcaris mei. Ecce enim 22
delevi, ſicut nubem, iniquitates
tuas; & ſicut caliginem, peccata
tua. Revertere ad me, & redimam
te. Lætamini cœli, quoniam 23
miſertus eſt Deus Iſraelis. Canite
tubâ fundamenta terræ: clamate
montes lætitiam; colles, &
omnia ligna, quæ in eis ſunt: quoniam
redemit Deus Jacob: & Iſrael
glorificabitur. Sic dicit Dominus, 24
qui redimit te, & formans
te ex utero; Ego Dominus, qui
compleo omnia: extendi cœlum
ſolus, & firmavi terram. Quis 25
alius diſſipabit ſigna pythonum, &
divinationes de corde? avertens
prudentes retrorſum, & conſilium
eorum ſtultum faciens, Et 26
ſtatuens verbum pueri ſui, & conſilium
angelorum ſuorum verum
probans: dicens ad Hieruſalem,
Habitaberis; & civitatibus (i) Idumææ,
Habitabimini, & deſerta
illius germinabunt: Dicens abyſſo, 27
Deſolaberis, & flumina tua arefaciam:
Dicens Cyro, ut ſapiat: 28
& omnes voluntates meas faciet:
dicens ad Hieruſalem, Ædificaberis,
& domum ſanctam meam
fundabo.

MS. A. (ψ) θεὸν γλυπτὸν, (ω) αὐτῷ. (α) καρδίᾳ (β) ἂν ἐλογίσατο ἐν
τῇ ψυχῇ αὐτοῦ, οὐδὲ ἔγνω (˘) κρέας (γ) Γνῶτε (δ) τὰς ἁμαρτίας (˘) ἐπιστράφηθι
(ε) θεμέλια (ζ) ἠλέησεν (ˢ) Οὕτως, (˙) λυτρούμενός (η) ταῦτα, (θ) διεσκέδασεν
(ι) μωραίνων, Καὶ ἱστῶν ῥήματα παιδῶν αὐτοῦ, (κ) Ἱερουσαλὴμ, (λ) Ἰουδαίας

ΚΕΦ. μέ.

1 (α) ΟΥτω λέγει κύριος ὁ θεὸς τῷ χριστῷ
μου Κύρῳ, οὗ (β) ἐκράτησα τῆς δεξιᾶς, ἐπακοῦσαι
ἔμπροσθεν αὐτοῦ ἔθνη, καὶ ἰσχὺν βασιλέων
διαῤῥήξω, ἀνοίξω ἔμπροσθεν αὐτοῦ θύρας,
2 καὶ πόλεις οὐ συγκλεισθήσονται. Ἐγὼ
(γ) ἔμπροσθέν σου πορεύσομαι, καὶ ὄρη ὁμαλιῶ,
θύρας χαλκᾶς συντρίψω, καὶ μοχλοὺς
σιδηροῦς συγκλάσω.

CAP. XLV.

Sic dicit Dominus Deus chriſto 1
meo Cyro, cujus apprehendi dexteram,
ut obediant ante faciem ej⁹
gentes: & fortitudinem regum
diſrumpam: aperiam ante eum
januas: & (a) civitates non claudentur.
Ego ante te ibo, & montes 2
complanabo, portas æreas conteram,
& vectes ferreos confringam.

MS. A. (α) Οὕτως (β) ἐκράτησας (γ) ἔμπροσθεν αὐτοῦ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

17 וּשְׁאָרֵיהּ לְדַחֲלָא עֲבַד לְצַלְמָא סָגִיד לֵיהּ וְאִשְׁתַּעְבַּד לֵיהּ וּבָעֵא מִנֵּיהּ וַאֲמַר שֵׁיזְבְנִי אֲרֵי
18 דַחֲלְתִּי אַתְּ׃ לָא יָדְעִין וְלָא מִסְתַּכְּלִין אֲרֵי מְטַמְטְמָן מִלְּמֶחֱזֵי עֵינֵיהוֹן מִלְּאִסְתַּכָּלָא
19 בְּלִבְּהוֹן׃ וְלָא מְתִיב לְלִבֵּיהּ וְלָא מַדַּע וְלָא סוּכְלְתָנוּ לְמֵימַר פַּלְגֵיהּ אוֹקֵדִית בְּנוּרָא
וְאַף אֲפֵיתִי עַל גּוּמְרוֹהִי לְחֵם טְוֵית בִּסְרָא וַאֲכָלִית וּשְׁאָרֵיהּ לְתוֹעֵבָא אַעְבֵּיד לְיִבְלֵי אָעָא
20 אֶסְגּוֹד׃ הָא דַחַלְתָּא פַּלְגֵּיהּ קְטָמָא לִבֵּיהּ שַׁטְיָא אַטְעֲיֵיהּ וְלָא יְשֵׁיזֵב יָת נַפְשֵׁיהּ וְלָא
21 יֵימַר הֲלָא שִׁקְרָא עֲבֵדִית בִּימִינִי׃ אִדְּכַר אִלֵּין יַעֲקֹב וְיִשְׂרָאֵל אֲרֵי עַבְדִּי אַתְּ אַתְקֵנְתָּךְ
22 לְמֶהֱוֵי עֲבֵד פָּלַח קֳדָמַי אַתְּ יִשְׂרָאֵל לָא תִתְנְשֵׁי דַחַלְתִּי׃ מְחֵיתִי כְּעֵבָא חוֹבָךְ וְכַעֲנָן עָדֵי
23 כָּל חֶטְאָךְ תּוּב לְפוּלְחָנִי אֲרֵי פְּרַקְתָּךְ׃ שַׁבַּחוּ שְׁמַיָּא אֲרֵי עֲבַד יְיָ פּוּרְקָן לְעַמֵּיהּ יַבַּבוּ
יְסוֹדֵי אַרְעָא בּוֹעוּ טוּרַיָּא תּוּשְׁבַּחְתָּא חוּרְשָׁא וְכָל אִילָנַיָּא דְבֵיהּ אֲרֵי פְרַק יְיָ יַעֲקֹב
24 וּבְיִשְׂרָאֵל יִשְׁתַּבַּח׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ דְּפָרְקָךְ וּדְאַתְקְנָךְ מִמְּעַיִן אֲנָא יְיָ עָבֵיד כּוֹלָא
25 תְּלֵית שְׁמַיָּא בְּמֵימְרִי שַׁכְלְלֵית אַרְעָא בִּגְבוּרְתִּי׃ מְבַטֵּל אָתְוָת בַּדִּין וְקָסוֹמִין
26 מְשַׁגֵּשׁ מְתִיב חַכִּימַיָּא לַאֲחוֹרָא וְדַעְתְּהוֹן מְקַלְקֵל׃ מְקַיֵּם פִּתְגָּמֵי עַבְדּוֹהִי
צַדִּיקַיָּא וּמֵלַךְ שְׁלוּחוֹהִי מַשְׁלֵים דַּאֲמַר לִירוּשְׁלֶם תִּתּוֹתַב וּלְקִרְוַיָּא דְבֵית יְהוּדָה
27 יִתְבַּנְיָן וְחָרְבָתְהָא אֲקוֹמֵם׃ דַּאֲמַר עַל בָּבֶל תֶּחֱרוּב וְנַהֲרָהָא אוֹבֵישׁ׃ דַּאֲמַר עַל
28 כּוֹרֶשׁ לְמִתַּן לֵיהּ מַלְכוּ וְכָל רְעוּתִי יְקַיֵּם וּלְדַאֲמַר לִירוּשְׁלֶם תִּתְבְּנֵי וְהֵיכְלָא
יִשְׁתַּכְלַל׃

המ

כִּדְנַן אֲמַר יְיָ לִמְשִׁיחֵיהּ לְכוֹרֶשׁ דְּאַתְקֵיפִית בִּימִינֵיהּ לְמִמְסַר קֳדָמוֹהִי עַמְמִין וְחַרְצֵי 1
2 מַלְכִין אֲשָׁרֵי לְמִפְתַּח קֳדָמוֹהִי דָשִׁין וְתַרְעִין לָא יִתְאַחֲדוּן׃ מֵימְרִי קֳדָמָךְ יְהָךְ וְשׁוּרַיָּא
אֲכַבֵּישׁ דָּשִׁין דִּנְחָשׁ אֲתַבַּר וְעַבְרִין דְּבַרְזֶל אֲקַצֵּץ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Reliquum autem ejus in deum fecit, ſimulacrum cui procidit : & ſub- 17
jicitur ei, & deprecatur illud : & dicit, Libera me, quia Deus meus es tu.
Neſciunt neque intelligunt, obturati enim ſunt oculi eorum ne cernant, 18
neque intelligant cordibus ſuis. Nec ad animum ſuum revocat, neque 19
eſt ſcientia neque intelligentia, ut dicat, Partem ejus ſuccendi igne, quin
etiam coxi ſuper prunas ejus panem; aſſavi carnem & comedi, & reli-
quum in abominationem faciam, germen ligni adorabo. Ecce dimidi- 20
um dei ejus in cinerem redactum eſt : cor ejus inſipiens ſeduxit eum,
& non liberavit animam ſuam : neque dicet, An non mendacium *operatus*
ſum dexterâ meâ? Memento horum Jacob & Iſrael, quia ſervus meus es 21
tu, formavi te ut ſis ſervus meus ſerviens coram me. Iſrael ne obliviſcaris
timoris mei. Delevi tanquam nebulam omnia delicta tua, & ſicut nubem 22
tranſeuntem omnia peccata tua: revertere ad timorem mei quia redemi te.
Laudate cœli, quia fecit Dominus ſalutem populo ſuo : exultent funda- 23
menta terræ, gaudete montes in laude; ſylva & omnia ligna quæ in ea
ſunt : quia redemit Dominus Jacob, & in Iſrael laudabitur. Hæc dicit 24
Dominus qui ſalvabit te, & formavit te ab utero. Ego Dominus conditor
omnium, appendi cœlos in verbo meo, fundavi terram in potentiâ mea.
Irrita faciens ſigna divinorum, & ariolos in inſaniam vertens : convertens 25
ſapientes retrorſum, & ſcientiam eorum ſtultam reddens. Suſcitans *ver-* 26
ba ſervorum ſuorum juſtorum, & conſilium nuntiorum ſuorum complens.
Qui dico Hieruſalem, Habitaberis; & civitatibus domus Judæ Ædifica-
buntur; & ſolitudines ejus inſtaurabo. Qui dico Babyloni, Deſolare, & 27
flumina tua arefaciam. Qui dico *de* Cyro dandum ei regnum, & omnem vo- 28
luntatem meam complebit: qui dico Hieruſalem, Ædificaberis, & templum
fundabitur.

CAP. XLV.

HÆc dicit Dñs chriſto ſuo Cyro, cuj⁹ dexteram confortavi, ut traderem in 1
conſpectu ejus populos, & lumbos regũ diſſolverem, ut aperirem in con-
ſpectu ejus januas, & portæ non claudentur. Verbũ meũ tibi præibit, & 2
muros ſternam; portas æreas conteram, & vectes ferreos ſuccîdam.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܫܪܟܗ ܥܒܕܝܢ ܠܐܠܗܐ ܦܣܝܠܐ. ܘܣܓܕܝܢ ܠܗ. ܘܡܨܠܝܢ ܠܗ. ܘܐܡܪܝܢ. ܦܨܢ. ܡܛܠ 17
ܕܐܢܬܘ ܐܠܗܢ. * ܘܠܐ ܝܕܥܘ. ܘܠܐ ܐܣܬܟܠܘ ܕܐܫܬܥܥ ܚܙܘܐ ܕܥܝܢܝܗܘܢ. ܘܣܘܟܠܐ 18
ܕܠܒܗܘܢ. * ܘܠܐ ܐܬܦܢܝܘ ܠܐ ܒܠܒܗܘܢ. ܘܠܐ ܝܕܥܘ. ܘܠܐ ܐܬܪܥܝܘ ܘܐܡܪܘ. ܕܦܠܓܗ ܐܘܩܕܘ 19
ܒܢܘܪܐ. ܘܥܠ ܓܘܡܪܘܗܝ ܐܦܘ ܠܚܡܐ. ܘܛܘܝܘ ܒܣܪܐ ܘܐܟܠܘ. ܘܫܪܟܗ ܥܒܕܘ
ܠܗܘܢ ܦܬܟܪܐ ܕܩܝܣܐ. ܘܣܓܕܘ ܠܗ. * ܕܪܥܝܢ ܩܛܡܐ ܠܒܗܘܢ. ܘܡܛܥܝܢ ܠܗܘܢ 20
ܒܥܝܢ. ܘܠܐ ܡܦܨܝܢ ܢܦܫܗܘܢ. ܘܠܐ ܐܡܪܝܢ. ܕܕܓܠܘܬܐ ܥܒܕܬ ܝܡܝܢܢ. * ܐܬܕܟܪ ܗܠܝܢ 21
ܝܥܩܘܒ. ܘܐܝܣܪܝܠ. ܕܥܒܕܝ ܐܢܬ. ܓܒܠܬܟ ܠܝ ܥܒܕܐ. ܐܝܣܪܝܠ. ܠܐ
ܬܛܥܝܢܝ. * ܐܥܒܪܬ ܥܘܠܟ. ܐܝܟ ܥܪܦܠܐ. ܘܚܛܗܝܟ. ܐܝܟ ܥܢܢܐ. ܬܘܒ ܠܘܬܝ 22
ܕܦܪܩܬܟ. * ܫܒܚܘ ܫܡܝܐ. ܡܛܠ ܕܥܒܕ ܡܪܝܐ. ܝܒܒܘ ܫܬܐܣܘܗܝ ܕܐܪܥܐ. ܐܬܦܨܚܘ 23
ܛܘܪܐ. ܒܬܫܒܘܚܬܐ. ܘܚܘܪܫܐ. ܘܟܠܗ ܐܝܠܢܐ ܕܒܗ. ܕܦܪܩ ܡܪܝܐ ܠܝܥܩܘܒ. ܘܒܐܝܣܪܝܠ
ܐܫܬܒܚ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܦܪܩܟ. ܘܓܒܠܟ ܡܢ ܟܪܣܐ. ܘܥܕܪܟ. ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ 24
ܕܥܒܕܬ ܟܠ. ܘܡܬܚܬ ܫܡܝܐ ܒܠܚܘܕܝ. ܘܐܫܪܪܬ ܐܪܥܐ. ܡܢܝ ܘܒܝ. * ܡܒܛܠ ܐܢܐ ܐܬܘܬܐ 25
ܕܚܪܫܐ. ܘܩܨܡܝܗܘܢ. ܡܫܛܐ ܐܢܐ. ܡܗܦܟ ܐܢܐ ܚܟܝܡܐ ܠܒܣܬܪܗܘܢ. ܘܝܕܥܬܗܘܢ
ܡܣܟܠ ܐܢܐ. * ܘܡܩܝܡ ܡܠܬܐ ܕܥܒܕܗ. ܘܬܪܥܝܬܐ ܕܫܠܝܚܘܗܝ ܡܫܠܡ. ܕܐܡܪ ܠܐܘܪܫܠܡ 26
ܕܬܬܝܬܒ. ܘܠܡܕܝܢܬܐ ܕܝܗܘܕܐ ܕܬܬܒܢܝܢ. ܘܚܪܒܬܗ ܐܩܝܡ. * ܕܐܡܪ ܠܥܘܡܩܐ 27
ܚܪܘܒ. ܘܢܗܪܘܬܟ ܐܘܒܫ. * ܕܐܡܪ ܠܟܘܪܫ ܪܥܝ. ܕܨܒܝܢܝ ܢܫܠܡ. ܠܡܐܡܪ 28
ܠܐܘܪܫܠܡ ܕܬܬܒܢܐ. ܘܗܝܟܠܐ ܢܫܬܟܠܠ.

*ܩܦܠܐܘܢ * ܡܗ *

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܡܫܝܚܗ. ܠܟܘܪܫ ܕܐܚܕܬ ܒܝܡܝܢܗ. ܠܡܫܥܒܕܘ ܩܕܡܘܗܝ 1
ܥܡܡܐ. ܘܚܨܐ ܕܡܠܟܐ. ܕܐܫܪܐ ܠܡܦܬܚ ܩܕܡܘܗܝ ܬܪܥܐ. ܘܬܪܥܐ ܠܐ ܢܬܐܚܕܘܢ. * ܐܢܐ 2
ܩܕܡܝܟ ܐܙܠ. ܘܥܪܡܐ ܐܫܘܐ. ܬܪܥܐ ܕܢܚܫܐ. ܐܬܒܪ. ܘܡܘܫܠܐ ܕܦܪܙܠܐ ܐܓܕܥ.

* E reſiduo verò deum faciunt ſculptilem, 17
adorant eum, & precantur, dicentes; Libe-
ra nos, quia tu es deus noſter. Et non ſenti- 18
unt, neque percipiunt (eò quòd illitus ſit
viſus oculorum eorum & ſenſus cordis eo-
rum.) Nec mente concipiunt, nec animad- 19
vertunt, nec ratiocinantur ac dicunt me-
diam ejus partem igne ſe ſuccendiſſe, ad pru-
nas ejus panem coxiſſe, carnem aſſaviſſe &
comediſſe; & ex reſiduo feciſſe ſibi idolum
ligneum, idque adorâſſe. Cinere paſcitur 20
cor eorum, & turpiter errant, non ſalvant
animam ſuam, neque dicunt; Falſitatem o-
perata eſt dextera noſtra. Horum memine- 21
ris Jacob & Iſrael, quòd ſervus meus ſis, for-
maverim te mihi ſervum: igitur Iſrael, ne
obliviſcaris mei. Amovi culpam tuam ut 22
caliginem, & peccata tua ſicut nubem: rever-
tere ad me qui te ſalvavi. Canite cœli, quia 23
Dominus fecit, clangite fundamenta terræ,
exhilaramini montes cantu, ſylva & omnes
arbores quæ ſunt in ea: quia ſalvavit Domi-
nus Jacobum, & in Iſraele glorificatus eſt.
Sic dicit Dominus qui te ſalvavit, formavit 24
in utero, & adjuvit: Ego ſum Dominus qui
feci omnia, extendi cœlum ſolus, & terram
per me ipſum firmavi: Irrita facio ſigna 25
ariolorum, & divinationes eorum ſtultas
reddo: ſapientes retrorſum verto, & ſcien-
tiam eorum inſanam reddo. *Is ſum* qui 26
confirmat verbum ſervi ſui, & conſilium nun-
tiorum ſuorum perficit: qui dixit Jeroſoly-
mæ, habitandam, & civitatibus Judæ, fore æ-
dificandas; quiſque ruinas ejus reſtituam. Qui 27
dixi valli, Deſtruitor; et fluvios tuos arefecit:
Qui dixi Cyro paſtori meo, ut omnem volun- 28
tatem meam perficiat: dicendo Jeroſolymæ
quòd ædificabitur, et templo *quòd* extruetur.

CAP. XLV.

SIc dicit Dominus uncto ſuo Cyro; Dexte- 1
ram ejus prehendi, ſubjicientur illi gentes et
regum dorſa: incipiam aperire coram eo por-
tas, & portæ non claudentur. Ego tibi præibo, 2
& ſalebroſum complanabo: portas æneas
frangam, & vectes ferreos diſrumpam.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* والبقية عمله إلها منحوتا * فيسجد له ويصلي قايلا * خلصني لانك انت الهي * لم يعرفوا 17 18
ليعقلوا لانهم بصروا لينظروا بعيونهم ويفهموا بقلبهم * فلم يفكر بقلبه ولا بنفسه * ولا 19
عرف بعقله ان نصفها احرقه بالنار * وخبز على جمرها خبزا وشوى لحما واكل * وبقيتها صنعه
رذالة فيسجدون له * اعلم ان قلبهم رماد * وضلت قلوبهم وعقولهم * ولم يقدروا ينجوا 20
انفسهم * ولا يقولوا ان ايدينا عملت الباطل واتخذت الكذب * اذكر هذه الامور يا يعقوب * 21
واعلم يا اسرائيل انك عبدي * لاني خلقتك لتعبدني * ولا تنساني * لكي اصرف اثمك مثل 22
السحاب * وخطاياك مثل الضباب * وارجع الي لاني خلصتك * ايها السماء سبحي من اجل 23
صنيع الرب * ولتهتف اساسات الجبال له بالشكر * واحدثوا ايها الجبال للرب التسبيح * والغاب
وجميع الشجر التي فيها * من اجل ان الرب خلص يعقوب * وامتدح باسرائيل * هكذا يقول 24
الرب * انا الذي جبلتك في الرحم * وخلصتك واغثتك * انا انا الرب الذي خلقت الكل *
وانا الذي مددت السماء وحدي * وانا الذي ثبت الارض * وانا الذي ابطل ايات 25
العرافين * واصير كل تعبهم وعرافتهم جهلا * وارد الحكماء الى خلفهم * واعرف افاعيلهم للناس *
* واثبت كلمة عبيدي واتمم قول رسلي * لانهم قالوا ان قرى يهودا تعمر * واوريشليم تثبت * 26
وخراباتها تعمر * ويقول للغور اخرب * وتيبس انهارك * ويقول لكورش ارعا لتتم ارادتي * ويامر 27 28
ببناء اوريشليم * ويتم هيكلها *

الفصل الخامس والاربعون *

* هكذا يقول الرب لمسيحه كورش * اخذته بيمينه * لتخضع له الشعوب وظهور الملوك * 1
ابداء افتح الابواب بين يديه * ولا تغلق الابواب امامه * انا اسير قدامه واسهل له العسر 2
اكسر ابواب النحاس * واحطم انخال الحديد *

Reſiduum aptat in deum ſculptilem, ado- 17
rat eum, & precatur dicens, Serva me,
quia tu es Deus meus. Ignorant animad- 18
vertere ſe ad hoc præditos eſſe judicio, ut
videant oculis ſuis, mentéque ſuâ perci-
piant: At neque mente neque animo per- 19
pendit, nec intellectu deprehendit quòd
dimidiatum ejus partem exuſſerit igne,
panem ad prunas ejus coxerit, carnem aſ-
ſaverit, & comederit; ex ejus autem re-
ſiduo abominationem confecerit, & ado-
rent eam. Noveris cor iſtorum eſſe ci- 20
nerem, & corda mentéſque eorum aber-
râſſe, animas ſuas ſalvare non poſſe, neq;
dicere, Manus quidem noſtra fecêre va-
nitatem, & ſumpſêre mendacium. Me- 21
mento rerum iſtarum O Jacob, & ſcito
O Iſrael eſſe te ſervum meum: nam ego
te creavi ut ſervires mihi. Et ne oblivi-
ſcaris meî, ut amoveam iniquitatem tu- 22
am ceu nubem, & peccata tua ceu nebu-
lam. Revertere itaque ad me, quoniam
ego liberavi te. O cœlum, laudem dici- 23
to pro beneficio Domini, clamêntque fun-
damenta montium cum gratiarum acti-
one: innovate O montes, canticum Domi-
no, ſylva & arbores omnes in iis exiſten-
tes; quia Dominus liberavit Jacobum, &
gloriatus eſt in Iſraele. Sic dicit Domi- 24
nus, Ego ſum qui te compegi in vulva,
& adjuvi te: ego ſum Dominus qui o-
mnia creavi: ego qui cœlum ſolus exten-
di: & ego qui terram firmavi: Ego qui 25
irrita reddo ſigna divinorum, omnéſque
labores ac divinationes eorum in deliri-
um converto, ſapientes retrorſum ago, &
eorum facinora nota facio hominibus:
Aſſeram ſermonem ſervorum meorum, & 26
nuntiorum meorum dicta perficiam, Hi
enim dixerunt civitates Judæ fore habi-
tabiles, Jeruſalem duraturam, & ruinas
ejus reædificandas. Dicet valli; De- 27
ſtruere, & flumina ejus areſcant. Et di- 28
cet Cyro; Paſce, ut perficias voluntatem
meam: præcipiet ædificium Jeroſolymæ,
& templum ejus perficiet.

CAP. XLV.

SIc dicit Dominus chriſto ſuo Cyro, Ap- 1
prehendi eum dexterâ ipſius: ut incurven-
tur ei gentes & dorſa regum, incipiam
aperire portas ante ipſum, & non clau-
dentur portæ ante ipſum. Ego præcedam 2
eum, & aſperum complanabo ei: frangam
portas æneas, vectéſq; ferreos confringã:

ישעיה : מה

ut , *latibulorum abſcondita* & , *tenebroſitatis* theſauros tibi dabo Et
3 וְנָתַתִּי לְךָ אוֹצְרוֹת חֹשֶׁךְ וּמַטְמֻנֵי מִסְתָּרִים לְמַעַן
.Iſrael Deus , *tuo nomine in vocans* DOMINUS *ego* quod ſcias
תֵּדַע כִּי אֲנִי יְהוָה הַקּוֹרֵא בְשִׁמְךָ אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל׃
: meum electum Iſrael & , Jahacob meum ſervum Propter
4 לְמַעַן עַבְדִּי יַעֲקֹב וְיִשְׂרָאֵל בְּחִירִי
.me cognoviſti non & , te cognominavi , tuo nomine in te vocavi &
וָאֶקְרָא לְךָ בִּשְׁמֶךָ אֲכַנְּךָ וְלֹא יְדַעְתָּנִי׃
:Deus non me præter , amplius non & , DOMINUS Ego
5 אֲנִי יְהוָה וְאֵין עוֹד זוּלָתִי אֵין אֱלֹהִים
ortu ab ſciant Ut .me cognoviſti non & , te accinxi
6 אֲאַזֶּרְךָ וְלֹא יְדַעְתָּנִי׃ לְמַעַן יֵדְעוּ מִמִּזְרַח
,DOMINUS Ego .me præter *nihil* quod , occidente ab & , ſolis
שֶׁמֶשׁ וּמִמַּעֲרָבָה כִּי־אֶפֶס בִּלְעָדָי אֲנִי יְהוָה
faciens ; *tenebroſitatem* creans & , lucem Formans .amplius non &
7 וְאֵין עוֹד׃ יוֹצֵר אוֹר וּבוֹרֵא חֹשֶׁךְ עֹשֶׂה
.hæc omnia faciens DOMINUS Ego .malum creans & , pacem
שָׁלוֹם וּבוֹרֵא רָע אֲנִי יְהוָה עֹשֶׂה כָל־אֵלֶּה׃
,terra ſe Aperiat .juſtitiam ſtillent *æthera* & , deſuper cœli Stillate
8 הַרְעִיפוּ שָׁמַיִם מִמַּעַל וּשְׁחָקִים יִזְּלוּ־צֶדֶק תִּפְתַּח־אֶרֶץ
ego : ſimul faciet germinare , juſtitia & ſalus fructificent &
וְיִפְרוּ־יֶשַׁע וּצְדָקָה תַצְמִיחַ יַחַד אֲנִי
,ſuo plaſmatore cum contendenti Væ .eum creavi DOMINUS
9 יְהוָה בְּרָאתִיו׃ הוֹי רָב אֶת־יֹצְרוֹ
: ſuo figulo lutum dicet Nunquid .*humi* teſtis cum teſtæ
חֶרֶשׂ אֶת־חַרְשֵׂי אֲדָמָה הֲיֹאמַר חֹמֶר לְיֹצְרוֹ
,patri *dicenti* Væ ? *ei* manus non tuo operi & ? *facies* quid
10 מַה־תַּעֲשֶׂה וּפָעָלְךָ אֵין־יָדַיִם לוֹ׃ הוֹי אֹמֵר לְאָב
Dominus dixit Sic ? parturis quid , mulieri & ? generas quid
11 מַה־תּוֹלִיד וּלְאִשָּׁה מַה־תְּחִילִין׃ כֹּה־אָמַר יְהוָה
ſuper ,me interrogate ventura : ejus plaſmator & , Iſrael Sanctus
קְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל וְיֹצְרוֹ הָאֹתִיּוֹת שְׁאָלוּנִי עַל־
Ego .mihi præcipite mearum manuum opus ſuper & ,meos filios
12 בָּנַי וְעַל־פֹּעַל יָדַי תְּצַוֻּנִי׃ אָנֹכִי
meæ manus ,ego ; creavi eam ſuper hominem & , terram feci
עָשִׂיתִי אֶרֶץ וְאָדָם עָלֶיהָ בָרָאתִי אֲנִי יָדַי
Ego .præcepi eorum exercitui omni & , cœlos tetenderunt
13 נָטוּ שָׁמַיִם וְכָל־צְבָאָם צִוֵּיתִי׃ אָנֹכִי
ædificabit ipſe : dirigam ejus vias omnes & , juſtitia in eũ ſuſcitavi
הַעִירֹתִהוּ בְצֶדֶק וְכָל־דְּרָכָיו אֲיַשֵּׁר הוּא־יִבְנֶה
,pretio in non , dimittet meam captivitatẽ & , meam civitatem
עִירִי וְגָלוּתִי יְשַׁלֵּחַ לֹא בִמְחִיר
dixit Sic .exercituum DOMINUS dixit , munere in nec
14 וְלֹא בְשֹׁחַד אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת׃ כֹּה־אָמַר
viri , Sebaim & , Chus negotiatio & , Ægypti Labor ,Dominus
יְהוָה יְגִיעַ מִצְרַיִם וּסְחַר־כּוּשׁ וּסְבָאִים אַנְשֵׁי
: *ibunt* te poſt ; *erunt tibi* & , *tranſibunt* te ſuper menſuræ
מִדָּה עָלַיִךְ יַעֲבֹרוּ וְלָךְ יִהְיוּ אַחֲרַיִךְ יֵלֵכוּ
: *orabunt* te ad , *ſe incurvabunt* te ad & : *tranſibunt* compedibus in
בַּזִּקִּים יַעֲבֹרוּ וְאֵלַיִךְ יִשְׁתַּחֲווּ אֵלַיִךְ יִתְפַּלָּלוּ
Vere .Deum præter amplius non & , Deus te in Tantùm
15 אַךְ בָּךְ אֵל וְאֵין עוֹד אֶפֶס אֱלֹהִים׃ אָכֵן
.ſalvator Iſrael Deus , te abſcondens Deus tu
אַתָּה אֵל מִסְתַּתֵּר אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל מוֹשִׁיעַ׃
abierunt ſimul : ipſi omnes *ſunt pudefacti* etiam & , *ſunt affecti* Pudore
16 בּוֹשׁוּ וְגַם־נִכְלְמוּ כֻּלָּם יַחְדָּו הָלְכוּ
.*torminum artifices* pudore cum
בַכְּלִמָּה חָרָשֵׁי צִירִים׃

Verſio VULG. LAT.

3 Et dabo tibi theſauros abſconditos, & arcana ſecretorum : ut ſcias quia ego Dominus, qui voco nomen tuum,
4 Deus Iſrael. Propter ſervum meum Jacob, & Iſrael electum meum, & vocavi te nomine tuo: aſſimilavi te, & non cog-
5 noviſti me. Ego Dominus, & non eſt amplius : extra me non eſt Deus : accinxi te, &
6 non cognoviſti me : Ut ſciant hi, qui ab Ortu Solis, & qui ab Occidente, quoniam abſque me non eſt. Ego Dominus, &
7 non eſt alter, Formans lucem, & creans tenebras, faciens pacem, & creans malum : ego Dominus faciens omnia hæc.
8 Rorate cœli deſuper, et nubes pluant juſtum : aperiatur terra, et germinet Salvatorem : et juſtitia oriatur ſimul: ego Do-
9 minus creavi eum. Væ qui contradicit fictori ſuo, teſta de ſamiis terræ : numquid dicet lutum figulo ſuo ; Quid facis, et opus tuum abſque manibus
10 eſt ? Væ qui dicit patri , Quid generas ? et mulieri , Quid
11 parturis ? Hæc dicit Dominus Sanctus Iſrael , plaſtes ejus ; Ventura interrogate me, ſuper filios meos , et ſuper opus manuum mearum mandate
12 mihi. Ego feci terram, et hominem ſuper eam creavi ego: manus meæ tetenderunt cœlos , et omni militiæ eorum
13 mandavi. Ego ſuſcitavi eum ad juſtitiam, et omnes vias ejus dirigam : ipſe ædificabit civitatem meam, et captivitatem meam dimittet, non in pretio, neque in muneribus, dicit Do-
14 minus Deus exercituum. Hæc dicit Dominus; Labor Ægypti, et negotiatio Æthiopiæ , et Sabaim viri ſublimes ad te tranſibunt, et tui erunt : Poſt te ambulabunt, vincti manicis pergent : et te adorabunt , téque deprecabuntur : Tantùm in te eſt Deus, et non eſt
15 abſque te Deus. Verè tu es Deus abſconditus, Deus Iſrael
16 Salvator. Confuſi ſunt, et erubuerunt omnes : ſimul abierunt in confuſionem fabricatores errorum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

3 Καὶ δώσω σοι θησαυροὺς σκοτεινοὺς, ἀποκρύφους, ἀοράτους ἀνοίξω σοι, ἵνα (ε) γνῷς, ὅτι ἐγὼ κύριος ὁ (ζ) θεός σου ὁ
4 καλῶν τὸ ὄνομά σου, (η) ὁ θεὸς Ἰσραήλ. Ἕνεκεν (θ) τοῦ παιδός μου Ἰακὼβ, ϗ Ἰσραὴλ τοῦ ἐκλεκτοῦ μου, ἐγὼ καλέσω σε τῷ ὀνόματί (ι) σου, ϗ προσδέξομαί σε· σὺ δὲ οὐκ
5 ἔγνως με, Ὅτι ἐγὼ κύριος ὁ θεὸς, ϗ οὐκ ἔστιν ἔτι πλὴν ἐμοῦ θεός· (κ) ἐνίσχυσά σε,
6 ϗ οὐκ ᾔδεις με. Ἵνα γνῶσιν οἱ (") ἀπ' ἀνατολῶν ἡλίου ϗ οἱ ἀπὸ δυσμῶν, ὅτι οὐκ ἔστι (λ) θεὸς πλὴν ἐμοῦ. ἐγὼ κύριος ὁ θεὸς, ϗ οὐκ
7 ἔστιν ἔτι. Ἐγὼ ὁ κατασκευάσας φῶς, καὶ ποιήσας σκότος, ὁ ποιῶν εἰρήνην, ϗ κτίζων κακά. ἐγὼ κύριος ὁ θεὸς, ὁ ποιῶν (μ)
8 πάντα ταῦτα. Εὐφρανθήτω ὁ οὐρανὸς ἄνωθεν, καὶ αἱ νεφέλαι (ν) ῥανάτωσαν δικαιοσύνην· ἀνατειλάτω ἡ γῆ, ϗ βλαστησάτω ἔλεος, ϗ (ξ) δικαιοσύνην ἀνατειλάτω ἅ-
9 μα. ἐγώ εἰμι κύριος ὁ κτίσας σε. Ποῖον βέλτιον κατεσκεύασα ὡς πηλὸν κεραμέως; μὴ ὁ ἀροτριῶν ἀροτριάσει τὴν (ο) γῆν ὅλην τὴν ἡμέραν; μὴ ἐρεῖ ὁ πηλὸς τῷ κεραμεῖ, Τί ποιεῖς ὅτι οὐκ ἐργάζῃ, οὐδὲ ἔχεις (π) χεῖρας; μὴ ἀποκριθήσεται τὸ πλάσμα πρὸς τὸν
10 πλάσαντα αὐτό; Ὁ λέγων τῷ πατρὶ, Τί γεννήσεις; ϗ τῇ μητρὶ, Τί (ρ) ὠδίνεις;
11 Ὅτι οὕτω λέγει κύριος ὁ θεὸς ὁ ἅγιος Ἰσραὴλ, ὁ ποιήσας τὰ ἐπερχόμενα, Ἐρωτήσατέ με περὶ τῶν υἱῶν μου, ϗ περὶ τῶν (σ)
12 ἔργων τῶν χειρῶν μου ἐντείλασθέ μοι. Ἐγὼ ἐποίησα γῆν, ϗ ἄνθρωπον ἐπ' αὐτῆς, ἐγὼ τῇ χειρί μου ἐστερέωσα τὸν οὐρανὸν, ἐγὼ
13 πᾶσι τοῖς ἄστροις ἐνετειλάμην. Ἐγὼ ἤγειρα αὐτὸν μετὰ δικαιοσύνης (τ) βασιλέα, ϗ πᾶσαι αἱ ὁδοὶ αὐτοῦ εὐθεῖαι. (υ) οὗτος οἰκοδομήσει τὴν πόλιν μου, ϗ τὴν αἰχμαλωσίαν τοῦ λαοῦ μου ἐπιστρέψει, οὐ μετὰ λύτρων,
14 οὐδὲ μετὰ δώρων, εἶπε κύριος σαβαώθ. (φ) Οὕτω λέγει κύριος σαβαὼθ, Ἐκοπίασεν Αἴγυπτος, ϗ ἐμπορεία Αἰθιόπων, ϗ οἱ (χ) Σαβαεὶμ ἄνδρες ὑψηλοὶ ἐπὶ σὲ διαβήσονται, ϗ σοὶ ἔσονται δοῦλοι, ϗ ὀπίσω σου ἀκολουθήσουσι δεδεμένοι χειροπέδαις, ϗ (ψ) διαβήσονται πρὸς σὲ, ϗ προσκυνήσουσί σοι, ϗ ἐν σοὶ προσεύξονται· ὅτι ἐν σοὶ ὁ θεός
15 ἐστι, ϗ (ω) οὐκ ἔστι θεὸς πλήν σου. Σὺ γὰρ εἶ θεὸς, ϗ οὐκ ᾔδειμεν, ὁ θεὸς τοῦ Ἰσραὴλ σω-
16 τήρ. Αἰσχυνθήσονται καὶ ἐντραπήσονται πάντες οἱ ἀντικείμενοι αὐτῷ, καὶ πορεύσονται ἐν αἰσχύνῃ. ἐγκαινίζεσθε πρός με νῆσοι.

Et dabo tibi theſauros tenebroſos, abſconditos, inviſibiles aperiam tibi : ut ſcias, quia ego Dominus Deus tuus, qui voco nomen tuum, 3
Deus Iſrael. Propter puerum meum Jacob, & Iſrael electum meum, ego vocabo te nomine tuo, & ſuſcipiam te. Tu autem non 4
cognoviſti me: Quia ego Dominus Deus : & non eſt ampliùs præter me Deus. Confortavi te: & non noviſti me. Ut 5
ſciant hi, qui ab Ortu Solis, & qui ab Occidente, quoniam non eſt Deus præter me. Ego Dominus Deus : & non eſt ampliùs. 6
Ego qui fabricavi lucem, & feci tenebras : faciens pacem, & creans mala : ego Dominus Deus, faciens omnia hæc. Lætetur cœ- 7
lum deſuper, & nubes ſpargant juſtitiam. Germinet terra, & proferat miſericordiam, & juſtitiam germinet ſimul. Ego ſum 8
Dominus, qui creavi te. (b) Quid melius feci, quàm lutum figuli ? Nunquid arans arabit terram totâ die ? Nunquid dicet lutum figulo; Quid facis, quoniam non operaris, nec habes manus ? (c) Nunquid reſpondebit figmentum ad fictorem ſuum ? Qui dicit 9
patri. Quid generabis ? & matri, Quid parturis ? Sic enim di- 10
cit Dominus Deus Sanctus Iſrael, qui fecit ventura; Interrogate me de filiis meis, & de operibus manuum mearum mandate mihi. Ego fe- 11
ci terram, & hominem ſuper eam : ego manu meâ firmavi cœlum : ego omnibus ſtellis mandavi. Ego ſuſcitavi eum cum ju- 12
ſtitia regem : & (d) omnes viæ illius rectæ. Ipſe ædificabit civitatem meam : & captivitatem populi mei convertet, non cum pretio, neque cum muneribus, dixit Dominus Sabaoth : Sic dicit 13
Dominus Sabaoth ; Laboravit Ægyptus, & negotiatio Æthiopum, & Sabaim viri excelſi ad te tranſibunt, & tui erunt ſervi, & poſt te ſequentur vincti manicis, (e) & tranſibunt ad te, & adorabunt te, & in te orabunt : quoniam in te Deus eſt, & non eſt Deus abſque te. Tu (f) enim 14
Deus es, & neſciebamus, Deus Iſrael Salvator. Confundentur, 15
& erubeſcent omnes adverſarii ejus, & ambulabunt in confuſione. Innovamini ad me inſulæ : 16

MS.A. (ε) γνώσῃ, (ζ) θεὸς ὁ καλῶν (η) θεὸς (θ) Ἰακὼβ τοῦ παιδός μου, (ι) μου, (κ) ϗ οὐκ ᾔδεισάν με. Ἵνα γνῶσιν (") ἀπὸ (λ) πλὴν ἐμοῦ· ϗ ὅτι ἐγὼ (μ) ταῦτα πάντα. (ν) ῥαινέτωσαν (ξ) δικαιοσύνη (ο) γῆν; μὴ ἐρεῖ (π) χεῖρας; Ὁ λέγων τῷ (ρ) ὠδινήσεις; Ὅτι οὕτως (σ) θυγατέρων μου, ϗ περὶ τῶν ἔργων (τ) ϗ πᾶσαι αἱ (υ) αὐτὸς (φ) Οὕτως (χ) Σεβωεὶμ (ψ) προσκυνήσουσι (ω) ἐροῦσιν, Οὐκ ἔστιν ὁ θεὸς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 וְאֶתֵּן לָךְ אוֹצְרִין דַּחֲשׁוֹךְ וְסִימָן דְּמִטַּמְּרָן בְּדִיל דְּתִדַּע אֲרֵי אֲנָא יְיָ דְּרַבֵּיתִי בִשְׁמָךְ אֱלָהָא
4 דְיִשְׂרָאֵל׃ בְּדִיל עַבְדִּי יַעֲקֹב וְיִשְׂרָאֵל בְּחִירִי וּקְרֵית לָךְ בִּשְׁמָךְ אַתְקֵנְתָּךְ וְלָא יְדַעְתָּא
5 לְמִדְחַל קֳדָמַי׃ אֲנָא יְיָ וְלֵית עוֹד וּבַר מִנִּי לֵית אֱלָהָא סַעֲדְתָּךְ וְלָא יְדַעְתְּ לְמִדְחַל קֳדָמַי׃
6 בְּדִיל דְּיֵדְעוּן מִמַּדְנַח שִׁמְשָׁא וּמִמַּעַרְבָא אֲרֵי לֵית בַּר מִנִּי אֲנָא יְיָ וְלֵית עוֹד׃ 7 דַּאֲתְקֵין
8 נְהוֹר וּבָרֵי חֲשׁוֹךְ עָבֵד שְׁלָם וּבָרֵי בִישׁ אֲנָא יְיָ עָבֵד כָּל אִלֵּין׃ יְשַׁמְּשׁוּן שְׁמַיָּא מִלְּעֵלָּא
9 וַעֲנָנַיָּא יִגְּרוּן טוּבָא תִּתְפְּתַח אַרְעָא וְיֵיחוֹן מֵיתַיָּא וּזְכוּתָא תִתְגְּלֵי כַּחֲדָא אֲנָא יְיָ בְּרֵיתִנּוּן׃ וַי
דִּי מְדַמֵּי לְמֶדַן לְקֳבֵיל פִּתְגָּמֵי בָרְיֵהּ וְרָחֵיץ דְּיוֹטְבוּן לֵיהּ צַלְמֵי פַחֲרָא דְּעָבְדִין מֵעֲפַר
10 אַרְמְתָא הַאֶפְשַׁר דְּיֵימַר טִינָא לְעָבְדֵיהּ לָא עֲבַדְתַּנִי וְעוֹבָדָךְ לֵית יְדִין לֵיהּ׃ וַי דְּאָמַר לְאָב
11 מָה תוֹלִיד וּלְאִתְּתָא מָה תְעַדִּין׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ קַדִּישָׁא דְיִשְׂרָאֵל וּדְאַתְקְנֵיהּ אָתַיָּא דַעֲתִידִין
12 לְמֵיתֵי אַתּוּן שָׁאֲלִין מִן קֳדָמַי עַל עַמִּי וְעַל עוֹבַד גְּבוּרְתִּי תְּפַקְּדוּנַנִי׃ אֲנָא בְמֵימְרִי עֲבָדִית
13 אַרְעָא וֶאֱנָשָׁא עֲלַהּ בְּרֵיתִי אֲנָא בִגְבוּרְתִּי תְּלֵית שְׁמַיָּא וְכָל חֵילֵיהוֹן שַׁכְלֵילִית׃ אֲנָא
אַיְתֵנֵיהּ בְּגָלֵי בִּקְשׁוֹט וְכָל אוֹרְחָתֵיהּ אֲתַקֵּין הוּא יִבְנֵי קַרְתִּי וְגָלוּת עַמִּי יְשַׁלַּח לָא בְדָמִין
14 וְלָא בְמָמוֹן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ לֵיאוּת מִצְרַיִם וְתַגָּרֵי כוּשׁ וֶאֱנָשֵׁי סְבָא גַּבְרִין
דִּסְחוֹרָא עֲלָךְ יְעַדּוּן וְדִילָךְ יְהוֹן בָּתַר פִּתְגָּמָךְ יְהָכוּן בְּשַׁלְשְׁלָן יְעַדּוּן וְלָיךְ יִסְגְּדוּן מִנָּךְ
15 יִבְעוֹן וְיוֹדוֹן לְמֵימַר בִּקְוּשְׁטָא בִּיךְ אֱלָהָא וְלֵית עוֹד אֱלָהָא בַּר מִנָּךְ׃ בִּקְוּשְׁטָא אַתְּ אֱלָהָא
16 אַשְׁרֵיתָא בִתְקוֹף רוּמָא שְׁכִינְתָּךְ אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל פָּרִיק׃ בְּהִיתוּ וְאַף אִתְכְּנַעוּ כּוּלְהוֹן
כַּחֲדָא הֲלִיכוּ בְאִתְכְּנָעוּ פָּלְחֵי צַלְמַיָּא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et dabo tibi theſauros qui ſunt in tenebris, & obſtruſas opes; ut ſcias quia 3
ego Dominus qui voco nomen tuum, Deus Iſrael. Propter ſervũ meum Ja- 4
cob, & Iſrael electum meum vocavi te nomine tuo : direxi te, & nondum
cognoviſti timere ante me. Ego Dominus & non eſt alius, & extra 5
me non eſt Deus : adjuvi te, & nondum cognoviſti *timere* coram me. Ut 6
ſciant hi qui ab Ortu Solis ſunt & ab Occidente, quoniam abſque me
non eſt Deus : ego Dominus, & nullus eſt amplius. Formans lucem, 7
& creans tenebras, faciens pacem, & creans malum: ego Dominus faci-
ens omnia hæc. Miniſtrent cœli deſuper, & nubes fluant bonum; aperia- 8
tur terra, & reviviſcant mortui, & juſtitia reveletur pariter. Ego Dominus
creavi ea. Væ qui putat judicio contendere contra verba creatoris ſui ; & 9
confidit quòd ſibi proderunt ſimulacra teſtea , quæ facta ſunt ex pulvere
terræ. Nunquid dicet lutum factori ſuo, Non feciſti me; & opus tuum ma-
nibus caret ? Væ qui dicit patri, Quid generas ? atque mulieri, Quid con- 10
cipis ? Hæc dicit Dominus ſanctus Iſrael & qui formavit eum: *Signa* quæ 11
ventura ſunt vos interrogatis à facie mea ; ſuper populum meum, & ſuper
opus potentiæ meæ mandatis mihi. Ego in verbo meo feci terram, & homi- 12
nem ſuper eam creavi. Ego in potentia mea appendi cœlos, & omnem
militiam eorum fundavi. Ego adducam eum palàm in veritate, & omnes 13
vias ejus dirigam : ipſe ædificabit civitatem meam, & captivitatem popu-
li mei dimittet, non in pretio neque in pecunia , dicit Dominus exerci-
tuum. Hæc dicit Dominus, Labor Ægypti, & negotiatores Æthopiæ, & 14
viri Sabba, viri negotiationis ad te tranſibunt & tui erunt ; poſt verbum
tuum ambulabunt, in catenis tranſibunt, & te adorabunt, téque depreca-
buntur & confitebuntur, & dicent : In veritate in te eſt Deus, & non eſt
alius Deus præter *te*. In veritate tu Deus habitare feciſti majeſtatem tuam 15
in excelſa fortitudine, Deus Iſrael ſalvator. Confuſi ſunt , & etiam eru- 16
buerunt omnes ſimul, abierunt in confuſione cultores idolorum.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

3 * ܘܐܬܠ ܠܟ ܣܝܡܬܐ ܕܚܫܘܟܐ ܘܓܢܙܐ ܡܛܫܝܐ. ܕܬܕܥ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܕܩܪܝܬܟ ܒܫܡܟ·
4 ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܡܛܠ ܥܒܕܝ ܝܥܩܘܒ. ܘܐܝܣܪܝܠ ܓܒܝܝ. ܩܪܝܬܟ ܒܫܡܟ·
5 ܘܟܢܝܬܟ. ܘܠܐ ܝܕܥܬܢܝ. * ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܘܠܝܬ ܬܘܒ. ܠܒܪ ܡܢܝ ܠܝܬ ܐܠܗܐ. ܐܚܝܠܬܟ
6 ܘܠܐ ܝܕܥܬܢܝ. * ܕܢܕܥܘܢ ܡܢ ܡܕܢܚܝ ܫܡܫܐ· ܘܡܢ ܡܥܪܒܘܗܝ· ܕܠܝܬ ܠܒܪ ܡܢܝ. ܐܢܐ
7 ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܘܠܝܬ ܬܘܒ. * ܕܓܒܠܬ ܢܘܗܪܐ. ܘܒܪܝܬ ܚܫܘܟܐ. ܥܒܕ ܫܠܡܐ. ܘܒܪܐ ܒܝܫܬܐ.
8 ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܕܥܒܕ ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ. * ܐܬܒܣܡܘ ܫܡܝܐ ܡܢ ܠܥܠ. ܘܥܢܢܐ ܢܪܣܘܢ
ܙܕܝܩܘܬܐ. ܬܬܦܬܚ ܐܪܥܐ. ܘܢܣܓܐ ܦܘܪܩܢܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܬܕܢܚ ܐܟܚܕܐ. ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܒܪܝܬ
9 ܐܢܝܢ. * ܘܝ ܠܕܢܬܕܝܢ ܥܡ ܓܒܘܠܗ· ܚܨܦܐ ܡܢ ܚܨܦܐ ܕܐܪܥܐ. ܕܠܡܐ ܢܐܡܪ ܛܝܢܐ ܠܦܚܪܐ·
10 ܡܢܐ ܥܒܕ ܐܢܬ. ܘܠܐ ܗܘܝܬ ܥܒܕܐ ܕܐܝܕܝܟ. * ܘܝ ܠܗ ܠܕܐܡܪ ܠܐܒܐ ܡܢܐ ܡܘܠܕ ܐܢܬ. ܘܠܐܢܬܬܐ
11 ܡܢܐ ܡܒܛܢܐ ܐܢܬܝ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܘܓܒܘܠܗ· ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ.
12 ܫܐܠܘܢܝ ܐܬܘܬܐ ܥܠ ܒܢܝ. ܘܥܠ ܥܒܕ ܐܝܕܝ ܦܩܕܘܢܝ. * ܐܢܐ ܥܒܕܬ ܐܪܥܐ. ܘܒܪܢܫܐ
13 ܥܠܝܗ. ܐܢܐ ܒܐܝܕܝ ܡܬܚܬ ܫܡܝܐ. ܘܦܩܕܬ ܠܟܠܗ ܚܝܠܗܘܢ. * ܐܢܐ ܐܩܝܡܬܗ
ܒܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܟܠܗܝܢ ܐܘܪܚܬܗ ܐܬܪܨ. ܗܘ ܢܒܢܐ ܡܕܝܢܬܝ· ܘܫܒܝܝ ܢܫܪܐ. ܠܐ
14 ܒܕܡܝܐ. ܘܠܐ ܒܫܘܚܕܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ. ܡܪܝܐ ܠܥܡܠܗ ܕܡܨܪܝܢ. ܬܓܪܐ
ܕܟܘܫ ܘܕܣܒܐ. ܓܒܪܐ ܕܡܫܘܚܬܐ. ܠܘܬܟ ܢܥܒܪܘܢ. ܘܕܝܠܟ ܢܗܘܘܢ· ܘܒܬܪܟ
ܢܐܙܠܘܢ. ܘܒܫܫܠܬܐ ܢܥܒܪܘܢ. ܘܠܟ ܢܣܓܕܘܢ· ܘܠܟ ܢܨܠܘܢ. ܕܒܟ ܐܝܬܘܗܝ ܐܠܗܐ.
15 ܘܠܝܬ ܬܘܒ ܐܠܗܐ ܐܚܪܝܢ. * ܫܪܝܪܐܝܬ ܐܢܬ ܐܠܗܐ ܡܛܫܝܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ
16 ܘܦܪܘܩܗ. * ܒܗܬܘ ܘܐܬܟܢܥܘ ܟܠܗܘܢ. ܐܟܚܕܐ ܕܥܒܕܝܢ ܫܘܒܬܐ. ܘܓܠܦܝܢ
ܦܬܟܪܐ.

Dabóque tibi theſauros in tenebris *abditos*, 3
& opes abſtruſas : ut cognoſcas me eſſe
Dominum qui te vocavi nomine tuo, Deum
Iſraelis. Propter ſervum meum Jacobum, & 4
Iſraelem electum meum, vocavi te nomine
tuo, & cognominavi te, quum me non
cognoſceres. Ego ſum Dominus, & nullus eſt 5
prætereá : præter me nullus eſt Deus :
magnificavi te dum me ignorares : Ut cognoſcant 6
ab ortu ſolis & ab occaſu ejus nullum eſſe
præter me, me eſſe Dominum, & nullum
prætereá : Qui formavi lucem, & creavi 7
tenebras, feci pacem, & creavi malum : me
eſſe Dominum qui hæc omnia feci. Jucundamini 8
cœli supernè, & nubes ſpargant
juſtitiam, aperiatur terra, & multiplicetur
ſalus, & juſtitia ſimul egerminet : ego ſum
Dominus qui creavi hæc. Væ litiganti cum 9
fictore ſuo, teſtæ è teſtulis terræ : num diceret
argilla figulo, Quid facis ? aut, Non ſum opus
manuum tuarum. Væ illi qui dicit patri, 10
Quid generas ? & fœminæ, Quid concipis ?
Sic dicit Dominus, Sanctus Iſraelis & formator 11
ejus, cujus nomen eſt Dominus
potentiſſimus ; Petite à me ſigna de filiis meis, &
de opere manuum mearum examinate me.
Ego terram feci, & hominem ſuper eam : 12
ego propriis manibus cœlos extendi, &
toti exercitui eorum præcepta dedi : Ego 13
juſtè excitavi illum, & omnes vias ejus
complanabo : ipſe ædificabit civitatem meam, &
captivos meos dimittet ſine pretio et ſine
munere, ait Dominus potentiſſimus. Sic dicit 14
Dominus, Labor Ægypti, mercatores Chus
et Sabæ, viri *ſpectatæ* dignitatis, prope te
tranſibunt, tui erunt, teque ſequentur,
catenis *vincti* tranſibunt, te adorabunt, et in te
orabunt ; eò quòd in te ſit Deus, nec alius ſit
præterea Deus. Verè tu es abditus Deus 15
Iſraelis et redemptor ejus. Erubuerunt et 16
pudefacti ſunt ſimul omnes ii qui turpiter ſe
gerunt ſculpentes idola.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

3 * واعطيه الذخاير التي في الظلمات والاشياء المطمون والمسدون • ليعلم اني انا الرب الذي
4 دعوته من قبل مولده • اله اسرايل * ومن اجلك يا عبدي يعقوب ويا صفيي اسرايل • الذي
5 دعوتك باسمك وكنيتك من قبل ان تعرفني * انا انا الرب ولا اله غيري • انا الذي
6 عظمتك ولم تعرفني * فليعلموا الذي في مشارق الارض وفي مغاربها ان ليس اله غيري *
7 انا الذي صنعت هذه كلها * انا الذي خلقت النور في الظلمة • وامرت بالسلام ونهيت
8 عن الشر • وعملت هذه في مشارق الشمس الى مغاربها * انعمي ايتها السماء من فوق • وانت
ايها السحاب التي ترش البر • وتفرح الارض • وتكثر الصدوقيه • والخلاص ينشوا جميعا •
9 انا انا الرب الذي صنعت هذه الاشياء * ويل الذي يخاصم خالقه • ولا يعلم انه من
خزف الطين مصنوع • العل طين الفاخوري يقول لصانعه لماذا تصنعني • او لعله يقول
10 له لست انا من صنعتك * ويل القايل للاب لم تلد • وللام لم تطلقي * لان هكذا يقول
11 الرب الاله قدوس اسرايل الذي جبله • الصانع الاتيات • سلوني من اجل بني وبناتي *
12 ومن اجل اعمال يدي توصوني * انا صنعت الارض ولا انسان عليها • انا بيدي بنيت
13 السماء • انا امرت جميع الكواكب * انا اقمته ملكا بعدل • وطرقه كلها مستقيمه * هذا
14 يبني مدينتي • ويرد سبي شعبي لا بفديات ولا بهدايا • قال رب الجيوش * هكذا يقول رب
الجيوش • تعب مصر • ومتاجر الحبشه • واهل سابا الرجال المرتفعون • اليك يجوزون • ولك
يصيرون عبيدا • وخلفك يتبعون مربوطون الايادي بالاغلال • ويجيبون اليك ويسجدون
15 لك • وفيك يصلون • لان الله هو فيك • وليس اله غيرك موجودا * لانك انت هو الهنا ولم
16 نعلم • اله اسرايل ومخلصه * ها يفتضحون ويخجلون جميع الذين يعاندونه • ويسيرون
بالخزي • لتتجدد لي الجزاير •

Et dabo illi theſauros qui ſunt in tenebris, 3
cum rebus humatis & contectis, ut
ſciat me Dominum qui vocavi eum priuſquam
naſceretur, eſſe Deum Iſraelis :
Idque propter te O ſerve mi Jacob, & O 4
mi electe Iſrael, quem nomine tuo vocavi
& cognominavi antequam cognoſceres
me. Ego ego Dominus, & nullus eſt præter 5
me Deus : ego ſum qui magnificavi te
cùm nondum cognoſceres me. Noverint 6
ergò quicunque ſunt in Orientalibus atq;
Occidentalibus terræ partibus, nullum præter
me extare Deum. Ego ſum qui hæc
omnia feci : Ego ſum qui lucem in tenebris 7
creavi : pacem præcepi, & malum interdixi
: fecique hæc in ortu ſolis ad occaſum
ejus uſque. Delectare O cœlum 8
ſupernè, voſque O nubes quæ ſpargitis
juſtitiam : gaudeat etiam terra, multiplicetur
probitas, & ſalus pariter creſcat.
Ego ego Dominus qui feci res iſtas. Væ 9
illi qui ſuo cum creatore altercatur, nec
animadvertit ſe eſſe è teſtis argillæ compoſitum.
Num argilla figuli diceret factori
ſuo, Quare me facis ? an verò diceret
ei, Ego non ſum opificii tui ? Væ 10
dicenti ad patrem, Cur generas ? & ad
matrem, Cur parturis ? Sic enim dicit 11
Dominus Deus, Sanctus Iſraelis, qui formavit
eum, author rerum futurarum ;
Interrogate me de filiis & filiabus meis,
at de operibus manuum mearum mihi præciperetis
? Ego feci terram dum nullus 12
extaret homo ſuper eam : ego manibus
meis cœlum firmavi : ego ſtellas omnes
eſſe præcepi. Ego illum juſtè conſtitui 13
regem, nam viæ ejus omnes rectæ
ſunt. Hic ædificabit urbem meam, &
reſtituet captivos populi mei, non redemptionibus
neque muneribus, ait Dominus
exercituum. Sic dicit Dominus 14
exercituum, Labor Ægypti, & merces
Æthiopiæ, atque Sabæi viri præſtantes,
ad te tranſibunt, fientque ſervi tui,
teque ſequentur revincti manus vinculis
: ad te venient, te adorabunt, &
in te preces fundent ; quòd Deus in te
ſit. Neque enim alius præter te reperitur 15
Deus ; Nam tu es Deus noſter, nec
ſciebamus, Deus ac ſalvator Iſraelis.
Ecce pudefient & erubeſcent omnes 16
qui adverſabuntur ei, & abibunt cum
ignominia, ut renoventur mihi inſulæ.

יְשַׁעְיָה : מו

non : ſeculorum ſalute DOMINO in eſt ſalvatus Iſrael
17 יִשְׂרָאֵל נוֹשַׁע בַּיהוָה תְּשׁוּעַת עוֹלָמִים לֹא־
Quia *perpetuitatis* ſecula in uſque erubeſcetis neque ,afficiemini pudore
18 תֵבֹשׁוּ וְלֹא־תִכָּלְמוּ עַד־עוֹלְמֵי עַד׃ כִּי־
formans Deus ipſe ,cœlos creans DOMINUS dixit ſic
כֹה אָמַר־יְהוָה בּוֹרֵא הַשָּׁמַיִם הוּא הָאֱלֹהִים יֹצֵר
,eam creavit *inanitatem* non) :eam *firmans* ipſe ,eam faciens & ,terram
הָאָרֶץ וְעֹשָׂהּ הוּא כוֹנְנָהּ לֹא־תֹהוּ בְרָאָהּ
.amplius non & ,DOMINUS Ego (.eam formavit habitandum ad
לָשֶׁבֶת יְצָרָהּ אֲנִי יְהוָה וְאֵין עוֹד׃
Non *tenebroſitatis* terræ loco in ,ſum locutus abſcondito in Non
19 לֹא בַסֵּתֶר דִּבַּרְתִּי בִּמְקוֹם אֶרֶץ חֹשֶׁךְ לֹא
DOMINUS Ego .me quærite *Vanè* ,Jahacob ſemini dixi
אָמַרְתִּי לְזֶרַע יַעֲקֹב תֹּהוּ בַקְּשׁוּנִי אֲנִי יְהוָה
,venite & ,vos Congregate .recta annuncians ,juſtitiam loquens
20 דֹּבֵר צֶדֶק מַגִּיד מֵישָׁרִים׃ הִקָּבְצוּ וָבֹאוּ
extollentes cognoverunt Non .gentium *liberati* ſimul accedite
הִתְנַגְּשׁוּ יַחְדָּו פְּלִיטֵי הַגּוֹיִם לֹא יָדְעוּ הַנֹּשְׂאִים
.*ſalvabit* non Deum *ad orantes* & ,ſui ſculptilis lignum
אֶת־עֵץ פִּסְלָם וּמִתְפַּלְלִים אֶל־אֵל לֹא יוֹשִׁיעַ׃
fecit audire Quis .ſimul *inibunt cõſiliũ* inſuper,facite accedere &,Annuntiate
21 הַגִּידוּ וְהַגִּישׁוּ אַף יִוָּעֲצוּ יַחְדָּו מִי הִשְׁמִיעַ
?DOMINUS ego Nonne ? illud annunciavit *tunc* ex ,*quondam* à hoc
זֹאת מִקֶּדֶם מֵאָז הִגִּידָהּ הֲלוֹא אֲנִי יְהוָה
.me præter non ſalvans & ,juſtus Deus .me præter Deus ultrà non &
וְאֵין־עוֹד אֱלֹהִים מִבַּלְעָדַי אֵל־צַדִּיק וּמוֹשִׁיעַ אַיִן זוּלָתִי׃
non & ,Deus ego quia : terræ fines omnes *ſalvamini* & ,me ad *Reſpicite*
22 פְּנוּ־אֵלַי וְהִוָּשְׁעוּ כָּל־אַפְסֵי־אָרֶץ כִּי אֲנִי־אֵל וְאֵין
non & ,verbum *juſtitia* meo ore de *exiit* : juravi me Per .amplius
23 עוֹד׃ בִּי נִשְׁבַּעְתִּי יָצָא מִפִּי צְדָקָה דָּבָר וְלֹא
omnis jurabit ,genu omne curvabitur mihi quod : revertetur
יָשׁוּב כִּי־לִי תִּכְרַע כָּל־בֶּרֶךְ תִּשָּׁבַע כָּל־
: fortitudo & ,*juſtitiæ* ,*dixit* ,mihi DOMINO in Utique .lingua
24 לָשׁוֹן׃ אַךְ בַּיהוָה לִי אָמַר צְדָקוֹת וָעֹז
.*eum in ſuccenſentes* omnes afficientur pudore at ,perveniet eum ad uſque
עָדָיו יָבוֹא וְיֵבֹשׁוּ כֹּל הַנֶּחֱרִים בּוֹ׃
.Iſrael ſemen *omne* *ſe jactabunt* & ,*juſtificabuntur* DOMINO In
25 בַּיהוָה יִצְדְּקוּ וְיִתְהַלְלוּ כָּל־זֶרַע יִשְׂרָאֵל׃

CAP. XLVI. מו

beſtiæ eorum *dolores* fuerunt : Nebo ſe incurvavit ,Bel ſe Curvavit
1 כָּרַע בֵּל קֹרֵס נְבוֹ הָיוּ עֲצַבֵּיהֶם לַחַיָּה
.laſſitudinem ad onere *onerata* *veſtra geſtatricia* : *jumento &*
וְלַבְּהֵמָה נְשֻׂאֹתֵיכֶם עֲמוּסוֹת מַשָּׂא לַעֲיֵפָה׃
: onus ſalvare potuerunt non ,ſimul ſe incurvaverunt ,ſe Curvaverunt
2 קָרְסוּ כָרְעוּ יַחְדָּו לֹא יָכְלוּ מַלֵּט מַשָּׂא
domus me ad Audite .ivit captivitatem in eorum anima &
3 וְנַפְשָׁם בַּשְּׁבִי הָלָכָה׃ שִׁמְעוּ אֵלַי בֵּית
,utero ab *onerati* ,Iſrael domus reſiduum omne & ,Jahacob
יַעֲקֹב וְכָל־שְׁאֵרִית בֵּית יִשְׂרָאֵל הָעֲמֻסִים מִנִּי־בֶטֶן
,ipſe ego ſenectam ad uſque Et .vulva à *portati*
4 הַנְּשֻׂאִים מִנִּי־רָחַם׃ וְעַד־זִקְנָה אֲנִי הוּא
ego & ,feram ego & ,feci Ego .*bajulabo* ego caniciem ad uſque &
וְעַד־שֵׂיבָה אֲנִי אֶסְבֹּל אֲנִי עָשִׂיתִי וַאֲנִי אֶשָּׂא וַאֲנִי
? adæquabitis & ,me aſſimilabitis Cui .eruam & ,*bajulabo*
5 אֶסְבֹּל וַאֲמַלֵּט׃ לְמִי תְדַמְּיוּנִי וְתַשְׁווּ
? aſſimilabor & ,me comparabitis &
וְתַמְשִׁלוּנִי וְנִדְמֶה׃

Verſio VULG. LAT.

17 Iſrael ſalvatus eſt in Domino ſalute æternâ : non confundemini, et non erubeſcetis uſq; in 18 ſeculum ſeculi. Quia hæc dicit Dominus creans cœlos, ipſe Deus formans terrã, & faciens eã, ipſe plaſtes ejus : non in vanũ creavit eã : ut habitaretur, formavit eã, Ego Dñs, & non eſt ali⁹. 19 Non in abſcondito locutus ſum in loco terræ tenebroſo : non dixi ſemini Jacob ; Fruſtrà quærite me: ego Dñs loquens juſtitiã, annun- 20 tians recta. Congregamini, & venite, et accedite ſimul qui ſalvati eſtis ex gentib⁹: neſcierunt qui levant lignũ ſculpturæ ſuæ, & rogant deũ non ſalvantem. 21 Annuntiate, & venite, & conſiliamini ſimul: quis auditum fecit hoc ab initio, ex tunc prædixit illud ? numquid non ego Dñs, & non eſt ultrà Deus abſq; me ? Deus juſtus, & ſalvans non eſt præter me. 22 Convertimini ad me, & ſalvi eritis omnes fines terræ : quia 23 ego Deus, & non eſt alius. In memetipſo juravi, egredietur de ore meo juſtitiæ verbum, & 24 non revertetur ; Quia mihi curvabitur omne genu, & ju- 25 rabit omnis lingua. Ergò in Dño, dicet, meæ ſunt juſtitiæ & imperiũ : ad eum venient, & confundentur omnes qui 26 repugnant ei. In Dño juſtificabitur, & laudabitur omne ſemen Iſrael.

CAP. XLVI.

1 Confractus eſt Bel, contritus eſt Nabo : facta ſunt ſimulachra eorum beſtiis & jumentis, onera veſtra gravi pondere uſque ad laſſitudi- 2 nem. Contabuerunt, & contrita ſunt ſimul : non potuerunt ſalvare portantem, & anima eorum in captivitatẽ ibit. 3 Audite me, domus Jacob, & omne reſiduum domûs Iſrael, qui portamini à meo utero, qui geſtamini à mea 4 vulva. Uſque ad ſenectam ego ipſe, & uſque ad canos eo portabo : ego feci, et ego feram : ego portabo, 5 et ſalvabo. Cui aſſimilâſtis me, et adæquâſtis, et comparâſtis me, et feciſtis ſimilem ?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

17 Ἰσραὴλ σώζεται ὑπὸ κυρίου σωτηρίαν αἰώνιον· οὐκ αἰσχυνθήσονται, οὐδὲ μὴ ἐντραπῶ- 18 σιν ἕως τοῦ (α) αἰῶνος ἔτι. Οὕτως λέγει κύριος ὁ ποιήσας τὸν οὐρανὸν, οὗτος ὁ θεὸς ὁ καταδείξας τὴν γῆν, καὶ ποιήσας αὐτὴν, αὐτὸς διώρισεν αὐτὴν, οὐκ εἰς κενὸν ἐποίησεν αὐτὴν, ἀλλὰ (β) κατοικεῖσθαι ἔπλασεν αὐ- 19 τὴν, Ἐγώ εἰμι κύριος, καὶ οὐκ ἔστιν ἔτι. Οὐκ ἐν κρυφῇ λελάληκα, οὐδὲ ἐν τόπῳ γῆς σκοτεινῷ. οὐκ εἶπα τῷ σπέρματι Ἰακὼβ, Μάταιον ζητήσατε. ἐγώ εἰμι ἐγώ (γ) εἰμι κύριος ὁ λαλῶν δικαιοσύνην, καὶ ἀναγγέλλων ἀλή- 20 θειαν. Συνάχθητε, καὶ ἥκετε, βουλεύσασθε ἅμα οἱ σωζόμενοι ἀπὸ τῶν ἐθνῶν. οὐκ ἔγνωσαν οἱ αἴροντες τὸ ξύλον γλύμμα αὐτῶν, καὶ (δ) οἱ προσευχόμενοι πρὸς θεοὺς, οἳ οὐ σώ- 21 ζουσιν. Εἰ ἀναγγελοῦσιν, ἐγγισάτωσαν, ἵνα (ε) γνῶσιν ἅμα, τίς ἀκουστὰ ἐποίησε ταῦτα ἀπ᾽ ἀρχῆς· τότε ἀνηγγέλη ὑμῖν. ἐγὼ ὁ θεὸς, καὶ οὐκ ἔστιν ἄλλος πλὴν ἐμοῦ· δί- 22 καιος καὶ σωτὴρ, οὐκ ἔστι (ζ) πάρεξ ἐμοῦ. Ἐπιστράφητε (η) ἐπ᾽ ἐμὲ, καὶ σωθήσεσθε, οἱ ἀπ᾽ ἐσχάτου τῆς γῆς: ἐγώ εἰμι ὁ θεὸς, καὶ 23 οὐκ ἔστιν (θ) ἄλλος. Κατ᾽ ἐμαυτοῦ ὀμνύω, εἰ (ι) μὴ ἐξελεύσεται ἐκ τοῦ στόματός μου δικαιοσύνη, οἱ λόγοι μου οὐκ ἀποστραφήσονται· 24 Ὅτι ἐμοὶ κάμψει πᾶν γόνυ, καὶ (κ) ὀμεῖται 25 πᾶσα γλῶσσα τὸν θεὸν, Λέγων, Δικαιοσύνη καὶ δόξα πρὸς αὐτὸν (λ) ἥξει, καὶ αἰσχυνθήσονται πάντες οἱ (μ) διορίζοντες 26 αὐτούς. Ἀπὸ κυρίου δικαιωθήσονται, καὶ ἐν τῷ θεῷ (ν) ἐνδοξασθήσεται πᾶν τὸ σπέρμα τῶν υἱῶν Ἰσραήλ.

Iſrael ſalvatur à Domino ſalute 17 *æternâ: non confundentur, neque erubeſcent uſque in (g) æternum* 18 *ampliùs. Sic dicit Dominus, qui fecit cœlum: iſte Deus, qui oſtendit terram, & fecit eam, ipſe diſtinxit eam: non in vacuum fecit eam, ſed ut habitaretur, plaſmavit eam; Ego ſum Dominus,* 19 *& non eſt ultra. Non in abſcondito loquutus ſum, neque in loco terræ tenebroſo. Non dixi ſemini Jacob, Vanum quærite. Ego ſum, ego ſum Dominus, qui loquor juſtitiam; & annuntio veritatem.* 20 *Congregamini, & venite: conſulite ſimul, qui ſalvamini de gentibus. Non cognoverunt, qui portant lignum ſculpturam ſuam,* 21 *& orant deos non ſalvantes. Si annuntiant, appropinquent, ut ſciant ſimul, quis audita fecit hæc ab initio: tunc annuntiatum eſt vobis. Ego Deus, & non eſt alius abſque me: juſtus, & ſalvator non eſt præter me.* 22 *Convertimini ad me; & ſalvi eritis, qui ab extremis terræ. Ego ſum Deus, & non eſt alius.* 23 *Per memetipſum juro; niſi egredietur de ore meo juſtitia; ſermones mei non avertentur;* 24 *Quia mihi incurvabit omne genu, et jurabit omnis lingua Deum;* 25 *Dicens, Juſtitia, & gloria ad eum veniet, & confundentur omnes qui ſeparant ſe* 26 *A Domino: (h) Juſtificabantur, & in Deo glorificabitur omne ſemen filiorum Iſrael.*

MS.A. (α) αἰῶνος. Οὕτως (β) κατοικεῖσθαι, Ἐγώ εἰμι, καὶ οὐκ (γ) εἰμι λαλῶν (δ) προσευχόμενοι ὡς πρὸς θεοὺς, οἳ οὐ σώσωσιν. Εἰ ἀναγγέλλοισιν, (ε) γνῶμεν (ζ) ἄλλος πάρεξ (η) πρὸς μὲ, (θ) ἄλλος πλὴν ἐμοῦ· δίκαιος καὶ σωτὴρ οὐκ ἔστιν πάρεξ ἐμοῦ. Κατ᾽ ἐμαυτοῦ (ι) μὴν (κ) ἐξομολογήσεται πᾶσα γλῶσσα τῷ θεῷ, (λ) ἥξουσιν, (μ) ἀφορίζοντες (ν) ἐνδοξασθήσονται, καὶ πᾶν

ΚΕΦ. μϛʹ.

1 Ἔπεσε Βὴλ, συνετρίβη (α) Ναβὼ, ἐγένετο τὰ γλυπτὰ αὐτῶν εἰς θηρία, καὶ (β) τὰ κτήνη· αἴρετε αὐτὰ καταδεδεμένα ὡς φορ- 2 τίον κοπιῶντι (γ) ἐκλελυμένῳ, Καὶ πεινῶντι, οὐκ ἰσχύοντι ἅμα, οἳ οὐ δυνήσονται σωθῆναι ἀπὸ πολέμου, αὐτοὶ δὲ αἰχμάλωτοι 3 ἤχθησαν. (*) Ἀκούετέ μου οἶκος τοῦ Ἰακὼβ, καὶ πᾶν τὸ κατάλοιπον τοῦ Ἰσραὴλ, οἱ αἰρόμενοι ἐκ κοιλίας, καὶ παιδευόμενοι (δ) ἐκ παιδίου 4 Ἕως γήρως. ἐγώ εἰμι, καὶ ἕως ἂν καταγηράσητε, ἐγώ εἰμι, ἐγὼ ἀνέχομαι ὑμῶν, ἐγὼ ἐποίησα, καὶ ἐγὼ ἀνήσω, ἐγὼ ἀναλήψομαι, 5 καὶ σώσω ὑμᾶς. Τίνι με ὡμοιώσατε; ἴδετε, τεχνάσασθε οἱ πλανώμενοι.

CAP. XLVI.

Cecidit Bel, contritus eſt (a) 1 *Nabo: facta ſunt ſculptilia eorum in beſtias, & jumenta: portatis ea colligata, quaſi onus laboranti, deficienti,* 2 *Et eſurienti, nec prævalenti ſimul: qui non poterunt ſalvari à bello: ipſi autem captivi ducti ſunt.* 3 *Audite me domus Jacob, & omnes reliquiæ Iſrael, qui portamini de utero, & erudimini à parvulo* 4 *uſque ad ſenectutem. Ego ſum: & donec ſeneſcatis, ego ſum: ego ſuſtineo vos: ego feci, & ego (b) portabo: ego ſuſcipiam, & ſalvos vos faciam.* 5 *Cui aſſimilâſtis me? Videte, excogitate, qui erratis,*

MS. A. (α) Δαγὼν, (β) κτήνη· ἔλεγον (γ) καὶ πεινῶντι, καὶ ἐκλελυμένῳ, οὐκ ἰσχύοντι ἅμα, οἳ οὐ μὴ δύνωνται (*) Ἀκούσατε (δ) ἀπὸ παιδίου ἕως γήρους.

תַּרְגּוּם יוֹנָתָן Targum JONATHAN.

17 יִשְׂרָאֵל יִתְפְּרִיק בְּמֵימְרָא דַיְיָ פּוּרְקַן עָלְמַיָא לָא תִבְהֲתוּן וְלָא תִתְכַּנְעוּן לְעָלַם וּלְעָלְמֵי
18 עָלְמַיָא׃ אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ דִּי בְרָא שְׁמַיָא הוּא אֱלֹהִים דְּשַׁכְלֵל אַרְעָא וַעֲבְדַהּ הוּא אַתְקְנַהּ
19 לָא לְרֵיקָנוּ בְרָהּ אֱלָהֵין לְאַסְגָאָה עֲלַהּ בְּנֵי אֱנָשָׁא אַתְקְנַהּ אֲנָא יְיָ וְלֵית עוֹד׃ לָא בְּסִתְרָא
מַלֵּלִית בַּאֲתַר אַרְעָא קְבַל וְלָא אֲמַרִית לְזַרְעָא דְבֵית יַעֲקֹב לְרֵיקָנוּ תְּבַעוּ דַחַלְתִּי אֲנָא
20 יְיָ מְמַלֵּל קְשׁוֹט מְחַוֵּי כֵיוָנָן׃ אִתְכְּנִישׁוּ וְאִתּוֹ אִתְקְרָבוּ כַחֲדָא מְשֵׁיזְבֵי עַמְמַיָא לָא יָדְעִין
21 דְּנָסְבִין יָת אָעֵי צַלְמֵיהוֹן וּבָעַן מִן דַּחַלָא דְלָא יִפְרוֹק׃ חַוּוּ וְאִתְקָרְבוּ אַף אִתְמְלִיכוּ כַחֲדָא
מַן בַּסַּר דָּא מִלְּקַדְמִין מִבְּכֵן חַוְיַהּ הֲלָא אֲנָא יְיָ וְלֵית עוֹד אֱלָהּ בַּר מִנִּי אֱלָהּ דְּזַכַּי וּפָרִיק
22 לֵית אֶלָּא אֲנָא׃ אִתְפְּנוּ לְמֵימְרִי וְאִתְפְּרִיקוּ כָּל דִּבְסְיָפֵי אַרְעָא אֲרֵי אֲנָא אֱלָהָא וְלֵית עוֹד׃
23 בְּמֵימְרִי קַיֵּמִית נְפַק מִן קֳדָמַי בִּזְכוּ פִתְגָם וְלָא יִבְטֵיל אֲרֵי קֳדָמַי תִּכְרַע כָּל בֶּרֶךְ תְּקַיֵּם כָּל
24 לִישָׁן׃ בְּרַם בְּמֵימְרָא דַיְיָ עֲלַי אֲמַר לְאַיְתָאָה זַכְוָן וּתְקוֹף בְּמֵימְרֵיהּ יוֹדוּן וְיִבְהֲתוּן
25 בְּטַעֲוָתְהוֹן כָּל עַמְמַיָא דַהֲווֹ מִתְגָּרַן בְּעַמֵּיהּ׃ בְּמֵימְרָא דַיְיָ יִזְכּוּן וְיִשְׁתַּבְּחוּן כָּל זַרְעָא
דְיִשְׂרָאֵל׃

מו

1 חֲמִיט בֵּל אִתְקְטֵף נְבוֹ הֲווֹ צַלְמָנֵיהוֹן דְּמוּת חֵיוָא וּבְעִירָא מְטוּלֵי טַעֲוָתְהוֹן יַקִּירִין עַל
2 נָטְלֵיהוֹן וְאִנּוּן מְשַׁלְהַיִן׃ אִתְקְצִיצוּ וְאִתְקְטִפוּ כַּחֲדָא וְלָא יְכִילוּ לְשֵׁיזָבָא נָטְלֵיהוֹן וּפָלְחֵיהוֹן
3 בְּשִׁבְיָא אֲזַלוּ׃ קַבִּילוּ לְמֵימְרִי דְבֵית יַעֲקֹב וְכָל שְׁאָרָא דְבֵית יִשְׂרָאֵל דִּרְחִימִין מִכָּל
4 עַמְמַיָא וַחֲבִיבִין מִכָּל מַלְכְּוָתָא׃ וְעַד עַלְמָא אֲנָא הוּא וְעַד עֲלַם עָלְמַיָא מֵימְרִי קַיָּם אֲנָא
בְרֵית כָּל אֱנָשָׁא וַאֲנָא בַדְּרֵית יַתְהוֹן לְבֵינֵי עַמְמַיָא אַף אֲנָא אֶשְׁבּוֹק לְחוֹבֵיהוֹן וְאֶסְלַח׃
5 לְמַן תְּדַמּוֹן קֳדָמַי וְתַשְׁווֹן וְתַכְוְנוּן קֳדָמַי בִּקְשׁוֹט׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

17 Iſrael ſalvatus eſt in verbo Domini ſalute æterna, non confundemini neque erubeſcetis in ſeculum, & in ſecula ſeculorum. 18 Quoniam hæc dicit Dominus, qui creavit cœlos, ipſe eſt Deus qui fundavit terram, & fecit eam, ipſe præparavit eam, non in vanum creavit eam; ſed ut multiplicentur in ea filii hominis, præparavit eam. Ego Dñs nec eſt alius. 19 Non in occulto locutus ſum, in loco terræ tenebroſo: neque dixi ſemini domus Jacob in vanum, Quærite timorem mei. Ego Dñs loquens veritatem, annuntians recta. 20 Congregamini & venite, accedite ſimul qui ſalvati eſtis ex populis: neſciunt enim qui tollunt ligna ſimulacri ſui, & rogant deum qui non ſalvat. 21 Annuntiate, accedite, & inite conſilium ſimul; quis annuntiavit hoc ab initio; jam antè narravit illud? Nónne ego Dñs, & non eſt amplius Deus abſque me? Deus juſtus & Salvator, non eſt alius à me. 22 Aſpicite ad verbum meum, & ſalvamini omnes qui in finibus terræ eſtis: quoniam ego ſum Deus, & non eſt alius. 23 Per verbum meum juravi, exiit à facie mea ſermo in juſtitia, & non erit irritus: quoniam ante me curvabitur omne genu, jurabit omnis lingua. 24 Veruntamen in Verbo Domini dixit ad me, ut adduceret juſtitiam & fortitudinem. In verbo ejus confitebuntur, & confundentur *in idolis ſuis* omnes populi qui irruebant in populum ejus. 25 In verbo Domini juſtificabitur & gloriabitur omne ſemen Iſrael.

CAP. XLVI

1 Incurvatus eſt Bel, ſucciſus eſt Nabo, fuerunt ſimulacra eorum in ſimilitudinem ſerpentum, & jumentorum. Onera idolorum *ſuorum* gravia ſunt portantibus ea, & ipſi ſunt laſſi. 2 Præciſa ſunt, & reſecta ſunt pariter, & non potuerunt liberare portantes ea, & cultores eorum in captivitatem abierunt. 3 Acquieſcite verbo meo domus Jacob, & omne reſiduum domus Iſrael, qui dilecti eſtis præ omnibus populis, & chari præ omnibus regnis. 4 Et uſque in ſeculum ego ſum; & uſque in ſecula ſeculorum Verbum meum permanet. Ego creavi omnes homines, & ego diſperſi eos inter populos: ego quoque dimittam peccata eorum, & propitius ero. 5 Quem aſſimilâſtis coram me, & adæquâſtis, & comparâſtis coram me in veritate?

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܦܘܪܩܢܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܒܡܪܝܐ ܦܪܘܩܐ ܕܥܠܡܐ. ܠܐ ܬܒܗܬܘܢ. ܘܠܐ ܬܬܟܠܡܘܢ 17
ܠܥܠܡܥܠܡܝܢ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܕܒܪܐ ܫܡܝܐ. ܗܘܝܘ ܐܠܗܐ ܕܓܒܠ ܐܪܥܐ. 18
ܘܥܒܕܗ. ܘܗܘܝܘ ܬܩܢܗ. ܠܐ ܗܘܐ ܣܪܝܩܐܝܬ ܒܪܗ. ܐܠܐ ܕܢܬܒ ܒܗ ܒܪܝܬܗ. ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ.
ܘܠܝܬ ܬܘܒ ܠܒܪ ܡܢܝ. * ܠܐ ܗܘܐ ܒܛܘܫܝܐ ܡܠܠܬ. ܒܐܬܪܐ ܕܐܪܥܐ ܚܫܘܟܬܐ. ܘܠܐ ܐܡܪܬ 19
ܠܙܪܥܐ ܕܝܥܩܘܒ. ܕܣܪܝܩܐܝܬ ܒܥܘܢܝ. ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܕܡܡܠܠ ܐܢܐ ܙܕܝܩܘܬܐ.
ܘܡܚܘܐ ܐܢܐ ܬܪܝܨܘܬܐ. * ܐܬܟܢܫܘ ܘܐܬܘ ܘܐܬܩܪܒܘ ܐܟܚܕܐ. ܐܝܠܝܢ ܕܡܫܬܘܙܒܝܢ ܡܢ ܥܡܡܐ. 20
ܠܐ ܝܕܥܘ ܕܫܩܠܝܢ ܩܝܣܐ ܓܠܝܦܐ. ܘܡܨܠܝܢ ܠܐܠܗܐ ܕܠܐ ܦܪܩ. * ܚܘܘ ܘܩܪܘܒܘ. ܘܐܬܡܠܟܘ 21
ܐܟܚܕܐ. ܡܢܘ ܐܫܡܥ ܗܕܐ ܡܢ ܩܕܡܝܢ. ܘܡܢ ܒܪܫܝܬ. ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܘܠܝܬ ܬܘܒ ܐܠܗܐ
ܠܒܪ ܡܢܝ. ܐܠܗܐ ܙܕܝܩܐ. ܘܦܪܘܩܐ ܘܠܝܬ ܠܒܪ ܡܢܝ. * ܐܬܦܢܘ ܠܘܬܝ ܘܐܚܘ 22
ܟܠܗܘܢ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܕܬܬܦܪܩܘܢ. ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܘܠܝܬ ܠܒܪ ܡܢܝ. * ܒܝ ܝܡܝܬ. 23
ܘܢܦܩܬ ܡܢ ܦܘܡܝ ܙܕܝܩܘܬܐ. ܡܠܬܐ ܕܠܐ ܬܗܦܘܟ. ܕܠܝ ܬܬܟܪܥ ܟܠ ܒܘܪܟ. ܘܒܝ ܬܐܡܐ
ܟܠ ܠܫܢ. * ܘܢܐܡܪܘܢ. ܒܡܪܝܐ ܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܥܫܝܢܐ ܠܘܬܗ ܢܐܬܘܢ. ܘܢܒܗܬܘܢ 24
ܟܠ ܕܡܬܚܪܝܢ ܠܗ. * ܒܝ ܢܫܬܒܗܪܘܢ ܘܢܙܕܕܩܘܢ. ܟܠܗ ܙܪܥܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. 25

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܘ *

* ܢܦܠ ܒܝܠ. ܘܐܬܬܒܪ ܢܒܘ. ܘܗܘܘ ܦܬܟܪܝܗܘܢ ܠܚܝܘܬܐ ܘܠܒܥܝܪܐ. ܛܥܢܬܐ 1
ܡܥܝܩܬܐ ܠܟܦܢܐ. * ܐܬܬܒܪܘ ܘܢܦܠܘ ܐܟܚܕܐ. ܘܠܐ ܐܫܟܚܘ ܠܡܦܠܛܘ ܠܛܥܘܢܝܗܘܢ. 2
ܘܐܙܠܘ ܒܫܒܝܐ ܢܦܫܗܘܢ. * ܫܡܥܘܢܝ ܒܢܝ ܒܝܬ ܝܥܩܘܒ. ܘܟܠܗ ܫܪܟܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. 3
ܕܡܬܛܥܢܝܢ ܡܢ ܟܪܣܐ. ܘܡܬܛܥܢܝܢ ܡܢ ܡܪܒܥܐ. * ܥܕܡܐ ܠܣܝܒܘܬܐ ܐܢܐ ܗܘ. ܘܥܕܡܐ 4
ܠܣܒܘܬܐ ܐܢܐ ܐܣܝܒܪ. ܐܢܐ ܥܒܕܬ. ܘܐܢܐ ܐܫܩܘܠ. ܘܐܢܐ ܐܣܝܒܪ ܘܐܦܪܩ. * ܠܡܢ 5
ܕܡܝܬܘܢܢܝ ܘܫܘܝܬܘܢܢܝ.

* Salus Iſraelis in Domino conſiſtit ſervatore 17
ſeculorum : non erubeſcetis, neque pudefi-
etis in ſecula perpetua. Sic enim dicit Do- 18
minus qui cœlum creavit, idem ille Deus
qui terram finxit ac fecit, idémque firmavit
eam, *qui* nequaquam fruſtrà creavit eam, ſed
ut inhabitarent eam creaturæ ipſius; Ego ſum
Dominus, nec alius eſt præter me. Non ſum 19
equidem clàm locutus, in loco terræ tenebro-
ſæ; neque dixi ſemini Jacobi, In vanum me
quærite : quum ego ſim Dominus juſtitiam
loquens, & indicans rectitudinem. Con- 20
gregamini, advenite, & ſimul accedite, qui
evaſuri eſtis ex gentibus, & ignoratis tuliſſe
vos lignum ſculptum, & oraviſſe deum qui
non ſalvat. Indicate, accedite, & ſimul ini- 21
te conſilium : quis id narravit jampridem,
cùm à principio ego ſim Dominus, nec ullus
extet præter me Deus? Deus juſtus ac redem-
ptor, & nullus præter me? Accedite ad me 22
omnes extremitates terræ, ut ſalvemini : nam
ego ſum Dominus, nec alius eſt præter me.
Per me juravi, & egreſſum eſt ex ore meo 23
verbum juſtitiæ, quod non revocabitur; Mihi
incurvatum iri omne genu, & per me juratu-
ram omnem linguam, Et dicturos, In Do- 24
mino eſt juſtitia : potentes ad eum venient,
& erubeſcent omnes qui te odio proſequun-
tur. In me gloriabitur & juſtificabitur uni- 25
verſum ſemen Iſraelis.

CAP. XLVI.

* Concidit Bil, *(i. Juppiter)* corruit Nebo; 1
(i. Mercurius) & ſculpta ipſorum idola fa-
cta ſunt ſarcinæ compreſſæ *(i. ponderoſæ)*
belluarum & jumentorum famelicorum :
Corruerunt, ſimulque ceciderunt, nec po- 2
tuerunt ſalvare bajulantes ſe, ſed ipſamet ab-
ierunt in captivitatem. Audite me filii fa- 3
miliâs Jacobi, totúmque reſiduum Iſraelis,
qui geſtamini in ventre, et in utero portami-
ni : Uſque ad ſenectutem equidem ego ſum, 4
et ad canitiem uſque ego tolerabo, ego feci, et
ego portabo, ego patiar, et ſalvabo. Cui 5
me aſſimilatis et comparatis?

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* إسرائيل يخلص من قبل الرب خلاصا أبديا * ولا يخزون ولا يخجلون إلى الأبد إلى الدهر * 17
* يقول الرب الضابط الكل * هكذا يقول الرب الذي صنع السماء * هو الله الذي أظهر 18
الأرض وصنعها * وهو جددها * ولم يخلقها باطلا * لكن لتسكن * أنا أنا وليس آخر أيضا * ولا 19
تكلمت في خفية ولا في موضع مظلم من الأرض * ولا قلت لزرع يعقوب اطلبوني باطلا * أنا
هو أنا هو الرب المتكلم بالعدل والمخبر بالحق * اجتمعوا وأتوا * تشاوروا معا أيها المخلصون 20
من الأمم * لم يعلم الذين يحملون الخشبة لنحتهم * ويصلون إلى آلهة لا تخلص ولا تخبر *
* ليقتربوا كي يعلموا معا * من صنع هذه مسموعات منذ البدو حينئذ يخبركم * أنا 21
الله وليس آخر غيري موجودا * عدل ومخلص ليس أحد من سواي * ارجعوا إلي فتخلصون 22
الذين من آخر الأرض * أنا هو الله وليس آخر موجودا * بذاتي أحلف حقا * من فمي 23
يخرج العدل * وكلماتي لا ترجع * لأن لي تجثوا كل ركبة * وكل لسان يحلف بالله *
* فإلا العدل والمجد إليه يأتي * ويفتضحون جميع الذين أفرزوا ذواتهم من الرب * يتبرر 24 25
بالله ويتمجد كل زرع بني إسرائيل *

* الفصل السادس والأربعون *

* سقط بيل * كسر صاغون * صارت منحوتاتهم للوحوش والبهائم * احملوها منكسين مثل حمل 1
زبل * وجائعون ومنحلون الذين لم يقوموا معا * الذين لم يستطيعوا أن يخلصوا من الحرب * 2
هؤلاء سبوا مسبيين * اسمعوا يا بيت يعقوب وكل بقية إسرائيل * المحمولون من البطن * 3
والمؤدبون من البطن من الصغر وإلى الكبر * أنا هو أنا هو * وإلى أن تهرمون وأنا أنا * 4
أنا أحملكم * أنا صنعت وأنا أترك * وأنا آخذ وأخلصكم * بمن شبهتموني * 5

Iſrael ſalvabitur à Domino ſalute æter- 17
nâ : & non pudefient, nec erubeſcent in
ſeculum ſempiternum, Ait Dominus omnia
tenens. Sic ait Dominus qui fecit cœ- 18
lum, ipſe eſt Deus ille qui terram detexit
& condidit, idemque reſtauravit eam,
nec in vanum creavit illam, ſed ut ha-
bitaretur; Ego, ego ſum, & nullus a-
lius præterea. Non ſum locutus in oc- 19
culto, neque in ullo tenebricoſo terræ
loco : neque dixi ſemini Jacobi, Quæ-
rite me fruſtrá : ego ſum, ego ſum Domi-
bus juſtitiam loquens, & annuntians ve-
ritatem. Congregamini, & venite, con- 20
ſilium ſimul inite O ſalvandi ex genti-
bus : quandoquidem *ignari ſunt qui li-*
gnum portant ad ſculpendum, & orant
deos qui nec ſalvare nec prænuntiare
poſſunt; *Accedant, ut ſimul addiſcant.* 21
Qui hæc nota fecit inde à principio, tunc
indicabit vobis. Ego ſum Deus, nec alius
præter me reperitur : juſtus & ſervator
nullus eſt præter me. Revertimini ad 22
me ut ſalvemini, qui eſtis ab extremo
terræ : ego ſum Deus, nec alius exiſtit.
Per me ipſum juro veritatem, ex ore meo 23
prodit juſtitia, & verba mea nequaquam
revocantur : mihi enim incurvabitur
omne genu, & omnis lingua per Deum
jurabit, Dicens; Juſtitia & gloria ad 24
eum veniet. Ignominâ afficientur omnes
qui ſeparaverunt ſe ipſos à Domino :
Omne verò *ſemen filiorum Iſraelis juſti-* 25
ficabitur in Deo, atque gloriabitur.

CAP. XLVI.

Corruit Bil, confractus eſt Sagon, 1
ceſſerunt ſculptilia eorum beſtiis & ju-
mentis, nam *confracta portare fecerunt ea*
velut onus ſtercoris : Et eſurientes ac lan- 2
guidi, qui ſimul conſiſtere, qui bellum eva-
dere non potuerunt, iidem abducti ſunt
captivi. Audite O domus Jacobi, to- 3
tumque reſiduum Iſraelis, qui geſtamini
ab utero, & erudimini ab utero à pueri-
tia ad ſenium uſque. Ego ſum, ego ſum; 4
etiam quoad decrepiti ſitis ego ipſe ſum :
ego tolerabo vos : ego feci, & ego de-
ſererem? imò ſuſcipiam, & liberabo
vos. Cuinam aſſimilâſtis me? 5

יְשַׁעְיָה : מו

: *appendent* calamo in argentum & , loculo de aurum *Vilipendentes*
6 הַזָּלִים זָהָב מִכִּיס וְכֶסֶף בַּקָּנֶה יִשְׁקֹלוּ
etiam , procident : Deum *illud* faciet & ,aurificem *conducent* mercede
יִשְׂכְּרוּ צוֹרֵף וְיַעֲשֵׂהוּ אֵל יִסְגְּדוּ אַף־
,eum gestabunt ,humerum super illum Portabunt .se incurvabunt
7 יִשְׁתַּחֲווּ׃ יִשָּׂאֻהוּ עַל־כָּתֵף יִסְבְּלֻהוּ
Insuper *,recedet* non suo loco de , stabit & *: se sub* eum deponent &
וְיַנִּיחֻהוּ תַחְתָּיו וְיַעֲמֹד מִמְּקוֹמוֹ לֹא יָמִישׁ אַף־
.eum servabit non ejꝰ tribulatione de,respōdebit non & ,eum ad clamabit
יִצְעַק אֵלָיו וְלֹא יַעֲנֶה מִצָּרָתוֹ לֹא יוֹשִׁיעֶנּוּ׃
super prævaricatores reducite *: viros vos præstate* & , hujus Mementote
8 זִכְרוּ־זֹאת וְהִתְאֹשָׁשׁוּ הָשִׁיבוּ פוֹשְׁעִים עַל־
, Deus ego quoniam : seculo à , priorum Recordamini .cor
9 לֵב׃ זִכְרוּ רִאשֹׁנוֹת מֵעוֹלָם כִּי אָנֹכִי אֵל
exordio ab Annuntians .ego sicut non & , Deus ultrà non &
10 וְאֵין עוֹד אֱלֹהִים וְאֶפֶס כָּמוֹנִי׃ מַגִּיד מֵרֵאשִׁית
meū Consilium ,dicens : facta sunt non quæ *quondam à* &,novissimum
אַחֲרִית וּמִקֶּדֶם אֲשֶׁר לֹא־נַעֲשׂוּ אֹמֵר עֲצָתִי
oriente ab Vocans .faciam meam voluntatē omnem ut , stabit
11 תָקוּם וְכָל־חֶפְצִי אֶעֱשֶׂה׃ קֹרֵא מִמִּזְרָח
,sum locutus etiam : mei consilii virum longinqua terra de , *volucrem*
עַיִט מֵאֶרֶץ מֶרְחָק אִישׁ עֲצָתוֹ אַף־דִּבַּרְתִּי
me ad Audite .illud faciam etiam , formavi : illud adducam etiam
12 אַף־אֲבִיאֶנָּה יָצַרְתִּי אַף־אֶעֱשֶׂנָּה׃ שִׁמְעוּ אֵלַי
feci Appropinquare .justitia à *longinqui* , corde *fortes*
13 אַבִּירֵי לֵב הָרְחוֹקִים מִצְּדָקָה׃ קֵרַבְתִּי
: faciet moram non mea salus & ; se elongabit non , meam justitiam
צִדְקָתִי לֹא תִרְחָק וּתְשׁוּעָתִי לֹא תְאַחֵר
.meam gloriam Israeli , salutem Sijon in dabo &
וְנָתַתִּי בְצִיּוֹן תְּשׁוּעָה לְיִשְׂרָאֵל תִּפְאַרְתִּי׃

Versio VULG. LAT.

6 Qui confertis aurum de sacculo,
& argentum staterâ ponderatis :
conducentes aurificem,
ut faciat deum : & procidunt,
7 & adorant. Portant
illum in humeris gestantes, &
ponentes in loco suo : & stabit,
ac de loco suo non movebitur ;
sed & cùm clamaverint
ad eum, non audiet : de
tribulatione non salvabit eos.
8 Mementote istud, & confundamini :
redite prævaricatores
9 ad cor. Recordamini prioris
seculi, quoniam ego sum
Deus, & non est ultrà Deus,
10 nec est similis meî : Annuntians
ab exordio novissimum,
& ab initio quæ necdum facta
sunt, dicens ; Consilium meum
stabit, & omnis voluntas mea
11 fiet : Vocans ab Oriente avem,
& de terra longinqua virum
voluntatis meæ, & locutus
sum, & adducam illud :
12 creavi, & faciam illud. Audite
me duro corde, qui longè
13 estis à justitia. Propè feci justitiam
meam, non elongabitur,
& salus mea non morabitur.
Dabo in Sion salutem, &
in Israel gloriam meam.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

6 Οἱ συμβαλλόμενοι χρυσίον ἐκ (*) μαρσυππίου,
καὶ ἀργύριον ἐν ζυγῷ, στήσουσιν ἐν
σταθμῷ, καὶ μισθωσάμενοι χρυσοχόον ἐποίησαν
χειροποίητα, καὶ κύψαντες προσκυνοῦσιν
7 (ε) αὐτοῖς. Αἴρουσιν αὐτὸ ἐπὶ (ζ) τοῦ ὤμου,
καὶ πορεύονται· ἐὰν δὲ θῶσιν αὐτὸ
ἐπὶ τοῦ τόπου αὐτοῦ, μένει, οὐ μὴ κινηθῇ· καὶ
ὃς (η) ἐὰν βοήσῃ πρὸς αὐτὸν, οὐ μὴ (θ)
εἰσακούσῃ, ἀπὸ κακῶν οὐ μὴ (ι) σώσῃ αὐτόν.
8 Μνήσθητε ταῦτα, καὶ στενάξατε, μετανοήσατε
οἱ πεπλανημένοι, ἐπιστρέψατε τῇ καρδίᾳ,
9 Καὶ μνήσθητε τὰ πρότερα ἀπὸ τοῦ αἰῶνος,
ὅτι ἐγώ εἰμι ὁ θεὸς, καὶ οὐκ ἔστιν ἔτι πλὴν ἐμοῦ,
10 Ἀναγγέλλων πρότερον τὰ ἔσχατα πρὶν
(κ) γενέσθαι, καὶ ἅμα συνετελέσθη· καὶ εἶπα,
(λ) Πᾶσα ἡ βουλή μου στήσεται, καὶ
11 πάντα ὅσα βεβούλευμαι, ποιήσω· Καλῶν
(μ) ἀπὸ ἀνατολῶν πετεινὸν, καὶ ἀπὸ γῆς πόρρωθεν
περὶ ὧν βεβούλευμαι, ἐλάλησα,
καὶ ἤγαγον, ἔκτισα καὶ ἐποίησα, ἤγαγον
αὐτὸν, καὶ εὐόδωσα τὴν ὁδὸν αὐτοῦ.
12 Ἀκούσατέ μου οἱ ἀπολωλεκότες τὴν καρδίαν,
13 οἱ μακρὰν ἀπὸ τῆς δικαιοσύνης. Ἤγγισα
τὴν δικαιοσύνην μου, καὶ τὴν σωτηρίαν
τὴν παρ' ἐμοῦ οὐ βραδυνῶ. δέδωκα ἐν Σιὼν
σωτηρίαν τῷ Ἰσραὴλ εἰς δόξασμα.

MS.A. (*) μαρσιππίου, (ε) αὐτό. (ζ) τῶν ὤμων, (η) ἂν (θ) ἀκούσῃ, (ι) σώσει (κ) αὐτὰ γενέσθαι, (λ) Πᾶσά μου ἡ βουλὴ (μ) ἀπ'

Qui confertis aurum de sacculo, 6
& argentum in statera : (c) statuent in pondere, & conducentes aurificem fecerunt opera manuum, & incurvati adorant ea:
Portant illud super humerum, 7
& vadunt : si autem posuerint illud in loco suo ; manet, non movebitur : &, quisquis clamaverit ad ipsum, non exaudiet ; de malis non salvabit eum. Me- 8
mentote horum, & ingemiscite : agite pœnitentiam, qui erràstis: revertimini corde, Et memen- 9
tote priorum à seculo : quoniam ego sum Deus ; & non est ultrà præter me : Qui annuntio priùs 10
novissima, antequàm fiant : & simul completa sunt. Et dixi ; Omne consilium meum stabit : & cuncta, quæ deliberavi, faciam :
Qui voco ab Oriente avem, & 11
de terra longinqua ea de quibus cogitavi : loquutus sum, & adduxi : creavi, & feci : addu
xi illum, & prosperavi viam ejus.
Audite me, qui perdidistis cor, qui 12
longè estis à justitia. Propè feci 13
justitiam (d) meam : & salutem, quæ à me est, tardare non faciam. Dedi in Sion salutem Israeli in gloriam.

CAP. XLVII. מז

; terra in sede , Babel filia virgo pulverem super sede &,Descende
1 רְדִי וּשְׁבִי עַל־עָפָר בְּתוּלַת בַּת־בָּבֶל שְׁבִי־לָאָרֶץ
,teneram te *vocabunt* adjicies non quia : Chasdim filia solium non
אֵין־כִּסֵּא בַּת־כַּשְׂדִּים כִּי לֹא תוֹסִיפִי יִקְרְאוּ־לָךְ רַכָּה
, *tuam comam detege* : farinam mole & , *molas* Tolle .delicatam &
2 וַעֲנֻגָּה׃ קְחִי רֵחַיִם וְטַחֲנִי קָמַח גַּלִּי צַמָּתֵךְ
,tuā *nuditas* Revelabitur .flumina transi ,*coxam* detege ,*talum* discooperi
3 חֶשְׂפִּי־שֹׁבֶל גַּלִּי־שׁוֹק עִבְרִי נְהָרוֹת׃ תִּגָּל עֶרְוָתֵךְ
occurram non & , capiam ultionem : tuum opprobrium videbitur etiam
גַּם תֵּרָאֶה חֶרְפָּתֵךְ נָקָם אֶקָּח וְלֹא אֶפְגַּע
Sanctus,ejus nomen exercituum DOMINUS noster Redemptor *.homo*
4 אָדָם׃ גֹּאֲלֵנוּ יְהוָה צְבָאוֹת שְׁמוֹ קְדוֹשׁ
: Chasdim filia , *tenebrositatem* in intra & , *tacita* Sede .Israel
5 יִשְׂרָאֵל׃ שְׁבִי דוּמָם וּבֹאִי בַחֹשֶׁךְ בַּת־כַּשְׂדִּים
fui Iratus .regnorum dominam te *vocabunt* , adjicies non quia
6 כִּי לֹא תוֹסִיפִי יִקְרְאוּ־לָךְ גְּבֶרֶת מַמְלָכוֹת׃ קָצַפְתִּי
eos dedi & ,meam hæreditatem contaminavi , meum populum contra
עַל־עַמִּי חִלַּלְתִּי נַחֲלָתִי וָאֶתְּנֵם
senem super , misericordias eis posuisti non : tua manu in
בְּיָדֵךְ לֹא־שַׂמְתְּ לָהֶם רַחֲמִים עַל־זָקֵן
ero seculum In : dixisti Et .valde tuum jugum aggravâsti
7 הִכְבַּדְתְּ עֻלֵּךְ מְאֹד׃ וַתֹּאמְרִי לְעוֹלָם אֶהְיֶה
recordareris neque ,tuum cor super hæc poneres non ut adeo *: hera*
גְבָרֶת עַד לֹא־שַׂמְתְּ אֵלֶּה עַל־לִבֵּךְ לֹא זָכַרְתְּ
.hujus novissimi
אַחֲרִיתָהּ׃

CAP. XLVII.

1 DEscende, sede in pulvere,
virgo filia Babylon, sede in
terra: non est solium filiæ Chaldæorum,
quia ultrà non voca-
2 beris mollis & tenera. Tolle
molam, & mole farinam : denuda
turpitudinem tuam, discooperi
humerum, revela cru-
3 ra, transi flumina. Revelabitur
ignomina tua, & videbitur
opprobrium tuum : ultionem
capiam, & non resistet
4 mihi homo. Redemptor noster,
Dominus exercituum no-
5 men illius, Sanctus Israel. Sede
tacens, & intra in tenebras,
filia Chaldæorum : quia non
vocaberis ultrà Domina regno-
6 rum. Iratus sum super populum
meum, contaminavi hæreditatem
meam, & dedi eos
in manu tua : non posuisti eis
misericordias : super senem
aggravâsti jugum tuum valdé.
7 Et dixisti ; In sempiternum ero
domina : non posuisti hæc super
cor tuum, neque recordata
es novissimi tui.

ΚΕΦ. μζ'.

1 ΚΑτάβηθι, κάθισον ἐπὶ τὴν γῆν παρθένος
θυγάτηρ Βαβυλῶνος, (α) κάθισον εἰς
τὴν γῆν θυγάτηρ Χαλδαίων, ὅτι οὐκέτι
προστεθήσῃ κληθῆναι ἁπαλὴ καὶ τρυφερά.
2 Λάβε μύλον, ἄλεσον ἄλευρον, ἀποκάλυψαι
τὸ κατακάλυμμά σου, ἀνακάλυψαι τὰς
πολιὰς, ἀνάσυρε τὰς κνήμας, διάβηθι πο-
3 ταμούς· Ἀνακαλυφθήσεται ἡ αἰσχύνη σου,
φανήσονται οἱ ὀνειδισμοί σου· τὸ δίκαιον
ἐκ σοῦ λήψομαι, οὐκέτι μὴ παραδῶ ἀν-
4 θρώποις. (β) Ὁ ῥυσάμενός σε κύριος σα-
5 βαώθ, ὄνομα αὐτῷ Ἅγιος Ἰσραήλ. Κάθισον
κατανενυγμένη, εἴσελθε εἰς τὸ σκότος
(*) θύγατερ Χαλδαίων, οὐκέτι μὴ κλη-
6 θήσῃ ἰσχὺς βασιλείας. Παρωξύνθην ἐπὶ τῷ
λαῷ μου, ἐμίανας τὴν κληρονομίαν μου.
ἐγὼ ἔδωκα (γ) αὐτοὺς εἰς τὴν χεῖρά σου,
σὺ δὲ οὐκ ἔδωκας αὐτοῖς ἔλεος, τοῦ πρεσβυ-
7 τέρου ἐβάρυνας τὸν ζυγὸν σφόδρα. Καὶ
εἶπας, Εἰς τὸν αἰῶνα ἔσομαι ἄρχουσα. οὐκ
ἐνόησας ταῦτα ἐν τῇ καρδίᾳ σου, οὐδὲ ἐμνήσθης
τὰ ἔσχατα.

MS.A. (α) εἴσελθε εἰς τὸ σκότος θυγάτηρ Χαλδαίων, (β) Εἶπεν ὁ ῥυσάμενός (*) θυγάτηρ (γ) εἰς τὴν χεῖρα

CAP. XLVII.

DEscende, sede super terram, 1
virgo filia Babylonis : sede (a) in terram, filia Chaldæorum : quoniam nequaquàm ultrà apponêris vocari mollis, & tenera. Tolle 2
molam : mole farinam : revela (b) operimentum tuum : denuda canos : discooperi tibias : transi flumina : Revelabitur igno- 3
minia tua : apparebunt opprobria tua. Quod justum est, de te auferam : nequaquàm ultrà tradam hominibus. (c) Qui eruit 4
te, Dominus Sabaoth : nomen ei, Sanctus Israel. Sede compuncta, 5
ingredere in tenebras, filia Chaldæorum : nequaquam ultrà vocaberis Fortitudo regni. Ira us sum 6
contra populum meum : (d) contaminâsti hæreditatem meam. Ego dedi eos in manum tuam : tu verò non dedisti eis misericordiam : seni aggravâsti jugum valdé. Et dixisti, In æternum 7
ero domina. Non intellexisti hæc in corde tuo, neque recordata es novissimorum.

תַּרְגּוּם יוֹנָתָן Targum JONATHAN.

6 הָא עַמְמַיָּא גָּבַן דְּהַב מִכִּיס וְכַסְפָּא בְּמֹאזְנַיָּא תָּקְלִין אָגְרִין קֵינָאָה וְעָבֵיד לֵיהּ דַּחֲלָא סָגְדִין
7 אַף מִשְׁתַּעְבְּדִין׃ נָטְלִין לֵיהּ עַל כַּתְפֵּיהוֹן סָבְלִין לֵיהּ מַחֲתִין לֵיהּ בְּאַתְרֵיהּ וְקָאֵם מֵאַתְרֵיהּ
8 לָא אֶפְשַׁר לֵיהּ דִּינוּד אַף יִבְעֵי מִנֵּיהּ לָא יְתִיבִנֵּיהּ מֵעַקְתֵיהּ לָא יִפְרְקִנֵּיהּ׃ אַדְכַּרוּ דָא
9 וְאִתַּקְפוּ וַאֲתִיבוּ מְרוֹדִין עַל לֵב׃ אַדְכַּרוּ קַדְמָיָתָא דְּמִן עַלְמָא אֲרֵי אֲנָא אֱלָהּ וְלֵית עוֹד
10 אֱלָהּ בַּר מִנִּי׃ מְחַוֵּי מִן אַוְּלָא לְסוֹפָא וּמִלְקַדְמִין דְּלָא אִתְעֲבִידָא אָמַר מִלְכִּי יִתְקַיֵּם וְכָל
11 רְעוּתִי אַעְבֵּיד׃ דְּאָמַר לְכַנָּשָׁא גָּלְוָתָא מִמַּדִּנְחָא לְאַיְתָאָה בְּגַלֵּי כְּעוֹף קַלִּיל מֵאֲרַע רְחִיקָא
12 בְּנֵי אַבְרָהָם רְחִימִי אַף מַלֵּלִית אַף אַיְתֵנַהּ אַתְקֵנְתַּהּ אַף אַעְבְּדִנַּהּ׃ קַבִּילוּ לְמֵימְרִי תַּקִּיפֵי
13 לִבָּא דִּרְחִיקִין מִזָּכוּתָא׃ קְרִיבָא זַכְוָתִי לָא תִתְרַחַק וּפוּרְקָנִי לָא יִתְעַכַּב וְאֶתֵּן בְּצִיּוֹן פְּרִיק
לְיִשְׂרָאֵל תּוּשְׁבַּחְתִּי׃

מז

1 חוּתִי וְתִיבִי עַל עַפְרָא מַלְכוּ כְּנִשְׁתָּא דְּבָבֶל תִּיבִי לְאַרְעָא לֵית כּוּרְסֵי יְקַר מַלְכוּת כַּסְדָּאֵי
2 אֲרֵי לָא תוֹסְפִין דְּיִקְרוּן לִךְ רַכִּיכָא וּמְפַנְּקָא׃ קַבִּילִי מְרוֹעָא וְעוּלִי בְשִׁעְבּוּד גְּלַאִי יְקַר
3 מַלְכוּתִיךְ אִתְבַּרוּ שִׁלְטוֹנַיִךְ אִתְבַּדַּרוּ עַם מַשְׁרְיָתִיךְ גְּלוֹ כְּמֵי נַהֲרָא׃ תִּתְגְּלֵי בַהֲתְתִיךְ אַף
4 יִתְחֲזֵי קְלָנִיךְ פּוּרְעֲנוּת גְּמִירָא אִתְפְּרַע מִנִּיךְ וַאֲשַׁנֵּי דִּינִיךְ מִבְּנֵי אֱנָשָׁא׃ פָּרְקָנָא יְיָ צְבָאוֹת
5 שְׁמֵיהּ קַדִּישָׁא דְּיִשְׂרָאֵל׃ תִּבִי שָׁתְקָא וְעוּלִי בְּקַבְלָא יְקַר מַלְכוּת כַּסְדָּאֵי אֲרֵי לָא תוֹסְפִין
6 דְּיִקְרוּן לִיךְ תְּקִיפַת מַלְכְוָן׃ רְגֵיזִית עַל עַמִּי אַפְסֵית אַחְסַנְתִּי וּמְסַרְתִּנּוּן בִּידִיךְ לָא אִתְמְלֵית
7 עֲלֵיהוֹן רַחֲמִין עַל סָבָא אַתְקֵיפַת מַרְוָתִיךְ לַחֲדָא׃ וַאֲמַרְתְּ לְעָלַם אֱהֵי תְּקִיפַת מַלְכְוָן עַד
לָא שַׁוִּית אִלֵּין עַל לִבִּיךְ לָא אַדְכַּרְתְּ לְסוֹפָא׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Ecce populi colligunt aurum de marsupio, & argentum in stateris ponde- 6
rant ; conducunt argentarium ut faciat sibi deum ; adorant & serviunt ei.
Tollunt illum in humeris suis, & portant illum, & deponunt illum in lo- 7
cum suum, in quo sic stat, ut de loco suo nequeat moveri : etiam interrogant
eum, & non respondet eis ; de tribulatione sua non salvabit eos. Me- 8
mentote hujus, & confortamini ; & revocate prævaricatores in animū. Re- 9
cordamini priorum quæ à seculo sunt, quia ego sum Deus, & non est ultrà
Deus absque me. Annuntians ab exordio in finem, & ab initio quæ 10
necdum facta sunt : dicens, Consilium meum confirmabitur ; & omnem
voluntatem meam faciam. Qui dico ut congregarem captivitatem ab 11
Oriente, & adducerem publicè sicut avem velocissimam de terra longinqua
filios Abraham dilecti mei : etiam locutus sum & etiam adducam illud,
præparabo illud, faciam quoque illud. Obedite verbo meo robusti 12
corde, qui longè estis à justitia. Propè est justitia mea, non elongabitur, & 13
salꝰ mea non impedietur. Dabo enim in Sion salutē, in Israel laudē meā.

CAP. XLVII.

DEscende & sede super pulverem regnum congregationis Babyloniæ ; 1
sede in terra absque solio inclytô regnū Chaldæorum ; quia non vocabunt
te ultrà tenerā & delicatā. Suscipe *infirmitatem*, & ingredere in servitutē, 2
revela gloriā regni tui. Contriti sunt principes tui, dispersi sunt populi exercitus
tui, migraverunt sicut aquæ fluminis. Discooperiatur confusio tua, 3
& videatur quoque ignominia tua. Ultionē perfectā capiā ex te, & mutabo
judiciū tuum à filiis hominum. Redemptor noster Deꝰ exercituum, nomē 4
ejus, Sanctꝰ Israel. Sede tacens, & ingredere in tenebras, regnum Chaldæo- 5
rum ; quia non addent vocare te fortitudinē regnorum. Iratus sum contra 6
populum meum, prophanavi hæreditatem meam, & tradidi eos in manu
tua : non es impleta miserationibus sup eos : sup senem aggravâsti subjectionē
tuam nimis. Et dixisti : In æternum ero fortitudo regnorum : adhuc 7
non posuisti hæc super cor tuum, nec recordata es finis eorum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܠܕܛܥܝܢ܂ ܘܡܦܩܝܢ ܕܗܒܐ ܡܢ ܟܝܣܝܗܘܢ܀ ܘܣܐܡܐ ܒܡܣܐܬܐ ܬܩܠܝܢ܂ ܘܐܓܪܝܢ ܨܐܦܐ 6
ܘܥܒܕܝܢ ܐܠܗܐ. ܘܣܓܕܝܢ ܠܗ. ܐܦ ܡܨܠܝܢ ܠܗ. * ܘܫܩܠܝܢ ܠܗ ܥܠ ܟܬܦܬܗܘܢ 7
ܘܡܚܕܪܝܢ ܠܗ. ܘܡܩܝܡܝܢ ܠܗ ܥܠ ܕܘܟܬܗ. ܘܠܐ ܡܫܟܚ ܠܡܩܡ ܡܢ ܕܘܟܬܗ. ܐܦ
ܡܨܠܝܢ ܠܗ. ܘܠܐ ܥܢܐ ܠܗܘܢ. ܘܠܐ ܦܪܩ ܠܗܘܢ ܡܢ ܐܘܠܨܢܗܘܢ. * ܐܬܕܟܪܘ ܗܠܝܢ. 8
ܘܐܬܒܝܢܘ. ܘܐܬܦܢܘ ܠܠܒܐ‥ ܚܛܝܐ. * ܐܬܕܟܪܘ ܩܕܡܝܬܐ ܕܡܢ ܥܠܡ. ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܐܠܗܐ. 9
ܘܠܝܬ ܬܘܒ ܠܒܪ ܡܢܝ. ܘܠܝܬ ܐܟܘܬܝ. * ܘܡܚܘܐ ܐܢܐ ܡܢ ܪܫܝܬܐ ܐܚܪܝܬܐ. ܘܡܢ 10
ܩܕܝܡ ܕܠܐ ܢܗܘܝܢ. ܘܐܡܪ ܐܢܐ. ܬܪܥܝܬܝ ܬܩܘܡ. ܘܟܠܗ ܨܒܝܢܝ ܥܒܕ ܐܢܐ. * ܩܪܐ 11
ܐܢܐ ܡܢ ܡܕܢܚܐ ܛܝܪܐ. ܘܡܢ ܐܪܥܐ ܪܚܝܩܬܐ ܓܒܪܐ ܕܬܪܥܝܬܝ. ܐܢܐ ܡܠܠܬ ܐܢܐ ܐܦ ܡܝܬܐ
ܐܢܐ. ܒܪܝܬ. ܐܦ ܥܒܕ ܐܢܐ. * ܫܡܥܘܢܝ ܥܛܝܫܝ ܠܒܐ‥ ܕܪܚܝܩܝܢ ܡܢ ܙܕܝܩܘܬܐ. 12
* ܩܪܒܬ ܙܕܝܩܘܬܝ ܠܡܐܬܐ. ܘܦܘܪܩܢܝ ܠܐ ܢܘܚܪ. ܘܐܬܠ ܒܨܗܝܘܢ ܦܘܪܩܢܐ. ܘܠܐܝܣܪܝܠ 13
ܠܬܫܒܘܚܬܝ. * ܡܐܡܪ * ܩܦܠܐܘܢ * ܢܚܘܬܝ ܘܬܒܝ ܥܠ ܥܦܪܐ ܒܬܘܠܬܐ‥ 1
ܒܪܬ ܒܒܠ. ܬܒܝ ܥܠ ܐܪܥܐ. ܒܪܬ ܟܣܕܝܐ. ܠܝܬ ܟܘܪܣܝܐ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܬܘܣܦܝܢ ܬܘܒ
ܠܡܬܩܪܝܘ ܡܦܢܩܬܐ ܘܡܥܕܢܬܐ. * ܣܒܝ ܪܚܝܐ. ܛܘܚܢܝ ܩܡܚܐ. ܓܠܝ ܐܣܬܟܝܟܝ 2
ܣܪܩܝ ܚܘܪܬܟܝ. * ܓܠܝ ܫܩܝܟܝ. ܘܬܬܚܙܐ ܥܪܛܠܝܘܬܟܝ. ܘܢܬܚܙܐ ܚܣܕܟܝ. ܘܠܐ ܐܦܓܥ 3
ܒܟܝ ܒܪܢܫܐ. * ܦܪܘܩܢ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ. ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܬܒܝ ܒܫܬܩܐ. ܘܥܘܠܝ 4 5
ܒܚܫܘܟܐ ܒܪܬ ܟܣܕܝܐ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܬܘܣܦܝܢ ܬܘܒ ܠܡܬܩܪܝܘ ܡܪܬ ܡܠܟܘܬܐ.
* ܪܓܙܬ ܥܠ ܥܡܝ. ܘܛܢܦܘ ܝܪܬܘܬܝ. ܘܐܫܠܡܬ ܐܢܘܢ ܒܐܝܕܝܟܝ. ܘܠܐ ܝܗܒܬܝ ܠܗܘܢ 6
ܪܚܡܐ. ܘܥܠ ܣܒܐ ܐܝܩܪܬܝ ܢܝܪܟܝ ܛܒ. * ܘܐܡܪܬܝ ܕܠܥܠܡ ܗܘܝܐ ܐܢܐ ܡܪܬܐ. ܘܠܐ 7
ܣܡܬܝ ܗܠܝܢ ܒܠܒܟܝ. ܘܠܐ ܐܬܕܟܪܬܝ ܚܪܬܐ.

His qui decepti prodigunt aurum è marſupiis ſuis, aut argentum in bilance appendunt, tum conflatore mercede conducto, deum conficiunt, adorant eum, & precantur illum? 6 Deinde geſtantes eum ſuis humeris, & circumagentes eum, demum collocant in loco ſuo, ex quo loco ſurgere nequit: oravit etiam illum, nec exaudit eos, nec eripit illos ex anguſtiis eorum, 7 Memineritis horum, & animadvertite, mentéque perpendite O ſcelerati. 8 Memineritis priorum quæ à ſeculo *facta* ſunt, quòd ego ſim Deus, & nullus præterea ſit præter me De⁹, nullúſque ſit mihi par: 9 Quòd à principio indico poſtrema, & ea quæ nondum facta ſunt multò ante prædico, conſilium meum ratum facio, & omnem voluntatem meam perficio: 10 Voco ab Oriente volucrem, & à terra remotiſſima virũ conſilii mei: ego loquor, & quidẽ adducã: formavi, & quidem faciã. 11 Audite me duri corde, remoti à juſtitia: 12 In procinctu eſt ut veniat juſtitia mea, & ſal⁹ mea nequaquã *diu* morabitur; dabóque in Sione ſalutem, & Iſraeli gloriam meam. 13

CAP. XLVII.

DEſcende, ac ſede ſuper pulverem virgo filia Babelis, ſede humi filia Chaldæorum: non *enim* adeſt ſolium: quia nequaquam vocabunt te deinceps Tenerã ac delicatam. 1 Accipe molam, mole farinam; retege velum tuum, tonde canos tuos: 2 Detege crura tua, & appareat ignominia tua: *egomet* ſuppliciũ de te ſumam, nec ſinam quenquam in te irruere. 3 Servatoris noſtri nomen eſt Dominus potens, Sanct⁹ Iſraelis. 4 Sede in ſtupore, ingredere in tenebras filia Chaldæorum; quia nequaquam vocabunt te deinceps Fortiſſimam regnorum. 5 Iratus populo meo quòd polluiſſent hæreditatem meam, tradideram eos in manus tuas: tu verò nullâ erga eos uſa es clementiâ, quin ſuper ſenes aggravâſti jugum tuum vehementer. 6 Et dixiſti, In perpetuum ero potentiſſima: & hæc animo non perpendiſti, neque recordata es finis. 7

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* انظروا ما صنعتم يا ضالون الذين يخرجون الذهب من اوعيتهم ويقومون الفضة في الميزان 6
بالمثقال * ويستاجرون صايغا صنعوا صنعة الايدي وخروا له سجدا * ويحملونها على اكتافهم 7
ويمضون * وان وضعوه يقيم على مكانه ولا يتحرك * والذي يصرخ اليه لا يسمعه ولا يخلصه
من الاسواء * اذكروا هذه * وتنهدوا وتوبوا يا ضالون * ارجعوا بالقلب واذكروا الاوليات منذ 8 9
الدهر * لاني انا هو الله وليس غيري موجودا ايضا * المخبر اولا بالاواخر قبل ان تكون وتكمل 10
معا * وقلت * كل رايي يقوم * وكلما رويته اصنعه * ادعوا من المشارق طايرا * ومن ارض بعيدة 11
الذين من اجلهم رويت * تكلمت وجلبت * خلقته وصنعته وجلبته وسهلت طريقه *

* الاصحاح الثالث والعشرون * النبوة في بابل وخرابها وما يصيبها *

* اسمعوني ايها الضالون القلب * الذين هم بعيدا من العدل * قربت عدلي وحقي * والخلاص 12 13
الذي من قبلي لست اوخر * اعطيت في صهيون خلاصا * لاسرايل الشرف *

* الفصل السابع والاربعون *

* انزلي اجلسي على الارض ايتها العذري ابنة بابل * اجلسي في الظلام يا ابنة الكلدانيين * 1
لانك لست منذ الان تستزيدي ان تدعي ناعمة ومتنعمة * خذي رحا واطحني دقيقا * 2
انفي نقابك * واكشفي شعرك * واخلعي خفافك * جوزي الانهارا * ستنكشف فضيحتك * 3
تظهر تعييراتك * اخذ منك الواجب * لست اسلمك بعد للناس * قال منجيك رب الجيوش اسمه 4
قدوس اسرايل * اجلسي ساهية * ادخلي في الظلمة يا ابنة الكلدانيين * لست تدعين 5
بعد قوة الملك * احتديت على شعبي * نجست ميراثي * وانا دفعتهم في يدك * وانت لم 6
تعطهم رحمة * ثقلت نير الشيخ جدا * وقلت اكون رييسة الى الابد * ولم تعقلي هذه 7
في قلبك * ولا ذكرت الاواخر *

Videte quid agatis O errantes, qui profertis aurum è vaſis veſtris, & argentum staterâ & pondere æſtimatis; tum aurifice mercede conducto componitis opificium manuale, eiq; procumbitis adorantes: 6 *Tum humeris ſublato abitis, & ſicubi collocetis illud, manet in loco ſuo, nec movetur; & ſi quis clamet ad illud, nec audit, nec liberat eum ab adverſitatibus.* 7 *Recordamini hujus; ſuſpirate, & pœnitentiam agite O errantes:* 8 *Ex animo revertimini, & mementote priorum quæ inde ab æterno* facta ſunt. 9 *Nam ego ſum Deus, & nullus præter me reperitur ultrà; Qui noviſſima prænuntio antequam fiant & impleantur pariter; & dixi, Omne conſilium meum ſtabit, & quicquid libet, ago:* 10 *Voco ab Oriente volucrem, & à regione longinqua eos de quibus cogitavi: locutus ſum, & adduxi: ipſum creavi, feci & adduxi, & viam ejus complanavi.* 11

Textus vigeſimus tertius.

Prophetia de Babele, ipſius deſtructione, & his quæ eventura ſunt ei.

Audite me O errantes corde, qui procul abeſtis à juſtitia: 12 *Admovi juſtitiam meam & veritatem meam; & ſalutem à me futuram non retardabo: dedi in Sione ſalutem, Iſraeli magnificentiam.* 13

CAP. XLVII.

DEſcende, & ſede humi O virgo filia Babelis, ſede in tenebris O filia Chaldæorum; quia nequaquam perges impoſterùm vocari Mollis ac delicata. 1 *Accipe molam, & mole farinam, depone velum tuum, detege crines tuos, exue ocreas tuas, tranſi flumina.* 2 *Detegetur turpitudo tua, apparebunt opprobria tua: exigam à te pœnam debitam, non tradam te ampliùs hominibus,* 3 *Inquit Servator tuus, Dominus exercituum, cujus nomen eſt Sanctus Iſraelis.* 4 *Sede à ſenſibus alienata, ingredere in tenebras O filia Chaldæorum: nequaquam vocaberis impoſterùm Robur regni.* 5 *Excandueram contra populum meum, prophanaveram hæreditatem meam, & ego tradideram eos in manum tuam; tu verò non exhibuiſti eis miſericordiam, imò jugum ſenis præter modum aggravâſti.* 6 *Et dixiſti, Ero domina in perpetuum: & non conſiderâſti hæc animo tuo, neque meminiſti poſtrema.* 7

ישעיה׃ מח

dicens , fiducia in habitans , delicata hoc audi nunc Et
8 וְעַתָּה שִׁמְעִי־זֹאת עֲדִינָה הַיּוֹשֶׁבֶת לָבֶטַח הָאֹמְרָה
, vidua ſedebo Non .amplius me præter non & , Ego : ſuo corde in
בִּלְבָבָהּ אֲנִי וְאַפְסִי עוֹד לֹא אֵשֵׁב אַלְמָנָה
hæc duo tibi venient Et .orbitatem cognoſcam nec
9 וְלֹא אֵדַע שְׁכוֹל׃ וְתָבֹאנָה לָּךְ שְׁתֵּי־אֵלֶּה
ſuam integritatem ſecundùm : viduitas & , orbitas , una die in ſubitò
רֶגַע בְּיוֹם אֶחָד שְׁכוֹל וְאַלְמֹן כְּתֻמָּם
fortitudine in , tuorum maleficiorum multitudine in , te ſuper venient
בָּאוּ עָלַיִךְ בְּרֹב כְּשָׁפַיִךְ בְּעָצְמַת
: dixiſti ; tua malitia in fidiſti Et .vehementer tuorum incantatorum
10 חֲבָרַיִךְ מְאֹד׃ וַתִּבְטְחִי בְרָעָתֵךְ אָמַרְתְּ
.te avertit ipſa tua ſcientia & ,tua Sapientia .me videns Nemo
אֵין רֹאָנִי חָכְמָתֵךְ וְדַעְתֵּךְ הִיא שׁוֹבְבָתֶךְ
veniet Et .ultrà me præter non & , Ego : tuo corde in dixiſti Et
11 וַתֹּאמְרִי בְלִבֵּךְ אֲנִי וְאַפְסִי עוֹד׃ וּבָא
non ,contritio te ſuper cadet & ,ejus auroram ſcies non ,malum te ſuper
עָלַיִךְ רָעָה לֹא תֵדְעִי שַׁחְרָהּ וְתִפֹּל עָלַיִךְ הֹוָה לֹא
.ſcies non ,deſolatio repentè te ſuper veniet & : eam placare poteris
תוּכְלִי כַּפְּרָהּ וְתָבֹא עָלַיִךְ פִּתְאֹם שֹׁאָה לֹא תֵדָעִי׃
,tuorũ maleficiorũ multitudine cũ & ,tuis incantatoribus cum nunc Sta
12 עִמְדִי־נָא בַחֲבָרַיִךְ וּבְרֹב כְּשָׁפַיִךְ
forte ſi , proficere poteris fortè ſi ,tuis pueritiis ab laborâſti quibus in
בַּאֲשֶׁר יָגַעַתְּ מִנְּעוּרָיִךְ אוּלַי תּוּכְלִי הוֹעִיל אוּלַי
.tuorum conſiliorum multitudine in Laborâſti .te robores
13 תַּעֲרוֹצִי׃ נִלְאֵית בְּרֹב עֲצָתָיִךְ
, ſtellas in contemplantes ,cœlos ſpeculantes te ſervent & ,nunc Stent
יַעַמְדוּ־נָא וְיוֹשִׁיעֻךְ הֹבְרוּ שָׁמַיִם הַחֹזִים בַּכּוֹכָבִים
Ecce .te ſuper ſunt ventura quæ ab ,menſes facientes cognoſcere
14 מוֹדִיעִם לֶחֳדָשִׁים מֵאֲשֶׁר יָבֹאוּ עָלָיִךְ׃ הִנֵּה
liberabunt non ; eos combuſſit ignis , ſtipula tanquam fuerunt
הָיוּ כְקַשׁ אֵשׁ שְׂרָפָתַם לֹא־יַצִּילוּ אֶת־
,ſe calefaciendum ad pruna non : flammæ manu de ſuam animam
נַפְשָׁם מִיַּד לֶהָבָה אֵין־גַּחֶלֶת לַחְמָם
.laborâſti quibus tibi fuerunt Sic .eo coram ſedendum ad focus
15 אוּר לָשֶׁבֶת נֶגְדּוֹ׃ כֵּן הָיוּ־לָךְ אֲשֶׁר יָגָעַתְּ
,erraverunt ſuum latus ad unuſquiſque ,tuis pueritiis ab tui Negotiatores
סֹחֲרַיִךְ מִנְּעוּרַיִךְ אִישׁ לְעֶבְרוֹ תָּעוּ
.te ſalvans non
אֵין מוֹשִׁיעֵךְ׃

CAP. XLVIII. מח

, Iſrael nomine in vocati , Jahacob domus hoc Audite
1 שִׁמְעוּ־זֹאת בֵּית־יַעֲקֹב הַנִּקְרָאִים בְּשֵׁם יִשְׂרָאֵל
,DOMINI nomen per jurantes , exierunt Jehudah aquis de &
וּמִמֵּי יְהוּדָה יָצָאוּ הַנִּשְׁבָּעִים בְּשֵׁם יְהוָה
.juſtitia in nec , veritate in non ,facient recordari Iſrael Deo in &
וּבֵאלֹהֵי יִשְׂרָאֵל יַזְכִּירוּ לֹא בֶאֱמֶת וְלֹא בִצְדָקָה׃
Iſrael Deo ſuper & ,ſe vocaverunt ſanctitatis civitate de Nam
2 כִּי־מֵעִיר הַקֹּדֶשׁ נִקְרָאוּ וְעַל־אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל
tunc ex Priora .ejus nomen exercituum Dominus : ſunt innixi
3 נִסְמָכוּ יְהוָה צְבָאוֹת שְׁמוֹ׃ הָרִאשֹׁנוֹת מֵאָז
,feci Repentè .ea feci audire & ,exierunt meo ore ex & ,annuntiavi
הִגַּדְתִּי וּמִפִּי יָצְאוּ וְאַשְׁמִיעֵם פִּתְאֹם עָשִׂיתִי
ferri nervus & : tu durus quòd mea ſcientia Ex .venerunt &
4 וַתָּבֹאנָה׃ מִדַּעְתִּי כִּי קָשֶׁה אָתָּה וְגִיד בַּרְזֶל
.æs tua frons & , tua cervix
עָרְפֶּךָ וּמִצְחֲךָ נְחוּשָׁה׃

Verſio VULG. LAT.

8 Et nunc audi hæc delicata, &
habitans confidenter, quæ di-
cis in corde tuo; Ego ſum, &
nõ eſt præter me ampliùs: non
ſedebo vidua, & ignorabo ſte-
9 rilitatem. Venient tibi duo hæc
ſubitò in die una, ſterilitas &
viduitas: univerſa venerunt ſu-
per te, propter multitudinem
maleficiorum tuorum, & pro-
pter duritiam incantatorum
10 tuorum vehementem. Et fidu-
ciam habuiſti in malitia tua,
& dixiſti; Non eſt qui videat
me: ſapientia tua & ſcientia
tua hæc decepit te. Et dixiſti
in corde tuo; Ego ſum, & præ-
11 ter me non eſt altera. Veniet
ſuper te malum, & neſcies or-
tum ejus: & irruet ſuper te ca-
lamitas, quam non poteris ex-
piare: veniet ſuper te repentè
12 miſeria, quam neſcies. Sta cum
incantatoribus tuis, & cum
multitudine maleficiorum tuo-
rum, in quib⁹ laborâſti ab ado-
leſcentia tua, ſi fortè quid pro-
ſit tibi, aut ſi poſſis fieri fortior.
13 Defeciſti in multitudine con-
ſiliorum tuorum: ſtent, & ſal-
vent te augures cœli, qui con-
templabantur ſidera, & ſuppu-
tabant menſes, ut ex eis annun-
14 tiarent ventura tibi. Ecce fa-
cti ſunt quaſi ſtipula, ignis com-
buſſit eos: non liberabunt ani-
mam ſuam de manu flammæ:
non ſunt prunæ, quibus calefi-
ant; nec focus, ut ſedeant ad
15 eum. Sic facta ſunt tibi in qui-
buſcunque laboraveras: nego-
tiatores tui ab adoleſcentia
tua, unuſquiſque in via ſua er-
raverunt: non eſt qui ſalvet te.

CAP. XLVIII.

1 Audite hæc dom⁹ Jacob, qui
vocamini nomine Iſrael, & de
aquis Juda exîſtis, qui juratis
in nomine Domini, & Dei Iſ-
rael recordamini non in veri-
2 tate, neque in juſtitia. De ci-
vitate enim Sancta vocati ſunt,
& ſuper Deum Iſrael conſta-
biliti ſunt: Dominus exerci-
3 tuum nomen ejus. Priora ex
tunc annuntiavi, & ex ore meo
exierunt, & audita feci ea: re-
pentè operatus ſum, et vene-
4 runt. Scivi enim quia durus
es tu, et nervus ferreus cervix
tua, et frons tua ærea.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

8 Νῦν δὲ (δ) ἄκουε ταῦτα τρυφερὰ, ἡ καθημένη, ἡ πεποιθυῖα, ἡ λέγουσα ἐν (") καρδίᾳ αὐτῆς, Ἐγώ εἰμι, καὶ οὐκ ἔστιν ἑτέρα, οὐ καθιῶ χήρα, οὐδὲ γνώσομαι ὀρφανίαν. 9 Νῦν δὲ ἥξει (ε) ἐπὶ σὲ τὰ δύο ταῦτα ἐξαίφνης ἐν ἡμέρᾳ μιᾷ, ἀτεκνία καὶ χηρεία ἥξει ἐξαίφνης ἐπὶ σὲ, ἐν τῇ φαρμακείᾳ σου, ἐν τῇ ἰσχύϊ τῶν ἐπαοιδῶν σου σφόδρα, 10 Τῇ ἐλπίδι τῆς πονηρίας σου· σὺ γὰρ εἶπας, Ἐγώ εἰμι, καὶ οὐκ ἔστιν ἑτέρα. γνῶθι, (ζ) ἡ σύνεσις τούτων ἔσται, καὶ ἡ πορνεία σου σοὶ αἰσχύνη. καὶ εἶπας τῇ καρδίᾳ σου, Ἐγώ εἰμι, καὶ 11 οὐκ ἔστιν ἑτέρα. Καὶ ἥξει ἐπὶ σὲ ἀπώλεια, καὶ οὐ μὴ γνῷς· βόθυνος, καὶ ἐμπεσῇ εἰς αὐτόν· καὶ ἥξει ἐπὶ σὲ ταλαιπωρία, καὶ οὐ μὴ δυνήσῃ καθαρὰ γενέσθαι· καὶ ἥξει ἐπὶ σὲ (η) ἐξαπίνης ἀπώλεια, καὶ οὐ μὴ (θ) γνώσῃ. 12 Στῆθι νῦν ἐν ταῖς ἐπαοιδαῖς σου, καὶ ἐν τῇ πολλῇ φαρμακείᾳ σου, ἃ ἐμάνθανες ἐκ νε-13 ότητός σου, εἰ δυνήσῃ ὠφεληθῆναι. Κεκοπίακας ἐν ταῖς βουλαῖς σου· στήτωσαν (ι) δὴ καὶ σωσάτωσάν σε οἱ ἀστρολόγοι τοῦ οὐρανοῦ, οἱ ὁρῶντες τοὺς ἀστέρας ἀναγγειλάτω-14 σάν σοι, τί μέλλει ἐπὶ σὲ ἔρχεσθαι. Ἰδοὺ πάντες ὡς φρύγανα ἐπὶ πυρὶ (") κατακαυθήσονται, καὶ οὐ μὴ ἐξέλωνται τὴν ψυχὴν αὐτῶν ἐκ φλογός· ὅτι ἔχεις ἄνθρακας πυρὸς, 15 κάθισαι ἐπ᾽ αὐτοὺς, Οὗτοι ἔσονταί σοι βοήθεια. ἐκοπίασας ἐν τῇ μεταβολῇ (κ) ἐκ νεότητος, ἄνθρωπος καθ᾽ ἑαυτὸν ἐπλανήθη, σοὶ δὲ οὐκ ἔσται σωτηρία.

Nunc autem audi hæc, delicata, 8 quæ ſedes, quæ confidis, quæ dicis in corde tuo; Ego ſum, & non eſt altera: non ſedebo vidua, neque cognoſcam orbitatem. Nunc 9 autem venient ſuper te duo hæc ſubitò in die una: orbitas, & viduitas venient repentè ſuper te, in maleficio tuo, in fortitudine incantatorum tuorum valdè, (e) Spe malitiæ tuæ. Tu enim di- 10 xiſti; Ego ſum, & non eſt altera. Scito: (f) intelligentia horum erit, & fornicatio tua tibi confuſio. Et dixiſti corde tuo; Ego ſum, & non eſt altera. Et 11 veniet ſuper te perditio, & neſcies: fovea, & incides in eam. Et veniet ſuper te miſeria; & non poteris munda fieri: & veniet ſuper te ſubitò perditio, & neſcies. Sta nunc in incantationi- 12 bus tuis, & in multo maleficio tuo, quæ diſcebas ad adoleſcentia tua: ſi poteris adjuvari. Labo- 13 râſti in conſiliis tuis: ſtent nunc, & ſalvam te faciant aſtrologi cœli: qui contemplantur ſtellas, annuntient tibi, quid venturum ſit ſuper te. Ecce omnes quaſi 14 phrygana in igne comburentur: & non eruent animam ſuam de flamma: quia habes carbones ignis; (g) ſede ſuper eos: Hi erunt tibi 15 adjutorium. Laborâſti in commutatione ab adoleſcentia: homo in ſemetipſo erravit; tibi autem non erit ſalus.

MS. A. (δ) ἄκουσον ταῦτα ἡ τρυφερὰ, (") τῇ καρδίᾳ (ε) ἐξέφνης τὰ δύο ταῦτα ἐν μιᾷ ἡμέρᾳ, χηρεία καὶ ἀτεκνία (ζ) ὅτι ἡ σύνεσις τούτων, καὶ ἡ πορνεία σου ἔσται σοι αἰσχύνη. (η) ἐξέφνης (θ) γνῷς. (ι) καὶ σωσάτωσάν (") κατακαήσονται (κ) σου ἐκ

ΚΕΦ. μη΄.

1 ΑΚούσατε ταῦτα οἶκος Ἰακὼβ, οἱ κεκλημένοι (α) ἐπὶ τῷ ὀνόματι Ἰσραὴλ, (β) καὶ ἐξ Ἰούδα ἐξελθόντες, οἱ ὀμνύοντες τῷ ὀνόματι κυρίου θεοῦ Ἰσραὴλ, μιμνησκόμενοι 2 οὐ μετὰ ἀληθείας, οὐδὲ μετὰ δικαιοσύνης, Καὶ ἀντεχόμενοι τῷ ὀνόματι τῆς πόλεως τῆς ἁγίας, καὶ ἐπὶ τῷ θεῷ (γ) Ἰσραὴλ ἀντιστηριζόμενοι· Κύριος Σαβαὼθ ὄνομα αὐτῷ. 3 Τὰ πρότερα ἔτι ἀνήγγειλα, καὶ ἐκ τοῦ στόματός μου ἐξῆλθε, καὶ (δ) ἀκουστὸν ἐγένε-4 το· ἐξάπινα ἐποίησα, καὶ ἐπῆλθεν. Γινώσκω (ε) ὅτι σκληρὸς εἶ, καὶ νεῦρον σιδηροῦν ὁ τράχηλός σου, καὶ τὸ μέτωπόν σου χαλκοῦν.

CAP. XLVIII.

Audite hæc domus Jacob, qui 1 vocati eſtis in nomine Iſrael, & de (a) Juda exiiſtis, qui juratis in nomine Domini Dei Iſrael, commemorantes non cũ veritate, neq; cum juſtitia. Et inhærentes 2 nomini civitatis Sanctæ, & ſuper Deum Iſrael innitentes. Dominus Sabaoth nomen ei. Priora ad- 3 huc annuntiavi, & de ore meo egreſſa ſunt, & auditum factum eſt. Subitò feci: & advenerunt. Scio, quia durus es, & nervus 4 ferreus collum tuum, & frons tua ænea.

MS. A. (α) τῷ ὀνόματι (β) καὶ οἱ (γ) τοῦ Ἰσραὴλ (δ) ἀκουστὰ (ε) ἐγὼ ὅτι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

8 וּכְעַן שְׁמַעִי דָא מְפַנְקְתָא דְיָתְבָא לִרְחָצָן דְאָמְרָא בְלִבַּהּ אֲנָא וְלֵית בַּר מִנִּי עוֹד לָא אֵתִיב
9 אַרְמְלוּ וְלָא אֵדַע תִּכְלוּ׃ וְיֵיתְיָן לִיךְ תַּרְתֵּין אִלֵּין זְמַן בְּיוֹמָא חַד תִּכַל וְאַרְמְלוּ כִּדְשַׁלְמָן
10 יֵיתוֹן עֲלָךְ בִּסְגִיאוּת חַרְשָׁךְ בִּתְקוֹף קִסְמַךְ לַחֲדָא׃ וְאִתְרְחֵיצְתְּ בְּבִישְׁתִיךְ אֲמַרְתְּ לֵית
11 דְּחָזֵי לִי חוּכְמְתִיךְ וּמַדְעִיךְ הִיא קַלְקְלָתִיךְ וַאֲמַרְתְּ בְּלִבִּיךְ אֲנָא וְלֵית בַּר מִנִּי עוֹד׃ וְתֵיתֵי
עֲלָךְ בִּישְׁתָא לָא תֵּדְעִין לְמִבְעֵי עֲלַהּ וְתִפּוֹל עֲלָךְ עָקָא לָא תִכְלִין לְאַעְדָיוּתַהּ וְתֵיתֵי עֲלָךְ
12 בִּתְכֵּיף אִתְרְגוּשָׁא לָא תֵדְעִין׃ קוּמִי כְעַן בְּקִסּוּמַיִךְ וּבְסַגִּיאוּת חַרְשַׁיִךְ דַּהֲוֵית מִתְעַסְּקָא
13 בְּהוֹן מִיַּנְקוּתִיךְ מָאִים תִּכְלִין לַהֲנָאָה מָאִים תִּכְלִין לְמִתְקַף׃ לְאֵית בִּסְגִיאוּת מִלְּכָךְ
יְקוּמוּן כְּעַן וְיִפְרְקוּנִיךְ דְּמִסְכָּן לְמוֹלָדַת שְׁמַיָּא וְדִחְזָן בְּכוֹכְבַיָּא מְהוֹדְעִין וּמְנַיָא מָטְעָן לִיךְ
14 לְמֵימַר כֵּן עָתִיד לְמֵיתֵי עֲלָךְ יְרַח בִּירַח׃ הָא הֲווֹ חַלָּשִׁין כְּקַשָּׁא עַמְמַיָּא דְתַקִּיפִין כְּאֶשָּׁתָא
שֵׁיצִיאוּנוּן לָא יְשֵׁזְבוּן יַת נַפְשְׁהוֹן מִיַּד קָטוֹלִין לֵית שְׁאָר וּמְשֵׁיזֵב אַף לָא אֲתַר לְאִשְׁתֵּזָבָא
15 בֵּיהּ׃ כֵּן הֲווֹ בִיךְ עוֹבְדֵי שִׁקְרַיִךְ דַּהֲוֵית מִתְעַסְּקָא בְהוֹן מִיַּנְקוּתִיךְ שִׁלְטוֹנֵי תוּקְפִיךְ [illegible]
לִקְבֵיל אַפּוֹהִי גְלוֹ לֵית דְּפָרִיק לִיךְ׃

מח

1 שִׁמְעוּ דָא בֵּית יַעֲקֹב דְּמִתְקְרָן בִּשְׁמָא דְיִשְׂרָאֵל וּמִזַּרְעִית יְהוּדָה נְפָקוּ דִּגְזַר לְהוֹן קְיָם
2 בִּשְׁמָא דַיְיָ אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל לָא יִפְסַק דִּכְרָנְהוֹן הֲלָא קְיָם מֵימְרֵיהּ בִּקְשׁוֹט וּבִזְכוּ׃ אֲרֵי
3 בְקַרְתָּא דְקוּדְשָׁא חוּלָקְהוֹן וְעַל אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל רוּחְצָנְהוֹן יְיָ צְבָאוֹת שְׁמוֹ׃ קַדְמָיָתָא
4 מִבְּכֵן חַוֵּיתִי וּמִמֵּימְרִי נְפָקָא וּמְסַרְתִּנוּן בִּתְכֵּף עֲבַדְתִּנוּן וַאֲתָאָה׃ גְּלֵי קֳדָמַי דְּאַתְּ סָרְבָן
וְקָשֵׁי כְּבַרְזְלָא קְדָלָךְ וּבֵית עֵינָךְ חֲסִין כִּנְחָשָׁא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et nunc audi hoc delicata quæ habitas confidenter, dicens in corde ſuo: Ego 8 ſum, & non eſt præter me amplius: non ſedebo vidua, nec ſciam orbationem. Et venient tibi duo hæc ſubitò in die uno, orbatio & viduitas; cùm 9 fuerint perfectæ, venient ſuper te, in multitudine maleficiorum tuorum, & in fortitudine incantationũ tuarũ vehementer. Et confiſa es in malitia tua: 10 dixiſti, Non eſt qui videat me: ſapientia tua & ſcientia tua ipſa *pervertit* te. Et dixiſti in corde tuo: Ego ſum, & præter me non eſt amplius. Et ve- 11 niet ſuper te malum, & neſcies deprecari ſuper ipſum: & cadet ſuper te tribulatio, & non poteris auferre eam: & veniet ſuper te repentè tumultus quem neſcis. Sta nunc cum divinationibus tuis, & in multitudine malefi- 12 ciorũ tuorũ, in quibus laborâſti ab infantia tua: ſi fortè poteris prodeſſe, aut ſi fortè poteris confortari. Laborâſti in multitudine conſiliorum 13 tuorum: ſtent nunc & ſalvent te qui contemplantur ſydera cœli, & vident in ſtellis: qui tempora ſcire faciunt, ſeducunt te dicentes: Sic venturum eſt tibi per ſingulos menſes. Ecce facti ſunt infirmi quaſi ſtipula, populi 14 qui erant fortes quaſi ignis: *conſumpſerunt* eos, & non liberabunt animam ſuam de manu occidentium: nec erit reſiduum, nec qui evadat, nec erit eis locus in quo liberentur. Sic fuerunt in te operantes iniquitates tuas, in 15 quibus laborâſti ab infantia tua; principes fortitudinis tuæ; unuſquiſque migravit contra faciem ſuam; non eſt qui ſalvet te.

CAP. XLVIII.

Audite hoc dom⁹ Jacob, qui vocamini in nomine Iſrael, & de cognatione 1 Juda exiſtis, quibus initum eſt pactum in nomine Dñi Dei Iſrael, non ceſſabit memoria eorum: an non ſtat verbum ejus in veritate & juſtitia? Quo- 2 niam in civitate ſancta eſt pars eorum, & in Deo Iſrael confidentia eorum, Dominus exercituum nomen ejus. Quæ prima fuerunt, ex tunc annuntiavi, 3 & de verbo meo exierunt, & *tradidi* ea: repentè feci ea, & evenerunt. Manifeſtum eſt coram me quòd rebellis ſis, & durum ſicut ferrum collum 4 tuum, & frons tua fortis ſicut æs.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

8 * ܗܫܐ ܫܡܥܝ ܗܠܝܢ ܡܦܢܩܬܐ ܕܝܬܒܐ ܠܫܠܝܐ. ܘܐܡܪܐ ܒܠܒܗ. ܐܢܐ ܐܢܐ ܘܠܒܪ ܡܢܝ
ܠܝܬ. ܠܐ ܝܬܒܐ ܐܢܐ ܐܪܡܠܬܐ. ܘܠܐ ܐܕܥ ܬܟܠܐ. * ܢܐܬܝܢ ܠܟܝ ܬܪܬܝܗܝܢ ܗܠܝܢ ܡܚܘܬܐ 9
ܒܝܘܡܐ ܚܕ. ܬܟܠܐ ܘܐܪܡܠܘܬܐ. ܡܢ ܫܠܝܐ ܢܐܬܝܢ ܠܟܝ. ܒܣܘܓܐܐ ܕܚܪܫܝܟܝ.
ܘܒܣܘܓܐܐ ܕܩܨܡܝܟܝ. * ܐܬܬܟܠܬܝ ܓܝܪ ܥܠ ܒܝܫܘܬܟܝ. ܘܐܡܪܬܝ. ܕܠܝܬ ܕܚܙܐ ܠܝ. 10
ܚܟܡܬܟܝ ܘܝܕܥܬܟܝ. ܗܝ ܐܛܥܝܬܟܝ. ܘܐܡܪܬܝ ܒܠܒܟܝ. ܐܢܐ ܐܢܐ ܘܠܒܪ ܡܢܝ ܠܝܬ. * ܘܬܐܬܐ 11
ܥܠܝܟܝ ܒܝܫܬܐ ܒܨܦܪܐ. ܘܠܐ ܬܕܥܝܢ. ܘܬܦܠ ܥܠܝܟܝ ܬܘܠܫܐ. ܘܠܐ ܬܫܟܚܝܢ ܠܡܥܒܪܘܬܗ.
ܘܬܐܬܐ ܥܠܝܟܝ ܡܢ ܫܠܝܐ ܫܓܘܫܝܐ. ܘܠܐ ܬܪܓܫܝܢ. * ܩܘܡܝ ܗܐ ܒܚܪܫܝܟܝ ܘܒܣܘܓܐܐ ܕܚܪܫܝܟܝ 12
ܣܓܝܐܐ. ܕܠܐܝܬܝ ܒܗܘܢ ܡܢ ܛܠܝܘܬܟܝ. ܐܢ ܬܫܟܚܝܢ ܠܡܘܬܪܘ. ܐܢ ܬܬܚܝܠܝܢ.
* ܠܐܝܬܝ ܒܣܘܓܐܐ ܕܡܬܚܫܒܢܘܬܟܝ. ܢܩܘܡܘܢ ܘܢܦܪܩܘܢܟܝ ܟܠܕܝܐ. ܕܚܙܝܢ ܫܡܝܐ 13
ܘܟܘܟܒܐ. ܘܡܘܕܥܝܢ ܠܟܝ ܒܝܪܚܐ ܕܐܬܝܢ ܠܟܝ. * ܗܐ ܗܘܘ. ܐܝܟ ܩܠܐ ܕܐܘܩܕܬ 14
ܐܢܘܢ ܢܘܪܐ. ܘܠܐ ܢܦܨܘܢ ܢܦܫܗܘܢ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܫܠܗܒܝܬܐ. ܠܝܬ ܓܘܡܪܐ ܠܢܘܪܗܘܢ.
ܘܠܐ ܢܘܗܪܐ ܕܠܘܩܒܠܗ ܢܬܒܘܢ. * ܗܟܢܐ ܗܘܘ ܠܟܝ ܬܓܪܝܟܝ. ܕܠܐܝܬܝ ܒܗܘܢ ܡܢ 15
ܛܠܝܘܬܟܝ. ܐܢܫ ܠܥܒܪܗ ܛܥܐ. ܘܠܝܬ ܕܦܪܩ ܠܟܝ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܚ *

1 * ܫܡܥܘ ܗܠܝܢ ܕܒܝܬ ܝܥܩܘܒ. ܕܡܬܩܪܝܢ ܒܫܡܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܡܢ ܡܝܐ ܕܝܗܘܕܐ
ܢܦܩܘ. ܕܝܡܝܢ ܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܕܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܡܥܗܕܝܢ. ܠܐ ܒܫܪܪܐ ܘܠܐ ܒܙܕܝܩܘܬܐ.
* ܡܛܠ ܕܡܢ ܡܕܝܢܬܐ ܕܩܘܕܫܐ ܐܬܩܪܝܘ. ܘܥܠ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܡܬܬܟܠܝܢ. ܡܪܝܐ 2
ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ. * ܩܕܡܝܬܐ ܕܡܢ ܩܕܝܡ ܚܘܝܬ. ܘܡܢ ܦܘܡܝ ܢܦܩ. ܘܐܫܡܥܬܟܘܢ 3
ܐܢܝܢ ܠܟܘܢ. ܘܡܢ ܫܠܝܐ ܥܒܕܬ ܐܢܝܢ. ܘܗܘܝ. * ܝܕܥ ܐܢܐ ܓܝܪ ܕܩܫܐ ܐܢܬ. ܘܩܕܠܟ 4
ܫܪܝܢܐ ܕܦܪܙܠܐ. ܘܒܝܬ ܥܝܢܝܟ ܢܚܫܐ.

Nunc audi hæc O voluptaria, quæ tranquillè ſedes, & in corde tuo dicis, Ego ſum, & nulla præter me; non ſedebo vidua, neque experiar orbitatem : 8
Evenient tibi ambo hæc flagella, eodem die : orbitas & viduitas ex improviſo evenient tibi, nil prohibente multitudine veneficorum tuorum, neque multitudine magorum tuorum. 9
Quia confiſa es malitiæ tuæ, & dixiſti; Non eſt qui me videat, ſapientia & ſcientia tua ipſa te decepit, & dixiſti in corde tuo; Ego ſum, & nulla præter me : 10
Superveniet tibi malum in matutino, te ignorante; occupabit te terror quem non poteris amovere, & veniet ſuper te repentè perturbatio, te non præſentiente. 11
Sta jam cum magis tuis, & veneficiis tuis multis in quibus deſudâſti à pueritia tua; fortè proficere poſſes, fortè vires acquireres. 12
Defatigata es multitudine cogitationum tuarum : ſtent, ſalvéntque te Chaldæi contemplatores cœli & ſiderum, & nota faciant tibi intra menſem quæ eventura ſunt tibi. 13
Ecce facti ſunt tanquam ſtipulæ quas combuſſit ignis, nec eripient ſe ipſos è manu flammæ : nullos habebit carbones ignis eorum, neque fulgorem cujus ex adverſo ſedere quis *poſſit*. 14
Tales facti ſunt tibi mercatores tui quibuſcum laborâſti à pueritia tua : unuſquiſque ſuam partem verſùs aberravit, nec adfuit qui te liberaret. 15

CAP. XLVIII.

Audite hæc filii familiâs Jacobi, qui vocant ſe de nomine Iſraelis, & ex aqua Judæ prodierunt; qui jurant per nomen Domini, & Dei Iſraelis mentionem faciunt mendaciter & injuſté. 1
Nam à civitate ſancta ſe vocant, & Deo Iſraelis innituntur, cujus nomen eſt Dominus potens. 2
Priora quæ inde ab initio *facta* fuerant, indicavi, prodierunt ex ore meo, eaque narravi vobis, quæ repentè ſum effecturus, & eventura ſunt. 3
Noveram te durum eſſe, cervicem tuam nervum ferreum, & frontem tuam æneam : 4

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

8 * والان اسمعي هذه ايها المتنعمة الجالسة المطمينة * القايلة في قلبها انا انا وليست اخرى
9 موجودة * لست اجلس ارملة * ولا اعرف يتما * والان ياتي عليك هاتان الاثنتان بغتة في يوم
واحد * الترمل وعدم الاولاد ياتي عليك بغتة بقوتك في سحر منجميك جدا في رجاء شرك *
10 * لانك انت قلت انا انا وليست اخرى موجودة * اعلمي ان فهم هولاء وزنايك يكون لك خزيا *
11 وقلت في قلبك انا انا وليست اخرى موجودة * وياتي عليك الهلاك ولا تعلمين حضن *
وتسقطين فيه * وياتي عليك الشقاء ولا تستطيعين ان تكوني طاهرة * وياتي عليك الهلاك
12 بغتة ولا تعلمين * فقفي الان في رقاك وفي سحرك الكثير الذي تعملينه منذ صبايك اتقدرين
13 ان تنتفعي * تعبت بافكارك * ليقوموا ويخلصوك القايلون بنجوم السماء * الذين ينظرون
14 الكواكب ليخبروك ما هو مزمع ان ياتي عليك * ها جميعهم مثل الهشيم يحترقون بالنار * ولا
يخرجون نفوسهم من اللهيب * انهم لك شرارات نار لتجلسي عليها * هولاء يكونون لك معونة *
15 * تعبت بتجارك منذ صبايك * والانسان ضل في ذاته * ولم يكن لك خلاص *

* الفصل الثامن والاربعون *

* النبوة في بني اسرايل ورد سبيهم * وقول يعيرهم على ما كان منهم من سوء الاعمال *

1 * اسمعوا هذه يا بيت يعقوب المدعوون باسم اسرايل * والذين خرجوا من يهودا * الذين يحلفوا
2 باسم الرب اله اسرايل * ويتذكرون لا بالحق ولا بالعدل * ويفتكرون ويتمسكون باسم المدينة
3 المقدسة * وباله اسرايل يتسددون * اسمه رب الجنود * الاوليات اخبرت بها ايضا * ومن فمي
4 خرجت * وصارت مسموعة * صنعتها بغتة وجاءت * انا اعرف انك انت قاس * ورقبتك عصب
حديد * وجبهتك نحاس *

Nunc itaque audi hæc O delicata, quæ ſedes tuta, & dicis in corde tuo, Ego, ego ſum, & nulla alia reperitur : non ſedebo vidua, neque orbitatem experiar. 8
At jam evenient tibi duo iſta repentè in uno die; viduitas & defectus filiorum evenient tibi repente cum fortitudine tua, cum magia aſtrologorum tuorum plurima, cum fiducia quam habes in *malitia tua.* 9
Quia tu dixiſti, Ego, ego ſum, nec alia reperitur; noveris quòd iſtorum prudentia & ſcortatio tua erunt tibi pudori. Dixiſti in corde tuo, Ego, ego ſum, & alia non reperitur; 10
Ideo ſuperveniet tibi exitium cujus præſentiam ignorabis, & incides in illud : venietque ſuper te calamitas, & non poteris eſſe munda : denique veniet ſuper te exitium repentinum te inſciâ. 11
Sta jam cum incantationibus & magiis tuis multis, quas exerces inde à pueritia tua, ſi fortè proficere poſſis. 12
Laborâſti in cogitationibus tuis; ſurgant & liberent te qui futura præſagiunt ex aſtris cœleſtibus : qui ſtellas contemplantur, prædicant tibi quæ tibi ſunt eventura. 13
Ecce omnes tanquam ſtipula igne comburentur, & non extrahent ſeipſos è flamma : hi erunt tibi ſcintillæ ignis in quibus ſedeas : hi eſſent tibi auxilio? 14
Laborâſti in negotiatoribus tuis à pueritia tua; at quiſque ſeorſum aberravit, nec fuit tibi ſalus. 15

CAP. XLVIII.

Prophetia de filiis Iſrael, & reductione captivitatis eorum. Item ſermo objurgatorius propter perpetratas ab eis actiones iniquas.

Audite hoc O domus Jacobi, qui nomen ſumitis ab Iſraele, & qui originem ducitis à Juda, qui juratis per nomen Domini Dei Iſraelis, memoriâ tamen neque veritatem neque juſtitiam recolitis; 1
Quamvis mente agitetis & teneatis nomen urbis ſanctæ, & in Deo Iſraelis vires collocetis, cujus nomen eſt Dominus exercituum. 2
Priora quoque indicavi, ex ore meo prodierunt, & facta ſunt publica : ea feci repentè, & evenerunt. 3
Equidem ſcio te durum eſſe, cervicem tuam nervum ferreum, & frontem tuam æneam : 4

fortè ne , te feci audire veniret antequam ,*tunc ex* tibi annuntiavi Et
5 וָאַגִּיד לְךָ מֵאָז בְּטֶרֶם תָּבוֹא הִשְׁמַעְתִּיךָ פֶּן־
.ea præcepit meũ conflatile &,meũ ſculptile & ,ea fecit *meus Dolor* : diceres
תֹּאמַר עָצְבִּי עָשָׂם וּפִסְלִי וְנִסְכִּי צִוָּם׃
? annuntiabitis nonne vos & ,hoc totum vide , Audiſti
6 שָׁמַעְתָּ חֲזֵה כֻּלָּהּ וְאַתֶּם הֲלוֹא תַגִּידוּ
.ea ſciviſti non & , conſervata & ,*nunc* ex nova te feci audire
הִשְׁמַעְתִּיךָ חֲדָשׁוֹת מֵעַתָּה וּנְצֻרוֹת וְלֹא יְדַעְתָּם׃
: ea audiſti non & ,diem ante & , *tunc* ex non & , ſunt creata Nunc
7 עַתָּה נִבְרְאוּ וְלֹא מֵאָז וְלִפְנֵי־יוֹם וְלֹא שְׁמַעְתָּם
etiam , audiſti non Etiam .ea cognovi Ecce , diceres fortè ne
8 פֶּן־תֹּאמַר הִנֵּה יְדַעְתִּין׃ גַּם לֹא־שָׁמַעְתָּ גַּם
novi nam : tua auris aperta fuit non *tunc* ex etiam ,cognoviſti non
לֹא יָדַעְתָּ גַּם מֵאָז לֹא־פִתְּחָה אָזְנֶךָ כִּי יָדַעְתִּי
tibi es vocatus utero ab prævaricator & , prævaricaberis prævaricando
בָּגוֹד תִּבְגּוֹד וּפֹשֵׁעַ מִבֶּטֶן קֹרָא לָךְ׃
frænum injiciam mea laude & ,meũ furorem prolongabo meũ nomen Propter
9 לְמַעַן שְׁמִי אַאֲרִיךְ אַפִּי וּתְהִלָּתִי אֶחֱטָם־
: *argento in* non & , te purgavi Ecce .*te ſuccidendum* non *ad* : tibi
10 לָךְ לְבִלְתִּי הַכְרִיתֶךָ׃ הִנֵּה צְרַפְתִּיךָ וְלֹא בְכָסֶף
, faciam me propter ,me Propter .afflictionis camino in te elegi
11 בְּחַרְתִּיךָ בְּכוּר עֹנִי׃ לְמַעֲנִי לְמַעֲנִי אֶעֱשֶׂה
Audi .dabo non alteri meã gloriam & ? *prophanabitur quomodo* nam
12 כִּי־אֵיךְ יֵחָל וּכְבוֹדִי לְאַחֵר לֹא־אֶתֵּן׃ שְׁמַע
, primus ego ipſe ego : *meus* vocatus Iſrael & , Jahacob me *ad*
אֵלַי יַעֲקֹב וְיִשְׂרָאֵל מְקֹרָאִי אֲנִי־הוּא אֲנִי רִאשׁוֹן
, terram fundavit mea manus Etiam .noviſſimus ego etiam
13 אַף אֲנִי אַחֲרוֹן׃ אַף־יָדִי יָסְדָה אֶרֶץ
.ſimul ſtabunt ,eos *ad ego vocans* : cœlos eſt mẽſa *palmo* mea dextera&
וִימִינִי טִפְּחָה שָׁמָיִם קֹרֵא אֲנִי אֲלֵיהֶם יַעַמְדוּ יַחְדָּו׃
? iſta annuntiavit eos inter quis ,audite & ,*vos* omnes vos Congregate
14 הִקָּבְצוּ כֻלְּכֶם וּשְׁמָעוּ מִי בָהֶם הִגִּיד אֶת־אֵלֶּה
ejꝰ brachiũ & , Babel in ejꝰ voluntatẽ faciet , eũ dilexit DOMINUS
יְהוָה אֲהֵבוֹ יַעֲשֶׂה חֶפְצוֹ בְּבָבֶל וּזְרֹעוֹ
eum adduxi : eũ vocavi etiam ,ſum locutus ego Ego .Chaſdim
15 כַּשְׂדִּים׃ אֲנִי אֲנִי דִּבַּרְתִּי אַף־קְרָאתִיו הֲבִיאֹתִיו
non , hoc audite ,me ad Appropinquate .ejus via proſperabitur &
16 וְהִצְלִיחַ דַּרְכּוֹ׃ קִרְבוּ אֵלַי שִׁמְעוּ־זֹאת לֹא
nunc & : *ego* ibi , *illud eſſe* tempore à,ſum locutꝰ abſcõdito in *capite* à
מֵרֹאשׁ בַּסֵּתֶר דִּבַּרְתִּי מֵעֵת הֱיוֹתָהּ שָׁם אָנִי וְעַתָּה
dixit Sic .ejus ſpiritus & ,me miſit *Dominus* Dominus
17 אֲדֹנָי יְהוִה שְׁלָחַנִי וְרוּחוֹ׃ כֹּה־אָמַר
tuus Deus Dominus Ego : Iſrael Sanctus tuus redemptor Dominus
יְהוָה גֹּאַלְךָ קְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל אֲנִי יְהוָה אֱלֹהֶיךָ
Utinam .ambulabis via in te ambulare faciens,*proficiendum ad*,te docens
18 מְלַמֶּדְךָ לְהוֹעִיל מַדְרִיכֲךָ בְּדֶרֶךְ תֵּלֵךְ׃ לוּא
tua juſtitia & ; tua pax flumẽ ſicut fuiſſet & :mea mandata ad attendiſſes
הִקְשַׁבְתָּ לְמִצְוֹתָי וַיְהִי כַנָּהָר שְׁלוֹמֶךָ וְצִדְקָתְךָ
germina & , tuum ſemen arena veluti fuiſſet Et .maris fluctus ſicut
19 כְּגַלֵּי הַיָּם׃ וַיְהִי כַחוֹל זַרְעֶךָ וְצֶאֱצָאֵי
deleretur non & , excideretur non : ejus *viſcera* ſicut ,*tuorum viſcerum*
מֵעֶיךָ כִּמְעֹתָיו לֹא־יִכָּרֵת וְלֹא־יִשָּׁמֵד
, Chaſdim à fugite , Babel de Egredimini *meis faciebus* à ejꝰ nomen
20 שְׁמוֹ מִלְּפָנָי׃ צְאוּ מִבָּבֶל בִּרְחוּ מִכַּשְׂדִּים
extremũ ad uſque illud efferte,hoc facite audire,annuntiate *præconii* voce in
בְּקוֹל רִנָּה הַגִּידוּ הַשְׁמִיעוּ זֹאת הוֹצִיאוּהָ עַד־קְצֵה
.Jahacob ſuũ ſervum Dominus Redemit , dicite : terræ
הָאָרֶץ אִמְרוּ גָּאַל יְהוָה עַבְדּוֹ יַעֲקֹב׃

Verſio VULG. LAT.

5 Prædixi tibi ex tunc: antequã venirent indicavi tibi, ne fortè diceres; Idola mea fecerunt hæc, & ſculptilia mea & conflatilia mandaverunt iſta.
6 Quæ audîſti, vide omnia : vos autem num annuntiâſtis ? Audita feci tibi nova ex tunc, & conſervata ſunt quæ neſcis :
7 Nunc creata ſunt, & non ex tunc : & ante diem, & non audîſti ea, ne fortè dicas;
8 Ecce ego cognovi ea. Neque audîſti, neque cognoviſti, neque ex tunc aperta eſt auris tua : ſcio enim quia prævaricans prævaricaberis, & tranſgreſſorem ex utero vocavi te.
9 Propter nomen meum longè faciam furorem meũ: & laude meâ infrænabo te, ne intereas.
10 Ecce excoxi te, ſed non quaſi argentum, elegi te in camino
11 paupertatis. Propter me, propter me faciam, ut non blaſphemer : & gloriam meam al-
12 teri non dabo. Audi me Jacob, & Iſrael quem ego voco : ego ipſe, ego primus,
13 et ego noviſſimus. Manus quoque mea fundavit terram, & dextera mea menſa eſt cœlos: ego vocabo eos, & ſtabunt
14 ſimul. Congregamini omnes vos, & audite; quis de eis annuntiavit hæc? Dñs dilexit eum, faciet voluntatem ſuam in Babylone, & brachiũ ſuũ in
15 Chaldæis. Ego ego locutꝰ ſũ, & vocavi eũ : adduxi eũ, &
16 directa eſt via ejus. Accedite ad me, & audite hoc : non à principio in abſcondito locutus ſum : ex tempore antequàm fieret, ibi eram: & nunc Dñs Deus miſit me, & ſpiritus
17 ejus. Hæc dicit Dñs redemptor tuus Sanctus Iſrael; Ego Dñs Deus tuꝰ docens te utilia, gubernans te in via, quâ am-
18 bulas. Utinam attendiſſes mandata mea : facta fuiſſet ſicut flumen pax tua, & juſtitia
19 tua ſicut gurgites maris. Et fuiſſet quaſi arena ſemen tuũ, & ſtirps uteri tui ut lapilli ejꝰ: non interîſſet, & non fuiſſet attritum nomen ejus à facie
20 mea. Egredimini de Babylone, fugite à Chaldæis, in voce exultationis annuntiate : auditum facite hoc, et efferte illud uſque ad extrema terræ. Dicite, Redemit Dominus ſervum ſuum Jacob.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

5 Καὶ ἀνήγγειλά σοι (ζ) πάλαι ἃ πρὶν ἐλθεῖν ἐπὶ σέ· ἀκουστόν σοι ἐποίησα, (η) μή ποτε εἴπῃς, Ὅτι τὰ εἴδωλά μοι ἐποίησε, καὶ εἴπῃς, Ὅτι τὰ γλυπτὰ καὶ τὰ χωνευτὰ ἐνετεί-
6 λατό μοι. Ἠκούσατε πάντα, καὶ ὑμεῖς οὐκ ἔγνωτε· (θ) ἀλλὰ ἀκουστά σοι ἐποίησα τὰ και-
7 νὰ ἀπὸ τοῦ νῦν, ἃ μέλλει γίνεσθαι· Καὶ οὐκ εἶπας, Νῦν γίνεται, καὶ οὐ πάλαι, καὶ οὐ προτέραις ἡμέραις ἤκουσας αὐτά. μὴ εἴπῃς,
8 (ι) Ναὶ γινώσκω αὐτά. Οὔτε ἔγνως, οὔτε ἠπίστω, οὔτε ἀπ᾽ ἀρχῆς (κ) ἤνοιξά σου τὰ ὦτα· ἔγνων γάρ, ὅτι ἀθετῶν ἀθετήσεις, καὶ
9 ἄνομος ἔτι ἐκ κοιλίας κληθήσῃ. Ἕνεκεν τοῦ ἐμοῦ ὀνόματος δείξω σοι τὸν θυμόν μου, καὶ τὰ ἔνδοξά μου ἐπάξω (λ) ἐπὶ σέ, ἵνα μὴ
10 ἐξολοθρεύσω σε. Ἰδοὺ πέπρακά σε, (*) οὐχ ἕνεκεν ἀργυρίου· ἐξειλάμην δέ σε ἐκ καμί-
11 νου πτωχείας. Ἕνεκεν ἐμοῦ ποιήσω σοι, ὅτι τὸ ἐμὸν ὄνομα βεβηλοῦται, καὶ τὴν δόξαν μου
12 ἑτέρῳ οὐ δώσω. Ἄκουέ μου Ἰακώβ, καὶ Ἰσραὴλ ὃν ἐγὼ καλῶ· ἐγώ εἰμι πρῶτος, καὶ
13 ἐγώ εἰμι εἰς τὸν αἰῶνα. Καὶ ἡ χείρ μου ἐθεμελίωσε τὴν γῆν, καὶ ἡ δεξιά μου ἐστερέωσε τὸν οὐρανόν. καλέσω αὐτούς, καὶ στήσονται
14 ἅμα, Καὶ συναχθήσονται πάντες, καὶ ἀκούσονται. τίς αὐτοῖς ἀνήγγειλε ταῦτα; ἀγαπῶν σε ἐποίησα (μ) τὸ θέλημά σου ἐπὶ
15 Βαβυλῶνα, τοῦ ἆραι σπέρμα Χαλδαίων. Ἐγὼ ἐλάλησα, ἐγὼ ἐκάλεσα, ἤγαγον αὐτόν,
16 καὶ (*) εὐόδωσα τὴν ὁδὸν αὐτοῦ. Προσαγάγετε πρός με, καὶ ἀκούσατε ταῦτα. οὐκ ἀπ᾽ ἀρχῆς ἐν κρυφῇ (ν) λελάληκα· ἡνίκα ἐγένετο, ἐκεῖ ἤμην, καὶ νῦν (ξ) κύριος κύριος ἀπέ-
17 στειλέ με, καὶ τὸ πνεῦμα αὐτοῦ. (ο) Οὕτω λέγει κύριος, ὁ ῥυσάμενός σε, (π) ἅγιος Ἰσραήλ, Ἐγώ εἰμι ὁ θεός σου, δέδειχά σοι τοῦ εὑρεῖν σε τὴν ὁδὸν ἐν ᾗ πορεύσῃ ἐν αὐτῇ.
18 Καὶ εἰ ἤκουσας τῶν ἐντολῶν μου, ἐγένετο ἂν ὡσεὶ ποταμὸς ἡ εἰρήνη σου, καὶ ἡ δικαιο-
19 σύνη σου ὡς κῦμα θαλάσσης. Καὶ ἐγένετο ἂν (ρ) ὡς ἡ ἄμμος τὸ σπέρμα σου, καὶ τὰ ἔκγονα τῆς κοιλίας σου ὡς ὁ χοῦς τῆς γῆς. οὐδὲ νῦν οὐ μὴ (σ) ἐξολοθρευθῇς, οὐδὲ ἀπο-
20 λεῖται τὸ ὄνομά σου (*) ἐνώπιον ἐμοῦ. Ἔξελθε ἐκ Βαβυλῶνος φεύγων ἀπὸ τῶν Χαλδαίων, φωνὴν εὐφροσύνης ἀναγγείλατε, καὶ ἀκουστὸν γενέσθω τοῦτο, ἀναγγείλατε ἕως ἐσχάτου τῆς γῆς· λέγετε, (τ) Ἐρρύσατο κύριος (υ) τὸν δοῦλον αὐτοῦ Ἰακώβ·

Et annuntiavi tibi (b) olim, quæ, antequàm venirent ſuper te. Auditum tibi feci : ne fortè diceres, Quia idola mihi fecerunt: & dicas, Quia ſculptilia & conflatilia mandaverunt mihi. 5
Audiſtis omnia, & vos non cognoviſtis. Sed audita tibi feci nova à nunc, quæ futura ſunt. 6
Et non dixiſti; Nunc fiunt, & non olim, & non prioribus diebus audîſti ea. Ne dicas, Etiam novi ea. 7
Neque nôſti, neque ſciſti : neque à principio aperui aures tuas. Scio enim quoniam prævaricans prævaricaberis, & iniquus adhuc ex utero vocaberis. 8
Propter nomen meum oſtendam tibi furorem meum, & glorioſa mea inferam ſuper te; ut non te interficiam. 9
Ecce vendidi te non propter argentum : erui autem te de fornace paupertatis. 10
Propter me faciam (c) tibi: quia nomen meum polluitur : & gloriam meam alteri non dabo. 11
Audi me Jacob, & Iſrael, quem ego voco. Ego ſum primus, & ego ſum in ſempiternum : 12
Et manus mea fundavit terram : & dextera mea firmavit cœlum. Vocabo eos, & ſtabunt ſimul, 13
Et congregabuntur omnes, & audient. (d) Quis eis nuntiavit hæc? Diligens te feci voluntatem tuam ſuper Babylonem; ut auferrem ſemen Chaldæorum. 14
Ego loquutus ſum, ego vocavi : adduxi eum, & proſperam feci viam ejus. 15
Accedite ad me; & audite hæc. (e) Non à principio in abſcondito loquutus ſum : quando fiebat, ibi eram : & nunc Dominus Dominus miſit me, & ſpiritus ejus. 16
Sic dicit Dominus, qui eruit te, Sanctus Iſrael; Ego ſum Deus tuus : docui te ut invenires viam, in qua ambulabis in ea. 17
Quòd ſi audiſſes mandata mea; facta eſſet ſicut flumen pax tua, & juſtitia tua, ſicut gurges maris. 18
Et fuiſſet ſicut arena, ſemen tuum; & fœtus uteri tui, quaſi pulvis terræ. Neque nunc exterminaberis, neq; peribit nomen tuum coram me. 19
Egredere de Babylone, fugiens à Chaldæis : vocem lætitiæ annuntiate : & auditum fiat hoc : annuntiate uſque ad extremum terræ : dicite, Liberavit Dominus ſervum ſuum Jacob: 20

MS.A. (ζ) τὰ πάλαι πρὶν (η) μὴ εἴπῃς, Ὅτι τὰ εἴδωλά μοι ἐποίησαν, καὶ μὴ εἴπῃς, Τὰ (θ) ἀλλὰ καὶ (ι) Ὅτι ναὶ (κ) ἤνοιξα τὰ ὦτά σου· (λ) ἐπὶ σοί, ἵνα μὴ ἐξολεθρεύσω σε. (*) οὐκ (μ) ταῦτα ἐπὶ Βαβυλῶνα, τὸ θέλημά σου τοῦ ἆραι (*) εὐόδωσα, (ν) ἐλάλησα, οὐδὲ ἐν τόπῳ γῆς σκοτινῷ· ἡνίκα (ξ) κύριος ἀπέσταλκέν (ο) Οὕτως (π) ὁ ἅγιος Ἰσραήλ, Δέδειχά σοι (ρ) ὡσεὶ ἄμμος (σ) ἐξολεθρευθῇς, (*) ἐνώπιόν μου (τ) Ἐρύσατο (υ) τὸν λαὸν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 וחויתי לך מבכן עד לא ייתין בסרתך דלמא תימר דחלתי עבדתנון וצלמי ומתכי
6 אתכנון : שמעתא הא אתגליאת לכל עמא מה דאתגליאת לכון ואתון הלא תחוון
7 בסרתך חדתן מכען ונטירן ולא ידעתנון : כען אתבריאה ולא מבכן וקדם יום מיתיהון
8 ולא בסרתנון דלמא תימר הא ידעתנון : אף לא שמעת למלי נביא אף לא קבילתא
אולפן אוריתא אף לפתגמי ברכן ולוטין קימי דאקמית עמכון בחורב לא ארכנתא
9 אודנך לקבלא ארי גלי קדמי דשקרא תשקר ומרוד ממעין יתקרי לך : בדיל שמי ארחיק
10 רוגזי ותושבחתי אקים לך בדיל דלא לשיציותך : הא צרפתך ולא בכסף בחרתך בדחוק
11 מסכינו : בדיל שמי בדיל מימרי אעביד דלא יתחל ויקרי דאתגליתי עליכון לעם אוחרן
12 לא אתין : קבילו למימרי דבית יעקב וישראל מזמני אנא הוא אנא הוא דמלקדמין אף
13 עלמי עלמיא דילי אנון ובר מני לית אלהא : אף במימרי שכללית ארעא ובגבורתי
14 תלית שמיא קרית אנא להון קמו כחדא : אתכנשו כולכון ושמעו מן בהון חוי ית אלין
15 יי דרחים לה לישראל יעביד רעותיה בבבל ותקוף דרע גבורתיה יגלי בכסדאי : אנא
במימרי גזרית קים עם אברהם אבוכון אף רביתיה אעליתיה לארע בית שכנתי ואצלח
16 ית ארחיה : אתקרבו למימרי שמעו דא לא מן אולא בסתרא מללית מעדן דאתפרשו
עממיא מדחלתי תמן אברהם אבוכון קרבתיה לפולחני אמר נביא וכען יי אלהים
17 שלחני ומימריה : כדנן אמר יי פריקך קדישא דישראל אנא יי אלהך מליף לך להנאה
18 מחוי לך באורח דתהך : אלו אציתתא לפקודי והוי פון כשפע נהר פרת שלמך וזכותך
19 כגלי ימא : והוו פון סגין כחלא דימא בנך ובני בנך כפרודוהי לא יפסוק ולא ישתיצי
20 שמיה דישראל מן קדמי לעלם : פוקו מבבל ערוקו ממדינת ארע כסדאי בקל תושבחתא
חוו ובסרו דא אפקוהא עד סיפי ארעא אמרו פרק יי עבדוהי דבית יעקב :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Annuntiavi enim tibi ex tunc : antequàm veniant, indicavi tibi : ne fortè 5
dicas; Idolũ meũ fecit illa, & ſimulacrũ meũ, et conflatile meũ firmavit
ea. Nunquid audiſti utrùm revelatũ ſit omni populo id ꝙ revelatũ eſt vo- 6
bis? & vos nonne annuntiabitis? nnntiavi tibi nova deinceps; & conſer-
vata, quæ neſcis. Nunc creata ſunt, & non ex tunc, & ante diẽ adventus eo- 7
rum non annuntiavi ea, ne fortè dicas: Ecce ego cognovi ea. Nec enim au- 8
diſti verba prophetarũ, nec ſuſcepiſti doctrinã Legis, nec inclinâſti aurẽ tuã
ut ſuſciperes verba benedictionũ et maledictionũ pacti mei ꝙ ſtatui vobiſcũ
in Horeb : quia manifeſtũ eſt corã me ꝙ prævaricans prævaricaberis, &
tranſgreſſor ex utero vocaberis. Propter nomen meũ, longè faciam furorẽ 9
meũ; & propter laudẽ meã ſuſtentabo te, ut non cõſumã te. Ecce conflavi te, 10
et non in argento; probavi te in anguſtia paupertatis. Propter nomẽ meũ, & 11
propter Verbũ meũ faciã ut non violetur: & gloriã meã, quã revelavi vobis,
populo alteri non dabo. Obedite verbo meo domꝰ Jacob, & Iſrael invitatꝰ 12
meus: ego ipſe, ego ipſe qui ſum ab initio; etiam ſecula ſeculorũ mea ſunt,
& abſque me non eſt Deꝰ. Etiam in verbo meo fundavi terrã, & in potentia 13
mea appendi cœlos: vocavi eos, et ſteterunt ſimul. Congregamini omnes 14
vos, & audite quis in *eis* annuntiet hæc. Dñs enim, *qui* dilexit Iſrael, faci-
et voluntatẽ ſuã in Babylonẽ, et fortitudinẽ brachii ſui revelabit in Chal-
dæos. Ego in verbo meo pepigi pactũ cum Abraham patre veſtro : etiam 15
vocavi eum, & introduxi eum in terrã domꝰ majeſtatis meæ: & direxi viam
ejus. Accedite ad Verbũ meũ, audite hæc: non à principio in occulto locutꝰ 16
ſum : à tempore quo ſeparati ſunt populi à timore mei, indè applicavi Abra-
ham *patrẽ veſtrũ* ad ſervitutẽ meam. Dixit propheta : Et nunc Dñs Deus
miſit me, & Verbũ ejꝰ. Hæc dicit Dñs redemptor tuꝰ Sanctꝰ Iſraelis; Ego 17
Dñs Deꝰ tuus, docens te profutura; indicans tibi viam in qua ambules. Si 18
attendiſſes præceptis meis, eſſet utique quaſi inundatio fluminis Euphratis
pax tua, & juſtitia tua ſicut fluctꝰ maris. Et eſſent utique filii tui multi ſicut 19
arena maris, & filii filiorũ tuorum ſicut lapilli ejꝰ : non ceſſabit nec con-
ſumetur nomen Iſraelis à facie mea in æternum. Egredimini de Babylo- 20
ne, fugite de provincia terræ Chaldæorũ: in voce laudis annuntiate et nar-
rate hoc, & efferte illud uſque ad extrema terræ : dicite ; Redemit Dominus ſervos ſuos de domo Jacob.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܚܘܝܬܟ ܡܢ ܩܕܝܡ. ܘܥܕܠܐ ܕܐܬܐ ܐܫܡܥܬܟ. ܕܠܐ ܬܐܡܪ. ܦܬܟܪܝ ܥܒܕܘ. ܘܓܠܝܦܝ 5
ܘܢܣܟܝ ܦܩܕܘܢܝ. * ܫܡܥܬ ܘܚܙܝܬ ܟܠܗܝܢ. ܘܐܢܬܘܢ ܠܐ ܚܘܝܬܘܢ. ܐܫܡܥܬܟ 6
ܚܕܬܬܐ ܕܡܢ ܗܫܐ ܢܛܝܪܢ. ܘܠܐ ܝܕܥܬ. * ܕܡܬܒܪܝܢ ܗܫܐ. ܘܠܐ ܡܢ ܩܕܝܡ. ܘܡܢ ܩܕܡ 7
ܝܘܡܐ ܠܐ ܫܡܥܬ ܐܢܝܢ. ܕܠܐ ܬܐܡܪ. ܕܗܐ ܝܕܥ ܐܢܐ ܠܗܝܢ. * ܠܐ ܫܡܥܬ. ܘܐܦܠܐ ܝܕܥܬ ܐܢܝܢ ܠܗܝܢ. 8
ܘܡܢ ܩܕܝܡ ܠܐ ܐܬܦܬܚ ܐܕܢܝܟ. ܝܕܥ ܐܢܐ ܕܡܕܓܠܘ ܡܕܓܠ ܐܢܬ. ܘܥܘܠܐ ܡܢ ܟܪܣܐ ܐܬܩܪܝܬ.
* ܡܛܠ ܫܡܝ ܐܘܪܟ ܪܘܓܙܝ. ܘܫܘܒܚܝ ܐܛܪ ܠܟ. ܘܠܐ ܐܘܒܕܟ. * ܗܐ ܨܪܦܬܟ. ܘܠܐ 9 10
ܒܟܣܦܐ. ܘܒܚܪܬܟ ܒܟܘܪܐ ܕܡܣܟܢܘܬܐ. * ܡܛܠܬܝ ܐܥܒܕ. ܕܠܐ ܐܬܛܘܫ. ܘܐܝܩܪܝ ܠܐܚܪܢܐ 11
ܠܐ ܐܬܠ. * ܫܡܥܝܢܝ ܝܥܩܘܒ. ܘܐܝܣܪܝܠ ܕܩܪܝܬ. ܐܢܐ ܐܢܐ ܩܕܡܝܐ. ܘܐܢܐ ܐܢܐ ܐܚܪܝܐ. * ܘܐܝܕܝ 12 13
ܐܫܬܬ ܫܬܐܣܘܗܝ ܕܐܪܥܐ. ܘܝܡܝܢܝ ܬܩܢܬ ܫܡܝܐ. ܩܪܐ ܐܢܐ ܠܗܘܢ. ܘܩܝܡܝܢ ܐܟܚܕܐ.
* ܐܬܟܢܫܘ ܟܠܟܘܢ. ܘܫܡܥܘ. ܡܢܘ ܐܝܬ ܒܟܘܢ ܕܢܚܘܐ ܗܠܝܢ. ܡܪܝܐ ܨܒܐ ܕܢܥܒܕ 14
ܨܒܝܢܗ ܒܒܒܠ. ܘܒܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ. * ܐܢܐ ܡܠܠܬ. ܘܐܦ ܩܪܝܬ. ܘܐܝܬܝܬܗ. ܘܐܨܠܚܬ 15
ܐܘܪܚܗ. * ܩܪܘܒܘ ܠܘܬܝ. ܘܫܡܥܘ ܗܕܐ. ܕܡܢ ܪܫܝܬܐ ܒܛܘܫܝܐ ܠܐ ܡܠܠܬ. ܘܡܢ ܙܒܢܐ 16
ܕܗܘܬ. ܬܡܢ ܗܘܝܬ. ܘܗܫܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܫܕܪܢܝ. ܘܪܘܚܗ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܦܪܘܩܟ 17
ܩܕܝܫܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ. ܡܠܦ ܐܢܐ ܠܟ ܕܠܐ ܬܥܘܠ. ܘܡܚܘܐ ܐܢܐ ܠܟ. ܐܘܪܚܐ
ܕܬܐܙܠ ܒܗ. * ܠܘ ܕܝܢ ܨܘܬ ܠܦܘܩܕܢܝ. ܗܘܐ ܗܘܐ ܫܠܡܟ. ܐܝܟ ܢܗܪܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܟ ܐܝܟ 18
ܓܠܠܐ ܕܝܡܐ. * ܘܗܘܐ ܗܘܐ ܙܪܥܟ ܐܝܟ ܚܠܐ. ܘܝܠܕܐ ܕܟܪܣܟ. ܐܝܟ ܩܠܦܘܗܝ. ܘܠܐ ܢܦܣܘܩ ܘܠܐ 19
ܢܐܒܕ ܫܡܗ ܡܢ ܩܕܡܝ. * ܦܘܩܘ ܡܢ ܒܒܠ. ܥܪܘܩܘ ܡܢ ܟܠܕܝܐ. ܒܩܠܐ ܕܫܘܒܚܐ. 20
ܚܘܘ ܗܕܐ. ܘܐܫܡܥܘܗ ܘܐܦܩܘܗ. ܥܕܡܐ ܠܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܘܐܡܪܘ. ܦܪܩ ܡܪܝܐ
ܠܝܥܩܘܒ ܥܒܕܗ.

Attamen indicavi tibi multò ante, & antequam eveniret, prænuntiavi: ne ergò dicas, Idola mea fecerunt, & ſculptilia atque fuſilia mea me ſervârunt. 5 Audîſti et vidiſti omnia, & vos annon annuntiabitis? narro tibi nova quæ ex hoc tempore ſunt recondita, & tu ignoras, 6 Quæ nunc creantur, non autem jamdudum, quæ ante diem *hunc* non audiveras: ut ne diceres, Noveram illa. 7 Non audiveras, nec noveras ea, neque antehac apertæ fuerant aures tuæ: novi te eſſe omnino mendacem, & ſceleratum ab utero vocatum eſſe. 8 Propter nomen meum prorogabo iram meam, & gloriam meam ſervabo tibi, nec perdam te. 9 Ecce purgavi te, ſed non inter argentum, probavi te in fornace paupertatis. 10 Propter me faciam, ne prophaner, & honorem meum alteri ne tribuam. 11 Audi me Jacob, & Iſrael quem vocavi: ego ſum primus, & ego ſum ultimus: 12 Manus mea firmavit fundamenta terræ, & dextera mea cœlos aptavit: voco eos, & ſimul adſunt. 13 Congregamini omnes, & audite: Quis eſt inter vos qui hæc indicet? Dominus vult perficere voluntatem ſuam in Babelem & in terram Chaldæorum. 14 Ego locutus ſum, atque etiam vocavi, adducam rem iſtam, & iter ipſius fauſtum reddam. 15 Accedite ad me, & audite hoc, quòd ab initio non ſum clàm locutus, et ex eo tempore quo *id* fuit, ibi aderã: & nunc Dominus Deus miſit me, & Spiritus ejus. 16 Sic dicit Dominus redemptor tuus, Sanctus Iſraelis; Ego Dominus Deus tuus doceo te ne te iniquè geras, & oſtendo tibi viam per quam incedas. 17 O utinam aurem præberes præceptis meis; eſſet quidem pax tua tanquam flumen, & juſtitia tua tanquam fluctus maris: 18 Eſſet ſemen tuum ſicut arena, & ſoboles viſcerum tuorum ut glareæ ejus: & non conſumeretur, neque periret nomen ejus à conſpectu meo. 19 Egredimini è Babele, fugite à Chaldæis cum voce cantûs: indicate hoc, narrate, & ad extremitates uſque terræ divulgate, & dicite; Liberavit Dominus Jacobum ſervum ſuum: 20

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* واخبرتك بما كان قديما قبل ان ياتي عليك * وصنعته لك مسموعا * لا تقل انهم صنعوا لي 5
الاوثان * ولا تقل ان المنحوتات والمسبوكات امروني * سمعتم بجميعها وانتم لم تعرفوا * بل 6
وضعتها لك مسموعات الجديدات منذ الان التي سريع ان تكون * ولست تقول * الان تكون 7
ولا قديما * ولا في الايام الاولي سمعتها * لا تقل نعم انني اعرفها * ولست تعرفها ولا صدقت بها * 8
ولم افتح اذانك منذ البدء * لانني عرفت انك عاص تعصي * وانتم من البطن تدعي * من 9
اجل اسمي اظهر لك غضبي * واجلب عليك تمجيداتي لكيلا استاصلك * ها عملتك 10
ليس من اجل فضة * وخلصتك من اتون الفقر * من اجلي اصنع لك لان اسمي تدنس * 11
ومجدي لست اعطيه لاخر * اسمعني يا يعقوب * ويا اسرائيل الذي انا ادعوه * انا هو الاول * 12
وانا انا الي الابد * ويدي اسست الارض * ويميني ثبتت السماء * ادعوهم ويقيمون معا * 13
* ويجتمعون جميعا ويسمعون من اخبرهم بهذه * اذ احببتك صنعت هذه علي بابل * ارادتي 14
ان انزع زرع الكلدانيين * انا تكلمت * انا دعوت * جلبته وسهلت طريقه * تقدموا 15 16
الي واسمعوا هذه * لم اتكلم منذ البدء في خفية ولا في موضع مظلم من الارض * حين
كان كنت هناك * والان الرب ارسلني وروحه * هكذا يقول الرب منجيك قدوس اسرائيل * 17
انا هو الرب الهك * قد اوضحت لك المنفعة لتجد طريقي التي فيها تسلك * فان سمعت 18
وصاياي صارت سلامتك اذن مثل النهر * وعدلك مثل امواج البحر * وصار زرعك اذن 19
مثل الرمل * واولاد بطنك مثل تراب الارض * ولا تستاصل منذ الان * ولا يبيد
اسمك من قدامي * اخرج من بابل * فر من الكلدانيين * اخبروا بصوت السرور * 20
وليصر هذا مسموعا * اخبروا الي اخر الارض * قولوا ان الرب نجا شعبه يعقوب * ولم
يدعه ان يعطش *

A tamen nuntiavi tibi quod fuerat olim, priuſquam adveniret tibi, fecique tibi notum. Ne dixeris, Operata ſunt in me idola: néve dixeris, Sculptilia & fuſilia præceperunt mihi. 5 *Audiveratis omnia, at vos nequaquam reſipuiſtis: veruntamen nota facio tibi ex hoc tempore nova quæ ſunt futura:* 6 *Adeoque dicere non poteris, Nunc fiunt, non autem olim, neque enim à priſcis diebus audiveram ea. Ne dixeris, Equidem noveram ea;* 7 *Quum neque noveris, neque credideris ea, nec aperuerim aures tuas ab initio, quòd ſcirem te rebellem eſſe rebellantem, & Improbum ex utero vocari.* 8 *Propter nomen meum aperio tibi furorem meum, & adducam ſuper te laudes meas, ne te radicitùs vellam.* 9 *Ecce feci te non ob argenti* quæſtum; *& liberavi te à fornace miſeriæ.* 10 *Propter me facio tibi, quia nomen meum conſpurcatum eſt; gloriam verò meam alteri non tribuam.* 11 *Audi me O Jacob, & O Iſrael quem ego voco: Ego ſum primus, & ego ſum ego in æternum:* 12 *Manus mea terram fundavit, & dextera mea cœlum firmavit: voco ea, ſimulque ſtant.* 13 *Unà congregantur, & audiunt eum qui talia indicat eis. Quòd te dilexerim, hæc ſum facturus contra Babelem: voluntas mea eſt evellendi ſemen Chaldæorum.* 14 *Ego locutus ſum, ego vocavi, adducam eum, & explanabo viam ejus.* 15 *Accedite ad me, & audite hoc: Non ſum locutus à principio in occulto nec in ullo tenebricoſo terræ loco: quando fuit hoc, illic aderam: & nunc Dominus miſit me, & Spiritus ejus.* 16 *Sic ait Dominus ſalvator tuus, Sanctus Iſraelis; Ego ſum Dominus Deus tuus, jam declaravi tibi utilitatem, ut invenias viam meam in qua ambules.* 17 *Quòd ſi acquieveris præceptis meis, fiet ſanè pax tua ſicut fluvius, & juſtitia tua ut undæ maris.* 18 *Et erit quidem ſemen tuum ut arena, & filii ventris tui ut pulvis terræ: non extirpaberis in poſterum, nec peribit nomen tuum à conſpectu meo.* 19 *Exi è Babele, fuge à Chaldæis: lætâ voce prædicate, & fiat id publicum, annuntiate uſque ad extremitatem terræ, diciteque Sanè Dominus eripuit populum ſuum Jacobum, nec paſſus eſt eum ſitire:* 20

ישעיה: מט

petra de aquas , eos fecit ambulare deſerta per , ſitierunt non Et
21 וְלֹא צָמְאוּ בָּחֳרָבוֹת הוֹלִיכָם מַיִם מִצּוּר
, pax Non .aquæ fluxerunt & , petram ſcidit & : eis fecit fluere
22 הִזִּיל לָמוֹ וַיִּבְקַע־צוּר וַיָּזֻבוּ מָיִם: אֵין שָׁלוֹם
.impiis ,DOMINUS dixit
אָמַר יְהוָה לָרְשָׁעִים:

CAP. XLIX. מט

DOMINUS :longe de *nationes* attendite & ,me *ad inſulæ* Audite
1 שִׁמְעוּ אִיִּים אֵלַי וְהַקְשִׁיבוּ לְאֻמִּים מֵרָחוֹק יְהוָה
fecit memorare meæ matris *viſceribus* de , me vocavit utero ab
מִבֶּטֶן קְרָאָנִי מִמְּעֵי אִמִּי הִזְכִּיר
umbra in ,acutum gladium ſicut ,meum os poſuit Et .meum nomen
2 שְׁמִי: וַיָּשֶׂם פִּי כְּחֶרֶב חַדָּה בְּצֵל
, terſam ſagittam in me poſuit & : me abſcondit ſuæ manus
יָדוֹ הֶחְבִּיאָנִי וַיְשִׂימֵנִי לְחֵץ בָּרוּר
, tu meus Servus ,mihi dixit Et .me abſcondit ſua pharetra in
3 בְּאַשְׁפָּתוֹ הִסְתִּירָנִי: וַיֹּאמֶר לִי עַבְדִּי־אָתָּה
vacuum In , dixi ego Et .gloriabor te in quia , Iſrael
4 יִשְׂרָאֵל אֲשֶׁר־בְּךָ אֶתְפָּאָר: וַאֲנִי אָמַרְתִּי לְרִיק
profectò : conſumpſi meam fortitudinem vanè & *vanum in* ; laboravi
יָגַעְתִּי לְתֹהוּ וְהֶבֶל כֹּחִי כִלֵּיתִי אָכֵן
.meo Deo cum meum opus & , DOMINO cum meum judicium
מִשְׁפָּטִי אֶת־יְהוָה וּפְעֻלָּתִי אֶת־אֱלֹהָי:
, ſibi ſervum in utero ex me formans DOMINUS dixit nunc Et
5 וְעַתָּה אָמַר יְהוָה יֹצְרִי מִבֶּטֶן לְעֶבֶד לוֹ
ero glorioſus & : *colligetur* non Iſrael & ,eum ad Jahacob *reducendum ad*
לְשׁוֹבֵב יַעֲקֹב אֵלָיו וְיִשְׂרָאֵל לֹא יֵאָסֵף וְאֶכָּבֵד
.mea fortitudo fuit meus Deus & , DOMINI oculis in
בְּעֵינֵי יְהוָה וֵאלֹהַי הָיָה עֻזִּי:
tribus ſuſcitandum ad *ſervum* mihi *te eſſe ab* eſt Leve , dixit Et
6 וַיֹּאמֶר נָקֵל מִהְיוֹתְךָ לִי עֶבֶד לְהָקִים אֶת־שִׁבְטֵי
lucem in te dedi & : convertendum ad Iſrael *ſervatos* & , Jahacob
יַעֲקֹב וּנְצִירֵי יִשְׂרָאֵל לְהָשִׁיב וּנְתַתִּיךָ לְאוֹר
.terræ extremum ad uſque *meam ſalutem exiſtendum ad* , gentium
גּוֹיִם לִהְיוֹת יְשׁוּעָתִי עַד־קְצֵה הָאָרֶץ:
contemptum ad ,ejus ſanctus Iſrael redemptor Dominus dixit Sic
7 כֹּה אָמַר־יְהוָה גֹּאֵל יִשְׂרָאֵל קְדוֹשׁוֹ לִבְזֹה־
, videbunt reges , dominorum ſervum ad ,gentem abominatã ad ,*anima*
נֶפֶשׁ לִמְתָעֵב גּוֹי לְעֶבֶד מֹשְׁלִים מְלָכִים יִרְאוּ
; fidelis quia ,Dominum propter : ſe incurvabunt &,principes;ſurgent &
וָקָמוּ שָׂרִים וְיִשְׁתַּחֲווּ לְמַעַן יְהוָה אֲשֶׁר נֶאֱמָן
tempore In ,DOMINUS dixit Sic .te elegit & ,Iſrael Sanctum
8 קְדֹשׁ יִשְׂרָאֵל וַיִּבְחָרֶךָּ: כֹּה אָמַר יְהוָה בְּעֵת
,te cõſervabo &:tibi ſum auxiliat⁹ ſalutis die in &,te exaudivi *voluntatis*
רָצוֹן עֲנִיתִיךָ וּבְיוֹם יְשׁוּעָה עֲזַרְתִּיךָ וְאֶצָּרְךָ
faciendũ hæreditare ad,terram ſuſcitandũ ad,populi fœdus in te dabo &
וְאֶתֶּנְךָ לִבְרִית עָם לְהָקִים אֶרֶץ לְהַנְחִיל
qui iis :Exite , vinctis dicendum Ad .deſolatas hæreditates
9 נְחָלוֹת שֹׁמֵמוֹת: לֵאמֹר לַאֲסוּרִים צֵאוּ לַאֲשֶׁר
omnibus in & ,paſcentur vias ſuper :vos Manifeſtate , *tenebroſitate* in
בַּחֹשֶׁךְ הִגָּלוּ עַל־דְּרָכִים יִרְעוּ וּבְכָל־
non & , ſitient neque eſurient Non .eorum *paſcuum locis editis*
10 שְׁפָיִים מַרְעִיתָם: לֹא יִרְעָבוּ וְלֹא יִצְמָאוּ וְלֹא־
ad & ,eos deducet eorũ miſerator quia : ſol nec , æſtus eos percutiet
יַכֵּם שָׁרָב וָשָׁמֶשׁ כִּי־מְרַחֲמָם יְנַהֲגֵם וְעַל־
: viam *in meos montes omnes* ponam Et .eos ducet aquarum *ſcaturigines*
11 מַבּוּעֵי מַיִם יְנַהֲלֵם: וְשַׂמְתִּי כָל־הָרַי לַדָּרֶךְ
.exaltabuntur meæ *ſtratæ viæ* &
וּמְסִלֹּתַי יְרֻמוּן:

Verſio VULG. LAT.

21 Non ſitierunt in deſerto, cùm
educeret eos: aquã de petra
produxit eis, & ſcidit petram,
22 & fluxerunt aquæ. Non eſt pax
impiis, dicit Dominus.

CAP. XLIX.

1 Audite inſulæ, & attendite
populi de longè: Dñs ab utero
vocavit me, de ventre matris
meæ recordat⁹ eſt nominis
2 mei. Et poſuit os meum quaſi
gladiũ acutũ: in umbra man⁹
ſuæ protexit me, & poſuit me
ſup ſagittã electã: in pharetra
3 ſua abſcondit me. Et dixit mihi;
Serv⁹ me⁹ es tu Iſrael, quia
4 in te gloriabor. Et ego dixi;
In vacuũ laboravi, ſine cauſa,
& vanè fortitudinẽ meã conſumpſi:
ergò judiciũ meũ cum
Dño, et op⁹ meũ cũ Deo meo.
5 Et nunc dicit Dominus, formans
me ex utero ſervũ ſibi,
ut reducam Jacob ad eum, &
Iſrael non congregabitur: &
glorificatus ſum in oculis Domini,
& Deus meus factus eſt
6 fortitudo mea. Et dixit; Parum
eſt ut ſis mihi ſervus ad
ſuſcitandas tribus Jacob, &
fæces Iſrael cõvertendas. Ecce
dedi te in lucem Gentium, ut
ſis ſalus mea uſque ad extremum
7 terræ. Hæc dicit Dominus
redemptor Iſrael, Sanctus
ejus, ad contemptibilem animam,
ad abominatam gentẽ,
ad ſervũ dominorũ; Reges videbunt,
& conſurgent principes,
& adorabunt propter
Dominum, quia fidelis eſt, &
Sanctum Iſrael qui elegit te.
8 Hæc dicit Dominus; In tempore
placito exaudivi te, &
in die ſalutis auxiliatus ſum
tuî: & ſervavi te, & dedi te
in fœdus populi, ut ſuſcitares
terram, & poſſideres hæreditates
9 diſſipatas: Ut diceres
his, qui vincti ſunt; Exite:
& his, qui in tenebris; Revelamini.
Super vias paſcentur,
& in omnibus planis
10 paſcua eorum. Non eſurient,
neque ſitient, & non percutiet
eos æſtus & Sol: quia
miſerator eorum reget eos,
& ad fontes aquarum potabit
11 eos. Et ponam omnes montes
meos in viam, & ſemitæ
meæ exaltabuntur.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

21 Καὶ ἐὰν διψήσωσι, δι' ἐρήμου ἄξει αὐτοὺς,
ὕδωρ ἐκ πέτρας ἐξάξει αὐτοῖς· σχισθήσεται
πέτρα, ϗ ῥυήσεται ὕδωρ, ϗ πίεται ὁ
22 λαός μου. Οὐκ ἔστι χαίρειν (φ), λέγει κύριος,
τοῖς ἀσεβέσιν.

MS. A. (φ) τοῖς ἀσεβέσιν, λέγει κύριος.

ΚΕΦ. μθ'.

1 Ἀκούσατέ μου νῆσοι, ϗ προσέχετε ἔθνη,
Διὰ χρόνου πολλοῦ στήσεται, λέγει κύριος,
ἐκ κοιλίας μητρός μου ἐκάλεσε τὸ ὄνομά
2 μου, Καὶ ἔθηκε τὸ στόμα μου (α) ὡς μάχαιραν
ὀξεῖαν, ϗ ὑπὸ τὴν σκέπην τῆς χειρὸς
αὐτοῦ ἔκρυψέ με· ἔθηκέ με ὡς βέλος
ἐκλεκτὸν, ϗ ἐν τῇ φαρέτρᾳ αὐτοῦ (β) ἔκρυψέ
3 με. Καὶ εἶπέ μοι, Δοῦλός μου εἶ σὺ
4 Ἰσραὴλ, ϗ ἐν σοὶ (¨) ἐνδοξασθήσομαι. Καὶ ἐγὼ
εἶπα, Κενῶς ἐκοπίασα, (γ) εἰς μάταιον
ϗ εἰς (δ) οὐδὲν ἔδωκα τὴν ἰσχύν μου·
διὰ τοῦτο ἡ κρίσις μου παρὰ (ε) κυρίῳ, ϗ ὁ
5 πόνος μου ἐναντίον τοῦ θεοῦ μου. Καὶ νῦν
(ζ) οὕτω λέγει κύριος, ὁ πλάσας με ἐκ κοιλίας
δοῦλον ἑαυτῷ, τοῦ συναγαγεῖν τὸν Ἰακὼβ
(η) πρὸς αὐτὸν, ϗ Ἰσραήλ. Συναχθήσομαι
ϗ δοξασθήσομαι ἐναντίον κυρίου,
6 ϗ ὁ θεός μου ἔσται (θ) μοι ἰσχύς. Καὶ εἶπέ
μοι, Μέγα σοι ἐστὶ τοῦ κληθῆναί σε παῖδά
μου, τοῦ στῆσαι τὰς φυλὰς Ἰακὼβ, ϗ τὴν διασπορὰν
τοῦ Ἰσραὴλ ἐπιστρέψαι. ἰδοὺ (ι) δέδωκά
σε εἰς διαθήκην γένους, εἰς φῶς ἐθνῶν,
τοῦ εἶναί σε εἰς σωτηρίαν ἕως ἐσχάτου τῆς
7 γῆς. Οὕτως λέγει κύριος, ὁ ῥυσάμενός σε,
ὁ θεὸς Ἰσραήλ, Ἁγιάσατε τὸν φαυλίζοντα
τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, τὸν βδελυσσόμενον ὑπὸ
τῶν ἐθνῶν τῶν δούλων τῶν ἀρχόντων. βασιλεῖς
ὄψονται αὐτὸν, ϗ ἀναστήσονται ἄρχοντες,
ϗ προσκυνήσουσιν αὐτῷ, ἕνεκεν κυρίου·
ὅτι πιστός ἐστιν ὁ ἅγιος Ἰσραὴλ, ϗ ἐξελεξάμην
8 σε. Οὕτως λέγει κύριος, Καιρῷ
δεκτῷ ἐπήκουσά σου, ϗ ἐν ἡμέρᾳ σωτηρίας
ἐβοήθησά σοι, (κ) ϗ ἔπλασά σε, ϗ ἔδωκά
σε εἰς διαθήκην ἐθνῶν τοῦ καταστῆσαι τὴν
γῆν, ϗ κληρονομῆσαι (λ) κληρονομίας ἐρήμους,
9 Λέγοντα τοῖς ἐν δεσμοῖς, Ἐξέλθετε,
ϗ τοῖς ἐν τῷ σκότει, ἀνακαλυφθῆναι.
(μ) ἐν πάσαις ταῖς ὁδοῖς βοσκηθήσονται,
ϗ ἐν πάσαις ταῖς τρίβοις ἡ νομὴ αὐτῶν.
10 Οὐ πεινάσουσιν, οὐδὲ διψήσουσιν, (ν) οὐδὲ
πατάξει αὐτοὺς ὁ καύσων, οὐδὲ ὁ ἥλιος,
(ξ) ἀλλ' ὁ ἐλεῶν αὐτοὺς παρακαλέσει, ϗ διὰ
11 πηγῶν ὑδάτων ἄξει αὐτούς. Καὶ θήσω πᾶν
ὄρος εἰς ὁδὸν, ϗ πᾶσαν τρίβον εἰς βόσκημα
αὐτοῖς.

MS. A. (α) ὡσεὶ (β) ἐσκέπασέν (¨) δοξασθήσομαι. (γ) ϗ εἰς (δ) οὐθὲν (ε) κυρίου, (ζ) οὕτως (η) ϗ Ἰσραὴλ πρὸς αὐτόν. (θ) μου (ι) τέθεικά σε εἰς φῶς ἐθνῶν, (κ) ϗ ἔδωκά σε (λ) κληρονομίαν ἐρήμου, (μ) ϗ ἐν πάσαις ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν (ν) οὐδὲ μὴ (ξ) ἀλλὰ

Et, ſi ſitierint, per deſertum ducet 21
eos, aquam de petra educet eis:
ſcindetur petra, & fluet aqua,
& bibet populus meus. Non 22
eſt gaudere, dicit Dominus, impiis.

CAP. XLIX.

Audite (a) me inſulæ: & 1
attendite gentes. Poſt multum
tempus ſtabit, dicit Dominus. Ex
utero matris meæ vocavit nomen
meum: Et poſuit os meum, quaſi 2
gladium acutum: & ſub protectione
manûs ſuæ abſcondit me.
Poſuit me, quaſi ſagittam electam:
& in pharetra ſua (b) abſcondit
me. Et dixit mihi; Servus 3
meus es tu, Iſrael: & in te
glorificabor. Et ego dixi; In vacuum 4
laboravi: in vanum, & in
nihilum dedi fortitudinem meam.
Propterea judicium meum apud
Dominum: & labor meus coram
Deo meo. Et nunc ſic dicit Dominus, 5
qui formavit me ex utero ſervum
ſibi; ut congregarem Jacob
ad eum, & Iſrael: Congregabor,
& glorificabor coram Domino:
& Deus meus erit mihi
fortitudo. Et dixit; Magnum 6
tibi eſt, ut voceris puer meus,
ut ſuſcites tribus Jacob, &
diſperſionem Iſrael convertas. Ecce
dedi te in (c) teſtamentum generis;
in lucem gentium: ut ſis in
ſalutem uſque ad extremum terræ.
Sic dicit Dominus, qui eruit 7
te, Deus Iſrael. Sanctificate eum,
(d) qui deſpicit animam ſuam, qui
abominatur à gentibus ſervis (e)
principum. Reges videbunt eum:
& conſurgent principes, & adorabunt
eum propter Dominum:
quia fidelis eſt Sanctus Iſrael, &
(f) elegi te. Sic dicit Dominus; 8
Tempore accepto exaudivi te, &
in die ſalutis auxiliatus ſum tuî:
& plaſmavi te, & dedi te in teſtamentum
gentium; ut conſtitueres
terram, & poſſideres hæreditates
deſertas, Dicens his, qui in 9
vinculis ſunt, Exite; & his, qui
in tenebris, ut revelentur. In omnibus
viis paſcentur: & in
omnibus ſemitis paſcua eorum.
Non eſurient, neq; ſitient: neque 10
percutiet eos æſtus, neque Sol: ſed
qui miſeretur eorum, conſolabitur
eos, & per fontes aquarum ducet
illos. Ponámque omnem montem 11
in viam, & omnem ſemitam in
paſcuam eis.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

21 וְלָא אַצְחִנוּן בְּחָרְבָתָא דְבַרְנוּן מַיָא מִטִינָרָא אַפֵּיק לְהוֹן וּבְזַע טִינָרָא וּנְגוֹדוּ מַיָא : לֵית
22 שְׁלָם אֲמַר יְיָ לְרַשִׁיעַיָא :

מט

1 קַבִּילוּ נַגְוָן לְמֵימְרִי וְאַצִּיתוּ מַלְכְּוָן מֵרָחִיק יְיָ עַד לָא הֲוֵיתִי זַמְּנַנִי מִמְּעֵי אִמִּי אַדְכַּר שְׁמִי :
2 וְשַׁוִּי פִּתְגָמוֹהִי בְּפוּמִי כַּחֲרַב חֲרִיפָא בִּטְלַל גְבוּרְתֵּיהּ אַגֵּן עֲלַי וְשַׁוְיַנִי כְּגִיר בְּחִיר דִּי בְּבֵית
3 אֲזֵנִין מְסַתַּר : וַאֲמַר לִי עַבְדִּי אַתְּ יִשְׂרָאֵל דְּבָךְ אֶשְׁתַּבַּח : וַאֲנָא אֲמָרִית לְרֵיקָנוּ לְאֵיתִי
4 לְלְמָא וְלָא מִדַּעַם חֵילִי שֵׁיצִיתִי בְּרַם דִּינִי גְלֵי קֳדָם יְיָ וַאֲגַר עוֹבָדַי קֳדָם אֱלָהִי : וּכְעַן אֲמַר
5 יְיָ דְאַתְקְנַנִי מִמְּעִין לְמֶהֱוֵי עֲבֵד פָּלַח קֳדָמוֹהִי לַאֲתָבָא דְבֵית יַעֲקֹב לְפוּלְחָנֵיהּ וְיִשְׂרָאֵל
6 לְדַחַלְתֵּיהּ יִתְקָרַב וְיִקְרָנָא קֳדָם יְיָ וּמֵימַר אֱלָהִי הֲוָה בְּסַעְדִי : וַאֲמַר הַזְעֵיר לְכוֹן דְּאַתּוֹן
מִתְקְרַן עַבְדַי לַאֲקָמָא יַת שִׁבְטֵי יַעֲקֹב וְגָלְוַת יִשְׂרָאֵל לַאֲתָבָא וְאֶתְּנִנָּךְ לִנְהוֹר עַמְמִין
7 לְמֶהֱוֵי פּוּרְקָנִי עַד סִיפֵי אַרְעָא : כִּדְנַן אֲמַר יְיָ פָּרְקֵיהּ דְיִשְׂרָאֵל קַדִּישֵׁיהּ לְדִבְסִירִין בֵּינֵי
עַמְמַיָא לְדִמְטַלְטְלִין בֵּינֵי מַלְכְּוָתָא לְדַהֲווֹ עַבְדִין לְשִׁלְטוֹנִין לְהוֹן מַלְכִין יֶחֱזוּן וִיקוּמוּן
8 רַבְרְבִין וְיִסְגְּדוּן בְּדִיל יְיָ דִּמְהֵימַן קַדִּישָׁא דְיִשְׂרָאֵל וְאִתְרְעֵי בָךְ : כִּדְנַן אֲמַר יְיָ בְּעִדָּן
דְּאַתּוֹן עָבְדִין רְעוּתִי אֲנָא מְקַבֵּל צְלוֹתְכוֹן וּבְיוֹם עָקָא אֲנָא מְקִים פּוּרְקָן וְסָעֵד לְכוֹן
וְאַתְקְנִנָּךְ וְאֶתְּנִנָּךְ לִקְיָם עַם לַאֲקָמָא צַדִּיקַיָא דִּשְׁכִיבִין בְּעַפְרָא לְאַחְסָנָא יְרוּתָן דְּצָדְיָן :
9 לְמֵימַר לְדַאֲסִירִין בֵּינֵי עַמְמַיָא פּוּקוּ וּלְדַעֲנִינִין בֵּינֵי מַלְכְוָתָא כַּד בְּקַבְלָא אִתְגְּלוֹ לִנְהוֹר
10 עַל אָרְחָן יִשְׁרוּן וּבְכָל נַגְרִין בֵּית מַשְׁרֵיהוֹן : לָא יִכְפְּנוּן וְלָא יִצְהוֹן וְלָא יִלְקוֹן שַׁרְבָא
11 וְשִׁמְשָׁא אֲרֵי דַעֲתִיד לְרַחֲמָא עֲלֵיהוֹן יְדַבְּרִנּוּן וְעַל מַבּוּעֵי מַיִין יְשָׁרִינּוּן : וְאֶשַׁוֵּי כָל טוּרַיָא
כְּבִישִׁין קֳדָמֵיהוֹן כְּאוֹרַח וּכְבִישַׁיָא יְרוּמוּן :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et non fecit eos ſitire in deſertis; deduxit eos: aquam de petra eduxit eis: 21
& ſcidit petram, & fluxerunt aquæ. Non eſt pax, dicit Dominus, impiis. 22

CAP. XLIX.

OBedite inſulæ *verbo meo*, & auſcultent regna à longè: Dominus ante- 1
quàm eſſem præparavit me; ab utero matris meæ recordatus eſt nominis
mei. Et poſuit verba ſua in ore meo quaſi gladium acutum: in umbra po- 2
tentiæ ſuæ protexit me: & poſuit me quaſi ſagittam electam, quæ abſcon-
dita eſt in pharetra. Et dixit mihi: Servus meus es tu Iſrael, in te enim 3
laudabor. Et ego dixi: In vacuum laboravi, in vanum & in nihilum for- 4
titudinem meam conſumpſi: veruntamen judicium meum manifeſtum eſt
coram Domino, & merces operum meorum coram Deo meo. Et nunc di- 5
cit Dominus qui præparavit me ex utero, ut ſim ſervus miniſtrans coram
eo; ut convertam domum Jacob ad ſervitutem ejus: & Iſrael ad timorem
ejus applicabitur, & *glorificabor* coram Domino, & Verbum Dei mei erit
in adjutorium meum. Et dixit: Nunquid parum vobis eſt quòd vos voce- 6
mini ſervi mei ad ſuſcitandas tribus Jacob, & ad convertendam captivita-
tem Iſrael? Dabo etiam te in lucem populorum, ut ſis ſalus mea uſque ad ex-
trema terræ. Hæc dicit Dominus redemptor Iſrael, & ſanctus ejus, his qui 7
contempti ſunt inter populos, & his qui transmigraverunt inter regna, his
qui ſerviebant dominatoribus: hos videbunt reges, & conſurgent; princi-
pes, & adorabunt, propter Dominum qui fidelis eſt, Sanctus Iſrael, & elegit
te. Hæc dicit Dominus: In tempore quo vos facitis voluntatem meam, ego 8
ſuſcipio orationes veſtras, & in die tribulationis ego ſuſcito ſalutem & ad-
jutorium vobis: præparavi enim & dedi te in pactum populi, ut ſuſcitares
juſtos qui jacent in pulvere, ut poſſideres hæreditates deſolatas: Et diceres 9
his qui vincti ſunt inter populos, Exite; & his qui retenti ſunt inter regna
ſicut in tenebris, Revelamini in lucem. In viis habitabunt, & in omnibus
rivis erit locus habitationis eorum. Non eſurient nec ſitient, neque percu- 10
tiet eos æſtus & Sol; quia qui miſerturus eſt eorum reget eos, et ſuper fon-
tes aquarum habitare faciet eos. Ponam omnes montes ſtratos coram eis in viæ morem, et ſemitæ elevabuntur. 11

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܒܚܘܪܒܐ ܕܒܪ ܐܢܘܢ܂ ܘܡܝܐ ܡܢ ܫܘܥܐ ܐܪܕܝ ܠܗܘܢ܂ ܦܠܓ ܟܐܦܐ܂ ܘܪܕܘ ܡܝܐ܂ * ܠܝܬ 21
ܫܠܡܐ ܠܪܫܝܥܐ܂ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ 22

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܛ *

* ܫܡܥܝ ܓܙܪ̈ܬܐ܂ ܘܨܘܬܘ ܥܡܡ̈ܐ ܀ ܡܢ ܪܘܚܩܐ܂ ܡܪܝܐ ܩܪܢܝ܂ ܘܡܢ ܡܪܒܥܐ܂ ܘܡܢ 1
ܟܪܣܗ ܕܐܡܝ ܐܬܕܟܪ ܫܡܝ܂ * ܥܒܕ ܦܘܡܝ ܐܝܟ ܣܝܦܐ ܚܪܝܦܐ܂ ܘܒܛܠܠܐ ܕܐܝܕܗ 2
ܛܫܝܢܝ܂ ܥܒܕܢܝ ܐܝܟ ܓܐܪܐ ܓܒܝܐ܂ ܘܒܩܛܪܩܘܗ ܛܫܝܢܝ܂ * ܘܐܡܪ ܠܝ܂ ܥܒܕܝ ܐܢܬ 3
ܐܝܣܪܐܝܠ ܕܒܟ ܡܫܬܒܗܪ ܐܢܐ܂ * ܘܠܐ ܐܡܪܬ ܠܙܪܥܗ ܕܝܥܩܘܒ ܕܠܣܪܝܩܘܬܐ ܠܐܝܬ 4
ܘܚܝܠܝ ܠܣܪܝܩܘܬܐ ܐܘܫܛܬ܂ ܫܪܝܪܐܝܬ ܕܝܢܝ ܩܕܡ ܡܪܝܐ܂ ܘܥܒܕܝ ܩܕܡ ܐܠܗܝ܂ * ܘܗܫܐ 5
ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܀ ܕܓܒܠܢܝ ܡܢ ܟܪܣܐ ܥܒܕܐ ܕܐܗܘܐ ܠܗ: ܕܐܗܦܘܟ ܠܝܥܩܘܒ ܠܘܬܗ
ܘܐܝܣܪܐܝܠ ܐܟܢܫ܂ ܘܐܫܬܒܚܬ ܩܕܡ ܡܪܝܐ܂ ܘܐܠܗܝ ܗܘܐ ܥܘܫܢܝ܂ * ܘܐܡܪ܂ ܙܥܘܪܐ ܗܝ 6
ܠܟ ܕܬܗܘܐ ܠܝ ܥܒܕܐ܂ ܘܬܩܝܡ ܫܒܛܐ ܕܝܥܩܘܒ܂ ܘܬܦܢܐ ܢܨܒܬܗ ܕܐܝܣܪܐܝܠ܂ ܝܗܒܬܟ
ܢܘܗܪܐ ܠܥܡܡ̈ܐ܂ ܕܬܗܘܐ ܦܘܪܩܢܝ ܥܕܡܐ ܠܣܘܦܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ܂ * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ 7
ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ ܘܦܪܘܩܗ܂ ܠܡܫܝܛܐ ܢܦܫܐ܂ ܠܡܣܠܝܐ ܠܥܡܐ܂ ܘܠܥܒ̈ܕܝ
ܫܠܝܛܢܐ܂ ܡܠܟܐ ܢܚܙܘܢ ܘܢܩܘܡܘܢ܂ ܘܫܠܝܛܢܐ ܢܣܓܕܘܢ ܠܗ܂ ܡܛܠ
ܡܪܝܐ ܕܡܗܝܡܢ܂ ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ ܕܓܒܟ܂ * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܒܥܕܢܐ ܕܪܥܝܢܐ 8
ܥܢܝܬܟ܂ * ܘܒܝܘܡܐ ܕܦܘܪܩܢܐ ܥܕܪܬܟ܂ ܘܓܒܠܬܟ ܘܝܗܒܬܟ ܩܝܡܐ ܠܥܡܐ ܘܢܘܗܪܐ
ܠܥܡܡ̈ܐ܂ ܕܬܩܝܡ ܐܪܥܐ܂ ܘܬܐܪܬ ܝܪ̈ܬܘܬܐ ܕܚܘܪ̈ܒܬܐ܂ * ܘܬܐܡܪ ܠܐܣܝܪ̈ܐ܂ ܕܦܘܩܘ܂ ܘܠܕܒܚܫܘܟܐ 9
ܐܬܓܠܘ܂ ܥܠ ܐܘܪ̈ܚܬܐ ܢܪܥܘܢ܂ ܘܒܟܠܗܘܢ ܫܒܝ̈ܠܐ ܡܪ̈ܥܝܬܗܘܢ܂ * ܠܐ ܢܟܦܢܘܢ܂ ܘܠܐ 10
ܢܨܗܘܢ܂ ܘܠܐ ܢܡܚܐ ܐܢܘܢ ܫܘܒܐ ܘܫܡܫܐ܂ ܡܛܠ ܕܡܪܚܡܢܐ ܢܕܒܪ ܐܢܘܢ܂ ܘܥܠ ܡܒܘܥܐ
ܕܡܝܐ ܢܣܒܠ ܐܢܘܢ܂ * ܘܐܥܒܕ ܟܠܗܘܢ ܛܘܪ̈ܐ ܐܘܪܚܐ܂ ܘܫܒܝ̈ܠܐ ܢܬܬܪܝܡܘܢ܀ 11

Per ſolitudines duxit eos, & aquas è rupe 21
profudit eis;rupit petrâ, & effluxerunt aquæ.
Non eſt pax impiis, dicit Dominus. 22

CAP. XLIX.

Audite inſulæ, & auſcultate populi : A 1
longinquo *tempore* Dominus vocavit me,ab
utero & à ventre matris meæ recordatus eſt
nominis mei : Effecit os meum ut gladium 2
acutum, & umbrâ manus ſuæ abſcondit me :
fecit me tanquam ſagittam electam,& in pharetra
ſua abdidit me. Tum dixit mihi, Servus 3
meus es : Iſrael, *tu es* in quo gloriabor.
Et non dixi ſemini Jacobi quòd fruſtrà laboverim, 4
& vires meas expoſuerim vanitati :
verè cauſa mea coram Domino eſt, & opus
meum coram Deo meo. Nunc ita dicit Dominus 5
qui me formavit in utero ut ſervus ejus
eſſem,ut Jacobum ad eum reducerem, & congregarem
Iſraelem (gloriam aſſecutus ſum
apud Dominum, & Deus meus fuit robur
meum,) Dicit , inquam ; Parvíne res eſt 6
momenti eſſe te mihi ſervum, tribum Jacobi
reſtaurare, et virgultum Iſraelis reducere?dedi
te lucem gentibus, ut ſis ſalus mea uſque
ad extrema terræ. Sic dicit Dominus, Sanctus 7
Iſraelis, et redemptor ejus ; Eum, cujus
anima deſpicitur, qui abominandus eſt apud
populum et apud ſervos principum ; reges videntes,
aſſurgent;et principes adorabunt eum
propter Dominum qui fidelis eſt, Sanctum
Iſraelis qui elegit te. Sic ait Dominus,Tempore 8
placito exaudiam te, et in die ſalutis auxiliabor
tibi, formabo te, dabóque te in fœdus
populo, et lucem gentibus ; ut reſtaures
terram,et acquiras poſſeſſionem ſolitudinum;
Dicáſque vinctis, Egredimini ; et carcere detentis, 9
Præbete vos : ſuper vias paſcentur, et
in omnibus ſemitis erunt paſcua eorum :
Non eſurient, neque ſitient, neque nocebit 10
eis æſtus aut ſol : quoniam qui miſeretur eorum,
ducet eos ; et ad fontes aquarum perducet
illos. Montes omnes efficiam vias, & 11
ſemitæ elevabuntur.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* اقاده في البرية * اخرج له ماء من صخر * انشعب الصخر وسال الماء وشرب شعبي * 21
* وليس للمنافقين ان يفرحوا قال الرب * 22

* الفصل التاسع والاربعون *

* اسمعن لي ايها الجزاير * انصتوا ايها الامم * لاجل زمن كثير يقوم قال الرب * من بطن 1
امي دعا اسمي * وجعل فمي مثل السيف الحاد * وتحت ستر يده اخفاني * جعلني مثل سهم 2
مختار * وفي جعبته سترني * وقال لي * عبدي انت يا اسرايل وبك امتجد * وانا قلت تعبت 3 4
باطلا * والى الباطل والى لا شي اعطيت قوتي * لاجل هذا قضايي من قبل الرب *
وعنايي امام الهي * والان هكذا قال الرب الذي جبلني من البطن عبدا له * لاجمع يعقوب 5
والم اسرايل اليه * وامتجد امام الرب * والهي يكون لي قوة * وقال لي عظيم هو لك ان 6
تدعى عبدي * لتقيم قبايل يعقوب وترد تفرق اسرايل * ها اعطيتك عهدا للاجناس ونورا
للامم * لتكون خلاصا الى اخر الارض *

* الاصحاح الرابع والعشرون *

* هكذا يقول الرب منقذك قدوس اسرايل * قدسوا الذي رذل نفسه المرذول من الامم عبيد 7
الروساء * يروه الملوك ويقوم الروساء ويسجدون له من اجل الرب * لانه امين قدوس اسرايل *
واختارك * هكذا يقول الرب * في زمن مقبول استجبت لك * وفي يوم الخلاص اعنتك * وجبلتك 8
واعطيتك وجعلتك عهدا للامم * لتقيم الارض وترث ميراث البرية * قايلا للذين في الرباطات 9
اخرجوا * والذين في الظلام تكشفوا * وفي كل الطرق يرعون * وفي كل السبل مرعى لهم * لا 10
يجوعون ولا يعطشون * ولا يضربهم السموم ولا الشمس * لكن الذي يرحمهم يعزيهم * والى
ينابيع المياه يقتادهم * واضع كل جبل طريقا * وكل سبيل مرعى لهم * 11

Deduxit eum per deſertum, aquam è petra 21
elicuit ei ; fiſſa eſt petra , & effluxit
aqua , bibitque populus meus : Nec eſt 22
improbis quod lætentur,inquit Dominus.

CAP. XLIX.

Audite me O inſulæ, aures præbete O 1
populi : poſt longum temporis intervallum
exurget , ait Dominus : ab utero matris
meæ vocavit nomen meum. Fecit os meum 2
ut gladium acuminatum, & ſub protectione
manûs ſuæ abſcondit me : fecit
me ut ſagittam electam, & in pharetra
ſua abſcondit me : Dixitque mihi, 3
Servus meus es O Iſrael,& in te glorior.
Ego verò dixi , Fruſtrà laboro , & in 4
vanum & abs re vires meas inſumo :
propterea à Domino judicium meum eſto,
& cura mea coram Deo meo. Nunc autem 5
ſic ait Dominus qui formavit me ab
utero ſervum ſibi, ut congregem Jacobum
& colligam Iſraelem ad ipſum, &
gloriam acquiram apud Dominum, Deo
vires mihi ſuppeditante : Ait, inquam, 6
mihi ; Eximia tibi res eſt vocari ſervum
meum ad erigendas tribus Jacobi , &
reſtituendam diſperſionem Iſraelis : ecce
conſtituo te fœdus omnigenis nationibus,
& lucem gentibus , ut ſis ſalus uſque ad
finem terræ.

Textus vigeſimus quartus.

Sic ait Dominus vindex tuus , Sanctus 7
Iſraelis ; Sanctificate eum qui ſprevit
animam ſuam, deſpectum à gentibus ſervis
principum : videbunt eum reges, &
aſſurgentes principes adorabunt eum
propter Dominum, quia fidelis eſt Sanctus
Iſraelis,& elegi te.Sic ait Dominus, 8
Tempore accepto exaudivi te, & in die
ſalutis adjuvi te, formavi te , & conſtitui
fecique te fœdus populis, ut erigas
terram , & acquiras hæreditatem deſerti :
Dicens iis qui ſunt in vinculis, 9
Egredimini ; & iis qui in tenebris, Revelamini :
in omnibus viis paſcentur,
& in omnibus ſemitis erit eis paſcuum.
Non eſurient neque ſitient, neque feriet 10
eos ventus calidus neque ſol ; ſed is qui
miſeretur eorum, recreabit illos, & ad
fontes aquarum deducet eos. Omnes 11
montes in viam , & omnes ſemitas in
paſcuum diſponam eis.

,mari à & ,aquilone ab isti ecce & : venient longinquo à isti Ecce
הִנֵּה־אֵלֶּה מֵרָחוֹק יָבֹאוּ וְהִנֵּה־אֵלֶּה מִצָּפוֹן וּמִיָּם 12
conclamate & ,terra exulta & ,cœli dicite Præconia .Sinim terra de isti &
13 וְאֵלֶּה מֵאֶרֶץ סִינִים : רָנּוּ שָׁמַיִם וְגִילִי אֶרֶץ יִפְצְחוּ
suorũ afflictorũ &,suũ populũ Dominus est consolatꝰ quia : præconio montes
הָרִים רִנָּה כִּי־נִחַם יְהוָה עַמּוֹ וַעֲנִיָּו
Dominus & : Dominus me Dereliquit ,Sijon Dixitque .miserebitur
14 יְרַחֵם : וַתֹּאמֶר צִיּוֹן עֲזָבַנִי יְהוָה וַאדֹנָי
filii miserendo à ,sui lactentis mulier obliviscetur Nunquid .mei est oblitus
15 שְׁכֵחָנִי : הֲתִשְׁכַּח אִשָּׁה עוּלָהּ מֵרַחֵם בֶּן־
Ecce .tui obliviscar non ego at ,obliviscamur istæ etiam ? sui uteri
16 בִּטְנָהּ גַּם־אֵלֶּה תִשְׁכַּחְנָה וְאָנֹכִי לֹא אֶשְׁכָּחֵךְ : הֵן
Festinaverunt .semper me coram tui muri : te exaravi volis super
17 עַל־כַּפַּיִם חַקֹּתִיךְ חוֹמֹתַיִךְ נֶגְדִּי תָּמִיד : מִהֲרוּ
circum Leva .exibunt te à ,te destruentes &,te demolientes :tui structores
18 בָּנָיִךְ מְהָרְסַיִךְ וּמַחֲרִבַיִךְ מִמֵּךְ יֵצֵאוּ : שְׂאִי־סָבִיב
Vivens : tibi venerunt ,se congregaverunt isti omnes : vide & ,tuos oculos
עֵינַיִךְ וּרְאִי כֻּלָּם נִקְבְּצוּ בָאוּ־לָךְ חַי־
: te vesties ornamento ut his omnibus quia ,Dominus dixit ego
אָנִי נְאֻם־יְהוָה כִּי כֻלָּם כַּעֲדִי תִלְבָּשִׁי
terra & ,tuæ solitudines & ,tua deserta Quia .sponsa tanquã ,eos ligabis &
19 וּתְקַשְּׁרִים כַּכַּלָּה : כִּי חָרְבֹתַיִךְ וְשֹׁמְמֹתַיִךְ וְאֶרֶץ
se elongabunt & ,incola ab erit arcta nunc nam : tuæ destructionis
הֲרִסֻתֵךְ כִּי עַתָּה תֵּצְרִי מִיּוֹשֵׁב וְרָחֲקוּ
: tuarũ orbitatum filii tuis auribus in dicent Adhuc .te absorbentes
20 מְבַלְּעָיִךְ : עוֹד יֹאמְרוּ בְאָזְנַיִךְ בְּנֵי שִׁכֻּלָיִךְ
dices Et .habitabo & ,mihi accede ; locus mihi est Angustus
21 צַר־לִי הַמָּקוֹם גְּשָׁה־לִּי וְאֵשֵׁבָה : וְאָמַרְתְּ
, solitaria & , orbata ego & ? istos mihi genuit Quis ,tuo corde in
בִּלְבָבֵךְ מִי יָלַד־לִי אֶת־אֵלֶּה וַאֲנִי שְׁכוּלָה וְגַלְמוּדָה
:ego sola remansi ego En ? evexit quis istos & : recedens & ,demigrans
גֹּלָה ׀ וְסוּרָה וְאֵלֶּה מִי גִדֵּל הֵן אֲנִי נִשְׁאַרְתִּי לְבַדִּי
ad levabo Ecce : Dominus Dominus dixit Sic ? ipsi ubi isti
22 אֵלֶּה אֵיפֹה הֵם : כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה הִנֵּה אֶשָּׂא אֶל־
tuos filios afferent &:meũ vexillũ exaltabo populos ad &,meã manũ gentes
גּוֹיִם יָדִי וְאֶל־עַמִּים אָרִים נִסִּי וְהֵבִיאוּ בָנַיִךְ
,tui nutritii reges erunt Et .portabũtur humerũ super tuæ filiæ & ,sinu in
23 בְּחֹצֶן וּבְנֹתַיִךְ עַל־כָּתֵף תִּנָּשֶׂאנָה : וְהָיוּ מְלָכִים אֹמְנַיִךְ
pulverẽ & ,tibi se incurvabunt terra facies : tuæ lactatrices eorũ dominæ &
וְשָׂרוֹתֵיהֶם מֵינִיקֹתַיִךְ אַפַּיִם אֶרֶץ יִשְׁתַּחֲווּ לָךְ וַעֲפַר
afficiẽtur pudore non quòd Dominus ego quòd scies & :lingent tuorũ pedũ
רַגְלַיִךְ יְלַחֵכוּ וְיָדַעַתְּ כִּי־אֲנִי יְהוָה אֲשֶׁר לֹא־יֵבֹשׁוּ
justi captivitas an & ? captura forti à tolletur Nũquid .me expectantes
24 קֹוָי : הֲיֻקַּח מִגִּבּוֹר מַלְקוֹחַ וְאִם־שְׁבִי צַדִּיק
,tolletur fortis captivitas Etiam ,Dominus dixit sic Etenim ? evadet
25 יִמָּלֵט : כִּי־כֹה אָמַר יְהוָה גַּם־שְׁבִי גִבּוֹר יֻקָּח
& ,litigabo ego tuo litigatore cum & : evadet violenti captura &
וּמַלְקוֹחַ עָרִיץ יִמָּלֵט וְאֶת־יְרִיבֵךְ אָנֹכִי אָרִיב וְאֶת־
te depopulantes faciam comedere Et .servabo ego tuos filios
26 בָּנַיִךְ אָנֹכִי אוֹשִׁיעַ : וְהַאֲכַלְתִּי אֶת־מוֹנַיִךְ אֶת־
omnis scient & : se inebriabunt suo sanguine musto tanquã & ,suã carnem
בְּשָׂרָם וְכֶעָסִיס דָּמָם יִשְׁכָּרוּן וְיָדְעוּ כָל־
.Jahacob fortis tuus redemptor & ,te salvans Dominus ego quòd caro
בָּשָׂר כִּי אֲנִי יְהוָה מוֹשִׁיעֵךְ וְגֹאֲלֵךְ אֲבִיר יַעֲקֹב :

Versio VUL. LAT.

12 Ecce isti de longè venient, &
ecce illi ab Aquilone & mari,
13 & isti de terra Australi. Lauda-
te cœli, & exulta terra, jubilate
montes laudẽ: quia consolatus
est Dñs populũ suum, & pau-
14 perum suorũ miserebitur. Et
dixit Sion; Dereliquit me Dñs,
15 & Dñs oblitus est meî. Num-
quid oblivisci potest mulier in-
fantẽ suum, ut non misereatur
filio uteri sui? & si illa oblita
fuerit, ego tamen non oblivi-
16 scar tuî. Ecce in manibus meis
descripsi te: muri tui corã ocu-
17 lis meis semper. Venerũt stru-
ctores tui: destruentes te & dis-
18 sipantes, à te exibunt. Leva in
circuitu oculos tuos, & vide, o-
mnes isti congregati sunt, ve-
nerũt tibi: vivo ego, dicit Dñs;
quia omnibus his velut orna-
mento vestiêris, et circumdabis
19 tibi eos quasi sponsa. Quia de-
serta tua, & solitudines tuæ, &
terra ruinæ tuæ, nunc angusta
erũt præ habitatoribꝰ, et longè
fugabuntur qui absorbebãt te.
20 Adhuc dicent in auribꝰ tuis filii
sterilitatis tuæ; Angustꝰ est mihi
locus, fac spatiũ mihi ut habi-
21 tẽ. Et dices in corde tuo; Quis
genuit mihi istos? ego sterilis,
& non pariens, transmigrata,
et captiva: et istos quis enutri-
vit? ego destituta & sola: et isti
22 ubi erant? Hæc dicit Dñs Deus;
Ecce levabo ad Gentes manũ
meam, & ad populos exaltabo
signũ meum. Et afferent filios
tuos in ulnis, & filias tuas sup
23 humeros portabunt. Et erunt
reges nutritii tui, et reginæ nu-
trices tuæ: vultu in terrã demis-
so adorabunt te, et pulverẽ pe-
dum tuorũ lingẽt. Et scies quia
ego Dñs, sup quo non confun-
24 dentur qui expectant eũ. Num-
quid tolletur à forti præda? aut
ꝙ captum fuerit à robusto, sal-
25 vum esse poterit? Quia hæc
dicit Dñs; Equidem, & capti-
vitas à forti tolletur: et ꝙ abla-
tũ fuerit à robusto, salvabitur.
Eos verò, qui judicaverunt
te, ego judicabo, et filios tuos
26 ego salvabo. Et cibabo hostes
tuos carnibꝰ suis: et quasi mu-
sto, sanguine suo inebriabun-
tur: et sciet omnis caro, quia
ego Dñs salvans te, et redem-
ptor tuus fortis Jacob.

Vers. GRÆC. LXX. Interp.

12 Ἰδοὺ οὗτοι πόῤῥωθεν (ο) ἥξουσιν, οὗτοι ἀπὸ
Βοῤῥᾶ (π) καὶ θαλάσσης, ἄλλοι δὲ (ρ) ἐκ γῆς
13 Περσῶν. Εὐφραίνεσθε οὐρανοί, καὶ ἀγαλλι-
άσθω ἡ γῆ, ῥηξάτωσαν τὰ ὄρη εὐφροσύνην,
ὅτι ἠλέησεν ὁ θεὸς τὸν λαὸν αὐτοῦ, καὶ τοὺς
14 ταπεινοὺς τοῦ λαοῦ αὐτοῦ παρεκάλεσεν. Εἶπε
δὲ Σιών, Ἐγκατέλιπέ με κύριος, καὶ (σ) ὅτι
15 κύριος ἐπελάθετό μου. Μὴ ἐπιλήσεται (τ)
γυνὴ τοῦ παιδίου αὐτῆς, (υ) ἢ τοῦ μὴ ἐλεῆ-
σαι τὰ ἔκγονα τῆς κοιλίας αὐτῆς; εἰ δὲ καὶ
(φ) ταῦτα ἐπιλάθοιτο γυνή, ἀλλ᾽ ἐγὼ οὐκ
16 ἐπιλήσομαί σου, εἶπε κύριος. Ἰδοὺ ἐπὶ τῶν
χειρῶν μου (ʺ) ἐζωγράφηκά σου τὰ τείχη, καὶ
17 ἐνώπιόν μου εἶ διαπαντός, Καὶ ταχὺ οἰκοδο-
μηθήσῃ ὑφ᾽ ὧν καθῃρέθης, καὶ οἱ ἐρημώσαν-
18 τές σε (χ) ἐξελεύσονται ἐκ σοῦ. Ἆρον κύ-
κλῳ τοὺς ὀφθαλμούς σου, καὶ ἴδε πάντας, ἰδοὺ
συνήχθησαν καὶ ἦλθοσαν πρὸς σέ· Ζῶ ἐγώ,
λέγει κύριος, ὅτι πάντας αὐτοὺς (ψ) ὡς κό-
σμον ἐνδύσῃ, καὶ περιθήσεις αὐτοὺς ὡς κόσμον
19 (ʺ) νύμφη. Ὅτι τὰ ἔρημά σου καὶ τὰ (ω) κατε-
φθαρμένα καὶ πεπτωκότα, ὅτι νῦν στενοχωρή-
σει ἀπὸ τῶν κατοικούντων, καὶ μακρυνθήσονται
20 ἀπὸ σοῦ οἱ καταπίνοντές σε. Ἐροῦσι γὰρ εἰς
τὰ ὦτά σου οἱ υἱοί σου, οὓς (α) ἀπολώλε-
κας, Στενός μοι ὁ τόπος, ποίησόν μοι τό-
21 πον ἵνα κατοικήσω. Καὶ ἐρεῖς ἐν τῇ καρδίᾳ
σου, Τίς ἐγέννησέ μοι τούτους; ἐγὼ δὲ ἄτε-
κνος καὶ χήρα, τούτους δὲ τίς ἐξέθρεψέ μοι;
ἐγὼ δὲ κατελείφθην μόνη, οὗτοι δέ μοι ποῦ
22 ἦσαν; Οὕτως λέγει (β) κύριος κύριος, Ἰ-
δοὺ αἴρω εἰς τὰ ἔθνη τὴν χεῖρά μου, καὶ εἰς
τὰς νήσους ἀρῶ (γ) σύσσημόν μου, καὶ ἄξουσι
τοὺς υἱούς σου ἐν κόλπῳ, τὰς δὲ θυγατέρας σου
23 ἐπ᾽ ὤμων ἀροῦσι. Καὶ ἔσονται βασιλεῖς τι-
θηνοί σου, αἱ δὲ ἄρχουσαι (δ) αὐτῶν τροφοί
σου· ἐπὶ πρόσωπον τῆς γῆς προσκυνήσουσί
(·) σε, καὶ τὸν χοῦν τῶν ποδῶν σου λείξουσι, καὶ
γνώσῃ, ὅτι ἐγὼ κύριος, καὶ οὐκ (ε) αἰσχυνθή-
24 σονται οἱ ὑπομένοντές με. Μὴ λήψεταί τις
παρὰ γίγαντος σκῦλα; καὶ ἐὰν αἰχμαλω-
25 τεύσῃ τις ἀδίκως, σωθήσεται; (ζ) Ὅτι οὕ-
τω λέγει κύριος, Ἐάν τις αἰχμαλωτεύσῃ
γίγαντα, λήψεται σκῦλα· λαμβάνων δὲ
παρὰ ἰσχύοντος σωθήσεται· ἐγὼ δὲ τὴν
κρίσιν σου κρινῶ, καὶ ἐγὼ τοὺς υἱούς σου ῥύσο-
26 μαι. Καὶ φάγονται οἱ (η) θλίψαντές σε τὰς
σάρκας αὐτῶν, καὶ πίονται ὡς οἶνον νέον τὸ
αἷμα αὐτῶν, καὶ μεθυσθήσονται· καὶ αἰσθαν-
θήσεται πᾶσα σάρξ, ὅτι ἐγὼ (θ) κύριος
ὁ ῥυσάμενός σε, καὶ ἀντιλαμβανόμενος ἰσχύ-
ος Ἰακώβ.

cum Transl. LAT.

Ecce isti de longè venient, isti ab 12
Aquilone, & mari; alii autem
de terra Persarum. Lætamini cœ- 13
li, & exultet terra: erumpant
montes lætitiam: quia misertus est
Deus populi sui: et humiles popu-
li sui consolatus est. Dixit autem 14
Sion; Dereliquit me Dominus, &
quia Dominus oblitus est meî.
Nunquid obliviscetur mulier 15
parvuli sui; ut non misereatur
fœtuum uteri sui? Sin autem &
horum oblita fuerit mulier; sed
ego non obliviscar tuî, dixit Do-
minus. Ecce super manus meas 16
depinxi muros tuos: & coram
me es semper: Citóque ædifica- 17
beris, à quibus destructa fueras:
& qui te dissipaverant; egre-
dientur ex te. Leva in circuitu 18
oculos tuos, & vide omnes: ecce
congregati sunt, & venerunt ad
te. Vivo ego, dicit Dominus: quia
omnibus his, quasi ornamento ve-
stiêris, & circundabis tibi eos, sic-
ut ornamentum sponsa: Quoni- 19
am deserta tua, & quæ dissipata,
& quæ corruerunt, (g) quia nunc
angustabuntur præ habitatoribus:
& longè fient à te, qui te devo-
rabant. Dicent enim in auribus tu- 20
is filii tui, quos perdidisti, Angu-
stus mihi locus est: fac mihi lo-
cum, ut habitem. Et dices in cor- 21
de tuo, Quis genuit mihi istos?
ego autem absq; liberis, & (h) vi-
dua: & istos quis enutrivit mihi?
ego autem derelicta sum sola: &
isti mihi ubi erant? Sic dicit Do- 22
minus Dominus; Ecce elevo ad
gentes manum meam, & ad insu-
las levabo signum meum & ad-
ducent filios tuos in sinu: & fili-
as tuas super humeros portabunt.
Et erunt reges nutritii tui, & (i) 23
principes fœminæ eorum, nutrices
tuæ. Super faciem terræ adora-
bunt te, & pulverem pedum tuo-
rum lingent. Et scies, quia ego Do-
minus, & non confundentur, qui
expectant me. Nunquid accipiet 24
quis à gigante spolia? &, si capti-
vum duxerit quis (k) iniquè; sal-
vabitur? Quoniam sic dicit Do- 25
minus; Si quis captivaverit gigan-
tem; accipiet spolia: qui autem ac-
cipit à forti; salvabitur. Ego au-
tem judicium tuum judicabo: &
ego filios tuos eruam: Et come- 26
dent, qui tribulaverunt te, carnes
suas; & bibent, quasi vinum no-
vum, sanguinem suum, & inebria-
buntur. Et sentiet omnis caro, quia
ego Dominus, qui erui te, & qui
adjuvo fortitudinem Jacob.

MS. A. (ο) ἔρχονται, (π) καὶ οὗτοι ἀπὸ θαλάσσης, (ρ) ἐγ γῆς (σ) ὁ θεὸς (τ) μήτηρ (υ) τοῦ μὴ ἐλεῆσαι (φ) ἐπιλάθοιτο ταῦτα (ʺ) ἐζωγράφησά (χ)* ἐξου ἐξελεύσονται, (ψ) ἐνδύσῃ καὶ περιθήσῃ (ʺ) νύμφης. (ω) διεφθαρμένα καὶ τὰ πεπτωκότα νῦν στενοχωρήσει ἀπὸ τῶν ἐνοικούντων, (α) ἀπώλεκας, (β) κύριος, Ἰδοὺ (γ) σύνσημόν (δ) τροφοί σου. (·) σοι, (ε) αἰσχυνθήσῃ. Μὴ λήμψεται (ζ) Οὕτως λέγει (η) θλίβοντες (θ) ὁ ῥυσάμενος

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

12 הָא אִלֵּין מֵרְחִיק יֵיתוֹן וְהָא אִלֵּין מִצְּפוּנָא וּמִמַּעַרְבָא וְאִלֵּין מֵאֲרַע דָּרוֹמָא : שַׁבַּחוּ שְׁמַיָּא
13 וּבוּעִי אַרְעָא וּדְוצוּ טוּרַיָּא תּוּשְׁבַּחְתָּא אֲרֵי עָתִיד יְיָ לְנַחָמָא עַמֵּיהּ וְעַל עַנְוְתָנוֹהִי יְרַחֵם :
14 וַאֲמַרַת צִיּוֹן סְלֵיק שְׁכִנְתֵּיהּ יְיָ מִנִּי וַיְיָ רַחֲקַנִי : הַאֶפְשַׁר דְּתִתְנְשֵׁי אִתְּתָא בְּרַהּ מִלְּרַחֲמָא
15 עַל בַּר מְעַהָא מְתִיבָא כְּנִשְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל וַאֲמַרַת אִם לֵית קֳדָמוֹהִי אִתְנְשָׁאָה דִּלְמָא לָא
מִתְנְשֵׁי לִי יָת דַּעֲבַדִית עֵגֶל דִּדְהַב אֲמַר לַהּ נְבִיָּא אַף אִלֵּין אִתְנַשְׁיָן מְתִיבָא וְאָמְרָא לֵידֵהּ
אִם אִית קֳדָמוֹהִי אִתְנְשָׁאָה דִּלְמָא מִתְנְשֵׁי לִי יָת דַּאֲמַרִית בְּסִינַי נַעְבֵּיד וּנְקַבֵּיל מְתִיב
16 וַאֲמַר לַהּ מֵימְרִי לָא יְרַחֲקִנָּךְ : הָא כִּדְעַל יְדִין אַתְּ צְיִירָא קֳדָמַי שׁוּרָךְ לְקִבְלִי תְּדִירָא : יוּחוֹן
17 בְּנוֹי חַרְבָּתִיךְ מְפַגְּרָךְ וּמְחָרְבָךְ מִנִּיךְ יִגְלוֹן : זְקוֹפִי יְרוּשְׁלֵם סְחוֹר סְחוֹר עֵינַךְ וַחֲזָא כָּל
18 בְּנֵי גָלְוָתִיךְ מִתְכַּנְּשִׁין וְאָתַן לְגַוִּיךְ קַיָּם אֲנָא אֲמַר יְיָ אֲרֵי כּוּלְּהוֹן לִיךְ כִּלְבוּשׁ דִּיקָר
19 וְעוֹבְדֵיהוֹן בְּגַוִּיךְ כִּקְשׁוּט כַּלְּתָא : אֲרֵי חָרְבָתִיךְ וְצַדְיוּתִיךְ וַאֲרַע מְפַגְּרוּתִיךְ אֲרֵי כְעַן
20 תִּדְחֲקִין מִיתַּב וְיִתְרַחֲקוּן מְסַלְעֲמָךְ : מִכְּעַן יֵימְרוּן חַד חַד בְּגַוִּיךְ בְּנֵי עַם גָּלְוָתִיךְ עָק לִי
21 אַתְרָא רְוַח לִי וְאֵיתֵב : וְתֵימְרִין בְּלִבִּיךְ מַן רַבִּי לִי יָת אִלֵּין וַאֲנָא תַכְלָא וִיחִידָא גַּלְיָא
22 וּמְטַלְטְלָא וְאִלֵּין מַן רַבִּי הָא אֲנָא אִשְׁתְּאֲרִית בִּלְחוֹדַי אִלֵּין הֵיכָא הֲווֹ : כִּדְנָן אֲמַר יְיָ
אֱלֹהִים הָא אֲנָא אֲגַלֵּי בְּעַמְמַיָּא גְּבוּרְתִּי וְעַל מַלְכְּוָתָא אֲרִים נִסִּי וְיֵיתוֹן בְּנַךְ בְּצִיבִין וּבְנָתִיךְ עַל
23 כִּתְפִין יִתְנַטְלָן : וִיהוֹן מַלְכַיָּא תוֹרְבְּיָנָךְ וּמַלְכְּוָתְהוֹן יְשַׁמְשׁוּנִיךְ עַל אַפֵּיהוֹן עַל אַרְעָא
יִשְׁתַּחֲווֹן לִמְבְעֵי מִנִּיךְ וַעֲפַר רִגְלָךְ יְלַחֲכוּן וְתֵידְעִין אֲרֵי אֲנָא יְיָ דְּלָא יִבְהֲתוּן צַדִּיקַיָּא
24 דִּמְסַבְּרִין לְפוּרְקָנִי : הֲיִתְנְסֵיב מִגִּבָּרָא עֲדִי וְאִם דִּשְׁבוֹ זַכָּאִין יִשְׁתֵּיזֵב : הָא אֲמַרַת יְרוּשְׁלֵם
הַאֶפְשַׁר דְּיִתְנְסֵב מֵעֵשָׂו רַשִׁיעָא דַּאֲמִיר עֲלֵיהּ עַל חַרְבָּךְ תֵּחֵי עֲדָאָה דַּעֲדִי מִנִּי וְאִם שִׁבְיָא
25 דִּשְׁבָא יִשְׁמָעֵאל דַּאֲמִיר עֲלֵיהּ דְּצַדִּיקַיָּא הוּא יִשְׁתֵּיזֵב : אֲרֵי כִּדְנָן אֲמַר יְיָ אַף דִּשְׁבוֹ גִּבָּרִין
אֲתִיב וְדַעֲדוֹ תַקִּיפִין אֱשֵׁיזֵב וְיָת פּוּרְעֲנוּתִיךְ אֲנָא אֶתְפְּרַע וְיָת בְּנַךְ אֲנָא אֶפְרוֹק : הָא אֲרֵי
כִּדְנָן אֲמַר יְיָ אַף עֲדָאָה דַּעֲדָא מִנִּיךְ עֵשָׂו גִּבָּרָא יִתְנְסֵב מִנֵּיהּ וּשְׁבִיָּא דִשְׁבָא מִנִּיךְ יִשְׁמָעֵאל
גּוּתְנָא דַּאֲמִיר עֲלֵיהּ עָרוֹד בְּאֱנָשָׁא יִשְׁתֵּיזֵב וְיָת פּוּרְעֲנוּתִיךְ אֲנָא אֶתְפְּרַע וְיָת בְּנַךְ אֲנָא
26 אֶפְרוֹק : וְאֶתֵּן יָת בְּסַר דַּהֲווֹ מוֹנָן לִיךְ מֵיכַל לְכָל עוֹפָא דִשְׁמַיָּא וּכְמָא דְמִתְרְוָן מֵחֲמַר
מְרִית כֵּן חֵיוַת בָּרָא מִדְּמְהוֹן תִּתְרְוֵי וְיֵדְעוּן כָּל בִּסְרָא אֲרֵי אֲנָא יְיָ פָּרְקִיךְ וּמְשֵׁיזְבִיךְ
תַּקִּיפָא דְיַעֲקֹב :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Ecce isti de longè venient, & ecce hi ab Aquilone & ab Occidente, & isti 12
de terra Australi. Laudate cœli, & exulta terra, & jubilate montes in lau- 13
de, quia consolaturꝰ est Dñs populũ suũ: & mansuetorũ suorũ miserebi-
tur. Et dixit Sion: Abstulit Deus majestatẽ suã à me; & Dñs abjecit me. 14
Nunquid obliviscetur mulier filii sui, quo minus misereatur filii uteri sui? 15
Respondit cœtꝰ Israel & ait: Si non est coram eo oblivio, fortè non illius
obliviscetur mihi, ꝙ fecerim vitulũ aureũ. Dixit ei Propheta: Etiam hujus
obliviscetur. *Respondit* et dixit ei: Si est coram illo oblivio, fortè oblivi-
scetur mihi illiꝰ ꝙ dixerim in Synai, Faciemꝰ, & obediemꝰ. Respondit &
dixit *ei*: Verbũ meũ non abjiciet te. Ecce quasi in manibꝰ tu signatꝰ es co- 16
ram me, muri tui in conspectu meo semp. Festinabunt *ædificantes tibi* soli- 17
tudines tuas: destruentes te & dissipantes ex te migrabunt. Leva Jerusalẽ 18
in circuitu oculos tuos, & vide omnes filios populi transmigrationis tuæ,
qui congregantur & veniunt ad te. Vivo ego, dicit Dñs, quoniã omnes isti
erunt tibi quasi vestimentũ gloriæ, & opera eorũ in medio tui quasi orna-
mentũ sponsæ. Quia solitudines tuæ, & deserta tua, & terra destructionis 19
tuæ, nunc sanè angusta erunt præ habitatoribꝰ, & longè erunt qui absorbe-
bant te. Posthac dicent singuli in medio tui filii populi transmigra- 20
tionis tuæ, Angustus est mihi locus, fac spatiũ mihi ut sedeam. Et dices in 21
corde tuo: Quis nutrivit mihi hos, & ego orbata & solitaria, captiva, &
transmigrans, & istos quis nutrivit? Ecce ego remansi sola; isti autem ubi
erant? Hæc dicit Dñs Deus: Ecce revelabo in populis potentiã meã, & su- 22
per regna levabo vexillũ meũ, & afferent filios tuos in lecticis, & filias tu-
as in humeris portabunt. Et erunt reges nutritii tui, & reginæ eorũ ministra- 23
bunt tibi; proni in terrã curvabuntur, ut deprecentur te; & pulverẽ pedũ
tuorũ lingent: & scietis quia ego Dñs, quod non confundentur justi qui spe-
rant in salutẽ meã. Nunquid tolletur à forti præda, & ꝙ ceperunt justi sal- 24
vabitur? *Targum aliud:* Dixit Jerusalem: Nunquid possibile est ut aufera-
tur ab Esau impio ꝙ dictũ est de eo: In gladio tuo vives? & præda quam
abstulit à me, & captivitas quã captivavit Ismael, de qua dictũ est, Quod
justorũ est, eruetur? Hæc enim dicit Dñs: etiã captivitatẽ, quam ceperunt 25
robusti, reducam, & deprædati sunt fortes, eruã: & vindictã tuã ego ul-
ciscar, & filios tuos ego salvabo. *Targum aliud:* Hæc enim dicit Dñs: Eti-
am præda quã abstulit à te Esau robustꝰ, tolletur ab eo, & captivitas quam
accepit à te Ismael superbꝰ, qui dictꝰ est onager in hominibus, eruetur: &
vindictam tuam ego ulciscar, & filios tuos ego salvabo. Dabo carnes eorũ 26
qui opprimebant te in escam omni volatili cœli: et sicut inebriantur vino
mero, ita bestiæ agri inebriabuntur sanguine eorum: et scient *omnis caro*,
quia ego Dominus salvans te, et liberans te fortis Jacob.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

12 *ܗܠܝܢ ܢܐܬܘܢ܂ ܡܢ ܪܘܚܩܐ܂ ܘܗܠܝܢ ܡܢ ܓܪܒܝܐ܂ ܘܗܠܝܢ ܡܢ ܝܡܐ܂ ܘܗܠܝܢ ܡܢ ܝܡܐ
13 ܕܣܝܢܝܡ܂ *ܫܒܚܘ ܫܡܝܐ ܘܪܘܙܝ ܐܪܥܐ܂ ܢܬܦܨܚܘܢ ܛܘܪܐ ܒܬܫܒܘܚܬܐ܂ ܡܛܠ
14 ܕܒܝܐ ܡܪܝܐ ܠܥܡܗ܂ ܘܪܚܡ ܥܠ ܡܣܟܢܘܗܝ܂ *ܐܡܪܬ ܨܗܝܘܢ܂ ܕܫܒܩܢܝ ܡܪܝܐ܂ ܘܡܪܝܐ
15 ܛܥܝܢܝ܂ *ܠܡܐ ܛܥܝܐ ܐܢܬܬܐ ܥܘܠܗ܂ ܘܠܐ ܡܪܚܡܐ ܥܠ ܒܢܝ ܟܪܣܗ܂ ܐܦ ܗܠܝܢ ܢܛܥܝܢ܂
16 ܐܢܐ ܠܐ ܐܛܥܝܟܝ܂ *ܗܐ ܥܠ ܦܣܬ ܐܝܕܝ ܨܪܬܟܝ܂ ܘܫܘܪܝܟܝ ܩܕܡܝ ܐܢܘܢ ܐܡܝܢܐܝܬ܂
17 *ܥܓܠ ܒܢܝܟܝ ܡܣܚܦܢܝܟܝ ܘܡܚܪܒܢܝܟܝ܂ ܡܢܟܝ ܢܦܩܘܢ܂ *ܐܪܝܡܝ ܒܚܕܪܝܟܝ
18 ܥܝܢܝܟܝ܂ ܘܚܙܝ ܕܟܠܗܘܢ܂ ܡܬܟܢܫܝܢ ܘܐܬܝܢ ܠܟܝ܂ ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܕܟܠܗܘܢ
19 ܐܝܟ ܨܒܬܐ ܬܠܒܫܝܢ܂ ܘܬܬܥܛܦܝܢ ܐܝܟ ܟܠܬܐ܂ *ܡܛܠ ܕܚܘܪܒܢܝܟܝ ܘܨܕܝܘܬܟܝ ܘܐܪܥܐ
ܕܚܪܒܘܬܟܝ܂ ܡܛܠ ܕܐܬܥܩܬ ܡܢ ܥܡܪܐ܂ ܘܢܬܪܚܩܘܢ ܒܠܘܥܝܟܝ܂ *ܘܬܘܒ ܢܐܡܪܘܢ
20 ܒܐܕܢܝܟܝ ܒܢܝ ܬܟܠܘܬܟܝ܂ ܕܐܬܥܩ ܠܢ ܐܬܪܐ܂ ܦܢܝ ܡܢܢ ܘܢܬܒ܂ *ܘܬܐܡܪܝܢ ܒܠܒܟܝ܂
21 ܡܢܘ ܝܠܕ ܠܝ ܠܗܠܝܢ܂ ܕܗܐ ܐܢܐ ܬܟܝܠܬܐ ܐܢܐ ܘܝܚܝܕܝܬܐ܂ ܫܒܝܬܐ ܘܡܛܪܕܬܐ܂ ܘܗܠܝܢ
ܡܢ ܪܒܝ ܠܝ܂ ܐܢܐ ܗܐ ܐܫܬܚܪܬ ܒܠܚܘܕܝ܂ ܘܗܠܝܢ ܐܝܟܐ ܗܘܘ܂ *ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ܂
22 ܗܐ ܡܪܝܡ ܐܢܐ ܐܝܕܝ ܠܥܡܡܐ܂ ܘܠܥܡܡܐ ܐܩܝܡ ܐܬܐ܂ ܘܢܝܬܘܢ ܒܢܝܟܝ ܥܠ
23 ܐܝܕܝܗܘܢ܂ ܘܒܢܬܟܝ ܥܠ ܟܬܦܝܗܘܢ ܢܫܩܠܘܢ܂ *ܘܢܗܘܘܢ ܡܠܟܐ ܡܪܒܝܢܝܟܝ܂
ܘܪܘܪܒܢܝܬܗܘܢ ܡܝܢܩܢܝܬܟܝ܂ ܥܠ ܐܦܝܗܘܢ ܥܠ ܐܪܥܐ ܢܣܓܕܘܢ ܠܟܝ܂ ܘܥܦܪܐ
24 ܕܪܓܠܝܟܝ ܢܠܚܟܘܢ܂ ܘܬܕܥܝܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ܂ ܕܠܐ ܒܗܬܝܢ ܐܝܠܝܢ ܕܡܣܟܝܢ ܠܝ܂ *ܠܡܐ
25 ܡܬܢܣܒܐ ܒܙܬܗ ܕܓܢܒܪܐ܂ ܐܘ ܫܒܝܬܗ ܕܥܫܝܢܐ ܡܬܦܨܝܐ܂ *ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂
ܕܐܦ ܫܒܝܬܗ ܕܓܢܒܪܐ ܡܬܢܣܒܐ܂ ܘܒܙܬܗ ܕܥܫܝܢܐ ܬܬܦܨܐ܂ ܘܕܝܢܟܝ ܐܢܐ ܐܕܘܢ܂ ܘܠܒܢܝܟܝ
26 ܐܢܐ ܐܦܪܘܩ܂ *ܘܐܘܟܠ ܠܐܠܘܨܝܟܝ ܒܣܪܗܘܢ܂ ܘܐܝܟ ܚܡܪܐ ܚܕܬܐ ܢܪܘܘܢ ܡܢ ܕܡܗܘܢ܂ ܘܢܕܥܘܢ
ܟܠ ܒܣܪ܂ ܕܐܢܐ ܡܪܝܐ ܦܪܘܩܟܝ܂ ܘܡܚܝܠܢܟܝ܂ ܥܫܝܢܗ ܕܝܥܩܘܒ܂

12 Iſti venient è longinquo, illi ab Aquilone, iſti à mari, alii à mari Senjam. 13 Canite cœli, exulta terra, exhilaramini montes cum cantico: quia conſolatus Dominus populum ſuum, & miſertus eſt pauperum ſuorum. 14 Sion autem dixit, Dereliquit me Dominus, & Dominus oblitus eſt mei. 15 Num obliviſcitur mulier infantis ſui, nec miſeretur filii viſcerum ſuorum? etiamſi iſtæ obliviſcantur, ego tui non oblviſcar. 16 Ecce ſuper palmas manuum mearum impreſſi te, & mœnia tua è regione mihi perpetuò verſantur. 17 Mox filii tui qui te deſtruunt & evertunt, ex te egredientur. 18 Attolle oculos tuos circumquaque, & aſpice quomodo congregentur omnes & veniant ad te: Per vitam meam, dicit Dominus; omnibus tanquam ornamento veſtieris, & ut ſponſa coronaberis, 19 Nam ſolitudines tuæ, inculta *loca* tua, & terra vaſtitatis tuæ anguſta reddetur ob frequentiā *habitatorum*, & fugient qui te deglutiunt. 20 Et adhuc dicent in auribus tuis filii ſterilitatis tuæ, Anguſtus eſt nobis locus, recede à nobis ut habitemus. 21 Adeóque dices apud temetipſam, Quis mihi genuit iſtos, cùm ego ſim ſterilis & ſolitaria, captiva & exagitata? hos quis educavit? quandoquidem ecce ſola remanſeram, iſti ubinam erant? 22 Sic dicit Dominus Deus, Ecce ſuſtollam ad gentes manum meam, & ad gentes erigam ſignum, afferéntque filios tuos ſuper manus ſuas, & filias tuas ſuper humeros ſuos portabunt. 23 Et erunt reges nutricii tui, et *fœminæ* principes eorum nutrices tuæ: proni ſuper terram adorabunt te, et pulverem pedum tuorum lingent: & ſcies me eſſe Dominum, nec pudefieri eos qui me expectant. 24 Num auferretur præda gigantis? aut captivitas herois eriperetur? 25 Imò ſic ait Dominus, Præda gigantis auferetur, & captivitas herois eripietur: cauſas tuas ego diſceptabo, & filios tuos ego ſervabo, 26 Efficiam ut comedant oppreſſores tui carnem ſuam, & ſanguine ſuo quaſi muſto inebrientur: & ſcient omnes mortales me eſſe Dominum ſalvatorem & protectorem tuum robuſtum Jacobi.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

12 * ها هولاء من بعيد ياتون * هاولاء من الجربياء * وهاولاء من البحر * واخر من ارض فارس *
13 * افرحن ايها السموات * ولتبتهج الارض * ولتبدو الجبال سرورا والاكام عدلا * لان الله
14 15 رحم شعبه وعزي ذليلي شعبه * قالت صهيون تركني الرب * والله نسيني * هل تنسي
الام ولدها * او لا ترحم اولاد جوفها * فالان نسيت المراة هذا * لكنني انا لست انساك قال
16 17 الرب * ها علي يدي صورت اسوارك * وامامي انت كل حين * وسريعا تبني من الذين
18 هدمت منهم * والذين اخربوك منك يخرجون * ارفعي عينيك من حولك * وانظريهم جميعا
ها اجتمعوا واتوا اليك * حي انا قال الرب انك ترتبطين جميعهم وتتوشحين بهم مثل زينة
19 العروس * لان خراباتك ومستوحشاتك ومهدوماتك الان تضيق من السكان * ويتبعدون
20 منك الذين ابتلعوك * لان بنيك يقولون في اذنيك الذين اهلكتيهم * الموضع ضيق
21 بي * اصنعي لي موضعا لكي اسكن * وتقولين في قلبك * من ولد لي هاولاء وانا ثكلي
22 وارملة * من ربي لي هاولاء * او هاولاء اين كانوا لي * هكذا يقول الرب * ها ارفع يدي للامم *
وعلي الجزاير ارفع علامتي * وياتون ببنيك في الحضن * ويرفعون بناتك علي الاكتاف *
23 * ويصير الملوك داياتك * والرييسات مربياتك * علي وجه الارض يسجدون لك * ويلحسون
24 تراب قدميك * وتعلمين اني انا الرب * ولست تخزين * هل ياخذ احد من الجبار غنايم *
25 وان سبي من يخلص بالظلم * هكذا يقول الرب * ان سبي احد جبارا ياخذ غنايم * واذا
26 اخذ من القوي يخلص * وانا اقضي قضاءك * وانا احيي بنيك * وياكل محزنوك لحومهم *
ويشربون مثل الخمر الجديدة دماهم ويسكرون * ويعلم كل ذي جسد اني انا منجيك
وعاضدك بقوة يا يعقوب *

12 Ecce iſti de longinquo venient, iſti ab Auſtro, iſti à mari, alii è terra Perſiæ. 13 Lætamini O cœli, exultet terra, edant montes gaudium, & colles juſtitiam; quia Deus miſertus eſt populi ſui, & conſolatus eſt abjectos populi ſui. 14 Dixit Sion, Dereliquit me Dominus, & Deus oblitus eſt mei. 15 An obliviſceretur mater nati ſui? aut non moveretur miſeratione erga filios uteri ſui? verùm licèt horum obliviſcatur fœmina, ego tamen haudquaquam obliviſcar tui, dicit Dominus. 16 Ecce ſuper manibus meis pinxi muros tuos, & coram me verſaris omni tempore. 17 Brevi ædificaberis ab his à quibus everſa fueras, & qui te deſtruxerant, egredientur ex te. 18 Attolle circum te oculos tuos, & vide eos omnes ecce congregatos eſſe, & ad te veniſſe. Vivo ego, dicit Dominus, colligabis omnes, uſque te præcinges ut ornamento ſponſæ. 19 Nam ruinæ tuæ, deſolationes tuæ, & rudera tua mox erunt anguſta præ habitatoribus, & recedent à te qui te abſorbebant. 20 Nam filii tui quibus orbata fueras, audiente te, dicent, Locus eſt mihi anguſtus, cede mihi locum ut habitem. 21 Dicéſque tecum ipſa, Quis mihi genuit iſtos, quum orba ſim & vidua? quis hos educavit mihi? vel iſti ubinam erant mihi? 22 Sic dicit Dominus, Ecce levabo manum meam ad gentes, & ad inſulas attollam ſignum meum; afferéntque filios tuos in gremio, & ſuſtollent ſuper humeros filias tuas. 23 Eruntque reges obſtetrices tuæ, & matronæ principes nutrices tuæ: ſuper faciem terræ te adorabunt, & lingent pulverem veſtigiorum tuorum: & experieris me eſſe Dominum, & non pudefiet. 24 An caperet aliquis à gigante ſpolia? aut ſi is prædaretur, quis violenter eriperet? 25 Sic ait Dominus, Si quis gigantem deprædetur, accipiet ſpolia; & rapiat à robuſto, evadet: ego judicabo cauſam tuam, & ego ſalvabo filios tuos. 26 Qui te contriſtant, devorabunt carnes ſuas, bibentque ſicut vinum novum, ſanguinem ſuum, & inebriabuntur: ſcientque omnes corpore præditi me eſſe redemptorem tuum, teque robore fulcientem O Jacob.

ישעיה : נ נא

CAP. L. נ

quam , veſtræ matris *exciſionis* liber iſte *Vbi* : DOMINUS dixit Sic
1 כֹּה אָמַר יְהוָה אֵי זֶה סֵפֶר כְּרִיתוּת אִמְּכֶם אֲשֶׁר
En ? ei vos vendidi *cui* , *meis fœneratoribꝰ ex* quis aut *? eam* dimiſi
שִׁלַּחְתִּיהָ אוֹ מִי מִנּוֹשַׁי אֲשֶׁר־מָכַרְתִּי אֶתְכֶם לוֹ הֵן
eſt dimiſſa *veſtris prævaricationibus in* &, eſtis vendlti *veſtris iniquitatibus in*
בַּעֲוֺנֹתֵיכֶם נִמְכַּרְתֶּם וּבְפִשְׁעֵיכֶם שֻׁלְּחָה
? *reſpondens* non & ,vocavi *? vir* non & , veni Cur .veſtra mater
2 אִמְּכֶם׃ מַדּוּעַ בָּאתִי וְאֵין אִישׁ קָרָאתִי וְאֵין עוֹנֶה
an & ; redemptione à mea manus ſe abbreviavit ſe abbreviando num
הֲקָצוֹר קָצְרָה יָדִי מִפְּדוּת וְאִם
faciã ſiccare mea increpatione in Ecce ? eruendũ ad potentia me in non
אֵין־בִּי כֹחַ לְהַצִּיל הֵן בְּגַעֲרָתִי אַחֲרִיב
, aqua *non à* eorum *piſcis fœtebit* ; deſertum flumina ponam , mare
יָם אָשִׂים נְהָרוֹת מִדְבָּר תִּבְאַשׁ דְּגָתָם מֵאֵין מַיִם
ponam ſaccum & : *caligine* cœlos Induam .ſiti *in morietur* &
3 וְתָמֹת בַּצָּמָא׃ אַלְבִּישׁ שָׁמַיִם קַדְרוּת וְשַׂק אָשִׂים
linguam mihi dedit Deus DOMINUS .eorũ operimentum
4 כְּסוּתָם׃ אֲדֹנָי יְהוִה נָתַן לִי לְשׁוֹן
mane in excitabit :verbum *laſſo* *opportunè loqui ſciendum ad*,eruditorum
לִמּוּדִים לָדַעַת לָעוּת אֶת־יָעֵף דָּבָר יָעִיר בַּבֹּקֶר
.*docti* ſicut audiendum ad aurem mihi excitabit ; *mane in*
בַּבֹּקֶר יָעִיר לִי אֹזֶן לִשְׁמֹעַ כַּלִּמּוּדִים׃
: fui rebellis non ego & , aurem mihi aperuit DEUS Dominus
5 אֲדֹנָי יְהוִה פָּתַח־לִי אֹזֶן וְאָנֹכִי לֹא מָרִיתִי
meas genas &,percutientibꝰ dedi meũ Corpus.ſum reverſus non retrorſum
6 אָחוֹר לֹא נְסוּגֹתִי׃ גֵּוִי נָתַתִּי לְמַכִּים וּלְחָיַי
.ſputo & , ignominiis ab abſcondi non *meas facies* : *decapillantibus*
לְמֹרְטִים פָּנַי לֹא הִסְתַּרְתִּי מִכְּלִמּוֹת וָרֹק׃
: erubui non ideo : mihi auxiliabitur DEUS meus Dominus Et
7 וַאדֹנָי יְהוִה יַעֲזָר־לִי עַל־כֵּן לֹא נִכְלָמְתִּי
.afficiar pudore non quòd novi & ; ſilicem ut *meas facies* poſui ideo
עַל־כֵּן שַׂמְתִּי פָנַי כַּחַלָּמִישׁ וָאֵדַע כִּי־לֹא אֵבוֹשׁ׃
quis : ſimul ſtemus ? mecum contendet quis ,me *juſtificans Propinquus*
8 קָרוֹב מַצְדִּיקִי מִי־יָרִיב אִתִּי נַעַמְדָה יָּחַד מִי־
DOMINUS Dominus En .me ad accedat *? mei judicii auctor*
9 בַעַל מִשְׁפָּטִי יִגַּשׁ אֵלָי׃ הֵן אֲדֹנָי יְהוִה
veſtimentũ ut ipſi omnes Ecce ?me faciat impiũ *ipſe* quis,mihi auxiliabitur
יַעֲזָר־לִי מִי־הוּא יַרְשִׁיעֵנִי הֵן כֻּלָּם כַּבֶּגֶד
,Dominum timens vos inter Quis .eos comedet tinea ,veteraſcent
10 יִבְלוּ עָשׁ יֹאכְלֵם׃ מִי בָכֶם יְרֵא יְהוָה
ſplendor non & , tenebris ambulavit qui : ſui ſervi *voce in audiens*
שֹׁמֵעַ בְּקוֹל עַבְדּוֹ אֲשֶׁר הָלַךְ חֲשֵׁכִים וְאֵין נֹגַהּ
Ecce ? ſuo Deo *in* innitatur & , DOMINI nomine in ſperet , *ſibi*
11 לוֹ יִבְטַח בְּשֵׁם יְהוָה וְיִשָּׁעֵן בֵּאלֹהָיו׃ הֵן
foco in ambulate , ſcintillis *vos cingentes* , ignem *accendentes* vos omnes
כֻּלְּכֶם קֹדְחֵי אֵשׁ מְאַזְּרֵי זִיקוֹת לְכוּ בְּאוּר
,vobis hoc fuit mea manu De .incendiſtis ſcintillis in &,veſtri ignis
אֶשְׁכֶם וּבְזִיקוֹת בִּעַרְתֶּם מִיָּדִי הָיְתָה־זֹּאת לָכֶם
.*jacebitis* dolore in
לְמַעֲצֵבָה תִּשְׁכָּבוּן׃

CAP. LI. נא

aſpicite : Dominum quærentes ,juſtitiam ſequentes me ad Audite
1 שִׁמְעוּ אֵלַי רֹדְפֵי צֶדֶק מְבַקְשֵׁי יְהוָה הַבִּיטוּ
.eſtis eruti ciſternæ perforationem ad & , eſtis exciſi petram ad
אֶל־צוּר חֻצַּבְתֶּם וְאֶל־מַקֶּבֶת בּוֹר נֻקַּרְתֶּם׃

Verſio VULG. LAT.

CAP. L.

1 HÆc dicit Dominus ; Quis
eſt hic liber repudii matris veſtræ,
quo dimiſi eam ? aut quis
eſt creditor meus, cui vendidi
vos ? ecce in iniquitatibus veſtris
venditi eſtis, & in ſceleribus
veſtris dimiſi matrem veſtram.
2 Quia veni,& non erat
vir : vocavi, & non erat qui
audiret : numquid abbreviata
et parvula facta eſt manus mea,
ut non poſſim redimere ? aut
non eſt in me virtus ad liberandũ ?
Ecce in increpatione mea
deſertum faciam mare, ponam
flumina in ſiccum : computreſcent
piſces ſine aqua, & morientur
3 in ſiti. Induam cœlos
tenebris, & ſaccum ponam operimentum
4 eorum. Dominus
dedit mihi linguam eruditam,
ut ſciam ſuſtentare eum, qui
laſſus eſt verbo : erigit manè,
manè erigit mihi aurem,ut audiam
5 quaſi magiſtrum. Dominus
Deus aperuit mihi aurem,
ego autem non contradico:retrorſũ
6 non abii. Corpus meũ
dedi percutientibus, & genas
meas vellentibus : faciẽ meam
non averti ab increpantibus,et
7 conſpuentibus in me. Dominus
Deus auxiliator meus,ideò
non ſum confuſus : ideò poſui
faciem meam ut petram duriſſimam,
& ſcio quoniam non
8 confundar. Juxta eſt qui juſtificat
me,quis contradicet mihi ?
ſtemus ſimul, quis eſt adverſarius
9 meus? accedat ad me. Ecce
Dominꝰ Deus auxiliator meus:
quis eſt qui condemnet me ?
Ecce omnes quaſi veſtimentũ
conterentur, tinea comedet
10 eos. Quis ex vobis timens Dominum,
audiens vocem ſervi
tui? qui ambulavit in tenebris,
& non eſt lumen ei, ſperet in
nomine Domini, & innitatur
11 ſuper Deum ſuum. Ecce vos
omnes accendentes ignem,accincti
flammis,ambulate in lumine
ignis veſtri,& in flammis
quas ſuccendiſtis : de manu
mea factum eſt hoc vobis, in
doloribus dormietis.

CAP. LI.

1 Audite me qui ſequimini ꝙ
juſtum eſt, & quæritis Dominum:
attendite ad petram unde
exciſi eſtis ; & ad cavernã laci,
de qua præciſi eſtis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. ν'.

1 Οὕτως λέγει κύριος, Ποῖον τὸ βιβλίον
τοῦ ἀποστασίου τῆς μητρὸς ὑμῶν, ᾧ ἐξαπέστειλα
αὐτήν; ἢ τίνι ὑποχρέῳ πέπρακα
ὑμᾶς; ἰδοὺ ταῖς ἁμαρτίαις ὑμῶν ἐπράθητε,
καὶ ταῖς ἀνομίαις ὑμῶν ἐξαπέστειλα τὴν
2 μητέρα ὑμῶν. Τί ὅτι ἦλθον, καὶ οὐκ ἦν
ἄνθρωπος; ἐκάλεσα, καὶ (α) οὐκ ἦν ὁ ὑπακούων;
μὴ οὐκ ἰσχύει ἡ χείρ μου τοῦ ῥύσασθαι; ἢ
οὐκ ἰσχύω τοῦ ἐξελέσθαι; ἰδοὺ (β) τῷ ἐλεγμῷ
μου ἐξερημώσω τὴν θάλασσαν, καὶ θήσω
ποταμοὺς ἐρήμους, καὶ ξηρανθήσονται οἱ
ἰχθύες αὐτῶν ἀπὸ τοῦ μὴ εἶναι ὕδωρ, καὶ ἀποθανοῦνται
3 ἐν δίψει. (γ) Ἐνδύσω τὸν οὐρανὸν
σκότος, καὶ (δ) ὡς σάκκον θήσω τὸ περιβόλαιον
4 αὐτοῦ. (ε) Κύριος κύριος δίδωσί
μοι γλῶσσαν (ζ) παιδείας, τοῦ γνῶναι
(η) ἡνίκα δεῖ εἰπεῖν λόγον. ἔθηκέ μοι (θ)
5 πρωΐ, προσέθηκέ μοι ὠτίον ἀκούειν, Καὶ ἡ
παιδεία (ι) κυρίου κυρίου ἀνοίγει μου τὰ
ὦτα· ἐγὼ δὲ οὐκ ἀπειθῶ, οὐδὲ ἀντιλέγω.
6 Τὸν νῶτόν μου (˜) ἔδωκα εἰς μάστιγας, τὰς δὲ
σιαγόνας μου εἰς ῥαπίσματα, τὸ δὲ πρόσωπόν
μου οὐκ ἀπέστρεψα ἀπὸ αἰσχύνης ἐμπτυσμάτων,
7 Καὶ (κ) κύριος κύριος βοηθός
μοι ἐγενήθη. διὰ τοῦτο οὐκ ἐνετράπην, ἀλλὰ
ἔθηκα τὸ πρόσωπόν μου ὡς στερεὰν πέτραν,
8 καὶ ἔγνων ὅτι οὐ μὴ αἰσχυνθῶ, Ὅτι ἐγγίζει
ὁ δικαιώσας με. τίς ὁ κρινόμενός μοι; ἀντιστήτω
μοι ἅμα· καὶ τίς ὁ κρινόμενός μοι;
9 ἐγγισάτω μοι. Ἰδοὺ (λ) κύριος κύριος
βοηθήσει μοι· τίς κακώσει με; ἰδοὺ πάντες
ὑμεῖς ὡς ἱμάτιον παλαιωθήσεσθε, καὶ (μ)
10 σὴς καταφάγεται ὑμᾶς. Τίς ἐν ὑμῖν ὁ φοβούμενος
τὸν κύριον; (ν) ὑπακουσάτω τῆς
φωνῆς τοῦ παιδὸς αὐτοῦ. οἱ πορευόμενοι ἐν
(ξ) σκότει, καὶ οὐκ ἔστιν αὐτοῖς φῶς, πεποίθατε
ἐπὶ τῷ ὀνόματι κυρίου, καὶ ἀντιστηρίσασθε
11 ἐπὶ τῷ θεῷ. Ἰδοὺ πάντες ὑμεῖς πῦρ καίετε,
καὶ κατισχύετε φλόγα· πορεύεσθε τῷ
φωτὶ τοῦ πυρὸς ὑμῶν, καὶ τῇ φλογὶ ᾗ ἐξεκαύσατε.
δι' ἐμὲ ἐγένετο ταῦτα ὑμῖν, ἐν λύπῃ κοιμηθήσεσθε.

CAP. L.

Sic dicit Dominus ; Qualis eſt 1
liber repudii matris veſtræ, quo
dimiſi eam ? aut cui (a) creditori
vendidi vos? Ecce peccatis veſtris
venundati eſtis : & in veſtris
iniquitatibus dimiſi matrem
veſtram. (b) Quid, quia veni, 2
& non erat homo ; vocavi, &
non erat qui obediret ? Nunquid
non poteſt manus mea liberare,
aut non prævaleo, ut eruam? Ecce
increpatione meã deſertum faciam
mare, & ponam flumina
deſerta : & areſcent piſces eorum,
eò quòd non ſit aqua,& morientur
in ſiti. Induam cælum tenebris, 3
& quaſi cilicium ponam
operimentum ejus. Dominus Dominus 4
dat mihi linguam diſciplinæ,
ut ſciam quando oporteat loqui
verbum. Poſuit (c) mihi mane,
addidit mihi aurem ad audiendum :
Et diſciplina Domini 5
Domini aperit aures meas. Ego
autem non renuo, neque contradico.
Dorſum meum dedi ad flagella, 6
& genas meas ad alapas :
& faciem meam non averti à
confuſione ſputorum, Et Dominus 7
Dominus auxiliator meus factus
eſt. Propterea non ſum confuſus,
ſed poſui faciem meam
ſicut ſolidam petram : & novi
quoniam non confundar : Quia 8
juxta eſt, qui juſtificavit me.
Quis eſt,qui judicetur mecum ?
reſiſtat mihi ſimul : & quis eſt,
qui judicium ineat adverſùm
me? appropinquet mihi. Ecce Dominus 9
Dominus adjuvabit me: quis
affliget me? Ecce omnes vos,quaſi
veſtimentum veteraſcetis : & tinea
comedet vos. Quis eſt in vobis, 10
qui timeat Dominum ? exaudiat
vocem pueri ejus. Qui ambulant
in tenebris, & non eſt eis
lux: confidite in nomine Domini,
& innitimini ſuper Deo. Ecce omnes 11
vos ignem accenditis, &
confortatis flammam. Ambulate
in lumine ignis veſtri, & in
flamma quam ſuccendiſtis. Propter
me facta ſunt hæc vobis :
in mœrore dormietis.

MS.A. (α) οὐχ ὑπήκουσεν; (β) τῇ ἀπειλῇ μου (γ) Καὶ ἐνδύσω (δ) θήσω ὡς σάκκον (ε) Κύριος δίδωσιν (ζ) σοφίας, τοῦ (η) ἐν καιρῷ ἡνίκα δεῖ (θ) τὸ πρωΐ, (ι) κυρίου ἀνοίγει τὰ ὦτά μου· (˜) δέδωκα (κ) κύριος βοηθός μου (λ) κύριος βοηθεῖ (μ) ὡς σὴς (ν) ἀκουσάτω (ξ) σκότει, οὐκ

ΚΕΦ. να'.

1 ἈΚούσατέ μου οἱ διώκοντες τὸ δίκαιον,
καὶ ζητοῦντες τὸν κύριον, ἐμβλέψατε εἰς τὴν
στερεὰν πέτραν, ἣν ἐλατομήσατε, καὶ εἰς τὸν
βόθυνον τοῦ λάκκου, ὃν ὠρύξατε.

CAP. LI.

Audite me, qui perſequimini 1
quod juſtum eſt, & quæritis Dominum.
Inſpicite in ſolidam petrã,
quam excidiſtis,& in foveam laci,
quam fodiſtis.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

נ

1 כדנן אמר יי אידא היא אגרת פטורין דיהבית לכנשתכון ארי אתרחקתא או מן גבר דליה
חובא קדמי דזבנית יתכון ליה הא בחוביכון אזדבנתון ובמרדיכון אתרחקת כנישתכון:
2 מא דין שלחית נביי ולא תבו אתנביאו ולא קבילו האתקפדא אתקפדא גבורתי
מלמפרק ואם לית קדמי חיל לשיזבא הא במופיתי אחריב ימא אשוי נהרין מדברא
3 יסרון נוניהון מבלי מיא וימותון בצחותא: אכסי שמיא כד בקבלא וכסקא אשוי
4 כסותהון: יי אלהים יהב לי לשן דמלפין להודעא לאלפא לצדיקיא דמשלהן לפתגמי
אוריתא חוכמא בכן בצפר בצפר מקדים לשלחא נביאוהי מאים יתפתחן אודני חיביא
5 ויקבלון אולפן: יי אלהים שלחני לאתנבאה ואנא לא סרבית לאחורא לא אסתחרית:
6 גבי יהבית למחן ולסתי למרטן אפי לא טמרית מאתכנעו ורוק: ויי אלהים סעיד לי על
7
8 כן לא אתכנעית על כן שויתי אפי תקיפין כטינרא וידענא ארי לא אתבהית: קריבא
9 זכותי מן ידין עמי נקום כחדא מן בעיל דיני יתקרב לותי: הא יי אלהים סעיד לי מן הוא
10 די יחיבנני הא כולהון כלבושא דבלי וכעשא אכל ליה: [אמר נביא עתיד קודשא
בריך הוא למהוי אמר לעממיא] מן בכון מדחליא דיי די שמע בקל עבדיה נביא דעבד
אוריתא בעקא כגבר דמהלך בקבלא ולית זהור ליה מתרחיץ בשמא דיי ומסתמיך על
11 פורקנא דאלהיה: [מתיבין עממיא ואמרין קדמוהי רבוננא לא אפשר לנא למעסק
באוריתא ארי כל יומנא אתגרינא דין עם דין בקרבא וכד נצחנא דין לדין אוקדנא
בתיהון ושבינא טפלהון ונכסיהון ובהדא גונא שלימו יומנא ולא אפשר לנא למעסק
באוריתא מתיב קודשא בריך הוא ואמר להון] הא כולכון מגרן באשתא מתקפי חרב
אזילו פילו באשתא דגריתון ובחרבא דתקפתון מממרי הות דא לכון לתקלותכון
תתובון:

נא

1 קבילו למימרי רדפי קושטא דבען אולפן מן קדם יי אסתכלו די כחציבא מטינרא
אתחצבתון וכפסולא דמגוב ריקן אתפסלתון:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. L.

1 HÆc dicit Dñs: Quis eſt iſte libellus repudii quẽ dedi cœtui veſtro,quia
elongatꝰ eſt à me? aut quis *vir* eſt creditor corã me? cui vendidi vos? Ecce
propter peccata veſtra venditi eſtis, & propter ſcelera veſtra elongata eſt
2 congregatio veſtra. Quare miſi Prophetas meos,& non ſunt converſi? prophetaverunt,
& non obedierunt: nunquid deficiens defuit potentia mea ut
non redimeret? aut non eſt corã me virtꝰ ad liberandũ? ecce in increpatione
mea ſiccabo mare; ponam flumina in deſertũ, computreſcent piſces eorũ
3 ſine aqua,& morientur in ſiti. Operiam cœlos quaſi tenebris, & quaſi
4 ſaccũ ponã operimentũ eorũ. Dñs Deꝰ dedit mihi linguã docentiũ, ut ſcirẽ
docere juſtos ſcientiã,qui ad verba Legis anhelant: veruntamẽ manè manè
prævenit ut mittat prophetas ſuos, ſi fortè aperiantur aures peccatorũ ,
5 & ſuſcipiant diſciplinã. Dñs Deus miſit me ad prophetandũ, & ego non
6 contradixi,neq; ſum converſus retrorſũ. Dorſũ meũ dedi percuſſoribꝰ, &
7 genas meas vellentibꝰ: faciẽ meã non abſcondi à confuſione,& ſputo. Dñs
autẽ Deꝰ auxiliator meus eſt,& ideò non ſum confuſus:ideo poſui faciẽ meam
8 fortẽ ſicut petrã;& ſcio quoniã non confundar. Appropinquat juſtitia
mea :quis judicabitur mecũ? ſurgamus ſimul,quis eſt adverſarius meus? accedat
9 ad me. Ecce Dñs Deꝰ auxiliator meꝰ eſt:quis eſt qui condemnet me ?
10 ecce omnes illi quaſi veſtimentũ ꝙ veteraſcit,ꝙ tinea comedit. Dicit Propheta:
Futurũ eſt ut ſanctus & benedictus dicat populis : Quis eſt in vobis
ex timentibus Dñm,audiens vocẽ *ſervi ſui Prophetæ*, qui eſt factor legis in
tribulatione ; ſicut vir qui ambulat in tenebris, & non eſt lumẽ ei:ſperet in
11 nomine Dñi, & innitatur ſup̃ ſalutare Dei ſui.Reſpondebunt populi & dicent
corã eo: Dominator noſter,non poteſt fieri ut laboremꝰ in Lege,quia
quotidie irruimꝰ unus contra alterũ in bello,& quando mutuò vincimus,
alter alterius ſuccendimus domos, & captivos ducimus parvulos eorũ &
ſubſtantias eorum:& hoc *pacto* conſumpti ſunt dies noſtri : itaq; non eſt
poſſibile nobis ut incumbamus Legi. Reſpondebit ille qui eſt ſanctus & benedictus
& dicet eis: Ecce oẽs vos immittentes ignẽ, & tenentes gladium,
ite & cadite in ignẽ quem immiſiſtis,et in gladium quem tenuiſtis: à verbo
meo factum eſt hoc vobis, in interitum veſtrum revertimini.

CAP. LI.

1 OBedite verbo meo qui ſequimini veritatem,qui quæritis doctrinam à facie
Domini, attendite, ꝙ ſicut id quod exciditur à petra, ſic exciſi eſtis; et
ſicut præciſio ciſternæ vacuæ, ſic præciſi eſtis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܢ *

1 * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܝܢܘ ܟܬܒܐ ܕܫܘܒܩܢܐ ܕܐܡܟܘܢ ܕܫܒܩܬܗ. ܐܘ ܡܢܘ ܡܪܐ ܚܘܒܝ

2 ܕܙܒܢܬܟܘܢ ܠܗ. ܗܐ ܒܚܛܗܝܟܘܢ ܐܙܕܒܢܬܘܢ. ܘܒܥܘܠܟܘܢ ܐܫܬܒܩܬ ܐܡܟܘܢ. * ܠܡܢܐ

ܐܬܝܬ ܘܠܝܬ ܐܢܫ. ܘܩܪܝܬ ܘܠܝܬ ܕܥܢܐ. ܡܚܨܕ ܚܨܕܬ ܐܝܕܝ ܘܐܬܛܠܡܬ. ܐܘ ܠܝܬ ܒܝ ܚܝܠܐ

ܠܡܦܪܩܘ. ܗܐ ܒܟܐܬܝ ܡܚܪܒ ܐܢܐ ܝܡܐ. ܘܥܒܕ ܐܢܐ ܢܗܪܘܬܐ ܐܝܟ ܡܕܒܪܐ. ܘܢܣܪܚܘܢ

3 ܢܘܢܝܗܘܢ ܡܢ ܕܠܝܬ ܡܝܐ. ܘܢܡܘܬܘܢ. * ܘܡܠܒܫ ܐܢܐ ܠܫܡܝܐ ܚܫܘܟܐ. ܘܣܩܐ ܥܒܕ

4 ܐܢܐ ܠܡܟܣܝܬܗܘܢ. * ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܝܗܒ ܠܝ ܠܫܢܐ ܕܡܠܦܢܐ. ܕܐܕܥ ܘܐܚܘܐ ܠܡܠܝܐ

5 ܡܠܬܐ. ܐܥܝܪ ܒܨܦܪܐ. ܒܨܦܪܐ ܝܗܒ ܠܝ ܐܕܢܐ ܠܡܫܡܥ ܝܘܠܦܢܐ. * ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܦܬܚ

6 ܠܝ ܐܕܢܐ. ܘܐܢܐ ܠܐ ܗܦܟܬ ܠܒܣܬܪ. ܘܠܐ ܩܡܬ ܒܚܪܝܢܐ. * ܓܘܫܡܝ ܝܗܒܬ

7 ܠܡܚܘܬܐ. ܘܦܟܝ ܠܡܚܘܦܬܐ. ܘܐܦܝ ܠܐ ܐܗܦܟܬ ܡܢ ܒܗܬܬܐ ܘܡܢ ܪܘܩܐ. * ܘܡܪܝܐ ܐܠܗܐ

ܥܕܪܢܝ. ܡܛܠܗܢܐ ܠܐ ܒܗܬܬ. ܡܛܠܗܢܐ ܣܡܬ ܐܦܝ ܐܝܟ ܟܐܦܐ. ܘܝܕܥܬ ܕܠܐ ܐܒܗܬ

8 ܐܢܐ. * ܕܩܪܝܒ ܗܘ ܡܙܕܕܩܢܝ. ܡܢܘ ܕܕܐܢ ܥܡܝ. ܢܩܘܡ ܐܟܚܕܐ. ܐܘ ܡܢܘ ܒܥܠ ܕܝܢܝ

9 ܢܬܩܪܒ ܠܘܬܝ. * ܗܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܡܥܕܪ ܠܝ. ܡܢܘ ܡܚܝܒ ܠܝ. ܗܐ ܟܠܗܘܢ ܐܝܟ

10 ܠܒܘܫܐ ܢܒܠܘܢ. ܘܣܣܐ ܢܐܟܘܠ ܐܢܘܢ. * ܡܢܘ ܒܟܘܢ ܕܕܚܠ ܡܢ ܡܪܝܐ. ܢܫܡܥ ܒܩܠܐ

ܕܥܒܕܗ. ܕܡܗܠܟ ܒܚܫܘܟܐ. ܘܠܝܬ ܠܗ ܢܘܗܪܐ. ܢܬܬܟܠ ܥܠ ܫܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܢܬܦܪܩ

11 ܒܐܠܗܗ. * ܗܐ ܟܠܟܘܢ ܫܕܝܢ ܢܘܪܐ ܐܢܬܘܢ. ܘܡܕܠܩܝܢ ܫܠܗܒܝܬܐ. ܗܠܟܘ ܒܢܘܗܪܐ

ܕܢܘܪܟܘܢ. ܘܒܨܡܚܐ ܕܫܠܗܒܝܬܟܘܢ. ܡܢ ܐܝܕܝ ܗܘܬ ܠܟܘܢ ܗܕܐ. ܕܒܥܩܬܐ ܬܫܟܒܘܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܢܐ *

1 * ܫܡܥܘܢܝ ܕܪܗܛܝܢ ܒܬܪ ܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܒܥܝܢ ܠܡܪܝܐ. ܚܘܪܘ ܒܛܘܪܐ ܕܐܬܓܙܪܬܘܢ ܡܢܗ.

ܘܒܓܘܒܐ ܕܐܬܚܦܪܬܘܢ ܡܢܗ.

CAP. L.

Sic dicit Dominus, Quinam eſt libellus repudii quo matrem veſtram dimiſerim? aut quiſnā eſt creditor meus cui vos vendiderim? Ecce propter peccata veſtra venundati eſtis, & propter ſcelus veſtrum repudiata fuit mater veſtra. 1

2 Cur me veniente nemo adeſt? vocanti nemo reſpondet? diu meſſuit manus mea, & decepta eſt? an *quia* nullæ ſunt in me vires ad eripiendum? ecce increpatione meâ mare exhaurio, & flumina perinde ac deſertum reddo, ita ut piſces eorum putreſcant ob aquæ penuriam ac moriantur:

3 Cœlos tenebris induo, & cilicium facio veſtimentum eorum.

4 Dominus Deus dedit mihi linguam eruditam, ut notum facerem & indicarem exagitatis verbum: excitavit *me* diluculò, diluculò diſponit mihi aures ad percipiendam doctrinam.

5 Dominus Deus aperuit mihi aures, & ego non averti me retrorſum, nec obſtinatè reſtiti.

6 Corpus meum expoſui plagis, & genas meas percuſſionibus, faciem meam non averti ab ignominia & ſputo.

7 Dominus Deus adjuvit me, propterea non ſum pudefactus: iccircò compoſui faciem meam ut lapidem, ſciens quòd non pudefiam,

8 Eò quòd proximus ſit juſtificator meus. Quis eſt qui mecum litiget? conſiſtamus unà: aut *ſi* quis eſt adverſarius meus, accedat ad me.

9 En Dominus Deus auxiliatur mihi, quis eſt me condemnaturus? en omnes iſti ut veſtimentum conſumentur, & tinea corrodet eos.

10 Quicunque eſt inter vos timens Dominum, audiat vocem ſervi ejus: Qui ambulat in tenebris & caret luce, ſperet in nomine Domini, & ſalvabitur per Deum ſuum.

11 En vos omnes injectores ignis eſtis, & incenſores flammæ; incedite in fulgore ignis veſtri, & nitore flammæ veſtræ: è manibus meis contigit hoc vobis, ut in triſtitia dormiatis.

CAP. LI.

1 Audite me qui curritis in juſtitia, & quæritis Dominum: conſiderate montem è quo exciſi eſtis, & foveam è qua effoſſi eſtis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الخمسون *

1 * هكذا يقول الرب * اي كتاب طلاق لامكم الذي به سرحتها * او لاي غريم

2 ابعتكم * ها بخطاياكم ابعتم * وباثامكم سرحت امكم * لماذا لاني اتيت وليس انسان

موجودا * دعوت وليس من يجيب * هل لا تقدر يدي ان تنجي * او لست اقدر ان اخلص *

ها بوعيدي اخرب البحر واجعل الانهار براري * وتجف حيتانها من ان لا يكون ماء * وتموت

3 بالعطش * واكسوا السماء ظلمة * واصنع لباسها مثل المسح * الرب اعطاني لسان التاديب *

4 لاعرف في وقت حين ينبغي ان اقول قولا وضع لي بالغداة * بالغداة زادني اذنا لاسمع * واذن

5 الرب يفتح اذني * وانا لم اعص ولم امار * اعطيت ظهري للسياط وخدي للطم * ولم ارد وجهي

6 عن خزي البصاق * والرب صار عوني * لاجل هذا لم اخجل * لكن وضعت وجهي مثل

7 الصخر الصماء وعلمت اني لست اخزى * لان الذي يبررني قريب * من يحاكمني

8 ليقف معي معا * ومن يخاصمني ليقترب لي * ها الرب يعينني من يسيء الي * ها انتم جميعا مثل

9 الثوب تبلون * ومثل السوس ياكلكم * من فيكم يخاف الرب فليسمع صوت عبده *

10 الذين يسيرون في الظلمة وليس لهم نور * توكلوا على اسم الرب وتشددوا بالله * ها انتم

11 جميعكم نار تاكل * فقووا لهيبا وسيروا في ضوء ناركم وفي اللهيب الذي اوقدتموه *

لاجلي صارت هذه لكم * في حزن ترقدون *

* الفصل الحادي والخمسون *

1 * اسمعوني يا طاردوا العدل وطالبوا الرب * انظروا الى الصخر الصماء التي قطعتموها * والى

حفر الجب الذي حفرتموه *

CAP. L.

1 *Sic ait Dominus, Quem repudii libellum habet mater veſtra, quo repudiârim eam? aut cui creditori vos venum expoſui? en pro peccatis veſtris venum expoſiti eſtis, & pro ſceleribus veſtris repudiata eſt mater veſtra.*

2 *Quâ de re cùm venio, nemo adeſt? voco, nec eſt qui reſpondeat? an non valet manus mea ſalvare? an eripere non poſſum? en* ſola *increpatione meâ mare deſtruo, & fluvios in ſolitudines converto, ita ut areſcant piſces eorum eò quòd deſit aqua, & ſiti pereant:*

3 *Cœlum tenebris induo, & pono veſtimentum ejus tanquam cilicium.*

4 *Dominus conceſſit mihi linguam morigeram, ut ſciam tempeſtivè quandonam oporteat proferre ſermonem quem imponit mihi diluculò;* nam *diluculò addit mihi aurem, ut audiam.*

5 *Eruditio Domini aperit aurem meam, & ego non rebello, neque ambigo:*

6 *Sed expono dorſum meum loris, & genas meas colaphis, nec averto faciem meam ab infamia ſputi.*

7 *Dominus eſt mihi præſidio, ideò non erubeſco, imò expono faciem meam ut ſilicem durum: & novi me non pudefactum iri,*

8 *Quoniam is qui me juſtificat, proximus eſt. Qui mecum litigat, ſtet unà mecum; & qui mecum judicio contendit, ad me accedat.*

9 *Ecce Dominus opem fert mihi, quis mihi noceat? ecce vos omnes ceu veſtis deteremini, & tanquam tinea corrodet vos.*

10 *Quiſquis inter vos timet Dominum, audiat vocem ſervi ipſius: qui ambulatis in tenebris, nec lucem habetis; confidite nomini Domini, & in Deo confortamini.*

11 *Ecce vos omnes eſtis ignis devorans; augete jam flammam, & incedite in luce ignis veſtri, & in flamma quam accendiſtis. Propter me factum eſt hoc vobis, in mœrore jacebitis.*

CAP. LI.

1 *Audite me O ſectatores juſtitiæ & quærentes Dominum: intuemini ad petram duram quam excidiſtis, & ad foveam putei quem excavâſtis.*

יְשַׁעְיָה: נא

: vos peperit , Sarah ad & , veſtrum patrem Abraham ad Aſpicite
2 הַבִּיטוּ אֶל־אַבְרָהָם אֲבִיכֶם וְאֶל־שָׂרָה תְּחוֹלֶלְכֶם
Quia .eum multiplicavi & , ei benedixi & , eum vocavi unum quia
3 כִּי־אֶחָד קְרָאתִיו וַאֲבָרְכֵהוּ וְאַרְבֵּהוּ׃ כִּי־
,ej⁹ deſolationes omnes eſt conſolatus, Sijon DOMINUS eſt conſolat⁹
נִחַם יְהוָֹה צִיּוֹן נִחַם כָּל־חָרְבֹתֶיהָ
ejus ſolitudinem & , *Heden* tanquam ejus deſertum poſuit &
וַיָּשֶׂם מִדְבָּרָהּ כְּעֵדֶן וְעַרְבָתָהּ
, ea in invenietur lætitia & Gaudium .DOMINI hortus veluti
כְּגַן־יְהוָֹה שָׂשׂוֹן וְשִׂמְחָה יִמָּצֵא בָהּ
,mi popule me ad Attendite *.cantus* vox & , actio gratiarum
4 תּוֹדָה וְקוֹל זִמְרָה׃ הַקְשִׁיבוּ אֵלַי עַמִּי
, exibit me à lex quia *: percipite auribus* me *ad* , mea *natio* &
וּלְאוּמִּי אֵלַי הַאֲזִינוּ כִּי תוֹרָה מֵאִתִּי תֵּצֵא
eſt Propinqua .faciam quieſcere populorum lucem in meum judicium &
5 וּמִשְׁפָּטִי לְאוֹר עַמִּים אַרְגִּיעַ׃ קָרוֹב
.judicabunt populos mea brachia & , mea ſalus eſt egreſſa , mea juſtitia
צִדְקִי יָצָא יִשְׁעִי וּזְרֹעַי עַמִּים יִשְׁפֹּטוּ
Levate .expectabunt meum brachium *ad* & , expectabunt *inſulæ* me *Ad*
6 אֵלַי אִיִּים יְקַוּוּ וְאֶל־זְרֹעִי יְיַחֵלוּן׃ שְׂאוּ
cœli nam :deorſum terram *ad aſpicite* & , veſtros oculos cœlos in
לַשָּׁמַיִם עֵינֵיכֶם וְהַבִּיטוּ אֶל־הָאָרֶץ מִתַּחַת כִּי־שָׁמַיִם
ej⁹ habitatores & , veteraſcet veſtimẽtũ ſicut terra & , *ſunt cõſumpti* fum⁹ ſicut
כֶּעָשָׁן נִמְלָחוּ וְהָאָרֶץ כַּבֶּגֶד תִּבְלֶה וְיֹשְׁבֶיהָ
non mea juſtitia & , erit *ſeculum* in mea ſalus & *: morientur* ſimiliter
כְּמוֹ־כֵן יְמוּתוּן וִישׁוּעָתִי לְעוֹלָם תִּהְיֶה וְצִדְקָתִי לֹא
mea lex populus , juſtitiam ſcientes me *ad* Audite .conteretur
7 תֵחָת׃ שִׁמְעוּ אֵלַי יֹדְעֵי צֶדֶק עַם תּוֹרָתִי
eorum *convitiis à* & , *hominis* opprobrium timeatis ne , *eorum corde in*
בְלִבָּם אַל־תִּירְאוּ חֶרְפַּת אֱנוֹשׁ וּמִגִּדֻּפֹתָם
lanam ſicut & , tinea eos comedet veſtimentum ſicut Quia *.conſternemini* ne
8 אַל־תֵּחָתּוּ׃ כִּי כַבֶּגֶד יֹאכְלֵם עָשׁ וְכַצֶּמֶר
mea ſalus & , erit *ſeculum* in mea juſtitia Et *.ſis* eos devorabit
יֹאכְלֵם סָס וְצִדְקָתִי לְעוֹלָם תִּהְיֶה וִישׁוּעָתִי
fortitudinem indue , te ſuſcita , te Suſcita .generationum generationem in
9 לְדוֹר דּוֹרִים׃ עוּרִי עוּרִי לִבְשִׁי־עֹז
generationes , *quondam* dies ſecundùm te Suſcita .DOMINI brachium
זְרוֹעַ יְהוָֹה עוּרִי כִּימֵי קֶדֶם דֹּרוֹת
? draconem *vulnerans* , *ſuperbum excidens ipſum* tu Nónne .ſeculorum
עוֹלָמִים הֲלוֹא אַתְּ־הִיא הַמַּחְצֶבֶת רַהַב מְחוֹלֶלֶת תַּנִּין׃
ponens *: multæ* voraginis aquas, mare exſiccans *ipſum* tu Nónne
10 הֲלוֹא אַתְּ־הִיא הַמַּחֲרֶבֶת יָם מֵי תְּהוֹם רַבָּה הַשָּׂמָה
redempti Et *? redemptos tranſeundum ad* , viam maris *profunditates*
11 מַעֲמַקֵּי־יָם דֶּרֶךְ לַעֲבֹר גְּאוּלִים׃ וּפְדוּיֵי
ſeculi lætitia & , *præconio* cum Sijon venient & , revertentur DOMINI
יְהוָֹה יְשׁוּבוּן וּבָאוּ צִיּוֹן בְּרִנָּה וְשִׂמְחַת עוֹלָם
, *mœror* fugient , *aſſequentur* lætitiam & , Gaudium .eorum caput ſuper
עַל־רֹאשָׁם שָׂשׂוֹן וְשִׂמְחָה יַשִּׂיגוּן נָסוּ יָגוֹן
timeas ut tu Quæ .vos *conſolans* ipſe ego , Ego .gemitus &
12 וַאֲנָחָה׃ אָנֹכִי אָנֹכִי הוּא מְנַחֶמְכֶם מִי־אַתְּ וַתִּירְאִי
es oblitus Et ? dabitur herba , hominis filio à & ? morietur homine ab
13 מֵאֱנוֹשׁ יָמוּת וּמִבֶּן־אָדָם חָצִיר יִנָּתֵן׃ וַתִּשְׁכַּח
: terram *fundantis* & , cœlos *tendentis* , tui factoris DOMINI
יְהוָֹה עֹשֶׂךָ נוֹטֶה שָׁמַיִם וְיֹסֵד אָרֶץ
quando, coarctantis excandeſcentiæ faciebus à die tota jugiter formidáſti &
וַתְּפַחֵד תָּמִיד כָּל־הַיּוֹם מִפְּנֵי חֲמַת הַמֵּצִיק כַּאֲשֶׁר
? coarctantis furor ubi Et .corrumpendum ad *paravit*
כּוֹנֵן לְהַשְׁחִית וְאַיֵּה חֲמַת הַמֵּצִיק׃

Verſio VUL. LAT.

2 Attendite ad Abraham patrem
veſtrum, & ad Saram quæ peperit
vos: quia unum vocavi
eum, & benedixi ei, & multiplicavi
3 eum. Conſolabitur
ergò Dominus Sion, & conſolabitur
omnes ruinas ejus: &
ponet deſertum ejus quaſi delicias,
& ſolitudinem ejus quaſi
hortum Domini. Gaudium &
lætitia invenietur in ea, gratiarum
actio & vox laudis.
4 Attendite ad me popule meus,
& tribus mea me audite: quia
lex à me exiet, et judiciũ meum
in lucem populorum requieſcet.
5 Propè eſt Juſtus meus,
egreſſus eſt Salvator meus, &
brachia mea populos judicabunt:
me inſulæ expectabunt,
& brachiũ meum ſuſtinebunt.
6 Levate in cœlum oculos veſtros,
& videte ſub terra deorſum:
quia cœli ſicut fumus liqueſcent,
& terra ſicut veſtimentum
atteretur, & habitatores
ej⁹ ſicut hæc interibunt:
Salus autem mea in ſempiternum
erit, & juſtitia mea non
7 deficiet. Audite me qui ſcitis
juſtum, popul⁹ meus lex mea in
corde eorum: nolite timere opprobriũ
hominum, & blaſphemias
8 eorum ne metuatis. Sicut
enim veſtimentum, ſic comedet
eos vermis: & ſicut lanam,
ſic devorabit eos tinea:
Salus autem mea in ſempiternum
erit, & juſtitia mea in generationes
9 generationũ. Conſurge,
conſurge, induere fortitudinem
brachiũ Domini: conſurge
ſicut in diebus antiquis,
in generationibus ſeculorum.
Numquid non tu percuſſiſti ſuperbũ,
vulneráſti draconem?
10 Numquid non tu ſiccáſti mare,
aquam abyſſi vehementis: qui
poſuiſti profundũ maris viam,
11 ut tranſirent liberati? Et nunc
qui redempti ſunt à Dño, revertentur,
& venient in Sion
laudantes, & lætitia ſempiterna
ſuper capita eorum, gaudiũ
& lætitiam tenebũt, fugiet dolor
12 & gemitus. Ego, ego ipſe
conſolabor vos: quis tu ut timeres
ab homine mortali, & à
filio hominis, qui quaſi fœnum
13 ita areſcet? Et oblitus es Domini
factoris tui, qui tetendit
cœlos, et fundavit terram: et
formidáſti jugiter totâ die à facie
furoris ejus qui te tribulabat,
et paraverat ad perdendũ:
ubi nunc eſt furor tribulantis?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

2 Ἐμβλέψατε εἰς Ἀβραὰμ τὸν πατέρα ὑμῶν,
καὶ εἰς Σάῤῥαν τὴν ὠδίνουσαν ὑμᾶς· ὅτι εἷς ἦν,
καὶ ἐκάλεσα αὐτὸν, καὶ (˙)εὐλόγησα αὐτὸν,
καὶ ἠγάπησα αὐτὸν, καὶ ἐπλήθυνα αὐτόν.
3 Καὶ σὲ νῦν παρακαλέσω Σιὼν,
καὶ παρεκάλεσα πάντα τὰ ἔρημα αὐτῆς
(α), καὶ θήσω τὰ ἔρημα αὐτῆς ὡς παράδεισον,
καὶ τὰ πρὸς δυσμὰς αὐτῆς ὡς παράδεισον
κυρίου· εὐφροσύνην καὶ ἀγαλλίαμα
εὑρήσουσιν ἐν αὐτῇ, ἐξομολόγησιν καὶ
4 φωνὴν αἰνέσεως. Ἀκούσατέ μου, (β)ἀκούσατέ
μου λαός μου, καὶ οἱ βασιλεῖς πρός με ἐνωτίσασθε,
ὅτι νόμος παρ' ἐμοῦ ἐξελεύσεται,
5 καὶ ἡ κρίσις μου εἰς φῶς ἐθνῶν. Ἐγγίζει
ταχὺ ἡ δικαιοσύνη μου, καὶ ἐξελεύσεται
(γ) ὡς φῶς τὸ σωτήριόν μου, καὶ εἰς τὸν
βραχίονά μου ἔθνη ἐλπιοῦσιν· ἐμὲ νῆσοι
ὑπομενοῦσι, καὶ εἰς τὸν βραχίονά μου ἐλπιοῦσιν.
6 Ἄρατε εἰς τὸν οὐρανὸν τοὺς ὀφθαλμοὺς ὑμῶν,
καὶ ἐμβλέψατε εἰς τὴν γῆν κάτω· ὅτι ὁ οὐρανὸς
ὡς καπνὸς ἐστερεώθη, (δ) ἡ δὲ γῆ ὡς
ἱμάτιον παλαιωθήσεται, οἱ δὲ κατοικοῦντες
(ε) ὥσπερ ταῦτα ἀποθανοῦνται, τὸ δὲ σωτήριόν
μου εἰς τὸν αἰῶνα ἔσται, ἡ δὲ δικαιοσύνη
7 μου οὐ μὴ ἐκλείπῃ. Ἀκούσατέ μου οἱ
εἰδότες κρίσιν, (ζ) λαὸς οὗ ὁ νόμος μου ἐν
τῇ καρδίᾳ ὑμῶν· μὴ φοβεῖσθε ὀνειδισμὸν
ἀνθρώπων, καὶ τῷ φαυλισμῷ αὐτῶν μὴ ἡττᾶσθε.
8 (η) Ὡς γὰρ ἱμάτιον βρωθήσεται ὑπὸ
χρόνου, καὶ (θ) ὡς ἔρια βρωθήσεται ὑπὸ σητός·
ἡ δὲ δικαιοσύνη μου εἰς τὸν αἰῶνα ἔσται,
τὸ δὲ σωτήριόν μου εἰς γενεὰς γενεῶν.
9 Ἐξεγείρου ἐξεγείρου Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἔνδυσαι
τὴν ἰσχὺν τοῦ βραχίονός σου, ἐξεγείρου ὡς ἐν
10 ἀρχῇ ἡμέρας, ὡς γενεὰ αἰῶνος. Οὐ σὺ
εἶ ἡ ἐρημοῦσα θάλασσαν, ὕδωρ ἀβύσσου
πλῆθος; ἡ θεῖσα τὰ βάθη τῆς θαλάσσης
11 ὁδὸν διαβάσεως ῥυομένοις Καὶ λελυτρωμένοις;
ὑπὸ γὰρ κυρίου ἀποστραφήσονται, καὶ
ἥξουσιν εἰς Σιὼν μετ' εὐφροσύνης καὶ ἀγαλλιάματος
αἰωνίου· ἐπὶ (ι) κεφαλῆς γὰρ
αὐτῶν (κ)αἴνεσις καὶ εὐφροσύνη καταλήψεται
αὐτούς· ἀπέδρα ὀδύνη καὶ λύπη καὶ στεναγμός.
12 Ἐγώ εἰμι, ἐγώ εἰμι ὁ παρακαλῶν σε·
γνῶθι (λ) τίς οὖσα ἐφοβήθης ἀπὸ ἀνθρώπου
θνητοῦ, καὶ ἀπὸ υἱοῦ ἀνθρώπου, οἳ ὡσεὶ χόρτος
13 ἐξηράνθησαν. Καὶ ἐπελάθου θεὸν τὸν ποιήσαντά
σε, τὸν ποιήσαντα τὸν οὐρανὸν καὶ θεμελιώσαντα
τὴν γῆν· καὶ ἐφοβοῦ ἀεὶ πάσας τὰς ἡμέρας
τὸ πρόσωπον τοῦ θυμοῦ τοῦ θλίβοντός
σε. ὃν τρόπον γὰρ ἐβουλεύσατο τοῦ (μ) ἆραί
σε, καὶ νῦν ποῦ ὁ θυμὸς τοῦ θλίβοντός σε;

Reſpicite in Abraam patrem veſtrum, & in Sarram, quæ peperit 2
vos: quia unus erat, & vocavi eum, & benedixi eum, & dilexi illum,
& multiplicavi eum. Et te 3
nunc conſolabor Sion: Et conſolatus ſum omnia deſerta ejus:
& (a) ponam deſerta ejus,
quaſi paradiſum; & ea, quæ
ad Occidentem ejus ſunt, quaſi
paradiſum Domini: lætitiam, &
exultationem invenient in ea, confeſſionem
& vocem laudis. Audite 4
me, audite me populus meus: &
(b) reges ad me auribus attendite:
quia lex à me egredietur, & judicium
meum in lucem gentium.
Appropinquat citò juſtitia mea: & 5
egredietur, ſicut lux, ſalutare meum:
& in brachio meo gentes ſperabunt.
Me inſulæ expectabunt,
& in brachio meo ſperabunt. Levate 6
in cælum oculos veſtros, &
inſpicite in terram deorſùm: quoniam
cælum, ſicut fumus, (c) firmatum
eſt: terra autem, ſicut veſtimentum
veteraſcet: & habitatores
ejus, ſicut hæc, morientur.
Salutare autem meum in ſempiternum
erit, & juſtitia mea non deficiet.
Audite me, qui ſcitis judicium; 7
populus, cujus lex mea in
corde (d) veſtro. Nolite timere
opprobrium hominum: & contemptu
eorum ne vincamini. Sicut enim 8
veſtimentum, comedentur à
tempore; & ſicut lanæ, comedentur
à tinea. Juſtitia autem mea
in æternum erit: & ſalus mea in
generationes generationũ. Exurge, 9
exurge (e) Hieruſalem, & induere
fortitudine brachii tui: exurge,
ſicut in principio diei, ſicut generatio
(f) ſempiterna. Nonne tu es, 10
quæ deſertum feciſti mare, aquam
abyſſi multam? quæ poſuiſti profunda
maris viam tranſitus his qui
fuerant liberati, Et redempti? A 11
Domino enim reducentur, & venient
in Sion cum lætitia, & exultatione
æternâ. Super caput enim
eorum laus: & lætitia apprehendet
eos: fugit dolor, & mæror, et
gemitus. Ego ſum, ego ſum, qui 12
conſolor te. Scito, qua cùm eſſes,
timueris ab homine mortali, et à
filio hominis; qui quaſi fænum, arefacti
ſunt. Et oblita es Dei factoris 13
tui, qui fecit cælum, et fundavit
terram: et timebas ſemper
cunctis diebus faciem furoris tribulantis
te. (g) Sicut enim cogitavit
auferre te; et nunc ubi eſt
furor tribulantis te?

MS.A. (˙) ηὐλόγησα (α) ὡς παράδεισον κυρίου· εὐφροσύνην (β) ἀκούσατε
λαός μου, (γ) τὸ σωτήριόν μου, καὶ εἰς (δ) καὶ ἡ γῆ (ε) τὴν γῆν (ζ) λαός μου οὗ (η)
Ὥσπερ (θ) ὥσπερ (ι) γὰρ τῆς κεφαλῆς (κ) ἀγαλλίαμα καὶ αἴνεσις καὶ εὐφροσύνη
(λ) τίνα εὐλαβηθεῖσα ἐφοβήθης (μ) ἆραι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

2 אִסְתַּכַּלוּ בְּאַבְרָהָם אֲבוּכוֹן וּבְשָׂרָה דְּעַדִּיאַתְכוֹן אֲרֵי חַד הֲוָה אַבְרָהָם יְחִידִי בְּעָלְמָא
3 קָרֵבְתֵּיהּ לְפוּלְחָנִי וּבָרֵכְתֵּיהּ וְאַסְגֵּיתֵיהּ׃ אֲרֵי עָתִיד יְיָ לְנַחָמָא צִיּוֹן לְנַחָמָא כָּל
חָרְבָתְהָא וִישַׁוֵּי מַדְבְּרַהָא כְּעֵדֶן וּמֵישְׁרַהָא כְּגִנְּתָא דַּייָ בְּיָע וְחֶדְוָא יִשְׁתְּכַח בַּהּ מַעֲלֵי
4 תוֹדְתָא וְקָל דִּמְשַׁבְּחִין׃ קַבִּילוּ לְמֵימְרִי עַמִּי וּכְנִשְׁתִּי לְפוּלְחָנִי אַצִּיתָא אֲרֵי אוֹרַיְתָא
5 מִן קֳדָמַי תִּפּוֹק וְדִינִי כִּנְהוֹר לֵיהּ עַמְמִין אַנְלֵי יִשְׁתַּבְּחוּן׃ קְרִיבָא זָכוּתִי נְפַק פּוּרְקָנִי
וּבִתְקוֹף דְּרַע גְּבוּרְתִּי עַמְמַיָּא יִתְדָּנוּן לְמֵימְרִי נְגָוָן יְסַבְּרוּן וְלִתְקוֹף דְּרַע גְּבוּרְתִּי יְכַתְּרוּן׃
6 זְקוּפוּ לִשְׁמַיָּא עֵינֵיכוֹן וְאִסְתַּכַּלוּ בְּאַרְעָא מִלְּרַע אֲרֵי שְׁמַיָּא כִּתְנָנָא דְּעָדֵי כֵּן יֶעְדּוֹן
וְאַרְעָא כִּכְסוּתָא דְּבָלְיָא כֵּן תִּבְלֵי וְיָתְבָהָא אַף אִנּוּן הָכֵין יְמוּתוּן וּפוּרְקָנִי לְעָלַם
7 יְהֵי וְזָכוּתִי לָא תִתְעַכַּב׃ קַבִּילוּ לְמֵימְרִי יָדְעֵי קוּשְׁטָא עַמָּא דְּאוּלְפַן אוֹרַיְתִי בְּלִבְּהוֹן
8 לָא תִדְחֲלוּן מֵחִסּוּדֵי בְּנֵי אֱנָשָׁא וּמֵאִתְרַבְרְבוּתְהוֹן לָא תִתַּבְּרוּן׃ אֲרֵי כִּלְבוּשָׁא דְּאָכֵיל
לֵיהּ עָשָׁא וּכְעַמְרָא דְּאָחֵיד בֵּיהּ רוּקְבָא וְזָכוּתִי לְעָלַם תְּהֵי וּפוּרְקָנִי לְדָר דָּרִין׃
9 אִתְגְּלָא אִתְגְּלָא לִבְשִׁי תְקוֹף גְּבוּרָא מִן קֳדָם יְיָ אִתְגְּלָא כְּיוֹמֵי קֳדָם דָּרַיָּא דְּמִלְּקַדְמִין
הֲלָא בְּדִילָךְ כְּנִשְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל תְּבַרִית גִּבָּרַיָּא שֵׁיצִיתִי פַּרְעֹה וּמַשִּׁרְיָתֵיהּ דַּהֲווֹ תַּקִּיפִין
10 כְּתַנִּינָא׃ הֲלָא בְדִילָךְ כְּנִשְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל אַחְרֵבִית יַמָּא מֵי תְּהוֹם רַבָּה שַׁוֵּיתִי עוּמְקֵי
11 יַמָּא אוֹרַח לְמֶעְבַּר מְשֵׁיזְבַיָּא׃ וּפְרִיקַיָּא דַּייָ יִתְכַּנְּשׁוּן מִבֵּינֵי גָלְוָתְהוֹן וְיֵעֲלוּן לְצִיּוֹן
בְּתוּשְׁבַּחְתָּא וְחֶדְוַת עָלַם תְּהֵי לְהוֹן דְּלָא פָסְקָא וַעֲנַן יְקָר יְהֵי מַטֵּל עַל רֵישֵׁיהוֹן בְּיָע
12 וְחֶדְוָא יִשְׁכְּחוּן וְיָסוּף מִנְּהוֹן מִבֵּית יִשְׂרָאֵל דְּווֹנָא וְתֵינְחָתָא׃ אֲנָא אֲנָא הוּא מְנַחֶמְכוֹן
13 מִמַּן אַתּוּן דָּחֲלִין מֵאֱנָשָׁא דְּמָאִית וּמִבַּר אֱנָשָׁא דִּי כְעִסְבָּא חֲשִׁיב׃ וְאִתְנְשֵׁיתָא פּוּלְחָנָא דַּייָ
דְּעָבְדָךְ דְּתָלָא שְׁמַיָּא וְשַׁכְלֵיל אַרְעָא וּדְחֵילְתָּא תְּדִירָא כָּל יוֹמָא מִן קֳדָם חֲמַת מְעִיקָא כְּמָא
דְּמַתְקְנִין לְחַבָּלָא וּכְעַן אָן הִיא חֲמַת דִּמְעִיקָא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Attendite ad Abraham patrem veſtrũ, & ad Saram quæ concepit vos; quoniam 2
un⁹ erat Abraham ſol⁹ in ſeculo: applicavi eum ad ſervitutem meam,
& benedixi ei, & multiplicavi eũ. Quia conſolatur⁹ eſt Dñs Sion, ut conſoletur 3
omnia deſerta ejus: & ponet deſertũ ejus ſicut delicias, & ſolitudinem
ej⁹ quaſi hortum Dñi: gaudiũ & exultatio invenientur in ea: offerentes
laudem & vox laudantiũ. Obedite verbo meo popule mi, & congregatio 4
mea ad ſervitutẽ meam auſculta; quoniam lex à facie mea egredietur,
& judiciũ meũ quaſi lumen: ipſum populi *me revelante* laudabunt. Propè 5
eſt juſtitia mea, egreſſa eſt ſal⁹ mea, & in fortitudine brachii potentiæ meæ
populi judicabuntur: Verbũ meũ inſulæ ſperabunt, & fortitudinem brachii
potentiæ meæ expectabunt. Levate in cœlũ oculos veſtros, & aſpicite terram 6
deorſum, quoniã cœli ſicut fum⁹ qui tranſit, ſic pertranſibunt; & terra
ſicut veſtimentũ quod veteraſcit; ſic veteraſcet, & habitatores ej⁹ etiam ipſi
ſimiliter morientur: ſal⁹ autem mea in æternũ erit, & juſtitia mea non *tardabit*.
Obedite verbo meo qui noſtis veritatem; popule in cuj⁹ corde eſt 7
doctrina Legis *mea*: ne timeatis ab opprobriis filiorũ hominis, & à ſuperbiis
eorum ne conteramini. Quoniam ſicut veſtimentũ quod corroditur à 8
tinea, & ſicut lana quã apprehendit putredo: juſtitia autem mea in æternum
erit, & ſal⁹ mea in generationẽ generationum. Revelare, revelare, induere 9
fortitudinẽ potentiæ à facie Dñi: revelare ſicut in dieb⁹ antiquis, in generationib⁹
quæ ab initio fuerunt: nonne propter te congregatio Iſrael contrivi
fortes, conſumpſi Pharaonem & exercitum ej⁹, qui erant fortes ſicut
draco? Nonne propter te cœtus Iſrael arefeci mare, & aquas abyſſi magni; 10
poſui in profundis maris viam ut tranſirent liberati? Et qui redempti ſunt à 11
Dño, *congregabuntur* de medio captivitatis ſuæ, & ingredientur in Sion
cum laude; & lætitia ſempiterna erit eis, quæ nunquam ceſſabit: & nubes
gloriæ erit obumbrans ſuper capita eorum; gaudiũ & lætitiam invenient:
& ceſſabit ab illis qui ſunt de domo Iſrael, mœror & gemitus. Ego, ego 12
ſum conſolator veſter: quem vos timetis? hominem qui moritur, & filium
hominis qui quaſi fœnũ reputat⁹ eſt? Et oblit⁹ es cult⁹ Dñi qui fecit te, qui 13
appendit cœlos & fundavit terrã: & timuiſti ſemp tota die à facie furoris
tribulantis, quando parabat diſperdere: jam verò ubi eſt furor tribulantis?

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܚܘܪܘ ܠܐܒܪܗܡ ܐܒܘܟܘܢ. ܘܠܣܪܐ ܕܝܠܕܬܟܘܢ. ܕܟܕ ܚܕ ܗܘܐ. ܩܪܝܬܗ ܘܒܪܟܬܗ 2
ܘܐܣܓܝܬܗ. * ܡܛܠ ܕܡܒܝܐ ܡܪܝܐ ܠܨܗܝܘܢ. ܘܡܒܢܐ ܠܟܠܗܘܢ ܚܘܪܒܝܗ. ܘܥܒܕ 3
ܡܕܒܪܗ. ܐܝܟ ܥܕܝܢ. ܘܦܩܥܬܗ ܐܝܟ ܦܪܕܝܣܗ ܕܡܪܝܐ. ܚܕܘܬܐ ܘܪܘܙܐ ܢܫܬܟܚ ܒܗ.
ܬܘܕܝܬܐ ܘܩܠܐ ܕܙܡܪܐ. * ܫܡܥܘܢܝ ܥܡܡܐ: ܘܐܨܘܬܘ ܠܝ ܐܡܘܬܐ: ܡܛܠ ܕܢܡܘܣܐ ܡܢ 4
ܩܕܡܝ ܢܦܩ. ܘܕܝܢܝ ܢܘܗܪܐ ܠܥܡܡܐ. * ܩܪܒ ܙܕܝܩܘܬܝ. ܘܢܦܩ ܦܘܪܩܢܝ. ܘܕܪܥܝ 5
ܠܥܡܡܐ ܢܕܘܢܢ. ܠܝ ܢܣܟܘܢ ܓܙܪܬܐ. ܘܠܕܪܥܝ ܢܣܒܪܘܢ. * ܐܪܝܡܘ ܠܫܡܝܐ ܥܝܢܝܟܘܢ 6
ܘܚܘܪܘ ܐܦ ܠܬܚܬ ܠܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܫܡܝܐ ܐܝܟ ܬܢܢܐ ܢܥܒܪܘܢ. ܘܐܪܥܐ ܐܝܟ
ܠܒܘܫܐ ܬܒܠܐ. ܘܥܡܘܪܝܗ ܐܟܘܬܗ ܢܗܘܘܢ. ܘܦܘܪܩܢܝ ܠܥܠܡ ܢܗܘܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܝ
ܠܐ ܬܥܒܪ. * ܫܡܥܘܢܝ ܝܕܥܝ ܙܕܝܩܘܬܐ: ܥܡܐ ܕܢܡܘܣܝ ܒܠܒܗܘܢ. ܠܐ ܬܕܚܠܘܢ ܡܢ 7
ܚܣܕܐ ܕܐܢܫܐ. ܘܡܢ ܓܘܕܦܝܗܘܢ ܠܐ ܬܙܘܥܘܢ. * ܡܛܠ ܕܐܝܟ ܕܥܡܪܐ ܘܐܝܟ ܕܠܒܘܫܐ 8
ܢܐܟܘܠ ܐܢܘܢ ܣܣܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܝ ܠܥܠܡ ܬܗܘܐ. ܘܦܘܪܩܢܝ ܠܕܪ ܕܪܝܢ. * ܐܬܬܥܝܪܝ ܐܬܬܥܝܪܝ 9
ܨܗܝܘܢ. ܘܠܒܫܝ ܥܘܫܢܐ ܕܕܪܥܗ ܕܡܪܝܐ. ܐܬܬܥܝܪܝ ܐܝܟ ܕܒܝܘܡܬܐ ܩܕܡܝܐ. ܘܐܝܟ ܕܕܪܐ ܕܡܢ
ܥܠܡܝܢ. ܐܢܬܝ ܐܢܬܝ ܕܦܣܩܬܝ ܦܣܩܐ ܪܒܐ ܘܩܛܠܬܝ ܠܬܢܝܢܐ. * ܐܢܬܝ ܗܝ ܕܐܚܪܒܬܝ 10
ܝܡܐ. ܘܡܝܐ ܕܬܗܘܡܐ ܪܒܐ. ܘܥܒܕܬܝ ܥܘܡܩܐ ܕܝܡܐ ܐܘܪܚܐ. ܕܢܥܒܪܘܢ ܦܪܝܩܐ.
ܦܪܝܩܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. * ܘܢܗܦܟܘܢ ܘܢܐܬܘܢ ܠܨܗܝܘܢ ܒܫܘܒܚܐ. ܘܠܥܠܡ ܬܗܘܐ ܚܕܘܬܐ 11
ܥܠ ܪܫܝܗܘܢ. ܒܘܣܡܐ ܘܚܕܘܬܐ ܢܕܪܟܘܢ. ܘܢܥܪܩܘܢ ܟܘܪܗܢܐ ܘܬܢܚܬܐ. * ܐܢܐ ܐܢܐ 12
ܡܒܝܐܢܟܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܢ ܐܢܬܝ ܕܕܚܠܬܝ ܡܢ ܐܢܫܐ ܕܡܐܬ. ܘܡܢ ܒܪܢܫܐ ܕܐܝܟ ܚܨܝܪܐ
ܢܝܒܫ. * ܘܛܥܝܬܝ ܠܡܪܝܐ ܕܥܒܕܟܝ. ܕܡܬܚ ܫܡܝܐ. ܘܫܬܐܣ ܫܬܐܣܝܗ ܕܐܪܥܐ. 13
ܘܕܚܠܬܝ ܐܡܝܢܐܝܬ ܟܠܗ ܝܘܡ ܡܢ ܚܡܬܗ ܕܐܠܘܨܐ. ܕܡܛܝܒ ܗܘܐ ܠܡܚܪܒܘ.
ܐܝܟܘ ܚܡܬܗ ܕܐܠܘܨܐ. ܕܡܣܪܗܒ ܗܘܐ ܠܓܢܒܪܐ ܠܡܚܪܒܘ.

* Conſiderate Abrahamum patrem veſtrum & 2
Saram quæ vos concepit ; quomodo, cùm unus eſſet, vocaverim eum, benedixerim, &
multiplicaverim. Ædificabit enim Dominus 3
Sionem, & reſtaurabit omnes ruinas ejus, deſertum ejus reddet Edeni ſimile, & planitiem
ejus ſimilem paradiſo Domini : exultatio & gaudium audietur in ea, gratiarum actio, &
vox cantici. Audite me populi, & auſcultate 4
me gentes : nam lex à conſpectu meo prodit, et judicium meum lux eſt populorum.
Acceſſit juſtitia mea, jam egreſſa eſt ſal⁹ mea, 5
& brachiis meis judicabuntur populi : me expectabunt inſulæ, et brachia mea præſtolabuntur.
Attollite in cœlum oculos veſtros, 6
& intuemini quoque deorſum in terram : nam cœli ut fumus labentur, et terra ut veſtimentum
conſumetur, & habitatoribus ejus idem continget : ſalus verò mea in æternum
erit, & juſtitia mea nunquam labetur. Audite 7
me qui cognoſcitis juſtitiam, popule in quorum corde lex mea eſt : ne timeatis contumelias
hominum, & blaſphemias eorum ne formidetis : Quoniam ut lanam & ut pan- 8
num corrodet eos tinea : juſtitia verò mea in æternum erit, et ſalus mea in generationem
generationum. Evigila, evigila Sion, & in- 9
duere fortitudine brachii Domini : evigila ut priſcis diebus, & ut ævis æternis. Tu, tu *inquam*
es quæ excidiſti exciſionem magnam, & occidiſti draconem. Tu es quæ deſtru- 10
xiſti mare et aquas abyſſi magnæ ; et in profundo aquarum feciſti viam, ut tranſirent redempti,
redempti *inquam* à Domino, Red- 11
irent, et ingrederentur Sionem cum gloria, in ſecula maneret gaudium ſuper capita eorum,
voluptatem et lætitiam aſſequerentur, fugeréntque ærumnæ et ſuſpiria. Ego ſum 12
conſolator veſter, ait Dominus : qualis es tu, quòd timeas hominem mortalem, & hominē
qui tanquam fœnum areſcet ? Et oblita ſis 13
Domini qui te fecit, qui cœlos extendit, et firmavit fundamenta terræ ? et jugiter quotidie
pertimeſcas iram oppreſſoris qui paratus erat ad vaſtandum ? ubinam eſt ira opprimentis
qui robuſtos accelerabat ad vaſtandum ?

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* انظروا الي ابراهيم ابيكم والي سارة التي طلقت بكم * لانه واحد كان ودعوته وباركته 2
واحببته وكثرته * والان ادعوك يا صهيون * وادعوا جميع خراباتها * مثل فردوس الرب 3
يجدون فيها سرورا وبهجة * اعترافا وصوت تسبيح * اسمعوني اسمعوا يا شعبي * وانصتوا الي 4
ايها الملوك * لان الناموس من عندي يخرج * وحكمي نور للامم * يقترب سريعا عدلي * ويخرج 5
خلاصي * وعلي ذراعي تتكل الامم * لي ترجوا الجزاير * وعلي ذراعي يتوكلون * ارفعوا الي السماء 6
اعينكم * وانظروا الي الارض اسفل * لان السماء مثل دخان تسرب * والارض مثل الثوب
تبلى * وسكان الارض مثل هكذا يموتون * وخلاصي الي الابد يكون * وعدلي لا يفني * اسمعوني 7
ايها العارفون بالحكم * شعبي الذي ناموسي في قلبكم * لا تخشوا تعيير البشر ولا تغلبوا
لافترايهم * لانهم مثل ثوب يوكل من الزمان * ومثل صوف يوكل من السوس * وعدلي 8
الي الدهر يكون * وخلاصي الي جيل الاجيال *

* الاصحاح الخامس والعشرون *

* النبوة في رد سبي ايروسليم اليها وبشارتها انها ترجع احسن مما كانت *

* انتبهي انتبهي يا ايروسليم والبسي قوة ذراعك * انتبهي كما في اول يوم كجيل الدهر * 9
* أليس انت البحر المخرب * ماء العمق الكثير * الذي صيرت اعماق البحر طريقا للعبور 10
للمخلصين والمستعتقين من قبل الرب * يرجعون ويوافون الي صهيون بسرور وابتهاج 11
ابدي * لان علي هاماتهم بهجة وتسبحة * ويتسلمهم السرور * تباعد الوجع والحزن والتنهد * انا 12
هو انا هو المعزي لك * اعرفي لمن تخافين * اتخافين من انسان مايت ومن ابن انسان الذي
مثل العشب يجفون * وتنسين الله الذي صنعك الذي صنع السماء واسس الارض * وتخشي 13
دايما كل الايام وجه غضب محزنك * لانه كما راي ان ينزعك * والان اين غضب محزنك *

Intuemini in Abrahamū patrem veſtrum, et ad Saram quæ peperit vos : hunc enim, 2
cùm unicus eſſet, vocavi, benedixi, dilexi, et multiplicavi. Sic jam vocabo te O Si- 3
on, & omnes ruinas tuas vocabo, ita ut quaſi in paradiſo Domini reperiant in te gaudium et hilaritatem, gratiarum actionem & vocem laudis. Audite me, au- 4
dite O popule meus, & attendite ad me O reges : lex enim à me prodibit, & judicium meum lux erit gentibus. Appropin- 5
quabit citò juſtitia mea, & egredietur ſalus mea, & in brachio meo fiduciam collocabunt gentes, me expectabunt inſulæ, et brachio meo confident. Attollite in cœ- 6
lum oculos veſtros, & intuemini in terram deorſum : etenim cœlum ut fumus diſſipabitur, terra ut veſtis veteraſcet, & habitatores terræ eodem modo atque iſta peribunt: ſalus verò mea in æternum manebit, et juſtitia mea nunquam deficiet.
Audite me qui judicium agnoſcitis, popule 7
mi qui legem meam in corde veſtro tenetis : ne pertimeſcatis opprobrium mortalium, & contumelias eorum ne ſuccumbatis. Hi enim ſimiles ſunt panno qui tem- 8
pore exeditur, & lanæ quæ à tineis corroditur : juſtitia verò mea perpetuò durabit, & ſalus mea in generatione generationum.

Textus vigeſimus quintus.

Prophetia de reductione captivitatis Jeroſolymæ ad ipſam, & prædictio ad eandem quòd in *ſtatum* priſtino meliorem ſit reſtituenda.

Expergiſcere, expergiſcere O Jeruſalem, 9
& indue fortitudinem brachii tui ; expergiſcere ut primâ die, ut ævo ſempiterno. Nónne tu es mare illud vaſtans, 10
aqua ſummæ profunditatis, quæ convertiſti profunda maris in viam, ut tranſirent ſalvati & redempti à Domino? Rever- 11
tentur et pervenient ad Sionem cum gaudio et lætitiâ ſempiternâ ; quoniam ſupra verticem eorum exultatio erit et jubilum, lætitia occupabit eos ; dolor, mœſtitia ac gemitus recedent. Ego ſum, ego ſum con- 12
ſolator tuus : dignoſce quem timere debeas : an timeres hominem mortalem & filium hominis, qui velut herba areſcent ?
Et oblivisceteris Dei qui te fecit, qui cœlū 13
condidit, terrámque fundavit? pavéréſque ſemper quotidiè vultum iratum affligentis te, quin te (ut arbitratur) excindat ? jam verò ubi eſt ira affligentis te ?

deficiet nec , fovea in morietur non & :solvi demigrans Festinavit
14 מִהַר צֹעֶה לְהִפָּתֵחַ וְלֹא־יָמוּת לַשַּׁחַת וְלֹא יֶחְסַר
personuerunt & , mare findens tuus Deus Dominus ego Et .ejus panis
15 לַחְמוֹ׃ וְאָנֹכִי יְהוָה אֱלֹהֶיךָ רֹגַע הַיָּם וַיֶּהֱמוּ
,tuo ore in mea verba posui Et.ejus nomen exercituū Dominus : ej' fluct'
16 גַּלָּיו יְהוָה צְבָאוֹת שְׁמוֹ׃ וָאָשִׂם דְּבָרַי בְּפִיךָ
fundandum ad &,cœlos plantandum ad : te protexi meæ manus umbra in &
וּבְצֵל יָדִי כִּסִּיתִיךָ לִנְטֹעַ שָׁמַיִם וְלִיסֹד
, te Suscita .tu meus populus ,Sijon ad dicendum ad & , terram
17 אֶרֶץ וְלֵאמֹר לְצִיּוֹן עַמִּי אָתָּה׃ הִתְעוֹרְרִי
Domini manu de bibisti quæ , Jerusalaim surge , te suscita
הִתְעוֹרְרִי קוּמִי יְרוּשָׁלַםִ אֲשֶׁר שָׁתִית מִיַּד יְהוָה אֶת־
.expressisti,bibisti veneni mortiferi calicis fæcem : ej' excandescentiæ calicem
כּוֹס חֲמָתוֹ אֶת־קֻבַּעַת כּוֹס הַתַּרְעֵלָה שָׁתִית מָצִית׃
apprehendens non & : genuit filiis omnibus ex ei ductor Non
18 אֵין־מְנַהֵל לָהּ מִכָּל־בָּנִים יָלָדָה וְאֵין מַחֲזִיק
,tibi evenientia hæc Duo .magnificavit filiis omnibus ex,ejus manum in
19 בְּיָדָהּ מִכָּל־בָּנִים גִּדֵּלָה׃ שְׁתַּיִם הֵנָּה קֹרְאֹתַיִךְ
quo : gladius & , fames & , contritio & Vastitas ? tibi condolebit quis
מִי יָנוּד לָךְ הַשֹּׁד וְהַשֶּׁבֶר וְהָרָעָב וְהַחֶרֶב מִי
,platearum omniū capite in jacuerunt,defecerunt tui Filii ? te consolabor
20 אֲנַחֲמֵךְ׃ בָּנַיִךְ עֻלְּפוּ שָׁכְבוּ בְּרֹאשׁ כָּל־חוּצוֹת
increpatione,Domini excandescentia pleni : retis sylvestris bos ut
כְּתוֹא מִכְמָר הַמְלֵאִים חֲמַת־יְהוָה גַּעֲרַת
non & ,ebria & , afflicta hoc nunc audi Idcircò .tui Dei
21 אֱלֹהָיִךְ׃ לָכֵן שִׁמְעִי־נָא זֹאת עֲנִיָּה וּשְׁכֻרַת וְלֹא
litigabit tuus Deus & , Dominus tuus Dominus dixit Sic .vino à
22 מִיָּיִן׃ כֹּה־אָמַר אֲדֹנַיִךְ יְהוָה וֵאלֹהַיִךְ יָרִיב
: mortiferi veneni calicem , tua manu de tuli Ecce .suo populo
עַמּוֹ הִנֵּה לָקַחְתִּי מִיָּדֵךְ אֶת־כּוֹס הַתַּרְעֵלָה אֶת־
.ultrà illum bibendum ad adjicies non : mei furoris calicis fæcem
קֻבַּעַת כּוֹס חֲמָתִי לֹא־תוֹסִיפִי לִשְׁתּוֹתָהּ עוֹד׃
, tuæ animæ dixerunt qui , te depopulantium manu in illum ponam Et
23 וְשַׂמְתִּיהָ בְּיַד מוֹגַיִךְ אֲשֶׁר־אָמְרוּ לְנַפְשֵׁךְ
, tuum corpus terram quasi posuisti & : transibimus & , te Incurva
שְׁחִי וְנַעֲבֹרָה וַתָּשִׂימִי כָאָרֶץ גֵּוֵךְ
.transeuntibus plateam sicut &
וְכַחוּץ לַעֹבְרִים׃

CAP. LII. נב

vestimenta te indue : Sijon tuam fortitudinē te indue,te suscita,te Suscita
1 עוּרִי עוּרִי לִבְשִׁי עֻזֵּךְ צִיּוֹן לִבְשִׁי בִּגְדֵי
veniat ,adjiciet non quia : sanctitatis civitas Jerusalaim , tuæ gloriæ
תִּפְאַרְתֵּךְ יְרוּשָׁלַםִ עִיר הַקֹּדֶשׁ כִּי לֹא יוֹסִיף יָבֹא־
surge , pulvere de te Excute .immundus & , præputiatus ultrà te in
2 בָךְ עוֹד עָרֵל וְטָמֵא׃ הִתְנַעֲרִי מֵעָפָר קוּמִי
.Sijon filia captiva , tui colli vinculis te solve : Jerusalaim sede
שְׁבִי יְרוּשָׁלָםִ הִתְפַּתְּחוּ מוֹסְרֵי צַוָּארֵךְ שְׁבִיָּה בַּת־צִיּוֹן׃
argento in non & : estis venundati Gratis ,Dominus dixit sic Quia
3 כִּי־כֹה אָמַר יְהוָה חִנָּם נִמְכַּרְתֶּם וְלֹא בְכֶסֶף
descendit Ægyptum : Dominus Dominus dixit sic Quia .eritis redempti
4 תִּגָּאֵלוּ׃ כִּי כֹה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה מִצְרַיִם יָרַד־
nihilo pro Assur & : ibi peregrinandum ad principio in meus populus
עַמִּי בָרִאשֹׁנָה לָגוּר שָׁם וְאַשּׁוּר בְּאֶפֶס
est ablatus quia?Dominus dixit , hic mihi quid nunc Et .eum oppressit
5 עֲשָׁקוֹ׃ וְעַתָּה מַה־לִּי־פֹה נְאֻם־יְהוָה כִּי־לֻקַּח
, Dominus dixit ,facient ululare ejus dominatores : gratis meus populus
עַמִּי חִנָּם מֹשְׁלָו יְהֵילִילוּ נְאֻם־יְהוָה
.blasphematum meum nomen die tota jugiter &
וְתָמִיד כָּל־הַיּוֹם שְׁמִי מִנֹּאָץ׃

Versio VUL. LAT.

14 Citò veniet gradiens ad aperiendum,& non interficiet usque ad internecionem,nec de-
15 ficiet panis ejus. Ego autem sum Dñs Deus tuus, qui conturbo mare,& intumescunt fluctus ejus: Dominus exercituum
16 nomen meū. Posui verba mea in ore tuo, & in umbra manûs meæ protexi te, ut plantes cœlos, & fundes terram: & dicas ad Sion, Populus meus es tu.
17 Elevare, elevare, consurge Jerusalem, quæ bibisti de manu Domini calicem iræ ejus: usque ad fundum calicis soporis bibisti, & potâsti usque ad fæces.
18 Non est qui sustentet eam ex omnibus filiis, quos genuit: & non est qui apprehendat manum ejus ex omnib' filiis, quos
19 enutrivit. Duo sunt quæ occurrerunt tibi; quis contristabitur super te? vastitas, & contritio, & fames, & gladius; quis
20 consolabitur te? Filii tui projecti sunt, dormierunt in capite omnium viarum, sicut oryx illaqueatus: pleni indignatione Domini, increpatione Dei tui.
21 Idcircò audi hoc paupercula,
22 & ebria non à vino. Hæc dicit dominator tuus Dominus, & Deus tuus, qui pugnabit pro populo suo; Ecce tuli de manu tua calicem soporis, fundum calicis indignationis meæ, non adjicies ut bibas illum ul-
23 trá. Et ponam illum in manu eorū, qui te humiliaverunt, & dixerunt animæ tuæ; Incurvare, ut transeamus: & posuisti ut terram corpus tuum, et quasi viam transeuntibus.

CAP. LII.

1 Consurge, consurge, induere fortitudine tuâ, Sion; induere vestimentis gloriæ tuæ, Jerusalem, civitas Sancti: quia non adjiciet ultrà, ut pertranseat per te incircumcis' & immun-
2 dus. Excutere de pulvere, consurge; sede Jerusalem: solve vincula colli tui, captiva filia
3 Sion. Quia hæc dicit Dominus; Gratìs venundati estis, & sine argento redimemini.
4 Quia hæc dicit Domin' Deus; In Ægyptum descendit populus meus in principio, ut colonus esset ibi: & Assur absque ulla causa calumniatus est
5 eum. Et numquid mihi est hîc, dicit Dominus, quoniam ablatus est populus meus gratís? Dominatores ejus iniquè agunt, dicit Dominus, & jugiter totâ die nomen meū blasphematur.

Versio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

14 Ἐν γὰρ τῷ σώζεσθαί σε οὐ στήσεται, οὐδὲ χρο-
15 νιεῖ, Ὅτι ἐγὼ ὁ θεός σου, ὁ ταράσσων τὴν θάλασσαν, καὶ ἠχῶν τὰ κύματα αὐτῆς· Κύριος
16 Σαβαὼθ ὄνομά μοι. Θήσω τοὺς λόγους μου εἰς τὸ στόμα σου, καὶ ὑπὸ τὴν (ν) σκιὰν τῆς χειρός μου σκεπάσω σε, ἐν ᾗ ἔστησα τὸν οὐρανὸν, καὶ ἐθεμελίωσα τὴν γῆν· καὶ ἐρεῖ Σι-
17 ὼν, Λαός μου εἶ σύ. Ἐξεγείρου ἐξεγείρου, ἀνάστηθι Ἱερουσαλὴμ, ἡ πιοῦσα (ξ) ἐκ χειρὸς κυρίου τὸ ποτήριον τοῦ θυμοῦ αὐτοῦ· τὸ ποτήριον γὰρ τῆς πτώσεως, τὸ κόνδυ τοῦ θυμοῦ (ο)
18 ἐξέπιες καὶ ἐξεκένωσας, Καὶ οὐκ ἦν ὁ παρακαλῶν σε ἀπὸ πάντων τῶν τέκνων σου ὧν ἔτεκες, καὶ οὐκ ἦν ὁ ἀντιλαμβανόμενος τῆς χειρός σου, οὐδὲ ἀπὸ πάντων τῶν υἱῶν σου ὧν
19 ὕψωσας. (π) Διὸ ταῦτα ἀντικείμενά σοι, τίς (ρ) συλλυπηθήσεταί σοι; πτῶμα καὶ σύντριμμα, λιμὸς καὶ μάχαιρα, τίς (σ)
20 παρακαλέσει σε; Οἱ υἱοί (τ) σου οἱ ἀπορούμενοι, οἱ καθεύδοντες ἐπ' ἄκρου πάσης ἐξόδου ὡς σευτλίον ἡμίεφθον, οἱ πλήρεις θυμοῦ κυρίου, ἐκλελυμένοι διὰ κυρίου τοῦ θεοῦ.
21 Διὰ τοῦτο ἄκουε τεταπεινωμένη, καὶ μεθύουσα
22 οὐκ ἀπὸ οἴνου. (υ) Οὕτω λέγει κύριος ὁ θεὸς ὁ κρίνων τὸν λαὸν αὐτοῦ, Ἰδοὺ εἴληφα ἐκ τῆς χειρός σου τὸ ποτήριον τῆς πτώσεως, τὸ κόνδυ τοῦ θυμοῦ (φ) μου, καὶ οὐ προσθήσῃ ἔτι
23 πιεῖν αὐτό· Καὶ (χ) δώσω αὐτὸ εἰς τὰς χεῖρας τῶν ἀδικησάντων σε καὶ τῶν ταπεινωσάντων σε, οἳ εἶπαν τῇ ψυχῇ σου, Κύψον, ἵνα παρέλθωμεν· καὶ ἔθηκας ἴσα τῇ γῇ τὰ (ψ) μέσα σου ἔξω τοῖς παραπορευομένοις.

Cum enim salva facta fueris; non stabit, neque (h) permanebit: Quia ego Deus tuus, qui conturbo mare, & sonare facio fluctus ejus: Dominus Sabaoth nomen mihi. Ponam verba mea in ore tuo: & sub umbra manûs meæ protegam te, in qua statui cœlum, & fundavi terram: & dicet Sion, Populus meus es tu. Exurge, exurge, elevare Hierusalem, quæ bibisti de manu Domini calicem furoris ejus. Calicem enim ruinæ, (i) Condy furoris ebibisti, & (k) evacuâsti: Et non erat, qui consolaretur te ex omnibus filiis tuis, quos genuisti: & non erat, qui apprehenderet manum tuam, neque ex omnibus filiis tuis, quos exaltâsti. (l) Quarè hæc contraria tibi: quis contristabitur tecum? ruina, & contritio, fames, & gladius: quis consolabitur te? Filii tui, indigentes, dormientes in capite omnis viæ, sicut (m) beta semicocta, pleni furoris Domini, deficientes (n) per Dominum Deum. Propterea audi humiliata, et ebria non à vino. Sic dicit Dominus Deus, qui judicat populum suum; Ecce tuli de manu tua calicem (o) ruinæ, Condy furoris mei: & non adjicies bibere illum ultrá: Et dabo eum in manus eorum, qui te inique oppresserunt, & humiliaverunt te: qui dixerūt animæ tuæ; Inclinare, ut transeamus: & posuisti æqualia terræ media tua foris transeuntibus. 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23

MS.A. (ν) δεξιάν μου σκεπάσω (ξ) τὸ ποτήριον τοῦ θυμοῦ ἐκ χειρὸς κυρίου· (ο) ἔπιες (π) Δύο ταῦτα (ρ) σοι συλλυπηθήσεται; (σ) σε παρακαλέσει; (τ) σοι, (υ) Οὕτως (φ) καὶ οὐ (χ) ἐμβαλῶ (ψ) μετάφρενά

ΚΕΦ. νβʹ.

1 Ἐξεγείρου ἐξεγείρου Σιὼν, ἔνδυσαι τὴν ἰσχύν σου Σιὼν, (α) καὶ σὺ ἔνδυσαι τὴν δόξαν σου Ἱερουσαλὴμ πόλις (β) ἡ ἁγία, οὐκέτι προστεθήσεται διελθεῖν διὰ σοῦ ἀπερίτμητος
2 καὶ ἀκάθαρτος. Ἐκτίναξαι τὸν χοῦν, καὶ ἀνάστηθι, κάθισον Ἱερουσαλὴμ, ἔκδυσαι τὸν δεσμὸν τοῦ τραχήλου σου ἡ αἰχμάλωτος θυ-
3 γάτηρ Σιών. Ὅτι τάδε λέγει κύριος, Δωρεὰν ἐπράθητε, καὶ οὐ μετὰ ἀργυρίου λυτρωθή-
4 σεσθε. Οὕτως λέγει κύριος, Εἰς Αἴγυπτον κατέβη ὁ λαός μου τὸ πρότερον παροικῆσαι
5 ἐκεῖ, καὶ εἰς Ἀσσυρίους βίᾳ ἤχθησαν. Καὶ νῦν τί (γ) ἐστε ὧδε; τάδε λέγει κύριος, Ὅτι ἐλήφθη ὁ λαός μου δωρεὰν, θαυμάζετε καὶ ὀλολύζετε. τάδε λέγει κύριος, Δι' ὑμᾶς διαπαντὸς τὸ ὄνομά μου βλασφημεῖται ἐν τοῖς ἔθνεσι.

CAP. LII.

1 Exurge, exurge, Sion: induere fortitudine tuâ, Sion: & tu induere gloriâ tuâ, Hierusalem, civitas Sancta: nequaquam ultrà adjiciet, ut pertranseat per te incircuncisus,
2 et immundus. Excute pulverem, et surge: sede Hierusalem, solve vinculum colli tui, captiva filia
3 Sion. Quia hæc dicit Dominus; Gratis venundati estis: et non cum argento redimemini. Sic dicit Do-
4 minus; In Ægyptum descendit populus meus prius, ut peregrinaretur ibi; et in Assyrios violenter
5 abducti sunt. Et nunc quid (a) estis hîc? Hæc dicit Domin'; Quia ablatus est populus meus gratis, admiramini: et ululate. Hæc dicit Dominus; Propter vos semper nomen meum blasphematur (b) in gentibus.

MS. A. (α) καὶ ἔνδυσαι (β) ἁγία, (γ) ὧδε ἔσται;

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 מוחי פורענא לאתגלאה ולא ימותון צדיקיא לחבל ולא יחסרון מזוניהון : ואנא
15 יי אלהך דנזיף בימא והמן גלוהי יי צבאות שמיה : ושויתי פתגמי נבואתי בפומך
16 ובטלל גבורתי אגנית עלך לקימא עמא דאמיר עליהון דיסגון ככוכבי שמיא ולשכללא
כנשתא דאמיר עליהון דיסגון כעפרא דארעא ולמימר לדדירין בציון עמי אתון :
17 אתרבא אתרבא קומי ירושלם דקבילת מן קדם יי ית כסא דחמתיה ית פילי כסא
18 דלוטא שתית אצדית : לית דמנחם לה מכל בנין דילידת ולית דמתקף בידה מכל בנין
19 דרביאת : תרתין עקן אתאה עלך ירושלם לא יכילית למקם כיד ארבע ייתון עלך
20 בזא ותברא וכפנא וחרבא לית די מנחמיך אלהן אנא : בניך יהון מטרפין רמן בריש כל
21 שוקיא כמזרקי מצדן מלן חמתא מן קדם יי מזופיתא מן קדם אלהיך : בכן שמעי כען
22 דא מטלטלתא דרויא מן עקא ולא מן חמר : כדנן אמר רבונך יי ואלהיך דעתיד
למעבד פורענות דין עמיה הא קבלית מן ידיך ית כסא דלוטא ית פילי כסא דחמתי
23 לא תוסיפין למשתה עוד : ואמסרנה ביד דהוו מונן ליך דהוו אמרין לנפשיך אמאיכי
ונעדי ואמאיכת כארעא יקריך והוית כשוק לעדן :

נב

1 אתגלא אתגלא לבשי תוקפיך ציון לבשי לבושי תושבחתיך ירושלם קרתא דקודשא
2 ארי לא יוספון יעדון ביך עוד ערלין ומסאבין : אתנפצי מעפרא קומי תבי על כורסי
3 יקרא ירושלם אתפסקו חנקי צוריכון שביה כנשתא דציון : ארי כדנן אמר יי מגן
4 אזדבנתון ולא בכסף תתפרקון : ארי כדנן אמר יי אלהים למצרים נחתת עמי בקדמיתא
5 לאתותבא תמן ואתוראה בלמא אנסיה : וכען עתידנא למפרק אמר יי ארי אזדבן עמי
מגן עממיא דשליטו בהון משתבחין אמר יי ותדירא כל יומא על פולחן שמי מרגזין :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Citò revelabitur vindicta, & non morientur justi in corruptionem, nec deficient cibaria eorum. Ego autem sum Dñs Deus tuus, increpans mare, & sonant fluctus ejus: Dñs exercituum nomen ejus. Et posui verba prophetiæ meæ in ore tuo: & in umbra potentiæ meæ protexi te, ut suscitarem populum de quo dictum est, Quòd multiplicarentur sicut stellæ cœli: & ut fundarem congregationem de qua dictum est, Quòd multiplicaretur sicut pulvis terræ: & dicerem habitantibus in Sion, Populus meus estis vos. Evehere, evehere, consurge Jerusalem, quæ suscepisti à facie Dñi calicem furoris ejus, phialam calicis maledictionis bibisti & detraxisti. Non est qui consoletur eam ex omnib' filiis quos peperit, neque est qui apprehendat manum ejus ex omnibus filiis quos nutrivit. Duæ tribulationes venerunt super te Jerusalem, non potuisti consurgere: cùm venerint quatuor super te, præda & contritio, & fames & gladius, non erit qui consoletur te, nisi ego. Filii tui jacent conturbati, projecti in capite omnium viarum quasi lagunculæ confractæ, pleni furore à facie Dñi, increpatione à facie Dei tui. Propterea audi nunc transmigrans, quæ inebriata es à tribulatione, & non à vino: Hæc dicit dominator tuus: Dñs De' tu' qui factur' est vindictam judicii populi sui: Ecce suscepi de manu tua calicem maledictionis, phialam calicis furoris mei: non addes ut bibas eam amplius. Et tradam eam in manu eorum qui te oppresserunt, qui dicebant animæ tuæ, Humiliare ut transeamus, & humiliâsti quasi terram gloriam tuam, & facta es quasi callis transeuntibus. 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23

CAP. LII.

Revelare, revelare, induere fortitudine tua Sion, induere vestimentis gloriæ tuæ Jerusalem civitas sancta: quia non adjicient transire ultra p te incircuncisi & immundi. Excutere de pulvere, consurge, sede super solium gloriæ tuæ Jerusalem. Succisa sunt vincula colli vestri, captiva congregatio Sion. Quoniam hæc dicit Dñs: Gratis venundati estis, & absq; argento redimemini. Quia hæc dicit Dñs Deus: In Ægyptum descendit popul' meus in principio, ut peregrinaretur ibi, & Assur temerè violenter oppressit eum. Et nunc redempturus sum eum, dicit Dñs, quia venundatus est populus meus gratis: populi qui dominati sunt eorum, sese jactitant, dicit Dñs: & semper tota die provocant eos propter cultum nominis mei. 1 2 3 4 5

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܠܐ ܢܡܘܬܘܢ ܠܚܒܠܐ. ܘܠܐ ܢܒܨܪ ܠܚܡܗ. * ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ. ܕܟܐܐ ܒܝܡܐ 14
ܘܡܫܠܝܢ ܓܠܠܘܗܝ. ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ. * ܣܡܬ ܡܠܝ ܒܦܘܡܟ. ܘܒܛܠܠܐ ܕܐܝܕܝ 15 16
ܟܣܝܬܟ. ܒܗ ܕܢܨܒܬ ܫܡܝܐ. ܘܐܫܬܐܣܬ ܐܪܥܐ. ܘܐܡܪܬ ܠܨܗܝܘܢ ܕܥܡܝ
ܐܢܬ. * ܐܬܬܥܝܪܝ ܐܬܬܥܝܪܝ ܘܩܘܡܝ ܐܘܪܫܠܡ: ܕܐܫܬܝܬܝ ܡܢ ܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ ܟܣܐ 17
ܕܚܡܬܗ. ܕܐܫܬܝܬܝ ܘܡܨܝܬܝ ܟܣܐ ܕܙܘܥܐ. * ܘܠܝܬ ܕܡܒܝܐ ܠܗ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܒܢܝܐ 18
ܕܝܠܕܬ. ܘܠܝܬ ܕܐܚܕ ܒܐܝܕܗ ܘܡܩܝܡ ܠܗ. ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܒܢܝܐ ܕܪܒܝܬ. * ܬܪܬܝܢ ܐܠܝܢ 19
ܐܬܝ ܠܟܝ. ܡܢܘ ܢܬܟܪܐ ܠܟܝ: ܒܙܬܐ ܘܬܒܪܐ. ܘܟܦܢܐ ܘܣܝܦܐ. ܡܢܘ ܢܒܝܐܟܝ. * ܒܢܝܟܝ 20
ܐܬܕܡܪܘ ܘܪܡܝܢ ܒܪܝܫ ܟܠܗܘܢ ܫܘܩܐ. ܐܝܟ ܣܠܩܐ ܕܒܫܠ. ܘܡܠܝܢ ܚܡܬܗ ܕܡܪܝܐ
ܘܟܐܬܗ ܕܐܠܗܟܝ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܫܡܥܝ ܗܕܐ ܡܣܟܢܬܐ: ܘܪܘܝܐ. ܘܠܐ ܡܢ ܚܡܪܐ. 21
* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܟܝ ܡܪܝܐ ܘܐܠܗܟܝ. ܕܕܐܢ ܠܥܡܗ. ܗܐ ܢܣܒܬ ܡܢ ܐܝܕܝܟܝ ܟܣܐ 22
ܕܙܘܥܐ. ܠܐ ܬܘܣܦܝܢ ܬܘܒ ܠܡܫܬܝܗ. * ܘܐܣܝܡܝܘܗܝ ܒܐܝܕܝ ܡܟܝܟܢܝܟܝ. ܕܐܡܪܘ 23
ܠܢܦܫܟܝ. ܐܬܟܦܝ ܘܢܥܒܪ. ܘܥܒܕܬ ܠܒܣܪܟܝ ܐܝܟ ܐܪܥܐ. ܘܐܝܟ ܫܘܩܐ ܠܥܒܪܝܢ.

* [illegible] * ܢܒ *

* ܐܬܬܥܝܪܝ ܐܬܬܥܝܪܝ. ܨܗܝܘܢ: ܘܠܒܫܝ ܡܐܢܐ ܕܫܘܒܚܟܝ ܐܘܪܫܠܡ ܩܪܝܬܐ 1
ܩܕܝܫܬܐ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܢܘܣܦ ܬܘܒ ܢܥܘܠ ܒܟܝ ܥܘܪܠܐ ܘܛܡܐܐ. * ܐܬܢܦܨܝ ܡܢ ܥܦܪܐ 2
ܘܩܘܡܝ ܬܒܝ. ܐܘܪܫܠܡ. ܫܪܝ ܢܝܪܐ ܡܢ ܨܘܪܟܝ. ܫܒܝܬܐ ܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. * ܡܛܠ 3
ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܓܢ ܐܙܕܒܢܬܘܢ. ܘܠܐ ܒܟܣܦܐ ܬܬܦܪܩܘܢ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ 4
ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܠܡܨܪܝܢ ܢܚܬ ܥܡܝ ܠܘܩܕܡܝܢ. ܠܡܬܬܘܬܒܘ ܬܡܢ. ܘܐܬܘܪܝܐ ܒܥܘܫܩܐ 5
ܕܒܪܗ. * ܘܗܫܐ ܡܢܐ ܠܝ ܗܪܟܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܐܬܕܒܪ ܥܡܝ ܡܓܢ. ܫܠܝܛܢܘܗܝ
ܡܝܠܠܝܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܡܝܢܐܝܬ ܟܠܝܘܡ. ܫܡܝ ܡܬܓܕܦ.

14 Nequaquam morientur ad corruptionem, 15 neque deficiet panis ejus. Ego ſum Dominus Deus tuus qui mari interminor, & ſedantur fluctus ejus: Dominus potens eſt nomen ejus: 16 Qui poſui verba mea in ore tuo, & ſub umbra manûs meæ illius te protexi, quâ cœlum extendi & terræ fundamenta firmavi; dixíq; Sioni, Populus meus es. 17 Evigila, evigila, & exurge Jeruſalem quæ bibiſti de manu Domini calicem furoris ejus, quæ bibiſti & ſuxiſti calicem tremoris; 18 Nemine exiſtente qui conſoletur eam, ex omnibus filiis quos peperit; nec qui teneat manum ejus & erigat eam, ex omnibus filiis quos enutrivit. 19 Duo iſta contigêre tibi; quis condoleat tibi? direptio & confractio, fames & gladius quis te conſoletur? 20 Filii tui attoniti jacent in compitis omnium platearum, velut beta flaccida, & pleni ſunt furore Domini & increpatione Dei tui. 21 Propterea audi hæc O miſera, quæ ebria es, tametſi non à vino. 22 Sic dicit herus tu', Dominus ac Deus tuus qui judicaturus eſt populum ſuum; Ecce arripio de manibus tuis calicem tremendum furoris mei, non perges ampliùs eum bibere: 23 Sed ponam eum in manu deprimentium te, qui cùm dixiſſent animæ tuæ, Sternere ut tranſeamus; redegiſti populum tuum velut humum & velut plateam tranſeuntibus.

CAP. LII.

1 Evigila, evigila Sion, & indue veſtimentum glorioſum Jeruſalem civitas ſancta; quia non eſt ampliùs ingreſſurus in te præputiatus & immundus. 2 Excute te à pulvere, & ſurge, ſede Jeruſalem: ſolve jugum à collo tuo captiva filia Sionis. 3 Nam ſic ait Dominus, Gratìs venundati eſtis, & abſque argento redimemini. 4 Sic enim ait Dominus Deus, In Ægyptum deſcendit populus meus olim ad peregrinandum illic: Aſſyrius autem per vim abduxit illum. 5 Nunc itaque quid mihi ſupereſt hîc, dicit Dominus, cùm populus meus ſit gratìs abductus; qui præſunt eis, clamitent (dicit Dominus) & jugiter quotidie nomen meum blaſphement?

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لانه عند ما يخلص ما يقف ولا يبطي * لاني انا الهك المقلق البحر والمهيج امواجه * رب 14
الجيوش اسمي * اصنع اقوالي في فيك * وتحت عيني استرك * التي بها اقمت السماء واسست 15 16
الارض * واقول لصهيون انت شعبي * انتبهي انتبهي وقومي يا ايروشليم التي شربت كاس 17
الغضب من يد الرب * لان كاس السقطة كاس الغضب شربت وامتصصت * وليس كان من 18
يعزيك من جميع اولادك الذين ولدتهم * وليس كان من يدعم يدك * ولا من جميع بنيك
الذين رفعتهم * هاتان الاثنتان مقاومتان لك * من يحزن معك * سقطة وانكسار * وجوع 19
وسيف * من يعزيك * بنوك فيك حايرون راقدون على طرف كل مخرج مثل سلق ذابل * 20
مملوين غضب الرب * متحيرين من قبل الرب الاله * لاجل هذا اسمعي ايتها الذليلة 21
والسكرانة ليس من خمر * هكذا يقول الرب الاله الذي يدين شعبه * ها اخذت من 22
يدك كاس السقطة كاس الغضب * وليس تستزيدين ان تشربيه بعد * واضعه في ايدي 23
الذين ظلموك * والذين اذلوك * والذين قالوا لنفسك انحني كي نجوز * ووضعت منكبيك
مساويين للارض للمارين خارجا *

* الفصل الثاني والخمسون *

* انتبهي انتبهي يا صهيون * البسي قوتك يا صهيون * والبسي مجدك يا ايروشليم المدينة 1
المقدسة * لا يستزيد ان يعبر فيك ايضا غير مختون ولا نجس * انفضي التراب وقفي 2
واجلسي يا ايروشليم * البسي رباط عنقك ايتها المسبية الابنة صهيون * لان هكذا يقول 3
الرب * ابعتم مجانا * وليس بفضة استنقذتم * هكذا يقول الرب * الى مصر نزل شعبي اولا 4
ليسكن هناك * والى الموصليين سيق بعسف * والان ما باله يكون ههنا * هكذا 5
يقول الرب * ان شعبي اخذ مجانا * تعجبوا وولولوا * هكذا يقول الرب * من اجلكم كل
حين اسمي يجدف عليه في الامم *

14 *Equidem ubi liberatus fuerit, nequaquam ſubſiſtet, nec diu morabitur:* 15 *Quoniam ego Deus tuus, qui mare conturbo & fluctus ejus excito, (Dominus exercituum eſt nomen meum.)* 16 *Indam verba mea in os tuum, & protegam te ſub dextera mea quâ cœlum erexi terrámque fundavi; & dicam Sioni, Tu es populus meus.* 17 *Expergiſcere, expergiſcere, & ſurge O Jeruſalem quæ hauſiſti calicem iræ de manu Domini: nam calicem ruinæ, calicem furoris hauſiſti & exuxiſti,* 18 *Et nemo fuit qui te conſolaretur ex omnibus filiis tuis quos peperiſti; nemóque fuit qui manum tuam ſuſtentaret, ne quidem ex omnibus filiis tuis quos elevâſti.* 19 *Hæc duo ſunt tibi contraria, quis tibi condoleret? ruina & contritio, fames & gladius: quis te conſolaretur?* 20 *Filii tui in te attoniti jacent ad extremitatem cujuſlibet viæ tanquam beta marceſcens, pleni furore Domini, conſternati à Domino Deo.* 21 *Iccircò audi O miſera & ebria non ex vino.* 22 *Sic ait Dominus Deus qui judicaturus eſt populum ſuum; Ecce recepi de manu tua calicem ruinæ, calicem furoris, & non perges eum bibere ulteriùs:* 23 *Et ponam eum in manus eorum qui te oppreſſerunt, qui te humiliaverunt, & qui cùm dixiſſent animæ tuæ, Incurvare ut tranſeamus, tu tuos humeros humo adæquatos ſtraviſti iis qui foras egrediebantur.*

CAP. LII.

1 *Expergiſcere, expergiſcere O Sion, induere fortitudine tuâ O Sion, & induere gloriâ tuâ O Jeruſalem urbs ſancta: non perget ampliùs tranſire per te incircunciſus neque pollutus.* 2 *Excute pulverem & ſta, ſede O Jeruſalem, induere cingulo colli tui O captiva filia Sion.* 3 *Sic enim ait Dominus, Venundati eſtis gratìs, ita ſine argento redimemini.* 4 *Sic ait Dominus, Cùm in Ægyptum deſcendiſſet populus meus antehac ut habitaret illic, ad Aſſyrios abductus fuit cum violentia.* 5 *Et nunc quorſum iſtîc eſſet? Sic ait Dominus, Populus quidem meus gratìs abductus eſt: admiramini, & ululate. Sic ait Dominus, Propter vos inceſſanter nomen meum blaſphematur inter gentes.*

ישעיה: נג

die in propterea : meum nomen meus populus cognoſcet Propterea
6 לכן ידע עמי שמי לכן ביום
ſunt decori Quàm .ego ecce loquens ipſe ego quia , illa
7 ההוא כי־אני־הוא המדבר הנני : מה־נאוו
, pacem facientis audire , evangelizantis pedes montes ſuper
על־ההרים רגלי מבשר משמיע שלום
, Sijon ad dicentis : ſalutem facientis audire , bonum evangelizantis
מבשר טוב משמיע ישועה אמר לציון
, vocem levaverunt tuorum ſpeculatorum Vox .tuus Deus Regnavit
8 מלך אלהיך : קול צפיך נשאו קול
convertendo in , videbunt oculum ad oculo quia : *præconia dicent* ſimul
יחדו ירננו כי עין בעין יראו בשוב
deſerta , ſimul *præconia dicite* , *Exclamate* .Sijon DOMINUS
9 יהוה ציון : פצחו רננו יחדו חרבות
, ſuum populum DOMINUS eſt conſolatus quia : Jeruſalaim
ירושלם כי־נחם יהוה עמו
brachium DOMINUS Denudavit .Jeruſalaim redemit
10 גאל ירושלם : חשף יהוה את־זרוע
omnes videbunt & : gentium omnium oculis in *ſuæ ſanctitatis*
קדשו לעיני כל־הגוים וראו כל־
, recedite , Recedite .noſtri Dei ſalutem terræ fines
11 אפסי־ארץ את ישועת אלהינו : סורו סורו
, ejus medio de exite : tangatis ne pollutum , inde exite
צאו משם טמא אל־תגעו צאו מתוכה
feſtinatione *in* non Quia .DOMINI vaſa *ferentes* vos purificate
12 הברו נשאי כלי יהוה : כי לא בחפזון
vos ante *vadens* quia : ambulabitis non fuga *in* & , exibitis
תצאו ובמנוסה לא תלכון כי־הלך לפניכם
âget prudenter Ecce .Iſrael Deus vos *colligens* & , DOMINUS
13 יהוה ומאספכם אלהי ישראל : הנה ישכיל
Quemadmodũ .valde erit ſublimis &,elevabitur & exaltabitur :meꝰ ſervꝰ
14 עבדי ירום ונשא וגבה מאד : כאשר
: ejus aſpectus viro præ corruptus ſic , multi te ſuper *obſtupuerunt*
שממו עליך רבים כן־משחת מאיש מראהו
eum ſuper : multas gentes aſperget Sic .hominum filiis præ ejus forma &
15 ותארו מבני אדם : כן יזה גוים רבים עליו
eis fuerat narratum non quod *quia* : ſuum os reges *comprimen t*
יקפצו מלכים פיהם כי אשר לא־ספר להם
.intellexerint audierant non quod & , viderint
ראו ואשר לא־שמעו התבוננו :

CAP. LIII. נג

quem ſuper DOMINI brachium & : noſtro auditui credidit Quis
1 מי האמין לשמעתנו וזרוע יהוה על־מי
terra de radix ſicut &,eo coram *ramus tener ut* aſcendit Et ? eſt revelatum
2 נגלתה : ויעל כיונק לפניו וכשרש מארץ
aſpectus non & ,eum vidimus &:decor neque ,ei forma non , *ſiccitatis*
ציה לא־תאר לו ולא הדר ונראהו ולא־מראה
, dolorum vir , *viris* *deſiit* & ,eſt Deſpectus.eum deſideraremus ut
3 ונחמדהו : נבזה וחדל אישים איש מכאבות
non & ,erat deſpectus ,eo ab *facies abſcondens* quaſi & : *ægritudine notus* &
וידוע חלי וכמסתר פנים ממנו נבזה ולא
noſtros dolores & ,tulit ipſe noſtros languores Verè .eum reputavimus
4 חשבנהו : אכן חלינו הוא נשא ומכאבינו
Dei percuſſum , plagatum eum reputavimus nos & : *eos bajulavit*
סבלם ואנחנו חשבנהו נגוע מכה אלהים
.humiliatum &
ומענה :

Verſio VULG. LAT.

6 Propter hoc ſciet populꝰ meus nomen meum in die illa : quia ego ipſe qui loquebar, ecce adſum. 7 Quàm pulchri ſuper montes pedes annuntiantis & prædicantis pacem ; annuntiantis bonum, prædicantis ſalutem, dicentis Sion ; Regnabit Deus 8 tuus ! Vox ſpeculatorum tuorum : levaverunt vocem, ſimul laudabunt : quia oculo ad oculum videbunt cùm converte- 9 rit Dominus Sion. Gaudete, & laudate ſimul deſerta Jeruſalem : quia conſolatus eſt Dominus populum ſuum, rede- 10 mit Jeruſalem. Paravit Dominus brachium ſanctum ſuum in oculis omnium Gentium : & videbunt omnes fines terræ 11 ſalutare Dei noſtri. Recedite, recedite, exite inde, pollutum nolite tangere : exite de medio ejus, mundamini qui fer- 12 tis vaſa Domini. Quoniam non in tumultu exibitis, nec in fuga properabitis : præcedet enim vos Dominus, & con- 13 gregabit vos Deus Iſrael. Ecce intelliget ſervus meus, exaltabitur, & elevabitur, & ſubli- 14 mis erit valdè. Sicut obſtupuerunt ſuper te multi, ſic inglorius erit inter viros aſpectus ejus, & forma ejus inter 15 filios hominum. Iſte aſperget gentes multas, ſuper ipſum continebunt reges os ſuum : quia quibus non eſt narratum de eo, viderunt ; & qui non audierunt, contemplati ſunt.

CAP. LIII.

1 Quis credidit auditui noſtro ? & brachium Domini cui 2 revelatum eſt ? Et aſcendet ſicut virgultum coram eo, & ſicut radix de terra ſitienti : non eſt ſpecies ei, neque decor : & vidimus eum, & non erat aſpectus, & deſideravimus 3 eum : Deſpectum, & noviſſimum virorum, virum dolorum, & ſcientem infirmitatem : & quaſi abſconditus vultus ejus & deſpectus, unde nec 4 reputavimus eum. Verè languores noſtros ipſe tulit, & dolores noſtros ipſe portavit : & nos putavimus eum quaſi leproſum, et percuſſum à Deo et humiliatum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

6 Διὰ τοῦτο γνώσεται ὁ λαός μου τὸ ὄνομά μου ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ὅτι ἐγώ εἰμι αὐτὸς 7 ὁ λαλῶν, πάρειμι. Ὡς ὥρα ἐπὶ τῶν ὀρέων, ὡς πόδες εὐαγγελιζομένου ἀκοὴν εἰρήνης, ὡς εὐαγγελιζόμενος ἀγαθά, ὅτι ἀκουστὴν ποιήσω τὴν σωτηρίαν σου, λέγων, Σιὼν βα- 8 σιλεύσει σου ὁ θεός. Ὅτι φωνὴ τῶν φυλασσόντων σε ὑψώθη, καὶ τῇ φωνῇ ἅμα εὐφρανθήσονται· ὅτι ὀφθαλμοὶ πρὸς ὀφθαλμοὺς ὄψονται, ἡνίκα ἂν (") ἐλεήσῃ κύριος τὴν 9 Σιών. Ῥηξάτω εὐφροσύνην ἅμα τὰ ἔρημα Ἱερουσαλήμ, ὅτι ἠλέησε κύριος αὐτήν, 10 καὶ ἐρρύσατο Ἱερουσαλήμ. Καὶ ἀποκαλύψει κύριος τὸν βραχίονα (δ) τὸν ἅγιον αὐτοῦ ἐνώπιον πάντων τῶν ἐθνῶν, καὶ ὄψονται πάντα (ε) ἄκρα τῆς γῆς τὴν σωτηρίαν τὴν παρὰ τοῦ 11 (ζ) θεοῦ ἡμῶν. Ἀπόστητε, ἀπόστητε, ἐξέλθατε ἐκεῖθεν, καὶ ἀκαθάρτου μὴ (η) ἅψησθε, ἐξέλθετε ἐκ μέσου αὐτῆς, ἀφορίσθητε οἱ φέροντες τὰ 12 σκεύη κυρίου. Ὅτι οὐ μετὰ ταραχῆς ἐξελεύσεσθε, οὐδὲ φυγῇ πορεύσεσθε· (') προπορεύσεται γὰρ πρότερος ὑμῶν κύριος, καὶ ὁ ἐπι- 13 συνάγων ὑμᾶς (θ) θεὸς Ἰσραήλ. Ἰδοὺ συνήσει ὁ παῖς μου, καὶ ὑψωθήσεται, καὶ 14 δοξασθήσεται σφόδρα. Ὃν τρόπον ἐκστήσονται ἐπὶ σὲ πολλοί, οὕτως ἀδοξήσει (ι) ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων τὸ εἶδός σου, καὶ ἡ δόξα 15 σου (κ) ἀπὸ υἱῶν ἀνθρώπων. Οὕτω θαυμάσονται ἔθνη πολλὰ ἐπ' αὐτῷ, καὶ (λ) συνέξουσι βασιλεῖς τὸ στόμα αὐτῶν· ὅτι οἷς οὐκ ἀνηγγέλη περὶ αὐτοῦ, ὄψονται, καὶ οἳ οὐκ ἀκηκόασι, συνήσουσι.

MS.A. (") ἐλεήσει (δ) αὐτοῦ τὸν ἅγιον (ε) τὰ ἄκρα (ζ) θεοῦ. Ἀπόστητε, (η) ἅπτεσθε, ἐξέλθατε (') πορεύσεται (θ) κύριος ὁ θεὸς (ι) ἀπὸ ἀνθρώπων (κ) ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων. Οὕτως (λ) *συνάξουσι

ΚΕΦ. νγ'.

1 Κύριε τίς ἐπίστευσε τῇ ἀκοῇ ἡμῶν; καὶ ὁ 2 βραχίων κυρίου τίνι ἀπεκαλύφθη; Ἀνηγγείλαμεν (α) ὡς παιδίον ἐναντίον αὐτοῦ, ὡς ῥίζα ἐν γῇ διψώσῃ. οὐκ ἔστιν εἶδος αὐτῷ, οὐδὲ δόξα· καὶ εἴδομεν αὐτόν, καὶ οὐκ 3 εἶχεν εἶδος οὐδὲ κάλλος. Ἀλλὰ τὸ εἶδος αὐτοῦ ἄτιμον, (β) καὶ ἐκλεῖπον παρὰ τοὺς υἱοὺς τῶν ἀνθρώπων. ἄνθρωπος ἐν πληγῇ ὤν, καὶ εἰδὼς φέρειν μαλακίαν, ὅτι ἀπέστραπται τὸ πρόσωπον αὐτοῦ, ἠτιμάσθη, 4 καὶ οὐκ ἐλογίσθη. Οὗτος τὰς ἁμαρτίας ἡμῶν φέρει, καὶ περὶ ἡμῶν ὀδυνᾶται, καὶ ἡμεῖς ἐλογισάμεθα αὐτὸν εἶναι ἐν πόνῳ, καὶ ἐν πληγῇ, καὶ ἐν κακώσει.

MS.A. (α) ἐναντίον αὐτοῦ ὡς παιδίον, (β) ἐκλεῖπον παρὰ πάντας ἀνθρώπους.

Proptereà ſciet populus meus nomen meum in die illa : quia ego ipſe, qui loquebar, adſum ; Sicut (c) hora ſuper montes ; (d) ſicut pedes evangelizantis auditum pacis, ſicut (e) evangelizans bona. Quia auditam (f) faciam ſalutem tuam, dicens ; Sion, regnabit Deus tuus : (g) Quia vox cuſtodientium te exaltata eſt : & voce ſimul lætabuntur : quia oculi ad oculos videbunt, quando miſertus fuerit Dominus Sion. Erumpant lætitiam ſimul deſerta Hieruſalem : quia miſertus eſt Dominus ejus, & eruit Hieruſalem. Et revelabit Dominus brachium ſanctum ſuum in conſpectu cunctarum gentium : & videbunt omnes fines terræ ſalutem, quæ à Deo noſtro. Recedite, recedite, egredimini indè : & immundum nolite tangere : exite de medio ejus : ſeparamini, qui portatis vaſa Domini : Quia non cum tumultu exibitis, neque cum fuga ibitis. Præcedit enim prior vobis Dominus, & qui congregat vos, Deus Iſrael. Ecce intelliget puer meus, & exaltabitur, & glorificabitur valdè. Sicut ſtupebunt ſuper te multi ; ſic ingloria erit ab hominibus ſpecies tua, & gloria tua à filiis hominum. Sic mirabuntur gentes multæ ſuper eo : & continebunt reges os ſuum : quia quibus non eſt annuntiatum de eo, videbunt : & qui non audierunt, intelligent. 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15

CAP. LIII.

Domine, quis credidit auditui noſtro ? & brachium Domini cui revelatum eſt ? (a) Annuntiavimus, quaſi (b) parvulum in conſpectu ejus : ſicut radix in terra ſitienti. Non eſt ſpecies ei, neque gloria : & vidimus eum : & non habebat ſpeciem, neque decorem : Sed ſpecies ejus inhonorata, et deficiens præ filiis hominum. Homo in plaga poſitus, & ſciens ferre infirmitatem : quia averſa eſt facies ejus, deſpecta, & non reputata. Iſte peccata noſtra portat, & pro nobis dolet : & nos reputavimus eum eſſe in labore, & in (c) plaga, et in afflictione. 1 2 3 4

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

6 בכן יתרבא בעממיא שמי בכן בעדנא ההיא תדעון ארי אנא הוא דמליל ומימרי
7 קים : מה יאין על טורי ארעא דישראל רגלי מבשר משמע שלם מבשר טב משמע
8 פורקן אמר לכנשתא דציון אתגליאת מלכותא דאלהיך : קל פרנסיך דמרימין קלהון
9 כחדא משבחין ארי בעיניהון יחזון גבורן די עבד יי כד יתיב שכנתיה לציון : בועו
10 ושבחו כחדא חרבת ירושלם ארי עתיד יי לנחמא עמיה פריק ירושלם : גלא יי ית
דרע קודשיה לעיני כל עממיא ויחזון כל דבסיפי ארעא ית פורקנא דאלהנא :
11 אתפרשו אתפרשו פוקו מתמן במסאב לא תקרבון פוקו מגוה אתבחרו נטלי מני בית
12 מקדשא דיי : ארי לא בבהילו תפקון מביני עממיא ובערוקי לא תתובלון לארעכון
13 ארי מדבר קדמיכון יי ועתיד לכנשא גלותכון אלהא דישראל : הא יצלח עבדי
14 משיחא ירום ויסגי ויתקוף לחדא : כמא דסברו ליה בית ישראל יומין סגיאין דהוה
15 חשך ביני עממיא חזוהון וזיוהון מבני אנשא : כן יבדר עממין סגיאין עלוהי ישתקון
מלכין ישוון ידיהון על פומהון ארי דלא אשתעיאו להון חזו ודלא שמעו
אסתכלו :

נג

1 מן הימין לבסורתנא דא ותקוף דרע גבורתא דיי כדון על מן אתגליאת : ויתרבא 2
צדיקא קדמוהי הא כלבלבין דפרחן וכאילן דמשלח שורשוהי על נגדין דמיין כן
יסגון תולדת קודשא בארעא דהות צריכא ליה לא חזו חולא חזויה ולא אימתיה אימת
3 הדיוט ויהי זיו קודשא זיויה דכל דיחזניה יסתכל ביה : בכן יהי לבסרן ויפסק יקר
כל מלכותא יהון חלשין ודון הא כאנש כיבין ומזומן למרעין וכמא דהות מסלקא
4 אפי שכנתא מננא בסירין ולא חשיבין : בכן על חובנא הוא יבעי ועויתנא בדיליה
ישתבקון ואנחנא חשיבין כתישין מחן מן קדם יי ומענן :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Proptereà magnificabitur nomen meum in populis. Ideò in tempore 6
illo ſcietis, quoniam ego ſum qui loquebar, & Verbum meum permanet.
Quàm pulchri ſunt ſup montes terræ Iſrael pedes evangelizantis, audire fa- 7
cientis pacẽ ; evangelizantis bonum, audire facientis ſalutẽ ! dicentis cœtui
Sion : Revelatũ eſt regnũ Dei tui. Vox gubernatorũ tuorũ, qui elevaverunt 8
vocem ſuã ſimul laudantes : quoniã oculis ſuis videbũt magnalia quæ faciet
Dñs, cùm reduxerit majeſtatem ſuã in Sion. Gaudete, & laudate ſimul, de- 9
ſerta Jeruſalem, quoniam conſolaturꝰ eſt Dñs populũ ſuũ, redempturꝰ Jeru-
ſalem. Revelavit Dñs brachium ſanctũ ſuum in oculis omnium populorum, 10
& videbunt omnes qui in extremis terræ ſunt, ſalutare Dei noſtri. Sepa- 11
ramini, ſeparamini, exite indè : immundum ne tangatis : egredimini de
medio ejus, electi eſtote, portantes vaſa domus ſanctuarii Domini : Quo- 12
niam non in conturbatione exibitis de medio populorum, neque in fuga
deducemini in terrã veſtram, quoniam ductor erit Dñs ante vos, & congre-
gaturus eſt captivitatem veſtram Deus Iſrael. Ecce proſperabit ſervꝰ meus 13
Chriſtus : exaltabitur & *augebitur*, & confortabitur nimis. Sicut ſperave- 14
runt eum domus Iſrael diebꝰ multis, qui erat pauper inter populos : viſio
eorum & ſplendor eorum à filiis hominum. Sic diſperget populos multos, 15
ſuper eum conticeſcent reges, admovebunt manus ſuas ſuper os ſuum, quia
quod non narraverũt eis, viderunt ; & quod non audierũt, contemplati ſunt.

CAP. LIII.

Quis credidit huic nuntio noſtro ? & fortitudo brachii potentiæ Domini 1
nunc cui revelata eſt ? Et magnificabitur juſtus coram eo ſicut ſurculi qui 2
florent, & ſicut arbor quæ mittit radices ſuas juxta torrentes aquarum : ſic
multiplicabitur gens ſancta, in terra quæ indigebat eo. Non erit aſpectꝰ ejꝰ
ſicut aſpectꝰ communis, nec timor ejꝰ ſicut timor idiotæ ; ſed erit decor ejꝰ,
decor ſanctitatis, *ut omnis* qui viderit eum, *contempletur* eum. Erit qui- 3
dem contemptus, verùm auferet gloriam omnium regũ : erunt infirmi &
dolentes quaſi vir doloribus & infirmitatibꝰ expoſitꝰ. Et cùm ſubtrahebat
vultum majeſtatis à nobis, eramꝰ deſpecti & in nihilum reputati. Proptereà 4
ipſe deprecabitur pro peccatis noſtris, & delicta noſtra propter eum di-
mittentur : & nos reputati ſumus vulnerati, percuſſi à facie Dñi, & afflicti.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

6 * ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܕܥ ܥܡܝ ܫܡܝ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܗܘ ܡܡܠܠ. ܘܐܢܐ ܗܘ. * ܡܢܐ
7 ܫܦܝܪܝܢ ܥܠ ܛܘܪܐ ܪܓܠܘܗܝ ܕܡܣܒܪ ܫܠܡܐ: ܘܡܣܒܪ ܛܒܬܐ: ܘܡܫܡܥ ܦܘܪܩܢܐ.
ܘܐܡܪ ܠܨܗܝܘܢ. ܐܡܠܟ ܐܠܗܟܝ. * ܩܠܐ ܕܕܝܘܩܝܟܝ ܐܪܝܡܘ ܩܠܐ. ܘܐܟܚܕܐ ܡܫܒܚܝܢ. 8
ܡܛܠ ܕܥܝܢ ܒܥܝܢ ܢܚܙܘܢ ܟܕ ܡܗܦܟ ܡܪܝܐ ܠܨܗܝܘܢ. * ܕܘܨܘ ܘܫܒܚܘ ܐܟܚܕܐ 9
10 ܚܘܪܒܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܡܛܠ ܕܒܝܐ ܡܪܝܐ ܠܥܡܗ. ܘܦܪܩ ܠܐܘܪܫܠܡ. * ܓܠܐ ܡܪܝܐ
ܕܪܥܗ ܩܕܝܫܐ. ܠܥܝܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. ܘܢܚܙܘܢ ܟܠܗܘܢ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ ܦܘܪܩܢܗ
11 ܕܐܠܗܢ. * ܥܒܪܘ ܥܒܪܘ. ܦܘܩܘ ܡܢ ܬܡܢ. ܘܒܛܡܐܐ ܠܐ ܬܬܩܪܒܘܢ. ܦܘܩܘ ܡܢ ܓܘܗ.
12 ܘܐܬܦܪܫܘ ܫܩܠܝ ܡܐܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܒܥܘܪܩܐ ܬܦܩܘܢ. ܘܒܥܪܘܩܝܐ
13 ܠܐ ܬܐܙܠܘܢ. ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܐܙܠ ܩܕܡܝܟܘܢ. ܘܡܟܢܫܢܟܘܢ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܗܐ
14 ܡܣܬܟܠ ܥܒܕܝ. ܘܡܬܪܝܡ ܘܡܬܥܠܐ ܘܡܫܬܒܗܪ ܛܒ. * ܐܝܟ ܕܢܬܕܡܪܘܢ ܥܠܘܗܝ
15 ܣܓܝܐܐ. ܗܟܢܐ ܡܬܚܒܠ ܚܙܘܗ ܡܢ ܓܒܪܐ. ܘܐܣܟܡܗ ܡܢ ܒܢܝܢܫܐ. * ܗܢܐ
ܢܕܟܐ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܥܠܘܗܝ ܢܐܚܕܘܢ ܡܠܟܐ ܦܘܡܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܫܬܥܝ
ܠܗܘܢ ܚܙܘ. ܘܕܠܐ ܫܡܥܘ ܐܣܬܟܠܘ.

Propterea cognoſcet populus meus nomen meum in die illo, quoniam ego loquor & ſum. 6
Quàm decori ſunt ſuper montes, pedes annuntiantis pacem, annuntiantis fauſta, & prædicantis ſalutem, dicentis Sioni, Regnavit Deus tuus. 7
Quàm decora vox ſpeculatorum tuorum extollentium vocem & ſimul canentium, cùm oculatim viderint reductam à Domino Sionem. 8
Exultate, & ſimul canite deſolationes Jeruſalem; quia conſolatus eſt Dominus populum ſuum, & redemit Jeruſalem: 9
Manifeſtavit Dominus brachium ſuum ſanctum coram cunctis gentibus, & videbunt omnes fines terræ ſalutem Dei noſtri. 10
Recedite, recedite, exite inde, & immundos ne tangatis: exite è medio ejus, & ſequeſtrate vos qui veſtes Domini portatis. 11
Nam non præcipitanter exibitis, neque ut fugitivi diſcedetis: quia præibit vobis Dominus, & qui vos congregat, eſt Deus Iſraelis. 12
Ecce ſapiet ſervus meus, efferetur, attolletur, & tantopere elevabitur, 13
Ut multi demirentur eum: adeo immutata eſt ſpecies ejus à virili, & aſpectus ejus ab humano. 14
Hic expiabit gentes multas, & de hoc occludent reges os ſuum: quia quod non dictum fuerat eis, viderunt; & quod non audiverant, perceperunt. 15

* ܩܦܠܐܘܢ * ܢܓ *

1 * ܡܢ ܗܝܡܢ ܠܫܡܥܢ. ܘܕܪܥܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܢ ܐܬܓܠܝ. * ܣܠܩ ܐܝܟ ܝܠܘܕܐ
2 ܩܕܡܘܗܝ. ܘܐܝܟ ܥܩܪܐ ܡܢ ܐܪܥܐ ܨܗܝܬܐ. ܠܝܬ ܗܘܐ ܠܗ ܚܙܘܐ. ܘܠܐ ܗܕܪܐ. ܘܚܙܝܢܝܗܝ
3 ܕܠܝܬ ܗܘܐ ܠܗ ܚܙܘܐ. ܘܟܦܪܢܝܗܝ. * ܫܝܛܐ ܘܡܟܝܟܐ ܕܒܢܝܢܫܐ. ܓܒܪܐ ܕܟܐܒܐ
ܘܝܕܥ ܚܘܫܐ. ܘܐܗܦܟܢ ܐܦܝܢ ܡܢܗ. ܘܫܛܢܝܗܝ. ܘܠܐ ܚܫܒܢܝܗܝ.
4 * ܒܫܪܪܐ ܟܐܒܝܢ ܗܘ ܢܣܒ. ܘܚܫܝܢ ܗܘ ܣܒܠ. ܘܚܢܢ ܚܫܒܢܝܗܝ ܕܒܟܐܒܐ.
ܘܡܚܝܐ ܕܐܠܗܐ ܘܡܡܟܟܐ.

CAP. LIII.

Quis crediturus eſſet narrationi noſtræ? & brachium Domini cui revelatum eſt? 1
Aſcendit ut infans coram eo, & ut radix è terra ſitibunda, neque formam habens neque decorem: & videntes eum non habere formam, inficiati ſumus eum. 2
Deſpectus eſt & viliſſimus hominum, vir dolorum, et haud ignarus paſſionum: avertimus ab eo facies noſtras, & contempſimus eum, nec æſtimavimus. 3
Verè paſſiones noſtras ipſe pertulit, et dolores noſtros ipſe paſſus eſt: nos tamen reputavimus eum cruciatum, à Deo percuſſum, & humiliatum. 4

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

6 * لأجل هذا يعرف شعبي اسمي في ذلك اليوم اني انا هو انا المتكلم حاضر * ما ابهى على
7 الجبال بالحقيقة اقدام المبشر باسماع السلامة * والمبشر يقينا بالخيرات * اني اصنع خلاصك
8 مسموعا * قائلا لصهيون يملكك الهك * لان صوت حفظتك رفع * ويفرحون بالصوت معا *
9 لان عيونا الى عيون تحدق حين يرحم الرب صهيون * لتنبسط براري ايروسليم سرورا ايضا
10 معا * لان الرب رحمها ونجى ايروسليم * ويكشف الرب ذراعه القدوس امام جميع الامم *
11 ويعاين جميع اطراف الارض الخلاص الذي من قبل الله * ابعدوا ابعدوا اخرجوا من
12 هناك * ولا تدنوا من نجس * اخرجوا من وسطها * اعتزلوا يا حاملي آنية الرب * لانكم ليس
تخرجون بقلق * ولا تمضون بهرب * لان الرب يسير امامكم * ويجمعكم الرب اله اسرائيل *

Propterea experietur populus meus nomen meum in illa die, quòd ego, ego inquam qui loquor, præſens adſum. 6
Quàm ſpecioſi re verà ſunt ſuper montes pedes annuntiantis famam pacis & certò annuntiantis bona. Equidem publicam faciam ſalutem tuam dicens Sioni, Dominabitur tibi Deus tuus. 7
Vox enim cuſtodum tuorum elevabitur, & voce ſimul lætabuntur; quoniam oculi oculos intuebuntur quando miſerebitur Dominus Sionis. 8
Sanè ſolitudines Jeroſolymæ in gaudium quoque ſimul prorumpent, eò quòd Dominus miſertus ſit earum, & Jeroſolymam liberaverit. 9
Retegétque Dominus brachium ſanctum ſuum coram cunctis gentibus, & videbunt omnes extremitates terræ ſalutem quæ erit à Deo. 10
Recedite, recedite, egredimini inde, & ne accedatis ad immundum: exite de medio ejus, ſecedite O portantes vaſa Domini. 11
Neque verò turbulenter exibitis, neque fugientium more diſcedetis; quia Dominus præibit vobis, & congregabit vos Dominus Deus Iſraelis. 12

* النبوة على المسيح * وصلبه واحتماله للذنوب *

Prophetia de Chriſto, crucifixione ipſius, & ablatione culparum.

13 * ها فتاي يفهم ويرتفع ويتمجد ويتعالى جدا * هكذا يتحيرون عليك كثيرون * هكذا
14 منظرك زري من الناس * ومجدك من بني البشر * هكذا يتعجب منه الامم الكثيرين *
15 والملوك تسد افواهها * لان الذين لم يخبروا به يرونه * والذين لم يسمعوا به يفهمونه *

Ecce puer meus prudens erit, elevabitur, glorificabitur, & multùm exaltabitur. 13
Ita mirabuntur te multi: ita aſpectus tuus deſpicietur ab hominibus, & gloria tua à filiis hominum: 14
Ita demirabuntur eum gentes multæ, & reges claudent ora ſua; quòd ii quibus nequaquam annuntiatum fuerat de eo, videbunt eum; & qui nihil audierant de ipſo, intelligent eum. 15

* الفصل الثالث والخمسون *

1 * يا رب من آمن بسماعنا * وذراع الرب لمن اعلنت * اخبرنا امامه مثل صبي * مثل اصل
2 في ارض عطشى * ليس له منظر ولا مجد * ونظرناه فليس له منظر ولا حسن * لكن منظره
3 مهان وناقص دون جميع البشر * انسان هو في جراح * ورأى ان يحمل وجعا * لانه رد وجهه
4 اهين ولم يحسب * هو يحمل خطايانا * ومن اجلنا يتوجع * ونحن حسبناه ان يكون في تعب
وجراح وفي اسواء *

CAP. LIII.

O Domine, quis credidit auditui noſtro? & brachium Domini cui revelatum eſt? 1
Narramus coram eo ut puerulus, ut radix in terra ſiticuloſa: non eſt ei ſpecies neque majeſtas: & cùm intuemur eum, non ineſt ei forma neque pulchritudo: 2
Sed ſpecies ejus contemptiſſima eſt & omnium mortalium imperfectiſſima: homo qui in vulneribus verſatur, & dolorem pati decrevit; quoniam is faciem ſuam averteret, deſpiceretur, nec æſtimaretur. 3
Ipſe portat peccata noſtra, & pro nobis dolore afficitur: & nos arbitrati ſumus eum verſari in labore, vulneribus, & ærumnis. 4

ישעיה: נד

: nostris iniquitatibus ab attritus ; nostris prævaricationibus à vulneratus Ipse Et
5 וְהוּא מְחֹלָל מִפְּשָׁעֵנוּ מְדֻכָּא מֵעֲוֺנֹתֵינוּ
est medicatum ejus livore in & , eum super nostrarum pacificationum Castigatio
מוּסַר שְׁלוֹמֵנוּ עָלָיו וּבַחֲבֻרָתוֹ נִרְפָּא־
suam viam ad unusquisque ; erravimus ovis tanquam nos Omnes .nobis
6 לָנוּ׃ כֻּלָּנוּ כַּצֹּאן תָּעִינוּ אִישׁ לְדַרְכּוֹ
.nostrû omnium iniquitatem eum in occurrere fecit Dominus &: sum⁹ conversi
פָּנִינוּ וַיהוָה הִפְגִּיעַ בּוֹ אֵת עֲוֺן כֻּלָּנוּ׃
agnus sicut , suum os aperiet non & , est afflictus ipse &, est Oppressus
7 נִגַּשׂ וְהוּא נַעֲנֶה וְלֹא יִפְתַּח־פִּיו כַּשֶּׂה
: obmutuit eam tondentibus coram ovis sicut & , ducetur occisionem ad
לַטֶּבַח יוּבָל וּכְרָחֵל לִפְנֵי גֹזְזֶיהָ נֶאֱלָמָה
& , est sublatus judicio de & , clausura De. suum os aperiet non &
8 וְלֹא יִפְתַּח פִּיו׃ מֵעֹצֶר וּמִמִּשְׁפָּט לֻקָּח וְאֶת־
; viventium terra de est abscissus quoniam ? eloquetur quis ejus generationē
דּוֹרוֹ מִי יְשׂוֹחֵחַ כִּי נִגְזַר מֵאֶרֶץ חַיִּים
impiis cum dedit Et .ei plaga , mei populi prævaricationem propter
9 מִפֶּשַׁע עַמִּי נֶגַע לָמוֹ׃ וַיִּתֵּן אֶת־רְשָׁעִים
, fecerit injuriam non super : ejus mortibus in divite cum & , ejus sepulturam
קִבְרוֹ וְאֶת־עָשִׁיר בְּמֹתָיו עַל לֹא־חָמָס עָשָׂה
; fecit ægrotare, eū contundere voluit Dominus Et .ejus ore in dolus nec
10 וְלֹא מִרְמָה בְּפִיו׃ וַיהוָה חָפֵץ דַּכְּאוֹ הֶחֱלִי
voluntas &: dies prolongabit ; semē videbit , sua anima delictum posuerit si
אִם־תָּשִׂים אָשָׁם נַפְשׁוֹ יִרְאֶה זֶרַע יַאֲרִיךְ יָמִים וְחֵפֶץ
, videbit suæ animæ laborem Propter. prosperabitur ejus manū per Dñi
11 יְהוָה בְּיָדוֹ יִצְלָח׃ מֵעֲמַל נַפְשׁוֹ יִרְאֶה
: multos meus servus justus justificabit sua scientia In. saturabitur
יִשְׂבָּע בְּדַעְתּוֹ יַצְדִּיק צַדִּיק עַבְדִּי לָרַבִּים
, multis in ei dabo partem Ideò .bajulabit ipse ipsorum iniquitates &
12 וַעֲוֺנֹתָם הוּא יִסְבֹּל׃ לָכֵן אֲחַלֶּק־לוֹ בָרַבִּים
mortem in effudit quòd eo pro , spolium partietur fortibus cum &
וְאֶת־עֲצוּמִים יְחַלֵּק שָׁלָל תַּחַת אֲשֶׁר הֶעֱרָה לַמָּוֶת
peccatum ipse & : est numeratus prævaricatoribus cum & , suam animam
נַפְשׁוֹ וְאֶת־פֹּשְׁעִים נִמְנָה וְהוּא חֵטְא־
.intercedet prævaricatoribus & , tulit multorum
רַבִּים נָשָׂא וְלַפֹּשְׁעִים יַפְגִּיעַ׃

CAP. LIV. נד

:parturivit non hinni & , præconium vocifera : peperit non sterilis Præconiza
1 רָנִּי עֲקָרָה לֹא יָלָדָה פִּצְחִי רִנָּה וְצַהֲלִי לֹא־חָלָה
.Dominus dixit , maritatæ filii quàm desolatæ filii plures quia
כִּי־רַבִּים בְּנֵי־שׁוֹמֵמָה מִבְּנֵי בְעוּלָה אָמַר יְהוָה׃
, extendant tuorū tabernaculorum cortinas & , tui tentorii locum Dilata
2 הַרְחִיבִי מְקוֹם אָהֳלֵךְ וִירִיעוֹת מִשְׁכְּנוֹתַיִךְ יַטּוּ
.consolida tuos clavos & , tuos funiculos prolonga : prohibeas ne
אַל־תַּחְשֹׂכִי הַאֲרִיכִי מֵיתָרַיִךְ וִיתֵדֹתַיִךְ חַזֵּקִי׃
civitates & , hæreditabit gentes tuum semē &: erumpes sinistra & , dextera Quia
3 כִּי־יָמִין וּשְׂמֹאול תִּפְרֹצִי וְזַרְעֵךְ גּוֹיִם יִירָשׁ וְעָרִים
nec, afficieris pudore non quia , timeas Ne. inhabitare facient desolatas
4 נְשַׁמּוֹת יוֹשִׁיבוּ׃ אַל־תִּירְאִי כִּי־לֹא תֵבוֹשִׁי וְאַל־
tuarum adolescentiarum pudoris quippe : confunderis nec quia , erubesces
תִּכָּלְמִי כִּי־לֹא תַחְפִּירִי כִּי בֹשֶׁת עֲלוּמַיִךְ
.amplius recordaberis non tuarum viduitatum opprobrii & , oblivisceris
תִּשְׁכָּחִי וְחֶרְפַּת אַלְמְנוּתַיִךְ לֹא תִזְכְּרִי־עוֹד׃
: ejus nomen Sebaoth Dominus tuus factor , tuus maritus Quia
5 כִּי בֹעֲלַיִךְ עֹשַׂיִךְ יְהוָה צְבָאוֹת שְׁמוֹ
.vocabitur terræ omnis Deus , Israel Sanctus tuus redemptor &
וְגֹאֲלֵךְ קְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל אֱלֹהֵי כָל־הָאָרֶץ יִקָּרֵא׃

Verſio VUL. LAT.

5 Ipſe autem vulneratus eſt pro-
pter iniquitates noſtras, attri-
tus eſt propter ſcelera noſtra :
diſciplina pacis noſtræ ſuper
eum, & livore ejus ſanati ſu-
6 mus. Omnes nos quaſi oves
erravimus, unuſquiſque in viā
ſuam declinavit: & poſuit Do-
minus in eo iniquitatem omni-
7 um noſtrûm. Oblatus eſt quia
ipſe voluit, & non aperuit os
ſuum: ſicut ovis ad occiſionem
ducetur, & quaſi agnus coram
tondente ſe obmuteſcet, & non
8 aperiet os ſuum. De anguſtia,
& de judicio ſublatus eſt : ge-
nerationem ejus quis enarra-
bit ? quia abſciſſus eſt de terra
viventium : propter ſcelus po-
9 puli mei percuſſi eum. Et da-
bit impios pro ſepultura, & di-
vitem pro morte ſua: eò quòd
iniquitatem non fecerit, neque
10 dolus fuerit in ore ejus. Et Do-
minus voluit conterere eum in
infirmitate: ſi poſuerit pro pec-
cato animam ſuam, videbit ſe-
men longævum, & voluntas
Domini in manu ej⁹ dirigetur.
11 Pro eo quòd laboravit anima
ejus, videbit & ſaturabitur : in
ſcientia ſua juſtificabit ipſe ju-
ſtus ſervus meus multos, & ini-
quitates eorum ipſe portabit.
12 Ideò diſpertiam ei plurimos,
& fortium dividet ſpolia, pro
eo quòd tradidit in mortem
animam ſuam, & cum ſcelera-
tis reputatus eſt : & ipſe pec-
cata multorum tulit, & pro
tranſgreſſoribus rogavit.

CAP. LIV.

1 LAuda ſterilis quæ non pa-
ris : decanta laudem, & hinni
quæ non pariebas : quoniam
multi filii deſertæ magis quàm
ejus quæ habet virum, dicit
2 Dñs. Dilata locum tentorii tui,
& pelles tabernaculorum tuo-
rū extende, ne parcas: longos
fac funiculos tuos, & clavos
3 tuos conſolida. Ad dexterā e-
nim & ad lævam penetrabis :
& ſemen tuū Gentes hæredi-
tabit, & civitates deſertas in-
4 habitabit. Noli timere, quia
non confundêris, neque eru-
beſces : non enim te pudebit,
quia confuſionis adoleſcentiæ
tuæ obliviſcêris, & opprobrii
viduitatis tuæ non recordabe-
5 ris ampliús. Quia dominabi-
tur tuî qui fecit te, Dominus
exercituū nomen ejus: & red-
emptor tuus Sanctus Iſrael,
Deus omnis terræ vocabitur.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

5 Αὐτὸς δὲ ἐτραυματίσθη διὰ τὰς (γ) ἁμαρτίας
ἡμῶν, καὶ (δ) μεμαλάκισται διὰ τὰς ἀνομίας
ἡμῶν, παιδεία εἰρήνης ἡμῶν ἐπ' αὐτόν,
6 τῷ μώλωπι αὐτοῦ ἡμεῖς ἰάθημεν. Πάντες
ὡς πρόβατα ἐπλανήθημεν· ἄνθρωπος τῇ
ὁδῷ αὐτοῦ ἐπλανήθη· καὶ κύριος παρέδω-
7 κεν αὐτὸν ταῖς ἁμαρτίαις ἡμῶν, Καὶ αὐ-
τὸς διὰ τὸ κεκακῶσθαι οὐκ ἀνοίγει τὸ
(ε) στόμα αὐτοῦ· ὡς πρόβατον ἐπὶ σφαγὴν
ἤχθη, καὶ ὡς ἀμνὸς ἐναντίον τοῦ (ζ) κείρον-
τος ἄφωνος, οὕτως οὐκ ἀνοίγει (η) τὸ στόμα.
8 Ἐν τῇ ταπεινώσει ἡ κρίσις αὐτοῦ ἤρθη,
τὴν γενεὰν αὐτοῦ τίς διηγήσεται; ὅτι αἴρεται
ἀπὸ τῆς γῆς ἡ ζωὴ αὐτοῦ, ἀπὸ τῶν ἀνομιῶν
9 τοῦ λαοῦ μου ἤχθη εἰς θάνατον. Καὶ δώσω
τοὺς πονηροὺς ἀντὶ τῆς ταφῆς αὐτοῦ, καὶ τοὺς
πλουσίους ἀντὶ τοῦ θανάτου αὐτοῦ· ὅτι ἀνο-
μίαν οὐκ ἐποίησεν, οὐδὲ (θ) δόλον ἐν τῷ
10 στόματι αὐτοῦ· Καὶ κύριος βούλεται καθα-
ρίσαι αὐτὸν (ι) τῆς πληγῆς. ἐὰν δῶτε
περὶ ἁμαρτίας, ἡ ψυχὴ ὑμῶν ὄψεται σπέρ-
11 μα μακρόβιον. καὶ βούλεται κύριος Ἀφελεῖν
ἀπὸ τοῦ πόνου τῆς ψυχῆς αὐτοῦ, δεῖξαι αὐ-
τῷ φῶς, καὶ πλάσαι τῇ συνέσει, δικαιῶ-
σαι δίκαιον εὖ δουλεύοντα πολλοῖς, καὶ
12 τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν αὐτὸς ἀνοίσει. Δια-
τοῦτο αὐτὸς κληρονομήσει πολλούς, καὶ τῶν
ἰσχυρῶν μεριεῖ σκῦλα· ἀνθ' ὧν παρεδόθη
εἰς θάνατον ἡ ψυχὴ αὐτοῦ, καὶ ἐν τοῖς ἀνό-
μοις ἐλογίσθη, καὶ αὐτὸς ἁμαρτίας πολ-
λῶν ἀνήνεγκε, καὶ διὰ τὰς (κ) ἀνομίας αὐ-
τῶν παρεδόθη.

Ipſe autem (d) vulneratus eſt pro- 5
pter peccata noſtra: & infirmatus
eſt propter iniquitates noſtras. Di-
ſciplina pacis noſtræ ſuper eum: li-
vore ejus nos ſanati ſumus. Omnes 6
quaſi oves erravimus: homo in
via ſua erravit. Et Dominus tra-
didit eum (e) propter iniquitates
noſtras: Et ipſe (f) propter afflicti- 7
onem non aperit os ſuum. Sicut o-
vis ad victimam (g) ductus eſt; et
ſicut agnus coram tondente mutus,
ſic non aperit os. In humilitate 8
judicium ejus ſublatum eſt. Gene-
rationem ejus quis enarrabit?
Quia tollitur de terra vita ejus:
ab iniquitatibus populi mei ductus
eſt ad mortem. Et (h) dabo peſſi- 9
mos pro ſepultura ejus, & divites
pro morte illius. Quia iniquita-
tem non fecit, neque (i) dolum in
ore ſuo: Et Dominus vult munda- 10
re eum à plaga. Si (k) dederitis pro
peccato; anima veſtra videbit ſe-
men longævum. Et vult (l) Domi-
nus Auferre de dolore animam e- 11
jus, oſtendere ei lucem, & forma-
re intelligentiâ, juſtificare juſtum
benè ſervientem multis; & pecca-
ta eorum ipſe portabit: Propterea 12
ipſe poſſidebit multos, & fortium
dividet ſpolia: pro eo quòd tradita
eſt ad mortem anima ejus: & in
iniquis reputatus eſt: & ipſe pec-
cata multorum tulit, & propter
iniquitates eorum traditus eſt.

MS.A. (γ) ἀνομίας (δ) ἐμαλακίσθη διὰ τὰς ἁμαρτίας ἡμῶν, (ε) στόμα· ὡς πρόβατον (ζ) κείραντος αὐτόν (η) τὸ στόμα αὐτοῦ. (θ) εὑρέθη δόλος ἐν τῷ (ι) ἀπὸ τῆς πληγῆς. (κ) ἁμαρτίας

ΚΕΦ. νδʹ.

1 Εὐφράνθητι στεῖρα ἡ οὐ τίκτουσα, ῥῆξον
καὶ βόησον ἡ οὐκ ὠδίνουσα, ὅτι πολλὰ τὰ
τέκνα τῆς ἐρήμου, μᾶλλον ἢ τῆς ἐχούσης τὸν
2 ἄνδρα· εἶπε γὰρ κύριος, Πλάτυνον τὸν τό-
πον τῆς σκηνῆς σου, καὶ τῶν αὐλαιῶν σου,
πῆξον, μὴ φείσῃ, μάκρυνον τὰ σχοινίσμα-
τά σου, καὶ τοὺς πασσάλους σου κατίσχυσον,
3 Ἔτι εἰς τὰ δεξιὰ καὶ (α) τὰ ἀριστερὰ ἐκ-
πέτασον. καὶ τὸ σπέρμα σου ἔθνη κληρονο-
μήσει, καὶ πόλεις ἠρημωμένας (β) κατοι-
4 κιεῖς. Μὴ φοβοῦ, ὅτι κατῃσχύνθης, μηδὲ
ἐντραπῇς, ὅτι ὠνειδίσθης, ὅτι αἰσχύνην
αἰώνιον ἐπιλήσῃ, καὶ ὄνειδος τῆς χηρείας
5 σου οὐ μὴ (γ) μνησθήσῃ ἔτι. Ὅτι κύριος
ὁ ποιῶν σε, Κύριος Σαβαὼθ ὄνομα αὐ-
τῷ· καὶ ὁ ῥυσάμενός σε, (δ) αὐτὸς Θεὸς
Ἰσραήλ, πάσῃ τῇ γῇ κληθήσεται.

CAP. LIV.

LÆtare ſterilis, quæ non paris: 1
erumpe, & clama, quæ non par-
turis: quia multi filii deſertæ, quā
ejus, quæ habet virum. Dixit e-
nim Dominus, Dilata locum taber- 2
naculi tui, & (a) aulæorum tuo-
rum: fige, ne parcas: protende
funiculos tuos: & palos tuos con-
forta: Adhuc in dextris & ſini- 3
ſtris dilata. Et ſemen tuum poſſi-
debit gentes: & civitates deſertas
habitare facies. Noli timere, quia 4
confuſa es: neque confundaris, quia
exprobratum tibi eſt. Confuſionem
enim (b) æternam oblivifcêris: &
opprobrii viduitatis tuæ memor
non eris ultrá: Quia Dominus, 5
qui facit te, Dominus Sabaoth no-
men illi: & qui eruit te, ipſe
Deus Iſrael, omni terræ voca-
bitur.

MS.A. (α) εἰς τὰ (β) κατοικήσεις. (γ) μνησθήσῃ. Ὅτι κύριος (δ) Θεὸς αὐτός

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 וְהוּא יִבְנֵי בֵּית מַקְדְּשָׁא דְּאִתְחַל בְּחוֹבָנָא אִתְמְסַר בַּעֲוָיָתָנָא וּבְאוּלְפָנֵיהּ שְׁלָמֵיהּ יִסְגֵּי
6 עֲלָנָא וּכְדִנְצִית לְפִתְגָּמוֹהִי חוֹבָנָא יִשְׁתַּבְקוּן לָנָא׃ כּוּלָנָא כְּעָנָא אִתְבַּדַּרְנָא גְּבַר לְקֳבֵל
7 אוֹרְחֵיהּ גְּלֵינָא וּמִן קֳדָם יְיָ הֲוָת רַעֲוָא לְמִשְׁבַּק חוֹבֵי כוּלָנָא בְּדִילֵיהּ׃ בָּעֵי וְהוּא מִתְּתַב וְעַד
לָא פְתַח פּוּמֵּיהּ מִתְקַבַּל תַּקִּיפֵי עַמְמַיָּא כְּאִמְּרָא לְנִכְסְתָא יִמְסַר וּכְרַחֲלָא דִּקְדָם גָּזְזַהָא
8 שָׁתְקָא וְלֵית לְקַבְלֵיהּ דְּפָתַח פּוּמֵּיהּ מְמַלֵּל מִלָּא׃ מִיסּוּרִין וּמִפּוּרְעָנוּ יְקָרֵיב גָּלְוָתַנָא
וּפְרִישָׁן דְּיִתְעַבְדָן לָנָא בְּיוֹמוֹהִי מַן יִכּוּל לְאִשְׁתָּעָאָה אֲרֵי יַעְדֵּי שׁוּלְטָן עַמְמַיָּא מֵאַרְעָא
9 דְּיִשְׂרָאֵל חוֹבִין דְּחָבוּ עַמִּי עַד לְוָתְהוֹן יִמְטוּ׃ וְיִמְסַר יָת רַשִׁיעַיָּא לְגֵיהִנֹּם וְיָת עַתִּירֵי נִכְסַיָּא
דַּאֲנַסוּ בְּמוֹתָא דְּאַבְדָנָא בְּדִיל דְּלָא יִתְקַיְּמוּן עָבְדֵי חֶטְאָה וְלָא יְמַלְּלוּן נִכְלִין בְּפוּמְהוֹן׃
10 וּמִן קֳדָם יְיָ הֲוָת רַעֲוָא לְמִצְרַף וּלְדַכָּאָה יָת שְׁאָרָא דְּעַמֵּיהּ בְּדִיל לְנַקָּאָה מֵחוֹבִין נַפְשְׁהוֹן
יֶחֱזוּן בְּמַלְכוּת מְשִׁיחֲהוֹן יִסְגּוּן בְּנִין וּבְנָן יוֹרְכוּן יוֹמִין וְעָבְדֵי אוֹרַיְתָא דַּיְיָ בִּרְעוּתֵיהּ
11 יִצְלְחוּן׃ מִשִּׁעְבּוּד עַמְמַיָּא יְשֵׁיזֵב נַפְשְׁהוֹן יֶחֱזוּן בְּפוּרְעָנוּת סָנְאֵיהוֹן יִסְבְּעוּן מִבִּזַּת מַלְכֵיהוֹן
12 בְּחוּכְמְתֵיהּ יְזַכֵּי זַכָּאִין בְּדִיל לְשַׁעְבָּדָא סַגִּיאִין לְאוֹרַיְתָא וְעַל חוֹבֵיהוֹן הוּא יִבְעֵי׃ בְּכֵן
אֲפַלֵּג לֵיהּ בִּזַּת עַמְמִין סַגִּיאִין וְיָת נִכְסֵי כְּרַכִּין תַּקִּיפִין יְפַלֵּג עֲדָאָה חֲלַף דִּמְסַר לְמוֹתָא
נַפְשֵׁיהּ וְיָת מָרוֹדַיָּא שַׁעְבֵּיד לְאוֹרַיְתָא וְהוּא עַל חוֹבִין סַגִּיאִין יִבְעֵי וְלִמְרוֹדַיָּא יִשְׁתְּבֵק
בְּדִילֵיהּ׃

נד

1 שַׁבַּחִי יְרוּשְׁלֵם דַּהֲוָת כְּאִתְּתָא עֲקָרָה דְּלָא יְלֵידַת בּוּעִי תּוּשְׁבַּחְתָּא וְדוּצִי דַּהֲוָת כְּאִתְּתָא דְּלָא
2 עֲדִיאַת אֲרֵי סַגִּיאִין יְהוֹן בְּנֵי יְרוּשְׁלֵם צְדִיתָא מִבְּנֵי כְּרַכָּא יְתִיבְתָּא אֲמַר יְיָ׃ אַפְּתַאי אֲתַר
3 בֵּית מַשְׁרִיךְ וּמִקְרְוֵי אַרְעִיךְ יָתְבֵי לָא תִמְנְעִין אַסְגַּאִי עַם מַשְׁרְיָתִיךְ וְשִׁלְטוֹנַיִךְ תַּקִּיפִי׃ אֲרֵי
4 לְדָרוֹמָא וְלִצְפוּנָא תִּתְקְפִין וּבְנַיִךְ עַמְמִין יֵירְתוּן וְקִרְוִין דְּצַדְיָן יְיַתְּבוּן׃ לָא תִדְחֲלִין אֲרֵי
לָא תִבְהֲתִין וְלָא תִתְכַּנְעִין אֲרֵי לָא תִתְכַּלְמִין אֲרֵי בַּהֲתַת עוּלֵימוּתִיךְ תִּתְנַשִׁין וְחִסּוּדֵי
5 אַרְמְלוּתִיךְ לָא תִדְכְּרִין עוֹד׃ אֲרֵי מָרִיךְ דְּעָבְדִיךְ יְיָ צְבָאוֹת שְׁמֵיהּ וּפָרְקִיךְ קַדִּישָׁא
דְּיִשְׂרָאֵל אֱלָהּ כָּל אַרְעָא יִתְקְרֵי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et ipſe ædificabit domum ſanctuarii, quod violatum eſt propter peccata 5
noſtra, & traditum eſt propter iniquitates noſtras. Et in doctrina ej⁹ mul-
tiplicabitur pax ſuper nos: & cùm obedierim⁹ verbis ej⁹, dimittentur nobis
peccata noſtra. Omnes nos quaſi oves diſperſi ſumus, unuſquiſque verſus 6
viam ſuam migravimus : & à facie Dñi voluntas fuit, ut dimitteret peccata
noſtra propter eum. Deprecat⁹ eſt, ipſe exaudit⁹ eſt, & antequàm aperiret os 7
ſuum accept⁹ eſt. Robuſtos populorum quaſi agnum ad victimam tradet; &
ſicut ovem quæ tacet coram tondente ſe, & non erit qui aperiat os ſuum in
conſpectu ej⁹, & loquatur verbum. Ex infirmitatib⁹ & ultione congregabit 8
captivitatem noſtram : & mirabilia quæ fient nobis in dieb⁹ ejus quis po-
terit enarrare? quia auferet dominiū populorū de terra Iſrael: peccata quæ
peccaverunt popul⁹ meus, uſq; ad eos pervenient. Et tradet impios in ge- 9
hennam, & divites ſubſtantiis qui vim attulerunt morte exitioſa, ut non
permaneant facientes peccatum, neq; loquantur dolum in ore ſuo. A facie 10
Dñi voluntas fuit, ut conflaret & mundaret reſiduum populi ſui, ut purifi-
caret à peccatis animas eorum: videbunt regnum Chriſti ſui, multiplicabunt
filios & filias, prolongabuntur dies eorum: & facientes legem Dñi, in vo-
luntate ejus dirigentur. A ſubjectione populorum liberabit animas eorum; 11
videbunt ultionem de inimicis ſuis, ſaturabuntur præda regū eorum. In ſa-
pientia ſua juſtificabit juſtos, ut ſubjiciat multos Legi : & pro peccatis eo-
rum ipſe deprecabitur. Ideò *dividam ei* prædā populorum multorum, & 12
divitias civitatū fortiū: dividet ſpolia, eò quòd tradidit morti animā ſuam,
& tranſgreſſores ſubjecit Legi: & ipſe pro peccatis multorū deprecabitur,
et tranſgreſſoribus dimittetur propter eū.

CAP. LIV.

LAuda Jeruſalem, quæ eras quaſi mulier ſterilis quæ non peperit : exulta 1
in laude, et gaude quæ eras quaſi mulier quæ non concepit : quoniam
plures futuri ſunt filii Jeruſalem deſertæ, quàm filii urbis habitabilis dicit
Dñs. Dilata locū domus habitationis tuæ, et à civitatibus terræ tuæ ne ha- 2
bitatores arceas: multiplica populū caſtrorū tuorum, et principes tuos cor-
robora. Quoniā ad Auſtrum et ad Aquilonem confortaberis, et filii tui po- 3
pulos hæreditabunt, et civitates quæ deſertæ ſunt habitabiles reddent. Ne 4
timeas, quia non confundêris; neq; erubeſcas, quoniam non te pudebit: quia
confuſionis adoleſcentiæ tuæ oblivifcêris, et opprobrii viduitatis tuæ non
recordaberis amplius. Quia dominator tuus qui fecit te, Dominus exerci- 5
tuum nomen ejus, & redemptor tuus Sanctus Iſrael, Deus omnis terræ vocabitur.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܘ ܡܬܩܛܠ ܡܛܠ ܚܛܗܝܢ. ܘܡܬܡܟܟ ܡܛܠ ܥܘܠܢ. ܡܪܕܘܬܐ ܕܫܠܡܢ. 5
ܥܠܘܗܝ. ܘܒܫܘܡܘܗܝ ܢܬܐܣܐ. * ܟܠܢ ܐܝܟ ܥܢܐ ܛܥܝܢ. ܘܐܢܫ ܠܨܒܝܢܗ ܦܢܝܢ. ܘܡܪܝܐ 6
ܐܦܓܥ ܒܗ. ܚܛܗܐ ܕܟܠܢ. * ܩܪܒ ܘܐܬܡܟܟ. ܘܠܐ ܦܬܚ ܦܘܡܗ. ܐܝܟ ܐܡܪܐ ܠܢܟܣܬܐ 7
ܐܬܕܒܪ. ܘܐܝܟ ܢܩܝܐ ܩܕܡ ܓܙܘܙܐ. ܫܬܝܩ ܗܘܐ. ܘܠܐ ܦܬܚ ܦܘܡܗ. * ܡܢ ܐܚܘܕܝܐ ܘܡܢ 8
ܕܝܢܐ ܐܬܕܒܪ. ܘܫܪܒܬܗ ܡܢܘ ܢܫܬܥܐ. ܡܛܠ ܕܐܬܓܙܪ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܚܝܐ. ܘܡܢ ܥܘܠܐ ܕܥܡܝ
ܩܪܒܘ ܠܗ. * ܢܬܠ ܪܫܝܥܐ ܩܒܪܗ. ܘܥܬܝܪܐ ܒܡܘܬܗ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܥܒܕ ܥܘܠܐ: ܘܠܐ ܐܫܬܟܚ ܢܟܠܐ 9
ܒܦܘܡܗ. * ܘܡܪܝܐ ܨܒܐ ܕܢܡܟܟܝܘܗܝ ܘܢܟܐܒܝܘܗܝ. ܘܐܬܬܣܝܡ ܚܛܗܐ ܥܠ ܢܦܫܗ. ܕܢܚܙܐ. 10
ܙܪܥܐ. ܘܢܘܪܟ ܝܘܡܬܐ. ܘܨܒܝܢܗ ܕܡܪܝܐ ܒܐܝܕܗ ܢܬܟܫܪ. * ܘܡܢ ܥܡܠܐ ܕܢܦܫܗ ܢܚܙܐ. 11
ܘܢܣܒܥ ܒܝܕܥܬܐ. ܘܢܙܕܩ ܠܙܕܝܩܐ. ܥܒܕܐ ܗܘ ܕܣܓܝܐܐ. ܘܚܛܗܝܗܘܢ ܗܘ ܢܣܝܒܠ.
* ܡܛܠܗܢܐ ܐܦܠܓܝܘܗܝ ܠܣܓܝܐܐ. ܘܥܡ ܥܫܝܢܐ ܢܦܠܓ ܒܙܬܐ. ܡܛܠ ܕܐܫܕ ܠܡܘܬܐ ܢܦܫܗ 12
ܘܥܡ ܥܘܠܐ ܐܬܡܢܝ. ܘܗܘ ܚܛܗܐ ܕܣܓܝܐܐ ܫܩܠ. ܘܠܥܘܠܐ ܦܓܥ.

* ܫܠܡ * ܢܓ *

* ܫܒܚܝ ܥܩܪܬܐ ܕܠܐ ܝܠܕܬ. ܘܐܬܦܨܚܝ ܒܬܫܒܘܚܬܐ ܘܪܘܙܝ ܕܠܐ ܚܒܠܬ. ܡܛܠ 1
ܕܣܓܝܐܝܢ ܒܢܝܗ ܕܨܕܝܬܐ. ܡܢ ܒܢܝܗ ܕܒܥܠܬܐ. * ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܦܬܝ ܐܬܪܐ 2
ܕܡܫܟܢܝܟܝ. ܘܝܪܝܥܬܐ ܕܡܫܟܢܝܟܝ. ܡܬܚܝ ܘܠܐ ܬܚܘܣܝܢ. ܐܘܪܟܝ ܚܒܠܝܟܝ.
ܘܣܟܬܝܟܝ ܥܫܢܝ. * ܡܛܠ ܕܠܝܡܝܢܐ ܘܠܣܡܠܐ ܬܬܦܫܝܢ. ܘܙܪܥܟܝ ܢܐܪܬ ܥܡܡܐ. 3
ܘܡܕܝܢܬܐ ܚܪܝܒܬܐ ܢܬܝܬܒܢ. * ܠܐ ܬܕܚܠܝܢ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܬܒܗܬܝܢ. ܘܠܐ ܬܬܚܦܝܢ. ܡܛܠ ܕܠܐ
ܬܚܦܪܝܢ. ܡܛܠ ܕܒܗܬܬܐ ܕܛܠܝܘܬܟܝ ܬܛܥܝܢ. ܘܚܣܕܐ ܕܐܪܡܠܘܬܟܝ ܬܘܒ ܠܐ ܬܬܕܟܪܝܢ. 4
* ܡܛܠ ܕܡܪܝܟܝ ܥܒܕ ܠܟܝ ܗܟܢܐ. ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ. ܘܦܪܘܩܟܝ ܩܕܝܫܐ 5
ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܠܗܐ ܕܟܠܗ ܐܪܥܐ ܢܬܩܪܐ.

Ipſe occiditur propter peccata noſtra, & 5
humiliatur propter ſcelus noſtrum: caſtigatio
pacis noſtræ ipſi imponitur, & cicatricibus
ejus curabimur. Omnes ut oves erravi- 6
mus, quiſque in *placitum* ſibi latus nos convertimus;
Dominus autem fecit ut irruerent
in eum peccata omnium noſtrûm. Acceſſit, 7
& humiliavit ſe, nec aperuit os ſuum: tanquam
agnus ad mactationem ductus eſt, &
velut ovis coram tonſore obmutuit, nec aperuit
os ſuum. E carcere & ex judicio raptus 8
eſt; at generationem ejus quis enarrabit?
nam ſucciſus eſt è terra viventium, & ex iniquis
populi mei tetigerunt eum: Contribuit 9
impius ad ſepulchrum ejus, & dives ad mortem
ipſius. Licèt non cõmiſerit iniquitatem,
nec ſit dolus in ore ipſius; Dominus tamen 10
voluit humiliare eum & doloribus afficere.
Impoſitũ eſt peccatũ animæ ipſius, ut videret
ſemen, & prorogaret dies, & voluntas Dñi
per eum proſperaretur, E ſuimetipſius labore 11
videret, & juſtos ſcientiâ ſaturaret atq; juſtificaret.
Servus erit multorũ, & eorũ peccata
ipſe portabit: Iccirco diſtribuam eum inter 12
multos, & inter robuſtos dividet ſpolia; pro
eo quòd animã ſuam effuderit in mortem, et
cum iniquis connumeratus ſit, idémq; peccata
multorũ pertulerit, & obvius fuerit iniquis.

CAP. LIV.

CAne ſterilis quæ non peperit, exhilarare 1
cantu & exulta quæ non parturivit; quia plures
futuri ſunt filii deſolatæ quàm conjugatæ.
Dicit Dominus, Dilata locum tentoriorum 2
tuorum, cortinas tabernaculorũ tuorũ extende,
& ne parcas; produc funiculos tuos, &
clavos tuos confirma. Nam dextrorſum & ſi- 3
niſtrorſum creſces, & ſemen tuum poſſidebit
gentes, & civitates deſolatas reddent habitabiles.
Ne timeas, quia non erubeſces; & ne 4
te contegas, quia non pudefies: nam verecundiæ
pueritiæ tuæ obliviſceris, & probri
viduitatis tuæ non recordaberis ampliús.
Nam Dominus tuus ita tecum acturus eſt, cujus
nomen eſt Dominus potentiſſimus; &
redemptor tuus Sanctus Iſraelis, totius terræ
Deus vocabitur.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

5 6 * وهو جرح لاجل اثامنا * وتوجع لاجل خطايانا * ادب سلامتنا عليه * بجراحه نحن شفينا * مثل
7 خراف ضللنا باجمعنا * والانسان في طريقه ضل * والرب اسلمه لخطايانا * وهو عندما توجع
لم يفتح فاه * مثل خروف سيق الي الذبح * ومثل حمل امام من يجز بغير صوت * هكذا لم
8 يفتح فاه في تواضعه * حكمه رفع * وجيله من يقصه * لان حياته ارتفعت من الارض * ومن
9 اثام شعبي سيق للموت * واكافي الاشرار عوض دفنه * والاغنياء عوض موته * لانه لم يصنع
10 اثما * ولم يوجد في فيه غش * وشاء الرب ان يطهره من الجراح * فان اعطيتم لنفوسكم
11 عن الخطية * ترون ذرية طويلة العمر * والرب شاء بيده ان ينزع من تعب نفسه * ليظهر له
12 نورا ويجبله بالفهم * ليبرر الصديق ويتعبد حسنا للكثيرين * وهو يصعد خطاياهم * لاجل
هذا هو يرث الكثيرين * ويقسم غنايم الاقوياء * عوض ما اسلمت نفسه للموت وحسب في الاثمة *
وهو رفع خطايا كثيرين * ومن اجل خطاياهم اسلم *

* الفصل الرابع والخمسون * * الاصحاح السادس والعشرون *

* في رد سبي بني اسرايل الي ايروشليم وبشارته لايروشليم *

1 * افرحي ايتها العاقر التي لم تلد * شيعي واصرخي ايتها التي لم تطلق * لان بني
2 المقفرة اكثر من التي لها رجل * لان الرب قال * وسعي موضع قبتك * وديارك انصبي *
3 لا تشفقي * طولي حبالك * وقوي اوتادك * مدي يمينا وشمالا ايضا * وزرعك يرث الامم *
4 يسكن المدن الخربة * ولا تخشي انك تخزي * ولا تخجلي انك تعيري * لانك تنسي
5 الخزي الابدي * ولا تذكري عار ترملك * لان الرب الذي صنعك رب الجيوش اسمه *
ومنجيك هو الاه اسرايل يدعي في كل الارض *

Ipſe verò vulneratus eſt propter iniqui- 5
tates noſtras, & dolores paſſus propter
peccata noſtra, caſtigatio pacis noſtræ impoſita
eſt ei, per ejus vulnera nos ſanati
ſumus. Sicut oves erravimus omnes, 6
& quiſque per viam ſuam erravit; Dominus
autem tradidit eum peccatis noſtris.
Et ipſe dum pateretur dolores, non 7
aperuit os ſuum: ut ovis ductus eſt ad
jugulationem; & ut agnus coram tondente
eſt ſine voce, ſic non aperuit os
ſuum dum humiliaretur. Judicium e- 8
jus altum eſt, & generationem ejus quis
enarret? vita quidem ipſius ablata eſt è
terra, & ab iniquitatibus populi mei ductus
eſt ad mortem: At rependam ini- 9
quis pro ſepultura ejus, & divitibus pro
morte ipſius, Quia non fecit iniquitatem,
nec inventus eſt in ore ejus dolus; Ideò 10
voluit eum Dominus mundare à vulneribus.
Quòd ſi dederitis animas veſtras
pro peccato, videbitis generationem longævæ
ætatis. Dominus inquam, voluit 11
manu ſuâ eum eripi à labore animæ ipſius,
ut oſtenderet ei lucem, & cingeret eum
prudentiâ; ad hoc ut juſtificaret juſtum,
& decenter ſubderet ſe multis, idémque
tolleret peccata eorum. Hac de cauſa 12
multos ipſe poſſidebit, & partietur ſpolia
fortium; pro eo ſcilicet quòd tradita ſit
anima ejus ad mortem, & annumeratus ſit
inter iniquos, quòd tulerit peccata multorum,
& propter peccata eorũ traditus ſit.

CAP. LIV.

Textus vigeſimus ſextus.

De reductione captivitatis filiorũ Iſrael Jeroſolymam: ejuſdémque prædictio ad Jeroſolymam.

LÆtare O ſterilis quæ non peperit, e- 1
rumpe & clama quæ non eſt paſſa dolores
partûs: quoniam filii ſolitariæ plures
erunt quàm ejus quæ habet maritum. Ait 2
enim Dominus, Amplifica locum tentorii
tui, domicilium tuum erige, ne parcas, prolonga
funiculos tuos, & paxillos tuos confirma;
Extende dextrorſum atque ſini- 3
ſtrorſum etiam: nam ſemen tuum poſſidebit
gentes, habitabis urbes dirutas. Et ne vere- 4
aris quin pudefias, neve erubeſcas quòd
probris afficienda ſis: quoniam obliviſceris
priſtinæ verecundiæ, nec recordaberis opprobrii
viduitatis tuæ. Nam Domini qui te 5
fecit, nomen eſt Dominus exercituum; &
Salvator tuus, ipſe Deus Iſraelis vocabitur
in tota terra.

ישעיה: נה

: Dominus te vocavit ſpiritu *afflictam* & ,derelictam mulierem ſicut Quia
6 כי־כאשה עזובה ועצובת רוח קראך יהוה
momento In.tuus Deus dixit,fuiſti *reprobata* quia ,*adoleſcentiarũ* uxorem &
7 ואשת נעורים כי תמאס אמר אלהיך : ברגע
modico In .te congregabo magnis miſerationibus in &:te dereliqui parvo
8 קטן עזבתיך וברחמים גדולים אקבצך : בשצף
ſeculi miſericordia in & ,te à momento *meæ facies* abſcondi iræ
קצף הסתרתי פני רגע ממך ובחסד עולם
hoc Noach *aquæ Quia* .Dominus tuus redemptor dixit : tui ſum miſertus
9 רחמתיך אמר גאלך יהוה: כי־מי נח זאת
ſic : terram ſuper ultrà Noach *aquas tranſeundo à* juravi cui ,mihi
לי אשר נשבעתי מעבר מי־נח עוד על־הארץ כן
montes Nam .te *in increpando ab &* ,te contra *iraſcendo ab* juravi
10 נשבעתי מקצף עליך ומגער־בך : כי ההרים
, recedet non te à mea miſericordia &:nutabunt colles & , *recedent*
ימושו והגבעות תמוטינה וחסדי מאתך לא־ימוש
.Dominus tuus miſerator dixit ,ſe movebit non meæ pacis fœdus &
וברית שלומי לא תמוט אמר מרחמך יהוה:
accubare faciens ego ecce : *lenita conſolatione non* , *jactata turbine* , *Afflicta*
11 עניה סערה לא נחמה הנה אנכי מרביץ
ponam Et .ſapphiris in te fundabo & , tuos lapides carbunculo in
12 בפוך אבניך ויסדתיך בספירים : ושמתי
: *rutilantis gemmæ* lapidibus ex tuas portas & ,tuas feneſtras *cryſtallum*
כדכד שמשתיך ושעריך לאבני אקדח
tui filii univerſi Et .*beneplaciti* lapidibus ex tuum terminum omnem &
13 וכל־גבולך לאבני־חפץ : וכל־בניך
: fundaberis juſtitia In .tuorum filiorum *pax multa &* : *Domini* docti
14 למודי יהוה ורב שלום בניך : בצדקה תכונני
quia , contritione à & ; timebis non quia , oppreſſione ab te elonga
רחקי מעשק כי־לא תיראי וממחתה כי
: me ex non *peregrinabitur peregrinando En* .te ad appropinquabit non
15 לא־תקרב אליך: הן גור יגור אפס מאותי
creavi ego Ecce .cadet ,te contra tecum *peregrinans* quiſquis
16 מי־גר אתך עליך יפול: הן אנכי בראתי
: ſuum opus in vas proferentem & , *prunam* igne in ſufflantem fabrum
חרש נפח באש פחם ומוציא כלי למעשהו
fictum vas Omne .*corrumpendum ad vaſtatorem* creavi ego &
17 ואנכי בראתי משחית לחבל : כל־כלי יוצר
judicio in *tecum* ſurget linguam omnem &,proſperabitur non te contra
עליך לא יצלח וכל־לשון תקום־אתך למשפט
eorum juſtitia & , Domini ſervorum hæreditas hæc : condemnabis
תרשיעי זאת נחלת עבדי יהוה וצדקתם
.Dominus dixit mecum à
מאתי נאם־יהוה :

CAP. LV. נה

, *ite* : *argentum ei non cui &* ,aquas ad *ite ſitiens omnis* O
1 הוי כל־צמא לכו למים ואשר אין־לו כסף לכו
pretio abſque & , argento abſque emite , *ite &* ,comedite & , emite
שברו ואכלו ולכו שברו בלוא־כסף ובלוא מחיר
, pane non in argentum *appenditis* Quare .lac & , vinum
2 יין וחלב : למה תשקלו־כסף בלוא־לחם
comedite & ,me ad audiendo audite ? *ſaturitatem ad non in* veſtrũ laborẽ &
ויגיעכם בלא לשבעה שמעו שמוע אלי ואכלו־
veſtram aurẽ Inclinate .veſtra anima craſſitudine in delectabitur &,bonum
3 טוב ותתענג בדשן נפשכם : הטו אזנכם
pactum *vobis excidam* & : veſtra anima vivet &,audite ; me ad venite &
ולכו אלי שמעו ותחי נפשכם ואכרתה לכם ברית
.ſtabiles David miſericordias *ſeculi*
עולם חסדי דוד הנאמנים :

Verſio VUL. LAT.

6 Quia ut mulierem derelictam & mœrentem ſpiritu vocavit te Dominus, & uxorẽ ab adoleſcentia abjectam, dixit Deus 7 tuus. Ad punctum in modico dereliqui te, & in miſerationi-8 bus magnis congregabo te. In momento indignationis abſcondi faciem meam parumper à te, & in miſericordia ſempiterna miſertus ſum tuî : dixit 9 redemptor tuus Dominus. Sicut in diebus Noë iſtud mihi eſt, cui juravi ne inducerem aquas Noë ultrà ſupra terram : ſic juravi ut non iraſcar tibi, 10 & non increpem te. Montes enim commovebuntur, & colles contremiſcent : miſericordia autem mea non recedet à te, & fœdus pacis meæ non movebitur : dixit miſerator 11 tuus Dñs. Paupercula, tempeſtate convulſa, abſq; ulla conſolatione. Ecce ego ſternam ꝑ ordinem lapides tuos, & fun-12 dabo te in ſapphiris, Et ponã jaſpidem propugnacula tua: et portas tuas in lapides ſculptos, & omnes terminos tuos in la-13 pides deſiderabiles : Univerſos filios tuos doctos à Domino; & multitudinem pacis filiis 14 tuis. Et in juſtitia fundaberis: recede procul à calumnia, quia non timebis; & à pavore, quia 15 non appropinquabit tibi. Ecce accola veniet, qui non erat mecum, advena quondã tuus ad-16 jungetur tibi. Ecce ego creavi fabrũ ſufflantẽ in igne prunas, & proferentem vas in opꝰ ſuum, & ego creavi interfecto-17 rem ad diſperdendum, Omne vas, quod fictum eſt contra te, non dirigetur : & omnem linguam reſiſtentem tibi in judicio, judicabis. Hæc eſt hæreditas ſervorum Domini; & juſtitia eorum apud me, dicit Dominus.

CAP. LV.

1 OMnes ſitientes venite ad aquas: & qui non habetis argentum, properate, emite, et comedite : venite, emite abſque argento, & abſque ulla commu-2 tatione vinum & lac. Quarè appenditis argentũ non in panibus, & laborem veſtrum non in ſaturitate? Audite audientes me, & comedite bonum, & delectabitur in craſſitudine ani-3 ma veſtra. Inclinate aurem veſtram, & venite ad me : audite, & vivet anima veſtra, & feriam vobiſcum pactum ſempiternum, miſericordias David fideles.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

6 Οὐχ ὡς γυναῖκα καταλελειμμένην καὶ ὀλιγόψυχον κέκληκέ σε (ε) ὁ κύριος, οὐδ᾽ ὡς γυναῖκα ἐκ νεότητος μεμισημένην, εἶπεν 7 ὁ θεός σου. Χρόνον μικρὸν κατέλιπόν σε, καὶ 8 (ʺ)μετ᾽ ἐλέους μεγάλου ἐλεήσω σε. Ἐν θυμῷ μικρῷ ἀπέστρεψα τὸ πρόσωπόν μου ἀπὸ σοῦ, καὶ ἐν ἐλέει αἰωνίῳ (ζ) ἐλεήσω σε, εἶπεν ὁ 9 ῥυσάμενός σε κύριος. Ἀπὸ τοῦ ὕδατος τοῦ ἐπὶ Νῶε τοῦτό μοι ἐστί· καθότι ὤμοσα αὐτῷ ἐν τῷ χρόνῳ ἐκείνῳ, τῇ γῇ μὴ θυμωθήσεσθαι ἐπὶ σοὶ ἔτι, μηδὲ ἐν ἀπειλῇ σου 10 τὰ ὄρη μεταστήσεσθαι, (η) οὐδ᾽ οἱ βουνοί σου μετακινηθήσονται· οὕτως οὐδὲ τὸ παρ᾽ ἐμοῦ σοι ἔλεος ἐκλείψει, οὐδὲ ἡ διαθήκη τῆς εἰρήνης σου οὐ μὴ μεταστῇ· εἶπε γὰρ (θ) ἵλεώς 11 σοι κύριος, Ταπεινὴ καὶ ἀκατάστατος οὐ παρεκλήθης. ἰδοὺ ἐγὼ ἑτοιμάζω σοι ἄνθρακα τὸν λίθον σου, καὶ τὰ θεμέλιά σου 12 σάπφειρον, Καὶ θήσω τὰς ἐπάλξεις σου ἴασπιν, καὶ τὰς πύλας σου λίθους κρυστάλλου, 13 καὶ τὸν περίβολόν σου λίθους ἐκλεκτούς. Καὶ πάντας τοὺς υἱούς σου διδακτοὺς θεοῦ, καὶ ἐν 14 πολλῇ εἰρήνῃ τὰ τέκνα σου. Καὶ ἐν δικαιοσύνῃ οἰκοδομηθήσῃ· ἀπέχου ἀπὸ ἀδίκου, καὶ οὐ φοβηθήσῃ, καὶ τρόμος οὐκ ἐγγιεῖ σοι. 15 Ἰδοὺ προσήλυτοι προσελεύσονταί σοι δι᾽ ἐμοῦ, καὶ (ι) παροικήσουσί σοι, καὶ ἐπὶ σὲ 16 καταφεύξονται. Ἰδοὺ ἐγὼ (κ) ἔκτισά σε, οὐχ ὡς χαλκεὺς φυσῶν ἄνθρακας, καὶ ἐκφέρων σκεῦος εἰς ἔργον· ἐγὼ δὲ ἔκτισά σε, 17 οὐκ εἰς ἀπώλειαν φθεῖραι. Πᾶν σκεῦος (λ) σκευαστὸν ἐπὶ σέ, οὐκ εὐοδώσω· καὶ πᾶσα φωνὴ ἀναστήσεται ἐπὶ σὲ εἰς κρίσιν, πάντας αὐτοὺς ἡττήσεις, οἱ δὲ ἔνοχοί σου ἔσονται ἐν αὐτῇ. ἔστι κληρονομία τοῖς θεραπεύουσιν (μ) κύριον, καὶ ὑμεῖς ἔσεσθέ μοι δίκαιοι, λέγει κύριος.

MS.A. (ε) κύριος, (ʺ) μου (ζ) ἠλέησά σε, (η) οὐδὲ (θ) κύριος ἵλεώς σοι, Ταπεινὴ (ι) ἐπὶ σὲ καταφεύξονται. (κ) κτίζω σε, οὐχ ὡς χαλκεὺς (λ) φθαρτὸν, ἐπὶ δὲ σὲ οὐκ εὐδοκήσω· καὶ πᾶσα φωνὴ ἣ ἀναστήσεται (μ) κυρίῳ,

Non ut mulierem derelictam, & puſillanimem vocavit te Dominus; neque ut mulierem, quæ ab adoleſcentia odioſa eſt, dixit Deus tuus: 6 *Tempore modico reliqui te: & cum miſericordia magna miſerebor tuî. In furore parvo averti faciem meam à te: & in miſericordia ſempiterna miſerabor tuî; dixit, qui eruit te Dominus. Ab aqua, quæ fuit ſub Noe, hoc mihi eſt: ſicut juravi ei in tempore illo, terræ nequaquam ultrà iraſci ſuper te, neque in comminatione tua Montes transferre: neque colles tui transferentur: Sic neque, quæ à me tibi miſericordia, deficiet: Nec teſtamentum pacis (c) tuæ auferetur. Dixit enim propitius tibi (d) Domine; Humilis, & inſtabilis non habuiſti conſolationem. (e) Ecce ego præparo tibi carbunculum lapidem tuum, & fundamenta tua Sapphirum: Et ponam propugnacula tua Jaſpin: & portas tuas lapides Cryſtalli: & murum tuum lapides electos, Et omnes filios tuos diſcipulos Dei: & in multa pace filii tui: Et in juſtitia ædificaberis. Recede ab iniquo; & non timebis, & tremor non appropinquabit tibi. Ecce proſelyti accedent ad te per me: & coloni erunt tui, & ad te confugient. Ecce ego creavi te; non ut ærarius (f) ſufflans prunas, & proferens vas in opus. Ego autem creavi te, non in perditionem interficere. Omne vas, quod factum eſt contra te, (g) non proſperabo: & omnis vox ſurget contra te in judicium; omnes eos vinces: & obnoxii tuî erunt in ea. Eſt hæreditas ſervientibus Domino: & vos eritis mihi juſti, dicit Dominus.* 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17

ΚΕΦ. νε΄.

1 Οἱ διψῶντες πορεύεσθε ἐφ᾽ ὕδωρ, καὶ ὅσοι μὴ ἔχετε ἀργύριον, βαδίσαντες ἀγοράσατε, καὶ (α) φάγετε ἄνευ ἀργυρίου καὶ τιμῆς (β) 2 οἴνου καὶ στέαρ. Ἵνα τί τιμᾶσθε ἀργυρίου, καὶ τὸν μόχθον ὑμῶν οὐκ εἰς πλησμονήν; ἀκούσατέ μου, καὶ φάγεσθε ἀγαθά, καὶ ἐντρυφήσει ἐν 3 ἀγαθοῖς ἡ ψυχὴ ὑμῶν. Προσέχετε τοῖς (γ) ὠσὶν ὑμῶν, καὶ ἐπακολουθήσατε ταῖς ὁδοῖς μου· (δ) εἰσακούσατέ μου, καὶ ζήσεται ἐν ἀγαθοῖς ἡ ψυχὴ (ε) ὑμῶν, καὶ διαθήσομαι ὑμῖν διαθήκην αἰώνιον, τὰ ὅσια Δαυὶδ τὰ πιστά.

CAP. LV.

Qui ſititis, ite ad aquam: & quotquot non habetis pecuniam, euntes emite, & (a) comedite ſine argento et pretio, vinum et adipem. Quare emitis (b) pecuniâ, et laborem veſtrum non in ſaturitatẽ? Audite me, et comedite bona: et delectabitur in bonis anima veſtra. Attendite auribus veſtris, et ſequimini vias meas: exaudite me; et vivet in bonis anima veſtra. Et conſtituam vobis teſtamentum æternum, ſancta David fidelia. 1 2 3

MS.A. (α) πίετε (β) *οἶνον (γ) ὠτίοις (δ) ἐπακούσατε (ε) ἡμῶν,

תרגום יונתן , Targum JONATHAN.

6 ארי כאתא שביקא ועיקרת רוח ערעך שכנתא דיי וכאתת עולמין דאתרחקת אמר
7 אלהיך : ברגז זעיר רחקתיך וברחמין סגיאין אקרב גלותך : בשעא זעירא סלקית
8 אפי שכנתי זמן זעירא מניך ובטבות עלם דלא פסקן ארחם עלך אמר פרקיך יי :
9 כיומי נוח דא קדמי דקימית במימרי דלא יעדון מי טופנא דהוו ביומי נוח עוד
10 על ארעא כן קימית במימרי דלא יחול רוגזי עלך ולא אזוף ביך : ארי טוריא יעדון
ורמתא יתפרקון וטובי מניך ירושלם לא יעדי וקים שלמי לא יתרחק אמר דעתיד
11 לרחמא עלך יי : חשיכתא מקבלא עולבן קרתא דאמרין עלה עממיא לא תתנחם
12 הא אנא כביש בצדידא אבני רצפתיך ואשכללניך באבנין טבין : ואשוי במרגלין אעך
13 ותרעיך לאבני גמר וכל תחומך לאבני צרוך : וכל בניך אלפין באוריתא דיי וסגי
14 יהי שלם בנך : בזכותא תתקנין אתרחקי מעושקא ארי לא תדחלין ומתבירא ארי
15 לא יעול עלך : הא אתכנשא יתכנשון ליך גלות עמיך לסופא מלכי עממיא דמתכנשין
16 לאעקא ליך ירושלם בגויך יתרמון : הא אנא בריית נפחא נפח נור בשחורין ומפיק
17 מנא לצורכיה ואנא בריית מחבלא לחבלא: כל זין דיתתקן עלך ירושלם לא יצלח וכל לישן
דיקום עמך לדינא תחיבניה דא אחסנת עבדיא דיי וזכותיהון מן קדמי אמר יי :

נה

1 וי כל דצבי למילף ייתי ויילף ודלית ליה כסף אתו שמעו ואליפו אתו שמעו
2 ואליפו בלא בדמין ובלא בממון אולפן דטב מחמר ומחלב : למא תתקלון כספכון
בלא למיכל ולאותכון בלא למסבע קבילו קבלא למימרי ואכלו דטב ותתפנק
3 בדדהן נפשכון: ארכינו אודניכון וקבילו למימרי שמעו ותתקים נפשכון ואגזר לכון קים
עלם טבות דוד דמהימנן :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quoniam ſicut mulierem derelictam & mœſtam animo vocavit te majeſtas Dñi, & ſicut mulierem quæ abjecta eſt ab adoleſcentia, dicit Deꝰ tuus. 6 In furore modico abjeci te, & in miſerationibus multis congregabo captivitatem tuam. 7 In tempore modico abſtuli faciem majeſtatis meæ in momento temporis à te : at benignitatibus ſempiternis, quæ nunquam ceſſabunt, miſerebor tui, dicit redemptor tuus Dñs. 8 Sicut in diebus Noe hoc eſt coram me : cui juravi per verbum meum, quòd non tranſirent aquæ diluvii quæ fuerũt in diebꝰ Noe ultrà ſuper terrã : ſic juravi in verbo meo, quòd non manebit furor meus ſuper te, nec increpabo te. 9 Quoniam montes pertranſibunt, & colles dirumpentur : & benignitas mea non auferetur à te Jeruſalem, & pactum pacis meæ non elongabitur, dicit qui miſerturus eſt tui Dñs. 10 Paupercula, injuria affecta civitas, de qua dicebant populi : Non erit ei conſolatio : ecce ego ſternam in ſtibio lapides pavimenti tui, & fundabo te lapidibus pretioſis : 11 Et ponam in margaritas ligna tua, & portas tuas in lapides ſculptos, & omnem terminum tuum in lapides utiles. 12 Et omnes filii tui diſcent legem Dñi, & multa erit pax filiis tuis. 13 In juſtitia præparaberis : recede à calumnia, quoniam non timebis; & de interitu, quoniam non veniet tibi. 14 Ecce congregatione congregabuntur ad te tranſmigrationes populi tui : & in fine reges populorum qui congregantur ut tribulent te Jeruſalem, in medio tui cadent. 15 Ecce ego creavi fabrum ferrarium ſufflantem *ignem* in prunas, & diducentem vas in opus ſuum; & ego creavi diſperdentem ad diſperdendum. 16 Omnia arma quæ præparata fuerint contra te Jeruſalem non dirigentur, & omnem linguam quæ inſurrexerit adverſum te in judicio condemnabis. 17 Hæc eſt hæreditas ſervorum Dñi, & juſtitia eorum à facie mea, dicit Dominus.

CAP. LV.

Heus omnis qui vult diſcere, veniat & diſcat; & qui non habetis argentum, venite, audite, & diſcite : venite, audite, et diſcite abſq; pretio et abſq; pecunia doctrinam meliorem vino et lacte. 1 Quare appenditis argentũ veſtrum non in cibum, & laborem veſtrum in [*id quod*] non eſt ſatiando ? obedite obedientes verbo meo, & comedite bonum, & delectabitur in pinguedine anima veſtra. 2 Inclinate aures veſtras, & obedite verbo meo; *audite* et ſuſtentabitur anima veſtra: et feriam vobiſcũ pactũ ſempiternũ, benignitates David fideles. 3

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܕܐܝܟ ܐܢܬܬܐ ܫܒܝܩܬܐ ܘܟܪܝܬܬ ܪܘܚܐ ܩܪܟܝ ܡܪܝܐ܂ ܘܐܝܟ ܐܢܬܬܐ ܕܛܠܝܘܬܐ 6
ܘܡܫܒܩܬܐ ܐܡܪ ܐܠܗܟܝ܂ * ܒܪܘܓܙܐ ܙܥܘܪܐ ܫܒܩܬܟܝ܂ ܘܒܪܚܡܝ ܣܓܝܐܐ ܐܟܢܫܟܝ܂ 7
* ܒܪܘܓܙܐ ܪܒܐ ܐܗܦܟܬ ܐܦܝ ܡܢܟܝ܂ ܘܒܪܚܡܝ ܕܠܥܠܡ ܐܬܪܚܡܬ ܥܠܝܟܝ: ܐܡܪ ܡܪܝܐ 8
ܦܪܘܩܟܝ܂ * ܗܕܐ ܐܝܟ ܝܘܡܬܗ ܕܢܘܚ ܗܝ ܠܝ܂ ܕܝܡܝܬ ܕܠܐ ܢܥܒܪܘܢ ܬܘܒ ܡܝܐ ܕܢܘܚ ܥܠ 9
ܐܪܥܐ܂ ܗܟܢܐ ܝܡܝܬ ܕܠܐ ܐܪܓܙ ܥܠܝܟܝ ܘܠܐ ܐܟܐܐ ܒܟܝ܂ * ܡܛܠ ܕܛܘܪܐ ܢܬܡܟܟܘܢ ܘܪܡܬܐ 10
ܢܬܟܦܦܢ܂ ܘܛܝܒܘܬܝ ܡܢܟܝ ܠܐ ܬܥܒܪ܂ ܘܩܝܡܐ ܕܫܠܡܟܝ ܠܐ ܢܥܒܪ: ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܚܡܢܐ܂
* ܡܣܟܢܬܐ ܘܡܫܬܓܫܬܐ ܕܠܐ ܒܝܐܬܐ܂ ܗܐ ܐܢܐ ܡܥܒܕ ܐܢܐ ܒܦܘܟܐ ܟܐܦܝܟܝ܂ ܘܫܬܐܣ 11
ܐܣܝܟܝ ܒܟܐܦܐ ܕܣܦܝܠܐ܂ * ܘܐܥܒܕ ܫܘܪܝܟܝ ܒܟܐܦܐ ܕܝܫܦܐ܂ ܘܬܪܥܝܟܝ ܒܟܐܦܐ 12
ܕܒܘܪܠܐ܂ ܘܬܚܘܡܝܟܝ ܒܟܐܦܐ ܓܒܝܬܐ܂ * ܘܟܠܗܘܢ ܒܢܝܟܝ ܢܕܥܘܢܢܝ܂ 13
ܘܣܓܝ ܫܠܡܐ ܕܒܢܝܟܝ܂ * ܘܒܙܕܝܩܘܬܐ ܬܬܩܢܝܢ܂ ܐܬܪܚܩܝ ܡܢ ܥܠܘܒܝܐ: ܡܛܠ ܕܠܐ 14
ܬܕܚܠܝܢ܂ ܘܡܢ ܬܒܪܐ: ܡܛܠ ܕܠܐ ܢܩܪܘܒ ܠܟܝ܂ * ܘܟܠ ܕܡܬܬܘܣܦܝܢ ܡܢ ܐܝܕܝ ܢܥܠܘܢ ܠܟܝ܂ 15
ܘܬܗܘܝܢ ܦܠܛܐ ܠܥܡܘܪܝܟܝ܂ * ܗܐ ܐܢܐ ܒܪܝܬ ܠܢܦܚܐ ܕܢܦܚ ܒܢܘܪܐ ܘܡܦܩ ܡܐܢܐ 16
ܠܥܒܕܘܗܝ܂ ܘܐܢܐ ܒܪܝܬ ܡܚܒܠܢܐ ܠܡܚܒܠܘ܂ * ܟܠ ܡܐܢ ܕܡܬܛܝܒ 17
ܥܠܝܟܝ ܠܐ ܢܨܠܚ܂ ܘܟܠ ܠܫܢ ܕܢܩܘܡ ܥܡܟܝ ܒܕܝܢܐ ܬܚܝܒܝܢܗ܂ ܗܕܐ ܗܝ ܝܪܬܘܬܐ
ܕܥܒܕܘܗܝ ܕܡܪܝܐ܂ ܘܙܕܝܩܘܬܗܘܢ ܡܢ ܩܕܡܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ * ܫܠܡܘ * ܢܗ *

* ܗܘܝ ܟܠܟܘܢ ܨܗܝܐ܂ ܙܠܘ ܠܡܝܐ܂ ܘܕܠܝܬ ܠܗ ܟܣܦܐ: ܙܠܘ ܙܒܢܘ ܘܐܟܘܠܘ ܕܠܐ 1
ܟܣܦܐ܂ ܘܕܠܐ ܕܡܝܐ ܚܡܪܐ ܘܚܠܒܐ܂ * ܠܡܢܐ ܬܬܠܘܢ ܟܣܦܐ ܕܠܐ ܠܠܚܡܐ: 2
ܘܠܥܡܠܟܘܢ ܕܠܐ ܠܣܒܥܐ܂ ܫܡܥܘ ܫܡܥܝܢ ܡܢܝ܂ ܘܐܟܘܠܘ ܛܒܬܐ܂ ܘܬܬܦܢܩ ܢܦܫܟܘܢ
ܒܬܘܪܒܐ܂ * ܨܠܘ ܐܕܢܝܟܘܢ ܘܬܘ ܠܘܬܝ܂ ܫܡܥܘ ܡܢܝ ܘܬܚܐ ܢܦܫܟܘܢ܂ ܘܐܩܝܡ ܠܟܘܢ 3
ܩܝܡܐ ܕܠܥܠܡ܂ ܛܝܒܘܬܗ ܕܕܘܝܕ ܡܗܝܡܢܬܐ܂

Ut uxorem enim repudiatam & dolentem animo revocabit te Dñs, & ut uxorem adoleſcentiæ derelictam, dicit Deus tuus. 6 Parvam ob iram repudiaveram te, at miſerationibus meis multis colligam te: 7 Magnam ob iram averteram faciem meam à te, ſed miſerationibus meis æternis miſertus ſum tui, dicit Dominus redemptor tuus. 8 Hoc eſto mihi ut diebus Noë: ut enim juraveram non tranſituras in poſterum aquas Noë ſuper terram; ſic juro fore ut non iraſcar tibi, neq; noceam tibi. 9 Nam montes citiùs humiliarentur, & colles incurvarentur, quàm gratia mea à te tranſeat, & fœdus pacis tuæ prætereat, dicit Dominus miſericors. 10 O miſera, procellis agitata, conſolatione deſtituta, en ego facturus ſum lapides tuos beryllum, & firmaturus fundamenta tua lapidibus ſapphyri; 11 Ædificaturus parietes tuos lapidibus jaſpidis, portas tuas lapidibus chryſtalli, & terminos tuos lapidibus electis. 12 Omnes filii tui cognoſcent me, 13 & multa erit pax filiorum tuorum, Tuque juſtitiâ ſtabilieris: longè aberis ab oppreſſione, 14 quia non timebis; & à contritione, quia non accedet ad te. Quicunque alieni ſunt à manibus meis, te ingredientur, & eris aſylum habitatoribus tuis. 15 Ego quidem creavi fabrum qui follibus excitaret ignem, & perficeret inſtrumentum ad opera ſua; at ego pariter creavi deſtructorem ad deſtruendum. 16 Omne inſtrumentũ quod aptatur contra te, non perducetur ad exitum: & omnem linguam quæ tecum ſteterit in judicio, convinces. Hæc eſt hæreditas ſervorum Domini, & juſtitia eorum à me; dicit Dominus. 17

CAP. LV.

HEus omnes ſitientes, ite ad aquas: qui non habetis pecuniam, ite, providete vobis, & comedite abſque pecunia, & ſine pretio vinum & lac. 1 Cur expenditis pecuniam non pro pane, & laborem veſtrum non pro ſaturitate? Audite me ex animo, & comedetis bona, & in pinguedine oblectabit ſe anima veſtra. 2 Inclinate aures veſtras, & venite ad me: acquieſcite mihi, & vivet anima veſtra: & ſtatuam vobiſcum pactum ſempiternum, gratiam Davidis fidelem. 3

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

6 * لست مثل امراة متروكة وصغيرة النفس دعاك الرب * وليس مثل امراة مبغوضة منذ
7 8 صباها * قال الهك * زمنا قليلا تركتك * وبرحمة عظيمة ارحمك * بغضب يسير صرفت
9 وجهي عنك * وبرحمة ابدية رحمتك * قال الرب منقذك من الماء الذي على عهد نوح *
10 هذا هو لي * لاني كما حلفت في ذلك الزمان للارض الا اغضب عليك ايضا * ولا انقل جبالك
بالوعيد ولا اكامك يحركون * هكذا ولا الرحمة التي لك من قبلي لا تفني * ولا عهد
11 سلامتك لا ينتقض * لان الرب الراحم لك قال * ايتها الذليلة والساقطة التي لم تعزي *
12 ها انا اهيي لك حجرك ياقوتا واساساتك فيروزجا * واصنع سرادقك يشبا * وابوابك حجارة المها
13 وسورك حجارة مختارة * وجميع بنيك متعلمين من الله * واولادك في السلامة الكثيرة *
14 15 * وبالعدل تبنين * ابعدي من الظلم ولا تخافي * والرعدة لا تقرب لك * ها الغرباء
16 يدخلون فيك * لاجلي يسكنون فيك * واليك يهربون * ها انا خلقتك ليس مثل نحاس
ينفخ جمرا ويخرج اناء للعمل * وانا خلقتك ليس للهلاك لافسد كل اناء فاسد وعليك لست
17 ارضى * وكل صوت يقوم عليك للمحاكمة تغلبين جميعهم * ويصيرون مسجونين
بك * هذا ميراث الذين يخدمون الرب * وانتم تصيرون لي صديقين قال الرب *

* الفصل الخامس والخمسون *

1 * ايها العطاش اذهبوا الي الماء * ويا الذين ليس لكم فضة اعمدوا اشتروا وكلوا واشربوا
2 وانطلقوا واشتروا بغير فضة ولا ثمن خمرا وشحما * لماذا تثمنون الفضة لغير خبز وتعبكم
3 ليس لشبع * اسمعوا مني فتاكلون الخيرات * وتتنعم نفسكم بالخيرات * واصنع لكم
عهدا ابديا * مواعيد داود الصادقة *

Nequaquam ut fœminam derelictam & puſillanimem vocavit te Dominus, neque ut fœminam inde ab adoleſcentia ſua exoſam. 6 *Ait meus tuus, Exiguo tempore dereliqui te, ſed maximâ miſericordiâ miſerebor tui:* 7 *Irâ brevi averti faciem meam à te, ſed miſericordiâ ſempiternâ ſum tui miſertus.* 8 *Dicit Dominus qui te eripuit ex aquis quæ contigêre tempore Noe, Hæc mea res eſt;* 9 *Nam quemadmodum tunc temporis juravi terræ me non ſuccenſurum tibi deinceps, Neque tuos montes comminatione tranſlatum iri, neque tuos colles movendos; ita neque miſericordiam quæ tibi impendetur à me, unquam defuturam, neque fœdus pacis tuæ unquam violandum: quoniam Dominus qui tui miſeretur, hæc locutus eſt.* 10 *O vilis & dejecta, quæ nullam percipis conſolationem, ecce ego diſponam tibi lapides tuos ex hyacintho, & fundamenta tua ex ſmaragdo,* 11 *Ponámque pinnas tuas ex jaſpide, portas tuas lapidibus adamantinis, & murum tuum lapidibus electis.* 12 *Omnes filii tui erunt edocti à Deo, & nati tui in pace abundanti,* 13 *Et juſtitiâ ædificaberis. Recede ab injuſtitia, & ne timeto, pavor non appropinquet ad te.* 14 *En extranei in te ingredientur, propter me habitabunt in te, & ad te confugient.* 15 *En ego te creavi, non ut faber ærarius qui flans in carbones producit vas ad uſum; & ego te creavi, non ad interitum, ut deſtruerem omne vas corruptum, & te non oblectarer.* 16 *Imò omnem clamorem quorumcunque inſurgentium contra te ad litigandum, ſuperabis, eruntque intra te concluſi. Talis erit hæreditas eorum qui ſerviunt Domino, & vos eritis mihi juſti, ait Dominus.* 17

CAP. LV.

HEus ſitientes, ite ad aquas: & O vos quibus non eſt argentum, ſubſiſtite, emite, comedite ac bibite; & ite, emite abſque argento aut pretio vinum & adipem. 1 *Cur æſtimatis argentum aliam ob rem quàm ob panem, & laborem veſtrum non ob ſaturitatem? Acquieſcite mihi, & comedetis bona, & oblectabitur anima veſtra in bonis:* 2 *Feriámque vobiſcum fœdus perpetuum, promiſſa Davidis veracia.* 3

ישעיה׃ נו

.populis præcipientem & ,ducem : eum dedi populis teſtem En
הֵן עֵד לְאוּמִּים נְתַתִּיו נָגִיד וּמְצַוֵּה לְאֻמִּים׃ 4
te ad ,te cognoverunt non *gens* & ,vocabis ſcies non gentem Ecce
הֵן גּוֹי לֹא־תֵדַע תִּקְרָא וְגוֹי לֹא־יְדָעוּךָ אֵלֶיךָ 5
,Iſrael ſanctum *ad* & ,tuum Deum Dominum propter : current
יָרוּצוּ לְמַעַן יְהוָה אֱלֹהֶיךָ וְלִקְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל
eum invocate *: ipſum inveniri in* Dominum Quærite *.te adornavit* quia
כִּי פֵאֲרָךְ׃ דִּרְשׁוּ יְהוָה בְּהִמָּצְאוֹ קְרָאֻהוּ 6
vir & ,ſuam viam impius Derelinquat *.propinquum ipſum exiſtendo in*
בִּהְיוֹתוֹ קָרוֹב׃ יַעֲזֹב רָשָׁע דַּרְכּוֹ וְאִישׁ 7
,ejus miſerebitur & Dominum ad revertatur &:ſuas cogitationes *iniquitatis*
אָוֶן מַחְשְׁבֹתָיו וְיָשֹׁב אֶל־יְהוָה וִירַחֲמֵהוּ
non Nam *.parcendum ad* multiplicabit quoniam ,noſtrum Deum ad &
וְאֶל־אֱלֹהֵינוּ כִּי־יַרְבֶּה לִסְלוֹחַ׃ כִּי לֹא 8
dixit , meæ viæ ,veſtræ viæ nec , veſtræ cogitationes meæ cogitationes
מַחְשְׁבוֹתַי מַחְשְׁבוֹתֵיכֶם וְלֹא דַרְכֵיכֶם דְּרָכָי נְאֻם
ſunt altiores ſic : terra quàm cœli ſunt altiores Quia .Dominus
יְהוָה׃ כִּי־גָבְהוּ שָׁמַיִם מֵאָרֶץ כֵּן גָּבְהוּ 9
.veſtræ cogitationes quàm meæ cogitationes & ,veſtræ viæ quàm meæ viæ
דְרָכַי מִדַּרְכֵיכֶם וּמַחְשְׁבֹתַי מִמַּחְשְׁבֹתֵיכֶם׃
, cœlis de nix & , imber *deſcendet* quemadmodum Quoniam
כִּי כַּאֲשֶׁר יֵרֵד הַגֶּשֶׁם וְהַשֶּׁלֶג מִן־הַשָּׁמַיִם 10
,eam *fecit* generare & ,terram *inebriavit quin-imo ,revertetur* non illuc &
וְשָׁמָּה לֹא יָשׁוּב כִּי אִם־הִרְוָה אֶת־הָאָרֶץ וְהוֹלִידָהּ
.comedenti panem & , ſerenti ſemen dabit & : eam *fecit* germinare &
וְהִצְמִיחָהּ וְנָתַן זֶרַע לַזֹּרֵעַ וְלֶחֶם לָאֹכֵל׃
revertetur non ,meo ore de egredietur quod ,meum verbum erit Sic
כֵּן יִהְיֶה דְבָרִי אֲשֶׁר יֵצֵא מִפִּי לֹא־יָשׁוּב 11
proſperabitur & , volui quod faciet *quin-imo* : vacuum me ad
אֵלַי רֵיקָם כִּי אִם־עָשָׂה אֶת־אֲשֶׁר חָפַצְתִּי וְהִצְלִיחַ
: deducemini pace in & ,egrediemini lætitia in Quia .illud miſi *quò*
אֲשֶׁר שְׁלַחְתִּיו׃ כִּי־בְשִׂמְחָה תֵצֵאוּ וּבְשָׁלוֹם תּוּבָלוּן 12
ligna omnia & ,*præconium* vobis coram *clamabunt* colles & montes
הֶהָרִים וְהַגְּבָעוֹת יִפְצְחוּ לִפְנֵיכֶם רִנָּה וְכָל־עֲצֵי
pro , abies aſcendet alba ſpina Pro *.vola* plaudent *agri*
הַשָּׂדֶה יִמְחֲאוּ־כָף׃ תַּחַת הַנַּעֲצוּץ יַעֲלֶה בְרוֹשׁ תַּחַת 13
ſignum in ,nomen in Domino erit & : myrtus aſcendet urtica
הַסִּרְפַּד יַעֲלֶה הֲדַס וְהָיָה לַיהוָה לְשֵׁם לְאוֹת
.ſuccidetur non *ſeculi*
עוֹלָם לֹא יִכָּרֵת׃

CAP. LVI. נו

quia : juſtitiam facite & ,judicium Cuſtodite : Dominus dixit Sic
כֹּה אָמַר יְהוָה שִׁמְרוּ מִשְׁפָּט וַעֲשׂוּ צְדָקָה כִּי־ 1
.ſe revelandum ad mea juſtitia & , *veniendum ad* mea ſalus propinqua
קְרוֹבָה יְשׁוּעָתִי לָבוֹא וְצִדְקָתִי לְהִגָּלוֹת׃
: illud in apprehenderit hominis filius & , hoc fecerit *hominis Beatitates*
אַשְׁרֵי אֱנוֹשׁ יַעֲשֶׂה־זֹּאת וּבֶן־אָדָם יַחֲזִיק בָּהּ 2
faciendo à ſuã manum *cuſtodiens* & ,illud *polluendo à* , ſabbathum *cuſtodiens*
שֹׁמֵר שַׁבָּת מֵחַלְּלוֹ וְשֹׁמֵר יָדוֹ מֵעֲשׂוֹת
,*Dominum ad ſe copulantis* alienigenæ filius dicat ne Et .malum omne
כָּל־רָע׃ וְאַל־יֹאמַר בֶּן־הַנֵּכָר הַנִּלְוָה אֶל־יְהוָה 3
ne & : ſuo populo *deſuper* Dominus me dividet Dividendo : dicendo
לֵאמֹר הַבְדֵּל יַבְדִּילַנִי יְהוָה מֵעַל עַמּוֹ וְאַל־
dixit ſic Quia .aridum lignum , *ego* Ecce : eunuchus dicat
יֹאמַר הַסָּרִיס הֵן אֲנִי עֵץ יָבֵשׁ׃ כִּי־כֹה אָמַר 4
quibus in eligent & ,mea ſabbata ſervabunt qui , eunuchis Dominus
יְהוָה לַסָּרִיסִים אֲשֶׁר יִשְׁמְרוּ אֶת־שַׁבְּתוֹתַי וּבָחֲרוּ בַּאֲשֶׁר
.meum fœdus *in apprehendentes &* , volui
חָפַצְתִּי וּמַחֲזִיקִים בִּבְרִיתִי׃

Verſio VULG. LAT.

4 Ecce teſtem populis dedi eum,
ducem ac præceptorem Gentibus.
5 Ecce gentem, quam neſciebas,vocabis;et Gentes,quæ
te non cognoverunt, ad te current,propter Dominum Deum
tuum, & Sanctum Iſrael,quia
6 glorificavit te. Quærite Dominum,
dum inveniri poteſt:invocate
7 eum,dum propè eſt.Derelinquat impius viam ſuam,et
vir iniquꝰ cogitationes ſuas,&
revertatur ad Dominum, &
miſerebitur ejus, & ad Deum
noſtrum : quoniam multus eſt
8 ad ignoſcendum. Non enim
cogitationes meæ,cogitationes
veſtræ : neque viæ veſtræ, viæ
9 meæ,dicit Dominus. Quia ſicut
exaltantur cœli à terra, ſic
exaltatæ ſunt viæ meæ à viis
veſtris, & cogitationes meæ à
10 cogitationibus veſtris.Et quomodò
deſcendit imber, & nix
de cœlo, & illuc ultrà non revertitur,
ſed inebriat terram,
& infundit eam, & germinare
eam facit, & dat ſemen ſerenti,
11 & panem comedenti : Sic
erit verbum meum,quod egredietur
de ore meo : non revertetur
ad me vacuum,ſed faciet
quæcunque volui, & proſperabitur
in his, ad quæ miſi illud.
12 Quia in lætitia egrediemini,et
in pace deducemini:montes et
colles cantabunt coram vobis
laudem, & omnia ligna regionis
13 plaudent manu. Pro ſaliunca
aſcendet abies,& pro urtica
creſcet myrtus:& erit Dominus
nominatus in ſignum æternum,
quod non auferetur.

CAP. LVI.

1 HÆc dicit Dominus;Cuſtodite
judicium, & facite juſtitiam
: quia juxta eſt ſalus mea
ut veniat, & juſtitia mea ut reveletur.
2 Beatus vir, qui facit
hoc, & filius hominis, qui apprehendet
iſtud : cuſtodiens
ſabbatum ne polluat illud, cuſtodiens
manus ſuas ne faciat
3 omne malum. Et non dicat filiꝰ
advenæ,qui adhæret Domino,
dicens ; Separatione dividet
me Dominus à populo ſuo:
Et non dicat Eunuchus ; Ecce
4 ego lignum aridum. Quia hæc
dicit Dominus Eunuchis ; Qui
cuſtodierint ſabbata mea, &
elegerint quæ ego volui, &
tenuerint fœdus meum ;

Verſio GRÆC. LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

4 Ἰδοὺ μαρτύριον ἐν ἔθνεσιν (·) ἔδωκα αὐτὸν,
5 ἄρχοντα καὶ προστάσσοντα ἔθνεσιν. Ἔθνη ἃ
οὐκ (ζ) οἴδασίν σε, ἐπικαλέσονταί σε, καὶ
λαοὶ οἳ οὐκ ἐπίστανταί σε, ἐπὶ σὲ καταφεύξονται,
ἕνεκεν (η) κυρίου τοῦ θεοῦ σου τοῦ ἁγίου
6 Ἰσραὴλ, ὅτι ἐδόξασέ σε. Ζητήσατε τὸν
(θ) κύριον, καὶ ἐν τῷ εὑρίσκειν αὐτὸν, ἐπικαλέσασθε.
7 ἡνίκα (ˮ) δ' ἂν ἐγγίζῃ ὑμῖν, Ἀπολιπέτω
ὁ ἀσεβὴς τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ, καὶ ἀνὴρ
ἄνομος τὰς βουλὰς αὐτοῦ, καὶ ἐπιστραφήτω
ἐπὶ κύριον, καὶ ἐλεηθήσεται, ὅτι ἐπὶ πολὺ
8 ἀφήσει τὰς ἁμαρτίας ὑμῶν. Οὐ γάρ εἰσιν
αἱ βουλαί μου ὥσπερ αἱ βουλαὶ ὑμῶν, (ʺ) οὐδ'
ὥσπερ αἱ ὁδοὶ ὑμῶν αἱ ὁδοί μου, λέγει κύριος.
9 Ἀλλ' ὡς ἀπέχει ὁ οὐρανὸς ἀπὸ τῆς
γῆς, οὕτως ἀπέχει ἡ ὁδός μου ἀπὸ τῶν ὁδῶν
ὑμῶν, καὶ τὰ διανοήματα ὑμῶν ἀπὸ τῆς διανοίας
10 μου. Ὡς γὰρ (ι) ἂν καταβῇ ὁ ὑετὸς
ἢ χιὼν (κ) ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ οὐ μὴ ἀποστραφῇ
ἕως ἂν μεθύσῃ τὴν γῆν, καὶ ἐκτέκῃ, καὶ
(λ) ἐκβλαστήσῃ, καὶ δῷ σπέρμα τῷ σπείροντι,
11 καὶ ἄρτον εἰς βρῶσιν, Οὕτως ἔσται
τὸ ῥῆμά μου ὃ ἐὰν ἐξέλθῃ ἐκ τοῦ στόματός
μου, οὐ μὴ ἀποστραφῇ, ἕως ἂν (μ) τελεσθῇ ὅσα
ἂν ἠθέλησα, καὶ εὐοδώσω τὰς ὁδούς σου, καὶ
12 τὰ ἐντάλματά μου. Ἐν γὰρ εὐφροσύνῃ ἐξελεύσεσθε,
καὶ ἐν χαρᾷ διδαχθήσεσθε· τὰ γὰρ
ὄρη καὶ οἱ βουνοὶ ἐξαλοῦνται προσδεχόμενοι ὑμᾶς
ἐν χαρᾷ, καὶ πάντα τὰ ξύλα τοῦ ἀγροῦ
13 ἐπικροτήσει τοῖς κλάδοις. Καὶ ἀντὶ τῆς
στοιβῆς ἀναβήσεται κυπάρισσος, ἀντὶ δὲ τῆς
κονύζης ἀναβήσεται μυρσίνη. καὶ ἔσται κύριος
εἰς ὄνομα, καὶ εἰς σημεῖον αἰώνιον,
καὶ οὐκ ἐκλείψει.

Ecce (c) teſtimonium in gentibus 4
dedi eum, principem, & præcipientem
gentibus. Gentes,quæ neſciebant 5
te, invocabunt te : & populi,
qui ignorabant te, ad te confugient
: propter Dominum Deum
tuum Sanctum Iſrael, quia glorificavit
te. Quærite Dominum, & 6
in inveniendo eum, invocate. Et
poſtquàm vobis appropinquaverit;
Relinquat impius vias ſuas , & 7
vir iniquus cogitationes ſuas, &
convertatur ad Dominum: & miſericordiam
(d) conſequetur: quia
multùm dimittet peccata veſtra.
Neque enim ſunt cogitationes meæ, 8
ſicut cogitationes veſtræ ; nec, ſicut
viæ veſtræ, viæ meæ, dicit Dominus.
Sed ſicut diſtat cœlum à 9
terra; ſic diſtat via mea à viis veſtris,
& cogitationes veſtræ à cogitatione
mea. Quomodò enim ſi 10
deſcendat pluvia, aut nix de cœlo,
& non revertatur, donec inebriet
terram, & generet, & oriatur,&
det ſemen ſeminanti , & panem
ad comedendum: Sic erit verbum 11
meum, quod exierit de ore meo :
(e)non revertetur;donec compleat,
quæ volui : & proſperas faciam
vias (f) tuas, et præcepta mea.
In lætitia enim egrediemini , et in 12
gaudio (g) docebimini. Montes enim
et colles exilient expectantes
vos in gaudio: et omnia ligna agri
applaudent ramis. Et pro (b) ſtœba 13
aſcendet cypariſſus : et pro conyza
aſcendet myrtus. Et erit (i)
Dominus in nomen, et in ſignum
ſempiternum; et non deficiet.

MS. A. (·) δέδωκα (ζ) ᾔδεισάν σε, ἐπικαλέσονταί σε, (η) τοῦ θεοῦ σου τοῦ ἁγίου (θ) θεὸν, καὶ (ˮ) ἂν ἐγγίζῃ (ʺ) οὐδὲ (ι) ἐὰν καταβῇ ὑετὸς (κ) ἀπὸ (λ) βλαστήσῃ, καὶ δώσει (μ) συντελεσθῇ ὅσα ἠθέλησα,

ΚΕΦ. νϛʹ.

1 Τάδε λέγει κύριος, Φυλάσσεσθε κρίσιν,
(α) καὶ ποιήσατε δικαιοσύνην· (β) ἤγγικε
γὰρ τὸ σωτήριόν μου παραγίνεσθαι, καὶ τὸ ἔλεός
2 μου ἀποκαλυφθῆναι. Μακάριος ἀνὴρ
ὁ ποιῶν ταῦτα, καὶ ἄνθρωπος ὁ ἀντεχόμενος
αὐτῶν, καὶ φυλάσσων τὰ σάββατα
μὴ βεβηλοῦν, καὶ διατηρῶν τὰς χεῖρας αὐτοῦ
3 μὴ ποιεῖν (γ) ἄδικα. Μὴ λεγέτω ὁ
ἀλλογενὴς ὁ προσκείμενος πρὸς κύριον,
Ἀφοριεῖ με ἄρα κύριος ἀπὸ τοῦ λαοῦ αὐτοῦ·
καὶ μὴ λεγέτω ὁ εὐνοῦχος, Ὅτι (δ) ξύλον
4 ἐγώ εἰμι ξηρόν. Τάδε λέγει κύριος τοῖς
εὐνούχοις, Ὅσοι ἂν φυλάξωνται τὰ σάββατά
μου, καὶ ἐκλέξωνται ἃ ἐγὼ θέλω, καὶ
ἀντέχωνται τῆς διαθήκης μου,

CAP. LVI.

HÆc dicit Dominus; Cuſtodite 1
judicium, et facite juſtitiam: quia
juxta eſt ſalutare meum, ut adveniat
; et miſericordia mea , ut
reveletur. Beatus vir, qui facit 2
hæc; et homo, qui retinet iſta, et
cuſtodit ſabbata, ut non prophanet
ea; et ſervat manus ſuas,ne faciat
iniqua. Ne dicat alienigena, qui 3
appoſitus eſt Domino: (a)Separabit
me utique Dominus à populo
ſuo.Et ne dicat eunuchꝰ;Quia ego
ſum lignum aridum. Hæc dicit 4
Dominus Eunuchis; Quicumque
cuſtodierint Sabbata mea, et elegerint,
quæ ego volo, et tenuerint
teſtamentum meum ;

MS.A. (α) ποιήσατε (β) ἤγγισεν (γ) ἀδίκημα. (δ) ἐγώ εἰμι ξύλον ξηρόν.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

הָא רַב לְעַמְמַיָא מַנִיתֵיהּ מֶלֶךְ וְשַׁלִּיט עַל כָּל מַלְכְוָתָא׃ הָא עַם דְּלָא תֵדַע יִפְלְחִנָךְ 4
וְעַם דְּלָא יַדְעוּךְ יִרְהֲטוּן לְאַסָּקָא לָךְ מִסִּין בְּדִיל יְיָ אֱלָהָךְ וּלְקַדִּישָׁא דְיִשְׂרָאֵל אֲרֵי 5
שַׁבְּחָךְ׃ תְּבַעוּ דְּחַלְתָּא דַייָ עַד דְּאַתּוּן חַיִין בְּעוֹ מִן קֳדָמוֹהִי עַד דְּאַתּוּן קַיְמִין׃ יִשְׁבּוֹק 6 7
רַשִׁיעָא אוֹרְחֵיהּ דְּרִשְׁעָא וּגְבַר אֱנַס עֶשְׁתּוֹנוֹהִי וִיתוּב לְפוּלְחָנָא דַייָ וִירַחֵם עֲלוֹהִי
וְלִדְחַלְתָּא דֶאֱלָהָנָא אֲרֵי מַסְגֵי לְסַלָּחָא׃ אֲרֵי לָא מַחְשְׁבָתִי מַחְשְׁבָתְכוֹן וְלָא 8
אָרְחָתְכוֹן תַּקְנָן כְּאָרְחָת טוּבִי אֲמַר יְיָ׃ אֲרֵי כְּמָא דְרָמִין שְׁמַיָא מִן אַרְעָא כֵּן תַּקְנָן 9
אָרְחָתִי מֵאָרְחָתְכוֹן וּמַחְשְׁבָתִי תַּקְנָן מִמַּחְשְׁבָתְכוֹן׃ אֲרֵי כְּמָא דְנָחֵית מִטְרָא וְתַלְגָּא 10
מִן שְׁמַיָא וּלְתַמָּן לָא אֶפְשַׁר לֵיהּ דִּיתוּב אֱלָהֵן מַרְוֵי יַת אַרְעָא וּמַרְבֵּי לַהּ וּמוֹעִילָהּ
וְיָהֵיב בַּר זַרְעָא כְּמִסַּת לְזָרַע וְלַחְמָא כְּמִסַּת לְמֵיכַל׃ כֵּן הֲוֵי פִּתְגָם טוּבִי דְּנָפֵק מִן 11
קֳדָמַי לָא אֶפְשַׁר דִּיתוּב לִקְדָמַי רֵיקָן אֱלָהֵן עָבֵד יַת דִּרְעֵנָא וּמַצְלַח לִדְשַׁלַּחְנָא לֵיהּ׃
אֲרֵי בְּחֶדְוָא תִּפְּקוּן מִבֵּינֵי עַמְמַיָא וּבִשְׁלָמָא תִּתּוּבְלוּן לְאַרְעֲכוֹן טוּרַיָא וְרָמָתָא יְבוּעוּן 12
קֳדָמֵיכוֹן תּוּשְׁבְּחָא וְכָל אִילָנֵי חַקְלָא יִשְׁעֲנוּן בְּעַנְפֵּיהוֹן׃ חֲלַף רַשִׁיעַיָא יִתְקַיְמוּן צַדִּיקַיָא 13
וַחֲלַף חַיָּבַיָא יִתְקַיְמוּן דָּחֲלֵי חֶטְאָה וִיהֵי קֳדָם יְיָ לְשׁוּם לְאָת עָלַם דְּלָא יִפְסוֹק׃

נו

כִּדְנָן אֲמַר יְיָ טְרוּ דִינָא עֲבִידוּ צִדְקְתָא אֲרֵי קָרִיב פּוּרְקָנִי לְמֵיתֵי וְזָכוּתִי לְאִתְגְּלָאָה׃ 1
טוּבֵי אֱנָשׁ דְּיַעְבֵּד דָּא וּבַר אֱנָשָׁא דְּיִתְקֵף בַּהּ יָטַר שַׁבְּתָא מֵאַחֲלוּתֵיהּ וְיָטַר יְדוֹהִי 2
מִלְמֶעְבַּד כָּל דְּבִישׁ׃ וְלָא יֵימַר בַּר עַמְמִין דְּמִתּוֹסַף עַל עַמָּא דַייָ לְמֵימַר אַפְרָשָׁא 3
יַפְרְשִׁנַנִי יְיָ מֵעַל עַמֵּיהּ וְלָא יֵימַר סְרִיסָא הָא אֲנָא חֲשִׁיב כְּאָע יְבִישׁ׃ אֲרֵי כִדְנָן אֲמַר 4
יְיָ לִסְרִיסַיָא דְּיִטְרוּן יַת יוֹמֵי שַׁבַּיָא דִילִי וּמִתְרְעַן בִּדְצָבֵינָא וּמִתְקְפִין בִּקְיָמִי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ecce principem populis conſtitui eum, regem & dominatorẽ ſuper omnia 4
regna. Ecce populꝰ quem neſciebas ſervient tibi;& populꝰ qui non cognovit 5
te, current ut offerant tibi tributa ; propter Dñm Deum tuum, & ſanctum
Iſraelis, qui decoravit te. Quærite timorem Dñi dum vos eſtis vivi : 6
quærite à facie ejꝰ dum vos permanetis. Relinquat impiꝰ viam ſuã malam, 7
& vir direptor cogitationes ſuas,& convertatur ad cultum Dñi ; & miſerebitur
ejꝰ;& ad timorẽ Dei noſtri,qui multꝰ eſt in ignoſcendo. Quia non 8
cogitationes meæ ſunt cogitationes veſtræ, neq; viæ veſtræ rectæ ſunt ſicut
via bonitatis meæ, dicit Dñs. Quia ſicut exaltantur cœli à terra, ſic rectæ 9
ſunt viæ meæ magis quàm viæ veſtræ ; & cogitationes meæ rectæ magis
quàm cogitationes veſtræ. Quia ſicut deſcendit pluvia & nix de cœlo, & 10
illuc impoſſibile eſt ut revertatur, ſed inebriat terrã, & germinare facit eã,
& proficit ei,& dat granũ ſementis ut ſatis ſit ſerenti;& panem ut ſatis ſit
ad comedendum: Sic erit verbũ bonitatis meæ quod egreditur à facie mea, 11
non poteſt reverti in conſpectũ meum vacuum, niſi faciat quod volui, &
proſperetur in his ad quæ miſi illud. Quia in lætitia egrediemini de medio 12
populorũ,& in pace deducemini in terrã veſtram:montes et colles exultabunt
coram vobis in laude, et omnes arbores agri plaudent ramis ſuis.
Pro impiis conſurgent juſti, et pro peccatoribus conſurgent timentes peccatũ: 13
et erit corã Dño in nomen et ſignũ ſempiternum, quod non ceſſabit.

CAP. LVI.

HÆc dicit Dñs:Cuſtodite judiciũ,et facite juſtitiã: quia propè eſt ſalus 1
mea ut veniat, et juſtitia mea ut reveletur. Beatꝰ homo qui fecerit hoc ; et 2
filiꝰ hominis qui apprehẽderit illud:qui cuſtodierit Sabbatũ,ne prophanet
illud,et ſervaverit manꝰ ſuas ne faciat omne malũ.Et non dicat filiꝰ populorũ, 3
qui appoſitus eſt populo Dñi,dicendo: Separatione ſeparavit me Dñs
à populo ſuo:neq;dicat eunuchus:Ecce ego reputatꝰ ſum ſicut lignum aridum.
Quia hæc dicit Dñs eunuchis,Qui cuſtodiunt dies Sabbathorum meorum, 4
& volunt ea quæ volo, et apprehendunt pactum meum ;

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

4 * ܗܐ ܣܗܕܐ ܠܥܡ̈ܡܐ ܝܗܒܬܟ܂ ܪܫܐ ܘܡܦܩܕܢܐ ܠܐܘܡ̈ܘܬܐ܂ * ܕܩܠܐ ܠܥܡ̈ܡܐ ܕܠܐ ܝܕܥܬ܂
5 ܘܥܡ̈ܡܐ ܕܠܐ ܝܕܥܘܟ ܠܟ܂ ܠܘܬܟ ܢܪܗܛܘܢ܂ ܡܛܠ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ܂ ܘܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ
6 ܕܫܒܚܟ܂ * ܒܥܘ ܠܡܪܝܐ܂ ܘܡܐ ܕܐܫܟܚܬܘܢܝܗܝ ܩܪܘܗܝ܂ * ܘܡܐ ܕܩܪܒ܂ ܢܫܒܘܩ
7 ܚܛܝܐ ܐܘܪܚܗ܂ ܘܓܒܪܐ ܥܘܠܐ ܬܪܥܝܬܗ܂ ܘܢܬܦܢܐ ܠܘܬܝ܂ ܘܐܪܚܡ ܥܠܘܗܝ܂ ܘܠܘܬ
ܐܠܗܢ܂ ܕܡܣܓܐ ܠܡܫܒܩ܂ * ܡܛܠ ܕܬܪܥܝܬܝ ܠܐ ܗܘܝ ܐܝܟ ܬܪܥܝܬܟܘܢ܂ ܘܐܘܪܚܬܝ
8 ܠܐ ܗܘܝ ܐܝܟ ܐܘܪܚܬܟܘܢ܂ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ * ܡܛܠ ܕܐܝܟ ܕܪܡܝܢ ܫܡܝܐ ܡܢ ܐܪܥܐ܂ ܗܟܢܐ
9 ܪܡܢ ܐܘܪܚܬܝ ܡܢ ܐܘܪܚܬܟܘܢ܂ ܘܬܪܥܝܬܝ ܡܢ ܬܪܥܝܬܟܘܢ܂ * ܡܛܠ ܕܐܝܟ ܡܛܪܐ ܕܢܚܬ
10 ܘܬܠܓܐ ܡܢ ܫܡܝܐ܂ ܘܠܬܡܢ ܠܐ ܗܦܟ: ܐܠܐ ܡܪܘܐ ܠܐܪܥܐ܂ ܘܡܘܠܕ ܠܗ܂ ܘܡܨܡܚ
ܠܗ܂ ܘܝܗܒ ܙܪܥܐ ܠܙܪܘܥܐ܂ ܘܠܚܡܐ ܠܡܐܟܘܠܬܐ܂ * ܗܟܢܐ ܢܗܘܐ ܦܬܓܡܝ ܕܢܦܩ
11 ܡܢ ܦܘܡܝ܂ ܠܐ ܢܗܦܘܟ ܠܘܬܝ ܣܪܝܩܐܝܬ܂ ܐܠܐ ܐܢ ܥܒܕ ܡܕܡ ܕܨܒܝܬ܂ ܘܡܫܡܠ
ܕܫܕܪܬܗ܂ * ܡܛܠ ܕܒܚܕܘܬܐ ܬܦܩܘܢ܂ ܘܒܫܠܡܐ ܬܐܙܠܘܢ܂ ܘܛܘܪܐ ܘܪܡܬܐ ܢܬܦܨܚܘܢ
12 ܩܕܡܝܟܘܢ܂ ܘܐܝܠܢܐ ܫܒܝܚܐ ܕܚܩܠܐ ܢܩܫܘܢ ܟܦܐ܂ * ܚܠܦ ܚܘܚܐ ܢܣܩ ܒܪܘܬܐ܂
13 ܘܚܠܦ ܙܘܦܐ ܢܣܩ ܐܣܐ܂ ܘܢܗܘܐ ܠܡܪܝܐ ܠܫܡܐ܂ ܘܠܐܬܐ ܕܠܥܠܡ ܕܠܐ ܢܫܬܪܐ܂

* ܩܦܠܐܘܢ * ܢܘ *

1 * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܛܪܘ ܕܝܢܐ܂ ܘܥܒܕܘ ܙܕܝܩܘܬܐ܂ ܡܛܠ ܕܡܩܪܒܐ ܦܘܪܩܢܝ܂ ܠܡܐܬܐ܂
2 ܘܙܕܝܩܘܬܝ ܠܡܬܓܠܝܘ܂ * ܛܘܒܘܗܝ ܠܓܒܪܐ ܕܢܥܒܕ ܗܕܐ܂ ܘܠܒܪܢܫܐ ܕܢܬܠܒܟ ܒܗ܂
3 ܘܢܛܪ ܫܒܬܐ ܕܠܐ ܢܬܠܠܗ܂ ܘܢܛܪ ܐܝܕܘܗܝ ܕܠܐ ܢܥܒܕ ܒܝܫܐ܂ * ܘܠܐ ܢܐܡܪ ܒܪ ܢܘܟܪܝܐ
ܕܡܬܠܘܐ ܠܡܪܝܐ: ܕܡܦܪܫܘ ܦܪܫ ܠܝ ܡܪܝܐ ܡܢ ܥܡܗ܂ ܘܠܐ ܢܐܡܪ ܡܗܝܡܢܐ:
4 ܕܗܐ ܐܢܐ ܩܝܣܐ ܝܒܝܫܐ܂ * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܠܡܗܝܡܢܐ ܕܢܛܪܘܢ ܫܒ̈ܬܝ܂ ܘܢܓܒܘܢ
ܡܕܡ ܕܨܒܐ ܐܢܐ܂ ܘܡܬܠܒܟܝܢ ܒܩܝܡܝ܂

Ecce teſtem gentibus dedi te, principem & 4
rectorem populis : Ut voces gentes quas 5
non nôſti, & gentes quæ te minimè nôrunt,
accurrant ad te, propter Dominium Deum
tuum, & Sanctum Iſraelis qui te glorificavit.
Quærite Dominum ; & cùm inveneritis eum, 6
invocate illum : Et cùm acceſſerit, derelin- 7
quat peccator viam ſuam, & vir iniquus conſilium ſuum, & convertatur ad me, & miſerebor
ipſius ; & ad Deum noſtrum qui largus
eſt in parcendo. Nam conſilia mea non ſūt ſi- 8
milia conſiliis veſtris, neque viæ meæ ſimiles
viis veſtris, dicit Dominus : Nam quemad- 9
modum cœli ſunt terrâ ſublimiores, ita altiores
ſunt viæ meæ viis veſtris, & conſilia mea
conſiliis veſtris. Quemadmodum enim plu- 10
via & nix è cœlo delapſa, illuc minimè redit,
ſed inebriat terram, & parere ac germinare
facit illam, præbétque ſemen ſatori, & panem
in cibum : Sic erit ſermo meus qui prodit 11
ex ore meo, non revertetur ad me vacuus,
quin *priùs* fecerit quod volo, & expleverit
id *cujus cauſâ* eum miſero. Nam cum lætitia 12
egrediemini, & cum pace diſcedetis, &
montes atque colles exhilarabuntur coràm
vobis, & laudatiſſimæ quæque arbores campi
complodent manus. Pro ſpinoſis frutetis 13
germinabit abies, & pro hyſſopo germinabit
myrtus : erítque Domino in nomen & monimentum
ſempiternum, quod nunquam
deficiet

CAP. LVI.

Sic dicit Dominus, Cuſtodite judicium, & 1
facite juſtitiam ; quia proximè ſalus mea ventura
eſt, & juſtitia mea revelanda. Beatus 2
vir qui fecerit hanc, & filius hominis qui firmus
eam tenuerit, ſabbathum quoque obſervaverit
ne prophanet illud, & cuſtodierit
manus ſuas ne quid mali committat. Ne- 3
que verò dicat filius alienigenarū qui adjungit
ſe Domino, Planè ſeparavit me Dominus
à populo ſuo : neque dicat Eunuchus, Lignum
ſum aridum. Nam ita dicit Dominus ; 4
Eunuchis qui cuſtodierint ſabbatha mea, elegerint
quod mihi placet, & fœdus meum firmiter
tenuerint ;

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

4 * ها شهادة للامم اعطيته * للامم رئيسا وامرا * ها الامم التي لم تعرفك تستغيث بك * والشعب
5
6 الذين لم يعرفوك اليك يلتجون لاجل الرب الهك وقدوس اسرائيل الذي مجدك * اطلبوا
7 الله * وعند وجودكم اياه استغيثوا به حين يقترب منكم * فليترك المنافق طرقه * والرجل
8 الاثيم اراوه * وليرجع الي الرب فيرحم * والي الهنا لانه يغفر خطايانا كثيرا * لان ليست ارايي
9 هي مثل ارايكم * ولا طرقكم طرقي يقول الرب * لكن كما تبعد السماء من الارض هكذا
10 تبعد طرقي من طرقكم * وتبعد فهمكم من تمييز فهمي * لانه كما انه اذا نزل المطر
والثلج من السماء لا يرجع الي هناك الي ان يسكر الارض * فتلد وتفرع وتعطي زرعا للزراع
11 وخبزا للاكل * هكذا تكون كلمتي الذي اذا خرجت من فمي لا ترجع الي باطلا الي ان
12 تكمل كلما اردته * واقوم طرقي ووصاياي * لانكم تخرجون بسرور وتنقلبون بفرح *
لان الجبال والاكام ترتكض منتظرة لكم بفرح * وجميع اشجار الحقل تصفق باغصانها *
13 * وبدلا من البلان يصعد السرو * وبدلا من السيكران يصعد الاس * ويكون للرب
اسم وعلامة ابدية ولا تفني *

* الفصل السادس والخمسون *

1 * هكذا يقول الرب * احفظوا الحكم * اصنعوا العدل * لان خلاصي قرب ان يحضر *
2 ورحمتي تنكشف * مغبوط الرجل الذي يصنع هذه * والانسان الذي يتمسك بها *
3 ويحترس ان لا ينجس السبوت * ويحفظ يديه ان لا تصنعا ظلما * لا يقول الغريب الجنس
الداخل الي الرب * اتري الرب يفرزني من شعبه * ولا يقول الخصي اني انا خشبة يابسة *
4 * هكذا يقول الرب * للخصيان الذين يحفظون اذن سبوتي ويختارون ما انا اريده
ويتمسكون بعهدي *

Ecce teſtimonium gentibus dedi eum, gen- 4
tibus principem & imperatorem. En gen- 5
tes quæ te ignorant, opem tuam implorabunt ;
& populus qui te non noverunt,
ad te confugient, propter Dominum Deum
tuum & ſanctum Iſraelis qui te glorificavit.
Quærite Deum ; & cùm reperieritis 6
eum, implorate præſidium ejus
dum propinquus eſt vobis. Ideò derelin- 7
quat impius vias ſuas, & vir ſceleratus
conſilia ſua ; & revertatur ad Dominum,
ut miſericordiam conſequatur ; et ad Deum
noſtrum, quia peccata noſtra multum
ignoſcit. Non enim conſilia mea ſunt ut 8
conſilia veſtra, neque viæ veſtræ ſunt
viæ meæ, dicit Dominus : Sed quantùm 9
diſtat cælum à terra, tantùm diſtant viæ
meæ à viis veſtris, & conceptus mentis
veſtræ à conceptu mentis meæ. Nam 10
quemadmodum cùm imber aut nix è cælo
deciderit, non revertitur illuc donec
terram inebriet, & hæc gignat egerminéque,
producá quæ ſementem ſatori, &
panem comedenti : Sic erit verbum me- 11
um, quod cùm exierit ex ore meo, non
redibit ad me vacuum, donec perfecerit
quicquid volo, dirigámque vias meas
& decreta mea. Vos enim egrediemini 12
cum exultatione, & cum lætitia dimittemini ;
nam montes & colles tripudiabunt
expectantes vos cum gaudio, &
omnes arbores agri plaudent ramis ſuis.
Pro dumis aſſurgent pini, & pro ebu- 13
lis aſſurgent myrti : eritque Domino nomen
& ſignum ſempiternum & indelebile.

CAP. LVI.

Sic ait Dominus, Cuſtodite judicium, 1
& facite juſtitiam ; quia ſalus mea brevi
affutura eſt, & miſericordia mea retegenda.
Beatus vir qui fecerit hanc, & 2
homo qui adhæſerit ei, caverit ne ſabbatha
contaminet, & cuſtodierit manus ſuas
ne faciant iniquitatem. Non dicat alie- 3
nigena qui ſe recipit ad Dominum, Putáſne
quòd Dominus me ſegreget à populo
ſuo ? néve dicat Eunuchus, Equidem ſum
lignum aridum. Sic ait Dominus ; Eunu- 4
chis qui cuſtodierint ſabbatha mea, quod
ego volo delegerint, & adhæſerint fœderi
meo ;

ישעיה: נו

nomen & ,manum meis muris in & , mea domo in eis dabo Et
5 וְנָתַתִּי לָהֶם בְּבֵיתִי וּבְחוֹמֹתַי יָד וָשֵׁם
quod , ei dabo ſeculi nomen ;filiabus quàm & , filiis quàm melius
טוֹב מִבָּנִים וּמִבָּנוֹת שֵׁם עוֹלָם אֶתֶּן־לוֹ אֲשֶׁר
,DOMINO ſuper copulatos alienigenæ filios Et .ſuccidetur non
6 לֹא יִכָּרֵת׃ וּבְנֵי הַנֵּכָר הַנִּלְוִים עַל־יְהוָה
exiſtendum ad , DOMINI nomen amandum ad & ,ei miniſtrandum ad
לְשָׁרְתוֹ וּלְאַהֲבָה אֶת־שֵׁם יְהוָה לִהְיוֹת
, illud polluendo à ,ſabbathum cuſtodientem omnem : ſervos in ei
לוֹ לַעֲבָדִים כָּל־שֹׁמֵר שַׁבָּת מֵחַלְּלוֹ
montem ad eos adducam Et .meum fœdus in apprehendentes &
7 וּמַחֲזִיקִים בִּבְרִיתִי׃ וַהֲבִיאוֹתִים אֶל־הַר
,eorum aſcenſiones:meæ orationis domo in eos lætificabo & , meæ ſanctitatis
קָדְשִׁי וְשִׂמַּחְתִּים בְּבֵית תְּפִלָּתִי עוֹלֹתֵיהֶם
mea domus quia : meo altari ſuper beneplacitũ ad eorum ſacrificia &
וְזִבְחֵיהֶם לְרָצוֹן עַל־מִזְבְּחִי כִּי בֵיתִי
Dominus Ait .populis omnibus vocabitur orationis domus
8 בֵּית־תְּפִלָּה יִקָּרֵא לְכָל־הָעַמִּים׃ נְאֻם אֲדֹנָי
eum ſuper congregabo adhuc : Iſrael expulſos congregans DOMINUS
יֱהוִה מְקַבֵּץ נִדְחֵי יִשְׂרָאֵל עוֹד אֲקַבֵּץ עָלָיו
omnis , devorandum ad venite : agri fera Omnis .ejus congregatos
9 לְנִקְבָּצָיו׃ כֹּל חַיְתוֹ שָׂדָי אֵתָיוּ לֶאֱכֹל כָּל־
, neſciverunt ipſi omnes , cæci ejus Speculatores .ſylva in fera
10 חַיְתוֹ בַּיָּעַר׃ צֹפָו עִוְרִים כֻּלָּם לֹא יָדָעוּ
,loquentes deliria : latrare poterunt non , muti canes ipſi univerſi
כֻּלָּם כְּלָבִים אִלְּמִים לֹא יוּכְלוּ לִנְבֹּחַ הֹזִים
noverunt non animo fortes canes Et .dormitare diligentes , jacentes
11 שֹׁכְבִים אֹהֲבֵי לָנוּם׃ וְהַכְּלָבִים עַזֵּי־נֶפֶשׁ לֹא יָדְעוּ
ipſi univerſi : intelligere noverunt non paſtores ipſi & , ſaturitatem
שָׂבְעָה וְהֵמָּה רֹעִים לֹא יָדְעוּ הָבִין כֻּלָּם
Venite .ejus extremo à ſuam cupiditatem ad vir ,reſpexerunt ſuam viam ad
12 לְדַרְכָּם פָּנוּ אִישׁ לְבִצְעוֹ מִקָּצֵהוּ׃ אֵתָיוּ
cras diem hunc ſecundùm erit & : ſechar potabimus & ,vinum capiam
אֶקְחָה־יַיִן וְנִסְבְּאָה שֵׁכָר וְהָיָה כָזֶה יוֹם מָחָר
.valde abundanter magnus
גָּדוֹל יֶתֶר מְאֹד׃

CAP. LVII. נז

miſericordiæ viri & : cor ſuper ponens quiſquam non & , periit Juſtus
1 הַצַּדִּיק אָבָד וְאֵין אִישׁ שָׂם עַל־לֵב וְאַנְשֵׁי־חֶסֶד
.juſtus colligitur mali faciebus à quia ,intelligente non in collecti
נֶאֱסָפִים בְּאֵין מֵבִין כִּי־מִפְּנֵי הָרָעָה נֶאֱסַף הַצַּדִּיק׃
.eo coram ambulans : ſuis cubiculis in requieſcent , pace Ingredietur
2 יָבוֹא שָׁלוֹם יָנוּחוּ עַל־מִשְׁכְּבוֹתָם הֹלֵךְ נְכֹחוֹ׃
.eſt fornicata & ,adulterum ſemen:auguratricis filii huc appropinquate vos Et
3 וְאַתֶּם קִרְבוּ־הֵנָּה בְּנֵי עֹנְנָה זֶרַע מְנָאֵף וַתִּזְנֶה׃
prolongabitis , os dilatabitis quem contra , eſtis oblectati quo Super
4 עַל־מִי תִּתְעַנָּגוּ עַל־מִי תַּרְחִיבוּ פֶה תַּאֲרִיכוּ
Incaleſcentes ? falſitatis ſemen ,prævaricationis nati vos Nonne ? linguam
5 לָשׁוֹן הֲלוֹא־אַתֶּם יִלְדֵי־פֶשַׁע זֶרַע שָׁקֶר׃ הַנֵּחָמִים
torrentibus in natos mactantes : frondoſo ligno omni ſub ulmis in
בָּאֵלִים תַּחַת כָּל־עֵץ רַעֲנָן שֹׁחֲטֵי הַיְלָדִים בַּנְּחָלִים
ipſi ipſi ,tua pars torrentis levibus In .petrarum ramos ſubter
6 תַּחַת סְעִפֵי הַסְּלָעִים׃ בְּחַלְּקֵי־נַחַל חֶלְקֵךְ הֵם הֵם
.munus feciſti aſcendere , libamen effudiſti ipſis etiam :tua ſors
גּוֹרָלֵךְ גַּם־לָהֶם שָׁפַכְתְּ נֶסֶךְ הֶעֱלִית מִנְחָה
? accipiam conſolationem his ſuper Nunquid
הַעַל אֵלֶּה אֶנָּחֵם׃

Verſio VULG. LAT.

5 Dabo eis in domo mea, & in muris meis locum, & nomen melius à filiis & filiabus : nomen ſempiternum dabo eis, 6 quod non peribit. Et filios advenæ, qui adhærent Domino, ut colant eum, & diligant nomen ejus, ut ſint ei in ſervos : omnem cuſtodientem ſabbatum ne polluat illud, & tenen- 7 tum fœdus meum : Adducam eos in montem ſanctum meum, & lætificabo eos in domo orationis meæ: holocauſta eorum, & victimæ eorum, placebunt mihi ſuper altari meo: quia domus mea, domus orationis vo- 8 cabitur cunctis populis. Ait Dominus Deus, qui congregat diſperſos Iſrael ; Adhuc congregabo ad eum congregatos 9 ejus. Omnes beſtiæ agri venite ad devorandum, univerſæ 10 beſtiæ ſaltûs. Speculatores ejus cæci omnes, neſcierunt univerſi : canes muti non valentes latrare, videntes vana, dor- 11 mientes & amantes ſomnia. Et canes impudentiſſimi neſcierunt ſaturitatem : ipſi paſtores ignoraverunt intelligentiam : omnes in viam ſuam declinaverunt, unuſquiſque ad avaritiam ſuam, à ſummo uſque ad 12 noviſſimum. Venite, ſumam' vinum, & impleamur ebrietate : & erit ſicut hodiè, ſic & cras, & multò ampliùs.

CAP. LVII.

1 Juſtus perit, & non eſt qui recogitet in corde ſuo : & viri miſericordiæ colliguntur, quia non eſt qui intelligat : à facie enim malitiæ collectus eſt ju- 2 ſtus. Veniat pax, requieſcat in cubili ſuo, qui ambulavit in di- 3 rectione ſua. Vos autem accedite huc filii auguratricis, ſemen adulteri, & fornicariæ. 4 Super quem luſiſtis? ſup quem dilatâſtis os, et ejeciſtis linguã? numquid non vos filii ſceleſti, 5 ſemen mendax? Qui conſolamini in diis ſubter omne lignum frondoſum, immolantes parvulos in torrentibus, 6 ſubter eminentes petras? In partibus torrentis pars tua, hæc eſt ſors tua: & ipſis effudiſti libamen, obtuliſti ſacrificium, numquid ſuper his non indignabor?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

5 Δώσω αὐτοῖς ἐν τῷ οἴκῳ μου, καὶ ἐν τῷ τείχει μου τόπον ὀνομαστὸν, (ε) κρείττω υἱῶν καὶ θυγατέρων, ὄνομα αἰώνιον δώσω αὐ- 6 τοῖς, καὶ οὐκ ἐκλείψει· Καὶ τοῖς ἀλλογενέσι τοῖς προσκειμένοις (ζ) κυρίῳ δουλεύειν αὐτῷ, καὶ ἀγαπᾷν τὸ ὄνομα κυρίου, τοῦ εἶναι αὐτῷ εἰς δούλους καὶ δούλας· καὶ πάντας τοὺς φυλασσομένους τὰ σάββατά μου μὴ βεβηλοῦν, καὶ ἀντεχομένους τῆς διαθήκης μου, 7 Εἰσάξω αὐτοὺς εἰς τὸ ὄρος τὸ ἅγιόν μου, καὶ εὐφρανῶ αὐτοὺς ἐν τῷ οἴκῳ τῆς προσευχῆς μου· τὰ ὁλοκαυτώματα αὐτῶν, καὶ αἱ θυσίαι αὐτῶν ἔσονται δεκταὶ ἐπὶ (η) τὸ θυσιαστήριόν μου. ὁ γὰρ οἶκός μου, οἶκος προσευχῆς κληθήσεται πᾶσι τοῖς ἔθνεσιν, 8 Εἶπε κύριος ὁ συνάγων τοὺς διεσπαρμένους Ἰσραὴλ, ὅτι συνάξω ἐπ᾽ αὐ- 9 τὸν συναγωγήν. Πάντα τὰ θηρία τὰ ἄγρια, δεῦτε, φάγετε, πάντα τὰ θηρία 10 τοῦ δρυμοῦ. Ἴδετε ὅτι (θ) ἐκτετύφλωνται πάντες, οὐκ ἔγνωσαν (ι), κύνες ἐνεοὶ οὐ δυνήσονται ὑλακτεῖν, ἐνυπνιαζόμενοι κοί- 11 την, φιλοῦντες νυστάξαι. Καὶ οἱ κύνες ἀναιδεῖς τῇ ψυχῇ, οὐκ εἰδότες πλησμονήν. καί εἰσι πονηροὶ οὐκ εἰδότες σύνεσιν, πάντες (κ) ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν ἐξηκολούθησαν, ἕκαστος κατὰ τὸ (λ) ἑαυτοῦ.

Dabo eis in domo mea, & in muro meo locum nominatum, meliorem filiis, & filiabus: nomen ſempiternum dabo eis : & non deficiet: Et alienigenis, qui additi ſunt Domino, ſervire ei, & diligere nomen ejus, ut ſint ei in ſervos, & ancillas : & omnes, qui cuſtodiunt ſabbata mea, ut non violent ea, & tenent teſtamentum meum; Inducam illos in montem ſanctum meum, & lætificabo eos in domo orationis meæ. Holocauſtomata eorum, & victimæ eorum erunt acceptabiles ſuper altare meum. Domus enim mea domus orationis vocabitur cunctis gentibus, Dixit Dominus, qui congregat diſperſos Iſrael : quia congregabo ad eum congregationem. Omnes beſtiæ feræ venite, comedite, omnes beſtiæ ſylvæ. Videte, quoniam excæcati ſunt omnes: non cognoverunt: canes muti non poterunt latrare : ſomniantes lectulum, amantes dormitationem. Et canes impudentes animo, ignorantes ſaturitatem : Et ſunt mali, neſcientes intelligentiam: omnes, vias ſuas ſequuti ſunt, unuſquiſque (b) juxta ſuum. 5 6 7 8 9 10 11

MS.A. (ε) κρείσσων (ζ) πρὸς κύριον (η) τοῦ θυσιαστηρίου μου. (θ) πάντες ἐκτετύφλωνται, (ι) φρονῆσαι, πάντες κύνες (κ) ἐν ταῖς ὁδοῖς (λ) αὐτοῦ.

ΚΕΦ. νζʹ.

1 Ἴδετε ὡς ὁ δίκαιος ἀπώλετο, καὶ οὐδεὶς ἐκδέχεται τῇ καρδίᾳ, καὶ ἄνδρες δίκαιοι αἴρονται, καὶ οὐδεὶς κατανοεῖ. ἀπὸ γὰρ προσ- 2 ώπου ἀδικίας ἦρται ὁ δίκαιος. Ἔσται ἐν εἰρήνῃ ἡ ταφὴ αὐτοῦ, ἦρται ἐκ τοῦ μέ- 3 σου. Ὑμεῖς δὲ προσαγάγετε ὧδε υἱοὶ ἄνο- 4 μοι, σπέρμα μοιχῶν καὶ πόρνης. Ἐν τίνι ἐνετρυφήσατε; καὶ ἐπὶ τίνα ἠνοίξατε τὸ στόμα ὑμῶν; καὶ ἐπὶ τίνα ἐχαλάσατε τὴν γλῶσσαν ὑμῶν; οὐχ ὑμεῖς ἐστὲ τέκνα ἀπω- 5 λείας; σπέρμα ἄνομον, Οἱ παρακαλοῦντες (α) εἴδωλα ὑπὸ δένδρα δασέα, σφάζοντες τὰ τέκνα αὐτῶν ἐν ταῖς φάραγξιν 6 ἀναμέσον τῶν πετρῶν; Ἐκείνη σου ἡ μερὶς, οὗτός σου ὁ κλῆρος, κἀκείνοις ἐξέχεας σπονδὰς, (β) καὶ τούτοις ἀνήνεγκας θυσίας. ἐπὶ τούτοις οὖν οὐκ ὀργισθήσομαι;

CAP. LVII.

Videte, quomodò juſtus periit; & nemo ſuſcipit corde : & viri juſti tolluntur ; & nemo conſiderat. A facie enim iniquitatis ablatus eſt juſtus: Erit in pace ſepultura ejus : ablatus eſt de medio. Vos autem accedite huc filii iniqui, ſemen adulterorum, & meretricis. In quo oblectati eſtis ? & ſuper quem aperuiſtis os veſtrum? et ſuper quem ejeciſtis linguam veſtram ? Nónne vos eſtis filii perditionis, ſemen iniquum, Qui (a) vocatis idola ſubter frondoſas arbores, immolantes filios veſtros in vallibus in medio petrarum ? Illa eſt pars tua : hæc eſt ſors tua : et illis effudiſti libamina, et his obtuliſti hoſtias. Super his ergò non iraſcar? 1 2 3 4 5 6

MS.A. (α) τὰ εἴδωλα (β) κἀκείνοις

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 וְאֶתֵּן לְהוֹן בְּבֵית מַקְדְּשִׁי וּבַאֲרַע בֵּית שְׁכִנְתִּי אֲתַר וְשׁוּם דְּטָב מִבְּנִין וּמִבְּנָן שׁוּם עָלַם אֶתֵּן
6 לְהוֹן דְּלָא יִפְסוּק׃ וּבְנֵי עַמְמַיָּא דְּמִתּוֹסְפִין עַל עַמֵּיהּ דַּיְיָ לְשַׁמָּשׁוּתֵיהּ וּלְמִרְחַם יָת שְׁמָא
7 דַּיְיָ לְמֶהֱוֵי לֵיהּ לְעַבְדִּין כָּל דְּיִטַּר שַׁבְּתָא לְאַחֲלוּתֵיהּ וּמַתְקְפִין בִּקְיָמִי׃ וְאַיְתִנּוּן
לְטוּרָא דְּקוּדְשִׁי וְאַחֲדֵנּוּן בְּבֵית צְלוֹתִי עֲלָוָתְהוֹן וְנִכְסַת קוּדְשֵׁיהוֹן יִתַּסְקוּן לְרַעֲוָא עַל
8 מַדְבְּחִי אֲרֵי בֵּית מַקְדְּשִׁי בֵּית צְלוֹ יִתְקְרֵי לְכָל עַמְמַיָּא׃ אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים דַּעֲתִיד
9 לְכַנָּשָׁא מְבַדְּרֵי יִשְׂרָאֵל עוֹד אֲקָרֵיב גָּלְוָתְהוֹן לְכַנָּשָׁא יָתְהוֹן׃ כָּל מַלְכֵי עַמְמַיָּא
דְּמִתְכַּנְּשִׁין לְאַעָקָא לִיךְ יְרוּשְׁלֵם בְּגַוִּיךְ יִתְרְמוֹן יְהוֹן לְמֵיכַל לְחֵיוַת בָּרָא תִּסְבַּע מִנְּהוֹן
10 חֵיוַת חוּרְשָׁא׃ סַכּוֹאֵיהוֹן סָמָן כּוּלְּהוֹן לָא יָדְעִין מִדַּעַם כּוּלְּהוֹן כַּלְבִין חֵרְשִׁין לָא
11 יָכְלִין לְמִנְבַּח נָיְמִין שָׁכְבִין רָחֲמִין לְמִדְמַךְ׃ וְכַלְבַּיָּא תַּקִּיפֵי נַפְשָׁן לָא יָדְעִין לְמִסְבַּע
וְאִנּוּן מַבְאֲשִׁין לָא יָדְעִין לְאִסְתַּכָּלָא כּוּלְּהוֹן גְּבַר לִקְבֵל אָרְחֵיהּ גְּלוֹ גְּבַר לְמִבַּז
12 מָמוֹנֵיהּ דְּיִשְׂרָאֵל׃ אָמְרִין אֱתוֹ וְנִסַּב חֲמַר וְנִתְרְוֵי מִן עַתִּיק וּתְהֵי שֵׁרוּתָנָא דִּמְחָר
טָבָא מִדְּיוֹמָא דֵּין רַבָּא סַגִּיאָה לַחֲדָא׃

נז

1 צַדִּיקַיָּא מָיְתִין וְלֵית אֱנָשׁ דִּמְשַׁוֵּי דַּחַלְתִּי עַל לֵב וְגַבְרֵי גָּמְלֵי חִסְדָּא מִתְכַּנְּשִׁין וְלָא
2 מִסְתַּכְּלִין אֲרֵי קֳדָם בִּישְׁתָא דַּעֲתִידָא לְמֵיתֵי מִתְכַּנְּשִׁין צַדִּיקַיָּא׃ יְהָכוּן שְׁלָם יְנוּחוּן
3 עַל אֲתַר בֵּית מִשְׁכְּבֵיהוֹן עָבְדֵי אוֹרָיְתֵיהּ׃ וְאַתּוּן אִתְקְרַבוּ הָלְכָא עַם דָּרָא דְּעוֹבָדֵיהוֹן
4 בִּישִׁין דְּמִנְּצִבַת קוּדְשָׁא נִצְבַתְהוֹן וְאִנּוּן מְנָאֲפִין וּמְזַנָּן׃ עַל מַן אַתּוּן מִתְפַּנְּקִין וּקְדָם
5 מַן תִּפְתְּחוּן פּוּמְכוֹן תַּסְגּוּן לְמַלָּלָא רַבְרְבָן הֲלָא אַתּוּן יַלְדֵי מָרוֹד זַרְעָא שִׁקְרָא׃ דְּפָלְחִין
6 לְטַעֲוָתָא תְּחוֹת כָּל אִילָן עֲבוּף נָכְסֵי יַנְקַיָּא בְּנַחֲלַיָּא תְּחוֹת שְׁקִיפֵי כֵּיפַיָּא׃ בְּשִׁיעִית
כֵּיף נַחֲלָא חוּלָקִיךְ אַף תַּמָּן אִנּוּן עַדְבִיךְ אַף לְהוֹן נְסַכְתְּ נִסְכִּין אַסֵּיקְתְּ קוּרְבְּנִין הַעַל
אִלֵּין יְתוּב מֵימְרִי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et dabo eis in domo ſanctuarii mei & in terra domus majeſtatis meæ locum, & nomen melius filiis & filiabus ; nomen æternum dabo eis quod 5
non ceſſabit. Et filii populorum qui apponuntur populo Domini, ut miniſtrent ei, & diligant nomen Domini, ut ſint ei in ſervos : quiſquis cu- 6
ſtodit Sabbathum ne violet illud, & tenet pactum meum ; Adducam eos in montem ſanctum meum, & lætificabo eos in domo orationis meæ : 7
holocauſta eorum & victimæ ſanctificatæ eorum offerentur voluntariè ſuper altari meo: quia domus ſanctuarii mei domus orationis vocabitur
omnibus populis. Ait Dominus Deus, qui congregaturus eſt diſperſos 8
Iſrael : Adhuc congregabo captivitatem eorum, ut colligam eos. Omnes 9
reges populorum qui congregantur ut tribulent te Jeruſalem, in medio tui projicientur, erunt in cibum beſtiis agri, ſaturabitur illis beſtia ſylvæ.
Speculatores eorum cæci ſunt omnes, nihil ſciunt : omnes illi ſunt canes 10
muti, non valentes latrare, dormientes, cubantes, diligentes dormire : Et 11
canes robuſti animo, neſciunt ſaturitatem : & ipſi malefacientes, neſciunt intelligere : omnes illi unuſquiſque contra viam ſuam migraverunt, ſinguli ut diripiant facultates Iſraelis. *Dicentes*, Venite, ſumamus 12
vinum, & inebriemur vino veteri : & erit prandium noſtrum craſtinum lautius hodierno, amplum & prolixum admodum.

CAP. LVII.

Juſti moriuntur, & non eſt vir qui proponat animo mei timorem : & 1
viri retribuentes miſericordiam colliguntur, & non contemplantur quia propter malum quod venturum eſt, colliguntur juſti. Ibunt in pace, & 2
requieſcent in loco domus cubationis ſuæ, qui operantur ſecundùm Legem *ejus*, Vos autem accedite huc, popule generationis cujus opera ſunt 3
mala. De plantatione enim ſancta eſt plantatio eorum, ſed ipſi ſunt adulteri & fornicantes. In quo vos delectamini, & ante quem vos aperitis os 4
veſtrum, & multiplicatis loqui magnalia ? nónne vos eſtis filii ſceleſti, ſemen mendax ? Qui adoletis idolis ſub omni ligno frondoſo, immolantes 5
parvulos in torrentibus, ſubter ſcopulos petrarum. In lævibus locis ripæ 6
torrentis eſt pars tua, ibi quoque ea ſunt ſors tua : etiam eis immolâſti victimas, obtuliſti oblationes : nunquid ob hæc pœnitebit Verbum meum ?

Verſio *S Y R I A C A* cum Interpretatione *L A T I N A.*

5 * ܐܬܠ ܠܗܘܢ ܒܒܝܬܝ ܘܒܫܘܪܝ ܐܬܪܐ ܘܫܡܐ ܕܛܒ ܡܢ ܒܢܝܐ ܘܡܢ ܒܢܬܐ. ܫܡܐ
6 ܕܠܥܠܡ ܐܬܠ ܠܗܘܢ ܕܠܐ ܢܥܒܪ. * ܘܠܒܢܝ ܢܘܟܪܝܐ ܕܡܬܠܘܝܢ ܠܡܪܝܐ ܠܡܫܡܫܘܬܗ:
ܘܠܡܪܚܡ ܫܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܢܗܘܘܢ ܠܗ ܠܥܒܕܐ. ܟܠ ܕܢܛܪ ܫܒܬܐ ܕܠܐ ܢܣܝܒܗ
7 ܘܡܬܠܒܟܝܢ ܒܩܝܡܝ. * ܐܝܬܐ ܐܢܘܢ ܠܛܘܪ ܩܘܕܫܝ. ܘܐܚܕܐ ܐܢܘܢ ܒܒܝܬ ܨܠܘܬܝ. ܘܥܠܘܬܗܘܢ
ܘܕܒܚܝܗܘܢ ܢܣܩܘܢ ܠܪܥܝܢܐ ܥܠ ܡܕܒܚܝ. ܡܛܠ ܕܒܝܬܝ ܒܝܬ ܨܠܘܬܐ ܢܬܩܪܐ
8 ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ: ܕܡܟܢܫ ܠܡܒܕܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܬܘܒ ܐܟܢܫ
9 10 ܥܠܘܗܝ ܠܟܢܘܫܘܗܝ. * ܟܠ ܚܝܘܬܐ ܕܕܒܪܐ. ܬܘ ܐܟܘܠܘ ܟܠܗ ܚܝܘܬܐ ܕܥܒܐ. * ܣܟܘܝܗ
ܥܘܝܪܐ ܐܢܘܢ ܟܠܗܘܢ ܘܠܐ ܝܕܥܝܢ. ܟܠܗܘܢ ܟܠܒܐ ܐܢܘܢ ܚܪܫܐ. ܘܠܐ ܡܫܟܚܝܢ ܠܡܢܒܚ. ܫܪܝܢ
11 ܘܪܡܝܢ. ܘܪܚܡܝܢ ܠܡܕܡܟ. * ܘܟܠܒܐ ܐܢܘܢ ܕܚܨܝܦܝܢ ܢܦܫܗܘܢ. ܘܠܐ ܝܕܥܝܢ ܠܡܣܒܥ.
ܗܢܘܢ ܒܝܫܝܢ. ܘܠܐ ܝܕܥܝܢ ܣܘܟܠܐ. ܟܠܗܘܢ ܠܐܘܪܚܗܘܢ ܦܢܘ. ܘܐܢܫ ܠܣܛܪܗ. ܘܠܥܒܪܗ.
12 * ܬܘ ܢܣܒ ܚܡܪܐ ܘܢܫܒܥ ܫܟܪܐ: ܘܢܗܘܐ ܐܝܟ ܝܘܡܢܐ. ܘܢܘܬܪ ܠܢ ܣܘܓܐܐ ܕܛܒ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܢܙ *

1 * ܗܐ ܙܕܝܩܐ ܐܒܕ. ܘܠܝܬ ܐܢܫ ܕܣܐܡ ܠܗ ܥܠ ܠܒܗ. ܘܓܒܪܐ ܙܕܝܩܐ ܡܬܟܢܫܝܢ ܕܠܐ ܡܣܬܟܠ.
2 ܡܛܠ ܕܡܢ ܩܕܡ ܒܝܫܬܐ ܡܬܟܢܫ ܙܕܝܩܐ. * ܘܢܐܬܐ ܫܠܡܐ ܘܢܬܬܢܝܚܘܢ ܥܠ
3 ܡܫܟܒܝܗܘܢ. ܘܢܗܠܟܘܢ ܠܘܩܒܠܗܘܢ. * ܘܐܢܬܘܢ ܩܪܘܒܘ ܠܟܐ ܒܢܝ ܡܡܟܟܬܐ:
4 ܙܪܥܐ ܕܓܝܪܐ ܘܙܢܝܬܐ. * ܥܠ ܡܢ ܐܬܦܢܩܬܘܢ. ܘܥܠ ܡܢ ܦܬܚܬܘܢ ܦܘܡܟܘܢ.
5 ܘܐܘܪܟܬܘܢ ܠܫܢܟܘܢ. ܗܐ ܐܢܬܘܢ ܒܢܝܐ ܕܥܘܠܐ. ܘܙܪܥܐ ܕܓܠܐ. * ܕܡܬܒܝܐܝܢ
ܒܦܬܟܪܐ. ܬܚܝܬ ܟܠ ܐܝܠܢ ܕܥܒܐ. ܘܢܟܣܝܢ ܠܛܠܝܐ ܒܢܚܠܐ. ܬܚܝܬ ܫܩܝܦܐ
6 ܕܟܐܦܐ. * ܡܢܬܟܝ ܘܝܪܬܘܬܟܝ. ܥܡ ܡܢܬܐ ܕܢܚܠܐ. ܐܦ ܥܠܝܗܘܢ ܢܣܟܬܝ
ܢܘܣܟܐ. ܘܐܣܩܬܝ ܩܘܪܒܢܐ. ܥܠ ܗܠܝܢ ܐܬܒܝܐ.

5 * Dabo in domo mea & intra muros meos locum & nomen excellentius quàm filiorum & filiarum; nomen *ſcilicet* ſempiternum dabo eis, quod nunquam deficiet. 6 Filios autem alienigenarum, qui Domino ſe adjunxerint ad miniſtrandum ei, & ad diligendum nomen Domini, ut ſint ſervi ejus; quemcunque cuſtodientem ſabbathum ne prophanet illud, & fœdus meum firmiter tenentem: 7 Adducam in montem ſanctum meum, & lætificabo in domo orationis meæ: holocauſta & ſacrificia eorum gratiſſima erunt ad altare meum: quoniam domus mea domus orationis vocabitur cunctis populis. 8 Sic dicit Dominus Deus qui congregat diſperſos Iſraelis, Adhuc aggregabo ei aggregatos. 9 Omnes beſtiæ agri venite, devorate omnes beſtias ſylvæ. 10 Videntes, cæci ſunt omnes & ignari; canes muti ſunt omnes, nec poſſunt latrare; indulgent voluptati, jacent, & amant dormitationem. 11 Sunt autem canes avidi appetitûs, & neſcientes ſaturari: erunt nequiſſimi, & ignari prudentiæ: omnes ad viam ſuam ſe converterunt, & quilibet ad partem & latus ſuum. 12 Venite *inquiunt* ſumamus vinum & ſumamus ſiceram, & ſimus ut hodierna dies, & lucrum faciamus nobis multum admodum.

CAP. LVII.

1 ECce juſtus perit, & nemo eſt qui animum adjiciat: & viri ſancti rapiuntur nemine advertente. A conſpectu quidem malitiæ rapitur juſtus: 2 At veniet pax, & requieſcent ſuper cubili ſuo, & coram ſe gradientur. 3 Vos verò accedite huc filii humiliatæ, ſemen adulterum & fornicarium. 4 Contra quem avidè inhiatis? & contra quem aperitis os veſtrum, & linguam veſtram protrahitis? equidem vos fœtus eſtis iniquus & ſemen falſum: 5 Qui conſolationē veſtrā collocatis in idolis ſubter omnem arborem ſylvæ, & jugulatis pueros in torrentibus ſub rupibus petrarum. 6 Sors tua & hæreditas tua, cum ſorte torrentium erit; nam & ſuper eos libâſti libamina, & obtuliſti ſacrificia: in his oblectarer?

Verſio *A R A B I C A* cum Interpretatione *L A T I N A.*

5 * أعطيهم في بيتي وفي سوري موضعا مسميا أفضل من البنين والبنات * أعطي لهم اسما
6 ابديا ولا يفني * وللغرباء الجنس الدخلاء الي الرب ليتعبدوا له وليحبوا اسم الرب ليكونوا له
عبيدا واماء * وجميع الذين يحفظون ان لا يدنسوا سبوتي والممسكون بعهدي *
7 * ادخلهم الي جبلي المقدس * وافرحهم في بيت صلاتي * محرقاتهم وذبائحهم تكون مقبولة
8 على مذبحي * لان بيتي بيت الصلاة يدعى لجميع الامم * لان جامع متفرقي اسرايل قال *
9 10 اني اجمع عليه جمعا * يا جميع الوحوش البرية تعالوا كلوا * يا جميع وحوش الغاب * انظروا
انهم جميعهم يعمون لم يعلموا ليتعقلوا * جميعهم كلاب ساهية لا يستطيعون ان ينبحوا *
11 الذين يحلمون في المضجع * يحبون ان ينعسوا * والكلاب الوقحة النفس لم يعرفوا شبعا * وهم
اشرار لم يعرفوا فهما * جميعهم في الطرقات تبع كل واحد منفعتهم *

* الفصل السابع والخمسون *

1 * انظروا كيف هلك الصديق وليس احد يفتكر
بالقلب * والرجال الصديقون يرفعون ولا واحد يتامل * لان من وجه الظلم رفع الصديق *
2 * يكون في السلامة دفنه * رفع من الوسط *

* الاصحاح السابع والعشرون *

* توبيخ بني اسرايل * وهو قريان يوم الاحد *

3 4 * وانتم تقدموا هاهنا ايها البنون الاثمة * زرع الفاسقين والزانية * بماذا تنعمتم * وعلى من
فتحتم فمكم * وعلى من دليتم لسانكم * اليس انتم تصيرون بني هلاك ذرية اثمة *
5 * الذين يسالون الاصنام تحت الاشجار المظللة * يذبحون اولادهم في الاودية بين
6 الصخور * نصيب تلك سهمكم * لاوليك اهرقت القوارير * ولاوليك قدمت الذبائح *
لهذا الست اغضب *

5 *Dabo in domo mea & intra murum meum, locum celebrem, præſtantiorem quàm filiorum & filiarum: dabo enim eis nomen æternum quod nunquam deficiet.* 6 *Et alienigenas qui ſe receperint ad Dominum ut ſerviant ei, & diligant nomen Domini, ut ſint ſervi & ancillæ ipſius; & eos omnes qui caverint ne prophanent ſabbatha mea, quique adhærent fœderi meo;* 7 *Introducam in montem ſanctum meum, & exhilarabo in domo orationis meæ: holocauſta & ſacrificia eorum erunt accepta ſuper altari meo: quia domus mea, domus orationis vocabitur cunctis gentibus.* 8 *Nam congregator diſperſorum Iſraelis, Ego, inquit, aggregabo illi cœtum.* 9 *O omnes beſtiæ campeſtres, venite, comedite; O omnes beſtiæ ſylveſtres,* 10 *Videte ut omnes iſti cæci ſint, neſciant prudenter agere; omnes ſint canes torpidi, latrare nequeant; qui ſomnient in cubili, ament dormitationem:* 11 *Et quidem canes impudentis aviditatis, ſaturitatis neſcii, iidémque flagitioſi, prudentiæ ignari; omnes in viis ſuis, unuſquiſque propriam ſectatur utilitatem.*

CAP. LVII.

1 *VIdete quomodo perierit juſtus, & nemo corde cogitet; viri probi tollantur, & nemo conſideret. Quoniam à facie iniquitatis ablatus eſt juſtus,* 2 *Erit in pace ſepultura ejus, ſublatus eſt è medio.*

Textus vigeſimus ſeptimus.

Objurgatio filiorum Iſraelis:
Lectio diei Dominicæ.

3 *Accedite huc O filii ſcelerati, ſemen adulterorum & ſcortatricis.* 4 *Qua in re oblectati eſtis? contra quem aperuiſtis os veſtrum? & contra quem exeruiſtis linguam veſtram? annon vos eritis filii perditionis, generatio maligna?* 5 *Qui rogatis idola ſub arboribus umbroſis, jugulatis liberos veſtros in torrentibus inter petras.* 6 *Sors illorum* idolorum *erit portio veſtra. Illis alabaſtra fudiſti, & illis obtuliſti ſacrificia: propter hæc annon iraſcerer?*

ישעיה: נח

illuc etiam : tuum cubile poſuiſti elevatum & excelſum montem Super
7 עַל הַר־גָּבֹהַּ וְנִשָּׂא שַׂמְתְּ מִשְׁכָּבֵךְ גַּם־שָׁם
poſuiſti poſtem & , oſtium poſt Et .victimam immolandum ad aſcendiſti
8 עָלִית לִזְבֹּחַ זָבַח׃ וְאַחַר הַדֶּלֶת וְהַמְּזוּזָה שַׂמְתְּ
dilatâſti , aſcendiſti & diſcooperuiſti me à quia : tuum *monimentum*
זִכְרוֹנֵךְ כִּי מֵאִתִּי גִּלִּית וַתַּעֲלִי הִרְחַבְתְּ
.vidiſti *manum*,eorum cubile dilexiſti ; eis *ex tibi excidiſti* & , tuum cubile
מִשְׁכָּבֵךְ וַתִּכְרָת־לָךְ מֵהֶם אָהַבְתְּ מִשְׁכָּבָם יָד חָזִית׃
miſiſti & : tua pigmenta multiplicâſti & ,oleo *in regem ad es progreſſa* Et
9 וַתָּשֻׁרִי לַמֶּלֶךְ בַּשֶּׁמֶן וַתַּרְבִּי רִקֻּחָיִךְ וַתְּשַׁלְּחִי
multitudine In.*ſepulchrũ* ad uſq; te humiliâſti&,*longè de ad uſq;* tuos legatos
10 צִירַיִךְ עַד־מֵרָחֹק וַתַּשְׁפִּילִי עַד־שְׁאוֹל׃ בְּרֹב
,inveniſti *tuæ manus vitũm*:eſt deſperatũ ,dixiſti nec , laborâſti tuæ viæ
דַּרְכֵּךְ יָגַעַתְּ לֹא אָמַרְתְּ נוֹאָשׁ חַיַּת יָדֵךְ מָצָאת
, *mentiaris* quod?timuiſti & es *verita* quem Et .ægrotâſti non ea propter
11 עַל־כֵּן לֹא חָלִית׃ וְאֶת־מִי דָּאַגְתְּ וַתִּירְאִי כִּי תְכַזֵּבִי
? *tacens* ego Anne:tuum cor ſuper poſuiſti nec,es recordata non mei &
וְאוֹתִי לֹא זָכַרְתְּ לֹא־שַׂמְתְּ עַל־לִבֵּךְ הֲלֹא אֲנִי מַחְשֶׁה
& : tuam juſtitiã annuntiabo Ego *? timebis* non me & ,ſeculo à &
12 וּמֵעֹלָם וְאוֹתִי לֹא תִירָאִי׃ אֲנִי אַגִּיד צִדְקָתֵךְ וְאֶת־
,*tuæ congregationes* te liberent,*te clamando In*.tibi proderunt non &,tua opera
13 מַעֲשַׂיִךְ וְלֹא יוֹעִילוּךְ׃ בְּזַעֲקֵךְ יַצִּילֻךְ קִבּוּצַיִךְ
hæreditabit me in *ſperans* & : vanitas tollet ,ventus tollet eos omnes &
וְאֶת־כֻּלָּם יִשָּׂא־רוּחַ יִקַּח־הָבֶל וְהַחוֹסֶה בִי יִנְחַל־
:viã *complanate,munite,munite* Dicétq; .*meæ ſanctitatis* montẽ poſſidebit &,terrã
14 אֶרֶץ וְיִירַשׁ הַר־קָדְשִׁי׃ וְאָמַר סֹלּוּ־סֹלּוּ פַּנּוּ־דָרֶךְ
, excelſus dixit ſic Quia .mei populi via de offendiculum tollite
15 הָרִימוּ מִכְשׁוֹל מִדֶּרֶךְ עַמִּי׃ כִּי כֹה אָמַר רָם
ſancto & , excelſo : ejus nomen ſanctum & ,*perpetuo* habitans ſublimis &
וְנִשָּׂא שֹׁכֵן עַד וְקָדוֹשׁ שְׁמוֹ מָרוֹם וְקָדוֹשׁ
ſpiritum *vivificandum ad* , ſpiritu humili & , contrito cum & : habitabo
אֶשְׁכּוֹן וְאֶת־דַּכָּא וּשְׁפַל־רוּחַ לְהַחֲיוֹת רוּחַ
,litigabo *ſeculũ* in non Quia .contritorum cor *vivificandum ad* &,humilium
16 שְׁפָלִים וּלְהַחֲיוֹת לֵב נִדְכָּאִים׃ כִּי לֹא לְעוֹלָם אָרִיב
ego animas &,*ſe involvet meis faciebus à* ſpiritu quia : iraſcar *finem* in nec
וְלֹא לָנֶצַח אֶקְּצוֹף כִּי־רוּחַ מִלְּפָנַי יַעֲטוֹף וּנְשָׁמוֹת אֲנִי
abſcondẽdo eã percuſſi &,ſum iratꝰ ejꝰ *cupiditatis* iniquitatẽ Propter .feci
17 עָשִׂיתִי׃ בַּעֲוֹן בִּצְעוֹ קָצַפְתִּי וְאַכֵּהוּ הַסְתֵּר
, vidi ejus Vias .ſui cordis viam per *refractarius* abiit & : ſum iratꝰ &
18 וְאֶקְצֹף וַיֵּלֶךְ שׁוֹבָב בְּדֶרֶךְ לִבּוֹ׃ דְּרָכָיו רָאִיתִי
, ei conſolationes reddidi & , eum feci requieſcere & : eum ſanavi &
וְאֶרְפָּאֵהוּ וְאַנְחֵהוּ וַאֲשַׁלֵּם נִחֻמִים לוֹ
longinquo ,pacem pacem : labiorum *germen* Creans .ejus lugentibus &
19 וְלַאֲבֵלָיו׃ בּוֹרֵא נוּב שְׂפָתָיִם שָׁלוֹם ׀ שָׁלוֹם לָרָחוֹק
mare veluti impii Et .eum ſanavi & , Dominus dixit , propinquo &
20 וְלַקָּרוֹב אָמַר יְהוָה וּרְפָאתִיו׃ וְהָרְשָׁעִים כַּיָּם
, cœno ejus aquæ ſe impellent & ,*poterit* non quieſcere nam : impulſum
נִגְרָשׁ כִּי הַשְׁקֵט לֹא יוּכָל וַיִּגְרְשׁוּ מֵימָיו רֶפֶשׁ
.impiis , meus Deus dixit , pax Non .luto &
21 וָטִיט׃ אֵין שָׁלוֹם אָמַר אֱלֹהַי לָרְשָׁעִים׃

CAP. LVIII. נח

:tuam vocem exalta tuba tanquam , prohibeas ne , gutture in Clama
1 קְרָא בְגָרוֹן אַל־תַּחְשֹׂךְ כַּשּׁוֹפָר הָרֵם קוֹלֶךָ
.eorũ peccata Jahacob domui &,eorũ prævaricationẽ meo populo *indica* &
וְהַגֵּד לְעַמִּי פִּשְׁעָם וּלְבֵית יַעֲקֹב חַטֹּאתָם׃

Verſio VUL. LAT.

7 Super montẽ excelſum & ſublimẽ
poſuiſti cubile tuũ, & illuc
aſcendiſti ut immolares hoſtias.
8 Et poſt oſtiũ, & retro poſtem
poſuiſti memoriale tuum:
quia juxta me diſcooperuiſti,
& ſuſcepiſti adulterũ: dilatâſti
cubile tuũ, & pepigiſti cum eis
fœdꝰ: dilexiſti ſtratũ eorũ manu
9 apertâ. Et ornâſti te regio unguento,
& multiplicâſti pigmẽta
tua. Miſiſti legatos tuos procul,
et humiliata es uſque ad inferos.
10 In multitudine viæ tuæ
laborâſti: non dixiſti; Quieſcã:
vitã manûs tuæ inveniſti, propterea
11 nõ rogâſti. Pro quo ſollicita
timuiſti, quia mentita es,
& meî non es recordata, neque
cogitâſti in corde tuo? quia ego
tacens, & quaſi non videns, &
12 meî oblita es. Ego annuntiabo
juſtitiã tuam, & opera tua non
13 proderunt tibi. Cùm clamaveris,
liberent te congregati tui,
& omnes eos auferet ventꝰ, tollet
aura : Qui autẽ fiduciã habet
meî, hæreditabit terrã, &
poſſidebit montẽ ſanctũ meũ.
14 Et dicam; Viam facite, præbete
iter, declinate de ſemita, auferte
offendicula de via populi
15 mei. Quia hæc dicit Excelſꝰ, et
ſublimis habitans æternitatem:
& ſanctũ nomen ejꝰ in excelſo
& in ſancto habitans, & cum
contrito & humili ſpiritu : ut
vivificet ſpiritũ humilium, &
16 vivificet cor contritorũ. Non
enim in ſempiternũ litigabo,
neque uſq; ad finẽ iraſcar: quia
ſpiritus à facie mea egredietur,
17 & flatus ego faciã. Propter iniquitatem
avaritiæ ejus iratus
ſum, & percuſſi eum: abſcondi
à te faciẽ meam, & indignatus
ſum: & abiit vagꝰ in via cordis
18 ſui. Vias ejus vidi, & ſanavi
eum, & reduxi eum, & reddidi
conſolationes ipſi, & lugentibꝰ
19 ejus. Creavi fructum labiorũ
pacem, pacem ei, qui longè eſt,
& qui propè, dixit Dominus, et
20 ſanavi eum. Impii autem quaſi
mare fervens, quod quieſcere
non poteſt, & redundant fluctus
ejus in conculcationem et
21 lutum. Non eſt pax impiis, dicit
Dominus Deus.

CAP. LVIII.

1 CLama, ne ceſſes, quaſi tuba
exalta vocẽ tuam, & annuntia
populo meo ſcelera eorum, et
domui Jacob peccata eorum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

7 Ἐπ᾽ ὄρος ὑψηλὸν καὶ μετέωρον, ἐκεῖ σου ἡ
κοίτη, καὶ ἐκεῖ ἀνεβίβασας (γ) θυσίας σου,
8 Καὶ ὀπίσω τῶν σταθμῶν τῆς θύρας σου ἔθηκας
μνημόσυνά σου. ᾤου, ὅτι ἐὰν ἀπ᾽ ἐμοῦ ἀποστῇς,
πλεῖόν τι ἕξεις; ἠγάπησας τοὺς κοιμωμένους
9 μετὰ σοῦ, Καὶ ἐπλήθυνας τὴν πορνείαν σου
μετ᾽ αὐτῶν, καὶ πολλοὺς ἐποίησας τοὺς μακρὰν
ἀπὸ σοῦ, καὶ ἀπέστειλας πρέσβεις ὑπὲρ τὰ
10 ὅριά σου, (δ) καὶ ἐταπεινώθης ἕως ᾅδου. Ταῖς
πολυοδίαις σου ἐκοπίασας, καὶ οὐκ εἶπας,
Παύσομαι ἐνισχύουσα, ὅτι ἔπραξας ταῦτα,
11 διὰ τοῦτο οὐ κατεδεήθης μου σύ. Τίνα εὐλαβηθεῖσα
ἐφοβήθης, καὶ ἐψεύσω με, καὶ οὐκ ἐμνήσθης
(ε), οὐδὲ ἔλαβές με εἰς τὴν διάνοιαν, οὐδὲ
εἰς τὴν καρδίαν σου; (ζ) καὶ ἐγώ σε ἰδὼν
12 παρορῶ, καὶ ἐμὲ οὐκ ἐφοβήθης. (η) Καὶ ἐγὼ
ἀπαγγελῶ τὴν δικαιοσύνην (θ) σου, καὶ
13 τὰ κακά σου, ἃ οὐκ (ι) ὠφελήσει σε, Ὅταν
ἀναβοήσῃς, ἐξελέσθωσάν σε ἐν τῇ θλίψει
σου· τούτους γὰρ πάντας ἄνεμος λήψεται, καὶ
ἀποίσει καταιγίς. οἱ δὲ ἀντεχόμενοί μου
κτήσονται γῆν, καὶ κληρονομήσουσι τὸ ὄρος
14 τὸ ἅγιόν μου· Καὶ ἐροῦσι, Καθαρίσατε ἀπὸ
προσώπου αὐτοῦ ὁδούς, καὶ ἄρατε σκῶλα ἀπὸ
15 τῆς ὁδοῦ τοῦ λαοῦ μου. Τάδε λέγει (κ) ὁ ὕψιστος,
ἐν ὑψηλοῖς κατοικῶν τὸν αἰῶνα, Ἅγιος ἐν
ἁγίοις, ὄνομα αὐτῷ, (λ) ὕψιστος ἐν ἁγίοις
ἀναπαυόμενος, καὶ ὀλιγοψύχοις διδοὺς
μακροθυμίαν, καὶ διδοὺς ζωὴν τοῖς συντετριμμένοις
16 τὴν καρδίαν, (μ) Οὐκ εἰς τὸν αἰῶνα
ἐκδικήσω ὑμᾶς, οὐδὲ διαπαντὸς ὀργισθήσομαι
ὑμῖν· πνεῦμα γὰρ παρ᾽ ἐμοῦ ἐξελεύσεται,
17 καὶ πνοὴν πᾶσαν ἐγὼ ἐποίησα. Δι᾽ ἁμαρτίαν
βραχύ τι ἐλύπησα αὐτόν, καὶ ἐπάταξα αὐτόν, καὶ
ἀπέστρεψα τὸ πρόσωπόν μου ἀπ᾽ αὐτοῦ, καὶ ἐλυπήθη,
καὶ ἐπορεύθη στυγνὸς ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτοῦ.
18 Τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ ἑώρακα, καὶ ἰασάμην αὐτόν,
καὶ παρεκάλεσα αὐτόν, καὶ ἔδωκα αὐτῷ παράκλησιν
19 ἀληθινήν, Εἰρήνην (ν) ἐπ᾽ εἰρήνῃ
τοῖς μακρὰν καὶ τοῖς ἐγγὺς οὖσι. καὶ εἶπε
20 κύριος, Ἰάσομαι αὐτούς, Οἱ δὲ ἄδικοι (ξ)
κλυδωνισθήσονται, καὶ ἀναπαύσασθαι οὐ δυνήσονται.
21 Οὐκ ἔστι χαίρειν τοῖς ἀσεβέσιν,
εἶπεν (ο) ὁ θεός.

ΚΕΦ. νη'.

1 ἈΝαβόησον ἐν ἰσχύϊ, καὶ μὴ φείσῃ, ὡς (·)
σάλπιγγι ὕψωσον τὴν φωνήν σου, καὶ ἀνάγγειλον
τῷ λαῷ μου τὰ ἁμαρτήματα αὐτῶν, καὶ
τῷ οἴκῳ Ἰακὼβ τὰς ἀνομίας αὐτῶν.

Super montem excelſum, & ſublimem, illic cubile tuum: & illuc 7
aſcendere feciſti hoſtias tuas: Et 8
poſt oſtii tui poſtes poſuiſti memorialia tua. Putabas, quoniam ſi
receſſiſſes à me, plus aliquid (b)
haberes: dilexiſti dormientes tecũ,
Et multiplicâſti fornicationem 9
tuam cum eis: multóſque feciſti
eos, qui procul à te, & miſiſti legatos
ultra terminos tuos: & humiliata
es uſque ad inferos. Multis 10
itineribus tuis laborâſti, & non
dixiſti, Deſinam : (c) confortata,
quia feciſti hæc: propterea non rogâſti
me tu. Quẽ timens perterrita 11
es? & mentita es mihi, nec
recordata es meî, neque ſumpſiſti
me in mentem, neque in cor tuum?
Et ego te vidẽs deſpicio: et me non
timuiſti. Et ego annuntiabo juſtitiã 12
tuã, et mala tua, quæ non proderũt
tibi: Cùm clamaveris, eruant te 13
in tribulatione tua. Iſtos enim
omnes tollet ventus, & auferet
tempeſtas. Qui autem innituntur
mihi, poſſidebunt terram, & hæreditate
conſequentur montem
ſanctum meum: Et dicent; Mundas 14
facite à facie ejus vias, & auferte
offendicula de via populi
mei. Hæc dicit Excelſus, in excelſis 15
habitans in æternum, Sanctus
in ſanctis, nomen illi: excelſus in
ſanctis requieſcens, & puſillanimis
dans patientiam, & dans vitam
his qui corde contriti (d) ſunt;
Non in æternum ulciſcar in vos: 16
neque ſemper iraſcar vobis: Spiritus
enim à me egredietur: & flatum
omnem ego feci. Propter peccatum 17
ad modicum quid contriſtavi
eum, & percuſſi eum, & averti
faciem meam ab eo: & contriſtatus
eſt, & ambulavit triſtis in
viis ſuis. Vias ejus vidi, & ſanavi 18
eum, et conſolatus ſum illum,
et dedi ei conſolationem veram,
Pacem ſuper pacem his, qui 19
longè, et qui propè ſunt. Et dixit
Dominus, Sanabo eos: Qui autem 20
iniqui ſunt, (e) fluctuabunt, et
quieſcere non poterunt. Non eſt 21
gaudium impiis, dixit Deus.

CAP. LVIII.

CLama in fortitudine, et ne 1
parcas: quaſi tubâ exalta vocem
tuam: et annuntia populo meo peccata
eorum, et domui Jacob iniquitates
eorum.

MS.A. Κεφ. νζ'. (γ) θυσίας, Καὶ ὀπίσω (δ) καὶ ἀπέστρεψας, καὶ ἐταπεινώθης (ε) μου, (ζ) κἀγώ (η) Κἀγὼ ἀπαγγέλλω (θ) μου, (ι) ὠφελήσουσίν σε, (κ) κύριος ὁ ὕψιστος, ὁ ἐν ὑψηλοῖς (λ) κύριος ὕψιστος (μ) Καὶ οὐκ (ν) ἐπ᾽ εἰρήνην (ξ) οὕτως (ο) κύριος ὁ θεός. MS.A. Κεφ. νη'. (·) σάλπιγγα

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

7 על טור רם ומנטל שוית אתר בית משריך אף לתמן סלקת לדבחא דבח׃ ואחורי
8 דשא ומזוזתא שוית דוכרן טעותיך הוית דמיא לאתתא דרחימא על בעלה וטעת בתר
נוכראין אפתירת אתר בית משרך וגזרת ליך מנהון קים רחמת אתר בית משכבהון
9 אתר בחרת׃ כד עבדת ליך אוריתא אצלחת במלכותא וכד אסגית ליך עובדין טבין
סגיאה משריתיך ושלחת אזגדך עד מרחיק ואמאכת תקיפי עממיא עד לשאול׃
10 בסגיאות ארחתיך לאית לא אמרת למתב נכסין סגיאין אסגית על כן לא סברת למתב׃
11 וית מן יציפת וקדם מן דחלת ארי אסגית למללא כדבין ופולחני לא אדכרת ולא שוית
דחלתי על לביך הלא אנא יהבית ארכא מעלמא דאם תתובין לאוריתא ולקדמי לא
12 תבת׃ אנא חויתי לך עובדין טבין דאנון זכון ליך ואת אסגית ליך עובדין בישין דלא
13 יהנון ליך׃ אצוחי כען אם יפרקוניך עובדי שקרין דהוית מתעסקא בהון מינקותיך
וית כולהון יטול רוחא יהון כלמא ודרחיץ על מימרי יחסין ארעא ויירת טורא דקודשי׃
14 ויימר אליפו ואזהרו אפנו לב עמא לאורח תקנא סליקו תקלת רשיעיא מאורח כנשתא
15 דעמי׃ ארי כדנן אמר רמא ומנטלא דשרי בשמיא וקדיש שמיה ברומא שרי וקדישא
שכנתיה אמר למפרק לתבירי לבא ולמכיכי רוחא לקימא רוח מכיכין ולמסעד לב
16 תבירין׃ ארי לא לעלמא אתפרע בדין ולא לאפרש יהי רוגזי ארי רוחי מיתיא אנא עתיד
17 לאתבא ונשמתא אנא עבדית׃ בחובי ממונהון דאנסו הוה רוגזי עליהון ואלקיתנון
18 סלקית שכנתי מנהון וטלטלתנון בדרית גלותהון על דטעו בתר הרהור לבהון׃ אורח
תיובתהון גליא קדמי ואשבוק להון וארחים עליהון ואשלם תנחומין להון ולמתאבלין
19 עליהון׃ דברא ממלל ספון בפום כל אנשא אמר נביא שלמא יתעבד לצדיקיא דנטרו
אוריתי מלקדמין ושלמא יתעבד לתביא דתבו לאוריתא קריב אמר יי ואשבוק להון׃
20 ורשיעיא כימא דטריד דבעי למנח ולא יכיל ועברין מוהי סין וטין׃ לית שלמא אמר 21
אלהי לרשיעיא׃

נח

1 נביא אכלי בגרונך לא תמנע כקל שופרא ארים קלך וחוי לעמי מרדיהון ולבית יעקב
חוביהון׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

In monte excelſo & elevato poſuiſti locũ manſionis domus tuæ : etiam illuc 7
aſcendiſti ut ſacrificares ſacrificium. Et poſt oſtiũ & poſtẽ poſuiſti memoriale 8
idolorum tuorum: ſimilis fuiſti mulieri quæ diligitur à marito, &
fornicatur poſt extraneos: dilatâſti *locũ domꝰ habitaculi tui, & pepigiſti* tibi
cũ eis *fœdus*; dilexiſti *locũ domꝰ cubiculi* eorum: locum elegiſti. Cùm exequereris 9
Legẽ, proſpera eras in regno: & cùm multiplicares tibi opera bona,
multiplicatus eſt exercitꝰ tuus, & miſiſti nuntios tuos procul, & depreſſiſti
fortitudinem populorum uſq; ad infernũ. In magnitudine viæ tuæ laborâſti: 10
non dixiſti, Convertar : divitias multas *multiplicâſti*, propterea
non ſperâſti quòd ageres pœnitentiam. De quo enim anxia es? & quẽ timuiſti? 11
quia multiplicâſti loqui mendacia, & cultus mei non es recordata;
nec poſuiſti timorẽ mei in corde tuo: nónne ego dedi terminũ à ſeculo, ut
convertaris ad Legẽ meã? & non es converſa in conſpectu meo. Ego enim 12
indicavi tibi opera bona, quæ eſſent juſta tibi; & tu multiplicâſti opera mala,
quæ non proderũt tibi. Clama nunc, ſi ſalvabunt te opera mendacii, in 13
quibꝰ laborâſti ab infantia tua; & omnia illa tollet ventus; erunt quaſi nihilũ:
qui autẽ confidit in verbo meo, poſſidebit terrã, & hæreditabit montẽ
ſanctũ meũ. Et dicet: Docete & admonete, præparate cor populi in via recta; 14
auferte offendiculum impiorum de via cœtus populi mei. Quia hæc 15
dicit excelſus & elevatus qui habitat in cœlis, & ſanctum nomen ejus : in
excelſo habitans & ſancta majeſtas ejꝰ, dixit ſe liberaturum contritos corde
& humiles ſpiritu, et vivificaturum ſpiritum humilium, & ſuſcitaturum cor
contritorũ: Quia non in æternũ ulciſcar in judicio, nec in *perpetuũ* erit furor 16
meꝰ: quoniã ſpiritũ mortuorũ ego *reſtituã*, & ſpiramenta ego feci. Ob 17
peccata pecuniæ eorũ quã vi abſtulerunt, fuit furor meꝰ ſuper eos, & percuſſi
eos: ſubduxi majeſtatẽ meam ab eis, & tranſmigrare feci eos ; diſperſi
captivitatẽ eorũ, eò quòd erraverunt poſt cogitationes cordis ſui. Via conversionis 18
eorũ revelata eſt corã me, & peperci eis, et miſertus ſum eorũ, et
reddidi conſolationẽ eis, et his qui lugebant ſuper eos. Qui creavi eloquiũ 19
labiorũ in ore omniũ hominũ : dixit Propheta: Pax fiet juſtis, qui cuſtodierunt
Legẽ meã ab initio, et pax fiet his qui convertentur ad Legẽ meã. Propè 20
eſt, dicit Dñs, ut dimittam eis. Impii autem ſunt quaſi mare commotum,
quod quærit quieſcere et non poteſt; et faciunt aquæ ejus cœnũ et lutum.
Non eſt pax impiis, dicit Deus. 21

CAP. LVIII.

CLama in gutture tuo Propheta, ne ceſſes : quaſi vocẽ tubæ exalta vocem 1
tuam, et annuntia populo meo ſcelera eorum , et domui Jacob peccata
eorum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܥܠ ܛܘܪܐ ܪܡܐ ܘܡܥܠܝܐ ܣܡܬܝ ܡܫܟܒܟܝ. ܐܦ ܠܬܡܢ ܣܠܩܬܝ ܠܡܕܒܚܘ ܕܒ̈ܚܝܢ 7
ܕܒ̈ܚܐ. * ܘܒܣܬܪ ܬܪ̈ܥܝܟܝ ܥܠ ܦܘܬܝ̈ܐ ܪܫܡܬܝ ܕܘܟܪܢܟܝ. ܡܛܠ ܕܡܢ ܠܘܬܝ ܓܠܝܬܝ 8
ܘܣܠܩܬܝ. ܘܐܪܘܝܚܬܝ ܡܫܟܒܟܝ. ܘܗܘܝܬܝ ܠܟܝ ܡܢܗܘܢ. ܘܪܚܡܬܝ ܡܫܟܒܗܘܢ.
* ܘܚܙܝܬܝ ܐܝܕܐ ܀ ܘܐܫܬܒܚܬܝ ܠܡܠ̈ܟܐ ܒܡܫܚܐ. ܘܐܣܓܝܬܝ ܒܣ̈ܡܝܟܝ. ܘܫܕܪܬܝ 9
ܐܝܙܓ̈ܕܝܟܝ ܠܪܘܚܩܐ. ܘܐܬܡܟܟܬܝ ܥܕܡܐ ܠܫܝܘܠ. * ܒܣܘܓܐ ܕܐܘܪ̈ܚܬܟܝ ܠܐܝܬܝ ܀ 10
ܘܠܐ ܐܡܪܬܝ ܕܐܫܠܐ. ܚܘܠܡܢܐ ܕܐܝ̈ܕܝܟܝ ܐܫܟܚܬܝ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܠܐ ܐܬܟܫܦܬܝ. * ܡܢ ܡܢ 11
ܐܬܪܗܒܬܝ ܘܕܚܠܬܝ ܀ ܕܟܕܒܬܝ ܒܝ. ܘܠܐ ܐܬܕܟܪܬܝܢܝ. ܘܠܐ ܣܡܬܝܢܝ ܒܠܒܟܝ. ܗܐ
ܐܢܐ ܩܕܝܫܐ ܕܡܢ ܥܠܡ. ܘܠܝ ܠܐ ܕܚܠܬܝ. * ܐܢܐ ܐܚܘܐ ܙܕܝܩܘܬܝ ܀ ܘܥܒ̈ܕܝܟܝ ܠܐ 12
ܢܘܬܪܘܢܟܝ. * ܟܕ ܩܥܝܬܝ ܢܦܨܘܢܟܝ ܐܝܠܝܢ ܕܡܬܟܢܫܝܢ ܠܘܬܟܝ. ܠܟܠܗܘܢ ܢܫܩܘܠ ܐܢܘܢ 13
ܪܘܚܐ ܀ ܘܢܕܒܪ ܐܢܘܢ ܥܠܥܠܐ ܀ ܘܐܝܠܝܢ ܕܡܬܬܟܠܝܢ ܥܠܝ. ܢܐܪܬܘܢ ܐܪܥܐ. ܘܢܐܪܬܘܢ
ܛܘܪܐ ܩܕܝܫܐ * ܘܢܐܡܪܘܢ. ܟܒܘܫܘ ܟܒܘܫܘ ܀ ܦܢܘ ܐܘܪܚܐ. ܘܐܪܝܡܘ ܬܘܩܠܬܐ ܡܢ ܐܘܪܚܗ 14
ܕܥܡܝ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܪܡܐ ܘܡܥܠܝܐ ܀ ܕܫܪܐ ܠܥܠܡܝܢ. ܘܩܕܝܫ ܫܡܗ. 15
ܡܪܘܡܐ. ܘܩܕܝܫ ܡܫܪܝܗ. ܠܡܟܝ̈ܟܐ ܘܠܬܒܝ̈ܪܝ ܪܘܚܐ. ܠܡܚܝܘ ܪܘܚܐ ܕܡܟܝ̈ܟܐ ܀
ܘܠܡܚܝܘ ܠܒܐ ܕܬܒܝ̈ܪܐ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܠܥܠܡ ܐܚܘܒ ܐܢܐ ܀ ܘܠܐ ܠܥܠܡ ܪܓܙ ܐܢܐ. 16
ܡܛܠ ܕܪܘܚܐ ܡܢ ܩܕܡܝ ܢܦܩܐ. ܘܢܫܡܬܐ ܐܢܐ ܥܒܕܬ. * ܡܛܠ ܥܘܠܐ ܕܢܟܠܗ ܪܓܙܬ 17
ܘܡܚܝܬܗ. ܘܬܘܒ ܪܓܙܬ. ܘܐܙܠ ܬܢܚܬܗ ܒܐܘܪܚܐ ܕܠܒܗ. * ܘܐܘܪ̈ܚܬܗ ܚܙܝܬ 18
ܘܐܣܝܬܗ. ܘܒܝܐܬܗ. ܘܦܪܥܬ ܒܘܝܐܐ ܠܗ. ܘܠܐܒܝ̈ܠܘܗܝ. * ܒܪܐ ܡܡܠܠܐ ܕܣܦܘ̈ܬܐ. ܫܠܡܐ 19
ܫܠܡܐ ܠܪ̈ܚܝܩܐ ܘܠܩܪ̈ܝܒܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܣܐ ܐܢܘܢ. * ܘܪ̈ܫܝܥܐ ܐܝܟ ܝܡܐ ܡܬܕܠܚܝܢ. 20
ܡܛܠ ܕܫܠܝܐ ܠܐ ܡܫܟܚܝܢ. ܘܡܪܩܝܢ ܡ̈ܝܘܗܝ ܪ̈ܚܫܐ ܘܣܝܢܐ. * ܠܝܬ ܫܠܡܐ ܠܪ̈ܫܝܥܐ. 21
ܐܡܪ ܐܠܗܝ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܢܚ * ܩܪܝ ܒܓܪܓܪܬܟ ܀ ܘܠܐ ܬܚܘܣ. ܘܐܪܝܡ 1
ܩܠܟ ܐܝܟ ܫܝܦܘܪܐ ܀ ܘܚܘܐ ܠܥܡܝ ܥܘܠܗܘܢ ܀ ܘܠܒܝܬ ܝܥܩܘܒ ܚܛܗ̈ܝܗܘܢ.

Super montes altos & ſublimes poſuiſti cu- 7
bile tuum,& illuc aſcendiſti ad mactandas victimas.
Et poſt januas ſuper paraſtades ſcul- 8
pſiſti memoriam tuam. Migrans enim à me
aſcendiſti, & ampliâſti cubile tuum, facta es
ex eis (*i. ad eos deſciviſti*) & amâſti concubitum
eorum. Et occaſionē videns, laudabilē 9
te reddidiſti apud reges per unguentum, multiplicâſti
odores tuos, miſiſti nuntios tuos in
longinquum, & humiliata es ad infernum uſque.
Copiâ viarum tuarum laborâſti, nec tamē 10
dixiſti, Ceſſabo: culpâ manuum tuarū contraxiſti
rubiginē, ideo non ſupplicas. Quem 11
timeres aut metueres, quandoquidē me denegâſti,
nec meminiſti mei, nec æſtimas me in
corde tuo? ecce ego ſanct⁹ ſum ab æterno, me
tamē non times. Ego oſtendā *tibi* juſtitiā meā, 12
& facta tua nequaquā proderunt tibi. Cùm 13
clamaveris, eripiéntne te qui congregantur
ad te? hos *quidem* omnes aſportabit vent⁹,&
abripiet turbo; illi verò qui ſperant in me,
poſſidebunt terrā, & poſſidebunt montē ſanctum
meum: Et dicent, Complanate, com- 14
planate, reſtituite viā, & auferte offendicula
ex itinere populi mei. Sic enim dicit ſubli- 15
mis & excelſus, habitans in æternum, eujus
nomē ſanctum eſt, cuj⁹ habitaculum altum eſt
& ſanctum, ad humiles & afflictos animo;
Vivificabo ſpiritum humilium, & cor dolentium
vivificabo. Nam non in perpetuum ſuc- 16
cenſebo, nec in perpetuum iraſcar: quoniam
ſpirit⁹ à me prodit, & aurā *vitalem* ego feci.
Propter crimē fraudis ej⁹ irat⁹ ſum & percuſſi 17
eā: iterum quoq; ſum irat⁹, & abiit ſuſpiriū
ej⁹ in via cordis ipſius. Vias ejus conſiderans 18
curavi eā et conſolatus ſum eā, & repēdi conſolationē
ipſi & lugentib⁹ ej⁹. Creatus eſt ſer- 19
mo labiorum, Pacē, pacē longinquis & propinquis,
inquit Dn̄s, & curabo eos. Improbi 20
verò ceu mare agitabuntur (nam quietē nunquā
reperient) cujus aquæ reptilia atque cœnum
volutant. Nulla pax eſt improbis, inquit 21
Deus meus.

CAP. LVIII.

Clama ex gutture tuo, & ne parcas; attol- 1
le vocem tuam inſtar tubæ, & indica populo
meo iniquitatem ſuam, et familiæ Jacobi
peccata ſua.
2

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* عَلَى جبل عالٍ وشاهقٍ هناك مضجعكِ * وهناك اصعدتِ الذبائح * وخلف قوائم بابكِ 7 8
وضعتِ ذكراناتكِ * واه لانكِ ان تبعدت عني يكون لك بالاكثر * احببت المضطجعين
معكِ * وكثرت زناكِ معهم * وصنعت كثيرين الذين منك بعيدا * وارسلت سفراء فوق 9
حدودكِ * ورجعت وذليت الي الجحيم * تعبت في طرقاتك الكثيرة * ولم تقولي اكف انا 10
القوية * لانك فعلت هذه لاجل هذا لم تطلبيني * انت لمن تخشي * خفت وكذبتيني * ولم 11
تذكريني * ولا احدثتيني في ضمير فهمكِ ولا في قلبكِ * وانا اراكِ واتغافل ولم تخافيني *
* انا اخبر بعدلي وشروركِ التي لا تنفعكِ * اذا صرخت لينقذوكِ في ضيقتكِ * لان 12 13
هاولاء كلهم ياخذهم الريح ويفرقهم العاصف * والذين يتمسكون بي يرثون الارض *
ويرثون جبلي المقدس * ويقولون طهروا السبل من وجهه * وارفعوا العثرات من طريق 14
شعبي * هكذا يقول الرب العلي الساكن في الاعالي الي الابد * القدوس في القديسين * 15
اسمه الرب العالي * المستريح في القديسين * والمعطي طول الاناة لصغيري الانفس * المعطي
الحياة للمنكسري القلب * لا انتقم منكم الي الابد * ولا اغضب عليكم كل حين * لان 16
روحا مني ينبثق * وكل نسمة انا صنعت * لاجل خطية قليلة اغضبته وضربته وصرفت 17
وجهي عنه * فحزن ومضي مكتئبا في طرقه * رايت طرقه وشفيته وعزيته واعطيته عزاء 18
حقيقيا * سلامة على سلامة للبعداء والقرباء * وقال الرب اشفيهم * والظالمون هكذا يغرقون 19 20
ولا يستطيعون ان يستريحوا * وليس للمنافقين سلام قال الرب الاله * 21

* الفصل الثامن والخمسون *

* اصرخ بقوة ولا تشفق * مثل بوق ارفع صوتك * اخبر شعبي بخطاياهم * وبيت يعقوب باثامهم * 1

Super montem excelſum & elevatum, illic 7
eſt cubile tuum, ibique ſacrificia obtuliſti;
Et poſt antes oſtii tui collocâſti mo- 8
nimenta tua. Heu, ſi receſſeris à me,
tuâ potiùs intererit: amâſti concumbentes
tecum, & ſcortationem tuam cum
iis multiplicâſti. Multos qui ex te 9
erant, procul egiſti, & advocatos miſiſti
ultra terminos tuos, demum reverſa
dejecta es ad infernum uſque. Fa- 10
tigata in viis tuis multiplicibus non dixiſti,
Abſtinebo ego fortis. Quoniam hæc
feciſti, propterea me non curâſti. Tu 11
quem formidas? timuiſti, & negâſti
me, non es mei recordata, & ne mentis
quidem tuæ ratiocinatione aut corde
tuo de me cogitâſti: quia te videns conniveo,
non me times. Ego indicabo 12
juſtitiam meam & ſcelera tua, quæ non
proderunt tibi, Cùm clamaveris ut li- 13
berent te in anguſtia tua: quoniam hos
omnes abripiet ventus, et turbo diſrumpet:
at verò qui mihi adhæſerint, poſſidebunt
terram, & hæreditario jure obtinebunt
montem ſanctum meum: Et di- 14
cent, Emundate ſemitas ante faciem
ejus, & tollite offendicula de via
populi mei. Sic ait Dominus altiſſimus 15
qui in excelſis habitat in æternum
uſque, Sanctus inter ſanctos, cujus nomen
eſt Dominus altiſſimus, qui requieſcit in
ſanctis, qui dat longanimitatem puſillanimis,
qui dat vitam conſternatis animo;
Non ſumam à vobis vindictam 16
in æternum, neque ſemper iraſcar vobis.
Nam ſpiritus qui à me procedit, &
halitus omnis quem ego feci, Cui par- 17
vum ob aliquod peccatum ſuccenſuerim,
percuſſerim eum, & faciem ab eo
meam averterim; ſi doluerit, & mæſtus
inceſſerit in viis ſuis: Videbo vias 18
ejus, curabo eum, & conſolabor eum,
daboque illi conſolationem veram; Pa- 19
cem ſuper pacem tam remotis quàm
propinquis. Dixit etiam Dominus, Curabo
eos. Pari modo ſceleſti demergen- 20
tur, nec poterunt quieſcere, Nec erit 21
pax impiis, ait Dominus Deus.

CAP. LVIII.

Clama validè, & ne parcas; quaſi 1
buccina attolle vocem tuam, annuntia populo
meo peccata ſua, & domui Jacob
ſcelera ſua.

ישעיה : נח

gens velut‾ : volent meas vias ſcire & , quærent *die die* me Et
2 וְאוֹתִי יוֹם יוֹם יִדְרֹשׁוּן וְדַעַת דְּרָכַי יֶחְפָּצוּן כְּגוֹי
,dereliquerit non ſui Dei judicium & , fecerit juſtitiam quæ
אֲשֶׁר־צְדָקָה עָשָׂה וּמִשְׁפַּט אֱלֹהָיו לֹא עָזָב
.volent Dei appropinquationē ,juſtitiæ judicia me interrogabunt
יִשְׁאָלוּנִי מִשְׁפְּטֵי־צֶדֶק קִרְבַת אֱלֹהִים יֶחְפָּצוּן׃
? neſciſti & ,noſtrā animā affliximus ? vidiſti non & ,jejunavimus quid Ut
3 לָמָּה צַּמְנוּ וְלֹא רָאִיתָ עִנִּינוּ נַפְשֵׁנוּ וְלֹא תֵדָע
veſtros labores omnes & , *voluntatem* invenietis *vos jejunare* die in Ecce
הֵן בְּיוֹם צֹמְכֶם תִּמְצְאוּ־חֵפֶץ וְכָל־עַצְּבֵיכֶם
percutiendum ad & ,*jejunabitis* contentionem & ,*litem* ad Ecce .*exigatis*
4 תִּנְגֹּשׂוּ׃ הֵן לְרִיב וּמַצָּה תָּצוּמוּ וּלְהַכּוֹת
excelſo in *faciendum audire ad* die ſicut jejunetis non : impiè pugno in
בְּאֶגְרֹף רֶשַׁע לֹא־תָצוּמוּ כַיּוֹם לְהַשְׁמִיעַ בַּמָּרוֹם
hominem affligere die ,*illud* elegi jejunium *erit hoc ſicut* Nunquid . veſtrā vocē
5 קוֹלְכֶם׃ הֲכָזֶה יִהְיֶה צוֹם אֶבְחָרֵהוּ יוֹם עַנּוֹת אָדָם
ſaccum & ,ſuum caput juncum ſicut *incurvandum ad num* ? ſuam animam
נַפְשׁוֹ הֲלָכֹף כְּאַגְמֹן רֹאשׁוֹ וְשַׂק
beneplaciti diem & ,jejunium vocabis iſtud Nunquid ? ſternat cinerem &
וָאֵפֶר יַצִּיעַ הֲלָזֶה תִּקְרָא־צוֹם וְיוֹם רָצוֹן
colligationes *ſolvere ? illud* elegi jejunium hoc Nonne ? Domino
6 לַיהוָה׃ הֲלוֹא זֶה צוֹם אֶבְחָרֵהוּ פַּתֵּחַ חַרְצֻבּוֹת
, liberos contritos *dimittere &* , jugi faſciculos *ſolvere* ,impietatis
רֶשַׁע הַתֵּר אֲגֻדּוֹת מוֹטָה וְשַׁלַּח רְצוּצִים חָפְשִׁים
,tuum panem eſurienti *frangere* Nonne .diſrumpatis jugum omne &
7 וְכָל־מוֹטָה תְּנַתֵּקוּ׃ הֲלוֹא פָרֹס לָרָעֵב לַחְמֶךָ
,*eū operies* & ,nudum videris cùm ? domum introducas vagos - *afflictos* &
וַעֲנִיִּים מְרוּדִים תָּבִיא בָיִת כִּי־תִרְאֶה עָרֹם וְכִסִּיתוֹ
,tuū lumen aurora veluti erumpet Tunc .te abſcondas non tua carne à &
8 וּמִבְּשָׂרְךָ לֹא תִתְעַלָּם׃ אָז יִבָּקַע כַּשַּׁחַר אוֹרֶךָ
gloria :tua juſtitia te coram ibit & : germinabit citò tua *medela* &
וַאֲרֻכָתְךָ מְהֵרָה תִצְמָח וְהָלַךְ לְפָנֶיךָ צִדְקֶךָ כְּבוֹד
,clamabis : exaudiet Dominus & ,invocabis Tunc .te colliget Domini
9 יְהוָה יַאַסְפֶךָ׃ אָז תִּקְרָא וַיהוָה יַעֲנֶה תְּשַׁוַּע
,digitum *mittende* ,jugum tui medio de removeris Si .*ego* ecce ,dicet &
וְיֹאמַר הִנֵּנִי אִם־תָּסִיר מִתּוֹכְךָ מוֹטָה שְׁלַח אֶצְבַּע
, tuam *animam* famelico protuleris Et .iniquitatem *loquendo* &
10 וְדַבֶּר־אָוֶן׃ וְתָפֵק לָרָעֵב נַפְשֶׁךָ
, tua lux *tenebroſitate* in orietur & : ſaturaveris afflictam animam &
וְנֶפֶשׁ נַעֲנָה תַּשְׂבִּיעַ וְזָרַח בַּחֹשֶׁךְ אוֹרֶךָ
, ſemper Dominus te ducet Et .meridies ſicut , tua caligo &
11 וַאֲפֵלָתְךָ כַּצָּהֳרָיִם׃ וְנָחֲךָ יְהוָה תָּמִיד
: impinguabit tua oſſa & ,tuam animam ſiccitatibus in faciet ſaturari &
וְהִשְׂבִּיעַ בְּצַחְצָחוֹת נַפְשֶׁךָ וְעַצְמֹתֶיךָ יַחֲלִיץ
non cujus ,aquarum *exitus* ſicut & ,irriguus hortus veluti eris &
וְהָיִיתָ כְּגַן רָוֶה וּכְמוֹצָא מַיִם אֲשֶׁר לֹא־
fundamenta ,ſeculi deſerta te à ædificabunt Et .*ejus* aquæ *mentientur*
12 יְכַזְּבוּ מֵימָיו׃ וּבָנוּ מִמְּךָ חָרְבוֹת עוֹלָם מוֹסְדֵי
ſepiens *tibi vocabitur* & : facies ſtare generationis & generationis
דוֹר־וָדוֹר תְּקוֹמֵם וְקֹרָא לְךָ גֹּדֵר
feceris redire Si .habitandum ad ſemitas faciens reverti ,fracturam
13 פֶּרֶץ מְשֹׁבֵב נְתִיבוֹת לָשָׁבֶת׃ אִם־תָּשִׁיב
: *meæ ſanctitatis* die in *tuam voluntatem faciendo* , *tuum pedem* ſabbatho à
מִשַּׁבָּת רַגְלֶךָ עֲשׂוֹת חֲפָצֶךָ בְּיוֹם קָדְשִׁי
: glorioſum Domini ſanctum , delicias ſabbathum vocaveris &
וְקָרָאתָ לַשַּׁבָּת עֹנֶג לִקְדוֹשׁ יְהוָה מְכֻבָּד
,*tuam voluntatem inveniendo ab* ,tuas vias *faciendo à* ,ipſum glorificaveris &
וְכִבַּדְתּוֹ מֵעֲשׂוֹת דְּרָכֶיךָ מִמְּצוֹא חֶפְצְךָ
.verbum *loquendo &*
וְדַבֵּר דָּבָר׃

Verſio VULG. LAT.

2 Me etenim de die in diem
quærunt,et ſcire vias meas vo-
lunt : quaſi gens,quæ juſtitiam
fecerit, et judiciū Dei ſui non
dereliquerit : rogant me judi-
cia juſtitiæ : appropinquare
3 Deo volunt. Quarè jejunavi-
mus, et non aſpexiſti : humi-
liavimus animas noſtras, et
neſciſti ? Ecce in die jejunii
veſtri invenitur voluntas ve-
ſtra, et omnes debitores ve-
4 ſtros repetitis. Ecce ad lites
& contentiones jejunatis, &
percutitis pugno impiè. No-
lite jejunare ſicut uſq; ad hanc
diem, ut audiatur in excelſo
5 clamor veſter. Numquid ta-
le eſt jejuniū ꝙ elegi, ꝑ diem
affligere hominē animam ſuā?
numquid contorquere quaſi
circulū caput ſuū, & ſaccū &
cinerem ſternere ? numquid
iſtud vocabis jejuniū,& diem
6 acceptabilē Dño? Nónne hoc
eſt magis jejunium, ꝙ elegi ?
diſſolve colligationes impie-
tatis, ſolve faſciculos depri-
mentes ; dimitte eos,qui con-
fracti ſunt , liberos, & omne
7 onus dirumpe.Frange eſurien-
ti panem tuū , & egenos va-
góſq; induc in domū tuam :
cùm videris nudū,operi eum,
& carnem tuā ne deſpexeris.
8 Tunc erumpet quaſi manè lu-
men tuū, & ſanitas tua citiùs
orietur , & anteibit faciē tuā
juſtitia tua, et gloria Dñi col-
9 liget te. Tunc invocabis, &
Dñs exaudiet : clamabis, &
dicet ; Ecce adſū : ſi abſtule-
ris de medio tuî catenā,& de-
ſieris extendere digitū, & lo-
10 qui ꝙ non prodeſt. Cū effude-
ris eſurienti animā tuā,& ani-
mā afflictā repleveris,orietur
in tenebris lux tua,& tenebræ
11 tuæ erunt ſicut meridies. Et
requiē tibi dabit Dñs ſemꝑ,&
implebit ſplendoribus animā
tuam, & oſſa tua liberabit, &
eris quaſi hort⁹ irrigu⁹, & ſic-
ut fons aquarū, cuj⁹ non defi-
12 cient aquæ. Et ædificabuntur in
te deſerta ſeculorū ;fundamen-
ta generationis & generatio-
nis ſuſcitabis : & vocaberis
ædificator ſepiū, avertens ſe-
13 mitas in quietē. Si averteris à
ſabbato pedē tuū , facere vo-
luntatē tuā in die ſancto meo,
& vocaveris ſabbatū delica-
tū, et ſanctū Dñi glorioſū, et
glorificaveris eū dū non facis
vias tuas,et non invenitur vo-
lūtas tua,ut loquaris ſermonē:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

2 Ἐμὲ ἡμέραν ἐξ ἡμέρας (α) ζητοῦσιν, καὶ
γνῶναί μου τὰς ὁδοὺς ἐπιθυμοῦσιν, ὡς λαὸς
δικαιοσύνην (β) πεποιηκὼς, καὶ κρίσιν θεοῦ
αὐτοῦ μὴ ἐγκαταλελοιπώς. αἰτοῦσί με νῦν
κρίσιν δικαίαν, καὶ ἐγγίζειν θεῷ ἐπιθυμοῦ-
3 σι, λέγοντες, Τί ὅτι ἐνηστεύσαμεν, καὶ οὐκ
εἶδες; ἐταπεινώσαμεν τὰς ψυχὰς ἡμῶν,
καὶ (γ) οὐκ ἔγνως; ἐν γὰρ ταῖς ἡμέραις τῶν νη-
στειῶν ὑμῶν εὑρίσκετε τὰ θελήματα ὑμῶν,
καὶ πάντας τοὺς ὑποχειρίους ὑμῶν ὑπονύσ-
4 σετε. (δ) Εἰ εἰς κρίσεις καὶ μάχας νηστεύετε,
καὶ τύπτετε πυγμαῖς ταπεινὸν, ἵνατί μοι
νηστεύετε ὡς σήμερον, ἀκουσθῆναι ἐν κραυ-
5 γῇ τὴν φωνὴν ὑμῶν; Οὐ ταύτην τὴν νηστείαν
ἐξελεξάμην, καὶ ἡμέραν ταπεινοῦν ἄνθρω-
πον τὴν ψυχὴν αὐτοῦ. οὐδ' ἂν κάμψῃς ὡς
κρίκον τὸν τράχηλόν σου, καὶ σάκκον καὶ σπο-
δὸν ὑποστρώσῃ, οὐδ' (ε) οὕτω καλέσετε
6 νηστείαν δεκτήν. Οὐχὶ τοιαύτην νηστείαν (ζ)
ἐξελεξάμην, λέγει κύριος· ἀλλὰ λῦε πάν-
τα σύνδεσμον ἀδικίας, διάλυε στραγγαλι-
ὰς βιαίων συναλλαγμάτων, ἀπόστελλε τε-
θραυσμένους ἐν ἀφέσει, καὶ πᾶσαν συγγρα-
7 φὴν ἄδικον διάσπα. Διάθρυπτε πεινῶντι
τὸν ἄρτον σου, καὶ πτωχοὺς ἀστέγους εἴσαγε εἰς τὸν
οἶκόν σου· ἐὰν ἴδῃς γυμνὸν, περίβαλε, καὶ
ἀπὸ τῶν οἰκείων τοῦ σπέρματός σου οὐχ (ˑ) ὑπερ-
8 όψει. Τότε ῥαγήσεται πρώϊμον τὸ φῶς
σου, καὶ τὰ ἰάματά σου ταχὺ ἀνατελεῖ· καὶ
προπορεύσεται ἔμπροσθέν σου ἡ δικαιοσύ-
9 νη σου, καὶ ἡ δόξα τοῦ θεοῦ περιστελεῖ σε. Τό-
τε βοήσῃ, καὶ ὁ θεὸς εἰσακούσεταί σου, ἔτι
λαλοῦντός σου ἐρεῖ, Ἰδοὺ πάρειμι. ἐὰν ἀφ-
έλῃς ἀπὸ σοῦ σύνδεσμον, καὶ χειροτονίαν,
10 καὶ ῥῆμα γογγυσμοῦ, Καὶ δῷς πεινῶντι τὸν
(η) ἄρτον ἐκ ψυχῆς σου, καὶ ψυχὴν τεταπεινωμένην
ἐμπλήσῃς, τότε ἀνατελεῖ ἐν
τῷ σκότει τὸ φῶς σου, καὶ τὸ σκότος σου
11 ὡς μεσημβρία, Καὶ ἔσται ὁ θεός (¨) σου μετὰ σοῦ
διαπαντός· καὶ ἐμπλησθήσῃ καθάπερ ἐπι-
θυμεῖ ἡ ψυχή σου, καὶ τὰ ὀστᾶ σου πιανθή-
σεται· καὶ ἔσται ὡς κῆπος μεθύων, καὶ ὡς
12 πηγὴ ἣν μὴ ἐξέλιπεν ὕδωρ· (θ) Καὶ οἰκο-
δομηθήσονταί σου αἱ ἔρημοι αἰώνιοι, καὶ ἔσται
(ι) τὰ θεμέλιά σου αἰώνια γενεῶν γενεαῖς,
καὶ κληθήσῃ οἰκοδόμος φραγμῶν, καὶ (κ)
13 τὰς τρίβους σου ἀναμέσον παύσεις. Ἐὰν
ἀποστρέψῃς τὸν πόδα σου ἀπὸ τῶν σαββάτων,
τοῦ μὴ ποιεῖν τὰ θελήματά σου ἐν τῇ ἡ-
μέρᾳ τῇ ἁγίᾳ, καὶ καλέσεις τὰ σάββατα
τρυφερὰ, ἅγια τῷ (λ) θεῷ· οὐκ ἀρεῖς τὸν
πόδα σου ἐπ' ἔργῳ, οὐδὲ λαλήσεις λόγον
ἐν ὀργῇ ἐκ τοῦ στόματός σου,

Me de die in diem quærunt : & 2
ſcire vias meas volunt,quaſi gens,
quæ juſtitiam fecerit,& judicium
Dei ſui non dereliquerit. Petunt
me nunc judicium juſtum : & ap-
propinquare Deo cupiunt , dicen-
tes, Quarè jejunavimus,& non 3
vidiſti ? humiliavimus animas
noſtras , & non cognoviſti ? In
diebus enim jejuniorum veſtrorum
(a) invenitis voluntates veſtras :
& omnes ſubjectos vobis affligitis.
Si ad judicia & jurgia jejunatis, 4
& percutitis pugnis humilem; ut-
quid mihi jejunatis, ut hodiè au-
diatur in clamore vox veſtra? Non 5
tale jejunium elegi,& die humili-
are hominem animam ſuam. Ne-
que, ſi incurvaveris, quaſi circu-
lum, collum tuum, & cilicium et
cinerem ſubſtraveris ; nec ſic vo-
cabitis jejunium (b) acceptabile.
Non hoc jejunium elegi,dicit Do- 6
minus. Sed ſolve omnem colliga-
turam iniquitatis: diſſolve obli-
gationes violentorum (c) contra-
ctuum : dimitte fractos in remiſ-
ſionem; & omnem ſcripturam
iniquam conſcinde : Frange eſu- 7
rienti panem tuum: & pauperes ſi-
ne tecto induc in domum tuam :
ſi videris nudum, operi: & dome-
ſticos ſeminis tui ne deſpexeris.
Tunc erumpet matutinum lumen 8
tuū:et (d) ſanitates tuæ citò orien-
tur : & præibit in conſpectu tuo
juſtitia tua : & gloria Dei circun-
dabit te. Tunc clamabis , & De- 9
us exaudiet te : adhuc loquente te
dicet; Ecce adſum. Si abſtuleris à
te colligationem, & (e) ordinati-
onem, & verbum murmurationis:
Et dederis eſurienti panem ex a- 10
nima tua,& animam humiliatam
ſaturaveris; tunc orietur in tene-
bris lumen tuum: & tenebræ tuæ
erunt ſicut meridies : Et erit De- 11
us tuus tecum ſemper : & imple-
beris, ſicut deſiderat anima tua :
*& oſſa tua pingueſcent : & * e-*
runt, ſicut hortus ebrius, & ſicut
fons, cui non defecit (f) aqua. Et 12
ædificabuntur tibi deſerta à ſecu-
lo: et erunt fundamenta tua ſem-
piterna generationum generationi-
bus : et vocaberis ædificator ſe-
pium : et ſemitas tuas in medio
quieſcere facies. Si averteris pe- 13
dem tuum à ſabbatis ; ut non fa-
cias voluntates tuas in die ſancta;
et vocabis Sabbata delicata, ſan-
cta Deo : Non tolles pedem tuum
ad opus ; neque loquêris verbum
in ira de ore tuo :

MS.A. (α) ζητήσουσιν, (β) θεοῦ (γ) οὐ προσέσχες; (δ) Εἰς κρίσεις (ε) οὕτως (ζ) ἐγὼ ἐξελεξάμην, (ˑ) ὑπερόψῃ. (η) ἄρτον σου (¨) σου διαπαντός· (θ) καὶ τὰ ὀστᾶ σου ὡς βοτάνη ἀνατελεῖ, καὶ πιανθήσεται, καὶ κληρονομήσουσι γενεὰς γενεῶν. Καὶ οἰκοδομηθήσονταί (ι) σου τὰ θεμέλια (κ) τοὺς τρίβους τοὺς ἀναμέσον (λ) θεῷ σου·

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

2 וקדמי יום יום אולפן תבעין כאלו למדע אורחן דתקנן קדמי צבן כעמא דזכו עבד ומדין
אלהיה לא אתרחק שאלין מן קדמי דין וקשוט כאלו לאתקרבא לדחלתא דיי צבן :
3 אמרין למא אנחנא צימין וקדמך גלי מסגפין נפשתנא וקדמך ידיע נביא אמר להון
4 הא ביום תעניתכון אתון תבעין צרכיכון וכל תקלתכון אתון מקרבין : הן לתחרו
ולמצו אתון צימין ולממחי בכורמיזא דרשעא לא תתענון תענין כאלין לאשמעא
5 במרומא קלכון : ההדא הוא תעניתא דרעינא בה יומא דמסגף אנשא נפשיה כפיף
רישיה כאגמון כפיף ועל סקא וקטמא באת הלדא אתון קרן תענית ויומא דרעוא ביה
6 מן קדם יי : הלא דא היא תעניתא דרעינא בה פרדו כנישת רשעא שרו קטרי כתבי דין
7 מסטי ופטרו דהוו אנסין בני חורין וכל דין מסטי תסלקון : הלא תפרנס לכפנא
מלחמך וחשיכין מטלטלין תעיל לגו ביתא ארי תחזי ערטלאה ותכסניה ומקריב
8 בשרך לא תכבוש עינך : בכן יתגלי כשפרפרא נהורך ואסות מחתך בפריע תסק ויהכון
9 קדמך זכותך ביקר מן קדם יי תתכנש : בכן תצלי ויי יקביל צלותך תבעי מן קדמוהי
10 ויעבד בעותך אם תעדי מבינך אסטיות דין מרמז באצבע וממלל מלין דאונס : ותתפח
קדם כפנא נפשך ונפש מסנפא תסבע וידנח בחשוכא נהורך וקבלך יהי כטיהרא :
11 וידברנך יי תדירא ויסבע בשני בצורתא נפשך וגופך יחיי בחיי עלמא ותהי נפשך
12 מליא תפנוקין כגנת שקיא דמרויא וכמבוע דמיין דלא פסקין מוהי : ויבנון מנך
חרבת עלם יסודי דר ודר תקומם ויקרון לך מקים אורחא דתקנא מתיב
13 רשיעיא לאוריתא : אם תתיב משבתא רגלך למעבד צורכך ביומא דקודשי
ותערע לשבתא בתפנוקין לקדישא דיי תיקר ותיקר קדמוהי מלמעבד אורחך מלספקא
צורכך ומללא מלין דאונס :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

A facie enim mea de die in diem doctrinam quærunt , ac ſi cupiant ſcire 2
vias quæ rectæ ſunt coram me:ſicut populus qui juſtitiam fecit,& à judicio
Dei ſui non receſſit; interrogant à facie mea judicium *et veritatē* ac ſi ve-
lint accedere ad timorem Domini. *Dicunt*, Quare nos jejunamus,& coram 3
te manifeſtum eſt : affligimus animas noſtras, & coram te notum eſt ? Pro-
pheta *dic* eis: Ecce die jejunii veſtri vos quæritis quæ neceſſaria ſunt vobis,
& omnia offendicula veſtra vos adducitis. Ecce ad litem & contentionem 4
vos jejunatis,& ad percutiendum pugno impietatis : ne jejunetis talia je-
junia,ut audiatur in excelſis vox veſtra. Hoccine eſt jejunium quod vo- 5
luì : per diem in quo affligit homo animam ſuam ; incurvare caput ſu-
um ſicut circulum curvum, & in ſacco & in cinere *pernoctare ?* nunquid
hoc vos vocatis jejunium, & diem acceptabilem à facie Dñi ? Nónne hoc 6
eſt magis jejunium quod elegi ? Separate congregationem impietatis, ſol-
vite colligationes ſcripturarum judicii depravati,& dimittite eos qui vim
patiuntur liberos : denique omne judicium depravatum auferetis. Suſten- 7
tabis utique eſurientem pane tuo,& pauperes tranſmigrantes, introduces
in domum tuam:cùm videris nudū,operies eum ; & à proximo carnis tuæ
non avertes oculos tuos. Tunc revelabitur quaſi manè lumen tuū,& ſani- 8
tas plagæ tuæ citò creſcet : & ibunt ante te juſtitiæ tuæ : in gloriā à facie
Dñi colligêris. Tunc orabis,& Dñs ſuſcipiet orationē tuam:deprecaberis 9
in conſpectu ej⁹,& faciet deprecationē tuam. Si abſtuleris de medio tui cor-
ruptelam judicii, annuentē digito,& loquentē verba rapinæ : Et effuderis 10
corā famelico animā tuā,& animā afflictā ſaturaveris: & orietur in tene-
bris lux tua,& caligo tua erit ſicut meridies. Et deducet te Dñs ſemꝑ,& ſa- 11
tiabit animā tuā in annis ſiccitatis: & corp⁹ tuum vivificabit in vita æterna:
& erit anima tua plena deliciis, quaſi hort⁹ irrigu⁹ qui inebriatus eſt, & ſi-
cut fons aquarū cuj⁹ aquæ nō deficiūt Et ædificabuntur ex te deſerta ſeculi; 12
fundamenta generationis & generationis ſuſcitabis: et vocabunt te confir-
mantē viā rectā,convertentē impios ad Legē. Si averteris à Sabbatho pedē 13
tuū,ut nō facias neceſſaria tua in die ſancto meo: et vocaveris Sabbathū in
deliciis, et ſanctū Dñi honoraris, et honore affeceris eū ne facias viā tuam,
neq; provideas in eo quæ tibi neceſſaria ſūt;nec loquaris verba violentiæ;

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

2 * ܘܠܝ ܟܠܝܘܡ ܒܥܝܢ ܠܝ܂ ܘܨܒܝܢ ܠܡܕܥ ܐܘܪܚܬܝ܂ ܐܝܟ ܥܡܐ ܕܥܒܕ ܙܕܝܩܘܬܐ ܘܠܐ ܫܒܩ
3 ܕܝܢܐ ܕܐܠܗܗ܂ ܫܐܠܝܢ ܡܢܝ ܕܝܢܐ ܘܙܕܝܩܘܬܐ܂ ܘܨܒܝܢ ܠܡܬܩܪܒܘ ܠܐܠܗܐ܂ * ܠܡܢܐ
ܨܡܢ ܘܠܐ ܚܙܝܬ܂ ܘܡܟܟܢ ܢܦܫܢ ܘܠܐ ܝܕܥܬ܂ ܗܐ ܒܝܘܡܐ ܕܨܘܡܟܘܢ ܡܫܟܚܝܢ ܨܒܝܢܟܘܢ܂
4 ܘܟܠܗܘܢ ܦܬܟܪܝܟܘܢ ܡܩܪܒܝܢ ܐܢܬܘܢ܂ * ܗܐ ܠܚܪܝܢܐ ܘܠܡܨܘܬܐ ܨܝܡܝܢ
ܐܢܬܘܢ܂ ܘܠܡܡܚܐ ܒܟܘܪܦܐ ܕܥܘܠܐ܂ ܠܐ ܬܨܘܡܘܢ ܐܝܟ ܕܝܘܡܢܐ܂ ܠܡܫܡܥܘ ܒܪܘܡܐ ܩܠܟܘܢ܂
5 ܨܘܡܐ܂ * ܗܟܢܐ ܗܘ ܨܘܡܐ ܕܓܒܝܬ܂ ܕܢܡܟܟ ܐܢܫ ܢܦܫܗ܂ ܘܢܟܦ ܨܘܪܗ ܐܝܟ ܦܘܠܐ܂
6 ܘܣܩܐ ܘܩܛܡܐ ܢܫܬܘܐ ܠܗ܂ ܠܗܢܐ ܬܩܪܘܢ ܨܘܡܐ ܘܝܘܡܐ ܕܪܥܝܢܐ ܠܡܪܝܐ܂ * ܗܢܘ
ܨܘܡܐ ܕܓܒܝܬ܂ ܕܬܫܪܐ ܐܣܘܪܐ ܕܥܘܠܐ܂ ܘܬܦܫܛ ܚܢܩܐ ܕܢܟܠܐ܂ ܘܬܫܪܐ ܠܡܟܝܟܐ ܠܚܐܪܘܬܐ܂
7 ܘܟܠܗܘܢ ܡܫܥܒܕܢܘܬܐ ܬܦܣܩܘܢ܂ * ܘܬܦܪܘܣ ܠܟܦܢܐ ܠܚܡܟ܂ ܘܠܐܟܣܢܝܐ ܬܥܠ ܠܒܝܬܟ܂
8 ܟܕ ܬܚܙܐ ܥܪܛܠܝܐ ܬܟܣܝܘܗܝ܂ ܘܠܐ ܬܬܛܫܐ ܡܢ ܒܣܪܟ܂ * ܗܝܕܝܢ ܢܬܦܬܚ ܢܘܗܪܟ
ܐܝܟ ܨܦܪܐ܂ ܘܐܣܝܘܬܟ ܥܓܠ ܬܕܢܚ܂ ܘܬܐܙܠ ܩܕܡܝܟ ܙܕܝܩܘܬܟ܂ ܘܐܝܩܪܗ ܕܡܪܝܐ ܢܟܢܫܟ܂
9 * ܗܝܕܝܢ ܬܩܪܐ܂ ܘܢܥܢܝܟ ܡܪܝܐ܂ ܘܬܩܥܐ ܘܢܐܡܪ ܗܐ ܐܢܐ܂ ܐܢ ܬܥܒܪ ܡܢ ܠܒܟ ܢܟܠܐ܂ ܘܬܫܪܐ
10 ܠܡܟܝܟܐ܂ ܘܬܦܢܐ ܡܢ ܡܡܠܠܐ ܕܫܘܩܪܐ܂ * ܘܬܬܠ ܠܟܦܢܐ ܠܚܡܟ܂ ܘܢܦܫܐ ܟܦܢܬܐ
11 ܬܣܒܥ܂ ܢܕܢܚ ܢܘܗܪܟ ܒܚܫܘܟܐ܂ ܘܚܫܘܟܟ ܐܝܟ ܛܗܪܐ܂ * ܘܢܕܒܪܟ ܡܪܝܐ ܐܡܝܢܐܝܬ܂
ܘܢܣܒܥ ܢܦܫܟ ܒܒܘܣܡܐ܂ ܘܓܪܡܝܟ ܢܥܫܢ܂ ܘܬܗܘܐ ܐܝܟ ܦܪܕܝܣܐ ܪܘܝܐ܂ ܘܐܝܟ ܡܒܘܥܐ
12 ܕܡܝܐ ܕܠܐ ܚܣܪܝܢ ܡܝܘܗܝ܂ * ܘܢܒܢܘܢ ܡܢܟ ܚܪܒܬܐ ܕܡܢ ܥܠܡ܂ ܘܫܬܐܣܐ ܕܕܪ ܕܪܝܢ ܬܩܝܡ܂
13 ܘܢܩܪܘܢܟ ܓܕܪ ܬܪܥܐ܂ ܘܡܦܢܐ ܫܒܝܠܐ ܠܡܬܒܐ܂ * ܐܢ ܬܗܦܟ ܪܓܠܟ ܡܢ ܫܒܬܐ܂
ܕܠܐ ܬܥܒܕ ܨܒܝܢܟ ܒܝܘܡܐ ܕܩܘܕܫܝ܂ ܘܬܩܪܐ ܠܫܒܬܐ ܡܦܢܩܬܐ܂ ܘܩܘܕܫܗ ܕܡܪܝܐ ܡܝܩܪܐ܂
ܘܬܝܩܪܝܘܗܝ܂ ܕܠܐ ܬܥܒܕ ܒܗ ܐܘܪܚܟ܂ ܘܠܐ ܬܥܒܕ ܒܗ ܨܒܝܢܟ܂ ܘܠܐ ܬܡܠܠ ܡܠܬܐ܂

Etenim quotidie me requirunt; & ſcire vo- 2
lunt vias meas: velut popul⁹ qui exercuit ju-
ſtitiã, nec dereliquit jus Dei ſui, petunt à me ju-
diciũ & juſtitiã, & accedere volunt ad Deum.
Quare dum jejunam⁹, non reſpicis? dum ani- 3
mãm noſtrã humiliam⁹, tu ignoras? Ecce in die
jejunii veſtri cupiditatib⁹ veſtris indulgetis, &
afferitis cuncta idola veſtra. En ad jurgium & 4
contentioné jejunatis, & ad percutiendũ ini-
quiſſimâ cum violentiâ. Ne jejunetis ut hodie,
ut audiri faciatis vocé veſtrã in excelſo. Num 5
hujuſmodi jejunium eſt quod elegi, ut *ſcilicet*
humiliet quis animã ſuam, incurvet collum
ſuũ ut hamũ, & ſacco atque cinere ſeipſũ do-
met? num iſtud appellatis jejunium & diem
Dño gratum? Hoc eſt jejunium quod elegi; ut 6
ſolvas nex⁹ iniquitatis, & rumpas vincula frau-
dis, & ſubjectos in libertatem dimittas, omnia
denique vincula rumpatis: Frangas pané tu- 7
um eſurienti, peregrinum introducas domum
tuã, cùm videris nudum, operias illum, & non
negligas eâdem ac tu carne præditum. Tunc 8
aperietur velut aurora lux tua, & juſtitia tua
protinus eluceſcet, præcedet te juſtitia tua, &
majeſtas Dñi colliget te. Tunc vocabis, & re- 9
ſpondebit tibi Dñs; clamabis, & dicet, Ecce
me. Si tollas *inquam* è præcordiis tuis frau-
dem, ſubjectos dimittas, & à ſermone falſo re-
cedas; Des panem tuum eſurienti, & animam 10
eſurientem ſaties: ſplendeſcet lux tua in tene-
bris, & tenebræ tuæ ceu meridies: Reget te 11
ſemper Dominus, ſatiabit animam tuam de-
liciis, oſſa tua confirmabit, eriſque velut pa-
radiſus irriguus, & ut fons aquarum cujus
aquæ nunquam deficiunt: Ædificabunt ex 12
te ruinas quæ à ſeculo fuerunt, & fundamen-
ta generationum æternarum eriges: voca-
bunt te rupturarum inſtauratorem, & reſtitu-
torem ſemitarum in habitationem. Si avertas 13
pedem tuum à ſabbatho, quò minùs facias tu-
am voluntatem in die ſanctitatis meæ, ſabba-
thum appelles deliciis plenum & ſanctitatem
Domini honorandam, & honores illud ita ut
non ſecteris in eo viam tuam, nec facias in eo
voluntatem tuam, nec verbum loquaris:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

2 * يطلبوني يوما فيوما ويشتهون ان يعرفوا طرقي * مثل شعب صنع عدل الله ولم يترك
3 حكم الهه يسالوني الان حكما وعدلا ويشتهون ان يتقربوا لله * قايلين لماذا انا صمنا ولم
تر * اذللنا انفسنا ولم تعلم * لان في ايام اصوامكم تجدون ارادتكم وتعبدون جميع الذين
4 تحت ايديكم * تصومون للاحكام والمنازعات والمخاصمات * وتضربون الذليل بعقد
5 انامِلكم * لماذا تصومون لي مثل اليوم * ليسمع صوتكم بصراخ * لست اختار انا هذا
الصوم ويوما ان يذل الانسان نفسه * ولو انك احنيت عنقك مثل الطوق وفرش مسحا
6 ورمادا * فليس هكذا تدعون صوما مقبولا للرب * ليس هذا الصوم انا اخترته قال الرب *
لكن حل كل رباط الظلم * فك عقد المعاملات الاقتسارية * ارسل المنكسرين بالتخلية *
7 وخرق كل مكتوب ظالم * فت خبزك للجايع * ادخل المساكين الذين لا سقف لهم
8 الي بيتك * ان رايت عريانا اكسه * ومن خواص زرعك لا تتغافل عنه * حينيذ ينفجر
نورك صبحيا * واشفيتك تشرق سريعا * ويتقدم عدلك قدامك * ويجد الله يجللك *
9 * حينيذ تصرخ والله يسمعك * واذ تتكلم يقول هاندا * وان نزعت عنك الرباط وقبض اليد
10 وكلمة التذمر * وتعطي للجايع خبزك من نفسك * وتشبع النفس الذليلة * حينيذ يشرق
11 في الظلمة نورك * وظلمتك مثل الظهر * ويكون الله معك كل حين * ويمتلي كما
تشتهي نفسك * وعظامك تتدسم * وتكون كالبستان السكران ومثل الينبوع الذي لا
12 ينقطع ماوه * وعظامك تشرق مثل النبات * وتتدسم وترث جيل الاجيال * وتبني خرابك
الدهرية * وتصير اساساتك الدهرية لجيل الاجيال * وتدعي باني السياجات * وتكفي
13 السبل التي في الوسط * وان رددت رجلك عن السبوت ان لا تصنع ارادتك في اليوم
المقدس * وتدعوا السبوت المنعمة قدسا لالهك * ولا ترفع قدمك بعمل * ولا تتكلم كلمة
بغضب من فمك * وتكون متوكلا على الرب *

Quærunt me ſingulis diebus, & cupi- 2
unt ſcire vias meas: non ſecus ac
ſi eſſent populus faciens jus Dei, nec
deſerens judicium Dei ſui, petunt à
me nunc judicium & juſtitiam, & cu-
piunt accedere ad Deum: Dicentes, 3
Quare jejunantibus nobis, non reſpi-
cis? affligentibus animas noſtras, non
animadvertis? Quia in diebus jeju-
niorum veſtrorum adinvenitis cupidita-
tem veſtram, & opprimitis eos omnes
qui ſubditi ſunt vobis. Jejunatis ad 4
lites, jurgia, & contentiones, & humi-
lem percutitis nodis articulorũ digitorũ
veſtrorum. Cur jejunatis mihi ut ho-
die? an *ut audiatur veſtra vox cum*
clamore? Nequaquam eligo ego tale 5
jejunium & diem; quo quis affligat ani-
mam ſuam: etiamſi retorqueas col-
lum tuum veluti collare, ſternaſque cili-
cium ac cinerem; hujuſmodi tamen ne-
quaquam appellandum eſt à vobis jeju-
nium Domino jucundum. Tale jejunium 6
nequaquam elegi ego, ait Dominus: ſed
ſolve omnia vincula perverſitatis, reſcin-
de nexus contractuum violentorum: con-
fractos dimitte cum remiſſione, & la-
cera omne ſcriptum illicitum: Frange 7
panem tuum eſurienti, pauperes tecto
carentes induc in domum tuam: ſi videris
nudum, veſti eum; & præcipuis ſemi-
nibus tuis ne deſtituas eum. Tunc erum- 8
pet lux tua ut aurora *rutilans; & ſa-*
nitates tuæ protinus exorientur, præce-
det te juſtitia tua, & gloria Domini
illuſtrem te reddet: Tunc te clamantem 9
Deus exaudiet, & cùm loqueris, dicet,
Ecce me. Demum ſi amoveris à te li-
gamen, manu-captionem, & verbum de-
tractionis; Eſurienti panem tuum ex 10
animo tuo dederis, & animum dejectum
ſatiaveris; tunc fulgebit in tenebris lu-
men tuum, & tenebræ tuæ velut meri-
dies: Aderit ſemper tibi Deus, & ex- 11
plebitur prout exoptabis, anima tua;
oſſa tua jucundabuntur, eriſque velut
hortus irriguus; & veluti fons cujus
aqua nunquam deficit: oſſa tua germi-
nabunt ſicut herba, delectaberis, &
poſſidebis generationem generationum:
Reſtaurabuntur ruinæ tuæ æternæ, & 12
antiqua fundamenta tua erunt in ævum
ævorum: vocaberis Ædificator ſepium,
& vias interjectas abolebis. Tandem ſi 13
averteris pedem tuum à ſabbathis, ita
ut non indulgeas cupiditati tuæ in die
ſacro; ſabbatha delicata, ſanctum Deo
tuo vocaveris, non extuleris pedem tuũ
ad opus: nullum verbum cũ iracundia ex
ore tuo pronuntiaveris; & Domino fre-
tus fueris:

יְשַׁעְיָה : נט

: terræ excelſa ſuper te faciam equitare & ,Domino in delectaberis Tunc
14 אָז תִּתְעַנַּג עַל־יְהוָה וְהִרְכַּבְתִּיךָ עַל־בָּמֳותֵי אָרֶץ
Domini os quia ,tui patris Jahacob hæreditatem te faciam comedere &
וְהַאֲכַלְתִּיךָ נַחֲלַת יַעֲקֹב אָבִיךָ כִּי פִּי יְהוָה
.eſt locutum
דִּבֵּר׃

CAP. LIX. נט

ſe aggravavit nec :ſalvando à Domini manus eſt abbreviata non Ecce
1 הֵן לֹא־קָצְרָה יַד־יְהוָה מֵהוֹשִׁיעַ וְלֹא־כָבְדָה
dividentes fuerunt veſtræ iniquitates Quinimo .audiendo ab ejus auris
2 אָזְנוֹ מִשְּׁמוֹעַ׃ כִּי אִם־עֲוֹנֹתֵיכֶם הָיוּ מַבְדִּלִים
fecerunt abſcondere veſtra peccata & : veſtrum Deum inter ad vos inter
בֵּינֵכֶם לְבֵין אֱלֹהֵיכֶם וְחַטֹּאותֵיכֶם הִסְתִּירוּ
,ſanguine in ſunt pollutæ veſtræ volæ Nam .audiendo ab , vobis à facies
3 פָנִים מִכֶּם מִשְּׁמוֹעַ׃ כִּי כַפֵּיכֶם נְגֹאֲלוּ בַדָּם
veſtra lingua,falſitatē ſunt locuta veſtra labia :iniquitate in veſtri digiti &
וְאֶצְבְּעוֹתֵיכֶם בֶּעָוֺן שִׂפְתוֹתֵיכֶם דִּבְּרוּ־שֶׁקֶר לְשׁוֹנְכֶם
:veritate in judicatus non & ,juſtitia in vocans Non .meditabitur iniquitatē
4 עַוְלָה תֶהְגֶּה׃ אֵין־קֹרֵא בְצֶדֶק וְאֵין נִשְׁפָּט בֶּאֱמוּנָה
,laborem concipiendo ,mendacium loquendo & ,inanitate ſuper confidendo
בָּטוֹחַ עַל־תֹּהוּ וְדַבֶּר־שָׁוְא הָרוֹ עָמָל
araneæ telas & ,ruperunt reguli Ova .iniquitatē pariendo &
5 וְהוֹלֵיד אָוֶן׃ בֵּיצֵי צִפְעוֹנִי בִּקֵּעוּ וְקוּרֵי עַכָּבִישׁ
.vipera erumpet ,compreſſum & : morietur eorū ovis de Comedens .texent
יֶאֱרֹגוּ הָאֹכֵל מִבֵּיצֵיהֶם יָמוּת וְהַזּוּרֶה תִּבָּקַע אֶפְעֶה׃
.ſuis operibus in tegentur nec , veſtem in erunt non eorum Telæ
6 קוּרֵיהֶם לֹא־יִהְיוּ לְבֶגֶד וְלֹא יִתְכַּסּוּ בְּמַעֲשֵׂיהֶם
.eorum volis in rapinæ opus & , iniquitatis opera eorum Opera
מַעֲשֵׂיהֶם מַעֲשֵׂי־אָוֶן וּפֹעַל חָמָס בְּכַפֵּיהֶם׃
ſanguinem effundendum ad feſtinabunt & ,current malum ad eorum Pedes
7 רַגְלֵיהֶם לָרַע יָרֻצוּ וִימַהֲרוּ לִשְׁפֹּךְ דָּם
vaſtitas ;iniquitatis cogitationes eorum Cogitationes .innocentem
נָקִי מַחְשְׁבוֹתֵיהֶם מַחְשְׁבוֹת אָוֶן שֹׁד
non & ,cognoverunt non pacis Viam .eorum ſtratis viis in contritio &
8 וָשֶׁבֶר בִּמְסִלּוֹתָם׃ דֶּרֶךְ שָׁלוֹם לֹא יָדָעוּ וְאֵין
Omnis .eis ſunt obliquæ eorum Semitæ .eorum orbitis in judicium
מִשְׁפָּט בְּמַעְגְּלוֹתָם נְתִיבוֹתֵיהֶם עִקְּשׁוּ לָהֶם כֹּל
judicium ſe elongavit Propterea .pacem neſcit ,ea in calcans
9 דֹּרֵךְ בָּהּ לֹא יָדַע שָׁלוֹם׃ עַל־כֵּן רָחַק מִשְׁפָּט
ecce & ,lucem ad Expectavimus .juſtitia nos apprehendit non & ,nobis à
מִמֶּנּוּ וְלֹא תַשִּׂיגֵנוּ צְדָקָה נְקַוֶּה לָאוֹר וְהִנֵּה־
Palpavimus .ambulavimus caliginibus in ſplendores :tenebroſitas
10 חֹשֶׁךְ לִנְגֹהוֹת בָּאֲפֵלוֹת נְהַלֵּךְ׃ נְגַשְׁשָׁה
impegimus : attrectavimus oculis abſque veluti & , parietem cæci ſicut
כַעִוְרִים קִיר וּכְאֵין עֵינַיִם נְגַשֵּׁשָׁה כָּשַׁלְנוּ
Fremuimus .mortui ſicut , locis deſolatis in ; crepuſculo ut meridie in
11 בַצָּהֳרַיִם כַּנֶּשֶׁף בָּאַשְׁמַנִּים כַּמֵּתִים׃ נֶהֱמֶה
expectavimus :gemuimus gemendo columbæ tanquā &,nos omnes urſi ſicut
כַדֻּבִּים כֻּלָּנוּ וְכַיּוֹנִים הָגֹה נֶהְגֶּה נְקַוֶּה
Quia .nobis à ſe elongavit , ſalutem ad : non & judicium ad
12 לַמִּשְׁפָּט וָאַיִן לִישׁוּעָה רָחֲקָה מִמֶּנּוּ׃ כִּי־
noſtra peccata & , te coram noſtræ prævaricationes ſunt multiplicatæ
רַבּוּ פְשָׁעֵינוּ נֶגְדֶּךָ וְחַטֹּאותֵינוּ
noſtras iniquitates & ,nobiſcū noſtræ iniquitates quia :nos contra reſpondit
עָנְתָה בָּנוּ כִּי־פְשָׁעֵינוּ אִתָּנוּ וַעֲוֺנֹתֵינוּ
poſt à retrocedere & ,Dominum in mentiri & ,Prævaricari .eas cognovim⁹
13 יְדַעֲנוּם׃ פָּשֹׁעַ וְכַחֵשׁ בַּיהוָה וְנָסוֹג מֵאַחַר
meditari & concipere ;defectionem & , calumniam loqui : noſtro Deo
אֱלֹהֵינוּ דַּבֶּר־עֹשֶׁק וְסָרָה הֹרוֹ וְהֹגוֹ
.falſitatis verba corde de
מִלֵּב דִּבְרֵי־שָׁקֶר׃

Verſio VUGL. LAT.

14 Tunc delectaberis ſuper Dño,
& ſuſtollā te ſuper altitudines
terræ, & cibabo te hæreditate
Jacob patris tui: os enim Dñi
locutum eſt.

CAP. LIX.

1 ECce non eſt abbreviata
man⁹ Dñi ut ſalvare nequeat,
neq; aggravata eſt auris ejus ut
2 non exaudiat: Sed iniquitates
veſtræ diviſerunt inter vos &
Deū veſtrū, & peccata veſtra
abſconderunt facīe ejus à vo-
3 bis ne exaudiret. Man⁹ enim
veſtræ pollutæ ſūt ſanguine,&
digiti veſtri iniquitate : labia
veſtra locuta ſunt mendacium,
& lingua veſtra iniquitatē fa-
4 tur. Non eſt qui invocet juſti-
tiam,neq; eſt qui judicet veré:
ſed confidunt in nihilo, & lo-
quuntur vanitates : concepe-
runt laborem , & pepere-
5 runt iniquitatem. Ova aſpi-
dum ruperunt , & telas ara-
neæ texuerunt : qui come-
derit de ovis eorū, morietur :
& ꝙ confotū eſt, erumpet in
6 regulū. Telæ eorū non erunt
in veſtimentū,neq; operientur
operib⁹ ſuis: opera eorū opera
inutilia, & op⁹ iniquitatis in
7 manib⁹ eorū. Pedes eorū ad
malū currunt, & feſtinant ut
effundant ſanguinē innocentē:
cogitationes eorum cogitati-
ones inutiles: vaſtitas & con-
8 tritio in viis eorū. Viā pacis
neſcierunt, & non eſt judiciū
in greſſib⁹ eorū : ſemitæ eorū
incurvatæ ſunt eis: omnis qui
calcat in eis, ignorat pacem.
9 Propter hoc elongatū eſt judi-
ciū à nobis,& non apprehen-
det nos juſtitia: exſpectavim⁹
lucē,& ecce tenebræ;ſplendo-
rem,& in tenebris ambulavi-
10 mus. Palpavim⁹ ſicut cæci pa-
rietē, & quaſi abſq; oculis at-
trectavim⁹: impegim⁹ meridiè
quaſi in tenebris, in caligino-
11 ſis quaſi mortui. Rugiem⁹ qua-
ſi urſi omnes,& quaſi columbæ
meditantes gemem⁹:exſpecta-
vim⁹ judiciū, & non eſt; ſalu-
tem, & elongata eſt à nobis.
12 Multiplicatæ ſunt enim iniqui-
tates noſtræ corā te, & peccata
noſtra reſponderunt nobis :
quia ſcelera noſtra nobiſcū,&
iniquitates noſtras cognovi-
13 mus, Peccare et mentiri con-
tra Dñm : et averſi ſumus ne
irem⁹ poſt tergū Dei noſtri,ut
loqueremur calumniā et tranſ-
greſſionem : concepimus , et
locuti ſumus de corde verba
mendacii.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

14 Καὶ ἔσῃ πεποιθὼς ἐπὶ κύριον· καὶ ἀναβιβά-
σει σε ἐπὶ τὰ ἀγαθὰ τῆς γῆς, καὶ ψωμιεῖ σε
τὴν κληρονομίαν Ἰακὼβ τοῦ πατρός σου· τὸ
γὰρ στόμα κυρίου ἐλάλησε ταῦτα.

ΚΕΦ. νθ'.

1 Μὴ οὐκ ἰσχύει ἡ χεὶρ κυρίου τοῦ σῶσαι; ἢ
2 ἐβάρυνε τὸ οὖς αὐτοῦ τοῦ μὴ εἰσακοῦσαι; Ἀλλὰ
τὰ ἁμαρτήματα ὑμῶν (α) διϊστῶσιν ἀναμέσον
ὑμῶν (β) καὶ ἀναμέσον τοῦ Θεοῦ, καὶ διὰ τὰς ἁ-
μαρτίας ὑμῶν ἀπέστρεψε τὸ πρόσωπον (γ) ἀφ'
ὑμῶν τοῦ μὴ ἐλεῆσαι. Αἱ γὰρ χεῖρες ὑμῶν (δ)
3 μεμολυσμέναι αἵματι, καὶ οἱ δάκτυλοι ὑμῶν
ἐν ἁμαρτίαις, τὰ δὲ χείλη ὑμῶν ἐλάλησεν
ἀνομίαν, καὶ ἡ γλῶσσα ὑμῶν ἀδικίαν με-
λετᾷ. (ε) Οὐθεὶς λαλεῖ δίκαια, οὐδὲ ἐστι
4 κρίσις ἀληθινή· πεποίθασιν ἐπὶ ματαί-
οις, καὶ λαλοῦσι κενὰ, ὅτι κύουσι πόνον, καὶ
τίκτουσιν ἀνομίαν. Ὠὰ ἀσπίδων ἔρρηξαν,
5 καὶ ἱστὸν ἀράχνης ὑφαίνουσιν, καὶ ὁ μέλλων τῶν
ᾠῶν αὐτῶν φαγεῖν, συντρίψας οὔριον, εὗρε
καὶ ἐν αὐτῷ (ζ) βασιλίσκον. Ὁ ἱστὸς αὐ-
6 τῶν οὐκ ἔσται εἰς ἱμάτιον, οὐδὲ μὴ περιβά-
λωνται ἀπὸ τῶν ἔργων αὐτῶν· τὰ γὰρ ἔργα αὐ-
τῶν, ἔργα ἀνομίας. Οἱ δὲ πόδες αὐτῶν
7 ἐπὶ πονηρίαν τρέχουσι, ταχινοὶ ἐκχέαι
αἷμα, καὶ οἱ διαλογισμοὶ αὐτῶν, διαλο-
γισμοὶ (η) ἀπὸ φόνων. σύντριμμα καὶ τα-
λαιπωρία ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν. Καὶ ὁδὸν
8 εἰρήνης οὐκ (θ) οἴδασι, καὶ οὐκ ἔστι
κρίσις ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν. αἱ γὰρ τρίβοι
αὐτῶν διεστραμμέναι, ἃς διοδεύουσι, καὶ
οὐκ οἴδασιν εἰρήνην. Διὰ τοῦτο ἀπέστη ἡ κρί-
9 σις ἀπ' αὐτῶν, καὶ οὐ μὴ καταλάβῃ αὐτοὺς
δικαιοσύνη. ὑπομεινάντων αὐτῶν φῶς ἐ-
γένετο αὐτοῖς σκότος, μείναντες αὐγὴν
ἐν ἀωρίᾳ περιεπάτησαν. Ψηλαφήσουσιν ὡς
10 τυφλοὶ τοῖχον, καὶ ὡς οὐχ ὑπαρχόντων ὀφθαλ-
μῶν ψηλαφήσουσι· καὶ πεσοῦνται ἐν μεσημ-
βρίᾳ ὡς ἐν μεσονυκτίῳ, ὡς ἀποθνήσκοντες
στενάξουσιν· Ὡς ἄρκος καὶ ὡς περιστερὰ ἅμα
11 πορεύσονται. ἀνεμείναμεν κρίσιν, καὶ οὐκ ἔστι
σωτηρία, μακρὰν ἀφέστηκεν ἀφ' ἡμῶν. Πολ-
12 λὴ γὰρ ἡμῶν ἡ ἀνομία ἐναντίον σου, καὶ αἱ ἁ-
μαρτίαι ἡμῶν ἀντέστησαν ἡμῖν· αἱ γὰρ ἀνο-
μίαι ἡμῶν ἐν ἡμῖν, καὶ τὰ ἀδικήματα ἡ-
μῶν ἔγνωμεν. Ἠσεβήσαμεν καὶ ἐψευσάμεθα,
13 καὶ ἀπέστημεν (ι) ὄπισθεν τοῦ Θεοῦ ἡμῶν· ἐλα-
λήσαμεν ἄδικα, καὶ ἠπειθήσαμεν· ἐκύομεν,
καὶ ἐμελετήσαμεν ἀπὸ καρδίας ἡμῶν λόγους
ἀδίκους·

Et eris confidens ſuper Dominum. 14
Et elevabit te ſuper bona terræ:&
cibabit te hæreditate Jacob pa-
tris tui. Os enim Domini loqu-
tum eſt hæc.

CAP. LIX.

NUnquid non valet manus Do- 1
mini ſalvos facere? aut gravavit
aurem ſuam,ut non exaudiat? Sed 2
peccata veſtra ſeparant inter vos,
& Deum: & propter peccata ve-
ſtra avertit faciem à vobis, ne mi-
ſereatur. Manus enim veſtræ in- 3
quinatæ ſunt ſanguine : & digiti
veſtri in peccatis: labia autem ve-
ſtra loquuta ſunt (a) iniquitatem:
& lingua veſtra injuſtitiam medi-
tatur. Nemo loquitur juſta: neque 4
eſt judicium verum. Fidunt in va-
nis, & loquuntur inania : quia
parturiunt dolorem, & pariunt
iniquitatem. Ova aſpidum frege- 5
runt , & telam araneæ texunt.
(b) Et, qui de ovis eorum come-
dere voluerit,frangens putridum,
reperiit etiam in eo regulum. Tela 6
eorum non erit in veſtimentum,
neque operientur de operibus ſuis.
Opera enim eorum, opera iniquita-
tis: Et pedes eorum ad malitiam 7
currunt, veloces ad effundendum
(c) ſanguinem : & cogitationes
eorum, cogitationes (d) de homi-
cidiis. Contritio & miſeria in viis
eorum: Et viam pacis non cogno- 8
verunt:& non eſt judicium in viis
eorum. Semitæ enim eorum perver-
ſæ, quas tranſeunt : & neſciunt
pacem. Propterea receſſit judicium 9
ab eis: & non apprehendet eos ju-
ſtitia. Cùm expectarent lucem, fa-
ctæ ſunt eis tenebræ : præſtolantes
(e) ſplendorem in obſcuritate am-
bularunt : Palpabunt, ſicut cæci, 10
parietem; & quaſi non habentes o-
culos, attrectabunt : & cadent in
meridie,quaſi in nocte media:qua-
ſi morientes gement: Quaſi urſus, 11
& quaſi columba, pariter ambu-
labunt. Expectavimus judicium,
& non eſt : ſalus longè receſſit à
nobis. Multa enim eſt iniquitas no- 12
ſtra in conſpectu tuo : et peccata
noſtra reſtiterunt nobis. Iniquita-
tes enim noſtræ in nobis ſunt : et
injuſtitias noſtras cognovimus.
Impiè egimus, et mentiti ſumus, 13
et receſſimus (f) à Deo noſtro: lo-
quuti ſumus iniqua, et inobedien-
tes fuimus: parturivimus, et me-
ditati ſumus de cordibus noſtris
verba iniqua :

MS.A. (α) διασῶσιν (β) καὶ διὰ τὰς ἁμαρτίας (γ) αὐτοῦ ἀφ' (δ) μεμο-
λυμμέναι (ε) Οὐδὶς (ζ) βασιλίσκος. (η) ἀφρόνων. (θ) ἔγνωσαν, (ι)
ἀπὸ ὄπισθεν

תַּרְגּוּם יוֹנָתָן TARGUM JONATHAN.

בְּכֵן תִּתְפַּנַּק קֳדָם יְיָ וְיַשְׁרִנָּךְ עַל תּוּקְפֵי אַרְעָא וְיוֹכְלִנָּךְ פֵּרֵי אַחְסָנַת יַעֲקֹב אֲבוּךְ אֲרֵי 14
בְּמֵימְרָא דַיְיָ גְּזִיר כֵּן׃

נט

הָא לָא מִקְּפִידוּת יְדָא מִן קֳדָם יְיָ לֵית אַתּוּן מִתְפָּרְקִין וְלָא מִדְיַקִּיר קֳדָמוֹהִי מִלְּמִשְׁמַע 1
לָא מִתְקַבְּלָא צְלוֹתְכוֹן׃ אֱלָהֵן חוֹבֵיכוֹן הֲווֹ מַפְרְשִׁין בֵּינֵיכוֹן לְבֵין אֱלָהֲכוֹן וְחַטָּאֵיכוֹן 2
גְּרַמוּ לְסַלָּקָא אַפֵּי שְׁכִנְתָּא מִנְּכוֹן מִלְּקַבָּלָא צְלוֹתְכוֹן׃ אֲרֵי יְדֵיכוֹן שׁוּתָּפִין בִּדְם זַכַּי 3
וְאֶצְבְּעָתְכוֹן בְּחוֹבִין סִפְוָתְכוֹן מְמַלְּלִין שְׁקַר לִישָׁנְכוֹן נִכְלִין מְחַשֵּׁב׃ לֵית דְּמַצְלֵי 4
בִּקְשׁוֹט וְלֵית דְּמִתְדַּן בְּהֵימְנוּתָא מִתְרַחֲצִין עַל לְמָא וּמְמַלְּלִין שְׁקַר מוֹחָן וּמַפְּקִין
מִלִּבְּהוֹן מִלִּין דְּאוֹנֶס׃ הָא כְּבֵיעֵי חֵיוֵי חוּרְמָנִין מְפָרְתִין וּכְקוּיִן דְּעַכּוּבִיתָא מְחַיְא דְּמָן 5
דְּאָכֵל מִבֵּיעֵיהוֹן מָאֵת וּמְשַׁחְנָן וּמַפְּקָן חֵיוָן חֻרְמָנִין מְפָרְחִין׃ הָא כְקוּיִן דְּעַכּוּבִיתָא 6
דְלָא כְשַׁרִין לְאִתְכַּסָּאָה כֵּן לֵית הֲנָאָה בְּעוּבָדֵיהוֹן דְּרַשִּׁיעַיָּא עוּבָדֵיהוֹן עוּבָדֵי אוֹנֶס
וְלֵיאוּת שְׁקַר בִּידֵיהוֹן׃ רַגְלֵיהוֹן לְמֶעְבַּד דְּבִישׁ רָהֲטִין וּמוֹחִין לְמִשְׁפַּךְ דַּם זַכַּי עֶשְׁתּוֹנֵיהוֹן 7
עֶשְׁתּוֹנֵי אוֹנֶס בִּזָּא וְתַבְרָא בִּכְבִשֵׁיהוֹן׃ אוֹרַח שְׁלָמָא לָא יָדְעִין וְלֵית דִּינָא בְּמַהֲכֵיהוֹן 8
שְׁבִילֵיהוֹן עַקִּימוּ לְהוֹן כֹּל דְּדָרֵיךְ בְּהוֹן לָא יָדַע שְׁלָמָא׃ עַל כֵּן אִתְרְחַק דִּינָא מִנָּנָא וְלָא 9
מְעָרְעָן לָנָא זַכְוָן סַבַּרְנָא לִנְהוֹר וְהָא חֲשׁוֹךְ לְזֵהוֹר וְהָא כִּדְבְקַבְלָא אֲנַחְנָא מְהַלְּכִין׃
נְמַשְׁמֵשׁ כְּסָמָן כּוֹתְלִין וּכְדְלֵית לְהוֹן עֵינִין נְמַשְׁמֵשׁ אִתְּקֶלְנָא בְּטִיהֲרָא כְּמָא דְּמִתַּקְּלִין 10
בְּקַבְלָא אִתְאֲחַד בְּאַפָּנָא כְּמָא דַּאֲחִידִין קִבְרַיָּא בְּאַפֵּי מֵיתַיָּא׃ עַסֵּנָא מִן קֳדָם בַּעֲלֵי דְבָבָנָא 11
דְּמִתְכַּנְּשִׁין עֲלָנָא כְּדוּבִּין כּוּלָּנָא וּכְיוֹנִין נָהֲמָא נְהֵמְנָא סַבַּרְנָא לְדִינָא וְלֵית לְפוּרְקָנָא
אִתְרַחַק מִנָּנָא׃ אֲרֵי סַגִּיאִין חוֹבָנָא קֳדָמָךְ וְחַטָּאָנָא אַסְהִידוּ בָנָא אֲרֵי חוֹבָנָא גְּלַן לָנָא 12
וַעֲוָיָתָנָא יְדַעְנָא לְהוֹן׃ מְרַדְנָא וְכַדִּיבְנָא בְּמֵימְרָא דַּיְיָ וְאִסְתַּחַרְנָא לַאֲחוֹרָא מִבָּתַר 13
פּוּלְחָנָא דֶּאֱלָהָנָא וַהֲוֵינָא מְמַלְּלִין שְׁקַר וְסַטְיָא מוֹחָן וּמַפְּקִין מִלִּבְּהוֹן פִּתְגָּמֵי שְׁקַר׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Tunc delectaberis coram Dño , & collocabit te ſuper munitiones terræ : 14
& comedere te faciet fructum poſſeſſionis Jacob patris tui : quoniam in
verbo Domini decretum eſt ita.

CAP. LIX.

ECce non propter defectum manus à facie Dñi non eſtis ſalvi: nec quia 1
grave eſt corā eo audire,non ſuſcipitur oratio veſtra: Sed delicta veſtra di- 2
viſerunt inter vos & inter Deum veſtrū ; & peccata veſtra fuerunt in cauſa
quòd averteretur facies majeſtatis à vobis,ut non ſuſciperetur oratio veſtra.
Manus enim veſtræ inquinatæ ſunt ſanguine innocentum, & digiti veſtri in 3
peccatis : labia veſtra loquuntur mendaciū,& lingua veſtra dolos cogitat.
Non eſt qui oret in veritate,nec qui judicet in fide. Confidunt in vanitatē, 4
& loquuntur mendaciū: feſtinant & educunt de corde ſuo verba violentiæ.
Ecce ſicut ova aſpidum *diſrumpunt*,& ſimiles ſunt telis quas aranea texit : 5
qui comederit de ovis eorum morietur : & calefiunt, & educunt aſpides
volantes. Ecce ſicut telæ araneæ quæ non ſunt aptæ ad operiendū,ſic nulla 6
eſt utilitas in operibus impiorum. Opera eorum, opera iniquitatis ; & la-
bor mendacii eſt in manib⁹ eorum. Pedes eorum ad faciendū malum cur- 7
runt, & feſtinant ad effundendum ſanguinem innocentū : cogitationes eo-
rum cogitationes iniquæ; præda & contritio in viis eorum. Viam pacis non 8
cognoſcunt,neque eſt judicium in itineribus eorum: ſemitæ ſuæ pravæ ſunt
eis: & omnis qui calcaverit in eis,neſciet pacem. Propterea elongatum eſt 9
judicium à nobis, & non occurrit nobis juſtitia : expectavimus lucem, &
ecce tenebræ: ſplendorem, & ecce quaſi in caligine ambulam⁹. Palpavi- 10
mus ſicut cæci parietes ; & ſicut illi qui non habent oculos, palpavimus :
offendim⁹ in meridie,ſicut qui offendunt in tenebris ;clauſum eſt ante nos,
ſicut clauduntur ſepulchra ante mortuos. Fremim⁹ propter inimicos noſtros, 11
qui congregantur contra nos quaſi urſi: & planè omnes nos quaſi columbæ
gemim⁹ : expectavimus judiciū,& non eſt; ſalutem,& elongata eſt à nobis.
Quia multiplicata ſunt delicta noſtra coram te, & peccata noſtra teſti- 12
ficata ſunt contra nos : delicta enim noſtra manifeſta ſunt nobis, & ini-
quitates noſtras cognovimus. Tranſgreſſi ſumus , & mentiti ſumus in 13
verbo Dñi, et converſi ſumus retrorſum, ne iremus poſt timorem Dei
noſtri : & locuti ſumus mendacium & tranſgreſſionem, feſtinantes & educentes de corde verba mendacii.

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܗܝܕܝܢ ܬܬܬܟܠ ܥܠ ܡܪܝܐ. ܘܢܪܟܒܟ ܥܠ ܬܘܩܦܗ ܕܐܪܥܐ. ܘܢܘܟܠܟ ܝܪܬܘܬܗ ܕܝܥܩܘܒ 14
ܐܒܘܟ. ܡܛܠ ܕܦܘܡܗ ܕܡܪܝܐ ܡܠܠ.

* ܦܣ̈ܘܩܐ * ܝܕ *

* ܗܐ ܠܐ ܟܪܝܐ ܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ ܡܠܡܦܪܩ. ܘܠܐ ܝܩܝܪܐ ܐܕܢܗ ܡܠܡܫܡܥ. * ܐܠܐ ܚܛܗܝܟܘܢ ܗܘܘ 1
ܦܪܫܘ ܒܝܢܝܟܘܢ ܠܐܠܗܟܘܢ. ܘܚܛܗܝܟܘܢ ܐܗܦܟܘ ܐܦܘܗܝ ܡܢܟܘܢ ܕܠܐ ܢܫܡܥ. * ܡܛܠ 2 3
ܕܐܝܕܝܟܘܢ ܡܛܘܫܝܢ ܒܕܡܐ. ܘܨܒܥܬܟܘܢ ܒܥܘܠܐ. ܘܣܦܘܬܟܘܢ ܡܡܠܠܢ ܫܘܩܪܐ.
ܘܠܫܢܟܘܢ ܪܢܐ ܒܥܘܠܐ. * ܘܠܝܬ ܕܩܪܐ ܒܟܐܢܘܬܐ. ܘܠܝܬ ܕܕܐܢ ܒܗܝܡܢܘܬܐ. ܬܟܝܠܝܢ ܥܠ 4
ܣܪܝܩܘܬܐ. ܘܡܡܠܠܝܢ ܣܪܝܩܘܬܐ. ܒܛܢܘ ܥܡܠܐ ܘܝܠܕܘ ܟܐܒܐ. * ܒܝܥܐ ܕܚܪܡܢܐ ܐܦܩܘ. 5
ܘܥܘܠܐ ܕܥܟܒܝܬܐ ܙܩܘ. ܕܐܟܠ ܡܢ ܒܝܥܝܗܘܢ ܢܡܘܬ. ܘܕܦܩܥ ܡܢܗܘܢ ܢܫܟܚ ܐܟܕܢܐ. * ܡܩܘܪܗܘܢ 6
ܠܐ ܢܗܘܐ ܠܠܒܘܫܐ. ܘܠܐ ܢܬܟܣܘܢ ܒܥܒܕܝܗܘܢ. ܥܒܕܝܗܘܢ ܓܝܪ ܥܒܕܐ ܐܢܘܢ ܕܢܟܠܐ.
ܘܥܒܕܐ ܕܥܘܠܐ ܒܐܝܕܝܗܘܢ. * ܪܓܠܝܗܘܢ ܪܗܛܢ ܠܒܝܫܬܐ. ܘܡܣܪܗܒܝܢ ܠܡܐܫܕ 7
ܕܡܐ ܙܟܝܐ. ܡܚܫܒܬܗܘܢ ܡܚܫܒܬܐ ܕܢܟܠܐ. ܘܬܒܪܐ ܘܐܒܕܢܐ ܒܫܒܝܠܝܗܘܢ. * ܐܘܪܚܐ 8
ܕܫܠܡܐ ܠܐ ܝܕܥܘ. ܘܠܝܬ ܕܝܢܐ ܒܡܗܠܟܬܗܘܢ. ܫܒܝܠܝܗܘܢ ܡܥܩܡܢ. ܘܟܠ ܕܡܗܠܟ
ܒܗܘܢ ܠܐ ܝܕܥ ܫܠܡܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܬܪܚܩ ܕܝܢܐ ܡܢܢ. ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܠܐ ܐܕܪܟܬܢ. ܣܟܝܢ 9
ܠܢܘܗܪܐ ܘܗܘܐ ܚܫܘܟܐ. ܘܠܙܠܓܐ ܘܒܥܡܛܢܐ ܗܠܟܢܢ. * ܡܓܫܝܢ ܫܘܪܐ ܐܝܟ ܥܘܝܪܐ. 10
ܘܡܓܫܝܢ ܐܝܟ ܗܢܘܢ ܕܠܝܬ ܠܗܘܢ ܥܝܢܐ. ܐܬܬܩܠܢ ܒܛܗܪܐ ܐܝܟ ܕܒܪܡܫܐ. ܘܐܬܬܢܚܢ
ܐܝܟ ܗܢܘܢ ܕܩܪܝܒܝܢ ܠܡܡܬ. * ܢܗܡܝܢ ܟܠܢ ܐܝܟ ܕܒܐ. ܘܐܝܟ ܝܘܢܐ ܢܗܓܝܢ. ܣܟܝܢ 11
ܠܕܝܢܐ. ܘܠܝܬ. ܘܠܦܘܪܩܢܐ. ܘܐܬܪܚܩ ܡܢܢ. * ܡܛܠ ܕܣܓܝ ܚܛܗܝܢ ܩܕܡܝܟ. 12
ܘܚܛܗܝܢ ܣܗܕܘ ܒܢ. ܡܛܠ ܕܥܘܠܢ ܥܡܢ ܗܘ. ܘܚܛܗܝܢ ܝܕܝܥܝܢ ܐܢܘܢ. * ܐܥܘܠܢ 13
ܘܟܦܪܢ ܒܡܪܝܐ. ܘܗܦܟܢ ܡܢ ܒܬܪ ܐܠܗܢ. ܡܠܠܢ ܛܠܘܡܝܐ. ܘܡܪܕܢ. ܒܛܢܢ.
ܘܪܢܝܢ ܡܢ ܠܒܢ ܡܠܐ ܕܫܘܩܪܐ.

Tunc Domino confides qui te vexit ſuper 14
terræ robur, & comedendam tibi dedit hæreditatem Jacobi patris tui; quia os Domini
locutum eſt.

CAP. LIX.

Ecce non eſt impotens manꝰ Domini ad ſalvandum, 1
neque gravis auris ejꝰ ad audiendum:
Sed culpæ veſtræ diviſionem pepererunt inter 2
vos & Deum veſtrum, & peccata veſtra faciem
ejꝰ averterunt à vobis quò minùs exaudiat,
Nam manꝰ veſtræ contaminatæ ſunt ſanguine, 3
& digiti veſtri iniquitate, labia veſtra loquuntur
falſitatem, & lingua veſtra ſcelus meditatur.
Nemo eſt qui juſtè prædicet, nemo qui 4
fideliter judicet: confidunt rei inani, & loquuntur
vanitatem, concipiunt dolum, & pariunt dolores.
Ova reguli excludunt, & telam 5
aranearũ texunt: qui comederit ex ovis eorũ,
morietur; & qui ruperit *unum ex* iis, reperiet
anguiculũ. Tela eorum non erit *utilis* ad ve- 6
ſtem *conficiendam*, neque operient ſe factis ſuis:
facta eorum ſunt facta doloſa, & facta iniqua
in manibꝰ eorum. Pedes eorum currunt 7
ad malũ, & celeres ſunt ad fundendum ſanguinem
innoxiũ: cogitationes eorum ſunt cogitationes
fraudis, & rapina ac vaſtitas in ſemitis
eorũ. Viã pacis non agnoſcunt, & nullũ eſt jus 8
in greſſibꝰ eorum: ſemitæ eorũ *ita* diſtortæ, ut
quiſquis incedit in eis, pacem ignoret. Iccirco 9
receſſit à nobis judiciũ, & juſtitia non perveniet
ad nos. Expectamꝰ lucẽ, & fiunt tenebræ;
ſplendorẽ, & in caligine ambulamꝰ. Palpamꝰ 10
parietem more cæcorum; palpamꝰ inquã, ut hi
qui non habent oculos: impingimꝰ ipſo meridie
non ſecꝰ ac veſpertino tempore, & ſuſpiramꝰ
ut hi qui proximi ſunt morti. Fremimus 11
omnes tanquã urſi, & tanquã columbæ gemimus:
expectamꝰ judiciũ, & non eſt; ſalutẽ, &
procul abeſt à nobis. Quia multiplicata eſt ini- 12
quitas noſtra corã te, & peccata noſtra conteſtata
ſunt nos: quia iniquitas noſtra nobiſcum
eſt, et peccata noſtra nota ſunt: Perfidè egimꝰ, 13
negavimus Dñm, et avertimus nos à veſtigiis
Dei noſtri: locuti ſumus oppreſſionem, et rebellavimus:
concepimus, et meditati ſumus ex
animo noſtro verba falſitatis.

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* فيصعدك على خيرات الارض * ويطعمك ميراث يعقوب ابيك * لان فم الرب تكلم هذا * 14

* الفصل التاسع والخمسون *

* هل يد الرب لا تقوى ان تخلص * او سد اذنه ان لا تسمع * لكن خطاياكم افصلت 1 2
بينكم * لاجل خطاياكم صرف وجهه عنكم الا يرحم * لان ايديكم متدنسة 3
بالدم * واصابعكم بالخطايا * وشفاهكم تكلمت اثما * ولسانكم يتلو ظلما * ولا واحد 4
يتكلم بالعدل * وليس عدل حقيقي موجودا * توكلوا على الاباطيل * وتكلموا بالكذب *
لانهم يحبلون وجعا ويلدون اثما * شقوا بيض الافاعي * ونسجوا نسج العنكبوت * 5
والمزمع ان ياكل من بيضهم كسر بيضة فوجد فيها الحية الجرداء * ونسجهم ليس 6
يكون للباس * ولا ينتفعون من اعمالهم * لان اعمالهم اعمال اثم * وارجلهم الى الشر 7
يعجلون مسرعة لتسفك دما * وافكارهم افكار جهال * الكسر والشقوة في سبلهم * وطريق 8
السلامة ما عرفوها * وليس في طرقهم حكم موجودا * لان سبلهم التي يسلكون فيها
معوجة * ولم يعرفوا السلامة * لاجل هذا بعد الحكم عنهم * وليس يدركهم العدل * 9

* الاصحاح الثامن والعشرون *

واذ هم ينتظرون نورا صار لهم ظلام * انتظروا ضوا في نصف الليل * يجسون الحايط مثل 10
العميان * وكمثل من ليس لهم اعين يجسون * ويسقطون في وسط النهار كانهم في نصف الليل *
كمثل مايتين يتنهدون * مثل الدب ومثل الحمامة يسيرون معا * انتظرنا حكما وليس خلاص 11
موجودا * ووقف عنا بعيدا * لان اثمنا كثير امامك * وخطايانا قاومتنا * لان اثامنا فينا * وعرفنا 12
ظلاماتنا * لا نعبد وكذبنا وبعدنا من اثر الهنا * تكلمنا ظلما * وخالفنا جبلنا * ودرسنا من 13
قلبنا اقوالا ظالمة *

Præponet te bonis terræ, & comedendam tibi dabit hæreditatem Jacobi 14
patris tui; quoniam os Domini pronuntiavit hæc.

CAP. LIX.

Num manus Domini ſalvare non 1
poteſt? an verò aurem ſuam obſtruxit,
quò minùs audiat? Imò peccata ve- 2
ſtra ſeparaverunt vos, propter ſcelera
veſtra avertit faciem ſuam à vobis, quò
minùs miſereatur: Quia manus veſtræ 3
contaminatæ ſunt ſanguine, digiti ve-
ſtri peccatis, labia veſtra loquuntur ini-
quitatem, & lingua veſtrâ oppreſſionem
meditatur: Nemo loquitur juſtè, neque 4
reperitur vera juſtitia: innituntur vani-
tatibus, & loquuntur mendacium: con-
cipiunt enim dolorem, & pariunt ini-
quitatem. Viperarum ova ruperunt, & 5
araneæ telam texuerunt: at qui ac-
cinctus erat ad comedendum ex ovis
earum; fracto ovo, reperit in eo aſpi-
dẽ. Textura eorũ non cedet in veſtimen- 6
tum, nec operient ſeſe operibus ſuis, quoniã
opera eorum opera ſunt iniqua: Pedes 7
ſuos ad malum accelerant, feſtinos ad
effundendum ſanguinem: & cogita-
tiones eorum ſunt cogitationes impru-
dentum: contritio & miſeria in ſemitis
eorum: Viam pacis minimè cognoſcunt, 8
nec ullum in viis eorum judicium re-
peritur; ſiquidem ſemitæ eorum in qui-
bus incedunt, obliquæ ſunt, nec ag-
noſcunt pacem. Hic de cauſa receſſit 9
judicium ab eis, nec aſſequetur eos ju-
ſtitia.

Textus vigeſimus octavus.

Dum lucem ſperarent, advenerunt eis
tenebræ, expectârunt lucem in media
nocte. Palpant parietem quaſi cæci; & 10
velut hi qui non habent oculos palpant;
& cadunt in meridie, ac ſi eſſent in
media nocte; ut moribundi ſuſpirant:
ut urſus ſimul & ut columba incedunt. 11
Expectavimus judicium, at non reperitur
ſalus, ſtetit procul à nobis; Eò quòd 12
iniquitas noſtra multa ſit coram te, &
peccata noſtra nos impugnent: nam ini-
quitates noſtræ in nobis ſunt, & ſcelera
noſtra cognoſcimus. Non ſervimus Deo, 13
mentiti ſumus, & receſſimus à veſtigiis,
Dei noſtri: locuti ſumus oppreſſionem,
abalienati ſumus à monte noſtro, & ex
animo ſtuduimus ſermonibus perverſis:

ישעיה : ס

quia : ſtetit longe à juſtitia & ,judicium retrorſum eſt averſum Et
14 וְהֻסַּג אָחוֹר מִשְׁפָּט וּצְדָקָה מֵרָחוֹק תַּעֲמֹד כִּי־
fuit Et .ingredi potuit non *rectum* & : veritas platea in impegit
15 כָשְׁלָה בָרְחוֹב אֱמֶת וּנְכֹחָה לֹא־תוּכַל לָבוֹא׃ וַתְּהִי
,Dominus vidit Et .*expoliata* malo à receſſit & , *deficiens* veritas
הָאֱמֶת נֶעְדֶּרֶת וְסָר מֵרָע מִשְׁתּוֹלֵל וַיַּרְא יְהֹוָה
non quod vidit Et .judicium non quia ,ejus oculis in *fuit malum* &
16 וַיֵּרַע בְּעֵינָיו כִּי־אֵין מִשְׁפָּט׃ וַיַּרְא כִּי־אֵין
ſibi fecit ſalutem *&* : *intercedens* non quod , *obſtupuit* & ,quiſpiam
אִישׁ וַיִּשְׁתּוֹמֵם כִּי־אֵין מַפְגִּיעַ וַתּוֹשַׁע לוֹ
juſtitiam ſe induit Et .eum *fulcivit* ipſa ejus juſtitia & ,ipſius brachium
17 זְרֹעוֹ וְצִדְקָתוֹ הִיא סְמָכָתְהוּ׃ וַיִּלְבַּשׁ צְדָקָה
veſtimenta ſe induit & : ſuo capite in ſalutis galeam & ,loricam ſicut
כַּשִּׁרְיָן וְכוֹבַע יְשׁוּעָה בְּרֹאשׁוֹ וַיִּלְבַּשׁ בִּגְדֵי
propter Quaſi .zelum pallium ſicut ſe *involvit* & , veſtem ultionis
18 נָקָם תִּלְבֹּשֶׁת וַיַּעַט כַּמְעִיל קִנְאָה׃ כְּעַל
retributionem , ſuis hoſtibus iram *reddet propter quaſi* ,retributiones
גְּמֻלוֹת כְּעַל יְשַׁלֵּם חֵמָה לְצָרָיו גְּמוּל
occidente ab timebunt Et .reddet retributionē inſularibus :ſuis inimicis
19 לְאֹיְבָיו לָאִיִּים גְּמוּל יְשַׁלֵּם׃ וְיִירְאוּ מִמַּעֲרָב
,venerit cùm : ejus gloriam ſolis ortu ab & ,Domini nomen
אֶת־שֵׁם יְהֹוָה וּמִמִּזְרַח־שֶׁמֶשׁ אֶת־כְּבוֹדוֹ כִּי־יָבוֹא
veniet Et .eum *in vexillum erigens* Domini ſpiritus ,hoſtis ,fluvius veluti
20 כַנָּהָר צָר רוּחַ יְהֹוָה נֹסְסָה בוֹ׃ וּבָא
dixit , Jahacob in *prævaricatione* redeuntes ad & , redemptor Sijon ad
לְצִיּוֹן גּוֹאֵל וּלְשָׁבֵי פֶשַׁע בְּיַעֲקֹב נְאֻם
.Dominus dixit , eis cum meum pactum hoc *ego* Et .Dominus
21 יְהֹוָה׃ וַאֲנִי זֹאת בְּרִיתִי אוֹתָם אָמַר יְהֹוָה
non ,tuo ore in poſui quæ mea verba & ,te in qui meus Spiritus
רוּחִי אֲשֶׁר עָלֶיךָ וּדְבָרַי אֲשֶׁר־שַׂמְתִּי בְּפִיךָ לֹא
,tui ſeminis ſeminis ore de & ,tui ſeminis ore de & ,tuo ore de recedent
יָמוּשׁוּ מִפִּיךָ וּמִפִּי זַרְעֲךָ וּמִפִּי זֶרַע זַרְעֲךָ
.ſeculum in uſque & , *nunc* ex ,Dominus dixit
אָמַר יְהֹוָה מֵעַתָּה וְעַד־עוֹלָם׃

CAP. LX. ס

te ſuper Domini gloria & : tuum lumen venit quia ,illuminare Surge
1 קוּמִי אוֹרִי כִּי־בָא אוֹרֵךְ וּכְבוֹד יְהֹוָה עָלַיִךְ
.populos caligo & ,terram *operiet tenebroſitas* ecce Quia .eſt orta
2 זָרָח׃ כִּי־הִנֵּה הַחֹשֶׁךְ יְכַסֶּה־אֶרֶץ וַעֲרָפֶל לְאֻמִּים
.videbitur te ſuper ejus gloria & , Dominus orietur te ſuper Et
וְעָלַיִךְ יִזְרַח יְהֹוָה וּכְבוֹדוֹ עָלַיִךְ יֵרָאֶה׃
.tui ortus ſplendore in reges & ,tuo lumine in gentes ambulabunt Et
3 וְהָלְכוּ גוֹיִם לְאוֹרֵךְ וּמְלָכִים לְנֹגַהּ זַרְחֵךְ׃
,ſe congregaverunt ipſi Omnes .vide & , tuos oculos *circum* Leva
4 שְׂאִי־סָבִיב עֵינַיִךְ וּרְאִי כֻּלָּם נִקְבְּצוּ
Latus juxta tuæ filiæ & ,venient longe de tui filii : te ad venerunt
בָאוּ־לָךְ בָּנַיִךְ מֵרָחוֹק יָבֹאוּ וּבְנֹתַיִךְ עַל־צַד
dilatabitur & , *pavebit* & , *ſplendebis* & , videbis Tunc .nutrientur
5 תֵּאָמַנָה׃ אָז תִּרְאִי וְנָהַרְתְּ וּפָחַד וְרָחַב
fortitudo ,maris *tumultus* te ad fuerit converſa quando : tuum cor
לְבָבֵךְ כִּי־יֵהָפֵךְ עָלַיִךְ הֲמוֹן יָם חֵיל
dromedarii , te operiet camelorum *Copia* .tibi venerint gentium
6 גּוֹיִם יָבֹאוּ לָךְ׃ שִׁפְעַת גְּמַלִּים תְּכַסֵּךְ בִּכְרֵי
thus & , aurum : venient Seba de ipſi omnes : Ephah & ,Midian
מִדְיָן וְעֵיפָה כֻּלָּם מִשְּׁבָא יָבֹאוּ זָהָב וּלְבוֹנָה
.annuntiabunt Domini laudes & , deferent
יִשָּׂאוּ וּתְהִלֹּת יְהֹוָה יְבַשֵּׂרוּ׃

Verſio VULG. LAT.

14 Et converſum eſt retrorſum
judicium, & juſtitia longè ſtetit:
quia corruit in platea veritas,
& æquitas non potuit
15 ingredi. Et facta eſt veritas in
oblivionem: & qui receſſit à
malo, prædæ patuit: & vidit
Dominus, & malum apparuit
in oculis ejus, quia non eſt
16 judicium. Et vidit quia non
eſt vir: & aporiatus eſt, quia
non eſt qui occurrat: & ſalvavit
ſibi brachium ſuum, &
juſtitia ejus ipſa confirmavit
17 eum. Indutus eſt juſtitiâ ut
loricâ, & galea ſalutis in capite
ejus: indutus eſt veſtimentis
ultionis, & opertus eſt
18 quaſi pallio zeli. Sicut ad vindictam
quaſi ad retributionem
indignationis hoſtibus
ſuis, & viciſſitudinem inimicis
ſuis: inſulis vicem reddet.
19 Et timebunt qui ab Occidente,
nomen Dñi; & qui ab Ortu
Solis, gloriā ejus: cùm venerit
quaſi fluvius violentus,
20 quem ſpiritus Dñi cogit: Et
venerit Sion redemptor, &
eis qui redeunt ab iniquitate
21 in Jacob, dicit Dñs. Hoc fœdus
meum cum eis, dicit Dñs;
Spiritus meus, qui eſt in te,
& verba mea, quæ poſui in
ore tuo, non recedent de ore
tuo, & de ore ſeminis tui,
& de ore ſeminis ſeminis
tui, dicit Dominus, amodò &
uſque in ſempiternum.

CAP. LX.

1 Surge, illuminare Jeruſalē:
quia venit lumen tuum, &
2 gloria Dñi ſup te orta eſt. Quia
ecce tenebræ operient terrā,
& caligo populos: ſup te aut
orietur Dñs, & gloria ejus in
3 te videbitur. Et ambulabunt
Gentes in lumine tuo, & reges
4 in ſplendore ortûs tui. Leva in
circuitu oculos tuos, & vide:
omnes iſti congregati ſunt, venerunt
tibi: filii tui de longè
venient, & filiæ tuæ de latere
5 ſurgent. Tunc videbis, & afflues,
& mirabitur & dilatabitur
cor tuū, quando converſa
fuerit ad te multitudo maris,
fortitudo gentium venerit tibi.
6 Inundatio camelorum operiet
te, dromedarii Madian
et Epha; omnes de Saba
venient, aurum & thus deferentes,
et laudem Domino
annuntiantes.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

14 Καὶ ἀπεστήσαμεν ὀπίσω τὴν κρίσιν, καὶ ἡ δικαιοσύνη
μακρὰν ἀφέστηκεν (κ)· ὅτι (λ)
κατηναλώθη ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν ἡ ἀλήθεια,
καὶ δι' εὐθείας οὐκ (μ) ἐδύναντο διελθεῖν.
15 Καὶ ἡ ἀλήθεια ἦρται, καὶ μετέστησαν τὴν διάνοιαν
(ν) τοῦ συνιέναι. καὶ εἶδε κύριος, καὶ οὐκ
16 ἤρεσεν αὐτῷ, ὅτι οὐκ ἦν κρίσις. Καὶ εἶδε, καὶ
οὐκ ἦν ἀνήρ, καὶ κατενόησε, καὶ οὐκ ἦν ὁ ἀντιληψόμενος·
καὶ ἠμύνατο αὐτοὺς τῷ βραχίονι
17 αὐτοῦ, καὶ τῇ ἐλεημοσύνῃ ἐστηρίσατο. Καὶ
ἐνεδύσατο δικαιοσύνην ὡς θώρακα, καὶ περιέθετο
περικεφαλαίαν σωτηρίου ἐπὶ τῆς κεφαλῆς,
καὶ περιεβάλετο ἱμάτιον ἐκδικήσεως,
18 καὶ τὸ περιβόλαιον (ξ) αὐτοῦ, Ὡς ἀνταποδώσων
ἀνταπόδοσιν ὄνειδος τοῖς ὑπεναντίοις.
19 Καὶ φοβηθήσονται οἱ ἀπὸ δυσμῶν τὸ
ὄνομα κυρίου, καὶ οἱ (ο) ἀπ' ἀνατολῶν ἡλίου
τὸ ὄνομα τὸ ἔνδοξον. ἥξει γὰρ ὡς ποταμὸς
βίαιος ἡ ὀργὴ παρὰ κυρίου, ἥξει μετὰ θυμοῦ.
20 Καὶ ἥξει ἕνεκεν Σιὼν ὁ ῥυόμενος, καὶ
21 ἀποστρέψει ἀσεβείας ἀπὸ Ἰακώβ. Καὶ αὕτη
αὐτοῖς ἡ παρ' ἐμοῦ διαθήκη, εἶπε κύριος·
τὸ πνεῦμα τὸ ἐμόν, ὅ ἐστιν ἐπὶ σοί, καὶ
τὰ ῥήματα ἃ ἔδωκα εἰς τὸ στόμα σου, οὐ μὴ
ἐκλίπῃ ἐκ τοῦ στόματός σου, καὶ ἐκ τοῦ στόματος
τοῦ σπέρματός σου· (π) εἶπε γὰρ κύριος
ἀπὸ τοῦ νῦν καὶ εἰς τὸν αἰῶνα.

Et receſſimus retrorſū à judicio. Et 14
juſtitia longè ſtetit: quia conſumpta
eſt in viis eorum veritas: &
per rectum iter tranſire non poterant.
Et veritas ſublata eſt: 15
& tranſtulerunt mentem ab intelligendo.
Et vidit Dominus, &
non placuit ei: quoniam non erat
judicium. Et vidit; & non erat 16
vir: & conſideravit; & non
erat, qui defenderet. Et ultus
eſt eos brachio ſuo, & miſericordiâ
(g) ſuſtinuit. Et indutus eſt 17
juſtitiam, quaſi loricam: & poſuit
galeam ſalutaris *in capite: & circundatus*
eſt veſtimento vindictæ,
& pallio ſuo, Quaſi retributurus 18
retributionem opprobrium adverſariis.
Et timebunt, qui ab Occidente, 19
nomen Domini; & qui
ab Ortu Solis, nomen inclytum.
Veniet enim quaſi fluvius violentus,
ira à Domino: veniet cum
furore. Et veniet (h) propter 20
Sion, qui liberat: & avertet impietates
à Jacob. Et hoc erit eis 21
à me teſtamentum, dixit Dominus.
Spiritus meus, qui eſt in te,
& verba, quæ dedi in ore tuo,
non deficient de ore tuo, & ex
ore ſeminis tui: (i) ait enim
Dominus ex nunc, & in æternum.

MS.A. (κ) ἀφ' ἡμῶν (λ) καταναλωθῆ (μ) ἠδύναντο (ν) αὐτῶν τοῦ * συνιέναι. (ξ) Ὡς ἀνταποδώσων (ο) ἀπὸ (π) εἶπεν κύριος

ΚΕΦ. ξ'.

1 Φωτίζου φωτίζου Ἱερουσαλήμ, ἥκει γάρ
σου τὸ φῶς, καὶ ἡ δόξα κυρίου ἐπὶ σὲ ἀνατέταλκεν.
2 Ἰδοὺ σκότος (α) καλύψει γῆν,
καὶ γνόφος ἐπ' ἔθνη, ἐπὶ δὲ σὲ φανήσεται κύριος,
3 καὶ ἡ δόξα αὐτοῦ ἐπὶ σὲ ὀφθήσεται. Καὶ
πορεύσονται βασιλεῖς τῷ φωτί σου, καὶ
4 ἔθνη τῇ λαμπρότητί σου. Ἆρον κύκλῳ
τοὺς ὀφθαλμούς σου, καὶ ἴδε συνηγμένα τὰ
τέκνα σου. (β) ἥκασι πάντες οἱ υἱοί σου
μακρόθεν, καὶ αἱ θυγατέρες σου ἐπ' ὤμων
5 ἀρθήσονται. Τότε ὄψῃ, καὶ φοβηθήσῃ, καὶ
ἐκστήσῃ τῇ καρδίᾳ, ὅτι μεταβαλεῖ εἰς σὲ
πλοῦτος θαλάσσης, καὶ ἐθνῶν καὶ λαῶν, καὶ
6 ἥξουσί σοι Ἀγέλαι καμήλων, καὶ καλύψουσί
σε κάμηλοι Μαδιὰμ καὶ (γ) Γαιφά.
πάντες ἐκ Σαβὰ ἥξουσι φέροντες χρυσίον,
καὶ λίβανον οἴσουσι, (δ) καὶ τὸ σωτήριον
κυρίου εὐαγγελιοῦνται.

CAP. LX.

Illuminare, illuminare Hieruſalem; 1
venit enim lumen tuum:
& gloria Domini ſuper te orta
eſt. Ecce tenebræ operient terram: 2
& caligo ſuper gentes. Super
te autem apparebit Dominus:
& gloria illius in te videbitur:
Et ambulabunt reges in lumine 3
tuo, & gentes in ſplendore tuo.
Leva in circuitu oculos tuos, & 4
vide congregatos filios tuos. Venerunt
omnes filii tui de longè; et
filiæ tuæ ſuper humeros portabuntur.
Tunc videbis, & timebis, 5
& ſtupebis corde: quoniam transferentur
in te divitiæ maris, &
gentium, & populorum. Et venient
tibi Greges camelorum; & 6
operient te cameli Madiam, &
Gæpha. Omnes de Saba venient
ferentes aurum, & (a) thus deferent:
& ſalutare Domini annuntiabunt.

MS.A. (α) καὶ γνόφος καλύψει γῆν ἐπ' ἔθνη, ἐπὶ σὲ (β) ἰδοὺ ἥκασιν (γ) Γαιφάς. (δ) καὶ λίθον τίμιον, καὶ τὸ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 וְאִסְתְּחַר לַאֲחוֹרָא עָבְדֵי דִינָא וְעָבְדֵי זָכוּתָא מֵרַחִיק קָמַן אֲרֵי אִתְּקַלוּ בִרְחוֹבָא עָבְדֵי קוּשְׁטָא
15 וְעָבְדֵי הֵימְנוּתָא לָא יָכְלִין לְאִתְגַּלָּאָה׃ וַהֲווֹ עָבְדֵי קוּשְׁטָא מְטַמְּרִין וּדְסָטַן מִבִּישׁ מִתְבַּזְּזִין
16 וּגְלֵי קֳדָם יְיָ וּבְאִישׁ קֳדָמוֹהִי אֲרֵי לֵית דִּינָא׃ וּגְלֵי קֳדָמוֹהִי דְּלֵית גְּבַר דְּלֵיהּ עוֹבָדִין טָבִין
וִידִיעַ קֳדָמוֹהִי וְלֵית אֱנָשׁ דִּיקוּם וְיִבְעֵי עֲלֵיהוֹן וּפַרְקִנּוּן בִּדְרַע תּוּקְפֵיהּ וּבְמֵימַר רְעוּתֵיהּ
17 סַעְדִּנּוּן׃ אִתְגְּלֵי לְמֶעְבַּד זַכְוָן לְעַמֵּיהּ תְּקוֹף וּפוּרְקָן אַיְתֵי בְּמֵימְרֵיהּ לִדְחַלוֹהִי
18 וְיִתְגְּלֵי לְמֶעְבַּד לְאִתְפְּרָעָא בִּתְקוֹף מִסָּנְאֵי עַמֵּיהּ וְיָתִיב נִקְמָא לְבַעֲלֵי דְבָבוֹהִי׃ מָרֵי
גְמַלְיָא הוּא גְמָלָא יְשַׁלֵּם פּוּרְעָנוּתָא לְסָנְאוֹהִי גְמָלָא לְבַעֲלֵי דְבָבוֹהִי לְנַגְוָתָא גְמָלָא
19 יְשַׁלֵּם׃ וְיִדְחֲלוּן מִמַּעַרְבָא יָת שְׁמָא דַייָ וּמִמַּדְנַח שִׁמְשָׁא יָת יְקָרֵיהּ אֲרֵי יֵיתוּן כְּשִׁפְעַ
20 נְהַר פְּרָת מְעִיקִן בְּמֵימְרָא דַייָ יִתַּבְּרוּן׃ וְיֵיתֵי לְצִיּוֹן פָּרִיק וּלְאָתָבָא מְרוֹדַיָּא דְבֵית יַעֲקֹב
21 לְאוֹרַיְתָא אֲמַר יְיָ׃ וַאֲנָא דֵין קְיָמִי עִמְּהוֹן אֲמַר יְיָ רוּחַ קוּדְשִׁי דַּעֲלָךְ וּפִתְגָּמֵי נְבוּאָתִי
דְּשַׁוֵּיתִי בְּפוּמָּךְ לָא יֶעְדּוֹן מִפּוּמָּךְ וּמִפּוּם בְּנָךְ וּמִפּוּם בְּנֵי בְנָךְ אֲמַר יְיָ מִכְּעַן וְעַד עָלְמָא׃

ס

1 קוּמִי אַנְהַרִי יְרוּשְׁלֶם אֲרֵי מְטָא זְמַן פּוּרְקָנִיךְ וִיקָרָא דַייָ עֲלָךְ יִתְגְּלֵי׃ אֲרֵי הָא חֲשׁוֹכָא
2 יְחַפֵּי אַרְעָא וְקַבְלָא לְמַלְכְוָתָא וּבִיךְ יַשְׁרֵי שְׁכִנְתָּא דַייָ וִיקָרֵיהּ עֲלָךְ יִתְגְּלֵי׃ וִיהָכוּן
3 עַמְמַיָּא לִנְהוֹרִיךְ וּמַלְכַיָּא לְקֳבֵיל זְהוֹרִיךְ׃ זְקוֹפִי יְרוּשְׁלֶם סְחוֹר סְחוֹר עֵינָךְ וַחֲזִי כָּל
4 בְּנֵי עַם גָּלְוָתִךְ דְּמִתְכַּנְשִׁין וְאָתַן לְנַוִיךְ בְּנָךְ מֵרַחִיק יֵיתוּן וּבְנָתָךְ עַל גִּסְסִין יִתְנַסְּבָן׃
5 בְּכֵן תֶּחֱזַיִן וּתְנַהֲרִין וְתִדְחֲלִין וְיִפְתֵּי לִבִּיךְ בִּדְחֲלַת חֶטְאִין אֲרֵי יִתְחַלַּף לִיךְ עוֹתַר מַעַרְבָא
6 נִכְסֵי עַמְמַיָּא יִתְעֲלוּן לְנַוִיךְ׃ שִׁירַת עַרְבָאֵי תְּחַפֵּי סְחָרָנִיךְ הוּגְנֵי מִדְיָן וְהוֹלַד כּוּלְּהוֹן
מִשְּׁבָא יֵיתוּן דְּהַב וּלְבוֹנָה יְהוֹן טְעִינִין וּדְאָתַן עִמְּהוֹן בְּתוּשְׁבַּחְתָּא דַייָ יְהוֹן מְשַׁתְּעַן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et *converſi ſunt* retrorſum *facientes* judiciū, & *facientes juſtitiam* longè 14
ſteterunt: quia impegerunt in platea veraces, & fideles non potuerunt manifeſtari.
Et fuerunt veraces abſconditi; & qui declinant à malo direptionē 15
ſuſtinent. Et revelatū eſt corā Dño, & diſplicuit corā eo, quia non eſt judicium.
Et manifeſtū eſt corā eo, quòd non ſit vir cujꝰ opera bona ſint: & no- 16
tum eſt corā eo, quòd non ſit homo qui ſtet & deprecetur pro eis: & ſalvavit
eos in brachio fortitudinis ſuæ, & in verbo voluntatis ſuæ auxiliatus eſt
eis. Revelatꝰ eſt ut faciat æqua populo ſuo: fortitudinē & ſalutem adducet 17
in verbo ſuo timentibꝰ ſe, *& revelabitur* ut faciat ultionem in fortitudine
de inimicis populi ſui, & reddat vindictā hoſtibus ſuis. Dñs retributionum 18
eſt, retributionē ipſe reddet, vindictam inimicis ſuis; & mercedē hoſtibus
ſuis: inſulis retributionē reddet. Et timebunt ab Occidente nomen Dñi, & 19
ab Oriente Solis gloriā ejus. Quoniā venient tribulantes quaſi inundatio
fluminis Euphratis; & in verbo Dñi conterentur. Et veniet ad Sion re- 20
demptor, & ut convertat tranſgreſſores domꝰ Jacob ad Legem, dicit Dñs.
Et hoc eſt pactū meum cum eis, dicit Dñs: Spiritus ſanctꝰ meꝰ qui eſt in te, 21
& verba prophetiæ meæ quæ poſui in ore tuo, non auferentur ab ore tuo, &
ab ore filiorū tuorū, et nepotum, dicit Dñs, deinceps & uſque in æternum.

CAP. LX.

Surge illuminare Jeruſalē, quia pervenit tempꝰ redemptionis tuæ, & glo- 1
ria Dñi ſuper te revelabitur. Quia ecce tenebræ operient terrā, & caligo 2
regna: in te autē habitabit majeſtas Dñi, & gloria ejꝰ ſuper te revelabitur.
Et ambulabunt gentes in lumine tuo, & reges in ſplendore tuo. Leva Jeru- 3
ſalem in circuitu oculos tuos, & vide omnes filios populi captivitatis tuæ, 4
qui congregantur & veniunt ad te: filii tui de longè venient, & filiæ tuæ ſu-
per latera portabuntur. Tunc videbis, & illuminaberis; & timebis, et dilata- 5
bitur cor tuū in timore peccatorū: quia transferentur tibi divitiæ Occiden-
tis; ſubſtantiæ populorū afferentur ad te. Turba Arabū operiet in circuitu 6
tuo; dromedarii Madian et *Holad*, omnes hi de Saba venient; auro et thu-
re onuſti erunt: et qui venerint cum eis, laudem Domini narrabunt.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

14 *ܘܗܦܟܢ ܕܝܢܐ ܠܒܣܬܪܗ. ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܐܩܝܡܢ ܒܪܘܚܩܐ. ܡܛܠ ܕܐܬܬܩܠܬ ܩܘܫܬܐ
15 ܒܫܘܩܐ ܀ ܘܡܟܣܢܘܬܐ ܠܐ ܡܫܟܚܐ ܠܡܐܬܐ. *ܘܗܘܬ ܩܘܫܬܐ ܒܛܘܫܝܐ ܀ ܘܥܒܪ ܣܘܟܠܐ
16 ܡܢ ܪܥܝܢܢ ܀ ܘܚܙܐ ܡܪܝܐ ܕܠܝܬ ܕܝܢܐ. ܘܐܬܒܐܫ ܒܥܝܢܘܗܝ. *ܘܚܙܐ ܕܠܝܬ ܓܒܪ ܀
17 ܘܐܬܕܡܪ ܕܠܝܬ ܕܡܥܕܪ. ܘܦܪܩܗ ܕܪܥܗ. ܘܙܕܝܩܘܬܗ ܗܝ ܣܡܟܬܗ. *ܠܒܫ ܙܕܝܩܘܬܐ
18 ܐܝܟ ܫܪܝܢܐ. ܘܣܢܘܪܬܐ ܕܦܘܪܩܢܐ ܒܪܫܗ. ܘܠܒܫ ܠܒܘܫܐ ܕܦܘܪܥܢܐ. *ܕܢܬܒܥ
19 ܡܢ ܣܢܐܘܗܝ. ܘܢܦܪܘܥ ܠܒܥܠܕܒܒܘܗܝ. ܘܠܓܙܪܬܐ ܢܦܪܘܥ ܦܘܪܥܢܐ. *ܢܕܚܠܘܢ
ܡܢ ܡܥܪܒܐ ܠܫܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܡܢ ܡܕܢܚ ܫܡܫܐ ܠܐܝܩܪܗ. ܡܛܠ ܕܐܬܐ ܐܠܘܨܐ ܐܝܟ
20 ܢܗܪܐ ܀ ܘܪܘܚܗ ܕܡܪܝܐ ܡܟܟܐ ܠܗ. *ܘܢܐܬܐ ܠܨܗܝܘܢ ܦܪܘܩܐ ܀ ܘܠܕܦܢܝܢ
21 ܥܘܠܐ ܡܢ ܝܥܩܘܒ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. *ܘܐܢܐ ܗܢܐ ܩܝܡܝ ܕܥܡܗܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܀ ܪܘܚܝ
ܕܥܠܝܟ. ܘܡܠܝ ܕܣܡܬ ܒܦܘܡܟ ܀ ܠܐ ܢܥܒܪܘܢ ܡܢ ܦܘܡܟ ܘܡܢ ܦܘܡܗ ܕܙܪܥܐ
ܕܙܪܥܟ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܀ ܡܢ ܗܫܐ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ.

*ܩܦܠܐܘܢ * ܣ *

1 2 *ܩܘܡܝ ܐܢܗܪܝ ܡܛܠ ܕܐܬܐ ܢܘܗܪܟܝ. ܘܐܝܩܪܗ ܕܡܪܝܐ. ܥܠܝܟܝ ܕܢܚ. *ܡܛܠ
ܕܗܐ ܚܫܘܟܐ ܡܟܣܐ ܠܐܪܥܐ. ܘܥܪܦܠܐ ܠܐܡܘܬܐ. ܘܥܠܝܟܝ ܢܕܢܚ ܡܪܝܐ. ܘܐܝܩܪܗ
3 ܥܠܝܟܝ ܢܬܚܙܐ. *ܘܢܐܬܘܢ ܥܡܡܐ ܠܢܘܗܪܟܝ. ܘܡܠܟܐ ܠܢܘܗܪܐ ܕܕܢܚܟܝ. *ܐܪܝܡܝ
4 ܥܝܢܝܟܝ ܠܚܕܪܝܟܝ ܀ ܘܚܙܝ ܕܟܠܗܘܢ ܡܬܟܢܫܝܢ. ܘܐܬܝܢ ܠܟܝ. ܒܢܝܟܝ ܡܢ
5 ܪܘܚܩܐ ܢܐܬܘܢ. ܘܒܢܬܟܝ ܥܠ ܟܬܦܐ ܢܬܬܪܒܝܢ. *ܗܝܕܝܢ ܬܚܙܝܢ. ܘܬܢܗܪܝܢ. ܘܬܬܕܡܪܝܢ.
ܘܢܬܪܘܚ ܠܒܟܝ. ܡܛܠ ܕܢܬܗܦܟ ܠܟܝ ܥܘܬܪܐ ܕܝܡܐ. ܘܚܝܠܐ ܕܥܡܡܐ ܢܐܬܐ ܠܟܝ.
6 *ܣܓܝܐܘܬܐ ܕܓܡܠܐ ܬܟܣܟܝ. ܒܘܟܪܐ ܕܡܕܝܢ ܘܕܥܝܦܐ. ܟܠܗܘܢ ܡܢ ܫܒܐ ܢܐܬܘܢ. ܕܗܒܐ
ܘܠܒܘܢܬܐ ܢܫܩܠܘܢ. ܘܬܫܒܚܬܗ ܕܡܪܝܐ ܢܣܒܪܘܢ.

Judicium retro vertimus, & juſtitiam procul 14
ſtatuimus: quia impegit veritas in platea, &
increpatio venire nequit: Veritas in abdito 15
verſata eſt, & abſceſſit prudentia ab intellectu noſtro: Ideò videns Dominus nullum
eſſe judicium, ægrè tulit: Et videns nemi- 16
nem adeſſe, & nullum adjutorem adeſſe demiratus; ſalvavit eum brachium ipſius, &
juſtitia ejus fulcivit eum: Induit juſtitiam 17
quaſi loricam, & galeam ſalutis in capite
ſuo: & induit veſtes retributionis: Ut vin- 18
dictam ſumat ab oſoribus ſuis, & rependat
inimicis ſuis, inſulis etiam retributionem reddat. Formidabunt ab Occidente nomen 19
Domini, & ab ortu ſolis majeſtatem ejus;
quia veniente ſicut fluvio oppreſſore, ſpiritus
Dñi humiliabit eum: Sioni verò & his qui 20
avertunt iniquitatem à Jacobo, ſalvator adveniet, dicit Dominus. Meum verò pactum 21
vobiſcum, iſtud erit, dicit Dominus; Spiritus meus qui ſuper te eſt; & verba mea quæ
poſui in ore tuo, non deficient de ore tuo,
neque ab ore ſeminis progeniei tuæ, dicit Dominus, ex hoc tempore uſque in ſeculum.

CAP. LX.

Surge, lucem ede; quoniam advenit lumen 1
tuum, & majeſtas Domini ſuper te orietur.
Nam ecce tenebræ operiunt terram, & ca- 2
ligo populos; ſuper te autem orietur
Dominus, & majeſtas ejus ſuper te videbitur: Et venient gentes ad lumen tuum, & 3
reges ad fulgorem lucis tuæ. Attolle oculos 4
tuos circumquaque, & vide quomodo omnes
congregentur & veniant ad te: filii tui de
lonquinquo venient, & filiæ tuæ ſuper grabatis nutrientur. Tunc videbis, & ſplen- 5
deſces, gaudebis, & dilatabitur cor tuum;
quoniam ad te convertentur divitiæ maris, &
opes gentium ad te venient: Agmen came- 6
lorum operiet te, primogeniti Madianis &
Ephæ, omnes de Saba venient aurum & thus
afferentes, & laudes Domini prædicabunt.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

14 * وبعدنا خلف الحكم * والعدل وقف عنا بعيدا * لان الحق باد في طرقهم * ولم
15 يستطيعوا ان يعبروا باستقامة * والحق رفع * ونقلوا تمييز فهمهم ليفهموا * ونظر الرب
16 ولم يرضه * لانه لم يكن حكم * ونظر ولم يكن رجل * وتامل ولم يكن ناصر *
17 وانتقم منهم بذراعه * وسدده برحمته * ولبس العدل مثل الدرع * ووضع على راسه
18 بيضة الخلاص * وسربل ثوب الانتقام * ورداء مثل من يكافي مكافاة العار للمعاندين *
19 * ويخافون الذين من المغارب اسم الرب * والذين من مشارق الشمس الاسم الممجود *
20 لان الغضب من قبل الرب ياتي مثل نهر عاصف ياتي بحنق * وياتي لاجل صهيون المنقذ *
21 ويصرف النفاق عن يعقوب * وهذا هو العهد الذي لهم من لدني قال الرب * روحي
الذي هو عليك وكلماتي التي اعطيتها في فيك لا تفنى من فيك ولا من فم زرعك قال
الرب * منذ الان والى الابد *

• الفصل الستون *

• بشارة النبي لايروسليم * وهو قريان لاحد الفصح •

1 2 * استنيري يا ايروسليم * لان نورك اتي * ومجد الرب اشرق عليك * لان هوذا الظلمة والضباب
3 يغشيان الارض على الامم وعليك يتجلى الرب * ومجده يظهر عليك * ويسير الملوك في نورك *
4 والامم في بهاء اشراقك * ارفعي عينيك حولك وانظري اولادك مجتمعين * ها جميع بنيك ياتون
5 من البعد * وبناتك يحملون على الاكتاف * حينيذ تنظرين وتفرحين وتخافين وتذهلين بقلبك *
6 لانه ينقل اليك غنا البحر والامم والشعوب * وياتي اليك قطارات الابل ويغشاك * جمال مدين والجفار
ياتون جميعا من سابا حاملين ذهبا * ويقدمون لك لبانا وحجرا كريما * ويبشرون بخلاص الرب *

Retroceſſimus procul à judicio, & juſtitia 14
procul ſtetit à nobis; nam veritas periit
in viis eorum, nec poſſunt rectà incedere:
Veritas ablata eſt, & mutaverunt ratio- 15
nem mentis ſuæ, ne intelligerent. Hæc videns Dominus improbavit, eò quòd nullum eſſet judicium. Videns itaque nul- 16
lum eſſe virum, & conſiderans nullum
eſſe adjutorem; vindictam ſumpſit ab
eis brachio ſuo: munivit ſe miſericordiâ
ſuâ, Induit juſtitiam quaſi loricam, im- 17
poſuit capiti ſuo galeam ſalutis, & amicivit ſe veſte ultionis, Induitque ſe 18
velut is qui reddit retributionem ignominioſam contumacibus. Adeoque ter- 19
rebuntur ii qui ſunt ad Occaſum, nomen Domini, & qui ab ortu ſolis,
nomen illud glorioſum; quoniam ira
à Domino ventura eſt tanquam fluvius rapidus furibundè veniens. Pro 20
Sione verò venturus eſt redemptor,
qui ſcelus avertet à Jacobo. Cete- 21
rùm, hoc eſt fœdus quod à me cum
illis initur, dicit Dominus; Spiritus
meus qui ſuper te eſt, & verba
mea quæ inſerui in os tuum, non deficient ex ore tuo, neque ex ore ſeminis tui, ait Dominus, ex nunc in
ſempiternum uſque.

CAP. LX.

Annuntiatio Prophetæ ad Jeruſalem: legiturque Dominicâ Paſchatis.

R*Ecipe lumen O Jeruſalem; quia* 1
venit lumen tuum, & gloria Domini
ſuper te refulſit. Nam ecce tenebræ 2
& caligo terram obruunt ſuper gentes;
ſuper te verò apparebit Dominus, &
gloria ejus ſuper te patebit: Et ambu- 3
labunt reges in lumine tuo, & gentes
in nitore ſplendoris tui. Attolle oculos 4
tuos circum te, & aſpice filios tuos
congregatos: en omnes filii tui venient è longinquo, & filias tuas portabunt
ſuper humeros. Tunc videbis, & lætabe- 5
ris, timebis, & obſtupeſces in corde tuo;
quia transferentur ad te divitiæ maris,
gentes, ac populi: Venient ad te greges 6
camelorum & operient te, dromades Medianis & Gephavis venient ſimul de Saba
aurum advehentes; offerentque tibi incenſum & lapillos pretioſos, & prædicabunt ſalutem Domini.

ישעיה : ס

Nebajoth arietes , tibi ſe congregabunt Chedar *pecus* *Omne*
כל־צאן קדר יקבצו לך אילי נביות 7
domum & ,meum altare *voluntatem* ſuper Aſcendent .tibi miniſtrabunt
ישרתונך יעלו על־רצון מזבחי ובית
columbæ ſicut & ,volabunt nubes ut iſtæ Quæ .glorificabo meæ gloriæ
תפארתי אפאר : מי־אלה כעב תעופינה וכיונים 8
Tarſis naves & ,expectabunt *inſulæ* me Quia *? ſua columbaria* ad
אל־ארבתיהם : כי־לי איים יקוו ואניות תרשיש 9
,eorum argentum : longinquo de tuos filios *adducendum ad* ,principio in
בראשנה להביא בניך מרחוק כספם
, Iſrael ſancto & , tui Dei Domini nomini ,eis cum eorum aurum &
וזהבם אתם לשם יהוה אלהיך ולקדוש ישראל
, tuos muros alienigenæ filii ædificabunt Et .te glorificavit quia
כי פארך : ובנו בני־נכר חמתיך 10
, te percuſſi mea ira in nam : tibi miniſtrabunt eorum reges &
ומלכיהם ישרתונך כי בקצפי הכיתיך
,jugiter tuæ portæ aperientur Et .tui ſum miſertus mea voluntate in &
וברצוני רחמתיך : ופתחו שעריך תמיד 11
,gentium fortitudinem te ad *afferendum ad* ,claudentur non nocte ac die
יומם ולילה לא יסגרו להביא אליך חיל גוים
tibi ſerverint non quæ regnum & gens Nam .*ductos* eorum reges &
ומלכיהם נהוגים : כי־הגוי והממלכה אשר לא־יעבדוך 12
te ad Lebanon Gloria .vaſtabuntur vaſtando gentes & : peribunt
יאבדו והגוים חרב יחרבו : כבוד הלבנון אליך 13
locum glorificandum ad , ſimul *ulmus &* ,*ſapinus* , abies : veniet
יבא ברוש תדהר ותאשור יחדו לפאר מקום
te ad *ibunt* Et .glorificabo meorum pedum locum & ,mei ſanctuarii
מקדשי ומקום רגלי אכבד : והלכו אליך 14
plantas ſuper ſe incurvabunt & , te affligentium filii ſe *incurvando*
שחוח בני מעניך והשתחוו על־כפות
Domini civitatem te vocabunt & : te *reprobantes* omnes tuorum pedum
רגליך כל־מנאציך וקראו לך עיר יהוה
non & , *exoſam &* , *derelictam te eſſe* Pro .Iſrael Sancti Sijon
ציון קדוש ישראל : תחת היותך עזובה ושנואה ואין 15
,generationis gaudium , ſeculi *celſitudinem* in te ponam & : *tranſiens*
עובר ושמתיך לגאון עולם משוש דור
: lactaberis regum mamilla & ,gentium lac ſuges Et .generationis &
ודור : וינקת חלב גוים ושד מלכים תינקי 16
fortis tuus redemptor & ,te *ſalvans* Dominus *ego* quòd ſcies &
וידעת כי־אני יהוה מושיעך וגאלך אביר
afferam ferro pro & , aurum afferam ære Pro .Jahacob
יעקב : תחת הנחשת אביא זהב ותחת הברזל אביא 17
: ferrum lapidibus pro & , æs lignis pro & ; argentum
כסף ותחת העצים נחשת ותחת האבנים ברזל
audietur Non .juſtitiam *tuos exactores* & ,pacem *tuum cenſum* ponam &
ושמתי פקדתך שלום ונגשיך צדקה : לא־ישמע 18
: tuis terminis in contritio & , vaſtitas ; tua terra in rapina ultrà
עוד חמס בארצך שד ושבר בגבוליך
Non .laudem tuas portas & ,tuos muros ſalutem vocabis &
וקראת ישועה חומתיך ושעריך תהלה : לא־ 19
non *luna ſplendorem in & ,die* lucem in ſol amplius tibi erit
יהיה־לך עוד השמש לאור יומם ולנגה הירח לא־
tuus Deus & ,*ſeculi* lucem in Dominus tibi erit ſed : te illuminabit
יאיר לך והיה־לך יהוה לאור עולם ואלהיך
non tua luna & , tuus ſol ultrà occidet Non .tuam gloriam in
לתפארתך : לא־יבוא עוד שמשך וירחך לא 20
dies finientur & ,*ſeculi* lucem in tibi erit Dominus quia : *colligetur*
יאסף כי יהוה יהיה־לך לאור עולם ושלמו ימי
.tui luctus
אבלך :

Verſio VULG. LAT.

7 Omne pecus Cedar congregabitur
tibi,arietes Nabaioth miniſtrabunt
tibi: offerentur ſup
placabili altari meo,& domum
majeſtatis meæ glorificabo.
8 Qui ſunt iſti,qui ut nubes volant,
& quaſi columbæ ad feneſtras
9 ſuas? Me enim inſulæ
expectant , & naves maris in
principio,ut adducã filios tuos
de longè; argentũ eorum &
aurum eorum cum eis, nomini
Dñi Dei tui,& Sancto Iſrael ,
10 quia glorificavit te. Et ædificabunt
filii peregrinorum muros
tuos, & reges eorum miniſtrabunt
tibi : in indignatione
enim mea percuſſi te : &
in reconciliatione mea miſertus
11 ſum tuî. Et aperientur portæ
tuæ jugiter : die ac nocte
non claudentur , ut afferatur
ad te fortitudo Gentium , &
12 reges earum adducantur. Gens
enim & regnum , ꝙ non ſervierit
tibi, peribit: & Gentes
13 ſolitudine vaſtabuntur. Gloria
Libani ad te veniet, abies &
buxus , & pinus ſimul, ad ornandum
locum ſanctificationis
meæ ; & locum pedum
14 meorum glorificabo. Et venient
ad te curvi filii eorum qui
humiliaverunt te , & adorabunt
veſtigia pedum tuorum
omnes qui detrahebant tibi,&
vocabunt te Civitatem Dñi,
15 Sion Sancti Iſrael. Pro eo ꝙ
fuiſti derelicta,& odio habita,
& non erat qui ꝑ te tranſiret,
ponã te in ſuperbiam ſeculorum,
gaudium in generationẽ
16 & generationẽ : & Suges lac
Gentium , & mamillâ regum
lactaberis : & ſcies quia ego
Dñs ſalvans te, & redemptor
17 tu⁹ fortis Jacob. Pro ære afferam
aurum, & pro ferro afferã
argentũ , & pro lignis æs,et
pro lapidib⁹ ferrũ:et ponã viſitationẽ
tuã pacẽ, & præpoſitos
18 tuos juſtitiã. Non audietur
ultrà iniquitas in terra tua, vaſtitas
& contritio in terminis
tuis, & occupabit ſalus muros
19 tuos,et portas tuas laudatio.Nõ
erit tibi ampliùs Sol ad lucendum
ꝑ diem,nec ſplendor Lunæ
illuminabit te: ſed erit tibi
Dñs in lucem ſempiternam, et
20 De⁹ tu⁹ in gloriã tuã. Non occidet
ultrà Sol tuus, et Luna
tua non minuetur : quia erit
tibi Dñs in lucem ſempiternã,
et complebuntur dies luct⁹ tui.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

7 Καὶ πάντα τὰ πρόβατα Κηδὰρ συναχθήσονται,
ϗ (ε) κριοὶ Ναβαιὼθ ἥξουσι, ϗ ἀνενεχθήσεται
δεκτὰ ἐπὶ τὸ θυσιαστήριόν μου,
ϗ ὁ οἶκος τῆς προσευχῆς μου δοξασθήσεται.
8 Τίνες οἵδε, ὡς νεφέλαι πέτανται, ϗ (ζ) ὡσεὶ
9 περιστεραὶ σὺν νοσσοῖς ἐπ' ἐμέ; Ἐμὲ αἱ νῆσοι
ὑπέμειναν, ϗ πλοῖα Θαρσὶς ἐν πρώτοις,
ἀγαγεῖν τὰ τέκνα σου μακρόθεν, ϗ τὸν ἄργυρον
ϗ τὸν χρυσὸν (η) αὐτῶν μετ' αὐτῶν,
ϗ διὰ τὸ ὄνομα κυρίου τὸ ἅγιον, ϗ διὰ τὸ
10 τὸν ἅγιον τοῦ Ἰσραὴλ ἔνδοξον εἶναι. Καὶ οἰκοδομήσουσιν
ἀλλογενεῖς τὰ τείχη σου, ϗ οἱ
βασιλεῖς αὐτῶν παραστήσονταί σοι· διὰ γὰρ
ὀργήν μου ἐπάταξά σε, ϗ διὰ (θ) ἔλεον ἠγάπησά
11 σε. Καὶ ἀνοιχθήσονται αἱ πύλαι
σου διαπαντός, ἡμέρας ϗ νυκτὸς οὐ κλεισθήσονται,
εἰσαγαγεῖν πρὸς σὲ δύναμιν ἐθνῶν,
12 καὶ (ι) βασιλεῖς αὐτῶν ἀγομένους. Τὰ γὰρ
ἔθνη ϗ οἱ (κ) βασιλεῖς, οἵτινες οὐ δουλεύσουσί
σοι, (λ) ἀπολοῦνται, ϗ τὰ ἔθνη ἐρημίᾳ
13 (μ) ἐρημωθήσεται. Καὶ ἡ δόξα τοῦ Λιβάνου
πρὸς σὲ ἥξει, ἐν κυπαρίσσῳ ϗ πεύκῃ ϗ κέδρῳ
ἅμα, δοξάσαι τὸν τόπον τὸν ἅγιόν μου.
14 Καὶ πορεύσονται πρὸς σὲ δεδοικότες υἱοὶ ταπεινωσάντων
σε, ϗ παροξυνάντων σε, καὶ
κληθήσῃ Πόλις κυρίου, Σιὼν ἁγίου Ἰσραήλ·
15 Διὰ τὸ γεγενῆσθαί σε ἐγκαταλελειμμένην
ϗ μεμισημένην, ϗ οὐκ ἦν ὁ βοηθῶν. καὶ θήσω
σε ἀγαλλίαμα αἰώνιον, εὐφροσύνην γενεῶν
16 γενεαῖς. Καὶ θηλάσεις γάλα ἐθνῶν, καὶ
πλοῦτον βασιλέων φάγεσαι, ϗ γνώσῃ, ὅτι ἐγὼ
κύριος ὁ σώζων σε, ϗ ἐξαιρούμενός σε
17 (ν) θεὸς Ἰσραήλ. Καὶ ἀντὶ χαλκοῦ οἴσω σοι
χρυσίον, ἀντὶ δὲ σιδήρου οἴσω σοι ἀργύριον,
ἀντὶ δὲ (ξ) ξύλων οἴσω σοι χαλκόν, ἀντὶ
δὲ λίθων, σίδηρον. ϗ δώσω τοὺς ἄρχοντάς
σου ἐν εἰρήνῃ, ϗ τοὺς ἐπισκόπους σου ἐν
18 δικαιοσύνῃ. Καὶ οὐκ ἀκουσθήσεται ἔτι ἀδικία
ἐν τῇ γῇ σου, οὐδὲ σύντριμμα, οὐδὲ ταλαιπωρία
ἐν τοῖς ὁρίοις σου, ἀλλὰ κληθήσεται
Σωτήριον τὰ τείχη σου, καὶ αἱ πύλαι
19 σου Γλύμμα. Καὶ οὐκ ἔσται (ο) σοι ἔτι ὁ ἥλιος
εἰς φῶς ἡμέρας, οὐδὲ ἀνατολὴ σελήνης
φωτιεῖ (π) σου τὴν νύκτα, ἀλλ' ἔσται σοι
κύριος φῶς αἰώνιον, ϗ ὁ θεὸς δόξα σου.
20 Οὐ γὰρ δύσεται ὁ ἥλιός (ρ) σοι, ϗ ἡ σελήνη
σοι οὐκ ἐκλείψει· ἔσται (σ) γάρ σοι κύριος
φῶς αἰώνιον, ϗ ἀναπληρωθήσονται αἱ ἡμέραι
τοῦ πένθους σου.

Et omnes oves Cedar congregabuntur 7
: & arietes Nabaoth venient
: & offerentur acceptabilia
ſuper altare meum: & domus
orationis meæ glorificabitur.
Quinam iſti, ut nubes volant,& 8
ſicut columbæ cum pullis ad me?
Me inſulæ expectârunt, & naves 9
Tharſis in primis, ut adducant
filios tuos de longè, & argentum,&
aurum eorum cum eis:
& propter nomen Domini ſanctum:
& (b) quia Sanctus Iſrael
glorificatus eſt. Et ædificabunt 10
alienigenæ muros tuos : &
reges eorum aſſiſtent tibi : Propter
iram enim meam percuſſi te :
& propter miſericordiam dilexi
te. Et aperientur portæ tuæ ſemper 11
: die ac nocte non claudentur,
ut introducant ad te fortitudinem
gentium, & reges earum,
qui adducendi ſunt. Gentes enim 12
& reges, qui non ſervient
tibi, peribunt : & gentes ſolitudine
deſolabuntur. Et gloria Libani 13
ad te veniet in cypariſſo, &
pino, & cedro ſimul, ut glorificetur
locus ſanctus (c) meus. Et 14
ibunt ad te timentes filii eorum,
qui te humiliaverunt, & irritaverũt
te: & vocaberis,(d)Civitas
Domini,Sion Sancti Iſrael : Pro 15
eo quòd fuiſti derelicta, & odio
habita : & non erat qui auxiliaretur.
Et ponam te exultationem
æternam, gaudium generationum
generationibus. Et ſuges lac gentium, 16
& divitias regum comedes,
Et ſcies, quia ego Dominus,
qui ſalvabo te, & qui eruo te,
Deus Iſrael. Et pro ære afferam 17
tibi aurum : & pro ferro afferam
tibi argentum : & pro lignis afferam
tibi æs, & pro lapidibus
ferrum. Et dabo principes tuos
in pace, & epiſcopos tuos in juſtitia :
Et non audietur ultrà 18
iniquitas in terra tua : neq; contritio,
neq; miſeria in finibus tuis:
ſed vocabuntur (e)Salutare muri
tui, & portæ tuæ Sculptura.
Et non erit tibi Sol ultrà in lucem 19
diei, neq; ortus Lunæ lumen
præbebit tibi nocte : ſed erit tibi
Dominus lux æterna, & Deus
gloria tua. Non enim occidet Sol 20
tibi : & Luna tibi non deficiet.
Erit enim tibi Dominus lux ſempiterna
: & complebuntur dies
luctûs tui.

MS.A. (ε) οἱ κριοὶ Ναβαιὼθ ἥξουσίν σοι, (ζ) ὡς περιστεραὶ σὺν νεοσσοῖς; Ἐμὲ νῆσοι (η) μετ' αὐτῶν, διὰ τὸ ὄνομα (θ) ἔλεος (ι) βασιλεῖς ἀγομένοις. (κ) βασιλεῖς αὐτῶν, (λ) ἀποθανοῦνται, (μ) ἐρημωθήσονται. (ν) ὁ θεὸς (ξ) ξύλου, (ο) σοὶ ὁ ἥλιος (π) σοι (ρ) σου, (σ) γὰρ κύριός σοι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

כל עאן ערבאי יתכנשון לניך דכרי נביות ישמשוניך יתסקון לרעוא על מדבחי 7
ובית תושבחתי אשבח : מן אלין דאתן בגלי כעננין קלילין ולא אתעכבא גלותהא 8
דישראל דמתכנשין ואתין לארעהון הא כיונין דתיבן לגו שובכיהון : ארי למימרי נגון 9
יסברון ונחתי ספיני ימא אידא פרסא קלעהא בקדמיתא לאיתאה בניך מרחיק
כספהון ודהבהון עמהון לשמא דיי אלהך ולקדישא דישראל ארי שבחך : ויבנון בני 10
עממיא שורך ומלכיהון ישמשוניך ארי ברוגזי אלקיתיך וברעותי ארחם עלך : ויתפתחון 11
תרעך תדירא יימם ולילי לא יתאחדון לאעלא לניך נכסי עממיא ומלכיהון זקיקין :
ארי עם ומלכו דלא יפלחוניך ירושלם ייבדון ועממיא אשתיצאה ישתיצון : יקר לבנן 12 13
לניך יתעל בירון מורנין ואשכרעין כחדא לשבחא אתר בית מקדשי ואתר בית
אשריות שכנתי איקר : ויהכון לניך כפיפין בני משעבדיך וישתטחון למבעי מניך על 14
פרסת רגליך כל דהוו מרגזין ליך ויקרון ליך קרתא דיי ציון דאתרעי בה קדישא
דישראל : חלף דהוית שביקא ומטלטלא ולית דעדי ואשוינך ליקר עלם בית דיץ דר 15
ודר : ותסבעין נכסי עממיא ובבזת מלכין תתפנקין ותדעין ארי אנא יי פרקיך ומשזביך 16
תקיפא דיעקב : חלף נחשא דבזו מניך ירושלם איתי דהבא וחלף ברזלא איתי כספא 17
וחלף אעיא נחשא וחלף אבניא ברזלא ואשוי פרנסך שלם ושלטוניך בזכו : לא 18
ישתמע עוד חטפא בארעיך בזא ותבירא בתחומיך ויערעון פירקן על שורך ועל תרעך
יהון משבחין : לא תצטרכין עוד לנהור שמשא בימפא ואף לא לזהור סיהרא בליליא 19
ויהי ליך יי לנהור עלם ואלהך לתושבחתיך : לא תבטל עוד מלכותיך ויקריך לא 20
יעדי ארי יי יהי ליך לנהור עלם וישלמון יומי אבליך :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Omnes oves Arabum congregabuntur ad te;arietes Nabajoth miniſtrabunt 7
tibi:offerentur voluntariè ſuper altare meum;& domum laudis meæ decorabo.
Qui ſunt iſti qui veniunt pubicè ſicut nubes velociſſimæ,nec demorantur? 8
Tranſmigratio Iſrael,quæ congregatur & venit ad terrã ſuam,quaſi
columbæ quæ revertuntur ad columbaria ſua. Verbum enim meum inſulæ 9
expectabunt, & qui deſcendunt in navibus maris, prius manu extenſis velis,
ut afferant filios tuos à longè;argentum eorum & aurũ eorum cum eis,
propter nomen Dei tui,& ſanctum Iſrael qui decoravit te. Et ædificabunt 10
filii populorum muros tuos,& reges eorum miniſtrabunt tibi : quia in ira
mea pecuſſi te,& in voluntate mea miſerebor tui. Et aperientur portæ tuæ 11
ſemper,die ac nocte non claudentur,ut afferantur ad te divitiæ populorum,
& reges eorum compediti. Quia popul⁹ & regnũ quæ non ſervierint tibi, 12
Jeruſalem,peribunt ; & populi conſummatione conſummabuntur. Decor 13
Libani ad te introducetur,abietes,& buxi & pini ſimul,ad decorandũ locũ
dom⁹ ſanctuarii mei;et locũ manſionis majeſtatis meæ glorificabo. Et ibunt 14
ad te incurvi filii eorũ qui ſubjiciebant te;& proni in terra cadent ad plantas
pedum tuorum,ut rogent te,omnes qui irritabant te:& vocabunt te Civitatem
Dñi Sion,quam elegit Sanctus Iſrael. Pro eo quòd fuiſti derelicta 15
& tranſmigrans,& non erat qui per te tranſiret: ponã te in gloriã ſeculi,
domũ lætitiæ generationis & generationis. Et ſatiaberis divitiis populorũ, 16
& præda regũ delectaberis:& ſcies quia ego Dñs ſalvator tu⁹,& liberator
tuus fortis Jacob. Pro ære quod diripuerunt à te Jeruſalem,afferã aurum; 17
& pro ferro afferã argentũ,& pro lignis æs,& pro lapidib⁹ ferrum:& ponam
gubernatores tuos in pace,& principes tuos in juſtitia. Non audietur 18
ultrà rapina in terra tua;neque præda & contritio in terminis tuis.Et proclamabunt
ſalutem ſuper muros tuos, & ſuper portas tuas erunt laudantes.
Non indigebis ampliùs lumine Solis per diem,neque ſplendore Lunæ per 19
noctem:erit enim tibi Dñs in lucem ſempiternam,& Deus tuus in laudem
tuam. Non ceſſabit amplius regnum tuum, et gloria tua non auferetur : 20
quia Dñs erit tibi in lucem ſempiternam,et complebuntur dies luctus tui.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

ܟܠܗ ܥܢܐ ܕܩܕܪ ܢܬܟܢܫܢ ܠܟܝ. ܘܕܟܪܐ ܕܢܒܝܘܬ ܢܫܡܫܘܢܟܝ. ܘܢܣܩܘܢ ܠܪܥܘܬܐ ܥܠ 7
ܡܕܒܚܝ .܆ ܘܒܝܬܐ ܠܬܫܒܘܚܬܝ ܐܫܒܚ. * ܡܢ ܐܢܘܢ ܗܠܝܢ ܕܐܝܟ ܥܢܢܐ ܦܪܚܝܢ .܆ 8
ܘܐܝܟ ܝܘܢܐ ܠܟܘܘܝܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܠܝ ܢܣܟܘܢ ܓܙܪܬܐ .܆ ܘܐܠܦܐ ܕܬܪܫܝܫ ܐܝܟ ܕܡܢ ܩܕܡܝܬܐ .܆ 9
ܠܡܝܬܝܘ ܒܢܝܟܝ ܡܢ ܪܘܚܩܐ .܆ ܘܣܐܡܗܘܢ ܘܕܗܒܗܘܢ ܥܡܗܘܢ. ܠܫܡܗ ܕܡܪܝܐ
ܐܠܗܟܝ: ܘܠܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܕܫܒܚܟܝ. * ܘܢܒܢܘܢ ܒܢܝ ܢܘܟܪܝܐ ܫܘܪܝܟܝ .܆ 10
ܘܡܠܟܝܗܘܢ ܢܫܡܫܘܢܟܝ. ܡܛܠ ܕܒܪܘܓܙܝ ܡܚܝܬܟܝ .܆ ܘܐܬܪܥܝܬ ܪܚܡܬܟܝ.
* ܢܬܦܬܚܘܢ ܬܪܥܝܟܝ ܐܡܝܢܐܝܬ. ܒܐܝܡܡܐ ܘܒܠܠܝܐ ܠܐ ܢܬܬܚܕܘܢ. ܘܢܥܠܘܢ ܠܟܝ 11
ܚܝܠܐ ܕܥܡܡܐ .܆ ܘܡܠܟܝܗܘܢ ܕܡܕܒܪܝܢ. * ܡܛܠ ܕܥܡܐ ܘܡܠܟܘܬܐ ܕܠܐ ܢܫܡܫܘܢܟܝ 12
ܢܐܒܕܘܢ. ܘܥܡܡܐ ܒܚܪܒܐ ܢܬܚܪܒܘܢ. * ܐܝܩܪܐ ܕܠܒܢܢ ܠܟܝ ܢܐܬܐ. ܒܪܘܬܐ ܗܕܝܪܬܐ 13
ܥܡ ܫܘܪܒܝܢܐ ܐܟܚܕܐ. ܠܡܫܒܚܘ ܐܬܪܐ ܕܡܩܕܫܝ .܆ ܘܐܬܪܐ ܕܪܓܠܝ ܐܫܒܚ. * ܘܢܐܬܘܢ ܠܟܝ 14
ܟܕ ܡܬܟܟܝܢ .܆ ܒܢܝܐ ܕܡܟܟܢܝܟܝ. ܘܢܣܓܕܘܢ ܠܟܦܬܐ ܕܪܓܠܝܟܝ. ܟܠܗܘܢ
ܕܡܪܓܙܝܢ ܠܟܝ. ܘܢܩܪܘܢܟܝ ܨܗܝܘܢ ܡܕܝܢܬܗ ܕܡܪܝܐ ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܚܠܦ ܕܗܘܝܬܝ 15
ܫܒܝܩܬܐ ܘܣܢܝܬܐ. ܘܠܝܬ ܕܥܒܪ ܒܟܝ .܆ ܐܥܒܕܟܝ ܫܘܒܚܐ ܠܥܠܡ .܆ ܘܚܕܘܬܐ ܠܕܪܕܪܝܢ.
* ܘܬܝܢܩܝܢ ܚܠܒܐ ܕܥܡܡܐ. ܘܒܙܬܐ ܕܡܠܟܐ .܆ ܬܐܢܩܝܢ. ܘܬܕܥܝܢ. ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܦܪܘܩܟܝ 16
ܘܡܦܨܝܢܟܝ. ܥܫܝܢܗ ܕܝܥܩܘܒ. * ܚܠܦ ܢܚܫܐ ܐܝܬܐ ܕܗܒܐ. ܘܚܠܦ ܦܪܙܠܐ ܐܝܬܐ 17
ܣܐܡܐ. ܘܚܠܦ ܩܝܣܐ ܢܚܫܐ. ܘܚܠܦ ܟܐܦܐ ܦܪܙܠܐ. ܘܐܬܠ ܫܠܡܐ ܦܩܘܕܝܟܝ .܆
ܘܫܠܝܛܢܝܟܝ ܙܕܝܩܘܬܐ. * ܘܠܐ ܢܫܬܡܥ ܬܘܒ ܥܘܠܐ ܒܐܪܥܟܝ .܆ ܘܬܒܪܐ ܘܫܚܩܐ ܒܬܚܘܡܝܟܝ. 18
ܘܢܩܪܘܢ ܫܘܪܝܟܝ ܦܘܪܩܢܐ. ܘܬܪܥܝܟܝ ܬܫܒܘܚܬܐ. * ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܟܝ ܬܘܒ ܫܡܫܐ 19
ܠܢܘܗܪܐ ܕܐܝܡܡܐ. ܘܢܘܗܪܗ ܕܣܗܪܐ ܠܐ ܢܢܗܪ ܠܟܝ. ܡܛܠ ܕܢܗܘܐ ܠܟܝ ܡܪܝܐ.
ܢܘܗܪܐ ܕܠܥܠܡ. * ܘܢܫܠܡܘܢ ܝܘܡܬܐ ܕܐܒܠܟܝ. 20

Omnes Cedaris oves congregabunt tibi, & 7
arietes Nebaoth inſervient tibi, aſcendéntque
in *ſacrificium* gratum ſuper altare
meum, & domum gloriæ meæ glorioſam reddam.
Qui ſunt iſti, *inquies*, qui ut nubes 8
volant, & ut columbæ ad feneſtras ſuas?
Me enim expectabunt inſulæ & naves Thar- 9
ſis ut ab initio, ad adducendum filios tuos
è longinquo, & argentum atque aurum eorum
cum ipſis, ad nomen Domini Dei tui,
& ad Sanctum Iſraelis qui te glorificavit.
Et ædificabunt alienigenæ muros tuos, & 10
reges eorum miniſtrabunt tibi: quoniam in
ira mea percuſſi te, & placatus miſertus ſum
tui. Apertæ ſemper erunt portæ tuæ diu 11
noctúque, nec unquam claudentur; & ingredientur
in te exercitus populorum & reges
eorum impulſi. Nam populus & regnum 12
quæ non ſervierint tibi, peribunt, & populi
gladio trucidabuntur. Gloria Libani ad te 13
veniet, abies decora unà cum pinis, ad laudandum
locum ſanctuarii mei, & locum pedum
majeſtatis meæ. Et venient ad te hu- 14
miliati filii humiliantium te, & adorabunt
plantas pedum tuorum quicunque ad iram te
excitabant; & appellabunt te Sionem civitatem
Domini ſancti Iſraelis. Pro eo quòd 15
fuiſti derelicta & exoſa, adeò ut nemo *per te*
tranſiret, reddam te glorioſiſſimam in perpetuum,
et lætiſſimam in generationes ſempiternas.
Et ſuges lac gentium, et ſpolia 16
regum ſuges, et experieris me eſſe Dominum
redemptorem ac vindicem tuum, fortem Jacobi.
Pro ære adducam aurum, pro ferro 17
adducam argentum, pro lignis æs, et pro lapidibus
ferrum: cenſorem tuum conſtituam
pacem, et præfectum tuum juſtitiam. Non 18
audietur ampliùs iniquitas in terra tua, direptio
aut contritio in terminis tuis: imò
vocabunt muros tuos Salutem, et portas tuas
Laudem. Non erit tibi ampliùs ſol in lu- 19
cem diurnam, et ſplendor lunæ non lucebit
tibi, quia Dominus erit tibi lux perpetua.
Ceſſabunt dies luctûs tui; 20

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* وجميع خراف قيدار يجتمعون لك * وكباش نبايوت يوافون اليك * وتقدم مقبولات على مذبحي * 7
ويمجد بيت صلاتي * من هولاء الذين يطيرون مثل السحاب ومثل الحمامات مع فراخهن * لي 8 9
تنتظر الجزاير * وسفن ترسيس في الاوايل * لتحضر اولادك من البعد وفضتهم وذهبهم معهم *
لاجل اسم الرب القدوس ولاجل قدوس اسرايل * ليكون ممجودا * وتبني البنون الغربا 10
الجنس اسوارك * وملوكهم يقفون لك * لاني بغضبي ضربتك * وبرحمتي احببتك * وتفتح 11
ابوابك يا اورشليم كل حين نهارا وليلا * ولا يغلقون * لتدخل قوة الامم وملوكهم مساقون *
* لان الامم وملوكهم الذين لا يتعبدون لك يموتون * والامم كالقفر يخربون * ومجد لبنان 12 13
اليك ياتي بسروين وصنوبر وارز معا * لامجد موضع المقدس * وامجد موضع قدمي *
* ويسير اليك بنو الذين اذلوك او غاظوك خايفين * ويسجدون لك على اثار قدميك 14
جميع الذين اغاظوك * وتدعين صهيون مدينة الرب قدوس اسرايل * لاجل انك كنتي 15
مهملة ومبغوضة ولم يكن لك معين * فاجعلك بهجة ابدية سرورا لجيل الاجيال *
* وترضعين لبن الامم * وتاكلين غنى الملوك * وتعلمين اني انا هو الرب مخلصك ومنقذك 16
اله اسرايل * وبدل النحاس اقدم لك ذهبا * وبدل الحديد اقدم لك فضة * وبدل الخشب 17
اقدم لك نحاسا * وبدل الحجارة حديدا * واعطي روساءك في السلامة * ومتعهديك في
العدل * ولا يسمع ايضا ظلم في ارضك * ولا انكسار ولا سحق في حدودك * بل تدعى 18
اسوارك خلاصا وابوابك صيانة * ولا تكون لك الشمس لنور النهار ولا اشراق القمر لنور 19
الليل كله * لكن يصير لك الرب نورا ابديا * والله مجدك * لان شمسك لا تغرب * ويكون 20
قمرك لا ينقص * لان الرب لك نور ابدي * وتكمل ايام حزنك *

Omnes Cedaris pecudes tibi congregabuntur, 7
& arietes Nabaoth ad te veniunt,
& offerentur accepti ſuper altare
meum, eritque glorioſa domus orationis
meæ. Qui ſunt iſti qui nubium inſtar 8
volant, & quaſi columbæ cum pullis
ſuis? Me expectabunt inſulæ & claſ- 9
ſes Tharſis in primis, ut adducant filios
tuos è longinquo, & argentum atque
aurum eorum unà cum ipſis, pro nomine
Domini ſacroſancto, & pro Sancto Iſraelis,
ut glorificetur. Et ædificabunt 10
alieni generis filii mœnia tua, & reges
eorum aſſurgent tibi: quoniam in indignatione
mea te percuſſi, & in miſericordia
mea te dilexi. Portæ tuæ O Je- 11
ruſalem, jugiter patebunt diu noctuque,
& non claudentur; ut ingrediatur fortitudo
gentium, & reges earum adacti.
Nam populi & reges eorum, qui non 12
ſervierint tibi, morientur: & gentes
quaſi deſertum vaſtabuntur. Gloria 13
Libani ad te veniet unà cum pinis abietibus
ac cedris, ut glorioſum reddam locum
meũ ſanctũ, & glorioſum reddã locum
pedum meorum. Teque trepidi adi- 14
bunt filii eorum qui te depreſſerunt aut
contriſtârunt, & adorabunt te ſuper veſtigia
pedum tuorum omnes qui te mœrore
affecerunt; & vocaberis Sion urbs Domini
ſancti Iſraelis. Quia fuiſti dere- 15
licta & exoſa, nec adfuit tibi adjutor;
efficiam te jucunditatem æternam & gaudium
omnium poſteritatum: Et ſuges lac 16
populorum, comedeſque divitias regum,
& ſcies me eſſe Dominum ſervatorem ac
redemptorem tuum, Deum Iſraelis. Pro 17
ære offeram tibi aurum, & pro ferro offeram
tibi argentum, pro ligno offeram
tibi æs, & pro lapidibus ferrum: Dabóque
prætores tuos in pace, & cenſores
tuos in juſtitia: Et non audietur dein- 18
ceps oppreſſio in terra tua, neque contritio
neque calamitas in finibus tuis; ſed
mœnia tua vocabuntur Salus, & portæ
tuæ Protectio. Non erit tibi ſol iſte in 19
lucem diurnam, neque claritas lunæ in
lucem totius noctis; ſed erit tibi Dominus
in lucem perpetuam, & Deus in gloriam
tuam. Sol enim tuus nequaquam 20
occubiturus eſt, neque luna tua defectum
paſſura; quia Dominus tibi erit
luci perpetuæ, deſinentque dies mœroris
tui:

ישעיה : סא

:terram accipiēt hæreditate ſeculum in , juſti ipſi omnes tu⁹ popul⁹ Et
21 וְעַמֵּךְ כֻּלָּם צַדִּיקִים לְעוֹלָם יִירְשׁוּ אָרֶץ
,me *glorificandum ad*,mearũ manuum opus ,*mearum plantationum* virgultum
נֵצֶר מַטָּעוֹ מַעֲשֵׂה יָדַי לְהִתְפָּאֵר׃
Dominus ego : fortem gentem in *puſillus* & , mille in erit *Parvus*
22 הַקָּטֹן יִהְיֶה לָאֶלֶף וְהַצָּעִיר לְגוֹי עָצוּם אֲנִי יְהוָה
.illud faciam accelerare ſuo tempore in
בְּעִתָּהּ אֲחִישֶׁנָּה׃

CAP. LXI. סא

me Dominus unxit eapropter : me ſuper *DOMINI* Domini Spiritus
1 רוּחַ אֲדֹנָי יֱהוִה עָלָי יַעַן מָשַׁח יְהוָה אֹתִי
,corde contritos *faſcia ligandum ad* me miſit : manſuetis *evangelizandum ad*
לְבַשֵּׂר עֲנָוִים שְׁלָחַנִי לַחֲבֹשׁ לְנִשְׁבְּרֵי־לֵב
.carceris apertionem vinctis & ,libertatem captivis prædicandum ad
לִקְרֹא לִשְׁבוּיִם דְּרוֹר וְלַאֲסוּרִים פְּקַח־קוֹחַ׃
;noſtro Deo ultionis diem & ,DOMINO voluntatis annum *prædicandũ Ad*
2 לִקְרֹא שְׁנַת־רָצוֹן לַיהוָה וְיוֹם נָקָם לֵאלֹהֵינוּ
, Sijon lugentibus *ponendum Ad* .lugentes omnes *conſolandum ad*
3 לְנַחֵם כָּל־אֲבֵלִים׃ לָשׂוּם לַאֲבֵלֵי צִיּוֹן
amictum , luctu pro gaudii oleum ,cinere pro gloriam eis *dandum ad*
לָתֵת לָהֶם פְּאֵר תַּחַת אֵפֶר שֶׁמֶן שָׂשׂוֹן תַּחַת אֵבֶל מַעֲטֵה
plantatio , juſtitiæ arbores *eis vocabitur* & : ſtricto ſpiritu pro laudis
תְּהִלָּה תַּחַת רוּחַ כֵּהָה וְקֹרָא לָהֶם אֵילֵי הַצֶּדֶק מַטַּע
, ſeculi deſolationes ædificabunt Et .*me glorificandum* ad DOMINI
4 יְהוָה לְהִתְפָּאֵר׃ וּבָנוּ חָרְבוֹת עוֹלָם
,ſolitudinis civitates innovabunt & : erigent *priſcorum* ſolitudines
שֹׁמְמוֹת רִאשֹׁנִים יְקוֹמֵמוּ וְחִדְּשׁוּ עָרֵי חֹרֶב
paſcent & ,alieni ſtabunt Et .generationis & ,generationis deſerta
5 שֹׁמְמוֹת דּוֹר וָדוֹר׃ וְעָמְדוּ זָרִים וְרָעוּ
.veſtri vinitores & ,veſtri agricolæ alienigenæ filii & : *veſtrum pecus*
צֹאנְכֶם וּבְנֵי נֵכָר אִכָּרֵיכֶם וְכֹרְמֵיכֶם׃
dicetur ,noſtri Dei Miniſtri ,vocabimini DOMINI Sacerdotes vos Et
6 וְאַתֶּם כֹּהֲנֵי יְהוָה תִּקָּרֵאוּ מְשָׁרְתֵי אֱלֹהֵינוּ יֵאָמֵר
.*vos prædicabitis* eorum gloria in & , comedetis gentium *facultatem* : vobis
לָכֶם חֵיל גּוֹיִם תֹּאכֵלוּ וּבִכְבוֹדָם תִּתְיַמָּרוּ׃
: *ſua parte dicent præconia* ignominia & , *duplex* veſtro pudore Pro
7 תַּחַת בָּשְׁתְּכֶם מִשְׁנֶה וּכְלִמָּה יָרֹנּוּ חֶלְקָם
.eis erit *ſeculi* lætitia ,poſſidebunt *duplex* eorũ terra in ideo
לָכֵן בְּאַרְצָם מִשְׁנֶה יִירָשׁוּ שִׂמְחַת עוֹלָם תִּהְיֶה לָהֶם׃
: *aſcenſionem* in rapinam *odiens* ,judicium *diligens* Dominus ego Quia
8 כִּי אֲנִי יְהוָה אֹהֵב מִשְׁפָּט שֹׂנֵא גָזֵל בְּעוֹלָה
.eis *excidam ſeculi* fœdus & , veritate in eorum opus dabo &
וְנָתַתִּי פְעֻלָּתָם בֶּאֱמֶת וּבְרִית עוֹלָם אֶכְרוֹת לָהֶם׃
: populorum medio in eorum *genimina* &,eorũ ſemen gentibus in ſcietur Et
9 וְנוֹדַע בַּגּוֹיִם זַרְעָם וְצֶאֱצָאֵיהֶם בְּתוֹךְ הָעַמִּים
.Dominus benedixit ſemen ipſi quia ,eos cognoſcent eos *videntes* omnes
כָּל־רֹאֵיהֶם יַכִּירוּם כִּי הֵם זֶרַע בֵּרַךְ יְהוָה׃
: meo Deo in mea anima exultabit ,DOMINO in gaudebo Gaudendo
10 שׂוֹשׂ אָשִׂישׂ בַּיהוָה תָּגֵל נַפְשִׁי בֵּאלֹהַי
:me *involvit* juſtitiæ pallio , ſalutis veſtimentis fecit me induere quia
כִּי הִלְבִּישַׁנִי בִּגְדֵי־יֶשַׁע מְעִיל צְדָקָה יְעָטָנִי
.*ſuis vaſis* ornabit ſponſam tanquam & , *gloria conſecrabit* ſponſum tanquã
כֶּחָתָן יְכַהֵן פְּאֵר וְכַכַּלָּה תַּעְדֶּה כֵלֶיהָ׃
ſua ſemina hortus ſicut & ,ſuum germen proferet terra ſicut Quia
11 כִּי כָאָרֶץ תּוֹצִיא צִמְחָהּ וּכְגַנָּה זֵרוּעֶיהָ
juſtitiam faciet germinare *Dominus* Dominus ſic , faciet germinare
תַצְמִיחַ כֵּן אֲדֹנָי יֱהוִה יַצְמִיחַ צְדָקָה
.gentibus univerſis coram , laudem &
וּתְהִלָּה נֶגֶד כָּל־הַגּוֹיִם׃

Verſio VULG. LAT.

21 Populus autem tuus omnes
juſti, in perpetuum hæredita-
bunt terrá, germen plantatio-
nis meæ, opus manûs meæ ad
22 glorificandum. Minimus erit
in mille, & parvulus in gen-
tem fortiſſimam : ego Domi-
nus in tempore ejus ſubitò fa-
ciam iſtud.

CAP. LXI.

1 SPiritus Domini ſuper me,
eò quòd unxerit Dñs me : ad
annuntiandũ manſuetis miſit
me, ut mederer contritis cor-
de, & prædicarem captivis in-
dulgentiam , & clauſis aper-
2 tionem : Ut prædicarem annũ
placabilem Dño, & diem ul-
tionis Deo noſtro:ut conſola-
3 rer omnes lugentes : Ut pone-
rem lugentibus Sion ; & da-
rem eis coronam pro cinere,
oleum gaudii pro luctu, pal-
lium laudis pro ſpiritu mœ-
roris: & vocabuntur in ea for-
tes juſtitiæ, plantatio Dñi ad
4 glorificandum. Et ædificabunt
deſerta à ſeculo, & ruinas an-
tiquas erigent, & inſtaurabunt
civitates deſertas, diſſipatas in
generationem & generatio-
5 nem. Et ſtabunt alieni , &
paſcent pecora veſtra : & filii
peregrinorum, agricolæ & vi-
6 nitores veſtri erunt. Vos autẽ
Sacerdotes Dñi vocabimini :
Miniſtri Dei noſtri , dicetur
vobis : Fortitudinem Gentiũ
comedetis, & in gloria earum
7 ſuperbietis. Pro confuſione ve-
ſtra duplici & rubore, lauda-
bunt partem ſuam : propter
hoc in terra ſua duplicia poſ-
ſidebunt , lætitia ſempiterna
8 erit eis. Quia ego Dñs dili-
gens judicium, et odio habens
rapinã in holocauſto : et dabo
op⁹ eorũ in veritate, et fœdus
9 perpetuũ feriã eis. Et ſcient in
Gentib⁹ ſemen eorũ, et ger-
men eorũ in medio populorũ:
omnes qui viderint eos, cog-
noſcent illos , quia iſti ſunt
ſemen, cui benedixit Domin⁹.
10 Gaudens gaudebo in Dño, et
exultabit anima mea in Deo
meo: quia induit me veſtimen-
tis ſalutis : et indumento juſti-
tiæ circumdedit me, quaſi
ſponſum decoratũ coronâ, et
quaſi ſponſã ornatã monilib⁹
11 ſuis. Sicut enim terra profert
germen ſuũ, et ſicut hort⁹ ſe-
men ſuũ germinat; ſic Dñs De⁹
germinabit juſtitiam et lau-
dem coram univerſis Gentib⁹.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

21 Καὶ ὁ λαός σου πᾶς δίκαιος, (τ) δι᾽ αἰῶ-
νος κληρονομήσουσι τὴν γῆν, φυλάσσων τὸ
22 φύτευμα ἔργα χειρῶν αὐτοῦ εἰς δόξαν. Ὁ ὀ-
λιγοστὸς ἔσται εἰς χιλιάδας, καὶ ὁ ἐλάχιστος εἰς
ἔθνος μέγα. ἐγὼ κύριος κατὰ καιρὸν συνά-
ξω αὐτούς.

MS.A. (τ) καὶ διὰ

Et populus tuus omnis juſtus, ſem- 21
per poſſidebunt terram, cuſtodiens
plantationem, opera manuum ſu-
arum in gloriam. Qui paucus 22
eſt, erit in millia : & qui mini-
mus, in gentem magnam. Ego
Dominus in tempore congregabo
eos.

ΚΕΦ. ξα΄.

1 ΠΝεῦμα κυρίου ἐπ᾽ ἐμέ, οὗ εἵνεκεν ἔχρισέ
με, εὐαγγελίσασθαι πτωχοῖς ἀπέσταλκέ με,
ἰάσασθαι τοὺς συντετριμμένους (α) τὴν καρ-
δίαν, κηρύξαι αἰχμαλώτοις ἄφεσιν, καὶ τυ-
2 φλοῖς ἀνάβλεψιν, Καλέσαι ἐνιαυτὸν κυρίου
δεκτόν, καὶ ἡμέραν ἀνταποδόσεως, παρακα-
3 λέσαι πάντας τοὺς πενθοῦντας, Δοθῆναι τοῖς
πενθοῦσι (β) Σιὼν αὐτοῖς δόξαν ἀντὶ σπο-
δοῦ, ἄλειμμα εὐφροσύνης τοῖς πενθοῦσιν,
καταστολὴν δόξης ἀντὶ πνεύματος ἀκηδί-
ας· καὶ κληθήσονται γενεαὶ δικαιοσύνης,
4 φύτευμα κυρίου εἰς δόξαν. Καὶ οἰκοδομή-
σουσιν ἐρήμους αἰωνίας, (γ) ἐξηρημωμένας
πρότερον ἐξαναστήσουσι, καὶ καινιοῦσι πόλεις
5 ἐρήμους, (˝) ἐξηρημωμένας εἰς γενεάς. Καὶ
ἥξουσιν ἀλλογενεῖς ποιμαίνοντες τὰ πρόβατά
σου, καὶ ἀλλόφυλοι ἀροτῆρες, καὶ ἀμπελουρ-
6 γοί. Ὑμεῖς δὲ ἱερεῖς κυρίου κληθήσεσθε, (δ)
λειτουργοὶ θεοῦ, ἰσχὺν ἐθνῶν κατέδεσθε, καὶ
7 (˝) ἐν τῷ πλούτῳ αὐτῶν θαυμασθήσεσθε. Οὕ-
τως ἐκ δευτέρας κληρονομήσουσι τὴν γῆν,
καὶ εὐφροσύνη αἰώνιος ὑπὲρ κεφαλῆς αὐτῶν.
8 Ἐγὼ γάρ εἰμι κύριος ὁ ἀγαπῶν δικαιοσύ-
νην, καὶ μισῶν ἁρπάγματα ἐξ ἀδικίας. καὶ
δώσω τὸν μόχθον αὐτῶν δικαίοις, καὶ διαθή-
9 κην αἰώνιον διαθήσομαι αὐτοῖς. Καὶ γνω-
σθήσεται ἐν τοῖς ἔθνεσι τὸ σπέρμα αὐτῶν,
καὶ τὰ ἔκγονα (ε) αὐτῶν ἐν μέσῳ τῶν λαῶν.
πᾶς ὁ ὁρῶν αὐτοὺς ἐπιγνώσεται αὐτούς, ὅτι
οὗτοί εἰσι σπέρμα ηὐλογημένον ὑπὸ θεοῦ,
10 Καὶ (ζ) εὐφροσύνῃ εὐφρανθήσονται ἐπὶ κύ-
ριον. Ἀγαλλιάσθω ἡ ψυχή μου ἐπὶ τῷ κυ-
ρίῳ· ἐνέδυσε γάρ με ἱμάτιον σωτηρίου, καὶ
χιτῶνα εὐφροσύνης, ὡς νυμφίῳ περιέθηκέ
μοι μίτραν, καὶ ὡς νύμφην κατεκόσμησέ με
11 κόσμῳ. Καὶ ὡς γῆν αὔξουσαν τὸ ἄνθος
αὐτῆς, καὶ ὡς (η) κῆπος τὰ σπέρματα αὐ-
τοῦ, οὕτως (θ) ἀνατελεῖ κύριος κύριος
δικαιοσύνην, καὶ ἀγαλλίαμα ἐναντίον
πάντων τῶν ἐθνῶν.

MS. A. (α) τῇ καρδίᾳ, (β) Σιὼν δόξαν (γ) ἐξηρημωμένας προτέρας
(˝) ἐξηρημωμένας (δ) καὶ λειτουργοὶ θεοῦ, ἰσχὺς ἐθνῶν, (˝) ἐπὶ (ε) αὐτῶν.
πᾶς ὁ ὁρῶν (ζ) ἐν εὐφροσύνῃ (η) κῆπον (θ) ἀνατελεῖ κύριος δικαι-
οσύνην,

CAP. LXI.

SPiritus Domini ſuper me: pro- 1
pter quod unxit me : evangelizа-
re pauperibus miſit me, ſanare
contritos corde, prædicare capti-
vis remiſſionem, & cæcis viſum,
Vocare annum Domini accepta- 2
bilem, & diem retributionis, con-
ſolari omnes lugentes, ut detur 3
lugentibus Sion gloria eis pro ci-
nere, unctio lætitiæ lugentibus, (a)
ſecundùm ſtolam gloriæ pro ſpi-
ritu mœroris. Et vocabuntur ge-
nerationes juſtitiæ, plantatio Do-
mini in gloriam. Et ædificabunt 4
deſerta ſempiterna ; quæ deſola-
ta fuerant priùs, ſuſcitabunt ; &
innovabunt civitates deſertas, de-
ſolatas in generationes. Et ve- 5
nient alienigenæ paſcentes oves
tuas, & aliarum gentium arato-
res, & vinitores. Vos autem ſa- 6
cerdotes Domini vocabimini, mi-
niſtri (b) Dei : fortitudinem
gentium comedetis, (c) & in
divitiis earum eritis admirabiles.
Sic terram ſecundò poſſidebunt : 7
& gaudium ſempiternum erit ſu-
per caput eorum. Ego enim 8
ſum Dominus, qui diligo juſtiti-
am, & odi rapinas ex iniquitate.
Et dabo laborem eorum juſtis: &
teſtamentum æternum diſponam
eis. Et ſcietur in gentibus ſemen 9
eorum, & nepotes eorum in me-
dio populorum. Omnis, qui vide-
rit eos, cognoſcet illos : quia iſti
ſunt ſemen benedictum à Deo :
Et lætitiâ lætabuntur ſuper Do-
minum. Exultet anima mea in 10
Domino : induit enim me veſti-
mento ſalutis, & tunicâ lætitiæ :
ſicut (d) ſponſo, circumpoſuit mi-
bi mitram, & ſicut ſponſam or-
navit me mundo muliebri : Et ſic- 11
ut (e) terram efferentem florem
ſuum, & ſicut hortus ſemina ſua;
ſic germinare faciet Dominus Do-
minus juſtitiam, & exultationem
in conſpectu omnium gentium.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

21 וְעַמִּיךְ כּוּלְהוֹן זַכָּאִין לַעֲלַם יַחְסְנוּן אַרְעָא נִצְבָא דְחֶדְוָתִי עוֹבַד גְבוּרְתִּי לְאִשְׁתַּבָּחָא׃
22 דִּזְעֵיר בְּהוֹן יְהֵי לְאַלְפָא וּדְחַלָּשׁ לְעַם תַּקִּיף אֲנָא יְיָ בְּזִמְנַהּ אַיְתִנַּהּ׃

סא

1 אֲמַר נְבִיָּא רוּחַ נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ אֱלֹהִים עֲלַי חֲלַף דְּרַבִּי יָתִי יְיָ לְבַשָּׂרָא עִנְוְתָנַיָּא שַׁלְחַנִי
2 לְתַקָּפָא לִתְבִירֵי לִבָּא לְמִקְרֵי לְדִשְׁבַן חֵירוּ וְלִדְאֲסִירִין אִתְגְּלוֹ לִנְהוֹר: לְמִקְרֵי שְׁנַת רַעֲוָא
3 קֳדָם יְיָ וְיוֹם פּוּרְעָנוּתָא קֳדָם אֱלָהָנָא לְנַחָמָא כָּל אֲבֵלַיָּא : לְשַׁוָּאָה לַאֲבִילֵי צִיּוֹן לְמִתַּן
לְהוֹן כְּלִיל חֲלַף קְטַם מְשַׁח דְּחֶדְוָה חֲלַף אֶבְלָא רוּחַ מְשַׁבְּחָא חֲלַף רוּחֲהוֹן דַּהֲוָת עֲמְיָא
4 וְיִקְרוֹן לְהוֹן רַבְרְבֵי קוּשְׁטָא עַמֵּיהּ דַּייָ לְאִשְׁתַּבָּחָא : וְיִבְנוּן חָרְבַת עֲלַם צַדְיַת קַדְמָאֵי
5 יְקוֹמְמוּן וִיחַדְּתוּן קִרְוִין דַּהֲוָאָה חָרְבָן צַדְיָא דָּר וְדָר : וִיקוּמוּן נוּכְרָאִין וְיִרְעוּן עָנְכוֹן וּבְנֵי
6 עַמְמַיָּא אִכָּרֵיכוֹן וּמְפַלְחֵי כַרְמֵיכוֹן : וְאַתּוּן כַּהֲנַיָּא דַּייָ תִּתְקְרוֹן דִּמְשַׁמְּשִׁין קֳדָם אֱלָהָנָא
7 יִתְאֲמַר לְכוֹן נִכְסֵי עַמְמַיָּא תֵּיכְלוּן וּבִיקָרְהוֹן תִּתְפַּנְּקוּן : חֲלַף דִּבְהַתְתּוּן וְאִתְכְּנַעְתּוּן עַל
חַד תְּרֵין בְּטַבְוָן דַּאֲמָרִית לְכוֹן אַיְתֵי לְכוֹן וְיִתְבַּהֲתוּן עַמְמַיָּא דַּהֲווֹ מִשְׁתַּבְּחִין בְּחוּלָקְהוֹן
8 בְּכֵן בְּאַרְעֲהוֹן עַל חַד תְּרֵין יַחְסְנוּן חֶדְוַת עֲלַם תְּהֵי לְהוֹן: אֲרֵי אֲנָא יְיָ רָחֵים דִּינָא מְרַחֵק
9 קֳדָמַי שִׁקְרָא וְאוֹנְסָא וְאֶתֵּן אֲגַר עוֹבְדֵיהוֹן בִּקְשׁוֹט וּקְיָם עֲלַם אֶגְזַר לְהוֹן: וְיִתְרַבּוּן בְּעַמְמַיָּא
בְּנֵיהוֹן וּבְנֵי בְנֵיהוֹן בְּגוֹ מַלְכְוָתָא כָּל חָזְוֵיהוֹן יִשְׁתְּמוֹדְעוּנוּן אֲרֵי אִנּוּן זַרְעָא דְּבָרְכֵיהּ יְיָ :
10 אֲמַרַת יְרוּשְׁלֶם מֶחְדָּא אַחְדֵי בְּמֵימְרָא דַּייָ תָּבוּעַ נַפְשִׁי בְּפוּרְקָנָא דֶּאֱלָהִי אֲרֵי אַלְבְּשַׁנִי
לְבוּשִׁין דְּפוּרְקָן מְעִיל דְּזָכוּ עַטְּפַנִי כַּחַתְנָא דְּמַצְלַח בִּגְנוּנֵיהּ וּכְכַהֲנָא רַבָּא דְּמִתַּקַּן
11 בִּלְבוּשׁוֹהִי וּכְכַלְּתָא דְּמִתְקַשְּׁטָא בְּתִקּוּנָהָא : אֲרֵי כְּאַרְעָא דְּמַפְּקָא צִמְחַהּ וּכְגִנַּת שַׁקְיָא
דְּזֵרוּעָהָא מַרְבְּיָא כֵּן יְיָ אֱלֹהִים יְגַלֵּי זְכוּתָא וְתוּשְׁבַּחְתָּא דִירוּשְׁלֶם לְקֳבֵל כָּל עַמְמַיָּא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et populus tuus omnes juſti, ſemper hæreditabunt terram: plantatio læti- 21
tiæ meæ, opus potentiæ meæ ad gloriandum. Qui minimus fuerit in eis, 22
excreſcet in mille; & qui infirmus, in populum fortem: ego Dominus in
tempore ſuo adducam illud.

CAP. LXI.

DIxit Propheta: Spiritus *prophetiæ* à facie Dñi Dei ſup me, eò ꝙ unxit 1
me Dñs ad evãgelizandũ manſuetis; miſit me, ut cõfortarẽ contritos corde;
ut prædicarẽ captivis libertatẽ, & iis qui vincti ſunt, Apparete in lucem: Ut 2
prædicarẽ annũ voluntatis corã Dño, & diẽ ultionis corã Deo noſtro : ut
conſolarer omnes lugentes: Ut ponerẽ lugentib⁹ Sion, & eis darẽ coronã 3
pro cinere, oleum lætitiæ pro luctu: ſpiritũ ovantẽ, pro ſpiritu eorum qui
erat mœrens. Et vocabunt eos principes veritatis, populũ Dñi in laudẽ.
Et ædificabunt ruinas ſeculi, & ſolitudines antiquas ſuſcitabunt: & reno- 4
vabunt civitates quæ erant deſertæ, & ſolitudinẽ generationis & genera-
tionis. Et ſtabunt extranei & paſcent pecora veſtra, & filii populorũ agri- 5
colæ & vinitores veſtri erunt. Vos autem ſacerdotes Dñi vocabimini, Mi- 6
niſtri corã Deo noſtro, dicetur vobis. Divitias populorũ comedetis, & in
gloria eorũ lætabimini. Pro eo ꝙ confuſi eſtis & erubuiſtis, duplicia bona 7
quæ dixi vobis, adducam vobis : & confundentur populi qui gloriantur
in portione ſua. Propterea in terra ſua duplicia poſſidebunt: lætitia ſempi-
terna erit eis. Quia ego Dñs diligens judiciũ, abominabilis eſt corã me fal- 8
ſitas & violentia: & dabo mercedẽ operũ ſuorum in veritate, & pactum
ſempiternum feriã cum eis. Et magnificabuntur in populis filii eorũ, & fi- 9
lii filiorũ eorũ in medio regnorũ: omnes qui viderint eos cognoſcent eos,
quia iſti ſunt ſemen cui benedixit Dñs. Dicit Jeruſalem: Gaudens gaudebo 10
in verbo Dñi, & exultabit anima mea in ſalute Dei mei: quia induit me
Dñs veſtimento ſalutis, & pallio juſtitiæ involvit me : ſicut ſponſus qui
proſperatur in thalamo ſuo & ſicut Sacerdos magnus qui ornatur veſti-
mentis ſuis; aut ſicut ſponſa quæ decoratur ſuis ornamentis. Quoniam 11
ſicut terra quæ producit germen ſuum, & ſicut hortus irriguus cujus ſemina
pullulant : ſic Dominus Deus revelabit juſtitiam & laudem Jeruſalem, in conſpectu omnium populorum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܥܡܟ ܟܠܗܘܢ ܙܕܝܩܐ. ܠܥܠܡ ܢܐܪܬܘܢ ܐܪܥܐ. ܢܘܨܒܐ ܕܢܨܒܬ .· ܥܒܕܐ ܕܐܝܕܝ ܠܡܫܬܒܚܘ. 21
* ܙܥܘܪܐ ܢܗܘܐ ܠܐܠܦܐ .· ܘܒܨܝܪܐ ܠܥܡܐ ܥܫܝܢܐ. ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܒܙܒܢܗ ܐܛܪܝܘܗܝ. 22
* ܩܦܠܐܘܢ * ܣܐ * ܪܘܚܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܥܠܝ. ܡܛܠ ܕܡܫܚܢܝ ܡܪܝܐ 1
ܘܫܕܪܢܝ .· ܠܡܣܒܪܘ ܠܡܣܟܢܐ. ܘܠܡܚܒܫܘ ܠܬܒܝܪܝ ܠܒܐ. ܘܠܡܟܪܙܘ ܠܫܒܝܐ ܚܘܪܐ. ܘܠܐܣܝܪܐ
ܠܦܬܚܐ. * ܘܠܡܩܪܐ ܫܢܬܐ ܪܥܝܬܐ ܠܡܪܝܐ. ܘܝܘܡܐ ܕܦܘܪܥܢܐ ܠܐܠܗܢ. ܠܡܒܝܐܘ 2
ܠܟܠܗܘܢ ܐܒܝܠܐ. * ܠܡܬܠ ܠܐܒܝܠܐ ܕܨܗܝܘܢ. ܫܘܒܚܐ. ܚܠܦ ܩܛܡܐ. ܡܫܚܐ ܒܣܝܡܐ. 3
ܘܚܠܦ ܐܒܠܐ. ܬܟܣܝܬܐ ܕܬܫܒܘܚܬܐ. ܘܚܠܦ ܪܘܚܐ ܟܡܝܪܬܐ .· ܢܬܩܪܘܢ ܕܟܪܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ.
ܢܨܒܬܗ ܕܡܪܝܐ ܡܫܒܚܬܐ. * ܘܢܒܢܘܢ ܚܪܒܬܐ ܕܡܢ ܥܠܡ. ܘܚܘܪܒܐ ܕܩܕܡ ܢܩܝܡܘܢ 4
ܢܚܕܬܘܢ. ܘܢܚܕܬܘܢ ܩܘܪܝܐ ܚܪܒܬܐ. ܘܚܘܪܒܐ ܕܕܪܕܪܝܢ. * ܘܢܩܘܡܘܢ ܢܘܟܪܝܐ. ܘܢܪܥܘܢ 5
ܥܢܟܘܢ. ܘܒܢܝ ܢܘܟܪܝܐ ܢܗܘܘܢ ܠܟܘܢ ܐܟܪܐ ܘܟܪܡܐ. * ܘܐܢܬܘܢ ܟܗܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ 6
ܬܬܩܪܘܢ. ܘܡܫܡܫܢܘܗܝ ܕܐܠܗܢ. ܢܬܐܡܪ ܠܟܘܢ. ܢܟܣܝܗܘܢ ܕܥܡܡܐ. ܬܐܟܠܘܢ.
ܘܒܐܝܩܪܗܘܢ ܬܫܬܒܚܘܢ. * ܚܠܦ ܒܗܬܬܟܘܢ ܘܚܠܦ ܢܟܦܘܬܟܘܢ .· ܬܪܬܝܢ ܐܝܟܢܐ 7
ܬܐܪܬܘܢ ܒܐܪܥܗܘܢ. ܘܡܢ ܡܢܬܗܘܢ ܬܫܬܒܚܘܢ. ܚܕܘܬܐ ܕܠܥܠܡ ܬܗܘܐ ܠܟܘܢ. * ܡܛܠ 8
ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܕܪܚܡ ܐܢܐ ܕܝܢܐ. ܘܣܢܐ ܐܢܐ ܚܛܘܦܝܐ ܘܥܘܠܐ. ܘܐܬܠ ܥܒܕܝܟܘܢ ܒܩܘܫܬܐ.
ܘܩܝܡܐ ܕܠܥܠܡ ܐܩܝܡ ܥܡܟܘܢ. * ܘܢܬܝܕܥ ܙܪܥܟܘܢ ܒܥܡܡܐ. ܘܙܪܥܐ ܕܙܪܥܟܘܢ ܒܐܘܡܘܬܐ. 9
ܟܠ ܚܙܝܢܝܟܘܢ. ܢܫܬܘܕܥܘܢܟܘܢ .· ܕܙܪܥܐ ܐܢܬܘܢ. ܕܒܪܟ ܡܪܝܐ. * ܡܚܕܐ ܚܕܝܐ ܐܢܐ 10
ܒܡܪܝܐ .· ܘܬܪܘܙ ܢܦܫܝ ܒܐܠܗܝ. ܡܛܠ ܕܐܠܒܫܢܝ ܢܚܬܐ ܕܦܘܪܩܢܐ .· ܘܐܟܣܝܢܝ
ܦܪܝܣܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ. ܐܝܟ ܚܬܢܐ ܡܫܒܚܐ. ܘܐܝܟ ܟܠܬܐ ܡܨܒܬܐ. * ܘܐܝܟ ܐܪܥܐ ܕܡܦܩܐ 11
ܥܣܒܐ: ܘܐܝܟ ܓܢܬܐ ܕܡܘܥܝܐ ܙܪܥܐ .· ܗܟܢܐ ܢܘܥܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܙܕܝܩܘܬܐ
ܘܬܫܒܘܚܬܐ ܩܕܡ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ.

21 Et univerſus populus tuus juſtus poſſidebit terram: in perpetuum ſurculus quem plantavi, opus manuum mearum, glorioſum reddetur. 22 Minimus erit in millenos, & pauciſſimus in populum ingentem: ego Dominus in tempus opportunum id reſervo.

CAP. LXI.

1 Spiritus Domini Dei ſuper me eſt, eò quòd unxit me Dominus, & miſit me ut humilibus *læta* nuntiem, & confractos corde conſolidem, proclamem libertatem captivis, & ſolutionem carcere detentis: 2 Proclamem etiam annum Domini jucundum, & diem ſalutis Dei noſtri: ad conſolandum omnes lugentes. 3 Ad afferendum lugentibus Sionis gloriam; loco cineris unguentum ſuave, loco luctûs amictum laudis; & loco ſpiritûs dolentis vocabuntur arietes juſtitiæ, planta Domini glorioſa. 4 Ædificabunt ruinas antiquas, deſolationes priſtinas inſtaurabunt, & renovabunt civitates dirutas, & ſolitudines multorum ſeculorum. 5 Surgent extranei, & paſcent oves eorum, & alienigenæ erunt eis agricolæ & vinitores: 6 Vos autem ſacerdotes Domini vocabimini, & miniſtri Dei noſtri dicemini: opes gentium comedetis, & de magnificentia earum gloriabimini. 7 Pro pudore & pro ignominia veſtra, duplam hæreditatem poſſidebitis in terra earum, de portione earum gloriabimini, gaudium vobis erit ſempiternum. 8 Quoniam ego ſum Dominus amans judicium, & odio habens rapinam & iniquitatem, & laborem veſtrum cum veritate reddam, & pactum ſempiternum feriam vobiſcum. 9 Et innoteſcet ſemen veſtrum inter gentes, & ſemen ſeminis veſtri inter populos: omnes videntes vos, cognoſcent vos eſſe ſemen cui benedixit Dominus. 10 Vehementer jucundabor in Domino, & exultabit anima mea in Deo meo; quoniam induit me veſte ſalutis, & amicivit me pallio juſtitiæ tanquam ſponſum glorioſum & ut ſponſam ornatam. 11 Sicut enim terra quæ profert herbam, & ſicut hortus qui ſemen producit; ita producturus eſt Dominus Deus juſtitiam & laudem coram univerſis gentibus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وكل شعبك صديق * ومنذ الدهر يرثون الارض * حافظ الغرس اعمال يديه للمجد * 21
* القليل يصير الوفا * والحقير الي امة عظيمة * انا الرب في زمان اجمعهم * 22

* الفصل الحادي والستون *

* روح الرب علي الذي من اجله مسحني * ارسلني لابشر المساكين * واشفي منكسري 1
القلب * وانذر الماسورين بالتخلية والعميان بالنظر * وارسل الي المتيسرين بالاطلاق * وادعوا 2
بالسنة المقبولة للرب ويوم العوض للرب الهنا * لاعزي جميع الحزانا * ليعطي لمحزوني صهيون 3
عوض الرماد دهن السرور * وحلة المجد بدل من روح الضجر * ويدعون اجيال العدل غرس
الرب للمجد * ويبنون الخربات الابدية * التي كانت اولا معفين يعمروها * ويجددون مدنا خربة 4
التي كانت معفين من جيل وجيل * ويوافي الغرباء الجنس يرعون خرافك * والغرباء القبايل 5
حراثون وكرامون لكم * وانتم كهنة الرب تدعون * وخدام الهنا يقال لكم * تاكلون قوة الامم 6
وبغناهم تستعجبون * بدل فضيحتكم المضعفة وبدل الخجل يهلل نصيبهم * لاجل هذا 7
يرثون ارضهم ثانية * والسرور الابدي علي روسهم * لاني انا هو الرب الذي يحب العدل 8
ويبغض الاختطاف من الظلم * واعطي كدهم للصديقين * واضع لهم عدلا ابديا * ويعرف 9
زرعهم في الامم وبدو بنيهم في وسط الشعوب * وكل من يراهم يعرفهم * لان هولاء هم زرع
مبارك من الله * وبسرور يسرون بالرب *

* الاصحاح التاسع والعشرون *

* لتهلل نفسي بالرب * لانه البسني ثوب خلاص وسربلني حلة سرور * مثل عريس وضع علي 10
تاجا * ومثل عروس زينني بزينة * ومثل ارض تنبع زهرها * وكبستان ينبت بزوره * 11
هكذا يشرق الرب عدلا وبهجة قدام جميع الشعوب *

21 *Totus populus tuus juſtus erit, & à ſeculo poſſidebunt terram,* eritque *cuſtodiens plantas opus* ſcilicet *manuum ſuarum, ad gloriam.* 22 *Paucus fiet in millenos, & abjectus in gentem magnam, ego Dominus aliquando congregabo eos.*

CAP. LXI.

1 *Spiritus Domini ſuper me, propter quem unxit me: miſit me ut annuntiem pauperibus, & ſanem corde confractos, prædicem vinctis dimiſſionem, cæcis viſum, &* nuntium *mittam ad captivos de libertate:* 2 *Proclamem annum acceptum Domino, & diem compenſationis Domini Dei noſtri: ut conſoler omnes mæſtos:* 3 *Dandum eſſe afflictis Sionis pro cinere unguentum lætitiæ, & ſtolam gloriæ pro ſpiritu torporis: & vocabuntur Generationes juſtitiæ, planta Domini ad gloriam.* 4 *Ædificabunt ruinas perpetuas: quæ erant olim deſolata, reſtaurabunt, & renovabunt urbes dirutas quæ erant in ſolitudinem redactæ inde à multis generationibus.* 5 *Venient alieni generis* homines *ad paſcendum oves tuas, & extraneæ nationis erunt vobis aratores & vinitores:* 6 *Vos verò ſacerdotes Domini vocabimini, & miniſtri Dei noſtri dicemini: comedetis robur gentium, & divitiis earum fruemini.* 7 *Loco duplicis contumeliæ veſtræ & loco pudoris jubilat ſors illorum: propterea terram eorum ſecundò poſſidebunt, & gaudium æternum erit ſuper capita eorum:* 8 *Quoniam ego ſum Dominus amans juſtitiam, & odio habens rapinam tyrannicam: & dabo laborem eorum probis, ponamque eis juſtitiam ſempiternam.* 9 *Et notum fiet ſemen eorum inter gentes, & nepotes eorum in medio populorum: & quicunque viderit eos, cognoſcet eos; quoniam hi ſunt ſemen benedictum à Deo, & cum gaudio exultabunt in Domino.*

Textus vigeſimus nonus.

10 *Jubilet anima mea in Domino, quoniam ipſe me veſtivit indumento ſalutis, & induit ſtolâ gaudii: ut ſponſo impoſuit mihi diadema, & ut ſponſam decoravit me ornamento:* 11 *Et ut terra producens florem ſuum, utque hortus emittens ſemina ſua; ſic oriri faciet Dominus juſtitiam & hilaritatem coram cunctis populis.*

יְשַׁעְיָה: סב סג

CAP. LXII. סב

: quieſcam non Jeruſalaim propter & , tacebo non Sijon Propter
1 לְמַעַן צִיּוֹן לֹא אֶחֱשֶׁה וּלְמַעַן יְרוּשָׁלַםִ לֹא אֶשְׁקוֹט
lampas ut , ejus ſalus & ; ejus juſtitia , ſplendor ut , egrediatur donec
עַד־יֵצֵא כַנֹּגַהּ צִדְקָהּ וִישׁוּעָתָהּ כְּלַפִּיד
reges cuncti & , tuam juſtitiam gentes videbunt Et . ſe accendat
2 יִבְעָר׃ וְרָאוּ גוֹיִם צִדְקֵךְ וְכָל־מְלָכִים
DOMINI os quod ; novum nomen tibi vocabitur Et . tuam gloriam
כְּבוֹדֵךְ וְקֹרָא לָךְ שֵׁם חָדָשׁ אֲשֶׁר פִּי יְהוָה
; D O M I N I manu in gloriæ *diadema* eris Et . *illud* declarabit
3 יִקֳּבֶנּוּ׃ וְהָיִית עֲטֶרֶת תִּפְאֶרֶת בְּיַד־יְהוָה
, ultrà tibi dicetur Non . tui Dei *vola* in regni *cidaris* &
4 וּצְנִיף מְלוּכָה בְּכַף־אֱלֹהָיִךְ׃ לֹא־יֵאָמֵר לָךְ עוֹד
vocabitur tibi Sed . Deſolata ampliùs dicetur non tuæ terræ & , Derelicta
עֲזוּבָה וּלְאַרְצֵךְ לֹא־יֵאָמֵר עוֹד שְׁמָמָה כִּי לָךְ יִקָּרֵא
Dominus complacuit quia : *Maritata tuæ terræ* & , ea in mea Voluntas
חֶפְצִי־בָהּ וּלְאַרְצֵךְ בְּעוּלָה כִּי־חָפֵץ יְהוָה
, virgine cum juvenis *maritabitur Quia* . *maritata* erit tua terra & , te in
5 בָּךְ וְאַרְצֵךְ תִּבָּעֵל׃ כִּי־יִבְעַל בָּחוּר בְּתוּלָה
gaudebit , ſponſam ſuper ſponſo gaudium & : tui filii *tibi maritabuntur*
יִבְעָלוּךְ בָּנָיִךְ וּמְשׂוֹשׂ חָתָן עַל־כַּלָּה יָשִׂישׂ
, cuſtodes conſtitui Jeruſalaim tuos muros Super . tuus Deus te ſuper
6 עָלַיִךְ אֱלֹהָיִךְ׃ עַל־חוֹמֹתַיִךְ יְרוּשָׁלַםִ הִפְקַדְתִּי שֹׁמְרִים
rememorantes : tacebunt non jugiter nocte tota & die tota
כָּל־הַיּוֹם וְכָל־הַלַּיְלָה תָּמִיד לֹא יֶחֱשׁוּ הַמַּזְכִּירִים אֶת־
, ei ſilentium detis ne Et . vobis ſilentium ne , *Dominum*
7 יְהוָה אַל־דֳּמִי לָכֶם׃ וְאַל־תִּתְּנוּ דֳמִי לוֹ
Juravit . terra in laudem Jeruſalaim ponat donec & , ſtabiliat donec
8 עַד־יְכוֹנֵן וְעַד־יָשִׂים אֶת־יְרוּשָׁלַםִ תְּהִלָּה בָּאָרֶץ׃ נִשְׁבַּע
dedero ſi : ſuæ fortitudinis *brachio in & ſua dextera in* Dominus
יְהוָה בִּימִינוֹ וּבִזְרוֹעַ עֻזּוֹ אִם־אֶתֵּן אֶת־
alieni filii biberint ſi & , tuis inimicis cibum ultrà tuum triticum
דְּגָנֵךְ עוֹד מַאֲכָל לְאֹיְבַיִךְ וְאִם־יִשְׁתּוּ בְנֵי־נֵכָר
, illud comedent , illud *colligentes* Sed . *eo in* laboràſti quo tuum vinum
9 תִּירוֹשֵׁךְ אֲשֶׁר יָגַעַתְּ בּוֹ׃ כִּי מְאַסְפָיו יֹאכְלֻהוּ
atriis in illud bibent illud congregantes & : Dominum laudabunt &
וְהִלְלוּ אֶת־יְהוָה וּמְקַבְּצָיו יִשְׁתֻּהוּ בְּחַצְרוֹת
: populi viam *complanate* , portas per tranſite , Tranſite . meæ ſanctitatis
10 קָדְשִׁי׃ עִבְרוּ עִבְרוּ בַּשְּׁעָרִים פַּנּוּ דֶּרֶךְ הָעָם
. populos ſuper vexillū attollite , *lapide è elapidate , viā ſtratam munite , munite*
סֹלּוּ סֹלּוּ הַמְסִלָּה סַקְּלוּ מֵאֶבֶן הָרִימוּ נֵס עַל־הָעַמִּים׃
, Sijon filiæ dicite , terræ extremum ad *fecit* audire Dominus Ecce
11 הִנֵּה יְהוָה הִשְׁמִיעַ אֶל־קְצֵה הָאָרֶץ אִמְרוּ לְבַת־צִיּוֹן
. *ejus facies ad* ejus opus & , eo cum ejus merces ecce : *veniens* tua ſalus ecce
הִנֵּה יִשְׁעֵךְ בָּא הִנֵּה שְׂכָרוֹ אִתּוֹ וּפְעֻלָּתוֹ לְפָנָיו׃
, *vocabitur tibi &* : *Domini* redemptos , ſanctitatis populū eos vocabunt Et
12 וְקָרְאוּ לָהֶם עַם־הַקֹּדֶשׁ גְּאוּלֵי יְהוָה וְלָךְ יִקָּרֵא
. derelicta non civitas , Quæſita
דְרוּשָׁה עִיר לֹא נֶעֱזָבָה׃

CAP. LXIII. סג

iſte ? Boſrah de veſtes *rubefactus* , Edom de *veniens* iſte Quis
1 מִי־זֶה בָּא מֵאֱדוֹם חֲמוּץ בְּגָדִים מִבָּצְרָה זֶה
loquens ego : ſuæ potentiæ multitudine in feſtinus , ſua ſtola in *decoratus*
הָדוּר בִּלְבוּשׁוֹ צֹעֶה בְּרֹב כֹּחוֹ אֲנִי מְדַבֵּר
. ſervandum ad magnus juſtitia in
בִּצְדָקָה רַב לְהוֹשִׁיעַ׃

Verſio VUL. LAT.

CAP. LXII.

1 PRopter Sion non tacebo, &
propter Jeruſalem non quie-
ſcā, donec egrediatur ut ſplen-
dor juſtus ejus, & ſalvator ejus
2 ut lampas accendatur. Et vi-
debunt Gentes juſtum tuum, &
cuncti reges inclytum tuū : &
vocabitur tibi nomen novum,
quod os Domini nominabit.
3 Et eris corona gloriæ in manu
Domini, & diadema regni in
4 manu Dei tui. Non vocaberis
ultrà Derelicta : & terra tua
non vocabitur ampliùs Deſo-
lata : ſed vocaberis Voluntas
mea in ea, & terra tua Inhabi-
tata : quia complacuit Domi-
no in te ; & terra tua inhabi-
5 tabitur. Habitabit enim juve-
nis cum virgine, & habitabūt
in te filii tui. Et gaudebit ſpon-
ſus ſuper ſponſam, & gaude-
6 bit ſuper te Deus tuus. Super
muros tuos, Jeruſalem, conſti-
tui cuſtodes, totâ die & totâ
nocte in perpetuum non tace-
bunt. Qui reminiſcimini Do-
7 mini, ne taceatis, Et ne detis
ſilentium ei, donec ſtabiliat, &
donec ponat Jeruſalem laudē
8 in terra. Juravit Dominus in
dextera ſua, & in brachio for-
titudinis ſuæ ; Si dedero tri-
ticum tuum ultrà cibum ini-
micis tuis : & ſi biberint fi-
lii alieni vinum tuum, in quo
9 laboràſti. Quia qui congre-
gant illud, comedent, & lau-
dabunt Dominum : et qui com-
portant illud, bibent in atriis
10 ſanctis meis. Tranſite, tranſite
per portas, præparate viam
populo, planum facite iter, e-
ligite lapides, & elevate ſignū
11 ad Populos. Ecce Dominus
auditum fecit in extremis ter-
ræ, dicite filiæ Sion ; Ecce
Salvator tuus venit : ecce mer-
ces ejus cum eo, et opus ejus
12 coram illo. Et vocabunt eos,
Populus ſanctus, redempti à
Domino. Tu autem vocabe-
ris ; Quæſita civitas, et non
Derelicta.

CAP. LXIII.

1 QUis eſt iſte, qui venit de
Edom, tinctis veſtibus de Boſ-
ra ? iſte formoſus in ſtola ſua,
gradiens in multitudine forti-
tudinis ſuæ. Ego qui loquor
juſtitiam, et propugnator ſum
ad ſalvandum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. ξβ'.

1 ΔΙὰ Σιὼν οὐ σιωπήσομαι, καὶ διὰ Ἱερου-
σαλὴμ οὐκ ἀνήσω, ἕως ἂν ἐξέλθῃ ὡς φῶς ἡ
δικαιοσύνη (α) αὐτῆς, τὸ δὲ σωτήριόν μου
2 ὡς λαμπὰς καυθήσεται. Καὶ ὄψονται ἔθνη
τὴν δικαιοσύνην σου, καὶ βασιλεῖς τὴν δό-
ξαν σου, καὶ καλέσει σε (β) τὸ ὄνομα τὸ
3 καινὸν, ὃ ὁ κύριος ὀνομάσει αὐτό. Καὶ ἔ-
σῃ στέφανος κάλλους ἐν χειρὶ κυρίου, καὶ διά-
4 δημα βασιλείας ἐν χειρὶ θεοῦ σου. Καὶ οὐκ-
έτι κληθήσῃ Καταλελειμμένη, καὶ ἡ γῆ
σου οὐ κληθήσεται (γ) ἔτι Ἔρημος· σοὶ
γὰρ κληθήσεται, Θέλημα ἐμὸν, καὶ τῇ γῇ
σου, Οἰκουμένη, (δ) ὅτι εὐδόκησε κύριος
5 ἐν σοὶ, καὶ ἡ γῆ σου συνοικισθήσεται. Καὶ
ὡς συνοικῶν νεανίσκος παρθένῳ, (″) οὕτω κα-
τοικήσουσιν οἱ υἱοί σου (ε). καὶ ἔσται ὃν τρόπον
εὐφρανθήσεται νυμφίος ἐπὶ νύμφῃ, οὕτως
6 εὐφρανθήσεται κύριος ἐπὶ σοί. Καὶ ἐπὶ τῶν
(-) τειχῶν σου Ἱερουσαλὴμ κατέστησα φύλακας
ὅλην τὴν ἡμέραν καὶ ὅλην τὴν νύκτα, οἳ διὰ
τέλους οὐ σιωπήσονται μιμνησκόμενοι κυρί-
7 ου. Οὐκ ἔστι γὰρ ὑμῖν ὅμοιος· ἐὰν διορ-
θώσῃ, καὶ ποιήσῃ Ἱερουσαλὴμ (ζ) γαυρίαμα
8 ἐπὶ τῆς γῆς. Ὤμοσε κύριος κατὰ τῆς δό-
ξης αὐτοῦ, καὶ κατὰ τῆς ἰσχύος τοῦ βραχίο-
νος αὐτοῦ, Εἰ ἔτι δώσω τὸν σῖτόν σου, καὶ
τὰ βρώματά σου τοῖς ἐχθροῖς σου, (η) καὶ
εἰ ἔτι πίονται υἱοὶ ἀλλότριοι τὸν οἶνόν σου,
9 ἐφ' ᾧ ἐμόχθησας. (θ) Ἀλλ' οἱ (″) συναγαγόν-
τες φάγονται αὐτὰ, καὶ αἰνέσουσι κύριον, καὶ
οἱ (ˢ) συναγαγόντες πίονται αὐτὰ ἐν ταῖς ἐπ-
10 αύλεσι ταῖς ἁγίαις (ι) μου. Πορεύεσθε διὰ
τῶν πυλῶν μου, καὶ ὁδοποιήσατε τῷ λαῷ
μου, καὶ τοὺς λίθους (κ) ἐκ τῆς ὁδοῦ διαῤῥί-
11 ψατε, ἐξάρατε σύσσημον εἰς τὰ ἔθνη. Ἰ-
δοὺ γὰρ κύριος ἐποίησεν ἀκουστὸν ἕως ἐσχά-
του τῆς γῆς. εἴπατε τῇ θυγατρὶ Σιὼν, Ἰ-
δοὺ (λ) ὁ σωτήρ σοι παραγέγονεν ἔχων τὸν
ἑαυτοῦ μισθὸν, καὶ τὸ (μ) ἔργον αὐτοῦ πρὸ προσ-
12 ώπου αὐτοῦ. Καὶ καλέσει αὐτὸν λαὸν ἅγι-
ον, λελυτρωμένον ὑπὸ κυρίου· σὺ δὲ κλη-
θήσῃ Ἐπιζητουμένη πόλις, καὶ οὐκ Ἐγκα-
ταλελειμμένη.

CAP. LXII.

PRopter Sion non tacebo : & 1
propter Hieruſalem non relin-
quam : donec egrediatur, ſicut
lumen juſtitia (a) ejus. Et ſalu-
tare meum, ſicut lampas arde-
bit : Et videbunt gentes juſti- 2
tiam tuam, & reges gloriam tu-
am : & vocabit te nomen no-
vum, quod (b) Dominus nomina-
bit illud. Et eris corona deco- 3
ris in manu Domini, & diadema
regni in manu Dei tui. Et nequa- 4
quam ultrà vocaberis Derelicta :
& terra tua non vocabitur adhuc
Deſerta. Tibi (c) enim vocabi-
tur, Voluntas mea, & terræ tuæ,
Habitata : (d) quia complacuit
Domino in te : & terra tua co-
habitabitur. Et ſicut habitans 5
juvenis cum virgine ; ſic habita-
bunt filii (e) tui. Et erit,
quomodò lætabitur ſponſus ſuper
ſponſa ; ſic lætabitur ſuper te
Dominus. Et ſuper muros tuos, 6
Hieruſalem, conſtitui cuſtodes to-
tâ die, & totâ nocte : qui nun-
quam tacebunt recordantes Domi-
ni. Non eſt enim veſtri ſimilis. 7
Si correxerit, & fecerit Hieruſa-
lem gaudium ſuper terram ; Ju- 8
ravit Dominus per (f) gloriam
ſuam, & per fortitudinem bra-
chii ſui ; Si ultrà dedero triticum
tuum, & cibos tuos inimicis tuis,
& ſi ultrà biberint filii alieni vi-
num tuum, in quo laboràſti. Sed, 9
qui congregaverint, comedent ea,
& laudabunt Dominum : & qui
congregaverint, bibent ea in a-
triis ſanctis meis. Ite per portas 10
meas, & viam facite populo meo,
& lapides de via projicite. Leva-
te ſignum in gentes. Ecce enim 11
Dominus fecit auditum uſque ad
extremum terræ. Dicite filiæ Si-
on ; Ecce Salvator tuus venit
habens mercedem (g) ſuam, &
opus ſuum ante faciem ſuam : Et 12
vocabit eum, Populum ſanctum,
redemptum à Domino. Tu au-
tem vocaberis ; Requiſita civitas,
& non Derelicta.

MS. A. (α) μου, (β) τὸ ὄνομά σου (γ) Ἔρημος· σοὶ (δ) Καὶ ὡς συν-
οικῶν (″) οὕτως (ε) μετὰ σοῦ. (-) τειχέων (ζ) ἀγαυρίαμα (η) καὶ ἔτι (θ) Ἀλλ'
ἢ οἱ (″) συνάγοντες (ˢ) συνάγοντες (ι) σου. (κ) τοὺς ἐκ (λ) σοὶ ὁ σωτὴρ παρα-
γίνεται (μ) ἔργον πρὸ προσώπου

ΚΕΦ. ξγ'.

1 ΤΙ'ς οὗτος ὁ (α) παραγινόμενος ἐξ Ἐδὼμ,
ἐρύθημα ἱματίων ἐκ Βοσόρ ; οὕτως ὡραῖος
ἐν στολῇ, βίᾳ μετὰ ἰσχύος ; Ἐγὼ διαλέγομαι
δικαιοσύνην καὶ κρίσιν σωτηρίου.

CAP. LXIII.

QUis eſt iſte, qui venit de E- 1
dom, (a) rubor veſtium de Bo-
ſor ? (b) ſic formoſus in (c) ſto-
la, (d) violentiâ cum fortitudi-
ne ? (e) Ego loquor juſtitiam, &
judicium ſalutaris.

MS. A. (α) ὁ παραγινόμενος ἐξ Ἐδὲμ, ἐρυθήματα

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

סב

1 עד דאעבד פורקן לציון לא אניח לעממיא ועד דאיתי נחמא לירושלם לא אשקיט
2 למלכותא עד דיתגלי כשפרפרא נהורא ופורקנה כבעור יבער : ויחזון עממיא זכותיך
3 וכל מלכיא יקריך ויקרון ליך שמא חדתא די במימריה דיי יפרשניה : ותהון כליל
4 דחדוא קדם יי וכתר דתושבחא קדם אלהיך : לא יתאמר ליך עוד שביקא ולארעיך לא
יתאמר עוד צדיא ארי ליך יתקרי עבדי רעותי בה ולארעיך יתבא ארי תהי רעוא מן
5 קדם יי ביך וארעיך תתיתב : ארי כמא דמתיתב עולם עם בתולתא כן יתיתבון בגויכי
6 בניכי וכמא דחדי חתנא עם כלתא יחדי עלך אלהיך : הא על עובדי אבהתך צדיקיא
קרתא דירושלם מתקנין נטרין קדמי כל יממא וכל ליליא תדירא לא פסקין מתאמר
7 דכרן טבותיך קדם יי לא פסיק לכון : ולא יפסוק דכרנהון מן קדמוהי עד דיתקן ועד
8 דישוי ית ירושלם תשבחתא בארעא : קיים יי בימינה ובדרע תוקפיה אם אתן ית עבוריך
9 עוד מיכל לבעלי דבבך ואם ישתון בני עממיא חמריך דלאית ביה : ארי דכנשוהי
10 לעבורא ייכלוניה וישבחון קדם יי ודעצרוהי לחמרא ישתוניה בדרת קודשי : אמר נביא
עברו ותובו בתרעיא אפנו לב עמא לאורח תקנא בסרו בסורן טבן ונחמן לצדיקיא
11 דסליקו הירהור יצרא דהוא כאבן תקלא ארימו אתא על עממיא : הא יי אשמע לסיפי
ארעא אמרו לכנשתא דציון הא פרקיך מתגלי הא אגר עבדי מימריה עמיה וכל
12 עובדיהון גלן קדמוהי : ויקרון להון עמא דקודשא פריקיא דיי וליך יתקרי תביעתא
קרתא דלא אתרחקת :

סג

1 מן אמר אלין עתיד לאיתאה מחא על אדום פרענא תקיפא על בצרה למעבד פורענות
דין עמיה כמא דקים להון במימריה אמר הא אנא מתגלי כמא דמללית בזכו סניא
קדמי חיל למפרק :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. LXII.

DOnec faciam ſalutē Sion, non dabo requiē populis : & donec veniat 1
conſolatio Jeruſalem, non faciā quieſcere regna, donec reveletur ſicut di-
luculū lumen ej⁹, & ſal⁹ ejus ut lampas accendatur. Et videbunt populi ju- 2
ſtitiā tuā, & oēs reges gloriā tuam. Et vocabunt te nomine novo, ꝙ verbo 3
Dñi declarabitur. Et eris corona lætitiæ corā Dño, et diadema laudis coram
Deo tuo. Non dicetur tibi ampli⁹, Derelicta ; & terra tua non dicetur am- 4
pliùs deſerta ; ſed tu vocaberis [*Civitas*] in qua ſunt facientes voluntatem
meā ; & terra tua habitata, quoniā erit voluntas à facie Dñi in te : & terra
tua inhabitabitur. Sicut enim inhabitat juvenis cum virgine, ſic habitabunt 5
in medio tui filii tui : & ſicut lætatur ſponſus cum ſponſa, gaudebit ſuper
te Deus tuus. Ecce *ſuper* opera patrum tuorum juſtorum, civitas Jeru- 6
ſalem, *conſtituti ſunt cuſtodes* coram me, omni die ac nocte ſemper non
ceſſant : *dicitur memoria* bonitatum tuarum coram Domino, non *ceſ-
ſat vobis*. Neque ceſſabit memoria eorum à facie ejus, donec præparet & 7
donec ponat Jeruſalē laudabilē in terra. Juravit Dñs in dextera ſua, & in 8
brachio fortitudinis ſuæ, Si dedero frumentū tuū ultrà cibū inimicis tuis, et
ſi biberint filii populorū vinū tuum in quo laboràſti. Sed qui collegerint 9
frumentū, comedent illud, & laudabunt corā Dño : & qui calcaverint vi-
num, bibent illud in atrio ſancto meo. *Dixit Propheta*, tranſite et reverti- 10
mini per portas : convertite cor populi ad viā rectā ; annuntiate annunti-
ationes bonas, & conſolationes juſtis, qui abſtulerunt cogitationē libidi-
nis, quæ erat quaſi lapis offendiculi : levate ſignū ad populos. Ecce Dñs 11
auditū faciet in extremis terræ. Dicite cœtui Sion : Ecce ſalvator tu⁹ reve-
latur : ecce merces facientib⁹ verbū ejus cum eo ; quorum omnia opera
manifeſta ſunt coram eo. Et vocabunt eos populum ſanctum, *redemptos* 12
à Domino : & tu vocaberis requiſita civitas, quæ non eſt abjecta.

CAP. LXIII.

QUis dixit hæc, qui adductur⁹ eſt plagā ſuper Idumæā, ultionē fortē ſup 1
Boſram ; ut faciat ultionem judicii populi ſui, ſicut juravit eis in verbo ſuo ?
Dicit : Ecce ego appareo ſicut locutus ſum in juſtitia : multa virtus eſt coram
me ad ſalvandum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܦܘܠܓܐ * ܣܒ *

1 * ܡܛܠ ܨܗܝܘܢ ܠܐ ܐܫܬܘܩ. ܘܡܛܠ ܐܘܪܫܠܡ ܠܐ ܐܫܠܐ. ܥܕܡܐ ܕܢܦܘܩ ܙܕܝܩܘܬܗ ܐܝܟ
ܢܘܗܪܐ. ܘܦܘܪܩܢܗ ܐܝܟ ܠܡܦܐܕܐ ܢܕܠܩ. * ܘܢܚܙܘܢ ܥܡܡܐ ܙܕܝܩܘܬܟܝ. ܘܟܠܗܘܢ 2
ܡܠܟܐ ܐܝܩܪܟܝ. ܘܢܬܩܪܐ ܠܟܝ ܫܡܐ ܚܕܬܐ. ܕܦܘܡܗ ܕܡܪܝܐ ܢܫܡܝܘܗܝ. * ܘܬܗܘܝܢ 3
ܟܠܝܠܐ ܕܫܘܒܚܐ ܒܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܬܐܓܐ ܕܡܠܟܘܬܐ ܒܐܝܕܗ ܕܐܠܗܟܝ. * ܘܬܘܒ ܠܐ ܬܬܩܪܝܢ 4
ܫܒܝܩܬܐ. ܘܐܪܥܟܝ ܬܘܒ ܠܐ ܬܬܩܪܐ ܐܪܡܠܬܐ. ܐܠܐ ܬܬܩܪܝܢ ܨܒܝܢܝ. ܘܐܪܥܟܝ ܒܥܝܠܬܐ.
ܡܛܠ ܕܐܬܪܥܝ ܒܟܝ ܡܪܝܐ. ܘܐܪܥܟܝ ܬܬܒܥܠ. * ܡܛܠ ܕܐܝܟ ܕܡܬܒܥܠ ܥܠܝܡܐ ܠܒܬܘܠܬܐ. 5
ܗܟܢܐ ܢܬܒܥܠܘܢ ܒܟܝ ܒܢܝܟܝ. ܘܐܝܟ ܕܚܕܐ ܚܬܢܐ ܒܟܠܬܐ. ܢܚܕܐ ܒܟܝ ܐܠܗܟܝ. * ܥܠ 6
ܫܘܪܝܟܝ ܐܘܪܫܠܡ ܐܩܝܡܬ ܢܛܘܪܐ. ܟܠܝܘܡ ܐܝܡܡܐ ܘܠܠܝܐ ܐܡܝܢܐܝܬ. ܕܠܐ
ܢܫܬܘܩܘܢ. ܘܠܐ ܢܫܠܘܢ ܟܕ ܡܥܗܕܝܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. * ܘܠܐ ܬܬܠܘܢ ܫܠܝܐ ܠܗ. ܥܕܡܐ ܕܢܬܩܢܝܟܝ. 7
ܘܥܕܡܐ ܕܢܥܒܕܝܟܝ ܠܐܘܪܫܠܡ ܠܫܘܒܚܐ ܒܐܪܥܐ. * ܝܡܐ ܡܪܝܐ ܒܝܡܝܢܗ ܘܒܕܪܥܗ 8
ܚܣܝܢܐ. ܕܠܐ ܐܬܠ ܬܘܒ ܥܒܘܪܟܝ ܡܐܟܘܠܬܐ ܠܒܥܠܕܒܒܝܟܝ. ܘܠܐ ܢܫܬܘܢ ܒܢܝ
ܢܘܟܪܝܐ ܚܡܪܟܝ ܕܐܠܐܝܬܝ ܒܗ. * ܐܠܐ ܡܟܢܫܢܘܗܝ ܢܐܟܠܘܢܗ. ܘܢܫܒܚܘܢ ܠܡܪܝܐ. 9
ܘܡܟܢܫܢܘܗܝ ܢܫܬܘܢܝܗ ܒܕܪܬܐ ܕܩܘܕܫܝ. * ܥܒܪܘ ܥܒܪܘ ܒܬܪܥܐ. ܦܢܘ ܐܘܪܚܐ ܠܥܡܐ. 10
ܕܘܫܘ ܫܒܝܠܐ ܘܓܒܘ ܟܐܦܘܗܝ. ܐܪܝܡܘ ܐܬܐ ܠܥܡܡܐ. * ܗܐ ܡܪܝܐ ܐܫܡܥ ܠܣܘܦܝܗ 11
ܕܐܪܥܐ. ܐܡܪܘ ܠܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. ܗܐ ܦܪܘܩܟܝ ܐܬܐ. ܗܐ ܐܓܪܗ ܥܡܗ. ܘܥܒܕܗ ܩܕܡܘܗܝ.
* ܘܢܩܪܘܢ ܐܢܘܢ ܥܡܐ ܩܕܝܫܐ ܦܪܝܩܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܘܐܢܬܝ ܬܬܩܪܝܢ ܒܥܝܬܐ: ܡܕܝܢܬܐ ܕܠܐ 12
ܫܒܝܩܬܐ. * ܦܘܠܓܐ * ܣܓ * ܡܢܘ ܗܢܐ ܕܐܬܐ ܡܢ ܐܕܘܡ. ܘܨܒܝܥܝܢ ܢܚܬܘܗܝ 1
ܡܢ ܒܘܨܪܐ. ܘܗܕܝܪ ܒܠܒܘܫܘܗܝ ܘܡܣܓܝ ܒܣܘܓܐܐ ܕܚܝܠܗ. ܐܢܐ ܡܡܠܠ ܒܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܡܣܓܐ ܠܡܦܪܩ.

CAP. LXII.

PRopter Sionem non tacebo, & propter Jeruſalem non ſilebo: donec prodeat juſtitia ejus ſicut lumen, & ſalus ejus ut lampas ſplendeſcat. 1
Videbunt enim gentes juſtitiam tuam, & omnes reges gloriam tuam: & vocabitur tibi nomen novum quod os Domini imponet: 2
Eriſque corona laudis in manu Domini, & diadema regni in manu Dei tui: 3
Non vocaberis ampliùs Repudiata, & terra tua non vocabitur ampliùs Sterilis; ſed tu vocaberis Delitiæ meæ, & terra tua Maritata: quoniam grata es Domino, ideò terra tua maritabitur. 4
Nam quemadmodum ſe maritat adoleſcens virgini, ita maritabunt ſe tibi filii tui: & quemadmodum ſponſus oblectatur ſponſâ, te oblectabitur Deus tuus. 5
Super muros tuos Jeruſalem, conſtitui cuſtodes quotidie, diu noctúque jugiter, qui non tacebunt, neque ſilebunt commemorantes coram Domino: 6
Quibus non dabis requiem, donec ſtabiliat te, & donec reddat te Jeruſalem, glorioſiſſimam in terra. 7
Juravit Dominus per dexteram ſuam & per brachium ſuum robuſtum, *dicens*; Non dabo ampliùs frumentum tuum in cibum hoſtibus tuis, neque bibent filii exterorum vinum tuum pro quo laboraveris: 8
Sed colligentes illud comedent illud, & laudabunt Dominum; & colligentes hoc bibent illud in atriis ſanctis meis. 9
Tranſite, tranſite per portam, reſtituite viam populo, terite ſemitam & purgate lapides ejus, erigite ſignum gentibus. 10
Ecce Dominus promulgavit uſque ad extrema terræ, Dicite filiæ Sionis, Ecce venit Salvator tuus, ecce merces ejus cum eo, & opus ejus cum ipſo. 11
Et vocabunt eos Populum ſanctum, libertos Domini; & tu vocaberis Vindicata, civitas non Derelicta. 12

CAP. LXIII.

QUis hic eſt qui venit ex Adum, rubeis veſtibus de Boſar, decorus indumentis ſuis, & multitudine roboris ſui potens? Ego ſum qui juſtè loquor, & abundo ſalute. 1

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الثاني والستون *

1 * لاجل صهيون لست اسكن * ولاجل ايروسليم لست اتغاضي الي ان يخرج مثل النور عدلي *
2 وخلاصي مثل مصباح يتوقد * ويعاين الامم عدلك وجميع ملوك الارض مجدك * ويدعوك
3 باسمك الجديد الذي يسميه الرب * وتكوني اكليل حسن في يد الرب * وتاج ملك في يد
4 الهك * ولست تدعين بعد مهملة * وارضك لا تدعي قفر * لانك انت تدعين ارادتي * وارضك
5 مسكونة * لان الرب يسر بك * وارضك مسكونة * وكما يسكن الشاب مع العذري هكذا تسكن
6 بنوك معك * ويكون كما يفرح العريس بعروسه هكذا يفرح بك * وعلي اسوارك يا ايروسليم اقمت
7 حفظة النهار كله والليل كله * الذين لا يسكتون * الي النهاية يذكرون الرب * لان ليس لكم
8 شبيه ان تقومي وتصنعي يا ايروسليم سماحة علي الارض * حلف الرب بمجدك وبقوة ذراعه *
لا اعطي ايضا قمحك وطعمك لاعدايك * ولا تشرب ايضا البنون الغرباء خمرك الذي تعبت
9 فيه * لكن الذين يجمعون ياكلوها ويسبحون الرب * والذين يجمعون يشربوها في ديارك
10 المقدسة * اذهبوا جوزوا من ابوابي * هيوا الطريق واصنعوا طريقا * اصنعوا طريقا لشعبي *
11 وانقلوا الحجارة من الطريق * ارفعوا علامة للامم * لان ها الرب صنع مسموعا الي
اخر الارض * قولوا لابنة صهيون * ها مخلصك حضر * واجره معه وعمله قدام
12 وجهه * ويدعوه شعبا مقدسا مفديا من الرب * وانت تدعين مدينة مطلوبة
ولست مهملة *

* الفصل الثالث والستون *

1 * من هذا الجاي من ادوم وصبغ ثيابه من بوصار * هكذا بهي في لباسه يجور بقوة
كثيرة * انا اتكلم بالعدل وحكم الخلاص *

CAP. LXII.

PRopter Sionem non quieſcam, & propter Jeruſalem non connivebo: donec egrediatur ut ſplendor juſtitia mea, & ſalus mea ſicut fax ardeat: 1
Aſpiciant gentes juſtitiam tuam, & omnes reges terræ gloriam tuam: vocentque te nomine tuo novo quod Dominus imponet: 2
Et ſis corona decoris in manu Domini, & diadema regni in manu Dei tui: 3
Nequaquam vocaberis deinceps Derelicta, neque terra tua vocabitur Solitudo: quia tu vocaberis Voluntas mea, & terra tua Habitata, Dominus enim te oblectabitur, & terra tua erit habitata. 4
Et quemadmodum cohabitat juvenis cum virgine, ita cohabitabunt filii tui tecum: & erit quemadmodum gaudet ſponſus de ſua ſponſa, ita de te gaudebit. 5
Porrò ſuper mœnia tua O Jeruſalem, collocavi cuſtodes totâ die totâque nocte, qui non tacebunt, in finem uſque recordabuntur Domini. 6
Non enim erit par vobis, modò te corrigas & facias O Jeruſalem excelſum opus ſuper terram. 7
Juravit Dominus per gloriam ſuam & per brachii ſui robur, Non dabo ampliùs frumentum tuum & cibos tuos inimicis tuis, neque bibent ampliùs alienigenæ vinum tuum in quo laboraveris: 8
Sed filii tui qui congregabuntur, comedent eos, & laudabunt Dominum; & qui congregabuntur, bibent illud in atriis tuis ſanctis. 9
Ite, tranſite per portas meas, parate viam, & facite viam, facite inquam viam populo meo, & aſportate lapides è via, attollite ſignum ad populos. 10
Quoniam ecce Dominus auditum fecit uſque ad extremum terræ, Dicite huic filiæ Sioni, Ecce redemptor tuus adeſt, & merces ejus cum ipſo, & opus ejus ante faciem ipſius. 11
Et vocabit eum Populum ſanctum, redemptum à Domino; tu verò vocaberis urbs Requiſita, non autem Derelicta. 12

CAP. LXIII.

QUis eſt iſte veniens ex Edom, intinctis veſtibus de Boſar, adeo ſplendidus in veſtimento ſuo, gradiens multo cum robore? Ego loquor juſtitiam & judicium ſalutare. 1

ישעיה: סג

calcantis ſicut tua veſtimenta & , tuo veſtimento rubrum Quare
2 מַדּוּעַ אָדֹם לִלְבוּשֶׁךָ וּבְגָדֶיךָ כְּדֹרֵךְ
:mecum vir non populis de &,ego ſolus calcavi Torcular ?torculari in
3 בְּגַת׃ פּוּרָה דָּרַכְתִּי לְבַדִּי וּמֵעַמִּים אֵין־אִישׁ אִתִּי
ſpargetur & : mea ira in eos conculcabo & ,meo naſo in eos calcabo &
וְאֶדְרְכֵם בְּאַפִּי וְאֶרְמְסֵם בַּחֲמָתִי וְיֵז
inquinavi mea indumenta omnia & ,mea veſtimenta ſuper eorum victoria
נִצְחָם עַל־בְּגָדַי וְכָל־מַלְבּוּשַׁי אֶגְאָלְתִּי׃
.venit meorũ redemptorũ annus & : meo corde in ultionis dies Quia
4 כִּי יוֹם נָקָם בְּלִבִּי וּשְׁנַת גְּאוּלַי בָּאָה׃
mihi ſalvavit & : fulciens nõ & , obſtupui & : auxiliator non &,aſpexi Et
5 וְאַבִּיט וְאֵין עֹזֵר וְאֶשְׁתּוֹמֵם וְאֵין סוֹמֵךְ וַתּוֹשַׁע לִי
populos conculcabo Et .me fulcivit ipſe meus æſtus & ,meũ brachium
6 זְרֹעִי וַחֲמָתִי הִיא סְמָכָתְנִי׃ וְאָבוּס עַמִּים
terram in faciam deſcendere & ,mea ira in eos inebriabo & ,meo furore in
בְּאַפִּי וַאֲשַׁכְּרֵם בַּחֲמָתִי וְאוֹרִיד לָאָרֶץ
laudes ; faciam memorare Domini Miſerationes .eorum victoriam
7 נִצְחָם׃ חַסְדֵי יְהוָה אַזְכִּיר תְּהִלֹּת
multitudinẽ & : Dominus nobis reddidit quæ omnib⁹ ſuper quaſi Domini
יְהוָה כְּעַל כֹּל אֲשֶׁר־גְּמָלָנוּ יְהוָה וְרַב־
, ſuas miſericordias ſecundũ eis reddidit quod , Iſrael domui boni
טוּב לְבֵית יִשְׂרָאֵל אֲשֶׁר־גְּמָלָם כְּרַחֲמָיו
Verè : dixit Et .ſuarum miſerationum multitudinem ſecundùm &
8 וּכְרֹב חֲסָדָיו׃ וַיֹּאמֶר אַךְ־
.ſalvatorem in eis eſt factus & : mentientur non filii , ipſi me⁹ popul⁹
עַמִּי הֵמָּה בָּנִים לֹא יְשַׁקֵּרוּ וַיְהִי לָהֶם לְמוֹשִׁיעַ׃
:eos fecit ſalvos ejus facierũ angelus &,anguſtia non eorũ anguſtia omni In
9 בְּכָל־צָרָתָם לֹא צָר וּמַלְאַךְ פָּנָיו הוֹשִׁיעָם
: eos redemit ipſe ſuã indulgentiã propter & , ſuam dilectionẽ propter
בְּאַהֲבָתוֹ וּבְחֶמְלָתוֹ הוּא גְאָלָם
.fuerũt rebelles ipſi Et .ſeculi diebus cũctis eos portavit & ,eos tulit &
10 וַיְנַטְּלֵם וַיְנַשְּׂאֵם כָּל־יְמֵי עוֹלָם׃ וְהֵמָּה מָרוּ
ipſe ,inimicum in eis eſt verſus & : ej⁹ ſanctitatis ſpiritũ affecerunt dolore &
וְעִצְּבוּ אֶת־רוּחַ קָדְשׁוֹ וַיֵּהָפֵךְ לָהֶם לְאוֹיֵב הוּא
: ſui populi ,Moſeh ſeculi dierũ eſt recordat⁹ Et .eos contra pugnavit
11 נִלְחַם־בָּם׃ וַיִּזְכֹּר יְמֵי־עוֹלָם מֹשֶׁה עַמּוֹ
ponens Ubi ? ſui pecoris paſtorib⁹ cum ,mari de eos faciens aſcendere Ubi
אַיֵּה הַמַּעֲלֵם מִיָּם אֵת רֹעֵי צֹאנוֹ אַיֵּה הַשָּׂם
brachio,Moſeh dexterã ad Deducens ? ſuæ ſanctitatis ſpiritum ej⁹ medio in
12 בְּקִרְבּוֹ אֶת־רוּחַ קָדְשׁוֹ׃ מוֹלִיךְ לִימִין מֹשֶׁה זְרוֹעַ
? ſeculi nomen ſibi faciendum ad,eorum faciebus à aquas ſcindentis:ſuæ gloriæ
תִּפְאַרְתּוֹ בּוֹקֵעַ מַיִם מִפְּנֵיהֶם לַעֲשׂוֹת לוֹ שֵׁם עוֹלָם׃
.impingerent non , deſertum per equum ſicut , abyſſos per eos Deducens
13 מוֹלִיכָם בַּתְּהֹמוֹת כַּסּוּס בַּמִּדְבָּר לֹא יִכָּשֵׁלוּ׃
: eum deducet DOMINI ſpiritus , deſcendet vallem per animal Veluti
14 כַּבְּהֵמָה בַּבִּקְעָה תֵרֵד רוּחַ יְהוָה תְּנִיחֶנּוּ
.gloriæ nomen tibi faciendum ad , tuum populum duxiſti ſic
כֵּן נִהַגְתָּ עַמְּךָ לַעֲשׂוֹת לְךָ שֵׁם תִּפְאָרֶת׃
: tuæ gloriæ & ,tuæ ſanctitatis habitaculo de vide & , cœlis è Aſpice
15 הַבֵּט מִשָּׁמַיִם וּרְאֵה מִזְּבֻל קָדְשְׁךָ וְתִפְאַרְתֶּךָ
, tuorum viſcerum tumultus , tuæ fortitudines & , tuus zelus ubi
אַיֵּה קִנְאָתְךָ וּגְבוּרֹתֶךָ הֲמוֹן מֵעֶיךָ
:noſter pater tu Nam ? ſe continuerunt me erga ? tuarũ miſerationũ &
16 וְרַחֲמֶיךָ אֵלַי הִתְאַפָּקוּ׃ כִּי־אַתָּה אָבִינוּ
Domine Tu .nos agnovit non Iſrael & , nos neſcivit Abraham quia
כִּי אַבְרָהָם לֹא יְדָעָנוּ וְיִשְׂרָאֵל לֹא יַכִּירָנוּ אַתָּה יְהוָה
.tuum nomen ſeculo à : noſter redemptor ,noſter pater
אָבִינוּ גֹּאֲלֵנוּ מֵעוֹלָם שְׁמֶךָ׃

Verſio VUL. LAT.

2 Quarè ergò rubrum eſt indumentũ
tuum,& veſtimenta tua
ſicut calcantium in torculari?
3 Torcular calcavi ſolus, & de
Gentibus non eſt vir mecum:
calcavi eos in furore meo, &
conculcavi eos in ira mea: &
aſperſus eſt ſanguis eorum ſup
veſtimenta mea, & omnia indumenta
4 mea inquinavi. Dies
enim ultionis in corde meo,annus
redemptionis meæ venit.
5 Circumſpexi,& non erat auxiliator:
quæſivi,& non fuit qui
adjuvaret:et ſalvavit mihi brachiũ
meum, & indignatio mea
6 ipſa auxiliata eſt mihi. Et conculcavi
populos in furore meo,
& inebriavi eos in indignatione
mea,& detraxi in terrã virtutem
7 eorũ. Miſerationũ Dñi
recordabor, laudem Dñi ſuper
omnibus quæ reddidit nobis
Dñs, & ſuper multitudinẽ bonorũ
domui Iſrael, quæ largit⁹
eſt eis ſecundùm indulgentiam
ſuam,et ſecundùm multitudinẽ
8 miſericordiarũ ſuarum. Et dixit;
Veruntamen popul⁹ meus
eſt,filii non negantes: & factus
9 eſt eis Salvator. In omni tribulatione
eorũ non eſt tribulat⁹,
& angelus faciei ejus ſalvavit
eos:in dilectione ſua, & in indulgentia
ſua ipſe redemit eos:
& portavit eos,et elevavit eos
10 cunctis diebus ſeculi. Ipſi autẽ
ad iracundiã provocaverũt, &
afflixerũt ſpiritũ Sancti ej⁹:&
converſ⁹ eſt eis in inimicũ, &
11 ipſe debellavit eos. Et recordat⁹
eſt dierum ſeculi Moyſi,et
populi ſui: Ubi eſt qui eduxit
eos de mari cum paſtorib⁹ gregis
ſui?ubi eſt qui poſuit in me-
12 dio ej⁹ ſpiritũ Sancti ſui? Qui
eduxit ad dexterã Moyſen brachio
majeſtatis ſuæ, qui ſcidit
aquas ante eos, ut faceret ſibi
13 nomen ſempiternum: Qui eduxit
eos per abyſſos,quaſi equũ
in deſerto non impingentem.
14 Quaſi animal in campo deſcendens,
ſpirit⁹ Domini ductor ej⁹
fuit: ſic adduxiſti populũ tuũ,
ut faceres tibi nomen gloriæ.
15 Attende de cœlo, et vide de
habitaculo ſancto tuo, et gloriæ
tuæ: ubi eſt zelus tuus, et
fortitudo tua, multitudo viſcerum
tuorum, et miſerationum
tuarum? ſuper me continuerũt
16 ſe. Tu enim pater noſter, &
Abraham neſcivit nos, et Iſrael
ignoravit nos:tu,Domine,
pater noſter,redemptor noſter,
à ſeculo nomen tuum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

2 Διατί σου ἐρυθρὰ τὰ ἱμάτια, ϗ τὰ ἐνδύματά
3 σου ὡς ἀπὸ πατητοῦ ληνοῦ; Πλήρης
καταπεπατημένης, ϗ τῶν ἐθνῶν οὐκ ἔστιν ἀνὴρ
μετ' ἐμοῦ, ϗ κατεπάτησα αὐτοὺς ἐν (β)
θυμῷ μου, ϗ κατέθλασα αὐτοὺς ὡς γῆν,
4 ϗ κατήγαγον τὸ αἷμα αὐτῶν εἰς γῆν. Ἡμέρα
γὰρ ἀνταποδόσεως ἐπῆλθεν αὐτοῖς,
5 ϗ ἐνιαυτὸς λυτρώσεως πάρεστι. Καὶ ἐπέβλεψα,
ϗ (γ) οὐκ ἦν βοηθός· ϗ προσενόησα,
ϗ οὐθεὶς ἀντελαμβάνετο. ϗ ἐρρύσατο αὐτοὺς
ὁ βραχίων μου, ϗ ὁ θυμός μου ἐπέστη.
6 Καὶ κατεπάτησα αὐτοὺς τῇ ὀργῇ μου, καὶ
7 κατήγαγον τὸ αἷμα αὐτῶν εἰς γῆν. Τὸν ἔλεον
κυρίου ἐμνήσθην, τὰς ἀρετὰς κυρίου ἐν
πᾶσιν οἷς (δ) ἡμῖν ἀνταποδίδωσι. κύριος
κριτὴς ἀγαθὸς τῷ οἴκῳ Ἰσραὴλ, ἐπάγει ἡμῖν
κατὰ τὸ ἔλεος αὐτοῦ, ϗ κατὰ τὸ πλῆθος
8 τῆς δικαιοσύνης αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν, Οὐχ ὁ
λαός μου; τέκνα (ε) οὐ μὴ ἀθετήσωσι. ϗ
9 ἐγένετο αὐτοῖς εἰς σωτηρίαν Ἐκ πάσης
(ζ) θλίψεως αὐτῶν. οὐ πρέσβις, οὐδὲ
ἄγγελος, ἀλλ' (η) αὐτὸς ἔσωσεν αὐτοὺς,
διὰ τὸ ἀγαπᾷν αὐτοὺς ϗ φείδεσθαι αὐτῶν·
(θ) αὐτὸς ἐλυτρώσατο αὐτοὺς, ϗ ἀνέλαβεν
αὐτοὺς, ϗ ὕψωσεν αὐτοὺς πάσας τὰς ἡμέρας
10 τοῦ αἰῶνος. Αὐτοὶ δὲ ἠπείθησαν, καὶ
παρώξυναν τὸ πνεῦμα τὸ (ι) ἅγιον αὐτοῦ· ϗ
ἐστράφη αὐτοῖς εἰς ἔχθραν, (κ) αὐτὸς ἐπολέμησεν
11 αὐτούς. Καὶ ἐμνήσθη ἡμερῶν αἰωνίων·
(λ) Ποῦ ὁ ἀναβιβάσας ἐκ τῆς θαλάσσης
τὸν ποιμένα τῶν προβάτων; ποῦ ἐστιν ὁ
12 θεὶς ἐν αὐτοῖς τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον; Ὁ ἀγαγὼν
τῇ δεξιᾷ Μωσῆν, ὁ βραχίων τῆς
δόξης αὐτοῦ; κατίσχυσεν ὕδωρ ἀπὸ προσώπου
αὐτοῦ, ποιῆσαι (μ) ἑαυτῷ ὄνομα αἰώνιον. (ν)
13 Ἤγαγεν αὐτοὺς δι' ἀβύσσου, ὡς ἵππον δι'
14 ἐρήμου, ϗ οὐκ ἐκοπίασαν, Καὶ ὡς κτήνη διὰ
πεδίου. (ξ) κατέβη πνεῦμα παρὰ κυρίου,
ϗ ὡδήγησεν αὐτούς· οὕτως ἤγαγες τὸν λαόν
15 σου ποιῆσαι σεαυτῷ ὄνομα δόξης. Ἐπίστρεψον
ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, ϗ ἴδε ἐκ τοῦ οἴκου τοῦ
ἁγίου σου, ϗ (ο) δόξης σου. ποῦ ἐστιν ὁ ζῆλός
σου ϗ ἡ ἰσχύς σου; ποῦ ἐστι τὸ πλῆθος
τοῦ ἐλέους σου, ϗ (π) οἰκτιρμῶν σου, ὅτι ἀνέσχου
16 ἡμῶν; Σὺ γὰρ (ρ) εἶ πατὴρ ἡμῶν,
ὅτι Ἀβραὰμ οὐκ ἔγνω ἡμᾶς, ϗ Ἰσραὴλ οὐκ
ἐπέγνω ἡμᾶς, ἀλλὰ σὺ κύριε πατὴρ ἡμῶν
ῥῦσαι ἡμᾶς, ἀπ' ἀρχῆς τὸ ὄνομά σου (σ) ἐφ'
ἡμᾶς ἐστι.

Quarè rubra ſunt veſtimenta tua, 2
& indumenta tua, ſicut de calcato
torculari? (f) Plen⁹ percalcato: & 3
de gentibus non eſt vir mecũ: &
conculcavi eos in furore meo: &
confregi eos, quaſi terram: &
deduxi ſanguinem eorum in (g)
terram. Dies enim retributionis 4
venit eis: & annus redemptionis
adeſt. Et aſpexi; & non erat 5
auxiliator: & conſideravi;
& nullus præbebat auxilium. Et
eruit eos brachium meum: &
furor meus (h) advenit: Et 6
conculcavi eos in ira mea: &
deduxi in terram ſanguinem eorum.
Miſericordiæ Domini recordatus 7
ſum, virtutum Domini,
in omnibus, quæ retribuit nobis.
Dominus judex bonus domui Iſrael,
adducit nobis ſecundùm miſericordiam
ſuam, & ſecundùm
multitudinem juſtitiæ ſuæ. Et dixit; 8
Nonne populus meus? filii
non reprobabunt. Et factus eſt eis
in ſalutem Ex omni tribulatione 9
eorum: non legatus, neque
angelus, ſed (i) ipſe ſalvavit eos,
quòd diligeret eos, et parceret eis.
Ipſe redemit eos, et *ſuſcepit illos,*
& exaltavit eos omnibus diebus
ſeculi. Ipſi autem non crediderunt, 10
& exacerbaverunt ſpiritum
ſanctum ejus. Et converſus eſt
eis in inimicitiam: ipſe pugnavit
contra eos. Et recordatus eſt dierum 11
antiquorum. Ubi eſt, qui eduxit
è (k) mari paſtorem ovium?
Ubi eſt qui poſuit in eis ſpiritum
ſanctum? Qui eduxit dextrâ 12
Moſen, (l) brachium gloriæ
ſuæ? ſuperavit aquam à facie ejus,
ut faceret ſibi nomen ſempiternum.
Adduxit eos per abyſſum, 13
ſicut equum per ſolitudinem,
& non laboraverunt: Et ſicut 14
jumenta per campũ. Deſcendit ſpiritus
à Domino, & dux eorum
fuit. Sic adduxiſti populum tuum;
ut faceres tibi nomen gloriæ.
Convertere de cælo, & vide de 15
domo ſancta tua, & gloriæ tuæ.
Ubi eſt zelus tuus, & fortitudo
tua? Ubi eſt multitudo miſericordiæ
tuæ, et miſerationũ tuarũ, quia
ſuſtinuiſti nos? Tu enim es pater 16
noſter: quia Abraam non cognovit
nos: & Iſrael von cognovit
nos. Sed tu, Domine pater noſter, libera
nos: à principio nomen tuum
ſuper nos eſt.

MS.A. (β) θυμῷ, ϗ κατέθλασα (γ) οὐδεὶς βοηθός· (δ) ὁ κύριος ἡμῖν (ε) ϗ οὐ μὴ (ζ) θλίψεως. οὐ πρέσβεις, (η) αὐτὸς κύριος ἔσωσεν (θ) ϗ αὐτὸς (ι) ἅγιον· ϗ ἐστράφη (κ) ϗ αὐτὸς (λ) Ὁ ἀναβιβάσας ἐκ τῆς γῆς τὸν (μ) αὐτῷ (ν) Καὶ ἤγαγεν αὐτοὺς διὰ τῆς ἀβύσσου, (ξ) ϗ κατέβη (ο) δόξης. ποῦ ἐστιν (π) τῶν οἰκτιρμῶν (ρ) ἡμῶν εἶ πατὴρ, (σ) ἐστὶν ἐν ἡμῖν.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

2 מָא דֵין יִסְמְקוּן טוּרִין מִדַּם קְטִילִין וּמֵישְׁרִין יִפְקוּן כַּחֲמַר בְּמַעְצְרָא׃ הָא כִּבְעוּט דְּמִתְבְּעֵט
3 בְּמַעְצְרָא כֵּן יִסְגֵי קְטוֹל בְּמַשְׁרְיַת עַמְמַיָּא וְלָא יְהֵא לְהוֹן תְּקוֹף קֳדָמַי וְאֶקְטְלִנּוּן בְּרוּגְזִי
וַאֲדוּשִׁנּוּן בְּחֶמְתִּי וְאֶתְבַּר תְּקוֹף תַּקִּיפֵיהוֹן קֳדָמַי וְכָל חַכִּימֵיהוֹן אֱסַלְּעֵם׃ אֲרֵי יוֹם 4
פֻּרְעָנוּתָא קֳדָמַי וּשְׁנַת פּוּרְקַן עַמִּי מְטָת׃ וּגְלֵי קֳדָמַי וְלֵית גְּבַר דְּלֵיהּ עוֹבְדִין טָבִין וִידִיעַ 5
קֳדָמַי וְלֵית אֱנָשׁ דִּיקוּם וְיִבְעֵי עֲלֵיהוֹן וּפְרַקְתִּנּוּן בִּדְרַע תּוּקְפִּי וּבְמֵימַר רְעוּתִי סְעַדְתִּנּוּן׃
6 וְאֶקְטֹל עַמְמַיָּא בְּרוּגְזִי וַאֲדוּשִׁנּוּן בְּחֶמְתִּי וְאַרְמֵי לַאֲרַע אַרְעִיתָא קְטִילֵי גִּבָּרֵיהוֹן׃ אֲמַר
7 נְבִיָּא טֵיבְוָתָא דַּיְיָ אֲנָא מִדְּכַר תּוּשְׁבְּחָתָא דַּיְיָ כְּעַל כָּל דִּגְמַלְנָא יְיָ וּסְגֵי טוּבֵיהּ לְבֵית
8 יִשְׂרָאֵל דִּגְמַלְנוּן כְּרַחֲמוֹהִי וּכְסַגִּיוּת טוּבֵיהּ׃ וַאֲמַר בְּרַם עַמִּי אִנּוּן בְּנַיָּא דְּלָא יְשַׁקְּרוּן
9 וַהֲוָה מֵימְרֵיהּ לְהוֹן פָּרִיק׃ בְּכָל עִדָּן דְּחָבוּ קֳדָמוֹהִי לְאַיְתָאָה עֲלֵיהוֹן עָקָא לָא אָעִיק
לְהוֹן וּמַלְאַךְ שְׁלִיחַ מִן קֳדָמוֹהִי פְּרַקִנּוּן בְּרַחֲמְתֵיהּ וּבְמִחְסֵיהּ עֲלֵיהוֹן הָא שֵׁיזְבִנּוּן
10 וְנַטְלִנּוּן וְסוֹבְרִנּוּן כָּל יוֹמֵי עָלְמָא׃ וְאִנּוּן סָרִיבוּ וְאַרְגִּיזוּ עַל מֵימַר נְבִיֵּי קוּדְשֵׁיהּ וְאִתְהֲפַךְ
11 מֵימְרֵיהּ לְהוֹן לִבְעֵל דְּבָב הוּא אַגִּיחַ קְרָבָא בְּהוֹן׃ וְחָס עַל יְקַר שְׁמֵיהּ בְּדִיל דּוּכְרַן
טַבְוָתֵיהּ דְּמִן עָלְמָא גְּבוּרָן דַּעֲבַד עַל יְדֵי מֹשֶׁה לְעַמֵּיהּ דִּלְמָא יֵימְרוּן אָן דְּאַסְּקִנּוּן מִן יַמָּא
12 אָן דְּדַבְּרִנּוּן בְּמַדְבְּרָא כְּרַעְיָא לְעָנֵיהּ אָן דְּאַשְׁרֵי בֵּינֵיהוֹן יַת מֵימַר נְבִיֵּי קוּדְשֵׁיהּ׃ דְּבַר
לִימִינָא דְמֹשֶׁה דְּרַע תּוּשְׁבַּחְתֵּיהּ בְּזַע מֵי יַמָּא דְּסוּף מִן קֳדָמֵיהוֹן לְמֶעְבַּד לֵיהּ שׁוּם עָלַם׃
13 דַּבְּרִנּוּן בֵּין תְּהוֹמַיָּא כְּסוּסְיָא דִּי בְמַדְבְּרָא לָא מִתְקַל כֵּן אַף אִנּוּן לָא אִתְקִילוּ׃ כִּבְעִירָא
14 דִּי בְמֵישְׁרָא מְדַבְּרָא מֵימְרָא דַּיְיָ דַּבְּרִנּוּן כֵּן דַּבַּרְתֵּיהּ לְעַמָּךְ לְמֶעְבַּד לָךְ שׁוּם דְּתוּשְׁבַּחְתָּא׃
15 אִסְתַּכֵּי מִן שְׁמַיָּא וְאִתְגְּלֵי מִמְּדוֹר קוּדְשָׁךְ וְתוּשְׁבַּחְתָּךְ אָן פּוּרְעָנוּתָךְ וּגְבוּרְתָךְ הֲמוֹן טַבְוָתָךְ
16 וְסַגִּיוּת רַחֲמָךְ עֲלַי יִתְחַסְנוּן׃ אֲרֵי אַתְּ הוּא דְּרַחְמָךְ עֲלָנָא סַגִּיאִין כְּאַב עַל בְּנִין אֲרֵי אַבְרָהָם
לָא אַסְּקָנָא מִמִּצְרַיִם וְיִשְׂרָאֵל לָא עֲבַד לָנָא פְּרִישָׁן בְּמַדְבְּרָא אַתְּ הוּא יְיָ וְרַחֲמָךְ עֲלָנָא
סַגִּיאִין כְּאַב עַל בְּנִין פָּרְקָנָא מֵעָלַם שְׁמָךְ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quare rubeſcunt montes ſanguine occiſorum, & valles defluunt quaſi 2
vinum in torculari? Ecce ſicut calcantur in torculari uvæ, ſic multiplicabitur 3
occiſio in caſtris populorũ: & non erit eis fortitudo corã me; &
occidã eos in furore meo, & triturabo eos in ira mea; & conterã fortitudinem
robuſtorum eorum coram me; et omnes ſapientes eorum abſorbebo.
Quia dies ultionis corã me, & ann⁹ redemptionis populi mei pervenit. Et 4
manifeſtũ eſt corã me,quòd non ſit vir cuj⁹ opera ſint bona:et notũ eſt corã 5
me, quòd non ſit vir qui ſtet & deprecetur pro eis: & ſalvavi eos brachio
fortitudinis meæ, & verbo voluntatis meæ auxiliat⁹ ſum eis. Et occidã populos 6
in furore meo, & conculcabo eos in indignatione mea: & projiciam
in terrã inferiorẽ occiſos fortiũ eorũ. Dicit Propheta: Benignitatis Domini 7
recordabor,& laudis Dñi, pro omnib⁹ quæ retribuit nobis Dñs;& multitudine
bonitatis ej⁹ domui Iſrael, quib⁹ retribuit ſecundũ miſerationes ſuas,
& ſecundùm multitudinem benignitatis ſuæ. Et ait: Veruntamen populus 8
meus ſunt filii qui non mentiuntur: & fuit Verbum ej⁹ eis in redemptionẽ.
In omni tempore quo peccaverunt coram eo,ut adduceret ſuper eos tribulationẽ, 9
non tribulavit eos; & angelus miſſus à facie ej⁹ redemit eos; ſua in
eos dilectione & miſeratione *ecce* liberavit eos, & tulit eos,& ſuſtinuit eos
cunctis diebus ſeculi. Ipſi autem noluerunt obedire: ſed irritaverunt Prophetas 10
ſuper verbũ ſanctũ ejus, & converſũ eſt Verbũ ejus eis in inimicũ,
ipſe debellavit eos. Et miſertus eſt propter gloriã nominis ſui, & propter 11
memoriã benignitatis ſuæ, quæ à ſeculo eſt,& magnalia quæ fecit per manus
Moyſi populo ſuo, ne fortè dicant: Ubi eſt qui aſcendere fecit eos de
mari? ubi eſt qui duxit eos per ſolitudinẽ, ſicut paſtor oves ſuas? ubi eſt
qui habitare fecit in medio eorum verbũ prophetarũ ſanctorum ſuorum?
Qui deduxit ad dexterã Moyſis, brachium laudis ſuæ; diviſit aquas maris 12
carectoſi à facie eorum,ut faceret ſibi nomen ſempiternũ. Deduxit eos per 13
abyſſos, ſicut equũ qui in deſerto non impegit, ſic etiam ipſi non impegerunt.
Quaſi animal quod in campo ducitur, Verbũ Dñi deduxit eos: ſic deduxiſti 14
populũ tuum, ut faceres tibi nomẽ inclytũ. Aſpice de cœlo,& revelare 15
de habitaculo ſancto tuo, & laudis tuæ: ubi eſt ultio tua & potentia
tua? copia benignitatis tuæ, & multitudo miſerationũ tuarũ ſuper me confortatæ
ſunt. Quia tu es, & miſerationes tuæ tam copioſæ ſunt in nos, quã 16
patris in filios. Quia Abraham non eduxit nos de Ægypto, & Iſrael non fecit nobis mirabilia in deſerto. Tu es Dominus,&
miſericordiæ tuæ tam copioſæ ſunt ſuper nos, quàm patris in filios: Redemptor noſter à ſeculo nomen tuum,

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܠܡܢܐ ܣܡܘܩܝܢ ܢܚܬܝܟ ܘܡܐܢܝܟ . ܐܝܟ ܗܘ ܕܕܪܟ ܒܡܥܨܪܬܐ. * ܡܥܨܪܬܐ ܕܪܟܬ 2
ܒܠܚܘܕܝ . ܘܐܢܫ ܡܢ ܥܡܡܐ ܠܝܬ ܗܘܐ ܥܡܝ. ܕܫܬ ܐܢܘܢ ܒܪܘܓܙܝ . ܘܕܪܟܬ ܐܢܘܢ 3
ܒܚܡܬܝ. ܘܢܬܪ ܕܡܗܘܢ ܥܠ ܡܐܢܝ . ܘܟܠܗܘܢ ܢܚܬܝ ܨܒܥܬ. * ܡܛܠ ܕܝܘܡܐ 4
ܕܬܒܥܬܐ ܒܠܒܝ . ܘܫܢܬܐ ܕܦܘܪܩܢܝ ܡܛܬ . * ܚܪܝܬ. ܘܠܝܬ ܕܡܥܕܪ. ܘܐܬܕܡܪܬ. 5
ܘܠܝܬ ܕܣܡܟ. ܘܦܪܩܬܢܝ ܕܪܥܝ . ܘܚܡܬܝ ܗܝ ܣܡܟܬܢܝ. * ܕܫܬ ܥܡܡܐ ܒܪܘܓܙܝ . 6
ܘܕܘܕܬ ܐܢܘܢ ܒܚܡܬܝ. ܘܐܚܬܬ ܠܐܪܥܐ ܥܘܫܢܗܘܢ. * ܛܝܒܘܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܐܥܗܕ: 7
ܘܬܫܒܘܚܬܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܟܠ ܕܦܪܥܢ ܡܪܝܐ. ܘܐܣܓܝ ܛܝܒܘܬܗ ܥܠ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ.
ܕܦܪܥܢ. ܐܝܟ ܪܚܡܘܗܝ. ܘܐܝܟ ܣܘܓܐܐ ܕܛܝܒܘܬܗ. * ܘܐܡܪ. ܕܥܡܝ ܐܢܘܢ ܒܢܝܐ ܕܠܐ 8
ܡܕܓܠܝܢ. ܘܗܘܐ ܠܗܘܢ ܦܪܘܩܐ. * ܒܟܠ ܐܘܠܨܢܗܘܢ. ܠܐ ܐܠܨ ܐܢܘܢ. ܘܡܠܐܟܐ ܕܐܦܘܗܝ 9
ܦܪܩ ܐܢܘܢ. ܒܚܘܒܗ ܘܒܚܢܢܗ ܦܪܩ ܐܢܘܢ. ܘܐܪܝܡ ܐܢܘܢ. ܘܫܩܠ ܐܢܘܢ. ܟܠܗܘܢ
ܝܘܡܬܗ ܕܥܠܡܐ. * ܘܗܢܘܢ ܡܡܪܡܪܝܢ. ܘܡܥܝܩܝܢ ܪܘܚܐ ܕܩܘܕܫܗ. ܘܐܬܗܦܟ ܗܘܐ ܠܗܘܢ 10
ܠܒܥܠܕܒܒܐ. ܘܗܘ ܐܬܟܬܫ ܥܡܗܘܢ. * ܘܐܬܕܟܪ ܝܘܡܬܐ ܕܥܠܡܐ ܕܡܘܫܐ ܥܒܕܗ. ܐܝܟ 11
ܕܐܣܩ ܡܢ ܝܡܐ ܪܥܝܐ ܕܥܢܗ. ܘܐܝܟ ܕܣܡ ܒܓܘܗ ܪܘܚܐ ܕܩܘܕܫܗ. * ܘܕܒܪ ܠܝܡܝܢܗ 12
ܕܡܘܫܐ ܕܪܥܐ ܕܫܘܒܚܗ. ܨܪܐ ܝܡܐ ܡܢ ܩܕܡܝܗܘܢ. ܘܥܒܕ ܠܗ ܫܡܐ
ܠܥܠܡ. * ܕܕܒܪ ܐܢܘܢ ܒܬܗܘܡܐ. ܐܝܟ ܣܘܣܝܐ ܒܡܕܒܪܐ. * ܘܠܐ ܐܬܬܩܠܘ. ܐܝܟ ܒܥܝܪܐ 13 14
ܕܢܚܬܐ ܠܦܩܥܬܐ. ܪܘܚܗ ܕܡܪܝܐ ܕܒܪܬ ܐܢܘܢ. ܗܟܢܐ ܕܒܪܬ ܠܥܡܟ. ܘܥܒܕܬ
ܠܟ ܫܡܐ ܡܫܒܚܐ. * ܚܘܪ ܡܢ ܫܡܝܐ ܘܚܙܝ ܡܢ ܡܥܡܪܟ ܩܕܝܫܐ ܘܡܫܒܚܐ. ܐܝܟܘ 15
ܚܣܡܟ ܘܓܢܒܪܘܬܟ. ܘܗܘܡܝܐ ܕܪܚܡܝܟ ܘܕܚܢܢܝܟ ܐܬܟܡܪܘ ܥܠܝܢ. * ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܗܘ 16
ܐܒܘܢ. ܐܒܪܗܡ ܠܐ ܝܕܥܢ. ܘܐܝܣܪܝܠ ܠܐ ܐܫܬܘܕܥܢ. ܐܢܬ ܗܘ ܡܪܝܐ ܐܒܘܢ ܦܪܘܩܢ.
ܘܫܡܟ ܥܠܝܢ ܡܢ ܥܠܡ.

Quare rubicundæ ſunt veſtes tuæ & indumenta 2
tua, velut ejꝰ qui *muſtum* in lacu preſſit?
Lacum calcavi ſolus, & nemo ex populis 3
aderat mecum: preſſi eos in ira mea, & calcavi
eos in æſtu meo; ideò ſanguine eorum ſuper
indumenta mea erumpente, omnes meas
veſtes cruentavi. Dies enim ultionis mihi 4
eſt in animo, & annus ſalutis meæ pervenit.
Cùm autem reſpexiſſem, & nullus opem ferret; 5
obſtupuiſſem, & nemo fulciret; ſalvavit
me brachium meum, & æſtus meus ipſe me
fulcivit. Calcavi populos in ira mea, & ex- 6
agitavi eos in æſtu meo, adeóque in terram
dejeci robur eorum. Beneficium Domini et 7
laudem Domini memorabo pro omnibus quæ
contulit mihi Dominus, & *quòd* multiplicârit
benignitatem ſuam erga Iſraelitas, quòd retribuerit
mihi ſecundùm miſerationes ſuas, &
ſecundùm amplitudinẽ benignitatũ ſuarum:
Dixerit, Populus meus ſunt, filii minimè fallaces: 8
fuerit Salvator eorum: Et in cunctis 9
calamitatibus eorum non afflixerit eos; ſed
Angelus faciei ejus liberaverit eos, benignitate
& clementiâ ſuâ redemerit eos, extulerit et
evexerit eos cunctis diebus ſeculi. Ipſis quidem 10
exaſperantibꝰ & dolore afficientibus ſpiritum
ſanctitatis ejus, converſus fiebat eis inimicus,
& ipſe pugnabat contra eos: At recordabatur 11
priſcorum dierum Moſis ſervi ſui,
quomodo eduxerat è mari paſtorem gregis
ſui, & quomodo indiderat in eum ſpiritum
ſanctitatis ſuæ; Rexerat dexteram Moſis brachium 12
ejus glorioſũ, perruperat mare à conſpectu
eorum, & comparaverat eis nomen æternum:
Duxerat eos per abyſſum, tanquã 13
equum per deſertum, Nec impegerant more 14
jumenti deſcendentis in planitiem: (Spiritꝰ
enim Domini regebat illos) Ita duxiſti populum
tuum; & comparâſti tibi nomen glorioſũ.
Intuere de cœlo, & reſpice ex habitaculo tuo 15
ſancto & glorioſo: ubi eſt zelus tuus, & fortitudo
tua, & commotio viſcerum & miſerationũ
tuarum quæ commovebantur erga nos?
Tu enim pater noſter es: Abrahamum ignoramus, 16
& Iſraelem non cognovimus: tu quidem
Domine, pater noſter es, vindex noſter;
& nomen tuum ſuper nos eſt à ſeculo.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ما بال ثيابك حمر ولباسك كدواس المعصر المملوه المداسة * دست المعصر وحدي 2 3
وليس معي رجل من الامم موجودا * ودستهم بغضبي * ووطيتهم مثل الارض * وارسلت دمهم
على الارض * واتسخت ثيابي بدمهم * ودنسوا جميع لباسي * لان يوم المجازاة جاء لهم * 4
وسنة الانتقام حضرت * ونظرت ولم يكن معين * وتاملت وليس من يسند * ونجاهم 5
ذراعي * وغضبي هو وقف * ودستهم برجزي * واسكرتهم بغضبي * وارسلت دمهم على 6
الارض * ذكرت رحمة الرب * وساذكر فضايل الرب * تسبحة الرب على كل ما كافانا به 7
الرب * الرب حاكم صالح لبيت اسرايل يجلب علينا كرحمته وكثرة عدله * وقال 8
اليس هم شعب لي وبنون ولا يجحدون * وصار لهم خلاصا من كل حزنهم * ليس شفيع 9
ولا ملاك * لكن هو الرب خلصهم * من اجل انه يحبهم ويشفق عليهم * وهو انقذهم
وقبلهم ورفعهم جميع ايام الدهر * وهم عصوا واغاظوا الروح القدس * فرجع لهم عداوة 10
وهو حاربهم * وذكر الايام الدهرية * اين هو المصعد من البحر راعي خرافه * اين هو 11
الواضع فيهم الروح القدس * المصعد موسي بيمينه وذراع مجده * شق الماء عن وجهه 12
ليصنع له اسما ابديا * واقتادهم في العمق مثل فرس في البرية ولم يتعبوا * ومثل 13 14
بهايم في الفلاة ولم يجزعوا * نزل روح من الرب وهداهم * هكذا اقتدت شعبك لتصنع
لذاتك اسم مجد * ارجع يا رب من السماء * وانظر من مسكن مجدك المقدس * اين هي 15
غيرتك وقوتك * اين هي كثرة رحمتك ورافاتك * لانك تغضي يا رب * لانك انت هو 16
ابونا * لان ابراهيم لم يعرفنا * واسرايل لم يتعرف بنا * لكن انت يا رب ابونا * نجنا * واسمك
هو علينا منذ البدء *

Unde veſtes tuæ rubræ ſunt, & indumentum 2
tuum veluti conculcantis lacum
muſto *plenum & conculcatum? Conculcavi* 3
lacũ ſolus, nullo viro ex populis mecum
præſente: conculcavi autem eos in furore
meo, & preſſi eos ceu terram, & ſanguinem
eorum in terram fluere feci, proinde
veſtes meas eorum ſanguine reſperſi,
ita ut contaminârint totum indumentum
meum. Nam dies retributionis advenit 4
eis, & annus redemptionis inſtat. Et 5
vidente me nullum eſſe adjutorem, et conſiderante
quòd nemo fulciret; ſalvavit eos
brachium meum: furor verò meus perſtitit,
Et conculcavi eos in indignatione mea, 6
& inebriavi eos in ira mea, & ſanguinem
eorum in terram uſq; decurrere feci. Com- 7
memoravi miſericordiam Domini, & beneficia
Domini commemorabo, laudem Domini
pro omnibus quæ retribuit nobis
Dominus. Dominus judex optimus domui
Iſraelis diſponit nobis ſecundùm clementiam
ſuam & abundantiam æquitatis
ſuæ. Et dixit, An non ſunt mihi populus 8
& filii haud negaturi? & factus eſt eis
ſaluti ab omni afflictione eorum. Non 9
advocatus, neque angelus; ſed Dominus
ipſe liberavit eos; eò quòd amet illos, &
clemens ſit erga eos: ipſeque redemit eos,
ſuſcepit, & exaltavit eos omnibus ſeculi
diebus. Ipſi quidem rebellârunt, & Spiri- 10
tum ſanctum exaſperârunt; quare hoſtiliter
ad eos reverſus eſt, & ipſemet
pugnavit adverſùs eos. Sed recordatus 11
eſt dierum antiquorum, ubinam eſſet qui
eduxerat è mari paſtorem ovium ſuarum;
ubinam eſſet qui poſuerat inter eos
Spiritum ſanctum; Qui Moſen extra- 12
xerat dexterâ ſuâ et brachio gloriæ ſuæ;
aquam diffidit à facie ejus, ut compararet
ſibi nomen perpetuum; Et duxerat il- 13
los in pelago, velut equum in deſerto, neque
fatigati ſunt. Et velut jumenta per 14
ſolitudinem, nec defecerunt viribus; deſcenderat
ſpiritus à Domino, & rexerat
eos: hoc modo duxiſti populum tuum, ut
comparares tibi nomen glorioſum. Rever- 15
tere O Domine de cœlo, & reſpice ex habitatione
ſancta gloriæ tuæ. Ubi eſt zelus
tuus & potentia tua? ubi eſt abundantia
miſericordiæ & clementiæ tuæ? negligis
enim O Domine. Tu quidem pater noſter 16
es: nam Abraham non novit nos, neque
Iſrael cognovit nos; ſed tu O Domine
pater noſter es: ſalva nos, nam nomen tuum
ſuper nos eſt ab initio.

יְשַׁעְיָה : סד סה

noſtrum cor feciſti indurare ,tuis viis de Domine nos *facies* errare Quare
לָמָּה תַתְעֵנוּ יְהוָה מִדְּרָכֶיךָ תַּקְשִׁיחַ לִבֵּנוּ 17
.tuæ hæreditatis tribus ,tuos ſervos propter Convertere ? tuo timore à
מִיִּרְאָתֶךָ שׁוּב לְמַעַן עֲבָדֶיךָ שִׁבְטֵי נַחֲלָתֶךָ׃
conculcaverũt noſtri hoſtes :tuæ ſanctitatis populus poſſederunt breve Ad
לַמִּצְעָר יָרְשׁוּ עַם־קָדְשֶׁךָ צָרֵינוּ בּוֹסְסוּ 18
nec ;*eos in* es dominatus non ,ſeculo à Fuimus .*tuum ſanctuarium*
מִקְדָּשֶׁךָ׃ הָיִינוּ מֵעוֹלָם לֹא־מָשַׁלְתָּ בָּם לֹא־ 19
.eos ſuper tuum nomen eſt invocatum
נִקְרָא שִׁמְךָ עֲלֵיהֶם

CAP. LXIV. סד

.defluerent montes *tuis faciebus à* ,deſcenderes ,cœlos diſrumperes Utinam
לוּא־קָרַעְתָּ שָׁמַיִם יָרַדְתָּ מִפָּנֶיךָ הָרִים נָזֹלּוּ׃ 1
manifeſtandum ad ,*ignis bulliet aquas,liquefactionum ignem ardere Secundum*
כִּקְדֹחַ אֵשׁ הֲמָסִים מַיִם תִּבְעֶה־אֵשׁ לְהוֹדִיעַ 2
te faciendo In .formidabunt gentes *tuis faciebus* à : tuis hoſtibus tuũ nomen
שִׁמְךָ לְצָרֶיךָ מִפָּנֶיךָ גּוֹיִם יִרְגָּזוּ׃ בַּעֲשׂוֹתְךָ 3
.defluxerunt montes *tuis faciebus* à ,deſcendiſti : *expectabimus* non,terribilia
נוֹרָאוֹת לֹא נְקַוֶּה יָרַדְתָּ מִפָּנֶיךָ הָרִים נָזֹלּוּ׃
vidit non oculus :auribus perceperũt neque ,audierũt non ſeculo à Et
וּמֵעוֹלָם לֹא־שָׁמְעוּ לֹא הֶאֱזִינוּ עַיִן לֹא־רָאָתָה 4
,gaudenti Occurriſti .ipſum expectanti faciat ,te præter Deum
אֱלֹהִים זוּלָתְךָ יַעֲשֶׂה לִמְחַכֵּה־לוֹ׃ פָּגַעְתָּ אֶת־שָׂשׂ 5
,*es iratus tu* Ecce .tui recordabantur tuis viis in : juſtitiam facienti &
וְעֹשֵׂה צֶדֶק בִּדְרָכֶיךָ יִזְכְּרוּךָ הֵן־אַתָּה קָצַפְתָּ
immundus ut fuimus Et .nos ſalvabamur & ,ſeculum eis in ,*peccavimus &*
וַנֶּחֱטָא בָּהֶם עוֹלָם וְנִוָּשֵׁעַ׃ וַנְּהִי כַטָּמֵא 6
decidimus & :noſtræ juſtitiæ omnes *centonum* veſtimentum ut & ,nos omnes
כֻּלָּנוּ וּכְבֶגֶד עִדִּים כָּל־צִדְקֹתֵינוּ וַנָּבֶל
.nos abſtulerũt ventus tanquã noſtræ iniquitates &,nos omnes foliũ veluti
כֶּעָלֶה כֻּלָּנוּ וַעֲוֹנֵנוּ כָּרוּחַ יִשָּׂאֻנוּ׃
Nam .te *in* apprehendendũ ad ſe *excitans* ,*tuo nomine in invocans* non Et
וְאֵין־קוֹרֵא בְשִׁמְךָ מִתְעוֹרֵר לְהַחֲזִיק בָּךְ כִּי־ 7
.noſtrarũ iniquitatũ *manu in* nos diſſolviſti &,nobis à *tuæ facies* abſcondiſti
הִסְתַּרְתָּ פָנֶיךָ מִמֶּנּוּ וַתְּמוּגֵנוּ בְּיַד־עֲוֹנֵנוּ׃
,noſter fictor tu & , lutum nos : tu noſter pater ,Domine nunc Et
וְעַתָּה יְהוָה אָבִינוּ אָתָּה אֲנַחְנוּ הַחֹמֶר וְאַתָּה יֹצְרֵנוּ 8
, valde uſque Domine iraſcaris Ne .nos omnes tuæ manus opus &
וּמַעֲשֵׂה יָדְךָ כֻּלָּנוּ׃ אַל־תִּקְצֹף יְהוָה עַד־מְאֹד 9
tuus populus ,quæſo reſpice ,ecce :iniquitatis memineris *perpetuum* in ne &
וְאַל־לָעַד תִּזְכֹּר עָוֹן הֵן הַבֶּט־נָא עַמְּךָ
deſertum Sijon ,deſertum fuerunt tuæ ſanctitatis Civitates .nos omnes
כֻלָּנוּ׃ עָרֵי קָדְשְׁךָ הָיוּ מִדְבָּר צִיּוֹן מִדְבָּר 10
,noſtræ ſanctificationis Domus .deſolata Jeruſalaim ,fuit
הָיָתָה יְרוּשָׁלַםִ שְׁמָמָה׃ בֵּית קָדְשֵׁנוּ 11
combuſtionem in fuit ,noſtri patres te laudaverunt qua ,noſtræ gloriæ &
וְתִפְאַרְתֵּנוּ אֲשֶׁר הִלְלוּךָ אֲבֹתֵינוּ הָיָה לִשְׂרֵפַת
ſuper Nunquid .deſolationem in fuit *noſtra deſiderabilia omnia* & : ignis
אֵשׁ וְכָל־מַחֲמַדֵּינוּ הָיָה לְחָרְבָּה׃ הַעַל־ 12
? valde uſque nos affliges & , tacebis ? Domine te continebis his
אֵלֶּה תִתְאַפַּק יְהוָה תֶּחֱשֶׁה וּתְעַנֵּנוּ עַד־מְאֹד׃

CAP. LXV. סה

:me quæſierant non iis ſum inventus ;interrogaverant non iis ſum *Quæſitus*
נִדְרַשְׁתִּי לְלוֹא שָׁאָלוּ נִמְצֵאתִי לְלֹא בִקְשֻׁנִי 1
.*meo nomine in vocantem* non gentem ad ,ego ecce ,ego ecce : dixi
אָמַרְתִּי הִנֵּנִי הִנֵּנִי אֶל־גּוֹי לֹא־קֹרָא בִשְׁמִי׃

Verſio VUL. LAT.

17 Quarè errare nos feciſti, Dñe,
de viis tuis : indurâſti cor noſtrũ
ne timerem⁹ te?convertere
propter ſervos tuos,trib⁹hæreditatis
18 tuæ. Quaſi nihilũ poſſederunt
populũ ſanctũ tuum:
hoſtes noſtri conculcaverunt
19 ſanctificationẽ tuã. Facti ſum⁹
quaſi in principio,cùm nõ dominareris
noſtrî,neque invocaretur
nomen tuũ ſuper nos.

CAP. LXIV.

1 UTinam dirumperes cœlos,
& deſcẽderes:à facie tua montes
2 defluerent. Sicut exuſtio ignis
tabeſcerẽt,aquæ arderent
igni, ut notũ fieret nomen tuũ
inimicis tuis:à facie tua gentes
3 turbarentur. Cùm feceris mirabilia,
non ſuſtinebimus : deſcendiſti,
& à facie tua montes
4 defluxerunt. A ſeculo non audierunt,
neque auribus perceperunt
: ocul⁹ non vidit, Deus
abſque te, quæ præparâſti expectantib⁹
5 te. Occurriſti lætanti,
& facienti juſtitiam:in viis
tuis recordabuntur tuî:ecce tu
iratus es,& peccavim⁹:in ipſis
fuimus ſemper, & ſalvabimur.
6 Et facti ſumus ut immundus omnes
nos, & quaſi pann⁹ menſtruatæ
univerſæ juſtitiæ noſtræ:
& cecidimus quaſi folium
univerſi, & iniquitates noſtræ
quaſi ventus abſtulerunt nos.
7 Non eſt qui invocet nomen
tuũ,qui conſurgat,et teneat te:
abſcondiſti faciẽ tuam à nobis,
& alliſiſti nos in manu iniquitatis
8 noſtræ. Et nunc,Dñe, pater
noſter es tu, nos verò lutũ:
et fictor noſter tu,et opera manuum
9 tuarũ omnes nos.Ne iraſcaris
Dñe ſatis,& ne ultrà meminerius
iniquitatis noſtræ:ecce
reſpice, populus tuus omnes
10 nos.Civitas Sancti tui facta eſt
deſerta, Sion deſerta facta eſt,
11 Jeruſalẽ deſolata eſt.Dom⁹ſanctificationis
noſtræ, & gloriæ
noſtræ,ubi laudaverũt te patres
noſtri, facta eſt in exuſtionẽ ignis,
et omnia deſiderabilia noſtra
12 verſa ſunt in ruinas. Numquid
ſuꝑ his continebis te,Domine,
tacebis, & affliges nos
vehementer?

CAP. LXV.

1 QUæſierũt me qui antè non
interrogabant, invenerũt qui
non quæſierunt me:dixi ; Ecce
ego, ecce ego ad Gentem, quæ
non invocabat nomen meum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

17 Τί ἐπλάνησας ἡμᾶς κύριε ἀπὸ τῆς ὁδοῦ σου; ἐσκλήρωσας (τ)τὰς καρδίας ἡμῶν, τοῦ μὴ φοβεῖσθαί σε; ἐπίστρεψον διὰ τοὺς δούλους σου,
18 διὰ τὰς φυλὰς τῆς κληρονομίας σου, Ἵνα μικρὸν κληρονομήσωμεν τοῦ ὄρους τοῦ ἁγίου (υ)σου.
19 Ἐγενόμεθα ὡς τὸ ἀπ' ἀρχῆς ὅτε οὐκ ἦρξας ἡμῶν, οὐδὲ (φ) ἐκλήθη τὸ ὄνομά σου ἐφ' ἡμᾶς.

MS. A. (τ) ἡμῶν τὰς καρδίας, (υ) σου· οἱ ὑπεναντίοι ἡμῶν κατεπάτησαν τὸ ἁγίασμά σου. Ἐγενόμεθα ὡς τὸ ἀπ' ἀρχῆς (φ) ἐπεκλήθη

ΚΕΦ. ξδ'.

1 ἘΑν ἀνοίξῃς τὸν οὐρανόν, τρόμος λήψεται
2 ἀπὸ σοῦ ὄρη, καὶ τακήσονται, Ὡς κηρὸς ἀπὸ
προσώπου πυρὸς τήκεται, καὶ κατακαύσει πῦρ
τοὺς ὑπεναντίους, καὶ φανερὸν ἔσται τὸ (α)ὄνομά
σου ἐν τοῖς ὑπεναντίοις. ἀπὸ προσώπου
3 σου ἔθνη ταραχθήσονται, Ὅταν ποιῇς τὰ ἔνδοξα·
4 τρόμος λήψεται ἀπὸ σοῦ ὄρη. Ἀπὸ
τοῦ αἰῶνος οὐκ ἠκούσαμεν, οὐδὲ οἱ ὀφθαλμοὶ ἡμῶν
εἶδον θεὸν πλήν σου, καὶ τὰ ἔργα σου, ἃ
5 ποιήσεις τοῖς ὑπομένουσιν ἔλεον. Συναντήσεται
γὰρ τοῖς ποιοῦσι τὸ δίκαιον, καὶ τῶν ὁδῶν σου
μνησθήσονται. ἰδοὺ σὺ ὠργίσθης, καὶ ἡμεῖς ἡμάρτομεν·
6 διὰ τοῦτο ἐπλανήθημεν, Καὶ ἐγενήθημεν
ὡς ἀκάθαρτοι πάντες ἡμεῖς, ὡς ῥάκος
ἀποκαθημένης πᾶσα ἡ δικαιοσύνη ἡμῶν· καὶ
(β) ἐξεῤῥύημεν ὡς φύλλα διὰ τὰς ἀνομίας
7 ἡμῶν· οὕτως ἄνεμος οἴσει ἡμᾶς. Καὶ οὐκ ἔστιν
ὁ ἐπικαλούμενος τὸ ὄνομά σου, καὶ ὁ μνησθεὶς
ἀντιλαβέσθαι σου· ὅτι ἀπέστρεψας τὸ πρόσωπόν
σου ἀφ' ἡμῶν, καὶ παρέδωκας ἡμᾶς διὰ
8 τὰς ἁμαρτίας ἡμῶν. Καὶ νῦν κύριε πατὴρ ἡμῶν
σύ, ἡμεῖς δὲ πηλός, (γ)ἔργα τῶν χειρῶν
9 σου πάντες. Μὴ ὀργίζου ἡμῖν σφόδρα, καὶ
μὴ ἐν καιρῷ μνησθῇς ἁμαρτιῶν ἡμῶν· καὶ
νῦν ἐπίβλεψον, ὅτι λαός σου πάντες ἡμεῖς.
10 Πόλις τοῦ ἁγίου σου ἐγενήθη ἔρημος, Σιὼν
ὡς ἔρημος ἐγενήθη, Ἱερουσαλὴμ εἰς κατάραν.
11 Ὁ οἶκος τὸ ἅγιον ἡμῶν, καὶ ἡ δόξα
ἣν (δ)εὐλόγησαν οἱ πατέρες ἡμῶν, ἐγενήθη
πυρίκαυστος, καὶ πάντα (ε) ἔνδοξα ἡμῶν
12 συνέπεσε. Καὶ ἐπὶ πᾶσι τούτοις ἀνέσχου
κύριε, καὶ ἐσιώπησας, καὶ ἐταπείνωσας ἡμᾶς
σφόδρα.

MS. A. (α) ὄνομα κυρίου (β) ἐξερρύημεν (γ) ἔργον (δ) ηὐλόγησαν (ε) τὰ ἔνδοξα συνέπεσεν.

ΚΕΦ. ξε'.

1 ἘΜφανὴς (α) ἐγενήθην τοῖς ἐμὲ μὴ (β) ἐπερωτῶσιν, εὑρέθην τοῖς ἐμὲ μὴ (γ) ζητοῦσιν. εἶπα, Ἰδού εἰμι τῷ ἔθνει, (δ)οἳ οὐκ ἐκάλεσάν μου τὸ ὄνομα.

MS. A. (α) ἐγενόμην (β) ζητοῦσιν, (γ) ἐπερωτῶσιν. (δ) οἵτινες οὐκ ἐκάλεσε τὸ ὄνομά μου.

Quarè ſeduxiſti nos,Domine,de 17
via tua? indurâſti corda noſtra,
ne timeremus te? Convertere
propter ſervos tuos, propter tribus
hæreditatis tuæ:ut modicum poſſideamus 18
montis ſancti (m)tui. Facti 19
ſumus,quaſi à principio; cùm
non dominareris noſtrî, neque invocatum
eſſet nomen tuum ſuper
nos.

CAP. LXIV.

SI aperueris cœlum; tremor 1
apprehendet ex te montes: & liqueſcent,
Sicut cera à facie ignis 2
liqueſcit; & comburet ignis adverſarios:
& manifeſtum erit nomen
tuum in adverſariis. A facie
tua gentes turbabuntur; Cùm feceris 3
glorioſa: tremor apprehendet
ex te montes. A ſeculo non 4
audivimus: neque oculi noſtri viderunt
Deum præter te, & opera
tua,quæ facies expectantibus miſericordiam.
Occurret enim facientibus 5
juſtitiam: & viarum tuarum
recordabuntur. Ecce tu iratus
es: & nos peccavimus. Idcircò
erravimus, Et facti ſumus 6
quaſi immundi, omnes nos: ut
pannus (a)ſedentis, omnis juſtitia
noſtra: & defluximus quaſi
folia propter iniquitates noſtras:
Sic ventus auferet nos. Et non 7
eſt qui invocet nomen tuum, &
qui recordatus apprehendat te.
Quoniam avertiſti faciem tuam
à nobis: & tradidiſti nos propter
peccata noſtra. Et nunc, Domine, 8
pater noſter tu: nos autem
lutum: opera manuum tuarum
omnes: Ne iraſcaris nobis nimis: 9
& ne in tempore memineris peccatorum
noſtrorum. Et nunc reſpice;
quoniam populus tuus omnes
nos: Civitas Sancti tui facta eſt 10
deſerta: Sion quaſi ſolitudo facta
eſt:Hieruſalem in maledictionem:
Domus ſanctuarium noſtrum, & 11
gloria,cui benedixerunt patres noſtri,
facta eſt igni combuſta: & omnia
glorioſa noſtra conciderunt.
Et ſuper omnibus his ſuſtinuiſti, 12
Domine,& tacuiſti,& humiliâſti
nos valdè.

CAP. LXV.

MAnifeſtus factus ſum non 1
(a)interrogantibus me: inventus
ſum ab his,qui me non quærebant.
Dixi, Ecce ego genti,qui non vocaverunt
nomen meum.

תַּרְגּוּם יוֹנָתָן Targum JONATHAN.

לְמָה תְּרַחֲקִנַּנָא יְיָ לְמִטְעֵי מֵאָרְחָן דְּתַקְנָן קֳדָמָךְ כְּעַמְמַיָּא דְּלֵית לְהוֹן חוּלָק בְּאוּלְפַן 17
אוֹרַיְתָךְ לָא יִתְפְּנֵי לִבָּנָא מִדַּחַלְתָּךְ אֲתֵיב שְׁכִנְתָּךְ לְעַמָּךְ בְּדִיל עַבְדָּךְ צַדִּיקַיָּא דְּקַיֵּמְתָּא
לְהוֹן בְּמֵימְרָךְ לְמֶעְבַּד בֵּינֵיהוֹן שִׁבְטֵי אַחְסַנְתָּךְ׃ בִּזְעֵיר דְּיָרִיתוּ עַמָּא דְּקוּדְשָׁךְ בַּעֲלֵי 18
דְּבָבָנָא דּוּשִׁישׁוּ מַקְדְּשָׁךְ׃ הָא אֲנַחְנָא עַמָּךְ דְּמִן עָלְמָא לָא לְעַמְמַיָּא יְהַבְתְּ אוּלְפַן אוֹרַיְתָךְ 19
לָא אִתְקְרֵי שְׁמָךְ עֲלֵיהוֹן לָא לְהוֹן אַרְכֵינְתָּא שְׁמַיָּא אִתְגְּלֵיתָא מִן קֳדָמָךְ טוּרַיָּא זָעוּ׃

סד

כַּד שְׁלַחְתָּא רוּגְזָךְ כְּאִשָּׁתָא בְּיוֹמֵי אֵלִיָּהוּ אִתְמְסִיאַ יַמָּא מַיָּא מְלַחֲכָא אִשָּׁתָא לְהוֹדָעָא 1
שְׁמָךְ לְסָנְאֵי עַמָּךְ מִן קֳדָמָךְ עַמְמַיָּא זָעוּ׃ בְּמַעְבְּדָךְ פְּרִישָׁן לָא סַבַּרְנָא לְהוֹן אִתְגְּלֵיתָא מִן 2
קֳדָמָךְ טוּרַיָּא זָעוּ׃ וּמֵעָלְמָא לָא שְׁמַעַת אוּדֶן קָל גְּבוּרָן לָא אֲצֵיתַת לְמִלּוּל זִיעַ עַיִן לָא חֲזָת 3
מָא דַחֲזוֹ עַמָּךְ שְׁכִינַת יְקָרָךְ יְיָ אֲרֵי לֵית בַּר מִנָּךְ דְּאַתְּ עָתִיד לְמֶעְבַּד לְעַמָּךְ צַדִּיקַיָּא דְּמִן
עָלְמָא דִּמְסַבְּרִין לְפוּרְקָנָךְ׃ מִתְעַרְעִין קֳדָמָךְ עוֹבָדֵי אֲבָהָתָנָא צַדִּיקַיָּא דַּחֲדִיאוּ לְמֶעְבַּד 4
רְעוּתָךְ בִּקְשׁוֹט וּבִזְכוּ בְּאוֹרַח טוּבָךְ וְרַחֲמָךְ הֲווֹ דְּכִירִין לְדַחַלְתָּךְ הָא בְּכָל עִדָּן דַּהֲוָה רְגַז
מִן קֳדָמָךְ עֲלָנָא עַל דְּחַבְנָא בְּהוֹן בְּעוֹבָדֵי אֲבָהָתָנָא צַדִּיקַיָּא דְּמִן עָלְמָא אֲנַחְנָא מִתְפָּרְקִין׃
וַהֲוֵינָא כִּמְסָאַב כּוּלָּנָא וְכִלְבוּשׁ מְרַחַק כָּל זַכְוָתָנָא וְנַתְרְנָא כְּמִתַּר טְרַף כּוּלָּנָא וּבְחוֹבָנָא 5
כְּרוּחָא אִתְנְטֵלְנָא׃ וְלֵית דִּמְצַלֵּי בִּשְׁמָךְ מִתְרְעֵי לְאִתְקָפָא בְּדַחַלְתָּךְ אֲרֵי סַלֵּקְתָּא אַפֵּי 6
שְׁכִנְתָּךְ מִנָּנָא וּמְסַרְתָּנָא בְּיַד חוֹבָנָא׃ וְאַתְּ יְיָ רַחֲמָךְ עֲלָנָא סַגִּיאִין כְּאַב עַל בְּנִין אֲנַחְנָא 7
טִינָא וְאַתְּ בְּרֵיתָנָא וְעוֹבַד גְּבוּרְתָּךְ כּוּלָּנָא׃ לָא יְהֵי רְגַז מִן קֳדָמָךְ יְיָ בְּנָא עַד לַחֲדָא וְלָא 8
לְעָלְמָא תִּדְכַּר חוֹבִין הָא גְּלֵי קֳדָמָךְ דְּעַמָּךְ אֲנַחְנָא כּוּלָּנָא׃ קִרְוֵי קֻדְשָׁךְ הֲוָאָה מַדְבְּרָא 9
צִיּוֹן מַדְבְּרָא הֲוָת וִירוּשְׁלֶם צַדְיָא׃ בֵּית קֻדְשָׁנָא וְתוּשְׁבַּחְתָּנָא אֲתַר דִּפְלַחוּ קֳדָמָךְ 10
אֲבָהָתָנָא הֲוָה לִיקֵידַת נוּר וְכָל בֵּית רַגְנְגָנָא הֲוָה לְחָרְבָּה׃ הַעַל אִלֵּין תִּתְחַסַּן יְיָ וְאַתְּ יָהֵיב 11
אַרְכָּא לְרַשִׁיעַיָּא דִּמְשַׁעְבְּדִין בְּנָא עַד עָלְמָא׃

סה

אִשְׁתְּאֵלִית בְּמֵימְרִי לִדְלָא שְׁאִילוּ מִן קֳדָמַי תְּבַעִית אוּלְפַן אוֹרַיְתִי לִדְלָא תְּבַעוּ דַחַלְתִּי 1
אֲמָרִית הָא אֲנָא מִשְׁתְּאֵיל תְּדִירָא כָּל יוֹמָא לְעַם דְּלָא מְצַלֵּי בִשְׁמִי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quare abjeciſti nos Dñe ut aberrem⁹ de viis quæ rectæ ſunt corã te, *ſicut* 17
populi qui non habent partẽ *in doctrina* Legis *tuæ*? ne avertatur cor noſtrũ
à timore tui : converte majeſtatẽ tuã ad populũ tuũ propter ſervos tuos
juſtos; quib⁹ jurâſti in verbo tuo,te facturũ inter eos trib⁹ hæreditatis tuæ.
Ad modicũ poſſederunt popul⁹ ſanct⁹ tuus : inimici noſtri conculcaverunt 18
ſanctuariũ tuũ. Ecce nos popul⁹ tu⁹ à ſeculo ſum⁹:non enim populis dediſti 19
diſciplinã Legis tuæ, neq; invocatũ eſt ſuꝑ eos nomẽ tuũ.Non enim propter
eos inclinâſti cœlos & revelat⁹ es : à facie tua montes contremuerũt.

CAP. LXIV.

CUm miſiſti irã tuã ſicut ignẽ *in dieb⁹ Eliæ*, liquefactum eſt mare,aquas 1
lambuit ignis,ut notũ faceres nomen tuũ inimicis populi tui. A facie tua
populi contremuerunt.Cum faceres mirabilia,non expectavim⁹ ea,revelat⁹ 2
es; à facie tua montes contremuerunt. Et à ſeculo non audivit auris vocem 3
fortiũ factorũ, neq; auſcultavit eloquiũ tremoris:neq; ocul⁹ vidit ꝙ viderũt
populi tui,majeſtatẽ gloriæ tuæ,Dñe; quia null⁹ eſt abſq; te;ꝙ factur⁹ es
juſtis populi tui qui à ſeculo ſunt,qui expectãt ſalutẽ tuã.*Obverſantur* corã 4
te opera patrũ noſtrorũ juſtorũ, qui lætati ſunt ut facerent voluntatẽ tuã
in veritate & juſtitia: in ſemita bonitatis *tuæ* & miſerationũ tuarũ, recordati
ſunt timoris tui in omni tempore quo fuit ira à facie tua ſuꝑ nos, eò
ꝙ peccavim⁹ in ipſis: & propter opera patrũ noſtrorũ juſtorũ qui à ſeculo
ſunt,nos ſum⁹ ſalvi. Et facti ſum⁹,ut immund⁹,oẽs nos,& ſicut veſtimentum 5
abjectũ, oẽs juſtitiæ noſtræ:& defluim⁹, ſicut defluit foliũ, oẽs nos,&
propter peccata noſtra quaſi vent⁹ ſublati ſum⁹.Non eſt qui oret in nomine 6
tuo, volens apprehendere timorẽ tui : quia tuliſti faciẽ majeſtatis tuæ à
nobis,& tradidiſti nos in manũ peccatorũ noſtrorũ.Et *tu* Dñe,tam multæ 7
ſunt miſerationes tuæ in nos,quã patris in filios:nos ſum⁹ lutũ,tu verò nos
condidiſti :& op⁹ potentiæ tuæ ſum⁹ oẽs nos.Ne iraſcaris in nos Dñe ſupra 8
modũ,neque perpetuò recorderis delictorũ: en tibi apertũ eſt nos oẽs populũ
tuũ eſſe. Civitates ſanctitatis tuæ factæ ſunt in deſertũ : Sion in deſertum 9
redacta eſt;& Jeruſalẽ deſolata eſt. Dom⁹ ſanctuarii noſtri & laudabilia 10
noſtra,&loc⁹ in quo ſerviverũt corã te patres noſtri,facta ſunt in incendiũ
ignis; & omnis domus noſtra deſiderabilis facta eſt in deſolationem.
Nunquid ſuper his confortaberis Domine? Tu enim das terminum impiis, 11
qui ſubjiciunt nos uſque *in ſeculum*.

CAP. LXV.

INterrogat⁹ ſum in verbo meo ab iis qui antè non interrogabant à facie 1
mea: quæſivi doctrinam Legis *meæ* ab iis qui antè non quærebant timorẽ mei. Dixi, Ecce ego interrogat⁹ ſum ſemꝑ tota die à populo,qui non orabat in nomine meo.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

17 * ܠܡܢܐ ܐܛܥܝܬܢ. ܡܪܝܐ.. ܡܢ ܐܘܪܚܟ. ܘܩܫܝܬ ܠܒܢ ܡܢ ܕܚܠܬܟ. ܐܬܦܢܐ ܡܛܠ
18 ܥܒܕܝܟ ܫܒܛܐ ܕܝܪܬܘܬܟ. * ܩܠܝܠ ܝܪܬܘ ܥܡܐ ܕܩܘܕܫܟ. ܒܥܠܕܒܒܝܢ. ܕܫܘ ܡܩܕܫܟ.
19 * ܗܘܝܢ ܡܢ ܥܠܡ. ܕܠܐ ܐܫܬܠܛܬ ܒܗܘܢ .. ܘܠܐ ܐܬܩܪܝ ܫܡܟ ܥܠܝܗܘܢ.
* ܩܦܠܐܘܢ. * ܣܕ *
1 * ܠܐ ܦܬܚܬ ܫܡܝܐ ܘܢܚܬܬ .. ܘܡܢ ܩܕܡܝܟ .. ܛܘܪ̈ܐ ܢܬܬܙܝܥܘܢ ..
2 ܘܐܬܦܫܪܘ. ܐܝܟ ܕܡܬܦܫܪܐ ܫܥܘܬܐ ܡܢ ܩܕܡ ܢܘܪܐ. * ܘܬܐܟܘܠ ܢܘܪܐ ܠܒܥܠܕܒܒܝܟ. ܘܢܬܝܕܥ
3 ܫܡܟ ܠܒܥܠܕܒܒܝܟ. ܘܢܬܕܠܚܘܢ ܥܡܡܐ ܡܢ ܩܕܡܝܟ. * ܟܕ ܥܒܕܬ ܕܚܝܠܬܐ ܕܠܐ ܣܟܝܢ
4 ܠܟ .. ܢܚܬܬ. ܘܡܢ ܩܕܡܝܟ ܙܥܘ ܛܘܪ̈ܐ. * ܡܢ ܥܠܡ ܠܐ ܫܡܥܘ ܘܠܐ ܐܨܬܘܬܘ. ܘܥܝܢܐ ܠܐ ܚܙܬ
5 ܐܠܗܐ ܠܒܪ ܡܢܟ. ܕܥܒܕܬ ܐܝܬ ܠܐܝܠܝܢ ܕܡܣܟܝܢ ܠܟ. * ܘܦܓܥܬ ܐܝܬ ܒܒܘܣܡܐ ܠܐܝܠܝܢ ܕܥܒܕܝܢ
ܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܒܐܘܪܚܬܟ ܢܬܕܟܪܘܢܟ. ܗܐ ܐܢܬ ܪܓܙܬ. ܘܚܛܝܢ ܒܗܝܢ ܠܥܠܡ.
6 ܢܬܦܪܩ. * ܘܗܘܝܢ ܐܝܟ ܛܡܐܐ ܟܠܢ. ܘܐܝܟ ܐܘܡܢܬܐ ܕܕܫܬܢܝܬܐ. ܟܠܗ ܙܕܝܩܘܬܢ.
7 ܘܢܦܠܢ ܐܝܟ ܛܪܦܐ ܟܠܢ. ܘܐܝܟ ܥܠܥܠܐ ܢܫܩܘܢ ܚܛܗܝܢ. * ܘܠܝܬ ܕܩܪܐ ܒܫܡܟ. ܘܕܥܗܕ
8 ܠܡܬܚܝܠܘ ܒܟ. ܡܛܠ ܕܐܗܦܟܬ ܐܦܝܟ ܡܢܢ .. ܘܐܫܠܡܬܢ ܒܐܝܕ ܚܛܗܝܢ. * ܘܗܫܐ
9 ܡܪܝܐ. ܐܒܘܢ ܐܢܬ. ܚܢܢ ܛܝܢܐ. ܘܐܢܬ ܓܒܘܠܢ. ܘܥܒܕ ܐܝܕܝܟ ܚܢܢ. ܟܠܢ. * ܠܐ ܬܪܓܙ
10 ܡܪܝܐ.. ܥܕ ܠܥܠܡ. ܘܠܐ ܬܬܕܟܪ ܠܥܠܡ ܚܛܗܝܢ. ܚܘܪ ܕܥܡܟ ܚܢܢ. ܟܠܢ. * ܩܘܪܝܐ
11 ܕܩܘܕܫܟ. ܗܘܝ ܡܕܒܪܐ. ܘܨܗܝܘܢ ܗܘܬ ܡܕܒܪܐ. ܘܐܘܪܫܠܡ ܚܪܒܬܐ. * ܒܝܬ ܩܘܕܫܢ
ܘܬܫܒܘܚܬܢ. ܕܫܒܚܘܟ ܐܒܗܝܢ .. ܗܘܐ ܝܩܝܕܐ ܕܢܘܪܐ. ܘܟܠܗ ܪܓܝܓܬܢ. ܗܘܬ ܠܚܘܪܒܐ.
12 * ܥܠ ܗܠܝܢ ܐܬܚܣܢܬ ܡܪܝܐ. ܘܫܬܩܬ ܘܡܟܟܬܢ ܛܒ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܣܗ *
1 * ܐܬܚܙܝܬ ܠܐܝܠܝܢ ܕܠܐ ܫܐܠܘܢܝ. ܘܐܫܬܟܚܬ ܠܐܝܠܝܢ ܕܠܐ ܒܥܘܢܝ. ܐܡܪܬ ܗܐ
ܐܢܐ. ܗܐ ܐܢܐ. ܠܥܡܐ ܕܠܐ ܩܪܐ ܫܡܝ.

Cur abduxiſti nos Domine à via tua,& indurâſti 17
cor noſtrum quò minùs timeremus te ?
convertere propter ſervos tuos,tribũ hæreditatis
tuæ.Parũ poſſidet populꝰ ſanctitatis tuæ. 18
Oppreſſores noſtri conculcaverunt ſanctuariũ
tuum. Jam olim eramus antequam dominareris 19
in eos : & nomen tuum non eſt invocatum
ſuper eos.

CAP. LXIV.

ANnon cœlos aperires ac deſcenderes ? à 1
conſpectu tuo contremiſcerent montes,& liquefierent
quemadmodũ liquefit cera à conſpectu
ignis?Combureret ignis inimicos tuos? 2
& notũ fieret nomen tuũ hoſtibꝰ tuis ?& conturbarentur
gentes à conſpectu tuo? Quando 3
feciſti terribilia quæ non expectabamꝰ à te,deſcendiſti
; & à conſpectu tuo contremuerunt
montes. A ſeculo non audierunt,nec auribus 4
perceperũt,nec oculꝰ vidit Deũ præter te,qui
bene facis iis qui te expectant, Et cum delitiis 5
occurris iis qui faciunt juſtitiã, *quique* in viis
tuis tui ſunt memores : ecce te irato peccavimus
in eas in perpetuũ. *At* liberemur. Quia 6
facti ſumus ut immundi omnes,& ut panniculus
menſtruatæ omnis juſtitia noſtra:defluximꝰ
omnes ut folia, & turbinis inſtar abripuerunt
nos peccata noſtra:Nec eſt qui invocet nomen 7
tuũ,aut qui recordetur tibi firmiter confidere;
quoniã avertiſti faciẽ tuam à nobis, & tradidiſti
nos in manũ peccatorũ noſtrorum. Jam 8
verò Domine,pater noſter tu es;nos argilla,tu
verò plaſtes noſter,& opus manuũ tuarum ſumus
omnes.Ne plurimũ iraſcaris Dñe in perpetuũ, 9
neque memineris in perpetuũ peccatorum
noſtrorum:vide ꝙ populus tuus ſumꝰ omnes.
Civitates ſanctitatis tuæ redactæ ſunt 10
in deſertum,& Sion redacta eſt in ſolitudinẽ,
& Jeruſalem in ruinã. Sanctuarium noſtrũ et 11
laus noſtra quâ te laudaverunt patres noſtri,
igne conflagravit, & omnes delitiæ noſtræ
verſæ ſunt in ſolitudinẽ. Hæc paſſus es Domine, 12
et tacuiſti,et nos vehementer humiliâſti,

CAP. LXV.

QUæſitus ſum ab iis qui me non requirebant, 1
& inventus ſum ab iis qui me non quærebant
: Ecce me, ecce me, dixi populo qui
non invocabat nomen meum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

17 * لِمَاذَا أَضْلَلْتَنَا يَا رَبُّ عَنْ طَرِيقِكَ * وَقَسَّيْتَ قُلُوبَنَا أَلَّا نَخَافَكَ * اِرْجِعْ لِأَجْلِ عَبِيدِكَ وَلِأَجْلِ
18 19 قَبَائِلِ مِيرَاثِكَ * لِكَيْ نَرِثَ قَلِيلًا مِنْ جَبَلِكَ ٱلْمُقَدَّسِ * مُعَانِدُونَا دَاسُوا قُدْسَكَ * وَصِرْنَا كَمَا كُنَّا
مُنْذُ ٱلْبَدْءِ * لِمَا لَمْ تَرُسْ عَلَيْنَا وَلَا دُعِيَ ٱسْمُكَ عَلَيْنَا * * ٱلْفَصْلُ ٱلرَّابِعُ وَٱلسِّتُّونَ *
1 2 * إِنْ فَتَحْتَ ٱلسَّمَاءَ تَأْخُذُ ٱلْجِبَالَ مِنْكَ ٱلرِّعْدَةُ * وَيَذُوبُونَ كَمَا يَذُوبُ ٱلشَّمْعُ مِنْ وَجْهِ ٱلنَّارِ * وَتُحْرِقُ
3 ٱلنَّارُ مُعَانِدِيكَ * وَيَصِيرُ ٱسْمُكَ ظَاهِرًا لِمُعَانِدِيكَ * مِنْ وَجْهِكَ يَضْطَرِبُونَ ٱلْأُمَمُ * إِذَا صَنَعْتَ
4 عَجِيبَاتٍ تَأْخُذُ ٱلْجِبَالَ مِنْكَ ٱلرِّعْدَةُ * مُنْذُ ٱلدَّهْرِ مَا سَمِعْنَا وَلَا رَأَتْ أَعْيُنُنَا إِلَهًا سِوَاكَ * وَأَعْمَالُكَ
5 حَقِيقَةٌ * وَتَصْنَعُ ٱلرَّحْمَةَ بِٱلصَّابِرِينَ لَكَ * لِأَنَّ ٱلَّذِينَ يَعْمَلُونَ ٱلْعَدْلَ تَلْتَقِيهِمْ رَحْمَتُكَ
6 وَيَذْكُرُونَ طُرُقَكَ * هَا أَنْتَ سَخِطْتَ وَنَحْنُ أَخْطَأْنَا * لِأَجْلِ هٰذَا ضَلَلْنَا * وَصِرْنَا مِثْلَ ٱلْأَنْجَاسِ نَحْنُ
بِأَجْمَعِنَا * وَكُلُّ عَدْلِنَا مِثْلُ خِرْقَةِ ٱلطَّامِثِ * وَٱنْتَثَرْنَا نَحْنُ بِأَجْمَعِنَا مِثْلَ ٱلْوَرَقِ لِأَجْلِ آثَامِنَا *
7 هٰكَذَا ٱلرِّيحُ يَحْمِلُنَا * وَلَيْسَ مَنْ يَدْعُو بِٱسْمِكَ وَلَا يَذْكُرُ مُعَاضَدَتَكَ لَنَا * لِأَنَّكَ صَرَفْتَ
8 وَجْهَكَ عَنَّا وَأَسْلَمْتَنَا لِأَجْلِ خَطَايَانَا * وَٱلْآنَ يَا رَبُّ أَنْتَ هُوَ أَبُونَا * وَنَحْنُ طِينٌ وَأَنْتَ جَابِلُنَا *
9 وَنَحْنُ بِأَجْمَعِنَا أَعْمَالُ يَدَيْكَ * لَا تَزْجُرْ عَلَيْنَا يَا رَبُّ إِلَى ٱلْغَايَةِ * وَلَا تَذْكُرْ خَطَايَانَا فِي وَقْتِهَا * لَكِنِ
10 اُنْظُرْ يَا رَبُّ لِأَنَّنَا نَحْنُ بِأَجْمَعِنَا شَعْبُكَ مَدِينَةُ قُدْسِكَ * صَارَتْ صِهْيُونُ قَفْرَاءَ مِثْلَ ٱلْبَرِّيَّةِ * صَارَتْ
11 أُيُرُوسَلِيمُ لَعْنَةً * بَيْتُ قُدْسِنَا وَمَجْدُنَا ٱلَّذِي بَارَكَهُ آبَاؤُنَا صَارَ مُحْتَرِقًا بِٱلنَّارِ * وَكُلُّ ٱلْمَجِيدِ
12 سَقَطَ * وَفِي هٰذِهِ كُلِّهَا تُغْضِي يَا رَبُّ * وَسَكَتَّ وَأَذْلَلْتَنَا جِدًّا *

* ٱلْفَصْلُ ٱلْخَامِسُ وَٱلسِّتُّونَ * * ٱلْإِصْحَاحُ ٱلثَّلَاثُونَ *

* نُبُوَّةٌ فِي إِنْفَاءِ شَعْبِهِ * وَٱتِّخَاذِ ٱللهِ ٱلشُّعُوبَ بَدَلَهُمْ وَٱخْتِيَارِهِمْ لَمَّا أُخْرِجُوا * وَحُلُولِ ٱلشُّعُوبِ بَدَلَهُمْ *
1 * صِرْتُ ظَاهِرًا لِلَّذِينَ لَمْ يَطْلُبُونِي * وَوُجِدْتُ لِلَّذِينَ لَمْ يَسْأَلُوا عَنِّي * قُلْتُ لِلْأُمَمِ هَا أَنَا أَيُّهَا
ٱلْقَوْمُ ٱلَّذِينَ لَمْ يَدْعُوا بِٱسْمِي *

Cur nos aberrare ſineres O Domine à via 17
tua,& obdurares corda noſtra ne timeamus
te?revertere propter ſervos tuos,&
propter tribꝰ hæreditatis tuæ ; ut vel exiguã 18
partem generationis tuæ ſanctæ poſſideas.
Adverſarii noſtri conculcaverunt
ſanctuarium tuum ; Et redacti ſumus in 19
priſtinum ſtatũ :eò quòd non domineris in
nos,neq; invocetur nomen tuum ſuper nos.

CAP. LXIV.

SI cœlum aperires,montes propter te tremor 1
occuparet , & liqueſcerent quemadmodum
liqueſcit cera à facie ignis; Adureret 2
ignis adverſarios tuos, fieretque nomen
tuum notum inimicis tuis;à facie tua
conturbarentur populi ; Glorioſâ te præſtante, 3
montes propter te tremor occuparet.
Inde à ſeculo non audivimus, neque viderunt 4
oculi noſtri Deum præter te; quippe
opera tua certiſſima ſunt , & miſericordiam
exerces in expectantes te. Iis 5
enim qui faciunt juſtitiam,occurrit miſericordia
tua , & memores ſunt viarum
tuarum: ecce tu iratus es,& nos peccavimus
; iccirco aberravimus, Et facti ſumus 6
velut immundi nos omnes,& omnis
juſtitia noſtra tanquam panniculus menſtruæ
patientis : & effluximus nos omnes
ut folia,propter iniquitates noſtras. Ideo
aſportat nos ventus, Nec eſt qui invocet 7
nomen tuum, neque recordatur auxilii tui
erga nos : quoniam avertiſti faciem tuam
à nobis, & tradidiſti nos propter peccata
noſtra : At nunc O Domine, tu pater noſter 8
es, nos lutum,& tu fictor noſter,&
nos omnes opera manuum tuarum. Ne 9
ſuccenſeas nobis O Domine in finem uſq;,
neq; recorderis peccatorum noſtrorum in
tempore eorum : ſed conſidera O Domine
quòd nos omnes populꝰ tuus ſumus,urbs
ſanctitatis tuæ. Facta eſt Sion ſolitaria 10
ceu deſertum, facta eſt Jeruſalem maledictio.
Domꝰ ſanctitatis & gloriæ noſtræ, 11
cui benedixerunt patres noſtri , ſuccenſa
eſt igni, & omnis ſplendor decidit. Et in 12
his omnibus connives O Domine, ſiluiſti,
& nos quamplurimùm depreſſiſti.

CAP. LXV.

Textus trigeſimus.

Prophetia de expulſione populi ſui,& *quomodo* adoptaverit Deus Gentes pro eis, & elegerit eas illis ejectis, & ſubierint Gentes loco illorum.

FActus ſum conſpicuus iis qui me non 1
quærebant,& inventus ſum ab iis qui de me non interrogabant : dixi populis, Ecce me O gens quæ non invocabas nomen meum.

יְשַׁעְיָה׃ סה

viã ambulantes ,contumacem populũ ad die tota meas man⁹ Expandi
2 פֵּרַשְׂתִּי יָדַי כָּל־הַיּוֹם אֶל־עַם סוֹרֵר הַהֹלְכִים הַדֶּרֶךְ
ſuper me irritantes Populum .ſuas cogitationes poſt ,bona non
3 לֹא־טוֹב אַחַר מַחְשְׁבֹתֵיהֶם׃ הָעָם הַמַּכְעִיסִים אוֹתִי עַל־
.lateres ſuper adolentes & ,hortis in ſacrificantes : ſemper meis faciebus
פָּנַי תָּמִיד זֹבְחִים בַּגַּנּוֹת וּמְקַטְּרִים עַל־הַלְּבֵנִים׃
carnem comedentes : pernoctabunt monumentis in & ,ſepulchris in Manentes
4 הַיֹּשְׁבִים בַּקְּבָרִים וּבַנְּצוּרִים יָלִינוּ הָאֹכְלִים בְּשַׂר
Accede : Dicentes .eorum vaſis prophanatorum jus & , porci
5 הַחֲזִיר וּפְרַק פִּגֻּלִים כְּלֵיהֶם׃ הָאֹמְרִים קְרַב
fumus Iſti .te ſanctificavi quia , me in appropinques ne , te ad
אֵלֶיךָ אַל־תִּגַּשׁ־בִּי כִּי קְדַשְׁתִּיךָ אֵלֶּה עָשָׁן
: meis faciei ad ſcriptum Ecce .die tota ardens ignis , meo naſo in
6 בְּאַפִּי אֵשׁ יֹקֶדֶת כָּל־הַיּוֹם׃ הִנֵּה כְתוּבָה לְפָנָי
.eorum ſinu in reddam & , reddam quinimò , tacebo non
לֹא אֶחֱשֶׁה כִּי־אִם־שִׁלַּמְתִּי וְשִׁלַּמְתִּי עַל־חֵיקָם׃
dixit , ſimul veſtrorum patrum iniquitates & ,veſtras Iniquitates
7 עֲוֺנֹתֵיכֶם וַעֲוֺנֹת אֲבוֹתֵיכֶם יַחְדָּו אָמַר
colles ſuper & , montes ſuper ſuffiverunt qui : DOMINUS
יְהוָה אֲשֶׁר קִטְּרוּ עַל־הֶהָרִים וְעַל־הַגְּבָעוֹת
.eorũ ſinum in primium eorum opus remetiar & : me affecerunt probris
חֵרְפוּנִי וּמַדֹּתִי פְעֻלָּתָם רִאשֹׁנָה עַל־חֵיקָם׃
, botro in muſtum invenitur cùm Sicut : Dominus dixit Sic
8 כֹּה אָמַר יְהוָה כַּאֲשֶׁר יִמָּצֵא הַתִּירוֹשׁ בָּאֶשְׁכּוֹל
propter faciam ſic : illo in benedictio quoniã,illud corrumpas Ne ,dixit &
וְאָמַר אַל־תַּשְׁחִיתֵהוּ כִּי בְרָכָה בּוֹ כֵּן אֶעֱשֶׂה לְמַעַן
Jahacob de deducam Et .totum corrumpendum non ad , meos ſervos
9 עֲבָדַי לְבִלְתִּי הַשְׁחִית הַכֹּל׃ וְהוֹצֵאתִי מִיַּעֲקֹב
eam poſſidebunt & : meos montes poſſidentem Jehudah de & , ſemen
זֶרַע וּמִיהוּדָה יוֹרֵשׁ הָרָי וִירֵשׁוּהָ
Saron erit Et .ibi habitabunt mei ſervi & , mei electi
10 בְחִירַי וַעֲבָדַי יִשְׁכְּנוּ־שָׁמָּה׃ וְהָיָה הַשָּׁרוֹן
meo populo , bovis accubitum in ,Hachor vallis & , pecoris habitaculũ in
לִנְוֵה־צֹאן וְעֵמֶק עָכוֹר לְרֵבֶץ בָּקָר לְעַמִּי
obliviſcentes , Dominum derelinquentes vos Et .me requiſierunt qui
11 אֲשֶׁר דְּרָשׁוּנִי׃ וְאַתֶּם עֹזְבֵי יְהוָה הַשְּׁכֵחִים
Meni implentes & ,menſam Jovi parantes : meæ ſanctitatis montis
אֶת־הַר קָדְשִׁי הַעֹרְכִים לַגַּד שֻׁלְחָן וְהַמְמַלְאִים לַמְנִי
jugulationi vos omnes & ,gladio vos Numeraboque .libamen
12 מִמְסָךְ׃ וּמָנִיתִי אֶתְכֶם לַחֶרֶב וְכֻלְּכֶם לַטֶּבַח
non & ,ſum locutus;reſpondiſtis non & , vocavi quòd eo,vos incurvabitis
תִּכְרָעוּ יַעַן קָרָאתִי וְלֹא עֲנִיתֶם דִּבַּרְתִּי וְלֹא
nolui quæ in & , meis oculis in malum feciſtis & : audiſtis
שְׁמַעְתֶּם וַתַּעֲשׂוּ הָרַע בְּעֵינַי וּבַאֲשֶׁר לֹא־חָפַצְתִּי
mei ſervi Ecce : Deus Dominus dixit ſic Propterea .elegiſtis
13 בְּחַרְתֶּם׃ לָכֵן כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה הִנֵּה עֲבָדַי
.ſitietis vos & , bibent mei ſervi Ecce .eſurietis vos &,comedent
יֹאכֵלוּ וְאַתֶּם תִּרְעָבוּ הִנֵּה עֲבָדַי יִשְׁתּוּ וְאַתֶּם תִּצְמָאוּ
Ecce .afficiemini pudore vos & , lætabuntur mei ſervi Ecce
14 הִנֵּה עֲבָדַי יִשְׂמָחוּ וְאַתֶּם תֵּבֹשׁוּ׃ הִנֵּה
,cordis dolore præ clamabitis vos & : cordis bono à ovabunt mei ſervi
עֲבָדַי יָרֹנּוּ מִטּוּב לֵב וְאַתֶּם תִּצְעֲקוּ מִכְּאֵב לֵב
veſtrũ nomen dimittetis Et .ululabitis ſpiritus contritione præ &
15 וּמִשֵּׁבֶר רוּחַ תְּיֵלִילוּ׃ וְהִנַּחְתֶּם שִׁמְכֶם
ſuos ſervos & : Deus Dominus te interficiet &,meis electis juramentum in
לִשְׁבוּעָה לִבְחִירַי וֶהֱמִיתְךָ אֲדֹנָי יְהוִה וְלַעֲבָדָיו
.alio nomine vocabit
יִקְרָא שֵׁם אַחֵר׃

Verſio VULG. LAT.

2 Expandi manus meas totâ die
ad populũ incredulũ, qui gra-
ditur in via non bona poſt co-
3 gitationes ſuas. Popul⁹ qui ad
iracundiam provocat me ante
faciẽ meã ſemp: qui immo-
lant in hortis,& ſacrificant ſu-
4 per lateres: Qui habitant in
ſepulchris, & in delubris ido-
lorũ dormiunt: qui comedunt
carnem ſuillam, & jus profa-
5 nũ in vaſis eorum, Qui dicunt;
Recede à me, non appropin-
ques mihi,quia immundus es:
iſti fumus erunt in furore meo,
6 ignis ardens totâ die. Ecce
ſcriptũ eſt coram me: non ta-
cebo,ſed reddam & retribuam
7 in ſinum eorum Iniquitates
veſtras, & iniquitates patrum
veſtrorum ſimul,dicit Dñs,qui
ſacrificaverunt ſup montes,&
ſuper colles exprobraverunt
mihi, & remetiar opus eorum
8 primum in ſinu eorum. Hæc
dicit Dñs; Quomodò ſi inve-
niatur granum in botro, &
dicatur;Ne diſſipes illud, quo-
niam benedictio eſt: ſic faciam
propter ſervos meos, ut non
9 diſperdam totum. Et educam
de Jacob ſemen, & de Juda
poſſidentem montes meos: &
hæreditabunt eam electi mei,
& ſervi mei habitabunt ibi.
10 Et erunt campeſtria in caulas
gregum,& vallis Achor in cu-
bile armentorum, populo meo
11 qui requiſierunt me. Et vos,
qui dereliquiſtis Dominũ, qui
obliti eſtis montem ſanctum
meum, qui ponitis Fortunæ
menſam, & libatis ſuper eam.
12 Numerabo vos in gladio, et
omnes in cæde corruetis: pro
eo ꝙ vocavi, et non reſpondi-
ſtis: locutus ſum, et non au-
dîſtis: et faciebatis malum in
oculis meis, et quæ nolui ele-
13 giſtis. Propter hoc hæc dicit
Dñs Deus; Ecce ſervi mei
comedent, et vos eſurietis:
ecce ſervi mei bibent, et vos
14 ſitietis; Ecce ſervi mei læta-
buntur, et vos confundemi-
ni: ecce ſervi mei laudabunt
præ exultatione cordis, et vos
clamabitis præ dolore cordis,
et præ contritione ſpiritûs
15 ululabitis. Et dimittetis no-
men veſtrum in juramentum
electis meis: et interficiet te
Dominus Deus, et ſervos ſuos
vocabit nomine alio:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

2 Ἐξεπέτασα τὰς χεῖράς μου ὅλην τὴν ἡμέ-
ραν πρὸς λαὸν ἀπειθοῦντα καὶ ἀντιλέγοντα,
(ε) τοῖς πορευομένοις ὁδῷ οὐ καλῇ, ἀλλ' ὀπί-
3 σω τῶν ἁμαρτιῶν αὐτῶν. Ὁ λαὸς οὗτος ὁ παροξύ-
νων με ἐναντίον ἐμοῦ διαπαντός· αὐτοὶ (ζ)
θυσιάζουσιν ἐν τοῖς κήποις, καὶ θυμιῶσιν ἐπὶ
ταῖς πλίνθοις τοῖς δαιμονίοις, ἃ οὐκ (η) ἔ-
4 στιν· Ἐν τοῖς μνήμασι, καὶ ἐν τοῖς σπηλαί-
οις κοιμῶνται (θ) διὰ ἐνύπνια, (ι) οἱ ἔσθον-
τες κρέας ὕειον, καὶ ζωμὸν θυσιῶν, μεμολυμ-
5 μένα πάντα τὰ σκεύη αὐτῶν, Οἱ λέ-
γοντες, Πόῤῥω ἀπ' ἐμοῦ, μὴ ἐγγίσῃς (κ) μοι,
ὅτι καθαρός εἰμι. οὗτος καπνὸς τοῦ θυμοῦ μου,
πῦρ καίεται ἐν αὐτῷ πάσας τὰς ἡμέρας.
6 Ἰδοὺ γέγραπται ἐνώπιόν μου, οὐ (λ) σιωπήσω
7 ἕως ἂν ἀποδώσω εἰς τὸν κόλπον αὐτῶν Τὰς
ἁμαρτίας αὐτῶν, καὶ τῶν πατέρων αὐτῶν, λέ-
γει κύριος. οἳ ἐθυμίασαν ἐπὶ τῶν ὀρέων, καὶ
ἐπὶ τῶν βουνῶν ὠνείδισάν με, ἀποδώσω τὰ
8 ἔργα αὐτῶν εἰς τὸν κόλπον αὐτῶν. Οὕτως
λέγει κύριος, Ὃν τρόπον εὑρεθήσεται ὁ ῥὼξ
ἐν τῷ βότρυϊ, καὶ ἐροῦσι, Μὴ λυμήνῃ αὐτὸν,
ὅτι εὐλογία (μ) ἐστὶν ἐν αὐτῷ, οὕτως ποιήσω
ἕνεκεν τοῦ δουλεύοντός μοι, τούτου ἕνεκεν οὐ
9 μὴ ἀπολέσω πάντας. Καὶ ἐξάξω τὸ ἐξ Ἰα-
κὼβ σπέρμα καὶ (ν) ἐξ Ἰούδα, καὶ κληρονομή-
σει τὸ ὄρος τὸ ἅγιόν μου, καὶ κληρονομήσου-
σιν οἱ ἐκλεκτοί μου, καὶ οἱ δοῦλοί (ξ) μου, καὶ
10 κατοικήσουσιν ἐκεῖ. Καὶ ἔσονται ἐν τῷ δρυ-
μῷ ἐπαύλεις ποιμνίων, καὶ φάραγξ Ἀχὼρ εἰς
ἀνάπαυσιν βουκολίων τῷ λαῷ μου, οἳ ἐζή-
11 τησάν με. Ὑμεῖς δὲ οἱ ἐγκαταλιπόντες με, καὶ
ἐπιλανθανόμενοι τὸ ὄρος τὸ ἅγιόν μου, καὶ
ἑτοιμάζοντες τῷ δαιμονίῳ τράπεζαν, καὶ
12 πληροῦντες τῇ τύχῃ κέρασμα, Ἐγὼ παρα-
δώσω ὑμᾶς εἰς μάχαιραν, πάντες ἐν σφαγῇ
πεσεῖσθε· ὅτι ἐκάλεσα ὑμᾶς, καὶ οὐχ ὑπηκού-
σατε· ἐλάλησα, καὶ παρηκούσατε, καὶ ἐποιή-
σατε τὸ πονηρὸν ἐναντίον ἐμοῦ, καὶ ἃ οὐκ ἐβου-
13 λόμην, ἐξελέξασθε. Διατοῦτο τάδε λέγει
κύριος, Ἰδοὺ οἱ δουλεύοντές μοι φάγονται,
ὑμεῖς δὲ πεινάσετε· ἰδοὺ οἱ δουλεύοντές μοι
14 πίονται, ὑμεῖς δὲ (ο) διψήσετε· Ἰδοὺ οἱ δου-
λεύοντές μοι εὐφρανθήσονται, ὑμεῖς δὲ αἰ-
σχυνθήσεσθε· ἰδοὺ οἱ δουλεύοντές μοι ἀγαλ-
λιάσονται ἐν εὐφροσύνῃ, ὑμεῖς δὲ κεκράξεσθε
διὰ τὸν πόνον τῆς καρδίας ὑμῶν, καὶ ἀπὸ συν-
τριβῆς πνεύματος (π) ὑμῶν ὀλολύξετε.
15 Καταλείψετε γὰρ τὸ ὄνομα ὑμῶν εἰς πλησμο-
νὴν τοῖς ἐκλεκτοῖς μου, ὑμᾶς δὲ ἀνελεῖ κύ-
ριος· τοῖς δὲ δουλεύουσί (ρ) μοι κληθή-
σεται ὄνομα καινὸν,

Expandi manus meas totâ die ad 2
populum incredulum,& contradi-
centem,qui ambulabant in via non
bona, ſed poſt peccata ſua: Po- 3
pulus hic, qui exacerbat me in
conſpectu meo ſemper. Ipſi immo-
lant in hortis, & adolent incen-
ſum ſuper lateres dæmonibus,
qui non ſunt: In ſepulchris,& in 4
ſpecubus dormiunt propter ſomnia:
qui comedunt carnem ſuillam, &
jus hoſtiarum: inquinata omnia
vaſa eorum, Qui dicunt; Lon- 5
gè à me: ne appropinques mihi,
quoniam mundus ſum. Iſte eſt
furnus furoris mei: ignis ardet in
eo cunctis diebus. Ecce ſcriptum 6
eſt in conſpectu meo: non tace-
bo; donec retribuam in ſinũ eorũ
Peccata ſua,& patrũ ſuorũ,dicit 7
Dominus. Qui adolebant incen-
ſum ſuper montes,et ſuper colles;
exprobraverunt mihi: reddam
opera eorum in ſinum eorum. Sic 8
dicit Dominus; Quomodò inve-
nietur acinum in botro,& dicent;
Ne perdas illud, quia benedictio
eſt in eo; ſic faciam propter ſer-
vientem mihi: propter hunc
non diſperdam omnes. Et edu- 9
cam, quod de Jacob, ſemen, &
de Juda: & hæreditabit mon-
tem ſanctum meum: & hæredi-
tabunt electi mei,& ſervi mei,et
habitabunt ibi: Et erunt in ſaltu 10
oviiia gregum, & vallis Achor
in requiem armentorum populo
meo, qui requiſierunt me. Vos 11
autem qui dereliquiſtis me, & ob-
liti eſtis montis ſancti mei, & pa-
ratis (b) dæmoni menſam, &
impletis Fortunæ potionem; Ego 12
tradam vos in gladium: omnes
in mactatione cadetis: Quia vo-
cavi vos, & non obedîſtis: lo-
quutus ſum, & contempſiſtis,
& feciſtis malum in conſpectu
mei; &, quæ nolebam, elegiſtis.
Proptereà hæc dicit Dominus; 13
Ecce, qui ſerviunt mihi, man-
ducabunt; vos autem eſurietis;
ecce, qui ſerviunt mihi, bibent;
vos autem ſitietis: Ecce,qui ſer- 14
viunt mihi, lætabuntur; vos au-
tem confundemini: ecce qui ſer-
viunt mihi,exultabunt in lætitia;
vos autem clamabitis propter do-
lorem cordis veſtri: & propter
contritionem ſpiritûs veſtri ulu-
labitis. Relinquetis enim nomen 15
veſtrum in (c) ſaturitatem ele-
ctis meis. Vos autem interficiet
Dominus: ſervientibus autem
mihi vocabitur nomen novum,

MS.A. (ε) οἳ οὐκ ἐπορεύθησαν ὁδῷ ἀληθινῇ, ἀλλ' (ζ) θυμιάζουσιν (η) ἔσται· Καὶ ἐν (θ) δι' (ι) ἔσθοντες κρέα ὕια, (κ) μου, (λ) σιωπήσομαι ἕως ἂν ἀποδῶ (μ) κυρίου ἐστὶν (ν) τὸ ἐξ (ξ) μου, κατοικήσουσιν (ο) διψήσεσθαι· (π) ὀλολύξετε. (ρ) αὐτῷ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

2 שלחית נביאי כל יומא לעמא מסרבנא דאזלין באורח דלא תקנא בתר עשתוניהון׃
3 עמא דמרגזין על מימרי קדמי תדירא דבחין בגנן טעותא ומסקין בסמיא על לבניא׃
4 דיתבין בבתיא דבנן מעפר קבריא ועם פגרי בני אנשא דירין דאכלין בשר חזירא ורטב
5 פגול במניהון׃ דאמרין רחיק להלא לא תקרב בי ארי דכינא מנך אלין רוגזיהון כתננא
6 קדמי פורענותהון בגיהנם דאשתא דלקא בה כל יומא׃ הא כתיבא קדמי לא אתן להון
ארכא בחייא אלהן אשלם להון פורענות חוביהון ואמסור למותא תנינא ית גויתהון׃
7 חוביכון וחובי אבהתכון גלן קדמי כחדא אמר יי דאסיקו בוסמין על טוריא ועל רמתא
8 חסידו קדמי ואתן אגר עובדיהון בקדמיתא על חיקהון׃ כדנן אמר יי כמא דאשתכח
נח זכי בדרא דטופנא ואמרית דלא לחבלותיה בדיל לקימא עלמא מניה כן אעביד
9 בדיל עבדי צדיקיא בדיל דלא לחבלא כלא׃ ואפיק מיעקב זרעא ומיהודה ירית טורי
10 ויחסנונה בחירי ועבדי צדיקיא ישרון תמן׃ ויהי שרונא לבית משרי עדרין דען ומישר
11 עכור לבית ארבעה בקרן דתורין לעמי דתבעו דחלתי׃ ואתון בית ישראל שבקתון
פולחנא דיי אתנשיתון ית פולחן טורא דקדשי דמסדרין לטעון פתורין וממזגין
12 לדחלתהון אגנין׃ ואמסר יתהון לחרבא וכלכון לקטלא תתמסרון חלף דשלחית נביי
13 ולא תבתון אתנביאו ולא קבלתון ועבדתון דביש קדמי ובדלא צבינא אתרעיתון׃ בכן
כדנן אמר יי אלהים הא עבדי צדיקיא יכלון ואתון רשיעיא תכפנון הא עבדי צדיקיא
14 ישתון ואתון רשיעיא תצחון הא עבדי צדיקיא יחדון ואתון רשיעיא תבהתון׃ הא עבדי
15 צדיקיא ישבחון מטוב לב ואתון תצוחון מכאב לב ומתבר רוח תילילון׃ ותשבקון
שומכון לקימא לבחירי וימיתכון יי אלהים מותא תנינא ולעבדוהי צדיקיא יקרי שמא
אחרנא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Miſi enim prophetas meos oñi die ad populũ rebellẽ, qui ambulat in via 2
non recta, poſt cogitationes ſuas; Populũ qui provocat ad iracundiã corã 3
me Verbũ meũ ſemp. In hortis ſacrificant idolis, & adolent aromata ſup
lateres Qui habitant in domib⁹ quæ ædificantur de pulvere ſepulchrorũ, 4
et cum cadaverib⁹ filiorũ hominũ morantur: qui comedũt carnẽ ſuillã: &
jus immundũ eſt in vaſis eorũ. Qui dicunt: Abſcede illuc,non appropin- 5
ques ad me,quia purior te ſum. Furor iſtorũ eſt ſicut fum⁹ ante me; ultio
eorũ erit in gehenna, ubi ignis ardet oñi die. Ecce ſcriptũ eſt corã me:non 6
dabo eis terminũ in vita, ſed reddã eis ultionẽ peccatorũ ipſorũ, &
tradã morti ſecundæ corpora eorũ.Peccata veſtra & peccata patrũ veſtro- 7
rum ſimul manifeſta ſunt corã me,dicit Dñs:qui adoleverunt thymiamata
ſuper montes,& ſuper colles probro me affecerunt. Itaq; dabo mercedem
factorũ ipſorũ principio in ſinũ ipſorũ. Sic dicit Dñs: Sicut invent⁹ eſt 8
Noë juſt⁹ in generatione diluvii, & dixi ꝙ non diſperderẽ illũ, ut ſuſcita-
rem ſeculũ ab eo; ſic faciam propter ſervos meos juſtos, ut non diſperdam
omnia. Et educã de Jacob ſemen, & de Juda poſſidentẽ montes meos: & 9
hæreditabunt eam electi mei, & ſervi mei juſti habitabunt ibi. Et erit Sa- 10
ronitis in domũ manſionis gregũ oviũ, et vallis Achor in domũ accubati-
onis armentorũ boum, populo meo qui quæſierunt timorẽ mei. Vos au- 11
tem dom⁹ Iſrael dereliquiſtis cultum Domini; obliti eſtis culturæ montis
ſancti mei: qui ordinatis idolis menſas, & libatis diis eorũ ſcyphos. Et tra- 12
dam eos gladio, & oẽs vos occiſioni trademini, pro eò ꝙ miſi Prophetas
meos,& non eſtis converſi: prophetaverunt, et non obedîſtis; et feciſtis ꝙ
malum eſt coram me; et quod nolui, elegiſtis. Proptereà hæc dicit Domi- 13
nus Deus: Ecce ſervi mei juſti comedent,et vos impii eſurietis: ecce ſervi
mei juſti bibent, et vos impii ſitietis: ecce ſervi mei juſti lætabun-
tur, & vos impii confundemini. Ecce ſervi mei juſti laudabunt præ 14
hilaritate cordis; et vos clamabitis præ dolore cordis, et præ contritione
ſpiritus ululabitis. Et dimittetis nomen veſtrum in juramentum electis 15
meis: et interficiet vos Dominus Deus morte ſecunda, et ſervos ſuos ju-
ſtos vocabit nomine alio.

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܦܫܛܬ ܐܝܕܝ ܝܘܡܐ ܟܠܗ. ܠܘܬ ܥܡܐ ܕܠܐ ܡܬܛܦܝܣ. ܕܡܗܠܟܝܢ ܒܬܪ ܬܪܥܝܬܗܘܢ܀ 2
ܒܐܘܪܚܐ ܕܠܐ ܫܦܝܪܐ܀ * ܥܡܐ ܕܡܪܓܙ ܠܝ ܩܕܡܝ ܐܡܝܢܐܝܬ. ܕܕܒܚܝܢ ܒܓܢܐ܀ ܘܡܣܩܝܢ 3
ܒܣܡܐ ܥܠ ܐܓܘܪܐ. * ܘܝܬܒܝܢ ܒܩܒܪܐ. ܘܒܡܥܪܐ ܒܝܬܝܢ. ܘܐܟܠܝܢ ܒܣܪܐ ܕܚܙܝܪܐ܀ 4
ܘܡܬܛܘܫܝܢ ܒܦܓܪܐ ܡܐܢܝܗܘܢ. * ܘܐܡܪܝܢ. ܩܪܘܒ ܠܘܬܟ. ܠܐ ܬܬܩܪܒ ܒܝ. ܡܛܠ 5
ܕܡܩܕܫ ܐܢܐ. ܗܠܝܢ ܗܘܝ ܬܢܢܐ ܒܪܘܓܙܝ܀ ܘܢܘܪܐ ܝܩܕܐ ܟܠܝܘܡ. * ܗܐ ܟܬܝܒܐ ܩܕܡܝ. 6
ܠܐ ܐܫܬܘܩ ܥܕܡܐ ܕܐܦܪܘܥ ܐܢܘܢ ܐܥܦܐ ܒܥܘܒܗܘܢ܀ * ܚܛܗܝܗܘܢ. ܘܚܛܗܐ 7
ܕܐܒܗܝܗܘܢ܀ ܚܢܘ ܡܩܒܠ ܐܢܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܣܡܘ ܒܣܡܐ ܥܠ ܛܘܪܐ܀ ܘܥܠ
ܪܡܬܐ ܚܣܕܘܢܝ. ܐܟܝܠ ܥܒܕܝܗܘܢ ܩܕܡܝܬ ܒܥܘܒܗܘܢ܀ * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܝܟ 8
ܕܡܫܬܟܚܐ ܬܘܬܝܬܐ ܒܩܛܘܦܐ. ܘܐܡܪ ܐܢܫ ܠܚܒܪܗ. ܠܐ ܬܚܒܠܝܘܗܝ. ܡܛܠ
ܕܒܘܪܟܬܐ ܐܝܬ ܒܗ. ܗܟܢܐ ܐܥܒܕ ܡܛܠ ܥܒܕܝ. ܘܠܐ ܐܚܒܠ ܠܟܠܗܘܢ܀ * ܘܐܦܩ 9
ܙܪܥܐ ܡܢ ܝܥܩܘܒ. ܘܡܢ ܝܗܘܕܐ ܝܪܬܐ ܠܛܘܪܝ. ܘܢܐܪܬܘܢܗ ܓܒܝܝ. ܘܥܒܕܝ ܢܥܡܪܘܢ
ܬܡܢ. * ܘܢܗܘܐ ܫܪܘܢ ܕܝܪܐ ܠܥܢܐ. ܘܥܘܡܩܐ ܕܥܟܘܪ. ܠܡܪܒܥܐ ܕܬܘܪܐ ܠܥܡܝ 10
ܕܒܥܘܢܝ. * ܘܐܢܬܘܢ ܕܫܒܩܬܘܢ ܠܡܪܝܐ: ܘܛܥܝܬܘܢ ܠܛܘܪܐ ܩܕܝܫܐ: ܘܡܠܝܬܘܢ 11
ܦܬܘܪܐ ܠܓܕܐ. ܘܡܙܓܬܘܢ ܠܗ ܡܙܓܐ܀ * ܐܦܠܘܓܟܘܢ ܠܣܝܦܐ. ܘܟܠܟܘܢ ܠܩܛܠܐ 12
ܬܬܪܥܘܢ. ܡܛܠ ܕܩܪܝܬܟܘܢ ܘܠܐ ܥܢܝܬܘܢ. ܘܡܠܠܬ ܘܠܐ ܫܡܥܬܘܢ. ܘܥܒܕܬܘܢ ܕܒܝܫ
ܩܕܡܝ. ܘܓܒܝܬܘܢ ܡܕܡ ܕܠܐ ܨܒܐ ܐܢܐ܀ * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ 13
ܥܒܕܝ ܢܐܟܠܘܢ. ܘܐܢܬܘܢ ܬܟܦܢܘܢ. ܗܐ ܥܒܕܝ ܢܫܬܘܢ. ܘܐܢܬܘܢ ܬܨܗܘܢ. ܗܐ ܥܒܕܝ 14
ܢܚܕܘܢ. ܘܐܢܬܘܢ ܬܒܗܬܘܢ܀ * ܗܐ ܥܒܕܝ ܢܫܒܚܘܢ ܡܢ ܛܝܒܘܬܐ ܕܠܒܗܘܢ. ܘܐܢܬܘܢ 15
ܬܓܥܘܢ ܡܢ ܟܐܒܐ ܕܠܒܟܘܢ. ܘܡܢ ܬܒܪܐ ܕܪܘܚܟܘܢ ܬܝܠܠܘܢ܀ * ܘܬܫܒܩܘܢ ܫܡܟܘܢ ܠܡܘܡܬܐ
ܠܓܒܝܝ. ܘܢܡܝܬܟ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܘܠܥܒܕܘܗܝ ܢܩܪܐ ܫܡܐ ܐܚܪܢܐ܀

Expanderam manus meas totâ die ſuper 2
populum contumacem, gradientem poſt cogitationes
ſuas per viam dedecentem :
Populum qui me ſemper ad iram provo- 3
cant, qui ſacrificant in hortis, & thura ponunt
ſuper titulos : Sedent in ſepulchris, 4
pernoctant in ſpeluncis, edunt carnem porcinam,
& polluunt cadaveribus indumenta
ſua : Tum dicunt ; Recede procul, nec ac- 5
ceſſeris ad me, quia ſum ſanctificatus : hæc
ſunt fumus in ira mea, & ignis quotidie ardens.
Ecce ſcriptum eſt coram me : non 6
deſiſtam donec rependam illis duplum in ſinum
eorum : Peccata eorum & peccata pa- 7
rentum eorum, ex adverſo ſtant, ait Dominus ;
eorum qui thura poſuerunt ſuper montes,
& ſuper colles probro me affecerunt,
opera quamprimum remetiar in ſinum eorum.
Sic dicit Dominus, Quemadmodum 8
reperto acino in racemo, dicit quis ſocio ſuo,
Ne corrumpas eum, quia benedictio eſt in
illo ; ita facturus ſum propter ſervos meos, &
non corrumpam omnes : Sed eximam ſe- 9
men è Jacobo, & è Juda hæredem montis
mei, & poſſidebunt eum electi mei, & ſervi
mei habitabunt illic. Eritque Saron in cau- 10
lam ovium, & vallis Achor in cubile boum,
populo qui me quæſierunt. Vos autem qui 11
dereliquiſtis Dominum, obliti eſtis montis
ſancti ejus, implevistis menſas *in honorem*
Fortunæ, & temperâſtis ei lagenas ; Gla- 12
dio percutiam, & vos omnes nece confringam :
quia vocavi vos, & non reſpondiſtis ;
locutus ſum, & non audîſtis ; & feciſtis quod
malum erat coram me, & elegiſtis quod mihi
diſplicet. Propterea ſic dicit Dominus 13
Deus, Ecce ſervi mei comedent, vos autem
eſurietis : ecce ſervi mei bibent, vos autem
ſitietis : ecce ſervi mei lætabuntur, vos autem
lugebitis : Ecce ſervi mei canent præ 14
jucunditatibus animi ſui, vos autem clamabitis
præ dolore cordis veſtri & fractione ſpiritûs
veſtri : Et relinquetis nomen veſtrum 15
in juramentum electis meis ; nam morte afficiet
te Dominus Deus, ſervis autem ſuis nomen
aliud imponet.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* بسطت يدي النهار كله الي شعب عاص منافق * الذين لم يمضوا في الطريق الحقيقة لكن 2
خلف خطاياهم * هذا الشعب الذي اغاظني امامي كل حين * هاولاء يذبحون في البساتين 3
ويبخرون على اللبن للشياطين التي لم تكن * وفي الاجداث وفي المغاير يرقدون لاجل 4
الاحلام * ياكلون لحم الخنزير ومرق ذبائحهم * جميع اوانيهم منجسة * القائلون ابعد عني 5
لا تقربني لاني انا طاهر * هذا دخان غضبي * نار تحرق به جميع الايام * ها مكتوب امامي * 6
لست اسكت الي ان اكافي بخطاياهم في حضنهم * وخطايا ابائهم يقول الرب * الذين بخروا 7
على الجبال وعلي الاكام عيروني * ساكافيهم باعمالهم في حضنهم * هكذا يقول الرب * 8
كما يوجد حبة عنب في العنقود فيقولون لا تفسده لان بركة الرب كاينة فيه * هكذا اصنع
من اجل الذي تعبد لي * من اجل هذا لا اهلك الجميع * واخرج ذرية من يعقوب ومن 9
يهوذا * ويرث جبلي المقدس * ويرثه اصفيائي * وعبيدي يسكنون هناك * ويصير في الغيضة 10
ديار الرعايا * ووادي اخور لراحة اذواد البقر * لشعبي الذين طلبوني * وانتم الذين 11
اهملتموني ونسيتم جبلي المقدس وهيأتم مائدة للاصنام وكملتم مزاجا للجان * انا اسلمكم 12
للسيف جميعا * بالذبح تسقطون * لاني دعوتكم ولم تسمعوا * تكلمت فعصيتم * وصنعتم
الشر امامي * واخترتم ما لا اريده * لاجل هذا هكذا يقول الرب * ها الذين تعبدوا لي 13
ياكلون وانتم تجوعون * MS. Oxon. [وعبيدي يشربون وانتم تعطشون *] ها 14
الذين تعبدوا لي يفرحون وانتم تحزنون * ها الذين تعبدوا لي يهللون بسرور قلب *
وانتم تصارخون لاجل وجع قلبكم * ومن انكسار الروح تولولون * لان اسمكم 15
يترك هزوة لاصفيائي * ويبيدكم الرب الاله * ويدعي اسم جديد للذين يتعبدون لي *

Tetendi manus meas totâ die populo re- 2
belli improbo, non ambulanti in via vera,
ſed poſt peccata ſua. Is eſt populus qui 3
me jugiter in conſpectu meo provocat ad
iram : hi ſacrificant in hortis, & ſuper
lateres thus adolent dæmonibus qui non
ſunt. Et in ſepulchris inq; cavernis dor- 4
miunt ſomniorũ cauſâ : edunt carnem ſuil-
lam & juſculum ſacrificiorum ſuorum :
quorum vaſa omnia ſunt immunda : Qui 5
dicunt, Procul abſcede *à me, ne me tan-*
gas, quia mundus ſum, hoc fumus eſt iræ
meæ, ignis in eo ardens omnibus diebus.
Ecce ſcriptum eſt coram me : non tacebo 6
donec rependam peccata eorum in ſinum
ipſorum, Et peccata patrum eorum, dicit 7
Dominus. Hi qui adoleverunt ſuper mon-
tibus, & ſuper collibus contumeliis affece-
runt me, propria rependam opera in ſinum
eorum. Sic ait Dominus, ut cùm *reperitur* 8
acinus uvæ in botro, dicunt, Ne corrumpas
eum, quia benedictio Domini exiſtit in eo ;
ita faciam propter eum qui cultui meo ſe
*dediderit. Icci*r*co non perdam omnes ;*
Sed eximam progeniem è Jacobo et è Ju- 9
da, quæ hæreditate poſſidebit montem ſan-
ctum meum : poſſidebunt enim eum electi
mei, & ſervi mei habitabunt ibi : Et fient 10
in ſaltu caulæ gregum, & vallis Achor
cedet *in ſtationem præſepiorum boum, po-*
pulo meo qui me quæſierunt. Vos autem 11
qui dereliquiſtis me, & obliti eſtis montis
ſancti mei, inſtruxiſtis menſam idolis, &
perfeciſtis (conſecrâſtis) vinum *tempera-*
tum dæmonibus ; Ego vos omnes gladio 12
tradam, mactatione corruetis : quia me vo-
cantem non audiviſtis ; me loquente, re-
belliſtis ; coram me malum feciſtis, & ele-
*giſtis quod nolo. Icci*r*co ſic dicit Domi-* 13
nus, Ecce qui ſe mihi mancipârint, come-
dent ; vos autem eſurietis : [MS. Ox. *&*
ſervi mei bibent ; vos autem ſitietis :] *ecce*
qui ſe mihi mancipârint, gaudebunt ;
vos autem contriſtabimini : Ecce qui 14
ſe mihi mancipârint, hilari corde ju-
bilabunt ; vos autem clamitabitis præ do-
lore cordis veſtri, & præ contritione ſpi-
ritûs ejulabitis. Nam nomen veſtrum 15
ludibrio relinquetur electis meis, perdet-
que vos Dominus Deus, nomen verò
novum indetur iis qui ſe mihi manci-
pârint,

ישעיה : סו

jurans & : Amen Deo in ſe benedicet , terra in ſe *benedicens* Qui
16 אֲשֶׁר הַמִּתְבָּרֵךְ בָּאָרֶץ יִתְבָּרֵךְ בֵּאלֹהֵי אָמֵן וְהַנִּשְׁבָּע
anguſtiæ ſunt traditæ oblivioni quia : Amen Deo in jurabit , terra in
בָּאָרֶץ יִשָּׁבַע בֵּאלֹהֵי אָמֵן כִּי נִשְׁכְּחוּ הַצָּרוֹת
ego ecce Quia . meis oculis ab ſe abſcondent quia & , priores
17 הָרִאשֹׁנוֹת וְכִי נִסְתְּרוּ מֵעֵינָי׃ כִּי־הִנְנִי
memorabuntur non & : novam terram & , novos cœlos *creans*
בּוֹרֵא שָׁמַיִם חֲדָשִׁים וָאָרֶץ חֲדָשָׁה וְלֹא תִזָּכַרְנָה
, gaudete *Quinimo* . cor ſuper aſcendent nec , priores
18 הָרִאשֹׁנוֹת וְלֹא תַעֲלֶינָה עַל־לֵב׃ כִּי־אִם־שִׂישׂוּ
creans ego ecce Quia . *creans* ego quæ *perpetuum* in exultate &
וְגִילוּ עֲדֵי־עַד אֲשֶׁר אֲנִי בוֹרֵא כִּי הִנְנִי בוֹרֵא אֶת־
exultabo Et . gaudium ejus populum & , exultationem Jeruſalaim
19 יְרוּשָׁלַםִ גִּילָה וְעַמָּהּ מָשׂוֹשׂ׃ וְגַלְתִּי
ultrà ea in audietur non & : meo populo in gaudebo & , Jeruſalaim in
בִירוּשָׁלַםִ וְשַׂשְׂתִּי בְעַמִּי וְלֹא־יִשָּׁמַע בָּהּ עוֹד
infans ultrà *inde* erit Non . clamoris vox & , fletus vox
20 קוֹל בְּכִי וְקוֹל זְעָקָה׃ לֹא־יִהְיֶה מִשָּׁם עוֹד עוּל
puer quoniam : ſuos dies impleverit non qui , ſenex neque , dierum
יָמִים וְזָקֵן אֲשֶׁר לֹא־יְמַלֵּא אֶת־יָמָיו כִּי הַנַּעַר
.maledicetur *annorum centum filius* peccator & , morietur *annorum centum filius*
בֶּן־מֵאָה שָׁנָה יָמוּת וְהַחוֹטֶא בֶּן־מֵאָה שָׁנָה יְקֻלָּל׃
comedent & , vineas plantabunt & : habitabunt & , domos ædificabunt Et
21 וּבָנוּ בָתִּים וְיָשָׁבוּ וְנָטְעוּ כְרָמִים וְאָכְלוּ
, plantabunt non ; habitabit alius & , ædificabunt Non . earum fructum
22 פִּרְיָם׃ לֹא יִבְנוּ וְאַחֵר יֵשֵׁב לֹא יִטָּעוּ
, mei populi dies , *ligni* dies ſecundùm quia : comedet alius &
וְאַחֵר יֹאכֵל כִּי כִימֵי הָעֵץ יְמֵי עַמִּי
laborabunt Non . mei electi inveterabunt ſuarum manuum opus &
23 וּמַעֲשֵׂה יְדֵיהֶם יְבַלּוּ בְחִירָי׃ לֹא יִגְעוּ
benedictorum ſemen quia : *turbationem ad* generabunt nec , vacuum in
לָרִיק וְלֹא יֵלְדוּ לַבֶּהָלָה כִּי זֶרַע בְּרוּכֵי
antequam , erit Et . eis cum eorum *genimina &* , *ipſi* DOMINI
24 יְהוָה הֵמָּה וְצֶאֱצָאֵיהֶם אִתָּם׃ וְהָיָה טֶרֶם
.audiam ego & , loquentibus ipſis adhuc : exaudiam ego & , clament
יִקְרָאוּ וַאֲנִי אֶעֱנֶה עוֹד הֵם מְדַבְּרִים וַאֲנִי אֶשְׁמָע׃
; paleam comedet bos ſicut leo & , *unus ſicut* paſcentur agnus & Lupus
25 זְאֵב וְטָלֶה יִרְעוּ כְאֶחָד וְאַרְיֵה כַּבָּקָר יֹאכַל־תֶּבֶן
omni in *corrumpent* nec , *malefacient* non : *ejus* panis pulvis *ſerpens* &
וְנָחָשׁ עָפָר לַחְמוֹ לֹא־יָרֵעוּ וְלֹא־יַשְׁחִיתוּ בְּכָל־
.DOMINUS dixit , meæ ſanctitatis monte
הַר קָדְשִׁי אָמַר יְהוָה׃

CAP. LXVI. סו

ſcabellum terra & , meũ ſolium Cœli : DOMINUS dixit Sic
1 כֹּה אָמַר יְהוָה הַשָּׁמַיִם כִּסְאִי וְהָאָרֶץ הֲדֹם
ille ubi & , mihi ædificabitis quam domus iſta ubi : meorum pedum
רַגְלָי אֵי־זֶה בַיִת אֲשֶׁר תִּבְנוּ־לִי וְאֵי־זֶה
fuerunt & , fecit mea manus hæc omnia Et ? meæ quietis locus
2 מָקוֹם מְנוּחָתִי׃ וְאֶת־כָּל־אֵלֶּה יָדִי עָשָׂתָה וַיִּהְיוּ
, *afflictum ad reſpiciam illud ad* Et . DOMINUS dixit , hæc omnia
כָל־אֵלֶּה נְאֻם־יְהוָה וְאֶל־זֶה אַבִּיט אֶל־עָנִי
bovem *Mactans* . meum verbum ſuper trementẽ & , ſpiritu contritũ &
3 וּנְכֵה־רוּחַ וְחָרֵד עַל־דְּבָרִי׃ שׁוֹחֵט הַשּׁוֹר
munus faciens aſcendere : canem *decervicans agnum immolans* : virum *percutiens*
מַכֵּה־אִישׁ זוֹבֵחַ הַשֶּׂה עֹרֵף כֶּלֶב מַעֲלֵה מִנְחָה
elegerunt hæc etiam : *vanitati benedicens* thus *memorans* : *porci* ſanguinẽ
דַּם־חֲזִיר מַזְכִּיר לְבֹנָה מְבָרֵךְ אָוֶן גַּם־הֵמָּה בָּחֲרוּ
.*voluit* eorum anima ſuis *contaminationibus* in & , ſuis viis in
בְּדַרְכֵיהֶם וּבְשִׁקּוּצֵיהֶם נַפְשָׁם חָפֵצָה׃

Verſio VUL. LAT.

16 In quo qui benedictus eſt ſuper
terram, benedicetur in Deo Amen: & qui jurat in terra, jurabit in Deo Amen : quia oblivioni traditæ ſunt anguſtiæ
priores, & quia abſconditæ ſũt
17 ab oculis meis. Ecce enim ego
creo cœlos novos, & terrã novam: & non erunt in memoria
priora, & non aſcendent ſuper
18 cor. Sed gaudebitis & exultabitis uſque in ſempiternum, in
his quæ ego creo : quia ecce ego creo Jeruſalem exultationem, & populum ejus gaudiũ.
19 Et exultabo in Jeruſalem, &
gaudebo in populo meo: & nõ
audietur in eo ultrà vox fletûs
20 & vox clamoris. Non erit ibi
ampliùs infans dierũ, & ſenex
qui non impleat dies ſuos: quoniam puer centum annorum
morietur, & peccator centum
21 annorum maledictus erit. Et
ædificabunt domos, & habitabunt: & plantabunt vineas, &
22 comedent fructus earum. Non
ædificabunt, & alius habitabit:
non plantabunt, & alius comedet : ſecundùm enim dies ligni, erunt dies populi mei, &
opera manuum eorum inveterabunt :
23 Electi mei non laborabunt fruſtrà, neq; generabũt
in conturbatione : quia ſemen
benedictorum Domini eſt, &
24 nepotes eorum cum eis. Erítque antequàm clament, ego
exaudiam: adhuc illis loquentibus, ego audiam.
25 Lupus et agnus paſcentur ſimul, leo et bos
comedent paleas : et ſerpenti
pulvis panis ejus: non nocebunt, neque occîdent in omni
monte ſancto meo, dicit Dñs.

CAP. LXVI.

1 Hæc dicit Dominus; Cœlũ
ſedes mea, terra autem ſcabellum pedum meorum : quæ eſt
iſta Domus, quam ædificabitis
mihi? & quis eſt iſte locus quietis meæ?
2 Omnia hæc manus mea fecit, et facta ſunt
univerſa iſta, dicit Dominus: ad
quem autem reſpiciam, niſi ad
pauperculum, et contritum ſpiritu, et trementem ſermones
3 meos? Qui immolat bovem,
quaſi qui interficiat virum: qui
mactat pecus, quaſi qui excerebret canem: qui offert oblationem, quaſi qui ſanguinem
ſuillum offerat : qui recordatur thuris, quaſi qui benedicat idolo. Hæc omnia elegerunt in viis ſuis, et in abominationibus ſuis anima eorum
delectata eſt.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

16 Ὃ εὐλογηθήσεται ἐπὶ τῆς γῆς, εὐλογήσουσι γὰρ τὸν θεὸν τὸν ἀληθινόν· καὶ οἱ ὀμνύοντες ἐπὶ τῆς γῆς, ὀμοῦνται τὸν θεὸν τὸν ἀληθινόν. ἐπιλήσονται γὰρ τὴν θλῖψιν (σ) τὴν πρώτην, καὶ οὐκ ἀναβήσεται αὐτῶν ἐπὶ τὴν καρδίαν. 17 Ἔσται γὰρ ὁ οὐρανὸς καινός, καὶ ἡ γῆ καινή, καὶ οὐ μὴ μνησθῶσι τῶν προτέρων, οὐδ' 18 οὐ μὴ ἐπέλθῃ αὐτῶν ἐπὶ τὴν καρδίαν, Ἀλλ' εὐφροσύνην καὶ ἀγαλλίαμα εὑρήσουσιν ἐν αὐτῇ· (τ) ὅτι ἰδοὺ ἐγὼ ποιῶ ἀγαλλίαμα Ἱερουσαλήμ, καὶ τὸν λαόν μου εὐφροσύνην. 19 Καὶ ἀγαλλιάσομαι ἐπὶ Ἱερουσαλήμ, καὶ εὐφρανθήσομαι ἐπὶ τῷ λαῷ μου. καὶ οὐκέτι μὴ ἀκουσθῇ ἐν αὐτῇ φωνὴ κλαυθμοῦ, (υ) καὶ φωνὴ κραυγῆς, 20 (φ) Οὐδ' οὐ μὴ γένηται ἔτι ἐκεῖ ἄωρος καὶ πρεσβύτης, ὃς οὐκ ἐμπλήσει τὸν χρόνον αὐτοῦ· ἔσται γὰρ ὁ νέος ἑκατὸν ἐτῶν, ὁ δὲ ἀποθνήσκων ἁμαρτωλὸς ἑκατὸν ἐτῶν, καὶ 21 (χ) ἐπικατάρατος ἔσται. Καὶ οἰκοδομήσουσιν οἰκίας, καὶ αὐτοὶ ἐνοικήσουσι· καὶ καταφυτεύσουσιν ἀμπελῶνας, καὶ αὐτοὶ φάγονται 22 τὰ (ψ) γεννήματα αὐτῶν. Οὐ μὴ οἰκοδομήσουσι, καὶ ἄλλοι ἐνοικήσουσι, καὶ οὐ μὴ φυτεύσουσι, καὶ ἄλλοι φάγονται· κατὰ γὰρ τὰς ἡμέρας τοῦ ξύλου τῆς ζωῆς ἔσονται αἱ ἡμέραι τοῦ λαοῦ μου· (ω) τὰ γὰρ ἔργα τῶν πό23νων αὐτῶν παλαιώσουσιν. (α) Οἱ ἐκλεκτοί μου οὐ κοπιάσουσιν εἰς κενόν, οὐδὲ (β) τεκνοποιήσουσιν εἰς κατάραν, ὅτι σπέρμα (γ) εὐλογημένον ὑπὸ θεοῦ ἐστι, καὶ τὰ ἔκγονα αὐ24τῶν μετ' αὐτῶν (δ). Καὶ ἔσται πρὶν ἢ κεκράξαι αὐτούς, ἐγὼ (ε) ὑπακούσομαι αὐτῶν· 25 ἔτι λαλούντων αὐτῶν, ἐρῶ, Τί ἐστι; Τότε λύκοι καὶ ἄρνες βοσκηθήσονται ἅμα, καὶ λέων ὡς βοῦς φάγεται ἄχυρα, ὄφις δὲ γῆν ὡς ἄρτον. οὐκ ἀδικήσουσιν, (ζ) οὐδὲ λυμανοῦνται ἐπὶ τῷ ὄρει τῷ ἁγίῳ μου, λέγει κύριος.

Cui benedicetur ſuper terram. Benedicent enim Deum (d) *verum: & qui jurant ſuper terram, jurabunt Deum verum. Obliviſcentur enim tribulationis prioris: & non aſcendet ſuper cor eorum.* 17 *Erit enim cœlum novum, & terra nova: & non recordabuntur priorum: & non venient ſuper cor eorum:* 18 *Sed gaudium, & exultationem invenient in* (e) *ea: Quia ecce ego facio exultationem Hieruſalem, & populum meum lætitiam:* 19 *Et exultabo ſuper Hieruſalem: & lætabor ſuper populo meo. Et non ultrà audietur in ea vox fletûs, & vox clamoris:* 20 *Neque fiet ibi ultrà immaturus, & ſenex, qui non impleat tempus ſuum. Erit enim adoleſcens, centum annorum: qui autem moritur peccator centenarius, etiam maledictus erit.* 21 *Et ædificabunt domos, & ipſi inhabitabunt: & plantabunt vineas, & ipſi comedent genimina earum:* 22 *Non ædificabunt, & alii inhabitabunt: & non plantabunt, alii verò comedent. Etenim ſecundùm dies ligni vitæ erunt dies populi mei: Opera enim laborum ſuorum inveteraſcere facient* 23 *Electi mei: non laborabunt in vacuum: neq; filios generabunt in* (f) *maledictionem: quia ſemen benedictum à Deo eſt, & nepotes eorum cum eis.* 24 *Et erit, antequàm ipſi clament; ego exaudiã eos: adhuc loquentibus illis, dicam, Quid eſt?* 25 *Tunc lupi & agni paſcentur ſimul; & leo, quaſi bos, comedet paleas; & ſerpens terram, quaſi panem. Non nocebunt, neque corrumpent in monte ſancto meo, dicit Dominus.*

MS.A. (σ) αὐτῶν τὴν (τ) ἰδοὺ ἐγὼ ποιῶ Ἱερουσαλὴμ ἀγαλλίαμα, (υ) οὐδὲ φωνὴ (φ) Καὶ οὐ μὴ γένηται ἐκεῖ (χ) ἐπικατάρατός ἐστιν. (ψ) γεννήματα αὐτῶν. Καὶ οὐ μὴ (ω) τὰ ἔργα (α) Οἱ δὲ ἐκλεκτοὶ (β) τέκνα ποιήσουσιν (γ) ηὐλογημένον ὑπὸ τοῦ θεοῦ (δ) ἔσονται. (ε) ἐπακούσομαι (ζ) οὐδὲ μὴ

ΚΕΦ. ξς'.

1 Οὕτως λέγει κύριος, Ὁ οὐρανός (α) μου θρόνος, (β) καὶ ἡ γῆ ὑποπόδιον τῶν ποδῶν μου. ποῖον οἶκον οἰκοδομήσετέ μοι; (γ) καὶ 2 ποῖος τόπος τῆς καταπαύσεώς μου; Πάντα γὰρ ταῦτα ἐποίησεν ἡ χείρ μου, καὶ ἔστιν ἐμὰ πάντα ταῦτα, λέγει κύριος. καὶ ἐπὶ τίνα ἐπιβλέψω, ἀλλ' ἢ ἐπὶ τὸν ταπεινὸν καὶ ἡσύ3χιον, καὶ τρέμοντα τοὺς λόγους μου; Ὁ δὲ ἄνομος ὁ θύων μοι μόσχον, ὡς ὁ ἀποκτέννων κύνα· ὁ δὲ ἀναφέρων σεμίδαλιν, ὡς αἷμα ὕειον· ὁ διδοὺς λίβανον εἰς μνημόσυνον, ὡς βλάσφημος. καὶ (δ) αὐτοὶ ἐξελέξαντο τὰς ὁδοὺς αὐτῶν, καὶ τὰ βδελύγματα αὐτῶν (ε) ἡ ψυχὴ αὐτῶν ἠθέλησε,

CAP. LXVI.

1 *Sic dicit Dominus; Cœlum thronus meus: & terra ſuppedaneum pedum meorum. Quam mihi domum ædificabitis? aut quis locus requietis meæ?* 2 *Omnia enim iſta fecit manus mea: & mea ſunt omnia iſta, dicit Dominus. Et ſuper quem reſpiciam, niſi ſuper humilem, & quietum, & trementem ſermones meos?* 3 *Iniquus autem, qui immolat mihi* (a) *vitulum; quaſi qui occîdat canem: qui autem offert ſimilam; quaſi ſanguinem ſuillum: qui dat thus in memoriale; quaſi blaſphemus. Et ipſi elegerunt vias ſuas: & abominationes ſuas anima eorum voluit:*

MS.A. (α) μοι (β) ἡ δὲ γῆ (γ) ἢ ποῖος (δ) οὗτοι (ε) ἃ ἡ ψυχὴ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 דִּמְבָרֵךְ בְּאַרְעָא יְבָרֵךְ בֶּאֱלָהָא קַיָּמָא וּדְמְקַיֵּם בְּאַרְעָא יְקַיֵּם בֶּאֱלָהָא קַיָּמָא אֲרֵי יִתְנַשְׁיָן
17 עָקָתָא קַדְמָיָתָא וַאֲרֵי מִסְתַּתְּרָן מִן קֳדָמָי : אֲרֵי הָא אֲנָא בָרֵא שְׁמַיָּא חַדְתִּין וְאַרְעָא חַדְתָּא
18 וְלָא יִדַּכְּרָן קַדְמָיָתָא וְלָא יִתַּסְּקוּן עַל לֵב : אֱלָהֵן יֶחְדוּן וִיבוּעוּן בְּעָלַם עָלְמַיָּא דַּאֲנָא בָרֵי
19 אֲרֵי הָא אֲנָא בָרֵי יָת יְרוּשְׁלֶם בִּיעָא וְעַמַּהּ חָדֵי : וַאֲבוּעַ בִּירוּשְׁלֶם וְיֶחְדוּן בָּהּ עַמִּי וְלָא
20 יִשְׁתְּמַע בַּהּ עוֹד קָל דְּבָכָן וְקָל דִּמְצַוְּחִין : וְלָא יְהֵי מִתַּמָּן עוֹד יָנִיק יוֹמִין וְסָבָא דְּלָא יַשְׁלֵם
21 יָת יוֹמוֹהִי אֲרֵי דְּחַיָּב עוּלֵּם בַּר מְאָה שְׁנִין יְהֵי מָאִית וּדְחָטֵי בַּר מְאָה שְׁנִין יִתְרַךְ : וְיִבְנוּן
22 בָּתִּין וְיֵיתְבוּן וְיִצְּבוּן כַּרְמִין וְיֵיכְלוּן אִבְּהוֹן : לָא יִבְנוּן וְאָחֳרָנִין יֵיתְבוּן לָא יִצְּבוּן וְאָחֳרָנִין
23 יֵיכְלוּן אֲרֵי כְּיוֹמֵי אִילָן חַיַּיָּא יוֹמֵי עַמִּי וְעוֹבָד יְדֵיהוֹן יְבַלּוּן בְּחִירָי : לָא יְהֲלוּן לְרֵיקָן וְלָא
24 יְרַבּוּן לְמוֹתָא אֲרֵי זַרְעָא דְּבָרְכֵיהּ יְיָ אִנּוּן וּבְנֵי בְנֵיהוֹן עִמְּהוֹן : וִיהֵי עַד לָא יְצַלּוּן קֳדָמַי
25 וַאֲנָא אֲקַבֵּל צְלוֹתְהוֹן עַד לָא יִבְעוֹן מִן קֳדָמַי אַעְבֵּד בָּעוּתְהוֹן : דִּיבָא וְאִמְּרָא יִרְעוֹן כַּחֲדָא
וְאַרְיָא כְּתוֹרָא יֵיכוּל תִּבְנָא וְחִוְיָא עַפְרָא מְזוֹנֵיהּ לָא יַבְאֲשׁוּן וְלָא יְחַבְּלוּן בְּכָל טוּרָא
דְּקוּדְשִׁי אֲמַר יְיָ :

סו

1 כִּדְנַן אֲמַר יְיָ שְׁמַיָּא כּוּרְסֵי יְקָרִי וְאַרְעָא כְּבַשׁ קֳדָמַי אֵידֵין בֵּיתָא דְּתִבְנוּן קֳדָמַי וְאֵידֵין אֲתַר
2 בֵּית אַשְׁרָיוּת שְׁכִנְתִּי : וְיָת כָּל אִלֵּין גְּבוּרְתִּי עֲבַדַת וַהֲלָא הֲוָאָה כָּל אִלֵּין אֲמַר יְיָ וּבְדֵין
3 רַעֲוָא קֳדָמַי לְאִסְתַּכָּלָא בֵיהּ בִּדְעִנְוְתָן וּמַכִּיךְ רוּחַ וּמִשְׁתְּוֵי לְקַבֵּיל פִּתְגָמַי : נָכֵיס תּוֹרָא
כְּקָטֵיל גְּבַר דָּבַח אִמַּר כְּנָקֵיף כְּלַב מַסֵּק קוּרְבַּן דַּם חֲזִירָא קוּרְבַּן מַתְּנַתְהוֹן מַתְּנַת אוֹנֶס
אַף אִנּוּן אִתְרְעִיאוּ בְּאָרְחָתְהוֹן וּבְשִׁקּוּצֵיהוֹן נַפְשְׁהוֹן אִתְרְעִיאַת :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Qui benedicetur in terra, benedicetur in Deo vivo; & qui juraverit in terra, jurabit in Deo vivo : quia oblivioni traditæ ſunt anguſtiæ priores, & 16
quia occultatæ ſunt à facie mea. Quia ecce ego creo cœlos novos & terram novam: & non erunt in memoria priora, neque aſcendent ſuper cor. 17
Sed gaudebunt & exultabunt in ſeculo ſeculorum quod ego creabo : quia 18
ecce ego creo Jeruſalem exultationem, & populum ejus gaudium. Et exultabo in Jeruſalem, & gaudebunt in ea populus meus : & non audietur in 19
ea ultrà vox flentium & vox clamantium. Et non erit ibi ampliùs infans dierum, & ſenex qui non impleat dies ſuos: quoniam puer qui deliquerit ætate centum annorum, morietur; & qui peccaverit ætate centum annorum, exulabit. Et ædificabunt domos & habitabunt : & plantabunt 20
vineas, & comedent fructus earum. Non ædificabunt, & alii habitabunt; non plantabunt, & alii comedent : quoniam ſicut dies arboris vitæ erunt dies populi mei: & opus manuum ſuarum inveterabunt electi mei. 21 22
Non laborabunt in vanum, neque nutrient ad mortem ; quoniam ſemen, 23
cui benedixit Dominus, ſunt, & filii filiorum ſuorum cum eis. Et erit antequàm orent coram me, & ego ſuſcipiam orationem eorum ; & antequam 24
deprecentur à facie mea, *faciam* deprecationem eorũ. Lupus & agnus paſcentur ſimul, & leo ſicut bos comedet paleam: & ſerpentis pulvis erit panis ejus : non malè facient , neque nocebunt in omni monte ſancto meo, dicit Dominus. 25

CAP, LXVI.

Sic dicit Dominus : Cœli ſunt ſolium gloriæ meæ, & terra ſcabellum coram me: quæ eſt iſta domus quam ædificabitis mihi? & quis eſt iſte locus domus manſionis majeſtatis meæ? Et omnia hæc potentia mea fecit; facta utique ſunt univerſa hæc, dicit Dominus: & in iſto eſt voluntas coram me, ad reſpiciendum ad eum, [*nempe*] manſuetum & contritum ſpiritu, & *metuentem* propter ſermonem meum. Qui immolat bovem quaſi qui interficit virum: qui ſacrificat agnum, quaſi qui excoriat canem: qui offert *oblationem*, quaſi qui offerat ſanguinem ſuillum. Oblatio munerum eorum eſt munus rapinæ: ipſi quoque elegerunt vias ſuas, et abominationes ſuas anima eorum elegit. 1 2 3

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

16 * ܕܡܬܒܪܟ ܒܐܪܥܐ ܀ ܢܬܒܪܟ ܒܐܠܗܐ ܫܪܝܪܐ. ܘܕܝܡܐ ܒܐܪܥܐ ܢܐܡܐ ܒܐܠܗܐ ܫܪܝܪܐ. ܡܛܠ
17 ܕܢܬܛܥܝܢ ܥܩܬܐ ܩܕܡܝܬܐ. ܘܢܬܟܣܝܢ ܡܢ ܩܕܡܝ. * ܡܛܠ ܕܗܐ ܐܢܐ ܒܪܐ ܐܢܐ ܫܡܝܐ ܚܕܬܐ.
18 ܘܐܪܥܐ ܚܕܬܐ. ܘܠܐ ܢܬܕܟܪܢ ܩܕܡܝܬܐ. ܘܠܐ ܢܣܩܢ ܥܠ ܠܒܐ. * ܐܠܐ ܢܚܕܘܢ ܘܢܪܘܙܘܢ ܠܥܠܡ
19 ܥܠܡܝܢ ܒܕܒܪܐ ܐܢܐ. ܡܛܠ ܕܗܐ ܒܪܐ ܐܢܐ ܠܐܘܪܫܠܡ ܕܘܨܐ. ܘܥܡܗ ܚܕܘܬܐ. * ܘܐܕܘܨ ܒܐܘܪܫܠܡ.
20 ܘܐܪܘܙ ܒܥܡܝ. ܘܠܐ ܢܫܬܡܥ ܒܗ ܬܘܒ ܩܠܐ ܕܒܟܝܐ ܘܩܠܐ ܕܝܠܠܬܐ. * ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܬܡܢ
ܛܠܐ ܝܘܡܬܐ ܀ ܘܣܒܐ ܕܠܐ ܢܡܠܐ ܝܘܡܬܗ. ܡܛܠ ܕܛܠܝܐ ܒܪ ܡܐܐ ܫܢܝܢ ܢܡܘܬ. ܘܚܛܝܐ
21 ܕܡܛܐ ܒܪ ܡܐܐ ܫܢܝܢ ܢܬܠܛ. * ܘܢܒܢܘܢ ܒܬܐ ܘܢܥܡܪܘܢ ܘܢܢܨܒܘܢ ܟܪܡܐ ܘܢܐܟܠܘܢ
22 ܦܐܪܝܗܘܢ. * ܠܐ ܢܒܢܘܢ ܘܐܚܪܢܐ ܢܥܡܪܘܢ ܀ ܘܠܐ ܢܢܨܒܘܢ ܘܐܚܪܢܐ ܢܐܟܠܘܢ. ܡܛܠ ܕܝܘܡܬܗ
23 ܕܥܡܝ ܀ ܐܝܟ ܝܘܡܬܐ ܕܐܝܠܢܐ. ܘܥܒܕܐ ܕܐܝܕܝܗܘܢ ܢܒܠܘܢ. * ܓܒܝܐ ܠܐ ܢܠܐܘܢ
ܠܣܪܝܩܘܬܐ. ܘܠܐ ܢܘܠܕܘܢ ܠܠܘܛܬܐ. ܡܛܠ ܕܙܪܥܐ ܐܢܘܢ ܕܒܪܝܟܘܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܗܢܘܢ ܘܒܢܝܗܘܢ
24 25 ܥܡܗܘܢ. * ܘܢܗܘܐ ܕܥܕܠܐ ܢܩܪܘܢ ܐܢܐ ܐܥܢܐ ܐܢܘܢ. ܘܥܕ ܡܡܠܠܝܢ ܐܢܐ ܫܡܥ ܐܢܐ ܠܗܘܢ. * ܕܐܒܐ ܘܐܡܪܐ
ܐܟܚܕܐ ܢܪܥܘܢ. ܘܐܪܝܐ ܐܝܟ ܬܘܪܐ ܢܐܟܘܠ ܬܒܢܐ ܀ ܘܚܘܝܐ ܥܦܪܐ ܠܚܡܗ. ܘܠܐ
ܢܒܐܫܘܢ ܘܠܐ ܢܚܒܠܘܢ ܒܟܠܗ ܛܘܪܐ ܕܩܘܕܫܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܫܘܠܡܗ * ܗܘ *
1 * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܫܡܝܐ ܟܘܪܣܝܐ ܕܝܠܝ. ܘܐܪܥܐ ܟܘܒܫܐ ܕܪܓܠܝ. ܐܝܢܐ ܒܝܬܐ ܕܒܢܝܢ ܐܢܬܘܢ
2 ܠܝ. ܐܘ ܐܝܢܘ ܐܬܪܐ ܕܢܝܚܬܝ. * ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ ܐܝܕܝ ܥܒܕܬ ܀ ܘܕܝܠܝ ܐܢܝܢ ܗܠܝܢ
ܟܠܗܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܠܡܢ ܐܚܘܪ ܘܒܡܢ ܐܥܡܪ. ܐܠܐ ܒܢܝܚܐ ܘܡܟܝܟܐ ܘܪܘܚܐ ܕܙܐܥ ܡܢ ܡܠܬܝ.
3 ܕܢܟܣ ܬܘܪܐ ܐܝܟ ܗܘ ܕܩܛܠ ܓܒܪܐ. ܕܕܒܚ ܐܡܪܐ ܐܝܟ ܗܘ ܕܩܛܠ ܟܠܒܐ. ܕܡܩܪܒ
4 ܣܡܝܕܐ ܐܝܟ ܕܡܐ ܕܚܙܝܪܐ. ܕܡܩܪܒ ܠܒܘܢܬܐ ܐܝܟ ܗܘ ܕܡܒܪܟ ܠܦܬܟܪܐ. * ܐܦ ܗܢܘܢ
ܐܨܛܒܝܘ ܒܐܘܪܚܬܗܘܢ. ܘܨܒܬ ܢܦܫܗܘܢ ܒܛܢܦܘܬܗܘܢ.

Qui benedicitur in terra, per Deum ſanè be- 16
nedicetur ; & qui jurat in terra, per Deum ſa-
nè jurabit: quoniam oblivioni tradentur affli-
ctiones præteritæ, & abſcondentur à conſpe-
ctu meo. Nam ecce ego creaturus ſum cœ- 17
los novos & terram novam, neque recorda-
buntur rerum præteritarū, neque mentē ſub-
ibunt ; Sed lætabuntur & exultabunt in ſe- 18
culum ſeculorū in his quæ ego creabo. Ecce
enim creabo Jeroſolymæ exultationē, & in ea
gaudebo: Gaudebo inquam, in Jeruſalem, & 19
exultabo in populo meo ; & non audietur am-
pliùs in ea vox fletûs, aut vox ululatûs. Nec 20
erit ampliùs ibi puer ætate, aut ſenex qui non
expleat ætatem ſuam: puer enim, centum nat°
annos morietur ; & quicunque peccaverit cen-
teſimum annum agens, maledicetur. Ædifi- 21
cabunt domos, & inhabitabunt *eas* ; planta-
bunt vineas, & comedent fructus earum. Non 22
ædificabunt, & alii inhabitabunt ; neque plan-
tabunt, & alii comedent : quoniā dies populi
mei erunt ut dies arborū, & opus manuū ſua-
rum comedent. Electi mei non laborabunt in 23
vanum, neque gignent in maledictionē : ſunt
enim ſemen benedictū à Dño, tam ipſi quàm
prognati eorū cum ipſis. Antequā clament, 24
reſpondebo eis ; & antequam loquantur, audiā
illos. Lupus & agnus unà paſcentur, leo ſic- 25
ut bos comedet paleā, et ſerpentis cibus erit
pulvis : non nocebunt, neque corrumpent in
toto monte ſanctitatis meæ, dicit Dominus.

CAP. LXVI.

Sic dicit Dñs, Cœlum ſoliū meum eſt, terra 1
verò ſcabellū pedum meorū: quænā eſſet do-
mus quam ædificaretis mihi ? aut quinā locus
quietis meæ? Hæc *quidem* omnia manus mea 2
fecit, et mea ſunt hæc omnia, dicit Dominus.
In quem ergò reſpiciam, et *in quo* habitabo,
niſi in tranquillo et humili ſpiritu, qui ad
verbum meum contremiſcit? Qui bovem 3
jugulat, perinde eſt ac ſi hominem interfice-
ret ; qui mactat agnum, perinde ac ſi canem
occideret ; qui ſimilam offert, perinde ac ſi
ſanguinem porci ; qui thus offert, perinde ac
ſi benediceret idolis. Quemadmodum iſti 4
excogitaverunt vias ſuas, & ſuis idolis oble-
ctatus eſt animus eorum ;

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

16 * الذي يبارك على الارض لانهم يباركون الله الحقيقي * والذين يحلفون على الارض
17 يحلفون بالله الحقيقي * لانهم ينسون ضيقهم الاولي ولا تصعد على قلبهم * لان السماء تكون
18 جديدة والارض جديدة * ولا يذكرون الاوليين ولا يخطر على قلبهم * لكن يجدون فيها
19 سرورا وبهجة * ها انا اصنع ايروسليم بهجة وشعبي سرورا * وابتهج بايروسليم واسر
20 بشعبي * ولا يسمع فيها صوت بكاء اصلا ولا صوت صراخ * ولا يكون ايضا هناك غير كامل
الايام ولا شيخ لم يكمل زمانه * لان الشاب يكون بن مائة سنة * والذي يموت خاطئ بعد
21 مائة سنة فملعون هو * ويبنون بيوتا وهم يسكنون * ويغرسون كروما وهم ياكلون غلاتها *
22 * ولا يبنون واخرون يسكنون * ولا يغرسون واخرون ياكلون * لان كايام شجرة الحياة تكون
23 ايام شعبي * واعمال ايديهم يخلقون * واصفيائي لا يتعبون باطلا ولا يصنعون اولادا للعنة *
24 لانهم زرع مبارك من الله * وبنو بنيهم معهم يكونون * ويكون قبل ان يصرخوا انا استجيب
25 لهم * واذ يتكلمون اقول ما هو * حينئذ ترعى الذئاب والخراف معا * والاسد مثل البقر
ياكل التبن * والحية تاكل الارض مثل الخبز * ولا يضرون ولا يفسدون في جبلي المقدس
يقول الرب *

* الفصل السادس والستون *

1 * هكذا يقول الرب * السماء كرسي * والارض موطئ قدمي * فاي بيت تبنون لي * واي
2 موضع راحتي * لان هاولاء كلهم صنعتهم يدي * وهاولاء كلهم لي يقول الرب * فعلي من
3 انظر الا على المتواضع الهادي والمرتعد من كلامي * والاثيم الذي يذبح لي عجلا
كمن يقتل كلبا * والذي يقدم سميذا كدم خنزير * والذي يعطي لبانا للتذكار
4 كمجدف * وهاولاء اختاروا طرقهم ورد اثامهم التي ارادها نفسهم *

Quod ſuper terram benedicetur ; eò quòd 16
Deum verum benedicant : & qui jura-
verint ſuper terram, per Deum verum ju-
rabunt ; eò quòd ſint oblivioni daturi
præcedentem afflictionē ſuam, ita ut nun-
quam veniat in mentem eorum. Cœlum 17
enim erit novum, & terra nova ; & non
recordabuntur præteritorum, nec venient
illis in mentem ; Sed invenient in eis gau- 18
dium & jucunditatem. Ecce ego faciam
ut Jeruſalem ſit jucunditas, & populus
meus gaudium : Et jucundabor in Jeru- 19
ſalem, & gaudebo in populo meo: nec au-
dietur penitùs in ea vox fletûs, neque
vox clamoris. Nec erit ampliùs illic ado- 20
leſcens imperfectus ætate, neque ſenex qui
non peragat tempus ſuum : nam adole-
ſcens annos centum explebit : qui autem
mortuus fuerit peccator poſt annos cen-
tum, erit maledictus. Ædificabunt do- 21
mum, ipſique inhabitabunt ; plantabunt
vineas & ipſi comedent proventus earum.
Nequaquam ædificabunt, & alii inhabi- 22
tabunt ; neque plantabunt, & alii come-
dent: quoniam ut dies arboris vitæ, erunt
dies populi mei, & opus manuum ſuarum
conſument. Electi mei non laborabunt 23
in caſſum, neque progignent filios in exe-
crationem ; quoniam ſunt ſemen bene-
dictum à Deo, & nepotes eorum cum
ipſis erunt. Eritque nondum clamantibus 24
ipſis, ut ego reſpondeam ; & ſtatim atque
loquentur, dicam, Quid eſt ? Tunc pa- 25
ſcentur lupi & agni ſimul, & leo boum
inſtar comedet paleam, & ſerpens terram
quaſi panem comedet, & non lædent neq;
corrumpent in monte ſancto meo, dicit
Dominus.

CAP. LXVI.

Sic ait Dominus, Cœlum eſt ſedes mea, 1
& terra ſcabellum pedum meorum :
quam ergò domum ædificaretis mihi ?
& quis eſſet locus ſtationis meæ ? Nam 2
hos omnes condidit manus mea, & hi
omnes mei ſunt, ait Dominus : in quem
itaque reſpiciam, niſi in humilem, man-
ſuetum, & ad verba mea trepidan-
tem ? Iniquus autem qui mihi vitulum 3
ſacrificat, eſt ut is qui canem inter-
ficit : qui ſimilam offert, ac ſi ſangui-
nem porci : quique thus in memoriam
offert, idem ac blaſphemans. Quando- 4
quidem iſti elegerunt vias ſuas et abomi-
nationes ſuas, quas optavit animus eorum ;

adducam *eorum timores* & , eorum *adinventionibus* in eligam ego Etiam
4 גַּם־אֲנִי אֶבְחַר בְּתַעֲלֻלֵיהֶם וּמְגוּרֹתָם אָבִיא
: audierunt non &, sum locutus ; *respondens* non & , vocavi quòd eò , eis
לָהֶם יַעַן קָרָאתִי וְאֵין עוֹנֶה דִּבַּרְתִּי וְלֹא שָׁמֵעוּ
.elegerunt volui non *quo in* & , meis oculis in malum fecerúntque
וַיַּעֲשׂוּ הָרַע בְּעֵינַי וּבַאֲשֶׁר לֹא־חָפַצְתִּי בָּחָרוּ׃
dixerunt : ejus verbum ad *contremiscentes* , DOMINI verbum Audite
5 שִׁמְעוּ דְּבַר־יְהוָה הַחֲרֵדִים אֶל־דְּבָרוֹ אָמְרוּ
:meum nomen propter vos *elongantes* , vos habentes odio vestri fratres
אֲחֵיכֶם שֹׂנְאֵיכֶם מְנַדֵּיכֶם לְמַעַן שְׁמִי
.afficiẽtur pudore ipsi &, vestra lætitia in cõspicietur at : Domin⁹ *sit gloriosus*
יִכְבַּד יְהוָה וְנִרְאֶה בְשִׂמְחַתְכֶם וְהֵם יֵבֹשׁוּ׃
reddentis DOMINI vox , templo de vox , civitate de sonitus Vox
6 קוֹל שָׁאוֹן מֵעִיר קוֹל מֵהֵיכָל קוֹל יְהוָה מְשַׁלֵּם
antequam : peperit, parturiret Antequàm .suis inimicis retributionem
7 גְּמוּל לְאֹיְבָיו׃ בְּטֶרֶם תָּחִיל יָלָדָה בְּטֶרֶם
quis , *hæc sicut* audivit Quis .masculum *est enixa* & , ei dolor veniret
8 יָבוֹא חֵבֶל לָהּ וְהִמְלִיטָה זָכָר׃ מִי־שָׁמַע כָּזֹאת מִי
gens parietur num ? una die in terra est parta nũquid ? *hæc sicut* vidit
רָאָה כָּאֵלֶּה הֲיוּחַל אֶרֶץ בְּיוֹם אֶחָד אִם־יִוָּלֵד גּוֹי
.suos filios Sijon peperit etiam , *fuit ægra* quia ? una vice
פַּעַם אֶחָת כִּי־חָלָה גַּם־יָלְדָה צִיּוֹן אֶת־בָּנֶיהָ׃
? Dominus dixit , faciam parere non & , *frangam matricem* ego Num
9 הַאֲנִי אַשְׁבִּיר וְלֹא אוֹלִיד יֹאמַר יְהוָה
Lætamini ? tuus Deus dixit , *claudar &* , *faciens generare* ego Num
10 אִם־אֲנִי הַמּוֹלִיד וְעָצַרְתִּי אָמַר אֱלֹהָיִךְ׃ שִׂמְחוּ
gaudete : eam *diligentes* omnes ea in exultate & , Jerusalaim cum
אֶת־יְרוּשָׁלִַם וְגִילוּ בָהּ כָּל־אֹהֲבֶיהָ שִׂישׂוּ
, sugatis Ut .eam super *lugentes* universi gaudio ea cum
11 אִתָּהּ מָשׂוֹשׂ כָּל־הַמִּתְאַבְּלִים עָלֶיהָ׃ לְמַעַן תִּינְקוּ
, mulgeatis ut : ejus consolationum ubere ab saturemini &
וּשְׂבַעְתֶּם מִשֹּׁד תַּנְחֻמֶיהָ לְמַעַן תָּמֹצּוּ
dixit sic Nam .ejus gloriæ *splendore à* delectemini &
12 וְהִתְעַנַּגְתֶּם מִזִּיז כְּבוֹדָהּ׃ כִּי־כֹה אָמַר
, pacem , fluvium tanquam eam ad *declinans* ego Ecce : DOMINUS
יְהוָה הִנְנִי נֹטֶה־אֵלֶיהָ כְּנָהָר שָׁלוֹם
: sugetis & , gentium gloriam , inundantem torrentem tanquam &
וּכְנַחַל שׁוֹטֵף כְּבוֹד גּוֹיִם וִינַקְתֶּם
quem vir Sicut .*oblectabimini* genua super & , portabimini latus super
13 עַל־צַד תִּנָּשֵׂאוּ וְעַל־בִּרְכַּיִם תְּשָׁעֳשָׁעוּ׃ כְּאִישׁ אֲשֶׁר
Jerusalaim in & , vos consolabor ego sic , *cum consolabitur* sua mater
אִמּוֹ תְּנַחֲמֶנּוּ כֵּן אָנֹכִי אֲנַחֶמְכֶם וּבִירוּשָׁלִַם
, vestrum cor gaudebit & , videbitis Et .consolationem accipietis
14 תְּנֻחָמוּ׃ וּרְאִיתֶם וְשָׂשׂ לִבְּכֶם
manus cognoscetur & : germinabunt herba tanquam vestra ossa &
וְעַצְמוֹתֵיכֶם כַּדֶּשֶׁא תִפְרַחְנָה וְנוֹדְעָה יַד־
Quia .suis inimicis *indignabitur* & , *suis servis cum* DOMINI
15 יְהוָה אֶת־עֲבָדָיו וְזָעַם אֶת־אֹיְבָיו׃ כִּי־
: ejus quadrigæ turbo tanquã & , veniet igne in DOMINUS ecce
הִנֵּה יְהוָה בָּאֵשׁ יָבוֹא וְכַסּוּפָה מַרְכְּבֹתָיו
.ignis *flammis* in suam increpationẽ & , suũ *nasum* ira in reddendũ ad
לְהָשִׁיב בְּחֵמָה אַפּוֹ וְגַעֲרָתוֹ בְּלַהֲבֵי־אֵשׁ׃
omnem suo gladio in & , *contendens judicio* Dominus igne in Quia
16 כִּי בָאֵשׁ יְהוָה נִשְׁפָּט וּבְחַרְבּוֹ אֶת־כָּל־
, se *Sanctificantes* .*DOMINI vulnerati* erunt multi & : carnem
17 בָּשָׂר וְרַבּוּ חַלְלֵי יְהוָה׃ הַמִּתְקַדְּשִׁים
carnẽ comedẽtes : medio in *unum* post hortis in se *purificantes* &
וְהַמִּטַּהֲרִים אֶל־הַגַּנּוֹת אַחַר אַחַד בַּתָּוֶךְ אֹכְלֵי בְּשַׂר
.Dominus dixit , *finientur* simul : murem &, abominationem & , *porci*
הַחֲזִיר וְהַשֶּׁקֶץ וְהָעַכְבָּר יַחְדָּו יָסֻפוּ נְאֻם־יְהוָה׃

Versio VULG. LAT.

4 Unde & ego eligam illusiones eorum : & quæ timebant, adducam eis: quia vocavi, & non erat qui responderet : locutus sum, & non audierunt : fecerúntque malum in oculis meis, 5 & quæ nolui elegerunt. Audite verbum Domini, qui tremitis ad verbũ ejus: dixerunt fratres vestri odientes vos, & abjicientes propter nomen meũ; Glorificetur Dominus, et videbimus in lætitia vestra: ipsi autem 6 confundentur. Vox populi de civitate, vox de templo, vox Domini reddentis retributionem 7 inimicis suis. Antequàm parturiret, peperit : antequàm veniret part⁹ ejus, peperit ma- 8 sculum. Quis audivit unquam tale? et quis vidit huic simile? numquid parturiet terra in die una? aut parietur gens simul, quia parturivit et peperit Sion 9 filios suos? Numquid ego, qui alios parere facio, ipse non pariam, dicit Dominus? si ego, qui generationẽ cæteris tribuo, ste- 10 rilis ero, ait Dñs Deus tuus? Lætamini cum Jerusalem, & exultate in ea omnes qui diligitis eam: gaudete cum ea gaudio universi, qui lugetis super eam, 11 Ut sugatis, et repleamini ab ubere consolationis ejus: ut mulgeatis, et deliciis affluatis ab o- 12 mnimoda gloria ej⁹. Quia hæc dicit Dominus; Ecce ego declinabo super eam quasi fluvium pacis, & quasi torrentem inundantem gloriam Gentiũ, quam sugetis: ad ubera portabimini, et super genua blandientur vo- 13 bis. Quomodò si cui mater blandiatur, ita ego consolabor vos, et in Jerusalem consolabi- 14 mini. Videbitis, et gaudebit cor vestrum, et ossa vestra quasi herba germinabunt, et cognoscetur manus Domini servis ejus, & indignabitur inimicis 15 suis. Quia ecce Dñs in igne veniet, et quasi turbo quadrigæ ejus: reddere in indignatione furorem suum, & increpationem suam in flamma ignis: 16 Quia in igne Dominus dijudicabit, & in gladio suo ad omnem carnem, & multiplicabuntur interfecti à Domino, 17 Qui sanctificabantur, & mundos se putabant in hortis post januam intrinsecús: qui comedebant carnem suillã, & abominationem, & murem : simul consumentur, dicit Dominus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

4 (ε) Καὶ ἐγὼ ἐκλέξομαι τὰ (ζ) ἐμπαίγματα αὐτῶν, ϗ τὰς ἁμαρτίας (η) ἀνταποδώσω αὐτοῖς· ὅτι ἐκάλεσα αὐτοὺς, ϗ οὐχ ὑπήκουσάν μου· ἐλάλησα ϗ οὐκ ἤκουσαν, ϗ ἐποίησαν τὸ πονηρὸν ἐναντίον (θ) ἐμοῦ, ϗ ἃ οὐκ ἐβουλόμην, 5 ἐξελέξαντο. Ἀκούσατε (ι) ῥήματα κυρίου οἱ τρέμοντες τὸν λόγον αὐτοῦ· εἴπατε ἀδελφοὶ ἡμῶν τοῖς μισοῦσιν (κ) ὑμᾶς ϗ βδελυσσομένοις, ἵνα τὸ ὄνομα κυρίου δοξασθῇ, ϗ ὀφθῇ ἐν τῇ εὐφροσύνῃ αὐτῶν, (λ) ϗ ἐκεῖ- 6 νοι αἰσχυνθήσονται. Φωνὴ κραυγῆς ἐκ πόλεως, φωνὴ ἐκ ναοῦ, φωνὴ κυρίου ἀνταποδιδόντος ἀνταπόδοσιν τοῖς ἀντικειμένοις. 7 (μ) Πρὶν τὴν ὠδίνουσαν τεκεῖν, (ν) πρὶν ἐλθεῖν τὸν πόνον τῶν ὠδίνων, ἐξέφυγε ϗ ἔτε- 8 κεν ἄρσεν. Τίς ἤκουσε τοιοῦτο, ϗ τίς ἑώρακεν οὕτως; εἰ ὤδινε γῆ (ξ) ἐν ἡμέρᾳ μιᾷ, (ο) ἢ ϗ ἐτέχθη ἔθνος εἰς ἅπαξ, ὅτι ὤδινε ϗ 9 ἔτεκε Σιὼν τὰ παιδία αὐτῆς. Ἐγὼ δὲ ἔδωκα τὴν προσδοκίαν ταύτην, ϗ οὐκ ἐμνήσθης μου, εἶπε κύριος. οὐκ ἰδοὺ ἐγὼ γεννῶσαν ϗ στεῖραν ἐποίησα; εἶπεν ὁ (π) θεός σου. 10 Εὐφράνθητι Ἱερουσαλὴμ, ϗ (ρ) πανηγυρίσατε ἐν αὐτῇ πάντες οἱ ἀγαπῶντες αὐτήν, χάρητε ἅμα αὐτῇ χαρᾷ πάντες ὅσοι πεν- 11 θεῖτε ἐπ' αὐτῇ, Ἵνα θηλάσητε, ϗ ἐμπλησθῆτε ἀπὸ μαστοῦ παρακλήσεως αὐτῆς, ἵνα ἐκθηλάσαντες τρυφήσητε ἀπὸ εἰσόδου δό- 12 ξης αὐτῆς. Ὅτι τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐκκλίνω εἰς αὐτοὺς ὡς ποταμὸς εἰρήνης, ϗ ὡς χειμάρρους ἐπικλύζων δόξαν ἐθνῶν· τὰ παιδία αὐτῶν ἐπ' ὤμων ἀρθήσονται, ϗ 13 ἐπὶ γονάτων παρακληθήσονται. Ὡς εἴ τινα μήτηρ παρακαλέσει, (σ) οὕτω κἀγὼ παρακαλέσω ὑμᾶς, ϗ ἐν Ἱερουσαλὴμ παρακληθή- 14 σεσθε. Καὶ (τ) ὄψεσθε, ϗ χαρήσεται ἡ καρδία ὑμῶν, ϗ τὰ ὀστᾶ ὑμῶν ὡς βοτάνη ἀνατελεῖ. ϗ γνωσθήσεται ἡ χεὶρ κυρίου τοῖς (υ) φοβουμένοις αὐτὸν, ϗ ἀπειλήσει τοῖς ἀπειθοῦ- 15 σιν. Ἰδοὺ γὰρ κύριος ὡς πῦρ ἥξει, ϗ ὡς καταιγὶς τὰ ἅρματα αὐτοῦ, ἀποδοῦναι ἐν θυμῷ (φ) ἐκδίκησιν αὐτοῦ, ϗ ἀποσκορακισμὸν αὐτοῦ 16 ἐν φλογὶ πυρός. Ἐν γὰρ τῷ πυρὶ κυρίου (χ) κριθήσεται πᾶσα ἡ γῆ, ϗ ἐν τῇ ῥομφαίᾳ αὐτοῦ πᾶσα σάρξ· πολλοὶ τραυματίαι ἔσονται 17 ὑπὸ κυρίου. Οἱ ἁγνιζόμενοι ϗ καθαριζόμενοι εἰς τοὺς κήπους, ϗ ἐν τοῖς προθύροις ἐσθίοντες (ψ) κρέας ὕειον, ϗ τὰ βδελύγματα, ϗ τὸν μῦν, ἐπὶ τὸ αὐτὸ (ω) ἀναλωθήσονται, εἶπε κύριος.

Et ego eligam illusiones eorum, & peccata retribuam eis. Quia vocavi eos; & non obedierunt mihi: loquutus sum; & non audierunt: & fecerunt malum in conspectu meo; & quæ nolebam, elegerunt. 5 *Audite verba Domini, qui tremitis sermonem ejus: dicite fratres (b) nostri iis qui oderunt vos, & abominantur; ut nomen Domini glorificetur, & appareat in lætitia eorum: & illi confundentur.* 6 *Vox clamoris de civitate, vox de templo, vox Domini retribuentis retributionem adversariis.* 7 *Antequàm parturiens pareret, antequã veniat labor parturiginum; effugit, & peperit masculum.* 8 *Quis audivit tale, & quis vidit sic? Si parturivit terra in die una, aut etiam nata est gens tota simul: quia parturivit, & peperit Sion parvulos suos?* 9 *Ego autem dedi expectationem hanc: & non recordata es mei, dicit Dominus. Nonne ego parientem & sterilem feci, dixit Deus tuus?* 10 *Lætare Hierusalem; & conventum facite in ea omnes, qui diligitis eam: gaudete simul cũ ea gaudio, omnes qui lugetis super eã:* 11 *Ut sugatis, et impleamini ab ubere consolationis ejus: ut postquàm suxeritis, delectemini ab (c) introitu gloriæ ejus:* 12 *Quia hæc dicit Dominus; Ecce ego declino ad eos quasi fluvius pacis, & quasi torrens inundans gloriam gentium. Parvuli eorum in humeris portabuntur, & super genua consolabuntur.* 13 *Quomodò, si quem mater consoletur; ita & ego consolabor vos. Et in Hierusalem consolabimini:* 14 *Et videbitis: & gaudebit cor vestrum: & ossa vestra, sicut herba, germinabunt. Et cognoscetur manus Domini timentibus eum, & minabitur contumacibus.* 15 *Ecce enim Dominus, sicut ignis veniet, & sicut procella, currus ejus, reddere in furore ultionem suam, & increpationem suã in flamma ignis.* 16 *In igne enim Domini judicabitur omnis terra; & in gladio illius universa caro: multi vulnerati erunt à Domino.* 17 *(d) Qui purificantur, & mundantur in hortis, & in liminibus, comedentes carnem porcinam & abominationes, & murem; simul consumentur, dixit Dominus.*

MS.A. (ε) Κἀγὼ (ζ) ἐνπαίγματα (η) αὐτῶν (θ) μου, (ι) τὸ ῥῆμα (κ) ἡμᾶς (λ) κἀκεῖνοι (μ) Πρὶν ἢ (ν) πρὶν ἢ (ξ) ἐν μιᾷ ἡμέρᾳ, (ο) εἰ ἐτέχθη ἔθνος (π) θεός. Εὐφράνθητι (ρ) πανηγυρίσατε πάντες οἱ ἐνοικοῦντες ἐν αὐτῇ, χάρητε χαρὰν πάντες ὅσοι πενθεῖτε ἐπ' αὐτῇ, (σ) ὅτι οὕτως ϗ ἐγὼ (τ) ὄψεσθε, καὶ χαρήσεται ὑμῶν ἡ καρδία, (υ) σεβομένοις (φ) ἐκδίκησιν ϗ ἀποσκορακισμὸν ἐν φλογὶ (χ) καταναλωθήσεται (ψ) κρέα (ω) καταναλωθήσονται,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 אף אנא אצבי בתברהון ומסה דיצפן לא ישתיזבון חלף דשלחית נביי ולא תבו אתנביאו
5 ולא קבילו ועבדו דביש קדמי ובדלא צבינא אתרעיאו : קבילו פתגמא דיי צדיקיא
דמשתון לקביל פתגמי רעותיה אמרין אחיכון סנאיכון מרחקיכון בדיל שמי יסגי יקרא
6 דיי ונחזי בחדותכון ואנון יבהתון : קל אתרגושא מקרתא דירושלם קלא מהיכלא קל
7 מימרא דיי דמשלם גמלא לבעלי דבבוהי : עד לא מיתי עקא לה תתפרק עד לא ייתי
8 לה זיע כחבלין על ילידה יתגלי מלכה : מן שמע כהדא ומן חזא כאלן האפשר
דתתעבד ארעא ביומא חד אם יתברי עמא זמן חדא ארי עתידא דתתנחם ציון ותתמלי
9 מעם שבי גלותהא : אנא אלהא ברית עלמא מבראשית אמר יי אנא ברית כל אנשא
10 אנא בדרית יתהון לביני עממיא אף אנא עתיד לכנשא גלותיך אמר אלהיך : חדו
11 בירושלם ובועו בה כל רחמהא דוצו עמה דוצו כל דהוו מתאבלין עלה : בדיל
12 דתתפנקון ותשבעון מבזת תנחומתהא בדיל דתשתון ותתרוון מחמר יקרה : ארי כדנן
אמר יי הא אנא מיתי לה כשפע נהר פרת שלם וכנחל מגבר יקר עממיא ותתפנקון על
13 גססין תתנטלון ועל רכובין תתרבון : כגבר דאמיה מנחמא ליה כן מימרי ינחם יתכון
14 ובירושלם תתנחמון : ותחזון ויחדי לבכון וגויתכון כדתאין יזהרון ותתגלי גבורתא
15 דיי לאוטבא לעבדוהי צדיקיא וייתי לוט לבעלי דבבוהי : ארי הא יי באשתא מתגלי
16 וכעלעולין רתיכוהי לאתבא בתקוף רוגזיה ומזופיתיה בשלהובית אשתא : ארי באשתא
17 עתיד יי למדן ובחרביה ית כל בסרא ויסגיאין קטיליא קדם יי : דמזדמנין ודמדכן לגנן
דטעותא סיעא בתר סיעא אכלי בשר חזירא ושקצא ועכברא כחדא יסופון אמר יי :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

4 Ego quoque cupiam interitũ eorũ; & de quo solliciti sunt, non liberabuntur: eò quòd misi Prophetas meos, & non sunt conversi : prophetaverunt, & non obedierunt : & fecerunt quod malum est coram me, & quod nolui elegerunt. 5 Suscipite verbum Dñi, justi, qui *trepidatis* propter sermones voluntatis ej⁹. Dixerunt fratres vestri inimici vestri qui vos aversantur propter nomen meum, Magnificabitur gloria Dñi; & videbim⁹ in lætitia vestra: at ipsi confundentur. 6 Vox sonit⁹ de civitate Jerusalem, vox de templo, vox *verbi* Dñi reddentis retributionẽ inimicis suis. 7 Antequã veniat ei tribulatio, redempta erit: antequã veniat ei tremor, sicut dolores parturientis, revelabitur rex ej⁹. 8 Quis audivit rẽ hujuscemodi? quis vidit talia? nunquid potest fieri terra in die uno? nũ creatur popul⁹ in momento uno? quia futurũ est ut consolationẽ accipiat Sion, & impleatur populo captivo suorũ exulũ. 9 Ego Dñs creavi seculum à principio, dicit Dñs: ego creavi omnes homines, ego dispersi eos inter populos : ego quoque congregatur⁹ sum captivitatem tuam, dicit De⁹ tu⁹. 10 Lætamini in Jerusalem, & exultate in ea omnes qui diligitis eam: gaudete cum ea gaudio omnes qui lugetis sup eam : 11 Ut delectemini & saturemini de præda consolationũ ej⁹; ut bibatis & inebriemini de vino gloriæ ej⁹. 12 Quoniã hæc dicit Dñs: Ecce ego adducã ei quasi fluentem fluminis Euphratis pacem, & quasi torrentẽ inundantẽ, gloriã populorum: & delectabimini, ad ubera portabimini, & sup genua nutriemini. 13 Sicut vir cujus mater consolatur eum, sic Verbũ meũ consolabitur vos. Et in Jerusalem consolabimini, 14 Et videbitis, & lætabitur cor vestrũ, & corpora vestra quasi herbæ splendebunt. Et revelabitur potentia Dñi, ut benefaciat servis suis justis : & inducet maledictionem inimicis suis. 15 Quia ecce Dñs in igne revelabitur, & quasi turbines quadrigæ ejus, ut convertat in iram indignationem suam, & increpationẽ suam in flammã ignis : 16 Quoniam in igne judicaturus est Dñs, & in gladio suo omnem carnem : & multi erunt occisi coram Dño. 17 Qui sese præparant & lustrant in hortis idolorum, turba post turbam, comedentes carnem suillam, & abominationem, & murem, simul consumentur, dicit Dominus.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

ܐܦ ܐܢܐ ܐܨܒܐ ܒܡܒܙܚܢܘܬܗܘܢ. ܘܐܦܪܘܥ ܐܢܘܢ ܒܥܒܕܝܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܩܪܝܬ. ܘܠܝܬ ܕܥܢܐ.
ܘܡܠܠܬ. ܘܠܐ ܫܡܥܘ. ܘܥܒܕܘ ܕܒܝܫ ܩܕܡܝ. ܘܒܚܪܘ ܡܕܡ ܕܠܐ ܨܒܝܬ. * ܫܡܥܘ 5
ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܝܠܝܢ ܕܙܝܥܝܢ ܡܢ ܡܠܘܗܝ. ܐܡܪܘ ܠܐܚܝܟܘܢ. ܣܢܐܝܟܘܢ.
ܘܡܣܠܝܢܟܘܢ. ܡܛܠ ܫܡܝ. ܢܫܬܒܚ ܡܪܝܐ ܘܢܚܕܐ ܒܚܕܘܬܟܘܢ. ܘܗܢܘܢ ܢܒܗܬܘܢ.
* ܩܠܐ ܕܪܘܓܙܐ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܩܠܐ ܡܢ ܗܝܟܠܐ. ܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܕܦܪܥ ܦܘܪܥܢܐ ܠܒܥܠܕܒܒܘܗܝ. 6
* ܥܕܠܐ ܬܚܒܠ ܕܝܠܕܐ. ܘܥܕܠܐ ܢܐܬܘܢ ܚܒܠܝܗ. ܘܬܐܠܕ ܕܟܪܐ. * ܡܢ ܫܡܥ ܐܝܟ ܗܕܐ. 7
ܘܡܢ ܚܙܐ ܐܝܟ ܗܠܝܢ. ܕܬܬܚܒܠ ܐܪܥܐ ܒܝܘܡܐ ܚܕ. ܘܢܬܝܠܕ ܥܡܐ ܒܙܒܢܐ ܚܕܐ. ܡܛܠ 8
ܕܚܒܠܬ ܘܝܠܕܬ ܨܗܝܘܢ ܠܒܢܝܗ. * ܐܢܐ ܝܗܒܬ ܣܒܪܐ ܗܢܐ. ܘܠܐ ܡܘܠܕ ܐܢܐ ܐܡܪ 9
ܡܪܝܐ. ܕܠܡܐ ܠܐ ܗܘܐ ܐܢܐ ܡܘܠܕ ܐܢܐ. ܘܟܠܐ ܐܢܐ ܐܡܪ ܐܠܗܟܝ. * ܚܕܝ ܐܘܪܫܠܡ 10
ܘܕܘܨܘ ܒܗ. ܟܠ ܪܚܡܝܗ. ܐܬܒܣܡܘ ܥܡܗ ܒܒܘܣܡܐ. ܟܠ ܕܗܘܝܬܘܢ ܡܬܐܒܠܝܢ ܥܠܝܗ.
* ܕܬܐܢܩܘܢ. ܘܬܣܒܥܘܢ ܡܢ ܬܕܐ ܕܒܘܝܐܗ. ܘܬܐܢܩܘܢ. ܘܬܬܦܢܩܘܢ ܡܢ ܥܘܫܢܐ ܕܐܝܩܪܗ. 11
* ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܡܓܢܐ ܥܠܝܗ ܫܠܡܐ. ܐܝܟ ܢܗܪܐ. ܘܐܝܟ ܢܚܠܐ ܓܪܘܦܐ. 12
ܘܐܝܩܪܐ ܕܥܡܡܐ ܬܐܢܩܘܢ. ܥܠ ܥܪܣܬܐ ܬܬܛܥܢܘܢ. ܘܥܠ ܒܘܪܟܐ ܬܬܪܒܘܢ. * ܐܝܟ 13
ܓܒܪܐ ܕܡܒܝܐܐ ܠܗ ܐܡܗ. ܗܟܢܐ ܐܢܐ ܐܒܝܐܟܘܢ. ܘܒܐܘܪܫܠܡ ܬܬܒܝܐܘܢ. * ܘܬܚܙܘܢ 14
ܘܢܚܕܐ ܠܒܟܘܢ. ܘܓܪܡܝܟܘܢ ܐܝܟ ܬܕܐܐ ܢܦܪܥܘܢ. ܘܬܬܝܕܥ ܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ ܠܘܬ ܟܠܗܘܢ
ܥܒܕܘܗܝ. ܘܢܓܡܪ ܠܒܥܠܕܒܒܘܗܝ. * ܡܛܠ ܕܗܐ ܡܪܝܐ ܒܢܘܪܐ ܐܬܐ. ܘܐܝܟ ܥܠܥܠܐ 15
ܡܪܟܒܬܗ. ܠܡܗܦܟܘ ܒܚܡܬܐ ܪܘܓܙܗ. ܘܟܐܬܗ ܒܫܠܗܒܝܬܐ ܕܢܘܪܐ. * ܡܛܠ ܕܒܢܘܪܐ 16
ܕܐܢ ܡܪܝܐ. ܘܒܚܪ ܒܗ ܠܟܠ ܒܣܪ. ܘܢܣܓܘܢ ܩܛܝܠܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. * ܕܡܬܩܕܫܝܢ 17
ܘܡܬܕܟܝܢ ܒܓܢܐ. ܚܕ ܒܬܪ ܚܕ ܒܡܨܥܬܐ. ܘܐܟܠܝܢ ܒܣܪܐ ܕܚܙܝܪܐ. ܘܪܚܫܐ ܘܥܘܟܒܪܐ.
ܐܟܚܕܐ ܢܣܘܦܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.

etiam ego delectabor illuſione eorum, &
rependam eis opera eorum : quia vocavi, &
nemo reſpondit ; locutus ſum, & non audie-
runt ; fecerunt quod malum eſt coram me, &
elegerunt quod mihi diſplicet. Audite ſer- 5
monem Domini vos qui ad verbum ejus con-
tremiſcitis : dicite fratribus veſtris, odio ha-
bentibus vos, deſpicientibus vos propter no-
men meum ; Glorificabitur Dominus, & læ-
tabimur gaudio veſtro ; illi verò pudefient.
Vox perturbationis è civitate, & vox è tem- 6
plo, vox Domini rependentis retributionem
hoſtibus ſuis, Antequam parturiat quæ pa- 7
ritura eſt, & antequam adveniant dolores e-
jus, & pariat maſculum. Quis audivit rem 8
hujuſmodi ? aut quis talia vidit ? terram par-
turire uno die, & naſci populum unâ horâ ?
parturivit enim peperitque Sion filios ſuos.
Ego dedi ſpem (*facultatem*) iſtam, & non 9
parerem, ait Dominus ? annon ego parere fa-
cio & impedio, dicit Deus tuus ? Lætami- 10
ni in Jeruſalem, & exultate in ea omnes a-
mantes eam : jucundè exhilaramini cum ea
omnes qui eratis in luctu propter eam : Ut 11
ſugatis & ſaturemini ab ubere conſolationis
ejus, ſugatis & delicias capiatis à magnifi-
centia honoris ipſius. Nam ita dicit Domi- 12
nus, Ecce pacem derivabo ſuper eam tan-
quam fluvium, & ut torrentem rapidum :
honorem gentium ſugetis, ſuper grabatis
portabimini, & ſuper genibus nutriemini.
Uti quempiam mater ſua conſolatur, ita ego 13
vos conſolabor, & in Jeruſalem conſolatio-
nem capietis. Videbitis, & gaudebit cor 14
veſtrum, & oſſa veſtra ut gramen vernum
exultabunt, & cognoſcetur manus Domini
erga omnes ſervos ſuos, hoſtes verò ſuos con-
ſumet. Nam ecce Dominus in igne venturus 15
eſt, & quaſi turbo currus ejus ; ut æſtu furoris
ſui ſubvertat, & increpatio ejus erit flamma
ignis. Igne enim judicaturus eſt Dominus, 16
eoque omnem carnem exploraturus ; & mul-
tiplicabuntur occiſi à Domino. Qui ſancti- 17
ficant & purificant ſe alter poſt alterum me-
diis in hortis, & comedunt carnem porcinam,
inſecta, & mures ; pariter conſumentur, di-
cit Dominus ;

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

وانا اختار مهازيهم وساكافيهم بخطاياهم * لاني دعوتهم فلم يطيعوني * تكلمت فلم يسمعوا *
وصنعوا الشر امامي * واختاروا ما لم اشاه * اسمعوا كلمة الرب ايها المرتعدون من كلامه * 5
قولوا يا اخوتنا للذين يبغضوننا والمرذولين * كي يمجد اسم الرب ويظهر في سرورهم *
واولئك يخزون * صوت صراخ من المدينة وصوت من الهيكل * صوت الرب المكافي مكافاة 6
للمقاومين * قبل ان تطلق قبل ان ياتيها وجع الطلقات هربت وولدت ذكرا * من سمع 7 8
بمثل هذا ومن راى هكذا * ان الارض طلقت في يوم واحد وقد ولدت امة في مرة
واحدة * لان صهيون طلقت وولدت بنيها * وانا اعطيت هذا الرجاء ولم تذكريني قال 9
الرب * اليس انا الذي صنعت التي تلد والعاقر قال الرب * افرحي يا ايروسليم معا 10
وعيدوا فيها يا جميع محبيها * افرحوا بها فرحا يا جميع الذين حزنتم عليها * لكي 11
ترضعوا وتمتلوا من اثدية تعزيتها * كي اذا رضعتم تتنعمون من مدخل مجدها * لان 12
هكذا يقول الرب * ها انا اميل اليهم مجد الامم كانهار سلامة ومثل واد مندفق * ويحمل
اولادهم على الاكتاف * وعلى الركب يعزون مثل من تعزيه امه * لاني هكذا وانا اعزيهم * 13
ويتعزون بايروسليم * وترون ويفرح قلبكم * وعظامكم تزهر مثل النبات * ويعرف يد 14
الرب لعابديه * ويصول على العصاة * لان ها الرب مثل نار ياتي * ومركباته مثل العاصف * 15
فيعطي انتقامه بغضب وتسريكه بلهيب نار * لان كل الارض تدان بنار الرب وبحربته كل 16
جسد * كثيرون يصيرون جرحا من قبل الرب * المتقدسون والمتطهرون في البساتين 17
وقدام الابواب وفي السياجات * الذين ياكلون لحم الخنازير والرذالات واليربوع * جميعا
يبيدون قال الرب *

etiam ego eligam illuſiones eorum, & re-
pendam eis peccata ſua : quoniam vocanti
mihi non acquieverunt, loquentem non
audierunt ; ſed malum coram me perpe-
trârunt, & elegerunt quæ nolo. Audite 5
verbum Domini O qui ad ipſius verba
trepidatis : dicite O fratres noſtri, iis qui
nos odio proſequuntur, & deſpectis ; ut
glorificetur nomen Domini, & pateſiat in
hilaritate eorum ; illi autem erubeſcant.
Vox clamoris ab urbe, & vox de templo, 6
vox Domini reddentis retributionem ad-
verſariis. Antequam parturiret, ante- 7
quam adveniret ei dolor partûs, fugit
peperitque marem. Quis audivit ſimi- 8
lem huic rem ? aut quis tale vidit ? ter-
ram ſcilicet uno die parturiiſſe, & gen-
tem unâ vice peperiſſe ? nam Sion par-
turivit ac peperit filios ſuos. Ego dedi 9
ſpem iſtam, & non meminiſti mei, ait Do-
minus : annon ego ſum qui feci fœcun-
dam & ſterilem, ait Dominus ? Lætare 10
O Jeruſalem ſimul, & feſtum agite in
ea O omnes amantes eam : gaudio per-
fundimini in ea O omnes qui de illa do-
lueratis : Ut lac ſugatis & expleamini ab 11
uberibus conſolationis ejus : ut cùm ſuxe-
ritis, delicias percipiatis è limine glo-
riæ ipſius. Sic enim ait Dominus, Ecce 12
ego reflectam ad eos gloriam gentium
tanquam fluvios pacis & quaſi torren-
tem inundantem : filii eorum ſuper hume-
ros portabuntur, & ſuper genua blandi-
mentis mulcebuntur ut is cui mater ſua
blanditur. Nam eodem ego etiam modo 13
conſolabor eos : & conſolatione perfunde-
mini in Jeruſalem : Et videbitis, & 14
gaudebit cor veſtrum, & oſſa veſtra ceu
gramen florebunt : & nota fiet manus Do-
mini apud colentes eum, irruet autem in
rebelles. Ecce enim Dominus ut ignis 15
venturus eſt, & aurigæ ejus turbini ſimi-
les erunt, reddetque vindictam ſuam
cum furore, & exprobrationem ſuam cum
flamma ignis. Nam orbis univerſus 16
judicandus eſt igne Domini, ejuſq; lanceâ
quodcunque corpus, multi erunt vulne-
rati à Domino. Qui ſanctificant & 17
mundant ſe in hortis, & ante januas,
& in ſepibus, qui comedunt carnem por-
cinam, abominationes, & mures agreſtes ;
ſimul peribunt, ait Dominus.

יִרְמְיָה : א

congregandum ad veniens ,eorum cogitationes & ,eorum opera ego Et
18 וְאָנֹכִי מַעֲשֵׂיהֶם וּמַחְשְׁבֹתֵיהֶם בָּאָה לְקַבֵּץ
.meam gloriam videbunt & ,venient & :linguas & ,gentes omnes
אֶת־כָּל־הַגּוֹיִם וְהַלְּשֹׁנוֹת וּבָאוּ וְרָאוּ אֶת־כְּבוֹדִי׃
gentes ad *evaſos* eis ex mittam & ,ſignum eis in ponam Et
19 וְשַׂמְתִּי בָהֶם אוֹת וְשִׁלַּחְתִּי מֵהֶם פְּלֵיטִים אֶל־הַגּוֹיִם
inſulas ; Javan & , Tubal , arcum trahentes ,Lud & , Pul ,Tharſis
תַּרְשִׁישׁ פּוּל וְלוּד מֹשְׁכֵי קֶשֶׁת תֻּבַל וְיָוָן הָאִיִּים
viderunt non & ,meum auditum audierunt non quæ , longinquas
הָרְחֹקִים אֲשֶׁר לֹא־שָׁמְעוּ אֶת־שִׁמְעִי וְלֹא־רָאוּ
.gentibus in meam gloriam annuntiabunt & :meam gloriam
אֶת־כְּבוֹדִי וְהִגִּידוּ אֶת־כְּבוֹדִי בַּגּוֹיִם׃
munus gentibus cunctis de veſtros fratres omnes adducent,Et
20 וְהֵבִיאוּ אֶת־כָּל־אֲחֵיכֶם מִכָּל־הַגּוֹיִם מִנְחָה
, mulis in & , lecticis in & ,*curru* in & , equis in DOMINO
לַיהוָה בַּסּוּסִים וּבָרֶכֶב וּבַצַּבִּים וּבַפְּרָדִים
dixit , Jeruſalaim *meæ ſanctitatis* montem ad *velocibus animalibus in* &
וּבַכִּרְכָּרוֹת עַל הַר קָדְשִׁי יְרוּשָׁלַםִ אָמַר
vaſe in munus Iſrael filii adducent quẽadmodũ : Dominus
יְהוָה כַּאֲשֶׁר יָבִיאוּ בְנֵי יִשְׂרָאֵל אֶת־הַמִּנְחָה בִּכְלִי
,ſacerdotes in aſſumam eis ex etiam Et .Domini domum , mundo
21 טָהוֹר בֵּית יְהוָה׃ וְגַם־מֵהֶם אֶקַּח לַכֹּהֲנִים
cœli ſicut Quia .DOMINUS dixit , Levitas in
22 לַלְוִיִּם אָמַר יְהוָה׃ כִּי כַאֲשֶׁר הַשָּׁמַיִם
ſtantes , *faciens* ego quos , nova terra & , novi
הַחֲדָשִׁים וְהָאָרֶץ הַחֲדָשָׁה אֲשֶׁר אֲנִי עֹשֶׂה עֹמְדִים
.veſtrũ nomen &,veſtrum ſemen ſtabit ſic : Dominus dixit ,*meæ facies ad*
לְפָנַי נְאֻם־יְהוָה כֵּן יַעֲמֹד זַרְעֲכֶם וְשִׁמְכֶם׃
ſabbathi tempore de & , ejus *menſe in menſis tempore à* erit Et
23 וְהָיָה מִדֵּי־חֹדֶשׁ בְּחָדְשׁוֹ וּמִדֵּי שַׁבָּת
,*meæ facies ad ſe incurvandũ ad* caro omnis veniet : ejꝰ ſabbathum in
בְּשַׁבַּתּוֹ יָבוֹא כָל־בָּשָׂר לְהִשְׁתַּחֲוֹת לְפָנַי
virorum cadavera *in* videbunt & ,egredientur Et .Dominus dixit
24 אָמַר יְהוָה׃ וְיָצְאוּ וְרָאוּ בְּפִגְרֵי הָאֲנָשִׁים
eorũ ignis & ,morietur non eorum vermis quia : me in prævaricantium
הַפֹּשְׁעִים בִּי כִּי תוֹלַעְתָּם לֹא תָמוּת וְאִשָּׁם
.carni omni *nauſea* erunt & ,extinguetur non
לֹא תִכְבֶּה וְהָיוּ דֵרָאוֹן לְכָל־בָּשָׂר׃

Verſio VULG. LAT.

18 Ego autem opera eorum, & cogitationes eorum, venio ut congregem cum omnibus gentibus & linguis: & venient et
19 videbunt gloriã meam. Et ponam in eis ſignum, & mittam ex eis qui ſalvati fuerint, ad Gentes in mare, in Africam, & Lydiam tendentes ſagittam; in Italiam & Græciam, ad inſulas longè, ad eos qui non audierunt de me, & non viderunt gloriã meam. Et annuntiabunt
20 gloriam meam Gentibus, Et adducent omnes fratres veſtros de cunctis Gentibus donum Domino, in equis, & in quadrigis, & in lecticis, & in mulis, & in carrucis, ad montẽ ſanctum meum Jeruſalem, dicit Dominus; quomodò ſi inferant filii Iſrael munus in vaſe mundo in
21 domum Domini. Et aſſumã ex eis in Sacerdotes, et Levitas,
22 dicit Dominus; Quia ſicut cœli novi, & terra nova, quæ ego facio ſtare coram me, dicit Dominus; ſic ſtabit ſemen ve-
23 ſtrum, & nomen veſtrum. Et erit menſis ex menſe, & ſabbatum ex ſabbato: veniet omnis caro ut adoret coram fa-
24 cie mea, dicit Dominus. Et egredientur, & videbunt cadavera virorum, qui prævaricati ſunt in me: vermis eorum non morietur, & ignis eorum non extinguetur: & erunt uſque ad ſatietatem viſionis omni carni.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

18 Κἀγὼ τὰ ἔργα αὐτῶν ϗ τὸν λογισμὸν αὐτῶν· ἔρχομαι συναγαγεῖν πάντα τὰ ἔθνη ϗ τὰς γλώσσας, ϗ ἥξουσι ϗ ὄψονται τὴν
19 δόξαν μου. Καὶ καταλείψω ἐπ' αὐτῶν (α) σημεῖον, ϗ ἐξαποστελῶ ἐξ αὐτῶν σεσωσμένους εἰς τὰ ἔθνη, εἰς Θαρσὶς, ϗ Φοὺδ, ϗ Λοὺδ, ϗ Μοσὸχ, (β) ϗ εἰς Θοβὲλ, ϗ εἰς τὴν Ἑλλάδα, ϗ εἰς τὰς νήσους τὰς πόῤῥω, οἳ οὐκ ἀκηκόασί μου τὸ ὄνομα, (γ) οὔτε ἑωράκασί μου τὴν δόξαν. ϗ (δ) ἀναγγελοῦσι
20 τὴν δόξαν μου ἐν τοῖς ἔθνεσι, Καὶ ἄξουσι τοὺς ἀδελφοὺς ὑμῶν ἐκ πάντων τῶν ἐθνῶν δῶρον κυρίῳ, μεθ' ἵππων ϗ ἁρμάτων ἐν λαμπήναις ἡμιόνων μετὰ σκιαδίων εἰς τὴν ἁγίαν πόλιν Ἱερουσαλὴμ, εἶπε κύριος, ὡς ἀνενέγκαισαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ (ε) τὰς θυσίας αὐτῶν ἐμοὶ μετὰ ψαλμῶν εἰς τὸν οἶκον κυρί-
21 ου. Καὶ ἀπ' αὐτῶν λήψομαι (ζ) ἱερεῖς καὶ
22 Λευίτας, εἶπε κύριος. Ὃν τρόπον γὰρ ὁ οὐρανὸς καινὸς ϗ ἡ γῆ καινὴ, ἃ ἐγὼ ποιῶ, μένει (η) ἐνώπιον ἐμοῦ, λέγει κύριος, (θ) οὕτω στήσεται τὸ σπέρμα ὑμῶν, ϗ τὸ ὄνομα
23 ὑμῶν. Καὶ ἔσται (ι) μὴν ἐκ μηνὸς, ϗ σάββατον ἐκ σαββάτου, ἥξει πᾶσα σὰρξ (κ) τοῦ προσκυνῆσαι ἐνώπιον ἐμοῦ ἐν Ἱερουσα-
24 λὴμ, εἶπε κύριος. Καὶ ἐξελεύσονται, καὶ ὄψονται τὰ κῶλα τῶν ἀνθρώπων τῶν παραβεβηκότων ἐν ἐμοί· ὁ γὰρ σκώληξ αὐτῶν οὐ (λ) τελευτήσει, ϗ τὸ πῦρ αὐτῶν οὐ σβεσθήσεται, καὶ ἔσονται εἰς ὅρασιν πάσῃ σαρκί.

Et ego opera eorum, & cogitationem (e) eorum; venio congregare, omnes gentes, & linguas: & venient, & videbunt gloriam meam: Et dimittam ſuper eos ſignum: & emittam ex eis, qui ſalvati fuerint ad gentes in Tharſis, & Phud, & Lud, & (f) Moſoch, & in Thobel, & in Græciam, & in inſulas, quæ longè, qui non audierunt nomen meum, neque viderunt gloriam meam. Et annuntiabunt gloriam meam in gentibus: Et adducent fratres veſtros de omnibus nationibus, donum Domino cum equis, & rhedis, in lampenis mulorum cũ (g) umbraculis in ſanctã civitatem Hieruſalem, dixit Dominus; quaſi afferant filii Iſrael victimas ſuas mihi cum pſalmis in domum Domini. Et ex eis ſumam Sacerdotes, & Levitas, dixit Dominus. Sicut enim cœlum novum, & terra nova, quæ ego facio, permanent in conſpectu meo, dicit Dominus; ſic ſtabit ſemen veſtrum, & nomen veſtrum. Et erit menſis ex menſe, & ſabbatum ex ſabbato; veniet omnis caro, ut adoret in conſpectu meo in Hieruſalem, dixit Dominus. Et egredientur, & videbunt cadavera hominum, qui prævaricati ſunt in me. Vermis enim eorum non morietur, & ignis eorum non extinguetur; & erunt in viſionem omni carni. 18 19 20 21 22 23 24

MS. A. (α) σημεῖα, (β) ϗ Θοβὲλ, (γ) οὐδὲ ἑωράκασιν τὴν δόξαν μου. (δ) ἀναγγελοῦσίν μου τὴν δόξαν (ε) ἐμοὶ τὰς θυσίας αὐτῶν μετὰ (ζ) ἐμαυτῷ ἱερεῖς (η) ἐνώπιόν μου, (θ) οὕτως (ι) μῆνα (κ) ἐνώπιόν μου προσκυνῆσαι (λ) τελευτᾷ,

Ἡσαΐας προφήτης.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

18 וקדמי גלן עובדיהון ועשתוניהון עתידנא לכנשא ית כל עממיא אומיא ולישניא ויתון
19 ויחזון ית יקרי : ואשוי בהון אתא ואשלח מנהון משיזבין לביני עממיא למדינת ימא
פולאי ולודאי דנגדין ומחן בקשתא למדינת תובל ויון נגותא רחיקן דלא שמעו ית שמע
20 גבורתי ולא חזו ית יקרי ויחוון ית יקרי בעממיא : וייתון ית כל אחיכון מכל עממיא
קורבנא קדם יי בסוסון וברתיכין וברחלין ובכודנון ובתושבחן על טורא דקודשי
21 לירושלם אמר יי כמא דייתון בני ישראל ית קורבנא במנא דכי לבית מקדשא דיי : ואף
22 מנהון אקריב למהוי כהניא וליואי אמר יי : ארי כמא דשמיא חדתין וארעא חדתא
23 דאנא עביד קימין קדמי אמר יי כן יתקיים זרעכון ושומכון : ויהי בזמן ריש ירח בירח
24 ובזמן שבא בשבא ייתון כל בסרא למסגד קדמי אמר יי : ויפקון ויחזון בפגרי גבריא
חיביא דמרדו במימרי ארי נשמתהון לא ימותון ואשתהון לא תטפי ויהון מתדנין
רשיעיא בגיהנם עד דימרון עליהון צדיקיא מסת חזינא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et coram me manifeſta ſunt opera eorum, & cogitationes eorum. Congre- 18
gaturus ſum omnes populos, *gentes* & linguas; & venient & videbunt glo-
riam meam: Et ponam in eis ſignum, & mittam ex eis qui ſalvati fuerint, 19
ad populos, ad provincias maritimas, in Aphros & Lydos, tendentes &
percutientes arcu, ad provinciam Italiæ, & Græciam, ad inſulas longinquas,
quæ non audierunt famam potentiæ meæ, neque viderunt gloriam meam:
& nuntiabunt gloriam meam inter populos. Et adducent omnes fratres ve- 20
ſtros ex omnibus populis; oblationem coram Domino in equis & in qua-
drigis, & in lecticis, & in dromedariis, & in laudibus ad montem ſanctum
meum in Jeruſalem, dicit Dominus: ſicut adducebant filii Iſrael oblatio-
nem in vaſe mundo, in domum ſanctuarii Domini. Et etiam ex eis applica- 21
bo ut ſint Sacerdotes & Levitæ, dicit Dominus. Quia ſicut cœli novi & 22
terra nova quæ ego facio, permanebunt coram me, dicit Dominus; ſic ſta-
bilietur ſemen veſtrum & nomen veſtrum. Et erit in tempore *initii* menſis 23
in menſe, & in tempore Sabathi in Sabatho veniet omnis caro, ut ado-
ret coram me, dicit Dominus. Et egredientur & videbunt cadavera viro- 24
rum peccatorum, qui prævaricati ſunt in verbum meum: quia animæ eo-
rum non morientur, & ignis eorum non extinguetur: & erunt impii judicati in gehenna, donec dicant ſuper eos juſti: Satis vidimus.

ספר ירמיהו

CAPUT I. א

Hanathoth in qui ſacerdotibus de Chilchijahu filii Irmejahu Verba
1 דִּבְרֵי יִרְמְיָהוּ בֶּן־חִלְקִיָּהוּ מִן־הַכֹּהֲנִים אֲשֶׁר בַּעֲנָתוֹת
,eum ad DOMINI verbum fuit Quod .Binjamin terra in
2 בְּאֶרֶץ בִּנְיָמִן׃ אֲשֶׁר הָיָה דְבַר־יְהוָה אֵלָיו
anno decimo tertio in : Jehudah regis Amon filii Joſijahu diebus in
בִּימֵי יֹאשִׁיָּהוּ בֶן־אָמוֹן מֶלֶךְ יְהוּדָה בִּשְׁלֹשׁ־עֶשְׂרֵה שָׁנָה
.*eum regnare*
לְמָלְכוֹ׃

Verſio VUL. LAT.

PROPHETIA

JEREMIÆ.

CAP. I.

1 VErba Jeremiæ filii Helciæ, de ſacerdotibus qui fuerunt in Anathoth, in terra
2 Benjamin. Quod factum eſt verbum Domini ad eum in diebus Joſiæ filii Amon regis Juda, in tertiodecimo anno regni ejus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΙΕΡΕΜΙΑΣ.

ΚΕΦ. α'.

1 ΤΟ ῥῆμα τοῦ θεοῦ ὃ ἐγένετο (α) ἐπὶ Ἱερεμίαν τὸν τοῦ Χελκίου, ἐκ τῶν ἱερέων, ὃς κατῴκει
2 ἐν Ἀναθὼθ ἐν γῇ Βενιαμὶν, (β) Ὡς ἐγενήθη λόγος τοῦ θεοῦ πρὸς αὐτὸν, ἐν ταῖς ἡμέραις Ἰωσία υἱοῦ Ἀμὼς βασιλέως Ἰούδα, ἔτους τρισκαιδεκάτου ἐν τῇ βασιλείᾳ αὐτοῦ.

HIEREMIAS.

CAP. I.

VERBUM Dei, quod factum eſt ad Hieremiam filium Chelciæ, de ſacerdotibus, qui habitabat in Anathoth in terra Benjamin: Sicut factum eſt verbum Dei ad illum in diebus Joſiæ filii Amos regis Juda, anno tertiodecimo in regno ejus. 1 2

MS. A. Ἱερεμίας. (α) ἐπ' Ἰηρεμίαν (β) Ὃς ἐγενήθη λόγος θεοῦ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

1 פתגמי נבואת ירמיהו בר חלקיה מן רישי מטרת כהניא מן אמרכליא דהוו בירושלם
2 גברא דקביל אחסנתיה בענתות בארע שבטא בנימין : דהוה פתגם נבואה מן קדם יי
עמיה ביומי יאשיה בר אמון מלך שבטא דבית יהודה בתלת עסרי שנין למלכיה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAPUT I.

VErba prophetiæ Jeremiæ filii Helchiæ de principibus cuſtodiæ Sacer- 1
dotum, ex præpoſitis qui erant in Jeruſalem: vir qui ſuſcepit hæredita-
tem ſuam in Anathoth in terra tribus Benjamin. Quod factum eſt verbum 2
prophetiæ à facie Domini ad eum in diebus Joſiæ filii Amon regis tribus
domus Juda, in tertiodecimo anno regni ejus.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܢܐ ܝܕܥ ܐܢܐ ܥܒܕܝܗܘܢ ܘܡܚܫܒܬܗܘܢ. ܡܐ ܕܐܬܐ ܠܡܟܢܫܘ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ 18
ܘܠܫܢܐ. ܘܢܐܬܘܢ. ܘܢܚܙܘܢ ܐܝܩܪܝ. * ܘܐܣܝܡ ܒܗܘܢ ܐܬܐ. ܘܐܫܕܪ ܡܢܗܘܢ ܦܠܝܛܐ 19
ܠܥܡܡܐ. ܠܬܪܫܝܫ ܘܠܦܘܠ ܘܠܠܘܕ ܢܓܕܝ ܩܫܬܐ. ܘܠܬܘܒܠ ܘܠܝܘܢ ܘܠܓܙܪܬܐ
ܪܚܝܩܬܐ. ܕܠܐ ܫܡܥܘ ܫܡܥܝ ܘܠܐ ܚܙܘ ܐܝܩܪܝ. ܘܢܚܘܘܢ ܐܝܩܪܝ ܒܥܡܡܐ. * ܘܢܝܬܘܢ ܠܟܠܗܘܢ 20
ܐܚܝܟܘܢ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܩܘܪܒܢܐ ܠܡܪܝܐ. ܒܪܟܫܐ ܘܒܡܪܟܒܬܐ ܘܒܥܓܠܬܐ
ܠܛܘܪܐ ܕܩܘܕܫܝ ܠܐܘܪܫܠܡ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܝܟ ܕܡܝܬܝܢ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܩܘܪܒܢܐ ܒܡܐܢܐ
ܕܟܝܐ ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܐܦ ܡܢܗܘܢ ܐܣܒ ܟܗܢܐ ܘܠܘܝܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܐܝܟ 21 22
ܕܫܡܝܐ ܚܕܬܐ ܘܐܪܥܐ ܚܕܬܐ. ܕܥܒܕ ܐܢܐ. ܕܩܝܡܝܢ ܩܕܡܝ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܟܢܐ ܢܩܘܡ
ܙܪܥܟܘܢ ܘܫܡܟܘܢ. * ܘܢܗܘܐ ܡܢ ܝܪܚܐ ܠܝܪܚܐ ܘܡܢ ܫܒܬܐ ܠܫܒܬܐ. ܢܐܬܐ 23
ܟܠ ܒܣܪ ܠܡܣܓܕ ܩܕܡܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܢܦܩܘܢ ܘܢܚܙܘܢ ܫܠܕܝܗܘܢ ܕܓܒܪܐ 24
ܕܥܠܘ ܒܝ. ܕܠܐ ܬܘܠܥܬܗܘܢ ܡܝܬܐ. ܘܢܘܪܗܘܢ ܠܐ ܕܥܟܐ. ܘܢܗܘܘܢ ܠܬܕܡܘܪܬܐ ܠܟܠ ܒܣܪ.

* ܫܠܡ ܟܬܒܐ ܕܐܫܥܝܐ *

Ego enim novi opera eorum, & cogitationes 18
eorum. Quando veniam ad congregandum
omnes populos & linguas, venient etiam iſti,
& videbunt majeſtatem meam; Ponámque 19
ſignum in eis, & ex eis mittam illos qui evaſerint,
ad gentes; in Tharſis, Pul, & Lud
trahentes arcum; & in Thubil, & Javan, &
ad inſulas remotas, quæ non audierunt nomen
meum, neque viderunt majeſtatem meam:
Et promulgabunt gloriam meam inter
gentes, Et afferent omnes fratres veſtros ex 20
omnibus gentibus oblationem Domino; in
equis, curribus, & carrucis, ad montem ſanctitatis
meæ, in Jeruſalem, dicit Dominus;
quemadmodum afferunt Iſraelitæ ſimilam in
vaſis mundis ad ædem Domini. Ex iis etiam 21
accipiam ſacerdotes & Levitas, ait Dominus.
Quemadmodum cœli novi & terra nova 22
quæ conditurus ſum, perſiſtent coram me,
dicit Dominus; ita ſubſiſtet ſemen veſtrum &
nomen veſtrum. Eritque ut ſingulis quibuſq; 23
menſibus, & ſingulis quibúſq; ſabbathis, veniat
omnis caro ad adorandũ corã me, dicit
Dñs. Et egredientur, ac videbunt cadavera 24
virorum illorum qui perfidè mecum egerunt,
quòd vermis eorũ non moriatur, nec ignis eorũ
extinguatur, et ſint admirationi omni carni.

Libri Eſaiæ Finis.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وانا اعلم اعمالهم وفكرهم * وساجازيهم * ها انا اتي لاجمع جميع الامم والالسن * ويوافون 18
ويعاينون مجدي * واترك عليهم علامة * وارسل منهم مخلصين الي الامم * الي ترسيس 19
وفول ولود وموصوح * والي توبال والي اللادة * والي الجزاير البعيدة التي لم تسمع باسمي ولم
يعاينوا مجدي * ويذيعون مجدي في الامم * ويقتادون اخوتكم من جميع الامم قربانا 20
للرب * بخيل ومركبات في هوادج البغال بظلالات * الي المدينة المقدسة ايروسليم قال الرب *
كما كان بنو اسرايل يقدمون لي ضحاياهم بتهليل في بيت الرب * ومنهم اخذ لذاتي كهنة 21
ولاويين قال الرب * كما انه تكون السماء الجديدة والارض الجديدة اللتين انا اصنعهما 22
تثبتان امامي قال الرب * هكذا يقوم زرعكم واسمكم * ويكون كل بشر يجي شهرا بشهر 23
وسبتا بسبت يسجد امامي في ايروسليم قال الرب * ويخرجون وينظرون عظام الذين 24
عصوني * ان دودهم لا يموت ونارهم لا تطفا * ويصيرون منظرا لكل جسد *

* كملت نبوة اسعياء النبي * والحمد لله حق حمده *

Equidem novi opera & cogitationem eorum, 18
& rependam eis: ecce ego venturus
ſum ad congregandas omnes gentes &
linguas, & venient ac videbunt gloriam
meam. Ponámque ſignum ſuper eos, 19
& ex eis mittam ſalvatores ad gentes,
in Tharſis, Phul, Lud, Moſoch, Thubal,
Lada, ad inſulas denique remotiſſimas,
quæ nec audierunt nomen meum, neque
gloriam meam viderunt. Hi gloriam meam
promulgabunt inter gentes, Et fratres 20
veſtros adducent ex omnibus gentibus in
oblationem Domino, in equis & curribus,
in lecticis mulorum, ſub umbellis, ad urbem
ſanctam Jeruſalem, ait Dominus;
quemadmodum offerebant mihi Iſraelitæ
ſacrificia ſua cum jubilo in æde Domini.
Et ex iiſdem accipiam mihi ipſi Sa- 21
cerdotes & Levitas, ait Dominus. Quem- 22
admodum cœlum novum & terra nova
quæ ego conditurus ſum, perdurabunt coram
me, ait Dominus; ita perſiſtet ſemen
veſtrum & nomen veſtrum. Et erit ut 23
quiſque mortalis veniat de menſe in menſem,
& de ſabbatho in ſabbathum, adorare
coram me in Jeruſalem, ait Dominus.
Et egreſſi videbunt oſſa eorum qui contra 24
me rebellârunt, quòd vermes eorum non
moriantur, nec ipſorum ignis extinguatur,
adeóque fiant ſpectaculo omni corporeo.

Prophetiæ Eſaiæ Prophetæ
FINIS.
Laus Deo verè laudando.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܢܒܝܘܬܗ ܕܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ * * ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

* ܦܬܓܡܘܗܝ ܕܐܪܡܝܐ ܒܪ ܚܠܩܝܐ. ܡܢ ܟܗܢܐ ܕܒܥܢܬܘܬ ܕܒܐܪܥܐ ܕܒܢܝܡܝܢ. * ܕܗܘܐ 1 2
ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܘܬܗ. ܒܝܘܡܘܗܝ ܕܝܘܫܝܐ ܒܪ ܐܡܘܢ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ
ܒܫܢܬܐ ܬܠܬܥܣܪܐ ܕܡܠܟܘܬܗ.

PROPHETIA
JEREMIÆ PROPHETÆ.
CAPUT I.

SErmones Jeremiæ filii Helciæ de ſacerdotibus 1
qui erat in Anathoth quæ eſt in terra Benjaminis;
Ad quem fuit ſermo Domini in die- 2
bus Joſiæ filii Amon regis Juda, anno tertiodecimo
regni ejus:

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بسم الله الرحمن الرحيم * وبه نثق *

* نبدا بترجمة كتاب نبوة ارمياء النبي * بركاته علينا امين *

* الفصل الاول * * الاصحاح الاول *

* كلمة الرب التي صارت على ارمياء بن سلكيو من الكهنة * الذي سكن في اناثوث 1
في ارض بنيامين * هذا صارت كلمة الله اليه في ايام يوسيا بن عاموص ملك يهودا * في 2
السنة الثالثة عشر من ملكه *

IN NOMINE DEI
Miſericordis clementiſſimi,
cui confido.

Aggredior interpretationem libri
Prophetiæ JEREMIÆ Prophetæ,
cujus benedictiones ſint
ſuper nos, Amen.

CAP. I.
Textus primus.

VErbum Domini, quod factum eſt ad 1
Jeremiam Selciæ filium, ex ſacerdotibus,
qui habitabat in Anathoth in
terra Benjaminis. Ad hunc factum eſt 2
verbum Domini in diebus Joſiæ filii Amos
regis Judæ, anno tertiodecimo regni ejus.

ירמיה : א

ad usq; ,Jehudah regis Josijahu filii Jehojachim diebus in fuit Et
3 וַיְהִי בִּימֵי יְהוֹיָקִים בֶּן־יֹאשִׁיָּהוּ מֶלֶךְ יְהוּדָה עַד־
regis Josijahu filii Sidchijahu *annos undecim consummandum*
תֹּם עַשְׁתֵּי־עֶשְׂרֵה שָׁנָה לְצִדְקִיָּהוּ בֶן־יֹאשִׁיָּהוּ מֶלֶךְ
fuit Et .quinto mense in Jerusalaim *transmigrandum* ad usq; ,Jehudah
4 יְהוּדָה עַד־גְּלוֹת יְרוּשָׁלַםִ בַּחֹדֶשׁ הַחֲמִישִׁי׃ וַיְהִי
,utero in te formarem Priusquam : dicendo me ad Domini verbum
5 דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בְּטֶרֶם אֶצּוֹרְךָ בַבֶּטֶן
prophetam , te sanctificavi , vulva de exires antequam & : te novi
יְדַעְתִּיךָ וּבְטֶרֶם תֵּצֵא מֵרֶחֶם הִקְדַּשְׁתִּיךָ נָבִיא
non Ecce .Deus Domine Ahah : dixi Et .te dedi gentibus
6 לַגּוֹיִם נְתַתִּיךָ׃ וָאֹמַר אֲהָהּ אֲדֹנָי יְהוִה הִנֵּה לֹא־
Ne : me ad Dominus dixit Et .*ego* puer quia ,loqui novi
7 יָדַעְתִּי דַּבֵּר כִּי־נַעַר אָנֹכִי׃ וַיֹּאמֶר יְהוָה אֵלַי אַל־
& : ibis , te mittam *quò* omnia ad quia : *ego* puer , dicas
תֹּאמַר נַעַר אָנֹכִי כִּי עַל־כָּל־אֲשֶׁר אֶשְׁלָחֲךָ תֵּלֵךְ וְאֵת
quia : eorum *faciebus* à timeas Ne .loquêris ,tibi præcipiam quæ universa
8 כָּל־אֲשֶׁר אֲצַוְּךָ תְּדַבֵּר׃ אַל־תִּירָא מִפְּנֵיהֶם כִּי־
Dominus misit Et .Dominus dixit , te *eripiendum ad* ,ego tecum
9 אִתְּךָ אֲנִי לְהַצִּלֶךָ נְאֻם־יְהוָה׃ וַיִּשְׁלַח יְהוָה אֶת־
dedi Ecce : me ad Dominus dixit & : meum os *super* tetigit & ,suā manū
יָדוֹ וַיַּגַּע עַל־פִּי וַיֹּאמֶר יְהוָה אֵלַי הִנֵּה נָתַתִּי
, gentes super hac die te *legavi* , Vide .tuo ore in mea verba
10 דְבָרַי בְּפִיךָ׃ רְאֵה הִפְקַדְתִּיךָ הַיּוֹם הַזֶּה עַל־הַגּוֹיִם
:destruēdū ad &,disperdēdū ad &,diruēdū ad &,evellendū ad ,regna super &
וְעַל־הַמַּמְלָכוֹת לִנְתוֹשׁ וְלִנְתוֹץ וּלְהַאֲבִיד וְלַהֲרוֹס
Quid :dicendo,me ad Domini verbum fuit Et .*plantandū ad &,ædificandū ad*
11 לִבְנוֹת וְלִנְטוֹעַ׃ וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר מָה־
dixit Et .*videns* ego *amygdali* Virgam : dixi Et ?Iremejahu *videns* tu
12 אַתָּה רֹאֶה יִרְמְיָהוּ וָאֹמַר מַקֵּל שָׁקֵד אֲנִי רֹאֶה׃ וַיֹּאמֶר
,meum verbā super ego *festinans* nam : *videndo Benefecisti* : me ad Domin⁹
יְהוָה אֵלַי הֵיטַבְתָּ לִרְאוֹת כִּי־שֹׁקֵד אֲנִי עַל־דְּבָרִי
Quid:dicendo secundò me ad Domini verbum fuit Et .illud *faciendum ad*
13 לַעֲשֹׂתוֹ׃ וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי שֵׁנִית לֵאמֹר מָה
faciebus à ejus *facies* & ,*videns* ego *exsufflatam* Ollam : dixi & ?*videns* tu
אַתָּה רֹאֶה וָאֹמַר סִיר נָפוּחַ אֲנִי רֹאֶה וּפָנָיו מִפְּנֵי
malum pandetur Aquilone Ab : me ad Dominus dixit Et .Aquilonis
14 צָפוֹנָה׃ וַיֹּאמֶר יְהוָה אֵלָי מִצָּפוֹן תִּפָּתַח הָרָעָה
omnes *ad vocans* ego ecce Quia .terræ habitatores omnes super
15 עַל כָּל־יֹשְׁבֵי הָאָרֶץ׃ כִּי הִנְנִי קֹרֵא לְכָל־
: DOMINUS dixit , Aquilonis regnorum *familias*
מִשְׁפְּחוֹת מַמְלְכוֹת צָפוֹנָה נְאֻם־יְהוָה
portarum *ostio* suum solium unusquisque *dabunt* & , venient &
וּבָאוּ וְנָתְנוּ אִישׁ כִּסְאוֹ פֶּתַח שַׁעֲרֵי
super & , *circum* ejus muros omnes super & , Jerusalaim
יְרוּשָׁלַםִ וְעַל כָּל־חוֹמֹתֶיהָ סָבִיב וְעַל
super eis cum mea judicia loquar Et .Jehudah urbes universas
16 כָּל־עָרֵי יְהוּדָה׃ וְדִבַּרְתִּי מִשְׁפָּטַי אוֹתָם עַל
diis suffierunt & ,me dereliquerunt qui ; eorum malitiam omnem
כָּל־רָעָתָם אֲשֶׁר עֲזָבוּנִי וַיְקַטְּרוּ לֵאלֹהִים
tu Et .suarum manuum operibus se incurvaverunt & ; alienis
17 אֲחֵרִים וַיִּשְׁתַּחֲווּ לְמַעֲשֵׂי יְדֵיהֶם׃ וְאַתָּה
omnia eos ad loquêris & , surges & , tuos lumbos accinges
תֶּאְזֹר מָתְנֶיךָ וְקַמְתָּ וְדִבַּרְתָּ אֲלֵיהֶם אֵת כָּל־
fortè ne , eorum *faciebus à consterneris* ne : tibi præcipiam ego quæ
אֲשֶׁר אָנֹכִי אֲצַוֶּךָּ אַל־תֵּחַת מִפְּנֵיהֶם פֶּן־
.eorum facies ad te consternem
אֲחִתְּךָ לִפְנֵיהֶם׃

Versio VULG. LAT.

3 Et factum est in diebus Joakim
filii Josiæ regis Juda, usque ad
consummationē undecimi an-
ni Sedeciæ filii Josiæ regis Ju-
da, usque ad transmigrationē
4 Jerusalem, in mense quinto. Et
factum est verbum Domini ad
5 me, dicens; Priusquàm te for-
marem in utero, novi te: & an-
tequàm exires de vulva, sancti-
ficavi te, & prophetā in Gen-
6 tibus dedi te. Et dixi, A, a, a,
Domine Deus: ecce nescio lo-
7 qui, quia puer ego sum. Et di-
xit Dominus ad me, Noli dice-
re; Puer sum, quoniam ad o-
mnia, quæ mittam te, ibis: & u-
niversa, quæcunque mandave-
8 ro tibi, loquêris. Ne timeas à
facie eorum : quia tecum ego
sum, ut eruam te, dicit Domin⁹.
9 Et misit Dominus manum suā,
& tetigit os meum : & dixit
Dominus ad me ; Ecce dedi
10 verba mea in ore tuo : Ecce
constitui te hodiè super Gen-
tes, & super regna, ut evellas,
& destruas, & disperdas, &
dissipes, & ædifices, & plantes.
11 Et factum est verbum Domini
ad me, dicens ; Quid tu vides,
Jeremia? Et dixi, Virgam vigi-
12 lantem ego video. Et dixit Do-
minus ad me ; Benè vidisti, quia
vigilabo ego sup verbo meo
13 ut faciam illud. Et factum est
verbum Domini secundò ad
me, dicens ; Quid tu vides? Et
dixi; Ollam succensam ego vi-
deo, & faciem ejus à facie A-
14 quilonis. Et dixit Dominus ad
me ; Ab Aquilone pandetur
malum super omnes habitato-
15 res terræ. Quia ecce ego con-
vocabo omnes cognationes re-
gnorum Aquilonis, ait Domi-
nus : & venient & ponent u-
nusquisque solium suum in in-
troitu portarum Jerusalem, &
super omnes muros ejus in cir-
cuitu, & super universas urbes
16 Juda. Et loquar judicia mea
cum eis, super omnem maliti-
am eorum qui dereliquerunt
me, et libaverunt diis alienis, et
adoraverunt opus manuū sua-
17 rum. Tu ergò accinge lumbos
tuos, & surge, & loquere ad
eos omnia quæ ego præcipio
tibi. Ne formides à facie eorū:
nec enim timere te faciam vul-
tum eorum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

3 Καὶ ἐγένετο ἐν ταῖς ἡμέραις Ἰωακεὶμ υἱοῦ Ἰω-
σία βασιλέως Ἰούδα, ἕως ἐνδεκάτου ἔτους
(γ) τοῦ Σεδεκία υἱοῦ Ἰωσία βασιλέως Ἰού-
δα, ἕως τῆς αἰχμαλωσίας Ἱερουσαλὴμ ἐν τῷ
4 πέμπτῳ μηνί. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου
5 (δ) πρὸς αὐτόν· Πρὸ τοῦ με πλάσαι σε (·) ἐν
κοιλίᾳ, ἐπίσταμαί σε, ϗ πρὸ τοῦ (ε) σε ἐξ-
ελθεῖν ἐκ μήτρας, ἡγίακά σε, προφήτην
6 εἰς ἔθνη τέθεικά σε. Καὶ εἶπα, Ὁ Ὢν δέ-
σποτα κύριε, ἰδοὺ οὐκ ἐπίσταμαι λαλεῖν, ὅτι
7 νεώτερος ἐγώ εἰμι. Καὶ εἶπε κύριος πρὸς
μέ, Μὴ λέγε, Ὅτι νεώτερος ἐγώ εἰμι, ὅτι
πρὸς πάντας οὓς ἐὰν ἐξαποστείλω σε, πο-
ρεύσῃ, ϗ κατὰ πάντα ὅσα (ζ) ἐὰν ἐντείλωμαί
8 σοι, λαλήσεις. Μὴ (η) φοβηθῇς ἀπὸ προσ-
ώπου αὐτῶν, ὅτι μετὰ σοῦ ἐγώ εἰμι τοῦ ἐξαι-
9 ρεῖσθαί σε, λέγει κύριος. Καὶ ἐξέτεινε κύ-
ριος τὴν χεῖρα αὐτοῦ πρὸς μέ, ϗ ἥψατο τοῦ
στόματός μου, ϗ εἶπε κύριος πρὸς μέ, Ἰδοὺ
δέδωκα τοὺς λόγους μου εἰς τὸ στόμα (θ) σου.
10 Ἰδοὺ καθέστακά σε σήμερον ἐπὶ ἔθνη
ϗ ἐπὶ (ι) βασιλείας, ἐκριζοῦν, ϗ κατα-
σκάπτειν, ϗ (κ) ἀπολύειν, ϗ ἀνοικοδομεῖν, ϗ
11 καταφυτεύειν. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου
πρὸς μέ, λέγων, Τί σὺ (λ) ὁρᾷς; ϗ εἶπα,
12 Βακτηρίαν καρυΐνην. Καὶ εἶπε κύριος
πρὸς μέ, Καλῶς ἑώρακας, διότι ἐγρήγορα
ἐγὼ ἐπὶ τοὺς λόγους μου τοῦ ποιῆσαι αὐτούς.
13 Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου (μ) ἐκ δευτέρου
πρὸς μέ, λέγων, Τί σὺ ὁρᾷς; ϗ εἶπα, Λέβη-
τα ὑποκαιόμενον, ϗ τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἀπὸ
14 προσώπου Βορρᾶ. Καὶ εἶπε κύριος πρὸς μέ,
Ἀπὸ προσώπου Βορρᾶ ἐκκαυθήσεται τὰ κακὰ
15 ἐπὶ πάντας τοὺς κατοικοῦντας τὴν γῆν. Διό-
τι ἰδοὺ ἐγὼ συγκαλῶ πάσας τὰς βασιλείας
(ν) τῆς γῆς ἀπὸ Βορρᾶ, λέγει κύριος· ϗ ἥ-
ξουσι ϗ θήσουσιν ἕκαστος τὸν θρόνον αὐτοῦ ἐ-
πὶ τὰ πρόθυρα τῶν πυλῶν Ἱερουσαλήμ, ϗ
ἐπὶ πάντα τὰ τείχη τὰ κύκλῳ αὐτῆς, ϗ
16 ἐπὶ πάσας τὰς πόλεις Ἰούδα. Καὶ λα-
λήσω πρὸς αὐτοὺς (ξ) μετὰ κρίσεως, περὶ
πάσης τῆς κακίας αὐτῶν, ὡς ἐγκατέλι-
πόν με, καὶ ἔθυσαν θεοῖς ἀλλοτρίοις, ϗ
προσεκύνησαν τοῖς ἔργοις τῶν χειρῶν αὐ-
17 τῶν. Καὶ σὺ περίζωσαι τὴν ὀσφύν σου, ϗ
ἀνάστηθι, ϗ εἶπον (ο) πάντα ὅσα ἂν ἐν-
τείλωμαί σοι. μὴ φοβηθῇς ἀπὸ προσώπου
αὐτῶν, μηδὲ πτοηθῇς ἐναντίον αὐτῶν,
ὅτι μετὰ σοῦ (π) εἰμι, τοῦ ἐξαιρεῖσθαί σε, λέ-
γει κύριος.

Et factum est in diebus Joacim fi- 3
lii Josiæ regis Juda, usque ad un-
decimum annum Sedeciæ filii Jo-
siæ regis Juda, usque ad (a) capti-
vitatem Hierusalem in quinto
mense. Et factum est verbum Do- 4
mini ad eum; Antequàm forma- 5
rem te in utero, novi te: & ante-
quàm exires de vulva, sanctifica-
vi te: prophetam in gentes posui
te. Et dixi, (b) O On dominator 6
Domine: ecce nescio loqui; quia
junior ego sum. Et dixit Domi- 7
nus ad me; Noli dicere, Quia ju-
nior ego sum: quoniam ad omnes
ad quos misero te, ibis: & juxta
omnia, quæ mandavero tibi, loquê-
ris. Ne timeas à facie eorum: quia 8
ego tecum sum, ut eruam te, dicit
Dominus. Et extendit Dominus 9
manum suam ad me, & tetigit os
meum, & dixit Dominus ad me;
Ecce dedi verba mea in os tuum:
Ecce constitui te hodiè super gen- 10
tes, & super regna, ut eradices, et
destruas, & disperdas, & reædi-
fices, & plantes. Et factum est 11
verbum Domini ad me, dicens;
Quid tu vides? Et dixi, (c) Bacu-
lum nuceum. Et dixit Dominus ad 12
me, Benè vidisti: quia vigilavi ego
super verba mea, ut faciam illa.
Et factū est verbū Domini secun- 13
dò ad me, dicens; Quid tu vides?
Et dixi; Ollā succensā, & faciem
ejus à facie Aquilonis. Et dixit 14
Dominus ad me; A facie Aquilonis
exardescent mala super omnes ha-
bitatores terræ. Quia ecce ego con- 15
voco omnia regna terræ ab Aqui-
lone, ait Dominus. Et venient, &
ponent unusquisque solium suum
super vestibula portarum Hierusa-
lem, & super omnes muros, qui in
circuitu ejus, & super universas
urbes Judæ. Et loquar ad eos cum 16
judicio de omni malitia eorum,
quomodò dereliquerunt me, &
sacrificaverunt diis alienis, & ad-
oraverunt opera manuum sua-
rum. Et tu accinge lumbum tuum, 17
& surge, & dic omnia quæcun-
que mandavero tibi. Ne timeas à
facie eorum, (d) neque exterrearis
coram eis: quia tecum sum, ut li-
berem te, dicit Dominus.

MS.A. (γ) Σεδεκίου υἱοῦ Ἰωσείου (δ) πρός με, λέγων, (·) ἐκ κοιλίας, (ε) ἐξελ-
θεῖν σε (ζ) ἂν (η) φοβῇς (θ) σου. Καθέστακα (ι) βασιλεῖς, (κ) ἀπολλύειν. Καὶ ἐγένετο
(λ) ὁρᾷς, Ἱερεμία; (μ) πρός με ἐκ δευτέρου, (ν) ἀπὸ προσώπου Βορρᾶ τῆς γῆς,
(ξ) περὶ πάσης τῆς κακίας αὐτῶν μετὰ κρίσεως, (ο) πρὸς αὐτοὺς πάντα (π)
ἐγώ εἰμι,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 והוה ביומי יהויקים בר יאשיה מלך שבטא דבית יהודה עד דשלימא חדא עשרי שנין
לצדקיה אחוהי בר יאשיה מלך שבטא דבית יהודה עד דאתא נבוכד נצר מלכא דבבל
4 וצר על ירושלם תלת שנין ואגלי עמא דבה בירחא חמישאה׃ והוה פתגם נבואה מן
5 קדם יי עמי למימר׃ עד לא בריתך במעין אתקנתך ועד לא אתיתא לעלמא זמנתך נבי
6 משקי כס דלוט לעממיא מניתך׃ ואמרית קביל בעותי יי אלהים הא לית אנא ידע
7 לאתנבאה ארי רבי אנא ומשירותי עקא וגלו אנא מתנבי על עמא הדין׃ ואמר יי לי לא
8 תימר רבי אנא ארי כל אתר דאשלחנך תהך וית כל דאפקדנך תתנבי׃ לא תדחל מן
9 קדמיהון ארי בסעדך מימרי לשיזבותך אמר יי׃ ושלח יי ית פתגמי נבואתיה וסדר
10 בפומי ואמר יי לי הא שויתי פתגמי נבואתי בפומך׃ חזי דמניתך יומא הדין על עממיא
11 ועל מלכותא למעקר ולתרעא ולאבדא ולפגרא ועל בית ישראל למבני ולקימא׃ והוה
פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר מה את חזי ירמיה ואמרית מלך דמוחי לאבאשא
12 אנא חזי׃ ואמר יי לי יאות חזיתא ארי מוחי אנא על פתגמי למעבדיה׃ והוה
13 פתגם נבואה מן קדם יי עמי תנינות למימר מה את חזי ואמרית מלך דרתח כדוד
14 אנא חזי וטקוס משריתיה דמדברן ואתין מאפי צפונא׃ ואמר יי לי מצפונא תשרי
15 בישתא למיתי על כל יתבי ארעא׃ ארי הא אנא מכלי לכל זרעית מלכות צפונא
אמר יי וייתון ויירמון גבר כורסוהי לקבל תרעי ירושלם ועל כל שורהא סחור סחור
16 ועל כל קרויא דבית יהודה׃ ואמלל פורענות דיני מנהון על כל בישתהון דשבקו
17 פולחני ואסיקו בוסמין לטעות עממיא ואשתעבדו לעובדי ידיהון׃ ואת תתקף
חרצך ותקום ותתנבי להון ית כל דאנא מפקד לך לא תתמנע מלאוכחותהון דלמא
אתברנך קדמיהון׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et factum est in diebus Joachim filii Josiæ regis tribus domus Juda, donec 3
impletus est undecimus annus Sedechiæ fratris ejus filii Josiæ regis tribus
domus Juda, donec venit Nabuchodonosor rex Babylonis, & obsedit Jeru-
salem tribus annis, & transmigrare fecit populum qui in ea erat, in mense
quinto. Et factum est verbum prophetiæ à facie Dñi ad me, dicens: An- 4
tequàm crearem te in utero præparavi te, & antequàm venires in mundum, 5
paravi te: Prophetam propinantem calicem maledictionis populis con-
stitui te. Et dixi: Suscipe deprecationem meam Dñe Deus: ecce nescio 6
prophetare, quia puer ego sum: & à principio meo tribulationem & ca-
ptivitatem ego prophetizo contra populum hunc. Et dixit Dñs mihi: Ne 7
dicas, Puer ego sum: quia ad omnem locum ad quem mittam te, ibis; &
universa quæcunque mandavero, prophetabis. Ne timeas à facie eorum; 8
quia in adjutorium tuum erit Verbum meum ut eruat te, dicit Dñs. Et mi- 9
sit Dñs verba prophetiæ suæ, & ordinavit ea in ore meo: & dixit Domi-
nus mihi: Ecce posui verba prophetiæ meæ in ore tuo. Vide quòd consti- 10
tuerim te hodie super populos & super regna, ut evellas, & destruas, &
perdas, & dissipes; & super domū Israel, ut ædifices & confirmes. Et factum 11
est verbum prophetiæ à facie Domini ad me dicens: Quid tu vides Jere-
mia? & dixi: Regē festinantem ad malefaciendum ego video. Et dixit Dñs 12
mihi: Bene vidisti: quia festinabo ego super verbū meum ut faciam illud.
Et factum est verbū prophetiæ à facie Dñi ad me secundò dicens: Quid tu 13
vides? & dixi, Regem ferventem quasi lebetem ego video, & vexillum exer-
cit⁹ ej⁹ qui ducitur & venit à facie Aquilonis. Et dixit Dñs mihi: ab Aqui- 14
lone incipiet venire malum super omnes habitatores terræ. Quoniam ecce 15
ego convoco omnes cognationes regnorum Aquilonis, dicit Dñs: & ve-
nient & projicient unusquisq; soliū suum contra portas Jerusalem, & super
omnes muros ej⁹ in circuitu, & super universas urbes dom⁹ Judæ. Et loquar 16
ultionem judiciorū meorū cum eis super omnem malitiam eorū, qui dere-
liquerunt cultū meū, & adoleverunt aromata idolis populorū, et servierunt
operib⁹ manuū suarū. Tu autem confortabis lumbos tuos, & surges, et pro- 17
phetabis eis omnia quæ præcipio tibi: ne desinas corripere eos, ne fortè
conteram te coram eis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

3 ܘܗܘܐ ܒܝܘܡܬܗ ܕܝܘܝܩܝܡ ܒܪ ܝܘܫܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܥܕܡܐ ܕܫܠܡ *
ܚܕܥܣܪܐ ܫܢܝܢ ܠܨܕܩܝܐ ܒܪ ܝܘܫܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܥܕܡܐ ܕܐܫܬܒܝܬ
4 ܐܘܪܫܠܡ ܒܝܪܚܐ ܚܡܝܫܝܐ. * ܘܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ.
5 * ܥܕܠܐ ܐܨܘܪܟ. ܒܟܪܣܐ ܝܕܥܬܟ. ܘܥܕܠܐ ܢܦܩܬ ܡܢ ܡܪܒܥܐ. ܩܕܫܬܟ. ܘܢܒܝܐ
6 ܠܥܡܡܐ ܣܡܬܟ. * ܘܐܡܪܬ: ܒܒܥܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܗܐ ܠܐ ܝܕܥ ܐܢܐ
7 ܠܡܡܠܠܘ. ܡܛܠ ܕܛܠܝܐ ܐܢܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܠܐ ܬܐܡܪ ܕܛܠܝܐ ܐܢܐ. ܡܛܠ
8 ܕܠܟܠ ܕܐܫܕܪܟ ܬܐܙܠ. ܘܟܠ ܕܐܦܩܕܟ ܬܡܠܠ. * ܠܐ ܬܕܚܠ ܡܢ ܩܕܡܝܗܘܢ.
9 ܡܛܠ ܕܥܡܟ ܐܢܐ ܠܡܦܨܝܘܬܟ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܐܘܫܛ ܡܪܝܐ ܐܝܕܗ. ܘܩܪܒ
10 ܠܦܘܡܝ. ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܝܗܒܬ ܡܠܝ ܒܦܘܡܟ. * ܚܙܝ
ܕܫܠܛܬܟ ܝܘܡܢܐ. ܥܠ ܥܡܡܐ ܘܥܠ ܡܠܟܘܬܐ. ܠܡܥܩܪ ܘܠܡܣܚܦ. ܘܠܡܘܒܕܘ
11 ܘܠܡܒܢܝܘ ܘܠܡܢܨܒܘ. * ܘܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. ܡܢܐ
12 ܚܙܐ ܐܢܬ ܐܪܡܝܐ. ܘܐܡܪܬ. ܚܘܛܪܐ ܕܠܘܙܐ ܚܙܐ ܐܢܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܫܦܝܪ
13 ܚܙܝܬ. ܡܛܠ ܕܡܣܪܗܒ ܐܢܐ ܥܠ ܦܬܓܡܝ ܠܡܥܒܕܗ. * ܘܗܘܐ ܠܘܬܝ
ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܕܬܪܬܝܢ ܙܒܢܝܢ. ܘܐܡܪ: ܡܢܐ ܚܙܐ ܐܢܬ. ܘܐܡܪܬ. ܩܕܪܐ
14 ܕܢܦܚܐ ܚܙܐ ܐܢܐ ܘܦܪܨܘܦܗ. ܡܢ ܐܦܝ ܓܪܒܝܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ ܡܢ ܓܪܒܝܐ
15 ܬܬܦܬܚ ܒܝܫܬܐ. ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝ ܐܪܥܐ. * ܡܛܠ ܕܗܐ ܡܫܕܪ ܐܢܐ ܘܩܪܐ
ܐܢܐ. ܠܟܠܗܝܢ ܫܪܒܬܐ ܕܡܠܟܘܬܐ ܕܓܪܒܝܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܢܐܬܘܢ ܘܢܣܝܡܘܢ
ܟܠ ܚܕ ܟܘܪܣܝܗ ܒܡܥܠܢܐ ܕܬܪܥܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܫܘܪܝܗ ܚܕܪܝܗ.
16 ܘܥܠ ܟܠܗܝܢ ܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ. * ܘܐܡܠܠ ܕܝܢܝ ܥܡܗܘܢ. ܥܠ ܟܠܗܝܢ
ܒܝܫܬܗܘܢ. ܕܫܒܩܘܢܝ ܘܣܡܘ ܒܣܡܐ ܠܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ. ܘܣܓܕܘ ܠܥܒܕܐ
17 ܕܐܝܕܝܗܘܢ. * ܘܐܢܬ ܐܣܘܪ ܚܨܝܟ. ܘܩܘܡ ܐܡܪ ܠܗܘܢ ܟܠ ܕܡܦܩܕ ܐܢܐ ܠܟ.
ܠܐ ܬܕܚܠ ܡܢܗܘܢ. ܕܠܡܐ ܐܬܒܪܟ ܩܕܡܝܗܘܢ.

Fuit etiam in diebus Jojacimi filii Joſiæ 3
regis Juda, donec exacti eſſent undecim
anni Sedeciæ filii Joſiæ regis Juda, donec
capta fuiſſet Jeruſalem menſe quinto. 4
Fuit igitur ad me ſermo Domini, dicendo;
Quum nondum te finxiſſem in utero, novi 5
te; & quum nondum prodiiſſes è vulva,
ſanctificavi te, & prophetam gentibus conſtitui
te. Me autem dicente, Quæſo Do- 6
mine Deus, ecce neſcio loqui, quia puer
ſum: Dixit mihi Dominus, ne dicas, Puer 7
ſum, quoniam ad omnia propter quæ te miſſurus
ſum, ibis; & quicquid præcepturus
ſum tibi, loquêris. Ne timeto ab iſtis, quo- 8
niam adſum tibi ad eripiendum te, dicit
Dominus. Tum extenſâ Dominus manu ſuâ, 9
tetigit os meum, dixítque mihi Dominus;
Ecce poſui ſermones meos in os tuum. Vide 10
quòd poteſtatem do tibi hodie ſuper gentes
& ſuper regna, ad extirpandum & demoliendum,
ad deſtruendum & perdendum, & ad
ædificandum & plantandum. Fuit rurſus ad 11
me ſermo Domini, dicendo, Quid vides
Jeremia? Cui dixi, Baculum amygdalinum
video. Tum dixit mihi Dominus, Rectè vi- 12
des: nam acceleraturus ſum ſermonem meum
ut efficiam illum. Fuit etiam ad me ſer-
mo Domini ſecundâ vice, dixítque, Quid 13
vides? Et dixi, Ollam foco impoſitam video,
cujus facies eſt Aquilonem verſús. Tum 14
dixit mihi Dominus, Ab Aquilone erumpet
malum in omnes incolas terræ: Nam ecce 15
ego miſſurus ſum evocatum omnes familias
regnorum Aquilonarium, dicit Dominus;
ut venientes ponant quiſque ſolium
ſuum in veſtibulo portarum Jeruſalem,
& ſuper omnes muros ejus circunquaque, &
ſuper omnes civitates Juda. Et loquar judi- 16
cia mea (i. *rationes inſtituam*) cum eis de
cunctis malitiis eorum; quòd me derelicto
thura adoleverint diis alienis, & adoraverint
opus manuum ſuarum. Tu itaque ac- 17
cinge lumbos tuos, & ſurgens dic eis quicquid
præcepturus ſum tibi: ne timeto ab
eis, ne te conteram in conſpectu eorum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

3 *وكان في ايام يواقيم بن يوسيا ملك يهودا الي السنة الحادية عشر لصادقيا بن يوسيا
4 5 ملك يهودا الي سبي ايروسليم * في الشهر الخامس * فكانت كلمة الرب الي قايلا * من
قبل ان اجبلك من البطن عرفتك * من قبل ان تخرج من الرحم قدستك وصيرتك
6 نبيا للامم * فقلت ايها الكاين السيد الرب * لست اعرف ان اتكلم لاني انا شاب انا *
7 *فقال لي الرب * لا تقل اني انا شاب انا * لانك الي جميع الذين ارسلك اليهم اذن
8 تمضي * وبكل ما امرك اذن تتكلم * لا تخف من وجوههم * لاني انا معك انا لانقذك
9 يقول الرب * ومد الرب يده الي ولمس فاي وقال الرب لي * ها اعطيت كلماتي في فمك *
10 11 *واقمتك اليوم على امم وعلي ملوك * لتستاصل وتهدم وتهلك * وصارت كلمة الرب
12 الي قايلا * ماذا تري انت يا ارمياء * فقلت انا اري قضيبا جوزيا * فقال الرب لي *
13 حسنا رايت * من اجل اني انا مستيقظ على كلماتي لاصنعها * وصارت كلمة الرب الي ثانية
قايلا * ماذا تري انت * فقلت انا اري مرجلا تحته وقيدا * ووجهه من وجه الجربياء *
14 15 *فقال الرب لي * من وجه الجربياء تتوقد الشرور على جميع سكان الارض * من اجل اني
ها انا ادعوا جميع مملكات الملوك من وجه جربياء الارض يقول الرب * فياتون ويضعون
كل واحد كرسيه في مداخل ابواب ايروسليم * وعلي جميع الاسوار التي حولها * وعلي جميع
16 مدن يهودا * واتكلم معهم بالحكم من اجل جميع شرهم * لانهم تركوني وذبحوا لالهة غرباء *
17 وسجدوا لاعمال ايديهم * وانت منطق حقوك وقم فقل لهم كلما امرك به اذن * لا تخف من
وجوههم ولا تذعر قدامهم * لاني انا معك انا لانقذك يقول الرب *

Fuit etiam in diebus Joacimi filii Joſiæ 3
regis Judæ uſque ad annum undecimum
Sedeciæ filii Joſiæ regis Juda, uſque ad
captivitatem Jeroſolymæ in menſe quinto.
Fuit ergò verbum Domini ad me 4
dicentis, Priuſquam te plaſmarem ex 5
utero, novi te; priuſquam exires è vulva,
ſanctificavi te, fecíque te prophetam
gentibus. Dicenti verò mihi, O qui 6
es, here Domine, neſcio loqui; nam
adoleſcens ego ſum: Ait Dominus, 7
Ne dicas, Adoleſcens ego ſum; quoniam
ad omnes eos ad quos mittam
te, equidem ibis; & quicquid præcipiam
tibi, equidem loquêris. Ne ve- 8
rearis vultus eorum, quoniam ego tecum
ero, ut liberem te, ait Dominus.
Deinde extendens Dominus manum ſuam 9
ad me, tetigit os meum, dixitque Dominus
mihi; Ecce dedi verba mea in
os tuum, Et præfeci te hodiè genti- 10
bus & regibus, ut evellas, & deſtruas,
ac perdas. Factum eſt etiam 11
verbum Domini ad me dicentis, Quid
vides tu O Jeremia? Dixi, Ego video
virgam nuceam. Et dixit mihi 12
Dominus, Rectè vidiſti: nam ego vigilo
pro verbis meis, ut exequar illa. Et 13
factum eſt verbum Domini ad me ſecundò
dicentis, Quid tu vides? Et
dixi, Ego video cacabum ignémque illi
ſubjectum, cujus facies verſa eſt ad plagam
Aquilonarem. Dixitque mihi Do- 14
minus, Ab Aquilonari plaga erit incendium
malorum adverſùs omnes habitatores
terræ: Quoniam ecce ego advo- 15
caturus ſum cuncta regum regna ab Aquilonari
terræ plaga, dicit Dominus; qui
venient, ponéntque unuſquiſque ſolium
ſuum in veſtibulis portarum Jeroſolymæ,
& ſuper cunctis mœnibus quibus ambitur,
& ſuper cunctis urbibus Judæ.
Litémque cum eis inſtituam pro omnibus 16
eorum flagitiis, & quòd me dereliquerint,
& ſacrificaverint diis alienis, & adoraverint
opificia manuum ſuarum. Tu 17
ergò præcinge lumbum tuum, & ſta, dic
eis quicquid præcepturus ſum tibi: ne verearis
vultum eorum, néve formides præſentiam
eorum; quoniam ego tibi adero,
ut liberem te, dicit Dominus.

,ferream columnam in &,*munitionis* civitatē in hodie te dedi ecce ego Et
18 וַאֲנִי הִנֵּה נְתַתִּיךָ הַיּוֹם לְעִיר מִבְצָר וּלְעַמּוּד בַּרְזֶל
,ej' principib',Jehudah regibus ,terram omnem super *æris muros* in &
וּלְחֹמוֹת נְחֹשֶׁת עַל־כָּל־הָאָרֶץ לְמַלְכֵי יְהוּדָה לְשָׂרֶיהָ
non & , te contra bellabunt Et .terræ populo & , ejus sacerdotibus
19 לְכֹהֲנֶיהָ וּלְעַם הָאָרֶץ׃ וְנִלְחֲמוּ אֵלֶיךָ וְלֹא־
.te *liberandum ad*,Dominus ait , *ego* tecum quia : tibi prævalebunt
יוּכְלוּ לָךְ כִּי־אִתְּךָ אֲנִי נְאֻם־יְהוָה לְהַצִּילֶךָ׃

CAP. II. ב

auribus in *clamabis* & , Vade : dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et
1 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ הָלֹךְ וְקָרָאתָ בְאָזְנֵי
2 misericordiæ,tui sum Recordat' , Dñs dixit Sic : dicendo ,Jerusalaim
יְרוּשָׁלִַם לֵאמֹר כֹּה אָמַר יְהוָה זָכַרְתִּי לָךְ חֶסֶד
,deserto in me post *te eundo* ,*tuarum desponsatioriū* charitatis ,*tuarum pueritiarum*
נְעוּרַיִךְ אַהֲבַת כְּלוּלֹתָיִךְ לֶכְתֵּךְ אַחֲרַי בַּמִּדְבָּר
: *ejus proventus initium* , Domino Israel Sanctitas .sata non terra in
3 בְּאֶרֶץ לֹא זְרוּעָה׃ קֹדֶשׁ יִשְׂרָאֵל לַיהוָה רֵאשִׁית תְּבוּאָתֹה
.Dominus dixit , eos *ad* veniet malum;desolabuntur eū devorātes omnes
כָּל־אֹכְלָיו יֶאְשָׁמוּ רָעָה תָּבֹא אֲלֵיהֶם נְאֻם־יְהוָה׃
domus *familiæ* omnes & , Jahacob domus Domini verbum Audite
4 שִׁמְעוּ דְבַר־יְהוָה בֵּית יַעֲקֹב וְכָל־מִשְׁפְּחוֹת בֵּית
me in vestri patres invenerunt Quid : Dominus dixit Sic .Israel
5 יִשְׂרָאֵל׃ כֹּה אָמַר יְהוָה מַה־מָּצְאוּ אֲבוֹתֵיכֶם בִּי
,vanitatē post ambulaverunt &,me *desuper* se elongaverūt quia,iniquitatis
עָוֶל כִּי רָחֲקוּ מֵעָלָי וַיֵּלְכוּ אַחֲרֵי הַהֶבֶל
nos *faciens ascendere*,Dominus Ubi : dixerunt non Et ? sunt facti vani &
6 וַיֶּהְבָּלוּ׃ וְלֹא אָמְרוּ אַיֵּה יְהוָה הַמַּעֲלֶה אֹתָנוּ
desertam terram per ,desertum per nos *deducens* , Ægypti terra è
מֵאֶרֶץ מִצְרַיִם הַמּוֹלִיךְ אֹתָנוּ בַּמִּדְבָּר בְּאֶרֶץ עֲרָבָה
ea in transiit non terrā per,mortis umbræ & *ariditatis* terram per ,*vastam* &
וְשׁוּחָה בְּאֶרֶץ צִיָּה וְצַלְמָוֶת בְּאֶרֶץ לֹא־עָבַר בָּהּ
, Charmel terram in vos induxi Et .ibi homo habitavit neque ,vir
7 אִישׁ וְלֹא־יָשַׁב אָדָם שָׁם׃ וָאָבִיא אֶתְכֶם אֶל־אֶרֶץ הַכַּרְמֶל
contaminastis &,estis ingressi &:ej' bonū &,ej' fructum *comedendum ad*
לֶאֱכֹל פִּרְיָהּ וְטוּבָהּ וַתָּבֹאוּ וַתְּטַמְּאוּ אֶת
non Sacerdotes .abominationem in posuistis meam hæreditatē &,meā terrā
8 אַרְצִי וְנַחֲלָתִי שַׂמְתֶּם לְתוֹעֵבָה׃ הַכֹּהֲנִים לֹא
pastores &,me noverūt non legem *tractantes* &?Dominus Ubi : dixerunt
אָמְרוּ אַיֵּה יְהוָה וְתֹפְשֵׂי הַתּוֹרָה לֹא יְדָעוּנִי וְהָרֹעִים
non post & ,Bahal in prophetaverūt prophetæ &:me in sunt prævaricati
פָּשְׁעוּ בִי וְהַנְּבִיאִים נִבְּאוּ בַבַּעַל וְאַחֲרֵי לֹא־
,Dominus dixit ,*vobiscum litigabo* adhuc Propterea .ambulaverūt,*proderunt*
9 יוֹעִלוּ הָלָכוּ׃ לָכֵן עֹד אָרִיב אִתְּכֶם נְאֻם־יְהוָה
, Chittim insulas transite Siquidem .*litigabo* vestrorum filiorum *filiis cum* &
10 וְאֶת־בְּנֵי בְנֵיכֶם אָרִיב׃ כִּי עִבְרוּ אִיֵּי כִתִּיִּים
fuit *En*,videte &:vehementer considerate &,mittite Cedar &;videte &
וּרְאוּ וְקֵדָר שִׁלְחוּ וְהִתְבּוֹנְנוּ מְאֹד וּרְאוּ הֵן הָיְתָה
me' populus & : Dii non ipsi & ? Deos gens mutavit Num .*hoc sicut*
11 כָּזֹאת׃ הַהֵימִיר גּוֹי אֱלֹהִים וְהֵמָּה לֹא אֱלֹהִים וְעַמִּי
: hoc super cœli Obstupescite .*proderit* non in suam gloriam mutavit
12 הֵמִיר כְּבוֹדוֹ בְּלוֹא יוֹעִיל׃ שֹׁמּוּ שָׁמַיִם עַל־זֹאת
mala duo Nam.Dominus dixit,vehementer desolamini,horrescite &
13 וְשַׂעֲרוּ חָרְבוּ מְאֹד נְאֻם־יְהוָה׃ כִּי־שְׁתַּיִם רָעוֹת
.aquas *continebunt* non quæ , fractas cisternas , cisternas sibi *excidendū ad* ,*viventium aquarum* venam dereliquerunt Me:meus popul' fecit
עָשָׂה עַמִּי אֹתִי עָזְבוּ מְקוֹר מַיִם חַיִּים לַחְצֹב לָהֶם בֹּארוֹת בֹּארֹת נִשְׁבָּרִים אֲשֶׁר לֹא־יָכִלוּ הַמָּיִם׃

Versio VUL. LAT.

18 Ego quippe dedi te hodiè in civitatem munitam, & in columnā ferreā, & in murum æreū, super omnē terrā, regib' Juda, principib' ejus, et sacerdotib', & populo terræ. 19 Et bellabunt adversùm te, & non prævalebunt: quia ego tecum sum, ait Dominus, ut liberem te.

CAP. II.

1 ET factū est verbum Dñi ad 2 me, dicens; Vade, & clama in aurib' Jerusalē, dicens; Hæc dicit Dñs; Recordat' sum tuî, miserans adolescentiam tuam, & charitatē desponsationis tuæ, quando secuta es me in deserto, in terra quæ non seminatur. 3 Sanctus Israel Dño, primitiæ frugū ej': omnes, qui devorant eum, delinquunt: mala venient sup eos, dicit Dñs. 4 Audite verbum Domini dom' Jacob, & omnes cognationes dom' Israel: 5 Hæc dicit Dñs; Quid invenerunt patres vestri in me iniquitatis, quia elongaverūt à me, et ambulaverunt post vanitatē, et 6 vani facti sunt? Et non dixerūt; Ubi est Dñs, qui ascendere nos fecit de terra Ægypti: qui traduxit nos per desertū, per terrā inhabitabilē et inviam, p terrā sitis, et imaginē mortis, p terrā, in qua non ambulavit vir, neq; 7 habitavit homo? Et induxi vos in terrā Carmeli, ut comederetis fructū ejus, & optima illi': & ingressi contaminâstis terrā meam, & hæreditatē meam po- 8 suistis in abominationē. Sacerdotes non dixerūt; Ubi est Dñs? & tenentes legē nescierūt me, & pastores prævaricati sunt in me: & prophetæ prophetaverūt in Baal, et idola secuti sunt. 9 Proptereà adhuc judicio contendam vobiscum, ait Dñs, & cum filiis vestris disceptabo. 10 Transite ad insulas Cethim, & videte: & in Cedar mittite, et considerate vehementer: et vi- 11 dete si factū est hujuscemodi. Si mutavit gens deos suos, et certè ipsi non sunt Dii: populus verò meus mutavit gloriā suā 12 in idolum. Obstupescite cœli super hoc, et portæ ejus desolamini vehementer, dicit Dominus. 13 Duo enim mala fecit populus meus: Me dereliquerunt fontem aquæ vivæ, et foderunt sibi cisternas, cisternas dissipatas, quæ continere non valent aquas.

Vers. GRÆC. LXX. Interp.

18 Ἰδοὺ τέθεικά σε ἐν τῇ σήμερον ἡμέρᾳ ὡς πόλιν ὀχυρὰν, καὶ ὡς τεῖχος (η) χαλκοῦν, ὀχυρὸν πᾶσι τοῖς βασιλεῦσιν Ἰούδα, καὶ τοῖς ἄρχουσιν (θ) αὐτοῦ, καὶ τῷ λαῷ τῆς γῆς. 19 Καὶ πολεμήσουσί σε, καὶ οὐ μὴ δύνωνται πρὸς σὲ, διότι (ι) μετὰ σοῦ ἐγώ εἰμι, τοῦ ἐξαιρεῖσθαί σε, (κ) εἶπε κύριος.

MS.A. (η) χαλκοῦ, ὀχυρὸν ἅπασιν (θ) αὐτῶν, (ι) ἐγὼ μετὰ σοῦ εἰμι, (κ) λέγει

ΚΕΦ. β'.

1 ΚΑὶ εἶπε, 2 Τάδε λέγει κύριος, Ἐμνήσθην ἐλέους νεότητός σου, καὶ ἀγάπης τελειώσεώς σου, τοῦ ἐξακολουθῆσαί σε τῷ ἁγίῳ Ἰσραὴλ, λέγει κύριος. 3 (α) Ὁ ἅγιος Ἰσραὴλ τῷ κυρίῳ, ἀρχὴ (β) γεννημάτων αὐτοῦ· πάντες οἱ ἔσθοντες αὐτὸν πλημμελήσουσι, κακὰ ἥξει ἐπ' αὐτοὺς, φησὶ κύριος. 4 Ἀκούσατε λόγον κυρίου οἶκος Ἰακὼβ, καὶ πᾶσα πατριὰ οἴκου Ἰσραήλ. 5 Τάδε λέγει κύριος, Τί (γ) εὕροσαν οἱ πατέρες ὑμῶν ἐν ἐμοὶ πλημμέλημα, ὅτι ἀπέστησαν μακρὰν ἀπ' ἐμοῦ, καὶ ἐπορεύθησαν ὀπίσω τῶν ματαίων, καὶ ἐματαιώθησαν; 6 Καὶ οὐκ εἶπαν, Ποῦ ἐστι κύριος, ὁ ἀναγαγὼν (δ) ἡμᾶς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, ὁ καθοδηγήσας ἡμᾶς ἐν τῇ ἐρήμῳ ἐν γῇ (ε) ἀπείρῳ καὶ ἀβάτῳ, ἐν γῇ ἀνύδρῳ καὶ ἀκάρπῳ, ἐν γῇ (ζ) ᾗ οὐ διώδευσεν ἐν αὐτῇ (η) ἀνὴρ οὐθὲν, καὶ οὐ κατῴκησεν ἄνθρωπος ἐκεῖ; 7 Καὶ ἤγαγον ὑμᾶς εἰς τὸν Κάρμηλον, τοῦ φαγεῖν ὑμᾶς τοὺς καρποὺς αὐτοῦ, καὶ τὰ ἀγαθὰ αὐτοῦ. καὶ (·) εἰσήλθετε, καὶ ἐμιάνατε τὴν γῆν μου, καὶ τὴν κληρονομίαν (θ) μου ἔθεσθε εἰς βδέλυγμα. 8 Οἱ ἱερεῖς οὐκ εἶπαν, Ποῦ ἐστι κύριος; καὶ οἱ ἀντεχόμενοι τοῦ νόμου (ι), οὐκ ἠπίσταντό με, καὶ οἱ ποιμένες ἠσέβουν εἰς ἐμὲ, καὶ οἱ προφῆται (κ) ἐπροφήτευον τῇ Βάαλ, καὶ ὀπίσω ἀνωφελοῦς ἐπορεύθησαν. 9 Διατοῦτο ἔτι κριθήσομαι πρὸς ὑμᾶς, (λ) καὶ πρὸς τοὺς υἱοὺς τῶν υἱῶν ὑμῶν κριθήσομαι. 10 Διότι διέλθετε εἰς νήσους Χεττιὶμ, καὶ ἴδετε, καὶ εἰς Κηδὰρ ἀποστείλατε, καὶ νοήσατε σφόδρα, καὶ ἴδετε εἰ γέγονε 11 τοιαῦτα· (μ) Εἰ ἀλλάξονται ἔθνη θεοὺς αὐτῶν, καὶ οὗτοι οὐκ εἰσὶ θεοί· ὁ δὲ λαός μου ἠλλάξατο τὴν δόξαν αὐτοῦ, ἐξ ἧς οὐκ ὠφεληθήσονται. 12 Ἐξέστη ὁ οὐρανὸς ἐπὶ τούτῳ, καὶ ἔφριξεν ἐπὶ 13 πλεῖον σφόδρα, λέγει κύριος. Ὅτι δύο καὶ πονηρὰ ἐποίησεν ὁ λαός μου· ἐμὲ ἐγκατέλιπον πηγὴν ὕδατος (ν) ζωῆς, καὶ ὤρυξαν ἑαυτοῖς λάκκους συντετριμμένους, οἳ οὐ δυνήσονται ὕδωρ συνέχειν.

MS.A. (α) Ἅγιος (β) γεννημάτων (γ) εὕροισαν οἱ πατέρες ἡμῶν (δ) ὑμᾶς (ε) ἀβάτῳ καὶ ἀπείρῳ, (ζ) ἐν ᾗ (η) οὐθὲν, (·) εἰσήλθατε, (θ) καὶ ἔθεσθαι (ι) μου, οὐκ ἐπίσταντό (κ) ἐπροφήτευον (λ) λέγει κύριος, καὶ (μ) Εἰ ἀλλάξονται τὰ ἔθνη (ν) ζῶντος,

Cum Trans. LAT.

18 *Ecce posui te in hodierna die in civitatem munitā, & in murū æneū, munitum omnib' regib' Juda, et principibus ejus, & populo terræ.* 19 *Et bellabunt adversùm te: & non prævalebunt adversùm te: quia tecum ego sū, ut liberem te, ait Dñs.*

CAP. II.

1 *ET (a) dixit, Hæc dicit Domi-* 2 *nus; Recordatus sum misericordiæ adolescentiæ tuæ, Et dilectionis perfectionis tuæ, quando tu sequuta es Sanctū Israel, dicit Domin'.* 3 *(b) Sanctus Israel Domino, principiū geniminū ej': Omnes, qui comedent eum, delinquent: mala venient super eos, dicit Domin'.* 4 *Audite verbū Domini dom' Jacob, & omnis cognatio domûs Israel.* 5 *Hæc dicit Dominus; Quod invenerunt patres vestri in me delictum; quia recesserunt longè à me, et ambulaverūt post vana, et vani facti sūt?* 6 *Et non dixerunt; ubi est Dominus, qui eduxit nos de terra Ægypti, qui deduxit nos in deserto, in terro inusitata, & invia, in terra inaquosa, et infructuosa, in terra, in qua non pertransivit in ea vir unquā, (c) neque habitavit homo illîc?* 7 *Et duxi vos in Carmelum, ut comederetis fruct' ej', et bona ej'. Et ingressi estis, et contaminâstis terrā meā; & hæreditatē meā posuistis in abominationē.* 8 *Sacerdotes non dixerunt; ubi est Domin'? & tenentes legē, nescierunt me: et pastores impiè egerunt in me: & prophetæ prophetabant in Baal, & post inutile ambulaverunt.* 9 *Proptereà adhuc judicio contendā vobiscū: & cum filiis filiorū vestrorū judicio contendā.* 10 *Idcircò venite ad insulas Chettiim, & videte: & in Cedar mittite, et considerate vehementer: & videte, si facta sunt hujusmodi;* 11 *Si mutaverint gentes deos suos: & isti non sunt Dii. Populus verò meus mutavit gloriā suā in id, ex quo nihil juvabuntur.* 12 *Obstupuit cœlū super hoc: & inhorruit extra modū vehementer, dicit Dominus.* 13 *Duo enim, (d) & mala fecit populus meus: Me dereliquerunt fontē aquæ vivæ: et foderunt sibi cisternas contritas, quæ non poterunt continere aquam.*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

18 וַאֲנָא הָא יְהַבְתָּךְ יוֹמָא דֵין תַּקִּיף כְּקִרְיָה כְּרִיכָא וּכְעַמּוּדָא דְבַרְזֶל וּכְשׁוּר דִּנְחָשׁ לְאַשְׁקָאָה
כָּס דְּלוּט לְכָל יָתְבֵי אַרְעָא לְמַלְכָּא דְבֵית יְהוּדָה לְרַבְרְבָהָא לְכָהֲנָהָא וּלְעַמָּא דְאַרְעָא׃
19 וִיהוֹן דָּיְנִין וּמְגִיחִין לְקִבְלָךְ לְמִסְתַּר יַת פִּתְגָּמֵי נְבוּאָתָךְ וְלָא יָכְלִין לָךְ אֲרֵי בְּסַעֲדָךְ מֵימְרִי
אֲמַר יְיָ לְשֵׁיזָבוּתָךְ׃

ב

1 וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי לְמֵימַר׃ 2 אֵזֵיל וְתִתְנַבֵּי קֳדָם עַמָּא דִּי בִירוּשְׁלֶם לְמֵימַר
כִּדְנַן אֲמַר יְיָ דְּכִירְנָא לְכוֹן טַבְוַת יוֹמֵי קֶדֶם רַחֲמַת אֲבָהָתְכוֹן דְּהֵימִנוּ בְּמֵימְרִי וַאֲזַלוּ בָּתַר
תְּרֵין שְׁלִיחַי בָּתַר מֹשֶׁה וְאַהֲרֹן בְּמַדְבְּרָא אַרְבְּעִין שְׁנִין בְּלָא זְוָדִין בְּאַרְעָא דְּלָא מִזְדַּרְעָא׃
3 קוּדְשַׁיָּא אִנּוּן בֵּית יִשְׂרָאֵל קֳדָם יְיָ וְעַל בָּזְזֵיהוֹן כְּדִמְעָא אֲרָמוּת עֲלַלָא דְמַן דְּאָכִיל מִנֵּיהּ
חַיָּב לְמֵמַת וּכְשֵׁירוּ חֲצַד עוֹמֶר אֲרָמוּתָא דְעַד לָא מְקָרְבִין מִנֵּיהּ כָּהֲנַיָּא בְנֵי אַהֲרֹן
קוּרְבָּנַיָּא עַל מַדְבְּחָא מַן דְּאָכִיל מִנֵּיהּ מִתְחַיַּב אַף כֵּן כָּל בָּזְזֵיהוֹן דְּבֵית יִשְׂרָאֵל יְחוּבוּן
בִּישְׁתָּא תֵּיתֵי עֲלֵיהוֹן אֲמַר יְיָ׃ 4 קַבִּילוּ פִּתְגָּמָא דַיְיָ בֵּית יַעֲקֹב וְכָל זַרְעִית בֵּית יִשְׂרָאֵל׃
5 כִּדְנַן אֲמַר יְיָ מָה אַשְׁכַּחוּ אֲבָהָתְכוֹן בְּמֵימְרִי שְׁקַר אֲרֵי אִתְרַחַקוּ מִדַּחַלְתִּי וּטְעוֹ בָּתַר
טַעֲוָתָא וַהֲווֹ לִלְמָא׃ 6 וְלָא אֲמַרוּ נִדְחַל מִן קֳדָם יְיָ דְּאַסֵּיק יָתָנָא מֵאַרְעָא דְמִצְרַיִם דִּדְבַר
יָתָנָא בְּמַדְבְּרָא בְּאַרַע מֵישַׁר וְחָרוּב בְּאַרַע צַדְיָא וְטוּלֵי מוֹתָא בְּאַרַע דְּלָא עֲדָא בַהּ אֱנָשׁ
7 וְלָא אִתּוֹתַב אֱנָשָׁא תַּמָּן׃ וְאַעֲלֵית יַתְכוֹן לַאֲרַע דְּיִשְׂרָאֵל דַּהֲוַת מְנַצְּבָא כְּכַרְמְלָא לְמֵיכַל
אִבַּהּ וְטוּבַהּ וְעַלְתּוּן וְסָאֵבְתּוּן יַת אֲרַע בֵּית שְׁכִנְתִּי וְאַחְסַנְתִּי שַׁוֵּיתוּן לְפוּלְחַן טַעֲוָתָא׃
8 כָּהֲנַיָּא לָא אֲמַרוּ נִדְחַל מִן קֳדָם יְיָ וּמַלְפֵי אוֹרַיְתָא לָא אֲלִיפוּ לְמִדַּע דַּחַלְתִּי וּמַלְכַיָּא
9 מְרַדוּ בְּמֵימְרִי וּנְבִיאֵי שִׁקְרָא מִתְנַבַּן בְּשׁוּם טַעֲוָתָא וּבָתַר דְּלָא יְהַנוּן לְהוֹן אֲזַלוּ׃ בְּכֵן אֲנָא
עֲתִיד לְאִתְפְּרָעָא מִנְּכוֹן אֲמַר יְיָ וּמִן בְּנֵי בְנֵיכוֹן דְּאִם יַעְבְּדוּן כְּעוֹבָדֵיכוֹן אֲנָא עֲתִיד
10 לְאִתְפְּרָעָא׃ אֲרֵי עֲבַרוּ לְנַגְוָת כִּתָּאֵי וַחֲזוֹ וּלְמְדִינַת עַרְבָאֵי שְׁלַחוּ וְאִסְתַּכַּלוּ לַחֲדָא וַחֲזוֹ
עַמְמַיָּא דִּגְלָן מִכְּרַךְ לִכְרַךְ וּמִמְּדִינָה לִמְדִינָה נָטְלִין יַת טַעֲוָתְהוֹן וּמוֹבְלִין לְהוֹן עִמְּהוֹן
וּבַאֲתַר דְּאִנּוּן שָׁרַן פָּרְסִין יַת מַשְׁכְּנֵיהוֹן וּמְקִימִין יַת טַעֲוָתְהוֹן וְסָגְדִין לְהֵין אֵידָא הִיא
11 אוּמָּא וְלִישָּׁן דַּעֲבַדַת כְּוָתְכוֹן בֵּית יִשְׂרָאֵל׃ הָא עַמְמַיָּא לָא שְׁבַקוּ פּוּלְחַן טַעֲוָתָא וְאִנּוּן
טַעֲוָן דְּלֵית בְּהוֹן צְרוֹךְ וְעַמִּי שְׁבַקוּ פוּלְחָנִי דִּי בְדִילֵיהּ אֲנָא מַיְתֵי עֲלֵיהוֹן יְקָרָא וַאֲזַלוּ בָתַר
12 דְּלָא יְהַנוּן לְהוֹן׃ אִתְאַבַּלוּ שְׁמַיָּא עַל כְּדֵין עַל אַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל דַּעֲתִידָא לְמֶחְרַב וְעַל
13 בֵּית מַקְדְּשָׁא דַּעֲתִיד לְאִצְטַדָּאָה וְעַל דְּעוֹבָדִין בִּישִׁין עֲבַדוּ עַמִּי לַחֲדָא אֲמַר יְיָ׃ אֲרֵי
תַּרְתֵּין בִּישִׁין עֲבַדוּ עַמִּי פּוּלְחָנִי שְׁבַקוּ דִּי בְדִילֵיהּ אֲנָא מַיְתֵי עֲלֵיהוֹן יְקָרָא כְּמַבּוּעַ דְּמַיִין
דְּלָא פָסִיק וּטְעוֹ בָתַר טַעֲוָתָא דְּאִנּוּן לְהוֹן כְּגוּבִּין תְּבִירִין דְּלָא יָכְלִין לְקַיָּמָא מַיָּא׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

18 Et ego ecce dedi te hodie fortem sicut civitatem munitam, & sicut columnam ferream, & sicut murum æreum, ad propinandum calicem maledictionis omnibus habitatoribus terræ, & *regi* domus Juda, & principibus ejus, & sacerdotibus ejus, & populo terræ. 19 Et erunt contendentes & bellantes adversum te, ut celent verba prophetiæ tuæ, & non prævalebunt tibi; quia in auxilium tuū erit Verbum meum, dicit Dominus, ut eruam te.

CAP. II.

1 ET factū est verbū prophetiæ à facie Dñi ad me dicēs: Vade & vaticinare 2 corā populo qui est in Jerusalem, dicens: Hæc dicit Dñs: Memor sum vobis beneficiorū dierū antiquorū, & dilectionis patrū vestrorū, qui crediderunt verbo meo, & ambulaverunt post duos nuntios meos, Moysen & Aaron, in deserto quadraginta annis, absq; cibariis in terra non seminata. 3 *Sanctitates sunt* dom' Israel corā Dño, & adversus direptores suos sicut primitiæ oblationis frugum: quicunque cōederit ex eis, re' erit mortis: & sicut principiū messis manipuli oblationis; ex quo si aliquis comederit, antequā offerāt Sacerdotes filii Aaron oblationes sup altari, condemnatur; sic omnes qui deprædantur domū Israel, condemnabuntur; malū veniet sup eos, dicit Dñs. 4 Suscipe verbū Dñi dom' Jacob, & omnis cognatio dom' Israel. 5 Hæc dicit Dñs: Quid invenerunt patres vestri in verbo meo falsitatis, quia elongaverunt se à timore mei, & erraverunt post idola, & abierunt in vanitatē. 6 Nec dixerunt: Timeam' à facie Dñi, qui ascēdere nos fecit de terra Ægypti, qui duxit nos p desertū p terrā solitudinis & desolatā, p terrā vastā & umbrā mortis, p terrā p quā non transierat homo, nec ibi habitaverat quisquā. 7 Et introduxi vos in terrā Israel, quæ erat plantata sicut Carmel', ut cōederetis fruct' ej' & delicias ej': & intrastis & contaminastis terrā dom' majestatis meæ, & hæreditatē meā dicastis cultui idolorū. 8 Sacerdotes non dixerunt: Timeam' à facie Dñi: & doctores Legis non didicerunt scire timorē mei, & reges rebellarunt in verbum meum, & prophetæ falsi prophetârunt in nomine idolorū, & post ea quæ non proderunt eis ambulaverunt. 9 Proptereà ego sumā vindictā de vobis, dicit Dñs, & de filiis filiorū vestrorū: ꝙ si fecerint juxta opera vestra, itidē ego ulciscar. 10 Transite enim ad insulas Cethim, et videte; ad provincias Arabū mittite, et contēplamini diligēter, et videte populos qui migraverunt de arce in arcē, et de provincia in provinciā, portantes idola sua et ducentes ea *secū*: et in loco in quo subsistunt extendunt tabernacula sua, et statuunt idola sua, et adorāt ea: quænā est enim gēs et lingua quæ fecerit sicut vos, *Domus Israel?* 11 Ecce populi non reliquerunt cultū idolorū, cùm sint idola in quib' nulla est utilitas: et popul' me' deseruit cultū meū; propter quē ego induco sup eos gloriā, et abierunt post ea quæ non prosunt eis. 12 Lugete cœli propter hoc, propter terrā Israel quæ futura est in desolationē, et propter domū sanctuarii quæ futura est in destructionē, et propter *quod* opera valdè mala fecit popul' me', dicit Dñs. 13 Quia duo mala cōmisit popul' me', cultū meū reliquit, cuj' causa adducebā sup eos *gloriā*, sicut fontē aquarū qui non deficit; et erraverūt post idola, quæ sunt quasi cisternæ cōfractæ, quæ non possūt cōtinere aquas.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܢܐ ܗܐ ܝܗܒܬܟ ܝܘܡܢܐ ܐܝܟ ܡܕܝܢܬܐ ܚܣܝܢܬܐ. ܘܐܝܟ ܥܡܘܕܐ ܕܦܪܙܠܐ. ܘܐܝܟ ܫܘܪܐ 18
ܕܢܚܫܐ. ܥܠ ܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܥܠ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܥܠ ܪܘܪܒܢܘܗܝ. ܘܥܠ ܟܗܢܘܗܝ. ܘܥܠ
ܢܒܝܘܗܝ. ܘܥܠ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܐܪܥܐ. * ܘܢܬܟܬܫܘܢ ܥܡܟ. ܘܠܐ ܢܫܟܚܘܢ ܠܟ. ܡܛܠ ܕܥܡܟ 19
ܐܢܐ. ܠܡܦܨܝܘܬܟ ܐܡܪ ܡܪܝܐ * ܩܦܠܐܘܢ * ܒ * * ܘܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܗ 1
ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܙܠ ܘܐܟܪܙ ܒܐܕܢܝ ܐܘܪܫܠܡ. ܘܐܡܪ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܬܕܟܪܬ ܠܟܝ 2
ܛܝܒܘܬܐ ܕܛܠܝܘܬܟܝ: ܘܚܘܒܐ ܕܡܣܝܒܪܢܘܬܟܝ ܕܐܙܠܬܝ ܒܬܪܝ ܒܡܕܒܪܐ. ܒܐܪܥܐ ܕܠܐ
ܡܙܕܪܥܐ. * ܩܕܫ ܐܝܣܪܝܠ ܠܡܪܝܐ ܪܫ ܥܠܠܬܗ. ܟܠ ܕܐܟܠܝܢ ܠܗ ܢܚܛܘܢ. ܘܒܝܫܬܐ 3
ܬܐܬܐ ܥܠܝܗܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܕܒܝܬ ܝܥܩܘܒ. ܘܟܠܗܘܢ ܫܪ̈ܒܬܐ 4
ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܢܘ ܥܘܠܐ ܕܐܫܟܚܘ ܒܝ ܐܒܗ̈ܝܟܘܢ. ܕܐܬܪܚܩܘ 5
ܡܢܝ. ܘܐܙܠܘ ܒܬܪ ܣܪܝܩܘܬܐ ܘܣܪܝܩܘ ܘܠܐ ܐܡܪܘ. ܐܝܟܘ ܡܪܝܐ ܕܐܣܩܢ ܡܢ ܐܪܥܐ 6
ܕܡܨܪܝܢ. ܘܕܒܪܢ ܒܡܕܒܪܐ. ܒܐܪܥܐ ܚܪܒܬܐ ܘܡܫܘܚܬܐ. ܒܐܪܥܐ ܨܗܝܐ ܘܛܠܠܐ ܕܡܘܬܐ. ܒܐܪܥܐ
ܕܠܐ ܥܒܪ ܒܗ̇ ܓܒܪ. ܘܠܐ ܝܬܒ ܒܗ̇ ܒܪܢܫܐ. * ܘܐܝܬܝܬܟܘܢ ܠܐܪܥܐ ܕܟܪ̈ܡܐ. ܠܡܐܟܠ 7
ܦܐܪ̈ܝܗ̇ ܘܛܒܬܗ̇. ܘܐܬܝܬܘܢ ܘܛܢܦܬܘܢ ܠܐܪܥܝ. ܘܝܪܬܘܬܝ ܣܡܬܘܢ ܠܡܣܠܝܘܬܐ. * ܟܗ̈ܢܐ 8
ܠܐ ܐܡܪܘ ܐܝܟܘ ܡܪܝܐ. ܘܐܚܝܕܝ ܢܡܘܣܐ ܠܐ ܝܕܥܘܢܝ. ܘܪ̈ܥܘܬܐ ܟܦܪܘ ܒܝ. ܘܢܒܝ̈ܐ ܐܬܢܒܝܘ
ܒܒܥܠܐ. ܘܒܬܪ ܡܕܡ ܕܠܐ ܡܘܬܪ ܒܗ ܗܘ ܐܙܠܘ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܬܕܝܢ ܥܡܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. 9
ܘܥܡ ܒܢ̈ܝ ܒܢܝܟܘܢ ܐܬܕܝܢ. * ܥܒܪܘ ܠܓܙܪ̈ܬܐ ܕܟܬܝܐ ܘܚܙܘ. ܘܠܩܕܪ ܫܕܪܘ. ܘܐܣܬܟܠܘ 10
ܛܒ. ܘܚܙܘ ܐܢ ܗܘܐ ܐܝܟ ܗܕܐ. * ܐܢ ܡܫܚܠܦܝܢ ܥܡ̈ܡܐ ܐܠܗܝܗܘܢ. ܕܐܢܘܢ ܠܐ ܗܘܘ 11
ܐܠܗܐ. ܘܥܡܝ ܫܚܠܦ ܐܝܩܪܗ ܒܡܕܡ ܕܠܐ ܡܘܬܪ. * ܐܬܕܡܪܘ ܫܡܝܐ ܥܠ ܗܕܐ. ܘܙܘܥܘ ܘܕܚܠܘ ܛܒ 12
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܕܬܪ̈ܬܝܢ ܒܝ̈ܫܢ ܥܒܕ ܥܡܝ. ܠܝ ܫܒܩܘ ܡܒܘܥܐ ܕܡ̈ܝܐ ܚ̈ܝܐ. 13
ܘܐܙܠܘ ܚܦܪܘ ܠܗܘܢ ܓܘ̈ܒܐ. ܓܘ̈ܒܐ ܕܨܪ̈ܝܐ. ܕܠܐ ܡܫܟܚܝܢ ܠܡܚܕ ܠܗܘܢ ܡ̈ܝܐ.

Cæterùm ecce ego reddo te hodie ut civitatē munitā, ut columnā ferreā, & ut murum æneum contra terrā univerſam, contra reges Juda, contra principes eorum, contra ſacerdotes & prophetas eorum; denique contra totum terræ populum. 18 Pugnabunt quidem contra te, ſed non ſuperabunt te; quoniam adſum tibi ut eripiam te, dicit Dominus. 19

CAP. II.

Fuit etiam ad me ſermo Domini, dicendo; 1 Vade prædicatum in aures Jeruſalem, & dic; 2 Sic ait Dn̄s, Recordor tibi benefactum pueritiæ tuæ, amorē patientiæ tuæ; quòd ſecuta ſis me per deſertū, per terrā haud ſeminabilem; Conſecraverit Iſrael Dn̄o primitias frugum 3 ſuarū; quicunque comediſſent eas, delinquebant & malum eveniebat eis, dicit Domin⁹. Audite ſermonē Dn̄i, domus Jacobi, et omnes 4 familiæ Iſraeliticæ. Sic dicit Dn̄s, Quænam 5 eſt iniquitas quam deprehenderunt in me patres veſtri, ut recedentes à me ſectati ſint nihilū, nihilq; profecerint? Neque dixerint, Ubi 6 eſt Dn̄s qui extraxit nos è terra Ægypti; duxit nos per deſertum, per terrā vaſtā ac ſolitariā, terrā ſterilē, & umbræ mortis, terrā per quam nemo tranſierat, & ubi nemo habitabat? Imò 7 cùm adduxiſſem vos ad regionem vinearum, ut comederetis fructus & bona illius, Vos venientes polluiſtis terrā meā, et hæreditatē meam expoſuiſtis abominationi. Sacerdotes non 8 dixerunt, Ubi eſt Dn̄s? tractantes legem non cognoverunt me, paſtores negaverunt me, prophetæ per Baalem prophetaverunt, & id in quo nullum eſt emolumentum, ſectati ſunt. Hac de re judicio contendā vobiſcum, 9 dicit Dn̄s: & cum filiis filiorū veſtrorū contendā. Tranſite ad inſulas Chithæorum, ac 10 perſpicite; & ad Cedarē mittite, ac diligenter conſiderate, ac videte num quidquam ſimile factū ſit: Num mutent gentes deos ſuos, qui 11 tamē non ſunt Dii: popul⁹ autē me⁹ mutavit gloriam ſuam in rem inutilem. Obſtupeſcite 12 cœli de hac re, contremiſcite, & vehementer extimeſcite, ait Dn̄s, Nam duo crimina 13 perpetrârunt popul⁹ meus: Me dereliquerunt fontem aquarum vivarum, & abeuntes foderunt ſibi ciſternas, ciſternas quaſſatas, in quibus aquas conſervare nequeunt.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

18 * ها انا وضعتك في نهار اليوم مثل مدينة حصينة * مثل عمود حديد * ومثل سور نحاس
19 حصين * لجميع ملوك يهودا ولروسايهم ولشعب الارض * ويحاربونك ولا يقدرون عليك * من
اجل اني انا معك انا لانقذك يقول الرب * · الفصل الثاني ·
1
2 ** وقال هكذا يقول الرب * ذكرت رحمة شبابك ومحبة نهايتك * عند ما تبعت قدوس
3 اسرايل يقول الرب * قدس اسرايل للرب بدو غلاته * جميع الذين ياكلونها ياثمون وياتي
4
5 عليهم الشرور قال الرب * اسمعوا كلام الرب يا بيت يعقوب وكل ابوة بيت اسرايل * هكذا يقول
الرب * اي اثم وجدوا في ابائكم * لانهم تباعدوا عني بعيدا * ومضوا خلف الاباطيل وتباطلوا *
6 * ولم يقولوا اين هو الرب الذي اصعدنا من ارض مصر * الذي هدانا في البرية في ارض
غير مسلوكة وغير مخبور * في ارض عديمة الماء وغير مثمر وظلال الموت * في الارض التي
7 لم يسلك فيها احد ولم يسكن هناك ابن انسان * وادخلنا الي الكرمل لناكل ثمرته
8 وخيراته * ودخلتم ونجستم ارضي وميراثي * وصرتم رذالة * الكهنة لم يقولوا اين هو الرب *
والممسكون بناموسي لم يعرفوني * والرعاة نافقوا علي * والانبياء تنبوا لباعل * وخلف
9 ما لا ينفع سلكوا * لاجل هذا احاكمكم يقول الرب ايضا * ومع بني بنيكم
10 احاكم من اجل هذا * جوزوا الي جزاير ستيم وانظروا * الي قيذار ارسلوا * وتاملوا
11 جدا وانظروا ان كان صار مثل هذا * ايبدلون الامم الهتهم وهولاء ليس هم الهة *
12 وشعبي بدل مجده بما لا ينتفعون * دهشت السماء لهذا ورهبت جدا بالاكثر يقول الرب *
13 * لان شعبي صنع اثنين شريرين * تركوني انا ينبوع الماء الحي * وحفروا لهم جبابا مشققة
التي لا تستطيع ان تمسك ماء *

Ecce ego poſui te hodernâ die velut urbem munitam, velut columnam ferream, & velut murum æneum fortem, cunctis regibus Judæ, & principibus eorum, populóque terræ: 18 *Qui te quidem oppugnabunt, at non poterunt ſuperare te; quoniam ego tecum ero, ut liberem te, dicit Dominus.* 19

CAP. II.

Dixit præterea, Sic ait Dominus; 1 *Recordor benignitatis adoleſcentiæ tuæ, & ſupremæ dilectionis tuæ. Quando ſequebaris Sanctum Iſraelis, ait Dominus,* 2 *Conſecrabat Iſrael Domino primitias proventuum ſuorum; quicunque comediſſent eas, delinquebant, & contingebant eis mala, ait Dominus.* 3 *Audite verba Domini, O domus Jacobi, & univerſæ paternæ familiæ domûs Iſraelis.* 4 *Sic ait Dominus, Quam culpam invenerunt in me patres veſtri, quòd procul abſceſſerunt à me, & vanitates ſecuti indulſerunt vanitati?* 5 *Et non dixerunt, ubi eſt Dominus qui eduxit nos è terra Ægypti; qui rexit nos in deſerto, in terra impervia & ignota; in terra aquarum experte, infructuoſâ, & umbrâ lethali; in terra per quam nemo inceſſerat, & ubi nullus mortalium habitabat?* 6 *Et introduxit nos in Charmelum, ut comederemus fructus ejus & bona illius? Imò ingreſſi contaminâſtis terram meam & hæreditatem meam, & facti eſtis abominatio.* 7 *Sacerdotes non dixerunt, ubi eſt Dominus? & qui tenebant legem meam, ignoraverunt me; paſtores perfidè mecum egerunt; prophetæ Baali prophetaverunt, & quod inutile eſt, ſecuti ſunt.* 8 *Ob hoc judicium inſtituam vobiſcum, ait etiam Dominus: & cum filiis filiorum veſtrorum judicium hac de re inſtituam.* 9 *Tranſite ad inſulas Settim, & videte; ad Cedarem mittite, diligenter contemplamini, & conſiderate num ſimile quid factum ſit;* 10 *Num mutent gentes deos ſuos, licèt illi non ſint Dii: meus tamen populus mutavit gloriam ſuam in id ex quo nullum percipiunt emolumentum.* 11 *Obſtupeſcat hac de re cœlum, & magis magiſque paveſcat, ait Dominus:* 12 *Quòd populus meus duas res peſſimas fecerit; dereliquerint me ſcatebram aquæ vivæ, foderintque ſibi puteos diſruptos, aquam continere nequeuntes.* 13

ירמיה : ב

eũ Sup?prædã in fuit quare ? ipſe *domus natus* an , Iſrael ſerv⁹ Nũquid
14 הַעֶבֶד יִשְׂרָאֵל אִם־יְלִיד בַּיִת הוּא מַדּוּעַ הָיָה לָבַז׃ עָלָיו 15
,ſolitudinẽ in ej⁹ terrã poſuerunt &:ſuã vocem dederunt *,leunculi rugient*
יִשְׁאֲגוּ כְפִרִים נָתְנוּ קוֹלָם וַיָּשִׁיתוּ אַרְצוֹ לְשַׁמָּה
,Tachpanches &,Noph filii Etiã.habitatore abſq; ſunt exuſtæ ej⁹ civitates
16 עָרָיו נִצְּתָה מִבְּלִי יֹשֵׁב׃ גַּם־בְּנֵי־נֹף וְתַחְפַּנֵס
Dñm *te relinquendo* tibi *facies* hoc Nõnne .verticem tibi *confringent*
17 יִרְעוּךְ קָדְקֹד׃ הֲלוֹא־זֹאת תַּעֲשֶׂה־לָּךְ עָזְבֵךְ אֶת־יְהוָה
via in tibi quid nunc Et ? viam p̃ te *deducentis* tempore in tuum Deum
18 אֱלֹהַיִךְ בְּעֵת מוֹלִכֵךְ בַּדָּרֶךְ׃ וְעַתָּה מַה־לָּךְ לְדֶרֶךְ
bibendum ad , Aſſur via in tibi quid & ? *Sichor aquas bibendum ad* ,Ægypti
מִצְרַיִם לִשְׁתּוֹת מֵי שִׁחוֹר וּמַה־לָּךְ לְדֶרֶךְ אַשּׁוּר לִשְׁתּוֹת
,ſcito &;te *increpabũt tuæ averſiones*&,tua malitia te Corripiet?fluminis *aquas*
19 מֵי נָהָר׃ תְּיַסְּרֵךְ רָעָתֵךְ וּמְשֻׁבוֹתַיִךְ תּוֹכִחֻךְ וּדְעִי
non & ,tuum Deum Dominum te reliquiſſe eſt amarũ & malũ quòd,vide &
וּרְאִי כִּי־רַע וָמָר עָזְבֵךְ אֶת־יְהוָה אֱלֹהָיִךְ וְלֹא
ſeculo à Quia .exercituum DEUS Dominus dicit , te in meum *pavorem*
20 פַחְדָּתִי אֵלַיִךְ נְאֻם־אֲדֹנָי יְהוִה צְבָאוֹת׃ כִּי מֵעוֹלָם
nam ;ſerviam Non : dixiſti & , tua vincula rupi ,tuum jugum confregi
שָׁבַרְתִּי עֻלֵּךְ נִתַּקְתִּי מוֹסְרוֹתַיִךְ וַתֹּאמְרִי לֹא אֶעֱבוֹד כִּי
pervagans tu frondoſo ligno omni ſub & ,ſublimem collem omnem ſuper
עַל־כָּל־גִּבְעָה גְּבֹהָה וְתַחַת כָּל־עֵץ רַעֲנָן אַתְּ צֹעָה
quomodo &;*veritatis* ſemen ipſam totã *Sorec* te plantavi ego Et .meretrix
21 זֹנָה׃ וְאָנֹכִי נְטַעְתִּיךְ שֹׂרֵק כֻּלֹּה זֶרַע אֱמֶת וְאֵיךְ
,nitro in te laveris ſi Quia ? alienæ vitis *ramos declinantes* mihi es converſa
22 נֶהְפַּכְתְּ לִי סוּרֵי הַגֶּפֶן נָכְרִיָּה׃ כִּי אִם־תְּכַבְּסִי בַּנֶּתֶר
dixit , me coram tua iniquitas eſt ſignata ;Borith tibi multiplicaveris &
וְתַרְבִּי־לָךְ בֹּרִית נִכְתָּם עֲוֺנֵךְ לְפָנַי נְאֻם
Behalim poſt ,ſum polluta Non : dices Quomodo .*Dominus* Domin⁹
23 אֲדֹנָי יְהוִה׃ אֵיךְ תֹּאמְרִי לֹא נִטְמֵאתִי אַחֲרֵי הַבְּעָלִים
levis dromedaria:feceris quid ſcito;valle in tuã viam vide?ambulavi non
לֹא הָלַכְתִּי רְאִי דַרְכֵּךְ בַּגַּיְא דְּעִי מֶה עָשִׂית בִּכְרָה קַלָּה
ſorbuit ſuæ animæ deſiderio in *deſertum doctus* Onager .ſuas vias *implicans*
24 מְשָׂרֶכֶת דְּרָכֶיהָ׃ פֶּרֶה לִמֻּד מִדְבָּר בְּאַוַּת נַפְשׁוֹ שָׁאֲפָה
,*laſſabuntur* non eam *quærentes* omnes?eã avertet quis ,ſuæ occaſionis ventum
רוּחַ תַּאֲנָתָהּ מִי יְשִׁיבֶנָּה כָּל־מְבַקְשֶׁיהָ לֹא יִיעָפוּ
tuũ guttur &,*diſcalceatione à* tuũ pedẽ Prohibe.eam invenient ſuo menſe in
25 בְּחָדְשָׁהּ יִמְצָאוּנְהָ׃ מִנְעִי רַגְלֵךְ מִיָּחֵף וגורנך
, alienos adamavi quippe:nequaquam?eſt Deſperatũ :dixiſti Et .ſiti à
מִצָּמְאָה וַתֹּאמְרִי נוֹאָשׁ לוֹא כִּי־אָהַבְתִּי זָרִים
ſic , *invenietur* quando , *furis pudorem Secundùm* .ibo eos poſt &
26 וְאַחֲרֵיהֶם אֵלֵךְ׃ כְּבֹשֶׁת גַּנָּב כִּי יִמָּצֵא כֵּן
, eorum principes ,eorum reges , ipſi , Iſrael domus ſunt affecti pudore
הֹבִישׁוּ בֵּית יִשְׂרָאֵל הֵמָּה מַלְכֵיהֶם שָׂרֵיהֶם
; tu meus Pater:ligno Dicentes .eorum prophetæ &,eorum ſacerdotes &
27 וְכֹהֲנֵיהֶם וּנְבִיאֵיהֶם׃ אֹמְרִים לָעֵץ אָבִי אַתָּה
: *facies* non & ,*cervicem* me ad verterunt quia : nos genuiſti Tu : lapidi &
וְלָאֶבֶן אַתְּ יְלִדְתָּנִי כִּי־פָנוּ אֵלַי עֹרֶף וְלֹא פָנִים
, tui Dii ubi Et .nos ſerva & , Surge : dicent ſui mali tempore in &
28 וּבְעֵת רָעָתָם יֹאמְרוּ קוּמָה וְהוֹשִׁיעֵנוּ׃ וְאַיֵּה אֱלֹהֶיךָ
nam ? tui mali tempore in te *ſervabunt* Num.Surgant?tibi feciſti quos
אֲשֶׁר עָשִׂיתָ לָּךְ יָקוּמוּ אִם־יוֹשִׁיעוּךָ בְּעֵת רָעָתֶךָ כִּי
.Jehudah tui Dii fuerunt tuarum civitatum *numerus*
מִסְפַּר עָרֶיךָ הָיוּ אֱלֹהֶיךָ יְהוּדָה׃

Verſio VUL. LAT.

14 Numquid ſervus eſt Iſrael, aut
vernacul⁹? quarè ergò fact⁹ eſt
15 in prædã? Sup̃ eum rugierunt
leones, & dederunt vocẽ ſuam,
poſuerunt terrã ejus in ſolitudinẽ:
civitates ejus exuſtæ ſunt,
16 & non eſt qui habitet in eis. Filii
quoque Mempheos & Taphnes
conſtupraverunt te uſq;
17 ad verticẽ. Numquid non iſtud
factum eſt tibi, quia dereliquiſti
Dñm Deum tuum eo tempore,
18 quo ducebat te p̃ viã? Et nunc
quid tibi vis in via Ægypti, ut
bibas aquam turbidã? & quid
tibi cum via Aſſyriorũ, ut bibas
19 aquã fluminis? Arguet te malitia
tua, & averſio tua increpabit
te. Scito, & vide, quia malũ
& amarũ eſt reliquiſſe te Dñm
Deũ tuum, & non eſſe timorẽ
meî apud te, dicit Dñs De⁹ exercituum.
20 A ſeculo confregiſti
jugũ meũ, rupiſti vincula mea,
& dixiſti; Non ſerviã. In omni
enim colle ſublimi, & ſub omni
ligno frondoſo, tu proſternebaris
21 meretrix. Ego autem
plantavi te vineã electã, omne
ſemen verum: quomodò ergò
converſa es mihi in pravũ vinea
22 aliena? Si laveris te nitro,
& multiplicaveris tibi herbã
borith, maculata es in iniquitate
tua corã me, dicit Dñs Deus.
23 Quomodò dicis; Non ſum polluta,
poſt Baalim non ambulavi?
vide vias tuas in convalle,
ſcito quid feceris: curſor levis
24 explicans vias ſuas. Onager aſſuetus
in ſolitudine, in deſiderio
animæ ſuæ, attraxit ventum
amoris ſui: null⁹ avertet eam:
omnes qui quærunt eam, non
deficient: in menſtruis ejus invenient
25 eam. Prohibe pedem
tuum à nuditate, & guttur tuũ
à ſiti. Et dixiſti; Deſperavi, nequaquã
faciã: adamavi quippe
alienos, & poſt eos ambulabo.
26 Quomodò confunditur fur
quando deprehenditur, ſic confuſi
ſunt dom⁹ Iſrael, ipſi, et reges
eorũ, principes, & ſacerdotes,
27 & prophetæ eorũ, Dicentes
ligno, Pater me⁹ es tu; & lapidi,
Tu me genuiſti. Verterunt
ad me tergũ, & non faciẽ, & in
tempore afflictionis ſuæ dicent;
28 Surge, & libera nos. Ubi ſunt
dii tui, quos feciſti tibi? ſurgãt
& liberent te in tempore afflictionis tuæ: ſecundùm numerũ quippe civitatum tuarum erant dii tui, Juda.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

14 Μὴ δοῦλός ἐστιν Ἰσραὴλ, ἢ οἰκογενής ἐστι; διατί
15 εἰς προνομὴν ἐγένετο; Ἐπ' αὐτὸν ὠρύοντο
λέοντες, καὶ ἔδωκαν τὴν φωνὴν αὐτῶν, οἳ ἔταξαν
τὴν γῆν αὐτοῦ εἰς ἔρημον, καὶ αἱ πόλεις αὐτοῦ
16 κατεσκάφησαν, παρὰ τὸ μὴ κατοικεῖσθαι. Καὶ
υἱοὶ Μέμφεως καὶ Τάφνας ἔγνωσάν σε, καὶ (ξ)
17 κατέπαιζόν σου. Οὐχὶ ταῦτα ἐποίησέ σοι τὸ
καταλιπεῖν σε ἐμέ; λέγει κύριος ὁ θεός σου.
18 Καὶ νῦν τί σοι καὶ (ο) τῇ ὁδῷ Αἰγύπτου τοῦ πιεῖν
ὕδωρ Γηῶν; καὶ τί σοι καὶ (π) τῇ ὁδῷ Ἀσσυρίων
19 τοῦ πιεῖν ὕδωρ ποταμῶν; Παιδεύσει σε
ἡ ἀποστασία σου, καὶ ἡ κακία σου ἐλέγξει σε. καὶ
γνῶθι, καὶ ἴδε, ὅτι πικρόν σοι τὸ καταλιπεῖν
σε ἐμὲ, λέγει κύριος ὁ θεός σου· καὶ οὐκ (ρ)
εὐδόκησα ἐπὶ σοὶ, λέγει κύριος ὁ θεός σου.
20 Ὅτι ἀπ' αἰῶνος συνέτριψας τὸν ζυγόν σου, καὶ
διέσπασας τοὺς δεσμούς σου, καὶ εἶπας, Οὐ (σ)
δουλεύσω σοι, ἀλλὰ πορεύσομαι ἐπὶ πάντα
βουνὸν ὑψηλὸν, καὶ ὑποκάτω παντὸς ξύλου
κατασκίου, ἐκεῖ διαχυθήσομαι ἐν τῇ πορνείᾳ
21 μου. Ἐγὼ δὲ ἐφύτευσά σε ἄμπελον καρποφόρον
(τ) πᾶσαν ἀληθινήν· πῶς (υ) ἐστράφης εἰς
22 πικρίαν ἡ ἄμπελος ἡ ἀλλοτρία; Ἐὰν (φ) ἀποπλύνῃ
ἐν νίτρῳ, καὶ πληθυνῇς σεαυτῇ (χ)
ποίαν, κεκηλίδωσαι (ψ) ἐν ταῖς ἀδικίαις σου
23 ἐναντίον ἐμοῦ, λέγει κύριος. Πῶς ἐρεῖς, Οὐκ
ἐμιάνθην, καὶ ὀπίσω τῆς Βάαλ οὐκ ἐπορεύθην; ἴδε
τὰς ὁδούς σου ἐν τῷ πολυανδρίῳ, καὶ γνῶθι
24 τί ἐποίησας. ὀψὲ φωνὴ αὐτῆς ὠλόλυξε· Τὰς
ὁδοὺς αὐτῆς ἐπλάτυνεν ἐφ' ὕδατα ἐρήμου, ἐν
ἐπιθυμίαις ψυχῆς αὐτῆς ἐπνευματοφορεῖτο,
παρεδόθη, τίς ἐπιστρέψει αὐτήν; πάντες οἱ
ζητοῦντες αὐτὴν οὐ κοπιάσουσιν, ἐν τῇ ταπεινώσει
25 αὐτῆς εὑρήσουσιν αὐτήν. Ἀπόστρεψον
τὸν πόδα σου ἀπὸ ὁδοῦ τραχείας, καὶ τὸν φάρυγγά
σου ἀπὸ δίψους. ἡ δὲ εἶπεν, Ἀνδριοῦμαι, ὅτι
ἠγαπήκει ἀλλοτρίους, καὶ ὀπίσω αὐτῶν ἐπορεύετο.
26 Ὡς αἰσχύνη κλέπτου ὅταν ἁλῷ, οὕτως
αἰσχυνθήσονται οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, αὐτοὶ καὶ
οἱ βασιλεῖς αὐτῶν, καὶ οἱ (ω) ἄρχοντες αὐτῶν,
27 καὶ οἱ ἱερεῖς αὐτῶν, καὶ οἱ προφῆται αὐτῶν. Τῷ
ξύλῳ εἶπαν, Ὅτι πατήρ μου εἶ σύ, καὶ τῷ λίθῳ,
Σὺ ἐγέννησάς με· καὶ ἔστρεψαν ἐπ' ἐμὲ νῶτα,
καὶ οὐ πρόσωπα αὐτῶν. καὶ ἐν τῷ καιρῷ τῶν
κακῶν αὐτῶν ἐροῦσιν, Ἀνάστα καὶ σῶσον ἡμᾶς.
28 Καὶ ποῦ εἰσιν οἱ θεοί σου, οὓς ἐποίησας σεαυτῷ;
εἰ ἀναστήσονται καὶ (α) σώσουσιν ἐν καιρῷ
τῆς κακώσεώς σου. ὅτι (β) κατ' ἀριθμὸν τῶν πόλεών
σου ἦσαν θεοί σου Ἰούδα, καὶ (γ) κατ' ἀριθμὸν
διόδων τῆς Ἱερουσαλὴμ ἔθυον τῇ Βάαλ.

Nunquid ſerv⁹ eſt Iſrael, aut vernacul⁹ 14
eſt? quarè factus eſt in prædã? 15
Super eũ rugierunt leones, &
dederunt vocem ſuã; qui poſuerũt
terrã ejus in ſolitudinẽ: & civitates
illius deſtructæ ſunt, eò quòd
non habitentur. Et filii Mempheos 16
& Taphnas cognoverunt te, et illuſerunt
tibi. Nõnne hæc fecit tibi 17
(e) illud, quòd dereliquiſti me, dicit
Dominus Deus tuus? Et nunc 18
quid tibi, & viæ Ægypti, ut bibas
aquã Geon? Et quid tibi, & viæ
Aſſyriorũ, ut bibas aquã fluminũ?
Corripiet te rebellio tua, et malitia 19
tua arguet te. Et ſcito, et vide, quia
amarũ tibi, quòd dereliqueris me,
dicit Dominus Deus tuus: &
non complacui in te, dicit
Dominus Deus tuus: Quia à ſeculo 20
confregiſti jugum tuum, &
dirupiſti vincula tua, & dixiſti;
non ſerviã tibi: ſed ibo ad omnem
collẽ excelſum, & ſubter omne lignũ
umbroſũ: ibi diffundar in fornicatione
mea. Ego autẽ plantavi 21
te vitẽ fructiferã omnẽ verã: quomodò
converſa es in amaritudinẽ
vitis alienæ? Si laveris te in nitro, 22
& multiplicaveris tibi (f) herbã;
maculata es in tuis iniquitatib⁹ corã
me, dicit Domin⁹. Quomodò dices, 23
Non ſum polluta, & poſt Baal
non ambulavi? Vide vias tuas in
(g) ſepulchro multitudinis, et noſce,
quid feceris. Ad veſperã vox
ejus (h) ululavit: Vias ſuas dilatavit 24
ſuper aquas ſolitudinis: in deſideriis
animæ ſuæ (i) ſpiritu portabatur:
tradita eſt: quis convertet
eam? Omnes, qui quærunt illã, non
laborabunt: in (k) humilitate illius
reperient illã. Averte pedem tuũ à 25
via aſpera, & guttur tuum à ſiti.
Illa vero dixit, (l) Viriliter agam:
quia dilexit alienos, et poſt eos ambulabat.
Sicut confuſio furis, cùm 26
deprehenſus fuerit; ſic confundentur
filii Iſrael, ipſi, & reges eorum, &
principes eorũ, et ſacerdotes eorũ,
et prophetæ eorum. Ligno dixerunt, 27
Quia pater me⁹ es tu: et lapidi,
Tu genuiſti me. Et converterunt
ad me dorſa, et non facies ſuas. Et
in tempore malorũ ſuorũ dicent;
Surge, et ſalva nos. Et ubi ſunt dii 28
tui, quos feciſti tibi? ſi ſurgent, et
ſalvabunt in tempore afflictionis
tuæ? Quia juxta numerũ civitatũ
tuarũ erant dii tui, Juda: et juxta
numerũ viarũ Hieruſalem immolabant
Baal.

MS. A. (ξ) κατέπεζάν σου. (ο) γῆ Αἰγύπτου (π) τῇ γῇ (ρ) ηὐδόκησα ἐν σοὶ, (σ) δουλεύσω, ἀλλὰ πορεύσομαι (τ) ἀληθινὴν πᾶσαν· (υ) ἐστράφη (φ) *ἀποπλύνῃ (χ) πόαν, (ψ) ἐναντίον ἐμοῦ ἐν ταῖς ἀδικίαις σου, λέγει κύριος ὁ θεός σου. (ω) ἄρχοντες, καὶ οἱ ἱερεῖς (α) σώσουσίν σε ἐν (β) κατὰ (γ) κατὰ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 הַכְעַבְדָּא הֲוָה יִשְׂרָאֵל אִם יְלִיד בֵּיתָא הוּא מַדִּין אִתְמְסַר לְבָזוֹזִין׃ עֲלוֹהִי יִכְלוֹן מַלְכַיָּא
15 16 יָרִימוּן קָלְהוֹן וְשַׁוּוּ אַרְעֵיהּ לְצָדוּ קִרְווֹהִי צַדְיָן מִבְּלִי יָתִיב׃ אַף בְּנֵי מָפֵיס וְתַחְפַּנְחֵס
17 יִקְטְלוּן גִּבָּרָךְ וְיִבְזוֹן נִכְסָךְ׃ הֲלָא דָא פּוּרְעָנוּתָא תִּתְעֲבֵד מִנִּיךְ עַל דִּשְׁבַקְתְּ יָת פּוּלְחָנָא
18 דַּייָ אֱלָהָךְ דְּאַחְזְיָךְ אוֹרְחָא תַּקְנָא וְלָא הֲלַכְתָּא בַהּ׃ וּכְעַן מָה לְכוֹן לְאִתְחַבָּרָא לְפַרְעֹה
מַלְכָּא דְמִצְרַיִם לְמִרְמֵי דְכוּרֵיכוֹן בְּנַהֲרָא וּמָה לְכוֹן לְמִגְזַר קְיָם עִם אַתּוּרָאָה לְאַגְלָאָה
19 יָתְכוֹן לְהָלָאָה מֵעֲבַר פְּרָת׃ אַיְתֵיתִי עֲלָךְ יִסּוּרִין וְלָא מְנַעַתְּ מִבִּישְׁתִּיךְ וְעַל דְּלָא תַבְתְּ
לְאוֹרַיְתָא פּוּרְעָנוּתָא תִּתְעֲבֵד מִנִּיךְ וּדְעִי וַחֲזִי אֲרֵי בִישְׁתָּא וּמְרִירָא אַיְתֵי עֲלָךְ יְרוּשְׁלֶם עַל
דִּשְׁבַקְתְּ יָת פּוּלְחָנָא דַּייָ אֱלָהָךְ וְלָא שַׁוִּיתָא דְּחַלְתִּי לָקֳבֵל עֵינָךְ אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים צְבָאוֹת׃
20 אֲרֵי מֵעַלְמָא תַּבָּרִית נִיר עַמְמַיָּא מִצַּוְּרֵיכוֹן פְּסָקִית חֲנִיקֵיכוֹן וַאֲמַרְתּוּן לָא נוֹסֵף עוֹד
לְמֶעְבַּר עַל מֵימְרָךְ אֲרֵי עַל כָּל רָמָא מְנַטְּלָא וּתְחוֹת כָּל אִילָן עֲבוּף אַתְּ פָּלְחָא לְטַעֲוָתָא׃
21 וַאֲנָא קַיֵּמְתְּכוֹן קֳדָמַי כְּמִנְצַב גֻּפְנָא בְחִירָא כּוּלְּכוֹן עָבְדֵי קְשׁוֹט וְאֵיכְדֵין אִשְׁתַּנֵּיתוּן קֳדָמַי
22 בְּעוֹבָדֵיכוֹן מְקַלְקְלַיָּא סְטֵיתוּן מִבָּתַר פּוּלְחָנִי הֲוֵיתוּן כְּגֻפֶן דְּלֵית בֵּיהּ הֲנָאָה׃ אֲרֵי אִם
תְּדַמּוּן לְאִתְנַקָּאָה מֵחוֹבַיִךְ כְּמָא דִמְנַקַּן בְּנִתְרָא וּמְחַוְּרִין בְּבוֹרִיתָא הָא כְרוֹשֶׁם כִּתְמָא
23 דְּלָא דְכֵי כֵּן סַנִּיאוּ חוֹבַיִךְ קֳדָמַי אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים׃ אֵיכְדֵין תֵּימְרִין לָא אִסְתְּאַבִית וּבָתַר
טַעֲוַת עַמְמַיָּא לָא הֲלָכִית זְקוֹפִי עֵינַיִךְ עַל אָרְחָתִיךְ כַּד הֲוֵית יָתְבָא בְחֵילְתָא לָקֳבֵל בֵּית
24 פְּעוֹר דְּעִי מָה עֲבַדְתְּ הֲוֵית דַּמְיָא לְיַנְקָא קַלִּילָא דִמְקַלְקְלָא אָרְחָתַהָא׃ כְּעָרוֹדָא דִמְדוֹרֵהּ
בְּמַדְבְּרָא בִּרְעוּת נַפְשֵׁהּ שָׁתְיָא רוּחָא כְּיָרוֹדָא כֵּן כְּנִשְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל מְרַדַת וּטְעַת מִן
אוֹרַיְתָא וְלָא צְבִיָּא לְמֵתַב נְבִיָּא אֲמַר לַהּ כָּל בָּעֲיָא דְאוֹרַיְתִי לָא יִשְׁתַּלְהוֹן בְּזִמְנַהּ
25 יַשְׁכְּחוּנַהּ׃ מְנַעִי רִגְלִיךְ מִלְּאִתְחַבָּרָא לְעַמְמַיָּא וּפוּמִיךְ מִלְּמִפְלַח לְטַעֲוַת עַמְמַיָּא וַאֲמַרְתְּ
תָּבֵית מִבָּתַר פֻּלְחָנָךְ לָא אֲרֵי רְחֵימִית לְאִתְחַבָּרָא לְעַמְמַיָּא וּבָתַר פּוּלְחַן טַעֲוָתְהוֹן
26 אֵהָךְ׃ כִּבְהַהֲתַת גְּבַר דְּמִתְחַשַּׁב מְהֵימַן וּמִשְׁתְּכַח גְּנִיב כֵּן בְּהִיתוּ בֵּית יִשְׂרָאֵל אִנּוּן מַלְכֵיהוֹן
27 רַבְרְבֵיהוֹן וְכָהֲנֵיהוֹן וּנְבִיֵּיהוֹן דְּשִׁקְרָא׃ אָמְרִין לְצֶלֶם אָעָא אֲבוּנָא אַתְּ וּלְמָה דְּמִתְעֲבֵד מִן
אַבְנָא אָמְרִין לֵיהּ אַתְּ בְּרֵיתָנָא אֲרֵי אַחֲרוּ בְּפוּלְחָנִי קְדָל וְלָא שַׁוִּיאוּ דַחַלְתִּי לָקֳבֵל
אַפֵּיהוֹן וּבְעִדָּן דְּבִישְׁתָּא אָתְיָא עֲלֵיהוֹן כָּפְרִין בְּטַעֲוָתְהוֹן וּמוֹדָן קֳדָמַי וְאָמְרִין רַחֵם עֲלָנָא
28 וּפְרוֹקְנָא׃ וְאָן דַּחַלְתְּכוֹן דַּעֲבַדְתּוּן לְכוֹן יְקוּמוּן אִם יָכְלִין לְמִפְרְקְכוֹן בְּעִדָּן בִּישְׁתְכוֹן אֲרֵי
מִנְיַן קִרְוֵיכוֹן הֲוָאָה דַּחַלַתְכוֹן דְּבֵית יְהוּדָה׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Nunquid ſerv⁹ factus eſt Iſrael? num domi nat⁹ verna eſt? quare traditus 14
eſt direptoribus? Adverſus eũ clamant reges, tollunt vocẽ ſuã, ponunt terrã 15
ej⁹ in deſolationẽ, civitates ej⁹ deſertæ ſunt abſq; habitatore. Filii quoque 16
Mempheos & Taphnis occidũt fortes tuos, & diripiũt facultates tuas.
Nõnne hæc ultio fit in te, eò quòd dereliquiſti cultũ Dñi Dei tui, qui oſtẽdit 17
tibi viam rectã, & non ambulâſti in ea? Nunc autem quid vobis eſt ut 18
conſortium jungatis cum Pharaone rege Ægypti, ad projiciendũ maſculos
veſtros in fluvium? & quid vobis eſt ut ineatis pactum cum Aſſur, ad
transferendum vos ultra flumen Euphratẽ? Induxi ſuper te afflictiones, & 19
non ceſſâſti à malitia tua: & quia non es converſa ad Legẽ, ultio fiet de te:
& vide & cognoſce quia malũ & amaritudinẽ induxi ſuper te Jeruſalẽ, eò
quòd dereliquiſti cultum Dñi Dei tui, & non poſuiſti timorem mei ante
oculos tuos, dicit Dñs Deus exercituum. Quia à ſeculo confregi jugum populorum 20
de collo veſtro, ſuccidi vincula veſtra: & dixiſtis: Non addemus
ultrà tranſgredi verbum tuũ, quia in omni colle ſublimi, & ſub omni ligno
frondoſo tu colebas idola. Ego autẽ ſtatuerã vos coram me ſicut plantã 21
vitis electæ, omnes facientes veritatem; & quomodo mutati eſtis coram me
in operib⁹ veſtris corruptis? declinâſtis à timore mei, facti eſtis ſicut vitis in
qua nulla eſt utilitas. Quoniam ſi putatis mundari à peccatis veſtris ſicut 22
mundant nitro, & dealbant ſapone; ecce quaſi nota maculæ quæ non eſt
munda: ſic multiplicata ſunt peccata tua corã me, dicit Dñs De⁹. Quomodo 23
dicis, Non ſum polluta, & poſt idola populorum non ambulavi? leva oculos
tuos ſuper vias tuas, quando habitabas in valle contra Bethphegor; ſcito
quid feceris: ſimilis fuiſti camelæ juvenculæ velociſſimæ quæ depravat
vias ſuas. Sicut onager qui moratur in deſerto, in voluntate animæ ſuæ, bibens 24
ventum ſicut draco; ſic cœtus Iſrael tranſgreſſus eſt & aberravit à
Lege; & noluit agere pœnitentiam. Propheta dic ei: Omnes qui
quærunt Legem meam non fatigabuntur, in tempore ſuo invenient eam.
Prohibe pedem tuum ne te jungas populis; et os tuum, ne colas idola *populorũ*: 25
& dixiſti; Averſus ſum à cultu tuo. Nequaquam, ſed amavi conjungi
populis, & poſt cultum idolorum eorum ibo. Sicut confuſio viri qui cum 26
habitus eſſet fidelis, invenitur latro; ſic confuſi ſunt domus Iſrael, ipſi &
reges eorum, & principes eorum, et Sacerdotes eorum, et falſi prophetæ
eorum. Dicunt ſimulacro ligneo; Pater noſter es: et ei quod ex lapide factum 27
eſt, Tu creâſti nos: quoniam averterunt terga cultui meo, & non propoſuerunt
timorẽ mei ante faciẽ ſuam; et in tempore quo venit malum ſuper
eos, negant idola ſua, et confitentur corã me, et dicunt, Miſerere *noſtri*
et ſalva nos. Et ubi ſunt dii veſtri quib⁹ ſerviſtis? conſurgant ſi poſſunt, ut 28
ſalvent vos in tempore mali veſtri: quoniã ſecundùm numerum civitatum
veſtrarum facti ſunt dii veſtri, viri domus Juda.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

14 * ܥܒܕܐ. ܥܒܕܐ ܗܘ ܝܣܪܝܠ. ܐܢ ܝܠܝܕ ܒܝܬܐ ܗܘ. ܡܛܠ ܡܢܐ ܗܘܐ ܠܒܙܬܐ. * ܥܠܘܗܝ
15 ܢܗܡܘܢ ܐܪܝܘܬܐ. ܘܢܪܝܡܘܢ ܩܠܗܘܢ. ܘܢܣܝܡܘܢ ܐܪܥܗ ܠܚܘܪܒܐ. ܘܩܘܪܝܗ. ܢܬܚܪܒܢ ܡܢ
16 ܕܠܐ ܒܢܝܗ. * ܐܦ ܒܢܝ ܡܦܝܣ ܘܬܚܦܢܚܣ. ܢܪܥܘܢܟܝ ܪܝܫܐ ܪܝܫܐ. * ܗܐ ܗܠܝܢ ܢܗܘܝܢ
17 ܠܟܝ. ܥܠ ܕܫܒܩܬܝ ܠܡܪܝܐ ܐܠܗܟܝ ܒܙܒܢܐ ܕܡܕܒܪ ܗܘܐ ܠܟܝ ܒܐܘܪܚܐ. * ܘܗܫܐ ܡܢܐ
18 ܠܟܝ ܠܐܘܪܚܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܠܡܫܬܐ ܡܝܐ ܕܫܝܚܘܪ. ܘܡܢܐ ܠܟܝ ܠܐܘܪܚܐ ܕܐܬܘܪ ܠܡܫܬܐ
ܡܝܐ ܕܢܗܪܐ. * ܬܪܕܝܟܝ ܒܝܫܘܬܟܝ. ܘܬܟܣܢܟܝ ܬܘܝܬܟܝ. ܕܥܝ ܘܚܙܝ ܕܒܝܫ
19 ܘܡܪܝܪ. ܕܫܒܩܬܝ ܠܡܪܝܐ ܐܠܗܟܝ ܘܠܐ ܕܚܠܬܝ ܡܢܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ.
20 * ܡܛܠ ܕܡܢ ܥܠܡ ܬܒܪܬ ܢܝܪܟܝ. ܘܦܣܩܬ ܣܘܪܝܟܝ. ܘܐܡܪܬܝ ܕܠܐ ܐܦܠܘܚ ܐܚܪܢܐ. ܠܐ
ܐܦܠܘܚ. ܗܐ ܠܐ ܥܠ ܟܠ ܪܡܬܐ ܪܡܬܐ. ܘܬܚܝܬ ܟܠ ܐܝܠܢ ܕܥܒܝ. ܐܝܟ ܙܢܝܬܐ ܡܙܕܢܝܐ.
21 * ܘܐܢܐ ܢܨܒܬܟܝ ܫܒܫܬܐ ܕܟܠܗ ܙܪܥܐ ܕܫܪܪܐ. ܘܐܝܟܢܐ ܐܬܗܦܟܬܝ ܠܡܪܪܘ ܐܝܟ
22 ܓܦܬܐ ܢܘܟܪܝܬܐ. * ܐܢ ܬܚܘܪܝܢ ܒܢܬܪܐ. ܘܬܣܓܐܝܢ ܠܟܝ ܒܘܪܝܬܐ. ܟܬܡܘ ܚܛܗܝܟܝ
23 ܩܕܡܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. * ܐܝܟܢܐ ܐܡܪܐ ܐܢܬܝ ܕܠܐ ܐܛܢܦܬ. ܘܒܬܪ ܒܥܠܐ ܠܐ
24 ܐܙܠܬ. ܚܙܝ ܐܘܪܚܟܝ ܒܚܝܠܐ. ܘܕܥܝ ܡܢܐ ܥܒܕܬܝ. * ܐܪܝܡܬܝ ܩܠܟܝ ܒܡܥܩܡܘܬ
ܐܘܪܚܬܐ: ܐܝܟ ܥܪܕܐ ܕܡܬܡܪܢ ܒܡܕܒܪܐ ܒܪܓܝܓܬܐ ܕܢܦܫܗ. ܫܡܛܬ ܪܘܚܐ ܐܝܟ ܕܐܒܐ. ܡܢ
25 ܢܗܦܟܝܗ. ܟܠ ܕܒܥܐ ܠܗ ܠܐ ܢܬܠܐܐ. ܒܐܘܪܚܬܗ ܢܫܟܚܝܗ. * ܟܠܝ ܪܓܠܝܟܝ ܡܢ
ܥܪܛܠܝܘܬܐ. ܘܓܓܪܬܟܝ ܡܢ ܨܗܝܐ. ܘܐܡܪܬܝ ܐܬܐܠܨܬ. ܠܐ ܐܨܒܐ ܐܢܐ. ܡܛܠ ܕܪܚܡܬ
26 ܢܘܟܪܝܐ. ܘܒܬܪܗܘܢ ܐܙܠ. * ܐܝܟ ܕܒܗܬ ܓܢܒܐ ܡܐ ܕܐܫܬܟܚ. ܗܟܢܐ ܢܒܗܬܘܢ ܒܢܝ
27 ܝܣܪܝܠ. ܗܢܘܢ ܘܡܠܟܝܗܘܢ. ܘܪܘܪܒܢܝܗܘܢ ܘܟܗܢܝܗܘܢ ܘܢܒܝܝܗܘܢ. * ܕܐܡܪܝܢ
ܠܩܝܣܐ ܐܒܐ ܐܢܬ. ܘܠܟܐܦܐ ܕܐܢܬ ܝܠܕܬܢܝ. ܡܛܠ ܕܐܗܦܟܘ ܠܝ ܩܕܠܗܘܢ.
28 ܘܠܐ ܐܦܝܗܘܢ. ܘܒܙܒܢܐ ܕܒܝܫܬܗܘܢ ܐܡܪܝܢ. ܩܘܡ ܥܕܪܝܢ. ܘܦܨܢ. * ܘܐܝܟܐ
ܐܢܘܢ ܐܠܗܝܟܝ ܕܥܒܕܬܝ ܠܟܝ. ܢܩܘܡܘܢ ܘܢܦܨܘܢܟܝ. ܒܙܒܢ ܒܝܫܬܟܝ. ܡܛܠ ܕܐܝܟ
ܡܢܝܢܐ ܕܩܘܪܝܟܝ. ܗܘܘ ܐܠܗܝܟܝ ܝܗܘܕܐ.

* An ſervus eſt Iſrael? quòd ſi filiꝰ familiâs eſt, 14
cur factus eſt in prædam? Contra eum rugiunt 15
leones, & attollunt vocem ſuam, terram
ejus redigunt in ſolitudinem, & civitates
ejus civium penuriâ deſolantur? Quin 16
etiam cives Mephis & Tahphis capita quæq;
tua contundent. Ecce ſic tibi fiet, eò quòd 17
dereliqueris Dominum Deum tuum, quo tempore
te per viam ducebat. Jam verò quid te 18
movet ad eundum per viam Ægypti, ut bibas
aquas Sihoris? aut quid te movet ad eundum
per viam Aſſur, ut bibas aquas fluminis? Puniet 19
te malitia tua, & pœnitudo tua te arguet:
agnoſce verò & conſidera quòd peſſimum
hoc ſit & amariſſimum: eò quòd dereliqueris
Dominum Deum tuum, & me non
timueris, ait Dominus Deus potentiſſimus.
Nam jam olim frangente me jugum tuum, & 20
diſrumpente lora tua, dixeras; Nulli alii Deo
ſum ulteriùs ſervitura: ecce tamen ſuper
omnem collē ſublimem, & ſubter quancunq;
arborem condenſam tu errabunda ſcortaris.
Equidem plantaveram te virgultum quod totum 21
erat ſemen fidele: quomodo ergò in me
converſa es, & rebellâſti ut vitis aliena?
Etiamſi nitro te dealbes, & plurimum ſulphuris 22
adhibeas tibi; cicatrices *tamen* impreſſerunt
in te peccata tua coram me, dicit
Dominus Deus. Quomodo diceres, Non pollui 23
me, & Baalem non ſum ſecuta? Vide vias
tuas in vallibus, & agnoſce quid feceris. Extuliſti 24
vocem tuam ô viis perverſa, tanquam
onager qui in deſerto ſeſe exercet in appetitibus
animæ ſuæ: hauſiſti ventum ut canis
ſylveſtris: quis abducat eam? quicunque
quærit eam, anxius ne ſit; in viis ejus inveniet
illam. Cohibe pedes tuos à nuditate & 25
guttur tuum à ſiti: tu verò dicis, Valida ſum,
nolo: nam alienos amo, ſequar eos. Ut 26
erubeſcit fur ubicunque extiterit, ſic erubeſcent
Iſraelitæ, tam ipſi quam reges ac
principes eorum, ſacerdotes ac prophetæ
eorum. Qui dicunt ligno, Pater noſter es; & 27
lapidi, Tu me genuiſti: quia obverterunt
mihi cervicem ſuam, non autem faciem ſuam:
tempore verò calamitatis ſuæ dicunt,
Surge, adjuva nos, & libera nos. At ubi ſunt 28
dii tui quos feciſti tibi? ſurgant, & liberent
te in tempore calamitatis tuæ: nam quot ſunt
civitates tuæ, tot ſunt dii tui ô Juda.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

14 15 * هل اسرايل هو عبد ام حصيص * لماذا صار للنهب * اسد زارت واعطت صوتها الذين
16 ربدوا ارضه للخراب * ومدنه خسفت من ان لا تسكن * وبنو منف وطفناس عرفوك وهزوا
17 18 بك * اليس هذه صنعتها لك لتركك اياي يقول الرب الاهك * والان ما لك وارض مصر لتشربي
19 ماء جيحون * وما لك وارض الموصليين لتشربي ماء الانهار * يودبك عتوك * وشرك يبكتك *
فاعلمي وانظري انه مر لك تركك اياي يقول الرب الاهك * ولم اسر بك يقول الرب الهك *
20 * لانك منذ الدهر كسرت نيرك وقرضت رباطاتك * وقلت لا اتعبد لكن امضي الى كل
21 اكمة مرتفعة * وتحت كل شجرة ظليلة هناك افرح بزناي * وانا غرستك كرمة مثمرة حقيقية
22 كلها * كيف رجعت كالكرمة الغريبة مرارة * ان اغتسلت بالبورق واكثرت لك الغاسول *
لادنسك امامي بظلاماتك يقول الرب الهك *

* الاصحاح الثاني *

23 * كيف تقولين لم اتدنس * وخلف باعال لم امض * انظري طرقك في الوادي واعلمي
24 ما تصنعين * صوتها ولول عشاء * وسعت طرقاتها على مياه القفر بشهوات نفسها * لبست
25 روحا * اسلمت * من ذا يردها * جميع طالبيها لا يتعبون * في ذلها يجدونها * ردي قدمك
من الطريق الخشنة وحنجرتك من العطش * فقالت انشجع * لانها احبت الغرباء * وخلفهم
26 ذهبت * مثل خزي اللص اذا اخذ * هكذا تخزى بنو اسرايل * هم وملوكهم ورؤساوهم *
27 وكهنتهم وانبياوهم * قالوا للعود انك انت هو ابي * وللحجر انت ولدتني * وادارا لي ظهورهم
28 لا وجوههم * وفي زمن شرورهم يقولون قم وخلصنا * فاين هي الهتك التي صنعتها لك *
ايقومون ويخلصوك في زمن سوك * لان كعدد مدنك صارت الهتك يا يهوذا * وكعدد
مسالك اورشليم ذبحوا لباعال *

Num ſervus Iſrael, an peculiaris eſt? 14
cur expoſitus eſt direptioni? Leones rugientes 15
& vocem ſuam edentes ſunt ii
qui redegerunt terram ejus in ruinam, &
urbes ejus in humum demerſæ ſunt, quò
minùs habitarentur. Filii Memphis & 16
Daphnu cognoverunt te & deriſerunt te.
Nonne hæc feci tibi, quòd me dereliqueris, 17
ait Dominus Deus tuus? Nunc etiam 18
quid negotii tibi eſt cum terra Ægypti,
ut bibas aquas Gihonis? & quid
tibi cum terra Aſſyriorum, ut bibas aquam
fluviorum? Erudiet te pervicacia 19
tua, & malitia tua te arguet: ſcito
eam & vide quòd amarum tibi ſit me
dereliquere, dicit Dominus Deus tuus;
neque te minimè delectari, ait Dominus
Deus tuus: Eò quòd à ſeculo fregeris 20
jugum tuum, & vincula tua diſruperis, et
dixeris; Non me ſubjiciam, ſed ibo ad omnem
collem excelſum, & ſub omni arbore
umbrifera ibi delectabor in fornicatione
mea. Atqui ego plantaveram te vitem 21
fructiferam, omnino fidelem: quomodo degeneraſti
ſicut vitis aliena in amaritudinem?
Quanvis te nitro abſterſeris, & 22
multum ſmegmatis adhibueris tibi; nihilominus
contaminabo te coram me perverſitatibus
tuis, ait Dominus Deus tuus.

Textus ſecundus.

Quo pacto dicis, Non pollui me, & poſt 23
Baalem non abii? Conſidera vias tuas in
valle, & adverte quid agas. Vox ejus 24
ingemuit ſub veſperum, dilatavit vias
ſuas ſuper aquas deſerti cupiditatibus animæ
ſuæ, induit ſpiritum, dedidit ſeſe,
quis revocabit eam? omnes quærentes
eam, non fatigantur; in abjectione ipſius
inveniunt eam. Dicenti; *Revoca pedem* 25
tuum à via aſpera, & guttur tuum à ſiti;
reſpondet, Agam generosè: adamavit
enim exteros, eóſque ſecuta eſt. Quemadmodum 26
pudore ſuffunditur fur cùm
captus fuerit, ſic pudefient Iſraelitæ: ipſi
enim & reges ac principes eorum, ſacerdotes
atque prophetæ eorum. Dixerunt 27
ligno, Sanè tu pater meus es; &
lapidi, Tu me genuiſti. Obverterunt mihi
terga ſua, non facies; tempore tamen
malorum ſuorum dicunt, Exurge, libera
nos. At ubinam ſunt dii tui quos feciſti 28
tibi? num ſurgent, & liberabunt te
tempore adverſitatis tuæ? nam pro numero
urbium tuarum ſunt dii tui O Juda,
& pro numero compitorum Jeroſolymæ
ſacrificaverunt Baali.

ירמיה : ג

dixit ,me contra eſtis prævaricati vos omnes ?me contra *litigabitis* quid Ut
29 למה תריבו אלי כלכם פשעתם בי נאם־
:receperunt non *caſtigationem* ,veſtros filios percuſſi *vanum In* .Dominus
30 יהוה׃ לשוא הכיתי את־בניכם מוסר לא לקחו
:generatio O .*corruptor* leo tanquã veſtros prophetas veſter gladius *comedit*
31 אכלה חרבכם נביאיכם כאריה משחית׃ הדור
num ? Iſraeli fui *deſertum* Nunquid .Domini verbum videte vos
אתם ראו דבר־יהוה המדבר הייתי לישראל אם־
non ,*ſumus Dominati* : meus populus dixerunt quare ? *Jah caliginis* terra
ארץ מאפליה מדוע אמרו עמי רדנו לוא־
ſponſa ,ſui ornamenti virgo obliviſcetur Nunquid .te ad ultrà veniemus
32 נבוא עוד אליך׃ התשכח בתולה עדיה כלה
.numero abſque diebus mei ſunt obliti meus populus & ? *ſuorum collariorum*
קשריה ועמי שכחוני ימים אין מספר׃
malas etiam Ideo ?dilectionẽ quærendã ad ,tuã viam *bonificabis* Cur
33 מה־תיטבי דרכך לבקש אהבה לכן גם את־הרעות
animarum *ſanguis* ſunt inventi *tuis alis* in Etiam .tuas vias docuiſti
34 למדתי את־דרכיך׃ גם בכנפיך נמצאו דם נפשות
ſuper ſed ,*eos* inveniſti perfoſſorio cum non : innocentum *egenorum*
אביונים נקיים לא־במחתרת מצאתים כי על־
ejus *naſus* eſt averſus *vere* ,ſum innocens Quia : dixiſti Et .his omnibus
35 כל־אלה׃ ותאמרי כי נקיתי אך שב אפו
.peccavi Non : *te dicere ſuper* *tecum* *ſubiens judicium* ego Ecce .me à
ממני הנני נשפט אותך על־אמרך לא חטאתי׃
Ægypto ab Etiam ? tuam viam *mutandum ad valde abibis* Cur
36 מה־תזלי מאד לשנות את־דרכך גם ממצרים
Etiam .Aſſur ab es affecta pudore quemadmodũ ,afficieris pudore
תבשי כאשר בשת מאשור׃ גם מאת
Dominus reprobavit quia : tuũ caput ſuper tuæ manus & ,egredieris hinc
37 זה תצאי וידיך על־ראשך כי־מאס יהוה
.eis proſperaberis non & ,tuas confidentias *in*
במבטחיך ולא תצליחי להם׃

CAP. III. ג

erit & ,eo *cum* ab *abibit* & ,ſuã uxorem vir *dimittet En* : *Dicendo*
1 לאמר הן ישלח איש את־אשתו והלכה מאתו והיתה
prophanando Nónne ? amplius eam ad revertetur nunquid ,alterius viri
לאיש־אחר הישוב אליה עוד הלוא חנוף
revertere ſed : *multis ſociis* es fornicata tu Et ? iſta terra eſt *prophanata*
תחנף הארץ ההיא ואת זנית רעים רבים ושוב
: vide & ,loca *edita* ad tuos oculos Leva .Dominus dixit ,me ad
2 אלי נאם־יהוה׃ שאי עיניך על־שפים וראי
Harabs ſicut ,eis ſediſti viis *Super* ? *fueris conſtuprata* non ubi
איפה לא שגלת על־דרכים ישבת להם כערבי
.*tua malitia in &* ,*tuis fornicationibus in* terram *prophanaſti* & ,deſerto in
במדבר ותחניפי ארץ בזנותיך וברעתך׃
mulieris frons & :fuerit non ſerotina pluvia & ,imbres ſunt prohibiti Et
3 וימנעו רבבים ומלקוש לוא היה ומצח אשה
:me vocabis *nunc* ex Nónne .*pudefieri* renuiſti ,tibi fuit meretricis
4 זונה היה לך מאנת הכלם׃ הלוא מעתה קראתי לי
,ſeculum in *obſervabit* Nunquid ? tu *mearũ adoleſcentiarũ* dux :meus Pater
5 אבי אלוף נערי אתה׃ הינטור לעולם
.potuiſti & ,mala feciſti & ,es locuta Ecce ? æternum in ſervabit num
אם־ישמר לנצח הנה דברתי ותעשי הרעות ותוכל׃
vidiſti Nunquid : regis Joſijahu diebus in ,me ad Dominus dixit Et
6 ויאמר יהוה אלי בימי יאשיהו המלך הראית
montem omnem ſuper ipſa *vadens* : Iſrael *refractaria* fecit quæ
אשר עשתה משבה ישראל הלכה היא על־כל־הר
.ibi eſt fornicata & ,frondoſum lignum omne ſub *ad* & ,excelſum
גבה ואל־תחת כל־עץ רענן ותזני־שם׃

Verſio VUL. LAT.

29 Quid vultis mecũ judicio contendere
? omnes dereliquiſtis
30 me,dicit Dñs. Fruſtrà pcuſſi filios
veſtros,diſciplinã non receperunt:devoravit gladi⁹ veſter
prophetas veſtros,quaſi leo
31 vaſtatur Generatio veſtra. Videte
verbũ Dñi:Numquid ſolitudo
fact⁹ ſum Iſraeli, aut terra
ſerotina ? quarè ergò dixit popul⁹
me⁹;Receſſim⁹,non veniemus
32 ultrà ad te?Numquid obliviſcetur
virgo ornamenti ſui,
aut ſponſa faſciæ pectoralis
ſuæ?popul⁹ verò me⁹ oblit⁹ eſt
33 meî dieb⁹ innumeris. Quid niteris
bonã oſtendere viã tuã ad
quærendã dilectionẽ,quæ inſup
& malitias tuas docuiſti vias
34 tuas, Et in alis tuis invent⁹eſt
ſanguis animarũ pauperum &
innocentũ?non in foſſis inveni
eos, ſed in omnibus quæ ſuprà
35 memoravi. Et dixiſti ; Abſque
peccato & innocẽs ego ſum:&
propterea avertatur furor tu⁹ à
me. Ecce ego judicio contendã
tecũ,eò ꝙ dixeris;Non peccavi.
36 Quàm vilis facta es nimis,
iterans vias tuas! & ab Ægypto
confundêris,ſicut confuſa es ab
37 Aſſur. Nam & ab iſta egredieris,&
man⁹ tuæ erunt ſuper caput
tuum:quoniã obtrivit Dñs
confidentiã tuam, & nihil habebis
proſperum in ea.

CAP. III.

1 VUlgò dicitur ; Si dimiſerit
vir uxorẽ ſuam,& recedens ab
eo,duxerit virum alterũ :numquid
revertetur ad eam ultrá ?
numquid non polluta et contaminata
erit mulier illa?tu autẽ
fornicata es cũ amatorib⁹ multis:tamen
revertere ad me,dicit
2 Dñs;& ego ſuſcipiã te. Leva
oculos tuos in directũ,et vide
ubi non proſtrata ſis: in viis
ſedebas,expectans eos quaſi latro
in ſolitudine : & polluiſti
terrã in fornicationib⁹ tuis,&
3 in malitiis tuis. Quam ob rem
prohibitæ ſunt ſtillæ pluviarũ,
& ſerotin⁹ imber nõ fuit:frons
mulieris meretricis facta eſt
4 tibi,noluiſti erubeſcere. Ergò
ſaltem amodò voca me ; Pater
me⁹,dux virginitatis meæ tu es:
5 Numquid iraſcêris in ppetuũ,
aut pſeverabis in finẽ?Ecce locuta
es,et feciſti mala,et potuiſti.
6 Et dixit Dñs ad me in dieb⁹
Joſiæ regis ; Numquid vidiſti
quæ fecerit averſatrix Iſrael ?
abiit ſibimet ſuper omnẽ montẽ
excelſum,& ſub omni ligno
frondoſo, & fornicata eſt ibi.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

29 Ἱνατί λαλεῖτε πρὸς μὲ ; πάντες ὑμεῖς (δ)
ἠσεβήσατε, ϗ πάντες ὑμεῖς ἠνομήσατε εἰς
30 ἐμὲ, λέγει κύριος. Μάτην ἐπάταξα τὰ
τέκνα ὑμῶν, παιδείαν οὐκ ἐδέξασθε, μάχαιρα
κατέφαγε τοὺς προφήτας ὑμῶν ὡς λέων
31 (ε) ὀλοθρεύων, ϗ οὐκ ἐφοβήθητε. Ἀκούσατε
(ζ) λόγον κυρίου· τάδε λέγει κύριος,
Μὴ ἔρημος (η) ἐγενόμην τῷ Ἰσραὴλ ἢ γῆ
κεχερσωμένη ; διατί εἶπεν ὁ λαός μου, Οὐ
(θ) κυριευθησόμεθα, ϗ οὐχ ἥξομεν πρὸς σὲ
32 ἔτι ; Μὴ ἐπιλήσεται νύμφη τὸν κόσμον αὐτῆς,
ϗ παρθένος τὴν στηθοδεσμίδα αὐτῆς ; ὁ
δὲ λαός μου ἐπελάθετό μου ἡμέρας ὧν οὐκ ἔστιν
33 ἀριθμός. Τί ἔτι καλὸν ἐπιτηδεύσεις
ἐν ταῖς ὁδοῖς σου, τοῦ ζητῆσαι ἀγάπησιν ;
οὐχ οὕτως· ἀλλὰ ϗ σὺ ἐπονηρεύσω τοῦ μιᾶναι
34 τὰς ὁδούς σου, Καὶ ἐν ταῖς χερσί σου
(ι) εὑρέθησαν αἵματα ψυχῶν ἀθῴων. οὐκ ἐν
διορύγμασιν εὗρον αὐτούς , ἀλλ' (κ) ἐπὶ
35 πάσῃ δρυΐ. Καὶ εἶπας, Ἀθῷός εἰμι, ἀλλὰ
ἀποστραφήτω ὁ θυμὸς αὐτοῦ ἀπ' ἐμοῦ. ἰδοὺ
ἐγὼ κρίνομαι πρὸς σὲ, ἐν τῷ λέγειν σε,
36 Οὐχ ἥμαρτον· Ὅτι κατεφρόνησας σφόδρα
τοῦ δευτερῶσαι τὰς ὁδούς σου. ϗ ἀπὸ Αἰγύπτου
καταισχυνθήσῃ, καθὼς κατῃσχύνθης
37 ἀπὸ Ἀσσούρ· Ὅτι ϗ ἐντεῦθεν ἐξελεύσῃ,
ϗ αἱ χεῖρές σου ἐπὶ τῆς κεφαλῆς σου·
ὅτι ἀπώσατο κύριος τὴν ἐλπίδα σου, ϗ
οὐκ εὐοδωθήσῃ ἐν αὐτῇ.

Ut quid loquimini ad me ? Omnes 29
vos impiè egiſtis , & omnes vos
iniquè egiſtis in me,dicit Dominus.
Fruſtrà percuſſi filios veſtros: diſciplinam 30
non recepiſtis. Gladius
devoravit prophetas veſtros, quaſi
leo vaſtator; & non timuiſtis. Audite 31
verbum Domini : Hæc dicit
Dominus; Nunquid ſolitudo fact⁹
ſum Iſraeli ; aut terra plena ſcutium?
Cur dixit populus meus,Non
ſerviemus, nec veniemus ultrà ad
te? Nunquid obliviſcetur ſponſa 32
ornamenti ſui , & virgo faſciæ
pectoralis ſuæ ? Populus autem
meus oblitus eſt meî diebus,quorum
non eſt numerus. Quod adhuc 33
bonum adinvenies in viis tuis
ad quærendam dilectionem ? Non
ſic. Sed & tu malignata es polluendo
vias tuas : Et in manibus 34
tuis inventi ſunt ſanguines animarum
innocentium. Non in foſſis
inveni eos, ſed in omni quercu.
Et dixiſti,Innocens ſum: ſed avertatur 35
furor ejus à me. Ecce ego
judicio contendo tecum, in dicendo
te,Non peccavi: Quia contempſiſti 36
valdè, iterando vias tuas.
Et ab Ægypto confundêris, ſicut
confuſa es ab Aſſur : Quia & 37
hinc egrediêris; & manus tuæ ſuper
caput tuum : quoniam repulit
Dominus ſpem tuam : & non
proſperaberis in ea.

MS.A. (δ) ἠνομήσατε εἰς (ε) ὀλεθρεύων , (ζ) τὸν λόγον (η) ἐγενόμην (θ) δουλευθησόμεθα, ϗ οὐκ (ι) εὑρέθη (κ) ἐν

ΚΕΦ. γ'.

1 Ἐὰν ἐξαποστείλῃ ἀνὴρ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ,
ϗ ἀπέλθῃ ἀπ' αὐτοῦ, ϗ γένηται ἀνδρὶ
ἑτέρῳ, μὴ ἀνακάμπτουσα ἀνακάμψει πρὸς
αὐτὸν ἔτι ; οὐ μιαινομένη μιανθήσεται ἡ
γυνὴ ἐκείνη; ϗ σὺ ἐξεπόρνευσας ἐν ποιμέσι
πολλοῖς, ϗ ἀνέκαμπτες πρὸς μὲ,
2 λέγει κύριος. Ἆρον (α) τοὺς ὀφθαλμούς σου
εἰς εὐθεῖαν, ϗ ἴδε, ποῦ οὐχὶ ἐξεφύρθης.
ἐπὶ ταῖς ὁδοῖς (β) ἐκάθισας αὐτοῖς ὡσεὶ
κορώνη (γ) ἐρημουμένη, ϗ ἐμίανας τὴν γῆν
ἐν ταῖς πορνείαις (δ) σου ϗ ἐν ταῖς κακίαις σου.
3 Καὶ ἔσχες ποιμένας πολλοὺς εἰς πρόσκομμα
σεαυτῇ. ὄψις πόρνης ἐγένετό (ε) σου,
4 ἀπηναισχύντησας πρὸς πάντας. Οὐχ ὡς οἶκόν
με ἐκάλεσας, ϗ πατέρα ϗ ἀρχηγὸν
5 τῆς παρθενίας σου ; Μὴ διαμενεῖ εἰς τὸν αἰῶνα,
ἢ (ζ) φυλαχθήσεται εἰς νῖκος ; ἰδοὺ ἐλάλησας,
ϗ ἐποίησας τὰ πονηρὰ ταῦτα, ϗ
6 ἠδυνάσθης. Καὶ εἶπε κύριος πρὸς μὲ ἐν
ταῖς ἡμέραις (η) Ἰωσίου τοῦ βασιλέως, Εἶδες
ἃ ἐποίησέ μοι ἡ κατοικία τοῦ Ἰσραήλ ; ἐπορεύθησαν
ἐπὶ πᾶν ὄρος ὑψηλὸν, ϗ ὑποκάτω
παντὸς ξύλου ἀλσώδους , ϗ ἐπόρνευσαν
ἐκεῖ.

CAP. III.

SI (a) dimiſerit vir uxorem 1
ſuam, & receſſerit ab eo, & facta
fuerit viro alteri; nunquid revertens
revertetur ad eum ultrá ?
Nónne inquinata inquinabitur
mulier illa? Et tu fornicata es
in paſtoribus multis, & revertebaris
ad me, dicit Dominus. Leva 2
oculos tuos in directum, & vide,
ubi non fueris permiſta. In viis
ſedebas, (b) eis quaſi cornix deſerta.
Et (c) polluiſti terram in
fornicationibus tuis, & in malis
tuis: Et habuiſti paſtores multos 3
in offenſionem tibi. Facies (d)
tua facta eſt meretricis : ſine rubore
facta es ad omnes. Nónne(e) 4
tanquam domum me vocâſti, &
patrem, & ducem virginitatis
tuæ ? Nunquid permanebit in perpetuum, 5
aut conſervabitur in (f)
victoriam ? Ecce loquuta es, &
feciſti mala hæc, & potuiſti. Et 6
dixit Dominus ad me in diebus
Joſiæ regis; Vidiſti, quæ fecit mihi
domus Iſrael ? Iverunt ſuper
omnem montem excelſum,& ſubter
omne lignum frondoſum ; &
fornicati ſunt ibi.

MS.A. (α) εἰς εὐθεῖαν τοὺς ὀφθαλμούς σου, λέγει κύριος, ϗ ἴδε, (β) αὐταῖς ἐκάθισας (γ) ἠρημωμένη, (δ) σου. Καὶ ἔσχες (ε) σοι, ἀπηνεχύντησας (ζ) διαφυλαχθήσεται (η) Ἰωσία, τὸ Ἴδες

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

29 למה אתון מרמן למרן לקבל פתגמי כולכון מרדתון במימרי אמר יי׃ למגן אלקיתי ית
30 בניכון אולפן לא קבילו קטלת חרבכון נבייכון כאריא דמחבל׃ עם דרא אתון קבילו
31 פתגמא דיי הא כמדבר צדי דלית ביה הנאה הוה מימרי לישראל אם כארע חורבא
32 מה דין אמרו עמי אטלטלנא לא נתוב עוד לפולחנך׃ האפשר דתתנשי בתולתא
33 תקונה כלתא קשוטהא ועמי שבקו פלחני יומין דלא מנין׃ מה את משתפרא בארחתיך
34 למעבד רחמי לאתחברא בעממיא בכן אף ית בישן אלפת מן ארחתיך׃ אף בסתרא
אשתכחת דאשדת דם זכי דם נפשת דמסכנין זכאין לא כמה דמשכחין במחתרתא
35 אלהין על כל אלין עבדת׃ ואמרת ארי זכיתי ברם תב רוגזיה מני הא אנא עביד עמיך
36 פורענות דין על דאמרת לא חטיתי׃ מה את מסתכלא לחדא לקלקלא ית אורחתיך
37 אף ממצרים תבהתין כמה דבהתת מאתוראה׃ אף מלות דין תפקין ובהתת חוביך
על רישיך ארי רחיק יי רוחצניך ולא תצלחין להון׃

ג

1 למימר הא יפטר גבר ית אתתיה ותהך מלותיה ותהי לגבר אוחרן האפשר דיתוב
לותה עוד הלא מחב תחוב ארעא ההיא ואת טעית ואתחברת לעממין סגיאין
2 ותובי מכען לפולחני אמר יי׃ זקופי עינך על נגדין וחזא היכא לא אתחברת ליך
למפלח לטעותא על אורחת בית מישריהון אורכת להון כערבאי דשרן במשכנין
3 במדברא והיבת ארעא בטעותיך ובבשתיך׃ ואתמנעו רסיסיא ומלקושא לא
4 הוה וחוצפא כאתתא נפקת ברא הוה ליך מסרבת לאתכנעא׃ הלא מכען תצלן
5 קדמי רבוני את פרקי דמן עלמא׃ האפשר דיתנטרון ליך חוביך לעלם אם תתקף
6 עלך מחא לאפריש הא מללת ועבדת בישן ואסגית׃ ואמר יי לי ביומי יאשיה
מלכא החזיתא מה דעבדו דמתחסנין למתא לפולחני דבית ישראל אזלין אנון על
כל רמא מנטלא ולתחות כל אילן עבוף ופלחין אען לטעותא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quare vos putatis judicio contendere adverſus verba mea ? omnes vos 29
prævaricati eſtis in Verbũ meũ, dicit Dñs. Fruſtrà percuſſi filios veſtros, 30
diſciplinã non ſuſceperunt : occîdit gladius veſter prophetas veſtros quaſi
leo qui devaſtat. Popule generationis, vos ſuſcipite verbũ Dñi : nunquid 31
ſicut ſolitudo deſerta in qua nulla eſt utilitas,fuit Verbũ meũ Iſraeli,aut ſicut
terra vaſta ? quare dixerunt popul⁹ me⁹, Migravimus,non revertemur
ultrà ad cultũ tuũ ? Num fieri poteſt ut obliviſcatur virgo ornamenti ſui, 32
aut ſponſa ornat⁹ ſui ? & popul⁹ me⁹ reliquerunt timorẽ mei diebus ſine
numero.Et quid gloriaris in viis tuis,*ut facias amores*,ut jungaris populis? 33
inſup & mala docuiſti ex viis tuis. In occulto quoque inventa es effudiſſe 34
ſanguinẽ innocentẽ,ſanguinẽ animarũ pauperũ innocentũ :non ſicut inveniunt
in foſſa,ſed ob hæc omnia feciſti. Et dixiſti,Quoniam innocens ſum, 35
veruntamẽ averſus eſt furor ejus à me.Ecce ego faciã tecũ ultionẽ judicii,
eò quod dixiſti, Non peccavi. Quare tu contemplaris admodũ ad corrumpendã 36
viã tuã?etiã ab Ægypto confundêris,ſicut confuſa es ab Aſſur.Etiã 37
ex hoc egredieris, & confuſio peccati tui ſuper caput tuum : quia procul
ſummovit Dominus fiduciam tuam, & non proſperaberis in eis.

CAP. III.

DIcendo:Si dimiſerit vir uxorẽ ſuã,& abierit ab eo,& nupſerit viro alteri, 1
nunquid revertetur ad eã ultrà ? nónne peccando peccabit terra illa?
& tu fornicata es & adjunxiſti te populis multis : tamẽ revertere jam ab
hoc tempore ad cultũ meũ, dicit Dñs. Tolle oculos tuos ad loca edita, & 2
vide ubi non te junxiſti ut coleres idola : ſup viã dom⁹ manſionis eorũ expectabas
ea;ſicut Arabes qui morantur in tabernaculis in deſerto;& reã feciſti
terrã in idolis tuis,& in malitia tua. Et prohibitæ ſunt guttæ pluviæ, 3
& ſerotinus imber non fuit : & impudentia quaſi mulieris meritricis fuit
tibi:noluiſti tete humiliare. Ab hoc tempore utique orabis corã me [*dicens:*] 4
Dñs me⁹ es tu, redẽptor me⁹,qui à ſeculo es.Num fieri poteſt ut re- 5
ſerventur tibi peccata *tua* in æternũ,aut roborabitur ſup te plaga in finẽ ?
ecce locuta es, & feciſti mala, & multiplicâſti. Et dixit Dominus ad me 6
in diebus Joſiæ regis : Nunquid vidiſti quid fecerit domus Iſrael, quæ induratur
ut convertatur ad cultum meum ? Abeunt ipſi ſuper omnem collem
excelſum & ſub omne lignum frondoſum, & colunt *lignea* idola.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

29 * ܠܡܢܐ ܕܝܢܝܢ ܐܢܬܘܢ ܥܡܝ. ܘܟܠܟܘܢ ܕܓܠܬܘܢ ܒܝ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܣܪܝܩܐܝܬ ܡܚܝܬ
30 ܠܒܢܝܟܘܢ. ܘܡܪܕܘܬܐ ܠܐ ܩܒܠܘ. ܘܐܟܠܬ ܚܪܒܐ ܠܢܒܝܝܟܘܢ. ܐܝܟ ܐܪܝܐ ܡܚܒܠܐ.
31 * ܐܢܬܘܢ ܕܪܐ: ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܕܠܡܐ ܡܕܒܪܐ ܗܘܝܬ ܠܐܝܣܪܝܠ. ܐܘ ܐܝܟ ܐܪܥܐ
32 ܨܕܝܬܐ. ܡܛܠ ܡܢܐ ܐܡܪܘ ܥܡܝ. ܢܚܬܢ. ܠܐ ܢܐܬܐ ܬܘܒ ܠܘܬܟ. * ܕܠܡܐ ܛܥܝܐ ܒܬܘܠܬܐ
33 ܨܒܘܬܗ̇. ܘܟܠܬܐ ܬܫܒܘܚܬܗ̇. ܥܡܝ ܕܝܢ ܛܥܝܢܝ. ܝܘܡܬܐ ܕܠܝܬ ܠܗܘܢ ܡܢܝܢ. * ܡܢܐ
ܬܘܒ ܡܛܝܒܝܢ ܐܘܪܚܬܟܝ: ܠܡܒܥܐ ܪܚܡܬܐ. ܗܐ ܐܦ ܒܝܫܬܐ ܝܠܦܬܝ ܒܐܘܪܚܬܟܝ.
34 * ܘܐܦ ܒܐܝܕܝܟܝ ܐܫܬܟܚ ܕܡܐ ܕܢܦܫܬܐ ܕܡܣܟܢܐ ܙܟܝܐ. ܠܐ ܗܘܐ ܒܡܚܬܪܬܐ ܐܫܟܚܬܝܢ
35 ܐܢܘܢ. ܐܠܐ ܬܚܝܬ ܟܠ ܐܝܠܢ. * ܘܐܡܪܬܝ ܕܙܟܝܬܐ ܐܢܐ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܦܟ ܪܘܓܙܗ ܡܢܝ.
36 ܗܐ ܐܢܐ ܕܐܢ ܐܢܐ ܥܡܟܝ. ܥܠ ܕܐܡܪܬܝ ܕܠܐ ܚܛܝܬ. * ܡܢܐ ܡܙܕܠܠܬܝ ܛܒ ܠܡܬܢܝܘ ܐܘܪܚܬܟܝ.
37 ܐܦ ܡܢ ܡܨܪܝܢ ܬܒܗܬܝܢ. ܐܝܟ ܕܒܗܬܬܝ ܡܢ ܐܬܘܪ. * ܐܦ ܡܢ ܗܕܐ ܗܘܐ ܬܦܩܝܢ ܟܕ ܐܝܕܝܟܝ
ܥܠ ܪܫܟܝ. ܕܐܣܠܝ ܡܪܝܐ ܠܬܘܟܠܢܟܝ. ܘܠܐ ܬܨܠܚܝܢ ܒܗܘܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܓ *

1 * ܐܢ ܢܫܒܘܩ ܓܒܪܐ ܐܢܬܬܗ. ܘܬܐܙܠ ܡܢ ܠܘܬܗ ܘܬܗܘܐ ܠܓܒܪܐ ܐܚܪܢܐ. ܐܢ
ܡܬܦܢܝܐ ܠܘܬܗ ܬܘܒ. ܗܐ ܡܛܢܦܘ ܡܬܛܢܦܐ ܐܪܥܐ ܗܝ. ܘܐܢܬܝ ܙܢܝܬܝ ܥܡ ܪܚܡܐ
2 ܣܓܝܐܐ. ܬܘܒܝ ܠܘܬܝ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܐܪܝܡܝ ܥܝܢܝܟܝ ܠܫܒܝܠܐ. ܘܚܙܝ ܐܝܟܐ
ܐܬܛܢܦܬܝ. ܥܠ ܐܘܪܚܬܐ ܝܬܒܬܝ ܠܗܘܢ. ܐܝܟ ܥܘܪܒܐ ܒܡܕܒܪܐ. ܘܛܢܦܬܝ ܐܪܥܐ
3 ܒܙܢܝܘܬܟܝ. * ܘܡܛܠ ܒܝܫܘܬܟܝ. ܐܬܟܠܝܘ ܪܣܣܐ. ܘܥܣܒܐ ܠܐ ܗܘܐ. ܘܒܝܬ ܥܝܢܝ ܕܐܢܬܬܐ
4 ܙܢܝܬܐ ܗܘܐ ܠܟܝ. ܘܠܐ ܨܒܝܬܝ ܠܡܬܟܠܡܘ. * ܗܐ ܡܟܝܠ ܩܪܝܬܝܢܝ ܐܒܝ ܐܢܬ. ܘܡܪܒܝܢܝ
5 ܕܡܢ ܛܠܝܘܬܝ ܐܢܬ. * ܕܠܡܐ ܢܛܪ ܠܥܠܡ. ܐܘ ܢܛܪ ܠܥܠܡܝܢ ܗܐ ܡܠܠܬܝ:
6 ܘܥܒܕܬܝ ܒܝܫܬܐ. ܘܐܬܚܝܠܬܝ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ ܒܝܘܡܘܗܝ ܕܝܘܫܝܐ ܡܠܟܐ.
ܚܙܝܬ. ܡܢܐ ܕܥܒܕܬ ܥܡܘܪܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܙܠܬ ܗܝ ܥܠ ܟܠ ܛܘܪ ܪܡ. ܘܬܚܝܬ
ܟܠ ܐܝܠܢ ܕܥܒܝܢ. ܘܙܢܝܬ ܬܡܢ.

* Quare contenditis mecum ? omnes me denegâſtis, 29
ait Dominus. Fruſtrà percuſſi filios 30
veſtros, nam diſciplinam haud receperunt :
conſumpſit gladius prophetas veſtros tanquam
leo vaſtans. Vos ô generatio, audite 31
ſermonem Domini ; Nunquid ſolitudo factus
ſum Iſraeli, aut ſicut terra deſerta ? quam ob
rem dicunt populus meus, Deſcendimus, non
ſumus ampliùs ad te venturi ? Num obliviſcitur 32
virgo blanditiarum ſuarum, aut ſponſa
ornamenti ſui ? populus verò meus obliti
ſunt mei diebus innumeris. Cur adhuc paras 33
vias tuas ad quærendum amorem, cùm ecce
tum malum didiceris in viis tuis, Tum etiam 34
in manibus tuis inventus ſit ſanguis animarum
pauperculorum innocentium, quos nequaquam
in furto deprehendiſti, ſed ſub quacunq;
arbore ? Quia tamẽ dicis, Innoxia ſum, 35
ideóq; avertit iram ſuã à me; ecce te judico,
eò quòd dicas, Non peccavi. Quorſum gravioribus 36
implicaris obſcœnitatibus repetendo
vias tuas ? etiam ab Ægypto erubeſces, quemadmodum
erubuiſti ab Aſſur. Etiam ab hoc 37
diſcedes manibus tuis capiti tuo impoſitis :
quia iratus eſt Dominus fiduciam tibi præbentibus,
neque proſpera eris per eos.

CAP. III.

Et verò ſi quis dimittat uxorem ſuam, & 1
illa diſcedens ab eo nubat viro alteri, ſi denuo
revertatur ad eam, ecce planè pollueretur
terrą illa. Tu verò licèt ſcortata ſis cum
paſtoribus multis, revertere ad me, dicit Dominus.
Attolle oculos tuos in compita, & vide 2
ubi vitiata fueris : juxta vias ſediſti illis
tanquam corvus in deſerto. Polluiſti terram
ſcortatione tuâ ; Et propter malitiam tuam 3
cohibiti ſunt rores, nec fuit gramen : frons
mulieris ſcortantis fuit tibi, & argui noluiſti.
Ecce poſthac vocatura es me, *dicens*, Pater 4
meus, educator meus à pueritia mea tu es.
Nunquid ſervabitur in æternum, aut in ſecula 5
aſſervabitur *pertinacia tua ?* ecce locuta es
& feciſti malum, & prævaluiſti. Dixítque 6
mihi Dominus in diebus Joſiæ regis, Vidiſtíne
quid fecerit habitatrix Iſraelis ? abiit
hæc ad omnem montem ſublimem & ſubter
omnem arborem condenſam, ibíque ſcortata
eſt :

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

29 30 * لماذا تتكلمون علي جميعا. اعصيتم الي يقول الرب * ضربت اولادكم باطلا ولم يقبلوا ادبا.
31 السيف اكل انبياءكم مثل اسد ضار. ولم تخافوا * اسمعوا كلمة الرب. هكذا يقول الرب
32 هل صرت برية لاسرائيل او ارضا بورا. لماذا قال شعبي لا نستعبد ولا ناتي اليك ايضا * هل
33 تنسي العروس زينتها. والعذري رباط صدرها فاما شعبي نسيني اياما ليس لها عدد * لماذا
تعملين جيدا في طرقاتك ايضا لتطلبي حبا. ليس هكذا لكن انت زنيت لتنجسي
34 طرقاتك * وفي يديك وجد دم نفوس الازكياء. لا في سقوف وجدتهم لكن في كل بلوطة.
35 * وقلت انا بريه هكذا. ليرجع غضبه عني. ها انا احاكمك معك عند ما قلت لم اخط.
36 37 * لانك ازدريت جدا لتنسي طرقاتك. ومن مصر تخزي كما خزيت من الموصل * لانك من
هناك خرجت ويداك علي راسك. لان الرب اقصي رجاك فلم تستقم طرقك.

* الفصل الثالث *

1 * اذا سرح رجل امراته وبانت عنه وصارت لرجل اخر. هل تعود اليه راجعة ايضا. اليس
تنجس تلك المراة وتصير نجسة. وانت زنيت برعاة كثيرين وترجعين الي يقول الرب.
2 * ارفعي الحاظك باستقامة يقول الرب وانظري اين. اليس عجبت في الطرقات التي جلست
3 فيهن مثل غداف بري. ونجست الارض بزناك * وامسكت رعاة كثيرين عثر. لذلك
4 صار لك وجه زانية وصفقتيه للكل * اليس مثل بنت تدعوني ابا ورئيسا لبتوليتك.
5 6 * هل تدوم الي الابد او تحفظ للغاية. ها تكلمت وصنعت هذه الشرور وتقويت * وقال لي
الرب في ايام يوسيا. نظرت ما صنعت في ساكنة اسرائيل. مضوا علي كل جبل عال
وتحت كل شجرة ظليلة وزنوا هناك.

* *Quarè de me loquimini vos omnes ?* 29
peccâſtis in me ; dicit Dominus. Fruſtrà
percuſſi filios veſtros, non acceperunt 30
eruditionem : gladius devoravit
prophetas veſtros ut leo perniciosus, attamen
non timetis. Audite verbum Domini : 31
Sic ait Dominus, An factus ſum
deſertum Iſraelis ? an tellus inculta ? cur
dixit populus meus, Nequaquam ſubjiciemus
nos, nec ultrà veniemus ad te ?
Num obliviſcitur ſponſa ornatûs ſui, aut 32
virgo faſciæ pectoris ſui ? at populus
meus oblitus eſt mei diebus innumeris.
Cur adhuc bonum facis in viis tuis, ut 33
quæras amicitiam ? Non ita, ſed tu ſcortata
es, ut contaminares vias tuas ; Et 34
in manibus tuis inventus eſt ſanguis animarum
innocentium, quos non in rimis
inveniſti, ſed in omni quercu : Attamen 35
dicis, Innoxia ſum hoc pacto, avertatur
à me ira ejus. Ecce ego litigaturus ſum
tecum, eò quòd dicas, Non peccavi.
Nam plurimum te negligis, ut obliviſcaris 36
viarum tuarum, & ab Ægypto reportes
pudorem, uti pudefacta es ab Aſſyria :
Nam illinc egreſſa es manibus tuis 37
capiti tuo impoſitis. Quia Dominus procul
amovit ſpem tuam, ideò non erunt
rectæ viæ tuæ.

CAP. III.

Si dimiſerit quis uxorem ſuam, & illa 1
ſub eo ſeparata nupſerit alteri viro, num
denuò rediens ad eum reverteretur ? an
non contaminaretur illa mulier, fierétque
polluta ? Tu igitur quæ multis cum paſtoribus
fornicata es, ad me reverteteris,
dicit Dominus ? Tuos intuitus rectà erige, 2
dicit Dominus, & ſpice ubinam. Nónne
delectata es in viis in quibus ſedebas
tanquam corvus ſylveſtris, & contamináſti
terram fornicationibus tuis, Et ad- 3
haſiſti paſtoribus multis in offendiculum ?
Propterea facta eſt tibi facies meretricia,
& impudenter cum omnibus te geſſiſti.
Annon ut filia vocabis me patrem & du- 4
cem virginitatis tuæ ? Num æternò du- 5
rabit, aut in finem uſque aſſervabitur hæc
impudentia tua ? ecce locuta es & tan- 6
ta mala commiſiſti, atque invaluiſti. Præterea
dixit mihi Dominus in diebus Joſiæ,
Vidiſtine quid fecerit mihi habitatrix
Iſraelis ? Iverunt ſuper omnem montem
excelſum, & ſubter omnem arborem umbriferam,
ibique fornicati ſunt.

ירמיה: ג

non & ,revertaris me Ad : hæc omnia *eam facere* *post* ,dixi Et
7 ואמר אחרי עשותה את־כל־אלה אלי תשוב ולא־
super quod vidi Et .Jehudah ejus soror prævaricatrix vidit Et .est reversa
8 שבה ותראה בגודה אחותה יהודה׃ וארא כי על־
,eam dimisi ,Israel *refractaria adulterium commisit* quibus ,causas omnes
כל־אדות אשר נאפה משבה ישראל שלחתיה
prævaricatrix timuit non & : eam ad ejus *excidiorum* libellum dedi &
ואתן את־ספר כריתתיה אליה ולא יראה בגדה
levitate à fuit Et .ipsa etiam est fornicata &,abiit *&*,ejus soror Jehudah
9 יהודה אחותה ותלך ותזן גם־היא׃ והיה מקל
lapide cum est mœchata & : terram *prophanavit* &,suæ fornicationis
זנותה ותחנף את־הארץ ותנאף את־האבן
me ad est reversa non hoc omni cum etiam Et .ligno &
10 ואת־העץ׃ וגם־בכל־זאת לא־שבה אלי
,*falsitate in quinimo* ,suo corde toto in Jehudah ejus soror prævaricatrix
בגודה אחותה יהודה בכל־לבה כי אם־בשקר
suam animam Justificavit:me ad Dominus dixit Et .Dominus dixit
11 נאם־יהוה׃ ויאמר יהוה אלי צדקה נפשה
clamabis & ,Vade .Jehudah *prævaricatrice præ* ,Israel *refractaria*
12 משבה ישראל מבגדה יהודה׃ הלך וקראת
refractaria Revertere *: dices* & ,Aquilonem ad istos sermones
את־הדברים האלה צפנה ואמרת שובה משבה
quia : vos in *meas facies* cadere faciam non : Dominus dixit ,Israel
ישראל נאם־יהוה לוא־אפיל פני בכם כי־
Veruntamen .seculum in servabo non : Dominus dixit ,*ego benignus*
13 חסיד אני נאם־יהוה לא אטור לעולם׃ אך
: es prævaricata tuum Deum Dominum in quia ,tuam iniquitatem scito
דעי עונך כי ביהוה אלהיך פשעת
mea voce in & ,*frondoso* ligno omni sub alienis tuas vias sparsisti &
ותפזרי את־דרכיך לזרים תחת כל־עץ רענן ובקולי
dixit ,*refractarii* filii Convertimini .Dominus ait ,audistis non
14 לא־שמעתם נאם־יהוה׃ שובו בנים שובבים נאם־
unum ,vos assumam & : vobis in *fui patronus* ego quia : Dominus
יהוה כי אנכי בעלתי בכם ולקחתי אתכם אחד
dabo Et .Sijon vos introducam & ,familia de duos &,civitate de
15 מעיר ושנים ממשפחה והבאתי אתכם ציון׃ ונתתי
.intellectu & scientia vos pascent &:meum cor juxta pastores vobis
לכם רעים כלבי ורעו אתכם דעה והשכיל׃
diebus in ,terra in *fructificati fueritis* &,fueritis multiplicati cùm ,erit Et
16 והיה כי תרבו ופריתם בארץ בימים
,Domini fœderis Arca : ultrà dicent non ,Dominus dixit ,illis
ההמה נאם־יהוה לא־יאמרו עוד ארון ברית יהוה
nec ,visitabunt nec ,*eo in* recordabuntur neque ,cor super ascendet nec
ולא יעלה על־לב ולא יזכרו־בו ולא יפקדו ולא
,Domini solium Jerusalaim vocabunt illo tempore In .ultrà fiet
17 יעשה עוד׃ בעת ההיא יקראו לירושלם כסא יהוה
.Jerusalaim in Domini nomine in gentes omnes eam ad se congregabũt &
ונקוו אליה כל־הגוים לשם יהוה לירושלם
diebus In .mali sui cordis *obstinationem* post ultrà ambulabunt non Et
18 ולא־ילכו עוד אחרי שררות לבם הרע׃ בימים
simul venient & : Israel domum ad Jehudah domus ibunt illis
ההמה ילכו בית־יהודה על־בית ישראל ויבאו יחדו
.vestros patres feci sortiri quam terram ad Aquilonis terra de
מארץ צפון על־הארץ אשר הנחלתי את־אבותיכם׃
tibi tribuam & ,filios in te ponam Quomodo : dixi ego Et
19 ואנכי אמרתי איך אשיתך בבנים ואתן־לך
: dixi Et ?gentium exercituum *elegantiæ* hæreditatem ,*desiderii* terram
ארץ חמדה נחלת צבי צבאות גוים ואמר
.retrocedes non me *post* à & ,me vocabis meum Patrem
אבי תקראי־לי ומאחרי לא תשובי׃

Versio VULG. LAT.

7 Et dixi, cùm fecisset hæc omnia; Ad me revertere: & non est reversa. Et vidit prævaricatrix soror ejus Juda, 8 Quia pro eo, quòd mœchata esset aversatrix Israel, dimisissem eam, & dedissem ei libellum repudii: & non timuit prævaricatrix Juda soror ejus, sed abiit, & fornicata est etiam ipsa. 9 Et facilitate fornicationis suæ contaminavit terram, & mœchata est cum lapide & ligno. 10 Et in omnibus his non est reversa ad me prævaricatrix soror ejus Juda in toto corde suo, sed in mendacio, ait Dominus. 11 Et dixit Dominus ad me; Justificavit animam suam aversatrix Israel, comparatione prævaricatricis Judæ. 12 Vade, & clama sermones istos contra Aquilonem, & dices; Revertere aversatrix Israel, ait Dominus, & non avertam faciem meam à vobis: quia sanctus ego sum, dicit Dominus, & non irascar in perpetuum. 13 Veruntamen scito iniquitatem tuam, quia in Dominum Deum tuum prævaricata es: & dispersisti vias tuas alienis sub omni ligno frondoso, & vocem meam non audîsti, ait Dominus. 14 Convertimini filii revertentes, dicit Dominus; quia ego vir vester: & assumam vos unum de civitate, & duos de cognatione, & introducam vos 15 in Sion. Et dabo vobis pastores juxta cor meum, & pascent 16 vos scientiâ & doctrinâ. Cúmque multiplicati fueritis, & creveritis in terra in diebus illis, ait Dominus: non dicent ultrà, Arca testamenti Domini: neque ascendet super cor, neque recordabuntur illius: nec visitabitur, nec fiet ultrá. 17 In tempore illo vocabunt Jerusalem, Solium Domini: & congregabuntur ad eam omnes Gentes in nomine Domini in Jerusalem, & non ambulabunt post pravitatem cordis sui pessimi. 18 In diebus illis ibit domus Juda ad domum Israel, & venient simul de terra Aquilonis, ad terram quam dedi patribus vestris. 19 Ego autem dixi; Quomodò ponam te in filios, & tribuam tibi terram desiderabilem, hæreditatem præclaram exercituum Gentium? Et dixi; Patrem vocabis me, & post me ingredi non cessabis.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

7 Καὶ εἶπα, μετὰ τὸ πορνεῦσαι αὐτὴν (θ) ταῦτα πάντα, Πρὸς μὲ ἀνάστρεψον. καὶ οὐκ ἀνέστρεψε· καὶ εἶδε τὴν ἀσυνθεσίαν αὐτῆς ἡ ἀσύνθετος Ἰούδα. 8 Καὶ εἶδον, (ι) ὅτι περὶ πάντων ὧν κατελήφθη ἐν οἷς ἐμοιχᾶτο ἡ κατοικία (κ) Ἰσραὴλ, καὶ ἐξαπέστειλα αὐτὴν, καὶ ἔδωκα αὐτῇ βιβλίον ἀποστασίου εἰς τὰς χεῖρας αὐτῆς· καὶ οὐκ ἐφοβήθη ἡ ἀσύνθετος Ἰούδα, καὶ ἐπορεύθη, καὶ ἐπόρνευσε καὶ αὐτὴ, 9 Καὶ ἐγένετο εἰς οὐθὲν ἡ πορνεία αὐτῆς, καὶ ἐμοίχευσε τὸ ξύλον καὶ τὸν λίθον. 10 Καὶ ἐν πᾶσι τούτοις οὐκ (") ἐπεστράφη πρὸς μὲ ἡ ἀσύνθετος Ἰούδα ἐξ ὅλης τῆς καρδίας αὐτῆς, ἀλλ' ἐπὶ ψεύδει. 11 Καὶ εἶπε κύριος πρὸς μὲ, Ἐδικαίωσε τὴν ψυχὴν αὐτοῦ Ἰσραὴλ ἀπὸ τῆς ἀσυνθέτου Ἰούδα. 12 (λ) Πορεύου καὶ ἀνάγνωθι τοὺς λόγους τούτους (μ) πρὸς Βοῤῥᾶν, καὶ ἐρεῖς, Ἐπιστράφηθι πρὸς μὲ ἡ κατοικία τοῦ Ἰσραὴλ, λέγει κύριος. καὶ (ν) μὴ στηριῶ τὸ πρόσωπόν μου ἐφ' ὑμᾶς, ὅτι (ξ) ἐλεήμων ἐγώ εἰμι, λέγει κύριος, 13 καὶ οὐ μηνιῶ ὑμῖν εἰς τὸν αἰῶνα. Πλὴν, γνῶθι τὴν ἀδικίαν σου, ὅτι εἰς κύριον τὸν θεόν σου ἠσέβησας, καὶ διέχεας τὰς ὁδούς σου εἰς ἀλλοτρίους ὑποκάτω παντὸς ξύλου ἀλσώδους, τῆς δὲ φωνῆς μου (ο) οὐχ ὑπήκουσας, λέγει κύριος. 14 Ἐπιστράφητε υἱοὶ ἀφεστηκότες, λέγει κύριος, διότι (π) ἐγὼ κατακυριεύσω ὑμῶν, καὶ λήψομαι ὑμᾶς ἕνα ἐκ πόλεως καὶ δύο ἐκ πατριᾶς, 15 καὶ εἰσάξω ὑμᾶς εἰς Σιὼν, Καὶ δώσω ὑμῖν ποιμένας κατὰ τὴν καρδίαν μου, καὶ ποιμανοῦσιν ὑμᾶς (ρ) ποιμαίνοντες μετ' ἐπιστήμης. 16 Καὶ ἔσται ἐὰν πληθυνθῆτε, καὶ αὐξηθῆτε ἐπὶ τῆς γῆς, (σ) λέγει κύριος, ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις οὐκ ἐροῦσιν ἔτι, Κιβωτὸς διαθήκης ἁγίου Ἰσραὴλ, οὐκ ἀναβήσεται ἐπὶ καρδίαν, (τ) οὐκ ὀνομασθήσεται, οὐδὲ ἐπισκεφθήσεται, καὶ οὐ ποιηθήσεται ἔτι. 17 Ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, καὶ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ καλέσουσι τὴν Ἱερουσαλὴμ, Θρόνον κυρίου· καὶ συναχθήσονται (υ) πάντα τὰ ἔθνη εἰς αὐτὴν, καὶ οὐ πορεύσονται ἔτι ὀπίσω τῶν (") ἐνθυμημάτων τῆς καρδίας αὐτῶν τῆς πονηρᾶς. 18 (φ) Ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις (χ) συνελεύσονται ὁ οἶκος Ἰούδα ἐπὶ τὸν οἶκον τοῦ Ἰσραὴλ, καὶ ἥξουσιν ἐπιτοαυτὸ ἀπὸ γῆς Βοῤῥᾶ (ψ) καὶ ἀπὸ πασῶν τῶν χωρῶν ἐπὶ τὴν γῆν, ἣν (ω) κατεκληρονόμησα τοὺς πατέρας αὐτῶν· 19 Καὶ ἐγὼ εἶπα, Γένοιτο κύριε· ὅτι τάξω σε εἰς τέκνα, καὶ δώσω σοι γῆν ἐκλεκτὴν, κληρονομίαν θεοῦ παντοκράτορος ἐθνῶν· (α) καὶ εἶπα, Πατέρα καλέσετέ με, καὶ ἀπ' ἐμοῦ οὐκ ἀποστραφήσεσθε.

7 Et dixi, postquàm fornicata erat ipsa hæc omnia; Ad me revertere. Et non est reversa. Et vidit prævaricationem ejus prævaricatrix Juda. 8 Et (g) viderunt, quia pro omnibus, in quibus deprehensa est, in quibus mœchata est domus Israel; & dimisi eam, & dedi ei libellum repudii, in manus ejus. Et non timuit prævaricatrix Juda: & ivit, & fornicata est etiam ipsa: 9 Et facta est in nihilum fornicatio ipsius: & mœchata est lignum, & lapidem. 10 Et in omnibus his non est reversa ad me prævaricatrix Juda ex toto corde suo, sed in mendacio. 11 Et dixit Dominus ad me; Justificavit animam suam Israel præ prævaricatrice Juda: 12 Vade, & lege sermones istos contra Aquilonem, & dices; Revertere ad me domus Israel, dicit Dominus: & non firmabo faciem meam super vos: quia misericors ego sum, dicit Dominus, & non irascar vobis in perpetuum. 13 Veruntamen scito injustitiam tuam: quoniam in Dominum Deum tuum impiè egisti, & effudisti vias tuas ad alienos sub omni ligno frondoso: voci autem meæ non obedîsti, dicit Dominus. 14 Convertimini filii, qui recessistis, dicit Dominus: quia ego dominabor vestri. & assumam vos, unum de civitate, & duos ex cognatione: & introducam vos in Sion: 15 Et dabo vobis pastores juxta cor meum: & pascent vos pascentes cum scientia. 16 Et erit, si multiplicati eritis, & creveritis super terram, ait Dominus; in diebus illis non dicent ultrà, Arca testamenti, Sancti Israel: neque ascendet super cor: non nominabitur, neque visitabitur, neque fiet ultrá. 17 In diebus illis, et in tempore illo vocabunt Hierusalem, Solium Domini: et congregabuntur omnes gentes ad eam: et non ambulabunt ultrà post cogitationes cordis sui pessimi. 18 In diebus illis convenient domus Juda ad domum Israel: et venient simul de terra Aquilonis, et de omnibus regionibus ad terram, quam dedi in hæreditatem patribus vestris. 19 (Et ego dixi: Fiat Domine.) (b) Quia ponam te in filios, et dabo tibi terram electam, (i) hæreditatem Dei omnipotentis gentium. Et dixi; Patrem vocabitis me, et à me non avertemini.

MS.A. (θ) πάντα ταῦτα, (ι) διότι (κ) τοῦ Ἰσραὴλ, (") ἀπεστράφη (λ) Πορεύθητι καὶ ἀνάγνωσον (μ) πρὸς Βοῤῥᾶ, καὶ ἐρεῖς, Ἐπιστράφητι (ν) οὐ (ξ) ἐλεῶν (ο) οὐκ ἤκουσας, (π) ἰδοὺ ἐγὼ (ρ) ποιμαίνες (σ) ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, λέγει κύριος, οὐκ (τ) καὶ οὐκ (υ) εἰς αὐτὴν πάντα τὰ ἔθνη, (") ἐπιθυμημάτων (φ) Καὶ ἐν (χ) συνελεύσεται οἶκος Ἰσραὴλ ἐπὶ τὸν οἶκον Ἰούδα, (ψ) ἀπὸ πασῶν (ω) κατεκληρονόμησαν οἱ πατέρες αὐτῶν· (α) καὶ * ὡς πατέρα

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

7 ואמרית בתר דעבדו ית כל אלין לפולחני יתובון ולא תבו וחזו משקריא אחיהון דבית
8 יהודה׃ וגלי קדמי ארי על כל עסק דטעו דמתחסנין למתב לפולחני דבית ישראל
אגליתנון כמה דיהבין אגרת גט פטורין ומשלחין ולא דחילו משקריא דבית יהודה
9 אחיהון ואזלו וטעו אף אנון׃ והוה מדקלילא בעינהא טעותהא וחיבת ית ארעא וטעת
10 עם פלחי אבניא ואעיא׃ ואף בכל דאלא תבו לפולחני משקריא אחיהון דבית יהודה
11 בכל לבהון אלהין בשקרא אמר יי׃ ואמר יי לי זכיאו נפשיהון דמתחסנין למתב לפולחני
12 דבית ישראל ממשקריא דבית יהודה׃ איזל ותתנבי ית פתגמיא האלין בארע צפונא
ותימר תובו דמתחסנין למתב לפולחני דבית ישראל אמר יי כד תתובון לא אשלח
13 רוגזי בכון ארי מסגי למעבד טבון אנא אמר יי ולא יתנטרון ליך חוביך לעלם׃ ברם
דעי חוביך ארי במימרא דיי אלהך מרדת וקלקלת ית אורחתך אתחברת לעממיא
14 פלחי טעותא תחות כל אילן עבוף ולמימרי לא קבלתון אמר יי׃ תובו בניא דמתחסנין
למתב אמר יי ארי אנא אתרעיתי בכון ואקרב יתכון כאלו אתון משתארין חד מקרתא
15 ותרין מזרעיתא ואעל יתכון לציון׃ ואמני עליכון פרנסין עבדי רעותי ויפרנסון יתכון
16 במדע ובחוכמה׃ ויהי ארי תסגון ותפשון בארעא ביומיא האנון אמר יי לא יימרון עוד
ארון קימא דיי ולא יסק על לב ולא ידכרון עוד ביה ולא יזועון ולא יגיחון ביה עוד קרב׃
17 בעדנא ההיא יקרון לירושלם אתר בית שכנתא דיי ויתנהון למפלח בה כל עממיא
18 לשמא דיי לירושלם ולא יהכון עוד בתר הרהור לבהון בישא׃ ביומיא האנון יתחברון
דבית יהודה עם בית ישראל ויתון כחדא מארע צפונא לארעא דאחסנית ית אבהתהון׃
19 ואנא אמרית איכדין אצלחניך בבניא ואתן ליך ארע חמדתא אחסנת חדוות תושבחת
עממיא ואמרית רבוני תצלן קדמי ומבתר פולחני לא תתובין׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

7 Et dixi postquã fecerũt omnia hæc: Ad cultũ meũ convertentur: & non sunt conversi; & viderũt falsarii fratres eorũ viri domꝰ Juda. 8 Et manifestũ fuit corã me, quia pro eo quòd erraverunt, & indurati sunt ut converterentur ad cultũ meũ viri domꝰ Israel, transmigrare feci eos, sicut dant literas libelli repudii & dimittunt [*uxores.*] Et non timuerunt falsarii domꝰ Juda fratres eorũ, sed abierunt & erraverunt etiã ipsi. 9 Et factũ est ex eo quod levia videbantur in oculis ejꝰ idola ejꝰ; reã fecit terrã, & fornicata est cum cultoribꝰ lapidũ & lignorũ. 10 Et in omnibꝰ his non sunt conversi ad cultũ meũ falsarii domꝰ Juda fratres eorum in toto corde suo, nisi in mendacio, dicit Dñs. 11 Et dixit Dñs ad me: *Justificaverunt* animã suã *illi qui sese obstinant ne redeant* ad cultũ meũ domꝰ Israel, magis quàm *falsarii* domꝰ Juda. 12 Vade & prophetiza verba hæc in terra Aquilonis, & dices: Convertimini qui vos obfirmatis, ne convertamini ad cultũ meũ, domꝰ Israel, dicit Dñs: cùm enim conversi fueritis, non immittam furorẽ meum in vos, quia ego multa cõfero beneficia, dicit Dñs: & non reservabũtur peccata *tua* tibi in æternũ. 13 Veruntamen scito peccata tua, quia in Verbũ Dñi Dei tui prævaricata es, & corrupisti viã tuã: adjunxisti te populis colentibꝰ idola, sub omni ligno frondoso; & verbo meo non obedistis, dicit Dñs. 14 Convertimini filii qui vos obfirmatis ne convertamini, dicit Dñs, quia ego elegi vos; & applicabo vos ac si relicti sitis, unum de civitate, & duo de cognatione, & introducam vos in Sion: 15 Et constituam vobis gubernatores facientes voluntatẽ meam, & gubernabũt vos in scientia & in sapientia. 16 Et erit cùm multiplicati fueritis & creveritis in terra, in diebꝰ illis, dicit Dñs, non dicent amplius, Arca fœderis Dñi, nec ascendet in cor, nec ultrà ejꝰ recordabuntur, nec commovebũtur, nec in ea ampliꝰ inibũt præliũ. 17 In tempore illo vocabũt Jerusalẽ locũ domꝰ majestatis Dñi, et discẽt colere in ea oẽs populi nomẽ Dñi in Jerusalẽ, et non ambulabũt ultrà post cogitationẽ cordis sui pessimi. 18 In diebꝰ illis conjungẽtur domꝰ Juda cùm domo Israel, et veniẽt simul de terra Aquilonis, in terrã quã possidere feci patres vestros. 19 Et ego dixi: Quomodo prosperabo te in filiis, et dabo tibi terrã desiderabilẽ, hæreditatẽ lætitiæ laudis populorũ? et dixi: Dñm meũ invocabis corã me, et à cultu meo nõ revertêris.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܘܐܡܪܬ ܡܢ ܒܬܪ ܕܥܒܕܬ ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ ܠܘܬܝ ܬܘܒܝ. ܘܠܐ ܐܬܦܢܬ. ܘܚܙܬ ܢܟܠܗ̇ ܚܬܗ̇ 7
ܝܗܘܕܐ. ܘܚܙܬ ܟܠܗܝܢ ܨܒܘܬܗ̇. * ܘܥܠ ܕܓܪܬ ܥܡܘܪܬܐ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܫܒܩܬܗ̇. 8
ܘܝܗܒܬ ܠܗ̇ ܟܬܒܐ ܕܫܘܒܩܢܐ. ܘܠܐ ܕܚܠܬ ܢܟܠܬܐ ܚܬܗ̇ ܝܗܘܕܐ. ܘܙܢܝܬ ܐܦ ܗܝ. * ܘܡܛܠ 9
ܕܨܥܪܐ ܗܘܬ ܙܢܝܘܬܗ̇. ܛܢܦܬ ܐܪܥܐ. ܘܓܪܬ ܒܟܐܦܐ ܘܒܩܝܣܐ. * ܘܐܦ ܡܢ ܒܬܪ ܗܠܝܢ 10
ܟܠܗܝܢ . ܠܐ ܐܬܦܢܬ ܠܘܬܝ ܢܟܠܬܐ ܚܬܗ̇ ܝܗܘܕܐ. ܡܢ ܟܠܗ ܠܒܗ̇. ܐܠܐ ܒܕܓܠܘܬܐ.
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܙܕܩܬ ܢܦܫܗ̇ ܥܡܘܪܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܡܢ ܢܟܠܬܐ ܚܬܗ̇ 11
ܝܗܘܕܐ. * ܙܠ ܘܐܟܪܙ ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ ܠܓܪܒܝܐ. ܘܐܡܪ. ܬܘܒܝ ܥܡܘܪܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ . ܐܡܪ 12
ܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܐܩܫܐ ܐܦܝ ܒܟܘܢ. ܡܛܠ ܕܛܒ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܐܛܪ ܐܢܐ ܠܥܠܡ. * ܒܪܡ 13
ܕܥܝ ܣܟܠܘܬܟܝ . ܕܒܡܪܝܐ ܐܠܗܟܝ ܣܟܠܬܝ . ܘܒܕܪܬܝ ܐܘܪܚܬܟܝ ܠܢܘܟܪܝܐ ܬܚܝܬ
ܟܠ ܐܝܠܢ ܕܥܒܝܢ. ܘܒܩܠܝ ܠܐ ܫܡܥܬܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܬܘܒܘ ܒܢܝܐ ܬܝܒܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. 14
ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܨܒܝܬ ܒܟܘܢ. ܘܕܒܪܬܟܘܢ. ܚܕ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܬܪܝܢ ܡܢ ܫܪܒܬܐ. ܘܐܝܬܝܬܟܘܢ ܠܨܗܝܘܢ.
* ܘܐܬܠ ܠܟܘܢ ܪܥܘܬܐ ܐܝܟ ܠܒܝ. ܘܢܪܥܘܢܟܘܢ ܒܝܕܥܬܐ ܘܒܣܘܟܠܐ. * ܘܢܗܘܐ ܡܐ 15 16
ܕܬܣܓܘܢ ܘܬܦܫܘܢ ܒܐܪܥܐ . ܒܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ . ܠܐ ܢܐܡܪܘܢ ܬܘܒ ܩܒܘܬܐ
ܕܩܝܡܐ ܕܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܬܣܩ ܥܠ ܠܒܐ. ܘܠܐ ܢܬܕܟܪܘܢܗ̇. ܘܠܐ ܢܣܥܪܘܢܗ̇. ܘܠܐ ܬܬܥܒܕ ܬܘܒ.
* ܒܗ ܒܙܒܢܐ ܗܘ . ܢܩܪܘܢ ܠܐܘܪܫܠܡ. ܟܘܪܣܝܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܢܣܟܘܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ 17
ܠܫܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܢܐܙܠܘܢ ܬܘܒ ܒܬܪ ܪܓܝܓܬܐ ܕܠܒܗܘܢ ܒܝܫܐ. * ܒܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ . 18
ܢܐܙܠܘܢ ܕܒܝܬ ܝܗܘܕܐ. ܥܡ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ . ܘܢܐܬܘܢ ܐܟܚܕܐ ܡܢ ܐܪܥܐ
ܕܓܪܒܝܐ . ܠܐܪܥܐ ܕܐܘܪܬܬ ܠܐܒܗܝܗܘܢ. * ܘܐܢܐ ܐܡܪܬ ܕܐܣܝܡܟܝ ܒܝܢܝ ܒܢܝܐ. ܘܐܬܠ 19
ܠܟܝ ܐܪܥܐ ܓܒܝܬܐ. ܘܝܪܬܘܬܐ ܕܚܝܠܐ ܕܥܡܡܐ. ܘܐܡܪܬ. ܐܒܐ ܬܩܪܘܢܢܝ.
ܘܡܢ ܒܬܪܝ ܠܐ ܬܗܦܟܘܢ.

7 * Cúmque dixiſſem poſtquàm feciſſet hæc omnia, Revertere ad me; non eſt reverſa: vidit autem perfidiam ejus ſoror ejus Juda, 8 vidítque res ejus omnes. Quoniam ergò adulterium commiſit habitatrix Iſraelis, repudiavi eam, dedique ei libellum repudii: nec tamen timuit perfida ſoror ejus Juda, ſed ipſa quoque fornicata eſt. 9 Quia turpiſſima erat ſcortatio ejus, terram polluit, & adulterata eſt cum lapidibus & lignis. 10 Quin etiam poſt hæc omnia non eſt ad me reverſa perfida ſoror ejus Juda ex toto corde ſuo, ſed falſò, ait Dominus. 11 Quapropter dixit mihi Dominus, Juſtiorem ſe prædicat habitatrix Iſraelis perfidâ ſorore ſuâ Juda: 12 Abi, & prædica ſermones iſtos in Aquilone, & dic; Revertere habitatrix Iſraelis, dicit Dominus, nec obdurabo faciem meam contra vos; quia bonus ſum, dicit Dominus, nec iram ſervo in perpetuum. 13 Verùm agnoſce peccata tua quæ in Dominum Deum tuum commiſiſti, quòd diſperſeris vias tuas alienis ſub quacunque arbore denſa, & vocem meam non audieritis, ait Dominus. 14 Convertimini filii revertentes, ait Dominus; quoniam ego vobis oblectatus aſſumpſi vos unum ex civitate, & duos ex familia, & adduxi vos in Sionem; 15 Ubi daturus ſum vobis paſtores juxta cor meum, qui paſcant vos cum ſcientia & prudentia. 16 Erítque cùm fœtificaveritis & creveritis in terra dieb⁹ illis, dicit Dominus; ut non dicant ampliùs, Arca fœderis Domini, nec veniat in animum, neque recordentur illius, neque recenſeant eam, neque fiat ampliús. 17 Eodem illo tempore vocabunt Jeroſolymam, Solium Dñi; & expectabunt omnes gentes nomen Domini, neque ſectabuntur ampliùs appetitus animi ſui pravi. 18 Iis diebus euntes Judæi cum Iſraelitis, venient ſimul è terra Aquilonari in terram quam hæreditariam dedi patribus eorum. 19 Adeóque dixeram; Annumerabo te inter filios, dabóque tibi terram electam, & hæreditatem virium exercituum gentium: & dixeram, Pater mi vocabitis me, & à me ſequendo nequaquam recedetis.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* وقلت بعد أن زنت بهذه كلها ارجعي إلي * فلم ترجع * ونظرت خائنة يهودا خيانتها * ورأيت 7 8
جميع الذين أخذت من أجلهم الذي زنت بهم ساكنة إسرائيل * وسرحتها وأعطيتها
كتاب طلاقها في يديها. ولم تخف خائنة يهودا * ومضت هي وزنت * وصار زناها إلى لا شيء * 9
وزنت بالخشبة والحجر * وفي هذه كلها لم ترجع إلي خائنة يهودا من كل قلبها * بل 10
بالكذب * وقال لي الرب برّرت نفسها ساكنة إسرائيل من خائنة يهودا * امض فاقرأ هذه 11 12
الأقوال عند الجربياء * وتقول ارجعي إلي يا ساكنة إسرائيل يقول الرب * ولا أشدد وجهي
عليكم * لأني أنا رحيم أنا يقول الرب * ولا أحقد عليكم إلى الأبد * لكن اعرفي ظلمك * 13
لأنك نافقت على الرب إلهك * وأبذلت طرقك للغرباء تحت كل شجرة ذات أفنان * ولم
تسمعي صوتي يقول الرب * ارجعوا أيها الأبناء المتباعدون يقول الرب * من أجل أني ها أنا 14
أسود عليكم وآخذكم واحدا من مدينة واثنين من أبوة * وآتي بكم إلى صهيون *
* وأعطيكم رعاة كقلبي * ويرعونكم الرعاة بفطنة * ويكون إذا كثرتم ونموتم 15 16
على الأرض * في تلك الأيام يقول الرب لا تقولون أين تابوت عهد قدوس إسرائيل * ولا
يصعد على قلبكم * ولا يسمى * ولا يفتقد * ولا يصنع أيضا * في تلك الأيام وفي ذلك 17
الزمان يدعون أيروسليم كرسي الرب * ويجتمعون إليها كل الأمم * ولا يمضون أيضا
خلف شهوات قلبهم الخبيث * وفي تلك الأيام يجتمع بيت إسرائيل على بيت يهودا * ويأتون 18
جميعا من أرض الجربياء ومن جميع الكور إلى الأرض التي ورثوا آباؤهم * وأنا قلت يكون 19
يا رب * لأني ربيتك لأولاد * وأعطيك الأرض المنتخبة ميراث إله الأمم ضابط الكل * وإن
كنتم تدعوني أبا ولم ترجعوا عني *

7 * *Attamen, quanvis fornicata eſſet cum omnibus iſtis, dixi; Revertere ad me, & non eſt reverſa: viditque perfida Judæ hanc ejus perfidiam.* 8 *Quarè cùm vidiſſem eos omnes quorum amore capta eſt, quibuſcum fornicata eſt habitatrix Iſraelis; dimiſi eam, dedique libellum repudii ſui in manus ejus: attamen non timuit perfida Judæ, ſed eadem abiens fornicata eſt.* 9 *Fuit autem fornicatio ejus cum nihilo; fornicata enim eſt cum ligno & cum lapide.* 10 *At in his quidem omnibus non eſt ad me reverſa perfida Judæ ex toto corde ſuo, ſed fictè.* 11 *Quapropter dixit mihi Dominus, Juſtificat ſeipſam habitatrix Iſraelis præ perfida Judæ:* 12 *Vade, recita ſermones iſtos apud Aquilonem, dicáſque; Revertere ad me O habitatrix Iſraelis, ait Dominus; nec obdurabo faciem meam contra vos, quoniam ego miſericors ſum, dicit Dominus; nec odium ſervabo contra vos in perpetuum.* 13 *Verùm agnoſce impietatem tuam, impiè namque geſſiſti in Dominum Deum tuum, & proſtituiſti vias tuas ſub quacunque arbore denſorum ramorum, nec audiſti vocem meam, dicit Dominus.* 14 *Revertimini O filii abalienati, dicit Dominus; quoniam ecce ego dominaturus ſum vobis, & accepturus vos, unum ex urbe una, & duos de familia una paterna, vóſque adducturus ad Sionem;* 15 *Et daturus vobis paſtores menti meæ conformes, qui paſtores prudenter vos paſcent.* 16 *Eritque, cùm multi fueritis & creveritis ſuper terram, ut iis diebus (ait Dominus) non dicatis, ubi eſt arca fœderis Sancti Iſraelis? neque ſubeat menti veſtræ, non nominetur, neque inviſatur, neque fiat ampliús.* 17 *Iis diebus eóque tempore vocabunt Jeroſolymam, Solium Domini, & confluent ad eam univerſæ gentes, neque ſequentur deinceps libidinem improbi cordis ſui.* 18 *Iiſdem quoque diebus conjunget ſe domus Iſraelis cum domo Judæ, veniéntque pariter è terra Aquilonari, & ex omnibus regionibus ad terram quam poſſederant patres eorum.* 19 *Et ego dixi, Sit hoc O Domine, quia deſtinavi te ad filios procreandos, dedíque tibi terram electam, hæreditatem Dei gentium omnipotentis. Quòd ſi vocatis me patrem, quarè ergò receditis à me?*

יִרְמְיָה׃ ד

domus me in estis prævaricati sic ,suo socio à mulier est prævaricata ut Siquidem
20 אָכֵן בָּגְדָה אִשָּׁה מֵרֵעָהּ כֵּן בְּגַדְתֶּם בִּי בֵּית
fletus ,est audita loca edita super Vox .Dominus dixit , Israel
21 יִשְׂרָאֵל נְאֻם־יְהוָה׃ קוֹל עַל־שְׁפָיִים נִשְׁמָע בְּכִי
sunt obliti ,suam viam pervertêre quia , Israel filiorum deprecationum
תַּחֲנוּנֵי בְּנֵי יִשְׂרָאֵל כִּי הֶעֱווּ אֶת־דַּרְכָּם שָׁכְחוּ
sanabo ,refractarii filii Convertimini .sui Dei Domini
22 אֶת־יְהוָה אֱלֹהֵיהֶם׃ שׁוּבוּ בָּנִים שׁוֹבָבִים אֶרְפָּה
Dominus tu quia , te ad venimus nos Ecce : vestras aversiones
מְשׁוּבֹתֵיכֶם הִנְנוּ אָתָנוּ לָךְ כִּי אַתָּה יְהוָה
verè : montibus , turba , collibus à vanum in Verè .noster Deus
23 אֱלֹהֵינוּ׃ אָכֵן לַשֶּׁקֶר מִגְּבָעוֹת הָמוֹן הָרִים אָכֵן
comedit confusio Et .Israel salus nostro Deo Domino in
24 בַּיהוָה אֱלֹהֵינוּ תְּשׁוּעַת יִשְׂרָאֵל׃ וְהַבֹּשֶׁת אָכְלָה אֶת־
,eorum bovem & , eorum pecus,nostris adolescentiis ab nostrorũ patrũ laborem
יְגִיעַ אֲבוֹתֵינוּ מִנְּעוּרֵינוּ אֶת־צֹאנָם וְאֶת־בְּקָרָם
,nostro pudore in Jacebimus .eorum filias & , eorum filios
25 אֶת־בְּנֵיהֶם וְאֶת־בְּנוֹתֵיהֶם׃ נִשְׁכְּבָה בְּבָשְׁתֵּנוּ
,peccavimus nostro Deo Domino quia : nostra ignominia nos operiet &
וּתְכַסֵּנוּ כְּלִמָּתֵנוּ כִּי לַיהוָה אֱלֹהֵינוּ חָטָאנוּ
non & hanc diem ad usque & ,nostris pueritiis à nostri patres & ,nos
אֲנַחְנוּ וַאֲבוֹתֵינוּ מִנְּעוּרֵינוּ וְעַד־הַיּוֹם הַזֶּה וְלֹא
.nostri Dei Domini voce in audivimus
שָׁמַעְנוּ בְּקוֹל יְהוָה אֱלֹהֵינוּ׃

CAP. IV. ד

si & : revertere me ad ,Dominus dixit , Israel fueris reversus Si
1 אִם־תָּשׁוּב יִשְׂרָאֵל נְאֻם־יְהוָה אֵלַי תָּשׁוּב וְאִם־
jurabis Et .vagaberis non &,meis faciebus à tuas abominationes abstuleris
2 תָּסִיר שִׁקּוּצֶיךָ מִפָּנַי וְלֹא תָנוּד׃ וְנִשְׁבַּעְתָּ
se benedicent & : justitia in & ,judicio in ,veritate in Dominus Vivens
חַי־יְהוָה בֶּאֱמֶת בְּמִשְׁפָּט וּבִצְדָקָה וְהִתְבָּרְכוּ
Dominus dixit sic Quia .se laudabunt eo in & , gentes eo in
3 בוֹ גּוֹיִם וּבוֹ יִתְהַלָּלוּ׃ כִּי־כֹה אָמַר יְהוָה
seratis. ne & : novale vobis Novate : Jerusalaim & ,Jehudah viro
לְאִישׁ יְהוּדָה וְלִירוּשָׁלַםִ נִירוּ לָכֶם נִיר וְאַל־תִּזְרְעוּ
præputia auferte &,DOMINO vos Circuncidite .spinas ad
4 אֶל־קוֹצִים׃ הִמֹּלוּ לַיהוָה וְהָסִרוּ עָרְלוֹת
egrediatur fortè ne : Jerusalaim habitatores & ,Jehudah vir ,vestri cordis
לְבַבְכֶם אִישׁ יְהוּדָה וְיֹשְׁבֵי יְרוּשָׁלָםִ פֶּן־תֵּצֵא
malitia facierum à ,extinguens non & ,succendatur & ,mea ira ignis ut
כָאֵשׁ חֲמָתִי וּבָעֲרָה וְאֵין מְכַבֶּה מִפְּנֵי רֹעַ
,facite audire jerusalaim in &,Jehudah in Annuntiate .vestrorũ conatuum
5 מַעַלְלֵיכֶם׃ הַגִּידוּ בִיהוּדָה וּבִירוּשָׁלַםִ הַשְׁמִיעוּ
: dicite & , complete , clamate ; terra in tuba Clangite : dicite &
וְאִמְרוּ וְתִקְעוּ שׁוֹפָר בָּאָרֶץ קִרְאוּ מַלְאוּ וְאִמְרוּ
vexillum Levate .munitionis civitates in ingrediamur & , Colligamini
6 הֵאָסְפוּ וְנָבוֹאָה אֶל־עָרֵי הַמִּבְצָר׃ שְׂאוּ־נֵס
adducens ego malum quia : stetis ne , aufugite , Sijon in
צִיּוֹנָה הָעִיזוּ אַל־תַּעֲמֹדוּ כִּי רָעָה אָנֹכִי מֵבִיא
,suo umbraculo de leo Ascendit .magnam contritionem &,Aquilone ab
7 מִצָּפוֹן וְשֶׁבֶר גָּדוֹל׃ עָלָה אַרְיֵה מִסֻּבְּכוֹ
ponendum ad ,suo loco de est egressus ,est profectus gentium corruptor &
וּמַשְׁחִית גּוֹיִם נָסַע יָצָא מִמְּקֹמוֹ לָשׂוּם
absque destruentur tuæ civitates : solitudinem in tuam terram
אַרְצֵךְ לְשַׁמָּה עָרַיִךְ תִּצֶּינָה מֵאֵין
quia ululate & plangite , saccis vos accingite hoc Super .habitatore
8 יוֹשֵׁב׃ עַל־זֹאת חִגְרוּ שַׂקִּים סִפְדוּ וְהֵילִילוּ כִּי
.eo ab Domini nasi ira est aversa non
לֹא־שָׁב חֲרוֹן אַף־יְהוָה מִמֶּנּוּ׃

Versio VULG. LAT.

10 Sed quomodò si contemnat mulier amatorem suum, sic contempsit me domus Israel, dicit Dominus. 21 Vox in viis audita est, ploratus & ululatus filiorum Israel: quoniam iniquam fecerunt viam suam, obliti sunt Domini Dei sui. 22 Convertimini filii revertentes, & sanabo aversiones vestras. Ecce nos venimus ad te: tu enim es Dominus Deus noster. 23 Verè mendaces erant colles, & multitudo montium: verè in Domino Deo nostro salus Israel. 24 Confusio comêdit laborem patrum nostrorum ab adolescentia nostra, greges eorum, & armenta eorum, filios eorum, 25 & filias eorum. Dormiemus in confusione nostra, & operiet nos ignominia nostra: quoniam Domino Deo nostro peccavimus nos, & patres nostri, ab adolescentia nostra usque ad diem hanc: & non audivimus vocem Domini Dei nostri.

CAP. IV.

1 SI revertêris Israel, ait Dominus, ad me convertere: si abstuleris offendicula tua à facie mea, 2 non commoveberis. Et jurabis; Vivit Dominus, in veritate, & in judicio, & in justitia, & benedicent eum Gentes, ipsúmque 3 laudabunt. Hæc enim dicit Dominus viro Juda & Jerusalem; Novate vobis novale, & nolite 4 serere super spinas: Circumcidimini Domino, & auferte præputia cordium vestrorum, viri Juda, & habitatores Jerusalem: ne fortè egrediatur ut ignis indignatio mea, & succendatur, & non sit qui extinguat, propter malitiam cogitationum vestra- 5 rum. Annuntiate in Juda, & in Jerusalem auditum facite: loquimini, & canite tubâ in terra: clamate fortiter, & dicite; Congregamini, & ingrediamur civi- 6 tates munitas, Levate signum in Sion. Confortamini, nolite stare: quia malum ego adduco ab Aquilone, & contritionem ma- 7 gnam. Ascendit leo de cubili suo, & prædo Gentium se levavit: egressus est de loco suo, ut ponat terram tuam in solitudinem: civitates tuæ vastabuntur, remanentes absque habitatore. 8 Super hoc accingite vos ciliciis, plangite & ululate: quia non est aversa ira furoris Domini à nobis.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

20 Πλὴν ὡς ἀθετεῖ γυνὴ εἰς τὸν συνόντα αὐτῇ, οὕτως ἠθέτησεν εἰς ἐμὲ (β) ὁ οἶκος Ἰσραήλ, λέγει κύριος. 21 (γ) Φωνὴ ἐκ χειλέων ἠκούσθη κλαυθμοῦ καὶ δεήσεως υἱῶν Ἰσραήλ, ὅτι ἠδίκησαν ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν, 22 ἐπελάθοντο θεοῦ ἁγίου αὐτῶν. Ἐπιστράφητε υἱοὶ ἐπιστρέφοντες, καὶ (δ) ἰάσομαι τὰ συντρίμματα ὑμῶν. Ἰδοὺ δοῦλοι (") ἡμεῖς ἐσόμεθά σοι, ὅτι (ε) σὺ κύριος ὁ θεὸς 23 ἡμῶν εἶ. Ὄντως εἰς ψεῦδος ἦσαν οἱ βουνοί, καὶ ἡ δύναμις τῶν ὀρέων, πλὴν διὰ κυρίου θεοῦ ἡμῶν ἡ σωτηρία (ζ) τοῦ Ἰσ- 24 ραήλ. Ἡ δὲ αἰσχύνη (η) κατηνάλωσε τοὺς μόχθους τῶν πατέρων ἡμῶν, ἀπὸ νεότητος (θ) ἡμῶν, τὰ πρόβατα αὐτῶν καὶ τοὺς (ᵈ) μόσχους αὐτῶν, καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτῶν καὶ τὰς 25 θυγατέρας αὐτῶν. Ἐκοιμήθημεν ἐν τῇ αἰσχύνῃ ἡμῶν, καὶ ἐπεκάλυψεν ἡμᾶς ἡ ἀτιμία ἡμῶν, διότι ἔναντι τοῦ θεοῦ (ι) ἡμῶν ἡμάρτομεν ἡμεῖς, καὶ οἱ πατέρες ἡμῶν, ἀπὸ νεότητος ἡμῶν ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης· καὶ (κ) οὐχ ὑπηκούσαμεν τῆς φωνῆς κυρίου τοῦ θεοῦ ἡμῶν.

MS.A. (β) λέγει κύριος, ὁ οἶκος Ἰσραήλ. (γ) Φωναὶ (δ) ἰάσομαι αὐτούς. Ἰδοὺ (") *ὑμεῖς (ε) κύριος ὁ θεὸς (ζ) τῷ Ἰσραήλ. (η) κατανάλωσεν (θ) αὐτῶν, (ᵈ) *μόσχους (ι) ἡμάρτημεν, καὶ οἱ πατέρες (κ) οὐκ ἠκούσαμεν

ΚΕΦ. δʹ.

1 Ἐὰν ἐπιστραφῇ (α) Ἰσραήλ, λέγει κύριος, πρὸς μὲ, ἐπιστραφήσεται. (β) καὶ ἐὰν περιέλῃ τὰ βδελύγματα (γ) αὐτοῦ ἐκ στόματος αὐτοῦ, καὶ ἀπὸ τοῦ προσώπου μου εὐ- 2 λαβηθῇ, Καὶ ὀμόσῃ, Ζῇ κύριος, μετὰ ἀληθείας (δ) ἐν κρίσει καὶ ἐν δικαιοσύνῃ, καὶ εὐλογήσουσιν ἐν αὐτῷ ἔθνη, καὶ ἐν αὐτῷ 3 αἰνέσουσι τῷ θεῷ ἐν (ε) Ἱερουσαλήμ. Ὅτι τάδε λέγει κύριος τοῖς ἀνδράσιν Ἰούδα, καὶ τοῖς κατοικοῦσιν Ἱερουσαλήμ, Νεώσατε ἑαυτοῖς νεώματα, καὶ μὴ σπείρητε ἐπ᾽ ἀκάν- 4 θαις. (ζ) Περιτμήθητε τῷ θεῷ ὑμῶν, καὶ (η) περιέλεσθε τὴν σκληροκαρδίαν ὑμῶν ἄνδρες Ἰούδα καὶ οἱ κατοικοῦντες (ᵈ) Ἱερουσαλήμ, μὴ ἐξέλθῃ ὡς πῦρ ὁ θυμός μου, καὶ ἐκκαυθήσεται, καὶ οὐκ ἔσται ὁ σβέσων, ἀπὸ προσώπου 5 πονηρίας ἐπιτηδευμάτων ὑμῶν. Ἀναγγείλατε ἐν τῷ Ἰούδα, καὶ ἀκουσθήτω ἐν Ἱερουσαλήμ· εἴπατε, Σημάνατε ἐπὶ τῆς γῆς σάλπιγγι, κεκράξατε μέγα· (θ) εἴπατε, Συνάχθητε, καὶ (ι) εἰσέλθωμεν εἰς τὰς πόλεις τὰς 6 (κ) τειχήρεις. Ἀναλαβόντες φεύγετε εἰς Σιών· σπεύσατε, μὴ στῆτε, ὅτι (λ) κακὰ ἐγὼ ἐπάγω ἀπὸ Βορρᾶ, καὶ συντριβὴν μεγά- 7 λην. Ἀνέβη λέων ἐκ τῆς μάνδρας αὐτοῦ, (") ἐξολοθρεύων ἔθνη ἐξῆρε, καὶ ἐξῆλθεν ἐκ τοῦ τόπου αὐτοῦ, τοῦ θεῖναι τὴν γῆν εἰς ἐρήμωσιν· (μ) καὶ αἱ πόλεις καθαιρεθήσονται, 8 παρὰ τὸ μὴ κατοικεῖσθαι αὐτάς. Ἐπὶ τούτοις περιζώσασθε σάκκους, καὶ κόπτεσθε, καὶ (ν) ἀλαλάξατε, διότι οὐκ ἀπεστράφη ὁ θυμὸς κυρίου ἀφ᾽ ὑμῶν.

MS.A. (α) Ἰσραὴλ πρὸς μὲ, λέγει κύριος, (β) ἐὰν περιέλῃ (γ) αὐτοῦ, καὶ ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ (δ) καὶ ἐν (ε) Ἱερουσαλήμ. *Νεώσατε ἑαυτοῖς (ζ) Περιτμηθήσεσθε (η) περιέλεσθαι (ᵈ) ἐν Ἱερουσαλήμ, (θ) καὶ εἴπατε, (ι) εἰσέλθατε (κ) ὀχυράς. (λ) ἐγὼ κακὰ (") ἐξολεθρεύων (μ) καὶ πόλεις (ν) *ἀλλάξατε,

Verũtamẽ, sicut prævaricatur mulier in cohabitantem ei; sic prævaricata est in me domus Israel, dicit Dominus. 20 *Vox de labiis audita est, ploratûs, & deprecationis filiorum Israel: quoniam injustè egerunt in viis suis, obliti sunt Dei sancti sui.* 21 *Revertimini filii revertentes: & sanabo contritiones vestras. Ecce servi nos erimus tibi: tu enim es Dominus Deus noster.* 22 *Verè in mendacium erant colles, & fortitudo montium: tantùm per Dominum Deum nostrum salus Israel.* 23 *Confusio autem consumpsit labores patrum nostrorum ab adolescentia (k) nostra, oves eorum, & vitulos eorum, & filios eorum, & filias eorum.* 24 *Dormivimus in confusione nostra: & cooperuit nos ignominia nostra: quoniam coram Deo nostro peccavimus nos, & patres nostri ab adolescentia nostra usque in diem hanc: & non obedivimus voci Domini Dei nostri.* 25

CAP. IV.

SI conversus fuerit Israel, ait Dominus, ad me; convertetur: & si abstulerit abominationes suas de ore suo, & à facie mea reveritus fuerit, 1 *Et juraverit, Vivit Dominus, cum veritate in judicio, & in justitia; & benedicent in eo gentes, & in eo laudem dicent Deo in Hierusalem.* 2 *Hæc enim dicit Dominus viris Juda, & habitatoribus Hierusalem; Novate vobis novalia, & nolite serere super spinas.* 3 *Circuncidimini Deo vestro: & circuncidite (a) duritiam cordis vestri, viri Juda, & habitatores Hierusalem: ne egrediatur ut ignis, indignatio mea; & succendetur, (& non erit, qui extinguat,) à facie nequitiæ adinventionum vestrarum.* 4 *Annuntiate in Juda, & audiatur in Hierusalem: dicite, Significate super terram tubâ: Clamate fortiter: dicite; Congregamini, & ingrediamur in civitates muratas:* 5 *Assumentes fugite in Sion: festinate, nolite stare: quia mala ego adduco ab Aquilone, & contritionem magnam.* 6 *Ascendit leo de cubili suo: exterminans gentes levavit se, et egressus est de loco suo, ut ponat (b) terram in solitudinem: et civitates destruentur, eò quòd non habitentur ipsæ.* 7 *Super his accingite vos ciliciis, et plangite, et (c) ululate; quia non est aversus (d) furor Domini à vobis.* 8

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

20 בְּכֵן כְּמָה דִמְשַׁקְרָא אִתְּתָא בְּבַעְלָא כֵּן שַׁקַּרְתּוּן בְּמֵימְרִי בֵּית יִשְׂרָאֵל אֲמַר יְיָ׃ קָלָא
21 עַל נַגְדִּין אִשְׁתְּמַע דִּבְכַן וּמִתְאַנְּחִין בְּנֵי יִשְׂרָאֵל אֲרֵי קַלְקִילוּ יָת אוֹרְחָתְהוֹן אִתְנְשִׁיאוּ יָת
22 פּוּלְחָנָא דַיְיָ אֱלָהֲהוֹן׃ תּוּבוּ בְּנַיָא דְמִתְחַסְנִין לְמֵתַב אֶשְׁבּוֹק לְכוֹן כַּד תְּתוּבוּן הָא בְּכָל
23 עִדָּן אַתּוּן אָמְרִין תַּבְנָא לְפוּלְחָנָךְ פּוּרְקָנָא אֲרֵי אַתְּ יְיָ אֱלָהָנָא׃ בְּכֵן לְשִׁקְרָא פְּלַחְנָא
עַל רָמָתָא וְלָא לַהֲנָאָה אִתְרְגֵשְׁנָא עַל טוּרַיָּא בְּרַם בְּמֵימְרָא דַיְיָ אֱלָהָנָא פּוּרְקָן יִשְׂרָאֵל׃
24 וּבַהֲתַת חוֹבִין אֲסֵיפַת יָת לֵיאוּת אֲבָהָתָנָא מִזְּעוּרָנָא יָת עָנְהוֹן וְיָת תּוֹרֵיהוֹן וְיָת בְּנֵיהוֹן
25 וְיָת בְּנָתְהוֹן׃ נִשְׁכּוֹב בִּבְהָתַת חוֹבָנָא וְתַחְפִּנָנָא אִתְכְּנְעוּתָנָא אֲרֵי קֳדָם יְיָ אֱלָהָנָא חַבְנָא
אֲנַחְנָא וַאֲבָהָתָנָא מִזְּעוּרָנָא וְעַד יוֹמָא הָדֵין וְלָא קַבֵּלְנָא לְמֵימְרָא דַיְיָ אֱלָהָנָא׃

ד

1 אִם תְּתוּב יִשְׂרָאֵל לְפוּלְחָנִי אֲמַר יְיָ תִּתְקַבַּל תְּיוּבְתָּךְ עַד לָא תִתְחַתַּם גְּזֵרְתָּךְ וְאִם תַּעְדֵּי
2 שִׁקּוּצָךְ מִן קֳדָמַי לָא תִטַּלְטֵל׃ אִם תְּקַיֵּים בִּשְׁמִי קַיָּים הוּא יְיָ בְּקוּשְׁטָא בְּדִינָא וּבִזְכוּתָא
3 וְיִתְבָּרְכוּן עַמְמַיָּא בְּיִשְׂרָאֵל וּבֵיהּ יִשְׁתַּבְּחוּן׃ אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ לֶאֱנָשׁ יְהוּדָה וּלְיָתְבֵי
4 יְרוּשְׁלֶם עֲבִידוּ לְכוֹן עוֹבָדִין טָבִין וְלָא תִבְעוֹן פּוּרְקָן בְּחוֹבִין׃ תּוּבוּ לְפוּלְחָנָא דַיְיָ
וְאַעְדּוּ רֶשַׁע לִבְּכוֹן אֱנָשׁ יְהוּדָה וְיָתְבֵי יְרוּשְׁלֶם דִּלְמָא יִדְלַק כְּאֶשָּׁתָא רוּגְזִי וִישֵׁיצֵי וְלָא יְהֵי
5 חַיִּס מִן קֳדָם בִּישׁוּת עוֹבָדֵיכוֹן׃ חַווֹ בִיהוּדָה וּבִירוּשְׁלֶם בַּסַּרוּ וְאָמְרוּ תְּקַעוּ שׁוֹפָרָא
6 בְּאַרְעָא אַכְלוּ אַסְנוּ וְאִמְרוּ אִתְכַּנְּשׁוּ וְנֵיעוּל לְקִרְוִין כְּרִיכָן׃ זְקוּפוּ אָתָא עַל צִיּוֹן גְּלוֹ לָא
7 תִתְעַכְּבוּן אֲרֵי בִשְׁתָּא אֲנָא מַיְתֵי מִצִּפּוּנָא וּתְבִירָא רַבָּא׃ גְּלָא מַלְכָּא מִכְּרַכֵּיהּ וּמְחַבֵּל
עַמְמַיָּא נְטַל בְּמַשְׁרְיָתֵיהּ נְפַק מֵאַתְרֵיהּ לְשַׁוָּאָה אַרְעִיךְ לְצָדוּ קִרְוַיִךְ יִצְדְּיָן מִבְּלִי יָתֵב׃
8 עַל דָּא יִיסְרוּן סַקִּין יִסְפְּדוּן וִייַלְּלוּן אֲרֵי לָא תָב תְּקוֹף רוּגְזָא דַיְיָ מִנָּנָא׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Propterea sicut prævaricatur mulier in maritum suum; sic *prævaricati estis* in Verbum meum domus Israel, dicit Dñs. 20 Vox juxta torrentes audita est plorantium & gementiũ filiorum Israel, quia corruperunt vias suas, obliti sunt cultus Dñi Dei sui. 21 Convertimini filii qui obfirmatis vos ad conversionem, dimittam vobis si conversi fueritis: ecce in omni tempore vos dicitis, Conversi sumus ad cultum tuum, *salva nos*, quoniam tu es Dñs Deus noster. 22 Utiq; in vanum coluimꝰ super colles, & in nullum usum congregati sumꝰ super montes; veruntamen in verbo Dñi Dei nostri salꝰ Israel. 23 Confusio autem peccatorum consumpsit laborem patrum nostrorum ab adolescentia nostra; oves eorũ, & boves eorũ; filios eorũ, & filias eorũ. 24 Jacemus in confusione peccatorum nostrorum, & cooperiet nos verecundia nostra, quia coram Dño Deo nostro peccavimꝰ nos & patres nostri ab adolescentia nostra & usq; in præsentẽ diẽ, & non obedivimꝰ verbo Dñi Dei nostri. 25

CAP. IV.

SI convertêris Israel ad cultum meum, dicit Dñs, acceptabilis erit conversio tua, antequàm signetur sententia tua: & si abstuleris abominationes tuas à facie mea non commoveberis. 1 Et si juraveris *in nomine meo*, Vivꝰ est Dñs, in veritate, in judicio & in justitia; & benedicentur populi in Israel, & in ipso laudabuntur. 2 Quia sic dicit Dñs viro Juda & habitatoribꝰ Jerusalem: 3 Facite vobis opera bona, & non quæratis salutẽ in peccatis. 4 Convertimini ad cultũ Dñi, & auferte impietatem cordis vestri viri Juda, & habitatores Jerusalem; ne fortè *ardeat* quasi ignis furor meꝰ, & consumat absq; misericordia, propter malitiam operũ vestrorum. 5 Annuntiate in Juda & in Jerusalem; narrate & dicite, clangite tuba in terra, clamate, multiplicate & dicite: Congregamini, & ingrediamur in civitates munitas. 6 Levate signum in Sion, migrate & non moremini, quia malum ego adveho ab Aquilone, & contritionem magnam. 7 Migravit rex de arce sua, & disperdens populos profectꝰ est cum exercitu suo: egressus est de loco suo, ut ponat terrã tuam in desolationẽ. Civitates tuæ desertæ erunt absq; habitatore. 8 Sup hoc accingẽtur saccis, plangẽt & ululabũt: quia non est aversus furor iræ Dñi à nobis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

20 * ܫܪܝܪܐܝܬ ܐܝܟ ܕܡܕܓܠܐ ܐܢܬܬܐ ܡܢ ܚܒܪܗ܂ ܗܟܢܐ ܕܓܠܘ ܒܝ ܒܢܝ ܝܣܪܝܠ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
21 * ܩܠܐ ܒܫܒܝܠܐ ܐܫܬܡܥ. ܒܟܝܐ ܘܒܥܘܬܐ ܕܒܢܝ ܝܣܪܝܠ. ܕܥܩܡܘ ܐܘܪܚܬܗܘܢ. ܘܛܥܘ
22 ܠܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ. * ܬܘܒܘ ܒܢܝܐ ܬܝܒܐ. ܘܐܣܐ ܬܝܒܘܬܟܘܢ. ܘܐܡܪܘ ܗܘܢܘܢ. ܗܐ ܚܢܢ
23 ܕܝܠܟ. ܡܛܠ ܕܐܢܬܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. * ܫܪܝܪܐܝܬ ܠܕܓܠܘܬܐ ܪܡܬܐ. ܘܥܘܫܢܐ ܕܛܘܪܐ.
24 ܫܪܝܪܐܝܬ ܒܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܦܘܪܩܢܗ ܕܝܣܪܝܠ. * ܘܒܗܬܬܐ ܐܟܠܬ ܠܥܡܠܐ ܕܐܒܗܝܢ ܡܢ
25 ܛܠܝܘܬܗܘܢ. ܥܢܗܘܢ ܘܬܘܪܝܗܘܢ. ܒܢܝܗܘܢ ܘܒܢܬܗܘܢ. * ܢܕܡܟ ܒܒܗܬܬܢ.
ܘܢܟܣܝܢ ܚܣܕܢ. ܡܛܠ ܕܠܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܚܛܝܢ. ܚܢܢ ܘܐܒܗܝܢ ܡܢ ܛܠܝܘܬܢ. ܘܥܕܡܐ
ܠܝܘܡܢܐ. ܘܠܐ ܫܡܥܢ ܒܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܕ̄ *

1 * ܐܢ ܬܬܘܒ ܝܣܪܝܠ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܘܬܝ ܬܬܘܒ. ܘܐܢ ܬܥܒܪ ܛܢܦܘܬܟ ܡܢ ܩܕܡܝ ܠܐ ܬܙܘܥ.
2 ܘܬܐܡܐ ܚܝ ܗܘ ܡܪܝܐ. ܒܩܘܫܬܐ ܘܒܕܝܢܐ ܘܒܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܢܬܒܪܟܘܢ ܒܗ ܥܡܡܐ. ܘܒܗ
3 ܢܫܬܒܗܪܘܢ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܠܓܒܪܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܠܥܡܘܪܐ ܕܐܘܪܫܠܡ.
4 ܐܢܗܪܘ ܠܟܘܢ ܢܘܗܪܐ. ܘܠܐ ܬܙܪܥܘܢ ܥܠ ܟܘܒܐ. * ܓܙܘܪܘ ܠܡܪܝܐ. ܘܐܥܒܪܘ ܥܘܪܠܘܬܐ
ܕܠܒܟܘܢ. ܓܒܪܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܥܡܘܪܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܕܠܐ ܬܦܘܩ ܐܝܟ ܢܘܪܐ ܚܡܬܝ.
5 ܘܬܐܩܕ ܘܠܝܬ ܕܡܕܥܟ. ܡܛܠ ܒܝܫܘܬܐ ܕܥܒܕܝܟܘܢ. * ܚܘܘ ܒܝܗܘܕܐ. ܘܒܐܘܪܫܠܡ
ܐܫܡܥܘ ܘܐܡܪܘ. ܐܙܥܩܘ ܒܫܝܦܘܪܐ ܒܐܪܥܐ. ܩܪܘ ܒܩܠܐ ܪܡܐ ܘܐܡܪܘ. ܐܬܟܢܫܘ ܘܢܥܘܠ ܠܡܕܝܢܬܐ
6 ܥܫܝܢܬܐ. * ܐܪܝܡܘ ܐܬܐ ܠܨܗܝܘܢ. ܐܬܚܝܠܘ ܘܠܐ ܬܩܘܡܘܢ. ܡܛܠ ܕܒܝܫܬܐ ܡܝܬܐ
7 ܐܢܐ ܡܢ ܓܪܒܝܐ. ܘܬܒܪܐ ܪܒܐ. * ܡܠܟܐ ܚܣܝܢܐ ܣܠܩ ܐܝܟ ܐܪܝܐ ܡܢ ܥܒܘܒܗ. ܘܡܚܒܠܢܐ
ܕܥܡܡܐ. ܫܩܠ ܘܢܦܩ ܡܢ ܐܬܪܗ. ܠܡܣܡ ܐܪܥܟ ܠܚܘܪܒܐ: ܘܩܘܪܝܟ ܢܬܚܪܒܘܢ ܡܢ
8 ܕܠܐ ܥܡܘܪܐ. * ܡܛܠ ܗܕܐ ܐܣܘܪܘ ܣܩܐ ܘܪܩܘܕܘ ܘܐܝܠܠܘ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܦܟܬ
ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ ܡܢܟܘܢ.

Sed verè quemadmodum fallit mulier amicum ſuum, ita me fefellerunt Iſraelitæ, dicit Dominus. 20 Vox in ſemitis audita eſt, fletus & obſecratio Iſraelitarum, quòd perverterint vias ſuas, & obliti ſint Domini Dei ſui. 21 Convertimini filii revertentes, & ſanabo reverſiones veſtras. Ipſi verò dixerunt, Ecce nos tui ſumus; quoniam tu es Dominus Deus noſter. 22 Verè mendaces ſunt colles & montium moles: verè in Domino Deo noſtro eſt ſalus Iſraelis. 23 Ignominia devoravit laborem patrum noſtrorum ab eorum pueritia, greges & armenta eorum, filios ac filias eorum. 24 Nos in ignominia noſtra jacebimus, & pudor obruet nos, eò quòd in Dominum Deum noſtrũ peccaverimus tam nos quàm patres noſtri à pueritia noſtra ad hunc uſq; diem, nec audierimus vocem Domini Dei noſtri. 25

CAP. IV.

Si ad me revertaris Iſrael, ait Dominus, revertaris; & ſi amoveris abominationem tuam à conſpectu meo, non timebis: 1 Et in veritate, judicio, atque juſtitiâ jurabis per Deum vivum, & benedicent ſibi gentes in ipſo, & in ipſo gloriabuntur. 2 Sic enim dicit Dominus ad viros Judæ & habitatores Jeruſalem, Accendite vobis lucernâ, & ne feratis ſuper ſpinas: 3 Circuncidite vos Domino, & amovete præputium cordis veſtri, viri Judæ & habitatores Jeruſalem; ne prodiens tanquam ignis excandeſcentia mea, comburat ita ut nemo extinguat, propter malitiam actionum veſtrarum. 4 Notum facite in Juda, & in Jeruſalem promulgate, ac dicite; Clangite tubâ in terra, altâ voce proclamate, ac dicite, Congregamini ut ingrediamur in civitates munitas: 5 Attollite ſignum Sioni, fumite animos, & ne deſidete: nam malũ adducturus ſum ab Aquilone, & contritionem magnam. 6 Rex quidam potentiſſimus aſcenſurus eſt quaſi leo de ſylva ſua, gentéſque conſumpturus: profectus eſt & prodivit è loco ſuo, ut terram tuam redigat in deſertum: & civitates tuæ deſolabuntur ob penuriam incolarum. 7 Ob hoc cingite vos ciliciis, plangite, & ululate, quia nondum receſſit à vobis æſtus iræ Domini. 8

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

20 * لكن كما تغدر المراة بالكاين معها * هكذا غدرني بيت اسرايل يقول الرب * اصوات
21 بكاء وطلبة سمعت من شفاه بني اسرايل * لانهم ظلموا في طرقهم * نسوا الله قدوسهم *
22 * ارجعوا ايها الابناء الراجعون فاشفيكم * ها نحن عبيد نكون لك * لانك الرب الهنا *
23 * ان كانت الاكام بالحقيقة للكذب وقوة الجبال * لكن من قبل الرب الخلاص لاسرايل *
24 25 * والخزي اباد اتعاب اباينا منذ شبابهم * خرافهم وعجاجيلهم * وبنيهم وبناتهم * رقدنا في
خزينا وغطانا هواننا * من اجل انا امام الله اخطانا نحن واباونا منذ شبابنا والي هذا اليوم *
ولم نسمع صوت الرب الهنا *

* الفصل الرابع *   * الاصحاح الثالث *

1 * ان كان يرجع اسرايل الي يقول الرب فليرجع * ان كان يزيل رذالاته فيخاف من وجهه *
2 * ويقسم حي هو الرب بالحكم والحق والعدل * فيباركون به الامم وبه يسبحون لله في
3 4 ايروسليم * فلتحرثوا لهم فلاحات * ولا يزرعوا على الاشواك * تختتنون لالهنا وتزيلون
قسوة قلوبكم يا رجال يهودا والسكان في ايروسليم * ليلا يخرج مثل النار غضبي * ويوقد
5 ولا يكون من يطفي * من وجه سوء اعمالكم * اخبروا في يهودا * وليسمع في ايروسليم *
قولوا * اعملوا علامات علي الارض * اصرخوا عظيما ببوق وقولوا * اجتمعوا وادخلوا الي
6 المدن الحصينة * خذوا واهربوا الي صهيون * اسرعوا ولا تقفوا * لاني انا اجلب شرورا من
7 الجربياء وانكسارا عظيما * صعد الاسد من غابته ليفسد الامم ظعن وخرج من موضعه
8 ليصنع الارض خرابا * ويهدم المدن من ان لا تسكن * لاجل هذا اتزروا مسوحا ونوحوا
وولولوا * من اجل انه لا يرجع غضب الرب عنكم *

Verùm quemadmodum fraudat uxor comitem ſuum, ita fraudavit me domus Iſraelis, ait Dominus. 20 *Voces fletûs & deprecationis auditæ ſunt è labiis Iſraelitarum, eò quòd impiè ſe geſſerint in viis ſuis, obliti ſint Dei ſancti ſui.* 21 *Revertimini O filii averſantes, ut ſanem vos. Ecce nos ſervi tui erimus, quoniam tu es Dominus Deus noſter.* 22 *Quandoquidem colles & montium robur ſunt reverà mendacium, igitur à Domino eſt ſalus Iſraelis,* 23 *Et ignominia conſumpſit labores patrum noſtrorum inde ab eorum juventute, oves ac pecudes eorum, & filios ac filias eorum:* 24 *Jacuimus in turpitudine noſtra, & operuit nos vituperium noſtrum; eò quòd coram Deo peccaverimus tam nos quàm patres noſtri inde à juventute noſtra ad hodiernum uſque diem, nec audierimus vocem Domini Dei noſtri.* 25

CAP. IV.

Textus tertius.

Si revertatur ad me Iſrael, dicit Dominus, revertatur: ſi amoveat vitia ſua, vultum ejus reverebitur: 1 *Jurabit dicens, Vivat Dominus, in judicio, veritate, & juſtitiâ; ut ita benedicant per eum gentes, & per ipſum laudent Deum in Jeruſalem:* 2 *Arabunt ſibi arva, & non ſerent ſuper ſpinas:* 3 *Circuncidetis vos Deo noſtro, & amovebitis duritiem cordis veſtri, O viri Judæ & habitantes in Jeruſalem: ne egrediatur velut ignis furor meus, & ardeat nemine extinguente, propter nequitiam operum veſtrorum.* 4 *Annuntiate in Juda, & promulgetur in Jeruſalem, dicite; Ponite ſigna ſuper terram, altè exclamate buccinâ, & dicite; Congregamini, & ingredimini urbes munitas:* 5 *Capite fugam ad Sionem, feſtinate, ne moremini: quoniam ego adducturus ſum mala ab Aquilone, & cladem magnam.* 6 *Aſcendit leo de ſylva ſua, ut conſumat gentes; proceſſit, & exivit è loco ſuo, ut terram deſolatam reddat, urbéſque deſtruantur eò quòd non habitentur.* 7 *Propterea accingite vos ciliciis, plangite, & ejulate; quia non recedet à vobis ira Domini.* 8

ירמיה : ד

:principũ cor & , regis cor peribit , Dñs dixit , illa die in erit Et
9 והיה ביום ההוא נאם־יהוה יאבד לב־המלך ולב השרים
Ahah : dixi Et .admirabuntur prophetæ & ,ſacerdotes obſtupeſcent &
10 ונשמו הכהנים והנביאים יתמהו : ואמר אהה
:dicendo ,Jeruſalaim & , *iſti populo impoſuiſti imponendo* verè ,*Domine* Dñe
אדני יהוה אכן השא השאת לעם הזה ולירושלם לאמר
illo tempore In .animam ad uſq; gladius *pertigit* & : vobis erit Pax
11 שלום יהיה לכם ונגעה חרב עד־הנפש : בעת ההיא
,deſerto in *locis editis* ſiccus Ventus : Jeruſalaim & ,huic populo dicetur
יאמר לעם־הזה ולירושלם רוח צח שפים במדבר
plenus Ventus.purgandũ ad neq; ventilandum ad non,mei populi filiæ via
12 דרך בת־עמי לוא לזרות ולוא להבר : רוח מלא
Ecce .eis cum judicia loquar ego etiam nunc:mihi veniet *illis ab*
13 מאלה יבוא לי עתה גם־אני אדבר משפטים אותם : הנה
aquilis *præ ſunt leves* ,ejus currus turbo veluti &,aſcendet nubes tanquã
כעננים יעלה וכסופה מרכבותיו קלו מנשרים
tuum cor malitia à Lava .ſumus *devaſtati* quoniam ,nobis Væ .ejus equi
14 סוסיו אוי לנו כי שדדנו : כבסי מרעה לבך
tuo interiori in facies morari quo uſque : ſis ſalva ut , Jeruſalaim
ירושלם למען תושעי עד־מתי תלין בקרבך
facientis audire & :Dan à annuntiantis vox Nam?tuæ *injuriæ* cogitationes
15 מחשבות אונך : כי קול מגיד מדן ומשמיע
ſuper facite audire ecce : *gentibus* Memorate .Ephraim monte de iniquitatẽ
16 און מהר אפרים : הזכירו לגוים הנה השמיעו על־
civitates ſup dabunt & : longinqua terra è venientes cuſtodes Jeruſalaim
ירושלם נצרים באים מארץ המרחק ויתנו על־ערי
:circuitu à eam juxta fuerũt agrorũ cuſtodes Veluti.ſuam vocem Jehudah
17 יהודה קולם : כשמרי שדי היו עליה מסביב
: tibi hæc fecerũt *tua ſtudia* & tua Via .Dominus dixit,*exacerbavit* me quia
18 כי־אתי מרתה נאם־יהוה : דרכך ומעלליך עשו אלה לך
,*meis Viſcerib⁹* .tuũ cor ad uſque *pertigit* quia,*amarum* quia:tua malitia iſta
19 זאת רעתך כי מר כי נגע עד־לבך : מעי
non,meũ cor *mihi tumultuans*,mei cordis parietes , *torquebor meis viſceribus*
מעי אחולה קירות לבי המה־לי לבי לא
.belli clamorẽ,mea anima audiſti tubæ vocem quoniam ,tacebo
אחריש כי קול שופר שמעתי נפשי תרועת מלחמה:
repentè : terra omnis eſt vaſtata quia,eſt vocata cõtritionẽ ſuper Cõtritio
20 שבר על־שבר נקרא כי־שדדה כל־הארץ פתאום
: vexilla videbo Uſquequo .meæ cortinæ ſubitò ,mea *tentoria* ſunt vaſtata
21 שדדו אהלי רגע יריעתי : עד־מתי אראה־נס
,cognoverunt non me me⁹ popul⁹ ſtultus Quia ? tubæ vocem audiam
22 אשמעה קול שופר : כי אויל עמי אותי לא ידעו
,malefaciẽdũ ad *illi* ſapientes ,*ipſi* intelligẽtes nõ & ,*ipſi* inſipiẽtes filii
בנים סכלים המה ולא נבונים המה חכמים המה להרע
:vacua &,*inanitas* ecce & ,terram Vidi .noverũt non benefacere at
23 ולהיטיב לא ידעו : ראיתי את־הארץ והנה תהו ובהו
:*cõtremiſcẽtes* ecce & ,montes Vidi .eorũ lux non & , cœlos *ad* &
24 ואל־השמים ואין אורם : ראיתי ההרים והנה רעשים
:homo non ecce & ,Vidi .*concutiebantur* colles omnes &
25 וכל־הגבעות התקלקלו : ראיתי והנה אין האדם
Charmel ecce & , Vidi .*avolarant* cœli *volatile omne* &
26 וכל־עוף השמים נדדו : ראיתי והנה הכרמל
,DOMINI *faciebus* à erant deſtructæ ejus urbes omnes & : deſertum
המדבר וכל־עריו נתצו מפני יהוה
.ejus *naſi* iræ *faciebus* à
מפני חרון אפו :

Verſio VULG. LAT.

9 Et erit in die illa, dicit Dominus; Peribit cor regis, & cor principũ: & obſtupeſcent ſacerdotes, et prophetæ conſternabuntur. 10 Et dixi; Heu, heu, heu, Domine Deus, ergóne decepiſti populum iſtum & Jeruſalem, dicens; Pax erit vobis: & ecce pervenit gladius uſque ad animã? 11 In tempore illo dicetur populo huic & Jeruſalem; Ventus urens in viis, quæ ſunt in deſerto viæ filiæ populi mei, non ad ventilandum et ad purgandum. 12 Spiritus plenus ex his veniet mihi: & nunc ego loquar judicia mea cum eis. 13 Ecce quaſi nubes aſcendet, & quaſi tempeſtas currus ejus: velociores aquilis equi illius: væ nobis quoniam vaſtati ſumus. 14 Lava à malitia cor tuum, Jeruſalem, ut ſalva fias: uſquequò morabuntur in te cogitationes noxiæ? 15 Vox enim annuntiantis à Dan, & notum facientis idolum de monte Ephraim. 16 Dicite gentibus; Ecce auditum eſt in Jeruſalem cuſtodes venire de terra longinqua, & dare ſuper civitates Juda vocem ſuam. 17 Quaſi cuſtodes agrorum facti ſunt ſuper eam in gyro: quia me ad iracundiam provocavit, dicit Dominus. 18 Viæ tuæ, & cogitationes tuæ fecerunt hæc tibi: iſta malitia tua, quia amara, quia tetigit cor tuum. 19 Ventrem meum, ventrem meum doleo, ſenſus cordis mei turbati ſunt in me: non tacebo, quoniam vocem buccinæ audivit anima mea, clamorem prælii. 20 Contritio ſuper contritionem vocata eſt, & vaſtata eſt omnis terra: repentè vaſtata ſunt tabernacula mea, ſubitò pelles meæ. 21 Uſquequò videbo fugientem, audiam vocem buccinæ? 22 Quia ſtultus populus meus me non cognovit: filii inſipientes ſunt, & vecordes: ſapientes ſunt ut faciant mala: benè autem facere neſcierunt. 23 Aſpexi terram, & ecce vacua erat, & nihili; & cœlos, & non erat lux in eis. 24 Vidi montes, & ecce movebantur: & omnes colles conturbati ſunt. 25 Intuitus ſum, & non erat homo: & omne volatile cœli receſſit. 26 Aſpexi, & ecce Carmelus deſertus: & omnes urbes ejus deſtructæ ſunt à facie Domini, & à facie iræ furoris ejus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

9 Καὶ ἔσαι ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ, λέγει κύριος, ἀπολεῖται ἡ καρδία τοῦ βασιλέως, καὶ ἡ καρδία τῶν ἀρχόντων, καὶ οἱ ἱερεῖς (ξ) ἐκςήσονται, καὶ οἱ προφῆται θαυμάσονται. 10 Καὶ εἶπα, Ὦ δέσποτα κύριε, ἄρα γε ἀπατῶν ἠπάτησας τὸν λαὸν τοῦτον καὶ τὴν Ἱερουσαλήμ, λέγων, Εἰρήνη (ο) ἔσαι, καὶ ἰδοὺ ἥψατο ἡ μάχαιρα ἕως τῆς ψυχῆς αὐτῶν; 11 Ἐν τῷ καιρῷ (π) ἐκείνῳ ἐροῦσι τῷ λαῷ τούτῳ καὶ τῇ Ἱερουσαλήμ, Πνεῦμα πλανήσεως ἐν τῇ ἐρήμῳ, ὁδὸς τῆς θυγατρὸς τοῦ λαοῦ μου, οὐκ εἰς καθαρόν, οὐδ᾽ εἰς ἅγιον. 12 Πνεῦμα πληρώσεως ἥξει μοι· νῦν δὲ ἐγὼ λαλῶ (ρ) κρίματά μου πρὸς αὐτούς. 13 Ἰδοὺ ὡς νεφέλη ἀναβήσεται, καὶ ὡς καταιγὶς τὰ ἅρματα (σ) αὐτοῦ, κουφότεροι ἀετῶν οἱ ἵπποι (τ) αὐτοῦ. οὐαὶ ἡμῖν, ὅτι ταλαιπωροῦμεν. 14 Ἀπόπλυνε ἀπὸ κακίας τὴν καρδίαν σου Ἱερουσαλήμ, ἵνα σωθῇς. ἕως πότε (υ) ὑπάρχουσιν ἐν σοὶ διαλογισμοὶ πόνων σου; 15 Διότι φωνὴ (φ) ἀγγέλλοντος ἐκ Δὰν ἥξει, καὶ ἀκουσθήσεται πόνος ἐξ ὄρους Ἐφραίμ. 16 Ἀναμνήσατε ἔθνη, ἰδοὺ ἥκασιν· ἀναγγείλατε ἐν Ἱερουσαλήμ, συστροφαὶ ἔρχονται ἐκ γῆς μακρόθεν, καὶ ἔδωκαν ἐπὶ τὰς πόλεις Ἰούδα φωνὴν αὐτῶν. 17 Ὡς φυλάσσοντες ἀγρόν, ἐγένοντο ἐπ᾽ αὐτὴν κύκλῳ, ὅτι ἐμοῦ ἠμέλησας, λέγει κύριος. 18 Αἱ ὁδοί σου καὶ τὰ ἐπιτηδεύματά σου ἐποίησαν ταῦτά σοι· αὕτη ἡ κακία σου, ὅτι πικρά, ὅτι ἥψατο ἕως τῆς καρδίας σου. 19 Τὴν κοιλίαν μου, τὴν κοιλίαν μου ἀλγῶ, καὶ τὰ αἰσθητήρια τῆς καρδίας μου, μαιμάσσει ἡ ψυχή μου, σπαράσσεται ἡ καρδία μου. οὐ σιωπήσομαι, ὅτι φωνὴν σάλπιγγος ἤκουσεν ἡ ψυχή μου, κραυγὴν πολέμου 20 Καὶ (χ) ταλαιπωρίας, συντριμμὸν ἐπικαλεῖται, ὅτι τεταλαιπώρηκε πᾶσα ἡ γῆ, ἄφνω τεταλαιπώρηκεν (ψ) ἡ σκηνή, διεσπάσθησαν αἱ δέρρεις μου. 21 Ἕως πότε ὄψομαι φεύγοντας ἀκούων φωνὴν σαλπίγγων; 22 Διότι οἱ ἡγούμενοι τοῦ λαοῦ μου ἐμὲ οὐκ ᾔδεισαν· υἱοὶ ἄφρονές εἰσι καὶ οὐ συνετοί, σοφοί εἰσι τοῦ κακοποιῆσαι, τὸ δὲ (ω) καλῶς ποιῆσαι οὐκ ἐπέγνωσαν. 23 Ἐπέβλεψα ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ ἰδοὺ οὐθέν, καὶ εἰς τὸν οὐρανόν, καὶ οὐκ ἦν τὰ φῶτα αὐτοῦ. 24 Εἶδον τὰ ὄρη, καὶ ἦν τρέμοντα, καὶ πάντας τοὺς βουνοὺς ταρασσομένους. 25 Ἐπέβλεψα, καὶ ἰδοὺ οὐκ ἦν ἄνθρωπος, καὶ πάντα τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ ἐπτοεῖτο. 26 Εἶδον, καὶ ἰδοὺ ὁ Κάρμηλος ἔρημος, καὶ πᾶσαι αἱ πόλεις ἐμπεπυρισμέναι πυρὶ ἀπὸ προσώπου κυρίου, καὶ ἀπὸ προσώπου ὀργῆς θυμοῦ αὐτοῦ ἠφανίσθησαν.

9 Et erit in die illa, dicit Dominus; peribit cor regis, & cor principum: & obſtupeſcent ſacerdotes, & prophetæ mirabuntur. 10 Et dixi; O (e) Dominator Domine: ergóne decipiens decepiſti populum iſtum, & Hieruſalem, dicens, Pax erit; & ecce tetigit gladius uſque ad animam eorum? 11 In tempore illo dicent populo huic, & Hieruſalem; Spiritus erroris in deſerto: via filiæ populi mei non ad purum, neq; ad ſanctum: 12 Spiritus repletionis veniet mihi. Nunc autem ego loquor judicia mea adverſùs eos. 13 Ecce quaſi nubes aſcendet, et quaſi tempeſtas, currus ejus: leviores aquilis equi ejus. Væ nobis, quia miſerè vexamur. 14 Lava à malitia cor tuum Hieruſalem, ut ſalva fias. Uſquequò ſubſiſtunt in te cogitationes (f) laborum tuorũ? 15 Vox enim annuntiantis è Dan veniet: & audietur dolor de monte Ephræm. 16 Commonefacite gentes, ecce venerunt: annuntiate in Hieruſalem, catervæ veniunt de terra longinqua: & dederunt ſuper civitates Juda vocem ſuam: 17 Quaſi cuſtodes agri facti ſunt ſuper eam in circuitu: quia me neglexiſti, dicit Dominus. 18 Viæ tuæ, & adinventiones tuæ fecerunt hæc tibi: iſta malitia tua: quia amara, quia tetigit uſque ad cor tuum. 19 Ventrem meum, ventrem meum doleo, & ſenſoria cordis mei: (g) fluctuat anima mea, dilaceratur cor meum: non tacebo; quoniam vocem tubæ audivit anima mea, clamorem prælii, 20 Et miſeriæ: contritionem advocat; quia vaſtata eſt omnis terra: repentè vaſtatum eſt tabernaculum, dilaceratæ ſunt pelles meæ. 21 Uſquequò videbo fugientes, audiens vocem tubarum? 22 Quia duces populi mei me non cognoverunt. Filii inſipientes ſunt, & non intelligentes: ſapientes ſunt, ut faciant mala: benè autem facere neſcierunt. 23 Aſpexi ſuper terram; & ecce (h) nihil: & in cœlum; & non erant lumina ejus. 24 Vidi montes; & erant trementes: & omnes colles turbatos. 25 Inſpexi; et ecce non erat homo: et omnia volatilia cœli pavebant. 26 Vidi; et ecce Carmelus deſertus, et omnes civitates inflammatæ igni à facie Domini; & à facie iræ furoris ejus deletæ erant.

MS.A. (ξ) ἐκςήσονται Καὶ εἶπαν, (ο) ἔσαι ὑμῖν, καὶ ἥψατο (π) τούτῳ (ρ) κρίματα πρὸς αὐτούς. (σ) αὐτῶν, (τ) αὐτῶν. οὐαὶ ὑμῖν, (υ) ὑπάρξουσιν (φ) ἀναγγέλλοντος (χ) ταλαιπωρίαν καὶ συντριμμὸν (ψ) σκηναὶ (ω) καλὸν ποιοῦντες οὐκ ἔγνωσαν.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

9 ויהי בעדנא ההיא אמר יי יתבר לבא דמלכא ולבא דרברביא ויצדון כהניא ונביי שקרא
10 ישתעממון : ואמרית קביל בעותי יי אלהים בכן הא נביי שקרא מטען לעמא הדין
11 וליתבי ירושלם למימר שלמא יהי לכון וכען הא חרבא מקטלא בעמא : בעדנא ההיא
יתאמר לעמא הדין וליתבי ירושלם כרוח טיהרין על רישי נגדין דמיין במדברא כן
12 אורח כנשתא דעמי לא למדרי ולא לבדרא : על דטעו בתר נביי שקרא דמתנבן להון
ברוח דשקר בכן משרית עממיא מאלין קלילין כרוחא ייתון עליהון כען אף במימרי
13 איתנון ואמלל פורענות דיני מנהון : הא מלך במשריתיה יסק עליהון כעננא דסליק
וחפיית ארעא וכעלעולין רתיכוהי קלילין מנשריא סוסותיה וי לנא ארי אתי למבזנא :
14 אתחורי מלמעבד בישא לבך ירושלם בדיל דתתפרקין עד אימתי יורכון ויתקימון עבדי
15 אונס די בגויך : ארי קל נבייא דמתנבן עליהון דיגלון על דפלחו לעגלא די בדן ומבסרי
בסורן בישן ייתון עליהון על דאשתעבדו לצלמא דאקים מיכה בטורא דבית אפרים :
16 אדכרו לעממיא הא בשרו על ירושלם אמרו משרית עממין חטופין כקטופין אתן
17 מארע רחיקא וישרון על קרויא דבית יהודה וירימון עליהון קלהון : כנטרי חקלן הוו
18 עלה מסחור סחור ארי על מימרי סרבת אמר יי : ארחתך בישתא ועובדך מקלקליא
19 גרמו אלין ליך דא בישתא ומררא איתי עלך ירושלם עד דאתבר רשע לביך : אמר נביא
מעי מעי כיבין לי זע סמך לבי המי לי לבי לא שתק ארי קל צוחת קרנא שמעת נפשי
20 יבבות עבדי קרבא : תברא על תברא יתערע ארי אתבזיזת כל ארעא בתכף חרובת
21 22 ארעי זמן חדא כל קרוי : עד אימתי אנא חזי סימן אשמע קל קרנא : ארי אטפשו עמי
מדע דחלתי לא אליפו בנין טפשין אנון ולא סוכלתנין אנון חכימין אנון לאבאשא
23 ולאוטבא לית אנון ידעין : חזיתי ית ארעא הא צדיא ורקניא אסתכלית בשמיא והא לא
24 25 מזהרין נהוריהון : חזיתי טוריא והא זיעין וכל רמתא אתפרקא : חזיתי והא לית עמא שרי
26 עלה וכל עופא דשמיא אטלטלו : חזיתי והא ארעא דישראל דהוה מנצבא ככרמלא
תבת למהוי כמדברא וכל קרוהא צדיאה מן קדם יי מן קדם תקוף רוגזיה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et erit in tempore illo, dicit Dñs, conteretur cor regis & cor principum, & 9
vaſtabuntur ſacerdotes, & prophetæ falſi conturbabuntur. Et dixi: Suſcipe 10
deprecationem meam Dñe Deus: certè ecce prophetæ *falſi* decipiunt populũ
iſtum & *habitatores* Jeruſalem dicentes: Pax erit vobis: & nunc ecce
gladi⁹ occîdit in populo. In tempore illo dicetur populo huic, & *habitatorib⁹* 11
Jeruſalem; Quaſi ventus meridian⁹ ſuper capita fluentorũ aquarum in
deſerto, ſic eſt via congregationis populi mei, non ad ventilandũ nec ad diſpergendum:
Pro eo quòd erraverunt, ſequentes falſos prophetas, qui pro- 12
phetabant eis in ſpiritu falſitatis: propterea exercit⁹ populorũ leviores his
ſicut vent⁹ venient contra eos. Nunc enim in verbo meo adducam eos, &
loquar ultionem judiciorũ meorũ de eis. Ecce rex cum exercitu ſuo aſcen- 13
det ſuper eos ſicut nubes quæ aſcendit & operit terram: & quaſi turbines
curr⁹ ejus, & velociores aquilis equi ej⁹: væ nobis, quia venit ad vaſtandum
nos. Munda cor tuũ ne facias malũ, Jeruſalem, ut ſalva fias: quouſque dura- 14
bunt & ſtabiles erunt violenti qui ſunt in te? Quia vox prophetarũ qui pro- 15
phetant adverſùm eos qui migraverunt *eò quòd coluerunt* vitulũ qui eſt in
Dan, & *nuntiantes* annuntiationes malas venient ſuper eos, eò quòd ſervi-
erunt ſimulachro quod erexerat Michæas in monte dom⁹ Ephraim. Com- 16
memorate populis, & annuntiate Jeruſalem: dicite; Exercit⁹ populorũ diri-
pientiũ quaſi vindemiatores veniunt de terra longinqua, & caſtrametabun-
tur ſuper civitates dom⁹ Juda; & tollent ſuper eas vocẽ ſuã. Quaſi cuſtodes 17
agrorũ fuerũt ſuper eam per circuitũ, quia contra Verbũ meum rebellavit,
dicit Dñs. Viæ tuæ peſſimæ, & opera tua cauſata ſũt hæc tibi: Iſta malitia & 18
amaritudo induxit ſuper te Jeruſalẽ, donec contereretur impietas cordis tui.
Dicit Propheta: Viſcera mea, viſcera mea dolent mihi: mota eſt ſuſtentatio 19
cordis mei; rugit in me cor meũ, nec tacet, quia vocẽ clamoris tubæ corneæ
audivit anima mea, ululationẽ bellatorũ. Confractio ſuper confractionem 20
accidit, quia direpta eſt omnis terra; ſubitò deſolata eſt terra mea, in tem-
pore uno oẽs civitates meæ. Quando videbo ego ſigna, audiam vocẽ cornu? 21
Quia inſipientes facti ſunt popul⁹ me⁹; ſcire timorẽ meũ non didicerũt: filii 22
inſipientes ſunt, & non intelligẽtes: ſapientes ſũt ut malè faciãt, bene autẽ
facere neſciũt. Vidi terrã, & ecce deſerta & vacua: contemplat⁹ ſum in cœ- 23
los, & ecce non ſplendebãt luminaria eorũ. Vidi montes, et ecce movebãtur, 24
& oẽs colles ſubvertebãtur. Vidi, & ecce non erat popul⁹ habitans in ea, & 25
omnia volatilia cœli migraverant. Vidi, & ecce terra Iſrael quæ erat plan- 26
tata ſicut Carmelus, converſa eſt ut eſſet ſicut deſertum, & omnes urbes
ejus vaſtatæ ſunt à facie Domini, à facie iræ furoris ejus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܢܐܒܕ ܠܒܐ ܕܡܠܟܐ܂ ܘܠܒܐ ܕܫܠܝܛܢܐ܂ ܘܢܬܕܡܪܘܢ 9
ܟܗܢܐ܂ ܘܢܒܝܐ ܢܬܡܗܘܢ܂ * ܘܐܡܪܬ܂ ܒܒܥܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ܂ ܫܪܝܪܐܝܬ ܡܛܥܝܘ ܛܥܝܬ 10
ܠܥܡܐ ܗܢܐ ܘܠܐܘܪܫܠܡ܂ ܘܐܡܪܬ܂ ܫܠܡܐ ܢܗܘܐ ܠܟܘܢ܂ ܘܗܐ ܡܛܬ ܣܝܦܐ ܥܕܡܐ ܠܢܦܫܐ܂
* ܒܗ ܒܙܒܢܐ ܗܘ܂ ܢܬܐܡܪ ܠܥܡܐ ܗܢܐ ܘܠܐܘܪܫܠܡ܂ ܐܝܟ ܪܘܚܐ ܛܥܝܐ ܕܒܫܒܝܠܐ 11
ܕܡܕܒܪܐ܂ ܐܘܪܚܗ ܕܒܪܬ ܥܡܝ܂ ܠܐ ܠܡܕܪܝܘ܂ ܘܠܐ ܠܡܟܢܫܘ܂ * ܪܘܚܐ ܕܡܠܝܐ ܡܢ ܗܠܝܢ ܐܬܐ ܠܝ܂ 12
ܗܫܐ ܐܦ ܐܢܐ ܡܡܠܠ ܐܢܐ ܕܝܢܐ ܥܡܗܘܢ܂ * ܗܐ ܐܝܟ ܥܢܢܐ ܣܠܩ܂ ܘܐܝܟ ܥܠܥܠܐ ܡܪܟܒܬܗ܂ 13
ܩܠܝܠܝܢ ܡܢ ܢܫܪܐ ܪܟܫܘܗܝ܂ ܘܝ ܠܢ ܕܐܬܒܙܙܢ܂ * ܚܠܠܝ ܠܒܟܝ ܡܢ ܒܝܫܬܐ ܐܘܪܫܠܡ 14
ܡܛܠ ܕܬܬܦܪܩܝܢ܂ ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܢܒܘܬܢ ܒܓܘܟܝ ܡܚܫܒܬܟܝ ܒܝܫܬܐ܂ * ܡܛܠ 15
ܕܩܠܐ ܕܡܒܣܪ ܡܢ ܕܢ܂ ܘܡܫܡܥ ܐܘܠܨܢܐ ܡܢ ܛܘܪܐ ܕܐܦܪܝܡ܂ * ܐܕܟܪܘ ܠܥܡܡܐ܂ ܘܐܫܡܥܘ 16
ܠܐܘܪܫܠܡ܂ ܗܐ ܟܢܫܐ ܕܥܡܡܐ ܐܬܝܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܪܚܝܩܬܐ܂ ܘܢܪܝܡܘܢ ܩܠܗܘܢ ܥܠ ܩܘܪܝܐ
ܕܝܗܘܕܐ܂ * ܐܝܟ ܢܛܘܪܝ ܚܩܠܐ܂ ܗܘܘ ܥܠܝܗ ܡܢ ܚܕܪܝܗ܂ ܡܛܠ ܕܠܝ ܡܪܡܪܬܢܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ 17
* ܐܘܪܚܬܟܝ ܘܥܒܕܝܟܝ܂ ܥܒܕܘ ܠܟܝ ܗܠܝܢ܂ ܗܕܐ ܒܝܫܘܬܟܝ ܕܡܪܝܪܐ ܘܡܛܬ ܥܕܡܐ 18
ܠܠܒܟܝ܂ * ܡܥܝ ܡܥܝ ܟܐܒܝܢ ܠܝ܂ ܘܫܘܠܝ ܠܒܝ܂ ܠܒܝ ܡܬܥܙܙ ܠܝ ܘܠܐ ܫܠܐ܂ 19
ܡܛܠ ܕܩܠܐ ܕܫܝܦܘܪܐ ܫܡܥܬ ܢܦܫܝ܂ ܘܩܥܬܐ ܕܩܪܒܐ܂ * ܬܒܪܐ ܥܠ ܬܒܪܐ ܐܬܐ܂ ܡܛܠ 20
ܕܐܬܒܙܙܬ ܟܠܗ ܐܪܥܐ܂ ܡܢ ܫܠܝ ܐܬܒܙܙܘ ܡܫܟܢܝ܂ ܘܢܦܠܘ ܝܪܝܥܬܝ܂ * ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܐܚܙܐ 21
ܠܥܪܘܩܐ܂ ܘܐܫܡܥ ܩܠܐ ܕܫܝܦܘܪܐ܂ * ܡܛܠ ܕܣܟܠܘ ܥܡܝ܂ ܘܠܝ ܠܐ ܝܕܥܘ܂ ܒܢܝܐ ܣܟܠܐ ܐܢܘܢ܂ 22
ܘܠܐ ܗܘܘ ܣܟܘܠܬܢܐ܂ ܚܟܝܡܝܢ ܐܢܘܢ ܠܡܒܐܫܘ܂ ܘܠܡܛܒܘ ܠܐ ܝܕܥܘ܂ * ܚܙܝܬ ܠܐܪܥܐ܂ 23
ܘܗܐ ܬܘܗ ܘܒܘܗܘ܂ ܘܠܫܡܝܐ܂ ܘܠܝܬ ܢܘܗܪܗܘܢ܂ * ܚܙܝܬ ܠܛܘܪܐ ܘܗܐ ܙܝܥܝܢ܂ ܘܟܠܗܘܢ 24
ܪܡܬܐ ܐܬܦܪܩܘ܂ * ܚܙܝܬ ܘܗܐ ܠܝܬ ܒܪܢܫܐ܂ ܘܟܠܗ ܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ ܥܪܩܬ܂ 25
* ܚܙܝܬ ܘܗܐ ܟܪܡܠܐ ܚܪܝܒ܂ ܐܝܟ ܡܕܒܪܐ܂ ܘܟܠܗܘܢ ܩܘܪܘܗܝ ܐܬܚܪܒܘ܂ ܡܢ ܩܕܡ 26
ܡܪܝܐ܂ ܘܡܢ ܩܕܡ ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ܂

Erit enim illo die, dicit Dñs, interibit animus 9
regis & animus principum, obſtupeſcent ſacerdotes,
& prophetæ mirabuntur. Ego verò 10
dixi, Obſecro DñeDeus, profectò *dicar* omnino
decepiſſe populum hunc & Jeroſolymam:
dixeram enim, Pax erit vobis; ecce tamen
pertigit gladius ad animam uſque. Eodem 11
tempore dicetur huic populo & Jeroſolymæ,
Qualis eſt ſpiritus oberrans per ſemitas deſerti,
talis eſt via filiæ populi mei, non ad ventilandum,
neque ad recondendum *fruges*.
Spiritus hiſce perfectior adveniet mihi: quapropter 12
ego etiam proponam eis lites meas.
Ecce tanquam nubes aſcenſurus eſt, & turbini 13
ſimiles erunt currus ejus, celeriores aquilis
equi ejus: væ nobis, quia direpti ſumus, Ablue 14
à malitia cor tuum Jeruſalem, ut ſerveris:
quouſq; tandem pernoctabunt in præcordiis
tuis cogitationes tuæ malignæ? Nam vox quæ 15
indicat è Dan, dolorem etiam prædicat è
monte Aphremi. Commemorate gentibus, 16
& prædicate Jeroſoymæ, *quòd* ecce turbæ populorum
venient è terra longinqua, & attollent
vocem ſuam contra civitates Judæ. Ut 17
cuſtodes agrorum undique obſederunt eam,
quia exaſperavit me, dicit Dominus. Viæ tuæ 18
& actiones tuæ hæc tibi produxerunt: hæc
eſt nequitia tua, quæ amara facta pervenit
uſque ad cor tuum, Viſcera mea, viſcera mea 19
doleo, & præcordia mea: cor meum ſubſilit
mihi, cor *inquam* meũ indeſinenter; quia tubæ
ſonitum audivit anima mea, & clangorem
belli. Contritio ſuper contritionem veniet; 20
nam diripienda eſt univerſa terra, repentina
præda capietur tentorium meum, & corruent
aulæa mea. Quouſq; viſurus ſum fugientem, 21
& tubæ ſonitum auditurus? Eò quòd deſipuerint 22
populus meus, & me non cognoverint,
filii ſint ſtulti, non autem ſapientes; ſapientes
quidem ſint ad malum, bonum autem
non agnoſcant: Aſpexi terram, & ecce 23
vacua eſt atque deſerta; cœlos, & abeſt
lumen eorum: Aſpexi montes, & ecce contremiſcunt, 24
& omnes colles procul abſceſſerunt.
Intuitus ſum, & nullus eſt homo: imò 25
omnes cœli volucres receſſerunt. Aſpexi, & 26
ecce Charmelus vaſtatus eſt quaſi deſertum,
& omnes civitates ejus abraſæ: *idque* à facie
Domini, & à facie æſtûs furoris ejus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ويكون في ذلك اليوم يقول الرب* يهلك قلب الملك وقلب الرؤساء* والكهنة يتحيرون* وقالوا 9 10
ايها السيد الرب خداعا اخدعت هذا الشعب اذن ولايروشليم قايلا يكون لكم السلم *
فلمس السيف حتى نفسهم * في هذا الوقت يقولون لهذا الشعب ولايروشليم* روح ضلالة في 11
البرية طريق ابنة شعبي* ليست للطهر ولا للقدس * روح كامل ياتي لي * والان انا اتكلم معهم 12
بالاحكام * ها مثل سحابة يصعد* ومثل عاصف مركباته* خيوله اخف من النسور* الويل لنا 13
لانا نشقا* لتغسلي من الشر قلبك يا ايروشليم لكي تخلصي* الى متى افكار اوجاعك موجوده 14
فيك * من اجل ان صوت المخبر ياتي من دان* ويسمع الوجع من جبل افرام * اذكروا ايها 15 16
الامم* ها اتوا* اخبروا في ايروشليم* الترجيعات ياتي من ارض بعيدة* واعطوا على مدن يهودا
صوتهم * مثل حارس حقل صاروا عليها من حولها* لانك تكاسلت عني يقول الرب* طرقك 17 18
واعمالك صنعت هذه لك* وهذا شرك لانه مر انه لمس حتى قلبك* بطني بطني اتوجع* وحاسات 19
قلبي تعض نفسي* اتصرع قلبي* لست اسكت* لان نفسي سمعت صوت البوق* صرخة
الحرب* وسحقا وانكسارا يدعوا* لان الارض كلها شقيت بغتة* شقيت قبابي* مزقت وسقائفي* 20
* الى متى انظر الهاربين* واسمع صوت الابواق* من اجل ان مقدمي شعبي لم يعرفوني* 21 22
بنون جهال هم وليسوا فهماء* هم حكماء ليصنعوا الشر ولم يعرفوا ان يصنعوا الخير* نظرت 23
الارض واذا لا شي* والى السماء فلم تكن انوارها * نظرت الجبال وهي مرتعدة* وجميع 24
الاكام قلقة * ونظرت واذا لم يكن انسان* وجميع طيور السماء جزعت * نظرت واذا 25 26
الكرمل برية* وجميع المدن محرقة بالنار* من وجه الرب ومن زجر غضبه فنيوا*

Erit ſiquidem illâ die, dicit Dominus, ut 9
pereat animus regis & animus principum,
& ſacerdotes obſtupeſcant, Ac dicant, 10
Heus heus Domine, ergóne planè decepiſti
populum iſtum & Jeruſalem, dicens;
Erit vobis ſalus; quum tetigerit
gladius vel ipſam animam eorum? Tunc 11
temporis dicent huic populo & Jeroſolymæ,
Spiritus eſt erroris in deſerto viâ
filiæ populi mei, non ad puritatem, neque
ad ſanctitatem. Spiritus perfectionis 12
adveniet mihi, ac jam pronuntiabo eis judicia:
Ecce nubis inſtar aſcenſurus eſt, 13
& turbinis inſtar erunt currus ejus, equi
ejus velociores aquilis: væ nobis, quia vexandi
ſumus. Lava pravitate cor tuum O 14
Jeruſalem, ut evadas; quouſque cogitationes
dolorum tuorum te occupabunt? Nam 15
vox præconis ventura eſt è Dan, &
prædicabitur dolor è monte Aphremi.
Recordamini O populi: ecce venerunt: 16
annuntiate in Jeruſalem: repercuſſiones
vocis veniunt è terra longinqua: ediderunt
contra urbes Judæ vocem ſuam:
ut agri cuſtos circundederunt eam undique. 17
Quia me neglexiſti, dicit Dominus,
Viæ tuæ & actiones tuæ hæc tibi 18
fecerunt: & hæc malitia tua, quia amara
eſt, vel ipſum cor tuum tetigit. Ventrem 19
meum, ventrem meum doleo, &
præcordia cordis mei mordent animam
meam, conſternatus eſt animus meus, haud
ſileo; quia anima mea audivit clangorem
buccinæ, clamorem belli, Miſeriam & 20
contritionem proclamari; quòd tota terra
affligenda ſit repentè, affligenda tentoria
mea, & aulæa mea laceranda. Quouſque 21
viſurus ſum fugientes, & clangorem
buccinarum auditurus? Quia præpoſiti 22
populi mei me minimè nôrunt, filii
ſunt inſipientes, non autem prudentes;
ſunt periti in agendis malis, ignari verò
benefaciendi. Terram aſpexi, & ecce 23
nihil; cœlum, & non aderant ejus lumina.
Cùm aſpicio montes, trepidi 24
ſunt, omnéſque colles perturbati. Aſpexi 25
quoque, & ecce nullus erat homo, quin
omnes cœli volucres conterritæ ſunt.
Aſpexi, & ecce Charmelus erat ſolitudo, 26
& omnes urbes igni exuſtæ; à facie
Domini, & à facie iræ furoris ejus
conſumpti ſunt.

יִרְמְיָה : ה

: terra omnis erit Deſerta : Dominus dixit ſic Nam
27 כִּי־כֹה אָמַר יְהוָה שְׁמָמָה תִהְיֶה כָּל־הָאָרֶץ
, terra *lugebit* hoc Propter .faciam non conſummationem ſed
28 וְכָלָה לֹא אֶעֱשֶׂה׃ עַל־זֹאת תֶּאֱבַל הָאָרֶץ
non & ,cogitavi,ſum locutus quod *ſuper* : deſuper cœli *nigreſcent* &
וְקָדְרוּ הַשָּׁמַיִם מִמָּעַל עַל כִּי־דִבַּרְתִּי זַמֹּתִי וְלֹא
, arcu jacientis & *equitis* voce A .eo ab avertar nec ,me pœnituit
29 נִחַמְתִּי וְלֹא־אָשׁוּב מִמֶּנָּה׃ מִקּוֹל פָּרָשׁ וְרֹמֵה קֶשֶׁת
.aſcenderunt rupes ad & , *condenſa* in ſunt ingreſſi ; *civitas* omnis *fugiens*
בֹּרַחַת כָּל־הָעִיר בָּאוּ בֶּעָבִים וּבַכֵּפִים עָלוּ
tu Et .quiſquam eis in *habitans* non & , eſt derelicta civitas Omnis
30 כָּל־הָעִיר עֲזוּבָה וְאֵין־יוֹשֵׁב בָּהֵן אִישׁ׃ וְאַתְּ
ornamento te *ornabis* quia : coccino te *indues* quia ? facies quid vaſtata
שָׁדוּד מַה־תַּעֲשִׂי כִּי־תִלְבְּשִׁי שָׁנִי כִּי־תַעְדִּי עֲדִי־
reprobaverunt :*te decorabis vanum in* ,tuos oculos *fuco in* *ſcindes* quia , *auri*
זָהָב כִּי־תִקְרְעִי בַפּוּךְ עֵינַיִךְ לַשָּׁוְא תִּתְיַפִּי מָאֲסוּ־
parturientis tanquam vocem Quippe .quærent tuam animã ,amatores te *in*
31 בָךְ עֹגְבִים נַפְשֵׁךְ יְבַקֵּשׁוּ׃ כִּי קוֹל כְּחוֹלָה
expandet,*conqueretur* ; Sijon filiæ vocem ,*primiparæ* ut anguſtiam , audivi
שָׁמַעְתִּי צָרָה כְּמַבְכִּירָה קוֹל בַּת־צִיּוֹן תִּתְיַפֵּחַ תְּפָרֵשׂ
.*interfectoribus* mea anima *eſt laſſata* quia ,mihi nunc Væ : ſuas *volas*
כַּפֶּיהָ אוֹי־נָא לִי כִּי־עָיְפָה נַפְשִׁי לַהֹרְגִים׃

CAP. V. ה

quærite & ,ſcitote & , nunc videte & ,Jeruſalaim plateis in *Diſcurſate*
1 שׁוֹטְטוּ בְּחוּצוֹת יְרוּשָׁלַםִ וּרְאוּ־נָא וּדְעוּ וּבַקְשׁוּ
; judicium *faciens* ſit an , virum inveniatis an , ejus plateis in
בִרְחוֹבוֹתֶיהָ אִם־תִּמְצְאוּ אִישׁ אִם־יֵשׁ עֹשֶׂה מִשְׁפָּט
,dixerint Dominus *vivens* ſi Et .ei parcam & : veritatem *quærens*
2 מְבַקֵּשׁ אֱמוּנָה וְאֶסְלַח לָהּ׃ וְאִם חַי־יְהוָה יֹאמֵרוּ
? *veritatem* ad nónne tui oculi Domine .jurabunt *vanum in ideo*
3 לָכֵן לַשֶּׁקֶר יִשָּׁבֵעוּ׃ יְהוָה עֵינֶיךָ הֲלוֹא לֶאֱמוּנָה
accipere renuerunt,eos conſumpſiſti : doluerunt non & , eos percuſſiſti
הִכִּיתָה אֹתָם וְלֹא־חָלוּ כִּלִּיתָם מֵאֲנוּ קַחַת
ego Et .reverti renuerunt ;petra *præ ſuas* facies *roboraverunt* : diſciplinam
4 מוּסָר חִזְּקוּ פְנֵיהֶם מִסֶּלַע מֵאֲנוּ לָשׁוּב׃ וַאֲנִי
viam noverunt non quia:ſunt facti ſtulti;*ipſi tenues Verumtamen* , dixi
אָמַרְתִּי אַךְ־דַּלִּים הֵם נוֹאֲלוּ כִּי לֹא יָדְעוּ דֶּרֶךְ
, *magnates* ad mihi Ibo .ſui Dei judicium ,Domini
5 יְהוָה מִשְׁפַּט אֱלֹהֵיהֶם׃ אֵלְכָה־לִּי אֶל־הַגְּדֹלִים
judicium , Domini viam cognoverunt ipſi quippe ; eos alloquar &
וַאֲדַבְּרָה אוֹתָם כִּי הֵמָּה יָדְעוּ דֶּרֶךְ יְהוָה מִשְׁפַּט
.vincula *evulſerunt*,jugum confregerunt ſimul ipſi *veruntamen* : ſui Dei
אֱלֹהֵיהֶם אַךְ הֵמָּה יַחְדָּו שָׁבְרוּ עֹל נִתְּקוּ מוֹסֵרוֹת׃
, eos vaſtabit *deſertorum* lupus , ſylva de leo eos percuſſit Idcirco
6 עַל־כֵּן הִכָּם אַרְיֵה מִיַּעַר זְאֵב עֲרָבוֹת יְשָׁדְדֵם
: rapietur eis ex *egrediens* omnis ,eorum civitates ſuper *vigilans* pardus
נָמֵר שֹׁקֵד עַל־עָרֵיהֶם כָּל־הַיּוֹצֵא מֵהֵנָּה יִטָּרֵף
.eorum *averſiones invaluerunt*,ſuæ prævaricationes ſe multiplicaverunt quia
כִּי רַבּוּ פִּשְׁעֵיהֶם עָצְמוּ מְשֻׁבוֹתֵיהֶם׃
juraverunt & , me dereliquerunt tui filii ? tibi parcam hoc *ad Ubi*
7 אֵי לָזֹאת אֶסְלוֹחַ־לָךְ בָּנַיִךְ עֲזָבוּנִי וַיִּשָּׁבְעוּ
domo & :commiſerunt adulterium & ,eos ſaturavi & *: Deum* non per
בְּלֹא אֱלֹהִים וָאַשְׂבִּעַ אוֹתָם וַיִּנְאָפוּ וּבֵית
,erant manè *paſti* Equi .*turmatim* ſe congregabant meretricis
8 זוֹנָה יִתְגּוֹדָדוּ׃ סוּסִים מְיֻזָּנִים מַשְׁכִּים הָיוּ
.hinniebant ſui *ſocii* uxorem ad unuſquiſque
אִישׁ אֶל־אֵשֶׁת רֵעֵהוּ יִצְהָלוּ׃

Verſio VULG. LAT.

27 Hæc enim dicit Dominus; Deſerta
erit omnis terra, ſed tamen
28 conſummationẽ non faciam. Lugebit terra, & mœrebunt cœli
deſupér : eò quòd locutus ſum,
cogitavi, & non pœnituit me,
29 nec averſus ſum ab eo. A voce
equitis & mittentis ſagittam, fugit omnis civitas : ingreſſi ſunt
ardua, & aſcenderunt rupes:univerſæ urbes derelictæ ſunt,et non
30 habitat in eis homo. Tu autem
vaſtata quid facies?cùm veſtieris
te coccino, cùm ornata fueris
monili aureo, & pinxeris ſtibio
oculos tuos, fruſtrà componêris;
contempſerunt te amatores tui,
31 animam tuam quærent. Vocem
enim quaſi parturientis audivi,
anguſtias ut puerperæ : vox filiæ
Sion intermorientis, expandentíſque manus ſuas; Væ mihi,quia
defecit anima mea propter interfectos.

CAP. V.

1 Circuite vias Jeruſalem, &
aſpicite, & conſiderate, & quærite in plateis ejus, an inveniatis
virum facientem judicium, &
quærentem fidem: & propitius
2 ero ei. Quòd ſi etiam, Vivit
Dominus,dixerint : & hoc falsò
3 jurabunt. Domine,oculi tui reſpiciunt fidem : percuſſiſti eos,
& non doluerunt:attriviſti eos,
& renuerunt accipere diſciplinam : induraverunt facies ſuas
ſupra petram, & noluerunt re-
4 verti. Ego autem dixi; Forſitan
pauperes ſunt & ſtulti, ignorantes viam Domini, judicium Dei
5 ſui. Ibo igitur ad optimates,
& loquar eis : ipſi enim cognoverunt viam Domini, judicium
Dei ſui : & ecce magis hi ſimul
confregerunt jugum, ruperunt
6 vincula. Idcircò percuſſit eos
leo de ſylva, lupus ad veſperam
vaſtavit eos, pardus vigilans ſuper civitates eorum : omnis, qui
egreſſus fuerit ex eis, capietur;
quia multiplicatæ ſunt prævaricationes eorum, confortatæ ſunt
7 averſiones eorum. Super quo
propitius tibi eſſe potero? filii
tui dereliquerunt me, & jurant
in his qui non ſunt dii : ſaturavi
eos, & mœchati ſunt, & in domo meretricis luxuriabantur.
8 Equi amatores & emiſſarii facti
ſunt : Unuſquiſque ad uxorem
proximi ſui hinniebat.

Verſió GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

27 Τάδε λέγει κύριος, Ἔρημος ἔσται πᾶσα
28 ἡ γῆ, συντέλειαν δὲ οὐ μὴ ποιήσω. Ἐπὶ
τούτοις πενθείτω ἡ γῆ, καὶ συσκοτασάτω
ὁ οὐρανὸς ἄνωθεν· διότι ἐλάλησα, καὶ οὐ
μετανοήσω, ὥρμησα, καὶ οὐκ ἀποστρέψω ἀπ᾽
29 αὐτῆς. Ἀπὸ φωνῆς ἱππέως, καὶ ἐντεταμένου τόξου ἀνεχώρησε (α) πᾶσα ἡ χώρα·
εἰσέδυσαν εἰς τὰ σπήλαια, καὶ εἰς τὰ ἄλση
ἐκρύβησαν, καὶ (β) ἐπὶ τὰς πέτρας ἀνέβησαν.
πᾶσα πόλις ἐγκατελείφθη, οὐ (γ) κατοικεῖ
30 ἐν αὐταῖς ἄνθρωπος. Καὶ σὺ τί ποιήσεις; ἐὰν περιβάλῃ κόκκινον, καὶ κοσμήσῃ
κόσμῳ χρυσῷ· (δ) ἐὰν ἐγχρίσῃ στίβι τοὺς
ὀφθαλμούς σου, (ε) εἰς μάταιον ὡραϊσμός
σου. ἀπώσαντό σε οἱ ἐρασταί σου, τὴν ψυ-
31 χήν σου (ζ) ζητοῦσιν. Ὅτι φωνὴν ὡς ὠδινούσης ἤκουσα τοῦ στεναγμοῦ σου, ὡς πρωτοτοκούσης. φωνὴ θυγατρὸς Σιὼν ἐκλυθήσεται, καὶ παρήσει τὰς χεῖρας αὐτῆς· (η)
Οἴμοι ἐγώ, ὅτι ἐκλείπει ἡ ψυχή μου ἐπὶ
τοῖς ἀνῃρημένοις.

Hæc dicit Dominus; Deſerta erit 27
omnis terra : conſummationem autem non faciam. Super his lugeat 28
terra,& contenebreſcat cœlum deſupér: eò quòd loquutus ſum, &
non me pænitebit : aggreſſus ſum,
& non avertam me ab ea. A voce 29
equitis, & intenti arcûs, receſſit omnis regio. Ingreſſi ſunt in
ſpeluncas,& in nemora ſe abſconderunt, & ſuper petras aſcenderunt : Omnis civitas derelicta eſt:
non (i) habitabat in eis homo.(k)
Et tu, quid facies? ſi circundederis tibi coccinum, & ornaveris te 30
ornatu aureo, ſi unxeris ſtibio oculos tuos; in vanum pulchritudo
tua. Repulerunt te amatores tui :
animam tuam quærunt: Quia vocem quaſi parturientis audivi, gemitum tuum quaſi primò parientis. 31
Vox filiæ Sion diſſolvetur: & dimittet manus ſuas; Heu mihi,
quia deficit anima mea ſuper interfectis.

MS.A. (α) πᾶσα χώρα· (β) εἰς (γ) κατοικήσει (δ) καὶ ἐὰν ἐγχρίσῃ στίμῃ (ε) εἰς μάτην ὁ ὡραϊσμός (ζ) ζητήσουσιν. (η) Ὤμμοι

ΚΕΦ. ε'.

1 Περιδράμετε ἐν ταῖς ὁδοῖς Ἱερουσαλήμ,
καὶ ἴδετε, καὶ γνῶτε, καὶ ζητήσατε ἐν ταῖς
πλατείαις αὐτῆς, ἐὰν εὕρητε, εἰ ἔστι ποιῶν κρίμα, καὶ ζητῶν πίστιν, καὶ ἵλεως ἔσο-
2 μαι αὐτοῖς, λέγει κύριος. Ζῇ κύριος,
λέγουσι, διατοῦτο οὐκ (α) ἐν ψεύδεσιν ὀμνύ-
3 ουσι; (β) Κύριε οἱ ὀφθαλμοί σου εἰς πίστιν·
ἐμαστίγωσας αὐτούς, καὶ (γ) οὐκ ἐπόνεσαν,
συνετέλεσας αὐτούς, καὶ οὐκ ἠθέλησαν δέξασθαι παιδείαν· (δ) ἐστερέωσαν τὰ πρόσωπα αὐτῶν ὑπὲρ πέτραν, καὶ οὐκ ἠθέλησαν
4 ἐπιστραφῆναι. Καὶ ἐγὼ εἶπα, Ἴσως πτωχοί εἰσι, (ε) διότι οὐκ ἐδυνάσθησαν, ὅτι οὐκ
5 ἔγνωσαν ὁδὸν κυρίου, καὶ κρίσιν θεοῦ. Πορεύσομαι πρὸς τοὺς ἁδρούς, καὶ λαλήσω (ζ)
αὐτοῖς, ὅτι αὐτοὶ ἐπέγνωσαν ὁδὸν κυρίου,
καὶ κρίσιν θεοῦ· καὶ ἰδοὺ ὁμοθυμαδὸν συνέ-
6 τριψαν ζυγόν, διέρρηξαν δεσμούς. Διατοῦτο ἔπαισεν αὐτοὺς λέων (η) ἐκ τοῦ δρυμοῦ, καὶ λύκος ἕως τῶν οἰκιῶν (θ) ὠλόθρευσεν αὐτούς, καὶ πάρδαλις ἐγρηγόρησεν ἐπὶ
τὰς πόλεις αὐτῶν. πάντες οἱ ἐκπορευόμενοι ἀπ᾽ αὐτῶν (ι) θηρευθήσονται, ὅτι ἐπλήθυναν ἀσεβείας αὐτῶν, (κ) ἴσχυσαν ἐν
7 ταῖς ἀποστροφαῖς αὐτῶν. Ποία τούτων ἵλεως γένωμαί σοι. οἱ υἱοί σου ἐγκατέλιπόν με, καὶ ὤμνυον ἐν τοῖς οὐκ οὖσι θεοῖς·
καὶ ἐχόρτασα αὐτούς, καὶ (λ) ἐμοιχῶντο, καὶ
8 ἐν οἴκοις πορνῶν (μ) κατέλυον. Ἵπποι
θηλυμανεῖς ἐγενήθησαν, ἕκαστος ἐπὶ τὴν
γυναῖκα τοῦ πλησίον αὐτοῦ ἐχρεμέτιζον.

CAP. V.

Circumcurrite in viis Hieruſalem, & videte, & cognoſcite, 1
& quærite in plateis ejus, ſi inveniatis : ſi eſt faciens judicium,
& quærens fidem: & propitius
ero eis, dicit Dominus. Vivit Dominus, dicunt : nihilominùs in 2
mendaciis jurant. Domine, oculi 3
tui ad fidem : flagellâſti eos, &
non doluerunt : conſummâſti eos,
& noluerunt recipere diſciplinam:
firmaverunt facies ſuas ſuper petram : et noluerunt reverti. Et 4
ego dixi; Fortaſſe inopes ſunt,
quia non potuerunt:quia non cognoverunt viam Domini, et judicium Dei : Ibo ad optimates, et 5
loquar eis, quia ipſi cognoverunt
viam Domini, et judicium Dei.
Et ecce unanimiter confregerunt
jugum, diruperunt vincula. Ideò 6
percuſſit eos leo de ſylva: et lupus
uſque ad domos vaſtavit eos : et
pardus vigilavit ſuper civitates
eorum. Omnes egredientes, ab eis
capientur : quia multiplicaverunt
impietates ſuas, confortati ſunt in
averſionibus ſuis. (a) Quãnam 7
harum propitius fiam tibi? Filii
tui dereliquerunt me: et jurabant
in diis, qui non ſunt : et ſatiavi
eos, et mœchabantur, et in domibus meretricum diverſabantur:
Equi (b) furentes in fœminas facti 8
ſunt: unuſquiſque ſuper uxorem
proximi ſui hinniebant.

MS.A. (α) ἐπὶ ψεύδεσιν (β) Καὶ οἱ ὀφθαλμοί (γ) οὐχ (δ) ἐστερεώθησαν (ε) διατοῦτο οὐκ ἠδυνήθησαν, (ζ) πρὸς αὐτούς, (η) ἐκ δρυμοῦ, (θ) ὠλέθρευσεν (ι) θηρεύσονται (κ) καὶ ἴσχυσαν (λ) *ἐμοίχοντο, (μ) κατελύοντο.

תרגום יונ״ן Targum JONATHAN.

27 אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ צְדוּ תְהֵי כָּל אַרְעָא וּגְמִירָא לָא אַעֲבֵיד ׃ עַל דָא תֶחֱרוּב אַרְעָא וְיִקְבְּלוּן
28 נְהוֹרֵי שְׁמַיָא מִלְעֵלָא עַל דִגְזֵרִית בְּמֵימְרִי חֲשֵׁבִית בְּעֵצְתִּי אֶעְבְּדִנַהּ וְלָא אֲתִיבִנַהּ ׃
29 מִקָל פָּרָשִׁין וְדַנְגְרִין בְּקַשְׁתָּא גְלוֹ כָּל יָתְבֵי אַרְעָא עֲלוּ לְמֶעֱרַק בְּחוּרְשַׁיָא סְלִיקוּ לְאִטְמָרָא
30 בְּכֵיפַיָא כָּל קִרְוֵיהוֹן שְׁבִיקָן וְלֵית דְיָתֵיב בְּהוֹן אֱנָשׁ ׃ וְאַתְּ הָא מִתְבַּזְזָא מָה אִית בִּיךְ
חֵיל לְמֶעְבַּד אֲרֵי אִתְרְחֵיצְתְּ עַל לָבְשֵׁי צִבְעָנִין וְעַל דְמִתַקְנִין בְּתִקוּנִין דִדְהַב אֲרֵי תְכַחֲלִין
31 בִּצְדִידָא עֵינָךְ לָא לַהֲנָאָה תִתַקְנִין קְצוֹ בִיךְ רַחֲמָךְ מְקַטְלִין נַפְשָׁךְ בְּעָן ׃ אֲרֵי קָל כִּמְעַדְיָא
שְׁמַעִית עָקָא כְּאִתְּתָא דְמַשְׁרְיָא לְמֵילַד בְּכוּר קָל כְּנִשְׁתָּא דְצִיּוֹן דְמִשְׁתַּטְחָא וּפָרְסָא יְדָהָא
אָמְרָא וַי כְּעַן לִי אֲרֵי מִשַׁלְהֲיָא נַפְשִׁי מִן קֳדָם קָטוֹלִין ׃

ה

1 הַלִּיכוּ בְּשׁוּקֵי יְרוּשְׁלֵם וַחֲזוֹ כְעַן וּדְעוּ וּבְעוֹ בִרְחוֹבָהָא אִם תַשְׁכְּחוּן גְבַר דְלֵיהּ עוֹבְדִין
2 טָבִין אִם אִית עָבֵד דִין דִקְשׁוֹט בָּעֵי הֵימָנוּתָא וְאֶשְׁבּוֹק לְהוֹן ׃ וְאִם בִּשְׁמָא דַיְיָ יָמַן בְּכֵן
3 לְשִׁקְרָא אִנוּן מִשְׁתַּבְּעִין ׃ יְיָ הֲלָא גְלֵי קֳדָמָךְ לְאוֹטָבָא לְעָבְדֵי הֵימָנוּתָא רַשִׁיעַיָא אַלְקִיתָא
יָתְהוֹן וְלָא תָבוּ שֵׁיצִיתִנוּן סְרִיבוּ לְקַבָּלָא אוּלְפָן אַתְקִיפוּ אַפֵּיהוֹן מִטִינָרָא מְסָרְבִין לְמֵתָב ׃
4 וַאֲנָא אֲמָרִית בְּרַם מִדְמִסְכְּנִין אִנוּן אִטַפְּשׁוּ אֲרֵי לָא אֲלִיפוּ לְמִדַע אָרְחָן דְתַקְנָן קֳדָם יְיָ
5 לְמֶעְבַּד דִין דִקְשׁוֹט קֳדָם אֱלָהֲהוֹן ׃ אֵהָךְ לִי לְוָת רַבְרְבַיָא וַאֲמַלֵל עִמְהוֹן אֲרֵי אִנוּן
אֲלִיפוּ לְמִדַע אָרְחָן דְתַקְנָן קֳדָם יְיָ לְמֶעְבַּד דִין דִקְשׁוֹט קֳדָם אֱלָהֲהוֹן בְּרַם אִנוּן כַּחֲדָא
6 מְרָדוּ מִן אוֹרַיְתָא אִתְרַחֲקוּ מִן אוּלְפָנָא ׃ עַל כֵּן מֶלֶךְ בְּמַשְׁרְיָתֵיהּ יִסַק עֲלֵיהוֹן כְּאַרְיָא
מֵחוּרְשָׁא וְיִקַטְלִנוּן עַמְמַיָא דְתַקִיפִין כְּדֵיבֵי רַמְשָׁא יִבְזְזוּנוּן שִׁלְטוֹנִין דַחֲסִינִין כְּנִמְרָא
7 כָּמְנִין עַל קִרְוֵיהוֹן כָּל דְיִפּוֹק מִנְהוֹן יִתְקְטִל אֲרֵי סַגִיאִין מַרְדֵיהוֹן תַקִיפִין תְיוּבַתְהוֹן ׃ נְבִיָא
אֱמַר לֵיהּ לִכְנִשְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל עַל אֵידָא אֶשְׁבּוֹק לְכוֹן אֲנָא קְרֵיתִי לְכוֹן בְּנִין וְאִנוּן שְׁבַקוּ
פוּלְחָנִי וּמְקַיְמִין בְּשׁוּם טַעֲוָתָא עוֹד שַׂבְעִית יָתְהוֹן טוּבָא וְאִנוּן תָבוּ לְמֶהֱוֵי זַנָאִין וּבֵית
8 נַפְקַת בָּרָא מִסְתַּיְעִין ׃ סוּסָוָן אַנְרִיסִין אָחֲרִין הֲווֹ גְבַר עַל אִתַּת חַבְרֵיהּ מְצַוְחִין ׃

PARAPH CHALD. Verſio Latina.

Quoniã ſic dicit Dñs:Vaſtitas erit oĩs terra,&conſummationẽ non faciam. 27
Propter hoc deſolabitur terra,& obſcurabũtur luminaria cœli ſurſũ,eò ꝙ 28
decrevi in verbo meo,cogitavi in conſilio meo:faciã illud,& non illud revocabo. A voce equitũ & tẽdentiũ arcũ migraverũt oẽs habitatores *terræ*; 29
ingreſſi ſunt ut fugiant in ſylvas, aſcenderunt ut abſcondantur in rupibus :
omnes civitates eorũ derelictæ ſunt,& non eſt homo qui habitet in eis. Tu 30
autẽ ecce direpta es ; quæ eſt in te virtꝰ ut facias ? quia confidiſti iis qui induuntur variis coloribꝰ, & iis qui ornantur ornamentis aureis, quia pingis
ſtibio oculos tuos;in nullũ uſũ ornas te. Deteſtati ſunt te amatores tui,occiſores quærũt animã tuã. Quia vocẽ quaſi prægnantis audivi,anguſtiã quaſi 31
mulieris quæ incipit parere primogenitũ:vocẽ cœtꝰ Sion qui proſternit ſe
& expandit manꝰ ſuas,dicens:Væ nunc mihi,quia laſſa eſt anima mea propter interfectores.

CAP. V.

Ambulate ꝑ vicos Jeruſalẽ,& videte nunc,& ſcitote,& quærite in plateis ejꝰ, ſi inveneritis virũ cujꝰ opera ſint bona, ſi eſt faciens judicium 1
rectũ,& quærens fidẽ,& dimittam eis. Si autẽ in nomine Dñi jurant:utiq; 2
falsò ipſi jurant. Dñe nónne revelatũ eſt corã te ut benefacias fidelibus ? 3
impios autẽ ꝑcuſſiſti,& non ſunt converſi:conſumpſiſti eos,renuerũt recipere diſciplinã;obfirmarũt faciẽ ſuã magis quàm rupes,renuũt redire. Ego 4
autẽ dixi, Pro eo quòd pauperes ſunt,inſipientes facti ſũt,quia non didicerunt *cognoſcere* vias quæ rectæ ſunt corã Dño,ut facerent judiciũ verũ coram Deo ſuo. Vadam ego ad principes & loquar cum eis,quia ipſi didice- 5
runt cognoſcere vias quæ rectæ ſunt corã Dño, ut faciant judiciũ verũ coram Deo ſuo:ſed hi ſimul prævaricati ſunt à Lege, & elongati ſunt à diſciplina. Propterea rex cum exercitu ſuo aſcendet ſuper eos quaſi leo de ſyl- 6
va,& occidet eos populi qui fortes ſunt ſicut lupi veſpertini;deprædabuntur eos dominatores qui robuſti ſunt ſicut *pardus*,inſidiantes civitatibꝰ eorum:quicunq; egredietur ex illis,interficietur, quia multæ ſunt rebelliones
eorũ,validæ averſiones eorũ. Propheta dic cœtui Iſrael:Propter quid di- 7
mittam vobis?*ego* vocavi *vos* filios,& ipſi reliquerunt cultũ meum,& jurant
in nomine idolorum : rurſus ſatiavi eos bono, & ipſi converſi ſunt ut fornicentur;& in domo meretricis congregantur. Equi emiſſarii moram fa- 8
cientes fuerunt, unuſquiſque ad uxorem proximi ſui hinniebant.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܠܡܬܚܒܠܘ ܗܘܬ ܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܘܫܘܡܠܝܐ ܠܐ ܐܥܒܕ. * 27
ܡܛܠ ܗܢܐ ܬܬܐܒܠ ܐܪܥܐ. ܘܢܚܫܟܘܢ ܫܡܝܐ ܡܢ ܠܥܠ. ܟܠ ܕܡܠܠܬ ܘܐܬܪܥܝܬ * 28
ܠܐ ܬܘܝܬ. ܘܠܐ ܐܒܨܘܪ ܡܢܗ. * ܡܢ ܩܠܐ ܕܦܪܫܐ ܘܕܫܕܝ ܩܫܬܐ. ܥܪܩܬ. ܟܠܗ ܡܕܝܢܬܐ. 29
ܥܠܘ ܒܥܒܐ ܘܒܟܐܦܐ ܣܠܩܘ. ܟܠܗܝܢ ܡܕܝܢܬܐ ܐܫܬܒܩ. ܘܠܝܬ ܐܢܫ ܕܥܡܪ ܒܗܝܢ.
* ܘܐܢܬܝ ܒܙܝܙܬܐ. ܡܢܐ ܥܒܕܐ ܐܢܬܝ ܟܕ ܠܒܫܐ ܐܢܬܝ ܙܚܘܪܝܬܐ. ܟܕ ܡܨܛܒܬܐ ܒܨܒܬܐ 30
ܕܕܗܒܐ. ܟܕ ܟܚܠܐ ܐܢܬܝ ܒܟܘܚܠܐ ܥܝܢܝܟܝ. ܠܣܪܝܩܘܬܐ ܡܨܛܒܬܐ ܐܢܬܝ. ܫܒܩܘܟܝ
ܡܚܒܢܝܟܝ. ܘܢܦܫܟܝ ܒܥܝܢ. * ܡܛܠ ܕܩܠܐ ܐܝܟ ܕܟܪܝܗܬܐ ܫܡܥܬ. ܘܚܒܠܐ ܐܝܟ ܕܝܠܕܬܐ 31
ܕܒܘܟܪܐ. ܩܠܐ ܕܒܪܬ ܨܗܝܘܢ ܕܡܬܬܙܝܥܐ. ܘܦܫܛܐ ܐܝܕܝܗ. ܘܐܡܪܐ. ܘܝ ܠܝ
ܕܐܫܬܪܝܬ ܢܦܫܝ ܡܛܠ ܩܛܝܠܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܗ * ܐܬܟܪܟܘ ܒܫܘܩܘܗ̈ܝ ܕܐܘܪܫܠܡ 1
ܘܚܙܘ. ܘܕܥܘ. ܘܒܥܘ ܒܦܠܛܝܗ̈. ܐܢ ܬܫܟܚܘܢ ܓܒܪܐ. ܐܢ ܐܝܬ ܕܥܒܕ ܕܝܢܐ ܘܒܥܐ
ܗܝܡܢܘܬܐ. ܘܐܫܒܘܩ ܠܗ. * ܘܐܢ ܚܝ ܡܪܝܐ ܢܐܡܪܘܢ. ܡܫܩܪܐܝܬ ܝܡܝܢ. * ܡܪܝܐ. 2 3
ܥܝܢܝܟ ܠܘܬ ܗܝܡܢܘܬܐ. ܡܚܝܬ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܐܬܟܪܝܘ. ܫܝܨܝܬ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܨܒܘ ܠܡܬܦܢܝܘ.
ܥܫܢܘ ܐܦܝܗܘܢ ܡܢ ܟܐܦܐ. ܘܠܐ ܨܒܘ ܠܡܬܦܢܝܘ. * ܘܐܢܐ ܐܡܪܬ. ܡܛܠ ܕܡܣܟܢܐ ܐܢܘܢ. 4
ܛܥܘ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܝܕܥܘ ܐܘܪܚܗ ܕܡܪܝܐ ܘܕܝܢܐ ܕܐܠܗܗܘܢ. * ܐܙܠ ܠܘܬ ܪܘܪܒܢܐ 5
ܘܐܡܠܠ ܥܡܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܗܢܘܢ ܝܕܥܘ ܐܘܪܚܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܕܝܢܐ ܕܐܠܗܗܘܢ. ܐܠܐ ܐܟܚܕܐ
ܬܒܪܘ ܢܝܪܐ. ܦܣܩܘ ܐܣܘܪܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܩܛܠ ܐܢܘܢ ܐܪܝܐ ܡܢ ܥܒܐ. 6
ܘܕܐܒܐ ܕܪܡܫܐ ܢܒܙܘܙ ܐܢܘܢ. ܢܡܪܐ ܢܟܡܢ ܥܠ ܩܘܪܝܗܘܢ. ܟܠ ܕܢܦܩ ܡܢܗܘܢ
ܢܬܚܛܦ. ܡܛܠ ܕܣܓܝܘ ܚܛܗܝܗܘܢ. ܘܥܫܢܘ ܕܠܐ ܢܬܦܢܘܢ. * ܥܠ ܐܝܕܐ ܐܫܒܘܩ ܠܟܝ. 7
ܒܢܝܟܝ ܫܒܩܘܢܝ. ܘܝܡܘ ܒܕܠܐ ܗܘܘ ܐܠܗܐ. ܘܣܒܥܬ ܐܢܘܢ. ܘܓܪܘ. ܘܒܒܝܬ
ܙܢܝܬܐ ܐܬܟܬܫܘ. * ܐܝܟ ܣܘܣܘܬܐ ܪܡܟܐ ܚܡܝܡܐ ܗܘܘ. ܓܒܪ ܠܐܢܬܬ ܚܒܪܗ ܡܨܗܠ ܗܘܐ. 8

Nam ita dicit Domin' De', Corrumpenda eſt 27
univerſa terra, at conſummationem nondum
faciã: Propter hæc lugeat terra, & cœli ob- 28
ſcurentur ſupernè. Rerum omniũ quas locut'
ſum & cogitavi, nulli' me pœnitet, nec *quic-*
quam ex iis diminuam. A voce equitum & 29
jaculantium arcu fugiet univerſa civitas, in-
gredientur in ſylvas, & in petras aſcendent:
civitates omnes derelinquentur, & nemo erit
qui habitet in eis. Tu ergò direpta, quid facis 30
induendo te coccino, ornando te ornamentis
aureis, collinendo collyrio oculos tuos? In
vanum ſanè te ornas: dereliquerunt te amici
tui, & animam tuam quærunt. Nam vocem ut 31
ægrotæ audivi, & dolorem ut mulieris parere
nitentis: vocem *nimirum* filiæ Sionis agitantis
ſeſe, manuſque pandentis, ac dicentis; Væ mihi,
quoniam conturbata eſt anima mea propter
interfectos meos.

CAP. V.

CIrcuite per vicos Jeruſalem, videte, & cog- 1
noſcite, & diſquirite in plateis ej': ſi virũ in-
veniatis, ſi quempiã facientẽ judiciũ, & aman-
tem fidei; condonabo illi. At ſi quando, Vivit 2
Dñs, dicant; proculdubio falſò jurant. Domine, 3
oculi tui ad fidẽ *ſpectant*, percuſſiſti eos, at nõ
doluerunt; conſumpſiſti eos, at reverti nolue- 4
runt: obfirmaverunt facies ſuas pluſquã petrã:
nolũt converti. Quamobrẽ ego dixi, Quia pau- 5
peres ſunt, aberraverunt: non enim nõrunt vi-
am Dñi, neque judicium Dei ſui. Ibo ad ma-
gnates, & alloquar eos, quoniã ipſi nõrunt viã
Dñi, & judiciũ Dei ſui: verùm omnes pariter
fregerunt jugũ, & diruperunt vincula. Pro- 6
pterea confringet eos leo de ſylva, & lupi
veſpertini dilaniabunt eos; pardus inſidiabi-
tur ad civitates eorum, quotquot egredientur
ex eis, erunt in prædam: quia multiplicata
ſunt delicta eorum, & *adeò* creverunt, ut mi-
nimè convertantur. Cujus rei cauſsâ parce- 7
rem tibi? filii tui dereliquerunt me, & jurâ-
runt per eos qui non ſunt Dii: ſatiavi eos, &
adulterati ſunt, & in domo meretricum pu-
gnaverunt: Ut equi admiſſarii, libidinoſi 8
erant, & quiſque ad uxorem ſocii ſui adhin-
niebat.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

هكذا يقول الرب * تصير كل الارض برية * ولست اصنع جرما * علي هذه لتحزن الارض وتظلم 27 28
السماء من فوق * من اجل اني تكلمت ولا ارجع * وثبت ولا ارد عنها * من صوت الفارس 29
والقوس الموتر انفصلت كل كورة * ودخلوا الي المغاير * واختبوا في الشعاري * وصعدوا
الي الصخور * كل مدينة تركت * وليس يسكن فيها انسان * وانت ما تصنعين ان 30
لبست احمرا وتزينت بزينة ذهبية * وان اكتحلت عينيك بالاثمد تباهيك باطلا للباطل *
افضوك اصحابك ويطلبون نفسك * لاني سمعت تنهدك مثل صوت الطلقة ومثل التي تلد 31
بكرا * صوت ابنة صهيون يتحلل ويرخي يديها * الويل لي انا لان نفسي فنيت بالمقتولين *

* الفصل الخامس *

* طوفوا في طرق ايروسليم * وانظروا واعلموا واطلبوا في شوارعها * ان كنتم تجدون هل 1
صانع حكم موجود وطالب ايمان * فاصير لهم راحما يقول الرب * وحي هو الرب يقولون * 2
لاجل هذا لا يحلفون بالكذب * واعينك للايمان * جلدتهم ولم يتوجعوا افنيتهم فلم 3
يريدوا ان يقبلوا ادبا * صلبوا وجوههم اكثر من الصخر ولم يريدوا ان يرجعوا * وانا 4
قلت * لعلهم مساكين لاجل هذا لم يقتدروا * لانهم لم يعرفوا طريق الرب وحكم الله *
* اذهب الي الاغنياء واتكلم معهم * لان هاولاء عرفوا طريق الرب وحكم الله * واذا هم كسروا 5
النير بنفس واحدة وحرقوا الرباطات * لاجل هذا اسقطهم اسد من الغاب * وذيب استاصلهم الي 6
بيوتهم * ونمر سهر علي مدنهم * جميع المارين يصادون منهم * لانهم اكثروا نفاقهم وتقووا *
بتصرفاتهم * بايه هذه اصير راحما لك * بنوك تركوني وحلفوا بالتي لم تكن الهة * اشبعتهم 7
فسقوا وفي بيوت الزواني انحلوا * وصاروا خيل مهارة * كل واحد علي امراة صاحبه يصهل * 8

Sic ait Dominus, Redigetur univerſa 27
terra in ſolitudinem, at excidium non-
dum fecero. De his terra contriſte- 28
tur, & obtenebreſcat cœlum ſupernè:
quia pronuntiavi, neque retractabo
ſententiam; *aſſerui, neque recedam ab*
ea. A voce equitis, & arcu tenſo di- 29
viſæ ſunt omnes provinciæ, ingreſſæ
ſunt cavernas, abdiderunt ſe in ſpelun-
cu, & conſcenderunt petras: omnes ur-
bes derelictæ ſunt, & nemo habitat
in eis: Tu ergò quid factura es? Et- 30
iamſi rubro te colore *veſtias, & aureis*
ornamentis componas, & licèt ſtibio
fuligines oculos tuos, tua tamen pompa
otioſa eſt & in vanum: procul amove-
runt te amaſii tui, & quærunt animam
tuam. Gemitus enim tuos ut vocem par- 31
turientis audivi, & ut ejus quæ pri-
mogenitum parit: vox filiæ Sionis li-
queſcet, & manus ejus remittet: væ
inquiet *mihi, quoniam conſumpta eſt*
anima mea propter interfectos,

CAP. V.

PErluſtrate vias Jeroſolymæ, videte, 1
& cognoſcite, & perquirite in vicis
ejus: ſi quem repereritis extare qui fa-
ciat judicium & quærat fidem, ero illis
propitius, dicit Dominus. Vivus eſt 2
Dominus, dicunt; annon tamen men-
daciter jurant; Cùm oculi tui fidem 3
reſpiciant? Flagellâſti eos, ſed non do-
luerunt; conſumpſiſti eos, ſed nolue-
runt accipere eruditionem; obdurârunt
facies ſuas pluſquam lapides, & re-
verti noluerunt. Quapropter ego dixi, 4
Fortaſſe quia ſunt pauperes, ideo ne-
queunt: non enim cognoſcunt viam Do-
mini & jus Dei. Pergam ad divites, 5
& loquar cum eis; ſiquidem iſti nôrunt
viam Domini & jus Dei: at ecce iſti
fregerunt jugum pari conſenſu, & vin-
cula diruperunt. Ideo deturbabit eos 6
leo de ſylvis, lupus exterminabit eos uſque
ad domos eorum, & pardus vigilavit
ad urbes eorum: omnes tranſeuntes ca-
pientur ab eis, eò quòd multiplicârint im-
pietatem ſuam, & invaluerint in pravis
inſtitutis ſuis. Propter quam harum re- 7
rum eſſem tibi propitius? filii tui de-
reliquerunt me, & jurârunt per ea quæ
Dii nequaquam ſunt: ſaturavi eos, &
adulterati ſunt, & in domibus meretri-
cum effrænes fuerunt: Et facti ſunt 8
equi admiſſarii, quiſque in uxorem ſocii
ſui hinniebat.

ירמיה : ה

quia gente in an & ? Dominus dixit ,viſitabo non his ſuper Nũquid
9 הַעַל־אֵלֶּה לוֹא־אֶפְקֹד נְאֻם־יְהוָה וְאִם בְּגוֹי אֲשֶׁר־
,lab.fallate &,ej* muros in Aſcendite ? mea anima ulciſcetur non ,hæc ſicut
10 כָּזֶה לֹא תִתְנַקֵּם נַפְשִׁי׃ עֲלוּ בְשָׁרוֹתֶיהָ וְשַׁחֵתוּ
Domini non quia ,ej*(murorũ)mœnia auferte : faciatis ne conſũmationẽ &
וְכָלָה אַל־תַּעֲשׂוּ הָסִירוּ נְטִישׁוֹתֶיהָ כִּי לוֹא לַיהוָה
domus & , Iſrael domus me in ſunt prævaricati prævaricãdo Quia .ipſæ
11 הֵמָּה׃ כִּי בָּגוֹד בָּגְדוּ בִּי בֵּית יִשְׂרָאֵל וּבֵית
: ipſe Non :dixerunt & ,Dominum in ſunt Mentiti .Dominus ait ,Jehudah
12 יְהוּדָה נְאֻם־יְהוָה׃ כִּחֲשׁוּ בַּיהוָה וַיֹּאמְרוּ לוֹא הוּא
.videbimus non famem & gladium & ,malum nos ſuper veniet non &
וְלֹא־תָבוֹא עָלֵינוּ רָעָה וְחֶרֶב וְרָעָב לוֹא נִרְאֶה׃
.eis fiet Sic .eis in non ſermo & ,ventum in erunt prophetæ Et
13 וְהַנְּבִיאִים יִהְיוּ לְרוּחַ וְהַדִּבֵּר אֵין בָּהֶם כֹּה יֵעָשֶׂה לָהֶם׃
vos loqui Pro : exercituum Deus Dominus dixit ſic Propterea
14 לָכֵן כֹּה־אָמַר יְהוָה אֱלֹהֵי צְבָאוֹת יַעַן דַּבֶּרְכֶם אֶת־
populum & ,ignem in tuo ore in mea verba dans ego ecce : hoc verbum
הַדָּבָר הַזֶּה הִנְנִי נֹתֵן דְּבָרַי בְּפִיךָ לְאֵשׁ וְהָעָם
longinquo de gentẽ vos ſuper adducens ego Ecce .eos comedet & ,ligna hunc
15 הַזֶּה עֵצִים וַאֲכָלָתַם׃ הִנְנִי מֵבִיא עֲלֵיכֶם גּוֹי מִמֶּרְחָק
,ipſa ſeculo à gens ,ipſa robuſta gens ,Dominus ait , Iſrael domus
בֵּית יִשְׂרָאֵל נְאֻם־יְהוָה גּוֹי אֵיתָן הוּא גּוֹי מֵעוֹלָם הוּא
ejus Pharetra .loquatur quid audies nec ,ejus linguã cognoſces non gens
16 גּוֹי לֹא־תֵדַע לְשֹׁנוֹ וְלֹא תִשְׁמַע מַה־יְדַבֵּר׃ אַשְׁפָּתוֹ
,tuã meſſem comedet Et .fortes ipſi univerſi ,patens ſepulchrum veluti
17 כְּקֶבֶר פָּתוּחַ כֻּלָּם גִּבּוֹרִים׃ וְאָכַל קְצִירְךָ
,tuũ bovem &,tuũ pecus comedet,tuas filias &,tuos filios comedẽt,tuũ panẽ &
וְלַחְמֶךָ יֹאכְלוּ בָּנֶיךָ וּבְנוֹתֶיךָ יֹאכַל צֹאנְךָ וּבְקָרֶךָ
quibus ,tuarũ munitionum urbes depauperabit :tuã ficum &,tuã vitem comedet
יֹאכַל גַּפְנְךָ וּתְאֵנָתֶךָ יְרֹשֵׁשׁ עָרֵי מִבְצָרֶיךָ אֲשֶׁר
, Dñs dixit , ipſis diebus in etiam Et .gladio in ,eis in fidens tu
18 אַתָּה בֹּטֵחַ בָּהֵנָּה בֶּחָרֶב׃ וְגַם בַּיָּמִים הָהֵמָּה נְאֻם־יְהוָה
quid Propter ,dixeritis ſi erit Et .conſũmationẽ vobiſcum faciam non
19 לֹא־אֶעֱשֶׂה אִתְּכֶם כָּלָה׃ וְהָיָה כִּי תֹאמְרוּ תַּחַת מֶה
: eos ad dices & ? hæc omnia nobis noſter Deus Dominus fecit
עָשָׂה יְהוָה אֱלֹהֵינוּ לָנוּ אֶת־כָּל־אֵלֶּה וְאָמַרְתָּ אֲלֵיהֶם
ſic :veſtra terra in,alienigenæ Deo ſerviſtis & , me dereliquiſtis Sicut
כַּאֲשֶׁר עֲזַבְתֶּם אוֹתִי וַתַּעַבְדוּ אֱלֹהֵי נֵכָר בְּאַרְצְכֶם כֵּן
: Jahacob domo in hoc Annuntiate .vobis non terra in alienis ſervietis
20 תַּעַבְדוּ זָרִים בְּאֶרֶץ לֹא לָכֶם׃ הַגִּידוּ זֹאת בְּבֵית יַעֲקֹב
,ſtulte popule hoc nunc Audite .dicendo ,Jehudah in hoc facite audire &
21 וְהַשְׁמִיעוּהָ בִיהוּדָה לֵאמֹר׃ שִׁמְעוּ־נָא זֹאת עַם סָכָל
.audient non & , eis aures : videbunt non & ,eis oculi : cor non &
וְאֵין לֵב עֵינַיִם לָהֶם וְלֹא יִרְאוּ אָזְנַיִם לָהֶם וְלֹא יִשְׁמָעוּ׃
non meis faciebus à An ? Dominus ait , timebitis non me Nunquid
22 הַאוֹתִי לֹא־תִירָאוּ נְאֻם־יְהוָה אִם מִפָּנַי לֹא
non & ,ſeculi ſtatutum ,mari terminũ arenam poſui qui ? dolebitis
תָחִילוּ אֲשֶׁר־שַׂמְתִּי חוֹל גְּבוּל לַיָּם חָק־עוֹלָם וְלֹא
tumultuabuntur & ; prævalebunt non & ,ſe cõmovebunt Et .illud præteribit
יַעַבְרֶנְהוּ וַיִּתְגָּעֲשׁוּ וְלֹא יוּכָלוּ וְהָמוּ
contumax cor fuit huic populo Et .illud tranſibunt non & ,ejus fluctus
23 גַלָּיו וְלֹא יַעַבְרֻנְהוּ׃ וְלָעָם הַזֶּה הָיָה לֵב סוֹרֵר
: ſuo corde in dixerunt non Et .abierunt & ,declinaverunt : rebelle &
24 וּמוֹרֶה סָרוּ וַיֵּלֵכוּ׃ וְלוֹא־אָמְרוּ בִלְבָבָם
,temporaneã & pluviam dantem noſtrũ Deum Dominum nunc Metuamus
נִירָא נָא אֶת־יְהוָה אֱלֹהֵינוּ הַנֹּתֵן גֶּשֶׁם וְיֹרֶה
.nobis cuſtodiet meſſis ſtatutorum ſeptimanas ? ſuo tempore in ſerotinam &
וּמַלְקוֹשׁ בְּעִתּוֹ שְׁבֻעֹת חֻקּוֹת קָצִיר יִשְׁמָר־לָנוּ׃

Verſio VULG. LAT.

9 Numquid ſuper his non viſitabo, dicit Dominus; & in gente tali 10 non ulciſcetur anima mea? Aſcendite muros ejus, & diſſipate, conſummationem autem nolite facere: auferte propagines ejus, 11 quia non ſunt Domini. Prævaricatione enim prævaricata eſt in me domus Iſrael, & domus 12 Juda, ait Dominus. Negaverunt Dominum, & dixerunt; Non eſt ipſe: neque veniet ſuper nos malum: gladium & famem non 13 videbimus. Prophetæ fuerunt in ventum locuti, & reſponſum non fuit in eis: hæc ergò evenient 14 illis. Hæc dicit Dominus Deus exercituum; Quia locuti eſtis verbum iſtud: ecce ego do verba mea in ore tuo in ignem, & populum iſtum in ligna, & vo15rabit eos. Ecce ego adducam ſuper vos gentem de longinquo domus Iſrael, ait Dominns; gentem robuſtam, gentem antiquam, gentem, cujus ignorabis linguam, nec intelliges quid lo16quatur. Pharetra ejus quaſi ſepul17chrum patens, univerſi fortes. Et comedet ſegetes tuas, & panem tuum: devorabit filios tuos, & filias tuas: comedet gregẽ tuũ, & armenta tua: comedet vineam tuam, & ficum tuam: & conteret urbes munitas tuas, in quib' 18 tu habes fiduciã, gladio. Veruntamen in diebus illis, ait Dominus, non faciam vos in conſum19mationem. Quòd ſi dixeritis; Quarè fecit nobis Domin' Deus noſter hæc omnia? dices ad eos; Sicut dereliquiſtis me, & ſerviſtis deo alieno in terra veſtra, ſic ſervietis alienis in terra non ve20ſtra. Annuntiate hoc domui Jacob, & auditum facite in Juda, 21 dicentes; Audi popule ſtulte, qui non habes cor: qui habentes oculos, non videtis; & aures, & non 22 auditis. Me ergò non timebitis, ait Dñs; & à facie mea non dolebitis? Qui poſui arenam terminum mari, præceptum ſempiternum, quod non præteribit: & commovebuntur, & non potерunt: & intumeſcent fluct' ejus, 23 & non tranſibunt illud: Populo autem huic factũ eſt cor incredulum & exaſperans, receſſerunt 24 & abierunt. Et non dixerunt in corde ſuo; Metuam' Dominum Deũ noſtrũ, qui dat nobis pluviã temporaneam & ſerotinam in tempore ſuo; plenitudinem annuæ meſſis cuſtodientem nobis:

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

9 Μὴ ἐπὶ τούτοις οὐκ (ʹ)ἐπισκέψομαι; λέγει κύριος· ἢ ἐν ἔθνει τοιούτῳ οὐκ ἐκδική10σει ἡ ψυχή μου; Ἀνάβητε ἐπὶ τοὺς προμαχῶνας αὐτῆς, καὶ κατασκάψατε, συντέλειαν δὲ (ν) μὴ ποιήσητε· ὑπολίπεσθε τὰ ὑποστηρίγματα αὐτῆς, ὅτι τοῦ κυρίου 11 εἰσίν. Ὅτι ἀθετῶν ἠθέτησεν εἰς ἐμὲ, (ξ) λέγει κύριος, οἶκος Ἰσραὴλ, καὶ οἶκος 12 Ἰούδα. Ἐψεύσατο τῷ κυρίῳ αὐτῶν, καὶ εἶπαν, Οὐκ ἔστι ταῦτα· οὐχ ἥξει ἐφ' ἡμᾶς κακὰ, καὶ μάχαιραν καὶ λιμὸν (ο) οὐκ 13 ὀψόμεθα. Οἱ προφῆται ἡμῶν ἦσαν εἰς ἄνεμον, καὶ λόγος κυρίου οὐχ ὑπῆρχεν ἐν 14 αὐτοῖς. Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Ἀνθ' ὧν ἐλαλήσατε τὸ ῥῆμα τοῦτο, ἰδοὺ ἐγὼ δέδωκα τοὺς λόγους μου εἰς τὸ στόμα σου πῦρ, καὶ τὸν λαὸν τοῦτον 15 ξύλα, καὶ καταφάγεται αὐτούς. Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω ἐφ' ὑμᾶς ἔθνος πόρρωθεν οἶκος Ἰσραὴλ, λέγει κύριος, ἔθνος οὗ οὐκ (π) 16 ἀκούσῃ τῆς φωνῆς τῆς γλώσσης αὐτοῦ. Πάν17τες ἰσχυροί, Καὶ κατέδονται τὸν θερισμὸν (ρ) ὑμῶν, καὶ τοὺς ἄρτους ὑμῶν, καὶ κατέδονται τοὺς υἱοὺς ὑμῶν, καὶ τὰς θυγατέρας ὑμῶν, καὶ κατέδονται τὰ πρόβατα ὑμῶν, καὶ τοὺς (σ) μόσχους ὑμῶν, καὶ κατέδονται τοὺς ἀμπελῶνας ὑμῶν, καὶ τοὺς συκῶνας ὑμῶν, καὶ τοὺς ἐλαιῶνας ὑμῶν· καὶ ἀλοήσουσι τὰς πόλεις τὰς ὀχυρὰς ὑμῶν, ἐφ' αἷς ὑμεῖς πεποίθατε ἐπ' 18 αὐταῖς, ἐν ῥομφαίᾳ. Καὶ ἔσται ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, λέγει κύριος ὁ θεός σου, οὐ 19 μὴ ποιήσω ὑμᾶς εἰς συντέλειαν. Καὶ ἔσται ὅταν εἴπητε, Τίνος ἕνεκεν ἐποίησε κύριος ὁ θεὸς ἡμῶν ἡμῖν (ʺ)πάντα ταῦτα; καὶ ἐρεῖς αὐτοῖς, Ἀνθ' ὧν ἐδουλεύσατε θεοῖς (τ) ἀλλοτρίοις ἐν τῇ γῇ ὑμῶν, οὕτως δουλεύσετε ἀλλοτρίοις ἐν τῇ γῇ 20 οὐχ ὑμῶν. Ἀναγγείλατε ταῦτα εἰς τὸν οἶκον Ἰακὼβ, καὶ ἀκουσθήτω ἐν (υ) τῷ 21 οἴκῳ Ἰούδα. Ἀκούσατε δὴ ταῦτα λαὸς μωρὸς καὶ ἀκάρδιος, ὀφθαλμοὶ αὐτοῖς καὶ οὐ βλέπουσιν, ὦτα αὐτοῖς καὶ οὐκ ἀκούουσι. 22 Μὴ ἐμὲ οὐ φοβηθήσεσθε, λέγει κύριος; (φ) ἢ ἀπὸ προσώπου μου οὐκ εὐλαβηθήσεσθε; τὸν τάξαντα ἄμμον ὅριον τῇ θαλάσσῃ, πρόσταγμα αἰώνιον, καὶ οὐχ ὑπερβήσεται αὐτό, καὶ ταραχθήσεται, καὶ οὐ (χ) δυνήσεται· καὶ ἠχήσουσι τὰ κύματα αὐτῆς, καὶ οὐχ ὑπερ23βήσεται αὐτό. Τῷ δὲ λαῷ τούτῳ ἐγενήθη καρδία ἀνήκοος καὶ ἀπειθὴς, καὶ ἐξέ24κλιναν καὶ ἀπήλθοσαν, Καὶ οὐκ (ψ) εἶπον ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτῶν, Φοβηθῶμεν δὴ κύριον τὸν θεὸν ἡμῶν, τὸν διδόντα (ω) ἡμῖν ὑετὸν (α) πρώιμον καὶ ὄψιμον, κατὰ καιρὸν πληρώσεως προστάγματος θερισμοῦ, καὶ ἐφύλαξεν ἡμῖν.

9 Nunquid ſuper his non viſitabo, dicit Dominus? aut in gentem talem non ulciſcetur anima mea? 10 Aſcendite ſuper propugnacula veſtra, et deſtruite: conſummationem autem ne faciatis: (c) relinquite ſuſtentacula ejus, quia Domini ſunt. 11 Prævaricans enim prævaricata eſt in me, dicit Dominus, domus Iſrael: & domus Juda. 12 Mentita eſt Domino ſuo: & dixerunt, Non ſunt hæc: non venient ſuper nos mala: & gladium, & famem non videbimus: 13 Prophetæ noſtri fuerunt in ventum: & verbum Domini non fuit in eis. 14 Ideò hæc dicit Dominus omnipotens; Pro eo quòd loquuti eſtis verbum iſtud; ecce ego dedi verba mea in os tuum, ignem; & populum iſtum, ligna: & devorabit eos. 15 Ecce ego adduco ſuper vos gentem de longè, domus Iſrael, dicit (d) Dominus; gentem, cujus non audiet vocem linguæ ejus: 16 Univerſi (e) fortes: 17 Et devorabũt meſſem veſtrã, et panes veſtros: et devorabũt filios veſtros, et filias veſtras: et devorabũt oves veſtras, & vitulos veſtros: & devorabunt vineas veſtras, & ficeta veſtra, & oliveta veſtra: et triturabunt civitates munitas veſtras, in quibus vos fidiſtis in eis, in gladio. 18 Et erit in diebus illis, dicit Dominus Deus tuus, non faciam vos in conſummationem. 19 Et erit, quando dixeritis, Cur fecit Dominus Deus noſter nobis omnia hæc? et dices eis; Pro eo, quòd (f) ſerviſtis diis alienis in terra veſtra; ſic ſervietis alienis in terra non veſtra. 20 Annuntiate hæc in domum Jacob: et audiatur in domo Juda. 21 Audite nunc hæc populus ſtultus, et ſine corde: oculi eis, et non vident: aures eis, et non audiunt. 22 Nunquid me non timebitis, dicit Dominus? aut à facie mea non verebimini? qui poſui arenam terminum mari, præceptum æternum, et non ſupergredietur illud: et turbabitur, et non poterit: et ſonabunt fluctus ejus, et non ſupergredientur illud. 23 Populo autem huic factum eſt cor non audiens, et contumax: et declinaverunt, et abierunt, 24 Et non dixerunt in corde ſuo; Timeamus nunc Dominum Deum noſtrum, qui dat nobis pluviam temporaneam, et ſerotinum, ſecundùm tempus impletionis præcepti meſſis; et cuſtodivit nobis.

MS.A. (ʹ)ἐπισκέψωμαι; (ν) οὐ μὴ (ξ) οἶκος Ἰσραὴλ, καὶ (ο) οὐχ (π) ἀκούσῃ τῆς φωνῆς αὐτοῦ. (ρ)* αὐτῶν, (σ) μόσχους, καὶ κατέδονται (ʺ) ἅπαντα (τ) ἑτέροις * ἐν γῇ οὐχ ὑμῶν, Ἀναγγείλατε (υ) τῷ Ἰούδα. (φ) μὴ ἀπὸ (χ) δυνηθήσεται· (ψ) εἶπαν ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτῆς, (ω) ὑμῖν (α) πρόιμον

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

9 הַעַל אִלֵּין לָא אַסְעַר לְאַיְתָאָה עֲלֵיהוֹן בִּישְׁתָּא אֲמַר יְיָ וְאִם מִן עַמָּא דִכְדֵין עוֹבָדוֹהִי לָא
10 אִתְפְּרַע מִנְהוֹן כִּרְעוּתִי׃ סַקוּ בְקִרְוָהָא וְחַבִּילוּ וּגְמִירָא לָא תַעְבְּדוּן פַּגַּרוּ בִּרְנְיָתְהָא אֲרֵי
11 לָא רַעֲוָא קֳדָם יְיָ בְּהוֹן׃ אֲרֵי שִׁקְרָא שַׁקַּרוּ בְּמֵימְרִי בֵּית יִשְׂרָאֵל וּבֵית יְהוּדָה אֲמַר יְיָ׃
12 כַּדִּיבוּ בְּמֵימְרָא דַיְיָ וַאֲמַרוּ לָא מִן קֳדָמוֹהִי אָתְיָא עֲלָנָא טָבְתָא וְאַף לָא תֵיתֵי עֲלָנָא
13 בִּישְׁתָּא וּדְקָטְלִין בְּחַרְבָּא וּבְכַפְנָא לָא נֶחֱזֵי׃ וּנְבִיֵי שִׁקְרָא יְהוֹן לִלְמָא וּנְבוּאַת שִׁקְרֵיהוֹן
14 לָא תִתְקַיַּם דָּא פוּרְעָנוּתָא תִּתְעֲבֵד מִנְהוֹן׃ בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים צְבָאוֹת חֲלַף
דְּאִתְנַבֵּיתוֹן יַת פִּתְגָמָא הָדֵין הָא אֲנָא יָהֵיב פִּתְגָמֵי נְבוּאָתִי בְּפוּמָךְ תַּקִּיפִין כְּאֶשָּׁתָא וְעַמָּא
15 הָדֵין חַלָּשִׁין כְּקַשָּׁא וִיקַטְּלוּנוּן׃ הָא אֲנָא מַיְתֵי עֲלֵיכוֹן עַם מֵרְחִיק בֵּית יִשְׂרָאֵל אֲמַר יְיָ
עַם תַּקִּיף הוּא עַמָּא דְמֵעַלְמָא הוּא עַמָּא לָא תֵידַע לִישָּׁנֵיהּ וְלָא תִשְׁמַע מַה דִּימַלֵּל׃
16 17 בֵּית אֲזֵינֵיהּ כְּקִבְרָא פְתִיחַ כּוּלְּהוֹן גִּבָּרִין׃ וְיִבּוֹז חֲצָדָךְ וּמֵיכְלָךְ יִקְטְלוּן בְּנָךְ וּבְנָתָךְ
יִשְׁבֵּי עָנָךְ וְתוֹרָךְ יִבּוֹז פֵּרֵי גוּפְנָךְ וְתֵינָךְ יְפַגַּר קִרְוֵי אַרְעָךְ כְּרִיכָתָא דַּאֲתְּ רָחִיץ
18 לְאִשְׁתֵּיזָבָא בְהוֹן מִן קֳדָם דְּקָטְלִין בְּחַרְבָּא׃ וְאַף בְּיוֹמַיָּא הָאִנּוּן אֲמַר יְיָ לָא אַעְבֵּיד
19 עִמְּכוֹן גְּמִירָא׃ וִיהֵי אֲרֵי תֵימְרוּן חֲלַף מָה עֲבַד יְיָ אֱלָהָנָא לָנָא יַת כָּל אִלֵּין וְתֵימַר
לְהוֹן כְּמָה דִּשְׁבַקְתּוֹן פּוּלְחָנִי וּפְלַחְתּוֹן לְטַעֲוַת עַמְמַיָּא בְּאַרְעֲכוֹן כֵּן תִּשְׁתַּעְבְּדוּן
20 לְעַמְמַיָּא פָּלְחֵי טַעֲוָתָא בְּאַרְעָא דְּלָא דִילְכוֹן׃ חַוּוֹ דָא בְּבֵית יַעֲקֹב וּבַשְּׂרוּהָא בִדְבֵית
21 יְהוּדָה לְמֵימַר׃ שְׁמַעוּ כְעַן דָּא עַמָּא טַפְשָׁא וְלֵית לֵיהּ לֵב דְּעֵינִין לְהוֹן וְלָא חָזַן אוּדְנִין
22 לְהוֹן וְלָא שָׁמְעִין׃ הֲמִן קֳדָמַי לָא תִדְחֲלוּן אֲמַר יְיָ אִם מִן קֳדָם מֵימְרִי לָא תְזוּעוּן
דְּשַׁוֵּיתִי חָלָא תְּחוּמָא לְיַמָּא קְיָם עָלַם וְלָא עָדֵי לֵיהּ וּמִטָּרְפִין וְלָא יָכְלִין וְהָמָן גַּלּוֹהִי
23 וְלָא עָדָן לֵיהּ׃ וּלְעַמָּא הָדֵין הֲוָה לֵב סָטֵי וּמָרִיד עַל דִּסְטוֹ מִבָּתַר פּוּלְחָנִי גְלוֹ׃ וְלָא
24 אֲמַרוּ בְלִבְּהוֹן נִדְחַל כְּעַן קֳדָם יְיָ אֱלָהָנָא דִּמְחֵית מְטַר בַּכִּיר וְלַקִּישׁ בְּעִדָּנֵיהּ בִּזְמַן קְיָם
שְׁבוּעַיָּא דִּבְזְמַן חֲצָדָא נְטַר לָנָא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

9 An ob iſta non viſitabo ut adducã *ſuper eos* malum, dicit Dñs, aut de populo *cujus talia ſunt opera*, non ſumã ultionem ex eis juxta voluntatem meã? 10 Aſcendite in civitates ej', et diſſipate, & conſummationem non faciatis: deſtruite palatia ej', quia non eſt voluntas corã Dño in eis. 11 Quia prævaricationẽ prævaricati ſunt in Verbũ meũ dom' Iſrael et dom' Juda, dicit Dñs. 12 Mentiti ſunt in Verbũ Dñi, & dixerunt: Non venit ſup nos bonũ à facie *ejus*, nec veniet *ſuper nos* malũ: & eos qui occidunt gladio, & famem non videbim'. 13 Prophetæ autẽ falſi erunt in nihilũ, & prophetia falſa eorũ non confirmabitur: hæc ultio fiet de eis. 14 Propterea hæc dicit Dñs De' exercituũ, Pro eò quòd prophetâſtis verbũ iſtud, ecce ego dabo verba prophetiæ meæ in ore tuo fortia inſtar ignis, & populũ hunc infirmũ ſicut ſtipulã, & occident eos. 15 Ecce ego adducã ſup vos, dom' Iſrael, populũ à longè, dicit Dñs, populum fortẽ, populum qui à ſeculo eſt, populũ cuj' linguã ignorabis, & non audies quid loquatur. 16 Pharetra ej' quaſi ſepulchrũ patens, univerſi fortes. 17 Et deprædabitur meſſẽ tuam, & cibos tuos: occidet filios tuos & filias tuas; capiet oves tuas, & boves tuos; & diripiet fruct' vitis tuæ & ficus tuæ: deſtruet urbes munitas terræ tuæ in quibus tu confidebas ut ſalvus fieres in eis à facie eorũ qui occidunt gladio. 18 Et etiã in diebus illis, dicit Dñs, non faciã vobiſcũ conſummationẽ. 19 Et erit cùm dixeritis, Propter quid fecit Dñs De' noſter nobis hæc omnia? & dices eis: Sicut reliquiſtis cultum meũ, & coluiſtis idola populorũ in terra veſtra; ſic ſervietis populis colentibus idola in terra non veſtra. 20 Annuntiate hoc in domo Jacob, & narrate ea in domo Juda, dicentes: 21 Audite nunc hoc popule inſipiens & corde carens; quibus ſunt oculi, & non vident, & quibus ſunt aures, & non audiunt. 22 An à facie mea non timebitis, dicit Dominus, aut à facie Verbi mei non contremiſcetis? qui poſui arenam terminum mari præcepto ſempiterno quod non tranſgredietur; & commoventur, & non poſſunt; & infremunt fluctus ejus, & non tranſeunt illud. 23 Populo autem huic fuit cor declinans & rebelle: pro eo quòd declinaverunt à cultu meo, migraverunt. 24 Et non dixerunt in corde ſuo: Timeamus nunc coram Domino Deo noſtro, qui demittit pluviam temporaneam & ſerotinam temporibus ſuis: qui ſtato tempore hebdomadas, quæ ſunt tempore meſſis, cuſtodit nobis.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܥܠ ܗܠܝܢ ܠܐ ܐܣܥܘܪ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܒܥܡܐ ܕܐܝܟ ܗܢܐ ܠܐ ܬܬܦܪܥ ܢܦܫܝ .܀ * ܣܩܘ 9
ܥܠ ܫܘܪܝܗ̇ ܘܣܚܘܦܘ. ܘܓܡܘܪܐ ܠܐ ܬܥܒܕܘܢ. ܫܒܘܩܘ ܫܬܐܤܝܗ̇ .܀ ܡܛܠ ܕܕܡܪܝܐ ܐܢܘܢ. 10
* ܡܛܠ ܕܡܕܓܠ ܐܕܓܠܘ ܒܝ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܘܒܢܝ ܝܗܘܕܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܐܕܓܠܘ ܒܡܪܝܐ 11
ܘܐܡܪܘ. ܠܐ ܗܘܐ ܗܘ. ܠܐ ܐܬܝܐ ܥܠܝܢ ܒܝܫܬܐ. ܘܣܝܦܐ ܘܟܦܢܐ ܠܐ ܢܚܙܐ. * ܘܢܒܝܐ ܢܗܘܘܢ 12 13
ܠܪܘܚܐ. ܘܐܝܠܝܢ ܕܡܠܬܐ ܠܝܬ ܒܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܢܗܘܐ ܠܗܘܢ .܀ * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ 14
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܚܠܦ ܕܡܠܠܬܘܢ ܡܠܬܐ ܗܕܐ. ܗܐ ܝܗܒ ܐܢܐ ܦܬܓܡܝ
ܒܦܘܡܟ ܢܘܪܐ. ܘܥܡܐ ܗܢܐ ܩܝܣܐ. ܘܬܐܟܘܠ ܐܢܘܢ. * ܗܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟܘܢ ܒܝܬ 15
ܐܝܣܪܝܠ .܀ ܥܡܐ ܡܢ ܪܘܚܩܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܡܐ ܗܘ ܥܫܝܢܐ. ܥܡܐ ܗܘ ܕܡܢ ܥܠܡ.
ܥܡܐ ܕܠܐ ܝܕܥܬ ܠܫܢܗ. ܘܠܐ ܬܫܡܥ ܡܢܐ ܢܡܠܠ. * ܓܓܪܬܗ ܐܝܟ ܩܒܪܐ ܦܬܝܚܐ. 16
ܘܟܠܗܘܢ ܓܢܒܪܐ. * ܢܐܟܘܠ ܚܨܕܟ ܘܠܚܡܟ. ܢܐܟܘܠ ܒܢܝܟ ܘܒܢܬܟ. ܢܐܟܘܠ 17
ܥܢܟ ܘܬܘܪܝܟ. ܢܐܟܘܠ ܓܦܬܟ ܘܬܐܢܝܟ. ܢܦܩܪ ܩܘܪܝܟ ܕܡܫܘܪܐ ܕܐܢܬ ܬܟܝܠ
ܒܗܘܢ ܒܚܪܒܐ. * ܘܐܦ ܒܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܠܐ ܐܫܡܠܝܟܘܢ. * ܘܢܗܘܐ ܡܐ 18 19
ܕܬܐܡܪܘܢ. ܡܛܠ ܡܢܐ ܥܒܕ ܠܢ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ .܀ ܬܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܝܟ ܕܫܒܩܬܘܢܢܝ ܘܦܠܚܬܘܢ ܠܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ ܒܐܪܥܟܘܢ .܀ ܗܟܢܐ
ܬܦܠܚܘܢ ܠܢܘܟܪܝܐ ܒܐܪܥܐ ܕܠܐ ܕܝܠܟܘܢ. * ܚܘܘ ܗܕܐ ܒܒܝܬ ܝܥܩܘܒ. ܘܐܫܡܥܘܗ̇ 20
ܒܝܗܘܕܐ ܘܐܡܪܘ. * ܫܡܥܘ ܗܕܐ ܥܡܐ ܣܟܠܐ ܕܠܝܬ ܒܗ ܠܒܐ. ܕܥܝܢܐ ܐܝܬ ܠܗܘܢ. 21
ܘܠܐ ܚܙܝܢ. ܘܐܕܢܐ ܐܝܬ ܠܗܘܢ ܘܠܐ ܫܡܥܝܢ. * ܠܝ ܠܐ ܕܚܠܬܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ .܀ ܘܡܢ 22
ܩܕܡܝ .܀ ܠܐ ܙܝܥܬܘܢ .܀ ܕܣܡܬ ܚܠܐ ܬܚܘܡܐ ܠܝܡܐ. ܢܡܘܣܐ ܕܠܥܠܡ. ܘܠܐ ܥܒܪ ܠܗ.
ܘܡܬܓܥܫ ܘܠܐ ܡܫܟܚ. ܘܡܬܥܫܢܝܢ ܓܠܠܘܗܝ. ܘܠܐ ܥܒܪܝܢ ܠܗ. * ܘܠܥܡܐ ܗܢܐ .܀ 23
ܗܘܐ ܠܒܐ ܡܪܘܕܐ ܘܡܡܪܡܪܢܐ. ܣܛܘ ܘܐܙܠܘ .܀ ܘܠܐ ܐܡܪܘ ܒܠܒܗܘܢ. ܢܕܚܠ ܠܡܪܝܐ 24
ܐܠܗܢ. ܕܝܗܒ ܡܛܪܐ ܒܟܝܪܐ ܘܠܩܝܫܐ ܒܥܕܢܗ. ܘܚܨܕܐ ܕܩܝܛܐ ܠܣܬܘܐ ܢܛܪ ܠܢ.

Propter hæc non viſitarem, ait Dominus ? & 9
de hujuſmodi gente non ulciſceretur anima
mea ? Conſcendite muros ejus, & demolimini ; 10
at conſummationem ne facitote : relinquite
fundamenta ejus, quia Domini ſunt.
Quandoquidem omnino denegârunt me filii 11
Iſraelis & filii Judæ, ait Dominus ; Negaverunt
Dominum, dicentes, Non eſt ipſe ; nequaquam 12
adveniet nobis calamitas ; gladium &
famem nequaquam experiemur ; Prophetæ in 13
turbinem abibunt; nam iis quorum ſermo non
conſtat, ſic fiet : Propterea ſic dicit Dominus 14
Deus potentiſſimus, Quia tale verbum locuti
eſtis, ecce ego redditurus ſum ſermones meos
in ore tuo ignem, & populum iſtum ligna,
& devorabit eos. Ecce adducturus ſum contra 15
vos domus Iſraelis, populum è longinquo,
dicit Dominus : Is populus robuſtus eſt, populus
eſt antiquiſſimus, populus cujus linguam
ignoras, nec intelliges quod loquetur : Cujus 16
guttura ſunt aperta velut ſepulchra, omneſque
gigantes : Comedet meſſem tuam & panem 17
tuum, comedet filios tuos & filias tuas, comedet
oves tuas & boves tuos, comedet vites
tuas & ficus tuas ; civitates tuas munitas quibus
tu confidis, gladio depauperabit. Attamen 18
iis diebus, dicit Dominus, non exterminabo
vos : Sed erit, quum dixeritis, Qua de 19
cauſa fecit nobis Dominus Deus noſter hæc
omnia ? ut reſpondeas eis, Ita ait Dominus ;
Quemadmodum dereliquiſtis me, & ſerviviſtis
diis alienis in terra veſtra, ita ſervietis
exteris in terra non veſtra. Nuntiate hoc in 20
domo Jacobi, & prædicate in Juda, ac dicite,
Audite hoc popule ſtolide & excors, qui oculos 21
habetis, & non videtis ; aures habetis, nec
auditis : Me non metuitis, dicit Dominus ? & 22
à facie mea non contremiſcitis ? qui arenam
præſcripſi terminũ mari lege perpetuâ, neque
prætergreditur eam; reluctatur quidem, at non
poteſt, intumeſcunt fluctus ejus, at non excedunt
illum. Verùm populi iſtius cor factum 23
eſt rebelle & exaſperans, deflexerunt, & abierunt,
Neque dixerunt in corde ſuo, Metuamus 24
Dominum Deum noſtrum, qui dat pluviam
properam & ſerotinam, ſuo tempore : & fruges
æſtivas in hyemem ſervat nobis.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* هل لا اتعهدهم يقول الرب * امن امة هذا فعلها لا تنتقم نفسي * اصعدوا على سرفاتها 9 10
واهدموهن ولا تصنعوا جرما * اتركوا اساساتها لانهم للرب * لان بيت اسرايل عصاني 11
عصيانا * وبيت يهودا كذب لربهم * وقالوا ليست هذه تكون * ولا ياتي علينا سرور * 12
ولا نعاين سيفا وجوعا * انبياونا صاروا للريح * وكلمة الرب لم تات فيهم * لاجل هذا هكذا 13 14
يقول الرب الضابط الكل * لاجل انكم تكلمتم بهذه الكلمة ها انا اعطيت كلماتي في
فيك نارا وهذا الشعب حطبا فتحرقهم *

* الاصحاح الرابع *

* ها انا اجلب عليكم امة من البعد يا بيت اسرايل يقول الرب * امة لم تسمع صوتها * 15
* جميعهم اقوياء * وياكلون زرعكم وخبزكم * وياكلون بنيكم وبناتكم * وياكلون 16 17
غنمكم وعجولكم * وياكلون كرومكم وتينكم وزيتونكم * ويستاصلون مدنكم
الحصينة بالسيف التي انتم متوكلون عليها * ويكون في تلك الايام يقول الرب الهك لا 18
اجعلكم للفناء * ويكون اذا قلتم من اجل ماذا صنع الرب الهنا بنا هذه كلها * فتقول 19
لهم من اجل انكم تعبدتم لالهة غرباء في ارض ليست لكم * اخبروا بهذه لبيت يعقوب * 20
ولتسمع في يهودا * اسمعوا هذه ايها الشعب الجاهل العديم القلب * لهم اعين ولا تبصرون * 21
ولهم اذان ولا تسمعون * هل لا تخافوني يقول الرب * هل من وجهي لا تفزعون * انا المرتب الرمل 22
حدا للبحر امرا ابديا فلا يتجاوزه * ويضطرب ولا يقدر * وتعج امواجه ولا يتجاوزه * وصار 23
لهذا الشعب قلب غير سامع وعاص * وحادوا وانصرفوا * ولم يقل في قلبه * نخشى الرب 24
الهنا المعطي لنا مطرا صباحيا ومسائيا الى وقت كمال امر الحصاد * وحفظه لنا *

An propter hæc non viſitarem eos, dicit 9
Dominus ? an de gente cujus talis eſt
agendi ratio, non ulciſceretur anima
mea ? Aſcendite ad pinnas ejus, & 10
evertite eas ; verùm ne faciatis exitium :
relinquite fundamenta ejus, quia
Domini ſunt. Quia domus Iſraelis 11
planè rebellavit contra me, & domus
Judæ mentita eſt in Dominum ſuum,
Et dixerunt, Nequaquam hæc erunt, 12
neque contingent nobis mala, neque
gladium aut famem experiemur ; Prophetæ 13
noſtri in ventum abierunt, & verbum
Domini nequaquam venit per eos :
Iccirco ſic ait Dominus omnipotens,
Quia locuti eſtis hujuſmodi verbum, 14
ecce ego poſui verba mea in ore tuo
ignem ; & populum iſtum ligna, ut
comburat eos.

Textus quartus.

Ecce ego adducam ſuper vos gentem de 15
longinquo O domus Iſraelis, ait Dominus,
gentem cujus vocem non audiſti ; 16
Omnes fortiſſimi ſunt : Comedentque ſementem 17
veſtram & panem veſtrum,
comedent filios & filias veſtras, comedent
oves & vitulos veſtros, comedent
vineas, ficus, & oleas veſtras ; &
exterminabunt gladio urbes veſtras munitas,
quibus vos freti eſtis. Erit autem 18
iis diebus, ait Dominus Deus tuus, ut
non exponam vos exterminio. Fietque 19
cùm dixeritis, Quam ob rem fecit Dominus
Deus noſter nobis hæc omnia ?
ut dicas eis, Quia ſerviviſtis diis alienis
in terra non veſtra. Significate hæc 20
domui Jacobi, & nota fiant in Juda ;
Audite hæc popule ſtulte & expers cordis, 21
qui oculos habetis, nec videtis ; habetis
aures, nec auditis : An me non metuetis, 22
ait Dominus ? an vultum meum
non reverebimini ? mei qui diſpoſui arenam
terminum mari, ſtatuto perpetuo,
neque tranſgreditur illum : licèt turbetur,
nil tamen poteſt ; & licèt fremant
fluctus ejus, non tamen excedit illum.
At factum eſt huic populo cor inobediens 23
ac rebelle, declinaverunt, & abierunt ;
Neque dixerunt apud ſemetipſos, Vereamur 24
Dominum Deum noſtrum, qui dat
nobis imbrem matutinum ac veſpertinum,
quoad perficiatur tempus rei meſſoriæ ;
idque perpetuò ſervaverat nobis ;

bonū phibuerūt vestra peccata & :hæc fecerūt declinare vestræ Iniquitates
25 עֲוֹנוֹתֵיכֶם הִטּוּ־אֵלֶּה וְחַטֹּאותֵיכֶם מָנְעוּ הַטּוֹב
expositionē secundū intuebitur :impii meo populo in sunt inventi Quia .vobis à
26 מִכֶּם׃ כִּי־נִמְצְאוּ בְעַמִּי רְשָׁעִים יָשׁוּר כְּשַׁךְ
,*volatili* plena cavea Sicut .capient homines,*exterminatorium statuerunt,laqueorum*
27 יְקוּשִׁים הִצִּיבוּ מַשְׁחִית אֲנָשִׁים יִלְכֹּדוּ׃ כִּכְלוּב מָלֵא עוֹף
.sunt ditati & sunt magnificati ideo : dolo plenæ eorum domus sic
כֵּן בָּתֵּיהֶם מְלֵאִים מִרְמָה עַל־כֵּן גָּדְלוּ וַיַּעֲשִׁירוּ׃
non judicium *: mali verba* superaverūt etiam ,*nituere* ,sunt Impinguati
28 שָׁמְנוּ עָשְׁתוּ גַּם עָבְרוּ דִבְרֵי־רָע דִּין לֹא־
egenorum judicium & :prosperaverūt & ,pupilli judiciū ,judicaverūt
דָנוּ דִּין יָתוֹם וְיַצְלִיחוּ וּמִשְׁפַּט אֶבְיוֹנִים
? Dominus dicit , visitabo non his super Nunquid .judicaverant non
29 לֹא שָׁפָטוּ׃ הַעַל־אֵלֶּה לֹא־אֶפְקֹד נְאֻם־יְהוָה
Stupor ? mea anima ulciscetur non ,hæc sicut quæ gente in *Num*
30 אִם בְּגוֹי אֲשֶׁר־כָּזֶה לֹא תִתְנַקֵּם נַפְשִׁי׃ שַׁמָּה
,*falsitate in* prophetaverunt Prophetæ .terra in est facta *fœditas &*
31 וְשַׁעֲרוּרָה נִהְיְתָה בָּאָרֶץ׃ הַנְּבִאִים נִבְּאוּ בַשֶּׁקֶר
: sic dilexerunt meus populus &,*eorum* manus *super dominabuntur* sacerdotes &
וְהַכֹּהֲנִים יִרְדּוּ עַל־יְדֵיהֶם וְעַמִּי אָהֲבוּ כֵן
? ejus novissimo in facietis quid &
וּמַה־תַּעֲשׂוּ לְאַחֲרִיתָהּ׃

CAP. VI. ו

,buccina clangite Tecoah in &,Jerusalaim *interiori* de Binjamin filii Fugite
1 הָעִזוּ בְּנֵי בִנְיָמִן מִקֶּרֶב יְרוּשָׁלִַם וּבִתְקוֹעַ תִּקְעוּ שׁוֹפָר
, Aquilone ab est visum malum quia *: facem* elevate Hacherem-Beth super &
וְעַל־בֵּית הַכֶּרֶם שְׂאוּ מַשְׂאֵת כִּי רָעָה נִשְׁקְפָה מִצָּפוֹן
eam Ad .Sijon filiam assimilavi delicatæ & *Venustæ* .magna contritio &
2 וְשֶׁבֶר גָּדוֹל׃ הַנָּוָה וְהַמְּעֻנָּגָה דָּמִיתִי בַּת־צִיּוֹן׃ אֵלֶיהָ 3
paverunt ,*circum* tentoria ea in fixerunt :eorū greges & ,pastores venient
יָבֹאוּ רֹעִים וְעֶדְרֵיהֶם תָּקְעוּ עָלֶיהָ אֹהָלִים סָבִיב רָעוּ
, surgite , bellum eam adversus *Sacrate* .*suam manum* unusquisque
4 אִישׁ אֶת־יָדוֹ׃ קַדְּשׁוּ עָלֶיהָ מִלְחָמָה קוּמוּ
quia : dies declinavit quia : nobis Væ .Meridie in ascendamus &
וְנַעֲלֶה בַצָּהֳרָיִם אוֹי לָנוּ כִּי־פָנָה הַיּוֹם כִּי־
labefactemus & ,*nocte in* ascendamus & ,Surgite .*vesperæ* umbræ se extenderūt
5 יִנָּטוּ צִלְלֵי־עָרֶב׃ קוּמוּ וְנַעֲלֶה בַלַּיְלָה וְנַשְׁחִיתָה
,*lignum* Succidite : exercituū Dominus dixit sic Quia .ejus *palatia*
6 אַרְמְנוֹתֶיהָ׃ כִּי כֹה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת כִּרְתוּ עֵצָה
ipsa tota ,est visitata civitas Hæc .aggerem Jerusalaim juxta effundite &
וְשִׁפְכוּ עַל־יְרוּשָׁלִַם סֹלְלָה הִיא הָעִיר הָפְקַד כֻּלָּהּ
fecit scaturire sic :suas aquas *puteum ebullire Secundū*.ejꝰ *interiori in* oppressor
7 עֹשֶׁק בְּקִרְבָּהּ׃ כְּהָקִיר בַּיִר מֵימֶיהָ כֵּן הֵקֵרָה
semper *meas facies super* ,ea in *audietur* vastitas & Direptio .suā malitiam
רָעָתָהּ חָמָס וָשֹׁד יִשָּׁמַע בָּהּ עַל־פָּנַי תָּמִיד
avellatur fortè ne , Jerusalaim teipsam Erudi .percussio & *ægritudo*
8 חֳלִי וּמַכָּה׃ הִוָּסְרִי יְרוּשָׁלִַם פֶּן־תֵּקַע
habitatam non terram desertam te ponam fortè ne : te à mea anima
נַפְשִׁי מִמֵּךְ פֶּן־אֲשִׂימֵךְ שְׁמָמָה אֶרֶץ לוֹא נוֹשָׁבָה׃
vineam velut racemabunt Racemando : exercituum Dominus dixit Sic
9 כֹּה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת עוֹלֵל יְעוֹלְלוּ כַגֶּפֶן
.canistra ad vindemiator sicut tuā manū Converte .Israel *residuum*
שְׁאֵרִית יִשְׂרָאֵל הָשֵׁב יָדְךָ כְּבוֹצֵר עַל־סַלְסִלּוֹת׃
incircumcisa Ecce ? audient & ,*contestabor* & , loquar *quem Super*
10 עַל־מִי אֲדַבְּרָה וְאָעִידָה וְיִשְׁמָעוּ הִנֵּה עֲרֵלָה
Domini verbum Ecce .attendere poterunt non & , eorum auris
אָזְנָם וְלֹא יוּכְלוּ לְהַקְשִׁיב הִנֵּה דְבַר־יְהוָה
.eo in volent non ,opprobrium in eis fuit
הָיָה לָהֶם לְחֶרְפָּה לֹא יַחְפְּצוּ־בוֹ׃

Versio VULG. LAT.

25 Iniquitates vestræ declinaverunt hæc : & peccata vestra prohibuerunt bonum à vobis. 26 Quia inventi sunt in populo meo impii insidiantes quasi aucupes, laqueos ponentes & pedicas ad capiendos viros. 27 Sicut decipula plena avibꝰ, sic domus eorum plenæ dolo : ideò 28 magnificati sunt & ditati. Incrassati sunt & impinguati : et præterierunt sermones meos pessimé. Causá viduæ non judicaverunt, causá pupilli non direxerunt, et judiciū pauperū 29 non judicaverunt. Numquid sup his non visitabo, dicit Dominꝰ? aut sup gentē hujuscemodi non ulciscetur anima mea ? 30 Stupor & mirabilia facta sunt 31 in terra : Prophetæ prophetabant mendaciū, & sacerdotes applaudebant manibꝰ suis: & populꝰ meꝰ dilexit talia : quid igitur fiet in novissimo ejus ?

CAP. VI.

1 Confortamini, filii Benjamin, in medio Jerusalem, & in Thecua clangite buccinā, & sup Bethacaré levate vexillū : quia malū visum est ab Aqui-2 lone, & contritio magna. Speciosæ & delicatæ assimilavi fi-3 liā Sion. Ad eā venient pastores, & greges eorū : fixerunt in ea tētoria in circuitu: pascet unusquisq; eos, qui sub manu sua 4 sunt. Sanctificate sup eam bellum: consurgite, & ascendamꝰ in meridie: væ nobis, quia declinavit dies, quia longiores 5 factæ sunt umbræ vesperi. Surgite, & ascendamꝰ in nocte, & 6 dissipemꝰ domos ejꝰ. Quia hæc dicit Dñs exercituum; Cædite lignū ejꝰ, et fundite circa Jerusalé aggeré: hæc est civitas visitationis, omnis calumnia in 7 medio ejus. Sicut frigidā fecit cisterna aquā suā, sic frigidam fecit malitiā suā : iniquitas & vastitas audietur in ea, corā me 8 semp infirmitas & plaga. Erudire Jerusalé, ne fortè recedat anima mea à te, ne fortè ponā 9 te desertā, terrā inhabitabilem. Hæc dicit Dñs exercituū; Usq; ad racemū colligēt quasi in vinea reliquias Israel: converte manum tuā quasi vindemiator 10 ad cartallū. Cui loquar? & quē contestabor ut audiat? ecce incircumcisæ aures eorū, et audire non possunt: ecce verbum Dñi factū est eis in opprobrium, et non suscipient illud.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

25 Αἱ ἀνομίαι ὑμῶν ἐξέκλιναν ταῦτα, καὶ αἱ ἁμαρτίαι ὑμῶν (β)ἀπέστησαν τὰ ἀγαθὰ ἀφ᾽ ὑμῶν. 26 Ὅτι εὑρέθησαν ἐν τῷ λαῷ μου (γ)ἀσεβεῖς, καὶ παγίδας ἔστησαν τοῦ διαφθεῖραι ἄνδρας, 27 καὶ συνελαμβάνοσαν. Ὡς παγὶς (δ)ἐφεσταμένη πλήρης πετεινῶν, οὕτως οἱ οἶκοι αὐτῶν πλήρεις δόλου· διὰ τοῦτο ἐμεγαλύνθησαν, καὶ ἐπλούτησαν, 28 Καὶ παρέβησαν κρίσιν, οὐκ ἔκριναν κρίσιν ὀρφανοῦ, καὶ κρίσιν χήρας οὐκ ἐκρίνοσαν. 29 Μὴ ἐπὶ τούτοις οὐκ ἐπισκέψομαι; λέγει κύριος· (ε)ἢ ἐν ἔθνει τῷ τοιούτῳ οὐκ ἐκδικήσει ἡ ψυχή μου; 30 Ἔκστασις καὶ φρικτὰ ἐγενήθη ἐπὶ τῆς γῆς. 31 Οἱ προφῆται προφητεύουσιν ἄδικα, καὶ οἱ ἱερεῖς ἐπεκρότησαν ταῖς χερσὶν αὐτῶν, καὶ ὁ (ζ)λαός μου ἠγάπησεν οὕτως. καὶ τί ποιήσετε εἰς τὰ μετὰ ταῦτα;

Iniquitates vestræ declinaverunt 25 *hæc: & peccata vestra repulerunt bona à vobis.* 26 *Quia inventi sunt in populo meo impii: & laqueos statuerunt ad perdendos viros, & ceperunt.* 27 *Sicut laqueus superpositus plenus avium; sic domus eorum plenæ dolo. Ideò magnificati sunt, & ditati,* 28 *Et transgressi sunt judicium : non judicaverunt judicium pupilli: & judicium viduæ non judicaverunt.* 29 *Nunquid super his non visitabo? dicit Dominus: aut in gentē talē non ulciscetur anima mea?* 30 *Stupor, & horribilia facta sunt super terrā.* 31 *Prophetæ prophetant iniqua, & sacerdotes applauserunt manibus suis : & populus meus dilexit sic. Et quid facietis post hæc?*

MS.A. (β) ἐξαπέστησαν (γ) ἀσεβεῖς, παγίδας ἔστησαν διαφθεῖραι (δ) ἐπεσταμένη (ε) ἢ ἔθνει τοιούτῳ (ζ) λαὸς ἠγάπησαν,

ΚΕΦ. ϛʹ.

1 Ἐνισχύσατε υἱοὶ Βενιαμὶν ἐκ μέσου τῆς Ἱερουσαλὴμ, καὶ (α) ἐν Θεκουὲ σημάνατε σάλπιγγι, καὶ ὑπὲρ (β) Βαιθαχαρμὰ ἄρατε σημεῖον, ὅτι κακὰ ἐκκέκυφεν ἀπὸ Βορρᾶ, καὶ 2 συντριβὴ μεγάλη γίνεται. Καὶ ἀφαιρεθήσεται 3 τὸ ὕψος (γ) θύγατερ Σιών. Εἰς αὐτὴν ἥξουσι ποιμένες, καὶ τὰ ποίμνια αὐτῶν· καὶ πήξουσιν ἐπ᾽ αὐτὴν σκηνὰς κύκλῳ, καὶ ποιμανοῦσιν ἕκαστος τῇ χειρὶ (δ) αὐτοῦ. 4 Παρασκευάσασθε ἐπ᾽ αὐτὴν εἰς πόλεμον, ἀνάστητε, καὶ ἀναβῶμεν ἐπ᾽ αὐτὴν μεσημβρίας. οὐαὶ ἡμῖν, ὅτι κέκλικεν ἡ ἡμέρα, ὅτι ἐκλείπουσιν αἱ σκιαὶ (ε) τῆς ἡμέρας. 5 Ἀνάστητε, καὶ (ζ) ἀναβῶμεν ἐπ᾽ αὐτὴν νυκτὶ, καὶ διαφθείρωμεν τὰ θεμέλια αὐτῆς. 6 Ὅτι τάδε λέγει κύριος, Ἔκκοψον τὰ ξύλα αὐτῆς, ἔκχεον ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ δύναμιν. ὦ πόλις ψευδής, ὅλη καταδυναστεία ἐν αὐτῇ. 7 Ὡς ψύχει λάκκος ὕδωρ, (η) οὕτω ψύχει κακία αὐτῆς, ἀσέβεια καὶ ταλαιπωρία ἀκουσθήσεται ἐν αὐτῇ ἐπὶ πρόσωπον αὐτῆς διαπαντός. 8 πόνῳ καὶ μάστιγι Παιδευθήσῃ Ἱερουσαλὴμ, μὴ ἀποστῇ ἡ ψυχή μου ἀπὸ σοῦ, μὴ ποιήσω σε ἄβατον γῆν, ἥτις οὐ (θ) κατοικισθῇ. 9 Ὅτι τάδε λέγει κύριος, Καλαμᾶσθε, καλαμᾶσθε ὡς ἄμπελον τὰ κατάλοιπα τοῦ Ἰσραὴλ, ἐπιστρέψατε ὡς ὁ τρυγῶν ἐπὶ τὸν κάρταλλον αὐτοῦ. 10 Πρὸς τίνα λαλήσω, καὶ (ι) διαμαρτύρωμαι, καὶ εἰσακούσεται; ἰδοὺ ἀπερίτμητα τὰ ὦτα (κ) αὐτῶν, καὶ οὐ δυνήσονται ἀκούειν· ἰδοὺ τὸ ῥῆμα κυρίου ἐγένετο αὐτοῖς εἰς ὀνειδισμὸν, (λ) οὐ μὴ βουληθῶσιν (μ) αὐτό.

CAP. VI.

Confortamini, filii Benjamin, 1 *de medio Hierusalem: & in Thecue significate tubâ: & super Bethacharma levate signum : quia mala incubuerunt ab Aquilone: & contritio magna fit: Et auferetur* 2 *celsitudo tua, filia Sion. In eam* 3 *venient pastores, & greges eorum: & figent super eam tabernacula in circuitu; et pascent unusquisque manu suâ. Paramini super eam in* 4 *bellum: consurgite, et ascendamus super eam meridie: væ nobis, quia declinavit dies, quia deficiunt umbræ (a) diei. Surgite, et ascendamus* 5 *super eam nocte; et dissipemus fundamenta illius. Quia* 6 *hæc dicit Dominus; Cæde ligna ejus, effunde super Hierusalem virtutem. O civitas mendax; tota oppressio in ea. Sicut frigidam facit* 7 *cisterna aquam; sic frigidam facit malitia ejus. Impietas, et miseria audietur in ea super faciem ejus semper. Dolore, et flagello Erudiêris, Hierusalē: Ne recedat anima* 8 *mea à te: ne faciam te inviam terram, quæ non habitetur. Quia hæc* 9 *dicit (b) Dominus; Racemate, racemate quasi vineam, reliquias Israel : convertimini, quasi vindemiator ad cartallum suum. Ad* 10 *quem loquar, et contestabor; et exaudiet? Ecce incircuncisæ aures eorum; et non poterunt audire. Ecce verbum Domini factum est eis in opprobrium : non volent illud.*

MS.A. (α) ἐκ Θεκουὲ (β) Βηθαχὰρ (γ) σου θύγατηρ (δ) αὐτῶν. (ε) τῆς ἑσπέρας. (ζ) διαβῶμεν ἐν τῇ νυκτὶ, (η) οὕτως (θ) κατοικηθήσεται. (ι) διαμαρτύρομαι, καὶ ἀκούσεται; (κ) ὑμῶν, καὶ οὐ δύνανται (λ) καὶ οὐ μὴ (μ) αὐτὸ ἀκοῦσαι. Καὶ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

25 חוֹבֵיכוֹן גְּרָמוּ אִלֵּין לְכוֹן וְחַטָּאֵיכוֹן מְנַעוּ טוּבָא מִנְּכוֹן: אֲרֵי אִשְׁתְּכַחוּ בְּעַמִּי חַיָּבִין בִּנְכִלִין 26
27 אָשְׁדִין דַּם זַכַּי כִּלְבוּשׁ צַיָּדִין דְּמָחֵי וְקָטֵיל מִתְעַשְּׁתִין לְחַבָּלָא נַפְשִׁין קַטְלִין: כְּבֵית פִּטְמָא
28 דִּמְלֵי עוֹפָא כֵּן בָּתֵּיהוֹן מְלָן נִכְלִין עַל כֵּן סְגִיאוּ וְעַתִּירוּ: עֲתַרוּ אַף קְנוֹ נִכְסִין אַף עֲבַרוּ
עַל פִּתְגָּמֵי אוֹרַיְתָא עֲבַדוּ דְבִישׁ דִּין דִּקְשׁוֹט לָא דָיְנִין וְאִלּוּ הֲווֹ דָיְנִין דִּין יַתְמָא הֲווֹ
29 מַצְלְחִין וְדִין חֲשִׁיכַיָּא בְקוּשְׁטָא לֵית אִנּוּן דָּיְנִין: הַעַל אִלֵּין לָא אֶסְעַר לְאַיְתָאָה עֲלֵיהוֹן
30 בִּישָׁא אֲמַר יְיָ אִם מִן עַמָּא דִּכְדֵין עוֹבָדוֹהִי לָא אֶתְפְּרַע מִנְּהוֹן כִּרְעוּתִי: תֵּימְהָא וּשְׁנוּ הֲווֹ
31 בְּאַרְעָא: נְבִיֵּי שִׁקְרָא מִתְנַבַּן שְׁקַר וְכָהֲנַיָּא מְסַיְּעִין עַל יְדֵיהוֹן וְעַמִּי רְחִימוּ כֵן וּמַה
תַּעְבְּדוּן לְסוֹפָא:

ו

1 גְּלוֹ בְּנֵי בִנְיָמִן מִגּוֹ יְרוּשְׁלֶם אֲרֵי קָל צְוָחַת קַרְנָא אִשְׁתְּמַעַת בְּאַרְעָא וְעַל בֵּית בְּקַעַת
2 כַּרְמַיָּא זְקָפוּ עַמְמַיָּא סִמְוָתָא אֲרֵי בִישְׁתָא אִסְתְּכִיאַת מִצִּפּוּנָא וּתְבִירָא רַבָּא: יָאֲתָא
3 וּמְפַנְּקְתָא אֵיכְדֵין קַלְקֵילְתְּ יַת אוֹרְחָתִיךְ בְּכֵן בְּהֵיתַת כְּנִשְׁתָּא דְצִיּוֹן: לַהּ יֵיתוּן מַלְכִין
4 וּמַשְׁרְיָתֵיהוֹן יִגְדּוּן עֲלַהּ מַשְׁכְּנִין סְחוֹר סְחוֹר וְסַיְעִין גְּבַר יַת חַבְרֵיהּ: זַמִּינוּ עֲלַהּ עָבְדֵי
5 קְרָבָא קוּמוּ וְנִסַּק בְּטִיהֲרָא וַי לָנָא אֲרֵי פְנָא יוֹמָא אֲרֵי נְגַדוּ טוּלֵי רַמְשָׁא: קוּמוּ וְנִסַּק
6 בְּלֵילְיָא וּנְחַבֵּל בִּרְנְיָתְהָא: אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת קְצוֹ אָעָא וְצַבַּרוּ עַל יְרוּשְׁלֶם מְלֵיתָא
7 הִיא קַרְתָּא דְאִתְפְּקִידוּ לַהּ חוֹבָהָא כּוּלְהוֹן אַנְסִין בְּגַוַּהּ: כְּגוּבָא דִמְקַיֵּים מוֹהִי כֵּן אוֹרִיכוּ
וְאִתְקַיִּמוּ בְגַוַּהּ עָבְדֵי בִישְׁתָא קָל חֲטוֹפִין וּבְזוֹזִין מִשְׁתְּמַע בַּהּ קֳדָמַי תְּדִירָא עַל כֵּן
8 אַיְתֵיתִי עֲלַהּ מְרַע וּמָחָא: אִתְרַדָּא יְרוּשְׁלֶם דִּלְמָא יִרְחַק מֵימְרִי יָתִיךְ דִּלְמָא אֲשַׁוֵּינִיךְ צַדְיָא
9 כְּאַרְעָא סְדוֹם דְּלָא אִתּוֹתְבַת: כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת אִתְבַּזָּזָא יִתְבַּזְּזוּן כְּמָא דִמְהַלְּכִין
עַל שׁוּלֵי גֻפֶן לְמִקְטַף שְׁאָרָא דְיִשְׂרָאֵל וּתְתִיב מַחְתָּךְ עֲלֵיהוֹן כִּדְקָטֵיף עַל סַלְסְלִין:
10 עַל מַן אֲמַלֵּל וְאַסְהֵד וִיקַבְּלוּן אוּלְפָן הָא אִטַּפְשַׁת אוּדְנְהוֹן וְלָא יָכְלִין לְמֵצַת הָא
פִּתְגָּמָא דַיְיָ הֲוָה לְהוֹן לְחִסּוּדִין מִדְּלָא צָבַן בֵּיהּ:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Iniquitates vestræ causantur hæc vobis, & delicta vestra prohibuerunt bo- 25
num à vobis. Quia inventi sunt in populo meo peccatores, & in dolo ef- 26
fundentes sanguinem innocentem : quasi indumentum venatorum, quod
percutit & occidit, cogitant disperdere animas interfectores. Sicut domus 27
saginationis quæ plena est avibus, sic domus eorum plenæ sunt dolo ; pro-
pterea multiplicati sunt & ditati sunt : Divites facti sunt & possederunt di- 28
vitias, transgressi quoque sunt sermones Legis, fecerunt quod malum est.
Judicium verum non judicant: si autem judicassent judicium pupilli, pro-
sperati fuissent ; & judicium pauperum in veritate non judicant. An ob ista 29
non visitabo ut adducam super eos mala, dicit Dñs ? aut de populo qui talis
est in operibꝰ suis, non sumam ex eo vindictam pro voluntate mea ? Admi- 30
ratio & fœditas facta *sunt* in terra. Prophetæ falsi prophetant falsa, & sa- 31
cerdotes auxiliantur manibus eorum, & populus meus dilexit sic : & quid
facietis in novissimo ejus ?

CAP. VI.

Migrate filii Benjamin de medio Jerusalem, quia vox clamoris tubæ cor- 1
neæ audita est in terra: & sup campū vinearū levate populi signa, quia
malū visum est ab Aquilone, & contritio magna. Pulchra & delicata quo- 2
modo corrupisti vias tuas? propterea confusꝰ est cœtꝰ Sion. Ad eā venient 3
reges & exercitꝰ eorū: extendent sup eā tabernacula per circuitū, & adju-
vabunt unusquisq; proximū suū. Præparate contra eā bellatores: surgite et 4
ascendamꝰ in Meridie. Væ nobis quia declinavit dies, quia longiores factæ
sunt umbræ vespertinæ. Surgite & ascendamꝰ in nocte, & dissipemꝰ pala- 5
tia ejꝰ. Quia hæc dicit Dñs exercituū: Succidite ligna & comportate super 6
Jerusalé aggeré: ista est civitas cujꝰ peccata visitantur: omnes sunt violenti
in medio ejꝰ. Sicut cisterna quæ sustentat aquas suas, sic expectaverunt & 7
sustentati sunt in medio ejꝰ operantes malū. Vox raptorū & deprædatorū
audita est in ea corā me semp: propterea adduxi sup eā infirmitatē et percus-
sionē. Erudire Jerusalé, ne fortè abjiciat te Verbū meum, ne fortè ponā te 8
desertā sicut terrā Sodomæ, quæ nō habitatur. Hæc dicit Dñs exercituū: Di- 9
reptione diripientur, sicut qui ambulant ad radices vitis ad vindemiandum
residuum Israel : et *convertes plagam tuam* ad eos , sicut vindemiator 10
ad canistra. Ad quem loquar, & quem contestabor, ut suscipiant disci-
plinam? Ecce obturata est auris eorum, & non possunt audire: ecce verbum
Domini factum est eis in opprobrium, eò quòd nolunt illud.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

25 * ܣܟܠܘܬܟܘܢ ܗܦܟܬ ܗܠܝܢ ܥܠܝܟܘܢ. ܘܚܛܗܝܟܘܢ ܟܠܝܘ ܛܒܬܐ ܡܢܟܘܢ. * ܡܛܠ
26 ܕܐܫܬܟܚܘ ܒܥܡܝ ܚܛܝܐ. ܘܐܩܝܡܘ ܦܚܐ ܐܝܟ ܣܝܓܐ. ܕܢܬܚܕܘܢ ܒܗܘܢ ܒܢܝܢܫܐ.
27 * ܘܐܝܟ ܡܨܝܕܬܐ ܕܡܠܝܐ ܦܪܚܬܐ. ܗܟܢܐ ܒܬܝܗܘܢ ܡܠܝܢ ܢܟܠܐ. * ܡܛܠܗܢܐ ܪܒܘ
28 ܘܥܬܪܘ. ܘܥܒܪܘ ܥܠ ܕܝܢܐ. ܕܝܢܐ ܠܐ ܕܢܘ. ܘܕܝܢܐ ܕܝܬܡܐ ܠܐ ܬܪܨܘ. ܘܕܝܢܐ ܕܡܣܟܢܐ ܠܐ ܕܢܘ.
29 * ܥܠ ܗܠܝܢ ܠܐ ܐܦܩܘܕ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܡܢ ܥܡܐ ܕܗܟܢܐ ܠܐ ܬܬܦܪܥ ܢܦܫܝ. * ܬܡܗܐ ܘܫܛܝܘܬܐ
30 ܗܘܬ ܒܐܪܥܐ. * ܢܒܝܐ ܐܬܢܒܝܘ ܫܘܩܪܐ. ܘܟܗܢܐ ܐܚܕܘ ܐܝܕܝܗܘܢ. ܘܥܡܝ ܪܚܡܘ ܗܠܝܢ.
31 ܘܡܢܐ ܥܒܕܝܬܘܢ ܒܚܪܬܐ.

* ܫܠܡ * ܗ̄ *

1 * ܥܪܩܘ ܒܢܝ ܒܢܝܡܝܢ ܡܢ ܓܘ ܐܘܪܫܠܡ. ܘܒܬܩܘܥ ܩܥܘ ܒܫܝܦܘܪܐ. ܘܥܠ ܒܝܬ ܟܪܡ
2 ܐܩܝܡܘ ܐܬܐ. ܡܛܠ ܕܒܝܫܬܐ ܡܝܬܝܐ ܐܢܐ ܡܢ ܓܪܒܝܐ. ܘܬܒܪܐ ܪܒܐ. * ܡܦܢܩܬܐ
3 ܘܡܥܕܢܢܬܐ ܕܡܝܬ. ܗܘܝܬܝ ܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. * ܠܘܬܟܝ ܢܐܬܘܢ ܪܥܘܬܐ. ܘܥܢܗܘܢ ܥܡܗܘܢ.
4 ܘܢܩܒܥܘܢ ܥܠܝܗ̇ ܡܫܟܢܝܗܘܢ ܚܕܪ ܚܕܪ. ܘܢܪܥܘܢ ܓܒܪ ܓܒܪ ܒܐܝܕܗ. * ܛܝܒܘ ܥܠܝܗ̇
5 ܩܪܒܐ. ܘܐܡܪܘ. ܩܘܡܘ ܢܣܩ ܒܛܗܪܐ. ܘܝ ܠܢ ܕܦܢܐ ܝܘܡܐ. ܘܐܪܟܢܘ ܛܠܠܝ ܪܡܫܐ. * ܩܘܡܘ
6 ܢܣܩ ܥܠܝܗ̇ ܒܠܠܝܐ. ܘܢܚܒܠ ܩܨܪܝܗ̇. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܦܣܘܩܘ
ܩܝܣܝܗ̇. ܘܐܪܡܘ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ ܟܡܝܢܐ. ܗܝ ܡܕܝܢܬܐ ܕܐܬܦܩܕܬ. ܘܟܠܗ̇ ܥܘܫܩܐ
7 ܒܓܘܗ̇. * ܐܝܟ ܕܢܒܥ ܓܘܒܐ ܡܝܘܗܝ. ܗܟܢܐ ܢܒܥܬ ܒܝܫܘܬܗ̇. ܚܛܘܦܝܐ ܘܒܙܬܐ ܡܫܬܡܥ ܒܗ̇
8 ܩܕܡ ܐܦܝ ܐܡܝܢܐܝܬ. * ܒܟܐܒܐ ܘܒܡܚܘܬܐ ܐܬܪܕܝ ܐܘܪܫܠܡ. ܕܠܐ ܬܩܘܨ ܢܦܫܝ
ܡܢܟܝ. ܕܠܐ ܐܥܒܕܟܝ ܚܘܪܒܐ. ܐܝܟ ܐܪܥܐ ܕܠܐ ܡܬܝܬܒܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ 9
ܚܝܠܬܢܐ. ܡܥܠܠܘ ܢܥܠܠܘܢ ܐܝܟ ܓܦܬܐ ܫܪܟܢܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܗܦܟ ܐܝܕܟ ܐܝܟ ܩܛܘܦܐ
10 ܠܩܛܘܦܐ. * ܥܡ ܡܢ ܐܡܠܠ ܘܐܣܗܕ ܘܢܫܡܥܘܢ. ܗܐ ܥܘܪܠܢ ܐܕܢܝܗܘܢ. ܘܠܐ ܡܫܟܚܝܢ
ܠܡܫܡܥ. ܗܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܗܘܐ ܠܗܘܢ ܚܣܕܐ. ܘܠܐ ܨܒܝܢ ܒܗ.

Culpæ veſtræ reflexerunt hæc in vos, & peccata veſtra averterunt bona à vobis. 25 Inventi 26 ſunt enim in populo meo peccatores, qui laqueos ceu ſepes erexerunt, ut iis caperentur homines: Et veluti cavea plena avibus, ita 27 domus eorum plenæ ſunt dolo. Propterea 28 magni ac divites effecti ſunt, & transgreſſi ſunt judicium: jus non dixerunt, & cauſam pupillorum haud rectè diſpoſuerunt, neque judicaverunt cauſam egenorum. An propter 29 iſta non viſitarem, dicit Dominus? & de hujuſmodi populo non ſumeret ultionem anima mea? Stupiditas & ſtultitia facta eſt in terra: 30 Prophetæ falſitatem vaticinabantur, & ſacerdotes tenebant manus eorum, & populo meo 31 placuerunt iſta: ecquid tandè facturi eſſetis?

CAP. VI.

DEfecerunt filii Benjaminis è Jeruſalem; 1 nam cum ſonitu clanxerunt *Aſſyrii* buccinâ & ſuper Beth-berem vexillum erexerunt: malum enim adductus ſum ex Aquilone, & contritionem magnam. Voluptuoſæ ac delicatæ ſi- 2 milis facta es filia Sion: Contra te venient pa- 3 ſtores unà cum gregibus ſuis, figentque circum te tentoria ſua circunquaque, & paſcent quiſque latus quod occupabit. Præparate ad- 4 versùs eam bellum, & dicite; Surgite, aſcen- 5 damus ipſo meridie: væ nobis, quia receſſit dies, & inclinârunt umbræ veſpertinæ: Surgite, aſcendamus adversùs eam noctu, & demoliamur palatia ejus. Sic enim dicit Domi- 6 nus potentiſſimus, Succidite ligna ejus, & inſidias tendite contra Jeruſalem civitatem illam, quæ cùm viſitata eſt, tota oppreſſio ejus *inventa eſt* in medio ipſius: Quemadmodum 7 congerit puteus aquas ſuas, ita congeſſit malitiam ſuam: rapina & deprædatio auditur in ea coram facie mea jugiter. Doloribus ac plagis 8 erudire Jeruſalem, ne te nauſeet anima mea, ne te redigam in ſolitudinem ceu terram quæ nunquam fuit habitata. Sic dicit Domi- 9 nus potentiſſimus, Accuratè racemabuntur, ut vitis, reliquiæ Iſraelis: reduc manum tuam, ut vindemiator, ad racemationem. Quos 10 alloquar & conteſtabor ut audiant? en aures eorum ſunt præputiatæ, nec poſſunt auſcultare: en ſermo Domini factus eſt apud eos in probrum, nec oblectantur illo.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

25 * اثامنا امالت هذه * وخطايانا ابعدت الخيرات عنا * لان النفاق وجد في هذا الشعب * اقاموا 26
فخاخا ليفسدوا رجالا واخذوهم * مثل فخ منصوب مملو طيورا هكذا بيوتهم مملوة 27
غشا * لاجل هذا عظموا واستغنوا وتجاوزوا القضاء * ولم يحكموا حكم اليتيم * ولم يقضوا 28
قضاء الارملة * هل بهذه لا اتعهدهم يقول الرب * او لامة بهذه الحال لا تنتقم نفسي * 29
30 * حيرة ورهبة صارت على الارض * الانبياء تنباوا ظلما * والكهنة صفقوا بايديهم * والشعب 31
احب هكذا * وماذا يصنع فيما بعد هذه *

* الفصل السادس *

1 * تقووا يا بني بنيامين من وسط اورشليم * ومن تكوا اعلنوا بالبوق * ومن اجل بيت تاخار
2 ارفعوا علامة * لان الشرور طلعت من الجربياء * ويكون انكسار عظيم * وينزع ارتفاعك يا
3 ابنة صهيون * اليها ياتي الرعاة وقطعانهم * وينصبون عليها خياما من حولها * ويرعون كل
4 واحد بيده * استعدوا لها للحرب * قوموا فنصعد عليها نصف النهار * ويل لنا ان النهار مال
5 6 وزال ظل المساء * قوموا ونعبر في الليل * ونفسد اساساتها * لان هكذا يقول الرب * اقطعوا
7 خشبها * صيروا على اورشليم جيشا * ايتها المدينة الكاذبة كلها بقوة فيها * كما يبرز الجب ماء *
8 هكذا تبرز شرها * نفاق وشقوة يسمعان فيها على وجهها كل حين * بوجع وضربة تتادبين
يا اورشليم * لا تبتعد نفسي عنك * ولا اجعلك ارضا غير مسكونة التي لا تسكن *
9 * لان هكذا يقول الرب قضبوا قضبوا مثل كرمة بقايا اسرائيل * ارجعوا مثل القاطف الى
10 سلته * مع من اتكلم واشهد ويسمع * ها اذانكم غير مختونة ولا تستطيعون ان تسمعوا *
ها كلمة الرب صارت لهم للتعيير ولم يشاوا ان يسمعوها *

Sed ſcelera noſtra hæc averterunt; & peccata noſtra proſperitates amoverunt à nobis. 25 *Etenim perverſitas inventa eſt in* 26 *iſto populo: tetenderunt laqueos ad perdendos viros, & ceperunt eos. Ut la-* 27 *queus tenſus, plenus avibus, ita domus eorum plenæ ſunt dolo. Hac de cauſa* 28 *magni & divites effecti transgrediuntur judicium, cauſam pupilli non judicant, neque dirimunt litem viduæ. An propter hæc non viſitarem* 29 *eos, ait Dominus? an de gente quæ talis eſt conditionis, non ulciſceretur anima mea? Stupenda res & horrenda* 30 *facta eſt ſuper terram: Prophetæ fal-* 31 *ſum prædixerunt, & ſacerdotes applauſerunt manibus, populo autem placent hujuſmodi res: & quid poſt hæc facere poſſit?*

CAP. VI.

COrroboramini O filii Benjaminis de 1 *medio Jeruſalem, & de Tecua promulgate buccinâ, & propter Beth-techer attollite ſignum: quia mala comparuerunt ex Aquilone, & futurum eſt ingens excidium: Et auferetur ſuperbia tua O* 2 *filia Sionis. Ad eam venient paſtores* 3 *cum gregibus ſuis, figentque tabernacula circum ipſam, paſcentque unuſquiſque ad manum ſuam.* (i. ad libitum.) *Parate* 4 *vos contra eam ad prælium: ſurgite, aſcendamus contra eam meridie: væ nobis, quia reflexit ſe dies, & receſſit umbra veſpertina: Surgite, & tranſeamus* 5 *noctu, & demoliamur fundamenta ipſius. Sic enim ait Dominus, Cædite ligna* 6 *ejus, collocate circum Jeruſalem exercitum. Heus urbs, tota mendax cum robore quod in ipſa eſt; Quemadmo-* 7 *dum profert puteus aquam, ita profert ſcelus ſuum: impietas & miſeria audiuntur in ea ſuper faciem ejus omni tempore. Dolore & flagello ſi erudita-* 8 *ris O Jeruſalem, non recedet à te animus meus, neque reddam te terram incultam quæ non habitatur. Nam ita* 9 *dicit Dominus; Amputate, amputate ceu vitim reliquias Iſraelis: revertimini ut vindemiator ad caniſtrum ſuum. Quem alloquar & conteſtabor, ut au-* 10 *diat? ecce aures veſtræ ſunt incircunciſæ, nec poteſtis audire: ecce verbum Domini factum eſt eis in opprobrium, nec volunt illud audire.*

ירמיה : ו

super *effundere* ,*continere* laboravi ,sum plenus Domini ira Et
וְאֶת־חֲמַת יְהוָה מָלֵאתִי נִלְאֵיתִי הָכִיל שְׁפֹךְ עַל־ 11
maritus etiam quia : pariter juvenum *secretum* super & ,*platea in* *parvulum*
עוֹלָל בַּחוּץ וְעַל סוֹד בַּחוּרִים יַחְדָּו כִּי־גַם־אִישׁ
vertentur Et .dierum pleno cum senex ,capientur uxore cum
עִם־אִשָּׁה יִלָּכֵדוּ זָקֵן עִם־מְלֵא יָמִים׃ וְנָסַבּוּ 12
extendam quia : pariter *feminæ* & , agri ; alteros ad eorum domus
בָתֵּיהֶם לַאֲחֵרִים שָׂדוֹת וְנָשִׁים יַחְדָּו כִּי־אַטֶּה
Nam .Dominus dicit , terram habitantes super meam manum
אֶת־יָדִי עַל־יֹשְׁבֵי הָאָרֶץ נְאֻם־יְהוָה׃ כִּי 13
,*cupiditate concupiscens* ipse omnis ,eorũ magnum ad usque & ,eorum parvo à
מִקְּטַנָּם וְעַד־גְּדוֹלָם כֻּלּוֹ בּוֹצֵעַ בָּצַע
curabãt Et .mendaciũ *faciens* ipse omnis,sacerdotẽ ad usq; & ,propheta à &
וּמִנָּבִיא וְעַד־כֹּהֵן כֻּלּוֹ עֹשֶׂה שָׁקֶר׃ וַיְרַפְּאוּ 14
non & , pax , Pax : dicendo levi *super* ,mei populi contritionem
אֶת־שֶׁבֶר עַמִּי עַל־נְקַלָּה לֵאמֹר שָׁלוֹם שָׁלוֹם וְאֵין
pudendo etiam ? fecerint abominationẽ quòd ,sunt affecti Pudore .pax
שָׁלוֹם׃ הוֹבִשׁוּ כִּי־תוֹעֵבָה עָשׂוּ גַּם־בּוֹשׁ 15
Quamobrem .nesciverunt erubescere etiam : sunt suffusi pudore non
לֹא־יֵבוֹשׁוּ גַּם־הַכְלִים לֹא יָדָעוּ לָכֵן
.Dominus dixit , corruent , eos visitabo tempore in *cadentes in* cadent
יִפְּלוּ בַנֹּפְלִים בְּעֵת־פְּקַדְתִּים יִכָּשְׁלוּ אָמַר יְהוָה׃
interrogate & , videte & , vias super State ,Dominus dixit Sic
כֹּה אָמַר יְהוָה עִמְדוּ עַל־דְּרָכִים וּרְאוּ וְשַׁאֲלוּ 16
; ea in ambulate & , bona via *ipsa* *ubi* , *seculi* semitis *in*
לִנְתִבוֹת עוֹלָם אֵי־זֶה דֶרֶךְ הַטּוֹב וּלְכוּ־בָהּ
.ambulabimus Non ; dixerunt & : vestræ animæ requiem invenietis &
וּמִצְאוּ מַרְגּוֹעַ לְנַפְשְׁכֶם וַיֹּאמְרוּ לֹא נֵלֵךְ׃
: buccinæ voci intendite : speculatores vos super constituam Et
וַהֲקִמֹתִי עֲלֵיכֶם צֹפִים הַקְשִׁיבוּ לְקוֹל שׁוֹפָר 17
cognosce & : gentes audite Ideo .intendemus Non : dixerunt &
וַיֹּאמְרוּ לֹא נַקְשִׁיב׃ לָכֵן שִׁמְעוּ הַגּוֹיִם וּדְעִי 18
adducens ego Ecce : terra Audi .eis in quæ *cœtus*
עֵדָה אֶת־אֲשֶׁר־בָּם׃ שִׁמְעִי הָאָרֶץ הִנֵּה אָנֹכִי מֵבִיא 19
super quia : eorum cogitationum fructum ,istum populum *ad* malum
רָעָה אֶל־הָעָם הַזֶּה פְּרִי מַחְשְׁבוֹתָם כִּי עַל־
.*ea in* reprobaverunt *&* meam legem & ,intenderunt non meis verbis
דְּבָרַי לֹא הִקְשִׁיבוּ וְתוֹרָתִי וַיִּמְאֲסוּ־בָהּ׃
terra de optimus calamus & ,veniet Seba de thus mihi jam quid Ut
לָמָּה־זֶּה לִי לְבוֹנָה מִשְּׁבָא תָבוֹא וְקָנֶה הַטּוֹב מֵאֶרֶץ 20
vestra sacrificia & : beneplacitum ad non *vestræ Ascensiones* ? longinqua
מֶרְחָק עֹלוֹתֵיכֶם לֹא לְרָצוֹן וְזִבְחֵיכֶם
dans ego Ecce : Dominus dixit sic Propterea .mihi dulcuerunt non
לֹא־עָרְבוּ לִי׃ לָכֵן כֹּה אָמַר יְהוָה הִנְנִי נֹתֵן 21
filii & , patres eis in ruent & : ruinas *hunc* *populum* *ad*
אֶל־הָעָם הַזֶּה מִכְשֹׁלִים וְכָשְׁלוּ בָם אָבוֹת וּבָנִים
Ecce : Dominus dixit Sic .peribunt ejus *socius* & vicinus , pariter
יַחְדָּו שָׁכֵן וְרֵעוֹ יֹאבֵדוּ׃ כֹּה אָמַר יְהוָה הִנֵּה 22
suscitabitur magna gens & , Aquilonis terra de *veniens* populus
עַם בָּא מֵאֶרֶץ צָפוֹן וְגוֹי גָּדוֹל יֵעוֹר
non & ,*ipse* *crudelis* , *prehendent* *parmam* & Arcum .terræ lateribus à
מִיַּרְכְּתֵי־אָרֶץ׃ קֶשֶׁת וְכִידוֹן יַחֲזִיקוּ אַכְזָרִי הוּא וְלֹא 23
:equitabunt equos super & ; *edet tumultum* mare ut eorũ Vox .miserebitur
יְרַחֵמוּ קוֹלָם כַּיָּם יֶהֱמֶה וְעַל־סוּסִים יִרְכָּבוּ
Audivimus .Sijon filia ,te adversum prælium ad vir tanquam *instructa*
עָרוּךְ כְּאִישׁ לַמִּלְחָמָה עָלַיִךְ בַּת־צִיּוֹן׃ שָׁמַעְנוּ 24
;nos apprehendit tribulatio : nostræ manus sunt *remissæ* ,ejus *auditum*
אֶת־שָׁמְעוֹ רָפוּ יָדֵינוּ צָרָה הֶחֱזִקַתְנוּ
.parturientis ut *angor*
חִיל כַּיּוֹלֵדָה׃

Versio VULG. LAT.

11 Idcircò furore Domini plenus
sum,laboravi sustinens:effunde
super parvulum foris,& super
consilium juvenum simul : vir
enim cum muliere capietur ,
12 senex cũ pleno dierũ. Et transibunt
domus eorũ ad alteros,
agri & uxores pariter : quia
extendam manum meam super
habitantes terram, dicit Dominus.
13 A minore quippe usq;
ad majorem omnes avaritiæ
student : & à propheta usque
ad sacerdotem cuncti faciunt
14 dolum. Et curabant contritionem
filiæ populi mei cum
ignominia,dicentes, Pax, pax:
15 & non erat pax. Confusi sunt,
quia abominationẽ fecerunt :
quin potiùs confusione non
sunt confusi , & erubescere
nescierunt ; quam ob rem cadent
inter ruentes : in tempore
visitationis suæ corruent, dicit
16 Dñs. Hæc dicit Dñs ; State
super vias, & videte, & interrogate
de semitis antiquis,quæ
sit via bona , & ambulate in
ea : & invenietis refrigerium
animabus vestris. Et dixerunt,
17 Non ambulabimus. Et constitui
super vos speculatores.
Audite vocem tubæ. Et dixe-
18 runt , Non audiemus. Ideò
audite Gentes , & cognosce
congregatio, quanta ego faci-
19 am eis; Audi terra ; Ecce ego
adducam mala super populum
istum, fructum cogitationum
ejus : quia verba mea non audierunt,
& legem meam pro-
20 jecerunt. Ut quid mihi thus de
Saba affertis, & calamũ suave
olentem de terra longinqua ?
holocautomata vestra non sunt
accepta, & victimæ vestræ non
21 placuerunt mihi. Propterea
hæc dicit Dñs ; Ecce ego dabo
in populũ istũ ruinas, & ruent
in eis patres & filii simul, vicinus
& proximus peribunt.
22 Hæc dicit Dñs ; Ecce populus
venit de terra Aquilonis, &
gens magna consurget à fini-
23 bus terræ. Sagittam & scutum
arripiet : crudelis est, et non
miserebitur : vox ejus quasi
mare sonabit : & super equos
ascendent , præparati quasi
vir ad prælium, adversũm te,
24 filia Sion. Audivimus famam
ejus , dissolutæ sunt manus
nostræ : tribulatio apprehendit
nos, dolores ut parturientem.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

11 Καὶ τὸν θυμόν μου ἔπλησα, ϗ ἐπέσχον,
ϗ οὐ συνετέλεσα αὐτούς. ἐκχεῶ ἐπὶ νήπια
ἔξωθεν, ϗ ἐπὶ συναγωγὴν νεανίσκων
ἅμα, ὅτι ἀνὴρ ϗ γυνὴ συλληφθήσονται,
12 πρεσβύτερος (ν) μετὰ πλήρους ἡμερῶν. Καὶ
μεταστραφήσονται αἱ οἰκίαι αὐτῶν εἰς ἑτέρους,
ἀγροὶ ϗ αἱ γυναῖκες αὐτῶν ἐπιτοαυτό· ὅτι
ἐκτενῶ τὴν χεῖρά μου ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας
13 τὴν γῆν ταύτην, λέγει κύριος. Ὅτι ἀπὸ
μικροῦ αὐτῶν (ξ) ϗ ἕως μεγάλου πάντες (ο) συνετελέσαντο
ἄνομα, ἀπὸ ἱερέως ϗ ἕως ψευδοπροφήτου
14 πάντες ἐποίησαν ψευδῆ. Καὶ
ἰῶντο (π) σύντριμμα τοῦ λαοῦ μου, ἐξουθενοῦντες
ϗ λέγοντες, Εἰρήνη εἰρήνη· ϗ ποῦ
15 ἐστιν εἰρήνη; Κατῃσχύνθησαν, ὅτι ἐξέλιπον·
ϗ οὐδ᾽ ὡς καταισχυνόμενοι (ρ) κατῃσχύνθησαν,
ϗ τὴν ἀτιμίαν αὐτῶν οὐκ ἔγνωσαν.
διατοῦτο πεσοῦνται ἐν τῇ πτώσει αὐτῶν, ϗ ἐν
καιρῷ ἐπισκοπῆς (σ) ἀπολοῦνται, εἶπε κύριος.
16 Τάδε λέγει κύριος, Στῆτε ἐπὶ ταῖς
ὁδοῖς, ϗ ἴδετε, ϗ ἐρωτήσατε τρίβους κυρίου
αἰωνίους· ϗ ἴδετε ποία ἐστὶν ἡ ὁδὸς ἡ ἀγαθή,
ϗ (ʺ) βαδίζετε ἐν αὐτῇ, ϗ εὑρήσετε
(τ) ἁγνισμὸν ταῖς ψυχαῖς ὑμῶν. ϗ εἶπαν, Οὐ
17 πορευσόμεθα. (*) Καθέστακα ἐφ᾽ ὑμᾶς σκοπούς·
Ἀκούσατε τῆς φωνῆς τῆς σάλπιγγος. ϗ εἶπαν,
18 Οὐκ ἀκουσόμεθα. Διατοῦτο ἤκουσαν
τὰ ἔθνη, ϗ οἱ ποιμαίνοντες τὰ ποίμνια
19 αὐτῶν. Ἄκουε (υ) γῆ, ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω ἐπὶ
τὸν λαὸν τοῦτον κακά, τὸν καρπὸν ἀποστροφῆς
αὐτῶν, ὅτι (φ) τῶν λόγων μου οὐ προσέσχον,
20 ϗ τὸν νόμον μου ἀπώσαντο. Ἱνατί
μοι λίβανον ἐκ Σαβὰ φέρετε, ϗ (χ) κινάμωμον
ἐκ γῆς μακρόθεν; τὰ ὁλοκαυτώματα
ὑμῶν οὐκ εἰσὶ δεκτά, ϗ αἱ θυσίαι ὑμῶν
21 οὐχ ἥδυνάν μοι. Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος,
Ἰδοὺ ἐγὼ δίδωμι ἐπὶ τὸν λαὸν τοῦτον
ἀσθένειαν, ϗ ἀσθενήσουσι (ψ) πατέρες ϗ υἱοὶ
ἅμα, γείτων ϗ ὁ πλησίον αὐτοῦ ἀπολοῦνται.
22 Τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ λαὸς ἔρχεται ἀπὸ
Βοῤῥᾶ, ϗ (ω) ἔθνη ἐξεγερθήσονται ἀπ᾽ ἐσχάτου
23 τῆς γῆς· Τόξον ϗ ζιβύνην κρατήσουσιν.
ἰταμός ἐστι, ϗ οὐκ ἐλεήσει· φωνὴ αὐτοῦ, ὡς
θάλασσα κυμαίνουσα· ἐφ᾽ ἵπποις ϗ ἅρμασι
παρατάξεται ὡς πῦρ εἰς πόλεμον πρὸς σὲ
24 θύγατερ Σιών. Ἠκούσαμεν τὴν ἀκοὴν αὐτῶν,
παρελύθησαν αἱ χεῖρες ἡμῶν, θλῖψις
κατέσχεν ἡμᾶς, ὠδῖνες ὡς τικτούσης.

Et furorem meum implevi, & sustinui, 11
& (c) non consumpsi eos.
Effundam super parvulos deforis, & super congregationem juvenum simul : quia vir, & uxor
capientur, senior cum pleno dierum : *Et transibunt domus eorum* 12
ad alteros, agri & uxores
eorum pariter : quia extendam
manum meam super habitantes
terrã hanc, dicit Dominus. A parvo 13
enim eorum, & usque ad magnũ
omnes consummaverunt iniqua :
à sacerdote, & usque ad
pseudoprophetam omnes fecerunt
mendacia. Et curabant contritionem 14
populi mei, spernentes, &
dicentes, Pax, pax. Et ubi est
pax ? Confusi sunt, quia defecerunt : 15
& neque sicut qui confunduntur,
confusi sunt : & inhonorationem
suam non cognoverunt.
Quamobrèm cadent in ruina sua,
& in tempore visitationis peribunt,
dicit Dominus. Hæc dicit 16
Dominus ; State super vias,
& videte, & interrogate semitas
Domini, quæ à seculo : & videte,
qualis est via bona, & ambulate
in ea: & invenietis purificationem
animabus vestris. Et
dixerunt; Non ibimus. Constitui 17
super eos speculatores : audite
vocem tubæ. Et dixerunt ; Non
audiemus. Ideò audierunt gentes, 18
& qui pascunt greges suos.
Audi terra ; Ecce ego adduco super 19
populum hunc mala, fructum
aversionis eorum : quia sermonibus
meis non attenderunt, & legem
meam projecerunt. Ut quid 20
mihi thus de Saba affertis, & cinamomum
de terra longinqua ?
Holocaustomata vestra non sunt
accepta, & sacrificia vestra non
mihi jucunda fuerunt. Propterea 21
hæc dicit Dominus ; Ecce ego do
super populum istum infirmitatem :
& infirmabuntur patres ,
& filii simul : vicinus & proximus
ejus peribunt. Hæc dicit 22
Dominus ; Ecce populus venit ab
Aquilone: & gentes exurgent ab
extremo terræ : Arcum, & Zibynam 23
tenebunt. Impudens est, et nõ
miserebitur : vox ejus, quasi mare
fluctuans : in equis, & in curribus
instruetur quasi ignis ad bellum
adversùs te, filia Sion. Audivimus 24
famam eorum : dissolutæ sunt manus nostræ : tribulatio apprehendit nos : dolores quasi parturientis.

MS.A. (ν) ϗ μετὰ (ξ) ϗ μεγάλου (ο) συνετέλεσαν (π) τὸ σύντριμμα (ρ) ᾐσχύνθησαν, (σ) αὐτῶν ἀπολοῦνται, (ʺ) βαδίσατε (τ) ἁγιασμὸν (*) Κατέστακα (υ) γῆ Ἰούδα, ἐγὼ (φ) τοῖς λόγοις (χ) κιννάμωμον (ψ) ἐν αὐτῇ πατέρες (ω) ἔθνος μέγα ἐξεγερθήσεται

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 וית נבואת דיי בתקוף מן קדם יי אתמליתי לאיתי לסוברא ולא יכילתא למשפך
על ינקין בשוקא ועל סיעת עולימין כחדא ארי אף גבר עם אתתא יתאחדו סב עם
12 דשבע יומין׃ ויסתחרון בתיהון לאוחרנין חקלן ונשין כחדא ארי ארים ית מחת
13 גבורתי על יתבי ארעא אמר יי׃ ארי מזעירהון ועד רבהון כולהון אנסי ממון
14 ומספר ועד כהן כולהון עבדי שקר׃ ואסיאו ית תבר כנשתא דעמי במלי שקריהון
15 למימר שלמא שלמא ולית שלם׃ עליהון למבהת ארי תועבתא עבדו אף
מבהת לית אנון בהתין אף אתכנעא לית אנון ידעין בכן יתרמון קטילין בעדן
16 דאסער עליהון חוביהון יתקלון אמר יי׃ כדנן אמר יי קומו על אורחן וחזו ושאילו
לשבילין דמן עלמא אידא אורחא דתקנא והליכו בה ואשכחו ניח לנפשכון ואמרו
17 18 לא ניזל׃ ואקמית עליכון מלפין קבילו למלי נביא ואמרו לא נקביל׃ בכן שמעו
19 עממיא ודעי כנשתא דישראל ית חוביהון׃ שמעי ארעא דישראל הא אנא מיתי בישתא
על עמא הדין תושלמת עובדיהון ארי לפתגמי עבדי נבייא לא קבילו ואוריתי וקצו
20 בה׃ למה דנן קדמי לבונתא דמשבא תיתי וקני טבתא מארע רחיקא עלותכון לא
21 לרעוא ונכסת קודשיכון לא יתקבלון קדמי׃ בכן כדנן אמר יי הא אנא מיתי על עמא
22 הדין תקלן ויתקלון בהון אבהן ובנין כחדא מגיר וקריביה ייבדון׃ כדנן אמר יי הא
23 עמא אתי מצפונא ועממין רברבין ייתון בגלי מסיפי ארעא׃ קשתן ותריסין אחידין
אכזראין אנון ולית להון רחמין קלהון כימא באתרגושיה ועל סוסותא רכיבין
24 מסדרין אנון כגבר עביד קרבין עלך כנשתא דציון׃ שמענא ית שמעהון אתרשלא
ידנא עקא אחדתנא הא כחבלין לילדתא׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Prophetia autem *Domini* in furore à facie Domini repletus sum : labora- 11
vi sustinens,& non potui effundere super lactentes in platea,& super turbam
juvenum simul : quia etiam vir cum uxore comprehensi sunt , senes
cum eo qui est satur diebus. Et transferentur domus eorum ad alios,agri 12
& uxores simul : quia levabo plagam potentiæ meæ super habitatores
terræ, dicit Domin⁹. Quia à minimo eorum usque ad maximum eorum, 13
omnes inhiant divitiis ; & à scriba usque ad sacerdotem omnes operantur
mendacium. Et curarunt contritionem cœtus populi mei verbis men- 14
daciorum suorum, dicentes; Pax, pax: & non erat pax. Eorum erat pu- 15
dore suffundi, quia abominationem fecerunt:confusione quoque non confunduntur
& humiliari nesciunt. Propterea projicientur occisi ; in tempore
quo visitavero super eos peccata eorum corruent, dicit Dominus.
Hæc dicit Dñs : State super vias & videte,& interrogate de semitis quæ à 16
seculo sunt, quæ est ista via quæ recta sit,& ambulate in ea, & invenietis
requiem animabus vestris: & dixerunt,Non ambulabim⁹. Et suscitavi su- 17
per vos doctores,[*dicens*:]Obedite verbis *Prophetæ*: & dixerunt,Non obe-
diemus. Propterea audite populi, & cognoscat cœt⁹ Israel peccata sua. 18
Audi terra Israel: Ecce ego adducam malum super populum istum, retribu- 19
tionem operum suorum : quia verbis servorum meorum prophetarum
non obedierunt,& Legem meam detestati sunt. Ut quid coram me thus 20
de Saba affertur,& calam⁹ aromatic⁹ de terra longinqua ? holocausta vestra
non sunt grata, & victimæ sanctificatæ vestræ non erunt acceptabiles
coram me. Propterea sic dicit Dñs : Ecce adducam super populum istum 21
offendicula, & offendent in eis patres & filii simul, vicinus & proximus
ej⁹,& peribunt. Hæc dicit Domin⁹ : Ecce *populus venit ab Aquilone*,& 22
populi multi venient publicè de finib⁹ terræ. Arc⁹ & scuta tenent : crude- 23
les sunt,nec est illis miseratio. Vox eorum sicut mare in fremitu suo,& equis
insident ; ordinati sunt,quasi vir committens prælium,contra te cœt⁹ Sion.
Audivimus famam eorum : dissolutæ sunt manus nostræ : angustia apprehen- 24
dit nos quasi dolores parturientis.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

11 ܘܐܢܬܝ ܡܠܝܬܝ ܚܡܬܗ ܕܡܪܝܐ ܘܠܐܝܬܝ. ܐܫܦܘܟܝ ܘܐܫܘܕܝ ܥܠ ܥܘܠܐ ܒܫܘܩܐ. *
ܘܥܠ ܟܢܘܫܬܐ ܕܥܠܝܡܐ ܐܟܚܕܐ. ܡܛܠ ܕܐܦ ܓܒܪܐ ܥܡ ܐܢܬܬܗ ܢܬܐܚܕܘܢ. ܘܣܒܐ ܥܡ
12 ܛܠܝܐ ܢܘܩܐ. * ܢܬܗܦܟܘܢ ܒܬܝܗܘܢ ܠܢܘܟܪܝܐ. ܘܚܩܠܬܗܘܢ ܘܢܫܝܗܘܢ ܐܟܚܕܐ. ܡܛܠ ܕܡܪܝܡ
13 ܐܢܐ ܐܝܕܝ ܥܠ ܥܡܘܪܝܗ ܕܐܪܥܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܕܡܢ ܙܥܘܪܗܘܢ ܘܥܕܡܐ ܠܪܒܗܘܢ.
ܟܠܗܘܢ ܢܟܠܝܢ ܢܟܠܐ. ܘܡܢ ܢܒܝܐ ܕܓܠܐ ܘܥܕܡܐ ܠܟܗܢܐ. ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝܢ ܫܘܩܪܐ.
14 * ܘܡܐܣܝܢ ܬܒܪܗ ܕܒܪܬ ܥܡܝ ܒܫܝܛܘܬܐ ܘܐܡܪܝܢ. ܫܠܡܐ ܫܠܡܐ ܘܠܝܬ ܫܠܡܐ. * ܒܗܬܘ
15 ܡܛܠ ܕܣܢܝܩܘܬܐ ܥܒܕܘ. ܘܒܗܬܬܐ ܠܐ ܒܗܬܘ. ܘܡܟܣܢܘܬܐ ܠܐ ܝܕܥܘ. ܡܛܠ ܗܢܐ
16 ܢܦܠܘܢ ܥܡ ܢܦܠܐ. ܘܒܙܒܢܐ ܕܡܬܦܩܕܝܢ ܢܬܬܚܪܒܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
ܩܘܡܘ ܥܠ ܐܘܪܚܬܐ ܘܚܙܘ. ܘܫܐܠܘ ܥܠ ܫܒܝܠܐ ܕܥܠܡܐ. ܘܚܙܘ ܐܝܢܐ ܐܘܪܚܐ ܛܒܬܐ ܘܗܠܟܘ
17 ܒܗ. ܘܬܫܟܚܘܢ ܢܝܚܐ ܠܢܦܫܬܟܘܢ. ܘܐܡܪܬܘܢ ܠܐ ܐܙܠܝܢ ܚܢܢ. * ܘܐܩܝܡܬ ܥܠܝܟܘܢ ܕܘܩܐ
18 ܕܬܫܡܥܘܢ ܩܠܐ ܕܫܝܦܘܪܐ. ܘܐܡܪܬܘܢ ܠܐ ܫܡܥܝܢ ܚܢܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܫܡܥܘ ܥܡܡܐ ⁖
19 ܘܕܥܘ ܟܢܫܐ ܕܒܗܘܢ. * ܫܡܥܝ ܐܪܥܐ ܗܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܒܝܫܬܐ ܥܠ ܥܡܐ ܗܢܐ. ܐܝܟ
20 ܦܐܪܐ ܕܡܚܫܒܬܗܘܢ. ܕܠܦܬܓܡܝ ܠܐ ܨܬܘ. ܘܢܡܘܣܝ ܐܣܠܝܘ. * ܠܡܢܐ ܗܘܐ ܠܝ
ܠܒܘܢܬܐ ܕܡܝܬܝܢ ܐܢܬܘܢ ܡܢ ܫܒܐ. ܘܩܢܝܐ ܕܒܣܡܐ ܕܡܢ ܐܪܥܐ ܪܚܝܩܬܐ. ܥܠܘܬܟܘܢ
21 ܠܐ ܨܒܝܐ. ܘܕܒܚܝܟܘܢ ܠܐ ܒܣܡܘ ܠܝ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܝܗܒ ܐܢܐ ܠܥܡܐ
ܗܢܐ ܬܘܩܠܬܐ. ܘܢܬܬܩܠܘܢ ܒܗܘܢ ܐܒܗܐ ܘܒܢܝܐ ܐܟܚܕܐ. ܘܫܒܒܐ ܘܪܚܡܗ ܢܐܒܕܘܢ.
22 * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܥܡܐ ܐܬܐ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܓܪܒܝܐ. ܘܥܡܐ ܪܒܐ ܢܬܬܙܝܥ ܡܢ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ.
23 * ܩܫܬܐ ܘܡܘܪܢܝܬܐ ܢܐܚܕܘܢ. ܘܟܥܝܪܝܢ ܐܢܘܢ ܘܠܐ ܡܪܚܡܝܢ. ܘܩܠܗܘܢ ܐܝܟ ܝܡܐ ܕܪܓܫ.
24 ܘܥܠ ܪܟܫܐ ܪܟܒܝܢ. ܘܡܛܝܒܝܢ ܐܝܟ ܓܢܒܪܐ ܠܩܪܒܐ. ܥܠܝܟܝ ܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. * ܫܡܥܢ
ܫܡܥܗܘܢ. ܘܐܬܪܦܝ ܐܝܕܝܢ. ܘܐܘܠܨܢܐ ܐܚܕܢ. ܘܚܒܠܐ ܐܝܟ ܕܝܠܕܬܐ.

11 Proinde tu furore Domini repleta es, & fatigata: exhauri, & effunde ſuper pueros in plateis, & ſuper cœtus adoleſcentium pariter: nam tum viri cum mulieribus capientur, tum ſenex cum teneræ ætatis puero: 12 Tradentur domus eorum alienis, et agri ſimul, atque mulieres. Ego enim exaltatur' ſum manum meam ſuper habitatores terræ, dicit Dominus; 13 Eò quòd à minimo inter ipſos ad maximũ uſque, omnes doloſè agunt: & à prophetis mendacibus ad ſacerdotes uſque, omnes falſitati ſtudent: 14 Curántque fractionem filiæ populi mei illuſione, & dicunt; Pax, pax; nec ulla eſt pax. 15 Erubuerúntne quòd abominationem fecerint? imò infames iſti non erubeſcunt, nec monita admittere nôrunt: ideò cadent cum occumbentibus? & quo tempore viſitabuntur, deſtruentur, ait Dominus. 16 Domino ſic dicente, Contemplamini vias, & inſpicite; interrogate de ſemitis mundi, & videte quænam via ſit optima, & in illa incedite, ut inveniatis requiem animabus veſtris, reſpondiſtis, Nequaquam incedemus. 17 Me etiam conſtituente ſuper vos ſpeculatores ut audiretis ſonitum buccinæ, dixiſtis; Nequaquam audiem'. 18 Iccircò audite gentes, & ſcito cœt' qui in iis eſt; 19 Audi terra, ecce ego adductur' ſum malum ſuper hunc populum ſecundũm fruct' cogitationum eorum, quia ſermones meos non audierunt, & legem meã ſpreverunt. 20 Quanti eſt apud me thus quod affertis de Saba, & calamus aromatic' quem de terra longinqua? holocauſtis veſtris non delector, ſacrificia veſtra non ſunt mihi jucunda. 21 Propterea ſic dicit Dominus, Ecce daturus ſum huic populo offendicula, in quib' offendent patres unà cum filiis, vicin' & amicus ejus peribunt. 22 Sic dicit Dominus, Ecce populus veniet è terrà Aquilonari, & populus ingens movebitur ab extremis terræ. 23 Arcubus & haſtis erunt armati, tetri ſunt & immites, & vox eorum quaſi maris ſævientis: equis inſident, & inſtructi ſunt velut gigantes ad bellum, contra te filia Sionis. 24 Audientibus nobis famam eorum, remittentur manus noſtræ, triſtitia occupabit nos & dolores ut parturientis.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

11 * وملات غضبي وامسكت * ولم يكملوا الدين * افيضه على الاطفال من خارج * وعلي
12 جمع الاحداث معا * لان رجلا وامراه يوخذون وشيخ مع ممتلي من الايام * وينتقل
مساكنهم الى اخرين * حقولهم ونساهم جميعا * لاني امدد يدي على سكان هذه الارض
13 كقول الرب * لان من صغيرهم الى كبيرهم اكملوا الاثم جميعا * ومن الكاهن الى النبي الكذاب
14 جميعهم صنعوا كذبا * ويشفون انكسار شعبي محتقرين وقايلين سلامه سلامه * واين
15 هي السلامه * خزيوا لانهم بادوا * ويخزون وكانهم لم يخزوا ولم يعرفوا هوانهم * لاجل هذا
16 يسقطون بسقطتهم * وفي زمان افتقادهم يهلكون قال الرب * هكذا يقول الرب * قفوا
في الطرقات وانظروا واسالوا عن سبل الرب الابديه * وانظروا اي الطريق الصالحه هي
17 واعمدوا فيها * فتجدون تقديسا لنفوسكم فقالوا لا نمض * اقمت عليكم رقباء اسمعوا
18 صوت البوق * فقالوا لا نسمع * لاجل هذا سمعت الامم والذين يرعون قطعانهم *
19 * اسمعي يا ارض يهودا * انا اجلب على هذا الشعب شرورا عن رجوعهم لانهم لم ينصتوا
20 لكلامي وابعدوا ناموسي * لماذا تقدموا لي لبانا من سابا ودارصيني من ارض بعيدة *
21 قرابينكم ليست هي مقبوله * وذبايحكم لا تلذ لي * لاجل هذا هكذا يقول الرب * ها
انا اعطي على هذا الشعب مرضا ويمرضون به الاباء والبنون معا * الجار وقريبه يهلكون *
22 * هكذا يقول الرب * ها شعب ياتي من الجربياء * وامه عظيمه تنهض من اخر الارض *
23 * يحملون قوسا ومزراقا * جافيه هي ولا ترحم * صوتها مثل البحر المموج * على الخيل والمركبات
24 تصطف مثل نار للحرب لك يا ابنه صهيون * سمعنا سماعهم * انحلت يدانا لوتنا ضيقه
مثل طلقات التي تلد *

11 *Plenus ſum irâ meâ, at continui me: quia tamen non perſolverunt debitum, effundam eam ſuper infantes foris, & ſuper cœtum puerorum ſimul: vir enim atque mulier capientur, & ſenex cum pleno dierum:* 12 *Et devolventur domus eorum ad alienos, agri, & uxores eorum ſimul. Nam extenſurus ſum manum meam contra hujus terræ incolas juxta dictum Domini:* 13 *Eò quòd à maximo ad minimum eorum, expleverint omnes iniquitatem; & à ſacerdote ad falſum prophetam ſtuduerint omnes falſitati;* 14 *Sanentque fractionem populi mei cum deſpectu, dicentes, Pax, pax: at ubi eſt pax?* 15 *Pudore ſuffuſi ſunt, quia perierunt: & pudore ſuffuſi, ſe* geſſerunt *ac ſi non fuiſſent pudefacti; neque ſenſerunt ignominiam ſuam: propterea ſuo caſu corruent; & tempore quo viſitabuntur, peribunt, ait Dominus.* 16 *Sic dicit Dominus, Subſiſtite in viis & aſpicite, & interrogate de ſemitis Domini ſempiternis, videte quænam via ſit optima, & in ea perſiſtite, ut inveniatis ſanctificationem animabus veſtris: ipſi verò dixerunt, Nequaquam ibimus.* 17 *Conſtitui ſuper vos exploratores* qui dicerent, *Audite ſonitum buccinæ: dixerunt autem, Nequaquam audiemus.* 18 *Iccirco audierunt gentes, & ii qui paſcunt greges ſuos.* 19 *Audi O terra Judæ; Ego adducam ſuper hunc populum calamitates, fructum averſionis eorum; eò quòd non attenderunt ad verba mea, & legem meam repulerint.* 20 *Quorſum offertis mihi thus de Saba, & cinnamomum de terra longinqua? holocauſta veſtra non ſunt accepta, neque victimæ veſtræ ſunt mihi gratæ.* 21 *Iccirco ſic ait Dominus, Ecce ego immiſſurus ſum in hunc populum morbum, quo laborabunt patres atque filii pariter, vicinus atque proximus ejus peribunt.* 22 *Sic dicit Dominus, Ecce populus veniet ex Aquilone, & gens magna ſurget ab extremo terræ.* 23 *Arcum geſtabunt & jaculum; crudelis eſt & immiſericors, vox ejus ut maris proceloſi; ſuper equos & currus inſtruent ſeſe velut ignis, ad bellum contra te O filia Sionis.* 24 *Auditâ illorum famâ, remiſſæ ſunt manus noſtræ, comitata eſt nos anguſtia* talis *quales ſunt dolores parturientis.*

יִרְמְיָה : ז

,inimici gladius quoniã :ambules ne viam per & , agrum exeas Ne
25 אַל־תֵּצְאִי הַשָּׂדֶה וּבַדֶּרֶךְ אַל־תֵּלֵכִי כִּי חֶרֶב לְאֹיֵב
,cinere in te volve & ,ſacco te accinge mei populi Filia .circuitu à pavor
26 מָגוֹר מִסָּבִיב : בַּת־עַמִּי חִגְרִי־שַׂק וְהִתְפַּלְּשִׁי בָאֵפֶר
veniet repente quia :amaritudinũ planctum ,tibi fac unici luctum
אֵבֶל יָחִיד עֲשִׂי־לָךְ מִסְפַּד תַּמְרוּרִים כִּי פִתְאֹם יָבֹא
: munitionẽ ,meo populo in te dedi *Propugnaculum* .nos ſuper vaſtator
27 הַשֹּׁדֵד עָלֵינוּ : בָּחוֹן נְתַתִּיךָ בְעַמִּי מִבְצָר
ambulantes,*contumaciã apoſtatæ* ipſi Omnes .corũ viam probabis & ſcies &
28 וְתֵדַע וּבָחַנְתָּ אֶת־דַּרְכָּם : כֻּלָּם סָרֵי סוֹרְרִים הֹלְכֵי
follis eſt Exuſtus .*ipſi* corruptores ipſi omnes :ferrum & , æs ,*delatoriè*
29 רָכִיל נְחֹשֶׁת וּבַרְזֶל כֻּלָּם מַשְׁחִיתִים הֵמָּה : נָחַר מַפֻּחַ
mali & ,conflando conflavit vanum in :plumbum eſt conſumptũ,igne ab
מֵאֵשְׁתַּם עֹפָרֶת לַשָּׁוְא צָרַף צָרוֹף וְרָעִים
reprobavit quia , *eis vocârunt* reprobatum Argentum .ſunt avulſi non
30 לֹא נִתָּקוּ : כֶּסֶף נִמְאָס קָרְאוּ לָהֶם כִּי־מָאַס
.*eis in* Dominus
יְהוָה בָּהֶם :

CAP. VII. ז

Sta : dicendo ,Domino à Irmejahu ad fuit quod Verbum
1 2 הַדָּבָר אֲשֶׁר־הָיָה אֶל־יִרְמְיָהוּ מֵאֵת יְהוָה לֵאמֹר : עֲמֹד
: *dices* & ,iſtud verbum ibi *prædicabis* & ,Domini domus porta in
בְּשַׁעַר בֵּית יְהוָה וְקָרָאתָ שָּׁם אֶת־הַדָּבָר הַזֶּה וְאָמַרְתָּ
, *illas* portas per *ingredientes* ,Jehudah omnis Domini verbum Audite
שִׁמְעוּ דְבַר־יְהוָה כָּל־יְהוּדָה הַבָּאִים בַּשְּׁעָרִים הָאֵלֶּה
: Iſrael Deus exercituũ Dominus dixit Sic .Domino vos *incurvandũ ad*
3 לְהִשְׁתַּחֲוֹת לַיהוָה : כֹּה־אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל
loco in vos faciã habitare & ,veſtra *ſtudia* & ,veſtras vias facite Bonas
הֵיטִיבוּ דַרְכֵיכֶם וּמַעַלְלֵיכֶם וַאֲשַׁכְּנָה אֶתְכֶם בַּמָּקוֹם
Templum :dicendo ,mendacii verbis *in vobis* fidatis Ne .iſto
4 הַזֶּה : אַל־תִּבְטְחוּ לָכֶם אֶל־דִּבְרֵי הַשֶּׁקֶר לֵאמֹר הֵיכַל
ſi Quoniam .*ipſi* Domini templum ,Domini templum ,Domini
5 יְהוָה הֵיכַל יְהוָה הֵיכַל יְהוָה הֵמָּה : כִּי אִם־
faciendo ſi : veſtra *ſtudia* & ,veſtras vias feceritis bonas faciendo bonas
הֵיטֵיב תֵּיטִיבוּ אֶת־דַּרְכֵיכֶם וְאֶת־מַעַלְלֵיכֶם אִם־עָשׂוֹ
,pupillum ,Peregrinum .ejus *ſocium* inter & virum inter judicium feceritis
6 תַּעֲשׂוּ מִשְׁפָּט בֵּין אִישׁ וּבֵין רֵעֵהוּ : גֵּר יָתוֹם
loco in effuderitis non innocentẽ ſanguinẽ &,oppreſſeritis non viduam &
וְאַלְמָנָה לֹא תַעֲשֹׁקוּ וְדָם נָקִי אַל־תִּשְׁפְּכוּ בַּמָּקוֹם
: vobis malum in ambulaveritis non alienos Deos poſt & , iſto
הַזֶּה וְאַחֲרֵי אֱלֹהִים אֲחֵרִים לֹא תֵלְכוּ לְרַע לָכֶם :
dedi quam terra in , iſto loco in vos faciam habitare Et
7 וְשִׁכַּנְתִּי אֶתְכֶם בַּמָּקוֹם הַזֶּה בָּאָרֶץ אֲשֶׁר נָתַתִּי
fidentes vos Ecce .ſeculum in uſque & ſeculo à ,veſtris patribus
8 לַאֲבוֹתֵיכֶם לְמִן־עוֹלָם וְעַד־עוֹלָם : הִנֵּה אַתֶּם בֹּטְחִים
,furandum Nunquid .*proficiendum non ad* ,mendacii verbis in *vobis*
9 לָכֶם עַל־דִּבְרֵי הַשָּׁקֶר לְבִלְתִּי הוֹעִיל : הֲגָנֹב
eundũ & ,Bahal adolendũ & ,*falſum in* jurandũ &,adulterãdũ &,occidendũ
רָצֹחַ וְנָאֹף וְהִשָּׁבֵעַ לַשֶּׁקֶר וְקַטֵּר לַבָּעַל וְהָלֹךְ
ſtetiſtis & veniſtis Et ? nôſtis non quos , alienos Deos poſt
10 אַחֲרֵי אֱלֹהִים אֲחֵרִים אֲשֶׁר לֹא־יְדַעְתֶּם : וּבָאתֶם וַעֲמַדְתֶּם
:dixiſtis &,*ea ſuper* meũ nomen eſt invocatũ qua ,hac domo in *meas facies ad*
לְפָנַי בַּבַּיִת הַזֶּה אֲשֶׁר נִקְרָא־שְׁמִי עָלָיו וַאֲמַרְתֶּם
ſpelunca Nũquid .iſtas abominationes omnes *faciendum ad* ſumꝰ Liberati
11 נִצַּלְנוּ לְמַעַן עֲשׂוֹת אֵת כָּל־הַתּוֹעֵבֹת הָאֵלֶּה : הַמְעָרַת
ea ſuper meũ nomen eſt invocatum qua , hæc domus fuit *effractorum*
פָּרִצִים הָיָה הַבַּיִת הַזֶּה אֲשֶׁר־נִקְרָא־שְׁמִי עָלָיו
.Dominus dixit , vidi ecce ego etiam ? veſtris oculis in
בְּעֵינֵיכֶם גַּם אָנֹכִי הִנֵּה רָאִיתִי נְאֻם־יְהוָה :

Verſio VULG. LAT.

25 Nolite exire ad agros,& in via ne
ambuletis : quoniam gladius ini-
26 mici , pavor in circuitu. Filia
populi mei,accingere cilicio, &
conſpergere cinere : luctum uni-
geniti fac tibi, planctum ama-
rum, quia repentè veniet vaſta-
27 tor ſuper nos. Probatorem dedi
te in populo meo robuſtum : &
ſcies, & probabis viam eorum.
28 Omnes iſti principes declinan-
tes,ambulantes fraudulenter, æs
& ferrum : univerſi corrupti
29 ſunt. Defecit ſufflatorium , in
igne conſumptum eſt plumbum,
fruſtrà conflavit conflator : ma-
litiæ enim eorum non ſunt con-
30 ſumptæ. Argentum reprobum
vocate eos, quia Dominus pro-
jecit illos.

CAP. VII.

1 VErbum, quod factum eſt ad
2 Jeremiam à Domino, dicens; Sta
in porta domûs Domini,& præ-
dica ibi verbum iſtud, & dic ;
Audite verbũ Dñi, omnis Juda,
qui ingredimini per portas has,
3 ut adoretis Dñm. Hæc dicit Do-
minus exercituum Deus Iſrael ;
Bonas facite vias veſtras, & ſtu-
dia veſtra : & habitabo vobiſcũ
4 in loco iſto. Nolite confidere in
verbis mendacii, dicentes ; Tem-
plum Dñi, templum Dñi, tem-
5 plum Dñi eſt. Quoniam ſi benè
direxeritis vias veſtras, & ſtudia
veſtra : ſi feceritis judicium inter
6 virũ & proximum ejus,Advenæ,
& pupillo, & viduæ non feceri-
tis calumniam,nec ſanguinem in-
nocentem effuderitis in loco
hoc, & poſt deos alienos non
ambulaveritis in malum vobiſ-
7 metipſis : Habitabo vobiſcum in
loco iſto ; in terra quam dedi pa-
tribus veſtris à ſeculo & uſque in
8 ſeculum. Ecce vos confiditis vo-
bis in ſermonibꝰ mendacii, qui
9 non proderunt vobis ; Furari ,
occidere , adulterari , jurare
mendaciter, libare Baalim,& ire
poſt deos alienos quos ignoratis.
10 Et veniſtis,& ſtetiſtis corã me in
domo hac, in qua invocatum eſt
nomen meum, & dixiſtis ; Li-
berati ſumus , eò quòd feceri-
mus omnes abominationes iſtas.
11 Numquid ergò ſpelunca latro-
num facta eſt domus iſta, in qua
invocatum eſt nomen meum in
oculis veſtris ? ego, ego ſum :
ego vidi, dicit Dominus,

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

25 Μὴ ἐκπορεύεσθε εἰς ἀγρὸν, ϗ ἐν ταῖς ὁδοῖς μὴ
βαδίζετε, ὅτι ῥομφαία τῶν ἐχθρῶν παρ-
26 οικεῖ κυκλόθεν. Θύγατερ λαοῦ μου περίζω-
σαι σάκκον, (α) κατάπασαι ἐν σποδῷ, πέν-
θος ἀγαπητοῦ ποίησαι σεαυτῇ κοπετὸν οἰ-
κτρὸν, ὅτι ἐξαίφνης ἥξει ταλαιπωρία ἐφ᾽
27 ὑμᾶς. Δοκιμαστὴν δέδωκά σε ἐν λαοῖς δε-
δοκιμασμένοις, ϗ γνώσῃ με ἐν τῷ δοκιμά-
28 σαι με τὴν ὁδὸν αὐτῶν , Πάντες ἀνήκοοι
πορευόμενοι σκολιῶς· χαλκὸς καὶ (β) σί-
29 δηρος, πάντες διεφθαρμένοι εἰσίν. Ἐξ-
έλιπε φυσητὴρ (γ) ἀπὸ πυρὸς, ἐξέλιπε
μόλιβος. εἰς κενὸν ἀργυροκόπος ἀργυρο-
30 κοπεῖ, πονηρία αὐτῶν οὐκ ἐτάκη. Ἀργύριον
ἀποδεδοκιμασμένον καλέσατε αὐτοὺς, ὅτι
ἀπεδοκίμασεν αὐτοὺς κύριος.

MS. A. (α) καὶ κατάπασαι σποδὸν, (β) σίδηρος, καὶ πάντες (γ) ἀ-
πὸ τῆς γῆς,

ΚΕΦ. ζʹ.

2 Ἀκούσατε λόγον κυρίου πᾶσα (α) Ἰουδαία.
3 Τάδε λέγει κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, Διορ-
θώσατε τὰς ὁδοὺς ὑμῶν, ϗ τὰ ἐπιτηδεύ-
ματα ὑμῶν, ϗ (β) κατοικιῶ ὑμᾶς ἐν τῷ
4 τόπῳ τούτῳ. Μὴ πεποίθατε ἐφ᾽ ἑαυτοῖς
ἐπὶ λόγοις ψευδέσιν, ὅτι τὸ παράπαν οὐκ
ὠφελήσουσιν ὑμᾶς, λέγοντες, Ναὸς κυρίου,
5 ναὸς κυρίου ἐστίν. Ὅτι ἐὰν διορθοῦντες δι-
ορθώσητε τὰς ὁδοὺς (γ) ὑμῶν ϗ τὰ ἐπιτη-
δεύματα ὑμῶν , ϗ ποιοῦντες ποιήσητε
κρίσιν ἀναμέσον ἀνδρὸς, ϗ ἀναμέσον τοῦ
6 πλησίον αὐτοῦ, Καὶ προσήλυτον ϗ ὀρφανὸν
ϗ χήραν μὴ καταδυναστεύσητε, καὶ αἷμα
ἀθῶον μὴ ἐκχέητε ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ, καὶ
ὀπίσω θεῶν ἀλλοτρίων μὴ (δ) πορεύησθε εἰς
7 κακὸν ὑμῖν, Καὶ κατοικιῶ ὑμᾶς ἐν τῷ τό-
πῳ τούτῳ ἐν γῇ ᾗ ἔδωκα τοῖς πατράσιν ὑ-
8 μῶν ἐξ αἰῶνος ϗ ἕως αἰῶνος. Εἰ δὲ ὑμεῖς
πεποίθατε ἐπὶ λόγοις ψευδέσιν, ὅθεν οὐκ
9 ὠφεληθήσεσθε, Καὶ φονεύετε, ϗ μοιχᾶσθε,
ϗ κλέπτετε, ϗ ὀμνύετε ἐπ᾽ ἀδίκῳ, ϗ θυ-
μιᾶτε τῇ Βάαλ, (ε) ϗ ἐπορεύεσθε ὀπίσω
θεῶν ἀλλοτρίων, ὧν οὐκ οἴδατε, τοῦ κα-
10 κῶς εἶναι ὑμῖν, Καὶ (ζ) ἤλθετε καὶ ἔστητε
(η) ἐνώπιον ἐμοῦ ἐν τῷ οἴκῳ οὗ ἐπικέκλη-
ται τὸ ὄνομά μου ἐπ᾽ αὐτῷ, καὶ εἴπατε,
Ἀπεσχήμεθα τοῦ μὴ ποιεῖν πάντα τὰ βδε-
11 λύγματα ταῦτα , Μὴ σπήλαιον λῃστῶν ὁ
οἶκός μου, οὗ ἐπικέκληται τὸ ὄνομά μου ἐπ᾽
αὐτῷ ἐκεῖ ἐνώπιον ὑμῶν ; ϗ ἰδοὺ ἐγὼ ἑώ-
ρακα, λέγει κύριος.

MS. A. (α) ἡ Ἰουδαία. (β)* οὐ κατοικιῶ (γ) ὑμῶν, ϗ ποιοῦντες ποιήσητε
κρίμα (δ) πορεύσησθε (ε) ϗ ὀπίσω θεῶν ἀλλοτρίων πορεύεσθε, (ζ) ἤλ-
θατε (η) ἐν τῷ οἴκῳ ἐνώπιόν μου

Nolite exire in agrum, & in vi- 25
is ne ambuletis : quoniam gladi-
us inimicorum accolit in circu-
itu. Filia populi mei, accingere 26
cilicio , & conſpergere in cine-
re : luctum dilecti fac tibi plan-
ctum miſerabilem : quia repentè
veniet miſeria ſuper vos. Pro- 27
batorem dedi te (d) in populis
probatis : & cognoſces me, in
probando me viam eorum : O- 28
mnes inobedientes , ambulantes
perverſè. Æs, & ferrum, uni-
verſi corrupti ſunt. Defecit ſuf- 29
flatorium ab igne: defecit plum-
bum. Fruſtrà argentum conflat
argenti conflator : malitia eorum
non eſt conſumpta. Argentum re- 30
probatum vocate eos : quia re-
probavit eos Dominus.

CAP. VII.

Audite (a) verbum Domini, 2
omnis Judæa. Hæc dicit Domi- 3
nus Deus Iſrael ; Dirigite vias
veſtras, & ſtudia veſtra : &
habitare vos faciam in loco iſto.
Nolite confidere in vobis ipſis, in 4
verbis mendacibus, quoniam om-
ninò non proderunt vobis, dicen-
tes ; Templum Domini, (b) tem-
plum Domini eſt. Quoniam ſi 5
dirigentes direxeritis vias ve-
ſtras, & ſtudia veſtra, & faci-
entes feceritis judicium inter vi-
rum, & proximum ejus, Et ad- 6
venam , & pupillum, & vidu-
am non oppreſſeritis, nec ſangui-
nem innocentem effuderitis in
loco hoc, & poſt deos alienos non
ambulaveritis in malum vobis ; 7
Et habitare vos faciam in loco
iſto, in terra, quam dedi patri-
bus veſtris à ſeculo, & uſque
in ſeculum. Si autem confiditis 8
vos in verbis mendacibus, undè
non erit vobis utilitas , Et occi- 9
ditis, & mœchamini, & fura-
mini, & juratis ſuper iniquo, &
adoletis ipſi Baal , & ambula-
batis poſt deos alienos, quos non
noviſtis, ut malè ſit vobis , Et 10
veniſtis, & ſtetiſtis coram me in
domo, in qua invocatum eſt no-
men meum in ea, & dixiſtis, (c)
Abſtinuimus, ne faceremus omnes
abominationes has ; Nunquid 11
ſpelunca latronũ eſt domus mea,
ubi invocatum eſt nomen meum
in ea, ibi coram vobis ? Et ecce
ego vidi, dicit Dominus.

תַּרְגּוּם יוֹנָתָן Targum JONATHAN.

25 לָא תִפְּקוּן לְחַקְלָא וּבְאוֹרְחָא לָא תְהָכוּן אֲרֵי חַרְבָּא דְסָנְאָה מְקַטְּלָא לְמִתְכַּנְשִׁין מִסְחוֹר
26 סְחוֹר : כְּנִשְׁתָּא דְעַמִּי אֱסָרוּ סַקִּין וְחָפוּ רֵישְׁכוֹן בִּקְטַמָּא אֶבֶל כְּיָחִיד עֲבִידוּ לְכוֹן מִסְפַּד
27 בְּמָרַר אֲרֵי בִתְכֵף יֵיתוֹן בָּזוֹזִין עֲלָנָא : בְּחִיר יְהַבְתָּךְ בְּעַמִּי בִּכְרַךְ תַּקִּיף וּתְהוֹדַע וּתְחַוֵּי
28 לְהוֹן יָת אוֹרְחַתְהוֹן : כָּל רַבְרְבֵיהוֹן מָרְדִין מְהַלְּכִין בִּנְכִילוּ כְּמָא דִמְעָרֵב נְחָשׁ עִם פַּרְזְלָא
29 כּוּלְּהוֹן מְחַבְּלִין אִנּוּן : הָא כְּמַשַּׁב נַפָּחִין דַּחֲרִיךְ בְּגוֹא דְנוּרָא כֵּן חֲשָׁא קָלֵיהוֹן דִּנְבִיַּיָּא
דְּמִתְנַבַּן לְהוֹן תּוּבוּ לְאוֹרַיְתָא וְלָא תָבוּ וּכְאַבָּרָא דְמִתְמְסֵי בְּגוֹ כוּרָא כֵּן הֲוָאָה בְּטִילִין
בְּעֵינֵיהוֹן מִלֵּי נְבִיַּיָּא דְמִתְנַבַּן לְהוֹן לָא לַהֲנָאָה אַלִּיפוּנוּן מַלְּפֵיהוֹן וְעוּבָדֵיהוֹן בִּישַׁיָּא לָא
30 שְׁבַקוּ : הָא מִכְּסַף פְּסוּלָא מְרַחֲקִין קְרוֹ לְהוֹן אֲרֵי רַחֵיק יְיָ יַתְהוֹן : ז
1 פִּתְגָם נְבוּאָה דַּהֲוָה עִם יִרְמְיָה מִן קֳדָם יְיָ לְמֵימַר : קוּם בִּתְרַע בֵּית מַקְדְּשָׁא דַיְיָ וְתִתְנַבֵּי
2 תַּמָּן יָת פִּתְגָמָא הָדֵין וְתֵימַר קַבִּילוּ פִּתְגָמָא דַיְיָ כָּל דְּבֵית יְהוּדָה דְּעָלִין בְּתַרְעַיָּא הָאִלֵּין
3 לְמִסְגַּד קֳדָם יְיָ : כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל אַתְקִינוּ אָרְחָתְכוֹן וְעוּבָדֵיכוֹן
4 וְאַשְׁרֵי יָתְכוֹן בְּאַתְרָא הָדֵין : לָא תִתְרַחֲצוּן לְכוֹן עַל פִּתְגָמֵי נְבִיֵּי שִׁקְרָא דְּאָמְרִין
קֳדָם הֵיכְלָא דַיְיָ אַתּוּן פָּלְחִין קֳדָם הֵיכְלָא דַיְיָ אַתּוּן דָּבְחִין קֳדָם הֵיכְלָא דַיְיָ אַתּוּן
5 סָגְדִין תְּלָת זִמְנִין בְּשַׁתָּא אַתּוּן מִתַחְזָן קֳדָמוֹהִי : אֲרֵי אִם אַתְקָנָא תְתַקְּנוּן יָת אָרְחָתְכוֹן
6 וְיָת עוּבָדֵיכוֹן אִם מֶעְבַּד תַּעְבְּדוּן דִּין דִּקְשׁוֹט בֵּין גַּבְרָא וּבֵין חַבְרֵיהּ : גִּיוֹר יָתוֹם
וְאַרְמְלָא לָא תוֹנִיסוּן וְדַם זַכַּי לָא תִשְׁדוּן בְּאַתְרָא הָדֵין וּבָתַר טַעֲוַת עַמְמַיָּא לָא תְהָכוּן
7 לְאַבְאָשָׁא לְכוֹן : וְאַשְׁרֵי יָתְכוֹן בְּאַתְרָא הָדֵין בְּאַרְעָא דִּיהָבֵית לַאֲבָהָתְכוֹן לְמִן עָלְמָא
8 וְעַד עָלְמָא : הָא אַתּוּן מִתְרַחֲצִין לְכוֹן עַל פִּתְגָמֵי נְבִיֵּי שִׁקְרָא בְּדִיל דְּלָא לַהֲנָאָה : גַּנְבִין
9 קָטוֹלֵי נַפְשָׁן וְנָיְפִין וּמִשְׁתַּבְעִין לְשִׁקְרָא וּמַסְקִין בּוּסְמִין לְבַעְלָא וְאָזְלִין בָּתַר טַעֲוַת עַמְמַיָּא
10 דְּלָא יְדַעְתּוּן : וְאָתַן אַתּוּן וְקָיְמִין קֳדָמַי בְּבֵיתָא הָדֵין דְּאִתְקְרֵי שְׁמִי עֲלוֹהִי וְאָמְרִין אַתּוּן
11 שְׁוֵבְנָא בְּדִיל לְמֶעְבַּד יָת כָּל תּוֹעֲבָתָא הָאִלֵּין : הַכְּבֵית כְּנִשַׁת רַשִׁיעִין הֲוָה בֵיתָא
הָדֵין דְּאִתְקְרֵי שְׁמִי עֲלוֹהִי בְּעֵינֵיכוֹן אַף קֳדָמַי כֵּן גְּלֵי אֲמַר יְיָ :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ne egrediamini in agrum, & in viam ne eatis;quia gladiꝰ inimici occidit 25
eos qui congregantur undequaque. Cœtꝰ populi mei accingimini ſaccis, 26
& operite capita veſtra cinere:luctũ *velut* unici facite vobis, planctum in
amaritudine;quia repentè venient vaſtatores ſup nos. Electũ dedi te in po- 27
pulo meo *in civitate fortiſſima*;& notificabis & annuntiabis eis vias ſuas.
Omnes principes eorũ rebellant,ambulantes in dolo,ut qui miſcet æs cum 28
ferro,univerſi corruptores ſunt. Ecce ſicut ſufflatoriũ ſufflatoris quod com- 29
buſtum eſt in medio ignis, ſic ſiluit vox Prophetarũ qui prophetant eis :
Convertimini ad Legem meam,& non ſunt converſi: & ſicut plumbũ quod
liqueſcit in medio fornacis,ſic ocioſa facta ſunt in oculis ſuis verba prophe-
tarum qui prophetant eis, & nihil prodeſt eis quod docent eos doctores
eorum, & opera ſua mala non reliquerunt. Ecce *præ argento reprobato* 30
abjectos vocate eos,quia projecit eos Dominus.

CAP. VII.

VErbum prophetiæ quod factum eſt ad Jeremiam coram Dño,dicendo: 1
Sta in porta domus ſanctuarii Dñi, & prophetabis ibi verbũ iſtud, & di- 2
ces:Suſcipite verbũ Dñi omnes viri domꝰ Juda,qui ingredimini per portas
iſtas,ut adoretis corã Dño. Hæc dicit Dñs exercitũ Deꝰ Iſrael:Rectas facite 3
vias veſtras, & opera veſtra,& habitare faciã vos in loco iſto. Nolite confi- 4
dere in verbis prophetarũ mendacii,qui dicũt: Corã templo Dñi vos coli-
tis,corã templo Dñi vos ſacrificatis,corã templo Dñi vos adoratis,ter in an-
no vos apparetis corã eo. Quoniã ſi dirigendo direxeritis vias veſtras,et ope- 5
ra veſtra;ſi faciendo feceritis judiciũ rectũ inter virũ & inter proximũ ejꝰ,
Et advenæ & pupillo & viduæ vim non feceritis, & ſanguinem innocen- 6
tem non effuderitis in loco iſto, & poſt idola populorum non ambulave-
ritis in malum vobis ; Collocabo vos in loco iſto in terra quam dedi pa- 7
tribꝰ veſtris à ſeculo & uſque in ſeculum. Et ecce vos confiditis in ver- 8
bis prophetarum mendacii, ita ut non proſit vobis. Latrones,homicidæ, 9
& adulteri,& jurantes falſò,& adolentes aromata idolo Baal,& ambulan-
tes poſt idola populorum quæ ignoratis. Et venitis vos & ſtatis coram me 10
in domo iſta,in qua invocatum eſt nomen meum, & dicitis;Liberati ſumꝰ;
ut faciatis omnes abominationes iſtas. Nunquid ſicut domꝰ congregationis 11
impiorum eſt domꝰ iſta, in qua invocatum eſt nomen meum in oculis ve-
ſtris ? coram me quoque ſic manifeſtum eſt , dicit Dominus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܠܐ ܬܦܩܘܢ ܠܚܩܠܐ. ܘܒܐܘܪܚܐ ܠܐ ܬܐܙܠܘܢ. ܡܛܠ ܚܪܒܐ ܕܒܥܠܕܒܒܐ ܕܚܕܪܐ ܡܢ ܣܚܪܢܘܬܟܝ 25
ܒܪܬ ܥܡܝ. * ܐܬܟܪܟܝ ܣܩܐ. ܘܐܬܦܠܫܝ ܒܩܛܡܐ. ܐܒܠܐ ܐܝܟ ܕܥܠ ܝܚܝܕܐ ܥܒܕܝ ܠܟܝ 26
ܘܡܪܩܕܬܐ ܡܪܝܪܬܐ. ܡܛܠ ܕܡܢ ܫܠܝܐ ܢܐܬܘܢ ܥܠܝܟܝ ܒܙܘܙܐ. * ܒܚܘܪܐ ܝܗܒܬܟ ܒܥܡܝ 27
ܥܫܝܢܐ. ܘܬܕܥ ܘܬܒܚܘܢ ܐܘܪܚܬܗܘܢ. * ܟܠܗܘܢ ܪܫܢܝܗܘܢ ܡܪܘܕܝܢ ܘܡܗܠܟܝܢ ܒܢܟܠܐ. 28
ܐܝܟ ܢܚܫܐ ܘܦܪܙܠܐ ܟܠܗܘܢ ܡܚܒܠܝܢ. * ܦܢܘ ܡܦܘܚܐ ܡܢ ܢܘܪܗܘܢ. ܘܐܒܪܐ. 29
ܘܠܣܪܝܩܘܬܐ ܨܪܦ ܨܪܘܦܐ. ܘܒܝܫܬܗܘܢ ܠܐ ܐܬܡܨܝܬ. * ܟܣܦܐ ܡܣܠܝܐ. ܩܪܘ ܐܢܘܢ. ܡܛܠ 30
ܕܣܠܐ ܐܢܘܢ ܡܪܝܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܙ * ܦܬܓܡܐ ܕܗܘܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܡܢ ܠܘܬ ܡܪܝܐ 1
ܟܕ ܐܡܪ. * ܩܘܡ ܒܬܪܥܐ ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܩܪܝ ܬܡܢ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ. ܘܐܡܪ. ܫܡܥܘ 2
ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܠܟܘܢ ܝܗܘܕܐ. ܕܥܐܠܝܢ ܒܬܪܥܐ ܗܠܝܢ. ܠܡܣܓܕ ܠܡܪܝܐ.
* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܬܩܢܘ ܐܘܪܚܬܟܘܢ ܘܥܒܕܝܟܘܢ. 3
ܘܐܥܡܪܟܘܢ ܒܐܬܪܐ ܗܢܐ. * ܘܠܐ ܬܬܟܠܘܢ ܥܠ ܦܬܓܡܐ ܕܫܘܩܪܐ ܕܐܡܪܝܢ ܠܟܘܢ. ܗܝܟܠܗ 4
ܕܡܪܝܐ. ܗܝܟܠܗ ܕܡܪܝܐ. * ܗܝܟܠܗ ܐܢܬܘܢ ܕܡܪܝܐ. ܐܢ ܬܬܩܢܘܢ ܐܘܪܚܬܟܘܢ ܘܥܒܕܝܟܘܢ. 5
ܘܐܢ ܬܥܒܕܘܢ ܕܝܢܐ ܬܪܝܨܐ ܒܝܢ ܓܒܪܐ ܠܚܒܪܗ. * ܘܬܘܬܒܐ ܘܝܬܡܐ ܘܐܪܡܠܬܐ: ܠܐ 6
ܬܛܠܡܘܢ. ܘܠܐ ܬܥܨܘܢ. ܘܕܡܐ ܙܟܝܐ ܠܐ ܬܐܫܘܕܘܢ ܒܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܘܒܬܪ ܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ ܠܐ
ܬܐܙܠܘܢ ܕܢܒܐܫ ܠܟܘܢ. * ܘܐܥܡܪܟܘܢ ܒܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܒܐܪܥܐ ܕܝܗܒܬ ܠܐܒܗܬܟܘܢ. ܡܢ 7
ܥܠܡ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ. * ܘܐܢ ܐܢܬܘܢ ܬܬܟܠܘܢ ܥܠ ܦܬܓܡܐ ܕܫܘܩܪܐ. ܕܠܐ ܡܘܬܪܝܢ. 8
* ܓܢܒܝܢ ܐܢܬܘܢ ܘܩܛܠܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܓܝܪܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܝܡܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܫܘܩܪܐ. ܘܡܣܩܝܢ 9
ܐܢܬܘܢ ܒܣܡܐ ܠܒܥܠܐ. ܘܐܙܠܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܬܪ ܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ ܕܠܐ ܝܕܥܬܘܢ. * ܘܐܬܝܢ ܐܢܬܘܢ 10
ܘܩܝܡܝܢ ܐܢܬܘܢ ܩܕܡܝ ܒܒܝܬܐ ܗܢܐ ܕܐܬܩܪܝ ܫܡܝ ܥܠܘܗܝ. ܘܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܦܨܢ.
ܟܕ ܥܒܕܝܢ ܐܢܬܘܢ ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ ܣܢܝܬܐ. * ܕܠܡܐ ܡܥܪܬܐ ܕܓܝܣܐ ܗܘܐ ܒܝܬܐ ܗܢܐ 11
ܕܐܬܩܪܝ ܫܡܝ ܥܠܘܗܝ ܒܥܝܢܝܟܘܢ. ܘܐܦ ܐܢܐ ܗܐ ܚܙܝܬ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.

Ne exeatis ad agrum & iter ne ſuſcipiatis, 25 propter gladium inimicorum, qui te circumcingit filia populi mei. Accinge te ciliciis, 26 & in cinere te voluta, luctum ut de unico *filio* age tibi, & planctum amariſſimum; quoniam ex improviſo venient contra te prædones. Speculatorem te conſtitui in populo 27 meo præduro, ut cognoſcas & explores vias eorum. Omnes principes eorum ſunt 28 rebelles, & cum dolo ambulant ſicut æs & ferrum omnes corrupti. Conſumpti ſunt 29 folles ab igne eorum, & plumbum; adeóque fruſtrà conflat conflator, nam malitia eorum non conſumitur. Argentum reprobum vo- 30 caverunt eos, quia reprobavit eos Dominus.

CAP. VII.

SErmo qui fuit ad Jeremiam à Domino, di- 1 cendo; Sta in oſtio domûs Domini, ibíque 2 proclama ſermonem iſtum, & dic; Audite ſermonem Domini omnes Judæi qui ingredimini per portas iſtas ad adorandum Dominum. Sic ait Dominus potens, Deus Iſrae- 3 lis; Emendate vias veſtras & actiones veſtras, tum efficiam ut habitetis in loco iſto. Ne collocetis fiduciam veſtram in ſermoni- 4 bus falſis dicentium vobis, Templum Domini, templum Domini. Vos eſtis templum 5 Domini, ſi emendetis vias veſtras & actiones veſtras; ſi jus reddatis inter virum & ſocium ejus; Advenas, pupillos, & viduas 6 non defraudetis, neque opprimatis; ſanguinem innocentem non effundatis in loco iſto; & poſt deos alienos non abeatis, quin malum contingat vobis. Tum efficiamut habi- 7 tetis in loco iſto, in terra quam dedi patribus veſtris, à ſeculo in ſeculum uſque. Vos verò 8 fiduciam collocatis in ſermonibus falſis & inutilibus, Fures eſtis, homicidæ, adulteri, falsò 9 juratis, adoletis thura Baali, et ſequimini deos alienos quos minimè nôſtis: Deinde venien- 10 tes ſtatis corā me in domo iſta ſuper quam invocatum eſt nomen meum, ac dicitis; Libera nos, dum hæc omnia crimina ꝑpetratis. Num 11 ſpelunca latronum eſt in oculis veſtris domus hæc ſuper quam invocatum eſt nomen meum? en ego quoque vidi, dicit Dominus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

25 * لا تخرجوا الى الحقل * ولا تسلكوا في الطرقات * لان حربة الاعداء تسعر من حولنا * يا ابنة 26
شعبي البسي مسحا وافرشي رمادا * لتصنعي لذاتك حزن الحبيب نوحا ومرثية * لان الشقا
ياتي عليكم بغتة كثيرا * اعطيتك في شعوب كثيرين * وتعرفني عند ما تخبر طريقهم * 27
* جميعهم غير سامعين * يسيرون باعوجاج * نحاس وحديد * وهم فاسدون جميعا * باد المنفاخ 28 29
من الارض * باد الرصاص * صائغ الفضة يصيغ الفضة باطلا * شرهم لا يذوب * فضة مرذولة 30
ادعوهم * لان الرب رذلهم * * الاصحاح الخامس * * الفصل السابع * [MS.Ox.* قول
الرب الذي كان على ارميا ليقول * قم في باب بيت الرب * وقل هناك هذه الاقوال * 1
وتكلم] * اسمعي قول الرب يا كل اليهودية * هكذا يقول الرب اله اسرائيل * قوموا طرقكم 2 3
واعمالكم * واسكنكم في هذا الموضع * لا تتوكلوا على الكلمات الكاذبة * لان الانبياء الكذبة 4
لا ينفعوكم بشي * القائلين هيكل الرب هيكل الرب هو * لانكم ان استقمتم وقومتم 5
طرقاتكم * وصانعون تصنعون حكما بين الرجل وبين قريبه * ولا تقهرون الملتجي واليتيم 6
والارملة * ولا تهرقوا دما زكيا في هذا الموضع * ولا تذهبوا خلف الالهة الغريبة * فانه شر
لكم * واسكنكم في هذا الموضع في الارض التي اعطيت لابائكم منذ الدهر والى الدهر * 7
* وان انتم وثقتم بالكلمات الكاذبة * فلهذا لا تنتفعون * وتقتلون وتفسقون وتسرقون * 8 9
وتحلفون بالظلم * وتبخرون لبعال * وتذهبون خلف الالهة الغريبة التي لم تعرفوها * ليكون
لكم الشر * وتاتون وتقفون في البيت امامي حيث دعي اسمي عليه * وتقولون ابتعدنا من 10
ان لا نصنع هذه الرذالات كلها * هل بيتي مغارة للصوص حيث دعي اسمي هناك عليه 11
امامكم * وها انا رايت يقول الرب *

Ne egrediamini in agrum, néve ambuletis in viis; quia lancea hoſtium circunſtat nobis. 25 *O filia populi mei, induere cilicio, & ſterne* tibi *cinerem, ut facias tibi luctum dilecti, gemitum, & næniam; quia calamitas adorietur vos repentè, ad probandum* vos. 26 *Poſui te inter populos probatos, & cognoſces me, cùm probaveris viam eorum.* 27 *Omnes ſunt inobedientes, obliquè incedentes, ænei atque ferrei, omnes demum corrupti.* 28 *Conſumptus eſt follis è terra, conſumptum eſt plumbum; opifex argenti in vanum conflat argentum, nequitia illorum non liqueſit.* 29 *Argentum reprobum vocate eos, quia Dominus reprobavit illos.* 30

CAP. VII.

Textus quintus.

MS. Ox. V*Erbū Domini quod fuit ad Jeremiam, dicendo, Sta in oſtio domûs Domini & loquere ibi iſthæc verba, diceſq;]* 1 *Audi dictum Domini O tota Judæa: Sic dicit Dominus Deus Iſraelis, Corrigite vias veſtras & actiones veſtras, ut habitare vos faciam in loco iſto.* 2 3 *Ne confidatis verbis mendacibus, quia prophetæ falſi non proderunt vobis ulla in re, dicentes, Templum Domini, templum Domini eſt.* 4 *Nam ſi vos emendaveritis, & correxeritis vias veſtras; ſedulò exercueritis judicium inter virum ejuſq; proximum;* 5 *Non oppreſſeritis confugientem ad vos, pupillum, ac viduam; non effuderitis ſanguinem innoxium hoc in loco; nec abieritis poſt deos alienos; hoc enim pernicioſum vobis eſt:* 6 *Equidem habitare vos faciam hoc in loco, in terra quam dedi majoribus veſtris, à ſeculo ad ſeculum uſque.* 7 *At verò vos confiditis verbis mendacibus, ideoque nihil proficitis:* 8 *Occiditis, adulteramini, furamini, falſò juratis, thus adoletis Baali, & ſectamini deos alienos quos ignoratis, ut contingat vobis malum:* 9 *Tum venientes ſtatis coram me hac in æde ſuper quam invocatum eſt nomen meum, ac dicitis, Receſſimus ab agendo has omnes abominationes.* 10 *Num ſpelunca latronum eſt apud vos ædes mea ſuper quam invocatum eſt nomen meum? nam ecce ego vidi, ait Dominus.* 11

ירמיה : ז

meã nomẽ feci habitare *quo* , Siloh in qui ,meũ locũ ad nunc ite Sed
12 כִּי לְכוּ־נָא אֶל־מְקוֹמִי אֲשֶׁר בְּשִׁילוֹ אֲשֶׁר שִׁכַּנְתִּי שְׁמִי
malitiæ faciebus à ei fecerim quæ videte & : principio in *ibi*
שָׁם בָּרִאשׁוֹנָה וּרְאוּ אֵת אֲשֶׁר־עָשִׂיתִי לוֹ מִפְּנֵי רָעַת
opera omnia *vos facere propter* nunc Et .Iſrael mei populi
13 עַמִּי יִשְׂרָאֵל׃ וְעַתָּה יַעַן עֲשׂוֹתְכֶם אֶת־כָּל־הַמַּעֲשִׂים
,loquẽdo &,ſurgẽndo manè vos ad ſum locut⁹ &:Domin⁹ dixit , hæc
הָאֵלֶּה נְאֻם־יְהוָה וָאֲדַבֵּר אֲלֵיכֶם הַשְׁכֵּם וְדַבֵּר
domui faciam Et .reſpõdiſtis non & , vos vocavi & : audiſtis non &
14 וְלֹא שְׁמַעְתֶּם וָאֶקְרָא אֶתְכֶם וְלֹא עֲנִיתֶם׃ וְעָשִׂיתִי לַבַּיִת
,*ea in fidentes* vos cui ,*ea ſuper* meũ nomen eſt invocatum qua
אֲשֶׁר נִקְרָא־שְׁמִי עָלָיו אֲשֶׁר אַתֶּם בֹּטְחִים בּוֹ
.Siloh feci ſicut ,veſtris patrib⁹ & vobis dedi quem loco &
וְלַמָּקוֹם אֲשֶׁר־נָתַתִּי לָכֶם וְלַאֲבוֹתֵיכֶם כַּאֲשֶׁר עָשִׂיתִי לְשִׁלוֹ׃
omnes projeci ſicut , *meis faciebus deſuper* vos projiciam Et
15 וְהִשְׁלַכְתִּי אֶתְכֶם מֵעַל פָּנָי כַּאֲשֶׁר הִשְׁלַכְתִּי אֶת־כָּל־
ores ne tu Et .Ephraim ſemen univerſum ,veſtros fratres
16 אֲחֵיכֶם אֵת כָּל־זֶרַע אֶפְרָיִם׃ וְאַתָּה אַל־תִּתְפַּלֵּל
,orationẽ & ,*præconium* eis pro aſſumas ne & , iſto populo pro
בְּעַד־הָעָם הַזֶּה וְאַל־תִּשָּׂא בַעֲדָם רִנָּה וּתְפִלָּה
videns tu Nónne .te *audiens ego* non quia : me *in intercedas* ne &
17 וְאַל־תִּפְגַּע־בִּי כִּי־אֵינֶנִּי שֹׁמֵעַ אֹתָךְ׃ הַאֵינְךָ רֹאֶה
? Jeruſalaim plateis in & ,Jehudah civitatibus in *facientes* iſti quid
מָה הֵמָּה עֹשִׂים בְּעָרֵי יְהוּדָה וּבְחֻצוֹת יְרוּשָׁלִָם׃
, ignem *ſuccendentes* patres & , ligna *colligentes* Filii
18 הַבָּנִים מְלַקְּטִים עֵצִים וְהָאָבוֹת מְבַעֲרִים אֶת־הָאֵשׁ
,cœli *reginæ* placentas *faciendum ad,conſperſionem ſubigentes* mulieres&
וְהַנָּשִׁים לָשׁוֹת בָּצֵק לַעֲשׂוֹת כַּוָּנִים לִמְלֶכֶת הַשָּׁמַיִם
me *irritandum ad* alienis diis libamina *libandum* &
וְהַסֵּךְ נְסָכִים לֵאלֹהִים אֲחֵרִים לְמַעַן הַכְעִסֵנִי׃
ad ſeipſos non an ? DOMINUS dixit , *irritantes* ipſi me Nónne
19 הַאֹתִי הֵם מַכְעִסִים נְאֻם־יְהוָה הֲלוֹא אֹתָם לְמַעַן
: *Dominus* Dominus dixit ſic Ideo ? eorum vultus pudorem
20 בֹּשֶׁת פְּנֵיהֶם׃ לָכֵן כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה
,*hominem* ſuper iſtum locum in *effuſa* mea ira &,meus *naſus* Ecce
הִנֵּה אַפִּי וַחֲמָתִי נִתֶּכֶת אֶל־הַמָּקוֹם הַזֶּה עַל־הָאָדָם
: *humi* fructum ſuper & , agri *lignum* ſuper & , *animal* ſuper &
וְעַל־הַבְּהֵמָה וְעַל־עֵץ הַשָּׂדֶה וְעַל־פְּרִי הָאֲדָמָה
Deus exercituũ Dominus dixit Sic .extinguetur non &,ſuccendetur &
21 וּבָעֲרָה וְלֹא תִכְבֶּה׃ כֹּה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי
.carnẽ comedite &,veſtris victimis *ſuper* addite *veſtras Aſcenſiones* : Iſrael
יִשְׂרָאֵל עֹלוֹתֵיכֶם סְפוּ עַל־זִבְחֵיכֶם וְאִכְלוּ בָשָׂר׃
die in eis præcepi nec ,veſtris patribus cum ſum locutus non Quia
22 כִּי לֹא־דִבַּרְתִּי אֶת־אֲבוֹתֵיכֶם וְלֹא צִוִּיתִים בְּיוֹם
.victimæ & *aſcenſionis* verbis ſuper , Ægypti terra è eos *me educere*
הוֹצִיאִ אוֹתָם מֵאֶרֶץ מִצְרָיִם עַל־דִּבְרֵי עוֹלָה וָזָבַח׃
,*mea voce in Audite* : dicendo , eis præcepi hoc verbum *Quinimò*
23 כִּי אִם־אֶת־הַדָּבָר הַזֶּה צִוִּיתִי אוֹתָם לֵאמֹר שִׁמְעוּ בְקוֹלִי
: populum in mihi eritis vos & , Deum in vobis ero &
וְהָיִיתִי לָכֶם לֵאלֹהִים וְאַתֶּם תִּהְיוּ־לִי לְעָם
.vobis ſit bene ut , vobis *præcipiam* quam via omni in *ambulabitis* &
וַהֲלַכְתֶּם בְּכָל־הַדֶּרֶךְ אֲשֶׁר אֲצַוֶּה אֶתְכֶם לְמַעַן יִיטַב לָכֶם׃
abierunt *&* ,ſuam aurem inclinaverunt nec *audiverunt* non Et
24 וְלֹא שָׁמְעוּ וְלֹא־הִטּוּ אֶת־אָזְנָם וַיֵּלְכוּ
.*facies ad* non &,*retrorſum ſunt facti* &:mali ſui cordis *obſtinatione* in cõſiliis in
בְּמֹעֵצוֹת בִּשְׁרִרוּת לִבָּם הָרָע וַיִּהְיוּ לְאָחוֹר וְלֹא לְפָנִים׃
ad uſque , Ægypti terra è veſtri patres ſunt egreſſi qua die A
25 לְמִן־הַיּוֹם אֲשֶׁר יָצְאוּ אֲבוֹתֵיכֶם מֵאֶרֶץ מִצְרַיִם עַד
prophetas meos ſervos omnes vos ad miſi & ; hanc diem
הַיּוֹם הַזֶּה וָאֶשְׁלַח אֲלֵיכֶם אֶת־כָּל־עֲבָדַי הַנְּבִיאִים
.mittendo & ſurgendo manè , *die*
יוֹם הַשְׁכֵּם וְשָׁלֹחַ׃

Verſio VULG. LAT.

12 Ite ad locum meum in Silo, ubi
habitavit nomen meum à prin-
cipio : & videte quæ fecerim ei
propter malitiam populi mei Iſ-
13 rael: Et nunc, quia feciſtis omnia
opera hæc, dicit Dñs : & locutus
ſum ad vos manè conſurgens, &
loquens, & non audiſtis : & vo-
cavi vos , & non reſpondiſtis :
14 Faciam domui huic, in qua in-
vocatum eſt nomen meum, & in
qua vos habetis fiduciam ; & lo-
co , quem dedi vobis & patri-
15 bus veſtris , ſicut feci Silo. Et
projiciam vos à facie mea, ſicut
projeci omnes fratres veſtros,
16 univerſum ſemen Ephraim. Tu
ergò noli orare pro populo hoc,
nec aſſumas pro eis laudem &
orationem, & non obſiſtas mihi:
17 quia non exaudiam te. Nónne
vides quid iſti faciunt in civita-
tibus Juda, & in plateis Jeruſa-
18 lem? Filii colligunt ligna,& pa-
tres ſuccendunt ignem, & muli-
eres conſpergunt adipem , ut fa-
ciant placentas reginæ cœli, &
libent diis alienis, & me ad ira-
19 cundiam provocent. Numquid
me ad iracundiam provocant,di-
cit Domin⁹ ? nónne ſemetipſos
20 in confuſionem vultûs ſui ? Ideò
hæc dicit Dñs Deus ; Ecce furor
meus, & indignatio mea confla-
tur ſuper locũ iſtũ, ſup viros,&
ſup jumenta , et ſuper lignũ re-
gionis , et ſuper fruges terræ, et
ſuccendetur, et non extinguetur.
21 Hæc dicit Dominus exercituum
Deus Iſrael ; Holocautomata
veſtra addite victimis veſtris,
22 et comedite carnes. Quia non
ſum locutus cum patribus ve-
ſtris, et non præcepi eis, in die
quâ eduxi eos de terra Ægypti,
de verbo holocautomatum , et
23 victimarum. Sed hoc verbum
præcepi eis, dicens ; Audite vo-
cem meam, et ero vobis Deus,
et vos eritis mihi populus : et
ambulate in omni via, quam
mandavi vobis , ut benè ſit vo-
24 bis. Et non audierunt, nec in-
clinaverunt aurem ſuam : et
abierunt in voluntatibus, et in
pravitate cordis ſui mali : facti-
que ſunt retrorſum et non in
25 antè, A die quâ egreſſi ſunt pa-
tres eorum de terra Ægypti,
uſque ad diem hanc. Et miſi ad
vos omnes ſervos meos prophe-
tas per diem conſurgens dilucu-
lò, et mittens.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

12 (θ) Ὅτι πορεύθητε εἰς τὸν τόπον μου τὸν
ἐν (ι) Σηλὼ, οὗ κατεσκήνωσα τὸ ὄνομά μου
ἐκεῖ ἔμπροσθεν, ϗ ἴδετε ἃ ἐποίησα αὐτῷ
ἀπὸ προσώπου κακίας λαοῦ μου Ἰσραήλ.
13 Καὶ νῦν ἀνθ' ὧν ἐποιήσατε πάντα τὰ ἔρ-
γα ταῦτα, ϗ ἐλάλησα πρὸς ὑμᾶς καὶ οὐκ
ἠκούσατέ μου, ϗ ἐκάλεσα ὑμᾶς ϗ οὐκ ἀπε-
14 κρίθητε, Τοίνυν κἀγὼ ποιήσω (κ) τῷ οἴκῳ
ᾧ ἐπικέκληται τὸ ὄνομά μου ἐπ' αὐτῷ, ἐφ'
ᾧ ὑμεῖς πεποίθατε ἐπ' αὐτῷ, ϗ τῷ τόπῳ
ᾧ (λ) ἔδωκα ὑμῖν ϗ τοῖς πατράσιν ὑμῶν,
15 καθὼς ἐποίησα τῇ Σηλώ. Καὶ (ˢ) ἀπορρίψω
ὑμᾶς ἀπὸ προσώπου μου, καθὼς ἀπέρριψα
τοὺς ἀδελφοὺς ὑμῶν, πᾶν τὸ σπέρμα Ἐφραίμ.
16 Καὶ σὺ μὴ προσεύχου (μ) περὶ τοῦ λαοῦ τού-
του, ϗ μὴ ἀξίου τοῦ ἐλεηθῆναι (ν) αὐτοὺς,
καὶ μὴ εὔχου, ϗ μὴ προσέλθῃς μοι περὶ
17 αὐτῶν, ὅτι οὐκ εἰσακούσομαι. Ἦ οὐχ ὁρᾷς,
τί αὐτοὶ ποιοῦσιν ἐν ταῖς (ξ) πόλεσιν Ἰ-
18 ούδα, ϗ ἐν ταῖς ὁδοῖς Ἰερουσαλήμ; Οἱ υἱ-
οὶ αὐτῶν συλλέγουσι ξύλα, ϗ οἱ πατέρες
αὐτῶν καίουσι πῦρ, καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν
τρίβουσι σταῖς, τοῦ ποιῆσαι (˙) καυῶνας τῇ στρα-
τιᾷ τοῦ οὐρανοῦ, ϗ (ο) ἔσπεισαν σπονδὰς θε-
19 οῖς ἀλλοτρίοις, ἵνα παροργίσωσί με. Μὴ
ἐμὲ αὐτοὶ παροργίζουσι, λέγει κύριος;
(π) οὐχὶ ἑαυτοὺς, ὅπως καταισχυνθῇ τὰ
20 πρόσωπα αὐτῶν; Διατοῦτο τάδε λέγει κύ-
ριος, Ἰδοὺ ὀργὴ ϗ θυμός μου (ρ) χεῖται
ἐπὶ τὸν τόπον τοῦτον, ϗ ἐπὶ τοὺς ἀνθρώπους,
ϗ ἐπὶ τὰ κτήνη, ϗ ἐπὶ πᾶν ξύλον τοῦ ἀγροῦ
αὐτῶν, ϗ ἐπὶ (σ) τὰ γεννήματα τῆς γῆς,
21 ϗ καυθήσεται ϗ οὐ (τ) σβεσθήσεται. Τά-
δε λέγει κύριος, Τὰ ὁλοκαυτώματα ὑμῶν
συναγάγετε μετὰ τῶν θυσιῶν ὑμῶν, ϗ φά-
22 γετε κρέα. (υ) Ὅτι οὐκ ἐλάλησα πρὸς τοὺς
πατέρας ὑμῶν, ϗ οὐκ ἐνετειλάμην αὐτοῖς
ἐν ἡμέρᾳ, ᾗ ἀνήγαγον αὐτοὺς ἐκ γῆς Αἰ-
γύπτου, περὶ ὁλοκαυτωμάτων ϗ (φ) θυ-
23 σίας. Ἀλλ' ἢ τὸ ῥῆμα τοῦτο ἐνετειλάμην
αὐτοῖς, λέγων, Ἀκούσατε τῆς φωνῆς μου, ϗ
ἔσομαι (χ) ὑμῖν εἰς θεὸν, ϗ ὑμεῖς ἔσεσθέ
μοι εἰς λαὸν, ϗ πορεύεσθε ἐν πάσαις ταῖς ὁδοῖς
μου, αἷς ἂν ἐντείλωμαι ὑμῖν, ὅπως ἂν εὖ ᾖ
24 ὑμῖν. Καὶ οὐκ (ψ) ἤκουσάν μου, ϗ οὐ προσέσχε
τὸ οὖς αὐτῶν, ἀλλ' ἐπορεύθησαν ἐν τοῖς (ω) ἐν-
θυμήμασι τῆς καρδίας αὐτῶν τῆς κακῆς, καὶ
ἐγενήθησαν εἰς τὰ ὀπίσω, ϗ οὐκ εἰς τὰ ἔμ-
25 προσθεν, Ἀφ' ἧς ἡμέρας ἐξήλθοσαν οἱ
πατέρες αὐτῶν ἐκ γῆς Αἰγύπτου, ϗ ἕως
τῆς ἡμέρας ταύτης. ϗ ἐξαπέστειλα πρὸς
ὑμᾶς πάντας τοὺς δούλους μου, τοὺς προφή-
τας, ἡμέρας ϗ ὄρθρου, (α) ϗ ἀπέστειλα,

Quarè ite ad locum meum, qui 12
in Selo, ubi collocavi nomen me-
um ibi antiquà: & videte, quæ fe-
ci ei à facie malitiæ populi mei
Iſrael. Et nunc pro eo, quòd fe- 13
ciſtis omnia opera hæc, & lo-
quutus ſum ad vos, & non au-
diſtis me, & vocavi vos, & non
reſpondiſtis ; Igitur & ego fa- 14
ciam domui, in qua invocatum
eſt nomen meum in ea, in qua
vos confidiſtis in ea; & loco,
quem dedi vobis, & patribus ve-
ſtris, ſicut feci Selo : Et proji- 15
ciam vos à facie mea, ſicut pro-
jeci fratres veſtros, omne ſemen
Ephræm. Et tu noli orare pro 16
populo iſto, neque poſtules, ut mi-
ſerear illorum : & ne ores, &
ne accedas ad me pro his : quia
non exaudiam. Nunquid non 17
vides , quid ipſi faciunt in ci-
vitatibus Juda, & in viis Hie-
ruſalem ? Filii eorum colligunt 18
ligna, & patres eorum ſuccen-
dunt ignem, & mulieres eorum
terunt ſimilam, ut faciant (d)
chauonas militiæ cœli : & li-
baverunt libamina diis alienis, ut
me ad iracundiam provocent,
Nunquid me ipſi ad iram provo- 19
cant, dicit Dominus ? nónne ſe-
metipſos, ut confundantur faci-
es eorum ? Ideò hæc dicit Do- 20
minus; Ecce ira & furor meus
funditur ſuper locum iſtum, &
ſuper homines, & ſuper jumenta,
& ſuper omne lignum agri eo-
rum, & ſuper genimina terræ :
& accendetur, & non extingue-
tur. Hæc dicit Dominus ; Ho- 21
locauſtomata veſtra congregate
cum ſacrificiis veſtris, & come-
dite carnes : Quia non ſum lo- 22
quutus ad patres veſtros, & non
mandavi eis in die, quâ eduxi
eos de terra Ægypti, de holocau-
ſtis, & ſacrificio : Sed verbum 23
hoc mandavi eis, dicens ; Au-
dite vocem meam, & ero vobis
in Deum : & vos eritis mihi in
populum : & ambulate in omni-
bus viis meis, quaſcunque man-
davero vobis ; ut benè vobis ſit.
Et non audierunt me, & non at- 24
tendit auris eorum : ſed iverunt
in deſideriis cordis ſui mali, &
facti ſunt in poſteriora, & non in
anteriora ; Ex qua die exierunt
patres eorum è terra Ægypti, &
uſque in diem hanc. Et miſi ad 25
vos, omnes ſervos meos prophe-
tas, die & diluculó : & miſi ,

MS.A. (θ) Πορεύθητε (ι) Σηλὼμ, (κ) τῷ τόπῳ τούτῳ ᾧ (λ) ἐλά-
λησα (ˢ) ἀπορρίψω (μ) ὑπὲρ τοῦ (ν) αὐτοὺς, ὅτι οὐκ εἰσακούσομαι. (ξ) ὁδοῖς
Ἱερουσαλήμ; Οἱ (˙) χαυῶνας (ο) σπεῖσαι (π) οὐχ (ρ) ἐκχεῖται (σ) πάντα τὰ
γεννήματα αὐτῆς, (τ) σβεσθήσεται ϗ οὐκ ἔσται ὁ σβέσων. (υ) Καὶ οὐκ (φ) θυ-
σιῶν. (χ) ὑμῶν (ψ) εἰσήκουσάν μου, ϗ οὐ προσέσχον (ω) ἐπιθυμήμα-
σιν (α) ἀπέστειλα,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

12 ארי אזילו כען לאתר בית שכנתי די בשילו דאשריתי שכנתי תמן בקדמיתא וחזו ית
13 דעבדית ליה מן קדם בישת עמי ישראל : וכען חלף דעבדתון ית כל עובדיא האלין
אמר יי ושלחית לותכון ית כל עבדי נבייא מקדים וממלל ולא קבלתון ואתנביאו לכון
14 ולא תבתון : ואעבד לביתא דאתקרי שמי עלוהי דאתון רחיצין ביה ולאתרא דיהבית
15 לכון ולאבהתכון כמא דעבדית לשילו : ואגלי יתכון מארעא בית שכנתי כמא דאגליתי
16 ית כל אחיכון ית כל זרעא דישראל : ואת לא תצלי על עמא הדין ולא תתחנן עליהון
17 בבעו וצלו ולא תבעי מן קדמי ארי לא רעוא קדמי לקבלא צלותך : הלית את חזי מא
18 דאנון עבדין בקרויא דבית יהודה ובשוקי ירושלם : בניא מלקטין אעא ואבהתא
מדלקין ית נורא ונשיא לישן לישא למעבד כרדוטין לכוכבת שמיא ולנסכא נסכין
19 לטעות עממיא בדיל לארגזא קדמי : המרגזין די קדמי אנון מרגזין אמר יי הלא לאבאשא
20 להון בדיל דיבהתון בעובדיהון : בכן כדנן אמר יי אלהים הא רוגזי וחמתי חל באתרא
21 הדין על אנשא ועל בעירא ועל אילן חקלא ועל אבא דארעא וישצי ולא יהי חים : כדנן
22 אמר יי צבאות אלהא דישראל עלותכון אוסיפו על נכסת קודשיכון ואכלו בסרא : ארי
לא מללית עם אבהתכון ולא פקדתנון ביומא דאפקית יתהון מארעא דמצרים על עסקי
23 עלון ונכסת קודשין : אלהין ית פתגמא הדין פקדית יתהון למימר קבילו למימרי ואהוי
לכון לאלהא ואתון תהון קדמי לעם ותהכון בכל ארחא דאפקד יתכון בדיל דייטב
24 לכון : ולא קבילו ולא ארכינו ית אודניהון ואזלו בעצתהון בהרהור לבהון בישא
25 ואחזרו בפולחני קדל ולא שויאו דחלתי לקביל אפיהון : למן יומא דנפקו אבהתכון
מארעא דמצרים עד יומא הדין ושלחית לותכון ית כל עבדי נבייא יום מקדים ומשלח :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ite enim nunc ad locum domus majeſtatis meæ qui eſt in Silo, in quo habi- 12
tare feci majeſtatẽ meã in principio: & videte quid fecerim ei propter ma-
litiã populi mei Iſrael. Et nunc pro eo ꝙ feciſtis omnia opera hæc, dicit 13
Dñs, & miſi ad vos *omnes ſervos meos Prophetas*, manè conſurgens, & lo-
quens,& non obediſtis; & prophetaverunt vobis,& non eſtis converſi: Et 14
faciã domui ſup qua invocatũ eſt nomen meũ, & in qua vos confiditis, &
loco quẽ dedi vobis & patrib⁹ veſtris,ſicut feci Silo. Et tranſmigrare vos 15
faciam de terra dom⁹ majeſtatis meæ, ſicut tranſmigrare feci oẽs fratres ve-
ſtros, omne ſemen Iſrael. Tu autẽ ne ores pro populo hoc, nec depreceris 16
pro eis in deprecatione & oratione,neque roges corã me,quia non eſt vo-
luntas corã me ad ſuſcipiendã orationẽ tuã.Nonne tu vides quid ipſi faci- 17
unt in civitatib⁹ dom⁹ Juda,& in vicis Jeruſalẽ?Filii colligunt ligna,et pa- 18
tres ſuccendunt ignẽ ; & mulieres conſpergunt maſſã ut faciant placentas
ſyderi cœli, & libent libationes idolis populorũ, ut irritent me. Nunquid 19
ipſi putant ꝙ irritent me, dicit Dñs? nonne in malũ ſibimet ut confundan-
tur in operib⁹ ſuis ? Propterea ſic dicit Dñs: Ecce furor me⁹ & indignatio 20
mea reſidet ſuper locũ iſtũ, ſuper homines, & ſuper jumenta,& ſuper ar-
bores agri, & ſuper fruct⁹ terræ ; et exterminabit ea, et non erit ei miſe-
ratio. Hæc dicit Dñs exercituũ Deus Iſrael: Holocauſtomata veſtra ad- 21
dite victimis ſanctificatis veſtris, & comedite carnes: Quia non ſum locut⁹ 22
cum patrib⁹ veſtris, nec præcepi eis in die qua eduxi eos de terra Ægypti
ſuper negotio holocauſtorũ et victimarũ ſanctarũ. Sed hoc verbũ præce- 23
pi eis,dicens:Obedite verbo meo,et ero vobis in Deũ,et vos eritis corã me
in populũ : et ambulabitis in omni via quã mandavero vobis, ut bene ſit
vobis.Et non *obedierunt*, nec inclinaverunt aures ſuas : et ambulaverunt 24
in conſiliis ſuis,in cogitatione cordis ſui peſſimi:et averterunt in cultu meo
dorſum,et non poſuerunt timorem mei ante faciem ſuam: A die qua egreſ- 25
ſi ſunt patres veſtri de terra Ægypti uſque in diem hanc : et miſi ad vos
omnes ſervos meos Prophetas, quotidiè manè conſurgens,et mittens:

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܡܛܠ ܗܢܐ ܙܠܘ ܠܐܬܪܝ ܕܒܫܝܠܘ. ܐܝܟܐ ܕܐܫܪܝܬ ܫܡܝ ܡܢ ܩܕܡܝܢ. ܘܚܙܘ ܡܢܐ ܥܒܕܬ 12
ܠܗ. ܡܛܠ ܒܝܫܘܬܗ ܕܥܡܝ ܐܝܣܪܝܠ. * ܘܗܫܐ ܚܠܦ ܕܥܒܕܬܘܢ ܥܒܕܐ ܗܠܝܢ 13
ܟܠܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ: ܘܡܠܠܬ ܥܡܟܘܢ ܘܠܐ ܫܡܥܬܘܢ: ܘܩܪܝܬ ܠܟܘܢ ܘܠܐ ܥܢܝܬܘܢ.
* ܐܥܒܕ ܠܒܝܬܐ ܗܢܐ ܕܐܬܩܪܝ ܫܡܝ ܥܠܘܗܝ. ܕܐܢܬܘܢ ܬܟܝܠܝܢ ܥܠܘܗܝ. 14
ܘܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܕܝܗܒܬ ܠܟܘܢ ܘܠܐܒܗܝܟܘܢ. ܐܝܟ ܕܥܒܕܬ ܠܫܝܠܘ. * ܘܐܫܕܝܟܘܢ ܡܢ 15
ܩܕܡ ܐܦܝ. ܐܝܟ ܕܫܕܝܬ ܠܟܠܗܘܢ ܐܚܝܟܘܢ. ܠܟܠܗ ܙܪܥܗ ܕܐܦܪܝܡ. * ܘܐܢܬ ܠܐ ܬܨܠܐ ܚܠܦ 16
ܥܡܐ ܗܢܐ. ܘܠܐ ܬܒܥܐ ܚܠܦܝܗܘܢ. ܘܠܐ ܬܒܥܐ ܡܢܝ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܫܡܥ ܐܢܐ ܠܟ. * ܠܐ ܚܙܐ ܐܢܬ 17
ܡܢܐ ܕܥܒܕܝܢ ܒܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ: ܘܒܫܘܩܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. * ܒܢܝܐ ܡܠܩܛܝܢ ܩܝܣܐ. 18
ܘܐܒܗܬܐ ܡܘܩܕܝܢ ܢܘܪܐ. ܘܢܫܐ ܠܫܝܢ ܠܫܐ. ܠܡܥܒܕ ܓܪܝܨܐ ܠܚܝܠܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܠܡܢܩܐ
ܢܩܝܐ ܠܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ. ܕܢܪܓܙܘܢܢܝ. * ܠܐ ܗܘܐ ܠܝ ܡܪܓܙܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܠܐ ܠܢܦܫܗܘܢ. 19
ܕܢܒܗܬܘܢ ܐܦܝܗܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ ܪܘܓܙܝ ܘܚܡܬܝ 20
ܡܬܢܝܚܝܢ ܥܠ ܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܥܠ ܒܢܝܢܫܐ. ܘܥܠ ܒܥܝܪܐ. ܘܥܠ ܐܝܠܢܐ ܕܚܩܠܐ. ܘܥܠ ܦܐܪܐ ܕܐܪܥܐ.
ܘܬܝܩܕ ܘܠܐ ܬܕܥܟ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܥܠܘܬܟܘܢ ܐܘܣܦܘ 21
ܥܠ ܕܒܚܝܟܘܢ. ܘܐܟܠܘ ܒܣܪܐ. ܕܠܐ ܐܡܪܬ ܠܐܒܗܝܟܘܢ. * ܘܠܐ ܦܩܕܬ ܐܢܘܢ ܒܝܘܡܐ ܕܐܦܩܬ 22
ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܠܐ ܥܠ ܥܠܘܬܐ. ܘܠܐ ܥܠ ܕܒܚܐ. * ܐܠܐ ܐܢܐ ܗܢܐ ܦܬܓܡܐ ܦܩܕܬ 23
ܐܢܘܢ. ܘܐܡܪܬ. ܫܡܥܘ ܒܩܠܝ. ܘܐܗܘܐ ܠܟܘܢ ܐܠܗܐ. ܘܐܢܬܘܢ ܬܗܘܘܢ ܠܝ ܥܡܐ.
ܘܗܠܟܘ ܒܟܠܗ ܐܘܪܚܐ ܕܡܦܩܕ ܐܢܐ ܠܟܘܢ. ܕܢܛܐܒ ܠܟܘܢ. * ܘܠܐ ܫܡܥܘ ܘܠܐ ܐܪܟܢܘ 24
ܐܕܢܗܘܢ ܠܡܫܡܥ. ܐܠܐ ܐܙܠܘ ܒܬܪ ܡܚܫܒܬܗܘܢ. ܘܒܬܪ ܪܓܝܓܬܐ ܕܠܒܗܘܢ ܒܝܫܐ. ܘܗܦܟܘ
ܠܒܣܬܪܗܘܢ. ܘܠܐ ܠܩܘܕܡܝܗܘܢ. * ܡܢ ܝܘܡܐ ܕܢܦܩܘ ܐܒܗܝܗܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. 25
ܘܥܕܡܐ ܠܝܘܡܢܐ. ܘܫܕܪܬ ܠܘܬܗܘܢ. ܠܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝ ܢܒܝܐ. ܟܠ ܝܘܡ.

* Iccircò ite in locum meum qui erat in Silo, 12
ubi habitare feceram nomen meum antea, &
videte quid fecerim ei propter nequitiam populi mei Iſraelis. Nunc igitur, quia perpe- 13
trâſtis hæc omnia facinora, dicit Dominus;
prædixi vobis, & non audîſtis; vocavi vos,
& non reſpondiſtis: Faciam huic domui ſu- 14
per quam invocatum eſt nomen meum, in qua
vos fiduciam collocatis, & civitati huic quam
dedi vobis & patribus veſtris; quemadmodũ
feci Silo: Et abjiciam vos à conſpectu meo, 15
quemadmodum abjeci omnes fratres veſtros,
univerſum ſemen Aphremi. Tu ergò ne ores 16
pro populo iſto, neque preceris pro eis, & ne
me depreceris; quoniam nequaquam exaudiã
te. An non vides quid faciant in civitati- 17
bus Judæ, & in plateis Jeruſalem? Filii col- 18
ligunt ligna, & parentes *eorum* accendunt ignem, fœminæ verò depſunt maſſam; ad faciendum placentas militiæ cœleſti, & libandum libamina diis alienis, ut me ad iracundiam provocent. Non me quidem irritant, 19
ait Dominus; ſed ſemetipſos, ut pudefiant
vultus eorum. Iccircò ſic ait Dominus Deus, 20
Ecce ira mea & furor meus requieſcent ſuper
locum iſtum, ſuper homines & ſuper jumenta, ſuper arbores campeſtres, & ſuper fructus
terræ; comburétque, & non extinguetur.
Sic dicit Dominus potens, Deus Iſraelis; Ho- 21
locauſta ſua accumulârunt ſacrificiis ſuis, &
comederunt carnem de qua non dixeram patribus eorum. Nihil enim præceperam eis, 22
quo die extraxi eos de terra Ægypti, de holocauſto neque de ſacrificiis: Sed hunc ego 23
ſermonem præceperam eis, & dixeram; Auſcultate voci meæ, eróque vobis Deus, & vos
eritis mihi populus: & ambulate in tota via
quam præcipio vobis, ut benè ſit vobis. At 24
non auſcultârunt, nec aurem ſuam præbuerunt ad audiendum; ſed abierunt poſt cogitationes ſuas & poſt appetitus cordis ſui peſſimi: & retroceſſerunt, non proceſſerunt: *Idque* ab eo die quo egreſſi ſunt patres eorum è 25
terra Ægypti ad hunc uſque diem: cùm tamen
ad eos mitterem omnes ſervos meos prophetas, ſingulis diebus:

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* اذهبوا الى موضعي الذي في سيلوم حيث اسكنت اسمي هناك من قبل * وانظروا ما 12
صنعت به من وجه شر شعبي اسرايل * والان من اجل انكم صنعتم هذه الاعمال كلها * 13
وتكلمت فلم تسمعوني * ودعوتكم فلم تجيبوا * الان وانا اصنع بهذا الموضع الذي دعي 14
اسمي عليه الذي انتم تثقون به * والموضع الذي تكلمت به معكم ومع ابايكم * كما صنعت
بسيلوم * واصرفكم من وجهي كما اصرفت اخوتكم كل زرع افرام * وانت لا تصل من اجل 15
هذا الشعب ولا تطلب ليرحموا * فاني لا استجيب * اوما رايت ما هولاء يصنعون في طرقات 16
ايروسليم * بنوهم يجمعون حطبا * واباءهم يوقدون نارا * ونساءهم يدقفن دقيقا ليعملن قرابين 17
لاجناد السماء * ويرقن قوارير للالهة الغريبة لكي يغضبوني * هل يسخطوني هاولاء يقول الرب * 18
اليس نفسهم * لكي تخزى وجوههم * لاجل هذا هكذا يقول الرب * ها رجزي وغضبي يراق على 19
هذا الموضع * وعلى الناس والبهايم * وعلى كل شجر حقلهم * وعلى كل غلاتهم * ويتوقد ولا 20
يطفا * ولا يكون من يطفي * هكذا يقول الرب * اجمعوا محرقاتكم مع ذبايحكم وكلوا لحما * 21
* ولم اتكلم مع ابايكم ولم اوصهم في اليوم الذي اصعدتهم فيه من ارض 22
مصر من اجل المحرقات والذبايح * لكن بهذه الكلمة اوصيتهم قايلا * اسمعوا صوتي 23
واكون لكم الها وانتم تكونون لي شعبا * وسيروا في جميع طرقي التي اوصيتكم
بهن اذن * لكي يكون لكم الخير * فلم يسمعوا لي ولا صغوا باذانهم * لكن 24
ساروا بشهوات قلبهم الرديه * وصاروا الى خلف وليس الى قدام * منذ يوم خرجوا 25
اباؤهم من ارض مصر والى هذا اليوم * ارسلت اليكم جميع عبيدي الانبياء
نهارا وارسلتهم سحرا *

Ite in locum meum illum qui eſt in Silome, ubi habitare feceram nomen meum olim, & videte quid fecerim ei cauſâ malitiæ populi mei Iſraelis. 12 *Nunc itaque, cùm feceritis omnes hujuſmodi actiones; allocutus ſim vos, nec audieritis me; vocaverim vos, nec reſponderitis:* 13 *Nunc, inquam, ego faciam huic loco ſuper quem invocatum eſt nomen meum, cui vos confiditis, loco in quo locutus ſum vobiſcum & cum patribus veſtris; quemadmodum feci Silomi:* 14 *Et repellam vos à facie mea, quemadmodum repuli fratres veſtros, totum ſcilicet ſemen Aphremi.* 15 *Tu verò ne ores pro populo iſto, neque petas ut miſericordiâ utar cum eis: non enim exauditurus eſſem.* 16 *An non vides quid iſti faciant in vicis Jeroſolymæ?* 17 *Filii eorum ligna colligunt, patres eorum accendunt ignem, & eorum fœminæ contundunt ſimilam ut conficiant ſacrificia copiis cœleſtibus; & effundunt alabaſtra diis alienis, ad irritandum me.* 18 *Num me ad iram concitant iſti, dicit Dominus? an non ſeipſos, ut pudefiant vultus eorum?* 19 *Hanc ob rem ita dicit Dominus, En ira mea & excandeſcentia mea effundetur ſuper hunc locum, & ſuper homines atque jumenta, ſuper omnes arbores agri eorum, & ſuper omnes proventus eorum: ardebit autem, & non extinguetur, nec erit qui extinguat.* 20 *Sic ait Dominus, Conjungite holocauſta veſtra cum ſacrificiis veſtris, & comedite carnem.* 21 *Neque enim locutus ſum cum majoribus veſtris, aut præcepi eis quâ die eduxi eos de terra Ægypti, de holocauſtis & ſacrificiis:* 22 *Sed hoc verbum præcepi illis, dicens, Acquieſcite voci meæ, eroque vobis Deus, & vos eritis mihi populus: & ambulate in omnibus viis meis quas præſcripſi vobis, ut benè ſit vobis.* 23 *Verùm non acquieverunt mihi, nec admoverunt aures ſuas; ſed ſecuti ſunt libidines cordis ſui depravati, & retrogreſſi ſunt, non progreſſi,* 24 *Inde ab ea die quâ exierunt majores eorum è terra Ægypti ad hodiernam uſque diem. Et quanvis miſerim ad vos omnes ſervos meos prophetas interdiu, miſerimque eos tempore matutino;* 25

ירמיה : ח

induraverūt & :ſuā aurem inclinaverūt nec ,me ad obaudierunt non Et
26 וְלוֹא שָׁמְעוּ אֵלַי וְלֹא הִטּוּ אֶת־אָזְנָם וַיַּקְשׁוּ
eos ad loquêris Et .ſuis patribus præ malefecerunt ; ſuā cervicem
27 אֶת־עָרְפָּם הֵרֵעוּ מֵאֲבוֹתָם׃ וְדִבַּרְתָּ אֲלֵיהֶם
, eos ad vocabis & : te ad obaudient non & , hæc verba omnia
אֶת־כָּל־הַדְּבָרִים הָאֵלֶּה וְלֹא יִשְׁמְעוּ אֵלֶיךָ וְקָרָאתָ אֲלֵיהֶם
quæ gens Hæc : eos ad dices Et .tibi reſpondebunt non &
28 וְלֹא יַעֲנוּכָה׃ וְאָמַרְתָּ אֲלֵיהֶם זֶה הַגּוֹי אֲשֶׁר
: diſciplinam receperunt nec , ſui Dei DOMINI voce in audierunt non
לוֹא־שָׁמְעוּ בְּקוֹל יְהוָה אֱלֹהָיו וְלֹא לָקְחוּ מוּסָר
,tuum nazareatum Tonde .ipſorū ore de eſt abſciſa & , veritas periit
29 אָבְדָה הָאֱמוּנָה וְנִכְרְתָה מִפִּיהֶם׃ גָּזִּי נִזְרֵךְ
,Dominus reprobavit quia : lamentum edita loca ſuper tolle & , projice &
וְהַשְׁלִיכִי וּשְׂאִי עַל־שְׁפָיִם קִינָה כִּי מָאַס יְהוָה
malum Jehudah filii fecerunt Quia .ſui furoris generationē dimiſit &
30 וַיִּטֹּשׁ אֶת־דּוֹר עֶבְרָתוֹ׃ כִּי־עָשׂוּ בְנֵי־יְהוּדָה הָרַע
,domo in ſuas abominationes poſuerunt : Dominus dixit ,meis oculis in
בְּעֵינַי נְאֻם־יְהוָה שָׂמוּ שִׁקּוּצֵיהֶם בַּבַּיִת
ædificaverunt Et .eā polluendum ad ea ſuper meū nomen eſt invocatū qua
31 אֲשֶׁר־נִקְרָא־שְׁמִי עָלָיו לְטַמְּאוֹ׃ וּבָנוּ
,ſuos filios comburendum ad,Hinnom filii valle in quæ ,Topheth excelſa
בָּמוֹת הַתֹּפֶת אֲשֶׁר בְּגֵיא בֶן־הִנֹּם לִשְׂרֹף אֶת־בְּנֵיהֶם
.meū cor ſuper aſcendit nec,præcepi non quod : igni in ſuas filias &
וְאֶת־בְּנֹתֵיהֶם בָּאֵשׁ אֲשֶׁר לֹא צִוִּיתִי וְלֹא עָלְתָה עַל־לִבִּי׃
,Topheth ultrà dicetur nō &,Dominus dicit ,venientes dies ecce Ideo
32 לָכֵן הִנֵּה־יָמִים בָּאִים נְאֻם־יְהוָה וְלֹא־יֵאָמֵר עוֹד הַתֹּפֶת
ſepelient & : interfectionis Vallis quinimò , Hinnom filii Vallis &
וְגֵיא בֶן־הִנֹּם כִּי אִם־גֵּיא הַהֲרֵגָה וְקָבְרוּ
volatili cibum in hujus populi cadaver erit Et .loco abſque Topheth in
33 בְתֹפֶת מֵאֵין מָקוֹם׃ וְהָיְתָה נִבְלַת הָעָם הַזֶּה לְמַאֲכָל לְעוֹף
urbibꝰ de faciā ceſſare Et .exterrens non & : terræ jumento & , cœli
34 הַשָּׁמַיִם וּלְבֶהֱמַת הָאָרֶץ וְאֵין מַחֲרִיד׃ וְהִשְׁבַּתִּי מֵעָרֵי
, lætitiæ vocem & , gaudii vocem Jeruſalaim plateis de & , Jehudah
יְהוּדָה וּמֵחֻצוֹת יְרוּשָׁלַםִ קוֹל שָׂשׂוֹן וְקוֹל שִׂמְחָה
.terra erit deſolationem in nam :ſponſæ vocem & ,ſponſi vocem
קוֹל חָתָן וְקוֹל כַּלָּה כִּי לְחָרְבָּה תִּהְיֶה הָאָרֶץ׃

CAP. VIII. ח

regum oſſa Educent : Dominus ait illo tempore In
1 בָּעֵת הַהִיא נְאֻם־יְהוָה וְיוֹצִיאוּ אֶת־עַצְמוֹת מַלְכֵי־
,ſacerdotum oſſa & ,ejꝰ principum oſſa & ,Jehudah
יְהוּדָה וְאֶת־עַצְמוֹת שָׂרָיו וְאֶת־עַצְמוֹת הַכֹּהֲנִים
Jeruſalaim habitantium oſſa & , prophetarum oſſa &
וְאֵת עַצְמוֹת הַנְּבִיאִים וְאֵת עַצְמוֹת יוֹשְׁבֵי־יְרוּשָׁלָםִ
omnē ad & ,lunam ad & ,ſolem ad ea diſtendent Et .ſuis ſepulchris de
2 מִקִּבְרֵיהֶם׃ וּשְׁטָחוּם לַשֶּׁמֶשׁ וְלַיָּרֵחַ וּלְכֹל
quæ & ,eis ſervierunt quibus & ,ea dilexerunt quæ , cœli exercitum
צְבָא הַשָּׁמַיִם אֲשֶׁר אֲהֵבוּם וַאֲשֶׁר עֲבָדוּם וַאֲשֶׁר
ſe incurvaverūt quibus & ,ipſa quæſierūt quæ & , ea poſt ambulaverūt
הָלְכוּ אַחֲרֵיהֶם וַאֲשֶׁר דְּרָשׁוּם וַאֲשֶׁר הִשְׁתַּחֲווּ
facies ſuper ſterquiliniū in ; ſepelientur nec , colligentur non ; eis
לָהֶם לֹא יֵאָסְפוּ וְלֹא יִקָּבֵרוּ לְדֹמֶן עַל־פְּנֵי
reſiduo omni vitis præ mors eligetur Et .erunt humi
3 הָאֲדָמָה יִהְיוּ׃ וְנִבְחַר מָוֶת מֵחַיִּים לְכֹל הַשְּׁאֵרִית
locis univerſis in , hac mala familia de ,reſiduorum
הַנִּשְׁאָרִים מִן־הַמִּשְׁפָּחָה הָרָעָה הַזֹּאת בְּכָל־הַמְּקֹמוֹת
.exercituum Dominus dixit , illuc eos propellam quò , reſiduis
הַנִּשְׁאָרִים אֲשֶׁר הִדַּחְתִּים שָׁם נְאֻם יְהוָה צְבָאוֹת׃
non & ,cadent Nunquid : Dominus dixit Sic : eos ad dices Et
4 וְאָמַרְתָּ אֲלֵיהֶם כֹּה אָמַר יְהוָה הֲיִפְּלוּ וְלֹא
? convertetur non & ,avertetur Nunquid ? reſurgent
יָקוּמוּ אִם־יָשׁוּב וְלֹא יָשׁוּב׃

Verſio VULG. LAT.

26 Et non audierunt me, nec inclinaverunt aurem ſuā: ſed induraverunt cervicem ſuā : & pejꝰ operati ſunt quàm patres 27 eorum. Et loquêris ad eos omnia verba hæc, & non audient te: & vocabis eos, & non 28 reſpondebunt tibi. Et dices ad eos ; Hæc eſt gens, quæ non audivit vocē Dñi Dei ſui, nec recepit diſciplinā: periit fides, 29 & ablata eſt de ore eorū. Tonde capillū tuum, & projice, & ſume in directū planctū : quia projecit Dñs, & reliquit generationē furoris ſui, 30 Quia fecerunt filii Juda malū in oculis meis, dicit Dñs: Poſuerunt offendicula ſua in domo, in qua invocatum eſt nomen meū, ut 31 pollueren̄t eam : Et ædificaverunt excelſa Topheth, quæ eſt in valle filii Ennom: ut incenderent filios ſuos, & filias ſuas igni: quæ non præcepi, nec 32 cogitavi in corde meo. Ideò ecce dies venient, dicit Dñs, & non dicetur ampliùs, Topheth, & Vallis filii Ennom: ſed Vallis interfectionis : & ſepelient in Topheth, eò quòd non ſit 33 locus. Et erit morticînū populi hujꝰ in cibos volucribus cœli, & beſtiis terræ, & non erit qui 34 abigat. Et quieſcere faciam de urbibꝰ Juda, & de plateis Jeruſalem, vocē gaudii, & vocem lætitiæ, vocem ſponſi, & vocē ſponſæ: in deſolationem enim erit terra.

CAP. VIII.

1 IN illo tempore, ait Dominꝰ; Ejicient oſſa regum Juda, & oſſa principum ejus, & oſſa ſacerdotum, & oſſa prophetarum, & oſſa eorum qui habitaverunt Jeruſalem, de ſepul- 2 chris ſuis : Et expandent ea ad Solem, & Lunā, & omnem militiam cœli, quæ dilexerunt, et quibus ſervierunt, et poſt quæ ambulaverunt, et quæ quæſierunt, et adoraverunt: non colligentur, et non ſepelientur : in ſterquiliniū ſup faciem ter- 3 ræ erunt. Et eligent magis mortem quàm vitam omnes qui reſidui fuerint de cognatione hac peſſima in univerſis locis, quæ derelicta ſunt, ad quæ ejeci eos , dicit Dominus 4 exercituum. Et dices ad eos , Hæc dicit Dominus ; Numquid qui cadit, non reſurget ? et qui averſus eſt, non revertetur ?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

16 Καὶ οὐκ εἰσήκουσάν μου, καὶ οὐ προσέσχον τὸ οὖς αὐτῶν, καὶ ἐσκλήρυναν τὸν τράχηλον αὐτῶν 27 ὑπὲρ τοὺς πατέρας αὐτῶν. Καὶ ἐρεῖς αὐ- 28 τοῖς (·)τοῦτον τὸν λόγον, Τοῦτο τὸ ἔθνος ὃ οὐκ ἤκουσε τῆς φωνῆς κυρίου, οὐδὲ ἐδέξατο παιδείαν, ἐξέλιπεν ἡ πίστις ἐκ στόματος αὐ- 29 τῶν. Κεῖραι τὴν κεφαλήν σου, καὶ ἀπόῤῥιπτε, καὶ ἀνάλαβε ἐπὶ χειλέων θρῆνον, ὅτι ἀπεδοκίμασε (β) κύριος, καὶ ἀπώσατο τὴν γενεὰν 30 τὴν ποιοῦσαν ταῦτα. Ὅτι ἐποίησαν οἱ υἱοὶ Ἰούδα (γ) τὸ πονηρὸν ἐναντίον ἐμοῦ, λέγει κύριος· ἔταξαν τὰ βδελύγματα αὐτῶν ἐν τῷ οἴκῳ, οὗ ἐπικέκληται τὸ ὄνομά μου ἐπ' 31 αὐτὸν, τοῦ μιᾶναι αὐτόν. Καὶ ᾠκοδόμησαν τὸν βωμὸν τοῦ Ταφὲθ, ὅς ἐστιν ἐν φάραγγι υἱοῦ Ἐννὸμ, τοῦ κατακαίειν τοὺς υἱοὺς αὐτῶν, καὶ τὰς θυγατέρας αὐτῶν ἐν πυρὶ, ὃ οὐκ ἐνετειλάμην αὐτοῖς, (δ) καὶ οὐ διενοήθην ἐν τῇ 32 καρδίᾳ μου. Διατοῦτο ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, λέγει κύριος, καὶ οὐκ ἐροῦσιν ἔτι, Βωμὸς τοῦ Ταφὲθ καὶ φάραγξ υἱοῦ Ἐννὸμ, ἀλλ' Ἡ φάραγξ τῶν ἀνῃρημένων· καὶ θάψουσιν (ε) ἐν τῷ Ταφὲθ, διὰ τὸ μὴ ὑπάρχειν τόπον. 33 Καὶ ἔσονται οἱ νεκροὶ τοῦ λαοῦ τούτου (ζ) εἰς βρῶσιν τοῖς πετεινοῖς τοῦ οὐρανοῦ, καὶ τοῖς θη- 34 ρίοις τῆς γῆς, καὶ οὐκ ἔσται ὁ ἀποσοβῶν. Καὶ καταλύσω ἐκ (η) πόλεων Ἰούδα καὶ ἐκ διόδων Ἱερουσαλὴμ φωνὴν εὐφραινομένων, καὶ φωνὴν χαιρόντων, φωνὴν νυμφίου, καὶ φωνὴν νύμφης, ὅτι εἰς ἐρήμωσιν ἔσται πᾶσα ἡ γῆ.

Et non exaudierunt me, & non attendit auris eorum : & induraverunt cervicem ſuam ſuper patres ipſorum. Et dices eis hunc (e) ſermonem ; Hæc eſt gens, quæ non audivit vocem Domini, neque recepit diſciplinam : defecit fides ex ore eorum. Tonde caput tuum, & projice, & aſſume ſuper labia lamentationem: quia reprobavit Dominus, & repulit generationem facientem hæc : Quia fecerunt filii Juda malum coram me, dicit Dominus ; poſuerunt abominationes ſuas in domo, ubi invocatum eſt nomen meum ſuper eam, ad polluendam eam : Et ædificaverunt aram (ſ) Tapheth, quæ eſt in valle filii Ennom, ad comburendum filios ſuos, & filias ſuas in igni: quod non mandavi eis, neque cogitavi in corde meo. Idcircò ecce dies veniunt, dicit Dominus ; & non dicent ampliùs, Ara Tapheth, & Vallis filii Ennom, ſed Vallis interfectorum : & ſepelient in Tapheth, eò quòd non ſit locus : Et erunt mortui de populo hoc in eſcam volatilibus cœli, & beſtiis terræ : & non erit, qui abigat. Et ceſſare faciam de civitatibus Juda, & de viis Hieruſalem vocem lætantium, & vocem gaudentium, vocem ſponſi, & vocem ſponſæ : quia in deſolationem erit univerſa terra. 26 27 28 29 30 31 32 33 34

MS.A. (·) τὸν λόγον τοῦτον (β) καὶ ἀπώσατο κύριος τὴν (γ) τὰ πονηρὰ ἐνώπιον ἐμοῦ, (δ) οὐδὲ (ε) ἐν τῷ τάφῳ Ταφὲθ, (ζ) εἰς κατάβρωμα πᾶσιν τοῖς (η) πόλεως

ΚΕΦ. η'.

1 ἘΝ τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, λέγει κύριος, ἐξοίσουσι τὰ ὀστᾶ τῶν βασιλέων Ἰούδα, καὶ τὰ ὀστᾶ τῶν ἀρχόντων αὐτοῦ, καὶ τὰ ὀστᾶ τῶν ἱερέων, καὶ τὰ ὀστᾶ (α) προφητῶν, καὶ τὰ ὀστᾶ τῶν (β) κατοικούντων ἐν Ἱερουσα- 2 λὴμ ἐκ τῶν τάφων αὐτῶν, Καὶ ψύξουσιν αὐτὰ πρὸς τὸν ἥλιον καὶ τὴν σελήνην, καὶ πρὸς πάντας τοὺς ἀστέρας, καὶ πρὸς πᾶσαν τὴν στρατιὰν τοῦ οὐρανοῦ, ἃ ἠγάπησαν, καὶ οἷς ἐδούλευσαν, καὶ ὧν ἐπορεύθησαν ὀπίσω αὐτῶν, καὶ ὧν ἀντείχοντο, καὶ οἷς προσεκύνησαν αὐτοῖς. οὐ κοπήσονται, καὶ οὐ ταφήσονται, καὶ ἔσονται εἰς παράδειγμα ἐπὶ προσώπου τῆς 3 γῆς, Ὅτι (γ) εἵλοντο τὸν θάνατον ἢ τὴν ζωὴν, καὶ πᾶσι τοῖς καταλοίποις τοῖς καταλειφθεῖσιν ἀπὸ τῆς γενεᾶς ἐκείνης, ἐν παντὶ τόπῳ (δ) οὗ ἐὰν ἐξώσω αὐτοὺς 4 ἐκεῖ. Ὅτι τάδε λέγει κύριος, Μὴ ὁ πίπτων οὐκ ἀνίσταται; ἢ ὁ ἀποστρέφων οὐκ (ε) ἀναστρέφει;

CAP. VIII.

IN tempore illo, dicit Dominus, efferent oſſa regum Juda, & oſſa principum ejus, & oſſa ſacerdotum, & oſſa prophetarum, & oſſa habitantium in Hieruſalem, de ſepulchris eorum, Et (a) torrebunt ea ad Solem, & Lunam, & ad omnia ſydera, & ad omnem militiam cœli, quæ dilexerunt, & quibus ſervierunt, & poſt quæ ambulaverunt poſt ea, & quibus adhæſerunt, & quæ adoraverunt ea. Non plangentur, & non ſepelientur : & erunt in exemplum ſuper faciem terræ. Quia elegerunt mortem, quàm vitam, etiam de omnibus reſiduis, qui relicti fuerint de generatione illa, in omni loco, quocunque expulero eos illuc. Quia hæc dicit Dominus ; Nunquid qui cadit, non reſurgit ? aut, qui avertit ſe, non revertitur ? 1 2 3 4

MS.A. (α) τῶν προφητῶν αὐτῶν, (β) κατοικούντων Ἱερουσαλὴμ (γ) εἵλαντο τὸν θάνατον μᾶλλον ἢ (δ) ᾧ ἐὰν (ε) ἐπιστρέψει;

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

26 וְלָא קַבִּילוּ לְמֵימְרִי וְלָא אַרְכִּינוּ יַת אוּדְנֵיהוֹן וְאַקְשִׁיאוּ יַת קְדַלְהוֹן אַבְאִישׁוּ מֵאֲבָהָתְהוֹן׃
27 וּתְמַלֵּל עִמְּהוֹן יַת כָּל פִּתְגָּמַיָּא הָאִלֵּין וְלָא יְקַבְּלוּן מִנָּךְ וְתִתְנַבֵּי לְהוֹן וְלָא יְתִיבוּנָךְ׃
28 וְתֵימַר לְהוֹן דֵּין עַמָּא דִּי לָא שְׁמַעוּ לְמֵימְרָא דַּייָ אֱלָהֲהוֹן וְלָא קַבִּילוּ אוּלְפָּן פְּסַקַת
29 הֵימָנוּתָא וְאִתְמְנַעַת מִפּוּמְהוֹן׃ תְּלִישִׁי עַל רַבְרְבַיִךְ דִּיגְלוֹן וְטוּלִי עַל נַגְדִּין אִלְיָא אֲרֵי
30 רַחִיק יְיָ וְרַטִּישׁ יַת דָּרָא דַּעֲבַרוּ עַל מֵימְרֵיהּ׃ אֲרֵי עֲבַדוּ בְנֵי יְהוּדָה דְּבִישׁ קֳדָמַי אֲמַר יְיָ
31 שַׁוִּיאוּ שִׁקּוּצֵיהוֹן בְּבֵיתָא דְּאִתְקְרֵי שְׁמִי עֲלוֹהִי לְסַאֲבוּתֵיהּ׃ וּבְנוֹ בָּמַת תּוֹפֶת דִּי בְּחֵילַת
בַּר הִנֹּם לְאוֹקָדָא יַת בְּנֵיהוֹן וְיַת בְּנָתֵיהוֹן בְּנוּרָא דְּלָא פַקֵּדִית בְּאוֹרַיְתִי וְלָא רַעֲוָא קֳדָמַי׃
32 בְּכֵן הָא יוֹמַיָּא אָתָן אֲמַר יְיָ וְלָא יִתְאֲמַר עוֹד תּוֹפֶת וְחֵילַת בַּר הִנֹּם אֱלָהֵין חֵילַת קְטִילַיָּא
33 וְיִקְבְּרוּן בְּתוֹפֶת מִבְּלִי אֲתַר׃ וּתְהֵי נְבֵלְתָּא דְּעַמָּא הָדֵין מִשְׁגְּרָא לְמֵיכַל לְעוֹפָא דִּשְׁמַיָּא
34 וּלְבְעִירָא דְּאַרְעָא וְלֵית דְּמָנִיד׃ וַאֲבַטֵּל מִקִּרְוַיָּא דְּבֵית יְהוּדָה וּמִשּׁוּקֵי יְרוּשְׁלֶם קָל בְּיַע
וְקָל חֶדְוָא קָל חַתְנִין וְקָל כַּלָּן אֲרֵי לְחוּרְבָא תְּהֵי אַרְעָא׃

ח

1 בְּעִדָּנָא הַהִיא אֲמַר יְיָ יַפְּקוּן יַת גַּרְמֵי מַלְכַיָּא דְּבֵית יְהוּדָה וְיַת גַּרְמֵי רַבְרְבֵיהוֹן וְיַת גַּרְמֵי
2 כָּהֲנַיָּא וְיַת גַּרְמֵי נְבִיֵּי שִׁקְרָא וְיַת גַּרְמֵי יָתְבֵי יְרוּשְׁלֶם מִקִּבְרֵיהוֹן׃ וְיִשְׁטְחוּנוּן לָקֳבֵל
שִׁמְשָׁא וְסִיהֲרָא וּלְכָל חֵילֵי שְׁמַיָּא דִּרְחִימוּנוּן וְדִפְלַחוּנוּן וְדִטְעוֹ בַּתְרֵיהוֹן וְדִתְבָעוּנוּן
3 וְדִסְגִידוּ לְהוֹן לָא יִתְכַּנְשׁוּן וְלָא יִתְקַבְּרוּן לְזִיבַל מְבַדַּר עַל אַפֵּי אַרְעָא יְהוֹן׃ וְיִתְרְעוּן
בְּמוֹתָא מִבְּחַיַּיָא לְכָל שְׁאָרָא דְּיִשְׁתַּאֲרוּן מִן זַרְעִיתָא בִּישְׁתָּא הָדָא בְּכָל אַתְרַיָּא
4 דְּיִשְׁתַּאֲרוּן דְּאַגְלֵיתִנּוּן לְתַמָּן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת׃ וְתֵימַר לְהוֹן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ הֲיִפְּלוּן וְלָא
יְקוּמוּן אִם לְמֵתַב גְּלֵי קֳדָמַי דְּלָא יְתוּבוּן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et non obedierunt verbo meo, nec inclinaverunt aures ſuas ; ſed induraverunt cervicem ſuam; pejus egerunt quàm patres eorum. Et loquêris cum eis omnia verba hæc, nec acquieſcent tibi: et prophetabis eis, & non reſpōdebunt tibi. Et dices eis : Iſte eſt populus qui non audivit verbum Dñi Dei ſui, nec ſuſcepit diſciplinam: ceſſavit fides, & ablata eſt de ore eorum. Evelle capillos propter principes tuos qui captivi ducentur, & tolle propter duces lamentationem, quia projecit Dominus, & reliquit *generationem* qui tranſgreſſi ſunt verbū ſuum. Quia fecerunt filii Juda quod malum eſt coram me, dicit Dñs : poſuerunt abominationes ſuas in domo ſup qua invocatum eſt nomen meum, ut contaminarent eam. Et conſtruxerunt excelſum Topheth, quod eſt in valle filii Hennom, ut incenderent filios ſuos & filias ſuas igni: quod non præcepi in Lege mea, nec talis voluntas eſt coram me. Propterea ecce dies veniunt, dicit Dñs, & non dicetur amplius, Topheth & vallis filii Hennom; ſed Vallis occiſorum: & ſepelient in Topheth, eò quòd non ſit locus. Et erit cadaver populi hujus projectum in cibum volucribus cœli & beſtiis terræ : & non erit qui amoveat. Et ceſſare faciā de civitatibꝰ domꝰ Juda, & de vicis Jeruſalē vocē gaudii et vocē lætitiæ, vocem ſponſorū & vocem ſponſarū : quia in deſolationē erit terra. 26 27 28 29 30 31 32 33 34

CAP. VIII,

IN tempore illo, dicit Dñs, educent oſſa regū domꝰ Juda, & oſſa principū eorum, et oſſa ſacerdotū, & oſſa falſorum prophetarū, et oſſa habitatorū Jeruſalē de ſepulcris ſuis: Et expandent ea contra Solem & Lunam, et oēm militiam cœli, quæ dilexerunt, & quibus ſervierunt, & poſt quæ erraverunt, & quæ quæſierunt, & adoraverunt: non colligentur nec ſepelientur; in ſtercus diſperſum ſup faciem terræ erunt. Et eligetur mors magis quàm vita omnibus reliquiis quæ remanſerint de cognatione hac peſſima ; in omnibus locis in quibus remanſerint, ad quæ tranſmigrare eos feci, dicit Dominus exercituum. Et dices eis: Hæc dicit Dominus : Nunquid cadent & non reſurgent ? aut de averſione notum eſt coram me ꝙ non convertêtur ? 1 2 3 4

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܩܕܡܬ ܘܫܕܪܬ. ܘܠܐ ܫܡܥܘ. ܘܠܐ ܐܪܟܢܘ ܐܕܢܗܘܢ ܠܘܬܝ. ܘܩܫܝܘ ܩܕܠܗܘܢ. ܝܬܝܪ ܡܢ 26
ܐܒܗܝܗܘܢ. * ܘܬܐܡܪ ܠܗܘܢ ܗܠܝܢ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ. ܘܠܐ ܢܫܡܥܘܢܟ. ܘܩܪܝ ܐܢܬ 27
ܠܗܘܢ. ܘܠܐ ܢܥܢܘܢܟ. * ܐܒܕܬ ܗܝܡܢܘܬܐ. ܘܦܣܩܬ ܡܢ ܦܘܡܗܘܢ. * ܓܙܘܪܝ ܣܥܪܟܝ 28
ܘܫܕܝ. ܘܫܩܘܠܝ ܥܠ ܫܒܝܠܐ ܐܘܠܝܬܐ. ܕܪܓܙ ܡܪܝܐ. ܘܫܒܩܗ ܠܕܪܐ ܕܪܘܓܙܗ. * ܡܛܠ 29 30
ܕܥܒܕܘ ܒܢܝ ܝܗܘܕܐ ܕܒܝܫ ܩܕܡܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܣܡܘ ܛܢܦܘܬܗܘܢ. ܒܒܝܬܐ ܕܐܬܩܪܝ
ܫܡܝ ܥܠܘܗܝ. ܘܛܢܦܘܗܝ. * ܘܒܢܘ ܒܡܬܐ ܠܬܘܦܬ ܕܒܚܝܠܐ ܕܒܪ ܗܢܘܡ. ܠܡܘܩܕܘ. 31
ܒܢܝܗܘܢ ܘܒܢܬܗܘܢ ܒܢܘܪܐ. ܕܠܐ ܦܩܕܬ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܣܠܩܬ ܥܠ ܠܒܝ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ 32
ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܢܬܐܡܪ ܬܘܒ ܬܘܦܬ ܘܚܝܠܐ ܕܒܪ ܗܢܘܡ. ܐܠܐ ܚܝܠܐ ܕܩܛܝܠܐ.
ܘܢܩܒܪܘܢ ܒܬܘܦܬ ܡܢ ܕܠܝܬ ܐܬܪܐ. * ܘܢܗܘܝܢ ܫܠܕܝܗܘܢ ܕܥܡܐ ܗܢܐ. ܡܐܟܘܠܬܐ 33
ܠܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܠܚܝܘܬܐ ܕܐܪܥܐ. ܘܠܝܬ ܕܡܦܪܩ. * ܘܐܒܛܠ ܡܢ ܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܡܢ 34
ܫܘܩܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܩܠܐ ܕܚܕܘܬܐ. ܘܩܠܐ ܕܦܨܝܚܘܬܐ. ܩܠܐ ܕܚܬܢܐ. ܘܩܠܐ ܕܟܠܬܐ. ܡܛܠ ܕܠܚܘܪܒܐ
ܬܗܘܐ ܟܠܗ ܐܪܥܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܚ *

* ܒܙܒܢܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܢܦܩܘܢ ܓܪܡܐ ܕܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܓܪܡܐ ܕܪܘܪܒܢܘܗܝ. 1
ܘܓܪܡܐ ܕܟܗܢܘܗܝ. ܘܓܪܡܐ ܕܢܒܝܘܗܝ. ܘܓܪܡܐ ܕܥܡܘܪܘܗ ܕܐܘܪܫܠܡ ܡܢ
ܩܒܪܝܗܘܢ. * ܘܢܫܛܚܘܢ ܐܢܘܢ ܠܫܡܫܐ ܘܠܣܗܪܐ ܘܠܟܠܗ ܚܝܠܐ ܕܫܡܝܐ. ܕܪܚܡܘ 2
ܐܢܘܢ. ܘܦܠܚܘ ܐܢܘܢ. ܘܐܙܠܘ ܒܬܪܗܘܢ. ܘܫܐܠܘ ܠܗܘܢ. ܘܣܓܕܘ ܠܗܘܢ. ܠܐ ܢܬܟܢܫܘܢ.
ܘܠܐ ܢܬܩܒܪܘܢ. ܐܠܐ ܐܝܟ ܙܒܠܐ ܥܠ ܐܦܝ ܐܪܥܐ ܢܗܘܘܢ. * ܘܢܓܒܘܢ ܠܗܘܢ ܡܘܬܐ ܡܢ 3
ܚܝܐ. ܟܠܗ ܫܪܟܐ ܕܐܫܬܚܪܘ ܡܢ ܫܪܒܬܐ ܗܕܐ ܒܝܫܬܐ. ܒܟܠ ܐܬܪܘܬܐ ܕܒܕܪܬ ܐܢܘܢ
ܬܡܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܘܬܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܢܦܠܘܢ. ܘܠܐ 4
ܢܩܘܡܘܢ. ܘܐܢ ܢܬܘܒܘܢ. ܠܐ ܢܬܘܒܘܢ.

Prætervertebam, mittebámque; ſed non ob- 26
temperârunt, neque præbuerunt aurem ſuam
mihi; imò obdurârunt cervicem ſuam multò
magis quàm patres eorum. Tu quoque di- 27
ces eis omnes ſermones iſtos, at non auſculta-
bunt tibi; vocabis eos, & non reſpondebunt
tibi. Periit fides, & defecit ex ore eorum. 28
Tonde comam tuam, & abjice, & ſume ſecus 29
ſemitas lamentationem; quoniam iratus eſt
Dominus, & deſeruit generationem præva-
ricatricem. Quia perpetrârunt filii Judæ 30
ſcelus coram me, dicit Dominus; poſuerunt
abominationem ſuam in æde ſuper quam in-
vocatum eſt nomen meum, & contaminave-
runt eam: Et ædificaverunt altaria in To- 31
pheth quæ eſt in valle filii Hennom, ut filios
filiáſque ſuas igni comburerent; quod non
præceperam eis, neque in animum meum ſub-
ierat: Propterea ecce dies venturi ſunt, di- 32
cit Dominus, quum non dicetur ampliùs To-
pheth & vallis filii Hennom, ſed vallis inter-
fectorum: & ſepelient in Topheth præ loci
penuria: Et erunt cadavera populi iſtius 33
eſcæ volatilibus cœli, & beſtiæ terræ, nemi-
ne eripiente. Ita ceſſare faciam ex civitati- 34
bus Judæ & ex plateis Jeroſolymæ, vocem ex-
ultationis, & vocem lætitiæ, vocem ſponſi, &
vocem ſponſæ; quandoquidem in ſolitudi-
nem redigenda eſt tota terra.

CAP. VIII.

Tunc temporis, ait Dominus, extrahentes 1
oſſa regum Judæ, & oſſa principum eorum,
oſſa ſacerdotum, & oſſa prophetarum eorum,
oſſa denique civium Jeruſalem, è ſepulchris
ipſorum; Expandent ea ſoli & lunæ, toti- 2
que militiæ cœleſti, quæ dilexerũt, coluerunt,
ſectati ſunt, conſuluerunt, & adoraverunt:
non colligentur, neque ſepelientur, ſed ut fi-
mus erunt in ſuperficie terræ: Eligéntque 3
ſibi mortem potiùs quàm vitam reſidui omnes
qui ſupererunt ex hac familia peſſima cunctis
in locis in quæ diſperſi eos, ait Dominus po-
tentiſſimus. Præterea dices eis, Sic ait Do- 4
minus; Cadent, & non reſurgent; & licèt
pœniteat eos, non *tamen* pœnitet illos.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ولم يسمعوا لي ولا نصتوا باذانهم * وصعبوا رقابهم اكثر من اباءهم * * ويقول لهم هذا 26 27
القول * هذه الامة التي لم تسمع صوت الرب ولم تقبل ادبا * فني الايمان من فمهم * جزي راسك 28 29
واطرحي وخذي على شفتيك نوحا * لان الرب نبذ واقصى الجيل الذي يصنع هذه * لان 30
بني يهودا صنعوا الشر امامي يقول الرب * ونصبوا رذائلهم في البيت حيث دعي اسمي عليه
لينجسوه * وبنوا هيكل طافات الذي هو في وادي بن انوم ليحرقوا بنيهم وبناتهم بالنار هذا 31
الذي لم امرهم به ولم افكر فيه بقلبي * لاجل هذا تاتي ايام يقول الرب * فلا تقولون اين 32
هيكل طافات ووادي بن انوم لكن وادي المقتولين * ويدفنوهم في قبر طافات من اجل
انه لا يكون لهم موضع * وتكون اموات هذا الشعب طعاما لجميع طيور السماء ووحوش 33
الارض * ولا يكون منقذ * وابطل من مدينة يهودا ومن مسالك ايروسليم * صوت المسرورين 34
وصوت الفرحين * صوت العريس وصوت العروس * لان كل الارض تكون للخراب *

* الفصل الثامن *

* في ذلك الزمان يقول الرب يخرجون عظام ملوك يهودا * وعظام روسايه * وعظام الكهنة * وعظام 1
انبيايهم * وعظام سكان ايروسليم من قبورهم * ويبسطوها للشمس والقمر * ولجميع 2
الكواكب * ولجميع اجناد السماء هذه التي احبوها * وتعبدوا لها وساروا خلفها *
وتمسكوا بها وسجدوا لها * لا يجمعوهم ولا يدفنوهم * ويصير سهن على وجه الارض * لانهم 3
اختاروا الموت بالحري اكثر من الحياة * وجميع البقية التي تبقي من هذا الجيل
في كل الموضع الذي اقصيهم اذن هناك * ان هكذا يقول الرب * هل الساقط 4
لا يقوم * والمنصرف لا يعود *

Tamen non acquieverunt mihi, nec au- 26
res ſuas admoverunt: imò obduraverunt cervicem ſuam pluſquam majores
ſui. 27 & 28 Dices etiam eis hunc
ſermonem; Hæc eſt gens quæ non acquievit voci Domini, nec eruditionem
ſuſcepit; defecit fides ex ore eorum.
Tonde caput tuum, & proſterne te, & 19
ſume ſuper labia tua lamentationem;
quia Dominus abjecit repulitque generationem talia perpetrantem. Quia filii 30
Judæ malum operati ſunt coram me
dicit Dominus; diſpoſuerunt abominationem ſuam in domo ſuper quam invocatum eſt nomen meum, ut pollucrent
eam; Et ædificaverunt templum Ta- 31
phathis, quod eſt in valle filii Ennomis,
ut filios filiaſque ſuas igne comburerent;
rem ſanè quam neque præceperam eis,
neque mente cogitaveram: Iccirco dies 32
venient, ait Dominus, quibus non dicetis, ubi eſt templum Taphathis, &
vallis filii Ennomis, ſed vallis occiſorum? & ſepelient eos in ſepultura Taphathis, eò quòd nullus ſuperſit eis locus. Eruntque mortui iſtius populi, eſca 33
cunctis volucribus cæli & beſtiis terræ; nec erit qui redimat: Et abolebo 34
ex urbe Judæ & ex vicis Jeroſolymorum vocem exultantium & vocem gaudentium, vocem ſponſi & vocem ſponſæ; quia tota terra vaſtabitur.

CAP. VIII.

Tempore illo, dicit Dominus, extrahent 1
oſſa regum Judæ, & oſſa principum ejus,
oſſa ſacerdotum, oſſa prophetarum eorum,
& oſſa civium Jeroſolymæ, è ſepulchris
eorũ; Et exponent ea ſoli & lunæ, omni- 2
buſq; ſyderibus, et cunctis cœli exercitib⁹,
quos amaverunt, quibus ſervierunt,
quos ſectati ſunt, quibus adhæſerunt,
quoſque adoraverunt. Non colligent,
neque ſepelient eos, ſed erunt ſpectaculo ſuper faciem terræ; Eò quòd elege- 3
rint mortem potiùs quàm vitam. Ad
omnes autem reſiduos qui ſuperſunt
ex hac generatione quocunque in loco
ad quem depulero eos, ſic dicit Dominus;
Num qui cadit, non reſurgit? an qui diſ- 4
cedit, non revertitur?

ירמיה : ח

? pertinaci aversione Jerusalaim iste populus est refractarius Quare
5 מַדּוּעַ שׁוֹבְבָה הָעָם הַזֶּה יְרוּשָׁלַםִ מְשֻׁבָה נִצַּחַת
,audivi & , Attendi .reverti renuerunt ,dolum in Apprehenderunt
6 הֶחֱזִיקוּ בַּתַּרְמִית מֵאֲנוּ לָשׁוּב׃ הִקְשַׁבְתִּי וָאֶשְׁמָע
: dicendo , suo malo super pœnituit vir non ,loquentur rectum non
לוֹא־כֵן יְדַבֵּרוּ אֵין אִישׁ נִחָם עַל־רָעָתוֹ לֵאמֹר
equus tanquam ,suum cursum in est conversus ipse Omnis ? feci Quid
מֶה עָשִׂיתִי כֻּלֹּה שָׁב בִּמְרֻצוֹתָם כְּסוּס
;sua (statuta) tempora cognovit cœlo in ciconia Etiam .prælium in exundans
7 שׁוֹטֵף בַּמִּלְחָמָה׃ גַּם־חֲסִידָה בַשָּׁמַיִם יָדְעָה מוֹעֲדֶיהָ
: sui adventus tempus custodierunt hirundo & ,grus & ,turtur &
וְתֹר וְסוּס וְעָגוּר שָׁמְרוּ אֶת־עֵת בֹּאָנָה
: dicetis Quomodo .Domini judicium noverunt non meus populus &
8 וְעַמִּי לֹא יָדְעוּ אֵת מִשְׁפַּט יְהוָה׃ אֵיכָה תֹאמְרוּ
ecce Verè ? nobiscum Domini lex & , nos Sapientes
חֲכָמִים אֲנַחְנוּ וְתוֹרַת יְהוָה אִתָּנוּ אָכֵן הִנֵּה
, sapientes sunt affecti Pudore .scribæ falsitas ,stylus fecit vanum in
9 לַשֶּׁקֶר עָשָׂה עֵט שֶׁקֶר סֹפְרִים׃ הֹבִשׁוּ חֲכָמִים
,reprobaverunt Domini verbo in ecce : sunt capti & ,sunt consternati
חַתּוּ וַיִּלָּכֵדוּ הִנֵּה בִדְבַר־יְהוָה מָאָסוּ
eorum uxores dabo Propterea ? eis quid sapientia &
10 וְחָכְמַת מֶה לָהֶם׃ לָכֵן אֶתֵּן אֶת־נְשֵׁיהֶם
magnum ad usque & parvo à quia ,hæredibus eorum agros , aliis
לַאֲחֵרִים שְׂדוֹתֵיהֶם לְיוֹרְשִׁים כִּי מִקָּטֹן וְעַד־גָּדוֹל
sacerdotem ad usque & propheta à : cupiditatem concupiscens ipse totus
כֻּלֹּה בֹּצֵעַ בָּצַע מִנָּבִיא וְעַד־כֹּהֵן
mei populi filiæ contritionem curabant Et .mendacium faciens ipse totus
11 כֻּלֹּה עֹשֶׂה שָּׁקֶר׃ וַיְרַפּוּ אֶת־שֶׁבֶר בַּת־עַמִּי
.pax non & , pax Pax : dicendo , levi super
עַל־נְקַלָּה לֵאמֹר שָׁלוֹם ׀ שָׁלוֹם וְאֵין שָׁלוֹם׃
pudendo Etiam ? fecerunt abominationem quoniam ,sunt affecti Pudore
12 הֹבִשׁוּ כִּי תוֹעֵבָה עָשׂוּ גַּם־בּוֹשׁ
cadent Idcirco .nescierunt erubescere & , sunt affecti pudore non
לֹא־יֵבֹשׁוּ וְהִכָּלֵם לֹא יָדָעוּ לָכֵן יִפְּלוּ
.Dominus dixit , corruent suæ visitationis tempore in , cadentes in
בַנֹּפְלִים בְּעֵת פְּקֻדָּתָם יִכָּשְׁלוּ אָמַר יְהוָה׃
nec , vite in uvæ non ,Dominus dixit , eos colligam Colligendo
13 אָסֹף אֲסִיפֵם נְאֻם־יְהוָה אֵין עֲנָבִים בַּגֶּפֶן וְאֵין
.eis transibunt , eis dedi & ,defluxit folium & , ficu in ficus
תְּאֵנִים בַּתְּאֵנָה וְהֶעָלֶה נָבֵל וָאֶתֵּן לָהֶם יַעַבְרוּם׃
civitates in ingrediamur & ,vos Colligite ? sedentes nos quid Propter
14 עַל־מָה אֲנַחְנוּ יֹשְׁבִים הֵאָסְפוּ וְנָבוֹא אֶל־עָרֵי
,nos fecit silere noster Deus Dominus quia , ibi silebimus & ,munitionis
הַמִּבְצָר וְנִדְּמָה־שָּׁם כִּי יְהוָה אֱלֹהֵינוּ הֲדִמָּנוּ
.Domino peccavimus nam : fellis aquam nobis dedit potum &
וַיַּשְׁקֵנוּ מֵי־רֹאשׁ כִּי חָטָאנוּ לַיהוָה׃
.terror ecce & ,medelæ tempus ad : bonum non & ,pacem ad Expectare
15 קַוֵּה לְשָׁלוֹם וְאֵין טוֹב לְעֵת מַרְפֵּה וְהִנֵּה בְעָתָה׃
hinnituum voce à , ejus equorum fremitus est auditus Dan A
16 מִדָּן נִשְׁמַע נַחְרַת סוּסָיו מִקּוֹל מִצְהֲלוֹת
,terram devoraverunt & ,venerunt & : terra omnis tremuit ,ejus fortiũ
אַבִּירָיו רָעֲשָׁה כָּל־הָאָרֶץ וַיָּבוֹאוּ וַיֹּאכְלוּ אֶרֶץ
ego ecce Quia .ea in habitantes & ; urbem ? ejus plenitudinem &
17 וּמְלוֹאָהּ עִיר וְיֹשְׁבֵי בָהּ׃ כִּי הִנְנִי
: incantatio eis non quibus , regulos serpentes vos in mittens
מְשַׁלֵּחַ בָּכֶם נְחָשִׁים צִפְעֹנִים אֲשֶׁר אֵין־לָהֶם לָחַשׁ
,mærorem super mea Confortatio .Dominus ait , vos mordebunt &
18 וְנִשְּׁכוּ אֶתְכֶם נְאֻם־יְהוָה׃ מַבְלִיגִיתִי עֲלֵי יָגוֹן
.mærens meum cor me in
עָלַי לִבִּי דַוָּי׃

Verſio VULG. LAT.

5 Quarè ergò averſus eſt populus iſte in Jeruſalem averſione contentioſâ? Apprehenderunt mendacium, & noluerunt reverti. 6 Attendi, & auſcultavi: nemo quod bonum eſt loquitur, nullus eſt qui agat pœnitentiam ſuper peccato ſuo, dicens; Quid feci? omnes converſi ſunt ad curſum ſuum, quaſi equus impetu vadens 7 ad prælium. Milvus in cœlo cognovit tempus ſuum: turtur, & hirundo, & ciconia, cuſtodierunt tempus adventûs ſui: populus autem meus non cognovit judicium Domini. 8 Quomodò dicitis; Sapientes nos ſumus, & lex Domini nobiſcum eſt? verè mendacium operatus eſt ſtylus mendax ſcribarum. 9 Confuſi ſunt ſapientes, perterriti & capti ſunt: verbum enim Domini projecerunt, & ſapientia nulla eſt in eis. 10 Propterea dabo mulieres eorum exteris, agros eorum hæredibus: quia à minimo uſque ad maximum omnes avaritiam ſequuntur: à propheta uſque ad ſacerdotem cuncti 11 faciunt mendacium. Et ſanabant contritionem filiæ populi mei ad ignominiam, dicentes; Pax, pax: cùm non eſſet pax. 12 Confuſi ſunt, quia abominationem fecerunt: quinimò confuſione non ſunt confuſi, & erubeſcere neſcierunt: idcircò cadent inter corruentes, in tempore viſitationis ſuæ corruent, dicit Dominus. 13 Congregans congregabo eos, ait Dominus; non eſt uva in vitibus, & non ſunt ficus in ficulnea, folium defluxit: & dedi eis quæ prætergreſſa ſunt. 14 Quarè ſedemus? convenite, & ingrediamur civitatem munitam, & ſileamus ibi: quia Dominus Deus noſter ſilere nos fecit, & potum dedit nobis aquam fellis: peccavimus enim Domino. 15 Expectavimus pacem, & non erat bonum; tempus me- 16 delæ, & ecce formido. A Dan auditus eſt fremitus equorum ejus, à voce hinnituum pugnatorum ejus, commota eſt omnis terra: & venerunt, et devoraverunt terram, & plenitudinem ejus; urbem et habitatores ejus. 17 Quia ecce ego mittam vobis ſerpentes regulos, quibus non eſt incantatio: & mordebunt vos, 18 ait Dominus. Dolor meus ſuper dolorem, in me cor meum mœrens.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

5 Διατί ἀπέστρεψεν (ζ) ὁ λαός μου οὗτος ἀποστροφὴν ἀναιδῆ, καὶ κατεκρατήθησαν (η) ἐν τῇ προαιρέσει αὐτῶν, καὶ οὐκ (θ) ἠθέλησαν τοῦ ἐπιστρέψαι; 6 Ἐνωτίσασθε δὴ, καὶ ἀκούσατε. οὐχ (ι) οὕτω λαλήσουσιν, Οὐκ ἔστιν (κ) ἄνθρωπος ὁ μετανοῶν ἀπὸ τῆς κακίας αὐτοῦ, λέγων, Τί ἐποίησα; διέλιπεν ὁ τρέχων (λ) ἀπὸ τοῦ δρόμου αὐτοῦ, ὡς ἵππος κάθιδρος ἐν χρεμετισμῷ αὐτοῦ. 7 Καὶ ἡ ἀσίδα ἐν τῷ οὐρανῷ ἔγνω τὸν καιρὸν αὐτῆς, τρυγὼν καὶ χελιδὼν ἀγροῦ, στρουθία ἐφύλαξαν καιροὺς (μ) εἰσόδων ἑαυτῶν, ὁ δὲ λαός (ν) μου οὗτος οὐκ ἔγνω τὰ κρίματα κυρίου. 8 Πῶς ἐρεῖτε, Ὅτι Σοφοί ἐσμεν ἡμεῖς, καὶ νόμος κυρίου μεθ᾽ ἡμῶν ἐστιν, εἰς μάτην ἐγενήθη σχοῖνος ψευδὴς γραμματεῦσιν. 9 Ἠσχύνθησαν Σοφοὶ, καὶ ἐπτοήθησαν καὶ ἑάλωσαν, ὅτι τὸν (ξ) νόμον κυρίου ἀπεδοκίμασαν. σοφία τίς ἐστιν ἐν αὐτοῖς; 10 Διατοῦτο δώσω τὰς γυναῖκας αὐτῶν ἑτέροις, καὶ τοὺς ἀγροὺς αὐτῶν τοῖς κληρονόμοις, καὶ συνάξουσι τὰ (ο) γεννήματα αὐτῶν, λέγει κύριος. 13 Οὐκ ἔστι σταφυλὴ ἐν ταῖς ἀμπέλοις, καὶ οὐκ ἔστι σῦκα ἐν ταῖς συκαῖς, καὶ τὰ φύλλα κατέῤῥυηκεν. 14 Ἐπὶ τί ἡμεῖς καθήμεθα; Συνάχθητε, καὶ εἰσέλθωμεν εἰς τὰς πόλεις τὰς ὀχυρὰς, καὶ (π) ἀποῤῥιφῶμεν ἐκεῖ, ὅτι ὁ θεὸς ἀπέῤῥιψεν ἡμᾶς, καὶ ἐπότισεν ἡμᾶς ὕδωρ χολῆς, ὅτι ἡμάρτομεν ἐναντίον αὐτοῦ. 15 Συνήχθημεν εἰς εἰρήνην, καὶ οὐκ ἦν ἀγαθὰ, εἰς καιρὸν ἰάσεως, καὶ ἰδοὺ σπουδή. 16 Ἐκ Δὰν (ρ) ἀκουσόμεθα φωνὴν ὀξύτητος ἵππων αὐτοῦ· ἀπὸ φωνῆς χρεμετισμοῦ ἱππασίας ἵππων αὐτοῦ ἐσείσθη (σ) πᾶσα ἡ γῆ, καὶ ἥξει καὶ καταφάγεται τὴν γῆν, καὶ τὸ πλήρωμα αὐτῆς, 17 πόλιν καὶ τοὺς κατοικοῦντας ἐν αὐτῇ. Διότι ἰδοὺ ἐγὼ ἐξαποστέλλω (τ) εἰς ὑμᾶς ὄφεις θανατοῦντας, οἷς οὐκ ἔστιν (υ) ἐπᾶσαι, 18 καὶ δήξονται ὑμᾶς Ἀνίατα μετ᾽ ὀδύνης καρδίας ὑμῶν ἀπορουμένης.

5 Quarè averſus eſt populus meus hic averſione impudenti, & confirmati ſunt in electione ſua, & noluerunt reverti? 6 Auribus percipite nunc, & audite. Nonne ſic loquentur, Non eſt homo, qui pœnitentiam agat à peccato ſuo, dicens; Quid feci? (b) Defecit currens à curſu ſuo, quaſi equus defeſſus in hinnitu ſuo. 7 Et (c) aſida in cœlo cognovit tempus ſuum: turtur, & hirundo agri, paſſeres cuſtodierunt tempora ingreſſuum ſuorum: populus autem meus hic non cognovit judicia Domini. 8 Quomodò dicetis; Quia ſapientes ſumus nos, & lex Domini nobiſcum eſt? Fruſtrà factus eſt (d) juncus mendax ſcribis. 9 Confuſi ſunt ſapientes, & perterriti, & capti ſunt: quia legem Domini reprobaverunt. Sapientia quæ eſt in eis? 10 Propterea dabo uxores eorum aliis, & agros eorum (e) hæredibus, Et colligent genimina eorum, dicit Dominus. 13 Non eſt uva in vitibus: & non ſunt ficus in ficis, & folia defluxerunt. 14 Quarè nos ſedemus? Convenite, & ingrediamur in civitates munitas, & projiciamur ibi: quoniam Deus projecit nos, & potum dedit nobis aquam fellis: quia peccavimus coram eo. 15 Congregati ſumus ad pacem, & non fuerunt bona; ad tempus medelæ, & ecce trepidatio. 16 E Dan audiemus vocem fremitûs equorum ejus: à voce hinnitûs equitatûs equorum ejus commota eſt omnis terra: & veniet, & devorabit terram, & plenitudinem ejus; urbem, & habitantes in ea. 17 Quia ecce ego mitto in vos ſerpentes mortiferos, quibus non eſt incantatio: & mordebunt vos 18 Inſanabiliter cum dolore cordis veſtri deficientis.

MS.A. (ζ) ὁ λαὸς οὗτος (η) τῇ προαιρέσει (θ) ἠθέλησαν ἐπιστρέψαι; (ι) οὕτως λαλοῦσιν, (κ) ἄνθρωπος μετανοῶν (λ) ἐκ τοῦ (μ) εἰσόδου αὐτῶν, (ν) μου οὐκ (ξ) λόγον (ο) γεννήματα (π) ἀποῤῥιφῶμεν, ὅτι ὁ θεὸς (ρ) ἀκούσομαι (σ) ἀπ᾽ αὐτοῦ πᾶσα (τ) ἐφ᾽ ὑμᾶς (υ) ἐπᾶσαι,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 מה דין מתחסנין למתב לפולחני עמא הדין יתבי ירושלם תבו למרד מן אוריתא ולא
6 צבן למתב אתקיפו בנכלין מסרבין למתב: אציתית וגלי קדמי לא כדכשר ממללין לית
גבר דמתיב מן בישתיה למימר מה עבדית כולהון מסגן ברעות נפשהון כסוסיא דגזר
7 בקרבא: אף חוריתא בשמיא ידעא זמנהא ושפנינא וכורכיא וסנוניתא נטרין ית עדן
8 מעלהון ועמי לא הוו ידעין למעבד ית קימא דיי: איכדין תימרון חכימין אנחנא ועל
9 אוריתא דיי אנחנא רחיצין בכן הא לשקרא עבד ספר קולמס דשקר לזיפא: בהיתו
10 חכימיא אתברו ואתאחידו הא בפתגמא דיי קצו וחולק בחוכמתא לית להון: בכן אתן
ית נשיהון לאוחרנין חקלתהון לירותין ארי מן זעירא ועד רבא כולהון אנסי ממון
11 מספר ועד כהן כולהון עבדי שקר: ואסיאו ית תבר כנשתא דעמי במלי שקריהון
12 למימר שלמא שלמא ולית שלם: עליהון למבהת ארי תועבה עבדו אף מבהת לית
אנון בהתין ואתכנעו לית אנון ידעין בכן יתרמון קטילין בעדן דאסער עליהון חוביהון
13 יתקלון אמר יי: שצאה אשיצנון אמר יי ויסופון כמסף ענבין מגפן וכנבלא מתינא
14 וכטרף מאילן על דיהבית להון אוריתי מסיני ועברו עלה: על מה אנחנא יתבין
אתכנשו ונעול לקרוין כריכן ונשתוק תמן ארי יי אלהנא איתי עלנא תבר ואבהתנא
15 ואשקנא כס דלוט ביש כרישי חיון ארי חבנא קדם יי: סברנא לשלם ולית טב ולעדן
16 סליחות חובין והא פורענות חטאין: על די פלחו לעגלא דבדן מלך במשריתיה יסק
עליהון ויגלי יתהון מקל פסיעות גברוהי יזועון כל יתבי ארעא ייתון ויבזון ארעא
17 ומלואה קרויא ודיתבין בהון: ארי הא אנא מגרי בכון עממין קטולין כחיון חורמנין
18 דלית להון לחשא ויקטלון יתכון אמר יי: על דהוו מלעגין לקבל נביא דמתנבן להון
דונא ותנחתא איתי עליהון מן קדם חוביהון עליהון אמר נביא לבי דוי:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

5 Quare obfirmant ſe populꝰ iſte, habitatores Jeruſalẽ, ut non convertantur ad cultũ meum? ſed averſi ſunt ut recedant à Lege, & noluerunt redire; ſed apprehenderunt dolos, renuentes converti. 6 Auſcultavi & manifeſtum eſt corã me, quia non rectè loquuntur: non eſt vir qui convertatur à malitia ſua, dicens: Quid feci? omnes multiplicant voluntatẽ animæ ſuæ, ſicut equꝰ qui confligit. 7 Etiã ciconia in cœlo novit tempꝰ ſuũ, & turtur, & grus, & hirundo cuſtodierunt tempꝰ adventꝰ ſui: populꝰ autẽ meꝰ neſcierunt facere *ſtatutum* Dñi. 8 Quomodo dicitis: Sapientes ſumꝰ, & in Lege Dñi nos confidimꝰ? Ecce igitur fruſtrà fecit ſcriba calamũ mendacii ad falſandam ſcripturã. 9 Confuſi ſunt ſapientes, contriti ſunt & apprehenſi ſunt: ecce Verbũ Dñi deteſtati ſunt, & nulla pars eſt eis in ſapientia. 10 Propterea dabo uxores eorũ aliis, & agros eorũ hæredibꝰ: quia à minimo uſq; ad maximũ omnes violenter accipiunt pecunias; & à ſcriba uſq; ad ſacerdotem omnes faciunt mendaciũ. 11 Et ſanabant contritionẽ cœtꝰ populi mei verbis mendacibꝰ ſuis, dicentes, Pax pax, & non erat pax. 12 Confundi debuerant, quia abominationẽ fecerunt; tamen confuſione non ſunt confuſi, & erubeſcere neſcierunt: idcircò projicientur occiſi; in tempore quo viſitavero ſuper eos peccata ſua, corruent, dicit Dñs. 13 Perdendo perdã eos, dicit Dñs: & deficient ſicut deficiunt uvæ de vite, & ſicut ficus defluens de ficulnea, & ſicut foliũ ab arbore: eo ꝗ dedi eis Legẽ meã ex Synai, & tranſgreſſi ſunt eam. 14 Quare nos ſedemꝰ? congregamini & ingrediamur civitates munitas, & ſileamꝰ ibi: quia Dñs Deus noſter adduxit ſuper nos contritionẽ, & pudefecit nos; & potavit nos calice maledictionis peſſimæ, tanquam capitibus ſerpentũ; quia peccavimꝰ coram Dño. 15 Expectavimꝰ pacem, & non erat bonũ; tempus propitiationis peccatorum, & ecce vindicta delictorũ. 16 Pro eo quod coluerunt vitulũ qui eſt in Dan: rex cum exercitu ſuo aſcendet ſuper eos, & tranſmigrare eos faciet: à voce conculcationis fortiũ ſuorũ commovebuntur oẽs habitatores terræ: venient & deprædabuntur terrã & plenitudinẽ ejꝰ, civitates et habitantes in eis. 17 Quoniã ecce ego excito in vos populos occidentes ſicut ſerpentes regulos, quibꝰ non eſt incantatio; & occident vos, dicit Dñs. 18 Pro eo ꝗ ſubſannaverunt contra Prophetas qui prophetabant eis, adducam eis dolorem & gemitum propter peccata eorum: ſuper eos, dicit Propheta, cor meum dolet.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܡܛܠ ܡܢܐ ܗܦܟ ܥܡܐ ܗܢܐ ܐܘܪܫܠܡ ܗܘܦܟܐ ܚܨܝܦܐ. ܐܬܚܝܕܘ ܒܢܟܠܐ. ܘܠܐ ܨܒܘ 5
ܠܡܬܦܢܝܘ. * ܨܬܬ ܘܫܡܥܬ. ܘܠܐ ܗܘܐ ܬܪܝܨܐܝܬ ܡܡܠܠܝܢ. ܠܝܬ ܓܝܪ ܐܢܫ ܕܬܘܐ ܥܠ ܒܝܫܬܗ. 6
ܘܐܡܪ. ܡܢܐ ܥܒܕܬ. ܟܠܗܘܢ ܡܗܠܟܝܢ ܒܪܓܝܓܬܗܘܢ. ܐܝܟ ܣܘܣܝܐ ܕܢܓܕ ܒܩܪܒܐ. * ܐܦ 7
ܣܘܪܕܐ ܒܫܡܝܐ ܝܕܥܐ ܙܒܢܗ. ܫܘܦܢܝܢܐ ܘܟܘܪܟܝܐ ܘܣܢܘܢܝܬܐ: ܢܛܪܝܢ ܙܒܢܐ
ܕܡܥܠܢܗܘܢ. ܘܥܡܝ ܠܐ ܝܕܥ ܕܝܢܗ ܕܡܪܝܐ. * ܐܝܟܢܐ ܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܕܚܟܝܡܐ ܚܢܢ. 8
ܘܢܡܘܣܗ ܕܡܪܝܐ ܥܡܢ. ܫܪܝܪܐܝܬ ܠܫܘܩܪܐ ܥܒܝܕ ܩܢܝܐ ܕܓܠܐ ܠܣܦܪܐ. * ܒܗܬܘ 9
ܚܟܝܡܐ. ܘܐܬܬܒܪܘ ܘܐܬܬܚܕܘ. ܡܛܠ ܕܒܣܝܘ ܠܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܚܟܡܬܐ ܠܐ ܗܘܬ ܒܗܘܢ.
* ܡܛܠܗܢܐ ܐܬܠ ܢܫܝܗܘܢ ܠܢܘܟܪܝܐ. ܘܚܩܠܬܗܘܢ ܠܒܙܬܐ. ܡܛܠ ܕܡܢ ܙܥܘܪܗܘܢ 10
ܘܥܕܡܐ ܠܪܒܗܘܢ. ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝܢ ܢܟܠܐ. ܘܡܢ ܢܒܝܐ ܕܓܠܐ ܘܥܕܡܐ ܠܟܗܢܐ.
ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝܢ ܫܘܩܪܐ. * ܘܡܐܣܝܢ ܬܒܪܐ ܕܒܪܬ ܥܡܝ ܒܨܥܪܐ ܘܐܡܪܝܢ. ܫܠܡܐ 11
ܫܠܡܐ. ܘܠܝܬ ܫܠܡܐ. * ܒܗܬܘ ܡܛܠ ܕܣܢܝܬܐ ܥܒܕܘ. ܘܒܗܬܬܐ ܠܐ ܒܗܬܝܢ. 12
ܘܡܬܟܠܡܘ ܠܐ ܝܕܥܝܢ. ܡܛܠܗܢܐ ܢܦܠܘܢ ܥܡ ܢܦܠܐ. ܘܒܙܒܢܐ ܕܡܬܦܩܕܝܢ
ܢܬܬܩܠܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܡܫܠܡܘ ܐܫܠܡ ܐܢܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܠܝܬ ܥܢܒܐ ܒܓܦܬܐ. ܘܠܝܬ 13
ܬܐܢܐ ܒܬܐܢܬܐ. ܘܐܦ ܛܪܦܐ ܢܬܪܘ. ܘܝܗܒܬ ܠܗܘܢ ܘܥܒܪܘ ܡܢܗܘܢ. * ܘܐܡܪܝܢ. ܠܡܢܐ ܝܬܒܝܢܢ. 14
ܐܬܟܢܫܘ ܘܢܥܘܠ ܠܩܘܪܝܐ ܥܫܝܢܬܐ. ܘܢܫܬܘܩ ܬܡܢ. ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܫܬܩܢ.
ܘܐܫܩܝܢ ܡܝܐ ܡܪܝܪܐ. ܡܛܠ ܕܚܛܝܢ ܠܡܪܝܐ. * ܣܟܝܢ ܠܫܠܡܐ. ܘܠܐ ܗܘܬ ܛܒܬܐ. ܘܠܙܒܢܐ 15
ܕܐܣܝܘܬܐ. ܘܗܘܬ ܠܢ ܒܝܫܬܐ. * ܡܢ ܕܢ ܐܫܬܡܥ ܢܚܡܬܐ ܕܪܟܫܘܗܝ. ܡܢ ܩܠܐ ܕܡܡܠܠܐ 16
ܕܓܢܒܪܘܗܝ. ܙܥܬ ܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܘܐܬܘ ܘܐܟܠܘ ܐܪܥܐ ܘܡܠܝܗ. ܡܕܝܢܬܐ ܘܥܡܘܪܝܗ. * ܡܛܠ 17
ܕܗܐ ܡܫܕܪ ܐܢܐ ܒܟܘܢ ܚܘܘܬܐ ܪܘܪܒܬܐ. ܕܠܐ ܡܬܚܒܪܢ ܒܚܘܫܒܐ. ܘܢܢܟܬܘܢܟܘܢ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܣܦܬ ܒܟܪܝܘܬܝ. ܘܟܪܝܐ ܠܝ ܠܒܝ. 18

Quarè averſus eſt populus iſte Jeroſolymitanus averſione impudenti, perſeverant in do- 5
lo, nec volunt converti? Attendi & audi- 6
vi, & nequaquam rectè loquuntur: nemo eſt
enim quem pœniteat malitiæ ſuæ, dicátque;
Quid egi? omnes incedunt in appetitu pro-
prio velut equus abducens *equitem* in prælio.
Equidē ciconia in cœlo novit tempus ſuûm, 7
& turtur, grus, atque hirundo, obſervant
tempus introitûs ſui; populus verò meus igno-
rant judicium Domini. Quomodo dicitis; 8
Sapientes ſumus, & lex Domini penes nos eſt?
Verè ad fallendum inſervit perito calamus
mendax. Pudefacti ſunt ſapientes, fracti, ca- 9
ptíque; eò quòd ſermonē Domini ſpreverint,
neque ſapientia ſit in eis. Proptereà tradam 10
uxores eorum alienis, & agros eorum in di-
reptionem; quia tam minimus quàm maximus
inter eos, omnes dolosè agunt; & falſi pro-
phetæ æquè ac ſacerdotes, omnes falſitati ſtu-
dent; Et fractionem filiæ populi mei nugis 11
curant, dicentes; Pax pax; cùm non ſit pax.
Pudefactíne ſunt quòd abominationem per- 12
petrârint? imò pudendos iſtos non pudet, ſeſé-
que compeſcere minimè nôrunt: iccircò inter
occumbentes corruent, & quo tempore viſita-
buntur, deſtruentur, ait Dominus; planè con-
ſumam eos, ait Dominus. Non ſunt uvæ in 13
viti, neque fic⁹ extant in ficu, quin etiam folia
defluxerunt: dederam quidem illis, at prӕteri-
erunt ab ipſis. Dicéntque, Quorſum deſide- 14
mus? Congregamini, & ingrediamur civita-
tes munitas; ibíque conticeamus, (i. *intereamus*) quandoquidem Dominus Deus noſter
ſilere (*perire*) nos fecit, & bibendas dedit
nobis aquas amaras, quia peccavimus in Deū.
Expectavimus pacem, & nihil boni *contigit*; 15
temp⁹ curationis, & contigit nobis infœlici-
tas. E Dane auditus eſt hinnitus equorum e- 16
jus, à voce locutionis gigantum ejus contre-
muit univerſa terra: venientes, terram devo-
rârunt et quicquid in ea continetur, civitatem
& habitatores ejus. Nam ecce immittam in 17
vos ſerpentes immanes incantationum inca-
paces, mordebúntque vos, ait Dominus.
Conſumptus ſum mœrore meo, & angit me 18
cor meum.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* لأجل ماذا هذا الشعب انصرف انصرافا وقحا * وتمسكوا ببدعهم * ولم يريدوا ان يرجعوا * 5
* انصتوا الآن واسمعوا * ليس هكذا يتكلمون * ليس انسان يتوب من شر قايلا ما الذي 6
صنعت * الذي يجري انكف عن جريه مثل حصان عرقان من صهيله * والقعقع في السماء 7
عرفت وقتها * اليمامة وسنونوه الحجل والعصافير حفظوا اوقات دخولهم * وشعبي لم يعرف
احكام الرب * الاصحاح السادس * كيف تقولون انا نحن حكماء 8
وناموس الرب هو معنا * صار التقويم الكاذب للكتبة باطلا * خزيوا الحكماء وخدعوا وانخذلوا * 9
لانهم نبذوا كلمة الرب * اين هي الحكمة التي فيهم * لاجل هذا اعطي نساهم لآخرين وحقولهم 10
للوارثين * ويجمعون غلاتهم يقول الرب * [MS. Ox. لان من صغيرهم والي كبيرهم مكروا مكرا *
ومن انبياهم الكذبة والي كهنتهم * جميعهم يرتكبون البلا والزور * ويشبهون انكسار شعبي 11
بالمزح * ويقولوا سلام سلام * وليس سلام * خزوا لانفسهم لانهم عملوا النجاسة * ولا يخزون من 12
الخزي * والكفاف لا يعرفوا * من اجل ذلك يسقطوا مع الصرعا * وفي الوقت الذي ينزلهم
ينكبون يقول الرب * اهلكهم هلاكا يقول الرب] * ليس عنب موجودا في الكرمات * ولا تين 13
موجود في شجر تين * والاوراق تساقطت * لماذا نحن جلوس * اجتمعوا فندخل في المدن 14
الحصينة ونطرح * لان الله طرحنا واسقانا ماء مرار لانا اخطانا امامه * اجتمعنا للسلامة فلم 15
تكن الصالحات في وقت الشفا * وها الصرعة من دان * اسمع صوت حث خيوله من صوت 16
صهيل فروسية خيله * تزلزلت منه كل الارض * ويأتي ويأكل الارض بكمالها * المدينة والساكن
فيها * من اجل اني ها انا ارسل عليكم حيات مميتة التي ليس يمكن ان ترقى * ويلدغونكم 17
وليس لكم شفا * ويحير قلبكم بالوجع * 18

Qua de cauſa populus iſte averſus eſt 5
averſione pervicaci, & adhæſerunt here-
ſi ſuæ, nec reverti volunt? Attendite 6
jam, & audite quòd *non ita loquuntur:*
nemo eſt quem pœniteat ſceleris ſui di-
cens, Quid feci? qui currebat, deſtitit à
ſuo curſu velut equus proprio hinnitu
ſudabundus. Vel grus in cœlo cognoſcit 7
tempus ſuum; turtur, hirundo campeſtris,
& aves, obſervant ſtata ingreſſûs ſui tem-
pora; populus verò meus ignorat judicia
Domini.

Textus ſextus.

Quo pacto dicitis, Nos quidem ſapientes 8
ſumus, & lex Domini apud nos eſt?
directio falſa ſcribis fruſtranea facta eſt,
Pudefacti ſunt ſapientes, decepti, & ope 9
deſtituti; quia rejecerunt verbum Do-
mini: ubinam eſt ſapientia illis indita?
Iccirco daturus ſum uxores eorum aliis, 10
& agros eorum poſſidentibus, qui *& pro-*
ventus eorum colligent, dicit Dominus;
[MS. Ox. *quia à parvo uſq; ad magnū om-*
ninò dolosè agunt: et à falſis eorū prophe-
tis etiā uſq; ad ſacerdotes, calamitates &
mendacia machinantur omnes. Et fracti- 11
onem populi mei in jocos vertunt dicendo,
Pax, pax, cùm non ſit pax. Num pude- 12
facti ſunt apud ſeipſos quòd abominati-
onem fecerint? imò ne minimo quidem
pudore affecti ſunt, neq; ullam cohibiti-
onem nôrunt: idcirco inter proſtratos
corruent, & quo tempore deijciet illos
confringentur, dicit Dominus, penitùs
diſperdam, eos inquit Dominus.] *Nulla* 13
reperiuntur uvæ in vitibus, neq; ficus re-
periuntur in arbore ficulnea, ſed & folia
defluxerunt. Quare deſidemus? congre- 14
gamini ut ingrediamur urbes munitas, &
procumbamus; quandoquidem Deus ab-
jecit nos, & potavit nos aquâ amaritudi-
nis, eò quòd coram ipſo peccaverimus.
Congregati ſumus pacis gratiâ, ſed non 15
contigerunt bona in tempore curationis,
imò ecce profligatio de Dane. Audi 16
ſonitum fervoris equorum ejus ob vocem
hinnitûs equitatûs equorum ejus: con-
tremuit ab eo tota terra: & veniet, ter-
ramque funditùs comedet, urbem &
habitantes in ea. Nam ecce ego immiſ- 17
ſurus ſum in vos ſerpentes mortiferos
qui incantari nequibunt, mordebuntque
vos, nec erit vobis medela; Et cor ve- 18
ſtrum dolore ſtupeſiet.

ירמיה : ט

:distantiarum terra de mei populi filiæ clamoris vox Ecce
הִנֵּה־קוֹל שַׁוְעַת בַּת־עַמִּי מֵאֶרֶץ מַרְחַקִּים 19
? ea in non ejus rex an , Sijon in non DOMINUS Nunquid
הַיהוָה אֵין בְּצִיּוֹן אִם־מַלְכָּהּ אֵין בָּהּ
? alienigenæ vanitatibus in,suis sculptilibus in me fecerunt irasci Quare
מַדּוּעַ הִכְעִסוּנִי בִּפְסִלֵיהֶם בְּהַבְלֵי נֵכָר׃
Super .sumus salvati non nos & , æstas est finita ,messis Transivit
20 21 עָבַר קָצִיר כָּלָה קָיִץ וַאֲנַחְנוּ לוֹא נוֹשָׁעְנוּ׃ עַל־
.me apprehendit stupor,sum denigratus:sum cōtritꝰ mei populi filiæ cōtritionē
שֶׁבֶר בַּת־עַמִּי הָשְׁבָּרְתִּי קָדַרְתִּי שַׁמָּה הֶחֱזִקָתְנִי׃
Sed ? ibi non medicus num ? Ghilhad in non resina Nunquid
הַצֳרִי אֵין בְּגִלְעָד אִם־רֹפֵא אֵין שָׁם כִּי 22
? mei populi filiæ cicatrix conscendit non cur
מַדּוּעַ לֹא עָלְתָה אֲרֻכַת בַּת־עַמִּי׃

CAP. IX. ט

flebo & : lachrymæ vena meꝰ oculus & ,aquæ meum caput det Quis
מִי־יִתֵּן רֹאשִׁי מַיִם וְעֵינִי מְקוֹר דִּמְעָה וְאֶבְכֶּה 1
deserto in mihi det Quis .mei populi filiæ saucios nocte ac die
יוֹמָם וָלַיְלָה אֵת חַלְלֵי בַת־עַמִּי׃ מִי־יִתְּנֵנִי בַמִּדְבָּר 2
quia : eis ab abibo & ,meū populū derelinquā & ,viatorū diversoriū
מְלוֹן אֹרְחִים וְאֶעֶזְבָה אֶת־עַמִּי וְאֵלְכָה מֵאִתָּם כִּי
fecerunt ejaculari Et .prævaricatorum retentio , adulteri ipsi universi
כֻּלָּם מְנָאֲפִים עֲצֶרֶת בֹּגְדִים׃ וַיַּדְרְכוּ אֶת־ 3
:terra in se roboraverūt;veritatē ad non &,mendaciū suū arcū ,suā linguā
לְשׁוֹנָם קַשְׁתָּם שֶׁקֶר וְלֹא לֶאֱמוּנָה גָּבְרוּ בָאָרֶץ
.Dominus dixit,cognoverūt non me &,sunt egressi malum ad malo de quia
כִּי מֵרָעָה אֶל־רָעָה יָצָאוּ וְאֹתִי לֹא־יָדָעוּ נְאֻם־יְהוָה׃
quia : fidatis ne fratre omni super & ,cavete suo socio à Unusquisque
אִישׁ מֵרֵעֵהוּ הִשָּׁמֵרוּ וְעַל־כָּל־אָח אַל־תִּבְטָחוּ כִּי 4
fraudulenter - sodalis omnis & ,supplantabit supplantando frater omnis
כָל־אָח עָקוֹב יַעְקֹב וְכָל־רֵעַ רָכִיל
non veritatem &,fallacia utentur suum socium in unusquisque Et .incedet
יַהֲלֹךְ׃ וְאִישׁ בְּרֵעֵהוּ יְהָתֵלּוּ וֶאֱמֶת לֹא 5
.laboraverūt agendo pravè,mendacium loqui suā linguā docuerunt :loquētur
יְדַבֵּרוּ לִמְּדוּ לְשׁוֹנָם דַּבֶּר־שֶׁקֶר הַעֲוֵה נִלְאוּ׃
.Dominꝰ dixit ; me scire renuerūt dolo in , doli medio in tuū Sedere
שִׁבְתְּךָ בְּתוֹךְ מִרְמָה בְּמִרְמָה מֵאֲנוּ דַעַת־אוֹתִי נְאֻם־יְהוָה׃ 6
,eos excoquens ego Ecce : exercituum Dominus dixit sic Propterea
לָכֵן כֹּה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת הִנְנִי צוֹרְפָם 7
? mei populi filiæ faciebus à faciam quomodo quia : eos probabo &
וּבְחַנְתִּים כִּי־אֵיךְ אֶעֱשֶׂה מִפְּנֵי בַּת־עַמִּי׃
cum pacem suo ore In .est locuta dolum,eorum lingua extensa Sagitta
חֵץ שׁוֹחֵט לְשׁוֹנָם מִרְמָה דִבֵּר בְּפִיו שָׁלוֹם אֶת־ 8
his super Nunquid .suā insidiam ponet suo intimo in & ,loquetur suo socio
רֵעֵהוּ יְדַבֵּר וּבְקִרְבּוֹ יָשִׂים אָרְבּוֹ׃ הַעַל־אֵלֶּה 9
,hæc sicut quæ gente in an ? Dominus dixit , eis in visitabo non
לֹא־אֶפְקָד־בָּם נְאֻם־יְהוָה אִם בְּגוֹי אֲשֶׁר־כָּזֶה
,lamentū & ,fletum tollam montes Super ? mea anima ulciscetur non
לֹא תִתְנַקֵּם נַפְשִׁי׃ עַל־הֶהָרִים אֶשָּׂא בְכִי וָנֶהִי 10
,trāseunte viro non à ,sunt incēsa quoniā:planctū deserti pascua amœna sup &
וְעַל־נְאוֹת מִדְבָּר קִינָה כִּי נִצְּתוּ מִבְּלִי־אִישׁ עֹבֵר
,sunt vagati jumentū ad usq; & ,cœli volatili à,pecoris vocem audierūt nō &
וְלֹא שָׁמְעוּ קוֹל מִקְנֶה מֵעוֹף הַשָּׁמַיִם וְעַד־בְּהֵמָה נָדְדוּ
,draconum habitaculum ,acervos in Jerusalaim dabo Et .abierunt
הָלָכוּ׃ וְנָתַתִּי אֶת־יְרוּשָׁלִַם לְגַלִּים מְעוֹן תַּנִּים 11
.habitatore absque desolationem dabo , Jehudah civitates &
וְאֶת־עָרֵי יְהוּדָה אֶתֵּן שְׁמָמָה מִבְּלִי יוֹשֵׁב׃

Versio VUL. LAT.

19 Ecce vox clamoris filiæ populi
mei de terra longinqua : Numquid
Dominus non est in Sion,
aut rex ejus non est in ea? Quarè
ergò me ad iracundiam concitaverunt
in sculptilibus suis, & in
20 vanitatibꝰ alienis? Transiit messis,
finita est æstas, & nos salvati
21 non sumꝰ. Super contritione filiæ
populi mei contritꝰ sum, &
contristatus, stupor obtinuit me.
22 Numquid resina non est in Galaad
? aut medicus non est ibi ?
quarè igitur non est obducta cicatrix
filiæ populi mei :

CAP. IX.

1 Quis dabit capiti meo aquam,
& oculis meis fontem lachrymarum
? & plorabo die ac nocte in-
2 terfectos filiæ populi mei. Quis
dabit me in solitudine diversorium
viatorum, & derelinquam
populum meum, & recedam ab
eis ? quia omnes adulteri sunt,
3 cœtus prævaricatorum. Et extenderunt
linguam suam quasi arcum
mendacii & non veritatis ?
confortati sunt in terra, quia de
malo ad malum egressi sunt, &
me non cognoverunt, dicit Do-
4 minus. Unusquisque se à proximo
suo custodiat, & in omni fratre
suo non habeat fiduciam :
quia omnis frater supplantans
supplantabit, & omnis amicus
5 fraudulenter incedet. Et vir
fratrem suum deridebit: & veritatem
non loquentur : docuerunt
enim linguam suam loqui
mendacium : ut iniquè agerent,
6 laboraverunt. Habitatio tua in
medio doli : in dolo renuerunt
7 scire me, dicit Dominus. Proptereà
hæc dicit Dominus exercituum;
Ecce ego conflabo, &
probabo eos : quid enim aliud
faciam à facie filiæ populi mei ?
8 Sagitta vulnerans lingua eorum,
dolum locuta est : in ore suo pacem
cum amico suo loquitur, &
9 occultè ponit ei insidias. Numquid
super his non visitabo, dicit
Dominus ? aut in gente hujusmodi
non ulciscetur anima
10 mea ? Super montes assumam
fletum ac lamentum, & super
speciosa deserti planctum : quoniam
incensa sunt, eò quòd non
sit vir pertransiens: & non audierunt
vocem possidentis : à volucre
cœli usque ad pecora trans-
11 migraverunt & recesserunt. Et
dabo Jerusalem in acervos arenæ,
& cubilia draconum : & civitates
Juda dabo in desolationem,
eò quòd non sit habitator.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

19 Ἰδοὺ φωνὴ κραυγῆς θυγατρὸς λαοῦ μου ἀπὸ
γῆς μακρόθεν. μὴ κύριος οὐκ ἔστιν
ἐν Σιών; ἢ βασιλεὺς οὐκ ἔστιν ἐκεῖ; διότι
παρώργισάν με ἐν τοῖς γλυπτοῖς αὐτῶν, ϗ
20 ἐν ματαίοις ἀλλοτρίοις. Διῆλθε θέρος,
παρῆλθεν ἀμητὸς, ϗ ἡμεῖς οὐ διεσώθημεν.
21 Ἐπὶ συντρίμματι θυγατρὸς λαοῦ μου
(φ) ἐσκοτώθην· ἐν ἀπορίᾳ κατίσχυσάν με
22 ὠδῖνες ὡς (χ) τικτούσης. Καὶ μὴ ῥητίνη
οὐκ ἔστιν ἐν Γαλαὰδ, ἢ ἰατρὸς οὐκ ἔστιν ἐκεῖ;
διατί οὐκ ἀνέβη ἴασις θυγατρὸς λαοῦ μου;

Ecce vox clamoris filiæ populi 19
mei de terra longinqua. Nunquid
Dominus non est in Sion?
aut rex non est ibi? Quoniam
ad iracundiam concitaverunt
me in sculptilibus suis, & in vanitatibus
alienis. Transiit æstas, 20
præteriit messis: & nos salvati
non sumus. Super contritione 21
filiæ populi mei obtenebratus sum
in afflictione: tenuerunt me dolores
quasi parientis. Et nunquid 22
resina non est in Galaad, aut medicus
non est ibi? Quarè non
ascendit sanatio filiæ populi mei?

MS. A. (φ) ἐσκοτώθην· ἀπορίᾳ (χ) τικτούσης. Μὴ * ῥιτίνη

ΚΕΦ. Θ'.

1 ΤΙ'ς δώσει κεφαλῇ μου ὕδωρ, ϗ ὀφθαλμοῖς
μου πηγὴν δακρύων; ϗ κλαύσομαι
τὸν λαόν μου τοῦτον ἡμέρας ϗ νυκτὸς, (α) τοὺς
τετραυματισμένους θυγατρὸς λαοῦ μου.
2 Τίς δῴη μοι ἐν τῇ ἐρήμῳ σταθμὸν ἔσχατον,
ϗ καταλείψω τὸν λαόν μου, ϗ ἀπελεύσομαι
ἀπ' αὐτῶν, ὅτι πάντες μοιχῶνται,
3 σύνοδος ἀθετούντων, Καὶ ἐνέτειναν τὴν
γλῶσσαν αὐτῶν ὡς τόξον. ψεῦδος, ϗ
οὐ πίστις ἐνίσχυσεν ἐπὶ τῆς γῆς, ὅτι ἐκ κακῶν
εἰς κακὰ ἐξήλθοσαν, ϗ ἐμὲ οὐκ (β) ἔγνωσαν,
4 φησὶ κύριος. Ἕκαστος ἀπὸ τοῦ
πλησίον αὐτοῦ (γ) φυλάξασθε, ϗ ἐπ' ἀδελφοῖς
(δ) αὐτῶν μὴ πεποίθατε, ὅτι πᾶς
ἀδελφὸς πτέρνῃ πτερνιεῖ, ϗ πᾶς φίλος δολίως
5 πορεύσεται. Ἕκαστος κατὰ τοῦ φίλου
(ε) αὐτοῦ καταπαίξεται, ἀλήθειαν οὐ μὴ
λαλήσωσι· μεμάθηκεν ἡ γλῶσσα αὐτῶν
λαλεῖν ψευδῆ, ἠδίκησαν, ϗ οὐ διέλιπον
6 τοῦ ἐπιστρέψαι. Τόκος ἐπὶ τόκῳ, ϗ δόλος
ἐπὶ δόλῳ· οὐκ ἤθελον εἰδέναι (ζ) με, φησὶ
7 κύριος. Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος,
Ἰδοὺ ἐγὼ πυρώσω αὐτοὺς, καὶ δοκιμῶ αὐτούς.
ὅτι ποιήσω ἀπὸ προσώπου πονηρίας
8 θυγατρὸς λαοῦ μου. Βολὶς τιτρώσκουσα
ἡ (η) γλῶσσα αὐτῶν, δόλια τὰ ῥήματα τοῦ
στόματος αὐτῶν· τῷ πλησίον αὐτοῦ λαλεῖ
εἰρηνικὰ, ϗ ἐν ἑαυτῷ ἔχει τὴν ἔχθραν.
9 Μὴ ἐπὶ τούτοις οὐκ ἐπισκέψομαι; λέγει κύριος·
ἢ ἐν λαῷ τοιούτῳ οὐκ ἐκδικήσει ἡ
10 ψυχή μου; Ἐπὶ τὰ ὄρη λάβετε κοπετὸν,
καὶ ἐπὶ τὰς τρίβους τῆς ἐρήμου θρῆνον, ὅτι
ἐξέλιπον παρὰ τὸ μὴ εἶναι ἀνθρώποις.
οὐκ ἤκουσαν φωνὴν ὑπάρξεως ἀπὸ πετεινῶν
τοῦ οὐρανοῦ, ϗ ἕως (θ) κτηνῶν, ἐξέστησαν,
11 ᾤχοντο. Καὶ δώσω τὴν Ἱερουσαλὴμ
εἰς μετοικίαν, καὶ εἰς (ι) κατοικητήριον
δρακόντων, καὶ τὰς πόλεις Ἰούδα εἰς
ἀφανισμὸν θήσομαι, παρὰ τὸ μὴ κατοικεῖσθαι.

CAP. IX.

Quis dabit capiti meo aquam, 1
& oculis meis fontem lachrymarum?
& plorabo populum
meum hunc die ac nocte, interfectos
filiæ populi mei. Quis det 2
mibi in solitudine mansionem novissimam;
& relinquam populum
meum, & recedam ab eis?
Quia omnes mœchantur: cœtus
prævaricatorum: Et intenderunt 3
linguam suam quasi arcum:
mendacium, & non fides invaluit
super terram: quia de malis
in mala egressi sunt, & me
non cognoverunt, dicit Dominus.
unusquisq; à proximo suo 4
vos custodite, & super fratribus
suis non habeatis fiduciam: quia
omnis frater supplantatione supplantabit:
& omnis amicus dolosè
incedet: Unusquisq; con- 5
tra fratrem suum illudet: veritatem
non loquentur. Didicit lingua
eorum loqui mendacia: iniquè
egerunt: & non intermiserunt,
ut converterentur. Usura 6
super usuram, & dolus super dolum:
noluerunt scire me, dicit
Dominus. Proptereà hæc dicit 7
Dominus; Ecce ego igne examinabo
eos, & probabo eos. (a)
Quia faciam à facie malitiæ filiæ
populi mei. Sagitta vulnerans 8
lingua eorum: dolosa verba oris
eorum: proximo suo loquitur pacifica,
& in seipso habet inimicitiam.
Nunquid super his non 9
visitabo? dicit Dominus; aut in
populo hujuscemodi nō ulciscetur
anima mea? Super montes assu- 10
mite planctum, & super semitas
deserti lamentationem: quoniam
defecerunt, eò quòd non sint homines.
Non audierunt vocem (b)
substantiæ: à volucribus cœli, &
usq; ad pecora, obstupuerunt, recesserunt.
Et dabo Hierusalem 11
in transmigrationem, & in habitaculum
draconum: & civitates Juda ponam in desolationem; eò quòd non habitentur.

MS. A. (α) ϗ τετραυματισμένους (β) ἔγνωσαν. Ἕκαστος (γ) ἐξήλθοσαν, φυλάξασθε, (δ) ἑαυτῶν (ε) ἑαυτοῦ (ζ) με. Διατοῦτο τάδε λέγει (η) καρδία αὐτῶν, (θ) τῶν κτηνῶν, (ι) κατοικητήρια

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

19 הא קל צוחת כנשתא דעמי מארעא רחיקא נביא אוכח יתהון השכנתא דיי לית בציון
20 אם מלכה לית בה מא דין מרגזין קדמי בצלמניהון בפולחן טעותא : אמרת כנשתא
21 דישראל עדא זמנא שלים קצא ואנחנא לא מתפרקין : אמרת ירושלם על תבר כנשתא
22 דעמי אודעזעית אתחפיאו אפי אכרום אוכמין כקדרא אשתממו אחדתני : אמר ירמיה
נביא דלמא לא אית בי עובדין טבין למבעי על בית ישראל הלא מחמיד הויתי
לאולפניה דאליה נביא דמגלעד דפתגמוהי אנון אסותא ארי על דלא תבו בכן לא
סליקת אסו למחת כנשתא דעמי : ט
1 מן יתן רישי כנחל דמין ועיני כמבועא דמעין ואבכי ימם ולילי על קטילי כנשתא דעמי :
2 מן יתנני במדברא בית מבתת עדי אורחן ואשבוק ית כנשתא דעמי ואהך מלותהון
3 ארי כולהון זנאין סיעת שקרין : ואליפו ית לישנהון פתגמי שקר דמן אנון כקשתא
נכילא ולא להימנותא תקיפו בארעא ארי מבישתא לבישתא נפקו ומדע דחלתי לא
4 אליפו אמר יי : גבר מחבריה אסתמרו ועל כל אחא לא תתרחצון ארי כל אחא מכמן
5 כמין וכל רחים בנכילו מהליך : וגבר בחבריה משקרין וקושטא לא ממללין אליפו
6 לישנהון פתגמי שקר אטפשו טעו : יתבין בבית כנשתהון ומשתען על עויתהון בנכילו
7 מסרבין למדע דחלתי אמר יי : בכן כדנן אמר יי צבאות הא אנא מיתי עליהון עקא
8 וצריף להון ובחר להון ארי איכדין אעביד מן קדם חובי כנשתא דעמי : כגיר די מחריף
לישנהון נכלין מחשב בפומהון שלמא גבר עם חבריה ממללין ובמעוהי משוי כמניה :
9 העל אלין לא אסער לאיתאה עליהון בישתא אמר יי אם מן עמא דכדין עובדוהי לא
10 אתפרע מנהון כרעותי : על טוריא אנא מרים קלי ובכי ומצוח ועל דירות מדברא אליא
ארי צדיאו מבלי אנש דעדי ולא אשתמע קל בעירא בארעהון מעופא דשמיא ועד
11 בעירא אטלטלו גלו : ואתן ית ירושלם ליגרין מדור ירודין וית קרויא דבית יהודה אתן
לצדו מבלי יתיב :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Ecce vox clamoris cœtꝰ populi mei de terra longinqua. Tu Propheta, in- 19
crepa eos, [*dicens:*] Nunquid majestas Dñi non est in Sion? aut rex ejus
non est in ea? quare irritant me simulacris suis, et cultu idolorū? Dixit cœ- 20
tus Israel: Transivit tempꝰ, impletꝰ est finis, et nos non sumꝰ salvati. Dixit 21
Jerusalē: Sup contritionē cœtꝰ populi mei contremui, opertæ sunt facies
meæ nigredine, atræ quasi olla; stupor obtinuit me. Dixit Jeremias prophe- 22
ta: Fortè non sunt mihi opera bona ad deprecandū pro domo Israel: desi-
derabā utiq; doctrinā Eliæ prophetæ, qui fuit de Galaad; cujꝰ verba erant
medicina: quia pro eo ꝙ non sunt conversi, ideò non crevit medicina
plagæ cœtus populi mei.

CAP. IX.

Quis dabit caput meū quasi torrentē aquarū, & oculos meos quasi fon- 1
tem *scaturientem*, & plorabo die ac nocte sup interfectos cœtꝰ populi mei.
Quis dabit me in solitudine domū mansionis viatorū, & relinquā cœtum 2
populi mei, & ibo ab eis? quia omnes sunt fornicatores & turba falsario-
rum. Et docuerunt linguas suas verba mendacii; similes sunt arcui doloso: 3
& non in fide confortati sunt in terra, quia de malo ad malū egressi sunt,
& scientiā timoris mei non didicerunt, dicit Dñs. Unusquisque custodiat se 4
à socio suo, & in omni fratre nolite confidere: quia omnis frater insidian-
do insidiatur; & omnis amicꝰ in dolo ambulat. Et unusquisque fratri suo 5
mentiuntur, & veritatē non loquuntur: docuerunt linguā suā verba men-
dacii, insipientes facti sunt & erraverunt. Sedent in domo congregationis 6
suæ, & narrant sup iniquitates suas in dolis: renuunt scire timorē mei, di-
cit Dñs. Proptereà hæc dicit Dñs exercituū: Ecce ego inducā super eos 7
angustiā, & conflabo eos, & probabo eos. Quomodo enim faciā à facie
peccatorū cœtꝰ populi mei? Sicut sagitta acuta lingua eorū dolos agitat: in 8
ore suo pacē unusquisque loquitur cum proximo suo, & in visceribus suis
ponit insidias suas. Nunquid propter hæc non visitabo, ut adducā sup eos 9
mala? dicit Dominus: aut de populo cujꝰ opera talia sunt, non sumam vin-
dictā juxta voluntatē meā? Sup montes ego attollo vocē *meam*, & fletum 10
& clamorē, & sup habitacula deserti lamentationē: quia deserta facta sunt
absque homine transeunte, nec auditur vox pecoris in terra eorum: à vo-
lucri cœli usque ad pecora mota sunt & transmigraverunt. Et dabo Jeru- 11
salem in acervos, habitaculum draconum; & civitates domus Juda dabo
in solitudinem, ita ut non sit habitator.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܗܐ ܩܠܐ ܕܓܥܬܗ ܕܒܪܬ ܥܡܝ ܡܢ ܐܪܥܐ ܪܚܝܩܬܐ. ܕܐܡܪܝܢ. ܡܪܝܐ ܠܝܬ ܒܨܗܝܘܢ. ܐܘ 19
ܡܠܟܗ ܠܝܬ ܒܗ. ܡܛܠ ܕܐܪܓܙܘܢܝ ܒܓܠܝܦܝܗܘܢ. ܘܒܣܪܝܩܘܬܐ ܢܘܟܪܝܬܐ. * ܥܒܪ 20
ܚܨܕܐ ܘܫܠܡ ܩܛܦܐ. ܘܚܢܢ ܠܐ ܐܬܦܪܩܢ. * ܥܠ ܬܒܪܗ ܕܒܪܬ ܥܡܝ ܐܬܬܒܪܬ ܘܐܟܡܬ. ܘܬܡܗܐ ܐܚܕܢܝ. 21
* ܫܥܘܬܐ ܠܝܬ ܒܓܠܥܕ. ܐܘ ܐܣܝܐ ܠܝܬ ܬܡܢ. ܡܛܠ ܡܢܐ ܠܐ ܣܠܩܬ ܐܣܝܘܬܗ ܕܒܪܬ ܥܡܝ. 22

* ܩܦܠܐܘܢ * ܛ *

* ܡܢ ܢܬܠ ܢܗܦܘܟ ܪܫܝ ܠܡܝܐ. ܘܥܝܢܝ ܠܡܒܘܥܐ ܕܕܡܥܐ. ܘܐܒܟܐ ܐܝܡܡܐ ܘܠܠܝܐ. 1
ܥܠ ܩܛܝܠܐ ܕܒܪܬ ܥܡܝ. * ܡܢ ܢܬܠ ܢܬܬܢܝ ܒܡܕܒܪܐ ܒܝܬ ܡܫܪܝܐ ܕܐܘܪܚܐ. ܘܐܫܒܘܩ 2
ܠܥܡܝ. ܘܐܙܠ ܠܝ ܡܢ ܠܘܬܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ ܓܝܪܐ ܐܢܘܢ. ܘܟܢܘܫܬܐ ܕܕܓܠܐ.
* ܘܡܬܚܘ ܠܫܢܗܘܢ ܐܝܟ ܕܒܩܫܬܗܘܢ. ܕܓܠܘܬܐ ܘܠܐ ܒܗܝܡܢܘܬܐ. ܥܫܢܘ ܒܐܪܥܐ. ܡܛܠ 3
ܕܡܢ ܒܝܫܬܐ ܠܒܝܫܬܐ ܢܦܩܘ. ܘܠܝ. ܠܐ ܝܕܥܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܓܒܪ ܡܢ ܚܒܪܗ ܐܙܕܗܪܘ. 4
ܘܥܠ ܟܠ ܐܚ. ܠܐ ܬܬܟܠܘܢ. ܡܛܠ ܕܟܠ ܐܚ ܢܟܠܐ ܢܟܠ. ܘܟܠ ܪܚܡܐ ܒܢܟܠܐ ܡܗܠܟ.
* ܓܒܪ ܒܚܒܪܗ ܡܒܙܚ. ܘܫܪܪܐ ܠܐ ܡܡܠܠܝܢ. ܐܠܦܘ ܠܫܢܗܘܢ ܠܡܡܠܠܘ 5
ܕܓܠܘܬܐ. ܘܐܬܡܪܡܪܘ ܘܠܐܝܘ. * ܡܘܬܒܟ ܒܓܘ ܢܟܠܐ. ܒܢܟܠܝܗܘܢ ܠܐ ܨܒܘ ܠܡܕܥܢܝ ܐܡܪ 6
ܡܪܝܐ. * ܡܛܠܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܗܐ ܨܪܦ ܐܢܐ ܠܗܘܢ. ܘܒܚܪ ܐܢܐ ܠܗܘܢ. 7
ܡܛܠ ܕܐܝܟܢܐ ܐܥܒܕ ܡܢ ܩܕܡ ܒܝܫܘܬܗ ܕܒܪܬ ܥܡܝ. * ܐܝܟ ܓܐܪܐ ܚܪܝܦܐ ܠܫܢܗܘܢ. ܘܢܟܠܐ ܡܡܠܠ. 8
ܒܦܘܡܗ ܫܠܡܐ ܥܡ ܚܒܪܗ ܡܡܠܠ. ܘܒܓܘܗ ܣܝܡ ܟܡܐܢܐ. * ܠܐ 9
ܥܠܝܗܘܢ ܠܐ ܐܦܩܘܕ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܒܥܡܐ ܕܗܟܢܐ ܠܐ ܬܬܦܪܥ ܢܦܫܝ. * ܥܠ ܛܘܪܐ ܫܩܘܠܘ 10
ܒܟܬܐ ܘܐܘܠܝܬܐ. ܘܥܠ ܕܝܪܐ ܕܡܕܒܪܐ ܐܘܠܝܬܐ. ܕܚܪܒ ܡܢ ܕܠܐ ܐܢܫ ܕܢܥܒܪ. ܘܠܐ ܫܡܥܘ ܩܠܐ
ܕܩܢܝܢܐ. ܡܢ ܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܒܥܝܪܐ ܐܬܦܠܓܘ ܘܐܙܠܘ. * ܘܐܬܠ ܠܐܘܪܫܠܡ 11
ܚܪܒܐ. ܡܥܡܪܐ ܠܝܪܘܪܐ. ܘܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ ܐܬܠ ܠܚܘܪܒܐ. ܡܢ ܕܠܐ ܥܡܘܪܐ.

Ecce vocem clamoris filiæ populi mei de terra longinqua, dicentium; An Dominus non eſt in Sione? an rex ejus non eſt in ea? quia *nimirum* irritaverunt me ſculptilibus ſuis, & numinibus peregrinis. 19 Præteriit meſſis, & finita eſt vindemia; & nos haud liberati ſumus. 20 Propter contritionem filiæ populi mei, mœrore confectus ſum, & ſtupor occupavit me. 21 Num cera nulla eſt in Gelaad? num medicus non adeſt ibi? quare non *proſperè* ſucceſſit curatio filiæ populi mei? 22

CAP. IX.

O Utinam verteretur caput meum in aquam, & oculi mei in fontes lachrymarum: deflerem equidem interdiu noctúque occiſos filiæ populi mei. 1 O utinam ponerer in deſerto in diverſorio viatorum: relinquerem ſanè populum meum, & abſcederem ab eis; quia ſunt omnes adulteri & cœtus mendacium: 2 Linguam ſuam quaſi arcu ſuo ſunt jaculati: falſitate & perfidiâ magnificati ſunt in terra: quoniam de ſcelere in ſcelus progreſſi ſunt, & me non cognoverunt, dicit Dominus. 3 Quiſque à ſocio ſuo cavete, & ulli fratri ne confidite: omnis enim frater doloſè agit, & omnis amicus fraudulenter incedit: 4 Quiſque ſocium ſuum decipit, ac veritatem non loquuntur: docuerunt linguam ſuam loqui falſitatem: agitantur & laborant. 5 Tua habitatio eſt in medio dolo, præ dolo ſuo renuerunt cognoſcere me, dicit Dominus. 6 Propterea ſic ait Dominus potens, Ecce conflaturus ſum eos, & probaturus illos: quomodo enim agerem ſpectatâ *nequitiâ* filiæ populi mei? 7 Sagittæ acutæ ſimilis eſt lingua eorum, fraudémque loquitur: ore tenus pacem quiſque cum ſocio ſuo loquitur, at in præcordiis ejus latent inſidiæ. 8 Has ob res non viſitarem, dicit Dominus? & de populo qui talis eſt, non ulciſceretur anima mea? 9 Ob montes attollite fletum & ejulatum, & ob caulas deſerti lamentationem; quia deſolabuntur ob penuriam hominis qui tranſeat, nec audient vocem pecoris: tam volucres cœli quàm jumenta diſſipabuntur & abibunt. 10 Reddámque Jeruſalem dirutam, habitationem canum ſylveſtrium; & civitates Judæ redigam in ſolitudinem ob penuriam incolarum. 11

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

19 * ها صوت صراخ ابنة شعبي من ارض بعيدة * هل الرب ليس هو في صهيون * او ملك ليس
20 هو هناك * من اجل انهم اغضبوني بمنحوتاتهم وبالاباطيل الغريبة * عبر الصيف ذهب الحصاد *
21 ولكن لم نخلص * بانكسار ابنة شعبي اظلمت بالحزن * قويت في الاوجاع مثل التي تلد *
22 * هل ليس موجود في جلعاد قلفونية * او طبيب ليس هو هناك * لماذا لم يصعد شفا ابنة
شعبي *

* الفصل التاسع *

1 * من يعطي لراسي ماء وعيني ينبوع دموع * فاندب شعبي نهارا وليلا ومنهشمين ابنة
2 شعبي * من يعطيني في البرية حرزا اخيرا * واترك شعبي واذهب عنهم * لانهم جميعهم * يزنون *
3 جمع عصاة * واوتروا السنتهم بالكذب مثل القوس * وليس ايمان قوي على الارض * لانهم
4 خرجوا من شرور الى شرور * ولم يعرفوني يقول الرب * كل واحد من قريبه احتفظوا * وباخوتكم
5 لا تثقوا * لان كل اخ يعرقب العقب * وكل صديق يسير بغش * وكل واحد على صديقه يهزي *
6 ولا يتكلمون بالحق * تعلم لسانهم ان يتكلم بالكذب * ظلموا ولم يكفوا ليرجعوا * ربا على
7 ربا * وغش على غش * ولم يريدوا ان يعرفوني * لاجل هذا هكذا يقول الرب * ها انا احميهم
8 وامتحنهم * لاني ماذا اصنع من وجه شر ابنة شعبي * قلبهم نصلة ناخس * كلمات فمهم
9 غاشة * يتكلم مع قريبه بالسلامة * وله في ذاته العداوة * هل بهذه لا اتعهدهم يقول الرب *
10 او من شعب هذه حاله لا تنتقم نفسي * على الجبال خذوا عويلا * وعلى آكام البرية نوحا *
لانهم فنيوا من ان تكون البشر * لم يسمعوا صوت وجود من طيور السماء * وحتى البهائم جاروا
11 وعبروا * واعطي اورشليم للخلوة ومساكن للتنانين * واجعل مدن يهوذا للتلاف من
ان لا تسكن *

Ecce clamor vociferationis filiæ populi mei de terra longinqua, Num Dominus non eſt in Sione? aut nullus eſt ibi rex? quoniam ad iracundiam concitaverunt me ſculptilibus ſuis & vanitatibus alienis. 19 *Præteriit æſtas, elapſa eſt meſſis; & nos minimè ſervamur.* 20 *Ob fractionem filiæ populi mei ſtupore tenebreſco, invaluerunt in me dolores ut parturientis.* 21 *An non reperitur in Galaad reſina? aut medicus non eſt illic? quare non proficit valetudo filiæ populi mei?* 22

CAP. IX.

Quis det capiti meo aquam, & oculis meis fontem lachrymarum, ut populum meum & conquaſſatos filiæ populi mei diu noctuque lugeam? 1 *Quis concedat mihi in deſerto munitionem ultimam, ut deſtituto populo meo recedam ab eis? Omnes enim fornicantur, ſunt cœtus rebellium:* 2 *Linguas ſuas mendacio velut arcum tetenderunt, & invaluit perfidia ſuper terram: quia de flagitiis in flagitia proceſſerunt, non cognoſcentes me, dicit Dominus.* 3 *Quiſque à proximo ſuo cavetote, & fratribus veſtris ne confiditote; nam omnis frater ſupplantat calcaneum, & omnis amicus doloſè ambulat:* 4 *Quiſque amico ſuo illudit, neque loquuntur veritatem: didicit eorum lingua loqui mendacium: perfidè agunt, neque deſiſtunt ut ſeſe retrahant:* 5 *uſuram uſuræ, & dolum dolo* accumulant, *nec volunt cognoſcere me.* 6 *Idcirco ſic dicit Dominus, Ecce ego excoquam eos, & probabo illos: ecquid enim agerem à facie malignitatis filiæ populi mei?* 7 *Cor eorum cuſpis pungens, verba oris eorum doloſa: loquitur cum proximo ſuo pacem, at ſervat ei in animo ſuo inimicitiam.* 8 *An propter iſta non viſitarem eos, dicit Dominus? an ab hujuſmodi cõditionis gente non ſumeret ultionem anima mea?* 9 *De montibus ſumite gemitum, & de collibus deſerti lamentum; quia deſinent eſſe ibi homines, nec audient vocem ullius volucris cœli, quin & jumenta abibunt & diſpergentur.* 10 *Et redigam Jeroſolymam in deſolationem & luſtra draconum, urbeſque Judæ exponam ruinæ, eò quòd non habitentur.* 11

יִרְמְיָה׃ ט

Domini os eſt locutū quem & ? hoc intelliget & ,ſapiens vir Quis
12 מִי־הָאִישׁ הֶחָכָם וְיָבֵן אֶת־זֹאת וַאֲשֶׁר דִּבֶּר פִּי־יְהֹוָה
deſertū veluti,eſt exuſta ,terra periit quid *Super*?illud nūtiabit &,*eū ad*
אֵלָיו וְיַגִּדָהּ עַל־מָה אָבְדָה הָאָרֶץ נִצְּתָה כַמִּדְבָּר
,meā legem *eos dereliquere Super* : Dominus dixit Et *? tranſeunte abſque*
13 מִבְּלִי עֹבֵר׃ וַיֹּאמֶר יְהֹוָה עַל־עָזְבָם אֶת־תּוֹרָתִי
ambulaverūt nec ,*mea voce in* audierūt non & ;*eorum facies ad* dedi quam
אֲשֶׁר נָתַתִּי לִפְנֵיהֶם וְלֹא־שָׁמְעוּ בְקוֹלִי וְלֹא־הָלְכוּ
quos ,Behalim poſt & ,ſui cordis *obſtinationē* poſt abierunt Et .ea in
14 בָהּ׃ וַיֵּלְכוּ אַחֲרֵי שְׁרִרוּת לִבָּם וְאַחֲרֵי הַבְּעָלִים אֲשֶׁר
exercituū Dominus dixit ſic Idcirco .eorum patres *eos* docuerunt
15 לִמְּדוּם אֲבוֹתָם׃ לָכֵן כֹּה־אָמַר יְהֹוָה צְבָאוֹת
,abſinthio hunc populum *eos cibans* ego Ecce : Iſrael Deus
אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל הִנְנִי מַאֲכִילָם אֶת־הָעָם הַזֶּה לַעֲנָה
quas , gentes in eos diſpergam Et .fellis aquam eis potum dabo &
16 וְהִשְׁקִיתִים מֵי־רֹאשׁ׃ וַהֲפִיצוֹתִים בַּגּוֹיִם אֲשֶׁר
gladium eos poſt mittam & : eorū patres & ipſi noverunt non
לֹא יָדְעוּ הֵמָּה וַאֲבוֹתָם וְשִׁלַּחְתִּי אַחֲרֵיהֶם אֶת־הַחֶרֶב
Conſiderate : exercituū Dominus dixit Sic .eos *me conſumere ad uſque*
17 עַד כַּלּוֹתִי אוֹתָם׃ כֹּה אָמַר יְהֹוָה צְבָאוֹת הִתְבּוֹנְנוּ
, mittite ſapientes ad & : veniant & ,lamentatrices *ad* vocate &
וְקִרְאוּ לַמְקוֹנְנוֹת וּתְבוֹאֶינָה וְאֶל־הַחֲכָמוֹת שִׁלְחוּ
demittant &,querimoniam nos ſuper *tollant* & feſtinent Et .veniant &
18 וְתָבוֹאנָה׃ וּתְמַהֵרְנָה וְתִשֶּׂנָה עָלֵינוּ נֶהִי וְתֵרַדְנָה
querimoniæ vox Quia.aquis defluant noſtræ palpebræ &,*lachrymā* noſtri oculi
19 עֵינֵינוּ דִּמְעָה וְעַפְעַפֵּינוּ יִזְּלוּ־מָיִם׃ כִּי קוֹל נְהִי
!vehemēter ſumꝰ affecti pudore!ſumꝰ vaſtati Quomodo.Sijon de eſt audita
נִשְׁמַע מִצִּיּוֹן אֵיךְ שֻׁדָּדְנוּ בֹּשְׁנוּ מְאֹד
audite Sed.noſtra habitacula projecerūt quia:terram dereliquimꝰ quia
20 כִּי־עָזַבְנוּ אָרֶץ כִּי הִשְׁלִיכוּ מִשְׁכְּנוֹתֵינוּ׃ כִּי־שְׁמַעְנָה
: ejus oris verbum veſtra auris aſſumat & ,Domini verbum mulieres
נָשִׁים דְּבַר־יְהֹוָה וְתִקַּח אָזְנְכֶם דְּבַר־פִּיו
.planctum ſuam *ſociam* unaquæque & ,*querimoniam* veſtras filias docete &
וְלַמֵּדְנָה בְנוֹתֵיכֶם נֶהִי וְאִשָּׁה רְעוּתָהּ קִינָה׃
;noſtra palatia in intravit , noſtras feneſtras *in* mors aſcendit Quia
21 כִּי־עָלָה מָוֶת בְּחַלּוֹנֵינוּ בָּא בְּאַרְמְנוֹתֵינוּ
,Loquere .plateis de juvenes , platea de parvulum *ſuccidendum ad*
22 לְהַכְרִית עוֹלָל מִחוּץ בַּחוּרִים מֵרְחֹבוֹת׃ דַּבֵּר
ſtercus tanquam hominis *cadaver* cadet & ,DOMINUS dixit Sic
כֹּה נְאֻם־יְהֹוָה וְנָפְלָה נִבְלַת הָאָדָם כְּדֹמֶן
non & ,metentem poſt à manipulus veluti & : agri *faciebus ſuper*
עַל־פְּנֵי הַשָּׂדֶה וּכְעָמִיר מֵאַחֲרֵי הַקֹּצֵר וְאֵין
,ſua ſapientia in ſapiens ſe laudet Ne : Dominus dixit Sic .*colligens*
23 מְאַסֵּף׃ כֹּה אָמַר יְהֹוָה אַל־יִתְהַלֵּל חָכָם בְּחָכְמָתוֹ
dives ſe laudet neque : ſua potentia in potens ſe laudet neque
וְאַל־יִתְהַלֵּל הַגִּבּוֹר בִּגְבוּרָתוֹ אַל־יִתְהַלֵּל עָשִׁיר
,*intelligendo ſe laudans* ſe laudet hoc in *Quinimò* .*ſua opulentia* in
24 בְּעָשְׁרוֹ׃ כִּי אִם־בְּזֹאת יִתְהַלֵּל הַמִּתְהַלֵּל הַשְׂכֵּל
,judicium ,miſericordiam *faciens* Dominus ego quia : me *ſciendo &*
וְיָדֹעַ אוֹתִי כִּי אֲנִי יְהֹוָה עֹשֶׂה חֶסֶד מִשְׁפָּט
dies Ecce .Dominus dixit , *volui illis in quia* : terra in juſtitiā &
25 וּצְדָקָה בָּאָרֶץ כִּי־בְאֵלֶּה חָפַצְתִּי נְאֻם־יְהֹוָה׃ הִנֵּה יָמִים
.*præputio in* circūciſum omnē *ſuper* viſitabo & ,Dominus dixit , *venientes*
בָּאִים נְאֻם־יְהֹוָה וּפָקַדְתִּי עַל־כָּל־מוּל בְּעָרְלָה׃
,Hamon filios *ſuper* & , Edom *ſuper* & ,Jehudah *ſuper* & ,Ægyptum *Super*
26 עַל־מִצְרַיִם וְעַל־יְהוּדָה וְעַל־אֱדוֹם וְעַל־בְּנֵי עַמּוֹן
; deſerto in *habitantes* , *anguli extremificatos* omnes *ſuper* & ,Moab *ſuper* &
וְעַל־מוֹאָב וְעַל כָּל־קְצוּצֵי פֵאָה הַיֹּשְׁבִים בַּמִּדְבָּר
.*corde præputiati* Iſrael domus omnis & , *præputiatæ* gentes omnes quia
כִּי כָל־הַגּוֹיִם עֲרֵלִים וְכָל־בֵּית יִשְׂרָאֵל עַרְלֵי־לֵב׃

Verſio VULG. LAT.

12 Quis eſt vir ſapiens, qui intelligat
hoc, & ad quem verbum oris
Domini fiat ut annuntiet iſtud,
quarè perierit terra, & exuſta ſit
quaſi deſertum, eò quòd non ſit
13 qui pertranſeat? Et dixit Dominus;
Quia dereliquerunt legem
meam, quam dedi eis, & non audierunt
vocem meam, & non ambulaverunt
14 in ea: Et abierunt
poſt pravitatē cordis ſui, & poſt
Baalim: quod didicerunt à patribus
15 ſuis. Idcircò hæc dicit
Dominꝰ exercituū Deus Iſrael;
Ecce ego cibabo populum iſtum
abſinthio, & potū dabo eis aquā
16 fellis. Et diſpergam eos in Gentibꝰ,
quas non noverunt ipſi &
patres eorum: & mittam poſt eos
17 gladiū, donec conſumantur. Hæc
dicit Dominus exercituum Deus
Iſrael; Contemplamini, & vocate
lamentatrices, & veniant:
& ad eas, quæ ſapientes ſunt,
18 mittite, & properent: Feſtinent,
& aſſumant ſuper nos lamentū:
deducant oculi noſtri lachrymas,
& palpebræ noſtræ defluant
19 aquis. Quia vox lamentationis
audita eſt de Sion; Quomodò
vaſtati ſumus & confuſi vehementer?
quia dereliquimus terram,
quoniam dejecta ſunt tabernacula
20 noſtra. Audite ergò
mulieres verbum Domini: &
aſſumant aures veſtræ ſermonem
oris ejus: & docete filias veſtras
lamentum, & unaquæque proximam
21 ſuā planctum. Quia aſcendit
mors per feneſtras noſtras,
ingreſſa eſt domos noſtras, diſperdere
parvulos deforìs, juvenes
22 de plateis. Loquere; Hæc
dicit Dominus; Et cadet morticînū
hominis quaſi ſtercus ſuper
faciem regionis, & quaſi fœnum
poſt tergum metentis, & non
23 eſt qui colligat. Hæc dicit Dominus;
Non glorietur ſapiens in
ſapientiâ ſuâ, & non glorietur
fortis in fortitudine ſuâ, et non
glorietur dives in divitiis ſuis:
24 Sed in hoc glorietur, qui gloriatur,
ſcire et nôſſe me, quia
ego ſum Dominus, qui facio
miſericordiam, et judicium, et
juſtitiam in terra: hæc enim
25 placent mihi, ait Dominus. Ecce
dies veniunt, dicit Dominus:
et viſitabo ſuper omnem qui
circumciſum habet præputium,
26 Super Ægyptum, et ſuper Juda,
et ſuper Edom, et ſuper filios Ammon,
et ſup Moab, et ſuper omnes
qui attonſi ſunt in comam, habitantes
in deſerto: quia omnes
gentes habent præputiū, omnis
autem domus Iſrael incircumciſi
ſunt corde.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

12 (κ) Τίς ὁ ἄνθρωπος ὁ συνετὸς, καὶ συνέτω
τοῦτο; καὶ ᾧ λόγος στόματος κυρίου πρὸς
αὐτὸν, ἀναγγειλάτω (λ) ὑμῖν, ἕνεκεν τίνος
ἀπώλετο ἡ γῆ, ἀνήφθη, ὡς ἔρημος,
13 παρὰ τὸ μὴ (μ) διοδεύεσθαι αὐτήν; Καὶ
εἶπε κύριος πρός με, Διὰ τὸ ἐγκαταλιπεῖν
αὐτοὺς τὸν νόμον μου, ὃν ἔδωκα πρὸ
προσώπου αὐτῶν, καὶ οὐκ ἤκουσαν τῆς φωνῆς
14 μου, Ἀλλ' ἐπορεύθησαν ὀπίσω τῶν (ν)
ἀρεστῶν τῆς καρδίας αὐτῶν τῆς κακῆς, καὶ
ὀπίσω τῶν εἰδώλων ἃ ἐδίδαξαν αὐτοὺς οἱ
15 πατέρες αὐτῶν· Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος
ὁ θεὸς Ἰσραήλ, Ἰδοὺ ἐγὼ (ξ) ψωμιῶ
αὐτοὺς ἀνάγκας, καὶ ποτιῶ αὐτοὺς ὕδωρ χολῆς,
16 Καὶ διασκορπιῶ αὐτοὺς ἐν τοῖς ἔθνεσιν,
εἰς οὓς οὐκ ἐγίνωσκον αὐτοὶ καὶ οἱ πατέρες
αὐτῶν, καὶ ἐπαποστελῶ ἐπ' αὐτοὺς τὴν
μάχαιραν, ἕως τοῦ ἐξαναλῶσαι αὐτοὺς ἐν
17 αὐτῇ. Τάδε λέγει κύριος, Καλέσατε τὰς
θρηνούσας, καὶ (ο) ἐλθέτωσαν, καὶ πρὸς τὰς
18 σοφὰς ἀποστείλατε, καὶ φθεγξάσθωσαν, Καὶ
λαβέτωσαν ἐφ' ὑμᾶς θρῆνον, καὶ καταγαγέτωσαν
οἱ ὀφθαλμοὶ ὑμῶν δάκρυα, καὶ τὰ
19 βλέφαρα ὑμῶν ῥείτω ὕδωρ, Ὅτι φωνὴ οἴκτου
ἠκούσθη ἐν Σιών· Πῶς ἐταλαιπωρήσαμεν,
κατῃσχύνθημεν σφόδρα, ὅτι ἐγκατελίπομεν
τὴν γῆν, καὶ ἀπερρίψαμεν τὰ
20 σκηνώματα ἡμῶν; Ἀκούσατε δὴ γυναῖκες
λόγον (π) θεοῦ, καὶ δεξάσθω τὰ ὦτα ὑμῶν
λόγους στόματος αὐτοῦ, καὶ διδάξατε τὰς
θυγατέρας ὑμῶν (ρ) οἶκτον, καὶ γυνὴ τὴν
21 πλησίον (σ) αὐτῆς θρῆνον. Ὅτι ἀνέβη
θάνατος (τ) διὰ τῶν θυρίδων ὑμῶν, εἰσῆλθεν
εἰς τὴν γῆν ὑμῶν, τοῦ ἐκτρίψαι νήπια
ἔξωθεν, καὶ νεανίσκους ἀπὸ τῶν πλατειῶν.
22 Καὶ ἔσονται οἱ νεκροὶ τῶν ἀνθρώπων
εἰς παράδειγμα ἐπὶ προσώπου τοῦ πεδίου
τῆς γῆς ὑμῶν, (υ) ὡς χόρτος ὀπίσω θερίζοντος,
καὶ οὐκ ἔσται ὁ συνάγων. Τάδε
23 λέγει κύριος, Μὴ καυχάσθω ὁ σοφὸς ἐν τῇ
σοφίᾳ αὐτοῦ, καὶ μὴ καυχάσθω ὁ ἰσχυρὸς ἐν
τῇ ἰσχύϊ αὐτοῦ, καὶ μὴ καυχάσθω ὁ πλούσιος ἐν
24 τῷ πλούτῳ αὐτοῦ, Ἀλλ' ἢ ἐν τούτῳ καυχάσθω
ὁ καυχώμενος, συνιεῖν καὶ γινώσκειν, ὅτι
ἐγώ εἰμι κύριος ὁ ποιῶν ἔλεος καὶ κρίμα
καὶ δικαιοσύνην ἐπὶ τῆς γῆς, ὅτι ἐν τούτοις
25 τὸ θέλημά μου, λέγει κύριος. Ἰδοὺ
ἡμέραι ἔρχονται, λέγει κύριος, καὶ ἐπισκέψομαι
ἐπὶ πάντας (φ) περιτετμημένους ἀκροβυστίας
26 αὐτῶν· Ἐπ' Αἴγυπτον, καὶ ἐπὶ
(χ) Ἰδουμαίαν, καὶ ἐπὶ Ἐδώμ, καὶ ἐπὶ (ψ)
υἱοὺς Ἀμμών, καὶ ἐπὶ υἱοὺς Μωάβ, καὶ ἐπὶ πάντα
περικειρόμενον τὰ κατὰ πρόσωπον αὐτοῦ,
τοὺς κατοικοῦντας ἐν τῇ ἐρήμῳ, ὅτι πάντα
τὰ ἔθνη (ω) ἀπερίτμητα σαρκὶ, καὶ πᾶς
οἶκος Ἰσραὴλ (α) ἀπερίτμητοι καρδίας
αὐτῶν.

Quis eſt homo intelligens, & intelligat hoc? Et cui ſermo oris 12
Domini ad eum, annuntiet vobis,
quarè periit terra, exuſta eſt
quaſi deſertum, eò quòd non ſit,
qui pertranſeat eam? Et dixit 13
Dominus ad me; Quia ipſi dereliquerunt
legem meam, quam
dedi ante faciem eorum, & non
audierunt vocem meam: Sed iverunt 14
poſt placita cordis ſui mali,
& poſt idola, quæ docuerunt
eos patres eorum. Idcircò hæc 15
dicit Dominus Deus Iſrael; Ecce
ego cibabo eos anguſtiis, &
potum dabo eis aquam fellis: Et 16
diſpergam eos in gentibus, quas
non noverunt ipſi, & patres eorum:
& immittam ſuper eos gladium,
donec ipſi conſumantur in
eo. Hæc dicit Dominus; Vocate 17
lamentatrices, & (c) & veniant:
& ad eas, quæ ſapientes
ſunt, mittite; & loquantur: Et 18
aſſumant ſuper vos lamentum:
& deducant oculi veſtri lachrymas:
& palpebræ veſtræ fluant
aquam: Quoniam vox lamentationis 19
audita eſt in Sion; Quomodò
miſerè vexati ſumus, confuſi
ſumus vehementer; quoniam
dereliquimus terram, & abjecimus
tabernacula noſtra? Audite 20
nunc mulieres verbum Dei:
& aſſumant aures veſtræ ſermones
oris ejus: & docete filias
veſtras lamentum: & mulier
proximam ſuam planctum.
Quia aſcendit mors per feneſtras 21
veſtras: ingreſſa eſt in terram
veſtram, diſperdere parvulos deforis,
& juvenes de (d) plateis: 22
Et erunt morticina hominum
in exemplum ſuper faciem campi
terræ veſtræ, quaſi fœnum poſt
metentem: & non erit, qui colligat.
Hæc dicit Dominus; Non 23
glorietur ſapiens in ſapientia ſua:
& non glorietur fortis in fortitudine
ſua: & non glorietur
dives in divitiis ſuis: Sed 24
in hoc glorietur, qui gloriatur,
intelligere, & (e) nôſſe, quia ego
ſum Dominus faciens miſericordiam,
& judicium, & juſtitiā
ſuper terram: quia in iſtis eſt
voluntas mea, dicit Dominus. Ecce 25
dies veniunt, dicit Dominꝰ, &
viſitabo ſuper omnes, qui circunciſa
habent præputia ſua: Super 26
Ægyptum, & ſuper (f) Idumæam,
& ſuper Edom, & ſuper
filios Ammon, & ſuper filios
Moab, & ſuper omnem attonſum
circa faciem ſuam, habitantes in
deſerto; quia omnes gentes incircuncisæ
carne: & omnis domus
Iſrael, incircuncisi cordibus
ſuis.

MS.A. (κ) Τίς ἄνθρωπος συνετὸς καὶ συνιεῖτε τοῦτο; καὶ ὁ λόγος (λ) ἡμῖν, τίνος ἕνεκεν, (μ) διοδεύεσθαι; Καὶ εἶπεν (ν) ἐραστῶν (ξ) ψωμίζω ὑμᾶς αὐτοὺς (ο) ἐλθάτωσαν, (π) κυρίου, (ρ) οἰκτρὸν, (σ) ἑαυτῆς (τ) εἰς τὴν γῆν ὑμῶν, καὶ ἦλθεν διὰ τῶν θυρίδων ὑμῶν, τοῦ ἐκτρίψαι (υ) καὶ ὡς (φ) περιτετμημένους (χ) τὴν Ἰδουμαίαν, (ψ) πάντας τοὺς υἱοὺς Ἀμμών, καὶ ἐπὶ τοὺς υἱοὺς Μωάβ, καὶ ἐπὶ πᾶν περικειρόμενον (ω) ἀπεριτέτμητα (α) ἀπερίτμητος

תַּרְגּוּם יוֹנָתָן Targum JONATHAN.

12 מַן גַּבְרָא דְחַכִּים וְיִסְבַּר יַת דָּא וּדְאִתְמַלַּל מִן קֳדָם יְיָ עִמֵּיהּ וִיחַוֵּינַהּ עַל מָה חֲרוּבַת אַרְעָא
13 צְדִיאַת כְּמַדְבְּרָא מִבְּלִי יָתֵיב׃ וַאֲמַר יְיָ עַל דִּי שְׁבַקוּ יַת אוֹרַיְתִי דִּיהַבִית קֳדָמֵיהוֹן וְלָא
14 קַבִּילוּ לְמֵימְרִי וְלָא הֲלִיכוּ בַהּ׃ וַאֲזַלוּ בָּתַר הִרְהוּר לִבְּהוֹן וּבָתַר בַּעֲלַיָּא דְּאַלִּיפוּנוּן
15 אֲבָהָתְהוֹן׃ בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל הָא אֲנָא מַיְתֵי עָקָא עַל עַמָּא הָדֵין
16 מְרַר כְּגִידִין וְאַשְׁקִנּוּן כָּס דְּלוּט כְּרֵישֵׁי חִוְיָן׃ וְאֲבַדַּרְנוּן בֵּינֵי עַמְמַיָּא דְלָא יְדַעוּ אִנּוּן
17 וַאֲבָהָתְהוֹן וְאֲגָרֵי בָּתְרֵיהוֹן דְּקָטְלִין בְּחַרְבָּא עַד דְּאֱשֵׁיצֵי יָתְהוֹן׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת
18 אִסְתַּכַּלוּ וּקְרוֹ לְאָלְיָתָא וְיֵיתְיָן וּלְחַכִּימָתָא שְׁלַחוּ וְיֵיתְיָן׃ וִיוֹחֲיָן וְיִטְּלָן עֲלָנָא אֶלְיָא וְיִשַּׁגְרָן
19 עֵינָנָא דִמְעִין וְגַלְגַלֵּי עֵינָנָא יִגְּרוּן מַיָּא׃ אֲרֵי קָל אִלְיָא אִשְׁתְּמַע מִצִּיּוֹן אֵיכְדֵין אִתְבְּזַזְנָא
20 בְּהֵתְנָא לַחֲדָא אֲרֵי חֲרוּבַת אַרְעָא אֲרֵי צְדִיאָה בִּרְנְיָתְנָא׃ אֲרֵי שְׁמַעָא נְשַׁיָּא פִּתְגָּמָא דַּיְיָ
21 וְתֵצִית אוּדְנְכוֹן לְמִלֵּי נְבִיוֹהִי וְאַלֵּפְנָא לִבְנָתֵיכוֹן אִלְיָא וְאִתְּתָא לְחַבְרְתָהּ עִנְוָיָא׃ אֲרֵי
22 סְלֵיק מוֹתָא בְּחַרְכָּנָא עַל בְּבִרְנְיָתָנָא לְשֵׁיצָאָה יַנְקִין מִשּׁוּקָא עוּלֵימִין מֵרְחוֹבִין׃ אִתְנַבֵּי
כִּדְנַן אֲמַר יְיָ וְתִתְרְמֵי נְבֵלְתָא דֶאֱנָשָׁא כְּזֶבֶל מְבַדַּר עַל אַפֵּי חַקְלָא וְכַעֲמִירָא מִבָּתַר חָצְדָא
23 וְלֵית דִּמְכַנֵּישׁ׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ לָא יִשְׁתַּבַּח שְׁלֹמֹה בַר דָּוִד חַכִּימָא בְּחוּכְמְתֵיהּ וְלָא יִשְׁתַּבַּח
24 שִׁמְשׁוֹן בַּר מָנוֹחַ גִּבָּרָא בִּגְבוּרְתֵיהּ וְלָא יִשְׁתַּבַּח אַחְאָב בַּר עָמְרִי עַתִּירָא בְּעוּתְרֵיהּ׃ אֱלָהֵן
בְּדָא יִשְׁתַּבַּח דְּמִשְׁתַּבַּח דְּחַכִּים וְאַלִּיף לְמִדַּע דַּחֲלְתִי אֲרֵי אֲנָא יְיָ עָבֵידְנָא חִסְדָּא וְדִין
25 דִּקְשׁוֹט וְזָכוּ בְּאַרְעָא אֲרֵי בְאִלֵּין רַעֲוָא קֳדָמַי אֲמַר יְיָ׃ הָא יוֹמַיָּא אָתַן אֲמַר יְיָ וְאַסְעַר עַל
26 כָּל עַמְמַיָּא עַרְלַיָּא וְעַל בֵּית יִשְׂרָאֵל דְּדָמָן עוֹבָדֵיהוֹן לְעוֹבָדֵי עַרְלַיָּא׃ עַל מִצְרָאֵי וְעַל
יְהוּדָה וְעַל אֱדוֹמָאֵי וְעַל בְּנֵי עַמּוֹן וְעַל מוֹאֲבָאֵי וְעַל כָּל מַקְפֵי פָּתָא דְּשָׁרָן בְּשִׁכּוּנִין
בְּמַדְבְּרָא אֲרֵי כָל עַמְמַיָּא עַרְלִין בְּבִשְׂרְהוֹן וְכָל בֵּית יִשְׂרָאֵל עַרְלִין בְּלִבְּהוֹן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quis eſt vir ſapiens, & intelligat hoc? & cum quo locutꝰ eſt Dn̄s, & annuntiet 12
illud, quare deſolata ſit terra, & deſerta ſit ſicut ſolitudo abſque
habitatore? Et dixit Dn̄s: Quia dereliquerunt legem meam quam dedi 13
corā eis, & non obedierunt verbo meo, et non ambulaverunt in ea. Sed 14
abierunt poſt cogitationē cordis ſui, et poſt Baalim, quæ docuerunt eos patres
eorū. Propterea ſic dicit Dn̄s exercituū Deus Iſrael: Ecce ego adducā 15
tribulationē ſup populū iſtum amarā quaſi abſinthiū, & potū dabo eis calicē
maledictionis, quaſi capita ſerpentum. Et diſpergā eos inter populos 16
quos non cognoverunt ipſi & patres eorum; & immittā poſt eos occiſores
gladio, donec conſumā eos. Hæc dicit Dn̄s exercituū: Contemplamini, & 17
vocate lamentratices, ut veniant: & ad eas quæ ſapientes ſunt mittite, ut
veniant. Et feſtinent & aſſumant ſup nos lamentū; & defluant oculi noſtri 18
lachrymis, et palpebræ oculorū noſtrorū decurrant aquis. Quia vox lamentationis 19
audita eſt ex Sion: Quomodo vaſtati ſumꝰ, confuſi ſumꝰ vehementer?
quia deſerta eſt terra, quia deſolata ſunt palatia noſtra. Audite enim 20
mulieres verbū Dn̄i, & auſcultet auris veſtra verba prophetarū ejꝰ, & docete
filias veſtras lamentū, & unaquæq; proximā ſuā planctū. Quia aſcendit 21
mors p feneſtras noſtras: ingreſſa eſt palatia noſtra, ut conſumat infantes
de vico, juvenes de plateis. Vaticinare: Hæc dicit Dn̄s: Et projicietur cadaver 22
hominis quaſi ſtercꝰ diſperſū ſup faciē agri, & ſicut manipulꝰ poſt meſſorē,
& non erit qui colligat. Hæc dicit Dn̄s: Ne ſibi placeat Salomon filiꝰ 23
David *ſapiens* in ſapientia ſua, nec ſibi placeat Sampſon filiꝰ Manue *fortis*
in fortitudine ſua, nec ſibi placeat Achab filiꝰ Ameri *dives* in divitiis ſuis.
Sed in hoc ſibi bene placeat qui ſibi placet ꝙ ſapiens ſit, et didicerit ſcire 24
timorē mei. Quia ego ſum Dominus faciens miſericordiam, & judicium
verū, & juſtitiā in terra; quia in his eſt voluntas corā me, dicit Dn̄s. Ecce 25
dies veniunt, dicit Dn̄s, & viſitabo ſuper omnes populos incircumciſos; *&*
ſuper domum Iſrael, quorum opera ſimilia ſunt operibus incircumciſorum.
Super Ægyptios & ſuper Judam, & ſuper Idumæos, et ſup filios Ammon, 26
et ſuper Moabitas, et ſuper omnes attonſos coma, qui morantur in habitaculis
in deſerto; quia omnes populi incircumciſi ſunt in carne ſua, et omnis domus Iſrael incircumciſi ſunt in corde ſuo.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܢܘ ܓܒܪܐ ܕܚܟܝܡ· ܢܣܬܟܠ ܗܕܐ. ܘܡܡܠܠܗ ܦܘܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܘܬܗ ܢܚܘܝܘܗܝ. 12
ܥܠ ܡܢܐ ܐܒܕܬ ܐܪܥܐ ․ ܘܚܪܒܬ ܐܝܟ ܡܕܒܪܐ ܡܢ ܚܣܝܪܘܬ ܥܒܘܪܐ. * ܘܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܕܫܒܩܘ 13
ܢܡܘܣܝ ܕܝܗܒܬ ܠܗܘܢ ܘܠܐܒܗܝܗܘܢ ․ ܘܠܐ ܫܡܥܘ ܠܩܠܝ ܘܠܐ ܗܠܟܘ ܒܗ ․ * ܘܐܙܠܘ 14
ܒܬܪ ܪܓܝܓܬ ܠܒܗܘܢ ܒܝܫܐ ․ ܘܒܬܪ ܦܬܟܪܐ ܕܐܠܦܘ ܐܢܘܢ ܐܒܗܝܗܘܢ ․ * ܡܛܠ ܗܢܐ 15
ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܗܐ ܡܘܟܠ ܐܢܐ ܠܗܘܢ ܠܥܡܐ ܗܢܐ ܡܪܪܐ.
ܘܐܫܩܐ ܐܢܘܢ ܡܝܐ ܡܪܝܪܐ. * ܘܐܒܕܪ ܐܢܘܢ ܒܥܡܡܐ. ܕܠܐ ܝܕܥܘ ܐܢܘܢ ܗܢܘܢ ܘܐܒܗܝܗܘܢ. 16
ܘܐܫܕܪ ܒܬܪܗܘܢ ܚܪܒܐ. ܥܕܡܐ ܕܐܫܠܡ ܐܢܘܢ ․ * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܩܪܘ ܠܐܠܝܬܐ. 17
ܘܢܐܬܝܢ. ܘܠܘܬ ܚܟܝܡܬܐ ܫܕܪܘ ܘܢܐܬܝܢ. * ܘܢܣܬܪܗܒܢ. ܘܢܫܩܠܢ ܥܠܝܢ ܐܘܠܝܬܐ. 18
ܘܢܚܬܢ ܥܝܢܝܢ ܕܡܥܐ. ܘܓܒܝܢ ܢܪܕܝܢ ܡܝܐ. * ܡܛܠ ܕܩܠܐ ܕܐܘܠܝܬܐ ܐܫܬܡܥ ܡܢ ܨܗܝܘܢ. 19
ܕܐܡܪ ․ ܐܝܟܢܐ ܐܬܒܙܙܢ. ܒܗܬܢ ܒܗܬܐ ܣܓܝ. ܡܛܠ ܕܫܒܩܢ ܐܪܥܐ. ܘܢܦܠܘ ܡܫܟܢܝܢ.
* ܡܛܠܗܢܐ ܫܡܥܝܢ ܢܫܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܬܫܡܥܢ ܐܕܢܝܟܝܢ ܡܠܬܐ ܕܦܘܡܗ. 20
ܘܐܠܦܝܢ ܠܒܢܬܟܝܢ ܐܘܠܝܬܐ ․ ܘܐܢܬܬܐ ܠܚܒܪܬܗ ܩܝܢܬܐ. * ܡܛܠ ܕܣܠܩ ܡܘܬܐ 21
ܠܟܘܝܢ. ܘܥܠ ܠܒܝܪܬܢ. ܠܡܫܝܨܘ ܥܘܠܐ ܡܢ ܫܘܩܐ. ܘܥܠܝܡܐ ܡܢ ܦܠܛܝܬܐ. * ܡܛܠ 22
ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܢܦܠܘܢ ܫܠܕܝܗܘܢ ܕܒܢܝܢܫܐ ܐܝܟ ܙܒܠܐ ܥܠ ܐܦܝ ܚܩܠܐ. ܘܐܝܟ ܥܡܝܪܐ
ܒܬܪ ܚܨܘܕܐ. ܘܠܝܬ ܡܟܢܫܢܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܠܐ ܢܫܬܒܗܪ ܚܟܝܡܐ ܒܚܟܡܬܗ. 23
ܘܠܐ ܢܫܬܒܗܪ ܓܢܒܪܐ ܒܓܢܒܪܘܬܗ. ܘܠܐ ܢܫܬܒܗܪ ܥܬܝܪܐ ܒܥܘܬܪܗ. * ܐܠܐ ܒܗܕܐ 24
ܢܫܬܒܗܪ ܡܢ ܕܡܫܬܒܗܪ ․ ܡܢ ܕܡܣܬܟܠ ܘܝܕܥ ܠܝ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܥܒܕ ܛܝܒܘܬܐ
ܘܕܝܢܐ ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܒܐܪܥܐ. ܘܒܗܠܝܢ ܨܒܝܢܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ․ 25
ܘܐܣܥܘܪ ܥܠ ܟܠ ܓܙܝܪ ܒܥܘܪܠܘܬܐ. * ܥܠ ܡܨܪܝܢ. ܘܥܠ ܝܗܘܕܝܐ. ܘܥܠ ܐܕܘܡ. ܘܥܠ ܒܢܝ 26
ܥܡܘܢ. ܘܥܠ ܡܘܐܒ. ܘܥܠ ܟܠ ܩܨܝܨܝ ܦܐܬܐ ܕܝܬܒܝܢ ܒܡܕܒܪܐ. ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ
ܥܡܡܐ ܥܘܪܠܝܢ ܒܒܣܪܗܘܢ ․ ܘܟܠܗܘܢ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܥܘܪܠܝܢ ܒܠܒܗܘܢ.

Vir qui ſapiens eſt, intelligat hoc; & is ad 12
quem ſermo oris Domini eſt, indicet eum,
Qua de cauſa periit *hæc* terra, & deſolata eſt
veluti deſertum propter penuriam viatorum?
Et dixit Dominus, Quia dereliquerunt legem 13
meam quam dedi eis & patribus eorum, non
auſcultaverunt voci meæ, nec ambulaverunt
in illa; Sed ſectati ſunt libidines animi ſui 14
pravi, & idola quæ docuerunt eos patres
eorum: Idcircò ſic ait Dominus potens, 15
Deus Iſraelis; Ecce cibaturus ſum populum
hunc abſinthio, & potaturus eos aquis amaris:
Diſperſurus eos inter gentes quas nec 16
ipſi nec patres eorum cognoverunt, & miſſurus
poſt eos gladium donec abſumam eos.
Sic dicit Dominus potentiſſimus, Advocate 17
lamentatrices ut adveniant, & ad *mulieres*
ſapientes mittite ut veniant, Et feſtinent, 18
componántque de nobis lamentationes; demittant
oculi noſtri lachrymas, & pupillæ noſtræ
aquas emanent: Quia vox lamentationis 19
audita eſt è Sione, dicens; Quomodo direpti
ſumus? maximo pudore ſuffuſi ſumus?
dereliquimus enim terram, & corruerunt habitationes
noſtræ. Propterea, audite mulieres 20
ſermonem Domini, & percipiant aures veſtræ
verbum oris ejus; & docete filias veſtras
lamenta, & quælibet ſociam ſuam cantum.
Nam aſcendit mors ad feneſtras noſtras, & 21
ingreſſa eſt in palatia noſtra, ad conſumendos
pueros è vicis, & juvenes è plateis. Sic enim 22
ait Dominus, Cadent hominum cadavera ſicut
fimus ſuper faciem terræ, & ſicut fœnum
poſt meſſorem, nec ullus erit collector. Sic 23
dicit Dominus, Ne gloriator ſapiens in ſapientia
ſua, néve gloriator gigas in robore
ſuo, neque gloriator dives in divitiis ſuis:
Sed in hoc glorietur qui gloriatur, quòd *nimirum* 24
intelligat & agnoſcat me eſſe Dominum
exercentem beneficium, judicium, & juſtitiam
erga terram; & his me delectari, dicit
Dominus. Ecce dies venturi ſunt, ait Dominus; 25
quibus viſitabo omnem circunciſum cum
præputio, Ægyptios, & Judæos, Adumæos, 26
& Ammonitas, Moabitas, & omnes barbitonſos
qui degunt in ſolitudine: nam omnes hi
populi ſunt præputiati in carne ſua: omnes
autem Iſraelitæ præputiati in corde ſuo.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* من انسان فهم فيفهم هذه * وكلمة فم الرب اليه * ليخبرنا من اجل ماذا هلكت الارض * 12
استوحشت مثل البرية من ان لا تسلك * وقال الرب * من اجل انهم تركوا ناموسي الذي 13
اعطيت قبل وجوههم * ولم يسمعوا صوتي * لكن مضوا خلف مراضي قلبهم الردي * وخلف 14
الاصنام التي علمهم اباوهم * لاجل هذا هكذا يقول الرب اله اسراييل * ها انا اطعمهم الشدايد 15
واسقيهم ماء مرار * وامزقهم في الامم التي لم يعرفوها ولا اباوهم * وارسل عليهم السيف الى 16
ان ابيدهم به * هكذا يقول الرب * ادعوا النايحات وليأتوا * وارسلوا الى الحكيمات * ولينطقوا 17 18
وليأخذوا عليكم نوحا * ولتهمل عيونكم دموعا * ولتسل اجفانكم ماء * لان صوت المرثية سمع 19
في صهيون * كيف شقينا وخزينا جدا لانا تركنا الارض واطرحنا مساكننا * اسمعن ايها 20
النسوة كلمة الرب * ولتقبل اذانكم كلمات فمه * وعلمن بناتكن مرثية * والمراة صاحبتها
نوحا * لان الموت صعد ارضكم * واتى من كواكم ليكسر الاطفال من خارج والشبان من 21
الشوارع * وتصير اموات الناس سهلا على وجه بقعة ارضكم * ومثل العشب خلف الحاصد * 22
وليس يكون من يجمع * هكذا يقول الرب * لا يفتخر الحكيم بحكمته * ولا يفتخر 23
القوي بقوته * ولا يفتخر الغني بغنايه * لكن بهذا فليفتخر المفتخر * ان يفهم ويعرف 24
اني انا هو الرب صانع الرحمة والحكم والعدل على الارض * لان بهذه ارادتي يقول الرب * ها 25
ايام تاتي يقول الرب * واتعهد على جميع المختونين قلفاتهم * على مصر * وعلى اليهودية * 26
وعلى ادوم * وعلى جميع بني عمون * وعلى بني مواب * وعلى كل من يجز ما على وجهه
الساكن في البرية * لان كل الامم غير مختونة بالجسد * وكل بيت اسراييل غير
مختونين بقلوبهم *

Si quis prudens eſt, & hæc intelligit, & 12
verbum oris Domini ad ipſum eſt; indicet
nobis qua de cauſa perierit hæc terra, deſolata
ſit quaſi deſertum, nemoque illic
ambulet. Dixitque Dominus, Quia de- 13
ſeruerunt legem meam quam dedi ipſis
aſpicientibus, nec audierunt vocem
meam; Sed abierunt poſt placita cordis 14
ſui peſſimi, & poſt idola quæ docuerunt
eos majores ipſorum: Propterea ſic dicit 15
Dominus Deus Iſraelis; Ecce ego cibabo
eos calamitatibus, & potabo illos aquâ
amaritudinis. Et dilacerabo eos inter 16
gentes quas nec ipſi nec patres eorum
cognoverunt: & immittam in eos gladium,
donec eos ipſo conſumam. Ita di- 17
cit Dominus, Convocate lamentatrices,
& veniant; mittite ad mulieres *ſapientes,*
ut pronuntient edantque de vobis 18
carmen lugubre; demittant oculi veſtri
lachrymas, & ex palpebris veſtris affluat
aqua: Nam vox lamentationis 19
audita eſt in Sione; Quomodo ſummâ
miſeriâ & pudore perculſi ſumus? dereliquimus
enim terram, & abjecimus habitationes
noſtras. Audite O fœminæ ver- 20
bum Domini, & percipiant aures veſtræ
verba oris ejus: docete filias veſtras
carmen lugubre, & altera alteram lamentum:
Quia mors ad terram veſtram 21
aſcendit, & venit per feneſtras veſtras,
ut pueros foris confringat, & juvenes è
plateis: Eruntque cadavera humana 22
publica ſuper faciem regionis terræ veſtræ,
& quaſi gramen poſt meſſorem, nec
erit qui colligat. Sic ait Dominus, Ne ſe 23
jactet ſapiens ob ſapientiam ſuam, neque
ſe jactet robuſtus ob robur ſuum, neque
ſe jactet dives propter divitias ſuas:
Sed ob hoc ſe jactet glorius, quòd in- 24
telligat ſciatque me eſſe Dominum exercentem
miſericordiam, judicium, &
juſtitiam ſuper terram; in his enim eſt
voluptas mea, dicit Dominus. Ecce dies 25
venient, dicit Dominus, quibus viſitabo
omnes circunciſos præputiis, Ægyptum, 26
& Judæam, Edom, & omnes filios
Ammon, filios Moab, & omnes tondentes
quod ſuper faciem ſuam eſt,
degentes in deſerto: omnes enim gentes
corpore ſunt incircunciſæ, tota verò domus
Iſraelis ſunt incircunciſi cordibus.

ירמיה׃ י

CAP. X. י

domus , vos ſuper DOMINUS eſt locutus quod verbum Audite
1 שִׁמְעוּ אֶת־הַדָּבָר אֲשֶׁר דִּבֶּר יְהוָה עֲלֵיכֶם בֵּית
, diſcatis ne gentium viam *In* : Dominus dixit Sic .Iſrael
2 יִשְׂרָאֵל׃ כֹּה ׀ אָמַר יְהוָה אֶל־דֶּרֶךְ הַגּוֹיִם אַל־תִּלְמָדוּ
.eis ab gentes *conſternentur* ſed : *conſternemini* ne cœlorum ſignis à &
וּמֵאֹתוֹת הַשָּׁמַיִם אַל־תֵּחָתּוּ כִּי־יֵחַתּוּ הַגּוֹיִם מֵהֵמָּה׃
,illud præcidit ſylva de lignum quia : *ipſa* vanitas populorum ſtatuta Quia
3 כִּי־חֻקּוֹת הָעַמִּים הֶבֶל הוּא כִּי־עֵץ מִיַּעַר כְּרָתוֹ
auro *in* & , argento *In* .aſcia in artificis manuum opus
4 מַעֲשֵׂה יְדֵי־חָרָשׁ בַּמַּעֲצָד׃ בְּכֶסֶף וּבְזָהָב
.*prodibit* non & ,*illa* confortaverunt malleis in & clavis In .illud decoravit
יְיַפֵּהוּ בְּמַסְמְרוֹת וּבְמַקָּבוֹת יְחַזְּקוּם וְלוֹא יָפִיק׃
non quia ,*portabuntur* portando ;*loquentur* non & , *ipſa æquabilitatis* palma Sicut
5 כְּתֹמֶר מִקְשָׁה הֵמָּה וְלֹא יְדַבֵּרוּ נָשׂוֹא יִנָּשׂוּא כִּי לֹא
non *benefacere* etiam & ,*malefacient* non quia , *eis ab timeatis* ne : *incedent*
יִצְעָדוּ אַל־תִּירְאוּ מֵהֶם כִּי־לֹא יָרֵעוּ וְגַם־הֵיטֵיב אֵין
tuũ nomen magnũ & , *tu* Magnus .Domine tu ſicut non A .*eis*
6 אוֹתָם׃ מֵאֵין כָּמוֹךָ יְהוָה גָּדוֹל אַתָּה וְגָדוֹל שִׁמְךָ
quia ,convenit tibi quia ,gentium rex te timebit non Quis .fortitudine in
7 בִּגְבוּרָה׃ מִי לֹא יִרָאֲךָ מֶלֶךְ הַגּוֹיִם כִּי לְךָ יָאָתָה כִּי
.tu ſicut non à eorum *regno omni* in & , gentium *ſapientibus omnibus in*
בְכָל־חַכְמֵי הַגּוֹיִם וּבְכָל־מַלְכוּתָם מֵאֵין כָּמוֹךָ׃
.*ipſum* lignum vanitatum Eruditio .agent ſtultè & ,deſipient *uno in* Et
8 וּבְאַחַת יִבְעֲרוּ וְיִכְסָלוּ מוּסַר הֲבָלִים עֵץ הוּא׃
,artificis opus ,Uphaz de aurum & ,afferetur Tarſis de extenſum Argentum
9 כֶּסֶף מְרֻקָּע מִתַּרְשִׁישׁ יוּבָא וְזָהָב מֵאוּפָז מַעֲשֵׂה חָרָשׁ
ſapientum opus ,eorũ indumentũ purpura &,hyacinthus : aurificis manus &
וִידֵי צוֹרֵף תְּכֵלֶת וְאַרְגָּמָן לְבוּשָׁם מַעֲשֵׂה חֲכָמִים
rex & , vivens Deus , *ipſe* veritas Deus Dominus Et .*ipſa* univerſa
10 כֻּלָּם׃ וַיהוָה אֱלֹהִים אֱמֶת הוּא־אֱלֹהִים חַיִּים וּמֶלֶךְ
.ejꝰ *indignationem* gentes ſuſtinebunt non &,terra contremiſcet ejus ira ab:*ſeculi*
עוֹלָם מִקִּצְפּוֹ תִּרְעַשׁ הָאָרֶץ וְלֹא־יָכִלוּ גוֹיִם זַעְמוֹ׃
,fecerunt non terram & *cælos* qui Dii : eis dicetis *hoc Secundùm*
11 כִּדְנָה תֵּאמְרוּן לְהוֹם אֱלָהַיָּא דִּי־שְׁמַיָּא וְאַרְקָא לָא עֲבַדוּ
,ſua potẽtia in terram *Faciens* .hi cœlo ſub de & ,terra è pereant
12 יֵאבַדוּ מֵאַרְעָא וּמִן־תְּחוֹת שְׁמַיָּא אֵלֶּה׃ עֹשֵׂה אֶרֶץ בְּכֹחוֹ
.cœlos extendit ſuâ prudentia in & ,ſua ſapientia in orbem *ſtabiliens*
מֵכִין תֵּבֵל בְּחָכְמָתוֹ וּבִתְבוּנָתוֹ נָטָה שָׁמָיִם׃
extremo ab *vapores faciet aſcendere &* , cœlo in aquarũ *ſtrepitum cũ dare vocem Ad*
13 לְקוֹל תִּתּוֹ הֲמוֹן מַיִם בַּשָּׁמַיִם וַיַּעֲלֶה נְשִׂאִים מִקְצֵה
omnis *Bruteſcit* .ſuis theſauris de ventũ *eduxit* & , *fecit pluviæ* fulgura : terræ
14 אֶרֶץ בְּרָקִים לַמָּטָר עָשָׂה וַיּוֹצֵא רוּחַ מֵאֹצְרֹתָיו׃ נִבְעַר כָּל־
falſitas quia : ſculptili à *fuſor* omnis eſt affectꝰ Pudore .ſcientiã propter homo
אָדָם מִדַּעַת הֹבִישׁ כָּל־צוֹרֵף מִפָּסֶל כִּי שֶׁקֶר
tẽpore in : *errorum* opus *ipſa* Vanitas .*eis* in ſpiritꝰ non &,ejꝰ cõflatile
15 נִסְכּוֹ וְלֹא־רוּחַ בָּם׃ הֶבֶל הֵמָּה מַעֲשֵׂה תַּעְתֻּעִים בְּעֵת
plaſmator quia ,Jahacob pars hæc ſicut Non .peribunt *eorum* viſitationis
16 פְּקֻדָּתָם יֹאבֵדוּ׃ לֹא־כְאֵלֶּה חֵלֶק יַעֲקֹב כִּי־יוֹצֵר
exercituum Dominus : ejus hæreditatis virga Iſrael & , ipſe omnium
הַכֹּל הוּא וְיִשְׂרָאֵל שֵׁבֶט נַחֲלָתוֹ יְהוָה צְבָאוֹת
.*munitione in habitans* ,*tuam negotiationem* terra de *Collige* .ejus nomen
17 שְׁמוֹ׃ אִסְפִּי מֵאֶרֶץ כִּנְעָתֵךְ יוֹשֶׁבְתִּי בַּמָּצוֹר׃

Verſio VUL. LAT.

CAP. X.

1 Audite verbum, quod locutus
2 eſt Dñs ſup vos, domꝰ Iſrael. Hæc
dicit Dñs; Juxta vias Gentium
nolite diſcere: & à ſignis cœli
nolite metuere, quæ timent Gentes:
3 Quia leges populorum vanæ
ſunt: quia lignũ de ſaltu præcîdit
opus manꝰ artificis in aſcia.
4 Argento & auro decoravit illud:
clavis et malleis compegit, ut non
5 diſſolvatur. In ſimilitudinẽ palmæ
fabricata ſunt, & non loquentur:
portata tollentur, quia
incedere non valent; nolite ergò
timere ea, quia nec malè poſſunt
6 facere, nec bené. Non eſt ſimilis
tuî, Dñe: magnus es tu, &
magnũ nomen tuum in fortitudine.
7 Quis non timebit te, ô rex
Gentium? tuũ eſt enim decus:
inter cunctos ſapientes Gentium,
& in univerſis regnis eorum nullus
8 eſt ſimilis tuî. Pariter inſipientes
& fatui probabuntur: doctrina
vanitatis eorum lignũ eſt.
9 Argentum involutum de Tharſis
affertur, & aurũ de Ophaz: opus
artificis, & manꝰ ærarii: hyacinthus
& purpura indumentum
eorum; opus artificum univerſa
10 hæc. Dominus autem Deus verus
eſt: ipſe Deus vivens, & rex
ſempiternꝰ: ab indignatione ejꝰ
commovebitur terra: & non ſuſtinebunt
Gentes comminationem
11 ejus. Sic ergò dicetis eis;
Dii, qui cœlos & terram non
fecerunt, pereant de terra, &
de his, quæ ſub cœlo ſunt.
12 Qui facit terram in fortitudine
ſua, præparat orbem in
ſapientia ſua, & prudentiâ ſuâ
13 extendit cœlos. Ad vocem ſuam
dat multitudinem aquarum in
cœlo, & elevat nebulas ab extremitatibus
terræ: fulgura in
pluviam facit, & educit ventum
14 de theſauris ſuis. Stultus factus
eſt omnis homo à ſcientia, confuſus
eſt artifex omnis in ſculptili:
quoniam falſũ eſt ꝙ conflavit,
15 & non eſt ſpiritꝰ in eis. Vana
ſunt, & opꝰ riſu dignũ: in tempore
viſitationis ſuæ peribunt.
16 Non eſt his ſimilis pars Jacob:
qui enim formavit omnia, ipſe
eſt: & Iſrael virga hæreditatis
ejus: Dominus exercituum nomen
17 illi. Congrega de terra confuſionem
tuam, quæ habitas in
obſidione.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. ί.

1 Ἀκούσατε (α) τὸν λόγον κυρίου,
ὃν (β) ἐλάλησεν ἐφ' ὑμᾶς οἶκος Ἰσραήλ.
2 Τάδε λέγει κύριος, Κατὰ τὰς
ὁδοὺς τῶν ἐθνῶν μὴ (γ) μανθάνετε,
καὶ ἀπὸ τῶν σημείων τοῦ οὐρανοῦ μὴ
φοβεῖσθε, ὅτι φοβοῦνται αὐτὰ τοῖς
3 προσώποις αὐτῶν. Ὅτι τὰ νόμιμα
τῶν ἐθνῶν μάταια. ξύλον ἐστὶν ἐκ τοῦ
δρυμοῦ ἐκκεκομμένον, ἔργον τέκτονος,
4 καὶ χώνευμα, Ἀργυρείῳ καὶ χρυσίῳ κεκαλλωπισμένα
(δ), ἐν σφύραις καὶ ἥλοις
5 ἐστερέωσαν (") αὐτά· Θήσουσιν αὐτά,
καὶ οὐ κινηθήσονται. ἀργύρειον τορευτόν
ἐστιν, οὐ πορεύσονται, ἀργύρειον
9 (ε) προσβλητόν ἐστι. Ἀπὸ Θαρσὶς
ἥξει χρυσίον Μωφάζ, καὶ (ζ) χεὶρ
χρυσοχόων, ἔργα τεχνιτῶν πάντα, ὑάκινθον
καὶ πορφύραν ἐνδύσουσιν αὐτά.
5 Αἰρόμενα ἀρθήσονται, ὅτι οὐκ ἐπιβήσονται.
μὴ φοβηθῆτε αὐτά, ὅτι (η) οὐ
μὴ κακοποιήσωσιν, καὶ ἀγαθὸν οὐκ ἔστιν
11 ἐν αὐτοῖς. Οὕτως ἐρεῖτε αὐτοῖς,
Θεοὶ οἳ τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν οὐκ
ἐποίησαν, ἀπολέσθωσαν (θ) ἐκ τῆς
γῆς, καὶ ὑποκάτωθεν τοῦ οὐρανοῦ τούτου.
12 Κύριος ὁ ποιήσας τὴν γῆν ἐν τῇ ἰσχύϊ
αὐτοῦ, ὁ ἀνορθώσας τὴν οἰκουμένην
ἐν τῇ σοφίᾳ αὐτοῦ, καὶ τῇ φρονήσει
13 αὐτοῦ ἐξέτεινε τὸν οὐρανόν, Καὶ
πλῆθος ὕδατος ἐν οὐρανῷ· καὶ ἀνήγαγε
νεφέλας ἐξ ἐσχάτου τῆς γῆς, ἀστραπὰς
εἰς ὑετὸν ἐποίησε, καὶ ἐξήγαγε
14 φῶς ἐκ θησαυρῶν αὐτοῦ. Ἐμωράνθη
πᾶς ἄνθρωπος ἀπὸ γνώσεως, κατῃσχύνθη
πᾶς χρυσοχόος ἐπὶ τοῖς
γλυπτοῖς αὐτοῦ, ὅτι ψευδῆ ἐχώνευσεν,
15 οὐκ ἔστι πνεῦμα ἐν αὐτοῖς. Μάταιά
ἐστιν ἔργα ἐμπεπαιγμένα, ἐν καιρῷ
16 ἐπισκοπῆς αὐτῶν ἀπολοῦνται. Οὐκ
ἔστι τοιαύτη μερὶς τῷ Ἰακώβ, ὅτι ὁ
πλάσας τὰ πάντα, αὐτὸς κληρονομία
17 αὐτοῦ, Κύριος ὄνομα (ι) αὐτῷ. Συνήγαγεν
ἔξωθεν τὴν ὑπόστασίν σου,
(κ) κατοικοῦσαν ἐν ἐκλεκτοῖς.

CAP. X.

Audite verbum Domini, 1
quod locutus eſt ſuper vos,
domus Iſrael. Hæc dicit 2
Dominus; Juxta vias gentium
nolite diſcere: & à ſignis
cœli nolite metuere:
(a) quia timent ea faciebus
ſuis: Quia legitima gentium 3
vana ſunt. Lignum eſt
de ſaltu præciſum, opus artificis,
et conflatio, Argento, 4
& auro decorata: in
malleis & clavis firmaverunt
illas: Collocabunt ea, 5
& non movebuntur: argentum
tornatile eſt: non ibunt:
argentum productum eſt E 9
Tharſis: veniet aurum Mophaz:
& manus aurificum: opera
artificum omnia: hyacintho
& purpurâ induent ea: Portata 5
tollentur: quia non conſcendent.
Ne timeatis ea;
quia non malefacient; &
bonum non eſt (b) in eis. Sic 11
dicetis eis; Dii, qui cœlum,
& terram non fecerunt,
diſpereant de terra, & de
ſubter cœlo hoc. Dominus, 12
qui fecit terram in fortitudine
ſua, qui erexit orbem
in ſapientia ſua, & prudentiâ
ſuâ extendit cœlum: Et 13
multitudinem aquæ in cœlo:
& eduxit nubes ab extremo
terræ: fulgura in pluvias
fecit: & eduxit (c) lumen
ex theſauris ſuis. Stultus 14
factus eſt omnis homo à
ſcientia: confuſus eſt omnis
aurifex in ſculptilibus ſuis:
quia falſa conflavit: non
eſt ſpiritus in eis. Vana 15
ſunt opera, ridicula: in tempore
viſitationis ſuæ peribunt.
Non eſt talis pars 16
Jacob. Qui enim formavit
omnia; (d) ipſe eſt hæreditas
ejus: Dominus nomen
illi. Congregavit deforis 17
ſubſtantiam ſuam, quæ habitat
(e) in electis.

MS. A. (α) λόγον (β) ἐλάλησεν κύριος ἐφ' ὑμᾶς (γ) πορεύεσθαι, (δ) ἐστίν, (") αὐτά, καὶ οὐ (ε) προσβλητόν. Ἀπὸ Θαρσεὶς (ζ) χεῖρες (η) οὐ κακοποιήσουσιν, (θ) ἀπὸ τῆς γῆς, (ι) αὐτοῦ. (κ) ἡ κατοικοῦσα

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

י

1 קַבִּילוּ יָת פִּתְגָמָא דְמַלֵּיל יְיָ עֲלֵיכוֹן בֵּית יִשְׂרָאֵל׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ מֵאוֹרְחַת עַמְמַיָּא לָא תֵילְפוּן 2
3 וּמֵאָתְוָן דְּמִשְׁתַּנַן בִּשְׁמַיָּא לָא תִתַּבְרוּן אֲרֵי מִתַּבְּרִין עַמְמַיָּא מִנְּהוֹן׃ אֲרֵי גְזֵרַת עַמְמַיָּא
4 לְמָה אִנוּן אֲרֵי אָעָא מֵחוּרְשָׁא קְיָץ לֵיהּ עוֹבַד יְדֵי נַגַּר בְּחַצִינָא׃ בְּכַסְפָּא וּבְדַהֲבָא חָפֵי לֵיהּ
5 בְּמַסְמְרִין וּבְמַקָּבִין מַתְקֵיף לֵיהּ דְּלָא יִצְטְלֵי׃ עוֹבַד נְגִיד זְקִיפִין אִנוּן וְלָא מְמַלְּלִין
אִתְנַטָּלָא יִתְנַטְּלוּן אֲרֵי לֵית בְּהוֹן רוּחָא לְהַלָּכָא לָא תִדְחֲלוּן מִנְּהוֹן אֲרֵי לָא מַבְאֲשִׁין וְאַף
6 לְאֵיטָבָא לֵית אִנוּן יָדְעִין׃ לֵית בַּר מִנָּךְ יְיָ רַב אַתְּ וְרַב שְׁמָךְ בִּגְבוּרְתָא׃ מַן לָא יִדְחַל מִן 6
7 קֳדָמָךְ מֶלֶךְ עַל כָּל עַמְמַיָּא אֲרֵי דִילָךְ הִיא מַלְכוּתָא אֲרֵי בְּכָל חַכִּימֵי עַמְמַיָּא וּבְכָל
8 מַלְכְוָתְהוֹן לֵית בַּר מִנָּךְ׃ וּבְחֲדָא יְחוּבוּן עַמְמַיָּא עַל דְּאִטַּפַּשׁוּ עַל דִּפְלַחוּ לְטַעֲוָתָא דִּלְמָא
9 אִנוּן׃ כַּסְפָּא דִמְחַפַּן מֵאַפְרִיקָא מַיְתַן וְדַהֲבָא מֵאוֹפִיר עוֹבַד נַגַּר וִידֵי קֵינָי תִּכְלָא וְאַרְגְּוָנָא
10 לְבוּשְׁהוֹן עוֹבַד חַכִּימִין כּוּלְּהוֹן׃ וַיְיָ אֱלֹהִים קְשׁוֹט הוּא אֱלָהּ קַיָּם וּמְלַךְ עָלְמִין מֵרוּגְזֵיהּ
11 תְּזוּעַ אַרְעָא וְלָא יָכְלִין עַמְמַיָּא לְסוֹבָרָא רוּגְזֵיהּ׃ דְּנָא פַּרְשֶׁגֶן אִגַּרְתָּא דִשְׁלַח יִרְמְיָה נְבִיָּא
לְוָת שְׁאַר סָבֵי גָלוּתָא דִי בְּבָבֶל וְאִם יֵימְרוּן לְכוֹן עַמְמַיָּא דְאַתּוּן בֵּינֵיהוֹן פְּלַחוּ לְטַעֲוָתָא
בֵּית יִשְׂרָאֵל כְּדֵין תְּתִיבוּן וּכְדֵין תֵּימְרוּן לְהוֹן טַעֲוָן דְּאַתּוּן פָּלְחִין לְהוֹן טַעֲוָן דְּלֵית בְּהוֹן
צְרוֹךְ אִנוּן מִן שְׁמַיָּא לָא יָכְלִין לְאַחָתָא מִטְרָא וּמִן אַרְעָא לָא יָכְלִין לְצַמָּחָא פֵּירִין אִנוּן
12 וּפָלְחֵיהוֹן יֵיבְדוּן מֵאַרְעָא וְיִשְׁתֵּיצוּן מִן תְּחוֹת שְׁמַיָּא אִלֵּין׃ וּכְדְנָא תֵימְרוּן לְהוֹן אֲנַחְנָא
פָּלְחִין לִדְעָבֵיד אַרְעָא בְּחֵילֵיהּ שַׁכְלֵל תֵּבֵל בְּחוּכְמְתֵיהּ בְּסוּכְלְתָנוּתֵיהּ תְּלָא שְׁמַיָּא׃
13 לְקָל מִתְּנֵיהּ רְכַפְרַת דְּמַיִן בִּשְׁמַיָּא וּמַסִּיק עֲנָנִין מִסְּיָפֵי אַרְעָא בַּרְקִין לִזְמַן מִטְרָא עֲבַד
14 וּמַפֵּק רוּחִין מִבֵּית גִּנְזוֹהִי׃ אִתְבָּרוּ כָּל עַמְמַיָּא מִלְּמִדַּע חָכְמָא בְּהֵית כָּל קֵינָי מִלְּמֶעְבַּד
15 צַלְמִן אֲרֵי שִׁקְרָא אַתְכוּנוּן וְלָא רוּחָא בְּהוֹן׃ לְמַדֵּי אִנוּן עוֹבַד תַּלְעָבָא בְּעִדָּן
16 דְּאַסְעַר עֲלֵיהוֹן חוֹבֵיהוֹן יֵיבְדוּן׃ לָא כְאִלֵּין חוּלָקֵיהּ דְּיַעֲקֹב אֲרֵי דִּבְרָא כוּלָּא הוּא
17 וְיִשְׂרָאֵל שִׁבְטָא דְאַחְסַנְתֵּיהּ יְיָ צְבָאוֹת שְׁמֵיהּ׃ כְּנוֹשִׁי מֵאַרְעָא סְחוֹרְתִיךְ דְּיָתְבָא בְּתוּקְפָּא
בְּקִרְוִין כְּרִיכָן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. X.

Suſcipite verbum quod loquitur Dominus ſuper vos domus Iſrael. Hæc 1
dicit Dominus: De viis gentium nolite diſcere, & de ſignis quæ *mutata* 2
ſunt in cœlis, ne conterreamini, à quibus populi conterrentur. Quia decreta 3
populorum vana ſunt, quia lignum de ſylva præciditur ei: opꝰ manuum
fabri lignarii in aſcia. Argento & auro cooperit illud, clavis & malleis 4
corroborat illud, ut non inclinetur. Opere ductili eriguntur ea, & 5
non loquuntur, portando portantur, quia non habent ſpiritum ad ambulandum.
Ne timeatis ab eis, quia non malefaciunt, nec ſciunt benefacere.
Non eſt præter te Domine; magnus es tu, & magnum nomen tuum in fortitudine. 6
Quis non timebit à facie tua, Rex omnium populorum? tuum eſt 7
enim regnum; quia in omnibꝰ ſapientibus populorum, & in univerſis regnis
eorum nullus eſt abſque te. Et pariter populi delinquunt, eò quòd inſipientes 8
facti ſunt dum colunt idola quæ vana ſunt. Argentum involutum 9
ex Africa afferunt, & aurum ex Ophir, opus fabri lignarii & manuum argentarii:
hyacinthꝰ & purpura indumentum eorum, opus ſapientum univerſa
hæc. Et Dominus Deus verus eſt, ipſe eſt Deus vivus, & rex ſeculorum. 10
A furore ejus commovebitur terra, & non poterunt populi ſuſtinere
iram ejus. Hoc eſt exemplar epiſtolæ quam miſit Jeremias propheta ad reliquos 11
ſeniores tranſmigrationis, qui erant in Babylonia. Si enim dixerint
vobis populi inter quos vos habitatis: Domus Iſrael ſervite idolis; ſic reſpondebitis,
& ſic dicetis eis: Idola quibus vos ſervitis, errores ſunt in quibus
nulla eſt utilitas: ex cœlo non poſſunt deducere pluviam, & ex terra
non poſſunt producere fructꝰ: ipſa & cultores eorum peribunt de terra, et
conſumentur de his, quæ ſub cœlis iſtis ſunt. Et ſic dicetis eis: Nos colimꝰ 12
eum qui fecit terram in virtute ſua, fundavit orbem in ſapientia ſua, & in
prudentia ſua appendit cœlos. Ad vocem ſuam dat impetum aquarum in 13
cœlis, & aſcendere facit nubes ab extremitatibus terræ: fulgura in tempus
pluviæ fecit, & educit ventos de theſauris ſuis. *Fracti* ſunt omnes populi 14
neſcientes ſapientiam: *confuſus eſt omnis argentarius* à faciendo ſculptili,
quia fruſtra conflarunt ea, & non eſt ſpiritus in eis. Vana ſunt, opus ſubſannatione 15
dignum: in tempore quo viſitavero ſuper eos peccata eorum,
peribunt. Non eſt ſicut hæc pars Jacob; quia qui creavit omnia, ipſe eſt: & 16
Iſrael virga hæreditatis ejus, Dominus exercituum nomen ejus. Congrega 17
de terra mercimonia tua quæ habitas in *munitione*, in civitatibus
munitis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝ *

1 * ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܐ ܕܐܡܪ ܡܪܝܐ ܥܠܝܟܘܢ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܀ * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܘܪܚܬܐ 2
ܕܥܡܡܐ. ܠܐ ܬܐܠܦܘܢ. ܘܡܢ ܐܬܘܬܐ ܕܫܡܝܐ ܠܐ ܬܕܚܠܘܢ. ܡܛܠ ܕܥܡܡܐ ܗܢܘܢ ܕܕܚܠܝܢ ܡܢܗܘܢ.
* ܡܛܠ ܕܢܡܘܣܐ ܕܥܡܡܐ ܠܐ ܡܕܡ ܐܢܘܢ. ܡܛܠ ܕܩܝܣܐ ܡܢ ܥܒܐ ܦܣܝܩ. ܥܒܕ ܐܝܕܝ 3
ܢܓܪܐ ܒܢܪܓܐ. * ܒܣܐܡܐ ܘܒܕܗܒܐ ܡܚܦܝܢ. ܒܡܩܒܬܐ ܘܡܣܡܪ̈ܐ ܡܫܪܪܝܢ ܠܗܘܢ. ܕܠܐ 4
ܢܬܦܪܩܘܢ. * ܐܝܟ ܕܩܠܐ ܙܩܝܦܝܢ ܘܠܐ ܡܡܠܠܝܢ. ܘܡܫܩܠ ܫܩܠܝܢ ܠܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܠܐ 5
ܡܗܠܟܝܢ. ܠܐ ܬܕܚܠܘܢ ܡܢܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܡܒܐܫܝܢ ܘܐܦܠܐ ܡܛܒܝܢ. * ܠܝܬ ܐܟܘܬܟ 6
ܡܪܝܐ: ܪܒ ܐܢܬ. ܘܪܒ ܫܡܟ ܒܓܢܒܪܘܬܐ. * ܡܢ ܠܐ ܢܕܚܠܟ ܡܠܟܐ ܕܟܠܗܘܢ ܥܠܡܐ. 7
ܕܠܟ ܗܘ ܝܐܝܐ ܐܝܩܪܐ. ܡܛܠ ܕܒܝܬ ܟܠܗܘܢ ܚܟܝܡܐ ܕܥܡܡܐ. ܘܒܟܠܗ ܡܠܟܘܬܗܘܢ
ܠܝܬ ܐܟܘܬܟ. * ܐܟܚܕܐ ܢܐܒܕܘܢ ܘܢܫܠܡܘܢ ܡܪ̈ܕܘܬܐ ܣܪ̈ܝܩܬܐ ܕܦܬܟܪ̈ܐ ܕܩܝܣܐ. * ܣܐܡܐ 8
9 ܓܒܝܐ ܡܢ ܬܪܫܝܫ ܐܬܐ. ܘܕܗܒܐ ܡܢ ܐܘܦܝܪ. ܥܒܕܐ ܕܢܓܪܐ ܘܐܝܕܝ ܨܐܪܐ. ܬܟܠܬܐ ܘܐܪܓܘܢܐ
ܠܒܘܫܗܘܢ. ܥܒܕܐ ܕܚܟܝܡܐ. * ܘܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܫܪܪܐ. ܐܠܗܐ ܚܝܐ ܘܡܠܟܐ 10
ܕܥܠܡܐ. ܡܢ ܪܘܓܙܗ ܬܬܙܝܥ ܐܪܥܐ. ܘܠܐ ܡܣܝܒܪܝܢ ܥܡܡܐ ܪܘܓܙܗ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪܘ ܠܗܘܢ. 11
ܐܠܗܐ ܕܫܡܝܐ ܘܐܪܥܐ ܠܐ ܥܒܕܘ. ܢܐܒܕܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܘܡܢ ܬܚܝܬ ܫܡܝܐ ܗܠܝܢ. * ܡܪܝܐ 12
ܥܒܕ ܐܪܥܐ ܒܚܝܠܗ. ܘܬܩܢ ܬܒܝܠ ܒܚܟܡܬܗ. ܘܒܣܘܟܠܗ ܡܬܚ ܫܡܝܐ. ܠܩܠ ܩܠܐ 13
ܕܪܥܡܐ ܕܡܝܐ ܒܫܡܝܐ. ܡܣܩ ܥܢܢܐ ܡܢ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܘܒܪܩܐ ܠܡܛܪܐ ܥܒܕ. ܘܡܦܩ
ܪܘܚܐ ܡܢ ܐܘܨܪ̈ܘܗܝ. * ܣܟܠ ܟܠ ܒܪܢܫ ܡܢ ܝܕܥܬܐ. ܒܗܬܘ ܟܠ ܨܐܪ̈ܐ ܕܗܘܘ ܡܢ 14
ܦܬܟܪ̈ܐ ܕܥܒܕܘ. ܡܛܠ ܕܒܫܘܩܪܐ ܢܣܟܘ ܠܗܘܢ. ܘܪܘܚܐ ܠܝܬ ܒܗܘܢ. * ܠܐ ܡܕܡ ܐܢܘܢ. 15
ܥܒ̈ܕܐ ܕܡܣܬܪ̈ܩܢ ܐܢܘܢ. ܒܙܒܢܐ ܕܣܘܥܪܢܗܘܢ ܢܐܒܕܘܢ. * ܠܐ ܐܝܟ ܗܠܝܢ ܡܢܬܗ ܕܝܥܩܘܒ 16
ܡܛܠ ܕܗܘ ܕܒܪܐ ܟܠ. ܗܘܝܘ ܡܢܬܗܘܢ. ܘܐܝܣܪܝܠ ܫܒܛܐ ܕܝܪܬܘܬܗ. ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ
ܫܡܗ. * ܟܢܘܫ ܡܢ ܐܪܥܐ ܨܥܪܟܝ ܝܬܒܬ ܒܐܘܠܨܢܐ. 17

CAP. X.

Audite ſermonem quem protulit de vobis Dominus O Iſraelitæ : [1] Sic dicit Dominus ; [2] Viam gentium ne addiſcatis, ſigna cœleſtia ne colatis, quia gentes quidem colunt ea : [3] Nam idola gentium nihil ſunt : ſunt enim lignum è ſylva cæſum, opus manuum fabri aſciâ *dolatum*, [4] Argento & auro ſunt obducta, laminis ferreis clavíſque firmant illa ne disjungantur : [5] Tanquam palmæ ſunt erecta, ſed non loquuntur ; & portando portant ea, quia non incedunt. Ne colatis iſta, quia nec obſunt, nec proſunt. [6] Nullus eſt par tibi Domine, quia maximꝰ es & maximum nomen tuum potentiâ. [7] Quis non revereatur te rex omnium ſeculorum, quandoquidem te decet honor ? cùm inter omnes gentium ſapientes, & in toto regno ipſorum nemo par ſit tibi : [8] Simul ergò pereant ac deficiant documenta vana idolorum ligneorum. [9] Argentum optimum è Tharſis advehitur, & aurum ex Ophir : artificio fabri & manibus conflatoris *parantur* : hyacinthus & purpura veſtimentum eorum, textura peritorum. [10] Dominus autem Deus veritatis, Deus eſt vivorum & rex ſeculorum ; cujus ab ira contremiſcit terra, cujus indignationem ſuſtinere nequeunt populi. [11] Sic dicito illis ; dii qui cœlum ac terram non condiderunt, pereant hujuſmodi de terra & de ſub cœlo. [12] Dominus terram fecit potentiâ ſuâ, condidit orbem ſapientiâ ſuâ, mentéque ſuâ cœlum extendit : [13] Edit ſonitum fragoris aquarum in cœlo, elicit nubes ab extremitatibus terræ, fulgura ad pluviam facit, ventóſque depromit de theſauris ſuis. [14] Deſipuerunt (*i. aberrârunt*) omnes homines à ſcientia, pudefacti ſunt omnes aurifices à ſculptilibus quæ fecerunt : falſitaté enim conflaverunt, & non eſt ſpiritus in eis : [15] Nihil ſunt, ſed opificia ſtulta ſunt : quo tempore viſitabuntur, peribunt. [16] Non eſt ut iſtorum pars Jacobi ; quoniam is qui creavit omnia, idem eſt pars eorum, & Iſrael *viciſſim* tribus hæreditatis ejus, Dominus potentiſſimus eſt nomen ejus. [17] Congrega de terra ignominiam tuam tu quæ ſedes in anguſtia :

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل العاشر * الاصحاح السابع *

1 * اسمعوا قول الرب الذي تكلم به عليكم يا بيت اسرائيل * هكذا يقول الرب * في 2
طرقات الامم لا تسلكوا * ومن علامات السماء لا تخافوا * لانهم يخافونها بوجوههم * لان 3
سرائع الامم باطلة * عود هو من الغيضة مقطوع * عمل نجار وسبيك * بفضة وذهب 4
مزينان هما * بمطرقات ومسامير شدوهما فلا يتحركان [*MS. Oxon. ليس مثلك يا 6
رب العظيم * وعظيم هو اسمك بالجبروت * فمن لا يخافك من ملوك جميع الارض * لان 7
الملك لك يصلح * لان ليس في جميع حكما الشعوب * وجميع الممالك مثلك * فاما 8
تعليم رهبة الالهة الخشب * وعبادتها فيبطل ويهلك جميعا * فضة مخروطة هما فلا 9
يذهبان * فضة مفرغة من ترسيس تاتي * ذهب موفاز وايادي الصياغ * جميع اعمال
الصناع * يكسونها ياقوتا وبرفيرا * محمولة ترفع لانها لا تمشي [*MS. Oxon. والرب هو اله 10
الحق * وهو اله الحياة * وملك عالم * من غضبه ترتعد الارض * ولا تصبر الشعوب
لغضبه] * لا تخافوها * لانها لا تصنع سوا وليس فيها صلاح * هكذا يقال لهم * الالهة التي 5 11
لم تصنع السماء والارض ليهلكوا من الارض ومن تحت هذه السماء * الرب صنع الارض بقوته * 12
وقوم العالمين بحكمته * وبفهمه مد السماء * وكثر ماء في السماء * واصعد سحبا من آخر الارض * 13
صنع بروقا للمطر * واخرج نورا من كنوزه * جهل كل انسان من المعرفة * خزي كل صائغ 14
بمنحوتاته * لانهم سبكوا الكذب * ليس فيها روح * باطلة هي * اعمال لعبية * في زمان 15
تعهدكم يهلكون * ليس هذا النصيب بعينه ليعقوب * لان جابل الكل هو ميراثه * 16
الرب اسمه * جمع قواتك من خارج ايتها الساكنة في المختارين * 17

CAP. X.

Textus ſeptimus.

Audite dictum Domini quod pronuntiavit de vobis O domus Iſraelis : [1] *Sic ait Dominus,* [2] *In viis gentium ne incedatis, & à ſignis cæleſtibus ne timeatis, quoniam illæ facie tenus ea formidant :* [3] *Nam ceremoniæ gentium vanæ ſunt ; lignum eſt è ſylva reſectum, opus fabri lignarii, aut fuſura :* [4] *Argento & auro exornant utrumque, & malleis clavíſque confirmant, ne moveantur.* [MS.Ox. [6] *Non eſt ſimilis tui Domine, maximus es, & maximum nomen tuum potentiâ.* [7] *Et quiſnam eſt ex omnibus regibus terræ qui te non revereatur : cùm tibi convenit regnum : nam inter omnes ſapientes gentium, & inter omnia regna non eſt par tibi.* [8] *Doctrina verò timendi deos ligneos, & cultus eorum, & ceſſabit & peribit ſimul.*] [9] *Argentum ſunt inciſum, ideo non ambulant ; argentum ſolidum è Tharſis advectum, aut aurum Mophaz, manus aurificis, omnia artificum opificia : veſtiunt ea hyacintho & purpurâ, & geſtata vehuntur, quia non gradiuntur.* [MS.Ox. [10] *Dominus autem Deus veritatis : & ille vivorum Deus eſt, & rex ſeculorum : ab ira ejus contremiſcet terra, neque ſubſtinebunt gentes indignationem ejus.*] [5] *Ne timeatis hæc, quia neqꝫ malum inferunt, neque ullum eſt in eis emolumentum.* [11] *Ita dicatur illis, dii qui cœlum ac terram non fecerunt, pereant de terra & de ſub cœlo iſto.* [12] *Dominus terram fecit virtute ſuâ, ſtabilivit orbem habitabilem ſapientiâ ſuâ, ſuoqꝫ intellectu cœlum extendit, & aquæ copiam in cœlo :* [13] *Extrahit nubes ab extremo terræ, facit imbri fulgura, & profert fulgorem de theſauris ſuis.* [14] *Cognitionis imperitus eſt omnis homo, pudefactus eſt omnis aurifex ſculptilibus ſuis : mendacium enim conflaverunt, res in quibus non eſt ſpiritus,* [15] *Quæ vanæ ſunt, opera ludicra : tempore viſitationis veſtræ peribunt.* [16] *Non eſt hæc eadem portio Jacobi ; nam plaſmator omnium eſt hæreditas ejus, Dominus nomen ejus.* [17] *Recipe facultates tuas extrinſecus O quæ habitas inter attonitos.*

יִרְמְיָה: יא

vice in terræ habitatores *jaciens funda ego* Ecce :Dominus dixit ſic Quia
18 כִּי־כֹה אָמַר יְהוָה הִנְנִי קוֹלֵעַ אֶת־יוֹשְׁבֵי הָאָרֶץ בַּפַּעַם
ſuper mihi Væ .inveniant ut *eis faciam anguſtiam* & : hac
19 הַזֹּאת וַהֲצֵרוֹתִי לָהֶם לְמַעַן יִמְצָאוּ׃ אוֹי־לִי עַל־
hanc Profectò : *dixi* ego & : mea plaga eſt *doloroſa* ,mea contritione
שִׁבְרִי נַחְלָה מַכָּתִי וַאֲנִי אָמַרְתִּי אַךְ זֶה
mei funiculi omnes & ,eſt vaſtatũ meũ *Tentorium* .*eam feram &* infirmitatẽ
20 חֳלִי וְאֶשָּׂאֶנּוּ׃ אָהֳלִי שֻׁדָּד וְכָל־מֵיתָרַי
,meũ tẽtoriũ ultrà *extẽdens* non:*ipſi* nõ *&*,me *ſunt egreſſi* mei filii :ſunt dirupti
נִתָּקוּ בָּנַי יְצָאֻנִי וְאֵינָם אֵין־נֹטֶה עוֹד אָהֳלִי
non Dominum &,paſtores ſunt effecti *bruti* Quia .meas cortinas *erigens* &
21 וּמֵקִים יְרִיעוֹתָי׃ כִּי נִבְעֲרוּ הָרֹעִים וְאֶת־יְהוָה לֹא
Vox .eſt *diſperſa* eorũ *paſcua* omnis &,intellexerũt non Propterea.quæſierũt
22 דָרָשׁוּ עַל־כֵּן לֹא הִשְׂכִּילוּ וְכָל־מַרְעִיתָם נְפוֹצָה׃ קוֹל
ponendum ad,Aquilonis terra de magna cõmotio & ,venit ecce auditionis
שְׁמוּעָה הִנֵּה בָאָה וְרַעַשׁ גָּדוֹל מֵאֶרֶץ צָפוֹן לָשׂוּם
quod Domine Novi .draconũ habitaculũ,ſolitudinẽ Jehudah civitates
23 אֶת־עָרֵי יְהוּדָה שְׁמָמָה מְעוֹן תַּנִּים׃ יָדַעְתִּי יְהוָה כִּי
.ſuũ greſſum *præparare &* ,ambulantis viri nec : ejus via hominis non
לֹא לָאָדָם דַּרְכּוֹ לֹא־לְאִישׁ הֹלֵךְ וְהָכִין אֶת־צַעֲדוֹ׃
fortè ne ,tuo *naſo* in non ,judicio in veruntamen ,Domine me Corripe
24 יַסְּרֵנִי יְהוָה אַךְ בְּמִשְׁפָּט אַל־בְּאַפְּךָ פֶּן־
quæ gentes ſuper tuam *excandeſcentiam* Effunde .me facias diminuere
25 תַּמְעִטֵנִי׃ שְׁפֹךְ חֲמָתְךָ עַל הַגּוֹיִם אֲשֶׁר
:invocaverunt nõ *tuo nomine in* quæ *familias* ſuper &,te cognoverũt non
לֹא־יְדָעוּךָ וְעַל מִשְׁפָּחוֹת אֲשֶׁר בְּשִׁמְךָ לֹא קָרָאוּ
,eũ conſumpſerunt &,eum devoraverunt & , Jahacob comederunt quia
כִּי־אָכְלוּ אֶת־יַעֲקֹב וַאֲכָלֻהוּ וַיְכַלֻּהוּ
.fecerunt deſolare ejus habitaculum &
וְאֶת־נָוֵהוּ הֵשַׁמּוּ׃

CAP. XI. יא

Audite :*dicendũ ad*,Domino à Irmejahu ad fuit quod Verbum
1 הַדָּבָר אֲשֶׁר־הָיָה אֶל־יִרְמְיָהוּ מֵאֵת יְהוָה לֵאמֹר׃ שִׁמְעוּ
2 *ſuper* & ,Jehudah *virum* ad *loquemini* & , hujus pacti verba
אֶת־דִּבְרֵי הַבְּרִית הַזֹּאת וְדִבַּרְתֶּם אֶל־אִישׁ יְהוּדָה וְעַל־
Deus Dominus dixit Sic , eos ad dices Et .Jeruſalaim habitatores
3 יֹשְׁבֵי יְרוּשָׁלָם׃ וְאָמַרְתָּ אֲלֵיהֶם כֹּה־אָמַר יְהוָה אֱלֹהֵי
pacti verbis *audierit* non *qui vir* Maledictꝰ : Iſrael
יִשְׂרָאֵל אָרוּר הָאִישׁ אֲשֶׁר לֹא יִשְׁמַע אֶת־דִּבְרֵי הַבְּרִית
eos *me educere* die in veſtris patribus præcepi Quod .hujus
4 הַזֹּאת׃ אֲשֶׁר צִוִּיתִי אֶת־אֲבוֹתֵיכֶם בְּיוֹם הוֹצִיאִי־אוֹתָם
facite & ,*mea voce in* Audite :dicẽdo,ferrea fornace è,Ægypti terra è
מֵאֶרֶץ־מִצְרַיִם מִכּוּר הַבַּרְזֶל לֵאמֹר שִׁמְעוּ בְקוֹלִי וַעֲשִׂיתֶם
,populũ in mihi eritis & , vobis præcepero quæ omnia juxta ea
אוֹתָם כְּכֹל אֲשֶׁר־אֲצַוֶּה אֶתְכֶם וִהְיִיתֶם לִי לְעָם
juramentũ *ſtatuere Pro* .Deum in vobis ero ego &
5 וְאָנֹכִי אֶהְיֶה לָכֶם לֵאלֹהִים׃ לְמַעַן הָקִים אֶת־הַשְּׁבוּעָה
lacte fluentẽ terram eis *dandum ad* veſtris patribus juravi quod
אֲשֶׁר־נִשְׁבַּעְתִּי לַאֲבוֹתֵיכֶם לָתֵת לָהֶם אֶרֶץ זָבַת חָלָב
dixit Et.Domine Amen : dixi &,reſpondi Et .hanc diẽ ſecundũ,melle &
6 וּדְבַשׁ כַּיּוֹם הַזֶּה וָאַעַן וָאֹמַר אָמֵן יְהוָה׃ וַיֹּאמֶר
,Jehudah civitatibꝰ in hæc verba omnia Prædica :me ad Dominꝰ
יְהוָה אֵלַי קְרָא אֶת־כָּל־הַדְּבָרִים הָאֵלֶּה בְּעָרֵי יְהוּדָה
, hujus pacti verba Audite :dicendo,Jeruſalaim plateis in &
וּבְחֻצוֹת יְרוּשָׁלָם לֵאמֹר שִׁמְעוּ אֶת־דִּבְרֵי הַבְּרִית הַזֹּאת
veſtros patres in ſum conteſtatus conteſtando Quia .ea *facietis* &
7 וַעֲשִׂיתֶם אוֹתָם׃ כִּי הָעֵד הַעִדֹתִי בַּאֲבוֹתֵיכֶם
,hanc diem ad uſque ,Ægypti terra è eos *me facere* aſcendere die in
בְּיוֹם הַעֲלוֹתִי אוֹתָם מֵאֶרֶץ מִצְרַיִם עַד־הַיּוֹם הַזֶּה
.*mea voce in* Audite : dicendo,conteſtando &,ſurgendo manè
הַשְׁכֵּם וְהָעֵד לֵאמֹר שִׁמְעוּ בְּקוֹלִי׃

Verſio VULG. LAT.

18 Quia hæc dicit Dominus; Ecce
ego longè projiciam habitatores
terræ in hac vice: & tribulabo
19 eos ita ut inveniantur. Væ mihi
ſuper contritione mea, peſſimâ
plagâ meâ. Ego autem dixi; Pla-
nè hæc infirmitas mea eſt, & por-
20 tabo illam. Tabernaculũ meum
vaſtatum eſt, omnes funiculi mei
dirupti ſunt, filii mei exierunt à
me, & non ſubſiſtunt: non eſt
qui extendat ultrà tentorium
meum, & erigat pelles meas.
21 Quia ſtultè egerunt paſtores, &
Dominum non quæſierunt: pro-
ptereà non intellexerunt, & o-
mnis grex eorum diſperſus eſt.
22 Vox auditionis ecce venit, &
commotio magna de terra Aqui-
lonis: ut ponat civitates Juda ſo-
litudinem, & habitaculum draco-
23 num. Scio, Domine, quia non eſt
hominis via ejus: nec viri eſt ut
ambulet, & dirigat greſſus ſuos,
24 Corripe me, Domine, veruntamen in judicio; & non in furore
tuo, ne fortè ad nihilum redigas
25 me. Effunde indignationẽ tuam
ſuper Gentes, quæ non cognove-
runt te; & ſuper provincias, quæ
nomen tuum non invocaverunt:
quia comederunt Jacob & devo-
raverunt eum, & conſumpſerunt
illum, et decus ejus diſſipaverunt.

CAP. XI.

1 VErbum, quod factum eſt à
Domino ad Jeremiam, dicens;
2 Audite verba pacti hujus, & lo-
quimini ad viros Juda, & habi-
3 tatores Jeruſalem, Et dices ad
eos; Hæc dicit Dominus Deus
Iſrael; Maledictus vir, qui non
4 audierit verba pacti hujus, Quod
præcepi patribus veſtris, in die
quâ eduxi eos de terra Ægypti,
de fornace ferrea, dicens; Audi-
te vocem meam, & facite omnia
quæ præcipio vobis, et eritis mihi
in populum, & ego ero vobis in
5 Deum: Ut ſuſcitem juramentũ:
quod juravi patribus veſtris, da-
turum me eis terram fluentẽ lacte
& melle, ſicut eſt dies hæc. Et re-
ſpondi, & dixi; Amen, Domine.
6 Et dixit Dominus ad me; Voci-
ferare omnia verba hæc in civi-
tatibus Juda, & foris Jeruſalem,
dicens; Audite verba pacti hu-
7 jus, & facite illa: Quia conte-
ſtans conteſtatus ſum patres ve-
ſtros, in die quâ eduxi eos de
terra Ægypti, uſque ad diem
hanc: manè conſurgens conte-
ſtatus ſum, & dixi; Audite vo-
cem meam.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

18 Ὅτι τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ σκελίζω
τοὺς κατοικοῦντας τὴν γῆν ταύτην ἐν θλί-
19 ψει, ὅπως εὑρεθῇ ἡ πληγή σου. Οὐαὶ ἐ-
πὶ συντρίμματί σου, ἀλγηρὰ ἡ πληγή
σου· (λ) κἀγὼ εἶπα, Ὄντως τοῦτο τὸ (μ)
20 τραῦμά σου, καὶ κατέλαβέ σε. Ἡ σκηνή
σου ἐταλαιπώρησεν, ὤλετο· καὶ πᾶσαι αἱ
δέρρεις σου διεσπάσθησαν. οἱ υἱοί μου καὶ τὰ
πρόβατά μου οὐκ εἰσίν, οὐκ ἔστιν ἔτι τόπος
τῆς σκηνῆς μου, τόπος τῶν δέρρεών μου.
21 Ὅτι οἱ (ν) ποιμένες ἠφρονεύσαντο, καὶ
τὸν κύριον οὐκ (ξ) ἐζήτησαν· διὰ τοῦτο οὐκ
ἐνόησε πᾶσα ἡ νομή, καὶ διεσκορπίσθησαν.
22 Φωνὴ ἀκοῆς ἰδοὺ ἔρχεται καὶ σεισμὸς μέγας
ἐκ γῆς Βορρᾶ, τοῦ τάξαι τὰς πόλεις Ἰούδα
εἰς ἀφανισμόν, καὶ κοίτην στρουθῶν. Οἶδα
23 κύριε ὅτι οὐχὶ τοῦ ἀνθρώπου ἡ ὁδὸς αὐτοῦ, οὐ-
δὲ ἀνὴρ πορεύσεται καὶ κατορθώσει πορείαν
24 αὐτοῦ. Παίδευσον ἡμᾶς κύριε, πλὴν ἐν κρί-
σει, καὶ μὴ ἐν θυμῷ, ἵνα μὴ ὀλίγους ἡμᾶς
25 ποιήσῃς. Ἔκχεον (ο) τὸν θυμόν σου ἐπὶ
ἔθνη τὰ μὴ (π) εἰδότα σε, καὶ ἐπὶ γενεὰς
αἳ τὸ ὄνομά σου οὐκ ἐπεκαλέσαντο, ὅτι κα-
τέφαγον τὸν Ἰακὼβ καὶ ἐξανήλωσαν (ρ) αὐ-
τόν, καὶ τὴν νομὴν αὐτοῦ ἠρήμωσαν.

Quia hæc dicit Dominus; Ec- 18
ce ego ſupplantabo habitatores
terræ hujus in tribulatione; ut
inveniatur plaga tua. Væ ſu- 19
per contritione tua: doloris ple-
na eſt plaga tua. Et ego dixi;
Planè hoc eſt vulnus (f) tuum:
& apprehendit te. Tabernacu- 20
lum tuum vaſtatum eſt, periit, &
omnes pelles tuæ conſciſſæ ſunt.
Filii mei, & oves meæ non ſunt:
non eſt locus ultrà tabernaculi
mei, locus pellium mearum. Quia 21
paſtores ſtultè egerunt; & Do-
minum non quæſierunt. Propter-
eà non intellexit omnis grex: &
diſperſi ſunt: Vox auditionis 22
ecce venit, & commotio magna
de terra Aquilonis, ut ponat ci-
vitates Juda in ſolitudinem, &
cubile ſtruthionum. Scio, Domine, 23
quia non eſt hominis via ejus:
neque vir ibit, & diriget greſſum
ſuum. Corripe nos, Domine, ve- 24
runtamen in judicio, & non in
furore: ut paucos non facias nos:
Effunde indignationem tuam ſu- 25
per gentes, quæ non cognoverunt
te, & ſuper generationes, quæ
nomen tuum non invocaverunt:
quia devoraverunt Jacob, &
conſumpſerunt eum, & paſcuam ejus ad ſolitudinem redegerunt.

MS.A. (λ) καὶ ἐγὼ (μ) τραῦμα, οὐκ ἐκατέλαβέν με. (ν) ποιμαίνες μου *ἠυφρονεύσαντο, (ξ) ἐξεζήτησαν· (ο) τὴν ὀργήν (π) ἰδόντα (ρ) τὸν Ἰσραήλ,

ΚΕΦ. ια΄.

1 Ὁ ΛΌΓΟΣ Ὁ ΓΕΝΌΜΕΝΟΣ ΠΑ-
ΡᾺ ΚΥΡΊΟΥ ΠΡῸΣ ἹΕΡΕΜΊΑΝ,
2 ΛΈΓΩΝ, Ἀκούσατε τοὺς λόγους τῆς δια-
θήκης ταύτης, καὶ λαλήσεις πρὸς ἄνδρας Ἰ-
ούδα, (α) καὶ πρὸς τοὺς κατοικοῦντας ἐν Ἱ-
3 ερουσαλήμ, Καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτούς, Τάδε
λέγει κύριος ὁ θεὸς Ἰσραήλ, Ἐπικατάρα-
τος ὁ ἄνθρωπος, ὃς οὐκ ἀκούσεται τῶν λόγων
4 τῆς διαθήκης ταύτης, (β) Ἧς ἐνετειλά-
μην τοῖς πατράσιν (˙) ὑμῶν, ἐν ἡμέρᾳ ᾗ ἀνή-
γαγον αὐτοὺς ἐκ γῆς Αἰγύπτου ἐκ καμίνου
τῆς σιδηρᾶς, λέγων, Ἀκούσατε τῆς φω-
νῆς μου, καὶ ποιήσατε πάντα (γ) ὅσα ἐὰν
ἐντείλωμαι ὑμῖν, καὶ ἔσεσθέ μοι εἰς λαόν, καὶ
5 ἐγὼ ἔσομαι ὑμῖν εἰς θεόν· Ὅπως στήσω
τὸν ὅρκον μου, ὃν ὤμοσα τοῖς πατράσιν
(δ) ὑμῶν, τοῦ δοῦναι αὐτοῖς γῆν ῥέουσαν
γάλα καὶ μέλι, (ε) καθὼς ἡ ἡμέρα αὕτη. καὶ
6 ἀπεκρίθην, καὶ εἶπα, Γένοιτο κύριε. Καὶ
εἶπε κύριος πρός με, Ἀνάγνωθι τοὺς λό-
γους τούτους ἐν πόλεσιν Ἰούδα, καὶ ἔξω-
θεν Ἱερουσαλήμ, λέγων, Ἀκούσατε τοὺς λό-
γους τῆς διαθήκης ταύτης, καὶ ποιήσατε αὐτούς.

CAP. XI.

VERBUM, quod factum 1
eſt à Domino ad Hieremiam, di-
cens; Audite verba teſtamen- 2
ti hujus: Et loquêris ad viros
Juda, & ad habitatores Hieru-
ſalem: Et dices ad eos; Hæc 3
dicit Dominus Deus Iſrael;
Maledictus homo, qui non au-
diet verba teſtamenti hujus,
Quod mandavi patribus veſtris 4
in die, quâ eduxi eos de terra
Ægypti, de fornace ferrea, di-
cens; Audite vocem meam, &
facite omnia quæcunque manda-
vero vobis: & eritis mihi in
populum: & ego ero vobis in
Deum: Ut ſtatuam juramen- 5
tum meum, quod juravi patri-
bus veſtris, daturum me eis ter-
ram fluentem lacte, & melle,
ſicut eſt dies hæc. Et reſpondi,
& dixi; Fiat, Domine. Et di- 6
xit Dominus ad me; Lege ver-
ba hæc in civitatibus Juda, &
foris Hieruſalem, dicens; Au-
dite verba teſtamenti hujus &
facite (a) illa.

MS.A. (α) καὶ τοὺς κατοικοῦντας Ἱερουσαλήμ, (β) Ἣν (˙) * ἡμῶν (γ) ὅσα ἐντείλωμαι (δ) * ἡμῶν, (ε) ὡς

תַּרְגּוּם יוֹנָתָן Targum JONATHAN.

18 אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ הָא אֲנָא מַיְתֵי עָקָא עַל עַמָּא הָדֵין וּכְמָה דְשָׁדַן אַבְנָא בְּקַלְעָא כֵּן אֲבַדַּר
19 יַת יָתְבֵי אַרְעָא בְּזִמְנָא הָדָא וְאָעִיק לְהוֹן בְּדִיל דִיקַבְּלוּן פּוּרְעָנוּת חוֹבֵיהוֹן׃ וַי לִי עַל תַּבְרִי
20 מִמַּרְעָא מַחְתִּי וַאֲנָא אֲמָרִית בְּרַם דֵּין מַרְעִי וְאֶסוֹבְרִנֵּיהּ׃ אַרְעִי חֲרוּבַת וְכָל קִרְוַי אִתְבְּזִיזָא
21 עַמִּי גְלוֹ וְלֵיתְנוּן לֵית דִמְתַח עוֹד מַשְׁכְּנִי וּמְקֵים יְרִיעָתִי׃ אֲרֵי אִטַּפָּשׁוּ מַלְכַיָּא וְאוּלְפַן מִן
22 קֳדָם יְיָ לָא תְבַעוּ עַל כֵּן לָא יִצְלְחוּן וְכָל עַמְּהוֹן יִתְבַּדְּרוּן׃ קָל בְּסוּרְתָא הָא אָתְיָא וּתְבָרָא
23 רַבָּא מֵאֲרַע צִפּוּנָא לְשַׁוָּאָה יַת קִרְוַיָּא דְבֵית יְהוּדָה לְצָדוּ מְדוֹר יְרוֹדִין׃ יְדַעְנָא יְיָ אֲרֵי לָא
24 לֶאֱנָשָׁא אוֹרְחֵיהּ וְלָא לִגְבַר דְּאָזֵיל וּמְתַקֵּן יַת פְּסִיעָתֵיהּ׃ אַיְתֵא עֲלֵיהוֹן יִסּוּרִין יְיָ בְּרַם
25 בְּדִין חֲשׁוֹךְ לָא יִתְקַף רוּגְזָךְ בְּהוֹן דִּלְמָא יִזְעֲרוּן׃ שְׁפוֹךְ חֶמְתָּךְ עַל עַמְמַיָּא דְּלָא אֲלִיפוּ
לְמֵידַע דַּחַלְתָּךְ וְעַל מַלְכְוָתָא דִּי בְּפָלְחַן שְׁמָךְ לָא תְבַעוּ אֲרֵי שַׁלִּיטוּ בִדְבֵית יַעֲקֹב וּבְזוֹ
נִכְסֵיהוֹן וְשֵׁיצִיאוּנוּן וְיַת מְדוֹרְהוֹן אַצְדִּיאוּ׃ יא
1 פִּתְגָם נְבוּאָה דַּהֲוָה עִם יִרְמְיָה מִן קֳדָם יְיָ לְמֵימַר׃ קַבִּילוּ יַת פִּתְגָמֵי קְיָמָא הָדֵין וּתְמַלְּלוּן
2
3 עִם אֱנָשׁ יְהוּדָה וְעַל יָתְבֵי יְרוּשְׁלֶם׃ וְתֵימַר לְהוֹן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל לֵיט גַּבְרָא
4 דְּלָא יְקַבֵּל יַת פִּתְגָמֵי קְיָמָא הָדֵין׃ דְּפַקֵּדִית יַת אֲבָהָתְכוֹן בְּיוֹמָא דְאַפֵּקִית יָתְהוֹן מֵאַרְעָא
דְמִצְרַיִם מִכּוּרָא דְבַרְזְלָא לְמֵימַר קַבִּילוּ לְמֵימְרִי וְתַעְבְּדוּן יָתְהוֹן כְּכֹל דַּאֲפַקֵּד יַתְכוֹן
5 וּתְהוֹן קֳדָמַי לְעַם וַאֲנָא אֱהֵוֵי לְכוֹן לֶאֱלָהּ׃ בְּדִיל לְקַיָּמָא יַת קְיָמָא דְּקַיֵּמִית לַאֲבָהָתְכוֹן
6 לְמִתַּן לְהוֹן אַרְעָא עָבְדָא חֲלַב וּדְבַשׁ כְּיוֹמָא הָדֵין וַאֲתֵיבִית וַאֲמָרִית אָמֵן יְיָ׃ וַאֲמַר יְיָ לִי
אִתְנַבֵּי יַת כָּל פִּתְגָמַיָּא הָאִלֵּין בְּקִרְוַיָּא דְבֵית יְהוּדָה וּבְשׁוּקֵי יְרוּשְׁלֶם לְמֵימַר קַבִּילוּ יַת
7 פִּתְגָמֵי קְיָמָא הָדֵין וְתַעְבְּדוּן יַתְהוֹן׃ אֲרֵי אַסְהָדָא אַסְהֵדִית בַּאֲבָהָתְכוֹן בְּיוֹמָא דְאַסֵּקִית
יָתְהוֹן מֵאַרְעָא דְמִצְרַיִם וְעַד יוֹמָא הָדֵין מַקְדַּם וּמַסְהֵד לְמֵימַר קַבִּילוּ לְמֵימְרִי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quia hæc dicit Dñs: Ecce ego adducam tribulationem ſuper populũ iſtũ; 18
& ſicut projiciunt lapidem funda, ſic diſpergam habitatores terræ hoc tem-
pore: & tribulabo eos ut recipiant tribulationem peccatorũ ſuorũ. Væ 19
mihi ſuper confractionẽ meã: infirmata eſt plaga mea: & ego dixi: Certè
hæc eſt infirmitas mea, & ſuſtinebo illam. Terra mea deſerta eſt, & omnes 20
urbes meæ direptæ ſunt; populꝰ meꝰ migravit, & non comparet: nec eſt qui
extendat ultrà tabernaculũ meũ, et erigat cortinas meas. Quia inſipientes 21
facti ſunt reges, & doctrinã à facie Dñi non quæſierunt. Proptereà non pro-
ſperabuntur, & omnes populi eorũ diſpergentur. Vox annuntiationis ecce 22
venit, & confractio magna de terra Aquilonis, ut ponã civitates domus Ju-
da in ſolitudinẽ, habitaculũ draconũ. Scio Dñe quia non eſt homini via 23
ejꝰ, nec hominis eſt qui ambulat & dirigit greſſus ſuos. Adduc ſuper eos in- 24
firmitates, veruntamen in judicio *modico*: ne iraſcatur furor tuꝰ contra eos,
ne fortè minuantur. Effunde iram tuã ſuꝑ populos qui non didicerunt ſci- 25
re timorẽ tui, et ſuꝑ regna quæ non quæſierunt cultũ nominis tui; quia do-
minati ſunt domui Jacob, & diripuerunt ſubſtantias eorum, & conſumpſe-
runt eos, & habitacula eorum vaſtarunt.

CAP. XI.

VErbum prophetiæ quod factum eſt ad Jeremiam, à facie Dñi dicentis: 1
Suſcipite verba pacti hujꝰ, & loquimini ad viros Juda, & ad habitatores Je- 2
ruſalem. Et dices eis: Hæc dicit Dñs Deꝰ Iſrael: Maledictus vir qui non 3
ſuſceperit verba pacti hujus. Quod præcepi patribꝰ veſtris in die quo eduxi 4
eos de terra Ægypti ex fornace ferrea, dicens: Obedite verbis meis, & fa-
cite ea juxta omnia quæ præcepi vobis, & eritis coram me in populũ, & ego
ero vobis in Deũ. Ut confirmẽ juramentũ ꝙ juravi patribꝰ veſtris, ꝙ darem 5
eis terram producentẽ lac & mel, ſicut eſt dies hic. Et reſpondi, & dixi:
Amen Dñe. Et dixit Dñs ad me: Prophetiza omnia verba iſta in civita- 6
tibus domus Juda, & in vicis Jeruſalẽ, dicens: Suſcipite verba pacti hujus,
& facite ea. Quia conteſtans conteſtatus ſum patres veſtros quo die eduxi 7
eos ex terra Ægypti, uſque in diem hanc, manè conſurgens & conteſtans,
dicens: Obedite verbo meo.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܡܫܪܩܠ ܐܢܐ ܠܥܡܘܪܝܗ ܕܐܪܥܐ ܗܕܐ ܒܙܒܢܐ ܗܢܐ. 18
ܕܢܒܥܘܢܢܝ ܘܢܫܟܚܘܢܢܝ. * ܘܝ ܠܝ ܥܠ ܬܒܪܝ. ܕܟܪܝܗܘܢ ܡܚܘܬܝ. ܘܐܢܐ ܐܡܪܬ. ܗܢܘ 19
ܟܐܒܝ ܕܐܣܝܒܪܝܘܗܝ. * ܡܫܟܢܝ ܐܬܒܙܙ. ܘܟܠܗܘܢ ܐܫܬܪܝܘ ܐܛܢܒܝ. ܒܢܝ ܢܦܩܘ 20
ܡܢܝ ܘܠܝܬ ܐܢܘܢ. ܠܝܬ ܕܢܩܝܡ ܬܘܒ ܡܫܟܢܝ. ܘܡܩܝܡ ܝܪܝܥܬܝ. * ܡܛܠ ܕܐܣܛܟܠܘ 21
ܪܥܘܬܐ ܘܠܡܪܝܐ ܠܐ ܒܥܘ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܣܬܟܠܘ. ܟܠܗ ܡܪܥܝܬܗܘܢ ܐܬܒܕܪܬ. * ܩܠܐ 22
ܕܫܡܥܬܐ ܗܐ ܐܬܬ. ܘܙܘܥܐ ܪܒܐ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܓܪܒܝܐ. ܠܡܣܡ ܠܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ ܠܚܘܪܒܐ.
ܠܡܥܡܪܐ ܠܬܢܝܢܐ. * ܝܕܥ ܐܢܐ ܕܐܘܪܚܬܗ ܕܡܪܝܐ ܠܐ ܗܘܬ ܐܝܟ ܕܒܪܢܫܐ. ܘܠܐ ܐܝܟ ܕܓܒܪܐ ܕܐܙܠ 23
ܘܡܬܩܢ ܗܠܟܬܗ. * ܪܕܝܢܝ ܡܪܝܐ ܒܕܝܢܐ. ܘܠܐ ܒܪܘܓܙܟ. ܕܠܡܐ ܬܒܨܪܢܝ. * ܐܫܘܕ ܚܡܬܟ 24 25
ܥܠ ܥܡܡܐ ܕܠܐ ܝܕܥܘܟ. ܘܥܠ ܫܪܒܬܐ ܕܒܫܡܟ ܠܐ ܩܪܘ. ܕܐܟܠܘܗܝ ܠܝܥܩܘܒ. ܘܐܟܠܘܗܝ
ܘܫܠܡܘܗܝ. ܘܠܥܡܪܗ ܐܚܪܒܘ. * ܩܦܠܐ * ܫܠ *

* ܦܬܓܡܐ ܕܗܘܐ ܠܘܬ ܐܪܡܝܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܫܡܥ ܦܬܓܡܝ ܩܝܡܐ ܗܢܐ. 1 2
ܘܐܡܪ ܠܓܒܪܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܠܥܡܘܪܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. * ܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ 3
ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܐܝܠ. ܠܝܛ ܗܘ ܓܒܪܐ ܕܠܐ ܢܫܡܥ ܦܬܓܡܝ ܩܝܡܐ ܗܢܐ. * ܕܦܩܕܬ 4
ܠܐܒܗܝܟܘܢ. ܒܝܘܡܐ ܕܐܦܩܬ ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ ܡܢ ܩܡܝܢܐ ܕܦܪܙܠܐ. ܘܐܡܪܬ. ܫܡܥܘ
ܒܩܠܝ. ܘܥܒܕܘ ܟܠ ܕܡܦܩܕ ܐܢܐ ܠܟܘܢ. ܘܬܗܘܘܢ ܠܝ ܠܥܡܐ. ܘܐܢܐ ܐܗܘܐ ܠܟܘܢ ܠܐܠܗܐ.
* ܘܐܩܝܡ ܡܘܡܬܐ ܕܝܡܝܬ ܠܐܒܗܝܟܘܢ. ܠܡܬܠ ܠܗܘܢ ܐܪܥܐ ܕܡܪܕܝܐ ܚܠܒܐ ܘܕܒܫܐ. ܐܝܟ 5
ܝܘܡܢܐ. ܘܥܢܝܬ ܘܐܡܪܬ. ܐܡܝܢ ܡܪܝܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܩܪܝ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ 6
ܒܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܒܫܘܩܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܘܐܡܪ. ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܝ ܩܝܡܐ ܗܢܐ. ܘܥܒܕܘ
ܐܢܘܢ. * ܡܛܠ ܕܡܣܗܕܘ ܐܣܗܕܬ ܒܐܒܗܝܟܘܢ ܩܕܡܝܐ. ܒܝܘܡܐ ܕܐܣܩܬ ܐܢܘܢ 7
ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܥܕܡܐ ܠܝܘܡܢܐ. ܩܕܡܬ ܘܐܡܪܬ. ܫܡܥܘ ܒܩܠܝ.

* Nam ſic dicit Dominus, Ecce irretiam habi- 18
tatores hujus terræ hoc tempore, ut quærant
me & inveniant. Hei mihi propter fractio- 19
nem meam, nam dolorifica eſt plaga mea: ego
verò dixi, Hic eſt dolor meus, perferam il-
lum. Tentorium meum direptum eſt, & o- 20
mnes funiculi ejus dirupti: filii mei egreſſi ſunt
à me, & non extant; non eſt qui denuo figat
tentorium meum, & erigat aulæa mea. Nam 21
deſipuerunt paſtores, & Dominum non quæ-
ſierunt: quia non fuerunt ſolertes, totus grex
eorum diſſipatus eſt. Vox rumoris funeſti ecce 22
venit, et commotio magna de terra Aquilonis,
ad redigendas civitates Judæ in ſolitudinem,
in habitationem draconum. Scio vias Do- 23
mini non eſſe ſicut hominis, neque ut homi-
nis qui vadit diſponítque negotium ſuum.
Caſtiga me Domine cum modo, non autem 24
in furore tuo, ne fortè ad exiguum numerum
me redigas. Effunde iram tuam in gentes 25
quæ te non noverunt, & in nationes quæ no-
men tuum non invocant: comederunt enim
Jacobum, comederunt eum et conſumpſerunt,
& habitationem ejus vaſtaverunt.

CAP. XI.

Sermo qui factus eſt ad Jeremiam à Domi- 1
no, dicendo; Audi ſermonem fœderis hu- 2
jus, & dic viris Judæ & civibus Jeruſalem:
Dic *inquam eis*, Sic ait Dominus potentiſſi- 3
mus, Deus Iſraelis; Maledictus vir ille qui
non auſcultaverit ſermones fœderis hujus,
Quod præcipiens majoribus veſtris die quâ 4
eduxi eos de terra Ægypti de fornace ferri,
dixi; Auſcultate voci meæ, & facite quicquid
præcipio vobis, eritíſque mihi populus, & ego
ero vobis Deus; Et præſtabo jusjurandum 5
quod juravi majoribus veſtris, me daturum
vobis terram lacte & melle manantem, ut eſt
hodiernâ die. Cui reſpondens dixi; Amen,
Domine. Tum dixit mihi Dominus, Reci- 6
ta omnes ſermones iſtos in civitatibus Judæ
& in vicis Jeroſolymæ, & dic; Audite ſer-
mones fœderis hujus, & facite eos. Nam 7
conteſtans conteſtatus ſum priſcos majores
veſtros quâ die evexi eos de terra Ægypti,
ad hanc uſque diem, præmiſi, & dixi; Au-
ſcultate voci meæ:

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* لان هكذا يقول الرب ٠ ها انا اعرقل سكان هذه الارض بشدة ٠ لكي يوجد ضربتك * ويل 18 19
على انكسارك ٠ ضربتك موجعة * وانا قلت يقينا هذا الجرح لم يدركني * مسكنك شقي 20
وهلك ٠ وكل شقاقك تمزقت ٠ بني وخرافي ليسوا موجودين ٠ ليس موضع موجودا بعد لخبائي *
ولا موضع لشقاقي * لان رعاتي جهلوا ولم يطلبوا الرب ٠ لاجل هذا لم ينفعهم كل المرعى 21
وتفرقوا * صوت سماع ها اقبل وزلزلة عظيمة من ارض الجربياء ٠ لترتيب بلدان يهودا للفناء 22
ومرقدا للنعام * علمت يا رب ان ليس للانسان طريقه ٠ ولا رجل يسير ويقوم مسلكه * ادبنا يا 23 24
رب لا بحكم ولا بغضب ٠ لكيلا تجعلنا قليلين * افض غضبك على الامم التي لم تعرفك * 25
وعلى الاجيال التي لم تدع اسمك ٠ لانهم اكلوا يعقوب واّبادوا اسرائيل وخربوا ديارة *

* الفصل الحادي عشر *

* القول الصاير من قبل الرب الى ارمياء قايلا ٠ * اسمعوا كلمات هذا العهد ٠ وتكلم مع 1 2
رجال يهودا وسكان اورشليم وتقول لهم * هكذا يقول الرب اله اسرائيل ٠ ملعون الانسان الذي 3
لا يسمع كلام هذا العهد * الذي به اوصيت لابائكم في اليوم الذي اصعدتهم فيه من 4
ارض مصر من اتون الحديد ٠ قايلا اسمعوا صوتي واسمعوا كلما اوصيكم به ٠ وتكونون
لي شعبا وانا اكون لكم الها * لكي اقيم قسمي الذي اقسمت به لابائكم * ان اعطيهم 5
ارضا تفيض لبنا وعسلا مثل هذا اليوم * فاجبت وقلت يكون يا رب * وقال الرب لي ٠ اقرا 6
هذه الكلمات في مدن يهودا ومن خارج اورشليم ٠ قايلا اسمعوا كلمات هذا العهد واعملوا
بهن ٠ فلم يعملوا [MS. Ox. * لانني ناشدت اباكم واوعزت اليهم من يوم اخرجتهم من 7
ارض مصر * والى يومنا * وتقدمت وبعثت اليهم * وقلت اسمعوا قولي *

Sic enim dicit Dominus, Ecce ego terræ 18
hujus incolas calamitate involvam, ut
inveniatur plaga tua. Heu de contriti- 19
one tua: plaga tua dolore plena eſt: ego
autem dicebam, Certè vulnus hoc non
attinget me. Tabernaculum tuum miſerè 20
periit, & omnia aulæa tua dilacerata
ſunt: filii mei & agni mei non extant;
non extat ampliùs locus tentorio meo, ne-
que locus aulæis meis. Nam paſtores mei 21
deſipuerunt, nec Dominum quæſierunt;
iccirco nullum paſcuum profuit eis, & di-
ſperſi ſunt. Vox ſonora ecce advenit 22
magno cum tremore de terra Aquilonari,
ut diſponat regiones Judæ in exitium &
cubile quadrupedium. Novi O Domine, 23
quòd non ſit homini via, nec quiſquam
incedat iterque ſuum dirigat. Caſtiga 24
nos O Domine, non in judicio neque cum
furore, ne paucos nos reddas. Effunde 25
furorem tuum ſuper gentes quæ te minimè
nôrunt, & ſuper nationes quæ non invo-
caverunt nomen tuum; quia comederunt
Jacobum, & conſumpſerunt Iſraelem,
& habitationes ejus deſtruxerunt.

CAP. XI.

Sermo factus à Domino ad Jeremiam, 1
dicens; *Audite verba hujus fœderis, &* 2
alloquere viros Judæ & habitatores Je-
ruſalem, dicaſque ad eos; Sic ait Domi- 3
nus Deus Iſraelis, Maledictus homo qui
non acquieverit verbis hujus fœderis,
Quod mandavi patribus veſtris quo die 4
extraxi eos è terra Ægypti de fornace
ferri, dicens; Acquieſcite voci meæ, &
auſcultate quicquid præcipio vobis, eri-
tiſque mihi populus, & ego ero vobis
Deus: ut tuear juramentum meum quod 5
juravi patribus veſtris, daturum me ipſis
terram affluentem lacte & melle, ut ho-
diernâ die. Cui reſpondi ac dixi, Sit O
Domine. Deinde dixit mihi Dominus, 6
Recita hæc urbibus Judæ & in foris
Jeroſolymæ, dicens; Audite verba hujus
fœderis, & facite ea: ſed non fecerunt.
[MS. Ox. *Quia conteſtatus ſum ego pa-* 7
tres veſtros, & declaravi eis, quo tem-
pore evexi eos de terra Ægypti, ad hanc
uſque diem noſtram, antevertendo, &
mittendo ad eos, dicendoque; Auſcultate
voci meæ:

ירמיה : יא

unuſquiſq; abierunt & :ſuam autem inclinaverunt nec *audiverunt* non Et
8 וְלֹא שָׁמְעוּ וְלֹא־הִטּוּ אֶת־אָזְנָם וַיֵּלְכוּ אִישׁ
verba omnia eos ſuper induxi & : mali ſui cordis *pertinacia* in
בִּשְׁרִירוּת לִבָּם הָרָע וָאָבִיא עֲלֵיהֶם אֶת־כָּל־דִּבְרֵי
dixit Et .fecerunt non & ,*faciendum ad* præcepi quod , hujus pacti
9 הַבְּרִית־הַזֹּאת אֲשֶׁר־צִוִּיתִי לַעֲשׂוֹת וְלֹא עָשׂוּ׃ וַיֹּאמֶר
habitatoribꝰ in &,Jehudah viro in conjuratio eſt Inventa :me ad Dominꝰ
יְהוָה אֵלָי נִמְצָא־קֶשֶׁר בְּאִישׁ יְהוּדָה וּבְיֹשְׁבֵי
qui , priorum ſuorũ patrũ iniquitates ad ſunt Reverſi .Jeruſalaim
10 יְרוּשָׁלָם׃ שָׁבוּ עַל־עֲוֺנֹת אֲבוֹתָם הָרִאשֹׁנִים אֲשֶׁר
Deos poſt abierunt hi Et .meis verbis obtemperare renuerunt
מֵאֲנוּ לִשְׁמוֹעַ אֶת־דְּבָרַי וְהֵמָּה הָלְכוּ אַחֲרֵי אֱלֹהִים
domus & , Iſrael domus diſſipaverunt : eis *ſerviendum ad* alienos
אֲחֵרִים לְעָבְדָם הֵפֵרוּ בֵית־יִשְׂרָאֵל וּבֵית
.eorum patribus cum *excidi* quod , meum pactum Jehudah
יְהוּדָה אֶת־בְּרִיתִי אֲשֶׁר כָּרַתִּי אֶת־אֲבוֹתָם׃
,malum eos *ad adducens* ego Ecce : Dominus dixit ſic Quamobrem
11 לָכֵן כֹּה אָמַר יְהוָה הִנְנִי מֵבִיא אֲלֵיהֶם רָעָה
non & ,me ad clamabunt & *: ipſo ab* exire poterunt non quo
אֲשֶׁר לֹא־יוּכְלוּ לָצֵאת מִמֶּנָּה וְזָעֲקוּ אֵלַי וְלֹא
habitatores & , Jehudah civitates ibunt Et .eos *ad* audiam
12 אֶשְׁמַע אֲלֵיהֶם׃ וְהָלְכוּ עָרֵי יְהוּדָה וְיֹשְׁבֵי
ſuffientes ipſi quibus , Deos ad clamabunt & , Jeruſalaim
יְרוּשָׁלַםִ וְזָעֲקוּ אֶל־הָאֱלֹהִים אֲשֶׁר הֵם מְקַטְּרִים
.eorum mali tempore in eos ſervabunt non ſervando & *; eis*
לָהֶם וְהוֹשֵׁעַ לֹא־יוֹשִׁיעוּ לָהֶם בְּעֵת רָעָתָם׃
numerum & : Jehudah tui Dii fuerunt tuarum civitatum *numerus* Quia
13 כִּי מִסְפַּר עָרֶיךָ הָיוּ אֱלֹהֶיךָ יְהוּדָה וּמִסְפַּר
aras , confuſionis aras poſuiſtis Jeruſalaim platearum
חֻצוֹת יְרוּשָׁלַםִ שַׂמְתֶּם מִזְבְּחוֹת לַבֹּשֶׁת מִזְבְּחוֹת
, hoc populo pro ores ne tu Et .Bahal ſuffiendum ad
14 לְקַטֵּר לַבָּעַל׃ וְאַתָּה אַל־תִּתְפַּלֵּל בְּעַד־הָעָם הַזֶּה
audiens ego non quia : orationem & *præconium* eis pro *leves* ne &
וְאַל־תִּשָּׂא בַעֲדָם רִנָּה וּתְפִלָּה כִּי אֵינֶנִּי שֹׁמֵעַ
meo dilecto Quid .ſuo malo ſuper me ad *eos clamare* tempore *in*
15 בְּעֵת קָרְאָם אֵלַי בְּעַד רָעָתָם׃ מֶה לִידִידִי
ſanctuarii *caro* & , *multas cogitationes ſceleſtas ipſam faciendo* ,mea domo in
בְּבֵיתִי עֲשׂוֹתָהּ הַמְזִמָּתָה הָרַבִּים וּבְשַׂר־קֹדֶשׁ
Olivam .exultâſti tunc tua malitia quia : te *deſuper* tranſibunt
16 יַעַבְרוּ מֵעָלָיִךְ כִּי רָעָתֵכִי אָז תַּעֲלֹזִי׃ זַיִת
: tuum nomen Dominus vocavit *formæ* fructu pulchram *frondoſam*
רַעֲנָן יְפֵה פְרִי־תֹאַר קָרָא יְהוָה שְׁמֵךְ
confregerunt & : eam ſuper *ignem accendit* grandis loquelæ vocem ad
לְקוֹל הֲמוּלָּה גְדֹלָה הִצִּית אֵשׁ עָלֶיהָ וְרָעוּ
te ſuper eſt locutus , te *plantans* exercituum Dominus Et .ejus ramos
17 דָּלִיּוֹתָיו׃ וַיהוָה צְבָאוֹת הַנּוֹטֵעַ אוֹתָךְ דִּבֶּר עָלַיִךְ
quod , Jehudah domus & , Iſrael domus malum propter ,malum
רָעָה בִּגְלַל רָעַת בֵּית־יִשְׂרָאֵל וּבֵית יְהוּדָה אֲשֶׁר
Dominus Et .Bahal *ipſi ſuffiendo* ,me irritandum ad ſibi fecerunt
18 עָשׂוּ לָהֶם לְהַכְעִסֵנִי לְקַטֵּר לַבָּעַל׃ וַיהוָה
ego Et .eorum *conatus* me feciſti videre tunc : ſcivi & ,me fecit ſcire
19 הוֹדִיעַנִי וָאֵדָעָה אָז הִרְאִיתַנִי מַעַלְלֵיהֶם׃ וַאֲנִי
quòd cognovi non & ,jugulandum ad *ducetur* bos ,agnus tanquam
כְּכֶבֶשׂ אַלּוּף יוּבַל לִטְבוֹחַ וְלֹא־יָדַעְתִּי כִּי־
,ejus *pane in lignum* Corrumpamus .cogitationes cogitaverunt me contra
עָלַי חָשְׁבוּ מַחֲשָׁבוֹת נַשְׁחִיתָה עֵץ בְּלַחְמוֹ
memoretur non ejus nomen & ,viventium terra è eum excindamus &
וְנִכְרְתֶנּוּ מֵאֶרֶץ חַיִּים וּשְׁמוֹ לֹא־יִזָּכֵר
.amplius
עוֹד׃

Verſio VULG. LAT.

8 Et non audierunt, nec inclinaverunt aurem ſuam: ſed abierunt unuſquiſque in pravitate cordis ſui mali: & induxi ſuper eos omnia verba pacti hujꝰ, quod præcepi ut facerent, & non fecerunt. 9 Et dixit Dominus ad me; Inventa eſt conjuratio in viris Juda, & in habitatoribus Jeruſalem. 10 Reverſi ſunt ad iniquitates patrum ſuorum priores, qui noluerunt audire verba mea: & hi ergò abierunt poſt deos alienos, ut ſervirent eis: irritum fecerunt domus Iſrael et domus Juda pactum meum, quod pepigi cum patribus eorum. 11 Quam ob rem hæc dicit Dominus; Ecce ego inducam ſuper eos mala, de quibus exire non poterunt: & clamabunt ad me, & non exaudiam eos. 12 Et ibunt civitates Juda, & habitatores Jeruſalem, & clamabunt ad deos, quibus libant, & non ſalvabunt eos in tempore afflictionis eorum. 13 Secundùm numerum enim civitatum tuarum erant dii tui, Juda: & ſecundùm numerum viarum Jeruſalem, poſuiſti aras confuſionis, aras ad libandum Baalim. 14 Tu ergò noli orare pro populo hoc, & ne aſſumas pro eis laudem & orationem: quia non exaudiam in tempore clamoris eorum ad me, in tempore afflictionis eorum. 15 Quid eſt, quòd dilectus meus in domo mea fecit ſcelera multa? numquid carnes ſanctæ auferẽt à te malitias tuas, in quibus gloriata es? 16 Olivam uberem, pulchram, fructiferam, ſpecioſam, vocavit Dominus nomen tuum: ad vocem loquelæ, grandis exarſit ignis in ea, & combuſta ſunt fruteta ejus. 17 Et Dominus exercituum qui plantavit te, locutus eſt ſuper te malum, pro malis domûs Iſrael & domûs Juda, quæ fecerunt ſibi ad irritandum me, libantes Baalim. 18 Tu autem, Domine, demonſtrâſti mihi, & cognovi: tunc oſtendiſti mihi ſtudia eorum. 19 Et ego quaſi agnus manſuetus, qui portatur ad victimam: & non cognovi quia cogitaverunt ſuper me conſilia, dicentes; Mittamus lignum in panem ejus, & eradamus eum de terra viventium, & nomen ejus non memoretur ampliùs.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

8 9 Καὶ οὐκ ἐποίησαν. Καὶ εἶπε κύριος πρός με, Εὑρέθη σύνδεσμος (ζ) ἐν ἀνδράσιν Ἰούδα, καὶ ἐν τοῖς (η) κατοικοῦσιν ἐν 10 Ἱερουσαλήμ. Ἐπεστράφησαν ἐπὶ τὰς ἀδικίας τῶν πατέρων αὐτῶν τῶν πρότερον, οἳ οὐκ (θ) ἠθέλησαν εἰσακοῦσαι τῶν λόγων μου, καὶ ἰδοὺ αὐτοὶ (ι) πορεύονται ὀπίσω θεῶν ἀλλοτρίων, τοῦ δουλεύειν αὐτοῖς. καὶ διεσκέδασαν οἶκος Ἰσραὴλ καὶ οἶκος Ἰούδα τὴν διαθήκην μου, ἣν διεθέμην πρὸς τοὺς πατέρας αὐτῶν. 11 Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω ἐπὶ τὸν λαὸν τοῦτον κακὰ, ἐξ ὧν οὐ δυνήσονται ἐξελθεῖν ἐξ αὐτῶν· καὶ κεκράξονται πρός με, καὶ οὐκ εἰσακούσομαι 12 αὐτῶν. Καὶ πορεύσονται πόλεις Ἰούδα καὶ οἱ κατοικοῦντες Ἱερουσαλὴμ, καὶ κεκράξονται πρὸς τοὺς (κ) θεοὺς, οἷς αὐτοὶ θυμιῶσιν αὐτοῖς, (λ) οἳ μὴ σώσουσιν αὐτοὺς ἐν 13 τῷ καιρῷ τῶν κακῶν αὐτῶν. Ὅτι (μ) κατ᾽ ἀριθμὸν τῶν πόλεών σου ἦσαν θεοί σου Ἰούδα, καὶ (ν) κατ᾽ ἀριθμὸν ἐξόδων τῆς Ἱερουσαλὴμ, (ξ) ἐτάξατε βωμοὺς θυ-14 μιᾶν τῇ Βάαλ. Καὶ σὺ μὴ προσεύχου (ο) περὶ τοῦ λαοῦ τούτου, καὶ μὴ ἀξίου περὶ αὐτῶν ἐν δεήσει καὶ προσευχῇ, ὅτι οὐκ εἰσακούσομαι ἐν τῷ (π) καιρῷ ἐν ᾧ ἐπικα-15 λοῦνταί με, ἐν καιρῷ κακώσεως αὐτῶν. Τί ἡ ἠγαπημένη ἐν τῷ οἴκῳ μου ἐποίησε βδέλυγμα; μὴ εὐχαὶ καὶ κρέα ἅγια ἀφελοῦσιν ἀπὸ σοῦ τὰς κακίας σου, ἢ τούτοις διαφεύ-16 ξῃ; Ἐλαίαν ὡραίαν εὔσκιον τῷ εἴδει ἐκάλεσε κύριος τὸ ὄνομά σου, εἰς φωνὴν περιτομῆς αὐτῆς, ἀνήφθη πῦρ (ρ) ἐπ᾽ αὐτὴν, μεγάλη ἡ θλῖψις ἐπὶ σὲ, (˘) ἠχρειώθησαν οἱ 17 κλάδοι αὐτῆς. Καὶ κύριος ὁ καταφυτεύσας σε, ἐλάλησεν ἐπὶ σὲ κακὰ ἀντὶ τῆς κακίας οἴκου Ἰσραὴλ καὶ οἴκου Ἰούδα, ὅ, τι ἐποίησαν (σ) ἑαυτοῖς τοῦ παροργίσαι με 18 ἐν τῷ θυμιᾷν αὐτοὺς τῇ Βάαλ. Κύριε γνώρισόν μοι, καὶ γνώσομαι. τότε εἶδον 19 τὰ ἐπιτηδεύματα αὐτῶν· (τ) Ἐγὼ δὲ ὡς ἀρνίον ἄκακον ἀγόμενον τοῦ θύεσθαι, οὐκ ἔγνων. ἐπ᾽ ἐμὲ ἐλογίσαντο λογισμὸν πονηρὸν, (υ) λέγοντες, Δεῦτε καὶ (˘) ἐμβάλωμεν ξύλον εἰς τὸν (φ) ἄρτον αὐτοῦ, καὶ ἐκτρίψωμεν αὐτὸν ἀπὸ γῆς ζώντων, (χ) καὶ τὸ ὄνομα αὐτοῦ οὐ μὴ μνησθῇ (ψ) οὐκέτι.

8 9 *Et non fecerunt. Et dixit Dominus ad me; Inventa eſt (b) colligatio in viris Juda, & in habitatoribus Hieruſalem:* 10 *Reverſi ſunt ad iniquitates patrum ſuorum priores: qui noluerunt exaudire verba mea: & ecce ipſi abeunt poſt deos alienos, ad ſerviendum eis. Et diſſipavit domus Iſrael, & domus Juda, teſtamentum meum, quod diſpoſui ad patres eorum.* 11 *Propterea hæc dicit Dominus; Ecce ego induco ſuper populum hunc mala: ex quibus exire non poterunt ex eis: & clamabunt ad me, & non exaudiam eos.* 12 *Et ibunt civitates Juda, & habitatores Hieruſalem; & clamabunt ad deos, quibus ipſi adolent eis: qui non ſalvabunt eos in tempore malorum eorum.* 13 *Juxta enim numerum civitatum tuarum erant dii tui, Juda: & juxta numerum viarum Hieruſalem poſuiſtis aras ad incenſum adolendum Baal.* 14 *Et tu noli orare pro populo hoc: & noli poſtulare pro eis in oratione, & deprecatione: quia non exaudiam in tempore, in quo invocabunt me, in tempore afflictionis ſuæ.* 15 *Quid dilecta in domo mea fecit abominationem? Nunquid vota, & carnes ſanctæ auferent à te malitias tuas, aut propter iſta effugies?* 16 *Olivam pulchram, (c) benè opacam ſpecie, vocavit Dominus nomen tuum, ad vocem circumciſionis ejus, accenſus eſt ignis ſuper eam: magna tribulatio ſuper te: inutiles facti ſunt rami ejus:* 17 *Et Dominus, qui plantavit te, loquutus eſt ſuper te mala, pro malitia domûs Iſrael, & domûs Juda: quicquid fecerunt ſibi ad irritandum me, in adolendo ipſos Baal.* 18 *Domine, notum fac mihi, & cognoſcam. Tunc vidi ſtudia eorum.* 19 *Ego autem quaſi agnus innocens ductus ad immolandum, non cognoſcebam. Super me cogitaverunt cogitationem malam, dicentes; Venite, & mittamus lignum in panem ejus, & exteramus eum de terra viventium, & nomen ejus non memoretur ampliùs.*

MS. A. (ζ) ἐν πόλεσιν (η) κατοικοῦσιν Ἱερουσαλὴμ, (θ) ἤθελον ἀκοῦσαι (ι) βαδίζουσιν (κ) θεοὺς αὐτῶν, (λ) * μὴ σώσουσιν αὐτοὺς ἐν καιρῷ (μ) κατὰ (ν) κατὰ (ξ) ἔταξαν βωμοὺς τοῦ θυμιᾶν (ο) ὑπὲρ (π) καιρῷ ᾧ (ρ) ἐν αὐτῇ, (˘) ἠχρεώθησαν (σ) αὐτοῖς (τ) Ἐγὼ ὡς (υ) κατὰ σοῦ λέγοντες, (˘) ἐμβάλωμεν (φ) * ἄρτον τράχηλον αὐτοῦ, (χ) καὶ ὄνομα (ψ) οὐκέτι.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

8 ולא קבילו ולא ארכינו ית אודנהון ואזלו גבר בהרהור לבהון בישא ואיתיתי עליהון
9 פורענותא על דלא קבילו פתגמי קימא הדין דפקדית למעבד ולא עבדו : ואמר יי לי
10 אשתכח דמרדו במימרי אנש יהודה ויתבי ירושלם : תבו לחובי אבהתהון קדמאי
דסריבו לקבלא ית פתגמי ואנון טעו בתר טעות עממיא למפלחהון אשניאו בית
11 ישראל ובית יהודה ית קימי דגזרית ית אבהתכון : בכן כדנן אמר יי הא אנא מיתי
12 עליכון בישתא דלא יכלון לאשתיזבא מנה ויצלון קדמי ולא אקבל צלותהון : ויהכון
אנש קרויא דבית יהודה ויתבי ירושלם ויבעון מן טעותא דאנון מסקין בוסמין להין
13 האם יכלן למפרקהון בעדן בישתהון : ארי מנין קרויכון הואה דחלתכון דבית יהודה
14 ומנין שוקי ירושלם שויתון אגורין לבהתא ואגורין לאסקא בוסמין לבעלא : ואת לא
תצלי על עמא הדין ולא תתחנן עליהון בבעו ובצלו ארי לא רעוא קדמי בעדן דאת
15 מצלי עליהון קדמי בעדן בישתהון : מה לעמא דהוה חביב קדמי שבקו פולחן בית
מקדשי עבדו עצה לחטאין סגיאין מערבין בשר שקוצין עם בשר קודשא יגלון מניך
16 מן קדם בשתיך בכן הויתא תקיפא : הא כאלן זיתא דשפיר בריויה ויאי בחזויה וסוכיה
מטלן באילניא כן רבי יי שמיך בעממיא וכדו דעברת על אוריתא משרית עממין
17 דתקיפין כאשתא ייתון עלך ויתחברון להון סומכין : ויי צבאות דקים יתיך גזר לאיתאה
עלך בישא בדיל חובי בית ישראל ובית יהודה דעבדו להון לארגזא קדמי לאסקא
18 19 בוסמין לבעלא : ויי אלפני ואליפית בכן אחזיתני עובדיהון : ואנא כאמר בחיר
דלנכסתא מתובל ולא ידעית ארי עלי חשיבו עשתונין בישין אמרין נרמי סמא דמותא
במיכליה ונשיצניה מארעא דישראל ושמיה לא ידכר עוד :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

8 Et non obedierũt, nec inclinaverunt aures ſuas: ſed ambulaverũt unuſquiſque in cogitatione cordis ſui mali, & adduxi ſuper eos ultionem, eò quòd non ſuſcepiſſent verba pacti hujus quod præcepi ut facerent, & non fecerunt. 9 Et dixit Dñs ad me: *Inventum* eſt *quòd rebellârunt in verbum meum viri* Juda, & *habitatores* Jeruſalem. 10 Reverſi ſunt ad iniquitates patrum ſuorũ priorum, qui noluerunt ſuſcipere verba mea, & ipſi erraverunt poſt idola populorum, ut colerent ea. Irritum fecerunt domꝰ Iſrael & domꝰ Juda pactum meum quod pepegi cum patribꝰ *veſtris*. 11 Propterea hæc dicit Dominꝰ: Ecce ego inducam ſuper *vos* malum, & non poterunt liberari ex eo: & orabunt corã me, & non ſuſcipiã orationes eorũ. 12 Ibúntque viri civitatum domꝰ Juda, & habitatores Jeruſalem, & deprecabuntur idola quibꝰ adolebant aromata, ſi fortè poſſint ſalvare eos in tempore mali ſui. 13 Quia ſecundũ numerũ civitatũ veſtrarũ fuerunt dii veſtri viri domꝰ Juda, & ſecundũ numerũ viarũ Jeruſalẽ poſuiſtis aras confuſioni, aras ad adolenda aromata ipſi Baal. 14 Tu autẽ ne ores pro populo iſto, nec depreceris pro eis in deprecatione et oratione; quoniã non erit voluntas corã me, quo tempore tu orabis pro eis corã me, in tempore mali eorũ. 15 Quid eſt populo huic qui erat dilectꝰ coram me? reliquerunt cultũ domꝰ ſanctuarii mei: inierunt conſiliũ ad peccandũ multũ: cõmiſcent carnẽ abominationũ cum carne ſanctificata: migrabunt à te; propter malitiã tuam tunc eras fortis. 16 Sicut arbor olea pulchra forma, & ſpecioſa aſpectu, cujꝰ rami obumbrant *arbores*; ſic magnificavit Dñs nomen tuũ in populis. Et nunc cùm tranſgreſſa es legẽ, exercitꝰ populorum qui fortes ſunt ſicut ignis, venient contra te, & conjungentur eis auxilia. 17 Et Dominꝰ exercituum qui ſuſtinuit te, decrevit inducere ſuper te malum, propter peccata domꝰ Iſrael & domꝰ Juda, quæ fecerunt ſibi ad irritandum coram me, ut adolerent aromata Baal. 18 Dominꝰ autem docuit me, & didici: tunc oſtendiſti mihi opera eorum. 19 Et ego ſicut agnꝰ electꝰ qui ducitur ad victimam, & neſcivi quia contra me cogitaverunt cogitationes malas: dicentes: Mittamus venenum mortiferum in cibo ejus, & diſperdamus eum de terra Iſrael, & nomen ejus non memoretur ampliùs.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

8 * ܘܠܐ ܫܡܥܘ. ܘܠܐ ܐܪܟܢܘ ܐܕܢܝܗܘܢ. ܘܐܙܠܘ ܟܠ ܓܒܪ ܒܪܓܝܓܬܐ ܕܠܒܗܘܢ ܒܝܫܐ. ܘܐܝܬܝܬ
ܥܠܝܗܘܢ ܟܠ ܦܬܓܡܝ ܩܝܡܐ ܗܢܐ ܕܦܩܕܬ ܠܡܫܡܥܘܢ. ܘܠܐ ܫܡܥܘ. * ܘܐܡܪ ܠܝ 9
10 ܡܪܝܐ. ܐܫܬܟܚ ܡܪܕܐ ܒܓܒܪܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܒܥܡܘܪܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. * ܗܦܟܘ ܠܚܛܗܐ
ܕܐܒܗܝܗܘܢ ܩܕܡܝܐ. ܘܠܐ ܨܒܘ ܠܡܫܡܥ ܦܬܓܡܝ. ܘܐܙܠܘ ܐܢܘܢ ܒܬܪ ܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ
ܠܡܦܠܚ ܐܢܘܢ. ܘܒܛܠܘ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܘܒܢܝ ܝܗܘܕܐ. ܠܩܝܡܝ ܕܩܝܡܬ
11 ܥܡ ܐܒܗܝܗܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܗܐ
ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܥܠܝܗܘܢ ܒܝܫܬܐ. ܕܠܐ ܢܫܟܚܘܢ ܠܡܦܩ ܡܢܗ. ܘܢܩܥܘܢ ܠܘܬܝ. ܘܠܐ ܐܫܡܥ
12 ܐܢܘܢ. * ܘܢܐܙܠܘܢ ܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܥܡܘܪܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܘܢܩܥܘܢ ܠܘܬ ܐܠܗܐ
ܕܡܣܩܝܢ ܗܘܘ ܠܗܘܢ ܒܣܡܐ. ܘܡܦܪܩܘ. ܠܐ ܢܦܪܩܘܢ ܐܢܘܢ ܒܙܒܢܐ ܕܒܝܫܬܗܘܢ.
13 * ܡܛܠ ܕܐܝܟ ܡܢܝܢܐ ܕܩܘܪܝܟܝ ܗܘܘ ܐܠܗܝܟܝ ܝܗܘܕܐ. ܘܐܝܟ ܡܢܝܢܐ ܕܫܘܩܝܗ
14 ܕܐܘܪܫܠܡ. ܣܡܬܘܢ ܡܕܒܚܐ ܠܒܗܬܬܐ. ܡܕܒܚܐ ܠܡܣܩܘ ܒܣܡܐ ܠܒܥܠܐ. * ܘܐܢܬ
ܠܐ ܬܨܠܐ ܥܠ ܥܡܐ ܗܢܐ. ܘܠܐ ܬܬܠ ܥܠܝܗܘܢ ܒܥܘܬܐ ܘܨܠܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܫܡܥ ܐܢܐ ܡܐ ܕܩܪܝܢ
15 ܠܝ ܒܙܒܢܐ ܕܒܝܫܬܗܘܢ. * ܡܢܐ ܚܒܝܒܬܝ ܒܒܝܬܝ ܥܒܕܬ ܛܢܦܘܬܐ ܣܓܝܐܬܐ.
16 ܘܒܣܪܐ ܩܕܝܫܐ ܢܥܒܪܘܢ ܡܢܟܝ. ܡܛܠ ܥܘܠܟܝ ܕܣܓܝ ܒܝܫ. * ܙܝܬܐ ܥܒܝܛܬܐ. ܫܦܝܪ
ܦܐܪܐ ܘܫܦܝܪ ܚܙܘܐ. ܩܪܐ ܡܪܝܐ ܫܡܟܝ. ܠܩܠܐ ܕܦܘܩܕܢܐ ܪܒܐ. ܫܕܪܘ ܒܗ ܢܘܪܐ. ܘܢܐܟܠܘܢ
17 ܘܫܒܘܩܘ ܣܘܟܝܗ. * ܘܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܕܢܨܒܟܝ. ܡܠܠ ܥܠܝܟܝ ܒܝܫܬܐ. ܡܛܠ ܒܝܫܬܐ
ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܘܕܒܝܬ ܝܗܘܕܐ. ܕܥܒܕܘ ܠܗܘܢ ܠܡܪܓܙܘܬܝ. ܟܕ ܡܣܩܝܢ ܒܣܡܐ ܠܒܥܠܐ.
18 * ܡܪܝܐ ܚܘܝܢܝ ܘܐܕܥ. ܗܝܕܝܢ ܚܘܝܬܢܝ ܥܒܕܝܗܘܢ. * ܘܐܢܐ ܐܝܟ ܐܡܪܐ ܬܡܝܡܐ ܕܡܬܕܒܪ
19 ܠܢܟܣܬܐ. ܘܠܐ ܝܕܥܬ ܕܥܠܝ ܐܬܚܫܒܘ ܡܚܫܒܬܐ. ܘܐܡܪܘ ܢܚܒܠ ܩܝܣܐ ܒܡܐܟܘܠܬܗ.
ܘܢܥܩܪܝܘܗܝ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܚܝܐ. ܘܫܡܗ ܬܘܒ ܠܐ ܢܬܕܟܪ.

Ipſi verò non auſcultaverunt, nec aurem ſuam 8
admoverunt, ſed ambulaverunt quiſque pro
libidinib' animi ſui peſſimi: ideò adduxi ſuper eos omnes ſermones fœderis hujus, cui
præceperam ut auſcultarent, & non auſcultaverunt. Et dixit mihi Dñs, Deprehenſa eſt re- 9
bellio in viris Judæ & civibus Jeruſalem: Re- 10
verſi ſunt ad peccata majorũ ſuorũ priſcorũ,
& noluerunt auſcultare ſermonibus meis, ſed
abierunt ipſi poſt deos alienos ad colendum
eos: & irritum fecerunt filii Iſraelis & filii
Judæ teſtamentũ meũ quod pepigeram cum
majorib' eorũ. Propterea ſic ait Dñs poten- 11
tiſſimus, Deus Iſraelis; Ecce adducã ſuper eos
calamitatẽ è qua emergere non poterunt: &
clamabunt ad me, at non exaudiam eos. Tunc 12
abeuntes civitates Judæ & cives Jeroſolymorum; clamabunt ad deos quibus adolebant in-
cenſum; at non ſervabunt eos tempore calamitatis eorũ. Nam quot erant civitates tuæ, 13
tot erant dii tui Juda; & quot ſunt vici Jeroſolymorum, *totidem* altaria poſuiſtis, ad
ignominiam; altaria *inquam* ad adolendum
thura Baali. Tu igitur ne ores pro populo 14
iſto, neque fundas pro eis precem & orationem; quia non exaudiam quando clamabunt
ad me tempore calamitatis ſuæ. Quare ô 15
mihi dilecta, in domo mea feciſti abominationem multam? ideò carnem ſacram amovebunt à te, propter crimen tuum quod graviſſimum eſt. Oleam opacam, pulchram fru- 16
ctibus, & aſpectu decoram vocaverat Dominus nomen tuum: ad vocem ſupremi decreti
dimittite ignem in illam, & conſumantur rami ejus. Nam Dominus exercituum qui te 17
plantaverat, pronuntiavit contra te malum,
propter malitiam domûs Iſraelis & domûs
Judæ, quam exercuerunt ad irritandum me
adhibendo thura Baali. Domine, oſtende 18
mihi ut ſciam: verè oſtendiſti mihi actiones
eorum. At ego tanquam agnus ſimplex qui 19
ducitur ad jugulationem, ignorabam eos in
me molitos eſſe cogitationem, & dixiſſe,
Corrumpamus lignum (*arborem*) cum cibo
(*fructu*) ſuo, & extinguamus illud è terra
viventium, ut nominis ejus nulla fiat in poſterum mentio.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

8 * ولم يسمعوا ولا امالوا مسامعهم ولكن سلك كل امرء منهم بمحبة نفسه الردي * وانزلت بهم جميع
9 ما قلت في هذا العهد * حين امرتهم يسمعوا ولم يسمعوا] * وقال الرب لي وجد رباط في مدن
10 يهودا وفي سكان اورسليم * عادوا الي ظلامات ابايهم الاولين الذين لم يشاوا ان يسمعوا
اقوالي * وها هم يعمدون خلف الالهة الغريبة ليعبدوا لها * وابطل بيت اسرايل وبيت يهودا
11 عهدي الذي عهدت لابايهم * لاجل هذا هكذا يقول الرب * ها انا اجلب على هذا
12 الشعب سرورا لا يستطيعون ان يخرجوا منها * ويصرخون الي فلا استجيب لهم * ويذهب مدن
يهودا وسكان اورسليم ويصرخون لالهتهم التي هم يبخرون لها ليعينوهم في زمن سرورهم *
13 * لان كعدد مدنك صارت الهتك يا يهودا * وكعدد مخارج اورسليم ربوا هياكل
14 ليبخروا لباعال * وانت لا تصل من اجل هذا الشعب ولا تتضرع من اجلهم بطلبة وصلاة *
15 لاني لست استجيب في الوقت الذي يدعوني فيه في زمان بلايهم * لماذا المحبوبة في بيتي
16 عملت رذالة * هل الصلوات واللحوم المقدسة يزيلون عنك سرورك * او بهذا تهربي * زيتونة
بهية حسنة الظل بالمنظر دعا الرب اسمك * بصوت ختانها التهبت النار فيها * عظيمة الشدة
17 عليك * اغصانها فسدت * والرب الذي غرسك تكلم عليك سرورا بدل شر بيت اسرايل
وبيت يهودا * لانهم صنعوا لهم ان يغضبوني عند تبخيرهم لباعال *

* الاصحاح الثامن *

18 * يا رب عرفني فاعرف * حينيذ نظرت اعمالهم * فانا مثل خروف لا شر فيه مساق ليذبح ولم
19 اعلم لانهم تشاوروا على مشورة رديئة قايلين * تعالوا فنضع خشبة في خبزه ونهلكه من
ارض الاحياء * واسمه لا يذكر بعد *

Attamen non auſcultârunt, neque incli- 8
naverunt aures ſuas, ſed ambulaverunt
unuſquiſque juxta placitum animi ſui
peſſimi: quapropter adduxi ſuper eos o-
mnia quæ locutus fueram in iſthoc fœde-
re, quando præceperam eis ut auſcultarent,
& non auſcultaverunt.] Quapropter di- 9
xit mihi Dominus, Deprehenſa eſt conju-
ratio in urbibus Judæ & inter cives Je-
ruſalem; Relapſi ſunt in impietates præ- 10
teritorum patrum ſuorum, qui noluerunt
acquieſcere dictis meis; & ecce iſti per-
ſiſtunt poſt deos peregrinos ut adorent e-
os; & violaverunt domus Iſraelis et do-
mus Judæ fœdus meum quod pepigeram
cum patribus eorum. Idcirco ſic dicit 11
Dominus, Ecce ego inducturus ſum ſu-
per hunc populum mala è quibus evadere
nequibunt: clamabúntque ad me, ſed
non exaudiam eos. Ibúntque urbes Ju- 12
dæ & cives Jeruſalem, & clamabunt
ad deos ſuos quibus adolent, ut opem fe-
rant eis tempore miſeriarum ſuarum. Nam 13
juxta numerum urbium tuarum ſunt dii
tui O Juda; & juxta numerum exitu-
um Jeroſolymæ, templa diſpoſuerunt ut
adolerent Baali. Tu ergò ne ores pro hu- 14
juſmodi populo, neque precibus aut ora-
tione ſupplices pro illis; quia nequaquam
exauditurus ſum tempore quo me invoca-
bunt, tempore calamitatis eorum. Quæ è 15
dilecta domi meæ fecit abominationem?
num orationes & carnes ſanctæ averte-
rent à te miſerias tuas? an per hæc effu-
geres? Olivam formoſam, ſpecie pulcher- 16
rimè umbroſam vocaverat Dominus no-
men tuum: ad vocem circunciſionis ejus
exarſit ignis in ea (maxima tibi calamitas
impendet) rami ejus corrupti ſunt. Nam 17
Dominus qui te plantavit, locutus eſt de
te mala, pro ſcelere domûs Iſraelis et do-
mûs Juda; ſtuduerunt enim excitare me
ad iram adolendo Baali.

Textus octavus.

O Domine, doce me ut ſciam: tunc vidi 18
facinora illorum. Ego verò ſicut agnus 19
eram in quo nulla eſt malitia ductus ut
immoletur, neſciebam eos nefarium iniiſſe
contra me conſilium, dicentes; Agite, po-
namus lignum in panem ejus, & per-
damus eum de terra viventium, & nomen
ejus non memoretur ampliùs.

videam , cor & renes *probans* ,justitiam *judicans* exercituum Domine *Et*
20 וַיהוָה צְבָאוֹת שֹׁפֵט צֶדֶק בֹּחֵן כְּלָיוֹת וָלֵב אֶרְאֶה
sic Propterea .meam *litem* revelavi *te ad* quia : eis de tuam ultionem
21 נִקְמָתְךָ מֵהֶם כִּי אֵלֶיךָ גִּלִּיתִי אֶת־רִיבִי׃ לָכֵן כֹּה־
:dicendo,tuam animam *quærentes* , Hanathoth viros ad Domin' dixit
אָמַר יְהוָה עַל־אַנְשֵׁי עֲנָתוֹת הַמְבַקְשִׁים אֶת־נַפְשְׁךָ לֵאמֹר
Propterea.nostras man' p morieris non & ,Dñi nomine in vaticineris Ne
22 לֹא תִנָּבֵא בְּשֵׁם יְהוָה וְלֹא תָמוּת בְּיָדֵנוּ׃ לָכֵן
juvenes : eos *super visitans* ego Ecce : exercituum Dominus dixit sic
כֹּה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת הִנְנִי פֹקֵד עֲלֵיהֶם הַבַּחוּרִים
residuum Et .fame in morientur eorũ filiæ & eorũ filii,gladio in morietur
23 יָמֻתוּ בַחֶרֶב בְּנֵיהֶם וּבְנוֹתֵיהֶם יָמֻתוּ בָּרָעָב׃ וּשְׁאֵרִית
annus ,Hanathoth *viros in* , malum inducam quia : eis erit non
לֹא תִהְיֶה לָהֶם כִּי־אָבִיא רָעָה אֶל־אַנְשֵׁי עֲנָתוֹת שְׁנַת
.eorum visitationis
פְּקֻדָּתָם׃

CAP. XII. יב

loquar judicia Veruntamen:*te contra litigabo cùm* ,Domine *tu* Justus
1 צַדִּיק אַתָּה יְהוָה כִּי אָרִיב אֵלֶיךָ אַךְ מִשְׁפָּטִים אֲדַבֵּר
prævaricãtes omnes *fuerũt securi*,est prosperata impiorũ via Quare .tecum
אוֹתָךְ מַדּוּעַ דֶּרֶךְ רְשָׁעִים צָלֵחָה שָׁלוּ כָּל־בֹּגְדֵי
:fructũ fecerunt etiã,*iverunt*,sunt radicati etiã,eos Plãtâsti ?prævaricationẽ
2 בָגֶד׃ נְטַעְתָּם גַּם־שֹׁרָשׁוּ יֵלְכוּ גַּם־עָשׂוּ פֶרִי
Domine tu Et .eorum renibus à *longinquus* & ,eorum *ore in tu* *propinquus*
3 קָרוֹב אַתָּה בְּפִיהֶם וְרָחוֹק מִכִּלְיוֹתֵיהֶם׃ וְאַתָּה יְהוָה
pecus sicut eos evelle : tecum meum cor probâsti & ,me vidisti , me nôsti
יְדַעְתָּנִי תִּרְאֵנִי וּבָחַנְתָּ לִבִּי אִתָּךְ הַתִּקֵם כְּצֹאן
lugebit quo Usque .occisionis diem ad eos *sanctifica* & ; jugulationẽ ad
4 לְטִבְחָה וְהַקְדִּשֵׁם לְיוֹם הֲרֵגָה׃ עַד־מָתַי תֶּאֱבַל
ea in habitantium malitiã propter?arescet agri omnis herba & , terra
הָאָרֶץ וְעֵשֶׂב כָּל־הַשָּׂדֶה יִיבָשׁ מֵרָעַת יֹשְׁבֵי־בָהּ
.*nostrum novissimum* videbit Non:dixerũt quoniã,*volatile* &,animalia *periit*
סָפְתָה בְהֵמוֹת וָעוֹף כִּי אָמְרוּ לֹא יִרְאֶה אֶת־אַחֲרִיתֵנוּ׃
contendes quomodo &:te fecerũt laborare &,cucurristi peditib' cum *Quia*
5 כִּי אֶת־רַגְלִים רַצְתָּה וַיַּלְאוּךָ וְאֵיךְ תְּתַחֲרֶה
facies quomodo & , *fidens* tu pacis terra in Et ? equis cum
אֶת־הַסּוּסִים וּבְאֶרֶץ שָׁלוֹם אַתָּה בוֹטֵחַ וְאֵיךְ תַּעֲשֶׂה
ipsi etiam tui patris dom' &,tui fratres etiam Nam?Jarden altitudine in
6 בִּגְאוֹן הַיַּרְדֵּן׃ כִּי גַם־אַחֶיךָ וּבֵית־אָבִיךָ גַּם־הֵמָּה
Ne :*implendo* te post clamaverunt ipsi etiam ; te contra sunt prævaricati
בָּגְדוּ בָךְ גַּם־הֵמָּה קָרְאוּ אַחֲרֶיךָ מָלֵא אַל־
,meam domũ Reliqui .bona te ad fuerint locuti quum,eis *in* credas
7 תַּאֲמֵן בָּם כִּי־יְדַבְּרוּ אֵלֶיךָ טוֹבוֹת׃ עָזַבְתִּי אֶת־בֵּיתִי
vola in meæ animæ dilectionem dedi : meam hæreditatem dimisi
נָטַשְׁתִּי אֶת־נַחֲלָתִי נָתַתִּי אֶת־יְדִדוּת נַפְשִׁי בְּכַף
dedit:sylva in leo tanquam mea hæreditas mihi Fuit .ejus inimicorum
8 אֹיְבֶיהָ׃ הָיְתָה־לִּי נַחֲלָתִי כְּאַרְיֵה בַיָּעַר נָתְנָה
mea hæreditas tincta avis Nunquid .eam odi ideo , *sua voce in* me contra
9 עָלַי בְּקוֹלָהּ עַל־כֵּן שְׂנֵאתִיהָ׃ הַעַיִט צָבוּעַ נַחֲלָתִי
fera omnis vos congregate , *Ite* ?eam contra *circum* avis Nunquid ? *mihi*
לִי הַעַיִט סָבִיב עָלֶיהָ לְכוּ אִסְפוּ כָּל־חַיַּת
sunt demoliti multi Pastores .devorandum ad venite , agri
10 הַשָּׂדֶה הֵתָיוּ לְאָכְלָה׃ רֹעִים רַבִּים שִׁחֲתוּ
portionem *dederunt* : meam partem conculcaverunt , meam vineam
כַרְמִי בֹּסְסוּ אֶת־חֶלְקָתִי נָתְנוּ אֶת־חֶלְקַת
.solitudinis desertum in *mei desiderii*
חֶמְדָּתִי לְמִדְבַּר שְׁמָמָה׃

Versio VULG. LAT.

20 Tu autem, Domine Sabaoth, qui judicas justè, & probas renes & corda, videam ultionem tuam ex eis: tibi enim revelavi causam 21 meam. Propterea hæc dicit Domin' ad viros Anathoth, qui quærunt animam tuam, & dicunt; Non prophetabis in nomine Domini, & non morieris in manib' 22 nostris. Propterea hæc dicit Dominus exercituum; Ecce ego visitabo super eos: juvenes morientur in gladio, filii eorum & fi-23 liæ eorum morientur in fame. Et reliquiæ non erunt ex eis: inducã enim malũ super viros Anathoth, annum visitationis eorum.

CAP. XII.

1 Justus quidem tu es, Domine, si disputem tecum: veruntamen justa loquar ad te: Quarè via impiorum prosperatur: benè est omnibus qui prævaricantur & ini-2 què agunt? Plantâsti eos, & radicem miserunt: proficiunt & faciunt fructum: propè es tu ori eo-3 rum, & longè à renibus eorum. Et tu, Domine, nôsti me, vidisti me, et probâsti cor meum tecũ: congrega eos quasi gregem ad victimam, & sanctifica eos in die occisio-4 nis. Usquequò lugebit terra, & herba omnis regionis siccabitur, propter malitiam habitantium in ea? consumptum est animal, & volucre, quoniam dixerunt; Non 5 videbit novissima nostra. Si cum peditibus currens laborâsti: quomodò contendere poteris cum equis? cùm autem in terra pacis securus fueris, quid facies in su-6 perbia Jordanis? Nam & fratres tui, & domus patris tui, etiam ipsi pugnaverunt adversùm te, & clamaverunt post te plenâ voce: ne credas eis cùm locuti fue-7 rint tibi bona. Reliqui domum meam, dimisi hæreditatem meã: dedi dilectam animam meam in 8 manu inimicorum ejus: Facta est mihi hæreditas mea quasi leo in sylva: dedit contra me vocẽ, ideò 9 odivi eam. Numquid avis discolor hæreditas mea mihi? numquid avis tincta p totum? venite, congregamini omnes bestiæ terræ, 10 properate ad devorandũ. Pastores multi demoliti sunt vineã meam, conculcaverunt partẽ meam: dederunt portionem meam desiderabilem in desertum solitudinis.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

20 Κύριε κρίνων δίκαια, δοκιμάζων νεφροὺς καὶ καρδίας, ἴδοιμι τὴν παρὰ σοῦ ἐκδίκησιν ἐξ αὐτῶν, ὅτι πρὸς σὲ ἀπεκάλυψα τὸ δικαίωμά μου. 21 Διὰ τοῦτο τάδε λέγει (ω) κύριος ἐπὶ τοὺς ἄνδρας Ἀναθὼθ τοὺς ζητοῦντας τὴν ψυχήν μου, τοὺς λέγοντας, Οὐ μὴ (α) προφητεύσεις ἐπὶ τῷ ὀνόματι κυρίου, εἰ δὲ μή, ἀποθανῇ ἐν ταῖς χερσὶν ἡμῶν. 22 Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπισκέψομαι ἐπ' αὐτούς· οἱ νεανίσκοι αὐτῶν ἐν μαχαίρᾳ (β) ἀποθανοῦνται, καὶ οἱ υἱοὶ αὐτῶν καὶ αἱ θυγατέρες αὐτῶν τελευτήσουσιν ἐν 23 λιμῷ. Καὶ ἐγκατάλειμμα οὐκ ἔσται αὐτῶν, ὅτι ἐπάξω κακὰ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας ἐν Ἀναθώθ, ἐν ἐνιαυτῷ ἐπισκέψεως αὐτῶν.

MS.A. (ω) κύριος ὁ θεὸς (α) προφητεύσῃς (β) πεσοῦνται,

ΚΕΦ. ιβ'.

1 Δίκαιος εἶ κύριε, ὅτι ἀπολογήσομαι πρὸς σέ. πλὴν κρίματα λαλήσω πρὸς σέ. τί ὅτι ὁδὸς ἀσεβῶν εὐοδοῦται; εὐθήνησαν 2 πάντες οἱ ἀθετοῦντες (α) ἀθετήματα; Ἐφύτευσας αὐτούς, καὶ (β) ἐρριζώθησαν· ἐτεκνοποιήσαντο, καὶ ἐποίησαν καρπόν. ἐγγὺς εἶ σὺ τοῦ στόματος αὐτῶν, καὶ πόρρω ἀπὸ τῶν 3 νεφρῶν αὐτῶν. Καὶ σὺ κύριε γινώσκεις με, (γ) δεδοκίμακας τὴν καρδίαν μου ἐναντίον σου. ἅγνισον αὐτοὺς εἰς ἡμέραν σφαγῆς αὐτῶν. 4 Ἕως πότε πενθήσει ἡ γῆ, καὶ πᾶς (δ) ὁ χόρτος τοῦ ἀγροῦ ξηρανθήσεται ἀπὸ κακίας τῶν κατοικούντων (ε) ἐν αὐτῇ; (ζ) ἠφανίσθησαν κτήνη καὶ πετεινά, (η) ὅτι εἶπαν, Οὐκ ὄψεται ὁ 5 θεὸς ὁδοὺς ἡμῶν. Σοῦ οἱ πόδες τρέχουσι, καὶ (θ) ἐκλύουσί σε· πῶς παρασκευάσῃ ἐφ' ἵπποις; καὶ ἐν γῇ εἰρήνης σὺ πέποιθας· πῶς 6 ποιήσεις ἐν φρυάγματι τοῦ Ἰορδάνου; Ὅτι (ι) καὶ οἱ ἀδελφοί σου καὶ ὁ οἶκος τοῦ πατρός σου, (κ) καὶ οὗτοι ἠθέτησάν σε, καὶ αὐτοὶ ἐβόησαν, ἐκ τῶν ὀπίσω σου ἐπισυνήχθησαν· μὴ πιστεύσῃς ἐν αὐτοῖς, ὅτι λαλήσουσι (λ) 7 πρὸς σὲ καλά. (μ) Ἐγκαταλέλοιπα τὸν οἶκόν μου, ἀφῆκα τὴν κληρονομίαν μου, ἔδωκα τὴν ἠγαπημένην ψυχήν μου εἰς χεῖρας ἐχθρῶν 8 αὐτῆς. Ἐγενήθη ἡ κληρονομία μου ἐμοὶ ὡς λέων ἐν δρυμῷ, ἔδωκεν ἐπ' ἐμὲ τὴν φωνὴν 9 αὐτῆς, διὰ τοῦτο ἐμίσησα αὐτήν. Μὴ σπήλαιον (ν) ὑαίνης ἡ κληρονομία μου (ξ) ἐμοί, ἢ σπήλαιον κύκλῳ αὐτῆς; βαδίσατε, συναγάγετε πάντα τὰ θηρία τοῦ ἀγροῦ, καὶ (ο) 10 ἐλθέτωσαν τοῦ φαγεῖν αὐτήν. Ποιμένες πολλοὶ διέφθειραν τὸν ἀμπελῶνά μου, ἐμόλυναν τὴν μερίδα μου, ἔδωκαν (π) τὴν μερίδα τὴν ἐπιθυμητήν μου εἰς ἔρημον ἄβατον,

MS.A. (α) ἀθετήσει; (β) ἐρριζώθησαν· ἐτεκνοποίησαν, (γ) ἐδοκίμασας (δ) χόρτος ξηρανθήσεται (ε) * αὐτῶν; (ζ ἠφάνισας (η) καὶ εἶπαν, (θ) ἐκλύουσίν (ι) οἱ ἀδελφοί (κ) ἠθέτησάν (λ) ἐπὶ σὲ (μ) Ἐγκαταλέλοιπα (ν) λῃστῶν ἢ (ξ) ἐμοί; βαδίσατε καὶ συναγάγετε (ο) ἐλθέτωσαν τοῦ καταφαγεῖν (π) μερίδα μου ἐπιθυμητὴν εἰς

Cum Translatione LATINA.

20 *(d) Domine, judicans justa, probans renes, & corda, videam eam, quæ à te, ultionem ex eis: quoniam ad te revelavi justificationem meam.* 21 *Idcircò hæc dicit Dominus super viros Anathoth, qui quærunt animam meam, dicentes; Non prophetabis in nomine Domini: alioqui morieris in manib' nostris;* 22 *Ecce ego visitabo super eos. Juvenes eorum in gladio morientur:* 23 *et filii eorum, et filiæ eorum morientur in fame: Et reliquiæ non erunt eorum. Inducam enim mala super habitatores Anathoth, in anno visitationis eorum.*

CAP. XII.

1 *Justus es, Domine: quia satisfaciam tibi: Veruntamen judicia loquar ad te. Quid est, quòd via impiorum prosperatur? abundaverunt omnes, qui prævaricantur prævaricationes?* 2 *Plantâsti eos, & radicem miserunt: filios fecerunt, & fecerunt fructum. Propè es tu ori eorum, & longè à renibus eorum.* 3 *Et tu, Domine, cognoscis me: probâsti cor meum corã te. (a) Purifica eos in diẽ occisionis eorum.* 4 *Usquequò lugebit terra, et omnis herba agri siccabitur à malitia habitantium in ea? Deleta sunt jumenta, & volatilia: quia dixerunt, Non videbit Deus vias nostras.* 5 *(b) Tui pedes currunt, & dissolvunt te: quomodò præparaberis in equis? & in terra pacis tua confidisti;* *(c) quomodò facies in fremitu Jordanis?* 6 *Nam et fratres tui, & domus patris tui, etiam ipsi spreverunt te: & ipsi clamaverunt: ex posterioribus tuis congregati sunt: ne credas in eis; quia loquentur ad te bona.* 7 *Reliqui domum meam, dimisi hæreditatem meam: dedi dilectam animam meam in manus inimicorum ejus.* 8 *Facta est hæreditas mea mihi, quasi leo in sylva: dedit super me vocem suam: ideò odivi eam.* 9 *Nónne spelunca hyænæ hæreditas mea mihi? an spelunca in circuitu (d) ejus? Pergite, congregate omnes bestias agri: & veniant ad comedendam eam:* 10 *Pastores multi disruperunt vineam meam: polluerunt partem meam: dederunt portionem meã desiderabilem in desertum invium:*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

20 וַיְיָ צְבָאוֹת דַיָן קְשׁוֹט גַלְיָן קֳדָמוֹהִי כָלְיָן וְלֵב אֶחֱזֵי פּוּרְעֲנוּת דִינָךְ מִנְהוֹן אֲרֵי קֳדָמָךְ
21 אֲמַרֵית יַת עֻלְבָנִי׃ בְּכֵן כִּדְנָן אֲמַר יְיָ עַל אֱנָשֵׁי עֲנָתוֹת דְּבָעַן לְמִקְטְלָךְ דְּאָמְרִין לָא תִתְנַבֵּי
22 בִּשְׁמָא דַיְיָ וְלָא תְמוּת בִּידָנָא׃ בְּכֵן כִּדְנָן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת הָאֲנָא מַסְעַר עֲלֵיהוֹן עוּלֵימֵיהוֹן
23 יִתְקַטְלוּן בְּחַרְבָּא בְּנֵיהוֹן וּבְנָתֵיהוֹן יְמוּתוּן בְּכַפְנָא׃ וּשְׁאָרָא לָא יְהֵי לְהוֹן אֲרֵי אַיְתֵי
בִּישְׁתָּא עַל אֱנָשֵׁי עֲנָתוֹת שְׁנַת סוֹעֲרָן חוֹבֵיהוֹן׃

יב

1 זַכַּי אַתְּ יְיָ מִלְמֶרַן לְקֳבֵל פִּתְגָמָךְ בְּרַם שְׁאֵלַת דִינִין אֲנָא שָׁאֵל מִן קֳדָמָךְ מַדֵין אוֹרְחַת
2 רַשִׁיעַיָא מַצְלְחָא שְׁלָן שְׁלֵיוָא כָּל מְשַׁקְרֵי שְׁקַר׃ קַיֵמְתִּנוּן אַף תְּקִיפוּ עֲתַרוּ אַף קְנוֹ נִכְסִין
3 קְרִיבִין פִּתְגָמֵי אוֹרַיְתָךְ בְּפוּמְהוֹן וּרְחִיקָא דַחֲלְתָךְ מִכָּלְיָתְהוֹן׃ וְאַתְּ יְיָ כּוֹלָא יְדִיעַ וּגְלֵי קֳדָמָךְ
דְּאַתְּ בָּחַר לְבְבַיָא דְּרָעַן בִּדְחַלְתָּךְ רַשִׁיעַיָא אַתְקְנִנּוּן כְּעָנָא לְנִכְסְתָא וְזַמְנִנּוּן לְיוֹם קְטוֹלֵי׃
4 עַד אֵימָתַי תֶּחֱרוּב אַרְעָא וְעִשְׂבָּא דְכָל חַקְלָא יִיבַשׁ מֵחוֹבֵי רַשִׁיעַיָא דְיָתְבִין בָּהּ סָף בְּעִירָא
5 וְעוֹפָא אֲרֵי אֲמַרוּ לָא גְלֵי קֳדָמוֹהִי סוֹפָנָא׃ דְּנָא תְיוּבְתָּא לְיִרְמְיָה נְבִיָא עַל בָּעוּתֵיהּ נְבִיָא
אַתְּ דָמֵי לְגַבְרָא דִרְהַט עִם רַגְלָאָה וְלָאֵי וְאֵיכְדֵין אַתְּ מְדַמֵי לְמִרְהַט כָּל קֳבֵל סוּסְוָתָא
בְּבִקְעֲתָא וּבְאַרְעָא שְׁלָמָא אַתְּ מִתְבְּטַח וְנָפֵיל וְאֵיכְדֵין אַתְּ מְדַמֵי לְמֶעְבַּד כָּל קֳבֵל חֵיוַת
בָּרָא דִבְרוּם יַרְדְּנָא וְאִם עַל טַבְוָן דַּאֲנָא מוֹטֵב לִנְבוּכַד נֶאצַּר מַלְכָּא דְבָבֶל רַגְלָאָה נְבִיָא
אַתְּ חָזֵי וּמִתְמְהַּ וּמָן פּוֹן דְּאַחְזֵיךְ מָה דַּאֲנָא עֲתִיד לְמֶעְבַּד לַאֲבָהָתָךְ צַדִּיקַיָא דְמִן עַלְמָא
דִּרְהַטוּ כְּסוּסְוָתָא לְמֶעְבַּד עוֹבָדִין טָבִין קֳדָמַי וְאַף אֲמָרִית לְהוֹן דְּאַיְתֵי עַל בְּנֵיהוֹן בִּרְכָן
6 וְנַחְמָן הָא כְּמַיָא דְנָחֲתִין שְׁטוֹף לְיַרְדְּנָא׃ וּדְאַתְּ יִרְמְיָה בָּעֵי עֲלֵיהוֹן רַחֲמִין אֲרֵי יַת אֲחָךְ
וּבֵית אֲבוּךְ אַף אִנּוּן שְׁקַרוּ בָךְ אַף אִנּוּן אֲמַרוּ עֲלָךְ מִלִין בִּישִׁין לָא תְהֵימַן בְּהוֹן אֲרֵי
7 יֵימְרוּן עֲלָךְ פִּתְגָמִין תַּקְנִין׃ שְׁבַקִית יַת בֵּית מַקְדְּשִׁי רְטֵשִׁית יַת אַחְסַנְתִּי מְסָרֵית יַת עַמָּא
8 דַהֲוָה חֲבִיב קֳדָמַי בְּיַד סָנְאוֹהִי׃ הֲוַת קֳדָמַי אַחְסַנְתִּי כְּאַרְיָא בְּחוּרְשָׁא סְלִיקַת עֲלַי
9 אִתְרְגוּשְׁתַּהּ עַל כֵּן רַחֲקְתַּהּ׃ כְּעוֹפָא דְמִתְבַּדַר כֵּן אִתְבַּדְּרַת אַחְסַנְתִּי קֳדָמַי וּכְעוֹפָא
דְמִשְׁתַּדֵּי כֵּן יִתְכַּנְשׁוּן עֲלַהּ דְּקָטְלִין בְּחַרְבָּא מִסְחוֹר סְחוֹר מַלְכֵי עַמְמַיָא וּמַשִׁרְיָתֵיהוֹן
10 יֵיתוּן עֲלַהּ לְמִבְזַהּ׃ מַלְכִין סַגִיאִין קְטָלוּ עַמִי דוּשׁוּ יַת אַחְסַנְתִּי יְהָבִין יַת אַחְסָנַת
חֶמְדְּתִי לְמַדְבַּר צָדֵי׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

20 Et Dñs exercituũ judex veritatis, in cuj' conspectu manifesta sunt renes & cor. Videbo ultionẽ judicii tui ex eis: quia corã te dixi injuriã meã. 21 Propterea hæc dicit Dñs sup viros Anathoth, qui quærunt occidere te, qui dicunt: Non prophetabis in nomine Dñi, & non morieris in manib' nostris. 22 Propterea hæc dicit Dñs exercituũ: Ecce ego visitabo sup eos. Juvenes eorũ occidẽtur gladio: filii eorũ & filiæ eorũ morientur fame. 23 Et reliquiæ non erunt eis; quia inducam malũ super viros Anathoth, annũ visitationis peccatorũ suorum.

CAP. XII.

1 Justior es Dñe, quàm ut contendã ante Verbũ tuũ: veruntamen interrogationẽ judicii ego interrogo à facie tua, quare *via* impiorum *prosperatur*, & pacificè degũt oẽs qui prævaricãtur prævaricationẽ? 2 Sustentâsti eos, etiã roborati sunt; divites facti sunt: & etiã possederũt substantias: propè sunt verba legis tuæ in ore eorũ, & longè est timor tui à renib' eorũ. 3 Tu autẽ Dñe omnia scis, & manifestũ est corã te, ꝙ tu eligis corda quæ sibi placent in timore tui. Præpara impios quasi oves ad victimã, & præpara eos in diẽ occisionis. 4 Usquequo deserta erit terra, & herba omnis agri siccabitur, propter peccata impiorũ qui habitant in ea? Consumptũ est animal & volucre: quia dixerũt; Non est revelat' corã eo finis noster. 5 Hæc est responsio quæ facta est ad Jeremiam prophetã super interrogationẽ suã: Propheta, similis es tu viro qui currit pedibus & lassatur. Quomodo ergo tu putas currere contra equos? in planitie & terra pacis tu fidis & cadis: & quomodo tu putas facere contra bestias agri in elatione Jordanis? Et si sup bona quib' ego benefeci Nabuchodonosor regi Babylonis pediti, ô propheta tu videns miraris; quid ubi primũ ego ostendero tibi ꝙ ego factur' sum patrib' tuis justis quia à seculo fuerũt, qui cucurrerũt sicut equi ut facerẽt opera bona corã me? Etiã dixi eis, ꝙ adducerẽ sup filios eorũ benedictiones & consolationes, sicut aquas, quæ descendũt cum inundatione in Jordanem. 6 Et tu *Jeremia* quæris pro illis misericordiã? quia etiã fratres tui & dom' patris tui, etiã ipsi iniquè egerunt contra te: ipsi quoq; dixerũt adversum te verba mala. Ne credas eis cùm dixerint de te verba recta. 7 Reliqui domũ sanctuarii mei, abjeci hæreditatẽ meã, tradidi populũ qui erat dilect' corã me, in manum inimicorũ suorũ. 8 Facta est corã me hæreditas mea quasi leo in sylva: ascendit *contra me* tumultus ejus, propterea projeci eam. 9 Sicut avis quæ dispersa est, sic dispersa est hæreditas mea corã me: & sicut avis quæ volat, sic cõgregabũtur contra eã *occidẽtes gladio undiquaq;: reges populorũ & exercit' eorum venient contra eam*, ut diripiant eam. 10 Reges multi occiderunt populum meum, conculcaverunt hæreditatem meam, posuerunt possessionem desiderii mei in desertum desolationis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܕܝܢܐ ܕܩܘܫܬܐ. ܒܚܪ ܟܘܠܝܬܐ ܘܠܒܐ. ܐܚܙܐ ܦܘܪܥܢܘܬܟ ܡܢܗܘܢ. 20
ܡܛܠ ܕܠܟ ܓܠܝܬ ܕܝܢܝ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܐܢܫܐ ܕܥܢܬܘܬ ܕܒܥܝܢ 21
ܢܦܫܟ. ܘܐܡܪܝܢ ܠܐ ܬܬܢܒܐ ܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܕܠܐ ܬܡܘܬ ܒܐܝܕܝܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ 22
ܡܪܝܐ ܕܚܝܠܬܐ. ܗܐ ܦܩܕ ܐܢܐ ܥܠܝܗܘܢ. ܥܠܝܡܝܗܘܢ ܢܡܘܬܘܢ ܒܚܪܒܐ. ܘܒܢܝܗܘܢ
ܘܒܢܬܗܘܢ. ܢܡܘܬܘܢ ܒܟܦܢܐ. * ܘܫܪܟܐ ܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܡܝܬܐ ܐܢܐ ܒܝܫܬܐ ܥܠ 23
ܐܢܫܐ ܕܥܢܬܘܬ. ܒܫܢܬܐ ܕܣܘܥܪܢܗܘܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܒ *

* ܙܕܝܩ ܐܢܬ ܡܪܝܐ. ܕܐܕܘܢ ܥܡܟ. ܒܪܡ ܕܝܢܐ ܡܡܠܠ ܐܢܐ ܥܡܟ. ܡܛܠ ܡܢܐ ܐܘܪܚܗ 1
ܕܪܫܝܥܐ ܡܨܠܚܐ. ܘܫܠܝܢ ܟܠܗܘܢ ܥܘܠܐ. * ܢܨܒܬ ܐܢܘܢ. ܘܐܫܪܘ ܥܩܪܝܗܘܢ. ܥܒܕܘ 2
ܐܦ ܦܐܪܐ. ܩܪܝܒ ܐܢܬ ܒܦܘܡܗܘܢ. ܘܪܚܝܩ ܐܢܬ ܡܢ ܟܘܠܝܬܗܘܢ. * ܘܐܢܬ 3
ܡܪܝܐ ܝܕܥܬܢܝ ܘܚܙܝܬܢܝ. ܘܒܚܪܬ ܠܒܝ ܩܕܡܝܟ. ܛܝܒ ܐܢܘܢ. ܐܝܟ ܥܢܐ ܠܢܟܣܬܐ. ܘܙܡܢ
ܐܢܘܢ ܠܝܘܡ ܩܛܠܐ. * ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܬܬܐܒܠ ܐܪܥܐ. ܘܥܣܒܐ ܕܟܠܗ ܕܚܩܠܐ ܢܝܒܫ ܡܢ ܒܝܫܬܐ 4
ܕܥܡܘܪܝܗ̇ ܣܦܘ ܒܥܝܪܐ ܘܦܪܚܬܐ. ܕܐܡܪܘ. ܠܐ ܢܚܙܐ ܚܪܬܢ. * ܗܐ ܥܡ ܪ̈ܓܠܐ ܪܗܛܬ 5
ܘܐܠܐܝܘܟ. ܘܐܝܟܢܐ ܡܬܚܪܐ ܐܢܬ ܥܡ ܪ̈ܟܫܐ. ܘܒܐܪܥܐ ܕܫܠܡܐ :: ܬܬܟܠ ܒܗ. ܘܐܝܟܢܐ ܬܥܒܪ
ܐܝܟ ܒܬܘܥܪܬܗ ܕܝܘܪܕܢܢ. * ܡܛܠ ܕܐܦ ܐܚܝܟ ܘܒܝܬ ܐܒܘܟ. ܐܦ ܗܢܘܢ ܕܓܠܘ ܒܟ. ܘܐܦ 6
ܗܢܘܢ ܐܡܪܘ ܥܠܝܟ ܒܝܫܬܐ. ܠܐ ܬܗܝܡܢ ܐܢܘܢ ܟܕ ܢܡܠܠܘܢ ܥܡܟ ܛܒܬܐ. * ܫܒܩܬ ܒܝܬܝ 7
ܫܒܩܬ ܝܪܬܘܬܝ. ܝܗܒܬ ܚܒܝܒܬܗ ܕܢܦܫܝ ܒܐܝܕܝ ܒܥܠܕܒܒܝܗ̇. * ܗܘܬ ܠܝ ܝܪܬܘܬܝ ܐܝܟ 8
ܐܪܝܐ ܒܥܒܐ. ܐܪܝܡܬ ܥܠܝ ܩܠܗ̇. ܡܛܠ ܗܢܐ ܣܢܝܬܗ̇. * ܦܪܚܬܐ ܨܒܝܥܬܐ ܗܘܬ ܠܝ ܝܪܬܘܬܝ 9
ܘܦܪܚܬܐ ܬܚܕܪܝܗ̇. ܙܠܘ ܟܢܫܘ ܟܠܗ̇ ܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ ܘܐܝܬܘ ܠܡܐܟܠܗ̇. * ܘܪ̈ܥܘܬܐ ܣܓܝܐܐ 10
ܚܒܠܘ ܟܪܡܝ. ܕܫܘ ܡܢܬܝ. ܥܒܕܘ ܡܢܬܝ ܪܓܝܓܬܐ. ܐܝܟ ܡܕܒܪܐ ܚܪܒܐ.

Verùm Domine potentiſſime, judex verita- 20
tis, renum cordíſque ſcrutator, *fac* videam
ultionem tuam de illis; quia tibi revelavi
judicia mea. Propterea ſic dicit Dominus, In 21
cives Anathoth qui quærunt animam tuam,
& dicunt, Ne vaticineris in nomine Domini,
et ne moriaris manibus noſtris: Propterea 22
inquam ſic dicit Dominus exercituum, Ecce
animadverſurus ſum in eos: juvenes gladio
occumbent, & filii ac filiæ eorum fame mori-
entur, Nec *fœlicem* exitum conſequentur; 23
adducturus enim ſum calamitatem ſuper ci-
ves Anathoth anno viſitationis eorum.

CAP. XII.

Juſtiſſimus quidem es Domine, ut judicio 1
contendam tecum: attamen cauſam hanc tibi
proponam. Qua de re via impii proſpera
eſt, & locupletes ſunt omnes perfidi? Plantas 2
eos, & firmas demittunt radices, proficiunt,
& fructus etiam producunt, propinquus es
in ore ipſorum, at longinquus à renibus eo-
rum. Tu autem Domine *qui* me cognoſcis, 3
me vides, & cor meum exploras apud te;
præpara eos tanquam oves ad jugulationem,
& appara eos ad diem occiſionis. Quouſq; 4
lugebit terra? nam tota agri herba exaruit,
propter nequitiam habitantium in ea defe-
cerunt jumenta & volucres; quia dixerunt,
Non videbit finem noſtrum. Ecce cum pedi- 5
tibus cucurriſti, & laſſum te reddidêre; quo-
modo ergò certares cum equis, & terræ pa-
cis confideres? & quomodo tranſires per
vaſtitatem Jordanis? Quandoquidem etiam 6
fratres tui & familia patris tui, vel ipſi te
deceperunt, vel ipſimet *mala* de te verba
dixerunt; ne credas iſtis licèt bene de te lo-
quantur. Dereliqui domum meam, deſerui 7
hæreditatem meam, tradidi dilectam animæ
meæ in manus inimicorũ ejus. Facta eſt mihi 8
hæreditas mea ſicut leo in ſylva, extulit con-
tra me vocem ſuam; iccirco odi eam. Avis 9
picta facta eſt mihi hæreditas mea, ideo avis
circundabit eam. Ite, congregate omnes beſti-
as deſerti, & adducite ad devorandã illã. Pa- 10
ſtores multi corruperunt vineã meã, concul-
caverunt portionẽ meã, reddiderunt portionẽ
mihi gratiſſimã quaſi ſolitudinem deſertam,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* رب القوات يحكم بالعدل * يختبر الكلى والقلوب * انظر الانتقام الذي من قبلك فيهم * 20
لاني كشفت لك عدلي * لاجل هذا هكذا يقول الرب الاله على رجال اناثوث الذين يطلبون 21
نفسي القايلين لا تتنبا باسم الرب ولا تموت في ايدينا * لاجل هذا هكذا يقول رب القوات * 22
ها انا اطلع عليهم * شبانهم يموتون بالسيف * وبنوهم وبناتهم يموتون بالجوع * ولا يكون 23
لهم بقية * لاني اجلب شرورا على السكان في اناثوث في سنة تعهدهم *

* الفصل الثاني عشر *

* عدل انت يا رب * لاني انا اجاوب معك لا اتكلم معك بالاحكام * لماذا ان طريق المنافقين 1
مستقيمة * جميع الذين يعصون عصيانا مخصبين * غرستهم غرسا فتاصلوا * صنعوا اولادا 2
وصنعوا ثمرا * قريب انت من فمهم وبعيد من كلاهم * وانت يا رب عرفتني ورايتني وامتحنت 3
قلبي امامك * اجمعهم مثل خراف للذبح * وطهرهم ليوم ذبحهم * الى متى تحزن الارض * وكل 4
عشب الارض ييبس من شر الساكنين في الارض * هلكت البهايم والطيور * لانهم قالوا لا
يعاين الله طرقنا * رجلاك تسرع ويملونك * كيف تسعد على الخيل * وفي ارض سلامتك وثقت 5
كيف تصنع في ارتجاج الاردن * لان اخوتك وبيت ابيك والاخر غدروا بك * وهم صرخوا 6
من خلفك واجتمعوا * لا تامنهم لانهم يتكلمون عليك شرورا * اهملت بيتي * تركت ميراثي * 7
اعطيت نفسي المحبوبة في ايدي اعدايها * صار ميراثي لي مثل اسد في الغاب * اعطت علي 8
صوتها * لاجل هذا ابغضتها * هل مغار لصوص ميراثي لي * امضوا واجمعوا جميع وحوش 9
الحقل * وليأتوا ليأكلوها * الرعاة الكثيرون افسدوا كرمي * دنسوا نصيبي * اعطوا قسمي 10
المشتهي لبرية غير مسلوكة *

Dominus virtutum juſtè judicat, renes 20
& corda ſcrutatur: videam precor ul-
tionem quæ per te ſumenda eſt ab eis, quo-
niam tibi retexi jus meum. Iccirco ſic 21
ait Dominus Deus de civibus Anathoth
qui quærunt animam meam, qui dicunt,
Ne vaticineris in nomine Domini, ne mo-
riaris per manus noſtras: Iccirco in- 22
quam ſic ait Dominus virtutum, Ecce
ego reviſam eos: juvenes eorum gladio
morientur, filii & filiæ eorum fame inter-
ibunt; Nec erit eis reſiduum; quoniam 23
inducam mala ſuper habitantes in Ana-
thoth anno viſitationis eorum.

CAP. XII.

Juſtiſſimus es O Domine: quandoqui- 1
dem ego ſum tecum diſceptaturus, an-
non loquerer tecum judicia? Quarè via
impiorum eſt recta? omnes qui contuma-
ciſſimè rebellant, fœcundi ſunt? Plan- 2
tando plantas eos, & radicantur? pro-
ducunt liberos, & edunt fructus? pro-
pinquus es ori eorum, & longinquus à
renibus eorum. Et tu O Domine, noſti 3
me, vides me, & probâſti cor meum co-
ram te: congrega eos tanquam agnos ad
jugulationem, & expia illos ad diem
mactationis eorum. Quouſque mœrebit 4
terra, & omnis herba terræ ſiccabitur ob
nequitiam habitantium in terra? interie-
runt jumenta & volatilia; quia dicunt,
Nequaquam intuetur Deus vias noſtras.
Pedes tui ſunt celeres, attamen labore 5
te conficiunt, quomodo curſu certares cum
equis? Tu qui terræ pacis tuæ confidis,
quomodo faceres in concitatione Jorda-
nis? Nam fratres tui, & domus tua 6
paterna cum aliis, perfidè tecum egerunt,
ipsique à tergo tuo exclamaverunt &
congregati ſunt: ne credas illis quia locuti
ſunt de te mala. Neglexi domum meam, 7
deſerui hæreditatem meam, tradidi ani-
mam meã dilectam in manus inimicorum
ejus. Facta eſt hæreditas mea mihi ſicut 8
leo in ſylva, edidit contra me vocem ſu-
am, propterea odio proſequor eam. Num 9
ſpelunca latronum eſt hæreditas mea mi-
hi? Agite, congregate omnes agri bel-
luas: veniant, & comedant eam. Pa- 10
ſtores multi depravârunt vineam meam,
polluerunt ſortem meam, redegerunt partẽ
meã optatiſſimã in deſertum impervium,

videam , cor & renes probans ,justitiam *judicans* exercituum Domine *Et*
20 וַיהוָה צְבָאוֹת שֹׁפֵט צֶדֶק בֹּחֵן כְּלָיוֹת וָלֵב אֶרְאֶה
sic Propterea .meam *litem* revelavi *te ad* quia : eis de tuam ultionem
21 נִקְמָתְךָ מֵהֶם כִּי אֵלֶיךָ גִּלִּיתִי אֶת־רִיבִי׃ לָכֵן כֹּה־
:dicendo,tuam animam *quærentes* , Hanathoth viros ad Dominꝰ dixit
אָמַר יְהוָה עַל־אַנְשֵׁי עֲנָתוֹת הַמְבַקְשִׁים אֶת־נַפְשְׁךָ לֵאמֹר
Propterea .nostras manꝰ ꝑ morieris non & ,Dñi nomine in vaticineris Ne
22 לֹא תִנָּבֵא בְּשֵׁם יְהוָה וְלֹא תָמוּת בְּיָדֵנוּ׃ לָכֵן
juvenes : eos *super visitans* ego Ecce : exercituum Dominus dixit sic
כֹּה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת הִנְנִי פֹקֵד עֲלֵיהֶם הַבַּחוּרִים
residuum Et .fame in morientur eorũ filiæ & eorũ filii,gladio in moriẽtur
23 יָמֻתוּ בַחֶרֶב בְּנֵיהֶם וּבְנוֹתֵיהֶם יָמֻתוּ בָּרָעָב׃ וּשְׁאֵרִית
annus ,Hanathoth *viros in* , malum inducam quia : eis erit non
לֹא תִהְיֶה לָהֶם כִּי־אָבִיא רָעָה אֶל־אַנְשֵׁי עֲנָתוֹת שְׁנַת
.eorum visitationis
פְּקֻדָּתָם׃

CAP. XII. יב

loquar judicia Veruntamen:*te contra litigabo cùm* ,Domine *tu* Justus
1 צַדִּיק אַתָּה יְהוָה כִּי אָרִיב אֵלֶיךָ אַךְ מִשְׁפָּטִים אֲדַבֵּר
prævaricãtes omnes *fuerũt securi*,est prosperata impiorũ via Quare .tecum
אוֹתָךְ מַדּוּעַ דֶּרֶךְ רְשָׁעִים צָלֵחָה שָׁלוּ כָּל־בֹּגְדֵי
:fructũ fecerunt etiã,*iverunt*,sunt radicati etiã,eos Plãtâsti ?prævaricationẽ
2 בָגֶד׃ נְטַעְתָּם גַּם־שֹׁרָשׁוּ יֵלְכוּ גַּם־עָשׂוּ פֶרִי
Domine tu Et .eorum renibus à *longinquus* & ,eorum *ore in tu propinquus*
3 קָרוֹב אַתָּה בְּפִיהֶם וְרָחוֹק מִכִּלְיוֹתֵיהֶם׃ וְאַתָּה יְהוָה
pecus sicut eos evelle : tecum meum cor probâsti & ,me vidisti , me nôsti
יְדַעְתָּנִי תִּרְאֵנִי וּבָחַנְתָּ לִבִּי אִתָּךְ הַתִּקֵם כְּצֹאן
lugebit quo Usque .occisionis diem ad eos *sanctifica* & ; jugulationẽ ad
4 לְטִבְחָה וְהַקְדִּשֵׁם לְיוֹם הֲרֵגָה׃ עַד־מָתַי תֶּאֱבַל
ea in habitantium malitiã propter?arescet agri omnis herba & , terra
הָאָרֶץ וְעֵשֶׂב כָּל־הַשָּׂדֶה יִיבָשׁ מֵרָעַת יֹשְׁבֵי־בָהּ
.*nostrum novissimum* videbit Non:dixerũt quoniã,*volatile* &,animalia *periit*
סָפְתָה בְהֵמוֹת וָעוֹף כִּי אָמְרוּ לֹא יִרְאֶה אֶת־אַחֲרִיתֵנוּ׃
contendes quomodo &:te fecerũt laborare &,cucurristi peditibꝰ cum *Quia*
5 כִּי אֶת־רַגְלִים רַצְתָּה וַיַּלְאוּךָ וְאֵיךְ תְּתַחֲרֶה
facies quomodo & , *fidens* tu pacis terra in Et ?equis cum
אֶת־הַסּוּסִים וּבְאֶרֶץ שָׁלוֹם אַתָּה בוֹטֵחַ וְאֵיךְ תַּעֲשֶׂה
ipsi etiam tui patris domꝰ &,tui fratres etiam Nam?Jarden altitudine in
6 בִּגְאוֹן הַיַּרְדֵּן׃ כִּי גַם־אַחֶיךָ וּבֵית־אָבִיךָ גַּם־הֵמָּה
Ne :*implendo* te post clamaverunt ipsi etiam ; te contra sunt prævaricati
בָּגְדוּ בָךְ גַּם־הֵמָּה קָרְאוּ אַחֲרֶיךָ מָלֵא אַל־
,meam domũ Reliqui .bona te ad fuerint locuti quum,eis *in* credas
7 תַּאֲמֵן בָּם כִּי־יְדַבְּרוּ אֵלֶיךָ טוֹבוֹת׃ עָזַבְתִּי אֶת־בֵּיתִי
vola in meæ animæ dilectionem dedi : meam hæreditatem dimisi
נָטַשְׁתִּי אֶת־נַחֲלָתִי נָתַתִּי אֶת־יְדִדוּת נַפְשִׁי בְּכַף
dedit:sylva in leo tanquam mea hæreditas mihi Fuit .ejus inimicorum
8 אֹיְבֶיהָ׃ הָיְתָה־לִּי נַחֲלָתִי כְּאַרְיֵה בַיָּעַר נָתְנָה
mea hæreditas tincta avis Nunquid .eam odi ideo , *sua voce in* me contra
9 עָלַי בְּקוֹלָהּ עַל־כֵּן שְׂנֵאתִיהָ׃ הַעַיִט צָבוּעַ נַחֲלָתִי
fera omnis vos congregate , *Ite* ?eam contra *circum* avis Nunquid *? mihi*
לִי הַעַיִט סָבִיב עָלֶיהָ לְכוּ אִסְפוּ כָּל־חַיַּת
sunt demoliti multi Pastores .devorandum ad venite , agri
10 הַשָּׂדֶה הֵתָיוּ לְאָכְלָה׃ רֹעִים רַבִּים שִׁחֲתוּ
portionem *dederunt* : meam partem conculcaverunt , meam vineam
כַּרְמִי בֹּסְסוּ אֶת־חֶלְקָתִי נָתְנוּ אֶת־חֶלְקַת
.solitudinis desertum in *mei desiderii*
חֶמְדָּתִי לְמִדְבַּר שְׁמָמָה׃

Versio VULG. LAT.

20 Tu autem,Domine Sabaoth, qui
judicas justè, & probas renes &
corda, videam ultionem tuam ex
eis : tibi enim revelavi causam
21 meam. Propterea hæc dicit Do-
minꝰ ad viros Anathoth,qui quæ-
runt animam tuam, & dicunt ;
Non prophetabis in nomine Do-
mini, & non morieris in manibꝰ
22 nostris. Propterea hæc dicit Do-
minus exercituum ; Ecce ego vi-
sitabo super eos : juvenes mori-
entur in gladio, filii eorum & fi-
23 liæ eorum morientur in fame. Et
reliquiæ non erunt ex eis:inducã
enim malũ super viros Anathoth,
annum visitationis eorum.

CAP. XII.

1 Justus quidem tu es,Domine, si
disputem tecum : veruntamen ju-
sta loquar ad te : Quarè via im-
piorum prosperatur : benè est o-
mnibus qui prævaricantur & ini-
2 què agunt? Plantâsti eos, & ra-
dicem miserunt:proficiunt & fa-
ciunt fructum:propè es tu ori eo-
3 rum,& longè à renibus eorum. Et
tu,Domine,nôsti me,vidisti me,et
probâsti cor meum tecũ:congre-
ga eos quasi gregem ad victimam,
& sanctifica eos in die occisio-
4 nis. Usquequò lugebit terra, &
herba omnis regionis siccabitur,
propter malitiam habitantium in
ea ? consumptum est animal, &
volucre, quoniam dixerunt ; Non
5 videbit novissima nostra. Si cum
peditibus currens laborâsti:quo-
modò contendere poteris cum
equis ? cùm autem in terra pacis
securus fueris, quid facies in su-
6 perbia Jordanis ? Nam & fratres
tui, & domus patris tui, etiam
ipsi pugnaverunt adversùm te,
& clamaverunt post te plenâ vo-
ce : ne credas eis cùm locuti fue-
7 rint tibi bona. Reliqui domum
meam, dimisi hæreditatem meã:
dedi dilectam animam meam in
8 manu inimicorum ejus: Facta est
mihi hæreditas mea quasi leo in
sylva:dedit contra me vocẽ,ideò
9 odivi eam. Numquid avis disco-
lor hæreditas mea mihi?numquid
avis tincta ꝑ totum?venite, con-
gregamini omnes bestiæ terræ,
10 properate ad devorandũ.Pastores
multi demoliti sunt vineã meam,
conculcaverunt partẽ meam:de-
derunt portionem meam deside-
rabilem in desertum solitudinis.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

20 Κύριε κρίνων δίκαια, δοκιμάζων νεφροὺς καὶ
καρδίας, ἴδοιμι τὴν παρὰ σοῦ ἐκδίκησιν ἐξ
αὐτῶν, ὅτι πρὸς σὲ ἀπεκάλυψα τὸ δικαί-
21 ωμά μου. Διὰ τοῦτο τάδε λέγει (ω) κύριος
ἐπὶ τοὺς ἄνδρας Ἀναθὼθ τοὺς ζητοῦντας τὴν
ψυχήν μου, τοὺς λέγοντας, Οὐ μὴ (α) προφη-
τεύσεις ἐπὶ τῷ ὀνόματι κυρίου, εἰ δὲ μή, ἀ-
22 ποθάνῃ ἐν ταῖς χερσὶν ἡμῶν· Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπι-
σκέψομαι ἐπ᾽ αὐτούς· οἱ νεανίσκοι αὐτῶν
ἐν μαχαίρᾳ (β) ἀποθανοῦνται, καὶ οἱ υἱοὶ αὐ-
τῶν καὶ αἱ θυγατέρες αὐτῶν τελευτήσουσιν ἐν
23 λιμῷ. Καὶ ἐγκατάλειμμα οὐκ ἔσται αὐτῶν,
ὅτι ἐπάξω κακὰ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας ἐν
Ἀναθώθ, ἐν ἐνιαυτῷ ἐπισκέψεως αὐτῶν.

MS.A. (ω) κύριος ὁ θεὸς (α) προφητεύσῃς (β) πεσοῦνται,

ΚΕΦ. ιβʹ.

1 Δίκαιος εἶ κύριε, ὅτι ἀπολογήσομαι
πρὸς σέ. πλὴν κρίματα λαλήσω πρὸς σέ·
τί ὅτι ὁδὸς ἀσεβῶν εὐοδοῦται; εὐθήνησαν
2 πάντες οἱ ἀθετοῦντες (α) ἀθετήματα; Ἐφύ-
τευσας αὐτούς, καὶ (β) ἐρριζώθησαν· ἐτεκνο-
ποιήσαντο, καὶ ἐποίησαν καρπόν. ἐγγὺς εἶ
σὺ τοῦ στόματος αὐτῶν, καὶ πόρρω ἀπὸ τῶν
3 νεφρῶν αὐτῶν. Καὶ σὺ κύριε γινώσκεις με,
(γ) δεδοκίμακας τὴν καρδίαν μου ἐναντίον
σου. ἅγνισον αὐτοὺς εἰς ἡμέραν σφαγῆς αὐτῶν.
4 Ἕως πότε πενθήσει ἡ γῆ, καὶ πᾶς (δ) ὁ χόρ-
τος τοῦ ἀγροῦ ξηρανθήσεται ἀπὸ κακίας τῶν κατ-
οικούντων (ε) ἐν αὐτῇ; (ζ) ἠφανίσθησαν κτή-
νη καὶ πετεινά, (η) ὅτι εἶπαν, Οὐκ ὄψεται ὁ
5 θεὸς ὁδοὺς ἡμῶν. Σοῦ οἱ πόδες τρέχουσι, καὶ
(θ) ἐκλύουσί σε· πῶς παρασκευάσῃ ἐφ᾽
ἵπποις; καὶ ἐν γῇ εἰρήνης σὺ πέποιθας· πῶς
6 ποιήσεις ἐν φρυάγματι τοῦ Ἰορδάνου; Ὅτι
(ι) καὶ οἱ ἀδελφοί σου καὶ ὁ οἶκος τοῦ πατρός
σου, (κ) καὶ οὗτοι ἠθέτησάν σε, καὶ αὐτοὶ ἐ-
βόησαν, ἐκ τῶν ὀπίσω σου ἐπισυνήχθησαν·
μὴ πιστεύσῃς ἐν αὐτοῖς, ὅτι λαλήσουσι (λ)
7 πρὸς σὲ καλά. (μ) Ἐγκαταλέλοιπα τὸν οἶκόν
μου, ἀφῆκα τὴν κληρονομίαν μου, ἔδωκα τὴν
ἠγαπημένην ψυχήν μου εἰς χεῖρας ἐχθρῶν
8 αὐτῆς. Ἐγενήθη ἡ κληρονομία μου ἐμοὶ ὡς
λέων ἐν δρυμῷ, ἔδωκεν ἐπ᾽ ἐμὲ τὴν φωνὴν
9 αὐτῆς, διὰ τοῦτο ἐμίσησα αὐτήν. Μὴ σπή-
λαιον (ν) ὑαίνης ἡ κληρονομία μου (ξ) ἐμοί,
ἢ σπήλαιον κύκλῳ αὐτῆς; βαδίσατε, συν-
αγάγετε πάντα τὰ θηρία τοῦ ἀγροῦ, καὶ (ο)
10 ἐλθέτωσαν τοῦ φαγεῖν αὐτήν. Ποιμένες
πολλοὶ διέφθειραν τὸν ἀμπελῶνά μου, ἐμό-
λυναν τὴν μερίδα μου, ἔδωκαν (π) τὴν μερίδα
τὴν ἐπιθυμητήν μου εἰς ἔρημον ἄβατον,

MS.A. (α) ἀθετήσει; (β) ἐρρίζωσαν· ἐτεκνοποίησαν, (γ) ἐδοκίμασας (δ) χόρ-
τος ξηρανθήσεται (ε) * αὐτῶν; (ζ) ἠφάνισας (η) καὶ εἶπαν, (θ) ἐκλύουσίν
(ι) οἱ ἀδελφοί (κ) ἠθέτησαν (λ) ἐπὶ σὲ (μ) Ἐγκαταλέλοιπα (ν) λῃστῶν ἡ (ξ)
ἐμοί; βαδίσατε καὶ συναγάγετε (ο) ἐλθάτωσαν τοῦ καταφαγεῖν (π) μερί-
δα μου ἐπιθυμητὴν εἰς

(d) Domine, judicans justa, pro- 20
bans renes, & corda, videam e-
am, quæ à te, ultionem ex eis:
quoniam ad te revelavi justifica-
tionem meam. Idcircò hæc dicit 21
Dominus super viros Anathoth,
qui quærunt animam meam, di-
centes; Non prophetabis in nomine
Domini: alioqui morieris in ma-
nibꝰ nostris; Ecce ego visitabo su- 22
per eos. Juvenes eorum in gladio
morientur: et filii eorum, et filiæ 23
eorum morientur in fame: Et reli-
quiæ non erunt eorum. Inducam
enim mala super habitatores A-
nathoth, in anno visitationis
eorum.

CAP. XII.

Justus es, Domine: quia satis- 1
faciam tibi: Veruntamen judicia
loquar ad te. Quid est, quòd via
impiorum prosperatur? abunda-
verunt omnes, qui prævarican-
tur prævaricationes? Plantâsti 2
eos, & radicem miserunt: filios
fecerunt, & fecerunt fructum.
Propè es tu ori eorum, & longè
à renibus eorum. Et tu, Domine, 3
cognoscis me: probâsti cor meum
corã te. (a) Purifica eos in diẽ oc-
cisionis eorum. Usquequò lugebit 4
terra, et omnis herba agri siccabi-
tur à malitia habitantium in ea?
Deleta sunt jumenta, & volati-
lia: quia dixerunt, Non vide-
bit Deus vias nostras. (b) Tui 5
pedes currunt, & dissolvunt te:
quomodò præparaberis in equis?
& in terra pacis tua confidisti;
(c) quomodò facies in fremitu
Jordanis? Nam et fratres tui, & 6
domus patris tui, etiam ipsi spre-
verunt te: & ipsi clamaverunt:
ex posterioribus tuis congregati
sunt: ne credas in eis; quia lo-
quentur ad te bona. Reliqui do- 7
mum meam, dimisi hæreditatem
meam: dedi dilectam animam
meam in manus inimicorum ejus.
Facta est hæreditas mea mihi, 8
quasi leo in sylva: dedit super
me vocem suam: ideò odivi e-
am. Nónne spelunca hyænæ hæ- 9
reditas mea mihi? an spelunca
in circuitu (d) ejus? Pergite,
congregate omnes bestias agri: &
veniant ad comedendam eam:
Pastores multi disruperunt vine- 10
am meam: polluerunt partem me-
am: dederunt portionem meã de-
siderabilem in desertum invium:

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

20 וַייָ צְבָאוֹת דַיָין קְשׁוֹט גַלְיָן קֳדָמוֹהִי כָּלְיָן וְלִבָּא אַחְזֵי פּוּרְעָנוּת דִינָךְ מִנְהוֹן אֲרֵי קֳדָמָךְ
21 אֲמָרִית יָת עֻלְבָּנִי׃ בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ עַל אֱנָשֵׁי עֲנָתוֹת דְבָעַן לְמִקְטְלָךְ דְאָמְרִין לָא תִתְנַבֵּי
22 בִּשְׁמָא דַייָ וְלָא תְמוּת בִּידָנָא׃ בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת הָאֲנָא מַסְעַר עֲלֵיהוֹן טוּלֵמֵיהוֹן
23 יִתְקַטְלוּן בְּחַרְבָּא בְּנֵיהוֹן וּבְנָתֵיהוֹן יְמוּתוּן בְּכַפְנָא׃ וּשְׁאָרָא לָא יְהֵי לְהוֹן אֲרֵי אַיְתֵי
בִּישְׁתָא עַל אֱנָשֵׁי עֲנָתוֹת שְׁנַת סוֹעֲרָן חוֹבֵיהוֹן׃ יב
1 זַכַּי אַתְּ יְיָ מִלְמֵרַן לְקֳבֵל פִּתְגָמָךְ בְּרַם שְׁאֵילַת דִינִין אֲנָא שָׁאֵל מִן קֳדָמָךְ מַדֵין אוֹרְחַת
2 רַשִׁיעַיָא מַצְלְחָא שְׁלָן שְׁלֵיוָא כָל מְשַׁקְרֵי שְׁקַר׃ קַיֵמְתִּנוּן אַף תְקִיפוּ עֲתַרוּ אַף קְנוֹ נִכְסִין
3 קְרִיבִין פִּתְגָמֵי אוֹרָיְתָךְ בְּפוּמְהוֹן וּרְחִיקָא דְחַלְתָּךְ מִכֻּלְיָתְהוֹן׃ וְאַתְּ יְיָ כוֹלָא יְדִיעַ וּגְלֵי קֳדָמָךְ
דְאַתְּ בָּחַר לִבְבַיָא דְרָעַן בִּדְחַלְתָּךְ רַשִׁיעַיָא אַתְקְנִנּוּן כְּעָנָא לְנִכְסְתָא וְזַמִנְנוּן לְיוֹם קְטוֹלֵי׃
4 עַד אֵימָתַי תֶּחֱרוּב אַרְעָא וְעִשְׂבָּא דְכָל חַקְלָא יִיבַשׁ מֵחוֹבֵי רַשִׁיעַיָא דְיָתְבִין בָּהּ סָף בְּעִירָא
5 וְעוֹפָא אֲרֵי אֲמַרוּ לָא גְלֵי קֳדָמוֹהִי סוֹפָנָא׃ דְנָא תְיוּבְתָא לְיִרְמְיָה נְבִיָא עַל בָּעוּתֵיהּ נְבִיָא
אַתְּ דָמֵי לְגַבְרָא דִרְהַט עִם רַגְלָאָה וְלָאֵי וְאֵיכְדֵין אַתְּ מְדַמֵי לְמִרְהַט כָּל קֳבֵל סוּסָוָתָא
בְּבִקְעֲתָא וּבְאַרְעָא שְׁלָמָא אַתְּ מִתְרְחֵיץ וְנָפֵיל וְאֵיכְדֵין אַתְּ מְדַמֵי לְמֶעְבַּד כָּל קֳבֵל חֵיוַת
בָּרָא דִבְרוּם יַרְדְנָא וְאִם עַל טָבְוָן דַאֲנָא מוֹטֵב לִנְבוּכַדְנֶאצַּר מַלְכָּא דְבָבֶל רִגְלָאָה נְבִיָא
אַתְּ חָזֵי וּמַתְמַהּ וּמַן פּוּן דְאַחֲוִיךְ מַה דַאֲנָא עָתִיד לְמֶעְבַּד לַאֲבָהָתָךְ צַדִיקַיָא דְמִן עָלְמָא
דִרְהַטוּ כְסוּסָוָתָא לְמֶעְבַּד עוֹבְדִין טָבִין קֳדָמַי וְאַף אֲמָרִית לְהוֹן דְאַיְתֵי עַל בְּנֵיהוֹן בִּרְכָן
6 וְנֶחָמָן הָא כְמַיָא דְנָחֲתִין שְׁטוֹף לְיַרְדְנָא׃ וּדְאַתְּ יִרְמְיָה בָּעֵי עֲלֵיהוֹן רַחֲמִין אֲרֵי יָת אַחָךְ
וּבֵית אֲבוּךְ אַף אִנּוּן שַׁקַרוּ בָךְ אַף אִנּוּן אֲמַרוּ עֲלָךְ מִלִין בִּישִׁין לָא תְהֵימַן בְּהוֹן אֲרֵי
7 יֵימְרוּן עֲלָךְ פִּתְגָמִין תַּקְנִין׃ שְׁבַקִית יָת בֵּית מַקְדְשִׁי רְטֵשִׁית יָת אַחְסַנְתִּי מְסָרֵית יָת עַמָא
8 דַהֲוָה חֲבִיב קֳדָמַי בְּיַד סָנְאוֹהִי׃ הֲוָת קֳדָמַי אַחְסַנְתִּי כְּאַרְיָא בְּחוּרְשָׁא סְלִיקַת עֲלַי
9 אִתְרְגוּשְׁתַּהּ עַל כֵּן רְחֵיקְתַּהּ׃ כְּעוֹפָא דְמִתְבַּדַר כֵּן אִתְבַּדְרַת אַחְסַנְתִּי קֳדָמַי וּכְעוֹפָא
דְמִשְׁתְּדֵי כֵּן יִתְכַּנְשׁוּן עֲלַהּ דְקָטְלִין בְּחַרְבָּא מִסְחוֹר סְחוֹר מַלְכֵי עַמְמַיָא וּמַשִׁרְיָתֵיהוֹן
10 יֵיתוּן עֲלַהּ לְמִבְזְהַהּ׃ מַלְכִין סַגִיאִין קְטַלוּ עַמִי דוֹשִׁישׁוּ יָת אַחְסַנְתִּי יְהַבוּ יָת אַחְסָנַת
חֶמְדָתִי לְמַדְבַּר צְדֵי׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et Dñs exercituũ judex veritatis,in cujꝰ conspectu manifesta sunt renes & 20
cor. Videbo ultionẽ judicii tui ex eis:quia corã te dixi injuriã meã. Pro- 21
pterea hæc dicit Dñs sup viros Anathoth,qui quærunt occidere te,qui di-
cunt:Non prophetabis in nomine Dñi,& non morieris in manibꝰ nostris.
Propterea hæc dicit Dñs exercituũ : Ecce ego visitabo sup eos. Juvenes 22
eorũ occidẽtur gladio: filii eorũ & filiæ eorũ morientur fame. Et reliquiæ 23
non erunt eis ; quia inducam malũ super viros Anathoth, annũ visitationis
peccatorũ suorum.

CAP. XII.

Justior es Dñe,quàm ut contendã ante Verbũ tuũ:veruntamen interroga- 1
tionẽ judicii ego interrogo à facie tua,quare *via* impiorum *prosperatur*,
& pacificè degũt oẽs qui prævaricãtur prævaricationẽ?Sustentâsti eos,etiã 2
roborati sunt;divites facti sunt : & etiã possederũt substantias : propè sunt
verba legis tuæ in ore eorũ,& longè est timor tui à renibꝰ eorũ. Tu autẽ 3
Dñe omnia scis,& manifestũ est corã te, ꝙ tu eligis corda quæ sibi placent
in timore tui. Præpara impios quasi oves ad victimã,& præpara eos in diẽ
occisionis. Usquequo deserta erit terra,& herba omnis agri siccabitur,pro- 4
pter peccata impiorũ qui habitant in ea?Consumptũ est animal & volucre:
quia dixerũt;Non est revelatꝰ corã eo finis noster. Hæc est responsio quæ 5
facta est ad Jeremiam prophetã super interrogationẽ suã:Propheta,similis
es tu viro qui currit pedibus & lassatur. Quomodo ergo tu putas currere
contra equos ? in planitie & terra pacis tu fidis & cadis : & quomodo tu
putas facere contra bestias agri in elatione Jordanis ? Et si sup bona quibꝰ
ego benefeci Nabuchodonosor regi Babylonis pediti,ô propheta tu videns
miraris ; quid ubi primũ ego ostendero tibi ꝙ ego facturꝰ sum patribꝰ tuis
justis quia à seculo fuerũt,qui cucurrerũt sicut equi ut facerẽt opera bona
corã me?Etiã dixi eis, ꝙ adducerẽ sup filios eorũ benedictiones & conso-
lationes,sicut aquas, quæ descendũt cum inundatione in Jordanem. Et tu 6
Jeremia quæris pro illis misericordiã ? quia etiã fratres tui & domꝰ patris
tui,etiã ipsi iniquè egerunt contra te:ipsi quoq; dixerũt adversum te verba
mala.Ne credas eis cùm dixerint de te verba recta.Reliqui domũ sanctuarii 7
mei,abjeci hæreditatẽ meã,tradidi populũ qui erat dilectꝰ corã me,in ma-
num inimicorũ suorũ. Facta est corã me hæreditas mea quasi leo in sylva : 8
ascendit *contra me* tumultus ejus,propterea projeci eam.Sicut avis quæ di- 9
spersa est,sic dispersa est hæreditas mea corã me : & sicut avis quæ volat,sic
cõgregabũtur contra eã *occidẽtes gladio undiquaq;:reges populorũ & ex-*
ercitꝰ eorum venient contra eam,ut diripiant eam. Reges multi occiderunt 10
populum meum, conculcaverunt hæreditatem meam, posuerunt possessio-
nem desiderii mei in desertum desolationis.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

20 * ܘܡܪܝܐ ܡܚܣܢܐ ܕܝܢܐ ܕܩܘܫܬܐ. ܒܨܐ ܟܘܠܝܬܐ ܘܠܒܐ.. ܐܚܙܐ ܬܘܪܥܢܟ ܡܢܗܘܢ..
21 ܡܛܠ ܕܠܟ ܓܠܝܬ ܕܝܢܝ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܐܢܫܐ ܕܥܢܬܘܬ ܕܒܥܝܢ
22 ܢܦܫܟ. ܘܐܡܪܝܢ ܠܐ ܬܬܢܒܐ ܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܬܡܘܬ ܒܐܝܕܝܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ
ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܗܐ ܦܩܕ ܐܢܐ ܥܠܝܗܘܢ.. ܥܠܝܡܐ ܢܡܘܬܘܢ ܒܚܪܒܐ. ܘܒܢܝܗܘܢ
23 ܘܒܢܬܗܘܢ. ܢܡܘܬܘܢ ܒܟܦܢܐ. * ܘܫܪܟܐ ܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܡܝܬܐ ܐܢܐ ܒܝܫܬܐ ܥܠ
ܐܢܫܐ ܕܥܢܬܘܬ. ܒܫܢܬܐ ܕܣܘܥܪܢܗܘܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܒ *

1 * ܙܕܝܩ ܐܢܬ ܡܪܝܐ ܕܐܕܘܢ ܥܡܟ. ܒܪܡ ܕܝܢܐ ܡܡܠܠ ܐܢܐ ܥܡܟ. ܡܛܠ ܡܢܐ ܐܘܪܚܗ
2 ܕܪܫܝܥܐ ܡܨܠܚܐ. ܘܫܠܝܢ ܟܠܗܘܢ ܥܘܠܐ. * ܢܨܒܬ ܐܢܘܢ. ܘܐܫܪܫܘ ܥܩܪܝܗܘܢ. ܐܬܘ
3 ܘܥܒܕܘ ܦܐܪܐ. ܩܪܝܒ ܐܢܬ ܒܦܘܡܗܘܢ. ܘܪܚܝܩ ܐܢܬ ܡܢ ܟܘܠܝܬܗܘܢ. * ܘܐܢܬ
ܡܪܝܐ ܝܕܥܬܢܝ. ܘܚܙܝܬܢܝ. ܘܒܚܪܬ ܠܒܝ ܩܕܡܝܟ. ܟܢܫ ܐܢܘܢ. ܐܝܟ ܥܢܐ ܠܢܟܣܬܐ. ܘܙܡܢ
4 ܐܢܘܢ ܠܝܘܡ ܩܛܠܐ. * ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܬܬܐܒܠ ܐܪܥܐ. ܘܥܣܒܐ ܕܟܠܗ ܚܩܠܐ ܝܒܫ ܡܢ ܒܝܫܬܐ
5 ܕܥܡܘܪܝܗ ܣܦܘ ܒܥܝܪܐ. ܘܦܪܚܬܐ. ܕܐܡܪܘ. ܠܐ ܢܚܙܐ ܚܪܬܢ. * ܐܢ ܥܡ ܪܓܠܝܐ ܪܗܛܬ
ܘܐܠܐܝܘܟ. ܘܐܝܟܢܐ ܡܬܚܪܐ ܐܢܬ ܥܡ ܣܘܣܝܐ. ܘܒܐܪܥܐ ܕܫܠܡܐ ܬܟܝܠ ܐܢܬ. ܘܐܝܟܢܐ ܥܒܪ
6 ܐܢܬ ܒܥܘܫܢܗ ܕܝܘܪܕܢܢ. * ܡܛܠ ܕܐܦ ܐܚܝܟ ܘܒܝܬ ܐܒܘܟ. ܐܦ ܗܢܘܢ ܢܟܠܘ ܒܟ. ܐܦ
7 ܗܢܘܢ ܐܡܪܘ ܒܬܪܟ ܒܝܫܬܐ. ܠܐ ܬܗܝܡܢ ܐܢܘܢ ܟܕ ܢܡܠܠܘܢ ܥܡܟ ܛܒܬܐ. * ܫܒܩܬ ܒܝܬܝ.
8 ܫܒܩܬ ܝܪܬܘܬܝ. ܝܗܒܬ ܚܒܝܒܬܗ ܕܢܦܫܝ ܒܐܝܕܝ ܒܥܠܕܒܒܝܗ. * ܗܘܬ ܠܝ ܝܪܬܘܬܝ ܐܝܟ
9 ܐܪܝܐ ܒܥܒܐ. ܐܪܝܡܬ ܥܠܝ ܒܩܠܗ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܣܢܝܬܗ. * ܦܪܚܬܐ ܡܨܝܪܬܐ ܗܘܬ ܠܝ ܝܪܬܘܬܝ
10 ܘܦܪܚܬܐ ܚܕܪܐ ܠܗ. ܙܠܘ ܟܢܘܫܘ ܟܠܗ ܚܝܘܬܐ ܕܕܒܪܐ. ܐܝܬܘ ܠܡܐܟܠܗ. * ܘܪܥܘܬܐ ܣܓܝܐܐ
ܚܒܠܘ ܟܪܡܝ. ܕܫܘ ܡܢܬܝ. ܝܗܒܘ ܡܢܬܐ ܕܪܓܬܝ ܐܝܟ ܡܕܒܪܐ ܚܪܒܐ.

Verùm Domine potentiſſime, judex veritatis, renum cordíſque ſcrutator, *fac* videam ultionem tuam de illis; quia tibi revelavi judicia mea. 20
Propterea ſic dicit Dominus, In cives Anathoth qui quærunt animam tuam, & dicunt, Ne vaticineris in nomine Domini, et ne moriaris manibus noſtris: 21
Propterea *inquam* ſic dicit Dominus exercituum, Ecce animadverſurus ſum in eos: juvenes gladio occumbent, & filii ac filiæ eorum fame morientur, 22
Nec *fœlicem* exitum conſequentur; adducturus enim ſum calamitatem ſuper cives Anathoth anno viſitationis eorum. 23

CAP. XII.

Juſtiſſimus quidem es Domine, ut judicio contendam tecum: attamen cauſam hanc tibi proponam. Qua de re via impii proſpera eſt, & locupletes ſunt omnes perfidi? 1
Plantas eos, & firmas demittunt radices, proficiunt, & fructus etiam producunt, propinquus es in ore ipſorum, at longinquus à renibus eorum. 2
Tu, autem Domine *qui* me cognoſcis, me vides, & cor meum exploras apud te; præpara eos tanquam oves ad jugulationem, & appara eos ad diem occiſionis. 3
Quouſq; lugebit terra? nam tota agri herba exaruit, propter nequitiam habitantium in ea defecerunt jumenta & volucres; quia dixerunt, Non videbit finem noſtrum. 4
Ecce cum peditibus cucurriſti, & laſſum te reddidêre; quomodo ergò certares cum equis, & terræ pacis confideres? & quomodo tranſires per vaſtitatem Jordanis? 5
Quandoquidem etiam fratres tui & familia patris tui, vel ipſi te deceperunt, vel ipſimet *mala* de te verba dixerunt; ne credas iſtis licèt bene de te loquantur. 6
Dereliqui domum meam, deſerui hæreditatem meam, tradidi dilectam animæ meæ in manus inimicorũ ejus. 7
Facta eſt mihi hæreditas mea ſicut leo in ſylva, extulit contra me vocem ſuam; iccirco odi eam. 8
Avis picta facta eſt mihi hæreditas mea, ideo avis circundabit eam. Ite, congregate omnes beſtias deſerti, & adducite ad devorandã illã. 9
Paſtores multi corruperunt vineã meã, conculcaverunt portionẽ meã, reddiderunt portionẽ mihi gratiſſimã quaſi ſolitudinem deſertam, 10

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

20 * رب القوات يحكم بالعدل * يختبر الكلى والقلوب * انظر الانتقام الذي من قبلك فيهم *
21 لاني كشفت لك عدلي * لاجل هذا هكذا يقول الرب الاله على رجال اناثوث الذين يطلبون
22 نفسي القائلين لا تتنبأ باسم الرب ولا تموت في ايدينا * لاجل هذا هكذا يقول رب القوات *
23 ها انا اطلع عليهم * شبانهم يموتون بالسيف * وبنوهم وبناتهم يموتون بالجوع * ولا يكون
لهم بقية * لاني اجلب شرورا على السكان في اناثوث في سنة تعهدهم *

* الفصل الثاني عشر *

1 * عدل انت يا رب * لاني انا اجاوب معك لا اتكلم معك بالاحكام * لماذا ان طريق المنافقين
2 مستقيمة * جميع الذين يعصون عصيانا مخصبين * غرستهم غرسا فتأصلوا * صنعوا اولادا
3 وصنعوا ثمرا * قريب انت من فمهم وبعيد من كلاهم * وانت يا رب عرفتني ورايتني وامتحنت
4 قلبي امامك * اجمعهم مثل خراف للذبح * وطهرهم ليوم ذبحهم * الى متى تحزن الارض * وكل
عشب الارض ييبس من شر الساكنين في الارض * هلكت البهائم والطيور * لانهم قالوا لا
5 يعاين الله طرقنا * رجلاك تسرع ويكلّوك * كيف تستعد على الخيل * وفي ارض سلامتك تثق
6 كيف تصنع في ارتجاج الاردن * لان اخوتك وبيت ابيك والآخر غدروا بك * وهم صرخوا
7 من خلفك واجتمعوا * لا تأمنهم لانهم يتكلمون عليك شرورا * اهملت بيتي * تركت ميراثي *
8 اعطيت نفسي المحبوبة في ايدي اعدائها * صار ميراثي لي مثل اسد في الغاب * اعطت علي
9 صوتها * لاجل هذا ابغضتها * هل مغارة لصوص ميراثي لي * امضوا واجمعوا جميع وحوش
10 الحقل * وليأتوا ليأكلوها * الرعاة الكثيرين افسدوا كرمي * داسوا نصيبي * اعطوا قسمي
المشتهي لبرية غير مسلوكة *

* *Dominus virtutum juſtè judicat, renes & corda ſcrutatur: videam* precor *ultionem quæ per te* ſumenda eſt *ab eis, quoniam tibi retexi jus meum.* 20
Iccirco ſic ait Dominus Deus de civibus Anathoth qui quærunt animam meam; qui dicunt, Ne vaticineris in nomine Domini, ne moriaris per manus noſtras: 21
Iccirco inquam *ſic ait Dominus virtutum, Ecce ego reviſam eos: juvenes eorum gladio morientur, filii & filiæ eorum fame interibunt;* 22
Nec erit eis reſiduum; quoniam inducam mala ſuper habitantes in Anathoth anno viſitationis eorum. 23

CAP. XII.

Juſtiſſimus es O Domine: quandoquidem ego ſum tecum diſceptaturus, annon loquerer tecum judicia? Quarè via impiorum eſt recta? omnes qui contumaciſſimè rebellant, fœcundi ſunt? 1
Plantando plantas eos, & radicantur? producunt liberos, & edunt fructus? propinquus es ori eorum, & longinquus à renibus eorum. 2
Et tu O Domine, noſti me, vides me, & probâſti cor meum coram te: congrega eos tanquam agnos ad jugulationem, & expia illos ad diem mactationis eorum. 3
Quouſque mœrebit terra, & omnis herba terræ ſiccabitur ob nequitiam habitantium in terra? interierunt jumenta & volatilia; quia dicunt, Nequaquam intuetur Deus vias noſtras. 4
Pedes tui ſunt celeres, attamen labore *te conficiunt, quomodo curſu certares cum equis? Tu qui terræ pacis tuæ confidis, quomodo faceres in concitatione Jordanis?* 5
Nam fratres tui, & domus tua paterna cum aliis, perfidè tecum egerunt, ipſique à tergo tuo exclamaverunt & congregati ſunt: ne credas illis quia locuti ſunt de te mala. 6
Neglexi domum meam, deſerui hæreditatem meam, tradidi animam meã dilectam in manus inimicorum ejus. 7
Facta eſt hæreditas mea mihi ſicut leo in ſylva, edidit contra me vocem ſuam, propterea odio proſequor eam. 8
Num ſpelunca latronum eſt hæreditas mea mihi? Agite, congregate omnes agri belluas: veniant, & comedant eam. 9
Paſtores multi depravârunt vineam meam, polluerunt ſortem meam, redegerunt partẽ meã optatiſſimã in deſertum impervium, 10

est Desolata .desolata me contra luxit , desolationem in eam Posuit
11 שָׂמָהּ לִשְׁמָמָה אָבְלָה עָלַי שְׁמֵמָה נָשַׁמָּה
loca *edita* omnia Super : cor super *ponens* *vir* non quia : terra omnis
12 כָּל־הָאָרֶץ כִּי אֵין אִישׁ שָׂם עַל־לֵב׃ עַל־כָּל־שְׁפָיִם
extremo ab *devorans* Domini gladius quia : vastatores venerunt deserto in
בַּמִּדְבָּר בָּאוּ שֹׁדְדִים כִּי חֶרֶב לַיהוָה אֹכְלָה מִקְצֵה
carni universæ pax non : terræ extremum ad usque & , terræ
אֶרֶץ וְעַד־קְצֵה הָאָרֶץ אֵין שָׁלוֹם לְכָל־בָּשָׂר׃
:profecerũt non, ægrotaverunt, messuerunt spinas & ,frumenta Seminaverũt
13 זָרְעוּ חִטִּים וְקֹצִים קָצָרוּ נֶחְלוּ לֹא יוֹעִלוּ
Sic .Domini *nasi* iram propter vestris *proventibus* à afficiemini pudore &
14 וּבֹשׁוּ מִתְּבוּאֹתֵיכֶם מֵחֲרוֹן אַף־יְהוָה׃ כֹּה׀
,hæreditatẽ *in tangentes* ,pessimos meos vicinos omnes adversum Dñs dixit
אָמַר יְהוָה עַל־כָּל־שְׁכֵנַי הָרָעִים הַנֹּגְעִים בַּנַּחֲלָה
desuper eos *evellens* ego Ecce : Israel meum populum feci hæreditare quam
אֲשֶׁר־הִנְחַלְתִּי אֶת־עַמִּי אֶת־יִשְׂרָאֵל הִנְנִי נֹתְשָׁם מֵעַל
post erit Et .eorum medio è evellam Jehudah domum & , sua *humo*
15 אַדְמָתָם וְאֶת־בֵּית יְהוּדָה אֶתּוֹשׁ מִתּוֹכָם׃ וְהָיָה אַחֲרֵי
unumquemque, eos reducam &:eorũ miserebor &,revertar , eos *me evellere*
נָתְשִׁי אוֹתָם אָשׁוּב וְרִחַמְתִּים וַהֲשִׁבֹתִים אִישׁ
discendo si ,erit Et .suam terram ad unumquemq; &,suam hæreditatẽ ad
16 לְנַחֲלָתוֹ וְאִישׁ לְאַרְצוֹ׃ וְהָיָה אִם־לָמֹד
Vivens , meo nomine in *jurandum ad* , mei populi vias didicerint
יִלְמְדוּ אֶת־דַּרְכֵי עַמִּי לְהִשָּׁבֵעַ בִּשְׁמִי חַי־
, Bahal in jurare meum populum docuerunt sicut : Dominus
יְהוָה כַּאֲשֶׁר לִמְּדוּ אֶת־עַמִּי לְהִשָּׁבֵעַ בַּבָּעַל
evellam & ,audierint non si Et .mei populi medio in ædificabuntur &
17 וְנִבְנוּ בְּתוֹךְ עַמִּי׃ וְאִם לֹא יִשְׁמָעוּ וְנָתַשְׁתִּי
.Dominus ait ,perdendo & evellendo ,illam gentem
אֶת־הַגּוֹי הַהוּא נָתוֹשׁ וְאַבֵּד נְאֻם־יְהוָה׃

CAP. XIII. יג

,*linorum* cingulum tibi *emes* & , Vade : me ad Dominus dixit Sic
1 כֹּה־אָמַר יְהוָה אֵלַי הָלוֹךְ וְקָנִיתָ לְּךָ אֵזוֹר פִּשְׁתִּים
emi Et .illud inferes non aquam in &:tuos lumbos super illud pones &
2 וְשַׂמְתּוֹ עַל־מָתְנֶיךָ וּבַמַּיִם לֹא תְבִאֵהוּ׃ וָאֶקְנֶה
fuit Et .meos lumbos super posui & : Domini verbum juxta cingulum
3 אֶת־הָאֵזוֹר כִּדְבַר יְהוָה וָאָשִׂם עַל־מָתְנָי׃ וַיְהִי
quod cingulum Tolle : dicendo ,secundò me ad Domini verbum
4 דְבַר־יְהוָה אֵלַי שֵׁנִית לֵאמֹר׃ קַח אֶת־הָאֵזוֹר אֲשֶׁר
, Euphratem ad vade , surge & : tuos lumbos super quod , emisti
קָנִיתָ אֲשֶׁר עַל־מָתְנֶיךָ וְקוּם לֵךְ פְּרָתָה
illud abscondi & , *abii* Et .petræ foramine in ibi illud absconde &
5 וְטָמְנֵהוּ שָׁם בִּנְקִיק הַסָּלַע׃ וָאֵלֵךְ וָאֶטְמְנֵהוּ
dierum fine à fuit Et .mihi Dominus præceperat sicut , Euphrate in
6 בִּפְרָת כַּאֲשֶׁר צִוָּה יְהוָה אוֹתִי׃ וַיְהִי מִקֵּץ יָמִים
, Euphratem ad vade , Surge : me ad Dominus dixit & , multorum
רַבִּים וַיֹּאמֶר יְהוָה אֵלַי קוּם לֵךְ פְּרָתָה
illud abscondendum ad,tibi præcepi quod cingulum inde tolle &
וְקַח מִשָּׁם אֶת־הָאֵזוֹר אֲשֶׁר צִוִּיתִיךָ לְטָמְנוֹ
de cingulum tuli & , fodi & , Euphratem ad *ivi* Et .ibi
7 שָׁם׃ וָאֵלֵךְ פְּרָתָה וָאֶחְפֹּר וָאֶקַּח אֶת־הָאֵזוֹר מִן־
, cingulum *erat corruptum* ecce & : *ibi* illud absconderam *quo* loco
הַמָּקוֹם אֲשֶׁר־טְמַנְתִּיו שָׁמָּה וְהִנֵּה נִשְׁחַת הָאֵזוֹר
: dicendo , me ad Domini verbum fuit Et .*cuiquam prosperabatur* non
8 לֹא יִצְלַח לַכֹּל׃ וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃
& , Jehudah superbiam *corrumpam* Sic : Dominus dixit Sic
9 כֹּה אָמַר יְהוָה כָּכָה אַשְׁחִית אֶת־גְּאוֹן יְהוּדָה וְאֶת־
.multam Jerusalaim superbiam
גְּאוֹן יְרוּשָׁלִַם הָרָב׃

Versio VULG. LAT.

11 Posuerunt eam in dissipationem,
luxitque super me : desolatione
desolata est omnis terra : quia
nullus est qui recogitet corde.
12 Super omnes vias deserti vene-
runt vastatores, quia gladius Do-
mini devorabit ab extremo ter-
ræ usque ad extremum ejus : non
13 est pax universæ carni. Semi-
naverunt triticum, & spinas mes-
suerunt : hæreditatem accepe-
runt, & non eis proderit : con-
fundemini à fructibus vestris,
propter iram furoris Domini.
14 Hæc dicit Dominus adversùm
omnes vicinos meos pessimos,
qui tangunt hæreditatem, quam
distribui populo meo Israel;
Ecce ego evellam eos de terra
sua, & domum Juda evellam de
15 medio eorum. Et cùm evulse-
ro eos, convertar, & miserebor
eorum : & reducam eos, virum
ad hæreditatem suam, & virum
16 in terram suam. Et erit : si e-
ruditi didicerint vias populi mei,
ut jurent in nomine meo, Vivit
Dominus, sicut docuerunt popu-
lum meum jurare in Baal : ædifi-
cabuntur in medio populi mei.
17 Quòd si non audierint. evellam
gentem illam evulsione & per-
ditione, ait Dominus.

CAP. XIII.

1 HÆc dicit Dominus ad me;
Vade, & posside tibi lumbare
lineum, & pones illud super
lumbos tuos, & in aquam non
2 inferes illud. Et possedi lum-
bare juxta verbum Domini, &
3 posui circa lumbos meos. Et
factus est sermo Domini ad me,
4 secundò, dicens; Tolle lumba-
re, quod possedisti, quod est cir-
ca lumbos tuos, & surgens vade
ad Euphraten, & absconde ibi
5 illud in foramine petræ. Et ab-
ii, & abscondi illud in Eu-
phrate, sicut præceperat mihi
6 Dominus. Et factum est post
dies plurimos, dixit Dominus
ad me; Surge, vade ad Euphra-
ten : & tolle inde lumbare, quod
præcepi tibi ut absconderes il-
7 lud ibi. Et abii ad Euphraten,
& fodi, & tuli lumbare de loco,
ubi absconderam illud : & ecce
computruerat lumbare, ita ut nul-
8 li usui aptum esset. Et factum est
verbum Domini ad me, dicens;
9 Hæc dicit Dominus; Sic putre-
scere faciam superbiam Juda, &
superbiam Jerusalem multam :

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

11 (ρ) Ἐτέθη εἰς ἀφανισμὸν ἀπωλείας. Δι᾽ ἐμὲ
ἀφανισμῷ ἠφανίσθη πᾶσα ἡ γῆ, ὅτι οὐκ
12 ἔστιν ἀνὴρ τιθέμενος ἐν καρδίᾳ. Ἐπὶ πᾶ-
σαν διεκβολὴν ἐν τῇ ἐρήμῳ (σ) ἦλθον
ταλαιπωροῦντες, ὅτι μάχαιρα τοῦ κυρίου (τ)
καταφάγεται ἀπ᾽ ἄκρου τῆς γῆς (υ) ἕως ἄκρου
13 τῆς γῆς· οὐκ ἔστιν εἰρήνη πάσῃ σαρκί. Σπεί-
ρατε πυροὺς, καὶ ἀκάνθας (φ) θερίζετε, οἱ
κλῆροι αὐτῶν οὐκ ὠφελήσουσιν (χ) αὐτούς.
αἰσχύνθητε (ψ) ἀπὸ καυχήσεως ὑμῶν, ἀπὸ
14 ὀνειδισμοῦ ἔναντι κυρίου. Ὅτι τάδε λέγει
κύριος περὶ πάντων τῶν γειτόνων τῶν (ω) πο-
νηρῶν, τῶν ἁπτομένων τῆς κληρονομίας μου, ἧς
ἐμέρισα τῷ λαῷ μου Ἰσραήλ, Ἰδοὺ ἐγὼ ἀ-
ποσπῶ αὐτοὺς ἀπὸ τῆς γῆς αὐτῶν, καὶ τὸν Ἰού-
15 δαν ἐκβαλῶ ἐκ μέσου αὐτῶν. Καὶ ἔσται μετὰ
τὸ ἐκβαλεῖν (α) με αὐτοὺς, ἐπιστρέψω καὶ
ἐλεήσω αὐτοὺς, καὶ κατοικιῶ αὐτοὺς, ἕκαστον
εἰς τὴν κληρονομίαν αὐτοῦ, καὶ ἕκαστον εἰς τὴν
16 γῆν αὐτοῦ. Καὶ ἔσται ἐὰν (β) μαθόντες
μάθωσι (γ) τὴν ὁδὸν τοῦ λαοῦ μου, τοῦ ὀμνύειν
τῷ ὀνόματί μου, Ζῇ κύριος, καθὼς ἐδί-
δαξαν τὸν λαόν μου ὀμνύειν τῇ Βάαλ, καὶ (δ)
17 οἰκοδομηθήσονται ἐν μέσῳ τοῦ λαοῦ μου. Ἐὰν
δὲ μὴ ἐπιστρέψωσι, (ε) καὶ ἐξαρῶ τὸ ἔθνος
ἐκεῖνο (ζ) ἐξάρσει καὶ ἀπωλείᾳ.

MS.A. (ρ) Ἐγενήθη εἰς (σ) ἤλθοσαν (τ) κατέφαγεν (υ) καὶ ἕως (φ) θερίσατε, (χ) ἑαυτούς. (ψ) αἰσχύνθητε ἀπὸ (ω) σκληρῶν, (α) αὐτούς, (β) μανθάνοντες (γ) τὴν ὁδόν μου, (δ) ᾠκοδομηθήσονται (ε) ἐξαρῶ (ζ) ἐξάρξει

Posita est in dissipationem perdi- 11
tionis. Propter me dissipatione
dissipata est universa terra : quia
non est vir, qui ponat in corde.
Ad omne (e) diverticulum in 12
deserto venerunt vastatores :
quia gladius Domini devorabit
ab extremo terræ usque ad extre-
mum terræ : non est pax universæ
carni. (f) Seminate frumenta, et 13
spinas metite : cleri eorum non
proderunt eis. Confundimini à
gloriatione vestra, ab opprobrio in
conspectu Domini. Quia hæc di- 14
cit Dominus de omnibus vicinis
pessimis, qui tangunt hæredita-
tem meam, quam distribui popu-
lo meo Israel; Ecce ego evello
eos de terra sua : & Judam e-
jiciam de medio eorum. Et erit, 15
postquàm ejecero eos; revertar,
& miserebor eorum, & habitare
faciã eos, unumquemq; in hæredi-
tate sua, & unumquemq; in ter-
ra sua. Et erit si discentes didi- 16
cerint viam populi mei, ad ju-
randum in nomine meo, Vivit
Dominus, sicut docuerunt popu-
lum meum jurare in Baal; & (g)
ædificabitur in medio populi mei.
Si autem non fuerint reversi; & 17
auferam gentem illam ablatione,
& perditione.

ΚΕΦ. ιγ΄.

1 Τάδε λέγει κύριος, Βάδισον καὶ κτῆσαι
σεαυτῷ περίζωμα λινοῦν, καὶ περίθου περὶ τὴν
2 ὀσφύν σου, καὶ ἐν ὕδατι οὐ διελεύσεται. Καὶ
ἐκτησάμην τὸ περίζωμα κατὰ τὸν λόγον κυ-
3 ρίου, καὶ περιέθηκα περὶ τὴν ὀσφύν μου. Καὶ
(α) ἐγενήθη λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέ-
4 γων, Λάβε τὸ περίζωμα τὸ περὶ τὴν ὀ-
σφύν σου, καὶ ἀνάστηθι, καὶ βάδισον ἐπὶ τὸν
Εὐφράτην, καὶ κατάκρυψον αὐτὸ ἐκεῖ ἐν
5 τῇ τρυμαλιᾷ τῆς πέτρας. Καὶ ἐπορεύθην,
καὶ ἔκρυψα αὐτὸ ἐν τῷ Εὐφράτῃ, καθὼς
6 ἐνετείλατό μοι κύριος. Καὶ ἐγένετο μεθ᾽
ἡμέρας πολλὰς, καὶ εἶπε κύριος πρὸς μὲ,
Ἀνάστηθι, (β) βάδισον ἐπὶ τὸν Εὐφράτην,
καὶ λάβε ἐκεῖθεν τὸ περίζωμα, ὃ ἐνετειλά-
7 μην σοι τοῦ κατακρύψαι ἐκεῖ. Καὶ ἐπορεύ-
θην ἐπὶ τὸν Εὐφράτην ποταμὸν, καὶ ὤρυ-
ξα, καὶ ἔλαβον τὸ περίζωμα ἐκ τοῦ τόπου οὗ
κατώρυξα αὐτὸ ἐκεῖ, καὶ ἰδοὺ διεφθαρμέ-
8 νον ἦν, ὃ οὐ μὴ χρησθῇ εἰς οὐθέν. Καὶ ἐγε-
9 νήθη λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, Τά-
δε λέγει κύριος, (γ) Οὕτω φθερῶ τὴν ὕβριν
Ἰούδα καὶ τὴν ὕβριν Ἱερουσαλὴμ, τὴν πολλὴν
ταύτην ὕβριν,

MS.A. (α) ἐγένετο (β) καὶ βάδισον (γ) Οὕτως

CAP. XIII.

HÆc dicit Dominus; Vade, et 1
possidé tibi cinctorium lineum,
& pone circa lumbum tuum : &
per aquam non transibit. Et 2
possedi cinctorium juxta ver-
bum Domini; & posui circa
lumbum meum. Et factus 3
est sermo Domini ad (a) me,
dicens; Tolle cinctorium, quod 4
circa lumbum tuum, & surge,
& vade ad Euphratem : & abs-
conde illud ibi in foramine pe-
træ. Et ivi, & abscondi illud in 5
Euphrate, sicut præceperat mihi
Dominus. Et factum est post dies 6
multos; & dixit Dominus ad me;
Surge, vade ad Euphratem, &
tolle inde cinctorium, quod præ-
cepi tibi, ut absconderes ibi. Et 7
abii ad Euphratem fluvium, &
fodi, & tuli cinctorium de loco,
ubi defoderam illud ibi. Et ecce
corruptum erat; ita ut nulli u-
sui aptum esset. Et factum est 8
verbum Domini ad me, dicens;
Hæc dicit Dominus; Sic cor- 9
rumpam contumeliam Juda, &
contumeliam Hierusalem, multã
contumeliam hanc,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 שויוהא לצדו אתאבלת קדמי חרובת צדיאת כל ארעא ארי לית אנש דמשוי דחלתי
12 על לבא : על כל נגדין במדברא אתו בזוזין ארי חרבא קדם יי מקטלא מסיפי ארעא
13 ועד סיפי ארעא לית שלמא לכל בסרא : לא תהון דמין לדזרעו חטין על ביר ולא
משכחין למכנש אלהן כובין ומעללתהון לית להון הנאה ותבהתון בעובדיכון במיתי
14 עליכון תקוף רגזא דיי : כדנן אמר יי על כל מגריא בישיא דמנזקין באחסנתא
דאחסנית ית עמי ית ישראל הא אנא מטלטל להון מעל ארעהון וית דבית יהודה
15 אטלטל מביניהון : ויהוה בתר דאטלטל יתהון אתוב במימרי וארחם עליהון ואתבנון
16 גבר לאחסנתיה וגבר לארעיה : ויהי אם מילף ילפון מאורחת כנשתא דעמי לקימא
17 בשמי קים הוא יי כמא דאליפו ית עמי לקימא בשום טעותא ויתקימון בגו עמי : ואם לא
יקבלון אולפן ואטלטל ית עמא הדין טלטול דאבדן אמר יי :

יג

1 כדנן אמר יי לי איזיל ותזבן לך זרז דכתן ותשוינה על חרצך ובמיא לא תעלניה :
2 3 וזבינית ית זרזא כפתגמא דיי ושויתיה על חרצי : והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי
4 תנינות למימר : סב ית זרזא די זבנתא די על חרצך וקום איזיל לפרת וטמרהי תמן
5 6 בשעיעות כיף גלי : ואזלית וטמרתיה בפרת כמא די פקיד יי יתי : והוה מסוף יומין
סגיאין ואמר יי לי קום איזיל לפרת וסב מתמן ית זרזא די פקדתך למטמריה תמן :
7 ואזלית לפרת וחפרית ונסיבית ית זרזא מן אתרא דטמרתיה תמן והא אתחבל זרזא
8 9 לית ביה צרוך לכל מדעם : והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר : כדנן אמר יי
כדין אחבל ית תקוף אנש יהודה וית תקוף יתבי ירושלם דהוה סגי :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Posuerunt eam in desolationem : luxit coram me; deserta est & desolata est 11
omnis terra ; quia non est homo qui proponat animo timorem mei. Super 12
omnia excelsa deserti venerunt deprædatores, quia gladius coram Dño oc-
cîdit ab extremis terræ : & usque ad extrema terræ non est pax ulli carni.
Nolite esse similes his qui seminant triticum in agro inculto, & non inve- 13
niunt quod colligant nisi spinas, & ex fructu eorum non est illis utilitas.
Et confundemini in operib' vestris, cùm venerit super vos ira furoris Dñi.
Hæc dicit Dñs super omnes vicinos malos, qui nocent hæreditati quam 14
possidere feci populum meum Israel. Ecce ego transmigrare eos faciam de
terra sua, & viros domus Juda transmigrare faciam de medio eorum. Et 15
erit postquàm transmigrare fecero eos, convertar in verbo meo, & mise-
rebor eorum, & reducam eos, unumquemq; ad hæreditatem suam, & unum-
quemque in terrã suam. Et erit si discendo didicerint de viis cœtus populi 16
mei, ut jurent in nomine meo : Viv' est Dñs, sicut docuerunt populũ meum
jurare in nomine idolorum, & stabilientur in medio populi mei. Et si non 17
susceperint disciplinam, transmigrare faciam populum istum transmigra-
tione perditionis, dicit Dominus.

CAP. XIII.

HÆc dicit Dñs mihi : Vade, & eme tibi cingulum lineum, & pones illud 1
super lumbos tuos, & in aquam non inferes illud. Et emi cingulum juxta 2
verbum Dñi, & posui super lumbos meos. Et factum est verbum prophetiæ 3
à facie Dñi ad me secundò, dicens : Tolle cingulũ quod emisti, quod est in 4
lumbis tuis, & surge, vade ad Euphratem, & absconde illud ibi in limpidis-
sima petra conspicua. Et abii & abscondi illud in Euphrate, sicut præcepit 5
Dñs mihi. Et factum est post multos dies, & dixit Dñs ad me : Surge & 6
vade in Euphratẽ, & tolle inde cingulũ quod præcepi tibi ut absconderes
illud ibi. Et abii in Euphratẽ, et fodi, et tuli cingulũ de loco in quo abscõdi 7
illud : & ecce corruptũ erat cingulũ, ita ut inutile esset omni rei. Et factũ 8
est verbũ prophetiæ à facie Dñi ad me, dicẽs : Hæc dicit Dñs : Sic *corrumpã* 9
fortitudinẽ virorũ Juda, & fortitudinẽ habitatorũ Jerusalẽ, quæ erat multa.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

11 * ܐܪܡܝܘܗ ܠܚܘܪܒܐ. ܐܬܐܒܠܬ ܥܠܝ ܚܪܒܬܐ. ܐܬܚܪܒܬ ܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܐܢܫ ܕܣܐܡ ܥܠ
12 ܠܒܗ. * ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܫܒܝܠܐ ܕܡܕܒܪܐ ܐܬܘ ܒܙܘܙܐ. ܡܛܠ ܕܚܪܒܗ ܕܡܪܝܐ ܐܟܠܐ. ܡܢ
ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܘܠܝܬ ܫܠܡܐ ܠܟܠ ܒܣܪ. * ܙܪܥܬܘܢ ܚܛܐ.
13 ܘܚܨܕܬܘܢ ܟܘܒܐ. ܘܠܐܝܘ. ܘܡܕܡ ܠܐ ܐܘܬܪܬܘܢ ܒܗܘܢ. ܘܒܗܬܘ ܡܢ ܥܠܠܬܟܘܢ. ܡܛܠ
14 ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܫܒܒܝ ܒܝܫܐ. ܕܩܪܒܘ
ܠܝܪܬܘܬܐ ܕܐܘܪܬܬ ܠܥܡܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܗܐ ܥܩܪ ܐܢܐ ܠܗܘܢ ܡܢ ܐܬܪܗܘܢ. ܘܠܒܢܝ ܒܝܬ ܝܗܘܕܐ
15 ܐܥܩܘܪ ܡܢ ܒܝܢܬܗܘܢ. * ܘܡܢ ܒܬܪ ܕܐܥܩܘܪ ܐܢܘܢ. ܐܗܦܘܟ ܘܐܪܚܡ ܥܠܝܗܘܢ. ܘܐܗܦܟܝܘܢ
16 ܐܢܫ ܠܝܪܬܘܬܗ ܘܐܢܫ ܠܐܪܥܗ. * ܘܐܢ ܢܠܦܘܢ ܐܘܪܚܬܝ ܠܥܡܝ: ܕܢܐܡܘܢ ܒܫܡܝ
17 ܚܝܐ ܗܘ ܡܪܝܐ: ܐܝܟ ܕܐܠܦܘ ܠܥܡܝ ܕܢܐܡܘܢ ܒܒܥܠ. ܢܬܒܢܘܢ ܒܓܘ ܥܡܝ. * ܘܐܢ ܠܐ
ܢܫܡܥܘܢ. ܐܥܩܘܪ ܠܥܡܐ ܗܘ ܥܩܪܐ. ܘܐܘܒܕܝܘܗܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܓ *

1 * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܙܠ ܙܒܢ ܠܟ ܣܘܕܪܐ ܕܟܬܢܐ. ܘܐܣܘܪܝܗܝ ܒܚܨܝܟ. ܘܒܡܝܐ ܠܐ
2 ܬܥܠܝܘܗܝ. * ܘܙܒܢܬ ܣܘܕܪܐ ܐܝܟ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܐܣܪܬܗ ܒܚܨܝ. * ܘܗܘܐ ܠܘܬܝ
3 ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܕܬܪܬܝܢ ܙܒܢܝܢ. ܘܐܡܪ ܠܝ. * ܣܒ ܣܘܕܪܐ ܕܙܒܢܬ ܕܒܚܨܝܟ.
4 ܘܩܘܡ ܙܠ ܠܦܪܬ. ܘܛܫܝܗܝ ܬܡܢ ܒܢܩܥܐ ܕܟܐܦܐ. * ܘܐܙܠܬ ܘܛܫܝܬܗ ܒܦܪܬ.
5 ܐܝܟ ܕܦܩܕܢܝ ܡܪܝܐ. * ܘܡܢ ܒܬܪ ܝܘܡܬܐ ܣܓܝܐܐ ܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܩܘܡ ܙܠ ܠܦܪܬ.
6 ܘܣܒ ܡܢ ܬܡܢ ܣܘܕܪܐ ܕܦܩܕܬܟ ܕܬܛܫܝܘܗܝ ܬܡܢ. * ܘܐܙܠܬ ܠܦܪܬ. ܘܚܦܪܬ.
7 ܘܫܩܠܬܗ ܠܣܘܕܪܐ ܡܢ ܐܬܪܐ ܕܛܫܝܬܗ. ܘܗܐ ܡܚܒܠ ܗܘܐ ܣܘܕܪܐ ܘܡܕܡ ܠܐ ܚܫܚ. * ܘܗܘܐ
8 ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܘܬܝ ܘܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܗܟܢܐ
9 ܐܚܒܠ ܫܘܒܗܪܗ ܕܝܗܘܕܐ ܘܫܘܒܗܪܗ ܕܐܘܪܫܠܡ ܣܓܝܐܐ.

11 Deſolaverunt eam, vaſtaverunt illam, luxit de me vaſtata, deſolata eſt univerſa terra; quia nemo eſt qui animum adjiciat. 12 In omnes deſerti ſemitas venerunt prædones, quia gladius Domini conſumpturus eſt ab extremitatibus terræ uſque ad extremitates terræ, nec erit pax ulli carni. 13 Seretis triticum, & metetis ſpinas; fatigabimini, & nihil proficietis, ſed erubeſcetis ob *paucitatem* proventuũ veſtrorum, propter æſtum furoris Domini. 14 Sic dicit Dñs de omnibus vicinis meis paſtoribus qui contrectant hæreditatẽ quam hæreditario jure poſſidendam tradidi populo meo Iſraeli; Ecce convellam eos è loco ſuo, & filios familiâs Judæ convellam de medio eorum. 15 Et poſtquam convulſero eos, convertar, & miſerebor ipſorum, & reducam eos quenque in hæreditatem ſuam, & quenq; in patriã ſuam. 16 Præterea ſi vias meas docuerint populum meũ, ut jurent per nomẽ meũ, *dicántque*; Per Deum vivum; quemadmodum docuerunt eos jurare per Baalem; ſedebunt in medio populi mei. 17 Quòd ſi non auſcultaverint, populum hunc radicitùs evellam & planè perdam, dicit Dominus.

CAP. XIII.

1 ITa dixit mihi Dominus, Vade, eme tibi ſudariũ lineum, eóque præcinge lumbos tuos; verùm in aquas ne mergito illud. 2 Empto igitur ſudario ſecundùm ſermonem Domini, præcinxi lumbos meos. 3 Tum factus eſt ad me ſermo Domini ſecundâ vice, dixítque mihi; 4 Sume ſudarium quod emiſti, quod eſt impoſitum lumbis tuis: ſurgens perge ad Euphratem, ibíque abſconde illud in fiſſura petræ. 5 Tum abiens abſcondi illud ad Euphratem, quemadmodum præceperat mihi Dominus, 6 Multis autem exactis diebus, dixit mihi Dominus, Surge, vade ad Euphratem, & reſume inde ſudarium quod illîc abſcondere te juſſeram. 7 Quapropter pergens ad Euphratem, effodi, reſumpſiq; ſudariũ è *loco* ubi abſconderam illud: ſed ecce corruptum erat ſudarium ita ut nulli rei inſerviret. 8 Tum factꝰ eſt ad me ſermo Dñi, dixítque; 9 Sic dicit Dominus potens, Deus Iſraelis; Hoc modo corrumpã faſtuoſos Judæ & faſtuoſos Jeroſolymæ multos.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

11 * صار لفناء الهلاك * لأجلي تفنا كل الأرض فناء * لأنه ليس رجل وضع في قلبه *
12 * على كل مخرج في البرية أتوا الأشقياء * لأن سيف الرب أكل من أطراف الأرض إلى أطراف
13 الأرض * وليس تكون سلامة لكل ذي لحم * زرعتم حنطة وحصدتم شوكا * مواريثهم لا
14 تنفعهم * أخزوا خزيا من افتخاركم * من التعيير أمام الرب * لأن هكذا يقول الرب من
أجل جميع الحيوان الأشرار اللامسين ميراثي الذي أقسمته لشعبي إسرائيل * ها أنا أنزعهم
15 من أرضهم * وبيت يهوذا أخرجه من وسطهم * ويكون من بعد ما أخرجهم أرجع
16 وأرحمهم وأسكنهم كل واحد في ميراثه وكل واحد في أرضه * ويكون إذا تعلموا يتعلمون
طرقي ليحلفوا باسمي حي الرب * كما علموا شعبي أن يحلف ببعال * ويبنون في وسط شعبي *
17 * وإن لم يرجعوا أنزع تلك الأمة بفناء وهلاك *

* الفصل الثالث عشر *

1 * هكذا يقول الرب * اعمد واقتن لك منطقة كتان * وشدها على حقوك * ولا يجوز في ماء *
2 3 * فاقتنيت منطقة ككلمة الرب * وشددتها على حقوي * وكانت كلمة الرب إلي قائلا *
4 * خذ المنطقة التي على حقوك * وقم واعمد إلى الفرات * وخبئها هناك في ثقب الصخر *
5 6 * فمضيت وأخفيتها في الفرات كما أمرني الرب * وكان بعد أيام كثيرة قال لي الرب * قم واعمد
7 إلى الفرات وخذ من هناك المنطقة التي أمرتك أن تخبيها هناك * ومضيت إلى نهر الفرات *
فحفرت وأخذت المنطقة من الموضع الذي حفرته * وإذا هي فاسدة لا تصلح لشيء *
8 9 * وكانت كلمة الرب إلي قائلا * هكذا يقول الرب * هكذا أفسد كبرياء يهوذا وكبرياء
أورشليم * هذه الكبرياء الكثير *

11 *Facta eſt in ruinam exitialem, propter me funditùs evertetur tota terra, quia nemo repoſuit in animo ſuo.* 12 *Ad omne iter quod eſt in deſerto, venerunt miſeri, quia gladius Domini devorabit ab extrema terra uſque ad extremam terram, nec erit pax ulli mortali.* 13 *Frumentum ſeretis, & ſpinas metetis; prædia eorum non proderunt eis. Pudore ſuffundimini propter ſuperbiam veſtram, propter probrum coram Domino* commiſſum: 14 *Sic enim ait Dominus de cunctis belluis pernicioſis attingentibus hæreditatem meam quam diſpertitus ſum inter populum meum Iſraelem: Ecce ego evellam eos de terra eorum, & domum Judæ ejiciam de medio eorum.* 15 *Eritque poſtquam ejecero eos, ut rurſus miſerear illorum, & habitare faciam illos quenque in hæreditate ſua, & quenque in terra ſua.* 16 *Erit etiam cùm diſcendo didicerint vias meas ita ut jurent per nomen meum, Vivus eſt Dominus, quemadmodum docuerunt populum meum jurare per Baalem; ut ædificentur in medio populi mei.* 17 *Quòd ſi minimè convertantur, evellam gentem illam cum exterminio & perditione.*

CAP. XIII.

1 *SIc ait Dominus; Age, compara tibi cingulum lineum, & applica lumbo tuo; per aquam autem ne tranſeat.* 2 *Quarè comparatum juxta verbum Domini cingulum applicui lumbo meo.* 3 *Rurſus fuit ad me verbum Domini dicentis;* 4 *Accipe cingulum quod eſt ſuper lumbum tuum & ſurgens abi ad Euphratem, ibique abſconde illud in foramine petræ.* 5 *Abiens itaque abſcondi illud ad Euphratem, quemadmodum præceperat mihi Dominus.* 6 *Fuit autem poſt multos dies ut diceret mihi Dominus; Surge, & abi ad Euphratem, & recipe inde cingulum quod præceperam tibi ut abſconderes illic.* 7 *Quarè abiens ad fluviũ Euphratem, effodi, recepique cingulum illud è loco quem effoderam; & ecce corruptum ita fuerat, ut nulli prodeſſet uſui.* 8 *Tum fuit ad me verbum Domini dicentis;* 9 *Sic ait Dominus, Hoc modo corrumpam inſolentiam Judæ & inſolentiam Jeroſolymæ, inſolentiam hanc nimiam:*

ירמיה : יג

ambulantes ,mea verba audire renuentes ,pessimum istum Populum
10 העם הזה הרע המאנים לשמע את־דברי ההלכים
,eis serviendū ad ,alienos Deos post abieruntque,sui cordis pertinacia in
בשררות לבם וילכו אחרי אלהים אחרים לעבדם
prosperabitur non quod ,hoc cingulū sicut erit & : eis se incurvandū ad &
ולהשתחות להם ויהי כאזור הזה אשר לא־יצלח
feci adhærere sic ,viri lumbos ad cingulū adhærebit sicut Nam .cuiquam
11 לכל: כי כאשר ידבק האזור אל־מתני איש כן הדבקתי
dixit ,Jehudah domum omnem & ,Israel domum omnem me ad
אלי את־כל־בית ישראל ואת־כל־בית יהודה נאם
:gloriam in &,laudē in &,nomen in &,populū in mihi existendū ad:Domin⁹
יהוה להיות לי לעם ולשם ולתהלה ולתפארת
dixit Sic : istud verbum eos ad dices Et .audierunt non &
12 ולא שמעו: ואמרת אליהם את־הדבר הזה כה־אמר
: te ad dicent Et .vino implebitur uter Omnis : Israel Deus Dominus
יהוה אלהי ישראל כל־נבל ימלא יין ואמרו אליך
dices Et ? vino implebitur uter omnis quòd nesciemus sciendo Nunquid
13 הידע לא נדע כי כל־נבל ימלא יין: ואמרת
habitatores omnes implens ego Ecce : Dominus dixit Sic : eos ad
אליהם כה־אמר יהוה הנני ממלא את־כל־ישבי
,ejus solio super Davidi sedentes reges & ,hujus terræ
הארץ הזאת ואת־המלכים הישבים לדוד על־כסאו
, Jerusalaim habitatores omnes & , prophetas & , sacerdotes &
ואת־הכהנים ואת־הנביאים ואת כל־ישבי ירושלם
,pariter filios & patres & ,suū fratrem ad virum eos collidā Et .ebrietate
14 שכרון: ונפצתים איש אל־אחיו והאבות והבנים יחדו
, miserebor nec ,ignoscam neque parcam non : Dominus ait
נאם־יהוה לא־אחמול ולא־אחוס ולא ארחם
.est locut⁹ Dn̄s quia : vos elevetis ne auscultate &,Audite .eos corrūpendo à
15 מהשחיתם: שמעו והאזינו אל־תגבהו כי יהוה דבר:
antequā &,faciat cōtenebrescere antequā ,gloriā vestro Deo Domino Date
16 תנו ליהוה אלהיכם כבוד בטרם יחשך ובטרם
,lucem ad expectabitis & : crepusculi montes super vestri pedes offendant
יתנגפו רגליכם על־הרי נשף וקויתם לאור
,hoc audieritis non si Et .caliginem in ponet ,mortis umbrā in eā ponet &
17 ושמה לצלמות ישית לערפל: ואם לא תשמעוה
lachrymando & : superbiæ faciebus à mea anima plorabit occultis in
במסתרים תבכה־נפשי מפני גוה ודמע
est ductus captivus quia :lachrymam meus oculus descendet &,lachrymabitur
תדמע ותרד עיני דמעה כי נשבה
quoniā : sedete ,vos Humiliate : heræ & regi Dic .Domini grex
18 עדר יהוה: אמר למלך ולגבירה השפילו שבו כי
Meridiei Civitates .vestræ gloriæ diadema vestræ principalitates descendit
19 ירד מראשותיכם עטרת תפארתכם: ערי הנגב
est translata ,ipsa tota Jehudah est translata : aperiens non & ,sunt clausæ
סגרו ואין פתח הגלת יהודה כלה הגלת
ubi : Aquilone ab venientes videte & ,vestros oculos Levate .perfectionibus
20 שלומים: שאו עיניכם וראו הבאים מצפון איה
visitaverit cùm dices Quid .tuæ gloriæ pecus tibi est datus grex
21 העדר נתן־לך צאן תפארתך: מה־תאמרי כי־יפקד
Nonne .caput in duces te super eos docuisti tu & ? te super
עליך ואת למדת אתם עליך אלפים לראש הלוא
dixeris cùm Et ? parturientem mulierem ut te apprehendent dolores
22 חבלים יאחזוך כמו אשת לדה: וכי תאמרי
multitudinem propter ? hæc mihi evenerunt Quare : tuo corde in
בלבבך מדוע קראני אלה ברב
.tuæ plantæ sunt afflictæ vi ,tuæ fimbriæ sunt discoopertæ ,tuæ iniquitatis
עונך נגלו שוליך נחמסו עקביך:

Versio VULG. LAT.

10 Populum istum pessimum, qui nolunt audire verba mea, & ambulant in pravitate cordis sui: abierúntque post deos alienos ut servirent eis, & adorarent eos: & erunt sicut lumbare istud, quod nulli usui aptum est. 11 Sicut enim adhæret lumbare ad lumbos viri, sic agglutinavi mihi omnem domum Israel, & omnem domum Juda, dicit Dominus: ut essent mihi in populum, & in nomen, & in laudem, & in gloriam: & non audierunt. 12 Dices ergò ad eos sermonem istum; Hæc dicit Dominus Deus Israel; Omnis laguncula implebitur vino. Et dicent ad te; Numquid ignoramus quia omnis laguncula implebitur vino? 13 Et dices ad eos; Hæc dicit Dominus; Ecce ego implebo omnes habitatores terræ hujus, & reges qui sedent de stirpe David super thronum ejus, & sacerdotes, & prophetas, & omnes habitatores Jerusalem, ebrietate: 14 Et dispergam eos virum à fratre suo, & patres & filios pariter, ait Dominus: non parcam, & non concedam: neque miserebor ut non disperdam eos. 15 Audite, & auribus percipite. Nolite elevari, quia Dominus locutus est. 16 Date Domino Deo vestro gloriam antequàm contenebrescat, & antequàm offendant pedes vestri ad montes caliginosos: expectabitis lucem, & ponet eam in umbram mortis, & in caliginem. 17 Quòd si hoc non audieritis, in abscondito plorabit anima mea à facie superbiæ: plorans plorabit, & deducet ocul⁹ meus lachrymam, quia captus est grex Domini. 18 Dic regi, & dominatrici; Humiliamini, sedete: quoniam descendit de capite vestro corona gloriæ vestræ. 19 Civitates Austri clausæ sunt, & non est qui aperiat: translata est omnis Juda transmigratione perfectâ. 20 Levate oculos vestros, & videte qui venitis ab Aquilone: ubi est grex, qui datus est tibi, pecus inclytum tuum? 21 Quid dices cùm visitaverit te? tu enim docuisti eos adversùm te, & erudîsti in caput tuum: numquid non dolores apprehendent te, quasi mulierem parturientem? 22 Quòd si dixeris in corde tuo; Quarè venerunt mihi hæc? Propter multitudinem iniquitatis tuæ revelata sunt verecundiora tua, pollutæ sunt plantæ tuæ.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

10 Τοὺς μὴ βουλομένους ὑπακούειν τῶν λόγων μου, καὶ πορευθέντας ὀπίσω θεῶν ἀλλοτρίων τοῦ δουλεύειν αὐτοῖς, καὶ τοῦ προσκυνεῖν αὐτοῖς· καὶ ἔσονται ὥσπερ τὸ περίζωμα τοῦτο, (δ) 11 ὃ οὐ χρησθήσεται εἰς οὐθέν. Ὅτι καθάπερ κολλᾶται τὸ περίζωμα περὶ τὴν ὀσφὺν τοῦ ἀνθρώπου, οὕτως ἐκόλλησα πρὸς ἐμαυτὸν τὸν οἶκον τοῦ Ἰσραὴλ, καὶ πάντα (ε) οἶκον Ἰούδα, τοῦ γενέσθαι μοι εἰς λαὸν ὀνομαστὸν, καὶ εἰς καύχημα, καὶ εἰς δόξαν· καὶ οὐκ 12 (ζ) εἰσήκουσάν μου. Καὶ ἐρεῖς πρὸς τὸν λαὸν τοῦτον, Πᾶς ἀσκὸς πληρωθήσεται οἴνου. καὶ ἔσται ἐὰν εἴπωσι πρὸς σὲ, Μὴ γνόντες οὐ γνωσόμεθα, ὅτι πᾶς ἀσκὸς 13 πληρωθήσεται οἴνου; Καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, Τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ πληρῶ τοὺς κατοικοῦντας τὴν γῆν ταύτην, καὶ τοὺς βασιλεῖς αὐτῶν τοὺς καθημένους υἱοὺς (η) τοῦ Δαυὶδ ἐπὶ τοῦ θρόνου αὐτῶν, καὶ τοὺς ἱερεῖς καὶ τοὺς προφήτας, καὶ τὸν Ἰούδαν καὶ πάντας τοὺς (θ) κατοικοῦντας ἐν 14 Ἱερουσαλὴμ, μεθύσματι· Καὶ διασκορπιῶ αὐτοὺς ἄνδρα καὶ τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, καὶ τοὺς πατέρας αὐτῶν, καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτῶν ἐν τῷ αὐτῷ. οὐκ ἐπιποθήσω, λέγει κύριος, καὶ οὐ φείσομαι, καὶ οὐκ οἰκτειρήσω 15 ἀπὸ διαφθορᾶς αὐτῶν. Ἀκούσατε, καὶ ἐνωτίσασθε, καὶ μὴ ἐπαίρεσθε, ὅτι κύριος 16 ἐλάλησε. Δότε τῷ κυρίῳ θεῷ (ι) ὑμῶν δόξαν πρὸ τοῦ συσκοτάσαι, καὶ πρὸ τοῦ προσκόψαι πόδας ὑμῶν ἐπ' ὄρη σκοτεινά· καὶ ἀναμενεῖτε εἰς φῶς, καὶ ἐκεῖ σκιὰ θανάτου, καὶ τεθήσονται εἰς σκότος. (κ) 17 Ἐὰν δὲ μὴ ἀκούσητε, κεκρυμμένως κλαύσεται ἡ ψυχὴ ὑμῶν ἀπὸ προσώπου ὕβρεως, καὶ κατάξουσιν οἱ ὀφθαλμοὶ ὑμῶν δάκρυα, 18 ὅτι συνετρίβη τὸ ποίμνιον κυρίου. Εἴπατε τῷ βασιλεῖ καὶ τοῖς δυναστεύουσι, Ταπεινώθητε (λ) καὶ καθίσατε, ὅτι καθῃρέθη ἀπὸ κεφαλῆς ὑμῶν στέφανος δόξης 19 ὑμῶν. Πόλεις αἱ πρὸς Νότον, συνεκλείσθησαν, καὶ οὐκ ἦν ὁ ἀνοίγων· (μ) ἀποικίσθη Ἰούδας, συνετέλεσαν ἀποικίαν τε- 20 λείαν. Ἀνάλαβε (ν) ὀφθαλμούς σου Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἴδε τοὺς ἐρχομένους ἀπὸ Βορρᾶ. ποῦ ἐστι τὸ ποίμνιον ὃ ἐδόθη σοι, 21 πρόβατα δόξης σου; Τί ἐρεῖς ὅταν ἐπισκέπτωνταί σε; καὶ σὺ ἐδίδαξας αὐτοὺς ἐπὶ σὲ (ξ) μαθήματα εἰς ἀρχήν. (ο) οὐκ ὠδῖνες καθέξουσί σε (π) καθὼς γυναῖ- 22 κα τίκτουσαν; Καὶ ἐὰν εἴπῃς ἐν τῇ καρδίᾳ σου, (ρ) Διατί ἀπήντησέ μοι ταῦτα; διὰ τὸ πλῆθος τῆς (σ) ἀδικίας σου ἀνεκαλύφθη τὰ ὀπίσθιά σου, παραδειγματισθῆναι τὰς πτέρνας σου.

MS.A. (δ) ὃ οὐ μὴ (ε) τὸν οἶκον (ζ) ἤκουσάν (η) Δαυὶδ ἐπὶ θρόνους αὐτῶν, (θ) καθημένους (ι) ἡμῶν (κ) Ἐὰν μὴ (λ) ὅτι καθῃρέθη ἀπὸ τῆς κεφαλῆς ὑμῶν στέφανος δόξης. Πόλεις (μ) ἀπῳκίσθη Ἰούδας, συνετέλεσεν (ν) τοὺς ὀφθαλμούς σου Ἰσραὴλ, (ξ) μαθητὰς (ο) οὐχ (π) οὐχ ὡς (ρ) Τί ἀπήντησέν (σ) κακίας

10 *Eos qui nolunt obedire verbis (b) meis, & ambulaverunt post deos alienos; ut serviant eis, & adorent eos: & erunt, sicut cinctorium istud, quod nulli erit usui.* 11 *Sicut enim adhæret cinctorium circa lumbum hominis; sic agglutinavi ad me domum Israel, & omnem domum Juda; ut esset mihi in populum nominatum, & in gloriationem, & in gloriam. Et non exaudierunt me.* 12 *Et dices ad populum (c) istum; Omnis (d) uter implebitur vino. Et erit, si dixerint ad te; Nónne cognoscentes cognoscemus, quia omnis uter implebitur vino?* 13 *Et dices ad eos; Hæc dicit Dominus; Ecce ego impleo habitatores terræ hujus, & reges eorum sedentes filios David super thronum (e) ipsorum, & sacerdotes, & prophetas, & Judam, & omnes habitatores Hierusalem, ebrietate:* 14 *Et dispergam eos, virum, & fratrem ejus, & patres eorum, & filios eorum pariter. Non desiderabo, ait Dominus, & non parcam, & non miserebor à perditione eorum.* 15 *Audite, & auribus percipite, & nolite elevari; quia Dominus loquutus est.* 16 *Date Domino Deo vestro gloriam; antequàm contenebrescat, & antequàm offendant pedes vestri ad montes tenebrosos. Et expectabitis ad lucem: & ibi umbra mortis: & (f) ponentur in tenebris.* 17 *Quòd si non audieritis; in abscondito plorabit anima vestra à facie superbiæ: & deducent oculi vestri lachrymas; quia contritus est grex Domini.* 18 *Dicite regi, et potentibus; Humiliamini, et sedete: quia sublata est de capite vestro corona gloriæ vestræ.* 19 *Civitates, quæ ad Austrum, conclusæ sunt: et non est, qui aperiat. Translatus est Judas: consummaverunt transmigrationem perfectam.* 20 *Leva oculos tuos Hierusalem, et vide venientes ab Aquilone. ubi est grex, qui datus est tibi, oves gloriæ tuæ?* 21 *Quid dices, cùm visitaverint te? Et tu docuisti eos adversùm te doctrinas in principatum: Nunquid non dolores apprehendent te, quasi mulierem parturientem?* 22 *Quòd si dixeris in corde tuo, Quarè occurrerunt mihi hæc? propter multitudinem iniquitatis tuæ revelata sunt posteriora tua, (g) ut dehonestentur calcanei tui.*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 עמא הדין דעובדיהון בישין דסריבו לקבלא ית פתגמי דאזלין בתר הרהור לבהון
וטעו בתר טעות עממיא למפלחהון ולמסגד להון ויהון כזרזא הדין דלית בהון צרוך
11 לכל מדעם: ארי כמא דמדבק זרזא בחרצא דגברא כן קרבית לפולחני ית כל בית
ישראל וית כל בית יהודה אמר יי למהוי קדמי לעם ולשום ולתושבחא ולרבו ולא
12 קבילו: ותימר להון ית פתגמא הדין כדנן אמר יי אלהא דישראל כל גרב יתמלי חמר
13 ויימרון לך המדע לא הוינא ידעין ארי כל גרב יתמלי חמר: ותימר להון כדנן אמר יי
הא אנא ממלי ית כל יתבי ארעא הדא וית מלכיא דיתבין לדוד על כורסוהי וית כהניא
14 וית נבייא דשקרא וית כל יתבי ירושלם עקא ויהון דמן לרויא: ואגרנין גבר באחוהי
15 ואבהן ובנין כחדא אמר יי לא אחמול ולא אחוס ולא ארחם מלחבלותהון: קבילו ואציתו
16 לא תתרברבון ארי במימרא דיי גזיר כן: הבו קדם יי אלהכון יקרא עד לא תיתי עליכון
עקא ותהון דמין לדמהלכין כדבקבלא ועד לא יתנגפון רגליכון על טורי קבל ותסברון
17 לנהור ויהי עליכון חשוך לזהור והא כדבקבלא תהון מהלכין אתון: ואם לא תקבלון
אולפן כד בסתרא תבכי נפשי מן קדם דיעדי מנכון יקרכון ומדמע תדמע ותשגר עיני
18 דמעין ארי אשתבי עמא דיי: אמר למלכא ולמלכתא אמאיכו תבו ארי גלא יקרכון
19 מנכון נפל כליל תושבחתכון: קרוי דרומא אתאחידו ולית דפתח גלו דבית יהודה
20 כולהון גלו שלמא אתקבלו תושלימת עובדיכון: זקופו עיניכון וחזו דאתן מצפונא אן
21 עמא דאתמסר ליך עם תושבחתיך: מה תימרון ארי יסער עלך חובך ואת אליפת יתהון
למעבד בישין עלך הוו רברבין כדמן אולא הלא עקא וחבלין ייחדונך היא כחבלין
22 לילדתא: וארי תימרין בלבך מא דין ערעוני כל אלין על דסגיאו חובך אתגליאת
בהתתיך אתחזי קלניך:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Popul⁹ hic cuj⁹ opera sunt mala, qui noluit suscipere verba mea, qui ambulant *post cogitationẽ* cordis sui, & erraverunt post idola populorū ut colerent ea, & adorarent ea, erit sicut cingulū istud ꝙ nulli usui est utile. 10
Quia sicut adhæret cingulū lumbis viri, sic applicavi ad cultū meū omnē domū Israel, & omnē domū Juda, dicit Dn̄s, ut essēt corā me in populū, & in nomen, & in laudē, & in magnitudinē; & non obedierūt. 11
Et dices ad eos verbū istud: Hæc dicit Dn̄s De⁹ Israel; Omnis uter implebitur vino. Et dicent tibi: Nunquid planè ignoram⁹ quod omnis uter implebitur vino? 12
Et dices ad eos: Hæc dicit Dn̄s; Ecce ego implebo omnes habitatores terræ huj⁹, & reges, qui sedent super soliū David, & sacerdotes, & pseudoprophetas, & omnes habitatores Jerusalē tribulatione; & erunt similes ebrio. 13
Et irruere faciam eos unumquemq; in fratrē suū, patres & filios pariter, ait Dn̄s: non parcā, nec miserebor, nec clemens ero ut nō disperdā eos. 14
Audite & auscultate, & nolite elevari: quia in verbo Dn̄i decretū est ita. 15
Date corā Domino Deo vestro gloriā, antequā veniat sup vos tribulatio, & similes sitis his qui ambulāt in caligine, & antequā offendant pedes vestri ad montes caliginis; & expectetis lucē, & *sint* sup vos tenebræ; & splendorē, & ecce sitis quasi in tenebris ambulantes. 16
Si autē non susceperitis disciplinam, quasi in occulto plorabit anima mea, pro eo ꝙ ablata est à vobis gloria vestra, & lachrymās lachrymabitur, & deducet ocul⁹ me⁹ lachrymas; quia captiv⁹ duct⁹ est popul⁹ Dn̄i. 17
Dic regi & *reginæ*: Humiliamini, sedete; quia migravit gloria vestra à vobis; cecidit corona laudis vestræ. 18
Civitates Austri clausæ sunt, & non est qui aperiat: migraverunt omnes de domo Juda migratione perfecta; recepta est retributio operū *vestrarū*. 19
Levate oculos vestros, & videte eos qui veniunt ab Aquilone; ubi est popul⁹ qui traditus est tibi, *popul⁹* laudis tuæ? 20
Quid dices cū visitaverit sup te peccatum tuū? Tu enim docuisti eos ut facerent mala: adversum te magnificantur sicut ab initio. Nonne tribulatio & dolores apprehendent te sicut dolores parturientē? 21
Et si dixeris in corde tuo: Quare acciderunt mihi omnia hæc? propterea quod multiplicata sunt peccata tua, revelata est confusio tua, conspicua est ignominia tua. 22

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

10 * ܥܡܐ ܗܢܐ ܒܝܫܐ ܕܠܐ ܨܒܘ ܠܡܫܡܥ ܡܠܝ. ܘܡܗܠܟܝܢ ܒܨܒܝܢܐ ܕܠܒܗܘܢ. ܘܐܙܠܘ
ܒܬܪ ܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ. ܠܡܦܠܚ ܐܢܘܢ ܘܠܡܣܓܕ ܠܗܘܢ. ܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܣܘܕܪܐ ܗܢܐ
11 ܕܠܡܕܡ ܠܐ ܦܐܐ. * ܡܛܠ ܕܐܝܟܢܐ ܕܢܩܦ ܣܘܕܪܐ ܠܚܨܘܗܝ ܕܓܒܪܐ. ܗܟܢܐ ܐܕܒܩܬ ܠܝ
ܠܟܠܗ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܘܠܟܠܗ ܒܝܬ ܝܗܘܕܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ: ܕܢܗܘܘܢ ܠܝ ܠܥܡܐ. ܘܠܫܡܐ
12 ܘܠܐܝܩܪܐ. ܘܠܬܫܒܘܚܬܐ. ܘܠܐ ܫܡܥܘ. * ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܟܠ ܕܢ ܢܬܡܠܐ ܚܡܪܐ. ܘܐܢ ܢܐܡܪܘܢ ܠܟ. ܡܕܡ ܚܢܢ ܠܐ
13 ܝܕܥܝܢ. ܕܟܠܗܘܢ ܕܢܐ ܡܬܡܠܝܢ ܚܡܪܐ. * ܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܡܡܠܐ
ܐܢܐ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܘܗܝ ܕܐܪܥܐ ܗܕܐ. ܘܠܡܠܟܐ ܕܝܬܒܝܢ ܥܠ ܟܘܪܣܝܗ ܕܕܘܝܕ. ܘܠܟܗܢܐ
14 ܘܠܢܒܝܐ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܘܗܝ ܕܐܘܪܫܠܡ ܪܘܝܘܬܐ. * ܘܐܒܕܪ ܐܢܘܢ ܓܒܪ ܡܢ ܐܚܘܗܝ
ܐܟܚܕܐ: ܘܐܒܗܐ ܘܒܢܝܐ ܐܟܚܕܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܠܐ ܐܪܚܡ ܘܠܐ ܐܚܘܣ ܘܠܐ ܐܚܘܣ ܠܡܚܒܠܘ
15 16 ܐܢܘܢ. * ܫܡܥܘ ܘܨܘܬܘ. ܘܠܐ ܬܬܪܝܡܘܢ. ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܡܠܠ. * ܗܒܘ ܠܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ
ܐܝܩܪܐ. ܥܕܠܐ ܢܚܫܟ. ܘܥܕܠܐ ܢܬܬܩܠܢ ܪܓܠܝܟܘܢ ܥܠ ܛܘܪܐ ܕܚܫܘܟܐ: ܘܬܣܟܘܢ ܠܢܘܗܪܐ.
17 ܘܢܣܝܡܝܘܗܝ ܚܫܘܟܐ ܘܛܠܠܐ ܕܡܘܬܐ. * ܘܐܢ ܠܐ ܬܫܡܥܘܢܝܗ. ܒܛܘܫܝܐ ܬܒܟܐ ܢܦܫܝ
ܡܢ ܩܕܡ ܫܚܩܐ. ܘܡܒܟܝܘ ܬܒܟܐ. ܘܢܚܬܢ ܥܝܢܝ ܕܡܥܐ. ܡܛܠ ܕܐܫܬܒܝ ܥܢܗ ܕܡܪܝܐ.
18 * ܐܡܪ ܠܡܠܟܐ ܘܠܫܠܝܛܢܐ ܐܬܡܟܟܘ. ܘܬܘܒܘ. ܡܛܠ ܕܢܦܠ ܡܢ ܪܫܟܘܢ ܟܠܝܠܐ
19 ܕܫܘܒܚܟܘܢ. * ܩܘܪܝܐ ܕܬܝܡܢܐ ܐܬܚܕܘ. ܘܠܝܬ ܕܦܬܚ. ܐܫܬܒܝܬ ܝܗܘܕܐ ܟܠܗ
20 ܫܒܝܬܐ ܓܡܝܪܬܐ. * ܐܪܝܡܘ ܥܝܢܝܟܘܢ ܘܚܙܘ ܠܕܐܬܝܢ ܡܢ ܓܪܒܝܐ. ܐܝܟܘ ܥܢܐ ܕܐܬܝܗܒܬ
21 ܠܟܝ. ܥܢܐ ܕܫܘܒܚܟܝ. * ܡܢܐ ܬܐܡܪܝܢ ܡܐ ܕܣܥܪ ܠܟܝ. ܘܐܢܬܝ ܐܠܦܬܝ
ܐܢܘܢ ܠܡܕܘܫܬܐ ܕܝܠܟܝ ܒܪܫܝܬ. ܗܐ ܚܒܠܐ ܢܐܚܕܘܢܟܝ. ܐܝܟ ܐܢܬܬܐ ܕܡܚܒܠܐ
22 ܠܡܐܠܕ. * ܘܐܢ ܬܐܡܪܝܢ ܒܠܒܟܝ. ܡܛܠ ܡܢܐ ܓܕܫ ܠܝ ܗܠܝܢ. ܡܛܠ ܣܘܓܐ
ܕܚܛܗܝܟܝ ܐܬܓܠܝܘ ܫܘܦܠܝܟܝ. ܘܐܬܚܙܝܘ ܥܩܒܝܟܝ.

* Populus hic malignus qui noluerunt auſcultare 10
ſermonibus meis, qui ambulant ex arbitrio
cordis ſui, & ſectati ſunt deos alienos ad
colendum & adorandum eos; erunt ſimiles
huic ſudario quod nulli rei aptum eſt. Nam 11
quemadmodum adhæreſcit ſudarium lumbis
viri, ita agglutinaveram mihi totam domum
Iſraelis & totam domum Judæ, dicit Dominus,
ut eſſent mihi populus, & ad nomen, &
ad honorem, & ad laudem: at non acquieverunt.
Quapropter dic eis ſermonem iſtum, 12
Sic ait Dominus potentiſſimus, Deus Iſraelis;
Omne dolium implendum eſt vino. Ecce dicturi
ſunt tibi, An verò neſcimus omnia dolia
vina impleri? Reſponde illis, Sic ait Dominus, 13
Ecce repleturus ſum cunctos habitatores
hujus terræ, & reges inſidentes ſolio Davidis,
& ſacerdotes, atque prophetas omnéſque cives
Jeroſolymorum, ebrietate; Et diſperſurus 14
eos quemque à fratre ſuo, cùm patres, tum
filios pariter, ait Dominus: non miſerebor,
neque indulgebo, neque parcam corrumpere
eos. Audite, & auſcultate, & ne elevemini: 15
nam Dominus loquitur. Exhibete Domino 16
Deo veſtro honorem, priuſquam tenebreſcat,
& priuſquam frangantur pedes veſtri ſuper
montes in tenebris; expectetis lucem, &
vertat eam in tenebras & umbras lethales.
Quòd ſi non auſcultaveritis ei, latenter flebit 17
anima mea propter afflictionem, acerbè lachrymabor,
& emittent oculi mei lachrymas,
quia captivus abducendus eſt grex Domini.
Dic regibus & magnatibus, Humiliamini, & 18
pœniteat vos; quia decidit è capite veſtro
diadema gloriæ veſtræ: Civitates Aquilonares 19
clauſæ ſunt, nec eſt qui aperiat: captiva
facta eſt univerſa Judæa captivitate omnimodâ.
Attollite oculos veſtros, & videte eos 20
qui veniunt ab Aquilone. Qualis eſt grex
ille qui traditus fuerat tibi? oves gloriæ tuæ?
Quid dictura es quando viſitabit te, cùm tu 21
erudieris eos documento ut ſint conculcationi?
ecce dolores corripient te, ceu mulierem
partu laborantem. Quòd ſi dicas apud temetipſam, 22
Quare contingerent mihi talia?
Propter multitudinem delictorum tuorum
retectæ ſunt fimbriæ tuæ, & conſpecti ſunt
tali tui.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لانهم لم يريدوا ان يسمعوا كلماتي * ومضوا خلف الالهة الغرباء ليتعبدوا لها ويسجدوا لها * 10
ويصيرون مثل هذه المنطقة التي لا تصلح لشي * لان كما تقرب المنطقة الى حقو الانسان * 11
هكذا الصق بي بيت اسرايل وجميع بيت يهودا ليكونوا لي شعبا مسمي وللفخر وللشرف *
فلم يسمعوا لي * وتقول لهذا الشعب * كل زق يمتلي خمرا * ويكون اذ يقولون لك غير عارفين 12
لك * لا نعرف ان كل زق يمتلي خمرا * فتقول لهم * هكذا يقول الرب * ها انا املا سكان 13
هذه الارض وملوكهم بني داود الجالسين على كراسيهم * والكهنة والانبياء ويهودا * وجميع
الجلوس في ايروسليم بالسكر * وافرقهم رجلا واخاه واباوهم وابناءهم بهذا بعينه * لا اعطف 14
يقول الرب ولا اشفق ولا اترااف من فسادهم * اسمعوا وانصتوا ولا ترفعوا لان الرب تكلم * 15
* اعطوا للرب الهنا مجدا من قبل ان تظلموا وقبل ان تعثر ارجلكم على جبال مظلمة * 16
وتتوقعون نورا وهناك ظلال الموت * ويغشاكم الظلام ان لم تسمعوا * تبكي نفسكم سرا 17
من وجه الكبرياء * وتهمل عيونكم دموعا لان قطيع الرب انكسر * قولوا للملك وللاقوياء * 18
تواضعوا لان اكليل المجد نزع من على راسكم * المدن التي عند التيمن غلقت ولم 19
يكن من يفتح * طرد يهودا * اكمل جلوة كاملة *

* الاصحاح التاسع *

* ارفع عينيك يا اسرايل وانظر الاتيين اليك من الجربياء * اين هو القطيع الذي 20
اعطي لك * خراف مجدك * ماذا تقول اذا تعهدوك * وانت علمتهم بديا عليك تلاميذ * ليس 21
هي طلقات ياخذونك * ليس مثل امراة تلد * وان قلت في قلبك لماذا اصابتني هذه * 22
لاجل كثرة شرك كشف ما خلفك لتشهر عقباك *

Quia noluerunt auſcultare verbis meis, 10
ſed abierunt poſt deos alienos, ut iis ſervirent,
& eos adorarent: Fient inquam
ſimiles huic cingulo quod eſt prorſus inutile.
Quemadmodum enim cingulum 11
tangit lumbum humanum, ſic adhæſerat
mihi domus Iſraelis, totáque domus Judæ,
ut eſſent mihi populus celebris, & ad
gloriam, & ad nobilitatem: ſed non auſcultârunt
mihi. Tum dices huic populo, 12
Omnis uterculus impletur vino. Eritque
cùm tibi dixerint, te ignorantes, An neſcimus
omnem uterculum vino impleri?
ut dicas eis, Sic ait Dominus; Ecce ego 13
repleturus ſum incolas hujus terræ, &
reges eorum filios Davidis ſedentes ſuper
thronos ſuos, & ſacerdotes atque prophetas,
Judam, & omnes degentes in Jeruſalem,
ebrietate; Eóſque diſperſurus 14
unum cum altero, & patres eorum, & filios
eorum hoc eodem modo: Nequaquam
miſerebor, inquit Dominus, neque parcam,
neque indulgebo, propter corruptelam
eorum. Audite, & auſcultate, néve 15
exaltemini, quia Dominus locutus eſt.
Reddite Domino Deo noſtro gloriam antequam 16
tenebris involvamini, et antequam
impingant pedes veſtri ſuper montes tenebricoſos;
& expectantibus vobis lucem,
ſit illic umbra mortis; obruant vos
tenebræ, niſi obtemperetis. Fleat anima 17
veſtra in occulto, propter inſolentiam, &
profundant oculi veſtri lachrymas; quia
grex Domini prædâ captus eſt. Dicite 18
regi & potentibus, Humiliamini, quia corona
gloriæ detracta eſt è capite veſtro:
Urbes quæ ſunt ad Aquilonem, clauſæ 19
ſunt, nec eſt qui aperiat: expulſus eſt Juda,
explevit tranſmigrationem perfectam.

Textus nonus.

Attolle oculos tuos O Iſrael, & contemplare 20
eos qui veniunt ad te ex Aquilone.
Ubi eſt grex qui traditus tibi fuerat? agni
gloriæ tuæ? Quid dicturus es quando te 21
viſitabunt, cùm tu in principio inſtruxeris
eos contra te diſcipulos? nequaquam
erunt dolores partûs qui te corripient, nequaquam
ut mulieris parturientis. Quòd 22
ſi dixeris apud animum tuum, Qua de
cauſa contingent hæc mihi? Propter multitudinem
criminis tui retecta ſunt poſteriora
tua, ut pateant calcanei tui.

ירמיה : יד

etiam ? ſuas maculas pardus &?ſuam pellem Æthiops vertet Nunquid
23 הֲיַהֲפֹךְ כּוּשִׁי עוֹרוֹ וְנָמֵר חֲבַרְבֻּרֹתָיו גַּם־
eos diſpergere faciam Et ? malefacere *docti* benefacere poteritis vos
24 אַתֶּם תּוּכְלוּ לְהֵיטִיב לִמֻּדֵי הָרֵעַ׃ וַאֲפִיצֵם
pars tua ſors Hæc .deſerti ventum ad,tranſeuntem ſtipulam tanquã
25 כְּקַשׁ עוֹבֵר לְרוּחַ מִדְבָּר׃ זֶה גוֹרָלֵךְ מְנָת־
fidiſti & , mei es oblita quæ : Dominus dixit ,me à *tuarum menſurarũ*
מִדַּיִךְ מֵאִתִּי נְאֻם־יְהוָֹה אֲשֶׁר שָׁכַחַתְּ אוֹתִי וַתִּבְטְחִי
apparuit & *: tuas facies ſuper* tuas fimbrias *detexi* ego etiam Et *.falſitate* in
26 בַּשָּׁקֶר׃ וְגַם־אֲנִי חָשַׂפְתִּי שׁוּלַיִךְ עַל־פָּנָיִךְ וְנִרְאָה
tuæ fornicationis fœditas , *tui hinnitus* & ,tua Adulteria .tua ignominia
27 קְלוֹנֵךְ׃ נִאֻפַיִךְ וּמִצְהֲלוֹתַיִךְ זִמַּת זְנוּתֵךְ
, Jeruſalaim tibi væ : tuas abominationes vidi , agro in colles ſuper
עַל־גְּבָעוֹת בַּשָּׂדֶה רָאִיתִי שִׁקּוּצָיִךְ אוֹי לָךְ יְרוּשָׁלַםִ
.adhuc quando , poſthac te mundabis non
לֹא תִטְהֲרִי אַחֲרֵי מָתַי עֹד׃

CAP. XIV. יד

.prohibitionum verba ſuper Irmejahu ad Domini verbum fuit Quod
1 אֲשֶׁר הָיָה דְבַר־יְהוָֹה אֶל־יִרְמְיָהוּ עַל־דִּבְרֵי הַבַּצָּרוֹת׃
3 terra in *nigruere* , ſunt *infirmata* ejus portæ & , Jehudah *Luxit*
2 אָבְלָה יְהוּדָה וּשְׁעָרֶיהָ אֻמְלְלוּ קָדְרוּ לָאָרֶץ
ſuos minores miſerunt eorum *illuſtres* Et .aſcendit Jeruſalaim clamor &
3 וְצִוְחַת יְרוּשָׁלַםִ עָלָתָה׃ וְאַדִּרֵיהֶם שָׁלְחוּ צְעוֹרֵיהֶם
ſunt reverſi : aquas invenerunt non , foſſas ad venerunt : aquam ad
לַמָּיִם בָּאוּ עַל־גֵּבִים לֹא־מָצְאוּ מַיִם שָׁבוּ
operuerunt & ,erubuerunt & , ſunt affecti pudore , *vacuè* ſuis vaſis
כְלֵיהֶם רֵיקָם בֹּשׁוּ וְהָכְלְמוּ וְחָפוּ
pluvia fuit non quia *: contritam humum* Propter .ſuum caput
4 רֹאשָׁם׃ בַּעֲבוּר הָאֲדָמָה חַתָּה כִּי לֹא־הָיָה גֶשֶׁם
Nam .ſuum caput operuerunt , agricolæ ſunt affecti pudore : terra in
5 בָּאָרֶץ בֹּשׁוּ אִכָּרִים חָפוּ רֹאשָׁם׃ כִּי
.herba erat non quia *,relinquere &* , peperit agro in cerva etiam
גַם־אַיֶּלֶת בַּשָּׂדֶה יָלְדָה וְעָזוֹב כִּי לֹא־הָיָה דֶּשֶׁא׃
:dracones tanquam ventum *ſorbuerunt : locis editis ſuper* ſteterunt onagri Et
6 וּפְרָאִים עָמְדוּ עַל־שְׁפָיִם שָׁאֲפוּ רוּחַ כַּתַּנִּים
noſtræ iniquitates Si .herba non quia , eorum oculi defecerunt
7 כָּלוּ עֵינֵיהֶם כִּי־אֵין עֵשֶׂב׃ אִם־עֲוֺנֵינוּ
quia : tuum nomen propter fac , Domine ,nos contra ſunt teſtificatæ
עָנוּ בָנוּ יְהוָֹה עֲשֵׂה לְמַעַן שְׁמֶךָ כִּי־
Iſrael Expectatio .peccavimus tibi ,noſtræ *averſiones ſunt multiplicatæ*
8 רַבּוּ מְשׁוּבֹתֵינוּ לְךָ חָטָאנוּ׃ מִקְוֵה יִשְׂרָאֵל
,terra in peregrinus veluti eris quare:afflictionis tempore in ejus ſervator
מוֹשִׁיעוֹ בְּעֵת צָרָה לָמָּה תִהְיֶה כְּגֵר בָּאָרֶץ
vir veluti es futurus Quare ? pernoctandum ad *declinavit* viator tanquã &
9 וּכְאֹרֵחַ נָטָה לָלוּן׃ לָמָּה תִהְיֶה כְּאִישׁ
noſtro interiori in tu & ? facere ſalvum *poterit* non fortis tanquam,attonitus
נִדְהָם כְּגִבּוֹר לֹא־יוּכַל לְהוֹשִׁיעַ וְאַתָּה בְקִרְבֵּנוּ
Sic .nos *dimittas* ne,eſt invocatum nos ſuper tuum nomen &,Domine
10 יְהוָֹה וְשִׁמְךָ עָלֵינוּ נִקְרָא אַל־תַּנִּחֵנוּ׃ כֹּה־
ſuos pedes , ſe movere dilexerunt ita : huic populo Dominus dixit
אָמַר יְהוָֹה לָעָם הַזֶּה כֵּן אָהֲבוּ לָנוּעַ רַגְלֵיהֶם
recordabitur nunc : eos noluit Dominus *&* : prohibuerunt non
לֹא חָשָׂכוּ וַיהוָֹה לֹא רָצָם עַתָּה יִזְכֹּר
: me ad Dominus dixit Et .eorum peccata viſitabit & ,eorũ iniquitatis
11 עֲוֺנָם וְיִפְקֹד חַטֹּאתָם׃ וַיֹּאמֶר יְהוָֹה אֵלַי
.bonum in iſto populo pro ores Ne
אַל־תִּתְפַּלֵּל בְּעַד־הָעָם הַזֶּה לְטוֹבָה׃

Verſio VULG. LAT.

23 Si mutare poteſt Æthiops pellem ſuam, aut pardus varietates ſuas: & vos poteritis benefacere, cùm 24 didiceritis malum. Et diſſeminabo eos quaſi ſtipulam, quæ 25 vento raptatur in deſerto. Hæc ſors tua, parſque menſuræ tuæ à me, dicit Dominus; quia oblita es meî, & confiſa es in men- 26 dacio. Uude & ego nudavi femora tua contra faciem tuam, & 27 apparuit ignominia tua, Adulteria tua, & hinnitus tuus, ſcelus fornicationis tuæ: ſuper colles in agro vidi abominationes tuas. Væ tibi, Jeruſalem, non mundaberis poſt me: uſquequò adhuc?

CAP. XIV.

1 Quod factum eſt verbum Domini ad Jeremiam de ſermoni- 2 bus ſiccitatis. Luxit Judæa, & portæ ejus corruerunt, & obſcuratæ ſunt in terra; & clamor Je- 3 ruſalem aſcendit. Majores miſerunt minores ſuos ad aquam: venerunt ad hauriendum, non invenerunt aquam, reportaverunt vaſa ſua vacua: confuſi ſunt & afflicti, & operuerunt ca- 4 pita ſua. Propter terræ vaſtitatem, quia non venit pluvia in terram, confuſi ſunt agricolæ, 5 operuerunt capita ſua. Nam & cerva in agro peperit, & reli- 6 quit: quia non erat herba. Et onagri ſteterunt in rupibus, traxerunt ventum quaſi dracones, defecerunt oculi eorum, quia 7 non erat herba. Si iniquitates noſtræ reſponderint nobis: Domine, fac propter nomen tuum, quoniam multæ ſunt averſiones 8 noſtræ, tibi peccavimus. Expectatio Iſrael, ſalvator ejus in tempore tribulationis: quarè quaſi colonus futurus es in terra, & quaſi viator declinans ad ma- 9 nendum? Quarè futurus es velut vir vagus, ut fortis qui non poteſt ſalvare? tu autem in nobis es, Domine, & nomen tuum invocatum eſt ſuper nos, ne de- 10 relinquas nos. Hæc dicit Dominus populo huic, qui dilexit movere pedes ſuos, & non quievit, & Domino non placuit: Nunc recordabitur iniquitatum eorum, 11 & viſitabit peccata eorum. Et dixit Dominus ad me; Noli orare pro populo iſto in bonum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

23 Εἰ ἀλλάξεται Αἰθίοψ τὸ (τ) δέρμα αὐτοῦ, καὶ πάρδαλις τὰ ποικίλματα αὐτῆς, καὶ ὑμεῖς (υ) δυνήσεσθε εὐποιῆσαι μεμαθηκότες τὰ κακά. 24 Καὶ (φ) διέσπειρα αὐτοὺς, ὡς φρύγανα φερόμενα ὑπὸ ἀνέμου εἰς (χ) ἔρημον. 25 Οὕτως ὁ κλῆρός σου, καὶ μερὶς τοῦ ἀπειθεῖν ὑμᾶς ἐμοὶ, λέγει κύριος. ὡς ἐπελάθου (ψ) μου, καὶ ἤλπισας ἐπὶ ψεύδεσι, 26 Κἀγὼ ἀποκαλύψω τὰ (ω) ὀπίσω σου ἐπὶ τὸ πρόσωπόν σου, καὶ ὀφθήσεται ἡ ἀτιμία σου, 27 Καὶ (α) ἡ μοιχεία σου, καὶ χρεμετισμός σου, καὶ ἡ ἀπαλλοτρίωσις τῆς πορνείας σου. ἐπὶ τῶν βουνῶν, καὶ ἐν τοῖς ἀγροῖς ἑώρακα τὰ βδελύγματά σου. οὐαί σοι Ἱερουσαλήμ, ὅτι οὐκ ἐκαθαρίσθης ὀπίσω μου ἕως τίνος ἔτι;

MS.A. (τ) δέρμα, καὶ πάρδαλις (υ)* δυνήσεσθε (φ) διέφθειρα (χ) ἔρημον τόπον. Οὗτος (ψ) νόμου μου, (ω) ὀπίσθιά σου κατὰ πρόσωπόν σου, (α) αἱ μοιχίαι σου, καὶ ὁ χρεμετισμός

Si mutabit Æthiops pellem ſuã, & pardus varietates ſuas; & vos poteritis benefacere, cùm didiceritis mala. 24 Et diſſeminavi eos, quaſi ſtipulas, quæ feruntur à vento in deſertum. 25 Sic ſors tua, & pars inobedientiæ veſtræ adverſùm me, dicit Dominus. Sicut oblita es meî, & ſperâſti in mendaciis; 26 Et ego nudabo poſteriora tua ſuper faciem tuam: & videbitur ignominia tua, 27 Et adulterium tuum, & hinnitus tuus, & alienatio fornicationis tuæ. Super colles, & in agris vidi abominationes tuas. Væ tibi, Hieruſalem: quia non es mundata poſt me uſquequò adhuc. 23

ΚΕΦ. ιδʹ.

1 (α) ΚΑῚ ἘΓΈΝΕΤΟ ΛΌΓΟΣ ΚΥΡΊΟΥ ΠΡῸΣ ἹΕΡΕΜΊΑΝ ΠΕΡῚ ΤΗ͂Σ ἈΒΡΟΧΊΑΣ.

2 Ἐπένθησεν ἡ Ἰουδαία, καὶ αἱ πύλαι αὐτῆς ἐκενώθησαν, καὶ ἐσκοτώθησαν ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ἡ κραυγὴ τῆς Ἱερουσαλὴμ ἀνέβη. 3 Καὶ οἱ μεγιστᾶνες αὐτῆς ἀπέστειλαν τοὺς νεωτέρους (β) αὐτῶν ἐφ᾽ ὕδωρ· ἤλθοσαν ἐπὶ τὰ φρέατα, καὶ οὐχ (γ) εὕροσαν ὕδωρ, (δ) καὶ ἀπέστρεψαν τὰ ἀγγεῖα αὐτῶν κενά. 4 Καὶ τὰ ἔργα τῆς γῆς ἐξέλιπεν, ὅτι οὐκ ἦν ὑετός. ᾐσχύνθησαν (ε) οἱ γεωργοὶ, ἐπεκάλυψαν τὰς κεφαλὰς αὐτῶν. 5 Καὶ ἔλαφοι ἐν ἀγρῷ (ζ) ἔτεκον, καὶ ἐγκατέλιπον, ὅτι οὐκ ἦν βοτάνη. 6 Ὄνοι ἄγριοι ἔστησαν ἐπὶ νάπας, καὶ εἵλκυσαν ἄνεμον, ἐξέλιπον οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτῶν, ὅτι οὐκ ἦν χόρτος (η). 7 Αἱ ἁμαρτίαι ἡμῶν ἀντέστησαν ἡμῖν· κύριε ποίησον ἡμῖν ἕνεκεν σου, ὅτι πολλαὶ αἱ ἁμαρτίαι ἡμῶν ἐναντίον σου, ὅτι σοὶ 8 ἡμάρτομεν. Ὑπομονὴ Ἰσραὴλ κύριε, καὶ σώζεις ἐν καιρῷ κακῶν. ἱνατί ἐγενήθης ὡσεὶ πάροικος ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ὡς αὐτόχθων ἐκ- 9 κλίνων εἰς κατάλυμα; Μὴ ἔσῃ ὥσπερ ἄνθρωπος ὑπνῶν, ἢ ὡς ἀνὴρ οὐ δυνάμενος σώζειν; καὶ σὺ ἐν ἡμῖν εἶ κύριε, καὶ τὸ ὄνομά σου ἐπικέκληται ἐφ᾽ ἡμᾶς, μὴ ἐπιλάθῃ ἡ- 10 μῶν. Οὕτως λέγει κύριος τῷ λαῷ τούτῳ, Ἠγάπησαν κινεῖν πόδας αὐτῶν, καὶ οὐκ ἐφείσαντο, καὶ ὁ θεὸς οὐκ (θ) εὐδόκησεν ἐν αὐτοῖς, 11 νῦν μνησθήσεται (ι) τῆς ἀδικίας αὐτῶν. Καὶ εἶπε κύριος πρός με, Μὴ προσεύχου περὶ τοῦ λαοῦ τούτου εἰς ἀγαθὰ,

CAP. XIV.

Et factum eſt verbum Domini ad Hieremiam, de ſiccitate. 1 *Luxit Judæa, & portæ ejus vacuæ factæ ſunt, & contenebratæ ſunt ſuper terram: & clamor Hieruſalem aſcendit:* 2 *Et magnates ejus miſerunt juniores ſuos ad aquam: venerunt ad puteos, & non invenerunt aquam: & reportaverunt vaſa ſua (a) vacua:* 3 *Et opera terræ defecerunt, quia non erat pluvia. Confuſi ſunt agricolæ: operuerunt capita ſua:* 4 *Et cervæ in agro pepererunt, & reliquerunt; quia non erat herba.* 5 *Onagri ſteterunt in rupibus, & traxerunt (b) ventum: defecerunt oculi eorum; quia non erat fœnum.* 6 *(c) Peccata noſtra reſtiterunt nobis: Domine, fac nobis propter te: quoniam multa ſunt peccata noſtra coram te: quia tibi peccavimus.* 7 *Expectatio Iſrael, Domine: & ſalvabis in tempore malorum. Quarè factus es, ſicut advena in terra, & quaſi (d) indigena divertens ad diverſorium?* 8 *Nunquid eris quaſi homo dormiens, vel quaſi vir, qui (e) ſalvare non poſſit? Et tu in nobis es, Domine: & nomen tuum invocatum eſt ſuper nos: ne obliviſcaris noſtri.* 9 *Sic dicit Dominus populo huic; Dilexerunt movere pedes ſuos, et non pepercerunt: & Deus (f) non proſperavit in eis: nunc recordabitur iniquitatis eorum.* 10 *Et dixit Dominus ad me; Noli orare pro populo iſto in bona:* 11

MS.A. (α) Ὁ ΛΌΓΟΣ Ὁ ΓΕΝΆΜΕΝΟΣ ΠΡῸΣ ἹΕΡΕΜΊΑΝ ΠΑΡᾺ ΚΥΡΊΟΥ ΠΕΡῚ ΤΗ͂Σ ἈΒΡΟΧΊΑΣ. (β) αὐτῆς (γ) εὗρον (δ) ἀπέστρεψαν (ε) γεωργοὶ, ἐπεκάλυψαν τὴν κεφαλήν (ζ) ἐτέκοσαν, (η) ἀπὸ λαοῦ ἀδικίας. Αἱ (θ) ηὐδόκησεν (ι) τῶν ἀδικιῶν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

האפשר דישני הנדואה משכיה ונמרא שלטי רקמתיה אף אתון תכלון לאוטבא 23
דהייתון מלפין למעבד בישין : ואבדרנון כקשא דעדי מן קדם רוחא למדברא : דין 24 25
עדבך וחולק אחסנתיך מן קדמי אמר יי דשבקת פולחני ואתרחצת על שקרא :
ואף אנא אגלי בהתת חובך על אפך ויתחזי קלנך : טפשותיך ושטותיך ועצת חטאי 26 27
ינקותיך על רמתא בחקלא גלי קדמי שקוציך וי ליך ירושלם לא תדכין עד כען ליך
ארכא יומין סגיאין :

יד

דהוה פתגם נבואה מן קדם יי עם ירמיה על עסקי בוצרתא : אתאבלו דבית יהודה 1 2
וקרויהון חרובא אתחפיאו אפיהון אכרום אוכמין כקדרא אתרטישו לארעא וצוחת
יתבי ירושלם סליקת : ותקיפיהון שלחו תניניהון למיא אתו על פצידיא ולא אשכחו 3
מיא תבו מניהון ריקן בהיתו ואתכנעו וחפו רישיהון : בדיל חובי יתבי ארעא אתברו 4
ארי לא הוה מטרא בארעא בהיתו אכריא וחפו רישיהון : ארי אף אילתא במדברא 5
ילידת ושבקא ארי לא הוו דתאין דעסבא : וערדין קמו על נגדין שתן רוחא כירודין 6
קמא עיניהון ארי לית עסבא : אם חובנא אסהידו בנא יי עבד בדיל שמך ארי סגיאין 7
תיובתנא קדמך חבנא : סיבור ישראל פרקיה בעדן עקא למה יחול רוגזך עלנא ואנחנא 8
כתותבין בארעא וכעדי אורחא דסטא למבתא : למה יחול רוגזך עלנא ואנחנא 9
מטלטלין ושביקין ואת גבר יכיל למפרק ואת שכנתך בינגא יי ושמך עלנא אתקרי לא
תשבקננא : כדנן אמר יי לעמא הדין כמה דרחימו כן אתפרע מנהון לאגלותהון 10
מארע בית שכנתי וכמה דהוו מערבין לפולחן טעותא ומבית מקדשי רגליהון לא מנעו
וקדם יי לא רעוא בהון כען יסער עליהון חוביהון ויתפרע עויתהון : ואמר יי לי לא 11
תצלי על עמא הדין לטבא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Nunquid mutabit Æthiops pellem ſuam, aut pardus maculas picturæ ſuæ? 23 & vos quoque poteſtis benefacere cùm ſitis aſſueti ad malè faciendũ? 24 Et diſpergam eos ſicut ſtipulam quæ pertranſit à facie venti in deſertum. 25 Hæc eſt ſors tua, & pars hæreditatis tuæ à facie mea, dicit Dñs; quia reliquiſti cultum meum, & confiſa es in mendacio. 26 Ego quoque revelabo confuſionem peccati tui ſuper faciem tuam, & apparebit ignominia tua. 27 Inſipientia tua & ſtultitia tua & conſiliũ *peccatorũ* adoleſcentiæ tuæ: ſuper colles in agro revelatæ ſunt coram me abominationes tuæ. Væ tibi Jeruſalem, non mundaberis: hactenus prorogatio eſt tibi multis diebus.

CAP. XIV.

1 Quod factum eſt verbum prophetiæ à facie Dñi ad Jeremiam de negotiis ſiccitatis. 2 Luxerunt viri domus Juda, & civitates eorum deſertæ ſunt, & coopertæ ſunt facies eorum nigredine, atræ quaſi olla; projecti ſunt in terram, & clamor habitatorum Jeruſalem aſcendit. 3 Et fortes eorum miſerunt ſubditos ſibi ad aquam; venerũt ad ciſternas, & non invenerũt aquam; reverſi ſunt cum vaſis ſuis vacuis; confuſi ſunt & erubuerunt, & operuerunt capita ſua. 4 Propter peccata habitatorum terræ contriti ſunt; quia non fuit pluvia in terra: confuſi ſunt agricolæ, operuerunt capita ſua. 5 Quoniam etiam cerva in agro peperit & reliquit; quia non erant germina herbæ. 6 Et onagri ſteterunt ſuper torrentes: biberunt ventum quaſi dracones; defecerunt oculi eorum, quia non erat herba. 7 Si iniquitates noſtræ teſtificatæ ſunt contra nos, Dñe fac propter nomen tuum quoniam multæ ſunt averſiones noſtræ: coram te peccavimus. 8 Expectatio Iſrael, ſalvator ejus in tempore tribulationis, quare reſidet ira tua ſuper nos? & nos ſumus ſicut peregrini in terra, & ſicut viator qui divertit ad pernoctandũ. 9 Quare reſidet ira tua ſuper nos? & nos ſumus transmigrantes & derelicti, tu autẽ fortis, potens ad ſalvandum, & majeſtas tua inter nos eſt Dñe, & nomen tuum invocatum eſt ſuper nos, ne derelinquas nos. 10 Hæc dicit Dñs populo huic: Sicut dilexerunt, ſic vindictam ſumam ex eis, ut tranſmigrare faciam eos de terra domus majeſtatis meæ: & ſicut oblectarunt ſe in cultu idolorum, & de domo ſanctuarii mei non prohibuerunt pedes ſuos; & non eſt voluntas coram Dño in eis. Nunc viſitabit peccata eorum, & vindictam ſumet iniquitatum eorum. 11 Et dixit Dominus ad me: Ne ores pro populo iſto in bonum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܝܟ ܕܠܐ ܡܫܟܚ ܗܢܕܘܝܐ ܕܢܫܚܠܦ ܡܫܟܗ܂ ܘܢܡܪܐ ܦܬܟ̈ܘܗܝ܀ ܘܐܦ ܐܢܬܘܢ ܠܐ 23
ܡܫܟܚܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܡܛܒܘ܇ ܡܛܠ ܕܝܠܝܦܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܒܝܫܬܐ܂ * ܘܐܒܕܪ ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܥܘܪܐ ܕܥܒܪ 24
ܩܕܡ ܪܘܚܐ ܠܡܕܒܪܐ܂ * ܗܢܘ ܦܣܬܟܝ ܘܡܢܬܐ ܕܝܪܬܘܬܟܝ ܡܢ ܠܘܬܝ܂ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܡܛܠ 25
ܕܛܥܝܬܝܢܝ܂ ܘܐܬܬܟܠܬܝ ܥܠ ܫܘܩܪܐ܀ * ܐܦ ܐܢܐ ܐܓܠܐ ܫܘܦܠܝܟܝ܂ ܘܐܪܡܐ ܐܢܘܢ ܥܠ 26
ܐܦܝܟܝ ܘܢܬܚܙܐ ܨܥܪܟܝ܂ * ܓܘܪܟܝ ܘܨܗܠܟܝ܂ ܘܙܢܝܘܬܐ ܕܙܢܝܘܬܟܝ܂ ܥܠ ܪ̈ܡܬܐ ܒܡܕܒܪܐ܂ 27
ܚܙܝܬ ܛܢܦܘܬܟܝ܂ ܘܝ ܠܟܝ ܐܘܪܫܠܡ܃ ܕܠܐ ܐܬܕܟܝܬܝ܂ ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ܂ ܬܘܒܝ܂

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܕ *

* ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܥܠ ܡܘܚܠܐ ܕܡܛܪܐ܂ * ܐܬܐܒܠܬ ܝܗܘܕ܂ ܘܬܪ̈ܥܝܗ 1
ܢܚܪ̈ܒܘܢ܂ ܘܢܦܠܘܢ ܒܐܪܥܐ܂ ܘܓܥܬܗ ܕܐܘܪܫܠܡ ܬܣܩ܂ * ܘܪ̈ܘܪܒܢܝܗܘܢ ܢܫܕܪܘܢ ܠܙܥܘܪ̈ܝܗܘܢ 2 3
ܠܡ̈ܝܐ܂ ܢܐܬܘܢ ܠܓܘܒܐ܂ ܘܠܐ ܢܫܟܚܘܢ ܡ̈ܝܐ܂ ܘܢܗܦܟܘܢ ܡܐܢ̈ܝܗܘܢ ܣܦܝܩܝܢ܂ ܢܒܗܬܘܢ
ܘܢܬܟܢܥܘܢ܂ ܘܢܚܦܘܢ ܪ̈ܫܝܗܘܢ܂ * ܡܛܠ ܥܘ̈ܠܝܗ ܕܐܪܥܐ܂ ܠܐ ܗܘܐ ܡܛܪܐ܂ ܢܒܗܬܘܢ ܐܟܪ̈ܐ 4
ܘܢܚܦܘܢ ܪ̈ܫܝܗܘܢ܂ * ܘܐܦ ܐܝܠܬܐ ܒܡܕܒܪܐ ܝܠܕܢ܂ ܘܫܒܩܢ ܥܘ̈ܠܝܗܝܢ܂ ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܐ 5
ܕܬܐܐ܂ * ܘܦܪ̈ܐ ܕܒܪܐ ܢܩܘܡܘܢ ܥܠ ܫܒ̈ܝܠܐ܂ ܢܫܘܦܘܢ ܪܘܚܐ ܐܝܟ ܬܢ̈ܝܢܐ܂ ܢܚܫܟܢ ܥܝܢ̈ܝܗܘܢ܂ ܡܛܠ 6
ܕܠܝܬ ܥܣܒܐ܂ * ܐܢ ܚܛܗ̈ܝܢ ܣܗܕܝܢ ܒܢ܂ ܡܪܝܐ ܚܘܣ ܡܛܠ ܫܡܟ܂ ܡܛܠ 7
ܕܣܓܝܐܐ ܗܝ ܛܝܒܘܬܟ܂ ܘܠܟ ܚܛܝܢ܀ * ܣܒܪܗ ܕܐܝܣܪܝܠ܂ ܘܦܪܘܩܗ ܒܥܕܢܐ 8
ܕܐܘܠܨܢܐ܀ ܠܐ ܬܗܘܐ ܐܝܟ ܬܘܬܒܐ ܒܐܪܥܐ܂ ܘܐܝܟ ܐܘܪܚܐ ܕܣܛܐ ܠܡܒܬ܂ * ܠܐ ܬܗܘܐ ܐܝܟ ܓܒܪܐ 9
ܡܚܝܠܐ܀ ܘܐܝܟ ܓܒܪܐ ܠܐ ܡܫܟܚ ܠܡܦܪܩ܂ ܘܐܢܬ ܡܪܝܐ ܒܝܢܬܢ ܐܢܬ܂ ܘܫܡܟ ܐܬܩܪܝ
ܥܠܝܢ܂ ܠܐ ܬܫܒܩܢ܂ * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܥܡܐ ܗܢܐ܂ ܗܢܘܢ ܪܚܡܘ ܠܡܛܥܐ܂ ܪ̈ܓܠܝܗܘܢ 10
ܠܐ ܟܠܘ܂ ܘܡܪܝܐ ܠܐ ܨܒܐ ܒܗܘܢ܂ ܡܟܝܠ ܢܥܗܕ ܥܘ̈ܠܝܗܘܢ܂ ܘܢܦܩܘܕ ܚܛܗ̈ܝܗܘܢ܂
* ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ܂ ܠܐ ܬܨܠܐ ܥܠ ܥܡܐ ܗܢܐ ܠܛܒܬܐ܂ 11

* Et quemadmodum non poteſt Indus mutare 23
cutem ſuam, aut pardus maculas ſuas; ita neque
vos benefacere poteſtis, quòd aſſueti ſitis
malo. Itaque diſperdam eos veluti glumam 24
quæ tranſit coram vento in deſerto Hæc eſt 25
ſors tua & pars hæreditatis tuæ à me, dicit
Dominus. Quandoquidem oblita es mei, &
freta es falſitate; Ego viciſſim retegam fimbrias 26
tuas, & rejiciam eas ſuper faciem tuam,
ut conſpiciatur ignominia tua, Adulterium 27
tuum, hinnitus tuus, & fornicatio ſcortationis
tuæ: ſuper colles in deſerto vidi abominationem
tuam. Væ tibi Jeruſalem, quia non
mundas te: quouſque tandem? convertere.

CAP. XIV.

Et factus eſt ſermo Domini ad Jeremiam 1
de pluviæ defectu. Lugebit Judæa, & portæ 2
ejus deſolabuntur, & corruent in terram, &
gemitus Jeroſolymæ aſcendet. Magnates eorum 3
mittent plebeios ſuos ad aquas; venientes
ad ciſternam non invenient aquas, revertentur
ſuis vaſis vacuis, erubeſcent, & pudore
ſuffuſi operient capita ſua. Propter facinora 4
terræ non erit pluvia: erubeſcentes
agricolæ operient capita ſua. Quin etiam 5
cervæ in deſerto parient, & derelinquent hinnulos
ſuos, eò quòd non ſit gramen: Et onagri 6
adſtabunt, ſemitis, ventum aſpirabunt ut
canes ſylveſtres, obtenebreſcent oculi eorum,
quia non erit fœnum. Si peccata noſtra contra 7
nos teſtantur, *tu* Domine parce propter
nomen tuum: nam plurima eſt bonitas tua, &
in te peccavimus. Spes Iſraelis, & ſervator 8
ejus in tempore anguſtiæ, ne ſis ut peregrinus
in terra, & tanquam viator qui divertit
ad pernoctandum. Ne ſis ut homo imbecillis, 9
& ut homo non valens ſervare. Tu quidem
Domine, in medio noſtri es, & nomen tuum
invocatum eſt ſuper nos; ne derelinquas nos.
Sic dicit Dominus huic populo, iſti dilexerunt 10
evagari, pedes ſuos non continuerunt;
ideò Domino diſplicent, mox recordabitur
iniquitatis eorum, & viſitabit peccata eorum.
Deinde dixit mihi Dominus, Ne oraveris 11
pro populo iſto in bonum:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ايبدل الحبشي جلده والنمر بقعه * فانتم تقدرون ان تصنعوا الردي الذي تعلمتموه 23
جيدا * وافسدهم مثل الهشيم المحمول من الريح الي موضع خراب * هذا سهمك ونصيبك 24 25
ان عصيتموني يقول الرب * كما نسيت ناموسي وتوكلت علي الكذب * ساكشف ما خلفك 26
اسفل تجاه وجهك ويظهر اهانتك * وفسقك وصهيلك وغريبة زناك علي الاكام وفي الحقول * 27
رايت رداءاتك * الويل لك يا ايروسليم لانك لم تسعي خلفي * الي متي ايضا *

* الفصل الرابع عشر *

* القول الصاير الي ارمياء من قبل الرب من اجل عدم المطر * 1
* خربت اليهودية * وابوابها استفرغت واظلمت علي الارض * وصراخ ايروسليم صعد * 2
* وعظماوها ارسلوا شبانها الي الماء * اتوا الي الابار فلم يجدوا ماء * ردوا اوعيتهم فارغة * 3
* واعمال الارض فنيت لانه لم يكن مطر * خزيوا الفلاحون * كشفوا راسهم * والايلات 4 5
في الحقل ولدن وتركوا لانه لم يكن نبات * الحمير الحقلية وقفوا علي الروابي واجتذبوا 6
ريحا * فنيت اعينهم لانه لم يكن عشب * من ظلم الشعب * خطايانا وقفت بنا * يا رب 7
اصنع لنا من اجلك * لان خطايانا كثيرة امامك * لانا اخطانا اليك * يا رجاء اسرايل 8
يا رب * خلص في زمن الاسواء * لماذا صرت مثل غريب علي الارض * مثل متاهل يميل الي
موضع المبيت * لا تكن مثل انسان نايم * ولا مثل رجل لا يستطيع ان يخلص * 9
وانت فينا يا رب انت * واسمك دعي علينا * لا تنسنا * هكذا يقول الرب لهذا الشعب * 10
احبوا ان يحركوا ارجلهم ولم يشفقوا * الله لم يسر بهم * الان يذكر مظالمهم * وقال الرب 11
لي * لا تصل عن هذا الشعب للخيرات *

* *An mutaret Æthiops pellem ſuam, aut* 23
pardus maculas ſuas? ita vos malum
quod didiciſtis, in bonum vertere poteſtis?
Ideò corrumpam eos ceu ſtipulam à vento 24
in locum deſertum aſportatam. Hæc erit 25
portio tua & ſors tua, ſi contra me rebellaveritis,
ait Dominus. Quemadmodum
oblitus es legis meæ, & fiduciam collocâſti
in mendacio; Ita retegam poſteriores 26
fimbrias tuas ante faciem tuam, ut
appareat turpitudo tua, Adulterium tuum, 27
hinnitus tuus, & extraordinaria
ſcortatio tua ſuper colles & in agris:
Vidi abominationes tuas. Væ tibi O Jeruſalem,
quia non mundas te ſequendo me:
Quouſque tandem?

CAP. XIV.

Sermo factus ad Jeremiam à Domino 1
de pluviæ penuria.

* *Mærore conficietur Judæa, portæ ejus* 2
evacuabuntur, obſcura ſuper terram evadet,
& clamor Jeroſolymorum aſcendet.
* *Magnates enim ejus mittent juvenes ejus* 3
ad aquam; qui venientes ad puteos, nec
invenientes aquam, vaſa ſua vacua reportabunt.
* *Terræ culturæ ceſſabunt, quia* 4
non erit pluvia: pudefacti agricolæ detegent
caput ſuum. Cervæ quoque in agro 5
parientes deſtituent fœtum, quia non
erit herba: Aſini ſylveſtres ſtantes ſuper 6
colles haurient ventum, deficient oculi
eorum, quia nullum erit fœnum propter
populi perverſitatem. Peccata noſtra denuntiabunt 7
nos; O Domine, age nobiſcum
propter teipſum, quia peccata noſtra plurima
ſunt coram te; nam tibi peccavimus.
O ſpes Iſraelis, O Domine, ſalva tempore 8
calamitoſo. Quarè factus es ut
peregrinus ſuper terram? ut viator qui
digreditur ad locum diverſorii? Ne 9
ſis ut homo dormitans, neque ut vir impotens
ad ſalvandum. Quandoquidem
tu es inter nos O Domine, & nomen tuum
invocatum eſt ſuper nos; ne obliviſcaris
noſtri. Sic ait Dominus huic populo, 10
Dilexerunt movere pedes ſuos, nec pepercerunt:
non oblectatur illis Deus: jamjam
recordaturus eſt impietatem eorum.
Tum dixit mihi Dominus, Ne preceris 11
huic populo proſpera:

ירמיה: יד

etiam ? ſuas maculas pardus &?ſuam pellem Æthiops vertet Nunquid
23 הֲיַהֲפֹךְ כּוּשִׁי עוֹרוֹ וְנָמֵר חֲבַרְבֻּרֹתָיו גַּם־
eos diſpergere faciam Et ? malefacere *docti* benefacere poteritis vos
24 אַתֶּם תּוּכְלוּ לְהֵיטִיב לִמֻּדֵי הָרֵעַ׃ וַאֲפִיצֵם
pars tua ſors Hæc .deſerti ventum ad,tranſeuntem ſtipulam tanquã
25 כְּקַשׁ עוֹבֵר לְרוּחַ מִדְבָּר׃ זֶה גוֹרָלֵךְ מְנָת־
fidiſti & , mei es oblita quæ : Dominus dixit ,me à *tuarum menſurarũ*
מִדַּיִךְ מֵאִתִּי נְאֻם־יְהוָה אֲשֶׁר שָׁכַחַתְּ אוֹתִי וַתִּבְטְחִי
apparuit & *: tuas facies ſuper* tuas fimbrias *detexi* ego etiam Et .*falſitate* in
26 בַּשָּׁקֶר׃ וְגַם־אֲנִי חָשַׂפְתִּי שׁוּלַיִךְ עַל־פָּנָיִךְ וְנִרְאָה
tuæ fornicationis fœditas , *tui hinnitus* & ,tua Adulteria .tua ignominia
27 קְלוֹנֵךְ׃ נִאֻפַיִךְ וּמִצְהֲלוֹתַיִךְ זִמַּת זְנוּתֵךְ
, Jeruſalaim tibi væ : tuas abominationes vidi , agro in colles ſuper
עַל־גְּבָעוֹת בַּשָּׂדֶה רָאִיתִי שִׁקּוּצָיִךְ אוֹי לָךְ יְרוּשָׁלַםִ
.adhuc quando , poſthac te mundabis non
לֹא תִטְהֲרִי אַחֲרֵי מָתַי עֹד׃

CAP. XIV. יד

.prohibitionum verba ſuper Irmejahu ad Domini verbum fuit Quod
1 אֲשֶׁר הָיָה דְבַר־יְהוָה אֶל־יִרְמְיָהוּ עַל־דִּבְרֵי הַבַּצָּרוֹת׃
terra in *nigruere* , ſunt *infirmata* ejus portæ & , Jehudah *Luxit*
2 אָבְלָה יְהוּדָה וּשְׁעָרֶיהָ אֻמְלְלוּ קָדְרוּ לָאָרֶץ
ſuos minores miſerunt eorum *illuſtres* Et .aſcendit Jeruſalaim clamor &
3 וְצִוְחַת יְרוּשָׁלַםִ עָלָתָה׃ וְאַדִּרֵיהֶם שָׁלְחוּ צְעוֹרֵיהֶם
ſunt reverſi : aquas invenerunt non , foſſas ad venerunt : aquam ad
לַמָּיִם בָּאוּ עַל־גֵּבִים לֹא־מָצְאוּ מַיִם שָׁבוּ
operuerunt & ,erubuerunt & , ſunt affecti pudore , *vacua* ſuis vaſis
כְלֵיהֶם רֵיקָם בֹּשׁוּ וְהָכְלְמוּ וְחָפוּ
pluvia fuit non quia *: contritam humum* Propter .ſuum caput
4 רֹאשָׁם׃ בַּעֲבוּר הָאֲדָמָה חַתָּה כִּי לֹא־הָיָה גֶשֶׁם
Nam .ſuum caput operuerunt , agricolæ ſunt affecti pudore : terra in
5 בָּאָרֶץ בֹּשׁוּ אִכָּרִים חָפוּ רֹאשָׁם׃ כִּי
.herba erat non quia ,*relinquere* & , peperit agro in cerva etiam
גַם־אַיֶּלֶת בַּשָּׂדֶה יָלְדָה וְעָזוֹב כִּי לֹא־הָיָה דֶּשֶׁא׃
:dracones tanquam ventum *ſorbuerunt : locis editis ſuper* ſteterunt onagri Et
6 וּפְרָאִים עָמְדוּ עַל־שְׁפָיִם שָׁאֲפוּ רוּחַ כַּתַּנִּים
noſtræ iniquitates Si .herba non quia , eorum oculi defecerunt
7 כָּלוּ עֵינֵיהֶם כִּי־אֵין עֵשֶׂב׃ אִם־עֲוֺנֵינוּ
quia : tuum nomen propter fac , Domine ,nos contra ſunt teſtificatæ
עָנוּ בָנוּ יְהוָה עֲשֵׂה לְמַעַן שְׁמֶךָ כִּי־
Iſrael Expectatio .peccavimus tibi ,noſtræ *averſiones ſunt multiplicatæ*
8 רַבּוּ מְשׁוּבֹתֵינוּ לְךָ חָטָאנוּ׃ מִקְוֵה יִשְׂרָאֵל
,terra in peregrinus veluti eris quare:afflictionis tempore in ej' ſervator
מוֹשִׁיעוֹ בְּעֵת צָרָה לָמָּה תִהְיֶה כְּגֵר בָּאָרֶץ
vir veluti es futurus Quare ? pernoctandum ad *declinavit* viator tanquã &
9 וּכְאֹרֵחַ נָטָה לָלוּן׃ לָמָּה תִהְיֶה כְּאִישׁ
noſtro interiori in tu & ? facere ſalvum *poterit* non fortis tanquam,attonitus
נִדְהָם כְּגִבּוֹר לֹא־יוּכַל לְהוֹשִׁיעַ וְאַתָּה בְקִרְבֵּנוּ
Sic .nos *dimittas* ne,eſt invocatum nos ſuper tuum nomen &,Domine
10 יְהוָה וְשִׁמְךָ עָלֵינוּ נִקְרָא אַל־תַּנִּחֵנוּ׃ כֹּה־
ſuos pedes , ſe movere dilexerunt ita : huic populo Dominus dixit
אָמַר יְהוָה לָעָם הַזֶּה כֵּן אָהֲבוּ לָנוּעַ רַגְלֵיהֶם
recordabitur nunc : eos noluit Dominus *&* : prohibuerunt non
לֹא חָשָׂכוּ וַיהוָה לֹא רָצָם עַתָּה יִזְכֹּר
: me ad Dominus dixit Et .eorum peccata viſitabit & ,eorũ iniquitatis
11 עֲוֺנָם וְיִפְקֹד חַטֹּאתָם׃ וַיֹּאמֶר יְהוָה אֵלַי
.bonum in iſto populo pro ores Ne
אַל־תִּתְפַּלֵּל בְּעַד־הָעָם הַזֶּה לְטוֹבָה׃

Verſio VULG. LAT.

23 Si mutare poteſt Æthiops pellem
ſuam, aut pardus varietates ſuas:
& vos poteritis benefacere, cùm
24 didiceritis malum. Et diſſemi-
nabo eos quaſi ſtipulam, quæ
25 vento raptatur in deſerto. Hæc
ſors tua, parſque menſuræ tuæ
à me, dicit Dominus; quia obli-
ta es meî, & confiſa es in men-
26 dacio. Unde & ego nudavi fe-
mora tua contra faciem tuam, &
27 apparuit ignominia tua, Adul-
teria tua, & hinnitus tuus,ſcelus
fornicationis tuæ: ſuper colles
in agro vidi abominationes tuas.
Væ tibi, Jeruſalem, non mun-
daberis poſt me: uſquequò ad-
huc?

CAP. XIV.

1 Quod factum eſt verbum Do-
mini ad Jeremiam de ſermoni-
2 bus ſiccitatis. Luxit Judæa, &
portæ ejus corruerunt, & obſcu-
ratæ ſunt in terra; & clamor Je-
3 ruſalem aſcendit. Majores mi-
ſerunt minores ſuos ad aquam:
venerunt ad hauriendum, non
invenerunt aquam, reportave-
runt vaſa ſua vacua: confuſi
ſunt & afflicti, & operuerunt ca-
4 pita ſua. Propter terræ vaſtita-
tem, quia non venit pluvia in
terram, confuſi ſunt agricolæ,
5 operuerunt capita ſua. Nam &
cerva in agro peperit, & reli-
6 quit: quia non erat herba. Et
onagri ſteterunt in rupibus, tra-
xerunt ventum quaſi dracones,
defecerunt oculi eorum, quia
7 non erat herba. Si iniquitates
noſtræ reſponderint nobis: Do-
mine,fac propter nomen tuum,
quoniam multæ ſunt averſiones
8 noſtræ, tibi peccavimus. Expe-
ctatio Iſrael,ſalvator ejus in tem-
pore tribulationis: quarè quaſi
colonus futurus es in terra, &
quaſi viator declinans ad ma-
9 nendum? Quarè futurus es vel-
ut vir vagus, ut fortis qui non
poteſt ſalvare? tu autem in no-
bis es,Domine, & nomen tuum
invocatum eſt ſuper nos, ne de-
10 relinquas nos. Hæc dicit Domi-
nus populo huic, qui dilexit mo-
vere pedes ſuos, & non quievit,
& Domino non placuit: Nunc
recordabitur iniquitatum eorum,
11 & viſitabit peccata eorum. Et
dixit Dominus ad me; Noli ora-
re pro populo iſto in bonum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

23 Εἰ ἀλλάξεται Αἰθίοψ τὸ (τ) δέρμα αὐτοῦ,
καὶ πάρδαλις τὰ ποικίλματα αὐτῆς, καὶ ὑ-
μεῖς (υ) δυνήσεσθε εὖ ποιῆσαι μεμαθηκό-
24 τες τὰ κακά. Καὶ (φ) διέσπειρα αὐτοὺς, ὡς
φρύγανα φερόμενα ὑπὸ ἀνέμου εἰς (χ) ἔρη-
25 μον. Οὗτος ὁ κλῆρός σου, καὶ μερὶς τοῦ ἀπει-
θεῖν ὑμᾶς ἐμοὶ, λέγει κύριος. ὡς ἐπελάθου
26 (ψ) μου, καὶ ἤλπισας ἐπὶ ψεύδεσι, Κἀγὼ
ἀποκαλύψω τὰ (ω) ὀπίσω σου ἐπὶ τὸ πρόσ-
27 ωπόν σου, καὶ ὀφθήσεται ἡ ἀτιμία σου, Καὶ
(α) ἡ μοιχεία σου, καὶ χρεμετισμός σου, καὶ
ἡ ἀπαλλοτρίωσις τῆς πορνείας σου. ἐπὶ τῶν βου-
νῶν, καὶ ἐν τοῖς ἀγροῖς ἑώρακα τὰ βδε-
λύγματά σου. οὐαί σοι Ἰερουσαλήμ, ὅτι οὐκ
ἐκαθαρίσθης ὀπίσω μου ἕως τίνος ἔτι;

Si mutabit Æthiops pellem ſuã, 23
& pardus varietates ſuas; &
vos poteritis benefacere, cùm di-
dicerítis mala. Et diſſeminavi eos, 24
quaſi ſtipulas, quæ feruntur à
vento in deſertum. Sic ſors tua, 25
& pars inobedientiæ veſtræ ad-
verſùm me, dicit Dominus. Sicut
oblita es meî, & ſperâſti in men-
daciis; Et ego nudabo poſteriora 26
tua ſuper faciem tuam: & vide-
bitur ignominia tua, Et adulte- 27
rium tuum, & hinnitus tuus, &
alienatio fornicationis tuæ. Super
colles, & in agris vidi abomina-
tiones tuas. Væ tibi, Hieruſalem:
quia non es mundata poſt me
uſquequò adhuc.

MS.A. (τ) δέρμα, καὶ πάρδαλις (υ) * δυνήσεται (φ) διέφθειρα (χ) ἔρημον
τόπον. Οὗτος (ψ) νόμου μου, (ω) ὀπίσθιά σου κατὰ πρόσωπόν σου, (α)
αἱ μοιχεῖαι σου, καὶ ὁ χρεμετισμὸς

ΚΕΦ. ιδʹ.

1 (α) ΚΑῚ ἘΓΈΝΕΤΟ ΛΌΓΟΣ ΚΥΡΊ-
ΟΥ ΠΡῸΣ ἹΕΡΕΜΊΑΝ ΠΕΡῚ
ΤΗ͂Σ ἈΒΡΟΧΊΑΣ.
2 Ἐπένθησεν ἡ Ἰουδαία, καὶ αἱ πύλαι αὐ-
τῆς ἐκενώθησαν, καὶ ἐσκοτώθησαν ἐπὶ τῆς
γῆς, καὶ ἡ κραυγὴ τῆς Ἱερουσαλὴμ ἀνέβη.
3 Καὶ οἱ μεγιστᾶνες αὐτῆς ἀπέστειλαν τοὺς νε-
ωτέρους (β) αὐτῶν ἐφ' ὕδωρ· ἤλθοσαν ἐπὶ τὰ
φρέατα, καὶ οὐχ (γ) εὕροσαν ὕδωρ, (δ) καὶ ἀπέ-
στρεψαν τὰ ἀγγεῖα αὐτῶν κενά. Καὶ τὰ ἔργα
4 τῆς γῆς ἐξέλιπεν, ὅτι οὐκ ἦν ὑετός. ᾐσχύν-
θησαν (ε) οἱ γεωργοὶ, ἐπεκάλυψαν τὰς
5 κεφαλὰς αὐτῶν. Καὶ ἔλαφοι ἐν ἀγρῷ (ζ)
ἔτεκον, καὶ ἐγκατέλιπον, ὅτι οὐκ ἦν βοτάνη.
6 Ὄνοι ἄγριοι ἔστησαν ἐπὶ νάπας, καὶ εἵλκυσαν ἄ-
νεμον, ἐξέλιπον οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτῶν, ὅτι οὐκ ἦν
7 χόρτος (η). Αἱ ἁμαρτίαι ἡμῶν ἀντέστησαν ἡ-
μῖν· κύριε ποίησον ἡμῖν ἕνεκεν σου, ὅτι πολ-
λαὶ αἱ ἁμαρτίαι ἡμῶν ἐναντίον σου, ὅτι σοὶ
8 ἡμάρτομεν. Ὑπομονὴ Ἰσραὴλ κύριε, καὶ σώ-
ζεις ἐν καιρῷ κακῶν. ἵνα τί ἐγενήθης ὡσεὶ
πάροικος ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ὡς αὐτόχθων ἐκ-
9 κλίνων εἰς κατάλυμα; Μὴ ἔσῃ ὥσπερ ἄν-
θρωπος ὑπνῶν, ἢ ὡς ἀνὴρ οὐ δυνάμενος
σώζειν; καὶ σὺ ἐν ἡμῖν εἶ κύριε, καὶ τὸ ὄνομά
σου ἐπικέκληται ἐφ' ἡμᾶς, μὴ ἐπιλάθῃ ἡ-
10 μῶν. Οὕτως λέγει κύριος τῷ λαῷ τούτῳ,
Ἠγάπησαν κινεῖν πόδας αὐτῶν, καὶ οὐκ ἐφεί-
σαντο, καὶ ὁ θεὸς οὐκ (θ) εὐώδωσεν ἐν αὐτοῖς,
11 νῦν μνησθήσεται (ι) τῆς ἀδικίας αὐτῶν. Καὶ
εἶπε κύριος πρὸς μέ, Μὴ προσεύχου περὶ τοῦ
λαοῦ τούτου εἰς ἀγαθά,

CAP. XIV.

ET factum eſt verbum Domi- 1
ni ad Hieremiam, de ſiccitate.
Luxit Judæa, & portæ ejus va- 2
cuæ factæ ſunt, & contenebratæ
ſunt ſuper terram: & clamor
Hieruſalem aſcendit: Et ma- 3
gnates ejus miſerunt juniores
ſuos ad aquam: venerunt ad pu-
teos, & non invenerunt aquam:
& reportaverunt vaſa ſua (a)
vacua: Et opera terræ defece- 4
runt, quia non erat pluvia. Con-
fuſi ſunt agricolæ: operuerunt
capita ſua: Et cervæ in agro pe- 5
pererunt, & reliquerunt; quia
non erat herba. Onagri ſteterunt 6
in rupibus, & traxerunt (b) ven-
tum: defecerunt oculi eorum;
quia non erat fœnum. (c) Pecca- 7
ta noſtra reſtiterunt nobis: Do-
mine, fac nobis propter te: quo-
niam multa ſunt peccata noſtra
coram te: quia tibi peccavimus.
Expectatio Iſrael, Domine: & 8
ſalvabis in tempore malorum.
Quarè factus es, ſicut advena in
terra, & quaſi (d) indigena di-
vertens ad diverſorium? Nun- 9
quid eris quaſi homo dormiens,
vel quaſi vir, qui (e) ſalvare non
poſſit? Et tu in nobis es, Domine:
& nomen tuum invocatum eſt
ſuper nos: ne obliviſcaris noſtri.
Sic dicit Dominus populo huic; 10
Dilexerunt movere pedes ſuos, et
non pepercerunt: & Deus (f) non
proſperavit in eis: nunc recorda-
bitur iniquitatis eorum. Et dixit 11
Dominus ad me; Noli orare pro
populo iſto in bona:

MS.A. (α) Ὁ ΛΌΓΟΣ Ὁ ΓΕΝΆΜΕΝΟΣ ΠΡῸΣ ἹΕΡΕΜΊΑΝ
ΠΑΡᾺ ΚΥΡΊΟΥ ΠΕΡῚ ΤΗ͂Σ ἈΒΡΟΧΊΑΣ. (β) αὐτῆς (γ) εὗρον
(δ) ἀπέστρεψαν (ε) γεωργοὶ, ἐπεκάλυψαν τὴν κεφαλὴν (ζ) ἐτέκοσαν,
(η) ἀπὸ λαοῦ ἀδικίας. Αἱ (θ) ηὐδόκησεν (ι) τῶν ἀδικίων

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

23 הַאֶפְשַׁר דִּישַׁנֵּי הִנְדּוּאָה מַשְׁכֵיהּ וְנִמְרָא שַׁלְטֵי רִקְמָתֵיהּ אַף אַתּוּן תִּכְלוּן לְאוֹטָבָא
24 דַּהֲוֵיתוּן מַלְּפִין לְמֶעְבַּד בִּישִׁין׃ וְאֶבַדַּרְנוּן כְּקַשָּׁא דְעָדֵי מִן קֳדָם רוּחָא לְמַדְבְּרָא׃ דֵּין 25
עַדְבִיךְ וְחוּלַק אַחְסַנְתִּיךְ מִן קֳדָמַי אֲמַר יְיָ דִּשְׁבַקְתְּ פּוּלְחָנִי וְאִתְרְחֵצְתְּ עַל שִׁקְרָא׃
26 וְאַף אֲנָא אֲגַלֵּי בַּהֲתַת חוֹבִךְ עַל אַפִּךְ וְיִתְחֲזֵי קְלָנִיךְ׃ טַפְשׁוּתִיךְ וּשְׁטוּתִיךְ וַעֲצַת חֶטְאֵי 27
יַנְקוּתִיךְ עַל רָמָתָא בְּחַקְלָא גְּלֵי קֳדָמַי שִׁקּוּצַיִךְ וַי לִיךְ יְרוּשְׁלֶם לָא תִדְכֵּין עַד כְּעַן לִיךְ
אַרְכָא יוֹמִין סַגִּיאִין׃
יד
1 דַּהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִם יִרְמְיָה עַל עִסְקֵי בּוֹצַרְתָּא׃ אִתְאַבַּלוּ דְבֵית יְהוּדָה 2
וְקִרְוֵיהוֹן חֲרוּבָא אִתְחַפִּיאוּ אַפֵּיהוֹן אֻכְרוּם אוּכָּמִין כְּקִדְרָא אִתְרְטִישׁוּ לְאַרְעָא וְצִוְחַת
3 יָתְבֵי יְרוּשְׁלֶם סְלֵיקַת׃ וְתַקִּיפֵיהוֹן שְׁלַחוּ תְּנִינֵיהוֹן לְמַיָּא אֲתוֹ עַל פְּצִידַיָּא וְלָא אַשְׁכַּחוּ
4 מַיָּא תָּבוּ מָנֵיהוֹן רֵיקָן בְּהִיתוּ וְאִתְכְּנַעוּ וַחֲפוֹ רֵישֵׁיהוֹן׃ בְּדִיל חוֹבֵי יָתְבֵי אַרְעָא אִתְּבַרוּ
5 אֲרֵי לָא הֲוָה מִטְרָא בְּאַרְעָא בְּהִיתוּ אִכָּרַיָּא וַחֲפוֹ רֵישֵׁיהוֹן׃ אֲרֵי אַף אַיַּלְתָּא בְּמַדְבְּרָא
6 יְלֵידַת וְשָׁבְקָא אֲרֵי לָא הֲווֹ דִּתְאִין דְּעִסְבָּא׃ וַעֲרָדִין קָמוּ עַל נִגְדִּין שְׁתַן רוּחָא כְּיָרוֹדִין
7 קְמָא עֵינֵיהוֹן אֲרֵי לֵית עִסְבָּא׃ אִם חוֹבָנָא אַסְהִידוּ בָנָא יְיָ עֲבֵד בְּדִיל שְׁמָךְ אֲרֵי סַגִּיאִין
8 תְּיוּבְתָּנָא קֳדָמָךְ חַבְנָא׃ סִיבוּר יִשְׂרָאֵל פָּרְקֵיהּ בְּעִדָּן עָקָא לְמָה יְחוּל רוּגְזָךְ עֲלָנָא וַאֲנַחְנָא
9 כְּתוֹתָבִין בְּאַרְעָא וּכְעָדֵי אוֹרְחָא דִּסְטָא לִמְבָּת׃ לְמָה יְחוּל רוּגְזָךְ עֲלָנָא וַאֲנַחְנָא
מְטַלְטְלִין וּשְׁבִיקִין וְאַתְּ גִּבַּר יָכֵיל לְמִפְרַק וְאַתְּ שְׁכִנְתָּךְ בֵּינָנָא יְיָ וּשְׁמָךְ עֲלָנָא אִתְקְרֵי לָא
10 תִשְׁבְּקִנָּנָא׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ לְעַמָּא הָדֵין כְּמָה דְרְחִימוּ כֵּן אִתְפְּרַע מִנְּהוֹן לְאַגְלָיוּתְהוֹן
מֵאֲרַע בֵּית שְׁכִנְתִּי וּכְמָה דַהֲווֹ מְעָרְבִין לְפוּלְחַן טַעֲוָתָא וּמִבֵּית מַקְדְּשִׁי רַגְלֵיהוֹן לָא מְנַעוּ
11 וּקְדָם יְיָ לָא רַעֲוָא בְהוֹן כְּעַן יִסְעַר עֲלֵיהוֹן חוֹבֵיהוֹן וְיִתְפְּרַע עֲוָיָתְהוֹן׃ וַאֲמַר יְיָ לִי לָא
תְּצַלֵּי עַל עַמָּא הָדֵין לְטָבָא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Nunquid mutabit Æthiops pellem ſuam, aut pardus maculas picturæ ſuæ? 23
& vos quoque poteſtis benefacere cùm ſitis aſſueti ad malè faciendũ? Et 24
diſpergam eos ſicut ſtipulam quæ pertranſit à facie venti in deſertum. Hæc 25
eſt ſors tua,& pars hæreditatis tuæ à facie mea, dicit Dñs; quia reliquiſti
cultum meum,& confiſa es in mendacio. Ego quoque revelabo confuſio- 26
nem peccati tui ſuper faciem tuam,& apparebit ignominia tua. Inſipientia 27
tua & ſtultitia tua & conſiliũ *peccatorũ* adoleſcentiæ tuæ: ſuper colles in
agro revelatæ ſunt coram me abominationes tuæ. Væ tibi Jeruſalem, non
mundaberis: hactenus prorogatio eſt tibi multis diebus.

CAP. XIV.

Quod factum eſt verbum prophetiæ à facie Dñi ad Jeremiam de nego- 1
tiis ſiccitatis. Luxerunt viri domus Juda, & civitates eorum deſertæ ſunt, 2
& coopertæ ſunt facies eorum nigredine, atræ quaſi olla; projecti ſunt in
terram, & clamor habitatorum Jeruſalem aſcendit. Et fortes eorum miſe- 3
runt ſubditos ſibi ad aquam; venerũt ad ciſternas,& non invenerũt aquam;
reverſi ſunt cum vaſis ſuis vacuis; confuſi ſunt & erubuerunt, & operue-
runt capita ſua. Propter peccata habitatorum terræ contriti ſunt; quia non 4
fuit pluvia in terra: confuſi ſunt agricolæ, operuerunt capita ſua. Quoniam 5
etiam cerva in agro peperit & reliquit; quia non erant germina herbæ.
Et onagri ſteterunt ſuper torrentes: biberunt ventum quaſi dracones; de- 6
fecerunt oculi eorum, quia non erat herba. Si iniquitates noſtræ teſtificatæ 7
ſunt contra nos, Dñe fac propter nomen tuum quoniam multæ ſunt aver-
ſiones noſtræ: coram te peccavimus. Expectatio Iſrael, ſalvator ejus in 8
tempore tribulationis, quare reſidet ira tua ſuper nos? & nos ſumus ſicut
peregrini in terra,& ſicut viator qui divertit ad pernoctandũ. Quare reſi- 9
det ira tua ſuper nos? & nos ſum' tranſmigrantes & derelicti, tu autẽ fortis,
potens ad ſalvandum,& majeſtas tua inter nos eſt Dñe,& nomen tuum in-
vocatum eſt ſuper nos, ne derelinquas nos. Hæc dicit Dñs populo huic: 10
Sicut dilexerunt, ſic vindictam ſumam ex eis, ut tranſmigrare faciam eos
de terra domus majeſtatis meæ: & ſicut oblectarunt ſe in cultu idolorum,
& de domo ſanctuarii mei non prohibuerunt pedes ſuos; & non eſt vo-
luntas coram Dño in eis. Nunc viſitabit peccata eorum, & vindictam
ſumet iniquitatum eorum. Et dixit Dominus ad me: Ne ores pro populo iſto in bonum. 11

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

23 * ܐܝܟ ܕܠܐ ܡܫܟܚ ܟܘܫܝܐ ܕܢܫܚܠܦ ܡܫܟܗ. ܘܢܡܪܐ ܓܘܢܘܗܝ. ܗܟܢܐ ܐܦ ܐܢܬܘܢ ܠܐ
24 ܡܫܟܚܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܡܥܒܕ ܛܒܬܐ: ܡܛܠ ܕܐܠܦܬܘܢ ܒܝܫܬܐ. * ܘܐܒܕܪ ܐܢܘܢ. ܐܝܟ ܩܠܐ ܕܥܒܪ
25 ܩܕܡ ܪܘܚܐ ܒܡܕܒܪܐ. * ܗܢܘ ܦܠܓܟܝ ܘܡܢܬܐ ܕܝܪܬܘܬܟܝ ܡܢ ܠܘܬܝ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ
26 ܕܛܥܝܬܝܢܝ. ܘܐܬܬܟܠܬܝ ܥܠ ܫܘܩܪܐ. * ܐܦ ܐܢܐ ܐܓܠܐ ܫܘܦܠܝܟܝ. ܘܐܪܡܐ ܐܢܘܢ ܥܠ
27 ܐܦܝܟܝ ܘܢܬܚܙܐ ܨܥܪܟܝ. * ܓܘܪܟܝ ܘܨܗܠܟܝ. ܘܙܢܝܘܬܐ ܕܙܢܝܘܬܟܝ. ܥܠ ܪܡܬܐ ܒܡܕܒܪܐ.
ܚܙܝܬ ܫܝܘܛܝܟܝ. ܘܝ ܠܟܝ ܐܘܪܫܠܡ: ܕܠܐ ܐܬܕܟܝܬܝ. ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܬܘܒܝ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܕ *

1 * ܗܘܐ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܥܠ ܟܠܝܢܐ ܕܡܛܪܐ. * ܐܬܐܒܠܬ ܝܗܘܕ. ܘܬܪܥܝܗ
2
3 ܐܬܚܪܒܘ ܘܐܬܩܕܪܘ ܒܐܪܥܐ. ܘܨܘܚܬܐ ܕܐܘܪܫܠܡ ܣܠܩܬ. * ܘܪܘܪܒܢܝܗܘܢ ܫܕܪܘ ܙܥܘܪܝܗܘܢ
ܠܡܝܐ. ܐܬܘ ܠܓܘܒܐ. ܘܠܐ ܐܫܟܚܘ ܡܝܐ. ܘܗܦܟܘ ܡܐܢܝܗܘܢ. ܣܪܝܩܝܢ. ܒܗܬܘ
4 ܘܐܬܟܢܥܘ ܘܚܦܘ ܪܫܝܗܘܢ. * ܡܛܠ ܚܒܪܘܗ ܕܐܪܥܐ ܠܐ ܗܘܐ ܡܛܪܐ. ܒܗܬܘ ܐܟܪܐ
5 ܘܚܦܘ ܪܫܝܗܘܢ. * ܐܦ ܐܝܠܬܐ ܒܚܩܠܐ ܝܠܕܬ. ܘܫܒܩܬ ܒܢܝܗܝܢ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܐ
6 ܬܕܐܐ. * ܘܦܪܐܐ. ܩܡܘ ܥܠ ܫܒܝܠܐ. ܘܫܡܘ ܪܘܚܐ ܐܝܟ ܬܢܝܢܐ. ܚܫܟܝ ܥܝܢܝܗܘܢ. ܡܛܠ
7 ܕܠܝܬ ܥܣܒܐ. * ܐܢ ܚܛܗܝܢ ܣܗܕܘ ܒܢ. ܡܪܝܐ ܚܘܣ ܡܛܠ ܫܡܟ. ܡܛܠ
8 ܕܣܓܝܐܐ ܗܝ ܛܝܒܘܬܟ. ܘܠܟ ܚܛܝܢ. * ܣܒܪܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܦܪܘܩܗ ܒܙܒܢܐ
9 ܕܐܘܠܨܢܐ. ܠܐ ܬܗܘܐ ܐܝܟ ܬܘܬܒܐ ܒܐܪܥܐ. ܘܐܝܟ ܐܪܚܐ ܕܣܛܐ ܠܡܒܬ. * ܠܐ ܬܗܘܐ ܐܝܟ ܓܒܪܐ
ܡܪܝܪܐ. ܘܐܝܟ ܓܒܪܐ ܕܠܐ ܡܫܟܚ ܠܡܦܪܩ. ܘܐܢܬ ܡܪܝܐ ܒܝܢܬܢ ܐܝܬ. ܘܫܡܟ ܐܬܩܪܝ
10 ܥܠܝܢ. ܠܐ ܬܫܒܩܢ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܥܡܐ ܗܢܐ. ܪܚܡܘ ܕܢܫܘܛܘܢ ܪܓܠܝܗܘܢ
ܠܐ ܟܠܘ. ܘܡܪܝܐ ܠܐ ܨܒܐ ܒܗܘܢ. ܡܟܝܠ ܢܥܗܕ ܥܘܠܗܘܢ. ܘܢܦܩܘܕ ܚܛܗܝܗܘܢ.
11 * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܠܐ ܬܨܠܐ ܥܠ ܥܡܐ ܗܢܐ ܠܛܒܬܐ.

Et quemadmodum non poteſt Indus mutare 23
cutem ſuam, aut pardus maculas ſuas; ita neque
vos benefacere poteſtis, quòd aſſueti ſitis
malo. Itaque diſperdam eos veluti glumam 24
quæ tranſit coram vento in deſerto. Hæc eſt 25
ſors tua & pars hæreditatis tuæ à me, dicit
Dominus. Quandoquidem oblita es mei, &
freta es falſitate; Ego viciſſim retegam fimbrias 26
tuas, & rejiciam eas ſuper faciem tuam,
ut conſpiciatur ignominia tua, Adulterium 27
tuum, hinnitus tuus, & fornicatio ſcortationis
tuæ: ſuper colles in deſerto vidi abominationem
tuam. Væ tibi Jeruſalem, quia non
mundas te: quouſque tandem? convertere.

CAP. XIV.

ET factus eſt ſermo Domini ad Jeremiam 1
de pluviæ defectu. Lugebit Judæa, & portæ 2
ejus deſolabuntur, & corruent in terram, &
gemitus Jeroſolymæ aſcendet. Magnates eorum 3
mittent plebeios ſuos ad aquas; venientes
ad ciſternam non invenient aquas, revertentur
ſuis vaſis vacuis, erubeſcent, & pudore
ſuffuſi operient capita ſua. Propter facinora 4
terræ non erit pluvia: erubeſcentes
agricolæ operient capita ſua. Quin etiam 5
cervæ in deſerto parient, & derelinquent hinnulos
ſuos, eò quòd non ſit gramen: Et onagri 6
adſtabunt, ſemitis, ventum aſpirabunt ut
canes ſylveſtres, obtenebreſcent oculi eorum,
quia non erit fœnum. Si peccata noſtra contra 7
nos teſtantur, *tu* Domine parce propter
nomen tuum: nam plurima eſt bonitas tua, &
in te peccavimus. Spes Iſraelis, & ſervator 8
ejus in tempore anguſtiæ, ne ſis ut peregrinus
in terra, & tanquam viator qui divertit
ad pernoctandum. Ne ſis ut homo imbecillis, 9
& ut homo non valens ſervare. Tu quidem
Domine, in medio noſtri es, & nomen tuum
invocatum eſt ſuper nos; ne derelinquas nos.
Sic dicit Dominus huic populo, iſti dilexerunt 10
evagari, pedes ſuos non continuerunt;
ideò Domino diſplicent, mox recordabitur
iniquitatis eorum, & viſitabit peccata eorum.
Deinde dixit mihi Dominus, Ne oraveris 11
pro populo iſto in bonum:

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

23 * أيبدل الحبشي جلده والنمر بقعه * فأنتم تقدرون أن تصنعوا الردي الذي تعلمتموه
24 25 جيدا * وأفسدهم مثل الهشيم المحمول من الريح إلى موضع خراب * هذا سهمك ونصيبك
26 إن عصيتموني يقول الرب * كما نسيت ناموسي وتوكلت على الكذب * سأكشف ما خلفك
27 أسفل تجاه وجهك * ويظهر أهانتك * وفسقك وصهيلك * وغريبة زناك على الآكام وفي الحقول *
رأيت رداءاتك * الويل لك يا أورشليم لأنك لم تنقي خلفي * إلى متى أيضا *

* الفصل الرابع عشر *

1 * القول الصاير إلى ارمياء من قبل الرب من أجل عدم المطر *
2 * خربت اليهودية * وأبوابها استفرغت وأظلمت على الأرض * وصراخ أورشليم صعد *
3 * وعظماؤها أرسلوا شبانها إلى الماء * أتوا إلى الآبار فلم يجدوا ماء * ردوا أوعيتهم فارغة *
4 5 * وأعمال الأرض فنيت لأنه لم يكن مطر * خزيوا الفلاحون * كشفوا رأسهم * والأيلات
6 في الحقل ولدن وتركوا * لأنه لم يكن نبات * الحمير الحقلية وقفوا على الروابي واجتذبوا
7 ريحا * فنيت أعينهم لأنه لم يكن عشب * من ظلم الشعب * خطايانا وقفت بنا * يا رب
8 اصنع لنا من أجلك * لأن خطايانا كثيرة أمامك * لأنا أخطأنا إليك * يا رجاء إسرائيل
يا رب * خلص في زمن الأسواء * لماذا صرت مثل غريب على الأرض * مثل متأهل يميل إلى
9 موضع المبيت * لا تكن مثل إنسان نايم * ولا مثل رجل لا يستطيع أن يخلص *
10 وأنت فينا يا رب أنت * واسمك دعي علينا * لا تنسنا * هكذا يقول الرب لهذا الشعب *
11 أحبوا أن يحركوا أرجلهم ولم يشفقوا * الله لم يسر بهم * الآن يذكر مظالمهم * وقال الرب
لي * لا تصل عن هذا الشعب للخيرات *

An mutaret Æthiops pellem ſuam, aut 23
pardus maculas ſuas? ita vos malum
quod didiciſtis, in bonum vertere poteſtis?
Ideò corrumpam eos ceu ſtipulam à vento 24
in locum deſertum aſportatam. Hæc erit 25
portio tua & ſors tua, ſi contra me rebellaveritis,
ait Dominus. Quemadmodum
oblitus es legis meæ, & fiduciam collocâſti
in mendacio; Ita retegam poſteriores 26
fimbrias tuas ante faciem tuam, ut
appareat turpitudo tua, Adulterium tuum, 27
hinnitus tuus, & extraordinaria
ſcortatio tua ſuper colles & in agris:
Vidi abominationes tuas. Væ tibi O Jeruſalem,
quia non mundas te ſequendo me:
Quouſque tandem?

CAP. XIV.

SErmo factus ad Jeremiam à Domino 1
de pluviæ penuria.

Mœrore conficietur Judæa, portæ ejus 2
evacuabuntur, obſcura ſuper terram evadet,
& clamor Jeroſolymorum aſcendet.
Magnates enim ejus mittent juvenes ejus 3
ad aquam; qui venientes ad puteos, nec
invenientes aquam, vaſa ſua vacua reportabunt.
Terræ culturæ ceſſabunt, quia 4
non erit pluvia: pudefacti agricolæ detegent
caput ſuum. Cervæ quoque in agro 5
parientes deſtituent fœtum, quia non
erit herba: Aſini ſylveſtres ſtantes ſuper 6
colles haurient ventum, deficient oculi
eorum, quia nullum erit fœnum propter
populi perverſitatem. Peccata noſtra denuntiârunt 7
nos; O Domine, age nobiſcum
propter teipſum, quia peccata noſtra plurima
ſunt coram te; nam tibi peccavimus.
O ſpes Iſraelis, O Domine, ſalva tempore 8
calamitoſo. Quarè factus es ut
peregrinus ſuper terram? ut viator qui
digreditur ad locum diverſorii? Ne 9
ſis ut homo dormitans, neque ut vir impotens
ad ſalvandum. Quandoquidem
tu es inter nos O Domine, & nomen tuum
invocatum eſt ſuper nos; ne obliviſcaris
noſtri. Sic ait Dominus huic populo, 10
Dilexerunt movere pedes ſuos, nec pepercerunt:
non oblectatur illis Deus: jamjam
recordaturus eſt impietatem eorum.
Tum dixit mihi Dominus, Ne preceris 11
huic populo proſpera:

ירמיה : יד

cùm & : eorum *præconium ad* *audiens* *ego* non , jejunaverint Cùm
12 כִּי יָצֻמוּ אֵינֶנִּי שֹׁמֵעַ אֶל־רִנָּתָם וְכִי
, gladio in quia : ea *volens* *ego* non , *munus & aſcenſionem fecerint aſcendere*
יַעֲלוּ עֹלָה וּמִנְחָה אֵינֶנִּי רֹצָם כִּי בַּחֶרֶב
Domine Ahah : dixi Et .eos *conſumens* ego peſte in &,fame in &
13 וּבָרָעָב וּבַדֶּבֶר אָנֹכִי מְכַלֶּה אוֹתָם׃ וָאֹמַר אֲהָהּ אֲדֹנָי
videbitis Non : eis *dicentes* vates Ecce : DOMINE
יֱהֹוִה הִנֵּה הַנְּבִאִים אֹמְרִים לָהֶם לֹא־תִרְאוּ
dabo *veritatis* pacem *quippe* : vobis erit non fames &,gladium
חֶרֶב וְרָעָב לֹא־יִהְיֶה לָכֶם כִּי־שְׁלוֹם אֱמֶת אֶתֵּן
: me ad DOMINUS dixit Et .iſto loco in vobis
14 לָכֶם בַּמָּקוֹם הַזֶּה׃ וַיֹּאמֶר יְהוָֹה אֵלַי
neque , eos miſi non ,meo nomine in *vaticinantes* vates Falſum
שֶׁקֶר הַנְּבִיאִים נִבְּאִים בִּשְׁמִי לֹא שְׁלַחְתִּים וְלֹא
,divinationem &,*falſitatis* viſionem : eos ad ſum locutus nec , eis præcepi
צִוִּיתִים וְלֹא דִבַּרְתִּי אֲלֵיהֶם חֲזוֹן שֶׁקֶר וְקֶסֶם
.vobis *vaticinantes* ipſi ſui cordis ſeductionem & , nihil &
וֶאֱלוֹל וְתַרְמוּת לִבָּם הֵמָּה מִתְנַבְּאִים לָכֶם׃
vaticinantes vates ſuper DOMINUS dixit ſic Idcirco
15 לָכֵן כֹּה־אָמַר יְהוָֹה עַל־הַנְּבִאִים הַנִּבְּאִים
Gladius : *dicentes* ipſi & , eos miſi non ego &,meo nomine in
בִּשְׁמִי וַאֲנִי לֹא־שְׁלַחְתִּים וְהֵמָּה אֹמְרִים חֶרֶב
conſumentur fame in & ,gladio in : iſta terra in erit non fames &
וְרָעָב לֹא יִהְיֶה בָּאָרֶץ הַזֹּאת בַּחֶרֶב וּבָרָעָב יִתַּמּוּ
erunt , *eis vaticinantes* ipſi quibus populus Et .illi vates
16 הַנְּבִיאִים הָהֵמָּה׃ וְהָעָם אֲשֶׁר־הֵמָּה נִבְּאִים לָהֶם יִהְיוּ
non & , gladii & , famis *faciebus* à , Jeruſalaim plateis in projecti
מֻשְׁלָכִים בְּחוּצוֹת יְרוּשָׁלַםִ מִפְּנֵי הָרָעָב וְהַחֶרֶב וְאֵין
: eorum filiæ & , eorum filii & , eorum uxores , ipſi , *ipſis ſepeliens*
מְקַבֵּר לָהֵמָּה הֵמָּה נְשֵׁיהֶם וּבְנֵיהֶם וּבְנֹתֵיהֶם
verbum eos ad dices Et .ſuum malum eos ſuper effundam &
17 וְשָׁפַכְתִּי עֲלֵיהֶם אֶת־רָעָתָם׃ וְאָמַרְתָּ אֲלֵיהֶם אֶת־הַדָּבָר
: taceant ne & , die ac nocte *lachrymam* mei oculi *Deſcendant* : iſtud
הַזֶּה תֵּרַדְנָה עֵינַי דִּמְעָה לַיְלָה וְיוֹמָם וְאַל־תִּדְמֶינָה
plaga ,mei populi filia virgo eſt contrita magna contritione quoniam
כִּי שֶׁבֶר גָּדוֹל נִשְׁבְּרָה בְּתוּלַת בַּת־עַמִּי מַכָּה
: gladio *vulnerati* ecce & , agrum fuero egreſſus Si .valde *infirma*
18 נַחְלָה מְאֹד׃ אִם־יָצָאתִי הַשָּׂדֶה וְהִנֵּה חַלְלֵי־חֶרֶב
vates *etiam* quia : fame infirmati ecce &,civitatem introiero ſi &
וְאִם בָּאתִי הָעִיר וְהִנֵּה תַּחֲלוּאֵי רָעָב כִּי גַם־נָבִיא
reprobando Nunquid .cognoverũt non &,terram in circuierunt ſacerdos *etiam*
19 גַּם־כֹּהֵן סָחֲרוּ אֶל־אֶרֶץ וְלֹא יָדָעוּ׃ הֲמָאֹס
Quare ? tua anima eſt abominata Sijon *in an* ? Jehudah *reprobâſti*
מָאַסְתָּ אֶת־יְהוּדָה אִם־בְּצִיּוֹן גָּעֲלָה נַפְשֶׁךָ מַדּוּעַ
non & , pacem *ad* expecta ? ſanitas nobis non & , nos feciſti percutere
הִכִּיתָנוּ וְאֵין לָנוּ מַרְפֵּא קַוֵּה לְשָׁלוֹם וְאֵין
Cognovimus .turbatio ecce & , ſanitatis tempus *ad* & ; bonum
20 טוֹב וּלְעֵת מַרְפֵּא וְהִנֵּה בְעָתָה׃ יָדַעְנוּ
quia ,noſtrorum patrum iniquitatem , noſtram impietatem DOMINE
יְהוָֹה רִשְׁעֵנוּ עֲוֹן אֲבוֹתֵינוּ כִּי
ſolium dejicias ne ,tuum nomen propter reprobes Ne .tibi peccavimus
21 חָטָאנוּ לָךְ׃ אַל־תִּנְאַץ לְמַעַן שִׁמְךָ אַל־תְּנַבֵּל כִּסֵּא
ſunt Nunquid .nobiſcum tuum pactum irrites ne ,recordare :tuæ gloriæ
22 כְּבוֹדֶךָ זְכֹר אַל־תָּפֵר בְּרִיתְךָ אִתָּנוּ׃ הֲיֵשׁ
? imbres dabunt cœli *ſi* & , *facientes pluere* gentium vanitatibus in
בְּהַבְלֵי הַגּוֹיִם מַגְשִׁמִים וְאִם־הַשָּׁמַיִם יִתְּנוּ רְבִבִים
,te expectabimus Et ? noſter Deus DOMINUS ipſe tu Nonne
הֲלֹא אַתָּה־הוּא יְהוָֹה אֱלֹהֵינוּ וּנְקַוֶּה־לָּךְ
.hæc omnia feciſti tu quia
כִּי־אַתָּה עָשִׂיתָ אֶת־כָּל־אֵלֶּה׃

Verſio VULG. LAT.

12 Cùm jejunaverint, non exaudiam
preces eorum : & ſi obtulerint
holocautomata, & victimas,
non ſuſcipiam ea : quoniam gladio,
& fame, & peſte conſumam
13 eos. Et dixi, A a a, Domine
Deus : Prophetæ dicunt eis ;
Non videbitis gladium, & fames
non erit in vobis, ſed pacem veram
14 dabit vobis in loco iſto. Et
dixit Dominus ad me ; Falsò
prophetæ vaticinantur in nomine
meo : non miſi eos, & non
præcepi eis, neque locutus ſum
ad eos : viſionem mendacem, &
divinationem, & fraudulentiam,
& ſeductionem cordis ſui prophetant
15 vobis. Idcircò hæc dicit
Dominus de prophetis, qui
prophetant in nomine meo, quos
ego non miſi, dicentes ; Gladius
& fames non erit in terra hac ;
In gladio & fame conſumentur
16 prophetæ illi. Et populi, quibus
prophetant, erunt projecti
in viis Jeruſalem præ fame &
gladio, & non erit qui ſepeliat
eos, ipſi & uxores eorum, filii &
filiæ eorum : & effundam ſuper
17 eos malum ſuum. Et dices ad
eos verbum iſtud ; Deducant oculi
mei lachrymam per noctem
& diem, & non taceant : quoniam
contritione magnâ contrita
eſt virgo filia populi mei, plagâ
18 peſſimâ vehementer. Si egreſſus
fuero ad agros, ecce occiſi
gladio : & ſi introiero in civitatem,
ecce attenuati fame.
Propheta quoque & ſacerdos
abierunt in terram, quam ignorabant.
19 Numquid projiciens
abjeciſti Judam ? aut Sion abominata
eſt anima tua ? quarè ergò
percuſſiſti nos, ita ut nulla ſit ſanitas ?
Expectavimus pacem, &
non eſt bonum : & tempus curationis,
20 & ecce turbatio. Cognovimus,
Domine, impietates
noſtras, iniquitates patrum noſtrorum,
quia peccavimus tibi.
21 Ne des nos in opprobrium propter
nomen tuum, neque facias
nobis contumeliam ſolii gloriæ
tuæ : recordare, ne irritum facias
fœdus tuum nobiſcum.
22 Numquid ſunt in ſculptilibus
Gentium qui pluant ? aut cœli
poſſunt dare imbres ? nónne tu
es Dominus Deus noſter, quem
expectavimus ? tu enim feciſti
omnia hæc.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

12 Ὅτι ἐὰν (ι) νηστεύωσιν, οὐκ εἰσακούσομαι τῆς
δεήσεως αὐτῶν, καὶ ἐὰν προσενέγκωσιν
ὁλοκαυτώματα καὶ θυσίας, οὐκ εὐδοκήσω
ἐν αὐτοῖς, ὅτι ἐν (κ) μαχαίρᾳ καὶ ἐν λιμῷ
καὶ ἐν θανάτῳ ἐγὼ συντελέσω αὐτούς.
13 Καὶ εἶπα, Ὁ (λ) Ὢν κύριε, ἰδοὺ οἱ προφῆται
αὐτῶν προφητεύουσι, καὶ λέγουσιν,
Οὐκ ὄψεσθε μάχαιραν, οὐδὲ λιμὸς ἔσται
ἐν (μ) ὑμῖν, ὅτι ἀλήθειαν καὶ εἰρήνην
δώσω ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ.
14 Καὶ εἶπε κύριος πρός με, Ψευδῆ οἱ προφῆται
προφητεύουσιν ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου,
οὐκ ἀπέστειλα αὐτούς, καὶ οὐκ ἐνετειλάμην
αὐτοῖς, καὶ οὐκ ἐλάλησα πρὸς αὐτούς· ὅτι
ὁράσεις ψευδεῖς, καὶ μαντείας, καὶ οἰωνίσματα,
καὶ προαιρέσεις καρδίας αὐτῶν
15 αὐτοὶ προφητεύουσιν ὑμῖν. Διατοῦτο
τάδε λέγει κύριος περὶ τῶν προφητῶν
τῶν προφητευόντων (ν) ἐπὶ τῷ ὀνόματί
μου ψευδῆ, (ξ) καὶ ἐγὼ οὐκ ἀπέστειλα αὐτούς,
οἳ (ο) λέγουσι, Μάχαιρα καὶ λιμὸς
οὐκ ἔσται ἐπὶ τῆς γῆς ταύτης· Ἐν θανάτῳ
νοσερῷ ἀποθανοῦνται, καὶ ἐν λιμῷ
16 συντελεσθήσονται οἱ προφῆται, Καὶ ὁ
λαός, οἷς αὐτοὶ προφητεύουσιν αὐτοῖς,
καὶ ἔσονται ἐρριμμένοι ἐν ταῖς (π) ὁδοῖς
Ἱερουσαλήμ, ἀπὸ προσώπου (ρ) μαχαίρας
καὶ τοῦ λιμοῦ, καὶ οὐκ ἔσται ὁ θάπτων
αὐτούς, καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν, καὶ οἱ υἱοὶ
αὐτῶν, καὶ αἱ θυγατέρες αὐτῶν, καὶ ἐκχεῶ
17 ἐπ᾽ αὐτοὺς τὰ κακὰ αὐτῶν. Καὶ ἐρεῖς
πρὸς αὐτοὺς τὸν λόγον τοῦτον, Καταγάγετε
ἐπ᾽ ὀφθαλμοὺς ὑμῶν δάκρυα ἡμέρας
καὶ νυκτός, καὶ μὴ διαλιπέτωσαν, ὅτι συντρίμματι
συνετρίβη (") θυγάτηρ λαοῦ μου,
18 καὶ πληγῇ ὀδυνηρᾷ σφόδρα. Ἐὰν ἐξέλθω
εἰς τὸ πεδίον, καὶ ἰδοὺ τραυματίαι (σ)
μαχαίρας· καὶ ἐὰν εἰσέλθω εἰς τὴν πόλιν,
καὶ ἰδοὺ πόνος λιμοῦ· ὅτι ἱερεὺς καὶ προφήτης
ἐπορεύθησαν (τ) εἰς γῆν, ἣν οὐκ
19 ᾔδεισαν. Μὴ ἀποδοκιμάζων ἀπεδοκίμασας
τὸν Ἰούδαν, καὶ ἀπὸ Σιὼν ἀπέστη ἡ
ψυχή σου; ἵνατί ἔπαισας ἡμᾶς, καὶ οὐκ
ἔστιν ἡμῖν ἴασις; ὑπεμείναμεν εἰς εἰρήνην,
καὶ οὐκ ἦν ἀγαθά, εἰς καιρὸν ἰάσεως,
20 καὶ ἰδοὺ ταραχή. Ἔγνωμεν κύριε ἁμαρτήματα
ἡμῶν, ἀδικίας πατέρων ἡμῶν,
21 ὅτι ἡμάρτομεν ἐναντίον σου. Κόπασον
διὰ τὸ ὄνομά σου, μὴ ἀπολέσῃς θρόνον
δόξης σου· μνήσθητι, μὴ διασκεδάσῃς τὴν
22 διαθήκην σου (υ) τὴν μεθ᾽ ἡμῶν. Μὴ ἔστιν
ἐν εἰδώλοις τῶν ἐθνῶν ὑετίζων; καὶ εἰ ὁ οὐρανὸς
δώσει πλησμονὴν αὐτοῦ, οὐχὶ σὺ
εἶ αὐτός; καὶ ὑπομενοῦμέν (φ) σε κύριε,
ὅτι σὺ ἐποίησας πάντα ταῦτα.

Quoniam, ſi jejunaverint; non 12
exaudiam orationem eorum: &,
ſi obtulerint holocauſtomata, &
ſacrificia; non placebo mihi in
eis: quoniam in gladio, & in
fame, & in morte ego conſummabo
eos. Et dixi; O (g) On 13
Domine. Ecce prophetæ eorum
prophetant, & dicunt; Non videbitis
gladium: & fames non
erit in vobis: quia veritatem
& pacem dabo ſuper terram,
& in loco iſto. Et dixit Dominus 14
ad me; Falſa prophetæ
prophetant in nomine meo: non
miſi eos, & non præcepi eis, &,
non ſum loquutus ad eos. Viſiones
enim mendaces, & divinationes,
& auguria, & electiones
cordis ſui ipſi prophetant
vobis. Ideò hæc dicit 15
Dominus de prophetis, qui prophetant
in nomine meo falſa,
& ego non miſi eos, qui dicunt;
Gladius, & fames non
erit in terra hac; In morte
morboſa morientur: & in fame
conſumentur prophetæ, Et 16
populus, quibus ipſi prophetant
eis: & projecti erunt in viis
Hieruſalem à facie gladii, &
famis, (& non erit, qui ſepeliat
eos) et filii eorum, et filiæ eorum:
et effundam ſuper eos
mala ſua. Et dices ad eos verbum 17
iſtud; Deducite ſuper oculos
veſtros lachrymas die ac
nocte, et non ceſſent: quoniam
contritione contrita eſt filia populi
mei: et plaga doloroſa
valdé. Si egreſſus fuero in campum; 18
et ecce occiſi gladio: et,
ſi introiero in civitatem; et ecce
dolor famis: quia ſacerdos
et propheta abierunt in terram,
quam ignorabant. Nunquid reprobans 19
reprobâſti Judam, et à
Sion receſſit anima tua? Quarè
percuſſiſti nos, et non eſt nobis
ſanatio? Suſtinuimus ad pacem,
et non fuerunt bona: ad
tempus ſanationis, et ecce turbatio.
Cognovimus, Domine, peccata 20
noſtra, iniquitates patrum
noſtrorum: quia peccavimus
coram te. Ceſſa propter nomen 21
tuum: ne perdas thronum gloriæ
tuæ. Recordare; ne diſſipes
teſtamentum tuum, quod
nobiſcum. Nunquid eſt (h) in 22
idolis gentium, qui pluat? Quod
ſi cœlum dabit ſatietatem ſuam;
nónne tu es ipſe? Et ſuſtinebimus
te, Domine; quia tu
feciſti omnia hæc.

MS.A. (ι) νηστεύσουσιν (κ) μαχαίρῃ (λ) Ὢν δέσποτα κύριε, (μ) ἡμῖν, (ν)
τῷ ὀνόματι (ξ) κἀγὼ (ο) λέγοντες, (π) διόδοις (ρ) μαχαίρης (") ἡ θυγάτηρ
(σ) ῥομφαίας· (τ) ὁδὸν ἣν οὐκ ᾔδεισαν· (υ) μεθ᾽ ἡμῶν. (φ) σε, ὅτι σὺ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

12 ארי יצומון לא רעוא קדמי לקבלא צלותהון וארי יסקון עלתא ומנחתא לא רעוא קדמי
13 בהון ארי בחרבא ובכפנא ובמותא אנא משיצי יתהון : ואמרית קביל בעותי יי אלהים
הא נביי שקרא אמרין להון לא תחזון דקטלין בחרבא וכפנא לא יהי לכון ארי שלם
14 דקשוט אתן לכון באתרא הדין : ואמר יי לי שקרא אמרין נביי שקרא דמתנבן בשמי
לא שלחתנון ולא פקדתנון ולא מליית עמהון נבואת שקר ואולפן וכדבין ורשע לבהון
15 אנון מתנבן לכון : בכן כדנן אמר יי על נביי שקרא דמתנבן בשמי ואנא לא שלחתנון
ואנון אמרין חרבא וכפנא לא יהי בארעא הדא בחרבא ובכפנא יסופון נביי שקרא
16 האנון : ועמא דאנון מתנבן להון יהון מטרפין רמן בשוקי ירושלם מן קדם כפנא
וחרבא ולית דקבר להון אנון נשיהון בניהון ובנתיהון ואשפוך עליהון ית בישתהון :
17 ותימר להון ית פתגמא הדין ישגרן עיני דמען ליליי ויומם ולא ישתקן ארי תברא רבא
18 אתברת מלכות כנשתא דעמי מחא ממרעא לחדא : אם נפקית לחקלא והא קטילי
חרבא ואם עלית לקרתא והא ממרעי כפנא ארי אף ספר אף כהן אתפניאו לסחורתהון
19 על די מה בארעא ולא בקרו : המרטש רטשתא ית דבית יהודה ואם יתבי ציון רחיק
מימרך מה דין אלקיתנא ולית לנא אסא סברנא לשלם ולית טב ולעדן סליחת
20 חובין והא פורענות חטאין : ידענא יי חובנא וחובי אבהתנא ארי חבנא קדמך :
21 לא תרחקננא בדיל שמך לא תנבל אתר בית כורסי יקרך יעול דוכרן קים אבהתנא
22 קדמך לא תשני קימך עמנא : האלית צרוך בטעות עממיא לאחתא מטרא ואם שמיא
לא יתנון רסיסין אלהן על מימרך הלא את הוא יי אלהנא ונסבר קדמך ארי את
עבדת ית כל אלן :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Cùm jejunaverint, non eſt voluntas coram me ad ſuſcipiendam orationem 12
eorum: & cùm obtulerint holocauſta & munus, non eſt voluntas coram me
in eis. Quia in gladio, & fame, & morte ego diſperdam eos. Et dixi : 13
Suſcipe deprecationem meam Dñe Deus. Ecce prophetæ falſi dicunt eis :
Non videbitis eos qui occidunt gladio ; & fames non erit vobis ; quia pacem
veram dabo vobis in loco iſto. Et dixit Dñs ad me: Falſum tamen dicunt 14
prophetæ falſi qui prophetant in nomine meo. Non miſi eos, nec præcepi
eis, nec locutus ſum eis prophetiam & doctrinam falſam ; & mendacia,
& impietatem cordis ſui ipſi prophetant vobis. Propterea hæc dicit 15
Dñs de prophetis falſis, qui prophetant in nomine meo, & ego non miſi
eos : & ipſi dicunt: Gladius & fames non erit in terra hac ; In gladio &
fame conſumentur illi prophetæ falſi. Populus autem quibus prophetant, 16
erũt diſcerpti & projecti per vicos Jeruſalem à facie famis & gladii, & non
erit qui ſepeliat eos ; ipſi & uxores eorum, & filii & filiæ eorum ; & effundam
ſuper eos mala eorum. Et dices ad eos : Propter verbum iſtud deducent 17
oculi mei lachrymas nocte ac die, & non tacebunt ; quia confractione
magna contritum eſt regnum cœtus populi mei : plaga infirmata vehementer.
Si egreſſus fuero ad agrum, ecce occiſi gladio : & ſi introiero in 18
civitatem, ecce infirmi fame. Quoniam etiam ſcriba & ſacerdos converſi
ſunt ad negotiationes ſuas, ad id quod eſt in terra, nec requiſierunt.
Nunquid abjiciendo abjeciſti domum Juda ? aut habitatores Sion 19
ſummovit Verbum tuum ? quare percuſſiſti nos, & non eſt nobis ſanitas ?
Expectavimus pacem, & non eſt bonum ; & tempus remiſſionis peccatorum,
& ecce vindicta peccatorum. Cognovimus Dñe peccata noſtra, & 20
peccata patrum noſtrorum : quia peccavimus coram te. Ne projicias nos 21
propter nomen tuum, nec vilem facias locum ſolii gloriæ tuæ. Veniat
memoria pacti patrum noſtrorum ante te : ne irritum facias pactum tuum
nobiſcum. Ecce non eſt utilitas in diis populorum ad deducendam pluviam ; 22
nec cœli dabunt rores, niſi juxta verbum tuum. Nónne tu es Dñs
Deus noſter ? & expectavimus coram te, quia tu feciſti hæc omnia.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܡܛܠ ܕܐܢ ܢܨܘܡܘܢ. ܠܐ ܫܡܥ ܐܢܐ ܒܥܘܬܗܘܢ. ܘܐܢ ܡܩܪܒܝܢ ܝܩܕܐ ܘܩܘܪܒܢܐ. ܠܐ ܨܒܐ ܐܢܐ 12
ܠܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܒܚܪܒܐ ܘܒܟܦܢܐ ܘܒܡܘܬܢܐ ܐܢܐ ܡܣܝܦ ܐܢܐ ܠܗܘܢ. * ܘܐܡܪܬ. 13
ܒܒܥܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ ܢܒܝ̈ܐ ܐܡܪܝܢ ܠܗܘܢ. ܕܠܐ ܬܚܙܘܢ ܚܪܒܐ. ܘܟܦܢܐ ܠܐ ܢܗܘܐ
ܠܟܘܢ. ܐܠܐ ܫܠܡܐ ܘܫܝܢܐ ܐܬܠ ܠܟܘܢ ܒܐܬܪܐ ܗܢܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܒܫܘܩܪܐ 14
ܢܒܝܢ ܢܒܝ̈ܐ ܒܫܡܝ. ܕܐܢܐ ܠܐ ܫܕܪܬ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܦܩܕܬ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܡܠܠܬ ܥܡܗܘܢ. ܚܙܘܢܐ
ܕܓܠܐ. ܘܩܨܡܐ ܘܢܚܫܐ. ܘܢܟܠܐ ܕܠܒܗܘܢ. ܗܢܘܢ ܡܬܢܒܝܢ ܠܟܘܢ. * ܡܛܠܗܢܐ ܗܟܢܐ 15
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܢܒܝ̈ܐ ܕܡܬܢܒܝܢ ܒܫܡܝ. ܕܐܢܐ ܠܐ ܫܕܪܬ ܐܢܘܢ. ܘܗܢܘܢ ܐܡܪܝܢ.
ܚܪܒܐ ܘܟܦܢܐ ܠܐ ܢܗܘܐ ܒܐܪܥܐ ܗܕܐ. ܒܚܪܒܐ ܘܒܟܦܢܐ ܢܣܘܦܘܢ ܢܒܝ̈ܐ ܗܢܘܢ. * ܘܥܡܐ 16
ܕܗܢܘܢ ܡܬܢܒܝܢ ܠܗܘܢ. ܢܗܘܘܢ ܫܕܝܢ ܒܫܘܩܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܡܢ ܩܕܡ ܚܪܒܐ ܘܟܦܢܐ.
ܘܡܘܬܢܐ. ܘܠܝܬ ܠܗܘܢ ܩܒܘܪ. ܗܢܘܢ ܘܢܫܝܗܘܢ. ܘܒܢܝܗܘܢ. ܘܒܢܬܗܘܢ. ܘܐܫܘܕ
ܥܠܝܗܘܢ ܒܝܫܬܗܘܢ. * ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ. ܢܪܕܢ ܥܝܢ̈ܝܢ ܕܡܥ̈ܐ 17
ܒܐܝܡܡܐ ܘܒܠܠܝܐ. ܘܠܐ ܢܫܠܝܢ. ܡܛܠ ܕܬܒܪܐ ܪܒܐ ܐܬܬܒܪܬ ܒܬܘܠܬܐ ܒܪܬ ܥܡܝ.
ܡܚܘܬܐ ܕܟܪܝܗܐ ܛܒ. * ܐܢ ܢܦܩܬ ܠܚܩܠܐ. ܗܐ ܡܩܛܠܝ ܚܪܒܐ. ܘܐܢ ܥܠܬ 18
ܠܡܕܝܢܬܐ. ܗܐ ܡܬܚܫܝܢ ܟܦܢܐ. ܡܛܠ ܕܐܦ ܢܒܝܐ ܘܐܦ ܟܗܢܐ. ܣܚܪܘ ܐܪܥܐ.
ܘܠܐ ܝܕܥܘ. * ܡܣܠܝܘ ܐܣܠܝܬ ܠܝܗܘܕܐ. ܐܘ ܒܨܗܝܘܢ ܣܢܝܬ ܢܦܫܟ. ܡܛܠ 19
ܡܢܐ ܡܚܝܬܢ. ܘܠܝܬ ܠܢ ܐܣܝܘܬܐ. ܣܟܝܢ ܠܫܠܡܐ. ܘܠܝܬ ܛܒܬܐ.
ܘܠܙܒܢܐ ܕܐܣܝܘܬܐ. ܘܗܐ ܕܘܚܕܐ. * ܝܕܥܢ ܡܪܝܐ ܚܛܗ̈ܝܢ ܘܥܘܠܗ̈ ܕܐܒܗ̈ܝܢ. 20
ܡܛܠ ܕܚܛܝܢ ܠܟ. * ܠܐ ܬܪܓܙ. ܡܛܠ ܫܡܟ. ܘܠܐ ܬܒܣܪ ܟܘܪܣܝܐ ܕܐܝܩܪܟ. 21
ܐܬܕܟܪ. ܘܠܐ ܬܦܠܛ ܩܝܡܟ ܥܡܢ. * ܠܐ ܓܝܪ ܡܫܟܚܝܢ ܦܬܟܪ̈ܐ ܕܥܡܡ̈ܐ ܕܢܚܬܘܢ 22
ܡܛܪܐ. ܐܦ ܠܐ ܫܡܝܐ ܕܢܬܠܘܢ ܪܣܣܐ. ܐܠܐ ܐܢܬ ܗܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. ܘܢܣܟܐ ܠܟ.
ܕܐܢܬ ܥܒܕܬ ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ.

* Quoniam licèt jejunent, non exaudiam orationem eorum; & quanvis offerant holocauſta & oblationes, non delectabor eis: nam gladio, famæ, ac peſte conſumpturus ſum eos. 12

Dicenti verò mihi, Quæſo Domine Deus, Ecce prophetæ dicunt eis, Nequaquam experiemini gladium, & fames non erit vobis; imò pacem & ſecuritatem dabo vobis in loco iſto: 13

Reſpondit Dominus, Falsò vaticinantur iſti prophetæ in nomine meo, cùm ego nec miſerim eos, nec præceperim eis, nec allocutus ſim eos: viſiones falſas, omina, divinationes, atque dolum cordis ſui vaticinantur iſti vobis. 14

Propterea ſic dicit Dominus de prophetis qui vaticinantur in nomine meo, quos ego non miſi, quique dicunt, Gladius & fames non erit in terra iſta; Gladio & fame peribunt hujuſmodi prophetæ: 15

Et populus cui iſti vaticinantur, erunt projecti in plateis Jeruſalem præ gladio, fame, ac peſte, nemine ſepeliente; tam ipſi, quàm uxores, & filii ac filiæ ipſorum; adeóque refundam in eos malitiam ſuam. 16

Dic igitur eis ſermonem iſtum, Stillent oculi noſtri lachrymas diu noctúque indeſinenter, quia contritione magnâ contrita eſt virgo filia populi mei, plagâ admodum dolorificâ. 17

Sive ad campum egrediar, ecce gladio confoſſos *cerno*; ſive urbem ingrediar, ecce fame languentes: nam tum prophetæ tum ſacerdotes per orbem vagantur, nec animadvertunt. 18

Prorſúsne abominatus es Judam? an Sionem faſtidivit anima tua? quare nos percuſſiſti, nulláque nobis eſt medela? expectavimus pacem, & nullum adeſt bonum? tempus curationis, & ecce terror? 19

Agnoſcimus Domine peccata noſtra & peccata patrum noſtrorum, etenim peccavimus in te. 20

Ne iraſcaris, propter nomen tuum, néve dedecores ſolium majeſtatis tuæ: recordare, & ne violes pactum tuum quod nobiſcum *pepigiſti*. 21

Non enim poſſunt idola gentium demittere pluviam, neque cœli ſuppeditare ſtillas, ſed tu Domine Deus noſter: ideò te expectabimus, quia tu facis hæc omnia. 22

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

12 * لانهم ان صاموا لا استجيب طلبتهم * وان قدموا محرقات وذبايح لا اسر بهم * لان بسيف
13 وبجوع وبموت انا افنيهم * فقلت ايها الكاين السيد الرب * ها انبياوهم يتنبون ويقولون لا
تعاينون سيفا ولا يكون فيكم جوع * لاني اعطي حقا وسلامة على الارض وفي هذا الموضع *
14 * وقال الرب لي * انبياوهم يتنبون كذبا باسمي * لم ارسلهم ولم اوصهم ولا تكلمت معهم *
15 لانهم يتنبون بمناظر كاذبة وبتنجيم وبتطيرات وبدع قلوبهم * لاجل هذا هكذا يقول الرب
من اجل الانبياء الذين يتنبون باسمي كذبا وانا لم ارسلهم * الذين يقولون لا يكون
16 سيف وجوع على هذه الارض * بموت صعب يموتون وبجوع يهلكون الانبياء * والشعب
الذين يتنبون لهم بهذا * ويصيرون مطرحين في مسالك ايروسليم من وجه السيف والجوع *
17 ولا يكون من يدفنهم * [هم] ونساوهم وبنوهم وبناتهم * واسكب عليهم شرورهم * وتقول لهم هذا
القول * اهملوا من عيونكم دموعا نهارا وليلا ولا تكف * لان بانكسار انكسرت ابنة
18 شعبي * وبضربة موجعة جدا * ان خرجت الى الصحراء فها جرحاء السيف * وان دخلت الى
19 المدينة فها وجع الجوع * لان الكاهن والنبي سلكوا طريقا لم يعرفوها * هل رذلت يهوذا
رذلا * ومن صهيون تباعدت نفسك * لماذا سقطنا ولم يكن لنا شفا * رجونا سلامة ولم
20 يكن لنا خير * واذا اضطراب في زمن الشفا * علمنا يا رب خطايانا وظلم ابايينا * لانا
21 اخطانا امامك * كف لاجل اسمك * لا تهلك كرسي مجدك * اذكر لا تبطل عهدك
22 معنا * ليس في الهة الامم من يمطر * ولا السماء تعطي شبعها * اليس انت هو انت ونرجوك
لانك صنعت هذه كلها *

* *Nam etſi jejunaverint, non exaudiam petitionem eorum, & quanvis obtulerint holocauſta & ſacrificia, non oblectabor eis; imo gladio, & fame, ac lue conſumpturus ſum eos.* 12

Me autem dicente, O qui es, here, Domine, ecce prophetæ eorum prophetant ac dicunt, Non experiemini gladium, nec erit fames inter vos; imò veritatem & pacem daturus ſum ſuper terram & in loco iſto: 13

Dixit mihi Dominus, Prophetæ eorum mendacium prophetant illis in nomine meo, quum nec miſerim eos, neque præceperim eis, neque allocutus ſim eos: prophetant enim viſiones falſas, aſtrologiam, auguria, & commenta cordium ſuorum. 14

Idcirco ſic ait Dominus de prophetis qui falsò prophetant in nomine meo, quos ego non miſi, qui dicunt neque gladium neque famem futuram in hac terra; Atroci morte morientur, et fame peribunt tam prophetæ, 15

Quàm populus cui talia prophetant: eruntque projecti in vicis Jeruſalem præ gladio et fame, nec erit qui ſepeliat eos; ipſi inquam & uxores, & filii filiæque illorum: et effundam ſuper eos ſcelera ipſorum. 16

Hunc etiam ſermonem dices eis, Profundite ex oculis veſtris lachrymas diu noctúque inceſſanter, quia fractione confracta eſt filia populi mei & percuſſione admodum dolorificâ. 17

Si exeam in deſertum, ecce gladio vulnerati; ſin autem urbem ingrediar, ecce dolor famis: quia tam ſacerdos, quàm propheta ambulaverunt in via quam ignorabant. 18

Nam penitùs deteſtatus es Judam, & à Sione abalienatus eſt animus tuus? quarè cecidimus, nec ſupereſt nobis curatio? ſperavimus pacem, nec ullum nobis adeſt bonum; ſed ecce turbatio in tempore curationis? 19

Cognovimus O Domine, peccata noſtra & perverſitatem patrum noſtrorum, quòd coram te peccaverimus. 20

Abſtine propter nomen tuum, ne perdas ſolium gloriæ tuæ: recordare, ne irritum facias fœdus tuum nobiſcum. 21

Non eſt inter deos gentium qui pluviam demittat, neque cœlum dat ſaturitatem ſuam: nónne tu ipſe es, téque expectaremus, quum tu feceris hæc omnia? 22

CAP. XV. טו

non ,*meos facies ad* Semuel & , Moſceh *ſteterit* Si:me ad Dominus dixit Et
1 וַיֹּאמֶר יְהוָה אֵלַי אִם־יַעֲמֹד מֹשֶׁה וּשְׁמוּאֵל לְפָנַי אֵין
,erit Et.egrediātur&,*meis facieb⁹ deſuper* Emitte.iſtum populum ad mea *anima*
2 נַפְשִׁי אֶל־הָעָם הַזֶּה שַׁלַּח מֵעַל־פָּנַי וְיֵצֵאוּ׃ וְהָיָה
dixit Sic : eos ad dices & ? egrediemur Quò : te ad dixerint *cùm*
כִּי־יֹאמְרוּ אֵלֶיךָ אָנָה נֵצֵא וְאָמַרְתָּ אֲלֵיהֶם כֹּה־אָמַר
:gladium ad ,gladium ad qui & : mortem ad ,mortem ad Qui ,Dominus
יְהוָה אֲשֶׁר לַמָּוֶת לַמָּוֶת וַאֲשֶׁר לַחֶרֶב לַחֶרֶב
.captivitatem ad,captivitatem ad qui & : famem ad ,famem ad qui &
וַאֲשֶׁר לָרָעָב לָרָעָב וַאֲשֶׁר לַשְּׁבִי לַשֶּׁבִי׃
Gladium : Dominus dixit ,*genera* quatuor eis *ſuper* *viſitabo* Et
3 וּפָקַדְתִּי עֲלֵיהֶם אַרְבַּע מִשְׁפָּחוֹת נְאֻם־יְהוָה אֶת־הַחֶרֶב
& ,cœlorum *volatile* & ,trahendum ad canes & ,occidendum ad
לַהֲרֹג וְאֶת־הַכְּלָבִים לִסְחֹב וְאֶת־עוֹף הַשָּׁמַיִם וְאֶת־
commotionē in eos dabo Et.*corrumpendū ad & edendum* ad terræ *beſtiam*
4 בֶּהֱמַת הָאָרֶץ לֶאֱכֹל וּלְהַשְׁחִית׃ וּנְתַתִּים לְזַוְעָה
regis Jechizchijahu filiū Menaſſeh propter ,terræ regnis univerſis
לְכֹל מַמְלְכוֹת הָאָרֶץ בִּגְלַל מְנַשֶּׁה בֶן־יְחִזְקִיָּהוּ מֶלֶךְ
te ſuper indulgebit quis Quia .Jeruſalaim in fecit quæ *ſuper* , Jehudah
5 יְהוּדָה עַל אֲשֶׁר־עָשָׂה בִּירוּשָׁלָםִ׃ כִּי מִי־יַחְמֹל עָלַיִךְ
pacem *ad* poſtulandū ad *recedet* quis & ? tibi condolebit quis &?Jeruſalaim
יְרוּשָׁלַםִ וּמִי יָנוּד לָךְ וּמִי יָסוּר לִשְׁאֹל לְשָׁלֹם
extendam & ,abiiſti retrorſum,Dominus dicit ,me dereliquiſti Tu ? *tibi*
6 לָךְ׃ אַתְּ נָטַשְׁתְּ אֹתִי נְאֻם־יְהוָה אָחוֹר תֵּלֵכִי וָאַט
eos diſpergam Et .*pœnitere ſum laſſus* ,*te corrumpam* & ,te ſuper meam manū
7 אֶת־יָדִי עָלַיִךְ וָאַשְׁחִיתֵךְ נִלְאֵיתִי הִנָּחֵם׃ וָאֶזְרֵם
,meum populum perdidi , orbavi : terræ portas in ventilabro in
בְּמִזְרֶה בְּשַׁעֲרֵי הָאָרֶץ שִׁכַּלְתִּי אִבַּדְתִּי אֶת־עַמִּי
:mariū arena præ ejus viduæ mihi *Denſuere*.ſunt reverſi non ſuis viis à
8 מִדַּרְכֵיהֶם לוֹא שָׁבוּ׃ עָצְמוּ־לִי אַלְמְנוֹתָו מֵחוֹל יַמִּים
feci cadere : meridie in vaſtatorem *electi matrem* ſuper eos ad adduxi
הֵבֵאתִי לָהֶם עַל־אֵם בָּחוּר שֹׁדֵד בַּצָּהֳרָיִם הִפַּלְתִּי
,ſeptem *pariens* eſt Infirmata .*terrores & civitatem* repentè eam ſuper
9 עָלֶיהָ פִּתְאֹם עִיר וּבֶהָלוֹת׃ אֻמְלְלָה יֹלֶדֶת הַשִּׁבְעָה
,eſt affecta pudore : die adhuc *in* ejus ſol *eſt ingreſſus*,ejus anima *anhelavit*
נָפְחָה נַפְשָׁהּ בָּאָה שִׁמְשָׁהּ בְּעֹד יוֹמָם בּוֹשָׁה
ait ,eorum *inimicorū facies ad* dabo gladium in ejus reſiduum &:erubuit &
וְחָפֵרָה וּשְׁאֵרִיתָם לַחֶרֶב אֶתֵּן לִפְנֵי אֹיְבֵיהֶם נְאֻם־
virum & , *litis* virum me genuiſti quia,mea mater mihi Væ .Dominus
10 יְהוָה׃ אוֹי־לִי אִמִּי כִּי יְלִדְתִּנִי אִישׁ רִיב וְאִישׁ
,*me in* ſunt fœnerati nec ,ſum fœneratus non : terra univerſa in *contentionis*
מָדוֹן לְכָל־הָאָרֶץ לֹא־נָשִׁיתִי וְלֹא־נָשׁוּ־בִי
:bonū in *tuum reſiduum* non Si : Domin⁹ Dixit .mihi *maledicens ipſe omnis*
11 כֻּלֹּה מְקַלְלַונִי׃ אָמַר יְהוָה אִם־לֹא שֵׁרִותִךָ לְטוֹב
anguſtiæ tempore in &,malo tempore in *te in* feci occurrere non ſi
אִם־לוֹא הִפְגַּעְתִּי בְךָ בְּעֵת־רָעָה וּבְעֵת צָרָה אֶת־
tuam Facultatē ? æs & Aquilone ab ferrum ferrum cōteret Nūquid .inimicū
12 13 הָאֹיֵב׃ הֲיָרֹעַ בַּרְזֶל בַּרְזֶל מִצָּפוֹן וּנְחֹשֶׁת׃ חֵילְךָ
omnia propter & : pretio *in* non ,dabo direptionem in tuos theſauros &
וְאוֹצְרוֹתֶיךָ לָבַז אֶתֵּן לֹא בִמְחִיר וּבְכָל־
tuos inimicos faciam tranſire Et .tuis terminis omnib⁹ in &,tua peccata
14 חַטֹּאותֶיךָ וּבְכָל־גְּבוּלֶיךָ׃ וְהַעֲבַרְתִּי אֶת־אֹיְבֶיךָ
vos ſuper , meo *naſo* in eſt ſuccenſus ignis quia : nôſti non terram in
בְּאֶרֶץ לֹא יָדָעְתָּ כִּי־אֵשׁ קָדְחָה בְאַפִּי עֲלֵיכֶם
vindica & ,me viſita &,mei recordare,Domine nôſti Tu .ardebit
15 תּוּקָד׃ אַתָּה יָדַעְתָּ יְהוָה זָכְרֵנִי וּפָקְדֵנִי וְהִנָּקֶם
.opprobrium te propter *me ferre* ſcito :me ſuſcipias tui furoris longanimitate in ne , meis *perſecutoribus* de me
לִי מֵרֹדְפַי אַל־לְאֶרֶךְ אַפְּךָ תִּקָּחֵנִי דַּע שְׂאֵתִי עָלֶיךָ חֶרְפָּה׃

Verſio VULG. LAT.

CAP. XV.

1 Et dixit Dñs ad me; Si ſteterit
Moyſes & Samuel coram me,non
eſt anima mea ad populū iſtum:
ejice illos à facie mea,& egrediantur.
2 Quòd ſi dixerint ad te;Quò
egrediemur?dices ad eos;Hæc dicit
Dñs;Qui ad mortē, ad mortē:
& qui ad gladiū,ad gladium: &
qui ad famē, ad famem:& qui ad
3 captivitatē, ad captivitatem. Et
viſitabo ſup eos quatuor ſpecies,
dicit Dñs;Gladium ad occiſionē,
& canes ad lacerandū,& volatilia
cœli & beſtias terræ ad devorandum
4 & diſſipandū. Et dabo
eos in fervorem univerſis regnis
terræ:propter Manaſſen filiū Ezechiæ
regis Juda,ſup omnibus quæ
5 fecit in Jeruſalē. Quis enim miſerebitur
tuî,Jeruſalē?aut quis contriſtabitur
pro te?aut quis ibit ad
6 rogandum pro pace tua?Tu reliquiſti
me, dicit Dñs;retrorſū abiiſti:
& extendā manū meam ſup
te, & interficiam te:laboravi rogans.
7 Et diſpergā eos ventilabro
in portis terræ: interfeci & diſperdidi
populū meum, & tamen
8 à viis ſuis non ſunt reverſi. Multiplicatæ
ſunt mihi viduæ ejus ſup
arenā maris:induxi eis ſuper matrem
adoleſcentis vaſtatorē meridie:
miſi ſup civitates repentè
9 terrorē. Infirmata eſt quæ peperit
ſeptē, defecit anima ejus:occidit
ei Sol,cùm adhuc eſſet dies:confuſa
eſt,& erubuit:& reſiduos ejus
in gladium dabo in conſpectu
10 inimicorū eorū,ait Dñs. Væ mihi,
mater mea:quarè genuiſti me,virum
rixæ, virū diſcordiæ in univerſa
terra? non fœneravi, nec
fœneravit mihi quiſquā: omnes
11 maledicunt mihi. Dicit Dñs; Si
non reliquiæ tuæ in bonū, ſi non
occurri tibi in tempore afflictionis,
& in tempore tribulationis
12 adverſùs inimicū. Numquid fœderabitur
ferrū ferro ab Aquilone,
13 & æs?Divitias tuas & theſauros
tuos in direptionē dabo gratìs,
in omnib⁹ peccatis tuis, & in
14 omnib⁹ terminis tuis. Et adducā
inimicos tuos de terra, quam neſcis:
quia ignis ſuccenſ⁹ eſt in furore
15 meo, ſuper vos ardebit. Tu
ſcis,Dñe,recordare meî,& viſita
me;& tuere me ab his qui perſequuntur
me, noli in patientia tua
ſuſcipere me: ſcito quoniā ſuſtinui
propter te opprobrium.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. ιε'.

1 Καὶ εἶπε κύριος πρός με, Ἐὰν στῇ Μωσῆς
καὶ (α)Σαμουὴλ πρὸ προσώπου μου, οὐκ
ἔστιν ἡ ψυχή μου πρὸς αὐτούς. ἐξαπόστειλον
2 τὸν λαὸν τοῦτον, καὶ (β)ἐξελθέτωσαν. Καὶ ἔσται
ἐὰν εἴπωσι πρὸς σέ, Ποῦ ἐξελευσόμεθα; καὶ
ἐρεῖς πρὸς αὐτούς, Τάδε λέγει κύριος (γ),
Ὅσοι εἰς θάνατον, εἰς θάνατον· καὶ ὅσοι εἰς
μάχαιραν, εἰς μάχαιραν· καὶ ὅσοι εἰς λιμόν,
εἰς λιμόν· καὶ ὅσοι εἰς αἰχμαλωσίαν,
3 εἰς αἰχμαλωσίαν. Καὶ ἐκδικήσω ἐπ᾽ αὐτοὺς
(ʹ) τέσσαρα εἴδη, λέγει κύριος· τὴν μάχαιραν
εἰς σφαγήν, καὶ τοὺς κύνας εἰς διασπασμόν,
καὶ τὰ θηρία τῆς γῆς, καὶ τὰ πετεινὰ τοῦ
4 οὐρανοῦ εἰς βρῶσιν καὶ (ʺ)διαφθοράν. Καὶ παραδώσω
αὐτοὺς εἰς ἀνάγκας πάσαις ταῖς βασιλείαις
τῆς γῆς, διὰ Μανασσῆ υἱὸν (δ) Ἐζεκίου
βασιλέως Ἰούδα, περὶ πάντων ὧν ἐποίησεν
5 ἐν Ἰερουσαλήμ. Τίς φείσεται ἐπὶ σοὶ
Ἱερουσαλήμ; καὶ τίς δειλιάσει ἐπὶ σοί; ἢ τίς
6 ἀνακάμψει εἰς εἰρήνην σοι; Σὺ ἀπεστράφης
με, λέγει κύριος, ὀπίσω (ε)πορεύσῃ· καὶ ἐκτενῶ
τὴν χεῖρά μου (ζ), καὶ διαφθερῶ σε, καὶ
7 οὐκέτι ἀνήσω αὐτούς. Καὶ (η) διασπερῶ αὐτοὺς
ἐν διασπορᾷ, ἐν πύλαις λαοῦ μου ἠτεκνώθησαν,
ἀπώλεσαν τὸν λαόν μου διὰ τὰς κακίας
8 αὐτῶν. Ἐπληθύνθησαν (θ) αἱ χῆραι αὐτῶν
ὑπὲρ τὴν ἄμμον τῆς θαλάσσης· ἐπήγαγον
ἐπὶ μητέρα νεανίσκους, ταλαιπωρίαν ἐν μεσημβρίᾳ,
ἐπέρριψα ἐπ᾽ αὐτὴν ἐξαίφνης τρόμον
9 καὶ σπουδήν. Ἐκενώθη ἡ τίκτουσα ἑπτά,
ἀπεκάκησεν ἡ ψυχὴ αὐτῆς, ἐπέδυ ὁ ἥλιος
αὐτῇ ἔτι μεσούσης τῆς ἡμέρας, κατῃσχύνθη
καὶ ὠνειδίσθη. τοὺς καταλοίπους αὐτῶν εἰς μάχαιραν
δώσω ἐναντίον τῶν ἐχθρῶν αὐτῶν. (ι)
10 Οἴμοι ἐγὼ μῆτερ, ὡς τίνα με ἔτεκες ἄνδρα
δικαζόμενον, καὶ διακρινόμενον(κ) πάσῃ τῇ
γῇ; οὔτε ὠφέλησα, οὔτε ὠφέλησέν με οὐδείς. ἡ
ἰσχύς μου ἐξέλιπεν ἐν τοῖς καταρωμένοις
11 με. Γένοιτο δέσποτα κατευθυνόντων αὐτῶν εἰ
μὴ παρέστην σοι ἐν καιρῷ τῶν κακῶν αὐτῶν,
καὶ ἐν καιρῷ θλίψεως αὐτῶν, εἰς ἀγαθὰ
12 πρὸς τὸν ἐχθρόν. Εἰ γνωσθήσεται σίδηρος,
13 καὶ περιβόλαιον χαλκοῦν ἡ ἰσχύς σου. Καὶ τοὺς
θησαυρούς σου εἰς προνομὴν δώσω ἀντάλλαγμα,
διὰ πάσας τὰς (λ) ἁμαρτίας σου,
14 καὶ ἐν πᾶσι τοῖς ὁρίοις σου. Καὶ (μ) καταδουλώσω
σε κύκλῳ τοῖς ἐχθροῖς σου, ἐν τῇ
γῇ ᾗ οὐκ ᾔδεις· ὅτι πῦρ ἐκκέκαυται ἐκ τοῦ
15 θυμοῦ μου, ἐφ᾽ ὑμᾶς καυθήσεται. Κύριε μνήσθητί
μου, καὶ ἐπίσκεψαί με, καὶ (ν)ἀθῴωσόν
με ἀπὸ τῶν καταδιωκόντων με, μὴ εἰς μακροθυμίαν·
γνῶθι, ὡς ἔλαβον περὶ σοῦ
ὀνειδισμόν

CAP. XV.

Et dixit Dominus ad me; Si 1
ſteterit Moyſes & Samuel ante
faciem meam; non eſt anima mea
ad eos. Emitte populum(a)iſtum,
& egrediantur. Et erit,ſi dixerint 2
ad te, quò egrediemur? & dices
ad eos;Hæc dicit Dominus; Quicunque
ad mortem, ad mortem:
& quicunque ad gladium, ad
gladium: & quicunque ad famem,
ad famem: & quicunque
ad captivitatem, ad captivitatē.
Et ulciſcar ſuper eos quatuor 3
ſpecies, dicit Dominus: gladium
ad occiſionem, & canes ad lacerationem;
& beſtias terræ,et volatilia
cœli, ad comeſtionem, &
corruptionem. Et tradam eos in 4
anguſtias omnibus regnis terræ
propter Manaſſen filium Ezeciæ
regis Juda, pro omnibus quæ fecit
in Hieruſalem. Quis parcet 5
ſuper te,Hieruſalē?et quis contriſtabitur
ſuper te? aut quis curvabit
ſe ad pacē tibi? Tu averſata es 6
*me,*dicit Dñs; *retrorſum ibis. Et*
extendā manum meā, et diſperdam
te: & nequaquàm ultrà dimittam
eos: Et diſpergam eos in 7
diſperſionem in portis populi mei:
orbati filiis ſunt, (b)diſperdiderunt
populum meum propter malitias
ſuas: Multiplicatæ ſunt viduæ 8
eorum ſuper arenam maris:
induxi ſuper matrem, (c) adoleſcentes,
miſeriam in meridie:injeci
ſuper eam repentè tremorem,
& trepidationem. (d)Vacuafacta 9
eſt, quæ parit ſeptem: afflicta
eſt anima ejus:ſubiit Sol ei, cùm
adhuc medius dies eſſet: confuſa
eſt,& maledicta: reliquos eorum
in gladium dabo in conſpectu inimicorum
ſuorum. Heu me,mater, 10
quarè genuiſti me virum, qui judicer,
et diſcernar omni terræ?
Non (e)profui, nec profuit mihi
quiſquam. Fortitudo mea defecit
in iis,qui maledicunt mihi. Fiat, 11
Domine,dirigentibus illis: ſi non
aſtiti tibi in tempore malorum eorum,
et in tempore tribulationis
eorum in bona contra inimicum.
Si cognoſcetur ferrū,et operimentum 12
æneum (f)fortitudo tua? Et 13
theſauros tuos in direptionem dabo,
(g) commutationem propter
omnia peccata tua, et in cunctis
terminis tuis. Et ſervire te faciam 14
in circuitu inimicis tuis, in terra,
quam non noviſti: quia ignis accenſus
eſt è furore meo:ſuper vos
ardebit. Domine,recordare meî,et 15
viſita me,et tuere me ab his qui
perſequuntur me, (h)non in longanimitate.
Scito, quoniam accepi pro te opprobrium

MS.A. (α) Ἀαρὼν πρὸ προσώπου (β) ἐξελθέτωσαν. (γ) ὁ θεός, (ʹ) τέσσαρα (ʺ) εἰς διαφθοράν. (δ) Ἐζεκία βασιλέα (ε) μου (ζ) ἐπὶ σέ, (η) διαφθερῶ ἐν διαφθορᾷ, (θ) χῆραι (ι) Οἴμμοι (κ) τῇ γῇ; (λ) κακίας (μ) καταδουλώσουσιν (ν) ἀθῴωσόν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

טו

1 וַאֲמַר יְיָ לִי אִם יְקוּם מֹשֶׁה וּשְׁמוּאֵל לְמִבְעֵי מִן קֳדָמַי לָא רַעֲוָא קֳדָמַי בְּעַמָּא הָדֵין שַׁלַּח
2 מֵאֲרַע בֵּית שְׁכִנְתִּי וְיִגְלוּן׃ וִיהֵי אֲרֵי יֵימְרוּן לָךְ לְאָן נִגְלֵי וְתֵימַר לְהוֹן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ
3 דִּלְמוֹתָא לְמוֹתָא וּדְלְחַרְבָּא לְחַרְבָּא וּדְלְכַפְנָא לְכַפְנָא וּדִי לְשִׁבְיָא לְשִׁבְיָא׃ וְאַסְעַר עֲלֵיהוֹן
אַרְבַּע פּוּרְעָנֻן בִּישָׁן אֲמַר יְיָ יַת דְּקָטְלִין בְּחַרְבָּא לְמִקְטַל וְיַת כַּלְבַיָּא לְגָרְרָא וְיַת עוֹפָא
4 דִּשְׁמַיָּא וְיַת בְּעִירָא דְּאַרְעָא לְמֵיכַל וּלְחַבָּלָא׃ וְאֶתְּנִנּוּן לְזִיעַ לְכֹל מַלְכְוַת אַרְעָא עַל דְּלָא
5 תָבוּ כִּמְנַשֶּׁה בַר יְחִזְקִיָּה מַלְכָּא שִׁבְטָא דְבֵית יְהוּדָה עַל דְּאַסְגֵּי לְמֶעְבַּד בִּירוּשְׁלֶם׃ אֲרֵי מַן
6 יְחוּס עֲלָךְ יְרוּשְׁלֶם וּמַן יְדוּיֵ עֲלָךְ וּמַן יְזוּר לְמִשְׁאַל לִשְׁלָמָא לָךְ׃ אַתְּ שְׁבַקְתְּ פּוּלְחָנִי אֲמַר
יְיָ לְאַחוֹרָא אִסְתְּחַרְתְּ וְאָרִים יַת מְחַת גְּבוּרְתִי עֲלָךְ וְאֶחַבְּלִנָּךְ עַל דַּהֲוֵית יָכְלָא לְמֵתַב וְלָא
7 תַבְתְּ׃ וּכְמָא דְדָרָן בִּמְדָרְיָא כֵּן אֲבַדַּר יַת עַמִּי בְּקִרְוֵי אַרְעָא תַּכְּלִית אֲבֵדִית יַת עַמִּי
8 מֵאָרְחַתְהוֹן לָא תָבוּ׃ סְגִיאַת קֳדָמַי אַרְמְלָתְהוֹן מֵחָל יַמְמִין אַיְתִיתִי עֲלֵיהוֹן עַל סִיעַת
9 עוּלֵמֵיהוֹן בָּזוֹזִין כַּד בְּטִהֲרָא אַיְתֵיתִי עֲלֵיהוֹן מַשִּׁרְיָן בִּתְכֵף וְחַבִּילָא קִרְוֵיהוֹן׃ צְדִיאַת
אַרְעֲהוֹן מִבְּלִי עַמָּא הֲווֹ לְמַפַּחַת נְפַשׁ גְּלָא יְקָרְהוֹן בְּחַיֵּיהוֹן וְעַד דְּאִנּוּן קַיְמִין בְּהִיתוּ
10 וְאִתְכְּנַעוּ וּשְׁאָרְהוֹן לְחַרְבָּא אֶמְסַר קֳדָם בַּעֲלֵי דְבָבֵיהוֹן אֲמַר יְיָ׃ וַי לִי אִמִּי אֲרֵי יְלִידְתִּנִי
לְמֶהֱוֵי גְּבַר דִּין וֶאֱנָשׁ מַצּוּ לְכָל יָתְבֵי אַרְעָא לָא רְשַׁן בִּי וּמָא דַּאֲנָא רְשֵׁינָא לָא תָבַע מִנְּהוֹן
11 כֻּלְּהוֹן מְלַטְטִין לִי׃ אֲמַר יְיָ אִם לָא סוֹפָךְ יְהֵי לְטָב אִם לָא יֵיתוֹן וְיִבְעוֹן מִנָּךְ בְּעִדָּן דְּאַיְתֵי
12 עֲלֵיהוֹן סָנְאָה וְיָעִיק לְהוֹן בְּעֵיל דְּבָבָא׃ מְלַךְ דְּתַקִּיף כְּבַרְזְלָא יִסַּק לְסָעֵד מְלַךְ דְּתַקִּיף
13 כְּבַרְזְלָא וּכְנְחָשָׁא יֵיתֵי מִצִּפּוּנָא עֲלַהּ לְמִתְבְּרַהּ׃ נִכְסֵיכוֹן וּבֵית גִּנְזֵיכוֹן לְבִזָּא אֶמְסַר לָא
14 בְּדָמִין בְּחוֹבִין דַּהֲוֵיתוֹן פָּלְחִין לְטַעֲוָתָא וּבְכָל תְּחוּמֵיכוֹן׃ וְתִשְׁתַּעְבְּדוּן לְבַעֲלֵי דְבָבֵיכוֹן
15 בְּאַרְעָא דְּלָא יְדַעְתּוּן אֲרֵי קִדּוּם תַּקִּיף כְּאֶשָּׁתָא נְפַק מִן קֳדָמַי בִּרְגַז עֲלֵיכוֹן יְחוּל׃ אִתְגְּלֵי
קֳדָמָךְ יְיָ יֵעוֹל דּוּכְרָנִי וּפַקֵּדְנִי לְאוֹטָבָא לִי וְאַסְעַר עַל בַּעֲלֵי דְבָבַי וְאִתְפְּרַע לִי מֵרָדְפַי לָא
תִתֵּן אַרְכָּא לְעַלְבָּנִי גְּלֵי קֳדָמָךְ דְּקַבֵּלִית חִסּוּדִין עַל מֵימְרָךְ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XV.

Et dixit Dñs ad me: Si ſteterint Moyſes & Samuel ad deprecādū in cōſpectu 1
meo, non eſt mihi beneplacitū in populo iſto. Mitte eos de terra dom⁹
majeſtatis meæ,ut tranſmigrēt. Et erit,cùm dixerint tibi: Quò migrabim⁹? 2
& dices ad eos:Hæc dicit Dñs;Qui ad mortē ad mortem:&qui ad gladiū,
ad gladiū:& qui ad famē,ad famē:& qui ad captivitatē,ad captivitatem.
Et viſitabo ſup eos quatuor ultiones peſſimas,dicit Dñs: Occiſores gladio 3
ad occidendū, & canes ad dilacerandū; & aves cœli & beſtias terræ,ad
comedendū & ad diſſipandū. Et dabo eos in commotionē omnib⁹ regnis 4
terræ,eò ꝙ non ſunt converſi ſicut Manaſſes fili⁹ Ezechiæ regis trib⁹ dom⁹
Juda,propter multa[*mala*]quæ fecit in Jeruſalē. Quis enim miſerebitur tui 5
Jeruſalē?aut quis contriſtabitur ſup te?& quis divertet ad ſalutandū te?Tu 6
deſeruiſti cultū meū,dicit Dñs;retrorſū converſa es:& levabo plagam fortitudinis
meæ ſuper te,& diſperdam te,eò quòd poteras converti,& non es
converſa. Et ſicut ventilāt in ventilabris, ſic diſpergā populū meum per 7
civitates terræ: orbavi liberis & diſperdidi populum meū: à ſemitis ſuis
non ſunt converſi. Multiplicatæ ſunt corā me viduæ eorū plus quàm arena 8
mariū:induxi ſup eos ſup cœtū adoleſcentū eorū,deprædatores velut meridie:
induxi ſup eos repentè exercitū,& diſſipavit civitates eorū. Deſerta 9
eſt terra eorū abſq; populo: fuerūt in exhalationē animæ,migravit gloria
eorū in vita eorū:& interea dū ipſi ſtāt,confuſi ſunt,& erubuerūt. Et reſiduos
eorū gladio tradā corā inimicis eorū,dicit Dñs. Væ mihi mater mea, 10
quia progenuiſti me ut ſim vir litis,& homo contētionis omnib⁹ habitatorib⁹
terræ. Null⁹ fœneravit mihi,& nihil ex his quæ mutuavi ego,quæro ab
eis:oēs maledicūt mihi. Dicit Dñs:Si non finis tu⁹ erit in bonū,ſi non veniēt 11
& deprecabūtur te in tēpore quo adduxero ſup eos hoſtē,& arctaverit
eos inimic⁹. Et rex qui fortis eſt ſicut ferrū, aſcēdet ut fulciat regē robuſtū 12
ſicut ferrū & ſicut æs,veniet ab Aquilone cōtra eā ut cōterat eā. Subſtantiā 13
eorū & domū theſaurorū eorū in direptionē tradā, non in pretio, ſed
pro peccatis,quib⁹ colebatis idola, *etiā* in omnib⁹ terminis veſtris. Et ſervietis 14
inimicis veſtris in terra quam ignorabatis. Quia vent⁹ fortis urens
quaſi ignis egreſſ⁹ eſt à facie mea in furore,& ſuper vos reſidebit. Manifeſtū 15
eſt coram te Dñe, veniat mei recordatio, & viſita me, ut benefacias mihi,
& viſita ſuper inimicos meos, & ulciſcere me à perſequentib⁹ me, ne des
dilationem injuriæ meæ: manifeſtum eſt enim coram te,quod ſuſceperim opprobria propter verbum tuum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܗ * * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܐܢ ܢܩܘܡ ܡܘܫܐ ܘܫܡܘܐܝܠ ܩܕܡܝ. 1
ܠܐ ܨܒܝܐ ܢܦܫܝ ܒܥܡܐ ܗܢܐ. ܐܦܩ ܐܢܘܢ ܡܢ ܩܕܡ ܐܦܝ ܘܢܦܩܘܢ. * ܘܐܢ ܢܐܡܪܘܢ ܠܟ ܠܐܝܟܐ 2
ܢܦܘܩ. ܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܠܡܘܬܐ ܠܡܘܬܐ. ܘܕܠܚܪܒܐ ܠܚܪܒܐ. ܘܕܠܟܦܢܐ
ܠܟܦܢܐ. ܘܕܠܫܒܝܬܐ ܠܫܒܝܬܐ. * ܘܐܦܩܘܕ ܥܠܝܗܘܢ ܐܪܒܥ ܡܚܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܚܪܒܐ 3
ܠܡܩܛܠ. ܘܟܠܒܐ ܠܡܓܪܪ. ܘܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ ܘܚܝܘܬܐ ܕܐܪܥܐ. ܠܡܐܟܠ ܘܠܡܚܒܠܘ.
* ܘܐܬܠܝܢܘܢ ܠܙܘܥܐ ܒܟܠܗܝܢ ܡܠܟܘܬܐ ܕܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܚܛܗܘܗܝ ܕܡܢܫܐ ܒܪ ܚܙܩܝܐ 4
ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܥܠ ܡܕܡ ܕܥܒܕ ܒܐܘܪܫܠܡ. * ܡܢܘ ܢܚܘܣ ܥܠܝܟܝ ܐܘܪܫܠܡ. 5
ܘܡܢܘ ܢܬܟܪܐ ܠܟܝ. ܘܡܢܘ ܢܨܛܠܐ ܠܡܫܐܠ ܫܠܡܟܝ. * ܐܢܬܝ ܫܒܩܬܝܢܝ ܐܡܪ 6
ܡܪܝܐ. ܘܠܒܣܬܪܟܝ ܐܙܠܬܝ. ܘܐܪܝܡ ܐܝܕܝ ܥܠܝܟܝ. ܘܐܚܒܠܟܝ. ܘܠܐ ܐܚܘܣ
ܥܠܝܗܘܢ. * ܘܐܕܪܐ ܐܢܘܢ ܒܡܕܪܝܐ ܒܩܘܪܝܐ ܕܐܪܥܐ. ܐܬܟܠ ܘܐܘܒܕܬ ܥܡܝ. ܘܡܢ ܐܘܪܚܬܗܘܢ 7
ܠܐ ܗܦܟܘ. * ܣܓܝ ܐܪܡܠܬܗܘܢ ܡܢ ܚܠܐ ܕܝܡܐ. ܐܝܬܝܬ ܥܠܝܗܘܢ. ܥܠ ܐܡܐ ܘܥܠ ܥܠܝܡܐ 8
ܒܙܘܙܐ ܒܛܗܪܐ. ܐܪܡܝܬ ܥܠܝܗܘܢ ܡܢ ܫܠܝܐ ܕܘܘܕܐ ܘܪܬܝܬܐ. * ܐܝܠܠܬ ܕܝܠܕܬ ܫܒܥܐ. 9
ܢܦܚܬ ܢܦܫܗ. ܥܪܒܬ ܫܡܫܗ ܒܦܠܓܗ ܕܝܘܡܐ. ܒܗܬܬ ܘܐܬܚܦܪܬ. ܘܫܪܟܢܗܘܢ
ܠܚܪܒܐ ܐܫܠܡ ܩܕܡ ܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܝ ܠܝ ܐܡܝ ܕܝܠܕܬܝܢܝ. ܓܒܪܐ ܕܝܢܐ 10
ܘܓܒܪ ܡܟܣܢܐ ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܠܐ ܚܝܒܬ ܐܢܐ ܘܠܐ ܚܝܒܝܢ ܠܝ. ܘܟܠܗܘܢ ܡܨܥܪܝܢ ܠܝ. * ܐܡܪ 11
ܡܪܝܐ. ܠܐ ܐܫܒܘܩܟܝ ܠܫܝܢܐ. ܐܠܐ ܐܦܓܥ ܒܟܝ ܒܥܠܕܒܒܐ. ܡܢ ܓܪܒܝܐ. ܒܙܒܢܐ ܕܐܘܠܨܢܐ
ܒܙܒܢܐ ܕܒܝܫܬܐ. * ܕܩܫܐ ܐܝܟ ܦܪܙܠܐ. ܘܐܝܟ ܢܚܫܐ. * ܢܟܣܝܟܝ ܘܣܝܡܬܟܝ ܘܟܠܗܘܢ ܬܚܘܡܝܟܝ. 12
ܠܒܙܬܐ ܐܬܠ. ܡܛܠ ܚܛܗܝܟܝ. * ܘܐܫܥܒܕܟܝ ܠܒܥܠܕܒܒܝܟܝ ܒܐܪܥܐ ܕܠܐ ܝܕܥܬܝ. ܡܛܠ 13 14
ܕܢܘܪܐ ܢܦܩܬ ܒܪܘܓܙܝ. ܥܠܝܟܘܢ ܬܐܩܕ. * ܐܢܬ ܡܪܝܐ. ܝܕܥ ܐܢܬ. ܐܬܕܟܪܢܝ ܘܣܥܘܪܝܢܝ. 15
ܘܬܒܥ ܠܝ ܡܢ ܪܕܘܦܝ. ܠܐ ܬܫܒܘܩܢܝ ܠܢܓܝܪܘܬ ܪܘܚܟ. * ܕܥ ܕܡܛܠܬܟ ܩܒܠܬ ܚܣܕܐ. 16

CAP. XV.

Dixit autem mihi Dominus; Etiamſi Moſes 1
& Samuel ſtarent coram me, nequaquam
placaretur animus meus erga populum iſtum:
ejice eos à facie mea, & exeant. Quòd ſi dixe- 2
rint tibi, Quò exibimus? dic eis; Sic dicit
Dñs, Qui ad mortem, ad mortem *exeat*; qui
ad gladium, ad gladium; qui ad famem, ad
famem; & qui ad captivitatem, ad captivita-
tem. Animadverſurus enim ſum in eos qua- 3
tuor flagellis, dicit Dominus; gladio ad inter-
ficiendum, canibus ad trahendum, et volatili-
bus cœli ac beſtiis terræ ad devorandum atq;
conſumendum: Denique dabo eos divaga- 4
tioni inter omnia regna terræ, propter ſcele-
ra Manaſſis filii Hezeciæ regis Judæ, ob ea
omnia quæ perpetravit in Jeruſalem. Quis
tui miſereſceret Jeruſalem? & quis de te do- 5
leret? aut quis diverteret ad ſalutandum te?
Tu me dereliquiſti, dicit Dñs, & retrorſum 6
abiiſti: ideo levabo manum meam contra te,
& conſumam te, nec ampliùs parcā illis: Sed 7
ventilabro diſpergam illos per civitates ter-
ræ. Orbavi, adeoq; conſumpſi populū meū;
attamen à viis ſuis non ſunt reverſi. Multipli- 8
cabuntur viduæ eorū pluſquam arena maris:
adducam ſuper eos, tam ſuper matrem quàm
ſuper adoleſcentes, prædones ipſo meridie:
injiciam in eos repentè perturbationem &
tremorem: Ejulabit quæ peperit ſeptem, in- 9
flabit ventrē ſuū, occidet ſol ejus in medio
dierum ejus, erubeſcet & pudefiet; reliquas
autem eorum gladio exponā coram hoſtibus
eorum, dicit Dominus. Hei mihi mater mea, 10
quòd me genueris virum judicem & virum
objurgatorē in tota terra: non ſum obnoxius,
neque ſunt obnoxii mihi, omnes tamen con-
tumelis me afficiunt. Dicit Dominus, Non ſi- 11
nam te in proſperitate, ſed irruere faciam in
te hoſtē ex Aquilone, tempore anguſtiæ, tem-
pore calamitatis, Quod duriſſimum erit ſicut 12
ferrū & ſicut æs. Opes tuas, theſauros tuos, 13
omnéſque terminos tuos direptioni expo-
nam propter peccata tua: Subjiciámque te 14
hoſtibus tuis in terra quam ignoras; quoniam
ignis accenſus eſt in ira mea, ſuper vos arde-
bit. Tu Dñe nôſti, recordare mei, et libera me, 15
& ulciſcere me de perſequentib⁹ me: noli me
juxta longanimitatē tuā protrahere. Agnoſce 16
quòd opprobrium propter te ſuſtinuerim,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الخامس عشر * * وقال الرب لي ان قام موسي وهارون امام وجهي لا 1
تكن نفسي معهم * ارسل هذا الشعب وليخرجوا * وان قالوا لك الي اين نخرج * فتقول لهم * 2
هكذا يقول الرب الاله * الذين للموت للموت * والذين للسيف للسيف * والذين للجوع للجوع *
والذين للسبي للسبي * واجلب عليهم اربعة انواع يقول الرب * السيف للذبح * والكلاب 3
للسحب * وسباع الارض وطيور السماء للاكل وللفساد * واسلمهم للشدايد في جميع ممالك 4
الارض * لاجل منسي بن حزقيا ملك يهوذا * من اجل ما صنع في ايروسليم * من يشفق عليك 5
يا ايروسليم * ومن يجزع عليك او يرد لك سلامتك * انت انصرفت عني يقول الرب * سلكت 6
خلفي * فامد يدي عليك وافسدك * ولا اريحهم بعد * وافسدهم بفساد في ابواب الارض * شعبي 7
اثكلوا * اهلكوا شعبي لاجل شرورهم * كثرت اراملهم اكثر من رمل البحر * جلبت علي الام 8
والشبان شقوة في نصف النهار * طرحت عليها بغتة رعدة ورجفة * افزعت التي تلد سبعة * 9
توحشت نفسها * غابت الشمس عنها ايضا نصف النهار * خزيت وعيرت * سادفع بقاياهم للسيف
امام اعدايهم * الويل لي انا ايتها الام * كيف ولدتني رجلا مقسطا حاكما في الارض * لم 10
انتفع ولم ينفعني ولا واحد * فنيت قوتي بالذين يلعنونني * يكون يا سيد * اذ هم مقومون * 11
لولا وقفت لك في زمن شرورهم وفي زمن ضيقهم بالخير عند العدو * ايعرف الحديد ورداء 12
نحاس قوتك * وادفع كنوزك للنهب فداء عن جميع شرورك وفي جميع حدودك لاعدايك * 13
* الذين يستعبدونك من حولك في الارض التي لم تعرفها * لان نارا توقدت من غضبي * 14
تتقد عليكم * * الاصحاح العاشر * * يا رب اذكرني وتعهدني وزكني من الطاردين لي 15
لا يطول روحي * اعرف كيف احدث من اجلك تعييرا 16

CAP. XV.

Sed dixit mihi Dominus; Etiamſi ſtete- 1
rint Moſes & Haron ante faciem meam,
nequaquam erit animus meus erga iſtos:
amanda populum iſtum, & egrediantur.
Quòd ſi tibi dicant, Quò egrediemur? 2
dices eis; Sic ait Dominus Deus, Qui ad
mortem deſtinati ſunt, *ad mortem* exeun-
to; & qui ad gladium, ad gladium; qui
ad famem, ad famem; & qui ad captivi-
tatem, ad captivitatem: Adducam enim 3
ſuper iſtos quatuor genera, dicit Dominus;
gladium ad jugulandum, canes ad di-
laniandum, & feras terræ atque volati-
lia cœli ad devorandum & conſumen-
dum: Et exponam eos miſeriis in omni- 4
bus regnis terræ, propter Manaſſem filium
Hezeciæ regis Judæ, ob ea quæ perpetra-
vit in Jeruſalem. Quis tui miſereatur 5
O Jeruſalem? aut quis ægrè ferat cauſâ
tui? aut reſtituat tibi pacem tuam? Tu 6
à me diſceſſiſti, ait Dominus; ambulâſti
ex adverſo mei: ideò extendam ſuper te
manum meam, & conſumam te, nec re-
quiem dabo illis in poſterum; Sed peni- 7
tiùs corrumpam illos in portis terræ. Po-
pulum meum orbabunt, perdent populum
meum propter ſcelera ipſius. Multiplica- 8
buntur viduæ eorum pluſquam arena ma-
ris: inducam ſuper matrem & juvenes
afflictionem ipſo meridie, injiciam in eam
repentinum terrorem atque tremorē: Ve- 9
xabo eam quæ parit ſeptenos, ſolitaria fiet
anima ejus, occidet ſol ab ea vel ipſo me-
ridie, pudore & ignominiâ afficietur: tra-
dam reliquias eorum gladio coram hoſti-
bus eorum. Hei mihi O mater, quomodo 10
peperiſti me virum jus atque judicium
decernentem in terra, qui nullam percepi
utilitatem, & ne unus quidem profuit
mihi, ſed *conſumptæ ſunt vires meæ in iis* 11
qui maledicunt mihi? Contingat O Domine
maledictum eorum, (*dummodo ipſi recti*
ſint) ſi non aſtiti tibi tempore malorum eo-
rum & tempore anguſtiæ ipſorum, in bo-
num apud inimicum. Nam cognoſcet 12
ferrum aut operimentum æneum potentiam
tuam? Quopropter dabo theſauros tuos 13
in direptionem pro omnibus ſceleribus tuis,
idque in omnibus terminis tuis, hoſtib⁹ tuis
Qui te ſervitute prement undiq; in terra 14
quam nunquā cognoviſti: nam ignis qui ac-
cenſus eſt à furore meo, ſuper vos ardebit.

Textus decimus

O Domine, recordare mei, & viſita me, 15
meque inſontem redde à perſequentibus me
ſine dilatione. Agnoſce quomodo ſuſce- 16
perim cauſâ tui contumelias

ירמיה : יו

mihi tuum verbum fuit & : eos comedi & , tui sermones sunt Inventi
16 נִמְצְאוּ דְבָרֶיךָ וָאֹכְלֵם וַיְהִי דְבָרְיךָ לִי
est invocatum quia : mei cordis lætitiam in & , gaudium in
לְשָׂשׂוֹן וּלְשִׂמְחַת לְבָבִי כִּי־נִקְרָא
Non .exercituum Deus DOMINE , me super tuum nomen
17 שִׁמְךָ עָלַי יְהוָה אֱלֹהֵי צְבָאוֹת׃ לֹא־
tuæ manus faciebus à : exultavi nec , ludentium *secreto* in sedi
יָשַׁבְתִּי בְסוֹד־מְשַׂחֲקִים וָאֶעְלֹז מִפְּנֵי יָדְךָ
fuit quid Ut .me replesti *indignatione* quoniam : sedi solus
18 בָּדָד יָשַׁבְתִּי כִּי־זַעַם מִלֵּאתָנִי׃ לָמָּה הָיָה
essendo ? curari renuit , desperata mea plaga & ,*perpetuus* meus dolor
כְאֵבִי נֶצַח וּמַכָּתִי אֲנוּשָׁה מֵאֲנָה הֵרָפֵא הָיוֹ
Propterea .*fuere* fideles non , aquæ , mendax velut mihi eris
19 תִהְיֶה לִי כְּמוֹ אַכְזָב מַיִם לֹא נֶאֱמָנוּ׃ לָכֵן
, te convertam & ,fueris conversus Si : DOMINUS dixit sic
כֹּה־אָמַר יְהוָה אִם־תָּשׁוּב וַאֲשִׁיבְךָ
meum os tanquam ,*sordido à* pretiosum eduxeris si & : stabis *meas facies ad*
לְפָנַי תַּעֲמֹד וְאִם־תּוֹצִיא יָקָר מִזּוֹלֵל כְּפִי
.eos ad converteris non tu & , te ad ipsi convertentur : eris
תִהְיֶה יָשֻׁבוּ הֵמָּה אֵלֶיךָ וְאַתָּה לֹא־תָשׁוּב אֲלֵיהֶם׃
bellabunt & , munitum , *æris* murum in huic populo te dabo Et
20 וּנְתַתִּיךָ לָעָם הַזֶּה לְחוֹמַת נְחֹשֶׁת בְּצוּרָה וְנִלְחֲמוּ
, te *servandum ad* ego tecum quia : tibi prævalebunt non & , te contra
אֵלֶיךָ וְלֹא־יוּכְלוּ לָךְ כִּי־אִתְּךָ אֲנִי לְהוֹשִׁיעֲךָ
: pessimorum manu de te eruam Et .DOMINUS dixit,te *eruendum* &
21 וּלְהַצִּילֶךָ נְאֻם־יְהוָה׃ וְהִצַּלְתִּיךָ מִיַּד רָעִים
.*terribilium vola* de te redimam &
וּפְדִתִיךָ מִכַּף עָרִיצִים׃

CAP. XVI. יו

, uxorem tibi accipies Non : dicendo , me ad Domini verbum fuit Et
1 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ לֹא־תִקַּח לְךָ אִשָּׁה
2 dixit sic Quia .isto loco in filiæ & filii tibi erunt nec
3 וְלֹא־יִהְיוּ לְךָ בָּנִים וּבָנוֹת בַּמָּקוֹם הַזֶּה׃ כִּי־כֹה אָמַר
loco in *natos* filias super & filios Super:Dominus
יְהוָה עַל־הַבָּנִים וְעַל־הַבָּנוֹת הַיִּלּוֹדִים בַּמָּקוֹם
eorum patres super & , eos *parientes* eorum matres super & ; isto
הַזֶּה וְעַל־אִמֹּתָם הַיֹּלְדוֹת אוֹתָם וְעַל־אֲבוֹתָם
ægrotationum Mortibus .ista terra in eos *generantes*
4 הַמּוֹלִדִים אוֹתָם בָּאָרֶץ הַזֹּאת׃ מְמוֹתֵי תַחֲלֻאִים
super sterquilinium in ; sepelientur neque ,plangentur non , morientur
יָמֻתוּ לֹא יִסָּפְדוּ וְלֹא יִקָּבֵרוּ לְדֹמֶן עַל־
erit & , consumentur fame in & gladio in & : erunt *humi facies*
פְּנֵי הָאֲדָמָה יִהְיוּ וּבַחֶרֶב וּבָרָעָב יִכְלוּ וְהָיְתָה
Nam .terræ *animali* & , cœlorum *volatili* escam in eorum *cadaver*
5 נִבְלָתָם לְמַאֲכָל לְעוֹף הַשָּׁמַיִם וּלְבֶהֱמַת הָאָרֶץ׃ כִּי־
vadas nec , *feralis epuli* domum ingrediaris Ne : Dominus dixit sic
כֹה אָמַר יְהוָה אַל־תָּבוֹא בֵּית מַרְזֵחַ וְאַל־תֵּלֵךְ
à meam pacem *collegi* quia : eis *commovearis* neque,plangendū ad
לִסְפּוֹד וְאַל־תָּנֹד לָהֶם כִּי־אָסַפְתִּי אֶת־שְׁלוֹמִי מֵאֵת
.miserationes & , misericordiam , Dominus dixit , isto populo
הָעָם הַזֶּה נְאֻם־יְהוָה אֶת־הַחֶסֶד וְאֶת־הָרַחֲמִים׃
nec : sepelientur non , hac terra in parvi & magni morientur Et
6 וּמֵתוּ גְדֹלִים וּקְטַנִּים בָּאָרֶץ הַזֹּאת לֹא יִקָּבֵרוּ וְלֹא־
expandent non Et .*eis decalvabitur* neque ,*incidetur nec* , eos plangent
7 יִסְפְּדוּ לָהֶם וְלֹא יִתְגֹּדַד וְלֹא יִקָּרֵחַ לָהֶם׃ וְלֹא־יִפְרְסוּ
potū dabunt neque:mortuo super *eum* consolandū ad luctum super *sibi*
לָהֶם עַל־אֵבֶל לְנַחֲמוֹ עַל־מֵת וְלֹא־יַשְׁקוּ
.sua matre super &,suo patre super ,consolationum calicem eis
אוֹתָם כּוֹס תַּנְחוּמִים עַל־אָבִיו וְעַל־אִמּוֹ׃

Versio VULG. LAT.

16 Inventi sunt sermones tui, &
comedi eos, & factum est mihi
verbum tuum in gaudium & in
lætitiam cordis mei : quoniam
invocatum est nomen tuum super
me, Domine Deus exercituum.
17 Non sedi in concilio ludentium,
& gloriatus sum à facie manûs
tuæ : solus sedebam, quoniam
18 comminatione replêsti me. Qua-
rè factus est dolor meus per-
petuus, & plaga mea desperabi-
lis renuit curari ? facta est mihi
quasi mendacium aquarum infi-
19 delium. Propter hoc hæc dicit
Dominus ; Si convertêris, con-
vertam te, & ante faciem meam
stabis : & si separaveris pretio-
sum à vili, quasi os meum eris :
convertentur ipsi ad te, & tu
20 non convertêris ad eos. Et da-
bo te populo huic in murum æ-
reum, fortem : & bellabunt ad-
versùm te, & non prævalebunt :
quia ego tecum sum ut salvem
te, & eruam te, dicit Dominus.
21 Et liberabo te de manu pessi-
morum, & redimam te de manu
fortium.

CAP. XVI.

1 ET factum est verbum Domi-
2 ni ad me, dicens ; Non accipi-
es uxorem, & non erunt tibi fi-
3 lii & filiæ in loco isto. Quia
hæc dicit Dominus super filios
& filias, qui generantur in loco
isto, & super matres eorum, quæ
genuerunt eos : & super patres
eorum, de quorum stirpe sunt
4 nati in terra hac ; Mortibus
ægrotationum morientur : non
plangentur, & non sepelientur,
in sterquilinium super faciem
terræ erunt : & gladio & fame
consumentur : & erit cadaver
eorum in escam volatilibus cœli,
5 & bestiis terræ. Hæc enim di-
cit Dominus ; Ne ingrediaris do-
mum convivii, neque vadas ad
plangendum, neque consoleris
eos : quia abstuli pacem meam
à populo isto, dicit Dominus ;
misericordiam & miserationes.
6 Et morientur grandes & parvi
in terra ista : non sepelientur
neque plangentur, & non se in-
cîdent, neque calvitium fiet pro
7 eis. Et non frangent inter eos
lugenti panem ad consolandum
super mortuo : & non dabunt
eis potum calicis ad consolan-
dum super patre suo & matre.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

16 Ὑπὸ τῶν ἀθετούντων τοὺς λόγους σου· συν-
τέλεσον αὐτούς. καὶ ἔσται ὁ λόγος σου ἐμοὶ
εἰς εὐφροσύνην καὶ χαρὰν καρδίας μου, ὅτι
ἐπικέκληται τὸ ὄνομά σου ἐπ᾽ ἐμοὶ κύριε
17 παντοκράτωρ. Οὐκ ἐκάθισα ἐν συνεδρίῳ
αὐτῶν παιζόντων, ἀλλὰ εὐλαβούμην ἀπὸ
προσώπου χειρός σου· καταμόνας ἐκαθή-
18 μην, ὅτι πικρίας ἐνεπλήσθην. Ἱνατί οἱ λυ-
ποῦντές με κατισχύουσί μου; ἡ πληγή μου στε-
ρεὰ, πόθεν (ξ) ἰαθήσομαι; γινομένη ἐγε-
νήθη μοι ὡς ὕδωρ ψευδὲς, οὐκ ἔχον πίστιν.
19 Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος, Ἐὰν ἐπιστρέ-
ψῃς, καὶ ἀποκαταστήσω σε, καὶ πρὸ προσώπου
μου στήσῃ· καὶ ἐὰν ἐξαγάγῃς τίμιον (ο) ἀπὸ
ἀναξίου, ὡς τὸ στόμα μου ἔσῃ· καὶ ἀναστρέ-
ψουσιν αὐτοὶ πρὸς σὲ, καὶ σὺ οὐκ ἀνα-
20 στρέψεις πρὸς αὐτούς. Καὶ δώσω σε τῷ
λαῷ τούτῳ, ὡς τεῖχος ὀχυρὸν, χαλκοῦν·
καὶ (π) πολεμήσουσι πρὸς σὲ, καὶ οὐ μὴ δύ-
νωνται πρὸς σὲ, διότι μετὰ σοῦ εἰμι τοῦ σώ-
21 ζειν σε, Καὶ (ρ) τοῦ ἐξαιρεῖσθαί σε ἐκ
χειρὸς πονηρῶν, καὶ λυτρώσομαί σε ἐκ
χειρὸς λοιμῶν.

Ab his qui reprobant sermones 16
tuos : consumma eos. Et erit mi-
hi verbum tuum in lætitiam, &
gaudium cordis mei : quoniam in-
vocatum est nomen tuum super
me, Domine omnipotens. Non sedi 17
in consessu (i) ipsorum ludenti-
um : sed metuebam à facie manûs
tuæ. Solus sedebam ; quoniam a-
maritudine repletus sum. Ut quid 18
qui contristant me, prævalent (k)
adversum me? Plaga mea solida
est : unde sanabor? Dum fit, facta
est mihi quasi aqua mendax, non
habens fidem. Ideò hæc dicit 19
Dominus ; Si revertêris, & re-
stituam te, & ante faciem meam
stabis. Et, si eduxeris pretiosum à
vili ; quasi os meum eris. Et con-
vertentur ipsi ad te : & tu non
convertêris ad eos. Et dabo te in 20
populo isto, quasi murum muni-
tum, æneum : & bellabunt adver-
sùm te, & non poterunt adver-
sùm te : quia tecum sum, ut sal- 21
vem te : Et eruam te de manu
pessimorum, & redimam te de
manu pestilentium.

MS.A. (ξ) ἰάσομαι; γινομένη μοι ἐγενήθη ὡς ὕδωρ *ψευδὸς, οὐκ ἔχων πίστιν. (ο) ἀπὸ ἀξίου, ὡς στόμα (π) πολεμήσουσίν σε, (ρ) ἐξερεῖσθαί

ΚΕΦ. ιϛʹ.

2
1 ΚΑὶ σὺ μὴ λάβῃς γυναῖκα, λέγει κύ-
2 ριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, Καὶ οὐ γεννηθήσεταί
σοι υἱὸς, οὐδὲ θυγάτηρ ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ.
3 Ὅτι τάδε λέγει κύριος περὶ τῶν υἱῶν (α) καὶ
περὶ τῶν θυγατέρων τῶν γεννωμένων ἐν τῷ τό-
πῳ τούτῳ, καὶ περὶ τῶν μητέρων αὐτῶν τῶν
τετοκυιῶν αὐτοὺς, καὶ περὶ τῶν πατέρων αὐ-
τῶν τῶν γεγεννηκότων αὐτοὺς ἐν τῇ γῇ ταύ-
4 τῃ, Ἐν θανάτῳ νοσερῷ ἀποθανοῦνται,
οὐ κοπήσονται, (β) καὶ οὐ ταφήσονται· εἰς
παράδειγμα ἐπὶ προσώπου τῆς γῆς ἔσονται·
καὶ τοῖς θηρίοις τῆς γῆς (γ) ἔσονται καὶ τοῖς
πετεινοῖς τοῦ οὐρανοῦ· ἐν (δ) μαχαίρᾳ πε-
σοῦνται, καὶ ἐν λιμῷ συντελεσθήσονται.
5 Τάδε λέγει κύριος, Μὴ εἰσέλθῃς εἰς θί-
ασον αὐτῶν, καὶ μὴ πορευθῇς τοῦ κόψα-
σθαι, (ε) καὶ μὴ πενθήσῃς αὐτοὺς, ὅτι (ζ)
ἀφέστακα τὴν εἰρήνην μου ἀπὸ τοῦ λαοῦ τούτου.
6 Οὐ μὴ (ʹʹ) κόψονται αὐτοὺς, οὐδὲ ἐντομίδας
οὐ μὴ ποιήσουσι, (η) καὶ οὐ ξυρηθήσονται,
7 Καὶ οὐ μὴ κλασθῇ ἄρτος ἐν πένθει αὐ-
τῶν εἰς παράκλησιν ἐπὶ τεθνηκότι· οὐ
ποτιοῦσιν αὐτὸν ποτήριον εἰς παράκλη-
σιν ἐπὶ πατρὶ (θ) καὶ μητρὶ αὐτοῦ.

CAP. XVI.

ET tu ne accipias uxorem, Di- 1
cit Dominus Deus Israel, Et non 2
gignetur tibi filius, neque filia in
loco isto. Quia hæc dicit Domi- 3
nus de filiis, & de filiabus, qui
nascuntur in loco isto, & de ma-
tribus eorum, quæ pepererunt eos,
& de patribus eorum, qui genu-
erunt eos in terra ista ; In morte 4
morbosa morientur : non plangen-
tur, & non sepelientur : in ex-
emplum super faciem terræ erunt :
(a) & bestiis terræ erunt, & vo-
latilibus cœli : in gladio cadent,
& in fame consummabuntur.
Hæc dicit Dominus ; Ne ingredi- 5
aris in (b) thiasum eorum, &
non vadas ad plangendum, ne-
que lugeas eos : quia abstuli pa-
cem meam à populo (c) isto : Non 6
plangent se, neque incisiones fa-
cient, neque radentur, Neque 7
frangetur panis in luctu eorum
in consolationem super mortuum :
non dabunt ei potum calicis in
consolationem super patrem, &
matrem ejus.

MS.A. (α) καὶ τῶν (β) οὐδὲ (γ) καὶ τοῖς (δ) μαχαίρῃ (ε) καὶ πενθήσῃς (ζ) ἀφέστηκα (ʹʹ) κόψωνται (η) οὐδὲ μὴ ξυρήσονται, (θ) αὐτοῦ ἢ ἐπὶ μητρὶ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 קַבְּלִית לְפִתְגָמָךְ וְקַיֵּמְתִּנוּן וַהֲוָה מֵימְרָךְ לִי לְבִיעַ וּלְחֶדְוַת לִבִּי אֲרֵי אִתְקְרֵי שְׁמָךְ עֲלַי
17 יְיָ אֱלֹהִים צְבָאוֹת׃ לָא יְתֵיבִית בְּסִיעַת מְשַׁבְּחִין וְלָא חֲדֵיתִי מִן קֳדָם מֵימְרָךְ פְּרִישׁ
18 יְתֵיבִית אֲרֵי נְבוּאָה דִלְוָט מַלֵּיתָנִי׃ לְמָה הֲוָה כֵּיבִי לְאַפְרַשׁ וּמַחְתִּי תַקִּיפָא לְמַסְרְבָא
19 לְאִתַּסָּאָה לָא יְהֵי מֵימְרָךְ לִי כַּדְבִין כְּמַבַּע דְמַיִין דְּפָסְקִין מוֹהִי׃ בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ
אִם תְּתוּב וַאֲתִיבִנָּךְ קֳדָמַי תְּשַׁמֵּשׁ וְאִם תְּתִיב רַשִׁיעַיָּא לְמֶהֱוֵי צַדִּיקַיָּא רְעוּת מֵימְרִי
20 תְּקַיֵּם יְתוּבוּן אִנּוּן לְפִתְגָמָךְ וְאַתְּ לָא תְתוּב לְמִטְעֵי בַּתְרֵיהוֹן׃ וְאֶתְּנִנָּךְ לְעַמָּא הָדֵין
כְּשׁוּר דִּנְחָשׁ כְּרִיךְ וִיגִיחוּן לְקִבְלָךְ וְלָא יִכְלוּן לָךְ אֲרֵי בְּסַעְדָּךְ מֵימְרִי לְמִפְרְקָךְ
21 וּלְשֵׁיזָבוּתָךְ אֲמַר יְיָ׃ וְאֲשֵׁיזְבִנָּךְ מִיַּד מַבְאֲשִׁין וְאֶפְרְקִנָּךְ מִיַּד תַּקִּיפִין׃

יו

1 וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי לְמֵימַר׃ לָא תִסַּב לָךְ אִתְּתָא וְלָא יְהוֹן לָךְ בְּנִין
2 וּבְנָן בְּאַתְרָא הָדֵין׃ אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ עַל בְּנִין וְעַל בְּנָן דְּמִתְיַלְדִין בְּאַתְרָא הָדֵין וְעַל
3 אִמְּהָתְהוֹן דְּיָלְדָן יָתְהוֹן וְעַל אֲבָהָתְהוֹן דְּמוֹלְדִין יָתְהוֹן בְּאַרְעָא הָדָא׃ מִמּוֹת מַרְעֵי
4 כְּפַן יְמוּתוּן לָא יִסְתַּפְדוּן וְלָא יִתְקַבְּרוּן לְזִבְל מְבַדַּר עַל אַפֵּי אַרְעָא יְהוֹן וּבְחַרְבָּא וּבְכַפְנָא
5 יְסוּפוּן וּתְהֵי נִבְלַתְהוֹן מְשַׁגְרָא לְמֵיכַל לְעוֹפָא דִשְׁמַיָּא וּלְבְעִירָא דְאַרְעָא׃ אֲרֵי כִדְנַן
אֲמַר יְיָ לָא תֵעוֹל לְבֵית מַרְזְחָא וְלָא תְהָךְ לְמִסְפַּד וְלָא תְחַוֵּי לְהוֹן אֲרֵי כְנֵשִׁית יָת
6 שְׁלָמִי מִן עַמָּא הָדֵין אֲמַר יְיָ יָת חִסְדָּא וְיָת רַחֲמֵי׃ וִימוּתוּן רַבְרְבִין וּדְעַדְקִין בְּאַרְעָא
7 הָדָא לָא יִתְקַבְּרוּן וְלָא יִסְפְּדוּן לְהוֹן וְלָא יִתְהַמְמוּן וְלָא יִמְרְטוּן לְהוֹן׃ וְלָא יִפְּרְסוּן
לְהוֹן עַל אֶבְלָא לְנַחֲמוּתְהוֹן עַל מִיתָא וְלָא יַשְׁקוּן יָתְהוֹן כָּס תַּנְחוּמִין גְּבַר עַל אֲבוּהִי
וְעַל אִמֵּיהּ׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Suscepi verba tua, & stabilivi ea : & factum est verbum tuum mihi in 16
gaudium & lætitiam cordis mei : quia invocatum est nomen tuum super me,
Dñe Deus exercituum. Non sedi cum turba cantantium, nec delectat' sum : 17
à facie verbi tui separatus sedebam, quia prophetiâ maledictionis implêsti
me. Quare factus est dolor meus in perpetuum ? & plaga mea fortis, *ut re-* 18
nuat curari ? Ne sit Verbum tuum mihi in mendacium, sicut fons aquarum
cujus aquæ deficiunt. Propterea hæc dicit Dñs : Si converteris, & con- 19
vertam te ; coram me ministrabis : & si revocaris impios ut sint justi, volun-
tatem verbi mei implebis. *Revertantur* ipsi *ad verba tua*, & tu non rever-
têris ut erres post eos. Et dabo te populo huic quasi murum æreum, for- 20
tem : & pugnabunt adversum te, & non prævalebunt tibi ; quia in adjuto-
rium tuum est Verbum meum, ut salvem te, & ut liberem te, Dicit Dñs.
Et eruam te de manu malignantium, & salvabo te de manu fortium. 21

CAP. XVI.

ET factum est verbum prophetiæ à facie Dñi ad me, dicens : Ne acci- 1
pias tibi uxorem, nec sint tibi filii & filiæ in loco isto. Quia hæc dicit 2
Dñs super filios & super filias qui nascuntur in loco isto, & super matres 3
eorum quæ pariunt eos, & super patres eorum qui generant eos in terra
ista : Morte ægrotationum famis morientur ; non plangentur, neque sepe- 4
lientur ; in stercus dispersum super faciem terræ erunt : & in gladio & in
fame peribunt : & erit cadaver eorum projectum in escam volatilibus
cœli & bestiis terræ. Quia hæc dicit Dominus : ne egrediaris in domum 5
convivii, nec vadas ad plangendum, nec contristeris cum eis : quia col-
legi pacem meam à populo isto, dicit Dominus : misericordiam & mise- 6
rationes. Et morientur grandes & parvi in terra ista : non sepelientur ;
nec plangent eos, nec sese incident, nec facient calvitium propter eos. 7
Nec frangent eis [panem] in luctu ut consolentur eos super mortuum, nec
propinabunt eis calicem consolationis *quisque* super patre suo, & super
matre sua.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

ܘܢܛܪܬ ܦܘܩܕܢܝܟ. ܘܥܒܕܬ ܐܢܘܢ. ܘܗܘܐ ܠܝ ܦܬܓܡܟ ܠܒܣܝܡܘܬܐ. ܘܠܚܕܘܬܗ ܕܠܒܝ.
ܡܛܠ ܕܐܬܩܪܝ ܫܡܟ ܥܠܝ. * ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܠܐ ܝܬܒܬ ܒܟܢܘܫܬܐ ܕܡܒܙܚܢܐ. 17
ܐܠܐ ܕܚܠܬ ܡܢ ܩܕܡ ܐܝܕܟ. ܘܒܠܚܘܕܝ ܝܬܒܬ. ܡܛܠ ܕܪܘܓܙܐ ܡܠܝܬܢܝ. * ܠܡܢܐ ܗܘܐ 18
ܟܐܒܝ ܠܥܠܡ. ܘܡܚܘܬܝ ܚܣܝܢܐ. ܘܠܐ ܨܒܝܐ ܠܡܬܐܣܝܘ. ܘܗܘܝܬ ܠܝ ܐܝܟ ܡܝܐ ܕܓܠܐ
ܕܠܐ ܡܬܗܝܡܢܝܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܢ ܬܬܘܒ ܐܦܢܝܟ. ܘܩܕܡܝ ܬܩܘܡ. 19
ܘܐܢ ܬܦܩ ܝܩܝܪܐ ܡܢ ܨܥܪܐ. ܐܝܟ ܦܘܡܝ ܬܗܘܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܢܬܦܢܘܢ ܗܢܘܢ ܠܘܬܟ.
ܘܐܢܬ. ܠܐ ܬܬܦܢܐ ܠܘܬܗܘܢ. * ܘܐܬܠܟ ܠܥܡܐ ܗܢܐ. ܐܝܟ ܫܘܪܐ ܕܢܚܫܐ ܥܫܝܢܐ. 20
ܘܢܬܟܬܫܘܢ ܥܡܟ. ܘܠܐ ܢܙܟܘܢܟ. ܡܛܠ ܕܥܡܟ ܐܢܐ. ܠܡܦܪܩܟ. ܘܠܡܫܘܙܒܘܬܟ. ܐܡܪ
ܡܪܝܐ. * ܘܐܦܨܝܟ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܒܝܫܐ. ܘܐܦܪܩܟ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܥܫܝܢܐ. 21

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܘ *

1 * ܘܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܠܐ ܬܣܒ ܠܟ ܐܢܬܬܐ. ܘܠܐ ܢܗܘܘܢ ܠܟ
2 ܒܢܝܐ ܘܒܢܬܐ ܒܐܬܪܐ ܗܢܐ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܒܢܝܐ ܘܥܠ ܒܢܬܐ 3
ܕܡܬܝܠܕܝܢ ܒܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܘܥܠ ܐܡܗܬܗܘܢ ܕܝܠܕܢ ܠܗܘܢ. ܘܥܠ ܐܒܗܝܗܘܢ ܕܡܘܠܕܝܢ
ܠܗܘܢ ܒܐܬܪܐ ܗܢܐ. * ܒܡܘܬܐ ܕܡܟܪܗܐ ܢܡܘܬܘܢ. ܠܐ ܢܬܪܩܕܘܢ. ܘܠܐ 4
ܢܬܩܒܪܘܢ. ܐܠܐ ܐܝܟ ܙܒܠܐ ܥܠ ܐܦܝ ܐܪܥܐ ܢܗܘܘܢ. ܘܒܚܪܒܐ ܘܒܟܦܢܐ ܢܫܠܡܘܢ.
ܘܢܗܘܝܢ ܫܠܕܝܗܘܢ ܡܐܟܘܠܬܐ ܠܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܠܚܝܘܬܐ ܕܐܪܥܐ. * ܡܛܠ 5
ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܠܐ ܬܐܙܠ ܠܡܪܩܕܘ. ܘܠܐ ܬܬܢܝܕ ܥܠܝܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܐܪܚܩܬ ܫܠܡܝ
ܡܢ ܥܡܐ ܗܢܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܛܝܒܘܬܐ ܘܪܚܡܐ. * ܘܢܡܘܬܘܢ ܪܘܪܒܐ ܘܙܥܘܪܐ 6
ܒܐܪܥܐ ܗܕܐ. ܠܐ ܢܬܩܒܪܘܢ ܘܠܐ ܢܬܪܩܕܘܢ ܥܠܝܗܘܢ. ܘܠܐ ܢܬܠܟܘܢ. ܘܠܐ ܢܬܩܪܚܘܢ ܥܠܝܗܘܢ.
* ܘܠܐ ܢܓܙܘܢ ܥܠܝܗܘܢ ܒܐܒܠܐ. ܠܡܒܝܐܘ ܥܠ ܡܝܬܐ. ܘܠܐ ܢܫܩܘܢ ܐܢܘܢ ܟܣܐ 7
ܕܒܘܝܐܐ ܥܠ ܐܒܗܝܗܘܢ. ܘܥܠ ܐܡܗܬܗܘܢ.

mandata tua cuſtodierim ac fecerim fueritq; mihi ſermo tuus jucunditati & lætitiæ cordis mei; quia invocatum eſt ſuper me nomen tuum. 17 Domine Deus potentiſſime, non ſedi inter cœtum irriſorum, ſed extimui manum tuam, & ſeorſum ſedi, eò quòd irâ me repleveris. 18 Quare factus eſt dolor meus ingens, & plaga mea vehemens, nec vult curari? & factus es mihi velut aquæ fallaces quibus credi non poteſt? 19 Propterea ſic dicit Dominus; Si convertaris, reſtituam te, & coram me ſtabis: & ſi eduxeris pretioſum ex obſcœno, ſicut os meum eris, dicit Dominus: & ipſi convertentur ad te, tu autem non converteris ad eos: 20 Opponam te huic populo tanquam fortiſſimum murum æneum, & bellabunt adverſùm te, at non ſuperabunt te; quia tecum ſum ad liberandum & eruendum te, dicit Dominus: 21 Eripiam te de manu improborum, & ſervabo te de manu potentium.

CAP. XVI.

1 ET fact' eſt ad me ſermo Domini, dicendo, 2 Ne ducas tibi uxorem, & ne ſint tibi filii aut filiæ in loco iſto: 3 Quoniam ſic ait Dominus de filiis & filiabus naſcituris in loco iſto, & de matribus eorum quæ pariture ſunt eos, deque patribus eorum qui genituri ſunt ipſos in loco iſto; 4 Morte languentium fame morientur, non plangentur, neque ſepelientur, ſed ut fimus erunt ſuper faciem terræ: gladio & fame conſumentur, erúntque cadavera eorum cibo volatilibus cœli & beſtiis terræ. 5 Nam ſic ait Dominus, Ne abeas ad plangendum, neque loco movearis propter eos: quoniam abſtuliſti pacem meam ab hujuſcemodi populo, dicit Dominus, & benignitatem atque miſericordiam. 6 Morientur magni æquè ac parvi in terra iſta, non ſepelientur, neque plangentur; non lugebunt, neque pilos avellent ſibi propter eos. 7 Neque *pilos* tondebunt propter eos in luctu ad capiendam conſolationem de mortuo, neque potabunt eos calice conſolationis de patribus & matribus eorum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA:

مِن الذين يعصون لك * افنهم ويكون كلمتك اليّ للسرور وفرحا لقلبي * لانّ اسمك دُعي
علي * ايها الرب ضابط الكل * لم اجلس في مجمع المستهزيين * لكن اتقيت من وجه يدك * 17
جلست وحدي لاني امتليت مرارة * لماذا الذين يحربوني يقوون علي * ضربتي شديدة * 18
من اين اتعافا * صايرة صارت لي مثل ماء كذب ليس له صدق * لاجل هذا هكذا 19
يقول الرب * ان انصرفت فاردك ويقف امام وجهي * وان اخرجت الكريم من الذليل
فتكون مثل فمي * ويرجعون هاولاء اليك وانت فلا ترجع اليهم * واعطيك لهذا الشعب 20
مثل سور نحاس حصين * ويحاربون ولا يقتدرون عليك * من اجل اني معك لاخلصك *
21 * وانجيك من يد الاشرار * وانقذك من يد المفسدين *

* الفصل السادس عشر *

1 2 ** وانت لا تاخذ امراة يقول الرب اله اسرايل * ولا يكون لك ابن ولا ابنة في هذا
الموضع * لانه هكذا يقول الرب من اجل البنين والبنات المولودين في هذا الموضع * 3
ومن اجل امهاتهم اللاتي تلدهم * ومن اجل اباهم الذين يولدوهم في هذه الارض * بموت 4
صعب يموتون * لا يندبون ولا يدفنون * بل يكونون للشهرة على وجه الارض * بالسيف
يسقطون * وبالجوع يفنون * ويكون جثثهم طعاما لطيور السماء وسباع الارض * هكذا 5
يقول الرب * لا تدخل الي جمعهم * ولا تمض لتندبهم وتنوح عليهم * لاني صرفت سلامي عن
6 7 هذا الشعب * لا يندبوهم ولا يصنعون تشريحاتهم * ولا ينتفون عليهم شعرا * ولا يكسر
خبز في مناحتهم للعزاء على الميت * ولا يشربون لسقيهم كاسا للعزاء على ابيه ولا على امه *

16 *ab iis qui ſunt tibi rebelles: conſume illos, ſitque mihi verbum tuum exultationi, & gaudio cordi meo; quandoquidem nomen tuum invocatum eſt ſuper me.* 17 *O Domine omnia tenens, non ſedi in concilio irriſorum; ſed manum tuam pertimeſcens ſedi ſolus, quia repletus ſum amaritudine.* 18 *Cur ii qui me affligunt, contra me invaleſcunt? plaga mea atrox eſt, unde recuperabo ſanitatem? facta mihi eſt omnino velut aqua fallax cui nulla eſt firmitas.* 19 *Iccirco ſic ait Dominus; Si abieris, reducam te, ſtabiſque coram facie mea; & ſi eduxeris honeſtum à vili, eris tanquam os meum; & iſti revertentur ad te, non tu reverteris ad eos:* 20 *Dabóque te huic populo velut murum æneum munitum; ut pugnantes non prævaleant tibi; quoniam adero tibi ut ſervem te,* 21 *Et eruam te de manu ſceleſtorum, eripiámque te de manu corruptorum.*

CAP. XVI.

1 2 *Tu autem ne ducas uxorem, dicit Dominus Deus Iſraelis, neque ſit tibi filius aut filia hoc in loco:* 3 *Quia ſic ait Dominus de filiis & filiabus in iſto loco gignendis, déque matribus eorum quæ pariture ſunt eos, & de patribus eorum qui genituri ſunt eos in hac regione:* 4 *Diâ morte morientur, non plangentur, neque ſepelientur, ſed erunt publicè expoſiti ſuper faciem terræ: gladio corruent, & fame interibunt, erúntque cadavera eorum cibo volatilibus cœli & beſtiis terræ.* 5 *Sic ait Dominus, Ne ingrediaris in cœtum eorum, neque abeas ad plangendum & lugendum eos: quoniam abſtuli pacem meam ab hoc populo.* 6 *Non plangent eos, neque facient diſſectiones eorum, neque vellent pro eis pilos,* 7 *Neque frangetur panis in exequiis eorum in conſolationem pro mortuo, neque potandum præbebunt eis calicem in conſolationem pro patre ſuo aut matre ſuâ.*

,comedendum ad , eis *aſſidendum ad* ,ingrediaris non convivii domum Et
8 וּבֵית־מִשְׁתֶּה לֹא־תָבוֹא לָשֶׁבֶת אוֹתָם לֶאֱכֹל
: Iſrael Deus exercituum Dominus dixit ſic Nam .bibendũ ad &
9 וְלִשְׁתּוֹת׃ כִּי כֹה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל
,veſtris dieb⁹ in &,veſtris oculis in iſto loco de *faciens* ceſſare ego Ecce
הִנְנִי מַשְׁבִּית מִן־הַמָּקוֹם הַזֶּה לְעֵינֵיכֶם וּבִימֵיכֶם
,erit Et .ſponſæ vocem & ſponſi vocem ,lætitiæ vocem & gaudii vocem
10 קוֹל שָׂשׂוֹן וְקוֹל שִׂמְחָה קוֹל חָתָן וְקוֹל כַּלָּה׃ וְהָיָה
dixerint & , hæc verba omnia huic populo annuntiaveris cùm
כִּי תַגִּיד לָעָם הַזֶּה אֵת כָּל־הַדְּבָרִים הָאֵלֶּה וְאָמְרוּ
malum omne nos ſuper Dominus eſt locutus quid Propter *: te ad*
אֵלֶיךָ עַל־מֶה דִבֶּר יְהוָה עָלֵינוּ אֵת כָּל־הָרָעָה
quod ,noſtrũ peccatũ quod & ,noſtra iniquitas quæ & , hoc grande
הַגְּדוֹלָה הַזֹּאת וּמֶה עֲוֺנֵנוּ וּמֶה חַטָּאתֵנוּ אֲשֶׁר
quod Propterea : eos ad dices Et ? noſtro Deo Domino peccavimus
11 חָטָאנוּ לַיהוָה אֱלֹהֵינוּ׃ וְאָמַרְתָּ אֲלֵיהֶם עַל־אֲשֶׁר־
Deos poſt abierunt & ,Dominus ait , me veſtri patres dereliquerũt
עָזְבוּ אֲבוֹתֵיכֶם אוֹתִי נְאֻם־יְהוָה וַיֵּלְכוּ אַחֲרֵי אֱלֹהִים
,dereliquerunt me & : eis ſe incurvaverũt &,eis ſervierunt & ,alienos
אֲחֵרִים וַיַּעַבְדוּם וַיִּשְׁתַּחֲווּ לָהֶם וְאֹתִי עָזָבוּ
faciendo *maleſeciſtis* vos Et .cuſtodierunt non meam legem &
12 וְאֶת־תּוֹרָתִי לֹא שָׁמָרוּ׃ וְאַתֶּם הֲרֵעֹתֶם לַעֲשׂוֹת
ſui cordis *obſtinationem* poſt unuſquiſq; *euntes* vos ecce & *:veſtris patribus præ*
מֵאֲבוֹתֵיכֶם וְהִנְּכֶם הֹלְכִים אִישׁ אַחֲרֵי שְׁרִרוּת לִבּוֹ־
terra *deſuper* vos *protelabo* Et *.me ad audire non pro* , mali
13 הָרָע לְבִלְתִּי שְׁמֹעַ אֵלָי׃ וְהֵטַלְתִּי אֶתְכֶם מֵעַל הָאָרֶץ
: veſtri patres & ,vos cognoviſtis non quam terram *ſuper* hac
הַזֹּאת עַל־הָאָרֶץ אֲשֶׁר לֹא יְדַעְתֶּם אַתֶּם וַאֲבוֹתֵיכֶם
non quia ,nocte ac die alienis diis ibi ſervietis &
וַעֲבַדְתֶּם־שָׁם אֶת־אֱלֹהִים אֲחֵרִים יוֹמָם וָלַיְלָה אֲשֶׁר לֹא־
,Domin⁹ dixit ,*venientes* dies ecce Propterea .miſericordiã vobis dabo
14 אֶתֵּן לָכֶם חֲנִינָה׃ לָכֵן הִנֵּה־יָמִים בָּאִים נְאֻם־יְהוָה
Iſrael filios fecit aſcẽdere qui ,Dominus *Vivens* :ultrà dicetur non &
וְלֹא־יֵאָמֵר עוֹד חַי־יְהוָה אֲשֶׁר הֶעֱלָה אֶת־בְּנֵי יִשְׂרָאֵל
fecit aſcendere qui Dominus *vivens Quinimo* .Ægypti terra è
15 מֵאֶרֶץ מִצְרָיִם׃ כִּי אִם־חַי־יְהוָה אֲשֶׁר הֶעֱלָה אֶת־
quas terris univerſis de & ,Aquilonis terra de Iſrael filios
בְּנֵי יִשְׂרָאֵל מֵאֶרֶץ צָפוֹן וּמִכֹּל הָאֲרָצוֹת אֲשֶׁר
dedi quam ,ſuã *humum ſuper* eos faciã reducere & *:illuc* eos fecit expellere
הִדִּיחָם שָׁמָּה וַהֲשִׁבֹתִים עַל־אַדְמָתָם אֲשֶׁר נָתַתִּי
,Dominus dixit ,multos piſcatores ad *mittens* ego Ecce .eorum patribus
16 לַאֲבוֹתָם׃ הִנְנִי שֹׁלֵחַ לְדַוָּגִים רַבִּים נְאֻם־יְהוָה
eos venabũtur &,venatores multos ad mittam ea poſt & :eos piſcabũtur&
וְדִיגוּם וְאַחֲרֵי־כֵן אֶשְׁלַח לְרַבִּים צַיָּדִים וְצָדוּם
.petrarum *foraminibus* de & ,colle omni *deſuper* & ,monte omni *deſuper*
מֵעַל כָּל־הַר וּמֵעַל כָּל־גִּבְעָה וּמִנְּקִיקֵי הַסְּלָעִים׃
:meis facieb⁹ à ſunt occultatæ non ;eorum vias omnes ſuper mei oculi Quia
17 כִּי עֵינַי עַל־כָּל־דַּרְכֵיהֶם לֹא נִסְתְּרוּ מִלְּפָנָי
.meorum oculorum conſpectu à eorum iniquitas eſt abſcondita neque
וְלֹא־נִצְפַּן עֲוֺנָם מִנֶּגֶד עֵינָי׃
eos polluere ſuper eorũ *peccati* & ,eorũ *iniquitatis duplum initio* reddam Et
18 וְשִׁלַּמְתִּי רִאשׁוֹנָה מִשְׁנֵה עֲוֺנָם וְחַטָּאתָם עַל חַלְּלָם
ſuis abominationibus & ,ſuarũ abominationũ *cadavere* in meã terram
אֶת־אַרְצִי בְּנִבְלַת שִׁקּוּצֵיהֶם וְתוֹעֲבוֹתֵיהֶם
,meum robur & ,mea fortitudo Domine .meã hæreditatem impleverunt
19 מָלְאוּ אֶת־נַחֲלָתִי׃ יְהוָה עֻזִּי וּמָעֻזִּי
, terræ *finibus à* venient gentes te ad *: anguſtiæ* die in meũ refugiũ &
וּמְנוּסִי בְּיוֹם צָרָה אֵלֶיךָ גּוֹיִם יָבֹאוּ מֵאַפְסֵי־אָרֶץ
eis in non & ,vanitatẽ ;noſtri patres poſſederunt *falſitatem* Verè :dicent &
וְיֹאמְרוּ אַךְ־שֶׁקֶר נָחֲלוּ אֲבוֹתֵינוּ הֶבֶל וְאֵין־בָּם
? Dii non ipſi & , Deos homo ſibi faciet Nũquid *.faciens profectũ*
20 מוֹעִיל׃ הֲיַעֲשֶׂה־לּוֹ אָדָם אֱלֹהִים וְהֵמָּה לֹא אֱלֹהִים׃

Verſio VULG. LAT.

8 Et domum convivii non ingrediaris, ut ſedeas cum eis, &
9 comedas & bibas: Quia hæc
dicit Dominus exercituum Deus
Iſrael; Ecce ego auferam de
loco iſto in oculis veſtris, &
in diebus veſtris, vocem gaudii, & vocem lætitiæ, vocem
10 ſponſi, & vocem ſponſæ. Et
cùm annuntiaveris populo huic
omnia verba hæc, & dixerint tibi; Quarè locutus eſt Dominus
ſuper nos omne malum grande
iſtud? quæ iniquitas noſtra: &
quod peccatum noſtrum, quod
peccavimus Domino Deo noſtro?
11 Dices ad eos; Quia dereliquerunt me patres veſtri, ait
Dominus: & abierunt poſt deos
alienos, & ſervierunt eis, & adoraverunt eos: & me dereliquerunt, & legem meam non
12 cuſtodierunt. Sed & vos pejus
operati eſtis,quàm patres veſtri:
ecce enim ambulat unuſquiſque
poſt pravitatem cordis ſui mali,
13 ut me non audiat. Et ejiciam
vos de terra hac, in terram,quam
ignoratis vos, & patres veſtri:
& ſervietis ibi diis alienis die
ac nocte, qui non dabunt vobis
14 requiem. Propterea ecce dies
veniunt, dicit Dominus, & non
dicetur ultrà; Vivit Dominus,
qui eduxit filios Iſrael de terra
15 Ægypti: Sed, Vivit Dominus,
qui eduxit filios Iſrael de terra
Aquilonis, & de univerſis terris,
ad quas ejeci eos: & reducam
eos in terram ſuam, quam dedi
16 patribus eorum. Ecce ego mittam piſcatores multos,dicit Dominus, & piſcabuntur eos: &
poſt hæc mittam eis multos venatores, & venabuntur eos de omni monte, & de omni colle, &
17 de cavernis petrarum. Quia oculi mei ſuper omnes vias eorum: non ſunt abſconditæ à facie mea, & non fuit occultata
iniquitas eorum ab oculis meis.
18 Et reddam primùm duplices iniquitates, & peccata eorum:quia
contaminaverunt terram meam
in morticinis idolorum ſuorum,
& abominationibus ſuis imple-
19 verunt hæreditatem meam. Domine, fortitudo mea, & robur
meum, & refugium meum in die
tribulationis: ad te Gentes venient ab extremis terræ, & dicent; Verè mendacium poſſederunt patres noſtri, vanitatem,
20 quæ eis non profuit. Numquid
faciet ſibi homo deos, & ipſi
non ſunt Dii?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

8 Εἰς οἰκίαν πότου οὐκ εἰσελεύσῃ σύ, (ι)
συγκαθίσαι μετ' αὐτῶν τοῦ φαγεῖν καὶ πιεῖν.
9 Διότι τάδε λέγει κύριος ὁ θεὸς
Ἰσραήλ, Ἰδοὺ ἐγὼ καταλύω ἐκ τοῦ τόπου
τούτου ἐνώπιον τῶν ὀφθαλμῶν ὑμῶν, (κ)
καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις ὑμῶν, φωνὴν χαρᾶς, καὶ
φωνὴν εὐφροσύνης, φωνὴν νυμφίου, καὶ
10 φωνὴν νύμφης. Καὶ ἔσται ὅταν ἀναγγείλῃς
τῷ λαῷ (λ) τούτῳ ἅπαντα τὰ ῥήματα ταῦτα,
καὶ εἴπωσι πρὸς σέ, Διατί ἐλάλησε
κύριος ἐφ' ἡμᾶς πάντα τὰ κακὰ ταῦτα;
τίς ἡ ἀδικία ἡμῶν; καὶ τίς ἡ ἁμαρτία
ἡμῶν, ἣν ἡμάρτομεν (μ) ἔναντι κυρίου τοῦ
11 θεοῦ ἡμῶν; Καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτούς, Ἀνθ'
ὧν ἐγκατέλιπόν με οἱ πατέρες (ν) ὑμῶν,
λέγει κύριος, καὶ ᾤχοντο ὀπίσω
θεῶν ἀλλοτρίων, καὶ ἐδούλευσαν αὐτοῖς,
(ξ) καὶ προσεκύνησαν αὐτοῖς, καὶ ἐμὲ ἐγκατέλιπον,
καὶ τὸν νόμον μου οὐκ ἐφύλαξαντο·
12 Καὶ ὑμεῖς ἐπονηρεύσασθε ὑπὲρ τοὺς
πατέρας ὑμῶν· καὶ ἰδοὺ ὑμεῖς πορεύεσθε
ἕκαστος ὀπίσω τῶν (ο) ἀρεστῶν τῆς καρδίας
ὑμῶν τῆς πονηρᾶς, τοῦ μὴ ὑπακούειν μου.
13 Καὶ ἀπορρίψω ὑμᾶς ἀπὸ τῆς γῆς ταύτης,
εἰς τὴν γῆν ἣν οὐκ ᾔδειτε ὑμεῖς καὶ οἱ πατέρες
ὑμῶν, καὶ δουλεύσετε (π) ἐκεῖ θεοῖς
ἑτέροις, οἳ οὐ δώσουσιν ὑμῖν ἔλεος.
14 Διατοῦτο ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, λέγει κύριος,
καὶ οὐκ ἐροῦσιν ἔτι, Ζῇ κύριος, ὁ
ἀναγαγὼν τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ ἐκ γῆς Αἰγύπτου,
15 Ἀλλά, Ζῇ κύριος, ὃς ἀνήγαγε τὸν
οἶκον Ἰσραὴλ ἀπὸ γῆς Βοῤῥᾶ, καὶ ἀπὸ
πασῶν τῶν χωρῶν οὗ ἐξώσθησαν ἐκεῖ. καὶ
ἀποκαταστήσω αὐτοὺς εἰς τὴν γῆν αὐτῶν,
16 ἣν ἔδωκα τοῖς πατράσιν αὐτῶν. Ἰδοὺ ἐγὼ
ἀποστέλλω τοὺς ἁλιεῖς τοὺς πολλούς, λέγει
κύριος, καὶ ἁλιεύσουσιν αὐτούς· καὶ μετὰ
ταῦτα (ρ) ἀποστελῶ τοὺς (σ) πολλοὺς θηρευτάς,
καὶ θηρεύσουσιν αὐτοὺς ἐπάνω παντὸς
ὄρους, καὶ ἐπάνω παντὸς (τ) βουνοῦ, καὶ
17 ἐκ τῶν τρυμαλιῶν τῶν πετρῶν. Ὅτι οἱ
ὀφθαλμοί μου ἐπὶ πάσας τὰς ὁδοὺς αὐτῶν,
καὶ οὐκ ἐκρύβη τὰ ἀδικήματα αὐτῶν ἀπέναντι
18 τῶν ὀφθαλμῶν μου. Καὶ ἀνταποδώσω
διπλᾶς τὰς (υ) κακίας αὐτῶν, καὶ
τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν, ἐφ' αἷς ἐβεβήλωσαν
τὴν γῆν μου ἐν τοῖς θνησιμαίοις τῶν
βδελυγμάτων αὐτῶν, καὶ ἐν ταῖς ἀνομίαις
αὐτῶν, ἐν αἷς ἐπλημμέλησαν τὴν κληρονομίαν
19 μου. Κύριε (φ) σὺ ἰσχύς μου, καὶ βοήθειά
μου, καὶ καταφυγή μου ἐν ἡμέραις κακῶν·
πρὸς σὲ ἔθνη ἥξουσιν ἀπ' ἐσχάτου τῆς γῆς,
καὶ ἐροῦσιν, Ὡς ψευδῆ ἐκτήσαντο οἱ πατέρες
ἡμῶν εἴδωλα, καὶ οὐκ ἔστιν ἐν αὐτοῖς ὠφέλημα;
20 Εἰ ποιήσει ἑαυτῷ ἄνθρωπος θεούς,
καὶ οὗτοι οὐκ εἰσὶ θεοί.

In domum convivii non ingredieris tu, ut ſedeas cum eis ad 8
comedendum, & bibendum.
Quia hæc dicit Dominus Deus 9
Iſrael; Ecce ego abire facio de
loco iſto coram oculis veſtris, &
in diebus veſtris, vocem gaudii,
& vocem lætitiæ, vocem ſponſi, & vocem ſponſæ. Et erit, 10
cùm annuntiaveris populo huic
omnia verba hæc, & dixerint
ad te, Quarè loquutus eſt Dominus ſuper nos omnia mala iſta?
quæ iniquitas noſtra, & quod
peccatum noſtrum, quod peccavimus coram Domino Deo noſtro? Et dices ad eos, Pro eo, 11
quòd dereliquerunt me patres
veſtri, dicit Dominus, & abierunt poſt deos alienos, & ſervierunt eis, & adoraverunt eos,
& me dereliquerunt, & legem
meam non cuſtodierunt: Et vos 12
malè egiſtis ſuper patres veſtros.
Et ecce vos ambulatis unuſquiſque poſt placita cordis veſtri
peſſimi, ad non obediendum mihi. Et abjiciam vos de terra 13
hac in terram, quam non noviſtis vos, & patres veſtri: &
ſervietis ibi diis (d) aliis, qui
non dabunt vobis miſericordiam.
Propterea ecce dies veniunt, di- 14
cit Dominus: & non dicent ultrà; Vivit Dominus, qui eduxit
filios Iſrael de terra Ægypti:
Sed, Vivit Dominus, qui eduxit 15
domum Iſrael de terra Aquilonis, & de univerſis regionibus,
quò expulſi ſunt illuc. Et reſtituam eos in terram ſuam,
quam dedi patribus eorum. Ecce 16
ego mitto piſcatores multos, dicit
Dominus; & piſcabuntur eos:
& poſt hæc mitto multos venatores; & venabuntur eos deſuper
omni monte, et deſuper omni
colle, et de cavernis petrarum:
Quia oculi mei ſuper omnes 17
vias (e) eorum: et non ſunt
abſconditæ iniquitates eorum ab
oculis meis. Et reddam dupli- 18
ces malitias eorum, et peccata
eorum, in quibus contaminaverunt terram meam in morticinis abominationum ſuarum,
et in ſuis iniquitatibus, in quibus (f) delinquere fecerunt hæreditatem meam. Domine, tu 19
fortitudo mea, et auxilium meum, et refugium meum in diebus
malorum. Ad te gentes venient
ab extremo terræ, et dicent;
Quàm falſa poſſederunt patres
noſtri idola, et non eſt in eis utilitas? Si faciet ſibi homo de- 20
os, et ipſi non ſunt Dii.

MS.A. (ι) τοῦ καθεῖσαι (κ) ἐν ταῖς (λ) πάντα τὰ (μ) ἐναντίον
(ν) αὐτῶν, (ξ) καὶ ἐμὲ ἐγκατέλειπον (ο) ἐραστῶν (π) θεοῖς (ρ) ἀποστελῶ (σ)
σοφοὺς θηρευτάς, (τ) βουνοῦ ὑψηλοῦ, (υ) ἀδικίας (φ) ἰσχύς μου,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

8 וּבֵית אַסְחָרוּתָא לָא תֵיעוּל לְאַסְחָרָא עִמְּהוֹן לְמֵיכַל וּלְמִשְׁתֵּי׃ אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת
9 אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל הָא אֲנָא מְבַטֵּל מִן אַתְרָא הָדֵין לְעֵינֵיכוֹן וּבְיוֹמֵיכוֹן קָל בְּיָע וְקָל חֶדְוָא
10 קָל חַתְנִין וְקָל כַּלָּן׃ וִיהֵי אֲרֵי תְחַוֵּי לְעַמָּא הָדֵין יָת כָּל פִּתְגָּמַיָּא הָאִלֵּין וְיֵימְרוּן לָךְ עַל מַה
גְּזַר יְיָ עֲלָנָא יָת כָּל בִּישְׁתָא רַבְּתָא הָדָא וּמָה חוֹבָנָא וּמָה סוֹרְחָנָנָא דְּחַבְנָא קֳדָם יְיָ
11 אֱלָהָנָא׃ וְתֵימַר לְהוֹן עַל דִּשְׁבַקוּ אֲבָהָתְכוֹן פּוּלְחָנִי אֲמַר יְיָ וּטְעוֹ בָתַר טַעֲוַת עַמְמַיָּא
12 וּפְלַחוּנוּן וּסְגִידוּ לְהוֹן וּפוּלְחָנִי שְׁבַקוּ וְיָת אוֹרָיְתִי לָא נְטַרוּ׃ וְאַתּוּן אַבְאֶשְׁתּוּן לְמֶעְבַּד
מֵאֲבָהָתְכוֹן וְהָא אַתּוּן אָזְלִין גְּבַר בָּתַר הִרְהוּר לִבֵּיהּ בִּישָׁא בְּדִיל דְּלָא לְקַבָּלָא לְמֵימְרִי׃
13 וְאֲטַלְטֵל יָתְכוֹן מֵעַל אַרְעָא הָדָא לְאַרְעָא דְּלָא יְדַעְתּוּן אַתּוּן וַאֲבָהָתְכוֹן וְתִפְלְחוּן תַּמָּן
14 לְעַמְמַיָּא פָּלְחֵי טַעֲוָתָא יֵימָם וְלֵילֵי דְּלָא יְהֵי לְכוֹן רַחֲמִין׃ בְּכֵן הָא יוֹמַיָּא אָתַן אֲמַר יְיָ
15 וְלָא יְהוֹן מִשְׁתַּעַן עוֹד בִּגְבוּרְתָּא דַיְיָ דְּאַסֵּיק יָת בְּנֵי יִשְׂרָאֵל מֵאַרְעָא דְמִצְרָיִם׃ אֱלָהֵן יְהוֹן
מִשְׁתַּעַן בִּגְבוּרְתָּא דַיְיָ דְּאַסֵּיק יָת בְּנֵי יִשְׂרָאֵל מֵאֲרַע צִפּוּנָא וּמִכָּל מְדִינָתָא דְּאַגְלֵינוּן לְתַמָּן
16 וְאָתִיבִנּוּן לְאַרְעֲהוֹן דִּיהָבִית לַאֲבָהָתְהוֹן׃ הָא אֲנָא שָׁלַח לְעַמְמִין קָטוֹלִין אֲמַר יְיָ
וְיִקְטְלוּנוּן וּבָתַר כֵּן אֶשְׁלַח לְסַנְאִין צַיָּדִין וִיצַדוּנוּן מֵעַל כָּל טוּר וּמֵעַל כָּל רָמְתָא
17 וּמִשְּׁקִיפֵי כֵיפַיָּא׃ אֲרֵי קֳדָמַי גְּלַן כָּל אוֹרְחָתְהוֹן לָא מִסְתַּתְּרָן מִן קֳדָמַי וְלָא מִטַּמְּרָן חוֹבֵיהוֹן
18 מִלְּקֳבֵל מֵימְרִי׃ וַאֲשַׁלֵּם לְתִנְיָנִין כְּקַדְמָאִין עַל חַד תְּרֵין חוֹבֵיהוֹן וְחַטָּאֵיהוֹן עַל דְּאַחִילוּ
19 יָת אֲרַע בֵּית שְׁכִנְתִּי בְּנִבְלַת שִׁקּוּצֵיהוֹן וְתוֹעֲבָתְהוֹן מְלוֹ יָת אַחְסַנְתִּי׃ יְיָ תּוּקְפִּי וְרְחַצְנִי
וּמְשֵׁיזְבִי בְּעִדָּן עָקָא לִשְׁמַע גְּבוּרְתָךְ עַמְמִין יֵיתוֹן מִסְּיָפֵי אַרְעָא וְיֵימְרוּן בְּרַם לְשִׁקְרָא פְלַחוּ
20 אֲבָהָתָנָא לִלְמָא וְלֵית בְּהוֹן הֲנָאָה׃ הַאֶפְשַׁר דְּיַעְבֵּד לֵיהּ אֱנָשׁ דַּחֲלָן וְאִנּוּן טַעֲוָן דְּלֵית
בְּהוֹן צְרוֹךְ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et domum convivii non ingrediaris ut diſcumbas cum eis ad comedendum 8
& ad bibendum. Quia hæc dicit Dñs exercituum,Deus Iſrael: Ecce ego 9
ceſſare faciam de loco iſto in oculis veſtris & in diebus veſtris vocem gaudii
& vocem lætitiæ, vocem ſponſorum & vocem ſponſarum. Erítque ſi 10
annuntiaveris populo huic omnia verba hæc, & dixerint tibi; Quare decrevit
Dñs ſuper nos omne malum grande hoc? & quod eſt peccatum noſtrum,
& quæ eſt iniquitas noſtra quam commiſimus coram Dño Deo noſtro?
Et dices ad eos: Pro eo quòd dereliquerunt patres veſtri cultum 11
meum,dicit Dñs; & erraverunt poſt idola populorum, & ſervierunt eis,&
adoraverunt ea, & cultum meum dereliquerunt, & legem meam non cuſtodierũt.
Et vos pej⁹ operati eſtis quàm patres veſtri: & ecce ipſi ambu- 12
latis unuſquiſq; poſt cogitationem cordis ſui mali, ut non obediatis verbo
meo. Et tranſmigrare vos faciam de terra hac in terram quam non cogno- 13
viſtis vos & patres veſtri, & ſervietis ibi populis colentibus idola die ac
nocte,qui non erũt vobis miſericordes. Propterea ecce dies venient, dicit 14
Dñs,& non erũt ultrà narrantes potentiã Dñi,qui aſcendere fecit filios Iſrael
de terra Ægypti.Sed erũt narrantes potentiã Dñi,qui aſcendere fecit 15
filios Iſrael de terra Aquilonis, & de omnibus provinciis ad quas tranſmigrare
eos feci:& reducam eos in terram ſuam, quam dedi patrib⁹ *veſtris*.
Ecce ego mandabo populis occiſorib⁹, dicit Dñs, ut occidant eos:& poſt- 16
hæc mandabo multis venatorib⁹ ut venẽtur eos ab omni monte,& ab omni
colle,& de cavernis petrarũ. Quia corã me notæ ſunt omnes viæ eorũ,non 17
ſunt opertæ à facie mea;nec ſũt abſcondita peccata eorũ à conſpectu Verbi
mei. Et reddã ſecundis ſicut & primis *duplices* iniquitates eorũ,& pec- 18
cata eorũ: quia violaverunt terrã dom⁹ majeſtatis meæ;& cadaverib⁹ immunditiarum
ſuarũ, & abominationib⁹ ſuis impleverunt hæreditatẽ meam.
Dñs robur meũ,fiducia mea, & liberator me⁹ in tempore anguſtiæ. Ad famam 19
potentiæ tuæ populi venientã finib⁹ terræ, & dicent: Veruntamen mendacium
coluerũt patres noſtri, & vanitatẽ, quæ eis non profuit. Nunquid *fieri* 20
poteſt ut faciat homo ſibi deos? & ipſi ſunt idola in quib⁹ non eſt utilitas.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

8 * ܘܠܒܝܬ ܡܫܬܝܐ ܠܐ ܬܥܘܠ ܠܡܬܒ ܥܡܗܘܢ ܠܡܐܟܠ ܘܠܡܫܬܐ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ
9 ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܗܐ ܡܒܛܠ ܐܢܐ ܡܢ ܐܬܪܐ ܗܢܐ ܩܕܡܝܟܘܢ ܘܒܝܘܡܝܟܘܢ.
10 ܩܠܐ ܕܚܕܘܬܐ ܘܩܠܐ ܕܒܣܝܡܘܬܐ. ܩܠܐ ܕܚܬܢܐ. ܘܩܠܐ ܕܟܠܬܐ. * ܘܡܐ ܕܬܚܘܐ ܠܥܡܐ ܗܢܐ ܐܢܘܢ ܠܟܠܗܘܢ
ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ. ܢܐܡܪܘܢ ܠܟ. ܡܛܠ ܡܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܥܠܝܢ ܒܝܫܬܐ ܗܕܐ
11 ܪܒܬܐ. ܡܢܐ ܚܛܝܢ. ܘܡܢܐ ܗܝ ܣܟܠܘܬܢ ܕܣܟܠܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. * ܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܡܛܠ
ܕܫܒܩܘܢܝ ܐܒܗܝܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܙܠܘ ܒܬܪ ܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ. ܘܦܠܚܘ ܐܢܘܢ ܘܣܓܕܘ
12 ܠܗܘܢ. ܘܠܝ ܫܒܩܘ ܘܢܡܘܣܝ ܠܐ ܢܛܪܘ. * ܘܐܦ ܐܢܬܘܢ ܐܒܐܫܬܘܢ ܠܡܥܒܕ. ܝܬܝܪ ܡܢ
ܐܒܗܝܟܘܢ. ܘܗܐ ܐܢܬܘܢ ܐܙܠܝܢ ܐܢܫ ܒܬܪ ܪܓܝܓܬܐ ܕܠܒܗ ܒܝܫܐ ܕܠܐ ܠܡܫܬܡܥܘ ܠܝ.
13 * ܘܐܫܕܝܟܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܗܕܐ. ܠܐܪܥܐ ܕܠܐ ܝܕܥܬܘܢ ܐܢܬܘܢ ܘܐܒܗܝܟܘܢ. ܘܬܦܠܚܘܢ ܬܡܢ
14 ܠܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ ܒܐܝܡܡܐ ܘܒܠܠܝܐ. ܘܠܐ ܐܬܠ ܠܟܘܢ ܚܢܢܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܢܬܐܡܪ ܬܘܒ ܚܝ ܗܘ ܡܪܝܐ ܕܐܣܩ ܠܒܢܝܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ.
15 * ܐܠܐ ܚܝ ܗܘ ܡܪܝܐ. ܕܐܦܩ. ܘܐܝܬܝ ܠܒܢܝܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܓܪܒܝܐ. ܘܡܢ ܟܠ
16 ܐܬܪܘܬܐ ܕܐܕܚܬ ܐܢܘܢ ܠܬܡܢ. ܘܐܗܦܟ ܐܢܘܢ ܠܐܪܥܗܘܢ ܕܝܗܒܬ ܠܐܒܗܝܗܘܢ. * ܗܐ ܡܫܕܪ
ܐܢܐ ܨܝܕܐ ܣܓܝܐܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܢܨܘܕܘܢ ܐܢܘܢ. ܘܡܢ ܒܬܪܟܢ ܐܫܕܪ ܨܝܕܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܢܨܘܕܘܢ ܐܢܘܢ.
17 ܡܢ ܟܠ ܛܘܪ. ܘܡܢ ܟܠ ܪܡܐ. ܘܡܢ ܢܩܥܐ ܕܫܘܥܐ. * ܡܛܠ ܕܥܝܢܝ. ܥܠ ܟܠܗܘܢ
18 ܐܘܪܚܬܗܘܢ. ܘܠܐ ܛܫܝܢ ܡܢ ܩܕܡܝ. ܘܠܐ ܡܬܛܫܝܐ ܥܘܠܗܘܢ ܡܢ ܩܕܡ ܥܝܢܝ. * ܘܐܦܪܘܥ ܐܢܘܢ
ܩܕܡܝܬ ܚܕ ܬܪܝܢ ܚܘܒܝܗܘܢ ܘܚܛܗܝܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܛܡܐܘ ܐܪܥܝ ܒܕܒܚܝ ܦܬܟܪܝܗܘܢ.
19 ܘܒܛܢܦܘܬܗܘܢ ܡܠܘ ܝܪܬܘܬܝ. * ܡܪܝܐ ܚܝܠܝ ܘܡܥܕܪܢܝ. ܘܓܘܣܝ ܒܝܘܡ ܐܘܠܨܢܐ
ܠܘܬܟ ܢܐܬܘܢ ܥܡܡܐ ܡܢ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܘܢܐܡܪܘܢ. ܫܪܝܪܐܝܬ ܦܬܟܪܐ
20 ܕܓܠܐ ܕܐܘܪܬܘ ܐܒܗܝܢ. ܠܐ ܡܕܡ ܐܢܘܢ. ܘܠܝܬ ܒܗܘܢ ܝܘܬܪܢܐ. * ܗܐ ܒܢܝܢܫܐ ܥܒܕܝܢ
ܠܗܘܢ ܐܠܗܐ. ܘܗܢܘܢ ܠܐ ܗܘܘ ܐܠܗܐ.

Denique domum convivii ne ingrediaris ut
ſedeas cum eis ad edendum & bibendum.
Nam ſic ait Dn̄s Deus Iſraelis, Ecce facturus 9
ſum ut ceſſet è loco iſto coram vobis, & in diebus
veſtris, vox exultationis & vox lætitiæ,
vox ſponſi & vox ſponſæ. Quòd ſi indicanti 10
tibi huic populo omnes ſermones iſtos, dixerint,
Qua de cauſa pronuntiavit Dn̄s contra
nos malum hoc maximum ? quam culpam
commiſimus, aut quod crimen perpetravimus
in Dn̄m Deum noſtrum ? Reſponde illis, Quia 11
derelinquentes me patres veſtri ſecuti ſunt deos
alienos, coluerūt et adoraverūt eos, me autē
deſeruerunt, & legem meam non ſervaverunt:
Vos etiam multò pejùs feciſtis quàm patres 12
veſtri, & ecce ſectamini quiſq; libidines pravi
cordis veſtri, ita ut non acquieſcatis mihi :
Ideo ejecturus ſum vos è terra iſta, in terram 13
quam ignorâſtis vos & patres veſtri, ibique
coletis deos alienos die nocteque, nec reddam
vos clementiâ dignos. Propterea ecce dies 14
venturi ſunt, inquit Dn̄s, quibus non dicetur
ampliùs, Per Dominum vivum qui extraxit
Iſraelitas è terra Ægypti : Sed, Per Dominum 15
vivum qui extracturus & reducturus eſt
Iſraelitas è terra Aquilonari, vel è quibuſcunque
locis quò depulerim eos: reducturus enim
ſum eos in terram ipſorum quam dederam patribus
eorum. Ecce miſſurus ſum piſcatores 16
multos, dicit Dominus, & piſcabuntur eos: &
poſtmodum miſſurus ſum venatores multos,
& venabuntur eos ex omni monte, & ex omni
colle, & à latibulis petrarum : Quia 17
oculi mei ad omnes vias eorum *advertunt*,
nec abſconduntur à me, nec latet iniquitas
eorum oculos meos. Et rependam eis priùs 18
duplicata ſcelera, & peccata eorum, eò quòd
contaminaverint terram meam ſacrificiis
idolorum ſuorum, & ſpurcitiâ ſuâ impleverint
hæreditatem meam. Domine robur meum 19
& auxiliator meus, & perfugium meum
in die calamitatis, ad te gentes accedent è
finibus terræ, dicentque, Reverà idola falſa
quæ hæreditaria reliquerunt nobis patres noſtri,
nihil ſunt, & nulla eſt in eis utilitas. En 20
mortales faciunt ſibi deos, qui tamen non
ſunt Dii :

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

8 9 * إلى بيت الشرب لا تدخل انت فتجلس معهم لتأكل وتشرب * من أجل انه هكذا
يقول الرب اله اسرائيل * ها انا مبطل من هذا الموضع امام أعينكم في ايامكم * صوت
10 الفرح وصوت السرور * وصوت العريس وصوت العروس * ويكون اذا اخبرت الشعب بجميع
هذه الكلمات * فيقولون لك لماذا تكلم علينا الرب بجميع هذه الشرور * ما هو ظلمنا
11 وما هي خطيتنا التي اخطانا امام الرب الهنا * فتقول لهم من اجل ان اباءهم اجتنبوني
يقول الرب * وذهبوا خلف الالهة الغريبة وتعبدوا لها * وتركوني ولم يحفظوا ناموسي *
12 * وانتم تساررتم اكثر من ابائكم * وها انتم تمضون كل واحد خلف اهوية قلبه
13 الردي الا تطيعوني * فاطردكم من هذه الارض الى الارض التي لم تعرفوها انتم ولا
14 اباوكم * فتعبدون الهة اخر الذين لا يعطونكم رحمة * لاجل هذا ها ايام تاتي يقول
15 الرب * فلا يقولون ايضا حي الرب الذي اصعد بني اسرائيل من ارض مصر * لكن حي
الرب الذي اصعد بيت اسرائيل من الجربياء ومن جميع الكور حيث اقصيوا هناك *
16 واردهم الى ارضهم التي اعطيتها لابائهم * ها انا ارسل صيادين كثيرين يقول الرب
فيصيدونهم * وبعد هذه ارسل صيادين حكماء فيصطادونهم فوق كل جبل وفوق
17 كل تل عال * ومن اثقبة الصخور * لان عيني على جميع طرقهم * ولم تخف ظلاماتهم
18 امام عيني * واكافيهم بظلاماتهم مضعفة * وبخطاياهم التي دنسوا بها ارضي برمم
19 ردالاتهم وباثامهم التي خطاء بها ميراثي * ايها الرب قوتي ومعونتي وملجاي في ايام الاسواء *
اليك تاتي الامم من اخر الارض * ويقولون حقا اقتنت اباونا الاصنام كذبا * وليس
20 فيهم منفعة * ايصنع الانسان له الهة وليست هي بالهة *

Domum compotationis ne ingrediaris tu, 8
ſedeaſque cum eis ad edendum & bibendum 9
: Quoniam ſic dicit Dominus
Deus Iſraelis, Ecce ego aboliturus ſum
ab hac loco coram oculis veſtris, in
diebus veſtris, vocem lætitiæ & vocem
exultationis, vocem ſponſi & vocem
ſponſæ. Erit autem cùm annuntiaveris 10
huic populo omnia verba iſta, ut dicant
tibi, Quare locutus eſt Dominus contra
nos tanta mala? quænam eſt perverſitas
noſtra, & quod peccatum
noſtrum quod commiſimus coram Domino
Deo noſtro ? Tum dices eis, 11
Quia patres eorum receſſerunt à me,
dicit Dominus, & abierunt poſt deos
alienos, iiſque ſe mancipârunt, me autem
dereliquerunt, & non cuſtodierunt
legem meam : Vos etiam deteriores 12
eſtis patribus veſtris, & ecce ſequimini
quilibet appetitus animi ſui peſſimi, ne
obtemperetis mihi : Iccirco ejiciam vos 13
ex hac terra in regionem quam nec vos
cognoviſtis nec patres veſtri, & ſervietis
diis aliis qui non præbebunt vobis miſericordiam.
Hanc ob rem ecce dies venient, 14
dicit Dominus, quibus non dicent
ampliùs, Vivit Dominus qui eduxit
filios Iſraelis è terra Ægypti : Sed, vivit 15
Dominus qui eduxit domum Iſraelis
ex Aquilone & ex omnibus regionibus
in quas relegati fuerint : reducturus
enim ſum eos ad terram ſuam
quam dedi patribus eorum. Ecce ego 16
mittam venatores multos, ait Dominus,
ut venentur eos : tum poſtea mittam
venatores peritos ut venentur eos ſuper
omnem montem, & ſuper omnem collem
excelſum, & è foraminibus petrarum.
Nam oculi mei intuentur omnes vias 17
eorum, & non deliteſcunt perverſitates
eorum coram oculis meis : Et retribuam 18
eis pro ſceleribus eorum duplum, &
pro peccatis eorum, quibus conſpurcaverunt
terram meam putredinibus abominationum
ſuarum, & pro iniquitatibus
eorum quas perpetravit hæreditas
mea. Eja Domine virtus mea, auxilium 19
& refugiū meū in diebus adverſis, ad te
venient gentes ab extremo terræ, dicentque,
Sanè iniquè poſſederunt idola patres
noſtri, cùm nulla ſit in iis utilitas. Num 20
faceret homo ſibi deos, qui nequaquam
Dii ſunt ?

יִרְמְיָה : יז

eis faciam ſcire , hac vice in eos faciens ſcire ego ecce Idcirco

21 לָכֵן הִנְנִי מוֹדִיעָם בַּפַּעַם הַזֹּאת אוֹדִיעֵם אֶת־ 21

meum nomen quòd ſcient & : meam fortitudinem & ,meam manum

יָדִי וְאֶת־גְּבוּרָתִי וְיָדְעוּ כִּי־שְׁמִי

.Dominus

יְהוָה׃ יז CAP. XVII.

,adamantis ungue in , ferri ſtylo in ſcriptum Jehudah Peccatum

1 חַטַּאת יְהוּדָה כְּתוּבָה בְּעֵט בַּרְזֶל בְּצִפֹּרֶן שָׁמִיר

.eorum ararum cornibus in & ,eorum cordis tabula in ſculptum

חֲרוּשָׁה עַל־לוּחַ לִבָּם וּלְקַרְנוֹת מִזְבְּחוֹתֵיכֶם׃

juxta ſuorum lucorum & ,ſuarum ararum eorum filios recordari Secundùm

2 כִּזְכֹּר בְּנֵיהֶם מִזְבְּחוֹתָם וַאֲשֵׁרֵיהֶם עַל־

agro in Montane .excelſos colles juxta ,frondoſum lignum

3 עֵץ רַעֲנָן עַל גְּבָעוֹת הַגְּבֹהוֹת׃ הֲרָרִי בַּשָּׂדֶה

tua excelſa , dabo direptionem in tuos theſauros omnes tuam facultatem

חֵילְךָ כָל־אוֹצְרוֹתֶיךָ לָבַז אֶתֵּן בָּמֹתֶיךָ

te in & facies remiſſionem Et .tuis confinibus univerſis in peccato in

4 בְּחַטָּאת בְּכָל־גְּבוּלֶיךָ׃ וְשָׁמַטְתָּה וּבְךָ

terra in ,tuis inimicis te faciã ſervire &,tibi dedi quam tua hæreditate ab

מִנַּחֲלָתְךָ אֲשֶׁר נָתַתִּי לָךְ וְהַעֲבַדְתִּיךָ אֶת־אֹיְבֶיךָ בָּאָרֶץ

in uſque ,meo naſo in ſuccendiſtis ignem quoniam : nôſti non quam

אֲשֶׁר לֹא־יָדָעְתָּ כִּי־אֵשׁ קְדַחְתֶּם בְּאַפִּי עַד־

qui vir Maledictus : Dominus dixit Sic .ardebit ſeculum

5 עוֹלָם תּוּקָד׃ כֹּה אָמַר יְהוָה אָרוּר הַגֶּבֶר אֲשֶׁר

recedet Domino à & ,ſuũ brachium carnem ponens & , homine in confidet

יִבְטַח בָּאָדָם וְשָׂם בָּשָׂר זְרֹעוֹ וּמִן־יְהוָה יָסוּר

cùm videbit non & , planitie in juniperus tanquam erit Et .ejus cor

6 לִבּוֹ׃ וְהָיָה כְּעַרְעָר בָּעֲרָבָה וְלֹא יִרְאֶה כִּי־

,ſalſa terra , deſerto in loca exuſta habitabit & , bonum venerit

יָבוֹא טוֹב וְשָׁכַן חֲרֵרִים בַּמִּדְבָּר אֶרֶץ מְלֵחָה

erit & ,Domino in fidet qui vir Benedictus .habitabis non &

7 וְלֹא תֵשֵׁב׃ בָּרוּךְ הַגֶּבֶר אֲשֶׁר יִבְטַח בַּיהוָה וְהָיָה

,aquas ſuper plantatum lignum tanquam erit Et .ejus fiducia Dominus

8 יְהוָה מִבְטַחוֹ׃ וְהָיָה כְּעֵץ שָׁתוּל עַל־מַיִם

, æſtus venerit cùm videbit non & ,ſuas radices mittet rivum ſuper &

וְעַל־יוּבַל יְשַׁלַּח שָׁרָשָׁיו וְלֹא יִרְאֶ כִּי־יָבֹא חֹם

nec ,erit ſolicitum non caritatis anno in & ,viride ejus folium erit &

וְהָיָה עָלֵהוּ רַעֲנָן וּבִשְׁנַת בַּצֹּרֶת לֹא יִדְאָג וְלֹא

anxium & omnibus præ cor Supplantativũ .fructum faciendo à recedet

9 יָמִישׁ מֵעֲשׂוֹת פֶּרִי׃ עָקֹב הַלֵּב מִכֹּל וְאָנֻשׁ

probans , cor ſcrutans Dominus Ego ? illud cognoſcet quis , ipſum

10 הוּא מִי יֵדָעֶנּוּ׃ אֲנִי יְהוָה חֹקֵר לֵב בֹּחֵן

.ſuorũ ſtudiorũ fructũ juxta ,ſuã viã juxta unicuiq; dandum ad & , renes

כְּלָיוֹת וְלָתֵת לְאִישׁ כִּדְרָכָו כִּפְרִי מַעֲלָלָיו׃

: judicio in non & ,opulentiam faciens , peperit non & ,collegit Perdix

11 קֹרֵא דָגַר וְלֹא יָלָד עֹשֶׂה עֹשֶׁר וְלֹא בְמִשְׁפָּט

.inſipiens erit ſuo noviſſimo in & ,eam derelinquet ſuorũ dierũ dimidio in

בַּחֲצִי יָמָו יַעַזְבֶנּוּ וּבְאַחֲרִיתוֹ יִהְיֶה נָבָל׃

.noſtri ſanctuarii locus , principio à altitudo gloriæ Solium

12 כִּסֵּא כָבוֹד מָרוֹם מֵרִאשׁוֹן מְקוֹם מִקְדָּשֵׁנוּ׃

: afficientur pudore te derelinquentes omnes ,Domine Iſrael Expectatio

13 מִקְוֵה יִשְׂרָאֵל יְהוָה כָּל־עֹזְבֶיךָ יֵבֹשׁוּ

aquarum venam dereliquerunt quoniam : ſcribentur terra in mei apoſtatæ

יְסוּרַי בָּאָרֶץ יִכָּתֵבוּ כִּי עָזְבוּ מְקוֹר מַיִם־

,me fac ſalvum : ſanabor & ,Domine me Sana .Dominum viventium

14 חַיִּים אֶת־יְהוָה׃ רְפָאֵנִי יְהוָה וְאֵרָפֵא הוֹשִׁיעֵנִי

.tu mea laus quoniam : ero ſalvus &

וְאִוָּשֵׁעָה כִּי תְהִלָּתִי אָתָּה׃

Verſio VULG. LAT.

21 Idcircò ecce ego oſtendam eis per vicem hanc, oſtendam eis manum meam, & virtutem meam : & ſcient quia nomen mihi Dominus.

CAP. XVII.

1 PEccatum Juda ſcriptum eſt ſtylo ferreo in ungue adamantino, exaratum ſuper latitudinem cordis eorum, & in cornibus 2 ararum eorum. Cùm recordati fuerint filii eorum ararũ ſuarũ, & lucorũ ſuorum, lignorúmque frondentiũ, in montibus excelſis, 3 Sacrificantes in agro : fortitudinem tuam, & omnes theſauros tuos in direptionem dabo, excelſa tua propter peccata in uni- 4 verſis finibus tuis. Et relinquêris ſola ab hæreditate tua, quam dedi tibi : & ſervire te faciam inimicis tuis in terra, quam ignoras : quoniam ignem ſuccendiſti in furore meo, uſque in æternum 5 ardebit. Hæc dicit Dñs ; Maledictus homo, qui confidit in homine, & ponit carnem brachium ſuum, & à Dño recedit cor ejus. 6 Erit enim quaſi myricæ in deſerto, & non videbit cùm venerit bonum : ſed habitabit in ſiccitate in deſerto, in terra ſalſugi- 7 nis, & inhabitabili. Benedictus vir, qui confidit in Dño, & erit 8 Dñs fiducia ejus. Et erit quaſi lignum quod tranſplantatur ſuper aquas, quod ad humorem mittit radices ſuas : & non timebit cùm venerit æſtus. Et erit foliũ ejus viride, & in tempore ſiccitatis non erit ſolicitum, nec aliquando deſinet facere fructũ. 9 Pravum eſt cor omnium, & inſcrutabile : quis cognoſcet illud ? 10 Ego Dñs ſcrutans cor, & probans renes : qui do unicuique juxta viam ſuam, & juxta fructum 11 adinventionum ſuarum. Perdix fovit quæ non peperit : fecit divitias, & non in judicio : in dimidio dierum ſuorũ derelinquet eas, & in noviſſimo ſuo erit in- 12 ſipiens. Solium gloriæ altitudinis à principio, locus ſanctificationis noſtræ. 13 Expectatio Iſrael, Domine : omnes, qui te derelinquunt, confundentur : recedentes à te, in terra ſcribentur : quoniã dereliquerunt venam aquarum 14 viventium, Dñm. Sana me, Dñe, & ſanabor : ſalvum me fac, et ſalvus ero : quoniam laus mea tu es.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

21 Διατοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ δηλώσω αὐτοῖς ἐν τῷ καιρῷ τούτῳ τὴν χεῖρά μου, καὶ γνωριῶ αὐτοῖς τὴν δύναμίν μου, καὶ γνώσονται, ὅτι ὄνομά μοι Κύριος.

ΚΕΦ. ιζʹ.

5 Ἐπικατάρατος ὁ ἄνθρωπος, ὃς τὴν ἐλπίδα ἔχει ἐπ' ἄνθρωπον, καὶ στηρίσει σάρκα βραχίονος αὐτοῦ ἐπ' αὐτὸν, καὶ ἀπὸ κυρίου ἀποστῇ ἡ καρδία αὐτοῦ. 6 Καὶ ἔσται ὡς ἡ ἀγριομυρίκη ἡ ἐν τῇ ἐρήμῳ, (α) οὐκ ὄψεται ὅταν ἔλθῃ τὰ ἀγαθὰ, καὶ κατασκηνώσει ἐν ἁλίμοις, καὶ ἐν (β) ἐρήμῳ, ἐν γῇ ἁλμυρᾷ ἥτις οὐ κατοικεῖται. 7 Καὶ εὐλογημένος ὁ ἄνθρωπος, ὃς πέποιθεν ἐπὶ τῷ κυρίῳ, καὶ ἔσται κύριος ἐλπὶς αὐτοῦ· 8 Καὶ ἔσται ὡς ξύλον εὐθηνοῦν παρ' ὕδατα, καὶ ἐπὶ ἰκμάδα βαλεῖ (γ) ῥίζαν αὐτοῦ· οὐ φοβηθήσεται ὅταν ἔλθῃ καῦμα, καὶ ἔσται (δ) ἐπ' αὐτῷ στελέχη ἀλσώδη, ἐν ἐνιαυτῷ ἀβροχίας οὐ φοβηθήσεται, καὶ οὐ διαλείψει ποιῶν καρπόν. 9 Βαθεῖα ἡ καρδία παρὰ πάντα, καὶ ἄνθρωπός ἐστι, καὶ τίς γνώσεται αὐτόν; 10 Ἐγὼ κύριος ἐτάζων καρδίας, καὶ δοκιμάζων νεφρούς, τοῦ δοῦναι ἑκάστῳ κατὰ τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ, καὶ κατὰ τοὺς καρποὺς τῶν ἐπιτηδευμάτων αὐτοῦ. 11 Ἐφώνησε πέρδιξ, συνήγαγεν ἃ οὐκ ἔτεκε, ποιῶν πλοῦτον αὐτοῦ οὐ μετὰ κρίσεως· ἐν ἡμίσει ἡμερῶν αὐτοῦ ἐγκαταλείψουσιν αὐτὸν, καὶ ἐπ' ἐσχάτων αὐτοῦ ἔσται ἄφρων. 12 Θρόνος δόξης (ε) ὑψωμένος, ἁγίασμα ἡμῶν, 13 Ὑπομονὴ Ἰσραήλ. κύριε, πάντες οἱ καταλιπόντες σε καταισχυνθήτωσαν, ἀφεστηκότες ἐπὶ τῆς γῆς γραφήτωσαν, ὅτι ἐγκατέλιπον πηγὴν ζωῆς, τὸν κύριον. 14 Ἴασαί με κύριε, καὶ ἰαθήσομαι· σῶσόν με, καὶ σωθήσομαι, (ζ) ὅτι καύχημά μου σὺ εἶ.

21 *Idcircò ecce ego oſtendam eis in tempore illo manum meam : & notam faciam eis virtutem meam : & ſcient, quia nomen mihi Dominus.*

CAP. XVII.

5 *MAledictus (a) homo, qui ſpem habet in homine, & firmabit carnem brachii ſui (b) ſuper ſe : & à Domino diſcedet cor ejus.* 6 *Et erit, ſicut (c) myrica ſylveſtris, quæ in deſerto eſt : non videbit, cùm venient bona : & habitabit in (d) ſalſis, & in deſerto, in terra ſalſa, quæ non habitabitur.* 7 *Et benedictus homo, qui fidit in Domino, & erit Dominus ſpes ejus.* 8 *Et erit tanquam lignum fructiferum ſecus aquas, & ad humorem mittet radicem ſuam : non timebit, cùm venerit æſtus : & erunt in eo propagines nemoroſæ : in anno ſiccitatis non timebit : & non deficiet faciens fructum.* 9 *Profundum eſt cor ſuper omnia : & homo eſt, (e) & quis cognoſcet eum?* 10 *Ego Dominus ſcrutans corda, & probans renes, ad dandum unicuique juxta vias ejus, & ſecundùm fructus adinventionum ejus.* 11 *Clamavit perdix, congregavit, quæ non peperit : faciens divitias ſuas non cum judicio : in (f) dimidio dierum ejus relinquent eum, & in noviſſimis ſuis erit inſipiens.* 12 *Solium gloriæ * elevatum, ſanctificatio noſtra,* 13 *Expectatio Iſrael, Domine, omnes qui te dereliquerint, confundantur ; qui receſſerint, in terra ſcribantur : quoniam dereliquerunt fontem vitæ, Dominum.* 14 *Sana me, Domine, & ſanabor : ſalva me, & ſalvabor : quoniam gloriatio mea tu es.*

MS.A. (α) ἢ οὐκ ὄψεται (β) τῇ ἐρήμῳ, (γ) ῥίζας αὐτοῦ· καὶ οὐ (δ) ἐν αὐτῷ (ε) ὑψούμενος, (ζ) καύχημά μου εἶ.

תַּרְגּוּם יוֹנָתָן Targum JONATHAN.

21 בְּכֵן הָא אֲנָא מְחַוֵּי לְהוֹן בְּזִמְנָא הָדָא אֲחַוְּנוּן יָת פּוּרְעָנוּתִי וְיָת מְחַת גְּבוּרְתִּי וְיִדְעוּן אֲרֵי 21
שְׁמִי יְיָ׃

יז

1 חוֹבֵי בֵית יְהוּדָה כְּתִיבִין בְּעֵט דְּבַרְזֶל בְּטֻפַּר שָׁמִיר חֲרִיתִין עַל לוּחַ לִבְּהוֹן וּלְקַרְנָת
2 אֱגוֹרֵיכוֹן׃ כְּאִדְּכָּרָא בְּנֵיהוֹן אֱגוֹרֵיהוֹן וַאֲשֵׁרֵיהוֹן תְּחוֹת כָּל אִילַן עֲבוֹף וְעַל רָמָתָא
3 מְנַטְּלָתָא׃ עַל דִּפְלַחְתּוּן עַל טוּרַיָא בְּחַקְלָא נִכְסֵיכוֹן וְכָל בֵּית גִּנְזֵיכוֹן לְבִזָּא אֶמְסַר בְּחוֹבִין
4 דַּהֲוֵיתוּן פָּלְחִין לְטַעֲוָתָא בְּכָל תְּחוּמֵיכוֹן׃ וְאַיְתֵי סָנְאָה עַל אַרְעֲכוֹן וּתְהֵי צַדְיָא כִּשְׁמִטְּתָא
וּבְכוֹן אַעְבֵּד פּוּרְעֲנוּת דִּינִין עַד דְּאַגְלֵי יַתְכוֹן מֵאַחְסַנְתְּכוֹן דִּיהָבִית לְכוֹן וְתִשְׁתַּעְבְּדוּן
לְבַעֲלֵי דְבָבֵיכוֹן בְּאַרְעָא דְּלָא יְדַעְתּוּן אֲרֵי קְדוֹם תַּקִּיף כְּאִשְּׁתָא נְפַק מִן קֳדָמַי בִּרְגַז עַד
5 עָלְמָא יְחוּל׃ כִּדְנָן אֲמַר יְיָ לִיט גַּבְרָא דְּאִתְרְחֵץ בֶּאֱנָשָׁא וִישַׁוֵּי בִּשְׂרָא רְחָצְנֵיהּ וּמִן מֵימְרָא
6 דַיְיָ יֶעְדֵּי לִבֵּיהּ׃ וִיהֵי כְּעַכּוּבִיתָא בְּמֵישְׁרָא וְלָא יֶחֱזֵי אֲרֵי יֵיתֵי טָבָא וְיִשְׁרֵי דְּלָא וְלָד
7 בְּמַדְבְּרָא בְּאֲרַע סְדוֹם דְּלָא אִתְיַתְּבַת׃ בְּרִיךְ גַּבְרָא דְּאִתְרְחֵיץ בְּמֵימְרָא דַיְיָ וִיהֵי מֵימְרָא
8 דַיְיָ רוּחְצָנֵיהּ׃ וִיהֵי כְּאִילָן דִּשְׁתִיל עַל מַבּוּעַ דְּמַיִין וְעַל נִגְדִּין יְשַׁלַּח שׁוּרְשׁוֹהִי וְלָא יֶחֱזֵי
אֲרֵי יֵיתֵי חוּמָא וִיהוֹן טַרְפּוֹהִי עֲבוֹף וּבִשְׁנַת בַּצּוֹרְתָּא לָא יִתַּר וְלָא יִפְסוֹק מִלְּמֶעְבַּד פֵּירִין׃
9 נְכִיל לִבָּא מִכּוֹלָא וְתַקִּיף הוּא מַן יְדַעְנֵיהּ׃ אֲנָא יְיָ חָקַר לִבָּא בָּחַר כָּלְיָתָא וּלְמִתַּן לֶאֱנָשׁ 10
11 כְּאָרְחָתֵיהּ כְּפֵירֵי עוֹבָדוֹהִי׃ הָא כְּקוֹרָאָה דִּמְכַנֵּשׁ בֵּעִין דְּלָא דִילֵיהּ וּמְשַׁחֵן אֶפְרוֹחִין
דְּבַתְרוֹהִי לָא יְהָכוּן כֵּן כָּל גְּבַר רַשִׁיעַ דִּקְנֵי נִכְסִין דְּלָא בְדִינָא בְּפַלְגוּת יוֹמוֹהִי שָׁבִיק לְהוֹן
12 וּבְסוֹפֵיהּ מִתְקְרֵי רַשִׁיעָא׃ פּוּרְעָנוּתָא תִתְעֲבֵד מִנֵּיהּ מִן קֳדָם דִּשְׁכִנְתֵּיהּ עַל כּוּרְסֵי יְקָרָא
13 בִּשְׁמֵי מְרוֹמָא עִיל מִן אוּלָא מְקַבֵּל אֲתַר בֵּית מַקְדְּשָׁנָא׃ סְבוֹר יִשְׂרָאֵל יְיָ כָּל דִּשְׁבַקוּ
פּוּלְחָנָךְ יִבְהֲתוּן וְרַשִׁיעַיָא דַּעֲבָרוּ עַל מֵימְרָךְ בְּגֵיהִנָּם אִנּוּן עֲתִידִין לְמִפַּל אֲרֵי שְׁבַקוּ
14 פּוּלְחָנָךְ יְיָ דִּבְדִילֵיהּ אַתְּ מַיְתֵי עֲלֵיהוֹן יְקָרָא כְּמַבּוּעַ דְּמַיִין דְּלָא פָסְקִין מוֹהִי׃ אַסְּיֵנִי יְיָ
וְאֶתַּסֵּי פָּרְקֵנִי וְאֶתְפְּרֵק אֲרֵי תוּשְׁבַּחְתִּי אַתְּ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Propterea ego annuntiabo eis hoc tempore, oſtendam eis ultionem meam, & plagam potentiæ meæ : & ſcient quia nomen meum eſt Dominus. 21

CAP. XVII.

1 PEccata domus Judæ ſcripta ſunt ſtylo ferreo, & ungue adamantino, ſculpta ſuper tabula cordis eorũ, & in cornib⁹ ararum eorum. 2 Cùm recordati fuerint filii eorum ararũ ſuarum & lucorum ſuorũ, ſub omni ligno frondoſo, & ſup collib⁹ elevatis. 3 Pro eo quod *coluiſtis* idola ſup montes in agro ; ſubſtantiã veſtrã & omnem domum theſaurorum veſtrorum direptioni tradam in peccatis, quib⁹ coluiſtis idola in omnib⁹ terminis veſtris. 4 Et adducam hoſtẽ ſuper terrã veſtrã, erítque deſolata ſicut in anno remiſſionis ; & *vobiſcum* faciã vindictam judicii, donec tranſmigrare vos faciã de hæreditate veſtra quã dedi vobis : & ſervietis inimicis veſtris in terra quam ignoratis : quia ſpiritus urens fortis ſicut ignis, egreſſus eſt à facie mea in ira, uſq; in ſeculũ reſidebit. 5 Hæc dicit Dñs : Maledictus vir qui confidit in homine, & ponit carnẽ fiduciã ſuã, & à verbo Dñi aufert cor ſuum. 6 Et erit ſicut miryca in ſolitudine, & non videbit cùm venerit bonum : & morabitur abſque generatione in deſerto, ſicut in terra Sodomæ quæ non habitatur. 7 Benedict⁹ vir qui confidit in Verbo Dñi, & erit Verbũ Dñi fiducia ej⁹. 8 Et erit ſicut arbor quæ plantata eſt juxta fontes aquarum ; & juxta fluenta mittet radices ſuas ; & non videbit cùm venerit æſt⁹, & erunt folia ej⁹ viridia, & in anno ſiccitatis non defluent, & non ceſſabit facere fructũ. 9 Doloſũ eſt cor præ omnib⁹, & validũ eſt : quis cognoſcet illud ? 10 Ego Dñs ſcrutans cor, & probans renes, ut dem unicuiq; juxta viã ſuã, & juxta fructum operum ſuorum. 11 Ecce ſicut perdix quæ congregat ova quæ non ſunt ſua, & fovet pullos qui eam non ſecuturi ſint ; ſic omnis vir impius qui poſſidet divitias præter jus, in dimidio dierum ſuorum relinquit eas, & in fine vocatur impi⁹. 12 Ultio fiet de eo à facie ej⁹, cujus majeſtas habitat in ſolio gloriæ, in cœlis excelſis à principio, è regione domus ſanctuarii noſtri. 13 Expectatio Iſrael, Dñe : omnes qui derelinquunt cultum tuum confundentur. Et impii, qui tranſgrediuntur verbum tuum, futurum eſt, ut cadant in gehennam, quia dereliquerunt cultum tuum Dñe, propter quem tu adducebas ſuper eos gloriam ſicut fontem aquarum, cujus aquæ non deficiunt. 14 Sana me Domine, et ſanabor : ſalva me, et ſalvus ero ; quia laus mea tu es.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ ܡܘܕܥ ܐܢܐ ܠܗܘܢ܂ ܘܡܚܘܐ ܐܢܐ ܙܒܢܐ ܗܢܐ ܐܝܕܝ ܘܓܢܒܪܘܬܝ܂ 21
ܘܢܕܥܘܢ ܕܡܪܝܐ ܫܡܝ܂

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܙ *

* ܣܟܠܘܬܗ ܕܝܗܘܕܐ ܟܬܝܒܐ ܒܩܢܝܐ ܕܦܪܙܠܐ ܘܒܛܦܪܐ ܕܫܡܝܪܐ܂ ܘܓܠܝܦܐ ܥܠ ܠܘܚܝܐ 1
ܕܠܒܗܘܢ܂ ܘܥܠ ܩܪܢܬܐ ܕܡܕܒܚܝܗܘܢ ܘܕܦܬܟܪܝܗܘܢ ܀ * ܬܚܝܬ ܟܠ ܐܝܠܢ ܥܒܘܝ܂ ܘܥܠ 2
ܟܠ ܪܡܬܐ ܪܡܬܐ܂ ܘܒܛܘܪܐ ܘܒܕܒܪܐ܂ * ܢܟܣܝܟ ܘܟܠܗܘܢ ܣܝܡܬܟ ܘܬܚܘܡܝܟ ܀ ܠܒܙܬܐ 3
ܐܬܠ ܡܛܠ ܣܟܠܘܬܟ܂ * ܘܐܫܬܒܩ ܡܢ ܝܪܬܘܬܐ ܕܝܗܒܬ ܠܟ܂ ܘܐܫܥܒܕܟ ܠܒܥܠܕܒܒܝܟ 4
ܒܐܪܥܐ ܕܠܐ ܝܕܥܬ ܐܢܬ܂ ܡܛܠ ܕܢܘܪܐ ܐܘܩܕܬܘܢ ܒܪܘܓܙܝ ܀ ܥܕܡܐ ܠܥܠܡ ܬܐܩܕ܂ * ܗܟܢܐ 5
ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܠܝܛ ܗܘ ܓܒܪܐ ܕܬܘܟܠܗ ܥܠ ܒܪܢܫܐ ܀ ܘܥܒܕ ܡܢ ܒܣܪܐ ܕܪܥܗ ܀ ܘܠܒܗ
ܡܢ ܡܪܝܐ ܢܦܩ ܠܒܗ܂ * ܢܗܘܐ ܐܝܟ ܥܪܥܪܐ ܒܡܕܒܪܐ܂ ܘܠܐ ܢܚܙܐ ܟܕ ܐܬܝܐ ܛܒܬܐ܂ ܘܢܫܪܐ 6
ܒܫܚܝܢܐ ܒܡܕܒܪܐ܂ ܒܐܪܥܐ ܡܠܝܚܬܐ ܕܠܐ ܡܬܝܬܒܐ܂ * ܒܪܝܟ ܗܘ ܓܒܪܐ ܕܬܘܟܠܗ ܥܠ 7
ܡܪܝܐ܂ ܘܢܗܘܐ ܡܪܝܐ ܬܘܟܠܢܗ܂ ܢܗܘܐ ܐܝܟ ܐܝܠܢܐ ܕܢܨܝܒ܂ ܥܠ ܡܝܐ܂ ܘܥܠ ܡܪܕܝܬܐ 8
ܢܫܕܪ ܫܪܫܘܗܝ܂ ܘܠܐ ܢܕܚܠ ܡܢ ܚܘܡܐ ܕܐܬܐ܂ ܘܢܗܘܘܢ ܛܪܦܘܗܝ ܪܘܝܢ܂ ܘܒܫܢܬܐ
ܕܚܣܪ ܒܗ ܡܛܪܐ܂ ܠܐ ܢܕܚܠ܂ ܘܠܐ ܢܬܟܠܐ ܡܢ ܕܢܥܒܕ ܦܐܪܐ܂ * ܥܫܝܢ ܠܒܐ ܡܢ ܟܠ 9
ܒܢܝܢܫܐ܂ ܘܡܢܘ ܢܕܥܝܘܗܝ܂ * ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܒܨܐ ܠܒܐ ܘܒܚܪ ܟܘܠܝܬܐ܂ ܘܦܪܥ ܠܒܪܢܫܐ 10
ܐܝܟ ܐܘܪܚܬܗ܂ ܘܐܝܟ ܦܐܪܐ ܕܥܒܕܘܗܝ܂ * ܐܝܟ ܚܓܠܐ ܕܩܪܐ ܠܐܝܠܝܢ ܕܠܐ ܝܠܕ܂ ܗܟܢܐ ܗܘ ܡܢ 11
ܕܩܢܐ ܥܘܬܪܐ ܕܠܐ ܒܕܝܢܐ܂ ܒܦܠܓܘܬ ܝܘܡܘܗܝ ܢܫܒܩܘܢܗ܂ ܘܒܚܪܬܗ ܢܗܘܐ ܣܟܠܐ܂
* ܟܘܪܣܝܐ ܕܫܘܒܚܐ ܕܐܬܬܪܝܡ ܡܢ ܩܕܡ܂ ܡܢ ܐܬܪܐ ܕܡܩܕܫܢ܂ ܣܒܪܗ ܕܐܝܣܪܝܠ 12
ܡܪܝܐ ܗܘ܂ * ܟܠ ܕܫܒܩܘܟ ܢܒܗܬܘܢ܂ ܘܡܪܘܕܐ ܒܐܪܥܐ ܢܬܟܬܒܘܢ܂ ܡܛܠ ܕܫܒܩܘ 13
ܠܡܪܝܐ ܡܒܘܥܐ ܕܡܝܐ ܚܝܐ܂ * ܐܣܝܢܝ ܡܪܝܐ ܘܐܬܐܣܐ܂ ܦܪܘܩܝܢܝ ܘܐܬܦܪܩ܂ ܡܛܠ 14
ܕܫܘܒܚܝ ܐܢܬ ܗܘ܂

Propterea ecce oſtendam eis, & hoc tempore notam faciam illis manum meam & potentiam meam, & ſcient quòd Dominus eſt nomen meum. 21

CAP. XVII.

1 Peccatum Judæ ſcriptum eſt calamo ferreo & ungue adamantino, ſculptúmque in tabulis cordis eorum, in cornib' altarium eorum, & numinib' eorum, 2 Subter omnem arborem opacam, & ſuper omnem collem excelſum, in montibus, & in deſerto. 3 Opes tuas, omnéſque theſauros ac terminos tuos direptioni exponam propter peccata tua: 4 Et amovebo te ex hæreditate quam dedi tibi, ſervúmque te reddam hoſtib' tuis in terra quam ignoras: quandoquidem ignem accendiſtis in ira mea, in æternum ardebit. 5 Sic ait Domin', Maledictus ſit vir ille qui fiduciam collocat in homine, qui carne præditum efficit brachium ſuum, & cuj' cor à Domino declinat. 6 Similis erit ſtipiti in loco campeſtri, nec ſentiet cùm advenerit bonum, degétque in hiatibus in deſerto, in terra ſalſuginoſa quæ nunquam fuit habitata. 7 Benedictus ſit vir ille qui Domino fidit, cujus fiducia Dominus eſt. 8 Similis erit arbori quæ ad aquas plantata, ſecus algam mittit radices ſuas; nec timet adveniente æſtu, ſed hilaria ſunt folia ejus; & quo anno deeſt pluvia, nequaquam timet, nec ab edendis fructibus deſiſtit. 9 Durus corde præ omnibus homo eſt, quis agnoſcat eum? 10 Ego Dominus cor perſcrutor, & renes exploro, & homini rependo ſecundùm vias ejus, & ſecundùm fructus operum ejus. 11 Ut perdix quæ vocitat quos non peperit, ſic ille qui opes injuſtè comparat: mediis diebus ſuis derelinquet eas, & finis ejus erit infamis. 12 Solium gloriæ ſublatum eſt jam olim è loco ſanctuarii noſtri: *at* ſpes Iſraelis, Dominus eſt. 13 Quicunque te dereliquerint, pudefient: & rebelles in terra ſcribentur; quia dereliquerunt Dominum fontem aquarum viventium. 14 Sana me Domine, & ſanabor; ſerva me, & ſervabor: quia laus mea tu es.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لاجل هذا ها انا اعلن لهم في ذلك الزمان يدي * واعرفهم قوتي * ويعرفون ان اسمي الرب * 21

* الفصل السابع عشر * [* MS. Ox. خطية يهوذا مكتبة بقلم 1
حديد * واظفار مطرقة * موسومة علي الواح قلوبهم * وعلي قرون مذابحهم * اذا ما 2
ذكروا بقلوبهم مذابحهم ونخافتهم * لها التي عملوها تحت كل شجرة علية * وعلي
كل اكمة مرتفعة * والجبال والسحاري * اموالكم ومواشيكم للنهب اجعلها * من اجل خطاياك 3
يقول الرب * واصرفك من الميراث الذي اعطيتك واستعبدك لاعداك في الارض التي 4
لا تعرفها * لان النار تقدحت بغضبي * ولا تزال متقدة الي الابد * هكذا يقول الرب *] 5
ملعون الانسان الذي له التوكل على انسان * ويسند لحم ذراعه عليه * وقلبه بعيد من
الرب * فيصير مثل الطرفا الحقلية التي في البرية * هنك لا تعاين الخير اذا اتي * ويسكن 6
في السباخ وفي البرية وفي ارض مالحة التي لا تسكن * ومبارك الانسان الذي وثق بالرب * 7
ويكون الرب رجاوه * فيصير مثل العود الخصيب عند المياه * وفي النداوة يفرع اصوله * 8
ولا يخاف اذا اتي الحر * ويصير فيه اغصان ظليلة * ولا يخاف في سنة عدم المطر * ولا ينقص
يصنع ثمر * القلب العميق اكثر من كل فهو الانسان * فمن يعرفه * انا الرب افحص 9 10
القلوب وامتحن الكلي لاعطي كل واحد كطرقه وكثمار اعماله *

* الاصحاح الحادي عشر * * صوتت الحجلة * جمعت ما لم تلد * الصانع غناه ليس 11
بحكم * في نصف ايامه يتركه * وفي اواخره يصير جاهلا * كرسي مرتفع مقدسنا * رجاء اسرائيل 12
الرب * جميع الذين يجنبونك ليخزوا * المتباعدون منك على الارض ليكتبوا * لانهم 13
تركوا الرب ينبوع الحياة * اشفني يا رب فاشفا * خلصني فاخلص * انت فخري * 14

Propterea ecce declarabo eis tunc temporis manum meam, & notam faciam fortitudinem meam, ſcientque nomen meum eſſe Dominum. 21

CAP. XVII.

1 [Ms. Ox. *Peccatū Judæ ſcriptū eſt calamo ferri, & cælaturis malleoli, impreſſum ſuper tabulas cordis eorum, & ſuper cornua altarium eorum.* 2 *Cùm recordentur in cordibus ſuis ararum ipſorum, & numinum ipſorum: quæ nempe fecerunt ſibi ſub omni arbore alta, & ſuper omnem collem excelſum, in montibus & in campis.* 3 *Opes veſtras, & armenta veſtra direptioni exponam propter peccata, tua dicit Dominus.* 4 *Et ejiciam te ex hæreditate quam dedi tibi, & ſervire te faciam inimicis tuis in terra quam ignoras: quoniam ignis erumpit in furore meo, qui permanebit ardere in æternum. Sic dicit Dominus,*] 5 *Maledictus homo qui fiduciam habet in homine, eoque fulcit carnem brachii ſui, animus autem ejus remotus eſt à Domino.* 6 *Is enim erit inſtar tamaricis campeſtris exiſtentis in deſerto, quæ non fruitur bono cùm evenit: habitabitque in paludoſis, & in deſerto, & in terra ſalſuginoſa quæ habitari non poteſt.* 7 *E contra benedictus ille qui Domino confidit, cujus ſpes Dominus eſt.* 8 *Is enim erit uberrimæ arboris inſtar quæ ſecus aquas & in humiditate protendit radices ſuas, nec timet cùm accidit æſtus, imò creſcunt in ea rami umbriferi: non pertimeſcit annum pluviæ penuriâ laborantem, nec deſinit producere fructum.* 9 *Cor omni re magis profundum, eſt humanum; quis illud agnoſcat?* 10 *Ego Dominus corda perveſtigo & renes exploro, ut cuique dem ſecundùm vias ejus & ſecundùm fructus operum ejus.*

Textus undecimus.

11 *Clamat perdix, & congregat quod non peperit: ita qui divitias ſuas iniquè comparat, mediis diebus ſuis relinquet eas, & poſtremò ſtultus evadet.* 12 *Solium ſublime ſanctuarium noſtrum, ſpes Iſraelis Dominus eſt.* 13 *Omnes qui te devitant, pudore ſuffundantur; qui à te recedunt, ſuper terram ſcribantur: quia dereliquerunt Dominum fontem vitæ.* 14 *Sana me O Domine, & ſanabor; ſalva me & ſalvabor: tu enim es gloria mea.*

ירמיה : יז

.nunc veniat ,Domini verbum Ubi : me ad *dicentes* Ipſi Ecce
15 הִנֵּה־הֵמָּה אֹמְרִים אֵלָי אַיֵּה דְבַר־יְהוָה יָבוֹא נָא׃
, deſideravi non *anxium* diem & , te poſt *paſtore à acceleravi* non ego Et
16 וַאֲנִי לֹא־אַצְתִּי מֵרֹעֶה אַחֲרֶיךָ וְיוֹם אָנוּשׁ לֹא הִתְאַוֵּיתִי
ſis Ne .fuit *tuis faciebus coram ,meorū labiorū prolatio* : nôſti tu
17 אַתָּה יָדָעְתָּ מוֹצָא שְׂפָתַי נֹכַח פָּנֶיךָ הָיָה׃ אַל־תִּהְיֵה־
afficientur Pudore .mala die in , tu mea ſpes : *conſternationi* mihi
18 לִי לִמְחִתָּה מַחֲסִי־אַתָּה בְּיוֹם רָעָה׃ יֵבֹשׁוּ
non & , ipſi *conſternabuntur* : ego afficiar pudore non & ,me perſequentes
רֹדְפַי וְאַל־אֵבֹשָׁה אָנִי יֵחַתּוּ הֵמָּה וְאַל־
contritione duplici & ,malam diem eos ſuper Adduc .ego *conſternabor*
אֵחַתָּה אָנִי הָבִיא עֲלֵיהֶם יוֹם רָעָה וּמִשְׁנֶה שִׁבָּרוֹן
porta in *ſtabis* & ,Vade : me ad Dominus dixit Sic .eos contere
19 שָׁבְרֵם׃ כֹּה־אָמַר יְהוָה אֵלַי הָלֹךְ וְעָמַדְתָּ בְּשַׁעַר
quam & ,Jehudah reges *eam per ingredientur* quam ,populi filiorum
בְּנֵי־עָם אֲשֶׁר יָבֹאוּ בוֹ מַלְכֵי יְהוּדָה וַאֲשֶׁר
: eos ad dices Et .Jeruſalaim portis omnibus in atque,*eam per egredientur*
20 יֵצְאוּ בוֹ וּבְכֹל שַׁעֲרֵי יְרוּשָׁלִָם׃ וְאָמַרְתָּ אֲלֵיהֶם
omnes & ,Jehudah omnis & ,Jehudah reges Domini verbum Audite
שִׁמְעוּ דְבַר־יְהוָה מַלְכֵי יְהוּדָה וְכָל־יְהוּדָה וְכֹל
dixit Sic .has portas per *ingredientes* , Jeruſalaim habitatores
21 יֹשְׁבֵי יְרוּשָׁלִָם הַבָּאִים בַּשְּׁעָרִים הָאֵלֶּה׃ כֹּה אָמַר
die in *onus* portetis ne & *:veſtris animabus in eſtote Circumſpecti* :Domin⁹
יְהוָה הִשָּׁמְרוּ בְּנַפְשׁוֹתֵיכֶם וְאַל־תִּשְׂאוּ מַשָּׂא בְּיוֹם
onus efferatis Neque .Jeruſalaim portas per inferatis nec , ſabbati
22 הַשַּׁבָּת וַהֲבֵאתֶם בְּשַׁעֲרֵי יְרוּשָׁלִָם׃ וְלֹא־תוֹצִיאוּ מַשָּׂא
,faciatis non opus omne & , ſabbati die in veſtris domibus de
מִבָּתֵּיכֶם בְּיוֹם הַשַּׁבָּת וְכָל־מְלָאכָה לֹא תַעֲשׂוּ
.veſtris patribus præcepi quemadmodū ,ſabbati diem *ſanctificabitis* &
וְקִדַּשְׁתֶּם אֶת־יוֹם הַשַּׁבָּת כַּאֲשֶׁר צִוִּיתִי אֶת־אֲבוֹתֵיכֶם׃
induraverunt ſed ,ſuam aurem inclinaverunt nec ,audiverunt non Et
23 וְלֹא שָׁמְעוּ וְלֹא הִטּוּ אֶת־אָזְנָם וַיַּקְשׁוּ
,erit Et .diſciplinam *accipere non pro &* , *audire non pro* ſuam cervicem
24 אֶת־עָרְפָּם לְבִלְתִּי שׁוֹמֵעַ וּלְבִלְתִּי קַחַת מוּסָר׃ וְהָיָה
inferre non pro : Dominus dixit , me *ad* audieritis audiendo ſi
אִם־שָׁמֹעַ תִּשְׁמְעוּן אֵלַי נְאֻם־יְהוָה לְבִלְתִּי הָבִיא
ſanctificando & , ſabbati die in hujus civitatis portas per onus
מַשָּׂא בְּשַׁעֲרֵי הָעִיר הַזֹּאת בְּיוֹם הַשַּׁבָּת וּלְקַדֵּשׁ אֶת־
ingredientur Et .opus omne eo in *faciendum non ad* , ſabbati diem
25 יוֹם הַשַּׁבָּת לְבִלְתִּי עֲשׂוֹת־בָּהּ כָּל־מְלָאכָה׃ וּבָאוּ
ſolium ſuper ſedentes ,principes & reges hujus civitatis portas per
בְשַׁעֲרֵי הָעִיר הַזֹּאת מְלָכִים וְשָׂרִים יֹשְׁבִים עַל־כִּסֵּא
vir ,eorum principes & , ipſi equis in & , curru in equitantes,David
דָוִד רֹכְבִים בָּרֶכֶב וּבַסּוּסִים הֵמָּה וְשָׂרֵיהֶם אִישׁ
.ſeculum in hæc civitas habitabitur &:Jeruſalaim habitatores &,Jehudah
יְהוּדָה וְיֹשְׁבֵי יְרוּשָׁלִָם וְיָשְׁבָה הָעִיר־הַזֹּאת לְעוֹלָם׃
terra de & ,Jeruſalaim circuitibus de & ,Jehudah civitatib⁹ de venient Et
26 וּבָאוּ מֵעָרֵי־יְהוּדָה וּמִסְּבִיבוֹת יְרוּשָׁלִַם וּמֵאֶרֶץ
adducentes ,*Meridie* ab & ,monte de & , *planitie* de & ,Binjamin
בִּנְיָמִן וּמִן־הַשְּׁפֵלָה וּמִן־הָהָר וּמִן־הַנֶּגֶב מְבִאִים
confeſſionem adducentes & : thus & ,*munus* & ,ſacrificium & ,*aſcenſionem*
עֹלָה וְזֶבַח וּמִנְחָה וּלְבוֹנָה וּמְבִאֵי תוֹדָה
ſanctificandum ad me ad audieritis non ſi Et .Domini domum
27 בֵּית יְהוָה׃ וְאִם־לֹא תִשְׁמְעוּ אֵלַי לְקַדֵּשׁ אֶת־
portas per *ingrediendum &* ,onus *portandum* non *ad* & , ſabbati diem
יוֹם הַשַּׁבָּת וּלְבִלְתִּי שְׂאֵת מַשָּׂא וּבֹא בְּשַׁעֲרֵי
,ejus portis in ignem faciam ſuccendere & , ſabbati die in Jeruſalaim
יְרוּשָׁלִַם בְּיוֹם הַשַּׁבָּת וְהִצַּתִּי אֵשׁ בִּשְׁעָרֶיהָ
.extinguetur non & ,Jeruſalaim palatia devorabit &
וְאָכְלָה אַרְמְנוֹת יְרוּשָׁלִָם וְלֹא תִכְבֶּה׃

Verſio VULG. LAT.

15 Ecce ipſi dicunt ad me, Ubi eſt
16 verbum Domini? veniat. Et ego
non ſum turbatus, te paſtorem
ſequens: & diem hominis non
deſideravi, tu ſcis. Quod egreſ-
ſum eſt de labiis meis, rectum in
17 conſpectu tuo fuit. Non ſis tu
mihi formidini, ſpes mea tu in die
18 afflictionis. Confundantur qui
me perſequuntur, & non con-
fundar ego: paveant illi, & non
paveam ego: induc ſuper eos
diem afflictionis, & duplici con-
19 tritione contere eos. Hæc dicit
Dominus ad me; Vade, & ſta in
porta filiorum populi, per quam
ingrediuntur reges Juda, & egre-
diuntur, & in cunctis portis Je-
20 ruſalem: Et dices ad eos; Audite
verbū Dñi reges Juda, et omnis
Juda; cunctiq; habitatores Jeruſa-
lem, qui ingredimini per portas
21 iſtas. Hæc dicit Dñs; Cuſtodite
animas veſtras, & nolite portare
pondera in die ſabbati, nec in-
22 feratis per portas Jeruſalem. Et
nolite ejicere onera de domibus
veſtris in die ſabbati, & omne
opus non facietis: ſanctificate
diem ſabbati, ſicut præcepi pa-
23 tribus veſtris. Et non audierunt,
nec inclinaverunt aurem ſuam:
ſed induraverunt cervicem ſuam,
ne audirent me, & ne accipe-
24 rent diſciplinam. Et erit: Si au-
dieritis me, dicit Dominus, ut
non inferatis onera p̄ portas ci-
vitatis hujus in die ſabbati: & ſi
ſanctificaveritis diem ſabbati,
25 ne faciatis in eo omne opus: In-
gredientur per portas civitatis
hujus reges & principes, ſeden-
tes ſuper ſolium David, & aſcen-
dentes in curribus & equis, ipſi
& principes eorum, viri Juda,
& habitatores Jeruſalem: & ha-
bitabitur civitas hæc in ſempi-
26 ternum. Et venient de civita-
tibus Juda, & de circuitu Je-
ruſalem, & de terra Benjamin,
& de campeſtribus, & de mon-
tuoſis, & ab Auſtro, portantes
holocauſtum, & victimam, & ſa-
crificium, & thus, et inferent
oblationem in domum Domini.
27 Si autem non audieritis me ut
ſanctificetis diem ſabbati, et ne
portetis onus, et ne inferatis
per portas Jeruſalem in die ſab-
bati: ſuccendam ignem in por-
tis ejus: et devorabit domos
Jeruſalem, et non extinguetur.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

15 Ἰδοὺ αὐτοὶ λέγουσι πρὸς μὲ, Ποῦ ἐστιν ὁ
16 λόγος κυρίου; (η) ἐλθέτω. Ἐγὼ δὲ οὐκ ἐκο-
πίασα κατακολουθῶν ὀπίσω σου. καὶ ἡμέραν
ἀνθρώπου οὐκ ἐπεθύμησα· σὺ (θ) ἐπίστῃ· τὰ
ἐκπορευόμενα διὰ τῶν χειλέων μου, πρὸ
17 προσώπου (ι) σού ἐστι. Μὴ γενηθῇς μοι εἰς
ἀλλοτρίωσιν, φειδόμενός μου ἐν ἡμέρᾳ πονη-
18 ρᾷ. Καταισχυνθήτωσαν οἱ διώκοντές με, (κ)
καὶ μὴ καταισχυνθείην ἐγώ· πτοηθείησαν
αὐτοὶ, καὶ μὴ πτοηθείην ἐγώ. ἐπάγαγε ἐπ'
αὐτοὺς (λ) ἡμέραν πονηρὰν, δισσὸν σύν-
19 τριμμα σύντριψον αὐτούς. Τάδε λέγει
κύριος, Βάδισον, καὶ στῆθι (μ) ἐν ταῖς πύλαις
υἱῶν λαοῦ σου, ἐν αἷς εἰσπορεύονται ἐν αὐταῖς
βασιλεῖς Ἰούδα, καὶ ἐν αἷς ἐκπορεύονται ἐν
αὐταῖς, καὶ ἐν πάσαις ταῖς πύλαις Ἱερουσα-
20 λήμ, Καὶ ἐρεῖς (ν) αὐτοῖς, Ἀκούσατε τὸν
λόγον κυρίου βασιλεῖς Ἰούδα, καὶ πᾶσα (ξ)
Ἰουδαία, καὶ πᾶσα Ἱερουσαλήμ, οἱ εἰσπορευ-
21 όμενοι ἐν ταῖς πύλαις ταύταις· Τάδε λέγει
κύριος, Φυλάσσεσθε τὰς (ο) ψυχὰς ὑμῶν, καὶ
μὴ αἴρετε βαστάγματα ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῶν
σαββάτων, καὶ μὴ ἐκπορεύεσθε ταῖς πύλαις
22 Ἱερουσαλήμ, Καὶ μὴ ἐκφέρετε βαστάγματα
ἐξ (π) οἰκιῶν ὑμῶν ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῶν σαβ-
βάτων, καὶ πᾶν ἔργον οὐ ποιήσετε. ἁγιάσατε
τὴν ἡμέραν τῶν σαββάτων, καθὼς ἐνετειλά-
23 μην τοῖς πατράσιν (ρ) ὑμῶν. Καὶ οὐκ ἤκου-
σαν, καὶ οὐκ ἔκλιναν τὸ οὖς αὐτῶν, καὶ ἐσκλή-
ρυναν τὸν τράχηλον αὐτῶν ὑπὲρ τοὺς πατέ-
ρας αὐτῶν, τοῦ μὴ (σ) ἀκοῦσαί μου,
24 καὶ τοῦ μὴ δέξασθαι παιδείαν. Καὶ ἔσται,
ἐὰν (τ) εἰσακούσητέ μου, λέγει κύ-
ριος, τοῦ μὴ εἰσφέρειν βαστάγματα διὰ τῶν
πυλῶν τῆς πόλεως ταύτης ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῶν
σαββάτων, καὶ ἁγιάζειν τὴν ἡμέραν τῶν σαβ-
25 βάτων, τοῦ μὴ ποιεῖν πᾶν ἔργον, Καὶ εἰσε-
λεύσονται διὰ τῶν πυλῶν τῆς πόλεως ταύτης
βασιλεῖς καὶ ἄρχοντες καθήμενοι ἐπὶ θρόνου
Δαυίδ, καὶ ἐπιβεβηκότες ἐφ' ἅρμασι καὶ ἵπ-
ποις αὐτῶν, αὐτοὶ καὶ οἱ ἄρχοντες αὐτῶν,
ἄνδρες Ἰούδα καὶ οἱ κατοικοῦντες (υ) ἐν Ἱε-
ρουσαλήμ· καὶ (φ) κατοικισθήσεται ἡ πόλις αὕ-
26 τη εἰς τὸν αἰῶνα. Καὶ ἥξουσιν ἐκ τῶν πόλεων
Ἰούδα, καὶ κυκλόθεν Ἱερουσαλήμ, καὶ ἐκ γῆς
Βενιαμίν, καὶ ἐκ (¨) γῆς πεδινῆς, καὶ ἐκ τοῦ ὄ-
ρους, καὶ ἐκ τῆς πρὸς Νότον, φέροντες ὁλοκαυ-
τώματα καὶ (χ) θυσίας καὶ θυμιάματα καὶ
μάννα καὶ λίβανον, φέροντες αἴνεσιν εἰς
27 οἶκον κυρίου. Καὶ ἔσται ἐὰν μὴ (ψ) ἀκού-
σητέ μου τοῦ ἁγιάζειν τὴν ἡμέραν τῶν σαβ-
βάτων, τοῦ μὴ αἴρειν βαστάγματα, (ω)
καὶ μὴ εἰσπορεύεσθαι ταῖς πύλαις Ἱερουσαλήμ
ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῶν σαββάτων, καὶ ἀνάψω
πῦρ ἐν ταῖς πύλαις αὐτῆς, καὶ καταφάγε-
ται ἄμφοδα Ἱερουσαλήμ, καὶ οὐ σβεσθήσεται.

Ecce ipſi dicunt ad me, Ubi eſt 15
verbum Domini? veniat. Ego au- 16
tem non laboravi ſequens poſt te:
& diem hominis non deſideravi,
tu ſcis. Quæ egrediuntur per la-
bia mea, ante faciem tuam ſunt:
Non fias mihi (g) in alienatio- 17
nem, parcens mihi in die malo.
Confundantur, qui perſequuntur 18
me; & non confundar ego: pa-
veant illi; & non paveam ego:
induc ſuper eos diem peſſimum:
duplici contritione contere eos.
Hæc dicit Dominus; Vade, & 19
ſta in portis filiorum populi tui,
in quibus ingrediuntur in eis re-
ges Juda, & in quibus egrediun-
tur in eis, & in omnibus portis
Hieruſalem: Et dices eis; Au- 20
dite verbum Domini reges Juda,
& omnis Judæa, & omnis Hie-
ruſalem, qui ingredimini in por-
tis his: Hæc dicit Dominus; Cu- 21
ſtodite animas veſtras, & noli-
te portare pondera in die ſabba-
torum, (b) neque egrediamini por-
tis Hieruſalem, Neque efferatis 22
pondera è domibus veſtris in die
ſabbatorum: & omne opus non
facietis. Sanctificate diem ſab-
batorum, ſicut præcepi patribus
veſtris. Et non audierunt, nec 23
inclinaverunt aurem ſuam, &
induraverunt cervicem ſuam ſu-
per patres ſuos; ne audirent me, et
ne acciperent diſciplinam. Et erit, 24
ſi exaudieritis me, dicit Domi-
nus, ut non inferatis onera per
portas civitatis hujus in die ſab-
batorum, et ſanctificetis diem
ſabbatorum, non faciendo omne
opus; Et introibunt per por- 25
tas civitatis hujus reges, &
principes ſedentes ſuper ſolium
David, & aſcendentes in curri-
bus, & equis ſuis, ipſi & prin-
cipes eorum, viri Juda, & ha-
bitatores Hieruſalem: & habi-
tabitur civitas hæc in ſempiter-
num. Et venient de civitatibus 26
Juda, et de circuitu Hieruſalem,
et de terra Benjamin, et de terra
campeſtri, et de monte, et de ea
quæ ad Auſtrum, portantes holo-
cauſtomata, et ſacrificia. et thy-
miamata, et (i) manna, et thus,
afferentes (k) laudem in domum
Domini. Et erit, ſi non audie- 27
ritis me, ut ſanctificetis diem
ſabbatorum, non portando onera
et non ingrediendo portis Hie-
ruſalem in die ſabbatorum; et
accendam ignem in portis ejus:
et devorabit (l) bivia Hieruſa-
lem: et non extinguetur.

MS.A. (η) ἐλθάτω. (θ) ἐπίστασαι· (ι) μου (κ) καὶ μὴ πτοηθείην ἐγώ· πτοηθείησαν αὐτοὶ, καὶ μὴ ἐγώ. (λ) λιμὸν *πονηρὰν, (μ) ἐν πύλαις (ν) πρὸς αὐτούς. Ἀκούσατε λόγον (ξ) Ἱερουσαλήμ, (ο) φυλακὰς (π) οἴκων (ρ) *ἡμῶν. (σ) εἰσακοῦσαί μου, *Καὶ ἔσται, (τ) ἀκούσητέ μου, (υ) Ἱερουσαλήμ· (φ) κατοικηθήσεται (¨) τῆς πεδινῆς, (χ) θυσίαν καὶ θυμίαμα (ψ) εἰσακούσητε (ω) καὶ εἰσπορεύεσθαι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

15 הָא אִנּוּן אָמְרִין לִי אָן דְּאִתְנַבֵּיתָא בִּשְׁמָא דַייָ יִתְקַיַּם כְּעַן׃ וַאֲנָא לָא עַכֵּבִית עַל מֵימְרָךְ
16 מִלְּאִתְנַבָּאָה עֲלֵיהוֹן לְאוֹתָבוּתְהוֹן לְדַחְלְתָךְ וּלְיוֹם בִּישׁ דְּאַתְּ מַיְתֵי עֲלֵיהוֹן לָא חַמֵּדִית
17 אַתְּ גְּלֵי קֳדָמָךְ אַפָּקוּת שִׂפְוָתִי גְּלֵי קֳדָמָךְ הֲוָה׃ לָא יְהֵי מֵימְרָךְ לִי כַּדְבִין רְחָצְנִי אַתְּ בְּעִדָּן
18 עָקָא׃ יִבְהֲתוּן רָדְפַי וְלָא אֶבְהֵת אֲנָא יִתְכַּלְמוּן אִנּוּן וְלָא אֶתְכְּלֵם אֲנָא אַיְתָא עֲלֵיהוֹן יוֹם
19 בִּישׁ וְעַל חַד תְּרֵין תְּבָרָא תַּבְּרִנּוּן׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ לִי אֱזֵיל וּתְקוּם בִּתְרַע בְּנֵי עַמָּא דְּיָעֲלוּן
20 בֵּיהּ מַלְכַיָּא דְבֵית יְהוּדָה וּדְיִפְּקוּן בֵּיהּ וּבְכָל תַּרְעֵי יְרוּשְׁלֶם׃ וְתֵימַר לְהוֹן קַבִּילוּ פִּתְגָּמָא
דַייָ מַלְכַיָּא דְבֵית יְהוּדָה וְכָל דְּבֵית יְהוּדָה וְכָל יָתְבֵי יְרוּשְׁלֶם דְּעָלִין בְּתַרְעַיָּא הָאִלֵּין׃
21 כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אִסְתַּמַּרוּ בְּנַפְשָׁתְכוֹן וְלָא תִטְּלוּן מְטוּל בְּיוֹמָא דְשַׁבְּתָא וְתַעֲלוּן בְּתַרְעֵי
22 יְרוּשְׁלֶם׃ וְלָא תַפְּקוּן מְטוּל מִבָּתֵּיכוֹן בְּיוֹמָא דְשַׁבְּתָא וְכָל עֲבִידְתָּא לָא תַעַבְדוּן וּתְקַדְּשׁוּן
23 יָת יוֹמָא דְשַׁבְּתָא כְּמָה דְּפַקֵּדִית יָת אֲבָהָתְכוֹן׃ וְלָא קַבִּילוּ וְלָא אַרְכִּינוּ יָת אוּדְנֵיהוֹן
24 וְאַקְשִׁיאוּ יָת קְדָלְהוֹן בְּדִיל דְּלָא לְמִשְׁמַע וּבְדִיל דְּלָא לְקַבָּלָא אוּלְפָן׃ וִיהֵי אִם קַבָּלָא
תְקַבְּלוּן לְמֵימְרִי אֲמַר יְיָ בְּדִיל דְּלָא לְאַעָלָא מְטוּל בְּתַרְעֵי קַרְתָּא הָדָא בְּיוֹמָא דְשַׁבְּתָא
25 וּלְקַדָּשָׁא יָת יוֹמָא דְשַׁבְּתָא בְּדִיל דְּלָא לְמֶעְבַּד בֵּיהּ כָּל עֲבִידְתָּא׃ וְיֵעֲלוּן בְּתַרְעֵי קַרְתָּא
הָדָא מַלְכִין וְרַבְרְבִין יָתְבִין עַל כּוּרְסֵי דָוִד רָכְבִין בִּרְתִיכִין וּבְסוּסָוָן אִנּוּן וְרַבְרְבָנֵיהוֹן
26 אֱנָשׁ יְהוּדָה וְיָתְבֵי יְרוּשְׁלֶם וְתִתֵּיב קַרְתָּא הָדָא לְעָלַם׃ וְיֵיתוֹן מִקִּרְוַיָּא דְבֵית יְהוּדָה
וּמִסַּחֲרָנֵי יְרוּשְׁלֶם וּמֵאֲרַע שֵׁבֶט בִּנְיָמִן וּמִן שְׁפֵילְתָּא וּמִן טוּרָא וּמִן דָּרוֹמָא מַיְתָן עֲלָוָן
27 וְנִכְסַת קוּדְשִׁין וְקוּרְבָּנִין וּלְבוֹנְתָא וּמַעֲלֵי תוֹדְתָא לְבֵית מַקְדְּשָׁא דַייָ׃ וְאִם לָא תְקַבְּלוּן
לְמֵימְרִי לְקַדָּשָׁא יָת יוֹמָא דְשַׁבְּתָא וּבְדִיל דְּלָא לְמִטַּל מְטוּל וּמֵעַל בְּתַרְעֵי יְרוּשְׁלֶם
בְּיוֹמָא דְשַׁבְּתָא וְאַדְלֵיק אֶשָּׁתָא בְּתַרְעָהָא וּתְשֵׁיצֵי בִּירָנְיָת יְרוּשְׁלֶם וְלָא תִטְפֵי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ecce ipſi dicunt mihi: Ubi eſt q̃ prophetâſti in nomine Dñi? confirmetur 15
nunc. Ego autem non ſum cunctat⁹ ſuper verbum tuum ut non prophe- 16
tarem eis; ut convertam eos ad timorem tui: & diem malam quam tu addu-
ces ſuper eos, non deſideravi. Manifeſtum eſt enim corā te; quod egreſſum
eſt de labis meis, notum coram te fuit. Non ſit Verbum tuum mihi *men-* 17
dacia: fiducia mea es tu in tempore tribulationis. Pudefiant perſequen- 18
tes me, & non pudefiam: confundantur & non confundar ego: adduc ſuper
eos diem mali, & duplici contritione contere eos. Hæc dixit Dñs mihi: 19
Vade & ſta in porta filiorū populi, per quā ingrediuntur reges dom⁹ Juda,
& per quā egrediuntur, & in omnib⁹ portis Jeruſalē. Et dices eis: Suſcipite 20
verbum Dñi reges dom⁹ Juda, & omnis dom⁹ Juda, & omnes habitatores
Jeruſalē qui ingrediuntur per portas iſtas. Hæc dicit Dñs: Cuſtodite ani- 21
mas veſtras, & non portetis on⁹ in die ſabbathi, nec inferatis per portas
Jeruſalem. Neque efferatis on⁹ ex domib⁹ veſtris in die ſabbathi, & nul- 22
lum op⁹ faciatis: & ſanctificetis diem ſabbathi, ſicut præcepi patrib⁹ ve-
ſtris. Nec obedierunt nec inclinaverunt aures ſuas, ſed induraverunt cer- 23
vicem ſuam ut non audirent, & ut non rociperent diſciplinam. Et erit ſi 24
obediendo obedieritis verbo meo, dicit Dñs, ut non inferatis on⁹ per por-
tas civitatis huj⁹ in die ſabbathi, & ut ſanctificetis diē ſabbathi, ut non fiat
in eo omne op⁹. Et ingredientur per portas civitatis huj⁹ reges & prin- 25
cipes, ſedentes ſuper ſolium David, aſcendentes in quadrigis & in equis,
ipſi & principes eorum, viri Juda, & habitatores Jeruſalem; & habitabitur
civitas hæc in æternum. Et venient de civitatib⁹ dom⁹ Judæ, & de circu- 26
itu Jeruſalem, & de terra trib⁹ Benjamin, & de campeſtrib⁹, et de mon-
tanis, et ab Auſtro, adducentes holocauſta et victimas ſanctificatas, et obla-
tiones, et thus, et offerentes ſacrificium confeſſionis in domo ſanctuarii
Dñi. Quòd ſi non obedieritis verbo meo, ut ſanctificetis diem ſabbathi, 27
et ut non portetis on⁹, et inferatis per portas Jeruſalem in die ſabbathi;
ſuccendam ignem in portis ejus, et conſumet palatia Jeruſalem, et non ex-
tinguetur.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

15 * ܗܐ ܗܢܘܢ ܐܡܪܝܢ ܠܝ . ܐܝܟܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܢܐܬܐ ܗܫܐ . * ܘܐܢܐ ܒܒܝܫܬܐ ܠܐ ܦܫܥܬ.
16 ܒܬܪܟ . ܐܢܬ ܝܕܥ ܐܢܬ . ܕܝܘܡܗ ܕܒܪܢܫܐ ܠܐ ܪܓܒܬ . ܘܡܕܡ ܕܢܦܩ ܡܢ ܣܦܘܬܝ ܩܕܡ
17 ܐܦܝܟ ܗܘܐ . * ܠܐ ܬܗܘܐ ܠܝ ܠܬܒܪܐ . ܐܠܐ ܐܦܨܢܝ ܒܝܘܡܐ ܒܝܫܐ . * ܢܒܗܬܘܢ ܪܕܘܦܝ
18 ܘܠܐ ܐܒܗܬ ܐܢܐ . ܢܬܬܒܪܘܢ ܗܢܘܢ . ܘܠܐ ܐܬܬܒܪ ܐܢܐ . ܐܝܬܐ ܥܠܝܗܘܢ ܝܘܡܐ ܒܝܫܐ .
19 ܘܬܒܪܐ ܥܦܝܦܐ ܬܒܪ ܐܢܘܢ . * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ . ܙܠ ܩܘܡ ܒܬܪܥܐ ܕܒܢܝ ܥܡܐ .
20 ܕܒܗ ܥܐܠܝܢ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܢܦܩܝܢ ܒܗ . ܘܒܟܠܗܘܢ ܬܪܥܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ . * ܘܐܡܪ
ܠܗܘܢ . ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ . ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ . ܘܟܠܗ ܒܝܬ ܝܗܘܕܐ . ܘܟܠܗܘܢ
21 ܥܡܘܪܘܗ ܕܐܘܪܫܠܡ ܕܥܐܠܝܢ ܒܬܪܥܐ ܗܠܝܢ . * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ . ܐܙܕܗܪܘ ܒܢܦܫܟܘܢ .
22 ܘܠܐ ܬܫܩܠܘܢ ܡܘܒܠܐ ܒܝܘܡܐ ܕܫܒܬܐ . ܘܬܥܠܘܢ ܒܬܪܥܐ ܕܐܘܪܫܠܡ . * ܘܠܐ ܬܦܩܘܢ
ܡܘܒܠܐ ܡܢ ܒܬܝܟܘܢ ܒܝܘܡܐ ܕܫܒܬܐ . ܘܟܠ ܥܒܕܐ ܠܐ ܬܥܒܕܘܢ . ܘܬܩܕܫܘܢ ܝܘܡܐ
23 ܕܫܒܬܐ . ܐܝܟ ܕܦܩܕܬ ܠܐܒܗܬܟܘܢ . * ܘܠܐ ܫܡܥܘ . ܘܠܐ ܐܪܟܢܘ ܐܕܢܗܘܢ ܠܡܫܡܥ .
24 ܘܩܫܝܘ ܩܕܠܗܘܢ ܕܠܐ ܢܫܡܥܘܢ . ܘܠܐ ܢܩܒܠܘܢ ܡܪܕܘܬܐ . * ܘܐܢ ܡܫܡܥ
ܬܫܬܡܥܘܢܢܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ . ܕܠܐ ܬܥܠܘܢ ܡܘܒܠܐ ܒܬܪܥܝܗ ܕܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܒܝܘܡܐ
25 ܕܫܒܬܐ : ܘܬܩܕܫܘܢ ܝܘܡܐ ܕܫܒܬܐ : ܘܠܐ ܬܥܒܕܘܢ ܒܗ ܟܠ ܥܒܕܐ . * ܢܥܠܘܢ
ܒܬܪܥܝܗ ܕܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ . ܡܠܟܐ ܘܪܘܪܒܢܐ ܕܝܬܒܝܢ ܥܠ ܟܘܪܣܝܗ ܕܕܘܝܕ . ܟܕ ܪܟܝܒܝܢ
ܒܡܪܟܒܬܐ ܘܒܣܘܣܘܬܐ . ܗܢܘܢ ܘܪܘܪܒܢܝܗܘܢ . ܓܒܪܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܥܡܘܪܘܗ ܕܐܘܪܫܠܡ .
26 ܘܬܬܒ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܠܥܠܡ . * ܘܢܐܬܘܢ ܡܢ ܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ ܡܢ ܚܕܪܝ ܐܘܪܫܠܡ . ܘܡܢ
ܐܪܥܐ ܕܒܢܝܡܝܢ ܘܡܢ ܦܩܥܬܐ . ܘܡܢ ܛܘܪܐ ܘܡܢ ܬܝܡܢܐ . ܕܡܝܬܝܢ ܕܒܚܐ ܘܩܘܪܒܢܐ
27 ܘܒܣܡܐ . ܘܡܝܬܝܢ ܬܘܕܝܬܐ ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ . * ܘܐܢ ܠܐ ܬܫܬܡܥܘܢܢܝ ܠܡܩܕܫܘ
ܝܘܡܐ ܕܫܒܬܐ : ܕܠܐ ܬܫܩܠܘܢ ܡܘܒܠܐ ܘܬܥܠܘܢ ܒܬܪܥܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ ܒܝܘܡܐ
ܕܫܒܬܐ . ܐܫܠܚ ܢܘܪܐ ܒܬܪܥܝܗ . ܘܬܐܟܘܠ ܐܒܪܘܢܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ . ܘܠܐ ܬܕܥܟ .

En iſti dicunt mihi, Ubinam eſt ſermo Domini? eveniat jam. 15 Atqui ego in adverſitate non deſtitui te: tu nôſti quòd humanum diem nequaquam expetiverim, & quicquid è labiis meis prodiit, coram facie tua factum ſit. 16 Ne ſis mihi fractioni, ſed protege me in die calamitoſo. 17 Pudefiant perſecutores mei, & ne pudefiam ego: frangantur ipſi, & ne frangar ego: adduc ſuper eos diem malum, & duplâ fractione frange eos. 18 Ita dixit mihi Dominus, Vade, ſta in porta filiorum populi, per quam ingrediuntur reges Judæ, & per quam egrediuntur, atque in omnib⁹ portis Jeruſalem: 19 Et dic eis, Audite ſermonem Domini reges Judæ, & univerſa domus Judæ, omneſque cives Jeruſalem, qui per has portas ingredimini. 20 Sic dicit Dominus, Cavete vobis ipſis, & ne geſtetis onus die ſabbathi & inferatis per portas Jeroſolymæ: 21 Neque educatis onus è domibus veſtris die ſabbathi, neque ullum opus exerceatis: ſed ſanctificetis diem ſabbathi, quemadmodum præceperam majoribus veſtris. 22 At *illi* nec obtemperaverunt, nec aurem ſuam præbuerunt ad audiendum: imò cervicem ſuam obdurârunt, ne obtemperarent, & ne reciperent diſciplinam. 23 Vos autem ſi obedienter audieritis me, dicit Dominus, ut nullum onus inferatis in portas urbis hujus die ſabbathi, ſed ſanctificaveritis diem ſabbathi, nullumque exercueritis in eo opus; 24 Ingredientur per hujus ejuſdem urbis portas reges atque magnates qui ſedent ſuper ſolium Davidis, vecti curribus & equis tam ipſi & magnates eorum, quàm viri Judæ & cives Jeruſalem, eritque civitas hæc perpetuò habitata: 25 Et ex civitatibus Judæ circunjacentibus Jeroſolymæ, è terra Benjaminis, ex planitie, ex monte, & ab Auſtro venient qui afferant ſacrificia, oblationes, & incenſum, quique afferant gratiarum actionem in domum Domini. 26 Quòd ſi me non audieritis ſanctificando diem ſabbathi, quò minùs geſtetis onus & intretis per portas Jeroſolymæ die ſabbathi; ignem dimittam in portas ejus, devorabitque palatia Jeroſolymæ, nec extinguetur. 27

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

15
16 * ها هاولاء يقولون اين هي كلمة الرب * لتاتي * وانا لم اتعب تابعا خلفك * ولم اشته يوم
17 انسان * انت تعلم بالبارزات من شفتي امام وجهك * انت لا تصر لي للغربة * اشفق علي
18 في يوم الشرير * ليخز الذين يطردونني ولا اخزى انا * ليجزعوا هم ولا انا * اجلب عليهم وباء
19 شريرا * اكسرهم كسرا مضاعفا * هكذا يقول الرب * اعمد وقف في ابواب بني شعبك
الذين يدخلون فيهم ملوك يهوذا * والذين يخرجون منهم * وفي جميع ابواب ايروسليم *
20 * وتقول لهم اسمعوا قول الرب يا ملوك يهوذا * وكل ايروسليم الداخلون في هذه الابواب *
21 * هكذا يقول الرب * احتفظوا بحفظتكم ولا ترفعوا احمالا في يوم السبوت * ولا تخرجوا في
22 ابواب ايروسليم * ولا تخرجوا احمالا من بيوتكم في يوم السبوت * ولا تصنعوا كل عمل *
23 قدسوا يوم السبوت كما اوصيت اباءهم * ولم يسمعوا ولم يميلوا اذانهم * وغلظوا رقابهم اكثر
24 من ابائهم الا يسمعوني * ويكون ان سمعتم مني يقول الرب * الا تحملوا احمالا في ابواب هذه
25 المدينة في يوم السبوت * وان تقدسوا يوم السبوت الا تصنعوا كل عمل * ويدخلوا من
ابواب هذه المدينة الملوك والروساء الجلوس على كرسي داود والراكبون على مراكبهم *
26 هاولاء وروساوهم * رجال يهوذا وسكان ايروسليم * فلتسكن هذه المدينة الى الابد * وياتون من
مدن يهوذا ومن حول ايروسليم * ومن ارض بنيامين * ومن الصحراء ومن الجبل * ومن
الارض نحو التيمن * يحملون محرقات وذبيحة * وبخورا ومنا ولبانا * يحملون تسبحة الى بيت الرب *
27 * ويكون ان لم تسمعوا مني لتقدسوا يوم السبوت * الا ترفعوا احمالا وتدخلوا في ابواب
ايروسليم في يوم السبوت * فاشعل نارا في ابوابها * وتاكل ازقة ايروسليم ولا تطفا *

En iſti dicunt, ubi eſt verbum Domini? veniat. 15 *At ego non ſum deſeſſus te ſequendo, nec optavi diem hominis: tu nôſti prodeuntia de labiis meis coram facie tua.* 16 *Tu ne ſis mihi peregrinationi, parce mihi in die malo.* 17 *Pudefiant qui me perſequuntur, & non terrear ego: formident illi, non ego: induc ſuper eos luem pernicioſam: contere illos contritione duplici.* 18 *Sic ait Dominus, Sta & conſiſte in portis illis popularium tuorum, per quas ingrediuntur reges Judæ, & è quibus egrediuntur, atque in omnibus portis Jeroſolymæ:* 19 *Et dicas illis, Audite ſententiam Domini O reges Judæ, & omnes Jeroſolymitani ingredientes per has portas.* 20 *Sic ait Dominus, Advertite cautè, & ne ſublatis oneribus in die ſabbathorum exeatis per portas Jeroſolymæ:* 21 *Neque extrahatis onera è domibus veſtris in die ſabbathorum, neque faciatis ullum opus; ſanctificate diem ſabbathorum, quemadmodum præceperam patribus eorum.* 22 *Verùm iſti nec audierunt, nec admoverunt aures ſuas; imò obdurârunt cervices ſuas pluſquàm patres ſui, quò minùs audirent me.* 23 *Erit autem ſi obtemperaveritis mihi, dicit Dominus, non ferentes onera per portas hujus urbis in die ſabbathorum, ſique ſanctificaveritis diem ſabbathorum, quò minùs faciatis ullum opus;* 24 *ut intrent per portas hujus urbis, reges ac principes ſedentes ſuper ſolio Davidis, & curribus ſuis inſidentes; tam iſti quàm principes eorum, viri Judæ & habitatores Jeroſolymæ; utque habitetur hæc urbs in æternum:* 25 *Et veniant ex urbibus Judæ, & ex* loci*s adjacentibus Jeroſolymæ, è terra Benjaminis, è deſerto, & ex monte; & de terra* quæ eſt *Meridiem verſùs afferant holocauſta, ſacrificium, & incenſum; & munus cum thure, afferant* inquam *laudem in domum Domini.* 26 *Verùm ſi non auſcultaveritis mihi ut ſanctificetis diem ſabbathorum ita ut minimè tollatis onera & ingrediamini per portas Jeroſolymæ die ſabbathorum; ignem accendam in portis ejus, qui conſumet vicos Jeroſolymæ, & non extinguetur.* 27

ירמיה : יח

CAP. XVIII. יח

.dicendum ad ,Domino à Irmejahu ad fuit quod Verbum
1 הדבר אשר היה אל־ירמיהו מאת יהוה לאמר:
.mea verba te faciam audire ibi & ,figuli domum *descendes* & ,Surge
2 קום וירדת בית היוצר ושמה אשמיעך את־דברי:
.*formas* ſuper opus *faciens* ipſe ecce & ,figuli domum deſcendi Et
3 וארד בית היוצר והנהו עשה מלאכה על־האבנים:
: figuli manu in *lutum velut faciens* ipſe quod vas eſt *corruptum* Et
4 ונשחת הכלי אשר הוא עשה בחמר ביד היוצר
fuit rectum quemadmodũ ,alterum vas illud fecit & ,eſt converſus Et
ושב ויעשהו כלי אחר כאשר ישר
: dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et .*faciendum ad* figuli oculis in
5 בעיני היוצר לעשות: ויהי דבר־יהוה אלי לאמור:
,Iſrael domus vobis facere potero non iſte figulus ſicut Nũquid
6 הכיוצר הזה לא־אוכל לעשות לכם בית ישראל
,mea manu in *vos* ſic ,figuli manu in lutum ſicut Ecce ? Dominus ait
נאם־יהוה הנה כחמר ביד היוצר כן־אתם בידי
, regnum adverſus & ,gentem adverſus loquar Repentè .Iſrael domus
7 בית ישראל: רגע אדבר על־גוי ועל־ממלכה
gens convertetur Et .*diſperdendum ad & ,demoliendum ad & ,evellendum ad*
8 לנתוש ולנתוץ ולהאביד: ושב הגוי
ſuper me pœnitebit & : illud *ſuper* ſum locutus quod ſuo malo à ipſa
ההוא מרעתו אשר דברתי עליו ונחמתי על־
ſuper loquar repentè Et .ei facere cogitavi quod ,malo
9 הרעה אשר חשבתי לעשות לו: ורגע אדבר על־
faciet Et .*plantandum ad & , ædificandum ad* , regnum *ſuper* & , gentem
10 גוי ועל־ממלכה לבנות ולנטוע: ועשה
me pœnitebit & : *mea voce in audiendum non ad* ,meis oculis in malum
הרעה בעיני לבלתי שמע בקולי ונחמתי
dic ,nunc Et .ei *benefaciendũ ad* dixi quod , bono ſuper
11 על־הטובה אשר אמרתי להיטיב אותו: ועתה אמר־
: dicendo , Jeruſalaim *habitatores ſuper* & , Jehudah *virum ad* quæſo
נא אל־איש־יהודה ועל־יושבי ירושלם לאמר
cogitans & ,malum vos *ſuper fingens* ego Ecce : Dominus dixit Sic
כה אמר יהוה הנה אנכי יוצר עליכם רעה וחשב
, mala ſua via à unuſquiſq: nunc Revertimini .cogitationem vos *ſuper*
עליכם מחשבה שובו נא איש מדרכו הרעה
: eſt Deſperatũ : dixerunt Et .*veſtros conatus* & , veſtras vias facite bonas &
12 והיטיבו דרכיכם ומעלליכם: ואמרו נואש
obſtinationem unuſquiſque & ,ibimus noſtras cogitationes poſt *ſiquidem*
כי־אחרי מחשבותינו נלך ואיש שררות
Interrogate : Dominus dixit ſic Ideo .faciemus mali ſui cordis
13 לבו־הרע נעשה: לכן כה אמר יהוה שאלו־
, *valde* fecit *turpitudinem ? hæc ſicut* audivit Quis *: gentibus in* nunc
נא בגוים מי שמע כאלה שערורת עשתה מאד
? Lebanon nivem agri petra de relinquet Nunquid .Iſrael virgo
14 בתולת ישראל: היעזב מצור שדי שלג לבנון
mei *ſunt obliti* Quia ? defluentes frigidæ *alienæ* aquæ *deſerentur* Num
15 אם־ינתשו מים זרים קרים נוזלים: כי־שכחני
eorũ viis in eos fecerunt impingere & : adolebunt *vanum in*,meus populus
עמי לשוא יקטרו ויכשלום בדרכיהם
.calcatæ non viæ ſemitas *perambulandum ad* ,*ſeculi ſemitis*
שבילי עולם ללכת נתיבות דרך לא סלולה:
tranſiens Omnis .*ſeculi* ſibilos ſtuporem in eorum terram *ponendum Ad*
16 לשום ארצם לשמה שרוקת עולם כל עובר
Orientalis ventus Sicut .*ſuo capite in* movebit & ,obſtupeſcet ,eam juxta
17 עליה ישם ויניד בראשו: כרוח־קדים
eis oſtendam *facies* non & ,cervicem : *inimici facies ad* eos diſpergam
אפיצם לפני אויב ערף ולא־פנים אראם
.eorum *exitii* die in
ביום אידם:

Verſio VULG. LAT.

CAP. XVIII.

1 VErbum, quod factum eſt ad Jeremiam à Domino, dicens; 2 Surge, & deſcende in domum figuli, & ibi audies verba mea. 3 Et deſcendi in domum figuli, & ecce ipſe faciebat opus ſuper 4 rotam. Et diſſipatum eſt vas, quod ipſe faciebat è luto manibus ſuis : converſúſque, fecit illud vas alterum, ſicut placuerat 5 in oculis ejus ut faceret. Et factũ eſt verbũ Dñi ad me, dicens; 6 Numquid ſicut figulus iſte, non potero vobis facere, domus Iſrael, ait Dominus? ecce ſicut lutum in manu figuli, ſic vos 7 in manu mea, domus Iſrael. Repentè loquar adverſùm gentem & adverſùs regnum, ut eradicem, & deſtruam, & diſperdam 8 illud. Si pœnitentiam egerit gens illa à malo ſuo, quod locutus ſum adverſùs eam : agam & ego pœnitentiam ſuper malo, 9 quod cogitavi ut facerem ei. Et ſubitò loquar de gente & de regno, ut ædificem & plantem 10 illud. Si fecerit malum in oculis meis, ut non audiat vocem meam : pœnitentiam agam ſuper bono, quod locutus ſum 11 ut facerem ei. Nunc ergò dic viro Juda, & habitatoribus Jeruſalem, dicens; Hæc dicit Dominus; Ecce ego fingo contra vos malũ, & cogito contra vos cogitationẽ: revertatur unuſquiſque à via ſua mala, & dirigite vias veſtras et ſtudia veſtra. 12 Qui dixerunt; Deſperavimus : poſt cogitationes enim noſtras ibimus, & unuſquiſque pravitatem cordis ſui mali faciemus. 13 Ideò hæc dicit Dominus; Interrogate Gentes; Quis audivit talia horribilia, quæ fecit nimis 14 virgo Iſrael? Numquid deficiet de petra agri nix Libani? aut evelli poſſunt aquæ erumpentes 15 frigidæ, & defluentes? Quia oblitus eſt meî populus meus, fruſtrà libantes, & impingentes in viis ſuis, in ſemitis ſeculi, ut ambularent p̃ eas in itinere non 16 trito : Ut fieret terra eorum in deſolationem, & in ſibilum ſempiternum : omnis qui prætererit per eam obſtupeſcet, & mo-17 vebit caput ſuum. Sicut ventus urens diſpergam eos coram inimico : dorſum, & non faciem oſtendam eis in die perditionis eorum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. ιη′.

1 Ὁ Λόγος ὁ γενόμενος παρὰ κυρίου πρὸς 2 Ἱερεμίαν, λέγων, Ἀνάστηθι, ϗ κατάβηθι εἰς οἶκον τοῦ κεραμέως, ϗ ἐκεῖ ἀκούσῃ τοὺς 3 λόγους μου. Καὶ κατέβην εἰς τὸν οἶκον τοῦ κεραμέως, καὶ ἰδοὺ αὐτὸς ἐποίει ἔργον ἐπὶ 4 τῶν λίθων. Καὶ ἔπεσε τὸ ἀγγεῖον, ὃ αὐτὸς ἐποίει ἐν ταῖς χερσὶν αὐτοῦ· ϗ πάλιν(α) αὐτὸς ἐποίησεν αὐτὸ ἀγγεῖον ἕτερον, καθ-5 ὼς ἤρεσεν ἐνώπιον αὐτοῦ (β) ποιῆσαι. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, 6 Εἰ καθὼς ὁ κεραμεὺς οὗτος οὐ δυνήσομαι τοῦ ποιῆσαι ὑμᾶς οἶκος Ἰσραήλ; ἰδοὺ, ὡς ὁ πηλὸς τοῦ κεραμέως, ὑμεῖς ἐστε (γ) ἐν χερ-7 σίν μου. Πέρας λαλήσω ἐπὶ ἔθνος, ἢ ἐπὶ (δ) βασιλείαν τοῦ ἐξᾶραι αὐτοὺς, ϗ τοῦ ἀ-8 πολλύειν, Καὶ (ε) ἐπιστραφῇ τὸ ἔθνος ἐκεῖνο ἀπὸ πάντων τῶν (ζ) κακῶν αὐτῶν, ϗ μετανοήσω περὶ τῶν κακῶν, ὧν ἐλογισά-9 μην τοῦ ποιῆσαι αὐτοῖς. Καὶ πέρας λαλήσω ἐπὶ (η) ἔθνος ϗ βασιλείαν, τοῦ ἀνοικο-10 δομεῖσθαι ϗ τοῦ καταφυτεύεσθαι, Καὶ ποιήσωσι τὰ πονηρὰ ἐναντίον μου, τοῦ μὴ ἀκούειν (θ) τῆς φωνῆς μου, ϗ μετανοήσω περὶ τῶν ἀγαθῶν ὧν ἐλάλησα, τοῦ ποιῆσαι αὐ-11 τοῖς. Καὶ νῦν εἰπὸν πρὸς ἄνδρας Ἰούδα, ϗ πρὸς τοὺς κατοικοῦντας Ἱερουσαλήμ, Ἰδοὺ ἐγὼ πλάσσω ἐφ᾽ ὑμᾶς κακὰ, ϗ λογίζομαι ἐφ᾽ ὑμᾶς λογισμόν· ἀποστραφήτω δὴ ἕκαστος ἀπὸ (ι) ὁδοῦ αὐτοῦ τῆς πονηρᾶς, ϗ καλλίονα ποιήσατε τὰ ἐπιτηδεύματα ὑ-12 μῶν. Καὶ εἶπαν, Ἀνδριούμεθα, ὅτι ὀπίσω τῶν ἀποστροφῶν ἡμῶν πορευσόμεθα, ϗ ἕκαστος τὰ ἀρεστὰ τῆς καρδίας αὐτοῦ τῆς πονη-13 ρᾶς ποιήσομεν. Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος, Ἐρωτήσατε δὴ ἐν ἔθνεσι, τίς ἤκουσε τοιαῦτα φρικτὰ ἃ (κ) ἐποίησε σφό-14 δρα παρθένος (λ) Ἰσραήλ; Μὴ ἐκλείψουσιν ἀπὸ πέτρας μαστοὶ, ἢ χιὼν ἀπὸ τοῦ Λιβάνου; μὴ ἐκκλίνῃ ὕδωρ βιαίως ἀνέμῳ 15 φερόμενον; Ὅτι ἐπελάθοντό μου (μ) λαός μου, εἰς κενὸν ἐθυμίασαν ϗ ἀσθενήσουσιν ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν σχοίνους αἰωνίους, τοῦ ἐπιβῆναι τρίβους οὐκ ἔχοντας (ν) ὁδὸν 16 εἰς πορείαν, Τοῦ τάξαι τὴν γῆν αὐτῶν εἰς ἀφανισμὸν, (ξ) ϗ σύριγμα αἰώνιον· πάντες οἱ (ο) διαπορευόμενοι δι᾽ αὐτῆς ἐκστήσονται, ϗ κινήσουσι (π) τὴν κεφαλὴν 17 αὐτῶν. Ὡς ἄνεμον καύσωνα διασπερῶ αὐτοὺς κατὰ πρόσωπον (ρ) ἐχθρῶν αὐτῶν, δείξω αὐτοῖς ἡμέραν ἀπωλείας αὐτῶν.

CAP. XVIII.

1 VErbum, quod factum eſt à Domino ad Hieremiam, dicens; 2 Surge, & deſcende in domum figuli : & ibi audies verba mea. 3 Et deſcendi in domum figuli : & ecce ipſe faciebat opus ſuper lapides: 4 Et (a) cecidit vas, quod ipſe faciebat in manibus ſuis : & rurſus ipſe fecit illud vas alterum, ſicut placuerat in conſpectu ſuo facere. 5 Et factum eſt verbum Domini ad me; dicens; 6 Si, quomodò figulus iſte, non potero facere vos, domus Iſrael? Ecce, ſicut lutum figuli, vos eſtis in manibus meis. 7 Ad ſummam loquar ſuper gentem, aut ſuper regnum, ut auferam illos, & diſperdam, 8 Et convertetur gens illa ab omnibus malis ſuis; & agam pœnitentiam de malis, quæ cogitaveram facere eis. 9 Et ad ſummam loquar ſuper gentem, & regnum, ad reædificandum, & plantandum, 10 Et facient mala coram me, non audiendo vocem meam; & pœnitentiam agam de bonis, quæ loquutus eram facere eis. 11 Et nunc dic ad viros Juda, & ad habitatores Hieruſalem; Ecce ego fingo ſuper vos mala, & cogito ſuper vos cogitationem. Avertatur nunc unuſquiſque à via ſua mala, & meliora facite ſtudia veſtra. 12 Et dixerunt; (b) Confortabimur; quia poſt averſiones noſtras ibimus, & unuſquiſque placita cordis ſui mali faciemus. 13 Ideò hæc dicit Dominus; Interrogate nunc in gentibus; quis audivit talia horribilia, quæ fecit nimìs virgo Iſrael? 14 Nunquid deficient de petra ubera, aut nix de Libano? nunquid declinabit aqua violenter ſublata vento? 15 Quia obliti ſunt meî populus meus : in vacuum adoluerunt, & infirmabuntur in viis ſuis, (c) funiculos ſempiternos, ad conſcendendum ſemitas non habentes viam ad iter, 16 Ad ponendum terram ſuam in deſolationem, & ſibilum ſempiternum. Omnes tranſeuntes per eam obſtupeſcent, & movebunt caput ſuum. 17 Sicut ventum urentem, diſpergam eos ad faciem inimicorum ſuorum : (d) oſtendam eis diem perditionis eorum.

MS. A. (α) αὐτὸ ἐποίησεν ἀγγεῖον (β) τοῦ ποιῆσαι. (γ) ἐν ταῖς χερσίν (δ) βασιλείας (ε) ἐπιστρέψῃ (ζ) κακῶν, ϗ μετανοήσω περὶ πάντων τῶν κακῶν, ὧν ἐλάλησα τοῦ ποιῆσαι αὐτοῖς. (η) ἔθνη ϗ ἐπὶ βασιλείας, (θ) τῆς φωνῆς (ι) τῆς ὁδοῦ (κ) ἐποίησέν μοι (λ) Ἱερουσαλήμ; (μ) ὁ λαὸς (ν) ὁδὸν πορείας, (ξ) ϗ εἰς σύρριγμα (ο) παραπορευόμενοι (π) τὰς κεφαλὰς (ρ) τῶν ἐχθρῶν.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

יח

1 פתגם נבואה דהוה עם ירמיה מן קדם יי למימר: קום ותיחות לבית פחרא ותמן 2
3 אשמענך ית פתגמי: ונחתית לבית פחרא והא הוא עבד עבידתא על סדנא: ואתחבל
4 מנא דהוה עביד דטינא ביד פחרא ותב ועבדיה מן אוחרן כמא דכשר בעיני פחרא
5 למעבד: והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר: הכפחרא הדין הלא יוכלא קדמי
6 למעבד לכון בית ישראל אמר יי הא כמא דטינא ביד פחרא כן אתון חשיבין קדמי
7 בית ישראל: זמן אמליל על עמא ועל מלכותא למעקר ולתרעא ולאבדא:
8 ויתוב עמא ההוא מבשתיה דגזרית עלוהי ואתוב מן בישתא דחשבית למעבד ליה:
9 וזמן אמליל על עמא ועל מלכותא למבני ולקימא: ויעבד דביש קדמי בדיל דלא 10
11 לקבלא למימרי ואתוב מן טבתא דאמרית לאיטבא ליה: וכען אמר כען לאנש
יהודה וליתבי ירושלם למימר כדנן אמר יי הא אנא ברי עליכון בישא ומחשב עליכון
12 מחשבא תובו כען גבר מאורחיה בישתא ואתקינו אורחתכון ועובדיכון: ואמרו
13 תבנא מבתר פולחנך ארי בתר עשתוננא נהך וגבר הרהור לביה בישא נעביד: בכן
כדנן אמר יי שאילו כען בעממיא מן שמע כאלין שנן עבדת לחדא כנישתא דישראל:
14 הא כמא דלית אפשר דיפסוק מי תלג דנחת על חקלי לבנן כן לא יפסקון ממטר נחתין
15 ומי מבוע נבעין: ארי שבקו פולחני עמי לא להנאה אסיקו בוסמין ואטעיאונון
באורחתהון בישתא משבילין תקנן דמן עלמא למיזל באורחן דלא תקנן בשבילין דלא
16 מכבשין: לשואה ארעהון לצדו ואשתממות עלם כל דיעבר עלה יכלי ויניד ברישיה:
17 כבדור רוח קדומא כן אבדרנון קדם בעלי דבביהון קדל ולא אפין אחוינון ביום
תבריהון:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XVIII.

1 VErbum prophetiæ quod factum eſt ad Jeremiam à facie Domini, 2 dicentis : Surge & deſcende in domum figuli, & ibi audire te faciam verba mea. 3 Et deſcendi in domum figuli; & ecce ipſe faciebat opus ſuper rotam. 4 Et diſſipatum eſt vas quod fiebat ex luto in manu figuli : & reverſus eſt, & fecit vas aliud, ſicut placuit in oculis figuli ut faceret. 5 Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini ad me, dicens : 6 Nunquid ſicut figulus iſte, non poſſum vobis facere dom' Iſrael; dicit Dominus? Ecce ſicut lutum in manu figuli, ſic vos habemini coram me dom' Iſrael. 7 Tempore quodam loquar ſuper populũ & ſuper regnum, ut evellam & confringã & diſperdam. 8 Si autem converſus fuerit popul' ille à malo ſuo, q̃ decrevi contra eum : & avertar ego à malo quod cogitavi ut facerẽ ei. 9 Alio tempore loquar ſuper populum & ſuper regnũ ut ædificẽ, & ut ſuſtentem. 10 Et ſi fecerit quod malum eſt in conſpectu meo, ut non obediat verbo meo; & avertar ego à bono quod dixi ut bene facerem ei. 11 Nunc ergo age, dic viro Juda & habitatorib' Jeruſalẽ, dicendo: Hæc dicit Dñs: Ecce ego creo ſup̃ vos malum, & cogito contra vos cogitationem: convertimini nunc unuſquiſque à via ſua mala, & dirigite vias veſtras & opera veſtra. 12 Et dixerunt: Averſi ſumus à cultu tuo; quia poſt cogitationes noſtras ibimus, & quiſque cogitationem cordis ſui pravam faciemus. 13 Propterea hæc dicit Dñs : Interrogate nunc in populis, quis audivit talia? Rem alienam admodum fecit cœtus Iſrael. 14 Ecce ſicut fieri non poteſt ut deficiat *aqua nivalis* quæ deſcendit ſuper agros Libani; ſic non deficient pluviæ deſcendentes, & aquæ fontis manantes. 15 Quia dereliquerunt cultum meum populus meus, in nullum uſum accenderunt aromata, & errare eos fecerunt in viis ſuis peſſimis à ſemitis rectis quæ à ſeculo ſunt, ut ambularent in viis non rectis, in ſemitis non ſtratis. 16 Ut poneretur terra eorum in vaſtitatem & deſolationem perpetuam : omnis qui tranſierit per eam, clamabit, & movebit caput ſuum. 17 Juxta diſperſionem venti Orientalis diſpergam eos ante inimicos ſuos : dorſum & non faciem oſtendam eis in die interitus eorum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

1 * ܩܦܠܐܘܢ * ܝܚ * ܦܬܓܡܐ ܕܗܘܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܩܘܡ
2
3 ܚܘܬ ܠܒܝܬ ܦܚܪܐ. ܘܬܡܢ ܐܫܡܥܟ ܦܬܓܡܝ. * ܘܢܚܬܬ ܠܒܝܬ ܦܚܪܐ. ܐܝܟ ܦܬܓܡܗ
4 ܕܡܪܝܐ. ܘܗܐ ܗܘ ܥܒܕ ܥܒܕܐ ܥܠ ܐܒܢܐ. * ܘܐܬܚܒܠ ܗܘܐ ܡܐܢܐ ܕܛܝܢܐ ܕܥܒܕ ܗܘܐ
5 ܒܐܝܕܗ ܕܦܚܪܐ. ܘܗܦܟ ܘܥܒܕܗ ܡܐܢܐ ܐܚܪܢܐ ܐܝܟ ܕܫܦܪ. * ܘܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ
6 ܟܕ ܐܡܪ. * ܐܝܟ ܦܚܪܐ ܗܢܐ. ܠܐ ܡܫܟܚ ܐܢܐ ܠܡܥܒܕ ܥܡܟܘܢ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
7 ܗܐ ܐܝܟ ܛܝܢܐ ܒܐܝܕܝ ܦܚܪܐ. ܗܟܢܐ ܐܢܬܘܢ ܒܐܝܕܝ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. * ܐܢ ܡܢ ܫܠܝܐ
ܐܡܪ ܥܠ ܥܡܐ ܘܥܠ ܡܠܟܘܬܐ: ܠܡܥܩܪ. ܘܠܡܣܚܦ. ܘܠܡܦܟܦܟܘ ܘܠܡܘܒܕܘ:
8 * ܘܢܬܘܒ ܥܡܐ ܗܘ ܡܢ ܒܝܫܘܬܗ. ܐܗܦܘܟ ܡܢܗ ܒܝܫܬܐ ܕܐܬܚܫܒܬ ܠܡܥܒܕ ܠܗ.
9 * ܘܐܢ ܐܡܪ ܥܠ ܥܡܐ ܘܥܠ ܡܠܟܘܬܐ ܠܡܒܢܐ ܘܠܡܢܨܒ: * ܘܢܥܒܕ ܒܝܫ ܩܕܡܝ ܘܠܐ ܢܫܡܥ
10
11 ܒܩܠܝ. ܐܗܦܘܟ ܡܢܗ ܛܒܬܐ ܕܐܡܪܬ ܠܡܛܝܒܘ ܠܗ. * ܘܗܫܐ ܐܡܪ ܠܓܒܪܐ ܕܝܗܘܕܐ.
ܘܠܥܡܘܪܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܒܪܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟܘܢ ܒܝܫܬܐ. ܘܡܬܚܫܒ ܐܢܐ
ܥܠܝܟܘܢ ܡܚܫܒܬܐ. ܬܘܒܘ ܘܐܬܦܢܘ ܓܒܪ ܡܢ ܐܘܪܚܗ ܒܝܫܬܐ. ܘܐܬܩܢܘ ܐܘܪܚܬܟܘܢ.
12 ܘܥܒܕܝܟܘܢ. * ܘܐܡܪܘ ܗܢܘܢ. ܢܬܚܝܠ. ܘܒܬܪ ܡܚܫܒܬܢ ܢܐܙܠ. ܘܓܒܪ ܨܒܝܢܐ ܕܠܒܗ
13 ܒܝܫܐ ܢܥܒܕ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܫܐܠܘ ܒܥܡܡܐ ܡܢܘ ܫܡܥ ܐܝܟ ܗܠܝܢ.
14 ܫܛܝܘܬܐ ܪܒܬܐ ܥܒܕܬ ܒܬܘܠܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܐܢ ܚܣܝܪ ܡܢ ܛܘܪܐ ܕܬܕܝܐ ܬܠܓܐ ܘܡܢ
15 ܠܒܢܢ. ܘܐܢ ܡܬܟܠܝܢ ܡܝܐ ܩܪܝܪܐ ܢܘܟܪܝܐ ܕܪܕܝܢ. * ܡܛܠ ܕܛܥܝܘܢܝ ܥܡܝ.
ܠܣܪܝܩܘܬܐ. ܣܡܘ ܒܣܡܐ. ܘܐܬܬܩܠܘ ܒܐܘܪܚܬܗܘܢ. ܒܫܒܝܠܐ ܕܥܠܡ. ܠܡܐܙܠ
16 ܒܫܒܝܠܐ ܒܐܘܪܚܐ ܕܠܐ ܕܪܝܫܐ. * ܠܡܣܡ ܐܪܥܗܘܢ ܠܬܡܗܐ ܘܠܡܫܪܘܩܝܬܐ ܕܠܥܠܡ.
17 ܘܟܠ ܕܥܒܪ ܥܠܝܗ. ܢܬܕܡܪ. ܘܢܢܝܕ ܒܪܫܗ. * ܐܝܟ ܪܘܚܐ ܕܩܘܕܡܐ ܐܒܕܪ ܐܢܘܢ ܩܕܡ
ܒܥܠܕܒܒܐ. ܩܕܠܐ ܘܠܐ ܐܦܐ ܐܚܘܐ ܐܢܘܢ ܒܝܘܡܐ ܕܬܒܪܗܘܢ.

CAP. XVIII.

SErmo qui factus eſt ad Jeremiam à Dño, 1
dicendo; Surge, deſcende in domum figuli, 2
ibique declarabo tibi ſermones meos. Quare 3
cùm deſcendiſſē in domū figuli juxta ſermonē
Dñi, ecce is navabat opꝰ ſuꝑ incude (rotâ:)
At illo vaſe luteo quod faciebat, in manu fi- 4
guli corrupto, iterum compoſuit illud in aliud
vas quale voluit. Tum fuit ad me ſermo Do- 5
mini, dicendo; An ſicut figulus iſte non poſ- 6
ſem facere vobis Iſraelitæ, dicit Dominus?
Ecce qualis eſt argilla inter manus figuli, ta-
les eſtis vos inter manus meas Iſraelitæ. Si 7
repentè decernam populum aliquem aut re-
gnum convellere, demoliri, deturbare, ac per-
dere; Is autem populus convertatur à mali- 8
tia ſua, avertam ab eo malum quod illi face-
re propoſueram. Similiter ſi populum ali- 9
quem aut regnum ædificare & plantare ſtatu-
am; Is autem quod malum eſt coram me, per- 10
petraverit, nec audierit vocem meam; aver-
tam ab eo bonum quo illum afficere decreve-
ram. Jam ergò dic viris Judæ & civibus Je- 11
roſolymæ; Sic dicit Dominus, Ecce ma-
lum contra vos creo, & conſilium contra vos
molior: pœnitentiam agite, & revertimini
quiſque à via ſua peſſima, & corrigite vias
veſtras & actiones veſtras. Ipſi verò dixe- 12
runt, Obſtinemus *animum*, ſequamur cogita-
tiones noſtras, & quiſque libidinibus cordis
ſui peſſimi indulgeat. Iccirco ſic ait Dominꝰ, 13
Diſquirite inter gentes quis talia fecerit: ſtul-
titiam maximam commiſit virgo Iſraelis. An 14
deficeret nix à Monte uberum & à Libano?
& an deſiſterent aquæ frigidæ peregrinæ quæ
fluunt? Quòd oblivioni me tradiderint po- 15
pulus meus, vanitati thura adoleverint, & im-
pegerint in viis ſuis, in ſemitis æternis, eun-
do per ſemitas per viam non tritam: Ut ter- 16
ram ſuam exponant admirationi atque ſibilo
perpetuo, & quicunque per eam tranſierit,
obſtupeſcat, & agitet caput ſuum. Ut ven- 17
tus calidus diſſipabo illos coram inimicis:
cervicem, non autem faciem oſtendam eis die
calamitatum ipſorum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الثامن عشر *

1 * القول الصاير من قبل الرب الي ارمياء قايلا *
2 * قم وانزل الي بيت الفاخوري * وهناك تسمع اقوالي * فنزلت الي بيت الفاخوري * وها هو صنع
3
4 عملا علي الحجارة * فسقط الاناء الذي صنعه بيده * وصنعه ثانية اناء اخر كما رضي ان
5 يصنعه امامه * وكان قول الرب الي قايلا * اليس مثل هذا الفاخوري لا استطيع ان اصنعكم
6
7 يا بيت اسرايل * ها مثل طين الفاخوري انتم تكونون في يدي * اذا تكلمت بنهاية
8 علي امة او علي مملكة لاستاصلهم واهلكهم * فترجع تلك الامة عن جميع السرور * فارجع
9 عن جميع السرور التي تكلمت بها ان اصنعها بهم * واذا تكلمت بنهاية علي امم وعلي
10 ممالك ان ابنيها واغرسها * فيصنعون السرور امامي الا يسمعوا صوتي * فارجع عن جميع
11 الخيرات التي تكلمت بها ان اصنعها لهم * والان قلت عن رجال يهودا وعلي سكان ايروسليم *
وها انا اجلب عليكم سرورا وافكر عليكم فكرا * فليرجع كل واحد من طريقه
12 الرديه واصنعوا اعمالكم جيدا * فقالوا نتشجع لانا خلف ترجيعاتنا نمضي ونصنع
13 كل واحد مرضيات قلبه الردي * لاجل هذا هكذا يقول الرب * اسالوا في الامم
14 من سمع بهذه المرهوبات التي صنعتها الي العذري ايروسليم جدا * هل تفني الثدي
15 من الصخر والثلج من لبنان * او تميل الماء المحمول بريح عاصف * لان شعبي نسيني *
بخروا للباطل * ويصعقون في طرقاتهم ليسلكوا سبلا مقومة دهرية * وليس لهم طريق
16 مسلك * ليربوا ارضهم للفناء وللصفير الابدي * جميع المارين بها يتحيرون ويحركون
17 روسهم * مثل ريح سموم ابددهم لوجه اعدايهم * اظهرهم يوم هلاكهم *

CAP. XVIII.

SErmo habitus à Domino cum 1
Jeremia, dicendo;

Surge, & deſcende in domum figuli, 2
ibique audies ſermones meos. Cùm er- 3
gò deſcendiſſem in domum figuli, ecce
is opus fecerat ſuper lapides: Cadente 4
autem vaſe quod manu ſuâ fecerat,
denuo compoſuit illud in aliud vas,
prout illud componere ſibi placuit. Tunc 5
fuit ad me ſermo Domini dicentis;
Num ut figulus iſte non poſſem vos 6
facere O domus Iſrael? ecce tanquam
lutum figuli vos eſtis inter manus meas.
Quum facilè pronuntiavero de gente 7
aut de regno aliquo extirpando & per-
dendo; Si revertatur gens illa ab omni- 8
bus ſceleribus, ſimiliter ego revertar ab
omnibus malis quibus eos afficere ſta-
tueram. Rurſus quum facilè locutus 9
fuero de gentibus ac regnis ædificandis
ac plantandis; Si mala perpetrent coram 10
me, ita ut non audiant vocem meam; de-
ſiſtam ab omnibus bonis quibus eos af-
ficere decreveram. Jam verò cùm di- 11
xerim de viris Judæ & habitatoribus
Jeruſalem, En ego quoque adducturus
ſum contra vos mala, & cogito contra
vos cogitationem; ideo revertatur unuſ-
quiſque à via ſua prava, & bonas red-
dite actiones veſtras: Dicunt ipſi, Su- 12
mamus animos, etenim converſationes
noſtras proſequamur, & faciamus quiſ-
que placita animi ſui peſſimi. Hac de 13
cauſa ſic dicit Dominus, Interrogate
inter populos quis audierit talia hor-
renda qualia atrociter in me perpetra-
vit virgo Jeroſolyma. Num deficiant 14
ubera à rupe, & nix à Libano? an
divertatur aqua vento impetuoſo abre-
pta? Nam populus meus oblitus eſt mei, 15
adoleverunt vanitati, & languent in
viis ſuis, ut incedant per ſemitas rectas
perpetuas, cùm non ſit eis iter pervium:
Ut diſponant terram ſuam exitio & 16
ſibilo perpetuo: omnes qui tranſierint
per eam, obſtupeſcant & agitent capi-
ta ſua. Ut ventus uredinis diſperdam 17
eos ante faciem hoſtium ſuorum, tergo
poſtponam eos die perditionis eorum.

ירמיה : יט

non nam : cogitatus Irmejahu super cogitemus & ,Venite : dixerunt Et
18 ויאמרו לכו ונחשבה על־ירמיהו מחשבות כי־לא
.propheta à verbum & ,sapiente à consiliũ & ,sacerdote à lex peribit
תאבד תורה מכהן ועצה מחכם ודבר מנביא
universa ad attendamus ne & ,lingua *in* eum percutiamus & ,Venite
לכו ונכהו בלשן ואל־נקשיבה אל־כל־
.mecũ litigantiũ vocem *ad* audi & ,me ad Domine Attende .ejus verba
19 דבריו׃ הקשיבה יהוה אלי ושמע לקול יריבי׃
?meæ animæ foveam foderũt quia : malum bono pro *reddetur* Nunquid
20 הישלם תחת־טובה רעה כי־כרו שוחה לנפשי
avertendum ad ,bonum eis *super loquendum ad* ,*tuas facies ad me stare* Recordare
זכר׀ עמדי לפניך לדבר עליהם טובה להשיב
,famem in eorum filios da Propterea .eis ab tuam iram
21 את־חמתך מהם׃ לכן תן את־בניהם לרעב
, orbatæ eorum uxores sint & , gladii manus *super* eos fluere fac &
והגרם על־ידי־חרב ותהינה נשיהם שכלות
percussi eorum juvenes : morte occisi sint earum viri & , viduæ &
ואלמנות ואנשיהם יהיו הרגי מות בחוריהם מכי־
adduces nam : eorũ domibus de clamor Audiatur .prœlio in gladio
22 חרב במלחמה׃ תשמע זעקה מבתיהם כי־תביא
,me *capiendum ad* foveam foderunt quia : repentè *agmen* eos super
עליהם גדוד פתאם כי־כרו שיחה ללכדני
omne nôsti Domine tu Et .meis pedibus absconderunt laqueos &
23 ופחים טמנו לרגלי׃ ואתה יהוה ידעת את־כל־
,eorũ iniquitatem *super* expies ne : mortem in me *super* eorũ consilium
עצתם עלי למות אל־תכפר על־עונם
,*tuas facies ad offensi* sint Et .deleas ne *tuis faciebus* à eorũ peccatum &
וחטאתם מלפניך אל־תמחי והיו מכשלים לפניך
.eis cum fac tui *nasi* tempore in
בעת אפך עשה בהם׃

CAP. XIX. יט

, *testæ* figuli *lagenam - emes* & ,Vade : Dominus dixit Sic
1 כה אמר יהוה הלך וקנית בקבק יוצר חרש
ad *exibis* Et .sacerdotum senioribus de & , populi senioribus de &
2 ומזקני העם ומזקני הכהנים׃ ויצאת אל־
prædicabis & ,*solaris* portæ *ostio* *quæ* , Hinnom filii vallem
גיא בן־הנם אשר פתח שער החרסות וקראת
Audite : *dices* Et .te ad loquar quæ , verba ibi
3 שם את־הדברים אשר־אדבר אליך׃ ואמרת שמעו
dixit Sic : Jerusalaim habitatores & ,Jehudah reges Domini verbum
דבר־יהוה מלכי יהודה וישבי ירושלם כה־אמר
super malum *adducens* ego Ecce : Israel Deus exercituum Dominus
יהוה צבאות אלהי ישראל הנני מביא רעה על־
Eo .ejus aures tinnient ,*illud audientis* omnis quod ,istum locum
4 המקום הזה אשר כל־שמעה תצלנה אזניו׃ יען
adoleverunt & ,istum locum alienaverunt & ,me dereliquerũt quód
אשר עזבני וינכרו את־המקום הזה ויקטרו־
,eorũ patres & , ipsi ,*eos* noverunt non quos , alienis Diis eo in
בו לאלהים אחרים אשר לא־ידעום המה ואבותיהם
.innocentũ sanguine istum locum repleverũt & : Jehudah reges &
ומלכי יהודה ומלאו את־המקום הזה דם נקים׃
igni in suos filios comburendũ ad , Bahal excelsa ædificaverũt Et
5 ובנו את־במות הבעל לשרף את־בניהם באש
ascendit nec ,sum locutus nec ,præcepi non quod : Bahal *ipsi ascensiones*
עלות לבעל אשר לא־צויתי ולא דברתי ולא עלתה
,Dominus dixit ,*venientes* dies ecce Propterea .meum cor super
6 על־לבי׃ לכן הנה־ימים באים נאם־יהוה
filii vallis & , Topheth amplius *isti loco* , vocabitur non &
ולא־יקרא למקום הזה עוד התפת וגיא בן־
.occisionis Vallis *quinimo* : Hinnom
הנם כי אם־גיא ההרגה׃

Versio VULG. LAT.

18 Et dixerunt; Venite, & cogitemus contra Jeremiam cogitationes: non enim peribit lex à sacerdote, neque consilium à sapiente, nec sermo à propheta: venite, & percutiamus eum linguá, & non attendamus ad universos
19 sermones ejus. Attende, Domine, ad me, & audi vocem adversari-
20 orum meorũ. Numquid redditur pro bono malum, quia foderunt foveã animæ meæ? Recordare ꝙ steterim in conspectu tuo, ut loquerer pro eis bonum, & averterem indignationem tuam ab eis.
21 Propterea da filios eorum in famem, & deduc eos in manus gladii: fiant uxores eorum absque liberis, & viduæ: & viri earum interficiantur morte: juvenes eorum confodiantur gladio in
22 prælio. Audiatur clamor de domibus eorum: adduces enim super eos latronem repenté: quia foderunt foveam ut caperent me, & laqueos absconderunt pedibꝰ
23 meis. Tu autem, Domine, scis omne consilium eorum adversũm me in mortem: ne propitieris iniquitati eorum, & peccatum eorum à facie tua non deleatur: fiant corruentes in conspectu tuo, in tempore furoris tui abutere eis.

CAP. XIX.

1 HÆc dicit Dominus; Vade, & accipe lagunculam figuli testeam à senioribus populi, & à senio-
2 ribus sacerdotum: Et egredere ad vallem filii Ennom, quæ est juxta introitum portæ fictilis: & prædicabis ibi verba, quæ ego
3 loquar ad te. Et dices; Audite verbum Domini, reges Juda, & habitatores Jerusalem: hæc dicit Dominus exercituũ Deus Israel; Ecce ego inducã afflictioné sup locũ istũ, ita ut omnis, qui audie-
4 rit illã, tinniant aures ejus: Eò quòd dereliquerint me, & alienũ fecerint locum istum: & libaverunt in eo diis alienis, quos nescierunt ipsi, & patres eorum, & reges Juda: & repleverunt locum istum sanguine innocen-
5 tum. Et ædificaverunt excelsa Baalim, ad comburendos filios suos igni in holocaustũ Baalim: quæ non præcepi, nec locutus sum, nec ascenderunt in cor me-
6 um. Propterea ecce dies veniunt, dicit Dominus: & non vocabitur amplius locus iste, Topheth, et Vallis filii Ennom, sed Vallis occisionis.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

18 Καὶ εἶπαν, (σ) Δεῦτε καὶ λογισώμεθα ἐπὶ Ἱερεμίαν λογισμὸν, ὅτι οὐκ ἀπολεῖται νόμος ἀπὸ ἱερέως, καὶ βουλὴ ἀπὸ συνετοῦ, καὶ λόγος ἀπὸ προφήτου· δεῦτε καὶ πατάξωμεν (τ) αὐτὸν ἐν γλώσσῃ, καὶ ἀκουσόμεθα πάντας τοὺς
19 λόγους αὐτοῦ. Εἰσάκουσόν μου κύριε, καὶ (υ) εἰσ-
20 άκουσον τῆς φωνῆς τοῦ δικαιώματός μου. Εἰ ἀνταποδίδοται ἀντὶ ἀγαθῶν κακὰ, ὅτι συνελάλησαν ῥήματα κατὰ τῆς ψυχῆς μου, καὶ τὴν κόλασιν αὐτῶν (φ) ἔκρυψάν μοι. μνήσθητι ἑστηκότος μου κατὰ πρόσωπόν σου, τοῦ λαλῆσαι ὑπὲρ αὐτῶν ἀγαθὰ, τοῦ ἀποστρέψαι τὸν
21 θυμόν σου ἀπ᾽ αὐτῶν. Διὰ τοῦτο δὸς τοὺς υἱοὺς αὐτῶν εἰς λιμὸν, καὶ ἄθροισον αὐτοὺς εἰς χεῖρας (χ) μαχαίρας· γενέσθωσαν αἱ γυναῖκες αὐτῶν (ψ) ἄτεκνοι καὶ χῆραι, καὶ οἱ ἄνδρες αὐτῶν (ω) γενέσθωσαν ἀνῃρημένοι θανάτῳ, καὶ οἱ νεανίσκοι αὐτῶν πεπτωκότες (α)
22 μαχαίρᾳ ἐν πολέμῳ. Γενηθήτω κραυγὴ ἐν ταῖς οἰκίαις αὐτῶν· (β) ἐπάξεις ἐπ᾽ αὐτοὺς λῃστὰς ἄφνω, ὅτι ἐνεχείρησαν λόγον εἰς σύλληψίν μου, καὶ παγίδας ἔκρυψαν ἐπ᾽ ἐμέ.
23 Καὶ σὺ (γ) κύριε ἔγνως ἅπασαν τὴν βουλὴν (δ) αὐτῶν ἐπ᾽ ἐμὲ εἰς θάνατον· μὴ (ε) ἀθῳώσῃς τὰς ἀδικίας αὐτῶν, καὶ τὰς (ζ) ἁμαρτίας αὐτῶν ἀπὸ προσώπου σου (η) μὴ ἐξαλείψῃς. γενέσθω ἡ ἀσθένεια αὐτῶν ἐναντίον σου, ἐν καιρῷ θυμοῦ σου (θ) ποίησον ἐν αὐτοῖς.

MS. A. (σ) Δεῦτε, λογισώμεθα (τ) αὐτὸν γλώσσῃ, (υ) ἐπάκουσον (φ) ἔκρυψαν. μνήσθητι (χ) μαχαίρης· (ψ) ἄτεκνοι χῆραι, (ω) ἐσώτεσαν ἡρημένοι ἐν θανάτῳ, (α) ἐν μαχαίρῃ (β) ἐπάγαγε (γ) κύριε κύριε (δ) αὐτῶν ἣν ἐβουλεύσαντο ἐπ᾽ ἐμὲ (ε) ἀθῳώσῃς (ζ) ἁμαρτίας τῶν πατέρων αὐτῶν (η) καὶ μὴ ἐξαλείψῃς. (θ) ποίησον αὐτοῖς.

ΚΕΦ. ιθʹ.

1 ΤΟτε εἶπε κύριος πρός με, Βάδισον, καὶ κτῆσαι βικὸν πεπλασμένον ὀστράκινον, καὶ ἄξεις ἀπὸ τῶν πρεσβυτέρων τοῦ (α) λαοῦ καὶ
2 ἀπὸ τῶν ἱερέων, Καὶ ἐξελεύσῃ εἰς τὸ πολυάνδριον υἱῶν τῶν τέκνων αὐτῶν, ὅ ἐστιν ἐπὶ τῶν προθύρων (β) πύλης τῆς Χαρσείθ· καὶ ἀνάγνωθι ἐκεῖ πάντας τοὺς (γ) λόγους τού-
3 τους, οὓς ἂν λαλήσω πρὸς σέ, Καὶ ἐρεῖς αὐτοῖς, Ἀκούσατε (δ) τὸν λόγον κυρίου βασιλεῖς (ε) Ἰούδα, καὶ ἄνδρες Ἰούδα, καὶ οἱ κατοικοῦντες ἐν Ἰερουσαλὴμ, καὶ οἱ εἰσπορευόμενοι ἐν ταῖς πύλαις ταύταις· τάδε λέγει κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω ἐπὶ τὸν τόπον τοῦτον κακὰ, ὥστε παντὸς (ζ) ἀκούοντος αὐτὰ ἠ-
4 χήσει τὰ ὦτα αὐτοῦ. Ἀνθ᾽ ὧν ἐγκατέλιπόν με, καὶ ἀπηλλοτρίωσαν τὸν τόπον τοῦτον, καὶ ἐθυμίασαν ἐν αὐτῷ θεοῖς ἀλλοτρίοις, οἷς οὐκ ᾔδεισαν αὐτοὶ καὶ οἱ πατέρες αὐτῶν· καὶ οἱ βασιλεῖς Ἰούδα ἔπλησαν τὸν τόπον τοῦτον
5 αἱμάτων ἀθῴων, Καὶ ᾠκοδόμησαν ὑψηλὰ τῇ Βάαλ, τοῦ κατακαίειν τοὺς υἱοὺς αὐτῶν ἐν πυρὶ, ἃ οὐκ ἐνετειλάμην, (η) οὐδὲ διενοήθην
6 ἐν τῇ καρδίᾳ μου. Διὰ τοῦτο ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, λέγει κύριος, καὶ οὐ κληθήσεται (θ) τῷ τόπῳ τούτῳ ἔτι Διάπτωσις καὶ Πολυάνδριον υἱοῦ (ι) Ἐννὼμ, ἀλλ᾽ ἢ Πολυάνδριον τῆς σφαγῆς.

MS. A. (α) λαοῦ σου καὶ ἀπὸ τῶν πρεσβυτέρων τῶν ἱερέων, (β) τῆς πύλης (γ) λόγοις, οὓς ἐὰν (δ) λόγοις (ε) Ἰούδα, καὶ οἱ κατοικοῦντες Ἱερουσαλὴμ, (ζ) ἀκούοντος ἠχήσει (η) οὐδὲ ἐλάλησα, οὐδὲ (θ) ἐπὶ τῷ τόπῳ τούτῳ Διάπτωσις (ι) Ἐννόμ,

Et dixerunt; Venite, & cogitemꝰ super Hieremiam cogitationem: non enim peribit lex à sacerdote, neq; consilium à sapiente, nec sermo à propheta. Venite, & percutiamus eum in lingua: & (e) audiemus universos sermones ejus. 18
Exaudi me, Domine, & exaudi vocem justificationis meæ. Si redduntur pro bonis mala; quia colloquuti sunt verba contra animã meam, (f) & punitionem suam occultãrunt mihi? Recordare, quòd steterim ego ad faciem tuam, ut loquerer pro eis bona, ut averterẽ indignationem tuam ab eis. 19 20
Propterea da filios eorum in famem: & congrega eos in manus gladii. Fiant uxores eorum absq; liberis, & viduæ: & viri earum sint sublati morte, & juvenes eorum jacentes gladio in prælio. 21
Fiat clamor in domibus eorum. Adduces super eos repentè latrones; quia aggressi sunt verbum in captionem mei, & laqueos absconderunt super me. 22
Et tu, Domine, scis omne consilium eorum super me in mortem: ne mundes iniquitates eorum: & peccata eorum à facie tua ne deleas. Fiat infirmitas eorum coram te: in tempore furoris tui fac in eis. 23

CAP. XIX.

TUnc dixit Dominus ad me; Vade, & posside doliolum fictum testeum: & adduces de senioribus populi, & de sacerdotibus, 1
Et exibis in (a) polyandrion (b) filiorum filiorum eorum, quod est super vestibula portæ Charsith: & lege ibi omnia verba hæc, quæcunque loquutus fuero ad te: 2
Et dices eis; Audite verbũ Domini, reges Juda, & viri Juda, & habitatores Hierusalem, (c) & qui ingredimini in portis his. Hæc dicit Dominus Deus Israel; Ecce ego induco super locum istum mala, ut omnis, qui audit illa, tinniant aures ejus: 3
Pro eo, quòd dereliquerũt me, & alienum fecerunt locum istum, & adoleverunt in eo diis alienis, quos nescierunt ipsi, & patres eorum; & reges Juda repleverunt locum istum sanguinibus innocentibus: 4
Et ædificaverunt excelsa Baal, ad comburendos filios suos in igne: quæ non (d) præcepi, neque cogitavi in corde meo. 5
Idcircò ecce dies veniunt, dicit Dominus; & non vocabitur locus iste ampliùs (e) Ruina, & Polyandrion filii Ennom, sed Polyandrion occisionis. 6

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

18 ואמרו אתו ונחשב על ירמיה מחשבן ארי לא תפסוק אוריתא מכהן ומלך מחכים
ואולפן מספר אתו ונסהדניה סהדון דשקר ולא נצית לכל פתגמוהי׃ גלי קדמך 19
20 יי דיני ושמע קדמך עולבני׃ האפשר לשלמא חלף טבתא בישתא ארי כרו פחרת
למקטלי יעול דוכרן מקמי קדמך למללא עליהון פתגמין תקנין לאתבא ית חמתך
21 מנהון׃ בכן הב ית בניהון לכפנא ותבבנון על ידי קטולי חרבא ויהוין נשיהון תכלן
22 וארמלן וגבריהון יהון קטילי מותא עולימיהון מטעני חרבא בקרבא׃ תשתמע
צוחתא מבתיהון ארי תיתי עליהון משרין בתכף ארי כרו פחית למקטלי וקולין צלו
23 לפרסת רגלי׃ ואת יי ידיע וגלי קדמך ית כל אתמלוכיהון עלי למקטלי לא תכפר על
חוביהון וחטאיהון מן קדמך לא יתמחון ויהון מתכלין דמן קדמך בעדן פורענות
רוגזך אתפרע מנהון׃

יט

1 כדנן אמר יי לי אזל ותזבון זלוע דחסף פחר ותדבר עמך מסבי עמא ומסבי כהניא׃
2 ותפוק לחילת בר הנם דקדם תרע קלקלתא ותתנבי תמן ית פתגמא דאמליל
3 עמך׃ ותימר קבילו פתגמא דיי מלכיא דבית יהודה ויתבי ירושלם כדנן אמר יי
צבאות אלהא דישראל הא אנא מיתי בשתא על אתרא הדין דכל דישמעניה יצלן
4 אודנוהי׃ חלף דשבקו פולחני וסאיבו ית אתרא הדין ואסיקו ביה בוסמין לטעות
עממיא דלא ידעונון אנון ואבהתהון ומלכיא דבית יהודה ומלו ית אתרא הדין דם
5 זכאין׃ ובנו ית במת בעלא לאוקדא ית בניהון בנורא עלון לבעלא דלא פקדית באוריתי
6 ודלא שלחית ביד עבדי נביא ולא רעוא קדמי׃ בכן הא יומיא אתן אמר יי לא
יתקרי לאתרא הדין עוד תופת וחילת בר הנם אלהן חילת קטיליא׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et dixerunt: Venite & cogitemꝰ contra Jeremiam cogitationes. Non enim deficiet lex à sacerdote, & consilium à sapiente, nec doctrina à scriba. Venite & testificemur contra eum falsa testimonia, & non auscultemus omnia verba ejꝰ. 18
Notũ est corã te Dñe judicium meum, & audita est coram te injuria mea. 19
Nunquid reddi potest pro bono malum? Quia foderunt foveam ut occidant me: recordare quomodo steterim corã te ad loquendum pro eis verba recta, ut averterem irã tuã ab eis. 20
Propterea da filios eorum in famẽ, & trade eos in manꝰ occidentium gladio, & sint uxores eorum orbatæ & viduæ; & viri earum sint interfecti morte: juvenes eorum sint percussi gladio in prælio. 21
Audietur clamor de domibus eorum, cùm adduxeris contra eos exercitus repentè; qui foderunt foveã ut interficerent me, & laqueos extenderunt plantis pedum meorum. 22
Tu autem Dñe scis, & manifesta sunt corã te omnia consilia eorum contra me, ad interficiendum me: ne propitieris iniquitatibꝰ eorum, & peccata eorum à facie tua ne deleantur: et sint corruentes corã te; in tempore ultionis furoris tui vindictã sume ex eis. 23

CAP. XIX.

HÆc dicit Dñs: Vade & eme tibi lagunculam testaceam figuli, & tolles tecum de senioribꝰ populi, & de senioribus sacerdotum. 1
Et egredere ad vallem filii Hennon quæ est ante Portam sterquilinii: & prophetabis ibi verba quæ loquar tecum. 2
Et dices: Suscipite verbum Dñi reges domus Juda & habitatores Jerusalem: Hæc dicit Dñs exercituum Deus Israel; Ecce ego adducam malum super locum istum, ita ut omnis qui illud audierit, tinniant aures ejus. 3
Pro eo quòd dereliquerunt cultum meum, & coinquinaverunt locum istum, & adoleverunt in eo aromata idolis populorum, quæ non cognoverunt ipsi & patres eorum & reges domus Juda; & impleverunt locum istum sanguine innocentum. 4
Et ædificaverunt excelsa Baal, ad comburendos filios suos igne in holocausta Baal: quod non præcepi in lege mea, nec misi per manum servorum meorum prophetarum; nec est voluntas coram me. 5
Propterea ecce dies venient, dicit Dominus, & non vocabitur locus iste ultrà Thopheth, et vallis filii Hennon; sed vallis occisorum, 6

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

18 * ܘܐܡܪܘ ܬܘ ܢܬܚܫܒ ܡܚܫܒܬܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ܀ ܕܠܐ ܬܐܒܕ ܢܡܘܣܐ ܡܢ ܟܗܢܐ܀ 18
ܘܡܠܟܐ ܡܢ ܚܟܝܡܐ܀ ܘܡܠܬܐ ܡܢ ܢܒܝܐ. ܬܘ ܢܡܚܝܘܗܝ ܒܠܫܢܗ܀ ܘܠܐ ܢܨܘܬ
ܠܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܘܗܝ. * ܘܨܘܬ ܠܝ ܡܪܝܐ܇ ܘܫܡܥ ܩܠ ܥܘܠܒܢܝ. * ܕܠܡܐ ܦܪܥܝܢ ܒܝܫܬܐ 19
20
ܚܠܦ ܛܒܬܐ܀ ܕܚܦܪܘ ܓܘܡܨܐ ܠܢܦܫܝ. ܐܬܕܟܪ ܕܩܡܬ ܩܕܡܝܟ ܘܡܠܠܬ ܥܠܝܗܘܢ
ܛܒܬܐ܀ ܠܡܗܦܟܘ ܚܡܬܟ ܡܢܗܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܒ ܒܢܝܗܘܢ ܠܟܦܢܐ܀ ܘܐܫܠܡ 21
ܐܢܘܢ ܠܐܝܕܝ ܚܪܒܐ. ܢܗܘܝܢ ܢܫܝܗܘܢ ܬܟܠܢ. ܘܐܪܡܠܢ. ܘܓܒܪܝܗܘܢ. ܢܗܘܘܢ ܩܛܝܠܝ
ܚܪܒܐ ܒܩܪܒܐ. * ܢܫܬܡܥ ܩܥܬܐ ܡܢ ܒܬܝܗܘܢ܀ ܟܕ ܬܝܬܐ ܥܠܝܗܘܢ ܓܝܣܐ ܡܢ ܫܠܝ. 22
ܡܛܠ ܕܚܦܪܘ ܓܘܡܨܐ ܠܢܦܫܝ ܠܡܐܚܕܢܝ. ܘܦܚܐ ܛܫܝܘ ܠܪܓܠܝ. * ܘܐܢܬ ܡܪܝܐ 23
ܝܕܥ ܐܢܬ ܟܠ ܬܪܥܝܬܗܘܢ ܥܠܝ ܠܡܘܬܐ. ܘܠܐ ܬܚܘܣ ܥܠ ܥܘܠܗܘܢ. ܘܚܛܗܝܗܘܢ ܡܢ
ܩܕܡܝܟ. ܠܐ ܬܥܛܐ. ܢܗܘܘܢ ܬܩܝܠܝܢ ܩܕܡܝܟ܀ ܘܒܥܕܢܐ ܕܪܘܓܙܟ. ܥܒܕ ܒܗܘܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܛ *

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܙܠ ܘܙܒܢ܀ ܩܘܠܬܐ ܕܦܚܪܐ܀ 1
ܘܕܒܪ ܥܡܟ ܡܢ ܣܒܐ ܕܥܡܐ. ܘܡܢ ܣܒܐ ܕܟܗܢܐ. * ܘܦܘܩ ܠܢܚܠܐ ܕܒܪ ܗܢܘܡ܀ ܕܒܡܥܠܢܐ 2
ܕܬܪܥܐ ܕܚܪܣܝܬ܀ ܘܐܟܪܙ ܬܡܢ ܦܬܓܡܐ ܕܐܡܪ ܐܢܐ ܠܟ. * ܘܐܡܪ܀ ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ 3
ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܒܢܝ ܐܘܪܫܠܡ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܐܝܠ.
ܗܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܒܝܫܬܐ ܥܠ ܐܬܪܐ ܗܢܐ܀ ܕܟܠ ܕܢܫܡܥܝܗ ܢܨܠܢ ܐܕܢܘܗܝ. * ܡܛܠ ܕܫܒܩܘܢܝ 4
ܘܛܢܦܘܗܝ ܠܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܘܣܡܘ ܒܗ ܒܣܡܐ ܠܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ. ܕܠܐ ܝܕܥܘ ܐܢܘܢ ܘܐܒܗܝܗܘܢ
ܘܡܠܟܝܗܘܢ ܕܝܗܘܕܐ܀ ܘܡܠܘܗܝ ܠܐܬܪܐ ܗܢܐ ܕܡܐ ܕܙܟܝܐ܀ * ܘܒܢܘ ܒܝܬ ܒܥܠܐ 5
ܠܡܘܩܕܘ ܒܢܝܗܘܢ ܒܢܘܪܐ ܝܩܕܐ ܠܒܥܠܐ܀ ܕܠܐ ܦܩܕܬ. ܘܠܐ ܐܡܪܬ. ܘܠܐ ܣܠܩܬ
ܥܠ ܠܒܝ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܀ ܕܠܐ ܢܬܩܪܐ ܬܘܒ ܐܬܪܐ ܗܢܐ 6
ܬܘܦܬ ܘܢܚܠܐ ܕܒܪ ܗܢܘܡ. ܐܠܐ ܢܚܠܐ ܕܩܛܝܠܐ.

Præterea dixerunt; Adeſte, conſilium ſtruamus 18
contra Jeremiã, ne pereat lex à ſacerdotibus,
conſilium à ſapientibus, & verbum à
prophetis: adeſte, percutiamus linguam ipſius,
ne auſcultemus tot ſermones ejus. Attende 19
ad me Domine, & audi vocem oppreſſionis
meæ. An rependendum eſt mihi malum pro 20
bono, quòd foderint foveam animæ meæ? Recordare
quòd ſteterim coram te, & bene ſim
locutus de eis, ut averterem iram tuam ab eis.
Propterea expone filios eorum fami, & trade 21
illos in manus gladii: fiant uxores eorum orbæ
ac viduæ, & viri eorum gladio confoſſi in
prælio. Audiatur clamor è domibus eorum, 22
quum adduxeris contra eos turmam repentè:
quia foderunt foveam animæ meæ ad capiendum
me, & laqueos abdiderunt pedibus meis.
Jam tu Domine cognoſcens omnes qui mihi 23
necem machinantur, & ne parcas ſceleri eorum,
& peccata eorum à conſpectu tuo ne deleas:
ſint proſtrati coram te, & tempore indignationis
tuæ age contra eos.

CAP. XIX.

Sic dixit mihi Dominus, Abi, & eme lagunculam 1
teſtaceam: tum ductis tecum de ſenioribus
populi, & de ſenioribus ſacerdotum,
Egredere ad vallem filii Hennom quæ eſt in 2
ingreſſu portæ Hadſith, ibique prædica ſermones
quos tibi dicam. Dic ergò, Audite 3
ſermonem Domini reges Judæ, & cives Jeroſolymæ:
Sic dicit Dominus potentiſſimus
Deus Iſraelis, Ecce ego adducturus ſum malum
ſuper locum iſtum, quod quiſquis audierit,
tinnient aures ejus. Quia dereliquerunt 4
me, & polluerunt locum iſtum, & poſuerunt
in eo thura diis alienis quos nec ipſi noverant,
neque patres eorum, neque reges Judæ:
impleverunt locum iſtum ſanguine innoxio:
Et ædificaverunt altaria Baali ad comburendum 5
filios ſuos igne, holocauſtum Baali: quod
non præceperam, neque dixeram; neque ſubierat
in mentem meam? Propterea ecce 6
dies venturi ſunt, ait Dominus; ut non vocetur
ampliùs locus iſte Topheth aut Vallis
filii Hennom, ſed Vallis occiſorum.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

18 * فقالوا تعالوا نفكر على ارمياء فكرا * لانه لا يبيد الناموس من الكاهن والراي من الفهيم
19 والقول من النبي * تعالوا فنضربه باللسان ونسمع جميع اقواله * اسمعني يا رب واستجب صوت
20 معدلتي * ايكافى عوض الخيرات شرورا * لانهم تكلموا كلاما على نفسي واخفوا عقوبتهم *
21 اذكر قيامي لوجهك لاتكلم عنهم بالصالحات لترد غضبك عنهم * لاجل هذا اعطهم للجوع
واجمعهم لايدي السيف * لتصر نساوهم ارامل ثكالى * ورجالهم قياما قتلى بالموت * وشبانهم
22 ساقطين بالسيف في الحرب * لتكن الصرخة في بيوتهم * اجلب عليهم اللصوص بغتة لانهم
23 تخيروا قولا لمسكي * واخفوا لي فخاخا * وانت يا رب عرفت كل رايهم الذي راوه علي للموت *
لا تبري ظلاماتهم * وخطايا اباىهم من وجهك لا تمحهم * ليكن ضعفهم امامك * في زمن
غضبك اصنعه لهم *

* الفصل التاسع عشر *

* الاصحاح الثاني عشر *

1 * حينئذ قال الرب لي * امض واقتن كرازا مجبولا خزفيا * وهات من شيوخ شعبك ومن شيوخ
2 الكهنة * واخرج الى وادي بني هنم الذي هو قبالة باب حرسيت * واقرا هناك جميع الاقوال
3 التي اتكلم بها معك اذن * وتقول لهم اسمعوا كلمات الرب يا ملوك يهودا وسكان اورشليم *
والداخلون في هذه الابواب * هكذا يقول الرب اله اسرائيل * ها انا اجلب على هذا الموضع
4 شرورا * حتى كل من سمع تطن اذناه * من اجل انهم اجتنبوني وغربوا هذا الموضع * وبخروا
فيه للالهة الغريبة التي لم يعرفوها هم ولا اباوهم ولا ملوكهم * وملوا هذا الموضع من الدماء
5 الزكية * وبنوا مشارف للبعال ليحرقوا بنيهم بالنار * ما لم امرهم به ولم اقله * ولا تفكرت به في
6 قلبي * لاجل هذا ها ايام تاتي يقول الرب * فلا يدعى معبر على هذا الموضع * ولا وادي
بن ادوم * لكن وادي الذبح *

Dixerunt autem, Agite, cogitemus contra 18
Jeremiam cogitationem: neque enim peribit
lex à ſacerdote, & conſilium à ſapiente,
neque ſermo à propheta: agite,
percutiamus eum linguâ, & audiamus
omnes ſermones ipſius: Audi 19
me O Domine, & exaudi vocem litis
meæ. Num rependuntur pro bonis mala, 20
quòd locuti ſunt verba contra animam
meam, & abſconderunt pœnam quam in
me machinantur? *Recordare aſſiſtentiæ*
meæ coram facie tua ad loquendum pro
eis bona, ut averteres indignationem tuam
ab eis. Iccirco trade eos fami, & con- 21
grega illos in manus gladii; fiant uxores
eorum viduæ orbæ, & viri eorum maneant
nece extincti, et juvenes eorum gladio
proſtrati in bello. Sit clamor in domibus 22
eorum, adduc in eos latrones ex improviſo:
quia ſelegerunt ſermonem ad capiendum
me, & abſconderunt mihi laqueos.
Itaque tu O Domine qui *nôſti omne con-* 23
ſilium eorum quod excogitaverunt contra
me ad mortem, ne expies impietates eorum,
& peccata patrum ipſorum à conſpectu
tuo ne deleas: ſit infirmitas eorum
coram te, eâq; tempore furoris tui affice
illos.

CAP. XIX.

Textus duodecimus.

Tunc dixit mihi Dominus, Surge, & 1
compara tibi lagenã fictilem teſtaceã:
& adhibitis è ſenioribus populi tui & è
ſenioribus ſacerdotum, Exibis ad vallem 2
filiorũ Hennom, quæ eſt ex adverſo portæ
Harſith, ibiq; recita ſermones omnes quos
tibi ſum dicturus: Et dices eis, Audite 3
verba Domini O reges Judæ, & habitatores
Jeruſalem, & quotquot ingredimini
per has portas. Sic ait Dominus Deus Iſraelis,
Ecce ego adducã ſuper hunc locum
talia *mala, ut quiſquis audierit tinniant*
aures ejus. Eò quòd receſſerunt à me, ali- 4
enum reddiderunt hunc locum, & adoleverunt
in ipſo diis extraneis quos nec ipſi
cognoſcebant, nec patres eorum, nec reges
eorum; impleverunt hunc locum ſanguinibus
innoxiis; Et ædificaverunt excelſa 5
Baali, ut filios ſuos igne comburerent:
quod non præceperam eis, neque dixeram,
neq; animo conceperam: Idcirco ecce dies 6
venient, dicit Dominus, cùm non vocabitur
Tranſitus locus iſte, neque Vallis
filii Ennom, ſed Vallis jugulationis.

ירמיה: כ

, isto loco in Jerusalaim & , Jehudah consilium evacuabo Et
7 ובקתי את עצת יהודה וירושלם במקום הזה
quærentiū manu in & ,suorū inimicorū facies ad ,gladio in eos faciam cadere &
והפלתים בחרב לפני איביהם וביד מבקשי
,cœlorum volatili escam in eorū cadaver dabo & : eorum animam
נפשם ונתתי את נבלתם למאכל לעוף השמים
,stuporem in hanc civitatem ponam Et .terræ bestiæ &
8 ולבהמת הארץ: ושמתי את העיר הזאת לשמה
super sibilabit & ,obstupescet ,eam per transiens Omnis .sibilum in &
ולשרקה כל עבר עליה ישם וישרק על
& ,suorū filiorū carnem eos faciam comedere Et .ejus plagis universis
9 כל מכתה: והאכלתים את בשר בניהם ואת
,obsidione in,comedent sui socii carnem unusquisque & ,suarū filiarū carnem
בשר בנתיהם ואיש בשר רעהו יאכלו במצור
.eorū animā quærentes &,eorū inimici eos coarctabunt quā ,coarctatione in &
ובמצוק אשר יציקו להם איביהם ומבקשי נפשם:
dices Et .tecum euntium virorum oculis in lagenam conteres Et
10 11 ושברת הבקבק לעיני האנשים ההלכים אותך: ואמרת
conteram Sic : exercituum Dominus dixit Sic : eos ad
אליהם כה אמר יהוה צבאות ככה אשבר
vas contereret sicut , istam civitatem & , istum populum
את העם הזה ואת העיר הזאת כאשר ישבר את כלי
,sepelientur Topheth in & : ultrà sanari poterit non quod , figuli
היוצר אשר לא יוכל להרפה עוד ובתפת יקברו
ait , huic loco faciam Sic .sepeliendum ad loco non à
12 מאין מקום לקבור: כן אעשה למקום הזה נאם
.Topheth sicut hanc civitatem dandum ad &,ej' habitatorib' &,Dominus
יהוה וליושביו ולתת את העיר הזאת כתפת:
Topheth locus sicut Jehudah regum domus &,Jerusalaim domus erunt Et
13 והיו בתי ירושלם ובתי מלכי יהודה כמקום התפת
earum tectis super adoleverunt quarum ,domos omnes propter ,immundæ
הטמאים לכל הבתים אשר קטרו על גגתיהם
.alienis Diis libamina libare & , cœlorum militiæ omni
לכל צבא השמים והסך נסכים לאלהים אחרים:
illuc Dominus eum miserat quò , Topheth de Irmejah venit Et
14 ויבא ירמיהו מהתפת אשר שלחו יהוה שם
omni ad dixit & ,Domini domus atrio in stetit & : vaticinandum ad
להנבא ויעמד בחצר בית יהוה ויאמר אל כל
ego Ecce : Israel Deus exercituum Dominus dixit Sic .populum
15 העם: כה אמר יהוה צבאות אלהי ישראל הנני
,malum omne ,ej' urbes omnes super & , istam civitatem ad adducens
מבי אל העיר הזאת ועל כל עריה את כל הרעה
,suā cervicem induraverunt quoniam : eam contra sum locutus quod
אשר דברתי עליה כי הקשו את ערפם
.mea verba audiendum non ad
לבלתי שמוע את דברי:

CAP. XX. כ

dux præpositus ipse &) ,sacerdos Immer filius Paschur audivit Et
1 וישמע פשחור בן אמר הכהן והוא פקיד נגיד
.ista verba prophetantem Irmejahu (Domini domo in
בבית יהוה את ירמיהו נבא את הדברים האלה:
, cryptam in eum dedit & :prophetā Irmejahu Paschur percussit Et
2 ויכה פשחור את ירמיהו הנביא ויתן אתו על המהפכת
.Domini domo in quæ , superiori Binjamin porta in quæ
אשר בשער בנימן העליון אשר בבית יהוה:
: crypta de Irmejahu Paschur eduxit & ,crastino à fuit Et
3 ויהי ממחרת ויצא פשחור את ירמיהו מן המהפכת
,tuū nomē Dominus vocavit Paschur Non : Irmejahu eum ad dixit &
ויאמר אליו ירמיהו לא פשחור קרא יהוה שמך
.Missabib Maghor quinimò
כי אם מגור מסביב:

Versio VULG. LAT.

7 Et dissipabo consilium Juda &
Jerusalem in loco isto: & subver-
tam eos gladio in conspectu ini-
micorum suorū, & in manu quæ-
rentium animas eorum: & dabo
cadavera eorum, escam volatili-
8 bus cœli, & bestiis terræ. Et
ponam civitatem hanc in stupo-
rem, & in sibilum: omnis qui
prætererit per eam, obstupescet,
& sibilabit super universa plaga
9 ejus. Et cibabo eos carnibus fili-
orum suorum, & carnibus filiarū
suarum: & unusquisque carnem
amici sui comedet in obsidione,
& in angustia, in qua concludent
eos inimici eorum, & qui quæ-
10 runt animas eorum. Et conteres
lagunculam in oculis virorum,
11 qui ibunt tecum. Et dices ad
eos; Hæc dicit Dñs exercituum;
Sic conteram populum istum, &
civitatem istam, sicut conteritur
vas figuli, quod non potest ultrà
instaurari: & in Topheth sepe-
lientur, eò quòd non sit alius lo-
12 cus ad sepeliendū. Sic faciā lo-
co huic, ait Dñs, & habitatorib'
ejus: & ponam civitatem istam
13 sicut Topheth. Et erunt domus
Jerusalem, & domus regum Ju-
da, sicut locus Topheth, immun-
dæ; omnes domus, in quarum
domatibus sacrificaverunt omni
militiæ cœli, & libaverunt li-
14 bamina diis alienis. Venit autē
Jeremias de Topheth, quò mi-
serat eum Dñs ad prophetan-
dum, & stetit in atrio dom' Dñi:
15 & dixit ad omnem populū; Hæc
dicit Dñs exercituū Deus Israel;
Ecce ego inducam super civita-
tem hanc, & super omnes urbes
ejus, universa mala, quæ locutus
sum adversùm eam: quoniam
induraverunt cervicem suam, ut
non audirent sermones meos.

CAP. XX.

1 Et audivit Phassur filius Em-
mer sacerdos, qui constitutus erat
princeps in domo Domini, Jere-
miam prophetantem sermones
2 istos. Et percussit Phassur Jere-
miam prophetam, & misit eum
in nervum, quod erat in porta
Benjamin superiori, in domo
3 Domini. Cúmque illuxisset in
crastinum, eduxit Phassur Jere-
miam de nervo: & dixit ad eum
Jeremias; Non Phassur vocavit
Dominus nomen tuum, sed Pa-
vorem undique.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

7 Καὶ σφάξω τὴν βουλὴν Ἰούδα καὶ τὴν βου-
λὴν Ἱερουσαλὴμ ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ, καὶ
καταβαλῶ αὐτοὺς (κ) ἐν μαχαίρᾳ ἐναντί-
ον τῶν ἐχθρῶν αὐτῶν, καὶ ἐν χερσὶ τῶν ζη-
τούντων τὰς ψυχὰς αὐτῶν· καὶ δώσω τοὺς
νεκροὺς αὐτῶν εἰς βρῶσιν τοῖς πετεινοῖς τοῦ
8 οὐρανοῦ καὶ τοῖς θηρίοις τῆς γῆς. Καὶ (λ)
κατάξω τὴν πόλιν ταύτην εἰς ἀφανισμὸν,
(·) καὶ εἰς συριγμόν· πᾶς ὁ παραπορευόμενος
ἐπ' αὐτῆς σκυθρωπάσει, καὶ συριεῖ ὑπὲρ
9 πάσης τῆς πληγῆς αὐτῆς. Καὶ ἔδονται
τὰς σάρκας τῶν υἱῶν αὐτῶν, καὶ τὰς σάρκας
τῶν θυγατέρων αὐτῶν· καὶ ἕκαστος τὰς σάρ-
κας τοῦ πλησίον αὐτοῦ ἔδονται ἐν τῇ περιο-
χῇ, καὶ (μ) ἐν τῇ πολιορκίᾳ ᾗ πολιορκήσου-
10 σιν αὐτοὺς οἱ ἐχθροὶ αὐτῶν. Καὶ συντρί-
ψεις τὸν (ν) βικὸν κατ' ὀφθαλμοὺς τῶν
11 ἀνδρῶν τῶν ἐκπορευομένων μετὰ σοῦ, Καὶ
ἐρεῖς, Τάδε λέγει κύριος, Οὕτως συντρί-
ψω τὸν λαὸν τοῦτον, καὶ τὴν πόλιν ταύτην,
καθὼς συντρίβεται ἄγγος ὀστράκινον, ὃ οὐ
12 δυνήσεται ἰαθῆναι ἔτι. Οὕτως ποιήσω (ξ),
λέγει κύριος, τῷ τόπῳ τούτῳ, καὶ τοῖς
κατοικοῦσιν ἐν αὐτῷ, τοῦ δοθῆναι τὴν πόλιν
13 (ο) ταύτην, ὡς τὴν διαπίπτουσαν. Καὶ
οἶκοι Ἱερουσαλὴμ, καὶ οἶκοι βασιλέων Ἰούδα
ἔσονται καθὼς ὁ τόπος ὁ διαπίπτων, ἀπὸ
τῶν (π) ἀκαθαρσιῶν αὐτῶν ἐν πάσαις ταῖς
οἰκίαις, ἐν αἷς (ρ) ἐθυμίασαν ἐπὶ τῶν (σ)
δωμάτων αὐτῶν πάσῃ τῇ στρατιᾷ τοῦ οὐρα-
νοῦ, καὶ ἔσπεισαν σπονδὰς θεοῖς ἀλλοτρίοις.
14 Καὶ ἦλθεν (τ) Ἱερεμίας ἀπὸ τῆς διαπτώ-
σεως (υ), οὗ ἀπέστειλεν αὐτὸν κύριος ἐκεῖ,
τοῦ προφητεῦσαι· καὶ ἔστη (φ) ἐν τῇ αὐλῇ οἴκου
15 κυρίου, καὶ εἶπε πρὸς πάντα τὸν λαὸν, Τάδε
λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω ἐπὶ τὴν πό-
λιν (χ) ταύτην, καὶ ἐπὶ πάσας τὰς πόλεις
αὐτῆς, καὶ ἐπὶ τὰς κώμας αὐτῆς, ἅπαντα
τὰ κακὰ ἃ ἐλάλησα ἐπ' (ψ) αὐτὴν, ὅτι
ἐσκλήρυναν τὸν τράχηλον αὐτῶν, τοῦ μὴ εἰσ-
ακούειν τῶν (ω) ἐντολῶν μου.

Et jugulabo consilium Juda, & 7
consilium Hierusalem, in loco
isto: & subvertam eos in gla-
dio in conspectu inimicorum su-
orum, & in manibus quæren-
tium animas eorum: & dabo
mortuos eorum in escam volati-
libus cœli, & bestiis terræ: Et 8
(f) detraham civitatem hanc in
desolationem, & in sibilum.
Omnis, qui præterit per eam, tri-
stabitur, & sibilabit super uni-
versa plaga ejus. Et edent car- 9
nes filiorum suorum, & carnes
filiarum suarum: & unusquis-
que carnes proximi sui comedent
in angustia, & in obsidione, quâ
obsidebunt eos inimici eorum.
Et conteres doliolum ad oculos 10
virorum egredientium tecum,
Et dices; Hæc dicit Dominus; 11
Sic conteram populum istum,
& civitatem istam, sicut conte-
ritur vas testaceum, quod non
poterit ultrà (g) sanari. Sic 12
faciam, ait Dominus, loco huic,
& habitantibus in eo; ut detur
civitas ista, sicut quæ corruit.
Et domus Hierusalem, & do- 13
mus regum Juda erunt, sicut lo-
cus corruens, ab immunditiis eo-
rum in omnibus domibus, in qui-
bus sacrificaverunt super tecta
earum omni militiæ cœli, & li-
baverunt libamina diis alienis.
Et venit Hieremias de ruina, 14
quò miserat eum Dominus illuc
ad prophetandum: & stetit in
atrio domûs Domini: & dixit
ad omnem populum; Hæc di- 15
cit Dominus; Ecce ego induco
super civitatem hanc, & su-
per omnes urbes ejus, & su-
per pagos ejus, universa mala,
quæ loquutus sum super eam:
quoniam induraverunt cervicem
suam; ut non exaudirent man-
data mea.

MS. A. (κ) ἐν μαχαίρῃ (λ) τάξω (·) καὶ συριγμόν· (μ) ἐν πολιορκίᾳ (ν) βικὸν
τοῦτον καθ' (ξ) τῷ τόπῳ τούτῳ, λέγει κύριος, * τοῖς κατοικοῦσιν (ο) ὡς τὴν
(π) ἀκαθαρσιῶν ἐν πάσαις (ρ) ἐθυμίασαν (σ) δωμάτων πάσῃ τῇ (τ) Ἱερε-
μίας (υ) τοῦ τόπου Ταφὲθ, οὗ ἀπέστειλεν αὐτὸν κύριος τοῦ προφητεῦσαι·
(φ) ἐν αὐλῇ (χ) ταύτην κακὰ, καὶ ἐπὶ τὰς πόλεις πάσας, καὶ ἐπὶ (ψ) αὐ-
τὴν, καὶ ἐπὶ τὰς πόλεις αὐτῆς, ὅτι (ω) λόγων μου.

ΚΕΦ. κ'.

1 Καὶ ἤκουσε Πασχὼρ (α) ὁ υἱὸς Ἐμμὴρ ὁ
ἱερεὺς, καὶ οὗτος ἦν καθεσταμένος ἡγούμενος
οἴκου κυρίου, τοῦ Ἱερεμίου προφητεύοντος
2 τοὺς λόγους τούτους. Καὶ ἐπάταξεν αὐτὸν,
καὶ ἐνέβαλεν αὐτὸν εἰς τὸν καταράκτην,
ὃς ἦν ἐν πύλῃ οἴκου ἀποτεταγμένου τοῦ
3 ὑπερῴου, ὃς ἦν ἐν οἴκῳ κυρίου. Καὶ ἐξή-
γαγε Πασχὼρ τὸν Ἱερεμίαν ἐκ τοῦ καταρά-
κτου. καὶ εἶπεν αὐτῷ Ἱερεμίας, Οὐχὶ Πα-
σχὼρ ἐκάλεσε κύριος τὸ ὄνομά σου, ἀλλ'
ἢ Μέτοικον.

MS. A. (α) υἱὸς

CAP. XX.

Et audivit Paschor filius 1
Emmer sacerdos (& hic con-
stitutus erat præfectus domûs
Domini,) Hieremiam prophetan-
tem sermones istos. Et percus- 2
sit eum, & misit eum in (a) ca-
taractam, quæ erat in porta do-
mûs (b) assignatæ superioris, quæ
erat in domo Domini. (c) Et e- 3
duxit Paschor Hieremiam de ca-
taracta. Et dixit ei Hieremias;
Non Paschor vocavit (d) Domi-
nus nomen tuū, sed (e) Migrantē.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

7 ואקלקל ית מלך אנש יהודה ויתבי ירושלם באתרא הדין וארמינון בחרבא קדם בעלי
דבביהון וביד דבען למקטלהון ואתן ית נבלתהון משגרא למיכל לעופא דשמיא
8 ולבעירא דארעא: ואשוי ית קרתא הדא לצדו ולאשתממו כל דיעבר עלה יכלי ויניד על
9 כל מחתהא: ואוכלנון ית בשר בניהון וית בשר בנתהון וגבר נכסי קריביה יבזון בצירא
10 ובעקתא דיעיקון להון בעלי דבביהון ודבען למקטלהון: ותתבר ולוע לעיני גבריא
11 דאזלין עמך: ותימר להון כדנן אמר יי צבאות כדין אתבר ית עמא הדין וית קרתא הדא
כמא דמתבר ית מנא דפחרא דלא אפשר לאתסאה ליה עוד ובתופת יקברון מבלי
12 אתר למקבר: כן אעבד לאתרא הדין אמר יי וליתבוהי ולמתן ית קרתא הדא כתופת:
13 ויהון בתי ירושלם ובתי מלכיא דבית יהודה כאתר תופת דמסאב לכל בתיא דאסיקו
14 בוסמין על אגוריהון לכל חילי שמיא ונסיכו נסכין לטעות עממיא: ואתא ירמיה
15 מתופת דשלחיה יי תמן לאתנבאה וקם בדרת בית מקדשא דיי ואמר לכל עמא: כדנן
אמר יי צבאות אלהא דישראל הא אנא מיתי על קרתא הדא ועל כל קרוהא ית כל
בישתא דגזרית עלה ארי אקשיאו ית קדלהון בדיל דלא לקבלא ית פתגמי:

כ

1 ושמע פשחור בר אמר כהנא והוא ממנא סגן כהניא בבית מקדשא דיי דירמיה מתנבי
2 ית פתגמיא האלין: ואלקי פשחור ית ירמיה נביא ויהב יתיה לכיפתא דבתרע שבטא
3 בנימין עלאה די בבית מקדשא דיי: והוה ביומא דבתרוהי ואפיק פשחור ית ירמיה מן
כיפתא ואמר ליה ירמיה לא פשחור רבי יי שמך אלהן יתכנשון עלך דקטלין בחרבא
מסחור סחור:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et dissipabo consilium virorū Juda, et habitatorum Jerusalem in loco isto; 7
& cadere faciā eos in gladio corā inimicis suis, & in manu eorū qui quæ-
runt occidere eos: et dabo cadavera eorū projecta in cibū volatilib' cœli
& bestiis terræ. Et ponā civitatē hanc in solitudinē & desolationē: omnis 8
qui transierit p eam, clamabit, & movebit caput suum sup omnes plagas
ejus. Et cibabo eos carne filiorum suorum, & carne filiarū suarū; & unus- 9
quisque substantiam proximi sui diripient in obsidione & tribulatione qua
arctabunt eos inimici sui, & qui quærunt occidere eos. Et confringes la- 10
gunculam ante oculos virorum qui gradiuntur tecum. Et dices eis: Hæc di- 11
cit Dñs exercituū; Sic conteram populum istum & civitatē hanc, sicut con-
teritur vas figuli, q non potest ultrà instaurari; & in Thopheth sepelient,
eò q non erit locus ad sepeliendum. Sic faciam loco isti, dicit Dñs, & ha- 12
bitatoribus ejus, ut ponam civitatem istam sicut Thopheth. Et erunt do- 13
mus Jerusalem, & domus regum domus Juda sicut locus Thopheth, qui im-
mundus est, propter omnes domus in quarum tectis adoleverunt aromata
omni militiæ cœli, & libaverunt libamina idolis populorū. Et venit Jere- 14
mias de Thopheth; miserat enim illuc Dñs ut prophetaret; et stetit in atrio
domus sanctuarii Dñi, & dixit omni populo: Hæc dicit Dñs exercituum De- 15
us Israel: Ecce ego inducam super civitatem hanc, & super omnes urbes
ejus universa mala quæ decrevi contra eam. Quia obduraverunt cervicem
suam, ut non obedirent verbis meis.

CAP. XX.

Et audivit Phasur filius Emer sacerdos; & ipse erat constitutus princeps 1
sacerdotum in domo sanctuarii Dñi, quando Jeremias prophetabat verba
hæc. Et percussit Phasur Jeremiam prophetā, & conjecit eum in carcerem, 2
qui erat in porta superiori tribus Benjamin in domo sanctuarii Dñi. Fa- 3
ctúmque est subsequenti die, eduxit Phasur Jeremiam ex cippo. Et dixit ei
Jeremias: Non Phasur vocavit Dominus nomen tuum; sed congregabuntur
contra te qui occident gladio per circuitum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܒܛܠ ܠܡܠܟܗ ܕܝܗܘܕܐ ܘܕܐܘܪܫܠܡ ܒܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܘܐܪܡܐ ܐܢܘܢ ܒܚܪܒܐ ܩܕܡ 7
ܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ. ܘܒܐܝܕܐ ܕܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܢܦܫܗܘܢ. ܘܐܬܠ ܫܠܕܝܗܘܢ ܡܐܟܘܠܬܐ
ܠܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܠܚܝܘܬܐ ܕܐܪܥܐ. * ܘܐܣܝܡܝܗ ܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܠܬܡܗܐ ܘܠܡܫܪܘܩܝܬܐ. 8
ܘܟܠ ܡܢ ܕܥܒܪ ܥܠܝܗ. ܢܬܡܗ ܘܢܫܪܘܩ. ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܡܚܘܬܗ. * ܘܐܘܟܠ ܐܢܘܢ 9
ܒܣܪܐ ܕܒܢܝܗܘܢ. ܘܕܒܢܬܗܘܢ. ܘܓܒܪ ܒܣܪ ܚܒܪܗ ܢܐܟܘܠܘܢ. ܒܐܘܠܨܢܐ ܘܒܥܘܝܩܐ
ܕܢܥܝܩܘܢ ܠܗܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ ܘܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܢܦܫܗܘܢ. * ܘܬܬܒܪܝܘܗܝ ܠܒܩܒܘܩܐ 10
ܠܥܝܢ ܓܒܪܐ ܕܐܙܠܝܢ ܥܡܟ. * ܘܬܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܗܟܢܐ 11
ܐܬܒܪܝܘܗܝ ܠܥܡܐ ܗܢܐ ܘܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܐܝܟ ܕܐܬܬܒܪ ܡܐܢܐ ܗܢܐ ܕܦܚܪܐ. ܕܠܐ ܡܫܟܚ
ܠܡܬܐܣܝܘ. ܘܒܬܘܦܬ ܢܩܒܪܘܢ. ܡܢ ܕܠܝܬ ܐܬܪܐ ܠܡܩܒܪ. * ܗܟܢܐ ܐܥܒܕ ܠܐܬܪܐ ܗܢܐ 12
ܘܠܥܡܘܪܘܗܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܣܝܡܝܗ ܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܐܝܟ ܬܘܦܬ. * ܘܢܗܘܘܢ ܒܬܐ 13
ܕܐܘܪܫܠܡ ܘܒܬܐ ܕܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܐܝܟ ܐܬܪܐ ܕܬܘܦܬ ܡܛܡܐܝܢ. ܟܠ ܒܬܐ ܕܣܡܘ ܒܣܡܐ
ܥܠ ܐܓܪܝܗܘܢ ܠܟܠܗ ܚܝܠܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܢܣܟܘ ܢܣܟܐ ܠܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ. * ܘܐܬܐ ܐܪܡܝܐ ܡܢ 14
ܬܘܦܬ ܕܫܕܪܗ ܡܪܝܐ ܠܡܬܢܒܝܘ ܬܡܢ. ܘܩܡ ܒܕܪܬܐ ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܐܡܪ ܠܟܠܗ
ܥܡܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܗܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ 15
ܘܥܠ ܟܠܗܝܢ ܩܘܪܝܗ. ܟܠܗܝܢ ܒܝܫܬܐ ܕܡܠܠܬ ܥܠܝܗ. ܡܛܠ ܕܩܫܝܘ ܩܕܠܗܘܢ ܕܠܐ ܢܫܡܥܘܢ
ܦܬܓܡܝ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܟ * * ܘܫܡܥ ܦܫܚܘܪ ܒܪ ܐܡܪܝܐ ܟܗܢܐ. 1
ܘܗܘ ܦܩܝܕܐ ܗܘܐ. ܘܡܫܠܛܐ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܠܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܟܕ ܡܬܢܒܐ. ܦܬܓܡܐ
ܗܠܝܢ. * ܘܡܚܝܗܝ ܦܫܚܘܪ ܠܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ. ܘܐܪܡܝܗ ܒܣܝܓܐ ܕܒܬܪܥܐ ܕܒܢܝ ܒܢܝܡܝܢ 2
ܥܠܝܐ. ܕܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܗܘܐ ܠܝܘܡܐ ܐܚܪܢܐ. ܘܐܦܩܗ ܦܫܚܘܪ ܠܐܪܡܝܐ ܡܢ ܣܝܓܐ. 3
ܘܐܡܪ ܠܗ ܐܪܡܝܐ. ܠܐ ܗܘܐ ܦܫܚܘܪ ܩܪܐ ܡܪܝܐ ܫܡܟ. ܐܠܐ ܬܘܬܒܐ ܘܡܚܕܪܐ.

7 Et irritum faciam conſilium Judæ & Jeroſolymæ in loco iſto: & proſternam eos gladio coram hoſtibus ſuis, & per manû illorum qui quærunt animam ipſorum: tradámque cadavera eorum eſcam volucribus cœli & beſtiis terræ: 8 Et exponam civitatem iſtam admirationi & ſibilo, & quiſquis tranſierit prope illam; mirabitur, ac ſibilabit propter tantas plagas ejus. 9 Faciámque ut comedant carnem filiorum ſuorum, & filiarum ſuarum, & quiſque carnem ſocii ſui comedent in anguſtia & afflictione quâ affligent eos hoſtes ipſorum & hi qui quærunt animam eorum. 10 Deinde frange laguncul am coram viris qui tecum ituri ſunt; 11 Et dic eis; Sic dicit Dominus potentiſſimus, Ita frangam populum hunc & civitatem iſtam, quemadmodum fractum eſt hoc vas teſtaceum quod denuò ſanum reddi non poteſt: & in Topheth ſepelient, propter penuriam loci ad ſepeliendum. 12 Ita faciam loco iſti & habitatoribus ejus, dicit Dominus, reddámque civitatē iſtam ut Topheth: 13 Et erunt domus Jeroſolymæ & domus regum Judæ ut locus Topheti, immundæ; omnes domus illæ ſuper quarum tecta adoleverint thura cunctis cœli exercitibus, & libaverint libamina diis alienis. 14 Deinde reverſus Jeremia de Topheth quò miſerat eum Dominus ad prophetandum, ſtetit in atrio domûs Domini, dixitque univerſo populo; 15 Sic ait Dominus potentiſſimus Deus Iſraelis, Ecce adducturus ſum ſuper hanc urbem & ſuper omnia ipſius oppida totum illud malum quod locut' ſum contra eam: eò quòd obduraverint cervicem ſuam ne audirent ſermones meos.

CAP. XX.

1 Cum autem audiſſet Peſhur filius Amariæ ſacerdotis (is autem inſpector erat & præfectus in æde Domini) Jeremiam prophetam ſermones hujuſcemodi prophetantem, 2 Percuſſit Peſhur Jeremiam prophetam; conjecítque eum in ambitum qui erat in ſuprema Benjaminitarum janua quæ in æde Domini. 3 Cúmque poſtridie eduxiſſet Peſhur Jeremiam ex illo ambitu, dixit ad eum Jeremia; Nequaquam Peſhurem vocavit Dominus nomen tuum, ſed Peregrinum & Errabundum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وأذبح رأي يهوذا ورأي أيروسليم في هذا الموضع * وأطرحهم بالسيف أمام أعدائهم وفي 7
أيدي طالبي أنفسهم * وأدفع موتاهم طعاما لطيور السماء ولوحوش الأرض * وأرتب هذه 8
المدينة للفناء وللصفير * كل من يمر عليها يعبس ويصفر من أجل كل ضربتها * ويأكلون 9
لحوم بنيهم ولحوم بناتهم * وكل واحد يأكل لحوم قريبه في المرم وفي الحصار الذي يحاصرهم
به أعداؤهم * ويكسر هذا الكراز لعيني الرجال الخارجين معك * ويقول هكذا يقول الرب * 10 11
هكذا أكسر هذا الشعب وهذه المدينة * كما كسر الإناء الخزف الذي لا يمكن أن يجبر
بعد * هكذا أصنع بهذا الموضع يقول الرب وبالسكان فيه * لأدفع المدينة مثل ساقطة * 12
* وبيوت أيروسليم وبيوت ملوك يهوذا يصيرون كمثل الموضع الساقط * من النجاسات التي 13
في جميع البيوت التي فيها بخروا على الأسطحة لكل أجناد السماء * وأراقوا القوارير للآلهة
الغريبة * وأتى إرمياء من معبر موضع طافات حيث أرسله الرب ليتنبأ * ووقف في دار بيت 14
الرب * وقال لجميع الشعب * هكذا يقول الرب * ها أنا أجلب على هذه المدينة شرورا * وعلى 15
جميع المدن وعلى قراها * كل الشرور التي تكلمت بها عليها وعلى مدنها * لأنهم غلظوا
رقابهم ألا يسمعوا كلماتي *

7 *Nam jugulabo conſilium Judæ & conſilium Jeroſolymæ hoc in loco; & faciam ut gladio cadant coram inimicis ſuis & in manus quærentium animas eorum; dabóque mortuos eorum eſcam volatilibus cœli & beſtiis terræ:* 8 *Et exponam hanc urbem exitio & ſibilo; quicunque tranſierit ſuper eam, mœrenti vultu ſibilabit ob tantam ipſius plagam.* 9 *Comedent quoque carnes filiorum ſuorum, & filiarum ſuarum, & unuſquiſque comedet carnes proximi ſui in anguſtia & obſidione quâ prement illos inimici eorum.* 10 *Tum franges lagenam illam ob oculos virorum qui tecum exituri ſunt;* 11 *Diceſque, Sic ait Dominus: Eodem modo frangam hunc populum & hanc urbem, quo fractum eſt vas teſtaceum quod ampliùs conſolidari nequit.* 12 *Ita faciam huic loco, dicit Dominus, & habitantibus in eo; ut hanc urbem redigam ſicut dirutam.* 13 *Et domus Jeroſolymæ, domuſque regum Judæ reddentur ut locus dirutus, propter turpitudines quæ extant in cunctis domibus in quibus adoleverunt ſuper tecta omnibus copiis cœleſtibus, & fuderunt lenticulas diis alienis.* 14 *Itaque regreſſus Jeremia de Tranſitu loci Taph..th quò miſerat illum Dominus ut prophetaret, ſubſtitit in atrio domûs Domini, & ait univerſo populo:* 15 *Sic dicit Dominus, Ecce ego illaturus ſum ſuper hanc urbem calamitates, & ſuper omnes urbes & earum oppida miſerias omnes quas locutus ſum contra ipſam & contra urbes ipſius: quia cervicem ſuam obdurârunt, ut non auſcultarent verbis meis.*

* الفصل العشرون *

* وسمع فحسور بن أمير الكاهن * وهذا كان أقيم مقدم بيت الرب * إرمياء يتنبأ بهذه الكلمات * 1
* فضربه وألقاه في الممرق الذي كان في باب البيت المرتب الأعلى * الذي كان في بيت 2
الرب * وأخرج فحسور إرمياء من الممرق * فقال له إرمياء * ليس دعا الرب اسمك فحسور 3
لكن مجليا *

CAP. XX.

1 *Audiens autem Phebſor filius Emmiris ſacerdotis (hic autem conſtitutus fuerat princeps domûs Domini) Jeremiam talia verba prophetantem,* 2 *Percuſſit eum, detruſitque in penetrale quod erat in porta domûs ſuperiùs ſitæ, quæ erat in æde Domini.* 3 *Deinde cùm eduxiſſet Phebſor Jeremiam è penetrali, dixit illi Jeremia; Nequaquam vocavit Dominus nomen tuum Phebſurem, ſed Migratorem.*

ירמיה : כ

omnibus &,tibi pavorem in te *dans* ego Ecce : Dominus dixit ſic Quia
4 כִּי־כֹה אָמַר יְהוָה הִנְנִי נֹתֶנְךָ לְמָגוֹר לְךָ וּלְכָל־
: *videntes* tui oculi & ,ſuorū inimicorū gladio in corruent & ,te diligentib⁹
אֹהֲבֶיךָ וְנָפְלוּ בְּחֶרֶב אֹיְבֵיהֶם וְעֵינֶיךָ רֹאוֹת
,Babel in eos traducet & ,Babel regis manu in dabo Jehudah omnē &
וְאֶת־כָּל־יְהוּדָה אֶתֵּן בְּיַד מֶלֶךְ־בָּבֶל וְהִגְלָם בָּבֶלָה
, hujus civitatis *robur omne* dabo Et .gladio in eos percutiet &
5 וְהִכָּם בֶּחָרֶב׃ וְנָתַתִּי אֶת־כָּל־חֹסֶן הָעִיר הַזֹּאת
cunctos & ,ejus pretioſum omne & ,ejus laborem omnem &
וְאֶת־כָּל־יְגִיעָהּ וְאֶת־כָּל־יְקָרָהּ וְאֵת כָּל־
; eorum inimicorum manu in dabo Jehudah regum theſauros
אוֹצְרוֹת מַלְכֵי יְהוּדָה אֶתֵּן בְּיַד אֹיְבֵיהֶם
tu Et .Babel in eos adducent & ;eos tollent & , eos diripient &
6 וּבְזָזוּם וּלְקָחוּם וֶהֱבִיאוּם בָּבֶלָה׃ וְאַתָּה
: captivitatem in ibitis , tuæ domus habitatores omnes & , Paſchur
פַשְׁחוּר וְכֹל יֹשְׁבֵי בֵיתֶךָ תֵּלְכוּ בַּשֶּׁבִי
omnes & , tu ,ſepelieris ibi & ,morieris ibique ,ingredieris Babel &
וּבָבֶל תָּבוֹא וְשָׁם תָּמוּת וְשָׁם תִּקָּבֵר אַתָּה וְכָל־
me Seduxiſti .*falſitate in eis* es vaticinatus quibus , te diligentes
7 אֹהֲבֶיךָ אֲשֶׁר־נִבֵּאתָ לָהֶם בַּשָּׁקֶר׃ פִּתִּיתַנִי
fui : prævaluiſti & ,me fuiſti fortior ; ſum ſeductus & , Domine
יְהוָה וָאֶפָּת חֲזַקְתַּנִי וַתּוּכָל הָיִיתִי
ſufficienti ex Quia .me *ſubſannans ipſe omnis* , die omni deriſum in
8 לִשְׂחוֹק כָּל־הַיּוֹם כֻּלֹּה לֹעֵג לִי׃ כִּי־מִדֵּי
Domini verbum fuit quia : *clamabo* vaſtitatē & , *vim* ; *vociferabor* , *loquar*
אֲדַבֵּר אֶזְעָק חָמָס וָשֹׁד אֶקְרָא כִּי־הָיָה דְבַר־יְהוָה
,ej⁹ recordabor Non : dixi Et .die omni *vituperium* & ,*probrum in* mihi
9 לִי לְחֶרְפָּה וּלְקֶלֶס כָּל־הַיּוֹם׃ וְאָמַרְתִּי לֹא־אֶזְכְּרֶנּוּ
ignis tanquam meo corde in fuit & : ejus nomine in ultrà loquar nec
וְלֹא־אֲדַבֵּר עוֹד בִּשְׁמוֹ וְהָיָה בְלִבִּי כְּאֵשׁ
Nam .*potero* nec ,*ſuſtinendo* laboravi & : meis oſſibus in clauſus , ardens
10 בֹּעֶרֶת עָצֻר בְּעַצְמֹתָי וְנִלְאֵיתִי כַּלְכֵל וְלֹא אוּכָל׃ כִּי
,Annuntiate : undique pavorem , multorum detractionem audivi
שָׁמַעְתִּי דִּבַּת רַבִּים מָגוֹר מִסָּבִיב הַגִּידוּ
,*meā claudicationē obſervantes,meæ pacis* homo Omnis .illud annuntiabimus &
וְנַגִּידֶנּוּ כֹּל אֱנוֹשׁ שְׁלֹמִי שֹׁמְרֵי צַלְעִי
.eo de noſtrā ultionē accipiamus &,ei prævaleamus & ,decipiatur fortè ſi
אוּלַי יְפֻתֶּה וְנוּכְלָה לוֹ וְנִקְחָה נִקְמָתֵנוּ מִמֶּנּוּ׃
me perſequentes idcirco : *tremendus* potens tanquam mecum Dominus Et
11 וַיהוָה אוֹתִי כְּגִבּוֹר עָרִיץ עַל־כֵּן רֹדְפַי
non quia : vehementer *ſunt affecti* pudore : prævalebunt non & ,impingent
יִכָּשְׁלוּ וְלֹא יֻכָלוּ בֹּשׁוּ מְאֹד כִּי־לֹא
Domine Et .tradetur oblivioni non *ſeculi* ignominia ; *egerunt prudenter*
12 הִשְׂכִּילוּ כְּלִמַּת עוֹלָם לֹא תִשָּׁכֵחַ׃ וַיהוָה
tuā ultionē videam : cor & , renes *videns* ,juſtum *probans* ,exercituum
צְבָאוֹת בֹּחֵן צַדִּיק רֹאֶה כְלָיוֹת וָלֵב אֶרְאֶה נִקְמָתְךָ
laudate ,Domino Cantate .meā *litem* revelavi *te ad* quia : eis de
13 מֵהֶם כִּי אֵלֶיךָ גִּלִּיתִי אֶת־רִיבִי׃ שִׁירוּ לַיהוָה הַלְלוּ
.malorum manu de *egeni* animam liberavit quia ; Dominum
אֶת־יְהוָה כִּי הִצִּיל אֶת־נֶפֶשׁ אֶבְיוֹן מִיַּד מְרֵעִים׃
mea mater me peperit qua dies ; *ea in* ſum nat⁹ qua dies Maledicta
14 אָרוּר הַיּוֹם אֲשֶׁר יֻלַּדְתִּי בּוֹ יוֹם אֲשֶׁר־יְלָדַתְנִי אִמִּי
:dicendo,meo patri annuntiavit qui vir Maledictus .benedicta ſit ne
15 אַל־יְהִי בָרוּךְ׃ אָרוּר הָאִישׁ אֲשֶׁר בִּשַּׂר אֶת־אָבִי לֵאמֹר
vir ſit Et .eū lætificavit lætificando ; maſculus filius tibi eſt Natus
16 יֻלַּד־לְךָ בֵּן זָכָר שַׂמֵּחַ שִׂמְּחָהוּ׃ וְהָיָה הָאִישׁ
: eum pœnituit non &,DOMINUS ſubvertit quas civitates ſicut ,ille
הַהוּא כֶּעָרִים אֲשֶׁר־הָפַךְ יְהוָה וְלֹא נִחָם
.*meridiei* tempore in vociferationem & ,mane in clamorem audiat &
וְשָׁמַע זְעָקָה בַּבֹּקֶר וּתְרוּעָה בְּעֵת צָהֳרָיִם׃

Verſio VUL. LAT.

4 Quia hæc dicit Dominus ; Ecce
ego dabo te in pavorem, te
& omnes amicos tuos : &
corruent gladio inimicorum ſu-
orum, & oculi tui videbunt :
& omnem Judam dabo in
manum regis Babylonis : &
traducet eos in Babylonem, &
5 percutiet eos gladio. Et dabo
univerſam ſubſtantiam civitatis
hujus, & omnem laborem ejus,
omnéque pretium, & cunctos
theſauros regum Juda dabo in
manu inimicorū eorū:& diripi-
ent eos, & tollent, & ducent in
6 Babylonem. Tu autem Phaſſur,
& omnes habitatores dom⁹ tuæ,
ibitis in captivitatem : & in Ba-
bylonem venies, & ibi morieris,
ibíque ſepeliêris tu , & omnes
amici tui, quibus prophetâſti
7 mendacium. Seduxiſti me, Do-
mine , & ſeductus ſum : fortior
me fuiſti,& invaluiſti:factus ſum
in deriſum totâ die, omnes ſub-
8 ſannant me. Quia jam olim lo-
quor, vociferans iniquitatem, &
vaſtitatem clamito : & factus eſt
mihi ſermo Domini in oppro-
9 brium,& in deriſum totâ die. Et
dixi ; Non recordabor ejus, neq;
loquar ultrà in nomine illius : &
factus eſt in corde meo quaſi
ignis exæſtuans , clauſúſque in
oſſibus meis : & defeci, ferre
10 non ſuſtinens. Audivi enim con-
tumelias multorum, & terrorem
in circuitu ; Perſequimini, &
perſequamur eum: ab omnibus
viris, qui erant pacifici mei, &
cuſtodientes latus meum : ſi quo
modo decipiatur,& prævaleamus
adverſùs eum , & conſequamur
11 ultionem ex eo. Dominus autem
mecum eſt quaſi bellator fortis :
idcircò qui perſequuntur me, ca-
dent, & infirmi erunt : confun-
tur vehementer, quia non intel-
lexerunt opprobrium ſempiter-
num, quod nunquam delebitur.
12 Et tu, Domine exercituū proba-
tor juſti, qui vides renes & cor :
videam, quæſo, ultionem tuam ex
eis : tibi enim revelavi cauſam
13 meam. Cantate Domino, laudate
Dñm: quia liberavit animā pau-
14 peris de manu malorum. Male-
dicta dies, in qua natus ſum :
dies, in qua peperit me mater
15 mea, non ſit benedicta. Maledi-
ctus vir , qui annuntiavit patri
meo, dicens ; Natus eſt tibi puer
maſculus : et quaſi gaudio lætifi-
16 cavit eum. Sit homo ille ut ſunt
civitates, quas ſubvertit Domi-
nus, et non pœnituit eum: audiat
clamorem manè, & ululatum in
tempore meridiano :

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

4 (β) Διότι τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ δί-
δωμί σε εἰς μετοικίαν σὺν πᾶσι τοῖς φί-
λοις σου· ϗ πεσοῦνται ἐν (γ) μαχαίρᾳ
ἐχθρῶν αὐτῶν, ϗ οἱ ὀφθαλμοί σου ὄψονται·
ϗ σὲ ϗ πάντα (δ) Ἰούδα δώσω εἰς χεῖρας
βασιλέως Βαβυλῶνος, ϗ μετοικιοῦσιν αὐ-
τοὺς, ϗ (ε) κατακόψουσιν ἐν μαχαίραις.
5 Καὶ δώσω τὴν πᾶσαν ἰσχὺν τῆς πόλεως ταύ-
της, ϗ πάντας τοὺς πόνους αὐτῆς, ϗ πάν-
τας τοὺς θησαυροὺς τοῦ βασιλέως Ἰούδα εἰς
χεῖρας ἐχθρῶν (ζ) αὐτοῦ, ϗ ἄξουσιν αὐτοὺς
6 εἰς Βαβυλῶνα. Καὶ σὺ ϗ πάντες οἱ κατοι-
κοῦντες ἐν τῷ οἴκῳ σου, πορεύσεσθε ἐν αἰ-
χμαλωσίᾳ, ϗ ἐν Βαβυλῶνι ἀποθανῇ, καὶ
ἐκεῖ ταφήσῃ σὺ ϗ πάντες οἱ φίλοι σου, οἷς
7 ἐπροφήτευσας αὐτοῖς ψευδῆ. Ἠπάτη-
σάς με κύριε, ϗ ἠπατήθην, ἐκράτησας, ϗ
ἠδυνάσθης· ἐγενόμην εἰς γέλωτα, πᾶσαν
8 ἡμέραν διετέλεσα μυκτηριζόμενος. Ὅ-
τι πικρῷ λόγῳ μου γελάσομαι, ἀθεσίαν ϗ
ταλαιπωρίαν ἐπικαλέσομαι, ὅτι ἐγενήθη
λόγος κυρίου εἰς ὀνειδισμὸν ἐμοὶ ϗ εἰς
9 χλευασμὸν πᾶσαν ἡμέραν μου. Καὶ εἶ-
πα, Οὐ μὴ ὀνομάσω τὸ ὄνομα κυρίου, ϗ οὐ
μὴ (η) λαλήσω ἔτι ἐπὶ τῷ ὀνόματι αὐτοῦ. ϗ
ἐγένετο ὡς πῦρ καιόμενον φλέγον ἐν τοῖς
(θ) ὀστοῖς μου, ϗ παρεῖμαι πάντοθεν, ϗ οὐ
10 δύναμαι φέρειν, Ὅτι ἤκουσα ψόγον πολ-
λῶν συναθροιζομένων κυκλόθεν, Ἐπισύ-
στητε, ϗ ἐπισυστῶμεν (ι) ἐπ᾽ αὐτῷ πάντες
ἄνδρες φίλοι αὐτοῦ· τηρήσατε τὴν ἐπίνοι-
αν αὐτοῦ, εἰ ἀπατηθήσεται, ϗ δυνησόμεθα
αὐτῷ, ϗ ληψόμεθα τὴν ἐκδίκησιν ἡμῶν ἐξ
11 αὐτοῦ. (κ) Ὁ δὲ κύριος μετ᾽ ἐμοῦ καθὼς
(λ) μαχητὴς ἰσχύων· διὰ τοῦτο ἐδίωξαν, ϗ
νοῆσαι οὐκ ἠδύναντο. ᾐσχύνθησαν σφόδρα,
ὅτι οὐκ ἐνόησαν ἀτιμίας αὐτῶν, αἳ δι᾽ αἰῶ-
12 νος οὐκ ἐπιλησθήσονται. Κύριε δοκιμάζων
δίκαια, συνιῶν νεφροὺς ϗ καρδίας, ἴδοιμι
τὴν παρὰ σοῦ ἐκδίκησιν ἐν αὐτοῖς, ὅτι πρὸς
13 σὲ ἀπεκάλυψα τὰ ἀπολογήματά μου. Ἄ-
σατε τῷ κυρίῳ, αἰνέσατε αὐτῷ, ὅτι (μ)
ἐξείλατο τὴν ψυχὴν πένητος ἐκ χειρὸς
14 (ν) πονηρευομένων. Ἐπικατάρατος ἡ (ξ)
ἡμέρα, ἐν ᾗ ἐτέχθην ἐν αὐτῇ· ἡ ἡ-
μέρα ἐν ᾗ ἔτεκέν με ἡ μήτηρ μου, μὴ
15 ἔστω ἐπευκτή. Ἐπικατάρατος ὁ ἄν-
θρωπος ὁ εὐαγγελισάμενος τῷ πατρί μου
λέγων, Ἐτέχθη σοι ἄρσεν. εὐφραινό-
16 μενος (ο) Ἔστω ὁ ἄνθρωπος ἐκεῖνος, ὡς
αἱ πόλεις ἃς κατέστρεψε κύριος ἐν θυμῷ,
ϗ οὐ μετεμελήθη· ἀκουσάτω κραυγῆς (π)
τῷ πρωῒ, ϗ ἀλαλαγμοῦ μεσημβρίας,

Quia hæc dicit Dominus ; Ecce 4
ego do te in migrationem cum o-
mnibus amicis tuis : & cadent
in gladio inimicorum ſuorum :
& oculi tui videbunt : & te,
& omnem Judam dabo in ma-
nus regis Babylonis : & migrare
facient eos, & trucidabunt in
gladiis. Et dabo omnem fortitu- 5
dinem civitatis hujus, & omnes
labores ejus, & omnes theſau-
ros regis Juda in manus inimi-
corum ejus : & ducent eos in
Babylonem : Et tu, & omnes 6
habitantes in domo tua ibitis in
captivitatem : & in Babylone
morieris : & ibi ſepeliêris tu, &
omnes amici tui, quibus prophe-
tâſti eis falſa. Decepiſti me, Do 7
mine, & deceptus ſum : obtinu-
iſti, & potuiſti : factus ſum in
deriſum , totâ die perſeveravi
ſubſannatus : Quia amaro ver- 8
bo meo (f) ridebo prævaricati-
onem, & miſeriam invocabo :
quia factus eſt ſermo Domini in
opprobrium mihi, & in deriſum
totâ die meâ. Et dixi; Non 9
nominabo nomen Domini, nec lo-
quar ultrà in nomine ipſius. Et
factus eſt, quaſi ignis ardens u-
rens in oſſibus meis : & diſſolu-
tus ſum undique, & non poſ-
ſum ferre : Quia audivi vi- 10
tuperationem multorum congre-
gatorum undique ; Inſultate,
& inſultemus in eum omnes vi-
ri amici ejus : obſervate men-
tem ejus, ſi decipietur : & præ-
valebimus ei, & ſumemus vin-
dictam noſtram ex eo : Dominus 11
autem mecum, quaſi bellator for-
tis. Idcircò perſequuti ſunt, &
intelligere non potuerunt : con-
fortati ſunt valdè, quia non in-
tellexerunt ignominias ſuas, quæ
per ſeculum non tradentur obli-
vioni. Domine, probans juſta, 12
intelligens renes, & corda, vi-
deam ultionem, quæ à te in eis:
quia ad te revelavi (g) defenſio-
nes meas. Cantate Domino, lau- 13
date eum: quia liberavit animam
pauperis, de manu (h) malignan-
tium. Maledicta dies, in qua 14
natus ſum in ea : dies, in qua pe-
perit me mater mea, non ſit bene-
dicta. Maledictus homo, qui e- 15
vangelizavit patri meo, dicens ;
Natus eſt tibi maſculus. (i) Læ-
tans Sit homo ille, ſicut civita- 16
tes, quas ſubvertit Dominus in
furore, & non pœnituit eum.
Audite clamorem manè, & u-
lulatum meridie :

MS. A. (β) Διὰ τοῦτο (γ) μαχαίρῃ (δ) Ἰούδαν (ε) κατακόψουσιν αὐτοὺς ἐν μαχαίρᾳ. Καὶ δώσω πᾶσαν τὴν ἰσχὺν (ζ) αὐτῶν, (η) λαλήσω ἐπὶ τῷ ὀνόματι τούτῳ. (θ) ὀστέοις (ι) ἐπ᾽ αὐτὸν (κ) Καὶ κύριος (λ) * μαθητὴς ἰσχυρός· (μ) ἐξείλατο ψυχὴν (ν) στερεωτέρων αὐτοῦ. (ξ) ἡμέρα ᾗ ἐγεννήθην ἐν αὐτῇ· (ο) ἔστω (π) τὸ πρωῒ,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 ארי כדנן אמר יי הא אנא מסר לך לתבר לך ולכל רחמך ויתקטלון בחרב בעלי
דבביהון ועינך חזין וית כל דבית יהודה אמסר ביד מלכא דבבל ויגלנון לבבל וימחנון
5 בחרבא : ואתן ית כל עותר ארעא הדא וית כל עמלה וית כל ליאותה וית כל אוצרי
6 מלכיא דבית יהודה אמסר ביד בעלי דבביהון ויבזונון וישבונון ויובלנון לבבל : ואת
פשחור וכל יתבי ביתך תהכון בשביא ולבבל תתובל ותמן תמות ותמן תתקבר את וכל
7 רחמיך דאתנביתא להון בשקרא : שבשתני יי ואשתבשית תקפתני ויכלת לי הויתי
8 ללעיב כל יומא כולהון מחיכין בי : ארי בזמן דאנא מתנבי אנא מרים קלי בכי ומצוח
ועל חטופין ובזוזין אנא מתנבי ארי הוה פתגמא דיי לי לחסודין וללעג כל יומא :
9 ואמרית לא אדכרניה ולא אמלל עוד בשמיה והוון פתגמוהי בלבי כאשא בערא שטפין
10 ית גרמי ולאיתי לסוברא ולא יכלית : ארי שמעית מלי סגיאיא דמתכנשין מסחור
סחור חוו ונחוניה כל אנש שלמי כמנין לאבאשא לי מאים יטעי ונכול ליה ונתפרע
11 פורענותנא מניה : ויי מימריה בסעדי כגבר תקיף על כן רדפי יתקלון ולא יכלון למקם
12 יבהתון לחדא ארי לא יצלחון ותחפינון אתכנעות עלם דלא תפסוק : ויי צבאות בחר
קשוט גלין קדמוהי כולין ולבא אחזי פורענות דינך מנהון ארי קדמך אמרית ית עולבני :
13 שבחו קדם יי אודו קדם יי ארי שיזיב ית נפש מסכן מיד מבאשין : ליט יומא דאתילידית
14 ביה יומא דילדתני ביה אמי לא יהי בריך : ליט גברא דבשר ית אבא למימר אתיליד
15 לך בר דכר חדאה חדייה : ויהי גברא ההוא כקרויא דהפך יי ברוגזיה ולא אתותבא
16 וישמע צוחתא בצפרא ויבבא בעדן טיהרא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quia hæc dicit Dñs: Ecce ego tradā te in interitū, te & omnes amicos tu- 4
os, & occidentur gladio inimicorū ſuorū, & oculi tui videbunt:& omnes
viros dom⁹ Juda tradā in manū regis Babylonis, & abducet eos in Baby-
lonē, & *percutiet* eos gladio. Et dabo omnes divitias terræ huj⁹, & omnē 5
laborē ejus,& omnia in quib⁹ laboraverunt,& omnes theſauros regū do-
mus Juda tradā in manū inimicorū ſuorū, & diripient ea,& in captivitatē
ducent, & aſportabunt ea in Babylonē. Tu autē Phaſur,& omnes habita- 6
tores domus tuæ ibitis in captivitatē,& in Babylonē ducêris,& ibi morie-
ris,ibíque ſepelieris tu & omnes amici tui,quib⁹ prophetâſti in mendaciū.
Seduxiſti me Dñe, & ſeduct⁹ ſum: robuſtior me fuiſti, & invaluiſti con- 7
tra me :fui ſubſannationi quotidie, omnes me rident. Quia in tempore quo 8
ego prophetizo,ego tollo vocē meam plorans, & exclamans : & contra ra-
ptores & direptores ego prophetizo:factū eſt enim mihi verbū Dñi in op-
probriū & in deriſum tota die. Et dixi :Non recordabor ej⁹,nec loquar ul- 9
trà in nomine ej⁹: & facti ſunt ſermones ejus in corde meo quaſi ignis ar-
dens, inundantes oſſa mea: & laboravi ſuſtinens & non potui. Quia au- 10
divi verba multorū qui congregantur in circuitu: Annuntiate & denunti-
abim⁹ illud:omnes viri pacis meæ inſidiantur ut malefaciant mihi,Fortè er-
rabit, et prævalebim⁹ adverſùs eum, et ultionē noſtrā ſumem⁹ ex eo. Verbū 11
autē Dñi eſt in adjutoriū meum,ſicut heros robuſt⁹. Propterea qui me per-
ſequuntur,corruent, et non poterunt ſurgere: confundentur vehementer;
quia non proſperabuntur,et operiet eos verecundia æterna, quæ nunquam
ceſſabit. Dñs autē exercituū eligens veritatē, revelati ſunt coram eo renes 12
et cor; videbo ultionē judicii tui ex eis; quia coram te dixi injuriam meam.
Cantate coram Dño, confitemini coram Dño, quia liberavit animam pau- 13
peris de manu malignorū. Maledicta dies in qua nat⁹ ſum: dies in qua pe- 14
perit me mater mea,non ſit benedicta. Maledict⁹ vir qui annuntiavit patri 15
meo,dicens: Natus eſt tibi filius maſculus, lætitia lætificavit eum. Sitque 16
vir ille ſicut civitates quas ſubvertit Dominus in furore ſuo,et non ſunt ha-
bitatæ : et audiat clamorem manè,et ululatum in tempore meridiano.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܝܗܒ ܐܢܐ ܠܟ ܠܬܘܬܒܘܬܐ ܠܟ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܪ̈ܚܡܝܟ 4
ܘܢܦܠܘܢ ܒܚܪܒܐ ܕܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ. ܘܥܝܢܝܟ ܚܙܝܢ. ܘܠܟܠܗ ܝܗܘܕܐ. ܐܫܠܡ ܒܐܝ̈ܕܝ
ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܢܫܒܐ ܐܢܘܢ ܠܒܒܠ. ܘܢܩܛܠ ܐܢܘܢ ܒܚܪܒܐ. * ܘܐܫܠܡ ܟܠܗܘܢ 5
ܚܣܢ̈ܝ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܘܟܠܗ ܠܥܡܠܗ. ܘܟܠܗ ܝܩܪܗ. ܘܟܠܗܘܢ ܓܙ̈ܐ ܕܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ.
ܐܫܠܡ ܒܐܝ̈ܕܝ ܕܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ. ܘܢܒܙܘܢ ܐܢܘܢ. ܘܢܕܒܪܘܢ ܐܢܘܢ. ܘܢܘܒܠܘܢ ܐܢܘܢ
ܠܒܒܠ. * ܘܐܢܬ ܦܫܚܘܪ ܘܟܠܗܘܢ ܒ̈ܢܝ ܒܝܬܟ ܬܐܙܠܘܢ ܒܫܒܝܐ. ܘܠܒܒܠ ܬܐܙܠ. 6
ܘܬܡܢ ܬܡܘܬ ܘܬܡܢ ܬܬܩܒܪ ܐܢܬ ܘܟܠܗܘܢ ܪ̈ܚܡܝܟ ܕܐܬܢܒܝܬ ܠܗܘܢ ܒܫܘܩܪܐ. * ܦܬܝܬܢܝ 7
ܡܪܝܐ ܘܐܬܦܬܝܬ. ܐܚܝܠܬ ܘܐܬܚܝܠܬ. ܗܘܝܬ ܠܓܘܚܟܐ ܟܠܗ ܝܘܡ. ܘܟܠܗܘܢ
ܡܒܙܚܝܢ ܒܝ. * ܟܡܐ ܕܡܡܠܠ ܗܘܝܬ ܘܡܩܥܐ. ܥܠ ܛ̈ܠܘܡܐ ܘܥܠ ܒ̈ܙܘܙܐ ܩܪܐ 8
ܗܘܝܬ. ܡܛܠ ܕܗܘܐ ܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܚܣܕܐ ܘܠܡܘܝܩܐ ܟܠܗ ܝܘܡ. * ܘܐܡܪܬ. 9
ܕܠܐ ܐܬܕܟܪܝܘܗܝ. ܘܠܐ ܐܡܠܠ ܬܘܒ ܒܫܡܗ. ܘܗܘܐ ܒܠܒܝ ܐܝܟ ܢܘܪܐ ܝܩܕܬܐ ܘܡܫܚܢܐ ܒܓܪ̈ܡܝ.
ܘܠܐܝܬ ܠܡܣܝܒܪܘ. ܘܠܐ ܐܫܟܚܬ. * ܡܛܠ ܕܫܡܥܬ ܕܘܒܐ ܕܣ̈ܓܝܐܐ ܕܡܬܟܢܫܝܢ ܥܠܝ 10
ܚܕܪܝ. * ܘܐܡܪܝܢ ܟܠܗܘܢ ܕܫܐܠܝܢ ܫܠܡܝ ܒܦܘܡܗܘܢ. ܘܣܢܝܢ ܠܝ ܒܠܒܗܘܢ.
ܚܘܘܢܝܗܝ ܠܢ. ܘܢܩܘܡ ܥܠܘܗܝ. ܟܒܪ ܢܬܦܬܐ ܠܢ. ܘܢܣܒ ܬܒܥܬܢ ܡܢܗ. * ܘܡܪܝܐ 11
ܥܡܝ ܐܝܟ ܓܢܒܪܐ ܚܣܝܢܐ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܪ̈ܕܘܦܝ ܢܬܬܒܪܘܢ. ܘܠܐ ܢܫܟܚܘܢ.
ܢܒܗܬܘܢ ܛܒ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܣܬܟܠܘ. ܒܨܥܪܐ ܕܥܠܡ. ܕܠܐ ܡܬܛܥܝܐ. * ܘܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ 12
ܒܚܪ ܙܕܝܩܐ ܚܙܐ ܟܘ̈ܠܝܬܐ ܘܠܒܐ. ܐܚܙܐ ܬܒܥܬܟ ܡܢܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܠܟ ܓܠܝܬ ܕܝܢܝ.
* ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ. ܕܦܪܩ ܢܦܫܗ ܕܡܣܟܢܐ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܒܝ̈ܫܐ. * ܠܝܛ ܗܘ 13 14
ܝܘܡܐ ܕܐܬܝܠܕܬ ܒܗ. ܝܘܡܐ ܕܝܠܕܬܢܝ ܐܡܝ. ܠܐ ܢܗܘܐ ܡܒܪܟ. * ܠܝܛ ܗܘ ܓܒܪܐ ܕܣܒܪ ܠܐܒܝ. 15
ܘܐܡܪ ܠܗ ܕܐܬܝܠܕ ܠܟ ܒܪܐ ܕܟܪܐ. ܘܚܕܝܘ ܚܕܘܬܐ. * ܢܗܘܐ ܓܒܪܐ ܗܘ. ܐܝܟ ܩܘܪ̈ܝܐ 16
ܕܗܦܟ ܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܐܬܬܘܝ ܒܗܘܢ. ܢܫܡܥ ܓܥܬܐ ܒܨܦܪܐ. ܘܝܒܒܐ ܒܛܗܪܐ.

Propterea ſic dicit Dominus; Ecce reddam 4
te peregrinum, te *inquam* & omnes amicos
tuos,qui corruent gladio inimicorum ſuorum
oculis tuis cernentibus:totum quoque Judam
tradam in manum regis Babelis, qui captivos
abducet eos in Babelē, gladióque trucidabit.
Tradam etiam omnes arces hujus civitatis,totum 5
laborem, totúmque ſplendorem ipſius;
omnes denique theſauros regis Judæ tradam
in manū inimicorū ſuorum, ut capiant & diripiant
eos, & abducant eos in Babelem. Tu 6
quoque Peſhur & omnes domeſtici tui abibitis
in captivitatem,Babylonem abibis;& illic
morieris, ibique ſepeliêris tu & omnes amici
tui quibus falſò prophetâſti. Pellexiſti me 7
Domine, & pellectus ſum:ſuperâſti & viciſti
me:factus ſum deriſioni quotidie, & omnes
me ſubſannant. Quoties loquebar & vociferabar, 8
adversùs rapaces & direptores clamitabam.
Quia ceſſit mihi ſermo Domini in
opprobrium atque deriſum quotidie; Ideò 9
ſtatueram nullam ejus mentionem me facturum,
nec ampliùs locuturum nomine ipſius:
at factus eſt in corde meo velut ignis ardens
& incenſus in oſſibus meis. Tentavi quidem
patienter ferre, ſed non potui? Quoniam 10
audiebam machinationem multorum qui circum
me congregabantur: & dicebant omnes
qui precabantur mihi pacem ore ſuo tenus,
animo autem ſuo me oderant; Oſtendite eum
nobis ut inſurgamus in eum:fortè pellicietur
à nobis, & ſumemus ab eo vindictam noſtrā.
Atqui Dominus mecum eſt tanquam gigas robuſtiſſimus, 11
ideò omnes perſecutores mei pudeſient
& non ſubſiſtent:erubeſcent admodū,
eò quòd non fuerint prudentes, ignominiâ
ſempiternâ quæ nunquam oblivioni tradetur.
Itaque Domine potentiſſime, inveſtigator juſtitiæ, 12
inſpector renū et cordis,videam ultionē
tuam de iſtis; quia tibi revelavi cauſas meas.
Laudate Dominum, laudate *inquam* Dominum, 13
quia liberavit animam pauperis de manu
maleficôrum. Maledictus ſit ille dies quo 14
genitus ſum: dies ille quo peperit me mater
mea,ne ſit benedictus. Maledict⁹ ſit homo ille 15
qui nuntiavit patri meo dixítque ei;Natus eſt
tibi filius mas, exiſtimans ingenti eum afficere
lætitiâ. Sit homo ille ſimilis civitatibus quas 16
Dñs implacabiliter evertit:audiat clamorem
in matutino, & clangorem in meridie:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لأجل هذا هكذا يقول الرب * ها أنا أدفعك للجلوة مع جميع أصدقائك ويسقطون بسيف 4
أعدائهم * وعيناك تنظران * وأدفع كل يهودا إلى أيدي ملك بابل * ويجلوهم ويقطعوهم
بالسيف * وأدفع كل قوة هذه المدينة وجميع أتعابها وجميع كنوز ملك يهودا إلى أيدي 5
أعدائهم * ويسوقونهم إلى بابل * وأنت وجميع السكان في بيتك تمضون في السبي * وفي بابل تموت 6
وهناك تدفن أنت وجميع أصحابك الذين تنبأت لهم بالكذب * خدعتني يا رب فانخدعت * 7
مسكتني فغلبت * صرت ضحكة * كملت كل النهار مهزوا بي * لأني بقولي المر أزعق * أدعوا 8
حربا وسهوة * لأن كلمة الرب صارت لي للتعيير وللهزء كل نهاري * وقلت لا أسمي باسم الرب * ولا 9
أتكلم بهذا الاسم * وصار مثل نار متوقدة ملتهبة في عظامي * وأتصبر من كل ناحية ولم
أطق أن أحتمل * لأني سمعت ذم الكثيرين المجتمعين من حولي * بينوا ونثب عليه يا جميع 10
الرجال أصدقائه * احفظوا فكرته إن كان يخدع * ونقتدر عليه ونأخذ انتقامنا منه * والرب 11
معي كمثل تأييد قوي * لأجل هذا طردوا ولم يقدروا أن يفهموا * خزيوا جدا لأنهم لم
يفهموا إهانتهم التي لا تنسى منذ الدهر * أيها الرب مختبر العدل متفهم الكلى والقلوب * 12
أرى من قبلك الانتقام فيهم * لأني كشفت لك محاوباتي * أنشدوا للرب وسبحوا له * لأنه خلص 13
نفس المسكين من يد من هو أقوى منه * ملعون اليوم الذي ولدت فيه * اليوم الذي 14
فيه ولدتني أمي لا يكون مباركا * ملعون الإنسان الذي بشر أبي قائلا ولد لك ذكر * 15
وظن ذلك الإنسان أنه يكون مسرورا * يكون ذلك الإنسان مثل المدن التي خسفها الرب 16
بغضب ولم يندم * ليسمع الصراخ باكرا والرنين وسط النهار *

Iccirco ſic ait Dominus, Ecce ego traditurus 4
ſum te migrationi cum omnibus amicis
tuis, atque hi corruent gladio inimicorum
ſuorum oculis tuis videntibus:
tradamque totum Judam in manus regis
Babylonici,qui captivos abducent eos, &
gladio concident: Tradam etiam totum 5
robur hujus urbis, omneſque labores ejus,
& omnes theſauros regis Judæ in manus
inimicorum ſuorum, & abducent eos
Babelem. Tu denique & omnes habitantes 6
in domo tua ibitis in captivitatem,
& Babele morieris, ibique ſepeliêris tu
& omnes amici tui quibus mendacium
prophetâſti. Decepiſti me Domine, & 7
deceptus ſum: apprehendiſti me, & victus
ſum: factus ſum irriſioni: exegi totam
diem illuſus. Nam ego ſermone meo 8
amaro vociferor, mœrorem atque miſeriam
proclamo, quia verbum Domini
verſum eſt mihi in improperium &
deriſum totâ die meâ. Quare dixi, Non 9
nominabo nomen Domini, neque loquar
de hoc nomine: verùm factum eſt velut
ignis ardens, incendens oſſa mea. Patienter
ago ex omni parte, ſed ferre nequeo:
Quoniam audio criminationem 10
multorum circum me congregatorum,
dicentium, Patefacite, & contra ipſum
patefaciamus, O omnes viri amici ipſius:
obſervate cogitationem ejus, ſi fortè
decipiatur, & prævaleamus ei, & ſumamus
ultionem noſtram de ipſo. Verùm 11
Dominus mecum eſt ut ſubſidium fortiſſimum,
propterea perſecuti ſunt, ſed
non potuerunt intelligere: pudefacti ſunt
vehementer, quia non intellexerunt contemptum
ſuum qui nequaquam oblivioni
tradetur in ſeculū. Eja Domine probans 12
juſtitiam, intelligens renes & corda,
videam à te vindictam de iſtis;
quia tibi propoſui defenſiones meas. Canite 13
carmen Domino, eumque laudate;
quoniam eripuit animam pauperis ex
ejus manu qui fortior erat ipſo, Maledictus 14
dies quo natus ſum; dies quo me
genuit mater mea, non ſit benedictus.
Maledictus homo qui retulit patri meo 15
dicens; Natus eſt tibi maſculus,& arbitratus
eſt homo ille eum eſſe lætaturum.
Contingat homini illi quod urbibus quas 16
Dominus in imum cum furore detruſit,
nec pœnituit eum:audiat clamorem mane,
& ſtrepitum meridie:

ירמיה : כא

,meū ſepulchrū mea mater mihi fuiſſet &,vulva à me interfecit non Quòd
17 אשר לא־מותתני מרחם ותהי־לי אמי קברי
,ſum egreſſus vulva de jam quid Ut .ſeculi conceptio ejus vulva &
18 ורחמה הרת עולם: למה זה מרחם יצאתי
? mei dies pudore in deficerent & ;mæſtitiam & laborem videndum ad
לראות עמל ויגון ויכלו בבשת ימי:

CAP. XXI. כא

eum ad mittendo in , Domiño à Irmejahu ad fuit quod Verbum
1 הדבר אשר־היה אל־ירמיהו מאת יהוה בשלח אליו
filium Sephaniah & ,Malchijah filium Paſchur , Sidchijahu rex
המלך צדקיהו את־פשחור בן־מלכיה ואת־צפניה בן־
:Dominum nobis pro nunc Inquire : dicendum ad ,ſacerdotē Mahaſejah
2 מעשיה הכהן לאמר: דרש־נא בעדנו את־יהוה
faciat forte ſi ,nos adverſum prælians Babel rex Nebuchadreſar quia
כי נבוכדראצר מלך־בבל נלחם עלינו אולי יעשה
.nobis deſuper aſcendat &,ſua mirabilia omnia ſecundū nobiſcum Dominus
יהוה אותנו ככל־נפלאתיו ויעלה מעלינו:
dixit Sic : Sidchijahu ad dicetis Sic :eos ad Irmejahu dixit Et
3 ויאמר ירמיהו אליהם כה תאמרן אל־צדקיהו: כה־אמר 4
quæ , belli vaſa convertens ego Ecce : Iſrael Deus Domin⁹
יהוה אלהי ישראל הנני מסב את־כלי המלחמה אשר
, Babel rege cum , eis in pugnantes vos quibus ,veſtris manibus in
בידכם אשר אתם נלחמים בם את־מלך בבל
colligam & : murum extra vos ſuper coangustantes , Chaſdim &
ואת־הכשדים הצרים עליכם מחוץ לחומה ואספתי
vobiſcum ego pugnabo Et .hujus civitatis medium ad ea
5 אותם אל־תוך העיר הזאת: ונלחמתי אני אתכם
,excandeſcentia in & , naſo in & , forti brachio in & ,extenta manu in
ביד נטויה ובזרוע חזקה ובאף ובחמה
, hujus civitatis habitatores percutiam Et .magna ira in &
6 ובקצף גדול: והכיתי את־יושבי העיר הזאת
.morientur magna peſtilentia in , animal & , hominem &
ואת־האדם ואת־הבהמה בדבר גדול ימתו:
,Jehudah regem Sidchijahu Dabo :DOMINI effatum ſic poſt Et
7 ואחרי־כן נאם־יהוה אתן את־צדקיהו מלך־יהודה
hac civitate in reſiduos & , populum & ,ej⁹ ſervos &
ואת־עבדיו ואת־העם ואת־הנשארים בעיר הזאת
regis Nebuchadreſar manu in , fame à & , gladio à , peſte à
מן־הדבר מן־החרב ומן־הרעב ביד נבוכדראצר מלך־
:eorū animam quærentium manu in &,eorū inimicorū manu in & , Babel
בבל וביד איביהם וביד מבקשי נפשם
neque , parcet nec , eis ſuper ignoſcet non ,gladii os ad eos percutiet &
והכם לפי־חרב לא־יחוס עליהם ולא יחמל ולא
: Dominus dixit Sic : dices hunc populum ad Et .miſerebitur
8 ירחם: ואל־העם הזה תאמר כה אמר יהוה
.mortis viam & , vitarum viam veſtras facies ad dans ego Ecce
הנני נתן לפניכם את־דרך החיים ואת־דרך המות:
: peſte in & ,fame in & ,gladio in morietur , hac urbe in Habitans
9 הישב בעיר הזאת ימות בחרב וברעב ובדבר
; vivet & , vos ſuper coangustantes , Chaſdim ad fuerit delapſus & egreſſus &
והיוצא ונפל על־הכשדים הצרים עליכם יחיה
meas facies poſui Et .ſpolium in ſua anima ei erit &
10 והיתה־לו נפשו לשלל: כי־שמתי פני
: DOMINUS ait , bonum in non & ,malum in hanc civitatem in
בעיר הזאת לרעה ולא לטובה נאם־יהוה
.igni in eam comburet & , dabitur Babel regis manum in
ביד־מלך בבל תנתן ושרפה באש:
.DOMINI verbum Audite : Jehudah regis domui Et
11 ולבית מלך יהודה שמעו דבר־יהוה:

Verſio VULG. LAT.

17 Qui non me interfecit à vulva,ut fieret mihi mater mea ſepulchrū, & vulva ejus conceptus æternus.
18 Quarè de vulva egreſſus ſum, ut viderem laborem & dolorem, & conſumerentur in confuſione dies mei ?

CAP. XXI.

1 VErbum, quod factum eſt ad Jeremiam à Domino,quando miſit ad eum rex Sedecias Phaſſur filium Melchiæ, & Sophoniam filium Maaſiæ ſacerdotem, dicens;
2 Interroga pro nobis Dominum, quia Nabuchodonoſor rex Babylonis præliatur adverſùm nos : ſi fortè faciat Dominus nobiſcum ſecundùm omnia mirabilia ſua, & recedat à nobis.
3 Et dixit Jeremias ad eos;
4 Sic dicetis Sedeciæ; Hæc dicit Dominus Deus Iſrael; Ecce ego convertam vaſa belli, quæ in manibus veſtris ſunt, & quibus vos pugnatis adverſùm regem Babylonis, & Chaldæos, qui obſident vos in circuitu murorum : & congregabo ea in medio civitatis hujus.
5 Et debellabo ego vos in manu extenta, & in brachio forti, & in furore, & in indignatione, & in ira grandi.
6 Et percutiam habitatores civitatis hujus : homines & beſtiæ peſtilentiâ magnâ morientur.
7 Et poſt hæc, ait Dominus; Dabo Sedeciam regem Juda, & ſervos ejus, & populum ejus, & qui derelicti ſunt in civitate hac à peſte, & gladio, & fame, in manu Nabuchodonoſor regis Babylonis, & in manu inimicorum eorum, & in manu quærentium animam eorum, & percutiet eos in ore gladii, & non flectetur, neque parcet, nec miſerebitur.
8 Et ad populum hunc dices; Hæc dicit Dominus; Ecce ego do coram vobis viam vitæ, & viam mortis.
9 Qui habitaverit in urbe hac, morietur gladio, & fame, & peſte : qui autem egreſſus fuerit, & transfugerit ad Chaldæos, qui obſident vos, vivet, & erit ei anima ſua, quaſi ſpolium.
10 Poſui enim faciem meam ſuper civitatem hanc in malum, & non in bonum, ait Dominus; in manu regis Babylonis dabitur,& exuret eam igni.
11 Et domui regis Juda; Audite verbum Domini,

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

17 Ὅτι οὐκ ἀπέκτεινέ με (ς) ἐν μήτρᾳ, καὶ ἐγένετό μοι ἡ μήτηρ μου τάφος μου, καὶ ἡ μήτρα συλλήψεως αἰωνίας.
18 Ἱνατί τοῦτο ἐξῆλθον ἐκ μήτρας, τοῦ βλέπειν κόπους καὶ πόνους, καὶ διετέλεσαν ἐν αἰσχύνῃ αἱ ἡμέραι μου;

MS.A. (ς) ἐν μήτρᾳ μητρὸς,

ΚΕΦ. κα΄.

1 Ὁ ΛΟ΄ΓΟΣ Ὁ ΓΕΝΟ΄ΜΕΝΟΣ ΠΑΡ᾽Α ΚΥΡΙ΄ΟΥ ΠΡΟ΄Σ (α) ἹΕΡΕΜΙ΄ΑΝ, ὝΟΤΕ ἈΠΕ΄ΣΤΕΙΛΕ ΠΡΟ΄Σ ΑΥΤΟ΄Ν Ὁ ΒΑΣΙΛΕ΄ΥΣ ΣΕΔΕΚΙ΄ΑΣ ΤΟ΄Ν ΠΑΣΧΩ΄Ρ ὙΙΟ΄Ν ΜΕΛΧΙ΄ΟΥ, ΚΑΙ΄ ΣΟΦΟΝΙ΄ΑΝ ὙΙΟ΄Ν (β) ΒΑΣΑ΄ΙΟΥ ΤΟ΄Ν ἹΕΡΕ΄Α, ΛΕ΄ΓΩΝ,
2 Ἐπερώτησον περὶ ἡμῶν τὸν κύριον· ὅτι (˜) βασιλεὺς Βαβυλῶνος ἐφέστηκεν ἐφ᾽ ἡμᾶς· εἰ ποιήσει κύριος κατὰ πάντα τὰ θαυμάσια αὐτοῦ, καὶ ἀπελεύσεται ἀφ᾽ ἡμῶν.
3 Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς Ἱερεμίας, Οὕτως ἐρεῖτε πρὸς Σεδεκίαν βασιλέα Ἰούδα,
4 Τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ μεταστρέφω τὰ ὅπλα τὰ πολεμικὰ, ἐν οἷς ὑμεῖς πολεμεῖτε ἐν αὐτοῖς πρὸς τοὺς Χαλδαίους τοὺς (γ) συγκεκλεικότας ὑμᾶς ἔξωθεν τοῦ (δ) τείχους. καὶ συνάξω αὐτοὺς εἰς τὸ μέσον τῆς πόλεως ταύτης,
5 Καὶ πολεμήσω ἐγὼ ὑμᾶς ἐν χειρὶ (ε) ἐκτεταμένῃ, καὶ ἐν βραχίονι κραταιῷ μετὰ θυμοῦ καὶ (ζ) ὀργῆς μεγάλης.
6 Καὶ πατάξω πάντας τοὺς κατοικοῦντας ἐν τῇ πόλει ταύτῃ, τοὺς ἀνθρώπους καὶ τὰ κτήνη ἐν θανάτῳ μεγάλῳ, καὶ ἀποθανοῦνται.
7 Καὶ μετὰ ταῦτα οὕτως λέγει κύριος, Δώσω τὸν Σεδεκίαν βασιλέα Ἰούδα, καὶ τοὺς παῖδας αὐτοῦ, καὶ τὸν λαὸν (η) καταλειφθέντα ἐν τῇ πόλει ταύτῃ ἀπὸ τοῦ θανάτου καὶ ἀπὸ τοῦ λιμοῦ καὶ ἀπὸ τῆς μαχαίρας, εἰς χεῖρας ἐχθρῶν αὐτῶν, τῶν ζητούντων τὰς ψυχὰς αὐτῶν, καὶ κατακόψουσιν αὐτοὺς ἐν στόματι μαχαίρας· οὐ φείσομαι (θ) ἐπ᾽ αὐτοῖς, καὶ οὐ μὴ οἰκτειρήσω αὐτούς.
8 Καὶ πρὸς τὸν λαὸν τοῦτον ἐρεῖς, Τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ δέδωκα πρὸ προσώπου ὑμῶν τὴν ὁδὸν τῆς ζωῆς, καὶ τὴν ὁδὸν τοῦ θανάτου.
9 Ὁ καθήμενος ἐν τῇ πόλει ταύτῃ, ἀποθανεῖται ἐν μαχαίρᾳ καὶ ἐν λιμῷ· καὶ ὁ ἐκπορευόμενος προσχωρῆσαι πρὸς τοὺς Χαλδαίους τοὺς συγκεκλεικότας ὑμᾶς, ζήσεται, καὶ ἔσται ἡ ψυχὴ αὐτοῦ εἰς σκῦλα, καὶ ζήσεται.
10 Διότι (ι) ἐστήρικα τὸ πρόσωπόν μου ἐπὶ τὴν πόλιν ταύτην εἰς κακὰ, καὶ οὐκ εἰς ἀγαθά· εἰς χεῖρας βασιλέως Βαβυλῶνος παραδοθήσεται, καὶ κατακαύσει αὐτὴν ἐν πυρί.
11 Ὁ οἶκος βασιλέως Ἰούδα, ἀκούσατε λόγον κυρίου·

MS.A. (α) ἸΗΡΕΜΙ΄ΑΝ, ὝΟΤΙ (β) ΜΑΣΣΑ΄ΙΟΥ (˜) ὁ βασιλεὺς (γ) συγκλείοντας ἡμᾶς (δ) τείχους εἰς τὸ μέσον (ε) ἐντεταμένῃ, (ζ) ὀργῆς καὶ παροργισμοῦ μεγάλου. (η) τὸν καταλειφθέντα (θ) ἐπ᾽ αὐτοὺς, (ι) ἐστήρικα

Quia non interfecit me in vulva, & facta eſt mihi mater mea ſepulchrum meum, & vulva conceptionis æternæ. 17
Ut quid ita egreſſus ſum è vulva, ut viderem labores,& dolores, & conſummati ſunt in confuſione dies mei ? 18

CAP. XXI.

VERBUM, quod factum eſt à Domino ad Hieremiam, quando miſit ad eum rex Sedecias Paſchor filium Melchiæ, & Sophoniam filium Baſaiæ ſacerdotem, dicens; 1
Interroga pro nobis Dominum: quia rex Babylonis inſurrexit ſuper nos : ſi faciet Dominus ſecundùm omnia mirabilia ſua, & recedet à nobis? 2
Et dixit ad eos Hieremias; Sic dicetis ad Sedeciam regem Juda; 3
Hæc dicit Dominus; Ecce ego converto arma bellica, in quibus vos pugnatis in eis adverſùs Chaldæos, qui concluſerunt vos extra murum. 4
Et congregabo eos in medio civitatis hujus, 5
Et debellabo ego vos in manu extenta, & in brachio forti cum furore, & ira magna :
Et percutiam omnes habitantes in civitate hac, homines, & jumenta, in morte magna : & morientur. 6
Et poſt hæc ſic ait Dominus; Dabo Sedeciam regem Juda, & pueros ejus, & populum derelictum in civitate hac à morte, & à fame, & à gladio, in manus inimicorum eorum, quærentium animas eorum : & trucidabunt eos in ore gladii. Non parcam ſuper eis, & non miſerebor eorum. 7
Et ad populum hunc dices; Hæc dicit Dominus; Ecce ego dedi ante faciem veſtram, viam vitæ, & viam mortis. 8
Sedens in urbe hac, morietur in gladio, & in fame: & egrediens accedere ad Chaldæos, qui concluſerunt vos, vivet, & erit anima ejus in ſpolia, & vivet. 9
Obfirmavi enim faciem meam ſuper civitatem hanc in mala, & non in bona. In manus regis Babylonis tradetur : & comburet eam in igne. 10
Domus regis Juda, audite verbum Domini, 11

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

17 לוי דלא אמיר עלי דמתית ממעין והות לי פון אמי קברי והוית כדלא הוית: למה דנן 18
מבטנא נפקית למחזי עמל ודון וספו בבהתא יומי:

כא

1 פתגם נבואה דהוה עם ירמיה מקדם יי כד שלח לותיה מלכא צדקיה ית פשחור בר
2 מלכיה וית צפניה בר מעשיה כהנא למימר: צלי כען עלנא קדם יי ארי נבוכדנצר
3 מלכא דבבל מגיח קרבא בנא מאים יעבד יי עמנא ככל פרישתיה ויסתלק מננא: ואמר
4 ירמיה להון כדין תימרון לצדקיה: כדנן אמר יי אלהא דישראל האנא מסחר ית מאני
קרבא דבידכון דאתון מגיחין קרבא בהון עם מלכא דבבל ועם כשדאי דצירין עליכון
5 מברא לשורא ואכנש יתהון לגו קרתא הדא: ואגיח אנא עמכון ביד מרממא ובדרע
6 תקיפא וברגז ובחמה ובתקוף רב: ואמחי ית יתבי קרתא הדא וית אנשא וית בעירא
7 במותא סגיאה ימותון: ובתר כן אמר יי אמסר ית צדקיה מלך שבטא דבית יהודה וית
עבדוהי וית עמא וית דאשתארו בקרתא הדא מן מותא ומן חרבא ומן כפנא ביד נבוכד
ראצר מלכא דבבל וביד בעלי דבביהון וביד דבען למקטלהון ויקטלינון לפתגם דחרב
8 לא יחוס עליהון ולא יחמול ולא ירחם: ולעמא הדין תימר כדנן אמר יי האנא יהב
9 קדמיהון ית אורח חיי וית אורח מותא: דיתב בקרתא הדא יתקטל בחרבא ובכפנא
10 ובמותא ודיפוק ויתמסר לכשדאי דצירין עליכון ויחי ותהי ליה נפשיה לשיזבא: ארי
חל רוגזי בקרתא הדא לבישא ולא לטבא אמר יי בידא דמלכא דבבל תתמסר
11 ויוקדניה בנורא: ולבית מלך שבטא דבית יהודה קבילו פתגמא דיי:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Utinam non dictum fuiſſet de me:ſed quòd mortu⁹ eſſem ab utero,& eſſet mihi mater mea ſepulchrum meum, & eſſem quaſi non eſſem. 17
Quare de ventre egreſſus ſum;ut viderem laborem et dolorem, et conſumpti ſunt in confuſione dies mei ? 18

CAP. XXI.

VErbum prophetiæ quod factum eſt ad Jeremiam à facie Dñi, quando miſit ad eum rex Sedechias Phaſur filium Melchiæ, & Sophoniam filium Maaſiæ ſacerdotem, dicens : 1
Ora nunc pro nobis coram Dño, quia Nabuchodonoſor rex Babylonis præliatur adverſùm nos;fortaſſe faciet Dñs nobiſcum juxta omnia mirabilia ſua, & diſcedet à nobis. 2
Et dixit ad eos Jeremias:Hæc dicetis Sedechiæ; 3
Hæc dicit Dñs Deus Iſrael: Ecce ego convertam inſtrumenta belli quæ ſunt in manibus veſtris, quibus vos pugnatis contra regē Babylonis,& contra Chaldæos,qui obſident vos extra murum: & congregabo ea in medio civitatis hujus. 4
Et pugnabo ego vobiſcum in manu excelſa,et in brachio forti,et in furore,et in indignatione,et in ira grādi. 5
Et percutiam habitatores civitatis hujus: & homines & jumenta peſte magna morientur. 6
Et poſt hæc,dicit Dñs, tradam Sedechiam regem tribus domus Juda,& ſervos ejus,& populum & quicunque remanſerit in civitate iſta,à morte,& à gladio,& à fame,in manum Nabuchodonoſor regis Babylonis,& in manum inimicorum ſuorum,& in manum quærentium occidere eos;& percutiet eos in ore gladii : non parcet eis , nec ignoſcet, nec miſerebitur. 7
Populo autem huic dices:Hæc dicit Dñs; Ecce ego dabo coram vobis viam vitæ & viam mortis. 8
Qui habitaverit in urbe hac, interficietur gladio, & fame, & peſte : & qui egreſſus fuerit, et qui obedierit Chaldæis qui obſident vos, vivet,et erit ei anima ejus in evaſionem. 9
Quia reſidet furor meus contra civitatem iſtam in malum, et non in bonum,dicit Dominus. In manum regis Babylonis tradetur , qui eam ſuccendet igni. 10
Et domui regis tribus domus Juda, Suſcipite verbum Domini. 11

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

17 * ܕܠܐ ܐܡܝܬܢܝ ܒܡܪܒܥܐ. ܘܗܘܬ ܠܝ ܐܡܝ ܩܒܪܐ. ܘܡܪܒܥܐ ܒܛܢܬܗ ܕܥܠܡ.
18 * ܠܡܢܐ ܢܦܩܬ ܡܢ ܡܪܒܥܐ. ܠܡܚܙܐ ܥܡܠܐ ܘܕܘܘܢܐ. ܘܢܫܠܡܘܢ ܒܒܗܬܬܐ ܝܘܡܝ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܐ *

1 * ܦܬܓܡܐ ܕܗܘܐ ܠܘܬ ܐܪܡܝܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܟܕ ܫܕܪ ܠܘܬܗ ܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ. ܠܦܫܚܘܪ
2 ܒܪ ܡܠܟܝܐ ܘܠܨܦܢܝܐ ܒܪ ܡܥܣܝܐ ܟܗܢܐ. ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܥܘ ܚܠܦܝܢ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ.
ܡܛܠ ܕܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܡܬܟܬܫ ܥܡܢ. ܐܢ ܢܥܒܕ ܥܡܢ ܡܪܝܐ ܐܝܟ
ܟܠܗܝܢ ܬܕܡܪܬܗ. ܘܢܣܬܠܩ ܡܢܢ. * ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ ܐܪܡܝܐ. ܗܟܢܐ ܬܐܡܪܘܢ ܠܨܕܩܝܐ
3 ܡܠܟܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܗܐ ܡܗܦܟ ܐܢܐ ܡܐܢܝ ܩܪܒܐ ܕܒܐܝܕܝܟܘܢ.
4 ܕܡܬܟܬܫܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܗܘܢ. ܥܡ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ : ܘܥܡ ܟܠܕܝܐ. ܕܐܚܝܕܝܢ ܠܟܘܢ
ܠܒܪ ܡܢ ܫܘܪܐ. ܘܐܟܢܫ ܐܢܘܢ ܠܓܘ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. * ܘܐܬܟܬܫ ܐܢܐ ܥܡܟܘܢ. ܒܐܝܕܐ
5 ܦܫܝܛܬܐ. ܘܒܕܪܥܐ ܪܡܐ. ܒܪܘܓܙܐ ܘܒܚܡܬܐ. * ܘܒܪܘܓܙܐ ܪܒܐ ܐܡܚܐ ܠܥܡܘܪܝ ܡܕܝܢܬܐ
6 ܗܕܐ. ܠܒܢܝܢܫܐ ܘܠܒܥܝܪܐ. ܒܡܘܬܐ ܪܒܐ ܢܡܘܬܘܢ. * ܘܡܢ ܒܬܪܟܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܫܠܡܝܘܗܝ
7 ܠܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܠܥܒܕܘܗܝ. ܘܠܥܡܐ ܕܐܫܬܚܪ ܒܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ: ܡܢ ܚܪܒܐ.
ܘܡܢ ܟܦܢܐ. ܘܡܢ ܡܘܬܢܐ. ܐܫܠܡ ܒܐܝܕܐ ܕܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܒܐܝܕܐ
ܕܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ. ܘܒܐܝܕܐ ܕܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܢܦܫܗܘܢ. ܘܢܩܛܠ ܐܢܘܢ. ܒܦܘܡܐ ܕܚܪܒܐ.
8 ܘܠܐ ܢܚܘܣ ܥܠܝܗܘܢ. ܘܠܐ ܢܪܚܡ ܥܠܝܗܘܢ. * ܘܠܥܡܐ ܗܢܐ ܐܡܪ. ܗܟܢܐ
9 ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܝܗܒ ܐܢܐ ܩܕܡܝܟܘܢ. ܐܘܪܚܐ ܕܚܝܐ ܘܐܘܪܚܐ ܕܡܘܬܐ. * ܡܢ ܕܝܬܒ
ܒܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܢܡܘܬ ܒܚܪܒܐ ܘܒܟܦܢܐ. ܘܒܡܘܬܢܐ. ܘܡܢ ܕܢܦܩ ܠܘܬ ܟܠܕܝܐ.
10 ܕܐܚܝܕܝܢ ܠܟܘܢ. ܢܚܐ. ܘܬܗܘܐ ܠܗ ܢܦܫܗ ܠܒܙܬܐ. * ܡܛܠ ܕܣܡܬ ܐܦܝ ܒܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ.
ܠܒܝܫܬܐ. ܘܠܐ ܠܛܒܬܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܒܐܝܕܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܬܫܬܠܡ. ܘܢܘܩܕܝܗ
11 ܒܢܘܪܐ. ܘܒܝܬܗ ܕܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. * ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܕܒܝܬ ܕܘܝܕ.

Quòd morte non affecerit me in vulva, ut 17
esset mihi mater mea sepulchrum, & in vulva
conceptus meus perpetuus. Cur egressus 18
sum è vulva, ut aspicerem laborem & molestiam,
& consumerentur in pudore dies mei?

CAP. XXI.

SErmo qui fuit ad Jeremiam à Domino, cùm 1
misisset ad eum rex Sedecia Peshurem filium
Melachiæ, & Sephaniam filium Maasiæ sacerdotes, ut dicerent ; Precare pro nobis 2
Dominum, quia Nebuchadnosar rex Babelis
pugnat contra nos : si fortè agat nobiscum
Dominus juxta tot mirabilia sua, & arceat
illum à nobis. Dixit autem eis Jeremia, Sic 3
dicetis regi Sedeciæ ; Ita ait Dominus Deus 4
Israelis, Ecce aversurus sum instrumenta bellica quæ manibus tenetis, quibus dimicatis
contra regem Babelis & contra Chaldæos
qui vos obsident extra civitatem, & congregaturus eos intra civitatem istam ; Et præliaturus 5
egomet contra vos manu potenti &
brachio excelso, cum ira & æstu : Et magna 6
cum ira percussurus habitatores civitatis hujus
homines & jumenta magnâ clade morientur. Tum postea, dicit Dominus ; tradam 7
Sedeciam regem Judæ, & servos ejus ; &
populum qui superstes in hac civitate fuerit à
gladio, à fame, & à peste ; tradam in manum
Nebuchadnosaris regis Babelis, in manum
hostium suorum, & in manum eorum qui
quærunt animam ipsorum : & percutiet eos
acie gladii, neque parcet eis, neque clementiâ utetur, neque miserebitur illorum. Populo 8
autem isti dic, Sic ait Dominus ; Ecce
propono vobis viam vitæ & viam mortis :
Qui manserit in hac civitate, morietur gladio, 9
fame, & peste ; qui autem egressus fuerit ad Chaldæos qui vos obsident, vivet,
eripiétque animam suam. Posui enim faciem 10
meam contra civitatem istam in malum, &
non in bonum, dicit Dominus ; & in manum
regis Babelis tradetur, qui tum ipsam tum domum regis Judæ, igne comburet. Audite 11
sermonem Domini O domestici Davidis :

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

17 * لانه لم يقتلني في رحم الام * وتصير لي امي قبري ورحم حبل ابدي * لماذا خرجت من 18
الرحم لانظر الاتعاب والاوجاع * وكملت بالخزي ايامي *

* الفصل الحادي والعشرون * * الاصحاح الثالث عشر *

1 * القول الصاير من قبل الرب الي ارمياء لما ارسل اليه صداقيا الملك فشحور بن
2 ملسيو * وصفونيا بن ماسياوو الكاهن قايلا * اسال من اجلنا الرب * لان ملك
بابل وقف بنا * هل يصنع الرب كجميع عجايبه وينصرف عنا *
3 4 * فقال لهم ارمياء * هكذا قولوا لصداقيا ملك يهودا * هكذا يقول الرب * ها انا انقل
الاسلحة الحربية التي انتم تحاربون بها * الي الكلدانيين الذين يحبسونكم * من خارج
5 السور الي وسط هذه المدينة * وانا احاربكم بيد ممدودة وبذراع عزيز * بغضب وزجر
6 وغيظ عظيم * واضرب جميع السكان في هذه المدينة الناس والبهايم بموت عظيم ويموتون *
7 * ومن بعد هذه هكذا يقول الرب * ادفع صداقيا ملك يهودا واولاده * والشعب المتبقي في هذه
المدينة من الموت ومن الجوع ومن السيف * الي ايدي اعدايهم الذين يطلبون نفوسهم *
8 ويقطعونهم بفم السيف * ولا اشفق عليهم ولا اتراف عليهم * ويقول لهذا الشعب * هكذا
9 يقول الرب * ها انا اعطي امام وجوهكم طريق الحياة وطريق الموت * الجالس في هذه المدينة
يموت بالسيف والجوع * والذي يخرج ليلتجي للكلدانيين الذين حبسوكم يعيش * ويكون
10 نفسه للغنايم ويعيش * من اجل اني سددت وجهي علي هذه المدينة للشرور ولا للخيرات *
11 في ايدي ملك بابل تدفع * ويحرقها بالنار * يا بيت ملك يهودا اسمعوا قول
الرب *

Quòd non occiderit me in utero matris, 17
ut esset mihi mater mea sepulchrum meum, & uterus conceptionis perpetuum.
Quare de vulva prodivi ut viderem labores ac dolores, & finirent in pudore 18
dies mei?

CAP. XXI.

Textus decimus tertius.

SErmo habitus à Domino ad Jeremiam, quando misit ad eum 1
Sedecia rex Phehsurem Malachiæ
filium, & Sephoniam filium Maasiæ sacerdotem, dicens ; Consule pro nobis Dominum, quia rex 2
Babelis circumstat nos, an facturus sit Dominus secundùm omnia
miracula sua, ut abscedat à nobis.
Itaque dixit eis Jeremias, Ita dicite Sedeciæ regi Judæ ; Sic dicit Dominus, 3 4
Ecce ego transferam arma bellica quibus vos pugnatis, ad Chaldæos qui vos coarctant, ab extrinseco mœnium ad medium istius urbis ; Et ego expugnabo vos 5
manu extentâ & brachio robusto, cum ira, indignatione, & furore maximo :
Et percutiam omnes habitantes in hac 6
urbe, tam homines quàm jumenta, ingenti peste, & morientur. Et post hæc, sic 7
dicit Dominus, tradam Sedeciam regem Juda, & filios ejus, nec non populum quem reliquum fecerit hac in urbe
pestis, inedia, & gladius, in manus inimicorum suorum quærentium animas
eorum, qui concident eos acie gladii : &
non miserebor eorum, neque clementiâ utar in eos. Dices etiam huic populo, 8
Sic ait Dominus, Ecce ego pono ob oculos
vestros viam vitæ & viam mortis.
Qui commoratus fuerit in hac urbe, 9
morietur gladio & fame : qui autem
egressus fuerit ut se conferat ad Chaldæos qui concluserunt vos, vivet, servabitur anima ejus ad spolia, & evadet.
Nam ego reddidi severum vultum meum contra hanc urbem in mala, non in 10
bona : in manus regis Babyloniæ tradetur, & igne comburet illam. O domus 11
regis Judæ, audite sententiam
Domini.

ירמיה׃ כב

eruite &,judicium mane in Judicate :Dominus dixit ſic ,David Domus
12 בֵּית דָּוִד כֹּה אָמַר יְהוָה דִּינוּ לַבֹּקֶר מִשְׁפָּט וְהַצִּילוּ
,mea *excandeſcentia* ignis ut egrediatur fortè ne:opprimẽtis manu de *direptũ*
גָּזוּל מִיַּד עוֹשֵׁק פֶּן־תֵּצֵא כָאֵשׁ חֲמָתִי
.*eorum ſtudiorum malitiæ faciebus à extinguens* non & , ſuccendatur &
וּבָעֲרָה וְאֵין מְכַבֶּה מִפְּנֵי רֹעַ מַעַלְלֵיהֶם׃
:DOMINUS ait ,*planitiei* petra vallis habitatrix te ad *ego* Ecce
13 הִנְנִי אֵלַיִךְ יֹשֶׁבֶת הָעֵמֶק צוּר הַמִּישֹׁר נְאֻם־יְהוָה
?noſtra habitacula in ingredietur quis&,nos *ſuper* cõfringet Quis ; *dicentes*
הָאֹמְרִים מִי־יֵחַת עָלֵינוּ וּמִי יָבוֹא בִּמְעוֹנוֹתֵינוּ׃
:Dominus dixit , veſtrorũ *ſtudiorum* fructum juxta vos ſuper viſitabo Et
14 וּפָקַדְתִּי עֲלֵיכֶם כִּפְרִי מַעַלְלֵיכֶם נְאֻם־יְהוָה
.*ejus circuitus omnes comedet* & ,ejus ſylva in ignem faciam ſuccendere &
וְהִצַּתִּי אֵשׁ בְּיַעְרָהּ וְאָכְלָה כָּל־סְבִיבֶיהָ׃

CAP. XXII. כב

loquèris &,Jehudah regis domum Deſcende : Dominus dixit Sic
1 כֹּה אָמַר יְהוָה רֵד בֵּית־מֶלֶךְ יְהוּדָה וְדִבַּרְתָּ
rex ,Domini verbum Audi : *dices* Et .hoc verbum ibi
2 שָּׁם אֶת־הַדָּבָר הַזֶּה׃ וְאָמַרְתָּ שְׁמַע דְּבַר־יְהוָה מֶלֶךְ
,tuus populus &,tui ſervi & , tu ,David ſolium ſuper *ſedens* ,Jehudah
יְהוּדָה הַיֹּשֵׁב עַל־כִּסֵּא דָוִד אַתָּה וַעֲבָדֶיךָ וְעַמְּךָ
judicium Facite : Dominus dixit Sic .has portas *in ingredientes*
3 הַבָּאִים בַּשְּׁעָרִים הָאֵלֶּה׃ כֹּה אָמַר יְהוָה עֲשׂוּ מִשְׁפָּט
,*peregrinum* & : opprimentis manu de *direptum* liberate & ; juſtitiam &
וּצְדָקָה וְהַצִּילוּ גָזוּל מִיַּד עָשׁוֹק וְגֵר
innocentẽ ſanguinẽ & , rapiatis ne :*fraudetis* ne viduam & ,pupillum
יָתוֹם וְאַלְמָנָה אַל־תֹּנוּ אַל־תַּחְמֹסוּ וְדָם נָקִי
feceritis faciendo ſi Nam .iſto loco in effundatis ne
4 אַל־תִּשְׁפְּכוּ בַּמָּקוֹם הַזֶּה׃ כִּי אִם־עָשׂוֹ תַּעֲשׂוּ
reges hujus domus portas *in* ingredientur & , hoc *verbum*
אֶת־הַדָּבָר הַזֶּה וּבָאוּ בְשַׁעֲרֵי הַבַּיִת הַזֶּה מְלָכִים
,equis in & ,curru in equitantes ,ejus ſolium ſuper David *ipſi* ſedentes
יֹשְׁבִים לְדָוִד עַל־כִּסְאוֹ רֹכְבִים בָּרֶכֶב וּבַסּוּסִים
audieritis non ſi Et .ejus populus & ,ejus ſervi & , ipſe
5 הוּא וַעֲבָדָו וְעַמּוֹ׃ וְאִם לֹא תִשְׁמְעוּ אֶת־
quia : Dominus dixit , juravi me *in* , hæc verba
הַדְּבָרִים הָאֵלֶּה בִּי נִשְׁבַּעְתִּי נְאֻם־יְהוָה כִּי־
Dominus dixit ſic Quia .hæc domus erit ſolitudinem in
6 לְחָרְבָּה יִהְיֶה הַבַּיִת הַזֶּה׃ כִּי־כֹה אָמַר יְהוָה
: Lebanon caput mihi tu Ghilhad : Jehudah regis domum ſuper
עַל־בֵּית מֶלֶךְ יְהוּדָה גִּלְעָד אַתָּה לִי רֹאשׁ הַלְּבָנוֹן
ſanctificabo Et .*ſunt habitatæ* non urbes ,*deſertum* te poſuero non ſi
7 אִם־לֹא אֲשִׁיתְךָ מִדְבָּר עָרִים לוֹא נוֹשָׁבָה׃ וְקִדַּשְׁתִּי
electionem ſuccident & ,ejus inſtrumenta & *virum* ,*corrumpentes* te ſuper
עָלֶיךָ מַשְׁחִתִים אִישׁ וְכֵלָיו וְכָרְתוּ מִבְחַר
multæ gentes tranſibunt Et .ignem ſuper facient cadere & ,*tuarũ cedrorum*
8 אֲרָזֶיךָ וְהִפִּילוּ עַל־הָאֵשׁ׃ וְעָבְרוּ גּוֹיִם רַבִּים
quid Propter :ſuũ *ſocium* ad unuſquiſque dicent & ,iſtam civitatem *ſuper*
עַל הָעִיר הַזֹּאת וְאָמְרוּ אִישׁ אֶל־רֵעֵהוּ עַל־מֶה
quod *Super* :dicent Et ? huic grandi civitati ſic Domin' fecit
9 עָשָׂה יְהוָה כָּכָה לָעִיר הַגְּדוֹלָה הַזֹּאת׃ וְאָמְרוּ עַל אֲשֶׁר
ſe incurvaverunt & , ſui Dei Domini pactum dereliquerunt
עָזְבוּ אֶת־בְּרִית יְהוָה אֱלֹהֵיהֶם וַיִּשְׁתַּחֲווּ
ne & ,*mortuo in* defleatis Ne .eis ſervierunt & ,alienis Diis
10 לֵאלֹהִים אֲחֵרִים וַיַּעַבְדוּם׃ אַל־תִּבְכּוּ לְמֵת וְאַל־
,ultrà revertetur non quia : *abeunti* flendo flete : *ei* *commoveamini*
תָּנֻדוּ לוֹ בְּכוּ בָכוֹ לַהֹלֵךְ כִּי לֹא יָשׁוּב עוֹד
.ſuæ nativitatis terram videbit &
וְרָאָה אֶת־אֶרֶץ מוֹלַדְתּוֹ׃

Verſio VULG. LAT.

12 Domus David, hæc dicit Dominus ; Judicate manè judicium,&
eruite vi oppreſſum de manu calumniantis : ne fortè egrediatur
ut ignis indignatio mea, & ſuccendatur, & non ſit qui extinguat, propter malitiam ſtudiorum
13 rum veſtrorum. Ecce ego ad te
habitatricem vallis ſolidæ atque
campeſtris, ait Dominus : qui dicitis, Quis percutiet nos?& quis
14 ingredietur domos noſtras ? Et
viſitabo ſuper vos juxta fructum
ſtudiorum veſtrorum, dicit Dominus : & ſuccendam ignem in
ſaltu ejus : & devorabit omnia
in circuitu ejus.

CAP. XXII.

1 HÆc dicit Dominus ; Deſcende
in domum regis Juda, & loquêris
2 ibi verbum hoc, Et dices ;
Audi verbum Domini rex Juda,
qui ſedes ſuper ſolium David ; tu
& ſervi tui, & populus tuus, qui
3 ingredimini per portas iſtas. Hæc
dicit Dominus ; Facite judicium
& juſtitiam, & liberate vi oppreſſum de manu calumniatoris:
& advenam, & pupillum, et viduam nolite contriſtare, neque
opprimatis iniquè : & ſanguinem innocentem ne effundatis in
4 loco iſto. Si enim facientes feceritis verbum iſtud : ingredientur per portas domûs hujus, reges ſedentes de genere David
ſuper thronum ejus, & aſcendentes currus et equos, ipſi &
5 ſervi, & populus eorum. Quòd
ſi non audieritis verba hæc : in
memetipſo juravi, dicit Dominus ; quia in ſolitudinem erit domus
6 hæc. Quia hæc dicit Dominus ſuper domum regis Juda ;
Galaad, tu mihi caput Libani : ſi
non poſuero te ſolitudinem, urbes
7 inhabitabiles. Et ſanctificabo ſuper te, interficientem virum, & arma ejus : & ſuccîdent
electas cedros tuas, & præcipitabunt
8 in ignem. Et pertranſibunt
gentes multæ per civitatẽ hanc :
& dicet unuſquiſque proximo
ſuo ; Quarè fecit Dominus ſic
9 civitati huic grandi? Et reſpondebunt ; Eò quòd dereliquerint pactum Domini Dei ſui,
& adoraverint deos alienos, &
10 ſervierint eis. Nolite flere mortuum, neque lugeatis ſuper eum
fletu : plangite eum, qui egreditur : quia non revertetur ultrà,
nec videbit terram nativitatis
ſuæ.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

12 Οἶκος Δαυὶδ, τάδε λέγει κύριος, Κρίνατε πρωῒ κρίμα, καὶ κατευθύνατε, καὶ ἐξέλεσθε διηρπασμένον ἐκ χειρὸς ἀδικοῦντος αὐτὸν, ὅπως μὴ ἀναφθῇ ὡς πῦρ ἡ ὀργή μου, καὶ καυθήσεται, (κ) καὶ οὐκ ἔσται ὁ
13 σβέσων. Ἰδοὺ ἐγὼ πρὸς σὲ τὴν κατοικοῦσαν
τὴν κοιλάδα Σὸρ, τὴν πεδινὴν, τοὺς λέγοντας, Τίς πτοήσει ἡμᾶς; ἢ τίς εἰσελεύσεται
14 πρὸς τὸ κατοικητήριον ἡμῶν; Καὶ
ἀνάψω πῦρ ἐν τῷ (λ) δρυμῷ αὐτῆς, καὶ
(μ) ἔδεται πάντα τὰ κύκλῳ αὐτῆς.

MS. A. (κ) καὶ οὐκ ἔσται * καὶ οὐκ ἔσται (λ) * δρυμῷ (μ) κατέδεται

ΚΕΦ. κβʹ.

1 ΤΑ'δε λέγει κύριος, Πορεύου καὶ κατάβηθι εἰς τὸν οἶκον τοῦ βασιλέως Ἰούδα, καὶ
2 λαλήσεις ἐκεῖ τὸν λόγον τοῦτον, Καὶ ἐρεῖς, Ἄκουε λόγον κυρίου βασιλεῦ Ἰούδα,
ὁ καθήμενος ἐπὶ θρόνου Δαυὶδ, σὺ καὶ ὁ
οἶκός σου καὶ ὁ λαός σου, καὶ οἱ εἰσπορευό-
3 μενοι (α) ταῖς πύλαις ταύταις· Τάδε
λέγει κύριος, Ποιεῖτε κρίσιν καὶ δικαιοσύνην, καὶ ἐξαιρεῖσθε διηρπασμένον ἐκ χειρὸς
ἀδικοῦντος αὐτὸν, καὶ προσήλυτον καὶ ὀρφανὸν καὶ χήραν μὴ καταδυναστεύετε, καὶ μὴ
ἀσεβεῖτε, καὶ αἷμα ἀθῷον μὴ ἐκχέητε ἐν
4 τῷ τόπῳ τούτῳ. Διότι ἐὰν ποιοῦντες
ποιήσητε τὸν λόγον τοῦτον, καὶ εἰσελεύσονται ἐν ταῖς πύλαις τοῦ οἴκου τούτου βασιλεῖς (β) καθήμενοι ἐπὶ θρόνου Δαυὶδ, καὶ
ἐπιβεβηκότες ἐφ' ἁρμάτων καὶ ἵππων, αὐτοὶ καὶ οἱ παῖδες αὐτῶν, καὶ ὁ λαὸς αὐτῶν.
5 Ἐὰν δὲ μὴ ποιήσητε τοὺς λόγους τούτους,
κατ' ἐμαυτοῦ ὤμοσα, λέγει κύριος, ὅτι εἰς
6 ἐρήμωσιν ἔσται ὁ οἶκος οὗτος. Ὅτι τάδε
λέγει κύριος κατὰ τοῦ οἴκου βασιλέως Ἰούδα, Γαλαὰδ σύ μοι ἀρχὴ τοῦ Λιβάνου,
ἐὰν μὴ θῶ σε εἰς ἔρημον, πόλεις μὴ κατ-
7 οικηθησομένας, Καὶ (γ) ἐπάξω ἐπὶ σὲ ὀλοθρεύοντα ἄνδρα, καὶ τὸν πέλεκυν αὐτοῦ, καὶ
ἐκκόψουσι τὰς ἐκλεκτὰς κέδρους σου, καὶ
8 ἐμβαλοῦσιν εἰς τὸ πῦρ. Καὶ διελεύσονται
ἔθνη διὰ τῆς πόλεως ταύτης, καὶ (δ) ἐρεῖ
ἕκαστος πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ, Διατί ἐποίησε κύριος οὕτως τῇ πόλει (ε) ταύτῃ
9 τῇ μεγάλῃ; Καὶ ἐροῦσιν, Ἀνθ' ὧν ἐγκατέλιπον τὴν διαθήκην κυρίου (ζ) θεοῦ αὐτῶν, καὶ προσεκύνησαν θεοῖς ἀλλο-
10 τρίοις, καὶ ἐδούλευσαν αὐτοῖς. Μὴ κλαίετε τὸν τεθνηκότα, μηδὲ θρηνεῖτε αὐτόν·
κλαύσατε κλαυθμῷ τὸν ἐκπορευόμενον,
ὅτι οὐκ (η) ἐπιστρέψει ἔτι, οὐδὲ ὄψεται τὴν
γῆν πατρίδος αὐτοῦ.

MS. A. (α) ἐν ταῖς (β) καὶ ἄρχοντες καθήμενοι (γ) εἰσάξω ἐπὶ σὲ ἄνδρα ὀλεθρεύοντα, (δ) ἐροῦσιν (ε) τῇ μεγάλῃ ταύτῃ; (ζ) τοῦ θεοῦ (η) ἀναστρέψει

Domus David ; Hæc dicit Dominus ; Judicate manè judicium, & dirigite, & liberate direptum de manu opprimentis eum ; ut non accendatur, quaſi ignis, ira mea, & ardebit, &
non erit qui extinguat : Ecce 13
ego ad te inhabitantem vallem
(a) Sor, campeſtrem, qui dicitis;
Quis terrebit nos, aut quis ingredietur in habitaculum noſtrum? Et ſuccendam ignem in 14
ſaltu ejus, & devorabit omnia
quæ in circuitu ejus.

CAP. XXII.

HÆc dicit Dominus ; Vade, 1
& deſcende in domum regis Juda, & loquêris ibi verbum
hoc, Et dices ; Audi verbum 2
Domini, rex Juda, qui ſedes ſuper ſolium David, tu, & domus tua, & populus tuus, &
qui ingredimini per portas iſtas.
Hæc dicit Dominus ; Facite ju- 3
dicium, & juſtitiam : & liberate direptum de manu injuriantis eum : & advenam, &
pupillum, & viduam non opprimatis : neque impiè agatis : &
ſanguinem innocentem ne effundatis in loco iſto. Si enim faci- 4
entes feceritis verbum iſtud ; &
ingredientur in portis domûs hujus reges ſedentes ſuper thronum
David, & aſcendentes ſuper
currus, & equos ; ipſi, & pueri
eorum, & populus eorum. Quòd 5
ſi non feceritis verba hæc ; per
memetipſum juravi, dicit Dominus ; quia in ſolitudinem erit
domus hæc. Quia hæc dicit 6
Dominus ſuper domum regis Juda ; Galaad, tu mihi principium
Libani, ſi non poſuero te in ſolitudinem, urbes non habitandas:
*Et * inducam ſuper te extermi-* 7
nantem virum, & ſecurim ejus :
& ſuccîdent electas cedros tuas, & mittent in ignem. Et 8
pertranſibunt (a) gentes per civitatem hanc : & dicet unuſquiſque ad proximum ſuum ;
Quarè fecit Dominus ſic civitati huic magnæ? Et dicent ; 9
Pro eo, quòd dereliquerunt teſtamentum Domini Dei ſui, &
adoraverunt deos alienos, &
ſervierunt eis. Nolite flere 10
mortuum, neque lamentemini eum : plorate ploratione eum, qui
egreditur, quia non revertetur
ultrà, nec videbit terram patriæ ſuæ.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

12 בֵּית דָּוִד כִּדְנַן אֲמַר יְיָ דִּינוּ לְצַפְרָא דִּינָא וְשֵׁיזִיבוּ אֲנִיסָא מִיַּד דְּאָנֵיס לֵיהּ דִּלְמָא יִדְלַק
13 כְּאֶשָּׁתָא רוּגְזִי וִישֵׁיצֵי וְלָא יְהֵי חָיֵס מִן קֳדָם בִּישׁוּת עוֹבָדֵיכוֹן׃ הָאֲנָא שָׁלַח רוּגְזִי עֲלָךְ
דְּיָתְבָא בְתוּקְפָא בְּקִרְוִין כְּרִיכָן אֲמַר יְיָ דְּאָמְרִין מַן יֵיחוֹת עֲלָנָא וּמַן יֵיעוֹל בְּבִרְנְיָתָנָא׃
14 וְאֶסְעַר עֲלֵיכוֹן כְּפֵירֵי עוֹבָדֵיכוֹן אֲמַר יְיָ וְאַדְלֵיק אֶשָּׁתָא בְּקִרְוָהָא וּתְשֵׁיצֵי בְּכָל סְחוֹרָנָהָא׃

כב

1 כִּדְנַן אֲמַר יְיָ חוּת לְבֵית מְלַךְ שִׁבְטָא דְבֵית יְהוּדָה וְתִתְנַבֵּי תַמָּן יָת פִּתְגָּמָא הָדֵין׃ וְתֵימַר
2 קַבֵּל פִּתְגָּמָא דַיְיָ מְלַךְ שִׁבְטָא דְבֵית יְהוּדָה דְּיָתֵיב עַל כּוּרְסֵי דָוִד אַתְּ וְעַבְדָּךְ וְעַמָּךְ דְּעָלִין
3 בְּתַרְעַיָּא הָאִלֵּין׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ עֲבִידוּ דִּינָא וּצְדַקְתָּא וְשֵׁיזִיבוּ אֲנִיסָא מִיַּד דְּאָנֵיס לֵיהּ וְגִיּוֹר
4 יָתֵים וְאַרְמְלָא לָא תוֹנוּן וְלָא תֵינְסוּן וְדַם זַכַּי לָא תֵישְׁדוּן בְּאַתְרָא הָדֵין׃ אֲרֵי אִם מֶעְבַּד
תַּעְבְּדוּן יָת פִּתְגָּמָא הָדֵין וְיֵיעֲלוּן בְּתַרְעֵי בֵיתָא הָדֵין מַלְכִין יָתְבִין לְדָוִד עַל כּוּרְסוֹהִי
5 רָכְבִין בִּרְתִיכִין וּבְסוּסְוָן הוּא וְעַבְדוֹהִי וְעַמֵּיהּ׃ וְאִם לָא תְקַבְּלוּן יָת פִּתְגָּמַיָּא הָאִלֵּין
6 בְּמֵימְרִי קַיְּמִית אֲמַר יְיָ אֲרֵי לְחוּרְבָּא יְהֵי בֵיתָא הָדֵין׃ אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ עַל בֵּית מְלַךְ
שִׁבְטָא דְבֵית יְהוּדָא אִלּוּ אַתְּ חֲבִיב קֳדָמַי מִבֵּית מַקְדְּשָׁא דְּרָם בְּרֵישׁ טוּרַיָּא אִם לָא אֲשַׁוִּינָךְ
7 מַדְבְּרָא קִרְוִין דְּלָא אִתְיַתְּבָא׃ וְאַזְמֵן עֲלָךְ מְחַבְּלִין גְּבַר וְזֵינֵיהּ וְיִקְטְלוּן שְׁפַר גִּבָּרָךְ כְּמָה
8 דְּקָצְצִין אָעֵי חוּרְשָׁא וּרְמַן לְנוּרָא׃ וְיֶעְבְּרוּן עַמְמִין סַגִּיאִין עַל קַרְתָּא הָדָא וְיֵימְרוּן גְּבַר
9 לְחַבְרֵיהּ עַל מָה עֲבַד יְיָ כְּדֵין לְקַרְתָּא רַבְּתָא הָדָא׃ וְיֵימְרוּן עַל דִּשְׁבַקוּ יָת קְיָמָא דַיְיָ
10 אֱלָהָהוֹן וּסְגִידוּ לְטַעֲוַת עַמְמַיָּא וּפַלְחוּנוּן׃ לָא תִבְכּוּן עַל מִית וְלָא תִדְווֹן עֲלוֹהִי בְּכוּ
מִבְכָּא לִדְגָלֵי אֲרֵי לָא יְתוּב עוֹד וְיֶחֱזֵי יָת אַרְעָא דְיַלְדוּתֵיהּ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Domus David, hæc dicit Dominus: Judicate manè judicium, & eruite vim 12
patientem de manu violenti; ne fortè ſuccendatur ut ignis indignatio mea,
& conſumat, & non ſit qui miſereatur propter malitiam operum veſtrorum.
Ecce ego mitto furorem meum contra te quæ habitas in fortitudine 13
in civitatibus munitis, dicit Dominus: qui dicitis, Quis deſcendet contra
nos, & quis ingredietur palatia noſtra? Et viſitabo ſuper vos juxta fructum 14
operum veſtrorum, dicit Dominus, & ſuccendam ignem in urbibus ejus, &
conſumet omnia quæ in circuitu ejus ſunt.

CAP. XXII.

HÆc dicit Dñs : Deſcende in domũ regis tribus dom' Juda, & propheta- 1
bis ibi verbũ hoc. Et dices: Suſcipe verbũ Dñi rex tribus domus Juda, qui 2
habitas ſuper ſolium David, tu, & ſervi tui, et populi tui qui ingrediuntur
per portas iſtas. Hæc dicit Dominus: Facite judicium & juſtitiam, & 3
liberate vim patientem de manu ejus qui vim infert ei ; & peregrinum, &
pupillum, & viduam ne contriſtetis, nec vi opprimatis : & ſanguinem innocentem
ne effundatis in loco iſto. Quòd ſi faciendo feceritis verbũ iſtud, 4
ingredientur per portas domus hujus reges ſedentes ſuper ſolium David,
aſcendentes in curribus & in equis ipſe & ſervi & populus ejus. Et ſi non 5
ſuſceperitis verba hæc, per verbum meum juravi, dicit Dominus, quia in
ſolitudine erit domus hæc. Quia ſic dicit Dominus ſuper domum regis tri- 6
bus domus Juda : Quamvis tu ſis dilectus coram me *præ domo* ſanctuarii,
quæ excelſa eſt in cacumine montium; ſi non ponam te deſertum, urbes inhabitabiles.
Et præparabo contra te vaſtantes, virum & arma ejus. Et occi- 7
dent pulchritudinem fortium tuorum, ſicut ſucciduntur ligna ſaltus, & projiciuntur
in ignem. Et pertranſibunt populi multi juxta civitatem hanc, & 8
dicet unuſquiſque proximo ſuo : Quamobrem fecit Dominus ſic civitati
huic grandi? Et dicent : Pro eo quòd dereliquerunt pactum Domini Dei 9
ſui, & adoraverunt idola populorum, & ſervierunt eis. Ne ploretis ſuper 10
mortuum, ne contriſtemini ſuper eum : plorando plorate eum qui in captivitatem
ducitur ; quia non revertetur ultrà, nec videbit terram nativitatis ſuæ.

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܘܢܘ ܒܨܦܪܐ ܕܝܢܐ. ܘܦܪܘܩܘ ܠܡܬܛܠܡܢܐ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܛܠܡ ܠܗ : ܕܠܐ ܬܦܘܩ 12
ܐܝܟ ܢܘܪܐ ܚܡܬܝ. ܘܬܐܩܕ ܘܠܝܬ ܕܡܕܥܟ. ܡܛܠ ܒܝܫܘܬܐ ܕܥܒܕܝܟܘܢ. * ܗܐ 13
ܐܢܐ ܥܠܝܟܝ ܝܬܒܬ ܥܘܡܩܐ. ܫܘܥܐ ܕܦܩܥܬܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܐܡܪܝܢ ܡܢ ܢܐܬܐ
ܥܠܝܢ. ܘܡܢܘ ܢܥܘܠ ܠܡܥܡܪܢ. * ܘܐܣܥܘܪ ܥܠܝܟܘܢ. ܐܝܟ ܦܐܪܐ ܕܥܒܕܝܟܘܢ ܐܡܪ 14
ܡܪܝܐ. ܘܐܪܡܐ ܢܘܪܐ ܒܩܘܪܝܗ̇. ܘܬܐܟܘܠ ܟܠܗܘܢ ܚܕܪܝܗ̇.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܒ *

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܚܘܬ ܠܒܝܬܗ ܕܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܡܠܠ ܬܡܢ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ 1
ܘܐܡܪ. * ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܕܝܬܒ ܥܠ ܟܘܪܣܝܗ ܕܕܘܝܕ. ܐܢܬ 2
ܘܥܒܕܝܟ. ܘܥܡܟ ܕܥܐܠܝܢ ܒܬܪܥܐ ܗܠܝܢ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܒܕܘ ܕܝܢܐ ܘܙܕܩܬܐ. 3
ܘܦܪܘܩܘ ܠܡܬܛܠܡܢܐ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܛܠܡ ܠܗ. ܘܠܬܘܬܒܐ ܘܠܝܬܡܐ ܘܠܐܪܡܠܬܐ. ܠܐ ܬܥܠܒܘܢ.
ܘܠܐ ܬܛܠܡܘܢ. ܘܕܡܐ ܙܟܝܐ ܠܐ ܬܐܫܕܘܢ ܒܐܬܪܐ ܗܢܐ. * ܐܢ ܡܥܒܕ ܬܥܒܕܘܢ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ. 4
ܢܥܠܘܢ ܒܬܪܥܘܗܝ ܕܒܝܬܐ ܗܢܐ. ܡܠܟܐ ܘܪܘܪܒܢܐ. ܕܝܬܒܝܢ ܥܠ ܟܘܪܣܝܗ ܕܕܘܝܕ. ܟܕ
ܪܟܝܒܝܢ ܒܡܪܟܒܬܐ ܘܒܣܘܣܘܬܐ. ܗܘ ܘܥܒܕܘܗܝ ܘܥܡܗ : * ܘܐܢ ܠܐ ܬܫܡܥܘܢ ܦܬܓܡܐ 5
ܗܢܐ. ܒܝ ܝܡܝܬ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܠܚܘܪܒܐ ܢܗܘܐ ܒܝܬܐ ܗܢܐ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ 6
ܥܠ ܒܝܬܗ ܕܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܓܠܥܕ ܐܢܬ ܠܝ ܪܫܐ ܕܠܒܢܢ. ܐܠܐ ܐܥܒܕܝܟ ܡܕܒܪܐ. ܐܝܟ ܩܘܪܝܐ
ܕܠܐ ܡܬܝܬܒܢ. * ܘܐܥܬܕ ܥܠܝܟܝ ܡܚܒܠܢܐ. ܓܒܪܐ ܘܢܪܓܗ ܒܐܝܕܗ. ܘܢܦܣܩܘܢ ܓܒܝܐ 7
ܕܐܪܙܝܟܝ. ܘܢܪܡܘܢ ܠܢܘܪܐ. * ܘܢܥܒܪܘܢ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܘܢܐܡܪܘܢ 8
ܓܒܪ ܠܚܒܪܗ. ܥܠ ܡܢܐ ܥܒܕ ܡܪܝܐ ܗܟܢܐ ܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܪܒܬܐ. * ܘܢܐܡܪܘܢ. ܥܠ 9
ܕܫܒܩܘ ܩܝܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ. ܘܣܓܕܘ ܠܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ ܘܦܠܚܘ ܐܢܘܢ. * ܠܐ ܬܒܟܘܢ 10
ܥܠ ܡܝܬܐ. ܘܠܐ ܬܬܕܘܢ ܥܠܘܗܝ. ܡܒܟܐ ܒܟܘ ܥܠ ܕܐܙܠ ܘܬܘܒ ܠܐ ܗܦܟ. ܘܠܐ ܚܙܐ ܐܪܥܐ ܕܐܬܝܠܕ ܒܗ̇.

Sic dicit Dominus, Exercete in matutino judicium, & eripite oppreſſum ab eo qui opprimit illum; ne prodeat velut ignis excandeſcentia mea, & ardeat nemine extinguente, propter nequitiam actionum veſtrarum. 12
Ecce me contra te quæ habitas in convallibus, quæ profundam habes planitiem, dicit Dominus; qui dicitis, Quis veniat contra nos? aut quis ingrediatur habitationem noſtram? 13
Animadvertam in vos ſecundùm fructus actionum veſtrarum, dicit Dominus; & injiciam ignem in oppida ejus, & devorabit omnia confinia ipſius. 14

CAP. XXII.

Sic dicit Dominus, Deſcende in domum regis Judæ, ibíque loquere ſermonem iſtum, ac dicito; 1
Audi ſermonem Domini rex Judæ qui ſedes ſuper ſolio Davidis; tu ſervíque tui, & popul⁹ tuus qui ingrediuntur per has portas. 2
Sic dicit Dominus, Exercete judicium & juſtitiam, & eripite oppreſſum ab eo qui opprimit illum: peregrinos, pupillos, atque viduas ne affeceritis injuriâ, neve oppreſſeritis; & ſanguinem innoxium ne fuderitis in loco iſto. 3
Nam ſi diligenter exequamini ſermonem iſtum, ingredientur per oſtia hujus ædis reges ac principes qui ſedent ſuper ſolio Davidis, vecti curribus & equis; tam ipſe *rex* quàm ſervi ac populus ejus. 4
At ſi non auſcultaveritis ſermonem iſtum, per me juravi, dicit Dominus; in ſolitudinem redigendam eſſe hanc ædem. 5
Nam ſic ait Dominus de domo regis Judæ; Gelaad, tu es caput Libani, ſed redigam te in deſertũ, ut civitates inhabitatas: 6
Et comparabo adverſùm te vaſtatores, quenque ſecurim ſuâ manu ſuâ *geſtantem*, ut præcîdant ſelectiſſimas cedrorũ tuarũ, & in ignẽ projiciant. 7
Ita ut tranſeuntibus variis gentibus ſuper civitatem hanc magnam, & altero alteri dicentibus; Qua de re egit Domin⁹ hoc modo cum civitate iſta maxima? 8
Reſpondeatur, Quia dereliquerũt fœdus Domini Dei ſui, & adoraverunt deos alienos, & coluerunt eos. 9
Ne defleatis mortuum, neque commoveamini propter eum: impenſè flete pro eo qui abiturus eſt, nec ampliùs reverſurus, neque reviſurus terram in qua natus eſt. 10

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

12 * يا بيت داود هكذا يقول الرب * احكموا بالغداة حكما وقوموا * واستخلصوا المختطف من يد
13 الذي ظلمه * لئلا يشتعل مثل النار غضبي * ويتوقد ولا يكون من يطفي * ها انا اليك يا
14 ساكن الغور صور المرجية * القائلين من يخيفنا او من يدخل الي مسكننا * ساشعل نارا في
غيضتها * وتاكل كل ما حولها *

* الفصل الثاني والعشرون *

1 * هكذا يقول الرب * امض وانزل الي بيت ملك يهوذا * وتكلم هناك بهذا القول وتقول * اسمع
2 قول الرب يا ملك يهوذا الجالس على كرسي داود * انت وبنوك وشعبك والداخلون في هذه
3 الابواب * هكذا يقول الرب * اصنعوا حكما وعدلا * واستخلصوا المختطف من يد الذي
ظلمه * والملتجي واليتيم والارملة لا تتعدوا عليهم * ولا تنافقوا * ولا تهرقوا دما زكيا في
4 هذا الموضع * ان كنتم صانعين تصنعون هذا القول * ويدخلون في ابواب هذا البيت الملوك
والروساء الجالسون على كرسي داود والراكبون على المركبات والخيول * هولاء واولادهم
5 وشعبهم * وان لم تصنعوا هذه الكلمات * اقسمت بذاتي يقول الرب * ان هذا البيت يصير
6 للخراب * لان هكذا يقول الرب على بيت ملك يهوذا * يا جلعاد انت لي رييسة لبنان * ان لم
7 اصيرك للخراب * مدنا غير مسكونة * وادخل عليك رجلا مفسدا وفاسه * ويقطعون ارزتك
8 المختارة ويلقونهن في النار * ويعبر الامم بهذه المدينة * ويقولون كل واحد لقريبه * لماذا صنع
9 الرب هكذا بهذه المدينة العظيمة * فيقولون من اجل انهم اجتنبوا عهد الرب الههم * وسجدوا
10 للالهة الغريبة وعبدوها * لا تبكوا على الميت ولا تندبوه * ابكوا بكاء على الذاهب * لانه
لا يعود ايضا ولا يعاين ارض بلدته *

O Domus Davidis, ita dicit Dominus; Jus dicite in matutino, & corrigite vos, & eripite vim patientem de manu ejus qui opprimit ipſum: ut non incendatur velut ignis furor meus, exardeſcat nec ſit qui extinguat. 12
Ecce me ad te O qui degis in convalle, picturis pratenſibus; qui dicitis, Quis terreret nos? aut quis intraret in habitaculum noſtrum? 13
Accendam ignem in ſylva ipſius, ut conſumat quicquid adjacet illi. 14

CAP. XXII.

Sic ait Dominus, Vade, & deſcende in domum regis Judæ, ibique referas hujuſmodi ſermonem, ac dicas; 1
Audi ſermonem Domini O rex Judæ qui ſedes ſuper ſolium Davidis; tu & filii tui, populuſque tuus, & qui per has portas ingrediuntur. 2
Sic ait Dominus, Facite judicium & juſtitiam, & liberate vim patientem de manu ejus qui opprimit illum: ad vos ſeſe recipienti, pupillo, ac viduæ, vim ne inferatis; impiè ne agatis, néve effundatis ſanguinem innocentem hoc in loco. 3
Si hunc ſermonem omnino perfeceritis, utique ingredientur per portas hujus domûs reges & principes qui ſedent ſuper ſolium Davidis, quique curribus et equis vehentur; tam iſti quàm filii & populus eorum. 4
Quòd ſi hæc verba minimè perfeceritis, per me ipſum juro, dicit Dominus, hanc domum in ruinam abituram. 5
Sic enim ait Dominus de domo regis Judæ; O Galaad, tu es mihi primaria Libani, mentiar niſi redigam te in ruinam, in civitates inhabitabiles; 6
Et introducam adversùm te virum vaſtantem cum ſua ſecuri, præſcindentque cedros tuas electas, & projicient eas in ignem. 7
Cùmque tranſierint gentes per hanc urbem, & dixerint alter ad alterum, Quare ſic fecit Dominus huic urbi ingenti? 8
Dicent, Quia deſciverunt à fœdere Domini Dei ſui, & adoraverunt deos alienos, & ſervitute ſe mancipârunt eis. 9
Ne fleatis pro mortuo, neque lamentamini eum: acerbè flete pro abeunte, quia non eſt ampliùs reverſurus, neque viſurus ſolum patrium ſuum. 10

ירמיה: כב

ע

regis Joſijahu *filium* Sallum *ad* DOMINUS dixit ſic Quia
11 כִּי כֹה אָמַר־יְהוָה אֶל־שַׁלֻּם בֶּן־יֹאשִׁיָּהוּ מֶלֶךְ
de eſt egreſſus qui , ſuo patre Joſijahu pro *regnantem* Jehudah
יְהוּדָה הַמֹּלֵךְ תַּחַת יֹאשִׁיָּהוּ אָבִיו אֲשֶׁר יָצָא מִן־
quò loco in *Nam* .ampliùs huc revertetur non ,iſto loco
12 הַמָּקוֹם הַזֶּה לֹא־יָשׁוּב שָׁם עוֹד׃ כִּי בִּמְקוֹם אֲשֶׁר־
videbit non iſtam terram & ; morietur *illic* , eum tranſtulerunt
הִגְלוּ אֹתוֹ שָׁם יָמוּת וְאֶת־הָאָרֶץ הַזֹּאת לֹא־יִרְאֶה
ſua cœnacula & ,*juſtitia non* in ſuam domum ædificanti Væ .ampliùs
13 עוֹד׃ הוֹי בֹּנֶה בֵיתוֹ בְּלֹא־צֶדֶק וַעֲלִיּוֹתָיו
.ei dabit non ejus *opus* & , gratis ſerviet ſuo *ſocio in* : judicio *non in*
בְּלֹא מִשְׁפָּט בְּרֵעֵהוּ יַעֲבֹד חִנָּם וּפֹעֲלוֹ לֹא יִתֶּן־לוֹ׃
,*expoſita vento* cœnacula &,menſurarum domum mihi Ædificabo : *Dicens*
14 הָאֹמֵר אֶבְנֶה־לִּי בֵּית מִדּוֹת וַעֲלִיּוֹת מְרֻוָּחִים
.*minio in ungendo &* , *cedro in tecta* & , feneſtras ei *excindit* &
וְקָרַע לוֹ חַלּוֹנָי וְסָפוּן בָּאָרֶז וּמָשׁוֹחַ בַּשָּׁשַׁר׃
nónne tuus Pater ? *cedrum in te concitans* tu quia , regnabis Nunquid
15 הֲתִמְלֹךְ כִּי אַתָּה מְתַחֲרֶה בָאָרֶז אָבִיךָ הֲלוֹא
? ei *bonum* tunc ,juſtitiam & judicium fecit & , bibit & , comedit
אָכַל וְשָׁתָה וְעָשָׂה מִשְׁפָּט וּצְדָקָה אָז טוֹב לוֹ׃
ſcire hoc Nónne .*bonum* tunc ,egeni & *afflicti* judicium Judicavit
16 דָּן דִּין־עָנִי וְאֶבְיוֹן אָז טוֹב הֲלוֹא־הִיא הַדַּעַת
niſi ,tuũ cor & ,tui oculi non Sed ?DOMINUS dixit , me
17 אֹתִי נְאֻם־יְהוָה׃ כִּי אֵין עֵינֶיךָ וְלִבְּךָ כִּי אִם־
,fundendum *ad* innocentem ſanguinem *ſuper* & ,tuam *concupiſcentiam ſuper*
עַל־בִּצְעֶךָ וְעַל דַּם־הַנָּקִי לִשְׁפּוֹךְ
Propterea .faciendam *ad* contritionem *ſuper* & ,oppreſſionem *ſuper* &
18 וְעַל־הָעֹשֶׁק וְעַל־הַמְּרוּצָה לַעֲשׂוֹת׃ לָכֵן
:Jehudah regem Joſijahu filium Jehojachim *ad* DOMINUS dixit ſic
כֹּה־אָמַר יְהוָה אֶל־יְהוֹיָקִים בֶּן־יֹאשִׁיָּהוּ מֶלֶךְ יְהוּדָה
: eum plangent non :ſoror væ & ,mi frater væ : eum plangent Non
לֹא־יִסְפְּדוּ לוֹ הוֹי אָחִי וְהוֹי אָחוֹת לֹא־יִסְפְּדוּ לוֹ
trahendo,ſepelietur aſini Sepultura .ejus *decori* væ & , Domine væ
19 הוֹי אָדוֹן וְהוֹי הֹדֹה׃ קְבוּרַת חֲמוֹר יִקָּבֵר סָחוֹב
,clama &,Lebanon Aſcende .Jeruſalaim portas ultra *projiciendo &*
20 וְהַשְׁלֵךְ מֵהָלְאָה לְשַׁעֲרֵי יְרוּשָׁלִָם׃ עֲלִי הַלְּבָנוֹן וּצְעָקִי
ſunt contriti quia : *tranſitibus* è clama & ; tuã vocem da Baſan in &
וּבַבָּשָׁן תְּנִי קוֹלֵךְ וְצַעֲקִי מֵעֲבָרִים כִּי נִשְׁבְּרוּ
: Dixiſti .tuis *ſecuritatibus in* te ad ſum Locutus .te diligentes omnes
21 כָּל־מְאַהֲבָיִךְ׃ דִּבַּרְתִּי אֵלַיִךְ בְּשַׁלְוֹתַיִךְ אָמַרְתְּ
.*mea voce in* audiſti non quia : *tuis pueritiis à* tua via Hæc .audiam Non
לֹא אֶשְׁמָע זֶה דַרְכֵּךְ מִנְּעוּרַיִךְ כִּי לֹא־שָׁמַעַתְּ בְּקוֹלִי׃
:ibunt captivitatẽ in tui amatores &,ventus depaſcet tuos paſtores Omnes
22 כָּל־רֹעַיִךְ תִּרְעֶה־רוּחַ וּמְאַהֲבַיִךְ בַּשְּׁבִי יֵלֵכוּ
.tuam malitiam omnem propter erubeſces & ,afficieris pudore tunc nam
כִּי אָז תֵּבֹשִׁי וְנִכְלַמְתְּ מִכֹּל רָעָתֵךְ׃
veniendo in ,eris gratioſa quàm : cedris in *nidificans* ,Lebanon in *Habitans*
23 יֹשַׁבְתִּי בַּלְּבָנוֹן מְקֻנַּנְתִּי בָּאֲרָזִים מַה־נֵּחַנְתְּ בְּבֹא־
: Dominus dixit ,ego *Vivens* .parturientis tanquam *tormen*,dolores tibi
24 לָךְ חֲבָלִים חִיל כַּיֹּלֵדָה׃ חַי־אָנִי נְאֻם־יְהוָה
annulus Jehudah regis Jehojachim filius Chonjahu eſſet ſi quia
כִּי אִם־יִהְיֶה כָּנְיָהוּ בֶּן־יְהוֹיָקִים מֶלֶךְ יְהוּדָה חוֹתָם
te dabo Et .te evellam inde quia : mea dextera manu *ſuper*
25 עַל־יַד יְמִינִי כִּי מִשָּׁם אֶתְּקֶנְךָּ׃ וּנְתַתִּיךָ
timebis tu quorum manum in & ,tuam animam quærentium manum in
בְּיַד מְבַקְשֵׁי נַפְשֶׁךָ וּבְיַד אֲשֶׁר־אַתָּה יָגוֹר
manum in & ,Babel regis Nebuchadneſar manum in & ; *eorum faciebus à*
מִפְּנֵיהֶם וּבְיַד נְבוּכַדְרֶאצַּר מֶלֶךְ־בָּבֶל וּבְיַד
.Chaſdim
הַכַּשְׂדִּים׃

Verſio VULG. LAT.

11 Quia hæc dicit Dominus ad Sel-
lum filium Joſiæ regem Juda,
qui regnavit pro Joſia patre ſuo,
qui egreſſus eſt de loco iſto; Non
12 revertetur huc ampliùs : Sed in
loco,ad quẽ tranſtuli eũ, ibi mo-
rietur,& terram iſtã non videbit
13 ampliùs. Væ qui ædificat domũ
ſuam in injuſtitia, & cœnacula
ſua non in judicio: amicum ſuum
opprimet fruſtrà, & mercedem
14 ejus non reddet ei. Qui dicit ;
Ædificabo mihi domum latam,
& cœnacula ſpatioſa, qui ape-
rit ſibi feneſtras, & facit laquea-
ria cedrina, pingítque ſinopide.
15 Numquid regnabis, quoniam
confers te cedro ? pater tuus
numquid non comêdit & bibit,
& fecit judicium & juſtitiam
16 tunc cùm benè erat ei ? Judi-
cavit cauſam pauperis & egeni
in bonum ſuum : numquid non
ideò quia cognovit me, dicit
17 Dominus ? Tui verò oculi &
cor ad avaritiam, & ad ſangui-
nem innocentem fundendum,&
ad calumniam, & ad curſum
18 mali operis. Propterea hæc di-
cit Dominus ad Joakim filium
Joſiæ regem Juda ; Non plan-
gent eum ; Væ frater, & væ ſo-
ror : non concrepabunt ei ; Væ
19 domine, & væ inclyte. Sepul-
turâ aſini ſepelietur, putrefactus
& projectus extra portas Jeruſa-
20 lem. Aſcende Libanum,& clama:
& in Baſan da vocem tuam, &
clama ad tranſeuntes, quia con-
triti ſunt omnes amatores tui.
21 Locutus ſum ad te in abundantia
tua : & dixiſti ; Non audiam :
hæc eſt via tua ab adoleſcentia
tua,quia non audîſti vocem meã.
22 Omnes paſtores tuos paſcet ven-
tus, et amatores tui in captivi-
tatem ibunt : et tunc confundê-
ris, et erubeſces ab omni mali-
23 tia tua. Quæ ſedes in Libano, et
nidificas in cedris, quomodò
congemuiſti, cùm veniſſent tibi
dolores, quaſi dolores parturi-
24 entis ? Vivo ego, dicit Domi-
nus : quia ſi fuerit Jechonias
filius Joakim regis Juda, annu-
lus in manu dextera mea, inde
25 evellam eum. Et dabo te in
manu quærentium animam tu-
am, et in manu quorum tu for-
midas faciem, et in manu Nabu-
chodonoſor regis Babylonis, et
in manu Chaldæorum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

11 Διότι τάδε λέγει κύριος ἐπὶ Σελλὴμ υἱὸν
(ϑ) Ἰωσία τὸν βασιλεύοντα ἀντὶ Ἰωσίου
τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, ὃς ἐξῆλθεν ἐκ τοῦ τόπου
12 τούτου, Οὐκ ἀναστρέψει ἐκεῖ (ι) ἔτι, Ἀλλ᾽ ἢ
ἐν τῷ (κ) τόπῳ τούτῳ οὗ μετῴκισα αὐτὸν, ἐκεῖ
ἀποθανεῖται, καὶ τὴν γῆν ταύτην οὐκ ὄψε-
13 ται ἔτι. (λ) Ὁ οἰκοδομῶν οἰκίαν αὐτοῦ οὐ
μετὰ δικαιοσύνης, καὶ τὰ ὑπερῷα αὐτοῦ οὐκ ἐν
κρίματι, παρὰ τῷ πλησίον αὐτοῦ ἐργᾶται δω-
ρεὰν, καὶ τὸν μισθὸν αὐτοῦ οὐ μὴ ἀποδώσει αὐ-
14 τῷ. Ὠκοδόμησας σεαυτῷ οἶκον σύμμε-
τρον, ὑπερῷα ῥιπιστὰ διεσταλμένα θυρίσι, καὶ
ἐξυλωμένα ἐν κέδρῳ, καὶ κεχρισμένα ἐν
15 μίλτῳ. Μὴ (˘) βασιλεύσῃς, ὅτι σὺ παροξύνῃ
ἐν (μ) Ἄχαζ τῷ πατρί σου ; οὐ φάγονται,
καὶ οὐ πίονται. (ν) βέλτιόν σε ποιεῖν κρίμα
16 καὶ (ξ) δικαιοσύνην. Οὐκ ἔγνωσαν, οὐκ ἔκρι-
ναν κρίσιν (ο) ταπεινῷ, οὐδὲ κρίσιν πένητος.
οὐ (π) τοῦτό ἐστιν τὸ μὴ γνῶναί σε ἐμὲ, λέγει
17 κύριος ; Ἰδοὺ οὐκ εἰσὶν οἱ ὀφθαλμοί σου,
οὐδὲ ἡ καρδία σου καλὴ, ἀλλὰ εἰς τὴν πλε-
ονεξίαν σου, καὶ εἰς τὸ αἷμα τὸ ἀθῷον τοῦ
(ρ) ἐκχέαι αὐτὸ, καὶ εἰς ἀδικήματα καὶ εἰς
18 φόνον, τοῦ ποιεῖν (σ) αὐτά. Διατοῦτο τά-
δε λέγει κύριος ἐπὶ Ἰωακεὶμ υἱὸν Ἰωσία
βασιλέα Ἰούδα, (τ) καὶ ἐπὶ τὸν ἄνδρα τοῦ-
τον, (υ) Οὐ κόψονται αὐτὸν, Ὦ ἀδελφὲ, οὐ-
δὲ μὴ κλαύσονται αὐτὸν, Οἴμοι κύριε.
19 Ταφὴν ὄνου ταφήσεται, (φ) συμψησθεὶς ῥι-
φήσεται ἐπέκεινα τῆς πύλης Ἱερουσαλήμ.
20 Ἀνάβηθι εἰς τὸν Λίβανον, καὶ (χ) κέκραξον,
καὶ εἰς τὴν Βασὰν δὸς τὴν φωνήν σου, καὶ
βόησον εἰς τὸ (ψ) πέραν τῆς θαλάσσης, ὅ-
τι συνετρίβησαν πάντες οἱ ἐρασταί σου.
21 (ω) Ἐλάλησα πρὸς σὲ ἐν τῇ παραπτώσει
(α) σου, καὶ εἶπας, Οὐκ ἀκούσομαι. Αὕτη
ἡ ὁδός σου ἐκ νεότητός σου, οὐκ ἤκουσας
22 τῆς φωνῆς μου. Πάντας τοὺς ποιμένας σου
ποιμανεῖ ἄνεμος, (β) καὶ οἱ ἐρασταί σου
ἐν αἰχμαλωσίᾳ ἐξελεύσονται, ὅτι τότε
αἰσχυνθήσῃ καὶ (γ) ἀτιμωθήσῃ ἀπὸ πάν-
23 των τῶν φιλούντων σε. Κατοικοῦσα ἐν τῷ
Λιβάνῳ, ἐννοσσεύουσα ἐν ταῖς κέδροις, κα-
ταστενάξεις ἐν τῷ ἐλθεῖν σοι (δ) ὠδῖνας ὡς
24 τικτούσης. Ζῶ ἐγὼ, λέγει κύριος, ἐὰν γε-
νόμενος γένηται (ε) Ἰεχονίας υἱὸς Ἰωα-
κεὶμ βασιλεὺς Ἰούδα ἀποσφράγισμα ἐπὶ
τῆς χειρὸς τῆς δεξιᾶς μου, ἐκεῖθεν ἐκ-
25 σπάσω σε, Καὶ παραδώσω σε εἰς χεῖ-
ρας τῶν ζητούντων τὴν ψυχήν σου, ὧν σὺ εὐ-
λαβῇ ἀπὸ προσώπου αὐτῶν, εἰς χεῖρας τῶν
Χαλδαίων,

Quia hæc dicit Dominus ad (b) 11
Sellem filium Joſiæ regnantem
pro Joſia patre ejus, qui egreſſus
eſt de loco iſto ; Non revertetur
huc ampliùs : Sed in loco iſto, 12
quò tranſtuli eum, ibi morietur ;
& terram hanc non videbit am-
pliùs. (c) Qui ædificat do- 13
mum ſuam non cum juſtitia, &
cœnacula ſua non in judicio :
(d) apud proximum ſuum ope-
ratur gratis ; & mercedem e-
jus non reddet ei. Ædificâſti tibi 14
domum (e) commenſuratã, cœ-
nacula (f) perflatilia diſtincta fe-
neſtris, & contignata in cedro,
& linita in ſinopide. (g) Nun- 15
quid regnabis, quia tu contendis
in Achaz patre tuo ? non come-
dent, & non bibent. Melius
tibi erat facere judicium, &
juſtitiam. Non cognoverunt, 16
non judicaverunt judicium hu-
mili, neque judicium pauperis.
Nónne hoc eſt, te ignorare me,
dicit Dominus ? Ecce non ſunt 17
oculi (h) tui, neque cor tuum
bonum, ſed ad avaritiam tuam,
& ad ſanguinem innocentem, ut
effundas illum, & ad iniquita-
tes, & in homicidium, ut facias
ea. Propterea hæc dicit Domi- 18
nus ad Joacim filium Joſiæ re-
gem Juda, (i) & ſuper virum
iſtum ; Non plangent eum, O
frater : neque plorabunt eum, Heu
mihi, domine : Sepulchro aſini 19
(k) ſepelietur : raptatus projici-
etur ultra portam Hieruſalem.
Aſcende in Libanum, & clama ; 20
& in Baſan da vocem tuam, &
clama trans mare : quia contri-
ti ſunt omnes amatores tui.
(l) Loquutus ſum ad te in rui- 21
na tua : & dixiſti ; Non au-
diam. Hæc eſt via tua ab ado-
leſcentia tua : non audîſti vo-
cem meam. Omnes paſtores tu- 22
os paſcet ventus : & amatores
tui in captivitatem egredientur :
Quia tunc confundêris, & inho-
noraberis ab omnibus diligenti-
bus te. Quæ habitas in Libano, 23
quæ nidificas in cedris : inge-
miſces, cùm venerint tibi dolo-
res, quaſi parientis. Vivo ego, 24
dicit Dominus ; ſi factus fuerit
Jechonias filius Joacim rex Juda
(m) ſigillum ſuper manum dex-
teram meam; *indè evellam te, Et* 25
tradam te in manus quærentiũ
animam tuam, quorum tu formi-
das à facie (n) eorum : in manus
Chaldæorum :

MS.A. (ϑ) Ἰωσίου * τῷ βασιλεύοντι ἀντὶ Ἰωσία (ι) οὐκέτι, (κ) τόπῳ οὗ
μετῴκισα (λ) Ὦ ὁ οἰκοδομῶν τὴν οἰκίαν αὐτοῦ οὐκ ἐν δικαιοσύνῃ, (˘) βασιλεύσεις,
(μ) * Ἀχαὰβ (ν) βέλτιον ἦν σε (ξ) δικαιοσύνην καλήν. Οὐκ (ο) ταπεινῶν,
(π) τοῦτό σοι ἐστὶν (ρ) ἐκχαίειν (σ) ταῦτα. (τ) Οὐαὶ ἐπὶ (υ) οὐ μὴ κόψονται
αὐτὸν, Οὐαὶ ἀδελφέ. Ταφὴν ὄνου (φ) συμψηθεὶς (χ) κέκραξον, (ψ) πέραν
(ω) Ἐλάλησαν (α) σου, Οὐκ ἤκουσας τῆς φωνῆς μου. (β) καὶ ἐν αἰχμα-
λωσίᾳ (γ) ἀτιμασθήσῃ (δ) ὠδῖνας (ε) Ἰωακεὶμ υἱὸς Ἰεχονία

תרגום יונתן Targum Jonathan.

11 אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ עַל שַׁלּוּם בַּר יֹאשִׁיָּה מַלְכָּא שִׁבְטָא דְבֵית יְהוּדָה דִּמְלַךְ תְּחוֹת יֹאשִׁיָּה
12 אֲבוּהִי דִּגְלָא מִן אַתְרָא הָדֵין לָא יְתוּב לְתַמָּן עוֹד׃ אֱלָהֵן בְּאַתְרָא דְּאַגְלִיאוּ יָתֵיהּ תַּמָּן
13 יְמוּת וְיָת אַרְעָא הָדָא לָא יֶחֱזֵי עוֹד׃ וַי דְּבָנֵי בֵיתֵיהּ בְּלָא קְשׁוֹט וְעִלִּיתֵיהּ בְּלָא דִינָא כַּרְחֲוֵי
14 בְּחַבְרֵיהּ מַפְלַח מַגָּן וְאַגְרֵיהּ לָא יְהַב לֵיהּ׃ דַּאֲמַר אֶבְנֵי לִי בָּתִּין דִּמְשַׁחַן וְעִלִּין מְרַוְחָן
15 וּפָצֵים לֵיהּ חַרְכִּין וּמְטַלֵּל בְּכֵיוֹרֵי אַרְזַיָּא וּמְצַיַּר בְּסַמְמָנִין׃ הַאַתְּ מַדְמֵי לְמֶהֱוֵי כְּמַלְכָּא
16 קַדְמָאָה אֲבוּךְ הֲלָא אֲכַל וּשְׁתָא וַעֲבַד דִּין דִּקְשׁוֹט וּזְכוּ בְּכֵן טַב לֵיהּ׃ דָּן דִּין מִסְכֵּן וְחַשּׁוֹךְ
17 בְּכֵן הֲוָה טַב הֲלָא הִיא דַעְתָּא דִּרְעֵינָא בָהּ אֲמַר יְיָ׃ אֲרֵי לֵית עֵינָךְ וְלִבָּךְ אֱלָהֵן עַל מָמוֹנָא
18 לְמֵינַס וְעַל דַּם זַכֵּי לְמִשְׁפַּךְ וְעַל עוּשְׁקָא וְעַל דִּבְרְעוּת נַפְשָׁךְ לְמֶעְבַּד׃ בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ עַל
יְהוֹיָקִים בַּר יֹאשִׁיָּה מַלְכָּא שִׁבְטָא דְבֵית יְהוּדָה לָא יִסְפְּדוּן לֵיהּ וַי עַל אֲחִי וַי עַל אֲחָת לָא
19 יִסְפְּדוּן לֵיהּ וַי עַל מַלְכָּא וַי עַל מַלְכוּתֵיהּ׃ כְּמָה דִּמְשַׁגְרָן יָת נִבְלַת חֲמָרָא כֵּן יְשַׁגְּרוּן
20 יָת נִבְלְתֵיהּ יִתְגְּרַר וְיִשְׁתְּדֵי לְהַלְאָה לְתַרְעֵי יְרוּשְׁלֶם׃ סַקִי לְבֵית מַקְדְּשָׁא וּצְוַחִי וּבְתַרְעֵי
21 טוּר בֵּיתָא אֲרִימִי קָלִיךְ וּצְוַחִי עַל מְגִיזָתָא אֲרֵי אִתְּבַרוּ כָּל רַחֲמָךְ׃ שְׁלַחִית לְוָתִיךְ יָת כָּל
עַבְדַי נְבִיַּיָּא כַּד הֲוֵית יָתְבָא שְׁלֵוְיָא אֲמַרְתְּ לֵית אֲנָא מְקַבְּלָא אוּלְפָן דָּא אָרְחָתִיךְ מִזְּעוּרִיךְ
22 אֲרֵי לָא קַבֵּילְתְּ לְמֵימְרִי׃ כָּל פַּרְנָסָךְ יִתְבַּדְּרוּן לְכָל רוּחַ וְרָחֲמָךְ בְּשִׁבְיָא יְהָכוּן אֲרֵי בְּכֵן
23 תִּבְהֲתִין וְתִתְכַּנְעִין מִכֹּל בִּישְׁתָּךְ׃ דְּיָתְבָא בְּבֵית מַקְדְּשָׁא בֵּינֵי מַלְכַיָּא מְרַבְיָא בְנָהָא מָה
24 תַּעְבְּדִין בְּמֵיתֵי לָךְ עָקָא וְזִיעַ הָא כְחֶבְלִין לְיָלְדְתָּא׃ קַיָּם אֲנָא אֲמַר יְיָ אֲרֵי אִם יְהֵי כָּנְיָה בַר
יְהוֹיָקִים מַלְכָּא שִׁבְטָא דְבֵית יְהוּדָה כִּגְלַף דְּעִזְקָא עַל יַד יְמִינִי אֲרֵי מִתַּמָּן בְּמֵימְרִי אַגְלֵינָךְ׃
25 וְאֶתְּנִנָךְ בְּיַד דְּבָעַן לְמִקְטְלָךְ וּבְיַד דְּאַתְּ דָּחֵיל מִן קֳדָמֵיהוֹן וּבְיַד נְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא דְבָבֶל
וּבִידָא דְכַשְׂדָּאֵי׃

Paraph. Chald. Verſio Latina.

Quia ſic dicit Dñs ſup Sallũ filiũ Joſiæ regis trib⁹ dom⁹ Juda, qui regna- 11
vit pro Joſia patre ſuo, Qui migravit de loco iſto, non revertetur huc am-
pli⁹. Sed in loco ad quẽ tranſmigrare fecerunt eum, ibi morietur, & terrã 12
hanc non videbit ampli⁹. Væ qui ædificat domũ ſuã abſque veritate, et cœ- 13
nacula ſua injuſta ratione: in ſervitutẽ redigit amicũ ſuũ fruſtra, & merce-
dẽ non dat ei. Qui dicit: Ædificabo mihi domos menſurarũ, & cœnacula 14
ſpatioſa; & aperit ſibi feneſtras, & contegit trabib⁹ cedrinis, pingítque ſi-
nopide. Num cenſes te eſſe *quaſi* regẽ primũ? pater tu⁹ nonne comedit & 15
bibit, & fecit judiciũ verũ & juſtitiã, & tunc bene erat ei? Judicabat ju- 16
diciũ pauperis & egeni; tunc enim bonũ erat ei. Nonne iſta eſt ſcientia
quã volo, dicit Dñs? Quia non ſunt oculi tui & cor tuũ, niſi ad auferendã 17
pecuniã, et ad effundendũ ſanguinẽ innocentẽ, & ad faciendã calumniã &
voluntatẽ animi tui. Propterea hæc dicit Dñs de Joachim filio Joſiæ rege 18
trib⁹ dom⁹ Juda: Non plangent eum; Væ ob fratrẽ meũ, væ ob ſororẽ, non
plangent eum: væ ob regẽ, væ ob regnũ ej⁹. Sicut projiciunt cadaver aſini, 19
ſic projicient cadaver ej⁹; lacerabitur & projicietur ultra portas Jeruſalẽ.
Aſcende in domũ ſanctuarii, & clama, & in portis montis dom⁹ eleva vo- 20
cem tuã, & clama ad vada, quia contriti ſunt omnes amatores tui. Miſi ad 21
te omnes ſervos meos prophetas, cùm ſederes tranquilla. Dixiſti: Non ego
ſuſcipiã *diſciplinã*. Hæc eſt via tua ab adoleſcentia tua; quia non obediſti
verbo meo. Omnes gubernatores tui diſpergentur in omnem ventum, & 22
amatores tui in captivitatẽ ibunt: tunc enim confundêris & erubeſces ab
omni malitia tua. Quæ habitas in domo ſanctuarii, & *inter reges* nutriens 23
filios tuos; quid facies cùm venerit tibi tribulatio & commotio quaſi dolo-
res parturientis? Vivo ego, dicit Dñs; quia ſi fuerit Chonias filius Joachim 24
rex trib⁹ dom⁹ Juda quaſi ſculptura annuli in manu dextera mea; quia inde
per verbũ meũ transferã te. Et dabo te in manum quærentium occidere 25
te, & in manum eorum à quorum facie tu times, & in manum Nabuchodo-
noſor regis Babylonis, & in manum Chaldæorum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

11 * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܫܠܘܡ ܒܪ ܝܘܫܝܐ ܕܐܡܠܟ ܚܠܦ ܝܘܫܝܐ ܐܒܘܗܝ.
ܕܢܦܩ ܡܢ ܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܠܐ ܢܬܗܦܟ ܠܬܡܢ ܬܘܒ. * ܐܠܐ ܒܐܬܪܐ ܕܐܫܬܒܝ ܬܡܢ ܢܡܘܬ. ܘܐܪܥܐ 12
ܗܕܐ ܬܘܒ ܠܐ ܢܚܙܐ. * ܘܝ ܠܕܒܢܐ ܒܝܬܗ ܕܠܐ ܒܟܐܢܘܬܐ. ܘܥܠܝܬܗ ܕܠܐ ܒܕܝܢܐ. ܘܚܒܪܗ ܦܠܚ 13
ܠܗ ܡܓܢ. ܘܐܓܪܗ ܠܐ ܝܗܒ ܠܗ. * ܕܐܡܪ ܐܒܢܐ ܠܝ ܒܬܐ ܕܡܫܘܚܬܐ. ܘܥܠܝܬܐ 14
ܡܪܘܚܬܐ. ܘܦܬܚ ܠܗܝܢ ܟܘܐ. ܘܡܛܠܠ ܠܗܝܢ ܒܐܪܙܐ. ܘܨܪ ܠܗܝܢ ܨܘܪܬܐ. * ܕܡܠܟܬ 15
ܐܝܟ. ܕܡܬܚܒܪ ܐܢܬ ܒܐܪܙܐ. ܐܒܘܟ ܐܟܠ. ܘܫܬܐ. ܘܥܒܕ ܕܝܢܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܡܛܠܗܢܐ
ܐܛܐܒܬ ܠܗ. * ܕܢ ܕܝܢܐ ܕܡܣܟܢܐ ܘܕܒܨܝܪܐ. ܘܥܒܕ ܕܬܪܝܨ. ܗܘ ܕܗܠܝܢ ܥܒܕ. ܝܕܥ ܠܝ 16
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܥܝܢܝܟ ܕܝܢ ܘܠܒܟ. ܠܘܬ ܠܐ ܡܕܡ ܐܚܪܝܢ. ܐܠܐ ܠܐ ܩܢܝܢܟ. ܘܠܐ 17
ܕܡܐ ܙܟܝܐ ܠܡܐܫܕ. ܘܠܐ ܠܛܠܘܡܝܐ ܘܠܐ ܠܡܥܒܕ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ 18
ܡܪܝܐ. ܥܠ ܝܘܝܩܝܡ ܒܪ ܝܘܫܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܠܐ ܢܪܩܕܘܢ ܥܠܘܗܝ. ܘܠܐ ܢܐܡܪܘܢ. ܘܝ
ܐܚܝ ܘܝ ܐܚܝ. ܘܠܐ ܢܪܩܕܘܢ ܥܠܘܗܝ. ܘܝ ܡܪܝ ܘܝ ܡܪܝ. * ܩܒܘܪܬܐ ܕܚܡܪܐ ܢܬܩܒܪ. ܘܢܓܪܘܢ 19
ܢܫܕܘܢܝܗܝ. ܠܒܪ ܡܢ ܬܪܥܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. * ܣܩܝ ܠܠܒܢܢ. ܘܐܙܥܩܝ. ܘܒܒܝܣܢ ܐܪܝܡܝ 20
ܩܠܟܝ. ܘܐܙܥܩܝ ܡܢ ܥܒܪܝܗ ܕܝܡܐ. ܕܐܬܬܒܪܘ ܟܠܗܘܢ ܪܚܡܝܟܝ. * ܘܐܡܪܬ ܠܟܝ 21
ܒܫܝܢܘܬܟܝ. ܘܐܡܪܬܝ. ܕܠܐ ܐܫܬܡܥ. ܗܢܐ ܗܘ ܥܝܕܟܝ ܡܢ ܛܠܝܘܬܟܝ. ܘܠܐ ܫܡܥܬܝ
ܒܩܠܝ. * ܠܟܠܗܘܢ ܪܥܘܬܟܝ ܬܪܥܐ ܪܘܚܐ. ܘܪܚܡܝܟܝ ܒܫܒܝܐ ܢܐܙܠܘܢ. ܘܗܝܕܝܢ 22
ܬܒܗܬܝܢ ܘܬܬܟܠܡܝܢ ܡܢ ܟܠܗܝܢ ܒܝܫܬܟܝ. * ܕܝܬܒܐ ܒܠܒܢܢ. ܘܡܩܢܢܐ ܒܐܪܙܐ. ܡܢܐ 23
ܡܬܬܢܚܐ ܐܢܬܝ. ܟܕ ܢܐܬܘܢ ܥܠܝܟܝ ܚܒܠܐ ܘܙܘܥܐ ܐܝܟ ܕܝܠܕܬܐ. * ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ 24
ܐܠܗܐ. ܐܢ ܢܗܘܐ ܝܘܟܢܝܐ ܒܪ ܝܘܝܩܝܡ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܥܙܩܬܐ ܥܠ ܐܝܕܝ ܕܝܡܝܢܐ.
ܐܠܐ ܡܢ ܬܡܢ ܐܥܩܪܢܟ. * ܘܐܫܠܡܢܟ ܒܐܝܕܝ ܐܢܫܐ ܕܒܥܝܢ ܢܦܫܟ. ܘܒܐܝܕܝ ܕܐܢܫܝܢ 25
ܕܕܚܠ ܐܢܬ ܡܢ ܦܪܨܘܦܝܗܘܢ. ܒܐܝܕܝ ܕܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܒܐܝܕܝ ܕܟܠܕܝܐ.

Nam ſic ait Dominus de Salum filio Joſiæ qui 11
regnabat loco Joſiæ patris ſui, qui egreſſus eſt
è loco iſto; Non eſt ampliùs huc reverſurus;
Sed in loco in quem captivus abductus eſt, 12
ibidem morietur, & terram hanc non eſt re-
viſurus. Væ ædificanti domum ſuam iniquè, 13
& cœnacula ſua injuſtè, cui proximus ſuus
gratìs ſervivit nullâ ipſi mercede ſolutâ:
Qui dicit; Ædificabo mihi domos amplas 14
& cœnacula ſpatioſa, aperit eis feneſtras,
cedris tegit illas, ornátque picturis. An re- 15
gnaturus es? an cedris fruiturus? Pater qui-
dem tuus comedit ac bibit: exercuit judici-
um & juſtitiam, ideò benefeci ei: Jus dixit 16
pauperibus & egenis, & fecit quod rectum
erat. Qui talia facit, cognoſcit me, dicit Do-
minus. Tui verò oculi & cor tuum ad nul- 17
lam rem aliam *intenti* ſunt, niſi ad poſſeſſio-
nem *augendam*, ad ſanguinem innoxium fun-
dendum, & ad violentiam atque oppreſſio-
nem exercendam. Sic enim ait Dominus de 18
Joacimo filio Joſiæ regis Judæ, Non lamenta-
buntur eum, neque dicent; Eheu frater mi,
eheu frater mi: neque lamentabuntur eum,
dicentes; Eheu domine, eheu domine. Sepul- 19
turâ aſini ſepelietur, trahent enim & proji-
cient eum ultra portas Jeroſolymæ. Con- 20
ſcende Libanum & vocifera, & in Baiſane at-
tolle vocem tuam & exclama ab ulteriori-
bus maris littoribus, quòd confracti ſunt o-
mnes amici tui. Allocutus ſum te *dum eſſes* 21
in affluentia tua, tu verò dixiſti; Non acquie-
ſcam: (hæc eſt conſuetudo tua à pueritia tua)
& non acquieviſti voci meæ. Omnes paſto- 22
res tuos depaſcet ventus, & amatores tui in
captivitatem abibunt: ac tunc erubeſces, &
compeſcéris ab omnibus nequitiis tuis. Quæ 23
ſedes in Libano, quæ nidificas in cedris, quan-
tùm gemes cùm venerint ſuper te dolores ac
tremor ut parturientis! Vivo ego, dicit Do- 24
minus Deus; etiamſi eſſet Jechonia filius Jo-
jacimi regis Judæ annulus ſuper manũ meam
dexteram, inde tamen evellam te: Tradám- 25
que te in manum hominum quærentium ani-
mam tuam, & in manum eorum quorum aſpe-
ctum formidas; in manum Nebuchadnoſaris
regis Babelis, & in manum Chaldæorum:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

11 * من أجل انه هكذا يقول الرب علي سليم بن يوسيو المملك عوض يوسيا ابيه الذي خرج
12 من هذا الموضع * لا يعود الي هناك ايضا * لكن في الموضع حيث سبي هناك يموت * ولا
13 يعاين هناك الارض ايضا * يا باني بيته ليس بالعدل * وعلاليه ليس بالحكم * عند قريبه
14 يعمل ربا * ولا يعطي له اجرته * تبنيت لذاتك بيتا مقدرا وعلالي واسعة بكوى *
15 وسقفه بالارز ومدهونه بتماثيل * لا تملك لانك انت تماري بحسب احاب ابيك * لا
16 ياكلون ولا يشربون * لم يعرفوا ان يصنعوا حكما جيدا وعدلا حسنا * لم يحكموا حكم
17 المتواضعين ولا حكم المسكين * اليس هذا هو لك * الا تعرفني يقول الرب * ها ليست
عيناك ولا قلبك جيدا * لكن في شرهك وفي الدم الزكي لتريقه * وفي الظلامات وفي
18 القتل لتصنعهم * لاجل هذا هكذا يقول الرب على يواقيم بن يوسيا ملك يهودا * ويل علي
هذا الرجل * لا ينوحون عليه * ويل يا اخي * ولا يبكون عليه * الويل يا سيد الويل لي
19 يا اخي * لا يدفنوه دفنا * يجر ويرمي خارجا من باب ايروسليم * اصعدي الي لبنان
20 واصرخي * والي بيسان اعطي صوتك واهتفي الي عبر البحر * لان جميع احبائك انكسروا *
21 * تكلموا عليك في سقطتك * لم تسمعي صوتي * جميع رعاتك يرعاهم الريح * وفي
22 السبي يخرجون * لانك حينئذ تخزين وتهانين من جميع محبيك * ايتها الساكنة في لبنان
23 المعششة في الارزات * تنهدي عند ما ياتي لك الطلقات مثل التي تلد * حي انا يقول الرب *
24 ان كان يكون يواقيم بن يوحانيا ملك يهودا خاتما على يدي اليمني * من هناك اطرحك *
25 * وادفعك الي ايدي الذين يطلبون نفسك * الذين انت تتقي من وجههم * الي ايدي
الكلدانيين *

Nam ſic ait Dominus de Sallimo Joſiæ 11
filio qui regnum occupaverat loco Joſiæ
patris ſui, qui egreſſus eſt è loco iſto: Non
eſt reverſurus huc ampliùs; Sed in loco 12
quò captivus abductus eſt, illic morietur,
nec ampliùs reviſet terram iſtam O qui 13
domum tuam extruis haud juſtè, & cœ-
nacula tua haud æquè; apud proximum
tuum contrahis fœnus, nec reddis ei mer-
cedem ſuam; Extruxiſti tibi ædem am- 14
plam & cœnacula ſpatioſa cum feneſtris,
laqueata cedris, figuris depicta: Nequa- 15
quam regnabis, quia imitaris originem
Achabi patris tui. Non comedent, neque
bibent; neſciunt enim bonum *exercere ju-*
dicium & juſtitiam rectam: Non judi- 16
caverunt cauſam humilium neque cauſam
pauperis. An non hæc tua res eſt? an non
cognoſcis me, dicit Domin⁹? Ecce neq; oculi 17
tui neq; cor tuum rectum eſt; ſed avidi-
tatem tuam ſpectant, *& ſanguinem in-*
nocentem ut effundas eum, & tyranni-
des atque cædem ut exerceas illas.
Propterea ſic dicit Dominus de Joacimo 18
Joſiæ filio, rege Judæ; Infœlicem hunc
virum, non plangent eum, dicentes, *Heu*
frater mi: neque deplorabunt eum,
dicentes, *Heu O domine, heu mihi O mi*
frater. Non mandabunt eum ſepulturæ, 19
ſed *raptabitur & abjicietur extra portam*
Jeroſolymæ. Aſcende Libanum & cla- 20
ma, & ad Baiſanem uſque ede vocem
tuam & ad adverſum uſque littus ma-
ris vocifera, quia contriti ſunt omnes
amatores tui: Locuti ſunt de te in ruina 21
tua: non auſcultâſti voci meæ. Omnes 22
paſtores tuos depaſcet ventus, & in
captivitatem egredientur: tunc enim
pudeſies, & deſpicieris ab omnibus a-
matoribus tuis. O quæ habitas in Libano, 23
quæ nidificas in cedris, ſuſpira quum
advenerint tibi dolores ut parturienti.
Vivo ego, dicit Dominus, etiamſi eſ- 24
ſet Joacim Jochaniæ filius rex Judæ,
annulus in manu mea dextera; inde pro-
jiciam te, Et tradam te in manus eorum 25
qui quærunt animam tuam, quorum
faciem tu formidas, nempe in manus
Chaldæorum:

,alienam terram ſuper ,te genuit quæ tuā matrem & ,te protelabo Et
26 וְהֵטַלְתִּי אֹתְךָ וְאֶת־אִמְּךָ אֲשֶׁר יְלָדַתְךָ עַל הָאָרֶץ אַחֶרֶת
quam terram ad Et .moriemini ibique : ibi eſtis nati non quo
27 אֲשֶׁר לֹא־יְלִדְתֶּם שָׁם וְשָׁם תָּמוּתוּ׃ וְעַל־הָאָרֶץ אֲשֶׁר־
.revertentur non illuc , illuc redeundum ad ,ſuam animam elevantes ipſi
הֵם מְנַשְּׂאִים אֶת־נַפְשָׁם לָשׁוּב שָׁם שָׁמָּה לֹא יָשׁוּבוּ׃
non vas an ,Chonjahu iſte vir eſt diſperſus minutim vilis dolor Num
28 הַעֶצֶב נִבְזֶה נָפוּץ הָאִישׁ הַזֶּה כָּנְיָהוּ אִם־כְּלִי אֵין
ſunt projecti &,ejus ſemen & , ipſe ſunt projecti Quare ? eo in voluntas
חֵפֶץ בּוֹ מַדּוּעַ הוּטְלוּ הוּא וְזַרְעוֹ וְהֻשְׁלְכוּ
audi , terra , terra , Terra ? noverunt non quam terram ſuper
29 עַל־הָאָרֶץ אֲשֶׁר לֹא־יָדָעוּ׃ אֶרֶץ אֶרֶץ אָרֶץ שִׁמְעִי
,prole carentem iſtum virum Scribite : Dominus dixit Sic : Domini verbum
30 דְּבַר־יְהוָה׃ כֹּה אָמַר יְהוָה כִּתְבוּ אֶת־הָאִישׁ הַזֶּה עֲרִירִי
ej⁹ ſemine de proſperabitur non nam : ſuis diebus in proſperabitur non virum
גֶּבֶר לֹא־יִצְלַח בְּיָמָיו כִּי לֹא יִצְלַח מִזַּרְעוֹ
.Jehudah in ultrà dominans &,David ſolium ſuper ſedens vir
אִישׁ יֹשֵׁב עַל־כִּסֵּא דָוִד וּמֹשֵׁל עוֹד בִּיהוּדָה׃

CAP. XXIII. כג

.Dominus dixit ,meæ paſcuæ pecus diſpergentib⁹ ac perdentibus paſtorib⁹ Væ
1 הוֹי רֹעִים מְאַבְּדִים וּמְפִצִים אֶת־צֹאן מַרְעִיתִי נְאֻם־יְהוָה׃
:meū populū paſcentes ,paſtores ad Iſrael Deus Dominus dixit ſic Ideo
2 לָכֵן כֹּה־אָמַר יְהוָה אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל עַל־הָרֹעִים הָרֹעִים אֶת־עַמִּי
: eas viſitâſtis non & ,eas propuliſtis atque,meum pecus diſperſiſtis Vos
אַתֶּם הֲפִצֹתֶם אֶת־צֹאנִי וַתַּדִּחוּם וְלֹא פְקַדְתֶּם אֹתָם
.Dominus dixit ,veſtrorum ſtudiorum malitiam vos ſuper viſitans ego ecce
הִנְנִי פֹקֵד עֲלֵיכֶם אֶת־רֹעַ מַעַלְלֵיכֶם נְאֻם־יְהוָה׃
expuli quò ,terris omnib⁹ de mei pecoris reſiduum cōgregabo ego Et
3 וַאֲנִי אֲקַבֵּץ אֶת־שְׁאֵרִית צֹאנִי מִכֹּל הָאֲרָצוֹת אֲשֶׁר־הִדַּחְתִּי
.multiplicabūtur &,creſcēt&,ſua habitacula ad eas faciā redire &,illuc eas
אֹתָם שָׁם וַהֲשִׁבֹתִי אֶתְהֶן עַל־נְוֵהֶן וּפָרוּ וְרָבוּ׃
neque,ultrà timebunt non & : eas paſcent &,paſtores eas ſuper ſuſcitabo Et
4 וַהֲקִמֹתִי עֲלֵיהֶם רֹעִים וְרָעוּם וְלֹא־יִירְאוּ עוֹד וְלֹא־
dixit ,venientes dies Ecce .Domini effatum ,deficient neque ,conſternabuntur
5 יֵחַתּוּ וְלֹא יִפָּקֵדוּ נְאֻם־יְהוָה׃ הִנֵּה יָמִים בָּאִים נְאֻם־
,aget intelligenter &,rex regnabit &,juſtum germen David ipſi ſuſcitabo&,Domin⁹
יְהוָה וַהֲקִמֹתִי לְדָוִד צֶמַח צַדִּיק וּמָלַךְ מֶלֶךְ וְהִשְׂכִּיל
Iſrael & ,Jehudah erit ſalv⁹ ej⁹ dieb⁹ In .terra in juſtitiā & judicium faciet &
6 וְעָשָׂה מִשְׁפָּט וּצְדָקָה בָּאָרֶץ׃ בְּיָמָיו תִּוָּשַׁע יְהוּדָה וְיִשְׂרָאֵל
.noſtra juſtitia Domin⁹, eū vocabunt quod ,ej⁹ nomen hoc &,fiducia in habitabit
יִשְׁכֹּן לָבֶטַח וְזֶה־שְּׁמוֹ אֲשֶׁר־יִקְרְאוֹ יְהוָה צִדְקֵנוּ׃
,Domin⁹ Vivens :ultrà dicent non &,Domin⁹ dixit,venientes dies ecce Ideo
7 לָכֵן הִנֵּה־יָמִים בָּאִים נְאֻם־יְהוָה וְלֹא־יֹאמְרוּ עוֹד חַי־יְהוָה
Domin⁹ vivens Quinimo .Ægypti terra è Iſrael filios fecit aſcendere qui
8 אֲשֶׁר הֶעֱלָה אֶת־בְּנֵי יִשְׂרָאֵל מֵאֶרֶץ מִצְרָיִם׃ כִּי אִם־חַי־יְהוָה
,Aquilonis terra de Iſrael dom⁹ ſemen adduxit qui & fecit aſcēdere qui
אֲשֶׁר הֶעֱלָה וַאֲשֶׁר הֵבִיא אֶת־זֶרַע בֵּית יִשְׂרָאֵל מֵאֶרֶץ צָפוֹנָה
.ſua humo in habitabunt & , illuc eos propuli quò terris omnib⁹ de &
וּמִכֹּל הָאֲרָצוֹת אֲשֶׁר הִדַּחְתִּים שָׁם וְיָשְׁבוּ עַל־אַדְמָתָם׃
omnia motitârunt ,meo interiori in meum cor eſt contritum prophetas Propter
9 לַנְּבִאִים נִשְׁבַּר לִבִּי בְקִרְבִּי רָחֲפוּ כָּל־
facibus à ,vinum eum pertranſivit vir veluti &,ebrius vir tanquā fui :mea oſſa
עַצְמוֹתַי הָיִיתִי כְּאִישׁ שִׁכּוֹר וּכְגֶבֶר עֲבָרוֹ יָיִן מִפְּנֵי
adulteris Quia .ejus ſanctitatis verborum faciebus à & , Domini
10 יְהוָה וּמִפְּנֵי דִּבְרֵי קָדְשׁוֹ׃ כִּי מְנָאֲפִים
loca amœna aruerunt ,terra luxit perjurii faciebus à quia : terra eſt repleta
מָלְאָה הָאָרֶץ כִּי־מִפְּנֵי אָלָה אָבְלָה הָאָרֶץ יָבְשׁוּ נְאוֹת
.ſic non eorū fortitudo & ,malus eorū curſus fuit & ,deſerti
מִדְבָּר וַתְּהִי מְרוּצָתָם רָעָה וּגְבוּרָתָם לֹא־כֵן׃

Verſio VULG. LAT.

26 Et mittam te, & matrem tuam quæ genuit te, in terram alienā, in qua nati non eſtis, ibíque moriemini: 27 Et in terram, ad quam ipſi levant animā ſuā ut revertantur illuc, non revertentur. 28 Numquid vas fictile atq; contritum vir iſte Jechonias? numquid vas abſq; omni voluptate? quarè abjecti ſunt ipſe & ſemen ejus, & projecti in terrā, quā ignoraverunt? 29 Terra, terra, terra, audi ſermonē Dñi. 30 Hæc dicit Dñs; Scribe virū iſtū ſterilē, virū qui in dieb⁹ ſuis non proſperabitur: nec enim erit de ſemine ejus vir, qui ſedeat ſuper ſoliū David, & poteſtatē habeat ultrà in Juda.

CAP. XXIII.

1 VÆ paſtoribus, qui diſperdunt et dilacerant gregē paſcuæ meæ, 2 dicit Dñs. Ideò hæc dicit Dñs De⁹ Iſrael ad paſtores, qui paſcūt populū tuū; Vos diſperſiſtis gregem meū, & ejeciſtis eos, & non viſitâſtis eos: ecce ego viſitabo ſup vos malitiā ſtudiorū veſtrorum, ait Dñs. 3 Et ego congregabo reliquias gregis mei de omnibus terris, ad quas ejecero eos illuc: & convertam eos ad rura ſua: & creſcent & multiplicabuntur. 4 Et ſuſcitabo ſup eos paſtores, & paſcent eos: non formidabunt ultrà, & non pavebunt: & nullus quæretur ex numero, dicit Dñs. 5 Ecce dies veniunt, dicit Domin⁹: & ſuſcitabo David germen juſtum: & regnabit rex, & ſapiens erit: & faciet judiciū & juſtitiā in terra. 6 In dieb⁹ illis ſalvabitur Juda, & Iſrael habitabit confidenter: & hoc eſt nomen, quod vocabunt eum, Dñs juſtus noſter. 7 Propter hoc ecce dies veniunt, dicit Dñs, et non dicent ultrà; Vivit Dñs, qui eduxit filios Iſrael de terra Ægypti: 8 Sed, Vivit Dñs, qui eduxit et adduxit ſemen domûs Iſrael de terra Aquilonis, et de cunctis terris, ad quas ejecerā eos illuc: et habitabunt in terra ſua. 9 Ad prophetas: Contritū eſt cor meū in medio meî, cōtremuerunt omnia oſſa mea: fact⁹ ſum quaſi vir ebrius, et quaſi homo madid⁹ à vino, à facie Dñi, et à facie verborum 10 ſanctorū ejus. Quia adulteris repleta eſt terra, quia à facie maledictionis luxit terra, arefacta ſunt arva deſerti: fact⁹ eſt curſus eorū mal⁹, et fortitudo eorū diſſimilis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

26 Καὶ (ζ) ἀποῤῥίψω σε καὶ τὴν μητέρα σου τὴν τεκοῦσάν σε εἰς γῆν, οὗ οὐκ ἐτέχθης ἐκεῖ, καὶ ἐκεῖ ἀποθανεῖσθε. 27 Εἰς δὲ τὴν γῆν ἣν αὐτοὶ εὔχονται ταῖς ψυχαῖς αὐτῶν, οὐ μὴ (η) ἀποστρέψωσιν. 28 Ἠτιμώθη Ἰεχονίας ὡς σκεῦος οὗ οὐκ ἔστι χρεία αὐτοῦ, ὅτι (θ) ἐξεῤῥίφη, καὶ ἐξεβλήθη εἰς γῆν ἣν οὐκ ᾔδει. 29 Γῆ, γῆ ἄκουε λόγον κυρίου, 30 Γράψον τὸν ἄνδρα τοῦτον ἐκκήρυκτον ἄνθρωπον, ὅτι οὐ μὴ αὐξηθῇ ἐκ τοῦ σπέρματος αὐτοῦ (ι) καθήμενος ἐπὶ θρόνου Δαυὶδ, ἄρχων ἔτι ἐν (κ) τῷ Ἰούδᾳ.

26 Et projiciam te, & matrem tuam, quæ peperit te, in terram, ubi non es natus illic: ibique moriemini: 27 In terram autem, quam ipſi optant animabus ſuis, non revertentur. 28 (o) Inhonoratus eſt Jechonias, quaſi vas, cujus non eſt utilitas ejus: quia abjectus eſt, & ejectus in terram, quam ignoravit. 29 Terra, terra, audi ſermonem Domini; 30 Scribe virum iſtum, abdicatum (p) hominem: quia non creſcet de ſemine (q) ejus, qui ſedeat ſuper thronum David, princeps ultrà in Juda.

MS. A. (ζ) παραδώσω σε (η) ἐπιστρέψωσιν. (θ) ἐξερίφη, (ι) ἀνὴρ καθήμενος (κ) τῷ οἴκῳ Ἰούδα.

ΚΕΦ. κγ΄.

1 (α) ὮΩ Ποιμένες οἱ ἀπολλύοντες καὶ διασκορπίζοντες τὰ πρόβατα τῆς νομῆς (β) αὐτῶν. 2 Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος ἐπὶ τοὺς ποιμαίνοντας τὸν λαόν μου· Ὑμεῖς διεσκορπίσατε τὰ πρόβατά μου, καὶ (γ) ἐξώσατε αὐτὰ, καὶ οὐκ ἐπεσκέψασθε αὐτὰ, ἰδοὺ ἐγὼ (δ) ἐκδικῶ ἐφ᾽ ὑμᾶς κατὰ τὰ πονηρὰ ἐπιτηδεύματα ὑμῶν. 3 (ε) Καὶ ἐγὼ εἰσδέξομαι τοὺς καταλοίπους τοῦ λαοῦ μου ἐπὶ πάσης τῆς γῆς, οὗ ἐξῶσα αὐτοὺς ἐκεῖ, καὶ καταστήσω αὐτοὺς εἰς τὴν νομὴν αὐτῶν, καὶ αὐξηθήσονται, καὶ πληθυνθήσονται. 4 Καὶ ἀναστήσω αὐτοῖς ποιμένας (ζ) οἳ ποιμανοῦσιν αὐτοὺς, καὶ οὐ φοβηθήσονται ἔτι, (η) οὐδὲ πτοηθήσονται, λέγει κύριος. 5 Ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, λέγει κύριος, καὶ ἀναστήσω τῷ Δαυὶδ ἀνατολὴν δικαίαν, καὶ βασιλεύσει βασιλεὺς, καὶ συνήσει, καὶ ποιήσει κρίμα καὶ δικαιοσύνην ἐπὶ τῆς γῆς. 6 Ἐν ταῖς (θ) ἡμέραις αὐτοῦ καὶ σωθήσεται Ἰούδας, καὶ Ἰσραὴλ κατασκηνώσει πεποιθὼς, καὶ τοῦτο τὸ (ι) ὄνομα αὐτοῦ, ὃ καλέσει αὐτὸν κύριος, Ἰωσεδέκ. 9 Ἐν τοῖς προφήταις. συνετρίβη ἡ καρδία μου (κ) ἐν ἐμοὶ, ἐσαλεύθη πάντα τὰ ὀστᾶ μου, ἐγενήθην ὡς (λ) ἀνὴρ συντετριμμένος, καὶ ὡς ἄνθρωπος συνεχόμενος ἀπὸ οἴνου ἀπὸ προσώπου κυρίου καὶ ἀπὸ προσώπου εὐπρεπείας δόξης αὐτοῦ. 10 Ὅτι ἀπὸ προσώπου τούτων ἐπένθησεν ἡ γῆ, ἐξηράνθησαν αἱ νομαὶ τῆς ἐρήμου· καὶ ἐγένετο ὁ δρόμος αὐτῶν πονηρὸς, καὶ ἡ ἰσχὺς αὐτῶν (μ) οὕτως.

CAP. XXIII.

1 O Paſtores, qui diſperditis, & diſſipatis oves paſcuæ (a) eorum: 2 Ideò hæc dicit Dominus ſuper paſcentes populum meum; Vos diſperſiſtis oves meas, & expuliſtis eas, & non viſitâſtis eas. Ecce ego ulciſcar ſuper vos juxta peſſimas adinventiones veſtras: 3 Et ego ſuſcipiam reſiduos populi mei ſuper omnem terram, quò expuli eos illuc: & conſtituam illos in paſcua ipſorum: & creſcent, & multiplicabuntur. 4 Et ſuſcitabo eis paſtores, qui paſcent eos: & non formidabunt ultrà, neque pavebunt, dicit Dominus, 5 Ecce dies veniunt dicit Domin⁹, & ſuſcitabo ipſi David (b) Orientem juſtum: & regnabit rex, & intelliget, & faciet judicium, & juſtitiam ſuper terram, 6 In diebus ejus: (c) & ſalvabitur Judas: & Iſrael habitabit confidenter. Et hoc eſt nomen ejus, quod vocabit eum Dominus, Ioſedec; 9 (d) In prophetis. Contritum eſt cor meum in me; commota ſunt omnia oſſa mea; factus ſum quaſi vir contritus, & quaſi homo captus à vino à facie Domini, & à facie decoris gloriæ ejus: 10 (e) Quia à facie (f) horum luxit terra, arefacta ſunt paſcua deſerti: & factus eſt curſus eorum malus, & fortitudo eorum (g) ſic.

MS.A. (α) Ὦ οἱ ποιμαίνες οἱ διασκορπίζοντες, καὶ ἀπολλύοντες (β) μου. (γ) ἀπώσατε αὐτὰ, καὶ οὐκ ἐπεσκέψατε (δ) ἐκδικήσω (ε) Κἀγὼ εἰσδέξομαι τὸ κατάλοιπον τοῦ λαοῦ μου ἀπὸ πάσης (ζ) καὶ ποιμανοῦσιν (η) καὶ οὐ πτοηθήσονται ἔτι, (θ) ἡμέραις ἐκείναις, καὶ (ι) ὄνομα, ὃ καλέσει (κ) σὺν ἐμοί, (λ) ἄνθρωπος (μ) οὐχ οὕτως.

תרגום יונתן Targum JOHATNAN.

26 וְאַטְלְטֵל יָתָךְ וְיָת אִמָּךְ דִּילִידְתָּךְ לְאַרְעָא אָחֳרִי דְּלָא אִתְיְלִידְתּוּן תַּמָּן וְתַמָּן תְּמוּתוּן׃
27 וּלְאַרְעָא דְּאִנּוּן מַטְעַן יָת נַפְשְׁהוֹן לְמִתַּב תַּמָּן לְתַמָּן לָא יְתוּבוּן׃ 28 בְּסִירָא חַלָּשָׁא מְטַלְטְלָא
גַּבְרָא הָדֵין כָּנְיָה כְּמָנָא דְּלֵית צְרוֹךְ בֵּיהּ מָה דֵּין אִטַּלְטָלוּ הוּא וּבְנוֹהִי וְאִתְגְּלִיאוּ לְאַרְעָא
29 דְּלָא יְדַעוּ׃ מֵאַרְעֵיהּ אַגְלוּהִי לְאַרְעָא אָחֳרִי אַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל קַבִּילִי פִּתְגָּמֵי דַיְיָ׃ 30 כִּדְנַן אֲמַר
יְיָ כְּתוּבוּ יָת גַּבְרָא הָדֵין דְּלָא וְלַד גַּבְרָא דְּלָא יִצְלַח בְּיוֹמוֹהִי אֲרֵי לָא יִצְלַח מִזַּרְעֵיהּ גְּבַר
יָתֵיב עַל כּוּרְסֵי דָוִד וְעָבֵד שׁוּלְטָן עַל דְּבֵית יְהוּדָה׃

כג

1 וַי פַּרְנָסַיָּא דִּמְאַבְּדִין וּמְבַדְּרִין יָת עַם דְּאִתְקְרִי שְׁמִי עֲלוֹהִי אֲמַר יְיָ׃ 2 בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ
אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל עַל פַּרְנָסַיָּא דִּמְפַרְנְסִין יָת עַמִּי אַתּוּן בַּדַּרְתּוּן יָת עַמִּי וְטַלְטֶלְתּוּנִין וְלָא
תְבַעְתּוּן יָתְהוֹן הָאֲנָא מַסְעַר עֲלֵיכוֹן יָת בִּישׁוּת עוֹבָדֵיכוֹן אֲמַר יְיָ׃ 3 וַאֲנָא אֲכַנֵּישׁ יָת
שְׁאָרָא דְעַמִּי מִכָּל מְדִינָתָא דְּאַגְלֵיתִי יָתְהוֹן לְתַמָּן וַאֲתֵיב יָתְהוֹן לְאַתְרֵיהוֹן וְיִפְשׁוּן וְיִסְגוּן׃
4 וַאֲקִים עֲלֵיהוֹן פַּרְנָסִין וִיפַרְנְסוּנוּן וְלָא יִדְחֲלוּן עוֹד וְלָא יִתַּבְּרוּן וְלָא יְזוּעוּן אֲמַר יְיָ׃ 5 הָא
יוֹמַיָּא אָתַן אֲמַר יְיָ וַאֲקִים לְדָוִד מְשִׁיחַ דְּצַדִּיקַיָּא וְיִמְלוֹךְ מַלְכָּא וְיַצְלַח וְיַעְבֵּד דִּין דִּקְשׁוֹט
6 וְזָכוּ בְּאַרְעָא׃ בְּיוֹמוֹהִי יִתְפָּרְקוּן דְּבֵית יְהוּדָה וְיִשְׂרָאֵל יִשְׁרֵי לְרָחְצָן וְדֵין שְׁמֵיהּ דִּיהוֹן
7 קָרָן לֵיהּ יִתְעַבְדָן לָנָא זָכְוָן מִן קֳדָם יְיָ בְּיוֹמוֹהִי׃ בְּכֵן הָא יוֹמַיָּא אָתַן אֲמַר יְיָ וְלָא יְהוֹן
8 מִשְׁתָּעַן עוֹד בִּגְבוּרְתָּא דַיְיָ דְּאַסֵּיק יָת בְּנֵי יִשְׂרָאֵל מֵאַרְעָא דְמִצְרָיִם׃ אֱלָהֵן יְהוֹן מִשְׁתָּעַן
בִּגְבוּרְתָּא דַיְיָ דְּאַסֵּק וּדְאַיְתִי יָת זַרְעָא דִּבְנֵי יִשְׂרָאֵל מֵאֲרַע צִפּוּנָא וּמִן מְדִינָתָא דְּאַגְלֵיתִנּוּן
9 לְתַמָּן וְיִתְּבוּן עַל אַרְעֲהוֹן׃ מִן קֳדָם נְבִיֵּי שִׁקְרָא אִתְּבַר לִבִּי בִּמְעַי זָעוּ כָּל גַּרְמַי הֲוֵיתִי
10 כִּגְבַר רָוֵי וּכְגַבְרָא דְּמִשְׁתַּטֵּי מִן קֳדָם חַמְרֵיהּ מִן קֳדָם יְיָ וּמִן קֳדָם פִּתְגָּמֵי קוּדְשֵׁיהּ׃ אֲרֵי
וְנָאֲפִין אִתְמְלִיאַת אַרְעָא אֲרֵי מִן קֳדָם מוֹמֵי דְשִׁקַּר חֲרוּבַת אַרְעָא יְבִישׁוּ דִּירָוַת מַדְבְּרָא
וְעַל דְּמַסְגָן בִּרְעוּת נַפְשְׁהוֹן בִּישְׁתָּא תֵיתֵי עֲלֵיהוֹן וְגִבָּרֵיהוֹן לָא יַצְלְחוּן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

26 Et tranſmigrare te faciam & matrem tuam quæ genuit te, in terram aliam in qua nati non eſtis, ibique moriemini. 27 Et ad terram quò ipſi ſeducunt animas ſuas ut revertantur, illuc non revertentur. 28 Contemptus, infirm⁹, vagus eſt vir iſte Chonias, ſicut vas in quo non eſt utilitas; quare tranſlati ſunt ipſe & filii ej⁹, & captivi ducti ſunt in terram quam ignoraverunt? De terra ſua tranſmigrare eum fecerunt in terram aliam. 29 Terra Iſrael ſuſcipe *verba* Domini. 30 Hæc dicit Dominus: Scribite virum iſtum abſque liberis, virum qui in dieb⁹ ſuis non proſperabitur: nec enim proſperabitur de ſemine ejus vir ſedens ſuper ſolium David, & habens poteſtatem ſuper domum Juda.

CAP. XXIII.

1 VÆ gubernatorib⁹ qui diſperdunt & diſpergunt populum ſuper quem invocatum eſt nomen meum, dicit Domin⁹. 2 Propterea hæc dicit Dominus Deus Iſrael de gubernatoribus qui gubernant populum meum: Vos diſperſiſtis oves meas, & vagari eas feciſtis, & non quæſiſtis eas. Ecce ego viſitabo ſuper vos malitiam operum veſtrorum, dicit Domin⁹. 3 Et ego congregabo reliquias populi mei ex omnib⁹ provinciis ad quas tranſmigrare eos feci, & reducam eos ad loca ſua, & creſcent & multiplicabuntur. 4 Et conſtituam ſuper eos gubernatores, & gubernabunt eos, & non timebunt ultrà, nec conterentur, nec commovebuntur, dicit Dñs. 5 Ecce dies veniunt, dicit Dñs, & ſuſcitabo David Meſſiam *juſtorum*, & regnabit rex, & proſperabitur, & faciet judicium verum, & juſtitiam in terra. 6 In dieb⁹ ej⁹ ſalvabuntur viri domus Juda, & Iſrael habitabit confidenter; & hoc eſt nomen ej⁹ quo vocabunt eum: Fient nobis juſtitiæ à facie Domini in diebus ejus. 7 Propterea ecce dies veniunt, dicit Dominus, & non erunt narrantes ultrà potentiam Domini qui aſcendere fecit filios Iſrael de terra Ægypti. 8 Sed erunt narrantes potentiam Domini qui aſcendere fecit & adduxit ſemen *filiorum* Iſrael de terra Aquilonis, et de provinciis ad quas tranſmigrare eos feci, et habitabunt in terra ſua. 9 Propter pſeudoprophetas contritum eſt cor meum in viſceribus meis, contremuerunt omnia oſſa mea: factus ſum quaſi vir ebrius, et ſicut vir qui factus eſt inſanus vino ſuo, à facie Domini, et à facie verborum ſanctitatis ejus. 10 Quia fornicariis repleta eſt terra; quia propter juramentum falſum deſerta eſt terra, arefacta ſunt habitacula deſerti: et eò quòd multiplicant voluntatem animæ ſuæ, malum veniet ſuper eos, et fortes eorum non proſperabuntur.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

26 * ܘܐܪܡܝܟ ܠܟ ܘܠܐܡܟ ܕܝܠܕܬܟ. ܠܐܪܥܐ ܢܘܟܪܝܬܐ ܕܠܐ ܐܬܝܠܕܬܘܢ ܬܡܢ. ܘܬܡܢ ܬܡܘܬܘܢ. * ܘܠܐܪܥܐ
27 ܕܡܣܟܝܢ ܢܦܫܬܗܘܢ ܠܡܬܦܢܝܘ. ܠܬܡܢ ܠܐ ܢܬܦܢܘܢ. * ܡܣܝܪܐ ܘܡܫܝܛܐ ܓܒܪܐ ܗܢܐ 28
ܝܘܟܢܝܐ. ܐܝܟ ܡܐܢܐ ܕܠܝܬ ܒܗ ܚܫܚܘ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܫܬܩܠ ܗܘ ܘܙܪܥܗ. ܘܐܫܬܕܝܘ
ܠܐܪܥܐ ܕܠܐ ܝܕܥܝܢ. * ܐܪܥܐ ܐܪܥܐ. ܐܪܥܐ ܫܡܥܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. 29
30 ܟܬܘܒܘܗܝ ܠܓܒܪܐ ܗܢܐ ܡܟܪܙܐ ܕܠܐ ܒܢܝܐ. ܡܛܠ ܕܓܒܪܐ ܒܚܝܘܗܝ. ܠܐ ܢܨܠܚ ܡܢ
ܙܪܥܗ ܓܒܪܐ ܕܢܬܒ ܥܠ ܟܘܪܣܝܐ ܕܕܘܝܕ. ܘܢܫܬܠܛ ܬܘܒ ܒܝܗܘܕܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܓ * * ܘܝ ܠܪܥܘܬܐ ܕܡܘܒܕܝܢ ܘܡܒܕܪܝܢ ܥܢܐ ܕܡܪܥܝܬܝ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. 1
* ܡܛܠ ܗܢܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܥܠ ܪܥܘܬܐ ܕܪܥܝܢ ܠܥܡܝ. ܐܢܬܘܢ 2
ܒܕܪܬܘܢ ܥܢܝ. ܘܐܛܥܝܬܘܢ ܐܢܝܢ. ܘܠܐ ܣܥܪܬܘܢ ܐܢܝܢ. ܗܐ ܦܩܕ ܐܢܐ ܥܠܝܟܘܢ. ܐܝܟ
ܒܝܫܘܬ ܥܒܕܝܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܐܢܐ ܐܟܢܫ ܫܪܟܐ ܕܥܢܝ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܐܬܪܘܬܐ ܕܒܕܪܬ 3
ܐܢܝܢ ܠܬܡܢ. ܘܐܗܦܟ ܐܢܝܢ ܠܕܝܪܬܗܝܢ. ܘܢܦܪܘܢ ܘܢܣܓܘܢ. * ܘܐܩܝܡ ܥܠܝܗܝܢ 4
ܪܥܘܬܐ. ܘܢܪܥܘܢ ܐܢܝܢ. ܘܠܐ ܢܕܚܠܢ ܬܘܒ. ܘܠܐ ܢܬܒܕܪܢ. ܘܠܐ ܢܛܥܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܗܐ 5
ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܩܝܡ ܠܕܘܝܕ. ܕܢܚܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܢܡܠܟ ܡܠܟܘܬܐ.
ܘܢܣܬܟܠ. ܘܢܥܒܕ ܕܝܢܐ ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܒܐܪܥܐ. * ܒܝܘܡܘܗܝ ܢܬܦܪܩ ܝܗܘܕܐ. ܘܐܝܣܪܝܠ 6
ܢܫܪܐ ܒܫܠܝܐ. ܘܗܢܘ ܫܡܗ ܕܢܩܪܘܢܗ. ܡܪܝܐ ܙܕܝܩܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܐܡܪ 7
ܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܢܬܐܡܪ ܬܘܒ ܚܝ ܗܘ ܡܪܝܐ ܕܐܣܩ ܠܒܢܝܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܐܠܐ 8
ܚܝ ܗܘ ܡܪܝܐ. ܕܢܦܩ ܘܢܝܬܐ ܠܒܢܝܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܓܪܒܝܐ. ܘܡܢ ܟܠܗܘܢ ܐܬܪܘܬܐ
ܕܐܬܒܕܪܘ ܠܗܘܢ. ܘܢܬܒܘܢ ܥܠ ܐܪܥܗܘܢ. * ܥܠ ܢܒܝܐ ܐܬܬܒܪ ܠܒܝ ܒܓܘܝ. ܘܐܬܬܙܝܥܘ ܟܠܗܘܢ 9
ܓܪܡܝ. ܘܗܘܝܬ ܐܝܟ ܓܒܪܐ ܪܘܝܐ. ܘܐܝܟ ܓܒܪܐ ܕܙܟܝܗ ܚܡܪܗ. ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܘܡܢ ܩܕܡ
ܦܬܓܡܐ ܕܩܘܕܫܗ. * ܡܛܠ ܕܓܝܪܐ ܘܚܛܘܦܐ ܐܬܡܠܝܬ ܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܗܠܝܢ ܐܬܚܒܠܬ 10
ܐܪܥܐ. ܘܝܒܫ ܕܝܪܐ ܕܡܕܒܪܐ. ܘܗܘܬ ܪܗܛܬܗܘܢ ܒܝܫܐ. ܘܚܝܠܬܗܘܢ ܠܐ ܐܬܟܫܪܘ.

Et ejicã te matrémque tuam quæ te genuit, in 26
terrã alienam ubi nati non fuiſtis, ibíque mo-
riemini: Et in terrã ad quam arbitrati ſunt 27
animi veſtri vos reverſuros, nequaquã rever-
temini. Deſpectus atque contemptus eſt vir 28
iſte Jechonia, ut vas quod nullius eſt uſûs: id-
circò ſublat⁹ eſt ipſe & ſemen ejus, ejectíque
ſunt in terrã quam ignorant. O terra, terra, 29
terra, audi ſermonẽ Domini. Sic dicit Domi- 30
nus, Scribite virum iſtum proclamatũ ſine li-
beris: nam ex hujus viri ſemine, quandiu vixe-
rit, nemo proſperabitur qui ſedeat ſuper ſoliũ
Davidis, & dominetur poſthac in Judam.

CAP. XXIII.

Heus paſtores qui perditis & diſpergitis o- 1
ves paſcui mei, dicit Dominus. Propterea ſic 2
ait Dominus Deus Iſraelis de paſtoribus qui
paſcunt populum meum, Vos diſperſiſtis oves
meas, ſeduxiſtis eas, nec viſitâſtis eas: ecce
animadverſurus ſum in vos juxta malignitatẽ
actionum veſtrarum, dicit Dominus. Ego 3
deinde congregabo reliquias ovium mearum
ex omnibus locis quò diſperſeram eas, & re-
ducam eas in caulã ſuam, & creſcent ac mul-
tiplicabuntur. Et conſtituam ſuper eas pa- 4
ſtores, qui ita paſcent eas, ut non timeant
ampliùs, neque diſpergantur, neque aberrent,
ait Dominus. Ecce dies venturi ſunt, dicit 5
Dominus; quibus excitabo Davidi radium
juſtitiæ, qui regnabit in regno, prudenter
aget, faciétque judicium & juſtitiã in terra.
Diebus ejus ſalvabitur Juda, & Iſrael habita- 6
bit ſecurè: atque hoc eſt nomen ejus quo vo-
cabunt eum, Dominus juſtitia noſtra. Pro- 7
pterea ecce dies venturi ſunt, ait Dominus;
quibus non dicetur ampliùs, Vivit Dominus
qui extraxit Iſraelitas è terra Ægypti; Sed, 8
Vivit Domin⁹ qui extrahet reducétque Iſrae-
litas è terra Aquilonari, & ex omnibus locis
in quæ diſperſi fuerant: & reſidebunt in ter-
ra ſua. Propter prophetas confractum eſt 9
cor meum in præcordiis meis, & contremue-
runt omnia oſſa mea, factúſque ſum ſimilis
viro ebrio, & viro quem proprium vinum ſu-
peravit: idque à conſpectu Domini & à con-
ſpectu ſermonum ſanctitatis ejus. Nam adul- 10
teris & raptoribus impleta eſt terra, propter
iſtos corrupta eſt terra, & exaruerunt caulæ
deſerti: facta eſt negotiatio eorum peſſima, et
potentiâ ſuâ haud proſperè egerunt.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

26 * وادفعك وامك التي ولدتك الى ارض حيث لم تولد هناك * وهناك تموتون * والى الارض 27
التي هم يظنون عنها * لا يعودون اليها بنفوسهم * وهان يوخانيا مثل اناء ليس به حاجة * 28
لانه طرح والقي الى ارض لم يعرفها * الارض الارض اسمعي قول الرب * اكتبي هذا 29 30
الرجل رجلا مرذولا * لانه لا ينمي من زرعه رجل يجلس على كرسي داود * ولا رييس في
بيت يهودا ايضا *

* الفصل الثالث والعشرون * * الاصحاح الرابع عشر *

1 * ايها الرعاة الذين بددوا واهلكوا غنم رعيتهم * لاجل هذا هكذا يقول الرب على 2
الذين يرعون شعبي * انتم بددتم خرافي وشردتموها ولا تعهدتموها * ها انا انتقم منكم
كاعمالكم الشريرة * وانا اقبل بقايا شعبي الذين بددتهم هناك * من كل الارض حيث 3
اقصيتهم هناك * واردهم الى مرعاهم * وينمون ويكثرون * واقيم لهم رعاة فيرعونهم * 4
ولا يخافون ايضا ولا يجزعون ايضا يقول الرب * ها ايام تاتي يقول الرب * واقيم 5
لداود مشرقا عادلا * ويملك ملك عادل * ويفهم ويصنع حكما وعدلا على الارض *
* في ايامه يخلص يهودا * واسرائيل يسكن مطمينا * وهذا الاسم الذي يدعوه به * 6
الرب يوصادك ** في الانبياء كسر قلبي في * ترعرعت جميع عظامي * صرت كرجل 9
مهشم ومثل انسان مذهول من الخمر * من وجه الرب ومن وجه بهاء مجده * لان من 10
وجه هولاء خربت الارض وجفت مراعي البرية * وصار سعيهم شريرا * وقوتهم ليست
هكذا *

Et propulſabo te matremque tuam quæ te 26
genuit, in terram in qua non es natus,
ibique ambo moriemini: Ad terram au- 27
tem quam putant, nequaquam redibunt
ipſimet. Et deſpectus eſt Jochania tan- 28
quam vas inutile, quia ejectus & expul-
ſus eſt in terram quam ignorabit. Ter- 29
ra, terra, audi ſermonem Domini: Scribe 30
hunc virum, virum deſpectum; quia non
procreabitur ampliùs ejus ſemine quiſ-
quam ſedens ſuper ſolium Davidis, neque
princeps in domo Judæ.

CAP. XXIII.

Textus decimus quartus.

Eja paſtores qui diſpergunt ac perdunt 1
oves paſcui ſui. Iccirco ſic ait Dominus 2
de iis qui paſcunt populum meum, Vos
diſperſiſtis agnos meos, & aberrare feci-
ſtis eos, neque viſitâſtis illos: ecce ego
ultionem ſumam à vobis juxta facinora
veſtra peſſima: Et ego recipiam reliquias 3
populi mei quem ibi diſperſeram, ex omni-
bus regionibus in quas ablegaveram eos,
& reducam illos ad paſcuum ſuum, &
creſcent ac multiplicabuntur. Et conſti- 4
tuam eis paſtores qui paſcant eos, & non
metuent deinceps, neque poſthac formida-
bunt, dicit Dominus. Ecce dies venient, 5
dicit Dominus, quibus excitabo Davidi
Orientem juſtum, qui regnabit rex juſtus,
prudens erit, & exercebit judicium &
juſtitiam ſuper terram. In diebus ejus 6
ſervabitur Juda, & Iſrael habitabit ſe-
curus: & iſtud eſt nomen quo nuncupa-
bunt eum, Dominus Joſedec.

Verſus 7. & 8. habentur in fine
Cap. poſt Verſ. 40.

Quoad prophetas contritum eſt cor meum 9
intra me, concuſſa ſunt omnia oſſa mea,
factus ſum ut vir confractus, & ſicut
homo vino potus, à facie Domini & à
facie ſplendoris gloriæ ipſius. Propter 10
hos enim doluit terra, & areſacta ſunt
paſcua deſerti; factus eſt populus eo-
rum malignus, & eorum fortitudo non
eſt eadem.

ירמיה : כג

mea domo in etiam *: fuerunt hypocritæ* ſacerdos *etiam* ,propheta *etiam* Quia
11 כִּי־גַם־נָבִיא גַּם־כֹּהֵן חָנֵפוּ גַּם־בְּבֵיתִי
eis eorum via erit Idcirco .Dominus ait ,eorum malum inveni
12 מָצָאתִי רָעָתָם נְאֻם־יְהוָה׃ לָכֵן יִהְיֶה דַרְכָּם לָהֶם
adducam nam : ea in corruent & impellētur ,caligine in *lubricitates* tanquā
כַּחֲלַקְלַקּוֹת בָּאֲפֵלָה יִדַּחוּ וְנָפְלוּ בָהּ כִּי־אָבִיא
prophetis in Et .Dominus ait ,eorū viſitationis annum ,malum eos ſuper
13 עֲלֵיהֶם רָעָה שְׁנַת פְּקֻדָּתָם נְאֻם־יְהוָה׃ וּבִנְבִיאֵי
fecerūt errare & ,Bahal in prophetaverūt *: inſulſum* vidi Someron
שֹׁמְרוֹן רָאִיתִי תִפְלָה הִנַּבְּאוּ בַבַּעַל וַיַּתְעוּ אֶת־
: turpitudinem vidi Jeruſalaim prophetis in Et .Iſrael meū populū
14 עַמִּי אֶת־יִשְׂרָאֵל׃ וּבִנְבִאֵי יְרוּשָׁלִַם רָאִיתִי שַׁעֲרוּרָה
,malorum manus confortaverūt & ,mendacio in *ambulare* & ,*adulterare*
נָאוֹף וְהָלֹךְ בַּשֶּׁקֶר וְחִזְּקוּ יְדֵי מְרֵעִים
ipſi univerſi mihi fuerunt :ſua malitia à unuſquiſq; convertātur non ut
לְבִלְתִּי־שָׁבוּ אִישׁ מֵרָעָתוֹ הָיוּ־לִי כֻלָּם
Dominus dixit ſic Propterea .Hamorah ut,ejus habitatores &,Sedom ut
15 כִּסְדֹם וְיֹשְׁבֶיהָ כַּעֲמֹרָה׃ לָכֵן כֹּה־אָמַר יְהוָה
eos potabo & ,abſinthio eos *cibans* ego Ecce :prophetas ad exercituū
צְבָאוֹת עַל־הַנְּבִאִים הִנְנִי מַאֲכִיל אוֹתָם לַעֲנָה וְהִשְׁקִתִים
omnē in *prophanatio* eſt egreſſa Jeruſalaim prophetis à nam *: capitis aquis*
מֵי־רֹאשׁ כִּי מֵאֵת נְבִיאֵי יְרוּשָׁלִַם יָצְאָה חֲנֻפָּה לְכָל־
verba *ſuper* audiatis Ne : exercituum Dominus dixit Sic .terram
16 הָאָרֶץ׃ כֹּה־אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת אַל־תִּשְׁמְעוּ עַל־דִּבְרֵי
: vos *illorum* vaneſcere *facientium* : vobis *prophetantium* prophetarum
הַנְּבִאִים הַנִּבְּאִים לָכֶם מַהְבִּלִים הֵמָּה אֶתְכֶם
dicendo *Dicentes* .Domini ore de non *loquentur* ſui cordis viſionem
17 חֲזוֹן לִבָּם יְדַבֵּרוּ לֹא מִפִּי יְהוָה׃ אֹמְרִים אָמוֹר
omni & : vobis erit Pax ,Dominus eſt Locutus :me *parvipendentibus*
לִמְנַאֲצַי דִּבֶּר יְהוָה שָׁלוֹם יִהְיֶה לָכֶם וְכֹל
.malum vos ſuper veniet Non :dixerūt ſui cordis *obſtinatione* in ambulanti
הֹלֵךְ בִּשְׁרִרוּת לִבּוֹ אָמְרוּ לֹא־תָבוֹא עֲלֵיכֶם רָעָה׃
? ejus verbum audivit & ,vidit & ,Domini ſecreto in ſtetit quis Etenim
18 כִּי מִי עָמַד בְּסוֹד יְהוָה וְיֵרֶא וְיִשְׁמַע אֶת־דְּבָרוֹ
excandeſcentia Domini turbo Ecce ? audivit & ,ejus verbo attendit quis
19 מִי־הִקְשִׁיב דְּבָרוֹ וַיִּשְׁמָע׃ הִנֵּה סַעֲרַת יְהוָה חֵמָה
Non .*manebit* impiorum caput ſuper , *imminens* turbo & ,egredietur
20 יָצְאָה וְסַעַר מִתְחוֹלֵל עַל רֹאשׁ רְשָׁעִים יָחוּל׃ לֹא
ipſum ſtatuendū ad uſque & ,ipſum faciendum ad uſque Domini *naſus* revertetur
יָשׁוּב אַף־יְהוָה עַד־עֲשֹׂתוֹ וְעַד־הֲקִימוֹ
.intelligentiā ea in intelligetis dierum noviſſimo in:ſui cordis cogitationes
מְזִמּוֹת לִבּוֹ בְּאַחֲרִית הַיָּמִים תִּתְבּוֹנְנוּ בָהּ בִּינָה׃
ſum locutus non : cucurrerunt ipſi & , prophetas miſi Non
21 לֹא־שָׁלַחְתִּי אֶת־הַנְּבִיאִים וְהֵם רָצוּ לֹא־דִבַּרְתִּי
,meo ſecreto in ſtetiſſent ſi Et .prophetabant ipſi & , eos ad
22 אֲלֵיהֶם וְהֵם נִבָּאוּ׃ וְאִם־עָמְדוּ בְּסוֹדִי
eos feciſſent averti & ,meum populum mea verba feciſſent audire &
וְיַשְׁמִעוּ דְבָרַי אֶת־עַמִּי וִישִׁבוּם
propinquo de Deus Nūquid .eorum *ſtudiorum* malitia à & ,mala ſua via à
23 מִדַּרְכָּם הָרָע וּמֵרֹעַ מַעַלְלֵיהֶם׃ הַאֱלֹהֵי מִקָּרֹב
ſe occultabit Num ? longinquo de Deus non & ,Dominus dixit , ego
24 אָנִי נְאֻם־יְהוָה וְלֹא אֱלֹהֵי מֵרָחֹק׃ אִם־יִסָּתֵר
Nónne ? Dominus dixit ,eum videbo non ego & , occultis in quiſpiam
אִישׁ בַּמִּסְתָּרִים וַאֲנִי לֹא־אֶרְאֶנּוּ נְאֻם־יְהוָה הֲלֹא
Audivi ? Dominus dixit ,*implens* ego terram & cœlos
25 אֶת־הַשָּׁמַיִם וְאֶת־הָאָרֶץ אֲנִי מָלֵא נְאֻם־יְהוָה׃ שָׁמַעְתִּי
,mendaciū meo nomine in prophetantes prophetæ dixerunt quæ
אֵת אֲשֶׁר־אָמְרוּ הַנְּבִאִים הַנִּבְּאִים בִּשְׁמִי שֶׁקֶר
.ſomniavi , Somniavi : dicendo
לֵאמֹר חָלַמְתִּי חָלָמְתִּי׃

Verſio VULG. LAT.

11 Propheta namque & ſacerdos polluti ſunt : & in domo mea inveni malum eorum, ait Domin⁹. 12 Idcircò via eorum erit quaſi lubricum in tenebris : impellentur enim, & corruent in ea : afferam enim ſuper eos mala, annum viſitationis eorum, ait Domin⁹. 13 Et in prophetis Samariæ vidi fatuitatem : prophetabant in Baal, & decipiebant populum meum Iſrael. 14 Et in prophetis Jeruſalem vidi ſimilitudinem adulterantium, & iter mendacii : & confortaverunt manus peſſimorum, ut non converteretur unuſquiſque à malitia ſua : facti ſunt mihi omnes ut Sodoma, & habitatores ejus quaſi Gomorrha. 15 Propterea hæc dicit Domin⁹ exercituum ad prophetas ; Ecce ego cibabo eos abſinthio, & potabo eos felle : à prophetis enim Jeruſalem, egreſſa eſt pollutio ſuper omnem terram. 16 Hæc dicit Dominus exercituum ; Nolite audire verba prophetarum, qui prophetant vobis, & decipiunt vos : viſionem cordis ſui loquuntur, non de ore Domini. 17 Dicunt his, qui blaſphemant me ; Locutus eſt Dominus ; Pax erit vobis : & omni, qui ambulat in pravitate cordis ſui, dixerunt ; Non veniet ſuper vos malum. 18 Quis enim affuit in conſilio Domini, & vidit & audivit ſermonem ejus ? quis conſideravit verbum illi⁹ & audivit ? 19 Ecce turbo Dominicæ indignationis egredietur, & tempeſtas erumpens ſuper caput impiorum veniet. 20 Non revertetur furor Domini, uſque dum faciat, & uſque dum compleat cogitationem cordis ſui : in noviſſimis dieb⁹ intelligetis conſilium ejus. 21 Non mittebam prophetas, & ipſi currebant : non loquebar ad eos, & ipſi prophetabant. 22 Si ſtetiſſent in conſilio meo, & nota feciſſent verba mea populo meo, avertiſſem utique eos à via ſua mala, & à cogitationib⁹ ſuis peſſimis. 23 Putáſne Deus è vicino ego ſum, dicit Domin⁹ ? & non Deus de longé ? 24 Si occultabitur vir in abſconditis : & ego non videbo eum, dicit Domin⁹ ? numquid non cœlum & terram ego impleo, dicit Dominus ? 25 Audivi quæ dixerunt prophetæ, prophetantes in nomine meo mendacium, atque dicentes ; Somniavi, ſomniavi.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

11 Ὅτι ἱερεὺς, καὶ προφήτης ἐμολύνθησαν, καὶ ἐν τῷ οἴκῳ μου εἶδον πονηρίας αὐτῶν. 12 Διατοῦτο γενέσθω ἡ ὁδὸς αὐτῶν αὐτοῖς εἰς ὀλίσθημα ἐν γνόφῳ, καὶ ὑποσκελισθήσονται, καὶ πεσοῦνται ἐν αὐτῇ· διότι ἐπάξω ἐπ᾽ αὐτοὺς κακὰ, ἐν ἐνιαυτῷ ἐπισκέψεως (ν) αὐτῶν. 13 Καὶ ἐν τοῖς προφήταις Σαμαρείας εἶδον ἀνομήματα· (ξ) ἐπροφήτευον διὰ τῆς Βάαλ, καὶ ἐπλάνησαν τὸν λαόν μου Ἰσραήλ. 14 Καὶ ἐν τοῖς προφήταις Ἱερουσαλὴμ ἑώρακα φρικτὰ, μοιχωμένους, καὶ πορευομένους ἐν ψεύδεσι, καὶ ἀντιλαμβανομένους χειρῶν (ο) πολλῶν, τοῦ μὴ ἀποστραφῆναι ἕκαστον ἀπὸ τῆς ὁδοῦ αὐτοῦ τῆς πονηρᾶς. ἐγενήθησάν μοι πάντες ὡς Σόδομα, καὶ οἱ κατοικοῦντες αὐτὴν, (π) ὥσπερ Γόμοῤῥα. 15 Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ (ρ) ψωμιῶ αὐτοὺς ὀδύνην, καὶ ποτιῶ αὐτοὺς ὕδωρ πικρὸν, ὅτι ἀπὸ τῶν προφητῶν Ἱερουσαλὴμ ἐξῆλθε μολυσμὸς πάσῃ τῇ γῇ. 16 Οὕτως λέγει κύριος παντοκράτωρ, Μὴ ἀκούετε τοὺς λόγους τῶν προφητῶν, ὅτι ματαιοῦσιν (σ) ἑαυτοῖς ὅρασιν, ἀπὸ καρδίας (') αὐτῶν λαλοῦσι, καὶ οὐκ ἀπὸ 17 στόματος κυρίου. Λέγουσι τοῖς ἀπωθουμένοις τὸν λόγον κυρίου, Εἰρήνη ἔσται ὑμῖν, καὶ πᾶσι τοῖς πορευομένοις τοῖς θελήμασιν αὐτῶν, καὶ παντὶ τῷ πορευομένῳ πλάνῃ καρδίας (τ) αὐτοῦ, εἶπαν, Οὐκ ἥξει ἐπὶ σὲ κακά. 18 (υ) Ὅτι τίς ἔστη ἐν ὑποστήματι κυρίου, καὶ εἶδε τὸν λόγον αὐτοῦ; τίς (φ) ἠνωτίσατο, καὶ 19 ἤκουσεν; Ἰδοὺ σεισμὸς παρὰ κυρίου, καὶ ὀργὴ (χ) ἐκπορεύεται εἰς συσσεισμὸν, συστρεφομένη 20 (ψ) ἐπὶ τοὺς ἀσεβεῖς ἥξει. Καὶ οὐκ ἔτι ἀποστρέψει ὁ θυμὸς κυρίου, (ω) ἕως ποιήσῃ αὐτὸ, καὶ ἕως ἂν στήσῃ αὐτὸ, ἀπὸ ἐγχειρήματος καρδίας αὐτοῦ. ἐπ᾽ (α) ἐσχάτου τῶν ἡ- 21 μερῶν νοήσουσιν (β) αὐτό. Οὐκ ἀπέστελλον τοὺς προφήτας, καὶ αὐτοὶ ἔτρεχον· (″) οὐδὲ ἐλάλησα πρὸς αὐτοὺς, καὶ αὐτοὶ ἐπροφήτευον. 22 Καὶ εἰ ἔστησαν ἐν τῇ ὑποστάσει μου, καὶ εἰ ἤκουσαν τῶν λόγων μου, καὶ τὸν λαόν (γ) μου ἂν ἀπέστρεφον αὐτοὺς ἀπὸ τῶν πονηρῶν ἐπιτηδευ- 23 μάτων αὐτῶν. Θεὸς ἐγγίζων ἐγώ εἰμι, λέ- 24 γει κύριος, (δ) καὶ οὐχὶ θεὸς πόῤῥωθεν. Εἰ (ε) κρυβήσεταί τις ἐν κρυφαίοις, καὶ ἐγὼ οὐκ ὄψομαι αὐτόν; μὴ οὐχὶ τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν 25 γῆν ἐγὼ πληρῶ; λέγει κύριος. Ἤκουσα ἃ λαλοῦσιν οἱ προφῆται, ἃ προφητεύουσιν ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου, ψευδῆ λέγοντες, (ϛ) Ἠνυπνιασάμην ἐνύπνιον.

Quia ſacerdos & propheta polluti ſunt : & in domo mea vidi nequitias eorum. 11 *Idcirco fiat via eorum ipſis in lubricum in caligine : & ſupplantabuntur, & cadent in ea : quia inferam ſuper eos mala in anno viſitationis eorum.* 12 *Et in prophetis Samariæ vidi iniquitates. Prophetârunt per Baal, & ſeduxerunt populum meum Iſrael.* 13 *Et in prophetis Hieruſalem vidi horribilia, adulterantes, & ambulantes in mendaciis, & ſuſcipientes manus (h) multorum ; ut non averteretur unuſquiſque à via ſua peſſima. Facti ſunt mihi omnes, quaſi Sodoma ; & habitatores ejus, quaſi Gomorra.* 14 *Propterea hæc dicit Dominus ; Ecce ego cibabo eos (i) dolore, & potabo eos aquâ amarâ : quia à prophetis Hieruſalem egreſſa eſt pollutio omni terræ.* 15 *Sic dicit Dominus omnipotens ; Nolite audire verba prophetarum : quia vanam faciunt (k) vobis viſionem: de corde ſuo loquuntur, & non ex ore Domini.* 16 *Dicunt iis qui abjiciunt verbum Domini ; Pax erit vobis: & omnibus ambulantibus in voluntatibus ſuis, & omni ambulanti in errore cordis ſui dixerunt ; Non venient ſuper te mala.* 17 *Quoniam quis ſtetit in (l) ſubſiſtentia Domini, & vidit ſermonem ejus ? Quis auribus percepit, & audivit ?* 18 *Ecce commotio à Domino, & ira egreditur in commotionem: conferta ſuper impios veniet :* 19 *Et non ultrà avertetur furor Domini, donec fecerit illud, & donec ſtatuerit illud ab aggreſſione cordis ſui. In noviſſimo dierum intelligent illud.* 20 *Non mittebam prophetas ; & ipſi currebant : neq; loquut⁹ erā ad eos ; & ipſi prophetabant.* 21 *Quòd ſi ſtetiſſent in ſubſiſtentia mea, &, ſi audiſſent verba mea ; & populum meum avertiſſent (m) eos à peſſimis ſtudiis eorum.* 22 *Deus appropinquans ego ſū, dicit Domin⁹, & non De⁹ de longé.* 23 *Si abſcondetur (n) quis in abſconditis, & ego non videbo eum ? Nunquid non cœlum & terram ego impleo? dicit Dominus.* 24 *Audivi, quæ loquuntur prophetæ, quæ prophetant in nomine meo, mendacia dicentes, Somniavi ſomnium.* 25

MS.A. (ν) αὐτῶν, φησὶν κύριος. Καὶ ἐν (ξ) ἐπροφήτευσαν ἐπ᾽ ὀνόματί μου διὰ τῆς (ο) πονηρῶν, τῆς (π) ὡς (ρ) ψωμίζω αὐτοὺς ὀδύνας, (σ) αὐτοῖς ὁράσεις, καὶ ἀπὸ (') ἑαυτῶν (τ) αὐτοῦ, Οὐχ ἥξει (υ) Ὅτι ἔστη (φ) ἐνωτίσατο, (χ) ἐκπορευομένη εἰς συσσεισμὸν, (ψ) ἥξει ἐπὶ τοὺς ἀσεβεῖς. (ω) ἕως ἂν (α) ἐσχάτων (β) αὐτά. (″) οὐκ (γ) μου ἀποστρέφειν αὐτοὺς ἀπὸ τῶν ἐπιτηδευμάτων αὐτῶν τῶν πονηρῶν. (δ) καὶ οὐ (ε) κρυβήσεται ἄνθρωπος ἐν (ϛ) Ἐνυπνιασάμην

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 אֲרֵי אַף סָפַר אַף כָּהֵן גְּנִיבוּ אוֹרְחַתְהוֹן אַף בְּבֵית מַקְדְּשִׁי גְּלָן קֳדָמַי בִּישַׁתְהוֹן אֲמַר יְיָ׃
12 בְּכֵן תְּהֵי אוֹרְחַתְהוֹן לְהוֹן כְּמַשְׁרוֹעִין בְּקַבְלָא יִתְקְלוּן וְיִפְּלוּן בַּהּ אֲרֵי אַיְתֵי עֲלֵיהוֹן
13 בִּישְׁתָא שְׁנַת סְעוֹרַן חוֹבֵיהוֹן אֲמַר יְיָ׃ וּבִנְבִיֵי שֹׁמְרוֹן חֲזֵיתִי רְשַׁע מִתְנַבַּן בְּשׁוּם טַעֲוְתָא
14 וּמַטְעַן יַת עַמִּי יַת יִשְׂרָאֵל׃ וּבִנְבִיֵי יְרוּשְׁלֶם חֲזֵיתִי שַׁנּוּ זַנָּאִין וּמְהַלְּכִין בְּשִׁקַר וּמַתְקְפִין יַד
מַבְאֲשִׁין בְּדִיל דְּלָא לְמֵתַב גְּבַר מִן בִּישְׁתֵיהּ הֲווֹ קֳדָמַי כּוּלְהוֹן כִּסְדוֹם וְיָתְבַהָא כַּעֲמוֹרָה׃
15 בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת עַל נְבִיֵי שִׁקְרָא הָאֲנָא מַיְתֵי עֲלֵיהוֹן עָקָא מְרַר כְּגִידִין וְאַשְׁקֵנּוּן
16 כָּס דְּלוֹט בִּישׁ כְּרֵישֵׁי חִיוִין אֲרֵי מִן נְבִיֵי יְרוּשְׁלֶם נְפַקַת חֲנֻפְתָּא לְכָל יָתְבֵי אַרְעָא׃ כִּדְנַן
אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת לָא תְקַבְּלוּן לְפִתְגָמֵי נְבִיֵי שִׁקְרָא דְּמִתְנַבַּן לְכוֹן מַטְעַן אִנּוּן לְכוֹן רְשַׁע
17 לִבְּהוֹן מְמַלְּלִין לָא בְּמֵימְרָא דַּיְיָ׃ אָמְרִין בִּנְבוּאַת שִׁקְרֵיהוֹן לִדְמַרְגְּזִין קֳדָמַי מַלֵּיל יְיָ
18 שְׁלָמָא יְהֵי לְכוֹן וְכָל דְּאָזֵיל בְּהִרְהוּר לִבֵּיהּ אָמְרִין לָא תֵיתֵי עֲלֵיכוֹן בִּישְׁתָא׃ אֲרֵי לָא
קָמוּ דְּאִתְגְּלֵי לְהוֹן רַז מִן קֳדָם יְיָ וְלָא חֲזוֹ וְלָא שְׁמַעוּ יַת פִּתְגָמוֹהִי וְלָא אֲצִיתוּ לְמֵימְרֵיהּ
19 וְלָא קַבִּילוּ׃ הָא מְזוֹפִיתָא מִן קֳדָם יְיָ בִּרְגַז נַפְקַת וְעַלְעוֹל מִשְׁתַּגֵּשׁ עַל רֵישׁ רַשִׁיעִין יְחוּל׃
20 לָא יְתוּב רוּגְזָא דַּיְיָ עַד דְּיַעְבֵּד וְעַד דִּיקַיֵּם מַחְשְׁבַת רְעוּתֵיהּ בְּסוֹף יוֹמַיָּא תִּסְתַּכְּלוּן בַּהּ
21 אִסְתַּכָּלָא׃ לָא שְׁלַחִית יַת נְבִיֵי שִׁקְרָא וְאִנּוּן רָהֲטִין לְאַבְאָשָׁא וְלָא מַלֵּלִית עִמְּהוֹן וְאִנּוּן
22 מִתְנַבַּן שְׁקָר׃ וְאִלּוּ קָמוּ דְּאִתְגְּלֵי לְהוֹן רַז מִן קֳדָם יְיָ וְאַשְׁמַעוּ פִּתְגָמַי יַת עַמִּי וַאֲתִיבִנּוּן
23 מֵאוֹרְחַתְהוֹן בִּישְׁתָא וּמִבִּישׁוּת עוֹבָדֵיהוֹן׃ אֲנָא אֱלָהָא בְּרֵית עַלְמָא מִבְּרֵאשִׁית אֲמַר יְיָ
24 אֲנָא אֱלָהָא עֲתִידְנָא לְחַדָּתָא עַלְמָא לְצַדִּיקַיָּא׃ אִם יִדַּמֵּי גְּבַר לְאִטַּמָּרָא כַּד בְּסִתְרָא
25 וְקֳדָמַי הֲלָא גְלֵי אֲמַר יְיָ הֲלָא יַת שְׁמַיָּא וְיַת אַרְעָא יְקָרִי מְלֵי אֲמַר יְיָ׃ שְׁמִיעַ קֳדָמַי יַת
דְּאָמְרִין נְבִיֵי שִׁקְרָא דְּמִתְנַבַּן בִּשְׁמִי שִׁקְרָא לְמֵימַר פִּתְגָם נְבוּאָה בְּחֶלְמָא אִתְחֲוָא לִי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quoniā etiā ſcriba & ſacerdos ſuffurati ſunt vias ſuas; in domo quoq; ſanctuarii mei revelata ſunt corā me mala eorū, dicit Dn̄s. 11 Idcirco erit via eorum eis quaſi lubricitates in tenebris: impingent & cadent in ea; quia adducā ſup eos malū, annum viſitationum peccatorum eorum, dicit Dn̄s. 12 Et in prophetis Samariæ vidi impietatē; prophetant in nomine idolorū, & ſeducunt populū meū Iſrael. 13 Et in prophetis Jeruſalē vidi mutationē adulterantiū & ambulantiū in mendacio, & confortantiū man⁹ malignorū, ut null⁹ vir convertatur à malitia ſua; facti ſunt omnes corā me quaſi Sodoma, & habitatores ej⁹ quaſi Gomorra. 14 Propterea hæc dicit Dn̄s exercituū ſup pſeudoprophetas : Ecce ego adducā ſup eos anguſtiā amarā ſicut abſinthium, & potabo eos calice maledictionis peſſimæ, quaſi capitib⁹ draconum; quia à prophetis Jeruſalem egreſſa eſt adulatio in omnes habitatores terræ. 15 Hæc dicit Dn̄s exercituū: Ne recipiatis verba pſeudoprophetarū qui prophetant vobis ; decipiunt enim vos ; impietatē cordis ſui loquuntur, non ex verbo Dn̄i. 16 Dicunt in prophetia mendacia ſua his qui irritant corā me: Locut⁹ eſt Dn̄s, Pax erit vobis: & omnib⁹ qui ambulant in cogitatione cordis ſui, dicunt: Non veniet ſup vos malū. 17 Non enim ſteterunt ut revelaretur ſibi ſecretū à facie Dn̄i ; nec viderunt, nec audierunt ſermones ej⁹, nec auſcultaverunt verba ej⁹, nec obedierunt. 18 Ecce increpatio à facie Dn̄i egredietur in ira, & tempeſtas conturbans ſup caput impiorū reſidebit. 19 Non avertetur ira Dn̄i donec fecerit & impleverit cogitationes voluntatis ſuæ. 20 In fine dierū intelligetis hoc intelligendo. Non miſi pſeudoprophetas, et ipſi currebant ad malè faciendū; nec locut⁹ ſum cum eis, & ipſi prophetabant falſū. 21 Et ſi ſtetiſſent ut revelaretur ſibi ſecretū à faciè Dn̄i, & audire feciſſent populū meū verba mea; *avertiſſem* utique eos à via ſua mala, & à malitia operū ſuorū. 22 Ego De⁹ creavi orbē à principio, dicit Dn̄s. 23 Ego Dn̄s renovatur⁹ ſum mundū juſtis. Num putat homo ſe latitare cùm in occulto eſt? 24 an non corā me revelat⁹ eſt, dicit Dn̄s? Nonne cœlū et terrā implet gloria mea, dicit Dn̄s? 25 Auditū eſt à me ꝙ dicūt pſeudoprophetæ, qui prophetāt in nomine meo falſa, dicētes : Verbū prophetiæ in ſomnio annūtiatū eſt mihi.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

11 * ܡܛܠ ܕܐܦ ܢܒܝܐ ܐܦ ܟܗܢܐ ܐܬܛܢܦܘ. ܐܦ ܒܒܝܬܝ ܐܫܟܚܬ ܒܝܫܘܬܗܘܢ ܐܡܪ
12 ܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܗܘܐ ܠܗܘܢ ܐܘܪܚܗܘܢ. ܐܝܟ ܫܥܝܥܘܬܐ. ܒܚܫܘܟܐ ܢܬܕܚܩܘܢ
ܘܢܦܠܘܢ ܒܗܝܢ. ܡܛܠ ܕܡܝܬܐ ܐܢܐ ܥܠܝܗܘܢ ܒܝܫܬܐ. ܫܢܬܐ ܕܣܘܥܪܢܗܘܢ ܐܡܪ
13 ܡܪܝܐ. * ܘܒܢܒܝܐ ܕܫܡܪܝܢ ܚܙܝܬ ܕܓܠܘܬܐ. ܕܐܬܢܒܝܘ ܒܒܥܠܐ. ܘܐܛܥܝܘ ܠܥܡܝ ܐܝܣܪܐܝܠ.
14 * ܘܒܢܒܝܐ ܕܐܘܪܫܠܡ ܚܙܝܬ ܫܢܝܘܬܐ. ܓܝܪܝܢ ܘܡܗܠܟܝܢ ܒܫܘܩܪܐ. ܘܡܚܣܢܝܢ
ܐܝܕܝܗܘܢ ܡܢ ܪܚܡܝܗܘܢ. ܕܠܐ ܢܬܦܢܘܢ ܓܒܪ ܡܢ ܐܘܪܚܗ ܒܝܫܬܐ. ܘܗܘܘ ܠܝ ܟܠܗܘܢ
15 ܐܝܟ ܣܕܘܡ. ܘܥܡܘܪܝܗ ܐܝܟ ܥܡܘܪܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܥܠ ܢܒܝܐ.
ܗܐ ܡܘܟܠ ܐܢܐ ܠܗܘܢ ܡܪܪܐ. ܘܐܫܩܐ ܐܢܘܢ ܡܝܐ ܡܪܝܪܐ. ܡܛܠ ܕܡܢ ܠܘܬ ܢܒܝܐ ܕܐܘܪܫܠܡ
16 ܢܦܩܬ ܛܢܦܘܬܐ ܠܟܠܗ ܐܪܥܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܠܐ ܬܫܡܥܘܢ ܠܡܠܝܗܘܢ
ܕܢܒܝܐ ܕܓܠܐ. ܕܡܬܢܒܝܢ ܠܟܘܢ ܘܡܛܥܝܢ ܠܟܘܢ. ܚܙܘܢܐ ܕܠܒܗܘܢ ܡܡܠܠܝܢ. ܘܠܐ
17 ܗܘܐ ܡܢ ܦܘܡ ܡܪܝܐ. * ܘܐܡܪܝܢ ܠܐܝܠܝܢ ܕܡܪܓܙܝܢ ܠܝ. ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܫܠܡܐ ܢܗܘܐ
ܠܟܘܢ. ܘܠܟܠ ܕܡܗܠܟ ܒܪܓܝܓܬܐ ܕܠܒܗ. ܐܡܪܝܢ ܠܗ. ܠܐ ܬܐܬܐ ܥܠܝܟܘܢ ܒܝܫܬܐ.
18 * ܡܢܘ ܓܝܪ ܩܡ ܒܐܪܙܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܚܙܝܗܝ ܘܫܡܥ ܡܠܬܗ. ܐܘ ܡܢܘ ܐܨܬ ܠܡܠܬܗ
19 ܘܫܡܥܗ. * ܗܐ ܥܘܒܕܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܒܚܡܬܐ ܢܦܩ. ܘܥܘܒܕܐ ܡܬܚܪܟ. ܥܠ ܪܫܐ
20 ܕܪܫܝܥܐ ܢܬܬܢܝܚ. * ܠܐ ܢܗܦܘܟ ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ. ܥܕܡܐ ܕܢܥܒܕ. ܘܥܕܡܐ ܕܢܩܝܡ
21 ܬܪܥܝܬܐ ܕܠܒܗ. ܒܚܪܬܐ ܕܝܘܡܬܐ ܬܬܒܝܢܘܢ ܒܗ. * ܠܐ ܫܕܪܬ ܠܢܒܝܐ ܘܗܢܘܢ ܪܗܛܘ.
22 ܘܠܐ ܡܠܠܬ ܥܡܗܘܢ ܘܗܢܘܢ ܐܬܢܒܝܘ. * ܘܠܐ ܩܡܘ ܒܐܪܙܝ. ܘܐܫܡܥܘ ܦܬܓܡܝ ܠܥܡܝ.
23 ܘܐܬܦܢܝܘ ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܘܪܚܬܗܘܢ ܒܝܫܬܐ ܘܡܢ ܒܝܫܘܬܐ ܕܥܒܕܝܗܘܢ. * ܐܠܗܐ ܐܢܐ ܕܡܢ
24 ܩܪܝܒ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܐܠܗܐ ܕܡܢ ܪܘܚܩܐ. * ܐܢ ܢܬܛܫܐ ܓܒܪܐ ܒܡܛܫܝܬܐ. ܐܢܐ
25 ܚܙܐ ܐܢܐ ܠܗ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܫܡܝܐ ܘܐܪܥܐ. ܡܠܝܢ ܡܢܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܫܡܥܬ
ܡܕܡ ܕܐܡܪܘ ܢܒܝܐ ܕܡܬܢܒܝܢ ܒܫܡܝ ܒܕܓܠܘܬܐ. ܘܐܡܪܝܢ ܚܠܡܐ ܚܠܡܬ.

Tum enim prophetæ tum ſacerdotes impiè 11
egerunt, & vel domi meæ inveni malignitatem
eorum, dicit Dominus. Propterea erunt 12
iis viæ ſuæ *loca* lubrica, in tenebras impellentur,
& cadent in illis: adducturus enim ſum
ſuper eos malum, annum viſitationis eorum,
dicit Dominus. Ut in prophetis Samariæ de- 13
prehenderam mendaciũ, prophetabant *enim*
per Baalem, & ſeducebant populum meum Iſraelem:
Ita in prophetis Jeroſolymæ depre- 14
hendi ſtultitiam: adulteri ſunt, & ambulant in
falſitate, & contrahunt manus ſuas ab amicis
ſuis, ut non revertantur quiſque à via ſua prava:
denique facti ſunt mihi omnes ut Sodoma,
& habitatores hujus *urbis* ut Gomorra. Pro- 15
pterea ſic ait Dominus exercituũ de *his* prophetis;
Ecce cibabo eos abſinthio, & potabo
eos aquis amaris: quoniam à prophetis Jeroſolymæ
prodivit impietas in totam terram.
Ita dicit Dominus exercituũ, Ne audiatis ſer- 16
mones falſorum prophetarũ qui prophetantes
vobis ſeducunt vos. Viſionẽ quidem cordis
ſui loquuntur, non autem ex ore Domini:
Dicunt iis qui *me* exaſperant, Ex oraculo Do- 17
mini pax erit vobis: & quibuſvis pro animi
ſui libidine ambulantibus dicunt, Non eveniat
vobis malum. Quis enim interfuit ſe- 18
creto Dei, aut vidit eum, aut audivit ſermonem
ejus? aut quis auſcultavit ſermonem ejus,
& audivit illum? En effectus Domini 19
cum furore proditur' eſt, & effectus ardebit;
ſuper impiorum caput requieſcet: Non a- 20
vertetur æſtus furoris Domini, donec perfecerit,
& donec præſtiterit cogitationem cordis
ſui: in fine dierum animadvertetis eum.
Non miſi prophetas iſtos, ipſi tamen abie- 21
runt: non ſum allocutus eos, ipſi tamen prophetaverunt:
Non adfuerunt ſecreto meo, 22
meos tamen ſermones annuntiaverunt populo
meo, eóſque revocâſſe à viis ſuis pravis &
à malignitate actionum ſuarum *ſeſe jactant.*
An Deus è propinquo ſum, ait Dominus; ac 23
non Deus è longinquo? Etiamſi quis in ab- 24
dito delitescat, ipſum ego video, inquit Dominus;
en cœlum ac terra plena me ſunt, inquit
Dominus potentiſſim'. Audivi quid dixe- 25
rint prophetæ qui meo nomine falſum prophetant,
ac dicunt; Somnium ſomniavi.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

11 * لان الكاهن والنبي تدنسا * وفي بيتي نظرت شرورهم * لاجل هذا لتكن طريقهم لهم 12
زلقا بضباب * ويعرقلون ويسقطون فيها * من اجل اني اجلب عليهم شرورا في سنة افتقادهم
13 قال الرب * وفي انبياء سامرة رايت الاثام * تنباوا باسمي لبعل * واضلوا شعبي اسرائيل * وفي 14
انبياء ايروسليم رايت مرهوبات فسقة وسايرين بالكذب * ومعاضدين الايدي الشريرين * الا
يرجع كل واحد من طريقه الشريرين * صاروا لي جميعهم مثل سدوم * وسكانها مثل عامورا *
15 * لاجل هذا هكذا يقول الرب * ها انا اطعمهم اوجاعا واسقيهم ماء مرا * لان من انبياء
16 ايروسليم خرج الدنس لكل الارض * هكذا يقول الرب ضابط الكل * لا تسمعوا اقوال
17 الانبياء * لانهم يتباطلون لكم بالرويا * ومن قلبهم يتكلمون وليس من فم الرب * يقولون
للمتباعدين عن قول الرب * السلم يكون لكم * ولجميع الذين يسيرون بارادتهم ولكل
18 سائر بضلالة قلبه * ليس ياتي عليك شرور * لان من ياتي بسر الرب * وراي قوله من نصت
19 وسمع * ها زلزلة من قبل الرب * وغضب خارج للزلزال يدور على المنافقين * وليس ينصرف 20
غضب الرب بعد * الي ان يصنعه والي ان يقيمه * من سويداء قلبهم الي اخر الايام يعقلونه *
21 * لم ارسل الانبياء وهم اسرعوا * ولم اتكلم معهم وهم تنباوا * ولم يقفوا على اسراري ولم 22
23 يسمعوا اقوالي * ولم يرجعوا شعبي عن اعمالهم الشريرين * اله قريب انا انا يقول الرب *
24 وليس اله بعيد * ايختفي انسان في خفايا وانا لا اعاينه * كلا * اليس انا املا السماء
25 والارض يقول الرب * سمعت ما تكلمت به الانبياء وما تنباته باسمي قائلين الكذب *
حلمت حلما *

Quia ſacerdos & propheta contamina- 11
verunt ſeſe, & in domo mea vidi ſcelera
eorum; Idcirco ſit eis via ſua lubricitas 12
in caligine, implicentur & cadant in ea;
quoniam illaturus ſum eis mala in anno
viſitationis eorum, ait Dominus. In 13
prophetis quidem Samariæ vidi ſcelera;
prophetaverunt in nomine meo Baali, &
ſeduxerunt populum meum Iſraelem. At 14
in prophetis Jeroſolymorum horrenda video,
adulteros, ambulantes in mendacio,
& ſceleratas manus roborantes, quò
minùs deſiſtat quiſque à via ſua mala:
facti ſunt mihi omnes iſti ut Sodoma, &
hujus urbis *incolæ ut Gomorra. Iccirco* 15
ſic ait Dominus, Ecce ego cibaturus ſum
iſtos doloribus, & potaturus eos aquâ
amarâ: quandoquidem à prophetis Jeroſolymorum
egreſſa eſt contaminatio in
totam terram. Sic ait Dominus omnipo- 16
tens, Ne auſcultetis dictis prophetarum
iſtorum, quoniam effingunt vobis viſiones,
& ex propria mente, non ex ore
Domini loquuntur: Recedentibus à ſer- 17
mone Domini dicunt, Pax erit vobis; &
omnibus iis qui ambulant pro ſuopte arbitrio,
& omni incedenti in errore cordis
ſui, Nequaquam advenient tibi mala.
Quis enim intervenit ſecreto Domini? 18
& conſilium ſermonis ejus quis auſcultavit
aut audivit? Ecce terræmotus 19
à Domino cum furore proceſſurus ad
incutiendum tremitum, circumaget ſe
ſuper impios: Neque ceſſabit unquam 20
furor Domini, quoad id perficiat, &
quoad id præſtet: ex intimo corde ſuo
hæc tandem percipient. Non miſi hos 21
prophetas, ipſi tamen cucurrerunt; non
ſum allocutus eos, attamen ipſi prophetaverunt:
Non interfuerunt arcanis me- 22
is, nec audierunt ſermones meos, nec
avocârunt populum meum à pravis actionibus
eorum. Deus propinquus ego ſum, 23
ait Dominus, non Deus longinquus. An
abderet ſe aliquis in latebras, & ego
non viderem eum? minimè verò. An 24
non ego cœlum ac terram impleo, dicit
Dominus? Audivi quid locuti ſint hi 25
prophetæ, quidve prophetârint nomine
meo, referentes mendacium, dicentes; Somniavi
ſomnium.

ירמיה: כג

,mendacium prophetantium prophetarum corde in est nunquid ? Usquequo
26 עד־מתי היש בלב הנבאים נבאי השקר
faciendum oblivisci ad Cogitantium ? sui cordis *doli vatum* &
27 ונביאי תרמת לבם: החשבים להשכיח את־
unusquisque *narrabunt* quæ , suis somniis in mei nominis meũ populum
עמי שמי בחלומתם אשר יספרו איש
.Bahal *in* mei nominis eorum patres sunt obliti sicut ; suo *socio*
לרעהו כאשר שכחו אבותם את־שמי בבעל:
meũ verbum quo & ,somnium narret ,somnium *eo cum* quo Propheta
28 הנביא אשר־אתו חלום יספר חלום ואשר דברי
dixit , *tritico cum* paleæ quid : *veritate* meum verbum loquatur ,*eo cum*
אתו ידבר דברי אמת מה־לתבן את־הבר נאם־
,Dominus dixit ,ignis tanquam meum verbum sic Nonne ? Dominus
29 יהוה: הלוא כה דברי כאש נאם־יהוה
ad ego ecce Propterea .petram *disperget contritam* malleus veluti &
30 וכפטיש יפצץ סלע: לכן הנני על־
.suo *socio cum* à unusquisque,mea verba *furantes* ,Dominus ait ,prophetas
הנביאים נאם־יהוה מגנבי דברי איש מאת רעהו:
,*suam linguam usurpantibus* , Dominus ait , prophetas ad ego Ecce
31 הנני על־הנביאים נאם־יהוה הלקחים לשונם
ait ,*falsitatis* somnia prophetantes ad ego Ecce .Dicit : *dixere* &
32 וינאמו נאם: הנני על־נבאי חלמות שקר נאם־
,suis mendaciis in meũ populum fecerũt errare &,ea narraverũt &,Domin⁹
יהוה ויספרום ויתעו את־עמי בשקריהם
proficiendo & ,eis præcepi nec , eos misi non ego & : *sua levitate* in &
ובפחזותם ואנכי לא־שלחתים ולא צויתים והועיל
te interrogaverit *cùm* Et .Dominus dixit ,huic populo profuerunt non
33 לא־יועילו לעם־הזה נאם־יהוה: וכי־ישאלך
? Domini *onus Quod* : dicendo,sacerdos vel,propheta vel , iste populus
העם הזה או־הנביא או־כהן לאמר מה־משא יהוה
.Dominus dicit ,vos derelinquam & ?*onus Quod* : eos ad dices &
ואמרת אליהם את־מה־משא ונטשתי אתכם נאם־יהוה:
,Domini *Onus* : dixerit qui , populus & ,sacerdos & ,propheta Et
34 והנביא והכהן והעם אשר יאמר משא יהוה
dicetis Sic .ejus domum *super* & , illum virum *super* visitabo &
35 ופקדתי על־האיש ההוא ועל־ביתו: כה תאמרו
Quid : suum fratrem ad unusquisque & ,suum *socium* ad unusquisque
איש על־רעהו ואיש אל־אחיו מה־
Domini *onus* Et ? Dominus est locutus quid & ,Dominus respondit
36 ענה יהוה ומה־דבר יהוה: ומשא יהוה
; suum verbum unicuique erit *onus* quia : ultrà *memorabitis* non
לא תזכרו־עוד כי המשא יהיה לאיש דברו
.nostri Dei exercituũ Domini ,viventis Dei verba pervertistis &
והפכתם את־דברי אלהים חיים יהוה צבאות אלהינו:
quid & ,Dominus tibi respondit Quid : prophetam ad dices Sic
37 כה תאמר אל־הנביא מה־ענך יהוה ומה־
sic Propterea ? dicetis Domini *onus* num Et ? Dominus est locutus
38 דבר יהוה: ואם־משא יהוה תאמרו לכן כה
,Domini *Onus* , istud verbum *vos dicere Propter* : Dominus dixit
אמר יהוה יען אמרכם את־הדבר הזה משא יהוה
Propterea .Domini *onus* dicatis Non : dicendo , vos ad misi &
39 ואשלח אליכם לאמר לא תאמרו משא יהוה: לכן
,civitatẽ & , vos *deseram* & ,obliviscẽdo vestri obliviscar & ego ecce
הנני ונשיתי אתכם נשא ונטשתי אתכם ואת־העיר
.*meis faciebus desuper* vestris patribus & , vobis dedi quam
אשר־נתתי לכם ולאבותיכם מעל פני:
quæ , *seculi* ignominiam & ,*seculi* opprobrium vos super dabo Et
40 ונתתי עליכם חרפת עולם וכלמות עולם אשר
.tradetur oblivioni non
לא תשכח:

Versio VULG. LAT.

26 Usquequò istud est in corde prophetarum vaticinantium mendacium, & prophetantium seductiones cordis sui? 27 Qui volunt facere ut obliviscatur populus meus nominis mei propter somnia eorũ, quæ narrat unusquisque ad proximum suum: sicut obliti sunt patres eorum nominis mei propter Baal. 28 Propheta, qui habet somnium, narret somnium: & qui habet sermonem meum, loquatur sermonẽ meum verè: quid paleis ad triticum, 29 dicit Dominus? Numquid non verba mea sunt quasi ignis, dicit Dominus; & quasi malleus conterens petram? 30 Propterea ecce ego ad prophetas, ait Dominus, qui furantur verba mea unusquisque à proximo suo. 31 Ecce ego ad prophetas, ait Dominus, qui assumunt linguas suas, & aiunt; Dicit Dominus. 32 Ecce ego ad prophetas somniantes mendacium, ait Dominus, qui narraverunt ea, & seduxerunt populum meum in mendacio suo, & in miraculis suis: cùm ego non misissem eos, nec mandassem eis, qui nihil profuerunt populo huic, dicit Dominus. 33 Si igitur interrogaverit te popul⁹ iste, vel propheta, aut sacerdos, dicens; Quod est onus Domini? dices ad eos, Vos estis on⁹: projiciam quippe vos, dicit Dominus. 34 Et propheta, & sacerdos, & popul⁹ qui dicit; Onus Domini: visitabo super virum illum, & super domum ej⁹. 35 Hæc dicetis unusquisque ad proximum, & ad fratrem suum; Quid respondit Domin⁹? & quid locutus est Domin⁹? 36 Et on⁹ Domini ultrà non memorabitur: quia onus erit unicuique sermo suus: & pervertistis verba Dei viventis, Domini exercituum 37 Dei nostri. Hæc dices ad prophetam, Quid respondit tibi Domin⁹? & quid locut⁹ est Domin⁹? 38 Si autem onus Domini dixeritis: propter hoc hæc dicit Domin⁹; Quia dixistis sermonem istum, Onus Domini: & misi ad vos, dicens; Nolite di- 39 cere, Onus Domini: Propterea ecce ego tollam vos portans, & derelinquam vos, & civitatem quam dedi vobis & patrib⁹ 40 vestris, à facie mea. Et dabo vos in opprobrium sempiternũ, & ignominiam æternam, quæ nunquam oblivione delebitur.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

26 Ἕως πότε ἔσται ἐν καρδίᾳ τῶν προφητῶν τῶν προφητευόντων ψευδῆ, (ζ) ἐν τῷ προφητεύειν αὐτοὺς τὰ θελήματα τῆς καρδίας αὐτῶν, 27 Τῶν λογιζομένων τοῦ ἐπιλαθέσθαι τοῦ νόμου μου ἐν τοῖς ἐνυπνίοις αὐτῶν, ἃ (η) διηγοῦντο ἕκαστος τῷ πλησίον αὐτοῦ, καθάπερ ἐπελάθοντο οἱ πατέρες αὐτῶν τοῦ ὀνόματός μου 28 ἐν τῇ Βάαλ; Ὁ προφήτης ἐν ᾧ τὸ ἐνύπνιόν ἐστι, διηγησάσθω τὸ ἐνύπνιον αὐτοῦ, καὶ ἐν ᾧ ὁ λόγος μου πρὸς αὐτὸν, διηγησάσθω τὸν λόγον μου ἐπ' ἀληθείας. τί τὸ ἄχυρον πρὸς τὸν σῖτον; οὕτως οἱ λόγοι μου, λέγει κύριος. (θ) 29 Οὐκ ἰδοὺ οἱ λόγοι μου, ὥσπερ πῦρ, λέγει κύριος, καὶ ὡς πέλυξ κόπτων πέτραν; 30 (ι) Ἰδοὺ ἐγὼ διατοῦτο πρὸς τοὺς προφήτας, λέγει κύριος ὁ θεὸς, τοὺς κλέπτοντας τοὺς λόγους μου (κ) 31 ἕκαστον παρὰ τοῦ πλησίον αὐτοῦ. Ἰδοὺ ἐγὼ πρὸς τοὺς προφήτας τοὺς ἐκβάλλοντας (λ) προφητείας γλώσσης, καὶ νυστάζοντας νυσταγμὸν (μ) αὐτῶν. 32 Διατοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ πρὸς τοὺς προφήτας τοὺς προφητεύοντας (ν) ἐνύπνια ψευδῆ, καὶ οὐ διηγοῦντο αὐτὰ, καὶ ἐπλάνησαν τὸν λαόν μου ἐν τοῖς ψεύδεσιν αὐτῶν, καὶ ἐν τοῖς πλάνοις αὐτῶν, καὶ ἐγὼ οὐκ ἀπέστειλα αὐτοὺς, καὶ οὐκ ἐνετειλάμην αὐτοῖς, καὶ ὠφέλειαν οὐκ ὠφελήσουσι τὸν λαὸν τοῦτον. 33 Καὶ ἐὰν (ξ) ἐρωτήσωσιν ὁ λαὸς οὗτος, ἢ ἱερεὺς, ἢ προφήτης, Τί τὸ λῆμμα κυρίου; καὶ ἐρεῖς αὐτοῖς, Ὑμεῖς ἐστε τὸ λῆμμα, 34 καὶ ῥάξω ὑμᾶς, λέγει κύριος. Ὁ προφήτης, καὶ (") οἱ ἱερεῖς, καὶ ὁ λαὸς, οἳ ἂν εἴπωσι, Λῆμμα κυρίου, καὶ ἐκδικήσω τὸν ἄνθρωπον ἐκεῖνον, καὶ 35 τὸν οἶκον αὐτοῦ. (ο) Οὕτως ἐρεῖτε ἕκαστος πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ, καὶ ἕκαστος πρὸς τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, Τί ἀπεκρίθη (π) κύριος, καὶ τί ἐλάλησε κύριος; 36 Καὶ λῆμμα κυρίου μὴ (ρ) ὀνομάζετε ἔτι, ὅτι τὸ λῆμμα τῷ ἀνθρώπῳ ἔσται ὁ λόγος αὐτοῦ. 37 Καὶ διατί ἐλάλησε κύριος 38 ὁ θεὸς ἡμῶν; Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος ὁ (σ) θεὸς ἡμῶν, Ἀνθ' ὧν εἴπατε τὸν λόγον τοῦτον, 39 Λῆμμα κυρίου, καὶ ἀπέστειλα πρὸς ὑμᾶς, λέγων, Οὐκ ἐρεῖτε, Λῆμμα κυρίου, Διατοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ λαμβάνω, καὶ ῥάσσω ὑμᾶς, καὶ τὴν πόλιν ἣν ἔδωκα ὑμῖν καὶ τοῖς πατράσιν ὑμῶν. 40 Καὶ δώσω ἐφ' ὑμᾶς ὀνειδισμὸν αἰώνιον, καὶ ἀτιμίαν αἰώνιον, (") ἥτις οὐκ ἐπιλησθήσεται. 7 Διατοῦτο ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, λέγει κύριος, καὶ οὐκ ἐροῦσιν ἔτι, Ζῇ κύριος, ὃς ἀνήγαγε 8 τὸν οἶκον Ἰσραὴλ ἐκ γῆς Αἰγύπτου, Ἀλλὰ, Ζῇ κύριος, ὃς συνήγαγε (τ) πᾶν τὸ σπέρμα Ἰσραὴλ ἀπὸ γῆς Βορρᾶ, καὶ ἀπὸ πασῶν τῶν χωρῶν, οὗ ἐξῶσεν αὐτοὺς ἐκεῖ, καὶ ἀποκατέστησεν αὐτοὺς εἰς τὴν γῆν αὐτῶν.

26 Usquequò erit in corde prophetarum prophetantium falsa, dum ipsi prophetant voluntates cordis sui, 27 Cogitantium, ut oblivio fiat legis meæ in somniis ipsorum, quæ narrant unusquisque proximo suo, sicut obliti sunt patres eorum nominis mei in Baal? 28 Propheta, in quo somnium est, narret somniũ suũ: et in quo sermo meus ad eum; narret sermonem meum in veritate. Quid palea ad triticum? Sic verba mea, dicit Dominus. 29 Nonne ecce verba mea, sicut (o) ignis, dicit Dominus, & sicut securis cædens petram? 30 Ecce ego (p) propterea ad prophetas, dicit Dominus Deus, qui furantur verba mea, unusquisque à proximo suo. 31 Ecce ego ad prophetas, qui (q) emittunt prophetias linguæ, & dormitant dormitationem suam. 32 Propterea ecce ego ad prophetas, qui prophetant somnia falsa, & (r) non narrant ea, & seduxerunt populum meum in mendaciis suis, & in erroribus suis: & ego non miseram eos, & non mandâram eis: & adjumento non adjuvabunt populum hunc. 33 Quòd si interrogaverint populus iste, vel sacerdos, vel propheta, Quæ est (ſ) assumptio Domini? & dices eis; Vos estis assumptio, & allidam vos, dicit Dominus. 34 Propheta, & sacerdotes, & populus, quicunque dixerint; Assumptio Domini: & ulciscar hominem illum, & domum ejus. 35 Sic dicetis unusquisque ad proximum suum, & unusquisque ad fratrem suum; Quid respondit Dominus, & quid loquus⁹ est Domin⁹? 36 Et assumptionem Domini nolite nominare ultrá: quia assumptio homini erit sermo ejus. 37 (t) Et quarè loquutus est Domin⁹ De⁹ noster? 38 Propter hoc hæc dicit Dominus Deus noster; Pro eo, quòd dixistis sermonem istum, Assumptio Domini, & misi ad vos, dicens; Non dicetis, 39 Assumptio Domini: Propterea ecce ego assumo, & allido vos, & civitatem, quam dedi vobis, & patrib⁹ vestris. 40 Et dabo super vos opprobriũ sempiternũ, et ignominiam sempiternã, quæ oblivioni non tradetur. 7 Idcircò ecce dies veniunt, dicit Dominus: & non dicent ultrà; Vivit Dominus, qui eduxit domum Israel de terra Ægypti: 8 Sed Vivit Dominus, qui congregavit omne semen Israel à terra Aquilonis, & ab omnibus regionibus, quò expulerat eos illuc; & restituit eos in terram ipsorum.

MS. A. (ζ) καὶ ἐν τῷ (η) διηγοῦνται (θ) Οὐχ οἱ λόγοι μου, ὥσπερ φλέγον πῦρ, λέγει κύριος, καὶ ὡς πέλεκυς (ι) Διατοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ (κ) ἕκαστος (λ) προφητείαν γλώσσῃ, (μ) ἑαυτῶν. Ἰδοὺ ἐγὼ (ν) ψευδῆ ἐνύπνια, καὶ διηγοῦντο (ξ) ἐρωτήσωσίν σε ὁ λαὸς (") ὁ ἱερεὺς, (ο) Ὅτι οὕτως (π) κύριος; Καὶ λῆμμα (ρ) ὀνομάζεται, ὅτι λῆμμα κυρίου ἔσται τῷ ἀνθρώπῳ ὁ λόγος (σ) θεὸς, Ἀνθ' ὧν (") εἴ τις (τ) ἅπαν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

26 עד אימתי אית בלבהון דנביי שקרא דמתנבן שקר ומתנבן רשע לבהון: 27 דמחשבין
לאנשאה ית עמי שמי בחלמהון דמשתען גבר לחבריה כמה דשבקו אבהתהון ית
פולחן שמי ומקימין בשום טעותא: 28 נביא דעמיה חלמא ישתעי חלמא ודפתגמי עמיה
ימלל פתגמי קשוט הא כמה דמפרש בין תבנא לעבורא כן פריש בין צדיקיא לרשיעיא
29 אמר יי: הלא כל פתגמי תקיפין כאשתא אמר יי וכפטישא דמפגע כיפא: 30 בכן הא אנא
31 שלח רוגזי על נביי שקרא אמר יי מגנבין פתגמי גבר מן חבריה: בכן הא אנא שלח רוגזי
32 על נביי שקרא אמר יי דמתנבן כרעות לבהון ואמרין כן אמר: הא אנא שלח רוגזי על
דמתנבן חלמא דשקר אמר יי ומשתען ומטען ית עמי בשקריהון ובבקרותהון ואנא לא
33 שלחתנון ולא פקדתנון והנאה לא יהנון לעמא הדין אמר יי: וארי ישאלנך עמא הדין
או ספר או כהן למימר מה נבואתא בשמא דיי ותימר להון כדין נבואתא וארטוש יתכון
34 אמר יי: וספר וכהן ועמא דיימר נבואתא בשמא דיי ואסער על גברא ההוא ועל ביתיה:
35 כדין תימרון גבר לחבריה וגבר לאחוהי מה אתיב יי ומה מלל יי: 36 ונבואה בשמא דיי
לא תדכרון עוד ארי נבואתא תהי לגבר דמקים פתגמי רעותיה ואתון מדמן לבטלא ית
37 פתגמי אלהא קימא דיי צבאות אלהנא: כדין תימר לנביא מה אתיבך יי ומה מלל יי:
38 ואם נבואה בשמא דיי תימרון בכן כדנן אמר יי חלף דאמרתון ית פתגמא הדין נבואה
39 בשמא דיי ושלחית לותכון למימר לא תימרון נבואתא מקדם יי: בכן הא אנא שלח רוגזי
וארטוש יתכון מרטש וארחיק יתכון וית קרתא דיהבית לכון ולאבהתכון מקביל
40 מימרי: ואתן עליכון חסודי עלם ותחפנון אתכנעות עלם דלא תפסוק:

PARÁPH. CHALD. Versio Latina.

26 Quousque est istud in corde pseudoprophetarum, qui prophetant falsa, & prophetant impietatem cordis sui? 27 Qui cogitant efficere ut obliviscatur popul⁹ me⁹ nominis mei per somnia sua, quæ narrant unusquisque socio suo, sicut reliquerunt patres eorum cultum nominis mei, jurantes per nomina idolorum. 28 Propheta apud quem est somnium, narret somnium; & apud quẽ est verbum meum, loquatur verbum meum verè. Ecce sicut qui separat paleam à tritico, sic separo impios à justis, dicit Domin⁹. 29 Nónne omnia verba mea sunt fortia sicut ignis, dicit Dñs? & sicut malleus conterens petrã? 30 Propterea ecce ego mitto furorẽ meum super pseudoprophetas, dicit Dñs, qui suffurantur verba mea quisque à socio suo. 31 *Ideo* ecce mitto furorẽ meum super pseudoprophetas, dicit Domin⁹, qui prophetant juxta voluntatẽ cordis sui, & dicunt: Sic dicit [*Dominus.*] 32 Ecce ego immitto furorẽ meum super *eos* qui prophetant *somnium falsum*, dicit Domin⁹: & narrant & seducunt populũ meum mendaciis suis & temeritate sua. Ego enim non misi eos, nec præcepi eis, qui nihil profuerunt populo huic, dicit Dominus. 33 Et cùm interrogaverit te popul⁹ hic, aut scriba, aut sacerdos, dicens; Quæ est prophetia in nomine Domini? Et dices ei: Talis est prophetia; Projiciam vos, dicit Dominus. 34 Scriba enim & sacerdos, & populus qui dixerit, Prophetia in nomine Domini: & visitabo super virum illum, & super domum ejus. 35 Sic dicetis unusquisque proximo suo, & unusquisque fratri suo: Quid respondit Dominus, & quid locutus est Dominus? 36 Et prophetiæ in nomine Domini non recordabimini amplius: quia prophetia erit viro qui stabilierit verba voluntatis ejus. Vos autem putatis irrita facere verba Dei viventis, Domini exercituũ Dei nostri. 37 Sic dices prophetæ: Quid respondit tibi Domin⁹, aut quid locut⁹ est Domin⁹? 38 Et si, Prophetia in nomine Domini, dixeritis; propterea hæc dicit Domin⁹: Pro eo quòd dixistis sermonem istum, Prophetia in nomine Domini, cùm misissem ad vos, dicendo: Ne dicatis, Prophetia *à conspectu* Domini. 39 Propterea ecce ego immitto furorem meum, & derelinquam vos derelinquendo, & projiciam vos & civitatem quam dedi vobis, & patribus vestris, à conspectu Verbi mei. 40 Et *dabo* super vos *opprobria sempiterna*, & cooperiet vos ignominia sempiterna, nunquam desitura.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܐܝܬ ܒܦܘܡܗܘܢ ܕܢܒܝܐ ܕܓܠܐ ܕܢܒܝܘܬܐ ܕܓܠܬܐ. ܢܒܝܘܬܐ ܕܢܟܠܐ 26
ܕܠܒܗܘܢ. * ܕܡܬܚܫܒܝܢ ܠܡܛܥܝܘ ܠܥܡܝ ܒܫܡܝ. ܒܚܠܡܝܗܘܢ ܕܡܫܬܥܝܢ ܓܒܪ 27
ܠܚܒܪܗ. ܐܝܟ ܕܛܥܘ ܐܒܗܝܗܘܢ ܫܡܝ ܘܦܠܚܘ ܠܒܥܠܐ. * ܢܒܝܐ ܕܚܙܐ ܚܠܡܐ ܢܫܬܥܐ 28
ܚܠܡܐ. ܘܕܦܬܓܡܝ ܠܘܬܗ ܢܡܠܠ ܦܬܓܡܝ ܒܩܘܫܬܐ. ܡܢܐ ܚܠܛܝܢ ܬܒܢܐ
ܥܡ ܚܛܬܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܗܐ ܦܬܓܡܝ ܐܝܟ ܢܘܪܐ ܢܦܩܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܝܟ ܦܪܙܠܐ 29
ܕܦܣܩ ܟܐܦܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ ܐܢܐ ܥܠ ܢܒܝܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܓܢܒܝܢ ܦܬܓܡܝ ܐܢܫ 30
ܡܢ ܚܒܪܗ. * ܗܐ ܐܢܐ ܥܠ ܢܒܝܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܡܗܦܟܝܢ ܠܫܢܝܗܘܢ ܘܐܡܪܝܢ. ܡܪܝܐ ܐܡܪ 31
ܗܟܢܐ. * ܗܐ ܐܢܐ ܥܠ ܢܒܝܐ ܕܚܙܝܢ ܚܠܡܐ ܕܓܠܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܡܫܬܥܝܢ ܠܗܘܢ. ܘܡܛܥܝܢ 32
ܠܥܡܝ ܒܕܓܠܘܬܗܘܢ. ܘܒܦܚܙܘܬܗܘܢ. ܘܐܢܐ ܠܐ ܦܩܕܬ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܫܕܪܬ ܐܢܘܢ. ܘܡܕܡ ܠܐ
ܡܘܬܪܝܢ ܠܥܡܐ ܗܢܐ. * ܘܟܕ ܢܫܐܠܟ ܥܡܐ ܗܢܐ ܐܘ ܢܒܝܐ ܐܘ ܟܗܢܐ: ܘܢܐܡܪ ܠܟ. 33
ܡܢܘ ܡܫܩܠܐ ܕܡܪܝܐ. ܐܡܪ ܠܗܘܢ ܐܢܬ. ܗܢܘ ܡܫܩܠܗ ܕܡܪܝܐ. ܐܥܩܪܟܘܢ ܐܡܪ
ܡܪܝܐ. * ܘܢܒܝܐ ܐܘ ܟܗܢܐ ܐܘ ܥܡܐ. ܕܢܐܡܪ ܡܫܩܠܗ ܕܡܪܝܐ. ܐܦܩܘܕ ܥܠ ܓܒܪܐ ܗܘ. 34
ܘܥܠ ܒܝܬܗ. * ܗܟܢܐ ܬܐܡܪܘܢ ܓܒܪ ܠܚܒܪܗ ܘܓܒܪ ܠܐܚܘܗܝ. ܡܢܐ ܥܢܐ ܡܪܝܐ 35
ܘܡܢܐ ܡܠܠ ܡܪܝܐ. * ܘܡܫܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܠܐ ܬܬܕܟܪܘܢ ܬܘܒ. ܡܛܠ ܕܡܫܩܠܐ ܢܗܘܐ 36
ܠܓܒܪܐ ܕܢܒܝܘܬܗ. ܘܗܦܟܬܘܢ ܐܢܬܘܢ ܦܬܓܡܘܗܝ ܕܐܠܗܐ ܚܝܐ. ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ
ܐܠܗܢ. * ܗܟܢܐ ܬܐܡܪܘܢ ܠܓܒܪܐ. ܡܢܐ ܥܢܟ ܡܪܝܐ. ܘܡܢܐ ܡܠܠ ܡܪܝܐ. * ܘܐܢ 37 38
ܡܫܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܬܐܡܪܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܚܠܦ ܕܐܡܪܬܘܢ ܡܫܩܠܐ ܗܢܐ: ܘܫܕܪܬ
ܠܟܘܢ. ܕܠܐ ܬܐܡܪܘܢ.. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܣܒܘ ܢܣܒܟܘܢ. ܘܐܪܡܝܟܘܢ. ܘܠܡܕܝܢܬܐ 39
ܕܝܗܒܬ ܠܟܘܢ ܘܠܐܒܗܝܟܘܢ. ܡܢ ܩܕܡ ܐܦܝ. * ܘܐܬܠ ܥܠܝܟܘܢ ܚܣܕܐ ܕܥܠܡ. 40
ܘܨܥܪܐ ܕܠܥܠܡ. ܕܠܐ ܡܬܛܥܝܐ.

* Quouſque tandem erunt in ore falſorum pro- 26
phetarum iſtorum prophetiæ falſæ, prophe-
tiæ doli cordis eorum, Quorum conſilium eſt 27
nomine meo populum meum ſeducere per
ſomnia ſua quæ narrant alter alteri; quem-
admodum obliti ſunt patres eorum nominis
mei, & coluerunt Baalem? Propheta qui 28
ſomnium videt, narret ſomnium: & is penes
quem ſunt ſermones mei, referat ſermones
meos fideliter: quorſum miſcetis paleam cum
tritico, dicit Dominus? Ecce ſermones mei 29
velut ignis egrediuntur, ait Dñs; & veluti
chalybs qui cædit lapidem: Propterea en 30
præſtò ſum contra prophetas, dicit Dominus,
qui ſuffurantur ſermones meos alter ab altero.
Ecce me contra prophetas, dicit Domin⁹ qui 31
pervertunt linguas ſuas ac dicunt, Dominus
ita dicit. Ecce me contra prophetas qui vi- 32
dent ſomnia falſa, dicit Dominus, eáque nar-
rant, ſeducúntque populum meum falſitate &
laſciviâ ſuâ: cùm ego non præceperim eis,
nec miſerim eos, nihilq; proſint huic populo.
Cùm ergò poſtulaverit à te populus iſte, aut 33
propheta, aut ſacerdos *aliquis*, dixerítq; tibi,
Qualis eſt ſermo Domini? tu illis dicito, Is
eſt ſermo Domini; Evellam vos, dicit Domi-
nus. In prophetam verò illum, ſive ſacerdo- 34
tem, ſive populum qui dixerit, Sermo Do-
mini; animadvertam in ejuſmodi hominem,
& in domum ipſius. Ita dicetis quiſque ſocio 35
ſuo & quiſque fratri ſuo, Quid reſpondit
Dominus? &, Quid locut⁹ eſt Dñs? Sermonis 36
autem Domini ne memineritis poſthac; nam
ſermo, eſto homini prophetia ejus (*Domini*):
vos autem pervertitis ſermones Dei vivi,
Domini potentiſſimi, Dei noſtri. Ita dicetis 37
alicui, Quid reſpondit tibi Domin⁹, &, Quid
locutus eſt Domin⁹? Quòd ſi, Domini ſermo, 38
dixeritis, ſic ait Domin⁹; Quia ſermonem
hunc locuti eſtis, licèt mandâſſem vobis ne
loqueremini; Propterea tollendo vos tollam, 39
tum projiciã vos unà cum civitate quam dedi
vobis & patribus veſtris, à conſpectu meo:
Imponámque vobis opprobrium ſempiter- 40
num & ignominiam perpetuam quæ nun-
quam oblivioni tradetur.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* الي متي يكون قلب الانبياء الذين يتنبون بالكذب* وعند ما يتنباون بارادات قلبهم * 26
* الظانين ان ينسوا ناموسي باحلامهم* بما يخبر كل واحد قريبه* كما نسي اباوهم اسمي بباعال* 27
* النبي الذي له حلم فليحدث بحلمه* والذي اليه كلمتي فليحدث بكلمتي بالحق* اين 28
التبن من الحنطة* هكذا كلماتي يقول الرب * أليس كلماتي مثل نار متوقد يقول الرب* 29
ومثل معول يقطع الصخر* لاجل هذا ها انا الي الانبياء يقول الرب الاله الذين يسرقون 30
اقوالي كل واحد من قريبه * ها انا الي الانبياء الذين يخرجون نبوة لسان وينعسون نعاسهم* 31
* ها انا الي الانبياء الذين يتنبون احلاما كاذبة ويخبرون بها * واضلوا شعبي بكذبهم 32
وبضلالهم* وانا لم ارسلهم ولم امرهم* ولم ينفعوا شعبي هذا منفعة* وان سالك هذا الشعب 33
او الكاهن او النبي ما وحي الرب* فتقول لهم انتم انتم وحي الرب* وانتقم من ذلك الانسان 34
ومن بيته * لان هكذا تقولون كل واحد لقريبه وكل واحد لاخيه* بماذا اجاب الرب وبماذا 35
تكلم الرب * ووحي الرب لا يسمي ايضا* لان وحي الرب يكون للانسان كلمته * ولاجل 36 37
ماذا تكلم الرب الهنا* لاجل هذا هكذا يقول الرب الاله* من اجل انكم تقولون هذا 38
القول* وحي الرب* وارسلت اليكم قايلا لا تقولوا وحي الرب* لاجل هذا ها انا اخذلكم 39
واستاصلكم وهذه المدينة التي اعطيتها لابايكم * وارفع عليكم تعييرا ابديا 40
واهانة ابدية هذه لا تنسي* *لاجل هذا ها ايام تاتي يقول الرب* فلا يقولون ايضا 7
حي الرب الذي اصعد بني اسرايل من ارض مصر * لكن حي الرب الذي جمع كل 8
زرع اسرايل من ارض الجربياء ومن جميع الكور حيث اقصاهم هناك* وردهم الي ارضهم*

* *Quouſque cor prophetarum qui prophe-* 26
tant, hærebit falſitati? & quouſque pro-
phetabunt voluntates animi ſui, Putan- 27
tes ſe oblivioni daturos legem meam per
ſomnia ſua, et per ea quæ alter alteri nar-
rat; quemadmodum obliti fuerant, patres
eorum nominis mei per Baalem? Prophe- 28
ta qui ſomnium habuerit, referat ſomni-
um ſuum; & is ad quem fuerit verbum
meum, ſincerè loquatur verbum meum.
Quænam eſt inter paleam & triticum
proportio? eodem modo verba mea, dicit
Dominus. An non ſunt verba mea ſicut 29
ignis ardens, dicit Dominus; & ſicut bi-
pennis lapidem ſecans? Idcircò ecce me 30
ad prophetas, ait Dominus Deus; qui ſer-
mones meos alter ab altero furantur. Ecce 31
me ad prophetas qui prophetiã linguæ pro-
ferunt, & ſomnia ſua effutiunt. Ecce me 32
ad prophetas qui ſomnia falſa prophetant,
eaque narrantes populum meum ſuis men-
daciis & errore ſuo ſeducunt: cùm ego
nec miſerim eos, nec præceperim eis, nec
ullam attulerint huic populo meo utilita-
tem. Quòd ſi te interrogaverit hic popu- 33
lus, ſacerdos, aut propheta, quænam ſit
revelatio Domini, dices eis; Vos eſtis re-
velatio Domini. At vindictam ſumam ab 34
ejuſmodi homine & à domo ipſius. Nam 35
ſic dicetis quilibet proximo ſuo & quili-
bet fratri ſuo, Quid reſpondit Dominus?
&, Quid locutus eſt Dominus? At reve- 36
latio Domini ne nominetur ampliùs: nam
alioqui revelatio Domini foret homini
verbum ſuum: Et quorſum loqueretur 37
Dominus Deus noſter? Quare ſic ait Do- 38
minus Deus, Quandoquidem hujuſmodi
ſermonẽ profertis, Revelatio Domini; cùm
ad vos miſerim qui diceret; Ne dicatis, Re-
velatio Domini: Idcircò ecce ego deſerã 39
vos, & evellam vos cum hac urbe quam
dederam patribus veſtris: Et inſeram vo- 40
bis vituperium æternum deſpectúmque
perpetuum, talem ut nunquam oblivioni
tradatur. verſ. 7. *Iccircò ecce* 7
dies venient, dicit Dominus; quibus ne-
quaquam dicent poſthac, Vivat Dominus
qui eduxit filios Iſraelis de terra Ægypti;
Sed vivat Dominus qui collegit totum ſe- 8
men Iſraelis de terra Aquilonari, & ex
omnibus regionibus in quas ablegaverat
eos, reduxitque eos in terram eorum.

ירמיה : כד כה

CAP. XXIV. כד

ante parata ficuum canistra duo ecce & ,Dominus me fecit Videre
1 הראני יהוה והנה שני דודאי תאנים מועדים לפני
Babel *regem* Nebuchadreſar *transferre poſt* ,Domini templum
היכל יהוה אחרי הגלות נבוכדראצר מלך־בבל את־
,Jehudah principes & ,Jehudah regem Jehojachim filium Jechonjahu
יכניהו בן־יהויקים מלך־יהודה ואת־שרי יהודה
.Babel eos adduxit & , Jeruſalaim de *incluſorem* & , *artificem* &
ואת־החרש ואת־המסגר מירושלם ויבאם בבל:
caniſtrũ & : præcoquas ficus ſicut ,valde bonas ficus unum Caniſtrum
2 הדוד אחד תאנים טבות מאד כתאני הבכרות והדוד
.malitiam propter *comedentur* non quæ ,valde malas ficus *unum*
אחד תאנים רעות מאד אשר לא־תאכלנה מרע:
: dixi Et ? Irmejahu *videns* tu Quid : me ad Dominus dixit Et
3 ויאמר יהוה אלי מה־אתה ראה ירמיהו ואמר
, valde malas , malas & : valde bonas ,bonas ficus : Ficus
תאנים התאנים הטבות טבות מאד והרעות רעות מאד
Domini verbum fuit Et .malitiam propter *comedentur* non quæ
4 אשר לא־תאכלנה מרע: ויהי דבר־יהוה
ficus ſicut , Iſrael Deus Dominus dixit Sic : dicendo ,me ad
5 אלי לאמר: כה־אמר יהוה אלהי ישראל כתאנים
,Jehudah tranſmigrationem faciam cognoſcere ſic : hæ bonæ
הטבות האלה כן־אכיר את־גלות יהודה
.bonum in Chaſdim terram iſto loco de emiſi quam
אשר שלחתי מן־המקום הזה ארץ כשדים לטובה:
terram in eos reducam & ,bonum in eos ſuper meũ oculum ponam Et
6 ושמתי עיני עליהם לטובה והשבתים על־הארץ
.evellam non & ,eos plantabo & : deſtruam non & ,eos ædificabo & ; hanc
הזאת ובניתים ולא אהרס ונטעתים ולא אתוש:
erunt & ,Dominus *ego* quòd , me *ſciendum ad* cor eis dabo Et
7 ונתתי להם לב לדעת אתי כי אני יהוה והיו־
revertentur quia : Deum in eis ero ego & ,populum in mihi
לי לעם ואנכי אהיה להם לאלהים כי־ישבו
comedentur non quæ , malæ ficus ſicut Et .ſuo corde toto in me ad
8 אלי בכל־לבם: וכתאנים הרעות אשר לא־תאכלנה
Sidchijahu dabo Sic : Dominus dixit ſic quia ,malitiã propter
מרע כי־כה אמר יהוה כן אתן את־צדקיהו
, Jeruſalaim reſiduum & ,ejus principes & , Jehudah regem
מלך־יהודה ואת־שריו ואת שארית ירושלם
.Ægypti terra in *habitantes* & , hac urbe in *remanentes*
הנשארים בארץ הזאת והישבים בארץ מצרים:
; terræ regnis omnibus ,malum in ,commotionem in eos dabo Et
9 ונתתים לזועה לרעה לכל ממלכות הארץ
omnibus in maledictionem & ,*dicterium* in ,parabolam in & ,opprobrium in
לחרפה ולמשל לשנינה ולקללה בכל־
eis in mittam Et .*illuc* eos *expuli quò* locis
10 המקמות אשר־אדיחם שם: ושלחתי בם את־
deſuper eos conſumere ad uſque ,peſtem & , famem , gladium
החרב את־הרעב ואת־הדבר עד־תמם מעל
.eorum patribus & , eis dedi quam , *humo*
האדמה אשר־נתתי להם ולאבותיהם:

CAP. XXV. כה

, Jehudah populum omnem ſuper Irmejahu ad fuit quod Verbum
1 הדבר אשר־היה על־ירמיהו על־כל־עם יהודה
, Jehudah regis Joſijahu filii Jehojachim quarto anno in
בשנה הרבעית ליהויקים בן־יאשיהו מלך יהודה
.Babel regis Nebuchadreſar primus annus ipſe
היא השנה הראשנית לנבוכדראצר מלך בבל:
populum omnem ad propheta Irmejahu eſt locutus Quod
2 אשר דבר ירמיהו הנביא על־כל־עם
: dicendo , Jeruſalaim habitatores univerſos ad & , Jehudah
יהודה ואל כל־ישבי ירושלם לאמר:

Verſio VULG. LAT.

CAP. XXIV.

1 Oſtendit mihi Dominus: &
ecce duo calathi pleni ficis, poſiti
ante templum Domini, poſt-
quàm tranſtulit Nabuchodonoſor
rex Babylonis Jechoniam filium
Joakim regem Juda, & principes
ejus, & fabrum, & incluſorem,
de Jeruſalem, & adduxit
2 eos in Babylonem. Calathus unus
ficus bonas habebat nimis, ut
ſolent ficus eſſe primi temporis:
& calath⁹ unus ficus habebat malas
nimis, quæ comedi non poterant,
3 eò quòd eſſent malæ. Et
dixit Dominus ad me; Quid tu
vides, Jeremia? Et dixi; Ficus,
ficus bonas, bonas valdè; & malas,
malas valdè, quæ comedi non
4 poſſunt, eò quòd ſint malæ. Et
factum eſt verbum Domini ad
5 me, dicens; Hæc dicit Dominus
De⁹ Iſrael; Sicut fic⁹ hæ bonæ:
ſic cognoſcam tranſmigrationem
Juda, quam emiſi de loco
iſto in terram Chaldæorum,
6 in bonum. Et ponam oculos
meos ſuper eos ad placandum,
& reducam eos in terram hanc:
& ædificabo eos, & non deſtruam:
& plantabo eos, & non
7 evellam. Et dabo eis cor ut
ſciant me, quia ego ſum Domin⁹:
& erunt mihi in populum, &
ego ero eis in Deum: quia revertentur
ad me in toto corde
8 ſuo. Et ſicut ficus peſſimæ, quæ
comedi non poſſunt, eò quòd
ſint malæ: hæc dicit Dominus;
Sic dabo Sedeciam regem Juda,
& principes ejus, & reliquos de
Jeruſalem, qui remanſerunt in
urbe hac, & qui habitant in terra
9 Ægypti. Et dabo eos in vexationem,
afflictionémque omnibus
regnis terræ; in opprobrium,
& in parabolam, & in
proverbium, & in maledictionem
in univerſis locis, ad quæ
10 ejeci eos. Et mittam in eis gladium,
& famem, & peſtem; donec
conſumantur de terra, quam
dedi eis, & patribus eorum.

CAP. XXV.

1 Verbum, quod factum eſt ad
Jeremiam de omni populo Juda,
in anno quarto Joakim filii
Joſiæ regis Juda, (ipſe eſt annus
primus Nabuchodonoſor regis
2 Babylonis,) Quod locutus eſt
Jeremias propheta ad omnem
populum Juda, & ad univerſos
habitatores Jeruſalem, dicens;

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. κδ′.

1 (α) Ἔδειξέ μοι κύριος δύο καλάθους σύκων,
κειμένους κατὰ πρόσωπον ναοῦ κυρίου,
μετὰ τὸ ἀποικίσαι Ναβουχοδονόσορ βασιλέα
Βαβυλῶνος τὸν Ἰεχονίαν υἱὸν Ἰωακεὶμ
βασιλέα Ἰούδα, καὶ τοὺς ἄρχοντας (β),
καὶ τοὺς τεχνίτας, καὶ τοὺς δεσμώτας,
καὶ τοὺς πλουσίους ἐξ Ἱερουσαλήμ, καὶ ἤγαγεν
2 αὐτοὺς εἰς Βαβυλῶνα. Ὁ κάλαθος ὁ εἷς
σύκων χρηστῶν σφόδρα, ὡς τὰ σύκα τὰ
πρώϊμα· καὶ ὁ κάλαθος ὁ ἕτερος σύκων
πονηρῶν σφόδρα, ἃ οὐ βρωθήσεται ἀπὸ
3 πονηρίας αὐτῶν. Καὶ εἶπε κύριος πρὸς
μὲ, Τί σὺ ὁρᾷς Ἱερεμία; καὶ εἶπα, Σύκα·
(γ) σύκα τὰ χρηστὰ, χρηστὰ λίαν·
καὶ τὰ πονηρὰ, πονηρὰ λίαν, ἃ οὐ βρωθήσεται
4 ἀπὸ πονηρίας αὐτῶν. Καὶ ἐγένετο
5 λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, Τάδε
λέγει κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, Ὡς τὰ
σύκα τὰ χρηστὰ ταῦτα, οὕτως ἐπιγνώσομαι
τοὺς ἀποικισθέντας (δ) Ἰουδαίους, οὓς
(ε) ἐξαπέσταλκα ἐκ τοῦ τόπου τούτου εἰς
6 γῆν Χαλδαίων εἰς ἀγαθά. Καὶ στηριῶ
τοὺς ὀφθαλμούς μου ἐπ᾽ αὐτοὺς εἰς ἀγαθά.
καὶ ἀποκαταστήσω αὐτοὺς εἰς τὴν γῆν
ταύτην εἰς ἀγαθά· καὶ ἀνοικοδομήσω αὐτοὺς,
καὶ οὐ μὴ καθελῶ αὐτοὺς, καὶ καταφυτεύσω
7 αὐτοὺς, καὶ οὐ μὴ ἐκτίλω. Καὶ
δώσω αὐτοῖς καρδίαν τοῦ εἰδέναι αὐτοὺς
ἐμὲ, ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος, καὶ ἔσονταί
μοι εἰς λαὸν, καὶ ἐγὼ ἔσομαι αὐτοῖς εἰς
θεὸν, ὅτι ἐπιστραφήσονται ἐπ᾽ ἐμὲ ἐξ
8 ὅλης τῆς καρδίας αὐτῶν. Καὶ ὡς τὰ σύκα
τὰ πονηρὰ, ἃ οὐ (ζ) βρωθήσονται ἀπὸ πονηρίας
αὐτῶν, τάδε λέγει κύριος, Οὕτως
παραδώσω τὸν Σεδεκίαν βασιλέα Ἰούδα,
καὶ τοὺς μεγιστᾶνας αὐτοῦ, καὶ τὸ κατάλοιπον
Ἱερουσαλὴμ τοὺς ὑπολελειμμένους ἐν
τῇ (η) γῇ ταύτῃ καὶ τοὺς κατοικοῦντας ἐν
9 Αἰγύπτῳ. Καὶ δώσω αὐτοὺς εἰς διασκορπισμὸν
εἰς πάσας τὰς βασιλείας τῆς γῆς,
καὶ ἔσονται εἰς ὀνειδισμὸν, καὶ εἰς παραβολὴν,
καὶ εἰς μῖσος, καὶ εἰς κατάραν ἐν
10 παντὶ τόπῳ οὗ ἔξωσα αὐτοὺς ἐκεῖ. Καὶ
ἀποστελῶ εἰς αὐτοὺς (θ) τὸν λιμὸν, καὶ τὸν θάνατον,
καὶ τὴν μάχαιραν, ἕως ἂν ἐκλείπωσιν
ἀπὸ τῆς γῆς, ἧς ἔδωκα αὐτοῖς.

MS.A. (α) Καὶ ἔδειξέν (β) βασιλέως Ἰούδα, καὶ (γ) καὶ τὰ σύκα (δ) Ἰούδα, (ε) ἐξαπέσταλκας (ζ) βρωθήσεται (η) πόλει (θ) τὴν

ΚΕΦ. κε′.

1 Ὁ ΛΟ΄ΓΟΣ Ὁ (α) ΓΕΝΟ΄ΜΕΝΟΣ
ΠΡΟ΄Σ ἹΕΡΕΜΙ΄ΑΝ ἐπὶ πάντα τὸν
λαὸν Ἰούδα, ἐν τῷ ἔτει τῷ τετάρ-
2 τῳ τοῦ Ἰωακεὶμ υἱοῦ Ἰωσία βασιλέως
Ἰούδα, Ὃν ἐλάλησε πρὸς πάντα τὸν
λαὸν Ἰούδα, καὶ πρὸς τοὺς κατοικοῦντας
Ἱερουσαλὴμ, λέγων,

MS.A. (α) ΓΕΝΑ΄ΜΕΝΟΣ

CAP. XXIV.

Oſtendit mihi Dominus duos 1
calathos ficuum poſitos ad faciem
templi Domini; poſtquàm
tranſtulit Nabuchodonoſor rex
Babylonis Jechoniam filium Joacim
regem Juda, & principes,
& artifices, & vinctos, & divites
ex Hieruſalem, & adduxit
eos in Babylonem. Calathus 2
unus ficuum bonarum valdè,
ſicut ficus primi temporis:
& calathus alter ficuum malarum
valdè, quæ non comedentur
præ malitia ſua. Et dixit 3
Dominus ad me; Quid tu vides,
Hieremia? Et dixi, Ficus:
ficus bonas, bonas nimis; & malas,
malas nimis, quæ non comedentur
præ malitia ſua. Et fa- 4
ctum eſt ad me verbum Domini,
dicens; Hæc dicit Dominus De- 5
us Iſrael; Sicut ficus hæ bonæ;
ſic cognoſcam Judæos, qui tranſ-
migrârunt, quos emiſi de loco
iſto in terram Chaldæorum, in
bona. Et firmabo oculos meos 6
ſuper eos in bona: & reſtituam
eos in terram hanc in bona: et
reædificabo eos, & non deſtru-
am eos: & plantabo eos, & non
evellam. Et dabo eis cor, ut 7
ſciant me; quia ego ſum Domi-
nus: & erunt mihi in populum:
& ego ero eis in Deum: quia
revertentur ad me ex toto corde
ſuo. Et ſicut ficus peſſimæ, quæ 8
non comedentur præ malitia ſua,
hæc dicit Dominus; Sic tradam
Sedeciam regem Juda, & prin-
cipes ejus, & reſiduum Hieru-
ſalem, qui remanſerunt in terra
hac, & qui habitant in Ægypto.
Et dabo eos in diſperſionem in 9
omnia regna terræ: & erunt in
opprobrium, et in parabolam, et
in odium, et in maledictionem in
omni loco, quò ejeci eos illuc. Et 10
mittam in eos famem, et mor-
tem, et gladium; donec de-
ficiant de terra, quam dedi
(a) eis.

CAP. XXV.

Verbum, quod factum eſt ad 1
Hieremiam ſuper omnem populũ
(a) Juda, in anno quarto Joacim
filii Joſiæ regis Juda:
Quod loquutus eſt ad omnem 2
populum Juda, et ad habitatores
Hieruſalem, dicens;

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

כד

1 אחזיני יי והא תרין סלי תינין מחתין מקדם היכלא דיי בתר דאגלי נבוכד נצר מלכא
דבבל ית יכניה בר יהויקים מלך שבטא דבית יהודה וית רברבי יהודה וית אומניא
2 וית תרעיא מירושלם ואובילנון לבבל: סלא חדא תינין טבא לחדא כתינין בכירין
3 וסלא חד תינין בישין לחדא ודבישין בישן לחדא דלא מתאכלן מבישו: ואמר יי לי
מה את חזי ירמיה ואמרית תיניא טבתא טבן לחדא ודבישן בישן לחדא דלא
4 5 מתאכלין מבישו: והוה פתגם נבואה מקדם יי עמי למימר: כדנן אמר יי אלהא
דישראל כתיניא טבתא האלן כן אשתמודע ית גלות יהודה דאגליתי מן אתרא הדין
6 לארע כסדאי לטבתא: ואשוי מימרי עליהון לטבא ואתיבנון לארעא הדא ואבנינון
7 ולא אפגר ואקימנון ולא אטלטל: ואתן להון לבא למידע דחלתי ארי אנא יי ויהון
8 קדמי לעם ואנא אהוי להון לאלה ארי יתובון לפולחני בכל לבהון: וכתיניא בישתא
דלא מתאכלא מבישו ארי כדנן אמר יי כן אתן ית צדקיה מלך שבטא דבית יהודה
וית רברבוהי וית שארא דירושלם דאשתארו בארעא הדא ודיתבין בארעא דמצרים:
9 ואתנינון לזיע ולבישא לכל מלכות ארעא לחסודין ולמתל ולשועי וללוטא בכל
10 אתריא דאגלנון לתמן: ואגרי בהון ית דקטלין בחרבא בכפנא ובמותא עד דיסופון
מעל ארעא דיהבית להון ולאבהתהון:

כה

1 פתגם נבואה דהוה עם ירמיה על כל עמא דבית יהודה בשתא רביעיתא ליהויקים
בר יאשיה מלך שבטא דבית יהודה היא שתא קדמיתא לנבוכד נצר מלכא דבבל:
2 דאתנבי ירמיה נביא על כל עמא דבית יהודה ועל כל יתבי ירושלם למימר:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XXIV.

Oſtendit mihi Dñs; & ecce duo calathi pleni ficubus poſiti erant co- 1
ram templo Dñi, poſtquam tranſtulit Nabuchodonoſor rex Babylonis Je-
choniam filium Joachim, regem trib⁹ dom⁹ Juda, & principes Juda, & arti-
fices, & janitores de Jeruſalem, & adduxit eos in Babylonem. Calath⁹ unus 2
habebat ficus bonas valde, ſicut ficus primitiarum: & calathus alter ficus
valde malas habebat; quæ *vero malæ erant, valde malæ erant ut* non *poſ-*
ſent comedi præ malitia. Et dixit Dñs ad me: Quid tu vides Jeremia? 3
Et dixi: Ficus, ficus bonas, bonas valdè; & malas, malas valdè, quæ
comedi non poſſunt præ malitia. Et factum eſt verbum prophetiæ à facie 4
Dñi ad me, dicens: Hæc dicit Dñs Deus Iſrael: Sicut ficus bonæ iſtæ, 5
ſic cognoſcam tranſmigrationem Juda, quam tranſmigrare feci à loco iſto
in terram Chaldæorum in bonum. Et ponam ſuper eos verbum meum in 6
bonum: & reducam eos in terram hanc, & ædificabo eos & non de-
ſtruam, & ſtabiliam eos, & non transferam eos. Et dabo eis cor ut ſciant 7
timorem mei; quia ego Dñs. Et erunt coram me in populum, & ego ero
eis in Deum; quia convertentur ad cultum meum in toto corde ſuo. Et 8
ſicut fic⁹ malæ quæ comedi non poſſunt præ malitia; hæc enim dicit Dñs: Sic
dabo Sedechiam regem tribus domus Juda, & principes ejus, & reliquias
Jeruſalem, quæ remanſerunt in terra hac, & quæ habitant in terra Ægypti.
Et dabo eos in commotionem, & in malum omnibus regnis terræ; in op- 9
probria & in parabolam, in fabulam, & in maledictionem in omnibus lo-
cis, ad quæ tranſmigrare eos feci. Et immittam in eos occidentes gladio, & 10
fame, & *peſte*, donec conſumantur de terra, quam dedi eis & patrib⁹ eorũ.

CAP. XXV.

Verbum prophetiæ quod factum eſt ad Jeremiam ſuper omnem popu- 1
lum domus Juda in anno quarto Joachim filii Joſiæ regis tribus domus
Juda; ipſe eſt annus primus Nabuchodonoſor regis Babylonis. Quod 2
prophetavit Jeremias propheta ſuper omnem populum domus Juda, & ſu-
per omnes habitatores Jeruſalem, dicens:

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܕ *

ܚܘܝܢܝ ܡܪܝܐ ܬܪܬܝܢ ܡܣܝܡܢ ܕܬܐܢܐ ܩܦܦܝܢ ܩܕܡ 1
ܗܝܟܠܗ ܕܡܪܝܐ. ܡܢ ܒܬܪ ܕܫܒܐ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ : ܠܝܘܟܢܝܐ ܒܪ ܝܘܝܩܝܡ
ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܠܐܘܡܢܐ ܘܠܓܢܒܪܐ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ: ܘܐܘܒܠ ܐܢܘܢ ܠܒܒܠ. * ܘܩܦܦܬܐ 2
ܚܕܐ ܕܬܐܢܐ ܕܛܒܢ ܛܒ. ܐܝܟ ܬܐܢܐ ܒܟܘܪܐ. ܘܩܦܦܬܐ ܐܚܪܬܐ ܕܬܐܢܐ ܕܒܝܫܢ ܛܒ. ܕܠܐ ܡܬܐܟܠܢ
ܡܢ ܒܝܫܘܬܗܝܢ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܡܢܐ ܚܙܐ ܐܢܬ ܐܪܡܝܐ. ܘܐܡܪܬ. ܬܐܢܐ. ܬܐܢܐ ܕܛܒܢ 3
ܛܒ. ܘܕܒܝܫܢ ܒܝܫܢ ܛܒ. ܕܠܐ ܡܬܐܟܠܢ ܡܢ ܒܝܫܘܬܗܝܢ. * ܘܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܗ 4
ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܝܟ ܬܐܢܐ ܛܒܬܐ ܗܠܝܢ. ܗܟܢܐ 5
ܐܫܬܘܕܥ ܠܫܒܝܬܐ ܕܝܗܘܕܐ ܕܫܕܪܬ ܡܢ ܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܠܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ. ܠܛܒܬܐ. * ܘܐܣܝܡ 6
ܥܝܢܝ ܥܠܝܗܘܢ ܠܛܒܬܐ. ܘܠܐ ܠܒܝܫܬܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܗܦܟ ܐܢܘܢ ܠܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܘܐܒܢܐ
ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܐܣܬܘܪ. ܘܐܢܨܒ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܐܥܩܘܪ. * ܘܐܬܠ ܠܗܘܢ ܠܒܐ ܕܢܕܥܘܢܢܝ. ܕܐܢܐ 7
ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܘܢܗܘܘܢ ܠܝ ܠܥܡܐ. ܘܐܢܐ ܐܗܘܐ ܠܗܘܢ ܠܐܠܗܐ. ܟܕ ܢܬܘܒܘܢ ܠܘܬܝ ܡܢ ܟܠܗ
ܠܒܗܘܢ. * ܘܐܝܟ ܬܐܢܐ ܒܝܫܬܐ. ܕܠܐ ܡܬܐܟܠܢ ܡܢ ܒܝܫܘܬܗܝܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܟܢܐ 8
ܐܫܠܡܝܘܗܝ ܠܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܠܪܘܪܒܢܘܗܝ. ܘܠܫܪܟܐ ܕܥܡܐ ܕܐܫܬܚܪܘ ܒܡܕܝܢܬܐ
ܗܕܐ. ܘܕܝܬܒܝܢ ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܘܐܬܠ ܐܢܘܢ ܠܙܘܥܬܐ ܘܠܫܒܝܬܐ ܘܠܒܝܫܬܐ. ܒܟܠܗܝܢ 9
ܡܠܟܘܬܗ ܕܐܪܥܐ. ܠܚܣܕܐ ܘܠܡܬܠܐ ܘܠܡܘܣܩܐ ܘܠܠܘܛܬܐ. ܒܟܠܗܘܢ ܐܬܪܘܬܐ
ܕܐܒܕܪ ܐܢܘܢ ܠܬܡܢ. * ܘܐܫܕܪ ܒܬܪܗܘܢ ܚܪܒܐ ܘܟܦܢܐ ܘܡܘܬܢܐ. ܥܕܡܐ ܕܢܣܘܦܘܢ 10
ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܝܗܒܬ ܠܗܘܢ ܘܠܐܒܗܝܗܘܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܗ *

* ܦܬܓܡܐ ܕܗܘܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܥܠ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܒܫܢܬܐ ܪܒܝܥܝܬܐ ܕܝܘܝܩܝܡ ܒܪ 1
ܝܘܫܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܗܝ ܕܗܝ ܫܢܬܐ ܩܕܡܝܬܐ ܕܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. * ܕܐܡܪ ܐܪܡܝܐ
ܢܒܝܐ ܥܠ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܟܕ ܐܡܪ. 2

CAP. XXIV.

Oſtendit mihi Dominus duas ficuum 1
fiſcellas poſitas ante templum Domini, poſt-
quam captivos duxiſſet Nebuchadnoſar rex
Babelis Jochaniam filium Jojacimi regis Judæ,
& artifices, atque milites de Jeruſalem,
& perduxiſſet eos in Babelem. Fiſcella una 2
erat ficuum optimarum, quales ſunt ficus
præcoces: altera verò fiſcella ficuum peſſimarum,
quæ comedi nequibant præ ſua pravitate.
Tum dixit mihi Dominus, Quid vidiſti 3
Jeremia? Reſpondi, Ficus; quarum bonæ,
optimæ ſunt; malæ verò, peſſimæ, ita ut
comedi nequeant præ ſua pravitate. Deinde 4
factus eſt ad me ſermo Domini, dicendo; Sic 5
dicit Dominus Deus Iſraelis, Ut ficus bonas
iſtas, ita captivitatem Judæ quam ex hoc loco
amandavi in terram Chaldæorum, in bonum
recognoſcam: Adjiciam oculos meos ad illos 6
in bonum, non in malum, dicit Dominus: reducam
eos in locum iſtum: ædificabo eos,
non demoliar: plantabo eos, non evellam.
Inditurus enim ſum illis cor ad cognoſcendum 7
me, quòd ego ſim Dominus: erúntque
mihi populus, & ego ero illis Deus: quum
reverſi fuerint ad me ex toto corde ſuo. E 8
contra, ut ficus malas quæ præ ſua pravitate
comedi nequeunt, (ita dicit Dominus) ita
tradam Sedeciam regem Judæ, principes ejus,
& reliquum populū, tam eos qui remanent in
in hac civitate, quam qui cōmorantur in terra
Ægypti: Et exponam eos motui, transmigrationi, 9
& malo inter omnia regna terræ;
ignominiæ & fabulæ, vituperio, & maledictioni
in cunctis locis per quæ diſperſero eos:
Mittámq; poſt eos gladium, famē, ac peſtem, 10
donec abſumam eos de terra quam dedi ipſis
& patribus eorum.

CAP. XXV.

Sermo qui fuit ad Jeremiam de toto populo 1
Judæ, anno quarto Jojacimi filii Joſiæ regis
Judæ; (is eſt annus primus Nebuchadnoſaris
regis Babelis) Quem locutus eſt Jeremia 2
propheta apud univerſum populum Judæ, &
apud omnes cives Jeroſolymæ, dicendo;

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* الفصل الرابع والعشرون *   * الاصحاح الخامس عشر *

* واراني الرب سلتين موضوعتين لوجه هيكل الرب * من بعد ما سبي بختنصر ملك بابل 1
يوحانيا بن يواقيم ملك يهودا * ورؤساء ملك يهودا * والصناع والاسري والاغنياء من ايروسليم *
وساقهم الي بابل * السلة الواحدة تينا طيبا جدا مثل التين البدري الصبحي * والسلة 2
الثانية تينا رديا جدا لا يوكل من رداءته * وقال الرب لي * ماذا تري انت يا ارميا * فقلت 3
تينا * والتين الطيب طيبا جدا * والتين الردي ردي جدا لا يوكل من رداءته * وكان 4
قول الرب لي قايلا * هكذا يقول الرب اله اسرايل * مثل هذا التين الطيب هكذا اعرف 5
الذين سبيوا من يهودا الذين ارسلتهم من هذا الموضع الي ارض الكلدانيين للخيرات *
* واثبت عيني عليهم للخيرات * واردهم الي هذه الارض للخيرات * وابنيهم ولا اهدمهم * واغرسهم 6
ولا اقلعهم * واعطيهم قلبا ليعرفوني اني انا الرب * ويكونون لي شعبا واكون انا لهم الها * 7
لان يرجعون الي من كل قلبهم * ومثل هذا التين الردي الذي لا يوكل من رداءته * 8
هكذا يقول الرب * هكذا اسلم صدقيا ملك يهودا وعظماءه وبقية اسرايل المبقيين
في هذه المدينة والسكان بمصر * وادفعهم للتفرق في كل مملكات الارض * ويصيرون للتعيير 9
وللمثل وللبغضة وللعنة بكل موضع حيث اقصيهم هناك * وارسل عليهم الجوع والموت 10
والسيف * الي ان يفنوا من الارض التي اعطيتها لهم *

* الفصل الخامس والعشرون *

* القول الصاير الي ارميا علي كل شعب يهودا * في السنة الرابعة ليواقيم بن يوسيا ملك يهودا * 1
* الذي تكلم به مع كل يهودا ومع كل السكان بايروسليم قايلا * 2

CAP. XXIV.

Textus decimus quintus.

Deinde oſtendit mihi Dominus duos 1
calathos expoſitos faciei templi Domini,
poſtquam captivum duxit Bochtonaſſar
rex Babelis Jochaniam Joacimi filium
regem Judæ unà cum principibus
regis Judæ, opificibus, mancipiis, atque divitibus
è Jeruſalem, & abduxit eos in
Babelem. Calathus unus continebat *ficus* 2
jucundiſſimas, quales ſunt ficus antelucanæ
matutinæ: calathus autem ſecundus,
ficus admodum ingratas, ob pravitatem
ſuam incomeſtibiles. Dicenti autem 3
Domino mihi, Quid vides tu O Jeremia?
Dixi, Ficus; ac bonas quidem ficus,
jucundiſſimas; malas autem ficus,
ingratiſſimas, ob pravitatem ſuam incomeſtibiles.
Tum fuit ad me ſermo Domini 4
dicentis; Sic ait Dominus Deus Iſraelis; 5
ut has ficus jucundas, ita illos
qui captivi abducti ſunt ex Juda, quos
ablegavi ex hoc loco in terram Chaldæorum,
ad bona recognoſcam: Et firmos 6
habebo oculos meos ſuper illos in bona:
reducam illos in terram iſtam in bona: ædificabo
illos, ac non deſtruam: plantabo,
ac non evellam: Et dabo illis cor ut cog- 7
noſcant me, me eſſe Dominū: & erunt mihi
populus, eróque ego ipſis Deus; quia reverſuri
ſunt ad me ex toto corde ſuo.
Quemadmodum verò has ficus malas, 8
quæ comedi nequeunt ob pravitatē ſuam,
(ſic ait Dominus) ita tradam Sedeciam
regem Judæ, principes ejus, & reliquias
Iſraelitarum remanentium hac in urbe &
habitantium in Ægypto; Tradam, inquam, 9
eos diſperſioni in omnia regna terræ;
& exponentur infamiæ, proverbio,
odio, & maledictioni in omni loco in
quem diſperdam illos: Et mittam in 10
eos famem, mortem, & gladium, quoad
conſumantur de terra quam dedi eis.

CAP. XXV.

Sermo habitus ad Jeremiam de 1
univerſo populo Judæ, anno quarto
Joacimi filii Joſiæ regis Judæ,
Quem retulit univerſis Judæis, 2
& omnibus habitantibus in Jeruſalem,
dicens;

ירמיה: כה

, Jehudah regis Amon filii Josijahu anno decimo tertio A
מִן־שְׁלֹשׁ עֶשְׂרֵה שָׁנָה לְיֹאשִׁיָּהוּ בֶן־אָמוֹן מֶלֶךְ יְהוּדָה 3
fuit , anno vigesimo & tertio jam , hanc diem ad usque &
וְעַד הַיּוֹם הַזֶּה זֶה שָׁלֹשׁ וְעֶשְׂרִים שָׁנָה הָיָה
, surgendo manè , vos ad sum locutus & , me ad Domini verbum
דְבַר־יְהוָה אֵלָי וָאֲדַבֵּר אֲלֵיכֶם אַשְׁכֵּים
vos ad Dominus misit Et .audistis non & , loquendo &
וְדַבֵּר וְלֹא שְׁמַעְתֶּם׃ וְשָׁלַח יְהוָה אֲלֵיכֶם 4
non & , mittendo & ,surgendo mane , prophetas suos servos omnes
אֶת־כָּל־עֲבָדָיו הַנְּבִאִים הַשְׁכֵּם וְשָׁלֹחַ וְלֹא
:dicendum Ad.audiendum ad vestram aurem inclinâstis neque , audistis
שְׁמַעְתֶּם וְלֹא־הִטִּיתֶם אֶת־אָזְנְכֶם לִשְׁמֹעַ׃ לֵאמֹר 5
,vestrorum *studiorū* malitia à & ,mala sua via à quisque nunc Revertimini
שׁוּבוּ־נָא אִישׁ מִדַּרְכּוֹ הָרָעָה וּמֵרֹעַ מַעַלְלֵיכֶם
, vobis Dominus dedit quam *humum* super habitabitis &
וּשְׁבוּ עַל־הָאֲדָמָה אֲשֶׁר נָתַן יְהוָה לָכֶם
ambuletis ne Et .seculum in usque &,seculo à , vestris patribus &
וְלַאֲבוֹתֵיכֶם לְמִן־עוֹלָם וְעַד־עוֹלָם׃ וְאַל־תֵּלְכוּ 6
: eis vos incurvetis & , eis *serviendum ad* alienos Deos post
אַחֲרֵי אֱלֹהִים אֲחֵרִים לְעָבְדָם וּלְהִשְׁתַּחֲוֹת לָהֶם
non & , vestrarum manuum *facto in* me faciatis irasci ne &
וְלֹא־תַכְעִיסוּ אוֹתִי בְּמַעֲשֵׂה יְדֵיכֶם וְלֹא
, Dominus dixit , *me ad audivistis* non Et .vobis malefaciam
אָרַע לָכֶם׃ וְלֹא־שְׁמַעְתֶּם אֵלַי נְאֻם־יְהוָה 7
malum in vestrarum manuum *opere in* me faceretis irasci ut
לְמַעַן הַכְעִסוּנִי בְּמַעֲשֵׂה יְדֵיכֶם לְרַע
quòd eo Pro : exercituum Dominus dixit sic Propterea .vobis
לָכֶם׃ לָכֵן כֹּה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת יַעַן אֲשֶׁר 8
assumam & , *mittens* ego Ecce *: mea verba audivistis* non
לֹא־שְׁמַעְתֶּם אֶת־דְּבָרָי׃ הִנְנִי שֹׁלֵחַ וְלָקַחְתִּי אֶת־ 9
Nebuchadresar ad & , Dominus ait ,Aquilonis *familias* universas
כָּל־מִשְׁפְּחוֹת צָפוֹן נְאֻם־יְהוָה וְאֶל־נְבוּכַדְרֶאצַּר
,istam terram ad eos adducam & , meum servum Babel regem
מֶלֶךְ־בָּבֶל עַבְדִּי וַהֲבִאֹתִים עַל־הָאָרֶץ הַזֹּאת
: circum istas *gentes* omnes ad & , ejus habitatores ad &
וְעַל־יֹשְׁבֶיהָ וְעַל כָּל־הַגּוֹיִם הָאֵלֶּה סָבִיב
solitudines in &,sibilū in & ,stuporē in eos posā &,eos *internecione delebo* &
וְהַחֲרַמְתִּים וְשַׂמְתִּים לְשַׁמָּה וְלִשְׁרֵקָה וּלְחָרְבוֹת
; lætitiæ vocem & , gaudii vocem eis ex perdere faciam Et *.seculi*
עוֹלָם׃ וְהַאֲבַדְתִּי מֵהֶם קוֹל שָׂשׂוֹן וְקוֹל שִׂמְחָה 10
.lucernæ lumen & ,molarum vocem , sponsæ vocem & , sponsi vocem
קוֹל חָתָן וְקוֹל כַּלָּה קוֹל רֵחַיִם וְאוֹר נֵר׃
servient & ,stuporem in ,solitudinē in hæc terra universa erit Et
וְהָיְתָה כָּל־הָאָרֶץ הַזֹּאת לְחָרְבָּה לְשַׁמָּה וְעָבְדוּ 11
erit Et .annis septuaginta Babel regi istæ gentes
הַגּוֹיִם הָאֵלֶּה אֶת־מֶלֶךְ בָּבֶל שִׁבְעִים שָׁנָה׃ וְהָיָה 12
super & ,Babel regem *super* visitabo ,*annos* septuaginta *implere secundùm*
כִמְלֹאות שִׁבְעִים שָׁנָה אֶפְקֹד עַל־מֶלֶךְ־בָּבֶל וְעַל־
terram *super* & ,eorum iniquitatem,Dominus dixit , ipsam gentem
הַגּוֹי הַהוּא נְאֻם־יְהוָה אֶת־עֲוֺנָם וְעַל־אֶרֶץ
adducam Et *.seculi* solitudines in illam ponam & : Chasdim
כַּשְׂדִּים וְשַׂמְתִּי אֹתוֹ לְשִׁמְמוֹת עוֹלָם׃ וְהֵבֵאוֹתִי 13
; eam *super* sum locutus quæ mea verba omnia ipsam terram super
עַל־הָאָרֶץ הַהִיא אֶת־כָּל־דְּבָרַי אֲשֶׁר־דִּבַּרְתִּי עָלֶיהָ
Irmejahu prophetavit quod , hoc libro in scriptum omne
אֵת כָּל־הַכָּתוּב בַּסֵּפֶר הַזֶּה אֲשֶׁר־נִבָּא יִרְמְיָהוּ
.gentes omnes adversum
עַל־כָּל־הַגּוֹיִם׃

Verſio VULG. LAT.

3 A tertio decimo anno Joſiæ filii Ammon regis Juda uſque ad diem hanc, iſte tertius & vigeſimus annus; factum eſt verbum Domini ad me, & locutus ſum ad vos de nocte conſurgens, & 4 loquens: & non audîſtis. Et miſit Dominus ad vos omnes ſervos ſuos prophetas, conſurgens diluculò, mitténſque: & non audîſtis, neque inclinâſtis aures 5 veſtras ut audiretis, Cùm diceret; Revertimini unuſquiſque à via ſua mala, & à peſſimis cogitationibus veſtris: & habitabitis in terra, quam dedit Dominus vobis, & patribus veſtris, à ſe-6 culo & uſque in ſeculum. Et nolite ire poſt deos alienos, ut ſerviatis eis, adoretíſque eos: neque me ad iracundiam provocetis in operibus manuum veſtrarum, & non affligam vos. 7 Et non audîſtis me, dicit Dominus, ut me ad iracundiam provocaretis in operibus manuum veſtrarum, in malum veſtrum. 8 Propterea hæc dicit Dominus exercituum; Pro eo quòd non 9 audîſtis verba mea: Ecce ego mittam, & aſſumam univerſas cognationes Aquilonis, ait Dominus, & Nabuchodonoſor regem Babylonis ſervum meum: & adducam eos ſuper terram iſtam, & ſuper habitatores ejus, & ſuper omnes nationes, quæ in circuitu illius ſunt: & interficiam eos, & ponam eos in ſtuporem & ſibilum, & in ſolitudi-10 nes ſempiternas. Perdámque ex eis vocem gaudii, & vocem lætitiæ, vocem ſponſi, & vocem ſponſæ, vocem molæ, & lumen 11 lucernæ. Et erit univerſa terra hæc in ſolitudinem, & in ſtuporem: & ſervient omnes gentes iſtæ regi Babylonis ſeptua-12 ginta annis. Cúmque impleti fuerint ſeptuaginta anni, viſitabo ſuper regem Babylonis, & ſuper gentem illam, dicit Dominus, iniquitatem eorum, & ſuper terram Chaldæorum: & ponam illam in ſolitudines ſempi-13 ternas. Et adducam ſuper terram illam, omnia verba mea, quæ locutus ſum contra eam, omne quod ſcriptum eſt in libro iſto, quæcunque prophetavit Jeremias adverſùm omnes gentes:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

3 Ἐν τρισκαιδεκάτῳ ἔτει (β) Ἰωσία, υἱοῦ Ἀμὼς, βασιλέως Ἰούδα, ϗ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης εἴκοσι ϗ τρία ἔτη, καὶ ἐλάλησα πρὸς ὑμᾶς 4 ὀρθρίζων, καὶ λέγων, Καὶ ἀπέστελλον πρὸς ὑμᾶς τοὺς δούλους μου τοὺς προφήτας, ὄρθρου ἀποστέλλων, καὶ οὐκ εἰσηκούσατε, καὶ οὐ προσέχετε 5 τοῖς ὠσὶν ὑμῶν, Λέγων, Ἀποστράφητε ἕκαστος ἀπὸ τῆς ὁδοῦ αὐτοῦ τῆς πονηρᾶς, καὶ ἀπὸ τῶν πονηρῶν ἐπιτηδευμάτων ὑμῶν, καὶ κατοικήσετε ἐπὶ τῆς γῆς, ἧς ἔδωκα ὑμῖν καὶ τοῖς πατράσιν ὑμῶν, ἀπ' 6 αἰῶνος καὶ ἕως (γ) αἰῶνος. Μὴ πορεύεσθε ὀπίσω θεῶν ἀλλοτρίων, τοῦ δουλεύειν αὐτοῖς, ϗ τοῦ προσκυνεῖν αὐτοῖς, ὅπως μὴ παροργίζητέ με ἐν τοῖς ἔργοις τῶν χειρῶν 7 ὑμῶν, τοῦ κακῶσαι ὑμᾶς. Καὶ οὐκ 8 (δ) ἠκούσατέ μου. Διὰ τοῦτο τάδε λέγει κύριος, Ἐπειδὴ οὐκ ἐπιστεύ-9 σατε τοῖς λόγοις μου, Ἰδοὺ ἐγὼ ἀποστέλλω, ϗ λήψομαι (ε) πατριὰν ἀπὸ Βορρᾶ, καὶ ἄξω αὐτοὺς ἐπὶ τὴν γῆν ταύτην, καὶ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας αὐτὴν, καὶ ἐπὶ πάντα τὰ ἔθνη τὰ κύκλῳ αὐτῆς, (ζ) ϗ ἐξερημώσω αὐτοὺς, καὶ δώσω αὐτοὺς εἰς ἀφανισμὸν, ϗ εἰς συριγμὸν, 10 ϗ εἰς ὀνειδισμὸν αἰώνιον. Καὶ ἀπολῶ ἀπ' αὐτῶν φωνὴν (η) χαρᾶς, καὶ φωνὴν (θ) εὐφροσύνης, φωνὴν νυμφίου, ϗ φωνὴν νύμφης, ὀσμὴν 11 μύρου, καὶ φῶς λύχνου. Καὶ ἔσται πᾶσα ἡ γῆ εἰς ἀφανισμὸν, καὶ δουλεύσουσιν ἐν τοῖς ἔθνεσιν 12 ἑβδομήκοντα ἔτη. Καὶ ἐν τῷ (ι) πληρωθῆναι τὰ ἑβδομήκοντα ἔτη, ἐκδικήσω τὸ ἔθνος ἐκεῖνο, (κ) ϗ θήσομαι αὐτοὺς εἰς ἀφανισμὸν 13 αἰώνιον, Καὶ (λ) ἐπάξω ἐπὶ τὴν γῆν ἐκείνην (μ) πάντας τοὺς λόγους μου, οὓς ἐλάλησα κατ' αὐτῆς, πάντα τὰ γεγραμμένα ἐν τῷ βιβλίῳ τούτῳ·

In tertiodecimo anno Joſiæ, filii Amos, regis Juda, & uſque ad diem hanc, viginti & tres (b) anni: & loquutus ſum ad vos ante lucem ſurgens, & dicens; Et 4 *mittebam ad vos ſervos meos prophetas, diluculò mittens, (& non exaudiſtis, & non attendebatis auribus veſtris) Dicens; Avertimini u-* 5 *nuſquiſque à via ſua peſſima, & à peſſimis ſtudiis veſtris: & habitabitis ſuper terram quam dedi vobis, & patribus veſtris, à ſeculo, & uſque in ſeculum. Nolite ire* 6 *poſt deos alienos, ut ſerviatis eis, adoretiſque eos; ne me ad iracundiam provocetis in operibus manuum veſtrarum, ad affligendum vos: Et non* 7 *audîſtis me. Propterea hæc* 8 *dicit Dominus; Quoniam non credidiſtis verbis meis; Ecce ego mitto, & ſumam* 9 *cognationem ab Aquilone: et adducam eos ſuper terram iſtam, & ſuper habitatores ejus, & ſuper omnes nationes, quæ in circuitu illius ſunt: & deſolabo eos, & dabo eos in perditionem, & in ſibilum, & in opprobrium ſempiternum: Et perdam ex* 10 *eis vocem gaudii, & vocem lætitiæ, vocem ſponſi, & vocem ſponſæ, (c) odorem unguenti, et lumen lucernæ. Et erit univerſa terra in ſo-* 11 *litudinem: et ſervient in gentibus annos ſeptuaginta. Cùmque impleti fuerint ſe-* 12 *ptuaginta anni; ulciſcar gentem illam, et ponam eos in perditionem ſempiternam: Et inducam ſuper terram* 13 *illam omnia verba mea, quæ loquutus ſum contra eam, omnia quæ ſcripta ſunt in libro iſto.*

MS.A. (β) τοῦ βασιλέως (γ) τοῦ αἰῶνος. (δ) εἰσήκουσάν (ε) τὴν πατριὰν (ζ) ἐξερημώσω (η) εὐφροσύνης, (θ) χαρᾶς, (ι) συμπληρωθῆναι (κ) φησὶν κύριος, ϗ (λ) *πατάξω (μ) ἅπαντας

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 מִן תְּלָת עֶשְׂרֵי שְׁנִין לְיֹאשִׁיָּה בַּר אָמוֹן מְלַךְ שִׁבְטָא דְבֵית יְהוּדָה וְעַד יוֹמָא
הָדֵין דְּנָן עֶשְׂרִין וּתְלָת שְׁנִין הֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי וּמַלֵּלִית עִמְּכוֹן
4 מַקְדִּם וּמְמַלֵּל וְלָא קַבֵּלְתּוּן׃ וּשְׁלַח יְיָ לְוָתְכוֹן יָת כָּל עַבְדוֹהִי נְבִיַּיָא מַקְדִּם וּמְשַׁלַּח
5 וְלָא קַבֵּלְתּוּן וְלָא אַרְכֵינְתּוּן יַת אוּדְנְכוֹן לְקַבָּלָא׃ לְמֵימַר תּוּבוּ כְעַן גְּבַר מֵאוֹרְחֵיהּ
בִּישְׁתָא וּמִבִּישׁוּת עוֹבָדֵיכוֹן וְתִיבוּ עַל אַרְעָא דִּיהַב יְיָ לְכוֹן וְלַאֲבָהָתְכוֹן לְמִן עָלְמָא
6 וְעַד עָלְמָא׃ וְלָא תְהָכוּן בָּתַר טַעֲוַת עַמְמַיָּא לְמִפְלַחְהֵן וּלְמִסְגַּד לְהֵין וְלָא תַרְגְּזוּן
7 קֳדָמַי בְּעוֹבָדֵי יְדֵיכוֹן וְלָא אַבְאֵשׁ לְכוֹן׃ וְלָא קַבֵּלְתּוּן לְמֵימְרִי אֲמַר יְיָ בְּדִיל דְּלָא
8 לְאַרְגָּזָא קֳדָמַי בְּעוֹבָדֵי יְדֵיכוֹן לְאַבְאָשָׁא לְכוֹן׃ בְּכֵן כִּדְנָן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת חֲלַף
9 דְּלָא קַבֵּלְתּוּן יַת פִּתְגָמַי׃ הָא אֲנָא שָׁלַח וַאֲדַבַּר יַת כָּל מַלְכְוָת צִפּוּנָא אֲמַר יְיָ
וְלִנְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא דְבָבֶל עַבְדִּי וְאַיְתֵינוּן עַל אַרְעָא הָדָא וְעַל יָתְבָהָא וְעַל כָּל
עַמְמַיָּא הָאִלֵּין סְחוֹר סְחוֹר וְאֶגְמַרְנוּן וַאֲשַׁוֵּינוּן לְצָדוּ וּלְאִשְׁתְּמָמוּ וּלְחָרְבַת עָלַם׃
10 וְאוֹבֵד מִנְּהוֹן קָל בְּיַע וְקָל חֶדְוָא וְקָל חַתְנִין וְקָל כַּלָּן קָל סִיעָן דִּמְשַׁבְּחִין בִּנְהוֹר
11 בּוֹצִין׃ וּתְהֵי כָּל אַרְעָא הָדָא לְחָרְבָא לְצָדוּ וְיִפְלְחוּן עַמְמַיָּא הָאִלֵּין יַת מַלְכָּא
12 דְבָבֶל שַׁבְעִין שְׁנִין׃ וִיהֵי כְּמִשְׁלַם שַׁבְעִין שְׁנִין אַסְעַר עַל מַלְכָּא דְבָבֶל וְעַל עַמָּא
13 הַהוּא אֲמַר יְיָ יַת חוֹבֵיהוֹן וְעַל אֲרַע כַּסְדָּאֵי וַאֲשַׁוֵּי יָתַהּ לְצָדוּת עָלַם׃ וְאַיְתֵי עַל
אַרְעָא הַהִיא יַת כָּל פִּתְגָמַיָּא דִּגְזָרִית עֲלַהּ יַת כָּל דִּכְתִיב בְּסִפְרָא הָדֵין דְּאִתְנַבִּי
יִרְמְיָה עַל כָּל עַמְמַיָּא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

A tertio decimo anno Joſiæ filii Amon regis tribus domus Juda, & uſque 3 in diem hanc, iſte eſt vigeſimus & tertius annus; factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini ad me, & locutus ſum vobiſcum manè conſurgens & loquens, & non obedîſtis. Et miſit Dominus ad vos omnes ſervos 4 ſuos prophetas, manè conſurgens & mittens, & non obedîſtis, nec inclinâſtis aures veſtras ut obediretis. Dicendo: Convertimini nunc unuſ- 5 quiſque à via ſua mala, & à malicia operum veſtrorum, & habitate in terra quam dedit Dominus vobis, & patribus veſtris à ſeculo & uſque in ſeculum. Et non ambuletis poſt idola populorum, ut ſerviatis eis & ado- 6 retis ea, nec irritetis me operibus manuum veſtrarum, & non malè faciam vobis. Et non obediſtis verbo meo, dicit Dominus, ut *non* irri- 7 taretis me operibus manuum veſtrarum ad malefaciendum vobis. Pro- 8 pterea hæc dicit Dñs exercituum: Pro eo quòd non ſuſcepiſtis verba mea; Ecce ego mittam, & accipiam omnia regna Aquilonis, dicit Do- 9 minus, & Nabuchodonoſor regem Babylonis ſervum meum, & adducam eos ſuper terram iſtam, & ſuper habitatores ejus, & ſuper omnes populos iſtos per circuitum, & excîdam eos, & ponam eos in vaſtitatem, & ſtuporem, & in deſolationes perpetuas. Et perdam ex eis vocem gaudii 10 & vocem lætitiæ, vocem ſponſorum & vocem ſponſarum, & vocem cœtuum cantantium ad lumen lucernarum. Et erit omnis terra hæc in deſo- 11 lationem & in vaſtitatem. Et ſervient populi iſti regi Babylonis ſeptuaginta annis. Et erit cùm impleti fuerint ſeptuaginta anni, viſitabo ſuper 12 regem Babylonis, & ſuper populum illum peccata eorum, & ſuper terram Chaldæorum, dicit Dominus: & ponam illam in vaſtitates ſempiternas. Et adducam ſuper terram illam omnia verba quæ decrevi contra eam, 13 omne quod ſcriptum eſt in libro iſto, quod prophetavit Jeremias contra omnes populos.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

3 * ܡܢ ܫܢܬ ܬܠܬܥܣܪܐ ܫܢܝܢ ܠܝܘܫܝܐ ܒܪ ܐܡܘܢ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ: ܘܥܕܡܐ ܠܝܘܡܢܐ. ܗܐ
ܥܣܪܝܢ ܘܬܠܬ ܫܢܝܢ ܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܐܡܪܬ ܠܟܘܢ. ܡܩܕܡ ܗܘܝܬ ܡܩܕܡ
4 ܘܐܡܪ ܗܘܝܬ ܠܟܘܢ. ܘܠܐ ܫܡܥܬܘܢ. * ܘܫܕܪ ܡܪܝܐ ܠܘܬܟܘܢ. ܠܟܠܗܘܢ ܥܒܕܘܗܝ ܢܒܝܐ. ܘܠܐ
5 ܐܪܟܢܬܘܢ ܐܕܢܝܟܘܢ ܠܡܫܡܥ. ܘܠܡܐܡܪ. * ܬܘܒܘ ܓܒܪ ܡܢ ܐܘܪܚܗ ܒܝܫܬܐ. ܘܡܢ ܒܝܫܘܬ
ܥܒܕܝܟܘܢ. ܘܬܒܘ ܒܐܪܥܐ ܕܝܗܒ ܡܪܝܐ ܠܟܘܢ ܘܠܐܒܗܝܟܘܢ. ܡܢ ܥܠܡ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ.
6 * ܘܠܐ ܬܐܙܠܘܢ ܒܬܪ ܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ. ܠܡܦܠܚ ܐܢܘܢ ܘܠܡܣܓܕ ܠܗܘܢ. ܘܠܐ ܬܪܓܙܘܢܢܝ
7 ܒܥܒܕܐ ܕܐܝܕܝܟܘܢ. ܕܠܐ ܐܒܐܫ ܠܟܘܢ. * ܘܠܐ ܫܡܥܬܘܢܢܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܪܓܙܬܘܢܢܝ ܒܥܒܕܐ
8 ܕܐܝܕܝܟܘܢ. ܕܢܒܐܫ ܠܟܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܫܡܥܬܘܢ
9 ܠܡܠܝ. * ܗܐ ܡܫܕܪ ܐܢܐ ܘܕܒܪ ܐܢܐ. ܠܟܠܗܘܢ ܫܪܒܬܐ ܕܡܠܟܘܬܐ ܕܓܪܒܝܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
ܘܥܡ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܥܒܕܝ. ܘܐܝܬܐ ܐܢܘܢ ܥܠ ܐܪܥܐ ܗܕܐ. ܘܥܠ ܥܡܘܪܝܗ. ܘܥܠ
ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܚܕܪܝܗ. ܘܐܚܪܘܒ ܐܢܘܢ. ܘܐܥܒܕ ܐܢܘܢ ܠܬܡܗܐ ܘܠܫܪܘܩܝܐ.
10 ܘܠܚܘܪܒܐ ܕܠܥܠܡ. * ܘܐܘܒܕ ܡܢܗܘܢ ܩܠܐ ܕܚܕܘܬܐ. ܘܩܠܐ ܕܒܣܝܡܘܬܐ. ܩܠܐ ܕܚܬܢܐ ܘܩܠܐ ܕܟܠܬܐ.
11 ܩܠܐ ܕܪܚܝܐ. ܘܢܘܗܪܐ ܕܫܪܓܐ. * ܘܬܗܘܐ ܟܠܗ ܐܪܥܐ ܗܕܐ ܠܚܘܪܒܐ ܘܠܬܡܗܐ. ܘܢܦܠܚܘܢ
12 ܥܡܡܐ ܗܠܝܢ ܠܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܫܒܥܝܢ ܫܢܝܢ. * ܘܡܐ ܕܡܠܝ ܫܒܥܝܢ ܫܢܝܢ. ܐܦܩܘܕ
ܥܠ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ: ܘܥܠ ܥܡܗ ܥܘܠܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܥܠ ܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ.
13 ܘܐܥܒܕܝܗ ܠܬܡܗܐ ܕܠܥܠܡ. * ܘܐܝܬܐ ܥܠ ܐܪܥܐ ܗܝ. ܟܠܗܘܢ ܡܠܝ ܕܐܡܪܬ
ܥܠܝܗ. ܟܠ ܡܐ ܕܟܬܝܒ ܒܟܬܒܐ ܗܢܐ. ܕܐܬܢܒܝ ܐܪܡܝܐ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ.

* Ab anno tertio decimo Joſiæ filii Amonis 3
regis Judæ in præſentem uſq; diem, ecce vi-
ginti trib⁹ annis fuit ad me ſermo Dñi, quem
& retuli vobis: antevertebam quotidie, dice-
bámq; vobis; at non auſcultâſtis. Miſit etiam 4
Dñs ad vos omnes ſervos ſuos prophetas, at
ne inclinâſtis quidem aurem veſtram ad au-
diendum, & dicendum; Convertimini quiſq; 5
à via ſua prava, & à malignitate facinorum
veſtrorum, atq; *ita* manete in terra quam de-
dit Dñs vobis & patribus veſtris, à ſeculo in
ſeculũ uſque: Et ne proſequamini deos alie- 6
nos, colendo & adorando eos: neq; me irri-
tetis opere manuum veſtrarũ, ut non malefa-
ciam vobis: At non auſcultâſtis mihi, dicit 7
Dñs; ſed irritâſtis me opere manuum veſtra-
rum, ut malum vobis eveniret. Propterea ſic 8
ait Dñs Deus exercituum; Quia non acquie-
viſtis ſermonib⁹ meis, Ecce miſſurus ſum & 9
aſſumpturus cunctas nationes regni Aquilo-
naris dicit Dñs, cum Nebuchadnoſare rege
Babelis ſervo meo, & adducturus eos contra
terrã iſtã, contra habitatores ejus, & contra
omnes populos qui circunjacent illi, & vaſta-
bo eos, & exponã eos ſtupori, ſibilo, atq; va-
ſtitati in perpetuũ: Et abolebo ab eis vocem 10
exultationis, & vocẽ lætitiæ, vocem ſponſi, &
vocem ſponſæ, vocẽ molæ, & lumen lucernæ:
Eritq; tota hæc terra vaſtitati atque ſtupori: 11
& ſervient hi populi regi Babelis ſeptuaginta
annis. Cúmque tranſacti fuerint ſeptuaginta 12
anni, recenſebo contra regem Babelis & con-
tra populũ ejus iniquitates eorum, dicit Dñs,
nec non contra terram Chaldæorum, quam
exponam ſtupori perpetuo: Et adducam ſu- 13
per eandem terrã cunctos ſermones quos dixi
de illa, quicquid ſcriptum extat in libro iſto,
quæ prophetavit Jeremia de cunctis gen-
tibus:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

3 * في السنة الثالثة عشر للملك يوشيا بن أموص ملك يهودا والي هذا اليوم ثلاث وعشرون
4 سنة * وتكلمت معكم دلجا وقايلا * وارسلت اليكم عبيدي الانبياء * دلجه ارسلهم ولم
5 تسمعوا ولم تصغوا باذانكم * قايلا * ارجعوا كل واحد من طريقه الرديه ومن اعمالكم
6 الشرير * فتسكنون على الارض التي اعطيتها لكم ولابايكم منذ الدهر والي الدهر * ولا
تمضوا خلف الالهة الغريبة لتعبدوا لها ولتسجدوا لها * ليلا تغضبوني باعمال ايديكم * الا
7 اضر بكم * فلم تسمعوا لي * [MS. Ox. ولم تطيعوا يقول الرب * ولكن اغضبتموني باعمالكم *
8 لاجعلتكم الي الحرب *] * لاجل هذا هكذا يقول الرب * من اجل انكم لم تومنوا باقوالي *
9 * ها انا ارسل واخذ امة من الجربياء * واسوقهم الي هذه الارض وعلي ساكنيها وعلي جميع
10 الامم التي حولها * واخربهم وادفعهم للفناء وللصفير وللتعيير الابدي * واهلك منهم صوت
11 السرور وصوت الفرح * صوت العريس وصوت العروس * رايحة الطيب ونور السراج * ويصير كل
12 الارض للفناء * ويتعبدون في الامم سبعين سنة * وعند تمام السبعين سنة انتقم من تلك الامة
13 قال الرب * واجعلهم للفناء الابدي * واجلب على تلك الارض جميع كلماتي التي تكلمت
بها عليها * جميع المكتوبات في هذا السفر * [MS. Oxon. وما تنبا ارميا علي جميع الشعوب *]

* *Ab anno tertiodecimo regis Joſiæ filii A-* 3
mos regis Judæ ad hunc uſque diẽ, viginti
tribus annis mox allocutus ſum vos manè
ſurgens ac prædicans, Mox ad vos miſi 4
ſervos meos prophetas: diluculò mittebam
eos, & non audîſtis, imò nec aures veſtras
præbuiſtis dicenti, Revertimini quiſque à 5
via ſua peſſima & ab operibus veſtris ſce-
leſtis, ut habitetis ſuper terram quam dedi
vobis & majoribus veſtris, à ſeculo in ſe-
culum uſque: Et ne ſectemini deos alie- 6
nos, ut ſerviatis eis & adoretis eos; ne ex-
aſperantibus me operibus manuũ veſtrarũ,
noceam vobis; Sed non acquieviſtis mihi, 7
[MS. Ox. *neq; obtemperaviſtis, dicit Do-*
minus; ſed ad iracundiam provocâſtis me
operibus veſtris, ut vos gladio expone-
rem.] *Iccircò ſic ait Dominus; Quia non* 8
adhibuiſtis fidem dictis meis, Ecce ego mit- 9
tens accipiam gentem quandam ab Aqui-
lone, & adducam eos ad hanc terram, con-
tra habitatores ejus, & contra omnes gen-
tes ipſi adjacentes: & deſtruam eos, & ex-
ponã excidio, ſibilo, & vituperio ſempiter-
no: Et perdã ab eis vocem exultationis et 10
vocem lætitiæ, vocẽ ſponſi & vocem ſpon-
ſæ, odorem aromatum, & lumen lucernæ:
Et abibit tota hæc terra in excidium, fi- 11
éntque ſervi inter gentes ſeptuaginta an-
nis. Cúmque completi fuerint ſeptuagin- 12
ta anni, vindictam ſumam ab illa gente,
ait Dominus; & exponam illos exitio
perpetuo: Et adducam contra terram il- 13
lam cuncta verba mea quæ locutus ſum
de ipſa, omnia quæ ſcripta ſunt in hoc
libro, [MS. Ox. *et quæ prophetavit Jere-*
mia de cunctis gentibus.]

Advertat Lector, plurimas eſſe capitum & verſiculorum tranſpoſitiones in verſione Græca, & quæ cum ipſa concordat Arabicâ, Edit. Par. à cap. 25. ver. 13. uſque ad finem cap. 51. hujus libri, adeò ut verſiones iſtæ, cum Hebræo, cæteriſque verſionibus per columnas ſibi invicem reſpondentes aptè diſponi non poſſint, ſine textûs Græci & Arab. dilaceratione: quem tamen Græcorum codicum ordinem ab ipſo Hieronymo, aliiſque veteribus ſervatum, & cum pleriſque vetuſtis Græcis exemplaribus congruentem, immutare haud æquum duximus: Viſum eſt itaque Tabulam ſequentem apponere, quæ tum differentias prædictas, tum harmoniam verſionum iſtarum cum textu Hebræo per capita & verſiculos primo aſpectu Lectori exhibeat, unde nullo negotio collationem inſtituere poſſit. De iis verò quæ in Græca verſione non habentur, quæque ex Theodoreto & aliis conſarcinârunt Complutenſes, vide Nobilii notas, & noſtras varias Lectiones Tomo ultimo.

JEREMIÆ CAPITA.

Secundùm Heb. Syr. Chald. & Vulg. Lat.	Secundùm Græcam τῶν 70. & Arab.	Secundùm Heb. Syr. Chald. & Vulg. Lat.	Secundùm Græcam τῶν 70. & Arab.	Secundùm Heb. Syr. Chald. & Vulg. Lat.	Secundùm Græcam τῶν 70. & Arab.	Secundùm Heb. Syr. Chald. & Vulg. Lat.	Secundùm Græcam τῶν 70. & Arab.
Cap. 25. ad verſ. 14.	Cap. 25. ad ver. 14.	34	41	Cap. 44.	Cap. 51. ad ver. 31.	50	27
25. à v. 14. ad finē.	32	35	42	45	51. à ver. 31. ad finem.	51	28
26.	33	36	43	46	26	52	32
27. ad ver. 19.	34	37	44	47	29. verſ. 7. priores.		
à v. 19. ad finem.	deſunt.	38	45	48. ad verſ. 45.	31		
28	35	39, verſus tres priores, & 5. poſtremi.	46	à ver. 45. ad finē.	deſunt.		
29	36	à ver. 3. ad 14.	deſunt.	49. verſ. 5. priores	30. ver. 5. priores.		
30	37	40	47	à ver. 7. ad 23.	29. à ver. 7. ad finem.		
31	38	41	48	à ver. 23. ad 28.	30. ver. 5. poſtremi.		
32	39	42	49	à ver. 28. ad 34.	30. poſt ver. 5. ſex ſequentes.		
33. ad verſ. 14.	40	43	50	à ver. 34. ad finē.	25. à v. 13. ad finem.		
à ver. 14. ad finē.	deſunt.						

Quæ in verſione Græca, ut & in Arabica Pariſienſi deſunt, ſupplevimus in Arab. ex MS. Oxon. vetuſtiſſ.

יִרְמְיָה: כה

regibus & , multis gentibus ipsis etiam eis in servire Quia
14 כִּי עָבְדוּ־בָם גַּם־הֵמָּה גּוֹיִם רַבִּים וּמְלָכִים
opus juxta & , eorum opus secundùm eis reddam & , magnis
גְּדוֹלִים וְשִׁלַּמְתִּי לָהֶם כְּפָעֳלָם וּכְמַעֲשֵׂה
Israel Deus Dominus dixit sic Quia .eorum manuum
15 יְדֵיהֶם׃ כִּי כֹה אָמַר יְהֹוָה אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל
, mea manu de hujus furoris vini calicem Sume : me ad
אֵלַי קַח אֶת־כּוֹס הַיַּיִן הַחֵמָה הַזֹּאת מִיָּדִי
mittens ego quas gentibus omnibus illum facies propinare &
וְהִשְׁקִיתָה אֹתוֹ אֶת־כָּל־הַגּוֹיִם אֲשֶׁר אָנֹכִי שֹׁלֵחַ
faciebus à insanient & , commovebuntur & , bibent Et .eas ad te
16 אוֹתְךָ אֲלֵיהֶם׃ וְשָׁתוּ וְהִתְגֹּעֲשׁוּ וְהִתְהֹלָלוּ מִפְּנֵי
calicem accepi Et .eos inter mittens ego quem , gladii
17 הַחֶרֶב אֲשֶׁר אָנֹכִי שֹׁלֵחַ בֵּינֹתָם׃ וָאֶקַּח אֶת־הַכּוֹס
quas , gentibus omnibus feci propinare & , Domini manu de
מִיַּד יְהֹוָה וָאַשְׁקֶה אֶת־כָּל־הַגּוֹיִם אֲשֶׁר־
civitatibus & , Jerusalaim .eas ad Dominus me misit
18 שְׁלָחַנִי יְהֹוָה אֲלֵיהֶם׃ אֶת־יְרוּשָׁלַםִ וְאֶת־עָרֵי
eas dandum ad , ejus principibus & , ejus regibus & , Jehudah
יְהוּדָה וְאֶת־מְלָכֶיהָ וְאֶת־שָׂרֶיהָ לָתֵת אֹתָם
maledictionem in & , sibilum in , stuporem in , solitudinem in
לְחָרְבָּה לְשַׁמָּה לִשְׁרֵקָה וְלִקְלָלָה
& , Ægypti regi Parhoh .hanc diem secundùm
19 כַּיּוֹם הַזֶּה׃ אֶת־פַּרְעֹה מֶלֶךְ־מִצְרַיִם וְאֶת־
universæ Et .ejus populo omni & , ejus principibus & , ejus servis
20 עֲבָדָיו וְאֶת־שָׂרָיו וְאֶת־כָּל־עַמּוֹ׃ וְאֵת כָּל־
omnibus & , Hus terræ regibus omnibus & , miscellaneæ
הָעֶרֶב וְאֵת כָּל־מַלְכֵי אֶרֶץ הָעוּץ וְאֵת כָּל־
& , Hazzah & , Aschelon & , Pelistim terræ regibus
מַלְכֵי אֶרֶץ פְּלִשְׁתִּים וְאֶת־אַשְׁקְלוֹן וְאֶת־עַזָּה וְאֶת־
, Moab & , Edom .Asdod residuo & , Hecron
21 עֶקְרוֹן וְאֵת שְׁאֵרִית אַשְׁדּוֹד׃ אֶת־אֱדוֹם וְאֶת־מוֹאָב
universis & , Sor regibus omnibus Et .Hammon filiis &
22 וְאֶת־בְּנֵי עַמּוֹן׃ וְאֵת כָּל־מַלְכֵי צֹר וְאֵת כָּל־
, Dedan .mare trans in qui insulæ regibus & , Sidon regibus
23 מַלְכֵי צִידוֹן וְאֵת מַלְכֵי הָאִי אֲשֶׁר בְּעֵבֶר הַיָּם׃ אֶת־דְּדָן
Et .anguli extremificatis universis & , Buz & , Tema &
24 וְאֶת־תֵּימָא וְאֶת־בּוּז וְאֵת כָּל־קְצוּצֵי פֵאָה׃ וְאֵת
habitantibus , Occidentis regibus omnibus & , Harabiæ regibus cunctis
כָּל־מַלְכֵי עֲרָב וְאֵת כָּל־מַלְכֵי הָעֶרֶב הַשֹּׁכְנִים
regibus universis & , Zimri regibus cunctis Et .deserto in
25 בַּמִּדְבָּר׃ וְאֵת כָּל־מַלְכֵי זִמְרִי וְאֵת כָּל־מַלְכֵי
regibus cunctis Et .Madai regibus omnibus & , Helam
26 עֵילָם וְאֵת כָּל־מַלְכֵי מָדָי׃ וְאֵת כָּל־מַלְכֵי
omnibus & , suum fratrem ad viro remotis & , propinquis Aquilonis
הַצָּפוֹן הַקְּרֹבִים וְהָרְחֹקִים אִישׁ אֶל־אָחִיו וְאֵת כָּל־
Sesach rex & : humi faciebus super quæ , terræ regnis
הַמַּמְלְכוֹת הָאָרֶץ אֲשֶׁר עַל־פְּנֵי הָאֲדָמָה וּמֶלֶךְ שֵׁשַׁךְ
Dominus dixit Sic : eos ad dices Et .eos post bibet
27 יִשְׁתֶּה אַחֲרֵיהֶם׃ וְאָמַרְתָּ אֲלֵיהֶם כֹּה־אָמַר יְהֹוָה
, vomite & , inebriamini & , Bibite : Israel Deus exercituum
צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל שְׁתוּ וְשִׁכְרוּ וּקְיוּ
mittens ego quem , gladii faciebus à , resurgatis non & , cadite &
וְנִפְלוּ וְלֹא תָקוּמוּ מִפְּנֵי הַחֶרֶב אֲשֶׁר אָנֹכִי שֹׁלֵחַ
, tua manu de calicem accipere renuerint cùm , erit Et .vos inter
28 בֵּינֵיכֶם׃ וְהָיָה כִּי יְמָאֲנוּ לָקַחַת־הַכּוֹס מִיָּדְךָ
: exercituum Dominus dixit Sic : eos ad dices & , bibendum ad
לִשְׁתּוֹת וְאָמַרְתָּ אֲלֵיהֶם כֹּה אָמַר יְהֹוָה צְבָאוֹת
.bibetis Bibendo
שָׁתוֹ תִשְׁתּוּ׃

Versio VULG. LAT.

14 Quia servierunt eis, cùm essent
gentes multæ, & reges magni:
& reddam eis secundùm opera
eorum, & secundùm facta ma-
15 nuum suarum. Quia sic dicit
Dominus exercituum Deus Is-
rael; Sume calicem vini furo-
ris hujus de manu mea: & pro-
pinabis de illo cunctis genti-
bus, ad quas ego mittam te.
16 Et bibent, & turbabuntur, &
insanient à facie gladii, quem
17 ego mittam inter eos. Et ac-
cepi calicem de manu Domini,
& propinavi cunctis gentibus,
ad quas misit me Dominus:
18 Jerusalem, & civitatibus Juda,
& regibus ejus, & principi-
bus ejus: ut darem eos in soli-
tudinem, & in stuporem, & in
sibilum, & in maledictionem,
19 sicut est dies ista: Pharaoni
regi Ægypti, & servis ejus, &
principibus ejus, & omni po-
20 pulo ejus, Et universis gene-
raliter: cunctis regibus terræ
Ausitidis, & cunctis regibus ter-
ræ Philisthiim, & Ascaloni, &
Gazæ, & Accaron, & reliquiis
21 Azoti, Et Idumææ, & Moab,
22 & filiis Ammon: Et cunctis
regibus Tyri, & universis regi-
bus Sidonis: & regibus terræ
insularum, qui sunt trans mare:
23 Et Dedan, et Thema, et Buz, et
universis qui attonsi sunt in co-
24 mam: Et cunctis regibus Ara-
biæ, et cunctis regibus Occi-
dentis, qui habitant in deserto:
25 Et cunctis regibus Zambri, et
cunctis regibus Elam, et cunctis
26 regibus Medorum: Cunctis
quoque regibus Aquilonis de
propè et de longè, unicuique
contra fratrem suum: et omni-
bus regnis terræ, quæ super fa-
ciem ejus sunt: et rex Sesach
27 bibet post eos. Et dices ad
eos; Hæc dicit Dominus exer-
cituum Deus Israel; Bibite, et
inebriamini, et vomite: et ca-
dite, neque surgatis à facie gla-
dii, quem ego mittam inter
28 vos. Cúmque noluerint acci-
pere calicem de manu tua ut
bibant, dices ad eos; Hæc di-
cit Dominus exercituum; Bi-
bentes bibetis:

Versio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

34 Cap.49.Vulg.Lat. Ἃ ἘΠΡΟΦΗΤΕΥΣΕ (ν) ἹΕΡΕΜΙΑΣ ἘΠΙ ΤᾺ
35 ἜΘΝΗ ΤᾺ ἈΙΛΑΜ. Τάδε λέγει κύριος,
(ξ)Συντριβήτω τὸ τόξον Αἰλὰμ, ἀρχὴ δυνα-
36 στείας αὐτῶν. Καὶ ἐπάξω ἐπὶ Αἰλὰμ τέσσα-
ρας ἀνέμους ἐκ τῶν τεσσάρων ἄκρων τοῦ οὐρα-
νοῦ, καὶ διασπερῶ αὐτοὺς ἐν πᾶσι τοῖς ἀνέ-
μοις τούτοις, καὶ οὐκ ἔσται ἔθνος ὃ οὐχ
37 ἥξει ἐκεῖ, οἱ ἐξωσμένοι Αἰλάμ. Καὶ πτο-
ήσω αὐτοὺς ἐναντίον τῶν ἐχθρῶν αὐτῶν,
τῶν ζητούντων τὴν ψυχὴν αὐτῶν, καὶ ἐπ-
άξω ἐπ᾽ αὐτοὺς κατὰ τὴν ὀργὴν τοῦ θυμοῦ
μου, καὶ (ο) ἐπαποστελῶ ὀπίσω αὐτῶν τὴν
μάχαιράν μου, ἕως τοῦ ἐξαναλῶσαι αὐτούς.
38 Καὶ θήσω τὸν θρόνον μου ἐν Αἰλὰμ, καὶ ἐξ-
αποστελῶ ἐκεῖθεν βασιλέα καὶ μεγιστᾶνας.
39 Καὶ ἔσται ἐπ᾽ (π) ἐσχάτου τῶν ἡμερῶν, καὶ
ἀποστρέψω τὴν αἰχμαλωσίαν Αἰλὰμ, λέ-
γει κύριος.

QUÆ prophetavit Hieremi- 34
as super gentes, (d) quæ
Ælam. Hæc dicit Dominus; 35
Contritus est arcus Ælam,
principium potentatûs eorum.
Et inducam super Ælam qua- 36
tuor ventos à quatuor extre-
mis cœli: & dispergam eos in
omnibus ventis istis: & non erit
gens, quæ non veniet illuc, ex-
pulsi Ælam. Et terrefaciam eos 37
coram inimicis eorum, quæren-
tibus animam eorum: & in-
ducam super (e) eos secundùm
iram furoris mei: & immittam
post eos gladium meum; donec
absumpsero eos. Et ponam thro- 38
num meum in Ælam, & (f) e-
mittam inde regem, & magnates.
Et erit in novissimo dierum, & 39
reducam captivitatem Ælam,
dicit Dominus.

MS.A. (ν) ἹΗΡΕΜΙΑΣ (ξ) Συντρίβηθι (ο) ἐξαποστελῶ (π) ἐσχάτων τῶν ἡμερῶν ἀποστρέψω

Cap. 46. Vulg.Lat. ΚΕΦ. κϛ'.
1 Ἐν ἀρχῇ βασιλεύοντος (ʼ)
Σεδεκίου βασιλέως, ἐγένετο ὁ λόγος οὗτος (α)
2 περὶ Αἰλάμ. ΤΗ͂Ι ἈΙΓΥΠΤΩ ἘΠΙ
ΔΥΝΑΜΙΝ ΦΑΡΑΩ ΝΕΧΑΩ (β) ΒΑ-
ΣΙΛΕΩΣ ἈΙΓΥΠΤΟΥ, ὃς ἦν ἐπὶ (γ)
τῷ ποταμῷ Εὐφράτῃ ἐν Χαρμὶς, ὃν
ἐπάταξε Ναβουχοδονόσορ βασιλεὺς Βα-
βυλῶνος, ἐν τῷ ἔτει τῷ τετάρτῳ Ἰωα-
3 κεὶμ βασιλέως Ἰούδα. Ἀναλάβετε ὅπλα
καὶ ἀσπίδας, (δ) καὶ προσαγάγετε εἰς πό-
4 λεμον, (ʺ)Καὶ ἐπισάξατε τοὺς ἵππους, ἐπί-
βητε οἱ ἱππεῖς, καὶ κατάστητε ἐν ταῖς περικε-
φαλαίαις ὑμῶν, προβάλετε τὰ δόρατα (ε),
5 καὶ ἐνδύσασθε τοὺς θώρακας ὑμῶν. Τί
ὅτι αὐτοὶ (ζ) πτοοῦνται, καὶ ἀποχωροῦσιν
(η) εἰς τὸ ὀπίσω; διότι οἱ ἰσχυροὶ αὐτῶν
κοπήσονται, φυγῇ ἔφυγον, καὶ οὐκ ἀνέ-
στρεψαν περιεχόμενοι κυκλόθεν, λέγει
6 κύριος. Μὴ φευγέτω ὁ κοῦφος, καὶ μὴ (θ)
ἀνασωζέσθω ὁ ἰσχυρὸς ἐπὶ Βορρᾶν· τὰ
παρὰ τὸν Εὐφράτην (ι) ἠσθένησε, καὶ πε-
7 πτώκασι. Τίς οὗτος ὡς ποταμὸς ἀναβή-
σεται, καὶ ὡς ποταμοὶ (ʺ) κυμαίνουσιν ὕδωρ;
8 Ὕδατα Αἰγύπτου ὡς ποταμὸς ἀναβήσε-
ται. καὶ εἶπεν, Ἀναβήσομαι, καὶ κατακα-
λύψω τὴν γῆν, καὶ ἀπολῶ (κ) τοὺς κατοι-
9 κοῦντας ἐν αὐτῇ. Ἐπίβητε ἐπὶ τοὺς ἵππους,
(λ) παρασκευάσατε τὰ ἅρματα, ἐξέλθα-
τε οἱ (μ) μαχηταὶ Αἰθιόπων, καὶ Λίβυες
καθωπλισμένοι ὅπλοις, καὶ Λυδοὶ ἀνάβη-
10 τε, ἐντείνατε τόξον. Καὶ ἡ ἡμέρα ἐκεί-
νη κυρίῳ τῷ θεῷ ἡμῶν ἡμέρα ἐκδι-
κήσεως, τοῦ ἐκδικῆσαι τοὺς ἐχθροὺς αὐτοῦ·
καὶ καταφάγεται ἡ μάχαιρα κυρίου, καὶ ἐμ-
πλησθήσεται, καὶ μεθυσθήσεται ἀπὸ τοῦ αἵμα-
τος αὐτῶν, ὅτι θυσία τῷ κυρίῳ (ν) ἀπὸ
11 γῆς Βορρᾶ ἐπὶ ποταμῷ Εὐφράτῃ. Ἀνάβηθι
Γαλαὰδ, καὶ λάβε ῥητίνην τῇ παρθένῳ θυ-
γατρὶ Αἰγύπτου· (ξ) εἰς τὸ κενὸν ἐπλήθυνας
ἰάματά σου, ὠφέλεια οὐκ (ο) ἔστιν ἐν σοί.

CAP. XXVI.

IN (a) principio regnantis Se- 1
deciæ regis, factum est verbum
hoc de Ælam. IPSI ÆGY- 2
PTO super virtutem Pharaonis
Nechao regis Ægypti, qui erat
ad flumen Euphratem in Char-
mis: quem percussit Nabucho-
donosor rex Babylonis in anno
quarto Joacim regis Juda. As- 3
sumite arma, & scuta: & ac-
cedite ad bellum: Et insternite 4
equos, ascendite equites, & sta-
te in galeis vestris, (b) applicate
lanceas, & induimini loricis ve-
stris. Quid, quòd ipsi pavent, 5
& recedunt in posteriora? quia
fortes eorum cædentur: fugâ fu-
gerunt, et non sunt reversi, obsessi
undique, dicit Dominus. Non 6
fugiat levis, et non evadat for-
tis ad Aquilonem. Quæ ad Eu-
phratem, infirmata sunt, et ce-
ciderunt. Quis iste, quasi flumen 7
ascendet, (c) et velut flumina,
fluctuant aquam? Aquæ Æ- 8
gypti, quasi flumen, ascendent.
Et dixit; Ascendam, et operi-
am terram, et perdam (d) ha-
bitantes in ea. Ascendite super 9
equos, præparate currus: egre-
dimini pugnatores Æthiopum,
et Libyes armati armis, et Lydi
ascendite, intendite arcum. Et 10
dies illa Domino Deo nostro,
dies ultionis, ut sumat vindi-
ctam de inimicis suis: et de-
vorabit gladius (e) Domini, et
saturabitur, et inebriabitur de
sanguine eorum: quia sacrifi-
cium (f) Domino de terra
Aquilonis super flumen Euphra-
tem. Ascende Galaad, & su- 11
me resinam virgini filiæ Æ-
gypti: in vanum multiplicâsti
medicamina tua: utilitas non
est in te.

MS.A.(ʼ)Σεδεκίου, ἐγένετο (α) ἐπὶ Αἰλάμ. (β)*ΒΑΣΙΛΕΑ (γ) τοῦ ποταμοῦ Εὐφράτου (δ)προσαγάγετε(ʺ)Ἐπισάξατε (ε) ὑμῶν, (ζ)πτοοῦνται,(η)ὀπίσω;(θ) ἀνασωζέτω (ι) ἠσθένησαν, πεπτώκασιν. (ʺ)κυμανοῦσιν (κ) κατοικοῦντας (λ) καὶ κατασκευάσατε (μ) μαχηταὶ (ν) Σαβαὼθ ἀπὸ (ξ)εἰς κενὸν (ο) ἔστιν Σοί.

תַּרְגּוּם יוֹנָתָן Targum JONATHAN.

14 אֲרֵי פְּלַחוּ בְהוֹן אַף אִנּוּן עַמְמִין סַגִּיאִין וּמַלְכִין רַבְרְבִין וַאֲשַׁלֵּם לְהוֹן כְּאַגְרֵיהוֹן
15 וּכְעוֹבָדֵי יְדֵיהוֹן׃ אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל לִי קַבֵּל יָת כָּסָא דַחֲמַר לְוָטָא
16 הָדֵין מִן קֳדָמַי וְתַשְׁקֵי יָתֵיהּ יָת כָּל עַמְמַיָּא דַאֲנָא שָׁלַח יָתָךְ עֲלֵיהוֹן׃ וְיִשְׁתּוֹן
17 וְיִשְׁתַּגְשׁוּן וְיִטַּרְפוּן מִן קֳדָם דְקָטְלִין בְּחַרְבָּא דַאֲנָא שָׁלַח בֵּינֵיהוֹן׃ וְקַבֵּלִית יָת כָּסָא
18 מִן קֳדָם יְיָ וְאַשְׁקֵיתִי יָת כָּל עַמְמַיָּא דִשְׁלַחַנִי יְיָ לְוַתְהוֹן׃ יָת יְרוּשְׁלֶם וְיָת קִרְוַיָּא
דְבֵית יְהוּדָה וְיָת מַלְכָהָא וְיָת רַבְרְבָהָא לְמִתַּן יָתְהוֹן לְחָרְבָּא לְצָדוּ לְאִשְׁתְּמָמוּ
19 וּלְלוּטָא כְּיוֹמָא הָדֵין׃ יָת פַּרְעֹה מַלְכָּא מִצְרַיִם וְיָת עַבְדּוֹהִי וְיָת רַבְרְבוֹהִי וְיָת כָּל
20 עַמֵּיהּ׃ וְיָת כָּל מַלְכֵי סוּמְכְוָתָא וְיָת כָּל מַלְכֵי אֲרַע עוּץ וְיָת כָּל מַלְכֵי אֲרַע פְּלִשְׁתָּאֵי
21 וְיָת אַשְׁקְלוֹן וְיָת עַזָּה וְיָת עֶקְרוֹן וְיָת שְׁאָרָא דְאַשְׁדּוֹד׃ יָת אֱדוֹם וְיָת מוֹאָב וְיָת בְּנֵי
22 עַמּוֹן׃ וְיָת כָּל מַלְכֵי צוֹר וְיָת כָּל מַלְכֵי צִידוֹן וְיָת כָּל מַלְכֵי נִסָּא דִי בְּעִבְרָא דְיַמָּא׃
23 24 וְיָת דְּדָן וְיָת תֵּימָא וְיָת בּוּז וְיָת כָּל מַקְפֵי פָתָא׃ וְיָת כָּל מַלְכֵי עֲרָב וְיָת כָּל מַלְכֵי
25 עַרְבָאֵי דְשָׁרַן בִּשְׁכוּנִין בְּמַדְבְּרָא׃ וְיָת כָּל מַלְכֵי זִמְרִי וְיָת כָּל מַלְכֵי עֵילָם וְיָת כָּל
26 מַלְכֵי מָדָי׃ וְיָת כָּל מַלְכֵי צִפּוּנָא דְקָרִיבִין וּדְרָחִיקִין גְּבַר לְאַחוּהִי וְיָת כָּל מַלְכְוָת
27 עַמְמַיָּא דְעַל אַפֵּי אַרְעָא וּמַלְכָּא דְבָבֶל יִשְׁתֵּי בַתְרֵיהוֹן׃ וְתֵימַר לְהוֹן כִּדְנַן אֲמַר
יְיָ צְבָאוֹת אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל שְׁתוּ וּרְווֹ וְאִשְׁתַּגִּישׁוּ וּנְפָלוּ וְלָא תְקוּמוּן מִן קֳדָם דְקָטְלִין
28 בְּחַרְבָּא דַאֲנָא שָׁלַח בֵּינֵיכוֹן׃ וִיהֵי אֲרֵי יְסָרְבוּן לְקַבָּלָא כָסָא מִן יְדָךְ לְמִשְׁתֵּי וְתֵימַר
לְהוֹן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת מִשְׁתָּא תִשְׁתּוֹן׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Quia etiam ipsos ad servitutem adigent populi multi, & reges magni; & 14
retribuam eis juxta mercedem eorum, & juxta opera manuum suarum.
Quia sic dixit mihi Dominus Deus Israel: Recipe calicem vini maledi- 15
ctionis hujus à facie mea, & propinabis eum cunctis populis *contra* quos
ego mitto te. Et bibent & insanient, & conturbabuntur à facie eorum 16
qui occidunt gladio, quos ego mitto inter eos. Et suscepi calicem à facie 17
Dñi, & potum dedi omnibus populis, ad quos misit me Dñs. Jerusalem, & 18
civitatibus domus Juda, & regibus ejus, & principibus ejus, ad redigendos
eos in desolationem, & in vastitatem, & in stuporem, & in maledictio-
nem, sicut hodie. Pharaoni regi Ægypti, & servis ejus, & principibus 19
ejus, & omni populo ejus. Et omnibus regibus finitimis, & omnibus re- 20
gibus terræ Huts, & omnibus regib' terræ Philistinorum, & Ascaloni,
Gazæ, & Acharoni, & reliquiis Azoti. Idumeæ & Moab, & filiis Am- 21
mon. Et omnib' regib' Tyri, & omnib' regib' Sidonis, & omnib' re- 22
gib' insularum qui sunt trans mare. Dedan, & Theman, & Bus, & 23
omnibus circumdantibus angulum. Et cunctis regib' Arabiæ, & omnib' 24
regib' Arabum qui habitant in tentoriis in deserto. Et cunctis regib' 25
Zamri, & cunctis regib' Elam, & cunctis regib' Medorum. Et cunctis re- 26
gib' Aquilonis, qui propinqui sunt, & qui remoti sunt, quisque à fratre
suo; & cunctis regib' populorum qui sunt super faciem terræ. Et rex
Babylonis bibet post eos. Et dices ad eos: Hæc dicit Dñs exercituum 27
Deus Israel; Bibite & inebriamini, & conturbamini, & cadite; & non
surgatis à facie eorum qui occidunt gladio, quos ego mitto inter vos. Et 28
erit, si noluerint accipere calicem de manu tua, ad bibendum: hæc dices
eis; Hæc dicit Domin' exercituum: Bibendo bibetis.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

14 * ܡܛܠ ܕܦܠܚܘ ܐܢܘܢ ܐܦ ܒܗܘܢ. ܥܡ̈ܡܐ ܣܓܝ̈ܐܐ. ܘܡܠܟ̈ܐ ܪ̈ܘܪܒܐ. ܘܐܦܪܥ ܐܢܘܢ
15 ܐܝܟ ܥܒܕ̈ܝܗܘܢ. ܘܐܝܟ ܥܒܕܐ ܕܐܝ̈ܕܝܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ
ܕܐܝܣܪܝܠ. ܣܒ ܟܣܐ ܕܚܡܪܐ ܕܚܡܬܐ ܗܢܐ ܡܢ ܐܝܕܝ. ܘܐܫܩܝܘܗܝ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡ̈ܡܐ
16 ܐܝܠܝܢ ܕܡܫܕܪ ܐܢܐ ܠܟ ܠܘܬܗܘܢ. * ܘܢܫܬܘܢ ܘܢܬܕܘܕܘܢ. ܘܢܫܬܓܫܘܢ ܡܢ ܩܕܡ ܚܪܒܐ
17 ܕܡܫܕܪ ܐܢܐ ܒܝܢܬܗܘܢ. * ܘܢܣܒܬ ܟܣܐ ܡܢ ܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܐܫܩܝܬ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡ̈ܡܐ
18 ܕܫܕܪܢܝ ܡܪܝܐ ܠܘܬܗܘܢ. * ܠܐܘܪܫܠܡ ܘܠܡܕܝܢ̈ܬܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܠܡܠܟ̈ܝܗ. ܘܠܪ̈ܘܪܒܢܝܗ.
19 ܠܡܬܠ ܐܢܘܢ. ܠܚܘܪܒܐ. ܘܠܬܘܡܗܐ ܘܠܫܘܪܩܐ ܘܠܨܘܚܝܬܐ. ܐܝܟ ܝܘܡܢܐ ܗܢܐ. * ܠܦܪܥܘܢ
ܡܠܟܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܥܒ̈ܕܘܗܝ. ܘܠܪ̈ܘܪܒܢܘܗܝ. ܘܠܟܠܗ ܥܡܗ. ܘܠܟܠܗܘܢ
20 ܠܣܘܦܝܗܘܢ. * ܘܠܟܠܗܘܢ ܡܠܟ̈ܐ ܕܐܪܥܐ ܕܥܘܨ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܡܠܟ̈ܐ ܕܐܪܥܐ ܕܦܠܫܬܝ̈ܐ.
21 ܘܠܐܫܩܠܘܢ. ܘܠܥܙܐ. ܘܠܥܩܪܘܢ. ܘܠܫܪܟܐ ܕܐܫܕܘܕ. * ܘܠܐܕܘܡ ܘܠܡܘܐܒ. ܘܠܒ̈ܢܝ ܥܡܘܢ.
22 * ܘܠܟܠܗܘܢ ܡܠܟ̈ܐ ܕܨܘܪ: ܘܠܟܠܗܘܢ ܡܠܟ̈ܐ ܕܨܝܕܢ: ܘܠܡܠܟ̈ܐ ܕܓܙܪ̈ܬܐ ܕܒܥܒܪܐ ܕܝܡܐ.
23 * ܘܠܕܕܢ. ܘܠܬܝܡܢ ܘܠܒܘܙ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܩܨܝ̈ܨܝ ܦܐܬܐ: * ܘܠܟܠܗܘܢ ܡܠܟ̈ܐ ܕܬܚܘܡܗܘܢ
24 ܚܕ ܥܡ ܚܕ: ܘܠܟܠܗܘܢ ܡܠܟ̈ܐ ܕܥܪ̈ܒܝܐ ܕܥܡܪܝܢ ܒܡܕܒܪܐ: * ܘܠܟܠܗܘܢ ܡܠܟ̈ܐ ܕܙܡܪܝ.
25 ܘܠܟܠܗܘܢ ܡܠܟ̈ܐ ܕܥܝܠܡ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܡܠܟ̈ܐ ܕܡܕܝ. * ܘܠܟܠܗܘܢ ܡܠܟ̈ܐ ܕܓܪܒܝܐ
26 ܕܪܚܝܩܝܢ ܘܕܩܪܝܒܝܢ ܚܕ ܠܘܬ ܚܒܪܗ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܡܠܟܘ̈ܬܐ ܕܐܝܬ ܥܠ ܐܦܝ ܐܪܥܐ
27 ܟܠܗ. ܘܡܠܟܐ ܕܫܫܟ ܢܫܬܐ ܒܬܪܗܘܢ. * ܘܬܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ
ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܫܬܘ ܘܪܘܘ. ܘܬܩܝܘ ܘܢܦܠܘ. ܘܠܐ ܬܩܘܡܘܢ. ܡܢ ܩܕܡ ܚܪܒܐ ܕܡܫܕܪ
28 ܐܢܐ ܒܝܢܬܟܘܢ. * ܘܐܢ ܠܐ ܢܨܒܘܢ ܠܡܣܒ ܟܣܐ ܡܢ ܐܝܕܟ ܠܡܫܬܐ. ܬܐܡܪ ܠܗܘܢ.
ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܡܫܬܐ ܬܫܬܘܢ.

* Eò quòd redegerint ſibi etiam iſti in ſervitutem populos multos & reges magnos: & rependam eis ſecundùm actiones ſuas, & ſecundùm opus manuum ſuarum. 14 Sic enim ait Dominus potentiſſimus, Deus Iſraelis; Sume calicem vini furoris hujus de manu mea, & da illum bibendum cunctis gentibus contra quas ſum te miſſurus; 15 Ut bibentes obſtupeſcant & conturbentur à conſpectu gladii quem miſſurus ſum inter eas. 16 Quare ſumpſi calicem de manu Domini, & bibendum dedi cunctis gentibus contra quas miſit me Dominus: 17 Jeroſolymæ, & civitatibus Judæ, & regibus ac principibus ejus; ut redigerentur in vaſtitatem, ſtuporem, ac ſibilum ad hodiernum uſque diem: 18 Pharaoni regi Ægypti, & omnibus ſervis ejus, principibus ejus, toti populo ipſius, omnibúſque terminis ejus: 19 Omnibus regibus terræ Us, & omnibus regibus terræ Paleſtinorum: Aſcaloni; & Azæ, Ecroni, & reliquo Aſdodi: 20 Adumæis, Moabitis, & Ammonitis: 21 Omnibus regibus Tyri, omnibus regibus Sidonis, & regibus Inſularum tranſmarinis: 22 Item Darani, Tæmani, & Buzo, omnibúſque barbitonſis: 23 Cunctis regibus quorum limites ſunt communes, cunctíſque regibus Arabum qui degunt in deſerto: 24 Cunctis regibus Zemranis, cunctis regibus Ilamis, cunctíſque regibus Mediæ: 25 Item cunctis regibus Aquilonis, tam diſſitis quàm ſibi invicèm propinquis: omnibus denique regnis quæ ſunt ſuper faciem univerſæ terræ: demum rex monarcha poſt hos bibet. 26 Et dic eis, Sic ait Dominus potentiſſimus, Deus Iſraelis; Bibite & inebriamini, exagitamini & cadite nunquam ſurrecturi à conſpectu gladii quem miſſurus ſum inter vos. 27 Quòd ſi noluerint ſumere calicem de manu tua ad bibendum, dic eis; Sic ait Dominus potentiſſimus, Deus Iſraelis; Omnino bibendum vobis eſt. 28

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

34 * هذا ما تنبي به ارمياء على امم الاهواز *
35 36 * هكذا يقول الرب * لينكسر قوس الاهواز رئيسة قوتهم * واجلب على الاهواز اربع ارياح
من اربعة اطراف السماء * وابددهم في جميع هذه الرياح * ولا تكون امة الا وياتي هناك
37 المقصيون من الاهواز * وافزعهم امام اعدائهم الذين يطلبون نفسهم * واجلب عليهم
38 كرجز غضبي * وارسل وراهم سيفي الى ان يفنوا * واضع كرسي في الاهواز * وارسل من
39 هناك ملكا وعظماء * ويكون في اخر الايام ارد سبي الاهواز يقول الرب *

1 * الفصل السادس والعشرون * * في بدو ملك صدقيا كان هذا القول على الاهواز *
2 * في مصر على جيش فرعون ناحاو ملك مصر * الذي كان على نهر الفرات في حرميس *
الذي ضربه بختنصر ملك بابل في السنة الرابعة ليواقيم ملك يهوذا *
3 4 * خذوا اسلحة ودرقات * تقدموا للحرب * اسرجوا الخيل * اركبوا ايها الفرسان * قفوا بخوذكم *
5 والبسوا جواشنكم * لماذا لانهم يجزعون ويرجعون الى خلف * من اجل ان اقوياءهم يقطعون *
6 هربوا هربا ولم يرجعوا * احتوطوا من حولهم يقول الرب * لا يهرب الخفيف ولا يخلص القوي
7 الى الجربياء * الذين عند الفرات ضعفوا وسقطوا * من هذا الذي يصعد مثل النهر
8 ومثل انهار يموجون ماء * مياه مصر مثل نهر تصعد * وقال اصعد واغطي الارض وابيد
9 السكان فيها * اركبوا على الخيول * وهيوا المركبات * اخرجوا يا تلاميذ الحبش والنوبة
10 متسلحين بالاسلحة * واللوذانيون اصعدوا اوتروا قوسا * وذلك اليوم للرب الهنا يوم
الانتقام لينتقم من اعدائه * وياكل سيف الرب ويمتلي ويسكر من دمائهم * لانها ذبيحة
11 لرب الجيوش من ارض الجربياء على نهر الفرات * اصعدي بجلعاد وخذي قلفونية
للعذري ابنة مصر كثرت ادويتك باطلا وليس لك منفعة *

Hæc ſunt quæ prophetavit Jeremia de populis Alahuaz (*i.* Elamitis.) 34 *Sic dicit Dominus, Profectò frangetur arcus Elam præcipui roboris eorum:* 35 *Et adducam in Elamitas quatuor ventos è quatuor extremitatibus cœli, diſpergámque eos in omnes hos ventos: nec erit ulla gens, quo non abeant depulſi ex Elam:* 36 *Et pavidos reddam illos coram inimicis eorum quærentibus animam eorum: & adducam ſuper eos juxta furorem indignationis meæ: mittámque poſt eos gladium meum, donec abſumantur.* 37 *Et ponam ſolium meum in Elam, & emittam inde regem atque principes:* 38 *Tum fiet ultimis temporibus ut reducam captivitatem Elamitarum, dicit Dominus.* 39

CAP. XXVI.

INitio regni Sedeciæ fuit hic ſermo contra Elamitas. 1

De Ægypto, contra copias Pharaonis Nechao regis Ægypti, qui erat ſecus flumen Euphratem in Charmis, quem occîdit Bochtonaſſar rex Babelis anno quarto Joacimi regis Judæ. 2

Arripite arma & clypeos, accedite ad pugnam: 3 *Sternite equos, conſcendite O equites, adeſte cum galeis veſtris, & induite loricas veſtras.* 4 *Quarè? quia pavore correpti terga vertunt, eò quòd fortiſſimi illorum excinduntur: fugâ fugiunt, neque perſpiciunt: Cingite eos undique, ait Dominus.* 5 *Non fugiet velociſſimus; nec evadet fortiſſimus Aquilonem versùs: qui ſunt prope Euphratem, debilitati corruerunt.* 6 *Quis eſt hic qui ut flumen aſcendit, & veluti flumina undis fluctuantia?* 7 *Aquæ Ægypti ſicut flumen aſcendunt. Dixit enim, Aſcendam, operiam terram, & perdam habitantes in ea.* 8 *Conſcendite equos, inſtruite currus; prodite O heroes Æthiopum & Nubarum armis accincti: & vos Lydii aſcendite, arcum tendite;* 9 *Nam dies illa Domino Deo noſtro erit dies ultionis, ut ulciſcatur de inimicis ſuis: comedétque gladius Domini & explebitur, atque inebriabitur ſanguinibus eorum, quoniam victima erit Domino exercituum à terra Aquilonari ſecus flumen Euphratem.* 10 *Aſcende ad Galaad, & ſume reſinam pro virgine filia Ægypti: multiplicas medicinas tuas in vanum, & nulla tibi eſt utilitas.* 11

ירמיה: כו

, *eam ſuper* meum nomen eſt invocatum quam *civitate in* ecce Quia
29 כִּי הִנֵּה בָעִיר אֲשֶׁר נִקְרָא־שְׁמִי עָלֶיהָ
Non ? eritis innoxii *eſſendo mundi* vos & , malefacere *incipiens* ego
אָנֹכִי מֵחֵל לְהָרַע וְאַתֶּם הִנָּקֵה תִנָּקוּ לֹא
habitatores omnes ſuper *vocans* ego gladium nam : innoxii eritis
תִנָּקוּ כִּי חֶרֶב אֲנִי קֹרֵא עַל־כָּל־יֹשְׁבֵי
eos *ad* prophetabis tu Et .exercituum Dominus dixit , terræ
30 הָאָרֶץ נְאֻם יְהוָה צְבָאוֹת׃ וְאַתָּה תִּנָּבֵא אֲלֵיהֶם
DOMINUS : illos ad dices & : hæc verba omnia
אֵת כָּל־הַדְּבָרִים הָאֵלֶּה וְאָמַרְתָּ אֲלֵיהֶם יְהוָה
.ſuam vocem dabit *ſuæ ſanctitatis* habitaculo de & , rugiet excelſo de
מִמָּרוֹם יִשְׁאָג וּמִמְּעוֹן קָדְשׁוֹ יִתֵּן קוֹלוֹ
calcantium veluti celeuſma , ſuum habitaculū ſuper rugiet Rugiendo
שָׁאֹג יִשְׁאַג עַל־נָוֵהוּ הֵידָד כְּדֹרְכִים
extremū ad uſque ſonitus Venit .terræ *habitatores omnes ad reſonabit*
31 יַעֲנֶה אֶל כָּל־יֹשְׁבֵי הָאָרֶץ׃ בָּא שָׁאוֹן עַד־קְצֵה
omni ipſe judicio contendens , gentibus cū Domino *lis* quia : terræ
הָאָרֶץ כִּי רִיב לַיהוָה בַּגּוֹיִם נִשְׁפָּט הוּא לְכָל
dixit Sic .Dominus dixit , gladio *eos* tradet impios : *carni*
32 בָּשָׂר הָרְשָׁעִים נְתָנָם לַחֶרֶב נְאֻם־יְהוָה׃ כֹּה אָמַר
: gentem in gente à *egrediens* malum Ecce : exercituum Dominus
יְהוָה צְבָאוֹת הִנֵּה רָעָה יֹצֵאת מִגּוֹי אֶל־גּוֹי
interfecti erunt Et .terræ lateribus à ſuſcitabitur magnus turbo &
33 וְסַעַר גָּדוֹל יֵעוֹר מִיַּרְכְּתֵי־אָרֶץ׃ וְהָיוּ חַלְלֵי
extremum ad uſque & , terræ extremo ab illa die in DOMINI
יְהוָה בַּיּוֹם הַהוּא מִקְצֵה הָאָרֶץ וְעַד־קְצֵה
ſimum in, ſepelientur neque , colligentur nec , plangentur Non .terræ
הָאָרֶץ לֹא יִסָּפְדוּ וְלֹא יֵאָסְפוּ וְלֹא יִקָּבֵרוּ לְדֹמֶן
, clamate & , paſtores Ululate .erunt *humi faciebus ſuper*
34 עַל־פְּנֵי הָאֲדָמָה יִהְיוּ׃ הֵילִילוּ הָרֹעִים וְזַעֲקוּ
, veſtri dies ſunt completi quia : *pecoris inſignes cinere* vos involvite &
וְהִתְפַּלְּשׁוּ אַדִּירֵי הַצֹּאן כִּי־מָלְאוּ יְמֵיכֶם
.*deſiderii* vas veluti cadetis & , veſtræ diſperſiones & , jugulandum ad
לִטְבֹּחַ וּתְפוֹצוֹתִיכֶם וּנְפַלְתֶּם כִּכְלִי חֶמְדָּה׃
.*pecoris inſignioribus* ab evaſio & , paſtoribus à fuga peribit Et
35 וְאָבַד מָנוֹס מִן־הָרֹעִים וּפְלֵיטָה מֵאַדִּירֵי הַצֹּאן׃
vaſtavit quia : *pecoris eximiorum* ululatus & , paſtorum clamoris Vox
36 קוֹל צַעֲקַת הָרֹעִים וִילְלַת אַדִּירֵי הַצֹּאן כִּי־שֹׁדֵד
faciebus à , *pacis habitacula* ſunt ſucciſa Et .eorum *paſcuum* Dominus
37 יְהוָה אֶת־מַרְעִיתָם׃ וְנָדַמּוּ נְאוֹת הַשָּׁלוֹם מִפְּנֵי
: ſuum *latibulum* leunculus tanquam Dereliquit .Domini *naſi iræ*
38 חֲרוֹן אַף־יְהוָה׃ עָזַב כַּכְּפִיר סֻכּוֹ
, *depopulatoris iræ faciebus à* , deſolationem in corū terra fuit quia
כִּי־הָיְתָה אַרְצָם לְשַׁמָּה מִפְּנֵי חֲרוֹן הַיּוֹנָה
.ejus *naſi iræ faciebus à &*
וּמִפְּנֵי חֲרוֹן אַפּוֹ׃

CAP. XXVI. כו

, Jehudah regis Joſijahu filii Jehojachim regni principio In
1 בְּרֵאשִׁית מַמְלְכוּת יְהוֹיָקִים בֶּן־יֹאשִׁיָּהוּ מֶלֶךְ יְהוּדָה
dixit Sic : *dicendum ad* , Domino à iſtud verbum fuit
2 הָיָה הַדָּבָר הַזֶּה מֵאֵת יְהוָה לֵאמֹר׃ כֹּה אָמַר
loquêris & , DOMINI domus atrio in Sta : Dominus
יְהוָה עֲמֹד בַּחֲצַר בֵּית־יְהוָה וְדִבַּרְתָּ
domo ſe incurvandum ad *venientes* , Jehudah civitates omnes ad
עַל־כָּל־עָרֵי יְהוּדָה הַבָּאִים לְהִשְׁתַּחֲוֹת בֵּית־
, eos ad *loquendum ad* , tibi præcepi quæ verba univerſa , Domini
יְהוָה אֵת כָּל־הַדְּבָרִים אֲשֶׁר צִוִּיתִיךָ לְדַבֵּר אֲלֵיהֶם
.verbum *diminuas* ne
אַל־תִּגְרַע דָּבָר׃

Verſio VULG. LAT.

29 Quia ecce in civitate, in qua invocatum
eſt nomen meum, ego
incipiam affligere, & vos quaſi
innocentes & immunes eritis?
non eritis immunes: gladium
enim ego voco ſuper omnes habitatores
terræ, dicit Dominus
30 exercituum. Et tu prophetabis
ad eos omnia verba hæc, & dices
ad illos; Dominus de excelſo
rugiet, & de habitaculo ſancto
ſuo dabit vocem ſuam: rugiens
rugiet ſuper decorem ſuum: celeuma
quaſi calcantium concinetur
adverſùs omnes habitatores
31 terræ. Pervenit ſonitus uſque
ad extrema terræ: quia judicium
Domino cum gentibus: judicatur
ipſe cum omni carne, impios
tradidi gladio, dicit Dominus.
32 Hæc dicit Dominus exercituum;
Ecce afflictio egredietur de gente
in gentem: & turbo magnus
egredietur à ſummitatibus terræ.
33 Et erunt interfecti Domini in
die illa, à ſummo terræ uſque ad
ſummum ejus: non plangentur,
& non colligentur, neque ſepelientur:
in ſterquilinium ſuper
34 faciem terræ jacebunt. Ululate
paſtores, & clamate: & aſpergite
vos cinere, optimates gregis:
quia completi ſunt dies veſtri,
ut interficiamini; & diſſipationes
veſtræ, & cadetis quaſi
35 vaſa pretioſa. Et peribit fuga
à paſtoribus, & ſalvatio ab optimatibus
36 gregis. Vox clamoris
paſtorum, & ululatus optimatum
gregis: quia vaſtavit Dominus
37 paſcua eorum. Et conticuerunt
arva pacis à facie iræ
38 furoris Domini. Dereliquit
quaſi leo umbraculum ſuum,
quia facta eſt terra eorum in deſolationem
à facie iræ columbæ,
& à facie iræ furoris Domini.

CAP. XXVI.

1 IN principio regni Joakim filii
Joſiæ regis Juda, factum eſt verbum
iſtud à Domino, dicens;
2 Hæc dicit Dominus; Sta in atrio
domûs Domini: & loquêris ad
omnes civitates Juda, de quibus
veniunt ut adorent in domo Domini,
univerſos ſermones, quos
ego mandavi tibi ut loquaris ad
eos: noli ſubtrahere verbum,

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

12 Ἤκουσαν ἔθνη φωνήν σου, καὶ τῆς κραυγῆς
σου ἐπλήσθη ἡ γῆ, ὅτι μαχητὴς πρὸς
μαχητὴν (π) ἠσθένησαν, ἐπὶ τὸ αὐτὸ ἔπεσον
13 ἀμφότεροι. Ἃ ἘΛΆΛΗΣΕ ΚΎΡΙΟΣ
ἐν χειρὶ Ἱερεμίου, τοῦ ἐλθεῖν (ρ) τὸν βασιλέα
Βαβυλῶνος (σ) τοῦ κόψαι γῆν Αἰγύπτου.
14 Ἀναγγείλατε εἰς Μαγδωλόν, καὶ
παραγγείλατε εἰς Μέμφιν· εἴπατε, Ἐπίστηθι,
καὶ ἑτοίμασον, ὅτι κατέφαγε μάχαιρα
15 τὴν σμίλακά σου. Διατί ἔφυγεν (τ)
ἀπὸ σοῦ ὁ Ἆπις; ὁ μόσχος ὁ ἐκλεκτός
σου οὐκ ἔμεινεν· ὅτι (υ) κύριος παρέλυσεν
16 αὐτόν. Καὶ τὸ πλῆθός σου ἠσθένησε,
καὶ (φ) ἔπεσε· καὶ ἕκαστος πρὸς τὸν πλησίον
αὐτοῦ (χ) ἐλάλει, Ἀναστῶμεν, καὶ (¨) ἀναστρέψωμεν
πρὸς τὸν λαὸν ἡμῶν (ψ) εἰς
τὴν πατρίδα ἡμῶν, ἀπὸ προσώπου μαχαίρας
17 Ἑλληνικῆς. Καλέσατε τὸ ὄνομα
Φαραὼ Νεχαὼ βασιλέως Αἰγύπτου,
18 Σαὼν ἐσβιὲ μωήδ. Ζῶ ἐγώ, λέγει
κύριος ὁ θεός, ὅτι ὡς τὸ Ἰταβύριον ἐν
τοῖς ὄρεσι, καὶ ὡς ὁ Κάρμηλος (ω) ὁ ἐν τῇ
19 θαλάσσῃ, ἥξει. Σκεύη ἀποικισμοῦ ποίησον
σεαυτῇ κατοικοῦσα θύγατερ Αἰγύπτου,
ὅτι Μέμφις εἰς ἀφανισμὸν ἔσται,
καὶ κληθήσεται Οὐαί, διὰ τὸ μὴ
20 ὑπάρχειν κατοικοῦντας ἐν αὐτῇ. Δάμαλις
κεκαλλωπισμένη Αἴγυπτος, ἀπόσπασμα
ἀπὸ Βορρᾶ ἦλθεν ἐπ᾽ αὐτήν,
21 Καὶ οἱ μισθωτοὶ αὐτῆς ἐν αὐτῇ, ὥσπερ
μόσχοι σιτευτοὶ τρεφόμενοι ἐν αὐτῇ·
διότι καὶ (α) αὐτοὶ ἀπεστράφησαν, καὶ ἔφυγον
ὁμοθυμαδόν· οὐκ ἔστησαν, ὅτι ἡμέρα
ἀπωλείας ἦλθεν ἐπ᾽ (β) αὐτούς, καὶ καιρὸς
22 ἐκδικήσεως αὐτῶν. Φωνὴ (γ) αὐτῶν
ὡς ὄφεως συρίζοντος, ὅτι ἐν ἄμμῳ
(δ) πορεύονται, ἐν ἀξίναις ἥξουσιν
23 ἐπ᾽ αὐτήν· ὡς κόπτοντες ξύλα Ἐκκόψουσι
τὸν δρυμὸν αὐτῆς, λέγει (¨) κύριος,
ὅτι οὐ μὴ εἰκασθῇ, ὅτι (ε) πληθύνει ὑπὲρ
ἀκρίδα, καὶ οὐκ ἔστιν αὐτοῖς ἀριθμός.
24 Κατῃσχύνθη ἡ θυγάτηρ Αἰγύπτου, παρεδόθη
25 εἰς χεῖρας λαοῦ ἀπὸ Βορρᾶ. Ἰδοὺ
ἐγὼ ἐκδικῶ τὸν Ἀμμὼν τὸν υἱὸν αὐτῆς
ἐπὶ Φαραώ, καὶ ἐπὶ τοὺς πεποιθότας
27 ἐπ᾽ αὐτῷ. Σὺ δὲ μὴ φοβηθῇς δοῦλός
μου Ἰακώβ, μηδὲ πτοηθῇς Ἰσραήλ·
διότι ἐγὼ (ζ) ἰδοὺ σώζων σε μακρόθεν,
καὶ τὸ σπέρμα σου ἐκ τῆς αἰχμαλωσίας
αὐτῶν. καὶ ἀναστρέψει Ἰακώβ,
καὶ ἡσυχάσει καὶ ὑπνώσει, καὶ οὐκ ἔσται
ὁ παρενοχλῶν αὐτόν.

Audierunt gentes vocem tuam: 12
& clamore tuo impleta eſt terra:
quia pugnator adverſùs
pugnatorem infirmatus eſt: in
idipſum ceciderunt utrique.
QUÆ loquutus eſt Dominus
in manu Hieremiæ, cùm veniret 13
rex Babylonis ad percutiendam
terram Ægypti. (g) Annuntiate 14
in Magdolum, & annuntiate
in Memphim: dicite;
Sta, & præpara te: quia devoravit
gladius (h) ſmilacem
tuam. Quarè fugit à te (i) Apis, 15
vitulus electus tuus? non perſtitit;
quia Dominus diſſolvit eum:
Et multitudo tua infirmata 16
eſt, & cecidit: & unuſquiſque
ad proximum ſuum loquebatur;
Surgamus, & revertamur
ad populum noſtrum in
patriam noſtram à facie gladii
Græci. Vocate nomen Pharaonis
Nechao regis Ægypti, (k) 17
Saon Esbie Moed. Vivo ego, 18
dicit Dominus Deus, (l) quia,
ſicut Itabyrium in montibus,
& ſicut Carmelus in mari,
veniet. Vaſa tranſmigrationis
fac tibi, habitatrix filia Ægypti: 19
quoniam Memphis in ſolitudinem
erit, & vocabitur Væ, eò
quòd non ſint habitantes in ea.
Vitula adornata Ægyptus: excidium 20
ab Aquilone venit ſuper
eam: Et mercenarii ejus in
ea, quaſi vituli ſaginati nutriti 21
in (m) ea: nam & ipſi converſi
ſunt, & fugerunt unanimiter:
non ſteterunt: quia dies
perditionis venit ſuper eos, &
tempus ultionis eorum. Vox eorum, 22
quaſi ſerpentis ſibilantis:
quia in arena ambulant, in ſecuribus
venient ſuper eam:
quaſi cædentes ligna Excident
ſylvam ejus, dicit Dominus: 23
quoniam non ſupputabitur, quoniam
multiplicavit ſuper locuſtam:
& non eſt eis numerus.
Confuſa eſt filia Ægypti, tradita 24
eſt in manus populi ab (n)
Aquilone. Ecce ego ulciſcar 25
Ammon filium ejus (o) ſuper
Pharaonem, & ſuper eos qui
fiderunt (p) in eo. Tu autem ne
timueris, ſerve meus Jacob; neque 27
paveas, Iſrael: quia ecce
ego ſalvans te de longè, &
ſemen tuum ex captivitate ipſorum.
Et revertet Jacob, &
quieſcet, & dormiet: & non
erit, qui perturbet eum.

MS.A. (π) ἠσθένησεν, (ρ) Ναβουχοδονόσορ τὸν (σ) καὶ ἐκκόψαι τὴν γῆν αὐτοῦ. (τ) ὁ Ἆπις; (υ) ὁ κύριος (φ) ἔπεσον· (χ) ἐλάλουν, (¨) ἀποστρέψωμεν εἰς τὸν λαὸν (ψ) ἀπὸ προσώπου (ω) ἐν τῇ (α) οὗτοι ἀπεστράφησεν, (β) αὐτοῖς, (γ) ὡς ὄφεως (δ) πορεύσονται, (¨) κύριος ὁ θεός, (ε) ἐπλήθυνεν ὑπὲρ ἀκρίδας, (ζ) σώζω

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

29 אֲרֵי הָא בְקַרְתָּא דְּאִתְקְרֵי שְׁמִי עֲלַהּ אֲנָא מְשָׁרֵי לְאַבְאָשָׁא וְאַתּוּן מְדַמַּן דְּמִזְכָּא
תִזְכּוּן לָא תִזְכּוּן אֲרֵי דְקָטְלִין בְּחַרְבָּא אֲנָא מְכַלֵּי עַל כָּל יָתְבֵי אַרְעָא אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת׃
30 וְאַתְּ תִּתְנַבֵּי לְהוֹן יָת כָּל פִּתְגָּמַיָּא הָאִלֵּין וְתֵימַר לְהוֹן יְיָ מִמְּרוֹמָא יַכְלֵי וּמִמְּדוֹר קוּדְשֵׁיהּ
יְרִים מֵימְרֵיהּ אַכְלָאָה יַכְלֵי דְיֵיתוֹן בָּזוֹזִין עַל אֲרַע בֵּית שְׁכִנְתֵּיהּ הָא כְנָחֲתֵי מַעֲצָרָא
31 דְּמְרִימִין קָלְהוֹן כֵּן יֵיתֵי זְוָעָה לְכָל יָתְבֵי אַרְעָא׃ מְטָא אִתְרְגוּשָׁא עַד סְיָפֵי אַרְעָא אֲרֵי
דִינָא קֳדָם יְיָ בְּעַמְמַיָּא מִתְפְּרַע הוּא לְכָל בִּשְׂרָא רַשִׁיעַיָּא דִּבְהוֹן מַסְרְנוּן לְקִטְלָא אֲמַר יְיָ׃
32 כִּדְנָן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת הָא בִשְׁתָּא נָפְקָא מֵעַם לְעַם וְעַמְמִין רַבְרְבִין יֵיתוֹן בִּגְלֵי מִסְּיָפֵי
33 אַרְעָא׃ וִיהוֹן קְטִילַיָּא רְמַן קֳדָם יְיָ בְּיוֹמָא הַהוּא מִסְּיָפֵי אַרְעָא וְעַד סְיָפֵי אַרְעָא לָא
34 יִסְתַּפְדוּן וְלָא יִתְכַּנְשׁוּן וְלָא יִתְקַבְרוּן לְזֵיבַל מְבַדַּר עַל אַפֵּי אַרְעָא יְהוֹן׃ אֲלִילוּ מַלְכַיָּא
צְוַחוּ וַחֲפוּ רֵישֵׁיכוֹן בְּקִטְמָא תַּקִּיפֵי עַמָּא אֲרֵי שְׁלִימוּ יוֹמֵיכוֹן לְקַטָּלָא וְתִתְבַּדְּרוּן וְתִפְּלוּן
35 דַּהֲוֵיתוֹן רְגִינִין כְּמָנֵי חֶמְדְּתָא׃ וְיֵיבַד בֵּית עֲרוֹקֵי מִן מַלְכַיָּא וְשֵׁיזָבָא מִתַּקִּיפֵי עַמָּא׃ קָל
36 37 צְוַחַת מַלְכַיָּא וִילְלַת תַּקִּיפֵי עַמָּא אֲרֵי אַבֵּז יְיָ יָת עַמְּהוֹן׃ וְיִצְדוֹן מְדוֹרֵי שְׁלָמְהוֹן מִקֳּדָם
38 תְּקוֹף רוּגְזָא דַיְיָ׃ גְּלָא מַלְכָּא מִכְּרַכֵּיהּ אֲרֵי הֲוָת אַרְעֲהוֹן לְצָדוּ מִן קֳדָם חֲרַב סַנְאָה
דְּהִיא כַחֲמַר מְרַוְיָא וּמִן קֳדָם תְּקוֹף רוּגְזֵיהּ׃

כו

1 בְּרֵישׁ מַלְכוּת יְהוֹיָקִים בַּר יֹאשִׁיָּה מַלַךְ שִׁבְטָא דְבֵית יְהוּדָה הֲוָה פִּתְגָמָא הָדֵין מִן קֳדָם
2 יְיָ לְמֵימַר׃ כִּדְנָן אֲמַר יְיָ קוּם בְּדָרַת בֵּית מַקְדְּשָׁא דַיְיָ וְתִתְנַבֵּי עַל כָּל קִרְוַיָּא דְבֵית יְהוּדָה
דְּעָלִין לְמִסְגַּד בְּבֵית מַקְדְּשָׁא דַיְיָ יָת כָּל פִּתְגָּמַיָּא דְפַקֵּדְתָּךְ לְאִתְנַבָּאָה לְהוֹן לָא תִמְנַע
פִּתְגָּם׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quia ecce in civitate ſuper quam invocatum eſt nomen meum, ego incipio 29
affligere: & vos putatis prorſus eſſe immunes? Non eritis immunes:
quia eos qui occidunt gladio ego voco ſuper omnes habitatores terræ,
dicit Dominus exercituum. Tu autem prophetabis eis omnia verba hæc, 30
& dices eis: Dominus de excelſo clamabit, & de habitaculo ſancto ſuo
attollet verbum ſuum: clamando clamabit ut veniant direptores ſuper
terram domus majeſtatis ſuæ, ſicut qui deſcendunt in torcular, qui tollunt
vocem ſuam, ſic veniet conturbatio omnibus habitatoribus terræ. Pervenit 31
tumultus uſque ad extrema terræ: quia judicium coram Domino cum
populis: retribuet ipſe omni carni; impios qui in eis ſunt, tradet morti, dicit
Dominus. Hæc dicit Dominus exercituum: Ecce malum egredietur de 32
populo in populum, & populi multi venient apertè à finibus terræ. Et 33
erunt occiſi *projecti* à facie Domini in tempore illo à finibus terræ uſq; ad
extrema terræ: non plangentur, nec colligentur, nec ſepelientur: in ſtercus
diſperſum ſuper faciem terræ erunt. Ululate reges, & clamate, & operite 34
capita veſtra cinere fortes in populo; quia impleti ſunt dies veſtri ut occidamini:
et diſpergemini, et cadetis qui eratis *delicati* quaſi vaſa deſiderabilia.
Et peribit domus fugitivorum à regibus, & liberatio à fortibus populi. 35
Vox clamoris regum, & ululatio fortium populi: quia vaſtavit Dominus 36
populos eorum. Et deſolabuntur habitacula pacifica eorum, à facie furoris 37
iræ Domini. Migravit rex ex arce ſua; quia fuit terra eorum in deſolationem 38
à facie gladii inimici, qui inebriat ſicut vinum, & à facie iræ furoris
ejus.

CAP. XXVI.

IN principio regni Joachim filii Joſiæ regis tribus domus Juda, factum eſt 1
verbum iſtud à facie Domini, dicendo: Hæc dicit Dominus, Sta in atrio 2
domus ſanctuarii Domini, & prophetabis in omnes civitates domus Juda,
quæ veniunt ut adorent in domo ſanctuarii Domini, omnia verba quæ
præcepi tibi, ut prædiceres eis: ne dimittas verbum.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

29 * ܡܛܠ ܕܗܐ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ ܕܐܬܩܪܝ ܫܡܝ ܥܠܝܗ̇. ܫܪܐ ܐܢܐ ܠܡܒܐܫܘ ܠܗ̇. ܘܐܢܬܘܢ
ܡܙܟܐ ܬܙܕܟܘܢ. ܠܐ ܬܙܕܟܘܢ܆ ܡܛܠ ܕܚܪܒܐ ܩܪܐ ܐܢܐ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
30 ܚܝܠܬܢܐ: * ܘܐܢܬ ܬܬܢܒܐ ܥܠܝܗܘܢ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ܆ ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܡܪܝܐ
ܡܢ ܡܪܘܡܐ ܢܢܗܡ. ܘܡܢ ܡܥܡܪܐ ܕܩܘܕܫܗ ܢܬܠ ܩܠܗ. ܢܗܡܐ ܢܢܗܡ ܥܠ ܥܡܪܗ.
ܗܝܕܕ ܗܝܕܕ ܐܝܟ ܕܪܘܟܐ ܕܥܢܒܐ. ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ. * ܡܛܝܐ ܫܘܓܫܝܐ ܥܕܡܐ 31
ܠܣܘܦܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܕܝܢܐ ܠܡܪܝܐ ܥܡ ܥܡܡܐ. ܘܕܐܢ ܗܘ ܠܟܠ ܒܣܪ. ܘܠܪܫܝܥܐ
32 ܐܫܠܡ ܐܢܘܢ ܠܚܪܒܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܐܝܠ. ܗܐ
33 ܒܝܫܬܐ ܢܦܩܐ ܡܢ ܥܡܐ ܠܥܡܐ. ܘܥܠܥܠܐ ܪܒܐ ܬܬܥܝܪ ܡܢ ܣܘܦܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ. * ܘܢܗܘܘܢ
ܩܛܝܠܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܡܢ ܣܘܦܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܣܘܦܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ. ܠܐ
ܢܬܐܠܘܢ܆ ܘܠܐ ܢܪܩܕܘܢ. ܘܠܐ ܢܬܟܢܫܘܢ ܥܠܝܗܘܢ܆ ܘܠܐ ܢܬܩܒܪܘܢ. ܐܠܐ ܐܝܟ ܙܒܠܐ
34 ܥܠ ܐܦܝ ܐܪܥܐ ܢܗܘܘܢ. * ܐܝܠܠܘ ܪܥܘܬܐ ܘܐܙܥܩܘ. ܘܐܬܦܠܦܠܘ ܪܒܝ ܥܢܐ܆
35 ܕܡܠܘ ܝܘܡܝܟܘܢ ܠܡܬܢܟܣܘ. ܘܬܬܒܪܘܢ܆ ܘܬܦܠܘܢ ܐܝܟ ܡܐܢܐ ܕܪܓܬܐ. * ܘܢܐܒܕ ܡܥܪܩܐ
36 ܡܢ ܪܥܘܬܐ. ܘܦܠܛܬܐ ܡܢ ܕܒܪܐ ܕܥܢܐ. * ܩܠܐ ܕܩܥܬܐ ܕܪܥܘܬܐ. ܘܝܠܠܬܐ ܕܕܒܪܐ ܕܥܢܐ.
37 38 ܕܒܙ ܡܪܝܐ ܡܪܥܝܬܗܘܢ. * ܘܢܬܚܪܒܘܢ ܥܘܡܪܝ ܫܝܢܐ. ܡܢ ܩܕܡ ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ. * ܡܛܠ
ܕܫܒܩ ܕܝܪܗ. ܐܝܟ ܐܪܝܐ ܕܫܒܩ ܡܥܡܪܬܗ ܡܛܠ ܕܗܘܬ ܐܪܥܗܘܢ ܠܚܘܪܒܐ. ܡܢ ܩܕܡ
ܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ܆ ܘܡܢ ܩܕܡ ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ. * ܫܠܡܘ * ܟܗ *

29 Quandoquidē en ab ipſâ civitate ſuper quam invocatū eſt nomen meum, initium facio nocendi ei, vos immunes eſſetis? haudquaquam eritis immunes, quoniam gladium advoco in omnes habitatores terræ, dicit Dn̄s potentiſſimus. 30 Tu itaq; prophetabis eis omnes ſermones iſtos, & dices eis; Dn̄s ab excelſo rugiet, & ex habitaculo ſanctitatis ſuæ vocem ſuam edet, horrendè rugiet contra domiciliū ſuum, hem hem ut *uvarum* calcator reſonabit adverſùs omnes habitatores terræ, 31 Pervadet ſtrepitus uſq; ad extrema terræ: Quia diſceptatio eſt Dn̄o cum gentibus, & ipſe judicat omnem carnem; ideo impios gladio tradam, dicit Dn̄s. 32 Sic ait Dn̄s potentiſſimus, Deus Iſraelis, Ecce malum progredietur de gente in gentem, & procella magna excitabitur ab extremis terræ: 33 Erúntque qui interficientur à Domino in die illa, ab extremis terræ uſq; ad extrema terræ: nemo lugebit, nemo lamentabitur, nemóque deplorabit eos: non colligentur, neq; ſepelientur; ſed ut ſtercus in ſuperficie terræ manebunt. 34 Ululate paſtores, & exclamate; & volutate vos *in pulvere* potentiores in grege: quoniā expleti ſunt dies veſtri ut mactemini, frangamini, & cadatis ut vaſa expetibilia. 35 Et peribit perfugium à paſtoribus, & evadendi loc⁹ ab arietib⁹ gregis: 36 Vox clamoris paſtorum, & ululat⁹ arietum gregis *audietur*, eò quòd diripuerit Dn̄s greges eorum: 37 Et rumpentur domicilia tuta à conſpectu æſtuantis iræ Dn̄i, 38 Quia dereliquit domicilium ſuum ut leo qui cubile ſuum derelinquit, quia redactus eſt terra eorum in ſolitudinem à conſpectu iræ Domini, & à conſpectu ferventis furoris ejus.

CAP. XXVI.

1 * ܒܪܫ ܡܠܟܘܬܗ ܕܝܘܝܩܝܡ ܒܪ ܝܘܫܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ܆ ܗܘܐ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ ܠܘܬ
2 ܐܪܡܝܐ܆ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܘܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܩܘܡ ܒܕܪܬܐ ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ܆
ܘܐܡܪ ܠܟܠܗܘܢ ܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ ܕܐܬܝܢ ܠܡܣܓܕ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ
ܕܦܩܕܬܟ ܠܡܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܠܐ ܬܒܨܪ ܐܦܠܐ ܚܕܐ ܡܠܬܐ.

1 INitio regni Jojacimi filii Joſiæ regis Judæ factus eſt ſermo iſte ad Jeremiam à Domino, hiſce verbis; 2 Sic dicit Dominus, Sta in atrio domûs Domini, & dic omnibus civitatibus Judæorum venientium ad adorandum in domo Domini, omnes ſermones quos illis dicendum præcepi tibi: ne ullum quidem verbum ſubtrahito:

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* سمعوا الامم صوتك * ومن صراخك امتلات الارض * لان محاربا على محارب ضعف جميعا * 12
سقطا كلاهما *
* الاصحاح السادس عشر *
13 * هذا ما تكلم به الرب بيد ارمياء * اذ اتي بختنصر ملك بابل ليستاصل ارضه *
14 15 * اخبروا في مجدول * وخبروا في منف * قولوا قف وتهيا لان السيف اكل منقارك * لماذا هرب * لماذا
16 فر عجلك المختار هاربا ولم يثبت * لان الرب ازاله * وكثرتك ضعفت * وسقطوا كل واحد
17 على قريبه * قالوا نقوم وننصرف الى شعبنا من وجه سيف يوناني * ادعوا اسم فرعون ناخاو
18 ملك مصر صااون اسبي امويد * حي انا يقول الرب الاله انه كما ايطابيريون في الجبال
19 ومثل الكرمل في البحر ياتي * انية السبي * اصنعي لذاتك ايتها الساكنة ابنة مصر * لان
20 منف تصير للفناء وتدعي ويل * من اجل انه لا يكون سكان فيها * مصر العجلة المنقشة
21 ياتي عليها الانكسار من الجربياء * واجراؤها فيها مثل عجول مسمنة مربية فيها * من اجل
انه وهؤلاء انصرفوا وهربوا معا ولم يقفوا * لان يوم الهلاك اتي عليهم * وزمان انتقامهم بصوت
22 مثل حية تصفر * لانهم في الرمل يسيرون * وبفوس يوافون لها * مثل قاطعي الخشب يقطعون
23 24 غابها * يقول الرب الاله انها لا تشفي * لانهم كثروا اكثر من الجراد وليس لهم عدد * خزيت
25 ابنة مصر * دفعت في ايدي شعب من الجربياء * ها انا انتقم من امون ابنها على فرعون
26 وعلى الواثقين به [* MS.Oxon. وادفعهم الى اعدائهم الذين يطلبون انفسهم * في يد
بختنصر ملك بابل وفي ايدي عبيده * ومن بعد ذلك يحل ويسكن كالايام الاولي يقول الرب *]
27 * وانت لا تخف يا عبدي يعقوب * ولا تجزع يا اسرائيل * من اجل اني انا اخلصك من البعد *
وذريتك من السبي * ويرجع يعقوب * ويسكن وينام * ولا يكون من يؤذيه *

12 *Audient populi vocem tuam, & clamore tuo implebitur terra; quia bellator ſuper bellatorem, uterque debilitatus, corruent ambo.*

Textus decimus ſextus.

13 Hæc ſunt quæ locutus eſt Dominus per Jeremiam, quando venit Bochtonaſſar rex Babelis ad evertendam terram ipſius.

14 *Annuntiate in Migdol, & notum facite in Menphi; dicite, Siſte & compara te, quia gladius voravit roſtrum tuum.* 15 *Ad quid aufugit, quâ de causâ vitulus tuus electus fugiens erupit, nec ſubſtitit? quia Dominus depulit illum.* 16 *Multitudo quoque tua conſternata eſt, et cadentes quiſq; ſuper proximum ſuum; dicebant, Surgamus, & eamus ad populares noſtros à conſpectu gladii Græci.* 17 *Vocate nomen Pharaonis Nechao regis Ægypti, Saon esbi Hammoed.* 18 *Vivus ego ſum, ait Dominus Deus, quòd ut Itabyrion in montibus, et ut Charmelus in mari, venient inſtrumenta populationis.* 19 *Tui ipſius curam age O ò toſa filia Ægypti: nam Menphis erit in exitium, & vocabitur, Inſœlicitas; quia nulli manebunt habitatores in ea.* 20 *Super Ægyptum vitulam cælatam irruet contritio ab Aquilone,* 21 *Dum mercenarii ejus in ipſa tanquam vituli ſaginati nutriuntur in ea: nam etiam iſti diſcedent fugiéntq; ſimul, & non ſubſiſtent; quia dies exitii veniet ſuper illos, et tempus ultionis eorum cum voce ſimili ſerpentis ſibilantis.* 22 *Nam per arenas incedentes pervenient ad eam cum ſecuribus, ut lignorum cæſores cædent ſylvas ejus.* 23 *Dicit Dominus Deus eam minimè ſanandam, quòd ii plurimi ſint, plures locuſtis, imò innumeri.* 24 *Pudefiet filia Ægypti, tradetur in manus populi Aquilonaris:* 25 *Ecce ego vindictam de Ammone filio ipſius repetam, à Pharaone & à fidentibus ipſo.* 26 [MS. Ox. *Et tradam eos hoſtibus ſuis, qui quærunt animas ipſorum: nempe in manus Bochtonaſſaris regis Babyloniæ, & in manus ſervorum ejus: poſtmodum autem quieſcent, & habitabunt ſicut diebus priſcis, dicit Dominus.*] 27 *Tu verò ne timeto ſerve mi Jacob, neque formidato O Iſrael; quoniam ego vindicabo te è loco remoto, & progeniem tuam è captivitate: & revertetur Jacob, & quieſcet, dormiétque nemine lædente.*

ירמיה : כו

me pœniteat & ,mala ſua via à unuſquiſq; convertâtur &,audiant fortè Si
3 אולי ישמעו וישבו איש מדרכו הרעה ונחמתי
malitiam propter ,eis facere *cogitans* ego quod ,*malum* *ad*
אל־הרעה אשר אנכי חשב לעשות להם מפני רע
non Si : Dominus dixit Sic : eos ad dices Et .eorum *ſtudiorum*
4 מעלליהם: ואמרת אליהם כה אמר יהוה אם־לא
.*veſtras facies ad* dedi quam ,mea lege in *ambulandum ad* ,*me ad* *audieritis*
תשמעו אלי ללכת בתורתי אשר נתתי לפניכם:
mittens ego quos ,prophetarum meorũ ſervorũ verbis *ſuper audiendũ Ad*
5 לשמע על־דברי עבדי הנבאים אשר אנכי שלח
dabo Et *audiviſtis* non & ,mittendo & ,ſurgendo mane & , vos ad
6 אליכם והשכם ושלח ולא שמעתם: ונתתי
dabo hanc urbem & , Siloh ſicut iſtam domum
את־הבית הזה כשלה ואת־העיר הזאתה אתן
ſacerdotes audierunt Et .terræ gentibus cunctis maledictionem in
7 לקללה לכל גויי הארץ: וישמעו הכהנים
verba loquentem Irmejahu populus omnis & ,prophetæ &
והנביאים וכל־העם את־ירמיהו מדבר את־הדברים
Irmejahu *conſummare ſecundum* fuit Et .Domini domo in hæc
8 האלה בבית יהוה: ויהי ככלות ירמיהו
,populum omnem ad *loqui* Dominus præceperat quæ omnia loqui
לדבר את כל־אשר־צוה יהוה לדבר אל־כל־העם
,populus omnis & , prophetæ & , ſacerdotes eum apprehenderunt &
ויתפשו אתו הכהנים והנביאים וכל־העם
,Domini nomine in prophetâſti Quare .morieris Moriendo : dicendo
9 לאמר מות תמות: מדוע נבית בשם־יהוה
deſolabitur iſta urbs & , iſta domus erit Siloh Sicut : dicendo
לאמר כשלו יהיה הבית הזה והעיר הזאת תחרב
Irmejahu adverſus populus omnis eſt congregatus & ? *habitatore non à*
מאין ישב ויקהל כל־העם אל־ירמיהו
verba Jehudah principes audierunt Et .Domini domo in
10 בבית יהוה: וישמעו שרי יהודה את־הדברים
ſederunt & : Domini domum regis domo de aſcenderunt & ,hæc
האלה ויעלו מבית־המלך בית יהוה וישבו
prophetæ & ſacerdotes dixerunt Et .novæ Domini portæ oſtio in
11 בפתח שער־יהוה החדש: ויאמרו הכהנים והנביאים
mortis Judicium : dicendo ,populum omnem ad & ,principes ad
אל־השרים ואל־כל־העם לאמר משפט־מות
ſicut , iſtam civitatem contra prophetavit quia : huic viro
לאיש הזה כי נבא אל־העיר הזאת כאשר
,principes omnes ad Irmejahu ait Et .veſtris auribus *in* audiſtis
12 שמעתם באזניכם: ויאמר ירמיהו אל־כל־השרים
prophetandum ad me miſit Dominus : dicendo ,populum univerſum ad &
ואל־כל־העם לאמר יהוה שלחני להנבא
verba omnia hanc civitatem *ad* & ,iſtam domum *ad*
אל־הבית הזה ואל־העיר הזאת את כל־הדברים
,veſtra *ſtudia* & ,veſtras vias facite bonas nunc Et .audiſtis quæ
13 אשר שמעתם: ועתה היטיבו דרכיכם ומעלליכם
ad Dominum pœnitebit & : veſtri Dei Domini *voce in* *audite &*
ושמעו בקול יהוה אלהיכם וינחם יהוה אל־
,veſtra manu in *ego ecce* ego Et .vos adverſum eſt locutus quod *malum*
14 הרעה אשר דבר עליכם: ואני הנני בידכם
Veruntamen .veſtris oculis in rectum ſicut & ,bonum ſicut mihi facite
15 עשו־לי כטוב וכישר בעיניכם: אך
innocentẽ ſanguinẽ quòd me *vos interficientes* ſi quia ,ſciatis ſciendo
ידע תדעו כי־אם ממתים אתם אתי כי־דם נקי
:ejus habitatores *ad* & ,iſtam civitatem *ad* & , vos ſuper *dantes* *vos*
אתם נתנים עליכם ואל־העיר הזאת ואל־ישביה
loquendum ad , vos ad Dominus me miſit veritate in nam
כי באמת שלחני יהוה עליכם לדבר
.hæc verba omnia veſtris auribus in
באזניכם את כל־הדברים האלה:

Verſio VULG. LAT.

3 Si fortè audiant & convertantur unuſquiſque à via ſua mala: & pœniteat me mali, quod cogito facere eis propter malitiam ſtudiorum eorum. 4 Et dices ad eos; Hæc dicit Dominus; Si non audieritis me, ut ambuletis in lege 5 mea, quam dedi vobis, Ut audiatis ſermones ſervorum meorum Prophetarum, quos ego miſi ad vos de nocte conſurgens, & 6 dirigens, & non audîſtis: Dabo domum iſtam ſicut Silo, & urbem hanc dabo in maledictionẽ cun- 7 ctis gentibus terræ. Et audierunt ſacerdotes, & prophetæ, & omnis populus, Jeremiam loquentem verba hæc in domo Domini. 8 Cúmque complêſſet Jeremias, loquens omnia quæ præceperat ei Dominus ut loqueretur ad univerſum populum, apprehenderunt eum ſacerdotes, & prophetæ, & omnis populus, dicens; 9 Morte moriatur. Quarè prophetavit in nomine Domini, dicens; Sicut Silo erit domus hæc: & urbs iſta deſolabitur, eò quòd non ſit habitator? Et congregatus eſt omnis populus adverſùs 10 Jeremiam in domo Domini. Et audierunt principes Juda verba hæc: & aſcenderunt de domo regis in domum Domini, & ſederunt in introitu portæ domûs 11 Domini novæ. Et locuti ſunt ſacerdotes & prophetæ ad principes, & ad omnem populum, dicentes; Judicium mortis eſt viro huic: quia prophetavit adverſùs civitatem iſtam, ſicut audîſtis 12 auribus veſtris. Et ait Jeremias ad omnes principes, & ad univerſum populum, dicens; Dominus miſit me, ut prophetarem ad domum iſtam, & ad civitatem hanc, omnia verba quæ audîſtis. 13 Nunc ergò bonas facite vias veſtras, & ſtudia veſtra, & audite vocem Domini Dei veſtri: & pœnitebit Dominum mali, quod 14 locutus eſt adverſùm vos. Ego autem ecce in manibus veſtris ſum: facite mihi quod bonum et rectum eſt in oculis veſtris: 15 Veruntamen ſcitote et cognoſcite, quòd ſi occideritis me, ſanguinem innocentẽ tradetis contra voſmetipſos, et contra civitatem iſtam, et habitatores ejus: in veritate enim miſit me Dominus ad vos, ut loquerer in auribus veſtris omnia verba hæc.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

28 (η) Μὴ φοβοῦ παῖς μου Ἰακὼβ, λέγει κύριος, ὅτι μετὰ σοῦ ἐγώ εἰμι. ἡ ἀπτόητος καὶ τρυφερὰ παρεδόθη. ὅτι ποιήσω (θ) ἔθνει συντέλειαν ἐν παντὶ ἔθνει εἰς οὓς ἐξῶσά σε ἐκεῖ, σὲ δὲ οὐ μὴ ποιήσω ἐκλιπεῖν, καὶ παιδεύσω σε εἰς (ι) κρίμα, καὶ ἀθῷον οὐκ (κ) ἀθωώσω σε.

Ne timeas puer meus Jacob, dicit Dominus: quia tecum ego ſum. (q) Intrepida & delicata tradita eſt. Quia faciam (r) genti conſummationem in omni gente, ad quos expuli te illuc: te autem non faciam deficere: et caſtigabo te in judicio, et innocentem faciens non faciam innocentem te. 28

MS.A. (η) Καὶ σὺ μὴ (θ) συντέλειαν ἐν παντὶ (ι) κρίσιν, (κ) ἀθοώσω

Cap. 50.

ΚΕΦ. κζ΄.

1 Vulg.Lat. (α) ΛΟΓΟΣ ΚΥΡΙΟΥ ὋΝ ἘΛΑΛΗΣΕ ἘΠΙ ΒΑΒΥΛΩΝΑ. 2 Ἀναγγείλατε ἐν τοῖς ἔθνεσι, καὶ ἀκουστὰ ποιήσατε, καὶ μὴ κρύψητε· εἴπατε, Ἑάλωκε Βαβυλὼν, κατῃσχύνθη (β) Βῆλος, ἡ ἀπτόητος, ἡ τρυφερὰ παρεδόθη 3 (γ) Μαιρωδὰχ. Ὅτι ἀνέβη ἐπ' αὐτὴν ἔθνος ἀπὸ Βοῤῥᾶ, οὗτος θήσει τὴν γῆν αὐτῆς εἰς ἀφανισμὸν, καὶ οὐκ ἔσται ὁ κατοικῶν ἐν αὐτῇ ἀπὸ ἀνθρώπου (δ) καὶ ἕως 4 κτήνους. Ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, καὶ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, ἥξουσιν οἱ υἱοὶ (ε) Ἰσραὴλ αὐτοὶ, καὶ οἱ υἱοὶ Ἰούδα ἐπὶ τὸ αὐτὸ, βαδίζοντες καὶ κλαίοντες πορεύσονται, τὸν 5 κύριον θεὸν αὐτῶν ζητοῦντες. Ἕως (ζ) Σιὼν ἐρωτήσουσι τὴν ὁδὸν, ὧδε γὰρ τὸ πρόσωπον αὐτῶν δώσουσι, καὶ ἥξουσι, καὶ καταφεύξονται πρὸς κύριον (η) τὸν θεόν· δια- 6 θήκη γὰρ αἰώνιος οὐκ ἐπιλησθήσεται. Πρόβατα ἀπολωλότα ἐγενήθη ὁ λαός μου, οἱ ποιμένες αὐτῶν ἐξῶσαν αὐτοὺς, ἐπὶ τὰ ὄρη ἀπεπλάνησαν αὐτοὺς, ἐξ ὄρους ἐπὶ βουνὸν ᾤχοντο, ἐπελάθοντο κοίτης αὐ- 7 τῶν. Πάντες οἱ εὑρίσκοντες αὐτοὺς, (θ) ἀνήλισκον αὐτούς. οἱ ἐχθροὶ αὐτῶν εἶπαν, Μὴ ἀνῶμεν αὐτοὺς, ἀνθ' ὧν ἥμαρτον τῷ κυρίῳ. νομὴ δικαιοσύνης τῷ συν- 8 αγαγόντι τοὺς πατέρας αὐτῶν. (ι) Ἀπαλλοτριώθητε ἐκ μέσου Βαβυλῶνος καὶ ἀπὸ γῆς Χαλδαίων, καὶ ἐξέλθατε, καὶ γένεσθε ὥσπερ 9 δράκοντες κατὰ πρόσωπον προβάτων. Ὅτι ἰδοὺ ἐγὼ ἐγείρω ἐπὶ Βαβυλῶνα συναγωγὰς ἐθνῶν ἐκ γῆς Βοῤῥᾶ, καὶ παρατάξονται αὐτῇ· ἐκεῖθεν (κ) ἁλώσεται, ὡς βολὶς μαχητοῦ συνετοῦ οὐκ ἐπιστρέψει κενή. 10 Καὶ ἔσται ἡ Χαλδαία εἰς προνομὴν, πάντες οἱ (λ) προνομεύοντες αὐτὴν ἐμπλησθή- 11 σονται. Ὅτι ηὐφραίνεσθε, καὶ κατεκαυχᾶσθε, διαρπάζοντες τὴν κληρονομίαν μου, διότι ἐσκιρτᾶτε, ὡς βοΐδια ἐν βοτάνῃ, 12 καὶ ἐκερατίζετε ὡς ταῦροι. Ἠσχύνθη ἡ μήτηρ (μ) ὑμῶν σφόδρα, ἐνετράπη ἡ τεκοῦσα (ν) ὑμᾶς μήτηρ ἐπ' ἀγαθὰ, ἐσχάτη 13 ἐθνῶν, ἔρημος. Ἀπὸ ὀργῆς κυρίου, οὐ κατοικηθήσεται (ξ)· καὶ ἔσται εἰς ἀφανισμὸν πᾶσα· καὶ πᾶς ὁ διοδεύων διὰ Βαβυλῶνος σκυθρωπάσει, καὶ συριοῦσιν ἐπὶ πᾶσαν τὴν πληγὴν αὐτῆς.

CAP. XXVII.

1 *Verbum Domini, quod loquutus eſt ſuper (a) Babylonem.* 2 *Annuntiate in gentibus, & audita (b) facite, & ne abſcondatis. Dicite; Capta eſt Babylon: Confuſus eſt (c) Belus; interrita, delicata tradita eſt Mærodach:* 3 *Quia aſcendit ſuper eam gens ab Aquilone. Hic ponet terram ejus in deſolationem: & non erit, qui habitet in ea ab homine, & uſque ad pecus.* 4 *In diebus illis & in tempore illo, venient filii Iſrael, ipſi, & filii Juda in idipſum: euntes, & plorantes ibunt, Dominum Deum ſuum quærentes.* 5 *Uſque ad Sion interrogabunt viam: huc enim faciem ſuam dabunt: & venient, & confugient ad Dominum Deum. Teſtamentum enim æternum oblivioni non tradetur.* 6 *Oves perditæ factus eſt populus meus: paſtores eorum expulerunt eos in montes, ſeduxerunt eos, de monte in collem abierunt: obliti ſunt cubilis ſui.* 7 *Omnes invenientes eos abſumebant eos. Inimici eorum dixerunt, Ne dimittamus eos, eò quòd peccaverunt Domino. Paſcua juſtitiæ ei, qui congregavit patres (d) eorum.* 8 *Abalienamini de medio Babylonis: & de terra Chaldæorum, & egredimini: & eſtote velut (e) dracones ante faciem ovium.* 9 *Quia ecce ego ſuſcito ſuper Babylonem congregationes gentium de terra Aquilonis, & aciem opponent ei: indè capietur: quaſi jaculum pugnatoris intelligentis non redibit vacuum.* 10 *Et erit Chaldæa in direptionem: omnes diripientes eam implebuntur.* 11 *Quia lætabamini, & gloriabamini diripientes hæreditatem meam: quia geſtiebatis quaſi vituli in herba, & cornupetebatis, velut tauri.* 12 *Confuſa eſt mater veſtra valdè: (f) pudefacta eſt mater, quæ peperit vos ad bona: noviſſima gentium, (g) deſerta,* 13 *Præ ira Domini, non habitabitur: et erit univerſa in ſolitudinem; et omnis, qui tranſibit per Babylonem, triſtabitur; et ſibilabunt ſuper omnem plagam ejus.*

MS.A. (α) Ὁ ΛΟΓΟΣ ὋΝ ἘΛΑΛΗΣΕΝ ΚΥΡΙΟΣ ἘΠΙ (β) Βῆλ, (γ) Μεωδὰχ, (δ) ἕως κτήνους. (ε) Ἰακὼβ, καὶ οἱ (ζ) εἰς Σιὼν (η) θεόν· (θ) κατανάλισκον (ι) Ἀπαλλοτριώθητε (κ) ἁλώσονται, (λ) προνομεύσαντες (μ) ἡμῶν (ν) ἡμᾶς (ξ) εἰς τὸν αἰῶνα· καὶ ἔσται εἰς ἀφανισμὸν πᾶσα ἡ γῆ·

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 מאים ישמעון ויתובון גבר מאורחיה בישא ואתיב מן בישתא דאנא חשיב למעבד
4 להון מקדם בישות עובדיהון : ותימר להון כדנן אמר יי אם לא תקבלון למימרי
5 למהך באוריתי דיהבית קדמיכון : לקבלא לפתגמי עבדי נביא דאנא שלח לותכון
6 מקדם ומשלח ולא קבלתון : ואתן ית ביתא הדין כשילו וית קרתא הדא אתן
7 ללוטא לכל עממי ארעא : ושמעו כהניא וספריא וכל עמא דירמיה מתנבי ית פתגמיא
8 האלין בבית מקדשא דיי : והוה כד שיצי ירמיה לאתנבאה ית כל דפקיד יי למללא
9 עם כל עמא ואחדו יתיה כהניא וספריא וכל עמא למימר ממת תמות : מדין
אתנביתא בשמא דיי למימר כשילו יהי ביתא הדין וקרתא הדא תחרוב מבלי יתיב
10 ואתכנש כל עמא על ירמיה בבית מקדשא דיי : ושמעו רברבי יהודה ית פתגמיא האלין
וסליקו מבית מלכא לבית מקדשא דיי ויתיבו במעלנא דתרע בית מקדשא דיי
11 מדינחאה : ואמרו כהניא וספריא לרברביא ולכל עמא למימר חובת דין דקטול לגברא
12 הדין ארי אתנבי על קרתא הדא כמה דשמעתון באודניכון : ואמר ירמיה לכל
רברביא ולכל עמא למימר יי שלחני לאתנבאה על ביתא הדין ועל קרתא הדא ית כל
13 פתגמיא דשמעתון : וכען אתקינו אורחתכון ועובדיכון וקבלו למימרא דיי אלהכון
14 ויתוב יי מן בישתא דמליל עליכון : ואנא האנא מסיר בידכון עבידו לי כמה דתקין
15 וכמה דכשר בעיניכון : ברם מידע תידעון ארי אם קטלין אתון יתי ארי דם זכי אתון
יהבין עליכון ועל קרתא הדא ועל יתבהא ארי בקשוט שלחני יי עליכון לאתנבאה
קדמיכון ית כל פתגמיא האלין :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

3 Fortè audient & convertentur unuſquiſque à via ſua mala, & avertar ego 4 à malo quod cogito facere eis propter malitiam operum ipſorum. Et dices ad eos: Hæc dicit Dominus; Si non receperitis verbum meum ut ambu- 5 letis in lege mea quam dedi coram vobis: Ut obediatis verbis ſervorum meorum prophetarum, quos ego miſi ad vos, manè conſurgens & mit- 6 tens, & non obediſtis. Et dabo domum iſtam ſicut Silo, & civitatem 7 iſtam dabo in maledictionem omnibus populis terræ. Et audierunt ſacerdotes & ſcribæ & omnis populus Jeremiam prophetantem omnia ver- 8 ba hæc, in domo ſanctuarii Domini. Et factum eſt cùm conſummaſſet Jeremias prophetare omnia quæ præcepit ei Dominus ut loqueretur cum omni populo, apprehenderunt eum ſacerdotes & ſcribæ, & omnis popu- 9 lus, dicendo: Morte morieris. Quare prophetâſti in nomine Domini, dicens: Sicut Silo erit domus iſta? & civitas hæc deſolabitur abſque habitatore? Et congregatus eſt omnis populus contra Jeremiam in domo 10 ſanctuarii Domini. Et audierunt principes Juda verba hæc, & aſcenderunt de domo regis in domum ſanctuarii Domini, & ſederunt in introitu 11 portæ orientalis domus ſanctuarii Domini. Et dixerunt ſacerdotes & ſcribæ principibus & omni populo, dicentes: Peccatum judicii mortis eſt viro huic; quia prophetavit adverſùs civitatem iſtam: ſicut audiſtis aurib' 12 veſtris. Et ait Jeremias ad omnes principes, & ad omnem populum dicens: Dñs miſit me ut prophetarem contra domum iſtam, & contra civitatem 13 hanc omnia verba quæ audiſtis. Et nunc rectas facite vias veſtras, & opera veſtra, & obedite verbo Dñi Dei veſtri, & avertetur Dñs à malo quod lo- 14 cut' eſt contra vos. Et *ego* ecce ego tradit' ſum in manum veſtram; facite 15 mihi ſicut rectum eſt, & ſicut placuerit oculis veſtris. Veruntamen ſciendo ſcitote, quia ſi occiditis me, ſanguinem innocentem vos dabitis ſuper vos, & ſuper civitatem hanc, & ſuper habitatores ejus. Quia verè miſit me Dñs ad vos, ut prophetarem in conſpectu veſtro omnia verba hæc.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܟܒܪ ܢܫܡܥܘܢ. ܘܢܬܦܢܘܢ ܓܒܪ ܡܢ ܐܘܪܚܗ ܒܝܫܬܐ. ܘܐܬܬܘܐ ܡܢ ܒܝܫܬܐ ܕܐܬܚܫܒܬ 3
ܠܡܥܒܕ ܠܗܘܢ. ܡܛܠ ܒܝܫܘܬܐ ܕܥܒܕܝܗܘܢ. * ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܢ 4
ܠܐ ܬܫܡܥܘܢܢܝ ܘܬܗܠܟܘܢ ܒܢܡܘܣܝ ܕܝܗܒܬ ܩܕܡܝܟܘܢ: * ܘܬܫܡܥܘܢ ܠܡܠܝ ܥܒܕܝ 5
ܢܒܝܐ ܕܐܢܐ ܡܫܕܪ ܠܘܬܟܘܢ. ܩܕܡܬ ܘܫܕܪܬ ܘܠܐ ܫܡܥܬܘܢ.
* ܐܬܠ ܠܒܝܬܐ ܗܢܐ ܐܝܟ ܫܝܠܘ. ܘܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܐܬܠ ܠܠܘܛܬܐ ܠܟܠܗܘܢ 6
ܥܡܡܐ ܕܐܪܥܐ. * ܘܫܡܥܘ ܟܗܢܐ ܘܢܒܝܐ ܕܓܠܐ ܘܟܠܗ ܥܡܐ. ܠܐܪܡܝܐ ܟܕ ܡܡܠܠ 7
ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܟܕ ܫܠܡ ܐܪܡܝܐ ܠܡܡܠܠܘ ܟܠܡܕܡ ܕܦܩܕܗ ܡܪܝܐ 8
ܠܡܡܠܠܘ ܠܟܠܗ ܥܡܐ. ܐܚܕܘܗܝ ܟܗܢܐ ܘܢܒܝܐ ܕܓܠܐ ܘܟܠܗ ܥܡܐ ܘܐܡܪܘ. * ܢܬܩܛܠ 9
ܕܐܬܢܒܝ ܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ: ܘܐܡܪ ܕܐܝܟ ܫܝܠܘ ܢܗܘܐ ܒܝܬܐ ܗܢܐ. ܘܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܬܚܪܒ ܡܢ ܕܠܐ
ܝܬܒ. ܘܐܬܟܢܫܘ ܟܠܗ ܥܡܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܫܡܥܘ ܪܘܪܒܢܐ ܕܝܗܘܕܐ 10
ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ. ܘܣܠܩܘ ܡܢ ܒܝܬ ܡܠܟܐ ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܝܬܒܘ ܒܡܥܠܢܐ
ܕܬܪܥܐ ܚܕܬܐ ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܐܡܪܘ ܟܗܢܐ ܘܢܒܝܐ ܕܓܠܐ ܠܪܘܪܒܢܐ ܘܠܟܠܗ ܥܡܐ 11
ܟܕ ܐܡܪܝܢ. ܕܝܢܐ ܕܡܘܬܐ ܚܝܒ ܓܒܪܐ ܗܢܐ. ܕܐܬܢܒܝ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܘܥܠ ܥܡܘܪܝܗ.
ܐܝܟ ܕܫܡܥܬܘܢ ܒܐܕܢܝܟܘܢ. * ܘܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܠܟܠܗܘܢ ܪܘܪܒܢܐ ܘܠܟܠܗ ܥܡܐ. 12
ܡܪܝܐ ܫܕܪܢܝ ܠܡܬܢܒܝܘ ܥܠ ܒܝܬܐ ܗܢܐ ܘܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ
ܕܫܡܥܬܘܢ. * ܘܗܫܐ ܬܪܝܨܘ ܐܘܪܚܬܟܘܢ ܘܥܒܕܝܟܘܢ. ܘܫܡܥܘ ܠܩܠܗ ܕܡܪܝܐ 13
ܐܠܗܟܘܢ. ܘܢܬܬܘܐ ܡܪܝܐ ܡܢ ܒܝܫܬܐ ܕܐܡܪ ܥܠܝܟܘܢ. * ܘܐܢܐ ܗܐ ܒܐܝܕܝܟܘܢ ܐܢܐ. 14
ܥܒܕܘ ܒܝ ܐܝܟ ܕܫܦܝܪ ܘܐܝܟ ܕܬܩܢ ܒܥܝܢܝܟܘܢ. * ܒܪܡ ܡܕܥ ܝܕܥܘ. ܕܐܢ ܩܛܠܝܢ ܐܢܬܘܢ 15
ܠܝ. ܕܡܐ ܙܟܝܐ ܝܗܒܝܢ ܐܢܬܘܢ ܥܠܝܟܘܢ. ܘܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܘܥܠ ܥܡܘܪܝܗ. ܡܛܠ
ܕܒܩܘܫܬܐ ܫܕܪܢܝ ܡܪܝܐ ܠܘܬܟܘܢ. ܕܐܡܪ ܒܐܕܢܝܟܘܢ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ.

* Si fortè acquieſcant, & revertantur quiſque à 3
via ſua mala, ut deſiſtam à malo quod eis inferre
decreverã propter nequitiã actionũ eorum:
Itaq; dic eis; Sic dicit Dñs, niſi acquie- 4
veritis mihi, & ambulaveritis in lege mea quã
propoſui vobis; Et acquieveritis ſermonib' 5
ſervorũ meorum prophetarũ quos ego mitto
ad vos (ſingulis *enim* diebus diluculò miſi, &
nondũ acquieviſtis.) Reddã domũ iſtam ſimi- 6
lem Silo, & civitatẽ iſtam maledictioni tra-
dam apud omnes populos terræ. Audierunt 7
autem ſacerdotes, & prophetæ falſi, totúſque
populus Jeremiam ſermones hujuſmodi lo-
quentẽ in domo Dñi. Quare cùm finem fe- 8
ciſſet Jeremia dicendi quicquid præceperat ei
Dñs proloqui apud univerſum populũ, tenue-
runt eum; ſacerdotes, & falſi prophetæ, totúſq;
popul' ille, & dixerũt; Occidatur qui prophe- 9
tavit in nomine Dñi, dixítque ſimilem Silo
fore domũ iſtam, & civitatẽ hanc ruiturã ob
defectũ incolarũ: adeóq; congregatus fuerat
univerſus populus contra Jeremiam in domo
Dñi. Audientes autem principes Judæ ſermo- 10
nes iſtos, aſcenderunt è domo regia in domũ
Domini, & ſederunt in veſtibulo portæ novæ
domûs Dñi. Tum locuti ſunt ſacerdotes fal- 11
ſique prophetæ ad principes & univerſum
populũ, hiſce verbis; Sententiâ mortis dignus
eſt vir iſte, quia prophetavit contra civitatem
iſtam & contra habitatores ejus, quemadmo-
dum auribus veſtris audiviſtis. Dixit autem 12
Jeremia cunctis principibus totíque populo,
Dominus quidem me miſit ad prophetandum
contra domum hanc, & contra civitatem iſtã
omnes ſermones quos audîſtis. Nunc itaque 13
corrigite vias veſtras & actiones veſtras, &
obtemperate voci Dñi Dei veſtri, ut deſiſtat
Dñs à malo quod in vos decrevit. Quod au- 14
tem ad me, ecce ſum inter man' veſtras; facite
prout libuerit placueritque vobis. Verun- 15
tamen certò ſcitote, quòd ſi me interfeceritis,
ſanguinem innocentem aſcribetis contra vos,
contra civitatem iſtam, & contra habitato-
tes ejus: quoniam reverà miſit me Dominus
ad vos, ut referrem in aures veſtras omnes
ſermones iſtos.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وانت لا تخف يا عبدي يعقوب يقول الرب * لاني انا معك انا * العير خايفة المتنعمة اسلمت * 28
لاني اصنع هلاكا بكل امة اقصيتك اليهم هناك * واما انت اصنعك ان لا تفني * واودبك
بالحكم ولا اتركك تزكية *

* الفصل السابع والعشرون *

* القول الذي تكلم به الرب على بابل * اخبروا في الامم واسمعوا مسمعات ولا تخفوا * وقولوا 1 2
اهلكت بابل * خزي بيل ماروصاح * العير خايفة المتنعمة اسلمت * لان امة من الجربياء 3
صعدت عليها * فهي تصنع ارضها للفناء * ولا يكون من يسكن فيها من الانسان الي
البهيمة * في تلك الايام وفي ذلك الزمان تاتي بنو يعقوب وبنو يهودا جميعا يعمدون ويبكون * 4
يقصون طالبين الرب الههم الي صهيون يسالون الطريق * لانهم يعطون وجوههم هاهنا * 5
وياتون ويلتجون الي الرب الاله * لانه عهد ابدي لا ينسي * صار شعبي خرافا ضالة * رعاتهم 6
اقصوهم * على الجبال اضلوهم * يعبرون من جبل الي تل * نسوا مضجعهم * جميع الذين 7
يجدونهم ياكلونهم * اعداوهم قالوا لا ندعهم لانهم اخطاوا للرب مرعي العدل الجامع اباهم *
* تغربوا من وسط بابل * ومن ارض الكلدانيين اخرجوا * وصيروا مثل تيايس لوجه الخراف * 8
* لاني ها انا اثير على بابل مجامع امم من ارض الجربياء * ويصطفون عليها من هناك يهلكون * 9
مثل نصل المحارب الفهيم لا يرجع فارغا * ويكون الكلدانية للنهب * وجميع الذين ينهبونها 10
يشبعون * لانكم فرحتم وافتخرتم يا خاطفي ميراثي * من اجل انكم طربتم مثل عجاجيل 11
في النبات * وتناطحتم مثل الثيران * افتضحت امكم جدا * خجلت الام التي ولدتكم 12
للخيرات * اخرة الامم خراب من غضب الرب لا يسكن الي الابد * ويكون كل الارض للفناء * 13
وكل من يمر ببابل يعبس * ويصفرون على كل ضربتها *

* *Tu igitur ne timeto ſerve mi Jacob, ait Dominus; quoniam ego tecum ſum: impavida illa et delicata tradetur; quoniam excidium facturus ſum in omnibus gentibus ad quas te depuli; te autem efficiam ut non conſumaris: verùm puniam te in judicio, nec omnino inſontem relinquam.*

CAP. XXVII.

Sermo quem locutus eſt Dominus contra Babelem. 1

Annuntiate inter gentes, publicum facite, & ne celetis: dicite, Periit Babel, 2
pudefactus eſt Bil-merodach, intrepida illa et voluptuaria dedit manus. Quoni- 3
am gens quædam ex Aquilone contra ipſam aſcendit; hæc terram ejus tantum ad exitium rediget, ut nullus ſit vel homo vel jumentum qui habitet in ea. Iis 4
diebus eóque tempore filii Jacobi & filii Judæ ſimul venient, ſtabunt, ac flebunt: quærentes Dominum Deum ſuum, pergent ad Sionem interrogantes de via.
Huc enim vertent faciem ſuam, & veni- 5
ent, confugiéntque ad Dominum Deum; quia fœdus eſt perpetuum quod nunquam oblivioni tradetur. Factus eſt populus 6
meus oves perditæ, paſtores earum depulerunt eas, ſuper montes perdiderunt eas, aberrant de monte ad collem, oblitæ ſunt
cubilis ſui: Quicunque inveniunt eas, 7
comedunt eas. Hoſtes eorum dicunt, Ne dimittamus eos, quia peccaverunt in Dominum paſcuum juſtitiæ, congregantem
patres eorum. Migrate de medio Ba- 8
belis, et de terra Chaldæorum exite, et eſtote veluti dracones ante agnos. Nam ecce 9
concitabo contra Babelem turbas gentium de terra Aquilonari, quæ ſe diſponent contra eam (exinde peribunt) tanquam cuſpis ſagitta bellatoris periti qui non revertitur vacuus. Eritque Chaldæa in prædam, 10
et omnes qui prædabuntur eam, implebuntur. Quia lætati & gloriati eſtis O ra- 11
ptores hæreditatis meæ; quia exſultâſtis ut vituli in gramine, & quaſi tauri invicèm cornu petîſtis: Maximâ ignominiâ 12
affecta eſt mater veſtra, erubuit mater quæ vos ad bona genuit. Finis gentium, ob 13
iram Domini, ruina erit nunquam habitabilis; redigetur enim tota terra in deſolationem, & quicunque ſecus Babelem tranſierint, frontem contrahent & ſibilabunt propter tantam ejus plagam.

ירמיה : כו

,prophetas ad & ,sacerdotes ad populus omnis & ,principes dixerunt Et
16 ויאמרו השרים וכל־העם אל־הכהנים ואל־הנביאים
Domini nomine in quia : mortis judicium huic viro non
אין־לאיש הזה משפט־מות כי בשם יהוה
senioribus de viri Surrexeruntque .nos ad est locutus nostri Dei
17 אלהינו דבר אלינו : ויקמו אנשים מזקני
Michah : dicendo , populi concionem omnem ad dixerunt & , terræ
18 הארץ ויאמרו אל־כל־קהל העם לאמר : מיכיה
dixit & ,Jehudah regis Chizchijahu diebus in *vaticinans fuit* Morasthites
המורשתי היה נבא בימי חזקיהו מלך־יהודה ויאמר
: exercituum Dominus dixit Sic : dicendo ,Jehudah populū omnem ad
אל־כל־עם יהודה לאמר כה־אמר יהוה צבאות
domus mons & ,erit tumuli Jerusalaim & ,arabitur ager Sijon
ציון שדה תחרש וירושלם עיים תהיה והר הבית
Chizchijahu eum interfecerunt interficiendo Nunquid .sylvæ excelsa *in*
19 לבמות יער : ההמת המתהו חזקיהו
,Dominum timuit Nónne ? Jehudah omnis & ,Jehudah rex
מלך־יהודה וכל־יהודה הלא ירא את־יהוה
malum ad Dominum pœnituit & ,Domini *facies* est precatus &
ויחל את־פני יהוה וינחם יהוה אל־הרעה
grande malum *facientes* nos & ? eos adversus erat locutus quod
אשר־דבר עליהם ואנחנו עשים רעה גדולה
Domini nomine in *vaticinans fuit* vir etiam Et .nostras animas contra
20 על־נפשותינו : וגם־איש היה מתנבא בשם יהוה
adversus prophetavit & , Jeharim Chiriath de Semahajahu filius Urijahu
אוריהו בן־שמעיהו מקרית היערים וינבא על־
verba omnia juxta ,hanc terram adversus & , istam civitatem
העיר הזאת ועל־הארץ הזאת ככל דברי
omnes & ,ejus potentes omnes & ,Jehojachim rex audivit Et .Irmejahu
21 ירמיהו : וישמע המלך־יהויקים וכל־גבוריו וכל־
audivit & : eum interficere rex quæsivit & ,ejus verba principes
השרים את־דבריו ויבקש המלך המיתו וישמע
misit Et .Ægyptum est ingressus & ,fugitque ,timuit & , Urijahu
22 אוריהו וירא ויברח ויבא מצרים : וישלח
,Hachbor filium Elnathan ,Ægyptum viros Jehojachim rex
המלך יהויקים אנשים מצרים את־אלנתן בן־עכבור
,Ægypto de Urijahu eduxerunt Et .Ægyptum in eo cum viros &
23 ואנשים אתו אל־מצרים : ויוציאו את־אוריהו ממצרים
,gladio *in* eum percussit & ,Jehojachim regem ad eum adduxerunt &
ויבאהו אל־המלך יהויקים ויכהו בחרב
Veruntamen .populi filiorum sepulchra in ejus cadaver projecit &
24 וישלך את־נבלתו אל־קברי בני העם : אך
dandum non ad ,Irmejahu cum erat Saphan filii Achicam manus
יד אחיקם בן־שפן היתה את־ירמיהו לבלתי תת־
.eum interficiendum ad , populi manu in eum
אתו ביד־העם להמיתו :

CAP. XXVII. כז

fuit ,Jehudah regis Josijahu filii Jehojachim regni principio In
1 בראשית ממלכת יהויקם בן־יאושיהו מלך יהודה היה
dixit Sic : dicendo ,Domino à Irmejah ad istud verbum
2 הדבר הזה אל־ירמיה מאת יהוה לאמר : כה־אמר
.tuū collū super ea *dabis* & ,vectes & , vincula tibi Fac :me ad Domin⁹
יהוה אלי עשה לך מוסרות ומטות ונתתם על־צוארך :
regem ad & ,Moab regem ad & ,Edom regem ad ea mittes Et
3 ושלחתם אל־מלך אדום ואל־מלך מואב ואל־מלך
manum per ,Sidon regem ad & ,Sor regem ad & ,Hammon filiorum
בני עמון ואל־מלך צר ואל־מלך צידון ביד
.Jehudah regem Sidchijahu ad ,Jerusalaim *venientium* nuntiorum
מלאכים הבאים ירושלם אל־צדקיהו מלך יהודה :

Versio VULG. LAT.

16 Et dixerunt principes, & omnis populus, ad sacerdotes, & ad prophetas; Non est viro huic judicium mortis: quia in nomine Domini Dei nostri locutus est 17 ad nos. Surrexerunt ergò viri de senioribus terræ: & dixerunt ad omnem cœtū populi, loquen- 18 tes; Michæas de Morasthi fuit propheta in diebus Ezechiæ regis Juda, & ait ad omnem populum Juda, dicens; Hæc dicit Dominus exercituum, Sion quasi ager arabitur: & Jerusalem in acervum lapidum erit: & mons 19 domûs in excelsa sylvarum. Numquid morte condemnavit eum Ezechias rex Juda, & omnis Juda? numquid non timuerunt Dominum, & deprecati sunt faciem Domini: & pœnituit Dominum mali, quod locutus fuerat adversùm eos? Itaque nos facimus malum grande contra 20 animas nostras. Fuit quoque vir prophetans in nomine Domini, Urias filius Semei de Cariathiarim: & prophetavit adversùs civitatem istam, & adversùs terram hanc, juxta omnia verba Je- 21 remiæ. Et audivit rex Joakim, & omnes potentes, & principes ejus, verba hæc: & quæsivit rex interficere eum. Et audivit Urias, & timuit, fugitque & ingressus 22 est Ægyptum. Et misit rex Joakim viros in Ægyptum, Elnathan filium Achobor, & viros cum 23 eo in Ægyptum. Et eduxerunt Uriam de Ægypto: & adduxerunt eum ad regem Joakim, & percussit eum gladio: & projecit cadaver ejus in sepulchris 24 vulgi ignobilis. Igitur manus Ahicam filii Saphan fuit cum Jeremia, ut non traderetur in manus populi, & interficerent eum.

CAP. XXVII.

1 IN principio regni Joakim filii Josiæ regis Juda, factum est verbum istud ad Jeremiam à Domi- 2 no, dicens; Hæc dicit Dominus ad me; Fac tibi vincula, & catenas: & pones eas in collo tuo, 3 Et mittes eas ad regem Edom, & ad regem Moab, & ad regem filiorum Ammon, & ad regem Tyri, & ad regem Sidonis, in manu nuntiorum, qui venerunt Jerusalem ad Sedeciam regem Juda.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

14 Παρατάξασθε ἐπὶ Βαβυλῶνα κύκλῳ πάν-
τες τείνοντες τόξον, τοξεύσατε ἐπ᾽ αὐ-
τήν, μὴ φείσησθε ἐπὶ τοῖς τοξεύμασιν
15 ὑμῶν, Καὶ κατακρατήσατε (ο) αὐτήν.
παρελύθησαν αἱ χεῖρες αὐτῆς, ἔπεσαν αἱ ἐπ-
άλξεις αὐτῆς, (π) καὶ κατεσκάφη τὸ τεῖ-
χος αὐτῆς, ὅτι ἐκδίκησις παρὰ θεοῦ ἐστιν·
ἐκδικεῖτε ἐπ᾽ αὐτήν, καθὼς ἐποίησε, ποι-
16 ήσατε αὐτῇ. (ρ) Ἐξολοθρεύσατε σπέρ-
μα ἐκ Βαβυλῶνος, κατέχοντα δρέπανον
ἐν καιρῷ θερισμοῦ ἀπὸ προσώπου μαχαί-
ρας Ἑλληνικῆς, ἕκαστος εἰς τὸν (σ) λαὸν
αὐτοῦ ἀποστρέψουσι, καὶ ἕκαστος εἰς (τ) τὴν
17 γῆν αὐτοῦ φεύξεται. Πρόβατον πλανώμενον
Ἰσραήλ, λέοντες ἐξῶσαν αὐτόν· ὁ πρῶτος
ἔφαγεν αὐτὸν βασιλεὺς Ἀσσύρ, καὶ οὗτος ὕ-
στερον τὰ ὀστᾶ αὐτοῦ βασιλεὺς Βαβυλῶνος.
18 Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ
ἐκδικῶ ἐπὶ τὸν βασιλέα Βαβυλῶνος, καὶ
ἐπὶ τὴν γῆν αὐτοῦ, καθὼς ἐξεδίκησα ἐπὶ
19 τὸν βασιλέα Ἀσσύρ. Καὶ ἀποκαταστήσω
τὸν Ἰσραὴλ εἰς τὴν νομὴν αὐτοῦ, καὶ νεμή-
σεται ἐν τῷ Καρμήλῳ, καὶ ἐν ὄρει Ἐφραίμ,
καὶ ἐν (υ) τῷ Γαλαάδ, καὶ πλησθήσεται ἡ
20 ψυχὴ αὐτοῦ. Ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, καὶ
ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, (φ) ζητήσουσι τὴν
ἀδικίαν Ἰσραήλ, καὶ οὐχ ὑπάρξει, καὶ τὰς
ἁμαρτίας Ἰούδα, καὶ οὐ μὴ εὑρεθῶσιν, ὅτι ἵ-
21 λεως ἔσομαι τοῖς ὑπολελειμμένοις Ἐπὶ
τῆς γῆς, λέγει κύριος. πικρῶς ἐπίβηθι ἐπ᾽
αὐτήν, καὶ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας (χ) ἐπ᾽
αὐτήν· ἐκδίκησον μάχαιρα, καὶ ἀφάνισον,
λέγει κύριος, καὶ ποίει κατὰ πάντα ὅσα ἐν-
22 τέλλομαί σοι. Φωνὴ πολέμου καὶ συντρι-
23 βὴ μεγάλη ἐν γῇ Χαλδαίων. Πῶς (ψ) ἐ-
κλάσθη καὶ συνετρίβη ἡ σφῦρα πάσης τῆς
γῆς; πῶς ἐγενήθη εἰς ἀφανισμὸν Βα-
24 βυλὼν ἐν ἔθνεσιν; Ἐπιθήσονταί σοι,
(ω) καὶ οὐ γνώσῃ, ὦ Βαβυλὼν καὶ ἁλώσῃ·
εὑρέθης, καὶ ἐλήφθης, ὅτι τῷ κυρίῳ ἀν-
25 τέστης. Ἤνοιξε κύριος τὸν θησαυρὸν αὐτοῦ,
καὶ ἐξήνεγκε τὰ σκεύη ὀργῆς αὐτοῦ, ὅτι
ἔργον τῷ (α) κυρίῳ θεῷ ἐν γῇ Χαλδαίων,
26 Ὅτι ἐληλύθασιν οἱ καιροὶ αὐτῆς. ἀνοί-
ξατε τὰς ἀποθήκας αὐτῆς, (β) ἐρευνή-
σατε αὐτὴν ὡς σπήλαιον, καὶ (γ) ἐξολο-
θρεύσατε αὐτήν· μὴ γενέσθω αὐτῆς κατά-
27 λειμμα· Ἀναξηράνατε αὐτῆς πάντας τοὺς
καρποὺς, καὶ καταβήτωσαν εἰς σφαγήν. οὐαὶ
αὐτοῖς, ὅτι ἥκει ἡ ἡμέρα αὐτῶν, καὶ και-
28 ρὸς ἐκδικήσεως αὐτῶν. Φωνὴ φευγόντων,
καὶ ἀνασῳζομένων ἐκ γῆς Βαβυλῶνος, τοῦ
ἀναγγεῖλαι εἰς Σιὼν (δ) τὴν ἐκδίκησιν πα-
ρὰ κυρίου θεοῦ (ε) ἡμῶν.

Instruimini super Babylonem in 14
circuitu omnes, qui tenditis arcum: jaculamini super eam: ne
parcatis in jaculis vestris, (h) Et 15
subjicite eam. Dissolutæ sunt
manus ejus, ceciderunt propugnacula ejus, & suffossus est murus
ejus: quia ultio à Deo est: ulciscimini super eam: sicut fecit,
facite ei. Exterminate semen de 16
(i) Babylone, tenentem falcem in
tempore messis: à facie gladii
Græci, unusquisque ad populum
suum revertentur, & unusquisque in terram suam fugiet. Ovis 17
errans Israel: leones expulerunt
eum. Primus comēdit eum rex
Assur, & hic posteriùs ossa ejus
rex Babylonis. Propterea hæc 18
dicit Dominus; Ecce ego ulciscor super regem Babylonis, & super terram ejus, sicut ultus sum
super regem Assur. Et restituam 19
Israel in pascuam suam, & pascet in (k) Carmelo, & in monte
Ephræm, & in Galaad: & implebitur anima ejus. In diebus
illis, & in tempore illo quærent 20
iniquitatem Israel; & non erit:
& peccata Judæ; & non invenientur: quia propitius ero residuis (l) Super terram, dicit 21
Dominus. Amarè ascende super
eam, & super habitantes in ea:
ulciscere gladie, & dele, dicit
Dominus, & fac secundùm omnia quæ mandavero tibi. Vox 22
belli, & contritio magna in terra Chaldæorum. Quomodò fractus & contritus est malleus universæ terræ? quomodò facta est 23
in solitudinem Babylon in gentibus? (m) Ascendent in te, & 24
(n) non cognosces quia Babylon,
et capieris. Inventa es, et capta;
quia Domino restitisti. Aperuit 25
Dominus thesaurum suum, et
protulit vasa iræ suæ: quoniam
opus Domino Deo in terra Chaldæorum: Quoniam venerunt 26
tempora ejus. Aperite apothecas ejus: scrutamini eam, velut speluncam, et exterminate
eam: non sint ejus reliquiæ:
Exiccate omnes ejus fructus: 27
et descendant in occisionem. Væ
eis, quia venit dies ipsorum,
et tempus ultionis eorum. Vox 28
fugientium et evadentium de
terra Babylonis, ad annuntiandum in Sion ultionem à Domino
Deo (o) nostro.

MS.A. (ο) ἐπ᾽ αὐτήν. (π) κατεσκάφη (ρ) Ἐξολεθρεύσατε (σ) τόπον (τ) τὸν οἶκον (υ) γῇ Γαλαάδ, καὶ ἐμπλησθήσεται (φ) φησὶν κύριος, (χ) αὐτήν. (ψ) Συνεκλάσθη (ω) καὶ ἁλώσῃ, καὶ οὐ γνώσῃ ὡς Βαβυλών, καὶ εὑρέθης, (α) κυρίῳ ἐν γῇ (β) καὶ ἐραυνήσατε (γ) ἐξολεθρεύσατε (δ) ἐκδίκησιν (ε) αὐτῶν.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 ואמרו רברביא וכל עמא לכהניא ולספריא לית לגברא הדין חובת דין דקטול ארי
17 בשמא דיי אלהנא מלל עמנא : וקמו גבריא מסבי ארעא ואמרו לכל קהלא דעמא
18 למימר : מיכה דממרשא הוה מתנבי ביומי חזקיה מלך שבטא דבית יהודה ואמר לכל
עמא דבית יהודה למימר כדנן אמר יי צבאות ציון חקל תתרדי וירושלם ליגרין תהי
19 וטור בית מקדשא דיי לחישת חורשא : המקטל קטלוהי חזקיה מלך שבטא דבית
יהודה וכל דבית יהודה הלא דחיל מן קדם יי וצלי קדם יי ותב יי מן בישתא דמליל
20 עליהון ואנחנא גרמין לאיתאה בישתא רבתא על נפשתנא : ואף גברא הוה מתנבי
בשמא דיי אוריה בר שמעיה מקרית יערים ואתנבי על קרתא הדא ועל ארעא הדא ככל
21 פתגמי ירמיה : ושמע מלכא יהויקים וכל גברוהי וכל רברביא ית פתגמוהי ובעא
22 מלכא למקטליה ושמע אוריה ודחיל וערק ואתא למצרים : ושלח מלכא יהויקים
23 גברין למצרים ית אלנתן בר עכבור וגברין עמיה למצרים : ואפיקו ית אוריה ממצרים
24 ואיתיוהי לות מלכא יהויקים וקטליה בחרבא ורמא ית נבלתיה לקברי גליא : ברם יד
אחיקם בר שפן הות עם ירמיה בדיל דלא למסר יתיה בידא דעמא למקטליה :

כז

1 בריש מלכות יהויקים בר יאשיהו מלך שבטא דבית יהודה הות פתגמא הדין עם ירמיה
2 מן קדם יי למימר : כדנן אמר יי לי עביד לך חנקין ונירין ותתנינון על צורך : ותשלחנון
3 לות מלכא דאדום ולות מלכא דמואב ולות מלכא דבני עמון ולות מלכא דצור
ולות מלכא דצידון ביד אזגדיא דאתן לירושלם לות צדקיה מלך שבטא דבית
יהודה :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et dixerunt principes & omnis popul⁹ sacerdotibus & scribis: Non est 16
reatus judicii mortis viro huic; quia in nomine Dñi Dei nostri locutus est
nobiscum. Et surrexerunt viri de seniorib⁹ terræ, & dixerunt omni ecclesiæ 17
populi, dicendo: Micheas de Maresa prophetavit in dieb⁹ Ezechiæ regis 18
tribus domus Juda, & ait omni populo domus Juda, dicendo: Sic dixit
Dñs exercituum: Sion quasi ager arabitur, & Jerusalem in acervos erit,
& mons domus sanctuarii in silentia sylvæ. Num occidendo occiderunt 19
eum Ezechias rex tribus domus Juda, & omnes [*viri*] domus Juda?
Nónne timuit à facie Domini? & oravit coram Domino? & aversus est
Dominus à malo quod locutus fuerat super eos. Et nos sumus in causa ut
adducamus malum grande super animas nostras. Et etiam alius vir pro- 20
phetavit in nomine Domini, Urias nomine, fili⁹ Semeiæ de Cariathiarim;
& prophetavit adversum civitatem istam, & adversùs terram hanc, juxta
omnia verba Jeremiæ. Et audivit rex Joachim, & omnes potentes ejus, & 21
omnes principes, verba ejus: & quæsivit rex interficere eum. Et audivit
Urias, & timuit, & fugit, & venit in Ægyptum. Et misit rex Joachim 22
viros in Ægyptum, Elnathan filium Achbor, & alios viros cum eo in
Ægyptum. Et eduxerunt Uriam de Ægypto, & adduxerunt eum ad regem 23
Joachim: & interfecit eum gladio, & projecit cadaver ejus in sepulchra
transmigrantium. Veruntamen manus Achicam filii Saphan fuit cum 24
Jeremia, ut non traderent eum in manus populi ad occidendum eum.

CAP. XXVII.

IN principio regni Joachim filii Josiæ regis tribus domus Juda, factum 1
est verbum istud cum Jeremia à facie Domini, dicendo: Hæc dicit Do- 2
minus mihi: Fac tibi vincula & juga, & pones ea super collum tuum.
Et mittes ea ad regem Edom, & ad regem Moab, & ad regem filiorum 3
Ammon, & ad regem Tyri, & ad regem Sydon per manum nuntiorum qui
veniunt in Jerusalem ad Sedechiam regem tribus domus Juda.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

16 * ܘܐܡܪܘ ܪܘܪܒܢܐ ܘܟܠܗ ܥܡܐ ܠܟܗܢܐ ܘܠܢܒܝܐ ܕܓܠܐ. ܠܐ ܚܝܒ ܓܒܪܐ ܗܢܐ ܡܘܬܐ.
17 ܡܛܠ ܕܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܡܠܠ ܥܡܢ. * ܘܩܡܘ ܓܒܪܐ ܡܢ ܣܒܐ ܕܐܪܥܐ. ܘܐܡܪܘ
18 ܠܟܠܗ ܟܢܫܐ ܕܥܡܐ. * ܡܝܟܐ ܡܪܫܬܝܐ ܐܬܢܒܝ ܗܘܐ ܒܝܘܡܘܗܝ ܕܚܙܩܝܐ ܡܠܟܐ
ܕܝܗܘܕܐ: ܘܐܡܪ ܠܟܠܗ ܥܡܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܨܗܝܘܢ
19 ܚܩܠܐ ܬܬܕܒܪ. ܘܐܘܪܫܠܡ ܚܪܒܐ ܬܗܘܐ. ܘܛܘܪ ܒܝܬܐ ܠܥܒܐ ܕܥܒܐ. * ܕܠܡܐ: ܩܛܠܗ
ܩܛܠܗ ܗܘܐ ܚܙܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܟܠܗ ܝܗܘܕܐ. ܐܠܐ ܕܚܠܘ ܡܢ ܡܪܝܐ ܘܒܥܘ
ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ. ܘܐܬܬܘܝ ܡܪܝܐ ܡܢ ܒܝܫܬܐ ܕܐܡܪ ܥܠܝܗܘܢ. ܘܚܢܢ ܕܝܢ ܒܥܝܢܢ ܠܡܥܒܕ
20 ܒܝܫܬܐ ܪܒܬܐ ܥܠ ܢܦܫܢ. * ܘܐܦ ܓܒܪܐ ܐܚܪܢܐ ܗܘܐ ܕܡܬܢܒܐ ܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܐܘܪܝܐ
ܒܪ ܫܡܥܝܐ ܡܢ ܩܪܝܬ ܝܥܪܝܢ. ܘܐܬܢܒܝ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܘܥܠ ܐܪܥܐ ܗܕܐ. ܐܝܟ ܟܠܗܘܢ
21 ܦܬܓܡܘܗܝ ܕܐܪܡܝܐ. * ܘܫܡܥ ܡܠܟܐ ܝܘܝܩܝܡ ܘܟܠܗܘܢ ܥܒܕܘܗܝ ܘܟܠܗܘܢ ܪܘܪܒܢܘܗܝ
ܦܬܓܡܘܗܝ. ܘܒܥܐ ܡܠܟܐ ܠܡܩܛܠܗ. ܘܫܡܥ ܐܘܪܝܐ ܘܕܚܠ. ܘܥܪܩ
22 ܘܥܠ ܠܡܨܪܝܢ. * ܘܫܕܪ ܡܠܟܐ ܝܘܝܩܝܡ ܠܐܠܝܬܢ ܡܨܪܝܐ. ܒܪ ܥܟܒܘܪ. ܘܐܢܫܐ
23 ܥܡܗ ܠܡܨܪܝܢ. * ܘܐܦܩܘܗܝ ܠܐܘܪܝܐ ܡܢ ܡܨܪܝܢ. ܘܐܝܬܝܘܗܝ ܠܘܬ ܡܠܟܐ ܝܘܝܩܝܡ.
24 ܘܩܛܠܗ ܒܣܝܦܐ. ܘܫܕܝܗ ܠܫܠܕܗ ܥܠ ܩܒܪܐ ܕܒܢܝ ܥܡܐ. * ܒܪܡ ܐܝܕܗ ܕܐܚܝܩܡ ܒܪ
ܫܦܢ ܗܘܬ ܥܡ ܐܪܡܝܐ. ܕܠܐ ܢܫܠܡܘܢܝܗܝ ܒܐܝܕܐ ܕܥܡܐ ܠܡܩܛܠܗ

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܙ *

1 * ܒܪܫ ܡܠܟܘܬܗ ܕܨܕܩܝܐ ܒܪ ܝܘܫܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܗܘܐ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ ܠܘܬ ܐܪܡܝܐ
2 ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. * ܥܒܕ ܠܟ ܢܝܪܐ ܘܣܝܪܐ. ܘܣܝܡ ܐܢܘܢ ܥܠ ܨܘܪܟ. * ܘܫܕܪ ܐܢܘܢ ܠܡܠܟܐ
3 ܕܐܕܘܡ ܘܠܡܠܟܐ ܕܡܘܐܒ. ܘܠܡܠܟܐ ܕܒܢܝ ܥܡܘܢ. ܘܠܡܠܟܐ ܕܨܘܪ. ܘܠܡܠܟܐ ܕܨܝܕܢ.
ܒܐܝܕ ܐܝܙܓܕܐ ܕܐܬܝܢ ܠܐܘܪܫܠܡ ܠܘܬ ܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ.

* Tum dixerunt principes totúſque populus 16
ad ſacerdotes & falſos prophetas, Nequaquam
dignus eſt vir iſte morte, cùm nomine
Domini Dei noſtri ſit nos allocutus. Deinde 17
ſurgentes viri quidem è ſenioribus terræ,
dixerunt univerſo cœtui populi; Micha Maresithes 18
prophetavit in diebus Hezeciæ regis
Judæ, dixítque toti populo Judæ; Sic
ait Dominus exercituum Deus Iſraelis, Sion
in agrum redigetur, Jeruſalem deſolata fiet,
& mons *hujus* domûs in ſaltum. Num verò 19
morte affecit illum Hezecia rex Judæ totúſque
Juda? Quin potiùs timuerunt Dominum,
& exoraverunt eum, deſtitítque Dominus
a malo quod contra eos decreverat:
& nos jam crimen atrox nobis ipſis inferre
ſtuderemus? Fuit etiam vir quidam qui prophetavit 20
in nomine Domini, Uria Semeiæ
filius de civitate Naarin; prophetavit, inquam,
de civitate iſta, prorſus juxta ſermones
Jeremiæ: Cúmque audîſſet rex Jojacim, 21
& omnes ſervi omnéſque principes ejus ſermones
ipſius; voluit quidem rex interficere
eum: quod audiens Uria timuit, fugiénſque
recepit ſe in Ægyptum. Sed miſit rex Jojacim 22
quendam Ægyptium, *nempe* Eliathanem filium
Abchoris, & quoſdam cum eo in Ægyptum;
Qui Uriam educentes ex Ægypto, adduxerunt 23
eum ad regem Jojacim; & is interfecit
eum gladio, projecítque cadaver ejus
ſupra ſepulchra popularium. At verò manus 24
Ahicami filii Saphanis fuit cum Jeremia, ne
traderetur in manum plebis ut occideretur.

CAP. XXVII.

* INitio regni Sedeciæ filii Joſiæ regis Judæ 1
fuit ſermo iſte ad Jeremiam à Domino:
Fac tibi jugum & lora, eáque aptato collo 2
tuo. Deinde mitte illa ad regem Adum ad 3
regem Moab, ad regem filiorum Amon, ad
regem Tyri, & ad regem Sidonis; per legatos
qui Jeroſolymam veniunt ad Sedeciam
regem Judæ:

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

14 * اصطفوا على بابل من حولها * يا جميع الموتري قوسا ارموا عليها * لا تشفقوا على سهامكم *
15 واقبضوا عليها * استرخت يداها * سقطت شرافاتها * لان النقمة من قبل الله هي * انتقموا
16 منها * كما صنعت اصنعوا بها * استاصلوا الزرع من بابل * الماسك منجلا في زمن الحصاد * من
17 وجه سيف يوناني يرجع كل واحد الى موضعه * وكل واحد يهرب الى بيته * خروف ضال اسرايل *
18 الاسد اقصوه * الاول اكله ملك الموصل * وهذا اخيرا اكل عظامه ملك بابل * لاجل
هذا هكذا يقول الرب * ها انا احكم على ملك بابل وعلى ارضه * كما حكمت على ملك
19 الموصل * وارد اسرايل الى مرعاه * ويرعى في الكرمل وفي جبل افرام وفي ارض جلعاد * وتمتلي
20 نفسه * في تلك الايام وفي ذلك الزمان قال الرب * يطلبون ظلم اسرايل فلا يوجد * وخطايا
21 يهودا فلا يوجدون * لاني اصير راحما للمبقيين على الارض * يقول الرب بمرارة اركب عليها
22 وعلى سكانها * انتقم ايها السيف وافنها يقول الرب * واصنع كلما امرك به * صوت حرب
23 وانكسار عظيم في ارض الكلدانيين * كيف انسحقت وكسرت مطرقة كل الارض *
24 كيف صارت بابل للفناء في الامم * يثبون عليك ويهلكنك ولا تعلمين * مثل بابل وجدت
واخذت * لانك قاومت الرب *

* الاصحاح السابع عشر *

25 * فتح الرب كنزه واخرج اوعية غضبه * لان العمل للرب في ارض الكلدانيين * لان
26 ازمنتها بلغت * افتحوا اهراءها * ودوسوها مثل مغارة * واستاصلوها * لا يكن لها
27 بقية * ييبسوا جميع ثمرها * وليهبطوا للذبح * ويل لهم لان يومهم اتى وزمان انتقامهم *
28 * صوت الهاربين المتخلصين من ارض بابل * ليخبروا في صهيون الانتقام من قبل
الرب الههم *

* *Diſponite aciem contra Babelem circunquaque: O omnes arcum tendentes, jaculamini* 14
in eam, ne parcatis ſagittis veſtris, capite illam: Remiſſæ ſunt manus 15
ejus, pinnæ ejus ceciderunt. Quandoquidem ultio hæc à Deo eſt, ulciſcimini
de ea: quemadmodum fecit, facite ei:
Evellite ſemen ex Babele, tenentem 16
falculam tempore meſſis: à conſpectu
gladii Græci revertatur quiſque ad locum
ſuum, & quiſque fugiat in domum ſuam. *Agnus errans fuit Iſrael,* 17
leones depulerunt eum; prior comêdit
eum rex Aſſyriæ, hic autem poſtremò
comêdit ejus oſſa rex Babelis. *Iccirco* 18
ſic ait Dominus, Ecce ego condemnabo
regem Babelis ejúſque terram,
quemadmodum condemnavi regem Aſſyriæ;
Et reſtituam Iſraelem in paſcuum 19
ſuum, paſcétque in Charmelo, & in monte
Aphremi, atque in terra Galaad, &
explebitur anima ipſius. *Iis diebus eoque* 20
tempore, ait Dominus, quærent impietatem
Iſraelis, & non reperietur; & peccata
Judæ, nec invenientur: quia propitius
ero reſiduis ſuper terram. *Dicit* 21
Dominus, Cum acerbitate inſiliam in eam
& in cives ejus: ulciſcere O gladie, &
abſume illam dicit Dominus, & fac quicquid
præcipiam tibi. *Strepitus pugnæ,* 22
& contritio magna in terra Chaldæorum.
Quomodo diſcerptus fractúſque es malleæ 23
totius terræ? quomodo abiit Babel in
excidium inter gentes? *Irruent in te,* 24
ac peribis te neſciente: ut Babel invenieris,
& capieris; quia oppoſuiſti te Domino.

Textus decimus ſeptimus.

* *Aperuit Dominus repoſitorium ſuum,* 25
protulítque inſtrumenta furoris ſui; quia
opus hoc eſt Domini in terra Chaldæorum.
Quandoquidem tempora ejus 26
advenerunt, aperite granaria ejus, ſcrutamini
eam ut ſpeluncam, eámque funditùs
evertite, non ſuperſint illi reliquiæ:
Areſacite omnes fructus ejus: 27
& ad mactationem deſcendant. Væ
illis, quoniam advenit dies eorum, &
tempus ultionis eorum, *Vox fugientium* 28
& evadentium de terra Babelis,
ut annuntient in Sione ultionem illatam
à Domino Deo ſuo.

exercituum Dominus dixit Sic : *dicere suos dominos ad* eis præcipies Et
4 וְצִוִּיתָ אֹתָם אֶל־אֲדֹנֵיהֶם לֵאמֹר כֹּה־אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת
Ego *vestros dominos ad* dicetis Sic : Israel Deus
אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל כֹּה תֹאמְרוּ אֶל־אֲדֹנֵיכֶם׃ אָנֹכִי 5
faciebus super quod , *animal* & , hominem , terram feci
עָשִׂיתִי אֶת־הָאָרֶץ אֶת־הָאָדָם וְאֶת־הַבְּהֵמָה אֲשֶׁר עַל־פְּנֵי
,eam dedi & ; extento meo brachio in &,magna mea potentia in ,terræ
הָאָרֶץ בְּכֹחִי הַגָּדוֹל וּבִזְרוֹעִי הַנְּטוּיָה וּנְתַתִּיהָ
dedi ego nunc Et .meis oculis in *fuit rectum* cui
לַאֲשֶׁר יָשַׁר בְּעֵינָי׃ וְעַתָּה אָנֹכִי נָתַתִּי אֶת־ 6
Babel regis Nebuchadneſar manu in has terras omnes
כָּל־הָאֲרָצוֹת הָאֵלֶּה בְּיַד נְבוּכַדְנֶאצַּר מֶלֶךְ־בָּבֶל
.ei *ſerviendum ad* , ei dedi agri *beſtiam* etiam & , mei ſervi
עַבְדִּי וְגַם אֶת־חַיַּת הַשָּׂדֶה נָתַתִּי לוֹ לְעָבְדוֹ׃
,ejus filii filio & ,ejus filio & , gentes omnes ei ſervient Et
וְעָבְדוּ אֹתוֹ כָּל־הַגּוֹיִם וְאֶת־בְּנוֹ וְאֶת־בֶּן־בְּנוֹ 7
gentes *eo in* ſervient & ,ipſius etiam , ejus terræ tempus *venire uſque*
עַד בֹּא־עֵת אַרְצוֹ גַּם־הוּא וְעָבְדוּ בוֹ גּוֹיִם
quæ regnum & , gens erit Et .magni reges & ,multæ
רַבִּים וּמְלָכִים גְּדֹלִים׃ וְהָיָה הַגּוֹי וְהַמַּמְלָכָה אֲשֶׁר 8
& , Babel regi Nebuchadneſar ipſi ſervierint non
לֹא־יַעַבְדוּ אֹתוֹ אֶת־נְבוּכַדְנֶאצַּר מֶלֶךְ־בָּבֶל וְאֵת
, gladio *in* : Babel regis jugo *in* ſuum collum *dederit* non qui
אֲשֶׁר לֹא־יִתֵּן אֶת־צַוָּארוֹ בְּעֹל מֶלֶךְ בָּבֶל בַּחֶרֶב
,DOMINUS ait , illam gentem *ſuper* viſitabo peſte *in* & ,fame *in* &
וּבָרָעָב וּבַדֶּבֶר אֶפְקֹד עַל־הַגּוֹי הַהוּא נְאֻם־יְהוָה
ad audiatis ne vos Et .ejꝰ manum per eos *me conſumere ad uſque*
עַד־תֻּמִּי אֹתָם בְּיָדוֹ׃ וְאַתֶּם אַל־תִּשְׁמְעוּ אֶל־ 9
ad & ,veſtra ſomnia *ad* & ,veſtros divinos *ad* & , veſtros prophetas
נְבִיאֵיכֶם וְאֶל־קֹסְמֵיכֶם וְאֶל־חֲלֹמֹתֵיכֶם וְאֶל־
,*vos ad dicentes ipſi* qui ,veſtros maleficos *ad* & ,veſtros augures
עֹנְנֵיכֶם וְאֶל־כַּשָּׁפֵיכֶם אֲשֶׁר־הֵם אֹמְרִים אֲלֵיכֶם
ipſi mendacium Quia .Babel regi ſervietis Non : dicendo
לֵאמֹר לֹא תַעַבְדוּ אֶת־מֶלֶךְ בָּבֶל׃ כִּי שֶׁקֶר הֵם 10
propellam&,veſtra *humo deſuper* vos *elongandum ad* , vobis *vaticinantes*
נִבְּאִים לָכֶם לְמַעַן הַרְחִיק אֶתְכֶם מֵעַל אַדְמַתְכֶם וְהִדַּחְתִּי
ſuũ collum introduxerit quæ gens Et .pereatis & , vos
אֶתְכֶם וַאֲבַדְתֶּם׃ וְהַגּוֹי אֲשֶׁר יָבִיא אֶת־צַוָּארוֹ 11
ſuper eum faciam dimitti & ; ei ſervierit & , Babel regis jugum in
בְּעֹל מֶלֶךְ־בָּבֶל וַעֲבָדוֹ וְהִנַּחְתִּיו עַל־
.ea in habitabit & ,eam colet & , DOMINUS dixit , ſua terra
אַדְמָתוֹ נְאֻם־יְהוָה וַעֲבָדָהּ וְיָשַׁב בָּהּ׃
verba omnia ſecundùm ſum locutus Jehudah regem Sidchijahu ad Et
וְאֶל־צִדְקִיָּה מֶלֶךְ־יְהוּדָה דִּבַּרְתִּי כְּכָל־הַדְּבָרִים 12
, Babel regis jugum in veſtra colla Introducite :dicendo , hæc
הָאֵלֶּה לֵאמֹר הָבִיאוּ אֶת־צַוְּארֵיכֶם בְּעֹל מֶלֶךְ־בָּבֶל
, tu ,moriemini quid Ut .vivetis & ,ejus populo & , ei ſervite &
וְעִבְדוּ אֹתוֹ וְעַמּוֹ וִחְיוּ׃ לָמָּה תָמוּתוּ אַתָּה 13
eſt locutus quemadmodum ,peſte in & ,fame in ,gladio in tuus populꝰ &
וְעַמֶּךָ בַּחֶרֶב בָּרָעָב וּבַדָּבֶר כַּאֲשֶׁר דִּבֶּר
ne Et ? Babel regi ſervierit non quæ gentem ad Dominus
יְהוָה אֶל־הַגּוֹי אֲשֶׁר לֹא־יַעֲבֹד אֶת־מֶלֶךְ בָּבֶל׃ וְאַל־ 14
: dicendo , *vos ad* dicentium prophetarum verba *ad* audiatis
תִּשְׁמְעוּ אֶל־דִּבְרֵי הַנְּבִאִים הָאֹמְרִים אֲלֵיכֶם לֵאמֹר
.vobis *vaticinantes ipſi* mendaciũ quia :Babel regi ſervietis Non
לֹא תַעַבְדוּ אֶת־מֶלֶךְ בָּבֶל כִּי שֶׁקֶר הֵם נִבְּאִים לָכֶם׃
meo nomine in *vaticinantes* ipſi & ;Dominus ait , vos miſi non Quia
כִּי לֹא שְׁלַחְתִּים נְאֻם־יְהוָה וְהֵם נִבְּאִים בִּשְׁמִי 15
prophetæ & , vos pereatis & , vos *me expellere propter* ,*mendacio in*
לַשָּׁקֶר לְמַעַן הַדִּיחִי אֶתְכֶם וַאֲבַדְתֶּם אַתֶּם וְהַנְּבִאִים
.vobis *vaticinantes*
הַנִּבְּאִים לָכֶם׃

Verſio VULG. LAT.

4 Et præcipies eis ut ad dominos ſuos loquantur ; Hæc dicit Dominus exercituum, Deus Iſrael ; Hæc dicetis ad dominos veſtros ; 5 Ego feci terram, & homines, & jumenta, quæ ſunt ſuper faciem terræ, in fortitudine mea magna, & in brachio meo extento: & dedi eam ei, qui placuit in 6 oculis meis. Et nunc itaque ego dedi omnes terras iſtas in manu Nabuchodonoſor regis Babylonis ſervi mei : inſuper & beſtias agri dedi ei ut ſerviant 7 illi. Et ſervient ei omnes gentes, & filio ejus, & filio filii ejus : donec veniat tempus terræ ejus & ipſius : & ſervient ei gentes multæ, & reges magni. 8 Gens autem & regnum, quod non ſervierit Nabuchodonoſor regi Babylonis, & quicunque non curvaverit collum ſuum ſub jugo regis Babylonis : in gladio, & in fame, & in peſte viſitabo ſuper gentem illam, ait Dominus, donec conſumam 9 eos in manu ejus. Vos ergò nolite audire prophetas veſtros, & divinos, & ſomniatores, & augures, & maleficos, qui dicunt vobis ; Non 10 ſervietis regi Babylonis. Quia mendacium prophetant vobis, ut longè vos faciant de terra veſtra, & ejiciant vos, & per- 11 eatis. Porrò gens, quæ ſubjecerit cervicem ſuam ſub jugo regis Babylonis, & ſervierit ei ; dimittam eam in terra ſua, dicit Dominus : & colet eam, 12 & habitabit in ea. Et ad Sedeciam regem Juda locutus ſum ſecundùm omnia verba hæc, dicens ; Subjicite colla veſtra ſub jugo regis Babylonis, & ſervite ei, & populo ejus, 13 & vivetis. Quarè moriemini tu & populus tuus gladio, & fame, & peſte, ſicut locutus eſt Dominus ad gentem, quæ ſervire noluerit regi Babylonis? 14 Nolite audire verba prophetarum dicentium vobis ; Non ſervietis regi Babylonis : quia mendacium ipſi loquuntur vo- 15 bis. Quia non miſi eos, ait Dominus : & ipſi prophetant in nomine meo mendaciter : ut ejiciant vos, & pereatis tam vos, quàm prophetæ, qui vaticinantur vobis.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

29 Παραγγείλατε ἐπὶ Βαβυλῶνα πολλοῖς, παντὶ ἐντείνοντι τόξον, (˝)παρεμβάλλετε ἐπ᾽ αὐτὴν κυκλόθεν· μὴ ἔστω αὐτῆς ἀνασωζόμενος· ἀνταπόδοτε αὐτῇ κατὰ τὰ ἔργα αὐτῆς, κατὰ πάντα ὅσα ἐποίησε, ποιήσατε αὐτῇ· ὅτι πρὸς (ζ) κύριον ἀντέστη θεὸν 30 ἅγιον τοῦ Ἰσραήλ. Διὰ τοῦτο πεσοῦνται οἱ νεανίσκοι αὐτῆς ἐν ταῖς πλατείαις αὐτῆς, καὶ πάντες οἱ ἄνδρες οἱ πολεμισταὶ αὐτῆς 31 ῥιφήσονται, εἶπε κύριος. Ἰδοὺ ἐγὼ (η) ἐπὶ σὲ τὴν ὑβρίστριαν, λέγει κύριος· ὅτι ἥκει ἡ ἡμέρα σου, καὶ ὁ καιρὸς (˙) ἐκδικήσεώς 32 σου. Καὶ ἀσθενήσει ἡ ὕβρις σου, καὶ πεσεῖται, καὶ (θ) οὐδεὶς ἔσται ὁ ἀνιστῶν αὐτήν. καὶ ἀνάψω πῦρ ἐν τῷ δρυμῷ αὐτῆς, καὶ κατα- 33 φάγεται πάντα τὰ κύκλῳ αὐτῆς. Τάδε λέγει κύριος, Καταδεδυνάστευνται οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, καὶ οἱ υἱοὶ Ἰούδα, ἅμα πάντες οἱ αἰχμαλωτεύσαντες αὐτοὺς, κατεδυνάστευσαν αὐτοὺς, ὅτι οὐκ ἠθέλησαν ἐξα- 34 ποστεῖλαι αὐτούς. Καὶ ὁ λυτρούμενος αὐτοὺς ἰσχυρὸς, Κύριος παντοκράτωρ ὄνομα αὐτῷ· κρίσιν κρινεῖ πρὸς τοὺς ἀντιδίκους αὐτοῦ, ὅπως ἐξάρῃ τὴν γῆν· καὶ παροξυνεῖ 35 τοῖς κατοικοῦσι Βαβυλῶνα, Μάχαιραν ἐπὶ τοὺς Χαλδαίους, καὶ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας Βαβυλῶνα, καὶ ἐπὶ τοὺς μεγιστᾶνας αὐ- 36 τῆς, καὶ ἐπὶ τοὺς συνετοὺς αὐτῆς· Μάχαιραν ἐπὶ τοὺς μαχητὰς αὐτῆς, καὶ παραλυ- 37 θήσονται· Μάχαιραν ἐπὶ τοὺς ἵππους αὐτῶν, καὶ ἐπὶ τὰ ἅρματα αὐτῶν· μάχαιραν ἐπὶ τοὺς μαχητὰς αὐτῶν, (ι) καὶ ἐπὶ τὸν σύμμικτον τὸν ἐν μέσῳ αὐτῆς, καὶ ἔσονται (κ) ὡσεὶ γυναῖκες· μάχαιραν ἐπὶ τοὺς 38 θησαυροὺς (λ), καὶ διασκορπισθήσονται· Ἐπὶ τῷ ὕδατι αὐτῆς (μ), καὶ καταισχυνθήσονται, ὅτι γῆ τῶν γλυπτῶν ἐστι, καὶ ἐν 39 ταῖς (ν) νήσοις, οὗ κατεκαυχῶντο. Διὰ τοῦτο κατοικήσουσιν ἰνδάλματα ἐν ταῖς νήσοις, καὶ κατοικήσουσιν ἐν αὐτῇ θυγατέρες σειρήνων, οὐ μὴ κατοικηθῇ οὐκέτι εἰς τὸν αἰῶνα. 40 Καθὼς κατέστρεψεν ὁ θεὸς Σόδομα καὶ Γόμορρα, καὶ τὰς (ξ) ὁμορούσας αὐταῖς, εἶπε κύριος, οὐ μὴ κατοικήσει ἐκεῖ ἄνθρωπος, καὶ οὐ μὴ (ο) παροικήσει ἐκεῖ υἱὸς ἀνθρώπου. 41 Ἰδοὺ λαὸς ἔρχεται ἀπὸ (π) Βορρᾶ, καὶ ἔθνος μέγα, καὶ βασιλεῖς πολλοὶ ἐξεγερθήσονται 42 ἀπ᾽ ἐσχάτου τῆς γῆς, Τόξον καὶ ἐγχειρίδιον ἔχοντες, ἰταμός ἐστι, καὶ οὐ μὴ ἐλεήσῃ· (ρ) ἡ φωνὴ αὐτῶν ὡς θάλασσα ἠχήσει, ἐφ᾽ ἵπποις ἱππάσονται, παρεσκευασμένοι, ὥσπερ πῦρ, εἰς πόλεμον, πρὸς σὲ, (σ) 43 θύγατερ Βαβυλῶνος. Ἤκουσε βασιλεὺς Βαβυλῶνος τὴν ἀκοὴν αὐτῶν, καὶ (τ) παρελύθησαν αἱ χεῖρες αὐτοῦ· θλῖψις κατεκράτησεν αὐτοῦ, ὠδῖνες ὡς τικτούσης.

Annuntiate ſuper Babylonē multis, omni intendenti arcum : caſtrametamini ſuper eam in circuitu : non ſit ex ea qui evadat: retribuite ei ſecundùm opera ejus : juxta omnia, quæcunque fecit, facite ei : quoniam adverſùs Dominum ſtetit, Deum ſanctum Iſrael. Propter hoc cadent 30 *adoleſcentes ejus in plateis ejus, & omnes viri ejus bellatores projicientur, dixit Dominus. Ecce* 31 *ego ſuper te (p) ſuperbiam contumelioſam, dicit Dominus: quia venit dies tua, & tempus ultionis tuæ : Et infirmabitur ſuper-* 32 *bia tua, & cadet; & nemo erit, qui reſtituat eam. Et accendam ignem in ſylva ejus ; & devorabit omnia, quæ in circuitu ejus. Hæc dicit Dominus; Oppreſſi fu-* 33 *erunt filii Iſrael, & filii Juda ſimul: omnes, qui captivaverunt eos, oppreſſerunt eos : quia noluerunt emittere eos. Et qui redi-* 34 *mit eos fortis; Dominus omnipotens nomen ei : judicium judicabit contra adverſarios ejus, ut liberet terram : & acuet habitantibus Babylonem : Gladium* 35 *ſuper Chaldæos, & ſuper habitantes Babylonem, & ſuper magnates ejus, & ſuper ſapientes (q) ejus : Gladium ſuper pugna-* 36 *tores ejus: & diſſolventur: Gla-* 37 *dium ſuper equos eorum, & ſuper currus eorum : Gladium (r) ſuper pugnatores eorum, & ſuper commiſtum, qui in medio ejus : et erunt quaſi mulieres : Gladium ſuper theſauros, et (ſ) diſpergentur Super aquam ejus :* 38 *et confundentur; quia terra ſculptilium eſt: et in inſulis, ubi gloriabantur. Propter hoc habita-* 39 *bunt phantaſmata in inſulis : et habitabunt in ea filiæ Sirenum : non habitabitur ultrà in (t) ſeculum. Sicut evertit Deus Sodo-* 40 *mam, et Gomorram, et vicinas eis, ait Dominus ; non habitabit ibi homo, et non incolet ibi filius hominis. Ecce populus venit ab* 41 *Aquilone, et gens magna, et reges multi excitabuntur ab extremo terræ, Arcum et gladi-* 42 *um habentes. Crudelis eſt, et non miſerebitur. Vox eorum, quaſi mare, ſonabit : in equis equitabunt, præparati, quaſi ignis, ad prælium, adverſùs te, filia Babylonis. Audivit rex Babylo-* 43 *nis famam eorum : et diſſolutæ ſunt manus ejus : tribulatio obtinuit eum, dolores, quaſi parientis.*

MS.A. (˝) παρεμβάλατε (ζ) τὸν κύριον (η) πρὸς σὲ τὴν ὑβρίστριαν (˙) τῆς ἐκδικήσεώς (θ) οὐκ ἔσται (ι) καὶ τὸν (κ) ὡς (λ) αὐτῆς, καὶ (μ) ἐπεποίθει, (ν) νήσοις κατεκαυχῶντο. (ξ) ὁμορρούσας (ο) κατοικήσει (π) γῆς Βορρᾶ, (ρ) φωνὴ αὐτοῦ (σ) θυγάτηρ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 ותפקיד יתהון לות רבונהון למימר כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל כדנן תימרון
5 לרבונכון : אנא במימרי עבדית ית ארעא ית אנשא וית בעירא דעל אפי ארעא
6 בחילי רבא ובאדרעי מרממא ויהבתה לדכשר קדמי : וכען אנא יהבית ית כל מדינתא
האלין ביד נבוכדנאצר מלכא דבבל עבדי ואף ית חית ברא יהבית ליה למפלחיה :
7 ויפלחון יתיה כל עממיא וית בריה וית בר בריה עד דימטי עדן תבר ארעיה אף הוא
8 ויפלחון ביה עממין סגיאין ומלכין רברבין : ויהי עם ומלכו דלא יפלחון יתיה ית
נבוכדנאצר מלכא דבבל וית דלא יתן ית צוריה בניר מלכא דבבל בחרבא ובכפנא
9 ובמותא אסער על עמא ההוא אמר יי עד דאמסר יתהון בידיה : ואתון לא תקבלון מן
נבייכון דשקרא ומן קסמיכון ומן חלמי חלמכון ומן עוננכון ומן חרשיכון דאנון
10 אמרין לכון למימר לא תפלחון ית מלכא דבבל : ארי שקרא אנון מתנבן לכון בדיל
11 לארחקא יתכון מעל ארעכון ואטלטל יתכון ותיבדון : ועמא דיעיל ית צוריה בניר מלכא
12 דבבל ויפלחניה ואשרניה על ארעיה אמר יי ויפלחנה ויתיב בה : ועם צדקיה מלך
שבטא דבית יהודה מללית ית כל פתגמא האלין למימר אעילו ית צואריכון בניר
13 מלכא דבבל ופלחו יתיה ועמיה ואתקימו : למא תתקטלון את ועמך בחרבא ובכפנא
14 ובמותא כמא דמליל יי על עמא דלא יפלח ית מלכא דבבל : ולא תקבלון לפתגמי
נביי שקרא דאמרין לכון למימר לא תפלחון ית מלכא דבבל ארי שקרא אנון מתנבן
15 לכון : ארי לא שלחתנון אמר יי ואנון מתנבן בשמי שקרא בדיל דאטלטל יתכון
ותיבדון אתון ונביי שקרא דמתנבן לכון :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et præcipies eis ut dicant ad dominos ſuos in hunc modum : Hæc dicit 4
Dominus exercituum Deus Iſrael : Sic dicetis ad dominos veſtros : Ego 5
verbo meo feci terram, homines, & jumenta, quæ ſunt ſuper faciem terræ,
in virtute mea magna, & in brachio meo excelſo : & dedi eam ei qui pla-
cuit coram me. Et nunc ego dedi omnes provincias iſtas in manu Nabu- 6
chodonoſor regis Babylonis ſervi mei ; beſtias quoque agri dedi ut ſer-
viant ei. Et ſervient ei omnes populi, & filio ejus, & filio filii ejus, do- 7
nec veniat tempus interitus terræ ejus, etiam ipſius ; & ſervient ei populi
multi & reges magni. Fietq; ut quicunq; populꝰ & regnum non ſervierit 8
ipſi Nabuchodonoſor regi Babylonis, & qui non ſubmiſerit collum ſuum
jugo regis Babylonis gladio & fame & peſte viſitabo ſuper populum
illum, dicit Dominus, donec tradam eos in manum ejus. Vos autem ne 9
obediatis pſeudoprophetis veſtris, & divinis veſtris, & ſomniatoribus
ſomniorum veſtris, & auguribus veſtris, & maleficis veſtris, qui dicunt vo-
bis, dicendo : Ne ſerviatis regi Babylonis. Quia mendacium ipſi pro- 10
phetant vobis, ut elongem vos de terra veſtra, tranſmigrare vos faciam,
& pereatis. Populus autem qui induxerit collum ſuum in jugum regis 11
Babylonis, & ſervierit ei ; habitare faciam eum in terra ſua, dicit Domi-
nus, & colet eam, & habitabit in ea. Et cum Sedechia rege tribus 12
domus Juda *locutus ſum* omnia verba hæc, dicens : Inducite colla
veſtra in jugum regis Babylonis, & ſervite ei, & populo ejus ; & vive-
tis. Quare occidemini tu & populꝰ tuus gladio, & fame, & peſte ? ſicut 13
locutꝰ eſt Dominus ad populum qui non ſervierit regi Babylonis. Et 14
non obediatis verbis pſeudoprophetarum, qui dicunt vobis, dicendo :
Ne ſerviatis regi Babylonis ; quia mendacium ipſi prophetant vobis.
Quia non miſi eos, dicit Dominus, & ipſi prophetant in nomine meo 15
mendacium, ut tranſmigrare faciam vos, & pereatis vos & pſeudopro-
phetæ qui prophetant vobis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܦܩܘܕ ܐܢܘܢ ܕܢܐܡܪܘܢ ܠܡܪ̈ܘܬܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. 4
ܗܟܢܐ ܬܐܡܪܘܢ ܠܡܪ̈ܘܬܟܘܢ. * ܐܢܐ ܥܒܕܬ ܐܪܥܐ ܘܒܢܝ̈ܢܫܐ. ܘܒܥܝܪܐ ܕܥܠ ܐܦܝ̈ ܐܪܥܐ. 5
ܒܚܝܠܝ ܪܒܐ. ܘܒܕܪܥܝ ܪܡܐ. ܘܝܗܒܬܗ ܠܡܢ ܕܫܦܪ ܒܥܝܢܝ. * ܘܗܫܐ ܐܢܐ ܝܗܒܬ 6
ܟܠܗܝܢ ܐܪ̈ܥܬܐ ܗܠܝܢ. ܠܡܦܠܚ ܠܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܥܒܕܝ.
ܘܢܦܠܚܘܢܝܗ. ܘܐܦ ܚܝܘܬܐ ܕܕܒܪܐ ܝܗܒܬ ܠܗ ܠܡܦܠܚܗ. * ܘܢܦܠܚܘܢܝܗ ܥܡ̈ܡܐ 7
ܠܗ ܘܠܒܪܗ. ܘܠܒܪ ܒܪܗ. ܥܕܡܐ ܕܢܐܬܐ ܙܒܢܐ ܕܐܪܥܗ ܐܦ ܕܝܠܗ. ܘܢܦܠܚܘܢܝܗ
ܥܡ̈ܡܐ ܣܓܝ̈ܐܐ ܘܡܠ̈ܟܐ ܪ̈ܘܪܒܐ. * ܘܥܡܐ ܘܡܠܟܘܬܐ ܕܠܐ ܢܦܠܚܘܢܝܗ ܠܢܒܘܟܕܢܨܪ 8
ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܡܢ ܕܠܐ ܢܬܠ ܨܘܪܗ ܒܢܝܪܗ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܒܚܪܒܐ ܘܒܟܦܢܐ
ܘܒܡܘܬܢܐ ܐܦܩܘܕ ܥܠ ܥܡܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܕܡܐ ܕܐܫܠܡ ܐܢܘܢ ܒܐܝܕܘܗܝ. * ܘܐܢܬܘܢ ܠܐ 9
ܬܫܡܥܘܢ ܠܢܒ̈ܝܝܟܘܢ ܕܓܠܐ. ܘܠܩܨ̈ܘܡܝܟܘܢ. ܘܠܚܠ̈ܡܝܟܘܢ. ܘܠܚܪ̈ܫܝܟܘܢ
ܘܠܡܚܫ̈ܒܢܝܟܘܢ. ܕܐܡܪܝܢ ܠܟܘܢ. ܠܐ ܬܦܠܚܘܢ ܠܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. * ܡܛܠ ܕܫܘܩܪܐ 10
ܗܢܘܢ ܡܬܢܒܝܢ ܠܟܘܢ. ܕܐܪܚܩܟܘܢ. ܡܢ ܐܪܥܟܘܢ ܘܬܐܒܕܘܢ. * ܘܥܡܐ ܕܢܬܠ ܨܘܪܗ 11
ܒܢܝܪܗ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܢܦܠܚܘܢܝܗ. ܢܫܒܩܘܢܝܗ ܒܐܪܥܗ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
ܘܢܦܠܚܝܗ. ܘܢܥܡܪ ܒܗ. * ܘܠܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܡܠܠܬ ܐܝܟ ܦܬ̈ܓܡܐ ܗܠܝܢ 12
ܟܠܗܘܢ. ܘܐܡܪܬ. ܐܥܠܘ ܨܘܪܝܟܘܢ ܒܢܝܪܗ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܦܠܘܚܘ ܠܗ ܘܠܥܡܗ.
* ܘܚܝܘ ܘܠܐ ܬܡܘܬܘܢ. ܐܢܬ ܘܥܡܟ ܒܚܪܒܐ ܘܒܟܦܢܐ ܘܒܡܘܬܢܐ. ܐܝܟ ܕܐܡܪ ܡܪܝܐ 13
ܥܠ ܥܡܐ ܕܠܐ ܢܦܠܚ ܠܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. * ܘܐܢܬܘܢ ܠܐ ܬܫܡܥܘܢ ܠܡ̈ܠܝ ܢܒ̈ܝܐ 14
ܕܓܠܐ. ܕܐܡܪܝܢ ܠܟܘܢ. ܠܐ ܬܦܠܚܘܢ ܠܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܡܛܠ ܕܫܘܩܪܐ ܗܢܘܢ
ܡܬܢܒܝܢ ܠܟܘܢ. * ܠܐ ܫܕܪܬ ܐܢܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܗܢܘܢ ܡܬܢܒܝܢ ܒܫܡܝ ܫܘܩܪܐ. 15
ܕܐܪܚܩܟܘܢ. ܘܬܐܒܕܘܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܢܒ̈ܝܐ ܕܡܬܢܒܝܢ ܠܟܘܢ.

Et hortare eos ut dicant dominis ſuis, Sic 4
ait Dominus potentiſſimus Deus Iſraelis, ita
dicatis dominis veſtris; Terram & homines, 5
atque jumenta quæ ſuper faciem terræ ſunt,
ego feci potentiâ meâ maximâ & brachio
meo excelſo, eámque dedi cui rectum viſum
eſt in oculis meis. Et nunc omnes regiones 6
iſtas trado ut ſerviant Nebuchadnoſari regi
Babelis ſervo meo, & *quidem* ſervient illi:
quin etiam beſtiã deſerti trado illi ut ſerviat
ei. Eique ſervient populi, & filio ejus, ac 7
nepoti ipſius; donec ipſius etiam terræ tem-
pus adveniat; ſervient, inquam, ei populi
multi & reges magni. Et populus aut regnũ 8
quod non ſervierit Nebuchadnoſari regi Ba-
belis, & quicunque non ſubdiderit collum
ſuum jugo regis Babelis; gladio, fame, &
peſte animadvertam in ejuſmodi populum,
dicit Dominus, donec tradam eos in manum
ipſius. Vos ergò ne præbeatis aures prophe- 9
tis veſtris falſis, neque divinis veſtris, neque
ſomniatoribus veſtris, neque præſtigiatori-
bus veſtris, neque veneficis veſtris, qui di-
cunt vobis, Nequaquam ſervietis regi Babe-
lis: Quia falſum iſti prophetant vobis, ut 10
ejiciam vos ex *hac* terra, & pereatis. Popu- 11
lum verò qui ſubdiderit collum ſuum regi
Babelis, & ſervierit ei; relinquet eum in
terra ſua, dicit Dominus, ut colat eam, & ha-
bitet in ea. Etiam Sedeciam regem Judæ al- 12
locutus ſum ſimilibus omnino ſermonibus, &
dixi; Subdite collum veſtrum jugo regis Ba-
belis, eíque ſervite ac populo ipſius. Ita 13
vivetis ac non moriemini tu & populus tuus
gladio, fame, & peſte, quemadmodum præ-
dixit Dominus de populo qui non ſervierit
regi Babelis. Vos inquam, ne præbeatis 14
aures ſermonibus falſorum prophetarum qui
dicunt vobis, Nequaquam ſervietis regi Ba-
belis: nam falſum iſti prophetant vobis.
Hos non miſi, dicit Dominus, tamen ipſi 15
nomine meo falſum prophetant, ut expel-
lam vos, & pereatis vos ac prophetæ qui
prophetant vobis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* حبروا علي بابل لكثيرين لكل موتر قوسا * عسكروا عليها من حولها لا يكن من يخلص 29
منها * كافوها كاعمالها * كجميع ما صنعت اصنعوا بها * لانها عاندت الرب الاله قدوس
اسرايل * لاجل هذا تسقط شبانها في شوارعها * وجميع رجالها المحاربين يطرحون قال الرب * 30
* ها انا اليك ايتها المتكبرة يقول الرب * لان يومك اتي وزمان انتقامك * وعظمتك تضعف 31 32
وتسقط ولا يكون من يقيمها * واشعل نارا في غاباتها وتاكل كلما حولها * هكذا يقول 33
الرب علي المقهورين بني اسرايل وبني يهودا معا * يا جميع الذين سبوهم وقهروهم * لان لم
يريدوا ان يرسلوهم * ومنقذهم قوي * الرب ضابط الكل اسمه * يحكم حكما مع خصومه 34
كي يبدع الارض ويسخط سكان بابل * سيفا علي الكلدانيين وعلي سكان بابل * وعلي عظمايها 35
وعلي فهمايها * سيفا علي محاربيها ويسترخون * سيفا علي خيولهم وعلي مركباتهم * سيفا علي 36 37
محاربيهم والمختلط الذي في وسطها * ويصيرون مثل النساء * سيفا علي كنوزهم ويبددون *
* علي مايها ويجف ويخزون * لانها ارض المنحوتات وفي الجزاير افتخروا * لاجل هذا تسكن 38 39
اصنامها في الجزاير * وتسكن فيها بنات اوي * ولا تسكن بعد الي الابد * كما خسف 40
الله بسدوم وعامورا واهلها قال الرب * لا يسكن هناك انسان ولا يسكن هناك ابن
انسان * ها شعب اقبل من الجربياء * وامة عظيمة وملوك كثيرون ينهضون من اخر 41
الارض * معهم قوس وسكين * جافية هي ولا ترحم * صوتها مثل بحر يعج * يفرسون علي 42
الخيل * مستعدين مثل نار للحرب * اليك يا ابنة بابل * سمع ملك بابل بسماعهم واسترخت 43
يداه * ضبطته الشدة والطلقات مثل التي تلد *

Indicite multis contra Babelem, omnibus 29
arcum tendentibus: caſtra figite adver-
sùs eam undequaque: nemo ſit qui eva-
dat ex ea: rependite illi ſecundùm acti-
ones ejus: juxta omnia quæ fecit, faci-
te illi. Quia adverſata eſt Domino Deo
ſancto Iſraelis; *Ideò corruent juvenes* 30
ejus in vicis ejus, & omnes viri ejus bel-
latores proſternentur, ait Dominus. *Ecce* 31
me tibi O ſuperba, dicit Dominus; jam
enim advenit dies tua, & tempus ultionis
tuæ. *Magnificentia tua debilitata cor-* 32
ruet, nec erit qui erigat illam: & ac-
cendam ignem in ſylvis ejus, qui devora-
bit quicquid adjacet ei. *Sic dicit Domi-* 33
nus de oppreſſis filiis Iſraelis & filiis Ju-
dæ pariter, O quicunque captivos abdu-
xiſtis eos, opprimitis eos, nec dimittere
vultis; *Equidem vindex eorum for-* 34
tiſſimus eſt, Dominus omnipotens nomen
ejus; ipſe cauſam inſtituet cum adverſa-
riis ſuis, ut terram vaſtet, & execretur
cives Babelis. *Gladium ſuper Chaldæos* 35
& ſuper cives Babelis, ſuper principes, &
ſuper prudentes ejus: *Gladium ſuper* 36
bellatores ejus, ut emolleſcant: *Gladi-* 37
um in equos & aurigas eorum: gladium
in milites eorum, & miſcellaneam turbam
quæ eſt in ipſa, ut ſint ſicut fœminæ:
gladium in theſauros eorum, ut diſſipen-
tur: *In aquam ejus, ut areſcat, & pu-* 38
d fiant. Quia terra ſculptilium eſt, & in
inſulis gloriati ſunt; *Propterea commo-* 39
rabuntur idola ejus in inſulis, & habita-
bunt in ea canes ſylveſtres, nec habitabitur
deinceps in æternum. *Quemadmodum* 40
obruit Deus Sodomam & Gomorrham,
& habitatores earum, ait Dominus; nul-
lus habitaturus eſt illic homo, nec ullus
moraturus ibi filius hominis. *Ecce po-* 41
pulus adveniet ex Aquilone; & gens ma-
gna regéſque multi ſurgent ab extremo
terræ: *Arcum & cultrum geſtant, ru-* 42
dis eſt & inhumana, vox ejus ut maris
fremebundi, equis conſcendendis aſſueti
ſunt, ad prælium expediti velut ignis,
contra te O filia Babelis. *Auditâ à rege* 43
Babelis famâ eorum, remiſſæ ſunt manus
ejus, occupârunt eum anguſtia & dolores
ut parturientem.

יִרְמְיָה׃ כח

:dicendo ,sum locutus istum populum omnem ad & , sacerdotes ad'Et
16 וְאֶל־הַכֹּהֲנִים וְאֶל־כָּל־הָעָם הַזֶּה דִּבַּרְתִּי לֵאמֹר
vestrorum prophetarum verba *ad* audiatis Ne :Dominus dixit Sic
כֹּה אָמַר יְהוָה אַל־תִּשְׁמְעוּ אֶל־דִּבְרֵי נְבִיאֵיכֶם
conversa Domini domus vasa Ecce : dicendo ,vobis *prophetantium*
הַנִּבְּאִים לָכֶם לֵאמֹר הִנֵּה כְלֵי בֵית־יְהוָה מוּשָׁבִים
Ne .vobis *prophetantes* *ipsi* mendacium quia : citò nunc Babel de
מִבָּבֶלָה עַתָּה מְהֵרָה כִּי שֶׁקֶר הֵמָּה נִבְּאִים לָכֶם׃ אַל־ 17
erit quid ut :vivetis &,Babel regi servite : eos *ad* audiatis
תִּשְׁמְעוּ אֲלֵיהֶם עִבְדוּ אֶת־מֶלֶךְ בָּבֶל וִחְיוּ לָמָּה תִהְיֶה
Domini verbum est si & ,*ipsi* prophetæ si Et ? solitudo hæc civitas
18 הָעִיר הַזֹּאת חָרְבָּה׃ וְאִם־נְבִאִים הֵם וְאִם־יֵשׁ דְּבַר־יְהוָה
vasa eant non ut , exercituum *Domino in* nunc *occurrent* eis cum
אִתָּם יִפְגְּעוּ־נָא בַּיהוָה צְבָאוֹת לְבִלְתִּי־בֹאוּ הַכֵּלִים
, Jerusalaim in & ,Jehudah regis domo & ,Domini domo in *remanentia*
הַנּוֹתָרִים בְּבֵית־יְהוָה וּבֵית מֶלֶךְ יְהוּדָה וּבִירוּשָׁלִָם
super & ,columnas ad exercituum Dominus dixit sic Quia .Babel in
19 בָּבֶלָה׃ כִּי כֹה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת אֶל־הָעַמֻּדִים וְעַל־
urbe in *remanentium* vasorum residuum *super* & ,*fulcimenta super* &,mare
הַיָּם וְעַל־הַמְּכֹנוֹת וְעַל יֶתֶר הַכֵּלִים הַנּוֹתָרִים בָּעִיר
, Babel rex Nebuchadnesar *ea* tulit non Quæ .hac
20 הַזֹּאת׃ אֲשֶׁר לֹא־לְקָחָם נְבוּכַדְנֶאצַּר מֶלֶךְ בָּבֶל
Jehudah regem Jehojachim filium Jechonjah *eo transferendo in*
בַּגְלוֹתוֹ אֶת־יְכוֹנְיָה בֶן־יְהוֹיָקִים מֶלֶךְ־יְהוּדָה
.Jerusalaim & Jehudah *ingenuos* omnes & , Babel in Jerusalaim de
מִירוּשָׁלִַם בָּבֶלָה וְאֵת כָּל־חֹרֵי יְהוּדָה וִירוּשָׁלִָם׃
vasa *super* Israel Deus exercituum Dominus dixit sic Quia
21 כִּי כֹה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל עַל־הַכֵּלִים
.Jerusalaim & ,Jehudah regis domo & ,Domini domo *remanentia*
הַנּוֹתָרִים בֵּית יְהוָה וּבֵית מֶלֶךְ־יְהוּדָה וִירוּשָׁלִָם׃
me visitare diem ad usque erunt ibi & , adducentur Babel In
22 בָּבֶלָה יוּבָאוּ וְשָׁמָּה יִהְיוּ עַד יוֹם פָּקְדִי
ea faciam redire & , ea faciam ascendere & ; Dominus dixit , eos
אֹתָם נְאֻם־יְהוָה וְהַעֲלִיתִים וַהֲשִׁבֹתִים
.hunc locum ad
אֶל־הַמָּקוֹם הַזֶּה׃

CAP. XXVIII. כח

,Jehudah regis Sidchijah regni principio in ipso anno in fuit Et
1 וַיְהִי בַּשָּׁנָה הַהִיא בְּרֵאשִׁית מַמְלֶכֶת צִדְקִיָּה מֶלֶךְ־יְהוּדָה
Chananjah me ad dixit , quinto mense in , quarto anno in
בִּשְׁנַת הָרְבִעִית בַּחֹדֶשׁ הַחֲמִישִׁי אָמַר אֵלַי חֲנַנְיָה
oculis in ,Domini domo in ,Ghibhon de qui , propheta Hazur filius
בֶּן־עַזּוּר הַנָּבִיא אֲשֶׁר מִגִּבְעוֹן בְּבֵית יְהוָה לְעֵינֵי
Dominus dixit Sic : dicendo , populi omnis & , sacerdotum
2 הַכֹּהֲנִים וְכָל־הָעָם לֵאמֹר׃ כֹּה־אָמַר יְהוָה
regis jugum Confregi : dicendo , Israel Deus exercituum
צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל לֵאמֹר שָׁבַרְתִּי אֶת־עֹל מֶלֶךְ
locum ad *convertens* ego , dierum *annis duobus* adhuc In .Babel
3 בָּבֶל׃ בְּעוֹד שְׁנָתַיִם יָמִים אֲנִי מֵשִׁיב אֶל־הַמָּקוֹם
Nebuchadnesar tulit quæ , Domini domus vasa omnia hunc
הַזֶּה אֶת־כָּל־כְּלֵי בֵּית יְהוָה אֲשֶׁר לָקַח נְבוּכַדְנֶאצַּר
Et .Babel ea adduxit & , isto loco de Babel rex
4 מֶלֶךְ־בָּבֶל מִן־הַמָּקוֹם הַזֶּה וַיְבִיאֵם בָּבֶל׃ וְאֶת־
transmigrationē omnem & , Jehudah regem Jehojachim filium Jechonjah
יְכָנְיָה בֶן־יְהוֹיָקִים מֶלֶךְ־יְהוּדָה וְאֶת־כָּל־גָּלוּת
, istum locum ad *convertens* ego , Babel in *ingredientium* ; Jehudah
יְהוּדָה הַבָּאִים בָּבֶלָה אֲנִי מֵשִׁיב אֶל־הַמָּקוֹם הַזֶּה
.Babel regis jugum conteram nam : Dominus ait
נְאֻם־יְהוָה כִּי אֶשְׁבֹּר אֶת־עֹל מֶלֶךְ בָּבֶל׃

Versio VULG. LAT.

16 Et ad sacerdotes, & ad populum istum locutus sum, dicens ; Hæc dicit Domin⁹; Nolite audire verba prophetarum vestrorum, qui prophetant vobis, dicentes ; Ecce vasa Domini revertentur de Babylone nunc citó : mendacium 17 enim prophetant vobis. Nolite ergò audire eos, sed servite regi Babylonis, ut vivatis: quarè datur hæc civitas in solitudinem ? 18 Et si prophetæ sunt, & est verbum Domini in eis : occurrant Domino exercituum, ut non veniant vasa, quæ derelicta fuerant in domo Domini, & in domo regis Juda, & in Jerusalem, in 19 Babylonem. Quia hæc dicit Dominus exercituum ad columnas, & ad mare, & ad bases, & ad reliqua vasorum, quæ remanse- 20 runt in civitate hac : Quæ non tulit Nabuchodonosor rex Babylonis, cùm transferret Jechoniam filium Joakim regem Juda de Jerusalem in Babylonem, & omnes optimates Juda & Jerusalem. 21 Quia hæc dicit Dominus exercituum Deus Israel ad vasa, quæ derelicta sunt in domo Domini, & in domo regis Juda & Jerusa- 22 lem ; In Babylonem transferentur, & ibi erunt usque ad diem visitationis suæ, dicit Dominus ; & afferri faciam ea, & restitui in loco isto.

CAP. XXVIII.

1 ET factum est in anno illo, in principio regni Sedeciæ regis Juda, in anno quarto, in mense quinto, dixit ad me Hananias fili⁹ Azur propheta de Gabaon, in domo Domini, coram sacerdotibus & omni populo, dicens ; 2 Hæc dicit Dominus exercituum, Deus Israel ; Contrivi jugum re- 3 gis Babylonis. Adhuc duo anni dierum, & ego referri faciam ad locum istum omnia vasa domûs Domini, quæ tulit Nabuchodonosor rex Babylonis de loco isto, 4 & transtulit ea in Babylonem. Et Jechoniam filium Joakim regem Juda, & omnem transmigrationem Juda, qui ingressi sunt in Babylonem, ego convertam ad locum istum, ait Dominus : conteram enim jugum regis Babylonis.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

44 Ἰδοὺ ὥσπερ λέων ἀναβήσεται ἀπὸ τοῦ Ἰορδάνου εἰς (τ) Γαιθὰν, ὅτι ταχέως ἐκδιώξω αὐτοὺς ἀπ᾽ αὐτῆς, καὶ πάντα νεανίσκον ἐπ᾽ αὐτὴν ἐπιστήσω. ὅτι τίς ὥσπερ ἐγώ; καὶ τίς ἀντιστήσεταί μοι; καὶ τίς οὗτος ποιμὴν ὃς στήσεται κατὰ πρόσωπόν μου; 45 Διὰ τοῦτο ἀκούσατε τὴν βουλὴν κυρίου ἣν βεβούλευται ἐπὶ Βαβυλῶνα, καὶ (υ) λογισμοὺς αὐτοῦ οὓς ἐλογίσατο ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας Χαλδαίους· ἐὰν μὴ (φ) διαφθαρῇ τὰ ἀρνία τῶν προβάτων αὐτῶν, ἐὰν μὴ ἀφανισθῇ 46 νομὴ ἀπ᾽ αὐτῶν. Ὅτι ἀπὸ φωνῆς ἁλώσεως Βαβυλῶνος σεισθήσεται ἡ γῆ, καὶ κραυγὴ ἐν ἔθνεσιν ἀκουσθήσεται.

Ecce, sicut leo, ascendet de Jordane in Gæthan: quia citò expellam eos ab illa : & omnem adolescentem super eam statuam. Quoniam, quis sicut ego ? & quis resistet mihi ? Et quis iste pastor, qui stabit contra faciem 45 meam? Propter hoc audite consilium Domini, quod decrevit super Babylonem, & cogitationes ejus, quas cogitavit super habitatores Chaldæos, si non corrumpantur agni ovium eorum, si non 46 disperdantur pascua ab eis. Quia à voce captivitatis Babylonis commovebitur terra : & clamor in gentibus audietur.

MS.A. (τ) τόπον Αἰθάμ, (υ) διαλογισμοὺς οὓς διελογίσατο (φ) διαφθείρω

Cap. 51. Vulg. Lat.

ΚΕΦ. κη´.

1 Τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐξεγείρω ἐπὶ Βαβυλῶνα καὶ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας Χαλδαίους ἄνεμον καύσωνα διαφθείροντα. 2 Καὶ ἐξαποστελῶ εἰς Βαβυλῶνα ὑβριστὰς, καὶ (α) καθυβρίσουσιν αὐτὴν, καὶ λυμανοῦνται τὴν γῆν αὐτῆς. οὐαὶ ἐπὶ Βαβυλῶνα κυκλόθεν ἐν ἡμέρᾳ κακώσεως αὐτῆς. 3 Τεινέτω ὁ τείνων τὸ τόξον αὐτοῦ, καὶ περιθέσθω ᾧ ἐστιν ὅπλα αὐτοῦ, καὶ μὴ φείσησθε (β) ἐπὶ τοὺς νεανίσκους αὐτῆς, καὶ ἀφανίσατε πᾶσαν τὴν δύναμιν αὐτῆς. 4 Καὶ πεσοῦνται τραυματίαι ἐν γῇ Χαλδαίων, καὶ κατακεκεντημένοι ἔξωθεν αὐτῆς. 5 (γ) Διότι οὐκ ἐχήρευσεν Ἰσραὴλ καὶ Ἰούδας ἀπὸ (δ) θεοῦ αὐτῶν, ἀπὸ κυρίου παντοκράτορος, ὅτι ἡ γῆ αὐτῶν ἐπλήσθη ἀδικίας 6 ἀπὸ τῶν ἁγίων Ἰσραήλ. Φεύγετε ἐκ μέσου Βαβυλῶνος, καὶ ἀνασώζετε ἕκαστος τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, καὶ μὴ (ε) ἀποῤῥιφῆτε ἐν τῇ ἀδικίᾳ αὐτῆς, ὅτι καιρὸς ἐκδικήσεως αὐτῆς ἐστι παρὰ κυρίου, ἀνταπόδομα αὐ- 7 τὸς ἀνταποδίδωσιν αὐτῇ. Ποτήριον χρυσοῦν Βαβυλὼν ἐν χειρὶ κυρίου, μεθύσκον πᾶσαν τὴν γῆν, ἀπὸ τοῦ οἴνου αὐτῆς ἐπίο- 8 σαν ἔθνη, διὰ τοῦτο ἐσαλεύθησαν. Καὶ ἄφνω ἔπεσε Βαβυλὼν, καὶ συνετρίβη. θρηνεῖτε αὐτὴν, λάβετε (ζ) ῥητίνην τῇ δια- 9 φθορᾷ αὐτῆς, εἴπως ἰαθήσεται. Ἰατρεύσαμεν τὴν Βαβυλῶνα, καὶ οὐκ ἰάθη· ἐγκαταλίπωμεν αὐτὴν, καὶ ἀπέλθωμεν ἕκαστος εἰς τὴν γῆν αὐτοῦ, ὅτι (η) ἤγγικεν εἰς οὐρανὸν τὸ κρίμα αὐτῆς, ἐξῆρεν ἕως τῶν ἄ- 10 στρων. Ἐξήνεγκε κύριος τὸ κρίμα αὐτοῦ. δεῦτε, καὶ ἀναγγείλωμεν (θ) ἐν Σιὼν τὰ 11 ἔργα κυρίου (ι) τοῦ θεοῦ ἡμῶν. Παρασκευάζετε τὰ τοξεύματα, πληροῦτε τὰς φαρέτρας. ἤγειρε κύριος τὸ πνεῦμα βασιλέως Μήδων, ὅτι εἰς Βαβυλῶνα ἡ ὀργὴ αὐτοῦ, τοῦ (κ) ἐξολοθρεῦσαι αὐτὴν, ὅτι ἐκδίκησις κυρίου ἐστὶν, ἐκδίκησις λαοῦ αὐτοῦ ἐστιν.

CAP. XXVIII.

1 HÆc (a) dicit Dominus ; Ecce ego suscito super Babylonem, & super habitatores * Chaldæos ventum urentem corrumpentem. 2 Et emittam in Babylonem contumeliosos, & contumeliâ afficient eam, & vastabunt terram ejus. Væ super Babylonem in circuitu in die afflictionis ejus. 3 Tendat, qui tendit arcum suum ; & circumponat, cui sunt, arma sua: & ne parcatis super adolescentibus ejus, & delete omnem virtutem ejus. 4 Et cadent interfecti in terra Chaldæorum, & confossi deforis ejus. 5 Quia non fuit viduatus Israel & Judas à Deo suo, à Domino omnipotente: quia terra eorum repleta est iniquitate 6 à sanctis Israel. Fugite de medio Babylonis, & salvate unusquisque animam suam , & ne projiciamini in iniquitate ejus : quoniam tempus ultionis ejus est à Domino : retributionem ipse 7 retribuit ei. Calix aureus Babylon in manu Domini, inebrians omnem terram: de vino ejus biberunt 8 gentes : ideò commotæ sunt: Et repentè cecidit Babylon, & contrita est. Lamentamini eam , sumite resinam corruptioni ejus; 9 si quomodò sanabitur. Curavimus Babylonem, & non est sanata : derelinquamus eam, et abeamus unusquisque in terram suam : quoniam appropinquavit ad cœlum judicium ejus ; elevavit se 10 usque ad astra : Protulit Dominus judicium suum. Venite, et annuntiemus in Sion opera 11 Domini Dei nostri. Præparate arcus, implete pharetras. Suscitavit Dominus spiritum regis Medorum : quoniam in Babylonem ira ejus ad disperdendam eam : quia ultio Domini est, ultio (b) populi ejus est.

MS.A. (α) καθυβριοῦσιν (β) ἐπὶ νεανίσκους (γ) Διατί (δ) κυρίου θεοῦ αὐτῶν, κυρίου (ε) ἀπορριφῆται (ζ) ῥιτίνην (η) ἤγγισεν (θ) εἰς Σιὼν (ι) θεοῦ ἡμῶν. Παρασκευάσατε (κ) ἐξολεθρεῦσαι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 וּלְכָהֲנַיָּא וּלְכָל עַמָּא הָדֵין מַלֵּלִית לְמֵימַר כִּדְנַן אֲמַר יְיָ לָא תְקַבְּלוּן לְפִתְגָּמֵי נְבִיֵּיכוֹן
דְּשִׁקְרָא דְּמִתְנַבַּן לְכוֹן לְמֵימַר הָא מָנֵי בֵית מַקְדְּשָׁא דַּיְיָ מְתוּתְבִין מִבָּבֶל כְּעַן בִּפְרִיעַ
17 אֲרֵי שִׁקְרָא אִנּוּן מִתְנַבַּן לְכוֹן׃ לָא תְקַבְּלוּן מִנְּהוֹן פְּלַחוּ יַת מַלְכָּא דְבָבֶל וְאִתְקַיִּימוּ לְמָא
18 תְהֵי קַרְתָּא הָדָא חוּרְבָּא׃ וְאִם מִתְנַבַּן אִנּוּן וְאִם אִית פִּתְגָּמָא דַּיְיָ עִמְּהוֹן יִבְעוֹן כְּעַן
בְּמֵימְרָא דַּיְיָ צְבָאוֹת בְּדִיל דְּלָא יִתּוֹבְלוּן מָנַיָּא דְּאִשְׁתְּאַרוּ בְּבֵית מַקְדְּשָׁא דַּיְיָ וּבֵית מֶלֶךְ
19 שִׁבְטָא דְבֵית יְהוּדָה וּבִירוּשְׁלֶם לְבָבֶל׃ אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת עַל עַמּוּדַיָּא וְעַל יַמָּא
20 וְעַל בְּסִיסַיָּא וְעַל שְׁאָר מָנַיָּא דְּאִשְׁתְּאַרוּ בְּקַרְתָּא הָדָא׃ דְּלָא שְׁבָנוּן נְבוּכַד נֶצַּר מַלְכָּא
דְבָבֶל כַּד אַגְלֵי יַת יְכָנְיָה בַר יְהוֹיָקִים מֶלֶךְ שִׁבְטָא דְבֵית יְהוּדָה מִירוּשְׁלֶם לְבָבֶל וְיַת כָּל
21 רַבְרְבֵי יְהוּדָה וִירוּשְׁלֶם׃ אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל עַל מָנַיָּא דְּאִשְׁתְּאַרוּ
22 בֵּית מַקְדְּשָׁא דַּיְיָ וּבֵית מֶלֶךְ שִׁבְטָא דְבֵית יְהוּדָה וּבִירוּשְׁלֶם׃ לְבָבֶל יִתּוֹבְלוּן וְתַמָּן יְהוֹן
עַד יוֹמָא דְיֵיעוֹל דָּכְרָנְהוֹן קֳדָמַי אֲמַר יְיָ וְאַסֵּיקִנּוּן וַאֲתִיבִנּוּן לְאַתְרָא הָדֵין׃

כח

1 וַהֲוָה בְּשַׁתָּא הַהִיא בְּרֵישׁ מַלְכוּת צִדְקִיָּה מֶלֶךְ שִׁבְטָא דְבֵית יְהוּדָה בְּשַׁתָּא רְבִיעֵיתָא
בְּיַרְחָא חֲמִישָׁאָה אֲמַר לִי חֲנַנְיָה בַר עַזּוּר נְבִיָּא שִׁקְרָא דְּמִגִּבְעוֹן בְּבֵית מַקְדְּשָׁא דַּיְיָ לְעֵינֵי
2 כָּהֲנַיָּא וְכָל עַמָּא לְמֵימַר׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל לְמֵימַר תַּבְרֵית יַת נִיר
3 מַלְכָּא דְבָבֶל׃ בְּסוֹף תַּרְתֵּין שְׁנִין אֲנָא מְתִיב לְאַתְרָא הָדֵין יַת כָּל מָנֵי בֵּית מַקְדְּשָׁא דַּיְיָ
4 דִּשְׁבָא נְבוּכַדְנֶאצַּר מַלְכָּא דְבָבֶל מִן אַתְרָא הָדֵין וְאוֹבְלִנּוּן לְבָבֶל׃ וְיַת יְכָנְיָה בַר
יְהוֹיָקִים מֶלֶךְ שִׁבְטָא דְבֵית יְהוּדָה וְיַת כָּל גָּלוּת יְהוּדָה דְּאִתְגְּלִיאוּ לְבָבֶל אֲנָא מְתִיב
לְאַתְרָא הָדֵין אֲמַר יְיָ אֲרֵי אֶתְבַּר יַת נִיר מַלְכָּא דְבָבֶל׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Sacerdotibus autem & omni populo huic locutus sum dicens : Hæc dicit 16 Dominus ; Ne obediatis verbis pseudoprophetarum vestrorum prophetantium vobis, dicendo : Ecce vasa domus sanctuarii Domini revertentur de Babylonia nunc citò ; quia mendacium ipsi prophetant vobis. Ne obe- 17 diatis eis : sed servite regi Babylonis, & vivite. Quare erit civitas hæc desolata ? Et si prophetæ sunt, & est verbum Domini cum eis, deprecen- 18 tur nunc in verbo Domini exercituum, ut non efferantur vasa quæ remanserunt in domo sanctuarii Domini, & in domo regis tribus domus Juda, & in Jerusalem, in Babylonem. Quia hæc dicit Dominus exercituum 19 de columnis & de mari, & de basibus & reliquis vasis quæ remanserunt in civitate hac : Quæ non cepit Nabuchodonosor rex Babylonis cùm 20 transmigrare fecerat Jechoniam filium Joachim, regem tribus domus Juda, de Jerusalem in Babylonem , & omnes principes Juda & Jerusalem. Quia hæc dicit Dominus exercituum Deus Israel de vasis quæ remanse- 21 runt in domo sanctuarii Domini, & in domo regis tribus domus Juda, & in Jerusalem. In Babylonem transferentur, & ibi erunt usque in diem 22 quo subibit memoria eorum in conspectu meo, dicit Dominus ; & ascendere faciam, & reducam ea in locum istum.

CAP. XXVIII.

ET factum est anno illo in principio regni Sedechiæ regis tribus domus 1 Juda, anno quarto, mense quinto, dixit ad me Ananias filius Azor pseudopropheta de Gabaon, in domo sanctuarii Dñi, in oculis sacerdotũ & omnis populi, dicens : Hæc dicit Dñs exercituum Deus Israel, dicendo : Con- 2 fregi jugum regis Babylonis. In fine duorum annorum ego reducam in 3 locum istum omnia vasa domus sanctuarii Dñi, quæ cepit Nabuchodonosor rex Babylonis de loco isto, & transtulit ea in Babylonem. Et Jecho- 4 niam filium Joachim regem tribus domus Juda, & omnem transmigrationem Juda, quæ transmigravit in Babylonem, ego reducam in locum istum, dicit Dominus : quia confringam jugum regis Babylonis.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܠܟܗܢ̈ܐ ܘܠܟܠܗ ܥܡܐ ܗܢܐ. ܘܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܠܐ ܬܫܡܥܘܢ ܠܡ̈ܠܐ ܕܢܒ̈ܝܟܘܢ 16
ܕܡܬܢܒܝܢ ܠܟܘܢ ܘܐܡܪܝܢ. ܗܐ ܡܐܢ̈ܐ ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܗܦܟܝܢ ܡܢ ܒܒܠ ܩܠܝܠ.
ܡܛܠ ܕܫܘܩܪܐ ܗܢܘܢ ܡܬܢܒܝܢ ܠܟܘܢ. * ܠܐ ܬܫܡܥܘܢ ܠܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܦܠܘܚܘ ܠܡܠܟܐ 17
ܕܒܒܠ. ܘܚܝܘ. ܘܠܐ ܬܗܘܐ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܚܪܒܐ. * ܘܐܢ ܢܒܝ̈ܐ ܐܢܘܢ. ܘܐܝܬ ܦܬܓܡܗ 18
ܕܡܪܝܐ ܥܡܗܘܢ. ܢܬܒܥܘܢ ܡܢ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ: ܕܠܐ ܢܐܙܠܘܢ ܡܐܢ̈ܐ ܕܐܫܬܚܪܘ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ.
ܘܒܒܝܬܗ ܕܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܒܐܘܪܫܠܡ ܠܒܒܠ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ 19
ܕܐܝܣܪܝܠ. ܥܠ ܥܡܘܕ̈ܐ ܘܥܠ ܝܡܐ ܘܥܠ ܡܙܪ̈ܩܐ. ܘܥܠ ܫܪܟܐ ܕܡܐܢ̈ܐ ܕܐܫܬܚܪܘ
ܒܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ: * ܕܠܐ ܫܩܠ ܐܢܘܢ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܟܕ ܫܒܐ ܠܝܘܟܢܝܐ ܒܪ 20
ܝܘܝܩܝܡ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ ܠܒܒܠ: ܘܠܟܠܗܘܢ ܪ̈ܘܪܒܢܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܕܐܘܪܫܠܡ.
* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܥܠ ܡܐܢ̈ܐ ܕܐܫܬܚܪܘ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ 21
ܘܒܒܝܬܗ ܕܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܒܐܘܪܫܠܡ. * ܠܒܒܠ ܢܐܙܠܘܢ. ܘܬܡܢ ܢܗܘܘܢ. ܥܕܡܐ 22
ܠܝܘܡܐ ܕܐܣܥܘܪ ܐܢܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܦܩ ܐܢܘܢ. ܘܐܗܦܟ ܐܢܘܢ ܠܐܬܪܐ ܗܢܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܚ *

* ܘܗܘܐ ܒܫܢܬܐ ܗܝ. ܒܪܝܫ ܡܠܟܘܬܗ ܕܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܒܫܢܬܐ ܪܒܝܥܝܬܐ ܒܝܪܚܐ 1
ܕܚܡܫܐ. ܐܡܪ ܠܝ ܚܢܢܝܐ ܒܪ ܥܙܘܪ ܢܒܝܐ ܕܓܠܐ ܕܡܢ ܓܒܥܘܢ. ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܠܥܝܢ
ܟܗܢ̈ܐ ܘܠܥܝܢ ܟܠܗ ܥܡܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܬܒܪܬ ܢܝܪܗ 2
ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. * ܥܕܡܐ ܠܬܪܬܝܢ ܫܢܝܢ. ܡܗܦܟ ܐܢܐ ܠܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܠܟܠܗܘܢ ܡܐܢ̈ܐ 3
ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܕܫܩܠ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܡܢ ܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܘܐܘܒܠ ܐܢܘܢ ܠܒܒܠ.
ܥܡ ܝܘܟܢܝܐ ܒܪ ܝܘܝܩܝܡ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. * ܘܠܟܠܗ ܫܒܝܬܐ ܕܝܗܘܕܐ ܕܐܙܠܘ 4
ܠܒܒܠ. ܡܗܦܟ ܐܢܐ ܠܐܬܪܐ ܗܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܬܒܪ ܐܢܐ ܢܝܪܗ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ.

Similiter ad ſacerdotes totumque populum 16 iſtum ſic dicit Domin⁹, Ne auſcultetis ſermonibus prophetarum veſtrorum qui prophetant vobis ac dicunt, Ecce vaſa domûs Domini brevi reditura ſunt ex Babele : nam falſum iſti prophetant vobis. Ne auſcultetis eis, dicit 17 Domin⁹ : ſervite regi Babelis, ut vivatis, & non fiat civitas iſta deſolata. Quòd ſi prophetæ 18 ſunt, & ineſt illis ſermo Domini ; precentur Dñm potentiſſimũ ut vaſa quæ remanſerunt in domo Dñi, in domo regis Judæ, & in Jeruſalem, non abeant in Babelem. Sic enim 19 ait Dominus potentiſſim⁹ Deus Iſraelis de columnis, de mari, de phialis, deque cæteris vaſis quæ remanſerunt in hac civitate, Quæ 20 non aſportavit Nebuchadnoſar rex Babelis quando captivum duxit Jochaniam filium Jojacimi regis Judæ è Jeruſalem in Babelem, unà cum omnib⁹ principib⁹ Judæ & Jeruſalem. Sic *inquam*, ait Domin⁹ potentiſſimus 21 De⁹ Iſraelis de vaſis quæ ſuperſunt in domo Domini, & in domo regis Judæ & Jeruſalem : In Babelem abibunt, & illic manebunt 22 ad eum uſque diem quo viſitavero ea, dicit Dominus, extraxero, atque reduxero ea in locum iſtum.

CAP. XXVIII.

COntigit etiam anno illo, in principio re- 1 gis Judæ, anno quarto, menſe quinto ; ut diceret mihi Hanania fili⁹ Azuris propheta falſus qui erat è Gebeone, in domo Domini, præſentib⁹ ſacerdotib⁹ & præſente univerſo populo, Ita dicit Domin⁹ potentiſſim⁹ De⁹ 2 Iſraelis, Fregi jugum regis Babyloniæ. In- 3 tra biennium reſtituam in locum iſtum cuncta vaſa dom⁹ Domini, quæ rapuit Nebuchadnoſar rex Babyloniæ è loco iſto, tranſvexitque Babyloniam, unà cum Jochania filio Jojacimi regis Judæ. Omnes etiam capti- 4 vos Judæ qui abierunt Babyloniam, reducam in locum iſtum, dicit Dominus ; quia fracturus ſum jugum regis Babyloniæ.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ها مثل أسد يصعد من الاردن الي موضع اثام * لاني بسرعة أستكدهم منها * وكل 44
شاب اقيمه عليها * لان من مثلي انا * ومن ذا يقاومني * ومن ذا الراعي الذي يقف
لوجهي * لاجل هذا اسمعوا راي الرب الذي رواه علي بابل * والافكار التي فكرها 45
علي السكان الكلدانيين * ان لم افسد خراف غنمهم * ان لم يفن مرعاهم * لان من 46
صوت هلاك بابل تتزلزل الارض * ويسمع الصراخ في الامم *

* الفصل الثامن والعشرون *

* هكذا يقول الرب * ها انا اثير على بابل وعلي 1
السكان الكلدانيين ريحا محرقة مفسدة * وارسل الي بابل معدريين * ويعدرون عليها ويفسدون 2
ارضها * ويل على بابل من حولها في يوم ضرها * ليمد الماد قوسه وليلبس اسلحته * ولا 3
تشفقوا على شبانها * وافنوا كل جيشها * ويسقطون جرحا في ارض الكلدانيين * ومطعونين 4
من خارجها * من اجل ماذا * لم يترمل اسرايل ويهودا من الرب الههم الرب ضابط الكل * 5
لان ارضهم امتلات ظلما من اقداس اسرايل * فروا من وسط بابل * وخلصوا كل واحد 6
نفسه * ولا تنطرحوا في ظلمها * لان زمن انتقامها حضر من قبل الرب * وهو يكافيها مكافاة *
* كاس ذهب بابل في يد الرب * اسكر كل الارض من خمرها * شربت الامم * لاجل هذا 7
تزعزعوا * سقطت بابل بغتة وانكسرت * نوحوا عليها * خذوا قلفونية لفسادها لعل 8
تشفي * طببنا بابل فلم تشفي * تركناها وذهبنا كل واحد في طريقه * لان حكمها اقترب 9
الي السماء * ارتفع الي الكواكب * ابرز الرب حكمه * تعالوا فنخبر في صهيون باعمال الرب 10
الهنا * هيوا السهام * املوا الجعاب * اقام الرب روح ملك الماديين * لان غضبه على بابل 11
ليستاصلها * لان انتقام الرب حضر * انتقام شعبه هو *

Ecce tanquam leo aſcendet è Jordane 44 *ad locum Ethan : nam brevi exhauriam eos ex ipſa, & quemcunque juvenem præficiam ipſi. Quis enim mihi ſimilis eſt ? aut quis mecum certet ? aut quis eſt paſtor qui mihi reſiſtat ? Hanc ob* 45 *rem audite quid animo conceperit Dominus contra Babelem, & quas cogitationes cogitârit de civibus Chaldæis : mentiar niſi corrumpam agnos gregum eorum, niſi pereat paſcuum eorum. Nam præ fragore excidii Babelis ter-* 46 *ra contremiſcet, & audietur clamor inter gentes.*

CAP. XXVIII.

SIc dicit Dominus, Ecce ego con- 1 *citaturus ſum in Babelem & in cives Chaldæos ventum urentem pernicioſum: Et miſſurus in Babelem contumelioſos* 2 *qui contumeliis afficient eam, & terram ejus vaſtabunt. Væ Babeli undequaque in die calamitatis ejus. Tendat* 3 *qui tendit arcum ſuum, & induat arma ſua : ne parcatis juvenibus ejus, ſed extinguite omnes copias ejus ; ut* 4 *cadant ſaucii in terra Chaldæorum, & transfixi ab iis qui ſunt extra ipſam. Qua de cauſa ? Num viduati ſunt* 5 *Iſrael & Juda Domino Deo ſuo, Domino omnipotente, quòd eorum terra impleta ſit iniquitate à ſanctis Iſraelis ? Fugite de medio Babelis, & eri-* 6 *pite quiſque ſeipſum, neque præcipitetis vos in iniquitatem ejus : nam tempus ultionis ejus adeſt à Domino, & ipſe rependet illi vices. Calix aureus* 7 *eſt Babel in manu Domini, è cujus vino inebriavit univerſam terram ; biberunt gentes, ideo vacillârunt. Cecidit* 8 *Babel ſubitò, & fracta eſt : deplorate eam, accipite reſinam pro corruptione ejus, ſi fortè ſanetur. Remedium ad-* 9 *hibuimus Babeli ; ſed quia non eſt ſanata, reliquimus eam, & abivimus quiſque viâ ſuâ : judicium enim ejus ad cœlum appropinquavit, extulit ſe ad aſtra, Patefecit Dominus judicium* 10 *ſuum. Agite annuntiemus in Sione opera Domini Dei noſtri. Parate ſagit-* 11 *tas, implete pharetras : excitavit Dominus ſpiritum regis Medorum, quia furor ejus eſt contra Babelem, ut eam funditùs evertat : nam ultio Domini adeſt, ultio populi ſui eſt.*

ירמיה : כח

oculis in , prophetam Chananjah ad propheta Irmejah dixit Et
5 וַיֹּאמֶר יִרְמְיָה הַנָּבִיא אֶל־חֲנַנְיָה הַנָּבִיא לְעֵינֵי
.Domini domo in *ſtantium* , populi omnis oculis in & ,ſacerdotum
הַכֹּהֲנִים וּלְעֵינֵי כָּל־הָעָם הָעֹמְדִים בְּבֵית יְהוָה :
ſuſcitet : Dominus faciat Sic .Amen : propheta Irmejah ait Et
6 וַיֹּאמֶר יִרְמְיָה הַנָּבִיא אָמֵן כֵּן יַעֲשֶׂה יְהוָה יָקֵם
domus vaſa *convertendum ad* prophetâſti quæ , tua verba Dominus
יְהוָה אֶת־דְּבָרֶיךָ אֲשֶׁר נִבֵּאתָ לְהָשִׁיב כְּלֵי בֵית־
.iſtum locum ad Babel de tranſmigrationem omnem & ,Domini
יְהוָה וְכָל־הַגּוֹלָה מִבָּבֶל אֶל־הַמָּקוֹם הַזֶּה :
loquens ego quod , hoc verbum nunc audi Veruntamen
7 אַךְ־שְׁמַע־נָא הַדָּבָר הַזֶּה אֲשֶׁר אָנֹכִי דֹּבֵר
fuerunt qui Prophetæ .populi univerſi auribus in &,tuis auribus in
8 בְּאָזְנֶיךָ וּבְאָזְנֵי כָּל־הָעָם : הַנְּבִיאִים אֲשֶׁר הָיוּ
.multas terras *ad* prophetaverunt & , ſeculo à te ante & ,me ante
לְפָנַי וּלְפָנֶיךָ מִן־הָעוֹלָם וַיִּנָּבְאוּ אֶל־אֲרָצוֹת רַבּוֹת
.peſte & , *malo* & , prælio de , magna regna *ſuper* &
וְעַל־מַמְלָכוֹת גְּדֹלוֹת לְמִלְחָמָה וּלְרָעָה וּלְדָבֶר :
ſcietur ,prophetæ verbum *veniendo in* , pace de *prophetabit* qui Propheta
9 הַנָּבִיא אֲשֶׁר יִנָּבֵא לְשָׁלוֹם בְּבֹא דְּבַר הַנָּבִיא יִוָּדַע
Chananjah tulit Et .veritate in Dominus *eum* miſit quem propheta
10 הַנָּבִיא אֲשֶׁר־שְׁלָחוֹ יְהוָה בֶּאֱמֶת : וַיִּקַּח חֲנַנְיָה
.eū confregit & ,prophetæ Irmejah collo *deſuper* vectem propheta
הַנָּבִיא אֶת־הַמּוֹטָה מֵעַל צַוַּאר יִרְמְיָה הַנָּבִיא וַיִּשְׁבְּרֵהוּ :
dixit Sic : dicendo , populi omnis oculis in Chananjah ait Et
11 וַיֹּאמֶר חֲנַנְיָה לְעֵינֵי כָל־הָעָם לֵאמֹר כֹּה אָמַר
Babel regis Nebuchadneſar jugum confringam Sic : Dominus
יְהוָה כָּכָה אֶשְׁבֹּר אֶת־עֹל נְבֻכַדְנֶאצַּר מֶלֶךְ־בָּבֶל
abiit & : gentium omnium collo *deſuper* dierum *duobus annis adhuc in*
בְּעוֹד שְׁנָתַיִם יָמִים מֵעַל צַוַּאר כָּל־הַגּוֹיִם וַיֵּלֶךְ
ad Domini verbum fuit Et .ſuam viam in propheta Irmejah
12 יִרְמְיָה הַנָּבִיא לְדַרְכּוֹ : וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֶל־
deſuper vectem propheta Chananjah *confringere poſt* Irmejahu
יִרְמְיָהוּ אַחֲרֵי שְׁבוֹר חֲנַנְיָה הַנָּבִיא אֶת־הַמּוֹטָה מֵעַל
,Chananjah ad *dices* & ,Vade : dicendo ,prophetæ Irmejah collo
13 צַוַּאר יִרְמְיָה הַנָּבִיא לֵאמֹר : הָלוֹךְ וְאָמַרְתָּ אֶל־חֲנַנְיָה
facies & ,confregiſti *ligni* Vectes :Dominus dixit Sic : dicendo
לֵאמֹר כֹּה אָמַר יְהוָה מוֹטֹת עֵץ שָׁבָרְתָּ וְעָשִׂיתָ
Deus exercituū Dominus dixit ſic Quia .*ferri* vectes eis pro
14 תַחְתֵּיהֶן מֹטוֹת בַּרְזֶל : כִּי כֹה־אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי
gentium cunctarum collum ſuper *dedi* *ferri* Jugum : Iſrael
יִשְׂרָאֵל עֹל בַּרְזֶל נָתַתִּי עַל־צַוַּאר כָּל־הַגּוֹיִם
: ei ſerviant & ,Babel regi Nebuchadneſar *ſerviendum ad* , iſtarum
הָאֵלֶּה לַעֲבֹד אֶת־נְבֻכַדְנֶאצַּר מֶלֶךְ־בָּבֶל וַעֲבָדֻהוּ
propheta Irmejah dixit Et .ei dedi agri *feram* inſuper &
15 וְגַם אֶת־חַיַּת הַשָּׂדֶה נָתַתִּי לוֹ : וַיֹּאמֶר יִרְמְיָה הַנָּבִיא
te miſit non ,Chananjah nunc Audi : prophetam Chananjah ad
אֶל־חֲנַנְיָה הַנָּבִיא שְׁמַע־נָא חֲנַנְיָה לֹא־שְׁלָחֲךָ
.mendacio in iſtum populum feciſti fidere tu & ,Dominus
יְהוָה וְאַתָּה הִבְטַחְתָּ אֶת־הָעָם הַזֶּה עַל־שָׁקֶר :
faciebus deſuper te *mittens* ego Ecce : Dominus dixit ſic Idcirco
16 לָכֵן כֹּה אָמַר יְהוָה הִנְנִי מְשַׁלֵּחֲךָ מֵעַל פְּנֵי
ad es locutus *defectionem* quia : *mortuus* *tu* anno hoc : *humi*
הָאֲדָמָה הַשָּׁנָה אַתָּה מֵת כִּי־סָרָה דִבַּרְתָּ אֶל־
, ipſo anno in propheta Chananjah eſt mortuus Et .Dominum
17 יְהוָה : וַיָּמָת חֲנַנְיָה הַנָּבִיא בַּשָּׁנָה הַהִיא
.ſeptimo menſe in
בַּחֹדֶשׁ הַשְּׁבִיעִי :

Verſio VULG. LAT.

5 Et dixit Jeremias propheta ad
Hananiam prophetam, in oculis
ſacerdotum, & in oculis
omnis populi, qui ſtabat in
6 domo Domini. Et ait Jeremias
propheta; Amen, ſic faciat
Dominus: ſuſcitet Dominus verba
tua, quæ prophetâſti: ut referantur
vaſa in domum Domini,
& omnis tranſmigratio de
7 Babylone ad locum iſtum. Veruntamen
audi verbum hoc,
quod ego loquor in auribus
tuis,& in aurib' univerſi populi:
8 Prophetæ, qui fuerunt ante me
& ante te ab initio, & prophetaverunt
ſuper terras multas,
& ſuper regna magna, de prælio,
& de afflictione, & de fame.
9 Propheta, qui vaticinatus eſt
pacem: cùm venerit verbum
ejus, ſcietur propheta, quem
10 miſit Dominus in veritate. Et
tulit Hananias propheta catenam
de collo Jeremiæ prophetæ,
11 & confregit eam. Et ait
Hananias in conſpectu omnis
populi, dicens; Hæc dicit Dominus;
Sic confringam jugum
Nabuchodonoſor regis Babylonis
poſt duos annos dierum de
12 collo omnium gentium. Et abiit
Jeremias propheta in viam ſuã.
Et factum eſt verbum Domini
ad Jeremiam, poſtquàm confregit
Hananias propheta catenam
de collo Jeremiæ prophetæ, dicens;
13 Vade, & dices Hananiæ;
Hæc dicit Dominus; Catenas
ligneas contriviſti: & facies
14 pro eis catenas ferreas. Quia
hæc dicit Dominus exercituum
Deus Iſrael; Jugum ferreum
poſui ſuper collum cunctarum
gentium iſtarum, ut ſerviant
Nabuchodonoſor regi Babylonis,
& ſervient ei: inſuper &
15 beſtias terræ dedi ei. Et dixit
Jeremias propheta ad Hananiam
prophetam; Audi Hanania: non
miſit te Dominus, & tu confidere
feciſti populum iſtum in
16 mendacio. Idcircò hæc dicit
Dominus; Ecce ego mittam te
à facie terræ: hoc anno morieris:
adverſùm enim Dominum
17 locutus es. Et mortuus eſt
Hananias propheta in anno illo,
menſe ſeptimo.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

12 Ἐπὶ τειχέων Βαβυλῶνος ἄρατε σημεῖον,
ἐπιστήσατε φαρέτρας, (λ) ἐγείρατε φυλακάς,
ἑτοιμάσατε ὅπλα, ὅτι (μ) ἐνεχείρισε, καὶ
ποιήσει κύριος ἃ ἐλάλησεν ἐπὶ τοὺς κατοι-
13 κοῦντας Βαβυλῶνα, Κατασκηνοῦντας ἐφ'
ὕδασι πολλοῖς, καὶ ἐπὶ (″) πλήθει θησαυρῶν
αὐτῆς. ἥκει τὸ πέρας σου ἀληθῶς (ν) εἰς τὰ
14 σπλάγχνα σου. Ὅτι ὤμοσε κύριος κατὰ τοῦ
βραχίονος αὐτοῦ, Διότι πληρώσω σε ἀν-
θρώπων ὡσεὶ ἀκρίδων, καὶ φθέγξονται ἐπὶ
15 σὲ οἱ (ξ) καταβαίνοντες. Κύριος
ποιῶν γῆν ἐν τῇ ἰσχύϊ αὐτοῦ, ἑτοιμά-
ζων οἰκουμένην ἐν τῇ σοφίᾳ αὐτοῦ, ἐν
τῇ συνέσει αὐτοῦ ἐξέτεινε τὸν οὐρανόν,
16 Εἰς φωνὴν ἔθετο ἦχος ὕδατος ἐν (ο) οὐ-
ρανῷ, καὶ ἀνήγαγε νεφέλας ἀπ' ἐσχάτου τῆς
γῆς, ἀστραπὰς εἰς ὑετὸν ἐποίησε, καὶ ἐξή-
17 γαγε φῶς ἐκ τῶν θησαυρῶν αὐτοῦ. (π) Ἐμα-
ταιώθη πᾶς ἄνθρωπος ἀπὸ γνώσεως, κατ-
ῃσχύνθη πᾶς χρυσοχόος ἀπὸ τῶν γλυπτῶν
αὐτοῦ, ὅτι ψευδῆ (ρ) ἐχώνευσαν, οὐκ ἔστι
18 πνεῦμα ἐν αὐτοῖς. Μάταιά ἐστιν ἔργα με-
μωκημένα, ἐν καιρῷ ἐπισκέψεως αὐτῶν
19 ἀπολοῦνται. Οὐ τοιαύτη μερὶς τῷ Ἰα-
κώβ, ὅτι ὁ πλάσας τὰ πάντα, αὐτός ἐστιν
κληρονομία αὐτοῦ, Κύριος ὄνομα αὐτῷ.
20 Διασκορπίζεις σύ μοι σκεύη πολέμου, (σ) καὶ
διασκορπιῶ ἐν σοὶ ἔθνη, καὶ ἐξαρῶ ἐκ σοῦ
21 βασιλεῖς. Καὶ διασκορπιῶ ἐν σοὶ ἵππον καὶ
(τ) ἐπιβάτην αὐτοῦ, καὶ διασκορπιῶ ἐν σοὶ
22 ἅρματα καὶ ἀναβάτας αὐτῶν. Καὶ διασκορπιῶ
ἐν σοὶ (υ) νεανίσκον καὶ παρθένον, καὶ δια-
23 σκορπιῶ ἐν σοὶ ἄνδρα καὶ γυναῖκα. Καὶ δια-
σκορπιῶ ἐν σοὶ ποιμένα καὶ τὸ ποίμνιον αὐ-
τοῦ, καὶ διασκορπιῶ ἐν σοὶ γεωργὸν καὶ τὸ γε-
ώργιον αὐτοῦ, καὶ διασκορπιῶ ἐν σοὶ (φ) ἡγε-
24 μόνας καὶ στρατηγούς σου. Καὶ ἀνταποδώσω τῇ
(χ) Βαβυλῶνι καὶ πᾶσι τοῖς κατοικοῦσι Χαλ-
δαίοις πάσας τὰς (ψ) κακίας αὐτῶν, ἃς ἐποί-
ησαν ἐπὶ Σιὼν κατ' ὀφθαλμοὺς ὑμῶν, λέ-
25 γει κύριος. Ἰδοὺ ἐγὼ πρὸς σὲ τὸ ὄρος τὸ
διεφθαρμένον, τὸ διαφθεῖρον πᾶσαν τὴν
γῆν, καὶ ἐκτενῶ τὴν χεῖρά μου ἐπὶ σέ, καὶ
(ω) κατακυλιῶ σε ἐπὶ τῶν πετρῶν, καὶ δώ-
26 σω σε ὡς ὄρος ἐμπεπυρισμένον· Καὶ οὐ
μὴ λάβωσιν ἀπὸ σοῦ λίθον εἰς γωνίαν, καὶ
λίθον εἰς θεμέλιον, ὅτι εἰς ἀφανισμὸν
27 ἔσῃ εἰς τὸν αἰῶνα, λέγει κύριος. Ἄρατε
σημεῖον ἐπὶ τῆς γῆς, σαλπίσατε ἐν ἔθνεσι
σάλπιγγι, ἁγιάσατε ἐπ' αὐτὴν ἔθνη, παρ-
αγγείλατε ἐπ' αὐτὴν (α), βασιλεῖς ἄ-
ρατε παρ' ἐμοῦ, καὶ τοῖς (β) Ἀσχαναζέοις·
ἐπιστήσατε ἐπ' αὐτὴν βελοστάσεις, ἀναβι-
βάσατε ἐπ' αὐτὴν ἵππον ὡς ἀκρίδων
πλῆθος.

Super muros Babylonis levate 12
ſignum, (c) ſtatuite pharetras,
ſuſcitate cuſtodias, parate arma:
quoniam aggreſſus eſt, & faciet
Dominus, quæ loquutus eſt
ſuper habitatores Babylonis, (d)
Habitantes in aquis multis, & 13
in multitudine theſaurorum ejus.
Venit finis tuus verè in viſcera
tua: Quia juravit Dominus per 14
brachium ſuum; Quia implebo te
hominibus, ſicut locuſtis: & loquentur
ſuper te deſcendentes.
Dominus faciens terram in fortitudine 15
ſua, parans orbem in
ſapientia ſua; in intellectu ſuo
extendit cœlum, Ad vocem 16
poſuit ſonum aquæ in cœlo, &
eduxit nubes ab extremo terræ,
fulgura in pluviam fecit, & eduxit
lumen de theſauris ſuis.
Stultus factus eſt omnis homo à 17
ſcientia: Confuſus eſt omnis aurifex
à ſculptilibus ſuis; quia
falſa conflaverunt: non eſt ſpiritus
in eis. Vana ſunt opera 18
ridicula: in tempore viſitationis
ipſorum peribunt. Non talis 19
pars ipſi Jacob: quoniam qui
plaſmavit omnia, ipſe eſt (e)
hæreditas ejus: Dominus nomen
illi. (f) Diſpergis tu mihi vaſa 20
belli: & diſpergam in te gentes,
& (g) tollam de te reges. Et 21
diſpergam in te equum,& aſcenſorem
ejus: & diſpergam in te
currus, & aſcenſores eorum:
Et diſpergam in te (h) adoleſcentem, 22
& virginem: & diſpergam
in te virum, & mulierem:
Et diſpergam in te paſtorem, & 23
gregem ejus: & diſpergam in
te agricolam, & agriculturam
ejus: & diſpergam in te præfectos,
& duces militiæ tuos.
Et retribuam Babyloni, & omnibus 24
habitatoribus Chaldæis omnes
malitias eorum, quas fecerunt
ſuper Sion ante oculos
veſtros, dicit Dominus. Ecce ego 25
ad te montem corruptum, qui corrumpis
univerſam terram: &
extendam manum meam ſuper
te: et devolvam te ſuper petras:
et dabo te ſicut montem combuſtum:
Et non accipient de te 26
lapidem in angulum, et lapidem
in fundamentum: quia in deſolationem
eris in ſeculum, dicit
Dominus. Levate ſignum ſuper 27
terram: clangite in gentibus tubâ:
ſanctificate ſuper eam gentes: annuntiate
ſuper eam, (i) reges tollite
à me, et Achanazæis: ſtatuite
ſuper eam machinas: facite
aſcendere ſuper eam equum,
quaſi locuſtarum multitudinem:

MS. A. (λ) ἐγείρετε (μ) ἐνεχείρησεν (″) πλήθει (ν) ἐπὶ (ξ) καταβαίνοντες.
Ποιῶν γῆν (ο) τῷ οὐρανῷ, (π) Ἐμωράνθη (ρ) ἐχώνευσεν, (σ) κἀγὼ (τ)
ἀναβάτην (υ) ἄνδρα καὶ γυναῖκα, καὶ διασκορπιῶ ἐν σοὶ νεανίσκον
καὶ παρθένον. Καὶ διασκορπιῶ ἐν σοὶ ποιμαίνα (φ) ἡγεμόνα (χ) Βαβυλω-
νίᾳ (ψ) ἀδικίας (ω) κατακυλίσω σε ἀπὸ τῶν (α) βασιλείαις Ἀραρὲθ
παρ' (β) Ἀσχαναζαίοις·

ד

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 וַאֲמַר יִרְמְיָה נְבִיָּא לַחֲנַנְיָה נְבִיָּא שִׁקְרָא לְעֵינֵי כַהֲנַיָּא וּלְעֵינֵי כָל עַמָּא דְקָיְמִין בְּבֵית
6 מַקְדְּשָׁא דַייָ : וַאֲמַר יִרְמְיָה נְבִיָּא אָמֵן כֵּן יְהֵא רַעֲוָא מִן קֳדָם יְיָ יְקַיֵּם יְיָ יָת
פִּתְגָמָךְ דְּאִתְנַבֵּיתָא לַאֲתָבָא מָנֵי בֵית מַקְדְּשָׁא דַייָ וְכָל גָּלוּתָא מִבָּבֶל לְאַתְרָא
7 הָדֵין : בְּרַם שְׁמַע כְּעַן פִּתְגָמָא הָדֵין דִּי אֲנָא מְמַלֵּל קֳדָמָךְ וּקְדָם כָּל עַמָּא :
8 נְבִיַּיָא דַהֲווֹ קֳדָמַי וּקְדָמָךְ מִן עָלְמָא וְאִתְנַבִּיאוּ עַל מְדִינָן סַגִּיאָן וְעַל מַלְכְוָן רַבְרְבָן
9 לִקְרָבָא וּלְבִישְׁתָא וּלְמוֹתָא : נְבִיָּא דְּיִתְנַבֵּי לִשְׁלָמָא בְּמֵיתֵי פִּתְגָם נְבִיָּא יִתְיְדַע נְבִיָּא
10 דִּשְׁלָחֵיהּ יְיָ בִּקְשׁוֹט : וּנְסֵיב חֲנַנְיָה נְבִיָּא שִׁקְרָא יָת נִירָא מֵעַל צַוַּר יִרְמְיָה נְבִיָּא
11 וְתַבְרֵיהּ : וַאֲמַר חֲנַנְיָה לְעֵינֵי כָל עַמָּא לְמֵימַר כִּדְנָן אֲמַר יְיָ כְּדֵין אֶתְבַּר יָת נִיר נְבוּכַד
נֶצַּר מַלְכָּא דְבָבֶל בְּסוֹף תַּרְתֵּין שְׁנִין מֵעַל צַוַּר כָּל עַמְמַיָּא וַאֲזַל יִרְמְיָה נְבִיָּא לְאוֹרְחֵיהּ :
12 וַהֲוָה פִּתְגַם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִם יִרְמְיָה בָּתַר דִּתְבַר חֲנַנְיָה נְבִיָּא שִׁקְרָא יָת נִירָא מֵעַל
13 צַוַּר יִרְמְיָה נְבִיָּא לְמֵימַר : אֱזֵיל וְתֵימַר לַחֲנַנְיָה לְמֵימַר כִּדְנָן אֲמַר יְיָ נִירִין דְּאָעָא
14 תַּבַּרְתָּא וְתַעְבֵּיד חִלּוּפֵיהוֹן נִירִין דְּבַרְזֶל : אֲרֵי כִדְנָן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל
נִיר דְּבַרְזֶל יְהָבֵית עַל צַוַּר כָּל עַמְמַיָּא הָאִלֵּין לְמִפְלַח יָת נְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא דְבָבֶל
15 וְיִפְלְחוּנֵיהּ וְאַף יָת חֵיוַת בָּרָא יְהָבֵית לֵיהּ : וַאֲמַר יִרְמְיָה נְבִיָּא לַחֲנַנְיָה נְבִיָּא שִׁקְרָא
16 שְׁמַע כְּעַן חֲנַנְיָה לָא שַׁלְחָךְ יְיָ וְאַתְּ אַרְחֵיצְתָּא יָת עַמָּא הָדֵין עַל שִׁקְרָא : בְּכֵן כִּדְנָן
אֲמַר יְיָ הָא אֲנָא מַגְלֵיךְ מֵעַל אַפֵּי אַרְעָא בְּשַׁתָּא הָדָא אַתְּ מָאֵית וּלְשַׁתָּא אוֹחֲרַנְתָּא אַתְּ
17 מִתְקְבַר אֲרֵי סְטָיָא מַלֶּלְתָּא קֳדָם יְיָ : וּמִית חֲנַנְיָה נְבִיָּא שִׁקְרָא בְּשַׁתָּא הַהִיא
וְאִתְקְבַר בְּיַרְחָא שְׁבִיעָאָה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et dixit Jeremias propheta ad Ananiam *pſeudoprophetam*, in oculis ſa- 5
cerdotum, & in oculis omnis populi qui ſtabat in domo ſanctuarii Dñi.
Et ait Jeremias propheta: Amen, ſic placeat coram Dño: confirmet Dñs 6
verba tua quæ prophetâſti, ut reducantur vaſa dom' ſanctuarii Domini, &
omnis tranſmigratio de Babylonia in locum iſtum. Veruntamen audi 7
nunc verbum iſtud quod ego loquor coram te, & coram omni populo:
Prophetæ qui fuerunt ante me, & ante te à ſeculo, & prophetaverunt ſuper 8
provincias multas, & ſuper regna magna, de prælio, & de malo & de peſte.
Propheta qui prophetaverit de pace, cùm venerit verbum prophetæ, tunc 9
cognoſcetur propheta quem miſerit Domin' in veritate. Et tulit Ananias 10
pſeudopropheta jugum de collo Jeremiæ prophetæ, & confregit illud.
Et ait Ananias in oculis omnis populi, in hunc modum: Hæc dicit Domin': 11
Sic frangam jugum Nabuchodonoſor regis Babylonis in fine duorum an-
norum de collo omnium populorum. Et abiit Jeremias propheta in viam
ſuam. Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini cum Jeremia, poſt- 12
quam confregit Ananias *pſeudopropheta* jugum de collo Jeremiæ pro-
phetæ, dicens: Vade, & dic Ananiæ dicendo: Hæc dicit Dominus; Juga 13
lignea confregiſti, & facies pro eis juga ferrea. Quoniam hæc dicit Domi- 14
nus exercituum Deus Iſrael: Jugum ferreum ponam ſuper collum omnium
populorum iſtorum, ut ſerviant Nabuchodonoſor regi Babylonis, &
ſervient ei: & etiam beſtias agri dedi ei. Et ait Jeremias propheta ad 15
Ananiam *pſeudoprophetam*: Audi nunc Anania; Non miſit te Domi-
nus, & tu confidere feciſti populum hunc in mendacio. Propterea hæc di- 16
cit Dominus: Ecce ego tranſmigrare te faciam à ſuperficie terræ: in an-
no iſto tu morieris, *& anno altero ſepelieris*; quia perverſum locu-
tus es coram Domino. Et mortuus eſt Ananias *pſeudopropheta* in 17
anno illo, & ſepultus eſt in menſe ſeptimo.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

5 * ܘܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܠܚܢܢܝܐ ܢܒܝܐ ܕܓܠܐ. ܠܥܝܢܝ ܟܗܢܐ. ܘܠܥܝܢܝ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܩܝܡܝܢ
6 ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܐܡܝܢ. ܘܢܥܒܕ ܡܪܝܐ. ܢܩܝܡ ܡܪܝܐ ܦܬܓܡܝܟ
ܕܐܬܢܒܝܬ. ܠܡܗܦܟܘ ܡܐܢܝ ܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܟܠܗ ܫܒܝܬܐ ܡܢ ܒܒܠ ܠܐܬܪܐ ܗܢܐ.
7 8 * ܒܪܡ. ܫܡܥ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ ܕܐܡܪ ܐܢܐ ܩܕܡܝܟ. ܘܩܕܡ ܟܠܗ ܥܡܐ ܗܢܐ. * ܢܒܝܐ
ܕܗܘܘ ܩܕܡܝ ܘܩܕܡܝܟ ܡܢ ܥܠܡ: ܘܐܬܢܒܝܘ ܥܠ ܐܪܥܬܐ ܣܓܝܐܬܐ ܘܥܠ ܡܠܟܘܬܐ
9 ܪܘܪܒܬܐ: ܠܩܪܒܐ ܘܠܒܝܫܬܐ ܘܠܡܘܬܢܐ. * ܢܒܝܐ ܕܡܬܢܒܐ ܫܠܡܐ. ܟܕ ܢܐܬܐ
10 ܦܬܓܡܗ ܕܢܒܝܐ. ܢܬܝܕܥ ܢܒܝܐ ܗܘ ܕܫܕܪܗ ܡܪܝܐ ܒܩܘܫܬܐ. * ܘܢܣܒ ܚܢܢܝܐ ܢܒܝܐ
11 ܕܓܠܐ ܣܝܩܐ ܡܢ ܨܘܪܗ ܕܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ. ܘܬܒܪ ܐܢܘܢ. * ܘܐܡܪ ܚܢܢܝܐ ܠܥܝܢܝ ܟܠܗ ܥܡܐ.
ܘܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܕܗܟܢܐ ܐܬܒܪ ܢܝܪܗ ܕܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܥܕܡܐ
12 ܠܬܪܬܝܢ ܫܢܝܢ. ܡܢ ܨܘܪ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. ܘܐܙܠ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܠܐܘܪܚܗ. * ܘܗܘܐ
ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ. ܡܢ ܒܬܪ ܕܬܒܪ ܚܢܢܝܐ ܢܒܝܐ ܕܓܠܐ ܣܝܩܐ ܡܢ ܨܘܪܗ
13 ܕܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ. * ܙܠ ܘܐܡܪ ܠܚܢܢܝܐ ܢܒܝܐ ܕܓܠܐ. ܘܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܣܝܩܐ ܕܩܝܣܐ
14 ܬܒܪܬ. ܘܥܒܕ ܚܠܦܝܗܘܢ ܢܝܪܐ ܕܦܪܙܠܐ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ
ܕܐܝܣܪܝܠ. ܢܝܪܐ ܕܦܪܙܠܐ ܢܣܡ ܥܠ ܨܘܪܐ ܕܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܗܠܝܢ. ܠܡܦܠܚ
ܠܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܢܦܠܚܘܢܝܗܝ. ܘܐܦ ܚܝܘܬܐ ܕܕܒܪܐ ܝܗܒܬ ܠܗ
15 ܠܡܦܠܚܘܬܗ. * ܘܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܠܚܢܢܝܐ ܢܒܝܐ ܕܓܠܐ. ܫܡܥ ܚܢܢܝܐ: ܠܐ ܫܕܪܟ
16 ܡܪܝܐ. ܘܐܢܬ ܐܬܟܠܬܢܝ ܠܥܡܐ ܗܢܐ ܥܠ ܫܘܩܪܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
17 ܗܐ ܡܫܕܪ ܐܢܐ ܠܟ ܡܢ ܐܦܝ ܐܪܥܐ. ܫܢܬܐ ܗܕܐ ܡܐܬ ܐܢܬ ܐܝܟ ܕܒܥܘܠܐ ܡܠܠܬ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. * ܘܡܝܬ
ܚܢܢܝܐ ܢܒܝܐ ܕܓܠܐ. ܒܫܢܬܐ ܗܝ. ܒܝܪܚܐ ܫܒܝܥܝܐ.

* Tum dixit Jeremia propheta Hananiæ falſo 5
prophetæ coram ſacerdotibus & coram univerſo populo qui aſtabant in domo Domini;
Dixit, inquam, Jeremia; Amen, faxit ita Do- 6
minus: afferat Dominus ſermones quos prophetâſti, reducendo vaſa domûs Domini &
omnes captivos, è Babylonia in locum iſtum.
Verùm audi ſermonem iſtum quem dico te 7
præſente, & præſente toto hoc populo. Pro- 8
phetæ qui fuerunt ante me & ante te inde à
ſeculo, prædixerunt terris multis & regnis
magnis bellum, calamitatem, & peſtem; *Jam* 9
verò prophetam qui pacem prædicit, cùm evenerit ſermo hujus prophetæ, notum fiet
hujuſmodi prophetam verè miſſum eſſe à Domino. Tum Hanania falſus propheta raptis è 10
collo Jeremiæ prophetæ loris, fregit ea: Di- 11
xitque Hanania coram toto populo, Sic ait
Dominus, Ita frangã jugum Nebuchadnoſaris regis Babyloniæ intra biennium, è collo
omnium gentium. Abiit ergò Jeremia viam
ſuam. Sed fuit ſermo Domini ad Jere- 12
miam prophetam, poſtquam fregiſſet Hanania propheta falſus lora illa è collo Jeremiæ 13
prophetæ: Vade dictum Hananiæ prophetæ
falſo; Sic ait Dominus, Pro loris ligneis
quæ fregiſti, fac jugum ferreum. Nam ſic 14
ait Dominus exercituum Deus Iſraelis, Jugum ferreum imponam collo omnium iſtorum
populorum, ut ſerviant Nebuchadnoſari regi Babyloniæ; & quidem ſervient ei: quin
etiam beſtiam deſerti tradam illi ut ſerviat ei.
Dixit ergò Jeremia propheta ad Hananiam 15
falſam prophetam, Audi Hanania: Non
miſit te Dominus, nihilominus tu populum
iſtum inani ſpe lactâſti. Iccirco ſic ait Do- 16
minus, Ecce diſſoluturus ſum te de ſuperficie terræ: hoc anno moriturus es, quòd
iniquitatem ſis locutus coram Domino. Et 17
mortuus eſt Hanania falſus propheta eodem
anno, menſe ſeptimo.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

12 * ارفعوا علامة على اسوار بابل * اوقفوا الجعاب * انهضوا الحراس * هيوا الاسلحة * لان الرب
13 احتار * ويصنع كلما تكلم به على سكان بابل * الساكنة على المياه الكثيرة وعلى
14 كثرة كنوزها * بلغ انتهاوك بالحقيقة على احشاوك * لان الرب اقسم بذراعه من اجل
15 اني املاك اناسا مثل الجراد وينعمون عليك الهابطون * الصانع الارض بقوته * مهيي
16 المسكونة بحكمته * وبفهمه مد السماء * وصنع عجيج الماء بصوت في السماء * واصعد
17 السحب من آخر الارض * صنع البرق للمطر * واخرج النور من كنوزه * جهل كل انسان
من المعرفة * خزي كل صانع ذهب من منحوتاته * لانه سبك كذبا * ليست فيهم
18 19 روح موجودة * معمولة هي للباطل موضوعة * في زمن افتقادهم يهلكون * ليس نصيب
20 يعقوب مثل هذه * لان الجابل الكل هذا هو ميراثه * الرب اسمه * انت تفرق لي اواني
21 الحرب * وانا افرق فيك امما * وانزع منك ملوكا * وافرق فيك فرسا وراكبه وافرق
22 23 فيك مركبات وركابهن * وافرق فيك رجلا وامراة * وافرق فيك شابا وعذري * وافرق
24 فيك راعيا وقطيعه * وافرق فيك فلاحا وفلاحته * وافرق فيك قايدا وجنده * واكافي
لبابل ولكل السكان الكلدانيين بجميع ظلاماتهم التي صنعوها على صهيون لعيونكم
يقول الرب *

* الاصحاح الثامن عشر *

25 * ها انا اليك ايها الجبل المفسود الذي افسد كل الارض * وامدد يدي عليك واطردك
26 من الصخور * وادفعك مثل جبل محترق * فلا ياخذون منك حجرا للزاوية ولا حجرا للاساس *
27 لانك تكون للفناء الى الابد يقول الرب * ارفعوا علامة على الارض * بوقوا في الامم ببوق *
قدسوا الامم عليها * خبروا عليها بممالك قردا من قبلي * والخزريين * اقيموا عليها
مرامي * اصعدوا عليها خيلا مثل كثرة الجراد *

Attollite ſignum ſuper mœnia Babelis, 12
erigite pharetras, excitate cuſtodes,
arma parate; quia Domini arbitrium
eſt, facturus eſt quicquid locutus eſt
contra cives Babelis. Quæ habitas ſuper 13
aquas multas & ſuper copiam theſaurorum tuorum, advenit finis tuus verè
ſuper viſcera tua. Nam Dominus ju- 14
ravit per brachium ſuum, quòd implebo te hominibus ut locuſtis, & cantabunt de te hi qui deſcendent. Ejus qui 15
terram fecit potentiâ ſuâ, præparavit
orbem ſapientiâ ſuâ, & prudentiâ ſuâ
cœlum extendit, Fremitum aquæ cum 16
fragore ponit in cœlo, extrahit nubes ab
extremo terræ, fulgur ad pluviam componit, protulitque lucem è theſauris
ſuis; Cognitione caret omnis homo. 17
Pudeat omnem aurifabrum ſculptilium
ſuorum, quia mendacium fundit; nul-
lus in iis ſpiritus reperitur, Ad falſita- 18
tem ſunt fabrefacta & collocata: tempore viſitationis eorum peribunt. Haud- 19
quaquam ſors Jacobi hiſce ſimilis eſt:
nam omnium plaſmator, is eſt hæreditas ipſius, Dominus nomen ejus. Tu 20
diſtribuis mihi vaſa bellica, & ego diſtribuam in te gentes, & auferam à te
reges: Diſtribuam in te equum cum 21
equite, & diſtribuam in te currus cum
ſeſſoribus eorum: Diſpergam in te vi- 22
rum ac mulierem, & diſpergam in te
juvenem ac virginem: Diſpergam in te 23
paſtorem & gregem ejus, & diſpergam in
te aratorem & arvum ejus, diſperdámque
in te ducem & exercitum ejus: Deni- 24
que rependam Babeli omnibuſque civibus Chaldæis cunctas ipſorum iniquitates quas exercuerunt in Sionem, ob
oculos veſtros, dicit Dominus.

Textus decimus octavus.

En me tibi mons corrupte, qui totam ter- 25
ram corrupiſti: ut extendens contra te
manum meam, devolvam te de petris,
reddamque te ut montem exuſtum, Ita 26
ut non accipiant ex te lapidem ad angulum, aut lapidem ad fundamenta: nam
eris in perpetuum exterminium, dicit Dominus. Erigite ſignum ſuper terram, 27
clangite inter gentes buccinâ, ſanctificate ſuper eam gentes: narrate de ea
in regnis Cirda meo nomine, & inter
Chozaræos: erigite adverſùs eam aggeres ad contorquendum jacula, adducite contra illam equos multitudine
pares locuſtis:

ירמיה : כט

CAP. XXIX. כט

,Jeruſ. laim de propheta Irmejah miſit *quæ* , *libri* verba hæc Et
1 וְאֵלֶּה דִּבְרֵי הַסֵּפֶר אֲשֶׁר שָׁלַח יִרְמְיָה הַנָּבִיא מִירוּשָׁלָםִ
ad & , ſacerdotes ad & ,tranſmigrationis ſeniorum reſiduum ad
אֶל־יֶתֶר זִקְנֵי הַגּוֹלָה וְאֶל־הַכֹּהֲנִים וְאֶל־
fecerat tranſmigrare quem , populum omnem ad & , prophetas
הַנְּבִיאִים וְאֶל־כָּל־הָעָם אֲשֶׁר הֶגְלָה
, *regem* Jechonjah *egredi Poſt* .Babel in Jeruſalaim de Nebuchadneſar
2 נְבוּכַדְנֶאצַּר מִירוּשָׁלַםִ בָּבֶלָה: אַחֲרֵי צֵאת יְכָנְיָה הַמֶּלֶךְ
,*fabrum* & , Jeruſalaim & ,Jehudah principes , *eunuchos* & , *heram* &
וְהַגְּבִירָה וְהַסָּרִיסִים שָׂרֵי יְהוּדָה וִירוּשָׁלַםִ וְהֶחָרָשׁ
Ghemarjah & ,Saphan filii Elhaſah manû Per .Jeruſalaim de *incluſorem* &
3 וְהַמַּסְגֵּר מִירוּשָׁלָםִ : בְּיַד אֶלְעָשָׂה בֶן־שָׁפָן וּגְמַרְיָה
ad Jehudah rex Sidchijah miſit quos) Chilchijah filii
בֶּן־חִלְקִיָּה אֲשֶׁר שָׁלַח צִדְקִיָּה מֶלֶךְ־יְהוּדָה אֶל־
dixit Sic .dicendo (Babel in , Babel regem Nebuchadneſar
4 נְבוּכַדְנֶאצַּר מֶלֶךְ בָּבֶל בָּבֶלָה לֵאמֹר : כֹּה אָמַר
quam ,tranſmigrationi omni , Iſrael Deus exercituum Dominus
יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל לְכָל־הַגּוֹלָה אֲשֶׁר־
: habitate & ,domos Ædificate .Babel in Jeruſalaim de feci tranſmigrare
5 הִגְלֵיתִי מִירוּשָׁלַםִ בָּבֶלָה : בְּנוּ בָתִּים וְשֵׁבוּ
, uxores Accipite .eorum fructus comedite & ,hortos plantate &
6 וְנִטְעוּ גַנּוֹת וְאִכְלוּ אֶת־פִּרְיָן : קְחוּ נָשִׁים
& , uxores veſtris filiis accipite & , filias & , filios generate &
וְהוֹלִידוּ בָּנִים וּבָנוֹת וּקְחוּ לִבְנֵיכֶם נָשִׁים וְאֶת־
vos multiplicate & :filias &,filios pariant & , viris date veſtras filias
בְּנוֹתֵיכֶם תְּנוּ לַאֲנָשִׁים וְתֵלַדְנָה בָּנִים וּבָנוֹת וּרְבוּ־־־
quam ,civitatis pacem quærite Et .vos diminuatis non & , ibi
7 שָׁם וְאַל־תִּמְעָטוּ : וְדִרְשׁוּ אֶת־שְׁלוֹם הָעִיר אֲשֶׁר
: Dominum ad ea pro orate & ; *illuc* vos feci tranſmigrare
הִגְלֵיתִי אֶתְכֶם שָׁמָּה וְהִתְפַּלְלוּ בַעֲדָהּ אֶל־יְהוָה
Dominus dixit ſic Nam .pax vobis erit illius pace in quia
8 כִּי בִשְׁלוֹמָהּ יִהְיֶה לָכֶם שָׁלוֹם : כִּי כֹה אָמַר יְהוָה
qui ,veſtri prophetæ vobis *imponant* Ne : Iſrael Deus exercituum
צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל אַל־יַשִּׁיאוּ לָכֶם נְבִיאֵיכֶם אֲשֶׁר־
, veſtra ſomnia *ad* audiatis ne & :veſtri divini & ,*veſtro interiori in*
בְּקִרְבְּכֶם וְקֹסְמֵיכֶם וְאַל־תִּשְׁמְעוּ אֶל־חֲלֹמֹתֵיכֶם
vobis *vaticinantes* ipſi *falſitate in* Quia .*ſomniantes* vos quæ
9 אֲשֶׁר אַתֶּם מַחְלְמִים : כִּי בְשֶׁקֶר הֵם נִבְּאִים לָכֶם
dixit ſic Nam .Dominus dixit , eos miſi non : meo nomine in
10 בִּשְׁמִי לֹא שְׁלַחְתִּים נְאֻם־יְהוָה : כִּי־כֹה אָמַר
viſitabo , anni ſeptuaginta Babel in *implere os ad Quia* : Dominus
יְהוָה כִּי לְפִי מְלֹאת לְבָבֶל שִׁבְעִים שָׁנָה אֶפְקֹד
reducendum ad , bonum meum verbum vos ſuper ſuſcitabo & , vos
אֶתְכֶם וַהֲקִמֹתִי עֲלֵיכֶם אֶת־דְּבָרִי הַטּוֹב לְהָשִׁיב
,cogitationes novi ego Nam .iſtum locum ad vos
11 אֶתְכֶם אֶל־הַמָּקוֹם הַזֶּה : כִּי אָנֹכִי יָדַעְתִּי אֶת־הַמַּחֲשָׁבֹת
cogitationes : Dominus dixit , vos ſuper *cogitans* ego quas
אֲשֶׁר אָנֹכִי חֹשֵׁב עֲלֵיכֶם נְאֻם־יְהוָה מַחְשְׁבוֹת
.ſpem & ,noviſſimum vobis *dandum ad* ; *malum in* non & , pacis
שָׁלוֹם וְלֹא לְרָעָה לָתֵת לָכֶם אַחֲרִית וְתִקְוָה :
exaudiam & : me *ad* orabitis & , ibitis & , me invocabitis Et
12 וּקְרָאתֶם אֹתִי וַהֲלַכְתֶּם וְהִתְפַּלַּלְתֶּם אֵלָי וְשָׁמַעְתִּי
toto in me quæſieritis cùm ,invenietis & ,me quæretis Et .vos *ad*
13 אֲלֵיכֶם : וּבִקַּשְׁתֶּם אֹתִי וּמְצָאתֶם כִּי תִדְרְשֻׁנִי בְּכָל־
reducam & , Dominus dixit , vobis inveniar Et .veſtro corde
14 לְבַבְכֶם : וְנִמְצֵאתִי לָכֶם נְאֻם־יְהוָה וְשַׁבְתִּי אֶת־
cunctis de & ,gentibus univerſis de vos congregabo & ,veſtrã captivitatẽ
שְׁבִיתְכֶם וְקִבַּצְתִּי אֶתְכֶם מִכָּל־הַגּוֹיִם וּמִכָּל־
faciã reverti & : Dñs dixit ,*illuc* vos feci expelli *quò* , locis
הַמְּקוֹמוֹת אֲשֶׁר הִדַּחְתִּי אֶתְכֶם שָׁם נְאֻם־יְהוָה וַהֲשִׁבֹתִי
.*inde* vos feci tranſmigrare *quo* , locum ad vos
אֶתְכֶם אֶל־הַמָּקוֹם אֲשֶׁר־הִגְלֵיתִי אֶתְכֶם מִשָּׁם :

Verſio VULG. LAT.

CAP. XXIX.

1 ET hæc ſunt verba libri, quem
miſit Jeremias propheta de Jeruſalem ad reliquias ſeniorum
tranſmigrationis, & ad ſacerdotes, & ad prophetas, & ad omnẽ
populum, quem traduxerat Nabuchodonoſor de Jeruſalem in
2 Babylonem: Poſtquàm egreſſus
eſt Jechonias rex, & domina, &
eunuchi, & principes Juda &
Jeruſalem, & faber & incluſor
3 de Jeruſalem: In manu Elaſa
filii Saphan, & Gamariæ filii
Helciæ, quos miſit Sedecias rex
Juda ad Nabuchodonoſor regem
Babylonis in Babylonem, di-
4 cens; Hæc dicit Dominus exercituum Deus Iſrael omni tranſ-
migrationi, quam tranſtuli de
5 Jeruſalem in Babylonem; Ædificate domos, & habitate: &
plantate hortos, & comedite
6 fructum eorum. Accipite uxores,
& generate filios & filias: &
date filiis veſtris uxores, & filias
veſtras date viris, & pariant filios & filias: & multiplicamini
ibi, & nolite eſſe pauci numero.
7 Et quærite pacem civitatis, ad
quam tranſmigrare vos feci: &
orate pro ea ad Dominum:
quia in pace illius erit pax vo-
8 bis. Hæc enim dicit Dominus
exercituum Deus Iſrael; Non
vos ſeducant prophetæ veſtri,
qui ſunt in medio veſtrûm, &
divini veſtri: & ne attendatis
ad ſomnia veſtra, quæ vos ſomni-
9 atis: Quia falſò ipſi prophetant
vobis in nomine meo: & non
10 miſi eos, dicit Dñs. Quia hæc
dicit Dñs; Cùm cœperint impleri in Babylone ſeptuaginta
anni, viſitabo vos: & ſuſcitabo
ſuper vos verbum meum bonũ,
ut reducam vos ad locum iſtũ.
11 Ego enim ſcio cogitationes, quas
ego cogito ſuper vos, ait Dominus, cogitationes pacis, &
non afflictionis, ut dem vobis
12 finem et patientiam. Et invocabitis me, et ibitis: et orabitis
13 me, et ego exaudiam vos. Quæretis me, et invenietis: cùm quæ-
ſieritis me in toto corde veſtro.
14 Et inveniar à vobis, ait Domin⁹:
et reducam captivitatem veſtrã,
et congregabo vos de univerſis
gentibus, et de cunctis locis, ad
quæ expuli vos, dicit Dominus:
et reverti vos faciam de loco,
ad quem tranſmigrare vos feci.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

28 Ἀναβιβάσατε ἐπ' αὐτὴν ἔθνη, τὸν βασιλέα
τῶν Μήδων καὶ πάσης τῆς γῆς, τοὺς (γ)
ἡγουμένους αὐτοῦ, καὶ πάντας τοὺς στρατηγοὺς
29 (δ) αὐτοῦ. Ἐσείσθη ἡ γῆ, καὶ ἐπόνεσε, διότι
ἐξανέστη ἐπὶ Βαβυλῶνα λογισμὸς κυρίου,
τοῦ θεῖναι τὴν γῆν Βαβυλῶνος εἰς ἀφανισμὸν,
30 καὶ μὴ κατοικεῖσθαι αὐτήν. Ἐξέλιπε
μαχητὴς Βαβυλῶνος τοῦ πολεμεῖν,
(ε) καθήσονται ἐκεῖ ἐν περιοχῇ, ἐθραύσθη ἡ
δυναστεία αὐτῶν, ἐγενήθησαν ὡσεὶ γυναῖκες.
ἐνεπυρίσθη τὰ σκηνώματα αὐτῆς, συνε-
31 τρίβησαν οἱ μοχλοὶ αὐτῆς. Διώκων εἰς
(ζ) ἀπάντησιν διώκοντος διώξεται, καὶ ἀναγγέλλων
εἰς ἀπάντησιν ἀναγγέλλοντος,
τοῦ ἀναγγεῖλαι τῷ βασιλεῖ Βαβυλῶνος,
32 ὅτι ἑάλωκεν ἡ πόλις αὐτοῦ. Ἀπ' ἐσχάτου
τῶν διαβάσεων αὐτοῦ ἐλήφθησαν, καὶ τὰ (η)
συστήματα αὐτῶν ἐνέπρησαν ἐν πυρὶ, καὶ ἄν-
33 δρες αὐτοῦ οἱ πολεμισταὶ ἐξέρχονται. Διότι
τάδε λέγει κύριος, Οἶκοι βασιλέως Βαβυλῶνος,
ὡς ἅλων ὥριμος (θ) ἀλοηθήσονται·
ἔτι μικρὸν, καὶ ἥξει ὁ ἀμητὸς αὐ-
34 τῆς. Κατέφαγέ με, ἐμερίσατό με, κατέλαβέ
με σκότος λεπτὸν, Ναβουχοδονόσορ
βασιλεὺς Βαβυλῶνος κατέπιέ με, ὡς
δράκων ἔπλησε τὴν κοιλίαν αὐτοῦ ἀπὸ τῆς
35 τρυφῆς μου· ἐξῶσάν με. Οἱ μόχθοι μου
καὶ αἱ ταλαιπωρίαι μου εἰς Βαβυλῶνα, ἐρεῖ
κατοικοῦσα Σιὼν, καὶ τὸ αἷμά μου ἐπὶ τοὺς
κατοικοῦντας Χαλδαίους, (ι) ἐρεῖ Ἱερουσαλήμ.
36 Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ
κρινῶ τὴν ἀντίδικόν σου, καὶ (κ) ἐκδικήσω τὴν
ἐκδίκησίν σου, καὶ ἐρημώσω τὴν θάλασσαν
αὐτῆς, καὶ ξηρανῶ (λ) τὴν πηγὴν αὐτῆς.
37 Καὶ ἔσται Βαβυλὼν εἰς ἀφανισμὸν, καὶ οὐ
38 κατοικηθήσεται. (μ) Ὅτι ἅμα ὡς λέοντες
39 ἐξηγέρθησαν, καὶ ὡς σκύμνοι λεόντων. Ἐν
τῇ θερμασίᾳ αὐτῶν δώσω πότημα αὐτοῖς,
καὶ μεθύσω αὐτοὺς, ὅπως καρωθῶσι, καὶ (ν)
ὑπνώσωσιν ὕπνον αἰώνιον, καὶ οὐ μὴ ἐξεγερ-
40 θῶσι, λέγει κύριος. (*) Καὶ καταβιβάσω
αὐτοὺς ὡς ἄρνας εἰς σφαγὴν, καὶ ὡς κριοὺς
41 μετ' ἐρίφων. Πῶς ἑάλω καὶ ἐθηρεύθη τὸ
καύχημα πάσης τῆς γῆς; πῶς ἐγένετο
Βαβυλὼν εἰς ἀφανισμὸν ἐν τοῖς ἔθνεσιν;
42 Ἀνέβη ἐπὶ Βαβυλῶνα ἡ θάλασσα ἐν ἤ-
χῳ κυμάτων αὐτῆς, καὶ κατεκαλύφθη.
43 Ἐγενήθησαν αἱ πόλεις αὐτῆς (ξ) ὡς γῆ ἄν-
υδρος καὶ ἄβατος, οὐ κατοικήσει ἐν
αὐτῇ οὐδὲ εἷς, οὐδὲ μὴ καταλύσει ἐν αὐ-
44 τῇ υἱὸς ἀνθρώπου. Καὶ ἐκδικήσω ἐπὶ Βαβυλῶνα,
καὶ ἐξοίσω ἃ κατέπιεν ἐκ τοῦ στόματος
αὐτῆς, καὶ οὐ μὴ συναχθῶσι (ο) πρὸς
αὐτὴν ἔτι τὰ ἔθνη,

Facite aſcendere ſuper eam gen- 28
tes, regem Medorum, & univerſæ
terræ, præfectos ejus, &
omnes duces ejus. Commota eſt 29
terra, & laboravit: quia inſurrexit
ſuper Babylonem cogitatio
Domini, ad ponendam terram
Babylonis in deſolationem, & ut
ea non habitetur. Defecit pugna- 30
tor Babylonis à bellando: ſedebunt
illic in præſidio: quaſſata
eſt potentia eorum: facti ſunt,
quaſi mulieres. Combuſta ſunt
tabernacula ejus: contriti ſunt
vectes ejus. Perſequens in occur- 31
ſum perſequentis perſequetur, &
nuntians in occurſum nuntiantis,
ad nuntiandum regi Babylonis,
quia capta eſt civitas ejus. Ab 32
extremo tranſituum ejus capti
ſunt, & (k) collectiones eorum
incenſa ſunt in igni, & viri ejus
bellatores egrediuntur. Quia 33
hæc dicit Dominus; Domus regis
Babylonis, quaſi area matura,
triturabuntur: adhuc modicum,
& veniet meſſis ejus. Comedit 34
me, diviſit me, apprehenderunt
me tenebræ tenues: Nabuchodonoſor
rex Babylonis abſorbuit me,
quaſi draco, implevit ventrem
ſuum de teneritudine mea: ex-
pulerunt me Labores mei et 35
vexationes meæ in Babylonem,
dicet habitatrix Sion: & ſanguis
meus ſuper habitatores Chaldæos,
dicet Hieruſalem. Ideò 36
hæc dicit Dominus; Ecce ego
judicabo adverſariam tuam, &
ulciſcar ultionem tuam, & deſolabo
mare ejus, & areſaciam
fontem ejus: Et erit Babylon 37
in (l) ſolitudinem, & non habitabitur.
Simul enim ut leones ex- 38
citati ſunt, et ſicut catuli leonum.
In calore eorum dabo potum eis, 39
& inebriabo eos, ut ſopiantur,
& dormiant ſomnum ſempiternum,
et non conſurgant, dicit
Dominus. Et (m) deduc eos, 40
quaſi agnos ad mactationem, &
quaſi arietes cum hœdis. Quo- 41
modò capta (n) eſt, et per venationem
occupata gloriatio univerſæ
terræ? Quomodò facta
eſt Babylon in deſolationem in
gentibus? Aſcendit ſuper Ba- 42
bylonẽ mare in ſonitu fluctuum
ejus, (o) et cooperta eſt. Factæ 43
ſunt civitates ejus, quaſi terra
ſine aqua, et invia: nemo habitabit
in ea: neque divertet in
ea filius hominis. Et ulciſcar (p) 44
ſuper Babylonem, et extraham,
quæ abſorbuit, ex ore ejus: et non
congregabuntur ad eam gentes
(q) ultrà:

MS.A. (γ) ἡγεμόνας (δ) αὐτοῦ, καὶ πάσης τῆς γῆς ἐξουσίας αὐτοῦ. Ἐσείσθη
(ε) καὶ καθήσονται (ζ) ἀπαντὴν (η) συστήματα αὐτοῦ ἐνεπρήσθησαν (θ) ἀ-
λοηθήσεται· (ι) * ἐπὶ Ἱερουσαλήμ. (κ) ἐρημώσω τὴν θάλασσαν (λ) τὴν γῆν
(μ) Ὡς λέοντες ἐξηγέρθησαν ἅμα, (ν) ὑπνώσουσιν (*) Καταβίβασον
(ξ) γῆ ἄνυδρος (ο) ἔτι πρὸς αὐτὴν τὰ ἔθνη,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

כט

1 ואלין פתגמי ספרא דשלח ירמיה נביא מירושלם לות שאר סבי גלותא ולות כהניא
2 ולות ספריא ולות כל עמא דאגלי נבוכד נצר מירושלם לבבל : בתר דגלא יכניה
3 מלכא ומלכתא ורברביא רברבי יהודה וירושלם ואומניא ותרעיא מירושלם : ביד
אלעשה בר שפן וגמריה בר חלקיה דשלח צדקיה מלך שבטא דבית יהודה לות נבוכד
4 נצר מלכא דבבל לבבל למימר : כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל לכל גלותא
5 דאגליתי מירושלם לבבל : בנו בתין ותיבו וצובו גנין ואכולו ית אביהן : סבו נשין
6 ואולידו בנין ובנן וסבו לבניכון נשין וית בנתיכון הבו לגבריא וילידן בנין ובנן וסגו
7 תמן ולא תזערון : ותבעו ית שלם קרתא דאגליתי יתכון לתמן וצלו עלה קדם יי ארי
8 בשלמה יהי לכון שלם : ארי כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל לא יטעון לכון
נביאיכון דשקרא דביניכון וקסמיכון ולא תקבלון מן חלמי חלמיכון דאתון מחלמין :
9 ארי בשקרא אנון מתנבן לכון בשמי לא שלחתנון אמר יי : ארי כדנן אמר יי ארי לפום
10 משלם לבבל שבעין שנין יעול דכרנכון קדמי ואקים עליכון ית פתגמי תקנא לאתבא
11 יתכון לאתרא הדין : ארי קדמי גלין ית מחשבתא די אנא מחשב עליכון אמר יי
12 מחשבת שלמא ולא לבישא למתן לכון סוף וסבור : ותצלון קדמי ואקבל צלותכון
13 ותבעון מן קדמי ואעביד בעותכון : ותתבעון דחלתי ותשכחון ארי תבעון מן קדמי
14 בכל לבכון : ואשתאל לכון במימרי אמר יי ואתיב ית גלותכון ואכנוש יתכון מכל עממיא
ומכל אתריא דאגליתי יתכון לתמן אמר יי ואתיב יתכון לאתרא דאגליתי יתכון מתמן :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XXIX.

ET hæc ſunt verba libri quem miſit Jeremias propheta de Jeruſalem ad 1
reliquos ſeniores tranſmigrationis & ad ſacerdotes, & ad ſcribas, & ad
omnem populum quem tranſmigrare fecit Nabuchodonoſor de Jeruſalem
in Babyloniã. Poſtquam migravit Jechonias rex, & regina, & principes, 2
principes Juda, & Jeruſalem, & artifices, & janitores de Jeruſalem: Per ma- 3
num Elghaſa filii Saphan, & Gamariæ filii Helchiæ, quos miſit Sedechias
rex trib⁹ dom⁹ Juda ad Nabuchodonoſor regem Babylonis in Babyloniam,
dicens: Hæc dicit Dñs exercituum, Deus Iſrael, ad omnem tranſmigrati- 4
onem quam tranſmigrare feci de Jeruſalem in Babylonem. Ædificate do- 5
mos & habitate; & plantate hortos, & comedite fruct⁹ eorum. Accipite 6
uxores, & generate filios & filias: & accipite filiis veſtris uxores, & filias
veſtras tradite viris, & pariant filios & filias: & multiplicamini ibi, & non
minuamini. Et quærite pacem civitatis ad quam tranſmigrare vos feci, 7
& orate pro ea corã Dño; quia in pace illi⁹ erit vobis pax. Quia hæc dicit 8
Dñs exercituum De⁹ Iſrael: Ne ſeducant vos pſeudoprophetæ veſtri qui
ſũt inter vos, et divini veſtri: nec attendatis ad ſomnia veſtra quæ vos ſomni-
atis. Quia falſò ipſi prophetant vobis in nomine meo: non miſi eos, dicit 9
Dñs. Ita enim inquit Dñs: Cùm impleti fuerint in Babylone ſeptuaginta 10
anni, ſubibit recordatio veſtri corã me; & ſuſcitabo ſup vos verbũ meum
rectũ, ut reducam vos in locũ iſtum. Quia coram me manifeſtæ ſunt cogita- 11
tiones quas ego cogito ſup vos, dicit Dñs, cogitationes pacis et non in ma-
lum, ut dem vobis finẽ et ſpem. Et orabitis coram me; et ſuſcipiam orati- 12
onem veſtrã; et quæretis à facie mea, et faciã deprecationem veſtram. Et re- 13
quiretis timorem mei, et invenietis cùm poſtulabitis à facie mea toto cor-
de veſtro. Et quæſit⁹ ero à vobis in verbo meo, dicit Domin⁹: et reducam 14
tranſmigrationem veſtram, et congregabo vos ex omnib⁹ populis et ex omnib⁹
locis ad quæ tranſmigrare vos feci, dicit Domin⁹. Et reducam vos
in locum de quo tranſmigrare vos feci.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

*ܩܦܠܐܘܢ *ܟܛ*

1 * ܘܗܠܝܢ ܦܬܓܡܝ̈ ܐܓܪܬܐ ܕܫܕܪ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ ܠܒܒܠ : ܠܘܬ ܫܪܟܐ
ܕܣܒ̈ܐ ܕܫܒܝܬܐ ․ ܘܠܘܬ ܟܗܢ̈ܐ ܘܠܘܬ ܢܒܝ̈ܐ ܕܓܠܐ ․ ܘܠܘܬ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܐܫܒܝ
2 ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ ܠܒܒܠ ․ * ܡܢ ܒܬܪ ܕܢܦܩ ܝܘܟܢܝܐ ܡܠܟܐ
ܘܡܠܟܬܐ ․ ܘܡܗܝܡܢܐ ܘܪ̈ܘܪܒܢܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܕܐܘܪܫܠܡ ․ ܘܐܘܡܢ̈ܐ ܘܢܩܫ̈ܐ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ ․
3 * ܒܝܕ ܐܠܥܣܐ ܒܪ ܫܦܢ ․ ܘܓܡܪܝܐ ܒܪ ܚܠܩܝܐ ․ ܕܫܕܪ ܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ․ ܠܘܬ
4 ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܠܒܒܠ ․ * ܘܐܡܪ ܗܟܢܐ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ :
5 ܠܟܠܗ ܫܒܝܬܐ ܕܐܫܒܝܬ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ ܠܒܒܠ ․ * ܒܢܘ ܒ̈ܬܐ ܘܥܡܘ ․ ܘܢܨܒܘ
6 ܦܪ̈ܕܝܣܐ ܘܐܟܘܠܘ ܦܐܪ̈ܝܗܘܢ ․ * ܣܒܘ ܢܫ̈ܐ ܘܐܘܠܕܘ ܒܢ̈ܝܐ ܘܒܢ̈ܬܐ ․ ܘܣܒܘ ܠܒܢܝ̈ܟܘܢ
ܢܫ̈ܐ ․ ܘܒܢܬ̈ܟܘܢ ܗܒܘ ܠܓܒܪ̈ܐ ․ ܘܢܘܠܕܢ ܒܢ̈ܝܐ ܘܒܢ̈ܬܐ ․ ܘܣܓܘ ܬܡܢ ․ ܘܠܐ
7 ܬܙܥܪܘܢ ․ * ܘܫܐܠܘ ܫܠܡܗ ܕܡܕܝܢܬܐ ܕܐܫܒܝܬܟܘܢ ܬܡܢ ․ ܘܨܠܘ ܥܠܝܗ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ․
8 ܕܒܫܠܡܗ ܢܗܘܐ ܠܟܘܢ ܫܠܡܐ ․ * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ
ܕܐܝܣܪܐܝܠ ․ ܠܐ ܢܛܥܘܢܟܘܢ ܢܒܝ̈ܐ ܕܒܝܢܬܟܘܢ ․ ܘܩܨܘܡܝ̈ܟܘܢ ․ ܘܠܐ ܬܫܡܥܘܢ ܠܚܠܡܝ̈ܟܘܢ
9 ܕܐܢܬܘܢ ܚܠܡܝܢ ․ * ܡܛܠ ܕܒܫܘܩܪܐ ܡܬܢܒܝܢ ܠܟܘܢ ܒܫܡܝ ․ ܘܐܢܐ ܠܐ ܫܕܪܬ ܐܢܘܢ ․
10 ܐܡܪ ܡܪܝܐ ․ * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ․ ܕܟܕ ܢܫܠܡܢ ܠܒܒܠ ܫܒܥܝܢ ܫܢܝܢ ․
11 ܐܦܪܘܩܟܘܢ ․ ܘܐܩܝܡ ܥܠܝܟܘܢ ܦܬܓܡܝ̈ ܛܒ̈ܐ ․ ܠܡܗܦܟܘ ܠܟܘܢ ܠܐܬܪܐ ܗܢܐ ․ * ܡܛܠ
ܕܐܢܐ ܝܕܥ ܐܢܐ ܡܚܫܒܬܐ ܕܡܚܫܒ ܐܢܐ ܥܠܝܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ․ ܡܚܫܒܬܐ ܕܫܠܡܐ ܘܠܐ
12 13 ܕܒܝܫܬܐ ․ ܠܡܬܠ ܠܟܘܢ ܚܪܬܐ ܘܣܒܪܐ ․ * ܘܬܩܪܘܢܢܝ ․ ܘܬܨܠܘܢ ܩܕܡܝ ․ * ܘܟܕ ܬܒܥܘܢܢܝ
14 ܡܢ ܟܠܗ ܠܒܟܘܢ ․ ܬܫܟܚܘܢܢܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ․ * ܘܐܗܦܘܟ ܫܒܝܬܟܘܢ ․ ܘܐܟܢܫܟܘܢ
ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡ̈ܡܐ ․ ܘܡܢ ܟܠܗܝܢ ܐܬܪ̈ܘܬܐ ܕܒܕܪܬܟܘܢ ܠܬܡܢ ․ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ․ ܘܐܗܦܟܟܘܢ
ܠܐܬܪܐ ܕܐܫܒܝܬܟܘܢ ܡܢ ܬܡܢ ․

CAP. XXIX.

HOc autem eſt argumentum epiſtolæ quam 1
Jeroſolymis Babylonem miſit Jeremia propheta ad reliquos ſeniores captivos, ad ſacerdotes, ad falſos prophetas, & ad univerſum
populum quem Nebuchadnoſar rex Babylonis deportaverat Jeroſolymis Babylonem,
Poſteaquam Jochania rex cum regina, eunu- 2
chis, principibus Judæ & Jeroſolymorum,
artificibꝰ, atque militibꝰ, eſſet è Jeruſalem
egreſſus: Per Elaſam filium Saphanis, & 3
Gemariam filium Helciæ, quos Babylonem
miſit Sedecia rex Judæ ad Nebuchadnoſarem regem Babylonium. Ita dicit Dominꝰ 4
exercituum Deus Iſraelis ad omnes captivos
qui Jeroſolymis Babylonem abducti ſunt;
Ædificate domos, & inhabitate: plantate 5
hortos, & comedite fructꝰ eorum: Uxores 6
ducite, & filios filiaſque generate: ducite
uxores filiis veſtris, & filias veſtras date maritis, ut gignant filios & filias: & illic augeſcite, ac ne minuamini: Fauſta precami- 7
ni civitati quò vos captivos abegi, & pro
ipſa Dominum orate; quoniam ab ejꝰ proſperitate pendet proſperitas veſtra. Nam ſic 8
ait Dominꝰ potentiſſimꝰ Deꝰ Iſraelis, Ne ſeducant vos prophetæ qui ſunt inter vos, &
divini veſtri; neque attendatis ſomniis veſtris quæ vos ſomniatis: Quia falſum ii 9
prophetant vobis nomine meo, neque illos
ego miſi, dicit Dominꝰ. Sic enim ait Domi- 10
nus, Cùm expleti fuerint Babeli ſeptuaginta anni, ſalvabo vos, & ratos faciam de vobis ſermones jucundos, reducendo vos in
locum iſtum. Ego enim ſcio cogitationem 11
quam de vobis cogito, dicit Dominꝰ, cogitationem ſalubrem, non pernicioſam; dare *ſcilicet* vobis tandem ſpem, Ut invocetis me, 12
méque precemini: Et cùm quæſiveritis me 13
toto corde veſtro, invenietis me, dicit Dominꝰ: Et reducam captivos veſtros, colli- 14
gamque vos ex omnibꝰ gentibꝰ et ex omnibus terris quò vos diſperſi, ait Dominus, et
reducam vos ad locum unde vos captivos
abegi.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

28 * أصعدوا عليها أمما * ملك الماديين وقواد كل أرضه * وجميع قواد جيوش كل أرضه
29 وسلطانه * تزلزلت الأرض ووجعت * من أجل أن فكر الرب نهض على بابل * ليضع أرض
30 بابل للفناء ولا تسكن * فني محارب بابل أن يحارب * ويجلسون هناك في المرم * كسرت
31 قوتهم * صاروا مثل النساء * أحرقت مساكنها * سحقت متاريسها * الطارد يطرد للقاء
32 الطارد والمخبر لالتقاء المخبر * ليخبر ملك بابل أن مدينته هلكت * من آخر طرقاته
33 أخذوا * وأحرقت تاجاته بالنار * ورجاله المحاربون يخرجون * من أجل أنه هكذا يقول الرب *
34 بيوت ملك بابل مثل البيدر البالغ الذي يداس بعد قليل ويأتي قطافه * أكلني
ورعني أدركني ظلام خفيف بختنصر ملك بابل * ابتلعني مثل تنين * ملأ بطنه من
35 نعيمي * أقصتني أتعابي وشقوتي إلى بابل تقول الساكنة صهيون * ودمي على السكان
36 الكلدانيين قالت أيروسليم * لأجل هذا هكذا يقول الرب * ها أنا أدين غريمتك وأخرب
37 38 بحرها * وتصير بابل للفناء ولا تسكن * مثل أسود نهضوا معا * ومثل أشبال اللبوة *
39 * في حرارتهم أعطيهم مشربا وأسكرهم كي يسكرون وينامون نوما أبديا ولا يستيقظون
40 41 يقول الرب * أنزلهم مثل خراف للذبح * ومثل كباش مع جدا * كيف هلك وأصيد
42 فخر كل الأرض * كيف صارت بابل للفناء في الأمم * صعد على بابل البحر بعجيج
43 أمواجه وغطيت * صارت مدنها أرضا عديمة الماء وغير مسلوكة * ولا يسكن فيها ولا
44 واحد * ولا نزل بها ابن إنسان * وأقضي على بابل * وأخرج ما ابتلعته من فمها * ولا يجمع
إليها الأمم بعد *

Adducite contra eam gentes, regem 28
Medorum, & duces totius terræ ipſius,
omneſque duces turmarum totius regionis ac dominii ipſius. Tremuit do- 29
luitque terra, quia cogitatio Domini
concitata eſt contra Babelem, ut redigat
terram Babelis in deſtructionem, nec habitetur. Deſinet miles Babylonis pu- 30
gnare, & deſidebunt ibi in obſidione:
fracta eſt magnanimitas eorum, facti
ſunt ſicut fœminæ, exuſtæ ſunt habitationes ejus, vectes ejus contriti. Cur- 31
ſor curret obviàm curſori, & nuntius
obviàm nuntio, ut indicet regi Babelis
urbem ejus periiſſe: Ab extremis aditibus 32
ejus eos eſſe occupatos, tiaras ejus igne
combuſtas, & viros ejus bellatores
exire. Sic enim dicit Dominus, Do- 33
mus regis Babelis ſunt velut area matura, quæ paulò poſt trituranda eſt,
& cujus inſtat vindemia. Exedit me, 34
laceravit me, comprehendit me ceu
tenebræ veloces Bochtonaſſar rex Babelis, deglutivit me ut draco, ventrem
ſuum implevit delitiis meis: Depulerunt 35
me ærumnæ & miſeriæ meæ in Babelem, dicit habitatrix Sionis: & ſanguis
meus ſuper habitatores Chaldæos, inquit
Jeruſalem. Iccirco ſic dicit Dominus, 36
Ecce ego judicabo adverſariam tuam,
ejuſque mare vaſtabo: Et abibit Babel 37
in excidium, nec habitabitur. Ut leones 38
pariter ſurrexerunt, & ut leænæ. In 39
æſtu eorum præbebo illis potum, &
inebriabo eos; ut inebriati dormiant
ſomnum æternum, neque expergiſcantur,
ait Dominus. Deducam eos ut agnos ad 40
jugulationem, & velut arietes cum hædis. Quomodo periit & venatione captus 41
eſt faſtus univerſæ terræ? quomodo
redacta eſt Babel in deſtructionem inter gentes? Superavit Babelem mare 42
cum fremitu fluctuum ſuorum, & obruta eſt? Factæ ſunt urbes ejus terra 43
carens aquis & invia, quam nemo inhabitet, nulluſque mortalium incolat?
Et ſententiam feram contra Babelem, 44
extrahamque quod deglutivit, ex ejus
ore; & non confluent ampliùs ad eam
gentes:

ירמיה : כט

ſic Nam .Babel in prophetas Dominus nobis Suſcitavit : dixiſtis Quia
15 16 כִּי אֲמַרְתֶּם הֵקִים לָנוּ יְהוָה נְבִאִים בָּבֶלָה׃ כִּי־כֹה
omnem ad & ,David ſolium *ad ſedentem* , regem ad Dominus dixit
אָמַר יְהוָה אֶל־הַמֶּלֶךְ הַיּוֹשֵׁב אֶל־כִּסֵּא דָוִד וְאֶל־כָּל־
vobiſcum ſunt egreſſi non qui ,veſtros fratres , hac urbe in *habitantem* populũ
הָעָם הַיּוֹשֵׁב בָּעִיר הַזֹּאת אֲחֵיכֶם אֲשֶׁר לֹא־יָצְאוּ אִתְּכֶם
mittens ego Ecce : exercituum Dominus inquit Sic .tranſmigrationem in
17 בַּגּוֹלָה׃ כֹּה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת הִנְנִי מְשַׁלֵּחַ
ficus ſicut eos dabo & : peſtem & , famem ,gladium eos in
בָּם אֶת־הַחֶרֶב אֶת־הָרָעָב וְאֶת־הַדָּבֶר וְנָתַתִּי אוֹתָם כַּתְּאֵנִים
,gladio in eos *poſt* perſequar Et .malitia præ *comedentur* non quæ , turpes
18 הַשֹּׁעָרִים אֲשֶׁר לֹא־תֵאָכַלְנָה מֵרֹעַ׃ וְרָדַפְתִּי אַחֲרֵיהֶם בַּחֶרֶב
, terræ regnis univerſis commotionẽ in eos dabo & : peſte in & ,fame in
בָּרָעָב וּבַדָּבֶר וּנְתַתִּים לְזַוָעָה לְכֹל מַמְלְכוֹת הָאָרֶץ
,gentibus cunctis in opprobriũ in & ,ſibilum in & ,ſtuporem in & ,*execrationẽ* in
לְאָלָה וּלְשַׁמָּה וְלִשְׁרֵקָה וּלְחֶרְפָּה בְּכָל־הַגּוֹיִם
,mea verba *ad* audierunt non quòd *eo* Pro .*illuc eos expuli quò*
19 אֲשֶׁר־הִדַּחְתִּים שָׁם׃ תַּחַת אֲשֶׁר לֹא־שָׁמְעוּ אֶל־דְּבָרַי
, prophetas meos ſervos eos ad miſi quæ , Dominus dixit
נְאֻם־יְהוָה אֲשֶׁר שָׁלַחְתִּי אֲלֵיהֶם אֶת־עֲבָדַי הַנְּבִאִים
vos Et .Dominus dixit , audiſtis non & ; mittendo & ,ſurgendo manè
20 הַשְׁכֵּם וְשָׁלֹחַ וְלֹא שְׁמַעְתֶּם נְאֻם־יְהוָה׃ וְאַתֶּם
Jeruſalaim de miſi quam tranſmigratio omnis ,Domini verbum audite
שִׁמְעוּ דְבַר־יְהוָה כָּל־הַגּוֹלָה אֲשֶׁר־שִׁלַּחְתִּי מִירוּשָׁלִַם
Achab ad Iſrael Deus exercituum Dominus dixit Sic .Babel in
21 בָּבֶלָה׃ כֹּה־אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל אֶל־אַחְאָב
vobis *prophetantes* , Mahaſejah filium Sidchijahu ad & , Cholajah filium
בֶּן־קוֹלָיָה וְאֶל־צִדְקִיָּהוּ בֶן־מַעֲשֵׂיָה הַנִּבְּאִים לָכֶם
regis Nebuchadreſar manu in eos *dans* ego Ecce : *falſo* meo nomine in
בִּשְׁמִי שָׁקֶר הִנְנִי נֹתֵן אֹתָם בְּיַד נְבוּכַדְרֶאצַּר מֶלֶךְ־
omni maledictio eis ex aſſumetur Et .veſtris oculis in eos percutiet & ,Babel
22 בָּבֶל וְהִכָּם לְעֵינֵיכֶם׃ וְלֻקַּח מֵהֶם קְלָלָה לְכֹל
Dominus te Ponat : dicendo , Babel in quæ , Jehudah *tranſmigrationi*
גָּלוּת יְהוּדָה אֲשֶׁר בְּבָבֶל לֵאמֹר יְשִׂמְךָ יְהוָה
eo Pro .igni in Babel rex *eos torruit* quos ,Achab ſicut & ,Sidchijahu ſicut
23 כְּצִדְקִיָּהוּ וּכְאֶחָב אֲשֶׁר־קָלָם מֶלֶךְ־בָּבֶל בָּאֵשׁ׃ יַעַן
uxoribus cum commiſerunt adulterium & , Iſrael in nefas fecerunt quòd
אֲשֶׁר עָשׂוּ נְבָלָה בְּיִשְׂרָאֵל וַיְנַאֲפוּ אֶת־נְשֵׁי
;eis præcepi non quod , *falſo* meo nomine in verbũ ſunt locuti &,ſuorũ *ſodalium*
רֵעֵיהֶם וַיְדַבְּרוּ דָבָר בִּשְׁמִי שֶׁקֶר אֲשֶׁר לוֹא צִוִּיתִם
Nechelamitem Semabjahu ad Et .Dominus dixit ,*teſtis & cognoſcens* ego *&*
24 וְאָנֹכִי הַיּוֹדֵעַ וָעֵד נְאֻם־יְהוָה׃ וְאֶל־שְׁמַעְיָהוּ הַנֶּחֱלָמִי
, Iſrael Deus exercituum Dominus dixit Sic : dicendo , dices
25 תֹּאמַר לֵאמֹר׃ כֹּה־אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל
omnem ad literas tuo nomine in miſiſti tu quòd eo Pro : dicendo
לֵאמֹר יַעַן אֲשֶׁר אַתָּה שָׁלַחְתָּ בְשִׁמְכָה סְפָרִים אֶל־כָּל־
,ſacerdotem Mahaſejah filium Sephanjah ad & ,Jeruſalaim in qui ,populum
הָעָם אֲשֶׁר בִּירוּשָׁלִַם וְאֶל־צְפַנְיָה בֶן־מַעֲשֵׂיָה הַכֹּהֵן
pro ſacerdotem te dedit Dominus : dicendo , ſacerdotes univerſos ad &
26 וְאֶל כָּל־הַכֹּהֲנִים לֵאמֹר׃ יְהוָה נְתָנְךָ כֹהֵן תַּחַת
,furioſo viro omni Domini domo *præfectos exiſtendum ad* ,ſacerdote Jehojadah
יְהוֹיָדָע הַכֹּהֵן לִהְיוֹת פְּקִדִים בֵּית יְהוָה לְכָל־אִישׁ מְשֻׁגָּע
,nunc Et .nervum in & , *ſubverſionem* in eum *dabis &* ,prophetans &
27 וּמִתְנַבֵּא וְנָתַתָּה אֹתוֹ אֶל־הַמַּהְפֶּכֶת וְאֶל־הַצִּינֹק׃ וְעַתָּה
Quia ? vobis prophetantem Antothitem Irmejahu *in* increpâſti non quid ut
28 לָמָּה לֹא גָעַרְתָּ בְּיִרְמְיָהוּ הָעַנְּתֹתִי הַמִּתְנַבֵּא לָכֶם׃ כִּי
ædificate ; *ipſum* Longum : dicendo ,Babel nos ad miſit *propterea*
עַל־כֵּן שָׁלַח אֵלֵינוּ בָּבֶל לֵאמֹר אֲרֻכָּה הִיא בְּנוּ
.eorum fructus comedite & , hortos plantate & : habitate & ,domos
בָתִּים וְשֵׁבוּ וְנִטְעוּ גַנּוֹת וְאִכְלוּ אֶת־פְּרִיהֶן׃

Verſio VULG. LAT.

15 Quia dixiſtis ; Suſcitavit nobis
Dominus Prophetas in Babylone.
16 Quia hæc dicit Dominus ad
regem, qui ſedet ſup ſoliũ David,
et ad omnem populum habitatorem
urbis hujus, ad fratres veſtros,
qui non ſunt egreſſi vobiſcum
17 in tranſmigrationẽ. Hæc
dicit Dominus exercituum; Ecce
mittam in eos gladium, & famem,
& peſtem : & ponam eos
quaſi ficus malas, quæ comedi
non poſſunt , eò quòd peſſimæ
18 ſint. Et perſequar eos in gladio,
& in fame, & in peſtilentia:
& dabo eos in vexationem univerſis
regnis terræ; in maledictionem,
& in ſtuporem, & in ſibilum,
& in opprobrium cunctis
gentibus, ad quas ego ejeci eos :
19 Eò quòd non audierint verba
mea, dicit Dñs : quæ miſi ad eos
per ſervos meos prophetas, de
nocte conſurgens, & mittens : &
20 non audîſtis, dicit Dominus. Vos
ergò audite verbum Domini,
omnis tranſmigratio, quam emiſi
de Jeruſalem in Babylonem.
21 Hæc dicit Dominus exercituum
Deus Iſrael ad Achab filium
Goliæ , & ad Sedeciam filium
Maaſiæ, qui prophetant vobis
in nomine meo mendaciter;
Ecce ego tradam eos in manus
Nabuchodonoſor regis Babylonis:
& percutiet eos in oculis veſtris.
22 Et aſſumetur ex eis maledictio
omni tranſmigrationi Juda,
quæ eſt in Babylone, dicentium ;
Ponat te Dominus ſicut
Sedeciam, & ſicut Achab, quos
23 frixit rex Babylonis in igne: Pro
eo quòd fecerint ſtultitiam in
Iſrael, & mœchati ſunt in uxores
amicorum ſuorum, & locuti
ſunt verbum in nomine meo
mendaciter, ꝙ non mandavi eis:
ego ſum judex et teſtis, dicit Dñs.
24 Et ad Semeian Nehelamiten di-
25 ces; Hæc dicit Dñs exercituum,
Deus Iſrael; Pro eo quòd miſiſti
in nomine tuo libros ad omnem
populum, qui eſt in Jeruſalem, &
ad Sophoniam filium Maaſiæ ſacerdotem,
& ad univerſos ſacerdotes,
26 dicens; Dñs dedit te ſacerdotem
pro Joiade ſacerdote,
ut ſis dux in domo Domini ſuper
omnem virũ arreptitium & prophetantem,
ut mittas eum in
27 nervum & in carcerem. Et nunc
quarè non increpâſti Jeremiam
Anathothiten, qui prophetat vobis?
28 Quia ſuper hoc miſit in Babylonem
ad nos, dicens; Longũ
eſt : ædificate domos, & habitate
: et plantate hortos, et comedite
fructus eorum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

49 Καὶ ἐν Βαβυλῶνι πεσοῦνται τραυματίαι
50 πάσης τῆς γῆς. Ἀνασωζόμενοι ἐκ γῆς
(π) πορεύεσθε, καὶ μὴ ἵστασθε· οἱ μακρόθεν
μνήσθητε τοῦ κυρίου, καὶ Ἱερουσαλὴμ
ἀναβήτω ἐπὶ τὴν καρδίαν (ρ) ὑμῶν.
51 Ἠσχύνθημεν ὅτι ἠκούσαμεν ὀνειδισμὸν
ἡμῶν, κατεκάλυψεν ἀτιμία τὸ πρόσωπον
ἡμῶν, εἰσῆλθον ἀλλογενεῖς εἰς τὰ
52 ἅγια ἡμῶν, εἰς οἶκον κυρίου. Διὰ τοῦτο
ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, λέγει κύριος, καὶ
ἐκδικήσω ἐπὶ τὰ γλυπτὰ αὐτῆς, καὶ ἐν
πάσῃ τῇ γῇ αὐτῆς πεσοῦνται τραυματίαι.
53 Ὅτι ἐὰν ἀναβῇ Βαβυλὼν ὡς ὁ οὐρανὸς,
καὶ ὅτι ἐὰν (σ) ὀχυρώσῃ τὰ τείχη
ἰσχύϊ αὐτῆς, παρ᾽ ἐμοῦ ἥξουσιν (τ) ἐξολοθρεύοντες
αὐτὴν, λέγει κύριος.
54 Φωνὴ κραυγῆς ἐν Βαβυλῶνι, καὶ συν-
55 τριβὴ μεγάλη (υ) ἐν γῇ Χαλδαίων, Ὅτι
ἐξωλόθρευσε κύριος τὴν Βαβυλῶνα,
καὶ ἀπώλεσεν ἀπ᾽ αὐτῆς φωνὴν
μεγάλην ἠχοῦσαν ὡς ὕδατα πολλά·
56 ἔδωκεν εἰς ὄλεθρον φωνὴν αὐτῆς. Ὅτι
ἦλθεν ἐπὶ Βαβυλῶνα ταλαιπωρία,
ἑάλωσαν οἱ μαχηταὶ αὐτῆς, ἐπτόηται
τὸ τόξον αὐτῶν, ὅτι ὁ θεὸς ἀνταποδίδωσιν
αὐτοῖς. κύριος (φ) ἀνταπο-
57 δίδωσιν, Καὶ μεθύσει μέθῃ τοὺς ἡγεμόνας
αὐτῆς, καὶ τοὺς σοφοὺς (χ) αὐτῆς,
καὶ τοὺς στρατηγοὺς αὐτῆς, λέγει ὁ βασιλεὺς,
Κύριος παντοκράτωρ ὄνομα
58 αὐτῷ. Τάδε λέγει κύριος, Τεῖχος
Βαβυλῶνος ἐπλατύνθη, κατασκαπτόμενον
κατασκαφήσεται, καὶ αἱ πύλαι
αὐτῆς αἱ ὑψηλαὶ ἐμπυρισθήσονται, καὶ
οὐ κοπιάσουσι λαοὶ εἰς κενὸν, καὶ ἔθνη
59 ἐν ἀρχῇ ἐκλείψουσιν. Ὁ ΛΟΓΟΣ
ὋΝ ἘΝΕΤΕΙΛΑΤΟ ΚΥΡΙΟΣ ἹΕΡΕΜΙΑ
ΤΩ ΠΡΟΦΗΤΗ εἰπεῖν
τῷ Σαραίᾳ (ψ) υἱῷ Νηρίου, υἱοῦ Μαασαίου,
ὅτε ἐπορεύετο παρὰ Σεδεκίου
βασιλέως Ἰούδα εἰς Βαβυλῶνα, ἐν
(ω) τῷ ἔτει τῷ τετάρτῳ τῆς βασιλείας
αὐτοῦ· καὶ Σαραίας ἄρχων δώρων.
60 Καὶ ἔγραψεν (ά) Ἱερεμίας πάντα τὰ
κακὰ ἃ ἥξει ἐπὶ Βαβυλῶνα ἐν (α) βιβλίῳ,
πάντας τοὺς λόγους τούτους τοὺς
γεγραμμένους ἐπὶ Βαβυλῶνα.

Et in Babylone cadent interfecti univerſæ terræ. 49
Qui evaditis de (r) terra; ite, & non ſubſiſtatis. Qui de longè, recordamini Domini : & Hieruſalem aſcendat ſuper cor veſtrum. 50
Confuſi ſumus, 51 *quia audivimus opprobrium noſtrum : cooperuit ignominia faciem noſtram : intrârunt alienigenæ in ſancta noſtra, in domum Domini.*
Propter 52 *hoc ecce dies veniunt, dicit Dominus; & ulciſcar ſuper ſculptilia ejus : & in omni terra ejus cadent interfecti :*
Quia ſi aſcenderit Babylon, 53 *tanquàm cœlum, & quia, ſi munierit (ſ) muros fortitudine ſuâ; à me venient qui exterminent eam, dicit Dominus.*
Vox clamoris in Babylone, & 54 *contritio magna in terra Chaldæorum :*
Quia extermina- 55 *vit Dominus Babylonem , & diſperdidit ex ea vocẽ* magnã *ſonantem, quaſi aquas multas: dedit in perditionem vocem ejus :*
Quoniam venit ſu- 56 *per Babylonem calamitas, capti ſunt pugnatores ejus, tremuit arcus eorum : quia Deus retribuit eis. Dominus retribuit ,*
Et inebriabit ebrietate 57 *præfectos ejus, & ſapientes ejus, & duces ejus, dicit rex , Dominus omnipotens nomen illi.*
Hec dicit Dominus ; 58 *Murus Babylonis dilatatus eſt: effodiendo effodietur: & portæ ejus excelſæ comburentur : & (t) non laborabunt populi in vacuum : & gentes in principio deficient.*
VERBUM, quod mandavit Do- 59 *minus Hieremiæ prophetæ, ut diceret Saraæ filio Neriæ filii Maaſiæ; quando ibat à Sedecia rege Juda in Babylonem in anno quarto regni ejus : & Saraas princeps donorum.*
Et ſcripſit Hiere- 60 *mias omnia mala , quæ venient ſuper Babylonem, in libro, omnia verba hæc ſcripta ſuper Babylonem.*

MS. A. (π) πορεύεσθε, μὴ ἵστασθε· (ρ) ἡμῶν. (σ) ὀχυρώσῃ ὕψος ἰσχύος αὐτῆς, (τ) ἐξολεθρεύοντες (υ) ἐκ γῆς Χαλδαίων, Ὅτι ἐξωλέθρευσεν (φ) ἀνταποδίδωσιν αὐτῇ τὴν ἀνταπόδοσιν, Καὶ (χ) αὐτῆς, λέγει ὁ βασιλεὺς, (ψ)* υἱοῦ Νηρείου, υἱοῦ Μαασαίου, (ω) τῷ τετάρτῳ ἔτει (ά) Ἱηρεμίας (α) βιβλίῳ ἑνὶ πάντας τοὺς λόγους τοὺς ἐγγεγραμμένους

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

15 ארי אמרתון אקים לנא יי מלפין בבבל : ארי כדנן אמר יי על מלכא דיתיב על
16 כורסי דוד ועל כל עמא דיתיב בארעא הדא אחיכון דלא נפקו עמכון בגלותא :
17 כדנן אמר יי צבאות האנא מגרי בהון ית דקטלין בחרבא וכפנא ומותא ואתן יתהון
18 כתיניא בישתא דלא מתאכלן מבישו : וארדוף בתריהון בחרבא בכפנא ובמותא
ואתנינון לזיע לכל מלכות ארעא למומי ולצדו ולאשתממו ולחסודין בכל עממיא
19 דאגליתנון לתמן : חלף דלא קבילו לפתגמי אמר יי דשלחית לותהון ית עבדי
20 נבייא מקדם ומשלח ולא קבלתון אמר יי : ואתון קבילו פתגמא דיי כל גלותא
21 דאגליתי מירושלם לבבל : כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל על אחאב בר
קוליה ועל צדקיה בר מעשיה דאתנביאו לכון בשמי שקרא האנא מסר יתהון ביד
22 נבוכדרצר מלכא דבבל ויקטלנון לעיניכון : ויתנסב מנהון לוטא לכל גלות יהודה
23 די בבבל למימר ישוינך יי כצדקיה וכאחב דקלנון מלכא דבבל בנורא : חלף
דעבדו קלנא בישראל וזניאו ית נשי חבריהון ומלילו פתגמא בשמי שקרא דלא
24 פקדתנון וקדמי גלי ומימרי סהיד אמר יי : ולשמעיה דמן חלם תימר למימר :
25 כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל למימר חלף דשלחת בשמך אגרן לות
כל עמא די בירושלם ולות צפניה בר מעשיה כהניא ולות כל כהניא למימר :
26 יי מניך כהן חלף יהוידע כהנא למהוי ממנא סגן כהניא בבית מקדשא דיי לכל
27 גבר דמשתלי ומטפש ותתן יתיה לכיפתא ולגו צינוקא : וכען למה לא נזפת בירמיה
28 דמן ענתות דמתנבי לכון : ארי על כן שלח לותנא לבבל למימר אריכא היא
בנו בתין ותיבו וצובו גנין ואכולו ית אבהון :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quia dixiſtis : Suſcitavit nobis Dñs doctores in Babylone. Quia hæc dicit 15
Dñs ad regẽ qui ſedet ſuper ſoliũ David, & ad populũ qui habitat in *terra* 16
hac, ad fratres veſtros qui non ſunt egreſſi vobiſcum in tranſmigrationem.
Hæc dicit Dñs exercituum: Ecce ego immittam in eos occidentes gladio, & 17
famẽ, & peſtẽ; & dabo eos ſicut fic⁹ malas, quæ comedi non poſſunt præ ma-
litia. Et perſequar eos occidentib⁹ gladio, fame & peſte. Et dabo eos in 18
commotionẽ omnib⁹ regnis terræ, in maledictionẽ, & in deſolationẽ, & in
ſtuporẽ, & in opprobriũ omnib⁹ populis ad quos tranſmigrare eos feci.
Pro eo quòd non obedierunt verbis meis, dicit Dñs, ad quos miſi ſervos me- 19
os prophetas, manè conſurgens & mittens; & non obediſtis, dicit Dñs. Vos 20
autem ſuſcipite verbum Dñi, omnis tranſmigratio quã tranſmigrare feci de
Jeruſalem in Babylonem. Hæc dicit Dñs exercituũ De⁹ Iſrael ad Achab fi- 21
lium Choliæ, & ad Sedechiã filium Maaſiæ, qui prophetant vobis in nomine
meo mendaciter : Ecce ego tradam eos in manum Nabuchodonoſor regis
Babylonis, & occidet eos corã oculis veſtris. Et aſſumetur ex eis maledictio 22
omni tranſmigrationi Juda quæ eſt in Babylone, dicendo : Ponat te Dñs
ſicut Sedechiam & ſicut Achab quos torruit rex Babylonis igni. Pro eo 23
quòd fecerunt ignominiã in Iſrael, & fornicati ſunt cum uxoribu⁹ ſocio-
rum ſuorum, & locuti ſunt verbum in nomine meo mendaciter, quod non
præcepi eis. Et coram me manifeſtum eſt, & Verbum meum eſt teſtis, dicit
Domin⁹. Et Semeiæ Helamitæ loquêris, dicens : Hæc dicit Domin⁹ exerci- 24
tuum De⁹ Iſrael, in hunc modum: Pro eo quòd miſiſti in nomine tuo epiſto- 25
las ad omnem populum qui eſt in Jeruſalem, & ad Sophoniã filium Ma-
aſiæ ſacerdotem, & ad omnes ſacerdotes, dicens : Domin⁹ conſtituit te ſa- 26
cerdotem pro Jehojada ſacerdote, ut ſis conſtitut⁹ princeps ſacerdotum in
domo ſanctuarii Domini, omni viro ſtulto & inſipienti, ut mittas eum in
nervũ & in carcerẽ. Et nunc, quare non increpâſti Jeremiam qui eſt de 27
Anathoth, qui prophetat vobis ? Quia propterea miſit ad nos in Babylo- 28
nem, dicens; Longum eſt; ædificate domos, & habitate; & plantate hortos, &
comedite fructum eorum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܕܐܡܪܬܘܢ. ܕܐܩܝܡ ܠܢ ܡܪܝܐ ܢܒܝܐ ܒܒܒܠ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܥܠ ܡܠܟܐ 15
ܕܝܬܒ ܥܠ ܟܘܪܣܝܗ ܕܕܘܝܕ. ܘܥܠ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܝܬܒ ܒܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܐܚܝܟܘܢ ܕܠܐ 16
ܢܦܩܘ ܥܡܟܘܢ ܒܫܒܝܬܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܗܐ ܡܫܕܪ ܐܢܐ ܒܗܘܢ. ܣܝܦܐ 17
ܘܟܦܢܐ ܘܡܘܬܢܐ. ܘܐܥܒܕ ܐܢܘܢ. ܐܝܟ ܬܐܢܐ ܒܝܫܬܐ ܕܠܐ ܡܬܐܟܠܢ ܡܢ ܒܝܫܘܬܗܝܢ. * ܘܐܪܕܘܦ 18
ܒܬܪܗܘܢ ܒܣܝܦܐ ܘܒܟܦܢܐ ܘܒܡܘܬܢܐ. ܘܐܬܠ ܐܢܘܢ ܠܙܘܥܬܐ ܠܟܠܗܝܢ ܡܠܟܘܬܐ
ܕܐܪܥܐ. ܠܬܡܗܐ ܘܠܫܘܝܬܐ. ܘܠܚܣܕܐ ܘܠܡܫܪܘܩܝܬܐ ܒܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܒܕܪܬ ܐܢܘܢ
ܠܬܡܢ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܝ. ܕܫܕܪܬ ܠܘܬܗܘܢ. ܠܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝ ܢܒܝܐ. ܡܩܕܡ 19
ܫܕܪܬ. ܘܠܐ ܫܡܥܬܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܐܢܬܘܢ ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܠܗ. ܫܒܝܬܐ 20
ܕܐܫܬܒܝܬܘܢ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ ܠܒܒܠ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܥܠ ܐܚܐܒ ܒܪ 21
ܩܘܠܝܐ. ܘܥܠ ܨܕܩܝܐ ܒܪ ܡܥܣܝܐ. ܕܡܬܢܒܝܢ ܠܟܘܢ ܒܫܡܝ ܕܓܠܐ. ܗܐ ܡܫܠܡ ܐܢܐ
ܠܗܘܢ. ܒܐܝܕܐ ܕܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܢܩܛܘܠ ܐܢܘܢ ܒܣܝܦܐ ܠܥܝܢܝܟܘܢ. * ܘܢܗܘܘܢ 22
ܠܠܘܛܬܐ. ܠܟܠܗ ܫܒܝܬܐ ܕܝܗܘܕܐ ܕܒܒܒܠ. ܘܢܐܡܪܘܢ. ܢܥܒܕܟ ܡܪܝܐ ܐܝܟ ܨܕܩܝܐ. ܘܐܝܟ
ܐܚܐܒ. ܕܩܠܝ ܐܢܘܢ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܒܢܘܪܐ. * ܡܛܠ ܕܥܒܕܘ ܒܨܝܪܘܬܐ ܒܐܝܣܪܝܠ. ܘܓܡܪܘ ܢܫܐ 23
ܕܚܒܪܝܗܘܢ. ܘܡܠܠܘ ܦܬܓܡܐ ܒܫܡܝ ܕܓܠܐ. ܕܠܐ ܦܩܕܬ ܐܢܘܢ. ܘܐܢܐ ܝܕܥ ܐܢܐ ܘܣܗܕ ܐܢܐ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܠܫܡܥܝܐ ܢܚܠܡܝܐ ܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. 24 25
ܡܛܠ ܕܫܕܪܬ ܐܢܬ ܐܓܪܬܐ ܠܟܠܗ ܥܡܐ ܕܒܐܘܪܫܠܡ. ܘܠܨܦܢܝܐ ܒܪ ܡܥܣܝܐ ܟܗܢܐ. ܘܠܟܗܢܐ.
* ܡܪܝܐ ܐܩܝܡܟ ܟܗܢܐ ܚܠܦ ܝܘܝܕܥ ܟܗܢܐ. ܕܬܗܘܐ ܦܩܘܕܐ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܥܠ ܟܠܢܫ 26
ܕܡܬܢܒܐ ܘܡܫܬܢܐ ܒܕܓܠܘܬܐ. ܘܬܪܡܝܘܗܝ ܒܒܝܬ ܐܣܝܪܐ ܘܒܣܟܘܪܬܐ. * ܘܗܫܐ ܠܡܢܐ 27
ܠܐ ܟܐܝܬ ܠܐܪܡܝܐ ܕܡܢ ܥܢܬܘܬ. ܕܡܬܢܒܐ ܠܟܘܢ. * ܡܛܠ ܕܗܐ ܫܕܪ ܠܢ ܒܒܒܠ. 28
ܕܢܓܝܪܐ ܗܝ ܕܬܗܘܘܢ ܬܡܢ. ܒܢܘ ܒܬܐ ܘܥܡܪܘ. ܘܙܪܘ ܓܢܐ ܘܐܟܘܠܘ ܦܐܪܝܗܝܢ.

Quia dixiſtis, Excitavit nobis Dominus prophetas in Babele. 15 Sic enim dicit Dominus 16 de rege ſedente ſuper ſolium Davidis, & de toto populo habitante in hac civitate, fratribus veſtris qui non ſunt egreſſi vobiſcum tempore captivitatis: Sic *inquam*, dicit Dominus potentiſſimus, 17 Ecce mittam in eos gladium, famem, & peſtem; & ſimiles reddam eos ficubus malis quæ comedi nequeunt præ ſua pravitate: Et inſectabor eos gladio, fame, ac peſte: 18 & formidini proponam eos univerſis regnis terræ, ſtupori, & maledictioni, ignominiæ, & ſibilo inter omnes gentes quò diſperſero eos: Eò quòd non acquieverint ſermonibus meis, 19 miſi enim ad eos omnes ſervos meos prophetas; præmaturè miſi, at non acquieverunt eis, dicit Dominus. Vos autem audite ſermonē Domini, 20 O omnes captivi qui abducti eſtis Jeroſolymis Babylonem. Sic ait Dominus Deus Iſraelis de Ahabo filio Coliæ, 21 & de Sedecia filio Maaſiæ, qui vobis meo nomine falſò prophetant; Ecce tradam eos in manum Nebuchadnoſaris regis Babyloniæ, ut eos coram vobis gladio trucîdet, Sintque execrationi apud omnes captivos qui ſunt in Babele; 22 ita ut dicatur, Faciat te Dominus ſimilem Sedeciæ & Ahabo, quos igne frixit rex Babelis: Eò quòd crimen commiſerint in Iſraele, 23 uxores ſociorum ſuorum ſtupraverint, meoque nomine falſò locuti ſint ſermones quos non præceperam eis: atque *horum* quidem conſcius ego ſum ac teſtis ait Dominus. Porrò Semeia Nehemalites reſpondit; 24 Sic dicit Dn̄s potentiſſimus Deus Iſraelis; 25 (miſit enim ſuo nomine epiſtolam ad univerſum populum qui erat Jeroſolymis, & ad Sephaniam filium Maaſiæ ſacerdotem, & *reliquos* ſacerdotes) Domin⁹ conſtituit te ſacerdotem loco Jojadai ſacerdotis, 26 ut eſſes cenſor in domo Domini contra quenque prophetantem & in mendaciis delirantem, eumque conjiceres in carcerem & in ergaſtulum: Cur ergò non increpas Jeremiam Anathothiten qui prophetat vobis? 27 Ecce enim miſit ad nos in Babelem *dicens*, 28 Diu futuri eſtis illic, ædificate domos, & inhabitate; hortos plantate, & veſcimini fructibus eorum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

[*MS. Ox. اخرج يا شعبي منها * وينقذ كل امرء نفسه هاربًا من شدة غضب الرب * 45
* ليلا منكسر قلوبهم ويفزعون من الخبر الذي يسمع في الارض * ويثب والٍ علي والٍ * 46
* من اجل ذلك ستجي ايام يقول الرب امر فيها باصنام بابل المنحوتة * وتهلك الارض 47
كلها * وتسقط قتلاها كلها * وتفرح لبابل السماء والارض * وجميع ما فيها * سياتيها 48
المنتهبون من الجربي يقول الرب] * وفي بابل يسقطون جرحا كل الارض * ايها المتخلصون 49 50
من الارض انطلقوا لا تقفوا * ايها البعداء اذكروا الرب * ولتصعد اورشليم علي قلبنا *
* افتضحنا لانا سمعنا تعييرا * غطت الاهانة وجهنا * دخلت الغرباء الجنس الي مقادسنا الي 51
بيت الرب * لاجل هذا ايام تاتي يقول الرب * واقضي علي منحوتاتها * وفي كل ارضها يسقطون 52
الجرحا * لانه ان تعالت بابل مثل السماء * وان حصنت ارتفاع قوتها * من قبلي تاتي 53
مفسدوها يقول الرب * صوت صراخ في بابل * وانكسار عظيم من ارض الكلدانيين * 54
* لان الرب استاصل بابل واهلك منها الصوت العظيم الذي يصوت مثل مياه كثيرة * 55
اعطي للفساد صوتها * لان سطوه اتت علي بابل * هلكت محاربوها * جزع قوسهم * لان الله 56
كافاهم * الرب كافاها مكافاة * ويسكر ولاتها سكرا وحكماءها يقول الرب * الملك الضابط الكل 57
اسمه * هكذا يقول الرب * سور بابل عرض يهدم انهداما * وابوابها المرتفعات يحرقون * 58
ولا تتعب الشعوب باطلا * والامم في البدء يعيون *

* القول الصاير من قبل الرب الي ارميا ليقوله لصارا بن نيريو بن معسيا * لما انطلق من 59
عند صداقيا ملك يهودا الي بابل في السنة الرابعة من مملكته * وصارا رييس الهدايا *

* وكتب ارميا جميع الشرور التي تاتي علي بابل في سفر واحد * بجميع هذه الاقوال 60
المكتوبة علي بابل *

[MS. Oxon. *Egredimini ex illâ populè mi, & fugâ eripite unuſquiſq; animam ſuam, ab æſtu furoris Domini:* 45 *Ne fortè conſternetur animus eorum, & percellantur propter rumorem qui audietur in terra, quum contigerit dominator adverſùs dominatorem.* 46 *Propterea dies veniunt, dicit Dominus, quibus pronuntiavit de ſculptilibus Babylonis idolis: & tota illa terra peribit, & omnes confoſſi ejus cadent in ea.* 47 *Gaudebunt de Babele cæli & terra, & quæcunq; ſunt in eis, ſiquidem ab Aquilone venient in eam direptores, dicit Dominus.*] 48 *Et in Babele corruent vulnerati totius terræ.* 49 *O qui ex hac terra evaſiſtis, abite, ne moremini: O longinqui, recordamini Domini, & Jeruſalem nobis in mentem veniat.* 50 *Erubeſcimus, quoniam audimus opprobrium noſtrū, operit ignominia faciem noſtrā: ingreſſi ſunt alienigenæ in ſanctuaria noſtra, in domum Domini.* 51 *Iccirco dies veniunt, dicit Dominus, quum judiciū feram adverſùs ſculptilia ejus, & per totam terram ejus cadent vulnerati.* 52 *Nam licèt efferret ſe Babel æquè ac cœlum, & licèt muniret eminentiam roboris ſui; à me venient vaſtatores ejus, dicit Dominus.* 53 *Vox clamoris in Babele, & conquaſſatio magna de terra Chaldæorum:* 54 *Nam Dominus exterminavit Babelem, & perdidit ex ea vocem prægrandem qua fremebat more aquarum multarum, tradidit corruptioni vocem ejus.* 55 *Calamitate enim ſuper Babelem veniente, perierunt bellatores ejus, extimuit arcus eorum; quia Deus rependit eis, Dominus reddidit illi retributionem.* 56 *Et ebrietate inebriabuntur antiſtites & ſapientes ejus, dicit Dominus, cujus nomen eſt Rex omnipotens.* 57 *Sic dicit Dominus, Murus Babelis qui dilatatus fuit, funditùs everteur, & portæ ejus altiſſimæ comburentur; nec fruſtrà laborabunt populi, & gentes ipſo initio conſumentur.* 58

Sermo qui factus eſt à Domino ad Jeremiam, ut referret Saraæ filio Neriæ filii Maaſiæ, quum à Sedecia rege Judæ Babelem eſt profectus, anno quarto regni ipſius; erat autem Saraa præpoſitus muneribus. 59

Et ſcripſit Jeremia cuncta mala quæ eventura erant Babeli, in libello uno, omnes hos ſermones ſcriptos contra Babelem. 60

ירמיה : ל

Irmejahu auribus in ,hanc epiſtolam ſacerdos Sephanjah legit Et
29 וַיִּקְרָא צְפַנְיָה הַכֹּהֵן אֶת־הַסֵּפֶר הַזֶּה בְּאָזְנֵי יִרְמְיָהוּ
Mitte : dicendo ,Irmejahu ad Domini verbum fuit Et .prophetæ
30 31 הַנָּבִיא׃ וַיְהִי דְּבַר־יְהוָה אֶל־יִרְמְיָהוּ לֵאמֹר׃ שְׁלַח
ad Dominus dixit Sic : dicendo ,tranſmigrationem omnem ad
עַל־כָּל־הַגּוֹלָה לֵאמֹר כֹּה אָמַר יְהוָה אֶל־
,Semahjahu vobis prophetavit quòd eo Pro : Nechalamitem Semahjah
שְׁמַעְיָה הַנֶּחֱלָמִי יַעַן אֲשֶׁר נִבָּא לָכֶם שְׁמַעְיָה
Idcirco .mendacio *ſuper* vos fecit fidere & ,eum miſi non ego &
32 וַאֲנִי לֹא שְׁלַחְתִּיו וַיַּבְטַח אֶתְכֶם עַל־שָׁקֶר׃ לָכֵן
,Nechalamitem Semahjah *ſuper viſitans* ego Ecce : Dominus dixit ſic
כֹּה־אָמַר יְהוָה הִנְנִי פֹקֵד עַל־שְׁמַעְיָה הַנֶּחֱלָמִי
populi medio in habitans vir ei erit non ,ejus ſemen *ſuper* &
וְעַל־זַרְעוֹ לֹא־יִהְיֶה לוֹ אִישׁ ישֵׁב בְּתוֹךְ־הָעָם
dixit ,meo populo *faciens* ego quod ,*bono in* videbit non & ,hujus
הַזֶּה וְלֹא־יִרְאֶה בַטּוֹב אֲשֶׁר־אֲנִי עֹשֶׂה־לְעַמִּי נְאֻם־
.Dominum *ſuper* eſt locutus *defectionem* quia : Dominus
יְהוָה כִּי־סָרָה דִבֶּר עַל־יְהוָה׃

CAP. XXX. ל

: dicendo ,Domino à Irmejahu ad fuit quod Verbum
1 הַדָּבָר אֲשֶׁר הָיָה אֶל־יִרְמְיָהוּ מֵאֵת יְהוָה לֵאמֹר׃
tibi Scribe : dicendo ,Iſrael Deus Dominus dixit Sic
2 כֹּה־אָמַר יְהוָה אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל לֵאמֹר כְּתָב־לְךָ
: libro in te ad ſum locutus quæ ,*verba* omnia
אֵת כָּל־הַדְּבָרִים אֲשֶׁר־דִּבַּרְתִּי אֵלֶיךָ אֶל־סֵפֶר׃
convertam & ,Dominus dixit ,*venientes* dies ecce Etenim
3 כִּי הִנֵּה יָמִים בָּאִים נְאֻם־יְהוָה וְשַׁבְתִּי
: Dominus dixit ,Jehudah & ,Iſrael mei populi captivitatem
אֶת־שְׁבוּת עַמִּי יִשְׂרָאֵל וִיהוּדָה אָמַר יְהוָה
,eorum patribus dedi quam ,terram ad eos faciam redire &
וַהֲשִׁבֹתִים אֶל־הָאָרֶץ אֲשֶׁר־נָתַתִּי לַאֲבוֹתָם
Dominus eſt locutus quæ verba hæc Et .eam poſſidebunt &
4 וִירֵשׁוּהָ׃ וְאֵלֶּה הַדְּבָרִים אֲשֶׁר דִּבֶּר יְהוָה
: Dominus dixit ſic Quoniam .Jehudah ad & ,Iſrael ad
5 אֶל־יִשְׂרָאֵל וְאֶל־יְהוּדָה׃ כִּי־כֹה אָמַר יְהוָה
Interrogate .pax non & ,formido : audivimus terroris vocem
6 קוֹל חֲרָדָה שָׁמָעְנוּ פַּחַד וְאֵין שָׁלוֹם׃ שַׁאֲלוּ־
virum omnem vidi quare : maſculus *pariens* ſi ,videte & ,nunc
נָא וּרְאוּ אִם־יֹלֵד זָכָר מַדּוּעַ רָאִיתִי כָל־גֶּבֶר
ſunt converſæ & ,parturientem tanquam ſuos lumbos ſuper ſuas manus
יָדָיו עַל־חֲלָצָיו כַּיּוֹלֵדָה וְנֶהֶפְכוּ
; *illa ſicut non à* , illa dies magna quia ,Væ ? pallorem in facies omnes
7 כָל־פָּנִים לְיֵרָקוֹן׃ הוֹי כִּי גָדוֹל הַיּוֹם הַהוּא מֵאַיִן כָּמֹהוּ
die in erit Et .ſervabitur eo ab & ,Jahacob ipſi *ipſa anguſtiæ* tempus &
8 וְעֵת־צָרָה הִיא לְיַעֲקֹב וּמִמֶּנָּה יִוָּשֵׁעַ׃ וְהָיָה בַיּוֹם
,tuo collo *deſuper* ejus jugum conteram ,exercituũ Dominus dixit , illa
הַהוּא נְאֻם יְהוָה צְבָאוֹת אֶשְׁבֹּר עֻלּוֹ מֵעַל צַוָּארֶךָ
ſervient Et .extraneis ultra *eo in* ſervient non & ,rumpam tua vincula &
9 וּמוֹסְרוֹתֶיךָ אֲנַתֵּק וְלֹא־יַעַבְדוּ־בוֹ עוֹד זָרִים׃ וְעָבְדוּ
.eis ſuſcitabo quem ,ſuo regi David & ,ſuo Deo Domino
אֵת יְהוָה אֱלֹהֵיהֶם וְאֵת דָּוִד מַלְכָּם אֲשֶׁר אָקִים לָהֶם׃
conterreris nec ,Dominus dixit ,Jahacob mi ſerve timeas ne tu Et
10 וְאַתָּה אַל־תִּירָא עַבְדִּי יַעֲקֹב נְאֻם־יְהוָה וְאַל־תֵּחַת
terra de tuum ſemen & ,longè à te ſalvificans ego ecce quia : Iſrael
יִשְׂרָאֵל כִּי הִנְנִי מוֹשִׁיעֲךָ מֵרָחוֹק וְאֶת־זַרְעֲךָ מֵאֶרֶץ
,erit pacatus & ,requieſcet & ,Jahacob revertetur & ,eorum captivitatis
שִׁבְיָם וְשָׁב יַעֲקֹב וְשָׁקַט וְשַׁאֲנַן
.*exterrens* non &
וְאֵין מַחֲרִיד׃

Verſio VULG. LAT.

29 Legit ergò Sophonias ſacerdos
librum iſtum in auribus Jeremiæ
30 prophetæ. Et factum eſt
verbum Domini ad Jeremiam,
31 dicens ; Mitte ad omnem tranſmigrationem
, dicens ; Hæc dicit
Dominus ad Semeian Nehelamiten
; Pro eo quòd prophetavit
vobis Semeias, & ego non
miſi eum : & fecit vos confidere
32 in mendacio : Idcircò hæc dicit
Dominus ; Ecce ego viſitabo
ſuper Semeian Nehelamiten, &
ſuper ſemen ejus : non erit ei vir
ſedens in medio populi hujus,
& non videbit bonum, quod
ego faciam populo meo, ait
Dominus : quia prævaricationem
locutus eſt adverſùs Dominum.

CAP. XXX.

1 HOc verbum, quod factum eſt
ad Jeremiam à Domino, dicens ;
2 Hæc dicit Dominus Deus Iſrael,
dicens; Scribe tibi omnia verba,
quæ locutus ſum ad te, in
3 libro. Ecce enim dies veniunt,
dicit Dominus : & convertam
converſionem populi mei Iſrael
& Juda, ait Dominus : &
convertam eos ad terram, quam
dedi patribus eorum : & poſſidebunt
4 eam. Et hæc verba,
quæ locutus eſt Dominus ad Iſrael
5 & ad Judam : Quoniam hæc
dicit Dominus ; Vocem terroris
audivimus : formido, & non
6 eſt pax. Interrogate , & videte
ſi generat maſculus : quarè ergò
vidi omnis viri manum ſuper
lumbum ſuum , quaſi parturientis,
& converſæ ſunt univerſæ
7 facies in auruginem? Væ,
quia magna dies illa, nec eſt
ſimilis ejus : tempúſque tribulationis
eſt Jacob, & ex ipſo
8 ſalvabitur. Et erit in die illa,
ait Dominus exercituum : conteram
jugum ejus de collo tuo,
& vincula ejus dirumpam , &
non dominabuntur ei ampliùs
9 alieni : Sed ſervient Domino
Deo ſuo , & David regi ſuo ,
10 quem ſuſcitabo eis. Tu ergò
ne timeas ſerve meus Jacob, ait
Dominus, neque paveas Iſrael :
quia ecce ego ſalvabo te de
terra longinqua, & ſemen tuum
de terra captivitatis eorum : &
revertetur Jacob, & quieſcet, &
cunctis affluet bonis , & non
erit quem formidet :

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

61 Καὶ εἶπεν Ἱερεμίας πρὸς Σαραίαν, Ὅταν
ἔλθῃς εἰς Βαβυλῶνα, ϗ ὄψῃ ϗ ἀναγνώσῃ
62 πάντας τοὺς λόγους τούτους, Καὶ ἐρεῖς, Κύριε
κύριε, σὺ ἐλάλησας ἐπὶ τὸν τόπον τοῦτον, τοῦ
(β) ἐξολοθρεῦσαι αὐτὸν, ϗ τοῦ μὴ εἶναι ἐν αὐτῷ
κατοικοῦντας ἀπὸ ἀνθρώπου ἕως κτήνους,
63 ὅτι ἀφανισμὸς εἰς τὸν αἰῶνα ἔσται. Καὶ ἔσται
ὅταν (γ) παύσῃ τοῦ ἀναγινώσκειν τὸ βιβλίον
τοῦτο, ϗ ἐπιδήσεις (δ) ἐπ᾽ αὐτὸ λίθον,
64 ϗ ῥίψεις αὐτὸ εἰς μέσον τοῦ Εὐφράτου, Καὶ
ἐρεῖς, Οὕτως καταδύσεται Βαβυλὼν, (ε) ϗ
οὐ μὴ ἀναστῇ ἀπὸ προσώπου τῶν κακῶν, ὧν
ἐγὼ ἐπάγω ἐπ᾽ αὐτήν.

MS. A. (β ἐξολεθρεῦσαι (γ) παύσῃ ἀναγινώσκων (δ) αὐτῷ (ε) οὐ μὴ

Cap. 47. ΚΕΦ. κθ΄.
1 Vulg. Lat. ἘΠΙ` ΤΟΥ`Σ ἈΛΛΟΦΥ´-
2 ΛΟΥΣ ΤΆΔΕ ΛΕ´ΓΕΙ ΚΥ´ΡΙΟΣ· Ἰδοὺ
ὕδατα (α) ἀναβαίνει ἀπὸ Βοῤῥᾶ, ϗ ἔσται
εἰς χειμάῤῥουν κατακλύζοντα, ϗ κατακλύσει
γῆν ϗ τὸ πλήρωμα αὐτῆς, πόλιν ϗ
τοὺς (β) κατοικοῦντας ἐν αὐτῇ. ϗ κεκράξονται
οἱ ἄνθρωποι, ϗ (γ) ἀλαλάξουσιν ἅπαντες
3 οἱ κατοικοῦντες τὴν γῆν Ἀπὸ φωνῆς ὁρμῆς
αὐτοῦ, ἀπὸ τῶν ὅπλων τῶν ποδῶν αὐτοῦ, ϗ ἀπὸ
σεισμοῦ τῶν ἁρμάτων αὐτοῦ, (δ) ἤχου τροχῶν
αὐτοῦ. οὐκ ἐπέστρεψαν πατέρες (ε) ἐφ᾽ υἱοὺς αὐτῶν
4 ἀπὸ ἐκλύσεως χειρῶν αὐτῶν Ἐν τῇ ἡμέρᾳ
τῇ (ζ) ἐπερχομένῃ τοῦ ἀπολέσαι πάντας
τοὺς ἀλλοφύλους. ϗ ἀφανιῶ τὴν Τύρον,
ϗ τὴν Σιδῶνα, ϗ πάντας τοὺς καταλοίπους
τῆς βοηθείας αὐτῶν, ὅτι (η) ἐξολοθρεύσει
5 κύριος (θ) τοὺς καταλοίπους τῶν νήσων. Ἥκει
φαλάκρωμα ἐπὶ Γάζαν, (ι) ἀπεῤῥίφη Ἀσκάλων,
6 ϗ οἱ κατάλοιποι Ἐνακείμ. Ἕως τίνος
κόψεις ἡ (κ) μάχαιρα τοῦ κυρίου; ἕως
τίνος (λ) οὐχ ἡσυχάσεις; ἀποκατάστηθι εἰς
7 τὸν κολεόν σου, ἀνάπαυσαι, ϗ ἐπάρθητι. Πῶς
(μ) ἡσυχάσει, ϗ κύριος ἐνετείλατο αὐτῇ
ἐπὶ τὴν Ἀσκάλωνα, ϗ ἐπὶ τὰς παραθαλασσίους,
ἐπὶ τὰς καταλοίπους ἐπεγερθῆναι;
7 Cap.49. Vulg.Lat. ΤΗ͂ ἸΔΟΥΜΑΙ´Α,
τάδε λέγει κύριος, Οὐκ ἔστιν ἔτι
σοφία ἐν Θαιμὰν, (ν) ἀπώλετο βουλὴ ἐκ
8 συνετῶν, ᾤχετο σοφία αὐτῶν, Ἠπατήθη ὁ
τόπος αὐτῶν· βαθύνατε (ξ) εἰς κάθισιν οἱ
κατοικοῦντες ἐν (ο) Δαιδὰμ, ὅτι δύσκολα
ἐποίησεν· ἤγαγον ἐπ᾽ αὐτὸν ἐν χρόνῳ, ᾧ
9 (π) ἐπεσκεψάμην ἐπ᾽ αὐτόν. Ὅτι τρυγηταὶ
(ρ) ἦλθον, οἳ οὐ καταλείψουσίν σοι κατάλειμμα·
ὡς κλέπται ἐν νυκτὶ, ἐπιθήσουσι
10 (σ) χεῖρα αὐτῶν. Ὅτι ἐγὼ κατέσυρα τὸν
Ἡσαῦ, ἀνεκάλυψα τὰ κρυπτὰ αὐτῶν, κρυβῆναι
οὐ μὴ δύνωνται, ὤλοντο διὰ χεῖρα ἀδελφοῦ
αὐτοῦ, (τ) γείτονός μου, ϗ οὐκ ἔστιν
11 Ὑπολείπεσθαι ὀρφανόν σου, ἵνα ζήσηται· ϗ ἐγὼ
ζήσομαι, ϗ αἱ χῆραι ἐπ᾽ ἐμὲ πεποίθασιν.

MS. A. (α) ἀναβέννι (β) ἐνοικοῦντας (γ) ὀλολάξονται πάντες (δ) καὶ ἤχου τῶν τροχῶν αὐτοῦ. (ε) ἐπὶ (ζ) ἐρχομένῃ (η) ἐξολεθρεύσει (θ) τὰς καταλοίπους (ι) ἀπερρίφη Ἀσκάλων, ϗ τὰ κατάλοιπα (κ) μάχαιρα κυρίου; (λ) οὐκ (μ) ἡσυχάσεις , (ν) ἐπώλετο (ξ) ἑαυτοῖς εἰς κάθησιν (ο) Δαιδὰν, (π) ἐπεσκεψάμην αὐτόν. (ρ) ἦλθόν σοι, οὐ καταλείψουσίν σοι καταλίμματα· ὥσπερ κλέπται (σ) χεῖρας αὐτῶν. Ὅτι ἐγὼ κατηραύνησα (τ) ϗ γίτονος αὐτοῦ,

Et dixit Hieremias ad Saræam ; 61
Cùm veneris in Babylonem, &
videris & legeris omnia verba
hæc : Et dices ; Domine, Domine, 62
tu locutus es ſuper locum
iſtum ad diſperdendum eum, &
ut non ſint in eo habitantes ab
homine uſque ad pecus : quia ſolitudo
in ſeculum erit. Et erit, 63
cùm ceſſaveris legere librum
hunc ; & ligabis lapidem ad eum,
& projicies eum in medium
Euphratis, Et dices ; Sic demergetur 64
Babylon, & non reſurget
à facie malorum, quæ ego induco
ſuper eam.

CAP. XXIX.

SUPER (a) Allophylos 1
Hæc dicit Dominus ; Ecce aquæ 2
aſcendunt ab Aquilone, & erunt
in torrentem inundantem :
& inundabunt terram, & plenitudinem
ejus, civitatem, & habitantes
in ea. Et clamabunt homines,
& ululabunt omnes habitatores
terræ A voce impetûs ejus, 3
ab armis pedum ejus, & à concuſſione
curruum ejus, ſonitu rotarum
ejus. Non converterunt ſe
patres ſuper filios ſuos præ diſſolutione
manuum ſuarum, In die 4
ſuperveniente ad perdendum omnes
Allophylos. Et delebo Tyrum,
& Sidonem, & omnes reliquos
auxilii eorum : Quia exterminabit
Dominus reliquos
(b) inſularum. Venit calvitium 5
ſuper Gazam : projecta eſt Aſcalon,
& reliqui Enacim. Uſquequò 6
concîdes gladius Domini ?
uſquequò non quieſces? Regredere
in vaginam tuam, requieſce, &
tollere. Quomodò requieſcet ; 7
& Dominus mandavit ei ſuper
Aſcalonem, & adverſùs maritimas,
(c) ſuper reliquas ut inſurgat ?
(d) IDUMÆÆ, hæc dicit Dominus; 7
Non eſt ultrà ſapientia
in Theman : periit conſilium
à prudentibus : obiit ſapientia
eorum : Conculcatus eſt locus 8
eorum. (e) Demergite in ſeſſionem,
qui habitatis in Dædan :
quia dura fecit. Adduxi ſuper
eum in tempore, quo viſitavi ſuper
eum : Quia vindemiatores 9
venerunt; qui non relinquent tibi
reliquias: quaſi fures in nocte,
imponent manum ſuam : Quia 10
ego detraxi Eſau, revelavi abſcondita
eorum; abſcondi non poterunt.
Perierunt per manum fratris
ſui, (f) vicini mei: & non eſt
Relinqui pupillum tuũ, ut vivat. 11
*Et ego *faciam vivere; & viduæ*
ſuper me confiderunt.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

29 וּקְרָא צְפַנְיָה כַּהֲנָא יַת אִגַּרְתָּא הָדָא קֳדָם יִרְמְיָה נְבִיָּא׃ וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן
30 31 קֳדָם יְיָ עִם יִרְמְיָה לְמֵימַר׃ שְׁלַח לְוָת כָּל בְּנֵי גָלוּתָא לְמֵימַר כִּדְנַן אֲמַר יְיָ עַל שְׁמַעְיָה
דְמִן חֶלָם חֲלַף דְּאִתְנַבֵּי לְכוֹן שְׁמַעְיָה וַאֲנָא לָא שְׁלַחְתֵּיהּ וְאַרְחֵיץ יָתְכוֹן עַל שִׁקְרָא׃
32 בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ הָא אֲנָא מַסְעַר עַל שְׁמַעְיָה דְמִן חֶלָם וְעַל בְּנוֹהִי לָא
יְהֵי לֵיהּ גְּבַר יָתֵיב בְּגוֹ עַמָּא הָדֵין וְלָא יֶחֱזֵי בְטוּבָא דַאֲנָא עָבֵיד לְעַמִּי אֲמַר יְיָ אֲרֵי
סַטְיָא מַלֵּל קֳדָם יְיָ׃

ל

1 פִּתְגָם נְבוּאָה דַהֲוָה עִם יִרְמְיָה מִן קֳדָם יְיָ לְמֵימַר׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל
2 3 לְמֵימַר כְּתַב לָךְ יַת כָּל פִּתְגָמַיָּא דְמַלְּלִית עִמָּךְ עַל סִפְרָא׃ אֲרֵי הָא יוֹמַיָּא אָתַן אֲמַר
יְיָ וַאֲתֵיב יַת גָלוּת עַמִּי יִשְׂרָאֵל וִיהוּדָה אֲמַר יְיָ וַאֲתֵבִנּוּן לְאַרְעָא דִיהַבִית לַאֲבָהָתְהוֹן
4 5 וְיַחְסְנוּנַהּ׃ וְאִלֵּין פִּתְגָמַיָּא דְמַלֵּיל יְיָ עַל יִשְׂרָאֵל וִיהוּדָה׃ אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר
6 יְיָ קָל זְוָעָא שְׁמַעְנָא דַחֲלָא וְלֵית שְׁלָם׃ שְׁאִילוּ כְעַן וַחֲזוֹ אִם יְלִיד דְּכַר מָדֵין
חֲזֵיתִי כָּל גְּבַר יְדוֹהִי מַחְתָן עַל חַרְצֵיהּ כִּילֶדְתָּא וּמִשְׁתַּנְיָן כָּל אַפַּיָּא לְמֶהֱוֵי כְּיַרְקָנָא׃
7 8 וַי אֲרֵי רַב יוֹמָא הַהוּא לֵית דִּכְוָתֵיהּ וְעִדָּן עָקָא הוּא לְיַעֲקֹב וּמִנֵּיהּ יִתְפְּרֵק׃ וִיהֵי
בְּעִדָּנָא הַהִיא אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת אֶתְבַּר נִיר עַמְמַיָּא מִצַּוְּארֵיכוֹן וְחַנְקֵיכוֹן אֲפַסֵּק
9 וְלָא יִשְׁתַּעְבְּדוּן בְּיִשְׂרָאֵל עוֹד עַמְמַיָּא׃ וְיִפְלְחוּן קֳדָם יְיָ אֱלָהָהוֹן וְיִשְׁתַּמְעוּן לִמְשִׁיחָא
10 בַּר דָּוִד מַלְכְּהוֹן דַאֲקִים לְהוֹן׃ וְאַתְּ לָא תִדְחַל עַבְדִּי יַעֲקֹב אֲמַר יְיָ וְלָא תִתְּבַר יִשְׂרָאֵל
אֲרֵי הָאֲנָא פָּרֵיק לָךְ מֵרָחִיק וְיַת בְּנָךְ מֵאֲרַע גָלוּתְהוֹן וִיתוּבוּן דְבֵית יַעֲקֹב וְיִשְׁקְטוּן
וְיִשְׁרוֹן לִרְחָצָן וְלֵית דְּמָנִיד׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et legit Sophonias ſacerdos epiſtolam hanc coram Jeremia propheta. 29
Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini cum Jeremia, dicens : 30
Mitte ad omnes filios tranſmigrationis, dicens : Hæc dicit Dominus 31
ad Semeiam Helamitem : Pro eo quòd prophetavit vobis Semeias, &
ego non miſi eum, & confidere vos fecit in mendacio. Idcirco hæc dicit 32
Dominus : Ecce ego viſitabo ſuper Semeiam Helamitem, & ſuper filios
ejus, & non erit ei vir ſedens in medio populi hujus, & non videbit bonum
quod ego faciam populo meo, dicit Dominus. Quia perverſum locutus
eſt coram Domino.

CAP. XXX.

VErbum prophetiæ quod factum eſt ad Jeremiam à facie Domini, di- 1
cens : Hæc dicit Dominus Deus Iſrael, in hunc modum : Scribe tibi 2
omnia verba quæ locutus ſum tecum, in libro. Quia ecce dies veniunt, 3
dicit Dominus; & convertam tranſmigrationem populi mei Iſrael & Ju-
da, dicit Dominus; & reducam eos ad terram quam dedi patribus eorum,
& poſſidebunt eam. Et hæc ſunt verba quæ locutus eſt Dominus ſuper 4
Iſraele & Juda. Quia hæc dicit Dominus : Vocem commotionis au- 5
divimus ; terroris, & non erat pax. Interrogate nunc & videte num 6
pariat maſculus. Quare vidi omnis viri manus demiſſas ſuper lumbos
ſuos, more parturientis ; & mutatas univerſas facies , ut ſint quaſi au-
rugo ? Væ, quia magna eſt dies illa, & non eſt ei ſimilis ; & tempus tri- 7
bulationis eſt Jacob, & ex ipſa ſalvabitur. Et erit in tempore illo, dicit 8
Dominus exercituum ; conteram jugum populorum de cervicibus veſtris,
& vincula veſtra dirumpam ; & non ſubjicietur Iſrael ultrà populis. Et 9
ſervient coram Domino Deo ſuo, & obedient Chriſto filio David regi ſuo,
quem ſuſcitabo eis. Tu autem ne timeas ſerve mi Jacob, dicit Dominus, 10
nec conteraris Iſrael : quia ecce ego ſalvabo te de longinquo, & filios tu-
os de terra tranſmigrationis eorum ; & revertentur viri domus Jacob , &
quieſcent, & habitabunt confidenter ; & non erit qui exterreat eos.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܩܪܐ ܨܦܢܝܐ ܟܗܢܐ ܐܓܪܬܐ ܗܕܐ ܒܡܫܡܥܗ ܕܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ. * ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ 29
ܠܘܬ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܫܠܘܚ ܠܟܠܗ ܫܒܝܬܐ. ܘܐܡܪ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܫܡܥܝܐ 30 31
ܢܚܠܡܝܐ. ܥܠ ܕܐܬܢܒܝ ܠܟܘܢ ܫܡܥܝܐ. ܘܐܢܐ ܠܐ ܫܕܪܬܗ: ܘܐܬܟܠܟܘܢ ܥܠ ܫܘܩܪܐ.
* ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܡܦܩܕ ܐܢܐ ܥܠ ܫܡܥܝܐ ܢܚܠܡܝܐ ܘܥܠ ܙܪܥܗ. ܘܠܐ 32
ܢܗܘܐ ܠܗ ܓܒܪ ܕܝܬܒ ܒܓܘ ܥܡܐ ܗܢܐ. ܘܠܐ ܢܚܙܐ ܛܒܬܐ ܕܥܒܕ ܐܢܐ ܠܥܡܝ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܥܘܠܐ ܡܠܠ ܥܠ ܡܪܝܐ.

Legit autem Sephania ſacerdos hanc epiſtolam audiente Jeremiâ prophetâ. 29 Fuitque ſermo Domini ad Jeremiam prophetam his verbis; 30 Mitte ad omnes captivos, Sic dicit Dominus ad Semeiam Nehemaliten, Quia vobis prophetavit Semeia res pro quibus ego non miſeram eum, & inani ſpe vos lactavit: 31 Idcircò ſic ait Dominus, Ecce animadverſutus ſum in Semeiam Nehemaliten & in ſemen ejus, ita ut non remaneat ipſi quiſquam habitans inter populum iſtum, neque videat bonum quod facturus ſum populo meo, dicit Dominus; eò quòd flagitium ſit locutus contra Dominum. 32

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠ *

1 2 * ܦܬܓܡܐ ܕܗܘܐ ܠܘܬ ܐܪܡܝܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ
ܕܐܝܣܪܝܐܠ. ܟܬܘܒ ܠܟ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܕܡܠܠܬ ܥܡܟ ܒܟܬܒܐ. * ܡܛܠ ܕܗܐ 3
ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܗܦܘܟ ܫܒܝܬܐ ܕܥܡܝ ܐܝܣܪܝܐܠ ܘܝܗܘܕܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
ܘܐܗܦܘܟ ܐܢܘܢ ܠܐܪܥܐ ܕܝܗܒܬ ܠܐܒܗܝܗܘܢ. ܘܢܐܪܬܘܢܗ. * ܘܗܠܝܢ ܦܬܓܡܐ ܕܡܠܠ 4
ܡܪܝܐ ܥܠ ܐܝܣܪܝܐܠ ܘܥܠ ܝܗܘܕܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܩܠܐ ܕܙܘܥܬܐ ܫܡܥܢ. ܕܚܠܬܐ 5
ܘܠܝܬ ܫܠܡܐ. * ܫܐܠܘ ܘܚܙܘ. ܐܢ ܝܠܕ ܕܟܪܐ. ܡܛܠܡܢܐ ܚܙܝܬ ܟܠ ܓܒܪ 6
ܫܕܝܢ ܐܝܕܘܗܝ. ܥܠ ܚܨܘܗܝ ܐܝܟ ܝܠܕܬܐ. ܘܐܬܗܦܟܘ ܟܠܗܘܢ ܐܦܐ ܠܝܪܩܢܐ. * ܘܝ 7
ܕܪܒ ܝܘܡܐ ܗܘ ܘܠܝܬ ܐܟܘܬܗ. ܘܥܕܢ ܐܘܠܨܢܐ ܗܘ ܠܝܥܩܘܒ. ܘܡܢܗ ܢܬܦܪܩ.
* ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܐܬܒܪ ܢܝܪܗ ܡܢ ܨܘܪܟ. ܘܐܨܪܘܡ ܐܣܘܪܝܟ. ܘܠܐ 8
ܢܦܠܚܘܢ ܬܘܒ ܠܢܘܟܪܝܐ. * ܐܠܐ ܢܦܠܚܘܢ ܠܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ. ܘܠܕܘܝܕ ܡܠܟܗܘܢ 9
ܕܐܩܝܡ ܠܗܘܢ. * ܘܐܢܬ ܠܐ ܬܕܚܠ ܥܒܕܝ ܝܥܩܘܒ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܬܬܬܒܪ ܐܝܣܪܝܐܠ: 10
ܡܛܠ ܕܗܐ ܦܪܩ ܐܢܐ ܠܟ ܡܢ ܪܘܚܩܐ. ܘܠܙܪܥܟ. ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܫܒܝܬܗܘܢ. ܘܢܗܦܘܟ ܝܥܩܘܒ
ܘܢܫܠܐ. ܘܢܫܬܠܡ ܘܢܬܢܝܚ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗ ܡܢ ܕܡܙܝܥ.

CAP. XXX.

SErmo qui factus eſt ad Jeremiam à Domino. 1 Dixit ergò; 2 Sic ait Dominus Deus Iſraelis, Scribe tibi omnes ſermones quos tibi dixi, in volumine: 3 Nam ecce dies venturi ſunt, ait Dominus, quibus reducam captivos populi mei Iſraelis & Judæ, ait Dominus; reducam inquam, eos in terram quam dedi patribus eorum, & poſſidebunt eam. 4 Hi ergò ſunt ſermones quos locutus eſt Dominus de Iſraele & de Juda. 5 Sic ait Dominus, Vocem tremoris audivimus, pavorem, ac nullam ſecuritatem. 6 Sciſcitamini & videte num pariat mas: cur video cujuſcunque viri manus lateribus ſuis appoſitas more parturientis *fœminæ*, & omnes vultus in aduſtæ rei *colorem* verſos? 7 Heu quàm magnus futurus eſt ille dies, neque enim erit illi ſimilis: tempus quidem calamitoſiſſimum erit Jacobo, ſed eripietur ex eo. 8 Erit enim illo die, dicit Dominus exercituum, ut frangam jugum ejus à collo tuo, & lora tua diſrumpam; neque ſervitute premant eos inpoſterùm alieni, 9 Sed ſerviant Domino Deo ſuo, & Davidi regi ſuo quem ſuſcitabo eis. 10 Tu itaque ne timeto ſerve mi Jacob, dicit Dominus, néve conſternator O Iſrael; quoniam ecce liberaturus te ſum è *loco* remoto, & ſemen tuum è terra captivitatis ſuæ; & habitabit Jacob ſecurus, quieſcet, ac tranquillus erit, nec erit illi *quiſquam* infenſus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

61 62 * وقال ارميا لصارا * اذا اتيت الي بابل وتعاين وتقرا جميع هذه الاقوال وتقول * يا رب يا رب انت
تكلمت على هذا الموضع لتستاصله * والا يكون فيه سكان من الانسان الي البهيمة * لانه يكون
فسادا الي الدهر * ويكون اذا فرغت تقرا هذا السفر * فتربط فيه حجرا وتلقيه في وسط الفرات * 63
وتقول * هكذا تسقط بابل ولا تقوم * تطفى من وجه الكلدانيين مما انا اجلب عليهم * 64

Deinde dixit Jeremia Saraæ, Quum perveneris Babelem, tum inſpicies legeſque omnes hos ſermones, ac dices; 61 *O Domine, O Domine, tu locutus es contra locum iſtum, te penitùs everſurum eum, neque manſuros in eo habitatores ullos ex humano aut belluino genere, quippe qui futurus eſt deſtructioni perpetuæ.* 62 *Et ubi abſolveris legere libellum iſtum, alligabis ei lapidem, projicieſque in medium Euphratis,* 63 *Ac dices; Hoc modo ruat Babel, neque reſurgat: obruatur ab aſpectu Chaldæorum ob ea quæ ego inducturus ſum adverſùs eos.* 64

* الفصل التاسع والعشرون *   * الاصحاح التاسع عشر *

1 2 * القول على القبايل الغرباء * هكذا يقول الرب * ها مياه تصعد من الجربياء وتصير فايضة
الي الوادي * وتغرق الارض بكمالها المدينة والسكان فيها * ويصرخ الناس * ويهلك جميع سكان
الارض * من صوت وثبته * من اسلحة قدميه * ومن زلزلة مراكبه وصوت بكراته * لم ترجع 3
الاباء على بنيهم * من انحلال ايديهم في اليوم المقبل * لاهلك جميع القبايل الغريبة * وافني 4
صور وصيدا وجميع بقايا معونتهما * لان الرب يستاصل بقايا الجزاير * القرع ياتي على غزة * 5
طرحت عسقلان والبقايا في اكيم * الي من تنجذبين * سيف الرب تقطع * الي متي لا تستقر * 6
عد الي غمدك واسترح وارتفع * كيف يستقر والرب امر على عسقلان وعلي سواحل البحرية 7
لينهض على البقايا *

* في ادوم *

7 * هكذا يقول الرب * ليس في تيمان حكمة موجودة بعد * هلك الراي من الحكماء * فرت حكمتهم *
خدع موضعهم * عمقوا لهم جلسة السكان في دادان * لانه صنع عثرات جلبت عليه في 8
الزمان لما تطلعت عليها * لان القطافون اتوا الذين لا يتركون لك بقية * مثل السراق في 9
الليل يصعون عليهم * لاني انا جذبت خفاياهم لا يستطيعون ان يختفوا * هلكوا بيد اخيهم 10
وجاري * ولا يتركون يتيمك كي يعيش * وانا اعيش * والارامل على يتوكلن * 11

C A P. X X I X.

Textus decimus nonus.

SErmo contra nationes exteras. 1 *Sic dicit Dominus, En aquæ aſcendent ex Aquilone, & inundabunt ad torrentem uſque, operientque totam planè terram, urbem & habitantes in ea: & exclamabunt homines, & peribunt omnes habitatores terræ,* 2 *A fragore irruptionis ejus, ab armis pedum ejus, & à terræmotu curruum ejus, & ſtrepitu rotarum ejus: non convertentur patres ad filios ſuos, præ remiſſione manuum ſuarum in die venturo.* 3 *Equidem perdam omnes nationes exteras, & conſumam Tyrum ac Sydonem, omneſque reliquias ſubſidii earum: nam Dominus extirpaturus eſt reliquias Inſularum.* 4 *Porrigo obveniet Gazæ, proſternetur Aſcalon, & reliquiæ* quæ ſuperſunt in *Acchim: ad quem te contrahes? Gladie Domini amputabiſne?* 5 *quouſque non requieſces? revertere in vaginam tuam, quieſce, & abſcede.* 6 *Quomodo quieſceret, quum Dominus præceperit ei ut inſurgeret in reliquias Aſcalonis & orarum maritimarum?* 7

Contra Edom.

Sic dicit Dominus, Non extat ampliùs in Themane ſapientia, defecit conſilium à ſapientibus, friguit ſapientia eorum: 7 *Exciſus eſt locus eorum, profundam ſibi fecerunt ſeſſionē habitantes in Dadane. Quia dura perpetravit, adducam ſuper eam calamitatem* quo tempore *inviſam eam.* 8 *Nam vindemiatores venient, qui nullas relinquent tibi reliquias: ut fur in nocte obſidebunt eos:* 9 *Quoniam ego ſubtraxi abdita eorum, non poterunt abdere ſeſe: peribunt per manum fratris ſui ac vicini mei:* 10 *Et non permittent pupillo tuo ut vivat: ſed ego vivificabo, & viduæ mihi confident.* 11

ירמיה: לא

faciam nam:te *ſalvandum ad* ,DOMINUS ait ,ego tecum Quoniam
11 כִּי־אִתְּךָ אֲנִי נְאֻם־יְהוָה לְהוֹשִׁיעֶךָ כִּי אֶעֱשֶׂה
veruntamē : *illuc* te diſperſi *quò* ,gentibus cunctis in conſummationē
כָּלָה בְּכָל־הַגּוֹיִם אֲשֶׁר הֲפִצוֹתִיךָ שָׁם אַךְ
mundando & , judicio in te caſtigabo *&*,cõſummationē faciam non te
אֹתְךָ לֹא־אֶעֱשֶׂה כָלָה וְיִסַּרְתִּיךָ לַמִּשְׁפָּט וְנַקֵּה
,tua contritio *Deſperata* : Dominus dixit ſic Nam .te *mundabo non*
12 לֹא אֲנַקֶּךָּ׃ כִּי כֹה אָמַר יְהוָה אָנוּשׁ לְשִׁבְרֵךְ
curationis medicinæ *:medelam* ad tuū judiciū *judicans* Non .tua plaga *dolorifica*
13 נַחְלָה מַכָּתֵךְ׃ אֵין־דָּן דִּינֵךְ לְמָזוֹר רְפֻאוֹת תְּעָלָה
: quærent non te ,tui ſunt obliti tui amatores Omnes .tibi non
14 אֵין לָךְ׃ כָּל־מְאַהֲבַיִךְ שְׁכֵחוּךְ אוֹתָךְ לֹא יִדְרֹשׁוּ
multitudinem propter :crudeli caſtigatione te percuſſi inimici plaga quia
כִּי מַכַּת אוֹיֵב הִכִּיתִיךְ מוּסַר אַכְזָרִי עַל רֹב
,tua cõtritione ſuper *clamabis* Quid .tua peccata *invaluerunt* tuæ iniquitatis
15 עֲוֺנֵךְ עָצְמוּ חַטֹּאתָיִךְ׃ מַה־תִּזְעַק עַל־שִׁבְרֵךְ
invaluerunt tuæ iniquitatis multitudinē propter ? tuū dolorem *deſperatum*
אָנוּשׁ מַכְאֹבֵךְ עַל רֹב עֲוֺנֵךְ עָצְמוּ
,te devorantes omnes Propterea .tibi hæc feci ,tua peccata
16 חַטֹּאתַיִךְ עָשִׂיתִי אֵלֶּה לָךְ׃ לָכֵן כָּל־אֹכְלַיִךְ
erūt &:ibunt captivitatē in ipſi univerſi tui hoſtes univerſi &;devorabūtur
יֵאָכֵלוּ וְכָל־צָרַיִךְ כֻּלָּם בַּשְּׁבִי יֵלְכוּ וְהָיוּ
.prædam in dabo te prædantes cunctos & ,direptionem in te diripientes
שֹׁאסַיִךְ לִמְשִׁסָּה וְכָל־בֹּזְזַיִךְ אֶתֵּן לָבַז׃
: Dominus dixit,te ſanabo tuis plagis à &,*tibi emplaſtrum faciā aſcendere* Quia
17 כִּי אַעֲלֶה אֲרֻכָה לָךְ וּמִמַּכּוֹתַיִךְ אֶרְפָּאֵךְ נְאֻם־יְהוָה
dixit Sic .*eam non quærens ipſa* Sijon ,te vocaverunt *expulſam* quia
18 כִּי נִדָּחָה קָרְאוּ לָךְ צִיּוֹן הִיא דֹּרֵשׁ אֵין לָהּ׃ כֹּה אָמַר
ej⁹ habitaculorū &,Jahacob *tentoriorū captivitatē convertens* ego Ecce:Dominus
יְהוָה הִנְנִי־שָׁב שְׁבוּת אָהֳלֵי יַעֲקוֹב וּמִשְׁכְּנֹתָיו
ſuper palatium & ,ejus cumulum ſuper civitas ædificabitur & : miſerebor
אֲרַחֵם וְנִבְנְתָה עִיר עַל־תִּלָּהּ וְאַרְמוֹן עַל־
: *ludentium* vox & ,*confeſſio* eis ex egredietur Et .*ſedebit ejus normam*
19 מִשְׁפָּטוֹ יֵשֵׁב׃ וְיָצָא מֵהֶם תּוֹדָה וְקוֹל מְשַׂחֲקִים
non & ,eos honorabo & ; minuentur non & ,eos faciam multiplicare &
וְהִרְבִּתִים וְלֹא יִמְעָטוּ וְהִכְבַּדְתִּים וְלֹא
me coram ejus cœtus & ,*quondam* ſicut ejus filii erunt Et .*evileſcent*
20 יִצְעָרוּ׃ וְהָיוּ בָנָיו כְּקֶדֶם וַעֲדָתוֹ לְפָנַי
,ejus *præſtans* erit Et .*eum opprimentes* omnes *ſuper* viſitabo & : diſponetur
21 תִּכּוֹן וּפָקַדְתִּי עַל כָּל־לֹחֲצָיו׃ וְהָיָה אַדִּירוֹ
,eū appropinquare faciā & ,egredietur ej⁹ *interiori* de ej⁹ dominator & ,eo ex
מִמֶּנּוּ וּמֹשְׁלוֹ מִקִּרְבּוֹ יֵצֵא וְהִקְרַבְתִּיו
accedendum ad ſuum cor *edulcavit hic* iſte quis quia : me ad accedet &
וְנִגַּשׁ אֵלָי כִּי מִי הוּא־זֶה עָרַב אֶת־לִבּוֹ לָגֶשֶׁת
ero ego &,populum in mihi eritis Et ? Dominus dixit ,*me ad*
22 אֵלַי נְאֻם־יְהוָה׃ וִהְיִיתֶם לִי לְעָם וְאָנֹכִי אֶהְיֶה
turbo ;eſt egreſſus furore Domini turbo Ecce .Deum in vobis
23 לָכֶם לֵאלֹהִים׃ הִנֵּה סַעֲרַת יְהוָה חֵמָה יָצְאָה סַעַר
ira revertetur Non .*reſidebit* impiorum caput ſuper ; *imminens*
24 מִתְגּוֹרֵר עַל רֹאשׁ רְשָׁעִים יָחוּל׃ לֹא יָשׁוּב חֲרוֹן
: ſui cordis *molimina ipſum ſtatuere ad uſque &*,*eum facere ad uſque*,Domini *naſi*
אַף־יְהוָה עַד־עֲשֹׂתוֹ וְעַד־הֲקִימוֹ מְזִמּוֹת לִבּוֹ
.*eo in* intelligetis dierum noviſſimo in
בְּאַחֲרִית הַיָּמִים תִּתְבּוֹנְנוּ בָהּ׃

CAP. XXXI. לא

familiis univerſis Deum in Ero ,Dominus dixit ,illo tempore In
1 בָּעֵת הַהִיא נְאֻם־יְהוָה אֶהְיֶה לֵאלֹהִים לְכֹל מִשְׁפְּחוֹת
.populum in mihi erunt ipſi & ,Iſrael
יִשְׂרָאֵל וְהֵמָּה יִהְיוּ־לִי לְעָם׃

Verſio VULG. LAT.

11 Quoniam tecum ego ſum, ait
Dominus, ut ſalvem te: faciam
enim conſummationē in cunctis
gentibus, in quibus diſperſi
te: te autem non faciam in conſummationem:
ſed caſtigabo te
in judicio, ut non videaris tibi
12 innoxius. Quia hæc dicit Dominus;
Inſanabilis fractura tua,
13 peſſima plaga tua. Non eſt qui
judicet judicium tuum ad alligandum:
curationum utilitas non
14 eſt tibi. Omnes amatores tui
obliti ſunt tuî, téque non quærent:
plagâ enim inimici percuſſi
te caſtigatione crudeli:
propter multitudinem iniquitatis
tuæ dura facta ſunt pecca-
15 ta tua. Quid clamas ſuper contritione
tua? inſanabilis eſt dolor
tuus: propter multitudinem
iniquitatis tuæ, & propter dura
16 peccata tua, feci hæc tibi. Propterea
omnes, qui comedunt te,
devorabuntur: & univerſi hoſtes
tui in captivitatē ducētur: & qui
te vaſtant, vaſtabuntur, cunctóſq;
prædatores tuos dabo in prædā.
17 Obducam enim cicatricem tibi,
& à vulneribus tuis ſanabo te,
dicit Dominus. Quia Ejectam
vocaverunt te, Sion: Hæc eſt,
quæ non habebat requirentem.
18 Hæc dicit Dominus; Ecce ego
convertam converſionem tabernaculorum
Jacob, & tectis ejus
miſerebor, & ædificabitur civitas
in excelſo ſuo, & templum
juxta ordinem ſuum fundabitur.
19 Et egredietur de eis laus, vóxq;
ludentium: & multiplicabo eos,
& non minuentur: & glorificabo
20 eos, & non attenuabuntur. Et
erunt filii ejus ſicut à principio,
& cœtus ejus coram me permanebit:
& viſitabo adverſùm
21 omnes qui tribulant eum. Et erit
dux ejus ex eo: & princeps de
medio ejus producetur: & applicabo
eum, & accedet ad me.
Quis enim iſte eſt, qui applicet
cor ſuum ut appropinquet mihi,
22 ait Dñs? Et eritis mihi in populū,
23 & ego ero vobis in Deum. Ecce
turbo Dñi, furor egrediens, pro-
24 cella ruens, in capite impiorum
conquieſcet. Non avertet iram
indignationis Dñs, donec faciat
& compleat cogitationem cordis
ſui: in noviſſimo dierum intelligetis
ea.

CAP. XXXI.

1 IN tempore illo, dicit Domin⁹: Ero Deus univerſis cognationibus Iſrael, & ipſi erunt mihi in populum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

12 Ὅτι τάδε (υ) εἶπε κύριος, Οἷς οὐκ ἦν νόμος
πιεῖν τὸ ποτήριον, ἔπιον· καὶ σὺ (φ) ἀ-
13 θωωμένη οὐ μὴ ἀθωωθῇς, Ὅτι κατ᾽ ἐμαυτοῦ
ὤμοσα, λέγει κύριος, ὅτι εἰς ἄβατον, καὶ
εἰς ὀνειδισμὸν, καὶ εἰς (χ) κατάρασιν ἔσῃ ἐν
μέσῳ αὐτῆς, καὶ πᾶσαι αἱ πόλεις αὐτῆς ἔ-
14 σονται ἔρημοι (ψ) εἰς αἰῶνα. Ἀκοὴν ἤκουσα
παρὰ κυρίου, καὶ ἀγγέλους εἰς ἔθνη ἀπέστειλεν·
Συνάχθητε, καὶ παραγένεσθε εἰς αὐ-
15 τὴν, ἀνάστητε εἰς πόλεμον. (ω) Μικρὸν ἔδωκά
σε ἐν ἔθνεσιν, (α) εὐκαταφρόνητον ἐν
16 ἀνθρώποις. Ἡ παιγνία σου ἐνεχείρησέ
σοι, ἰταμία καρδίας σου κατέλυσε τρυμαλιὰς
πετρῶν, συνέλαβεν ἰσχὺν βουνοῦ ὑψηλοῦ.
(β) ὅτι ὕψωσεν ὥσπερ ἀετὸς (γ) νοσσιὰν
17 αὐτοῦ, ἐκεῖθεν καθελῶ σε. Καὶ ἔσται ἡ Ἰδουμαία
εἰς ἄβατον, πᾶς ὁ παραπορευόμενος
18 ἐπ᾽ αὐτὴν συριεῖ. Ὥσπερ κατεστράφη Σόδομα
καὶ Γόμορρα, καὶ αἱ πάροικοι αὐτῆς, εἶπε
κύριος παντοκράτωρ, οὐ μὴ (δ) καθίσῃ ἐκεῖ
ἄνθρωπος, καὶ οὐ μὴ (ε) κατοικήσῃ ἐκεῖ υἱὸς
19 ἀνθρώπου. Ἰδοὺ ὥσπερ λέων ἀναβήσεται
ἐκ μέσου τοῦ Ἰορδάνου (ζ) εἰς τόπον Αἰθὰμ,
ὅτι ταχὺ ἐκδιώξω αὐτοὺς ἀπ᾽ αὐτῆς, καὶ τοὺς
νεανίσκους ἐπ᾽ αὐτὴν (η) ἐπιστήσατε· ὅτι
τίς ὥσπερ ἐγώ; καὶ τίς ἀντιστήσεταί μοι; καὶ
τίς οὗτος ποιμὴν, ὃς στήσεται κατὰ πρόσωπόν
20 μου; Διατοῦτο ἀκούσατε βουλὴν κυρίου,
ἣν ἐβουλεύσατο ἐπὶ τὴν Ἰδουμαίαν, καὶ λογισμὸν
αὐτοῦ ὃν ἐλογίσατο ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας
Θαιμὰν, Ἐὰν μὴ (θ) συμψηθῶσι τὰ
ἐλάχιστα τῶν προβάτων, ἐὰν μὴ ἀβατωθῇ
21 ἐπ᾽ (ι) αὐτοὺς κατάλυσις αὐτῶν. Ὅτι ἀπὸ
φωνῆς πτώσεως αὐτῶν (κ) ἐφοβήθη ἡ γῆ,
22 (λ) καὶ κραυγὴ θαλάσσης οὐκ ἠκούσθη. Ἰδοὺ
ὥσπερ ἀετὸς ὄψεται, καὶ ἐκτενεῖ τὰς πτέρυγας
ἐπ᾽ ὀχυρώματα αὐτῆς. καὶ ἔσται ἡ καρδία
τῶν ἰσχυρῶν τῆς Ἰδουμαίας ἐν τῇ ἡμέρᾳ
ἐκείνῃ, ὡς καρδία γυναικὸς ὠδινούσης.

Quia hæc dicit Dominus; (g) 12
Quibus non erat lex bibere calicem;
biberunt: & tu abſoluta
non (h) abſolveris: Quoniam 13
per meipſum juravi, dicit Dominus,
quoniam in invium, &
in opprobrium, & in maledictionem
eris in medio ejus: &
omnes civitates ejus erunt deſertæ
in ſeculum. Auditum au- 14
divi à Domino; & (i) angelos
ad gentes miſit; Congregamini,
& advenite ad eam, exurgite
in bellum. Parvulum dedi 15
te in gentibus, contemptibilem in
hominibus. Luſio tua molita eſt 16
tibi, impudentia cordis tui: habitavit
cavernas petrarum, apprehendit
fortitudinem collis excelſi.
Quoniam (k) exaltavit,
quaſi aquila, nidum ſuum, indè
detraham te. Et erit Idumæa in 17
invium: omnis præteriens ſuper
eam (l) ſibilabit. Sicut ſubver- 18
ſa eſt Sodoma, & Gomorra, &
vicinæ ejus, dixit Dominus omnipotens;
non ſedebit ibi homo, &
non habitabit ibi filius hominis.
Ecce quaſi leo aſcendet de medio 19
Jordanis, in locum Æbam: quia
citò expellam eos ab ea: & juvenes
ſuper eam ſtate. Nam quis,
ſicut ego? & quis reſiſtet mihi?
Et quis iſte paſtor, qui ſtabit ante
faciem meam? Propterea audite 20
conſilium Domini, quod deliberavit
ſuper Idumæam, & cogitationem
ejus, quam cogitavit ſuper
habitantes Thæman, Si non
(m) abripiantur minima ovium,
ſi non invia fiet ſuper eos habitatio
ipſorum: Quoniam à vo- 21
ce ruinæ eorum timuit terra, &
clamor maris (n) non eſt auditus.
Ecce, ſicut aquila videbit, 22
& extendet alas ſuper munitiones
ejus. Et erit cor fortium Idumææ
in die illa, quaſi cor mulieris
parturientis.

MS. A. (υ) λέγει (φ) ἀθωουμένη οὐ μὴ ἀθωωθῇς, ὅτι πίνων πίεσαι. Καὶ (χ) κατάραν (ψ) εἰς τὸν αἰῶνα. (ω) Ἰδοὺ μικρὸν δέδωκα (α) καὶ εὐκαταφρόνητον (β) ὅτι ἐὰν ὑψώσῃς (γ) νοσσιάν σου, (δ) κατοικήσῃ (ε) καθείσῃ (ζ) εἰς τὸν τόπον Ἠθὰμ, (η) ἐπιστήσεται· (θ) συμψηφισθῶσιν (ι) αὐτῇ (κ) ἐσείσθη (λ) καὶ κραυγή σου ἐν θαλάσσῃ ἠκούσθη.

Cap. 49. Vulg. Lat.

ΚΕΦ. λʹ.

1 Τοῖς υἱοῖς Ἀμμὼν οὕτως εἶπε
κύριος, Μὴ υἱοὶ οὐκ εἰσὶν ἐν Ἰσραὴλ, ἢ παραληψόμενος
οὐκ ἔστιν (α) αὐτοῖς; διατί
παρέλαβε Μελχὸλ τὴν Γαλαάδ, καὶ ὁ λαὸς
αὐτῶν ἐν πόλεσιν αὐτῶν (β) ἐνοικήσει;
2 Διατοῦτο ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, φησὶ κύριος,
καὶ ἀκουτιῶ ἐπὶ Ῥαββὰθ θόρυβον (γ) πολέμων,
καὶ ἔσονται εἰς ἄβατον καὶ εἰς ἀπώλειαν,
καὶ (δ) βωμοὶ αὐτῆς ἐν πυρὶ κατακαυθήσονται,
καὶ παραλήψεται Ἰσραὴλ τὴν
ἀρχὴν αὐτοῦ.

CAP. XXX.

Filius (a) Ammon ſic dixit 1
Dominus; Nunquid filii non
ſunt in Iſrael? vel, (b) qui accipiat
hæreditatē, non eſt eis?
Cur hæreditate accepit (c) Melchol
ipſam Galaad, & populus
eorum in civitatibus eorum inhabitabit?
Propterea ecce dies 2
veniunt, ait Dominus, & auditum
faciam ſuper (d) Rabbath
tumultum bellorum: & erunt
in invium, & in perditionem: &
aræ ejus in igne comburentur, &
aſſumet Iſrael principatum ſuū.

MS. A. (α) ἐν αὐτοῖς; διότι (β) ἐνοικεῖ; (γ) πολέμου, (δ) οἱ βωμοὶ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 אֲרֵי בְּסַעֲדָךְ מֵימְרִי אֲמַר יְיָ לְמִפְרְקָךְ אֲרֵי אַעֲבֵיד גְּמִירָא בְּכָל עַמְמַיָּא דְּבַדַּרְתָּךְ לְתַמָּן
בְּרַם עִמָּךְ לָא אַעֲבֵד גְּמִירָא וְאַיְתֵי עֲלָךְ יִסּוּרִין לְאַלָּפוּתָךְ בְּרַם בְּדִין חֲסוּךְ וְשֵׁיצָאָה לָא
12 אֲשֵׁיצְנָךְ׃ אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ תַּקִּיף תַּבְרִיךְ מַמְרְעָא מַחְתִיךְ׃ לֵית דְּדָאֵין דִּינִיךְ לְרַחֲמָא
13 עֲלִיךְ אַסּוּ לָא סְלֵיקַת לִיךְ׃ כָּל רַחֲמַיִךְ אַנְשְׁיוּךְ מִשְׁאַל בִּשְׁלָמִךְ לָא תְבַעוּ אֲרֵי מַחַת 14
15 סָנְאָה אַלְקְתִיךְ יִסּוּר אַכְזְרָאִין עַל דִּסְגִיאוּ חוֹבַיִךְ תְּקִיפוּ חֲטָאַיִךְ׃ מָה אַתְּ מְצַוְחָא עַל
16 תַּבְרִיךְ מַמְרְעָא מַחְתִיךְ עַל דִּסְגִיאוּ חוֹבַיִךְ תְּקִיפוּ חֲטָאַיִךְ עֲבַדִית אִלֵּין לִיךְ׃ בְּכֵן כָּל
אָנְסַיִךְ יִתְאַנְסוּן וְכָל סָנְאַיִךְ כּוּלְהוֹן בְּשִׁבְיָא יְהָכוּן וִיהוֹן עָדַיִךְ לַעֲדִי וְכָל בָּזְזַיִךְ אֶמְסַר
17 לְבִזָּא׃ אֲרֵי אַיְתֵי אַסּוּ לִיךְ וּמִמַּחֲתַיִךְ אַסֵּינִיךְ אֲמַר יְיָ אֲרֵי מְטַלְטַלְתָּא קְרוֹ לִיךְ צִיּוֹן הִיא
18 תָּבַע לֵית לַהּ׃ כִּדְנָן אֲמַר יְיָ הָאֲנָא מְתֵיב גָּלוּת אַרְעֵיהּ דְּיַעֲקֹב וְעַל קִרְוָהִי אֲרַחֵם וְתִתְבְּנֵי
19 קַרְתָּא יְרוּשְׁלֶם בְּאַתְרַהּ וּבֵית מַקְדְּשָׁא כִּדְחָזֵי לֵיהּ יִשְׁתַּכְלַל׃ וְיִסְגוּן בְּהוֹן מַעֲלֵי
20 תוֹדְתָא וְקָל דִּמְשַׁבְּחִין וְאַסְגִּנוּן וְלָא יִזְעֲרוּן וְאַתְקֵיפִנּוּן וְלָא יְהוֹן חַלָּשִׁין׃ וְיִסְגוּן בְּנֵיהוֹן
21 כִּדְמִלְקַדְמִין וּכְנִשְׁתְּהוֹן קֳדָמַי תִּתְקַן וְאַסְעַר בִּישְׁתָּא עַל כָּל דְּחָקֵיהוֹן׃ וְיִתְרַבָּא
מַלְכֵּיהוֹן מִנְּהוֹן וּמְשִׁיחֵיהוֹן מִבֵּינֵיהוֹן יִתְגְּלֵי וְאֶקָרְבִנּוּן וְיִתְנְהוֹן לְפָלְחָנִי אֲרֵי מַן הוּא
22 דֵין דְּאִתְרְעֵי לִבֵּיהּ לְאִתְקָרָבָא לְפָלְחָנִי אֲמַר יְיָ׃ וּתְהוֹן קֳדָמַי לְעַם וַאֲנָא אֶהֱוֵי לְכוֹן
23 לֶאֱלָהּ׃ הָא מוֹפִיתָא מִן קֳדָם יְיָ בִּרְגַז נְפַקָא וְעַלְעוֹל מִתְכְּנַשׁ עַל רֵישׁ רַשִׁיעִין יְחוּל׃
24 לָא יְתוּב תְּקוֹף רוּגְזָא דַּיְיָ עַד דְּיַעְבֵּד וְעַד דִּיקַיֵּם מַחְשְׁבַת רְעוּתֵיהּ בְּסוֹף יוֹמַיָּא
תִּסְתַּכְּלוּן בַּהּ׃

לא

1 בְּעִדָּנָא הַהִיא אֲמַר יְיָ אֶהֱוֵי לֶאֱלָהּ לְכָל זַרְעִית יִשְׂרָאֵל וְאִנּוּן יְהוֹן קֳדָמַי לְעַם׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quia in adjutorium tuum eſt Verbum meum, dicit Domin⁹, ut ſalvet te: faci- 11
am enim conſummationem in omnib⁹ populis ad quos diſperſi te. Veruntamen
tecum non faciam conſummationem; ſed adducam ſuper te ægrotationes,
ut doceam te, *attamen* in judicio miſericordiæ, & perdendo non te perdam.
Quia hæc dicit Domin⁹: Fortis eſt confractio tua, gravis eſt plaga tua. 12
Non eſt qui judicet cauſam tuam ut miſereatur tui: medicina non eſt exorta 13
tibi. Omnes amici tui obliti ſunt tui; rogare de pace tua non quæſierunt. Quia 14
plaga inimici percuſſi te, caſtigatione crudelium; propterea quòd multiplicata
ſunt ſcelera tua, & invaluerunt peccata tua. Quid clamas ob confractio- 15
nem tuam? quòd gravis ſit plaga tua? pro eo quòd multiplicata ſunt ſcelera
tua, & invaluerunt peccata tua, feci hæc tibi. Propterea omnes qui te vi op- 16
primunt, vi opprimentur; & omnes inimici tui in captivitatem ibunt; et erunt
hi qui te deprædati ſunt, in prædam; & omnes diripientes te tradam in direptionem.
Quia adducam ſanitatem tibi, & à plagis tuis ſanabo te, dicit Domi- 17
nus. Quia vagam vocaverunt te Sion, ipſa eſt quæ non habebat requirentem.
Hæc dicit Dñs: Ecce ego reducam tranſmigrationem terræ Jacob, et civitatum 18
ejus miſerebor. Et ædificabitur civitas Jeruſalem in loco ſuo, & domus ſanctuarii,
ſicut decet eam, fundabitur. Et multiplicabuntur in eis offerentes 19
confeſſionem, & vox cantantium: & multiplicabo eos, & non minuentur, &
confortabo eos, & non erunt infirmi. Et *multiplicabuntur* filii eorum ſicut à 20
principio, & cœtus eorum coram me dirigetur. Et viſitabo malum adverſum
omnes qui tribulant eos. Et inungetur rex eorum ex illis, & Chriſtus eorum de 21
medio eorum revelabitur; et appropinquare faciam eos ut diſcant cultum meum.
Quoniam quis eſt iſte qui vult *corde ſuo* accedere ad cultum meum, dicit
Dominus? Et eritis coram me in populum, & ego ero vobis in Deum. Ecce in- 22
crepatio à facie Dñi egrediens in ira, & procella collecta ſuper caput impio- 23
rum reſidebit. Non avertetur ira furoris Domini, donec faciat & donec com- 24
pleat cogitationes voluntatis ſuæ. In fine dierum intelligetis iſtud.

CAP. XXXI.

IN tempore illo, dicit Dominus, ero in Deum omnibus cognationibus Iſra- 1
el, & ipſi erunt coram me in populum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܢܬ ܠܐ ܬܕܚܠ ܥܒܕܝ ܝܥܩܘܒ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܥܡܟ ܐܢܐ ܠܡܦܪܩܘܟ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. 11
ܡܛܠ ܕܐܥܒܕ ܓܡܝܪܘܬܐ ܒܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܒܕܪܬܟ ܠܘܬܗܘܢ. ܘܒܟ ܠܐ ܐܥܒܕ ܓܡܝܪܘܬܐ.
ܐܪܕܝܟ ܒܕܝܢܐ. ܘܡܙܟܝܘ ܠܐ ܐܙܟܝܟ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܟܪܝܗܘ ܬܒܪܟܝ ܘܚܫܝܢܐ ܗܘ 12
ܡܚܘܬܟܝ. * ܘܠܝܬ ܕܕܐܢ ܕܝܢܟܝ. ܕܢܚܒܫ ܘܢܐܣܝܟܝ. * ܟܠܗܘܢ ܪܚܡܝܟܝ ܛܥܐܘܟܝ 13
ܘܢܦܫܟܝ ܒܥܘ. ܡܛܠ ܕܡܚܘܬܐ ܕܒܥܠܕܒܒܐ ܡܚܝܬܟܝ. ܘܡܪܕܘܬܐ ܐܟܙܪܝܬܐ. ܡܛܠ 14
ܕܣܓܝܘ ܚܛܗܝܟܝ ܘܥܫܢܘ ܥܘܠܝܟܝ ܕܠܐ ܬܬܘܒܝܢ. * ܡܢܐ ܡܙܥܩܬܝ ܥܠ ܬܒܪܟܝ. 15
ܟܪܝܗܘ ܟܐܒܟܝ. ܥܠ ܣܓܝܐܘܬ ܚܛܗܝܟܝ ܘܥܫܢܘ ܥܘܠܝܟܝ. ܥܒܕܬ ܠܟܝ ܗܠܝܢ.
* ܡܛܠ ܗܢܐ ܟܠ ܐܟܘܠܝܟܝ ܢܬܐܟܠܘܢ. ܘܟܠܗܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝܟܝ ܒܫܒܝܐ ܢܐܙܠܘܢ. 16
ܘܢܗܘܘܢ ܕܫܝܦܝܟܝ ܠܡܕܫܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܒܙܘܙܝܟܝ ܐܬܠ ܠܒܙܬܐ. * ܡܛܠ ܕܐܣܩ ܠܟܝ 17
ܐܣܝܘܬܐ. ܘܡܢ ܡܚܘܬܟܝ ܐܐܣܝܟܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܕܚܝܩܬܐ ܩܪܘܟܝ. ܨܗܝܘܢ ܗܝ
ܕܬܒܥܐ ܠܝܬ ܠܗ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܡܗܦܟ ܐܢܐ ܫܒܝܬܐ ܕܡܫܟܢܗ ܕܝܥܩܘܒ 18
ܘܡܦܢܐ ܐܢܐ ܠܗ ܐܝܟ ܕܗܘܐ ܡܢ ܩܕܝܡ. ܘܥܠ ܡܫܟܢܘܗܝ ܐܪܚܡ. ܘܬܬܒܢܐ ܡܕܝܢܬܐ ܥܠ ܬܠܗ.
ܘܗܝܟܠܐ ܟܕ ܦܐܐ ܢܬܬܩܢ. * ܘܢܦܩܘܢ ܡܢܗܘܢ ܬܘܕܝܬܐ. ܘܩܠܐ ܕܡܫܒܚܢܐ. ܘܐܣܓܐ ܐܢܘܢ. 19
ܘܠܐ ܢܙܥܪܘܢ. ܘܐܪܒܐ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܢܒܨܘܪܘܢ. * ܘܢܗܘܘܢ ܒܢܝܗܘܢ ܐܝܟ ܕܡܢ ܩܕܝܡ. ܘܟܢܘܫܬܗܘܢ. 20
ܩܕܡܝ ܬܬܩܢ. ܘܐܣܥܘܪ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܐܠܘܨܝܗܘܢ. * ܘܢܗܘܐ ܡܠܟܗܘܢ ܡܢܗܘܢ. 21
ܘܫܠܝܛܗܘܢ ܡܢ ܡܨܥܬܗܘܢ ܢܦܘܩ. ܘܐܩܪܒܝܘܗܝ ܘܢܬܩܪܒ ܠܘܬܝ. ܡܛܠ ܕܐܦܢܐ
ܠܒܗ ܠܘܬܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܬܗܘܘܢ ܠܝ ܠܥܡܐ. ܘܐܢܐ ܐܗܘܐ ܠܟܘܢ ܠܐܠܗܐ. * ܗܐ ܥܠܥܠܐ 22
23
ܕܡܪܝܐ ܒܚܡܬܐ ܢܦܩܐ. ܘܥܠܥܠܐ ܕܡܬܓܪܓܪܐ. ܥܠ ܪܝܫܐ ܕܪܫܝܥܐ ܬܬܩܝܡ. * ܠܐ ܢܗܦܘܟ 24
ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ. ܥܕܡܐ ܕܢܥܒܕ. ܘܥܕܡܐ ܕܢܩܝܡ ܬܪܥܝܬܐ ܕܠܒܗ. ܒܚܪܬܐ
ܕܝܘܡܬܐ ܬܬܒܝܢܘܢ ܒܗ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܟܐ * * ܒܙܒܢܐ ܗܘ ܐܡܪ 1
ܡܪܝܐ. ܐܗܘܐ ܠܐܠܗܐ ܠܟܠܗܘܢ ܫܪܒܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܗܢܘܢ ܢܗܘܘܢ ܠܝ ܠܥܡܐ.

Tu ergò ne timeto ſerve mi Jacob, inquit Dominus; quia tibi adſum ut liberem te, dicit Dñs. Nam exterminio utar in omnes gentes inter quas te diſperſi, in te autem non utar exterminio: caſtigabo te cum moderatione, at non ſinam te prorſus impunem. 11
Sic enim ait Dominus, Dolorifica eſt confractio tua, & vehemens percuſſio tua. 12
Non eſt qui cauſæ tuæ patrocinetur, qui te adjuvet, tibiq; medeatur. 13
Omnes amici tui oblivioni te tradiderunt, & animam tuam quærunt, quia plagâ inimici ꝑcuſſi te & pœnâ ſæviſſimâ; eò quòd multiplicatæ ſint culpæ tuæ, & gravia facta ſint ſcelera tua, ut non agas pœnitentiam. 14
Cur exclamas ob confractionem tuam? dolorificus eſt ſanè dolor tuus: ob multitudinem culparum tuarũ, & quia gravia facta ſunt crimina tua, hæc feci tibi. 15
Propterea omnes qui te devorant, devorabuntur; & omnes inimici tui in captivitatẽ abibunt: conculcantes te erunt conculcationi, & omnes diripientes te prædæ exponam. 16
Nam eliciam tibi medelam, & à plaga tua curabo te, dicit Domin⁹; etenim Depulſam te vocaverunt, Sionem illam cui non eſt vindex. 17
Ita dicit Dominus, Ecce reducturus ſum captivitatem tabernaculi Jacobi, & reſtituturus illud ut erat antea, & tabernaculorum ejus miſerebor: & reædificabitur civitas ſuper acervum ſuum, & templum decenter reparabitur. 18
Et prodibit ex eis gratiarum actio, & voces cantorum: & multiplicabo eos, ac non minuentur; magnificabo eos, & non decreſcent: 19
Erunt filii eorum quales antea, & eccleſia eorum in conſpectu meo perſiſtet: animadvertam in omnes oppreſſores eorum: 20
Et rex eorum ex ipſis erit, & princeps eorum è medio ipſorum prodibit: & admovebo eum, & accedet ad me; quia convertam cor ejus ad me, dicit Dominus: 21
Denique eritis mihi populus, & ego ero vobis Deus. 22
Ecce procella Domini cum furore proditura eſt, procella inquam, flammivoma: ſuper caput impiorum ſe ſiſtet. 23
Non avertetur æſtus furoris Domini, donec perficiat & donec eventu comprobet conſilium cordis ſui: in fine dierum animadvertetis illum. 24

CAP. XXXI.

Tempore illo, dicit Dñs, ero Deus omnibus familiis Iſraelis, & ipſi erunt mihi populus. 1

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

12 * لان هكذا يقول الرب * الذين لم يكن لهم ناموس ليشربوا يشربون كاسا * وانت ايها المزكية
13 لن تزكي * لاني اقسمت بذاتي يقول الرب انك تصيري لغير مسلك وللتعيير وللعنة في
14 وسطها * وجميع مدنهم يصيرون براري الى الابد * سمعت سماعا من الرب * وارسل ملايكة الى
15 16 الامم * اجتمعوا واحضروا اليها * قوموا للحرب * دفعتك صغيرا في الامم وحقيرا في الناس * لعبك
رسم لك * جفاوة قلبك * حلت اثقبة الصخور * اخذ قوة التل العالي * لانك رفعت عشك مثل
17 18 النسر * من هناك اهدمك * ويصير ادوم غير مسلوكة * وكل من يمر عليها يصفر * حسبت
مثل سدوم وعامورا وقرياتها قال الرب الضابط الكل * لا يجلس هناك انسان ولا ابن انسان *
19 * ها مثل اسد يصعد من وسط الاردن الى موضع اثام * لاني اطردهم سريعا منها * فاقيموا شبانها *
20 لان من مثلي انا * ومن ذا يقاومني * ومن هو الراعي الذي يقوم لوجهي * لاجل هذا
اسمعوا راي الرب الذي رواه على ادوم * وفكرته الذي تفكر بها على سكان تامان * ان لم
21 تطبخ حقيرات الغنم * ان كان لم يضع عليهم في القفر محلاتهم * لان من صوت سقطتهم تزلزلت
22 الارض * وسمعت صرختك في البحر * ها مثل نسر تعاين * وتمد يديها على حصونها ويكون قلب
اقوياء ادوم في ذلك اليوم مثل قلب امراة تطلق *

* الفصل الثلثون *
* في بني عمون *

1 * هكذا قال الرب * هل بنون ليس تكون في اسرايل * وليس فيهم وارث * لماذا اخذ ملكول
2 جلعاد * وشعبهم يسكن في المدن * لاجل هذا ها ايام تاتي قال الرب * واسمع على رباث قلق
الحرب * ويصيرون للقفر والهلاك * وهياكلهم تحرق بالنار * وياخذ اسرايل بداتيه *

Sic enim ait Dominus, Ii quos non erat legitimum bibere, biberunt calicem; ergò tu quæ teipſam juſtificas, nullo modo inſons eris. 12
Nam per meipſum juro dicit Dominus, te fore inviam, & opprobrio, atq; maledicto in medio ipſius; & omnes urbes eorum ſolitudines in æternum futuras. 13
Famam audivi à Domino, quin & angelos miſit ad gentes hiſce mandatis, *Congregamini, & convenite ad eam, ſtate ad pugnam.* 14
Dedi te minimam inter gentes, & abjectiſſimam inter homines: 15
Deriſio tua hoc *tibi deſtinavit, & duritia cordis tui: Inhabitavit foramina petrarum, occupavit fortitudinem collis ſublimis. Quoniam elevâſti nidum tuum ſicut aquila, inde te deſtruam:* 16
Et erit Idumæa impervia, & quicunque tranſierit prope illam, ſibilabit. 17
Obruetur ut Sodoma & Gomorrha & vicinæ iis urbes, *ait Dominus omnipotens; non habitabit illic homo neque filius hominis.* 18
Ecce ſicut leo aſcendet è medio Jordanis ad locum Etham; quia citò expellam eos ex ipſa: inſtituite ergò juvenes ejus. Nam quis mihi ſimilis eſt? quis mihi reſiſtat? aut quis eſt paſtor qui inſurgat adverſùm me? 19
Propterea audite conſilium Domini, quod contra Idumæã decrevit, et cogitationem quam cogitavit adverſùs incolas Themanis: mentiar *niſi coquendæ ſint tenuiſſimæ pecudum, niſi redigendæ ſint apud eos in ſolitudinem habitationes eorum.* 20
Nam præ ſonitu ruinæ eorum contremuit terra, & auditus eſt clamor tuus in mari. 21
Ecce velut aquila inſpiciet, & extendet manus ſuas in arces ejus; eritque cor fortiſſimorum Idumææ in die illa, ſicut cor mulieris dolores patientis. 22

Contra Ammonitas.

CAP. XXX.

Sic ait Dominus, An filii nulli ſunt in Iſraele, nulluſq; eſt in eis hæres? cur uſurpavit Melchol Galaadem, & populus eorum habitat in urbibus? 1
Iccirco ecce dies venient, ait Dominus, *quibus efficiam ut audiatur ſuper Rabbath belli tumultus, & redigantur in ſolitudinem & exitium, templaque eorum igne comburantur, & obtineat Iſrael principatum ſuum.* 2

ירמיה : לא

populus deſerto in gratiam Invenit : DOMINUS dixit Sic
2 כֹּה אָמַר יְהוָה מָצָא חֵן בַּמִּדְבָּר עַם
.Iſraelem ipſum *faciendum* quieſcere *ad eundo* , gladii *ſuperſtites*
שְׂרִידֵי חָרֶב הָלוֹךְ לְהַרְגִּיעוֹ יִשְׂרָאֵל׃
perpetua Charitate : Et .mihi apparuit DOMINUS *longinquo* A
3 מֵרָחוֹק יְהוָה נִרְאָה לִי וְאַהֲבַת עוֹלָם
,te ædificabo Adhuc .miſericordia te attraxi ideo , te dilexi
4 אֲהַבְתִּיךְ עַל־כֵּן מְשַׁכְתִּיךְ חָסֶד׃ עוֹד אֶבְנֵךְ
,tuis tympanis ornaberis Adhuc .Iſrael virgo ædificaberis &
וְנִבְנֵית בְּתוּלַת יִשְׂרָאֵל עוֹד תַּעְדִּי תֻפַּיִךְ
vineas plantabis Adhuc .ludentium choro in egredieris &
5 וְיָצָאת בִּמְחוֹל מְשַׂחֲקִים׃ עוֹד תִּטְּעִי כְרָמִים
.prophanabunt & , plantantes plantabunt : Someron montibus in
בְּהָרֵי שֹׁמְרוֹן נָטְעוּ נֹטְעִים וְחִלֵּלוּ׃
: Ephraim monte in cuſtodes *clamaverunt* dies eſt Quia
6 כִּי יֶשׁ־יוֹם קָרְאוּ נֹצְרִים בְּהַר אֶפְרָיִם
.noſtrum Deum DOMINUM ad Sijon aſcendamus & ,Surgite
קוּמוּ וְנַעֲלֶה צִיּוֹן אֶל־יְהוָה אֱלֹהֵינוּ׃
exultate & , lætitia Jahacob *in Ovate* : Dominus dixit ſic Nam
7 כִּי־כֹה אָמַר יְהוָה רָנּוּ לְיַעֲקֹב שִׂמְחָה וְצַהֲלוּ
Domine fac Salvum:dicite &,laudate ,facite auditum : gentium capite in
בְּרֹאשׁ הַגּוֹיִם הַשְׁמִיעוּ הַלְלוּ וְאִמְרוּ הוֹשַׁע יְהוָה
adducens ego Ecce .Iſrael reſiduum tuum populum
8 אֶת־עַמְּךָ אֵת שְׁאֵרִית יִשְׂרָאֵל׃ הִנְנִי מֵבִיא
: terræ lateribus de eos congregabo & , Aquilonis terra de eos
אוֹתָם מֵאֶרֶץ צָפוֹן וְקִבַּצְתִּים מִיַּרְכְּתֵי־אָרֶץ
magnus cœtus : ſimul pariens & prægnans , claudus & cæcus eos inter
בָּם עִוֵּר וּפִסֵּחַ הָרָה וְיֹלֶדֶת יַחְדָּו קָהָל גָּדוֹל
miſericordiis cum & , venient fletu Cum .huc revertentur
9 יָשׁוּבוּ הֵנָּה׃ בִּבְכִי יָבֹאוּ וּבְתַחֲנוּנִים
via in aquarum torrentes ad eos faciã ambulare : eos adducere faciam
אוֹבִילֵם אוֹלִיכֵם אֶל־נַחֲלֵי מַיִם בְּדֶרֶךְ
Ephraim & , patrem in Iſraeli ero quia *: ea in* impingent non ,recta
יָשָׁר לֹא יִכָּשְׁלוּ בָּהּ כִּי־הָיִיתִי לְיִשְׂרָאֵל לְאָב וְאֶפְרַיִם
, gentes DOMINI verbum Audite *.ipſe* meus primogenitus
10 בְּכֹרִי הוּא׃ שִׁמְעוּ דְבַר־יְהוָה גּוֹיִם
, Iſrael *Spargens* : dicite & *: longè à* inſulis in annuntiate &
וְהַגִּידוּ בָאִיִּים מִמֶּרְחָק וְאִמְרוּ מְזָרֵה יִשְׂרָאֵל
.ſuum gregem paſtor ſicut eum cuſtodiet & ; eum congregabit
יְקַבְּצֶנּוּ וּשְׁמָרוֹ כְּרֹעֶה עֶדְרוֹ׃
manu de eum redemit & , Jahacob Dominus redemit Quoniam
11 כִּי־פָדָה יְהוָה אֶת־יַעֲקֹב וּגְאָלוֹ מִיַּד
confluent & , Sijon excelſo in *ovabunt* & ; venient Et .eo *præ fortis*
12 חָזָק מִמֶּנּוּ׃ וּבָאוּ וְרִנְּנוּ בִמְרוֹם־צִיּוֹן וְנָהֲרוּ
ſuper & , *muſtum* ſuper & ,frumentum ſuper Domini bonitatem ad
אֶל־טוּב יְהוָה עַל־דָּגָן וְעַל־תִּירֹשׁ וְעַל־
eorum anima eritque , *bovis & pecoris* filios ſuper & ,*recens* oleum
יִצְהָר וְעַל־בְּנֵי־צֹאן וּבָקָר וְהָיְתָה נַפְשָׁם
.amplius *dolendum ad* addent non & , irriguus hortus quaſi
כְּגַן רָוֶה וְלֹא־יוֹסִיפוּ לְדַאֲבָה עוֹד׃
: ſimul ſenes & , juvenes & , choro in virgo lætabitur Tunc
13 אָז תִּשְׂמַח בְּתוּלָה בְּמָחוֹל וּבַחֻרִים וּזְקֵנִים יַחְדָּו
eos lætificabo &,eos conſolabor & ,gaudium in eorũ luctum convertam &
וְהָפַכְתִּי אֶבְלָם לְשָׂשׂוֹן וְנִחַמְתִּים וְשִׂמַּחְתִּים
.ſuó *mærore* à
מִיגוֹנָם׃

Verſio VULG. LAT.

2 Hæc dicit Dominus; Invenit
gratiam in deſerto populus, qui
remanſerat à gladio : vadet ad
3 requiem ſuam Iſrael. Longè
Domin⁹ apparuit mihi. Et in
charitate perpetua dilexi te: ideò
4 attraxi te, miſerans. Rurſúmque
ædificabo te, & ædificaberis, vir-
go Iſrael : adhuc ornaberis tym-
panis tuis, & egredieris in cho-
5 ro ludentium. Adhuc plantabis
vineas in montibus Samariæ :
plantabunt plantantes, & donec
tempus veniat , non vindemia-
6 bunt : Quia erit dies, in qua cla-
mabunt cuſtodes in monte E-
phraim ; Surgite, & aſcenda-
mus in Sion ad Dominum Deum
7 noſtrũ. Quia hæc dicit Domin⁹;
Exultate in lætitia Jacob, &
hinnite contra caput Gentium :
perſonate, & canite, & dicite ;
Salva, Domine, populum tuum,
8 reliquias Iſrael. Ecce ego ad-
ducam eos de terra Aquilonis,
& congregabo eos ab extremis
terræ : inter quos erunt cæcus
& claud⁹, prægnans & pariens
ſimul, cœtus magnus reverten-
9 tium huc. In fletu venient, &
in miſericordia reducam eos :
& adducam eos per torrentes
aquarum in via recta, & non
impingent in ea : quia factus
ſum Iſraeli pater, & Ephraim
10 primogenitus meus eſt. Audite
verbum Domini Gentes, & an-
nuntiate in inſulis quæ procul
ſunt, & dicite ; Qui diſperſit
Iſrael, congregabit eum : &
cuſtodiet eum ſicut paſtor gre-
11 gem ſuum. Redemit enim Do-
minus Jacob, & liberavit eum
12 de manu potentioris. Et ve-
nient, & laudabunt in monte
Sion : & confluent ad bona
Domini, ſuper frumento, &
vino, & oleo, & fœtu peco-
rum & armentorum : eritque
anima eorum quaſi hortus ir-
riguus, & ultrà non eſurient.
13 Tunc lætabitur virgo in choro,
juvenes & ſenes ſimul : & con-
vertam luctum eorum in gau-
dium, & conſolabor eos, &
lætificabo à dolore ſuo.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

3 Ἀλάλαξον Ἐσεβὼν, ὅτι (ε) ὤλετο Γαΐ·
κεκράξατε θυγατέρες Ῥαββὰθ, περιζώσασθε
σάκκοις (ζ) καὶ κόψασθε, ὅτι Μελχὸλ
βαδιεῖται ἐν ἀποικίᾳ, οἱ ἱερεῖς αὐτοῦ καὶ οἱ
4 ἄρχοντες αὐτοῦ ἅμα. (η) Τί ἀγαλλιᾶσθε ἐν
τοῖς πεδίοις Ἐνακείμ; (θ) θύγατερ ἰτα-
μίας, ἡ πεποιθυῖα (ι) ἐπὶ θησαυροῖς, ἡ λέ-
5 γουσα, Τίς εἰσελεύσεται ἐπ' ἐμέ; Ἰδοὺ ἐ-
γὼ φέρω φόβον ἐπὶ σὲ, εἶπε κύριος, ἀπὸ
πάσης τῆς (κ) περιοίκου σου, καὶ διασπαρή-
σεσθε ἕκαστος (λ) εἰς τὸ πρόσωπον αὐτοῦ, καὶ
οὐκ ἔστιν ὁ συνάγων.
28 Cap. 49. Vulg. Lat. ΤΗ͂ ΚΗΔΑ΄Ρ
ΤΗ͂ ΒΑΣΙΛΙ΄ΣΣΗ ΤΗ͂Σ ΑΥ΄ΛΗ͂Σ,
ἫΝ ἘΠΑ΄ΤΑΞΕ ΝΑΒΟΥΧΟΔΟΝΟ΄-
ΣΟΡ(ʺ) ΒΑΣΙΛΕΥ΄Σ ΒΑΒΥΛΩ͂ΝΟΣ, οὕ-
τως εἶπε κύριος, Ἀνάστητε, καὶ ἀνάβητε ἐπὶ
29 Κηδὰρ, καὶ πλήσατε τοὺς υἱοὺς Κεδέμ. Σκηνὰς
αὐτῶν, καὶ τὰ πρόβατα αὐτῶν λήψονται·
ἱμάτια αὐτῶν, καὶ πάντα τὰ σκεύη αὐτῶν, καὶ
καμήλους (μ) αὐτῶν λήψονται ἑαυτοῖς· καὶ
(ν) καλέσατε ἐπ' αὐτοὺς ἀπώλειαν κυκλό-
30 θεν. Φεύγετε, λίαν (ξ) ἐμβαθύνατε εἰς κάθισιν,
καθήμενοι ἐν τῇ αὐλῇ, ὅτι ἐβουλεύσατο ἐφ'
ὑμᾶς βασιλεὺς Βαβυλῶνος βουλὴν, καὶ (ο)
31 ἐλογίσατο λογισμόν. Ἀνάστηθι, καὶ ἀνάβη-
θι (π) ἐπ' ἔθνος εὐσταθοῦν, καθήμενον
εἰς ἀναψυχὴν, οἷς οὐκ εἰσὶ θύραι, (ρ) οὐ βά-
32 λανοι, οὐ μοχλοὶ, μόνοι καταλύουσι. Καὶ ἔ-
σονται (σ) κάμηλοι αὐτῶν εἰς προνομὴν,
καὶ πλῆθος κτηνῶν αὐτῶν εἰς ἀπώλειαν, καὶ
λικμήσω αὐτοὺς παντὶ πνεύματι (τ) κεκαρ-
μένοις πρὸ προσώπου αὐτῶν, ἐκ παντὸς
(υ) πέραν αὐτῶν οἴσω τὴν τροπὴν αὐτῶν, εἶ-
33 πε κύριος. Καὶ ἔσται ἡ αὐλὴ διατριβὴ στρου-
θῶν, καὶ ἄβατος ἕως αἰῶνος, οὐ μὴ καθ-
ίσῃ ἐκεῖ ἄνθρωπος, καὶ οὐ μὴ κατοικήσει ἐκεῖ
υἱὸς ἀνθρώπου.
23 Cap. 49. Vulg. Lat. ΤΗ͂ ΔΑΜΑ-
ΣΚΩ͂· Κατῃσχύνθη Ἡμὰθ, καὶ Ἀρφὰθ,
ὅτι ἤκουσαν ἀκοὴν πονηρὰν, ἐξέστησαν, (φ)
ἐθυμώθησαν, ἀναπαύσασθαι οὐ μὴ δύνωνται.
24 Ἐξελύθη Δαμασκὸς, ἀπεστράφη εἰς φυ-
25 γὴν, τρόμος ἐπελάβετο αὐτῆς. Πῶς οὐ-
χὶ (χ) ἐγκατέλιπεν πόλιν ἐμὴν, κώμην
26 ἠγάπησαν; Διατοῦτο πεσοῦνται νεανίσκοι
ἐν πλατείαις σου, καὶ πάντες οἱ ἄνδρες
οἱ πολεμισταί (ψ) σου πεσοῦνται, φησὶ κύ-
27 ριος. Καὶ καύσω πῦρ ἐν τείχει Δαμασκοῦ,
καὶ καταφάγεται ἄμφοδα υἱοῦ Ἄδερ.

Ululate Eſebon, quia periit (e) 3
Gai : Clamate filiæ Rabbath; ac-
cingimini ſaccis, & (f) plan-
gite ; quia Melchol ibit in
tranſmigrationem , ſacerdotes
ejus , & principes ejus ſimul.
Quid (g) exultatis in campis 4
Enacim? filia impudentiæ, quæ
confidiſti in (h) theſauris, quæ
dicebas, Quis ingredietur ſuper
me? Ecce ego porto timorem ſu- 5
per te, ait Dominus, ab omni cir-
cuitu tuo: & diſpergemini u-
nuſquiſque in faciem ſuam: &
non eſt qui congreget.
(i) IPSI CEDAR 28
(k) Reginæ Aulæ, quam percuſſit
Nabuchodonoſor rex Babylonis,
dixit Dominus; Surgite, & a-
ſcendite ſuper Cedar, & (l)
implete filios (m) Cedem. Ta- 29
bernacula eorum, & oves eo-
rum tollent : veſtimenta eo-
rum, & omnia vaſa eorum,
& camelos eorum tollent ſibi.
Et vocate ſuper eos perditionem
undique. Fugite, valdè demer- 30
gite vos in ſeſſionem, qui ſedetis
in Aula: quoniam conſultavit
ſuper vos rex Babylonis conſili-
um, & cogitavit cogitationem.
Surge, & aſcende ſuper gentem 31
tranquillam ſedentem in refri-
gerio, quibus non ſunt portæ, (n)
non ſeræ, non vectes : ſoli ha-
bitant. Et erunt cameli eorum in 32
direptionem, & multitudo jumen-
torũ eorũ in perditionẽ: *& venti-*
labo eos omni ſpiritui (o) attonſos
ante faciem ipſorum : ex omni
(p) termino eorum afferam e-
verſionem eorum, ait Dominus. 33
Et erit Aula commoratio ſtru-
thionum, & invia in ſeculum :
non ſedebit ibi homo : & non
habitabit ibi filius hominis.
(q) DAMASCO. Confu- 23
ſa eſt Emath, & Arphath, quia
audierunt auditum peſſimum,
obſtupuerunt, indignati ſunt, re-
quieſcere non poterunt. Diſſolu- 24
ta eſt Damaſcus: averſa eſt in
fugam : tremor apprehendit (r)
eam. Quomodò non (ſ) reli- 25
quit civitatem meam, pagum di-
lexerunt? Propter hoc cadent 26
juvenes in plateis tuis: & o-
mnes viri bellatores tui cadent,
ait Dominus ; Et ſuccendam i- 27
gnem in muro Damaſci ; & de-
vorabit bivia filii Ader.

MS. A. (ε) ὤλετο Καΐ· κεκράξατε (ζ) καὶ ἐπιλημπτεύεσθε καὶ κόψασθε ἐπὶ Μελχὸμ ὅτι ἐν ἀποικίᾳ βαδιεῖται, οἱ (η) Ὅτι ἀγαλλιάσῃ (θ) θυγάτηρ (ι) ἐπὶ τοῖς θησαυροῖς αὐτῆς, ἡ λέγουσα (κ) περιοίκου (λ) εἰς πρόσωπον αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἔσται (ʺ) Ὁ ΒΑΣΙΛΕΥ΄Σ (μ) ἑαυτῶν λήμψονται αὐτοῖς· (ν) καλέσατε αὐτοὺς (ξ) ἐβαθύνατε εἰς κάθησιν, (ο) ἐλογίσατο ἐφ' ὑμᾶς λογισμόν. (π) ἐπὶ (ρ) οὐδὲ (σ) οἱ κάμηλοι (τ) κεκαρμένοις (υ) μέροις (φ) ἐκοιμήθησαν, ἀναπαύσασθαι (χ) ἐγκατέλειπον (ψ) σου, φησὶν κύριος.

תרגום יונתן Targum JOHATNAN.

2 כִּדְנָן אֲמַר יְיָ דִּיהַב רַחֲמִין לְעַמָּא דִּנְפַק מִמִּצְרַיִם סְפִיק צָרְכֵיהוֹן בְּמַדְבְּרָא כַּד הֲווֹ
3 מְעַרְקִין מִן קֳדָם דִּקְטָלִין בְּחַרְבָּא דַּבַּר בְּמֵימְרֵיהּ לְאַשְׁרָאָה בֵּית נְיָחָא יִשְׂרָאֵל׃ אֲמַרַת
יְרוּשְׁלֶם מִלְּקַדְמִין יְיָ אִתְגְּלֵי עַל אֲבָהָתָנָא נְבִיָּא אֱמַר לְהוֹן הָא רַחֲמַת עָלְמָא רְחֵמִית
4 יָתְכוֹן עַל כֵּן דַּבְּרִית יָתְכוֹן בְּטַבְוָן׃ עוֹד אֲקִימִנֵּךְ וְתִתְקַיְּמִין כְּנִשְׁתָּא דְּיִשְׂרָאֵל עוֹד
5 תִּתְקְנִין בְּתִקּוּנַיִךְ וְתִפְּקִין בְּסִיעַת מְשַׁבְּחִין׃ עוֹד תִּצְבִּין כַּרְמִין בְּטוּרֵי שׁוֹמְרוֹן צוּבוּ
6 שִׁתְלִין וְאַחִילוּ׃ אֲרֵי אִית אֲרִיכוּת יוֹמַיָּא וְסַגִּי טוּבָא דַּעֲתִיד לְמֵיתֵי לְצַדִּיקַיָּא דִּנְטַרוּ
אוֹרַיְתִי מִלְּקַדְמִין חוּלַקְהוֹן בְּאַרְעָא דְּיִשְׂרָאֵל דַּהֲווֹ מְחַמְּדִין לִשְׁנֵי נֶחָמְתָא דְּאָתְיָן
7 דְּאָמְרִין אֵימָתַי נְקוּם וְנִסַּק לְצִיּוֹן וְנִתְחֲזֵי קֳדָם יְיָ אֱלָהָנָא׃ אֲרֵי כִדְנָן אֲמַר יְיָ שַׁבַּחוּ דְּבֵית
יַעֲקֹב בְּחֶדְוָא וְרוּצוּ בְּרֵישׁ גְּלֵי לְעֵינֵי כָּל עַמְמַיָּא בַּשַּׂרוּ שַׁבַּחוּ וְאִמְרוּ פְּרִיק יְיָ יָת עַמֵּיהּ יָת
8 שְׁאָרָא דְּיִשְׂרָאֵל׃ הָאֲנָא מַיְתֵי לְהוֹן מֵאֲרַע צִפּוּנָא וַאֲכַנֵּשׁנוּן מִסְּיָפֵי אַרְעָא דַּהֲווֹ בְהוֹן
9 עַוִּירִין וְחַגְּרִין יַסְנָן בְּהוֹן מְעַדְּיָן וְיָלְדָן כַּחֲדָא בְּמַשִׁרְיָן סַגִּיאָן יְתוּבוּן הַלְּכָא׃ בִּמְגָלְהוֹן
כַּד הֲווֹ בָּכָן גְּלוֹ וּבְמִתַּבְהוֹן מִבֵּינֵי גָלְוָתְהוֹן בְּרַחֲמִין סַגִּיאִין אֲקָרְבִנּוּן אֲדַבְּרִנּוּן עַל
פְּצִידֵי מַיָּא בְּאוֹרַח תַּקְנָא לָא יִתְקְלוּן בַּהּ אֲרֵי הֲוָה מֵימְרִי לְיִשְׂרָאֵל כְּאַב וְאֶפְרַיִם חֲבִיב
10 הוּא קֳדָמַי׃ קַבִּילוּ פִּתְגָּמָא דַּיְיָ עַמְמַיָּא וְחַווֹ בְּנַגְוָן מֵרָחִיק וְאִמְרוּ מַן דְּבַדְּרֵיהּ לְיִשְׂרָאֵל
11 יְכַנְּשִׁנֵּיהּ וְיִטְּרִנֵּיהּ כְּרָעְיָא לְעֶדְרֵיהּ׃ אֲרֵי פְרִיק יְיָ יָת דְּבֵית יַעֲקֹב וְשֵׁיזְבִנּוּן מִיַּד דְּתַקִּיפִין
12 מִנְּהוֹן׃ וְיֵיתוּן וִישַׁבְּחוּן בְּטוּר בֵּית מַקְדְּשָׁא דְּאִתְבְּנֵי בְצִיּוֹן וְיִתְפַּנְּקוּן בְּטוּבָא דִּיהַב
לְהוֹן יְיָ בְּעִבּוּרָא וּבַחֲמָרָא וּבְמִשְׁחָא וּבְנֵי עָאן וְתוֹרִין וּתְהֵי נַפְשְׁהוֹן מַלְיָא תַּפְנוּקִין
13 כְּגִנַּת שַׁקְיָא דִּמְרַוְיָא וְלָא יוֹסְפוּן לְיִצְפָּא עוֹד׃ בְּכֵן תֶּחְדִּין כְּנִשְׁתָּא דְּיִשְׂרָאֵל כַּד בְּחִנְגִּין
וְעוּלֵימִין וְסָבִין כַּחֲדָא וְאַהֲפוֹךְ אֶבְלְהוֹן לְבִיעַ וַאֲנַחֵמִנּוּן וַאֲחַדֵּינוּן מִדְּווֹנְהוֹן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Hæc dicit Dñs, qui dedit miſericordias populo, *qui egreſſus eſt* de Ægypto, 2
neceſſaria tribuit eis in deſerto, quando fugiebant à facie eorum qui occide-
bant gladio, duxit verbo ſuo, ut collocaret Iſraelẽ in loco quietis. Dixit Jeru- 3
ſalem: Jam olim revelatus eſt Dñs patribus noſtris. Propheta dic eis: Ecce di-
lectione ſempiterna dilexi vos, ideo duxi vos in benignitate. Adhuc confir- 4
mabo te, & confirmaberis cœtus Iſrael : adhuc ornaberis ornamentis *tuis*, &
egredieris cum cœtu canentium. Adhuc plantabis vineas in montibus Sama- 5
riæ. Plantate plantantes, & publicate. Nam eſt longitudo dierum, & multum 6
bonum eventurum eſt juſtis qui ſervaverunt legem meam ab initio: pars eorũ
erit in terra Iſrael, qui deſiderabant annos conſolationis *venturos*, *dicentes* :
Quando ſurgem⁹ et aſcendem⁹ in Sion, & apparebim⁹ coram Dño Deo noſtro? 7
Quia hæc dicit Dñs: Laudate viri dom⁹ Jacob in lætitia, & exultate capite nuda-
to in oculis omnium populorum: annuntiate, laudate, & dicite : Redemit Dñs
populum ſuum, reliquias Iſrael. Ecce ego adducam eos de terra Aquilonis, & 8
congregabo eos à finibus terræ: qui cæci & claudi ſunt in eis, *ambulabunt*; in
eis erunt prægnantes & parientes ſimul, in exercitibus magnis revertentur huc.
In tranſmigratione ſua cùm flerent, migrârunt: at cùm reverſi fuerint de me- 9
dio tranſmigrationis ſuæ, in miſerationibus multis appropinquare faciam eos,
& adducam eos ad rivos aquarum, via recta, in qua non impingent : Quia
fuit Verbum meum Iſraeli quaſi pater, & Ephraim dilectus eſt coram me. 10
Suſcipite verbum Domini populi, & annuntiate in inſulis quæ longè ſunt, &
dicite: Qui diſperſit Iſraelem congregabit eum, & cuſtodiet eum ſicut paſtor
gregem ſuum. Quia redemit Dominus viros domus Jacob, & liberavit eos de 11
manu fortiorum eis. Et venient & laudabunt in *monte domus* ſanctuarii, quæ 12
ædificabitur in Sion : & delectabuntur bono quod dedit eis Dominus, fru-
mento & vino & oleo, & filiis ovium & boum : & erit anima eorum plena
delitiis ſicut hortus irriguus qui irrigatus eſt ; et non addent ut ſint ultrà ſol-
liciti. Tunc lætabitur cœtus Iſrael ſicut in choris, et juvenes et ſenes ſimul ; 13
et convertam luctum eorum in exultationem ; et conſolabor eos, et exhilara-
bo eos à *mæſtitia ſua*.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܫܟܚ ܪܚܡܐ ܒܡܕܒܪܐ ܥܡܐ ܕܐܫܬܘܙܒ ܡܢ ܚܪܒܐ. ܐܙܠ ܠܫܒܝܐ 2
ܐܝܣܪܝܠ. * ܡܢ ܪܘܚܩܐ ܡܪܝܐ ܐܬܚܙܝ ܠܝ. ܘܐܡܪ ܠܝ ܀ ܕܒܚܘܒܐ ܕܥܠܡܐ ܐܚܒܬܟܝ. 3
ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܓܕܬܟܝ ܠܛܝܒܘܬܐ. * ܬܘܒ ܐܒܢܝܟܝ ܘܬܬܒܢܝܢ ܒܬܘܠܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. 4
ܬܘܒ ܬܬܨܒܬܝܢ ܒܬܦܝܐ. ܘܬܦܩܝܢ ܒܚܕܘܬܐ ܕܡܙܡܪܢܐ. * ܬܘܒ ܬܢܨܒܝܢ ܟܪܡܐ 5
ܒܛܘܪܐ ܕܫܡܪܝܢ. ܢܨܘܒ ܢܨܘܒܐ ܘܫܒܚܝ. * ܡܛܠ ܕܐܝܬܘܗܝ ܝܘܡܐ ܕܢܩܪܘܢ ܢܛܘܪܐ 6
ܒܛܘܪܐ ܕܐܦܪܝܡ. ܘܢܐܡܪܘܢ. ܩܘܡܘ ܢܣܩ ܠܨܗܝܘܢ ܠܘܬ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. * ܡܛܠ 7
ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܫܒܚܘ ܕܒܝܬ ܝܥܩܘܒ ܒܚܕܘܬܐ. ܘܕܘܨܘ ܒܪܝܫ ܥܡܡܐ. ܐܫܡܥܘ
ܫܒܚܘ ܘܐܡܪܘ. ܦܪܘܩ ܡܪܝܐ ܠܥܡܟ ܠܫܪܟܢܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܗܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܠܗܘܢ 8
ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܓܪܒܝܐ. ܘܐܟܢܫ ܐܢܘܢ ܡܢ ܣܘܦܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ. ܘܐܦ ܚܓܝܪܐ ܘܥܘܝܪܐ ܕܐܝܬ
ܒܗܘܢ. ܘܒܛܢܬܐ ܘܝܠܕܬܐ ܐܟܚܕܐ. ܟܢܫܐ ܪܒܐ ܢܗܦܟܘܢ ܠܗܪܟܐ. * ܒܒܟܝܬܐ ܢܐܙܠܘܢ 9
ܘܒܬܟܫܦܬܐ ܢܐܬܘܢ. ܐܕܒܪ ܐܢܘܢ ܥܠ ܡܒܘܥܐ ܕܡܝܐ ܒܐܘܪܚܐ ܬܪܝܨܬܐ. ܕܠܐ ܢܬܬܩܠܘܢ
ܒܗ̇. ܡܛܠ ܕܗܘܝܬ ܠܐܝܣܪܝܠ ܠܐܒܐ. ܘܐܦܪܝܡ ܒܘܟܪܐ ܗܘ ܠܝ. * ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ 10
ܕܡܪܝܐ ܥܡܡܐ. ܘܚܘܘ ܒܓܙܪܬܐ ܕܪܚܝܩܢ ܘܐܡܪܘ. ܡܢ ܕܒܕܪܗ ܠܐܝܣܪܝܠ ܢܟܢܫܝܘܗܝ.
ܘܢܛܪܝܘܗܝ ܐܝܟ ܪܥܝܐ ܠܡܪܥܝܬܗ. * ܡܛܠ ܕܦܪܩܗ ܡܪܝܐ ܠܝܥܩܘܒ ܥܒܕܗ ܀ 11
ܘܦܪܩܗ ܡܢ ܐܝܕܝ ܕܥܫܝܢ ܡܢܗ. * ܘܢܐܬܘܢ ܘܢܫܒܚܘܢ ܒܪܘܡܗ ܕܨܗܝܘܢ. ܘܢܬܦܢܩܘܢ 12
ܡܢ ܛܒܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܡܢ ܥܒܘܪܐ ܘܡܢ ܚܡܪܐ. ܘܡܢ ܡܫܚܐ. ܘܡܢ ܒܢܝ ܥܢܐ ܘܬܘܪܐ.
ܘܬܗܘܐ ܢܦܫܗܘܢ ܐܝܟ ܓܢܬܐ ܪܘܝܬܐ. ܘܠܐ ܢܘܣܦܘܢ ܬܘܒ ܠܡܣܟܢܘܬܐ. * ܗܝܕܝܢ 13
ܬܚܕܐ ܒܬܘܠܬܐ ܒܚܕܘܬܐ. ܘܥܠܝܡܐ ܘܣܒܐ ܐܟܚܕܐ. ܘܐܗܦܘܟ ܐܒܠܗܘܢ ܠܚܕܘܬܐ.
ܘܐܒܝܐ ܐܢܘܢ. ܘܐܚܕܐ ܐܢܘܢ ܡܢ ܕܘܘܢܗܘܢ.

Sic ait Dominus, Nactus eſt clementiam in 2
deſerto populus qui gladium evaſerat, abiit in
captivitatem Iſrael. Dominus à longinquo 3
tempore apparuit mihi, dixitque mihi; Amore
perpetuo dilexi te, ideò attraxi te ad gratiam.
Rurſum ædificabo te, & inſtauraberis virgo 4
Iſraelis: rurſum ornamento decoraberis, &
procedes cum choro cantorum: Rurſum 5
plantabis vineam in monte Samariæ. Con-
ſere plantam, & cane; Quia præſto eſt 6
dies quo clamabunt cuſtodes in monte
Aphremi, dicéntque; Surgite, aſcendamus in
Sionem ad Dominum Deum noſtrum. Nam 7
ita dicit Dominus, Canite familia Jacobi
cum lætitia, & exultate in fronte gentium:
annuntiate, canite, ac dicite; Libera Domi-
ne populum tuum, reſiduum Iſraelis. Ecce 8
reducturus ſum eos de terra Aquilonari, &
collecturus eos ab extremis terræ: tam clau-
di & cæci qui extant inter illos, quàm gra-
vida & puerpera ſimul, magnâ catervâ huc
revertentur. Cùm fletu diſcedent, & cum 9
deprecatione revertentur: ducam eos ſuper
ſemitas aquarum, per vias planas in quibus
non impingant: quia ſum Iſraeli pater, &
Aphrem eſt primogenitus meus. Audite 10
ſermonem Domini, popule ejus, & indicate
in inſulis remotis, ac dicite; Qui diſperſit
Iſraelem, colliget eum, & defendet illum ut
paſtor gregem ſuum. Redemit enim Domi- 11
nus Jacobum ſervum ſuum, & eripuit eum
de manibus ejus qui ipſo potentior erat.
Venient itaque, & cantabunt in vertice Sio- 12
nis, & oblectabuntur bonis Domini, frumen-
to, vino, oleo, & fœtibus ovium atque boum:
eritque anima eorum ſimilis horto irriguo,
nec redigentur ampliùs in paupertaté. Tunc 13
geſtiet virgo lætitiâ, & adoleſcentes ac ſenes
unà lætabuntur: vertam enim triſtitiam eo-
rum in gaudium, & conſolabor atque exhi-
larabo eos ab ipſorum dolore:

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* هلل يا اسابون لان عاي هلك * اصرخن يا بنات ربات * اتزروا بالمسوح واندبوا على 3
ملكول * لانه يمضي في الجلوة * كهنته ورؤساوه يهللون تهليلا في البقاع في اكيم * يا 4
ابنة القاسية المتوكلة على كنورها * القايلة لي من يدخل الي * ها انا اجلب عليك 5
خوفا يقول الرب من جميع من حولك * وينفرون كل واحد على وجهه * ولا يكون
من يجمع *

Ulula O Heſebon, quia Ghai periit: cla- 3
mate O filiæ Rabbath: accingimini ſaccis,
& lamentamini Melcbolem, quia abitu-
rus eſt in captivitatem, ſacerdotes ejus &
principes ejus ejulantes plorabunt in pla-
nitie in Acchim. O filia crudelis, quæ 4
theſauris tuis freta dicis mihi, Quis in-
gredietur ad me? Ecce ego allaturus 5
ſum tibi metum, ait Dominus, ab omni-
bus adjacentibus tibi; ita ut diſpergantur
quiſque ſcorſim, nec ſit qui congreget.

* في قيدار ملكة الدار التي ضربها بختنصر ملك بابل *

Contra Cedar reginam Aulæ, quam percuſſit Bochtonaſſar rex Babelis.

* هكذا قال الرب * قوموا واصعدوا على قيدار * واكثروا بني كادام * ياخذون خيمهم وغنمهم 28 29
وثيابهم وآنيتهم * وياخذون جمالهم لهم * وادعوا عليهم هلاكا من حولهم * فروا جدا * 30
عمقوا جلسة ايها الجلوس في الدار * لان ملك بابل روى عليكم رايا * وفكر عليكم فكرا *
* قم واصعد الى امة سكينة جالسة في الانتعاش * ليس لها ابواب ولا اغلاق ولا متاريس * 31
يسكنون وحدهم * وتصير بقاياهم للنهب * وكثرة دوابهم للهلاك * واذريهم بكل 32
ريح مقرعي الرووس * قبل وجوههم من كل ناحيتهم اجلب خجلهم قال الرب * وتصير 33
الدار ماوى النعام * وغير مسلوكة الى الدهر * لا يجلس هناك انسان * ولا يسكن هناك
ابن انسان *

Sic dixit Dominus; Surgite, & aſcen- 28
dite contra Cedarem, & multiplicate fi-
lios Kedemi. Tollent eorum tentoria, 29
pecudes, veſtes, ac vaſa; tollentque ca-
melos eorum ſibi. Et proclamate contra
eos cladem undequaque. Fugite valdè, 30
profundam petitis fiſſionem O qui habi-
tatis in Aula: quia rex Babelis conſilium
decrevit contra vos, & cogitationem
contra vos cogitavit, dicens *Surge, &* 31
aſcende ad gentem tranquillam, proſpero
ſtatu fruentem, portis, ſeris, vectibuſque
carentem, ſolam habitantem: Sintque re- 32
liquiæ eorum in prædam, & multitudo
jumentorum eorum in perditionem: &
diſpergam eos in omnem ventum porrigi-
nem capitibus gignentem: ante facies
eorum ex omni parte afferam ignominiam
eorum, dixit Dominus. Et erit Aula 33
receptus ſtruthionum, & invia in ſempi-
ternum: non commorabitur illic homo,
nec habitabit illic filius hominis.

* الاصحاح العشرون *   * في دمشق *

Textus vigeſimus.

Contra Damaſcum.

* خزيت حماة وارفاد لانهما سمعا خبرا سوا * ذهلا غضبا لانهما لا يستطيعان ان يستريحا * 23
* انحلت دمشق * رجعت الى خلف * اخذتها الرعدة * كيف * اليس تركت مدينتي واحببت 24 25
القرية * لاجل هذا يسقطون الشبان في شوارعك * وجميع رجالك المحاربين يسقطون قال الرب * 26
* واشعل نارا في سور دمشق * فتاكل حارات بن اداد * 27

Pudefactæ ſunt Hamath & Arphad, quo- 23
niam audierunt nuntium infælicem: ob-
ſtupuerunt, iratæ ſunt, quia requieſcere
non poſſunt. Conſternata eſt Damaſcus, 24
terga dedit, tremor occupavit eam. Quâ 25
ratione? nonne dereliquit urbem meam,
& pagum dilexit? Propterea cadent 26
juvenes in vicis tuis, & omnes viri tui
bellatores cadent, ait Dominus: Et ignem 27
accendam in muro Damaſci, conſumet-
que regiones filii Ader.

ירמיה: לא

mea bonitate me⁹ popul⁹ &,pinguedine ſacerdotum animam inebriabo Et
14 וְרִוֵּיתִי נֶפֶשׁ הַכֹּהֲנִים דָּשֶׁן וְעַמִּי אֶת־טוּבִי
excelſo in Vox :Dominus dixit Sic .Dominus dixit ,ſaturabuntur
15 יִשְׂבָּעוּ נְאֻם־יְהוָה׃ כֹּה אָמַר יְהוָה קוֹל בְּרָמָה
,ſuos filios ſuper plorante Rachel,amaritudinū fletus ,*querimonia*,eſt audita
נִשְׁמָע נְהִי בְּכִי תַמְרוּרִים רָחֵל מְבַכָּה עַל־בָּנֶיהָ
:Dominus dixit Sic .*ipſe* non quia ,ſuis filiis ſuper conſolari renuit
16 מֵאֲנָה לְהִנָּחֵם עַל־בָּנֶיהָ כִּי אֵינֶנּוּ׃ כֹּה אָמַר יְהוָה
merces eſt quia :*lachryma* à tuos oculos & ,fletu à tuam vocem Prohibe
מִנְעִי קוֹלֵךְ מִבֶּכִי וְעֵינַיִךְ מִדִּמְעָה כִּי יֵשׁ שָׂכָר
eſt Et .inimici terra de revertentur & ,Dominus ait , tuo operi
17 לִפְעֻלָּתֵךְ נְאֻם־יְהוָה וְשָׁבוּ מֵאֶרֶץ אוֹיֵב׃ וְיֵשׁ־
.ſuū terminum ad filii revertentur &,Dominus ait ,*tuo noviſſimo* ſpes
תִּקְוָה לְאַחֲרִיתֵךְ נְאֻם־יְהוָה וְשָׁבוּ בָנִים לִגְבוּלָם׃
,ſum caſtigatus &,me Caſtigâſti :plangentem Ephraim audivi Audiendo
18 שָׁמוֹעַ שָׁמַעְתִּי אֶפְרַיִם מִתְנוֹדֵד יִסַּרְתַּנִי וָאִוָּסֵר
Dominus tu quia :convertar &,me fac converti : *doctus* non vitulus ut
כְּעֵגֶל לֹא לֻמָּד הֲשִׁבֵנִי וְאָשׁוּבָה כִּי אַתָּה יְהוָה
,mihi *eſſe notum* poſt & : me pœnituit,*me converti* poſt Nam .meus Deus
19 אֱלֹהָי׃ כִּי־אַחֲרֵי שׁוּבִי נִחַמְתִּי וְאַחֲרֵי הִוָּדְעִי
ſuſtinui quoniā ,erubui etiam &,ſum confuſus : femur *ſuper* percuſſi
סָפַקְתִּי עַל־יָרֵךְ בֹּשְׁתִּי וְגַם־נִכְלַמְתִּי כִּי נָשָׂאתִי
? Ephraim mihi pretioſus filius Nónne .*mearum pueritiarum* opprobrium
20 חֶרְפַּת נְעוּרָי׃ הֲבֵן יַקִּיר לִי אֶפְרַיִם
recordando,eo cum *me loquendi ſufficientia* ex quia ? *deliciarum* *natus* nónne
אִם יֶלֶד שַׁעֲשׁוּעִים כִּי־מִדֵּי דַבְּרִי בּוֹ זָכֹר
miſerendo , *ei* mea viſcera ſonuerunt idcirco : adhuc ejus recordabor
אֶזְכְּרֶנּוּ עוֹד עַל־כֵּן הָמוּ מֵעַי לוֹ רַחֵם
,altos cumulos tibi pone , *titulos* tibi Statue .Dominus ait,ej⁹ miſerebor
21 אֲרַחֲמֶנּוּ נְאֻם־יְהוָה׃ הַצִּיבִי לָךְ צִיֻּנִים שִׂמִי לָךְ תַּמְרוּרִים
, Iſrael virgo Revertere .ambulâſti viam *ſtratam* ad tuū cor pone
שִׁתִי לִבֵּךְ לַמְסִלָּה דֶּרֶךְ הָלָכְתִּי שׁוּבִי בְּתוּלַת יִשְׂרָאֵל
huc & illuc te vertes quo Uſque .iſtas tuas civitates ad revertere
22 שֻׁבִי אֶל־עָרַיִךְ אֵלֶּה׃ עַד־מָתַי תִּתְחַמָּקִין
Fœmina ,terra in novum Dominus *creavit* quia ? *refractaria* filia
הַבַּת הַשּׁוֹבֵבָה כִּי־בָרָא יְהוָה חֲדָשָׁה בָּאָרֶץ נְקֵבָה
Deus exercituum Dominus dixit Sic .virum circundabit
23 תְּסוֹבֵב גָּבֶר׃ כֹּה־אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי
,Jehudah terra in iſtud verbum dicent Adhuc : Iſrael
יִשְׂרָאֵל עוֹד יֹאמְרוּ אֶת־הַדָּבָר הַזֶּה בְּאֶרֶץ יְהוּדָה
tibi benedicat ,eorum captivitatem *me convertendo in* ,ejus urbibus in &
וּבְעָרָיו בְּשׁוּבִי אֶת־שְׁבוּתָם יְבָרֶכְךָ
habitabunt Et .*ſanctitatis* mons , juſtitiæ habitaculum Dominus
24 יְהוָה נְוֵה־צֶדֶק הַר הַקֹּדֶשׁ׃ וְיָשְׁבוּ
proficiſcentur &,agricolæ , ſimul ejus civitates omnes & ,Jehudah ea in
בָהּ יְהוּדָה וְכָל־עָרָיו יַחְדָּו אִכָּרִים וְנָסְעוּ
animam omnem & , laſſam animam feci inebriare Quia .*grege in*
25 בַּעֵדֶר׃ כִּי הִרְוֵיתִי נֶפֶשׁ עֲיֵפָה וְכָל־נֶפֶשׁ
me⁹ ſomnus & ; vidi & ,ſum expergefactus hoc Propter .implevi *dolentem*
26 דָּאֲבָה מִלֵּאתִי׃ עַל־זֹאת הֱקִיצֹתִי וָאֶרְאֶה וּשְׁנָתִי
,Dominus dixit , *venientes* dies Ecce .mihi fuit dulcis
27 עָרְבָה לִּי׃ הִנֵּה יָמִים בָּאִים נְאֻם־יְהוָה
,hominis ſemine ,Jehudah domum & , Iſrael domum ſeminabo &
וְזָרַעְתִּי אֶת־בֵּית יִשְׂרָאֵל וְאֶת־בֵּית יְהוּדָה זֶרַע אָדָם
.animalis ſemine &
וְזֶרַע בְּהֵמָה׃

Verſio VULG. LAT.

14 Et inebriabo animam ſacerdo-
tum pinguedine : & populus
meus bonis meis adimplebitur,
15 ait Dominus. Hæc dicit Domi-
nus ; Vox in excelſo audita eſt la-
mentationis, luctus, & fletus Ra-
chel plorantis filios ſuos, & no-
lentis conſolari ſuper eis, quia
16 non ſunt. Hæc dicit Dominus ;
Quieſcat vox tua à ploratu, & o-
culi tui à lachrymis: quia eſt mer-
ces operi tuo, ait Dominus : &
17 revertentur de terra inimici. Et
eſt ſpes noviſſimis tuis, ait Do-
minus : & revertentur filii ad
18 terminos ſuos. Audiens audivi
Ephraim tranſmigrantem ; Ca-
ſtigâſti me, & eruditus ſum, quaſi
juvenculus indomitus : converte
me, & convertar : quia tu Domi-
19 nus Deus meus. Poſtquàm enim
convertiſti me, egi pœnitenti-
am : & poſtquàm oſtendiſti mi-
hi, percuſſi femur meum. Con-
fuſus ſum, & erubui, quoniam
ſuſtinui opprobrium adoleſcen-
20 tiæ meæ. Si filius honorabilis
mihi Ephraim, ſi puer delicatus :
quia ex quo locutus ſum de eo,
adhuc recordabor ejus. Idcircò
conturbata ſunt viſcera mea ſu-
per eum : miſerans miſerebor e-
21 jus, ait Dominus. Statue tibi
ſpeculam, pone tibi amaritudi-
nes : dirige cor tuum in viam
rectam, in qua ambulâſti : rever-
tere virgo Iſrael, revertere ad
22 civitates tuas iſtas. Uſquequò
deliciis diſſolvêris filia vaga ?
quia creavit Dominus novum
ſuper terram: FOEMINA
CIRCUMDABIT VI-
23 RUM. Hæc dicit Dominus ex-
ercituum, Deus Iſrael ; Adhuc
dicent verbum iſtud in terra Ju-
da, & in urbibus ejus, cùm con-
vertero captivitatem eorum: Be-
nedicat tibi Dominus, pulchritu-
24 do juſtitiæ, mons ſanctus : Et
habitabunt in eo Judas & omnes
civitates ejus ſimul, agricolæ &
25 minantes greges. Quia inebria-
vi animam laſſam, & omnem a-
26 nimam eſurientem ſaturavi. Ideò
quaſi de ſomno ſuſcitatus ſum :
& vidi, & ſomnus meus dulcis
27 mihi. Ecce dies veniunt, dicit
Dominus : & ſeminabo domum
Iſrael & domum Juda ſemine
hominum, & ſemine jumento-
rum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

Cap. 48. Vulg.Lat.

ΚΕΦ. λα'.

1 ΤΗ͂ ΜΩΑ´Β. οὕτως εἶπε κύριος, Οὐαὶ ἐπὶ Ναβαύ, ὅτι ὤλετο, ἐλήφθη Καριαθὲμ, ᾐσχύνθη (α) ἀμαθ καὶ ἀγάθ.
2 Οὐκ ἔστιν ἔτι ἰατρεία Μωὰβ, γαυρίαμα ἐν Ἐσεβὼν, ἐλογίσατο ἐπ' αὐτὴν κακά· ἐκόψαμεν αὐτὴν ἀπὸ ἔθνους, καὶ παῦσιν παύσεται. ὄπισθέν σου βαδιεῖται μάχαιρα,
3 Ὅτι φωνὴ κεκραγότων ἐξ Ὡρωναῒμ, (β) ὄλεθρον καὶ σύντριμμα μέγα.
4 Συνετρίβη Μωὰβ, ἀναγγείλατε εἰς Ζογόρα,
5 Ὅτι ἐπλήσθη (*) Ἀλὼθ ἐν κλαυθμῷ. ἀναβήσεται κλαίων ἐν ὁδῷ Ὡρωναῒμ, κραυγὴν συντρίμματος ἠκούσατε.
6 Φεύγετε καὶ σώσατε τὰς ψυχὰς (γ) ὑμῶν, καὶ ἔσεσθε ὥσπερ ὄνος
7 ἄγριος ἐν ἐρήμῳ. Ἐπειδὴ ἐπεποίθεις ἐν (δ) ὀχυρώματί σου, καὶ σὺ συλληφθήσῃ· καὶ ἐξελεύσεται Χαμὼς ἐν ἀποικίᾳ, καὶ οἱ ἱερεῖς
8 αὐτοῦ, καὶ οἱ ἄρχοντες αὐτοῦ ἅμα. Καὶ ἥξει ὄλεθρος ἐπὶ πᾶσαν (ε) πόλιν, οὐ μὴ σωθῇ, καὶ ἀπολεῖται ὁ αὐλὼν, καὶ (ζ) ἐξολοθρευθήσεται
9 ἡ πεδινὴ, καθὼς εἶπε κύριος. Δότε (η) σημεῖα τῇ Μωὰβ, ὅτι ἀφῇ ἀφθήσεται, καὶ πᾶσαι αἱ πόλεις αὐτῆς εἰς ἄβατον ἔσονται (θ). πό-
10 θεν ἔνοικος αὐτῇ; Ἐπικατάρατος ὁ ποιῶν τὰ ἔργα κυρίου ἀμελῶς, ἐξαίρων μάχαιραν
11 αὐτοῦ ἀφ' αἵματος. Ἀνεπαύσατο Μωὰβ ἐκ παιδαρίου, καὶ πεποιθὼς ἦν ἐπὶ τῇ δόξῃ αὐτοῦ, οὐκ ἐνέχεεν ἐξ ἀγγείου εἰς ἀγγεῖον, καὶ εἰς ἀποικισμὸν οὐκ ᾤχετο· διὰ τοῦτο ἔστη γεῦμα αὐτοῦ ἐν αὐτῷ, καὶ ὀσμὴ αὐτοῦ οὐκ (ι) ἐξέλιπε.
12 Διὰ τοῦτο ἰδοὺ (κ) ἡμέραι αὐτοῦ ἔρχονται, φησὶ κύριος, καὶ ἀποστελῶ αὐτῷ κλίνοντας, καὶ κλινοῦσιν αὐτὸν, καὶ τὰ σκεύη αὐτοῦ λεπτυνοῦσι, καὶ
13 τὰ κέρατα αὐτοῦ συγκόψουσι, Καὶ καταισχυνθήσεται Μωὰβ ἀπὸ Χαμὼς, ὥσπερ (λ) κατῃσχύνθη οἶκος Ἰσραὴλ ἀπὸ Βαιθὴλ ἐλπί-
14 δος αὐτῶν πεποιθότες ἐπ' αὐτοῖς. Πῶς ἐρεῖτε, Ἰσχυροί ἐσμεν, καὶ ἄνθρωπος ἰσχύων
15 εἰς τὰ πολεμικά; Ὤλετο Μωὰβ πόλις αὐτοῦ, καὶ ἐκλεκτοὶ νεανίσκοι αὐτοῦ κατέβησαν εἰς
16 σφαγήν. Ἐγγὺς ἡμέρα Μωὰβ ἐλθεῖν, καὶ
17 πονηρία αὐτοῦ ταχεῖα σφόδρα. Κινήσατε (μ) αὐτῷ πάντες κυκλόθεν αὐτοῦ, πάντες εἰδότες ὄνομα αὐτοῦ· εἴπατε, Πῶς συνετρίβη βακτηρία εὐκλεὴς, ῥάβδος μεγαλώματος;
18 Κατάβηθι ἀπὸ δόξης, καὶ κάθισον ἐν ὑγρασίᾳ καθημένη (ν). Δαιβὼν ἐκτριβήσεται, ὅτι ὤλετο Μωὰβ, ἀνέβη εἰς σὲ λυμαινόμενος (ξ) ὀχύρωμά σου.

CAP. XXXI.

1 *Ad Moab ſic dixit (a) Dominus ; Væ ſuper Nabau, quia periit: capta eſt Cariathæm: Confuſa eſt (b) Amath, & Agath.*
2 *Non eſt ultrà (c) medicamen Moab, exultatio in Eſebon: (d) Cogitavit ſuper eam mala: (e) excidimus eam de gente : & quiete quieſcet. Poſt te vadet gladius:*
3 *Quia vox clamantium ex Oronæm : perditio, & contritio magna.*
4 *Contrita eſt Moab : annuntiate in (f) Zogoram:*
5 *Quia repleta eſt Aloth in ploratu. Aſcendit plorans in via Oronæm : clamorem contritionis (g) audiſtis :*
6 *Fugite, & ſalvate animas veſtras: & eritis quaſi aſinus agreſtis in deſerto.*
7 *Quoniam confidiſti in (h) munitione tua ; & tu capieris: & egredietur Chamos in tranſmigrationem, & ſacerdotes ejus, & principes ejus ſimul.*
8 *Et veniet vaſtatio ſuper univerſā civitatem: (i) non ſalvabitur: & peribit vallis, & exterminabitur campeſtris, ſicut dixit Dominus.*
9 *Date (k) ſigna Moab; quia tactu tangetur : & omnes civitates ejus in invium erunt. (l) Undè habitator ei ?*
10 *Maledictus, qui facit opera Domini negligenter, (m) qui ſubtrahit gladium ſuū à ſanguine.*
11 *Quievit Moab à parvulo, & fidens erat ſuper gloria ſua ; non effundebat de vaſe in vas, & in tranſmigrationem non abiit. Ideò manſit guſtus ej⁹ in ipſo: & odor ejus non defecit.*
12 *Propterea ecce dies ejus veniunt, ait Dominus: et mittam ei (n) ſternentes; & ſternent eū, & vaſa ejus comminuent, & (o) cornua ejus concident:*
13 *Et confundetur Moab à Chamos: ſicut confuſa eſt domus Iſrael à Bæthel ſpe (p) ſuâ. Fidentes in ipſis,*
14 *Quomodò dicetis, Fortes ſumus, & homo validus ad bellica?*
15 *Periit Moab civitas ejus: et electi juvenes ejus deſcenderunt in (q) occiſionem.*
16 *Propè eſt dies Moab ad veniendum : & malitia ejus velox valdè.*
17 *(r) Movete ei omnes, qui in circuitu ejus, omnes, (ſ) edite nomen ejus: dicite; Quomodò contrit⁹ eſt baculus glorioſus, virga magnificentiæ?*
18 *Deſcende de gloria, & ſede in humilitate (t) ſedens. Dæbon exteretur: quia periit Moab: aſcendit ad te vaſtans munitionem tuam.*

MS.A. (α) ἀμαθ τὸ κεφάλαιωμα, καὶ ἡττήθη. Καὶ γὰρ οὐκ ἔστιν ἔτι ἰατρεία ἐν Μωὰβ, ἀγαυρίαμα (β) ὄλεθρος (*) Ἀλαὼθ (γ) * αὐτῶν, (δ) ὀχυρώμασίν σου καὶ συλλημφθήσῃ· (ε) πόλιν, καὶ πόλεις οὐ (ζ) ἐξολεθρευθήσεται (η) σημεῖον τῷ Μωὰβ, ὅτι ἀφῇ ἀναφθήσεται, (θ) ἀπὸ ἐνοικούντων αὐτάς. Ἐπικατάρατος (ι) ἐκλίπει. (κ) ἡμέραι ἔρχονται, (λ) καταισχύνθη ὁ οἶκος (μ) αὐτὸν (ν) θυγάτηρ Δαιβὼν, ἐκτρίβηθι, (ξ) ὀχυρώματα

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 ואשבע נפש כהניא תפנוקין ועמי בית ישראל ית טובי דיהבית להון ישבעון אמר יי׃
15 כדנן אמר יי קלא ברום עלמא אשתמע בית ישראל דבכן ומתאנחן בתר ירמיה נביא
כד שלחיתיה נבוזר אדן רב קטוליא מרמתא אליא ודבכן במרר ירושלם מבכיא על
16 בנהא מסרבא לאתנחמא על בנהא ארי גלו׃ כדנן אמר יי מנעי קליך מלמבכי ועיניך
מלשגרא דמען ארי אית אגר לעובדי אבהתך צדיקיא אמר יי ויתובון מארע בעלי
17 18 דבביהון׃ ואית סבור לסופיך אמר יי ויתובון בניא לתחומהון׃ שמיע וגלי קדמי בית
ישראל דבכן ומתאנחין על דאטלטלו אמרין איתיתא עלן יסורין ולא אלפנא כעגל
19 לא מליף ניר כדו אתיבנא לפולחנך ונתוב ארי את יי אלהנא׃ ארי כד אנחנא תיבין
לאוריתא מתנחם עלנא וכדו דאתגלי לנא טפחנא על ירכנא בהיתנא ואף אתכנענא
20 ארי קבלנא חסודי חובנא דמלקדמין׃ הכבר חביב קדמי ישראל הלא רבי רחים הוא
ארי בזמן דמשוי פתגמי אוריתי על לביה למעבדהון מדכר דכירנא לאוטבא ליה
21 עוד על כן אתגוללו רחמי עליהון רחמא ארחים עליהון אמר יי׃ כנשתא
דישראל אדכרי ליך עובדי אבהתיך תקניא שפוכי תחנונין במרר שויאי לביך
אסתכלי בעובדין דעבדת אם תקנין דכן גלית לאורח רחיקא כדו תובי כנשתא
22 דישראל ותתובין לקרויך אלין׃ עד אימתי את מתחסנא למהב כנשתא דסגיאין
23 תיובתהא ארי הא יי ברי חדתא בארעא ועמא בית ישראל יתנהון לאוריתא׃ כדנן
אמר יי צבאות אלהא דישראל עוד יימרון ית פתגמא הדין בארעא דבית יהודה
24 ובקרוהי כד אתיב ית גלותהון יברכנך יי מדור קושטיה טורא קדישא׃ ויתבון בה
25 דבית יהודה וכל קרויהון כחדא אכרין ודנטלין בסיען׃ ארי שבעית נפש משלהיא
26 וכל נפש יצפא מליתי כל טוב׃ אמר נביא על דא בשורתא דיומי נחמתא דעתידין
27 למיתי אתערית וחזית תבית דמכית ושנתי הנאתני׃ הא יומיא אתן אמר יי ואקים ית
דבית ישראל וית דבית יהודה אסגנון באנשא ואצלחנון בבעירא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et ſatiabo animam ſacerdotum deliciis, & populus meus, domus Iſrael, bono 14
meo quod dedero eis, ſatiabitur, dicit Dñs. Hæc dicit Dominus: Vox in excel- 15
ſo mundi audita eſt, domus Iſrael flentis & gementis poſt Jeremiam prophe-
tam, quando miſit eum Nabuzaradan princeps occidentium ex Ramah :
lamentatio & *plorantes* ob amaritudinem ; Jeruſalem plorat propter filios ſu-
os, & renuit conſolari ſuper filiis ſuis, quia migraverunt. Hæc dicit Dominus: 16
Prohibe vocem tuam à fletu, & oculos tuos, ne deducant lachrymas; quia eſt
merces operibus patrum tuorum juſtorum, dicit Dominus : & revertentur de
terra inimicorum ſuorum. Et eſt ſpes fini tuo, dicit Dominus, & revertentur 17
filii ad terminos ſuos. Auditum & manifeſtum eſt coram me quòd domus Iſ- 18
rael plorat & gemit pro eo quòd tranſmigraverunt. Dicit enim: Induxiſti ſu-
per nos correptiones; nec edocti ſumus, quaſi vitulus non aſſuetus jugo. Nunc
autem converte nos ad cultum tuum, & convertemur : quia tu es Dominus
Deus noſter. Quando enim nos redim⁹ ad legem, conſolationem accipim⁹: & 19
nunc cùm notum fuit nobis, percuſſimus femur noſtrum, confuſi ſumus, &
rubore ſuffuſi ; quia recepimus opprobrium peccatorum noſtrorum, quæ à
principio ſunt. Ecce ſicut fili⁹ dilect⁹ coram me eſt Iſrael; utique puer ama- 20
bilis eſt. Quo enim tempore pono verba *legis meæ* in corde ejus ut faciat ea,
recordando recordor ut bene faciam ei adhuc: propterea commota ſunt vi-
ſcera mea ſuper eos, miſerans miſerebor eorum, dicit Dominus. Cœt⁹ Iſrael 21
recordare tibi operum patrum tuorum rectorum, effunde preces, in amaritu-
dine pone cor tuum: contemplare opera quæ feciſti an recta ſint, cùm tranſ-
migraveris in viam longinquā: nunc autem convertere cœt⁹ Iſrael ad legē, &
reverteris ad civitates *tuas* has. Quouſq; tu te obfirmas quò min⁹ redeas, cœt⁹, 22
cuj⁹ averſiones ſunt multæ ? Quia ecce creavit Domin⁹ novum in terra : Et
popul⁹ dom⁹ Iſrael incumbet Legi. Hæc dicit Domin⁹ exercituum De⁹ Iſra- 23
el : Adhuc dicent verbum iſtud in terra dom⁹ Juda, & in civitatib⁹ ej⁹, cùm
reduxero captivitatem eorum : Benedicat tibi Domin⁹ habitaculum veritatis
ej⁹ mons ſancte. Et habitabunt in ea viri dom⁹ Juda, & in omnib⁹ civitatib⁹ ej⁹ 24
ſimul agricolæ, & qui proficiſcuntur cum gregib⁹. Quia ſatiabo animam laſ- 25
ſam, & omnem animam ſolicitam implebo *omni* bono. Dixit propheta: Pro- 26
pter hanc annuntiationem dierum conſolationis qui venturi ſunt, ſuſcitat⁹ ſum
& vidi ; *iterum* dormivi, & ſomnium meum *profuit* mihi. Ecce dies veniunt, 27
dicit Domin⁹, & ſuſcitabo domum Iſrael & domum Juda : multiplicabo eos
hominibus, & proſperabo eos pecoribus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܪܘܐ ܢܦܫܐ ܕܟܗܢܐ ܕܘܫܢܐ. ܘܥܡܝ ܡܢ ܛܘܒܝ ܢܣܒܥܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ 14
ܡܪܝܐ. ܩܠܐ ܒܪܡܬܐ ܐܫܬܡܥ. ܐܠܝܐ ܘܒܟܬܐ ܡܪܝܪܬܐ. ܪܚܝܠ ܒܟܝܐ ܥܠ ܒܢܝܗ. ܘܠܐ 15
ܨܒܝܐ ܠܡܬܒܝܐܘ. ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܐܢܘܢ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܟܠܝ ܩܠܟܝ ܡܢ ܒܟܝܐ. 16
ܘܥܝܢܝܟܝ ܡܢ ܕܡܥܬܐ. ܡܛܠ ܕܐܝܬ ܐܓܪܐ ܠܥܡܠܟܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܢܗܦܟܘܢ ܡܢ
ܐܪܥܐ ܕܒܥܠܕܒܒܐ. * ܘܐܝܬ ܣܒܪܐ ܠܚܪܬܟܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܢܗܦܟܘܢ ܒܢܝܐ ܠܬܚܘܡܗܘܢ. 17
* ܡܫܡܥ ܫܡܥܬ ܠܐܦܪܝܡ ܕܐܠܐ ܘܐܡܪ. ܪܕܝܬܢܝ ܡܪܝܐ ܘܐܬܪܕܝܬ. ܐܝܟ ܥܓܠܐ ܕܠܐ 18
ܡܠܦ. ܐܦܢܝܢܝ ܘܐܬܦܢܐ. ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܗܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ. * ܡܛܠ ܕܡܢ ܒܬܪ ܕܐܬܦܢܝܬ 19
ܐܬܒܝܐܬ. ܘܡܢ ܒܬܪ ܕܝܕܥܬ ܐܬܢܝܚܬ. ܒܗܬܬ ܘܐܦ ܐܬܟܢܥܬ. ܡܛܠ ܕܩܒܠܬ ܚܣܕܐ
ܕܛܠܝܘܬܝ. * ܒܪܐ ܗܘ ܚܒܝܒܐ ܠܐܦܪܝܡ. ܘܝܠܕܐ ܡܫܒܚܐ. ܡܛܠ ܕܡܢ ܕܡܡܠܠ ܐܢܐ 20
ܥܠܘܗܝ ܡܬܕܟܪ ܐܢܐ ܠܗ. ܡܛܠܗܢܐ ܗܘܘ ܢܩܫܝܢ ܡܥܝ ܥܠܘܗܝ. ܘܐܪܚܡ ܥܠܘܗܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
* ܐܩܝܡ ܠܟܝ ܐܬܐ. ܘܬܒܝ ܒܡܕܒܪܐ. ܣܝܡܝ ܠܒܟܝ ܠܐܘܪܚܐ ܬܪܝܨܬܐ. ܗܦܘܟܝ ܒܬܘܠܬܐ 21
ܕܐܝܣܪܝܠ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܬܒܝ ܒܩܘܪܝܟܝ ܗܠܝܢ. * ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܡܬܦܠܓܐ ܐܢܬܝ 22
ܒܪܬܐ ܡܥܛܦܬܐ. ܡܛܠ ܕܒܪܐ ܡܪܝܐ ܚܕܬܐ ܒܐܪܥܐ. ܢܩܒܬܐ ܬܗܦܘܟ ܠܓܒܪܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ 23
ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܬܘܒ ܢܐܡܪܘܢ ܡܠܬܐ ܗܕܐ ܒܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕܐ
ܘܒܩܘܪܝܗ. ܡܐ ܕܐܗܦܘܟ ܫܒܝܬܗܘܢ. ܢܒܪܟܟܝ ܡܪܝܐ ܥܘܡܪܐ ܕܙܕܝܩܐ ܛܘܪܐ
ܩܕܝܫܐ. * ܘܢܬܒܘܢ ܒܟܝ ܝܗܘܕܐ ܘܟܠܗܝܢ ܩܘܪܝܗ ܐܟܚܕܐ. ܐܟܪܐ ܘܪܥܝ ܥܢܐ. 24
* ܡܛܠ ܕܐܪܘܝܬ ܢܦܫܐ ܕܨܗܝܐ. ܘܟܠ ܢܦܫܐ ܕܟܦܢܐ ܐܣܒܥܬ. * ܡܛܠܗܢܐ 25 26
ܐܬܬܥܝܪܬ ܘܚܙܝܬ. ܘܫܢܬܝ ܒܣܝܡܐ ܗܘܬ ܠܝ. * ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܐܡܪ 27
ܡܪܝܐ. ܘܐܙܪܘܥ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܘܠܒܝܬ ܝܗܘܕܐ. ܙܪܥܐ ܕܒܢܝܢܫܐ
ܘܙܪܥܐ ܕܒܥܝܪܐ.

Animam ſacerdotum ſuavitate inebriabo, & populus meus jucunditate meâ ſaturabuntur, ait Dominus. 14 Sic dicit Dominus, Vox in Rama audita eſt ejulatûs & fletûs amariſſimi: Rahel deflet filios ſuos, nec vult conſolationem admittere, quia non adſunt. 15 Sic dicit Dominus, Cohibe vocem tuam à fletu, & oculos tuos à lachrymis; quoniam erit merces lachrymis tuis, ait Dominus, & revertentur è terra inimicorum: 16 Erítque ſpes tandem tibi, & revertentur filii ad terminum ſuum. 17 Planè audio Aphremum ejulantem ac dicentem, Caſtigâſti me Domine, & correxi me; eram ut vitulus indomitus. Converte me, & convertar; quia tu es Dominus Deus meus. 18 Nam poſtquam converti me, conſolationem ſenſi; & poſtquam cognovi, quievi: pudore ſum atque ignominiâ ſuffuſus, quòd pueritiæ meæ turpitudine ſim affectus. 19 Filius eſt mihi charus Aphrem, & natus dilectus; nam eodem tempore quo contra eum loquor, recordor ipſius: idcircò viſcera mea ſunt erga ipſum *commota*, & miſerebor ejus, dicit Dominus. 20 Erige tibi vexillum, & habita in deſerto: adverte animum tuum ad viam rectam: revertere virgo Iſraelis, dicit Dominus, & habita in civitatibus tuis iſtis. 21 Quouſque dubia eris filia averſa? nam patraturus eſt Dominus rem novam ſuper terram; Fœmina amplectetur virum. 22 Sic ait Dominus potentiſſimus Deus Iſraelis, Deinceps dicturi ſunt ſermonem hunc in terrâ Judæ & in civitatibus ejus, quum reduxero captivos eorum; Benedicat tibi Dominus O habitaculum juſtorum, mons ſacroſancte: 23 Et habitent in te Juda & omnes civitates ejus ſimul, tam agricolæ quàm paſtores gregum. 24 Etenim inebriabo animam ſitientem, & omnem animam eſurientem ſaturabo. 25 Propter hoc evigilavi & vidi, & ſomnus meus jucundus fuit mihi. 26 Ecce dies venturi ſunt, dicit Dominus; quibus ſeminabo Iſraelitis & Judæis ſemen hominum & ſemen jumentorum: 27

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الحادي والثلثون *
* في مواب *

1 * هكذا قال الرب * ويل على نابو لانها هلكت. اخذت كاريائام * خزي اماث وعاث * ليس يكون 2
لمواب دواء بعد. السماحة في ساوون * صبوا عليهم سرورا * قطعناها من الامم ولا تستريح راحة *
3 * السيف يعدو لان صوت الصارخين من جبل نامان * هلاك وانكسار عظيم * كسرت مواب * 4
اخبروا في زوغورا * لان عصرون امتلات * بالبكاء يصعد الباكي في طريق حرنيم * سمعتم 5
صراخ الكسر * اهربوا وخلصوا نفوسكم * وتصيرون مثل الحمار الوحشي في البرية * من اجل 6 7
انك وثقت بحصونك فلم توخذي * ويخرج خاموس في السبي * وكهنته ورؤساوه معا * وياتي 8
الهلاك على كل الارض ولا تخلص * ويهلك الوادي ويستاصل الوادي قال الرب * اعطوا 9
علامة لمواب * لانها باللمس تشتعل * وجميع مدنها تصير للهلاك من سكانها * ملعون من 10
يصنع اعمال الرب بكسل * الرافع سيفه عن الدم * استراح مواب منذ صباه * وكان متوكلا 11
على شرفه * ولم يفرغ من اناء الى اناء * ولم يمض الى السبي * لاجل هذا ثبت ذوقه فيه * ورائحته
لم تفن * لاجل هذا ها ايام تاتي قال الرب * وارسل له حكاما يدينونه * ويسحقون انيته * 12
ويقطعون قرونه * ويخزى مواب من خاموس * كما خزي بيت اسرائيل من خاموس رجاهم اذ 13
توكلوا عليه * كيف تقولون * نحن اقوياء وانسان قوي للمحاربات * هلكت مواب مدينته * 14 15
وشبانه المختارون نزلوا للذبح * الشر قريب لياتي مواب * وشرور مسرعة جدا * حركوه جميعا 16 17
من حوله * جميعا ادعوا اسمه * قولوا انكسر قضيب الفخر عصا العظمة * انزلي 18
من الشرف * واجلسي في الرطوبة يا جالسة دابون * لان مواب هلكت * صعد عليك
مفسد حصنك *

CAP. XXXI.

Contra Moab.

ITa dicit Dominus, Væ Nabao, quia periit: capta eſt Cariathem, erubuit Amath & Gab. Non eſt ampliùs medicina Moabo, neque *inſolentia in Eſeone: fuderunt ſuper eos mala: excidimus eam de gentibus, nec ullâ fruetur quiete. Gladius curret, quia vox clamantium* auditur *è monte Neman, Clades, & contritio magna: contrita eſt Moab: annuntiate in Zogora, Quòd Eſſeron impleta eſt, cum ploratu aſcendit plorabundus per viam Hornim: audiſtis clamorem contritionis. Fugite, & voſipſos eripite, & eritis ut aſinus ſylveſtris in deſerto. Quia confiſa es arcibus tuis, an non capieris? imò egredietur Chamos in captivitatem, unà cum ſacerdotibus & principibus ſuis: Et veniet exitium ſuper univerſam terram, nec evadet: & peribit vallis, & exterminabitur convallis, ait Dominus. Date ſignum Moabo, quòd tactu flagrabit, & omnes urbes ejus jacturam patientur civium ſuorum. Maledictus qui fecerit opera Domini oſcitanter, quique ſubtraxerit gladium ſuum à ſanguine. Tranquillus fuit Moab à pueritia ſua, eratque fretus nobilitate ſuâ, non effuderat è vaſe in vas, neq; in captivitatem exierat: propterea manet ſapor ejus in ipſo, & odor ipſius non defecit. Hac de re ecce dies venturi ſunt, dixit* Dominus, *quum mittam ei judices, qui condemnabunt eum, vaſa ejus comminuent, & reſecabunt cornua ejus. Et erubeſcet Moab propter Chamoſum, quemadmodum erubuit domus Iſraelis propter Chamoſum ſpem ſuam, quando confiſi ſunt ei. Quomodo dicitis, Nos ſtrenui ſumus & homo fortis ad certamina? Periit Moab urbs ejus, & electi juvenes ejus mactatione corruerunt: Malum brevi adveniet Moabo, & miſeriæ ejus quamcitiſſimæ ſunt. Concutite eum omnes undique, omnes explodite nomen ejus: dicite, Fracta eſt virga gloriæ, baculus magnificentiæ. Deſcende ab altitudine, & ſede in humiditate O habitatrix Debonis quia Moab periit, aſcendit contra te arcis tuæ vaſtator.*

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18

ירמיה : לא

,diruendũ ad &,evellendũ ad eos ſuper fui *vigil* quemadmodum erit Et
28 וְהָיָה כַּאֲשֶׁר שָׁקַדְתִּי עֲלֵיהֶם לִנְתוֹשׁ וְלִנְתוֹץ
ero *pervigil* ſic ,malefaciendum ad & ,perdendum ad & ,*deſtruendum* ad &
וְלַהֲרֹס וּלְהַאֲבִיד וּלְהָרֵעַ כֵּן אֶשְׁקֹד
diebus In .Dominus dixit ,plantandum ad &,ædificandum ad eos ſuper
29 עֲלֵיהֶם לִבְנוֹת וְלִנְטוֹעַ נְאֻם־יְהוָה׃ בַּיָּמִים
dentes &,acerbam uvam comederunt Patres : ultrà dicent non illis
הָהֵם לֹא־יֹאמְרוּ עוֹד אָבוֹת אָכְלוּ בֹסֶר וְשִׁנֵּי
.morietur *iniquitate ſua in* unuſquiſque *Quinimo* .obſtupuerunt filiorum
30 בָנִים תִּקְהֶינָה׃ כִּי אִם־אִישׁ בַּעֲוֺנוֹ יָמוּת
.*ejus* dentes obſtupeſcent , acerbam uvam *comedentis* hominis Omnis
כָּל־הָאָדָם הָאֹכֵל הַבֹּסֶר תִּקְהֶינָה שִׁנָּיו׃
domo cum *excidam* & , DOMINUS dixit , *venientes* dies Ecce
31 הִנֵּה יָמִים בָּאִים נְאֻם־יְהוָה וְכָרַתִּי אֶת־בֵּית
fœdus ſecundũ Non .novum fœdus Jehudah domo cum & ,Iſrael
32 יִשְׂרָאֵל וְאֶת־בֵּית יְהוּדָה בְּרִית חֲדָשָׁה׃ לֹא כַבְּרִית
,eorum manũ *in me apprehendere* die in ,eorũ patribus cum *excidi* quod
אֲשֶׁר כָּרַתִּי אֶת־אֲבוֹתָם בְּיוֹם הֶחֱזִיקִי בְיָדָם
fecerunt irritum ipſi quia : Ægypti terra è eos *educendum ad*
לְהוֹצִיאָם מֵאֶרֶץ מִצְרָיִם אֲשֶׁר־הֵמָּה הֵפֵרוּ אֶת־
.DOMINUS dixit , *eos in* ſum dominatus ego & ,meum pactum
בְּרִיתִי וְאָנֹכִי בָּעַלְתִּי בָם נְאֻם־יְהוָה׃
poſt Iſrael domo cum *excidam* quod fœdus hoc Sed
33 כִּי זֹאת הַבְּרִית אֲשֶׁר אֶכְרֹת אֶת־בֵּית יִשְׂרָאֵל אַחֲרֵי
,eorũ *interiori* in meã legẽ Dabo : Dominus dixit , ipſos dies
הַיָּמִים הָהֵם נְאֻם־יְהוָה נָתַתִּי אֶת־תּוֹרָתִי בְּקִרְבָּם
erunt ipſi & , Deum in eis ero & : eã ſcribam eorũ corde *ſuper* &
וְעַל־לִבָּם אֶכְתֲּבֶנָּה וְהָיִיתִי לָהֶם לֵאלֹהִים וְהֵמָּה יִהְיוּ־
unuſquiſq; &,ſuũ *ſocium* unuſquiſque ultrà docebũt non Et.populũ in mihi
34 לִי לְעָם׃ וְלֹא יְלַמְּדוּ עוֹד אִישׁ אֶת־רֵעֵהוּ וְאִישׁ
ipſi omnes nam : Dominum Cognoſcite : dicendo ,ſuum fratrem
אֶת־אָחִיו לֵאמֹר דְּעוּ אֶת־יְהוָה כִּי כוּלָּם
:Dominus dixit,eorũ maximum ad uſq; &,eorũ mimimo à me cognoſcent
יֵדְעוּ אוֹתִי לְמִקְּטַנָּם וְעַד־גְּדוֹלָם נְאֻם־יְהוָה
.amplius memorabor non eorũ peccati &,eorũ iniquitati propitiabor quia
כִּי אֶסְלַח לַעֲוֺנָם וּלְחַטָּאתָם לֹא אֶזְכָּר־עוֹד׃
, lunæ ſtatuta ; diei lumine in ſolem *dans* , Dominus dixit Sic
35 כֹּה אָמַר יְהוָה נֹתֵן שֶׁמֶשׁ לְאוֹר יוֹמָם חֻקֹּת יָרֵחַ
Dominus,ej⁹ fluctus ſonarunt &,mare *findens* :noctis lumine in ſtellarum &
וְכוֹכָבִים לְאוֹר לָיְלָה רֹגַע הַיָּם וַיֶּהֱמוּ גַלָּיו יְהוָה
,*meis faciebus* à iſta ſtatuta *receſſerint* Si .ejus nomen exercituum
36 צְבָאוֹת שְׁמוֹ׃ אִם־יָמֻשׁוּ הַחֻקִּים הָאֵלֶּה מִלְּפָנַי
meas facies ad gentem eſſe ab ceſſabunt Iſrael ſemen etiam,Dominus dixit
נְאֻם־יְהוָה גַּם זֶרַע יִשְׂרָאֵל יִשְׁבְּתוּ מִהְיוֹת גּוֹי לְפָנַי
, ſurſum de cœli *metiantur* Si :Dominus dixit Sic .diebus cunctis
37 כָּל־הַיָּמִים׃ כֹּה אָמַר יְהוָה אִם־יִמַּדּוּ שָׁמַיִם מִלְמַעְלָה
omne *in reprobabo* ego etiam ,deorſum terræ fundamenta *inveſtigentur* &
וְיֵחָקְרוּ מוֹסְדֵי־אֶרֶץ לְמָטָּה גַּם־אֲנִי אֶמְאַס בְּכָל־
.DOMINUS dixit ,fecerunt quæ omnia *ſuper* , Iſrael ſemen
זֶרַע יִשְׂרָאֵל עַל־כָּל־אֲשֶׁר עָשׂוּ נְאֻם־יְהוָה׃
,Domino civitas ædificabitur &,Dominus dixit ,*venientes* dies Ecce
38 הִנֵּה יָמִים נְאֻם־יְהוָה וְנִבְנְתָה הָעִיר לַיהוָה
ultrà exibit Et .anguli portam ad uſque Chananeel turre à
39 מִמִּגְדַּל חֲנַנְאֵל עַד־שַׁעַר הַפִּנָּה׃ וְיָצָא עוֹד
.Ghohath circuibit & ,Ghareb collem ſuper eo coram menſuræ *linea*
קָוֵה הַמִּדָּה נֶגְדּוֹ עַל גִּבְעַת גָּרֵב וְנָסַב גֹּעָתָה׃
torrentẽ ad uſque *arva omnia* &,cineris & ,cadaverum vallem omnẽ Et
40 וְכָל־הָעֵמֶק הַפְּגָרִים וְהַדֶּשֶׁן וְכָל־הַשְּׁרֵמוֹת עַד־נַחַל
:Domino ſanctitas,Orientem ad equorum portæ angulũ ad uſque,Chidron
קִדְרוֹן עַד־פִּנַּת שַׁעַר הַסּוּסִים מִזְרָחָה קֹדֶשׁ לַיהוָה
.ſeculum in ultrà deſtruetur neque,evelletur non
לֹא־יִנָּתֵשׁ וְלֹא־יֵהָרֵס עוֹד לְעוֹלָם׃

Verſio VULG. LAT.

28 Et ſicut vigilavi ſuper eos ut evellerem, & demolirer, & diſſiparem, & diſperderem, & affligerem: ſic vigilabo ſuper eos ut ædificem, & plantem, ait Dominus. 29 In diebus illis non dicent ultrà; Patres comederunt uvam acerbam, & dentes filiorum obſtupuerunt. 30 Sed unuſquiſque in iniquitate ſua morietur: omnis homo, qui comederit uvam acerbam, obſtupeſcent dentes ejus. 31 Ecce dies venient, dicit Domin⁹: & feriam domui Iſrael & domui Juda fœdus novum: 32 Non ſecundùm pactum, quod pepigi cum patrib⁹ eorum, in die quâ apprehendi manum eorum, ut educerem eos de terra Ægypti; pactum, quod irritum fecerunt, & ego dominatus ſum eorum, dicit Dominus. 33 Sed hoc erit pactum, quod feriam cum domo Iſrael poſt dies illos, dicit Domin⁹: Dabo legem meam in viſceribus eorum, & in corde eorum ſcribam eam: & ero eis in Deum, & ipſi erunt mihi in populum. 34 Et non docebit ultrà vir proximum ſuum, & vir fratrem ſuum, dicens; Cognoſce Dominum: omnes enim cognoſcent me, à minimo eorum uſque ad maximum, ait Domin⁹: quia propitiabor iniquitati eorum, & peccati eorum non memorabor ampliús. 35 Hæc dicit Domin⁹, qui dat Solem in lumine diei, ordinẽ Lunæ & ſtellarum in lumine noctis: qui turbat mare, et ſonant fluctus ejus, Domin⁹ exercituum nomen illi. 36 Si defecerint leges iſtæ coram me, dicit Dominus: tunc & ſemen Iſrael deficiet, ut non ſit gens coram me cunctis diebus. 37 Hæc dicit Dominus; Si menſurari potuerint cœli ſurſũ, & inveſtigari fundamenta terræ deorſum: et ego abjiciam univerſum ſemen Iſrael, propter omnia quæ fecerunt, dicit Dominus. 38 Ecce dies veniunt, dicit Dominus: & ædificabitur civitas Domino, à turre Hananeel 39 uſque ad portam anguli. Et exibit ultrà norma menſuræ in conſpectu ejus ſuper collẽ Gareb: et 40 circuibit Goatha, Et omnem vallem cadaverum, & cineris, & univerſam regionem mortis, uſque ad torrentem Cedron, & uſque ad angulum portæ equorum Orientalis, Sanctum Domini: non evelletur, & non deſtruetur ultrà in perpetuum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

19 Ἐφ' ὁδοῦ στῆθι, καὶ ἔπιδε καθημένη (ο) ἐν Ἀρὴρ, καὶ ἐρώτησον φεύγοντα, καὶ σωζόμενον, 20 καὶ εἰπὸν, Τί ἐγένετο; Κατῃσχύνθη Μωὰβ, ὅτι συνετρίβη. ὀλόλυξον καὶ κέκραξον, ἀνάγγειλον ἐν (π) Ἀρνὼν, Ὅτι ὤλετο Μωὰβ, 21 Καὶ κρίσις ἔρχεται εἰς τὴν γῆν (ρ) Μισὼρ ἐπὶ Χελὼν, καὶ (σ) Ῥεφὰς, καὶ Μωφὰς, 22 Καὶ ἐπὶ Δαιβὼν, καὶ ἐπὶ Ναβαὺ, καὶ ἐπ' οἶκον (τ) Δαιθλαθαὶμ, 23 Καὶ ἐπὶ Καριαθαὶμ, καὶ (υ) ἐπ' οἶκον Γαιμὼλ, καὶ ἐπ' οἶκον Μαὼν, 24 Καὶ ἐπὶ Καριὼθ, καὶ ἐπὶ Βοσὸρ, καὶ ἐπὶ πάσας τὰς πόλεις Μωὰβ τὰς πόρρω καὶ τὰς ἐγγύς. 25 Κατεάχθη κέρας Μωὰβ, καὶ τὸ ἐπίχειρον αὐτοῦ συνετρίβη· 26 Μεθύσατε αὐτὸν, ὅτι ἐπὶ κύριον ἐμεγαλύνθη· καὶ ἐπικρούσει Μωὰβ ἐν χειρὶ αὐτοῦ, Καὶ ἔσται εἰς γέλωτα καὶ αὐτός. 27 (φ) καὶ εἰ μὴ εἰς γελοιασμὸν ἦν σοι Ἰσραὴλ, καὶ ἐν κλοπαῖς σου εὑρέθη, ὅτι ἐπολέμεις αὐτόν. 28 Κατέλιπον τὰς πόλεις, καὶ ᾤκησαν ἐν (χ) πέτραις οἱ κατοικοῦντες Μωάβ· ἐγενήθησαν (ψ) ὥσπερ περιστεραὶ (¨) νοσσεύουσαι ἐν πέτραις, (ω) στόματι βοθύνου. 29 Καὶ ἤκουσα ὕβριν Μωὰβ, (α) ὕβρισε λίαν, ὕβριν αὐτοῦ, καὶ ὑπερηφανίαν αὐτοῦ· καὶ ὑψώθη ἡ καρδία αὐτοῦ. 30 Ἐγὼ δὲ ἔγνων (¨) ἔργα αὐτοῦ· οὐχὶ τὸ ἱκανὸν (β) αὐτῷ οὐχ οὕτως ἐποίησε; 31 Διὰ τοῦτο ἐπὶ Μωὰβ ὀλολύζετε πάντοθεν· βοήσατε ἐπ' ἄνδρας (γ) κειράδας αὐχμοῦ, 32 Ὡς κλαυθμὸν Ἰαζὴρ (δ) ἀποκλαύσομαί σοι ἄμπελος Ἀσερημὰ, κλήματά σου διῆλθε θάλασσαν, πόλεις Ἰαζὴρ ἥψαντο, ἐπὶ ὀπώραν σου, (ε) ἐπὶ τρυγηταῖς σου ὄλεθρος (ζ) ἐπέπεσε. 33 (η) Συνεψήσθη χαρμοσύνη καὶ εὐφροσύνη ἐκ τῆς Μωαβίτιδος, καὶ οἶνος ἦν ἐπὶ ληνοῖς σου· πρωῒ οὐκ (ι) ἐπάτησαν, οὐδὲ δείλης οὐκ ἐποίησαν, αἰδέ. 34 Ἀπὸ κραυγῆς Ἐσεβὼν (κ) ἕως Αἰτὰμ αἱ πόλεις αὐτῶν ἔδωκαν φωνὴν αὐτῶν, ἀπὸ Ζογὸρ ἕως Ὡρωναῒμ, καὶ (λ) ἀγγελίαν Σαλασία, ὅτι καὶ τὸ ὕδωρ (μ) Νεβρεὶν εἰς κατάκαυμα ἔσται. 35 Καὶ ἀπολῶ τὸν Μωὰβ, φησὶ κύριος, (ν) ἀναβαίνοντα ἐπὶ τὸν βωμὸν, καὶ θυμιῶντα θεοῖς αὐτοῦ. 36 Διὰ τοῦτο καρδία τοῦ Μωὰβ, ὥσπερ αὐλοὶ βομβήσουσι, (ξ) καρδία μου ἐπ' ἀνθρώπους (ο) κειράδας ὥσπερ αὐλὸς βομβήσει· διὰ τοῦτο ἃ περιεποιήσατο, ἀπώλετο ἀπὸ ἀνθρώπου, 37 Πᾶσαν κεφαλὴν ἐν παντὶ τόπῳ (π) ξυρηθήσονται, καὶ πᾶς πώγων ξυρηθήσεται, καὶ πᾶσαι χεῖρες κόψονται, καὶ ἐπὶ πάσης ὀσφύος σάκκος.

19 In via ſta, & proſpice ſedens in Aer, & interroga ſugientem, & evadentem, & dic, Quid factum eſt? 20 Confuſus eſt Moab, quoniam contritus eſt. Ulula, & clama, annuntia in Arnon, Quia periit Moab, 21 Et judicium venit in terram Miſor ſuper Chelom, & Rephas, & Mophas, 22 Et ſuper Dæbon, & ſuper Nabau, & ſuper domum Dæblatham, 23 Et ſuper Cariatham, & ſuper domum Gæmol, & ſuper domum Maon, 24 Et ſuper Carioth, & ſuper Boſor, & ſuper omnes civitates Moab, quæ procul, & quæ propè. 25 Confractum eſt cornu Moab, & brachium ejus contritum eſt. 26 Inebriate eum, quia ſuper Dominum ſe magnificavit: & (u) pulſabit Moab in manu ſua: & erit in riſum etiam ipſe: 27 Et (x) quidem in deriſum erat tibi Iſrael, & in furtis tuis inventus eſt, quia oppugnabas (y) eum. 28 Reliquerunt civitates, & habitaverunt in petris habitatores Moab: facti ſunt quaſi columbæ nidificantes in petris, ore foveæ. 29 Et audivi contumeliam Moab (contumelioſus eſt valdè,) contumeliam ejus, & ſuperbiam ejus. Et exaltatum eſt cor ejus: 30 Ego autem cognovi opera ejus: (z) non quod ſatis ei erat, non ſic fecit. 31 Ideò ſuper Moab ululate undiq;. Clamate ſuper (ω) viros (aa) tonſos ſqualoris: 32 Quaſi plorationem Jazer plorabo tibi vitis (bb) Aſerema: propagines tuæ tranſierunt mare: civitates Jazer attigerunt: ſuper tempus fructuum tuorum, ſuper vindemias tuas pernicies irruit. 33 (cc) Corraſum eſt gaudium, & lætitia de Moabitide. Et vinum erat in torcularibus tuis: manè non calcârunt, & veſperè non fecerunt (dd) hæde. 34 A clamore Eſebon (ee) uſq; Ælbam civitates ipſorum dederunt vocem ſuam, à Zogor uſq; Oronæm, & (ff) Angeliam Salaſia: quoniam & aqua Nebrin in combuſtionem erit. 35 Et diſperdam Moab, ait Dominus, aſcendentem ſuper aram, & adolentem diis ejus. 36 Idcirco cor Moab, quaſi tibiæ bombos edent: cor meum ſuper viros tonſos, quaſi tibia ſonabit: ideò, quæ acquiſivit, perierunt ab homine. 37 Omne caput in omni loco radent: & omnis barba radetur, & omnes manus incidentur, & ſuper omnem lumbum cilicium;

MS. A. (ο) ἐν Ἀροὴρ, (π) Ἀρνῶν, (ρ) τοῦ Μισὼρ (σ) ἐπὶ Ῥεφὰς, καὶ Μωφὰθ, (τ) Δεβλαθαὶμ, (υ) ἐπὶ οἶκον Γαμῶλα, (φ) καὶ μὴ εἰς γελοιασμὸν σοι Ἰσραὴλ εἰ ἐν *κολοπαῖς σου (χ) πέτραις οἰκοῦντες (ψ) ὡς (¨) ἐνοσσεύουσαι (ω) βοθύνου στόματι. Ἤκουσα (α) ὕβρισεν σφόδρα, καὶ ὕβριν (¨) τὰ ἔργα (β) αὐτοῦ (γ) κειδάρας (δ) ἀποκλαύσομαι ἄμπελος (ε) καὶ ἐπὶ (ζ) ἔπεσεν. (θ) Συνεψήθη (ι) ἐπατήθησαν, (κ) ἕως Ἐλεαλὴ, καὶ ἕως Ἰασσὰ αἱ πόλεις (λ) ἀγγελία σαλισία, (μ) Ἐβείμ (ν) ἀναβαίνοντα ἐπὶ Μωὰβ, καὶ (ξ) καὶ καρδία (ο) κειδάρεις (π) ξυρήσονται,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

28 וִיהֵי כְּמָא דַחֲשַׁבִית עֲלֵיהוֹן לְמֶעְקַר וּלְתַרָעָא וּלְפַגָּרָא וּלְאַבָּדָא וּלְאַבְאָשָׁא כֵּן יֶחְדֵי
29 מֵימְרִי עֲלֵיהוֹן לְמִבְנֵי וּלְקַיָּמָא אֲמַר יְיָ׃ בְּיוֹמַיָּא הָאִנּוּן לָא יֵימְרוּן עוֹד אֲבָהָתָנָא חָטוֹ
30 31 וּבְנַיָּא לְקוֹ׃ אֱלָהֵן אֱנָשׁ בְּחוֹבֵיהּ יְמוּת כָּל אֱנָשׁ דְּיֶחְטֵי הוּא יְמוּת׃ הָא יוֹמַיָּא אָתַן
32 אֲמַר יְיָ וְאֶגְזַר עִם דְּבֵית יִשְׂרָאֵל וְעִם דְּבֵית יְהוּדָה קְיָמָא חַדְתָּא׃ לָא כִקְיָמָא דִּגְזָרִית עִם
אֲבָהָתְכוֹן בְּיוֹמָא דְּאַתְקֵפִית בִּידֵיהוֹן לְמַפָּקְהוֹן מֵאַרְעָא דְמִצְרַיִם דְּאִנּוּן אַשְׁנִיאוּ יָת
33 קְיָמִי וַאֲנָא אִתְרְעֵיתִי בְּהוֹן אֲמַר יְיָ׃ אֲרֵי דֵין קְיָמָא דַּאֲגְזַר עִם בֵּית יִשְׂרָאֵל בָּתַר יוֹמַיָּא
הָאִנּוּן אֲמַר יְיָ אֶתֵּן יָת אוֹרַיְתִי בִּמְעֵיהוֹן וְעַל לִבְּהוֹן אֶכְתְּבִנַּהּ וְאֶהֱוֵי לְהוֹן לֶאֱלָהּ וְאִנּוּן
34 יְהוֹן קֳדָמַי לְעָם׃ וְלָא יְאַלְּפוּן עוֹד גְּבַר יַת חַבְרֵיהּ וּגְבַר יַת אֲחוּהִי לְמֵימַר דְּעוּ לְמִדְחַל
מִן קֳדָם יְיָ אֲרֵי כוּלְּהוֹן יַלְפוּן לְמִדַּע דַּחֲלְתִּי לִמְזְעֵירְהוֹן וְעַד רַבְּהוֹן אֲמַר יְיָ אֲרֵי אֶשְׁבּוֹק
35 לְחוֹבֵיהוֹן וְחַטָּאֵיהוֹן לָא יִדַּכְרוּן עוֹד׃ כִּדְנָן אֲמַר יְיָ דִּיהַב שִׁמְשָׁא לְאַנְהָרָא בִּימָמָא
36 גְּזֵירַת סִיהֲרָא וְכוֹכְבַיָּא לְאַנְהָרָא בְּלֵילְיָא נְזִיף בְּיַמָּא וְהָמַן גַּלּוֹהִי יְיָ צְבָאוֹת שְׁמֵיהּ׃ כְּמָה
דְּלֵית אֶפְשַׁר דִּיעִידוּן קְיָמַיָּא הָאִלֵּין מִן קֳדָמַי אֲמַר יְיָ אַף זַרְעָא דְּיִשְׂרָאֵל לָא יִבְטְלוּן
37 מִלְמֶהֱוֵי עַם מְשַׁמֵּשׁ קֳדָמַי כָּל יוֹמַיָּא׃ כִּדְנָן אֲמַר יְיָ כְּמָה דְּלֵית אֶפְשַׁר דְּיִדַּע אֱנָשׁ
מְשַׁחַת שְׁמַיָּא מִלְעֵילָא וְאַף לָא לְמִבְדַּק יְסוֹדֵי אַרְעָא מִלְּרַע אַף מֵימְרִי לָא יְרַחֵק בְּכָל
38 זַרְעָא דְּיִשְׂרָאֵל עַל כָּל דַּעֲבַדוּ קֳדָמַי אֲמַר יְיָ׃ הָא יוֹמַיָּא אָתַן אֲמַר יְיָ וְתִתְבְּנֵי קַרְתָּא
39 דִּירוּשְׁלֵם קֳדָם יְיָ מִמִּגְדַּל פִּקּוּס וְעַד תְּרַע זָוִיתָא׃ וִיהֵי נְפַק עוֹד חוּט מְשַׁח בִּנְיָנָא לָקֳבְלֵהּ
40 עַד מְטֵי לְגִבְעָתָא דִסְמִיכָא לְגָרֵב וִיהֵי מִסְתְּחַר לִבְרֵיכַת עִגְלָה׃ וְכָל מֵישְׁרָא אֲתַר
דִּנְפַלוּ תַמָּן פִּגְרֵי מַשְׁרְיַת אַתּוּרָאָה וְכָל אֲרִיתָא עַד נַחְלָא דְקִדְרוֹן עַד זָוִית תְּרַע בֵּית
רֵיסָא דְמַלְכָּא מַדִּינְחָא קוּדְשָׁא קֳדָם יְיָ לָא יִתְעֲקַר וְלָא יִתְפְּגַר עוֹד לְעָלַם׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

28 Et erit, ſicut cogitavi ſuper eos ut evellerem, & ut contererem, & ut deſtruerem, & ut perderem, & ut malefacerem; ſic lætabitur Verbum meum ſuper eos, ut ædificem, & ut ſuſcitem, dicit Dñs. 29 In diebus illis non dicent amplius: Patres peccaverunt, & filii percuſſi ſunt. 30 Sed unuſquiſque in peccato ſuo morietur. Omnis homo qui peccaverit, ipſe morietur. 31 Ecce dies veniunt, dicit Dñs, & feriam cum domo Iſrael & domo Juda pactum novum. 32 Non ſicut pactum quòd pepigi cum patribus eorum in die qua apprehendi manum eorum ut educerem eos de terra Ægypti; quia ipſi irritum fecerunt pactum meum, & ego complacui mihi in eis, dicit Dñs. 33 Quia hoc eſt pactum quòd feriam cum *domo* Iſrael: Poſt dies illos, dicit Dñs, dabo legem meam in viſceribus eorum, & in corde eorum ſcribam eam; & ero eis in Deum, & ipſi erunt coram me in populum. 34 Et non docebunt ultrà vir proximum ſuum & vir fratrem ſuum, dicendo: Scitote timere Dñm. Quia omnes diſcent ut ſciant timorem mei, à minimo eorum uſque ad maximum eorum, dicit Dñs. Quia dimittam delicta eorum & peccata eorum non erunt in memoria amplius. 35 Hæc dicit Dominus, qui dedit Solem ad lucendum die, ſtatuta Lunæ & ſyderum ad lucendum nocte; increpat mare, & ſonant fluctus ejus, Dñs exercituum nomen ejus. 36 Sicut fieri non poteſt ut pertranſeant pacta hæc à facie mea, dicit Dñs; ſemen quoque Iſrael non deſinet eſſe populus miniſtrans coram me omnibus diebus. 37 Hæc dicit Dñs: Sicut non poteſt fieri ut ſciat homo menſuram cœli deſuper, nec etiam inveſtigare fundamenta terræ deorſum; ſic Verbum meum non averſabitur omnem cognationem Iſrael pro iis omnibus quæ fecerunt coram me, dicit Dñs. 38 Ecce dies venient, dicit Dñs, & ædificabitur civitas Jeruſalem coram Dño à turre Pechos uſque ad portam anguli. 39 Et egredietur adhuc filum menſuræ ædificii è regione ejus donec perveniat ad vallem, quæ eſt vicina Gareb, & erit circumiens *piſcinam* rotundam. 40 Et omnis vallis ubi ceciderunt cadavera exercitus Aſſyriorum; & omnes aquæ ductus uſque ad torrentem Cedron, & uſque ad angulum portæ domus ſtadii regis, Orientem verſus, ſanctitas coram Domino, non evelletur, nec deſtruetur ultrà in perpetuum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܝܟ ܕܐܬܚܦܛܬ ܥܠܝܗܘܢ ܠܡܥܩܪ ܘܠܡܣܚܦ: ܘܠܡܦܓܪܘ. ܘܠܡܘܒܕܘ 28
ܘܠܡܒܐܫܘ. ܗܟܢܐ ܐܬܚܦܛ ܥܠܝܗܘܢ ܠܡܒܢܐ ܘܠܡܢܨܒ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܒܝܘܡܬܐ 29
ܗܢܘܢ ܠܐ ܢܐܡܪܘܢ ܬܘܒ ܐܒܗܐ ܐܟܠܘ ܒܘܣܪܐ. ܘܫܢܝܗܘܢ ܕܒܢܝܐ ܩܗܝ. * ܐܠܐ ܐܢܫ ܒܚܛܗܘܗܝ 30
ܢܡܘܬ. ܟܠ ܒܪܢܫܐ ܕܐܟܠ ܒܘܣܪܐ. ܢܩܗܝܢ ܫܢܘܗܝ. * ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܐܡܪ 31
ܡܪܝܐ. ܘܐܩܝܡ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܘܠܒܝܬ ܝܗܘܕܐ ܕܝܬܩܐ ܚܕܬܐ. * ܠܐ ܐܝܟ ܗܝ ܕܝܬܩܐ 32
ܕܐܩܝܡܬ ܥܡ ܐܒܗܝܗܘܢ. ܒܝܘܡܐ ܕܐܚܕܬ ܒܐܝܕܝܗܘܢ ܘܐܦܩܬ ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ.
ܡܛܠ ܕܗܢܘܢ. ܒܛܠܘ ܕܝܬܩܝ. ܘܐܦ ܐܢܐ ܫܛܬ ܒܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܐܠܐ ܗܕܐ 33
ܕܝܬܩܐ ܕܐܩܝܡ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܒܬܪ ܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܬܠ ܢܡܘܣܝ
ܒܡܥܝܗܘܢ ܘܥܠ ܠܒܗܘܢ ܐܟܬܒܝܗ. ܘܐܗܘܐ ܠܗܘܢ ܠܐܠܗܐ. ܘܗܢܘܢ
ܢܗܘܘܢ ܠܝ ܠܥܡܐ. * ܘܠܐ ܢܠܦܘܢ ܬܘܒ ܓܒܪ ܠܐܚܘܗܝ ܘܓܒܪ ܠܚܒܪܗ. ܘܢܐܡܪܘܢ ܕܕܥܘ 34
ܠܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ ܢܕܥܘܢܢܝ. ܡܢ ܙܥܘܪܗܘܢ ܘܥܕܡܐ ܠܣܒܝܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
ܡܛܠ ܕܐܫܒܘܩ ܚܛܗܝܗܘܢ. ܘܠܚܛܗܝܗܘܢ ܬܘܒ ܠܐ ܐܬܕܟܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. 35
ܕܝܗܒ ܫܡܫܐ ܠܢܘܗܪܐ ܕܐܝܡܡܐ. ܘܢܡܘܣܐ ܕܣܗܪܐ ܘܕܟܘܟܒܐ ܠܢܘܗܪܐ ܕܠܠܝܐ. ܕܓܥܐ
ܒܝܡܐ ܘܫܠܝܢ ܓܠܠܘܗܝ. ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ. * ܐܢ ܢܥܒܪܘܢ ܢܡܘܣܐ ܗܠܝܢ ܡܢ ܩܕܡܝ 36
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܦ ܙܪܥܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܢܬܒܛܠ. ܠܐ ܢܗܘܘܢ ܥܡܐ ܩܕܡܝ ܟܠܗܘܢ ܝܘܡܬܐ.
* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܢ ܢܬܡܫܚܘܢ ܫܡܝܐ ܡܢ ܠܥܠ: ܘܢܬܓܠܘܢ ܫܬܐܣܝܗ ܕܐܪܥܐ ܡܢ 37
ܠܬܚܬ. ܐܦ ܐܢܐ ܐܣܠܐ ܠܟܠܗ ܙܪܥܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܡܛܠ ܟܠܡܕܡ ܕܥܒܕܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
* ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܬܬܒܢܐ ܡܕܝܢܬܐ ܠܡܪܝܐ. ܡܢ ܡܓܕܠܐ ܕܚܢܢܐܝܠ. ܠܬܪܥܐ 38
ܕܙܘܝܬܐ. * ܘܢܦܘܩ ܬܘܒ ܚܘܛܐ ܕܡܫܘܚܬܐ ܠܩܘܒܠܗ. ܥܠ ܪܡܬܐ ܕܓܪܒ. ܘܢܬܟܪܟ 39
ܠܥܘܬܐ. * ܘܟܠܗ ܦܩܥܬܐ ܕܫܕܝܢ ܒܗ ܩܛܡܐ ܘܙܒܠܐ. ܥܕܡܐ ܠܢܚܠܐ ܕܩܕܪܘܢ. ܘܥܕܡܐ 40
ܠܙܘܝܬܐ ܕܬܪܥܐ ܕܣܘܣܘܬܐ ܡܕܢܚܝܐ. ܩܘܕܫܐ ܠܡܪܝܐ. ܠܐ ܢܬܥܩܪ ܘܠܐ ܢܬܣܚܦ ܬܘܒ
ܠܥܠܡ.

Et quemadmodum ſtatueram eos evellere, 28
demoliri, deſtruere, perdere, & malis affice-
re; ita recordabor eorum ut ædificem ac plan-
tem *eos*, ait Dominus. Iis diebus non dicent 29
ampliùs, Patres comederunt uvas acerbas, &
dentes filiorum obſtupuerunt: Sed quiſque 30
pro peccatis ſuis morietur, quicunque come-
derit uvas acerbas, hujus dentes obſtupeſcent.
Ecce dies venturi ſunt, ait Dominus, quibus 31
ſtatuam Iſraelitis & Judæis fœdus novum,
Haud ſimile fœderi illi quod pepigeram cum 32
majoribus eorum, quo die prehendi manus
eorum & eduxi eos è terra Ægypti: (quoni-
am ipſi irritum fecerunt fœdus meum, ego
pariter aſpernatus ſum eos, dicit Dominus.)
Sed hoc eſt fœdus quod imponam Iſraelitis: 33
Poſt dies illos, dicit Dominus, indam legem
meam in præcordia eorum, & in cordibus
eorum ſcribam illam; & ero eis Deus, & ipſi
erunt mihi populus. Et non docebunt am- 34
pliùs quiſque fratré ſuum & quiſque ſocium
ſuum, dicéntque; Agnoſcite Dominum: nam
omnes agnoſcent me à minimo ad ſenem uſ-
que, dicit Dominus; dimittam quippe culpas
eorum, & peccata eorum non recordabor
ampliús. Sic ait Dominus qui ſolem diſpo- 35
ſuit in lucem diurnam, & adminiſtrationem
lunæ ac ſiderum in lucem nocturnam; quo
mari interminante ſedantur fluctus ejus; cui
nomen eſt Dominus potentiſſimus: Si ceſ- 36
ſârint adminiſtrationes iſtæ à conſpectu meo,
dicit Dominus, etiam ſemen Iſraelis ceſſa-
bunt eſſe populus in conſpectu meo cunctis
diebus. Sic dicit Dominus, Si menſurentur 37
cœli supernè, & pateſiant fundamenta terræ
infernè; etiam ego ſpernam totum ſemen Iſ-
raelis propter omnia quæ fecerunt, dicit Do-
minus. Ecce dies venturi ſunt, ait Domi- 38
nus, quum ædificabitur civitas *hæc* Domino
à turri Hananaelis uſque ad portam anguli:
Et procedet adhuc filum menſorium è regio- 39
ne illius verſùs collem Gareb, & reflectetur
ad Rama: Et tota vallis in quam projici- 40
unt fimum ac cinerem, uſque ad torrentem
Cedron, & uſque ad angulum portæ equo-
rum Orientalem, erit ſanctuarium Domino,
quod non evelletur, neque deſtruetur ampliùs
in perpetuum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* قفي علي الطريق وانظري ايتها الجالسة في اروعير * واسألي هاربا ومتخلصا * وقولي لماذا انها 19
انكسرت * اي شي كان * خزيت مواب * ولولي واخبري في ارنون ان مواب هلكت * والقضاء 20 21
اتي الي ارض ميشور علي سالون وعلي موفاث وعلي رافاس * وعلي رابون وعلي نابو وعلي بيت 22
دبلاثا * وعلي كرياثام وعلي بيت عامولا وعلي بيت ماعون * وعلي كاريوث وعلي بوصر وعلي 23 24
جميع مدن مواب البعيدة والقريبة * انكسر قرن مواب * وانسحق ذراعه * اسكروه لان الرب 25 26
قال * عظمه ومرتفع مواب في يديه * ويصير ضحكة وهو * كما كان اسرائيل لك للهزو وان كانوا 27
وجدوا في سرقاتك لما حاربتهم * تركوا المدن وسكنوا في الصخور * وسكان مواب صاروا مثل 28
الحمام المعشش في الصخور في فم الحفر * سمعت بعظمة مواب * تكبرت جدا كبرياه وارتفع 29
قلبه * وانا عرفت اعماله * اليس هكذا كفوه * اليس هكذا صنع * لاجل هذا ولولوا علي 30 31
مواب * اصرخوا جميعا علي رجال القحط * مثل بكاء يعزير ابكي عليك يا كرمة سابانا * 32
اغصانك جازت البحر * مدن يعزير لمسوا * علي فاكهتك نزل الهلاك * علي قطافك * زال 33
السرور والفرح من الموابية * والخمر الذي كان في معاصرك باكرا لم يداسوا * ولا عشية لم
يصنعوا * واه من صراخ اساون * الي الالي والي اطان مدنهم اعطوا صوتهم * من مكابس دم 34
اعياث واخبار سالاسيا * لان ماء نبريم يصير برية * واهلك مواب قال الرب * الصاعد علي 35
المذبح المبخر لالهته * لاجل هذا قلب مواب مثل زمور يزمرن * لاجل هذا ما اقتنوه هلك من 36
الانسان * يجزون كل راس بكل موضع * وكل لحية تنتف * وكل الايدي تقطع * والمسوح 37
علي كل حقو *

Ad viam conſiſte & aſpice O quæ ha- 19
bitas in Aröere, interroga fugientem &
evadentem, & dicito, Cur iſta contrita
eſt? quid rei factum eſt? Erubuit Moab, 20
ulula & annuntia in Arnone periiſſe
Moabum, Et judicium perveniſſe ad ter- 21
ram Miſoris, ſuper Selonem, ſuper
Mophazem, & ſuper Rephaſem, Super 22
Rebonem, ſuper Nabaum, & ſuper Beth-
deblathan, Super Keriathamum, ſuper 23
Bethghemolam, & ſuper Beth-maonem,
Super Kariath, ſuper Boſorem, demum 24
ſuper omnes urbes Moabi remotas &
propinquas. Confractum eſt cornu Mo- 25
abi, & contritum eſt brachium ejus. Ine- 26
briate eum, quia Dominus dixit: magni-
ficentia & celſitudo Moabi in manu ejus,
eritque riſui etiam ipſe, Quemadmo- 27
dum fuerunt Iſraelitæ tibi in deriſum;
etiamſi inventi fuerint in furtis tuis,
quum oppugnares eos. Derelictis urbibus 28
habitaverunt in petris, ita habitatores
Moabi ſimiles erunt columbis nidifican-
tibus in petris, in ore foveæ. Audivi ſu- 29
perbiam Moabi, crevit admodum arro-
gantia ejus, & elevatum eſt cor ejus; &
ego novi opera ejus. Annon hujuſmodi 30
eſſet retributio ejus? annon ita fecit?
Propterea ululate ſuper Moabum, cla- 31
mate omnes ſuper viros penuriâ laboran-
tes. Ut fletu Jazeris deſleo te, O vitis 32
Sebemæ; propagines tuæ mare penetrâ-
runt, urbes Jazeris attigerunt: ſuper
fructus tuos irruit pernicies, & ſuper
vindemiam tuam. Deſiit gaudium & 33
lætitia à Moabitide: & vina quæ erant
in lacubus tuis tempore matutino, haud
calcabuntur, nec veſpere conficientur.
Eheu, propter clamorem Eſeonis; ad Ele- 34
alam & ad Ettanem urbes ſuas uſque,
vocem ſuam ediderunt, ob torcularia
ſanguinis Aghiath & nuntia Salaſiæ:
quoniam aqua Nebrim vertetur in deſer-
tum. Perdamque Moabum, dixit Do- 35
minus, aſcendentem ſuper aram, adolen-
tem diis ejus. Idcirco cor Moabi buc- 36
cinarum inſtar tinniet: idcirco quicquid
poſſidebant, periit ab homine: Tonde- 37
bunt omne caput in omni loco, omnis
barba vellicabitur, omnes manus amputa-
buntur: & ſacci ſuper omnem lumbum,

ירמיה : לב

CAP. XXXII. לב

decimo anno in , Domino à Irmejahu ad fuit quod Verbum
1 הדבר אשר היה אל ירמיהו מאת יהוה בשנת העשירית
anni decimus octavus annus ipſe , Jehudah regis Sidchijahu
לצדקיהו מלך יהודה היא השנה שמנה עשרה שנה
:Jeruſalaim *ſuper coarctantes* Babel regis *virtus* tunc Et .Nebuchadneſar
2 לנבוכדראצר: ואז חיל מלך בבל צרים על ירושלם
domo quæ , cuſtodiæ atrio in clauſus erat propheta Irmejahu &
וירמיהו הנביא היה כלוא בחצר המטרה אשר בית
:dicendo , Jehudah rex Sidchijahu eum clauſerat Quòd .Jehudah regis
3 מלך יהודה: אשר כלאו צדקיהו מלך יהודה לאמר
dans ego Ecce :Dominus dixit Sic : dicendo *vaticinans* tu Quare
מדוע אתה נבא לאמר כה אמר יהוה הנני נתן
Sidchijahu Et ? eã capiet & , Babel regis manũ in hanc civitatem
4 את העיר הזאת ביד מלך בבל ולכדה: וצדקיהו
tradendo tradetur ſed , Chaſdim manu de evadet non Jehudah rex
מלך יהודה לא ימלט מיד הכשדים כי הנתן ינתן
ejus oculi &, illius ore cum ejus os loquetur & , Babel regis manum in
ביד מלך בבל ודבר פיו עם פיו ועיניו
; Sidchijahu faciet ire Babel in Et .videbunt illius oculos
5 את עיניו תראינה: ובבל יולך את צדקיהו
dimicaveritis *Cum* .Dominus dixit , eum *me viſitare uſque* erit ibi &
ושם יהיה עד פקדי אתו נאם יהוה כי תלחמו
verbum Fuit : Irmejahu dixit Et .proſperabimini non , Chaſdim cum
6 את הכשדים לא תצליחו: ויאמר ירמיהו היה דבר
tu° patruelis Sallum filius Chanamel Ecce : dicendo , me ad Domini
7 יהוה אלי לאמר: הנה חנמאל בן שלם דדך
:Hanathoth in qui , meũ agrum tibi Eme : dicendo , te ad *veniens*
בא אליך לאמר קנה לך את שדי אשר בענתות
Chanamel me ad venit Et .*emendum ad* redemptionis judicio *tibi* quia
8 כי לך משפט הגאלה לקנות: ויבא אלי חנמאל
ait & , cuſtodiæ atrium ad , Domini verbũ juxta mei patrui filius
בן דודי כדבר יהוה אל חצר המטרה ויאמר
terra in quæ , Hanathoth in qui meũ agrum quæſo Eme : me ad
אלי קנה נא את שדי אשר בענתות אשר בארץ
:tibi eme : redemptio *tibi* & , *hæreditatis* jure *tibi* quia :Binjamin
בנימין כי לך משפט הירשה ולך הגאלה קנה לך
agrum emi Et .*ipſum* Domini verbum quòd cognovi &
9 ואדע כי דבר יהוה הוא: ואקנה את השדה
ei appendi & , Hanathoth in qui , mei patrui filio Chanamel à
מאת חנמאל בן דדי אשר בענתות ואשקלה לו
ſcripſi Et .argenteos decem & , ſecalim ſeptem , argentum
10 את הכסף שבעה שקלים ועשרה הכסף: ואכתב
argentum appendi & : teſtes feci teſtificari & , ſignavi & , libro in
בספר ואחתם ואעד עדים ואשקל הכסף
, ſignatum emptionis librum accepi Et .*bilancibus* in
11 במאזנים: ואקח את ספר המקנה את החתום
librum dedi Et .*patentem* & , *jurium* & *præcepti*
12 המצוה והחקים ואת הגלוי: ואתן את הספר
Chanamel oculis in Machſejah filio Nerijah filio Baruch emptionis
המקנה אל ברוך בן נריה בן מחסיה לעיני חנמאל
, emptionis libro in *ſcribentium* teſtium oculis in & , mei patrui
דדי ולעיני העדים הכתבים בספר המקנה
præcepi Et .cuſtodiæ atrio in *manentium* , Jehudæorum omniũ oculis in
13 לעיני כל היהודים הישבים בחצר המטרה: ואצוה
exercituũ Dominus dixit Sic : dicendo , eorum oculis in Baruch
14 את ברוך לעיניהם לאמר: כה אמר יהוה צבאות
emptionis librum , iſtos libros *Tollendo* : Iſrael Deus
אלהי ישראל לקוח את הספרים האלה את ספר המקנה
eos *dabis* & , hunc apertum librum & , ſignatum & , hunc
הזה ואת החתום ואת ספר הגלוי הזה ונתתם
.multis diebus ſtent ut , *teſtæ* vaſe in
בכלי חרש למען יעמדו ימים רבים:

Verſio VULG. LAT.

CAP. XXXII.

1 VErbum, quod factum eſt ad Jeremiam à Domino, in anno decimo Sedeciæ regis Juda: ipſe eſt annus decimus octavus Na- 2 buchodonoſor. Tunc exercitus regis Babylonis obſidebat Jeruſalem: & Jeremias Propheta erat clauſus in atrio carceris, qui 3 erat in domo regis Juda. Clauſerat enim eum Sedecias rex Juda, dicens; Quarè vaticinaris, dicens; Hæc dicit Dominus; Ecce ego dabo civitatẽ iſtam in man⁹ regis Babylonis, & capiet eam? 4 Et Sedecias rex Juda non effugiet de manu Chaldæorum: ſed tradetur in man⁹ regis Babylonis: & loquetur os ejus cum ore illi⁹, & oculi ejus oculos illi⁹ videbunt. 5 Et in Babylonem ducet Sedeciã: & ibi erit donec viſitem eum, ait Dñs: ſi autem dimicaveritis adverſùm Chaldæos, nihil proſperũ 6 habebitis. Et dixit Jeremias; Factum eſt verbum Domini ad me, 7 dicens; Ecce Hanameel filius Sellum patruelis tu⁹ veniet ad te, dicens; Eme tibi agrum meũ, qui eſt in Anathoth: tibi enim competit ex propinquitate ut 8 emas. Et venit ad me Hanameel fili⁹ patrui mei ſecundùm verbum Domini ad veſtibulum carceris, & ait ad me; Poſſide agrum meum, qui eſt in Anathoth in terra Benjamin: quia tibi competit hæreditas, & tu propinqu⁹ es ut poſſideas. Intellexi autem 9 quòd verbum Domini eſſet. Et emi agrum ab Hanameel filio patrui mei, qui eſt in Anathoth: & appendi ei argentum ſeptem 10 ſtateres, & decem argenteos. Et ſcripſi in libro, & ſignavi, & adhibui teſtes: & appendi argen- 11 tum in ſtatera. Et accepi librum poſſeſſionis ſignatum, & ſtipulationes, & rata, & ſigna forin- 12 ſec⁹. Et dedi librum poſſeſſionis Baruch filio Neri filii Maaſiæ in oculis Hanameel patruelis mei, in oculis teſtium, qui ſcripti erant in libro emptionis, & in oculis omnium Judæorum, qui ſede- 13 bant in atrio carceris. Et præcepi Baruch coram eis, dicens; 14 Hæc dicit Domin⁹ exercituum, Deus Iſrael; Sume libros iſtos, librum emptionis hunc ſignatũ, & librum hunc qui apertus eſt: & pone illos in vaſe fictili, ut permanere poſſint diebus multis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

38 Καὶ ἐπὶ πάντων τῶν δωμάτων Μωὰβ, καὶ (ρ) ἐπὶ ταῖς πλατείαις αὐτῆς, ὅτι συνέτριψα, φησὶ κύριος, (σ) ὡς ἀγγεῖον, οὗ οὐκ ἔστιν χρεία αὐτοῦ. 39 Πῶς κατήλλαξε; πῶς ἔστρεψε νῶτον Μωάβ; ᾐσχύνθη, καὶ ἐγένετο Μωὰβ εἰς γέλωτα, καὶ ἐγκότημα πᾶσι τοῖς κύκλῳ (τ) αὐτῆς. 40 Ὅτι οὕτως εἶπε κύριος, 41 Ἐλήφθη (υ) Καριὼθ, καὶ τὰ ὀχυρώματα συνελήφθη, 42 Καὶ ἀπολεῖται Μωὰβ ἀπὸ ὄχλου, ὅτι ἐπὶ τὸν κύριον ἐμεγαλύνθη. 43 Παγὶς καὶ φόβος καὶ βόθυνος (φ) ἐπὶ σὲ καθήμενος (χ) Μωάβ. 44 Ὁ φεύγων ἀπὸ προσώπου τοῦ φόβου, ἐμπεσεῖται εἰς τὸν βόθυνον· καὶ ὁ ἀναβαίνων ἐκ τοῦ βοθύνου, (ψ) καὶ συλληφθήσεται ἐν τῇ παγίδι· (ω) ὅτι ἐπάξω ταῦτα ἐπὶ Μωὰβ ἐν ἐνιαυτῷ ἐπισκέψεως (α) αὐτῶν.

Et ſuper omnia tecta Moab, & in plateis (gg) ejus: quia contrivi, ait Dominus, tanquàm vas, cujus non eſt uſus ejus. 39 *Quomodò commutavit, quomodò vertit dorſum Moab? Confuſus eſt, & factus eſt Moab in riſum, & odium omnibus, qui in circuitu ejus.* 40 *Quia ſic dixit (hh) Dominus;* 41 *Capta eſt Carioth, & munitiones occupatæ (ii) ſunt:* 42 *Et peribit Moab à turba; quia ſuper Dominum ſe magnificavit.* 43 *Laqueus, & timor, & fovea ſuper te, qui ſedes (kk) Moab.* 44 *Qui fugit à facie timoris, incidet in foveam: & qui aſcendit de fovea, & capietur in laqueo: quoniam inducam hæc ſuper Moab in anno viſitationis (ll) ejus.* 38

MS. A. (ρ) ἐπὶ πλατείαις (σ) τὸν Μωὰβ ὡς (τ) αὐτοῦ. (υ) Ἀκκαριώθ, (φ) ἐπὶ σοὶ (χ) ἐπὶ Μωάβ. (ψ) συλλημφθήσεται (ω) διότι (α) αὐτῆς.

ΚΕΦ. λβ'.

Cap. 25. Vulg.Lat.(·) Οὕτως εἶπε κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, Λάβε τὸ ποτήριον τοῦ οἴνου τοῦ ἀκράτου τούτου ἐκ χειρός μου, καὶ ποτιεῖς πάντα τὰ ἔθνη, πρὸς ἃ ἐγὼ ἀποστέλλω σε πρὸς αὐτούς. 15 16 Καὶ πίονται, καὶ ἐξεμοῦνται, καὶ (α) ἐκμανήσονται ἀπὸ προσώπου τῆς (β) μαχαίρας, ἧς ἐγὼ ἀποστέλλω ἀναμέσον αὐτῶν. 17 Καὶ ἔλαβον τὸ ποτήριον ἐκ χειρὸς κυρίου, καὶ ἐπότισα τὰ ἔθνη πρὸς ἃ ἀπέστειλέ με κύριος (γ) πρὸς αὐτὰ, 18 Τὴν Ἱερουσαλὴμ, καὶ τὰς πόλεις Ἰούδα, καὶ βασιλεῖς Ἰούδα καὶ ἄρχοντας αὐτοῦ, τοῦ θεῖναι αὐτὰς εἰς ἐρήμωσιν, καὶ εἰς ἄβατον, καὶ εἰς συριγμὸν, 19 Καὶ τὸν Φαραὼ βασιλέα Αἰγύπτου, καὶ τοὺς παῖδας αὐτοῦ, καὶ τοὺς μεγιστᾶνας αὐτοῦ, καὶ πάντα τὸν λαὸν αὐτοῦ, 10 Καὶ πάντας τοὺς (δ) συμμίκτους, καὶ πάντας τοὺς βασιλεῖς (ε) ἀλλοφύλων, καὶ τὴν Ἀσκάλωνα, καὶ τὴν Γάζαν, καὶ τὴν Ἀκκάρων, καὶ τὸ ἐπίλοιπον Ἀζώτου, 21 Καὶ τὴν Ἰδουμαίαν, καὶ τὴν Μωαβῖτιν, καὶ τοὺς υἱοὺς Ἀμμὼν, 22 Καὶ (ζ) βασιλεῖς Τύρου, καὶ βασιλεῖς Σιδῶνος, καὶ βασιλεῖς τοὺς ἐν τῷ πέραν τῆς θαλάσσης,

CAP. XXXII.

SIc (a) dixit Dominus Deus Iſrael; Sume calicem vini meri hujus de manu mea, & potare facies omnes gentes, ad quas ego mitto te ad eos. 15 *Et bibent, & evoment, & inſanient à facie gladii, quem ego mitto inter eos.* 16 *Et accepi calicem de manu Domini, & propinavi gentibus, ad quas miſit me Dominus ad eas:* 17 *Hieruſalem, & civitatibus Juda, & regibus Juda, & principibus ejus, ad ponendum eas in deſolationem, & in invium, & in (b) ſibilum:* 18 *Et Pharaoni regi Ægypti, & pueris ejus, & principibus ejus, & omni populo ejus,* 19 *Et omnibus (c) miſtitiis, & omnibus regibus Allophylorum, & Aſcaloni, & Gazæ, & Accaron, & reliquiis Azoti,* 20 *Et Idumææ, & Moabitidi, & filiis Ammon,* 21 *Et regibus Tyri, & regibus Sidonis, & regibus, (d) qui trans mare,* 22

MS.A.(·) ὍΣΑ ἘΠΡΟΦΗ´ΤΕΥΣΕΝ ἹΕΡΕΜΙ´ΑΣ ἘΠῚ ΠΆΝΤΑ ΤᾺ ἜΘΝΗ. (α) μανήσονται (β) μαχαίρης, (γ) ἐπ' αὐτὰ, (δ) συμμίκτους αὐτοῦ, (ε) πάντων τῶν ἀλλοφύλων, (ζ) πάντας βασιλεῖς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

לב

1 פתגם נבואה דהוה עם ירמיה מן קדם יי בשתא עשירתא לצדקיה מלך שבטא דבית
2 יהודה היא שתא תמני עשרי שנין לנבוכדנצר: בכן משרית מלכא דבבל צירין על
ירושלם וירמיה נביא הוה כלי בדרת בית אסיריא די בבית מלך שבטא דבית יהודה:
3 דאסריה צדקיה מלך שבטא דבית יהודה למימר מדין את מתנבי למימר כדנן אמר יי
4 האנא מסר ית קרתא הדא ביד מלכא דבבל ויכבשנה: וצדקיה מלך שבטא דבית
יהודה לא ישתיזב מידא דכסדאי ארי אתמסרא יתמסר ביד מלכא דבבל וימליל
5 פומיה עם פומיה ועינוהי ית עינוהי יחזין: ולבבל יוביל ית צדקיה ותמן יהי עד דיעול
6 דוכרניה קדמי אמר יי ארי תגיחון קרב עם כסדאי לא תצלחון: ואמר ירמיה הוה פתגם
7 נבואה מן קדם יי עמי למימר: הא חנמאל בר שלום אחבוך אתי לותך למימר זבון לך
8 ית חקלי דבענתות ארי לך חזיא אחסנתא למזבן: ואתא לותי חנמאל בר אחבי
כפתגמא דיי לדרת בית אסיריא ואמר לי זבון כען ית חקלי דבענתות דבארע שבטא
9 בנימן ארי לך חזיא ירותא ולך אחסנתא זבון לך וידעית ארי פתגמא דיי הוא: וזבנית
ית חקלא מן חנמאל בר אחבי דבענתות ותקלית ליה ית כספא שבעא מנן ועשר סלעין
10 11 דכסף: וכתבית בשטרא וחתמית ואסהדית סהדין ותקלית כספא במוזניא: ונסבית
12 ית שטרא דזבינא ית דכתיב וחתים כהלכתא וכיד חזוא וית שטרא פתיחא: ויהבית ית
שטרא דזביני לברוך בר נריה בר מחסיה לעיני חנמאל אחבי ולעיני סהדיא דכתיבין
13 בשטרא דזביני לעיני כל יהודאי דיתבין בדרת בית אסיריא: ופקדית ית ברוך לעיניהון
14 למימר: כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל סב ית שטריא האלין ית שטרא דזבינא
הדין וית דכתיב וחתים וית שטרא פתיחא הדין ותתננון במן דחסף בדיל דיתקימון יומין סגיאין:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XXXII.

1 VErbum prophetiæ quod factum eſt ad Jeremiam à facie Domini in anno decimo Sedechiæ regis tribus domus Juda; ipſe eſt annus decimus octavus Nabuchodonoſor. 2 Et tunc copiæ regis Babylonis obſidebant Jeruſalem, & Jeremias propheta erat clauſus in atrio carceris, qui eſt in domo regis domus Juda. 3 Quem vinctum tenebat Sedechias rex tribus domus Juda: dicens, Quare tu prophetas; dicendo, Hæc dicit Dominus, Ecce ego tradam civitatem iſtam in manum regis Babylonis, & ſubjiciet eam? 4 Et Sedechias rex domus Juda non evadet è manu Chaldæorum; ſed tradendo tradetur in manum regis Babylonis, & loquetur os ejus cum ore illius, & oculi ejus oculos illius intuebuntur. 5 Et in Babylonem ducet Sedechiam, ubi erit donec ſubeat memoria ejus coram me, dicit Dominus. Etiam ſi pugnaveritis adverſùm Chaldæos, nihil proficietis. 6 Et dixit Jeremias, Factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini ad me, dicens: 7 Ecce Hanameel filius Salum patrui tui venit ad te: dicens, Eme tibi agrum meum qui eſt in Anathoth: quia tibi convenit hæreditas ut emas. 8 Venitque ad me Hanameel filius patrui mei juxta verbum Dñi in atrium domus vinctorũ; & dixit mihi, Eme nunc agrum meum, qui in Anathoth, quæ eſt in terra tribus Benjamin, quia tibi competit hæreditas, et tua eſt poſſeſſio, eme tibi. Et cognovi ꝙ verbum Domini eſſet. 9 Emi itáq; agrum ab Hanameel filio patrui mei, qui erat in Anathoth; et appendi ei argentum ſeptem minas, & decem ſiclos argenti. 10 Et ſcripſi in chirographo, & ſignavi, & adhibui teſtes, & appendi argentũ ſtateris. 11 Et tuli chirographum emptionis, ꝙ ſcriptum erat, & ſignatũ juxta morem, & ſicut decet, chirographum apertum. 12 Et dedi chirographũ emptionis Baruch filio Neriæ filii Maaſiæ in conſpectu Hanameel [*filii*] fratris patris mei, et in conſpectu teſtiũ qui ſcripti erant in chirographo emptionis, & in conſpectu omnium Judæorum, qui ſedebant in atrio vinctorũ. 13 Et præcepi Baruch in oculis eorum, dicens: 14 Hæc dicit Dñs Deus Iſrael: Tolle chirographa iſta, libellum emptionis iſtum, et ꝙ ſcriptum eſt & ſignatum, & chirographum apertum iſtud, & pones ea in vaſe fictili, ut permaneant diebus multis.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܦܘܠܓܐ * ܠܒ * ܦܬܓܡܐ ܕܗܘܐ ܠܘܬ ܐܪܡܝܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ . ܒܫܢܬܐ 1
ܕܥܣܪܐ ܕܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܗܘܝܘ ܫܢܬ ܬܡܢܬܥܣܪܐ ܠܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ
ܕܒܒܠ . * ܘܚܝܠܗ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܟܪܝܢ ܗܘܐ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ . ܘܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ . ܚܒܝܫ 2
ܗܘܐ ܒܕܪܬܐ ܕܡܛܪܬܐ ܕܒܝܬ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ . * ܕܚܒܫܗ ܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܐܡܪ . 3
ܡܛܠ ܡܢܐ ܡܬܢܒܐ ܐܢܬ ܘܐܡܪ ܐܢܬ . ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ . ܗܐ ܡܫܠܡ ܐܢܐ ܠܗܕܐ
ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܒܐܝܕܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܘܢܟܒܫܝܗ̇ . * ܘܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ . ܠܐ 4
ܢܦܠܛ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܟܠܕܝܐ. ܡܛܠ ܕܡܫܠܡܘ ܢܫܬܠܡ ܒܐܝܕܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ.
ܘܢܡܠܠ ܦܘܡܗ ܥܡ ܦܘܡܗ . ܘܥܝܢܘܗܝ ܒܥܝܢܘܗܝ ܢܚܙܝܢ . * ܘܠܒܒܠ 5
ܢܘܒܠܘܢܗܝ ܠܨܕܩܝܐ. ܘܬܡܢ ܢܗܘܐ ܥܕܡܐ ܠܝܘܡܐ ܕܐܣܥܘܪ ܐܢܐ ܠܗ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ
ܕܐܬܟܬܫܘܢ ܥܡ ܟܠܕܝܐ . ܘܠܐ ܬܨܠܚܘܢ . * ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܘܬ ܐܪܡܝܐ ܟܕ ܐܡܪ . * ܗܐ 6 7
ܚܢܡܐܝܠ ܒܪ ܫܠܘܡ ܕܕܟ ܐܬܐ ܠܘܬܟ ܘܐܡܪ . ܙܒܢ ܠܟ ܚܩܠܝ ܕܒܥܢܬܘܬ ܕܒܐܪܥܐ ܕܒܢܝܡܝܢ.
ܡܛܠ ܕܠܟ ܙܕܩܐ ܝܪܬܘܬܐ ܠܡܙܒܢ . * ܘܐܬܐ ܠܘܬܝ ܚܢܡܐܝܠ ܒܪ ܕܕܝ . ܐܝܟ ܦܬܓܡܗ 8
ܕܡܪܝܐ ܠܕܪܬܐ ܕܡܛܪܬܐ . ܘܐܡܪ ܠܝ . ܙܒܢ ܠܝ ܚܩܠܝ ܕܒܥܢܬܘܬ ܕܒܐܪܥܐ ܕܒܢܝܡܝܢ . ܡܛܠ
ܕܠܟ ܙܕܩܐ ܝܪܬܘܬܐ . ܘܠܟ ܘܠܐ ܙܒܢܝܗ̇ ܠܟ . * ܘܝܕܥܬ ܕܦܬܓܡܗ ܗܘ ܕܡܪܝܐ . ܘܙܒܢܬܗ 9
ܠܚܩܠܐ ܡܢ ܚܢܡܐܝܠ ܒܪ ܕܕܝ ܕܒܥܢܬܘܬ . ܘܬܩܠܬ ܠܗ ܟܣܦܐ . ܫܒܥܣܪ ܡܬܩܠܝܢ
ܕܟܣܦܐ. * ܘܟܬܒܬ ܫܛܪܐ ܘܚܬܡܬ . ܘܐܣܗܕܬ ܣܗܕܐ . ܘܬܩܠܬ ܟܣܦܐ ܒܡܣܐܬܐ. 10
* ܘܢܣܒܬ ܫܛܪܐ ܕܙܒܢܬܐ . ܕܚܬܝܡ ܒܦܘܩܕܢܐ ܘܒܢܡܘܣܐ ܘܕܠܐ ܚܬܝܡ . * ܘܝܗܒܬ 11 12
ܫܛܪܐ ܕܙܒܢܬܐ ܠܒܪܘܟ ܒܪ ܢܪܝܐ ܒܪ ܡܚܣܝܐ . ܠܥܝܢ ܚܢܡܐܝܠ ܒܪ ܕܕܝ . ܘܠܥܝܢ
ܣܗܕܐ ܕܟܬܝܒܝܢ ܒܫܛܪܐ ܕܙܒܢܬܐ . ܘܠܥܝܢ ܟܠܗܘܢ ܝܗܘܕܝܐ ܕܝܬܒܝܢ ܒܕܪܬܐ ܕܡܛܪܬܐ.
* ܘܦܩܕܬ ܠܒܪܘܟ ܠܥܝܢܝܗܘܢ ܘܐܡܪܬ . * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ . 13 14
ܣܒ ܫܛܪܐ ܗܠܝܢ . ܫܛܪܐ ܗܢܐ ܕܙܒܢܬܐ ܕܚܬܝܡ . ܘܫܛܪܐ ܗܢܐ ܕܠܐ ܚܬܝܡ . ܘܐܪܡܐ
ܐܢܘܢ ܒܡܐܢܐ ܕܚܨܦܐ . ܕܢܬܢܛܪܘܢ ܝܘܡܬܐ ܣܓܝܐܐ.

CAP. XXXII.

SErmo qui factus eſt ad Jeremiam à Domino, anno decimo Sedeciæ regis Judæ: is erat annus decimus octavus Nebuchadnoſari regi Babyloniæ. 1
Tunc autem copiæ regis Babyloniæ obſidebant Jeroſolymam, & Jeremia propheta detentus erat in atrio cuſtodiæ domûs regis Judæ: 2
Clauſerat enim illum Sedecia rex Judæ, dicens; Qua de cauſa vaticinaris, ac dicis; Sic ait Dominus, Ecce traditurus ſum civitatem iſtam in manus regis Babyloniæ, & capiet eam? 3
Et Sedecia rex Judæ non effugiet manum Chaldæorum, quia proculdubiò tradetur in manus regis Babyloniæ, & hujus os alloquetur os illius, & hujus oculi illius oculos videbunt? 4
Et Babylonem abducet Sedeciam, ibíque manebit uſque ad dié illum quo viſitavero eum, dicit Dominus; pugnabitis enim contra Chaldæos, & non ſuperabitis? 5
Factus eſt inquam, ſermo Domini ad Jeremiam, hiſce verbis. 6
Ecce Nahmael filius Salumi patrui tui venturus eſt ad te, & dicturus; Eme tibi agrum meum qui eſt in Anathoth in terra Benjaminis, ad te enim pertinet jus hæreditatis *hujus* emendæ. 7
Venit ergò ad me Nahmael filius patrui mei, juxta ſermonem Domini, in atrium cuſtodiæ; dixítque mihi, Eme tibi agrum meum qui eſt in Anathoth in terra Benjaminis; quoniam ad te pertinet jus hæreditatis, tibíque debetur: eme illam tibi. 8
Quoniam autem noveram ſermonem hunc eſſe Domini, emi agrum à Nahmaele filio patrui mei, qui erat in Anathoth, & appendi ei pecuniam, ſeptendecim ſiclos argenti; 9
Scripſi ſyngraphas, & obſignavi, teſtes adhibui, & pecuniam trutinâ appendi: 10
Deinde accepi ſyngraphas emptionis, tam illam quæ obſignata erat ſecundùm præceptum ac legem, quàm illam quæ non erat obſignata: 11
Et utramque ſyngrapham emptionis dedi Barucho filio Neriæ filii Maaſiæ, præſente Nahmaele filio patrui mei, & præſentibus teſtibus qui ſcripti fuerant in ſyngraphis emptionis, præſentibus denique cunctis Judæis qui aderant in atrio cuſtodiæ: 12
Tum Barucho præcepi his præſentibus, ac dixi; 13
Sic ait Dominus potentiſſimus Deus Iſraelis, Accipe ſyngraphas iſtas, ſyngrapham hanc emptionis obſignatam, & ſyngrapham hanc minimè obſignatã; & utramque repon ito in vaſe teſtaceo, ut ſerventur multis diebus. 14

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

38 * وعلي جميع اسطحة مواب وفي سوارعها كلها * لاني كسرت مواب قال الرب مثل اناء ليس به
39 حاجة * كيف ولي ظهرا مواب * خزي مواب * وصارت ضحكة وانكسارا لجميع من حولها * لان 40
41 هكذا قال الرب * اخذت عقرون * وحصونها قبضت * وهلكت مواب من الجمع * لانها تعظمت 42
43 علي الرب * فخ وخوف وحفرة عليك ايها الجالس في مواب * الهارب من وجه الخوف يسقط في 44
الحفر * والصاعد من الحفر يقبض في الفخ * من اجل اني اجلب هذه على مواب في سنة
45 افتقادها *] MS. Ox. يقول الرب * من اجل ان النار خرجت من حشبون * واللهيب من
46 مدينة سيحون * لتحرق شعاري مواب وتبيد ريسا بني شاول * الويل لك يا مواب * قد هلكت
47 يا شعب كاموش * لان بنيك وبناتك تفرقوا في السبي * فاما في اخر الايام فاني ارد سبي مواب
يقول الرب * الي هاهنا القول في نقمة مواب * [

* الفصل الثاني والثلثون *

* هذا ما تنبي به ارميا على جميع الامم *

14] MS.Ox. * من اجل ان اهل بابل تعبدوهم واستعبدوا شعوبا كثيرة * وملوكا عظيمة
15 واجزهم بما فعلوا وكما قدمت ايديهم * [* هكذا قال الرب اله اسرايل * خذ كاس الخمر
16 الصرف الذي بيدي * وسقيه لجميع الامم الذي انا ارسلك اليهم * فيتحيرون ويختبون من
17 وجه السيف الذي انا ارسله بينهم * واخذت الكاس من يد الرب * واسقيته الامم الذي
18 ارسلني الرب اليهم * ايروشليم ومدن يهودا وملوكهم ورؤساهم * ليكونوا للخراب وللقفر
19 وللصفير * وفرعون ملك مصر وعبيده وعظمائه * وكل شعبه وكل المختلطين به * وجميع ملوك 20
21 القبايل العربية * عسقلان وغزة وعقرون وبقية اردود * والادوميه والموابيه وبني عمون *
22 * وملوك صور وملوك صيدا * والملوك الذين في عبر البحر *

Et ſuper omnia tecta Moabi, & in omnibus vicis ejus: quia fregi Moabum, dixit Dominus, ut vas quod nullius eſt utilitatis. 38
Quomodo terga vertit Moab? pudefactus eſt Moab, & expoſitus ludibrio atq; contritioni omnibus circunjacentibus? 39
Nam ita dixit Dominus, 40
Capta eſt Acron, & arces ejus occupatæ; 41
Periitque Moab à congregatione, quia ſuperbivit contra Dominum. 42
Laqueus, pavor, & fovea ſuper te O qui degis in Moabo: 43
Qui pavorem effugerit, incidet in foveam; & qui emerſerit è fovea, laqueo capietur: hæc enim adducturus ſum ſuper Moabum anno viſitationis ejus, [MS.Oxon. *dicit Dominus.* 44
Quoniam ignis egredietur ex Heſhbon, & flamma ex urbe Sihonis, ut comburat crines Moabi, et conſumat principes filiorum Shaul. 45
Væ tibi Moab, jam periturus es popule Chamos, quoniam filii tui, filiæque tuæ in captivitatem diſpergentur. 46
Attamen reducam captivitatem Moabi ultimis temporibus, dicit Dominus. Hactenus ſermo de vindicta Moabi.] 47

CAP. XXXII.

Hæc ſunt quæ prophetavit Jeremia de cunctis gentibus.

[MS.Oxon. *Eò quod Babylonii ſubegerint, & ſibi etiam in ſervitutem redegerint gentes multas, & reges magnos; ideo rependam eis ſecundùm actiones eorum, & ſecundùm illud quod priùs operatæ erant manus eorum.*] 14
Sic dixit Dominus Deus Iſraelis, Accipe calicẽ vini meri qui eſt in manu mea, cumque propina cunctis gentibus ad quas te mitto; 15
ut attoniti abdant ſeſe à conſpectu gladii quem miſſurus ſum inter eos. 16
Quare acceptum de manu Domini calicem propinavi cunctis gentibus ad quas miſit me Dominus: 17
Jeroſolymæ, & urbibus Judæ, & regibus ac principibus eorum; ut eſſent deſtructioni, ſolitudini, & ſibilo: 18
Pharaoni regis Ægypti, & ſervis ejus, magnatibus ejus, totique populo ipſius, 19
& omnibus inter eum mixtis: Omnibus regibus nationum exterarum: 20
Aſcaloni, Gazæ, Acroni, & reliquæ Azdodi: Idumææ, Moabitidi, & filiis Ammon: 21
Regibus Tyri, regibus Sidonis, & regibus qui ſunt trans mare: 22

ירמיה: לב

eventur Adhuc : Iſrael Deus exercituum Dominus dixit ſic Quia
15 כִּי כֹה אָמַר יְהֹוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל עוֹד יִקָּנוּ
,Dominum ad oravi Et .iſta terra in vineæ & , agri & , domus
16 בָּתִּים וְשָׂדוֹת וּכְרָמִים בָּאָרֶץ הַזֹּאת׃ וָאֶתְפַּלֵּל אֶל־יְהֹוָה
: dicendo ,Nerijah *filium* Baruch *ad* emptionis librum *me dediſſe poſt*
אַחֲרֵי תִתִּי אֶת־סֵפֶר הַמִּקְנָה אֶל־בָּרוּךְ בֶּן־נֵרִיָּה לֵאמֹר׃
& cœlos feciſti tu Ecce .Deus Domine Ahah
17 אֲהָהּ אֲדֹנָי יֱהֹוִה הִנֵּה אַתָּה עָשִׂיתָ אֶת־הַשָּׁמַיִם וְאֶת־
non : extento tuo brachio in & , magna tua potentia in terram
הָאָרֶץ בְּכֹחֲךָ הַגָּדוֹל וּבִזְרֹעֲךָ הַנְּטוּיָה לֹא־
,millibus in miſericordiam *Faciens* .*verbum omne te à mirificabitur*
18 יִפָּלֵא מִמְּךָ כָּל־דָּבָר׃ עֹשֶׂה חֶסֶד לַאֲלָפִים
: eos poſt eorum filiorum ſinum in patrum *iniquitatem retribuens* &
וּמְשַׁלֵּם עֲוֺן אָבוֹת אֶל־חֵיק בְּנֵיהֶם אַחֲרֵיהֶם
,conſilio Magnus .ejꝰ nomen exercituū Dominus,potens ,magnus Deus
19 הָאֵל הַגָּדוֹל הַגִּבּוֹר יְהֹוָה צְבָאוֹת שְׁמוֹ׃ גְּדֹל הָעֵצָה
filiorū vias omnes ſuper aperti tui oculi quia : *adinventione* multus &
וְרַב הָעֲלִילִיָּה אֲשֶׁר־עֵינֶיךָ פְּקֻחוֹת עַל־כָּל־דַּרְכֵי בְּנֵי
fructum ſecundum & ,ſuas vias ſecundùm unicuique *dandum ad* ,hominis
אָדָם לָתֵת לְאִישׁ כִּדְרָכָיו וְכִפְרִי
, Ægypti terra in portenta & ſigna poſuiſti Qui .ſuorū *ſtudiorum*
20 מַעֲלָלָיו׃ אֲשֶׁר־שַׂמְתָּ אֹתוֹת וּמֹפְתִים בְּאֶרֶץ־מִצְרַיִם
nomen tibi feciſti & : homine in & : Iſrael in & , hanc diem ad uſque
עַד־הַיּוֹם הַזֶּה וּבְיִשְׂרָאֵל וּבָאָדָם וַתַּעֲשֶׂה־לְּךָ שֵׁם
terra è Iſrael tuū populum eduxiſti Et .hanc diem ſecundū
21 כַּיּוֹם הַזֶּה׃ וַתֹּצֵא אֶת־עַמְּךָ אֶת־יִשְׂרָאֵל מֵאֶרֶץ
brachio in & robuſta manu in & portentis in & ſignis in , Ægypti
מִצְרָיִם בְּאֹתוֹת וּבְמוֹפְתִים וּבְיָד חֲזָקָה וּבְאֶזְרוֹעַ
, hanc terram eis dediſti Et .magno terrore in & , extento
22 נְטוּיָה וּבְמוֹרָא גָּדוֹל׃ וַתִּתֵּן לָהֶם אֶת־הָאָרֶץ הַזֹּאת
,lacte fluentem terram , eis *dandum ad* ,eorū patribus juraſti quam
אֲשֶׁר־נִשְׁבַּעְתָּ לַאֲבוֹתָם לָתֵת לָהֶם אֶרֶץ זָבַת חָלָב
,*tua voce in* audierunt non & ,eam poſſederunt &,ſunt ingreſſi Et .melle &
23 וּדְבָשׁ׃ וַיָּבֹאוּ וַיִּרְשׁוּ אֹתָהּ וְלֹא־שָׁמְעוּ בְקוֹלֶךָ
eis præcepiſti quæ omnia : ambulaverunt non tua lege in &
וּבְתוֹרָתְךָ לֹא־הָלָכוּ אֵת כָּל־אֲשֶׁר צִוִּיתָה לָהֶם
.hoc malum omne eis *feciſti evenire* &;fecerūt non ,*faciendum ad*
לַעֲשׂוֹת לֹא עָשׂוּ וַתַּקְרֵא אֹתָם אֵת כָּל־הָרָעָה הַזֹּאת׃
eſt data urbs & ,eā capiendum ad ,civitatem *venerunt tormenta* Ecce
24 הִנֵּה הַסֹּלְלוֹת בָּאוּ הָעִיר לְלָכְדָהּ וְהָעִיר נִתְּנָה
,*famis* & , *gladii faciebus à* ,eam *ſuper præliantium* Chaſdim manū in
בְּיַד הַכַּשְׂדִּים הַנִּלְחָמִים עָלֶיהָ מִפְּנֵי הַחֶרֶב וְהָרָעָב
,*me ad* dixiſti tu Et .*videns* tu ecce &,*fuit* es locutꝰ quod & : *peſtis* &
25 וְהַדֶּבֶר וַאֲשֶׁר דִּבַּרְתָּ הָיָה וְהִנְּךָ רֹאֶה׃ וְאַתָּה אָמַרְתָּ אֵלַי
: teſtes teſtificare fac & ,argento *in* agrum tibi Eme ,*Domine* Domine
אֲדֹנָי יֱהֹוִה קְנֵה־לְךָ הַשָּׂדֶה בַּכֶּסֶף וְהָעֵד עֵדִים
,Irmejahu ad Domini verbū fuit Et .Chaſdim manu in dabitur urbs &
26 וְהָעִיר נִתְּנָה בְּיַד הַכַּשְׂדִּים׃ וַיְהִי דְּבַר־יְהֹוָה אֶל־יִרְמְיָהוּ
me à nunquid ,carnis univerſæ Deus Dominus *ego* Ecce : dicendo
27 לֵאמֹר׃ הִנֵּה אֲנִי יְהֹוָה אֱלֹהֵי כָּל־בָּשָׂר הֲמִמֶּנִּי
dans ego Ecce :Dominus dixit ſic Propterea ? *verbum omne mirificabitur*
28 יִפָּלֵא כָּל־דָּבָר׃ לָכֵן כֹּה אָמַר יְהֹוָה הִנְנִי נֹתֵן
regis Nebuchadreſar manū in & ,Chaſdim manū in hanc civitatem
אֶת־הָעִיר הַזֹּאת בְּיַד הַכַּשְׂדִּים וּבְיַד נְבוּכַדְרֶאצַּר מֶלֶךְ־
urbem *ſuper præliantes* Chaſdim venient Et .eam capiet & , Babel
29 בָּבֶל וּלְכָדָהּ׃ וּבָאוּ הַכַּשְׂדִּים הַנִּלְחָמִים עַל־הָעִיר
:eam comburent & ,igni in hanc civitatem ſuccendent & , hanc
הַזֹּאת וְהִצִּיתוּ אֶת־הָעִיר הַזֹּאת בָּאֵשׁ וּשְׂרָפוּהָ
,Bahal *ipſi earum* tecta *ſuper* adoleverunt quarum domos &
וְאֵת הַבָּתִּים אֲשֶׁר קִטְּרוּ עַל־גַּגּוֹתֵיהֶם לַבַּעַל
.me *iram ad concitandum ad* , alienis diis libamina libaverunt &
וְהִסִּכוּ נְסָכִים לֵאלֹהִים אֲחֵרִים לְמַעַן הַכְעִסֵנִי׃

Verſio VULG. LAT.

15 Hæc enim dicit Dominus exercituum, Deus Iſrael; Adhuc poſſidebuntur domus, & agri, 16 & vineæ in terra iſta. Et oravi ad Dominum, poſtquàm tradidi librum poſſeſſionis Baruch filio 17 Neri, dicens; Heu, heu, heu, Domine Deus : ecce tu feciſti cœlum & terram in fortitudine tua magna, & in brachio tuo extento : non erit tibi difficile 18 omne verbum : Qui facis miſericordiam in millibus, & reddis iniquitatem patrum in ſinum filiorum eorum poſt eos : Fortiſſime, magne, & potens, Dominus exercituum nomen tibi. 19 Magnus conſilio, & incomprehenſibilis cogitatu : cujus oculi aperti ſunt ſuper omnes vias filiorum Adam, ut reddas unicuique ſecundū vias ſuas, & ſecundùm fructū adinventionum ejus. 20 Qui poſuiſti ſigna & portenta in terra Ægypti uſque ad diem hanc, & in Iſrael, & in hominibus, & feciſti tibi nomen ſicut eſt dies hæc. 21 Et eduxiſti populum tuum Iſrael de terra Ægypti, in ſignis, & in portentis, & in manu robuſta, & in brachio 22 extento, & in terrore magno. Et dediſti eis terram hanc, quam juraſti patribus eorum ut dares eis terram fluentem lacte & 23 melle. Et ingreſſi ſunt, & poſſederunt eam : & non obedierunt voci tuæ, & in lege tua non ambulaverunt : omnia quæ mandâſti eis ut facerent, non fecerunt : & evenerunt eis omnia 24 mala hæc. Ecce munitiones extructæ ſunt adverſùm civitatem, ut capiatur : & urbs data eſt in manus Chaldæorum, qui præliantur adverſùs eam, à facie gladii, & famis, & peſtilentiæ : & quæcunque locutus es 25 acciderunt, ut tu ipſe cernis. Et tu dicis mihi, Domine Deus; Eme agrum argento, & adhibe teſtes : cùm urbs data ſit in ma- 26 nus Chaldæorum? Et factum eſt verbum Domini ad Jeremiam, 27 dicens; Ecce ego Dominus Deus univerſæ carnis : numquid mihi difficile erit omne verbum? 28 Proptereà hæc dicit Dominus; Ecce ego tradam civitatem iſtā in manus Chaldæorum, & in manus regis Babylonis, & capi- 29 ent eam. Et venient Chaldæi præliantes adverſū urbem hanc, & ſuccendent eam igni, & comburent eam, & domos, in quarū domatibus ſacrificabant Baal, & libabant diis alienis libamina ad irritandum me.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

23 Καὶ τὴν Δαιδὰν, καὶ τὴν Θαιμὰν, καὶ τὴν Ῥῶς, καὶ πᾶν περικεκαρμένον κατὰ πρόσωπον αὐτοῦ, 24 Καὶ πάντας τοὺς (η) συμμίκτους τοὺς καταλύοντας ἐν τῇ ἐρήμῳ, 25 Καὶ πάντας βασιλεῖς (θ) Αἰλὰμ, 26 καὶ πάντας βασιλεῖς Περσῶν, Καὶ πάντας βασιλεῖς (ι) ἀπὸ ἀπηλιώτου τοὺς πόρρω καὶ τοὺς ἐγγὺς, ἕκαστον πρὸς τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, καὶ πάσας (κ) βασιλείας τὰς ἐπὶ προσώπου τῆς γῆς. 27 Καὶ ἐρεῖς αὐτοῖς, Οὕτως εἶπε κύριος παντοκράτωρ, Πίετε, (λ) μεθύσθητε, καὶ ἐξεμέσατε, καὶ πεσεῖσθε, καὶ οὐ μὴ ἀναστῆτε ἀπὸ προσώπου τῆς μαχαίρας, ἧς ἐγὼ ἀποστέλλω ἀναμέσον ὑμῶν. 28 Καὶ ἔσται ὅταν μὴ βούλωνται δέξασθαι τὸ ποτήριον ἐκ τῆς χειρός σου, ὥστε πιεῖν, καὶ ἐρεῖς, Οὕτως εἶπε κύριος, Πίοντες πίεσθε, 29 Ὅτι ἐν πόλει (μ) ἐν ᾗ ὠνομάσθη τὸ ὄνομά μου (") ἐπ' αὐτὴν, ἐγὼ ἄρχομαι κακῶσαι, καὶ ὑμεῖς καθάρσει οὐ μὴ καθαρισθῆτε, ὅτι μάχαιραν ἐγὼ (ν) καλῶ ἐπὶ πάντας τοὺς καθημένους ἐπὶ τῆς γῆς. 30 Καὶ σὺ προφητεύσεις (ξ) ἐπ' αὐτοὺς τοὺς λόγους τούτους, καὶ ἐρεῖς, Κύριος ἀφ' ὑψηλοῦ χρηματιεῖ, ἀπὸ τοῦ ἁγίου αὐτοῦ δώσει φωνὴν αὐτοῦ, λόγον χρηματιεῖ (ο) ἐπὶ τοῦ τόπου αὐτοῦ. καὶ οἱ δὲ ὥσπερ τρυγῶντες ἀποκριθήσονται· καὶ ἐπὶ (π) καθημένους τὴν γῆν ἥκει ὄλεθρος 31 Ἐπὶ μέρος τῆς γῆς, ὅτι κρίσις τῷ κυρίῳ ἐν τοῖς ἔθνεσι· κρίνεται αὐτὸς πρὸς πᾶσαν σάρκα, οἱ δὲ ἀσεβεῖς ἐδόθησαν εἰς μάχαιραν, λέγει κύριος. 32 Οὕτως εἶπε κύριος, Ἰδοὺ κακὰ ἔρχεται ἀπὸ ἔθνους (") ἐπὶ ἔθνος, καὶ λαῖλαψ μεγάλη ἐκπορεύεται ἀπ' ἐσχάτου τῆς γῆς. 33 Καὶ ἔσονται τραυματίαι ὑπὸ κυρίου ἐν ἡμέρᾳ κυρίου, ἐκ μέρους τῆς γῆς, καὶ ἕως εἰς μέρος τῆς γῆς· οὐ μὴ (ρ) καταρυγῶσιν, εἰς κόπρια ἐπὶ προσώπου τῆς γῆς ἔσονται. 34 Ἀλαλάξατε ποιμένες, καὶ (σ) κεκράξατε, καὶ κόπτεσθε οἱ κριοὶ τῶν προβάτων, ὅτι ἐπληρώθησαν αἱ ἡμέραι (τ) ὑμῶν εἰς σφαγὴν, καὶ πεσεῖσθε 35 ὥσπερ οἱ κριοὶ οἱ ἐκλεκτοί, Καὶ ἀπολεῖται φυγὴ ἀπὸ τῶν ποιμένων, καὶ σωτηρία ἀπὸ τῶν κριῶν τῶν προβάτων. 36 Φωνὴ κραυγῆς τῶν ποιμένων, καὶ ἀλαλαγμὸς τῶν προβάτων καὶ τῶν κριῶν, ὅτι (υ) ὠλόθρευσε κύριος τὰ βοσκήματα αὐτῶν·

Et Dædā, et Thæman, et (e) Rhos, & omni circumtonſo ſecundùm faciem (f) ſuam, 23 *Et omnibus miſtitiis habitantibus in (g) deſerto,* 24 *Et omnibus regibus Ælam,* 25 *& omnibus regibus (h) Perſarum,* *Et omnibus regibus à Subſolano, qui longè, & qui propè, unicuique adverſùs proximum ſuum, & omnibus regnis, quæ ſuper faciem (i) terræ.* 26 *Et dices eis; Sic dixit Dominus omnipotens; Bibite, inebriamini, & vometis, & cadetis : & non reſurgatis à facie gladii, quem ego mitto inter vos.* 27 *Et erit, cùm noluerint accipere calicem de manu tua, ut bibant : & dices; Sic dixit Dominus; Bibentes bibetis :* 28 *Quia in civitate, in qua nominatum eſt nomen meum ſuper eam, ego incipio affligere : & (k) vos munditiâ non mundabimini : Gladium enim ego voco ſuper omnes ſedentes ſuper terram.* 29 *Et tu prophetabis ad eos verba hæc, & dices; Dominus de excelſo reſponſum dabit : de Sancto ſuo dabit vocem ſuam : verbum reſpondebit ſuper locum ſuum. Illi (l) autem, quaſi vindemiantes, reſpondebunt : & ſuper habitatores terræ venit interitus,* 30 *Super partem terræ; quoniam judicium Domino in gentibus : judicatur ipſe cum omni carne : impii autem dati ſunt in gladium, dicit Dominus.* 31 *Sic dixit Dominus; Ecce mala veniunt de gente in gentem : & tempeſtas magna egreditur ab extremo terræ :* 32 *Et erunt vulnerati à Domino in die Domini, de parte terræ, & uſque ad partem terræ : (m) non defodientur : in ſterquilinia ſuper faciem terræ erunt.* 33 *(n) Ululate paſtores, & clamate, & plangite arietes ovium : quia completi ſunt dies veſtri ad interfectionem, & cadetis, quaſi arietes electi :* 34 *Et peribit fuga à paſtoribus, & ſalus ab arietibus ovium.* 35 *Vox clamoris paſtorum, & ululatus ovium, & arietum : quia vaſtavit Dominus paſcua eorum :* 36

MS. A. (η) συμμίκτοις αὐτοῦ τοὺς (θ) Δαιδὰν, (ι) τοῦ ἀπηλιώτου (κ) τὰς βασιλείας (λ) καὶ μεθύσθητε καὶ ἐξεμέσατε, (μ) ἐφ' ᾗ (") ἐπ' αὐτῆς, ἐγὼ ἔρχομαι (ν) καλέσω ἐπὶ τοὺς (ξ) τοὺς λόγους τούτους ἐπ' αὐτοὺς, καὶ ἐρεῖς αὐτοῖς, (ο) ἀπὸ τοῦ τόπου τούτου. καὶ οἱ δὲ ὥσπερ τρυγῶντες (π) πάντας τοὺς καθημένους ἐπὶ τὴν γῆν (") εἰς (ρ) κατορύξωσιν (σ) κεκράξετε, (τ) ἡμῶν (υ) ὀλέθρευσεν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

15 אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל עוֹד יִזְדַּבְּנוּן בָּתִּין וְחַקְלִין וְכַרְמִין בְּאַרְעָא
16 הָדָא׃ וְצַלֵּיתִי קֳדָם יְיָ בָּתַר דִּיהַבִית יָת שְׁטָרָא דִזְבִינֵי לְבָרוּךְ בַּר נֵרִיָּה לְמֵימַר׃ קַבֵּל 17
בָּעוּתִי יְיָ אֱלֹהִים הָא אַתְּ עֲבַדְתָּא יָת שְׁמַיָּא וְיָת אַרְעָא בְּחֵילָךְ רַבָּא וּבִדְרָעָךְ מְרָמְמָא
18 לָא יִתְכַּסֵּי מִן קֳדָמָךְ כָּל פִּתְגָם׃ עָבֵד טִיבוּ לְאַלְפֵי דָרִין וּמְשַׁלֵּם חוֹבֵי אֲבָהָתָא לִבְנַיָּא
19 כַּד מְשַׁלְּמִין לְמֶחֱטֵי בָּתְרֵיהוֹן אֱלָהָא רַבָּא גִּבָּרָא יְיָ צְבָאוֹת שְׁמֵיהּ׃ דְּרַבְרְבִין מַלְכוּהִי
וְסַגִּיאִין עוֹבָדוֹהִי דִּי קֳדָמָךְ גַּלְיָן כָּל אוֹרְחָת בְּנֵי אֱנָשָׁא לְמִתַּן לֶאֱנָשׁ כְּאוֹרְחָתֵיהּ וּכְפֵרֵי
20 עוֹבָדוֹהִי׃ דְּשַׁוֵּיתָא אָתִין וּמוֹפְתִין בְּאַרְעָא דְמִצְרַיִם עַד יוֹמָא הָדֵין וּלְיִשְׂרָאֵל עֲבַדְתָּא
21 פְּרִישָׁן בְּגוֹ בְּנֵי אֱנָשָׁא וַעֲבַדְתָּא לָךְ שׁוּם כְּיוֹמָא הָדֵין׃ וְאַפֵּקְתָּא יָת עַמָּךְ יָת יִשְׂרָאֵל
22 מֵאַרְעָא דְמִצְרַיִם בְּאָתִין וּבְמוֹפְתִין וּבְיַד תַּקִּיפָא וּבְאֶדְרַע מְרָמַם וּבְחֶזְוָנָא רַבָּא׃ וִיהַבְתְּ
23 לְהוֹן יָת אַרְעָא הָדָא דְקַיֵּימְתָּא לַאֲבָהַתְהוֹן לְמִתַּן לְהוֹן אֲרַע עָבְדָא חֲלַב וּדְבַשׁ׃ וְעָלוּ
וְאַחְסִינוּ יָתַהּ וְלָא קַבִּילוּ לְמֵימְרָךְ וּבְאוֹרָיְתָךְ לָא הַלִּיכוּ יָת כָּל דְּפַקֵּדְתָּא לְהוֹן לְמֶעְבַּד
24 לָא עֲבַדוּ וַעֲרַעַת יָתְהוֹן יָת כָּל בִּישְׁתָּא הָדָא׃ הָא מַלְיָתָא עָלוּ עַל קַרְתָּא לְמִכְבְּשַׁהּ
וְקַרְתָּא אִתְמְסַרַת בִּידָא דְכַשְׂדָּאֵי דִּמְגִיחִין קְרָבָא עֲלַהּ מִן קֳדָם דְּקָטְלִין בְּחַרְבָּא וּבְכַפְנָא
25 וּמוֹתָנָא וּדְמַלֵּלְתָּא הֲוָה וּקְדָמָךְ גְּלֵי׃ וְאַתְּ אֲמַרְתְּ לִי יְיָ אֱלֹהִים זְבוֹן לָךְ חַקְלָא בְּכַסְפָּא
26 וְאַסְהֵד סָהֲדִין וְקַרְתָּא אִתְמְסַרַת בִּידָא דְכַסְדָּאֵי׃ וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִם
27 28 יִרְמְיָה לְמֵימַר׃ הָא אֲנָא יְיָ אֱלָהָא כָּל בִּשְׂרָא הֲמִן קֳדָמַי יִתְכַּסֵּי כָּל פִּתְגָם׃ בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר
יְיָ הָאֲנָא מָסַר יָת קַרְתָּא הָדָא בִּידָא דְכַסְדָּאֵי וּבְיַד נְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא דְבָבֶל וְיִכְבְּשִׁנַּהּ׃
29 וְיֵעֲלוּן כַּסְדָּאֵי דִּמְגִיחִין קְרָבָא עַל קַרְתָּא הָדָא וְיַדְלְקוּן יָת קַרְתָּא הָדָא בְּנוּרָא וְיוֹקְדוּנַהּ
וְיָת בָּתַיָּא דְּאַסִּיקוּ בוּסְמִין עַל אֱגָרֵיהוֹן לְבַעְלָא וְנַסִּיכוּ נִסְכִּין לְטָעֲוַת עַמְמַיָּא בְּדִיל לְאַרְגָּזָא קֳדָמַי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quia hæc dicit Dominus exercituum Deus Iſrael: Adhuc comparabuntur domus & agri & vineæ in terra iſta. 15 Et oravi coram Domino, poſtquam dedi libellum emptionis Baruch filio Neriæ, dicens : 16 Suſcipe deprecationem meam Domine Deus : 17 Ecce tu feciſti cœlos & terram virtute tua magna, & brachio tuo excelſo, & nullum verbum te latet. Faciens benignitatem in mille ætates, & reddens peccata patrum filiis, quando pergunt peccare poſt eos. 18 Deus magne, fortis, Dominus exercituum nomen ejus. Cujus conſilia ſunt magna, & multa opera ejus; in cujus conſpectu revelatæ ſunt omnes viæ filiorum hominum, ut des unicuique juxta vias ſuas, & ſecundùm fructum operum ſuorum. 19 Quia poſuiſti ſigna & portenta in terra Ægypti uſque in diem hanc, & Iſraeli feciſti mirabilia in medio filiorum hominum; & feciſti tibi nomen quale eſt hodie. 20 Et eduxiſti populum tuum Iſrael de terra Ægypti in ſignis, & portentis, & in manu forti, & in brachio excelſo, & in viſione magna. 21 Et dediſti eis terram iſtam pro qua jurâſti patribus eorum, ut dares eis terram producentem lac & mel. 22 Et ingreſſi ſunt & poſſederunt eam, & non obedierunt verbo tuo, & in lege tua non ambulaverunt: omnia quæ eis præcepiſti ut facerent, non fecerunt; & accidit eis omne malum hoc. 23 Ecce aggeres congeſti ſunt contra civitatem ad eam ſubjiciendam, & civitas tradita eſt in manum Chaldæorum, qui præliantur adverſùm eam, à facie eorum qui occidunt gladio, & fame, & peſtilentia : & quod locutus es, factum eſt, & tibi apertum eſt. 24 Et tu Domine Deus dicis mihi, Eme tibi agrum argento, et adhibe teſtes, 25 cùm civitas ſit tradita in manum Chaldæorum. 26 Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini ad Jeremiam, dicens : 27 Ecce ego Dominus Deus univerſæ carnis: An mihi quicquam erit abſtrûſum? 28 Propterea hæc dicit Dominus, Ecce ego tradam civitatem iſtam in manum Chaldæorum, & in manum Nabuchodonoſor regis Babylonis, & ſubjiciet eam. 29 Et ingredientur Chaldæi qui præliantur adverſum urbem hanc, & ſuccendent urbem igni, & comburent eam, & domos ſuper quarum tectis adoleverunt Baal aromata, & libaverunt libamina idolis populorum, ut irritarent me.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

15 * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܬܘܒ ܢܬܙܒܢܘܢ ܒܬܐ ܘܚܩܠܐ
16 ܘܟܪܡܐ ܒܐܪܥܐ ܗܕܐ. * ܘܨܠܝܬ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܡܢ ܒܬܪ ܕܝܗܒܬ ܣܦܪܐ ܕܙܒܢܬܐ ܠܒܪܘܟ ܒܪ
17 ܢܪܝܐ. ܘܨܠܝܬ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܘܐܡܪܬ. * ܒܒܥܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ.. ܗܐ ܐܢܬ ܥܒܕܬ ܫܡܝܐ ܘܐܪܥܐ
18 ܒܚܝܠܟ ܪܒܐ. ܘܒܕܪܥܟ ܪܡܐ. ܘܠܐ ܡܬܟܣܐ ܡܢܟ ܡܕܡ ܟܠ ܦܬܓܡ. * ܥܒܕ ܛܝܒܘܬܐ ܠܐܠܦܝܢ
ܕܪܐ. ܦܪܥ ܚܛܗܐ ܕܐܒܗܬܐ ܒܥܘܒܐ ܕܒܢܝܗܘܢ ܒܬܪܗܘܢ. ܐܠܗܐ ܪܒܐ ܘܓܢܒܪܐ ܘܕܚܝܠܐ.
19 ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ. * ܪܒ ܒܡܠܟܗ ܘܣܓܝ ܒܥܒܕܘܗܝ. ܕܥܝܢܘܗܝ ܦܬܝܚܢ ܥܠ
ܟܠܗܘܢ ܐܘܪܚܬܗܘܢ ܕܒܢܝܢܫܐ. ܕܬܬܠ ܠܟܠ ܐܢܫ ܐܝܟ ܐܘܪܚܬܗ. ܘܐܝܟ ܦܐܪܐ ܕܥܒܕܘܗܝ.
20 * ܕܥܒܕܬ ܐܬܘܬܐ ܘܬܕܡܪܬܐ ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ ܥܕܡܐ ܠܝܘܡܢܐ. ܠܐܝܣܪܝܠ ܘܠܒܢܝ
21 ܐܢܫܐ. ܘܥܒܕܬ ܠܟ ܫܡܐ ܐܝܟ ܕܝܘܡܢܐ. * ܘܐܦܩܬ ܠܥܡܟ ܐܝܣܪܝܠ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ..
22 ܒܐܬܘܬܐ ܘܒܬܕܡܪܬܐ. ܘܒܐܝܕܐ ܥܫܝܢܬܐ ܘܒܕܪܥܐ ܪܡܐ ܘܒܚܙܘܐ ܪܒܐ. * ܘܝܗܒܬ ܠܗܘܢ ܐܪܥܐ
23 ܗܕܐ ܕܝܡܝܬ ܠܐܒܗܝܗܘܢ ܕܐܬܠ ܠܗܘܢ. ܐܪܥܐ ܕܪܕܝܐ ܚܠܒܐ ܘܕܒܫܐ. * ܘܥܠܘ ܘܐܚܕܘܗ.
ܘܠܐ ܫܡܥܘ ܒܩܠܟ. ܘܒܢܡܘܣܟ ܠܐ ܗܠܟܘ. ܘܟܠ ܕܦܩܕܬ ܐܢܘܢ ܠܡܥܒܕ ܠܐ ܥܒܕܘ.
24 ܘܐܓܥܬ ܐܢܘܢ ܟܠܗ ܗܕܐ ܒܝܫܬܐ. * ܗܐ ܟܪܟܘܡܐ ܐܬܘ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܠܡܐܚܕܗ. ܘܡܕܝܢܬܐ
ܐܫܬܠܡܬ ܠܗ ܒܐܝܕܐ ܕܟܠܕܝܐ ܕܡܬܟܬܫܝܢ ܥܡܗ. ܡܢ ܩܕܡ ܚܪܒܐ ܘܟܦܢܐ ܘܡܘܬܢܐ.
25 ܘܡܕܡ ܕܐܡܪܬ ܗܘܐ ܗܘܐ. ܘܗܐ ܚܙܐ ܐܢܬ. * ܘܐܢܬ ܐܡܪܬ ܠܝ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ.. ܙܒܢ ܠܟ
26 ܚܩܠܐ ܒܟܣܦܐ. ܘܣܗܕ ܣܗܕܐ. ܘܗܐ ܡܕܝܢܬܐ ܐܫܬܠܡܬ ܠܗ ܒܐܝܕܐ ܕܟܠܕܝܐ. * ܘܗܘܐ
27 ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܘܬ ܐܪܡܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܟܠ ܒܣܪ. ܕܠܡܐ
28 ܡܢܝ ܡܬܟܣܐ ܡܕܡ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ ܡܫܠܡ ܐܢܐ ܠܗ
ܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܒܐܝܕܐ ܕܟܠܕܝܐ. ܘܒܐܝܕܗ ܕܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܢܟܒܫܝܗ.
29 * ܘܢܐܬܘܢ ܟܠܕܝܐ ܘܢܬܟܬܫܘܢ ܥܡ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܘܢܘܩܕܘܢܗ ܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ
ܘܢܘܩܕܘܢܗ ܒܢܘܪܐ. ܘܥܡ ܒܬܐ ܕܣܡܘ ܒܐܓܪܐ ܠܒܘܣܡܐ ܠܒܥܠ.. ܘܢܣܟܘ ܢܣܟܐ
ܠܐܠܗܐ ܐܚܪܢܐ ܕܢܪܓܙܘܢܢܝ.

Nam ſic ait Dominus exercituum Deus Iſraelis, Poſthac ementur domus, & prædia, at- 15
que vineæ in terra iſta. Oravi autem Domi- 16
num poſtquam dediſſem ſyngraphas emptionis Barucho filio Neriæ; oravi inquam, Do-
minum, ac dixi; Quæſo Domine Deus, Ecce 17
tu cœlum terrámque condidiſti potentiâ tuâ
magnâ & brachio tuo excelſo, neque te latet
res ulla: Qui benignitatem exerces in mil- 18
lia progenierum, rependis peccata patrum in
ſinum filiorum eorum poſt ipſos: Deus maxime, fortiſſime, ac formidabilis: cujus no-
men eſt Dominus potentiſſimus: Cujus con- 19
ſilium maximum, & plurima facta: cujus oculi ſunt aperti ſuper omnes hominum vias,
ut reddas cuique ſecundùm vias ejus, & ſecundùm fructus actionum ipſius: Qui ma- 20
xima ſigna atque portenta edidiſti in terra Ægypti ad hanc uſque diem, pro Iſraele inter
filios hominum; & comparâſti tibi nomen
quale eſt hodierno die: Eduxiſti populum 21
tuum Iſraelem è terra Ægypti ſignis, miraculis, manu robuſtâ, brachio excelſo, & ſpectaculo magno: Et dediſti eis terram iſtam 22
quam juraveras patribus eorum te daturum
eis, terram manantem lacte & melle. Et qui- 23
dem venerunt, ac poſſederunt eam: ſed *quia*
non auſcultaverunt voci tuæ, nec ambulaverunt in lege tua, & quæcunque præceperas
eis facere, non fecerunt; ideò contigit eis
tantum hoc malum. Ecce inſidiæ venerunt 24
contra civitatem iſtam ad çapiendum eam; et
civitas jam tradita eſt in manum Çhaldæorum oppugnantium eam, præ gladio, fame, ac
peſte; & quod prædixeras, evenit, ut ecce
vides: Tu tamen dicis mihi Domine Deus 25
potentiſſime, Eme tibi agrum pecuniâ, & adhibe teſtes; quum civitas ecce tradita jam ſit
in manum Chaldæorum. Tum factus eſt 26
ſermo Domini ad Jeremiam hiſce verbis;
Ego ſum Dominus Deus omnis carnis: an 27
me lateret ulla res? Propterea ſic ait Domi- 28
nus Deus, Ecce traditurus ſum hanc civitatem
in manum Chaldæorum & in manum Nebuchadnoſaris regis Babyloniæ, & ſubjugabit
eam: Et venientes Chaldæi expugnabunt 29
hanc civitatem, & evellent hanc civitatem,
& igne ſuccendent unà cum domibus ſuper
quarum tectis adoleverunt thura Baali, & libaverunt libamina diis alienis, ut me ad iram
provocarent.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

23 * ودادان وتامان وروس * وكل مجزوز قدام وجهه * وجميع المختلطين الخالين في البرية * 24
25 * وجميع ملوك الفرس * وجميع الملوك من مشرق الشمس القرباء والبعداء * كل واحد مع أخيه * 26
27 وجميع الممالك الذين على وجه الأرض * وتقول لهم * هكذا قال الرب الضابط الكل * اشربوا
28 واسكروا وقيئوا * وتسقطون ولا تقومون من وجه السيف الذي أنا أرسله بينكم * ويكون إذا
لم يريدوا أن يقبلوا الكاس من يدك حتى يشربوا * فتقول هكذا قال الرب * تشربون شاربين *
29 * لأن في المدينة التي دعي اسمي عليها أنا ابتدي أن أسي * وأنتم لم تطهروا بطهر * إني
30 أنا أدعوا سيفا على الجلوس على الأرض * وأنت تتنبأ بهذه الأقوال وتقول * الرب من العلي
يوحي * من قدسه * يعطي صوته * يوحي قولا من هذا الموضع * والذين مثل القاطفين
31 يجاوبون * وعلى الجلوس على الأرض يأتي الهلاك * على جزء الأرض * لأن جزوا للرب في الأمم *
ويدين كل ذي لحم * والمنافقون تجدوا للسيف قال الرب *

* الإصحاح الحادي والعشرون *

32 * هكذا قال الرب * ها شرور تأتي من أمة إلى أمة * وعاصف عظيم يخرج من آخر الأرض *
33 * وتصير جرحى من قبل الرب في يوم الرب من جزء الأرض وإلى جزء الأرض * لا يدفنوا *
34 للمزابل على وجه الأرض يكونون * هللوا أيها الرعاة * واصرخوا ونوحوا يا كباش الغنم * لأن
35 أيامكم كملت للذبح * وتسقطون مثل الكباش المختارة * ويهلك الملجأ من الرعاة *
36 والخلاص من كباش الغنم * صوت صراخ الرعاة * ورنين الخراف والكباش * لأن الرب
أهلك مراعيها *

Dadani, Themani, & Robos: omni fa- 23
cie detonſo, Cunctiſque miſcellaneis de- 24
gentibus in deſerto: Omnibus regibus
Perſarum, Et omnibus regibus qui ſunt 25
ad orientem ſolem, tam propinquis quàm 26
remotis, unicuique cum fratre ſuo: de-
mum cunctis regnis quæ extant ſuper
faciem terræ. Et dices eis, Sic dixit Do- 27
minus omnipotens, Bibite, inebriamini,
& vomite, ut cadentes non reſurgatis
à facie gladii quem ego miſſurus ſum
inter vos. Quòd ſi contingat ut renu- 28
ant accipere calicem de manu tua ut bi-
bant, dices; Ita dixit Dominus, Omni-
no bibetis. Quoniam in urbe ſuper quam 29
invocatum eſt nomen meum, incipiam
nocere; vos nullo modo inſontes eritis:
nam ego mucronem advocabo in habitan-
tes ſuper terram. Tu quoque prophetabis 30
hoſce ſermones, ac dices; Dominus
ab alto revelabit, è ſanctuario ſuo,
vocem edet, revelabit ſermonem ex hoc
loco: tam illos qui ceu vindemiatores
invicèm reſpondent; quàm habitantes
ſuper terram invadet interitus; Partem 31
ſcilicet *terræ: nam pars eſt Domino in*
gentibus, & judicabit omnem carnē prædatum, & impii diſponentur ad gladi-
um, dixit Dominus.

Textus vigeſimus primus.

Ita dixit Dominus, Ecce mala procedent 32
à gente in gentem, & tempeſtas magna
egredietur ab extremo terræ: Fient- 33
que vulnerati à Domino in die Domini,
ab una *terræ parte ad* aliam *terræ par-*
tem: non ſepelientur, ſed *in ſterquilinia*
ſuper faciem terræ erunt. Ululate O 34
paſtores, clamate, & lamentamini O
arietes ovium: quoniam adeſt finis
dierum veſtrorum ut jugulemini: cade-
ris ut arietes electi, Et peribit aſy- 35
lum à paſtoribus, & ſalus ab arietibus
ovium. Vox clamoris paſtorum, & 36
ovium arietumque balatus auditur; *quia*
Dominus vaſtavit paſcua eorum.

ירמיה: לב

malum *facientes* profectò Jehudah filii & Israel filii *fuerunt* Nam
30 כִּי־הָיוּ בְנֵי־יִשְׂרָאֵל וּבְנֵי יְהוּדָה אַךְ עֹשִׂים הָרַע
profectò Israel filii quia : *suis pueritiis à* meis oculis in
בְּעֵינַי מִנְּעֻרֹתֵיהֶם כִּי בְנֵי־יִשְׂרָאֵל אַךְ
.DOMINUS dixit , suarum manuum opere in me *irritantes*
מַכְעִסִים אֹתִי בְּמַעֲשֵׂה יְדֵיהֶם נְאֻם־יְהוָה׃
hæc civitas mihi fuit mea ira *super* & ,meo *naso super* Quia
31 כִּי עַל־אַפִּי וְעַל־חֲמָתִי הָיְתָה לִּי הָעִיר הַזֹּאת
: hanc diem ad usque & , eam ædificaverunt qua die à
לְמִן־הַיּוֹם אֲשֶׁר בָּנוּ אוֹתָהּ וְעַד הַיּוֹם הַזֶּה
malitiam omnem Propter *.meis faciebus desuper* eam *amovendum ad*
32 לַהֲסִירָהּ מֵעַל פָּנָי׃ עַל כָּל־רָעַת
,me *irritandum ad* fecerunt quam , Jehudah filiorum & ,Israel filiorum
בְּנֵי־יִשְׂרָאֵל וּבְנֵי יְהוּדָה אֲשֶׁר עָשׂוּ לְהַכְעִסֵנִי
,eorũ prophetæ & ,eorũ sacerdotes ,eorũ principes ,eorum reges , ipsi
הֵמָּה מַלְכֵיהֶם שָׂרֵיהֶם כֹּהֲנֵיהֶם וּנְבִיאֵיהֶם
verterunt Et .Jerusalaim habitatores & , Jehudah *vir* &
33 וְאִישׁ יְהוּדָה וְיֹשְׁבֵי יְרוּשָׁלִָם׃ וַיִּפְנוּ
, surgendo manè eos *docendo* & : facies non & , cervicem me *ad*
אֵלַי עֹרֶף וְלֹא פָנִים וְלַמֵּד אֹתָם הַשְׁכֵּם
.disciplinam *capiendum ad audientes ipsi* non & , docendo &
וְלַמֵּד וְאֵינָם שֹׁמְעִים לָקַחַת מוּסָר׃
est invocatum qua domo in suas abominationes posuerunt Et
34 וַיָּשִׂימוּ שִׁקּוּצֵיהֶם בַּבַּיִת אֲשֶׁר־נִקְרָא
excelsa ædificaverunt Et .eam *polluendam ad* , *ea super* meũ nomen
35 שְׁמִי עָלָיו לְטַמְּאוֹ׃ וַיִּבְנוּ אֶת־בָּמוֹת
suos filios *faciendum transire ad* ,Hinnom filii valle in quæ , Bahal
הַבַּעַל אֲשֶׁר בְּגֵיא בֶן־הִנֹּם לְהַעֲבִיר אֶת־בְּנֵיהֶם
ascendit nec , eis præcepi non quod , Molech *ipsi* suas filias &
וְאֶת־בְּנוֹתֵיהֶם לַמֹּלֶךְ אֲשֶׁר לֹא־צִוִּיתִים וְלֹא עָלְתָה
faciendum peccare *ad* ,hanc abominationem *faciendum ad* ,meum cor *super*
עַל־לִבִּי לַעֲשׂוֹת הַתּוֹעֵבָה הַזֹּאת לְמַעַן הַחֲטִי
Deus Dominus dixit sic propterea nunc Et .Jehudah
36 אֶת־יְהוּדָה׃ וְעַתָּה לָכֵן כֹּה־אָמַר יְהוָה אֱלֹהֵי
Datur : dicentes vos qua , hanc civitatem ad , Israel
יִשְׂרָאֵל אֶל־הָעִיר הַזֹּאת אֲשֶׁר אַתֶּם אֹמְרִים נִתְּנָה
ego Ecce .peste in & ,fame in & ,gladio in , Babel regis manu in
37 בְּיַד מֶלֶךְ־בָּבֶל בַּחֶרֶב וּבָרָעָב וּבַדָּבֶר׃ הִנְנִי
,meo *naso* in , *illuc* eos *propuli quò* terris universis de eos *congregans*
מְקַבְּצָם מִכָּל־הָאֲרָצוֹת אֲשֶׁר הִדַּחְתִּים שָׁם בְּאַפִּי
locum ad eos faciam redire & , magna *iracundia in* & , mea ira &
וּבַחֲמָתִי וּבְקֶצֶף גָּדוֹל וַהֲשִׁבֹתִים אֶל־הַמָּקוֹם
,populum in mihi erunt Et *.fiducia in* eos faciam habitare& ,istum
38 הַזֶּה וְהֹשַׁבְתִּים לָבֶטַח׃ וְהָיוּ לִי לְעָם
, unum cor eis dabo Et .Deum in eis ero ego &
39 וַאֲנִי אֶהְיֶה לָהֶם לֵאלֹהִים׃ וְנָתַתִּי לָהֶם לֵב אֶחָד
, eis *bonum in* , diebus omnibus me *timendum ad* , unam viam &
וְדֶרֶךְ אֶחָד לְיִרְאָה אוֹתִי כָּל־הַיָּמִים לְטוֹב לָהֶם
, *seculi* pactum eis *excidam* Et .eos post eorum filiis &
40 וְלִבְנֵיהֶם אַחֲרֵיהֶם׃ וְכָרַתִּי לָהֶם בְּרִית עוֹלָם
& : eis *me benefaciendum ad*,eorum *posterioribus* à revertar non quia
אֲשֶׁר לֹא־אָשׁוּב מֵאַחֲרֵיהֶם לְהֵיטִיבִי אוֹתָם וְאֶת־
.me *desuper recedere non pro* , eorum corde in dabo meum timorem
יִרְאָתִי אֶתֵּן בִּלְבָבָם לְבִלְתִּי סוּר מֵעָלָי׃
terra in eos plantabo & : eis benefaciendo eos super gaudebo Et
41 וְשַׂשְׂתִּי עֲלֵיהֶם לְהֵטִיב אוֹתָם וּנְטַעְתִּים בָּאָרֶץ
.mea anima tota in & ,meo corde omni in ,veritate in hac
הַזֹּאת בֶּאֱמֶת בְּכָל־לִבִּי וּבְכָל־נַפְשִׁי׃

Versio VULG. LAT.

30 Erant enim filii Israel, & filii
Juda, jugiter facientes malum in
oculis meis ab adolescentia sua :
filii Israel qui usque nunc exacerbant
me in opere manuum
31 suarum, dicit Dominus. Quia
in furore & in indignatione mea
facta est mihi civitas hæc, à die
quâ ædificaverunt eam, usque ad
diem istam quâ auferetur de conspectu
32 meo. Propter malitiam
filiorum Israel, & filiorum Juda,
quam fecerunt ad iracundiam
me provocantes, ipsi & reges
eorum, principes eorum, & sacerdotes
eorum, & prophetæ
eorum, viri Juda & habitatores
33 Jerusalem. Et verterunt ad me
terga & non facies : cùm docerem
eos diluculò, & erudirem,
& nollent audire ut acciperent
34 disciplinam. Et posuerunt idola
sua in domo, in qua invocatum
est nomen meum, ut polluerent
35 eam. Et ædificaverunt
excelsa Baal, quæ sunt in valle
filii Ennom, ut initiarent filios
suos & filias suas Moloch : quod
non mandavi eis, nec ascendit
in cor meum ut facerent abominationem
hanc, & in peccatum
36 deducerent Judam. Et nunc
propter ista, hæc dicit Dominus
Deus Israel ad civitatem hanc,
de qua vos dicitis quòd tradetur
in manus regis Babylonis in gladio
37 & in fame, & in peste; Ecce
ego congregabo eos de universis
terris, ad quas ejeci eos
in furore meo, & in ira mea, &
in indignatione grandi : & reducam
eos ad locum istum, &
habitare eos faciam confidenter.
38 Et erunt mihi in populum, &
39 ego ero eis in Deum. Et dabo
eis cor unum, & viam unam,
ut timeant me universis diebus:
& benè sit eis, & filiis eorum
40 post eos. Et feriam eis pactum
sempiternum, & non desinam
eis benefacere : & timorem
meum dabo in corde eorum, ut
41 non recedant à me. Et lætabor
super eis, cùm benè eis fecero :
& plantabo eos in terra ista in
veritate, in toto corde meo, &
in tota anima mea.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

37 Καὶ παύσεται τὰ κατάλοιπα τῆς εἰρήνης 38 ἀπὸ προσώπου ὀργῆς θυμοῦ μου. (φ) Ἐγκατέλιπεν ὥσπερ λέων κατάλυμα αὐτοῦ, ὅτι ἐγενήθη ἡ γῆ αὐτῶν εἰς ἄβατον ἀπὸ προσώπου (χ) τῆς μαχαίρας τῆς μεγάλης.

Et cessabunt (o) residua pacis à 37 facie iræ furoris mei. Dereliquit 38 quasi leo diversorium suum : quia facta est terra eorum in invium, à facie gladii magni.

MS. A. (φ) Κατέλειπέν με ὥσπερ λέων κάλυμα αὐτοῦ, (χ) μαχαίρας

ΚΕΦ. λγ'.

Cap. 26. Vulg. Lat.

1 ἘΝ ἈΡΧΗ͂ ΒΑΣΙΛΕ΄ΩΣ ἸΩΑΚΕῚΜ ὙΙΟΥ͂ ἸΩΣΙ΄Α, (α) ἘΓΕΝΗ΄ΘΗ Ὁ ΛΟ΄ΓΟΣ ΟὟΤΟΣ ΠΑΡᾺ ΚΥΡΙ΄ΟΥ· 2 Οὕτως εἶπε κύριος, Στῆθι ἐν αὐλῇ οἴκου κυρίου, καὶ χρηματιεῖς (β) ἅπασι τοῖς Ἰουδαίοις, καὶ πᾶσι τοῖς ἐρχομένοις προσκυνεῖν ἐν οἴκῳ κυρίου, ἅπαντας τοὺς λόγους, οὓς συνέταξά σοι (γ) χρηματίσαι αὐτοῖς, μὴ ἀφέλῃς ῥῆμα. 3 Ἴσως ἀκούσονται, καὶ ἀποστραφήσονται ἕκαστος (δ) ἀπὸ τῆς ὁδοῦ αὐτοῦ τῆς πονηρᾶς, καὶ παύσομαι ἀπὸ τῶν κακῶν ὧν ἐγὼ λογίζομαι τοῦ ποιῆσαι αὐτοῖς ἕνεκεν τῶν πονηρῶν ἐπιτηδευμάτων αὐτῶν. 4 Καὶ ἐρεῖς, Οὕτως εἶπε κύριος, Ἐὰν μὴ ἀκούσητέ μου, τοῦ πορεύεσθαι ἐν τοῖς (ε) νομίμοις μου οἷς ἔδωκα κατὰ πρόσωπον ὑμῶν, 5 Εἰσακούειν τῶν (ζ) λόγων τῶν παίδων μου τῶν προφητῶν, οὓς ἐγὼ ἀποστέλλω πρὸς ὑμᾶς ὄρθρου, καὶ ἀπέστειλα, καὶ οὐκ (η) ἠκούσατέ μου. 6 Καὶ δώσω τὸν οἶκον τοῦτον ὥσπερ (θ) Σηλώ, καὶ τὴν (ι) πόλιν δώσω εἰς κατάραν πᾶσι τοῖς ἔθνεσι πάσης τῆς γῆς. 7 Καὶ ἤκουσαν οἱ ἱερεῖς, καὶ οἱ ψευδοπροφῆται, καὶ πᾶς ὁ λαὸς τοῦ Ἱερεμίου λαλοῦντος τοὺς λόγους τούτους ἐν οἴκῳ κυρίου. 8 Καὶ ἐγένετο Ἱερεμίου παυσαμένου λαλοῦντος πάντα (κ) ἃ συνέταξε κύριος αὐτῷ λαλῆσαι παντὶ τῷ λαῷ, καὶ συνελάβοσαν αὐτὸν οἱ ἱερεῖς, καὶ οἱ ψευδοπροφῆται, καὶ πᾶς ὁ λαός, λέγων, 9 Θανάτῳ ἀποθανῇ, Ὅτι ἐπροφήτευσας τῷ ὀνόματι κυρίου, λέγων, Ὥσπερ (λ) Σηλὼ ἔσται ὁ οἶκος οὗτος, καὶ ἡ πόλις αὕτη ἐρημωθήσεται ἀπὸ (μ) κατοικούντων. καὶ ἐξεκκλησιάσθη πᾶς ὁ λαὸς ἐπὶ Ἱερεμίαν ἐν οἴκῳ κυρίου. 10 Καὶ ἤκουσαν οἱ ἄρχοντες Ἰούδα (ν) τὸν λόγον τοῦτον, καὶ ἀνέβησαν ἐξ οἴκου τοῦ βασιλέως εἰς οἶκον κυρίου, καὶ ἐκάθισαν ἐν προθύροις (ο) πύλης τῆς καινῆς. 11 Καὶ εἶπαν οἱ ἱερεῖς, καὶ οἱ ψευδοπροφῆται πρὸς τοὺς ἄρχοντας, καὶ παντὶ τῷ λαῷ, Κρίσις θανάτου τῷ ἀνθρώπῳ τούτῳ, ὅτι ἐπροφήτευσε κατὰ τῆς πόλεως ταύτης, καθὼς ἠκούσατε ἐν τοῖς ὠσὶν ὑμῶν. 12 Καὶ εἶπεν Ἱερεμίας πρὸς τοὺς ἄρχοντας, καὶ παντὶ τῷ λαῷ, λέγων, Κύριος ἀπέστειλέ με προφητεῦσαι ἐπὶ τὸν οἶκον τοῦτον, καὶ ἐπὶ τὴν πόλιν ταύτην πάντας τοὺς (π) λόγους οὓς ἠκούσατε.

CAP. XXXIII.

1 IN (a) principio regis Joacim filii Josiæ factum est verbum istud à Domino. 2 Sic dixit Dominus; Sta in atrio domûs Domini : & respondebis omnibus Judæis, & omnibus venientibus adorare in domo Domini, universos sermones, quos mandavi tibi respondere eis : noli subtrahere verbum. 3 Fortasse audient, & avertentur unusquisque à via sua mala : & cessabo à malis, quæ ego cogito facere eis propter pessima studia eorum. 4 Et dices, Sic dixit Dominus; Si non audieritis me, ambulando in legitimis meis, quæ dedi ante faciem vestram, 5 Exaudiendo verba puerorum meorum prophetarum, quos ego mitto ad vos diluculò, & misi, & non audîstis me; 6 Et dabo domum hanc sicut Selo; & civitatem dabo in maledictionem cunctis gentibus universæ terræ. 7 Et audierunt sacerdotes, & pseudoprophetæ, & universus populus Hieremiam loquentem verba hæc in domo Domini. 8 Et factum est, cùm Hieremias consummâsset loquens omnia, quæ præceperat ei Dominus loqui universo populo, & apprehenderunt eum sacerdotes, & pseudoprophetæ, & omnis populus, dicens; Morte moriaris : 9 Quia prophetâsti nomine Domini, dicens; Sicut Selo, erit domus hæc, & urbs ista desolabitur ab habitantibus. Et convênit Ecclesia universi populi super Hieremiam in domo Domini. 10 Et audierunt principes Juda verbum hoc : & ascenderunt de domo regis in domum Domini : & sederunt in vestibulis (b) portæ novæ. 11 Et dixerunt sacerdotes, & pseudoprophetæ ad principes, & omni populo; Judicium mortis homini huic, quia prophetavit adversùs civitatem istam: sicut audîstis in auribus vestris. 12 Et dixit Hieremias ad principes, & omni populo, dicens; Dominus misit me prophetare super domum istam, & super civitatem hanc omnia verba, quæ audîstis.

MS. A. (α) ἘΓΕ΄ΝΗ (β) πᾶσι (γ) αὐτοῖς χρηματίσαι, (δ) ἀπ' ὁδοῦ αὐτῶν (ε) νόμοις (ζ) λόγων μου καὶ τῶν (η) εἰσηκούσατέ (θ) Σηλώμ, (ι) πόλιν ταύτην δώσω (κ) ὅσα συνέταξε αὐτῷ κύριος (λ) Σηλὼμ (μ) ἐνοικούντων. καὶ ἐξεκλησιάσθη (ν) τῶν λόγων τούτων, (ο) πύλης κυρίου τῆς (π) λόγους τούτους οὓς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

30 ארי הוו בני ישראל ובני יהודה ברם עבדין דביש קדמי מזעוריהון ארי בני ישראל
31 ברם מרגזין קדמי בעובדי ידיהון אמר יי׃ ארי רוגזי וחמתי חל בקרתא הדא למן יומא
32 דבנו יתה ועד יומא הדין לאגליותא מקביל מימרי׃ על כל בישת בני ישראל ובני
יהודה דעבדו לארגזא קדמי אנון מלכיהון רברבניהון ונבייהון דשקרא ואנש
33 יהודה ויתבי ירושלם׃ ואחזרו בפולחני קדל ולא שויאו דחלתי לקבל אפיהון
ושלחית לותהון ית כל עבדי נבייא מקדם ומליף ולית אנון צבן לקבלא אולפן׃
34 ושויאו שקוציהון בביתא דאתקרי שמי עלוהי לסאבותיה׃ ובנו ית במת בעלא
35 די בחילת בר הנם לאעבראה ית בניהון וית בנתהון למולך דלא פקדית באוריתי
ולא רעוא קדמי למעבד תועבתא הדא בדיל לחיבא ית דבית יהודה׃
36 וכען בכן כדנן אמר יי אלהא דישראל על קרתא הדא דאתון אמרין אתמסרת
37 בידא דמלכא דבבל בחרבא ובכפנא ובמותא׃ הא אנא מכניש להון מכל
מדינתא דאגליתנון לתמן ברוגזי ובחמתי ובתקוף רב ואתיבנון לאתרא הדין
38 ואשרינון לרחצן׃ ויהון קדמי לעם ואנא אהוי להון לאלה׃ ואתין להון לבא חד
39 40 ואורח חד למדחל קדמי כל יומיא דייטב להון ולבניהון בתריהון׃ ואגזר להון קים
עלם דלא יתוב מימרי מבתריהון לאיטבא להון וית דחלתי אתין בלבהון בדיל דלא
41 יסטון מבתר פולחני׃ ויחדי מימרי עליהון לאיטבא להון ואקימנון בארעא הדא
בקשוט במימרי וברעותי׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Fuerunt enim filii Israel & filii Juda facientes utique malum in conspectu 30
meo ab adolescentia sua : quia filii Israel irritant utique me operibus manuum
suarum, dicit Dominus. Quia ira mea & furor meus resedit in civi- 31
tate hac à die qua construxerunt eam usque in diem hanc, ut transmigrare
facerem eam à conspectu Verbi mei : Propter omnia mala filiorum Israel, 32
& filiorum Juda, quæ fecerunt ut irritarent me ipsi & reges eorum, &
principes eorum, & pseudoprophetæ eorum, & viri Juda, & habitatores
Jerusalem. Et verterunt in cultu meo cervicem, & non posuerunt ti- 33
morem mei in conspectu vultus sui. Et misi ad eos omnes prophetas servos
meos, manè consurgens & docens : & noluerunt suscipere disciplinam.
Et posuerunt abominationes suas in domo in qua invocatum est nomen me- 34
um ut polluerent eam : Et construxerunt excelsa Baal, quæ sunt in valle fi- 35
lii Hinnom, ut traducerent filios suos & filias suas idolo Moloch; quod non
præcepi in lege mea, nec est voluntas coram me ut facerent abominationem
hanc, ut in peccatum deducerent domum Juda. Nunc ergo propterea sic di- 36
cit Dominus Deus Israel super civitate hac, de qua vos dicitis, Tradita est
in manum regis Babylonis, gladio & fame, & peste. Ecce ego congregabo 37
eos de omnibus provinciis, ad quas transmigrare feci eos in ira mea, & in
indignatione mea, & in furore grandi ; & reducam eos ad locum istum, &
habitare eos faciam confidenter. Et erunt coram me in populum, & ego 38
ero eis in Deum. Et dabo eis cor unum et viam unam, ut timeant coram 39
me omnibus diebus, et bene sit eis, et filiis eorum post eos. Et feriam cum 40
eis pactum sempiternum ; et non revertetur Verbum meum ab eis, ut
bene faciam eis : et timorem mei dabo in cordibus eorum, ut non declinent
à cultu meo. Et lætabitur Verbum meum super illos, ad bene faci- 41
endum eis, et stabiliam eos in terra ista, in veritate, in verbo meo et in
voluntate mea.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

ܡܛܠ ܕܗܘܘ ܒܢܝ̈ ܐܝܣܪܝܠ ܘܒܢܝ̈ ܝܗܘܕܐ . ܥܒܕܝܢ ܕܒܝܫ ܩܕܡܝ ܡܢ ܛܠܝܘܬܗܘܢ . 30
ܡܛܠ ܕܒܢܝ̈ ܐܝܣܪܝܠ . ܡܪܓܙܝܢ ܠܝ ܒܥܒܕ̈ܐ ܕܐܝܕܝܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ . * ܘܡܛܠ ܗܕܐ ܗܘܬ 31
ܪܘܓܙܝ ܘܚܡܬܝ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ . ܡܢ ܝܘܡܐ ܕܒܢܘܗ ܘܥܕܡܐ ܠܝܘܡܢܐ . ܠܡܘܒܕܘܬܗ
ܡܢ ܩܕܡ ܐܦܝ . * ܥܠ ܟܠܗܝܢ ܒܝܫܬܐ ܕܒܢܝ̈ ܐܝܣܪܝܠ ܘܕܒܢܝ̈ ܝܗܘܕܐ ܕܥܒܕܘ 32
ܠܡܪܓܙܘܬܝ . ܗܢܘܢ ܘܡܠܟܝܗܘܢ ܘܪܘܪܒܢܝܗܘܢ ܘܟܗܢܝܗܘܢ ܘܢܒܝܝܗܘܢ . ܘܓܒܪܐ
ܕܝܗܘܕܐ ܘܥܡܘܪܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ . * ܘܗܦܟܘ ܠܝ ܩܕܠܗܘܢ ܘܠܐ ܐܦܝܗܘܢ . ܘܐܠܦܬ ܐܢܘܢ . 33
ܡܩܕܡ ܘܐܠܦܬ . ܘܠܐ ܫܡܥܝܢ ܠܡܣܒ ܡܪܕܘܬܐ . * ܘܣܡܘ ܛܢܦܘܬܗܘܢ ܒܒܝܬܐ 34
ܕܐܬܩܪܝ ܫܡܝ ܥܠܘܗܝ . ܘܛܢܦܘܗܝ * ܘܒܢܘ ܒܝܬ̈ܐ ܠܒܥܠܐ ܒܬܘܦܬ ܕܒܢܚܠܐ ܕܒܪ 35
ܗܢܘܡ . ܠܡܥܒܪܘ ܒܢܝܗܘܢ ܘܒܢܬܗܘܢ ܠܡܠܟܘܡ . ܕܠܐ ܦܩܕܬ ܘܠܐ ܣܠܩܬ ܥܠ ܠܒܝ .
ܕܢܥܒܕܘܢ ܛܢܦܘܬܐ ܗܕܐ ܘܢܚܛܘܢ ܠܝܗܘܕܐ . * ܘܗܫܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ 36
ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܕܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܕܡܫܬܠܡܐ ܒܐܝܕܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ . ܒܣܝܦܐ ܘܒܟܦܢܐ
ܘܒܡܘܬܢܐ . * ܗܐ ܡܟܢܫ ܐܢܐ ܠܗܘܢ ܡܢ ܟܠܗܝܢ ܐܪ̈ܥܬܐ ܕܒܕܪܬ ܐܢܘܢ ܬܡܢ . ܒܪܘܓܙܝ 37
ܘܒܚܡܬܝ ܒܪܘܓܙܐ ܪܒܐ . ܘܐܗܦܟ ܐܢܘܢ ܠܐܬܪܐ ܗܢܐ . ܘܐܘܬܒ ܐܢܘܢ ܒܫܠܝܐ . * ܘܢܗܘܘܢ ܠܝ 38
ܠܥܡܐ . ܘܐܢܐ ܐܗܘܐ ܠܗܘܢ ܠܐܠܗܐ . * ܘܐܬܠ ܠܗܘܢ ܠܒܐ ܚܕܬܐ ܘܪܘܚܐ ܚܕܬܐ . ܠܡܕܚܠ 39
ܡܢܝ ܟܠܗܘܢ ܝܘܡܬܐ . ܘܢܛܐܒ ܠܗܘܢ ܘܠܒܢܝܗܘܢ ܒܬܪܗܘܢ . * ܘܐܩܝܡ ܠܗܘܢ 40
ܩܝܡܐ ܕܠܥܠܡ . ܕܠܐ ܐܗܦܘܟ ܡܢ ܒܬܪܗܘܢ ܠܡܛܐܒܘ ܠܗܘܢ . ܘܕܚܠܬܝ ܐܬܠ ܒܠܒܗܘܢ ܕܠܐ
ܢܣܛܘܢ ܡܢܝ . * ܘܐܚܕܐ ܒܗܘܢ . ܘܐܛܐܒ ܠܗܘܢ . ܘܐܢܨܒ ܐܢܘܢ ܒܐܪܥܐ ܗܕܐ ܒܫܪܪܐ . 41
ܒܟܠܗ ܠܒܝ ܘܒܟܠܗ ܢܦܫܝ .

Quia filii Iſraelis & filii Judæ mala perpetrârunt 30
coram me à pueritia ſua: quia filii Iſraelis
irritant me opere manuum ſuarum, ait
Dominus: Ideò incubuit ira mea & furor 31
meus ſuper hanc civitatem inde ab illo die
quo ædificaverunt eam ad præſentem uſque
diem, ut aboleam eam à conſpectu meo;
Propter omnia ſcelera filiorum Iſraelis & filiorum 32
Judæ, quæ ad irritandum me perpetrârunt
ipſi, & reges ac principes eorum, ſacerdotes
ac prophetæ eorum, viri Judæ, & cives
Jeroſolymorum; Et verterunt mihi cervicem, 33
non autem faciem ſuam. Equidem eos
docui, & prædocui; at non auſcultant ad
capeſſendam diſciplinam: Sed poſuerunt 34
abominationem ſuam in æde ſuper quam invocatum
eſt nomen meum, & polluerunt eam:
Et ædificaverunt aras Baali in Topheth quæ 35
eſt in valle filii Hennom, ut filios filiáſque
ſuas comburerent Amelecho, quod neque
mandaveram, neque in meum ſubierat animum,
ut committerent abominationem tantam,
& ad peccatum inducerent Judam. Nunc 36
ita dicit Dominus Deus Iſraelis de hac civitate
quam dicitis traditam eſſe in manum regis
Babyloniæ, per gladium, famem, ac peſtem;
Ecce collecturus ſum eos ex omnibus 37
regionibus quò illos in ira & excandeſcentia
mea magnô cum furore diſperſero: &
reducens eos in locum iſtum, facturus ſum ut
habitent ſecurè. Erunt mihi deníque populus, 38
& ego ero illis Deus: Dabóque eis cor 39
novum, & ſpiritum novum ad reverendum me
cunctis diebus, ut bene cedat eis & filiis eorũ
poſt ipſos: Et ſtatuam illis fœdus perpetuũ, 40
non deſtiturum me à proſequendo eos beneficiis:
reverentiam mei indam cordi eorum, ut
non deflectant à me: Lætificabo eos, & bene 41
cedet eis: firméque plantabo illos hac in terra,
ex toto corde meo, totóque animo meo.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* وينكف بقايا السلامة من وجه رجز غضبي * ترك مثل الاسد مظلته * لان ارضه صارت للقفر 37 38
من وجه السيف العظيم *

Et deficient reliquiæ pacis à facie æſtûs 37
iræ meæ. Deſeruit ſicut leo umbraculum 38
ſuum, quoniam terra ipſius redacta
eſt in ſolitudinem à facie gladii magni.

* الفصل الثالث والثلثون *

CAP. XXXIII.

* في بدو تملك يواقيم صار هذا القول من قبل الرب * هكذا قال الرب * قف في دار 1 2
بيت الرب * ووحي لجميع اليهود ولجميع الاتيين ليسجدوا في بيت الرب * جميع
الاقوال التي اريتها لك ان توحيها اليهم * لا تنقص كلمة * لعلهم يسمعون ويرجعون 3
كل واحد من طريقه الشرير * واكف من الشرور التي انا افكر فيها ان اصنعها
بهم من اجل اعمالهم الشريرة * وتقول هكذا قال الرب * ان لم تسمعوا لتسيروا في 4
سرايعي التي اعطيتها لوجهكم * لتسمعوا اقوال عبيدي الانبياء الذي انا ارسلهم 5
اليكم باكرا وارسلتهم فلم تسمعوني * وادفع هذا البيت مثل سيلوم * وادفع هذه 6
المدينة للعنة في جميع امم الارض * وسمعت الكهنة والانبياء الكذبة وكل الشعب ارميا 7
يتكلم بهذه الاقوال في بيت الرب * وكان لما كف ارميا ان يتكلم بجميع ما امر الرب 8
ليتكلم به الشعب * فقبض عليه الكهنة والانبياء الكذبة وكل الشعب قايلا * بالموت 9
تموت * لانك تنبيت باسم الرب قايلا * مثل سيلوم يصير هذا البيت * وهذه المدينة تخرب
من السكان * واجتمع كل الشعب على ارميا في بيت الرب * وسمعت روساء يهوذا هذه الاقوال * 10
وصعدوا الى بيت الملك الى بيت الرب * وجلسوا قباله ابواب بيت الرب الجديد * فقالت 11
الكهنة والانبياء الكذبة للروساء ولكل الشعب * حكم الموت لهذا الانسان *
لانه تنبا على هذه المدينة كما سمعتم باذانكم * فقال ارميا للروساء ولكل الشعب 12
قايلا * الرب ارسلني لاتنبا على هذا البيت وعلى هذه المدينة * بجميع هذه الاقوال
التي سمعتموها *

IN principio regni Joacimi factus 1
eſt hic ſermo à Domino.

Sic dixit Dominus, Sta in atrio domûs 2
Domini, & revela omnibus Judæis omnibuſque
venientibus ad adorandum in
domo Domini, cunctos ſermones quos tibi
diſpono ut reveles eis: ne ſubtrahas verbum: 3
Si fortè audiant, & revertantur
quiſque à via ſua peſſima, & deſiſtam
à malis quibus ego eos afficere
molior propter peſſimas actiones eorum.
Dices ergò, Sic dixit Dominus; Niſi 4
audieritis, ut ambuletis in legibus meis
quas poſui ob oculos veſtros, ut obtemperetis 5
ſermonibus ſervorum meorum
prophetarum, quos ego mittam ad vos
diluculò; (miſi enim illos, & non audîſtis
me) Reddam hanc domum ſimilem 6
Silomi, & exponam hanc urbem
maledictioni inter omnes terræ populos.
Audierunt autem ſacerdotes, prophetæ 7
falſi, totúſque populus Jeremiam loquentem
hujuſcemodi ſermones in domo
Domini. Et fuit, cùm finem feciſſet 8
Jeremia loquendi quicquid præceperat
ei Dominus ut loqueretur ad populum;
ut apprehenderent eum ſacerdotes, &
prophetæ falſi, totuſque populus, dicentes;
Morte afficieris, quia prophetâſti 9
in nomine Domini, dicens, Similis
Silomi fiet hæc domus, & urbs
iſta civibus deſolabitur. Cúmque congregatus
eſſet univerſus populus adverſùs
Jeremiam in domo Domini, Et audiſſent 10
principes Judæ res iſtas; aſcenderunt
ad domum regiam, in domum
Domini: & cùm ſediſſent è regione
januarum domûs Domini novarum:
Dixerunt ſacerdotes illi, & prophetæ 11
mendaces, ad principes & univerſum
populum, Sententia mortis huic homini
debetur, quia prophetavit contra hanc
urbem qualia audîſtis auribus veſtris.
Tunc allocutus eſt Jeremia principes 12
totúmque populum, dicens; Dominus
me miſit ad prophetandum contra domum
iſtam & contra hanc urbem hos omnes
ſermones quos audîſtis:

istum populum in adduxi Sicut : DOMINUS dixit sic Quia
42 כִּי־כֹה אָמַר יְהוָה כַּאֲשֶׁר הֵבֵאתִי אֶל־הָעָם הַזֶּה
eos super *adducens* ego sic , hoc grande malum omne
אֵת כָּל־הָרָעָה הַגְּדוֹלָה הַזֹּאת כֵּן אָנֹכִי מֵבִיא עֲלֵיהֶם
possidebitur Et .eos super *loquens* ego quod , bonum omne
43 אֶת־כָּל־הַטּוֹבָה אֲשֶׁר אָנֹכִי דֹּבֵר עֲלֵיהֶם׃ וְנִקְנָה
Deserta *: dicentes* vos qua , ista terra in ager
הַשָּׂדֶה בָּאָרֶץ הַזֹּאת אֲשֶׁר אַתֶּם אֹמְרִים שְׁמָמָה
Chasdim manu in est data , *animali & homine absque ipsa*
הִיא מֵאֵין אָדָם וּבְהֵמָה נִתְּנָה בְּיַד הַכַּשְׂדִּים׃
contestari & , *signare* & , libro in *scribere* & , ement argento *in* Agros
44 שָׂדוֹת בַּכֶּסֶף יִקְנוּ וְכָתוֹב בַּסֵּפֶר וְחָתוֹם וְהָעֵד
civitatibus in & ,Jerusalaim *circuitibus* in & , Binjamin terra in testes
עֵדִים בְּאֶרֶץ בִּנְיָמִן וּבִסְבִיבֵי יְרוּשָׁלַםִ וּבְעָרֵי
civitatibus in & , *planitiei* civitatibus in &,*montis* civitatib' in &,Jehudah
יְהוּדָה וּבְעָרֵי הָהָר וּבְעָרֵי הַשְּׁפֵלָה וּבְעָרֵי
.DOMINUS dixit ,eorum captivitatem faciam redire quia *: Meridiei*
הַנֶּגֶב כִּי־אָשִׁיב אֶת־שְׁבוּתָם נְאֻם־יְהוָה׃

CAP. XXXIII. לג

ipse adhuc ipse Et) .secundò Irmejahu ad Domini verbum fuit Et
1 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֶל־יִרְמְיָהוּ שֵׁנִית וְהוּא עוֹדֶנּוּ
DOMINUS dixit Sic : dicendo (,custodiæ atrio in clausus
2 עָצוּר בַּחֲצַר הַמַּטָּרָה לֵאמֹר׃ כֹּה־אָמַר יְהוָה
,illā *constabiliendum ad* , illam *formans* DOMINUS , *eam faciens*
עֹשָׂהּ יְהוָה יוֹצֵר אוֹתָהּ לַהֲכִינָהּ
: tibi respondebo & , me ad Clama .ejus nomen DOMINUS
3 יְהוָה שְׁמוֹ׃ קְרָא אֵלַי וְאֶעֱנֶךָּ
Quia .*ea* cognovisti non , munita & grandia tibi annuntiabo &
4 וְאַגִּידָה לְךָ גְּדֹלוֹת וּבְצֻרוֹת לֹא יְדַעְתָּם׃ כִּי
urbis domos *super* Israel Deus DOMINUS dixit sic
כֹה אָמַר יְהוָה אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל עַל־בָּתֵּי הָעִיר
,*aggeribus in dirutas* Jehudah regum domos *super* & , hujus
הַזֹּאת וְעַל־בָּתֵּי מַלְכֵי יְהוּדָה הַנְּתֻצִים אֶל־הַסֹּלְלוֹת
, Chasdim cum dimicandum ad *Venientes* .*gladio* in &
5 וְאֶל־הֶחָרֶב׃ בָּאִים לְהִלָּחֵם אֶת־הַכַּשְׂדִּים
feci percutere quos , hominum cadaveribus eas implendum ad &
וּלְמַלְאָם אֶת־פִּגְרֵי הָאָדָם אֲשֶׁר־הִכֵּיתִי
, hac civitate à *meas facies* abscondi *quòd* &,mea ira in & ,meo *naso* in
בְאַפִּי וּבַחֲמָתִי וַאֲשֶׁר הִסְתַּרְתִּי פָנַי מֵהָעִיר הַזֹּאת
ei *faciens ascendere* ego Ecce .eorum malitiam omnem propter
6 עַל כָּל־רָעָתָם׃ הִנְנִי מַעֲלֶה־לָּהּ
affluentiam eis revelabo & : eos curabo & , medicinam & ,*emplastrum*
אֲרֻכָה וּמַרְפֵּא וּרְפָאתִים וְגִלֵּיתִי לָהֶם עֲתֶרֶת
, Jehudah captivitatem faciam redire Et .veritatis & pacis
7 שָׁלוֹם וֶאֱמֶת׃ וַהֲשִׁבֹתִי אֶת־שְׁבוּת יְהוּדָה
.principio in sicut eos ædificabo & : Israel captivitatem &
וְאֵת שְׁבוּת יִשְׂרָאֵל וּבְנִתִים כְּבָרִאשֹׁנָה׃
, *mihi* peccaverunt qua , sua iniquitate omni ab illos emundabo Et
8 וְטִהַרְתִּים מִכָּל־עֲוֹנָם אֲשֶׁר חָטְאוּ־לִי
, *mihi* peccaverunt quibus , eorum iniquitatibus omnibus parcam &
וְסָלַחְתִּי לְכוֹל־עֲוֹנוֹתֵיהֶם אֲשֶׁר חָטְאוּ־לִי
,nomen in mihi erit Et .me contra sunt prævaricati quibus &
9 וַאֲשֶׁר פָּשְׁעוּ בִי׃ וְהָיְתָה לִּי לְשֵׁם
quæ , terræ gentibus cunctis , gloriam in & , laudem in , gaudium
שָׂשׂוֹן לִתְהִלָּה וּלְתִפְאֶרֶת לְכֹל גּוֹיֵי הָאָרֶץ אֲשֶׁר
,pavebunt & , eis *faciens* ego quod bonum omne audierint
יִשְׁמְעוּ אֶת־כָּל־הַטּוֹבָה אֲשֶׁר אָנֹכִי עֹשֶׂה אוֹתָם וּפָחֲדוּ
ego quam pace omni super & , bono omni super trement &
וְרָגְזוּ עַל כָּל־הַטּוֹבָה וְעַל כָּל־הַשָּׁלוֹם אֲשֶׁר אָנֹכִי
.ei *faciens*
עֹשֶׂה לָּהּ׃

Versio VULG. LAT.

42 Quia hæc dicit Dominus; Sicut adduxi super populum istum omne malum hoc grande: sic adducam super eos omne bonum, quod ego loquor ad eos. 43 Et possidebuntur agri in terra ista: de qua vos dicitis quòd deserta sit, eò quòd non remanserit homo & jumentum, & data sit in manus Chaldæorum. 44 Agri ementur pecuniâ, & scribentur in libro, & imprimetur signum, & testis adhibebitur: in terra Benjamin, & in circuitu Jerusalem, in civitatibus Juda, & in civitatibus montanis, & in civitatibus campestribus, & in civitatibus quæ ad Austrum sunt: quia convertam captivitatem eorum, ait Dominus.

CAP. XXXIII.

1 Et factum est verbum Domini ad Jeremiam secundò, cùm adhuc clausus esset in átrio carceris, dicens; 2 Hæc dicit Dominus qui facturus est, & formaturus illud, & paraturus, Dominus nomen ejus; 3 Clama ad me, & exaudiam te: & annuntiabo tibi grandia, & firma quæ nescis. 4 Quia hæc dicit Dominus Deus Israel ad domos urbis hujus, & ad domos regis Juda, quæ destructæ sunt, & ad munitiones, 5 & ad gladium Venientium ut dimicent cum Chaldæis, & impleant eas cadaveribus hominū, quos percussi in furore meo & in indignatione mea, abscondens faciem meam à civitate hac, propter omnem malitiam eorum. 6 Ecce ego obducam eis cicatricem & sanitatem, & curabo eos: & revelabo illis deprecationem pacis & veritatis. 7 Et convertā conversionem Juda, & conversionem Jerusalem: & ædificabo eos sicut à principio. 8 Et emundabo illos ab omni iniquitate sua, in qua peccaverunt mihi: & propitius ero cunctis iniquitatibus eorum, in quibus deliquerunt mihi, & spreverunt me. 9 Et erit mihi in nomen, & in gaudium, & in laudem, & in exultationem cunctis gentibus terræ, quæ audierint omnia bona, quæ ego facturus sum eis: & pavebunt, & turbabuntur in universis bonis, & in omni pace, quam ego faciam eis.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

13 Καὶ νῦν βελτίους ποιήσατε τὰς ὁδοὺς ὑμῶν, καὶ τὰ ἔργα ὑμῶν, καὶ (˜)ἀκούσατε τῆς φωνῆς κυρίου, καὶ παύσεται κύριος ἀπὸ τῶν κακῶν ὧν ἐλάλησεν ἐφ' ὑμᾶς. 14 Καὶ ἰδοὺ ἐγὼ ἐν χερσὶν ὑμῶν, ποιήσατέ μοι ὡς συμφέρει, καὶ ὡς βέλτιον ὑμῖν. 15 Ἀλλ' ἢ γνόντες γνώσεσθε, ὅτι εἰ ἀναιρεῖτέ με, αἷμα ἀθῷον δίδοτε ἐφ' ὑμᾶς, καὶ ἐπὶ τὴν πόλιν ταύτην, καὶ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας ἐν αὐτῇ· ὅτι ἐν ἀληθείᾳ (ρ) ἀπέσταλκέ με κύριος πρὸς ὑμᾶς λαλῆσαι εἰς τὰ ὦτα ὑμῶν πάντας τοὺς λόγους τούτους. 16 Καὶ (σ) εἶπον οἱ ἄρχοντες καὶ πᾶς ὁ λαὸς πρὸς τοὺς ἱερεῖς (˘) καὶ πρὸς τοὺς ψευδοπροφήτας, Οὐκ ἔστι τῷ ἀνθρώπῳ τούτῳ κρίσις θανάτου, ὅτι ἐπὶ τῷ ὀνόματι κυρίου τοῦ θεοῦ ἡμῶν ἐλάλησε πρὸς ἡμᾶς. 17 Καὶ ἀνέστησαν ἄνδρες τῶν πρεσβυτέρων τῆς γῆς, καὶ εἶπαν πάσῃ τῇ συναγωγῇ τοῦ λαοῦ, 18 Μιχαίας ὁ Μωραθίτης ἦν ἐν ταῖς ἡμέραις Ἐζεκίου βασιλέως Ἰούδα, καὶ εἶπε παντὶ τῷ λαῷ Ἰούδα, (˝)Οὕτως εἶπε κύριος, Σιὼν ὡς ἀγρὸς ἀροτριαθήσεται, καὶ Ἱερουσαλὴμ (τ) εἰς ἄβατον ἔσται, καὶ τὸ ὄρος τοῦ οἴκου (υ) εἰς ἄλσος δρυμοῦ. 19 Μὴ (φ) ἀνελὼν ἀνεῖλεν αὐτὸν Ἐζεκίας καὶ πᾶς Ἰούδα; (χ) οὐχ ὅτι ἐφοβήθησαν τὸν κύριον, καὶ ὅτι ἐδεήθησαν τοῦ (ψ) προσώπου κυρίου, καὶ ἐπαύσατο κύριος ἀπὸ τῶν κακῶν ὧν ἐλάλησεν ἐπ' αὐτούς; καὶ ἡμεῖς ἐποιήσαμεν κακὰ μεγάλα ἐπὶ (ω) ψυχὰς ἡμῶν. 20 Καὶ ἄνθρωπος ἦν προφητεύων (α) τῷ ὀνόματι κυρίου, Οὐρίας υἱὸς Σαμαίου ἐκ Καριαθιαρείμ, καὶ ἐπροφήτευσε περὶ τῆς γῆς ταύτης κατὰ πάντας τοὺς λόγους (˜)Ἱερεμίου· 21 Καὶ ἤκουσεν ὁ βασιλεὺς Ἰωακεὶμ καὶ πάντες οἱ ἄρχοντες πάντας τοὺς λόγους αὐτοῦ, καὶ ἐζήτουν ἀποκτεῖναι αὐτόν· καὶ ἤκουσεν Οὐρίας, καὶ εἰσῆλθεν εἰς Αἴγυπτον. 22 Καὶ ἐξαπέστειλεν ὁ βασιλεὺς ἄνδρας εἰς Αἴγυπτον, 23 (β) Καὶ ἐξηγάγοσαν αὐτὸν ἐκεῖθεν, καὶ εἰσηγάγοσαν αὐτὸν πρὸς τὸν βασιλέα, καὶ ἐπάταξεν αὐτὸν ἐν (γ) μαχαίρᾳ, καὶ ἔρριψεν αὐτὸν εἰς τὸ (δ) μνῆμα υἱῶν λαοῦ αὐτοῦ. 24 Πλὴν χεὶρ Ἀχικὰμ υἱοῦ Σαφὰν ἦν μετὰ (ε) Ἱερεμίου, τοῦ μὴ παραδοῦναι αὐτὸν εἰς χεῖρας τοῦ λαοῦ, (ζ) μὴ ἀνελεῖν αὐτόν.

Et nunc meliores facite vias vestras, & opera vestra, & audite vocem Domini: & cessabit Dominus à malis quæ loquutus est super vos. 13 *Et ecce ego in manibus vestris: facite mihi, sicut expedit, & sicut melius vobis.* 14 *Veruntamen cognoscentes cognoscetis; quòd si occideritis me, sanguinem innocentem datis super vos, & super civitatem hanc, & super habitatores ejus: Quia in veritate misit me Dominus ad vos, loqui in aures vestras omnia verba hæc.* 15 *Et dixerunt principes, & omnis populus ad sacerdotes, & ad pseudoprophetas; Non est homini huic judicium mortis, quia in nomine Domini Dei nostri locutus est ad nos.* 16 *Et surrexerunt viri de senioribus terræ, & dixerunt omni synagogæ populi;* 17 *Michæas Morasthites fuit in diebus Ezeciæ regis Juda, & dixit omni populo Juda; Sic dixit Dominus; Sion, quasi ager arabitur: & Hierusalem (c) in inviam erit, & mons domûs in lucum sylvæ.* 18 *Nunquid interficiens interfecit eum Ezecias, & omnis Juda? Nónne (d) quia timuerunt Dominum, & quia deprecati sunt faciem Domini; & cessavit Dominus à malis quæ loquutus fuerat super eos? Et nos fecimus mala magna super animas nostras.* 19 *Et homo fuit prophetans nomine Domini, Urias filius Samææ de Cariathiarim, & prophetavit de terra hac juxta omnia verba Hieremiæ:* 20 *Et audivit rex Joacim, & omnes principes, omnia verba ejus: & quærebant interficere eum. Et audivit (e) Urias, & ingressus est in Ægyptum.* 21 *Et emisit rex viros in (f) Ægyptum:* 22 *& eduxerunt eū inde, Et adduxerunt eum ad regem: & percussit eum in gladio: & projecit eum in monumentum filiorum populi sui.* 23 *Veruntamen manus Achicam filii Saphan erat cum Hieremia, ut non traderetur in manus populi, nè interficerent eum.* 24

MS. A. (˜)ἀκούσετε (ρ)ἀπέστειλέν (σ)εἶπαν (˘) καὶ τοὺς (˝)λέγων, Οὕτως (τ)ὡς ὀπωροφυλάκιον ἔσται, καὶ (υ)ὡς (φ)ἀνερῶν (χ)οὐχὶ (ψ)προσώπου αὐτοῦ, (ω)ψυχαῖς (α)ἐπὶ τῷ (˜)Ἱηρεμίου· (β)Καὶ συνελάβοσαν αὐτὸν, καὶ ἐξήγαγον αὐτὸν ἐκεῖθεν, καὶ εἰσήγαγον (γ) μαχαίρῃ, (δ) μνημεῖον (ε) Ἱηρεμίου, (ζ) τοῦ μὴ

ΚΕΦ. λδ'.

Cap. 27. Vulg. Lat. 2 Οὕτως εἶπε κύριος, (α)Ποίησον σεαυτῷ δεσμοὺς καὶ κλοιοὺς, καὶ περίθου περὶ τὸν τράχηλόν σου.

MS. A. (α)Ποίησον δεσμοὺς

CAP. XXXIV.

Sic (a) dixit Dominus; Fac tibi vincula, & (b) catenas, & circumpone circa collum tuum: 2

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

42 אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ כְּמָה דְאַיְתֵיתִי עַל עַמָּא הָדֵין יָת כָּל בִּישְׁתָא רַבְּתָא הָדָא כֵּן אֲנָא מַיְתֵי
43 עֲלֵיהוֹן יָת כָּל טָבְתָא דַאֲנָא מְמַלֵּל עֲלֵיהוֹן׃ וְיִזְדַּבְּנוּן חַקְלִין בְּאַרְעָא הָדָא דְאַתּוּן אָמְרִין
44 צַדְיָא הִיא מִבְּלִי אֱנָשׁ וּבְעִירָא אִתְמְסַרַת בִּידָא דְכַסְדָּאֵי׃ חַקְלִין בְּכַסְפָּא יִזְבְּנוּן וְיִכְתְּבוּן
בִּשְׁטָרָא וְיַחְתְּמוּן וְיַסְהֲדוּן סָהֲדִין בַּאֲרַע שִׁבְטָא דְבִנְיָמִין וּבִסְחָרְנֵי יְרוּשְׁלֶם וּבְקִרְוַיָּא
דְבֵית יְהוּדָה וּבְקִרְוֵי טוּרָא וּבְקִרְוֵי שְׁפֵלְתָּא וּבְקִרְוֵי דָרוֹמָא אֲרֵי אָתֵיב יָת גָּלְוַתְהוֹן
אֲמַר יְיָ׃

לג

1 וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִם יִרְמְיָה תִּנְיָנוּת וְהוּא עוֹד כְּעַן כְּלֵי בְּדָרַת בֵּית אֲסִירַיָּא
2 לְמֵימַר׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ דַּעֲבַדָהּ יְיָ בְּרָא יָתַהּ לְאַתְקָנוּתַהּ יְיָ שְׁמֵיהּ׃ צַלִּי קֳדָמַי וַאֲקַבֵּל 3
4 צְלוֹתָךְ וְאַחֲוֵי לָךְ רַבְרְבָן וּנְטִירָן דְּלָא יְדַעְתִּנּוּן׃ אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל עַל
בָּתֵּי קַרְתָּא הָדָא וְעַל בָּתֵּי מַלְכַיָּא דְבֵית יְהוּדָה דְּמִתְרָעִין לְהוֹן וּצְבָרִין מְלֵיתָא לְתַקָּפָא
5 שׁוּרָא מִן קֳדָם דְּקָטְלִין בְּחַרְבָּא׃ אָתַן לְאַגָּחָא קְרָבָא עִם כַּסְדָּאֵי וּלְמַלְיוּתְהוֹן יָת פִּגְרֵי
בְּנֵי אֱנָשָׁא דְּאַלְקֵיתִי בְּרוּגְזִי וּבְחֵמְתִי וּדְסַלְּקֵית שְׁכִנְתִּי מִן קַרְתָּא הָדָא עַל כָּל בִּישַׁתְהוֹן׃
6 הָאֲנָא מַיְתֵי לְהוֹן אָסוּ וּפוּרְקָן וְאַסֵּינוּן וְאַגְלֵי לְהוֹן תְּרַע תְּיוּבָא וְאַחֲוֵינוּן דִּיהָכוּן
7 בְּאוֹרַח שְׁלָם וּקְשׁוֹט׃ וְאָתֵיב יָת גָּלוּת יְהוּדָה וְיָת גָּלוּת יִשְׂרָאֵל וַאֲקֵימִנּוּן כְּדִבְקַדְמֵיתָא׃
8 וַאֲדַכֵּינוּן מִכָּל חוֹבֵיהוֹן דְּחַבוּ קֳדָמַי וְאֶשְׁבּוֹק לְכָל חוֹבֵיהוֹן דְּחַבוּ קֳדָמַי וּדְמָרַדוּ בְּמֵימְרִי׃
9 וִיהוֹן קֳדָמַי לְשׁוּם דְּחֶדְוָא לְתוּשְׁבְּחָא וְלִיקַר לְכָל עַמְמֵי אַרְעָא דִּי יִשְׁמְעוּן עַל כָּל טָבְתָא
דִּי אֲנָא עָבֵיד עִמְּהוֹן וִיזוּעוּן וְיִרְתְּתוּן עַל כָּל טָבְתָא וְעַל כָּל שְׁלָמָא דַּאֲנָא עָבֵיד לְהוֹן׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Quia hæc dicit Dominus, Sicut adduxi super populum istum omne malum hoc grave, sic adducam super eos omne bonum quod locutus sum cum eis. 42 Et ementur agri in terra ista, de qua vos dicitis, Deserta est absque homine & jumento, & tradita est in manum Chaldæorum. 43 Agros argento ement & scribent in chirographo, & signabunt, & adhibebunt testes in terra tribus Binjamin, & in circuitibus Jerusalem, & in civitatibus domus Juda, & in civitatibus montanis, & in civitatibus campestribus, & in civitatibus Austri: quia convertam captivitatem eorum, ait Dominus. 44

CAP. XXXIII.

Et factum est verbum prophetiæ ad Jeremiam à facie Domini secundò; 1 & ipse erat adhuc clausus in atrio domus vinctorum; dicendo: Hæc dicit 2 Dominus qui fecit illud; Dominus qui creavit ut pararet illud: Dominus nomen ejus. Ora coram me, & suscipiam orationem tuam, & annuntiabo tibi 3 grandia, & reservata quæ nescis. Quia hæc dicit Dominus Deus Israel, super 4 domos urbis hujus, & super domos regum domus Juda, quas diruerunt, & congerunt aggeres ad muniendum murum à facie eorum qui occidunt gladio. Veniebant ad dimicandum cum Chaldæis, & ad implendas eas cadave- 5 ribus filiorum hominum, quos percussi in ira mea, & in furore meo, & propter quos abstuli majestatem meam de civitate ista, propter omnem malitiam eorum. Ecce ego adducam super eos medicinam & salutem, & sanabo eos; 6 & revelabo eis portam pœnitentiæ, & significabo eis quomodo ambulent in via pacis & veritatis. Et reducam transmigrationem Juda, et transmigra- 7 tionem Israelis, & sustinebo eos sicut in principio. Et mundabo eos ab omni- 8 bus peccatis suis quibus peccaverunt coram me, ac remittam omnia peccata eorum quæ admiserunt coram me, & quibus prævaricati sunt in Verbum meum. Et erunt coram me in nomen lætitiæ, in laudem & in gloriam omni- 9 bus populis terræ, qui audierint omnia bona quæ ego facturus sum eis; & contremiscent & timebunt super omnia bona, & super omnem pacem quam ego faciam eis.

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

42 * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܝܟ ܕܐܝܬܝܬ ܥܠ ܥܡܐ ܗܢܐ ܟܠܗ ܒܝܫܬܐ ܗܕܐ ܪܒܬܐ.. ܗܟܢܐ ܡܝܬܐ
ܐܢܐ ܥܠܝܗܘܢ ܟܠܗ ܛܒܬܐ ܕܐܡܪ ܐܢܐ ܥܠܝܗܘܢ.. * ܘܢܙܕܒܢܘܢ ܚܩܠܐ ܒܐܪܥܐ ܗܕܐ. ܕܐܡܪܝܢ 43
ܐܢܬܘܢ ܕܚܪܒܐ ܗܝ ܡܢ ܒܢܝܢܫܐ ܘܡܢ ܒܥܝܪܐ. ܘܐܫܬܠܡܬ ܒܐܝܕܝܐ ܕܟܠܕܝܐ. * ܚܩܠܐ ܒܟܣܦܐ 44
ܢܙܒܢܘܢ. ܘܢܟܬܒܘܢ ܫܛܪ̈ܐ ܘܢܚܬܡܘܢ. ܘܢܣܗܕܘܢ ܣܗܕ̈ܐ. ܒܐܪܥܐ ܕܒܢܝܡܝܢ ܘܒܚܕܪ̈ܝܗ
ܕܐܘܪܫܠܡ. ܘܒܡܕܝܢ̈ܬܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܒܡܕܝܢ̈ܬܐ ܕܛܘܪܐ. ܘܒܡܕܝܢ̈ܬܐ ܕܫܦܠܬܐ. ܘܒܡܕܝܢ̈ܬܐ ܕܬܝܡܢܐ.
ܘܐܗܦܘܟ ܫܒܝܬܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܓ *

1 * ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܕܬܪ̈ܬܝܢ ܙܒܢ̈ܝܢ.. ܟܕ ܗܘ ܟܠܐ ܗܘܐ ܒܕܪܬܐ
ܕܒܝܬ ܡܛܪܬܐ ܘܐܡܪ.. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܥܒܕܟ ܘܓܒܠܟ ܘܐܬܩܢܟ. ܡܪܝܐ ܫܡܗ. 2
* ܩܪܝܢܝ ܘܐܥܢܝܟ. ܘܐܚܘܝܟ ܪܘܪ̈ܒܬܐ ܘܚܣܝܢ̈ܬܐ ܕܠܐ ܝܕܥܬ ܐܢܝܢ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ 3 4
ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܥܠ ܒ̈ܬܐ ܕܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܘܥܠ ܒ̈ܬܐ ܕܡ̈ܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܕܣܚܦܘ ܐܢܘܢ ܓܝ̈ܣܐ
ܒܣܝܦܐ.. * ܕܐܬܘ ܠܡܩܪܒ ܥܡ ܟܠܕܝ̈ܐ. ܘܠܡܡܠܝܘ ܐܢܘܢ ܦܓܪ̈ܐ ܕܒܢܝܢܫܐ ܕܩܛܠܬ 5
ܒܪܘܓܙܝ ܘܒܚܡܬܝ. ܘܐܗܦܟܬ ܐܦܝ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܥܠ ܟܠܗ ܒܝܫܬܐ ܕܥܒܕܘ ܩܕܡܝ.
* ܗܐ ܡܣܩ ܐܢܐ ܠܗ ܒܚܪܬܐ ܐܣܝܐ. ܘܐܣܐ ܐܢܘܢ. ܘܐܓܠܐ ܠܗܘܢ ܫܒܝ̈ܠܐ ܕܫܠܡܐ 6
ܘܕܗܝܡܢܘܬܐ. * ܘܐܗܦܘܟ ܫܒܝܬܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܫܒܝܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܐܒܢܐ ܐܢܘܢ. ܐܝܟ ܕܡܢ 7
ܩܕܝܡ. ܘܐܛܐܒ ܠܗܘܢ. ܐܝܟ ܕܡܢ ܩܕܝܡ ܙܒܢܐ. * ܘܐܕܟܐ ܐܢܘܢ. ܡܢ ܟܠܗ ܥܘܠܗܘܢ ܕܚܛܘ 8
ܒܝ. ܘܐܫܒܘܩ ܠܗܘܢ ܚܛܗ̈ܝܗܘܢ ܕܣܟܠܘ ܒܝ. ܘܐܥܘܠܘ ܒܝ. * ܘܢܗܘܐ ܠܝ 9
ܠܫܡܐ ܘܠܒܘܣܡܐ. ܘܠܚܕܘܬܐ ܘܠܬܫܒܘܚܬܐ. ܠܟܠܗܘܢ ܥܡ̈ܡܐ ܕܐܪܥܐ. ܕܢܫܡܥܘܢ
ܟܠܗ ܛܒܬܐ ܕܥܒܕ ܐܢܐ ܠܗܘܢ.. ܘܢܕܚܠܘܢ. ܘܢܪܓܙܘܢ ܥܠ ܟܠܗ ܛܒܬܐ.. ܘܥܠ
ܟܠܗ ܫܠܡܐ ܕܥܒܕ ܐܢܐ ܠܗܘܢ.

Sic dicit Dominus, Quemadmodum ad- 42
duxi super hunc populum totum malum hoc
ingens, ita adducturus sum super eos totũ bo-
num quod de ipsis dico. Et ementur agri in 43
terra iſta quam vos dicis exhauſtam homini-
bus & jumentis, & traditam in manum
Chaldæorum. Agros ement pecuniâ, ſcri- 44
bent ſyngraphas & obſignabunt, & teſtes
adhibebunt in terra Benjaminis, & in circun-
jacentibus Jeroſolymæ *locis*, in civitatibus
Judæ, & in oppidis montium, in oppidis pla-
nitierum, & in oppidis Auſtri, quum reduxe-
ro captivos eorum, dicit Dominus.

CAP. XXXIII.

RUrſum factus eſt ſermo Domini ad Jere- 1
miam prophetam dum adhuc detineretur in
atrio carceris, ac dixit; Sic ait Dominus qui 2
te fecit, plaſmavit, condiditque cujus nomen
Dominus eſt; Invoca me, & reſpondebo tibi 3
magna & fortia quæ ignoratis. Nam ſic ait 4
Dominus Deus Iſraelis de domibus civitatis
hujus, & de domibus regum Judæ, quas gla-
dio extirpârunt turmæ Quæ venerunt ad 5
pugnandum cum Chaldæis, & implendum
eas cadaveribus hominum quos ego peremi
in ira & furore meo, quum averti faciem
meam ab hac civitate propter tot mala quæ
coram me perpetrârunt: Ecce producam 6
iſti *civitati* longo poſt tempore medicum,
& ſanabo eos, & revelabo eis ſemitas pacis
& ſecuritatis: Reducam captivos Judæ & 7
captivos Iſraelis, & ædificabo eos ut antea,
& benefaciam eis ut antiquitús: Mundabo 8
eos ab omni iniquitate quâ peccaverunt in
me, & dimittam cuncta ſcelera quibus in
me deliquerunt, & perversè mecum egerunt:
Quod mihi vertetur in nomen, jucundita- 9
tem, gaudium, atque gloriam apud omnes
terræ gentes; quæ cùm audierint omne bo-
num quo uſurus ſum erga illos, timebunt, &
iraſcentur ob totum bonum totámque pacem
quibus affecturus ſum illos.

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* والان اجعلوا طرقكم جيدات واعمالكم * واسمعوا صوت الرب * ويكف الرب من الشرور 13
التي تكلم بها عليكم * وها انا في ايديكم * اصنعوا بي ما يرضيكم ويحسن عندكم * 14
* لكن تعلمون عالمين انكم ان قتلتموني تجلب عليكم دم زكي * وعلي هذه المدينة وعلي 15
السكان فيها * لاني بالحق ارسلني الرب اليكم لاتكلم في اذانكم بجميع هذه الاقوال * فقالت 16
الروساء وكل الشعب للكهنة وللانبياء الكذبة * ليس يكون لهذا الانسان حكم الموت *
لانه باسم الرب الهنا تكلم معنا * وقامت رجال مشايخ الارض * وقالوا لجمع الشعب قايلين * 17
* ميخا المارثي كان في ايام حزقيا ملك يهودا * وقال لجميع شعب يهودا * هكذا قال الرب * 18
صهيون مثل حقل يحرث * واورشليم تصير مثل محرس فاكهة * وجبل البيت يصير مثل
غيضة الغاب * هل بهلاك اهلكه حزقيا وكل يهودا * اليس لما خافوا الرب ولما طلبوا وجه 19
الرب فكف الرب من الشرور التي تكلم بها عليهم * ونحن صنعنا شرورا عظيمة على انفسنا *
* وانسان كان يتنبا باسم الرب * اوريا بن صاماآس من كرياثياريم * ويتنبا من اجل هذه 20
الارض بجميع كلمات ارميا * وسمع الملك يواقيم وجميع الروساء جميع هذه الاقوال * وطلبوا 21
ان يقتلوه * وسمع اوريا ودخل الي مصر * وارسل الملك رجالا الي مصر * واخرجوه من هناك 22 23
وادخلوه الي الملك * فضربه بالسيف وطرحه في قبر بني شعبه * لكن يد اشيكام بن 24
صافان مع ارميا الا يسلموه الي ايدي الشعب ليقتلوه *

* الفصل الرابع والثلثون *

[MS.Oxon. * في اول ملك صادقيا ابن يوشيا ملك يهودا * اوحي الرب الي ارميا * وقال *] 1
* هكذا قال الرب * اصنع رباطات واطواقا * وشدهم على عنقك * 2

Quapropter bonas reddite vias & acti- 13
ones veſtras, & audite vocem Domini;
ut deſiſtat Dominus à malis quæ locutus
eſt contra vos. Ego quidem ecce ſum 14
in manibus veſtris, facite de me quicquid
libuerit placueritque vobis. Verùm cer- 15
tò ſcitote quòd ſi me occideritis, addu-
cetur ſuper vos ſanguis innoxius, ſuper
hanc urbem, & ſuper habitantes in ea;
quia verè miſit me Dominus ad vos, ut
loquerer in aures veſtras omnes hos ſer-
mones. Tunc dixerunt principes & uni- 16
verſus populus ad ſacerdotes falſoſque
prophetas, Nequaquam debetur huic ho-
mini ſententia mortis, cùm nomine Do-
mini Dei noſtri ſit nos allocutus. Et ſur- 17
gentes viri ſeniores terræ, allocuti ſunt
populi cœtum dicentes; Michæa Mara- 18
thites qui erat in diebus Hezeciæ regis
Judæ, quum dixiſſet univerſo populo Ju-
dæ; Sic ait Dominus, Sion ut ager arabi-
tur, Jeruſalem fiet ut conditorium fru-
ctuum, & mons domûs fiet ut ſaltus
ſylvæ: Nunquid nece extinxit illum 19
Hezecia totúſque Juda? an non cùm
timuiſſent Dominum, cúmque vultum Do-
mini exorâſſent, deſtitit Dominus à malis
quæ locutus fuerat contra ipſos? & ve-
rò nos atrocia perpetravimus flagitia con-
tra animas noſtras. Quidam etiam pro- 20
phetabat nomine Domini, Uria Samææ fi-
lius, de Cariathjarim: is quoque prophe-
tavit de hac terra omnia verba Jeremiæ:
Audiens autem rex Joacim & omnes 21
principes cunctos hoſce ſermones, volue-
runt interficere eum. Id quum audîſſet U-
ria, ingreſſus eſt Ægyptum: Sed rex 22
miſit viros in Ægyptum, Qui inde ex- 23
tractum introduxerunt ad regem; iſque
gladio percuſſum illum injecit in ſepul-
chrum popularium ejus. Verùm manus 24
Achicami filii Saphanis erat cum Jere-
mia, ne traderetur in manus populi ad
occidendum eum.

CAP. XXXIIII.

[MS.Ox. *IN principio regni Zedeciæ* 1
filii Joſiæ regis Judæ, reve-
lavit Dominus Jeremiæ, & dixit;] *Sic* 2
dixit Dominus, Fac vincula & numellas,
iiſque aſtringe collum tuum:

ירמיה : לג

vos quo , isto loco in audietur Adhuc : DOMINUS dixit Sic
כֹּה אָמַר יְהוָה עוֹד יִשָּׁמַע בַּמָּקוֹם־הַזֶּה אֲשֶׁר אַתֶּם 10
civitatibus in , *animali absque &* , *homine absque ipse* Desertus : *dicentes*
אֹמְרִים חָרֵב הוּא מֵאֵין אָדָם וּמֵאֵין בְּהֵמָה בְּעָרֵי
, *habitatore absque &* , *homine absque desolatis* Jerusalaim plateis in & , Jehudah
יְהוּדָה וּבְחֻצוֹת יְרוּשָׁלַםִ הַנְשַׁמּוֹת מֵאֵין אָדָם וּמֵאֵין יוֹשֵׁב
, sponsæ vox & , sponsi vox , lætitiæ vox & , gaudii Vox , *jumento absque &*
וּמֵאֵין בְּהֵמָה׃ קוֹל שָׂשׂוֹן וְקוֹל שִׂמְחָה קוֹל חָתָן וְקוֹל כַּלָּה 11
, Dominus bonus quoniam , exercituum Domino Confitemini : dicentium vox
קוֹל אֹמְרִים הוֹדוּ אֶת־יְהוָה צְבָאוֹת כִּי־טוֹב יְהוָה
, Domini domum confessionem adducentium , ejus misericordia seculum in quoniam
כִּי־לְעוֹלָם חַסְדּוֹ מְבִאִים תּוֹדָה בֵּית יְהוָה
. Dominus dixit , principio in sicut , terræ captivitatem faciam reducere quia
כִּי־אָשִׁיב אֶת־שְׁבוּת־הָאָרֶץ כְּבָרִאשֹׁנָה אָמַר יְהוָה׃
deserto isto loco in erit Adhuc : exercituum Dominus dixit Sic
כֹּה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת עוֹד יִהְיֶה בַּמָּקוֹם הַזֶּה הֶחָרֵב 12
, pastorum *tugurium*, ejus civitatibꝰ cunctis in & , animal ad usque & , homine absque
מֵאֵין־אָדָם וְעַד־בְּהֵמָה וּבְכָל־עָרָיו נְוֵה רֹעִים
civitatibus in & , *depressionis* civitatibus in , *montis* civitatibus In . *pecus facientium accubare*
מַרְבִּצִים צֹאן׃ בְּעָרֵי הָהָר בְּעָרֵי הַשְּׁפֵלָה וּבְעָרֵי 13
, Jehudah civitatibus in & , Jerusalaim *circuitibus* in & , Binjamin terra in & , *Meridei*
הַנֶּגֶב וּבְאֶרֶץ בִּנְיָמִן וּבִסְבִיבֵי יְרוּשָׁלַםִ וּבְעָרֵי יְהוּדָה
Ecce . Dominus dixit , numerantis manus ad *pecus* transibunt adhuc
עֹד תַּעֲבֹרְנָה הַצֹּאן עַל־יְדֵי מוֹנֶה אָמַר יְהוָה׃ הִנֵּה 14
, bonum verbum confirmabo & , Dominus dixit , *venientes* dies
יָמִים בָּאִים נְאֻם־יְהוָה וַהֲקִמֹתִי אֶת־הַדָּבָר הַטּוֹב
. Jehudah domum *super* & , Israel domum ad sum locutus quod
אֲשֶׁר דִּבַּרְתִּי אֶל־בֵּית יִשְׂרָאֵל וְעַל־בֵּית יְהוּדָה׃
germen David ipsi faciam germinare illo tempore in & , illis diebus In
בַּיָּמִים הָהֵם וּבָעֵת הַהִיא אַצְמִיחַ לְדָוִד צֶמַח 15
ipsis diebus In . terra in justitiam & , judicium faciet & , justitiæ
צְדָקָה וְעָשָׂה מִשְׁפָּט וּצְדָקָה בָּאָרֶץ׃ בַּיָּמִים הָהֵם 16
qui iste & : *fiducia in* habitabit Jerusalaim & , Jehudah servabitur
תִּוָּשַׁע יְהוּדָה וִירוּשָׁלַםִ תִּשְׁכּוֹן לָבֶטַח וְזֶה אֲשֶׁר־
: Dominus dixit , sic Quia . *nostra justitia* Dominus , eam vocabit
יִקְרָא־לָהּ יְהוָה צִדְקֵנוּ׃ כִּי־כֹה אָמַר יְהוָה 17
. Israel domus solium super sedens , vir David ipsi excidetur Non
לֹא־יִכָּרֵת לְדָוִד אִישׁ יֹשֵׁב עַל־כִּסֵּא בֵית־יִשְׂרָאֵל׃
faciens ascendere , *meis faciebus* à vir excidetur non Levitis sacerdotibus Et
וְלַכֹּהֲנִים הַלְוִיִּם לֹא־יִכָּרֵת אִישׁ מִלְּפָנָי מַעֲלֶה 18
. diebus omnibus sacrificium faciens & , *munus* adolens & , *ascensionem*
עוֹלָה וּמַקְטִיר מִנְחָה וְעֹשֶׂה זֶּבַח כָּל־הַיָּמִים׃
dixit Sic : dicendo , Irmejahu ad Domini verbum fuit Et
וַיְהִי דְּבַר־יְהוָה אֶל־יִרְמְיָהוּ לֵאמוֹר׃ כֹּה אָמַר 19 20
meum pactum & , diei meum pactum *infringatis* Si : Dominus
יְהוָה אִם־תָּפֵרוּ אֶת־בְּרִיתִי הַיּוֹם וְאֶת־בְּרִיתִי
Etiam . suo tempore in *noctem & diem esse non ad &* , noctis
הַלָּיְלָה וּלְבִלְתִּי הֱיוֹת יוֹמָם־וָלַיְלָה בְּעִתָּם׃ גַּם־ 21
regnantem filium ei existendo ab , meo servo David cum *dissipabitur* meum pactum
בְּרִיתִי תֻפַר אֶת־דָּוִד עַבְדִּי מִהְיוֹת־לוֹ בֵן מֹלֵךְ
non *Quia* . meis ministris sacerdotibus Levitis cum & , ejus thronum super
עַל־כִּסְאוֹ וְאֶת־הַלְוִיִּם הַכֹּהֲנִים מְשָׁרְתָי׃ אֲשֶׁר לֹא־ 22
multiplicabo sic : maris arena *mensurabitur* nec , cœlorum exercitus *numerabitur*
יִסָּפֵר צְבָא הַשָּׁמַיִם וְלֹא יִמַּד חוֹל הַיָּם כֵּן אַרְבֶּה
verbum fuit Et . mihi ministrantes Levitas & , mei servi David semen
אֶת־זֶרַע דָּוִד עַבְדִּי וְאֶת־הַלְוִיִּם מְשָׁרְתֵי אֹתִי׃ וַיְהִי דְּבַר־ 23
: dicendo , Irmejahu ad Domini
יְהוָה אֶל־יִרְמְיָהוּ לֵאמֹר׃

Verſio VULG. LAT.

10 Hæc dicit Dominus; Adhuc audietur in loco isto (quem vos dicitis esse desertum, eò quòd non sit homo nec jumentum: in civitatibus Juda, & foris Jerusalem, quæ desolatæ sunt absque homine, & absque habitatore, & abs- 11 que pecore) Vox gaudii & vox lætitiæ, vox sponsi & vox sponsæ, vox dicentium; Confitemini Domino exercituum, quoniam bonꝰ Dominus, quoniam in æternum misericordia ejus: & portantium vota in domum Domini: reducã enim conversionem terræ sicut à 12 principio, dicit Dominus. Hæc dicit Dominus exercituũ; Adhuc erit in loco isto deserto absque homine, & absque jumento, & in cunctis civitatibus ejus, habitaculum pastorum accubantium gre- 13 gum. In civitatibus montuosis, & in civitatibus campestribus, & in civitatibus quæ ad Austrum sunt; & in terra Benjamin, & in circuitu Jerusalem, & in civitatibus Juda, adhuc transibũt greges ad manum numerantis, ait Domi- 14 nus. Ecce dies veniunt, dicit Dominus; & suscitabo verbum bonum, quod locutus sum ad domũ 15 Israel & ad domum Juda. In diebus illis, & in tempore illo, germinare faciam David germen justitiæ: & faciet judicium & justi- 16 tiam in terra. In diebus illis salvabitur Juda, & Jerusalem habitabit confidenter: & hoc est nomen, quod vocabunt eum, Domi- 17 nus justus noster. Quia hæc dicit Dominus; Non interibit de David vir, qui sedeat super thronum 18 domûs Israel. Et de Sacerdotibꝰ & de Levitis non interibit vir à facie mea, qui offerat holocautomata, & incendat sacrificium, & cædat victimas omnibus diebus. 19 Et factum est verbum Domini ad 20 Jeremiam, dicens; Hæc dicit Dominus; Si irritum potest fieri pactum meum cum die, & pactum meum cum nocte, ut non sit dies 21 & nox in tempore suo: Et pactum meum irritum esse poterit cum David servo meo, ut non sit ex eo filius qui regnet in throno ejus, & Levitæ & Sacerdotes mi- 22 nistri mei. Sicuti enumerari non possunt stellæ cœli, & metiri arena maris: sic multiplicabo semen David servi mei, & Levitas mi- 23 nistros meos. Et factum est verbum Domini ad Jeremiam, dicens;

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

3 Καὶ ἀποστελεῖς αὐτὰς πρὸς (β) βασιλέα Ἰδουμαίας, καὶ πρὸς βασιλέα Μωὰβ, καὶ πρὸς βασιλέα υἱῶν Ἀμμὼν, καὶ πρὸς (ʺ) τὸν βασιλέα Τύρου, καὶ πρὸς βασιλέα Σιδῶνος, ἐν χερσὶν (γ) ἀγγέλων αὐτῶν τῶν ἐρχομένων εἰς ἀπάντησιν αὐτῶν εἰς Ἱερουσαλὴμ πρὸς Σεδεκίαν βασιλέα 4 Ἰούδα. Καὶ συντάξεις αὐτοῖς πρὸς τοὺς κυρίους αὐτῶν εἰπεῖν, Οὕτως εἶπε κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, Οὕτως ἐρεῖτε (δ) πρὸς τοὺς κυρίους ὑμῶν, 5 Ὅτι ἐγὼ ἐποίησα τὴν γῆν ἐν τῇ ἰσχύϊ μου τῇ μεγάλῃ, καὶ ἐν τῷ ἐπιχείρῳ μου τῷ ὑψηλῷ, καὶ δώσω αὐτὴν ᾧ ἐὰν δόξῃ ἐν ὀφθαλ- 6 μοῖς μου· Ἔδωκα τὴν γῆν (ε) τῷ Ναβουχοδονόσορ βασιλεῖ Βαβυλῶνος δουλεύειν αὐτῷ, καὶ τὰ θηρία τοῦ ἀγροῦ ἐργάζεσθαι αὐτῷ. 8 Καὶ τὸ ἔθνος καὶ ἡ βασιλεία, ὅσοι (ζ) ἐὰν μὴ ἐμβάλωσι τὸν τράχηλον αὐτῶν (η) ὑπὸ τὸν ζυγὸν βασιλέως Βαβυλῶνος, (θ) ἐν μαχαίρᾳ καὶ ἐν λιμῷ ἐπισκέψομαι αὐτοὺς, εἶπε κύριος, (ι) ἕως ἐκ- 9 λίπωσιν ἐν χειρὶ αὐτοῦ. Καὶ ὑμεῖς μὴ ἀκούετε τῶν ψευδοπροφητῶν ὑμῶν, καὶ τῶν μαντευομένων ὑμῖν, καὶ τῶν ἐνυπνιαζομένων ὑμῖν, καὶ τῶν οἰωνισμάτων ὑμῶν, καὶ τῶν φαρμακῶν ὑμῶν, τῶν λεγόντων, Οὐ μὴ ἐργάσησθε τῷ βασιλεῖ 10 Βαβυλῶνος. Ὅτι ψευδῆ αὐτοὶ προφητεύουσιν ὑμῖν, πρὸς τὸ μακρῦναι ὑμᾶς ἀπὸ τῆς γῆς ὑμῶν. 11 Καὶ τὸ ἔθνος (κ) ὃ ἐὰν εἰσαγάγῃ τὸν τράχηλον αὐτοῦ ὑπὸ τὸν ζυγὸν βασιλέως Βαβυλῶνος, καὶ ἐργάσηται αὐτῷ, καὶ καταλείψω αὐτὸν ἐπὶ τῆς γῆς αὐτοῦ, καὶ ἐργᾶται 12 αὐτῷ, καὶ ἐνοικήσει ἐν αὐτῇ. Καὶ πρὸς Σεδεκίαν βασιλέα Ἰούδα ἐλάλησα κατὰ πάντας τοὺς λόγους τούτους, λέγων, Εἰσαγάγετε τὸν τράχηλον ὑμῶν, καὶ (ʺ) ἐργάσασθε τῷ βασιλεῖ Βαβυλῶνος,

3 *Et mittes ea ad regem Idumææ, & ad regem Moab, & ad regem filiorum Ammon, & ad regem Tyri, & ad regem Sidonis, in manibus nuntiorum eorum venientium in (c) occursu suo in Hierusalem ad Sedeciam regem Juda.* 4 *Et præcipies eis ad dominos suos dicere; Sic dixit Dominus Deus Israel; Sic dicetis ad dominos vestros;* 5 *(d) Quia ego feci terram in fortitudine mea magna, & in (e) brachio meo excelso: & dabo eam, cuicunque visum fuerit in oculis meis:* 6 *Dedi terram Nabuchodonosor regi Babylonis (f) ad serviendum ei, et bestias agri ad operandum ei.* 8 *(g) Et gens, & regnum, quicunque non injecerint collum suum sub jugum regis Babylonis; in (h) gladio, & in fame visitabo eos,* dixit Dominus, *donec deficiant in manu ejus.* 9 *Et vos nolite audire pseudoprophetas vestros, & qui divinant vobis, & qui somniant vobis, & auguria vestra, & maleficos vestros, qui dicunt; Non operabimini regi Babylonis;* 10 *Quia mendacia ipsi prophetant vobis, ad elongandos vos à terra (i) vestra.* 11 *Et gens, quæ injecerit cervicem suam sub jugo regis Babylonis, & operata fuerit ei; & relinquam eam in terra sua: & operabitur ei, & inhabitabit in ea.* 12 *Et ad Sedeciam regem Juda loquutus sum juxta omnia verba hæc, dicens; Injicite collum (k) vestrum, & operamini regi Babylonis.*

MS.A. (β) τὸν βασιλέα (ʺ) βασιλέα (γ) τῶν ἀγγέλων (δ) τοῖς κυρίοις (ε) πᾶσαν τῷ (ζ) ἂν (η) ὑπὸ ζυγὸν (θ) καὶ δουλεύσωσιν αὐτῷ, ἐν μαχαίρᾳ πσῦν], καὶ ἐν λιμῷ (ι) ἕως ἂν (κ) ὅσοι ἂν εἰσαγάγωσιν τὸν τράχηλον αὐτῶν (ʺ) ἐργάζεσθαι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

כִּדְנַן אֲמַר יְיָ עוֹד יִשְׁתְּמַע בְּאַתְרָא הָדֵין דְּאַתּוּן אָמְרִין חָרוּב הוּא מִבְּלִי אֱנָשָׁא וּמִבְּלִי 10
בְּעִירָא בְּקִרְוַיָּא דְבֵית יְהוּדָה וּבְשׁוּקֵי יְרוּשְׁלֶם דְּצַדְיָן מִבְּלִי אֱנָשָׁא וּמִבְּלִי יָתֵיב וּמִבְּלִי
בְּעִירָא׃ קָל בִּיעַ וְקָל חֶדְוָא קָל חַתְנִין וְקָל כַּלָּן קָל דְּאָמְרִין אוֹדוּ קֳדָם יְיָ צְבָאוֹת אֲרֵי 11
טָב יְיָ אֲרֵי לְעָלְמָא טְבוּתֵיהּ מַעֲלֵי תּוֹדְתָא לְבֵית מַקְדְּשָׁא דַּיְיָ אֲרֵי אֲתִיב יַת גָּלוּת
אַרְעָא כִּדְבְקַדְמֵיתָא אֲמַר יְיָ׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת עוֹד יְהֵי בְּאַתְרָא הָדֵין דְּחָרוּב מִבְּלִי 12
אֱנָשָׁא וּמִבְּלִי בְעִירָא וְכָל קִרְוֵיהוֹן דִּירְוַת בֵּית מֵישְׁרֵי רָעֲיָן וְחוּטְרִין דְּעָן׃ בְּקִרְוֵי 13
טוּרָא בְּקִרְוֵי שְׁפֵלְתָא וּבְקִרְוֵי דָרוֹמָא וּבַאֲרַע שֵׁבֶט בִּנְיָמִן וּבִסְחָרְנֵי יְרוּשְׁלֶם וּבְקִרְוַיָּא
דְבֵית יְהוּדָה עוֹד יִתְנֵה עַמָּא עַל יְדֵי מְשִׁיחָא אֲמַר יְיָ׃ הָא יוֹמַיָּא אָתָן אֲמַר יְיָ וַאֲקִים 14
יַת פִּתְגָמָא תַקְנָא דְּמַלֵּלִית עַל בֵּית יִשְׂרָאֵל וְעַל בֵּית יְהוּדָה׃ בְּיוֹמַיָּא הָאִנּוּן וּבְעִדָּנָא 15
הַהִיא אֲקִים לְדָוִד מְשִׁיחַ דְּצִדְקָא וְיַעְבֵּיד דִּין דִּקְשׁוֹט וּזְכוּ בְּאַרְעָא׃ בְּיוֹמַיָּא הָאִנּוּן 16
יִתְפָּרְקָן דְּבֵית יְהוּדָה וִירוּשְׁלֶם תִּשְׁרֵי לְרוּחְצָן וְדֵין שְׁמָהּ דִּיהוֹן קָרַן לָהּ יִתְעַבְדָן לָנָא
זַכְוָן מִן קֳדָם יְיָ בְּגַוַּהּ׃ אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ לָא יִפְסוֹק לְדָוִד גְּבַר יָתֵיב עַל כּוּרְסֵי מַלְכוּתָא 17
דְבֵית יִשְׂרָאֵל׃ וּלְכָהֲנַיָּא לֵיוָאֵי לָא יִפְסוֹק גְּבַר מִן קֳדָמַי מַסֵּיק עֲלָוָן וּמַקְרֵיב קוּרְבָּן 18
וְעָבֵיד נִכְסַת קוּדְשִׁין כָּל יוֹמַיָּא׃ וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִם יִרְמְיָה לְמֵימַר׃ 19
כִּדְנַן אֲמַר יְיָ כְּמָא דְלֵית אֶפְשַׁר דְּיִבַּטֵּיל קְיָמִי דַּאֲקֵימִית עִם יְמָמָא וְעִם לֵילְיָא וּבְדִיל 20
דְּלָא לְמֶהֱוֵי יְמָם וְלֵילֵי בְּעִדָּנֵיהוֹן׃ אַף קְיָמִי לָא יִבַּטֵּיל דַּאֲקֵימִית עִם דָּוִד עַבְדִּי 21
מִלְּמֶהֱוֵי לֵיהּ בַּר מְלֵיךְ עַל כּוּרְסֵיהּ וְיַת לֵיוָאֵי כָּהֲנַיָּא דִּמְשַׁמְּשִׁין קֳדָמַי׃ כְּמָא 22
דְלֵית אֶפְשַׁר דְּיִתְמְנוּן חֵילֵי שְׁמַיָּא וְלָא יִתְכִּיל חָלָא דְיַמָּא כֵּן אַסְגֵּי יַת זַרְעָא דָּוִד
עַבְדִּי וְיַת לֵוָאֵי דִּמְשַׁמְּשִׁין קֳדָמַי׃ וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִם יִרְמְיָה 23
לְמֵימַר׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Hæc dicit Dñs: Adhuc audietur in loco isto, de quo vos dicitis, Desertus 10
est, absq; homine, & jumento, in oppidis domꝰ Juda, & in plateis Jerusalem vastis absq; homine, & absq; habitatore & absq; pecore; Vox gaudii 11
& vox lætitiæ, vox sponsorum, & vox sponsarum, vox dicentium, Confitemini coram Dño exercituum; quoniam bonus est Dñs, quia in æternum benignitas ejus: & offerentium sacrificium confessionis in domo sanctuarii Dñi. Quia reducam captivitatem terræ sicut in principio, dicit Dñs.
Hæc dicit Dñs exercituum, Adhuc erunt in loco isto qui desertꝰ est absque 12
homine & absque jumento, & in omnibꝰ urbibus eorum, habitacula domꝰ mansionis pastorum, & caulæ ovium. In civitatibus montanis, & in civi- 13
tatibꝰ campestribus, & in civitatibus Austri, & in terra tribus Benjamin, & in circuitibus Jerusalem, & in civitatibꝰ domus Juda, adhuc discet populus per manum Messiæ, dicit Dñs. Ecce dies venient, dicit Dñs, Et susci- 14
tabo verbum rectum quod locutus sum ad domum Israel & ad domum Juda. In diebus illis, & in tempore illo suscitabo David Christum justitiæ, & 15
faciet judicium verum & justitiam in terra. In diebus illis salvabuntur 16
viri domus Juda, et Jerusalem habitabit confidenter. Et hoc est nomen quo vocabunt eum, Fient nobis justitiæ à facie Dñi in medio ejus. Quia hæc 17
dicit Dñs, Non deficiet de David vir qui sedeat super thronum regni domus Israel. Et de sacerdotibus et Levitis non deerit vir à facie mea in- 18
cendens holocausta, et offerens oblationem, et faciens victimam sanctificatam omnibus diebus. Et factum est verbum prophetiæ à facie Dñi cum 19
Jeremia; dicens: Hæc dicit Dñs, Sicut non potest fieri irritum pactum me- 20
um quod statui cum die et cum nocte, ut non sit dies et nox, tempore suo. Sic et pactum meum non fiet irritum quod statui cum David servo meo; 21
quo minus sit ei filius regnans super thronum ejus, et cum Levitis sacerdotibus qui ministrant coram me. Sicut non potest numerari militia cœli, 22
nec mensurari arena maris; sic multiplicabo semen David servi mei, et Levitas qui ministrant coram me. Et factum est verbum prophetiæ à facie 23
Domini cum Jeremia; dicens:

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA:*

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܬܘܒ ܢܫܬܡܥ ܒܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܕܐܢ̱ܬܘܢ ܐܡܪܝܢ. ܕܚܪܝܒ ܗܘ ܡܢ ܕܠܐ ܐ̱ܢܫܐ 10
ܘܡܢ ܕܠܐ ܒܥܝܪܐ. ܒܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܒܫܘܩܐ ܕܐܘܪܫܠܡ ܕܚܪܝܒܝܢ ܡܢ ܕܠܐ ܐ̱ܢܫܐ ܘܡܢ
ܕܠܐ ܕܝܪܐ ܘܡܢ ܕܠܐ ܒܥܝܪܐ. * ܩܠܐ ܕܪܘܙܐ ܘܩܠܐ ܕܚܕܘܬܐ. ܩܠܐ ܕܚܬܢܐ ܘܩܠܐ ܕܟܠܬܐ. ܩܠܐ 11
ܕܐܡܪܝܢ. ܐܘܕܘ ܠܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܕܛܒ ܗܘ ܡܪܝܐ ܘܚܢܢܐ. ܘܠܥܠܡ ܛܝܒܘܬܗ.
ܘܡܝܬܝܢ ܬܘܕܝܬܐ ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܐܗܦܟ ܫܒܝܬܗ ܕܐܪܥܐ ܐܝܟ ܕܡܢ ܩܕܡܝܬܐ ܐܡܪ
ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܬܘܒ ܢܗܘܐ ܒܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܕܚܪܝܒ ܡܢ 12
ܐ̱ܢܫܐ ܘܡܢ ܒܥܝܪܐ ܘܒܟܠܗܘܢ ܩܘܪܝܘܗܝ. ܕܝܪ̈ܐ ܕܪܥܘܬܐ ܘܡܪ̈ܒܥܐ ܕܥܢܐ. * ܒܩܘܪܝܐ 13
ܕܛܘܪܐ ܘܒܩܘܪܝܐ ܕܫܦܠܐ. ܘܒܩܘܪܝܐ ܕܬܝܡܢܐ. ܘܒܐܪܥܐ ܕܒܢܝܡܝܢ. ܘܒܚܕܪܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ.
ܘܒܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܬܘܒ ܢܥܒܪܢ ܥܢܐ ܥܠ ܐܝܕܝ ܡܢܝܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ 14
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܩܝܡ ܦܬܓܡܐ ܛܒܐ ܕܡܠܠܬ ܥܠ ܒܝܬ ܝܗܘܕܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܒܝܘܡܬܐ 15
ܗܢܘܢ ܘܒܙܒܢܐ ܗܘ. ܐܕܢܚ ܠܕܘܝܕ ܢܘܗܪܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܢܡܠܟ ܒܡܠܟܘܬܐ ܘܢܣܬܟܠ.
ܘܢܥܒܕ ܕܝܢܐ ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܒܐܪܥܐ. * ܒܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ ܢܬܦܪܩ ܝܗܘܕܐ ܘܐܘܪܫܠܡ ܬܫܪܐ 16
ܒܫܠܝܐ. ܘܗܢܘ ܫܡܗ ܕܢܩܪܘܢܝܗ ܡܪܝܐ ܙܕܝܩ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܠܐ ܢܚܣܪ ܠܕܘܝܕ 17
ܒܪܐ ܕܝܬܒ ܥܠ ܟܘܪܣܝܐ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. * ܘܠܟܗܢܐ ܘܠܠܘܝܐ. ܠܐ ܢܚܣܪ ܓܒܪܐ ܡܢ ܩܕܡܝ 18
ܕܢܣܩ ܥܠܘܬܐ ܘܢܥܒܕ ܕܒܚܬܐ. ܘܢܣܝܡ ܒܣܡܐ. ܒܟܠܗܘܢ ܝܘܡܬܐ. * ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ 19
ܕܡܪܝܐ ܠܘܬ ܐܪܡܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܢ ܡܫܟܚܝܢ ܐܢ̱ܬܘܢ ܠܡܒܛܠܘ ܩܝܡܝ 20
ܕܐܝܡܡܐ ܘܕܠܠܝܐ. ܕܠܐ ܢܗܘܐ. ܐܝܡܡܐ ܘܠܠܝܐ ܒܙܒܢܝܗܘܢ. * ܐܦ ܩܝܡܝ ܕܩܝܡܬ 21
ܠܕܘܝܕ ܥܒܕܝ ܢܦܣܘܩ. ܕܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗ ܒܪܐ ܕܢܡܠܟ ܥܠ ܟܘܪܣܝܗ. * ܘܠܟܗܢܐ 22
ܘܠܠܘܝܐ ܡܫܡܫܢܝ. ܐܝܟ ܕܠܐ ܡܬܡܢܝܢ ܚܝܠܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܠܐ ܡܬܟܝܠ ܚܠܐ
ܕܝܡܐ. ܗܟܢܐ ܐܣܓܐ ܙܪܥܗ ܕܕܘܝܕ ܥܒܕܝ. ܘܕܠܘܝܐ ܕܡܫܡܫܝܢ ܠܝ. * ܘܗܘܐ 23
ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܘܬ ܐܪܡܝܐ ܟܕ ܐܡܪ.

* Sic ait Dominus, Adhuc audietur in loco iſto 10
quem vaſtatum dicitis ob hominū jumentorúmque penuriā, in civitatibus *ſcilicet* Judæ
& in plateis Jeroſolymorum, quæ deſolatæ
ſunt ob defectū hominum, ob defectum incolarum, & ob defectum jumentorum; Vox ex- 11
ultationis & vox lætitiæ, vox ſponſi & vox
ſponſæ, vox dicentiū, Gratias agite Dño potentiſſimo, quia bonus eſt Dñs atque benign*,
& in perpetuum bonitas ejus: & afferentium
gratiarū actionem in ædem Dñi, nam reducturus ſum captivos hujus terræ in priſtinum
ſtatum, ait Dñs potentiſſimus. Sic ait Dñs 12
potentiſſimus, Poſthac erunt in regione iſta
hominibus adeóque jumentis exhauſta, & in
omnibus oppidis ejus, caulæ, & paſtores, &
ovium cubilia: In oppidis quoque monta- 13
nis, in oppidis campeſtribus, in oppidis
Auſtralibus, & in terra Benjaminis, in adjacentibus Jeroſolymæ locis, & in oppidis
Judæ, poſthac tranſibunt greges ſub manus
numerantis, ait Dñs. Ecce dies venturi ſunt, 14
ait Dñs, quibus eventu comprobabo ſermones bonos quos locutus ſum de Judæis, dicit
Dñs. Diebus illis & tempore illo producam 15
Davidi fulgorem juſtitiæ, qui regnum moderabitur: prudens erit, & exercebit judicium &
juſtitiā in terra. Diebus illis ſervabitur Juda, 16
& Jeruſalem habitabit ſecuré: & hoc eſt nomen quo vocabunt eum, Dñs juſtitia noſtra.
Nam ſic ait Dominus, Non deficiet Davidi fi- 17
lius inſidens ſolio Iſraelitárum: Et ſacerdo- 18
tibus atque Levitis non deerit vir à conſpectu
meo offerens holocauſtū, & faciens victimā,
adolénſque thura cunctis diebus. Factus eſt 19
etiam ſermo Domini ad Jeremiam, dicendo;
Sic ait Dñs, Si facere poteſtis ut ceſſent ad- 20
miniſtrationes meæ quibus diem noctémque
adminiſtro, ita ut non ſit dies neque nox tempore ſuo; Etiam fœdus meum quod pollici- 21
tus ſum Davidi ſervo meo, irritum fiet, ne ſit
ei filius regnans ſuper ſolium ipſius. Quod 22
autem ad ſacerdotes & Levitas miniſtros
meos, quemadmodum numerari nequit exercitus cœlorum, nec menſurari arena maris;
ita multiplicabo ſemen Davidis ſervi mei,
& Levitarum miniſtrantium mihi. Rurſum 23
fuit ſermo Domini ad Jeremiam, dicendo;

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

3 * ويرسلهم الي ملك يهودا والي ملك مواب * والي ملك بني امون والي ملك صيدا * بايدي
4 رسلهم الاتيين للقايهم في ايروسليم * الي صدقيا ملك يهودا * وتامرهم ان يقولوا لساداتهم *
5 هكذا قال الرب اله اسرايل * هكذا قولوا لساداتكم * اني انا صنعت الارض بقوتي
6 العظيمة وبذراعي الرفيعة * واعطيها لمن يسر في عيني * دفعت كل الارض لبختنصر
7 ملك بابل ليتعبد له * ووحوش الحقل ليعمل له [* MS.Oxon. ويستعبد الشعوب هو * وابنه *
وابن ابنه * الي الوقت الذي يجي عقاب ارضه ايضا * ويتعبد له شعوب كثيرة * وملوك
8 كثيرة] * والامة والمملكة الذين لا يضعون عنقهم تحت نير ملك بابل * بالسيف والجوع
اتعهدهم قال الرب * الي ان يفنوا في يده *

* الاصحاح الثاني والعشرون *

9 * وانتم لا تسمعوا من انبيايكم الكذبة * ولا من منجميكم * ولا من الذين يحلمون
10 لكم * ولا من فالاتكم * ولا من سحريكم الذين يقولون لا تعملوا لملك بابل * لان
11 هولاء يتنبون لكم بالكذب ليبعدوكم من ارضكم * والامة التي تدخل عنقها تحت نير
12 ملك بابل وتعمل له * ابقيها على ارضها * وتعمل له وتسكن فيها * ومع صدقيا ملك
يهودا تكلمت بجميع هذه الاقوال قايلا * ادخلوا عنقكم واعملوا لملك بابل [MS.Ox.
13 وتعبدوا له ولشعبه * وعيشوا ولا تموتوا انت وشعبك بالحرب والجوع والموت الذي قال الرب في
14 كل الشعب لا يتعبد لملك بابل * واياكم ان تسمعوا قول انبيا الزور * الذين يقولون
لكم * لا تخضعوا لملك بابل *

* *Deinde mittas ea ad regem Judæ, ad re-* 3
gem Moabi, ad regem filiorum Ammon,
& ad regem Sidonis, per nuntios venientes in occurſum eorum Jeroſolymam apud Sedeciam regem Judæ. Et his præ- 4
cipias ut dicant dominis ſuis, Sic dixit
Dominus Deus Iſraelis; Ita dicite dominis
veſtris, Ego quidem magnâ meâ poten- 5
tiâ & brachio meo excelſo terram condidi, eámque do cuicunque præſtat in o-
culis meis: Dedi totam terram Bochtonaſſari regi Babelis ut ſerviret ei, & be- 6
ſtias agri ut pro ipſo operarentur. [MS.Ox.
Et gentes multas in ſervitutẽ rediget ipſe, 7
& filius ejus, & nepos ejus; donec adveniat tempus quo animadvertam etiam
in terram ipſius: ſervient inquam, ei gentes multæ, & multi reges.] *Quare gens* 8
aut regnum, quæ non ſubjecerint collum
ſuum jugo regis Babelis; gladio & fame
viſitabo illa, dixit Dominus, donec abſumantur in manu ejus.

Textus vigeſimus ſecundus.

* *Vos itaque ne auſcultetis prophetis ve-* 9
ſtris mendacibus, neque aſtrologis veſtris,
neque iis qui ſomniant vobis, neque divinationibus veſtris, neque magis veſtris
qui dicunt, Ne operemini pro rege Babelis. Nam iſti prophetant vobis mendaci- 10
um, ut procul amoveant vos à terra ve-
ſtra. Gentem verò quæ collum ſuum 11
ſubdet jugo regis Babelis, éique operabitur; relinquam in terra ſua, ut operetur
illi, & habitet in ea. Et cum Sedecia 12
rege Judæ habui cunctos hoſce ſermones,
dicens, Subdite collum veſtrum, & operamini regi Babelis. [MS.Ox. *Et ſer-* 13
vite ei, & populo ejus. Ita vivite, &
non moriemini tu & populus tuus gladio,
fame & peſte, prout elocutus eſt Dominus
de omni populo qui non ſerviet regi Babyloniæ. Vos autem ne auſcultetis ſer- 14
monibus falſorum prophetarum qui alloquuntur vos, dicendo, Nequaquam ſervictis regi Babelis.

ירמיה : לד

quas familias Duas : dicendo,*ſunt locuti* iſte populus quid vidiſti Nónne
24 הֲלוֹא רָאִיתָ מָה־הָעָם הַזֶּה דִּבְּרוּ לֵאמֹר שְׁתֵּי הַמִּשְׁפָּחוֹת אֲשֶׁר
ultrà *exiſtendo ab parvipendent* meum populũ & *eas reprobavit & ,eis in* Dominus elegerat
בָּחַר יְהוָה בָּהֶם וַיִּמְאָסֵם וְאֶת־עַמִּי יִנְאָצוּן מִהְיוֹת עוֹד
die meum pactum non Si : Dominus dixit Sic *.eorum facies ad* gentem
25 גּוֹי לִפְנֵיהֶם׃ כֹּה אָמַר יְהוָה אִם־לֹא בְרִיתִי יוֹמָם
David &,Jahacob ſemen Etiam .poſui non terræ & ,cœlorum ſtatuta ; nocte &
26 וָלָיְלָה חֻקּוֹת שָׁמַיִם וָאָרֶץ לֹא־שָׂמְתִּי׃ גַּם־זֶרַע יַעֲקוֹב וְדָוִד
, Iiſhac ,Abraham *ſemen in* dominantes ej⁹ ſemine de *capiendo à,reprobabo* mei ſervi
עַבְדִּי אֶמְאַס מִקַּחַת מִזַּרְעוֹ מֹשְׁלִים אֶל־זֶרַע אַבְרָהָם יִשְׂחָק
.eorum miſerebor & ,eorum captivitatem reducam nam : Jahacob &
וְיַעֲקֹב כִּי־אָשׁוּב אֶת־שְׁבוּתָם וְרִחַמְתִּים׃

CAP. XXXIV. לד

rex Nebuchadneſar Et .Domino à Irmejahu ad fuit quod Verbum
1 הַדָּבָר אֲשֶׁר־הָיָה אֶל־יִרְמְיָהוּ מֵאֵת יְהוָה וּנְבוּכַדְנֶאצַּר מֶלֶךְ־
,ejus manus poteſtatis terræ regna univerſique ,ejus *virtus* omnis & , Babel
בָּבֶל וְכָל־חֵילוֹ וְכָל־מַמְלְכוֹת אֶרֶץ מֶמְשֶׁלֶת יָדוֹ
: dicendo ,ejus urbes omnes *ſuper* & ,Jeruſalaim *ſuper bellantes* populi omnes &
וְכָל־הָעַמִּים נִלְחָמִים עַל־יְרוּשָׁלִַם וְעַל־כָּל־עָרֶיהָ לֵאמֹר׃
regem Sidchijahu ad *dices* & , Vade : Iſrael Deus Dominus dixit Sic
2 כֹּה־אָמַר יְהוָה אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל הָלֹךְ וְאָמַרְתָּ אֶל־צִדְקִיָּהוּ מֶלֶךְ
civitatem *dans ego* Ecce : Dominus dixit Sic : eum ad *dices* & , Jehudah
יְהוּדָה וְאָמַרְתָּ אֵלָיו כֹּה אָמַר יְהוָה הִנְנִי נֹתֵן אֶת־הָעִיר
evades non tu Et .igni in eã ſuccendet & ,Babel regis manum in hanc
3 הַזֹּאת בְּיַד מֶלֶךְ־בָּבֶל וּשְׂרָפָהּ בָּאֵשׁ׃ וְאַתָּה לֹא תִמָּלֵט
: traderis ejus manum in & , comprehenderis comprehendendo ſed , ejus manu de
מִיָּדוֹ כִּי תָּפֹשׂ תִּתָּפֵשׂ וּבְיָדוֹ תִּנָּתֵן
,alloquetur tuum os ejus os & , videbunt Babel regis oculos tui oculi &
וְעֵינֶיךָ אֶת־עֵינֵי מֶלֶךְ־בָּבֶל תִּרְאֶינָה וּפִיהוּ אֶת־פִּיךָ יְדַבֵּר
.Jehudah rex Sidchijahu Domini verbum audi Attamen .introibis Babel &
4 וּבָבֶל תָּבוֹא׃ אַךְ שְׁמַע דְּבַר־יְהוָה צִדְקִיָּהוּ מֶלֶךְ יְהוּדָה
, morieris pace In .gladio in morieris Non , te ad Dominus dixit Sic
5 כֹּה־אָמַר יְהוָה עָלֶיךָ לֹא תָמוּת בֶּחָרֶב׃ בְּשָׁלוֹם תָּמוּת
, te ante fuerunt qui , priorum regum tuorum patrum *combuſtionibus in* &
וּבְמִשְׂרְפוֹת אֲבוֹתֶיךָ הַמְּלָכִים הָרִאשֹׁנִים אֲשֶׁר־הָיוּ לְפָנֶיךָ
,ſum locutus ego verbum quia ; te plangent Domine væ & , te comburent ſic
כֵּן יִשְׂרְפוּ־לָךְ וְהוֹי אָדוֹן יִסְפְּדוּ־לָךְ כִּי־דָבָר אֲנִי־דִבַּרְתִּי
Jehudah regem Sidchijahu ad propheta Irmejahu eſt locutus Et .Dominus dixit
6 נְאֻם־יְהוָה׃ וַיְדַבֵּר יִרְמְיָהוּ הַנָּבִיא אֶל־צִדְקִיָּהוּ מֶלֶךְ יְהוּדָה
ſuper pugnantes Babel regis *virtus* Et .Jeruſalaim in hæc verba univerſa
7 אֵת כָּל־הַדְּבָרִים הָאֵלֶּה בִּירוּשָׁלִָם׃ וְחֵיל מֶלֶךְ־בָּבֶל נִלְחָמִים עַל־
:Hazecah *ad* & ,Lachis *ad ,remanentes* Jehudah civitates omnes *ſuper* &,Jeruſalaim
יְרוּשָׁלִַם וְעַל כָּל־עָרֵי יְהוּדָה הַנּוֹתָרוֹת אֶל־לָכִישׁ וְאֶל־עֲזֵקָה
fuit quod Verbum .*munitionis* urbes,Jehudah civitatib⁹ *in* remanſerant iſtæ nam
8 כִּי הֵנָּה נִשְׁאֲרוּ בְּעָרֵי יְהוּדָה עָרֵי מִבְצָר׃ הַדָּבָר אֲשֶׁר־הָיָה
omni cum fœdus Sidchijahu *regem excidiſſe poſt* , Domino à Irmejahu ad
אֶל־יִרְמְיָהוּ מֵאֵת יְהוָה אַחֲרֵי כְּרֹת הַמֶּלֶךְ צִדְקִיָּהוּ בְּרִית אֶת־כָּל־
virum dimittendum Ad .libertatẽ *eis* prædicando ,Jeruſalaim in *qui* populo
9 הָעָם אֲשֶׁר בִּירוּשָׁלִַם לִקְרֹא לָהֶם דְּרוֹר׃ לְשַׁלַּח אִישׁ אֶת־
non *ad* : liberos , Hebræam & Hebræum , ſuam ancillam *virum* &,ſuum ſervũ
עַבְדּוֹ וְאִישׁ אֶת־שִׁפְחָתוֹ הָעִבְרִי וְהָעִבְרִיָּה חָפְשִׁים לְבִלְתִּי
univerſus &,principes omnes audierunt Et .*virum* ſuo fratre Jehudæo *in eis in faciendũ*
10 עֲבָד־בָּם בִּיהוּדִי אָחִיהוּ אִישׁ׃ וַיִּשְׁמְעוּ כָל־הַשָּׂרִים וְכָל־
unumquemq; &,ſuum ſervũ *unumquemq; dimittendũ ad*,pactum in venerant qui ,populus
הָעָם אֲשֶׁר־בָּאוּ בַבְּרִית לְשַׁלַּח אִישׁ אֶת־עַבְדּוֹ וְאִישׁ
.dimiſerũt & audierũt &:amplius eis *in ſerviendum* non *ad* ; liberos ,ſuam ancillam
אֶת־שִׁפְחָתוֹ חָפְשִׁים לְבִלְתִּי עֲבָד־בָּם עוֹד וַיִּשְׁמְעוּ וַיְשַׁלֵּחוּ׃

Verſio VULG. LAT.

24 Numquid non vidiſti quid populus hic locut⁹ ſit, dicens; Duæ cognationes, quas elegerat Dñs, abjectæ ſunt: & populũ meum deſpexerunt, eò quòd non ſit ultrà 25 gens coram eis? Hæc dicit Dñs; Si pactũ meum inter diem & nocté, & leges cœlo & terræ non poſui; 26 Equidẽ & ſemen Jacob & David ſervi mei projiciã, ut non aſſumã de ſemine ejus principes ſeminis Abraham, Iſaac, & Jacob: reducam enim converſionem eorum, & miſerebor eis.

CAP. XXXIV.

1 VErbum quod factũ eſt ad Jeremiã à Dño, quando Nabuchodonoſor rex Babylonis, & omnis exercitus ejus, univerſáque regna terræ, quæ erãt ſub poteſtate manûs ejus, & omnes populi bellabant contra Jeruſalẽ, & contra omnes urbes ejus, dicens; 2 Hæc dicit Dñs Deus Iſrael; Vade, & loquere ad Sedeciam regẽ Juda: & dices ad eum; Hæc dicit Dñs; Ecce ego tradam civitatẽ hanc in man⁹ regis Babylonis, & ſuccendet eam 3 igni. Et tu non effugies de manu ej⁹: ſed comprehenſione capieris, & in manu ejus tradêris: & oculi tui oculos regis Babylonis videbunt, & os ej⁹ cum ore tuo loquetur, & Babylonem introibis. 4 Attamen audi verbum Dñi, Sedecia rex Juda: Hæc dicit Dñs ad te; 5 Non morieris in gladio, Sed in pace morieris, & ſecundùm combuſtiones patrũ tuorum regũ priorum qui fuerunt ante te, ſic comburent te: et væ, dñe, plangent te: quia verbũ ego locutus ſum, dicit 6 Dñs. Et locut⁹ eſt Jeremias propheta ad Sedeciam regẽ Juda uni- 7 verſa verba hæc in Jeruſalẽ. Et exercitus regis Babylonis pugnabat contra Jeruſalẽ, & contra omnes civitates Juda, quæ reliquæ erant, contra Lachis, & contra Azecha: hæ enim ſupererant de civitatibus Juda, urbes munitæ. 8 Verbum, quod factum eſt ad Jeremiam à Domino, poſtquàm percuſſit rex Sedecias fœdus cum omni populo in Jeruſalem, prædi- 9 cans; Ut dimitteret unuſquiſque ſervum ſuum, & unuſquiſque ancillã ſuã, Hebræum, & Hebræam, liberos: et nequaquam dominarentur eis, id eſt, in Judæo & fra- 10 tre ſuo. Audierunt ergò omnes principes & univerſus populus, qui inierant pactum ut dimitteret unuſquiſque ſervum ſuum, & unuſquiſque ancillam ſuam liberos, & ultrà non dominarentur eis: audierunt igitur, & dimiſerunt.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

14 Ὅτι ἄδικα αὐτοὶ προφητεύουσιν ὑμῖν, 15 Ὅτι οὐκ ἀπέστειλα αὐτούς, φησὶ κύριος, ϗ προφητεύουσι (λ) τῷ ὀνόματί μου ἐπ' ἀδίκῳ, πρὸς τὸ (μ) ἀπολέσαι ὑμᾶς, ϗ ἀπολεῖσθε ὑμεῖς, ϗ οἱ προφῆται ὑμῶν, οἱ προφητεύοντες ὑμῖν ἐπ' ἀδίκῳ ψευδῆ. 16 Ὑμῖν, ϗ παντὶ τῷ λαῷ τούτῳ, ϗ τοῖς ἱερεῦσιν ἐλάλησα, λέγων, Οὕτως εἶπε κύριος, Μὴ ἀκούετε τῶν λόγων τῶν προφητῶν, τῶν προφητευόντων ὑμῖν (ν), λεγόντων, Ἰδοὺ σκεύη οἴκου κυρίου (ξ) ἐπιστρέψει ἐκ Βαβυλῶνος· ὅτι ἄδικα αὐτοὶ προφητεύουσιν 17 ὑμῖν. Οὐκ ἀπέστειλα αὐτούς. 18 (ο) Εἰ προφῆταί εἰσι, (π) ϗ εἰ ἔστι λόγος κυρίου ἐν αὐτοῖς, ἀπαντησάτωσάν μοι, 19 ὅτι οὕτως εἶπε κύριος. Καὶ τῶν ἐπιλοίπων 20 σκευῶν, Ὧν οὐκ ἔλαβε βασιλεὺς Βαβυλῶνος, ὅτε ἀπῴκισε τὸν Ἰεχονίαν 22 ἐξ Ἱερουσαλήμ, Εἰς Βαβυλῶνα εἰσελεύσεται, λέγει κύριος.

Quia iniqua ipſi prophetant vobis: Quia non miſi eos, 14 15 *ait Dominus: & prophetant nomine meo ſuper iniquo, ad perdendos vos. Et peribitis vos, & prophetæ veſtri, qui prophetant vobis ſuper iniquo mendacia. (l) Vobis &* 16 *omni populo huic, & ſacerdotibus loquutus ſum, dicens; Sic ait Dominus; Nolite audire verba prophetarum, qui prophetant vobis, dicentes; Ecce vaſa domûs Domini revertentur de (m) Babylone: quia iniqua ipſi prophetant vobis: (n) Non* 17 *miſi eos. Si prophetæ ſunt,* 18 *& ſi eſt verbum Domini in eis; occurrant (o) mihi: quia ſic dixit Dominus. Et* 19 *reliqua vaſa, Quæ non tulit* 20 *rex Babylonis, quando tranſtulit Jechoniam de Hieruſalem, In Babylonem intra-* 22 *bunt, dicit Dominus.*

MS.A. (λ) ἐπὶ τῷ (μ) ἀπολέσαι (ν) ψευδῆ, ϗ λεγόντων, (ξ) ἐπιστρέφει (ο) Καὶ εἰ (π) ϗ ἔστιν

Cap. 28. Vulg.Lat. ΚΕΦ. λε'.

1 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ τετάρτῳ ἔτει (α) Σεδεκία βασιλέως Ἰούδα (β) ἐν μηνὶ τῷ πέμπτῳ, εἶπέ μοι Ἀνανίας υἱὸς Ἀζὼρ ὁ ψευδοπροφήτης (γ) ἀπὸ Γαβαὼν ἐν οἴκῳ κυρίου, κατ' ὀφθαλμοὺς τῶν ἱερέων, ϗ παντὸς τοῦ λαοῦ, 2 λέγων, Οὕτως εἶπε κύριος, Συνέτριψα τὸν ζυγὸν τοῦ βασιλέως Βαβυλῶνος. 3 Ἔτι (δ) δύο ἔτη ἡμερῶν, ϗ ἐγὼ ἀποστρέψω εἰς τὸν τόπον τοῦτον τὰ σκεύη οἴκου κυρίου, 4 Καὶ (ε) Ἰεχονίαν, ϗ τὴν ἀποικίαν Ἰούδα, ὅτι (ζ) συντρίψω τὸν ζυγὸν βασιλέως Βαβυλῶνος. 5 Καὶ εἶπεν Ἱερεμίας πρὸς Ἀνανίαν κατ' ὀφθαλμοὺς παντὸς τοῦ λαοῦ ϗ κατ' ὀφθαλμοὺς τῶν ἱερέων τῶν ἑστηκότων ἐν οἴκῳ 6 κυρίου, Καὶ εἶπεν Ἱερεμίας, Ἀληθῶς (η) οὕτω ποιήσαι κύριος, στήσαι (θ) τὸν λόγον σου ὃν σὺ προφητεύεις, τοῦ ἀποστρέψαι τὰ σκεύη οἴκου κυρίου καὶ πᾶσαν τὴν ἀποικίαν ἐκ Βαβυλῶνος εἰς τὸν τόπον τοῦτον.

CAP. XXXV.

1 *ET (a) factũ eſt in quarto anno Sedeciæ regis Juda in menſe quinto, dixit mihi Ananias filius Azor pſeudopropheta de Gabaon in domo Domini ante oculos ſacerdotum, & omnis populi, dicens; Sic dixit (b) Do-* 2 *minus, Contrivi jugum regis Babylonis. Adhuc duo* 3 *anni dierum: & ego redire faciam ad locum iſtum vaſa domûs Domini, Et* 4 *Jechoniam, & tranſmigrationem Juda: quia conteram jugum regis Babylonis. Et dixit Hieremias ad Ana-* 5 *niam ante oculos omnis populi, & ante oculos ſacerdotum ſtantium in domo Domini. Et dixit Hiere-* 6 *mias, Verè ſic faciat Dominus: ſtatuat verbum tuum, quod tu prophetas, ut revertantur vaſa domûs Domini, & omnis tranſmigratio de Babylone ad locum iſtum.*

MS.A. (α) βασιλεύοντος Σεδεκίου βασιλέως (β) ἐν τῷ πέμπτῳ μηνί, (γ) ὁ ἀπὸ (δ) ἔτι δύο ἡμερῶν, ἐγὼ (ε) τὸν Ἰεχονίαν, (ζ) συνέτριψα (η) οὕτως (θ) κύριος τὸν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

24 הֲלָא חֲזֵיתָא מָא עַמָּא הָדֵין מְמַלְּלִין לְמֵימַר תַּרְתֵּין זַרְעִיָתָא דְּאִתְרְעֵי יְיָ בְּהוֹן וְרַחֲקִנּוּן
25 וְיָת עַמִּי מַרְגְּזִין מִלְמֶהֱוֵי עוֹד עַם מְשַׁמֵּשׁ קֳדָמַי כְּקָבְלְהוֹן׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ כְּמָא דְּלֵית
אֶפְשַׁר דְּיִבָּטֵיל קְיָמִי דַּאֲקֵימִית עִם יְמָמָא וְעִם לֵילְיָא כֵּן גְּזֵירַת שְׁמַיָּא וְאַרְעָא לָא שַׁוֵּיתִנּוּן
26 דְּיֶעְדּוֹן׃ אַף זַרְעָא דְּיַעֲקֹב וְדָוִד עַבְדִּי לָא אַרְחֵיק מִלְּקָרָבָא מִבְּנֵיהוֹן עָבְדִין שׁוּלְטָן עַל
זַרְעֵיהּ דְּאַבְרָהָם יִצְחָק וְיַעֲקֹב אֲרֵי אֲתִיב יָת גָּלְוָתְהוֹן וְאֶרְחַם עֲלֵיהוֹן׃

לד

1 פִּתְגָם נְבוּאָה דַּהֲוָה עִם יִרְמְיָה מִן קֳדָם יְיָ וּנְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא דְּבָבֶל וְכָל מַשִׁרְיָתֵיהּ וְכָל
מַלְכְוָת אַרְעָא שׁוּלְטָן יְדֵיהּ וְכָל עַמְמַיָּא מְגִיחִין קְרָבָא עַל יְרוּשְׁלֶם וְעַל כָּל קִרְוַהָא
2 לְמֵימַר׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל אֱזֵיל וְתֵימַר לְצִדְקִיָּה מֶלֶךְ שִׁבְטָא דְּבֵית יְהוּדָה
וְתֵימַר לֵיהּ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ הָא אֲנָא מָסַר יַת קַרְתָּא הָדָא בְּיַד מַלְכָּא דְבָבֶל וְיוֹקְדִנַּהּ בְּנוּרָא׃
3 וְאַתְּ לָא תִשְׁתֵּיזֵיב מִן יְדֵיהּ אֲרֵי אִתְאֲחָדָא תִתְאֲחַד וּבִידֵיהּ תִּתְמְסַר וְעֵינָךְ יַת עֵינֵי מַלְכָּא
4 דְּבָבֶל יֶחֱזְיָן וּפוּמֵיהּ עִם פּוּמָךְ יְמַלֵּל וּלְבָבֶל תֵּיתוֹבַל׃ בְּרַם קַבֵּיל פִּתְגָּמָא דַיְיָ צִדְקִיָּה מֶלֶךְ
5 שִׁבְטָא דְּבֵית יְהוּדָה כִּדְנַן אֲמַר יְיָ עֲלָךְ לָא תִתְקְטֵיל בְּחַרְבָּא׃ בִּשְׁלָמָא תְמוּת וּבִיקִידוֹת
אֲבָהָתָךְ מַלְכַיָּא קַדְמָאֵי דַּהֲווֹ קֳדָמָךְ כֵּן יוֹקְדוּן עֲלָךְ וַיְיָ עַל מַלְכָּא יִסְפְּדוּן עֲלָךְ אֲרֵי פִּתְגָמָא
6 אֲנָא מַלֵּילִית אֲמַר יְיָ׃ וּמַלֵּיל יִרְמְיָה נְבִיָּא עִם צִדְקִיָּה מֶלֶךְ שִׁבְטָא דְּבֵית יְהוּדָה יַת כָּל
7 פִּתְגָּמַיָּא הָאִלֵּין בִּירוּשְׁלֶם׃ וּמַשְׁרְיַת מַלְכָּא דְבָבֶל מְגִיחִין קְרָבָא עַל יְרוּשְׁלֶם וְעַל כָּל
קִרְוַיָּא דְּבֵית יְהוּדָה דְּאִשְׁתְּאָרָא עַל לָכִישׁ וְעַל עֲזֵקָה אֲרֵי אִנּוּן אִשְׁתְּאָרָא בְּקִרְוַיָּא דְּבֵית
8 יְהוּדָה קִרְוִין כְּרִיכָן׃ פִּתְגָם נְבוּאָה דַּהֲוָה עִם יִרְמְיָה מִן קֳדָם יְיָ בָּתַר דִּגְזַר מַלְכָּא צִדְקִיָּה
9 קְיָם עִם כָּל עַמָּא דְּבִירוּשְׁלֶם לְמִקְרֵי לְהוֹן חֵירוּ׃ לְשַׁלָּחָא גְּבַר יַת עַבְדֵּיהּ וּגְבַר יַת
אַמְתֵיהּ בַּר יִשְׂרָאֵל וּבַת יִשְׂרָאֵל בְּנֵי חוֹרִין בְּדִיל דְּלָא יִפְלְחוּן בְּהוֹן גְּבַר בַּאֲחוּהִי
10 יְהוּדָאָה׃ וּשְׁמַעוּ כָל רַבְרְבַיָּא וְכָל עַמָּא דְּעָלוּ בִקְיָמָא לְשַׁלָּחָא גְּבַר יַת עַבְדֵּיהּ וּגְבַר יַת
אַמְתֵיהּ בְּנֵי חוֹרִין בְּדִיל דְּלָא יִפְלְחוּן בְּהוֹן עוֹד וְקַבִּילוּ וְשַׁלַּחוּ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

24 Nónne vidiſti quid popul⁹ hic loquitur; dicendo: Duæ cognationes quas elegit Dñs, & projecit eas; & populum meum irritare faciunt, quo minus 25 ultrà ſit popul⁹ miniſtrans coram me in conſpectu eorum. Hæc dicit Dñs, Sicut non poteſt fieri ut aboleatur pactum meum quod ſtatui cum die & 26 cum nocte; ſic ſtatuta cœli & terræ non poſui ut tranſeant. Semen quoque Jacob & David ſervi mei non averſabor, quo minus applicem ex filiis eorum dominatores ſuper ſemen Abrahæ, & Iſaac, & Jacob: reducam enim captivitatem eorum, & miſerebor eorum.

CAP. XXXIV.

1 VErbum prophetiæ quod factum eſt ad Jeremiam à facie Dñi. Et Nabuchodonoſor rex Babylonis, & omnis exercit⁹ ejus, & omnia regna terræ dominationis man⁹ ejus, & omnes populi præliabantur adverſùm Jeruſalem, & adverſùm omnes urbes ejus; dicendo: 2 Hæc dicit Dñs Deus Iſrael, Vade & dic Sedechiæ regi trib⁹ domus Juda, & dices ei: Hæc dicit Dñs, Ecce ego tradam civitatem iſtã in manũ regis Babylonis, & ſuccendet eam 3 igni. Et tu non liberaberis de manu ejus; quia comprehenſione capieris, & in manum ejus tradêris, & oculi tui oculos regis Babylonis videbunt, & os ejus cum ore tuo loquetur, & in Babylonem ducêris. 4 Veruntamen ſuſcipe verbum Dñi Sedechia rex tribus dom⁹ Juda. Hæc dicit Dñs de te, 5 Non interficiêris gladio. Sed in pace moriêris, & ſecundùm combuſtionem patrum tuorum regum priorum qui fuerunt ante te, ſic exurent te: væ ſuper regem, plangent te, quia verbum hoc locutus ſum, dicit Dñs. 6 Et locut⁹ eſt Jeremias propheta cum Sedechia rege tribus domus Juda omnia 7 verba hæc in Jeruſalem. Et exercitus regis Babylonis pugnabant contra Jeruſalem, & contra omnes civitates domus Juda quæ remanſerant: contra Lachis & contra Azecha; hæ enim remanſerant de civitatib⁹ domus Juda, 8 urbes munitæ. Verbum prophetiæ quod factum eſt cum Jeremia à facie Dñi, poſtquam percuſſit rex Sedechias pactum cum omni populo qui erat 9 in Jeruſalem, ut prædicarent eis libertatem. Ut dimitteret quiſq; ſervum ſuum & quiſq; ancillam ſuam, filium Iſrael & filiam Iſrael, liberos: ut nul- 10 lus in ſervitutem redigeret fratrem ſuum Judæum. Et audierunt omnes principes, & omnis populus qui venerant in fœdus, ut dimitteret quiſque ſervum ſuum, & quiſq; ancillam ſuam liberos, ita ut non uteretur eis tanquam ſervis; & obedierunt, & dimiſerunt.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܠܐ ܚܙܝܬ ܐܝܟ ܡܢܐ ܕܐܡܪܝܢ ܥܡܐ: ܕܬܪܬܝܢ ܫܪ̈ܒܢ ܕܓܒܐ ܡܪܝܐ ܐܣܠܝ ܐܢܝܢ. ܘܠܥܡܝ 24
ܡܪܓܙܝܢ. ܕܠܐ ܢܗܘܐ ܥܡܐ ܩܕܡܝ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܢ ܠܐ ܗܘܐ ܩܝܡܝ ܕܐܝܡܡܐ ܘܕܠܠܝܐ. 25
ܘܢܡܘܣܐ ܕܫܡܝܐ ܘܕܐܪܥܐ ܠܐ ܣܡܬ. * ܐܦ ܙܪܥܗ ܕܝܥܩܘܒ ܘܕܕܘܝܕ ܥܒܕܝ ܐܣܠܐ. ܕܠܐ ܐܣܒ ܡܢ 26
ܙܪܥܗ ܫܠܝܛܢܐ. ܥܠ ܙܪܥܗ ܕܐܒܪܗܡ ܘܕܐܝܣܚܩ ܘܕܝܥܩܘܒ. ܟܕ ܐܗܦܘܟ ܫܒܝܬܗܘܢ
ܘܐܪܚܡ ܥܠܝܗܘܢ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܠܕ * * ܦܬܓܡܐ ܕܗܘܐ ܠܘܬ ܐܪܡܝܐ ܡܢ 1
ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܟܕ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܟܠܗ ܚܝܠܗ. ܘܟܠܗܝܢ ܡܠܟܘܬܐ ܕܐܪܥܐ
ܫܘܠܛܢ ܐܝܕܗ.. ܘܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܡܬܟܬܫܝܢ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ ܘܥܠ ܟܠܗܝܢ ܩܘܪܝܗ.
* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܙܠ ܘܐܡܪ ܠܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ.. ܗܟܢܐ ܐܡܪ 2
ܡܪܝܐ. ܗܐ ܡܫܠܡ ܐܢܐ ܠܗ ܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܒܐܝܕܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܢܘܩܕܝܗ ܒܢܘܪܐ.
* ܘܐܢܬ ܠܐ ܬܬܦܠܛ ܡܢ ܐܝܕܘܗܝ. ܐܠܐ ܡܬܬܚܕܘ ܬܬܚܕ. ܘܒܐܝܕܘܗܝ ܬܫܬܠܡ. ܘܥܝܢܝܟ 3
ܥܝܢܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܢܚܙܝܢ. ܘܦܘܡܟ ܥܡ ܦܘܡܗ ܢܡܠܠ. ܘܠܒܒܠ ܬܐܙܠ.
* ܒܪܡ ܫܡܥ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܥܠܝܟ. ܠܐ ܬܡܘܬ 4
ܒܚܪܒܐ. ܐܠܐ ܒܫܠܡܐ ܬܡܘܬ. * ܘܐܝܟ ܕܐܘܩܕܘ ܠܐܒܗܝܟ ܡܠܟܐ ܩܕܡܝܐ ܕܗܘܘ ܩܕܡܝܟ. 5
ܗܟܢܐ ܢܐܩܕܘܢ ܠܟ. ܡܛܠ ܕܦܬܓܡܐ ܗܢܐ ܡܠܠܬ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ 6
ܠܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ ܒܐܘܪܫܠܡ. * ܘܚܝܠܗ ܕܡܠܟܐ
ܕܒܒܠ. ܡܬܟܬܫ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ ܘܥܠ ܟܠܗܝܢ ܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ ܕܐܫܬܚܪ. ܥܠ ܠܟܝܫ 7
ܘܥܠ ܥܙܩܐ. ܡܛܠ ܕܗܠܝܢ ܐܫܬܚܪ ܒܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ ܩܘܪܝܐ ܚܣܝܢܬܐ. * ܦܬܓܡܐ ܕܗܘܐ 8
ܠܘܬ ܐܪܡܝܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ.. ܡܢ ܒܬܪ ܕܓܙܪ ܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܩܝܡܐ ܥܡ ܟܠܗ
ܥܡܐ ܕܒܐܘܪܫܠܡ. ܕܢܩܪܘܢ ܠܗܘܢ ܚܐܪܘܬܐ. * ܕܢܫܕܪܘܢ ܐܢܫ ܠܥܒܕܗ ܘܐܢܫ ܠܐܡܬܗ ܥܒܪܝܐ 9
ܘܥܒܪܝܬܐ ܒܢܝ ܚܐܪܐ. ܕܠܐ ܢܫܥܒܕܘܢ ܐܢܫ ܒܐܚܘܗܝ ܝܗܘܕܝܐ. * ܘܫܡܥܘ ܟܠܗܘܢ 10
ܪܘܪܒܢܐ. ܘܟܠܗ ܥܡܐ.. ܘܩܒܠܘ ܟܠܗܘܢ ܕܢܫܕܪܘܢ ܐܢܫ ܥܒܕܗ ܘܐܢܫ ܐܡܬܗ
ܒܢܝ ܚܐܪܐ.. ܕܠܐ ܢܫܥܒܕܘܢ ܒܗܘܢ ܬܘܒ.

An non percipis quid dicant populus iſte, 24
quòd duas familias quas elegerat Dominus,
abominatur: & populum meum irritant, ne
ſit populus coram me? Sic dicit Dominus, 25
Sin minùs fœdus meum diei & noctis, & leges
meas cœli ac terræ ego poſui; Ita ſemen 26
Jacobi & Davidis ſervi mei abominabor, ne
ſumam de ſemine ipſius principem ſuper domum
Abrahami, Iſahaci, & Jacobi; quum reduxero
captivos eorũ, & miſertꝰ fuero ipſorũ.

CAP. XXXIV.

Sermo qui factus eſt ad Jeremiam à Domino, 1
dum Nebuchadnoſar rex Babelis cum toto
exercitu ſuo, omnibúſque regnis terræ dominio
ſuo ſubjectæ, necnon omnes gentes oppugnabant
Jeroſolymam & omnes civitates
ejus. Sic ait Dominus Deus Iſraelis, Abi 2
dictum Sedeciæ regi Judæ; Sic dicit Dominus,
Ecce traditurus ſum hanc urbem in manum
regis Babyloniæ, ut eam igne comburat.
Et tu non effugies manus ejus, ſed proculdubiò 3
capiêris, & in manus ejus tradêris; oculi
tui oculos regis Babyloniæ videbunt, & os
tuum cum ipſius ore loquetur; denique Babylonem
ibis. Verùm audi ſermonem Domini 4
Sedecia rex Judæ: Sic ait Dominus de te,
Non es moriturus gladio, ſed in pace moriturus: 5
Et quemadmodum lamentati ſunt majores
tuos reges priſtinos qui te præceſſerunt,
ſic te lamentabuntur; hunc enim ego ſermonem
locutus ſum, ait Dominus. Retulit ergò 6
Jeremia propheta Sedeciæ regi Judæ omnes
ſermones iſtos in Jeruſalem, Dum copiæ regis 7
Babyloniæ oppugnarent Jeroſolymam &
reliquas omnes civitates Judæ, *nempe* Lachis
& Azecam; nam iſtæ præ *cæteris* civitatibus
Judæ, reliquæ manebant civitates munitæ.
Sermo qui fuit ad Jeremiam à Domino, dicendo 8
(poſtquam pepigiſſet rex Sedecia fœdus
cum toto populo qui erat Jeroſolymis de
promulganda ipſis libertate, Ut quiſque ſervum 9
ſuum & quiſque ancillam ſuam, Hebræum
Hebræámque, liberos dimitteret, nemo
fratrem ſuum Judæum ſervitute premeret: Et 10
acquieſcentes omnes principes totúſque populus
conſenſiſſent quiſque ſervum ſuum &
quiſque ancillam ſuam liberos dimittere, ut
ſibi non ſervirent ampliùs.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

لان هاولاء يتنبون لكم بالظلم * لاني لم ارسلهم قال الرب * ويتنبون باسمي بالظلم 15
ليحاربوكم * ويهلكون انتم وانبياوكم الذين يتنبون لكم بالظلم كذبا * ولكل هذا الشعب *
* وتكلمت مع الكهنة قايلا * هكذا قال الرب * لا تسمعوا اقوال الانبياء الكذبة الذين 16 17
يتنبون لكم قايلين ها ءانية بيت الرب تعود من بابل * لان هاولاء يتنبون لكم ظلما * ولم 18
ارسلهم * وليس هم انبياء * وليست كلمة الرب فيهم ليستقبلوك [*MS Ox. وان كانوا انبياء 19
وعندهم وحي الرب * يطلبون الي الرب القوي ان لا تسكب المتاع الذي بقي في بيت الرب
وفي بيت ملك يهوذا وال اورشليم * وينطلق به الي بابل *] لان هكذا قال الرب [القوي
اله اسراييل في العمودين * والبحر والانية * وساير المتاع الذي بقي في هذه القرية * الذي لم
ياخذه بختنصر ملك بابل حيث سبي يوحانيا ملك يهوذا الي بابل * وجميع الاشراف يهوذا
واورشليم] ** * والاواني المتبقية التي لم ياخذها ملك بابل لما جلي يوحانيا من ايروسليم * 20 21 22
الي بابل تدخل يقول الرب * * الفصل الخامس والثلثون * * وكان في السنة الرابعة 1
لصدقيا ملك يهوذا * في الشهر الخامس * قال لي حنانيا بن عازور النبي الكذاب الذي من
عاباون * في بيت الرب تجاه الكهنة وكل الشعب قايلا * هكذا قال الرب * كسرت نير ملك بابل * 2
* ايضا سنتين ايام انا ارد الي هذا الموضع ءانية بيت الرب * ويوحانيا * وسبي يهوذا * لاني 3 4
اكسر نير ملك بابل [*MS.Ox. قال ارميا لحننيا النبي الكذاب امام الكهنة * وجميع 5
الشعب القيام في بيت الرب] فقال ارميا * بالحقيقة هكذا قال الرب * يقيم الرب كلمتك التي 6
تنبيت بها * ليرد ءانية بيت الرب وكل الجلوة من بابل الي هذا الموضع *

Iſti inquam, iniquè prophetant vobis:
Nam ego non miſi eos, dixit Dominus, 15
attamen falſum prophetant nomine meo,
ut expugnent vos, & pereatis cùm vos
tum prophetæ veſtri qui iniquè falſitatem
prophetant vobis & toti huic populo. 16
Allocutus ſum etiam ſacerdotes, dicens, 17
Sic dixit Dominus, Ne acquieſcatis dictis
prophetarum mendacium qui prophetant
vobis, dicentes; Ecce vaſa domûs Domini
reditura ſunt ex Babele: nam iſti perversè
prophetant vobis. Non miſi eos, 18
neque ſunt prophetæ, nec eſt verbum Domini
penes ipſos, ut audeant *opponere ſe*
tibi. [MS. Oxon. *Quòd ſi prophetæ ſunt,* 19
& revelatio Domini apud ipſos, poſtulent
à Domino potentiſſimo ut non incedant
vaſa quæ reliqua ſunt in domo Domini,
& in domo regis Judæ, & apud cives
Jeroſolymæ, ut non abeant inquam in Babyloniam.]
Quoniam ſic dicit Dominus [*potentiſſimus Deus Iſraelis, de columnis, de*
mari, de inſtrumentis, cæteriſque vaſis quæ
reliqua ſunt in civitate hac, quæ non accepit
Bochtonaſſar rex Babelis, quum captivum
abduxit Jochaniam regem Judæ
in Babyloniam, & omnes principes Judæ 20
& Jeruſalem,] *Etiam vaſa quæ non* 21
tulit rex Babelis quando deportavit Jochaniam 22
ex Jeruſalem, in Babelem intrabunt, ait Dominus.

CAP. XXXV.

Prætereà factum eſt anno quarto Sedeciæ 1
regis Judæ, menſe quinto, ut alloqueretur
me Hanania filius Azoris propheta
mendax, qui erat de Gibaone, in domo
Domini, coram ſacerdotibus totóque populo, dicens;
Sic dixit Dominus, Fregi 2
jugum regis Babelis. Duo adhuc dierum 3
anni reſtant, poſt quos *ego reſtituam in*
hunc locum vaſa domûs Domini, &
Jochaniam, Et captivitatem Judæ; 4
quia fracturus ſum jugum regis Babelis.
[MS. Oxon. *Tum dixit Jeremia Hananiæ* 5
pſeudoprophetæ coram ſacerdotibus,
& univerſo populo qui aſtabant in domo
Domini,] *dixit inquam Jeremia; Verè* 6
ſic ait Dominus? præſtet Dominus verbum
tuum quòd prophetâſti, ut reſtituat
vaſa domûs Domini totámque captivitatem,
è Babele in hunc locum.

ירמיה: לד

& , ſervos reduxerunt & , *poſtea* ſunt converſi Et
וַיָּשׁוּבוּ אַחֲרֵי־כֵן וַיָּשִׁבוּ אֶת־הָעֲבָדִים וְאֶת־ 11
, ſervos in eos ſubjugaverunt & : liberos dimiſerant quos , ancillas
הַשְּׁפָחוֹת אֲשֶׁר שִׁלְּחוּ חָפְשִׁים וַיִּכְבִּישׁוּם לַעֲבָדִים
Irmejahu ad DOMINI verbum fuit Et .ancillas in &
וְלִשְׁפָחוֹת׃ וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֶל־יִרְמְיָהוּ 12
Deus DOMINUS dixit Sic : dicendo , DOMINO à
מֵאֵת יְהוָה לֵאמֹר׃ כֹּה־אָמַר יְהוָה אֱלֹהֵי 13
me educere die in , veſtris patribus cum fœdus *excidi* Ego : Iſrael
יִשְׂרָאֵל אָנֹכִי כָּרַתִּי בְרִית אֶת־אֲבוֹתֵיכֶם בְּיוֹם הוֹצִאִי
fine A : dicendo , ſervorum domo de , Ægypti terra è eos
אוֹתָם מֵאֶרֶץ מִצְרַיִם מִבֵּית עֲבָדִים לֵאמֹר׃ מִקֵּץ 14
qui , Hebræum ſuum fratrem *vir* dimittetis annorum ſeptem
שֶׁבַע שָׁנִים תְּשַׁלְּחוּ אִישׁ אֶת־אָחִיו הָעִבְרִי אֲשֶׁר־
liberum eum dimittes & , annis ſex tibi ſerviet & , tibi *vendetur*
יִמָּכֵר לְךָ וַעֲבָדְךָ שֵׁשׁ שָׁנִים וְשִׁלַּחְתּוֹ חָפְשִׁי
inclinaverunt nec , *me ad* veſtri patres audierunt non & : te *cum* à
מֵעִמָּךְ וְלֹא־שָׁמְעוּ אֲבוֹתֵיכֶם אֵלַי וְלֹא הִטּוּ
feciſtis & , hodie vos eſtis converſi Et .ſuam aurem
אֶת־אָזְנָם׃ וַתָּשֻׁבוּ אַתֶּם הַיּוֹם וַתַּעֲשׂוּ אֶת־ 15
: ſuo *ſocio* *vir* libertatem *prædicandum ad* , meis oculis in rectum
הַיָּשָׁר בְּעֵינַי לִקְרֹא דְרוֹר אִישׁ לְרֵעֵהוּ
eſt invocatum quam , domo in *meas facies ad* pactum *excidiſtis* &
וַתִּכְרְתוּ בְרִית לְפָנַי בַּבַּיִת אֲשֶׁר־נִקְרָא
, meum nomen *profanaſtis* & , eſtis reverſi Et .*eam ſuper* meum nomen
שְׁמִי עָלָיו׃ וַתָּשֻׁבוּ וַתְּחַלְּלוּ אֶת־שְׁמִי 16
, ſuam ancillam unuſquiſque & , ſuum ſervum unuſquiſque reduxiſtis &
וַתָּשִׁבוּ אִישׁ אֶת־עַבְדּוֹ וְאִישׁ אֶת־שִׁפְחָתוֹ
eos ſubjugaſtis & : ſuam animam in liberos *eos* dimiſiſtis quos
אֲשֶׁר־שִׁלַּחְתֶּם חָפְשִׁים לְנַפְשָׁם וַתִּכְבְּשׁוּ אֹתָם
Propterea .ancillas in & , ſervos in vobis *exiſtendum ad*
לִהְיוֹת לָכֶם לַעֲבָדִים וְלִשְׁפָחוֹת׃ לָכֵן 17
, *me ad* *audiviſtis* non Vos : DOMINUS dixit ſic
כֹּה־אָמַר יְהוָה אַתֶּם לֹא־שְׁמַעְתֶּם אֵלַי
unumquemque & , ſuo fratri *unumquemque* libertatem *prædicandum ad*
לִקְרֹא דְּרוֹר אִישׁ לְאָחִיו וְאִישׁ
, DOMINUS dixit , libertatem vobis *prædicans* ego ecce : ſuo *ſocio*
לְרֵעֵהוּ הִנְנִי קֹרֵא לָכֶם דְּרוֹר נְאֻם־יְהוָה
vos dabo & : famem ad & , peſtem ad , gladium ad
אֶל־הַחֶרֶב אֶל־הַדֶּבֶר וְאֶל־הָרָעָב וְנָתַתִּי אֶתְכֶם
viros dabo Et .terræ regnis cunctis commotionē in
לְזַוְעָה לְכֹל מַמְלְכוֹת הָאָרֶץ׃ וְנָתַתִּי אֶת־הָאֲנָשִׁים 18
fœderis verba ſtatuerunt non qui , meum pactum *tranſgredientes*
הָעֹבְרִים אֶת־בְּרִתִי אֲשֶׁר לֹא־הֵקִימוּ אֶת־דִּבְרֵי הַבְּרִית
, *duo* in conciderunt *quod* vitulum : *meas facies ad exciderunt* quod
אֲשֶׁר כָּרְתוּ לְפָנָי הָעֵגֶל אֲשֶׁר כָּרְתוּ לִשְׁנַיִם
principes & , Jehudah Principes .ejus *partes* inter tranſierunt &
וַיַּעַבְרוּ בֵּין בְּתָרָיו׃ שָׂרֵי יְהוּדָה וְשָׂרֵי 19
, terræ populum omnem & , ſacerdotes & , eunuchos , Jeruſalaim
יְרוּשָׁלַםִ הַסָּרִסִים וְהַכֹּהֲנִים וְכֹל עַם הָאָרֶץ
manum in eos dabo Et .vituli *partes* inter *tranſeuntes*
הָעֹבְרִים בֵּין בִּתְרֵי הָעֵגֶל׃ וְנָתַתִּי אוֹתָם בְּיַד 20
erit & : eorum animam quærentium manum in & , eorum inimicorum
אֹיְבֵיהֶם וּבְיַד מְבַקְשֵׁי נַפְשָׁם וְהָיְתָה
.terræ *animali* & , cœlorum *volatili* eſcam in eorum morticinium
נִבְלָתָם לְמַאֲכָל לְעוֹף הַשָּׁמַיִם וּלְבֶהֱמַת הָאָרֶץ׃
manum in dabo ejus principes & , Jehudah regem Sidchijahu Et
וְאֶת־צִדְקִיָּהוּ מֶלֶךְ־יְהוּדָה וְאֶת־שָׂרָיו אֶתֵּן בְּיַד 21
manum in & : eorum animam quærentium manum in & , eorum inimicorum
אֹיְבֵיהֶם וּבְיַד מְבַקְשֵׁי נַפְשָׁם וּבְיַד
.vobis *deſuper aſcendentium* , Babel regis *virtutis*
חֵיל מֶלֶךְ בָּבֶל הָעֹלִים מֵעֲלֵיכֶם׃

Verſio VULG. LAT.

11 Et converſi ſunt deinceps : &
retraxerunt ſervos & ancillas
ſuas, quos dimiſerant liberos, &
ſubjugaverunt in famulos & famulas.
12 Et factum eſt verbum
Domini ad Jeremiam à Domino,
13 dicens ; Hæc dicit Dominus
Deus Iſrael ; Ego percuſſi
fœdus cum patribus veſtris, in
die quâ eduxi eos de terra Ægypti,
de domo ſervitutis, dicens ;
14 Cùm completi fuerint ſeptem
anni, dimittat unuſquiſque fratrem
ſuum Hebræum, qui venditus
eſt ei, & ſerviet tibi ſex annis
: & dimittes eum à te liberum
: & non audierunt patres
veſtri me, nec inclinaverunt aurem
15 ſuam. Et converſi eſtis vos
hodiè, & feciſtis quod rectum
eſt in oculis meis, ut prædicaretis
libertatem unuſquiſque ad amicum
ſuum : & inîſtis pactum
in conſpectu meo, in domo, in
qua invocatum eſt nomen meum
16 ſuper eam. Et reverſi eſtis, &
commaculâſtis nomen meum :
& reduxiſtis unuſquiſque ſervum
ſuum, & unuſquiſque ancillam
ſuam, quos dimiſeratis ut
eſſent liberi & ſuæ poteſtatis :
& ſubjugâſtis eos ut ſint vobis
17 ſervi & ancillæ. Propterea hæc
dicit Dominus; Vos non audîſtis
me, ut prædicaretis libertatem
unuſquiſque fratri ſuo, & unuſquiſque
amico ſuo : ecce ego
prædico vobis libertatem, ait
Dominus, ad gladium, ad peſtem,
& ad famem : & dabo vos
in commotionem cunctis regnis
18 terræ. Et dabo viros, qui
prævaricantur fœdus meum, &
non obſervaverunt verba fœderis,
quibus aſſenſi ſunt in conſpectu
meo, vitulum quem conciderunt
in duas partes, & tranſierunt
19 inter diviſiones ejus: Principes
Juda & principes Jeruſalem,
eunuchi & ſacerdotes, &
omnis populus terræ, qui tranſierunt
inter diviſiones vituli :
20 Et dabo eos in manus inimicorum
ſuorum, & in manus quærentium
animam eorum : & erit
morticînum eorum in eſcam volatilibus
cœli, & beſtiis terræ.
21 Et Sedeciam regem Juda, &
principes ejus, dabo in manus
inimicorum ſuorum, & in manus
quærentium animas eorum, & in
manus exercituum regis Babylonis,
qui receſſerunt à vobis.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

7 Πλὴν ἀκούσατε τὸν λόγον κυρίου, ὃν ἐγὼ
λέγω εἰς τὰ ὦτα ὑμῶν καὶ εἰς τὰ ὦτα παντὸς
8 τοῦ λαοῦ. Οἱ προφῆται οἱ γεγονότες
πρότεροί μου καὶ πρότεροι ὑμῶν ἀπὸ τοῦ αἰῶνος,
καὶ ἐπροφήτευσαν ἐπὶ γῆς πολλῆς, καὶ
9 ἐπὶ βασιλείας μεγάλας εἰς πόλεμον. Ὁ
προφήτης ὁ προφητεύσας εἰς εἰρήνην, ἐλθόντος
τοῦ λόγου, γνώσονται τὸν προφήτην ὃν
10 ἀπέστειλεν αὐτοῖς κύριος ἐν πίστει. Καὶ ἔλαβεν
Ἀνανίας ἐν ὀφθαλμοῖς παντὸς τοῦ
λαοῦ τοὺς κλοιοὺς ἀπὸ τοῦ τραχήλου Ἱερεμίου, καὶ
11 συνέτριψεν αὐτούς. Καὶ εἶπεν Ἀνανίας κατ'
ὀφθαλμοὺς παντὸς τοῦ λαοῦ, λέγων, Οὕτως
εἶπε κύριος, Οὕτως συντρίψω τὸν ζυγὸν
βασιλέως Βαβυλῶνος ἀπὸ τραχήλων πάντων
12 τῶν ἐθνῶν. Καὶ ᾤχετο Ἱερεμίας εἰς τὴν
ὁδὸν αὐτοῦ. καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς
Ἱερεμίαν, μετὰ τὸ συντρῖψαι Ἀνανίαν τοὺς
κλοιοὺς ἀπὸ τοῦ τραχήλου (ι) αὐτοῦ, λέγων,
13 Βάδιζε, καὶ εἰπὸν πρὸς Ἀνανίαν, λέγων,
Οὕτως εἶπε κύριος, Κλοιοὺς ξυλίνους συνέτριψας,
καὶ ποιήσω ἀντ' αὐτῶν κλοιοὺς σιδηροῦς·
14 Ὅτι οὕτως εἶπε κύριος, Ζυγὸν σιδηροῦν
ἔθηκα ἐπὶ τὸν τράχηλον πάντων τῶν
ἐθνῶν, ἐργάζεσθαι τῷ βασιλεῖ Βαβυλῶνος.
15 Καὶ εἶπεν Ἱερεμίας τῷ Ἀνανίᾳ, Οὐκ ἀπέσταλκέ
σε κύριος, (κ) καὶ πεποιθέναι ἐποίησας
16 τὸν λαὸν τοῦτον ἐπ' ἀδίκῳ. Διατοῦτο
οὕτως εἶπε κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐξαποστέλλω
σε ἀπὸ προσώπου τῆς γῆς, τούτῳ τῷ ἐνιαυτῷ
17 ἀποθανῇ. Καὶ ἀπέθανεν ἐν τῷ (λ)
μηνὶ τῷ ἑβδόμῳ.

Veruntamen audite verbum (c)
Domini, quod ego dico in auribus
veſtris, & in auribus univerſi
populi. Prophetæ, qui fuerunt 8
priores me, & priores vobis à ſeculo;
& prophetaverunt ſuper
terram multam, & ſuper regna
magna in (d) bellum. Propheta, 9
qui prophetavit in pacem, veniente
verbo, cognoſcent prophetam,
quem miſit eis Dominus in fide.
Et tulit Ananias in oculis univerſi 10
populi catenas de collo Hieremiæ,
& contrivit eas. Et dixit 11
Ananias ante oculos omnis populi,
dicens ; Sic dixit Dominus ;
Sic conteram jugum regis (e) Babylonis
de collis omnium gentium.
Et abiit Hieremias in viam 12
ſuam. Et factum eſt verbum Domini
ad Hieremiam, poſtquàm
contrivit Ananias catenas de
collo ejus, dicens ; Vade, & dic 13
ad Ananiam, dicens ; Sic dixit
Dominus; Catenas ligneas contriviſti
: & faciam pro eis catenas
ferreas : Quia ſic ait Dominus 14
; Jugum ferreum poſui ſuper
collum cunctarum gentium, ad operandum
regi (f) Babylonis.
Et dixit Hieremias Ananiæ, Non 15
miſit te Dominus : & confidere
feciſti populum iſtum ſuper iniquo.
Idcircò ſic dixit Dominus, 16
Ecce ego emitto te à facie terræ :
hoc anno (g) morieris. Et mortuus 17
eſt in menſe ſeptimo.

MS.A. (ι) ἹΕΡΕΜΊΟΥ, ΛΕΓΏΝ, ΒΆΔΙΣΟΝ (κ) καὶ σὺ (λ) ἑβδόμῳ μηνί.

Cap. 29. ΚΕΦ. κθʹ.
Vulg. Lat.

1 Καὶ οὗτοι οἱ λόγοι τῆς βίβλου
οὓς ἀπέστειλεν Ἱερεμίας ἐξ Ἱερουσαλὴμ πρὸς
τοὺς πρεσβυτέρους τῆς ἀποικίας, καὶ πρὸς τοὺς
ἱερεῖς, καὶ πρὸς τοὺς ψευδοπροφήτας, ἐπιστολὴν
εἰς Βαβυλῶνα τῇ ἀποικίᾳ, καὶ πρὸς
2 (α) ἅπαντα τὸν λαόν, Ὕστερον ἐξελθόντος
Ἰεχονίου τοῦ βασιλέως, καὶ τῆς βασιλίσσης, καὶ
τῶν εὐνούχων, καὶ παντὸς ἐλευθέρου, καὶ δεσμώτου,
3 καὶ τεχνίτου ἐξ Ἱερουσαλήμ, Ἐν χειρὶ (β)
Ἐλεασὰν υἱοῦ Σαφάν, καὶ Γαμαρίου υἱοῦ Χελκίου,
ὃν ἀπέστειλε Σεδεκίας βασιλεὺς Ἰούδα,
πρὸς βασιλέα Βαβυλῶνος εἰς Βαβυλῶνα·
4 λέγων, Οὕτως εἶπε κύριος ὁ θεὸς
Ἰσραὴλ ἐπὶ τὴν ἀποικίαν ἣν (γ) ἀπῴκισα
5 ἀπὸ Ἱερουσαλήμ, Οἰκοδομήσατε (δ) οἴκους,
καὶ κατοικήσατε, καὶ φυτεύσατε παραδείσους,
6 καὶ (ε) φάγετε τοὺς καρποὺς αὐτῶν, Καὶ λάβετε
γυναῖκας, καὶ τεκνοποιήσατε υἱοὺς καὶ
θυγατέρας, καὶ λάβετε τοῖς υἱοῖς ὑμῶν
γυναῖκας, καὶ τὰς θυγατέρας ὑμῶν δότε ἀνδράσι,
καὶ πληθύνεσθε, καὶ μὴ σμικρυνθῆτε·

CAP. XXXVI.

Et (a) hæc ſunt verba libri, 1
quæ miſit Hieremias de Hieruſalem
ad ſeniores tranſmigrationis,
& ad ſacerdotes, & ad
pſeudoprophetas, ((b) epiſtolam
in Babylonem tranſmigrationi)
& ad omnem (c) populum;
Poſtquàm egreſſus eſt Jechonias 2
rex, & regina, & eunuchi, &
omnis liber, & vinctus, & artifex
de Hieruſalem, In manu 3
Elcaſan filii Saphan, et Gamariæ
filii Chelciæ ; quem miſit Sedecias
rex Juda ad regem Babylonis
in Babylonem, dicens;
Sic dixit Dominus Deus Iſrael 4
ſuper tranſmigrationem, quam
tranſtuli de Hieruſalem; Ædificate 5
domos, et habitate, et
plantate pomaria, et comedite
fructus eorum ; Et accipite uxores, 6
et generate filios, et filias :
et accipite filiis veſtris uxores:
et filias veſtras date (d) viris :
et multiplicamini, et nolite minui:

MS.A. (α) πάντα (β) Ἐλεασὰρ (γ) ἀποίκησεν ἐξ Ἱερουσαλήμ, (δ) οἰκίας, (ε) φάγεσθαι τοὺς καρποὺς αὐτῶν,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

וְתָבוּ בָּתַר כֵּן וַאֲתִיבוּ יַת עַבְדִין וְיַת אַמְהָתָא דִּפְטַרוּ בְּנֵי חוֹרִין וּכְבִישׁוּנוּן לְעַבְדִין 11
וּלְאַמְהָן׃ וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִם יִרְמְיָה מִן קֳדָם יְיָ לְמֵימַר׃ כִּדְנַן אֲמַר 12 13
יְיָ אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל אֲנָא גְזָרִית קְיָם עִם אֲבָהָתְכוֹן בְּיוֹמָא דְאַפֵּקִית יָתְהוֹן מֵאַרְעָא
דְמִצְרַיִם מִבֵּית עַבְדוּתָא לְמֵימַר׃ מִסּוֹף שְׁבַע שְׁנִין תְּשַׁלְּחוּן גְּבַר יַת אֲחוּהִי בַּר יִשְׂרָאֵל 14
דְיִזְדַּבַּן לָךְ וְיִפְלְחִנָךְ שִׁית שְׁנִין וְתִפְטְרִנֵיהּ בַּר חוֹרִין מֵעִמָּךְ וְלָא קַבִּילוּ אֲבָהָתְכוֹן
לְמֵימְרִי וְלָא אַרְכִינוּ יַת אוּדְנְהוֹן׃ וְתַבְתּוּן אַתּוּן יוֹמָא דֵין וַעֲבַדְתּוּן יַת דְּכָשַׁר קֳדָמַי 15
לְמִקְרֵי חֵירוּ גְּבַר לְחַבְרֵיהּ וּגְזַרְתּוּן קְיָם קֳדָמַי בְּבֵיתָא דְאִתְקְרֵי שְׁמִי עֲלוֹהִי׃ וְתַבְתּוּן 16
וְאַחֲלֶתּוּן יַת שְׁמִי וַאֲתֵיבְתּוּן גְּבַר יַת עַבְדֵיהּ וּגְבַר יַת אַמְתֵיהּ דִּי פְטַרְתּוּן בְּנֵי חוֹרִין
לְנַפְשְׁתְהוֹן וּכְבֵשְׁתּוּן יָתְהוֹן לְמֶהֱוֵי לְכוֹן לְעַבְדִין וּלְאַמְהָן׃ בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אַתּוּן 17
לָא קַבֵּלְתּוּן לְמֵימְרִי לְמִקְרֵי חֵירוּ גְּבַר לַאֲחוּהִי וּגְבַר לְחַבְרֵיהּ הָא אֲנָא מַכְלֵי לְכוֹן
חֵירוּ אֲמַר יְיָ מִן חַרְבָּא וּמִן מוֹתָא וּמִן כַּפְנָא וְאֶתֵּן יַתְכוֹן לְזִיעַ לְכָל מַלְכְוָת אַרְעָא׃
וְאֶתֵּן יַת גֻּבְרַיָּא דַעֲבַרוּ עַל קְיָמִי דְּלָא קַיִּמוּ יַת פִּתְגָמֵי קְיָמָא דִגְזַרוּ קֳדָמַי עֶגְלָא 18
דִּפְסַקוּ לִתְרֵין וַעֲבַרוּ בֵּין פַּלְגוֹהִי׃ רַבְרְבֵי יְהוּדָה וְרַבְרְבֵי יְרוּשְׁלֶם וְרַבְרְבַיָּא 19
וְכַהֲנַיָּא וְכָל עַמָּא דְאַרְעָא דַעֲבַרוּ בֵּין פַּלְגֵי עֶגְלָא׃ וְאֶמְסַר יַתְהוֹן בְּיַד בַּעֲלֵי 20
דְבָבֵיהוֹן וּבְיַד דְּבָעַן לְמִקְטַלְהוֹן וּתְהֵי נְבֶלְתְּהוֹן מִשְׁגְּרָא לְמֵיכַל לְעוֹפָא דִשְׁמַיָּא
וּלְבְעִירָא דְאַרְעָא׃ וְיַת צִדְקִיָּה מֶלֶךְ שִׁבְטָא דְבֵית יְהוּדָה וְיַת רַבְרְבוֹהִי אֶמְסַר 21
בְּיַד בַּעֲלֵי דְבָבֵיהוֹן וּבְיַד דְּבָעַן לְמִקְטַלְהוֹן וּבְיַד מַשְׁרְיַת מַלְכָּא דְבָבֶל דְּאִסְתַּלַּקָא
מִנְּכוֹן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et poſteà converſi ſunt, & reduxerunt ſervos & ancillas quos dimiſe- 11
rant liberos, & ſubjugaverunt eos in ſervos & in ancillas. Et factum eſt 12
verbum prophetiæ à facie Domini, cum Jeremia *à conſpectu Domini*;
dicendo : Hæc dicit Dominus Deus Iſrael : Ego pepigi pactum cum pa- 13
tribus veſtris, in die qua eduxi eos de terra Ægypti de domo ſervitutis ;
dicens : Poſt finem ſeptem annorum dimittetis unuſquiſque fratrem ſuum 14
Iſraelitam, qui venditus fuerit tibi, & ſerviet tibi ſex annis, & dimittes
eum liberum à te ; & non obedierunt patres veſtri verbo meo, nec incli-
naverunt aures ſuas. Et converſi eſtis vos hodiè, & feciſtis quod rectum eſt 15
coram me ut prædicaretis libertatem quiſque proximo ſuo, & iniviſtis pa-
ctum in conſpectu meo, in domo in qua invocatum eſt nomen meum. Et 16
averſi eſtis, & violâſtis nomen meum, & reduxiſtis quiſque ſervum ſuum,
& quiſque ancillam ſuam, quos vos dimiſeratis liberos animæ ſuæ; & ſub-
jugâſtis eos ut eſſent ſervi vobis & ancillæ. Propterea hæc dicit Domi- 17
nus: Vos non recepiſtis verbum meum, ut prædicaretis libertatem quiſque
fratri ſuo & quiſque proximo ſuo. Ecce ego clamo vobis libertatem, dicit
Dominus, ad gladium, ad peſtem & famem, & dabo vos in commotionem
omnibus regnis terræ. Et dabo viros qui tranſgreſſi ſunt pactum meum, 18
qui non confirmaverunt verba pacti mei, quod inierunt coram me, vitu-
lum quem conciderunt in duas partes, & tranſierunt inter diviſiones ejus.
Principes Juda, & principes Jeruſalem, & principes & ſacerdotes, & 19
omnis populus terræ, qui tranſierunt inter diviſiones vituli. Et tradam 20
eos in manum inimicorum ſuorum, et in manum quærentium occidere
eos, et erit eorum cadaver projectum in cibum avibus cœli, et beſtiis ter-
ræ. Sedechiam quoque regem *tribus* domus Juda, et principes ejus tra- 21
dam in manum inimicorum ſuorum, et in manum quærentium occidere
eos, et in manum exercitus regis Babylonis, qui diſceſſit à vobis.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܘܗܦܟܘ ܬܘܒ. ܘܫܥܒܕܘ ܐܢܘܢ ܠܥܒܕܐ ܘܠܐܡܗܬܐ. ܕܫܒܩܘ ܐܢܘܢ ܒܢܝ ܚܐܪܐ. 11
* ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. 12 13
ܐܢܐ ܩܝܡܬ ܩܝܡܐ ܥܡ ܐܒܗܝܟܘܢ. ܒܝܘܡܐ ܕܐܦܩܬ ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ ܡܢ ܒܝܬ
ܥܒܕܘܬܐ ܠܡܐܡܪ. * ܡܢ ܣܘܦ ܫܒܥ ܫܢܝܢ. ܬܫܒܩܘܢ ܓܒܪ ܠܐܚܘܗܝ ܥܒܪܝܐ ܕܐܙܕܒܢ 14
ܠܟ. ܘܢܦܠܚܟ ܫܬ ܫܢܝܢ. ܘܬܫܒܩܝܘܗܝ ܒܪ ܚܐܪܐ ܡܢ ܠܘܬܟ. ܘܠܐ ܫܡܥܘ ܠܝ ܐܒܗܝܟܘܢ.
ܘܠܐ ܪܟܢܘ ܐܕܢܝܗܘܢ ܠܘܬܝ. * ܘܗܦܟܬܘܢ ܐܢܬܘܢ ܝܘܡܢܐ. ܘܥܒܕܬܘܢ ܬܪܝܨܐ ܩܕܡ ܥܝܢܝ 15
ܠܡܩܪܐ ܚܐܪܘܬܐ ܓܒܪ ܠܚܒܪܗ. ܘܩܝܡܬܘܢ ܩܝܡܐ ܩܕܡܝ ܒܒܝܬܐ ܕܐܬܩܪܝ
ܫܡܝ ܥܠܘܗܝ. * ܘܗܦܟܬܘܢ ܘܛܡܐܬܘܢ ܫܡܝ. ܘܐܗܦܟܬܘܢ ܓܒܪ ܠܥܒܕܗ ܘܓܒܪ 16
ܠܐܡܬܗ ܕܫܒܩܬܘܢ ܒܢܝ ܚܐܪܐ ܠܢܦܫܗܘܢ. ܘܟܒܫܬܘܢ ܐܢܘܢ ܕܢܗܘܘܢ ܠܟܘܢ ܠܥܒܕܐ
ܘܠܐܡܗܬܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܢܬܘܢ ܠܐ ܫܡܥܬܘܢܢܝ 17
ܠܡܩܪܐ ܚܐܪܘܬܐ ܓܒܪ ܠܚܒܪܗ. ܗܐ ܩܪܐ ܐܢܐ ܠܟܘܢ ܚܐܪܘܬܐ. ܠܚܪܒܐ ܘܠܟܦܢܐ
ܘܠܡܘܬܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܬܠܟܘܢ ܠܙܘܥܬܐ ܠܟܠܗܝܢ ܡܠܟܘܬܐ ܕܐܪܥܐ. * ܘܐܬܠ 18
ܠܓܒܪܐ ܕܥܒܪܘ ܥܠ ܩܝܡܝ. ܘܠܐ ܐܩܝܡܘ ܦܬܓܡܝ ܩܝܡܐ ܕܩܝܡܘ ܩܕܡܝ. ܐܝܟ ܥܓܠܐ
ܕܦܠܓܘ ܠܬܪܝܢ ܘܥܒܪܘ ܒܝܬ ܦܠܓܘܗܝ. * ܪܘܪܒܢܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܕܐܘܪܫܠܡ. 19
ܘܡܗܝܡܢܐ ܘܟܗܢܐ ܘܟܠܗ ܥܡܐ ܕܐܪܥܐ. ܕܥܒܪܘ ܒܝܬ ܦܠܓܘܗܝ ܕܥܓܠܐ.
* ܘܐܫܠܡ ܐܢܘܢ ܒܐܝܕܝ ܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ. ܘܒܐܝܕܝ ܕܒܥܝܢ ܢܦܫܗܘܢ. ܘܢܗܘܘܢ 20
ܦܓܪܝܗܘܢ. ܡܐܟܘܠܬܐ ܠܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ ܘܠܚܝܘܬܐ ܕܐܪܥܐ. * ܘܠܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ 21
ܕܝܗܘܕܐ ܘܠܪܘܪܒܢܘܗܝ ܐܫܠܡ ܐܢܘܢ ܒܐܝܕܝ ܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ. ܘܒܐܝܕܝ ܕܒܥܝܢ
ܢܦܫܗܘܢ. ܘܒܝܕ ܚܝܠܗ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܕܣܠܩܝܢ ܠܘܬܗܘܢ.

* Cùm autem eos libertate donâſſent, iterum 11 converſi ſervitute preſſiſſent manumiſſos, & ſervos effeciſſent) Fuit inquam, ſermo Do- 12 mini ad Jeremiam, dicendo; Sic ait Domi- 13 nus Deus Iſraelis, Ego pepigeram fœdus cum majoribus veſtris quo die eduxi eos è terra Ægypti, è domo ſervitutis, dicendo; Poſt ſeptem annos dimittetis quiſque fratrem 14 ſuum Hebræum qui ſe tibi vendiderit; ſerviet tibi ſex annos, tum liberum dimittes eum abs te: ſed non acquieverunt mihi majores veſtri, neque inclinaverunt ad me aurem ſuam. Reverſi quidem vos hodie, fe- 15 ciſtis quod rectum eſt in oculis meis, promulgando libertatem quiſque ſocio ſuo: at *poſtquam* fœdus pepigiſtis coram me in æde ſuper quam invocatum eſt nomen meum. Mu- 16 tâſtis conſilium, & prophanâſtis nomen meum, repetentes quiſque ſervum ſuum & quiſque ancillam ſuam, quos ſibi ipſis liberos dimiſeratis, & ſubjugâſtis eos ut eſſent vobis ſervi & ancillæ. Iccirco ſic ait Dominus 17 Deus Iſraelis; *Quia* vos non obtemperâſtis mihi proclamando quiſque libertatem ſocio ſuo, ecce ego libertatem proclamo vobis ad gladium, famem, ac peſtem, dicit Dominus; & proponam vos in formidinem cunctis regnis terræ. Et viros illos qui tranſgreſſi ſunt 18 fœdus meum, qui non ſteterunt ſermonibus fœderis quod pepigerunt coram me; reddam *ut* vitulum illum quem duas in partes ſecuerunt, & tranſierunt inter diviſiones ejus: Principes *ſcilicet* Judæ & Jeroſolymæ, eunu- 19 chos, ſacerdotes, & univerſum terræ populũ, qui tranſierunt inter dimidiatas illius vituli partes: Tradámq; in manum hoſtium ipſo- 20 rum, & in manum quærentium animam ipſorum; erúntque cadavera ipſorum cibo volucribus cœli & beſtiis terræ: Et Sedeci- 21 am regem Judæ, ac principes ejus tradam in manum inimicorum eorum, & in manum quærentium animam eorum, in manum inquam, copiarum regis Babyloniæ, quæ aſcenſuræ ſunt contra ipſos.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* لكن اسمعوا قول الرب الذي انا اقوله في اذانكم وفي اذان كل الشعب * الانبياء 7 8
الذين كانوا قبلي وقبلكم منذ الدهر * وتنبوا على الارضين الكثيرة وعلى مملكات
عظمات بالحرب * الذي يتنبا بالسلامة اذ ياتيه القول يعرفون النبي الذي ارسله الرب 9
لهم بالايمان * واخذ حنانيا تجاه كل الشعب الاطواق من عنق ارميا وكسرهم * وقال حنانيا 10 11
تجاه كل الشعب قايلا. هكذا قال الرب. هكذا اكسر نير ملك بابل من جميع اعناق
الامم * وذهب ارميا في طريقه *

* وكان قول الرب الى ارميا من بعد ما كسر حنانيا الاطواق من عنقه قايلا. 12
* انطلق فقل لحنانيا قايلا. هكذا قال الرب. انت كسرت الاطواق الخشبية وانا اصنع 13
عوضهم اطواقا حديدية * لان هكذا قال الرب نيرا من حديد وضعت على عنق جميع 14
الامم ليعملوا لملك بابل * وقال ارميا لحنانيا لم يرسلك الرب وانت جعلت هذا الشعب ان 15
يتوكل على الظلم * لاجل هذا هكذا قال الرب. ها انا ارسلك من وجه الارض. وفي هذه 16
السنة تموت * فمات في الشهر السابع * 17

Veruntamen audite ſermonem Domini 7 *quem ego dicturus ſum in auribus veſtris, & in auribus totius populi: Tam* 8 *Prophetæ qui me & vos jamdudum præceſſerunt, et prophetaverunt de terris multis & de regnis magnis bellum; Quàm* 9 *qui pacem prophetat: eveniente ſermone, cognoſcunt* homines *utrùm prophetam miſerit eis Dominus fidelem. Tum arre-* 10 *ptas Hanania coram toto populo numellas è collo Jeremiæ, fregit; Et locu-* 11 *tus eſt Hanania coram univerſo populo, dicens; Sic ait Dominus, Ita frangam jugum regis Babelis ex omnibus collis gentium: abiitque Jeremia in viam ſuam.*

Fuit autem ſermo Domini ad Jere- 12 miam poſtquam fregiſſet Hanania numellas è collo ipſius, dicentis;

Vade & alloquere Hananiam, dicens; 13 *Sic dixit Dominus, Tu fregiſti numellas ligneas; at ego faciam loco illarum numellas ferreas. Nam ita dixit Do-* 14 *minus, Jugum ferreum impoſui collo cunctarum gentium, ut operentur regi Babelis. Dixit præterea Jeremia ad* 15 *Hananiam; Non miſit te Dominus, tu tamen efficis ut populus iſte confidat iniquitati. Hanc ob rem ſic dixit Do-* 16 *minus; Ecce ego emiſſurus ſum te è ſuperficie terræ, & hoc anno morieris. Et mortuus eſt menſe ſeptimo.* 17

* الفصل السادس والثلثون *

* وهذه اقوال الكتاب الذي ارسلهم ارميا من اوروسليم الى مشايخ الجلوة والى الكهنة والى الانبياء 1
الكذبة رسالة الى بابل في السبي والى كل الشعب المتاخر * حين خرج يوحانيا الملك 2
والملكة والخصيان وكل حر واسير وصانع من اوروسليم * بيد العازار بن صافان وعماريو 3
بن سلكيوا الذي ارسله صدقيا ملك يهوذا الى ملك بابل قايلا * هكذا قال الرب اله 4
اسرايل على السبي الذي سبيته من اوروسليم * ابنوا بيوتا واغرسوا بساتين وكلوا 5
ثمرها * واتخذوا نسا واعطوا بناتكم لرجال * اكثروا ولا تقلوا * 6

CAP. XXXVI.

CÆterùm hi ſunt ſermones epiſtolæ, 1 *quos miſit Jeremia de Jeruſalem ad ſeniores captivitatis, ad ſacerdotes, & ad falſos prophetas: epiſtola ad Babelem in captivitate* exiſtentem, *& ad omnem populum qui ſuperfuit, Quando Johania* 2 *rex cum regina, eunuchis, omnibus ingenuis & mancipiis, atque opificibus, egreſſus eſt Jeroſolymis:* Miſſæ *per Elia-* 3 *zarum filium Saphanis, & Gamarium filium Selechiæ, quem mittebat Sedecia rex Judæ ad regem Babelis, dicens; Sic* 4 *dixit Dominus Deus Iſraelis de captivis quos abduxi de Jeruſalem: Extruite* 5 *domos, hortos plantate, & fructus eorum comedite: uxores ducite, & filias* 6 *veſtras locate maritis: creſcite, & ne minuamini:*

, hanc civitatem ad eos reducam & ,Dominus dixit ,*præcipiens* ego Ecce

הִנְנִי מְצַוֶּה נְאֻם־יְהוָה וַהֲשִׁבֹתִים אֶל־הָעִיר הַזֹּאת 22

& : igni in eam incendent & ,eam capient & ,eam *ſuper* præliabuntur &

וְנִלְחֲמוּ עָלֶיהָ וּלְכָדוּהָ וּשְׂרָפֻהָ בָאֵשׁ וְאֶת־

,*habitatore abſque* ſolitudinem dabo Jehudah civitates

עָרֵי יְהוּדָה אֶתֵּן שְׁמָמָה מֵאֵין יֹשֵׁב׃

CAP. XXXV. לה

Jehojachim diebus in ,Domino *cum* à Irmejahu ad fuit quod Verbum

הַדָּבָר אֲשֶׁר־הָיָה אֶל־יִרְמְיָהוּ מֵאֵת יְהוָה בִּימֵי יְהוֹיָקִים 1

,Rechabitarum domum ad Vade : dicendo ,Jehudah regis Joſijahu filii

בֶּן־יֹאשִׁיָּהוּ מֶלֶךְ יְהוּדָה לֵאמֹר׃ הָלוֹךְ אֶל־בֵּית הָרֵכָבִים 2

5 *cubiculorum* unum *ad* Domini domum eos introduces & , eos *alloquêris* &

וְדִבַּרְתָּ אוֹתָם וַהֲבִאוֹתָם בֵּית יְהוָה אֶל־אַחַת הַלְּשָׁכוֹת

Irmejahu filium Jaazanjah aſſumpſi Et .vinum eis propinabis &

וְהִשְׁקִיתָ אוֹתָם יָיִן׃ וָאֶקַּח אֶת־יַאֲזַנְיָה בֶן־יִרְמְיָהוּ 3

univerſam & ,ejus filios omnes & ,ejus fratres & ,Chabaſſinjah filii

בֶּן־חֲבַצִּנְיָה וְאֶת־אֶחָיו וְאֶת־כָּל־בָּנָיו וְאֵת כָּל־

cubiculum *ad* ,Domini domum eos introduxi Et .Rechabitarum domum

בֵּית הָרֵכָבִים׃ וָאָבִא אֹתָם בֵּית יְהוָה אֶל־לִשְׁכַּת 4

cubiculum apud quod ,Dei viri Igdaljahu filii Chanan filiorum

בְּנֵי חָנָן בֶּן־יִגְדַּלְיָהוּ אִישׁ הָאֱלֹהִים אֲשֶׁר־אֵצֶל לִשְׁכַּת

.liminis cuſtodis Sallum filii Mahaſejahu cubiculum ſupra quod ,principum

הַשָּׂרִים אֲשֶׁר מִמַּעַל לְלִשְׁכַּת מַעֲשֵׂיָהוּ בֶן־שַׁלֻּם שֹׁמֵר הַסַּף׃

:calices & ,vino plenos ſcyphos Rechabitarum domus *filiorum facies ad dedi* Et

וָאֶתֵּן לִפְנֵי בְּנֵי בֵית־הָרֵכָבִים גְּבִעִים מְלֵאִים יַיִן וְכֹסוֹת 5

quia : vinum bibemus Non : dixerunt Et .vinum Bibite : eos ad dixi &

וָאֹמַר אֲלֵיהֶם שְׁתוּ־יָיִן׃ וַיֹּאמְרוּ לֹא נִשְׁתֶּה־יָּיִן כִּי 6

bibetis Non : dicendo ,nobis *ſuper* præcepit noſter pater Rechab filius Jonadab

יוֹנָדָב בֶּן־רֵכָב אָבִינוּ צִוָּה עָלֵינוּ לֵאמֹר לֹא תִשְׁתּוּ־

,ædificabitis non domum Et .ſeculum in uſque veſtri filii & , vos vinum

יַיִן אַתֶּם וּבְנֵיכֶם עַד־עוֹלָם׃ וּבַיִת לֹא־תִבְנוּ 7

ſed : vobis erit nec ,plantabitis non vineam & , ſeretis non ſementem &

וְזֶרַע לֹא־תִזְרָעוּ וְכֶרֶם לֹא־תִטָּעוּ וְלֹא יִהְיֶה לָכֶם כִּי

multis diebus vivatis ut ,veſtris diebus cunctis habitabitis tabernaculis in

בָּאֳהָלִים תֵּשְׁבוּ כָּל־יְמֵיכֶם לְמַעַן תִּחְיוּ יָמִים רַבִּים

voce in audivimus Et .*ibi peregrinantes* vos qua , *humi faciebus ſuper*

עַל־פְּנֵי הָאֲדָמָה אֲשֶׁר אַתֶּם גָּרִים שָׁם׃ וַנִּשְׁמַע בְּקוֹל 8

non ad ,nobis præcepit quæ omnibus in noſtri patris Rechab filii Jehonadab

יְהוֹנָדָב בֶּן־רֵכָב אָבִינוּ לְכֹל אֲשֶׁר צִוָּנוּ לְבִלְתִּי

,noſtri filii , noſtræ uxores , nos ,noſtris diebus cunctis vinum *bibendum*

שְׁתוֹת־יַיִן כָּל־יָמֵינוּ אֲנַחְנוּ נָשֵׁינוּ בָּנֵינוּ

,ager & , vinea & : *noſtræ ſeſſioni* domos *ædificandum non ad* Et .noſtræ filiæ &

וּבְנֹתֵינוּ׃ וּלְבִלְתִּי בְּנוֹת בָּתִּים לְשִׁבְתֵּנוּ וְכֶרֶם וְשָׂדֶה 9

,obedivimus & ; *tentoriis* in habitavimus *Et* .nobis fuit non ſementis &

וָזֶרַע לֹא יִהְיֶה־לָּנוּ׃ וַנֵּשֶׁב בָּאֳהָלִים וַנִּשְׁמַע 10

fuit Et .noſter pater Jonadab nobis præcepit quæ omnia juxta fecimus &

וַנַּעַשׂ כְּכֹל אֲשֶׁר־צִוָּנוּ יוֹנָדָב אָבִינוּ׃ וַיְהִי 11

,Venite : diximus & , terram ad Babel rex Nebuchadreſar *aſcendendo in*

בַּעֲלוֹת נְבוּכַדְרֶאצַּר מֶלֶךְ־בָּבֶל אֶל־הָאָרֶץ וַנֹּאמֶר בֹּאוּ

virtutis faciebus à & , Chaſdim *virtutis faciebus* à ,Jeruſalaim ingrediamur &

וְנָבוֹא יְרוּשָׁלִַם מִפְּנֵי חֵיל הַכַּשְׂדִּים וּמִפְּנֵי חֵיל

,Irmejahu ad Domini verbum fuit Et .Jeruſalaim in manſimus & : Aram

אֲרָם וַנֵּשֶׁב בִּירוּשָׁלִָם׃ וַיְהִי דְּבַר־יְהוָה אֶל־יִרְמְיָהוּ 12

dices & ,Vade ; Iſrael Deus exercituum Dominus dixit Sic : dicendo

לֵאמֹר׃ כֹּה־אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל הָלֹךְ וְאָמַרְתָּ 13

diſciplinam recipietis Nonne : Jeruſalaim habitatoribus & ,Jehudah *viro*

לְאִישׁ יְהוּדָה וּלְיוֹשְׁבֵי יְרוּשָׁלִַם הֲלוֹא תִקְחוּ מוּסָר

? Dominus dixit ,*mea verba ad audiendum ad*

לִשְׁמֹעַ אֶל־דְּבָרַי נְאֻם־יְהוָה׃

Verſio VULG. LAT.

22 Ecce ego præcipio, dicit Dominus, & reducam eos in civitatem hanc, & præliabuntur adverſùs eam, & capient eam, & incendent igni : & civitates Juda dabo in ſolitudinem, eò quòd non ſit habitator.

CAP. XXXV.

1 Verbum, quod factum eſt ad Jeremiam à Domino, in diebus Joakim filii Joſiæ regis Juda, di- 2 cens; Vade ad domum Rechabitarum : & loquere eis, & introduces eos in domum Domini, in unam exedram theſaurorum, & dabis eis bibere vinum. 3 Et aſſumpſi Jezoniam filium Jeremiæ filii Habſaniæ, & fratres ejus, & omnes filios ejus, & univerſam domum Rechabitarum : 4 Et introduxi eos in domum Domini ad gazophylacium filiorum Hanan, filii Jegedeliæ hominis Dei, quod erat juxta gazophylacium principum, ſuper theſaurum Maaſiæ filii Sellum, 5 qui erat cuſtos veſtibuli. Et poſui coram filiis domûs Rechabitarum ſcyphos plenos vino, & calices : & dixi ad eos; 6 Bibite vinum. Qui reſponderunt, Non bibemus vinum : quia Jonadab filius Rechab, pater noſter, præcepit nobis, dicens; Non bibetis vinum vos, & filii veſtri, uſque in ſempi- 7 ternum : Et domum non ædificabitis, & ſementem non ſeretis, & vineas non plantabitis, nec habebitis : ſed in tabernaculis habitabitis cunctis diebus veſtris, ut vivatis diebus multis ſuper faciem terræ, in qua vos 8 peregrinamini. Obedivimus ergò voci Jonadab filii Rechab, patris noſtri, in omnibus quæ præcepit nobis, ita ut non biberemus vinum cunctis diebus noſtris nos, & mulieres noſtræ, 9 filii, & filiæ noſtræ : Et non ædificaremus domos ad habitandum : & vineam, & agrum, & 10 ſementem non habuimus : Sed habitavimus in tabernaculis, & obedientes fuimus, juxta o- 11 mnia, quæ præcepit nobis Jonadab pater noſter. Cùm autem aſcendiſſet Nabuchodonoſor rex Babylonis ad terram noſtram, diximus; Venite, & ingrediamur Jeruſalem à facie exer- 12 citûs Chaldæorum, & à facie exercitûs Syriæ : & manſimus in Jeruſalem. Et factum eſt 13 verbum Domini ad Jeremiam, dicens; Hæc dicit Dominus exercituum Deus Iſrael; Vade, & dic viris Juda, & habitatoribus Jeruſalem; Numquid non recipietis diſciplinam ut obediatis verbis meis, dicit Dominus?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

7 Καὶ ζητήσατε εἰς εἰρήνην τῆς γῆς, εἰς ἣν ἀπῴκισα ὑμᾶς ἐκεῖ· καὶ (ε) προσεύξασθε περὶ αὐτῶν πρὸς κύριον, ὅτι ἐν (ζ) εἰρήνῃ αὐτῆς εἰρήνη ὑμῖν. 8 Ὅτι οὕτως εἶπε κύριος, Μὴ ἀναπειθέτωσαν ὑμᾶς οἱ ψευδοπροφῆται οἱ ἐν ὑμῖν, καὶ μὴ ἀναπειθέτωσαν ὑμᾶς οἱ μάντεις ὑμῶν, καὶ μὴ ἀκούετε εἰς τὰ ἐνύπνια ὑμῶν, ἃ ὑμεῖς ἐνυπνιάζεσθε, 9 Ὅτι ἄδικα αὐτοὶ προφητεύουσιν ὑμῖν ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου, 10 καὶ οὐκ ἀπέστειλα αὐτούς. Ὅτι οὕτως εἶπε κύριος, Ὅταν μέλλῃ πληροῦσθαι Βαβυλῶνι ἑβδομήκοντα ἔτη, ἐπισκέψομαι ὑμᾶς, καὶ ἐπιστήσω τοὺς λόγους μου ἐφ' ὑμᾶς, (η) τοῦ ἀποστρέψαι τὸν λαὸν ὑμῶν 11 εἰς τὸν τόπον τοῦτον. Καὶ λογιοῦμαι ἐφ' ὑμᾶς λογισμὸν εἰρήνης, καὶ οὐ κακά, τοῦ δοῦναι ὑμῖν ταῦ- 12 τα. Καὶ προσεύξασθε πρὸς μέ, 13 καὶ εἰσακούσομαι ὑμῶν. Καὶ (ʺ) ἐκζητήσατέ με, καὶ εὑρήσετέ με· (θ) ὅτι ζητήσετέ με ἐν ὅλῃ καρδίᾳ 14 15 ὑμῶν, Καὶ ἐπιφανοῦμαι ὑμῖν. Ὅτι εἴπατε, Κατέστησεν ἡμῖν κύριος (ι) προφήτας ἐν Βαβυλῶνι· 21 Οὕτως εἶπε κύριος ἐπὶ Ἀχιάβ, καὶ ἐπὶ Σεδεκίαν, Ἰδοὺ ἐγὼ δίδωμι αὐτοὺς εἰς χεῖρας βασιλέως Βαβυλῶνος, καὶ (κ) πατάξει αὐτοὺς κατ' ὀφθαλμοὺς ὑμῶν.

7 *Et quærite (e) ad pacem terræ, ad quam tranſmigrare vos feci illuc : & orate pro eis ad Dominum : quia in pace ejus pax vobis.* 8 *Sic enim dixit Dominus; Non ſeducant vos prophetæ, qui in vobis, & non ſeducant vos divini veſtri : & nolite audire ad ſomnia veſtra, quæ vos ſomniatis :* 9 *Quia iniqua ipſi prophetant vobis in nomine meo : & non miſi eos.* 10 *Quia ſic dixit Dominus; Cùm cœperint impleri Babyloni ſeptuaginta anni, viſitabo vos : & ſuſcitabo verba mea ſuper vos, ad reducendum populum veſtrum in locum iſtum.* 11 *Et cogitabo ſuper vos cogitationem pacis, & non mala, ad dandum vobis hæc.* 12 *Et orate ad me; & exaudiam vos :* 13 *Et quærite me; & invenietis me : (f) quia quæretis me in toto corde veſtro;* 14 *Et apparebo vobis.* 15 *Quia dixiſtis; Conſtituit nobis Dominus prophetas in (g) Babylone;* 21 *Sic dixit Dominus ſuper Achiab, & ſuper Sedeciam; Ecce ego do eos in manus regis Babylonis : & percutiet eos ante oculos veſtros.*

MS.A. (ε) προσεύχεσθε (ζ) τῇ εἰρήνῃ αὐτῶν ἔσται ἡ εἰρήνη ὑμῶν. Οὕτως εἶπεν κύριος, Μὴ * ἀναπειθέτω (η) τοῦτον λαὸν ὑμῶν ἀποστρέψαι εἰς (ʺ) ἐκζητήσετέ (θ) ὅταν * ἐν ὅλῃ καρδίᾳ, Καὶ ἐπιφανοῦμαι (ι) προφήτην (κ) * πατάξεις

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

הָא אֲנָא מְפַקֵּיד אֲמַר יְיָ וַאֲתִיבִנּוּן עַל קַרְתָּא הָדָא וִיגִיחוּן קְרָבָא עֲלַהּ וְיִכְבְּשׁוּנַהּ וְיוֹקְדוּנַהּ 22
בְּנוּרָא וְיָת קִרְוַיָּא דְבֵית יְהוּדָה אֶתֵּן לְצָדוּ מִבְּלִי יָתֵיב׃

לה

פִּתְגָם נְבוּאָה דַּהֲוָה עִם יִרְמְיָה מִן קֳדָם יְיָ בְּיוֹמֵי יְהוֹיָקִים בַּר יֹאשִׁיָּה מֶלֶךְ שִׁבְטָא 1
דְּבֵית יְהוּדָה לְמֵימַר׃ אֱזֵיל לְוָת בְּנֵי בֵית רֵכָב וּתְמַלֵּל עִמְּהוֹן וְתַעֲלֵינוּן לְבֵית מַקְדְּשָׁא 2
דַּיְיָ לַחֲדָא מִן לִשְׁכָּתָא וְתַשְׁקֵי יָתְהוֹן חַמְרָא׃ וּדְבַרֵית יָת יַאֲזַנְיָה בַּר יִרְמְיָה בַּר חֲבַצִּנְיָה 3
וְיָת אֲחוֹהִי וְיָת כָּל בְּנוֹהִי וְיָת כָּל בְּנֵי בֵית רֵכָב׃ וְאָעֲלֵית יָתְהוֹן לְבֵית מַקְדְּשָׁא דַּיְיָ 4
לְלִשְׁכַּת בַּר חָנָן בַּר יִגְדַּלְיָה נְבִיָּא דַּיְיָ דִּבְסְטַר לִשְׁכַּת רַבְרְבַיָּא דִּמְעֵיל לְלִשְׁכַּת מַעֲשֵׂיָה בַּר
שַׁלּוּם אַמַּרְכְּלָא׃ וִיהָבֵית קֳדָם בְּנֵי בֵית רֵכָב כַּלִּידִין מְלָן חַמְרָא וְכָסִין וַאֲמָרֵית לְהוֹן 5
שְׁתוֹ חַמְרָא׃ וַאֲמַרוּ לָא נִשְׁתֵּי חַמְרָא אֲרֵי יוֹנָדָב בַּר רֵכָב אֲבוּנָא פַּקֵּיד עֲלָנָא לְמֵימַר 6
לָא תִשְׁתּוֹן חַמְרָא אַתּוּן וּבְנֵיכוֹן עַד עָלְמָא׃ וּבֵיתָא לָא תִבְנוּן וְזַרְעָא לָא תִזְרְעוּן 7
וְכַרְמָא לָא תִצְבּוּן וְלָא יְהֵי לְכוֹן אֲרֵי בְּמַשְׁכְּנִין תֵּיתְבוּן כָּל יוֹמֵיכוֹן בְּדִיל דְּתִתְקַיְּמוּן
יוֹמִין סַגִּיאִין עַל אַפֵּי אַרְעָא דְּאַתּוּן דָּיְרִין תַּמָּן׃ וְקַבֵּילְנָא לְמֵימַר יוֹנָדָב בַּר רֵכָב אֲבוּנָא 8
לְכֹל דְּפַקְּדָנָא בְּדִיל דְּלָא לְמִשְׁתֵּי חַמְרָא כָּל יוֹמָנָא אֲנַחְנָא נְשָׁנָא בְּנָנָא וּבְנָתָנָא׃ וּבְדִיל 9
דְּלָא לְמִבְנֵי בָתִּין לְמִתְּבָנָא וְכַרְמִין וְחַקְלִין וְזַרְעִין לָא יְהֵי לָנָא׃ וִיתֵבְנָא בְּמַשְׁכְּנִין 10
וְקַבֵּילְנָא וַעֲבַדְנָא כְּכֹל דְּפַקְּדָנָא יוֹנָדָב אֲבוּנָא׃ וַהֲוָה כַּד סְלֵיק נְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא דְבָבֶל 11
עַל אַרְעָא וַאֲמַרְנָא אֱתוֹ וְנֵיעוֹל לִירוּשְׁלֶם מִן קֳדָם מַשְׁרִיַת כַּסְדָּאֵי וּמִן קֳדָם מַשְׁרִיַת
אֲרָם וִיתֵבְנָא בִּירוּשְׁלֶם׃ וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִם יִרְמְיָה לְמֵימַר׃ כִּדְנַן אֲמַר 12 13
יְיָ צְבָאוֹת אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל אֱזֵיל וְתֵימַר לֶאֱנָשׁ יְהוּדָה וּלְיָתְבֵי יְרוּשְׁלֶם הֲלָא תְקַבְּלוּן
אוּלְפָן לְקַבָּלָא לְפִתְגָמַי אֲמַר יְיָ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

22 Ecce ego præcipio, dicit Dñs, & reducam eos ad civitatem hanc; & præliabuntur adverſùs eam, & ſubjugabunt eam, & ſuccendent eam igne; & urbes domus Juda dabo in ſolitudinem abſque habitatore.

CAP. XXXV.

1 Verbum prophetiæ quod factum eſt cum Jeremia à facie Dñi, in diebus Joachim filii Joſiæ regis tribus domus Juda; 2 dicens : Vade ad filios domus Rechab, & loquere cum eis, & introduces eos in domum ſanctuarii Dñi, ad unum de gazophylaciis & propinabis eis vinum. 3 Et tuli Jaazaniam filium Jeremiæ filii Abaſaniæ & fratres ejus, & omnes filios ejus, & omnes filios domus Rechab. 4 Et introduxi eos in domum ſanctuarii Dñi, in gazophylacium *filii* Hanan, filii Jigdeliæ, prophetæ Dñi, quod eſt in latere gazophylacii principum, quod eſt ſupra gazophylacium Maaſiæ filii Sallum præpoſiti. 5 Et poſui coram filiis domus Rechab ſcyphos plenos vino, & calices : & dixi eis; Bibite vinum. 6 Et dixerunt, Non bibemus vinum, quia Jonadab filius Rechab pater noſter præcepit nobis; dicendo : Ne bibatis vinum vos & filii veſtri uſque in æternum. 7 Et domum non ædificabitis, & ſementem non ſeretis; nec plantabitis vineam, nec erit vobis : ſed in tentoriis habitabitis omnibus diebus veſtris; ut permaneatis diebus multis ſuper faciem terræ in qua vos habitatis. 8 Et obedivimꝰ verbo Jonadab filii Rechab patris noſtri in omnibꝰ quæ præcepit nobis, ut non biberemꝰ vinum omnibꝰ diebꝰ noſtris, nos & uxores noſtræ, filii noſtri & filiæ noſtræ. 9 Et ut non ædificaremꝰ domos ad habitandum, & vineas & agros, & ſementem non haberemꝰ. 10 Et habitavimꝰ in tentoriis, & obedivimꝰ, & fecimꝰ juxta omnia quæ præcepit nobis Jonadab pater noſter. 11 Et factum eſt cùm aſcendit Nabuchodonoſor rex Babylonis ad terram, diximꝰ : Venite, & ingrediamur in Jeruſalem à facie exercitꝰ Chaldæorum, & à facie exercitꝰ Syriæ : & habitavimꝰ in Jeruſalem. 12 Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini cum Jeremia; dicendo : 13 Hæc dicit Dominus exercituum Deus Iſrael, Vade, & dices viris Juda, & habitatoribus Jeruſalem : Nonne *recipietis* diſciplinam ut obediatis verbis meis, dicit Dominus?

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܗܐ ܐܢܐ ܦܩܕ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܗܦܟ ܐܢܘܢ ܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܘܢܬܟܬܫܘܢ ܥܡܗ̇. 22
ܘܢܟܒܫܘܢܗ̇ ܘܢܘܩܕܘܢܗ̇ ܒܢܘܪܐ. ܘܠܡܕܝܢܬܐ ܕܝܗܘܕܐ ܐܬܠ ܠܚܘܪܒܐ ܡܢ ܕܠܐ ܥܡܘܪܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܗ *

* ܦܬܓܡܐ ܕܗܘܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܒܝܘܡܬܗ ܕܝܗܘܝܩܝܡ ܒܪ ܝܘܫܝܐ ܡܠܟܐ 1
ܕܝܗܘܕܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܙܠ ܠܒܝܬ ܒܢܝ ܪܟܒܝܡ. ܘܡܠܠ ܥܡܗܘܢ. ܘܐܥܠ ܐܢܘܢ ܠܒܝܬܗ 2
ܕܡܪܝܐ ܠܚܕ ܡܢ ܐܣܛܘ̈ܐ. ܘܐܫܩܐ ܐܢܘܢ ܚܡܪܐ. * ܘܕܒܪܬ ܠܝܙܢܝܐ ܒܪ ܐܡܪܝܐ ܒܪ ܚܒܨܢܝܐ. 3
ܘܠܐܚܘ̈ܗܝ ܘܠܟܠܗܘܢ ܒܢܘ̈ܗܝ. ܘܠܟܠܗ ܒܝܬ ܪܟܒܝܡ. * ܘܐܥܠܬ ܐܢܘܢ ܠܒܝܬܗ 4
ܕܡܪܝܐ. ܠܒܝܬܐ ܕܒܢܝ ܚܢܢ ܒܪ ܓܕܠܝܐ ܢܒܝܐ ܕܐܠܗܐ. ܕܩܪܝܒ ܒܝܬܗ ܠܪ̈ܘܪܒܢܐ.
ܕܝܬܒܝܢ ܠܥܠ ܡܢ ܒܝܬܗ ܕܡܥܣܝܐ ܒܪ ܫܠܘܡ ܢܛܪ ܬܪܥܐ. * ܘܣܡܬ ܩܕܡ ܒ̈ܢܝ ܒܝܬ 5
ܪܟܒܝܡ. ܩ̈ܠܐ ܕܡܠܝܢ ܚܡܪܐ ܘܟܣܐ. ܘܐܡܪܬ ܠܗܘܢ ܐܫܬܘ ܚܡܪܐ. * ܘܐܡܪܘ ܠܐ ܫܬܝܢܢ 6
ܚܡܪܐ. ܡܛܠ ܕܝܘܢܕܒ ܒܪ ܪܟܒ ܐܒܘܢ. ܦܩܕܢ ܘܐܡܪ ܠܢ. ܠܐ ܬܫܬܘܢ ܚܡܪܐ ܐܢܬܘܢ
ܘܒܢܝܟܘܢ. ܥܕܡܐ ܠܥܠܡ. * ܘܒܝܬܐ ܠܐ ܬܒܢܘܢ ܠܟܘܢ. ܘܙܪܥܐ ܠܐ ܬܙܪܥܘܢ. ܘܟܪܡܐ ܠܐ 7
ܬܢܨܒܘܢ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܟܘܢ. ܐܠܐ ܒܡܫܟ̈ܢܐ ܬܬܒܘܢ ܟܠܗܘܢ ܝܘܡܬܟܘܢ. ܡܛܠ ܕܬܚܐܘܢ ܝܘܡܬܐ
ܣܓܝܐܐ. ܥܠ ܐܦܝ ܐܪܥܐ ܕܐܢܬܘܢ ܬܘܬܒܐ ܒܗ̇. * ܘܫܡܥܢ ܠܦܘܩܕܢܗ ܕܝܘܢܕܒ ܒܪ ܪܟܒ 8
ܐܒܘܢ. ܠܟܠ ܕܦܩܕܢ. ܕܠܐ ܢܫܬܐ ܚܡܪܐ ܟܠܗܘܢ ܝܘܡܬܢ. ܠܐ ܚܢܢ ܘܠܐ ܢܫܝܢ ܘܠܐ ܒܢܝܢ ܘܠܐ
ܒܢܬܢ. * ܘܠܐ ܢܒܢܐ ܒ̈ܬܐ ܠܡܥܡܪܢ. ܘܟܪܡܐ ܘܚܩܠܐ ܘܙܪܥܐ ܠܐ ܢܗܘܐ ܠܢ. * ܘܝܬܒܢ 9 10
ܒܡܫܟ̈ܢܐ. ܘܫܡܥܢ. ܘܥܒܕܢ ܟܠ ܕܦܩܕܢ ܝܘܢܕܒ ܐܒܘܢ. * ܘܟܕ ܣܠܩ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ 11
ܕܒܒܠ ܥܠ ܐܪܥܐ. ܐܡܪܢ ܕܢܥܘܠ ܠܐܘܪܫܠܡ. ܡܢ ܩܕܡ ܚܝܠܐ ܕܟܠܕ̈ܝܐ ܘܡܢ ܩܕܡ ܚܝܠܐ
ܕܐܕܘܡ. ܘܝܬܒܢ ܒܐܘܪܫܠܡ. * ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. 12
* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܙܠ ܐܡܪ ܠܓܒܪ̈ܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܠܥܡܘܪ̈ܝ 13
ܐܘܪܫܠܡ. ܠܐ ܡܩܒܠܝܢ ܐܢܬܘܢ ܡܪܕܘܬܐ ܠܡܫܡܥ ܦܬܓܡ̈ܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.

* Ecce ego præcipiam, Dicit Dominus, & reducam eos ad hanc civitatem, & oppugnabunt eam, & capient eam, ignéque ſuccendent: & civitates Judæ redigam in ſolitudinem præ incolarum defectu. 22

CAP. XXXV.

SErmo qui fuit ad Jeremiam à Dominò in diebus Jojacim filii Joſiæ regis Judæ, dicendo; 1 Vade ad familiam filiorum Rechebiami, 2 alloquere eos, & introduc eos in ædem Dñi in unam cauponarũ, & præbe illis vinum bibendũ. Igitur adduxi Jozaniam filiũ Amariæ 3 filii Habſaniæ, fratres ejus, filios ejᵘˢ omnes, totam denique familiam Rechebiami, Et introduxi 4 eos in ædem Dñi, in domum filiorũ Hananis filii Gedaliæ prophetæ Dei, cujus domus vicina erat principibus habitantibus ultra domum Maaſiæ filii Sallumi cuſtodis liminis. Cùmque propoſuiſſem filiis familiæ 5 Rechebiami lagenas vino plenas, calicéſque; dixi eis, Bibite vinum. Reſponderunt, Non 6 bibimus vinum; quia Jonadab Rechabi filius pater noſter præcepit dixitque nobis, Ne bibitote vinum, vos aut filii veſtri, in æternum: Domos ne ædificate vobis, ſemen ne ſerite, 7 vineas ne plantate, neque ſunto vobis; ſed in tentoriis habitate cunctis diebus, ut vivatis multis diebus ſuper faciem terræ in qua peregrini eſtis. Quare nos integrè obtemperantes 8 mandato Jonadabi filii Rechabi patris noſtri, quo mandavit nobis ne vinum biberemᵘˢ cunctis diebus noſtris, neque nos, neque uxores noſtræ, neque filii, neque filiæ noſtræ; Et ne 9 domos ædificaremus ad habitationem noſtrã; neque vineas, aut agros, aut ſementem poſſideremus: Habitavimus in tentoriis, & obedivimus, 10 atque perfecimus quicquid præcepit nobis Jonadab pater noſter. Verùm cùm 11 aſcendiſſet Nebuchadnoſar rex Babyloniæ contra terram iſtam, decrevimus ingredi Jeroſolymam metu exercitûs Chaldæorum & exercitûs Adumæorum, & habitavimus in Jeruſalem. Tunc fuit ſermo Domini ad Jeremam 12 prophetam, dicendo; Sic ait Dominus 13 exercituum Deus Iſraelis, Abi dictum viris Judæ & civibus Jeroſolymæ, An non recepturi *tandem* eſtis diſciplinam, ut pareatis ſermonibus meis, ait Dominus?

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* واطلبوا السلامة للارض التي سبيتكم اليها هناك * وصلوا من اجلهم الي الرب * لان 7
بسلامتهم تكون السلامة لكم * لان هكذا قال الرب * لا تضلكم الانبياء الكذبة الذين 8
فيكم * ولا تضلكم العرافون * ولا ترجحوا لاحلامكم التي انتم تحلمون بها * لان هاولاء 9
يتنبوا ظلما باسمي ولم ارسلهم *

* الاصحاح الثالث والعشرون *

* لان هكذا قال الرب * اذا ازمع ان تكمل ببابل سبعون سنة * اتعهدكم واقيم اقوالي 10
لارد شعبي الي هذا الموضع * وافكر عليكم فكر السلامة * وليس شرورا لاعطيكم * ويصلون 11 12
الي واستجيب لكم * وتطلبوني بكل قلبكم واظهر لكم [MS. Ox. * وارد سبيكم * واجمعكم 13 14
من جميع الشعوب من كل الارض التي فرقتكم فيها قال الرب * واردكم الي بلد الذي
سبيتكم منه] * لانكم قلتم * اقام لنا الرب انبياء في بابل [MS. Ox. * لاجل ذلك هكذي 15 16
يقول الرب في الملك الجالس علي كرسي دوود * وجميع الشعوب التي في هذه القرية * اخوتكم
الذين لم يسبوا معكم في السبي * هكذي يقول الرب القوي انا مرسل عليهم الحرب 17
والجوع والموت * واصيرهم مثل التين الردي الذي لا يوكل من رداته * واطردهم بالحرب 18
والجوع والموت * واجعلهم فزعا في جميع مملكات الارض * وعجبا ولعنة وعارا وصفيرا من
جميع الشعوب التي افرقهم فيها * لانهم لم يسمعوا الاقوالي * لاني ارسلت اليهم جميع عبيدي 19
الانبياء وتقدمت وارسلت فلم يقبلوا منهم قال الرب * وانتم فاسمعوا قول الرب ايها السبي 20
الذي قد سبي من اورشليم الي بابل] * هكذا قال الرب على اشياب وعلي صدقيا * 21
وانا اسلمهم الي ايدي ملك بابل * ويضربهم تجاه عيونكم *

* *Poſtulate pacem terræ ad quam vos egi captivos, & orate pro eis Dominum; quandoquidem per eorum pacem pax erit vobis.* 7 *Sic enim dixit Dominus, Ne ſeducant vos prophetæ mendaces qui ſunt inter vos, neque ſeducant vos pythones, neque præſtetis fidem ſomniis veſtris quæ vos ſomniatis:* 8 *Quoniam iſti perverſè prophetant nomine meo, nec eos miſi.* 9

Textus vigeſimus tertius.

* *Nam ita dixit Dominus, quando futurum eſt ut abſolvantur in Babele ſeptuaginta anni, viſitabo vos, & præſtabo ſermones meos, reducendo populum meum hunc in locum:* 10 *Et cogitabo de vobis cogitationem pacis, non autem mala vobis inferre.* 11 *Cùmque oraveritis me, exaudiam vos;* 12 *Et quæſieritis me toto corde veſtro, apparebo vobis.* 13 *[MS.Ox. Et reducam captivos veſtros, & congregabo vos ex omnibus gentibus, et ex omnibus terris quò vos diſperſero dicit Dominus, & reducam vos ad locum unde vos captivos abegi.]* 14 *Quia dixiſtis, Suſcitavit nobis Dominus prophetas in Babele.* 15 *[MS.Ox. Propterea ſic dicit Dominus de rege ſedente ſuper ſolium Davidis, & de toto populo qui reſidet in hac civitate, fratribus veſtris quos non abduxerunt captivos vobiſcum in deportatione;* 16 *Sic inquam ait Dominus potentiſſimus, Immiſſurus ſum ego ſuper hos gladium, famem, & peſtem; & daturus ſum eos ſicut ficus malas, quæ non poſſunt comedi præ ſua pravitate:* 17 *Et inſectabor eos gladio fame, ac peſte, & formidini exponam eos apud omnia regna terræ, ſtupori, & execrationi, & opprobrio, & ſibilo apud omnes gentes quò diſperſero eos;* 18 *Eò quòd non auſcultârunt verbis meis, quum miſerim ad eos omnes ſervos meos prophetas antevertendo & mittendo, at non acquieverunt eis, dicit Dominus,* 19 *Vos itaque audite verbum Domini, O omnes captivi qui deportati eſtis Jeroſolymis Babylonem;]* 20 *Sic dixit Dominus de Achabo & de Sedecia, Ego quoque tradam eos in manus regis Babelis, qui percutiet eos coram oculis veſtris.* 21

ירמיה: לו

,ſuis filiis præcepit *quæ* ,Rechab filii Jehonadab *verba* eſt Firmatum
14 הוקם את־דברי יהונדב בן־רכב אשר־צוה את־בניו
quia ; hanc diem ad uſque biberunt non & , vinum *bibendum non ad*
לבלתי שתות־יין ולא שתו עד־היום הזה כי
,ſurgẽdo manè vos ad ſum locut⁹ ego & : ſui patris *præceptum* audivere
שמעו את מצות אביהם ואנכי דברתי אליכם השכם
omnes vos ad Miſique *.me ad audiſtis* non &;loquendo &
15 ודבר ולא שמעתם אלי: ואשלח אליכם את־כל־
Convertimini:*dicendũ ad*,mittẽdo &,ſurgẽdo manè prophetas meos ſervos
עבדי הנביאים השכם ושלח לאמר שבו־
ne & , veſtra *ſtudia* facite bona & , mala ſua via à unuſquiſq; obſecro
נא איש מדרכו הרעה והיטיבו מעלליכם ואל־
in *habitate* & ,eis *ſerviendum ad* ,alienos Deos poſt ambuletis
תלכו אחרי אלהים אחרים לעבדם ושבו אל־
inclinaſtis non &:veſtris patribus &,vobis dedi quam *humo*
האדמה אשר־נתתי לכם ולאבתיכם ולא הטיתם את־
Jehonadab filii firmaverunt Quia *.me ad audiſtis* nec ,veſtram aurem
16 אזנכם ולא שמעתם אלי: כי הקימו בני יהונדב
iſte populus &:eis præcepit quod ,ſui patris præceptum Rechab filii
בן־רכב את מצות אביהם אשר צום והעם הזה
Deus exercituum Deus Dominus dixit ſic Idcircò*.me ad audiverũt* non
17 לא שמעו אלי: לכן כה־אמר יהוה אלהי צבאות אלהי
Jeruſalaim habitatores omnes *ad* &,Jehudah *ad adducens* ego Ecce : Iſrael
ישראל הנני מביא אל־יהודה ואל כל־יושבי ירושלם
ſum locutus eo pro , eis ſuper ſum locutus quod ,malum omne
את כל־הרעה אשר דברתי עליהם יען דברתי
domui Et.reſponderũt non & ,illos vocavi & : audierunt non & ,eos ad
18 אליהם ולא שמעו ואקרא להם ולא ענו: ולבית
Deus exercituum Dominus dixit Sic : Irmejahu dixit Rechabitarum
הרכבים אמר ירמיהו כה־אמר יהוה צבאות אלהי
, veſtri patris Jehonadab præcepto *ſuper audiviſtis* quòd eo Pro : Iſrael
ישראל יען אשר שמעתם על־מצות יהונדב אביכם
præcepit quæ omnia juxta feciſtis &,ejus præcepta omnia cuſtodiviſtis &
ותשמרו את־כל־מצותיו ותעשו ככל אשר־צוה
Non : Iſrael Deus exercituum Dominus dixit ſic Propterea .vobis
19 אתכם: לכן כה אמר יהוה צבאות אלהי ישראל לא־
.diebus cunctis *meas facies ad* ſtãs,Rechab filio Jehonadab *ipſi* vir excidetur
יכרת איש ליונדב בן־רכב עמד לפני כל־הימים:

CAP. XXXVI. לו

, Jehudah regis Joſijahu filii Jehojachim quarto anno in fuit Et
1 ויהי בשנה הרביעית ליהויקים בן־יאשיהו מלך יהודה
tibi Tolle : dicendo ,Domino à Irmejahu ad hoc verbum fuit
2 היה הדבר הזה אל־ירמיהו מאת יהוה לאמר: קח־לך
quæ , verba omnia eo in *ſcribes* & , libri volumen
מגלת־ספר וכתבת אליה את־כל־הדברים אשר־
,gentes omnes *ſuper* & ,Jehudah *ſuper* & , Iſrael *ſuper* te ad ſum locutus
דברתי אליך על־ישראל ועל־יהודה ועל־כל־הגוים
.hanc diem ad uſque & , Joſijahu diebus à ,te ad ſum locutus die à
מיום דברתי אליך מימי יאשיהו ועד היום הזה:
ego quod malum omne Jehudah domus audiant fortè Si
3 אולי ישמעו בית יהודה את כל־הרעה אשר אנכי
, mala ſua via à *vir* revertantur ut , eis facere *cogitans*
חשב לעשות להם למען ישובו איש מדרכו הרעה
Irmejahu vocavit Et .eorum peccato &,eorũ iniquitati ero propitius &
4 וסלחתי לעונם ולחטאתם: ויקרא ירמיהו
Irmejahu ore ex Baruch ſcripſit & ; Nerijah filium Baruch
את־ברוך בן־נריה ויכתב ברוך מפי ירמיהו את
.libri volumine*ſuper* eum ad eſt locutus quæ , Domini verba omnia
כל־דברי יהוה אשר־דבר אליו על־מגלת־ספר:

Verſio VULG. LAT.

14 Prævaluerunt ſermones Jonadab filii Rechab, quos præcepit filiis ſuis ut non biberent vinum: & non biberũt uſque ad diem hanc, quia obedierunt præcepto patris ſui: ego autem locutus ſum ad vos, de manè conſurgens & loquens, & non obedîſtis mihi. 15 Miſique ad vos omnes ſervos meos prophetas, conſurgens diluculò, mitténſq; & dicens; Convertimini unuſquiſque à via ſua peſſima, & bona facite ſtudia veſtra: & nolite ſequi deos alienos, neque colatis eos: & habitabitis in terra, quam dedi vobis & patribus veſtris: & non inclinâſtis aurem veſtram, neque 16 audîſtis me. Firmaverunt igitur filii Jonadab filii Rechab præceptum patris ſui, quod præceperat eis: populus autem iſte 17 non obedivit mihi. Idcircò hæc dicit Dominus exercituum, Deus Iſrael; Ecce ego adducam ſuper Juda & ſuper omnes habitatores Jeruſalem, univerſam afflictionẽ, quã locutus ſum adverſùm illos: eò quòd locutus ſum ad illos, & non audierunt: vocavi illos, & 18 non reſponderunt mihi. Domui autem Rechabitarum dixit Jeremias; Hæc dicit Dominus exercituum, Deus Iſrael; Pro eo quòd obedîſtis præcepto Jonadab patris veſtri, & cuſtodîſtis omnia mandata ejus, & feciſtis univerſa, quæ præcepit vobis: 19 Propterea hæc dicit Dominus exercituum, Deus Iſrael; Non deficiet vir de ſtirpe Jonadab filii Rechab, ſtans in conſpectu meo cunctis diebus.

CAP. XXXVI.

1 ET factum eſt in anno quarto Joakim filii Joſiæ regis Juda: factum eſt verbũ hoc ad Jeremiam 2 à Domino, dicens; Tolle volumen libri, & ſcribes in eo omnia verba, quæ locutus ſum tibi adverſùm Iſrael & Judã, & adverſùm omnes gentes; à die quâ locutus ſum ad te, ex diebus Joſiæ 3 uſque ad diem hanc: Si fortè audiente domo Juda univerſa mala, quæ ego cogito facere eis, revertatur unuſquiſque à via ſua peſſima: & propitius ero iniquitati, 4 & peccato eorum. Vocavit ergò Jeremias Baruch filium Neriæ, & ſcripſit Baruch ex ore Jeremiæ, omnes ſermones Domini quos locutus eſt ad eum, in volumine libri:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

22 Καὶ λήψονται (λ) ἀπ' αὐτῶν κατάραν ἐν πάσῃ τῇ ἀποικίᾳ Ἰούδα ἐν Βαβυλῶνι, λέγοντες, Ποιήσαι σε κύριος, ὡς Σεδεκίαν ἐποίησε, ϗ ὡς Ἀχιὰβ, οὓς ἀπετηγάνισε 23 βασιλεὺς Βαβυλῶνος ἐν πυρὶ, Δι' ἣν ἐποίησαν ἀνομίαν ἐν Ἰσραὴλ, ϗ ἐμοιχῶντο τὰς γυναῖκας τῶν πολιτῶν αὐτῶν, ϗ λόγον ἐχρημάτισαν ἐν τῷ ὀνόματί μου, ὃν οὐ συνέταξα αὐτοῖς· (μ) ϗ ἐγὼ μάρτυς, 24 φησὶ κύριος. Καὶ πρὸς Σαμαίαν τὸν Αἰ-25 λαμίτην ἐρεῖς, Οὐκ ἀπέστειλά σε τῷ ὀνόματί μου. ϗ πρὸς Σοφονίαν υἱὸν (ν) Μα-26 ασαίου τὸν ἱερέα εἰπὲ, Κύριος ἔδωκέ σε ἱερέα ἀντὶ Ἰωδαὲ τοῦ ἱερέως, γενέσθαι ἐπιστάτην ἐν τῷ οἴκῳ κυρίου παντὶ ἀνθρώπῳ προφητεύοντι, ϗ παντὶ ἀνθρώπῳ μαινομένῳ, ϗ δώσεις αὐτὸν εἰς τὸ ἀπό-27 κλεισμα, ϗ εἰς τὸν καταράκτην. Καὶ νῦν διατί συνελοιδορήσατε Ἱερεμίαν τὸν ἐξ Ἀναθὼθ, τὸν προφητεύσαντα ὑμῖν; 28 (ξ) Οὐ διατοῦτο ἀπέστειλε; ὅτι διὰ τοῦ μηνὸς τούτου ἀπέστειλε πρὸς ὑμᾶς εἰς Βαβυλῶνα, λέγων, Μακράν ἐστιν, οἰκοδομήσατε οἰκίας, ϗ κατοικήσατε, ϗ φυτεύσατε κήπους, ϗ φάγεσθε τὸν καρπὸν 29 αὐτῶν. Καὶ ἀνέγνω Σοφονίας τὸ βιβλίον 30 εἰς τὰ ὦτα Ἱερεμίου. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς Ἱερεμίαν, λέγων, 31 Ἀπόστειλον πρὸς τὴν ἀποικίαν, λέγων, Οὕτως εἶπε κύριος ἐπὶ Σαμαίαν τὸν Αἰλαμίτην, Ἐπειδὴ ἐπροφήτευσεν ὑμῖν Σαμαίας, (ο) ϗ ἐγὼ οὐκ ἀπέστειλα αὐτὸν, ϗ πεποιθέναι ἐποίησεν ὑμᾶς ἐπ' (π) ἀδίκοις, 32 Διατοῦτο οὕτως εἶπε κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπισκέψομαι ἐπὶ Σαμαίαν, ϗ ἐπὶ τὸ γένος αὐτοῦ, ϗ οὐκ ἔσται αὐτῶν ἄνθρωπος ἐν μέσῳ ὑμῶν, τοῦ ἰδεῖν τὰ ἀγαθὰ, ἃ ἐγὼ ποιήσω ὑμῖν, οὐκ ὄψονται.

Et aſſument de eis maledictionem 22 in omni tranſmigratione Juda, in Babylone, dicentes; Faciat te Dominus, ſicut Sedeciam fecit, & ſicut Achiab: quos frixit rex Babylonis in igne: Pro eo, quòd 23 fecerunt iniquitatem in (b) Iſrael, & mœchabantur uxores civium ſuorum, & verbum reſponderunt in nomine meo, quod non præcepi eis: & ego (i) teſtis, ait Dominus. Et ad Sameam 24 Ælamitem dices; Non (k) 25 miſi te nomine meo. Et ad Sophoniam filium Maaſiæ ſacerdotem (l) dic; Dominus dedit te ſa- 26 cerdotem pro Jodae ſacerdote, ut eſſes præfectus in domo Domini omni homini prophetanti, & omni homini inſanienti; & dabis eum in cuſtodiam, & in (m) cataractam. Et nunc quarè ſimul 27 (n) contumeliis affeciſtis Hieremiam, qui ex Anathoth, qui prophetavit vobis? Non (o) propter 28 hoc miſit: quia per menſem hunc miſit ad (p) vos in Babylonem, dicens; Longè eſt: ædificate domos, & habitate; & plantate hortos, & comedite fructum eorum. Et legit Sophonias 29 librum in auribus Hieremiæ. Et 30 factum eſt verbum Domini ad Hieremiam, dicens; Mitte ad 31 tranſmigrationem, dicens; Sic dixit Dominus ſuper Sameam (q) Ælamitem; Quoniam prophetavit vobis Samæas, & ego non miſi eum, & confidere vos fecit ſuper iniquis: Propter hoc ſic 32 dixit Dominus; Ecce ego viſitabo ſuper Samæam, & ſuper genus ejus: & non erit de eis homo in medio veſtri, ad videndum: bona, quæ ego faciam vobis, (r) non videbunt.

MS.A. (λ) ἐπ' (μ) κἀγὼ (ν) Μαασαίου (ξ) Ὅτι διατοῦτο ἀπέστειλεν πρὸς ὑμᾶς (ο) κἀγὼ (π) ἀδίκῳ,

Cap. 30. ΚΕΦ. λζ'.

1 Vulg. Lat. Ο ΛΟ'ΓΟΣ 'Ο (α) ΓΕΝΟ'ΜΕΝΟΣ ΠΡΟ'Σ 'ΙΕΡΕΜΙ'ΑΝ ΠΑΡΑ' 2 ΚΥΡΙ'ΟΥ, 'ΕΙΠΕΙ͂Ν, Οὕτως εἶπε κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, λέγων, Γράψον πάντας τοὺς λόγους, (β) οὓς ἐχρημάτισα πρὸς σὲ 3 ἐπὶ βιβλίου. Ὅτι ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, φησὶ κύριος, ϗ ἀποστρέψω τὴν ἀποικίαν λαοῦ μου Ἰσραὴλ ϗ Ἰούδα, εἶπε κύριος (γ), ϗ ἀποστρέψω αὐτοὺς εἰς τὴν γῆν, ἣν ἔδωκα τοῖς πατράσιν αὐτῶν, ϗ κυριεύσουσιν αὐτῆς. 4 ΚΑΙ` ΟΥ῀ΤΟΙ 'ΟΙ ΛΟ'ΓΟΙ ΟΥ῍Σ 'ΕΛΑ'ΛΗΣΕ ΚΥ'ΡΙΟΣ 'ΕΠΙ` 'ΙΣΡΑΗ`Λ 5 ΚΑΙ` 'ΙΟΥ'ΔΑ. Οὕτως εἶπε κύριος, Φωνὴν φόβου (δ) ἀκούσεσθε· φόβος, ϗ οὐκ ἔστιν εἰρήνη.

MS.A. (α) ΓΕΝΑ'ΜΕΝΟΣ (β) οὓς ἐγὼ (γ) παντοκράτωρ, ϗ (δ) ἀκούσατε·

CAP. XXXVII.

VERBUM, quod factũ eſt ad 1 Hieremiam à Domino, dicendo; Sic dixit Dominus Deus Iſrael, 2 dicens; Scribe omnia verba, quæ reſpondi ad te, ſuper librum: Quia ecce dies veniunt, dicit 3 Dominus: & redire faciam tranſmigrationem populi mei Iſrael, & Juda, ait Dominus: & reducam eos in terram, quam dedi patribus eorum: & dominabuntur ejus. ET Hæc ſunt 4 verba quæ loquutus eſt Dominus ſuper Iſrael, & Judam. Sic ait 5 Dominus; Vocem timoris audietis: timor, & non eſt pax.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 אתקימו פתגמי יונדב בר רכב דפקיד ית בנוהי בדיל דלא למשתי חמרא ולא אשתיאו
עד יומא הדין ארי קבילו ית תפקדתא דאבוהון ואנא שלחית לותכון ית כל עבדי נבייא
15 מקדים וממלל ולא קבלתון למימרי: ושלחית לותכון ית כל עבדי נבייא מקדים
ומשלח למימר תובו כען גבר מאורחיה בישתא ואתקינו עובדיכון ולא תהכון בתר
טעות עממיא למפלחהון ותיבו על ארעא דיהבית לכון ולאבהתכון ולא ארכנתון ית
16 אודנכון ולא קבלתון למימרי: ארי אקימו בני יונדב בר רכב ית תפקדתא דאבוהון
17 דפקדנון ועמא הדין לא קבילו למימרי: בכן כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל הא
אנא מיתי על אנש יהודה ועל כל יתבי ירושלם ית כל בישתא דגזרית עליהון חלף
18 דשלחית לותהון ית כל עבדי נבייא ולא קבילו ואתנביאו להון ולא תבו: ולבני בית
רכב אמר ירמיה כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל חלף דקבלתון לתפקידת יהונדב
19 אבוכון ונטרתון ית כל פקודוהי ועבדתון ככל דפקיד יתכון: בכן כדנן אמר יי צבאות
אלהא דישראל לא יפסוק גבר ליונדב בר רכב משמש קדמי כל יומיא:

לו

1 והוה בשתא רביעיתא ליהויקים בר יאשיה מלך שבטא דבית יהודה הוה פתגמא
2 הדין עם ירמיה מן קדם יי למימר: סב לך מגלת ספרא ותכתוב עלה ית כל פתגמיא
דמללית עמך על ישראל ועל יהודה ועל כל עממיא מיומא דמללית עמך מיומי
3 יאשיה ועד יומא הדין: מאים ישמעון דבית יהודה ית כל בישתא דאנא מחשיב למעבד
4 להון בדיל דיתובון גבר מאורחיה בישתא ואשבוק לחוביהון ולחטאיהון: וקרא
ירמיהו ית ברוך בר נריה וכתב ברוך מפום דירמיה ית כל פתגמיא דיי דמליל עמיה
על מגלת ספרא:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

14 Confirmata ſunt verba Jonadab filii Rechab quæ præcepit filiis ſuis, ut non biberent vinum: & non biberunt uſq; in diem hanc, quia obedierunt præcepto patris ſui. Et ego miſi ad vos omnes ſervos meos prophetas, manè 15 conſurgens & loquens, & non obediſtis verbo meo. Et miſi ad vos omnes ſervos meos prophetas, manè conſurgens & mittens; dicens: Convertimini nunc unuſquiſq; à via ſua mala, & dirigite opera veſtra; & ne ambuletis poſt idola populorum ut ſerviatis eis: & habitate in terra quam dedi vobis & patribus veſtris: & non inclinâſtis aures veſtras, nec obediſtis 16 verbo meo. Firmaverunt enim filii Jonadab, filii Rechab, præceptum patris ſui quod præceperat eis, & popul⁹ hic non obedierunt verbo meo. 17 Propterea hæc dicit Dominus exercituum, Deus Iſrael: Ecce ego adducam ſuper viros Juda, & ſuper omnes habitatores Jeruſalem omne malum quod decrevi adverſùs illos, eo quòd miſi ad eos omnes ſervos meos prophetas, & non obedierunt, & prophetarunt eis, & non ſunt converſi. 18 Filiis autem dom⁹ Rechab dixit Jeremias: Hæc dicit Dñs exercituum Deus Iſrael, Pro eo quòd obediſtis præcepto Jonadab patris veſtri, & cuſtodiſtis omnia mandata ejus; & feciſtis juxta omnia quæ præcepit vobis. 19 Propterea hæc dicit Dñs exercituum De⁹ Iſrael, Non deficiet vir de Jonadab filio Rechab, miniſtrans coram me, cunctis diebus.

CAP. XXXVI.

1 ET factum eſt in anno quarto Joachim filii Joſiæ regis trib⁹ dom⁹ Juda, 2 factum eſt verbum iſtud cum Jeremia à facie Dñi; dicens: Tolle tibi volumen libri, & ſcribes in eo omnia verba quæ locut⁹ ſum tecum, ſuper Iſrael & ſuper Judam, & ſuper omnem populum, à die qua locut⁹ ſum tecum; à dieb⁹ Joſiæ, & uſque in diem hanc. 3 Fortè audient viri dom⁹ Juda omne malum quod ego cogito facere, & convertentur unuſquiſq; à via ſua mala, & dimittam delicta & peccata eorum. 4 Et vocavit Jeremias Baruch filium Neriæ; & ſcripſit Baruch ex ore Jeremiæ omnia verba Domini, quæ locutus eſt cum eo in volumine libri.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

14 * ܩܡܘ ܦܬܓܡܘܗܝ ܕܝܗܘܢܕܒ ܒܪ ܪܟܒ. ܕܦܩܕ ܠܒܢܘܗܝ ܕܠܐ ܢܫܬܘܢ ܚܡܪܐ. ܘܠܐ ܐܫܬܝܘ
ܥܕܡܐ ܠܝܘܡܢܐ. ܡܛܠ ܕܫܡܥܘ ܦܘܩܕܢܗ ܕܐܒܘܗܘܢ. ܘܐܢܐ ܐܡܪܬ ܠܟܘܢ. ܩܕܡܬ ܘܐܡܪܬ.
15 ܘܠܐ ܫܡܥܬܘܢ. * ܘܫܕܪܬ ܠܘܬܟܘܢ ܠܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝ ܢܒܝܐ. ܩܕܡܬ ܘܫܕܪܬ. ܘܐܡܪܬ. ܬܘܒܘ
ܓܒܪ ܡܢ ܐܘܪܚܗ ܒܝܫܬܐ. ܘܬܩܢܘ ܥܒܕܝܟܘܢ. ܘܠܐ ܬܐܙܠܘܢ ܒܬܪ ܐܠܗܐ ܐܚܪܢܐ ܠܡܦܠܚܘܢ
ܐܢܘܢ. ܘܬܬܒܘܢ ܒܐܪܥܐ ܕܝܗܒܬ ܠܟܘܢ ܘܠܐܒܗܝܟܘܢ. ܘܠܐ ܐܪܟܢܬܘܢ ܐܕܢܝܟܘܢ. ܘܠܐ ܫܡܥܬܘܢܢܝ.
16 * ܗܐ ܐܩܝܡܘ ܒܢܘܗܝ ܕܝܗܘܢܕܒ ܒܪ ܪܟܒ. ܦܘܩܕܢܐ ܕܐܒܘܗܘܢ ܕܦܩܕ ܐܢܘܢ. ܘܥܡܐ ܗܢܐ ܠܐ
17 ܫܡܥܘܢܝ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܥܠ ܝܗܘܕܐ. ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܘܗܝ ܕܐܘܪܫܠܡ.
ܟܠܗ ܒܝܫܬܐ ܕܐܡܪܬ ܥܠܝܗܘܢ. ܥܠ ܕܐܡܪܬ ܠܗܘܢ ܘܠܐ ܫܡܥܘ. ܘܩܪܝܬ ܠܗܘܢ. ܘܠܐ
18 ܥܢܘܢܝ. * ܘܠܒܝܬ ܪܟܒܝܐ ܐܡܪ ܐܪܡܝܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ
ܕܐܝܣܪܝܠ: ܚܠܦ ܕܫܡܥܬܘܢ. ܦܘܩܕܢܐ ܕܝܗܘܢܕܒ. ܐܒܘܟܘܢ. ܘܢܛܪܬܘܢ. ܟܠܗܘܢ.
19 ܦܘܩܕܢܘܗܝ. ܘܥܒܕܬܘܢ ܟܠܡܕܡ ܕܦܩܕܟܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܠܐ ܢܚܣܪ ܓܒܪܐ ܠܝܗܘܢܕܒ ܒܪ ܪܟܒ. ܕܩܐܡ ܩܕܡܝ
ܟܠܗܘܢ ܝܘܡܬܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܘ *

1 * ܘܗܘܐ ܒܫܢܬܐ ܕܐܪܒܥ ܕܝܘܝܩܝܡ ܒܪ ܝܘܫܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܗܘܐ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ
2 ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܣܒ ܠܟ ܡܓܠܬܐ ܕܟܬܒܐ. ܘܟܬܘܒ
ܒܗ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܕܐܡܪܬ ܠܟ. ܥܠ ܐܝܣܪܝܠ ܘܥܠ ܝܗܘܕܐ ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ
3 ܥܡܡܐ. ܡܢ ܝܘܡܐ ܕܐܡܪܬ ܠܟ. ܡܢ ܝܘܡܬܗ ܕܝܘܫܝܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܝܘܡܢܐ. * ܕܠܡܐ
ܢܫܡܥܘܢ ܒܝܬ ܝܗܘܕܐ. ܟܠܗ ܒܝܫܬܐ ܕܡܬܚܫܒ ܐܢܐ ܠܡܥܒܕ ܠܗܘܢ. ܘܢܬܘܒܘܢ
4 ܓܒܪ ܡܢ ܐܘܪܚܗ ܒܝܫܬܐ. ܘܐܫܒܘܩ ܠܚܛܗܝܗܘܢ ܘܠܣܟܠܘܬܗܘܢ. * ܘܩܪܐ ܐܪܡܝܐ
ܠܒܪܘܟ ܒܪ ܢܪܝܐ. ܘܟܬܒ ܒܪܘܟ ܡܢ ܦܘܡܗ ܕܐܪܡܝܐ. ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܘܗܝ
ܕܡܪܝܐ ܕܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܥܠ ܡܓܠܬܐ ܕܟܬܒܐ.

* Inviolati fuerunt ſermones Jonadabi filii Rechabi, quo præcipiente filiis ſuis ne vinum biberent, haud biberunt in hunc uſque diem, quòd obtemperaverint interdicto patris ſui: ego autem dixi vobis atque prædixi, & non paruiſtis: 14 Miſi ad vos omnes ſervos meos prophetas, præmaturè miſi, & dixi, Revertimini quiſque à via ſua peſſima, & emendate actiones veſtras, néve ſectemini deos alienos ad colendū eos, ut permaneatis in terra quam dedi vobis & majoribus veſtris: vos tamen nec aurem veſtrâ inclinâſtis, nec audîſtis me. 15 Ecce præſtiterunt filii Jonadabi filii Rechabi mandatum patris ſui quod præceperat eis; populus autem iſte non obedierunt mihi: 16 Propterea adducturus ſum ſuper Judam & ſuper omnes cives Jeroſolymæ totum illud malum quod decrevi contra eos; quia mihi ipſos colloquenti non auſcultârunt, & eos vocanti non reſponderunt. 17 Familiæ verò Rechebiami dixit Jeremia; Sic ait Dominus potentiſſimus Deus Iſraelis, Eò quòd paruiſtis mandato Jonadabi patris veſtri, & obſervâſtis omnia præcepta ipſius, & executi eſtis quicquid juſſit vobis: 18 Propterea ſic ait Dominus potentiſſimus Deus Iſraelis, Non deficiet vir Jonadabo filio Rechabi, qui ſtet coram me cunctis diebus. 19

CAP. XXXVI.

FActum eſt præterea anno quarto Jòjacimi filii Joſiæ regis Judæ, ut eſſet ſermo iſte ad Jeremiam à Domino, hiſce verbis; 1 Sume tibi volumen libri, & ſcribe in eo omnes ſermones quos dixi tibi de Iſraele, de Juda, & de cunctis gentibus ab ea die quâ te ſum allocutus, à diebus Joſiæ ad præſentem uſque diem: 2 Si fortè audientes Judæi omne malum quod eis facere delibero, revertantur quiſque à via ſua mala, & dimittam culpas & ſcelera eorum. 3 Quamobrem advocavit Jeremia Baruchum Neriæ filium, ſcripſitque Baruch dictante Jeremiâ omnes Domini ſermones quos ad utrumque locutus fuerat, in volumine libri. 4

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

22 * وياخذون عليهم لعنات في جميع جلوة يهودا ببابل * قايلين يصنع بك الرب كما صنع
23 بصدقيا * ومثل اسياب الذين سلقهم ملك بابل بالنار * لاجل الاثم الذي صنعاه في
اوراسليم * وفسقوا بنساء بلديهم * واظهروا قولا باسمي الذي انا لم امرهم به * وانا شهيد
24 25 قال الرب * * ولصفونيا بن صاماا قال الرب * دفعتك كاهنا عوض ايوداا الكاهن لتكون
26 27 فيما في بيت الرب لكل انسان يتنبي ولكل انسان يجن * وتدفعه للرباط والسجن * والان لماذا
28 تسمون ارميا الذي من اناثوث الذي يتنبا لكم * اليس لاجل هذا ارسل اليكم الى
29 بابل * قايلا طويل هو * ابنوا بيوتا واسكنوا واغرسوا بساتين وكلوا ثمرهم * وقرا صفونيا السفر
30 31 في اذني ارميا * وكان قول الرب الى ارميا قايلا * ارسل الى الجلوة قايلا * هكذا قال الرب الى
صاماا الاهوازي * من اجل ان صاماا تنبا لكم وانا لم ارسله * وصنع ظلما لتتوكلوا
32 ابدم عليه * لاجل هذا هكذا قال الرب * ها انا اطلع على صاماا وعلى جنسه * ولا يكون
له انسان في وسطكم ليرى الخيرات التي انا اصنعها لكم * ولا يعاينوها *

1 * الفصل السابع والثلثون * * القول الصاير الى ارميا من قبل الرب ليقول *
2 * هكذا قال الرب اله اسرايل قايلا * اكتب جميع هذه الاقوال التي اظهرتها انا لك في سفر *
3 * لان ها ايام تاتي قال الرب * وارد جلوة شعبي اسرايل ويهودا قال الرب * واردهم الى الارض
التي اعطيت اباهم * ويسودون على الارض *
4 * وهذه الاقوال التي تكلم الرب بها على اسرايل وعلى يهودا *
5 * هكذا قال الرب * اسمعوا صوت خوفه * خوف وليس تكون سلامة *

* *Et ab his deſument formam execrationum in tota captivitate Judæ in Babele, dicentes; Faciat tibi Dominus quemadmodum fecit Sedeciæ, & quemadmodum Achabo, quos igne coxit rex Babelis* 22 *Propter impietatem quam perpetrârunt in Jeruſalem, mœchantes cum uxoribus popularium ſuorum, & meo nomine ſermonem promulgantes, quem non præceperam eis: & horum teſtis ego ſum, ait Dominus.* 23 *Ad Sophoniam autem Samæi filium dixit Dominus;* 24 25 *Poſui te ſacerdotem loco Ajodai ſacerdotis, ut eſſes præſes in domo Domini contra omnem hominem prophetantem & omnem hominem inſanientem, eúmque vinculis & carceri traderes:* 26 *Quare ergò contumeliis afficitis Jeremiam Anathothitem qui prophetat vobis?* 27 *An non hac de re miſit ad vos in Babelem, dicens; Longa erit mora, ædificate domos, & inhabitate; ſerite hortos, & veſcimini fructibus eorum.* 28 *Libellum hunc legit Sophonias audiente Jeremiâ.* 29 *Deinde fuit ſermo Domini ad Jeremiam, dicens;* 30 *Mitte ad captivitatem, dicens; Ita dixit Dominus ad Sameam Elamitam, Quia Samea prophetavit vobis, cùm ego non miſerim eum, & fabricavit iniquitatem cui vos fideretis:* 31 *Ideò ſic ait Dominus, Ecce ego inviſam Sameam & genus ejus, neque remanebit illi quiſquam in medio veſtrû, ad fruendum bonis quæ ego facturus ſum vobis, neque videndum illa.* 32

CAP. XXXVII.

SErmo habitus cum Jeremia à Domino, ut diceret; 1

* *Sic locutus eſt Dominus Deus Iſraelis, dicens; Scribe omnes hos ſermones quos indicavi tibi, in libro:* 2 * *Quoniam ecce dies venturi ſunt, dixit Dominus, cùm reducam captivitatem populi mei Iſraelis et Judæ dixit Dominus; reducam inquam, eos ad terram quam dedi patribus eorum, & dominabuntur ſuper terram.* 3

Atque hi ſunt ſermones quos locutus eſt Dominus de Iſraele & de Juda. 4

* *Ita dixit Dominus, Audite vocem ejus horrendam. Terror, non autem pax erit.* 5

potero non ,*clauſus* Ego : dicendo ,Baruch Irmejahu præcepit Et
וַיְצַוֶּה יִרְמְיָהוּ אֶת־בָּרוּךְ לֵאמֹר אֲנִי עָצוּר לֹא אוּכַל 5
, volumine in *leges* & , tu *introibis* Et .Domini domum ingredi
לָבוֹא בֵּית יְהוָה׃ וּבָאתָ אַתָּה וְקָרָאתָ בַמְּגִלָּה 6
populi auribus in Domini verba , meo ore ex ſcripſiſti quod
אֲשֶׁר־כָּתַבְתָּ מִפִּי אֶת־דִּבְרֵי יְהוָה בְּאָזְנֵי הָעָם
, Jehudah omnis auribus in etiam & : jejunii die in , Domini domo
בֵּית יְהוָה בְּיוֹם צוֹם וְגַם בְּאָזְנֵי כָל־יְהוּדָה
eorum *deprecatio* cadat fortè Si .ea leges ſuis civitatibus de *venientium*
הַבָּאִים מֵעָרֵיהֶם תִּקְרָאֵם׃ אוּלַי תִּפֹּל תְּחִנָּתָם 7
magnus quia : mala ſua via à *vir* revertantur & , Domini *facies ad*
לִפְנֵי יְהוָה וְיָשֻׁבוּ אִישׁ מִדַּרְכּוֹ הָרָעָה כִּי־גָדוֹל
.hunc populum *ad* Dominus eſt locutus quam , ira & *naſus*
הָאַף וְהַחֵמָה אֲשֶׁר־דִּבֶּר יְהוָה אֶל־הָעָם הַזֶּה׃
Irmejahu ei præcepit quæ omnia juxta Nerijah filius Baruch fecit Et
וַיַּעַשׂ בָּרוּךְ בֶּן־נֵרִיָּה כְּכֹל אֲשֶׁר־צִוָּהוּ יִרְמְיָהוּ 8
fuit Et .Domini domo Domini verba libro in legendo , propheta
הַנָּבִיא לִקְרֹא בַסֵּפֶר דִּבְרֵי יְהוָה בֵּית יְהוָה׃ וַיְהִי 9
Jehudah regis Joſijahu filii Jehojachim quinto anno in
בַּשָּׁנָה הַחֲמִשִׁית לִיהוֹיָקִים בֶּן־יֹאשִׁיָּהוּ מֶלֶךְ־יְהוּדָה
populo omni Domini *facies ad* jejunium prædicaverunt nono menſe *in*
בַּחֹדֶשׁ הַתְּשִׁעִי קָרְאוּ צוֹם לִפְנֵי יְהוָה כָּל־הָעָם
Jehudah urbibus de *venientibus* populo univerſo & ,Jeruſalaim in
בִּירוּשָׁלִַם וְכָל־הָעָם הַבָּאִים מֵעָרֵי יְהוּדָה
Irmejahu verba libro in Baruch Legitque .Jeruſalaim in
בִּירוּשָׁלִָם׃ וַיִּקְרָא בָרוּךְ בַּסֵּפֶר אֶת־דִּבְרֵי יִרְמְיָהוּ 10
, ſcribæ Saphan filii Ghemarjahu cubiculo in , Domini domo
בֵּית יְהוָה בְּלִשְׁכַּת גְּמַרְיָהוּ בֶן־שָׁפָן הַסֹּפֵר
auribus in , novæ Domini domus portæ oſtii ſuperiori atrio in
בֶּחָצֵר הָעֶלְיוֹן פֶּתַח שַׁעַר בֵּית־יְהוָה הֶחָדָשׁ בְּאָזְנֵי
Saphan filii Ghemarjahu filius Michajehu audivit Et .populi omnis
כָּל־הָעָם׃ וַיִּשְׁמַע מִכָיְהוּ בֶן־גְּמַרְיָהוּ בֶּן־שָׁפָן 11
Deſcenditque .libro *deſuper* Domini verba omnia
אֶת־כָּל־דִּבְרֵי יְהוָה מֵעַל הַסֵּפֶר׃ וַיֵּרֶד 12
omnes ibi ecce & : ſcribæ cubiculum *ſuper* regis domum
בֵּית־הַמֶּלֶךְ עַל־לִשְׁכַּת הַסֹּפֵר וְהִנֵּה־שָׁם כָּל־
, Semahajahu filius Delajahu & ,ſcriba Eliſamah : *ſedentes* principes
הַשָּׂרִים יוֹשְׁבִים אֱלִישָׁמָע הַסֹּפֵר וּדְלָיָהוּ בֶן־שְׁמַעְיָהוּ
Sidchijahu & ,Saphan filius Ghemarjahu & ,Hachbor filius Elnathan &
וְאֶלְנָתָן בֶּן־עַכְבּוֹר וּגְמַרְיָהוּ בֶן־שָׁפָן וְצִדְקִיָּהוּ
Michajehu eis *indicavit* Et .principes univerſi &,Chananjahu filius
בֶן־חֲנַנְיָהוּ וְכָל־הַשָּׂרִים׃ וַיַּגֵּד לָהֶם מִכָיְהוּ 13
libro in Baruch *legendo in* , audivit quæ verba omnia
אֵת כָּל־הַדְּבָרִים אֲשֶׁר שָׁמֵעַ בִּקְרֹא בָרוּךְ בַּסֵּפֶר
, Baruch ad principes omnes miſerunt Et .populi auribus in
בְּאָזְנֵי הָעָם׃ וַיִּשְׁלְחוּ כָל־הַשָּׂרִים אֶל־בָּרוּךְ 14
:dicendum ad ,Chuſi filii Selemjahu filii Nethanjahu filium Jehudi
אֶת־יְהוּדִי בֶן־נְתַנְיָהוּ בֶּן־שֶׁלֶמְיָהוּ בֶן־כּוּשִׁי לֵאמֹר
illud ſume , populi auribus in *eo in* legiſti quo Volumen
הַמְּגִלָּה אֲשֶׁר קָרָאתָ בָּהּ בְּאָזְנֵי הָעָם קָחֶנָּה
volumen Nerijah filius Baruch tulit & : *abi* &,tua manu in
בְיָדְךָ וָלֵךְ וַיִּקַּח בָּרוּךְ בֶּן־נֵרִיָּהוּ אֶת־הַמְּגִלָּה
, nunc Sede : eum ad dixerunt Et .eos ad venit &,ſua manu in
בְּיָדוֹ וַיָּבֹא אֲלֵיהֶם׃ וַיֹּאמְרוּ אֵלָיו שֵׁב נָא 15
.eorum auribus in Baruch legit & : noſtris auribus in illud lege &
וּקְרָאֶנָּה בְּאָזְנֵינוּ וַיִּקְרָא בָרוּךְ בְּאָזְנֵיהֶם׃
ad *vir* expaverunt , verba omnia *eos audire ſecundùm* fuit Et
וַיְהִי כְּשָׁמְעָם אֶת־כָּל־הַדְּבָרִים פָּחֲדוּ אִישׁ אֶל־ 16
regi nuntiabimus Nuntiando : Baruch ad dixerunt & , ſuum *ſocium*
רֵעֵהוּ וַיֹּאמְרוּ אֶל־בָּרוּךְ הַגֵּיד נַגִּיד לַמֶּלֶךְ
.hæc verba omnia
אֵת כָּל־הַדְּבָרִים הָאֵלֶּה׃

Verſio VULG. LAT.

5 Et præcepit Jeremias Baruch,dicens ;
Ego clauſus ſum, nec valeo
6 ingredi domum Domini. Ingredere
ergò tu, & lege de volumine,
in quo ſcripſiſti ex ore meo,
verba Domini, audiente populo
in domo Domini, in die jejunii :
inſuper & audiente univerſo Judâ ,
qui veniunt de civitatibus
7 ſuis, leges eis : Si fortè cadat
oratio eorum in conſpectu Domini,
& revertatur unuſquiſque
à via ſua peſſima : quoniam magnus
furor & indignatio eſt,
quam locutus eſt Dominus adverſùs
8 populum hunc. Et fecit
Baruch filius Neriæ,juxta omnia,
quæ præceperat ei Jeremias propheta,
legens ex volumine ſermones
Domini in domo Domini.
9 Factum eſt autem in anno quinto
Joakim filii Joſiæ regis Juda, in
menſe nono : prædicaverunt jejunium
in conſpectu Domini omni
populo in Jeruſalem, & univerſæ
multitudini, quæ confluxerat
de civitatibus Juda in Jeruſalem.
10 Legítque Baruch ex volumine
ſermones Jeremiæ in domo
Domini, in gazophylacio Gamariæ
filii Saphan ſcribæ, in veſtibulo
ſuperiori, in introitu portæ
novæ domûs Domini, audiente
11 omni populo. Cúmque audîſſet
Michæas filius Gamariæ filii
Saphan omnes ſermones Domini
12 ex libro: Deſcendit in
domum regis ad gazophylacium
ſcribæ : & ecce ibi omnes principes
ſedebant : Eliſama ſcriba,
& Dalaias filius Semeiæ, & Elnathan
filius Achobor, & Gamarias
filius Saphan, & Sedecias filius
Hananiæ, & univerſi principes.
13 Et nuntiavit eis Michæas
omnia verba, quæ audivit legente
Baruch ex volumine in auribus
14 populi. Miſerunt itaque
omnes principes ad Baruch, Judi
filium Nathaniæ filii Selemiæ, filii
Chuſi, dicentes ; Volumen, ex
quo legiſti audiente populo, ſume
in manu tua, & veni. Tulit
ergò Baruch filius Neriæ volumen
in manu ſua, & venit ad
15 eos. Et dixerunt ad eum;Sede,
& lege hæc in auribus noſtris.Et
legit Baruch in auribus eorum.
16 Igitur cùm audîſſent omnia verba,
obſtupuerunt unuſquiſque ad
proximum ſuum : & dixerunt ad
Baruch ; Nuntiare debemus regi
omnes ſermones iſtos.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

6 Ἐρωτήσατε, καὶ ἴδετε, εἰ ἔτεκεν ἄρσεν;
καὶ περὶ φόβου, ἐν ᾧ καθέξουσιν
ὀσφὺν καὶ σωτηρίαν; διότι ἑώρακα
πάντα ἄνθρωπον, καὶ αἱ χεῖρες αὐτοῦ
ἐπὶ τῆς ὀσφύος αὐτοῦ· ἐστράφησαν
7 πρόσωπα εἰς ἴκτερον. (δ) Ὅτι ἐγενήθη
μεγάλη ἡ ἡμέρα ἐκείνη, καὶ
οὐκ ἔστι τοιαύτη· καὶ χρόνος στενός ἐστι
τῷ Ἰακώβ, καὶ ἀπὸ τούτου σωθήσεται.
8 Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, εἶπε κύριος,
Συντρίψω (ε) τὸν ζυγὸν ἀπὸ τοῦ τραχήλου
αὐτῶν, καὶ τοὺς δεσμοὺς αὐτῶν
διαρρήξω· καὶ οὐκ ἐργῶνται αὐτοὶ
9 ἔτι (ζ) ἀλλοτρίοις, Καὶ ἐργῶνται
τῷ κυρίῳ θεῷ αὐτῶν· καὶ τὸν Δαυὶδ
(η) βασιλέα αὐτῶν ἀναστήσω
12 αὐτοῖς. Οὕτως (θ) εἶπε κύριος,
Ἀνέστησα (ι) σύντριμμα, ἀλγηρὰ ἡ
13 πληγή σου, Οὐκ ἔστι κρίνων κρίσιν
σου, εἰς ἀλγηρὸν ἰατρεύθης, (κ) ὠφέλεια
14 σοι οὐκ ἔστι. Πάντες οἱ φίλοι σου
ἐπελάθοντό σου, οὐ μὴ ἐπερωτήσωσιν·
ὅτι πληγὴν ἐχθροῦ ἔπαισά σε,
παιδείαν στερεάν· ἐπὶ πᾶσαν ἀδικίαν
σου ἐπλήθυναν αἱ ἁμαρτίαι σου.
16 Διατοῦτο πάντες οἱ ἔσθοντές σε βρωθήσονται,
καὶ πάντες οἱ ἐχθροί σου
15 κρέας αὐτῶν πᾶν ἔδονται· Ἐπὶ πλῆθος
(λ) ἀδικιῶν σου ἐπληθύνθησαν
αἱ ἁμαρτίαι σου· ἐποίησαν ταῦτά
16 σοι· Καὶ ἔσονται οἱ διαφοροῦντές σε
εἰς διαφόρημα, καὶ πάντας τοὺς (μ) προνομεύσαντάς
σε δώσω εἰς προνομήν.
17 Ὅτι ἀνάξω τὸ (ν) ἴαμά σου, ἀπὸ
πληγῆς ὀδυνηρᾶς ἰατρεύσω σε, φησὶ
κύριος· ὅτι Ἐσπαρμένη ἐκλήθης,
θήρευμα ὑμῶν ἐστιν, ὅτι ζητῶν οὐκ
18 ἔστιν αὐτήν. Οὕτως εἶπε κύριος, Ἰδοὺ
ἐγὼ ἀποστρέψω τὴν (ξ) ἀποικίαν
Ἰακώβ, καὶ τὴν (ο) αἰχμαλωσίαν
αὐτοῦ ἐλεήσω· καὶ οἰκοδομηθήσεται
πόλις ἐπὶ (π) τὸ ὕψος αὐτῆς,
καὶ ὁ λαὸς κατὰ τὸ κρίμα αὐτοῦ
19 καθεδεῖται. Καὶ ἐξελεύσονται ἀπ' αὐτῶν
ᾄδοντες, (ρ) φωνὴ παιζόντων·
καὶ πλεονάσω αὐτούς, καὶ οὐ μὴ
ἐλαττωθῶσι.

Interrogate, & videte, ſi 6
generat maſculus ? (a) &
de timore, in quo detinebunt
lumbum, & ſalutem?
quarè vidi omnem hominem,
& manus ejus ſuper
lumbum (b) ejus ? Verſæ
ſunt facies in auruginem ;
(c) Quia facta eſt 7
magna dies illa, & non
eſt talis : & tempus anguſtum
eſt Jacob ; & ex iſto
ſalvabitur. In die illa, 8
dixit Dominus, conteram
jugum de collo eorum : &
vincula eorum dirumpam :
& non operabuntur ipſi ultrà
alienis : Et operabuntur 9
Domino Deo ſuo. Et
David regem eorum ſuſcitabo
(d) eis : Sic ait Dominus ; 12
(e) Suſcitavi contritionem :
doloroſa eſt plaga
tua : Non eſt qui judicet 13
judicium tuum : in
dolore curata es : utilitas
tibi non eſt. Omnes amici 14
tui obliti ſunt tuî : non (f)
interrogabunt:quia plagâ inimici
percuſſi te, diſciplinâ
forti ſuper omnem iniquitatem
tuam. Multiplicata
ſunt peccata (g) tua. Proptereà 16
omnes qui comedunt
te, devorabuntur: & omnes
inimici tui (h) carnem
ſuam omnem comedent.
(Propter multitudinem iniquitatum 15
tuarum (i) multiplicata
ſunt peccata tua :
fecerunt hæc tibi :) Et erunt, 16
(k) qui vaſtant te,
in vaſtationem : et omnes,
qui diripuerunt te, dabo in
direptionem : Quia (l) obducam 17
curationem tuam : à
plaga doloroſa curabo te,
ait Dominus: quia Diſperſa
vocata es : (m) venatio veſtra
eſt : quia non eſt qui
quærat eam. Sic dixit Dominus 18
; Ecce ego reducam
tranſmigrationem Jacob : et
captivitati ejus miſerebor.
Et ædificabitur civitas ſuper
altitudinem ejus *: et(n)*
populus juxta judicium ſuum
ſedebit. Et egredientur 19
ab *eis canentes, vox ludentium*
: et multiplicabo eos, et non minuentur.

MS.A. (δ) Ἐγενήθη, ὅτι μεγάλη (ε) ζυγὸν ἀπὸ τραχήλου (ζ) ἐν ἀλλοτρίοις, (η) τὸν βασιλέα (θ) λέγει (ι) σύντριμμά σου, (κ) ὠφέλεια οὐκ ἔστιν σοι. (λ) ἀδικίας (μ) προνομεύοντάς (ν) ἱμάτιον (ξ) αἰχμαλωσίαν (ο) ἀποικίαν (π) τεῖχος αὐτῆς, (ρ) καὶ φωνὴ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

וּפַקֵּיד יִרְמְיָה יָת בָּרוּךְ לְמֵימַר אֲנָא כְלֵי לֵית אֲנָא יָכִיל לְמֵעַל לְבֵית מַקְדְּשָׁא דַייָ׃ 5
וְתֵיתֵי אַתְּ וְתִקְרֵי בִּמְגִלְּתָא דִכְתַבְתָּא מִפּוּמִי יָת פִּתְגָמַיָּא דַייָ קֳדָם עַמָּא בְּבֵית מַקְדְּשָׁא דַייָ 6
בְּיוֹמָא דְצוֹמָא וְאַף קֳדָם כָּל בֵּית יְהוּדָה דְאָתַן מִקִּרְוֵיהוֹן תִּקְרֵנּוּן׃ מָאִים תִּתְקַבַּל 7
בָּעוּתְהוֹן קֳדָם יְיָ וִיתוּבוּן גְּבַר מֵאוֹרְחָתֵיהּ בִּישְׁתָּא אֲרֵי רַב רוּגְזָא וְחֵמְתָא דִגְזַר יְיָ עַל
עַמָּא הָדֵין׃ וַעֲבַד בָּרוּךְ בַּר נֵרִיָּה כְּכֹל דִּי פַקְּדֵיהּ יִרְמְיָה נְבִיָּא לְמִקְרֵי בְסִפְרָא פִּתְגָמַיָּא 8
דַייָ בֵּית מַקְדְּשָׁא דַייָ׃ וַהֲוָה בְּשַׁתָּא חֲמִשְׁתָּא לִיהוֹיָקִים בַּר יֹאשִׁיָּה מֶלֶךְ שִׁבְטָא דְבֵית 9
יְהוּדָה בְּיַרְחָא תְשִׁיעָאָה גְּזַרוּ צוֹמָא קֳדָם יְיָ כָּל עַמָּא בִירוּשְׁלֶם וְכָל עַמָּא דְאָתַן
מִקִּרְוַיָּא דְבֵית יְהוּדָה בִּירוּשְׁלֶם׃ וּקְרָא בָרוּךְ בְּסִפְרָא יָת פִּתְגָמֵי יִרְמְיָה נְבִיָּא בֵּית 10
מַקְדְּשָׁא דַייָ בְּלִשְׁכַּת גְּמַרְיָה בַר שָׁפָן סָפְרָא בְּדַרְתָּא עִלָּיְתָא בְּמַעֲלָנָא דִתְרַע בֵּית
מַקְדְּשָׁא דַייָ מַדִּנְחָאָה קֳדָם כָּל עַמָּא׃ וּשְׁמַע מִיכָיְהוּ בַר גְּמַרְיָה בַר שָׁפָן יָת כָּל 11
פִּתְגָמָא דַייָ מֵעַל סִפְרָא׃ וּנְחַת לְבֵית מַלְכָּא לְלִשְׁכַּת סָפְרָא וְהָא תַמָּן כָּל רַבְרְבַיָּא 12
יָתְבִין אֱלִישָׁמָע סָפְרָא וּדְלָיָה בַר שְׁמַעְיָה וְאֶלְנָתָן בַּר עַכְבּוֹר וּגְמַרְיָה בַר שָׁפָן וְצִדְקִיָּה
בַּר חֲנַנְיָה וְכָל רַבְרְבַיָּא׃ וְחַוִּי לְהוֹן מִכָיְהוּ יָת כָּל פִּתְגָמַיָּא דִשְׁמַע כַּד קְרָא בָרוּךְ 13
בְּסִפְרָא קֳדָם עַמָּא׃ וּשְׁלַחוּ כָל רַבְרְבַיָּא לְוַת בָּרוּךְ יָת יְהוּדִי בַר נְתַנְיָה בַר שֶׁלֶמְיָה 14
בַּר כּוּשִׁי לְמֵימַר מְגִלְּתָא דִקְרֵיתָא בַהּ קֳדָם עַמָּא סַבְהִי בִידָךְ וְאִתָא וּנְסֵיב בָּרוּךְ בַּר נֵרִיָּה
יָת מְגִלְּתָא בִּידֵיהּ וַאֲתָא לְוָתְהוֹן׃ וַאֲמַרוּ לֵיהּ תּוּב כְּעַן וּקְרָהָא קֳדָמַנָא וּקְרָא 15
בָרוּךְ קֳדָמֵיהוֹן׃ וַהֲוָה כְּמִשְׁמַעְהוֹן יָת כָּל פִּתְגָמַיָּא תְּוָהוּ גְּבַר לְחַבְרֵיהּ וַאֲמַרוּ לְבָרוּךְ 16
חַוָּאָה נְחַוֵּי לְמַלְכָּא יָת כָּל פִּתְגָמַיָּא הָאִלֵּין׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et præcepit Jeremias Baruch ; dicens : Ego clauſus ſum, & non poſſum 5
ingredi in domum ſanctuarii Dñi.Et venies tu,& leges in volumine,in quo 6
ſcripſiſti ex ore meo, verba Dñi coram populo, in domo ſanctuarii Dñi,
in die jejunii, & etiam coram omni domo Juda, qui veniunt de civitatibus
ſuis, leges ea. Fortè acceptabilis erit deprecatio eorum coram Dño, 7
& convertentur unuſquiſque à via ſua mala: quoniam magnus eſt furor &
indignatio quam decrevit Dñs adverſùs populum hunc. Et fecit Baruch, 8
filius Neriæ, juxta omnia quæ præcepit ei Jeremias propheta, ut legeret in
libro verba Dñi, in domo ſanctuarii Dñi. Et factum eſt in anno quinto 9
Joachim filii Joſiæ regis tribus domus Juda, in menſe nono, decreverunt
jejunium coram Dño omnis populus in Jeruſalem, & omnis populus qui
venerat de urbibus domus Juda in Jeruſalem. Et legit Baruch in libro 10
omnia verba Jeremiæ *prophetæ*, in domo ſanctuarii Dñi, in gazophylacio
Gamariæ filii Saphan ſcribæ, in atrio ſuperiori, in introitu portæ domus
ſanctuarii Dñi orientalis, coram omni populo. Et audivit Michæas filius 11
Gamariæ filii Saphan omnia verba Dñi ex libro : Et deſcendit in domum 12
regis, in gazophylacium ſcribæ, & ecce ibi omnes principes ſedebant,
Eliſama ſcriba, & Dalaias filius Semeiæ, & Elnathan fili⁹ Achbor, & Gamarias
filius Saphan, & Sedechias filius Ananiæ, & univerſi principes.
Et annuntiavit eis Michæas omnia verba quæ audivit, quando legebat Baruch 13
in libro coram populo. Et miſerunt omnes principes ad Baruch Judi 14
filium Nathaniæ, filii Selemiæ, filii Chuſi ; dicendo : Volumen in quo
legiſti coram populo, ſume in manu tua, & veni. Et tulit Baruch filius
Neriæ volumen in manu ſua, & venit ad eos. Et dixerunt ei, *Redi* nunc 15
& lege illud coram nobis : & legit Baruch coram eis. Et factum eſt, 16
cùm audiſſent omnia verba, obſtupuerunt unuſquiſque ad proximum
ſuum : & dixerunt ad Baruch, Annuntiando annuntiabimus regi omnes
ſermones iſtos.

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܘܦܩܕ ܐܪܡܝܐ ܠܒܪܘܟ ܒܪ ܢܪܝܐ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܐܢܐ ܟܠܐ ܐܢܐ. ܘܠܐ ܡܫܟܚ ܐܢܐ ܕܐܥܘܠ ܠܒܝܬܗ 5
ܕܡܪܝܐ. * ܥܘܠ ܐܢܬ ܘܩܪܝ ܒܡܓܠܬܐ ܕܟܬܒܬ ܡܢ ܦܘܡܝ. ܦܬܓܡܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܩܕܡ 6
ܥܡܐ. ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܒܝܘܡܐ ܕܨܘܡܐ. ܘܐܦ ܩܕܡ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܝܗܘܕܐ ܕܐܬܝܢ ܡܢ
ܡܕܝܢܬܗܘܢ ܬܩܪܐ ܐܢܘܢ. * ܕܠܡܐ ܬܬܩܒܠ ܒܥܘܬܗܘܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܢܬܘܒܘܢ ܐܢܫ ܡܢ ܐܘܪܚܗ 7
ܒܝܫܬܐ. ܘܢܬܘܒ ܡܪܝܐ ܡܢܗܘܢ ܟܠܗ ܒܝܫܬܐ ܕܐܡܪ ܠܡܥܒܕ ܠܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܪܒܐ ܗܘ ܪܘܓܙܐ
ܘܚܡܬܐ ܕܡܠܠ ܡܪܝܐ ܥܠ ܥܡܐ ܗܢܐ. * ܘܥܒܕ ܒܪܘܟ ܒܪ ܢܪܝܐ ܟܠ ܕܦܩܕܗ ܐܪܡܝܐ 8
ܢܒܝܐ. ܠܡܩܪܐ ܒܣܦܪܐ ܦܬܓܡܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܗܘܐ ܒܫܢܬܐ 9
ܚܡܫܝܬܐ ܕܝܘܝܩܝܡ ܒܪ ܝܘܫܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܒܝܪܚܐ ܬܫܝܥܝܐ. ܟܪܙܘ ܨܘܡܐ ܩܕܡ
ܡܪܝܐ. ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܒܐܘܪܫܠܡ. ܘܩܪܐ ܒܪܘܟ ܩܕܡ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܐܬܐ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ ܕܝܗܘܕܐ
ܠܐܘܪܫܠܡ. * ܘܩܪܐ ܒܪܘܟ ܣܦܪܐ. ܦܬܓܡܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܕܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ. ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. 10
ܒܐܣܛܘܐ ܕܓܡܪܝܐ ܒܪ ܫܦܢ ܣܦܪܐ. ܒܕܪܬܐ ܥܠܝܬܐ. ܒܡܥܠܢܐ ܕܬܪܥܐ ܚܕܬܐ ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ.
ܩܕܡ ܟܠܗ ܥܡܐ. * ܘܫܡܥ ܡܝܟܐ ܒܪ ܓܡܪܝܐ ܒܪ ܫܦܢ. ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܘܗܝ ܕܡܪܝܐ 11
ܡܢ ܣܦܪܐ. * ܘܢܚܬ ܡܢ ܒܝܬ ܡܠܟܐ ܠܐܣܛܘܐ ܕܣܦܪܐ. ܘܚܙܐ ܬܡܢ. ܟܠܗܘܢ ܪܘܪܒܢܐ 12
ܝܬܒܝܢ. ܠܐܠܝܫܡܥ ܣܦܪܐ. ܘܠܕܠܝܐ ܒܪ ܫܡܥܝܐ. ܘܠܐܠܢܬܢ ܒܪ ܥܟܒܘܪ. ܘܠܓܡܪܝܐ ܒܪ ܫܦܢ.
ܘܠܨܕܩܝܐ ܒܪ ܚܢܢܝܐ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܪܘܪܒܢܐ. * ܘܚܘܝ ܐܢܘܢ ܡܝܟܐ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܕܫܡܥ: 13
ܟܕ ܩܪܐ ܒܪܘܟ ܣܦܪܐ ܒܐܕܢܝܗܘܢ ܕܥܡܐ. * ܘܫܕܪܘ ܟܠܗܘܢ ܪܘܪܒܢܐ ܠܘܬ ܒܪܘܟ. ܠܝܗܘܕܝ 14
ܒܪ ܢܬܢܝܐ ܒܪ ܫܠܡܝܐ ܒܪ ܟܘܫܝ. ܘܐܡܪܘ ܠܗ. ܡܓܠܬܐ ܕܩܪܝܬ ܒܗ ܩܕܡ ܥܡܐ. ܣܒܝܗ
ܒܐܝܕܝܟ. ܘܬܐ. ܘܢܣܒ ܒܪܘܟ ܒܪ ܢܪܝܐ ܡܓܠܬܐ ܒܐܝܕܗ. ܘܐܬܐ ܠܘܬܗܘܢ. * ܘܐܡܪܘ ܠܗ 15
ܪܘܪܒܢܐ. ܬܒ. ܘܩܪܝܗ ܩܕܡܝܢ. ܘܩܪܐ ܒܪܘܟ ܩܕܡܝܗܘܢ. * ܘܟܕ ܫܡܥܘ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ. ܬܘܗܘ 16
ܚܕ ܥܠ ܚܒܪܗ. ܘܐܡܪܘ ܠܒܪܘܟ. ܡܚܘܝܘ ܢܚܘܐ ܠܡܠܟܐ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ.

Tum præcepit Jeremia Barucho Neriæ filio, 5
dixítque ad eum, ego detentus *carcere* non
poſſum ingredi domum Domini: Ingredere 6
tu, & lege in volumine quos me dictante ſcripſiſti ſermones Domini, præſente populo, in
domo Domini, die jejunii: atque etiam
præſente toto populo Judæo qui venient è
civitatibus ſuis, leges eos. Si fortè admittan- 7
tur preces eorum ante Dñm, & revertantur
quiſque à via ſua peſſima, avertátque Dñs ab
ipſis omnia mala quæ decrevit in ipſos: nam
magna eſt ira & excandeſcentia quâ locutus
eſt Dñs de populo iſto. Et fecit Baruch Ne- 8
riæ filius quicquid præceperat ipſi Jeremia
propheta, legendo in eo libro ſermones Do-
mini in domo Domini. Accidit enim anno 9
quinto Jojacimi filii Joſiæ regis Judæ, menſe
nono, ut jejunium indicerent coram Domino
totus populus qui erat Jeroſolymis, legerétq;
Baruch præſente univerſo populo qui de ci-
vitatibus Judæ venerant Jeroſoymam; Lege- 10
ret inquam, Baruch ſcriba ſermones Domini
quos locutus fuerat Jeremia, in domo Domi-
ni, in diverſoriis Gemariæ filii Saphanis ſcri-
bæ in atrio ſuperiore, in veſtibulo portæ re-
centioris domûs Domini, præſente toto po-
pulo. Cùm autem audîſſet Micha filius Ge- 11
mariæ filii Saphanis omnes Domini ſermo-
nes, ex eo libro; Deſcendit è domo regia in 12
diverſoria ſcribæ: & cùm ibi vidiſſet omnes
principes conſidentes, Eliſemaum ſcribam,
Delaiam Semaiæ filium, Elathanem Abcho-
ris filiũ, Gemariam filiũ Saphanis, Sedeciam
filium Hananiæ, & omnes principes; Et in- 13
dicâſſet eis Micha omnes ſermones quos au-
dierat, quum legeret Baruch ſcriba audiente
univerſo populo: Miſerunt omnes principes 14
ad Baruchum, Jehudium filiũ Nethaniæ filii
Selamiæ filii Chuſi, & dixerunt ad eum; Volu-
men illud in quo legiſti præſente populo tolle
manu tuâ, & veni. Quare Baruch Neriæ fili',
volumine manu ſuâ arrepto venit ad eos.
Tum dixerunt ad illum principes, Sede, & 15
illud recita corã nobis: recitavítque illud Ba-
ruch corã ipſis. Qui cùm audiviſſent ſermones 16
illos, obſtupuerunt alter cum altero, & dixe-
runt Barucho, Indicabimus regi omnes ſer-
mone iſtos.

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* اسالوا وانظروا ايلد الذكر ومن اجل الخوف الذي به يمسكون الحقو والمقعد * من 6
اجل اني رايت كل انسان ويداه على حقوه. عادت الوجوه وصارت لليرقان * لان ذلك اليوم 7
عظيم. وليس يوجد مثله. ويكون زمانا ضيقا ليعقوب. ومن هنا يخلص * في ذلك اليوم قال 8
الرب. اكسر النير من وجههم. واصرف رباطاتهم. ولن يعملوا هاولاء للغرباء * لكن يعملون 9
للرب الاههم. واقيم لهم داود ملكهم [*MS Ox. وانت لا خوف عليك يا يعقوب عبدي 10
يقول الرب. لا تنكسر يا اسراييل. لاني مخلصك من ارض بعيدة * وانقذ نسلك من ارض
سبيهم * ويسكن يعقوب مطمانا ويرقد ويستريح. ولا يكون له مودي * وانت لا خوف عليك يا 11
يعقوب عبدي يقول الرب. لاني معك. واني مخلصك يقول الرب. واجزم الهلاك على جميع
الشعوب التي فرقتك فيها. ولا اهلكك معهم. واودبك بالعدل. ولا انكبك] * هكذا قال 12
الرب * اقمت الكسر * ضربتك موجعة * وليس من يحكم حكمك * سقيت بالوجع * وليس 13
تكون لك منفعة * جميع اصحابك نسيوك ولا يسالون * لان ضربة العدو ضربتك * 14
للتاديب الشديد على كل ظلمك * كثرت خطاياك * على كثرة ظلمك كثرت * 15
خطاياك صنعت لك هذه * لاجل هذا جميع الذين ياكلونها يوكلون * وجميع اعدايك 16
ياكلون لحمهم * ويصير الذين ابعدوك للابعاد * وجميع الذين نهبوك ادفعهم للنهب *
* لاني ارفع شفاك من الضربة الوجيعة واشفيك قال الرب * لانك دعيت مبددة * والمصيدة 17
موجودة لكم * لان ليس من يطلبها * هكذا قال الرب * ها انا ارد جلوة اسرايل * وارحم 18
سبيه * ويبني مدينة على سورها * والشعب كحكمه ياكل * ويخرج منهم مسبحون وصوت 19
لاعبين * واكثرهم ولا ينقصون *

* *Percontamini & videte num pariat ma-* 6
ſculus: attamen præ terrore qui erit in eo,
tenebitis lumbum ac nates: nam vidi u-
numquenque manibus lumbo ſuo appoſitis,
immutatos vultus atque in auriginem
verſos. Dies enim ille magnus erit, nec 7
invenietur ſimilis ei, eritque tempus cala-
mitoſum Jacobo; ex his tamen ſervabi-
tur. Die illo, dixit Dominus, conteram 8
jugum à facie eorum, & rumpam vincu-
la eorum: & nullo modo operabuntur iſti
alienis, Sed operabuntur Domino Deo 9
ſuo: & ſuſcitabo eis Davidem regem eo-
rum. [MS. Oxon. *Tu ergò ne timeto* 10
ſerve mi Jacob dicit Dominus, neque
conſternator O Iſrael: quoniam ego libero
te è terra longinqua; et redimam ſemen
tuum è terra captivitatis ſuæ; & habi-
tabit Jacob ſecurus, & commorabitur,
& quieſcet, nec quiſquam erit qui vocue-
rit ei. Proinde tu ne timeto Jacob ſer- 11
ve, mi dicit Dominus, quia tecum ego
ſum, & ego liberaturus ſum te, dicit Do-
minus: exitio autem dare decrevi omnes
gentes quò te diſperſero, veruntamen cum
illis te minimè diſperdam, ſed caſtigatu-
rus ſum te modicè, at non dimittam te.]
Sic dixit Dominus, Suſcitavi contritio- 12
nem: plaga tua dolore plena eſt; Nec 13
eſt qui cauſam tuam tueatur: curata es
in dolore, ſed nulla tibi fuit utilitas:
(Omnes amici tui obliti ſunt tui, nec in- 14
terrogant de te) *quia percuſſio inimici eſt*
plaga tua, ob duram animadverſionem in
omne ſcelus tuum: plurima ſunt peccata
tua: Pro multitudine ſcelerum tuorum 15
multiplicata eſt animadverſio, *peccata tua*
hæc tibi fecerunt. Idcircò omnes qui 16
comederunt eam, devorabuntur, & omnes
inimici tui comedent carnem ſuam: qui
te procul expulerunt, erunt in expulſio-
nem; & omnes qui te diripuerunt, dabo
in direptionem. Nam eliciam curatio- 17
nem tuam è plaga dolore plena, & cura-
bo te, dixit Dominus; quia vocata es Di-
ſperſa: & rete præſtò vobis eſt: quia non
eſt qui requirat eam. Sic ait Dominus, 18
Ecce ego reducam tranſmigrationem Iſ-
raelis, & miſerebor captivitatis ejus: &
reædificabitur urbs ſuper murum ſuum,
& populus juxta morem ſuum comedet:
Et egredientur ex eis canentes, & vox 19
ludentium: & multiplicabo eos, & non
minuentur:

ירמיה : לו

quomodo nobis nunc Nuntia : dicendo ,interrogaverunt Baruch Et
17 וְאֶת־בָּרוּךְ שָׁאֲלוּ לֵאמֹר הַגֶּד־נָא לָנוּ אֵיךְ
: Baruch eis dixit Et .ejus ore ex hæc verba omnia scripsisti
18 כָּתַבְתָּ אֶת־כָּל־הַדְּבָרִים הָאֵלֶּה מִפִּיו׃ וַיֹּאמֶר לָהֶם בָּרוּךְ
super scribens ego & , hæc verba omnia *me ad* legebat suo ore Ex
מִפִּיו יִקְרָא אֵלַי אֵת כָּל־הַדְּבָרִים הָאֵלֶּה וַאֲנִי כֹּתֵב עַל־
, tu te absconde, Vade, Baruch ad principes dixerunt Et .atramēto *in* libro
19 הַסֵּפֶר בַּדְּיוֹ׃ וַיֹּאמְרוּ הַשָּׂרִים אֶל־בָּרוּךְ לֵךְ הִסָּתֵר אַתָּה
regem ad sunt ingressi Et .*vos* ubi sciat *non vir* & ,Irmejahu &
20 וְיִרְמְיָהוּ וְאִישׁ אַל־יֵדַע אֵיפֹה אַתֶּם׃ וַיָּבֹאוּ אֶל־הַמֶּלֶךְ
.scribæ Elisamah cubiculo in commendaverūt volumen & : atrium in
חָצֵרָה וְאֶת־הַמְּגִלָּה הִפְקִדוּ בְּלִשְׁכַּת אֱלִישָׁמָע הַסֹּפֵר
rex misit Et .verba omnia regis aurib' in nuntiaverūt Et
21 וַיַּגִּידוּ בְּאָזְנֵי הַמֶּלֶךְ אֵת כָּל־הַדְּבָרִים׃ וַיִּשְׁלַח הַמֶּלֶךְ
Elisamah cubiculo de illud tulit &:volumen *capiendum ad* Jehudi
אֶת־יְהוּדִי לָקַחַת אֶת־הַמְּגִלָּה וַיִּקָּחֶהָ מִלִּשְׁכַּת אֱלִישָׁמָע
omnium auribus in & , regis auribus in Jehudi *illud* legit & ; scribæ
הַסֹּפֵר וַיִּקְרָאֶהָ יְהוּדִי בְּאָזְנֵי הַמֶּלֶךְ וּבְאָזְנֵי כָּל־
domo *sedens* rex Et .regem *desuper stantium* , principum
22 הַשָּׂרִים הָעֹמְדִים מֵעַל הַמֶּלֶךְ׃ וְהַמֶּלֶךְ יוֹשֵׁב בֵּית
fuit Et .*accensus ejus facies ad rogus* & , nono mense in , *hyemis*
23 הַחֹרֶף בַּחֹדֶשׁ הַתְּשִׁיעִי וְאֶת־הָאָח לְפָנָיו מְבֹעָרֶת׃ וַיְהִי
illud scidit ,quatuor & , pagellas tres Jehudi *legere secundùm*
כִּקְרוֹא יְהוּדִי שָׁלֹשׁ דְּלָתוֹת וְאַרְבָּעָה יִקְרָעֶהָ
ad usque , *rogo* in qui , ignem in *projicere* & , scribæ *scalpello in*
בְּתַעַר הַסֹּפֵר וְהַשְׁלֵךְ אֶל־הָאֵשׁ אֲשֶׁר אֶל־הָאָח עַד־
non Et .*rogum super* qui ,ignem super volumen omne *consumi*
24 תֹּם כָּל־הַמְּגִלָּה עַל־הָאֵשׁ אֲשֶׁר עַל־הָאָח׃ וְלֹא
, ejus servi omnes & , rex , sua vestimenta sciderunt nec , timuerunt
פָחֲדוּ וְלֹא קָרְעוּ אֶת־בִּגְדֵיהֶם הַמֶּלֶךְ וְכָל־עֲבָדָיו
, Elnathan etiam Et .ista verba omnia *audientes*
25 הַשֹּׁמְעִים אֵת כָּל־הַדְּבָרִים הָאֵלֶּה׃ וְגַם אֶלְנָתָן
comburendum non ad , regem *apud intercesserunt* Ghemarjahu & ,Delajahu &
וּדְלָיָהוּ וּגְמַרְיָהוּ הִפְגִּעוּ בַמֶּלֶךְ לְבִלְתִּי שְׂרֹף
rex præcepit Et .eos *ad* audivit non & : volumen
26 אֶת־הַמְּגִלָּה וְלֹא שָׁמַע אֲלֵיהֶם׃ וַיְצַוֶּה הַמֶּלֶךְ
& , Hazriel filio Serajahu & , Melech filio Jerachmeel
אֶת־יְרַחְמְאֵל בֶּן־הַמֶּלֶךְ וְאֶת־שְׂרָיָהוּ בֶן־עַזְרִיאֵל וְאֶת־
& , scribam Baruch *capiendum ad* , Habdeel filio Selemjahu
שֶׁלֶמְיָהוּ בֶּן־עַבְדְּאֵל לָקַחַת אֶת־בָּרוּךְ הַסֹּפֵר וְאֵת
verbum fuit Et .Dominus eos abscondit & : prophetam Irmejahu
27 יִרְמְיָהוּ הַנָּבִיא וַיַּסְתִּרֵם יְהוָה׃ וַיְהִי דְבַר־
,volumen *regem combussisse post* , Irmejahu ad Domini
יְהוָה אֶל־יִרְמְיָהוּ אַחֲרֵי שְׂרֹף הַמֶּלֶךְ אֶת־הַמְּגִלָּה
: dicendo Irmejahu ore ex Baruch scripserat quæ verba &
וְאֶת־הַדְּבָרִים אֲשֶׁר כָּתַב בָּרוּךְ מִפִּי יִרְמְיָהוּ לֵאמֹר׃
omnia eo *super* scribe & ,alterum volumen tibi tolle,Revertere
28 שׁוּב קַח־לְךָ מְגִלָּה אַחֶרֶת וּכְתֹב עָלֶיהָ אֵת כָּל־
,priori volumine *super* erant quæ , priora verba
הַדְּבָרִים הָרִאשֹׁנִים אֲשֶׁר הָיוּ עַל־הַמְּגִלָּה הָרִאשֹׁנָה
Jehojachim *super* Et .Jehudah rex Jehojachim combussit quod
29 אֲשֶׁר שָׂרַף יְהוֹיָקִים מֶלֶךְ־יְהוּדָה׃ וְעַל־יְהוֹיָקִים
combussisti Tu : Dominus dixit Sic : dices Jehudah regem
מֶלֶךְ־יְהוּדָה תֹּאמַר כֹּה אָמַר יְהוָה אַתָּה שָׂרַפְתָּ
: dicendo eo *super* scripsisti Quare : dicendo , istud volumen
אֶת־הַמְּגִלָּה הַזֹּאת לֵאמֹר מַדּוּעַ כָּתַבְתָּ עָלֶיהָ לֵאמֹר
, hanc terram *corrumpet* & , Babel rex veniet Veniendo
בֹּא־יָבוֹא מֶלֶךְ־בָּבֶל וְהִשְׁחִית אֶת־הָאָרֶץ הַזֹּאת
.*animal & hominem* ea ex faciet cessare &
וְהִשְׁבִּית מִמֶּנָּה אָדָם וּבְהֵמָה׃

Versio VULG. LAT.

17 Et interrogaverunt eum, dicentes; Indica nobis quomodò scripsisti omnes sermones istos ex ore 18 ejus. Dixit autem eis Baruch; Ex ore suo loquebatur quasi legens ad me omnes sermones istos: & ego scribebam in vo- 19 lumine atramento. Et dixerunt principes ad Baruch; Vade, & abscondere tu & Jeremias, & ne- 20 mo sciat ubi sitis. Et ingressi sunt ad regem in atrium: porrò volumen commendaverunt in gazophylacio Elisamæ scribæ: & nuntiaverunt audiente rege 21 omnes sermones. Misitque rex Judi ut sumeret volumen: qui tollens illud de gazophylacio Elisamæ scribæ, legit audiente rege, & universis principibus 22 qui stabant circa regem. Rex autem sedebat in domo hyemali in mense nono: & posita erat arula coram eo plena prunis. 23 Cumque legisset Judi tres pagellas vel quatuor, scidit illud scalpello scribæ, & projecit in ignē, qui erat super arulam, donec consumeretur omne volumen i- 24 gni, qui erat in arula. Et non timuerunt, neque sciderunt vestimenta sua, rex & omnes servi ejus, qui audierunt universos 25 sermones istos. Veruntamen Elnathan, & Dalaias, & Gamarias, contradixerunt regi ne combureret librum: & non audivit eos. 26 Et præcepit rex Jeremiel filio Amelech, & Saraiæ filio Ezriel, & Selemiæ filio Abdeel, ut comprehenderent Baruch scribam, & Jeremiam prophetam: abscon- 27 dit autem eos Dominus. Et factum est verbum Domini ad Jeremiam prophetam, postquàm combusserat rex volumen, & sermones quos scripserat Baruch 28 ex ore Jeremiæ, dicens; Rursùm tolle volumen aliud: & scribe in eo omnes sermones priores, qui erant in primo volumine, quod combussit Joakim rex 29 Juda. Et ad Joakim regem Juda dices; Hæc dicit Dominus; Tu combussisti volumen illud, dicens; Quarè scripsisti in eo annuntians; Festinus veniet rex Babylonis, & vastabit terram hanc, & cessare faciet ex illa hominem, & jumentum?

Versio GRÆC. LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

20 Καὶ εἰσελεύσονται οἱ υἱοὶ (σ) αὐτῶν ὡς τὸ πρότερον, καὶ τὰ μαρτύρια αὐτῶν (τ) κατὰ πρόσωπόν μου ὀρθωθήσεται. καὶ ἐπισκέψομαι τοὺς θλίβοντας αὐτούς, 21 Καὶ ἔσονται ἰσχυρότεροι (υ) αὐτοῦ ἐπ᾽ αὐτούς, καὶ ὁ ἄρχων αὐτοῦ ἐξ αὐτοῦ ἐξελεύσεται. καὶ συνάξω αὐτούς, καὶ ἀποστρέψουσι πρός με· ὅτι τίς ἐστιν οὗτος ὃς ἔδωκε τὴν καρδίαν αὐτοῦ, (φ) 23 ἀποστρέψαι πρός με; φησὶ κύριος. Ὅτι ὀργὴ κυρίου ἐξῆλθε θυμώδης, ἐξῆλθεν 24 ὀργὴ στρεφομένη, ἐπ᾽ ἀσεβεῖς ἥξει. Οὐ μὴ ἀποστραφῇ ὀργὴ θυμοῦ κυρίου, ἕως (χ) ποιήσει, καὶ ἕως καταστήσῃ ἐγχείρημα καρδίας αὐτοῦ, ἐπ᾽ (ψ) ἐσχάτων τῶν ἡμερῶν γνώσεσθε αὐτά.

20 Et ingredientur filii eorum, ut anteà: & (o) testimonia eorum ante faciem meam dirigentur. Et visitabo tribulantes eos: 21 Et erunt fortiores (p) ejus super eos: & princeps ejus ex ipso egredietur. Et congregabo eos, & revertentur ad me: quoniam quis est iste, qui dedit cor suum reverti ad me? dicit Dominus. 23 Quoniam ira Domini egressa est furoris plena: egressa est ira ruens, super impios veniet. 24 Non avertetur ira furoris Domini; donec faciet, & donec constituet inceptum cordis sui. In novissimis diebus cognoscetis ea.

MS.A. (σ) αὐτοῦ (τ) ὡς τὸ ἀπ᾽ ἀρχῆς κατὰ (υ) αὐτῶν (φ) ἐπιστρέψαι (χ) ποιήσῃ, (ψ) ἐσχάτου

Cap. 31. Vulg. Lat.

ΚΕΦ. λη´.

1 ΕΝ τῷ χρόνῳ ἐκείνῳ, εἶπε κύριος, (α) ἔσομαι εἰς θεὸν τῷ γένει Ἰσραήλ, (β) καὶ αὐτοὶ ἔσονταί μοι εἰς λαόν. 2 Οὕτως εἶπε κύριος, Εὗρον θερμὸν ἐν ἐρήμῳ μετὰ ὀλωλότων ἐν (γ) μαχαίρᾳ. 3 βαδίσατε, καὶ μὴ ὀλέσητε τὸν Ἰσραήλ, Κύριος πόρρωθεν (δ) ὤφθη αὐτῷ. ἀγάπησιν (ε) αἰώνιον ἠγάπησά σε· διὰ τοῦτο εἵλκυσά σε 4 εἰς οἰκτείρημα. (ε) Ὅτι οἰκοδομήσω σε, καὶ οἰκοδομηθήσῃ παρθένος Ἰσραήλ· ἔτι λήψῃ τύμπανόν σου, καὶ ἐξελεύσῃ μετὰ συναγωγῆς 5 παιζόντων. (ζ) Ὅτι ἐφυτεύσατε ἀμπελῶνας ἐν ὄρεσι Σαμαρείας, (η) φυ- 6 τεύσατε καὶ αἰνέσατε, Ὅτι ἐστὶν ἡμέρα κλήσεως ἀπολογουμένων ἐν ὄρεσιν Ἐφραίμ, Ἀνάστητε, καὶ ἀνάβητε εἰς Σιὼν 7 (θ) πρὸς κύριον τὸν θεὸν ὑμῶν. Ὅτι οὕτως εἶπε κύριος τῷ Ἰακώβ, Εὐφράνθητε, καὶ χρεμετίσατε ἐπὶ (ι) κεφαλὴν ἐθνῶν· ἀκουστὰ ποιήσατε, καὶ αἰνέσατε· εἴπατε, Ἔσωσε κύριος τὸν λαὸν αὐτοῦ, τὸ κατάλοιπον 8 τοῦ Ἰσραήλ. Ἰδοὺ ἐγὼ ἄγω αὐτοὺς ἀπὸ βορρᾶ, καὶ συνάξω αὐτοὺς (˝) ἀπ᾽ ἐσχάτου τῆς γῆς ἐν ἑορτῇ φασέκ· καὶ (˝) τεκνοποιήσει ὄχλον 9 πολύν, καὶ ἀποστρέψουσιν ὧδε. Ἐν κλαυθμῷ ἐξῆλθον, καὶ ἐν παρακλήσει ἀνάξω αὐτούς, αὐλίζων ἐπὶ (˙) διώρυγας ὑδάτων ἐν ὁδῷ ὀρθῇ, καὶ οὐ μὴ πλανηθῶσιν ἐν αὐτῇ· ὅτι ἐγενόμην τῷ Ἰσραὴλ εἰς πατέρα, καὶ Ἐ- 10 φραὶμ πρωτότοκός μου ἐστίν. Ἀκούσατε λόγους κυρίου ἔθνη, καὶ ἀναγγείλατε εἰς νήσους τὰς (κ) μακρόθεν· εἴπατε, Ὁ λικμήσας τὸν Ἰσραὴλ (λ) καὶ συνάξει αὐτόν, καὶ φυλάξει αὐτόν, ὡς ὁ βόσκων ποίμνιον αὐτοῦ.

CAP. XXXVIII.

1 IN (a) tempore illo, dixit Dominus, ero in Deum generi Israel: & ipsi erunt mihi in populum. 2 Sic dixit Dominus; Inveni (b) calidum in deserto cum iis, qui perierant gladio. Ite, & nolite 3 interficere Israel: Dominus de longè (c) apparuit ei. Dilectione perpetuâ dilexi te: ideò attraxi 4 te in miseratione. (d) Quoniam ædificabo te, & ædificaberis, virgo (e) Israel: adhuc assumes tympanum tuum; & egredieris cum synagoga ludentium. (f) 5 Quia plantâstis vineas in montibus Samariæ; plantate, & laudate: 6 Quia est dies vocationis respondentium in montibus Ephræm; Surgite, & ascendite in Sion ad Dominum Deum (g) 7 vestrum. Quia sic dixit Dominus ad Jacob; Lætamini, et hinnite super caput gentium: audita facite, et laudate: dicite; Salvavit Dominus populum suum, re- 8 siduum Israel. Ecce ego adduco eos ab Aquilone: et congregabo eos ab extremo terræ in (h) solennitate Phasec. Et generabit filiorum turbam multam, et rever- 9 tentur huc. In ploratu exierunt: et in consolatione adducam eos, divertere faciens super fossas aquarum in via recta: et non errabunt in ea. Quoniam factus sum Israeli in patrem: et Ephræm primogenitus meus est. 10 Audite verba Domini, gentes: et annuntiate in insulas longinquas: dicite; Qui ventilabit Israel, et congregabit eum, et custodiet eum, quasi pastor gregem suum.

MS.A. (α) καὶ ἔσομαι (β) καὶ ἔσονταί (γ) μαχαίρῃ. (δ) ὠφθήσεται (ε) αἰωνίαν (ε) Ἔτι (ζ) Ἐπι φυτεύσατε (η) φύσαντες φυτεύσατε (θ) ἐν ὄρεσιν κυρίου θεοῦ ὑμῶν. (ι) κεφαλῆς (˝) ἐπ᾽ (˝) τεκνοποιήσῃ (˙) διορυγὰς (κ) μακράν· (λ) συνάξει

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

17 וית ברוך שאילו למימר חוי כען לנא איכדין כתבתא ית כל פתגמיא האלין מפומיה׃
18 ואמר להון ברוך מפומיה קרי לי ית כל פתגמיא האלין ואנא כתיב על ספרא בדיותא׃
19 ואמרו רברביא לברוך איזיל אטמר את וירמיה ואנש לא ידע איכא אתון׃ ואתו לות
20 מלכא לדרתא וית מגלתא פקידו בלשכת אלישמע ספרא וחויאו קדם מלכא ית כל
21 פתגמיא׃ ושלח מלכא ית יהודי למסב ית מגלתא ונסבה מלשכת אלישמע ספרא
22 וקרהא יהודי קדם מלכא וקדם כל רברביא דקימין מעלוי מלכא׃ ומלכא יתיב בית
23 סתוא בירחא תשיעיתא וית נורא קדמוהי מדלקין׃ והוה כד קרי יהודי תלת פצין
וארבע בזע באזמל ספרא ורמי לנורא דלגומרי עד דשלימת כל מגלתא על נורא
24 דעל גומרי׃ ולא תוהו ולא בזעו ית לבושיהון מלכא וכל עבדוהי דשמעין ית כל
25 פתגמיא האלין׃ ואף אלנתן ודליה וגמריה בעו מן מלכא בדיל דלא לאוקדא ית
26 מגלתא ולא קביל מנהון׃ ופקיד מלכא ית ירחמאל בר מלכא וית שריה בר עזריאל
וית שלמיה בר עבדאל למדבר ית ברוך ספרא וית ירמיה נביא ואגין עליהון יי׃
27 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עם ירמיה בתר דאוקיד מלכא ית מגלתא וית פתגמיא
28 דכתב ברוך מפומא דירמיה למימר׃ תוב סב לך מגלתא אוחרי וכתוב עלה ית
כל פתגמיא קדמאי דהוו על מגלתא קדמיתא דאוקיד יהויקים מלך שבטא דבית
29 יהודה׃ ועל יהויקים מלך שבטא דבית יהודה תימר כדנן אמר יי את אוקדתא ית
מגלתא הדא למימר מא דין כתבתא עלה למימר מיתי יתי מלכא דבבל ויחבל ית
ארעא הדא ויבטל מנה אנשא ובעירא׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

17 Et Baruch interrogaverunt; dicentes: Indica nunc nobis, quomodo scri- 18 psisti omnes sermones istos ex ore ejus? Et dixit eis Baruch, Ex ore suo legebat mihi omnia verba hæc, & ego scribebam in volumine atramento. 19 Et dixerunt principes ad Baruch, Vade, abscondere tu & Jeremias, & ne- 20 mo sciat ubi sitis. Et venerunt ad regem in atrium, & volumen commendaverunt in gazophylacio Elisamæ scribæ, & nuntiaverunt coram rege 21 omnes sermones. Misitque rex Judi ut sumeret volumen: & tulit illud de gazophylacio Elisamæ scribæ, & legit Judi coram rege, & coram omni- 22 bus principibus qui stabant circa regem. Et rex sedebat in domo hyemali 23 in mense nono, & ignis erat succensus coram eo. Factum est autem cùm legisset Judi tres paginas aut quatuor, scidit illud scalpello scribæ, & projecit in ignem ex carbonibus; donec totum volumen super ignem ex car- 24 bonibus absumeretur. Et non obstupuerunt nec sciderunt vestimenta sua 25 rex & omnes servi ejus, qui audierunt omnes sermones istos. Et etiam Elnathan, & Dalaias & Gamarias rogaverunt regem ut non combureret vo- 26 lumen: & non acquievit eis. Et præcepit rex Hierameel filio regis, & Saraiæ filio Azriel, & Selemiæ filio Abdeel ut caperent Baruch scribam, & 27 Jeremiam prophetam; & protexit eos Dominus. Et factum est verbum prophetiæ ad Jeremiam, postquam combussit rex volumen & sermones 28 quos scripserat Baruch ex ore Jeremiæ; dicens: Rursum tolle tibi volumen aliud, et scribe in eo omnes sermones priores, qui erant in volumine 29 primo quod combussit Joachim rex tribus domus Juda. Et ad Joachim regem tribus domus Juda dices: Hæc dicit Dominus, Tu combussisti volumen istud; dicens: Quare scripsisti in eo, dicens, Veniendo veniet rex Babylonis, et disperdet terram hanc, et disperdet ex ea hominem et jumentum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

17 * ܘܠܒܪܘܟ ܫܐܠܘܗܝ. ܘܐܡܪܘ ܠܗ. ܚܘܝܢ ܐܝܟܢܐ ܟܬܒܬ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ ܡܢ
18 ܦܘܡܗ. * ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ ܒܪܘܟ. ܡܢ ܦܘܡܗ ܐܡܪ ܗܘܐ ܠܝ ܐܪܡܝܐ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ
19 ܗܠܝܢ. ܘܐܢܐ ܟܬܒ ܗܘܝܬ ܥܠ ܟܪܛܝܣܐ ܒܕܝܘܬܐ. * ܘܐܡܪܘ ܪܘܪܒܢܐ ܠܒܪܘܟ. ܙܠ ܐܬܛܫܐ ܐܢܬ
20 ܘܐܪܡܝܐ. ܘܐܢܫ ܠܐ ܢܕܥ ܐܝܟܐ ܐܢܬܘܢ. * ܘܥܠܘ ܠܘܬ ܡܠܟܐ ܠܕܪܬܐ. ܘܟܪܟܐ ܣܡܘܗܝ
ܒܣܛܘܢܐ ܕܐܠܝܫܡܥ ܣܦܪܐ. ܘܚܘܝܘ ܩܕܡ ܡܠܟܐ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ. * ܘܫܕܪ
21 ܡܠܟܐ ܠܝܗܘܕܝ ܕܢܝܬܝܘܗܝ ܠܟܪܟܐ. ܘܢܣܒܗ ܡܢ ܒܣܛܘܢܐ ܕܐܠܝܫܡܥ ܣܦܪܐ. ܘܩܪܝܗ
22 ܝܗܘܕܝ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. ܘܩܕܡ ܟܠܗܘܢ ܪܘܪܒܢܐ ܕܩܝܡܝܢ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. * ܘܡܠܟܐ ܝܬܒ
23 ܗܘܐ ܒܒܝܬ ܣܬܘܐ ܒܝܪܚܐ ܕܬܫܥܐ. ܘܢܘܪܐ ܣܝܡܝܢ ܗܘܘ ܩܕܡܘܗܝ. * ܘܟܕ ܩܪܐ ܝܗܘܕܝ ܬܠܬ
ܦܬܓܡܝܢ ܐܘ ܐܪܒܥܐ. ܦܪܬܗ ܒܓܠܘܦܐ ܕܣܦܪܐ. ܘܫܕܝܗ ܒܓܘܡܪܐ ܕܢܘܪܐ. ܘܝܩܕ ܟܠܗ ܟܪܟܐ
24 ܒܢܘܪܐ ܕܥܠ ܟܢܘܢܐ. * ܘܠܐ ܕܚܠܘ ܘܠܐ ܨܪܘ ܡܐܢܝܗܘܢ. ܡܠܟܐ ܘܥܒܕܘܗܝ ܟܠܗܘܢ.
25 ܟܕ ܫܡܥܘ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ. * ܘܐܦ ܐܠܝܬܢ ܘܓܡܪܝܐ ܘܕܠܝܐ. ܒܥܘ ܡܢ
26 ܡܠܟܐ. ܕܠܐ ܢܘܩܕܝܘܗܝ ܠܟܪܟܐ ܒܢܘܪܐ. ܘܠܐ ܫܡܥ ܠܗܘܢ. * ܘܦܩܕ ܡܠܟܐ ܠܝܪܚܡܐܝܠ
ܒܪ ܡܠܟܐ. ܘܠܣܪܝܐ ܒܪ ܥܙܪܐܝܠ. ܘܠܫܠܡܝܐ ܒܪ ܥܒܕܐܝܠ. ܠܡܐܚܕ ܠܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ
27 ܘܠܒܪܘܟ ܣܦܪܐ. ܘܛܫܐ ܐܢܘܢ ܡܪܝܐ. * ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ.
ܡܢ ܒܬܪ ܕܐܘܩܕ ܡܠܟܐ ܠܟܪܟܐ. ܘܦܬܓܡܐ ܕܟܬܒ ܒܪܘܟ ܡܢ ܦܘܡܗ
28 ܕܐܪܡܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܬܘܒ ܣܒ ܠܟ ܟܪܟܐ ܐܚܪܢܐ. ܘܟܬܘܒ ܒܗ ܟܠܗܘܢ
ܦܬܓܡܐ ܩܕܡܝܐ. ܕܗܘܘ ܒܟܪܟܐ ܕܐܘܩܕ ܝܗܘܝܩܝܡ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ
29 ܒܢܘܪܐ. * ܘܠܝܗܘܝܩܝܡ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܬܐܡܪ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܢܬ ܐܘܩܕܬ
ܟܪܟܐ ܗܢܐ ܘܐܡܪܬ. ܡܛܠ ܡܢܐ ܟܬܒܬ ܒܗ. ܕܢܐܬܐ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ
ܘܢܚܪܒܝܘܗ ܠܐܪܥܐ ܗܕܐ. ܘܢܒܛܠ ܡܢܗ ܒܢܝ ܐܢܫܐ ܘܒܥܝܪܐ.

* Baruchum autem rogaverunt, & dixerunt 17
ei, Indica nobis quomodo ſcripſeris omnes
ſermones iſtos eo dictante. Quibus ait Baruch, 18
Ore ſuo pronuntiabat mihi Jeremia
omnes ſermones iſtos, & ego atramento ſcribebam
in libro. Dixerunt principes Barucho, 19
Vade; & abdere tu & Jeremia, &
nemo ſciat ubi ſitis. Tum venerunt ad regem 20
in atrium, depoſito volumine in diverſorio
Eliſemai ſcribæ, & indicaverunt
regi omnes ſermones illos. Miſit ergò rex 21
Jehudium ut afferret volumen, qui arreptum
è diverſorio Eliſemai ſcribæ, legit illud Jehudius
coram rege & coram cunctis principibus
qui aſtabant regi. (Rex autem ſedebat 22
in domo hyberna menſe nono, ignémq;
ponebant ante ipſum) Cúmque legiſſet Jehudius 23
tres aut quatuor periodos, laceravit
illud ſcalpro librario, & projecit in carbones
ignis, ita ut totum volumen arderet igne
qui foco ſuperpoſitus erat. Nec interim 24
horruerunt, neque veſtimenta ſua ſciderunt
rex & omnes ſervi ejus, omnibus ejuſmodi
ſermonibus auditis. Quin etiam Eliathane, 25
& Gemaria, atque Delaia regem precantibus,
ne volumen illud igne combureret, non
acquievit eis: Imò præcepit rex Jerahmeeli 26
filio regis, & Seriæ filio Azrielis, & Selamiæ
filio Abdielis, ut apprehenderent Jeremiam
prophetam & Baruchum ſcribam; ſed
abſcondit eos Dominus. Fuit autem ſermo 27
Domini ad Jeremiam prophetam, (poſtquam
exuſſiſſet rex volumen & ſermones quos ſcripſerat
Baruch dictante Jeremiâ) dicendo;
Iterum ſume tibi volumen alterum, & ſcribe 28
in eo omnes ſermones priores qui erant in
volumine quod Jojacim rex Judæ igne combuſſit.
Ad Jojacim autem regem Judæ dices, 29
Sic ait Dominus, Tu volumen iſtud
exuſſiſti, & dixiſti, Quare ſcripſiſti in eo
venturum regem Babyloniæ, & terram iſtam
vaſtaturum, & aboliturum ab ea homines
ac jumenta?

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

20 * ولا يخرج بنوهم مثل الاول * وشهاداتهم لوجهي تستقيم * واتعهد محزنيهم * ويصيرون اقوى
21 منهم عليهم * ورييسه منه يخرج * واجمعهم * ولا يرجعون الي * لان من هو هذا الذي اعطي
22 23 قلبه الي قال الرب [.MS.Oxon * ويصيرون لي شعبا * وانا اكون لهم الها *] * لان رجز الرب
24 خرج * مسخط خرج * رجز مرجع ملتف على المنافقين ياتي * لا يرتد رجز غضب الرب * حتي
يفعل وحتي يقيم هوي قلبه * في الايام الاخرين تعرفوها *

1 * الفصل الثامن والثلثون * * في ذلك الزمان قال الرب * اكون لجنس اسرايل
* الاصحاح الرابع والعشرون * الها * وهم يكونون لي شعبا *

2 3 * هكذا قال الرب * وجدت حارا في القفر * ضالين بسيف تذهبون * وليس هكذا * الرب
4 من بعيد يظهر له * احببتك محبة ابدية * لاجل هذا اجتذبتك للرافة * لاني ابنيك
5 وتبنين يا عذري اسرايل * تاخذي دفك ايضا وتخرجين مع جمع اللاعبين * لاني غرست
6 كروما في جبال سامرن * اغرسوا وسبحوا * لانه يوم حكم المجاوبين في جبل افرام * قوموا
7 واصعدوا الي صهيون الي الرب الهنا * لان هكذا قال الرب ليعقوب * افرحوا واصهلوا
8 على راس الامم * اصمعوا مسمعات وسبحوا * قولوا خلص الرب شعبه بقية اسرايل * ها
انا اسوقهم من الجربياء * واجمعهم من اخر الارض في عيد الفصح * واجعل البنين جمعا
9 كثيرا * ويعودون الي هاهنا * ببكاء خرجوا وبتعزية ساجلبهم * ادبرهم على خلجان المياه
10 في ارض مستقيمة * فلا يضلون فيها * لاني صرت لاسرايل ابا * وافرام هو بكري * اسمعوا
اقوال الرب ايها الامم * واخبروا في الجزاير البعيدة * قولوا الذي غربل اسرايل يجمعه ويحرسه
مثل راعي قطيعه *

* *Et non egredientur filii eorum ut antea:* 20
*et teſtimonia eorum ad conſpectum meum
dirigentur: & viſitabo affligentes eos, &
erunt fortiores eis contra ipſos: Et princeps* 21
*ejus ex ipſo prodibit, & congregabo
eos. Attamen non convertentur ad me; nam
quis eſt ille qui dedidit mihi cor ſuum, dixit Dominus?* [MS. Oxon. *Et illi erunt* 22
mihi populus, & ego ero illis Deus.] *Nam* 23
*ira Domini prodivit, indignabunda prodivit,
ira retorta convoluta ſuper impios
veniet. Non avertetur ira furoris Domini,* 24
*donec exequatur, & donec præſtet
voluntatem cordis ejus. Poſtremis diebus
hæc ſcietis.*

CAP. XXXVIII.

IN illo tempore, ait Dominus, ero generi 1
Iſraelitico Deus, & ipſi erunt mihi populus.

Textus vigeſimus quartus.

Sic dixit Dominus, Inveni calidum in de- 2
*ſerto: errantes gladio peribetis? non ita.
Dominus à longè apparebit ei. Dilexi te* 3
*dilectione perpetuâ, ideò attraxi te ad clementiam.
Nam ædificabo te, & ædifica-* 4
*beris O virgo Iſraelis: ſumes adhuc tympanum
tuum, & prodibis cum turba ludentium.
Quia vineas plantavi in mon-* 5
tibus Samariæ, plantate & canite: Quia 6
*dies eſt judicii reſpondentium in monte
Aphremi, ſurgite & aſcendite in Sionem
ad Dominum Deum noſtrum. Sic enim* 7
*dixit Dominus Jacobo; Lætamini, & hinnite
ſuper caput gentium, res celebres facite,
& laudate: dicite, Servavit Dominus
populum ſuum, reliquias Iſraelis.
En ego adducam eos ex Aquilone,* 8
*& colligam eos ab extremo terræ in feſto
Paſchatis: filios reddam turbam plurimam,
& revertentur huc. Cum fletu* 9
*exierunt, ſed cum conſolatione reducam
eos: regam eos ſuper canales aquarum
per terram planam, in qua non aberrabunt:
factus enim ſum Iſraeli pater, &
Aphrem eſt primogenitus meus. Audite* 10
*ſermones Domini O gentes, & annuntiate
in inſulis remotis: dicite, Qui cribravit
Iſraelem, colliget eum, & cuſtodiet
eum ut paſtor gregem ſuum.*

ירמיה : לז

Non : Jehudah regem Jehojachim *ſuper* Dominus dixit ſic Propterea
30 לָכֵן כֹּה־אָמַר יְהוָה עַל־יְהוֹיָקִים מֶלֶךְ־יְהוּדָה לֹא־
projectum erit ejus cadaver & :David ſolio ſuper ſedens ei erit
יִהְיֶה־לּוֹ יוֹשֵׁב עַל־כִּסֵּא דָוִד וְנִבְלָתוֹ תִּהְיֶה מֻשְׁלֶכֶת
,ejᵒ ſemē *ſuper* & ,eū ſup viſitabo Et .noctē in gelu ad &,die in æſtum ad
31 לַחֹרֶב בַּיּוֹם וְלַקֶּרַח בַּלָּיְלָה׃ וּפָקַדְתִּי עָלָיו וְעַל־זַרְעוֹ
ſuper & , eos ſuper adducam & : eorum iniquitatem,ejus ſervos *ſuper* &
וְעַל־עֲבָדָיו אֶת־עֲוֺנָם וְהֵבֵאתִי עֲלֵיהֶם וְעַל־
quod , malum omne Jehudah *virum ad* & , Jeruſalaim habitatores
יֹשְׁבֵי יְרוּשָׁלַםִ וְאֶל־אִישׁ יְהוּדָה אֵת כָּל־הָרָעָה אֲשֶׁר־
volumen tulit Irmejahu & .audierunt non & : eos ad ſum locutus
32 דִּבַּרְתִּי אֲלֵיהֶם וְלֹא שָׁמֵעוּ׃ וְיִרְמְיָהוּ לָקַח מְגִלָּה
ſcripſit & ,*ſcribam* Nerijahu *filium* Baruch *ad* illud dedit & , alterum
אַחֶרֶת וַיִּתְּנָהּ אֶל־בָּרוּךְ בֶּן־נֵרִיָּהוּ הַסֹּפֵר וַיִּכְתֹּב
combuſſerat quem , libri verba omnia Irmejahu ore ex eo *ſuper*
עָלֶיהָ מִפִּי יִרְמְיָהוּ אֵת כָּל־דִּבְרֵי הַסֵּפֶר אֲשֶׁר שָׂרַף
verba ea ſuper *eſt additum* adhuc &:igni *in*, Jehudah rex Jehojachim
יְהוֹיָקִים מֶלֶךְ־יְהוּדָה בָּאֵשׁ וְעוֹד נוֹסַף עֲלֵיהֶם דְּבָרִים
.*illa ſicut* multa
רַבִּים כָּהֵמָּה׃

CAP. XXXVII. לז

,Jehojachim filio Chonjahu pro Joſijahu filius Sidchijahu rex regnavit Et
1 וַיִּמְלָךְ־מֶלֶךְ צִדְקִיָּהוּ בֶּן־יֹאשִׁיָּהוּ תַּחַת כָּנְיָהוּ בֶּן־יְהוֹיָקִים
non Et .Jehudah terra in Babel rex Nebuchadreſar cōſtituit regē quem
2 אֲשֶׁר הִמְלִיךְ נְבוּכַדְרֶאצַּר מֶלֶךְ־בָּבֶל בְּאֶרֶץ יְהוּדָה׃ וְלֹא
quæ ,Domini *verba ad* , terræ populus &,ejᵒ ſervi &,ipſe obedivit
שָׁמַע הוּא וַעֲבָדָיו וְעַם הָאָרֶץ אֶל־דִּבְרֵי יְהוָה אֲשֶׁר
Sidchijahu rex miſit Et .*prophetæ* Irmejahu *manu in* eſt locutᵒ
3 דִּבֶּר בְּיַד יִרְמְיָהוּ הַנָּבִיא׃ וַיִּשְׁלַח הַמֶּלֶךְ צִדְקִיָּהוּ אֶת־
ad ſacerdotē Mahaſejah filium Sephanjahu & ,Selemjah filium Jehuchal
יְהוּכַל בֶּן־שֶׁלֶמְיָה וְאֶת־צְפַנְיָהוּ בֶן־מַעֲשֵׂיָה הַכֹּהֵן אֶל־
Dominum ad nobis pro quæſo Ora : *dicendum ad*,prophetam Irmejahu
יִרְמְיָהוּ הַנָּבִיא לֵאמֹר הִתְפַּלֶּל־נָא בַעֲדֵנוּ אֶל־יְהוָה
dederunt non &:populi mediū in *egrediens* &,venit Irmejahu Et .noſtrū Deū
4 אֱלֹהֵינוּ׃ וְיִרְמְיָהוּ בָּא וְיֹצֵא בְּתוֹךְ הָעָם וְלֹא־נָתְנוּ
, Ægypto de eſt *egreſſa* Parhoh *virum* Et .carceris domum eum
5 אֹתוֹ בֵּית הַכְּלִיא׃ וְחֵיל פַּרְעֹה יָצָא מִמִּצְרָיִם
,eorum auditum ,Jeruſalaim *ſuper coarctantes* , Chaſdim audierunt &
וַיִּשְׁמְעוּ הַכַּשְׂדִּים הַצָּרִים עַל־יְרוּשָׁלַםִ אֶת־שִׁמְעָם
Irmejahu ad Domini verbum fuit Et .Jeruſalaim *deſuper* aſcenderunt &
6 וַיֵּעָלוּ מֵעַל יְרוּשָׁלָםִ׃ וַיְהִי דְּבַר־יְהוָה אֶל־יִרְמְיָהוּ
Sic , Iſrael Deus Dominus dixit Sic : dicendo ,prophetam
7 הַנָּבִיא לֵאמֹר׃ כֹּה־אָמַר יְהוָה אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל כֹּה
:me *quærendum ad*,me ad vos *mittentem* , Jehudah regem ad dicetis
תֹאמְרוּ אֶל־מֶלֶךְ יְהוּדָה הַשֹּׁלֵחַ אֶתְכֶם אֵלַי לְדָרְשֵׁנִי
ſuam terram in eſt *reverſa*,auxilium in vobis *exiens* Parhoh *virtus* Ecce
הִנֵּה חֵיל פַּרְעֹה הַיֹּצֵא לָכֶם לְעֶזְרָה שָׁב לְאַרְצוֹ
;hanc civitatem *ſuper* bellabunt & , Chaſdim redibunt Et .Ægyptum
8 מִצְרָיִם׃ וְשָׁבוּ הַכַּשְׂדִּים וְנִלְחֲמוּ עַל־הָעִיר הַזֹּאת
: Dominus dixit Sic .igni in eam ſuccendent & ,eam capient &
9 וּלְכָדֻהָ וּשְׂרָפֻהָ בָאֵשׁ׃ כֹּה אָמַר יְהוָה
nobis *deſuper* ibunt Eundo : dicendo , veſtras animas decipiatis Ne
אַל־תַּשִּׁאוּ נַפְשֹׁתֵיכֶם לֵאמֹר הָלֹךְ יֵלְכוּ מֵעָלֵינוּ
omnem *percuſſiſſetis ſi Quia* .ibunt non quia , Chaſdim
10 הַכַּשְׂדִּים כִּי־לֹא יֵלֵכוּ׃ כִּי אִם־הִכִּיתֶם כָּל־
viri eis *in* remaneant &,vobiſcum *pugnantium* , Chaſdim *virtutem*
חֵיל כַּשְׂדִּים הַנִּלְחָמִים אִתְּכֶם וְנִשְׁאֲרוּ־בָם אֲנָשִׁים
incendent & ,conſurgent,ſuo tentorio *in* unuſquiſque , transfixi
מְדֻקָּרִים אִישׁ בְּאָהֳלוֹ יָקוּמוּ וְשָׂרְפוּ אֶת־
.igni in hanc civitatem
הָעִיר הַזֹּאת בָּאֵשׁ׃

Verſio VULG. LAT.

30 Propterea hæc dicit Dominus contra Joakim regem Juda; Non erit ex eo qui ſedeat ſuper ſolium David: & cadaver ejus projicietur ad æſtum per diem, & ad 31 gelu per noctem. Et viſitabo contra eum, & contra ſemen ejus, & contra ſervos ejus, iniquitates ſuas; & adducam ſuper eos, & ſuper habitatores Jeruſalem, & ſuper viros Juda, omne malum, quod locutus ſum ad 32 eos, & non audierunt. Jeremias autem tulit volumen aliud, & dedit illud Baruch filio Neriæ ſcribæ: qui ſcripſit in eo ex ore Jeremiæ omnes ſermones libri, quem combuſſerat Joakim rex Juda igni: & inſuper additi ſunt ſermones multò plures, quàm anteà fuerant.

CAP. XXXVII.

1 Et regnavit rex Sedecias filius Joſiæ pro Jechonia filio Joakim: quem conſtituit regem Nabuchodonoſor rex Babylonis in 2 terra Juda. Et non obedivit ipſe, & ſervi ejus, & populus terræ, verbis Domini, quæ locutus eſt in manu Jeremiæ prophe- 3 tæ. Et miſit rex Sedecias Juchal filium Selemiæ, & Sophoniam filium Maaſiæ ſacerdotem, ad Jeremiam prophetā, dicens; Ora pro nobis Dominum Deum noſtrum. 4 Jeremias autem liberè ambulabat in medio populi: non enim miſerant eum in cuſtodiam carceris. Igitur exercitus Pharaonis egreſſus eſt de Ægypto: & audientes Chaldæi, qui obſidebant Jeruſalem, hujuſcemodi nuntium, 5 receſſerunt ab Jeruſalem. Et factum eſt verbum Domini ad Je- 6 remiam prophetam, dicens; Hæc dicit Dominus, Deus Iſrael; Sic dicetis regi Juda, qui miſit vos ad me interrogandum; Ecce exercitus Pharaonis, qui egreſſus eſt vobis in auxilium, revertetur in 7 terram ſuam in Ægyptum. Et redient Chaldæi, & bellabunt contra civitatem hanc: & capient eam, & ſuccendent eam igni. 8 Hæc dicit Dominus; Nolite decipere animas veſtras, dicentes; Euntes abibunt, & recedent à nobis Chaldæi; quia non abi- 9 bunt. Sed & ſi percuſſeritis omnem exercitum Chaldæorum, qui præliantur adversùm vos, & derelicti fuerint ex eis aliqui vulnerati: ſinguli de tentorio ſuo conſurgent, & incendent civitatem hanc igni.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

11 Ὅτι ἐλυτρώσατο κύριος τὸν Ἰακὼβ, ἐξείλατο αὐτὸν ἐκ χειρὸς στερεωτέρων αὐτοῦ. 12 Καὶ ἥξουσι, ϗ εὐφρανθήσονται ἐν τῷ ὄρει Σιὼν, ϗ ἥξουσιν ἐπ' ἀγαθὰ κυρίου, ἐπὶ γῆν σίτου ϗ οἴνου, ϗ καρπῶν, ϗ κτηνῶν, ϗ προβάτων· ϗ ἔσται ἡ ψυχὴ αὐτῶν ὥσπερ ξύλον (μ) ἔγκαρπον, ϗ οὐ πεινάσουσιν ἔτι. 13 Τότε χαρήσονται παρθένοι ἐν συναγωγῇ νεανίσκων, ϗ πρεσβύται χαρήσονται, ϗ στρέψω τὸ πένθος αὐτῶν εἰς (ν) χαρμονὴν, ϗ ποιήσω αὐτοὺς εὐφραινομένους. 14 Μεγαλυνῶ ϗ μεθύσω τὴν ψυχὴν τῶν ἱερέων υἱῶν Λευὶ, ϗ ὁ λαός μου τῶν ἀγαθῶν μου ἐμπλη- 15 σθήσεται· οὕτως εἶπε κύριος. Φωνὴ (ξ) ἐν Ῥαμᾶ ἠκούσθη θρήνου, ϗ κλαυθμοῦ, ϗ ὀδυρμοῦ· Ῥαχὴλ (ο) ἀποκλαιομένη οὐκ ἤθελε παύσασθαι ἐπὶ τοῖς υἱοῖς αὐτῆς, ὅτι οὐκ εἰσίν. 16 Οὕτως εἶπε κύριος, Διαλειπέτω ἡ φωνή σου ἀπὸ κλαυθμοῦ, ϗ οἱ ὀφθαλμοί σου ἀπὸ (π) δακρύων σου, ὅτι ἔστι μισθὸς τοῖς σοῖς ἔργοις, ϗ ἐπιστρέψουσιν ἐκ γῆς ἐ- 17 χθρῶν, Μόνιμον τοῖς σοῖς τέκνοις. 18 Ἀκοὴν ἤκουσα Ἐφραὶμ ὀδυρομένου, Ἐπαίδευσάς με, ϗ ἐπαιδεύθην· ἐγὼ ὥσπερ μόσχος οὐκ ἐδιδάχθην. ἐπίστρεψόν με, ϗ ἐπιστρέψω, ὅτι σὺ κύριος ὁ θεός μου. 19 Ὅτι ὕστερον αἰχμαλωσίας μου μετενόησα, ϗ ὕστερον τοῦ γνῶναί με, ἐστέναξα ἐφ' ἡμέρας αἰσχύνης, ϗ ὑπέδειξά σοι, ὅτι ἔλα- 20 βον ὀνειδισμὸν ἐκ νεότητός μου. Υἱὸς ἀγαπητὸς Ἐφραὶμ, ἐμοὶ παιδίον ἐντρυφῶν, ὅτι ἀνθ' ὧν οἱ λόγοι μου ἐν αὐτῷ, μνείᾳ μνησθήσομαι αὐτοῦ, διὰ τοῦτο ἔσπευσα ἐπ' αὐτῷ, ἐλεῶν ἐλεήσω αὐτὸν, φησὶ κύ- 21 ριος. Στῆσον σεαυτὴν Σιὼν, ποίησον τιμωρίαν, δὸς καρδίαν σου εἰς τοὺς ὤμους (ρ)· ὁδὸν ἣ ἐπορεύθης, (σ) ἀποστράφηθι παρθένος Ἰσραὴλ, ἀποστράφηθι εἰς 22 τὰς πόλεις σου πενθοῦσα. Ἕως πότε ἀποστρέψεις θυγάτηρ ἠτιμωμένη; ὅτι ἔκτισε κύριος σωτηρίαν εἰς καταφύτευσιν καινὴν, (τ) ἐν σωτηρίᾳ περιελεύσονται ἄν- 23 θρωποι. (υ) Ὅτι οὕτως εἶπε κύριος, Ἔτι ἐροῦσι τὸν λόγον τοῦτον ἐν γῇ Ἰούδα, ϗ ἐν πόλεσιν αὐτοῦ, ὅταν ἀποστρέψω τὴν αἰχμαλωσίαν αὐτοῦ, Εὐλογημένος κύριος ἐπὶ δίκαιον ὄρος τὸ ἅγιον αὐτοῦ. 24 Καὶ (φ) ἐνοικοῦντες ἐν ταῖς πόλεσιν Ἰούδα, ϗ ἐν (χ) πάσῃ τῇ γῇ αὐτοῦ, ἅμα γεωργῷ, ϗ ἀρθήσεται ἐν ποιμνίῳ.

Redemit enim Dominus Jacob, liberavit eum de manu validiorum eo. 11 *Et venient, & lætabuntur in monte Sion: & venient ad bona Domini, ad terram frumenti, & vini, & fructuum, & jumentorum, & ovium: & erit anima eorum, quaſi lignum fructiferum: & non eſurient ultrà.* 12 *Tunc gaudebunt virgines in ſynagoga juvenum, & ſenes gaudebunt: & vertam luctum eorum in gaudium, (i) & faciam eos lætantes.* 13 *Magnificabo, & inebriabo animam ſacerdotum filiorum Levi: & populus meus bonis meis implebitur: Sic dixit Dominus.* 14 *Vox in Rhama audita eſt (k) lamentationis, & plorationis, & fletûs: Rachel deplorans noluit (l) conquieſcere ſuper filiis ſuis, quia non ſunt.* 15 *Sic dixit Dominus; Deſinat vox tua à ploratu, et oculi tui à lachrymis tuis; quia eſt merces operibus tuis: & revertentur de terra inimicorum:* 16 *(m) Stabile filiis tuis.* 17 *Auditu audivi Ephræm lamentantē; Caſtigâſti me, et (n) ſum caſtigatus: ego, tanquam vitulus, non didici. Converte me, et convertar; quia tu Dominus Deus meus:* 18 *Quia poſt captivitatem meam egi pœnitentiam, et poſtquàm (o) cognovi, ingemui ſuper diem confuſionis, et oſtendi (p) tibi, quoniam accepi opprobrium ab adoleſcentia mea.* 19 *Filius dilectus Ephræm mihi, parvulus delicatus: quia ex quo verba mea in eo; memoriâ memorabor ejus: idcircò ſolicitus fui ſuper eo; miſerans miſerebor ejus, ait Dominus.* 20 *Statue teipſam (q) Sion, fac pœnam, da cor tuum in humeros: viâ, in qua ambulâſti, revertere virgo Iſrael; revertere in civitates tuas lugens.* 21 *Uſquequò (r) converteris, filia deſpecta? quoniam creavit (ſ) Dominus ſalutem in plantatione nova: in ſalute circuibunt homines:* 22 *Quia ſic dixit Dominus; Adhuc dicent ſermonem iſtum in terra Juda, et in urbibus ejus; quando reduxero captivitatem ejus; Benedictus Dominus ſuper juſtum montem ſanctum ejus:* 23 *Et qui habitant in (t) urbibus Juda, et in omni terra ejus, ſimul cum agricola; et elevabitur in grege.* 24

MS.A. (μ) ἔγκαρπον, (ν) εὐφροσύνην, (ξ) ἐν τῇ ὑψηλῇ ἠκούσθη (ο) ἀποκλαιομένης ἐπὶ τῶν υἱῶν αὐτῆς, ϗ οὐκ ἤθελεν παρακληθῆναι, ὅτι οὐκ εἰσίν. (π) δακρύων, ὅτι (ρ) σου· ὁδὸν ἣν (σ) ἀποστράφητι παρθένος θυγάτηρ Ἰερουσαλὴμ, ἀποστράφητι (τ) ἐν ᾗ σωτηρίᾳ (υ) Οὕτως εἶπεν (φ) οἱ ἐνοικοῦντες ἐν πόλεσιν (χ) * πάσαις ταῖς πόλεσιν αὐτοῦ,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

30 בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ עַל יְהוֹיָקִים מֶלֶךְ שִׁבְטָא דְבֵית יְהוּדָה לָא יְהֵי לֵיהּ יָתֵיב עַל כּוּרְסֵי דָוִד
31 וּנְבֶלְתֵּיהּ תְּהֵי מְשַׁגְרָא לְשַׁרְבָא בִּימָמָא וְלִגְלִידָא בְּלֵילְיָא׃ וְאַסְעַר עֲלוֹהִי וְעַל בְּנוֹהִי וְעַל
עַבְדוֹהִי יַת חוֹבֵיהוֹן וְאַיְתֵי עֲלֵיהוֹן וְעַל יָתְבֵי יְרוּשְׁלֶם וְעַל אֱנָשׁ יְהוּדָה יַת כָּל בִּישְׁתָא
32 דִּגְזָרִית עֲלֵיהוֹן וְלָא קַבִּילוּ׃ וְיִרְמְיָה נְסִיב מְגִלָּא אוֹחֲרִי וִיהָבַהּ לְבָרוּךְ בַּר נֵרִיָּה סַפְרָא
וּכְתַב עֲלַהּ מִפּוּמָא דְיִרְמְיָה יַת כָּל פִּתְגָּמֵי סִפְרָא דְּאוֹקִיד יְהוֹיָקִים מֶלֶךְ שִׁבְטָא דְבֵית
יְהוּדָה בְּנוּרָא וְעוֹד אִתּוֹסְפוּ עֲלֵיהוֹן פִּתְגָּמִין סַגִּיאִין כְּוָתְהוֹן׃

לז

1 וּמְלַךְ מֶלֶךְ צִדְקִיָּה בַּר יֹאשִׁיָּה חֲלַף כָּנְיָה בַּר יְהוֹיָקִים דְּאַמְלִיךְ נְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא דְבָבֶל
2 בְּאַרְעָא דְבֵית יְהוּדָה׃ וְלָא קַבֵּיל הוּא וְעַבְדוֹהִי וְעַמָּא דְאַרְעָא לְפִתְגָּמַיָּא דַיְיָ דְּמַלֵּיל בְּיַד
3 יִרְמְיָהוּ נְבִיָּא׃ וּשְׁלַח מַלְכָּא צִדְקִיָּהוּ יַת יְהוּכַל בַּר שֶׁלֶמְיָה וְיַת צְפַנְיָה בַּר מַעֲשֵׂיָה
4 כַּהֲנָא לְוַת יִרְמְיָה נְבִיָּא לְמֵימַר צַלִּי כְעַן עֲלָנָא קֳדָם יְיָ אֱלָהָנָא׃ וְיִרְמְיָה עָלֵיל וְנָפֵיק
5 בְּגוֹ עַמָּא וְלָא יְהַבוּ יָתֵיהּ בְּבֵית אֲסִירֵי׃ וּמַשְׁרִית פַּרְעֹה נְפַקָא מִמִּצְרָיִם וּשְׁמַעוּ כַּסְדָּאֵי
6 דְּצָיְרִין עַל יְרוּשְׁלֶם יַת שִׁמְעֲהוֹן וְאִסְתַּלַּקוּ מֵעַל יְרוּשְׁלֶם׃ וַהֲוָה פִּתְגַּם נְבוּאָה מִן קֳדָם
7 יְיָ עִם יִרְמְיָה לְמֵימַר׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל כְּדֵין תֵּימְרוּן לְמֶלֶךְ שִׁבְטָא דְבֵית
יְהוּדָה דִּשְׁלַח יַתְכוֹן לְקֳדָמַי לְמִתְבַּע אוּלְפָן מִן קֳדָמַי הָא מַשְׁרִית פַּרְעֹה דִּנְפַקָא לְכוֹן
8 לְסָעִיד תָּבָא לְאַרְעֲהוֹן לְמִצְרָיִם׃ וִיתוּבוּן כַּסְדָּאֵי וִיגִיחוּן קְרָבָא עַל קַרְתָּא הָדָא
9 וְיִכְבְּשׁוּנַהּ וְיוֹקְדוּנַהּ בְּנוּרָא׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ לָא תִטְעוּן נַפְשָׁתֵיכוֹן לְמֵימַר אִסְתַּלָּקָא
10 יִסְתַּלְּקוּן מִנָּנָא כַּסְדָּאֵי אֲרֵי לָא יִסְתַּלְּקוּן׃ אֲרֵי אִם תִּקְטְלוּן כָּל מַשְׁרִית כַּסְדָּאֵי דִּמְגִיחִין
קְרָבָא עִמְּכוֹן וְיִשְׁתָּאֲרוּן בְּהוֹן גַּבְרִין מְטַעֲנִין גְּבַר בְּמַשְׁכְּנֵיהּ יְקוּמוּן וְיוֹקְדוּן יַת קַרְתָּא
הָדָא בְּנוּרָא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Propterea hæc dicit Dominus ad Joachim regem tribus domus Juda, Non 30 erit ei ſedens ſuper ſolium David, & cadaver ejus erit projectum ad æſtum per diem, & ad gelu per noctem. Et viſitabo ſuper eum & ſuper filios 31 ejus, & ſuper ſervos ejus peccata eorum; & adducam ſuper eos, & ſuper habitatores Jeruſalem, & ſuper viros Juda omne malum quòd decrevi contra eos, & non obedierunt. Jeremias autem tulit volumen aliud, & dedit 32 illud Baruch filio Neriæ ſcribæ: & ſcripſit in eo ex ore Jeremiæ omnes ſermones libri, quem combuſſit Joachim rex tribus domus Juda igni: & rurſum additi ſunt eis ſermones multi, eis ſimiles.

CAP. XXXVII.

Et regnavit rex Sedechias filiᵒ Joſiæ pro Jechonia filio Joachim, quem 1 conſtituit regem Nabuchodonoſor rex Babylonis, in terra domus Juda. Et non obedivit ipſe & ſervi ejus, & populus terræ verbis Domini, quæ 2 locutus eſt per manum Jeremiæ prophetæ. Et miſit rex Sedechias Jehucal 3 filium Selemiæ, & Sophoniam filium Maaſiæ ſacerdotem ad Jeremiam prophetam; dicens: Ora nunc pro nobis coram Domino Deo noſtro. Et Jeremias ingrediebatur & egrediebatur in medio populi, & non 4 tradiderunt eum in domum vinctorum. Exercitus autem Pharaonis egreſ- 5 ſus eſt de Ægypto; & audierunt Chaldæi, qui obſidebant Jeruſalem, famam eorum, & receſſerunt ab Jeruſalem. Et factum eſt verbum prophe- 6 tiæ à facie Domini ad Jeremiam, dicens: Hæc dicit Dominus Deus Iſ- 7 rael, Sic dicetis regi tribus domus Juda, qui miſit vos coram me ad quærendum oraculum à facie mea. Ecce exercitus Pharaonis qui egreſſus eſt in auxilium veſtrum, reverſus eſt in terram ſuam, in Ægyptum. Et rever- 8 tentur Chaldæi, & pugnabunt adverſus civitatem hanc, & ſubjicient eam: & ſuccendent eam igni. Hæc dicit Dominus, Ne decipiatis animas ve- 9 ſtras; dicendo; Recedendo recedent à nobis Chaldæi, quia non recedent. Nam ſi occideritis omnem exercitum Chaldæorum qui pugnant 10 adverſus vos, & remanſerint in eis viri vulnerati, ſinguli in tabernaculo ſuo conſurgent, & ſuccendent civitatem iſtam igni.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

30 * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܥܠ ܝܗܘܝܩܝܡ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗ ܒܪܐ
ܕܢܬܒ ܥܠ ܟܘܪܣܝܗ ܕܕܘܝܕ. ܘܢܒܠܬܗ ܬܗܘܐ ܫܕܝܐ ܠܚܘܡܐ ܒܐܝܡܡܐ. ܘܠܓܠܝܕܐ
31 ܒܠܠܝܐ. * ܘܐܣܥܘܪ ܥܠܘܗܝ ܘܥܠ ܙܪܥܗ ܘܥܠ ܥܒܕܘܗܝ ܚܛܗܝܗܘܢ. ܘܐܝܬܐ ܥܠܝܗܘܢ
ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ ܘܥܠ ܐܢܫܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܟܠܗ ܒܝܫܬܐ ܕܐܡܪܬ
32 ܥܠܝܗܘܢ. ܥܠ ܕܠܐ ܫܡܥܘ ܠܩܠܝ. * ܘܢܣܒ ܐܪܡܝܐ ܡܓܠܬܐ ܐܚܪܬܐ. ܘܝܗܒܗ ܠܒܪܘܟ
ܒܪ ܢܪܝܐ ܣܦܪܐ. ܘܟܬܒ ܒܗ ܡܢ ܦܘܡܗ ܕܐܪܡܝܐ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ. ܕܟܬܝܒܝܢ
ܗܘܘ ܒܟܬܒܐ ܕܐܘܩܕ ܝܗܘܝܩܝܡ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܒܢܘܪܐ. ܘܬܘܒ ܐܘܣܦ ܥܠܝܗܘܢ ܦܬܓܡܐ
ܕܣܓܝܐܐ ܐܝܟ ܗܠܝܢ. * ܫܠܡ ܟܘ *

1 * ܘܐܡܠܟ ܡܠܟܐ ܨܕܩܝܐ ܒܪ ܝܘܫܝܐ. ܚܠܦ ܝܘܟܢܝܐ ܒܪ ܝܗܘܝܩܝܡ. ܕܐܡܠܟܗ ܢܒܘܟܕܢܨܪ
2 ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܒܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕܐ. * ܘܠܐ ܫܡܥ ܗܘ ܘܥܒܕܘܗܝ ܘܥܡܐ ܕܐܪܥܐ. ܠܦܬܓܡܘܗܝ
3 ܕܡܪܝܐ ܕܐܡܪ ܒܝܕ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ. * ܘܫܕܪ ܡܠܟܐ ܨܕܩܝܐ ܠܝܘܟܠ ܒܪ ܫܠܡܝܐ. ܘܠܨܦܢܝܐ ܒܪ
4 ܡܥܣܝܐ ܟܗܢܐ. ܠܘܬ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܠܡܐܡܪ. ܨܠܝ ܚܠܦܝܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ. * ܘܐܪܡܝܐ
5 ܢܦܩ ܗܘܐ ܘܥܐܠ ܒܝܬ ܥܡܐ. ܘܠܐ ܐܪܡܝܘܗܝ ܒܝܬ ܐܣܝܪܐ. * ܘܚܝܠܗ ܕܦܪܥܘܢ ܢܦܩ
ܡܢ ܡܨܪܝܢ. ܘܫܡܥܘ ܟܠܕܝܐ ܕܟܪܝܢ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ ܫܡܥܗܘܢ. ܘܣܠܩܘ ܠܗܘܢ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ.
6 7 * ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗ
ܕܐܝܣܪܝܠ. ܗܟܢܐ ܬܐܡܪܘܢ ܠܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܕܫܕܪܟܘܢ ܠܘܬܝ ܕܬܫܐܠܘܢ ܡܢܝ. ܗܐ ܚܝܠܗ
8 ܕܦܪܥܘܢ. ܕܢܦܩ ܠܡܥܕܪܢܘܬܟܘܢ. ܗܦܟ ܠܐܪܥܗ ܠܡܨܪܝܢ. * ܘܗܦܟܝܢ ܟܠܕܝܐ
9 ܘܡܬܟܬܫܝܢ. ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܘܟܒܫܝܢ ܠܗ. ܘܐܘܩܕܝܢ ܠܗ ܒܢܘܪܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܠܐ
10 ܬܛܥܘܢ ܢܦܫܬܟܘܢ ܟܕ ܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܕܡܐܙܠ ܐܙܠܝܢ ܡܢܢ ܟܠܕܝܐ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܙܠܝܢ. * ܕܐܢ
ܬܡܚܘܢ ܟܠܗ ܚܝܠܗ ܕܟܠܕܝܐ ܕܡܬܟܬܫܝܢ ܥܡܟܘܢ. ܘܢܫܬܚܪܘܢ ܒܗܘܢ ܐܢܫܐ
ܕܡܚܝܢ. ܓܒܪ ܡܢ ܡܫܟܢܗ ܢܩܘܡܘܢ. ܘܢܘܩܕܘܢܗ ܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܒܢܘܪܐ.

* Propterea ſic ait Dominus de Joſacimo rege Judæ, Non erit illi quiſquam ſedens ſuper ſolium Davidis, & cadaver ejus erit expoſitum æſtui diurno & gelu nocturno. 30 Et viſitabo cùm ipſius, tum ſeminis ac ſervorum ejus iniquitatem; & adducam ſuper eos, & ſuper omnes habitatores Jeroſolymæ, ſuperque homines Judæ, totum illud malum quod in ipſos decrevi; eò quod non auſcultârint voci meæ. 31 Itaque Jeremia ſumpſit volumen alterum; & tradidit illud Barucho filio Neriæ ſcribæ, qui ſcripſit in illo, dictante Jeremiâ, omnes ſermones qui ſcripti erant in eo libro quem Jojacim rex Judæ igne combuſſerat: & inſuper addidit eis complures ſimiles ſermones. 32

CAP. XXXVII.

DEinde regnavit rex Sedecia fili⁹ Joſiæ loco Jochaniæ filii Jojacimi, quem regem conſtituerat Nebuchadnoſar rex Babylonis in terra Judæ. 1 Sed neque iſte, neque ſervi ej⁹, neque terræ populus acquieverunt ſermonib⁹ Domini quos locut⁹ fuerat per Jeremiam prophetam. 2 Miſitque rex Sedecia Jubalem filium Selamiæ, & Sephaniam filium Maaſiæ ſacerdotes, ad Jeremiam prophetam, ut dicerent, Ora pro nobis Dominum Deum tuum. 3 Jeremia verò egrediebatur & ingrediebatur inter populum, nec tamen conjecerunt eum in carcerem. 4 Interim copiæ Pharaonis egreſſæ ſunt ex Ægypto; quare Chaldæi qui Jeroſolymam obſidebant, famam earum audientes, abſceſſerunt ab Jeruſalem. 5 Sed fuit ſermo Domini ad Jeremiam prophetam, dicendo; 6 Sic ait Dominus Deus Iſraelis, Ita dicetis regi Judæ qui vos ad me miſit ut conſuleretis me; En exercitus Pharaonis qui egreſſus eſt in auxilium veſtrum, revertetur in terram Ægypti: 7 Chaldæi autem redibunt, & expugnatam hanc civitatem capient, igneque comburent. 8 Sic ait Dominus, Ne putetis apud vos & dicatis, Recedunt à nobis Chaldæi: non enim recedunt. 9 Quamvis enim trucidaretis totum exercitum Chaldæorum qui vos oppugnant, & *nonniſi* homines inter eos vulnerati remanerent; quiſque ſuo ſurgerent è tentorio, & hanc civitatem igne ſuccenderent. 10

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

11 * لان الرب نجا يعقوب * استخلصه من يد من هو اقوى منه * ويأتون ويفرحون في جبل
12 صهيون * ويوافون الى خير الرب * الى ارض القمح والخمر والثمرات والبهائم والخراف *
13 ويصير نفسهم مثل العود الحسن الثمر * ولا يجوعون بعد * حينئذ تفرح العذارى في مجمع
14 الشبان * والشيوخ يفرحون * وارجع حزنهم الى فرحة * واجعلهم في سرور * اعظم واسكر نفس
15 الكهنة بني لاوي * وشعبي يمتلي من خيراتي * هكذا قال الرب * صوت سمع في الاكمة *
صوت نوح وبكاء وعويل * راحيل باكية من اجل بنيها ولم ترد ان تتعزى * لانهم ليسوا
16 موجودين * هكذا قال الرب * ليكف صوتك من البكاء وعيناك من الدموع * لان
17 18 الاجر في جميع الاعمال * ويعودون من ارض الاعداء * بنات مع بنيك * سامع سمعت
افرام النادب * ادبتني فتادبت * انا مثل عجل لم اتعلم ردني فارجع * لانك انت الرب
19 الهي * لاني اخر سبي تبت * وتنهدت اخيرا لاعلم * منذ يوم الخزي واظهرت لك اني
20 نلت تعييرا منذ صباي * افرام ابن حبيب ولد منعم * لاني من اجل كلماتي فيه اذكر
21 ذكرا لاجل هذا اسرعت اليه * راحم سارحمه قال الرب * اقيمي ذاتك يا صهيون *
اصنعي عقوبة * اعطي قلبك لجفاء الطريق التي ذهبت فيها * ارجعي يا عذراء اسرائيل *
22 ارجعي الى مدنك حزينة * الى متى تتصرفي ايها الابنة المهانة * لان الرب خلق خلاصا
23 لغرس جديد * الخلاص الذي به يسيرون البشر * هكذا قال الرب * يقولون هذا القول
ايضا في ارض يهودا وفي مدنه اذا رددت سبيه * مبارك الرب على العادل جبله المقدس *
24 * والسكان في مدن يهودا وفي كل بلده مع الفلاح ويخطف في القطيع *

Nam Dominus liberabit Jacobum, vindicabit eum de manu ejus qui potentior eſt ipſo: 11 *Et venientes exhilarabuntur in monte Sionis, venientque ad bona Domini, ad terram frumenti, vini, fructuum, jumentorum, pecudumque feracem: & fiet anima eorum tanquam lignum optimum fructum* producens, *& non eſurient ampliùs.* 12 *Tunc lætabuntur virgines cœtu juvenum, & ſenes gaudebunt: vertamque triſtitiam eorum in gaudium, & conſtituam eos in exultatione:* 13 *Magnificabo, & inebriabo animam ſacerdotum filiorum Levi; & populus meus implebitur bonis meis.* 14 *Sic dixit Dominus, Vox audita eſt in colle, vox lamentationis, fletûs, ac gemitûs; Rachelis plorantis propter filios, & admittere conſolationem renuentis, eò quòd non exiſtant.* 15 *Ita dixit Dominus, Deſiſtat vox tua à fletu, & oculi tui à lachrymis; quia merces eſt in cunctis operibus, & revertentur de terra inimicorum* 16 *Filiæ cum filiis tuis.* 17 *Audiens audivi Aphremum lamentantem; Erudiviſti me, & eruditus ſum, ego vitulo ſimilis, non didici: reduc me, & revertar; quia tu es Domin⁹ Deus meus.* 18 *Nam poſt captivitatem meam pœnituit me, & ſuſpiravi demum, ut diſcerem, inde à die erubeſcentiæ & indicavi tibi me adeptum eſſe opprobrium inde à pueritia mea.* 19 *Aphrem filius eſt charus, natus delitioſus; quandoquidem propter mea de ipſo verba, memoriâ ipſum recolo: hac de cauſa properavi ad ipſum, miſerans miſerabor ipſius, ait Dominus.* 20 *Erige teipſam O Sion, fac pœnam, adhibe cor tuum ad aſperitatem itineris per quod iviſti. Revertere O virgo Iſraelis, revertere ad urbes tuas mœrens.* 21 *Quouſque abibis O filia vitiis? nam Dominus creavit ſalutem plantario novello, ſalutem in qua ambulabunt homines.* 22 *Sic dixit Dominus; Dicent adhuc ſermonem iſtum in terra Judæ & in urbibus ejus, cùm reduxero captivitatem ejus; Benedictus Dominus ſuper juſtum montem ſuum ſanctum,* 23 *Et habitantes in urbibus Judæ & in tota regione ipſius, unà cum agricola; & ripiatur in grege.* 24

ירמיה : לח

faciebus à , Jeruſalaim *deſuper* Chaſdim *virtutem aſcendendo in* fuit Et
11 והיה בהעלות חיל הכשדים מעל ירושלם מפני
terram *eundum ad*, Jeruſalaim de Irmejahu eſt egreſſus Et .Parhoh *virtutis*
12 חיל פרעה: ויצא ירמיהו מירושלם ללכת ארץ
ipſe fuit Et .populi medio in ,inde ſeipſum *lubrificandum ad*, Binjamin
13 בנימן לחלק משם בתוך העם: ויהי־הוא
filius , Irijah ejus nomen & ,*præfecturarũ dominus* ibi & ,Binjamin porta in
בשער בנימן ושם בעל פקדת ושמו יראייה בן־
:dicendo ,prophetam Irmejahu apprehendit & :Chananjah filii Selemjah
שלמיה בן־חנניה ויתפש את־ירמיהו הנביא לאמר
ego non ,Falſum : Irmejahu Dixitque .*dilabens* tu Chaſdim Ad
14 אל־הכשדים אתה נפל: ויאמר ירמיהו שקר אינני
Irijah comprehendit *&* ,eum *ad* audivit non & : Chaſdim *ſuper dilabens*
נפל על־הכשדים ולא שמע אליו ויתפש יראייה
ſuper principes ſunt irati Et .principes ad eum adduxit & ,Irmejahu *in*
15 בירמיהו ויבאהו אל־השרים: ויקצפו השרים על
domum ,*ligationis* domum eum *dederunt* & :eum fecerũt ꝑcutere & ,Irmejahu
ירמיהו והכו אתו ונתנו אותו בית האסור בית
Cùm .carceris domum *in* fecerunt ipſam nam , ſcribæ Jehonathan
16 יהונתן הספר כי־אתו עשו לבית הכלא: כי
ibi manſit *&* , *hoſpitiola ad* & , laci domum *ad* Irmejahu eſſet ingreſſus
בא ירמיהו אל־בית הבור ואל־החניות וישב־שם
,eum tulit & ,Sidchijahu rex miſit Et .multis diebus Irmejahu
17 ירמיהו ימים רבים: וישלח המלך צדקיהו ויקחהו
verbum eſt Num :dixit & ,*abſcondito in* ſua domo in rex eũ interrogavit &
וישאלהו המלך בביתו בסתר ויאמר היש דבר
Babel regis manũ in : dixit Et .Eſt :Irmejahu dixit Et ? Domino *cum à*
מאת יהוה ויאמר ירמיהו יש ויאמר ביד־מלך בבל
peccavi Quid : Sidchijahu regem ad Irmejahu dixit Et .tradèris
18 תנתן: ויאמר ירמיהו אל־המלך צדקיהו מה חטאתי
domum *ad* me *dediſtis* quia ,huic populo & ,tuis ſervis & ,tibi
לך ולעבדיך ולעם הזה כי־נתתם אותי אל־בית
: dicendo ,vobis prophetabant qui ,veſtri prophetæ ubi Et ? carceris
19 הכלא: ואיו נביאיכם אשר־נבאו לכם לאמר
nunc Et ? hanc terram *ſuper* & ,vos *ſuper* Babel rex veniet Non
20 לא־יבא מלך־בבל עליכם ועל הארץ הזאת: ועתה
,*tuas facies ad* mea deprecatio obſecro Cadat : rex mi domine obſecro audi
שמע־נא אדני המלך תפל־נא תחנתי לפניך
.ibi moriar *non &* ,ſcribæ Jonathan domum me facias redire ne &
ואל־תשבני בית יהונתן הספר ולא אמות שם:
atrio in Irmejahu commendaverunt & ,Sidchijahu rex præcepit Et
21 ויצוה המלך צדקיהו ויפקדו את־ירמיהו בחצר
ad uſque ,piſtorum platea de *diem in* panis tortam ei *dare* & ,cuſtodiæ
המטרה ונתן לו ככר־לחם ליום מחוץ האפים עד־
atrio in Irmejahu manſit & : civitate de *panem omnem conſummare*
תם כל־הלחם מן־העיר וישב ירמיהו בחצר
.cuſtodiæ
המטרה:

CAP. XXXVIII. לח

, Paſchur filius Ghedaljahu & ,Matthan filius Sephatjah audivit Et
1 וישמע שפטיה בן־מתן וגדליהו בן־פשחור
verba ,Malchijah filius Paſchur & ,Selemjahu filius Juchal &
ויוכל בן־שלמיהו ופשחור בן־מלכיה את־הדברים
dixit Sic : dicendo ,populum omnem ad *loquens* Irmejahu quæ
2 אשר ירמיהו מדבר אל־כל־העם לאמר: כה אמר
, fame *in* , gladio *in* morietur , iſta civitate in *Manens* : Dominus
יהוה הישב בעיר הזאת ימות בחרב ברעב
ejus anima ei erit & ,vivet & , Chaſdim ad *egrediens &* : peſte *in* &
ובדבר והיצא אל־הכשדים יחיה והיתה־לו נפשו
.vivet & , ſpolium in
לשלל וחי:

Verſio VULG. LAT.

10 Ergò cùm receſſiſſet exercitus
Chaldæorum ab Jeruſalem pro-
11 pter exercitum Pharaonis, E-
greſſus eſt Jeremias de Jeruſa-
lem ut iret in terram Benjamin,
& divideret ibi poſſeſſionem in
12 conſpectu civium. Cúmque per-
veniſſet ad portam Benjamin,
erat ibi cuſtos portæ per vices,
nomine Jerias, filius Selemiæ
filii Hananiæ, & apprehendit
Jeremiam prophetam, dicens; Ad
13 Chaldæos profugis. Et reſpon-
dit Jeremias; Falſum eſt, non
fugio ad Chaldæos. Et non au-
divit eum: ſed comprehendit Je-
rias Jeremiam, & adduxit eum
14 ad principes. Quam ob rem
irati principes contra Jeremiam,
cæſum eum miſerunt in carce-
rem, qui erat in domo Jonathan
ſcribæ: ipſe enim præpoſitus
15 erat ſuper carcerem. Itaque in-
greſſus eſt Jeremias in domum
laci & in ergaſtulum: & ſedit
16 ibi Jeremias diebus multis. Mit-
tens autem Sedecias rex tulit
eum: & interrogavit eum in do-
mo ſua abſconditè, & dixit;
Putáſne eſt ſermo à Domino?
Et dixit Jeremias, Eſt. Et ait,
In manus regis Babylonis tra-
17 dêris. Et dixit Jeremias ad regem
Sedeciam; Quid peccavi tibi,
& ſervis tuis, & populo tuo,
quia miſiſti me in domum car-
18 ceris? Ubi ſunt prophetæ veſtri,
qui prophetabant vobis, & di-
cebant; Non veniet rex Baby-
lonis ſuper vos, & ſuper ter-
19 ram hanc? Nunc ergò audi, ob-
ſecro, domine mi rex; Valeat
deprecatio mea in conſpectu
tuo: & ne me remittas in do-
mum Jonathan ſcribæ, ne mo-
20 riar ibi. Præcepit ergò rex Se-
decias ut traderetur Jeremias in
veſtibulo carceris, & daretur ei
torta panis quotidiè, excepto
pulmento, donec conſumerentur
omnes panes de civitate: & man-
ſit Jeremias in veſtibulo carceris,

CAP. XXXVIII.

1 Audivit autem Saphatias filiꝰ
Mathan, & Gedelias filiꝰ Phaſſur,
& Juchal filiꝰ Selemiæ, & Phaſ-
ſur filius Melchiæ, ſermones,
quos Jeremias loquebatur ad
2 omnem populum, dicens; Hæc
dicit Dominꝰ; Quicunque man-
ſerit in civitate hac, morietur
gladio, & fame, & peſte: qui
autem profugerit ad Chaldæos,
vivet, & erit anima ejus ſoſpes
& vivens.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

25 Ὅτι ἐμέθυσα πᾶσαν ψυχὴν διψῶσαν, καὶ πᾶ-
26 σαν ψυχὴν πεινῶσαν ἐνέπλησα. Διατοῦτο
ἐξηγέρθην, καὶ εἶδον, καὶ ὁ ὕπνος μου ἡδύς
27 μοι (⸸) ἐγενήθη. Διατοῦτο ἰδοὺ ἡμέραι ἔρ-
χονται, φησὶ κύριος, καὶ σπερῶ τὸν Ἰσραὴλ
καὶ τὸν Ἰούδαν, σπέρμα ἀνθρώπου καὶ σπέρμα
28 κτήνους. Καὶ ἔσται ὥσπερ ἐγρηγόρουν ἐπ' αὐτοὺς
καθαιρεῖν καὶ κακοῦν, οὕτως γρηγορήσω ἐπ'
αὐτοὺς τοῦ οἰκοδομεῖν καὶ καταφυτεύειν, φη-
29 σὶ κύριος. Ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις οὐ μὴ
εἴπωσιν, Οἱ πατέρες ἔφαγον ὄμφακα, καὶ
30 οἱ ὀδόντες τῶν τέκνων (ω) ἡμωδίασαν. Ἀλλ'
ἢ ἕκαστος ἐν τῇ (α) ἑαυτοῦ ἁμαρτίᾳ ἀποθα-
νεῖται, καὶ τοῦ φαγόντος τὸν ὄμφακα αἱμωδιά-
31 σουσιν οἱ ὀδόντες αὐτοῦ. Ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχον-
ται, (β) φησὶ κύριος, καὶ διαθήσομαι τῷ
οἴκῳ Ἰσραὴλ καὶ τῷ οἴκῳ Ἰούδα διαθή-
32 κην καινήν, Οὐ κατὰ τὴν διαθήκην ἣν διεθέ-
μην τοῖς πατράσιν αὐτῶν, ἐν ἡμέρᾳ ἐπι-
λαβομένου μου τῆς χειρὸς αὐτῶν, ἐξαγαγεῖν
αὐτοὺς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, ὅτι αὐτοὶ οὐκ ἐνέ-
μειναν ἐν τῇ διαθήκῃ μου, (γ) καὶ ἐγὼ ἠ-
33 μέλησα αὐτῶν, φησὶ κύριος· Ὅτι αὕτη ἡ
(δ) διαθήκη μου, ἣν διαθήσομαι τῷ οἴκῳ
Ἰσραήλ, Μετὰ τὰς ἡμέρας ἐκείνας, φησὶ
κύριος, διδοὺς (ε) δώσω νόμους μου εἰς τὴν
διάνοιαν αὐτῶν, καὶ (ζ) ἐπὶ καρδίας αὐτῶν
γράψω αὐτούς, καὶ ἔσομαι αὐτοῖς εἰς θεόν,
καὶ αὐτοὶ ἔσονταί μοι εἰς λαόν. Καὶ οὐ μὴ
34 διδάξωσιν ἕκαστος τὸν (η) πολίτην αὐτοῦ,
καὶ ἕκαστος τὸν (θ) ἀδελφὸν αὐτοῦ, λέγων,
Γνῶθι τὸν κύριον· ὅτι πάντες εἰδήσουσί με
ἀπὸ μικροῦ (ι) αὐτῶν ἕως μεγάλου αὐτῶν,
ὅτι ἵλεως ἔσομαι ταῖς ἀδικίαις αὐτῶν, καὶ
τῶν ἁμαρτιῶν αὐτῶν οὐ μὴ μνησθῶ ἔτι.
37 Ἐὰν ὑψωθῇ ὁ οὐρανὸς εἰς τὸ μετέωρον,
φησὶ κύριος, καὶ ἐὰν ταπεινωθῇ τὸ ἔδα-
φος τῆς γῆς κάτω, καὶ ἐγὼ οὐκ ἀποδοκιμῶ
τὸ γένος Ἰσραήλ, φησὶ κύριος, περὶ πάν-
35 των ὧν (κ) ἐποίησαν. Οὕτως εἶπε κύριος,
ὁ δοὺς τὸν ἥλιον εἰς φῶς τῆς ἡμέρας, σελήνην
καὶ (λ) ἀστέρας εἰς φῶς τῆς νυκτός, καὶ κραυ-
γὴν (") ἐν θαλάσσῃ, καὶ ἐβόμβησε τὰ κύμα-
τα αὐτῆς, Κύριος παντοκράτωρ ὄνομα
36 αὐτῷ· Ἐὰν παύσωνται οἱ νόμοι οὗτοι ἀπὸ
προσώπου μου, φησὶ κύριος, καὶ τὸ γένος
Ἰσραὴλ (μ) παύσεται γενέσθαι ἔθνος κατὰ
38 πρόσωπόν μου πάσας τὰς (ν) ἡμέρας. Ἰδοὺ
ἡμέραι ἔρχονται, φησὶ κύριος, καὶ (") οἰκο-
δομηθήσεται πόλις τῷ κυρίῳ ἀπὸ πύρ-
γου Ἀναμεήλ, ἕως (ξ) πύλης τῆς γωνίας·
39 Καὶ ἐξελεύσεται ἡ διαμέτρησις αὐτῆς ἀπέν-
αντι αὐτῶν ἕως βουνῶν Γαρήβ, καὶ περικυ-
κλωθήσεται κύκλῳ ἐξ ἐκλεκτῶν (ο) λίθων,

Quia inebriavi omnem animam 25
ſitientem: & omnem animam e-
ſurientem ſaturavi. Ideò exper- 26
gefactus ſum, & vidi: & ſo-
mnus meus jucundus mihi factus
eſt. Idcircò ecce dies veniunt, ait 27
Dominus, & ſeminabo Iſrael, &
Judam, ſemine hominis, & ſe-
mine jumenti. Et erit, ſicut vigi- 28
labam ſuper eos ad deſtruendum
& affligendum; ſic vigilabo ſu-
per eos ad ædificandum, & plan-
tandum, ait Dominus. In diebus 29
illis non dicent; Patres comede-
runt uvam acerbam, & dentes
filiorum obſtupuerunt. Sed unuſ- 30
quiſque in peccato ſuo morietur:
et comedentis uvam acerbam ob-
ſtupeſcent dentes ejus. Ecce dies 31
veniunt, ait Dominus, & diſpo-
nam domui Iſrael, et domui Ju-
da, teſtamentum novũ, Non jux- 32
ta teſtamentum, quod diſpoſui
patribus eorum in die, cùm ap-
prehendi ego manum eorum ad
educendum eos de terra Ægy-
pti: quia ipſi non manſerunt
in teſtamento meo, et ego neglexi
eos, ait Dominus. Hoc enim 33
eſt teſtamentum meum, quod
diſponam domui Iſrael poſt
dies illos, ait Dominus: dans
dabo leges meas in mentem eorũ,
et in corde eorum ſcribam eas:
et ero eis in Deum, et ipſi erunt
mihi in populum. Et non docebunt 34
unuſquiſque civem ſuum, et u-
nuſquiſque fratrem ſuum, dicens;
Noſce Dominum: quia omnes in-
telligent me à parvo eorum
uſque ad magnum eorum: quo-
niam propitius ero iniquitatibus
eorum, et peccatorum eorum non
recordabor ampliùs. Si elevatum 37
fuerit cœlum in ſublime, ait Do-
minus, et ſi humiliatum fuerit pa-
vimentum terræ deorſùm, et ego
(u) non reprobabo genus Iſrael,
dicit Dominus, pro omnibus quæ
fecerunt. Sic dixit Dominus: 35
qui dat Solem in lumen diei, Lu-
nam et ſtellas in lumen noctis, et
clamorem in mari, et ſonuerunt
fluctus ejus: Dominus omnipo-
tens nomen illi; Si ceſſaverint 36
leges hæ à facie mea, dicit Do-
minus; et genus Iſrael ceſſabit
eſſe gens ante faciem meam cun-
ctis diebus. Ecce dies veniunt, 38
dicit Dominus, et ædificabitur
civitas Domino à * turri Ana-
meel uſque ad portam anguli,
Et exibit (x) dimenſio ejus con- 39
tra (y) eos uſque ad colles Ga-
reb: et circundabitur in circui-
tu ex electis lapidibus:

MS.A. (⸸) ἐγένετο. (ω) ἐμωδίασαν. (α) ἁμαρτίᾳ αὐτοῦ (β) λέγει (γ) κἀγὼ ἠμέλησα (δ) διαθήκη, ἣν (ε) νόμους (ζ) ἐπιγράψω αὐτοὺς ἐπὶ τὰς καρδίας αὐτῶν, καὶ ὄψομαι αὐτούς, καὶ ἔσομαι (η) ἀδελφὸν (θ) πλησίον (ι) ἕως μεγάλου (κ) ἐποίησάν μοι. (λ) τὰ ἄστρα (") ἐν τῇ (μ) παύσονται (ν) ἡμέρας, φησὶν κύριος. (") οἰκοδομήσει (ξ) τῆς πύλης (ο) *κύκλῳ, Καὶ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 והוה כד אסתלקא משרית כסדאי מעל ירושלם מן קדם משרית פרעה: ונפק 12
ירמיה מירושלם למיזל לארע שבטא בנימן לפלגא אחסנתא דאית ליה תמן בגו עמא:
13 והוה הוא בתרע שבטא בנימן ותמן גברא ממנא ושמיה יראיה בר שלמיה בר
14 חנניה ואחד ית ירמיה נביא למימר לכסדאי את משתמע: ואמר ירמיה שקרא
את אמר לית אנא משתמע לכסדאי ולא קביל מניה ואחד יראיה בירמיה ואיתיה
15 לות רברביא: ורגיזו רברביא על ירמיהו ואלקיאו יתיה ויהבו יתיה בית אסירי
16 בית יהונתן ספרא ארי יתיה עבדו לבית אסירי: ארי על ירמיה לבית אסירי ולגו
17 מן חנותא ויתיב תמן ירמיה יומין סגיאין: ושלח מלכא צדקיה ודבריה ושאליה
מלכא בביתיה בסתרא ואמר האית פתגמא מן קדם יי ואמר ירמיה אית ואמר ביד
18 מלכא דבבל תתמסר: ואמר ירמיה למלכא צדקיה מה חבית לך ולעבדך ולעמא
19 הדין ארי יהבתון יתי לבית אסירי: ואן נביאיכון דשקרא דאתנביאו לכון למימר לא
20 ייתי מלכא דבבל עליכון ועל ארעא הדא: וכען שמע כען רבוני מלכא תתקבל
21 כען בעותי קדמך ולא תתיבנני לבית יהונתן ספרא ולא אמות תמן: ופקיד
מלכא צדקיה ופקידו ית ירמיה בדרת בית אסיריא ויהבין ליה פתא דלחמא
ליומא משוק נחתומיא עד דשלים כל לחמא מן קרתא ויתב ירמיה בדרת בית אסריא:

לח

1 ושמע שפטיה בר מתן וגדליה בר פשחור ויוכל בר שלמיהו ופשחור בר מלכיה ית
2 פתגמיא דירמיה ממלל עם כל עמא למימר: כדנן אמר יי דיתיב בקרתא הדא יתקטיל
בחרבא בכפנא ובמותא ודיפוק וישתמע לכסדאי ייחי ותהי ליה נפשיה לשיזבא ויתקים:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et factum eſt cùm receſſiſſet exercitus Chaldæorum ab Jeruſalem, propter 11
exercitum Pharaonis. Egreſſúſque eſt Jeremias de Jeruſalem, ut iret in ter- 12
ram tribus Benjamin, ut divideret hæreditatem, quam habebat ibi in medio
populi. Cúmque eſſet ipſe in porta tribus Benjamin, erat ibi vir conſti- 13
tutus, nomine Jerias, filius Selemiæ filii Ananiæ, & apprehendit Jeremiam
prophetam; dicens: Tu Chaldæis tete vis dedere? Et dixit Jeremias, 14
Falſum tu dicis: non ego me dedo Chaldæis. Et non acquie-
vit, & apprehendit Jerias Jeremiam, & adduxit eum ad principes. Et 15
irati ſunt principes contra Jeremiam, & percuſſerunt eum, & conjecerunt
eum in carcerem domus Jonathan ſcribæ; ipſam enim fecerant in carce-
rem. Ingreſſus eſt enim Jeremias in domum carceris, & in medium taber- 16
narum: & ſedit ibi Jeremias diebus multis. Et miſit rex Sedechias, & 17
tulit eum, & interrogavit eum rex in domo ſua clam: & ait, Nunquid
eſt verbum à facie Domini? & ait Jeremias, Eſt. Et ait: In manum re-
gis Babylonis tradêris. Et dixit Jeremias regi Sedechiæ, Quid peccavi 18
tibi & ſervis tuis, & populo huic, ut poneretis me in domum carceris?
Et ubi ſunt pſeudoprophetæ veſtri, qui prophetant vobis; dicentes, Non 19
veniet rex Babylonis contra vos & contra terram iſtam? Et nunc audi 20
obſecro domine mi rex: acceptabilis ſit obſecro deprecatio mea coram te,
& ne reducas me in domum Jonathan ſcribæ, & non moriar ibi. Et præ- 21
cepit rex Sedechias, & commendaverunt Jeremiam in veſtibulo domus
carceris; & dabatur ei fruſtum panis quotidie de vico piſtorum, donec
conſumeretur omnis panis de civitate. Et manſit Jeremias in veſtibulo
carceris.

CAP. XXXVIII.

Audivit autem Saphatias filius Mathan, & Gedelias filius Phaſur, & Ju- 1
chal filius Selemiæ, & Phaſur filius Melchiæ, verba Jeremiæ loquentis cùm
omni populo; dicendo: Hæc dicit Dñs, Qui manſerit in urbe hac, occide- 2
tur gladio, & fame, & peſte: qui autem egreſſus fuerit, & dediderit ſe
Chaldæis, vivet; & erit ei anima ejus in evaſionem, & ſuſtentabitur.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܟܕ ܣܠܩ ܠܗ ܚܝܠܐ ܕܟܠܕܝܐ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ ܡܢ ܩܕܡ ܚܝܠܗ ܕܦܪܥܘܢ. * ܘܢܦܩ ܐܪܡܝܐ ܡܢ 11
ܐܘܪܫܠܡ ܠܡܐܙܠ ܠܐܪܥܐ ܕܒܢܝܡܝܢ ·. ܠܡܦܠܓܗ. ܬܡܢ ܡܢܬܐ ܥܡ ܥܡܐ. * ܘܟܕ 12 13
ܩܐܡ ܗܘܐ ܒܬܪܥܐ ܕܒܢܝܡܝܢ ·. ܐܝܬ ܗܘܐ ܬܡܢ ܪܒ ܩܛܘܪܐ ·. ܘܫܡܗ ܢܪܝܐ ܒܪ ܫܠܡܝܐ
ܒܪ ܚܢܢܝܐ. ܘܐܚܕܗ ܠܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܠܘܬ ܟܠܕܝܐ ܥܪܩ ܐܢܬ. * ܘܐܡܪ ܠܗ 14
ܐܪܡܝܐ ܕܓܠܐ ܗܝ. ܠܐ ܥܪܩ ܐܢܐ ܠܘܬ ܟܠܕܝܐ. ܘܠܐ ܫܡܥܗ. ܘܐܚܕܗ ܢܪܝܐ ܠܐܪܡܝܐ.
ܘܐܝܬܝܗ ܠܘܬ ܪܘܪܒܢܐ. * ܘܪܓܙܘ ܪܘܪܒܢܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ. ܘܢܓܕܘܗܝ. ܘܐܪܡܝܘܗܝ ܒܒܝܬ 15
ܐܣܝܪܐ ܒܒܝܬ ܝܘܢܬܢ ܣܦܪܐ. ܡܛܠ ܕܠܗ ܥܒܕܘܗ ܪܫ ܐܣܝܪܐ. * ܘܐܪܡܝܘܗܝ ܠܐܪܡܝܐ. ܒܒܝܬ 16
ܓܘܒܐ ܠܓܘܒܐ. ܘܗܘܐ ܬܡܢ ܐܪܡܝܐ ܝܘܡܬܐ ܣܓܝܐܐ. * ܘܫܕܪ ܡܠܟܐ ܨܕܩܝܐ. 17
ܘܐܦܩܗ. ܘܫܐܠܗ ܡܠܟܐ ܒܒܝܬܐ ܒܛܘܫܝܐ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܢܦܩ ܦܬܓܡܐ ܡܢ ܩܕܡ
ܡܪܝܐ ·. ܘܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܢܦܩ. ܘܐܡܪ ܡܠܟܐ ܐܝܢܐ ܢܦܩ. ܘܐܡܪ ܕܒܐܝܕܘܗܝ ܕܡܠܟܐ 18
ܕܒܒܠ ܡܫܬܠܡܬ. * ܘܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܠܡܠܟܐ ܨܕܩܝܐ. ܡܢܐ ܚܛܝܬ ܠܟ. ܘܠܥܒܕܝܟ
ܘܠܥܡܐ ܗܢܐ ·. ܕܐܪܡܝܬܘܢܝ ܒܒܝܬ ܐܣܝܪܐ. * ܘܐܝܟܐ ܐܢܘܢ ܢܒܝܐܝܟܘܢ ܕܡܬܢܒܝܢ ܗܘܘ 19
ܠܟܘܢ ܘܐܡܪܝܢ. ܕܠܐ ܐܬܐ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܥܠܝܟܘܢ. ܘܥܠ ܐܪܥܐ ܗܕܐ. * ܘܗܫܐ ܫܡܥܝܢܝ 20
ܡܪܝ ܡܠܟܐ. ܘܬܦܠ ܒܥܘܬܝ ܩܕܡܝܟ. ܘܠܐ ܬܗܦܟܢܝ ܠܒܝܬܗ ܕܝܘܢܬܢ ܣܦܪܐ. ܕܠܐ ܐܡܘܬ 21
ܬܡܢ. * ܘܦܩܕ ܡܠܟܐ ܨܕܩܝܐ ·. ܘܐܫܠܡܘܗܝ ܠܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܒܕܪܬܐ ܕܒܝܬ ܐܣܝܪܐ. ܘܝܗܒܝܢ
ܗܘܘ ܠܗ ܓܪܝܨܐ ܕܠܚܡܐ ܝܘܡܢܐ ܡܢ ܫܘܩܐ ܕܢܚܬܘܡܐ ·. ܥܕܡܐ ܕܫܠܡ ܟܠܗ ܠܚܡܐ
ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܝܬܒ ܐܪܡܝܐ ܒܕܪܬܐ ܕܒܝܬ ܐܣܝܪܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܟܣ *
* ܘܫܡܥ ܫܦܛܝܐ ܒܪ ܡܬܢ. ܘܓܕܠܝܐ ܒܪ ܦܫܚܘܪ. ܘܝܘܟܠ ܒܪ ܫܠܡܝܐ ܘܦܫܚܘܪ ܒܪ ܡܠܟܝܐ ·. 1
ܦܬܓܡܐ ܕܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܠܟܠܗ ܥܡܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܢ ܕܝܬܒ ܒܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ·: ܢܡܘܬ 2
ܒܚܪܒܐ ܘܒܟܦܢܐ ܘܒܡܘܬܢܐ. ܘܡܢ ܕܢܦܩ ܠܘܬ ܟܠܕܝܐ ·. ܢܚܐ ܘܬܬܦܨܐ ܢܦܫܗ.

11 * Cùm itaque diſceſſiſſet exercit⁹ Chaldæorum 11
12 ex Jeruſalem metu exercit⁹ Pharaonis, Exivit Jeremia de Jeruſalem ut abiret in terram Benjaminis ad ſortem ibi cùm populo dividendam :
13 Cúmque ſtaret ad portam Benjaminis, aderat illic præfect⁹ quidam cujus nomen erat Neria fili⁹ Selamiæ filii Hananiæ. Is apprehenſo Jeremiâ prophetâ dixit illi, Ad Chaldæos tu fugis.
14 Cui reſpondit Jeremia, Mentiris, nequaquam fugio ad Chaldæos : at non auſcultavit eum ; ſed Neria apprehenſum Jeremiâ adduxit ad principes.
15 Tum principes Jeremiæ ſuccenſentes flagellaverunt eum, & in carcerem conjecerunt in domo Jonathanis ſcribæ (hunc enim præfecerant carcere detentis)
16 Et præcipitaverunt Jeremiam è feneſtra foveæ in foveam, manſitque ibi Jeremia dies multos.
17 Tandem mittens rex Sedecia extraxit eum, & interrogavit eum rex domi ſecretò, & ait illi ; Prodiitne ſermo à Domino? Reſpondit Jeremia, Prodiit. Ait rex, Cujus modi prodiit ? Reſpondit, Te in manus regis Babyloniæ tradendum.
18 Subdiditque Jeremia ad regem Sedeciam ; Quid peccavi tibi, aut ſervis tuis, aut populo iſti, ut me in carcerem truderetis ?
19 Et ubi ſunt prophetæ veſtri qui prophetabant vobis, ac dicebant haudquaquam venturum regem Babyloniæ contra vos & contra terram iſtam ?
20 Jam audi me domine mi rex, & admittatur apud te deprecatio mea, néve me remittas in domum Jonathanis ſcribæ, ne illic moriar.
21 Quamobrem præcepit rex Sedecia, dimiſeruntque Jeremiam prophetam in atrium carceris, & dabant ei placentam panis quotidie ex officina piſtoris, donec conſumptus eſt totus panis ex civitate : manſit ergò Jeremia in atrio carceris.

CAP. XXXVIII.

1 Audivit autem Sephatia filius Mathanis, Gedalia filius Pheſhuris, Juchal filius Selamiæ, & Pheſhur filius Melachiæ, ſermones quos habuerat Jeremia ad univerſum populum ;
2 Sic ait Dominus, Quicunque manſerit in hac civitate, peribit gladio, fame, aut peſte ; quicunque verò exierit ad Chaldæos, vivet, & liberabit animam ſuam.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لاني اسكرت كل ارض عطشانة * ومليت كل نفس جايعة * لاجل هذا قمت ونظرت * 25 26
وصار لي نومي لذيذا * لاجل هذا ها ايام تاتي قال الرب * وازرع اسرايل ويهودا زرع 27
انسان وزرع بهيمة * ويكون كما سهرت عليهم لاهدمهم واكبهم * هكذا ساسهر عليهم 28
لابنيهم واغرسهم قال الرب * في تلك الايام لا يقولون * الاباء اكلوا الحصرم واسنان الاولاد 29
ضرست * لكن كل واحد بخطيته يموت * والذي ياكل الحصرم تضرس اسنانه * ها 30 31
ايام تاتي قال الرب * واصنع لبيت اسرايل ولبيت يهودا عهدا جديدا * ليس كالعهد الذي 32
عهدته لابايهم في يوم اخذت بيدهم لاخرجهم من ارض مصر * لانهم لم يثبتوا في
عهدي وانا تهاونت بهم قال الرب * لان هذا هو العهد الذي اعهد به لبيت اسرايل * 33
من بعد تلك الايام قال الرب * اعطي نواميسي في قلبهم * واكتبها على ضمايرهم *
واعاينهم * واصير لهم الها وهم يصيرون لي شعبا * ولا يعلمون كل واحد قريبه وكل 34
واحد اخاه قايلا اعرف الرب * لان جميعهم يعرفوني من صغيرهم الى كبيرهم * لاني
اصير راحما لظلاماتهم * ولست اذكر خطاياهم بعد * ان ارتفعت السماء ارتفاعا قال الرب * 37
وان ذل تراب الارض اسفل * فانا لست ابعد جنس اسرايل قال الرب * من اجل جميع ما
صنعوه لي * هكذا قال الرب المعطي الشمس لنور النهار * والقمر والنجوم لضوء الليل * 35
وصراخا في البحر * ورفع امواجه * الرب ضابط الكل اسمه * ان انكفت هذه النواميس قال 36
الرب * جنس اسرايل ينكف ليكون امة لوجهي قال الرب * ها ايام تاتي قال الرب * 38
فيبنون مدنا للرب * من برج اناماييل الى باب الزاوية * وتخرج مساحتها قدامهم الى تلال 39
غاريب * ويدار حولها من الحجارة الحسان *

25 *Quia inebriavi omnem terram ſitientem, & implevi omnem animam eſurientem.*
26 *Ad hoc exurrexi, & vidi, factuſque eſt mihi ſomnus meus jucundus.*
27 *Idcirco ecce dies venient, dixit Dominus, quum ſeminabo Iſraelem & Judam ſemine humano & ſemine jumenti :*
28 *Et erit, quemadmodum vigilavi ſuper eos ut deſtruerem & dejicerem eos ; ita vigilabo ſuper eos ut ædificem & plantem eos, ait Dominus.*
29 *Iis diebus nequaquam dictitabunt, Patres comederunt omphacem, & dentes filiorum obſtupeſcunt :*
30 *Sed unuſquiſque pro peccato ſuo morietur : & quicunq; comederit omphacem, hujus dentes obſtupeſcent.*
31 *Ecce dies venient, dixit Dominus, quum diſponam domui Iſraelis & domui Judæ fœdus novum :*
32 *Non quale fuit illud fœdus quod inieram cum majoribus eorum, die quo apprehendi manum eorum ut educerem eos è terra Ægypti : (nam quia non perſtiterunt in fœdere meo, ego viciſſim neglexi eos, dixit Dominus)*
33 *Sed hoc eſt fœdus quod ineo cum domo Iſraelis : Poſt illos dies, dixit Dominus, indam leges meas in cor eorum, & inſcribam eas menti eorum : reſpiciam eos, & ero illis Deus, ipſique fient mihi populus.*
34 *Et non docebunt unuſquiſque proximum ſuum & unuſquiſque fratrem ſuum, dicens ; Noſce Dominum : omnes enim me cognoſcent à minimo ad maximum : quoniam propitius ero perverſitatibus eorum, & non recordabor ampliùs peccata eorum.*

Anteponit hunc Ver. 37. ut in LXX.

37 *Etiamſi cœlum ſublimè ferretur, dixit Dominus, & quanvis terræ pulvis ad imum deprimeretur ; ego tamen haudquaquam amovebo genus Iſraelis, ait Dominus, pro omnibus quæ contra me perpetrârunt.*
35 *Ita dixit Dominus qui ſolem dat in lumen diei, lunam ac ſtellas in lucem noctis, ſonitum in mari, & extollit fluctus ejus, cujus nomen eſt Dominus omnitenens ;*
36 *Si deſierint hæ leges, dixit Dominus, genus Iſraelis deſinet eſſe populus in conſpectu meo, dixit Dominus.*
38 *Ecce dies venient, dixit Dominus, quum ædificabunt urbes Domino, à turri Anameelis uſq; ad portam anguli :*
39 *Et porrigetur dimenſio earum coram ipſis uſque ad colles Gareb, & undique cingentur lapidibus electis :*

ירמיה : לח

hæc civitas tradetur Tradendo : Dominus dixit Sic
כֹּה אָמַר יְהוָה הִנָּתֹן תִּנָּתֵן הָעִיר הַזֹּאת 3
principes dixerunt Et .eam capiet & ,Babel regis *virtutis* manum in
בְּיַד חֵיל מֶלֶךְ־בָּבֶל וּלְכָדָהּ : וַיֹּאמְרוּ הַשָּׂרִים 4
sic super nam , iste vir *nunc* Moriatur : regem ad
אֶל־הַמֶּלֶךְ יוּמַת נָא אֶת־הָאִישׁ הַזֶּה כִּי עַל־כֵּן
residuorum , belli virorum manus *debilitans* ipse
הוּא מְרַפֵּא אֶת־יְדֵי אַנְשֵׁי הַמִּלְחָמָה הַנִּשְׁאָרִים
eos ad loquendo , populi universi manus & , hac civitate in
בָּעִיר הַזֹּאת וְאֵת יְדֵי כָל־הָעָם לְדַבֵּר אֲלֵיהֶם
quærens ipse non iste vir quia : hæc verba secundùm
כַּדְּבָרִים הָאֵלֶּה כִּי הָאִישׁ הַזֶּה אֵינֶנּוּ דֹרֵשׁ
rex dixit Et .malum *in quinimo* ,huic populo pacem *ad*
לְשָׁלוֹם לָעָם הַזֶּה כִּי אִם־לְרָעָה : וַיֹּאמֶר הַמֶּלֶךְ 5
poterit rex non quia : *vestra manu in ipse* Ecce : Sidchijahu
צִדְקִיָּהוּ הִנֵּה־הוּא בְּיֶדְכֶם כִּי־אֵין הַמֶּלֶךְ יוּכַל
fecerunt projicere & , Irmejahu tulerunt Et .*verbum vobiscum*
אֶתְכֶם דָּבָר : וַיִּקְחוּ אֶת־יִרְמְיָהוּ וַיַּשְׁלִכוּ 6
atrio in qui , Melech filii Malchijahu cisternam in eum
אֹתוֹ אֶל־הַבּוֹר מַלְכִּיָּהוּ בֶן־הַמֶּלֶךְ אֲשֶׁר בַּחֲצַר
cisterna in & : funibus *in* Irmejahu submiserunt & , custodiæ
הַמַּטָּרָה וַיְשַׁלְּחוּ אֶת־יִרְמְיָהוּ בַּחֲבָלִים וּבַבּוֹר
.cœnum in Irmejahu est defixus & ,lutum *quinimo* , aqua non
אֵין־מַיִם כִּי אִם־טִיט וַיִּטְבַּע יִרְמְיָהוּ בַּטִּיט :
domo in ipse &) eunuchus vir Æthiops Melech-Hebed audivit Et
וַיִּשְׁמַע עֶבֶד־מֶלֶךְ הַכּוּשִׁי אִישׁ סָרִיס וְהוּא בְּבֵית 7
rex & : cisternam *ad* Irmejahu *dedissent* quòd (regis
הַמֶּלֶךְ כִּי־נָתְנוּ אֶת־יִרְמְיָהוּ אֶל־הַבּוֹר וְהַמֶּלֶךְ
domo de Melech-Hebed est egressus Et .Binjamin porta in *sedens*
יוֹשֵׁב בְּשַׁעַר בִּנְיָמִן : וַיֵּצֵא עֶבֶד־מֶלֶךְ מִבֵּית 8
, rex mi Domine : dicendo , regem ad est locutus & , regis
הַמֶּלֶךְ וַיְדַבֵּר אֶל־הַמֶּלֶךְ לֵאמֹר : אֲדֹנִי הַמֶּלֶךְ 9
Irmejahu in fecerunt quæ omnia isti viri malefecerunt
הֵרֵעוּ הָאֲנָשִׁים הָאֵלֶּה אֵת כָּל־אֲשֶׁר עָשׂוּ לְיִרְמְיָהוּ
morietur & : cisternam in fecerunt projicere quem ,prophetam
הַנָּבִיא אֵת אֲשֶׁר־הִשְׁלִיכוּ אֶל־הַבּוֹר וַיָּמָת
.civitate in ultrà panis non quia : *famis faciebus à se sub*
תַּחְתָּיו מִפְּנֵי הָרָעָב כִּי אֵין הַלֶּחֶם עוֹד בָּעִיר :
Tolle : dicendo ,Æthiopi Melech-Hebed rex præcepit Et
וַיְצַוֶּה הַמֶּלֶךְ אֵת עֶבֶד־מֶלֶךְ הַכּוּשִׁי לֵאמֹר קַח 10
Irmejahu *facies* ascendere & , viros triginta hinc tua manu in
בְיָדְךָ מִזֶּה שְׁלֹשִׁים אֲנָשִׁים וְהַעֲלִיתָ אֶת־יִרְמְיָהוּ
-Hebed assumpsit Et .moriatur antequam , cisterna de prophetam
הַנָּבִיא מִן־הַבּוֹר בְּטֶרֶם יָמוּת : וַיִּקַּח עֶבֶד־ 11
ad regis domum est ingressus & ,sua *manu in* viros Melech
מֶלֶךְ אֶת־הָאֲנָשִׁים בְּיָדוֹ וַיָּבֹא בֵית־הַמֶּלֶךְ אֶל־
vetera & , *tractionum vetera* inde tulit & ,thesaurum sub
תַּחַת הָאוֹצָר וַיִּקַּח מִשָּׁם בְּלוֹיֵ הַסְּחָבוֹת וּבְלוֹיֵ
.*funibus in* cisternam *ad* Irmejahu ad *ea* misit & , *corruptionum*
מְלָחִים וַיְשַׁלְּחֵם אֶל־יִרְמְיָהוּ אֶל־הַבּוֹר בַּחֲבָלִים :
nunc Pone : Irmejahu ad Æthiops Melech-Hebed dixit Et
וַיֹּאמֶר עֶבֶד־מֶלֶךְ הַכּוּשִׁי אֶל־יִרְמְיָהוּ שִׂים נָא 12
tuarum manuum axillis sub *corruptionum &* , *tractionum vetera*
בְּלוֹאֵי הַסְּחָבוֹת וְהַמְּלָחִים תַּחַת אַצִּלוֹת יָדֶיךָ
Irmejahu extraxerunt Et .sic Irmejahu fecit & : funes desubter
מִתַּחַת לַחֲבָלִים וַיַּעַשׂ יִרְמְיָהוּ כֵּן : וַיִּמְשְׁכוּ אֶת־יִרְמְיָהוּ 13
Irmejahu mansit & : cisterna è eum fecerunt ascendere & ,funibus *in*
בַּחֲבָלִים וַיַּעֲלוּ אֹתוֹ מִן־הַבּוֹר וַיֵּשֶׁב יִרְמְיָהוּ
.custodiæ atrio in
בַּחֲצַר הַמַּטָּרָה :

Versio VULG. LAT.

3 Hæc dicit Dominus ; Tradendo tradetur civitas hæc in manu exercitûs regis Babylonis, & capiet eam. 4 Et dixerunt principes regi ; Rogamus ut occidatur homo iste : de industria enim dissolvit manus virorum bellantium , qui remanserunt in civitate hac, & manus universi populi , loquens ad eos juxta verba hæc : siquidem homo iste non quærit pacem populo huic, 5 sed malum. Et dixit rex Sedecias ; Ecce ipse in manibus vestris est : nec enim fas est regem 6 vobis quidquam negare. Tulerunt ergò Jeremiam, & projecerunt eum in lacum Melchiæ filii Amelech, qui erat in vestibulo carceris : & submiserunt Jeremiam funibus in lacum , in quo non erat aqua, sed lutum : descendit itaque 7 Jeremias in cœnum. Audivit autem Abdemelech Æthiops vir eunuchus, qui erat in domo regis, quòd misissent Jeremiam in lacum : porrò rex sedebat in 8 porta Benjamin. Et egressus est Abdemelech de domo regis, & locutus est ad regem, dicens ; 9 Domine mi rex, malè fecerunt viri isti omnia quæcunque perpetrârunt contra Jeremiam prophetam,mittentes eum in lacum ut moriatur ibi fame ; non sunt enim panes ul- 10 trà in civitate. Præcepit itaque rex Abdemelech Æthiopi , dicens ; Tolle tecum hinc triginta viros , & leva Jeremiam prophetam de lacu antequàm 11 moriatur. Assumptis ergò Abdemelech secum viris, ingressus est domum regis, quæ erat sub cellario : & tulit inde veteres pannos, & antiqua quæ computruerant, & submisit ea ad Jeremiam in lacum per funiculos. 12 Dixitque Abdemelech Æthiops ad Jeremiam ; Pone veteres pannos, & hæc scissa & putrida , sub cubito manuum tuarum, & super funes : fecit ergò 13 Jeremias sic. Et extraxerunt Jeremiam funibus, & eduxerunt eum de lacu : mansit autem Jeremias in vestibulo carceris.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

40 Καὶ πάντες ἀσαρημὼθ ἕως (π) νάχαλ Κέδρων, ἕως γωνίας πύλης ἵππων ἀνατολῆς, ἁγίασμα τῷ κυρίῳ, καὶ οὐκέτι οὐ μὴ ἐκλίπῃ, καὶ οὐ μὴ καθαιρεθῇ ἕως τοῦ αἰῶνος.

Cap. 32. ΚΕΦ. λθʹ.

1 Vulg. Lat. Ὁ λόγος ὁ (α) γενόμενος παρὰ κυρίου πρὸς Ἱερεμίαν ἐν τῷ ἐνιαυτῷ (β) δεκάτῳ βασιλεῖ Σεδεκίᾳ, οὗτος ἐνιαυτὸς ὀκτωκαιδέκατος τῷ βασιλεῖ Ναβουχοδονόσορ (γ) βασιλεῖ Βαβυλῶνος. 2 Καὶ δύναμις βασιλέως Βαβυλῶνος ἐχαράκωσεν (δ) ἐπὶ Ἱερουσαλήμ, καὶ Ἱερεμίας ἐφυλάσσετο (ε) ἐν αὐλῇ τῆς φυλακῆς, ἥ ἐστιν ἐν 3 οἴκῳ (ζ) βασιλέως, Ἐν ᾗ κατέκλεισεν αὐτὸν ὁ βασιλεὺς Σεδεκίας, λέγων, Διατί σὺ προφητεύεις; λέγων, Οὕτως εἶπε κύριος, Ἰδοὺ (η) ἐγὼ δίδωμι τὴν πόλιν ταύτην ἐν χερσὶ βασιλέως Βαβυλῶνος, καὶ λήψεται 4 αὐτήν, Καὶ Σεδεκίας οὐ μὴ σωθῇ ἐκ χειρὸς (θ) τῶν Χαλδαίων, ὅτι παραδόσει (ι) παραδοθήσεται εἰς χεῖρας βασιλέως Βαβυλῶνος, καὶ λαλήσει στόμα αὐτοῦ πρὸς στόμα αὐτοῦ, καὶ οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ ὄψονται. 5 Καὶ εἰσελεύσεται (κ) Σεδεκίας εἰς Βαβυλῶνα, 6 καὶ ἐκεῖ καθιεῖται. ΚΑῚ Ὁ ΛΌΓΟΣ ΚΥΡΊΟΥ ἘΓΕΝΉΘΗ ΠΡῸΣ ἹΕΡΕΜΊΑΝ, ΛΈΓΩΝ, 7 Ἰδοὺ Ἀναμεὴλ υἱὸς Σαλὼμ ἀδελφοῦ πατρός σου ἔρχεται πρὸς σέ, λέγων (λ), Κτῆσαι σεαυτῷ τὸν ἀγρόν μου τὸν ἐν Ἀναθώθ, ὅτι σοὶ (μ) κρίσις 8 παραλαβεῖν εἰς κτῆσιν. Καὶ ἦλθε πρός με Ἀναμεὴλ υἱὸς Σαλώμ, ἀδελφοῦ πατρός μου, εἰς τὴν αὐλὴν τῆς φυλακῆς, καὶ εἶπε (ν), Κτῆσαι σεαυτῷ τὸν ἀγρόν μου τὸν ἐν γῇ Βενιαμὶν τὸν ἐν Ἀναθώθ, ὅτι σοὶ κρίμα (ξ) κτήσασθαι αὐτόν, καὶ σὺ πρεσβύτερος. καὶ 9 ἔγνων, ὅτι λόγος κυρίου ἐστί, Καὶ ἐκτησάμην τὸν ἀγρὸν Ἀναμεὴλ υἱοῦ ἀδελφοῦ πατρός μου, καὶ ἔστησα αὐτῷ ἑπτὰ σίκλους καὶ 10 δέκα ἀργυρίου, Καὶ ἔγραψα εἰς βιβλίον, καὶ (ο) ἐσφραγισάμην, καὶ διεμαρτυράμην μάρτυρας, καὶ ἔστησα τὸ ἀργύριον ἐν ζυγῷ. 11 Καὶ ἔλαβον τὸ βιβλίον τῆς κτήσεως τὸ ἐ- 12 σφραγισμένον (π), Καὶ ἔδωκα αὐτὸ τῷ Βαροὺχ υἱῷ Νηρίου (ρ) υἱῷ Μαασαίου, κατ' ὀφθαλμοὺς Ἀναμεὴλ υἱοῦ ἀδελφοῦ πατρός μου, καὶ κατ' ὀφθαλμοὺς τῶν (σ) ἀνδρῶν τῶν παρεστηκότων καὶ γραφόντων ἐν τῷ βιβλίῳ τῆς κτήσεως, καὶ κατ' ὀφθαλμοὺς τῶν Ἰουδαίων (τ) 13 τῶν ἐν τῇ αὐλῇ τῆς φυλακῆς. Καὶ συνέταξα τῷ Βαροὺχ κατ' ὀφθαλμοὺς αὐτῶν, λέγων, 14 Οὕτως εἶπε κύριος παντοκράτωρ, Λάβε τὸ βιβλίον τῆς κτήσεως τοῦτο, καὶ τὸ βιβλίον τὸ ἀνεγνωσμένον, καὶ θήσεις (υ) αὐτὸ εἰς ἀγγεῖον ὀστράκινον, ἵνα διαμείνῃ ἡμέρας 15 πλείους. Ὅτι οὕτως εἶπε κύριος, Ἔτι (φ) κτισθήσονται ἀγροὶ, καὶ οἰκίαι, καὶ ἀμπελῶνες 16 ἐν τῇ γῇ ταύτῃ. Καὶ (χ) προσηυξάμην πρὸς κύριον μετὰ τὸ δοῦναί με τὸ βιβλίον τῆς κτήσεως πρὸς Βαροὺχ υἱὸν Νηρίου, λέγων,

(ϛ) Et omnes Asaremoth usque (ω) ad Nachal Cedron, usque ad angulum portæ equorum Orientis: Sanctificium Domino : & nequaquam ultrà deficiet, & non destruetur usque in seculum. 40

CAP. XXXIX.

1 VErbum, (a) quod factum est à Domino ad Hieremiam in anno decimo regi Sedeciæ: hic est annus octavus decimus regi Nabuchodonosor, regi Babylonis: 2 Et virtus regis Babylonis vallum fecit super Hierusalem : & Hieremias custodiebatur in atrio carceris, qui est in domo regis : 3 In quo clauserat eum rex Sedecias, dicens ; Quarè tu prophetas? dicens ; Sic dixit Dominus; Ecce ego do civitatem istam in manibus regis Babylonis, & capiet eam. 4 Et Sedecias non salvabitur de manu Chaldæorum : quia traditione tradetur in manus regis Babylonis: & loquetur os ipsius ad os ejus ; & oculi ipsius oculos illius videbunt : 5 Et intrabit Sedecias in Babylonem, & ibi (b) demittet se. 6 ET VERBUM Domini factum est ad Hieremiam, dicens ; 7 Ecce Anameel filius Salom fratris patris tui venit ad te, dicens ; Posside tibi agrum meum , qui in Anathoth, quia tibi judicium est accipere in possessionem. 8 Et venit ad me Anameel filius Salom, fratris patris mei, in atrium carceris, & dixit ; Posside tibi agrum meum, qui in terra Benjamin, qui in Anathoth : quia tibi (c) judicium est possidere eum, & tu es senior. Et cognovi , quia verbum Domini est: 9 Et possedi agrum Anameel filii fratris patris mei, & appendi ei septem siclos & decem argenti : 10 Et scripsi in libello, & sigillavi: & contestatus sum testes : & appendi argentum in statera. 11 Et sumpsi libellum possessionis obsignatum , 12 Et dedi illum Baruch filio Neriæ filio Maasiæ ante oculos Anameel filii fratris patris mei, & ante oculos virorum , qui adstiterant , & (d) scripserant in libello possessionis, & ante oculos Judæorum qui in atrio carceris : 13 Et præcepi Baruch ante oculos eorum, dicens ; 14 Sic dixit Dominus omnipotens ; Sume librum possessionis istum , & librum, qui lectus est : & pones illum in vase testaceo ; ut permaneat dies plures. 15 Quia sic dixit Dominus ; Adhuc (e) possidebuntur agri , & domus, & vineæ in terra hac. 16 Et oravi ad Dominum, postquàm dedi librum possessionis ad Baruch filium Neriæ, dicens ;

MS.A. Κεφ. λη'. (π) χειμάῤῥου Νάχαλ

MS.A. Κεφ. λθ'. (α) ΓΕΝΆΜΕΝΟΣ (β) ΤΩ͂ ΔΕΚΆΤΩ ΤΩ͂ ΒΑΣΙΛΕΙ͂ ΣΕΔΕΚΙ'Α ΒΑΣΙΛΕΙ͂ ἸΟΥ'ΔΑ, ΟΥ͂ΤΟΣ Ὁ ἘΝΙΑΥΤΟ'Σ (γ) ΒΑΒΥΛΩ͂ΝΟΣ· (δ) ἘΝ (ε) ἘΝ ΤΗ͂ (ζ) ΤΟΥ͂ (η) δίδωμι (θ) βασιλέως Χαλδαίων, (ι) παραδοθήσονται (κ) εἰς Βαβυλῶνα Σεδεκίας, καὶ ἐκεῖ ἀποθανεῖται. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς (λ) σοι, (μ) κρίμα (ν) μοι, (ξ) παραλαβεῖν εἰς κτῆσιν, καὶ σύ (ο) διεσφραγισάμην, (π) καὶ τὸ ἀνεγνωσμένον, Καὶ ἔδωκα (ρ) υἱοῦ Μαασαίου, (σ) ἑστηκότων καὶ (τ) πάντων τῶν καθημένων ἐν τῇ (υ) εἰς ἀγγεῖον (φ) κληθήσονται (χ) προσηυξάμην

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

כדנן אמר יי אתמסרא תתמסר קרתא הדא ביד משרית מלכא דבבל ויכבשנה : 3
ואמרו רברביא למלכא יתקטיל כען גברא הדין ארי על כן הוא מרשיל ית ידי 4
גברי עבדי קרבא דאשתארו בקרתא הדא וית ידי כל עמא למללא עמהון
כפתגמיא האלין ארי גברא הדין ליתוהי תבע לשלמא לעמא הדין אלהן לבישו :
ואמר מלכא צדקיה הא הוא מסיר בידכון ארי לית מלכא יכיל לאתבא יתכון 5
פתגם : ודברו ית ירמיה ורמו יתיה לגובא דמלכיא בר מלכא דבדרת בית 6
אסיריא ושרביבו ית ירמיה באטוניא ובגובא לית מיא אלהן טינא וטבע ירמיה
בטינא : ושמע עבדא דמלכא צדקיה גבר רב והוא בבית מלכא ארי יהבו ית 7
ירמיה לגובא ומלכא יתיב בתרע שבטא בנימן : ונפק עבדא דמלכא מבית 8
מלכא ומליל עם מלכא למימר : רבוני מלכא אבאישו גבריא האלין ית כל 9
דעבדו לירמיה נביא ית דרמוהי לגובא כבר מית באתריה מן קדם כפנא ארי לית
לחמא עוד בקרתא : ופקיד מלכא ית עבדא דמלכא צדקיה למימר דבר עמך 10
מכא תלתין גברין ותסיק ית ירמיה נביא מן גובא עד לא ימות : ודבר עבדא 11
דמלכא ית גבריא עמיה ועל לבית מלכא לתחות אוצרא ונסיב מתמן בלאי
טפסן ובלאי שחקן ושרבבנון לות ירמיה לגובא באטוניא : ואמר עבדא 12
דמלכא צדקיה לירמיה שוי כען בלאי טפסן ושחקן תחות מדבקי ידך מלרע לאטוניא
ועבד ירמיה כן : ונגדו ית ירמיה באטוניא ואסיקו יתיה מן גובא ויתיב ירמיה 13
בדרת בית אסיריא :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Hæc dicit Dominus, Tradendo tradetur civitas hæc in manum exercitus 3
regis Babylonis,& subjiciet eam. Et dixerunt principes regi, Occida- 4
tur nunc vir iste, propterea quòd dissolvit manus bellatorum qui reman-
serunt in urbe hac, & manus totius populi , dum eos hujusmodi verbis
alloquitur. Vir enim iste non quærit pacem populo huic,sed malum. Et 5
dixit rex Sedechias, Ecce ipse traditus est in manum vestram : non enim
rex potest prohibere vobis verbum. Et tulerunt Jeremiam , & proje- 6
cerunt eum in lacum Melchiæ filii regis, qui erat in atrio domus carceris ;
& demiserunt Jeremiam funibus , & in lacu non erat aqua sed lutum ;
& demersus est Jeremias in luto. Et audivit servus regis Sedechiæ vir 7
magnus, & ipse [*erat*] in domo regis, quòd posuissent Jeremiam in la-
cu. Et rex sedebat in porta tribus Benjamin. Et egressus est servus 8
regis de domo regis, & locutus est cum rege ; dicens : Domine mi rex, 9
malefecerunt viri isti in omnibus quæ fecerunt Jeremiæ prophetæ, quem
conjecerunt in lacum : jam mortuus est in loco suo præ fame , neque
enim est ultrà panis in civitate. Et præcepit rex servo regis Sedechiæ ; 10
dicens : Tolle hinc tecum triginta viros , & subleva Jeremiam pro-
phetam de lacu, antequam moriatur. Et tulit servus regis viros secum ; 11
& ingressus est in domum regis, sub cellarium ; & tulit indè frusta panni
vetera scissa, & comminuta ; & demisit ea ad Jeremiam in lacum funi-
bus. Et dixit servus regis Sedechiæ ad Jeremiam , Pone nunc vete- 12
ra panni frusta scissa & trita , sub axillis manuum tuarum , & sub
funibus. Et fecit Jeremias sic. Et extraxerunt Jeremiam funibus, 13
& subvexerunt eum de lacu. Et mansit Jeremias in atrio domus
carceris.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܫܠܡܘ ܡܫܬܠܡܐ ܗܕܐ ܡܕܝܢܬܐ ܒܐܝܕܝ ܚܝܠܗ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܘܢܟܒܫܝܗ. 3
* ܘܐܡܪܘ ܪܘܪܒܢܐ ܠܡܠܟܐ. ܢܬܩܛܠ ܓܒܪܐ ܗܢܐ. ܡܛܠ ܕܗܘܝܘ ܡܪܦܐ ܐܝܕܝܐ ܕܓܒܪܐ 4
ܩܪܒܬܢܐ ܕܐܫܬܚܪܘ ܒܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܘܐܝܕܝܗ ܕܟܠܗ ܥܡܐ ܕܐܡܪ ܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ.
ܡܛܠ ܕܓܒܪܐ ܗܢܐ ܠܐ ܒܥܐ ܫܠܡܐ ܠܥܡܐ ܗܢܐ. ܐܠܐ ܒܝܫܬܐ. * ܘܐܡܪ ܡܠܟܐ ܨܕܩܝܐ. 5
ܗܐ ܡܫܠܡ ܒܐܝܕܝܟܘܢ. ܡܛܠ ܕܡܠܟܐ ܠܐ ܡܫܟܚ ܠܡܐܡܪ ܠܟܘܢ ܡܕܡ. * ܘܕܒܪܘܗܝ 6
ܠܐܪܡܝܐ. ܘܐܪܡܝܘܗܝ ܠܓܘܒܐ ܕܡܠܟܝܐ ܒܪ ܡܠܟܐ. ܕܒܕܪܬܐ ܕܒܝܬ ܐܣܝܪܐ. ܘܫܒܩܘܗܝ
ܠܐܪܡܝܐ ܒܚܒܠܐ ܠܓܘܒܐ. ܘܒܓܘܒܐ ܠܝܬ ܡܝܐ ܐܠܐ ܣܝܢܐ. ܘܛܒܥ ܐܪܡܝܐ ܒܣܝܢܐ.
* ܘܫܡܥ ܥܒܕܡܠܟ ܟܘܫܝܐ ܓܒܪܐ ܡܗܝܡܢܐ. ܘܗܘ ܒܒܝܬ ܡܠܟܐ ܗܘܐ. ܕܐܪܡܝܘܗܝ 7
ܠܐܪܡܝܐ ܠܓܘܒܐ. ܘܡܠܟܐ ܝܬܒ ܗܘܐ ܒܬܪܥܐ ܕܒܢܝܡܝܢ. * ܘܢܦܩ ܥܒܕܡܠܟ ܡܢ ܒܝܬ 8
ܡܠܟܐ. ܘܐܡܪ ܠܡܠܟܐ. * ܡܪܝ. ܒܝܫ ܥܒܕܘ ܓܒܪܐ ܗܠܝܢ. ܡܕܡ ܕܥܒܕܘ ܠܐܪܡܝܐ 9
ܢܒܝܐ. ܘܐܪܡܝܘܗܝ ܠܓܘܒܐ. ܘܗܐ ܡܝܬ ܒܟܦܢܐ. ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܠܚܡܐ ܒܡܕܝܢܬܐ.
* ܘܦܩܕ ܡܠܟܐ ܠܥܒܕܡܠܟ ܟܘܫܝܐ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܕܒܪ ܥܡܟ ܡܟܐ ܬܠܬܝܢ ܓܒܪܝܢ. 10
ܘܐܙܠ ܐܣܩܝܘܗܝ ܠܐܪܡܝܐ ܡܢ ܓܘܒܐ. ܥܕܠܐ ܢܡܘܬ. * ܘܕܒܪ ܥܒܕܡܠܟ ܟܘܫܝܐ ܓܒܪܐ 11
ܡܢ ܒܝܬ ܡܠܟܐ ܥܡܗ. ܘܥܠ ܠܒܝܬ ܓܙܐ ܕܬܚܝܬ ܡܢ ܒܝܬ ܡܠܟܐ. ܘܢܣܒ ܡܢ
ܬܡܢ ܡܐܢܐ ܕܡܣܚܦܐ ܘܡܐܢܐ ܕܪܘܩܥܐ. ܘܫܒܩ ܐܢܘܢ ܠܐܪܡܝܐ ܒܚܒܠܐ ܠܓܘܒܐ. * ܘܐܡܪ 12
ܥܒܕܡܠܟ ܟܘܫܝܐ ܠܐܪܡܝܐ. ܡܐܢܐ ܕܡܣܚܦܐ ܘܪܘܩܥܐ. ܣܝܡ ܬܚܝܬ ܫܚܬܐ ܕܐܝܕܝܟ ܡܢ
ܬܚܝܬ ܚܒܠܐ. ܘܥܒܕ ܐܪܡܝܐ ܗܟܢܐ. * ܘܢܓܕܘܗܝ ܠܐܪܡܝܐ ܒܚܒܠܐ. ܘܐܣܩܘܗܝ ܡܢ 13
ܓܘܒܐ. ܘܝܬܒ ܐܪܡܝܐ ܒܕܪܬܐ ܕܒܝܬ ܐܣܝܪܐ.

* Sic ait Dominus, Tradetur hæc civitas in manum exercitûs regis Babyloniæ, qui ſubjugabit illam. 3 Quare dixerunt principes ad regem; 4 Interficiatur vir iſte, quoniam ipſe remiſſas reddit manus virorum belligerorum qui reſidui ſunt in hac civitate, & manus totius populi quibuſcum habet hujuſcemodi ſermones : nam vir iſte non optat fœlicitatem huic populo, ſed potiùs perniciem. Quibus 5 dixit rex Sedecia, En eſt manibus veſtris commiſſus, quandoquidem rex nihil vobis dicere poteſt. Accipientes itaque Jeremiam 6 conjecerunt eum in foveam Melachiæ filii regis, *quæ erat* in atrio carceris, & fune Jeremiam demiſerunt in foveam : in illa autem fovea non erant aquæ, ſed tantùm lutum : immerſuſque eſt Jeremia in lutum. Sed cùm 7 audiſſet Abdamelech Æthiops, vir eunuchus, qui erat in domo regis, conjectum fuiſſe Jeremiam in foveam (rex autem ſedebat in porta Benjaminis) Egreſſus eſt Abdamelech è domo regia, dixitque regi; 8 Domine mi, Iniquè fecerunt homines iſti quod 9 egerunt in Jeremiam prophetam : nam projecerunt eum in foveam, & ecce fame perit, quòd non fit panis in civitate. Præcepit ergò rex Abdamelecho Æthiopi, & dixit illi, 10 Duc tecum iſtinc triginta viros, & vade, extrahe Jeremiam è fovea priuſquam moriatur. Tum ductis ſecum Abdamelech viris illis de 11 domo regia, ingreſſus eſt in ærariũ ꝙ erat ſub domo regia; & ſumptis inde pannis quibus terguntur *jumenta*, peniculamentis pannoſis, fune demiſit ea Jeremiæ in foveam; Dixitque 12 Abdamelech Æthiops ad Jeremiam, Peniculos terſorios & ſegmenta detrita pone ſub axillis tuis ſubter funem : fecitque ſic Jeremia. Tum Jeremiam fune trahentes edu- 13 xerunt eum è fovea; manſitque Jeremia in atrio carceris.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* وجميع اصاريموث الى الوادي * حقل الارزات الى الزاوية باب الخيل الشرقي قدسا للرب * 40
ولا يفني بعد ولا يهدم الى الدهر *

* الفصل التاسع والثلثون *

* الاصحاح الخامس والعشرون *

* القول الصاير الى ارميا من قبل الرب * في السنة العاشرة للملك صداقيا * هذه السنة 1
الثامنة عشر للملك بختنصر * وجيش ملك بابل سيّج في ايروسليم * وارميا حفظ في دار 2
الحبس الذي هو في بيت الملك * الذي حبسه فيه صداقيا الملك قايلا * 3
لماذا انت تتنبي قايلا هكذا قال الرب * ها ادفع هذه المدينة في يد ملك بابل وياخذها *
* ولا يخلص صداقيا من يد الكلدانيين * لانه يدفع دفعا الى يدي ملك بابل * 4
ويكلم فمه لفمه * وعيناه لعينيه تنظران * ويدخل الى بابل وهناك يموت * وكان قول 5 6
الرب الى ارميا قايلا * ها اناماييل بن صالوم اخي ابيك ياتي اليك قايلا * اقتن لذاتك 7
حقلي الذي في اناثوث * لانك انت لك ان تاخذ حكما * واتى الى اناماييل بن صالوم 8
اخي ابي الى دار الحبس وقال لي * اقتن حقلي الذي في ارض بنيامين فيه * فانت شيخ *
* وعرفت ان هذا قول الرب * واقتنيت حقل اناماييل بن اخي ابي * واقمت له سبع مثاقيل 9
ومائة من الفضة * وكتبت في كتاب وختمته * واشهدت شهودا * واقمت الفضة في ميزان * 10
* واخذت كتاب القنية المختوم المقرو * ودفعته لباروخ بن نيريو بن ماسا او لعيني اناماييل بن 11 12
اخي ابي ولعيني القيام والكاتبين في كتاب القنية * ولعيني اليهود الذين في دار الحبس *
* وامرت باروخ لعينيهم قايلا * هكذا قال الرب ضابط الكل * خذ كتاب القنية المقرو وضعه 13 14
في اناء خزفي كي يقيم اياما كثيرة * لان هكذا قال الرب يقتنون ايضا حقول وبيوت وكروم 15
في هذه الارض * وصليت الى الرب من بعد ما دفعت كتاب القنية لباروخ بن نيريو قايلا * 16

Tota Aſarimoth uſque ad vallem, agri cedrorum uſque ad angulum, portæ equorum Orientalis, ſanctuarium erunt Domino, quod non deficiet ampliùs, nec deſtruetur in æternum. 40

CAP. XXXIX.

Textus vigeſimus quintus.

SErmo qui factus eſt ad Jeremiam à Domino, anno decimo regis Sedeciæ, (is eſt annus decimus octavus regis Bochtonaſſaris) 1 Quum exercitus regis Babelis obſideret Jeroſolymam, & Jeremia cuſtodiretur in atrio carceris qui erat in domo regis, 2 In quem conjecerat eum Sedecia rex, dicens; 3

Quare tu prophetas, dicens, Ita dixit Dominus; Ecce tradam hanc urbem in manum regis Babelis, & capiet eam? Nec evadet Sedecia è manu Chaldæorum, quia certiſſimè tradetur in manus regis Babelis, eumque coràm alloquetur, & ejus oculi hujus oculos videbunt? Babelem ingredietur, ibique morietur? Fuit ergò ſermo Domini ad Jeremiam, dicens, Ecce Anameel filius Salomi fratris patris tui veniet ad te dicens, Acquire tibi ipſi agrum meum qui eſt in Anathoth; quandoquidem ad te jure ſpectat eum accipere. Quare quum veniſſet ad me Anameel filius Salomi fratris patris mei in atrium carceris, & dixiſſet mihi, Acquire agrum meum qui eſt in terra Benjaminis, in poſſeſſionem, quippe qui ſenior es; Et ſcirem hunc eſſe Domini ſermonem : acquiſivi agrum Anameelis filii fratris patris mei, & appendi illi centum ac ſeptem ſiclos argenti: Scripſi in libello, & obſignavi eum, teſtes adhibui, & pecuniam appendi ſtaterâ. Deinde ſumpſi libellum acquiſitionis obſignatum & prælectum, Dedique eum Baruchoſilio Neriæ filii Maaſiæ, ſpectante Anameele filio fratris patris mei, & ſpectantibus iis qui aderant & ſcripſerant in libello acquiſitionis, ſpectantibus etiam Judæis qui erant in atrio carceris : Et præcepi Barucho iis præſentibus, dicens; Sic ait Dominus omnipotens, Accipe libellum acquiſitionis qui lectus eſt, eumque reponas in vaſe teſtaceo, ut permaneat pluribus diebus. Sic enim dixit Dominus, Poſſidebuntur adhuc agri, domus, atque vineæ in hac terra. Tum oravi Dominum poſtquam dediſſem libellum acquiſitionis Barucho filio Neriæ dicens; 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16

ירמיה : לח

ſe ad prophetam Irmejahu tulit & ,Sidchijahu rex miſit Et
14 וַיִּשְׁלַח הַמֶּלֶךְ צִדְקִיָּהוּ וַיִּקַּח אֶת־יִרְמְיָהוּ הַנָּבִיא אֵלָיו
ad rex dixit & : Domini domo in qui ,tertium introitum ad
אֶל־מָבוֹא הַשְּׁלִישִׁי אֲשֶׁר בְּבֵית יְהוָה וַיֹּאמֶר הַמֶּלֶךְ אֶל־
.verbum me à celes ne ,verbum te ego Interrogans : Irmejahu
יִרְמְיָהוּ שֹׁאֵל אֲנִי אֹתְךָ דָּבָר אַל־תְּכַחֵד מִמֶּנִּי דָּבָר׃
nónne ,tibi annuntiavero Cùm : Sidchijahu ad Irmejahu dixit Et
15 וַיֹּאמֶר יִרְמְיָהוּ אֶל־צִדְקִיָּהוּ כִּי אַגִּיד לְךָ הֲלוֹא
.me ad audies non ,tibi conſuluero cùm Et ? me facies mori faciendo mori
הָמֵת תְּמִיתֵנִי וְכִי אִיעָצְךָ לֹא תִשְׁמַע אֵלָי׃
Vivens : dicendo ,abſcondito in Irmejahu ad Sidchijahu rex juravit Et
16 וַיִּשָּׁבַע הַמֶּלֶךְ צִדְקִיָּהוּ אֶל־יִרְמְיָהוּ בַּסֵּתֶר לֵאמֹר חַי־
,te occidero ſi , hanc animam nobis fecit qui ,Dominus
יְהוָה אֶת אֲשֶׁר עָשָׂה־לָנוּ אֶת־הַנֶּפֶשׁ הַזֹּאת אִם־אֲמִיתֶךָ
quærentes qui , iſtorum virorum manû in te tradidero ſi &
וְאִם־אֶתֶּנְךָ בְּיַד הָאֲנָשִׁים הָאֵלֶּה אֲשֶׁר מְבַקְשִׁים אֶת־
dixit Sic : Sidchijahu ad Irmejahu dixit Et .tuam animam
17 נַפְשֶׁךָ׃ וַיֹּאמֶר יִרְמְיָהוּ אֶל־צִדְקִיָּהוּ כֹּה־אָמַר
exieris exeundo Si : Iſrael Deus exercituum Deus Dominus
יְהוָה אֱלֹהֵי צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל אִם־יָצֹא תֵצֵא
non hæc civitas & ,tua anima vivet & ,Babel regis principes ad
אֶל־שָׂרֵי מֶלֶךְ־בָּבֶל וְחָיְתָה נַפְשֶׁךָ וְהָעִיר הַזֹּאת לֹא
ad exieris non ſi Et .tua domus & , tu vives & : igni in ſuccẽdetur
18 תִשָּׂרֵף בָּאֵשׁ וְחָיִתָה אַתָּה וּבֵיתֶךָ׃ וְאִם לֹא־תֵצֵא אֶל־
, Chaſdim manum in hæc civitas tradetur & , Babel regis principes
שָׂרֵי מֶלֶךְ בָּבֶל וְנִתְּנָה הָעִיר הַזֹּאת בְּיַד הַכַּשְׂדִּים
dixit Et .eorum manu de evades non tu & ; igni in eã ſuccendent &
19 וּשְׂרָפוּהָ בָּאֵשׁ וְאַתָּה לֹא־תִמָּלֵט מִיָּדָם׃ וַיֹּאמֶר
qui , Jehudæos verens Ego : Irmejahu ad Sidchijahu rex
הַמֶּלֶךְ צִדְקִיָּהוּ אֶל־יִרְמְיָהוּ אֲנִי דֹאֵג אֶת־הַיְּהוּדִים אֲשֶׁר
illudant & ,eorũ manũ in me dent fortè ne ; Chaſdim ad ſunt delapſi
נָפְלוּ אֶל־הַכַּשְׂדִּים פֶּן־יִתְּנוּ אֹתִי בְּיָדָם וְהִתְעַלְּלוּ־
,Domini voce in ,quæſo ,Audi .tradent Non : Irmejahu dixit Et .me in
20 בִי׃ וַיֹּאמֶר יִרְמְיָהוּ לֹא יִתֵּנוּ שְׁמַע־נָא בְּקוֹל יְהוָה
ſi Et .tua anima vivet & ,tibi erit bene & ,te ad loquens ego qua
21 לַאֲשֶׁר אֲנִי דֹּבֵר אֵלֶיךָ וְיִיטַב לְךָ וּתְחִי נַפְשֶׁךָ׃ וְאִם־
.Dominus mihi oſtendit quod ,verbum hoc , exire tu renuens
מָאֵן אַתָּה לָצֵאת זֶה הַדָּבָר אֲשֶׁר הִרְאַנִי יְהוָה׃
,Jehudah regis domo in remanſerunt quæ , mulieres omnes ecce Et
22 וְהִנֵּה כָל־הַנָּשִׁים אֲשֶׁר נִשְׁאֲרוּ בְּבֵית מֶלֶךְ־יְהוּדָה
,te Incitaverunt : dicentes ipſæ & ; Babel regis principes ad eductæ
מוּצָאוֹת אֶל־שָׂרֵי מֶלֶךְ בָּבֶל וְהֵנָּה אֹמְרוֹת הִסִּיתוּךָ
,tuus pes cœno in ſunt immerſi ,tuæ pacis viri tibi prævaluerunt &
וְיָכְלוּ לְךָ אַנְשֵׁי שְׁלֹמֶךָ הָטְבְּעוּ בַבֹּץ רַגְלֶךָ
tuos filios & ,tuas uxores omnes Et .retrorſum ſunt converſi
23 נָסֹגוּ אָחוֹר׃ וְאֶת־כָּל־נָשֶׁיךָ וְאֶת־בָּנֶיךָ
ſed ,eorũ manu de evades non tu & , Chaſdim ad educentes
מוֹצִאִים אֶל־הַכַּשְׂדִּים וְאַתָּה לֹא־תִמָּלֵט מִיָּדָם כִּי
.igni in cremabis hanc civitatem & ,capieris Babel regis manu in
בְיַד מֶלֶךְ־בָּבֶל תִּתָּפֵשׂ וְאֶת־הָעִיר הַזֹּאת תִּשְׂרֹף בָּאֵשׁ׃
, iſta verba in ſciat non Vir : Irmejahu ad Sidchijahu dixit Et
24 וַיֹּאמֶר צִדְקִיָּהוּ אֶל־יִרְמְיָהוּ אִישׁ אַל־יֵדַע בַּדְּבָרִים־הָאֵלֶּה
,tecum ſum locutus quòd ,principes audierint cùm Et .morieris non &
25 וְלֹא תָמוּת׃ וְכִי־יִשְׁמְעוּ הַשָּׂרִים כִּי־דִבַּרְתִּי אִתָּךְ
es locutus quid nobis nunc Indica ,te ad dixerint & ,te ad venerint &
וּבָאוּ אֵלֶיךָ וְאָמְרוּ אֵלֶיךָ הַגִּידָה־נָּא לָנוּ מַה־דִּבַּרְתָּ
quid &,te interficiemus non & ,nobis à celes ne , regem ad
אֶל־הַמֶּלֶךְ אַל־תְּכַחֵד מִמֶּנּוּ וְלֹא נְמִיתֶךָ וּמַה־
? rex te ad eſt locutus
דִּבֶּר אֵלֶיךָ הַמֶּלֶךְ׃

Verſio VULG. LAT.

14 Et miſit rex Sedecias, & tulit
ad ſe Jeremiam prophetam ad
oſtium tertium, quod erat in
domo Domini: & dixit rex ad
Jeremiam; Interrogo ego te ſermonem,
ne abſcondas à me aliquid.
15 Dixit autem Jeremias ad
Sedeciam; Si annuntiavero tibi,
numquid non interficies me? &
ſi conſilium dedero tibi, non me
16 audies. Juravit ergò rex Sedecias
Jeremiæ clàm, dicens; Vivit
Dominus, qui fecit nobis animam
hanc, ſi occidero te, & ſi
tradidero te in manus virorum
iſtorum, qui quærunt animam
17 tuam. Et dixit Jeremias ad Sedeciam;
Hæc dicit Dominus exercituum,
Deus Iſrael; Si profectus
exieris ad principes regis
Babylonis, vivet anima tua, &
civitas hæc non ſuccendetur
igni: & ſalvus eris tu, & domus
18 tua. Si autem non exieris
ad principes regis Babylonis,
tradetur civitas hæc in manus
Chaldæorum, & ſuccendent eam
igni: & tu non effugies de
19 manu eorum. Et dixit rex Sedecias
ad Jeremiam; Solicitus
ſum propter Judæos, qui transfugerunt
ad Chaldæos, ne fortè
tradar in manus eorum, & illudant
20 mihi. Reſpondit autem
Jeremias; Non te tradent: audi,
quæſo, vocem Domini, quam
ego loquor ad te, & benè tibi
21 erit, & vivet anima tua. Quòd ſi
nolueris egredi: iſte eſt ſermo,
quem oſtendit mihi Dominus;
22 Ecce omnes mulieres, quæ remanſerunt
in domo regis Juda,
educentur ad principes reges
Babylonis: & ipſæ dicent; Seduxerunt
te, & prævaluerunt
adverſùm te viri pacifici tui, demerſerunt
in cœno & in lubrico
pedes tuos, & receſſerunt à te.
23 Et omnes uxores tuæ, & filii
tui educentur ad Chaldæos: &
non effugies manus eorum, ſed in
manu regis Babylonis capieris:
& civitatem hanc comburet igni.
24 Dixit ergò Sedecias ad Jeremiam;
Nullus ſciat verba hæc, &
25 non morieris. Si autem audierint
principes quia locutus ſum
tecum, & venerint ad te, & dixerint
tibi; Indica nobis quid
locutus ſis cum rege, ne celes nos,
& non te interficiemus: & quid
locutus eſt tecum rex:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

17 Ὦ ὢν (ϡ) κύριε, σὺ ἐποίησας τὸν οὐρανὸν
καὶ τὴν γῆν (ω) τῇ ἰσχύϊ σου τῇ μεγάλῃ, καὶ
τῷ βραχίονί σου τῷ ὑψηλῷ καὶ τῷ μετεώρῳ,
18 οὐ μὴ ἀποκρυβῇ ἀπὸ σοῦ οὐθὲν, Ποιῶν
ἔλεος εἰς χιλιάδας, καὶ ἀποδιδοὺς ἁμαρτίας
πατέρων εἰς κόλπους τέκνων αὐτῶν
μετ᾽ αὐτούς· ὁ θεὸς ὁ (α) μέγας, ὁ ἰσχυρὸς,
19 Κύριος μεγάλης βουλῆς, καὶ (β) δυνατὸς
τοῖς ἔργοις, ὁ θεὸς ὁ μέγας ὁ παντοκράτωρ,
καὶ μεγαλώνυμος κύριος· οἱ ὀφθαλμοί
σου εἰς τὰς (γ) ὁδοὺς τῶν υἱῶν τῶν
ἀνθρώπων, δοῦναι ἑκάστῳ κατὰ τὴν ὁδὸν αὐτοῦ·
20 (δ) Ὃς ἐποίησας σημεῖα καὶ τέρατα
ἐν γῇ Αἰγύπτῳ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης, καὶ
ἐν Ἰσραὴλ, καὶ ἐν τοῖς γηγενέσι· καὶ ἐποίησας
σεαυτῷ ὄνομα, ὡς (°) ἡμέρα αὕτη,
21 Καὶ ἐξήγαγες τὸν λαόν σου Ἰσραὴλ ἐκ
γῆς Αἰγύπτου ἐν σημείοις (ε) καὶ ἐν τέρασιν,
ἐν χειρὶ κραταιᾷ, καὶ ἐν βραχίονι ὑψηλῷ,
22 καὶ ἐν ὁράμασι μεγάλοις, Καὶ ἔδωκας
αὐτοῖς τὴν γῆν ταύτην, ἣν ὤμοσας τοῖς
πατράσιν αὐτῶν, γῆν ῥέουσαν γάλα καὶ μέλι.
23 Καὶ εἰσήλθοσαν καὶ (ζ) ἔλαβον αὐτήν,
καὶ οὐκ ἤκουσαν τῆς φωνῆς σου, καὶ ἐν τοῖς
προστάγμασί σου οὐκ ἐπορεύθησαν· ἅπαντα ἃ
ἐνετείλω αὐτοῖς οὐκ ἐποίησαν, καὶ ἐποίησας συμβῆναι
αὐτοῖς (η) πάντα τὰ κακὰ ταῦτα. (θ)
24 Ἰδοὺ ὄχλος ἥκει εἰς τὴν (ι) πόλιν συλλαβεῖν
αὐτήν, καὶ ἡ πόλις ἐδόθη εἰς χεῖρας Χαλδαίων
τῶν πολεμούντων αὐτὴν ἀπὸ προσώπου
μαχαίρας, καὶ τοῦ λιμοῦ. ὡς ἐλάλησας,
25 οὕτως ἐγένετο. Καὶ σὺ λέγεις πρὸς μὲ,
Κτῆσαι σεαυτῷ (κ) τὸν ἀγρὸν ἀργυρίου·
καὶ (λ) ἔγραψα βιβλίον, καὶ ἐσφραγισάμην,
καὶ ἐπεμαρτυράμην μάρτυρας, καὶ ἡ πόλις ἐδόθη
26 εἰς χεῖρας Χαλδαίων. Καὶ ἐγένετο
27 λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, Ἐγὼ κύριος
ὁ θεὸς πάσης σαρκὸς, μὴ ἀπ᾽ ἐμοῦ
28 κρυβήσεταί (μ) τι; Διατοῦτο οὕτως εἶπε κύριος
ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, Δοθεῖσα παραδοθήσεται
ἡ πόλις αὕτη εἰς χεῖρας βασιλέως
29 Βαβυλῶνος, καὶ λήψεται αὐτήν, Καὶ ἥξουσιν
οἱ Χαλδαῖοι πολεμοῦντες (ν) ἐπὶ τὴν
πόλιν ταύτην, καὶ καύσουσι τὴν πόλιν ταύτην
ἐν πυρὶ, καὶ (ξ) κατακαύσουσι τὰς οἰκίας
ἐν αἷς (ο) ἐθυμιῶσαν ἐπὶ τῶν δωμάτων
αὐτῶν τῇ Βάαλ, καὶ ἔσπενδον σπονδὰς θεοῖς
30 ἑτέροις, πρὸς τὸ παραπικρᾶναί με· Ὅτι
ἦσαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ καὶ οἱ υἱοὶ Ἰούδα μόνοι
ποιοῦντες τὸ πονηρὸν (π) κατ᾽ ὀφθαλμούς
31 μου ἐκ νεότητος αὐτῶν. Ὅτι ἐπὶ τὴν ὀργήν
μου, καὶ ἐπὶ τὸν θυμόν μου ἦν ἡ πόλις
αὕτη, ἀφ᾽ ἧς ἡμέρας ᾠκοδόμησαν αὐτὴν καὶ
ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης, ἀπαλλάξαι (ρ) αὐτὴν
ἀπὸ προσώπου μου,

O (f) Quies, Domine, tu feciſti 17
cœlum, & terram fortitudine tuâ
magnâ, & brachio tuo excelſo,
& ſublimi: non abſcondetur à
te quicquam: Qui facis miſericordiam 18
in millia, & reddis peccata
patrum in ſinus filiorum eorum
poſt eos: Deus magnus, fortis,
(g) Dominus magni conſilii, 19
& potens operibus, Deus
magnus omnipotens, & magni
nominis Dominus: Oculi (h)
tui ad vias filiorum hominum,
ut des unicuique juxta viam
(i) ejus: Qui feciſti ſigna & 20
prodigia in terra Ægypto uſque
in diem hanc, & in Iſrael, &
in terrigenis, & feciſti tibi nomen,
ſicut dies hæc: Et eduxiſti 21
populum tuum Iſrael de
terra Ægypti in ſignis, & in
prodigiis, in manu valida, &
in brachio excelſo, & in viſionibus
magnis: Et dediſti eis 22
terram hanc, quam jurâſti patribus
eorum, terram fluentem
lac, & mel: Et intraverunt, 23
& acceperunt eam: & non audierunt
vocem tuam, & in præceptis
tuis non ambulârunt: omnia,
quæ mandâras eis, non fecerunt:
& fecerunt ut evenirent
ſibi mala hæc. Ecce turba 24
venit ad civitatem, ad capiendam
eam: & urbs data eſt in
manus Chaldæorum, qui oppugnant
eam à facie gladii, & (k)
famis: ſicut loquutus es; ita
factum eſt. Et tu dicis ad me; 25
Acquire tibi agrum argento:
& ſcripſi librum, & obſignavi,
& conteſtatus ſum teſtes:
& urbs data eſt in manꝰ Chaldæorũ.
Et factũ eſt verbum Domini 26
ad me, dicens; Ego Dominus 27
Deus univerſæ carnis:
nunquid à me abſcondetur quicquam?
Propterea ſic dixit 28
Dominus Deus Iſrael; Data
tradetur civitas iſta in manus
regis Babylonis, & capiet eam:
Et venient Chaldæi oppugnantes 29
ſuper civitatem iſtam, & ſuccendent
urbem hanc igne, &
comburent domos, in quibus adolebant
ſuper tecta earum Baal;
& libabant libamina diis alienis,
ad exacerbandam me: Quia 30
fuerunt filii Iſrael, & filii Juda
(l) ſoli facientes malum
ante oculos meos ab adoleſcentia
(m) ſua: Quia ſuper 31
iram meam, & ſuper furorem
meum fuit civitas hæc;
ex qua die ædificaverunt eam, &
uſque ad diem hanc, ad amovendam
eam à facie mea,

MS. A. (ϡ) κύριε, κύριε, (ω) ἐν τῇ (α) μέγας καὶ ἰσχυρὸς, (β) ὁ δυνατὸς (γ) ὁδοὺς τῶν ἀνθρώπων, ἀποδοῦναι (δ) Ὅσα (°) ἡ ἡμέρα (ε) καὶ τέρασιν, καὶ ἐν (ζ) ἐλάβοσαν (η) ἅπαντα (θ) Καὶ ἰδοὺ (ι) πόλιν ταύτην (κ) ἀγρὸν (λ) ἔγραψα εἰς (μ) ἔτι; (ν) ἐπὶ τὴν γῆν ταύτην, (ξ) καύσουσιν (ο) ἐθυμιῶσαν ἐν αὐταῖς ἐπὶ (π) ἐκ νεότητος αὐτῶν κατ᾽ ὀφθαλμούς μου. Ὅτι (ρ) αὐτοὺς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 וּשְׁלַח מַלְכָּא צִדְקִיָה וּדְבַר יַת יִרְמְיָה נְבִיָא לְוָתֵיהּ לְמַעֲלָנָא תְּלִיתָאָה דִי בְּבֵית
מַקְדְּשָׁא דַיְיָ וַאֲמַר מַלְכָּא לְיִרְמְיָה שָׁאֵל אֲנָא יָתָךְ פִּתְגָמָא לָא תְכַסֵּי מִנִי פִּתְגָמָא׃ וַאֲמַר 15
יִרְמְיָה לְצִדְקִיָה אֲרֵי אֲחַוֵי לָךְ הֲלָא מִקְטַל תִּקְטְלִנַנִי וַאֲרֵי אֲמַלְכִנָךְ לָא תְקַבֵּל מִנִי׃
וְקַיֵם מַלְכָּא צִדְקִיָה לְיִרְמְיָה בְּסִתְרָא לְמֵימַר קַיָם הוּא יְיָ יַת דְקַיֵם לָנָא יַת נַפְשָׁתָא 16
הָאִלֵין אִם אֶקְטְלִנָךְ וְאִם אֶמְסְרִנָךְ בְּיַד גַבְרַיָא הָאִלֵין דְבָעַן לְמִקְטְלָךְ׃ וַאֲמַר יִרְמְיָה 17
לְצִדְקִיָה כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל אִם מִפַּק תִּפּוֹק לְוַת רַבְרְבֵי מַלְכָּא
דְבָבֶל וְתִתְקַיֵם נַפְשָׁךְ וְקַרְתָּא הָדָא לָא תִתּוֹקַד בְּנוּרָא וְתֵחֵי אַתְּ וֶאֱנָשׁ בֵּיתָךְ׃ וְאִם 18
לָא תִפּוֹק לְוַת רַבְרְבֵי מַלְכָּא דְבָבֶל וְתִתְמְסַר קַרְתָּא הָדָא בִּידָא דְכַסְדָאֵי וְיוֹקְדוּנַהּ
בְּנוּרָא וְאַתְּ לָא תִשְׁתֵּיזֵב מִידֵיהוֹן׃ וַאֲמַר מַלְכָּא צִדְקִיָה לְיִרְמְיָה אֲנָא יָצֵף מִן יְהוּדָאֵי 19
דְאִשְׁתְּמַעוּ לְכַסְדָאֵי דִלְמָא יִמְסְרוּן יָתִי בִּידֵיהוֹן וְיִתְלַעֲבוּן בִּי׃ וַאֲמַר יִרְמְיָה לָא יִמְסְרוּן 20
קַבֵּל כְּעַן לְמֵימְרָא דַיְיָ לִדַאֲנָא מְמַלֵל עִמָךְ וְיֵיטַב לָךְ וְתִתְקַיֵם נַפְשָׁךְ׃ וְאִם 21
לֵית אַתְּ צָבֵי לְמִפַּק דֵין פִּתְגָמָא דְאַחֲזִיַנִי יְיָ׃ הָא כָל נְשַׁיָא דְאִשְׁתְּאַרָא 22
בְּבֵית מְלַךְ שִׁבְטָא דְבֵית יְהוּדָה מִתַּפְקָן לְוַת רַבְרְבֵי מַלְכָּא דְבָבֶל וְאִנוּן אָמְרִין
אַטְעֲיוּךְ וִיכִילוּ לָךְ אֱנָשׁ שְׁלָמָךְ אִשְׁתְּקַעָא בְּבַהֲתָא רִגְלָךְ אִסְתְּחַרָא לַאֲחוֹרָא׃
וְיַת כָּל נְשָׁךְ וְיַת בְּנָךְ מִתַּפְקִין לְוַת כַּסְדָאֵי וְאַתְּ לָא תִשְׁתֵּיזֵב מִידֵיהוֹן אֲרֵי בְּיַד מַלְכָּא 23
דְבָבֶל תִּתְמְסַר וְיַת קַרְתָּא הָדָא תִּתּוֹקַד בְּנוּרָא׃ וַאֲמַר צִדְקִיָה לְיִרְמְיָה אֱנָשׁ 24
לָא יְדַע בְּפִתְגָמַיָא הָאִלֵין וְלָא תְמוּת׃ וַאֲרֵי יִשְׁמְעוּן רַבְרְבַיָא אֲרֵי מַלֵלִית עִמָךְ 25
וְיֵיתוּן לְוָתָךְ וְיֵימְרוּן לָךְ חַוֵי כְעַן לָנָא מַה מַלֵלִית עִם מַלְכָּא לָא תְכַסֵּי מִנָנָא וְלָא נִקְטְלִנָךְ
וּמַה מַלֵל עִמָךְ מַלְכָּא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et miſit rex Sedechias, & tulit Jeremiam prophetam ad ſe, ad oſtium 14
tertium quod erat in domo ſanctuarii Domini. Dixítque rex ad Jeremiam,
Interrogo ego te ſermonem: ne celes à me quicquam. Et dixit Jeremias 15
ad Sedechiam, Si annuntiavero tibi, nónne interficiendo interficies me?
& ſi conſilium dedero tibi, non acquieſces mihi. Et juravit rex Sedechias, 16
dicens in occulto Jeremiæ, Vivus eſt Dominus qui ſuſtentat nobis animas
iſtas, ſi occidero te, & ſi tradidero te in manus virorum iſtorum, qui quærunt
occidere te. Et dixit Jeremias Sedechiæ: Hæc dicit Dominus exercituum 17
Deus Iſrael: Si egrediendo egreſſus fueris ad principes regis Babylonis,
& ſuſtentabitur anima tua, & civitas hæc non comburetur igni; & vives
tu, & viri domus tuæ. Si verò non exieris ad principes regis Babylonis, 18
tradetur civitas hæc in manum Chaldæorum, & ſuccendent eam igni; & tu
non liberaberis de manibꝰ eorum. Et dixit rex Sedechias ad Jeremiam, 19
Anxiꝰ ſum propter Judæos qui ſe dediderunt Chaldæis, ne fortè tradant me
in manꝰ eorum, & illudant mihi. Et dixit Jeremias, Non tradent: acquieſce 20
obſecro verbo Domini quod ego loquor tecum, ut bene ſit tibi, & ſuſtentetur
anima tua. Quòd ſi renuis exire: hoc eſt verbum quod oſtendit mi- 21
hi Dominꝰ. Ecce omnes mulieres quæ remanſerunt in domo regis tribꝰ 22
domꝰ Juda, educentur ad principes regis Babylonis; & ipſæ dicent, Deceperunt
te & prævaluerunt contra te viri pacifici tui: ſubmerſi ſunt in
confuſione pedes tui; converſi ſunt retrorſum. Et omnes uxores tuæ & 23
filii tui educentur ad Chaldæos, & tu non evades èmanibꝰ eorum, quia in
manu regis Babylonis *tradêris*, & civitas hæc comburetur igni. Et dixit 24
Sedechias ad Jeremiam, Nullus vir ſciat verba hæc, & non morieris.
Cùm autem audierint principes quia locutus ſum tecum, & venerint 25
ad te, & dixerint tibi, Narra nunc nobis quid locutus ſis cum rege,
ne celes à nobis & non interficiemus te; & quid locutus ſit tecum rex.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

14 * ܘܫܕܪ ܡܠܟܐ ܨܕܩܝܐ. ܘܕܒܪܗ ܠܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܠܘܬܗ. ܬܠܬ ܡܢ ܠܓܘ ܬܪ̈ܥܝܢ ܕܒܝܬܗ
15 ܕܡܪܝܐ. ܘܐܡܪ ܡܠܟܐ ܠܐܪܡܝܐ. ܫܐܠ ܐܢܐ ܠܟ ܡܠܬܐ. ܠܐ ܬܟܣܐ ܡܢܝ ܡܠܬܐ. * ܘܐܡܪ
ܐܪܡܝܐ ܠܨܕܩܝܐ. ܐܢ ܡܚܘܐ ܐܢܐ ܠܟ ܗܐ. ܡܩܛܠ ܩܛܠ ܐܢܬ ܠܝ. ܘܐܢ ܡܡܠܟ ܐܢܐ ܠܟ ܠܐ ܫܡܥ ܐܢܬ
16 ܠܝ. * ܘܝܡܐ ܡܠܟܐ ܨܕܩܝܐ ܠܐܪܡܝܐ ܡܛܫܝܐܝܬ ܒܒܝܬܐ. ܘܐܡܪ. ܚܝ ܗܘ ܡܪܝܐ ܕܥܒܕ
17 ܠܢ ܢܦܫܐ. ܕܠܐ ܐܩܛܠܟ. ܘܠܐ ܐܫܠܡܟ ܒܐܝܕܝ ܐܢܫ̈ܐ ܗܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܢܦܫܟ. * ܘܐܡܪ ܐܪܡܝܐ
ܠܨܕܩܝܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܢ ܢܦܩ ܬܦܘܩ ܠܘܬ ܪ̈ܘܪܒܢܐ ܕܡܠܟܐ
18 ܕܒܒܠ. ܚܝܐ ܐܝܬ ܢܦܫܟ. ܘܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܠܐ ܬܬܘܩܕ ܒܢܘܪܐ. ܘܚܝܐ ܐܢܬ ܘܒܝܬܟ. * ܘܐܢ ܠܐ
ܢܦܩ ܐܢܬ ܠܘܬ ܪ̈ܘܪܒܢܐ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܡܫܬܠܡܐ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܒܐܝܕܝ ܟܠܕܝ̈ܐ.
19 ܘܡܘܩܕܝܢ ܠܗ ܒܢܘܪܐ. ܘܐܢܬ ܠܐ ܬܬܦܠܛ ܡܢ ܐܝܕܝܗܘܢ. * ܘܐܡܪ ܡܠܟܐ ܨܕܩܝܐ ܠܐܪܡܝܐ.
ܕܚܠ ܐܢܐ ܡܢ ܝܗܘܕܝ̈ܐ ܕܢܦܩܬ ܠܘܬ ܟܠܕܝ̈ܐ. ܕܠܡܐ ܢܫܠܡܘܢܢܝ ܒܐܝܕܝܗܘܢ. ܘܢܒܙܚܘܢ ܒܝ.
20 * ܘܐܡܪ ܐܪܡܝܐ. ܠܐ ܡܫܠܡܝܢ ܠܟ. ܫܡܥ ܒܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܕܐܢܐ ܐܡܪ ܐܢܐ ܠܟ. ܕܢܛܐܒ ܠܟ.
21 22 ܘܬܚܐ ܢܦܫܟ. * ܘܐܢ ܠܐ ܨܒܐ ܐܢܬ ܠܡܦܩ. ܗܢܘ ܦܬܓܡܐ ܕܚܘܝܢܝ ܡܪܝܐ. * ܘܟܠܗܝܢ
ܢܫ̈ܐ ܕܐܫܬܚܪ̈ܢ ܒܒܝܬܗ ܕܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܢܦܩܢ ܠܘܬ ܪ̈ܘܪܒܢܐ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ.
ܘܗܢܝܢ ܐܡ̈ܪܢ. ܐܛܥܝܘܟ ܘܙܟܘܟ ܐܢܫ̈ܐ ܕܫܠܡܟ ܗܘܘ ܒܥܝܢ. ܘܛܒܥܘ ܒܣܝܢܐ
23 ܪ̈ܓܠܝܟ. ܘܗܦܟܘ ܠܒܣܬܪܗܘܢ. * ܘܠܟܠܗܝܢ ܢܫ̈ܝܟ ܘܒܢ̈ܝܟ. ܡܦܩܝܢ ܠܘܬ ܟܠܕܝ̈ܐ.
ܘܐܢܬ ܠܐ ܬܬܦܠܛ ܡܢ ܐܝܕܝܗܘܢ. ܐܠܐ ܒܐܝܕܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܬܬܐܚܕ.
24 ܘܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܬܐܩܕ ܒܢܘܪܐ. * ܘܐܡܪ ܨܕܩܝܐ ܠܐܪܡܝܐ. ܐܢܫ ܠܐ ܢܕܥ ܒܡ̈ܠܐ ܗܠܝܢ.
25 ܕܠܐ ܬܡܘܬ. * ܘܐܢ ܢܫܡܥܘܢ ܪ̈ܘܪܒܢܐ ܕܡܠܠܬ ܥܡܝ: ܘܢܐܬܘܢ ܠܘܬܟ ܘܢܐܡܪܘܢ
ܠܟ: ܚܘܝܢ ܡܢܐ ܡܠܠܬ ܥܡ ܡܠܟܐ: ܘܡܢܐ ܐܡܪ ܠܟ ܡܠܟܐ: ܠܐ ܬܟܣܐ
ܡܢܢ ܕܠܐ ܢܩܛܠܟ.

Deinde mittens rex Sedecia adduci juſſit ad ſe 14
Jeremiam prophetam tres intra portas domûs
Domini,dixítque rex ad Jeremiam, Verbum
abs te peto, ne me celato verbum. Dixit 15
Jeremia Sedeciæ; Si indicavero tibi, ecce
me morte afficies: ſique conſilium tibi dedero,
non auſcultabis mihi. Juravit autem 16
rex Sedecia Jeremiæ clanculùm in domo, dixítque;
Per Dominum vivum qui nobis indidit
animam, nec te morte afficiam, neque
te tradam in manum hominum iſtorum qui
quærunt animam tuam. Tunc dixit Jeremia 17
Sedeciæ, Sic ait Dominus potentiſſimus Deus
Iſraelis; Si prodieris ad principes regis
Babyloniæ, vivam ſervabis animam tuam,&
civitas iſta non comburetur igne; atque ita
vives tu & familia tua. Verùm ſi non prodieris 18
ad principes regis Babyloniæ, tradetur
civitas iſta in manuum Chaldæorum,& comburent
eam igne,neque tu manus eorum effugies.
Dicente autem rege Sedeciâ Jeremiæ, 19
Vereor Judæos, ne ſi prodiero ad Chaldæos,
tradant me in manus eorum, & ludibrio me
afficiant: Reſpondit Jeremia, Non ſunt te 20
tradituri: acquieſce quæſo,verbo Domini ꝙ
tibi dico, ut bene ſit tibi, & vivat anima tua.
Quòd ſi prodire nolis, hic eſt ſermo quem ſignificavit 21
mihi Dominus; Omnes fœminæ 22
quæ reliquæ manſerunt in domo regis Judæ,
prodibunt ad principes regis Babyloniæ, dicentes;
Seduxerunt atque vicerunt te homines
qui tuam cupiebant fœlicitaté, demerſiſque
in lutum pedibus tuis, ipſi ſe retraxerunt.
Omnes enim uxores tuas & filios tuos producent 23
ad Chaldæos: tu non effugies manus eorum,
ſed in manus regis Babyloniæ tradêris.
& civitas hæc igne comburetur. Tunc dixit 24
Sedecia Jeremiæ, Nemo reſciat hæc verba,
ne moriaris. Sed cùm audierint principes 25
me tecum ſermonem habuiſſe, venerintque
ad te & dixerint tibi, Indica nobis quid
locutus es apud regem, & quid dixit tibi
rex: ne celato nos, ne te interficiamus:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

17 * ايها الرب الكاين * انت صنعت السماء والارض بقوتك العظيمة وبذراعك الرفيعة العالية *
18 لا يخفي عنك ولا شي * الصانع الرحمة لالوف * والمعطي خطايا الاباء في احضان الابناء
19 بعدهم * الله العظيم القوي * رب الراي العظيم * والقوي في افعاله * الاله العظيم
الضابط الكل * والعظيم الاسم * يا رب عيناك الي طرق البشر لتعطي كل واحد كطريقه *
20 * كما صنعت ايات وجرايح في ارض مصر الي هذا اليوم في اسرايل وفي الارضيين * وصنعت
21 لذاتك اسما كما هذا اليوم * واخرجت شعبك اسرايل من ارض مصر بايات وجرايح * بيد
22 عزيزة وذراع رفيعة وبمراي عظيمة * واعطيتهم هذه الارض التي اعطيتها لابايهم * ارضا
23 تفيض لبنا وعسلا * ودخلوا واخذوها * ولم يسمعوا صوتك * ولم يسيروا في اوامرك * ولم
24 يصنعوا بكلما امرتهم * فجعلت ان تصيبهم جميع هذه الشرور * ها جمع اتي الي المدينة
لياخذها * والمدينة دفعت الي ايدي الكلدانيين ليحاربوها من وجه السيف والجوع *
25 كلما تكلمت هكذا صار * وانت تقول لي اقتن لذاتك حقل فضة * وكتبت كتابا
26 وختمته * واشهدت شهودا * والمدينة دفعت الي ايدي الكلدانيين * وكان قول الرب الي
27 28 قايلا * انا الرب الاله لا يخفي عني شي * لاجل هذا هكذا يقول الرب اله اسرايل *
29 دفعت وتدفع ايروسليم الي ايدي ملك بابل وياخذها * ويوافي الكلدانيون يحاربون في
هذه المدينة * ويحرقون هذه المدينة بالنار * ويحرقون المساكن التي فيها بخروا علي اسطحتهم
30 لباعال * واراقوا القوارير للالهة الغريبة ليمرمروني * لان بني اسرايل كانوا وبني يهوذا وحدهم
31 يصنعون الشر لعيني منذ صباهم * لان علي رجزي وعلي غضبي هذه المدينة منذ يوم
بنيها والي هذا اليوم * لابدلها من وجهي *

O Domine qui es, tu cœlum terramque 17
feciſti potentiâ tuâ magnâ, & brachio
tuo excelſo atque ſublimi, quem nulla
unquam res latet: Faciens miſericordiam 18
in millia, & reddens peccata parentum
in ſinus filiorum poſt ipſos, Deus
maxime & fortiſſime, Domine ſummi 19
conſilii, potentiſſime in operibus tuis,
Deus maxime, omnipotens, & ſummi
nominis: O Domine, oculi tui vias hominum
intuentur, ut reddas unicuique
ſecundùm viam ſuam. Quemadmodum 20
feciſti ſigna & portenta in terra Ægypti
ad hunc uſque diem in Iſraele
& in terricolis, & comparâſti tibi nomen
quale eſt hodiernâ die: Eduxiſti 21
populum tuum Iſraelem è terra Ægypti
ſignis atque portentis, manu potenti, brachio
exerto, magniſque ſpectaculis: Et 22
dediſti eis hanc terram quam dederas
majoribus eorum, terram lacte & melle
exuberantem. Sed quia ingreſſi & poſſidentes 23
eam, non auſcultaverunt voci
tuæ, nec ambulaverunt in præceptis
tuis, neque fecerunt quicquid præcepiſti
eis; ideo feciſti ut contingerent eis
tanta hæc mala. Ecce turba venit ad 24
urbem ut capiat eam; & urbs tradita
jam eſt in manus Chaldæorum, ut
expugnent eam metu gladii & famis:
quicquid locutus es, ita factum eſt:
Attamen tu mihi dicis, Acquire tibi 25
agrum pecuniâ; adeoque ſcripſi libellum
& obſignavi eum adhibitis teſtibus, quum
urbs tradita ſit in manus Chaldæorum.
Fuit autem ſermo Domini ad me, dicens; 26
Ego ſum Dominus Deus, nulla 27
me latet res. Iccirco ſic dicit Dominus 28
Deus Iſraelis; Tradita eſt, atque
tradetur Jeruſalem in manus regis Babelis,
& capiet eam: Et venient Chaldæi, 29
pugnabuntque in hac urbe, & urbem
hanc igne comburent, & ſuccendent
habitationes in quibus adoleverunt
ſuper tecta ſua Baali, & lenticulas
effuderunt diis alienis, ut me exaſperarent.
Quia filii Iſraelis & filii Judæ 30
ſoli malum perpetrabant in oculis meis
inde à pueritia ſua: Quia iræ meæ 31
& furori meo obnoxia fuit hæc urbs
ab ea die quâ ædificavi illam ad hodiernum
uſque diem, dubio procul immutabo eam à conſpectu meo;

ירמיה : לט

, regis facies ad meā deprecationē ego faciens Cadere : eos ad dices Et
26 וְאָמַרְתָּ אֲלֵיהֶם מַפִּיל־אֲנִי תְחִנָּתִי לִפְנֵי הַמֶּלֶךְ
Veneruntque .ibi moriendum ad ,Jonathan domum me reducendum non ad
27 לְבִלְתִּי הֲשִׁיבֵנִי בֵּית יְהוֹנָתָן לָמוּת שָׁם׃ וַיָּבֹאוּ
nuntiavit & ,eum interrogaverunt & ,Irmejahu ad principes omnes
כָל־הַשָּׂרִים אֶל־יִרְמְיָהוּ וַיִּשְׁאֲלוּ אֹתוֹ וַיַּגֵּד
tacuerunt & : rex præcepit quæ ,hæc verba omnia juxta eis
לָהֶם כְּכָל־הַדְּבָרִים הָאֵלֶּה אֲשֶׁר צִוָּה הַמֶּלֶךְ וַיַּחֲרִשׁוּ
atrio in Irmejahu mansit Et .verbum est auditum non quia , eo ab
28 מִמֶּנּוּ כִּי לֹא־נִשְׁמַע הַדָּבָר׃ וַיֵּשֶׁב יִרְמְיָהוּ בַּחֲצַר
ut est factum & : Jerusalaim est capta quo diem ad usque ,custodiæ
הַמַּטָּרָה עַד־יוֹם אֲשֶׁר־נִלְכְּדָה יְרוּשָׁלָםִ וְהָיָה כַּאֲשֶׁר
.Jerusalaim caperetur
נִלְכְּדָה יְרוּשָׁלָםִ׃

CAP. XXXIX. לט

, decimo mense in ,Jehudah regis Sidchijahu nono anno In
1 בַּשָּׁנָה הַתְּשִׁעִית לְצִדְקִיָּהוּ מֶלֶךְ־יְהוּדָה בַּחֹדֶשׁ הָעֲשִׂרִי
,Jerusalaim ad ejus virtus omnis & ,Babel rex Nebuchadresar venit
בָּא נְבוּכַדְרֶאצַּר מֶלֶךְ־בָּבֶל וְכָל־חֵילוֹ אֶל־יְרוּשָׁלַםִ
mense in Sidchijahu anno undecimo In .eam super obsederunt &
2 וַיָּצֻרוּ עָלֶיהָ׃ בְּעַשְׁתֵּי־עֶשְׂרֵה שָׁנָה לְצִדְקִיָּהוּ בַּחֹדֶשׁ
omnes sunt ingressi Et .civitas est diffisa , mensis nona in , quarto
3 הָרְבִיעִי בְּתִשְׁעָה לַחֹדֶשׁ הָבְקְעָה הָעִיר׃ וַיָּבֹאוּ כֹּל
, Sareser-Nerghal , media porta in sederunt & ,Babel regis principes
שָׂרֵי מֶלֶךְ־בָּבֶל וַיֵּשְׁבוּ בְּשַׁעַר הַתָּוֶךְ נֵרְגַל שַׂרְאֶצֶר
,Mag-Rab , Sareser-Nerghal , Saris-Rab , Sarsechim , Nebu-Samghar
סַמְגַּר־נְבוּ שַׂרְסְכִים רַב־סָרִיס נֵרְגַל שַׂרְאֶצֶר רַב־מָג
eos vidisset cùm fuit Et .Babel regis principes ,reliquum omne &
4 וְכָל־שְׁאֵרִית שָׂרֵי מֶלֶךְ בָּבֶל׃ וַיְהִי כַּאֲשֶׁר רָאָם
,fugerunt & ,belli viri omnes & ,Jehudah rex Sidchijahu
צִדְקִיָּהוּ מֶלֶךְ־יְהוּדָה וְכֹל אַנְשֵׁי הַמִּלְחָמָה וַיִּבְרְחוּ
inter portam per , regis horti via civitate de nocte sunt egressi &
וַיֵּצְאוּ לַיְלָה מִן־הָעִיר דֶּרֶךְ גַּן הַמֶּלֶךְ בְּשַׁעַר בֵּין
exercitus sunt persecuti Et .deserti via est egressus & : muros duos
5 הַחֹמֹתָיִם וַיֵּצֵא דֶּרֶךְ הָעֲרָבָה׃ וַיִּרְדְּפוּ חֵיל־
campestribus in Sidchijahu comprehenderunt & , eos post Chasdim
כַּשְׂדִּים אַחֲרֵיהֶם וַיַּשִּׂגוּ אֶת־צִדְקִיָּהוּ בְּעַרְבוֹת
Nebuchadnesar ad eum fecerunt ascendere & ,eum tulerunt & ,Jerecho
יְרֵחוֹ וַיִּקְחוּ אֹתוֹ וַיַּעֲלֻהוּ אֶל־נְבוּכַדְנֶאצַּר
eo cum est locutus & : Chamath terra in , Riblah in Babel regem
מֶלֶךְ־בָּבֶל רִבְלָתָה בְּאֶרֶץ חֲמָת וַיְדַבֵּר אִתּוֹ
Riblah in Sidchijahu filios Babel rex jugulavit Et .judicia
6 מִשְׁפָּטִים׃ וַיִּשְׁחַט מֶלֶךְ בָּבֶל אֶת־בְּנֵי צִדְקִיָּהוּ בְּרִבְלָה
.Babel rex jugulavit Jehudah heroes omnes & ,ejus oculis in
לְעֵינָיו וְאֵת כָּל־חֹרֵי יְהוּדָה שָׁחַט מֶלֶךְ בָּבֶל׃
,compedibus in eum vinxit & ; cæcavit Sidchijahu oculos Et
7 וְאֶת־עֵינֵי צִדְקִיָּהוּ עִוֵּר וַיַּאַסְרֵהוּ בַּנְחֻשְׁתַּיִם
populi domum & , regis Domúmque .Babel in eum adducendum ad
8 לָבִיא אֹתוֹ בָּבֶלָה׃ וְאֶת־בֵּית הַמֶּלֶךְ וְאֶת־בֵּית הָעָם
.diruerunt Jerusalaim muros & ; igni in Chasdim succenderunt
שָׂרְפוּ הַכַּשְׂדִּים בָּאֵשׁ וְאֶת־חֹמוֹת יְרוּשָׁלַםִ נָתָצוּ׃
qui dilabentes & ,civitate in remanentium populi residuum Et
9 וְאֵת יֶתֶר הָעָם הַנִּשְׁאָרִים בָּעִיר וְאֶת־הַנֹּפְלִים אֲשֶׁר
Nebuzaradan transtulit ,residuorum ,populi residuum & ,eū super sunt dilapsi
נָפְלוּ עָלָיו וְאֵת יֶתֶר הָעָם הַנִּשְׁאָרִים הֶגְלָה נְבוּזַרְאֲדָן
eis non quibus , tenues plebe de Et .Babel laniorum magister
10 רַב־טַבָּחִים בָּבֶל׃ וּמִן־הָעָם הַדַּלִּים אֲשֶׁר אֵין־לָהֶם
terra in laniorum magister Nebuzaradan fecit remanere , quicquam
מְאוּמָה הִשְׁאִיר נְבוּזַרְאֲדָן רַב־טַבָּחִים בְּאֶרֶץ
.illa die in agros & , vineas eis dedit & : Jehudah
יְהוּדָה וַיִּתֵּן לָהֶם כְּרָמִים וִיגֵבִים בַּיּוֹם הַהוּא׃

Versio VULG. LAT.

26 Dices ad eos ; Prostravi ego preces meas coram rege, ne me reduci juberet in domum Jonathan, & ibi morerer. 27 Venerunt ergò omnes principes ad Jeremiam, & interrogaverunt eum : & locutus est eis, juxta omnia verba quæ præceperat ei rex, & cessaverunt ab eo : nihil enim fuerat auditum. 28 Mansit verò Jeremias in vestibulo carceris usq; ad diem, quo capta est Jerusalem : & factum est ut caperetur Jerusalem.

CAP. XXXIX.

1 ANno nono Sedeciæ regis Juda, mense decimo, venit Nabuchodonosor rex Babylonis, & omnis exercitus ejus ad Jerusalem, & obsidebant eam. 2 Undecimo autem anno Sedeciæ, mense quarto, quintâ mensis, aperta est civitas. 3 Et ingressi sunt omnes principes regis Babylonis, & sederunt in porta media : Neregel, Sereser, Semegarnabu, Sarsachim, Rabsares, Neregel, Sereser, Rebmag, & omnes reliqui principes regis Babylonis. 4 Cúmque vidisset eos Sedecias rex Juda, & omnes viri bellatores, fugerunt : & egressi sunt nocte de civitate per viam horti regis, & per portam, quæ erat inter duos muros, & egressi sunt ad viam deserti. 5 Persecutus est autem eos exercitus Chaldæorum : & comprehenderunt Sedeciam in campo solitudinis Jerichontinæ, & captum adduxerunt ad Nabuchodonosor regem Babylonis in Reblatha, quæ est in terra Emath : & locut⁹ est ad eum judicia. 6 Et occîdit rex Babylonis filios Sedeciæ in Reblatha, in oculis ejus : & omnes nobiles Juda occîdit rex Babylonis. 7 Oculos quoque Sedeciæ eruit : & vinxit eum compedibus ut duceretur 8 in Babylonem. Domum quoque regis, & domum vulgi succenderunt Chaldæi igni, & murum Jerusalē subverterunt. 9 Et reliquias populi, qui remanserant in civitate, & perfugas, qui transfugerant ad eum, & superfluos vulgi, qui remanserant, transtulit Nabuzardan magister militū in Babylonem. 10 Et de plebe pauperū, qui nihil penitùs habebant, dimisit Nabuzardan magister militum in terra Juda : et dedit eis vineas et cisternas in die illa.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

32 Διὰ πάσας τὰς πονηρίας (σ) τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ καὶ Ἰούδα, ὧν ἐποίησαν (τ) πικρᾶναί με, αὐτοὶ καὶ οἱ βασιλεῖς αὐτῶν, καὶ οἱ ἄρχοντες αὐτῶν, καὶ οἱ ἱερεῖς αὐτῶν, καὶ οἱ προφῆται αὐτῶν, ἄνδρες Ἰούδα, καὶ οἱ κατοικοῦντες ἐν Ἱερουσαλὴμ, 33 Καὶ ἀπέστρεψαν πρός με νῶτον, καὶ οὐ πρόσωπον· καὶ ἐδίδαξα αὐτοὺς ὄρθρου, καὶ οὐκ (υ) ἤκουσαν ἔτι λαβεῖν παιδείαν. 34 Καὶ ἔθηκαν τὰ μιάσματα αὐτῶν ἐν τῷ οἴκῳ, (φ) οὗ ἐπεκλήθη τὸ ὄνομά μου ἐπ' αὐτῷ, ἐν ἀκαθαρσίαις αὐτῶν. 35 Καὶ ᾠκοδόμησαν τοὺς (χ) βωμοὺς τῇ Βάαλ τοὺς ἐν φάραγγι υἱοῦ Ἐννὸμ, τοῦ ἀναφέρειν τοὺς υἱοὺς αὐτῶν καὶ τὰς θυγατέρας αὐτῶν τῷ Μολὸχ βασιλεῖ, ἃ οὐ συνέταξα αὐτοῖς, καὶ οὐκ ἀνέβη (ψ) ἐπὶ καρδίαν μου τοῦ ποιῆσαι τὸ βδέλυγμα τοῦτο, πρὸς τὸ ἐφαμαρτεῖν τὸν (ω) Ἰούδαν. 36 Καὶ νῦν οὕτως εἶπε κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ ἐπὶ τὴν πόλιν, ἣν σὺ λέγεις, Παραδοθήσεται εἰς χεῖρας βασιλέως Βαβυλῶνος ἐν (α) μαχαίρᾳ, καὶ ἐν λιμῷ, καὶ ἐν ἀποστολῇ· 37 Ἰδοὺ ἐγὼ συνάγω αὐτοὺς ἐκ πάσης τῆς γῆς, οὗ διέσπειρα αὐτοὺς ἐκεῖ ἐν ὀργῇ μου, καὶ τῷ θυμῷ μου, (β) καὶ ἐν παροξυσμῷ μεγάλῳ· καὶ ἐπιστρέψω αὐτοὺς εἰς τὸν τόπον τοῦτον, καὶ (γ) καθιῶ αὐτοὺς πεποιθότας· 38 Καὶ ἔσονταί μοι εἰς λαὸν, καὶ ἐγὼ ἔσομαι αὐτοῖς εἰς θεόν. 39 Καὶ δώσω αὐτοῖς ὁδὸν ἑτέραν καὶ καρδίαν ἑτέραν, φοβηθῆναί με πάσας τὰς ἡμέρας, καὶ εἰς ἀγαθὸν αὐτοῖς καὶ τοῖς τέκνοις αὐτῶν μετ' αὐτούς. 40 Καὶ διαθήσομαι αὐτοῖς διαθήκην (˙) αἰωνίαν, ἣν οὐ μὴ ἀποστρέψω ὄπισθεν αὐτῶν· καὶ τὸν φόβον μου δώσω εἰς τὴν καρδίαν αὐτῶν, πρὸς τὸ μὴ ἀποστῆναι αὐτοὺς ἀπ' ἐμοῦ. 41 Καὶ ἐπισκέψομαι τοῦ ἀγαθῶσαι αὐτοὺς, καὶ φυτεύσω αὐτοὺς ἐν τῇ γῇ ταύτῃ ἐν πίστει, καὶ ἐν πάσῃ (δ) καρδίᾳ μου, καὶ ἐν πάσῃ ψυχῇ. 42 Ὅτι οὕτως εἶπε κύριος, Καθὰ ἐπήγαγον ἐπὶ τὸν λαὸν τοῦτον πάντα τὰ κακὰ τὰ μεγάλα ταῦτα, οὕτως ἐγὼ (ε) ἐπάξω ἐπ' αὐτοὺς πάντα τὰ ἀγαθὰ, ἃ ἐλάλησα ἐπ' αὐτούς. 43 Καὶ κτηθήσονται ἔτι ἀγροὶ ἐν τῇ γῇ, (ζ) ἣ σὺ λέγεις, Ἄβατός ἐστιν ἀπὸ ἀνθρώπων καὶ κτήνους, καὶ παρεδόθησαν εἰς χεῖρας Χαλδαίων. 44 Καὶ κτήσονται ἀγροὺς ἐν ἀργυρίῳ· καὶ γράψεις βιβλίον καὶ σφραγιεῖς, καὶ διαμαρτυρῇ μάρτυρας ἐν γῇ Βενιαμὶν, καὶ (η) κύκλῳ τῆς Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐν πόλεσιν Ἰούδα, καὶ ἐν πόλεσιν τοῦ ὄρους, καὶ ἐν πόλεσι τῆς σεφηλὰ, καὶ ἐν πόλεσι τῆς ναγὲβ, ὅτι ἀποστρέψω τὰς ἀποικίας αὐτῶν.

Propter omnes nequitias filiorum Israel, & Juda, quæ fecerunt ad exacerbandum me, ipsi, & reges eorum, & principes eorum, & sacerdotes eorum, & prophetæ eorum, viri Juda, & habitatores Hierusalem, 32 *Et (n) averterunt ad me dorsum, & non faciem. Et docui eos diluculò, et non audierunt (o) ultrà accipere disciplinam:* 33 *Et posuerunt inquinamenta sua in domo, in qua invocatum est nomen meum in ea, in immunditiis suis:* 34 *Et ædificaverunt aras Baal, quæ in valle filii Ennom, ad (p) offerendos filios suos, & filias suas (q) Moloch regi : quæ non præcepi eis, nec ascendit in cor meum ad faciendum abominationem istam, & ad faciendum peccare Judam.* 35 *Et nunc sic dixit Dominus Deus Israel super civitatem, quam tu dicis ; Tradetur in manus regis Babylonis in gladio, & in fame, & (r) amissione ;* 36 *Ecce ego congrego eos ex universa terra, quò dispersi eos illuc in ira mea, & furore meo, & in irritatione magna. Et convertam eos in locum istum, & sedere eos faciam confidentes :* 37 *Et erunt mihi in populum : & ego ero eis in Deum.* 38 *Et dabo eis viam aliam, & cor aliud, ut timeant me omnibus diebus, & in bonum ipsis, & filiis eorum post eos.* 39 *Et disponam eis testamentum æternum, quod non avertam à post eos ; & timorem meum dabo in cor eorum, ut non recedant ipsi à me :* 40 *Et visitabo ad benè faciendum eis : & plantabo eos in terra ista, in fide, & in omni corde meo, & in omni anima.* 41 *Quia sic dixit Dominus ; Sicut induxi super populum istum omnia mala magna hæc ; sic ego inducam super eos omnia bona, quæ loquut⁹ sum super eos.* 42 *Et possidebuntur adhuc agri in terra, de qua tu dicis ; Invia erit ab hominibus, & à pecore, & traditi sunt in manibus Chaldæorum.* 43 *Et possidebuntur agri in argento. Et scribes librum, & obsignabis, et contestaberis testes in terra Benjamin, & in circuitu Hierusalem, & in civitatibus Juda, & in civitatibus montis, & in civitatibus ipsius (s) Sephela, & in civitatibus Nigeb : quia redire faciā transmigrationes eorū.* 44

MS. A. (σ) υἱῶν (τ) παραπικρᾶναί με, αὐτοὶ καὶ οἱ πατέρες αὐτῶν, καὶ οἱ (υ) ἠθέλησαν ἔτι (φ) ᾧ (χ) βωμοὺς αὐτῶν τῇ (ψ) ἐπὶ τὴν (ω) Ἰούδα. (α) μαχαίρῃ, (β) καὶ παροξυσμῷ (γ) κατοικιῶ (˙) αἰώνιον, (δ) καρδίᾳ, καὶ ἐν πάσῃ ψυχῇ μου. (ε) ἐπάγω (ζ) ἣν (η) κυκλόθεν Ἱερουσαλὴμ,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

26 וְתֵימַר לְהוֹן בָּעוּ אֲנָא בְעֵי קֳדָם מַלְכָּא בְּדִיל דְּלָא לַאֲתָבוּתִי בֵּית יְהוֹנָתָן לִמְמַת תַּמָּן׃
27 וַאֲתוֹ כָל רַבְרְבַיָּא לְוַת יִרְמְיָה וּשְׁאִילוּ יָתֵיהּ וְחַוִּי לְהוֹן כְּכָל פִּתְגָמַיָּא הָאִלֵּין דְּפַקֵּיד מַלְכָּא
28 וּשְׁתִיקוּ מִנֵּיהּ אֲרֵי לָא אִשְׁתְּמַע פִּתְגָמָא׃ וִיתֵיב יִרְמְיָה בְּדָרַת בֵּית אֲסִירַיָּא עַד יוֹמָא
דְּאִתְכְּבֵישַׁת יְרוּשְׁלֶם וַהֲוָה כַּד אִתְכְּבֵישַׁת יְרוּשְׁלֶם׃

לט

1 בְּשַׁתָּא תְשִׁיעֵתָא לְצִדְקִיָּה מְלַךְ שִׁבְטָא דְבֵית יְהוּדָה בְּיַרְחָא עֲשִׂירָאָה אֲתָא נְבוּכַד רֶצַּר
2 מַלְכָּא דְבָבֶל וְכָל מַשִׁרְיָתֵיהּ לִירוּשְׁלֶם וְצָרוּ עֲלַהּ׃ בַּחֲדָא עַשְׂרֵי שְׁנִין לְצִדְקִיָּה בְּיַרְחָא
3 רְבִיעָאָה בְּתִשְׁעָה לְיַרְחָא אִתְרַעַת קַרְתָּא׃ וַאֲתוֹ כָּל רַבְרְבֵי מַלְכָּא דְבָבֶל וִיתִיבוּ
בְּתַרְעָא מְצִיעֵיתָא נֵרְגַל שַׂרְאֶצֶר סַמְגַּר נְבוֹ שַׂר סְכִים רַב סָרִיס נֵרְגַל שַׂרְאֶצֶר רַב
4 מָג וְכָל שְׁאָר רַבְרְבֵי מַלְכָּא דְבָבֶל׃ וַהֲוָה כַּד חֲזָנוּן צִדְקִיָּה מְלַךְ שִׁבְטָא דְבֵית
יְהוּדָה וְכָל גִּבָּרֵי עָבְדֵי קְרָבָא וַעֲרַקוּ וּנְפַקוּ בְלֵילְיָא מִן קַרְתָּא בְּאוֹרַח גִּנְּתָא דְמַלְכָּא
5 בְּתַרְעָא בֵּין שׁוּרַיָּא וּנְפַק בְּאוֹרַח מֵישְׁרָא׃ וּרְדַפוּ מַשִׁרְיַת כַּסְדָּאֵי בַּתְרֵיהוֹן וְאַדְבִּיקוּ
יַת צִדְקִיָּה בְּמֵישְׁרֵי יְרֵחוֹ וּדְבַרוּ יָתֵיהּ וְאַסְּקוּהִי לְוַת נְבוּכַד נֶצַּר מַלְכָּא דְבָבֶל לְרִבְלָה
6 בְּאַרְעָא דַחֲמָת וּמַלֵּיל עִמֵּיהּ פִּתְגָמֵי דִינִין׃ וּנְכַס מַלְכָּא דְבָבֶל יַת בְּנֵי צִדְקִיָּה בְּרִבְלָה
7 לְעֵינוֹהִי וְיַת כָּל רַבְרְבֵי יְהוּדָה נְכַס מַלְכָּא דְבָבֶל׃ וְיַת עֵינֵי צִדְקִיָּה עַוַּר וְאַסְרֵיהּ
8 בְּשַׁלְשְׁלָן דִּנְחָשׁ לְאוֹבָלָא יָתֵיהּ לְבָבֶל׃ וְיַת בֵּית מַלְכָּא וְיַת בֵּית עַמָּא אוֹקִידוּ
9 כַּסְדָּאֵי בְּנוּרָא וְיַת שׁוּרֵי יְרוּשְׁלֶם תְּרַעוּ׃ וְיַת שְׁאָר עַמָּא דְּאִשְׁתְּאַרוּ בְקַרְתָּא וְיַת
שְׁמִיעַיָּא דְּאִשְׁתְּמַעוּ עֲלוֹהִי וְיַת שְׁאָר עַמָּא דְּאִשְׁתְּאַרוּ אַגְלֵי נְבוּזַר אֲדָן רַב קָטוֹלַיָּא לְבָבֶל׃
10 וּמִן עַמָּא חֲשִׁיכַיָּא דְּלֵית לְהוֹן מִדְּעַם אַשְׁאַר נְבוּזַר אֲדָן רַב קָטוֹלַיָּא בְּאַרְעָא דְבֵית יְהוּדָה
וּמַנִּנּוּן לְמֶהֱוֵי מְפַלְּחִין בַּחֲקָלִין וּבְכַרְמִין בְּיוֹמָא הַהוּא׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Dices illis, Deprecationem ego postulavi coram rege, ut non reduceret me 26 in domum Jonathan, ut morerer ibi. 27 Et venerunt omnes principes ad Jeremiam, & interrogaverunt eum ; & narravit eis juxta omnia verba hæc quæ præcepit rex ; & dimiserunt eum : quia non fuerat auditum verbum. 28 Et habitavit Jeremias in atrio carceris, usque in diem quo capta est Jerusalem. Et factum est ut caperetur Jerusalem.

CAP. XXXIX.

1 ANno nono Sedechiæ regis tribus domus Juda, mense decimo, venit Nabuchodonosor rex Babylonis, & omnis exercitus ejus ad Jerusalem, & obsederunt eam. 2 Undecimo anno Sedechiæ, mense quarto, nono die mensis perrupta est civitas. 3 Et ingressi sunt omnes principes regis Babylonis, & sederunt in porta media ; Neregal, Sareser, Samgar-nebu, Sar-sechim, Rab-saris, Neregal, Sareser, Rab-mag, & omnes reliqui principes regis Babylonis. 4 Et factum est cùm vidisset eos Sedechias rex tribus domus Juda, & omnes viri bellatores, fugerunt : & egressi sunt nocte de civitate per viam horti regis, per portam quæ erat inter muros ; & egressus est per viam campestrem. 5 Et persecuti sunt exercitus Chaldæorum post eos, & comprehenderunt Sedechiam in campestribus Jericho : & tulerunt eum, & adduxerunt eum ad Nabuchodonosor regem Babylonis in Riblah, in terra Hamath ; & locutus est cum eo verba judiciorum. 6 Et occîdit rex Babylonis filios Sedechiæ in Riblah ante oculos ejus, & omnes principes Juda occîdit rex Babylonis. 7 Et oculos Sedechiæ excæcavit & vinxit eum catenis æreis, ut duceret eum in Babylonem. 8 Et domum regis & domum populi succenderunt Chaldæi igni, & muros Jerusalem confregerunt. 9 Et reliquias populi qui remanserat in civitate, & transfugas qui transfugerant ad eum, & reliquum populum qui remanserat, transtulit Nabuzardan princeps occidentium in Babylonem. 10 Et de pauperibus populi qui nihil habebant, dimisit Nabuzardan princeps occidentium in terra domus Juda, & constituit eos ut essent agricolæ & vinitores in die illa.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܕܒܥܘܬܐ ܒܥܝܬ ܡܢ ܡܠܟܐ : ܕܠܐ ܢܗܦܟܢܝ ܠܘܬ ܝܘܢܬܢ ܣܦܪܐ. ܕܠܐ 26
ܐܡܘܬ ܬܡܢ. * ܘܐܬܘ ܟܠܗܘܢ ܪܘܪܒܢܐ ܠܘܬ ܐܪܡܝܐ. ܘܫܐܠܘܗܝ. ܘܚܘܝ ܐܢܘܢ ܟܠܗܘܢ 27
ܡܠܐ ܕܦܩܕܗ ܡܠܟܐ. ܘܫܬܩܘ ܠܗܘܢ ܡܢܗ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܫܬܡܥܬ ܡܠܬܐ. * ܘܝܬܒ 28
ܐܪܡܝܐ ܒܕܪܬܐ ܕܒܝܬ ܐܣܝܪܐ. ܥܕܡܐ ܠܝܘܡܐ ܕܐܬܟܒܫܬ ܐܘܪܫܠܡ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܛ *

ܒܫܢܬܐ ܬܫܥ ܕܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܒܝܪܚܐ ܕܥܣܪܐ. 1
ܐܬܐ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܗܘ ܘܟܠܗ ܚܝܠܗ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ. ܘܐܬܪܘ ܥܠܝܗ.
* ܘܒܫܢܬ ܚܕܥܣܪܐ ܕܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ. ܒܝܪܚܐ ܕܚܡܫܐ. ܒܬܫܥܐ ܒܗ ܒܝܪܚܐ. ܐܬܬܪܥܬ 2
ܡܕܝܢܬܐ. * ܘܐܬܘ ܟܠܗܘܢ ܪܘܪܒܢܐ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܝܬܒܘ ܒܬܪܥܐ ܡܨܥܝܐ. ܢܪܓܠ ܫܪܐܨܪ 3
ܘܣܡܓܪ ܢܒܘ. ܘܣܪܣܟܝܡ ܪܒ ܡܗܝܡܢܐ. ܘܢܪܓܠ ܫܪܐܨܪ ܪܒܡܓ. ܘܟܠܗܘܢ ܪܘܪܒܢܐ
ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. * ܘܟܕ ܚܙܐ ܐܢܘܢ ܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܓܒܪܐ ܩܪܒܬܢܐ. 4
ܥܪܩܘ. ܘܢܦܩܘ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ ܒܠܠܝܐ. ܒܐܘܪܚܐ ܕܓܢܬܐ ܕܡܠܟܐ. ܒܬܪܥܐ ܕܒܝܬ ܫܘܪܐ. ܘܢܦܩܘ
ܒܐܘܪܚܐ ܕܥܪܒܬܐ. * ܘܪܕܦܘ ܚܝܠܐ ܕܟܠܕܝܐ ܒܬܪܗܘܢ. ܘܐܕܪܟܘܗܝ ܠܨܕܩܝܐ. ܒܥܪܒܬܐ 5
ܕܝܪܝܚܘ. ܘܟܠܗ ܚܝܠܗ ܐܬܒܕܪ ܡܢܗ. ܘܐܚܕܘܗܝ ܘܐܣܩܘܗܝ ܠܘܬ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ
ܕܒܒܠ ܠܕܒܠܬ ܒܐܪܥܐ ܕܚܡܬ. ܘܡܠܠ ܥܡܗ ܕܝܢܐ. * ܘܢܟܤ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ 6
ܠܒܢܘܗܝ ܕܨܕܩܝܐ ܒܕܒܠܬ ܠܥܝܢܘܗܝ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܪܘܪܒܢܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܢܟܤ ܡܠܟܐ
ܕܒܒܠ ܒܕܒܠܬ. * ܘܠܥܝܢܘܗܝ ܕܨܕܩܝܐ ܥܘܪ. ܘܐܣܪܗ ܒܫܫܠܬܐ ܠܡܘܒܠܗ 7
ܠܒܒܠ. * ܘܠܒܝܬܗ ܕܡܠܟܐ ܘܠܒܬܐ ܕܥܡܐ. ܐܘܩܕܘ ܟܠܕܝܐ ܒܢܘܪܐ. ܘܫܘܪܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ 8
ܡܢ ܚܕܪܐ. ܥܩܪܘ. * ܘܫܪܟܗ ܕܥܡܐ ܕܐܫܬܚܪܘ ܒܡܕܝܢܬܐ. ܘܕܢܦܠܘ ܠܘܬܗ : ܘܫܪܟܗ 9
ܕܥܡܐ ܕܐܫܬܚܪܘ. ܐܫܒܝ ܢܒܘܙܪܕܢ ܪܒ ܩܛܘܠܐ. ܘܐܘܒܠ ܐܢܘܢ ܠܒܒܠ. * ܘܡܢ ܡܣܟܢܐ 10
ܕܥܡܐ ܕܠܝܬ ܠܗܘܢ ܡܕܡ. ܫܒܩ ܢܒܘܙܪܕܢ ܪܒ ܩܛܘܠܐ ܒܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܝܗܒ ܠܗܘܢ
ܟܪܡܐ ܘܦܠܚܢܐ. ܒܝܘܡܐ ܗܘ.

* Dic eis, Enixè rogavi regem ne me remitteret 26
ad Jonathanem ſcribam, ne moriar ibi.
Venientibus ergò cunctis principibus ad Jeremiam, 27
& interrogantibus eum, indicavit illis
ea omnino verba quæ rex illi præceperat:
ſic abſtinuerunt ab eo, cùm res minimè reſcita
fuiſſet. Manſitque Jeremia in atrio carceris 28
uſque ad diem quo capta fuit Jeruſalem.

CAP. XXXIX.

ANno nono Sedeciæ regis Judæ, menſe 1
decimo, venit Nebuchadnoſar rex Babyloniæ
unà cum omnibus copiis ſuis contra Jeroſolymam,
& obſederunt eam. Anno verò 2
undecimo regis Sedeciæ, menſe quinto, nono
die ejuſdem menſis, perrupta eſt civitas: Et 3
venientes omnes principes regis Babyloniæ,
ſederunt in porta media; Nerghel-Seraſar,
& Samgadnebo, & Sarſechim princeps eunuchorum,
& Nerghel-Seraſar-Rabmag, omnéſque
principes regis Babyloniæ. Quos 4
cùm vidiſſent Sedecia rex Judæ & omnes viri
bellatores, fugerunt; & noctu exeuntes è civitate
per viam horti regii per portam quæ
eſt inter muros, egreſſi ſunt per viam campeſtrem.
Sed perſequentes eos copiæ Chal- 5
dæorum, aſſecutæ ſunt Sedeciam in campo
Jerichuntino; ubi toto ipſius exercitu ab eo
diſſipato, ceperunt eum, deduxerúntque ad
Nebuchadnoſarem regem Babyloniæ in
Deblatham in terram Hamathæ. Et initis 6
cum eo rationibus, jugulari juſſit rex Babyloniæ
filios Sedeciæ in Deblatha, coram ipſo:
omnes etiam principes Judæ jugulari juſſit rex 7
Babylonis in Deblatha. Tum oculos Sedeciæ
excæcari juſſit, & catenis vinciri, ut perduceretur
Babylonem. Domum verò regiam, 8
& domos populares igne combuſſerunt
Chaldæi, muróſque Jeruſalem per circuitum
everterunt. Denique reſiduum populi qui 9
reliqui erant in civitate, tam homines qui
aufugerant ad ipſum, quàm reliquum qui ſupererat
populum, captivos abduxit Nebuzardan
princeps ſatellitum, & perduxit eos
Babylonem. Ex pauperrimis autem plebis 10
qui nihil habebant, reliquit Nebuzardan
princeps ſatellitum in terra Judæ, dedítque
eis vineas & arva in die illo.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لاجل جميع شرور بني اسرايل ويهودا * كما صنعوا ليمرمروني هم وملوكهم وروساءهم وكهنتهم 32
وانبياوهم * رجال يهودا وسكان ايروسليم * وولوا لي ظهورهم وليس وجوههم * وعلمتهم باكرا فلم 33
يسمعوا ايضا لياخذوا ادبا * ووضعوا ادناسهم في البيت حيث دعي اسمي عليه بنجاستهم * وبنوا 34 35
الهياكل لباعال الذين في وادي بن انوم * ليصعدوا بنيهم وبناتهم لمولوخ * مصلحة لم امرهم
بها ولم تصعد على قلبي * ليصنعوا هذه الرذالة ليخطوا يهودا * والان هكذا قال الرب اله اسرايل 36
على المدينة التي انت تقول تدفع في ايدي ملك بابل بالسيف والجوع وبالرسالة * ها انا 37
اجمعهم من كل الارض حيث فرقتهم هناك برجزي وبغضبي وبحرد عظيم * واردهم الى هذا
الموضع * واجلسهم مطمانين * ويكونون لي شعبا وانا اكون لهم الها * وادفعهم الى ارض 38 39
اخرى ليخافوني جميع الايام * خيرا لهم ولابنايهم بعدهم * واعهد لهم عهدا ابديا لا اصرفه 40
من خلفهم * واعطي خوفي في قلبهم لييلا يبتعدوا مني * وابتهدهم لاصلحهم * واغرسهم في 41
هذه الارض بالايمان وبكل القلب وبكل النفس *

* الاصحاح السادس والعشرون *

* لان هكذا قال الرب * كما جلبت على هذا الشعب جميع هذه الشرور العظيمة * هكذا انا اجلب 42
عليهم الخيرات التي تكلمت بها عليهم * ويقتني ايضا حقول في الارض التي انت تقول تكون 43
غير مسلوكة من انسان وبهيمة * ويسلمون الى ايدي الكلدانيين * ويقتنون حقولا بالفضة * 44
ويكتب في سفر ويختم * ويشهد شهودا في ارض بنيامين وفي حول ايروسليم * وفي مدن يهودا
وفي مدن جبل سافيلا وفي مدن ناجاب لاني ارد جلواتهم *

*Propter tot ſcelera filiorum Iſraelis & 32
Judæ, quæ commiſerunt ut me exaſperarent,
tam ipſi quàm reges eorum, principes,
ſacerdotes, ac Prophetæ eorum,
viri Juda, & cives Jeruſalem, Vertentes 33
mihi dorſa ſua, non autem faciem, Et
quidem docui eos diluculò, ſed non audierunt
ampliùs, ut acquirerent diſciplinam:
Imò collocaverunt abominationes 34
ſuas in domo ſuper quam invocatum eſt
nomen meum, cum turpitudinibus ſuis:
Et ædificaverunt Baali templa quæ ſunt 35
in valle filii Ennom, ut offerrent filios
filiaſque ſuas Moloch, rem quam neq;
præceperam eis, neque in mentem mihi
venerat; ut ſcilicet, tantam abominationem
committerent, quatenus ad peccatum
inducerent Judam. Nunc itaque ſic dixit 36
Dominus Deus Iſraelis de urbe quam tu
dicis tradendam in manus regis Babelis,
gladio, fame, & emiſſione: En ego 37
colligam eos ex univerſa terra, quocunque
diſperſi eos in ira & furore meo &
ſumma cum indignatione; & reducam
eos hunc in locum, & efficiam ut ſedeant
ſecuri: Eruntque mihi populus, & 38
ego ero ipſis Deus: Ponam eos in alia terra, 39
ut me timeant cunctis diebus, in bonum
ſuum & filiorum ſuorum poſt ipſos:
Et inibo cum eis teſtamentum æternum 40
quod non abolebo poſt ipſos: & indam
timorem meum in cor eorum, ut non recedant
à me: Et viſitabo eos ut reparem 41
eos, & plantabo eos in hac terra fideliter,
& ex toto corde, totoque animo.*

Textus vigeſimus ſextus.

*Sic enim dixit Dominus; Quemadmodum 42
induxi ſuper hunc populum omnia
hæc mala maxima, ita ego inducam ſuper
eos bona quæ locutus ſum de ipſis.
Adeóque poſſidebuntur adhuc agri in 43
terra quam tu dicis non eſſe terendam ab
homini aut jumento, ſed tradendos in manus
Chaldæorum: Agros inquam, pecuniâ 44
comparabunt: & ſcribes in libello, &
obſignabis, & teſtes adhibebis in terra
Benjaminis, & in adjacentibus Jeroſolymæ
locis, in urbibus Judæ, in urbibus
montis Sephilæ, & in urbibus Negeb: quia
reducturus ſum transmigrationes eorum.*

ירמיה: מ

manu in ,Irmejahu super Babel rex resar-Nebuchad præceperat Et
11 וַיְצַו נְבוּכַדְרֶאצַּר מֶלֶךְ־בָּבֶל עַל־יִרְמְיָהוּ בְּיַד
tuos oculos &,illum Tolle : dicendo , laniorum magistri Nebuzaradan
12 נְבוּזַרְאֲדָן רַב־טַבָּחִים לֵאמֹר׃ קָחֶנּוּ וְעֵינֶיךָ
quod secundũ sed ,mali quicquam ei facias ne & ,illum super pone
שִׂים עָלָיו וְאַל־תַּעַשׂ לוֹ מְאוּמָה רָּע כִּי אִם כַּאֲשֶׁר
Nebuzaradan Misitque .eo cum facias sic , te ad loquetur
13 יְדַבֵּר אֵלֶיךָ כֵּן עֲשֵׂה עִמּוֹ׃ וַיִּשְׁלַח נְבוּזַרְאֲדָן
, Sareser Nerghal & , Saris-Rab Nebuzazban & ,laniorum magister
רַב־טַבָּחִים וּנְבוּשַׁזְבָּן רַב־סָרִיס וְנֵרְגַל שַׂרְאֶצֶר
,miserunt Et .Babel regis magistri omnes & ; Magh-Rab
14 רַב־מָג וְכֹל רַבֵּי מֶלֶךְ־בָּבֶל׃ וַיִּשְׁלְחוּ
eum tradiderunt & ,custodiæ atrio de Irmejahu tulerunt &
וַיִּקְחוּ אֶת־יִרְמְיָהוּ מֵחֲצַר הַמַּטָּרָה וַיִּתְּנוּ אֹתוֹ
ad eum *educendum ad* , Saphan filii Ahicham *filium* Ghedaljahu *ad*
אֶל־גְּדַלְיָהוּ בֶּן־אֲחִיקָם בֶּן־שָׁפָן לְהוֹצִאֵהוּ אֶל־
verbum fuerat Irmejahu ad Et .populi medio in *habitavit* & : domum
15 הַבַּיִת וַיֵּשֶׁב בְּתוֹךְ הָעָם׃ וְאֶל־יִרְמְיָהוּ הָיָה דְבַר־
, Vade : dicendo ,custodiæ atrio in *clausum ipsum existendo in* ,Domini
16 יְהוָה בִּהְיֹתוֹ עָצוּר בַּחֲצַר הַמַּטָּרָה לֵאמֹר׃ הָלוֹךְ
Dominus dixit Sic : dicendo ,Æthiopem Melech Hebed ad *dices* &
וְאָמַרְתָּ לְעֶבֶד־מֶלֶךְ הַכּוּשִׁי לֵאמֹר כֹּה־אָמַר יְהוָה
civitatẽ *ad* mea verba *adducens* ego Ecce : Israel Deus exercituũ
צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל הִנְנִי מֵבִי אֶת־דְּבָרַי אֶל־הָעִיר
.illa die in *tuas facies ad* erunt & :bonum in non & ,malum in hanc
הַזֹּאת לְרָעָה וְלֹא לְטוֹבָה וְהָיוּ לְפָנֶיךָ בַּיּוֹם הַהוּא׃
manum in traderis non & ; Dominus dixit ,illa die in te liberabo Et
17 וְהִצַּלְתִּיךָ בַיּוֹם־הַהוּא נְאֻם־יְהוָה וְלֹא תִנָּתֵן בְּיַד
eruendo Sed .*eorum faciebus à timens* tu quorum , virorum
18 הָאֲנָשִׁים אֲשֶׁר־אַתָּה יָגוֹר מִפְּנֵיהֶם׃ כִּי מַלֵּט
,spolium in tua anima tibi erit & : cades non gladio *in* & , te eruam
אֲמַלֶּטְךָ וּבַחֶרֶב לֹא תִפֹּל וְהָיְתָה לְךָ נַפְשְׁךָ לְשָׁלָל
.Dominus ait ,*me in* fidisti quia
כִּי־בָטַחְתָּ בִּי נְאֻם־יְהוָה׃

CAP. XL. מ

dimisit postquam ,Domino *cum* à Irmejahu ad fuit quod Verbum
1 הַדָּבָר אֲשֶׁר־הָיָה אֶל־יִרְמְיָהוּ מֵאֵת יְהוָה אַחַר ׀ שַׁלַּח
,eum *ipso capiendo in* ,Ramah de laniorum magister Nebuzaradan eum
אֹתוֹ נְבוּזַרְאֲדָן רַב־טַבָּחִים מִן־הָרָמָה בְּקַחְתּוֹ אֹתוֹ
transmigrationis omnis medio in , catenis in vinctus ipse &
וְהוּא־אָסוּר בָּאזִקִּים בְּתוֹךְ כָּל־גָּלוּת
magister tulit Et .Babel in *translatorum* , Jehudah & ,Jerusalaim
2 יְרוּשָׁלַםִ וִיהוּדָה הַמֻּגְלִים בָּבֶלָה׃ וַיִּקַּח רַב־
est locutus tuus Deus Dominus :eum ad dixit & ,Irmejahu laniorum
טַבָּחִים לְיִרְמְיָהוּ וַיֹּאמֶר אֵלָיו יְהוָה אֱלֹהֶיךָ דִּבֶּר
Dominus fecit &,adduxit Et .istum locum *ad* hoc malum
3 אֶת־הָרָעָה הַזֹּאת אֶל־הַמָּקוֹם הַזֶּה׃ וַיָּבֵא וַיַּעַשׂ יְהוָה
audivistis non & ,Domino peccâstis quia ; est locutus quemadmodum
כַּאֲשֶׁר דִּבֵּר כִּי־חֲטָאתֶם לַיהוָה וְלֹא־שְׁמַעְתֶּם
te solvi ecce nunc Et .hoc verbum vobis *fuit* & , ejus *voce in*
4 בְּקוֹלוֹ וְהָיָה לָכֶם דָּבָר הַזֶּה׃ וְעַתָּה הִנֵּה פִתַּחְתִּיךָ
,tuis oculis in *bonum* Si .*tua manu super* quæ , catenis à hodie
הַיּוֹם מִן־הָאזִקִּים אֲשֶׁר עַל־יָדֶךָ אִם־טוֹב בְּעֵינֶיךָ
: te super meum oculum ponam & ,veni ,Babel mecum *veniendum ad*
לָבוֹא אִתִּי בָבֶל בֹּא וְאָשִׂים אֶת־עֵינִי עָלֶיךָ
, vide : *cessa* , Babel mecum *veniendum ad* ,tuis oculis in *malum* si &
וְאִם־רַע בְּעֵינֶיךָ לָבוֹא־אִתִּי בָבֶל חֲדָל רְאֵה
,tuis oculis in *rectum ad* & *bonum* ad , *tuas facies ad* terra omnis
כָּל־הָאָרֶץ לְפָנֶיךָ אֶל־טוֹב וְאֶל־הַיָּשָׁר בְּעֵינֶיךָ
.vade , *illuc eundum ad*
לָלֶכֶת שָׁמָּה לֵךְ׃

Versio VULG. LAT.

11 Præceperat autem Nabuchodonosor rex Babylonis de Jeremia Nabuzardan magistro militum, 12 dicens; Tolle illum, & pone super eum oculos tuos, nihilque ei mali facias: sed, ut voluerit, sic 13 facias ei. Misit ergò Nabuzardan princeps militiæ, & Nabusezban, & Rabsares, & Neregel, & Sereser, & Rebmag, & omnes optimates regis Baylonis, 14 Miserunt, & tulerunt Jeremiam de vestibulo carceris, & tradiderunt eum Godoliæ filio Ahicam filii Saphan, ut intraret in domum, & 15 habitaret in populo. Ad Jeremiam autem factus fuerat sermo Domini, cùm clausus esset in 16 vestibulo carceris, dicens; Vade, & dic Abdemelech Æthiopi, dicens; Hæc dicit Domin⁹ exercituum, Deus Israel; Ecce egò inducam sermones meos super civitatem hanc in malum, & non in bonum: & erunt in con17 spectu tuo in die illa. Et liberabo te in die illa, ait Domin⁹: & non traderis in manus viro18 rum, quos tu formidas: Sed eruens liberabo te, & gladio non cades: sed erit tibi anima tua in salutem, quia in me habuisti fiduciam, ait Dominus.

CAP. XL.

1 SErmo, qui factus est ad Jeremiam à Domino, postquàm dimissus est à Nabuzardan magistro militiæ de Rama, quando tulit eum vinctum catenis, in medio omnium, qui migrabant de Jerusalem & Juda, & ducebantur 2 in Babylonem. Tollens ergò princeps militiæ Jeremiam, dixit ad eum; Domin⁹ De⁹ tu⁹ locutus est malum hoc super locum 3 istum. Et adduxit: et fecit Domin⁹ sicut locutus est, quia peccâstis Domino, & non audîstis vocem ejus, & factus est vobis 4 sermo hic. Nunc ergò ecce solvi te hodiè de catenis, quæ sunt in manibus tuis: si placet tibi ut venias mecum in Babylonem, veni; & ponam oculos meos super te: si autem displicet tibi venire mecum in Babylonem, reside: ecce omnis terra in conspectu tuo est: quod elegeris, & quò placuerit tibi ut vadas, illuc perge.

Vers. GRÆ. LXX. Interp. cum Transl. LAT.

Cap. 33. ΚΕΦ. μ'.
Vulg. Lat. 1

ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς Ἱερεμίαν (α) δεύτερον, καὶ (β) αὐτὸς ἦν ἔτι δεδεμένος ἐν τῇ αὐλῇ τῆς φυλακῆς, 2 λέγων, Οὕτως εἶπε κύριος, ποιῶν γῆν, καὶ πλάσσων αὐτὴν, τοῦ ἀνορθῶσαι αὐτὴν, Κύριος ὄνομα αὐτῷ· 3 Κέκραξον πρὸς μὲ, καὶ ἀποκριθήσομαί σοι, καὶ ἀπαγγελῶ σοι μεγάλα 4 καὶ ἰσχυρὰ, ἃ οὐκ ἔγνως αὐτά. Ὅτι οὕτως εἶπε (γ) κύριος περὶ οἴκων τῆς πόλεως ταύτης, καὶ περὶ (δ) οἴκων βασιλέως Ἰούδα τῶν (ε) καθῃρημένων εἰς χάρακας καὶ προμαχῶνας, 5 Τοῦ μάχεσθαι πρὸς τοὺς Χαλδαίους, καὶ πληρῶσαι αὐτὴν (ζ) τῶν νεκρῶν τῶν ἀνθρώπων, οὓς (η) ἐπάταξα ἐν ὀργῇ μου, καὶ ἐν θυμῷ μου· καὶ ἀπέστρεψα τὸ πρόσωπόν μου ἀπ' αὐτῶν, 6 περὶ πασῶν τῶν πονηριῶν αὐτῶν. Ἰδοὺ ἐγὼ (θ) ἀνάγω αὐτῇ συνούλωσιν καὶ ἴαμα, (ι) καὶ φανερώσω αὐτοῖς, καὶ ἰατρεύσω αὐτὴν, καὶ ποιήσω καὶ εἰρήνην καὶ πίστιν. 7 Καὶ ἀποστρέψω τὴν ἀποικίαν Ἰούδα, καὶ (κ) ἀποικίαν Ἰσραὴλ, καὶ οἰκοδομήσω αὐτοὺς (λ) καθὼς καὶ τὸ πρότερον. 8 Καὶ καθαριῶ αὐτοὺς ἀπὸ πασῶν τῶν ἀδικιῶν αὐτῶν, ὧν (μ) ἡμάρτοσάν μοι, καὶ οὐ μὴ μνησθήσομαι ἁμαρτιῶν αὐτῶν ὧν ἥμαρτόν (ν) μοι, καὶ ἀπέστησαν ἀπ' ἐμοῦ. 9 Καὶ ἔσται εἰς εὐφροσύνην καὶ (ξ) αἴνεσιν, καὶ εἰς μεγαλειότητα παντὶ τῷ λαῷ τῆς γῆς, οἵτινες ἀκούσονται πάντα τὰ ἀγαθὰ ἃ ἐγὼ (ο) ποιήσω, καὶ φοβηθήσονται καὶ πικρανθήσονται περὶ πάντων τῶν ἀγαθῶν, καὶ περὶ πάσης τῆς εἰρήνης 10 ἧς ἐγὼ (π) ποιήσω αὐτοῖς. Οὕτως εἶπε κύριος, Ἔτι ἀκουσθήσεται ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ, ᾧ ὑμεῖς λέγετε, Ἔρημός ἐστιν ἀπὸ ἀνθρώπων καὶ κτηνῶν, ἐν πόλεσιν Ἰούδα, καὶ ἔξωθεν Ἱερουσαλὴμ, ταῖς ἠρημωμέναις, (ρ) 11 παρὰ τὸ μὴ εἶναι ἄνθρωπον καὶ κτήνη· Φωνὴ εὐφροσύνης, καὶ φωνὴ (σ) χαρμοσύνης, φωνὴ νυμφίου, καὶ φωνὴ νύμφης, φωνὴ (τ) λεγόντων, Ἐξομολογεῖσθε κυρίῳ παντοκράτορι, ὅτι χρηστὸς κύριος, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. καὶ εἰσοίσουσι (υ) δῶρα εἰς οἶκον κυρίου, ὅτι (φ) ἀποστρέψω πᾶσαν τὴν ἀποικίαν τῆς γῆς ἐκείνης (χ) κατὰ τὸ πρότερον, εἶπε 12 κύριος. Οὕτως εἶπε κύριος τῶν δυνάμεων, Ἔτι ἔσται (ψ) ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ τῷ ἐρήμῳ, παρὰ τὸ μὴ εἶναι ἄνθρωπον καὶ (ω) κτῆνος, ἐν πάσαις ταῖς πόλεσιν αὐτοῦ καταλύματα ποιμένων κοιταζόντων (α) πρό13 βατα. Ἐν πόλεσι τῆς ὀρεινῆς, καὶ ἐν πόλεσι τῆς (β) Σεφηλὰ, καὶ ἐν πόλεσι τῆς ναγὲβ, καὶ ἐν γῇ Βενιαμὶν, καὶ ἐν ταῖς κύκλῳ Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐν πόλεσιν Ἰούδα, ἔτι παρελεύσεται πρόβατα ἐπὶ χεῖρα ἀριθμοῦντος, εἶπε κύριος.

CAP. XL.

ET (a) factum est verbum Domini ad Hieremiam secundò (& ipse erat adhuc ligatus in atrio carceris) dicens; 1 *Sic dixit Dominus faciens terram, & formans eam, ad erigendam eam: Dominus nomen illi;* 2 *Clama ad me, & respondebo tibi: & annuntiabo tibi magna, & fortia, quæ nõ nôsti ea.* 3 *Quia sic dixit Dominus de domibus urbis hujus, & de domibus regis Juda, quæ destructæ sunt in valla & propugnacula,* 4 *Ad pugnandum adversùs Chaldæos, & implendam eam cadaveribus hominum, quos percussi in ira mea, & in furore meo: & averti faciem meam ab eis pro omnibus malitiis eorum.* 5 *Ecce ego adduco ei cicatricem, & sanitatem: & (b) demonstrabo eis, & curabo eam, & faciam (c) etiam pacem, & fidem:* 6 *Et reducam transmigrationem Juda, & transmigrationem Israel: & ædificabo eos, sicut & anteà;* 7 *Et mundabo eos ab omnibus iniquitatibus eorum, quibus peccaverunt mihi, & non recordabor peccatorum eorum, quibus peccaverunt mihi, & recesserunt à me.* 8 *Et (d) erit in lætitiam, & laudem, & in magnificentiam omni populo terræ, qui quidem audient omnia bona, quæ ego faciam: & timebunt, & inamarescent pro omnibus bonis, & pro omni pace, quam ego faciam eis.* 9 *Sic dixit Dominus;* 10 *Adhuc audietur in loco isto, de quo vos dicitis, (Desertus est ab hominibus, & jumentis, in civitatibus Juda, & foris Hierusalem, quæ desolatæ sunt, eò quòd non sit homo, & pecus,)* *Vox lætitiæ, & vox gaudii, vox sponsi, & vox sponsæ, vox dicentium; Confitemini Domino omnipotenti; quoniam bonus est Dominus; quia in seculum misericordia ejus. Et inferent dona in domum Domini: quia reducam omnem transmigrationem terræ illius juxta id, quod anteà, dixit Dominus.* 11 *Sic dixit Dominus virtutum; Adhuc erunt in loco hoc deserto, eò quòd non sit homo, & pecus, in omnibus civitatibus ejus habitacula pastorum accubare facientium oves:* 12 *In civitatibus montanæ, & in civitatibus Sephela, & in civitatibus Nageb, & in terra Benjamin, & in iis quæ in circuitu Hierusalem, & in civitatibus Juda. Adhuc transibunt oves ad manum numerantis, ait (e) Dominus.* 13

MS. A. (α) ΕΚ ΔΕΥΤΕΡΟΥ, (β) ΑΥΤΟΣ ΕΤΙ ΗΝ (γ) κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ (δ) οἰκίας (ε) καθῃρημένων (ζ) νεκρῶν (η) *ἐπάταξεν ὀργῇ, (θ) ἐπάγω ἐπ' αὐτοὺς συνούλωσιν (ι) καὶ ἰατρεύσω αὐτοὺς, καὶ *φανεροὶ αὐτοῖς εἰσακούειν, καὶ ἰατρεύσω αὐτοὺς, καὶ ποιήσω αὐτοῖς εἰρήνην (κ) τὴν ἀποικίαν (λ) ὡς τὸ πρότερον. (μ) ἥμαρτόν (ν) μου, (ξ) εἰς αἴνεσιν, (ο) ποιῶ, καὶ φοβηθήσονται περὶ πάντων (π) ποιῶ (ρ) καὶ φωνὴ (σ) χαρμονῆς, (τ) λέγοντος, (υ) δῶρα αἰνέσεως εἰς (φ) ἀποστρέψω τὴν ἀποικίαν πάσης τῆς γῆς (χ) καθὰ πρότερον, (ψ) ἐν τῷ τόπῳ τῷ ἠρημωμένῳ τούτῳ, παρὰ (ω) κτήνη, καὶ ἐν (α) προβάτων, (β) Ναγὲβ, καὶ ἐν γῇ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 וּפַקֵּיד נְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא דְבָבֶל עַל יִרְמְיָה בְּיַד נְבוּזַר אֲדָן רַב קְטוֹלַיָא לְמֵימַר׃ דַּבְּרֵהִי
12 וְעֵינָךְ שַׁוֵּי עֲלוֹהִי וְלָא תַעְבֵּד לֵיהּ מִדַּעַם בִּישׁ אֱלָהֵן כְּמָה דִּימַלֵּל עִמָּךְ כֵּן עֲבֵיד עִמֵּיהּ׃
13 וּשְׁלַח נְבוּזַר אֲדָן רַב קְטוֹלַיָא וּנְבוּשַׁזְבָּן רַב סָרִיס וְנֵרְגַל שַׂרְאֶצֶר רַב מָג וְכָל שְׁאָר רַבְרְבֵי
14 מַלְכָּא דְבָבֶל׃ וּשְׁלַחוּ וּדְבַרוּ יַת יִרְמְיָהוּ מִדְּרַת בֵּית אֲסִירַיָא וִיהַבוּ יָתֵיהּ לִגְדַלְיָה בַּר
15 אֲחִיקָם בַּר שָׁפָן לְאַפָּקוּתֵיהּ לְבֵיתָא וִיתֵיב בְּגוֹ עַמָּא׃ וְעִם יִרְמְיָה הֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן
16 קֳדָם יְיָ כַּד הֲוָה כְּלֵי בִּדְרַת בֵּית אֲסִירַיָא לְמֵימַר׃ אֱזֵיל וְתֵימַר לְעַבְדָּא דְמַלְכָּא צִדְקִיָּה
לְמֵימַר כִּדְנָן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל הָא אֲנָא מַיְתֵי יַת פִּתְגָמַי עַל קַרְתָּא הָדָא
17 לְבִישְׁתָּא וְלָא לְטָבָא וִיהוֹן קֳדָמָךְ בְּיוֹמָא הַהוּא׃ וְאֵשֵׁיזְבִנָּךְ בְּיוֹמָא הַהוּא אֲמַר יְיָ וְלָא
18 תִתְמְסַר בְּיַד גֻּבְרַיָא דְאַתְּ דָּחֵיל מִן קֳדָמֵיהוֹן׃ אֲרֵי שֵׁיזָבָא אֲשֵׁיזְבִנָּךְ וּבְחַרְבָּא לָא תִתְקְטֵל
וּתְהֵי לָךְ נַפְשָׁךְ לְשֵׁיזָבָא אֲרֵי אִתְרְחֵצְתָּא עַל מֵימְרִי אֲמַר יְיָ׃

מ

1 פִּתְגָם נְבוּאָה דַּהֲוָה עִם יִרְמְיָה מִן קֳדָם יְיָ בָּתַר דִּשְׁלַח יָתֵיהּ נְבוּזַר אֲדָן רַב קְטוֹלַיָא מִן
רָמְתָא כַּד דְּבַר יָתֵיהּ וְהוּא אֲסִיר בְּעִזְקַיָא בְּגוֹ כָּל גָּלוּת יְרוּשְׁלֵם וִיהוּדָה דְּאִתְגְּלִיאוּ
2 לְבָבֶל׃ וּדְבַר רַב קְטוֹלַיָא לְיִרְמְיָה וַאֲמַר לֵיהּ יְיָ אֱלָהָךְ גְּזַר יַת בִּישְׁתָּא הָדָא עַל אַתְרָא
3 הָדֵין׃ וְאַיְתֵי וְקַיֵּים יְיָ כְּמָא דְמַלֵּיל אֲרֵי חַבְתּוּן קֳדָם יְיָ וְלָא קַבֵּלְתּוּן לְמֵימְרֵיהּ וַהֲוָה לְכוֹן
4 פִּתְגָמָא הָדֵין׃ וּכְעַן הָא שְׁרֵיתָךְ יוֹמָא דֵין מִן עִזְקַיָא דִּי עַל יְדָךְ אִם תַּקִּין בְּעֵינָךְ לְמֵיתָא
עִמִּי לְבָבֶל אֱתָא וַאֲשַׁוֵּי יַת עֵינִי עֲלָךְ וְאִם בִּישׁ בְּעֵינָךְ לְמֵיתֵי עִמִּי לְבָבֶל אִתְמְנַע חֲזֵי כָּל
אַרְעָא קֳדָמָךְ לְדְתַקִּין וּלְדְכָשַׁר בְּעֵינָךְ לְמֵיזַל תַּמָּן אֱזֵיל׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et præcepit Nabuchodonosor rex Babylonis de Jeremia per manum Nabu- 11
zardan principis occidentium; dicendo: Tolle illum, & oculos tuos pone 12
super eum, neque feceris ei quicquam mali; sed sicut locutus fuerit tecum,
sic fac cum eo. Et misit Nabuzardan princeps occidentium, & Nabusaz- 13
ban, Rabsaris, & Neregel, & Sareser, Rabmag, & omnes reliqui principes regis Babylonis. Et miserunt, & tulerunt Jeremiam de atrio domus vin- 14
ctorum; & tradiderunt eum Godoliæ filio Ahicam filii Saphan, ut educeret
eum in domum: & habitavit in medio populi. Et cum Jeremia factum est 15
verbum prophetiæ à facie Domini, cùm esset clausus in atrio carceris, dicens: Vade & dic servo regis Sedechiæ, hoc modo: Hæc dicit Dominus 16
exercituum Deus Israel, Ecce ego inducam sermones meos super civitatem
hanc in malum, & non in bonum; & erunt in conspectu tuo in die illa. Et 17
liberabo te in die illa, dicit Dominus, & non traderis in manum virorum
à quorum facie tu formidas. Quia liberando liberabo te, & gladio non oc- 18
cideris: & erit tibi anima tua in ereptionem; quia confisus es in verbo
meo, dicit Dominus.

CAP. XL.

VErbum prophetiæ quod factum est cum Jeremia à facie Domini, post- 1
quam misit eum Nabuzardan princeps occidentium de Ramatha, quando tulit eum, cùm esset vinctus compedibus, in medio omnis transmigrationis Jerusalem & Juda, qui in captivitatem abducebantur in Babylonem. Et tulit 2
princeps occidentium Jeremiam, & dixit ei: Dominus Deus tuus decrevit
malum hoc super locum istum. Et adduxit & firmavit Dominus sicut locu- 3
tus fuerat, quia peccâstis coram Domino, & non obedistis verbo ejus; & factus est ideo vobis sermo hic. Et nunc ecce solvi te hodie de catenis quæ in 4
manibus tuis erant: si rectum est in oculis tuis, ut venias mecum in Babylonem, veni, & ponam oculos meos super te. Et si displicet tibi venire mecum in Babylonem, desine: vide, omnis terra coram te est: quocunque rectum fuerit & placuerit in oculis tuis ut vadas, illuc vade.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

11 * ܘܦܩܕ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܥܠ ܐܪܡܝܐ܂ ܠܢܒܘܙܪܕܢ ܪܒ ܢܚܬܐ܂ ܘܐܡܪ ܠܗ܂
12 * ܕܒܪܝܗܝ ܠܐܪܡܝܐ܂ ܘܥܝܢܝܟ ܢܗܘܝܢ ܥܠܘܗܝ܂ ܘܠܐ ܬܥܒܕ ܠܗ ܡܕܡ ܕܒܝܫ܂ ܘܟܠ ܡܕܡ
ܕܐܡܪ ܠܟ܂ ܥܒܕ ܠܗ܂ * ܘܫܕܪ ܢܒܘܙܪܕܢ ܪܒ ܢܚܬܐ܂ ܘܢܒܘܫܙܒܢ ܪܒ ܡܗܝܡܢܐ܂ 13
14 ܘܢܪܓܠ ܫܪܐܨܪ ܪܒܡܓ܂ ܘܟܠܗܘܢ ܪܘܪܒܢܐ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ܀ * ܫܕܪܘ ܕܒܪܘܗܝ ܠܐܪܡܝܐ
ܡܢ ܕܪܬܐ ܕܒܝܬ ܐܣܝܪܐ܂ ܘܐܫܠܡܘܗܝ ܠܓܕܠܝܐ ܒܪ ܐܚܝܩܡ ܒܪ ܫܦܢ܂ ܠܡܦܩܘܬܗ
ܠܒܝܬܗ܂ ܘܝܬܒ ܒܝܢܝ ܥܡܐ܂ * ܘܥܠ ܐܪܡܝܐ ܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ܂ ܟܕ ܗܘ ܟܠܝܠ ܗܘܐ 15
16 ܒܕܪܬܐ ܕܡܛܪܬܐ܂ * ܙܠ ܘܐܡܪ ܠܥܒܕܡܠܟ ܟܘܫܝܐ܂ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ
ܕܐܝܣܪܝܠ܂ ܗܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܦܬܓܡܝ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܠܒܝܫܬܐ ܘܠܐ ܠܛܒܬܐ܂ ܘܢܗܘܘܢ
17 ܩܕܡܝܟ ܒܝܘܡܐ ܗܘ܂ * ܘܐܦܨܝܟ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܘܠܐ ܬܬܫܠܡ ܒܐܝܕܝ ܓܒܪܐ ܕܕܚܠܬ
18 ܡܢܗܘܢ܂ * ܘܐܦܨܝܟ܂ ܘܒܚܪܒܐ ܠܐ ܬܦܠ܂ ܘܬܗܘܐ ܢܦܫܟ ܠܟ ܠܒܙܬܐ܂ ܡܛܠ ܕܐܬܬܟܠܬ
ܥܠܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡ *

1 * ܦܬܓܡܐ ܕܗܘܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ܂ ܡܢ ܒܬܪ ܕܫܪܝܗܝ ܢܒܘܙܪܕܢ ܪܒ ܢܚܬܐ ܡܢ
ܪܡܬܐ܂ ܟܕ ܕܒܪܗ ܟܕ ܐܣܝܪ ܒܫܫܠܬܐ܂ ܒܝܢܝ ܟܠܗ ܫܒܝܬܐ ܕܐܘܪܫܠܡ ܘܝܗܘܕܐ܂
2 ܕܐܫܬܒܝܘ ܠܒܒܠ܂ * ܘܕܒܪܗ ܪܒ ܢܚܬܐ ܠܐܪܡܝܐ܂ ܘܐܡܪ ܠܗ܂ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ ܐܡܪ܂
3 ܒܝܫܬܐ ܗܕܐ ܥܠ ܐܬܪܐ ܗܢܐ܂ * ܘܐܝܬܝ܂ ܘܥܒܕ ܡܪܝܐ ܐܝܟ ܕܐܡܪ܂ ܡܛܠ ܕܚܛܝܬܘܢ ܠܡܪܝܐ
4 ܘܠܐ ܫܡܥܬܘܢ ܒܩܠܗ܂ ܘܗܘܐ ܠܟܘܢ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ܂ * ܘܗܫܐ ܗܐ ܫܪܝܬܟ ܝܘܡܢܐ ܡܢ
ܫܫܠܬܐ ܕܒܐܝܕܝܟ܂ ܐܢ ܫܦܝܪ ܒܥܝܢܝܟ ܠܡܐܬܐ ܥܡܝ ܠܒܒܠ܂ ܬܐ܂ ܘܐܗܘܐ ܥܝܢܝ ܥܠܝܟ܂ ܘܐܢ
ܠܐ ܫܦܝܪ ܒܥܝܢܝܟ ܠܡܐܬܐ ܥܡܝ ܠܒܒܠ܂ ܦܘܫ܂ ܗܐ ܟܠܗ ܐܪܥܐ ܩܕܡܝܟ܂ ܠܐܝܟܐ ܕܫܦܝܪ ܘܠܐܝܟܐ
ܕܬܪܝܨ ܒܥܝܢܝܟ܂ ܠܡܐܙܠ܂ ܬܡܢ ܙܠ܂

Commendaverat autem Nebuchadnoſar rex 11
Babylonis Jeremiam Nebuzardani præfecto
ſatellitum, & dixerat ei; Accipe Jeremiam,
& curam ejus gere, neque feceris ei quic- 12
quam mali; ſed quicquid tibi dixerit, fac
illi. Quapropter mittens Nebuzardan præ-
fectus ſatellitum, & Nebuſciazban princeps 13
eunuchorum, & Nerghel-Seraſar-Rabmag,
omnéſque principes regis Babyloniæ, Mit- 14
tentes adduci juſſerunt Jeremiam ex atrio
carceris, & commiſerunt eum Gedaliæ filio
Ahicami filii Saphanis, ut remitteret eum in
domum ſuam: ita manſit in medio populi.
Ad Jeremiam autem factus fuerat ſermo Do- 15
mini dum detineretur in atrio cuſtodiæ, Va- 16
de dictum Abdamelecho Æthiopi; Sic ait
Dominus potentiſſimus Deus Iſraelis, Ecce
facturus ſum ut res eveniant contra civitatem
iſtam in malum non in bonum; fiéntque te
ſpectante in die illo. Te autem eripiam illo 17
die, ait Dominus, & non tradêris in manum
virorum quos pertimeſcis: Eripiam te in- 18
quam, ut non occumbas gladio, ſed animam
tuam ſerves; eò quòd ſis mihi confiſus, dicit
Dominus.

CAP. XL.

SErmo qui factus eſt ad Jeremiam à Domi- 1
no poſtquam dimiſit eum Nebuzardan prin-
ceps ſatellitum de Rama, quò vinctum cate-
nis duxerat eum inter omnes captivos Jero-
ſolymorum & Judæ, qui deportati fuerant
Babylonem. Acceſſivit ergò princeps ſate- 2
llitum Jeremiam, & dixit illi; Dominus Deus
tuus prædixerat malum hoc de loco iſto:
Et quidem adduxit, præſtitítque Dominus 3
quemadmodum prædixerat: Quia peccâſtis in
Dominum, & non auſcultâſtis voci ejus, eve-
nit vobis res iſta. Te verò en hodiè ſolvo 4
catenis quæ ſunt in manibus tuis: ſi vis me-
cum venire Babylonem, veni, tuíque curam
geram; ſin autem venire mecum Babylonem
non vis, maneto: ecce tota terra coram te eſt,
quocunque commodum & quocunque jucun-
dum ire tibi viſum fuerit, eò vade.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* الفصل الاربعون *

1 * وصار قول الرب الى ارميا قايلا ثانية * وهو اذا كان مربوطا في دار الحبس *
2 3 * هكذا قال الرب صانع الارض وجابلها ليقومها * الرب اسمه * اصرخ الي فاجيبك * واخبرك
4 عظيمات وقويات هذه التي لم تعرفها * لان هكذا قال الرب اله اسرايل من اجل بيوت هذه
5 المدينة ومن اجل بيوت ملوك يهودا الجلوس على الحصن وعلى السراريف * ليتحاربوا مع
الكلدانيين * فاملاوها من اموات البشر الذين ضربتهم برجزي وبغضبي * واصرفت وجهي
6 عنهم من اجل جميع شرورهم * ها انا اصعد لها دواء وشفاء * واطهر لهم واطبها واصنع لهم
7 8 السلامة والايمان * وارد جلوة يهودا وجلوة ايروشليم وابنيهم كالاول * واطهرهم من جميع
9 خطاياهم التي اخطاوا بها الي * ولا اذكر خطاياهم التي اخطاوا بها الي وتباعدوا عني * وتصير
للسرور وللتسبحة وللعظمة لكل شعب الارض الذين يسمعون بجميع الخيرات التي انا اصنعها
ويخافون ويتمرمرون من اجل جميع الخيرات ومن اجل جميع السلامة التي انا اصنعها لهم *
10 * هكذا قال الرب * سيسمع ايضا في هذا الموضع الذي انتم تقولون هو خراب من الناس
11 والبهايم * في مدن يهودا ومن خارج ايروشليم الخربات ان لا يكون انسان وبهايم * صوت
سرور وصوت فرحة * صوت عريس وصوت عروس * صوت القايلين اعترفوا للرب الضابط الكل *
لان الرب صالح وان الى الابد رحمته * ويدخلون قرابين الى بيت الرب * لاني اصرف جلوة تلك
12 الارض كالاول قال رب القوات * هكذا قال الرب * يكون ايضا في هذا الموضع القفر وفي جميع
13 مدنه * منزلة للرعاة يربضون الخراف * في مدن الجبل * وفي مدن سافيلا * وفي مدن
ناجاب * وفي ارض بنيامين * وفي التي حول ايروشليم * وفي مدن يهودا ايضا تات الخراف على
يدي العداد قال الرب *

CAP. XL.

FActus eſt etiam ſermo Domini 1
ad Ieremiam ſecundò, dicens,
(idque dum vinctus eſſet in atrio
carceris.)
*Sic dixit Dominus terræ factor & pla- 2
ſmator, ut eam dirigeret, cujus nomen
Dominus eſt: Clama ad me, & reſpon- 3
debo tibi, & nota faciam tibi magna &
fortia quæ non nôſti. Nam ita dixit 4
Dominus Deus Iſraelis de domibus hu-
jus urbis, deque domibus regum Judæ
propugnaculo & ſuggrundis inſidenti-
um, ut pugnent adverſùm Chaldæos; 5
quas impleverunt mortuis hominibus
quos in ira & furore meo percuſſi, à qui-
bus faciem meam averti propter tot ſce-
lera eorum; Ecce ego producam eis 6
remedium & ſanitatem, & oſtendam
ipſis, curabo eas, & faciam illis pacem
& fidem: Et reducam captivitatem Ju- 7
dæ & captivitatem Jeroſolymæ, & ædi-
ficabo eos ut primitùs: Mundabo eos 8
ab omnibus peccatis eorum, quibus pec-
caverunt in me: & non recordabor
peccatorum eorum, quibus in me peccave-
runt, & receſſerunt à me. Eritque gau- 9
dio, laudi, & magnificentiæ omni ter-
ræ populo, qui audientes cuncta beneficia
quæ ego ſum collaturus, timebunt &
ægrè ferent, propter omnia bona & pro-
pter omnem pacem quam ego ſum eis præ-
ſtiturus. Ita dixit Dominus, Audietur 10
adhuc hoc in loco quem vos exhauſtum
dicitis hominibus & jumentis (in urbibus
videlicet Judæ, & exterioribus Jeroſo-
lymæ* locis *ita dirutis ut nullus extet
homo vel jumentum) Vox exultationis 11
& vox lætitiæ, vox ſponſi & vox ſpon-
ſæ, vox dicentium, Confitemini Domino
omnipotenti, quia Dominus optimus eſt, &
quia in æternũ miſericordia ejꝰ: inferentq;
munera in domũ Domini: ego enim reſti-
tuam tranſmigrationem ejus terræ,* ut *ſit
qualis erat antea, dixit Dominus virtu-
tum. Sic dixit Dominus, Erit adhuc 12
hoc in loco deſerto, & in cunctis urbi-
bus ejus, diverſorium paſtoribus abigen-
tibus pecudes: In urbibus montanis, & 13
in urbibus Sephel, in urbibus Negeb, in
terra Benjaminis, & ea quæ circumjacet
Jeroſolymis, & in urbibus Judæ, venient
adhuc pecudes ad manus recenſentis,
dixit Dominus.*

ירמיה: מ

quem , Saphan filii Ahicham filium Ghedaljah ad ,revertere & ,*redibit non ipſe* adhuc Et
וְעוֹדֶנּוּ לֹא־יָשׁוּב וְשֻׁבָה אֶל־גְּדַלְיָה בֶן־אֲחִיקָם בֶּן־שָׁפָן אֲשֶׁר 5
vel : populi medio in eo cum habita & , Jehudah civitatibus in Babel rex præpoſuit
הִפְקִיד מֶלֶךְ־בָּבֶל בְּעָרֵי יְהוּדָה וְשֵׁב אִתּוֹ בְּתוֹךְ הָעָם אוֹ
, *viaticum* laniorum magiſter ei dedit Et .vade ,*eundum ad* ,tuis oculis in *rectum* omnem ad
אֶל־כָּל־הַיָּשָׁר בְּעֵינֶיךָ לָלֶכֶת לֵךְ וַיִּתֶּן־לוֹ רַב־טַבָּחִים אֲרֻחָה
: Miſpah in Ahicham filium Ghedaljah ad Irmejahu venit Et .eum dimiſit & ,munus &
וּמַשְׂאֵת וַיְשַׁלְּחֵהוּ׃ וַיָּבֹא יִרְמְיָהוּ אֶל־גְּדַלְיָה בֶן־אֲחִיקָם הַמִּצְפָּתָה 6
principes omnes audierunt Et .terra in *reſiduorum* populi medio in eo cum habitavit &
וַיֵּשֶׁב אִתּוֹ בְּתוֹךְ הָעָם הַנִּשְׁאָרִים בָּאָרֶץ׃ וַיִּשְׁמְעוּ כָל־שָׂרֵי 7
Ghedaljahu Babel rex præfeciſſet quòd ,eorum viri & , *ipſi agro in* qui , *virtutum*
הַחֲיָלִים אֲשֶׁר בַּשָּׂדֶה הֵמָּה וְאַנְשֵׁיהֶם כִּי־הִפְקִיד מֶלֶךְ־בָּבֶל אֶת־גְּדַלְיָהוּ
tenuitate de &,pubem &,mulieres & viros *eo cum* cõmendâſſet quodque ; *terra in* Achicham filiũ
בֶן־אֲחִיקָם בָּאָרֶץ וְכִי הִפְקִיד אִתּוֹ אֲנָשִׁים וְנָשִׁים וָטָף וּמִדַּלַּת
; Miſpah in Ghedaljah ad venerunt Et .Babel in fuerant tranſlati non qui *iis de* ,terræ
הָאָרֶץ מֵאֲשֶׁר לֹא־הָגְלוּ בָּבֶלָה׃ וַיָּבֹאוּ אֶל־גְּדַלְיָה הַמִּצְפָּתָה 8
filius Serajah & ,Chareach filii Jonathan & , Jochanan & , Nethanjahu filius Iſmahel &
וְיִשְׁמָעֵאל בֶּן־נְתַנְיָהוּ וְיוֹחָנָן וְיוֹנָתָן בְּנֵי־קָרֵחַ וּשְׂרָיָה בֶן־
, ipſi , Mahachati filius Jezanjahu & , Nethophatites Hephai filii & , Tanchumeth
תַּנְחֻמֶת וּבְנֵי עֵופַי הַנְּטֹפָתִי וִיזַנְיָהוּ בֶּן־הַמַּעֲכָתִי הֵמָּה
, Saphan filii Achicham filius Ghedaljahu eis juravit Et .eorum viri &
וְאַנְשֵׁיהֶם׃ וַיִּשָּׁבַע לָהֶם גְּדַלְיָהוּ בֶן־אֲחִיקָם בֶּן־שָׁפָן 9
ſervite & , terra in habitate : Chaſdim *ſerviendo à* timeatis Ne : dicendo ,eorum viris &
וּלְאַנְשֵׁיהֶם לֵאמֹר אַל־תִּירְאוּ מֵעֲבוֹד הַכַּשְׂדִּים שְׁבוּ בָאָרֶץ וְעִבְדוּ
ſtandum ad ,Miſpah in *habitans ego* ecce ,ego Et .vobis erit bene & , Babel regi
אֶת־מֶלֶךְ בָּבֶל וְיִיטַב לָכֶם׃ וַאֲנִי הִנְנִי יֹשֵׁב בַּמִּצְפָּה לַעֲמֹד 10
,fructum *æſtivum* &,vinum colligite vos & ; nos ad venient qui , Chaſdim *facies ad*
לִפְנֵי הַכַּשְׂדִּים אֲשֶׁר יָבֹאוּ אֵלֵינוּ וְאַתֶּם אִסְפוּ יַיִן וְקַיִץ
.apprehendiſtis quas , veſtris urbibus in manete & , veſtris vaſis in ponite & , oleum &
וְשֶׁמֶן וְשִׂמוּ בִּכְלֵיכֶם וּשְׁבוּ בְּעָרֵיכֶם אֲשֶׁר־תְּפַשְׂתֶּם׃
, Edom in & ,Hammon filios inter & , Moab in qui , Jehudæi omnes etiam Et
וְגַם כָּל־הַיְּהוּדִים אֲשֶׁר־בְּמוֹאָב וּבִבְנֵי־עַמּוֹן וּבֶאֱדוֹם 11
; Jehudah in reſiduum Babel rex dediſſet quòd audierunt , terris univerſis in qui &
וַאֲשֶׁר בְּכָל־הָאֲרָצוֹת שָׁמְעוּ כִּי־נָתַן מֶלֶךְ־בָּבֶל שְׁאֵרִית לִיהוּדָה
ſunt reverſi Et .Saphan filii Ahicam filium Ghedaljahu eos ſuper præpoſuiſſet quòd &
וְכִי הִפְקִיד עֲלֵיהֶם אֶת־גְּדַלְיָהוּ בֶּן־אֲחִיקָם בֶּן־שָׁפָן׃ וַיָּשֻׁבוּ 12
terram venerunt & ; *illuc* fuerant expulſi *quò* , locis univerſis de Jehudæi omnes
כָל־הַיְּהוּדִים מִכָּל־הַמְּקֹמוֹת אֲשֶׁר נִדְּחוּ־שָׁם וַיָּבֹאוּ אֶרֶץ־
.valde *multum fructum æſtivum* &,vinum collegerunt & : Miſpah in Ghedaliahu ad Jehudah
יְהוּדָה אֶל־גְּדַלְיָהוּ הַמִּצְפָּתָה וַיַּאַסְפוּ יַיִן וָקַיִץ הַרְבֵּה מְאֹד׃
venerunt ; *agro in* qui , *virtutum* principes omnes & , Chareach filius Jochanan Et
וְיוֹחָנָן בֶּן־קָרֵחַ וְכָל־שָׂרֵי הַחֲיָלִים אֲשֶׁר בַּשָּׂדֶה בָּאוּ 13
, cognoſces cognoſcendo Nonne : eum ad dixerunt Et .Miſpah in Ghedaljahu ad
אֶל־גְּדַלְיָהוּ הַמִּצְפָּתָה׃ וַיֹּאמְרוּ אֵלָיו הֲיָדֹעַ תֵּדַע 14
, Nethanjah filium Iſmahel miſit ,Hammon filiorum rex Bahalis quòd
כִּי בַּעֲלִיס מֶלֶךְ בְּנֵי־עַמּוֹן שָׁלַח אֶת־יִשְׁמָעֵאל בֶּן־נְתַנְיָה
.Ahicam filius Ghedaljahu eis credidit non Et ? anima te *percutiendum ad*
לְהַכֹּתְךָ נָפֶשׁ וְלֹא־הֶאֱמִין לָהֶם גְּדַלְיָהוּ בֶּן־אֲחִיקָם׃
: dicendo , Miſpah in *abſcondito in* Ghedaljahu ad dixit Chareach filius Jochanan Et
וְיוֹחָנָן בֶּן־קָרֵחַ אָמַר אֶל־גְּדַלְיָהוּ בַסֵּתֶר בַּמִּצְפָּה לֵאמֹר 15
.ſciet *non vir* & , Nethanjah filium Iſmahel percutiam & , nunc Ibo
אֵלְכָה נָּא וְאַכֶּה אֶת־יִשְׁמָעֵאל בֶּן־נְתַנְיָה וְאִישׁ לֹא יֵדָע
peribit & , te ad congregati , *Jehudah omnis* diſpergentur & , anima te percutiet Quare
לָמָּה יַכֶּכָּה נֶּפֶשׁ וְנָפֹצוּ כָּל־יְהוּדָה הַנִּקְבָּצִים אֵלֶיךָ וְאָבְדָה
? Jehudah reſiduum
שְׁאֵרִית יְהוּדָה׃

Verſio VULG. LAT.

5 Et mecum noli venire : ſed habita apud Godoliam filium Ahicam filii Saphan, quem præpoſuit rex Babylonis civitatibus Juda : habita ergò cum eo in medio populi : vel quocunque placuerit tibi ut vadas, vade. Dedit quoque ei magiſter militiæ cibaria, & munuſcula, 6 & dimiſit eum. Venit autem Jeremias ad Godoliam filium Ahicam in Maſphath : & habitavit cum eo in medio populi, qui relictus fuerat 7 in terra. Cúmque audîſſent omnes principes exercit⁹, qui diſperſi fuerant per regiones, ipſi & ſocii eorum, quòd præfeciſſet rex Babylonis Godoliam filium Ahicam terræ, & quòd commendâſſet ei viros, & mulieres, & parvulos, & de pauperibus terræ, qui non fuerant 8 tranſlati in Babylonem : Venerunt ad Godoliam in Maſphath : & Iſmahel fili⁹ Nathaniæ, & Johanan & Jonathan filii Caree, & Sareas fili⁹ Thanehumeth, & filii Ophi, qui erant de Netophathi, & Jezonias fili⁹ Maachathi, ipſi & viri eo- 9 rum. Et juravit eis Godolias fili⁹ Ahicam filii Saphan, & comitibus eorum, dicens; Nolite timere ſervire Chaldæis, habitate in terra, & ſervite regi Babylonis, & benè 10 erit vobis. Ecce ego habito in Maſphath, ut reſpondeam præcepto Chaldæorum, qui mittuntur ad nos : vos autem colligite vindemiam, & meſſem, & oleum, & condite in vaſis veſtris, & manete in urbib⁹ 11 veſtris, quas tenetis. Sed & omnes Judæi, qui erant in Moab, & in filiis Ammon, & in Idumæa, & in univerſis regionib⁹, audito quòd dediſſet rex Babylonis reliquias in Judæa, & quòd præpoſuiſſet ſuper eos Godoliam filium Ahicam filii Saphan : 12 Reverſi ſunt, inquam, omnes Judæi de univerſis locis, ad quæ profugerant, et venerunt in terram Juda ad Godoliam in Maſphath, & collegerunt 13 vinum, & meſſem multam nimis. Johanan autem filius Caree, & omnes principes exercit⁹, qui diſperſi fuerant in regionib⁹, venerunt ad Godoliam in 14 Maſphath. Et dixerunt ei; Scito quòd Baalis rex filiorum Ammon miſit Iſmahel filium Nathaniæ percutere animam tuam. Et non credidit eis Godolias fili⁹ Ahi- 15 cam. Johanan autem fili⁹ Caree dixit ad Godoliam ſeorſum in Maſphath, loquens; Ibo, & percutiam Iſmahel filium Nathaniæ nullo ſciente, ne interficiat animam tuam, & diſſipentur omnes Judæi, qui congregati ſunt ad te, & peribunt reliquiæ Juda.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. μα´.

Cap. 34. Vulg. Lat.

1 Ὁ λόγος ὁ (α) γινόμενος πρὸς Ἱερεμίαν παρὰ κυρίου· (καὶ Ναβουχοδονόσορ βασιλεὺς Βαβυλῶνος, καὶ πᾶν τὸ στρατόπεδον αὐτοῦ, καὶ πᾶσα ἡ γῆ ἀρχῆς αὐτοῦ ἐπολέμουν ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐπὶ πάσας τὰς πόλεις 2 Ἰούδα·) λέγων, Οὕτως εἶπε κύριος, Βάδισον πρὸς Σεδεκίαν βασιλέα Ἰούδα, καὶ ἐρεῖς αὐτῷ, Οὕτως εἶπε κύριος, Παραδόσει παραδοθήσεται ἡ πόλις αὕτη εἰς χεῖρας βασιλέως Βαβυλῶνος, καὶ συλλήψεται αὐτὴν, καὶ καύσει αὐτὴν ἐν πυρί, 3 Καὶ σὺ οὐ μὴ σωθῇς ἐκ χειρὸς (β) αὐτοῦ, καὶ συλλήψει (γ) συλληφθήσῃ, καὶ εἰς χεῖρας αὐτοῦ δοθήσῃ, καὶ ὀφθαλμοί σου τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ ὄψονται, (δ) καὶ εἰς Βαβυλῶνα εἰσελεύσῃ.

CAP. XLI.

1 *Verbum, (a) quod factum eſt ad Hieremiam à Domino : (Et Nabuchodonoſor rex Babylonis, & omnis exercitus ejus, & (b) univerſa terra principatûs ejus bellabant ſuper Hieruſalem, & ſuper omnes civitates Juda :) dicens; Sic dixit Dominus; Vade ad Sedeciam regem Juda, & dices ei;* 2 *Sic dixit Dominus; Traditione tradetur civitas hæc in manus regis Babylonis : & capiet eam, & incendet eam in igne :* 3 *Et tu non ſalvaberis de manu ejus, & comprehenſione capieris, & in manus ejus daberis : & oculi tui oculos ejus (c) videbunt : & in Babylonem ingredieris.*

MS. A. (α) ΓΕΝΑ´ΜΕΝΟΣ (β) αὐτῶν, (γ) συλλημφθήσῃ, καὶ οἱ ὀφθαλμοί σου (δ) καὶ στόμα αὐτοῦ μετὰ τοῦ στόματός σου λαλήσει, καὶ εἰς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

וְאִם לֵית אַתְּ צָבֵי לְמֵתַב וְתוּב לְוַת גְּדַלְיָה בַּר אֲחִיקָם בַּר שָׁפָן דְּמַנִּי מַלְכָּא דְבָבֶל 5
בְּקִרְוַיָּא דְבֵית יְהוּדָה וְתֵב עִמֵּיהּ בְּגוֹ עַמָּא אוֹ לְכָל דְּכָשַׁר בְּעֵינָךְ לְמֵיזַל אֱזֵיל וּמַנִּיהּ לֵיהּ
רַב קְטוֹלַיָּא מַתְּנָן וּנְבִזְבְּזָן וְשַׁלְּחֵיהּ׃ וַאֲתָא יִרְמְיָה לְוַת גְּדַלְיָה בַּר אֲחִיקָם לְמִצְפַּיָא וִיתֵב 6
עִמֵּיהּ בְּגוֹ עַמָּא דְּאִשְׁתְּאָרוּ בְּאַרְעָא׃ וּשְׁמַעוּ כָל רַבָּנֵי חֵילְוָתָא דִּי בְחַקְלָא אִנּוּן וְגֻבְרֵיהוֹן 7
אֲרֵי מַנִּי מַלְכָּא דְבָבֶל יַת גְּדַלְיָה בַּר אֲחִיקָם בְּאַרְעָא וַאֲרֵי מַנִּי עִמֵּיהּ גֻּבְרַיָּא וּנְשַׁיָּא
וְטַפְלָא וּמֵחֲשִׁיכֵי עַמָּא דְאַרְעָא מִדְּלָא אִתְגְּלִיאוּ לְבָבֶל׃ וַאֲתוֹ לְוַת גְּדַלְיָה לְמִצְפַּיָא 8
וְיִשְׁמָעֵאל בַּר נְתַנְיָה וְיוֹחָנָן וְיוֹנָתָן בַּר קָרֵחַ וּשְׂרָיָה בַּר תַּנְחוּמֶת וּבְנֵי עֵיפַי דְּמִנְּטוֹפָא
וִיזַנְיָה בַּר מַעֲכַת אִנּוּן וְגֻבְרֵיהוֹן׃ וְקַיֵּים לְהוֹן גְּדַלְיָה בַּר אֲחִיקָם בַּר שָׁפָן וּלְגֻבְרֵיהוֹן לְמֵימַר 9
לָא תִדְחֲלוּן מִלְּמִפְלַח לְכַסְדָּאֵי תִּבוּ בְּאַרְעָא וּפְלַחוּ יַת מַלְכָּא דְבָבֶל וְיֵיטַב לְכוֹן׃ וַאֲנָא 10
הָא אֲנָא יָתֵיב בְּמִצְפַּיָא לְמֵיקַם קֳדָם כַּסְדָּאֵי דְּיֵיתוֹן עֲלָנָא וְאַתּוּן כְּנוֹשׁוּ חַמְרָא וּדְבֵלְתָא
וּמִשְׁחָא וְשַׁוּוּ בְּמָנֵיכוֹן וְתִבוּ בְּקִרְוֵיכוֹן דַּאֲחַדְתּוּן׃ וְאַף כָּל יְהוּדָאֵי דִּי בְמוֹאָב וּבִבְנֵי עַמּוֹן 11
וּבֶאֱדוֹם וְדִי בְכָל מְדִינָתָא שְׁמַעוּ אֲרֵי שְׁבַק מַלְכָּא דְבָבֶל שְׁאָרָא לִדְבֵית יְהוּדָה וַאֲרֵי מַנִּי
עֲלֵיהוֹן יַת גְּדַלְיָה בַּר אֲחִיקָם בַּר שָׁפָן׃ וְתָבוּ כָל יְהוּדָאֵי מִכָּל אַתְרַיָּא דְּאִתְבַּדַּרוּ לְתַמָּן 12
וַאֲתוֹ לְאַרְעָא דְבֵית יְהוּדָה לְוַת גְּדַלְיָה לְמִצְפַּיָא וּכְנַשׁוּ חַמְרָא וּדְבֵילְתָא סַגֵּי לַחֲדָא׃
וְיוֹחָנָן בַּר קָרֵחַ וְכָל רַבָּנֵי חֵילְוָתָא דִּי בְחַקְלָא אֲתוֹ לְוַת גְּדַלְיָהוּ לְמִצְפַּיָא׃ וַאֲמַרוּ לֵיהּ 13 14
הֲמִדַּע תִּדַּע אֲרֵי בַּעֲלִיס מַלְכָּא דִבְנֵי עַמּוֹן שְׁלַח יַת יִשְׁמָעֵאל בַּר נְתַנְיָה לְמִקְטְלָךְ נְפַשׁ
וְלָא הֵימֵין לְהוֹן גְּדַלְיָה בַּר אֲחִיקָם׃ וְיוֹחָנָן בַּר קָרֵחַ אֲמַר לִגְדַלְיָה בְּסִתְרָא בְּמִצְפַּיָא 15
לְמֵימַר אֱזֵיל כְּעַן וְאֶמְחֵי יַת יִשְׁמָעֵאל בַּר נְתַנְיָה וֶאֱנָשׁ לָא יְדַע לְמָה יִקְטְלִנָּךְ נְפַשׁ
וְיִתְבַּדְּרוּן כָּל דְּבֵית יְהוּדָה דְּאִתְכְּנִישׁוּ לְוָתָךְ וְיֵיבֵיד שְׁאָרָא דְבֵית יְהוּדָה׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et ſi tu non vis *reverti*, revertere ad Godoliam filium Ahicam filii Saphan, 5 quem conſtituit rex Babylonis in urbibus domus Juda, & habita cum eo in medio populi: aut ad quemcunque locum qui placuerit tibi ut pergas, perge. Et dedit ei princeps occidentium munera & dona, & dimiſit eum. 6 Et venit Jeremias ad Godoliam filium Ahicam in Maſpha, & habitavit cum eo in medio populi qui remanſit in terra. 7 Et audierunt omnes principes exercituum qui erant in agro, ipſi & viri eorum, quòd conſtituiſſet rex Babylonis Godoliam filium Ahicam in terra; & quòd conſtituiſſet cum eo viros & mulieres, & parvulos, & de pauperibus populi terræ, de his qui non fuerant tranſlati in Babylonem. 8 Et venerunt ad Godoliam in Maſpha. Et Iſmael filius Nethaniæ, & Johanan, & Jonathan *filius* Careæ, & Saraias filius Thanhumeth, & filii Ephai, qui erant de Netopha, & Jezanias filius Maachat, ipſi & viri eorum. 9 Et juravit eis Godolias filius Ahicam, filii Saphan, & viris eorum; dicens : Ne timeatis ſervire Chaldæis : habitate in terra, & ſervite regi Babylonis, & bene erit vobis. 10 Ecce ego habito in Maſpha, ut ſtem coram Chaldæis qui venient ad nos : vos autem colligite vinum, & caricas, & oleum, & reponite in vaſis veſtris, & manete in urbibus veſtris, quas occupâſtis. 11 Et etiam omnes Judæi qui erant in Moab & in filiis Ammon, & in Idumæa, & in univerſis regionibus, audierunt quòd dimiſiſſet rex Babylonis reliquias domui Juda; & quòd conſtituiſſet ſuper eos Godoliam filium Ahicam filii Saphan. 12 Et reverſi ſunt omnes Judæi de omnibus locis ad quæ diſperſi fuerant, & venerunt in terram domus Juda ad Godoliam in Maſpha, & collegerunt vinum & caricas in magna copia. 13 Et Johanan filius Caree, & omnes principes exercitus qui erant in agro, venerunt ad Godoliam in Maſpha. 14 Et dixerunt ei, Nónne planè ſcis quòd Baalis rex filiorum Ammon miſit Iſmaelem filium Nathaniæ, ut occidat animam tuam? Et non credidit eis Godolias filius Ahicam. 15 Johanan autem filius Caree locutus eſt ad Godoliam in ſecreto, in Maſpha; dicendo : Vadam nunc et percutiam Iſmaelem filium Nathaniæ, & nullus vir ſciet: quare interficiet animam tuam? et diſpergentur omnes viri domus Juda qui congregati ſunt ad te? et peribunt reliquiæ domus Juda?

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

5 * ܘܐܡܪ ܠܗ. ܐܢ ܩܐܡ ܐܢܬ. ܬܘܒ. ܠܘܬ ܓܕܠܝܐ ܒܪ ܐܚܝܩܡ ܒܪ ܫܦܢ ܦܘܫ ܥܡܗ ܒܓܘ ܥܡܐ. ܗܘ
ܕܐܫܠܛܗ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܒܡܕܝܢܬܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܐܘ ܠܟܠ ܕܫܦܪ ܒܥܝܢܝܟ ܠܡܐܙܠ ܙܠ.
6 ܘܝܗܒ ܠܗ ܢܒܘܙܪܕܢ ܪܒ ܩܛܘܠܐ ܡܘܗܒܬܐ ܠܐܘܪܚܐ ܘܫܪܝܗ.* ܘܐܬܐ ܐܪܡܝܐ ܠܘܬ ܓܕܠܝܐ
7 ܒܪ ܐܚܝܩܡ ܒܪ ܫܦܢ ܠܡܨܦܝܐ. ܘܝܬܒ ܥܡܗ ܒܓܘ ܥܡܐ ܕܐܫܬܚܪ ܒܐܪܥܐ.* ܘܫܡܥܘ
ܟܠܗܘܢ. ܪܒܝ ܚܝܠܐ ܕܒܡܕܝܢܬܐ ܗܢܘܢ ܘܓܒܪܝܗܘܢ. ܕܐܫܠܛ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܠܓܕܠܝܐ
ܒܪ ܐܚܝܩܡ ܒܐܪܥܐ: ܘܕܐܫܠܡ ܠܗ ܓܒܪܐ ܘܢܫܐ ܘܛܠܝܐ: ܘܡܢ ܡܣܟܢܐ ܕܐܪܥܐ ܐܝܠܝܢ ܕܠܐ
8 ܐܫܬܒܝܘ ܠܒܒܠ .* ܘܐܬܘ ܠܘܬ ܓܕܠܝܐ ܠܡܨܦܝܐ. ܐܫܡܥܝܠ ܒܪ ܢܬܢܝܐ. ܘܝܘܚܢܢ
ܘܝܘܢܬܢ ܒܢܝ ܩܪܚ. ܘܣܪܝܐ ܒܪ ܬܢܚܡܬ. ܘܒܢܝ ܥܝܦܝ ܕܡܢ ܢܛܘܦܐ. ܘܝܙܢܝܐ ܒܪ ܡܥܟܬܐ.
9 ܗܢܘܢ ܘܓܒܪܝܗܘܢ.* ܘܝܡܐ ܠܗܘܢ ܓܕܠܝܐ ܒܪ ܐܚܝܩܡ ܒܪ ܫܦܢ ܘܠܓܒܪܝܗܘܢ.
ܘܐܡܪ: ܠܐ ܬܕܚܠܘܢ ܠܡܦܠܚ ܠܟܠܕܝܐ. ܬܒܘ ܒܐܪܥܐ. ܘܦܠܘܚܘ ܠܡܠܟܐ ܕܒܒܠ
10 ܘܢܛܐܒ ܠܟܘܢ.* ܘܐܢܐ ܗܐ ܝܬܒ ܐܢܐ ܒܡܨܦܝܐ. ܠܡܩܡ ܩܕܡ ܟܠܕܝܐ ܕܐܬܝܢ ܠܘܬܢ. ܘܐܢܬܘܢ
ܟܢܫܘ ܚܡܪܐ ܘܩܝܛܐ ܘܡܫܚܐ. ܘܣܝܡܘ ܒܡܐܢܝܟܘܢ. ܘܬܒܘ ܒܩܘܪܝܟܘܢ
11 ܕܐܚܕܬܘܢ.* ܘܐܦ ܟܠܗܘܢ ܝܗܘܕܝܐ ܕܒܐܕܘܡ ܘܒܡܘܐܒ: ܘܒܝܢܝ ܒܢܝ ܥܡܘܢ. ܘܒܟܠܗܘܢ
ܐܬܪܘܬܐ. ܫܡܥܘ ܕܫܒܩ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܫܪܟܐ ܠܝܗܘܕܝܐ. ܘܕܐܫܠܛ ܥܠܝܗܘܢ ܠܓܕܠܝܐ ܒܪ
12 ܐܚܝܩܡ ܒܪ ܫܦܢ.* ܘܗܦܟܘ ܟܠܗܘܢ ܝܗܘܕܝܐ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܐܬܪܘܬܐ ܕܐܬܒܕܪܘ ܬܡܢ. ܘܐܬܘ
ܠܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕܐ ܠܘܬ ܓܕܠܝܐ ܠܡܨܦܝܐ. ܘܟܢܫܘ ܚܡܪܐ ܘܡܐܟܘܠܬܐ ܕܩܝܛܐ ܣܓܝܐܐ ܛܒ.
13 * ܘܝܘܚܢܢ ܒܪ ܩܪܚ ܘܟܠܗܘܢ ܪܒܝ ܚܝܠܐ ܕܒܡܕܝܢܬܐ. ܐܬܘ ܠܘܬ ܓܕܠܝܐ ܠܡܨܦܝܐ. ܘܐܡܪܘ
14 ܠܗ.* ܠܐ ܝܕܥ ܐܢܬ. ܕܒܥܠܝܣ ܡܠܟܐ ܕܒܢܝ ܥܡܘܢ: ܫܕܪ ܠܐܫܡܥܝܠ ܒܪ ܢܬܢܝܐ
15 ܠܡܩܛܠܟ. ܘܠܐ ܗܝܡܢ ܐܢܘܢ ܓܕܠܝܐ ܒܪ ܐܚܝܩܡ.* ܘܝܘܚܢܢ ܒܪ ܩܪܚ ܐܡܪ ܠܓܕܠܝܐ
ܒܛܘܫܝܐ ܠܡܨܦܝܐ. ܐܙܠ ܐܩܛܘܠܝܘܗܝ ܠܐܫܡܥܝܠ ܒܪ ܢܬܢܝܐ ܘܐܢܫ ܠܐ ܢܕܥ. ܕܠܡܐ ܢܩܛܠܟ.
ܘܢܬܒܕܪܘܢ ܟܠܗܘܢ ܝܗܘܕܝܐ ܕܟܢܝܫܝܢ ܠܘܬܟ. ܘܢܐܒܕ ܫܪܟܐ ܕܝܗܘܕܐ.

Dixit etiam ad eum, Si maneas, commorare in medio populi apud Gedaliam filium Ahicami filii Saphanis, quē præfecit rex Babyloniæ civitatibus Judæ; vel certè quocunque abire tibi libuerit, abi: dedítque illi Nebuzardan princeps ſatellitum munera in viam, & dimiſit eum. 5

Venit ergò Jeremia ad Gedaliam filium Ahicami filii Sephanis in Maſphiam, & commoratus eſt apud illum in medio populi qui reliquus erat in terra. 6

Audientes autem omnes copiarum duces qui erant in civitatibus, ipſi & viri qui cum eis erant, præfeciſſe regem Babylonis Gedaliam filium Ahicami illi regioni, eíque commiſiſſe viros, mulieres, ac pueros, & ex pauperibus terræ qui non fuerant abducti Babylonem; 7

Venerunt ad Gedaliam in Maſphiam Iſmael Nethaniæ filius, Johannes & Jonathan filii Corahi, Seria filius Tenahmathi filii Iphai Netophathitæ, & Jezania filius Maachatæ, ipſi & viri ſui. 8

His Gedalia filius Ahicami filii Saphanis, & viris qui cum eis erant, juravit, ac dixit; Ne timeatis ſervire Chaldæis: manete in hac terra, & ſervite regi Babyloniæ, ut benè cedat vobis. 9

Ego enim ecce manſurus ſum in Maſphia, ut reſiſtam Chaldæis qui contra nos venerint: vos autem colligite frumentum, vinum, oleum, & frugem æſtivam, reponite in vaſis veſtris, & manete in civitatibus veſtris quas occupâſtis. 10

Omnes etiā Judæi qui erant in Adum, in Moab, inter Ammonitas, & in cæteris regionibus, audientes quòd dimiſiſſet rex Babyloniæ reliquias Judæis, & præfeciſſet illis Gedaliam filium Ahicami filii Saphanis; 11

Reverſi ſunt omnes Judæi iſti ex omnibus locis in quæ diſperſi fuerant, venerúntque in terram Judæ ad Gedaliam in Maſphiam: & collegerunt vini & annonæ æſtivæ copiam ingentem. 12

Johannes autem Corahi filius, & omnes copiarum duces qui erant in civitatibus, Gedaliam adeuntes in Maſphia dixerunt ei; 13

An ignoras quòd Belaiſi rex Ammonitarum miſit Iſmaelem Nethaniæ filium ad interficiendum te? ſed non credidit eis Gedalia filius Ahicami. 14

Quin cùm Johannes Corahi filius clàm dixiſſet Gedaliæ in Maſphia, Ibo, & Iſmaelem Nethaniæ filium occîdam, nemine ſciente; ne te interfecto diſſipentur omnes Judæi apud te congregati, pereántque reliquiæ Judæorum; 15

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

14 Ox.MS.] *يستجيكم ايام يقول الرب واتم الاقوال الصالحة التي وعدت بها ال اسرايل وال يهوذا

15 يقول الرب *في تلك الايام وفي ذلك الزمان اضي لداود ضيا البر ويملك الملك * ويفهم

16 ويعدل في الارض * ويعمل البر * في تلك الايام يخلص يهوذا وتسكن اورشليم

17 مطمانة * وهذا اسم الذي يسمونه الرب الخفيا *لانه هكذي يقول الرب انه لا يعدم

18 داود ابنا يجلس على كرسي اسرايل * والكهنة واللاويون لا يعدمون رجلا يقوم امامي

19 20 يقرب الذبيحة وقربان ويبخر البخور كل ايام *ثم اوحي الرب الي ارميا وقال *هكذي يقول الرب

21 ان انتم قدرتم ان تبطلوا تدبير الليل والنهار الّا يكونا في وقتهما *يبطل العهد الذي عاهدت

22 داود عبدي الّا يكون له ابن يجلس علي كرسيه *والكهنة واللاويون خدامي كما لا يحصي نجوم

السماء ولا يكال رمل البحر* كذلك اكثر ذرية داود عبدي ونسل اللاويين الذين يخدموني*

23 24 * واوحي الرب الي ارميا وقال *ما تري ما يقول الشعب ان القبيلتين التين انتخب الرب رذلهما*

25 ويسخطوني الشعبي ان لا يكون امامي الشعب *هكذي يقول الرب ان لم يثبت عهدي وسنتي

26 الليل والنهار والحد الذي حددت السماء والارض لم يثبت*نسل يعقوب وداود عبدي وارذلها*

ولا اتخذ وليا من نسل داود علي بيت ابرهيم واسحق ويعقوب * اذا رددت سبيهم ورحمتهم *

1 * اَلْفَصْلُ الْحَادِي وَالْأَرْبَعُونَ * اَلْقَوْلُ الصَّايِرُ إِلَي إِرْمِيَا مِنْ قِبَلِ الرَّبِّ * وَبُخْتَنَصَّرُ مَلِكُ بَابِلَ

وَكُلُّ مُعَسْكَرِهِ وَكُلُّ أَرْضِ رِيَاسَتِهِ لِلْحَرْبِ عَلَي أُورُشَلِيمَ وَعَلَي مُدُنِ يَهُودَا * قَايِلًا

2 * هٰكَذَا قَالَ الرَّبُّ * اِمْضِ إِلَي صِدْقِيَّا مَلِكِ يَهُودَا وَتَقُولُ لَهُ * هٰكَذَا قَالَ الرَّبُّ *

3 تُدْفَعُ هٰذِهِ الْمَدِينَةُ إِلَي أَيْدِي مَلِكِ بَابِلَ * وَيَقْبِضُ عَلَيْهَا وَيُحْرِقُهَا بِالنَّارِ * وَأَنْتَ

لَا تَخْلُصُ مِنْ يَدِهِ * وَبِالْقَبْضِ تُقْبَضُ وَإِلَي يَدَيْهِ تُدْفَعُ * وَعَيْنَاكَ تَنْظُرَانِ عَيْنَيْهِ * وَتَدْخُلُ إِلَي بَابِلَ *

[MS.Oxon. *Advenient vobis dies, dixit Dominus, quum complebo verba illa optima, quæ promiſi tum Iſraelitis tum Judæis, inquit Dominus.* 14

Diebꝰ illis, & tempore illo accendam Davidi Lumen juſtitiæ: & regno dominabitur, & prudens erit, & æquitatem in terra adminiſtrabit, & juſtitiā exercebit. 15

Diebꝰ illis ſervabitur Juda, et Hieruſalem habitabit ſecurè: & iſtud eſt nomen quo vocabunt eum, Dominus abſconditus. 16

Quoniam ſic dicit Dominus, Davidi non deficiet filius ſedens in ſolio Iſraelitarum. 17

Etiam ſacerdotibus, & Levitis non deerit vir qui ſtet in conſpectu meo offerens ſacrificia et oblationes, et adolens thura cunctis diebus. 18

Tum revelavit Dominus Jeremiæ dicendo, 19

Sic ait Dominus, ſi irritam facere poteſtis adminiſtrationem noctis & diei, ita ut non ſint tempore ſuo; 20

Etiam fœdus meum quod pollicitus ſum Davidi ſervo meo irritum fiet, ne ſit illi filius ſedens ſuper ſolium ejus. 21

Quod autem ad ſacerdotes & Levitas miniſtros meos, quemadmodum numerari nequeunt ſtellæ cœli, nec menſurari arena maris; ita multiplicabo progeniem Davidis ſervi mei, et generationem Levitarum miniſtrantiū mihi. 22

Et revelavit Dominus Jeremiæ dicendo; 23

Annon animadvertis quid populꝰ iſte loquuntur, quòd duas familias elegerat Dominꝰ, jam abominatur ipſas: et quòd ita me irritârunt populꝰ meus, ut non ſit ampliùs gens corā me? 24

Sic dicit Dominꝰ, Si fœdꝰ meū et ſtatutū meū noctis et diei non eſt ſatis firmū; et terminꝰ quem poſui cœlo terræq;, ſi minimè ſtabilis; 25

Etiā progeniem Jacobi et Davidis ſervi mei ſpernam, ne ſumā præfectū de ſemine Davidis ſuper domū Abrahami, Iſhaci, et Jacobi, quū reduxero captivitatē eorū, & miſertus fuero ipſorū. 26

CAP. XLI.

SErmo factus ad Jeremiā à Domino (quū Bochtonaſſar rex Babelis, totuſq; exercitus ejus, & tota terra dominii ipſius oppugnaret Jeroſolymam & urbes Judæ) dicens; 1

Sic dixit Dominus, Adito Sedeciam regem Judæ, & dicas ei: Sic ait Dominus, Tradetur hæc urbs in manus regis Babelis, capiet eam, igneque ſuccendet. 2

Tu quoque non effugies manum ejus, ſed omninò capieris, & in manus ejus tradêris, oculi tui videbunt oculos ejus, & Babelem ingredieris. 3

: Chareach filium Jochanan ad Ahicam filius Ghedaljahu dixit Et
16 וַיֹּאמֶר גְּדַלְיָהוּ בֶּן־אֲחִיקָם אֶל־יוֹחָנָן בֶּן־קָרֵחַ
ad loquens tu falſum nam : hoc verbum facias Ne
אַל־תַּעַשׂ אֶת־הַדָּבָר הַזֶּה כִּי־שֶׁקֶר אַתָּה דֹבֵר אֶל־
.Iſmahel
יִשְׁמָעֵאל׃

CAP. XLI. מא

filii Nethanjah filius Iſmahel venit , ſeptimo menſe in fuit Et
1 וַיְהִי ׀ בַּחֹדֶשׁ הַשְּׁבִיעִי בָּא יִשְׁמָעֵאל בֶּן־נְתַנְיָה בֶן־
viri decem & , regis *magnates &* , *regni* ſemine de Eliſamah
אֱלִישָׁמָע מִזֶּרַע הַמְּלוּכָה וְרַבֵּי הַמֶּלֶךְ וַעֲשָׂרָה אֲנָשִׁים
comederunt & : Miſpah in Ahicam filium Ghedaljahu ad , eo cum
אִתּוֹ אֶל־גְּדַלְיָהוּ בֶּן־אֲחִיקָם הַמִּצְפָּתָה וַיֹּאכְלוּ
filius Iſmahel ſurrexit Et .Miſpah in ſimul panem ibi
2 שָׁם לֶחֶם יַחְדָּו בַּמִּצְפָּה׃ וַיָּקָם יִשְׁמָעֵאל בֶּן־
percuſſerunt & , eo cum erant qui viri decem & , Nethanjah
נְתַנְיָה וַעֲשֶׂרֶת הָאֲנָשִׁים ׀ אֲשֶׁר־הָיוּ אִתּוֹ וַיַּכּוּ
interfecit & , gladio *in* Saphan filii Ahicam filium Ghedaljahu
אֶת־גְּדַלְיָהוּ בֶן־אֲחִיקָם בֶּן־שָׁפָן בַּחֶרֶב וַיָּמֶת
, Jehudæos omnes Et .*terra in* Babel rex præfecerat quem , eum
3 אֹתוֹ אֲשֶׁר־הִפְקִיד מֶלֶךְ־בָּבֶל בָּאָרֶץ׃ וְאֵת כָּל־הַיְּהוּדִים
Chaſdim & , Miſpah in Ghedaljahu cum *eo cum* erant qui
אֲשֶׁר־הָיוּ אִתּוֹ אֶת־גְּדַלְיָהוּ בַּמִּצְפָּה וְאֶת־הַכַּשְׂדִּים
.Iſmahel percuſſit *belli* viros ; ibi ſunt inventi qui
אֲשֶׁר נִמְצְאוּ־שָׁם אֵת אַנְשֵׁי הַמִּלְחָמָה הִכָּה יִשְׁמָעֵאל׃
(.noverat *non vir &*) , Ghedaljahu *facere mori* , ſecunda die in fuit Et
4 וַיְהִי בַּיּוֹם הַשֵּׁנִי לְהָמִית אֶת־גְּדַלְיָהוּ וְאִישׁ לֹא יָדָע׃
, viri octoginta Someron de & , Silo de , Sechem de viri Veneruntq;
5 וַיָּבֹאוּ אֲנָשִׁים מִשְּׁכֶם מִשִּׁלוֹ וּמִשֹּׁמְרוֹן שְׁמֹנִים אִישׁ
thus & , *munus &* ; *inciſi* & , veſtibus ſciſſi & , barbam raſi
מְגֻלְּחֵי זָקָן וּקְרֻעֵי בְגָדִים וּמִתְגֹּדְדִים וּמִנְחָה וּלְבוֹנָה
Iſmahel eſt egreſſus Et .Domini domum *adducendum ad* , eorũ manu in
6 בְּיָדָם לְהָבִיא בֵּית יְהוָה׃ וַיֵּצֵא יִשְׁמָעֵאל
eundo vadens , Miſpah de eorum occurſum in Nethanjah filius
בֶּן־נְתַנְיָה לִקְרָאתָם מִן־הַמִּצְפָּה הֹלֵךְ הָלֹךְ
ad Venite : eos ad dixit & , eis *occurrere circa* fuit Et .flens &
וּבֹכֶה וַיְהִי כִּפְגֹשׁ אֹתָם וַיֹּאמֶר אֲלֵיהֶם בֹּאוּ אֶל־
medium ad *eos venire ſecundum* fuit Et .Ahicam filium Ghedaljahu
7 גְּדַלְיָהוּ בֶּן־אֲחִיקָם׃ וַיְהִי כְּבוֹאָם אֶל־תּוֹךְ
medium ad Nethanjah filius Iſmahel eos jugulavit & , civitatis
הָעִיר וַיִּשְׁחָטֵם יִשְׁמָעֵאל בֶּן־נְתַנְיָה אֶל־תּוֹךְ
viri decem Et .eo cum qui viri & , ipſe , ciſternæ
8 הַבּוֹר הוּא וְהָאֲנָשִׁים אֲשֶׁר־אִתּוֹ׃ וַעֲשָׂרָה אֲנָשִׁים
quia , nos occidas Ne : Iſmahel ad dixerunt & , eos inter ſunt reperti
נִמְצְאוּ־בָם וַיֹּאמְרוּ אֶל־יִשְׁמָעֵאל אַל־תְּמִתֵנוּ כִּי־
, olei & , ordeorum & , frumentorum, agro in *abſconditi* theſauri nobis ſunt
יֶשׁ־לָנוּ מַטְמֹנִים בַּשָּׂדֶה חִטִּים וּשְׂעֹרִים וָשֶׁמֶן
.eorum fratrum medio in eos interfecit non & , ceſſavit & : mellis &
וּדְבָשׁ וַיֶּחְדַּל וְלֹא הֱמִיתָם בְּתוֹךְ אֲחֵיהֶם׃
cadavera omnia Iſmahel *illuc* fecerat projicere *quò* ciſterna Et
9 וְהַבּוֹר אֲשֶׁר הִשְׁלִיךְ שָׁם יִשְׁמָעֵאל אֵת כָּל־פִּגְרֵי
fecit quam ipſa , Ghedaljahu *manu in* percuſſit quos , virorum
הָאֲנָשִׁים אֲשֶׁר הִכָּה בְּיַד־גְּדַלְיָהוּ הוּא אֲשֶׁר עָשָׂה
replevit ipſam ; Iſrael *regis* Bahaſa *faciebus à* Aſa rex
הַמֶּלֶךְ אָסָא מִפְּנֵי בַּעְשָׁא מֶלֶךְ־יִשְׂרָאֵל אֹתוֹ מִלֵּא
.occiſis Nethanjahu filius Iſmahel
יִשְׁמָעֵאל בֶּן־נְתַנְיָהוּ חֲלָלִים׃

Verſio VULG. LAT.

16 Et ait Godolias filius Ahicam ad Johanan filium Caree ; Noli facere verbum hoc : falſum enim tu loqueris de Iſmahel.

CAP. XLI.

1 ET factum eſt in menſe ſeptimo, venit Iſmahel filius Nathaniæ, filii Eliſama de ſemine regali, & optimates regis, & decem viri cum eo, ad Godoliam filium Ahicam in Maſphath : & comederunt ibi panes ſimul in 2 Maſphath. Surrexit autem Iſmahel filius Nathaniæ, & decem viri qui cum eo erant, & percuſſerunt Godoliam filium Ahicam filii Saphan gladio, & interfecerunt eum, quem præfecerat 3 rex Babylonis terræ. Omnes quoque Judæos, qui erant cum Godolia in Maſphath, & Chaldæos, qui reperti ſunt ibi, & viros 4 bellatores percuſſit Iſmahel. Secundo autem die poſtquàm occiderat Godoliam, nullo adhuc 5 ſciente, Venerunt viri de Sichem, & de Silo, & de Samaria octoginta viri, raſi barbâ, & ſciſſis veſtib⁹, & ſquallentes : & munera & thus habebant in manu, ut offerrent in domo Domi- 6 ni. Egreſſus ergò Iſmahel filius Nathaniæ in occurſum eorum de Maſphath, incedens & plorans ibat : cùm autem occurriſſet eis, dixit ad eos ; Venite ad 7 Godoliam filium Ahicam, Qui cùm veniſſent ad medium civitatis, interfecit eos Iſmahel filius Nathaniæ circa medium laci, ipſe, & viri qui erant cum eo. 8 Decem autem viri reperti ſunt inter eos, qui dixerunt ad Iſmahel ; Noli occidere nos : quia habemus theſauros in agro, frumenti, & hordei, & olei, & mellis. Et ceſſavit, & non interfecit eos cum fratribus ſuis. 9 Lacus autem in quem projecerat Iſmahel omnia cadavera virorum, quos percuſſit propter Godoliam, ipſe eſt, quem fecit rex Aſa propter Baaſa regem Iſrael : ipſum replevit Iſmahel filius Nathaniæ occiſis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

4 Ἀλλὰ ἄκουσον τὸν λόγον κυρίου, Σεδεκία βασιλεῦ Ἰούδα· 5 Οὕτως λέγει κύριος, Ἐν εἰρήνῃ ἀποθανῇ· καὶ ὡς ἔκλαυσαν τοὺς πατέρας σου τοὺς βασιλεύσαντας πρότερόν σου, κλαύσονται καὶ σέ, (ε) Οὐαὶ κύριε, καὶ ἕως ᾅδου (ζ) κόψονταί σε, ὅτι λόγον ἐγὼ ἐλάλησα, εἶπε κύριος. 6 Καὶ ἐλάλησεν Ἱερεμίας (η) πρὸς τὸν βασιλέα Σεδεκίαν πάντας τοὺς λόγους τούτους ἐν Ἱερουσαλήμ. 7 Καὶ ἡ δύναμις βασιλέως Βαβυλῶνος ἐπολέμει ἐπὶ Ἱερουσαλήμ, καὶ ἐπὶ τὰς πόλεις Ἰούδα (θ), καὶ ἐπὶ Λαχὶς, καὶ ἐπὶ Ἀζηκά, ὅτι αὗται κατελείφθησαν ἐν πόλεσιν Ἰούδα πόλεις ὀχυραί. 8 Ὁ λόγος ὁ (ι) γενόμενος πρὸς Ἱερεμίαν παρὰ κυρίου, μετὰ τὸ συντελέσαι τὸν βασιλέα Σεδεκίαν διαθήκην πρὸς τὸν λαὸν (κ), τοῦ 9 καλέσαι ἄφεσιν, Τοῦ ἐξαποστεῖλαι ἕκαστον τὸν παῖδα αὐτοῦ, καὶ ἕκαστον τὴν παιδίσκην αὐτοῦ, τὸν Ἑβραῖον καὶ τὴν Ἑβραίαν ἐλευθέρους, πρὸς τὸ μὴ δουλεύειν ἄνδρα ἐξ (λ) Ἰούδα. 10 Καὶ ἐπεστράφησαν πάντες οἱ μεγιστᾶνες, καὶ πᾶς ὁ λαὸς (μ) οἱ εἰσελθόντες ἐν τῇ διαθήκῃ, τοῦ ἀποστεῖλαι ἕκαστον τὸν παῖδα αὐτοῦ, (ν) καὶ ἕκαστον τὴν παιδίσκην αὐτοῦ, καὶ ἔδωσαν 11 Αὐτοὺς εἰς παῖδας καὶ παιδίσκας. 12 Καὶ (ξ) ἐγενήθη λόγος κυρίου πρὸς Ἱερεμίαν, λέγων, 13 Οὕτως εἶπε (ο) κύριος, Ἐγὼ διεθέμην διαθήκην πρὸς τοὺς πατέρας ὑμῶν ἐν τῇ ἡμέρᾳ, ᾗ ἐξειλάμην αὐτοὺς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, 14 ἐξ οἴκου δουλείας, λέγων, Ὅταν πληρωθῇ ἓξ ἔτη, ἀποστελεῖς τὸν ἀδελφόν σου τὸν Ἑβραῖον ὃς πραθήσεταί σοι, καὶ ἐργᾶταί σοι ἓξ ἔτη, καὶ (ϛ) ἐξαποστελεῖς αὐτὸν ἐλεύθερον. καὶ οὐκ ἤκουσάν μου, καὶ οὐκ ἔκλιναν τὸ οὖς αὐτῶν. 15 Καὶ (π) ἐπέστρεψαν σήμερον ποιῆσαι τὸ εὐθὲς (ρ) πρὸ ὀφθαλμῶν μου, τοῦ καλέσαι ἄφεσιν (σ) ἕκαστον τοῦ πλησίον αὐτοῦ· καὶ συνετέλεσαν διαθήκην κατὰ πρόσωπόν μου, ἐν τῷ οἴκῳ, οὗ ἐπεκλήθη τὸ ὄνομά μου ἐπ' 16 αὐτῷ. Καὶ ἐπεστρέψατε, καὶ ἐβεβηλώσατε (τ) τὸ ὄνομά μου, τοῦ ἐπιστρέψαι ἕκαστον τὸν παῖδα αὐτοῦ, καὶ ἕκαστον τὴν παιδίσκην αὐτοῦ, οὓς ἐξαπεστείλατε ἐλευθέρους τῇ ψυχῇ αὐτῶν, τοῦ 17 εἶναι ὑμῖν εἰς παῖδας καὶ παιδίσκας. Διατοῦτο οὕτως εἶπε κύριος, Ὑμεῖς οὐκ ἠκούσατέ μου, (υ) τοῦ καλέσαι ἄφεσιν ἕκαστον πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ· ἰδοὺ ἐγὼ καλῶ ἄφεσιν ὑμῖν εἰς μάχαιραν, καὶ εἰς τὸν θάνατον, καὶ εἰς τὸν λιμὸν, καὶ δώσω ὑμᾶς εἰς διασπορὰν πάσαις 18 ταῖς βασιλείαις τῆς γῆς· Καὶ δώσω τοὺς ἄνδρας τοὺς παρεληλυθότας τὴν (φ) διαθήκην μου, τοὺς μὴ στήσαντας τὴν διαθήκην μου, ἣν ἐποίησαν κατὰ πρόσωπόν μου, τὸν μόσχον ὃν ἐποίησαν ἐργάζεσθαι αὐτῷ,

Sed audi verbum Domini, Sedecia rex Juda: 4 *Sic dicit Dominus; In (d) pace morieris : &, ſicut* 5 *(e) ploraverunt patres tuos, qui regnârunt ante te, (f) plorabunt & te, Væ, domine, & uſque ad infernum plangent te: quia verbum ego loquutus ſum, dixit Dominus. Et loquutus eſt Hieremias ad regem Sedeciam omnia* 6 *verba hæc in Hieruſalem. Et* 7 *virtus regis Babylonis bellabat ſuper Hieruſalem, & ſuper civitates (g) Juda, & ſuper Lachis, & ſuper Azeca: quia hæ remanſerant in civitatibus Juda civitates munitæ. Verbum, quod* 8 *factum eſt ad Hieremiam à Domino, poſtquàm rex Sedecias conſummavit teſtamentum erga (h) populum, vocando dimiſſionem, ut dimitteret unuſquiſque* 9 *puerum ſuum, & unuſquiſq; ancillam ſuam, Hebræum & Hebræam liberos; ut non ſerviret vir è Juda. Et (i) converſi ſunt* 10 *omnes magnates, & omnis populus, qui ingreſſi erant in teſtamentum, ut dimitteret unuſquiſq; puerum ſuum, & unuſquiſque ancillam ſuam: (k) & dimiſerunt ...... Eos in pueros, & ancil-* 11 *las. Et factum eſt verbum Do-* 12 *mini ad Hieremiam, dicens; Sic* 13 *dixit Dominus; Ego diſpoſui teſtamentum ad patres veſtros in die quâ erui eos de terra Ægypti, è domo ſervitutis, dicens; Cùm* 14 *impleti fuerint ſex anni; mittes fratrem tuum Hebræum, qui emptus erit tibi, & operabitur tibi ſex annos: & dimittes eum liberum. Et non audierunt me, & non inclinaverunt aurem ſuam. Et converſi ſunt hodiè ad faci-* 15 *endum rectum ante oculos meos, cùm vocaret unuſquiſque dimiſſionem proximi ſui: & conſummaverunt teſtamentum ante faciem meam in domo, in qua invocatum eſt nomen meum in ea. Et* 16 *revertiſtis, & polluiſtis * nomen meum, cùm reduceret unuſquiſq; puerum ſuum, & unuſquiſque ancillam ſuam, quos dimiſeratis liberos animæ ſuæ, ut ſint vobis in pueros, & ancillas. Proptereà* 17 *ſic dixit Dominus; Vos non audîſtis me, ut vocaret dimiſſionem unuſquiſq; ad proximum ſuum. Ecce ego voco dimiſſionem vobis in gladium, & in mortem, & in famē: & dabo vos in diſperſionem omnibus regnis terræ: Et dabo viros, qui tranſgreſſi* 18 *ſunt teſtamentum meum, qui non ſtabilierunt teſtamentum meum, quod fecerant ad faciem meam, vitulum, (l) quem fecerant ad operandum eo,*

MS.A. (ε) Ὦ κύριε, (ζ) κλαύσονταί σε, ὅτι λόγον ἐλάλησα, (η) πρὸς βασιλέα (θ) τὰς καταλελειμμένας, ἐπὶ Λαχεὶς, (ι) ΓΕΝΑ'ΜΕΝΟΣ (κ) ΤΟ'Ν 'ΕΝ 'ΙΕΡΟΥΣΑΛΗ'Μ, ΤΟ~Υ (λ) 'ΙΣΡΑΗ'Λ. (μ) Ο'Ι 'ΕΛΘΟ'ΝΤΕΣ Ε'ΙΣ ΤΗ'Ν ΔΙΑΘΗ'ΚΗΝ, (ν) * ΚΑ'Ι 'ΕΩ~ΣΑΝ Α'ΥΤΟ'ΥΣ 'ΕΙΣ (ξ) ἐγένετο (ο) κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, (ϛ) ἀποστελεῖς (π) ἔστρεψαν (ρ) ἐν ὀφθαλμοῖς (σ) ἕκαστος τῷ πλησίον (τ) τὴν διαθήκην μου, (υ) καλέσαι * ἕκαστος ἄφεσιν πρὸς τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, καὶ ἕκαστον πρὸς τὸν πλησίον (φ) διαθήκην μου, ἣν ἐποίησαν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 וַאֲמַר גְּדַלְיָה בַר אֲחִיקָם לְיוֹחָנָן בַּר קָרֵחַ לָא תַעְבֵיד יַת פִּתְגָמָא הָדֵין אֲרֵי שִׁקְרָא אַתְּ
מְמַלֵּל עַל יִשְׁמָעֵאל׃

מא

1 וַהֲוָה בְּיַרְחָא שְׁבִיעָאָה אֲתָא יִשְׁמָעֵאל בַּר נְתַנְיָה בַר אֱלִישָׁמָע מִזַּרְעָא דְמַלְכוּתָא
וְרַבְרְבֵי מַלְכָּא וַעֲסַרָא גֻבְרִין עִמֵּיהּ לְוָת גְּדַלְיָה בַר אֲחִיקָם לְמִצְפָּיָא וַאֲכַלוּ תַמָּן לַחְמָא
2 כַּחֲדָא בְּמִצְפָּיָא׃ וְקָם יִשְׁמָעֵאל בַּר נְתַנְיָה וַעֲסַרָא גֻבְרִין דַּהֲווֹ עִמֵּיהּ וּמְחוֹ יַת
3 גְּדַלְיָה בַר אֲחִיקָם בַּר שָׁפָן בְּחַרְבָּא וּקְטַל יָתֵיהּ דְּמַנֵּי מַלְכָּא דְבָבֶל בְּאַרְעָא׃ וְיַת כָּל
יְהוּדָאֵי דַּהֲווֹ עִמֵּיהּ עִם גְּדַלְיָה בְּמִצְפָּיָא וְיַת כַּסְדָּאֵי דְּאִשְׁתְּכַחוּ תַמָּן יַת גֻּבְרֵי עָבְדֵי קְרָבָא
4 קְטַל יִשְׁמָעֵאל׃ וַהֲוָה בְּיוֹמָא תִנְיָנָא לְמִקְטַל יַת גְּדַלְיָה וֶאֱנָשׁ לָא יְדַע׃ וַאֲתוֹ גֻבְרַיָּא
5 מִשְּׁכֶם וּמִשִּׁילוֹ וּמִשֹּׁמְרוֹן תְּמָנַן גֻּבְרִין כַּד מְגַלְּחִין דִּקְנֵיהוֹן וּמְבַזְּעִין לְבוּשֵׁיהוֹן
וּמִתְהַמְּמִין וְקוּרְבָּנָא וּלְבוּנְתָא בִּידֵיהוֹן לְאַיְתָאָה לְבֵית מַקְדְּשָׁא דַיְיָ׃ וּנְפַק יִשְׁמָעֵאל
6 בַּר נְתַנְיָה לְקַדָּמוּתְהוֹן מִן מִצְפָּיָא אָזֵיל מֵיזַל וּבָכֵי וַהֲוָה כַּד עֲרַע יָתְהוֹן וַאֲמַר לְהוֹן
עוּלוּ לְוָת גְּדַלְיָה בַר אֲחִיקָם׃ וַהֲוָה כְּמֵעַלְהוֹן לְגוֹ קַרְתָּא וּנְכִיסִנּוּן יִשְׁמָעֵאל בַּר נְתַנְיָה
7 לְגוֹ גוּבָּא הוּא וְגֻבְרַיָּא דִּי עִמֵּיהּ׃ וַעֲסַרָא גֻבְרִין אִשְׁתְּכַחוּ בְהוֹן וַאֲמַרוּ לְיִשְׁמָעֵאל לָא
8 תִקְטְלִנָּנָא אֲרֵי אִית לָנָא מַטְמוֹרִין בְּחַקְלָא חִטִּין וְסַעֲרִין וּמְשַׁח וּדְבַשׁ וְאִתְמְנַע וְלָא
קַטְלִנּוּן בְּגוֹ אֲחוּהוֹן׃ וְגוּבָּא דִּי רְמָא תַמָּן יִשְׁמָעֵאל יַת כָּל פִּגְרֵי גֻבְרַיָּא דִּי קְטַל בְּיַד
9 גְּדַלְיָה הוּא דַּעֲבַד מַלְכָּא אָסָא כַּד צָר עֲלוֹהִי בַּעְשָׁא מַלְכָּא דְיִשְׂרָאֵל יָתֵיהּ מַלֵּי יִשְׁמָעֵאל
בַּר נְתַנְיָה קְטִילִין׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et ait Godolias filius Ahicam ad Johanan filium Caree : Ne facias verbum hoc, quia falſum tu loqueris de Iſmaele. 16

CAP. XLI.

ET factum eſt in menſe ſeptimo, venit Iſmael filius Nathaniæ filii Eliſamæ, de ſemine regio, & principes regis, & decem viri cum eo, ad Godoliam filium Ahicam in Maſpha ; & comederunt ibi panem ſimul in Maſpha. 1 Et ſurrexit Iſmael filius Nathaniæ & decem viri qui erant cum eo, & percuſſerunt Godoliam filium Ahicam filii Saphan gladio, & *occîdit* eum quem conſtituit rex Babylonis in terra. 2 Et omnes Judæos qui erant cum ipſo Godolia in Maſpha, & Chaldæos qui inventi ſunt ibi, viros bellatores occîdit Iſmael. 3 Et factum eſt in ſecundo die poſtquam occiſus fuerat Godolias, & nullus vir ſciebat. 4 Et venerunt viri de Sechem & de Silo, & de Samaria octoginta viri, raſa barba, & ſciſſis veſtibus, & inciſa [*facie*;] eorúmque in manibus erat oblatio & thus, ut adducerent in domum ſanctuarii Domini. 5 Egreſſúſque eſt Iſmael filius Nathaniæ in occurſum eorum de Maſpha, ambulans & plorans. 6 Et factum eſt cùm occurriſſet eis, dixit ad eos, Ingredimini ad Godoliam filium Ahicam. Et factum eſt cùm ingrederentur in medium urbis, & occîdit eos Iſmael filius Nathaniæ, circa medium laci, ipſe et viri qui erant cum eo. 7 Et decem viri inventi ſunt in eis, qui dixerunt ad Iſmaelem, Ne occidas nos, quia habemus theſauros in agro, triticum et hordeum, et oleum, et mel : et ceſſavit, et non interfecit eos in medio fratrum ſuorum. 8 Ciſterna autem in quam projecit Iſmael omnia cadavera virorum quos occîdit propter Godoliam, ipſa eſt quam fecit rex Aſa, quando obſedit eum Baaſa rex Iſrael : ipſam implevit Iſmael filius Nathaniæ occiſis. 9

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

16 * ܘܐܡܪ ܓܕܠܝܐ ܒܪ ܐܚܝܩܡ ܠܝܘܚܢܢ ܒܪ ܩܪܚ. ܠܐ ܬܥܒܕ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ. ܡܛܠ
ܕܓܠܬܐ ܡܡܠܠܬ ܥܠ ܐܝܫܡܥܝܠ.

Reſpondit Gedalia Ahicami filius Johanni filio Corahi, Ne feceris hanc rem : nam mendacium loqueris de Iſmaele. 16

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܐ *

1 * ܘܗܘܐ ܒܝܪܚܐ ܫܒܝܥܝܐ. ܐܬܐ ܐܝܫܡܥܝܠ ܒܪ ܢܬܢܝܐ ܒܪ ܐܝܫܡܥܝܠ ܡܢ ܙܪܥܐ ܕܡܠܟܘܬܐ.
ܘܪܘܪܒܢܘܗܝ ܕܡܠܟܐ. ܘܥܣܪܝܢ ܓܒܪܝܢ ܥܡܗ. ܠܘܬ ܓܕܠܝܐ ܒܪ ܐܚܝܩܡ ܠܡܨܦܝܐ. ܘܐܟܠܘ
ܬܡܢ ܠܚܡܐ ܐܟܚܕܐ ܒܡܨܦܝܐ. * ܘܩܡ ܐܝܫܡܥܝܠ ܒܪ ܢܬܢܝܐ ܗܘ ܘܥܣܪܝܢ ܓܒܪܝܢ ܕܐܬܘ 2
ܥܡܗ. ܘܩܛܠܘܗܝ ܠܓܕܠܝܐ ܒܪ ܐܚܝܩܡ ܒܪ ܫܦܢ ܒܣܝܦܐ. ܘܩܛܠܘܗܝ. ܠܗܘ
ܕܐܫܠܛܗ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕܐ. * ܘܠܟܠܗܘܢ ܝܗܘܕܝܐ ܕܐܝܬ ܗܘܘ ܥܡܗ ܥܡ 3
ܓܕܠܝܐ ܒܡܨܦܝܐ. ܘܠܟܠܕܝܐ ܕܐܫܬܟܚܘ ܬܡܢ. ܘܠܓܒܪܐ ܦܠܚܝ ܩܪܒܐ ܩܛܠ ܐܝܫܡܥܝܠ.
ܘܐܢܫ ܠܐ ܝܕܥ. * ܘܒܝܘܡܐ ܕܬܪܝܢ ܒܬܪ ܕܐܬܩܛܠ ܓܕܠܝܐ. * ܐܬܘ ܓܒܪܐ ܡܢ ܫܟܝܡ 4 5
ܘܡܢ ܫܝܠܘ ܘܡܢ ܫܡܪܝܢ. ܬܡܢܝܢ ܓܒܪܝܢ. ܓܠܝܚܝܢ ܕܩܢܝܗܘܢ. ܘܡܨܪܝܢ ܠܒܘܫܝܗܘܢ.
ܘܡܬܚܒܠܝܢ. ܘܩܘܪܒܢܐ ܘܠܒܘܢܬܐ ܒܐܝܕܝܗܘܢ. ܠܡܥܠܘ ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܢܦܩ 6
ܐܝܫܡܥܝܠ ܒܪ ܢܬܢܝܐ ܠܐܘܪܥܗܘܢ ܡܢ ܡܨܦܝܐ ܡܗܠܟ ܘܒܟܐ. ܘܟܕ ܦܓܥ ܒܗܘܢ.
ܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܬܘ ܠܘܬ ܓܕܠܝܐ ܒܪ ܐܚܝܩܡ. * ܘܟܕ ܥܠܘ ܠܡܨܥܬܗ ܕܡܕܝܢܬܐ. ܢܟܣ ܐܢܘܢ ܐܝܫܡܥܝܠ 7
ܒܪ ܢܬܢܝܐ. ܘܪܡܐ ܐܢܘܢ ܒܓܘ ܓܘܒܐ ܗܘ ܘܓܒܪܐ ܕܥܡܗ. * ܘܥܣܪܐ ܓܒܪܝܢ ܐܫܬܟܚܘ 8
ܒܗܘܢ. ܘܐܡܪܘ ܠܐܝܫܡܥܝܠ. ܠܐ ܬܩܛܠܢ. ܡܛܠ ܕܐܝܬ ܠܢ ܣܝܡܬܐ ܒܚܩܠܐ ܕܚܛܐ ܘܕܣܥܪܐ
ܘܡܫܚܐ ܘܕܒܫܐ. ܘܫܒܩ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܩܛܠ ܐܢܘܢ ܥܡ ܐܚܝܗܘܢ. * ܘܓܘܒܐ ܕܪܡܐ ܒܗ 9
ܐܝܫܡܥܝܠ ܟܠܗܘܢ ܦܓܪܐ ܕܓܒܪܐ ܕܩܛܠ ܥܡ ܓܕܠܝܐ. ܗܘܝܘ ܕܥܒܕ ܐܣܐ ܡܠܟܐ
ܕܝܗܘܕܐ. ܡܢ ܩܕܡ ܒܥܫܐ ܡܠܟܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܠܗ ܠܓܘܒܐ ܗܘ. ܡܠܝܗܝ ܐܝܫܡܥܝܠ ܩܛܝܠܐ.

CAP. XLI.

MEnſe ſeptimo veniens Iſmael filius Nethaniæ filii Iſmaelis de ſtirpe regia, optimatibus regis & viginti viris comitatus, ad Gedaliam Ahicami filium in Maſphiam ; panem comederunt ibi ſimul in Maſphia. 1 Deinde ſurgens Iſmael Nethaniæ filius unà cum illis viginti viris qui cùm eo venerant, Gedaliam filium Ahicami filii Saphanis quem rex Babyloniæ præfecerat terræ Judæ, gladio percuſſerunt & occiderunt. 2 Omnes etiam Judæos qui cum Gedalia erant in Maſphia, & Chaldæos qui illic aderant, atque viros bellatores interfecit Iſmael, nemine audiente. 3 Alterâ verò die poſt cædem Gedaliæ, 4 Venerunt quidam è Sechim, è Silo, & è Samaria, octoginta *ſcilicet* viri, abraſis barbis, diſciſſiſque veſtibus, atque perturbati, munus & incenſum manibus geſtantes ut inferrent in domum Domini. 5 His obviàm egreſſus eſt Iſmael Nethaniæ filius, de Maſphia, ambulans & procedens cum lachrymis : cúmque occurriſſet eis, ait illis, Venite ad Gedalium filium Ahicami. 6 Sed cùm ingreſſi fuiſſent civitatem, jugulavit eos Iſmael Nethaniæ filius, projecítque in foveam, ipſe & viri qui erant cum ipſo. 7 Decem autem viri extiterunt inter illos, qui dixerunt Iſmaeli, Ne occîdas nos, quoniam habemus in agro acervos tritici & hordei, oleum, & mel : ita dimiſit illos, neque occîdit cum fratribus eorum. 8 Porrò fovea in quam Iſmael omnia virorum cadavera quos interfecerat, ponè Gedaliam projecit, illa eſt quam fecerat Aſa rex Judæ metu Baaſæ regis Iſraelis : illam eandem foveam implevit Iſmael interfectis. 9

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

4 * فهكذا اسمع قول الرب يا صدقيا الملك * هكذا قال الرب * تموت في السلامة * وكما بكيت علي
5 اباءك الملكين من قبلك يبكون عليك * واسيداه * ويندبونك * لاني انا تكلمت بهذا
6 القول قال الرب * وتكلم ارميا مع الملك صدقيا بجميع هذه الاقوال في ايروسليم * وجيش
7 ملك بابل يحارب علي ايروسليم وعلي مدن يهودا * وعلي لاخيس وعلي ازيقا * لان هاتين بقيت في
مدن يهودا * مدينتان حصينتان *

* الاصحاح السابع والعشرون *

8 * القول الصاير علي ارميا من قبل الرب * من بعد ان اكمل صدقيا الملك عهدا مع الشعب
9 في ايروسليم ليدعوا غفرانا * ليسرح كل واحد عبده وكل واحد جاريته العبراني والعبرانية
10 احرارا * ليلا يستعبدهم رجل من يهودا * * ورجع جميع العظماء وكل الشعب الذين
11 دخلوا في العهد ان يسرح كل واحد عبده وعبدته * وتركوهم عبيدا وعبيدات *
12 * وصار قول الرب الي ارميا قايلا *
13 * هكذا قال الرب * انا وضعت عهدا لاباءكم في اليوم الذي خلصهم من ارض مصر من بيت
14 العبودية قايلا * اذا كملت ست سنين تسرح اخاك العبراني الذي يباع لك * ست سنين يتعبد لك *
15 وتسرحه معتوقا * فلم يسمعوا لي ولا امالوا اذانهم * ورجعوا اليوم ليصنعوا غفرانا كل واحد بقريبه *
16 واكملوا عهدا لوجهي في بيتي حيث دعي اسمي عليه * ورجعتم ودنستم عهدي ليرد كل
17 واحد عبده وكل واحد جاريته الذين سرحتموهم احرارا لقبيلتهم * لكم عبيدا وعبيدات * لاجل
هذا هكذا قال الرب * انتم لم تسمعوا لي لتدعوا غفرانا كل واحد مع قريبه * ها انا ادعوا لكم
18 غفرانا للسيف وللجوع وللموت * وادفعكم للنفي في جميع ممالك الارض * وادفع الرجال الذين
تجاوزوا عهدي الذي صنعوه لوجهي * العجل الذي صنعوه ليعمل له *

Itaque audi ſermonem Domini O Sedecia rex : Ita dixit Dominus, Morieris in pace ; 4 *Et quemadmodum defleſti patres tuos qui regnaverunt ante te, deflebunt te* dicentes, *Heu domine, & lamentabuntur te : nam ego locutus ſum hunc ſermonem, ait Dominus.* 5 *Locutus eſt ergò Jeremia apud regem Sedeciam cunctos hoſce ſermones in Jeruſalem,* 6 *Dum exercitus regis Babelis bellaret contra Jeruſalem & contra urbes Judæ, contra Lachis, & contra Azecam ; nam hæ duæ reſtabant ex urbibus Judæ, urbes munitæ.* 7

Textus vigeſimus ſeptimus,

Sermo fact⁹ ad Jeremiam à Domino, poſtquam tranſegiſſet Sedecia rex fœd⁹ cum populo in Jeruſalem de proclamanda indulgentia, 8 Ut quiſque ſervũ ſuum et quiſque ancillam ſuam Hebræum et Hebræam libertate donaret, ne quis ex Juda ſervos adhiberet eos : 9 Omnes tamen principes, totuſq; popul⁹ qui 10 fœd⁹ ſubierant de manumittendo quiſque ſervum et ancillam ſuam, deſciverunt, et reliquerunt eos ſervos et ancillas. 11

Factus eſt itaque ſermo Domini ad Jeremiam, dicens ; 12 *Sic ait Dominus, Ego pactum præfixeram majoribus veſtris in die quâ eripui eos de terra Ægypti, de domo ſervitutis, dicens ;* 13 *Cùm exacti fuerint ſex anni, manumittes fratrem tuum Hebræum qui tibi venditus fuerit : ſex annos ſerviet tibi, tum liberum dimittes eum : at non auſcultârunt mihi, neque præbuerunt aures ſuas.* 14 *Et hodie converſi indulgentiam fecerant quiſq; erga proximum ſuum, & fœdus perfecerant coram facie mea, in æde mea ſuper quam invocatum eſt nomen meum :* 15 *Nihilominus deſciviſtis, & polluiſtis fœdus meum ; reducens quiſque ſervum ſuum & quiſque ancillam ſuam, quos liberos dimiſeratis ad tribus ſuas ; repetentes eos vobis in ſervos & ancillas.* 16 *Propterea ſic dixit Dominus, Vos non acquieviſtis mihi ut proclamaretis quiſque indulgentiam erga proximum ſuum ; en ego vİciſſim proclamo vobis indulgentiam ad gladium, famem, & mortalitatem : & dabo vos in exilium in omnia regna terræ :* 17 *Tradamque viros illos qui tranſgreſſi ſunt fœdus meum quod pepigerant coram facie mea, vitulum quem fecerunt ut coleretur,* 18

יִרְמְיָה : מב

,Miſpah in qui ,populi reſiduum omne Iſmahel duxit captivũ Et
10 וַיִּשְׁבְּ יִשְׁמָעֵאל אֶת־כָּל־שְׁאֵרִית הָעָם אֲשֶׁר בַּמִּצְפָּה
, Miſpah in *reſiduos* ,populum omnem & , regis filias
אֶת־בְּנוֹת הַמֶּלֶךְ וְאֶת־כָּל־הָעָם הַנִּשְׁאָרִים בַּמִּצְפָּה
Ghedaljahu laniorum magiſter Nebuzaradan commendaverat quos
אֲשֶׁר הִפְקִיד נְבוּזַרְאֲדָן רַב־טַבָּחִים אֶת־גְּדַלְיָהוּ
abiit &,Nethanjah filius Iſmahel eos duxit captivos & ;Ahicam filio
בֶּן־אֲחִיקָם וַיִּשְׁבֵּם יִשְׁמָעֵאל בֶּן־נְתַנְיָה וַיֵּלֶךְ
filius Jochanan audivit Et .Hammon filios ad *tranſeundum ad*
11 לַעֲבֹר אֶל־בְּנֵי עַמּוֹן : וַיִּשְׁמַע יוֹחָנָן בֶּן־
malum omne , eo cum qui , *virtutum* principes omnes & ,Chareach
קָרֵחַ וְכָל־שָׂרֵי הַחֲיָלִים אֲשֶׁר אִתּוֹ אֵת כָּל־הָרָעָה
aſſumpſerunt Et .Nethanjah filius Iſmahel fecerat quod
12 אֲשֶׁר עָשָׂה יִשְׁמָעֵאל בֶּן־נְתַנְיָה : וַיִּקְחוּ אֶת־
filio Iſmahel cum *pugnandum ad* abierunt & , viros omnes
כָּל־הָאֲנָשִׁים וַיֵּלְכוּ לְהִלָּחֵם עִם־יִשְׁמָעֵאל בֶּן־
.Ghibhon in quæ , multas aquas ad eum invenerunt & : Nethanjah
נְתַנְיָה וַיִּמְצְאוּ אֹתוֹ אֶל־מַיִם רַבִּים אֲשֶׁר בְּגִבְעוֹן :
, Iſmahel cum qui , *populum omnem videre ſecundùm* ,fuit Et
13 וַיְהִי כִּרְאוֹת כָּל־הָעָם אֲשֶׁר אֶת־יִשְׁמָעֵאל אֶת־
,eo cum qui , *virtutum* principes univerſos &,Chareach filium Jochanan
יוֹחָנָן בֶּן־קָרֵחַ וְאֵת כָּל־שָׂרֵי הַחֲיָלִים אֲשֶׁר אִתּוֹ
duxerat captivum quem ,populus omnis ſe verterunt Et .ſunt læti &
14 וַיִּשְׂמָחוּ : וַיָּסֹבּוּ כָּל־הָעָם אֲשֶׁר־שָׁבָה
filium Jochanan ad iverunt & ,ſunt reverſi & : Miſpah de Iſmahel
יִשְׁמָעֵאל מִן־הַמִּצְפָּה וַיָּשֻׁבוּ וַיֵּלְכוּ אֶל־יוֹחָנָן בֶּן־
viris octo cum evaſit Nethanjah filius Iſmahel Et .Chareach
15 קָרֵחַ : וְיִשְׁמָעֵאל בֶּן־נְתַנְיָה נִמְלַט בִּשְׁמֹנָה אֲנָשִׁים
Jochanan tulit Et .Hammon filios ad abiit & : Jochanan *faciebus* à
16 מִפְּנֵי יוֹחָנָן וַיֵּלֶךְ אֶל־בְּנֵי עַמּוֹן : וַיִּקַּח יוֹחָנָן
omne , eo cum qui ,exercituum principes omnes & ,Chareach filius
בֶּן־קָרֵחַ וְכָל־שָׂרֵי הַחֲיָלִים אֲשֶׁר־אִתּוֹ אֵת כָּל־
Nethanjah filio Iſmahel ab reduxerat quem , populi reſiduum
שְׁאֵרִית הָעָם אֲשֶׁר הֵשִׁיב מֵאֵת יִשְׁמָעֵאל בֶּן־נְתַנְיָה
, Ahicam filium Ghedaljah percuſſit poſtquam , Miſpah de
מִן־הַמִּצְפָּה אַחַר הִכָּה אֶת־גְּדַלְיָה בֶּן־אֲחִיקָם
quos , eunuchos & ,*familiam* &,mulieres & , *belli homines* viros
גְּבָרִים אַנְשֵׁי הַמִּלְחָמָה וְנָשִׁים וְטַף וְסָרִסִים אֲשֶׁר
peregrinatione in habitaverunt &,abierunt Et .Ghibhon de reduxerat
17 הֵשִׁיב מִגִּבְעוֹן : וַיֵּלְכוּ וַיֵּשְׁבוּ בְּגֵרוּת
.Ægyptum *ingrediendum ad eundum ad*,lechem-Beth juxta quæ ,Chimham
כִּמְוֹהָם אֲשֶׁר־אֵצֶל בֵּית לָחֶם לָלֶכֶת לָבוֹא מִצְרָיִם :
percuſſerat quia : eorum *faciebus* à timuerunt nam : Chaſdim *faciebus* A
18 מִפְּנֵי הַכַּשְׂדִּים כִּי יָרְאוּ מִפְּנֵיהֶם כִּי־הִכָּה
quem , Ahicam filium Ghedaljahu Nethanjah filius Iſmahel
יִשְׁמָעֵאל בֶּן־נְתַנְיָה אֶת־גְּדַלְיָהוּ בֶּן־אֲחִיקָם אֲשֶׁר־
.*terra in* Babel rex præpoſuerat
הִפְקִיד מֶלֶךְ־בָּבֶל בָּאָרֶץ :

CAP. XLII. מב

,Chareach filius Jochanan & ,exercituum principes omnes acceſſerunt Et
1 וַיִּגְּשׁוּ כָּל־שָׂרֵי הַחֲיָלִים וְיוֹחָנָן בֶּן־קָרֵחַ
.magnũ ad uſque & parvo à populus omnis &,Hoſahajah filius Jezanjah &
וִיזַנְיָה בֶּן־הוֹשַׁעְיָה וְכָל־הָעָם מִקָּטֹן וְעַד־גָּדוֹל :
noſtra *deprecatio nunc* Cadat : prophetam Irmejahu ad dixerunt Et
2 וַיֹּאמְרוּ אֶל־יִרְמְיָהוּ הַנָּבִיא תִּפָּל־נָא תְחִנָּתֵנוּ
tuum Deum DOMINUM ad nobis pro ora & , *tuas facies ad*
לְפָנֶיךָ וְהִתְפַּלֵּל בַּעֲדֵנוּ אֶל־יְהוָה אֱלֹהֶיךָ
,*multo de parum* remanſimus quia : iſto reſiduo omni pro
בְּעַד כָּל־הַשְּׁאֵרִית הַזֹּאת כִּי־נִשְׁאַרְנוּ מְעַט מֵהַרְבֵּה
.nos *videntes* tui oculi ſicut
כַּאֲשֶׁר עֵינֶיךָ רֹאוֹת אֹתָנוּ :

Verſio VULG. LAT.

10 Et captivas duxit Iſmahel omnes reliquias populi, qui erant in Maſphath; filias regis, & univerſum populum, qui remanſerat in Maſphath: quos commendaverat Nabuzardan princeps militiæ Godoliæ filio Ahicam. Et cepit eos Iſmahel fili' Nathaniæ, & abiit ut tranſiret ad filios 11 Ammon. Audivit autem Johanan filius Caree, & omnes principes bellatorum, qui erant cum eo, omne malum, quod fecerat 12 Iſmahel filius Nathaniæ. Et aſſumptis univerſis viris, profecti ſunt ut bellarent adverſùm Iſmahel filium Nathaniæ, & invenerunt eum ad aquas multas, quæ 13 ſunt in Gabaon. Cúmque vidiſſet omnis populus, qui erat cum Iſmahel, Johanan filium Caree, & univerſos principes bellatorum, qui erant cum eo, læti 14 ſunt. Et reverſus eſt omnis populus, quem ceperat Iſmahel, in Maſphath: reverſúſque abiit ad 15 Johanan filium Caree. Iſmahel autem filius Nathaniæ fugit cum octo viris à facie Johanan, & ab- 16 iit ad filios Ammon. Tulit ergò Johanan filius Caree, & omnes principes bellatorum, qui erant cum eo, univerſas reliquias vulgi, quas reduxerat ab Iſmahel filio Nathaniæ de Maſphath, poſtquàm percuſſit Godoliam filium Ahicam; fortes viros ad præliũ, & mulieres, & pueros, & eunuchos, quos reduxerat de Gabaon. 17 Et abierunt, & ſederunt peregrinantes in Chamaam, quæ eſt juxta Bethlehem, ut pergerent, & 18 introirent Ægyptum A facie Chaldæorum: timebant enim eos, quia percuſſerat Iſmahel filius Nathaniæ Godoliam filium Ahicam, quem præpoſuerat rex Babylonis in terra Juda.

CAP. XLII.

1 ET acceſſerunt omnes principes bellatorum, & Johanan fili' Caree, & Jezonias filius Oſaiæ, & reliquum vulgus à parvo uſ- 2 que ad magnum: Dixerúntque ad Jeremiam prophetam; Cadat oratio noſtra in conſpectu tuo: & ora pro nobis ad Dominum Deum tuum, pro univerſis reliquiis iſtis: quia derelicti ſumus pauci de pluribus, ſicut oculi tui nos intuentur:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

19 Τοὺς ἄρχοντας Ἰούδα, καὶ τοὺς δυνάστας, καὶ 20 τοὺς ἱερεῖς, καὶ τὸν λαὸν, Καὶ δώσω αὐτοὺς τοῖς ἐχθροῖς αὐτῶν, καὶ ἔσται τὰ θνησιμαῖα αὐτῶν (χ) βρῶσις τοῖς πετεινοῖς τοῦ οὐρανοῦ καὶ τοῖς 21 θηρίοις τῆς γῆς. Καὶ τὸν Σεδεκίαν βασιλέα (") τῆς Ἰουδαίας, καὶ τοὺς ἄρχοντας αὐτῶν δώσω εἰς χεῖρας ἐχθρῶν αὐτῶν, καὶ δύναμις βασιλέως Βαβυλῶνος (ψ) τοῖς ἀποτρέχουσιν ἀπ' 22 αὐτῶν. Ἰδοὺ ἐγὼ συντάσσω, φησὶ κύριος, καὶ ἐπιστρέψω αὐτοὺς εἰς τὴν γῆν ταύτην, καὶ πολεμήσουσιν ἐπ' (ω) αὐτὴν, καὶ λήψονται αὐτὴν, καὶ κατακαύσουσιν αὐτὴν ἐν πυρὶ, καὶ τὰς πόλεις Ἰούδα, (α) καὶ δώσω αὐτὰς ἐρήμους ἀπὸ τῶν κατοικούντων.

19 *Principes (m) Juda, & potentes, & ſacerdotes, & (n) populum:* 20 *Et dabo eos inimicis (o) eorum: & erunt morticina (p) eorum eſca volatilibus cæli, & beſtiis terræ.* 21 *Et Sedeciam regem Judææ, & principes eorum dabo in manus inimicorũ eorũ: Et virtus regis Babylonis (q) recedentibus ab eis,* 22 *Ecce ego præcipio,* dicit *Dñs, & reducam eos in terram hanc: & bellabunt ſuper eam, & capient eam, & comburent eam in igne, & civitates Juda: & dabo eas deſertas ab habitatoribus.*

MS. A. (χ) βρώματα (") Ἰούδα, (ψ) οἱ ἀποτρέχοντες ἀπ' αὐτῶν, (ω) αὐτοὺς, (α) δώσω αὐτὰς εἰς ἄβατον ἀπὸ κατοικούντων.

Cap. 35. Vulg. Lat.

ΚΕΦ. μβ'.

1 Ο ΛΟΓΟΣ Ο (α) ΓΕΝΟΜΕΝΟΣ ΠΡΟΣ ΙΕΡΕΜΙΑΝ παρὰ κυρίου ἐν ἡμέραις Ἰωακεὶμ (β) βασιλέως Ἰούδα, λέγων, 2 (") Βάδισον εἰς οἶκον Ἀρχαβεὶν, καὶ ἄξεις αὐτοὺς εἰς οἶκον κυρίου, εἰς μίαν τῶν 3 αὐλῶν, καὶ ποτιεῖς αὐτοὺς οἶνον. Καὶ (γ) ἐξήγαγον τὸν Ἰεχονίαν υἱὸν (δ) Ἱερεμὶν υἱοῦ Χαβασὶν, καὶ τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ, καὶ τοὺς υἱοὺς αὐ- 4 τοῦ, καὶ πᾶσαν τὴν οἰκίαν (ε) Ἀρχαβεὶν, Καὶ εἰσήγαγον αὐτοὺς εἰς οἶκον κυρίου εἰς τὸ (ζ) παστοφόριον υἱῶν Ἰωνὰν, υἱοῦ Ἀνανίου, υἱοῦ Γοδολίου ἀνθρώπου τοῦ θεοῦ, ὅς ἐστιν ἐγγὺς (η) τοῦ οἴκου τῶν ἀρχόντων τῶν ἐπάνω τοῦ οἴκου (θ) Μαασαίου υἱοῦ Σελὼμ, τοῦ φυλάσσοντος 5 τὴν αὐλήν. Καὶ (ι) ἔδωκα κατὰ πρόσωπον αὐτῶν κεράμιον οἴνου, καὶ ποτήρια, καὶ εἶπα, Πίετε 6 οἶνον. Καὶ (κ) εἶπον, Οὐ μὴ πίωμεν οἶνον, ὅτι Ἰωναδὰβ υἱὸς Ῥηχὰβ ὁ πατὴρ ἡμῶν ἐνετείλατο ἡμῖν, (λ) λέγων, Οὐ μὴ πίητε οἶ- 7 νον ὑμεῖς καὶ οἱ υἱοὶ ὑμῶν, ἕως αἰῶνος, Καὶ οἰκίας οὐ μὴ οἰκοδομήσητε, καὶ σπέρμα οὐ μὴ σπείρητε, καὶ ἀμπελὼν οὐκ ἔσται ὑμῖν, ὅτι ἐν σκηναῖς (μ) οἰκήσετε πάσας τὰς ἡμέρας (") ὑμῶν, ὅπως ἂν (ν) ζήσητε ἡμέρας πολλὰς ἐπὶ τῆς γῆς, ἐφ' ἧς διατρίβετε ὑμεῖς ἐπ' αὐτῆς. 8 Καὶ (ξ) ἠκούσαμεν τῆς φωνῆς Ἰωναδὰβ τοῦ πατρὸς ἡμῶν, πρὸς τὸ μὴ πιεῖν οἶνον πάσας τὰς (ο) ἡμέρας ἡμῶν, ἡμεῖς καὶ αἱ γυναῖκες ἡμῶν, καὶ οἱ υἱοὶ ἡμῶν, καὶ αἱ θυγατέρες ἡμῶν, 9 (π) Καὶ πρὸς τὸ μὴ οἰκοδομεῖν οἰκίας τοῦ κατοικεῖν ἐκεῖ, καὶ ἀμπελὼν, καὶ ἀγρὸς, καὶ σπέρ- 10 μα οὐκ ἐγένετο ἡμῖν. Καὶ (ρ) ᾠκήσαμεν ἐν σκηναῖς, καὶ ἠκούσαμεν (σ), καὶ ἐποιήσαμεν κατὰ πάντα ἃ ἐνετείλατο ἡμῖν Ἰωναδὰβ ὁ πατὴρ 11 ἡμῶν. Καὶ ἐγενήθη ὅτε ἀνέβη Ναβουχοδονόσορ ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ εἴπαμεν (τ) εἰσελθεῖν, καὶ εἰσήλθομεν εἰς Ἱερουσαλὴμ, ἀπὸ προσώπου τῆς (υ) δυνάμεως τῶν Χαλδαίων, καὶ ἀπὸ προσώπου τῆς δυνάμεως τῶν Ἀσσυρίων, 12 καὶ ᾠκοῦμεν ἐκεῖ. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέγων,

CAP. XLII.

1 *VERBUM, (a) quod factũ eſt ad Hieremiam à Domino in diebus Joacim regis Juda, dicens;* 2 *Vade in domum (b) Archabin: & duces eos in domum Domini in unum atriorum, & potabis eos vino.* 3 *Et eduxi Jechoniam filiũ Hieremin filii Chabaſin, & fratres ejus, & filios ejus, & omnem domum Archabin:* 4 *Et introduxi eos in domum Domini in paſtophorium filiorum Jonam, filii Ananiæ, filii Godoliæ, hominis Dei, (c) qui eſt propè domum principum eorum, qui ſupra domum Maaſiæ filii Selom, cuſtodientis (d) atrium.* 5 *Et dedi ante faciem eorum laguncuIam vini, & pocula: & dixi, Bibite vinum.* 6 *Et dixerunt; Non bibemus vinũ: quia Jonadab filius Rechab pater noſter mandavit nobis, dicens; Non bibetis vinum, vos, & filii veſtri, uſque in ſeculum:* 7 *Et domos ne ædificetis, et ſemen ne ſeminetis: & vinea non erit vobis: quia in tabernaculis habitabitis cunctis diebus veſtris; ut vivatis diebus multis ſuper terram, ſuper quam incolitis vos ſuper eam.* 8 *Et audivimus vocẽ Jonadab patris noſtri, non bibendi vinum cunctis dieb' noſtris, nos, et uxores noſtræ, & filii noſtri, & filiæ noſtræ,* 9 *Et non ædificandi domos ad habitandum ibi: & vinea, & ager, et ſemen non fuit nobis:* 10 *Et habitavimus in tabernaculis. Et audivimus, & fecimus ſecundùm omnia, quæ mandavit nobis Jonadab pater noſter.* 11 *Et factum eſt, quando aſcendit Nabuchodonoſor ſuper terram; & diximus (e) ingredi: & ingreſſi ſumus in Hieruſalem à facie virtutis Chaldæorum, & à facie virtutis Aſſyriorum, & habitavimus ibi.* 12 *Et factum eſt verbum Domini ad me, dicens;*

MS.A. (α) ΓΕΝΑΜΕΝΟΣ ΠΑΡΑ ΚΥΡΙΟΥ ΠΡΟΣ ΙΕΡΕΜΙΑΝ (β) ΥΙΟΥ ΙΩΣΙΟΥ, ΒΑΣΙΛΕΩΣ (") Πορεύθητι εἰς οἶκον Ἀλχαβεὶν, καὶ κάλεσον αὐτοὺς, καὶ ἐξάξεις (γ) ἤγαγον (δ) Ἱερεμίου (ε) Χαραβεὶν, (ζ) παστοφόρειον Ἀνανίου, υἱοῦ (η) οἰκούντων ἀρχόντων (θ) Μασαίου (ι) ἔστησα (κ) εἶπαν, Οὐ πίομεν (λ) εἴπας, (μ) κατοικήσεται (") τῆς ζωῆς ὑμῶν, (ν) ζῆτε (ξ) εἰσηκούσαμεν (ο) ἡμέρας τῆς ζωῆς ἡμῶν, καὶ οἱ υἱοὶ ἡμῶν, (π) Πρὸς τὸ μὴ (ρ) οἰκήσαμεν (σ) κατὰ πάντα ὅσα ἐνετείλατο (τ) Ἀναβάντες εἰσελευσόμεθα εἰς (υ) δυνάμεως τῶν Ἀσσυρίων, καὶ ᾠκήσομεν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 וּשְׁבָא יִשְׁמָעֵאל יַת כָּל שְׁאָרָא דְעַמָּא דִּי בְמִצְפְּיָא יַת בְּנַת מַלְכָּא וְיַת כָּל עַמָּא דְּאִשְׁתְּאַרוּ
בְּמִצְפְּיָא דְּמַנִּי נְבוּזַר אֲדָן רַב קָטוֹלַיָא עַל גְּדַלְיָה בַּר אֲחִיקָם וּשְׁבָנוּן יִשְׁמָעֵאל בַּר נְתַנְיָהוּ
11 וַאֲזַל לְמֶעְבַּר לְוַת בְּנֵי עַמּוֹן : וּשְׁמַע יוֹחָנָן בַּר קָרֵחַ וְכָל רַבָּנֵי חֵילְוָתָא דִּי עִמֵּיהּ יַת כָּל
12 בִּישְׁתָא דַּעֲבַד יִשְׁמָעֵאל בַּר נְתַנְיָה : וּדְבַרוּ יַת כָּל גַּבְרַיָּא וַאֲזַלוּ לְאַגָּחָא עַל יִשְׁמָעֵאל בַּר
13 נְתַנְיָה וְאַשְׁכַּחוּ יָתֵיהּ עַל בְּרֵיכַת מַיִן סַגִּיאִין דִּי בְגִבְעוֹן : וַהֲוָה כַּד חֲזָא כָל עַמָּא דְּעִם
14 יִשְׁמָעֵאל יַת יוֹחָנָן בַּר קָרֵחַ וְיַת כָּל רַבָּנֵי חֵילְוָתָא דִּי עִמֵּיהּ וַחֲדִיאוּ : וְאִסְתְּחַרוּ כָּל עַמָּא
15 דִּשְׁבָא יִשְׁמָעֵאל מִן מִצְפְּיָא וְתָבוּ וַאֲזַלוּ לְוַת יוֹחָנָן בַּר קָרֵחַ : וְיִשְׁמָעֵאל בַּר נְתַנְיָה
16 אִשְׁתֵּזִיב בִּתְמַנְיָא גַּבְרִין מִן קֳדָם יוֹחָנָן בַּר קָרֵחַ וַאֲזַל לְוַת בְּנֵי עַמּוֹן : וּדְבַר יוֹחָנָן בַּר קָרֵחַ
וְכָל רַבָּנֵי חֵילְוָתָא דִּי עִמֵּיהּ יַת כָּל שְׁאָרָא דְעַמָּא דַּאֲתִיב מִלְּוַת יִשְׁמָעֵאל בַּר נְתַנְיָה מִן
מִצְפְּיָא בָּתַר דִּי קְטַל יַת גְּדַלְיָה בַּר אֲחִיקָם גַּבְרִין גִּבָּרֵי עָבְדֵי קְרָבָא וּנְשַׁיָּא וְטַפְלָא
17 וְרַבְרְבַיָּא דִּי אֲתִיב מִגִּבְעוֹן : וַאֲזַלוּ וִיתִיבוּ בְּגֵירוּת דִּיהַב דָּוִד לְכִמְהָם בַּר בַּרְזִלַּי
18 גִּלְעָדָאָה דִּי בִסְטַר בֵּית לֶחֶם לְמֵיזַל לְמֵעַל לְמִצְרָיִם : מִן קֳדָם כַּסְדָּאֵי אֲרֵי דְחִילוּ מִן
קֳדָמֵיהוֹן אֲרֵי קְטַל יִשְׁמָעֵאל בַּר נְתַנְיָה יַת גְּדַלְיָה בַּר אֲחִיקָם דְּמַנִּי מַלְכָּא דְבָבֶל
בְּאַרְעָא :

מב

1 וְקָרִיבוּ כָּל רַבָּנֵי חֵילְוָתָא וְיוֹחָנָן בַּר קָרֵחַ וִיזַנְיָה בַּר הוֹשַׁעְיָה וְכָל עַמָּא מִזְּעֵירָא וְעַד רַבָּא :
2 וַאֲמַרוּ לְיִרְמְיָה נְבִיָּא תִּתְקַבַּל כְּעַן בָּעוּתָנָא קֳדָמָךְ וְצַלִּי עֲלָנָא קֳדָם יְיָ אֱלָהָךְ עַל כָּל שְׁאָרָא
הָדֵין אֲרֵי אִשְׁתְּאַרְנָא זְעֵיר מִסַּגִּי כְּמָא דְעֵינָךְ חָזְיָן יָתָנָא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

10 Et captivavit Iſmael omnes reliquias populi, qui erat in Maſpha; filias regis, & omnem populum qui relictus fuerat in Maſpha, quos commendaverat Nabuzardan princeps occidentium Godoliæ filio Ahicam; & in captivitatem duxit eos Iſmael filius Nathaniæ. Et abiit ut tranſiret ad filios Am- 11 mon. Et audivit Johanan filius Caree, et omnes principes exercitus qui erant 12 cum eo, omne malum quod fecerat Iſmael filius Nathaniæ. Et tulerunt omnes viros, & abierunt ut pugnarent contra Iſmaelem filium Nathaniæ, & invenerunt eum juxta piſcinam aquarum multarum quæ eſt in Gabaon. 13 Et factum eſt cùm vidiſſet omnis populus qui erat cum Iſmaele, Johanan filium Caree, & omnes principes exercituum, qui erant cum eo, lætatus 14 eſt. Et reverſus eſt omnis populus quem ceperat Iſmael de Maſpha: & re- 15 verſi ſunt & perrexerunt ad Johanan filium Caree. Iſmael verò filius Nathaniæ liberatus eſt cum octo viris à facie Johanan filii Caree, & abiit ad 16 filios Ammon. Et tulit Johanan filius Caree, & omnes principes exercitus, qui erant cum eo, univerſas reliquias populi, quas reduxerat ab Iſmael filio Nathaniæ de Maſpha, poſtquam occiderat Godoliam filium Ahicam, & viros fortes bellatores, & uxores, & parvulos, & principes quos reduxerat 17 de Gabaon. Et abierunt, & ſederunt in peregrinatione, quam dederat David Camaham filio Berſelai Galaaditæ, quæ eſt juxta Bethlehem, ut perge- 18 rent & proficiſcerentur in Ægyptum A facie Chaldæorum: timebant enim à facie eorum, eò quòd occiderat Iſmael filius Nathaniæ Godoliam filium Ahicam, quem conſtituerat rex Babylonis in terra.

CAP. XLII.

1 ET acceſſerunt omnes principes exercituum, & Johanan filius Caree, & Jezanias filius Oſeæ, & omnis populus à minimo uſque ad maximum. 2 Et dixerunt ad Jeremiam prophetam, Acceptabilis ſit nunc deprecatio noſtra coram te, & ora pro nobis coram Domino Deo tuo pro omnibus reliquiis iſtis; quia relicti ſumus pauci ex multis, ſicut oculi tui vident nos.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܫܒܐ ܐܫܡܥܝܠ ܟܠܗ ܫܪܟܗ ܕܥܡܐ ܕܒܡܨܦܝܐ. ܕܐܫܠܡ ܢܒܘܙܪܕܢ ܪܒ ܕܒܚܐ 10
ܠܓܕܠܝܐ ܒܪ ܐܚܝܩܡ. ܘܫܒܐ ܐܢܘܢ ܐܫܡܥܝܠ ܒܪ ܢܬܢܝܐ. ܘܐܙܠ ܠܥܒܪܐ ܕܒܢܝ
ܥܡܘܢ. * ܘܫܡܥ ܝܘܚܢܢ ܒܪ ܩܪܚ ܘܟܠܗܘܢ ܪܒܝ ܚܝܠܐ ܕܥܡܗ: ܠܟܠܗ ܒܝܫܬܐ 11
ܕܥܒܕ ܐܫܡܥܝܠ ܒܪ ܢܬܢܝܐ. * ܘܕܒܪܘ ܟܠܗܘܢ ܓܒܪܐ. ܘܐܙܠܘ ܠܡܬܟܬܫܘ ܥܡ 12
ܐܫܡܥܝܠ ܒܪ ܢܬܢܝܐ. ܘܐܫܟܚܘܗܝ. ܥܠ ܡܝܐ ܣܓܝܐܐ ܕܐܝܬ ܒܓܒܥܘܢ. * ܘܟܕ ܚܙܐ 13
ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܥܡ ܐܫܡܥܝܠ. ܠܝܘܚܢܢ ܒܪ ܩܪܚ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܪܒܝ ܚܝܠܐ ܕܥܡܗ
ܚܕܝܘ. * ܘܗܦܟܘ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܫܒܐ ܐܫܡܥܝܠ ܡܢ ܡܨܦܝܐ. ܘܐܬܘ ܠܘܬ ܝܘܚܢܢ ܒܪ 14
ܩܪܚ. * ܘܐܫܡܥܝܠ ܒܪ ܢܬܢܝܐ ܐܬܦܠܛ. ܒܬܡܢܝܐ ܓܒܪܝܢ ܡܢ ܩܕܡ ܝܘܚܢܢ. ܘܐܙܠ 15
ܠܘܬ ܒܢܝ ܥܡܘܢ. * ܘܕܒܪ ܝܘܚܢܢ ܒܪ ܩܪܚ ܘܟܠܗܘܢ ܪܒܝ ܚܝܠܐ ܕܥܡܗ. ܟܠ 16
ܫܪܟܐ ܕܥܡܐ. ܕܐܦܢܝ ܡܢ ܠܘܬ ܐܫܡܥܝܠ ܒܪ ܢܬܢܝܐ. ܡܢ ܡܨܦܝܐ. ܡܢ ܒܬܪ ܕܩܛܠ
ܐܫܡܥܝܠ ܠܓܕܠܝܐ ܒܪ ܐܚܝܩܡ. ܘܕܒܪ ܓܒܪܐ ܡܩܪܒܢܐ ܘܢܫܐ ܘܛܠܝܐ ܘܡܗܝܡܢܐ.
ܕܐܦܢܝ ܡܢ ܓܒܥܘܢ. * ܘܐܙܠܘ ܘܝܬܒܘ ܒܐܕܪܐ ܕܒܡܗܘܡ ܕܠܘܬ ܓܢܒ ܒܝܬ ܠܚܡ. 17
* ܠܡܐܙܠ ܠܡܨܪܝܢ ܡܢ ܩܕܡ ܟܠܕܝܐ ܕܕܚܠܝܢ ܗܘܘ ܡܢܗܘܢ. ܥܠ ܕܩܛܠ ܐܫܡܥܝܠ 18
ܒܪ ܢܬܢܝܐ ܠܓܕܠܝܐ ܒܪ ܐܚܝܩܡ. ܗܘ ܕܐܫܠܛܗ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܒ *

* ܘܩܪܒܘ ܟܠܗܘܢ ܪܒܝ ܚܝܠܐ: ܘܝܘܚܢܢ ܒܪ ܩܪܚ ܘܝܙܢܝܐ ܒܪ ܗܘܫܥܝܐ. 1
ܘܟܠܗ ܥܡܐ ܡܢ ܙܥܘܪܐ ܘܥܕܡܐ ܠܩܫܝܫܐ. * ܘܐܡܪܘ ܠܐܪܡܝܐ. ܒܥܝܢ ܡܢܟ. 2
ܬܦܠ ܒܥܘܬܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ. ܡܛܠ ܕܐܫܬܚܪܢ ܩܠܝܠ ܡܢ ܣܓܝܐܐ. ܐܝܟ ܕܥܝܢܝܟ
ܚܙܝܢ ܠܢ.

Et captivum abduxit Iſmael totum reliquum populum qui erat in Maſphia, quos Nebuzardan præfectus ſatellitum commiſerat Gedaliæ filio Ahicami : captivos inquam, abduxit eos Iſmael Nethaniæ filius, & tranſmeavit ad Ammonitas. 10
Audiens autem Johannes Corahi filius, omnéſque duces exercitûs qui cum illo erant, totam illam prædam quam abduxerat Iſmael Nethaniæ filius; 11
Sumptis omnibus viris abiit oppugnatum Iſmaelem Nethaniæ filium, & offenderunt eum ad aquas multas quæ ſunt in Gebeone. 12
Quarè cùm vidiſſet totus ille populus qui erat cum Iſmaele, Johannem Corahi filium omnéſque duces exercitûs qui cum eo erant, lætati ſunt. 13
Sic reverſus totus ille popul⁹ quem abduxerat Iſmael de Maſphia, venerunt ad Johannem Corahi filium : 14
Iſmael verò Nethaniæ filius eripiens ſe cum octo hominibus à conſpectu Johannis, abiit ad Ammonitas. 15
Tum Johannes Corahi filius omnéſque duces exercitûs qui cum eo erant, totum reſiduum populum quem recuperaverat ab Iſmaele Nethaniæ filio, accipiens ex Maſphia, poſtquam interfeciſſet Iſmael Gedaliam Ahicami filium, accipiens inquam, viros bellatores, mulieres & pueros, atque eunuchos quos è Gebeone reduxerat; 16
Abierunt, & conſederunt in areis Bemham quæ ſunt ad latus Beth-lehem : 17
Ut irent, ſeſéque reciperent in Ægyptum, metu Chaldæorum quos pertimeſcebant eò quòd peremiſſet Iſmael Nethaniæ fili⁹ Gedaliam illum Ahicami filium, quem rex Babylonis præfecerat terræ Judæ. 18

CAP. XLII.

DEinde accedentes omnes copiarum duces, & Johannes Corahi filius, & Jezania Hoſeæ filius, totúſque populus à juniore ad ſeniorem uſque; 1
Dixerunt Jeremiæ, Rogamus te, ora pro nobis Dominum Deum tuum; nam pauci remanſimus ex multis, quales oculi tui nos vident : 2

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* رؤساء يهودا والاقوياء والكهنة والشعب * واسلمهم لاعدائهم * ويصير جثثهم ماكلة لطيور 19 20
السماء ولوحوش الارض * وصدقيا ملك يهودا ادفعه الى ايدي اعدائه وجيش ملك بابل * 21
للمسرعين منهم ها انا امرهم قال الرب * واردهم الى هذه الارض * ويحاربون عليها وياخذونها 22
ويحرقونها بالنار ومدن يهودا * وادفعها للخراب من السكان *

* الفصل الثاني والاربعون *

* القول الصاير الى ارميا من قبل الرب * في ايام يواقيم بن يوسيا ملك يهودا * قايلا * 1
* اعمد الى بيت ارخابين وسوقهم الى بيت الرب الى واحدة من الديار واسقهم خمرا * فاصعدت 2 3
يازونيان بن يارامين بن خاصابين * واخوته وبنيه وكل بيت ارخابين * وادخلتهم 4
الى بيت الرب الى عمارية بن يواداب بن عودوليو رجل الله * الذي هو قريب بيت
الرؤساء الذي فوق بيت ماساو بن صالوم حافظ الدار * واعطيت لوجههم جر 5
خمر وكووسا * وقلت اشربوا خمرا * فقالوا لا نشرب خمرا * لان يوانان بن كاربا ابانا 6
اوصانا قايلا * لا تشربوا خمرا انتم وبنوكم الى الدهر * ولا تبنوا بيتا * ولا تزرعوا زرعا * 7
ولا يكون لكم كرم * لانكم في الخيام تسكنون جميع ايام حياتكم * كي تعيشوا اياما
كثيرين على الارض التي انتم تسيرون عليها * فسمعنا صوت يواداب ابينا الا نشرب خمرا 8
جميع ايامنا * نحن ونساونا وابناونا وبناتنا * والا نبني بيوتا لنسكن * كرم وحقل وزرع لم 9
يكن لنا * وسكنا في الخيام وسمعنا كلما اوصانا به يواداب ابونا * وصار لما صعد بختنصر الى 10 11
هذه الارض * فقلنا نصعد ندخل الى ايروسليم من وجه جيش الموصليين ونسكن هناك *
* وصار قول الرب الى قايلا * 12

Principes Judæ, potentes, ſacerdotes, & populum; 19
Hos inquam, tradam hoſtibus ſuis, fientque cadavera eorum eſca volucribus cœli & beſtiis terræ: 20
Et Sedeciam regem Juda tradam in manus inimicorum ejus & copiarum regis Babelis. 21
Velociſſimis inter eos en ego præcipiam, dixit Dominus, & reducam eos in terram iſtam; oppugnabunt eam, & capient eam, ignéque comburent cum urbibus Juda: adeoque reddam illas civibus deſolatas. 22

CAP. XLII.

SErmo factus ad Jeremiam à Domino in diebus Joacimi filii Joſiæ regis Judæ, dicens; 1

Adi familiam Archabini, eóſque ducas in domum Domini ad unum atriorum, & des eis bibendum vinum. 2
Quare deduxi Jezonian filium Jeremin filii Chaſabin, & fratres ac filios ejus, totámque familiam Archabini; 3
Et introduxi eos in in domum Domini, in ædem filii Jonadabi filii Godoliæ viri Dei, qui vicinus erat domicilio principum quod erat ſupra domum Maaſiæ filii Salomi cuſtodis atrii: 4
Et poſitis ante ipſos lagenâ vini & calicibus, dixi; Bibite vinum. 5
Qui dixerunt; Nequaquam bibemus vinum, quia Joanan Carebæ filius pater noſter præcepit nobis, dicens; Ne bibatis vinum vos neque filii veſtri in æternum: 6
Ne extruatis domum, ſemen ne ſeratis, neque ſit vobis vinea: nam in tentoriis habitabitis cunctis diebus vitæ veſtræ, ut dies multos vivatis ſuper terram ſuper quam ambulatis. 7
Itaq; auſcultantes voci Jonadabi patris noſtri, ne vinum biberemus cunctis diebus noſtris, nos autem, uxores, aut filii filiæque noſtræ, 8
Et ne domos extrueremus ad habitandum; vineam, agrum, neque ſemen ullum poſſedimus, 9
Habitavimus in tentoriis, & auſcultavimus quæcunque præcepit nobis Jonadab pater noſter. 10
Contigit autem quum aſcendit Bochtonaſſar in terram iſtam, ut diceremus; Aſcendentes ingrediamur in Jeruſalem à facie exercitûs Aſſyriorum, & habitemus illic. 11
Tum factus eſt ad me ſermo Domini dicentis; 12

ירמיה : מב

pergamus *qua* , viam tuus Deus Dominus nobis annuntiet Et
3 וַיַּגֶּד־לָנוּ יְהוָה אֱלֹהֶיךָ אֶת־הַדֶּרֶךְ אֲשֶׁר נֵלֶךְ־
Irmejahu eos ad dixit Et .faciamus quod verbum & ,*ea in*
4 בָּהּ וְאֶת־הַדָּבָר אֲשֶׁר נַעֲשֶׂה׃ וַיֹּאמֶר אֲלֵיהֶם יִרְמְיָהוּ
veſtrum Deum Dominum ad *orans ego* ecce , Audivi : propheta
הַנָּבִיא שָׁמַעְתִּי הִנְנִי מִתְפַּלֵּל אֶל־יְהוָה אֱלֹהֵיכֶם
Dominus reſponderit quod verbum omne , erit & :veſtra verba ſecundū
כְּדִבְרֵיכֶם וְהָיָה כָּל־הַדָּבָר אֲשֶׁר־יַעֲנֶה יְהוָה
ipſi Et .verbum vobis à prohibebo non : vobis indicabo , vobis
5 אֶתְכֶם אַגִּיד לָכֶם לֹא־אֶמְנַע מִכֶּם דָּבָר׃ וְהֵמָּה
, veritatis *teſtem in nobis in* Dominus Sit : Irmejahu ad dixerunt
אָמְרוּ אֶל־יִרְמְיָהוּ יְהִי יְהוָה בָּנוּ לְעֵד אֱמֶת
Dominus te miſerit quo , verbum omne juxta niſi : *fidelis* &
וְנֶאֱמָן אִם־לֹא כְּכָל־הַדָּבָר אֲשֶׁר יִשְׁלָחֲךָ יְהוָה
voce in , malum ſive , bonum Sive .faciamus ſic , nos ad tuus Deus
6 אֱלֹהֶיךָ אֵלֵינוּ כֵּן נַעֲשֶׂה׃ אִם־טוֹב וְאִם־רָע בְּקוֹל
: *audiemus* , *eum ad* te *mittentes* nos quem , noſtri Dei Domini
יְהוָה אֱלֹהֵינוּ אֲשֶׁר אֲנוּ שֹׁלְחִים אֹתְךָ אֵלָיו נִשְׁמָע
.noſtri Dei Domini *voce in audierimus cùm* ,nobis ſit bene ut
לְמַעַן אֲשֶׁר יִיטַב־לָנוּ כִּי נִשְׁמַע בְּקוֹל יְהוָה אֱלֹהֵינוּ׃
.Irmejahu ad Domini verbum fuit & ,dierum decem *fine à* fuit Et
7 וַיְהִי מִקֵּץ עֲשֶׂרֶת יָמִים וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֶל־יִרְמְיָהוּ׃
principes omnes *ad* & , Chareach filium Jochanan *ad* Vocavitque
8 וַיִּקְרָא אֶל־יוֹחָנָן בֶּן־קָרֵחַ וְאֶל כָּל־שָׂרֵי
parvo à , populum univerſum *ad* & : eo cum qui exercituum
הַחֲיָלִים אֲשֶׁר אִתּוֹ וּלְכָל־הָעָם לְמִקָּטֹן
Dominus dixit Sic : eos ad dixit Et .magnum ad uſque &
9 וְעַד־גָּדוֹל׃ וַיֹּאמֶר אֲלֵיהֶם כֹּה־אָמַר יְהוָה
faciendum cadere *ad* , *eum ad* me miſiſtis quem , Iſrael Deus
אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל אֲשֶׁר שְׁלַחְתֶּם אֹתִי אֵלָיו לְהַפִּיל
terra in manſeritis manendo Si .*ejus facies ad veſtram deprecationem*
10 תְּחִנַּתְכֶם לְפָנָיו׃ אִם־שׁוֹב תֵּשְׁבוּ בָּאָרֶץ
non & , vos plantabo & : deſtruam non & ,vos ædificabo & , hac
הַזֹּאת וּבָנִיתִי אֶתְכֶם וְלֹא אֶהֱרֹס וְנָטַעְתִּי אֶתְכֶם וְלֹא
.vobis feci quod *malum ad* me pœnitet quia : evellam
אֶתּוֹשׁ כִּי נִחַמְתִּי אֶל־הָרָעָה אֲשֶׁר עָשִׂיתִי לָכֶם׃
:*ejus faciebus à timentes* vos cujus , Babel regis *faciebus* à timeatis Ne
11 אַל־תִּירְאוּ מִפְּנֵי מֶלֶךְ בָּבֶל אֲשֶׁר־אַתֶּם יְרֵאִים מִפָּנָיו
ſalvandum ad ego vobiſcum quia : Dominus dixit,eo ab timeatis ne
אַל־תִּירְאוּ מִמֶּנּוּ נְאֻם־יְהוָה כִּי־אִתְּכֶם אֲנִי לְהוֹשִׁיעַ
,miſericordias vobis dabo Et .ejꝰ manu de vos *liberandum ad* & , vos
12 אֶתְכֶם וּלְהַצִּיל אֶתְכֶם מִיָּדוֹ׃ וְאֶתֵּן לָכֶם רַחֲמִים
.*veſtram humum* in vos faciet *redire* & : veſtri miſerebitur &
וְרִחַם אֶתְכֶם וְהֵשִׁיב אֶתְכֶם אֶל־אַדְמַתְכֶם׃
audiendum non *ad* , hac terra in habitabimus Non , vos *dicentes* ſi Et
13 וְאִם־אֹמְרִים אַתֶּם לֹא נֵשֵׁב בָּאָרֶץ הַזֹּאת לְבִלְתִּי שְׁמֹעַ
terram ſed ,Nequaquam : Dicendo .veſtri Dei Domini *voce in*
14 בְּקוֹל יְהוָה אֱלֹהֵיכֶם׃ לֵאמֹר לֹא כִּי אֶרֶץ
tubæ *vocem* & , bellum videbimus non qua ,ingrediemur Ægypti
מִצְרַיִם נָבוֹא אֲשֶׁר לֹא־נִרְאֶה מִלְחָמָה וְקוֹל שׁוֹפָר
.habitabimus ibi & , eſuriemus non pane & ; audiemus non
לֹא נִשְׁמָע וְלַלֶּחֶם לֹא־נִרְעָב וְשָׁם נֵשֵׁב׃
, Jehudah reſiduum Domini verbum · audite idcirco nunc Et
15 וְעַתָּה לָכֵן שִׁמְעוּ דְבַר־יְהוָה שְׁאֵרִית יְהוּדָה
vos Si : Iſrael Deus exercituum Dominus dixit ſic
כֹּה־אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל אִם־אַתֶּם
, Ægyptum *ingrediendum ad* veſtras facies poſueritis ponendo
שׂוֹם תְּשִׂמוּן פְּנֵיכֶם לָבֹא מִצְרַיִם
.ibi peregrinandum ad intraveritis &
וּבָאתֶם לָגוּר שָׁם׃

Verſio VULG. LAT.

3 Et annuntiet nobis Dominꝰ Deꝰ
tuus viam, per quam pergamꝰ,
4 & verbum, quod faciamꝰ. Dixit
autem ad eos Jeremias propheta;
Audivi : ecce ego oro
ad Dominum Deum veſtrum ſecundùm
verba veſtra : omne
verbum , quodcunque reſponderit
mihi, indicabo vobis ; nec
5 celabo vos quidquam. Et illi
dixerunt ad Jeremiam ; Sit Dominus
inter nos teſtis veritatis
& fidei, ſi non juxta omne verbum,
in quo miſerit te Dominꝰ
Deus tuus ad nos, ſic faciemꝰ.
6 Sive bonum eſt, ſive malum,voci
Domini Dei noſtri, ad quem
mittimꝰ te, obediemꝰ : ut benè
ſit nobis cùm audierimus vocem
7 Domini Dei noſtri. Cùm autem
completi eſſent decem dies,
factum eſt verbum Domini ad
8 Jeremiam. Vocavítque Johanan
filium Caree, & omnes
principes bellatorum, qui erant
cum eo , & univerſum populum
à minimo uſque magnum.
9 Et dixit ad eos; Hæc dicit
Dominꝰ Deus Iſrael , ad quem
miſiſtis me , ut proſternerem
preces veſtras in conſpectu ejꝰ;
10 Si quieſcentes manſeritis in terra
hac , ædificabo vos, & non
deſtruam; plantabo,& non evellam
: jam enim placatus ſum ſuper
11 malo quod feci vobis. Nolite
timere à facie regis Babylonis,
quem vos pavidi formidatis
: nolite metuere eum, dicit
Dominus : quia vobiſcum
ſum ego, ut ſalvos vos faciam,
12 & eruam de manu ejꝰ. Et dabo
vobis miſericordias, & miſerebor
veſtrî, & habitare vos
13 faciam in terra veſtra. Si autem
dixeritis vos ; Non habitabimꝰ
in terra iſta, nec audiemus vocem
14 Domini Dei noſtri, Dicentes
; Nequaquàm, ſed ad terram
Ægypti pergemus : ubi non videbimus
bellum, & clangorem
tubæ non audiemus, & famem
non ſuſtinebimus : & ibi habitabimus.
15 Propter hoc nunc audite
verbum Domini,reliquiæ Juda :
Hæc dicit Dominus exercituum,
Deus Iſrael ; Si poſueritis faciem
veſtram ut ingrediamini
Ægyptum, & intraveritis ut ibi
habitetis :

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

13 Οὕτως λέγει κύριος, Πορεύου, καὶ εἰπὸν ἀνθρώπῳ
Ἰούδα, καὶ τοῖς κατοικοῦσιν (φ) Ἱερουσαλὴμ,
Οὐ μὴ λάβητε παιδείαν (ˇ) τοῦ ἀκούειν
14 τοὺς λόγους μου; Ἔστησαν ῥῆμα υἱοὶ Ἰωναδὰβ
υἱοῦ Ῥηχὰβ, ὃ ἐνετείλατο τοῖς τέκνοις αὐτοῦ
πρὸς τὸ μὴ πιεῖν οἶνον, καὶ οὐκ (χ) ἐπίοσαν· καὶ ἐγὼ
ἐλάλησα πρὸς ὑμᾶς (ψ) ὄρθρου, καὶ ἐλάλησα,
15 καὶ οὐκ ἠκούσατε. Καὶ ἀπέστειλα πρὸς ὑμᾶς
τοὺς (ω) παῖδάς μου τοὺς προφήτας, λέγων,
Ἀποστράφητε ἕκαστος ἀπὸ τῆς ὁδοῦ αὐτοῦ τῆς
πονηρᾶς, καὶ (α) βελτίω ποιήσατε (ˇ) τὰ ἐπιτηδεύματα
ὑμῶν, καὶ οὐ πορεύεσθε ὀπίσω θεῶν
(β) ἑτέρων τοῦ δουλεύειν αὐτοῖς, καὶ οἰκήσετε
ἐπὶ τῆς γῆς, ἧς ἔδωκα ὑμῖν, καὶ τοῖς
πατράσιν ὑμῶν· καὶ οὐκ ἐκλίνατε τὰ ὦτα ὑμῶν,
16 καὶ οὐκ (γ) εἰσηκούσατε. Καὶ ἔστησαν (ϛ) υἱοὶ
Ἰωναδὰβ υἱοῦ Ῥηχὰβ τὴν ἐντολὴν τοῦ
πατρὸς αὐτῶν, ὁ δὲ (δ) λαὸς οὗτος οὐκ ἤκουσέ
17 μου. Διατοῦτο οὕτως εἶπε (ε) κύριος, Ἰδοὺ
ἐγὼ φέρω ἐπὶ Ἰούδαν καὶ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας
Ἱερουσαλὴμ πάντα τὰ κακὰ, ἃ ἐλάλησα
18 ἐπ᾽ αὐτούς. Διατοῦτο οὕτως εἶπε κύριος,
Ἐπειδὴ ἤκουσαν υἱοὶ Ἰωναδὰβ υἱοῦ Ῥηχὰβ
τὴν ἐντολὴν τοῦ πατρὸς αὐτῶν ποιεῖν (ζ) καθότι
19 ἐνετείλατο αὐτοῖς ὁ πατὴρ αὐτῶν, Οὐ
μὴ ἐκλείπῃ ἀνὴρ τῶν υἱῶν Ἰωναδὰβ υἱοῦ Ῥηχὰβ
παρεστηκὼς κατὰ πρόσωπόν μου πάσας
τὰς ἡμέρας τῆς γῆς.

MS. A. (φ) ἐν Ἱερουσαλὴμ, (ˇ) ἀκούειν (χ) ἔπιον· κἀγὼ (ψ) ὄρθρου, καὶ οὐκ εἰσηκούσατε. (ω) δούλους μου (α) βέλτιον (ˇ) ἐπιτηδεύματα (β) ἀλλοτρίων (γ) ἠκούσατε. (ϛ) οἱ υἱοὶ (δ) λαός μου οὐκ ἤκουσάν μου. (ε) κύριος, Ἐπειδὴ ἤκουσαν οἱ υἱοὶ (ζ) ὅσα

Cap. 36. ΚΕΦ. μγʹ.

1 Vulg. Lat. (α) ΕΝ ΤΩ͂ ἘΝΙΑΥΤΩ͂
ΤΩ͂ ΤΕΤΑ΄ΡΤΩ ἸΩΑΚΕῚΜ υἱοῦ (β) Ἰωσία
βασιλέως Ἰούδα, ἐγενήθη λόγος κυρίου
2 πρὸς μὲ, λέγων, Λάβε σεαυτῷ (γ) χαρτίον
βιβλίου, καὶ γράψον ἐπ᾽ (δ) αὐτοῦ πάντας
τοὺς λόγους, οὓς (ε) ἐλάλησα πρὸς
σὲ ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐπὶ Ἰούδα, καὶ
ἐπὶ πάντα τὰ ἔθνη, ἀφ᾽ ἧς ἡμέρας λαλήσαντός
μου πρὸς σὲ, ἀφ᾽ ἡμερῶν Ἰωσία
βασιλέως Ἰούδα, καὶ ἕως τῆς ἡμέρας
3 ταύτης. Ἴσως (ζ) ἀκούσεται ὁ οἶκος Ἰούδα
πάντα τὰ κακὰ, (η) ἃ ἐγὼ λογίζομαι ποιῆσαι
αὐτοῖς, ἵνα ἀποστρέψωσιν (θ) ἀπὸ τῆς ὁδοῦ
αὐτῶν τῆς πονηρᾶς, καὶ ἵλεως ἔσομαι ταῖς ἀδικίαις
4 αὐτῶν, καὶ ταῖς ἁμαρτίαις αὐτῶν. Καὶ ἐκάλεσεν
Ἱερεμίας τὸν Βαροὺχ υἱὸν Νηρίου· καὶ (ι) ἔγραψεν
ἀπὸ στόματος Ἱερεμίου πάντας τοὺς
λόγους κυρίου, οὓς (κ) ἐλάλησε πρὸς αὐτὸν,
5 εἰς χαρτίον βιβλίου. Καὶ ἐνετείλατο Ἱερεμίας
τῷ Βαροὺχ, λέγων, Ἐγὼ φυλάσσομαι,
(λ) οὐ μὴ δύναμαι εἰσελθεῖν εἰς οἶκον
6 κυρίου· Καὶ ἀναγνώσῃ ἐν τῷ (μ) χαρτίῳ
τούτῳ εἰς τὰ ὦτα τοῦ λαοῦ ἐν οἴκῳ κυρίου,
ἐν ἡμέρᾳ νηστείας, καὶ ἐν ὠσὶ παντὸς (ν) Ἰούδα
τῶν ἐρχομένων ἐκ πόλεων αὐτῶν, ἀναγνώσῃ
αὐτοῖς.

MS. A. (α) ΚΑΙ῾ ἘΝ (β) ἸΩΣΙ΄ΟΥ (γ) χάρτην (δ) αὐτοῦ (ε) ἐχρημάτισα πρὸς σὲ ἐπὶ Ἰσραὴλ, καὶ ἐπὶ Ἰούδα (ζ) ἀκούσονται οἶκος (η) ἃ ἐλάλησα ἐπ᾽ αὐτοὺς, ἵνα ἀποστράφωσιν (θ) ἀπὸ ὁδοῦ αὐτοῦ (ι) ἔγραψεν Βαροὺχ ἀπὸ (κ) ἐχρημάτισεν (λ) οὐ δύναμαι (μ) χάρτῃ (ν) τοῦ λαοῦ τῶν

Sic dicit Dominus; Vade, & 13
dic homini Juda, & habitatoribus
Hieruſalem; Non accipietis
diſciplinam audiendi verba mea?
Firmaverunt verbum filii Jonadab 14
filii Rechab, quod mandavit
filiis ſuis, non bibendi vinum, &
non (f) biberunt. Et ego loquutus
ſum ad vos (g) diluculò :
& loquutus ſum, & non audîſtis.
Et miſi ad vos pueros meos 15
(h) prophetas, dicens; Avertimini
unusquiſque à via ſua peſſima:
& meliora facite ſtudia veſtra;
& non ambulate poſt deos alios
ſerviendo eis : & habitabitis ſuper
terram, quam dedi vobis, &
patribus veſtris. Et non inclinâſtis
aurē veſtrā, & non exaudîſtis.
Et firmaverunt filii Jonadab 16
filii Rechab mandatum patris
ſui : populus autem iſte non audivit
me. Idcircò ſic dixit Dominus; 17
Ecce ego offero ſuper Judam,
& ſuper habitatores Hieruſalem,
omnia mala quæ loquutus
ſum ſuper eos. (i) Propterea 18
ſic dixit Dominus; Quoniam
audierunt filii Jonadab filii Rhechab
mandatum patris ſui, faciendo,
ſicut mandavit eis pater
eorum: Non deficiet vir filiorum 19
Jonadab filii Rhechab ſtans ante
faciē meā cunctis diebꝰ (k) terræ.

CAP. XLIII.

In (a) anno quarto Joacim 1
filii Joſiæ regis Juda, factum
eſt verbum Domini ad me, dicens;
Sume tibi volumen libri : 2
& ſcribe ſuper illud omnia verba,
quæ loquutus ſum ad te ſuper
Hieruſalem, & ſuper Judam,
& ſuper omnes gentes, ex
qua die (b) loquente me ad te,
à diebus Joſiæ regis Juda, &
uſque ad diem hanc. Fortaſſe 3
audiet domus Juda omnia mala,
quæ ego cogito facere eis : ut
avertantur à via ſua peſſima :
& propitius ero iniquitatibus eorum,
& peccatis eorum. Et 4
vocavit Hieremias Baruch filium
Neriæ : & ſcripſit ex ore
Hieremiæ omnia verba Domini,
quæ loquutus eſt ad eum, in volumine
libri. Et mandavit Hieremias 5
Baruch, dicens; Ego cuſtodior :
non potero ingredi in
domum Domini. (c) Et leges 6
in volumine iſto, in auribus populi,
in domo Domini, in die
jejunii; & in auribus univerſi
Juda, venientium de civitatibus
ſuis, leges eis.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 וִיחַוֵּי לָנָא יְיָ אֱלָהָךְ יָת אוֹרְחָא דִּנְהָךְ בַּהּ וְיָת פִּתְגָמָא דְּנַעְבֵּיד׃ וַאֲמַר לְהוֹן יִרְמְיָה נְבִיָּא
4 שְׁמַעִית הָא אֲנָא מְצַלֵּי קֳדָם יְיָ אֱלָהֲכוֹן כְּפִתְגָמֵיכוֹן וִיהֵי כָּל פִּתְגָם דִּיתִיב יְיָ יָתְכוֹן אֲחַוֵּי
5 לְכוֹן לָא אֶמְנַע מִנְּכוֹן פִּתְגָם׃ וְאִנּוּן אֲמַרוּ לְיִרְמְיָה יְהֵי מֵימְרָא דַּייָ בְּנָא לְסָהִיד קְשׁוֹט
6 וּמְהֵימַן אִם לָא כְּכָל פִּתְגָמַיָּא דִּי שַׁלְחָנָךְ יְיָ אֱלָהָךְ לְוָתַנָא כֵּן נַעְבֵּיד׃ אִם טָב וְאִם בִּישׁ
לְמֵימְרָא דַּייָ אֱלָהָנָא דִּי אֲנַחְנָא שָׁלְחִין יָתָךְ לִקְדָמוֹהִי נְקַבֵּל בְּדִיל דְּיִיטַב לָנָא אֲרֵי נְקַבֵּל
7 לְמֵימְרָא דַּייָ אֱלָהָנָא׃ וַהֲוָה מִסּוֹף עַשְׂרָא יוֹמִין וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִם
8 יִרְמְיָה׃ וּקְרָא לְיוֹחָנָן בַּר קָרֵחַ וּלְכָל רַבָּנֵי חֵילְוָתָא דְּעִמֵּיהּ וּלְכָל עַמָּא לְמִזְעֵירָא וְעַד
9 רַבָּא׃ וַאֲמַר לְהוֹן כִּדְנָן אֲמַר יְיָ אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל דְּשַׁלַּחְתּוּן יָתִי לִקְדָמוֹהִי לְמִבְעֵי
10 בָּעוּתְכוֹן קֳדָמוֹהִי׃ אִם מִתַּב תֵּיתְבוּן בְּאַרְעָא הָדָא וְאֶבְנֵי יָתְכוֹן וְלָא אֶפְגַּר וְאַקִּים יָתְכוֹן
11 וְלָא אֲטַלְטֵל אֲרֵי תָבֵית מִן בִּישְׁתָא דַּעֲבַדִית לְכוֹן׃ לָא תִדְחֲלוּן מִן קֳדָם מַלְכָּא דְבָבֶל
דִּי אַתּוּן דָּחֲלִין מִן קֳדָמוֹהִי לָא תִדְחֲלוּן מִנֵּיהּ אֲמַר יְיָ אֲרֵי בְּסַעְדְּכוֹן מֵימְרִי לְמִפְרַק
12 יָתְכוֹן וּלְשֵׁיזָבָא יָתְכוֹן מִן יְדֵיהּ׃ וְאֶתֵּן לְכוֹן רַחֲמִין וִירַחֵים עֲלֵיכוֹן וִיתִיב יָתְכוֹן
13 לְאַרְעֲכוֹן׃ וְאִם אָמְרִין אַתּוּן לָא נִתֵּיב בְּאַרְעָא הָדָא בְּדִיל דְּלָא לְקַבָּלָא לְמֵימְרָא דַּייָ
14 אֱלָהֲכוֹן׃ לְמֵימַר לָא אֱלָהֵין לְאַרְעָא דְמִצְרַיִם נֵיעוֹל דְּלָא נֶחֱזֵי עָבְדֵי קְרָבָא וְקָל שׁוֹפָרָא
15 לָא נִשְׁמַע וּלְלַחְמָא לָא נִכְפַּן וְתַמָּן נִתֵּיב׃ וּכְעַן בְּכֵן קַבִּילוּ פִּתְגָמָא דַּייָ שְׁאָרָא דְּבֵית
יְהוּדָה כִּדְנָן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל אִם אַתּוּן שַׁוָּאָה תְּשַׁוּוֹן אַפֵּיכוֹן לְמֵיעַל
לְמִצְרַיִם וְתֵיעֲלוּן לְאִתּוֹתָבָא תַּמָּן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et indicet nobis Dn̄s Deus tuus viam in qua ambulemus, & verbum quod 3
faciamus. Et dixit eis Jeremias propheta, Audivi : Ecce ego oro coram 4
Dn̄o Deo veſtro juxta verba veſtra ; & erit, omne verbum quod reſponderit
Dn̄s vobis, annuntiabo vobis, & non prohibebo à vobis verbum.
Ipſi autem dixerunt ad Jeremiam, Sit Verbum Dn̄i nobis in teſtem verum 5
& fidelem,ſi non juxta omnia verba propter quæ miſerit te Dn̄s Deus tuus
ad nos, ſic faciemus : Sive bonum ſive malum : verbo Dn̄i Dei noſtri ad 6
quem mittimus nos te, obediemus, ut bene ſit nobis, cùm ſuſceperimus
ſermonem Dn̄i Dei noſtri. Et factum eſt poſt decem dies, & factum eſt 7
verbum prophetiæ à facie Dn̄i cum Jeremia. Et vocavit Johanan filium 8
Caree, & omnes principes exercitus qui erant cum eo, & omnem populum,
à minimo uſque ad maximum. Et dixit eis, Hæc dicit Dn̄s Deus Iſ- 9
rael, ante cujus conſpectum miſiſtis me ut deprecarer deprecationem veſtram
coram eo. Si habitando habitaveritis in terra iſta, ædificabo vos, 10
& non deſtruam ; & ſuſtentabo vos, & non faciam tranſmigrare, quia
converſus ſum à malo quod feci vobis. Ne timeatis à facie regis Babylonis, 11
à facie cujus vos timetis:ne timeatis ab eo,dicit Dn̄s;quia in adjutorium
veſtrum eſt Verbum meum , ut ſalvem vos, & liberem vos de manu
ejus. Et dabo vobis miſerationes : & miſerebitur veſtri, & reducet vos 12
in terram veſtram. Si autem vos dicitis, Non habitabimus in terra iſta, 13
ut non obediatis verbo Dn̄i Dei veſtri : Dicentes : Nequaquam,ſed in 14
terram Ægypti ingrediemur,ubi non videbimus bellatores,& vocem tubæ
non audiemus, & famem panis non ſuſtinebimus , & ibi habitabimus.
Et nunc igitur ſuſcipite verbum Dn̄i reliquiæ domus Juda : hæc dicit 15
Dominus exercituum Deus Iſrael , Si vos ponendo poſueritis faciem
veſtram ut ingrediamini in Ægyptum, & ingreſſi fueritis ad habitandum ibi:

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

3 ܘܢܚܘܐ ܠܢ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ ܐܘܪܚܐ ܕܢܐܙܠ ܒܗ. ܘܦܬܓܡܐ ܕܢܥܒܕ. * ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ ܐܪܡܝܐ *
4 ܢܒܝܐ. ܫܡܥܬ. ܘܗܐ ܡܨܠܐ ܐܢܐ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ. ܐܝܟ ܦܬܓܡܝܟܘܢ. ܘܟܠ ܦܬܓܡܐ
ܕܢܥܢܝܟܘܢ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ. ܐܚܘܝܟܘܢ. ܘܠܐ ܐܟܣܐ ܡܢܟܘܢ ܡܠܬܐ. * ܘܗܢܘܢ ܐܡܪܘ 5
ܠܐܪܡܝܐ. ܢܗܘܐ ܒܢ ܡܪܝܐ ܣܗܕܐ ܫܪܝܪܐ ܘܡܗܝܡܢܐ. ܐܠܐ ܐܝܟ ܦܬܓܡܐ ܕܢܫܕܪܟ ܡܪܝܐ
ܐܠܗܟ ܠܘܬܢ. ܗܟܢܐ ܢܥܒܕ. * ܐܢ ܛܒܬܐ ܘܐܢ ܒܝܫܬܐ. ܒܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܢܫܡܥ. 6
ܕܡܫܕܪܝܢܢ ܠܟ ܠܘܬܗ. ܘܢܛܐܒ ܠܢ. ܟܕ ܢܫܡܥ ܒܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. * ܘܡܢ ܒܬܪ ܥܣܪܐ 7
ܝܘܡܝܢ. ܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܘܬ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ. * ܘܩܪܐ ܠܝܘܚܢܢ ܒܪ ܩܘܪܚ. ܘܠܟܠܗܘܢ 8
ܪܫܝ ܚܝܠܐ ܕܥܡܗ. ܘܠܟܠܗ ܥܡܐ. ܡܢ ܙܥܘܪܐ ܘܥܕܡܐ ܠܩܫܝܫܐ. ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ.
* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܕܫܕܪܬܘܢܢܝ ܠܘܬܗ ܠܡܪܡܝܘ ܒܥܘܬܟܘܢ 9
ܩܕܡܘܗܝ. * ܐܢ ܬܬܒܘܢ ܒܐܪܥܐ ܗܕܐ. ܐܒܢܝܟܘܢ ܘܠܐ ܐܣܚܘܦܟܘܢ. ܘܐܢܨܒܟܘܢ ܘܠܐ 10
ܐܥܩܪܟܘܢ. ܘܐܬܬܘܝ ܡܢ ܒܝܫܬܐ ܕܥܒܕܬ ܠܟܘܢ. * ܠܐ ܬܕܚܠܘܢ ܡܢ ܩܕܡ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ 11
ܕܐܢܬܘܢ ܕܚܠܝܢ ܡܢܗ. ܠܐ ܬܕܚܠܘܢ ܡܢܗ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܥܡܟܘܢ ܐܢܐ ܐܡܪ
ܡܪܝܐ. ܠܡܦܪܩܟܘܢ ܘܠܡܦܨܝܘܬܟܘܢ ܡܢ ܐܝܕܘܗܝ. * ܘܐܬܠ ܠܟܘܢ ܪܚܡܐ 12
ܘܐܪܚܡܟܘܢ. ܘܐܘܬܒܟܘܢ ܒܐܪܥܟܘܢ. * ܘܐܢ ܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܠܐ ܢܬܒ ܚܢܢ ܒܐܪܥܐ ܗܕܐ. ܡܛܠ 13
ܕܠܐ ܬܫܡܥܘܢ ܒܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ. * ܘܐܡܪܬܘܢ ܠܐ ܐܠܐ. ܠܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ ܢܥܘܠ. ܕܠܐ 14
ܢܚܙܐ ܩܪܒܐ. ܘܩܠܐ ܕܫܝܦܘܪܐ ܠܐ ܢܫܡܥ. ܘܠܟܦܢܐ ܠܐ ܢܟܦܢ. ܘܬܡܢ ܢܬܒ. * ܗܫܐ ܫܡܥܘ 15
ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܫܪܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܢ ܐܢܬܘܢ
ܬܣܝܡܘܢ ܐܦܝܟܘܢ ܠܡܥܠ ܠܡܨܪܝܢ. ܘܬܐܙܠܘܢ ܠܡܥܡܪ ܬܡܢ.

Ut oſtendat nobis Dominus Deus noſter viam 3
quâ nobis ambulandum eſt, & res quæ nobis
agendæ. Quibus dixit Jeremia propheta, 4
Audio, ecce oraturꝰ ſum Dominum Deum veſtrum
juxta ſermonem veſtrum: & quemcunque
ſermonem reſponderit vobis Dominus
Deus veſter, indicaturus vobis, nec ullum vos
verbum celaturus. Viciſſim illi dixerunt Jeremiæ, 5
Sit adverſùm nos Dominꝰ teſtis verax
& fidelis, niſi juxta ſermonem cum quo miſerit
te Dominus Deus tuus ad nos, ita fecerimus.
Sive bonum ſive malum fuerit, voci Domini 6
Dei noſtri ad quem *te* mittemus, obtemperabimus;
nam benè ſucceder nobis, cùm
paruerimus voci Domini Dei noſtri. Exactis 7
itaque decem diebus, fuit ſermo Domini ad
Jeremiam prophetam: Unde convocatis Johanne 8
Corahi filio, & cunctis copiarum ducibus
qui erant cum illo, totóque populo à
juniore ad ſeniorem uſque, dixit eis; Sic ait 9
Dominus Deus Iſraelis ad quem me miſiſtis ut
proponerem ei petitionem veſtram. Si manſeritis 10
in terra iſta, ædificabo vos & non deſtruam,
plantabo vos & non evellam, deſiſtámque
à malo quod intuli vobis. Ne formidetis 11
regem Babyloniæ quem pertimeſcitis;
ne formidetis eum, dicit Dominus; quia
vobiſcum ſum, ait Dominus, ad ſalvandum &
eripiendum vos è manibus ejus: Miſericordiâ 12
vobiſcum utar, & veſtrî miſertus faciam
ut habitetis in terra veſtra. Verùm ſi dixeritis, 13
Nequaquam manſuri ſumus in hac terra,
quò minùs obtemperetis voci Domini Dei
veſtri: Et dixeritis, Non ita; terram Ægypti 14
ingrediemur, ut non videamus bellum, tubæ
ſonitum non audiamus, neque panis penuriâ
laboremus; denique illic habitabimus:
Igitur audite ſermonem Domini, O reliquiæ 15
Judæ. Sic ait Domiuus potentiſſimus Deus Iſraelis,
Si vos facies veſtras verteritis ad recipiendum
vos in Ægyptum, & ingreſſi fueritis
ut ibi commoremini;

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

13 * هكذا يقول الرب * امض وقل لرجل يهودا وللسكان في ايروسليم * اما تقبلون ادبا لتسمعوا
14 اقوالي * اقام بنو يوناداب بن ريخاب الكلمة التي اوصي بها اولاده الا يشربوا خمرا فلم يشربوا *
15 وانا تكلمت معكم سحرا فلم تسمعوا * وارسلت اليكم عبيدي الانبياء قايلا * ارجعوا كل
واحد من طريقه السري * واصلحوا اعمالكم جيدا * ولا تسلكوا خلف الالهة الغريبة لتعبدوا
لها * وتسكنون على الارض التي اعطيتها لكم ولابايكم * ولا تميلوا اذانكم * فلم تسمعوا *
16 * واقام بنو يوناداب بن ريخاب وصية ابيهم * وشعبي لم يسمع لي * لاجل هذا هكذا قال 17
الرب * ها انا اجلب على يهودا وعلى السكان بايروسليم * جميع الشرور التي تكلمت بها عليهم *
18 * لاجل هذا هكذا قال الرب * من اجل ان بني يوناداب بن ريخاب سمعوا وصية ابيهم
ليصنعوا كلما امرهم به ابوهم * لا يعدم رجل من بني يوناداب بن ريخاب يقوم لوجهي
جميع ايام الارض *

Sic ait Dominus, Vade & dic viro Judæ 3
& habitantibus in Jeruſalem, An non
capietis diſciplinam ut audiatis ſermones
meos? Præſtiterunt filii Jonadabi 14
filii Rechabi verbum quod præcepit filiis
ſuis ne vinum biberent, & non biberunt:
Ego verò allocutus ſum vos diluculò,
& non audîſtis: Miſi ad vos ſervos 15
meos prophetas, dicens; Retrahite vos
quiſque à via ſua mala, bene inſtituite
actiones veſtras, & ne ambuletis poſt deos
alienos, ut adoretis eos; ſic habitabitis
ſuper terram quam dedi vobis &
majoribus veſtris: & ne abducatis aures
veſtras: at non acquieviſtis. Sanè 16
præſtiterunt filii Jonadabi filii Rechabi
monitum patris ſui; populus verò meus
non obtemperavit mihi. Iccirco ſic ait 17
Dominus; Ecce ego inducam ſuper Judam
& ſuper habitantes in Jeruſalem,
cuncta mala quæ locutus ſum contra eos.
Quamobrem ſic dixit Dominus; Quia 18
filii Jonadabi filii Rechabi obtemperârunt
mandato patris ſui, perficientes quicquid
præcepit eis pater ſuus; non deficiet
vir de filiis Jonadabi filii Rechabi,
qui ſtet coram facie mea cunctis terræ
diebus.

* الفصل الثالث والاربعون * * الاصحاح الثامن والعشرون *

CAP. XLIII.

Textus vigeſimus octavus.

1 * وفي السنة الرابعة ليواقيم بن يوسيا ملك يهودا * صار قول الرب الي قايلا *
2 * خذ لك قرطاس سفر * واكتب فيه جميع الاقوال التي اظهرتها لك على اسرايل وعلى
يهودا وعلى جميع الامم * منذ يوم تكلمي معك من ايام يوسيا ملك يهودا الى هذا اليوم *
3 * لعلهم يسمعون بيت يهودا جميع الشرور التي تكلمت بها عليهم * كي يرجعوا من
4 طريقهم الردية * واصير راحما لظلاماتهم وخطاياهم * ودعا ارميا باروخ بن نيريو * وكتب
5 باروخ من فم ارميا جميع اقوال الرب التي اوحي بها اليه في قرطاس سفر * واوصي ارميا باروخ
6 قايلا * انا انحفظ ولا اقدر ان ادخل الى بيت الرب * فتقرا في هذا القرطاس لاذان
الشعب في بيت الرب في يوم الصيام * وفي اذان كل الشعب الاتيين من مدنهم
تقرا لهم *

ANno præterea quarto Joacimi 1
filii Joſiæ regis Judæ, factꝰ eſt ad
me ſermo Domini dicentis;

Sume tibi chartam libelli, & ſcribe in 2
ea cunctos ſermones quos indicavi tibi
de Jeruſalem, de Juda, & de omnibus
populis, inde à die colloquii meì tecum
à diebus Joſiæ regis Judæ, ad hodiernum
uſque diem. Forſitan audient domus 3
Judæ cuncta mala quæ locutus
ſum contra eos; ut retrahant ſe à via
ſua peſſima, ſiamque propitius perverſitatibus
& peccatis eorum. Advocavit 4
ergò Jeremia Baruchum Neriæ filium:
cùmque ſcripſiſſet Baruch ex ore Jeremiæ
cunctos Domini ſermones quos
revelaverat ei, in charta libelli; Præcepit 5
Jeremia Barucho, dicens; Ego ſub
cuſtodia ſum, nec poſſum ingredi domum 6
Domini: Legas igitur chartam
iſtam audiente populo, in domo Domini,
die jejunii: audiente quoque totâ turbâ
venientium ex urbibus ſuis, legas:

ירמיה׃ מג

comprehendet ibi , *eo ab timentes* vos quo , gladius erit Et
16 וְהָיְתָה הַחֶרֶב אֲשֶׁר אַתֶּם יְרֵאִים מִמֶּנָּה שָׁם תַּשִּׂיג
, *ea ab verentes vos* qua , fames & : Ægypti terra in vos
אֶתְכֶם בְּאֶרֶץ מִצְרָיִם וְהָרָעָב אֲשֶׁר־אַתֶּם דֹּאֲגִים מִמֶּנּוּ
erunt Et .moriemini ibi & , Ægypto *vos poſt* adhærebit ibi
17 שָׁם יִדְבַּק אַחֲרֵיכֶם מִצְרַיִם וְשָׁם תָּמֻתוּ׃ וְיִהְיוּ
, Ægyptum *intrandum ad* ſuas facies poſuerunt qui , viri omnes
כָל־הָאֲנָשִׁים אֲשֶׁר־שָׂמוּ אֶת־פְּנֵיהֶם לָבוֹא מִצְרַיִם
: peſte *in* & ,fame *in* , gladio *in* morientur , ibi peregrinandum ad
לָגוּר שָׁם יָמוּתוּ בַּחֶרֶב בָּרָעָב וּבַדָּבֶר
ego quod , mali *faciebus* à ,evaſor & ,ſuperſtes eis erit non &
וְלֹא־יִהְיֶה לָהֶם שָׂרִיד וּפָלִיט מִפְּנֵי הָרָעָה אֲשֶׁר אֲנִי
Deus exercituum Dominus dixit ſic Nam .eos ſuper *adducens*
18 מֵבִיא עֲלֵיהֶם׃ כִּי כֹה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי
habitatores ſuper mea ira & ,meus *naſus* eſt effuſus Sicut : Iſrael
יִשְׂרָאֵל כַּאֲשֶׁר נִתַּךְ אַפִּי וַחֲמָתִי עַל־יֹשְׁבֵי
: Ægyptum *vos intrando in* , vos ſuper mea ira effundetur ſic : Jeruſalaim
יְרוּשָׁלַםִ כֵּן תִּתַּךְ חֲמָתִי עֲלֵיכֶם בְּבֹאֲכֶם מִצְרָיִם
, maledictionem in & , ſtuporem in & , *execrationem* in eritis &
וִהְיִיתֶם לְאָלָה וּלְשַׁמָּה וְלִקְלָלָה
.iſtum locum ultrà videbitis non & ; opprobrium in &
וּלְחֶרְפָּה וְלֹא־תִרְאוּ עוֹד אֶת־הַמָּקוֹם הַזֶּה׃
intretis Ne : Jehudah reſiduum vos ſuper Dominus eſt Locutus
19 דִּבֶּר יְהוָה עֲלֵיכֶם שְׁאֵרִית יְהוּדָה אַל־תָּבֹאוּ
.hodie vos *in ſum conteſtatus* quòd ſciatis ſciendo : Ægyptum
מִצְרָיִם יָדֹעַ תֵּדְעוּ כִּי־הַעִידֹתִי בָכֶם הַיּוֹם׃
me miſiſtis vos nam ,veſtras animas *in* feciſtis errare *Quia*
20 כִּי הִתְעֵתֶים בְּנַפְשׁוֹתֵיכֶם כִּי־אַתֶּם שְׁלַחְתֶּם אֹתִי
Dominum ad nobis pro Ora : dicendo,veſtrum Deum Dominum ad
אֶל־יְהוָה אֱלֹהֵיכֶם לֵאמֹר הִתְפַּלֵּל בַּעֲדֵנוּ אֶל־יְהוָה
,noſter Deus Dominus dixerit quæ omnia juxta & , noſtrum Deum
אֱלֹהֵינוּ וּכְכֹל אֲשֶׁר יֹאמַר יְהוָה אֱלֹהֵינוּ
non & , hodie vobis annuntiavi Et .faciemus & ,nobis annuntia ſic
21 כֵּן הַגֶּד־לָנוּ וְעָשִׂינוּ׃ וָאַגִּד לָכֶם הַיּוֹם וְלֹא
me miſit quibus univerſis & ,veſtri Dei Domini *voce in audiviſtis*
שְׁמַעְתֶּם בְּקוֹל יְהוָה אֱלֹהֵיכֶם וּלְכֹל אֲשֶׁר־שְׁלָחַנִי
peſte *in* & ,fame *in* gladio *in* quòd ,ſciatis ſciendo nunc Et .vos ad
22 אֲלֵיכֶם׃ וְעַתָּה יָדֹעַ תֵּדְעוּ כִּי בַּחֶרֶב בָּרָעָב וּבַדֶּבֶר
.ibi peregrinandum ad intrare *voluiſtis* quem loco in ,moriemini
תָּמוּתוּ בַּמָּקוֹם אֲשֶׁר חֲפַצְתֶּם לָבוֹא לָגוּר שָׁם׃

CAP. XLIII. מג

,populum omnem ad loqui Irmejahu *conſummare ſecundū* fuit Et
1 וַיְהִי כְּכַלּוֹת יִרְמְיָהוּ לְדַבֵּר אֶל־כָּל־הָעָם אֶת־
eum miſerat quibus , eorum Dei DOMINI verba univerſa
כָּל־דִּבְרֵי יְהוָה אֱלֹהֵיהֶם אֲשֶׁר שְׁלָחוֹ
.iſta verba omnia , eos ad eorum Deus DOMINUS
יְהוָה אֱלֹהֵיהֶם אֲלֵיהֶם אֵת כָּל־הַדְּבָרִים הָאֵלֶּה׃
, Chareach filius Jochanan & , Hoſahajah filius Hazariah dixit Et
2 וַיֹּאמֶר עֲזַרְיָה בֶן־הוֹשַׁעְיָה וְיוֹחָנָן בֶּן־קָרֵחַ
Mendacium : Irmejahu ad dicentes , ſuperbi viri omnes &
וְכָל־הָאֲנָשִׁים הַזֵּדִים אֹמְרִים אֶל־יִרְמְיָהוּ שֶׁקֶר
: dicendo , noſter Deus Dominus te miſit non , *loquens* tu
אַתָּה מְדַבֵּר לֹא שְׁלָחֲךָ יְהוָה אֱלֹהֵינוּ לֵאמֹר
Sed .ibi peregrinandum ad , Ægyptum ingrediamini Non
3 לֹא־תָבֹאוּ מִצְרַיִם לָגוּר שָׁם׃ כִּי
dandum ad , nos adverſus te *incitans* Nerijah filius Baruch
בָּרוּךְ בֶּן־נֵרִיָּה מַסִּית אֹתְךָ בָּנוּ לְמַעַן תֵּת
tranſportandum ad & , nos *faciendum mori ad* , Chaſdim manum in nos
אֹתָנוּ בְיַד־הַכַּשְׂדִּים לְהָמִית אֹתָנוּ וּלְהַגְלוֹת
.Babel nos
אֹתָנוּ בָבֶל׃

Verſio VULG. LAT.

16 Gladius, quem vos formidatis, ibi comprehendet vos in terra Ægypti: & fames, pro qua eſtis ſoliciti, adhærebit vobis in Ægypto, & ibi moriemini. 17 Omnéſque viri, qui poſuerunt faciem ſuam ut ingrediantur Ægyptum, ut habitent ibi, morientur gladio, & fame, & peſte: null⁹ de eis remanebit, nec effugiet à facie mali, quod ego afferam 18 ſuper eos. Quia hæc dicit Dominus exrcituum, Deus Iſrael; Sicut conflat⁹ eſt furor me⁹, & indignatio mea ſuper habitatores Jeruſalem: ſic conflabitur indignatio mea ſuper vos, cùm ingreſſi fueritis Ægyptum, & eritis in jusjurandum, & in ſtuporem, & in maledictum, & in opprobrium: & nequaquàm ultrà 19 videbitis locum iſtum. Verbum Domini ſuper vos, reliquiæ Juda; Nolite intrare Ægyptum: ſcientes ſcietis quia 20 obteſtatus ſum vos hodiè, Quia decepiſtis animas veſtras: vos enim miſiſtis me ad Dominum Deum noſtrum, dicentes; Ora pro nobis ad Dominum Deum noſtrum, & juxta omnia quæcunque dixerit tibi Dominus Deus noſter, ſic annuntia no- 21 bis, & faciemus. Et annuntiavi vobis hodiè, & non audîſtis vocem Domini Dei veſtri, ſuper univerſis pro qui- 22 bus miſit me ad vos. Nunc ergò ſcientes ſcietis, quia gladio, & fame, & peſte moriemini in loco, ad quem voluiſtis intrare ut habitaretis ibi.

CAP. XLIII.

1 FActum eſt autem, cùm complêſſet Jeremias loquens ad populum univerſos ſermones Domini Dei eorum, pro quibus miſerat eum Domin⁹ De⁹ eorum 2 ad illos, omnia verba hæc: Dixit Azarias fili⁹ Oſaiæ, & Johanan fili⁹ Caree, & omnes viri ſuperbi, dicentes ad Jeremiam; Mendacium tu loqueris: non miſit te Domin⁹ De⁹ noſter, dicens; Ne ingrediamini Ægyptum ut 3 habitetis illîc. Sed Baruch filius Neriæ incitat te adverſùm nos, ut tradat nos in manus Chaldæorum, ut interficiat nos, & traduci faciat in Babylonem.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

7 Ἴσως πεσεῖται ἔλεος αὐτῶν κατὰ πρόσωπον κυρίου, ϗ ἀποστρέψουσιν (ˢ) ἐκ τῆς ὁδοῦ αὐτῶν τῆς πονηρᾶς, ὅτι μέγας ὁ (ξ) θυμὸς ϗ ἡ ὀργὴ κυρίου, ἣν ἐλάλησεν ἐπὶ τὸν λαὸν τοῦτον. 8 Καὶ ἐποίησε Βαροὺχ κατὰ πάντα ἃ ἐνετείλατο αὐτῷ Ἱερεμίας, τοῦ ἀναγνῶναι ἐν τῷ βιβλίῳ τοὺς λόγους κυρίου ἐν οἴκῳ 9 κυρίου. Καὶ ἐγενήθη ἐν τῷ ἔτει τῷ (ο) ὀγδόῳ τῷ βασιλεῖ Ἰωακεὶμ ἐν τῷ μηνὶ τῷ ἐνάτῳ, ἐξεκκλησίασαν νηστείαν κατὰ πρόσωπον κυρίου πᾶς ὁ λαὸς (π) ἐν Ἱερουσαλὴμ, 10 ϗ (ρ) οἶκος Ἰούδα. Καὶ ἀνέγνωσε Βαροὺχ ἐν τῷ βιβλίῳ (σ) τοὺς λόγους Ἱερεμίου ἐν οἴκῳ κυρίου, ἐν οἴκῳ Γαμαρίου υἱοῦ Σαφὰν τοῦ γραμματέως, ἐν τῇ αὐλῇ τῇ ἐπάνω ἐν (ˇ) προθύροις πύλης τοῦ οἴκου κυρίου τῆς και- 11 νῆς, (τ) ϗ ἐν ὠσὶ παντὸς τοῦ λαοῦ. Καὶ ἤκουσε Μιχαίας υἱὸς Γαμαρίου υἱοῦ Σαφὰν (υ) ἅπαντας τοὺς λόγους κυρίου, ἐκ τοῦ βιβλίου, 12 Καὶ κατέβη εἰς (φ) οἰκίαν τοῦ βασιλέως, εἰς τὸν οἶκον τοῦ γραμματέως, ϗ ἰδοὺ ἐκεῖ πάντες οἱ ἄρχοντες ἐκάθηντο, Ἐλισαμὰ ὁ γραμματεὺς, ϗ Δαλαίας υἱὸς Σελεμίου, ϗ (χ) Ἰωνάθαν υἱὸς Ἀχοβὼρ, ϗ Γαμαρίας υἱὸς Σαφὰν, ϗ Σεδεκίας υἱὸς Ἀνανίου, ϗ 13 πάντες οἱ ἄρχοντες· Καὶ ἀνήγγειλεν αὐτοῖς Μιχαίας πάντας τοὺς λόγους οὓς ἤκουσεν ἀναγινώσκοντος (ˇ) Βαροὺχ εἰς τὰ ὦτα 14 τοῦ λαοῦ, Καὶ ἀπέστειλαν πάντες οἱ ἄρχοντες πρὸς Βαροὺχ υἱὸν Νηρίου, τὸν (ψ) Ἰουδὶν υἱὸν Ναθανίου, υἱοῦ (ω) Σελεμίου, υἱοῦ Χουσὶ, λέγοντες, Τὸ (α) χαρτίον ἐν ᾧ σὺ ἀναγινώσκεις ἐν αὐτῷ ἐν ὠσὶ τοῦ λαοῦ, λάβε αὐτὸ εἰς τὴν χεῖρά σου, ϗ ἧκε. ϗ ἔλαβε Βαροὺχ (β) τὸ χαρτίον, ϗ κατέβη πρὸς 15 αὐτούς. Καὶ (γ) εἶπον αὐτῷ, Πάλιν ἀνάγνωθι εἰς τὰ ὦτα ἡμῶν. ϗ ἀνέγνω Βαροὺχ. 16 Καὶ ἐγενήθη ὡς ἤκουσαν πάντας τοὺς λόγους, συνεβουλεύσαντο ἕκαστος πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ, ϗ (δ) εἶπον, Ἀναγγέλλοντες ἀναγγείλωμεν τῷ βασιλεῖ (·) ἅπαντας τοὺς 17 λόγους τούτους. Καὶ τὸν Βαροὺχ ἠρώτησαν, λέγοντες, (ε) Ποῦ ἔγραψας πάντας τοὺς λό- 18 γους τούτους; Καὶ εἶπε Βαροὺχ, Ἀπὸ (ζ) στόματος αὐτοῦ ἀνήγγειλέ μοι Ἱερεμίας πάντας τοὺς λόγους τούτους, (η) ϗ ἔγραφον 19 ἐν βιβλίῳ. Καὶ (θ) εἶπον τῷ Βαροὺχ, Βάδισον, ϗ κατακρύβηθι σὺ ϗ Ἱερεμίας, ἄν- 20 θρωπος μὴ γνώτω ποῦ ὑμεῖς. Καὶ εἰσῆλθον πρὸς τὸν βασιλέα εἰς τὴν αὐλὴν, ϗ τὸ (ι) χαρτίον ἔδωκαν φυλάσσειν ἐν οἴκῳ Ἐλισαμά. ϗ ἀνήγγειλαν τῷ βασιλεῖ πάντας τοὺς λόγους τούτους.

Fortaſſe cadet miſericordia eorum ante faciem Domini, & avertent ſe à via ſua peſſima: quia magnus eſt furor, & ira Domini, quam loquutus eſt ſuper populum iſtum. Et fecit Baruch ſecundùm omnia, quæ mandavit ei Hieremias, legendo in libro verba Domini in domo Domini. Et factum eſt in anno (d) octavo regi Joacim in menſe nono, convocaverunt jejunium ad faciem Domini, omnis populus in Hieruſalem, & domus Juda. Et legit Baruch in libro verba Hieremiæ in domo Domini, in domo Gamariæ filii Saphan ſcribæ, in atrio ſuperiore, in veſtibulis portæ domûs Domini novæ, & in auribus univerſi populi. Et audivit Michæas filius Gamariæ filii Saphan omnia verba Domini, ex libro: Et deſcendit in domū regis, in domum ſcribæ: & ecce ibi omnes principes ſedebant, Eliſama ſcriba, & Dalæas filius Selemiæ, & Jonathan filius Acchobor, & Gamarias filius Saphan: & Sedecias filius Ananiæ, & omnes principes. Et annuntiavit eis Michæas omnia verba quæ audiverat legentem Baruch in auribus populi. Et miſerunt omnes principes ad Baruch filium Neriæ, Judin filium Nathaniæ, filii Selemiæ, filii Chuſi, dicentes; Volumen, in quo tu legis in eo in auribus populi, ſume illud in manu tua, & veni. Et ſumpſit Baruch volumen, & deſcendit ad eos. Et dixerunt ei; Iterum lege in auribus noſtris. Et legit Baruch. Et factum eſt, ut audierunt omnia verba, conſultaverunt unuſquiſq; ad proximum ſuum, & dixerunt; Annuntiantes annuntiemus regi omnia verba hæc. Et interrogaverunt Baruch, dicentes; (e) ubi ſcripſiſti omnes ſermones iſtos? Et dixit Baruch; Ex ore ſuo annuntiabat mihi Hieremias omnia verba hæc, & ſcribebam in libro. Et dixerunt ad Baruch; Vade, & abſcondere tu, & Hieremias: homo non ſciat, ubi vos. Et ingreſſi ſunt ad regem in atrium: & volumen dederunt ad cuſtodiendum in domo Eliſama. Et annuntiaverunt regi omnia verba iſta.* 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20

MS. A. (ˢ) ἀπὸ (ξ) θυμὸς κυρίου, ϗ ἡ ὀργὴ, ἣν ἐλάλησεν κύριος ἐπὶ τὸν τόπον τοῦτον. (ο) πέμπτῳ Ἰωακεὶμ βασιλεῖ ἐν (π) εἰς (ρ) ὁ οἶκος (σ) λόγους (ˇ) προθύροις οἴκου (τ) εἰς τὰ ὦτα (υ) πάντας (φ) οἶκον (χ) Νάθαν υἱὸς Ἀχοβὼρ, (ˉ) τοῦ Βαροὺχ (ψ) Ἰουδεὶ (ω) Σαλαμίου, (α) βιβλίον ἐν ᾧ ἀναγινώσκεις (β) υἱὸς Νηρίου τὸ χαρτίον ἐν χειρὶ αὐτοῦ, ϗ (γ) εἶπαν (δ) εἶπαν, Ἀναγγελοῦντες ἀναγγείλωμεν (·) πάντας (ε) Πόθεν (ζ) στόματος ἀνήγγειλεν (η) κἀγὼ (θ) εἶπαν οἱ ἄρχοντες πρὸς Βαροὺχ, Βάδισον ϗ κρύβηθι σὺ, ϗ Ἱερεμίας, ϗ ἄνθρωπος μὴ γνῶ (ι) βιβλίον

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 וּתְהֵי חַרְבָּא דִּי אַתּוּן דָּחֲלִין מִנַּהּ תַּמָּן תַּדְבֵּיק יַתְכוֹן בְּאַרְעָא דְמִצְרַיִם וְכַפְנָא דִּי אַתּוּן
17 יָצְפִּין מִנֵּיהּ תַּמָּן יַדְבֵּיק בַּתְרֵיכוֹן לְמִצְרַיִם וְתַמָּן תְּמוּתוּן׃ וִיהוֹן כָּל גֻּבְרַיָּא דְּשַׁוִּיאוּ יַת
אַפֵּיהוֹן לְמֵעַל לְמִצְרַיִם לְאִתּוֹתָבָא תַמָּן יִתְקַטְלוּן בְּחַרְבָּא בְּכַפְנָא וּבְמוֹתָנָא וְלָא יְהֵי לְהוֹן
18 שְׁאָר וּמְשֵׁיזֵב מִן קֳדָם בִּישְׁתָא דִּי אֲנָא מַיְתֵי עֲלֵיהוֹן׃ אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת אֱלָהָא
דְיִשְׂרָאֵל כְּמָא דְחָל רוּגְזִי וְחֵימְתִי עַל יָתְבֵי יְרוּשְׁלֶם כֵּן יְחוּל רוּגְזִי עֲלֵיכוֹן בְּמֵעַלְכוֹן
19 לְמִצְרַיִם וּתְהוֹן לְמוֹמֵי וּלְצַדּוּ וּלְלוּטָא וּלְחִסּוּדִין וְלָא תֶחֱזוֹן עוֹד יַת אַתְרָא הָדֵין׃ גְּזֵירַת
פִּתְגָמָא דַיְיָ עֲלֵיכוֹן שְׁאָרָא דְבֵית יְהוּדָה לָא תֵעֲלוּן לְמִצְרַיִם מֵידַע תִּדְעוּן אֲרֵי אַסְהֵידִית
20 בְּכוֹן יוֹמָא דֵין׃ אֲרֵי אַטְעִיתוּן בְּנַפְשָׁתֵיכוֹן אֲרֵי אַתּוּן שְׁלַחְתּוּן יָתִי לִקֳדָם יְיָ אֱלָהֲכוֹן
21 לְמֵימַר צַלִּי עֲלָנָא קֳדָם יְיָ אֱלָהָנָא וּכְכֹל דְּיֵימַר יְיָ אֱלָהָנָא כֵּן חַוִּי לָנָא וְנַעְבֵּיד׃ וְחַוֵּיתִי
22 לְכוֹן יוֹמָא דֵין וְלָא קַבֵּלְתּוּן לְמֵימְרָא דַיְיָ אֱלָהֲכוֹן וּלְכָל דִּי שַׁלְחַנִי לְוָתְכוֹן׃ וּכְעַן מֵידַע
תִּדְעוּן אֲרֵי בְּחַרְבָּא בְּכַפְנָא וּבְמוֹתָנָא תְּמוּתוּן בְּאַתְרָא דְּאִתְרְעִיתוּן לְמֵעַל
לְאִתּוֹתָבָא תַמָּן׃

מג

1 וַהֲוָה כַּד שֵׁיצֵי יִרְמְיָה לְמַלָּלָא עִם כָּל עַמָּא יַת כָּל פִּתְגָמַיָּא דַיְיָ אֱלָהֲהוֹן דְּשַׁלְחֵיהּ יְיָ
2 אֱלָהֲהוֹן לְוָתְהוֹן יַת כָּל פִּתְגָמַיָּא הָאִלֵּין׃ וַאֲמַר עֲזַרְיָה בַּר הוֹשַׁעְיָה וְיוֹחָנָן בַּר קָרֵחַ וְכָל
3 גֻּבְרַיָּא רַשִׁיעַיָּא אָמְרִין לְיִרְמְיָה שִׁקְרָא אַתְּ מִתְנַבֵּי לָא שַׁלְחָךְ יְיָ אֱלָהָנָא לְמֵימַר לָא
תֵעֲלוּן לְמִצְרַיִם לְאִתּוֹתָבָא תַמָּן׃ אֲרֵי בָּרוּךְ בַּר נֵרִיָּה מְגָרֵי יָתָךְ בָּנָא בְּדִיל לְמִמְסַר יָתָנָא
בִּידָא דְכַסְדָּאֵי לְמִקְטַל יָתָנָא וּלְאַגְלָאָה יָתָנָא לְבָבֶל׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

16 Et erit, gladius quem vos timetis, apprehendet vos ibi in terra Ægypti; & fames pro qua ſolliciti eſtis, ibi *conſequetur* vos in *Ægyptum*, & ibi moriemini. 17 Et omnes viri qui poſuerunt faciem ſuam ut ingrediantur in Ægyptum ad habitandum ibi, occidentur gladio, & fame, & peſte: & nullus ex eis remanebit, nec liberabitur à facie mali quod ego adducam ſuper eos. 18 Quia hæc dicit Dominus exercituum Deus Iſrael: Sicut reſedit furor meus & indignatio mea ſuper habitatores Jeruſalem; ſic reſidebit furor meus ſuper vos cùm ingreſſi fueritis in Ægyptum. Et eritis in jusjurandum, et in deſolationem, & in maledictionem, & in opprobria, & non videbitis ultrà locum iſtum. 19 Decrevit Verbum Domini ſuper vos reliquias domus Juda: Non ingrediemini in Ægyptum: ſciendo enim ſcitote, quia conteſtatus ſum vobis hodie. 20 Quia decepiſtis animas veſtras: vos enim miſiſtis me ante conſpectum Domini Dei veſtri; dicentes: Ora pro nobis coram Domino Deo noſtro, & juxta omnia quæ dixerit Dominus Deus noſter, ſic annuntia nobis ut faciamus. 21 Et annuntiavi vobis hodie, & non obediſtis verbo Domini Dei veſtri, & omnibus pro quibus miſit me ad vos. 22 Et nunc ſciendo ſcitote, quia gladio, & fame, & peſte moriemini in loco ad quem vultis intrare ad habitandum ibi.

CAP. XLIII.

1 ET factum eſt cùm impleſſet Jeremias loqui cum omni populo omnia verba Domini Dei ſui pro quibus miſerat eum Dominus Deus eorūm ad ipſos, [*ut loqueretur ad eos*] omnia verba hæc. 2 Et dixit Azarias filius Oſeæ, & Johanan filius Caree, & omnes viri impii; dicentes ad Jeremiam: Falſum tu prophetas nobis; non miſit te Dominus Deus noſter, ut diceres: Ne ingrediamini in Ægyptum ad habitandum ibi. 3 Quia Baruch filius Neriæ incitat te adverſus nos, ut tradat nos in manus Chaldæorum ut occidant nos, & transferant nos in Babylonem.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

16 *ܗܘ ܚܪܒܐ ܕܕܚܠܝܢ ܐܢܬܘܢ ܡܢܗ. ܬܡܢ ܬܕܪܟܟܘܢ ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܟܦܢܐ ܕܐܢܬܘܢ
17 ܕܚܠܝܢ ܡܢܗ. ܬܡܢ ܢܪܕܦ ܒܬܪܟܘܢ ܠܡܨܪܝܢ. ܘܬܡܢ ܬܡܘܬܘܢ. *ܘܢܗܘܘܢ ܟܠܗܘܢ
ܓܒܪܐ ܕܣܡܘ ܐܦܝܗܘܢ ܠܡܥܠ ܠܡܨܪܝܢ ܠܡܥܡܪ ܬܡܢ. ܢܡܘܬܘܢ ܒܚܪܒܐ
ܘܒܟܦܢܐ ܘܒܡܘܬܢܐ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗܘܢ ܫܪܝܕܐ ܘܡܫܬܘܙܒ. ܡܢ ܩܕܡ ܒܝܫܬܐ ܕܡܝܬܐ
18 ܐܢܐ ܥܠܝܗܘܢ. *ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܝܟ ܕܐܬܐܫܕ
ܚܡܬܝ ܘܪܘܓܙܝ ܥܠ ܥܡܘܪܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܗܟܢܐ ܢܬܐܫܕ ܚܡܬܝ ܥܠܝܟܘܢ. ܡܐ
ܕܥܠܬܘܢ ܠܡܨܪܝܢ. ܘܬܗܘܘܢ ܠܡܘܡܬܐ ܘܠܬܗܪܐ ܘܠܠܘܛܬܐ ܘܠܚܣܕܐ. ܘܠܐ ܬܚܙܘܢ
19 ܬܘܒ ܠܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܥܠܝܟܘܢ ܫܪܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. *ܠܐ ܬܥܠܘܢ ܠܡܨܪܝܢ. ܘܕܥܘ
20 ܕܐܣܗܕܬ ܒܟܘܢ ܝܘܡܢܐ. *ܕܐܛܥܝܬܘܢ ܢܦܫܟܘܢ. ܘܫܕܪܬܘܢܢܝ ܠܘܬ
21 ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ. ܘܐܡܪܬܘܢ ܨܠܝ ܥܠܝܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. ܘܟܠ ܡܕܡ ܕܐܡܪ ܠܟ ܡܪܝܐ
ܐܠܗܢ. ܚܘܝܢ ܘܢܥܒܕ. *ܘܚܘܝܬܟܘܢ ܝܘܡܢܐ. ܘܠܐ ܫܡܥܬܘܢ ܒܩܠܗ ܕܡܪܝܐ
22 ܐܠܗܟܘܢ. ܘܠܟܠ ܕܫܕܪܢܝ ܠܘܬܟܘܢ. ܠܐ ܥܒܕܬܘܢ. *ܘܗܫܐ ܕܥܘ. ܕܒܚܪܒܐ
ܘܒܟܦܢܐ ܘܒܡܘܬܢܐ ܬܡܘܬܘܢ. ܒܐܬܪܐ ܕܨܒܝܬܘܢ ܠܡܥܠ ܠܗ. ܠܡܥܡܪ ܬܡܢ.

Gladius ille quem pertimeſcitis, illic aſſe- 16
quetur vos in terra Ægypti ; & fames quam
timetis, illuc perſequetur vos in Ægyptum
uſque ; ibíque moriemini : Fiétque ut o- 17
mnes ii qui propoſuerint ingredi terram Æ-
gypti ad commorandum illic, pereant gla-
dio, fame, ac peſte ; neque remaneat illis ſu-
perſtes qui evadat malum quod illaturus ſum
eis. Sic enim ait Dominus potentiſſimus 18
Deus Iſraelis, Quemadmodum requievit ira
& furor meus ſuper cives Jeroſolymorum,
ita requieſcet furor meus ſuper vos ubi in-
greſſi fueritis Ægyptum: & eritis in jusjuran-
dum, ſtuporem, maledictionem, atque contu-
meliam : nec ampliùs videbitis locum iſtum,
ait Dominus de vobis, O reliquiæ Judæ. Ne 19
ingrediamini Ægyptum : & ſcitote me con-
teſtari vos hodiè, Quòd vos fallitis voſmet- 20
ipſos : miſiſtis enim me ad Dominum Deum
veſtrum, dicentes ; Ora pro nobis Dominum
Deum noſtrum ; & quicquid tibi dixerit Do-
minus Deus noſter, indica nobis, & exeque-
mur. Indicavi autem vobis hodiè, & non 21
obtemperatis voci Domini Dei veſtri, & eo-
rum omnium pro quibus me miſit ad vos,
nihil exequimini. Quarè ſcitote vos gla- 22
dio, fame, ac peſte morituros in ea loco
quem ingredi vultis ad commorandum ibi.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܓ *

CAP. XLIII.

1 *ܘܟܕ ܫܠܡ ܐܪܡܝܐ ܠܡܡܠܠܘ ܠܟܠܗ ܥܡܐ: ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ:
2 ܕܫܕܪܗ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ ܠܘܬܗܘܢ: ܠܡܐܡܪ ܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ. *ܐܡܪ
ܥܙܪܝܐ ܒܪ ܗܘܫܥܝܐ ܘܝܘܚܢܢ ܒܪ ܩܪܘܚ. ܘܟܠܗܘܢ ܥܘܠܐ ܐܡܪܘ ܠܐܪܡܝܐ. ܕܒܕܓܠܐܝܬ
3 ܐܡܪܬ. ܠܐ ܫܕܪܟ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܕܬܐܡܪ ܠܢ. ܕܠܐ ܬܥܠܘܢ ܠܡܨܪܝܢ ܠܡܥܡܪ ܬܡܢ. *ܡܛܠ
ܕܒܪܘܟ ܒܪ ܢܪܝܐ ܡܓܪܓ ܠܟ ܥܠܝܢ. ܕܢܫܠܡܢ ܒܐܝܕܐ ܕܟܠܕܝܐ. ܕܢܩܛܠܘܢ
ܘܢܫܒܘܢ ܠܒܒܠ.

Cumque finem feciſſet Jeremia referendi 1
toti populo cunctos ſermones Domini Dei
ipſorum, (miſerat enim illum Dominus Deus
eorum ad ipſos, ut referret ipſis ejuſmodi ſer-
mones) Dixit Jezania Hoſaiæ filius, & Jo- 2
hannes Corahi filius, omnéſque nefarii dixe-
runt Jeremiæ, Mendaciter loqueris ; nequa-
quam miſit te Dominus Deus noſter ut dice-
res nobis, Ne ingrediamini Ægyptũ ad com-
morandum illic : Nam Baruch Neriæ filius 3
te concitat adversùm nos, ut tradat nos in
manum Chaldæorum ad occidendum nos, &
captivos ducendum in Babelem.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

7 *لعل تقع رحمتهم لوجه الرب ويرجعون من طريقتهم الردية * لان غضب الرب عظيم والرجز
8 الذي تكلم به الرب على هذا الموضع *وصنع باروخ كلما اوصاه به ارميا * ليقرا في السفر
9 اقوال الرب في بيت الرب *وصار في السنة الخامسة ليواقيم الملك في الشهر التاسع *جمعوا صياما
10 ليوم الرب كل الشعب في ايروسليم وبيت يهودا *وقري باروخ في السفر اقوال ارميا في بيت الرب
في بيت غامارياو بن صافان الكاتب * في الدار العليا في مداخل بيت الرب الجديدة * في اذان
11 كل الشعب * وسمع ميخا بن غامارياو بن صافان جميع اقوال الرب من السفر * ونزل الى بيت
12 الملك الى بيت الكاتب * واذا هناك جميع الرؤساء جلوسا * اليشاما الكاتب * ودالااس بن
سالاميو * وناثان بن اخوبور * وغامارياس بن صافان * وصدقيا بن حنانيا * وجميع الرؤساء *
13 * فاخبر ميخا بجميع الاقوال التي سمعها من باروخ القاري في اذان الشعب * وارسل
14 جميع الرؤساء الى باروخ بن نيريو يوديث بن ناثانيو بن صالاميو بن خوسي قايلين *
الكتاب الذي قرات فيه في اذان الشعب خذه في يدك وات * فاخذ باروخ بن نيريو
15 القرطاس في يده ونزل اليهم * فقالوا له اقرا ايضا في اذاننا * وقري باروخ * وكان
16 لما سمعوا جميع الاقوال تشاوروا كل واحد مع قريبه وقالوا * نخبرون نخبر للملك
17 بجميع هذه الاقوال * وسالوا باروخ قايلين * من اين كتبت جميع هذه الاقوال *
18 * فقال باروخ * اخبرني ارميا من فمه بجميع هذه الاقوال * وانا كتبت في السفر * فقال
19 الرؤساء لباروخ * امض واختف انت وارميا * ولا يعرف انسان اين انتم * ودخلوا الى
20 الملك الى الدار * ودفعوا الكتاب ليحفظوه في بيت اليشاما * واخبروا الملك بجميع
هذه الاقوال *

Fortaſſe continget eis miſericordia apud 7
Dominum, & retrahent ſe à via ſua ma-
la : nam ira Domini & furor quo lo-
cutus eſt Dominus contra locum iſtum,
ingens eſt. Fecitque Baruch quicquid 8
mandavit ei Jeremia, legendo in eo li-
bello ſermones Domini in domo Domini.
Cùm enim factum eſſet anno quinto Jo- 9
acimi regis, menſe nono, ut indicerent
jejunium diei Domini totus populus in
Jeruſalem, & domus Judæ ; Legit Ba- 10
ruch in eo libello ſermones Jeremiæ in
domo Domini, in domo Gamariæ filii
Saphanis ſcribæ, in atrio ſuperiore, in ve-
ſtibulis domûs Domini recentioribus, au-
diente univerſo populo. Audiens autem 11
Micha filius Gamariæ filii Saphanis
cunctos Domini ſermones ex eo libello
recitatos, Deſcendit in ædem Domini, ad 12
domum ſcribæ ; & ecce illic omnes prin-
cipes conſidentes, Eliſama ſcriba, & Da-
laas filius Selemiæ, Nathan filius Achbo-
boris, Gamarias filius Saphanis, & Se-
decia filius Hananiæ, omneſque principes :
Retulitque Micha cunctos ſermones 13
quos audierat à Barucho recitante in
auribus populi. Tunc miſerunt omnes 14
principes ad Baruchum filium Neriæ, Ju-
din filium Nathaniæ, filii Salamiæ, filii
Chuſi, dicentes ; Libellum in quo legiſti
audiente populo, tolle manu tuâ, & veni.
Cúmque tuliſſet Baruch Neriæ filius char-
tam illam manu ſuâ, & deſcendiſſet ad
eos, Dixerunt ei ; Lege iterum nobis au- 15
dientibus : legitque Baruch. Cùm autem 16
audîſſent omnes ſermones illos, conſilium
inierunt alter cum altero, deinde dixe-
runt ; Omnino indicare debemus regi
cunctos hoſce ſermones. Tum Baruchum 17
interrogaverunt, dicentes, Unde ſcripſiſti
omnes hujuſmodi ſermones? Reſpondit 18
Baruch, Dictabat mihi Jeremia ore proprio
cunctos hoſce ſermones, & ego ſcribe-
bam in hoc libello. Dixerunt principes 19
ad Baruch, Age, abſcondere tu & Jere-
mia, nemóque ſciat ubi ſitis. Deinde re- 20
gem adeuntes in aulam, depoſito ad
aſſervandum libello in domo Eliſamæ,
indicaverunt regi omnes hos ſermones.

ירמיה: מד

, *virtutum* principes omnes & ,Chareach filius Jochanan *audivit* non Et
4 וְלֹא־שָׁמַע יוֹחָנָן בֶּן־קָרֵחַ וְכָל־שָׂרֵי הַחֲיָלִים
.Jehudah terra in *habitandum ad* ,Domini *voce in* populus univerſus &
וְכָל־הָעָם בְּקוֹל יְהוָה לָשֶׁבֶת בְּאֶרֶץ יְהוּדָה׃
,exercituum principes omnes & ,Chareach filius Jochanan tulit Et
5 וַיִּקַּח יוֹחָנָן בֶּן־קָרֵחַ וְכָל־שָׂרֵי הַחֲיָלִים אֵת
quò ,gentibus cunctis de fuerant reverſi qui ,Jehudah reſiduum omne
כָּל־שְׁאֵרִית יְהוּדָה אֲשֶׁר־שָׁבוּ מִכָּל־הַגּוֹיִם אֲשֶׁר
, Viros .Jehudah terra in *peregrinandum* ad *illuc* fuerant expulſi
6 נִדְּחוּ־שָׁם לָגוּר בְּאֶרֶץ יְהוּדָה׃ אֶת־הַגְּבָרִים
omnem & ,regis filias & ,*pubem* & ,mulieres &
וְאֶת־הַנָּשִׁים וְאֶת־הַטַּף וְאֶת־בְּנוֹת הַמֶּלֶךְ וְאֵת כָּל־
cum ,laniorum magiſter Nebuzaradan dimiſerat quam animam
הַנֶּפֶשׁ אֲשֶׁר הִנִּיחַ נְבוּזַרְאֲדָן רַב־טַבָּחִים אֶת־
,propheta Irmejahu & ,Saphan filio Achicham filio Ghedaljahu
גְּדַלְיָהוּ בֶּן־אֲחִיקָם בֶּן־שָׁפָן וְאֵת יִרְמְיָהוּ הַנָּבִיא
: Ægypti terram ſunt ingreſſi Et .Nerijahu filio Baruch &
7 וְאֶת־בָּרוּךְ בֶּן־נֵרִיָּהוּ׃ וַיָּבֹאוּ אֶרֶץ מִצְרַיִם
.Tachpanches ad uſque venerunt & : Domini *voce in audierunt* non quia
כִּי לֹא שָׁמְעוּ בְּקוֹל יְהוָה וַיָּבֹאוּ עַד־תַּחְפַּנְחֵס׃
: dicendo ,Tachpanches in Irmejahu ad Domini verbum fuit Et
8 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֶל־יִרְמְיָהוּ בְּתַחְפַּנְחֵס לֵאמֹר׃
,*lateraria in intrito in* eos *abſcondes* & ,grandes lapides tua manu in Sume
9 קַח בְּיָדְךָ אֲבָנִים גְּדֹלוֹת וּטְמַנְתָּם בַמֶּלֶט בַּמַּלְבֵּן
virorum oculis in ,Tachpanches in ,Parhoh domus *oſtio* in quæ
אֲשֶׁר בְּפֶתַח בֵּית־פַּרְעֹה בְּתַחְפַּנְחֵס לְעֵינֵי אֲנָשִׁים
exercituum Dominus dixit Sic : eos ad dices Et .Jehudæorum
10 יְהוּדִים׃ וְאָמַרְתָּ אֲלֵיהֶם כֹּה־אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת
regem Nebuchadreſar aſſumam & ,*mittens* ego Ecce : Iſrael Deus
אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל הִנְנִי שֹׁלֵחַ וְלָקַחְתִּי אֶת־נְבוּכַדְרֶאצַּר מֶלֶךְ־
,iſtos lapides ſupra ejꝰ thronum ponam & ,meum ſervum Babel
בָּבֶל עַבְדִּי וְשַׂמְתִּי כִסְאוֹ מִמַּעַל לָאֲבָנִים הָאֵלֶּה
.eos ſuper ſuum *elegans* tentorium tendet & : abſcondi quos
אֲשֶׁר טָמָנְתִּי וְנָטָה אֶת־שַׁפְרוּרוֹ עֲלֵיהֶם׃
: mortē ad ,mortem ad quos : Ægypti terram percutiet & ,veniet Et
11 וּבָאָה וְהִכָּה אֶת־אֶרֶץ מִצְרַיִם אֲשֶׁר לַמָּוֶת לַמָּוֶת
.gladium ad ,gladium ad quos & : captivitatē ad ,captivitatē ad quos &
וַאֲשֶׁר לַשְּׁבִי לַשְּׁבִי וַאֲשֶׁר לַחֶרֶב לֶחָרֶב׃
, eas comburet & ,Ægypti deorum domibus in ignem ſuccendam Et
12 וְהִצַּתִּי אֵשׁ בְּבָתֵּי אֱלֹהֵי מִצְרַיִם וּשְׂרָפָם
quemadmodum ,Ægypti terram *involvet* & : eos captivos ducet &
וְשָׁבָם וְעָטָה אֶת־אֶרֶץ מִצְרַיִם כַּאֲשֶׁר־
.pace in inde egredietur & ,ſuo *indumento* paſtor ſe *involveret*
יַעְטֶה הָרֹעֶה אֶת־בִּגְדוֹ וְיָצָא מִשָּׁם בְּשָׁלוֹם׃
& : Ægypti terra in quæ ,*Solis domus* ſtatuas conteret Et
13 וְשִׁבַּר אֶת־מַצְּבוֹת בֵּית שֶׁמֶשׁ אֲשֶׁר בְּאֶרֶץ מִצְרַיִם וְאֶת־
.igni in comburet Ægypti deorum domos
בָּתֵּי אֱלֹהֵי־מִצְרַיִם יִשְׂרֹף בָּאֵשׁ׃

CAP. XLIV. מד

habitantes ,Jehudæos omnes erga Irmejahu ad fuit quod Verbum
1 הַדָּבָר אֲשֶׁר־הָיָה אֶל־יִרְמְיָהוּ אֶל כָּל־הַיְּהוּדִים הַיֹּשְׁבִים
,Noph in & ,Tachpanches in & ,Migdol in *habitantes* ,Ægypti terra in
בְּאֶרֶץ מִצְרַיִם הַיֹּשְׁבִים בְּמִגְדֹּל וּבְתַחְפַּנְחֵס וּבְנֹף
Deus exercituum Dominus dixit Sic : dicendo ,Pathros terra in &
2 וּבְאֶרֶץ פַּתְרוֹס לֵאמֹר׃ כֹּה־אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי
ſuper adduxi quod malum omne vidiſtis Vos : Iſrael
יִשְׂרָאֵל אַתֶּם רְאִיתֶם אֵת כָּל־הָרָעָה אֲשֶׁר הֵבֵאתִי עַל־
die *deſolatio* ipſæ ecce & ,Jehudah urbes omnes ſuper & ,Jeruſalaim
יְרוּשָׁלִַם וְעַל כָּל־עָרֵי יְהוּדָה וְהִנָּם חָרְבָּה הַיּוֹם
.habitator eis in non & ,hac
הַזֶּה וְאֵין בָּהֶם יוֹשֵׁב׃

Verſio VULG. LAT.

4 Et non audivit Johanan filius
Caree, & omnes principes bellatorum,
& univerſꝰ populꝰ, vocem
Domini, ut manerent in terra
5 Juda. Sed tollens Johanan filius
Caree, & univerſi principes
bellatorum, univerſos reliquiarum
Juda, qui reverſi fuerant de
cunctis Gentibꝰ, ad quas fuerant
antè diſperſi, ut habitarent
6 in terra Juda; Viros, & mulieres,
& parvulos, & filias regis,
& omnem animam, quam reliquerat
Nabuzardan princeps
militiæ cum Godolia filio Ahicam
filii Saphan, & Jeremiam
prophetam, & Baruch filium
7 Neriæ. Et ingreſſi ſunt terram
Ægypti, quia non obedierunt
voci Domini: & venerunt uſque
8 ad Taphnis. Et factus eſt
ſermo Domini ad Jeremiam in
9 Taphnis, dicens; Sume lapides
grandes in manu tua, & abſcondes
eos in crypta, quæ eſt
ſub muro latericio in porta domûs
Pharaonis in Taphnis, cernentibꝰ
10 viris Judæis: Et dices
ad eos; Hæc dicit Dominꝰ exercituum,
Deꝰ Iſrael; Ecce ego mittam,
& aſſumam Nabuchodonoſor
regem Babylonis ſervum
meum: & ponam thronum ejꝰ
ſuper lapides iſtos, quos abſcondi,
& ſtatuet ſolium ſuum ſuper
11 eos. Veniénſque percutiet terram
Ægypti, quos in mortem,
in mortem; & quos in captivitatem,
in captivitatem: & quos
12 in gladium, in gladium. Et
ſuccendet ignem in delubris deorum
Ægypti, & comburet ea,
& captivos ducet illos: & amicietur
terra Ægypti, ſicut amicitur
paſtor pallio ſuo: & egredietur
13 indè in pace. Et conteret
ſtatuas domꝰ Solis, quæ ſunt
in terra Ægypti: & delubra deorum
Ægypti comburet igni.

CAP. XLIV.

1 VErbum, quod factum eſt per
Jeremiam ad omnes Judæos, qui
habitabant in terra Ægypti, habitantes
in Magdalo, & in Taphnis,
& in Memphis, & in terra
2 Phatures, dicens; Hæc dicit Dominꝰ
exercituum, Deꝰ Iſrael; Vos
vidiſtis omne malum iſtud, quod
adduxi ſuper Jeruſalem, & ſuper
omnes urbes Juda: & ecce deſertæ
ſunt hodiè, & non eſt in
eis habitator:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

21 Καὶ ἀπέστειλεν ὁ βασιλεὺς τὸν Ἰουδὶν, λαβεῖν τὸ χαρτίον. καὶ ἔλαβεν αὐτὸ ἐξ οἴκου Ἐλισαμά· καὶ ἀνέγνω Ἰουδὶν εἰς τὰ ὦτα τοῦ βασιλέως, καὶ εἰς τὰ (κ) ὦτα πάντων τῶν ἀρχόντων, τῶν ἑστηκότων (λ) περὶ τὸν βασιλέα.

22 Καὶ ὁ βασιλεὺς ἐκάθητο ἐν οἴκῳ χειμερινῷ, καὶ ἐσχάρα πυρὸς κατὰ πρόσωπον αὐτοῦ.

23 Καὶ ἐγενήθη ἀναγινώσκοντος Ἰουδὶν τρεῖς σελίδας καὶ τέσσαρας, ἀπέτεμνεν (μ) αὐτὰς τῷ ξυρῷ τοῦ γραμματέως, καὶ (ν) ἔρριπτεν εἰς τὸ πῦρ τὸ ἐπὶ τῆς ἐσχάρας, (ξ) ἕως ἐξέλιπε πᾶς ὁ χάρτης εἰς τὸ πῦρ τὸ ἐπὶ τῆς ἐσχάρας.

24 Καὶ οὐκ (ο) ἐζήτησαν, καὶ οὐ διέρρηξαν τὰ ἱμάτια αὐτῶν ὁ βασιλεὺς καὶ οἱ παῖδες αὐτοῦ (″) οἱ ἀκούοντες πάντας τοὺς λόγους τούτους.

25 Καὶ (π) Ἐλνάθαν καὶ Γοδολίας (ρ) ὑπέθεντο τῷ βασιλεῖ, πρὸς τὸ (σ) κατακαῦσαι τὸ χαρτίον.

26 Καὶ ἐνετείλατο ὁ βασιλεὺς τῷ (τ) Ἱερεμεὴλ υἱῷ τοῦ βασιλέως, καὶ τῷ Σαραίᾳ υἱῷ (υ) Ἐσεριὴλ, συλλαβεῖν τὸν Βαροὺχ, καὶ τὸν Ἱερεμίαν, καὶ κατεκρύβησαν.

27 Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς Ἱερεμίαν, μετὰ τὸ (φ) κατακαῦσαι τὸν βασιλέα τὸ χαρτίον, πάντας τοὺς λόγους, οὓς ἔγραψε Βαροὺχ ἀπὸ στόματος Ἱερεμίου, λέγων,

28 Πάλιν λάβε (χ) σὺ χαρτίον ἕτερον, καὶ γράψον (ψ) πάντας τοὺς λόγους, τοὺς ὄντας ἐπὶ τοῦ χαρτίου, οὓς κατέκαυσεν ὁ βασιλεὺς Ἰωακείμ,

29 Καὶ ἐρεῖς, Οὕτως εἶπε κύριος, Σὺ κατέκαυσας τὸ (″) χαρτίον τοῦτο, λέγων, Διατί ἔγραψας ἐπ' αὐτῷ, λέγων, Εἰσπορευόμενος εἰσπορεύσεται (′) βασιλεὺς Βαβυλῶνος, καὶ (ω) ἐξολοθρεύσει τὴν γῆν ταύτην, καὶ (α) ἐκλείψει ἐπ' αὐτῆς ἄνθρωπος καὶ κτήνη;

30 Διατοῦτο οὕτως εἶπε κύριος ἐπὶ Ἰωακεὶμ βασιλέα Ἰούδα, Οὐκ ἔσται αὐτῷ καθήμενος ἐπὶ (β) θρόνου Δαυίδ, καὶ τὸ θνησιμαῖον αὐτοῦ ἔσται ἐρριμμένον ἐν τῷ καύματι τῆς ἡμέρας, καὶ ἐν τῷ παγετῷ τῆς νυκτός·

31 Καὶ ἐπισκέψομαι ἐπ' αὐτὸν, καὶ ἐπὶ τὸ γένος αὐτοῦ, καὶ ἐπὶ τοὺς παῖδας αὐτοῦ, καὶ ἐπάξω ἐπ' (γ) αὐτὸν, καὶ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐπὶ γῆν Ἰούδα, πάντα τὰ κακὰ, ἃ ἐλάλησα (δ) πρὸς αὐτοὺς, καὶ οὐκ ἤκουσαν.

32 Καὶ ἔλαβε Βαροὺχ χαρτίον ἕτερον, καὶ ἔγραψεν ἐπ' αὐτῷ ἀπὸ στόματος Ἱερεμίου ἅπαντας τοὺς λόγους τοῦ βιβλίου, οὓς κατέκαυσεν Ἰωακείμ· καὶ ἔτι προσετέθησαν αὐτῷ λόγοι πλείονες, ὡς οὗτοι.

Et miſit rex Judin ad ſumendum 21
volumen. Et ſumpſit illud
è domo Eliſama: & legit Judin
in aures regis, & in aures omnium
principum ſtantium circa
regem. Et rex ſedebat in domo 22
(f) hyemali: & focus ad faciem
ejus. Et factum eſt legente 23
Judin tres pagellas & quatuor,
abſcidebat illas novaculâ ſcribæ,
& jaciebat in ignem, qui ſuper
arulam, donec defecit totum
volumen in igne, qui ſuper arulam.
Et (g) non quæſierunt, neque 24
ſciderũt veſtimenta ſua rex,
& pueri ejus audientes omnia
verba hæc. Et Elnathan, & 25
Godolias ſuggeſſerunt regi, (h)
de comburendo volumine. Et 26
mandavit rex Hieremeel filio regis,
& Saraæ filio Eſriel, ut comprehenderent
Baruch, & Hieremiam:
& occultati ſunt. Et factum 27
eſt verbum Domini ad Hieremiam,
poſtquàm rex combuſſerat
volumen, omnes ſermones,
quos ſcripſerat Baruch ex ore
Hieremiæ: dicens; Rurſùs ſume 28
tu volumen aliud, & ſcribe
omnia verba, quæ erant ſuper volumen,
quæ combuſſit rex Joacim:
Et dices; Sic dixit 29
Dominus; Tu combuſſiſti volumen
iſtud, dicens; Quarè ſcripſiſti
in eo, dicens; Ingrediens
ingredietur rex Babylonis, &
exterminabit terram iſtam, &
(i) deficient ab ea homo, & jumenta?
Propterea ſic dixit 30
Dominus ſuper Joacim regem
Juda; Non erit ei ſedens ſuper
thronum David: & morticinum
ejus erit projectum in æſtu
diei, & in gelu noctis: Et viſitabo 31
ſuper eum, & ſuper genus
ejus, & ſuper pueros (k) ejus:
& inducam ſuper eum, &
ſuper habitantes Hieruſalem, &
ſuper terram Juda omnia mala,
quæ loquutus ſum ad eos, &
non audierunt. Et ſumpſit 32
(l) Baruch volumen aliud, &
ſcripſit in eo ex ore Hieremiæ omnes
ſermones libri, quos combuſſerat
Joacim: & præterea
additi ſunt ei ſermones plures,
ſicut iſti.

MS. A. (κ) ὦτα τῶν ἀρχόντων, (λ) πρὸς (μ) αὐτὰ (ν) ἔρριπτεν (ξ) ἕως οὗ (ο) ἐξεζήτησαν, (″) ἀκούσαντες (π) Νάθαν (ρ) καὶ Γαμαρίας (σ) μὴ κατακαῦσαι τὸ βιβλίον. (τ) Ἱερεμαὴλ (υ) * Ἐσζειὴλ, (φ) ΚΑΥΣΑΙ (χ) ΣΕΑΥΤΩ ΧΑΡΤΙΟΝ (ψ) ΑΠΑΝΤΑΣ (″) βιβλίον (′) ὁ βασιλεὺς (ω) ἐξολεθρεύσει (α) ἐκτρίψει ἀπ' αὐτῆς ἄνθρωπον (β) θρόνον (γ) αὐτοὺς, (δ) ἐπ' αὐτοὺς,

Cap. 37. Vulg. Lat.

ΚΕΦ. μδ'.

1 ΚΑὶ ἐβασίλευσε Σεδεκίας υἱὸς Ἰωσία ἀντὶ (α) Ἰωακεὶμ, ὃν ἐβασίλευσεν Ναβουχοδονόσορ (β) βασιλεύειν τοῦ Ἰούδα.

2 Καὶ οὐκ ἤκουσαν αὐτὸς καὶ οἱ παῖδες αὐτοῦ καὶ ὁ λαὸς τῆς γῆς τοὺς λόγους κυρίου, οὓς ἐλάλησεν ἐν χειρὶ Ἱερεμίου.

CAP. XLIV.

ET regnavit Sedecias filius Joſiæ (a) pro Joacim; quem conſtituit regem Nabuchodonoſor, ut regnaret in Juda. 1 *Et non audierunt ipſe, & pueri ejus, & populus terræ, verba Domini, quæ loquutus eſt in manu Hieremiæ.* 2

MS.A. (α) Ἰεχονίου, υἱοῦ Ἰωακεὶμ, (β) βασιλεὺς Βαβυλῶνος βασιλεύειν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 וְלָא קַבִּילוּ יוֹחָנָן בַּר קָרֵחַ וְכָל רַבָּנֵי חֵילְוָתָא וְכָל עַמָּא לְמֵימְרָא דַיְיָ לְמִתַּב בְּאַרְעָא דְבֵית
5 יְהוּדָה׃ וּדְבַר יוֹחָנָן בַּר קָרֵחַ וְכָל רַבָּנֵי חֵילְוָתָא יָת כָּל שְׁאָרָא דְבֵית יְהוּדָה דְּתָבוּ מִכָּל
6 עַמְמַיָּא דְּאִתְבַּדַּרוּ לְתַמָּן לְאִתּוֹתָבָא בְּאַרְעָא דְבֵית יְהוּדָה׃ יָת גַּבְרַיָּא וְיָת נְשַׁיָּא וְיָת
טַפְלָא וְיָת בְּנָת מַלְכָּא וְיָת כָּל נַפְשָׁתָא דִּי שְׁבַק נְבוּזַרְאֲדָן רַב קָטוֹלַיָּא עַל גְּדַלְיָה בַּר
7 אֲחִיקָם בַּר שָׁפָן וְיָת יִרְמְיָה נְבִיָּא וְיָת בָּרוּךְ בַּר נֵרִיָּה׃ וַאֲתוֹ לְאַרְעָא דְמִצְרַיִם אֲרֵי לָא
8 קַבִּילוּ לְמֵימְרָא דַיְיָ וַאֲתוֹ עַד תַּחְפַּנְחֵס׃ וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִם יִרְמְיָה
9 בְּתַחְפַּנְחֵס לְמֵימַר׃ סַב עִמָּךְ אַבְנִין רַבְרְבָן וְתִטַמְּרִנּוּן בְּטְפֵיל בִּנְיָנָא דִּי בִתְרַע בֵּית פַּרְעֹה
10 בְּתַחְפַּנְחֵס לְעֵינֵי גַּבְרִין יְהוּדָאִין׃ וְתֵימַר לְהוֹן כִּדְנָן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל הָא
אֲנָא שָׁלַח וַאֲדַבַּר יָת נְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא דְבָבֶל עַבְדִּי וַאֲשַׁוֵּי יָת כּוּרְסוֹהִי עֵיל מִן אַבְנַיָּא
11 הָאִלֵּין דְּטַמַּרִית וְיִגּוֹד יָת אַפַּדְנֵיהּ עֲלֵיהוֹן׃ וְיֵיתֵי וְיִקְטֵיל יָת אַרְעָא דְמִצְרַיִם דִּי לְמוֹתָא
12 לְמוֹתָא וְדִי לְשִׁבְיָא לְשִׁבְיָא וְדִי לְחַרְבָּא לְחַרְבָּא׃ וְאַדְלֵיק אֶשָּׁתָא בְּבָתֵּי טַעֲוַת מִצְרָאֵי
וְיוֹקְדִנּוּן וְיִשְׁבִּנּוּן וְיִרוֹקֵן יָת אַרְעָא דְמִצְרַיִם כְּמָא דְמִתְעַטֵּיף רַעְיָא יָת לְבוּשֵׁיהּ וְיִפּוֹק
13 מִתַּמָּן בִּשְׁלָם׃ וִיתַבַּר יָת קָמַת בֵּית שֶׁמֶשׁ דִּי בְּאַרְעָא דְמִצְרַיִם וְיָת בָּתֵּי טַעֲוַת מִצְרַיִם
יוֹקֵיד בְּנוּרָא׃

מד

1 פִּתְגָם נְבוּאָה דַּהֲוָה עִם יִרְמְיָה עַל כָּל יְהוּדָאֵי דְּיָתְבִין בְּאַרְעָא דְמִצְרַיִם דְּיָתְבִין בְּמִגְדֹּל
2 וּבְתַחְפַּנְחֵס וּבְמַפֵּס וּבְאַרַע פַּתְרוֹס לְמֵימַר׃ כִּדְנָן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל אַתּוּן
חֲזֵיתוּן יָת כָּל בִּישְׁתָא דְּאַיְתֵיתִי עַל יְרוּשְׁלֶם וְעַל כָּל קִרְוַיָּא דְבֵית יְהוּדָה וְאִנּוּן חָרְבָא
יוֹמָא דֵין וְלֵית בְּהוֹן יָתֵיב׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et non obedivit Johanan filius Caree, et omnes principes exercitus, et omnis 4
populus verbo Domini, ut habitarent in terra domus Juda. Et tulit Johanan 5
filius Caree, & omnes principes exercituum, omnes reliquias domus
Juda, quæ reverſæ fuerant de omnibus populis ad quos diſperſi fuerant, ut
habitarent in terra domus Juda. Viros & mulieres, & parvulos, & 6
filias regis, & omnes animas quas dimiſit Nabuzardan princeps occidentium
cum Godolia filio Ahicam filii Saphan, & Jeremiam prophetam, & Baruch
filium Neriæ. Et venerunt in terram Ægypti; quia non obedierunt 7
verbo Domini, & venerunt uſque ad Taphnes. Factum eſt autem verbum 8
prophetiæ à facie Domini cum Jeremia in Taphnes; dicens: Tolle tecum 9
lapides grandes, & abſcondes eos in junctura ædificii, quæ eſt in porta domus
Pharaonis in Taphnes, ante oculos virorum Judæorum. Et dices ad eos, 10
Hæc dicit Dominus exercituum Deus Iſrael: Ecce ego mitto, & tollam
Nabuchodonoſor regem Babylonis ſervum meum, & ponā ſolium ejus ſup
lapides iſtos quos abſcondi, & extendet tentorium ſuum ſuper eos. Et veniet 11
& percutiet terram Ægypti; quos in mortem, in mortem; & quos in
captivitatem, in captivitatem; & quos in gladium, in gladium. Et ſuccendam 12
ignem in domibus idolorum Ægyptiorum, & comburet eas, & in
captivitatem ducet eos: & *ſpoliabit* terram Ægypti ſicut amicitur paſtor veſtimento
ſuo, & egredietur inde in pace. Et conteret ſtatuas domus Solis, 13
quæ ſunt in terra Ægypti, & domos idolorum Ægyptiorum ſuccendet igni.

CAP. XLIV.

VErbum prophetiæ quod factum eſt ad Hieremiam de omnibus Judæis 1
qui habitant in terra Ægypti, qui habitant in Magdalo, & in Taphnes, & in
Memphis, et in terra Phatures; dicendo: Hæc dicit Dominus exercituum 2
Deus Iſrael, Vos vidiſtis omne malum quod adduxi ſuper Jeruſalem, et ſuper
omnes urbes domus Juda; et ipſæ ſunt deſertæ hodie, et non eſt in eis
habitator;

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܠܐ ܫܡܥ ܝܘܚܢܢ ܒܪ ܩܘܪܚ ܘܟܠܗܘܢ ܪ̈ܝܫܝ ܚܝܠܐ . ܘܟܠܗ ܥܡܐ ܠܩܠܗ ܕܡܪܝܐ 4
ܐܠܗܗܘܢ . ܕܢܬܒܘܢ ܒܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕܐ. * ܘܕܒܪ ܝܘܚܢܢ ܒܪ ܩܘܪܚ ܘܟܠܗܘܢ ܪ̈ܝܫܝ ܚܝܠܐ: 5
ܘܟܠܗ ܫܪܟܐ ܕܐܫܬܚܪܘ ܡܢ ܕܒܝܬ ܝܗܘܕܐ: * ܓܒܪ̈ܐ ܘܢܫ̈ܐ ܘܛܠܝ̈ܐ ܘܒܢ̈ܬ 6
ܡܠܟܐ: ܘܟܠܗܝܢ ܢܦܫܬܐ ܕܫܒܩ ܢܒܘܙܪܕܢ ܪܒ ܢܚܘ̈ܬܐ: ܠܘܬ ܓܕܠܝܐ ܒܪ ܐܚܝܩܡ ܒܪ
ܫܦܢ. ܘܠܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܘܠܒܪܘܟ ܒܪ ܢܪܝܐ. * ܘܐܬܘ ܠܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܫܡܥܘ ܠܩܠܗ 7
ܕܡܪܝܐ. ܘܐܬܘ ܥܕܡܐ ܠܬܚܦܢܚܣ. * ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܒܬܚܦܢܚܣ ܟܕ ܐܡܪ. 8
* ܣܒ ܒܐܝܕܝܟ ܟܐ̈ܦܐ ܪ̈ܘܪܒܬܐ. ܘܛܡܘܪ ܐܢܝܢ ܒܛܝܢܐ ܒܡܠܒܢܬܐ. ܒܬܪܥܐ ܕܒܝܬ ܦܪܥܘܢ 9
ܒܬܚܦܢܚܣ ܠܥܝܢ̈ܝ ܓܒܪ̈ܐ ܝܗܘܕ̈ܝܐ. * ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ . ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ 10
ܕܐܝܣܪܝܠ. ܗܐ ܐܢܐ ܡܫܕܪ ܐܢܐ ܘܡܝܬܐ ܐܢܐ . ܠܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܥܒܕܝ. ܘܢܣܝܡ
ܟܘܪܣܝܗ ܠܥܠ ܡܢ ܟܐ̈ܦܐ ܗܠܝܢ ܕܛܡܪܬ. ܘܢܫܩܘܠ ܙܝܢܗ ܥܠܝܗܘܢ. * ܘܢܐܬܐ 11
ܘܢܡܚܝܗ ܠܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ . ܕܠܡܘܬܐ ܠܡܘܬܐ. ܘܕܠܫܒܝܬܐ ܠܫܒܝܬܐ. ܘܕܠܚܪܒܐ ܠܚܪܒܐ.
* ܘܢܫܕܐ ܢܘܪܐ ܒܒ̈ܬܐ ܕܐܠܗ̈ܐ ܕܡܨܪ̈ܝܐ. ܘܢܘܩܕ ܐܢܘܢ. ܘܢܫܒܐ ܐܢܘܢ. ܘܢܬܥܛܦܝܗ̇ 12
ܠܐܪܥܐ. ܐܝܟ ܕܡܬܥܛܦ ܪܥܝܐ ܠܡܪܛܘܛܗ. ܘܢܦܘܩ ܡܢ ܬܡܢ ܒܫܠܡܐ. * ܘܢܬܒܪ 13
ܩܡ̈ܐ ܕܒܝܬ ܫܡܫ ܕܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܒ̈ܬܐ ܕܐܠܗ̈ܐ ܕܡܨܪ̈ܝܐ. ܢܘܩܕ ܒܢܘܪܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܕ *

* ܦܬܓܡܐ ܕܗܘܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ . ܕܢܬܢܒܐ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܝܗܘܕ̈ܝܐ ܕܥܡܪܝܢ 1
ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ . ܘܕܥܡܪܝܢ ܒܡܓܕܘܠ ܘܒܬܚܦܢܚܣ. ܘܒܡܦܝܣ ܘܒܐܪܥܐ
ܕܦܬܪܘܣ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܢܬܘܢ ܚܙܝܬܘܢ ܟܠܗ 2
ܒܝܫܬܐ ܕܐܝܬܝܬ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ . ܘܥܠ ܟܠܗܝܢ ܩܘܪ̈ܝܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܗܐ ܚܪ̈ܒܢ ܝܘܡܢܐ.
ܘܠܝܬ ܒܗܝܢ ܐܢܫ ܕܥܡܪ.

Itaque non obtemperavit Johannes Corahi 4
filius, & omnes copiarum duces, totúſque populus
voci Domini Dei ſui; ut manerent in
terra Judæ: Sed abduxit Johannes Corahi 5
fili' omnes copiarum duces, & reliquos omnes
qui ſupererant ex familia Judæ, Tam 6
viros & mulieres, quàm pueros & ſtirpem
regiam; omnes *ſcilicet* animas quas reliquerat
Nebuzardan princeps ſatellitũ apud Gedaliam
filium Ahicami filii Saphanis, Jeremiam
quoque prophetam, & Baruchum filiũ
Neriæ; Abierúntque in terram Ægypti (non 7
enim obtemperârunt voci Domini) & pervenerunt
ad Tahphis uſque. Fuit autem ſermo 8
Domini ad Jeremiam in Tahphis, dicendo;
Accipe manu tuâ lapides magnos, & abde eos 9
ſub argilla in officina lateritia ad oſtium domûs
Pharaonis in Tahphis, *idque* ſpectantib'
viris Judæ: Et dic eis, Sic ait Domin' potentiſſim' 10
Deus Iſraelis, Ecce ego mittens adducam
Nebuchadnoſârem regem Babyloniæ
ſervum meum, collocabítque ſolium ſuum ſuper
lapides iſtos quos abdidiſti, & portabit
arma ſua ſuper eos. Veniens autem percutiet 11
terram Ægypti, quoſdam ad mortẽ, quoſdam
ad captivitatem, alios ad gladium: Dimittétque 12
ignem in ædes deorum Ægyptiorum,
& illas comburet, hos autem captivos
abducet: amiciétque ſe terrâ *hac*, quemadmodum
amicit ſe paſtor endromide ſuâ, &
exibit inde cum pace: Confringétque ſtatuam 13
Beth-ſemeſi in terra Ægypti, & ædes
deorum Ægyptiorum igne comburet.

CAP. XLIV.

SErmo qui fuit ad Jeremiam à Domino, ut 1
prophetaret de omnibus Judæis commorantibus
in terra Ægypti, & commorantibus in
Migdol, in Tahphis, in Mephes, & in terra
Phathros. Ita dicit Dominus potentiſſimus 2
De' Iſraelis, Vos vidiſtis totum illud malum
quod adduxi ſuper Jeruſalem & ſuper omnes
civitates Judæ, eáſque eſſe hodiè deſolatas,
& nullum extare in eis habitantem;

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وارسل الملك يودين ليأخذ القرطاس * فاخذه من بيت اليصاما. وقراه يودين في آذان الملك 21
وفي آذان الرؤساء القيام لدى الملك * والملك جالس في بيت شتوي وكانون نار لوجهه * وصار 22 23
اذ قرى يودين ثلث قطع واربعة. قطعها بموسى الكاتب وطرحها في النار التي على الكانون الى
ان فني كل القرطاس بالنار التي على الكانون * ولم يطلبوا ولا خرقوا ثيابهم الملك وعبيده. جميع 24
الذين سمعوا هذه الاقوال * وناثان وعودولياس وغامارياس سالوا الملك ان لا يحرق السفر * فامر 25 26
الملك يراميئيل بن الملك وصارا ابن اسرييل ان يقبضوا على باروخ وارميا * فاختفيا *

* وكان قول الرب الى ارميا من بعد ما احرق الملك القرطاس الذي فيه 27
جميع الاقوال التي كتبها باروخ من فم ارميا قايلا *

* خذ لك قرطاسا ايضا واكتب جميع الاقوال التي كانت في القرطاس التي احرقها يواقيم الملك 28
* وتقول هكذا قال الرب. انت احرقت هذا السفر قايلا. لماذا كتبت فيه قايلا داخلا يدخل 29
ملك بابل ويستاصل هذه الارض. ويبيد منها الانسان والبهايم * لاجل هذا هكذا قال الرب على 30
يواقيم ملك يهودا. لا يكون له جالس على كرسي داود * وجثته تكون مطروحة في حر النهار
وفي صقيع الليل * واطلع عليه وعلى جنسه وعلى عبيده. واجلب عليهم وعلى سكان اورشليم 31
وعلى ارض يهودا جميع الشرور التي تكلمت بها عليهم ولم يسمعوا * واخذ باروخ قرطاسا اخر * 32
وكتب فيه من فم ارميا جميع اقوال السفر التي احرقها يواقيم * وزيدت له ايضا اقوال
كثيرة مثل هذه *

* الفصل الرابع والاربعون *

* وملك صداقيا بن يوسيا عوض ياخونيو بن يواقيم الذي ملكه بختنصر ملك بابل ليملك 1
على يهودا * ولم يسمعوا هو وعبيده وشعب الارض. اقوال الرب التي تكلم بيد ارميا * 2

Tunc miſit rex Judin ut chartam illam 21
acciperet: accepitque eam de domo Eliſamæ,
legitque eam Judin audiente rege,
& audientibus principibus qui aderant
apud regem. Rex autem ſedebat in domo 22
hyemali, focuſque ignis erat ante ipſum.
Et factum eſt, cùm legiſſet Judin tres pagellas 23
vel quatuor, ut ſcinderet eas novaculâ
ſcriptoris, projiceretq; in ignem foco
impoſitũ, donec conſumpta eſſet tota illa
charta igne qui foco ſuperpoſitus erat:
Potiùs quàm deprecarentur, & laceraverent 24
veſtimenta ſua rex & ſervi ejus, omnes
videlicet *qui audierant ejuſmodi ſermones.*
Porrò Nathan, Godolias, & Gamarias 25
rogaverant regem ne libellũ illum
combureret. Sed rex imperavit Jeramieli 26
filio regis, & Saraæ filio Aſrielis, ut caperent
Baruchum & Jeremiam; verùm
abdiderant ſeſe.

Et fuit ſermo Domini ad Jeremiã, 27
poſtquã combuſſiſſet rex chartam
illam in qua erant omnes ſermones
quos ſcripſerat Baruch ex ore
Jeremiæ, dicens;

Sume tibi denuò chartam, & inſcribe 28
cunctos ſermones qui erant in charta
quam combuſſit Joacim rex: Et dices; 29
Ita dixit Dominus, Tu combuſſiſti libellum
iſtum, dicens; Quæ ſcripſiſti in eo,
dicens, Certiſſimè ingredietur rex Babelis,
evertetque terram iſtam: & extinguentur
ex ea homines & jumenta? Iccirco 30
ſic dixit Dominus de Joacimo rege
Judæ; Non erit ei qui ſedeat ſuper ſolio
Davidis, & cadaver ejus erit abjectum
ſub æſtu diei & gelu noctis: Et viſitabo 31
eum, & ſtirpem atque ſervos ipſius; &
inducam ſuper hos & ſuper habitatores
Jeruſalem, & ſuper terram Judæ, cuncta
mala quæ locutus ſum contra eos, nec audierunt.
Tulit ergò Baruch chartam aliam, 32
& ſcripſit in ea ex ore Jeremiæ
cunctos libelli ſermones quos combuſſerat
Joacim: & adjecti ſunt ei præterea multi
ſermones iis ſimiles.

CAP. XLIV.

POſtea regnavit Sedecia Joſiæ filius 1
pro Jechonia Joachimi filio, quem conſtituit
regem Buchtonaſſar rex Babelis, ut
regnaret ſuper Judam. Sed neque is, 2
neque ſervi ejus, neque terræ populus audierunt
ſermones Domini quos locutus
fuerat per Jeremiam.

eundum ad , *me irritandum ad* fecerunt quam , eorum *malitiæ faciebus* A
מִפְּנֵי רָעָתָם אֲשֶׁר עָשׂוּ לְהַכְעִסֵנִי לָלֶכֶת 3
, ipsi *eos* sciebant nec quos , *alienis* Diis *serviendum ad suffitum*
לְקַטֵּר לַעֲבֹד לֵאלֹהִים אֲחֵרִים אֲשֶׁר לֹא יְדָעוּם הֵמָּה
,prophetas meos servos omnes vos ad misi Et .vestri patres & ,vos
אַתֶּם וַאֲבֹתֵיכֶם: וָאֶשְׁלַח אֲלֵיכֶם אֶת־כָּל־עֲבָדַי הַנְּבִיאִים 4
verbum faciatis quæso Ne : dicendo ,mittendo & ,surgendo manè
הַשְׁכֵּים וְשָׁלֹחַ לֵאמֹר אַל־נָא תַעֲשׂוּ אֵת דְּבַר־
inclinaverũt nec ,*audierunt* non Et .odi quam , hujus abominationis
הַתֹּעֵבָה הַזֹּאת אֲשֶׁר שָׂנֵאתִי: וְלֹא שָׁמְעוּ וְלֹא־הִטּוּ 5
Diis *suffiendum non ad* ,sua malitia à *se avertendũ ad* suã aurem
אֶת־אָזְנָם לָשׁוּב מֵרָעָתָם לְבִלְתִּי קַטֵּר לֵאלֹהִים
civitatibus in est succensa & ,meus *nasus* & ,mea ira est effusa Et .alienis
אֲחֵרִים: וַתִּתַּךְ חֲמָתִי וְאַפִּי וַתִּבְעַר בְּעָרֵי 6
vastitatem ,solitudinem in fuerunt & : Jerusalaim plateis in & ,Jehudah
יְהוּדָה וּבְחֻצוֹת יְרוּשָׁלִָם וַתִּהְיֶינָה לְחָרְבָּה לִשְׁמָמָה
exercituum Deus Dominus dixit sic nunc Et .hanc diem secundùm
כַּיּוֹם הַזֶּה: וְעַתָּה כֹּה־אָמַר יְהוָה אֱלֹהֵי צְבָאוֹת 7
ad grande malum *facientes* vos quid Ad : Israel Deus
אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל לָמָה אַתֶּם עֹשִׂים רָעָה גְדוֹלָה אֶל־
,*parvulum*,mulierem & virum vobis faciendum excidere ad , vestras animas
נַפְשֹׁתֵיכֶם לְהַכְרִית לָכֶם אִישׁ־וְאִשָּׁה עוֹלֵל
.residuum vobis *faciendũ remanere non ad* ,Jehudah medio de ,*sugentem &*
וְיוֹנֵק מִתּוֹךְ יְהוּדָה לְבִלְתִּי הוֹתִיר לָכֶם שְׁאֵרִית:
Diis suffiendo ,vestrarum manuum *factis* in *me irritandum Ad*
לְהַכְעִסֵנִי בְּמַעֲשֵׂי יְדֵיכֶם לְקַטֵּר לֵאלֹהִים 8
peregrinandum ad ingredientes vos quam , Ægypti terra in alienis
אֲחֵרִים בְּאֶרֶץ מִצְרַיִם אֲשֶׁר־אַתֶּם בָּאִים לָגוּר
,maledictionẽ in *vos existendos ad* & , vos *succidendum ad* , ibi
שָׁם לְמַעַן הַכְרִית לָכֶם וּלְמַעַן הֱיוֹתְכֶם לִקְלָלָה
estis obliti Nunquid .terræ gentibus cunctis in ,opprobrium in &
וּלְחֶרְפָּה בְּכֹל גּוֹיֵי הָאָרֶץ: הַשְׁכַחְתֶּם אֶת־ 9
& , Jehudah regum malorum & ,vestrorum patrum malorum
רָעוֹת אֲבוֹתֵיכֶם וְאֶת־רָעוֹת מַלְכֵי יְהוּדָה וְאֵת
malorum & , vestrorum malorum & , *ejus* uxorum malorum
רָעוֹת נָשָׁיו וְאֵת רָעֹתֵכֶם וְאֵת רָעֹת
plateis in & , Jehudah terra in fecerunt quæ ,vestrarum uxorum
נְשֵׁיכֶם אֲשֶׁר עָשׂוּ בְּאֶרֶץ יְהוּדָה וּבְחֻצוֹת
non & , hanc diem ad usque sunt *attriti* Non ? Jerusalaim
יְרוּשָׁלִָם: לֹא דֻכְּאוּ עַד הַיּוֹם הַזֶּה וְלֹא 10
quæ , meis *statutis* in & ,mea lege in ambulârunt nec , timuerunt
יָרְאוּ וְלֹא־הָלְכוּ בְתוֹרָתִי וּבְחֻקֹּתַי אֲשֶׁר־
dixit sic Ideo .*vestrorum patrum facies ad &* ,*vestras facies ad* dedi
נָתַתִּי לִפְנֵיכֶם וְלִפְנֵי אֲבוֹתֵיכֶם: לָכֵן כֹּה־אָמַר 11
vos *in meas facies ponens* ego Ecce : Israel Deus exercituum Dominus
יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל הִנְנִי שָׂם פָּנַי בָּכֶם
tollam Et .Jehudah omnem *succidendum* ad & ,malum in
לְרָעָה וּלְהַכְרִית אֶת־כָּל־יְהוּדָה: וְלָקַחְתִּי אֶת־ 12
terram *ingrediendum ad* suas facies posuerunt qui , Jehudah residuum
שְׁאֵרִית יְהוּדָה אֲשֶׁר־שָׂמוּ פְנֵיהֶם לָבוֹא אֶרֶץ־
, Ægypti terra in omnes consumentur & ,ibi *peregrinandum* ad , Ægypti
מִצְרַיִם לָגוּר שָׁם וְתַמּוּ כֹל בְּאֶרֶץ מִצְרַיִם
,magnum ad usque & parvo à ,consumentur fame *in* gladio *in* , cadent
יִפֹּלוּ בַּחֶרֶב בָּרָעָב יִתַּמּוּ מִקָּטֹן וְעַד־גָּדוֹל
,stuporem in ,*execrationem* in erunt & : morientur fame *in* & gladio *in*
בַּחֶרֶב וּבָרָעָב יָמֻתוּ וְהָיוּ לְאָלָה לְשַׁמָּה
habitantes *super* visitabo Et .opprobrium in & ,maledictionem in &
וְלִקְלָלָה וּלְחֶרְפָּה: וּפָקַדְתִּי עַל הַיּוֹשְׁבִים 13
,gladio *in* ,Jerusalaim super visitavi quemadmodum , Ægypti terra in
בְּאֶרֶץ מִצְרַיִם כַּאֲשֶׁר פָּקַדְתִּי עַל־יְרוּשָׁלִָם בַּחֶרֶב
.peste *in* & , fame *in*
בָּרָעָב וּבַדָּבֶר:

Versio VULG. LAT.

3 Propter malitiam, quam fecerunt ut me ad iracundiam provocarent, & irent ut sacrificarent, & colerent deos alienos, quos nesciebant & illi, & vos, & patres 4 vestri. Et misi ad vos omnes servos meos prophetas, de nocte consurgens, mittensque & dicens; Nolite facere verbum abominationis hujuscemodi, quam 5 odivi. Et non audierunt, nec inclinaverunt aurem suam, ut converterentur à malis suis, & 6 non sacrificarent diis alienis. Et conflata est indignatio mea & furor meus, & succensa est in civitatib' Juda, & in plateis Jerusalem: & versæ sunt in solitudinem & vastitatem secundùm 7 diem hanc. Et nunc hæc dicit Domin' exercituum, Deus Israel; Quarè vos facitis malum grande hoc contra animas vestras, ut intereat ex vobis vir & mulier, parvul' & lactens de medio Judæ, nec relinquatur vobis quid-8 quam residuum: Provocantes me in operib' manuum vestrarum, sacrificando diis alienis in terra Ægypti, in quam ingressi estis ut habitetis ibi: & dispereatis, & sitis in maledictionem, & in opprobrium cunctis gen-9 tib' terræ? Numquid obliti estis mala patrum vestrorum, & mala regum Juda, & mala uxorum ejus, & mala vestra, & mala uxorum vestrarum, quæ fecerunt in terra Juda, & in regio-10 nibus Jerusalem? Non sunt mundati usque ad diem hanc: & non timuerunt, & non ambulaverunt in lege Domini, & in præceptis meis, quæ dedi coram vobis & coram patrib' vestris. 11 Ideò hæc dicit Domin' exercituum, De' Israel; Ecce ego ponam faciem meam in vobis in malum: & disperdam omnem 12 Judam. Et assumam reliquias Judæ, qui posuerunt facies suas ut ingrederentur terram Ægypti, & habitarent ibi: & consumentur omnes in terra Ægypti: cadent in gladio & in fame: & consumentur à minimo usque ad maximum, in gladio & in fame morientur: & erunt in jusjurandum, & in miraculum, & in maledictionem, & in opprobri-13 um. Et visitabo super habitatores terræ Ægypti, sicut visitavi super Jerusalem, in gladio, & fame, & peste.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

3 Καὶ ἀπέστειλεν ὁ βασιλεὺς Σεδεκίας τὸν (γ) Ἰωάχαλ υἱὸν Σελεμίου, καὶ τὸν Σοφονίαν υἱὸν (δ) Μαασαίου τὸν ἱερέα πρὸς Ἱερεμίαν, λέγων, Πρόσευξαι δὴ περὶ ἡμῶν πρὸς 4 κύριον. Καὶ Ἱερεμίας ἦλθε, καὶ διῆλθε (ε) διὰ μέσου τῆς πόλεως, καὶ οὐκ ἔδωκαν αὐτὸν (ζ) εἰς τὸν οἶκον τῆς φυλακῆς. Καὶ δύναμις Φαραὼ ἐξῆλθεν ἐξ Αἰγύπτου, καὶ ἤκουσαν οἱ Χαλδαῖοι τὴν ἀκοὴν αὐτῶν, καὶ ἀνέβησαν (η) 5 ἐπὶ Ἱερουσαλήμ. Καὶ ἐγένετο λόγος κυ-6 ρίου πρὸς Ἱερεμίαν, λέγων, Οὕτως εἶπε κύριος, Οὕτως ἐρεῖς πρὸς βασιλέα Ἰούδα τὸν ἀποστείλαντα πρὸς σὲ, (") τοῦ ἐκζητῆσαί με, Ἰδοὺ δύναμις Φαραὼ ἡ ἐξελθοῦσα ὑμῖν εἰς βοήθειαν, ἀποστρέψουσιν εἰς γῆν Αἰ-7 γύπτου, Καὶ ἀναστρέψουσιν (θ) αὐτοὶ οἱ Χαλδαῖοι, καὶ πολεμήσουσιν ἐπὶ τὴν πόλιν ταύτην, καὶ συλλήψονται αὐτὴν, καὶ καύσουσιν 8 αὐτὴν ἐν πυρί. Ὅτι οὕτως εἶπε κύριος, Μὴ ὑπολάβητε ταῖς ψυχαῖς ὑμῶν, λέγοντες, Ἀποτρέχοντες ἀπελεύσονται ἀφ' ἡμῶν οἱ 9 Χαλδαῖοι· ὅτι οὐ μὴ ἀπέλθωσι. Καὶ ἐὰν πατάξητε πᾶσαν δύναμιν τῶν Χαλδαίων τοὺς πολεμοῦντας ὑμᾶς, καὶ καταλειφθῶσί τινες ἐκκεκεντημένοι, ἕκαστος (*) ἐν τῷ τόπῳ αὐτοῦ (ι) οὗτοι ἀναστήσονται, καὶ καύσουσι τὴν πόλιν 10 ταύτην ἐν πυρί. Καὶ ἐγένετο ὅτε ἀνέβη ἡ δύναμις τῶν Χαλδαίων (κ) ἀπὸ Ἱερουσαλὴμ ἀπὸ προσώπου τῆς δυνάμεως Φαραὼ, 11 Ἐξῆλθεν (λ) Ἱερεμίας ἀπὸ Ἱερουσαλὴμ τοῦ πορευθῆναι εἰς γῆν Βενιαμὶν, τοῦ ἀγοράσαι 12 ἐκεῖθεν ἐν μέσῳ τοῦ λαοῦ. Καὶ ἐγένετο αὐτὸς ἐν πύλῃ Βενιαμὶν, καὶ ἐκεῖ ἄνθρωπος παρ' ᾧ (μ) κατέλυε, Σαρουΐα υἱὸς Σελεμίου, υἱοῦ Ἀνανίου, καὶ συνέλαβε τὸν Ἱερεμίαν, λέγων, Πρὸς 13 τοὺς Χαλδαίους σὺ φεύγεις. Καὶ εἶπε, Ψεῦδος, (ν) οὐκ εἰς τοὺς Χαλδαίους ἐγὼ φεύγω. Καὶ οὐκ (ξ) εἰσήκουσεν αὐτοῦ· καὶ συνέλαβε (ο) Σαρουΐα τὸν Ἱερεμίαν, καὶ εἰσήγαγεν αὐτὸν 14 πρὸς τοὺς ἄρχοντας. Καὶ ἐπικράνθησαν οἱ ἄρχοντες ἐπὶ Ἱερεμίαν, καὶ ἐπάταξαν αὐτὸν, καὶ ἀπέστειλαν αὐτὸν εἰς τὴν οἰκίαν Ἰωνάθαν τοῦ γραμματέως, ὅτι ταύτην ἐποίη-15 σαν εἰς (ˢ) οἰκίαν φυλακῆς. Καὶ ἦλθεν Ἱερεμίας εἰς οἰκίαν τοῦ λάκκου, καὶ εἰς τὴν χερέθ, 16 καὶ ἐκάθισεν ἐκεῖ ἡμέρας πολλάς. Καὶ ἀπέστειλε Σεδεκίας, καὶ ἐκάλεσεν αὐτὸν, καὶ (π) ἠρώτα αὐτὸν ὁ βασιλεὺς κρυφαίως εἰπεῖν, Εἰ ἔστιν ὁ λόγος παρὰ κυρίου; καὶ (ρ) εἶπεν, Ἔστιν· εἰς χεῖρας βασιλέως Βαβυλῶνος παρα-17 δοθήσῃ. Καὶ εἶπεν (·) Ἱερεμίας τῷ βασιλεῖ, Τί ἠδίκησά σε, καὶ τοὺς παῖδάς σου, καὶ τὸν λαὸν τοῦτον, ὅτι σὺ δίδως με εἰς οἰκίαν (σ) φυλακῆς;

Et misit rex Sedecias Joachal filium Selemiæ, & Sophoniam filium Maasiæ sacerdotem, ad Hieremiam, dicens; Ora nunc pro nobis ad Dominum. Et Hieremias venit, & transiit per medium civitatis: & non dederunt eum in domum carceris. Et virtus Pharaonis exiit ex Ægypto: & audierunt Chaldæi famam eorum: & ascenderunt (b) desuper Hierusalem. Et factum est verbum Domini ad Hieremiam, dicens; Sic dixit Dominus; Sic dices ad regem Juda, qui misit ad te ad exquirendum me; Ecce virtus Pharaonis, quæ egressa est vobis in auxilium, revertent in terram Ægypti: Et revertent ipsi Chaldæi, & bellabunt super civitatem hanc, & capient eam, & succendent eam in igne. Quoniam sic dixit Dominus; Non existimetis animabus vestris, dicentes; Recurrentes abibunt à nobis Chaldæi: quia non abibunt. Et, si percusseritis omnem virtutem Chaldæorum, eos, qui oppugnant vos, & remanserint quidam transfixi, unusquisque in loco suo, isti consurgent, & incendent civitatem hanc in igne. Et factum est, quando ascendit virtus Chaldæorum à Hierusalem à facie virtutis Pharaonis: Egressus est Hieremias de Hierusalem, ut iret in terram Benjamin, ut (c) emeret indè in medio populi. Et fuit ipse in porta Benjamin: & ibi homo, apud quem divertebat, Saruia filius Selemiæ, filii Ananiæ: & comprehendit Hieremiam, dicens; Ad Chaldæos tu fugis. Et dixit, Mendacium: non ad Chaldæos ego fugio. Et non exaudivit eum: & comprehendit Saruia Hieremiam: & introduxit eum ad principes. Et exacerbati sunt principes super Hieremiam, & percusserunt eum: & miserunt eum in domũ Jonathan scribæ: quia hanc fecerant in domum carceris. Et venit Hieremias in domum laci, & in (d) Chereth: & sedit ibi diebus multis. Et misit Sedecias, & vocavit eum: & interrogabat eum rex abscondìtè, dicendo, Si est verbum à Domino? Et dixit, Est: in manus regis Babylonis tradêris. Et dixit Hieremias regi; Quid læsi te, & pueros tuos, & populum istum; quia tu das me in domum carceris? 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17

MS.A. (γ) Ἰωάχαζ (δ) Μασαίου (ε) ἀναμέσον (ζ) εἰς οἶκον (η) ἀπὸ (") ἐκζητῆσαί (θ) οἱ Χαλδαῖοι, οἱ πολεμοῦντες τὴν γῆν ταύτην, (*) ἐν τόπῳ (ι) ὅτι αὐτοὶ (κ) ἐπὶ (λ) Ἱερεμίας (μ) κατέλυσεν, Σαρουΐας (ν) οὐχὶ πρὸς τοὺς (ξ) ἤκουσεν (ο) Σαρουΐας (ˢ) οἶκον (π) ἐπηρώτησεν αὐτὸν κρυφαίως, Εἰ ἔστιν λόγος κυρίου; (ρ) εἶπεν αὐτῷ, (·) Ἱερεμίας (σ) τῆς φυλακῆς;

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

מִן קֳדָם בִּישַׁתְהוֹן דַּעֲבַדוּ לְאַרְגָזָא קֳדָמַי לִמְהָךְ לְאַסָּקָא בוּסְמִין לְמִפְלַח לְטַעֲוַת עַמְמַיָא 3
דְּלָא יַדְעוּנוּן אַתּוּן וַאֲבָהַתְכוֹן: וּשְׁלַחִית לְוָתְכוֹן יָת כָּל עַבְדַי נְבִיַּיָא מַקְדִּים וּמַשְׁלַח 4
לְמֵימַר לָא כְעַן תַּעְבְּדוּן יָת עֲסַק תּוֹעֵיבְתָא הָדָא דְּרַחֵיקִית: וְלָא קַבִּילוּ וְלָא אַרְכִינוּ 5
יָת אוּדְנֵיהוֹן לְמֵתַב מִבִּישַׁתְהוֹן בְּדִיל דְּלָא לְאַסָּקָא בוּסְמִין לְטַעֲוַת עַמְמַיָא: וְחַל רוּגְזִי 6
וְחֵמְתִי וּדְלֵיק בְּקִרְוַיָא דְּבֵית יְהוּדָה וּבְשׁוּקֵי יְרוּשְׁלֶם וַהֲוָאָה לְחוּרְבָא לְצָדוּ כְּיוֹמָא הָדֵין:
וּכְעַן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלָהֵי צְבָאוֹת אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל לְמָה אַתּוּן גָּרְמִין בִּישְׁתָא רַבְּתָא עַל 7
נַפְשָׁתְכוֹן לְשֵׁיצָאָה לְכוֹן גְּבַר וְאִתְּתָא וְעוּלֵים וְיָנִיק מִגּוֹ בֵּית יְהוּדָה בְּדִיל דְּלָא לְמִשְׁבַּק לְכוֹן
שְׁאָרָא: לְאַרְגָזָא קֳדָמַי בְּעוּבָדֵי יְדֵיכוֹן לְאַסָּקָא בוּסְמִין לְטַעֲוַת עַמְמַיָא בְּאַרְעָא דְמִצְרַיִם 8
דְּאַתּוּן אָתַן לְאִתּוֹתָבָא תַמָּן בְּדִיל לְשֵׁיצָאָה לְכוֹן וּבְדִיל לְמֶהֱוֵיכוֹן לְלוּטָא וּלְחִסּוּדִין
בְּכֹל עַמְמֵי אַרְעָא: הַאִתְנְשִׁיתוּן יָת בִּישׁוּת אֲבָהָתְכוֹן וְיָת בִּישׁוּת מַלְכַיָא דְבֵית יְהוּדָה 9
וְיָת בִּישׁוּת נְשׁוֹהִי וְיָת בִּישַׁתְכוֹן וְיָת בִּישׁוּת נְשֵׁיכוֹן דַּעֲבַדוּ בְּאַרְעָא דְבֵית יְהוּדָה וּבְשׁוּקֵי
יְרוּשְׁלֶם: לָא פְסַקוּ עַד יוֹמָא הָדֵין וְלָא דְחִילוּ וְלָא הַלִּיכוּ בְּאוֹרָיְתִי וּבִקְיָמַי דִּיהָבִית 10
קֳדָמֵיכוֹן וּקְדָם אֲבָהָתְכוֹן: בְּכֵין כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל הָא אֲנָא מְשַׁוֵי 11
אַפֵּי בְכוֹן לְבִישָׁא וּלְשֵׁיצָאָה יָת כָּל דְּבֵית יְהוּדָה: וְאֶסַּב יָת שְׁאָרָא דְבֵית יְהוּדָה דְּשַׁוִּיאוּ 12
אַפֵּיהוֹן לְמֵיעַל לְאַרְעָא דְמִצְרַיִם לְאִתּוֹתָבָא תַמָּן וִיסוּפוּן כּוּלְּהוֹן בְּאַרְעָא דְמִצְרַיִם
יִתְרְמוֹן בְּחַרְבָּא וּבְכַפְנָא יְסוּפוּן מִזְעֵירָא וְעַד רַבָּא בְּחַרְבָּא וּבְכַפְנָא יְמוּתוּן וִיהוֹן לְמוֹמֵי
וְלִצְדוּ וּלְלוּטָא וּלְחִסּוּדִין: וְאַסְעַר עַל דְּיָתְבִין בְּאַרְעָא דְמִצְרַיִם כְּמָא דְאַסְעָרִית עַל 13
יְרוּשְׁלֶם בְּחַרְבָּא בְּכַפְנָא וּבְמוֹתָנָא:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Propter mala sua quæ fecerunt ut irritarent me, & irent, & adolerent aromata, & servirent idolis populorum, quæ nescierunt ipsi, & vos & patres vestri. Et misi ad vos omnes servos meos prophetas, manè consurgens & mittens; dicendo: Ne faciatis nunc rem abominationis hujus quam abjeci. Et non obedierunt nec inclinaverunt aures suas ut converterentur à malitia sua, ut non adolerent aromata idolis populorum. Et mansit furor meus & ira mea; & succensa est in civitates domus Juda, & in vicos Jerusalem: & factæ sunt in solitudinem, & in desolationem, sicut in die hac. Et nunc hæc dicit Dominus Deus exercituum Deus Israel: Quare vos causa estis mali grandis contra animas vestras, ut consumam ex vobis virum & mulierem, adolescentem, & lactentem de medio domus Juda, ut non remaneant vobis reliquiæ: Irritantes me operibus manuum vestrarum, adolendo aromata idolis populorum in terra Ægypti, quò vos venistis ad habitandum ibi, ut consumam vos, & ut sitis in maledictionem, & opprobria omnibus populis terræ? Nunquid obliti estis malitiæ patrum vestrorum, & malitiæ regum domus Juda, & malitiæ uxorum eorum, & malitiæ vestræ, & malitiæ uxorum vestrarum, quam fecerunt in terra domus Juda, & in vicis Jerusalem? Non cessaverunt usque in diem hanc, nec timuerunt, nec ambulaverunt in lege mea, & in pactis meis quæ posui coram vobis & patribus vestris. Propterea hæc dicit Dominus exercituum Deus Israel: Ecce ego ponam faciem meam in vobis in malum, ut consumam omnes viros domus Juda. Et tollam reliquias populi domus Juda, quæ posuerunt facies suas ut ingrederentur in terram Ægypti ad habitandum ibi: & consumentur omnes in terra Ægypti, cadent in gladio, & fame consumentur à minimo usque ad maximum in gladio, & fame morientur, & erunt in jusjurandum & vastitatem, & in maledictionem, & in opprobria. Et visitabo super eos qui habitant in terra Ægypti, sicut visitavi contra Jerusalem in gladio, & in fame, & in peste. 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܡܛܠ ܟܠܗ ܒܝܫܬܐ ܕܥܒܕܘ ܘܐܪܓܙܘܢܝ. ܘܐܙܠܘ ܘܣܡܘ ܒܣ̈ܡܐ ܠܐܠܗ̈ܐ ܐ̱ܚܪ̈ܢܐ. 3
[illegible] ܕܠܐ ܝܕܥܘ ܐܢܘܢ ܗܢܘܢ ܘܐܒܗ̈ܝܗܘܢ. * ܘܫܕܪܬ ܠܘܬܗܘܢ ܠܟܠܗܘܢ ܥܒܕ̈ܝ ܢܒ̈ܝܐ. 4
ܡܩܕܡ ܘܫܕܪܬ ܘܐܡܪܬ. ܠܐ ܬܥܒܕܘܢ ܛܢܦܘܬܐ ܗܕܐ ܕܣܢܝܬ. * ܘܠܐ ܫܡܥܘ ܘܠܐ ܐܪܟܢܘ ܐܕܢܗܘܢ 5
ܕܢܬܦܢܘܢ ܡܢ ܒܝܫܬܗܘܢ. ܕܠܐ ܢܣܝܡܘܢ ܒܣ̈ܡܐ ܠܐܠܗ̈ܐ ܐ̱ܚܪ̈ܢܐ. ܘܐܬܬܝܚ ܚܡܬܝ ܘܪܘܓܙܝ 6
ܘܢܦܩܬ. ܘܐܚܕܬ ܢܘܪܐ ܒܩܘܪ̈ܝܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܒܫܘ̈ܩܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܘܗܘܝ ܠܚܘܪܒܐ.
ܘܠܬܡܗܐ. ܐܝܟ ܕܝܘܡܢܐ. * ܘܗܫܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ 7
ܠܡܢܐ ܥܒܕܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܝܫܬܐ ܪܒܬܐ ܗܕܐ ܠܢܦܫܟܘܢ. ܕܬܘܒܕܘܢ ܡܢܟܘܢ ܓܒܪ̈ܐ
ܘܢܫ̈ܐ. ܘܛܠܝ̈ܐ ܘܝܢܘܩ̈ܐ ܡܢ ܓܘ ܝܗܘܕܐ. ܕܠܐ ܢܫܬܒܩ ܠܟܘܢ ܫܪܟܐ. * ܡܛܠ 8
ܕܡܪܓܙܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܝ ܒܥܒܕ̈ܐ ܕܐܝ̈ܕܝܟܘܢ. ܘܡܣܝܡܝܢ ܒܣ̈ܡܐ ܠܐܠܗ̈ܐ ܐ̱ܚܪ̈ܢܐ. ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ
ܕܥܠܬܘܢ ܠܡܥܡܪ ܬܡܢ. ܕܬܘܒܕܘܢ. ܘܬܗܘܘܢ ܠܠܘܛܬܐ ܘܠܚܣܕܐ. ܒܟܠܗܘܢ ܥܡܡ̈ܐ
ܕܐܪܥܐ. * ܠܡܐ ܛܥܝܬܘܢ ܒܝܫܬܐ ܕܐܒܗ̈ܝܟܘܢ. ܘܒܝܫܬܐ ܕܡ̈ܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ 9
ܘܒܝܫܬܐ ܕܢܫܝ̈ܗܘܢ. ܕܥܒܕܘ ܒܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕܐ ∴ ܘܒܫܘ̈ܩܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. * ܘܠܐ ܐܬܕܟܝܘ 10
ܥܕܡܐ ܠܝܘܡܢܐ. ܘܠܐ ܕܚܠܘ ܘܠܐ ܦܠܚܘܢܝ ܘܠܐ ܗܠܟܘ ܒܢܡܘܣܝ ܘܒܩܝܡܝ
ܕܝܗܒܬ ܠܗܘܢ ܘܠܐܒܗ̈ܝܗܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ ܐܠܗܗ 11
ܕܐܝܣܪܝܠ. ܗܐ ܣܐܡ ܐܢܐ ܐܦܝ ܒܟܘܢ ܠܒܝܫܬܐ. ܘܠܡܘܒܕܘ ܠܟܠܗܘܢ ܕܒܝܬ
ܝܗܘܕܐ. * ܘܐܣܒ ܫܪܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܕܣܡܘ ܐܦ̈ܝܗܘܢ ܠܡܥܠ ܠܡܨܪܝܢ ܠܡܥܡܪ ܬܡܢ. 12
ܘܢܫܬܠܡܘܢ. ܒܚܪܒܐ ܘܒܟܦܢܐ ܘܒܡܘܬܢܐ. ܘܢܗܘܘܢ ܠܡܘܡܬܐ ܘܠܬܡܗܐ
ܘܠܠܘܛܬܐ. ܘܠܚܣܕܐ. * ܘܐܦܩܘܕ ܥܠ ܕܥܡܪܝܢ ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܐܝܟ ܕܦܩܕܬ ܥܠ 13
ܐܘܪܫܠܡ. ܒܚܪܒܐ ܘܒܟܦܢܐ ܘܒܡܘܬܢܐ.

* Propter totum illud crimen quod commi- 3
ſerunt irritando me, & eundo thuráque ad-
hibendo diis alienis quos nec ipſi neque ma-
jores eorum cognoſcebant. Et *licèt* miſerim 4
ad eos omnes prophetas, præmiſerim atque
prædixerim, Ne perpetretis abominatio-
nem iſtam quam odi: Tamen non audierunt 5
neque aurem admoverunt, ut reverterentur
à ſceleribus ſuis, ne thura adhiberent diis
alienis. Idcirco deſæviente irâ & furore meo 6
exarſit ignis in civitatibus Judæ & in plateis
Jeroſolymæ, & redactæ ſunt in vaſtitatem &
ſtuporem, ut hodie *cernuntur*. Quapropter 7
ſic ait Dominus potentiſſimus Deus Iſraelis,
Quare tantum crimen perpetratis in voſmet-
ipſos, ut extinguatis à vobis viros & fœmi-
nas, & adoleſcentes ac pueros ex Juda, adeo-
que nullum relinquatis vobis veſtigium? Me 8
enim irritatis facinore manuum veſtrarum,
& adoletis thura diis alienis in terra Ægypti
quam ingreſſi eſtis ad peregrinandum illic;
ut extinguam vos, & ſitis maledictioni &
opprobrio apud omnes terræ populos. Num 9
obliti eſtis ſceleris patrum veſtrorum, ſcele-
ris regum Judæ, & ſceleris uxorum eorum,
quod perpetraverunt in terra Judæ & in pla-
teis Jeroſolymæ: Necdum expiaverunt ſe ad 10
hunc uſque diem, neque timuerunt aut colue-
runt me, neque ambulaverunt in lege mea &
fœdere meo quod dedi eis & majoribus eo-
rum? Idcirco ſic ait Dominus potentiſſimus 11
Deus Iſraelis, Ecce vultu maligno vos re-
ſpiciam, ad extinguendum omnes Judæos:
Conterámque reliquias Judæ qui propoſue- 12
runt ingredi Ægyptum ad peregrinandum
illic: peribunt enim gladio, fame, & peſte;
& erunt execrationi, ſtupori, maledictioni,
atque opprobrio. Et animadvertam in eos 13
qui commorantur in terra Ægypti, quemad-
modum animadverti in Jeroſolymam, gladio,
fame, & peſte:

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* الاصحاح التاسع والعشرون * وارسل الملك صداقيا يواحال بن سالاميو وصفونيا 3
بن ماساو الكاهن الي ارميا قايلا * صل من اجلنا الي الرب * فدخل ارميا وجاز وسط المدينة * 4
ولم يدفعوه الي بيت الحبس * وجيش فرعون خرج من مصر * فسمع الكلدانيون بسماعهم 5
وصعدوا عن ايروسليم * وصار قول الرب الي ارميا قايلا * 6
* هكذا قال الرب * هكذا تقول لملك يهودا الذي ارسل اليك لتطلبني * ها جيش فرعون 7
الخارج لكم للمعونة يرجعون الي ارض مصر * ويعود الكلدانيون الذين يحاربون هذه 8
الارض * وياخذونها ويحرقونها بالنار * لان هكذا قال الرب * لا تظنون في نفوسكم قايلين 9
ان الكلدانيين يسرعون وينصرفون عنكم * لانهم لم يذهبوا * وان ضربتم كل جيش 10
الكلدانيين الذين يحاربونكم * فيبقي قوم مجروحون كل واحد في موضعه * ان هاولاء
يقومون ويحرقون هذه المدينة بالنار * وكان لما صعد جيش الكلدانيين عن ايروسليم 11
من وجه جيش فرعون * خرج ارميا من ايروسليم ليذهب الي ارض بنيامين * ليبتاع من 12
هناك في وسط شعبه * وصار هو في باب بنيامين * وكان هناك انسان نزل عنده وهو صارويياس 13
بن سالاميو بن حنانيا * فقبض ارمياء قايلا * الي الكلدانيين انت تهرب * فقال كذب 14
ليس الي الكلدانيين انا اهرب * فلم يسمع منه * واخذ صارويياس ارميا وادخله الي
الروساء * فغضب الروساء علي ارميا وضربوه وارسلوه الي بيت يوناثان الكاتب * لانهم صنعوا 15
هذا في بيت الحبس * واتي ارميا الي الجب والي ساراث * وجلس اياما كثيرة * فارسل 16 17
صداقيا وادعاه وساله سرا * اموجود قول من الرب * فقال له موجود * في ايدي ملك بابل
تدفع * وقال ارميا للملك * بماذا اصبت بك وبعبيدك وبهذا الشعب لانك انت تدفعني 18
الي بيت الحبس *

Textus vigeſimus nonus.

Miſit autem rex Sedecia Joachalem Sele- 3
miæ filium, & Sephoniam filium Maaſiæ
ſacerdotem ad Jeremiam, dicens; Ora
pro nobis ad Dominum. Porrò ingredie- 4
batur Jeremia, tranſibátque per mediam
urbem, neque poſuerunt eum in domum
carceris. Interim exercitus Pharaonis 5
prodivit ex Ægypto: & cùm audîſſent
Chaldæi famam illorum, abſceſſerunt ab
Jeruſalem.

Tum factus eſt ſermo Domini 6
ad Jeremiam, dicens;

Sic ait Dominus, Ita dices regi Judæ 7
qui miſit ad te ut me requireres; En ex-
ercitus Pharaonis egreſſus in auxilium ve-
ſtrum, redibunt in terram Ægypti: Et 8
revertentur Chaldæi qui terram hanc op-
pugnant, & capient eam, ignéque combu-
rent. Nam ita dixit Dominus, Ne exi- 9
ſtimetis animis veſtris, dicentes; Chal-
dæos illicò diſceſſuros à vobis, nondum
enim abierunt: Et licèt percuſſeritis to- 10
tum exercitum Chaldæorum qui vos op-
pugnant; tamen remanebunt aliquot vul-
nerati quiſque in loco ſuo; & hi ſur-
gent, & hanc urbem igne comburent.
Factum eſt autem ut cùm diſceſſiſſet ex- 11
ercitus Chaldæorum ab Jeruſalem propter
exercitum Pharaonis, Egrederetur Je- 12
remia è Jeruſalem ut iret in terram Ben-
jaminis ad aliquid *inde emendum in me-*
dio populi ſui. Cúmque fuiſſet ipſe ad 13
portam Benjaminis, fuit ibi quidam apud
quem diverterat; (nempe Saruias filius
Selemiæ filii Hananiæ) qui comprehen-
dit Jeremiam, dicens; Ad Chaldæos tu
fugis. Reſpondit, Falſum eſt, nequa- 14
quam ad Chaldæos ego fugio. Verùm il-
le non acquievit; ſed captum Saruias
Jeremiam introduxit ad principes. Tunc 15
indignati principes contra Jeremiam, per-
cuſſerunt eum, & miſerunt in domum Jo-
nathanis ſcribæ: hunc enim poſuerant in
domo carceris. Venit ergò Jeremia ad 16
foveam & ad Sereth: cúmque manſiſſet
ibi dies multos, Mittens Sedecia advo- 17
cavit eum, & interrogavit eum ſecretò
num adeſſet ſermo à Domino: Cui dixit,
Adeſt: in manus regis Babelis tradendus
es. Præterea dixit Jeremia ad regem, 18
Qua in re læſi te, aut ſervos tuos, aut
populum iſtum, ut tu tradas me in do-
mum carceris?

ירמיה: מד

ingredientibus , Jehudah residuo superstes & evasor erit non Et
14 וְלֹא יִהְיֶה פָּלִיט וְשָׂרִיד לִשְׁאֵרִית יְהוּדָה הַבָּאִים
,Jehudah terram revertendum ad &,Ægypti terra in ibi peregrinandū ad
לָגוּר־שָׁם בְּאֶרֶץ מִצְרַיִם וְלָשׁוּב אֶרֶץ יְהוּדָה
habitandum ad *revertendum ad* , suam animam *elevantes* ipsi quam
אֲשֶׁר־הֵמָּה מְנַשְּׂאִים אֶת־נַפְשָׁם לָשׁוּב לָשֶׁבֶת
ipsi responderunt Et evasores nisi revertentur non quia : ibi
שָׁם כִּי לֹא־יָשׁוּבוּ כִּי אִם־פְּלֵטִים׃ וַיַּעֲנוּ אֶת־ 15
eorum uxores *suffientes* quòd *scientes* , viri omnes Irmejahu
יִרְמְיָהוּ כָּל־הָאֲנָשִׁים הַיֹּדְעִים כִּי־מְקַטְּרוֹת נְשֵׁיהֶם
, magno cœtu *stantes* mulieres universæ & , alienis Diis
לֵאלֹהִים אֲחֵרִים וְכָל־הַנָּשִׁים הָעֹמְדוֹת קָהָל גָּדוֹל
: dicendo ,Pathros in Ægypti terra in *habitantes* populus omnis &
וְכָל־הָעָם הַיֹּשְׁבִים בְּאֶרֶץ־מִצְרַיִם בְּפַתְרוֹס לֵאמֹר׃
audientes nos non ,Domini nomine in nos ad es locutus quod Verbo
16 הַדָּבָר אֲשֶׁר־דִּבַּרְתָּ אֵלֵינוּ בְּשֵׁם יְהוָה אֵינֶנּוּ שֹׁמְעִים
est egressum quod , verbum omne faciemus faciendo Sed .te ad
17 אֵלֶיךָ׃ כִּי עָשֹׂה נַעֲשֶׂה אֶת־כָּל־הַדָּבָר אֲשֶׁר־יָצָא
, libamina ei libando & ,cœlorum *reginæ* suffiendo ,nostro ore de
מִפִּינוּ לְקַטֵּר לִמְלֶכֶת הַשָּׁמַיִם וְהַסֵּיךְ־לָהּ נְסָכִים
nostri principes &,nostri reges ,nostri patres & , nos fecimus sicut
כַּאֲשֶׁר עָשִׂינוּ אֲנַחְנוּ וַאֲבֹתֵינוּ מְלָכֵינוּ וְשָׂרֵינוּ
, pane sumus saturati & : Jerusalaim plateis in & , Jehudah urbibus in
בְּעָרֵי יְהוּדָה וּבְחֻצוֹת יְרוּשָׁלַםִ וַנִּשְׂבַּע־לֶחֶם
cessavimus *tunc* ex Et .vidimus non malum & , *boni* fuimus &
18 וַנִּהְיֶה טוֹבִים וְרָעָה לֹא רָאִינוּ׃ וּמִן־אָז חָדַלְנוּ
:omnibus caruimus,libamina ei libare & , cœlorum *reginæ* suffire
לְקַטֵּר לִמְלֶכֶת הַשָּׁמַיִם וְהַסֵּךְ־לָהּ נְסָכִים חָסַרְנוּ כֹל
suffientes nos *cùm* Et .sumus consumpti fame in & , gladio *in* &
19 וּבַחֶרֶב וּבָרָעָב תָּמְנוּ׃ וְכִי־אֲנַחְנוּ מְקַטְּרִים
præter nunquid , libamina ei *libando* & , cœlorum *opificio*
לִמְלֶכֶת הַשָּׁמַיִם וּלְהַסֵּךְ לָהּ נְסָכִים הֲמִבַּלְעֲדֵי
ei libandum & , eam *effingendum ad* , *effigies* ei fecimus *nostros viros*
אֲנָשֵׁינוּ עָשִׂינוּ לָהּ כַּוָּנִים לְהַעֲצִבָה וְהַסֵּךְ לָהּ
, viros *super* ,populum omnem ad Irmejahu dixit Et ?libamina
20 נְסָכִים׃ וַיֹּאמֶר יִרְמְיָהוּ אֶל־כָּל־הָעָם עַל־הַגְּבָרִים
, verbum ei *respondentes* , populum omnem *super* & , mulieres *super* &
וְעַל־הַנָּשִׁים וְעַל־כָּל־הָעָם הָעֹנִים אֹתוֹ דָּבָר
, Jehudah civitatibus in *suffivistis quem suffitus* Nónne : dicendo
21 לֵאמֹר׃ הֲלֹא אֶת־הַקִּטֵּר אֲשֶׁר קִטַּרְתֶּם בְּעָרֵי יְהוּדָה
, vestri reges , vestri patres & , vos , Jerusalaim plateis in &
וּבְחֻצוֹת יְרוּשָׁלַםִ אַתֶּם וַאֲבוֹתֵיכֶם מַלְכֵיכֶם
, Dominus est recordatus *ipsorum* , terræ populus & ,vestri principes &
וְשָׂרֵיכֶם וְעַם הָאָרֶץ אֹתָם זָכַר יְהוָה
ultrà Dominus poterat non Et ? ejus cor super *ascendit* &
22 וַתַּעֲלֶה עַל־לִבּוֹ׃ וְלֹא־יוּכַל יְהוָה עוֹד
,*abominationum faciebus à* , vestrorum *actorum malitiæ faciebus à* ferre
לָשֵׂאת מִפְּנֵי רֹעַ מַעַלְלֵיכֶם מִפְּנֵי הַתּוֹעֵבֹת
, stuporem in & ,desolationem in vestra terra fuit & : fecistis quas
אֲשֶׁר עֲשִׂיתֶם וַתְּהִי אַרְצְכֶם לְחָרְבָּה וּלְשַׁמָּה
Propterea .hanc diem secundùm *habitatore absque* , maledictionem in &
23 וְלִקְלָלָה מֵאֵין יוֹשֵׁב כְּהַיּוֹם הַזֶּה׃ מִפְּנֵי
non & , Domino peccaveritis quòd & , suffiveritis quòd
אֲשֶׁר קִטַּרְתֶּם וַאֲשֶׁר חֲטָאתֶם לַיהוָה וְלֹא
, ejus *statutis* in & , ejus lege in & , Domini *voce in* *audieritis*
שְׁמַעְתֶּם בְּקוֹל יְהוָה וּבְתֹרָתוֹ וּבְחֻקֹּתָיו
vobis evenit idcirco : ambulaveritis non ejus testimoniis in &
וּבְעֵדְוֹתָיו לֹא הֲלַכְתֶּם עַל־כֵּן קָרָאת אֶתְכֶם
.hanc diem secundùm hoc malum
הָרָעָה הַזֹּאת כַּיּוֹם הַזֶּה׃

Versio VULG. LAT.

14 Et non erit qui effugiat, & sit
residuus de reliquiis Judæorum,
qui vadunt ut peregrinentur in
terra Ægypti : & revertantur in
terram Juda, ad quam ipsi elevant
animas suas ut revertantur,
& habitent ibi : non revertentur
15 nisi qui fugerint. Responderunt
autem Jeremiæ omnes
viri, scientes quòd sacrificarent
uxores eorum diis alienis, & universæ
mulieres, quarum stabat
multitudo grandis, & omnis popul⁹
habitantium in terra Ægypti
16 in Phatures, dicentes; Sermonem,
quem locut⁹ es ad nos
in nomine Domini, non audiemus
17 ex te : Sed facientes faciemus
omne verbum quod egredietur
de ore nostro, ut sacrificem⁹
reginæ cœli, & libemus ei libamina,
sicut fecim⁹ nos, & patres
nostri, reges nostri, & principes
nostri, in urbib⁹ Juda, & in
plateis Jerusalem : & saturati
sumus panib⁹, & benè nobis erat,
18 malúmque non vidim⁹. Ex
eo autem tempore, quo cessavimus
sacrificare reginæ cœli, &
libare ei libamina, indigem⁹ omnibus,
& gladio, & fame consumpti
19 sumus. Quòd si nos sacrificam⁹
reginæ cœli, & libam⁹
ei libamina : numquid sine viris
nostris fecim⁹ ei placentas,ad
colendum eam, & libandum ei
20 libamina? Et dixit Jeremias
ad omnem populum, adversùm
viros, & adversùm mulieres, &
adversùm universam plebem,
qui responderant ei verbum, dicens;
21 Numquid non sacrificium,
quod sacrificâstis in civitatibus
Juda, & in plateis Jerusalem,
vos & patres vestri, reges
vestri, & principes vestri, &
popul⁹ terræ, horum recordatus
est Dominus, & ascendit super
22 cor ejus? Et non poterat Domin⁹
ultrà portare propter malitiam
studiorum vestrorum, &
propter abominationes quas fecistis
: & facta est terra vestra in
desolationem, & in stuporem, &
in maledictum, eò quòd non sit
23 habitator, sicut est dies hæc. Propterea
quòd sacrificaveritis idolis,
& peccaveritis Domino, &
non audieritis vocem Domini,
& in lege, & in præceptis, & in
testimoniis ejus non ambulaveritis
: idcircò evenerunt vobis
mala hæc, sicut est dies hæc.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

18 Καὶ ποῦ εἰσιν οἱ προφῆται ὑμῶν οἱ (τ) προφητεύσαντες ὑμῖν, λέγοντες, Ὅτι οὐ μὴ ἔλθῃ βασιλεὺς Βαβυλῶνος ἐπὶ τὴν γῆν ταύτην;
19 Καὶ νῦν (υ) κύριε βασιλεῦ, πεσέτω τὸ ἔλεός μου κατὰ πρόσωπόν σου· καὶ τί ἀποστρέφεις με εἰς οἰκίαν Ἰωνάθαν τοῦ γραμματέως; καὶ οὐ μὴ ἀποθάνω ἐκεῖ.
20 Καὶ συνέταξεν ὁ βασιλεύς, καὶ ἐνεβάλοσαν αὐτὸν εἰς οἰκίαν τῆς φυλακῆς, καὶ ἐδίδοσαν αὐτῷ ἄρτον ἕνα τῆς ἡμέρας, ἔξωθεν οὗ πέσσουσιν, ἕως ἐξέλιπον οἱ ἄρτοι ἐκ τῆς πόλεως. καὶ ἐκάθισεν Ἱερεμίας ἐν τῇ αὐλῇ τῆς φυλακῆς.

Et ubi sunt prophetæ vestri, qui prophetabant vobis, dicentes; Quia non veniet rex Babylonis super terram hanc? 18
Et (v) nunc, domine rex, procidat misericordia mea ad faciem tuam. Et quid redire me facis in domum Jonathan scribæ? & non moriar ibi. 19
Et præcepit rex, & miserunt eum in domum carceris: & dederunt ei panem unum die deforis, ubi panem faciebant; donec defecerunt panes de civitate. Et sedit Hieremias in atrio carceris. 20

MS.A. (τ) προφητεύοντες (υ) κύριέ μου βασιλεῦ, πεσάτω δὴ τὸ

Cap. 38. Vulg. Lat.

ΚΕΦ. με΄.

1 ΚΑὶ ἤκουσε Σαφανίας υἱὸς
Νάθαν, καὶ Γοδολίας υἱὸς Πασχώρ, καὶ Ἰωάχαλ
υἱὸς Σελεμίου, τοὺς λόγους οὓς (*) Ἱερεμίας
2 ἐλάλει ἐπὶ τὸν λαόν, λέγων, Οὕτως εἶπε
κύριος, Ὁ κατοικῶν ἐν τῇ πόλει
ταύτῃ, ἀποθανεῖται ἐν ῥομφαίᾳ, καὶ ἐν λιμῷ·
καὶ ὁ ἐκπορευόμενος πρὸς τοὺς Χαλδαίους,
ζήσεται, καὶ ἔσται ἡ ψυχὴ αὐτοῦ εἰς
3 (α) εὕρημα, καὶ ζήσεται. Ὅτι οὕτως εἶπε
κύριος, Παραδιδομένη παραδοθήσεται ἡ
πόλις αὕτη εἰς χεῖρας δυνάμεως βασιλέως
Βαβυλῶνος, καὶ (β) συλλήψεται
4 αὐτήν· Καὶ (γ) εἶπον τῷ βασιλεῖ, Ἀναιρεθήτω
(*) δὴ ὁ ἄνθρωπος ἐκεῖνος, (δ)
ὅτι αὐτὸς ἐκλύει τὰς χεῖρας τῶν ἀνθρώπων
τῶν (ε) πολεμούντων τῶν καταλειπομένων
ἐν τῇ πόλει, καὶ τὰς χεῖρας παντὸς
τοῦ λαοῦ, λαλῶν πρὸς αὐτοὺς κατὰ τοὺς λόγους
τούτους· ὅτι ὁ ἄνθρωπος οὗτος οὐ χρησμολογεῖ
εἰρήνην τῷ (ζ) λαῷ τούτῳ,
5 ἀλλ' ἢ πονηρά. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεύς,
Ἰδοὺ αὐτὸς ἐν (η) χερσὶν ὑμῶν· ὅτι οὐκ
6 ἠδύνατο ὁ βασιλεὺς πρὸς αὐτούς. Καὶ
ἔρριψαν αὐτὸν εἰς (θ) λάκκον Μελχίου υἱοῦ
τοῦ βασιλέως, ὃς ἦν ἐν τῇ αὐλῇ τῆς φυλακῆς,
καὶ ἐχάλασαν αὐτὸν εἰς τὸν λάκκον,
καὶ ἐν τῷ λάκκῳ οὐκ ἦν ὕδωρ, ἀλλ' ἢ βόρβορος,
7 καὶ ἦν ἐν τῷ βορβόρῳ. Καὶ ἤκουσεν
Ἀβδεμέλεχ ὁ Αἰθίοψ, καὶ αὐτὸς ἐν οἰκίᾳ
τοῦ βασιλέως, ὅτι ἔδωκαν Ἱερεμίαν
εἰς τὸν λάκκον· καὶ ὁ βασιλεὺς ἦν ἐν τῇ (*) πύλῃ
8 Βενιαμίν, Καὶ ἐξῆλθε πρὸς αὐτόν, καὶ
ἐλάλησε πρὸς τὸν βασιλέα, καὶ εἶπεν,
9 Ἐπονηρεύσω ἃ ἐποίησας τοῦ ἀποκτεῖναι
τὸν ἄνθρωπον τοῦτον, ἀπὸ προσώπου τοῦ λιμοῦ,
ὅτι οὐκ εἰσὶν ἔτι ἄρτοι ἐν τῇ πόλει.
10 Καὶ ἐνετείλατο ὁ βασιλεὺς τῷ Ἀβδεμέλεχ,
λέγων, Λάβε εἰς (ι) τὰς χεῖράς σου
ἐντεῦθεν τριάκοντα ἀνθρώπους, καὶ ἀνάγαγε
αὐτὸν ἐκ τοῦ λάκκου, ἵνα μὴ ἀποθάνῃ.

CAP. XLV.

ET audivit Saphanias filius 1
Nathan, & Godolias filius Paschor, & Joachal filius (a) Semeliæ, verba, quæ Hieremias loquebatur ad populum, dicens;
Sic dixit Dominus (b) Habitans 2
in civitate ista morietur in gladio, & in (c) fame: &, qui egreditur ad Chaldæos, vivet: & erit anima ejus in rem inventam, & vivet. Quoniam 3
sic dixit Dominus; Tradendo tradetur civitas hæc in manus virtutis regis Babylonis, & capiet eam. Et (d) dixerunt regi; 4
Occidatur nunc homo iste: quia ipse dissolvit manus hominum bellantium, qui remanserunt in civitate, & manus universi populi, loquens ad eos juxta verba hæc. Homo enim iste non (e) vaticinatur pacem populo huic,
sed mala. Et dixit rex, Ecce ipse 5
in manibus vestris. Non enim poterat rex adversùs eos. (f) Et 6
projecerunt eum in lacum Melchiæ filii regis, qui erat in atrio carceris: & demiserunt (g) eum in lacum: & in lacu non erat aqua, sed lutum: & fuit in
luto. Et audivit Abdemelech (h) 7
Æthiops, & ipse in domo regis, quia dederant Hieremiam in lacum: et rex erat in porta Benjamin:
Et egressus est ad eum, 8
et loquutus est ad regem, et dixit; 9
(i) Malefecisti, quæ fecisti, interficiendo hominē istum à facie famis: quoniā non sunt amplius panes in civitate. 10
Et mandavit rex Abdemelech, dicens; Tolle in manus tuas hinc triginta homines, et educ eum è lacu, ut non moriatur.

MS.A. (*) ἐλάλησεν Ἰηρεμίας ἐπὶ (α) εὕρημα. Ὅτι οὕτως (β) συλλήμψονται (γ) εἶπαν (*) ὁ ἄνθρωπος (δ) ὅτι ἐκλύει (ε) πολεμιστῶν τῶν καταλελειμμένων ἐπὶ τῇ (ζ) λαῷ, ἀλλ' ἢ (η) ταῖς χερσὶν (θ) τὸν λάκκον (*) αὐλῇ (ι) τὴν χεῖρά σου ἀπ' ἐντεῦθεν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 ולא יהי שאר ומשיזיב לשארא דבית יהודה דאתן לאתותבא תמן בארעא דמצרים
ולמתב בארעא דבית יהודה דאנון מטען ית נפשהון למתב למתב תמן ארי לא יתובון
15 אלהין משיזבין : ואתיבו ית ירמיה כל גבריא דידעין ארי מסקן בוסמין נשיהון לטעות
עממיא וכל נשיא דקימן קהלא רבא וכל עמא דיתבין בארעא דמצרים בפתרוס
16 למימר : פתגמא דמלילתא עמנא בשמא דיי לית אנחנא צבן לקבלא מנך : ארי מעבד
17 נעביד ית כל פתגמא דנפק מפומנא לאסקא בוסמין לכוכבת שמיא ולנסכא לה
נסכין כמא דעבדנא אנחנא ואבהתנא מלכנא ורברבנא בקרויא דבית יהודה ובשוקי
18 ירושלם והוינא סבעין לחמא והוינא שלן שליוא ובישתא לא חזינא : ומן עדן
דאתמנענא לאסקא בוסמין לכוכבת שמיא ולנסכא לה נסכין חסרנא כולא ובחרבא
19 ובכפנא ספנא : וארי אנחנא מסקן בוסמין לכוכבת שמיא ומנסכן לה נסכין הבר
20 מגברנא עבדנא לה כרדיטין לטעותא ומנסכן לה נסכין : ואמר ירמיה לכל עמא
21 לגבריא ולנשיא ועל כל עמא דמתיבין יתיה פתגמא למימר : הלא ית בוסמניא
דאסקתון בקרויא דבית יהודה ובשוקי ירושלם אתון ואבהתכון מלכיכון ורבריבכון
22 ועמא דארעא יתהון דכר יי וגלי קדמוהי : ולא הות רעוא קדם יי עוד דלא למשבק מן
קדם בישות עובדיכון מן קדם תועבתא דעבדתון והות ארעכון לחורבא ולצדו וללוטא
23 מבלי יתיב כיומא הדין : מן קדם דאסקתון בוסמין ודחבתון קדם יי ולא קבלתון
למימרא דיי ובאוריתיה ובקימוהי ובסהדותיה לא הלכתון על כן ערעת יתכון בישתא
הדא כיומא הדין :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Nec erit reliquus nec superstes reliquiis domus Juda, quæ veniunt ad ha- 14
bitandum ibi in terra Ægypti :& ut revertantur in terram dom⁹ Juda, quò
ipsi decipiunt animas suas ut *revertantur* & habitent illic; quia non revertentur
nisi qui liberati fuerint. Et responderunt Jeremiæ omnes viri 15
qui sciebant quòd adolerent uxores suæ aromata idolis populorum, &
universæ mulieres quarum stabat multitudo magna, & omnis populus habitantium
in terra Ægypti, in Phatures; dicentes : Verbum quod locutus 16
es nobiscum in nomine Dñi, nolum⁹ suscipere à te. Sed faciendo faciemus 17
omne verbum quod egredietur de ore nostro, ad adolendum aromata syderi
cœli, & ad libandum ei libamina, sicut jam fecimus nos & patres nostri,
& reges nostri, & principes nostri in urbibus domus Juda, & in vicis Jerusalem,
& saturati sumus pane, & fuimus abundantes abundantia, &
malum non vidimus. Ex eo autem tempore quo cessavimus adolere aromata 18
syderi cœli, & libare ei libamina; indiguimus omnibus; & gladio,
& fame consumpti sumus. Quod si adolemus aromata syderi cœli, & 19
libamus ei libamina, nunquid sine viris nostris facimus ei placentas, idolo
[*inquam*,] & libam⁹ ei libamina? Et dixit Jeremias omni populo, viris & 20
mulieribus, & omni populo qui responderat ei verbum; dicendo : Nónne 21
aromatum quæ adolevistis in civitatibus domus Juda, & in vicis Jerusalem,
vos & patres vestri, & reges vestri, & principes vestri, & populus
terræ, eorum recordatus est Dñs, & nota sunt coram eo? Et non placuit 22
ultrà Dño, ut remitteret, propter malitiam operum vestrorum, & propter
abominationes quas fecistis. Et fuit terra vestra in desolationem et vastitatem,
et in maledictionem absque habitatore; sicut in die hac. Propter 23
id quod adolêstis aromata; et quia peccâstis coram Domino, et non
obedîstis verbo Domini; et in lege ejus et in pactis ejus, et in testimonis
ejus non ambulâstis : propterea evenit vobis malum hoc, sicut est
dies hæc.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗܘܢ ܦܠܝܛܐ ܘܫܪܝܕܐ. ܠܫܪܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܕܥܐܠܝܢ ܠܡܥܡܪ ܬܡܢ ܒܐܪܥܐ 14
ܕܡܨܪܝܢ ܘܠܡܗܦܟ ܠܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܕܗܢܘܢ ܡܣܒܪܝܢ ܢܦܫܗܘܢ ܠܡܗܦܟ ܠܬܡܢ.
ܠܐ ܢܗܦܟܘܢ ܐܠܐ ܒܨܝܪܐ. * ܘܥܢܘ ܘܐܡܪܘ ܠܐܪܡܝܐ. ܟܠܗܘܢ ܓܒܪܐ ܕܝܕܥܝܢ ܗܘܘ ܕܡܣܡܢ 15
ܗܘܝ ܢܫܝܗܘܢ ܒܣܡܐ ܠܐܠܗܐ ܐܚܪܢܐ. ܘܟܠܗܝܢ ܢܫܐ ܕܩܝܡܢ ܗܘܝ ܟܢܫܐ ܪܒܐ: ܘܟܠܗ ܥܡܐ
ܕܝܬܒܝܢ ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ ܘܒܦܬܪܘܣ. * ܘܐܡܪܘ ܠܗ. ܦܬܓܡܐ ܕܐܡܪܬ ܠܢ. ܒܫܡܗ 16
ܕܡܪܝܐ. ܠܐ ܫܡܥܝܢܢ ܠܟ. * ܐܠܐ ܡܥܒܕ ܥܒܕܝܢܢ. ܟܠ ܦܬܓܡܐ ܕܢܦܩ ܡܢ ܦܘܡܢ. ܠܡܣܡܘ 17
ܒܣܡܐ ܠܚܝܠܘܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܠܡܢܣܟܘ ܠܗ ܢܣܟܐ. ܐܝܟ ܕܥܒܕܢ ܚܢܢ ܘܐܒܗܝܢ
ܘܡܠܟܝܢ ܘܪܘܪܒܢܝܢ. ܒܡܕܝܢܬܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܒܫܘܩܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܘܣܒܥܝܢ ܗܘܝܢ. ܠܚܡܐ.
ܘܛܒ ܗܘܐ ܠܢ. ܘܒܝܫܬܐ ܠܐ ܚܙܝܢ. * ܘܗܘܐ ܡܢ ܕܫܠܝܢ ܡܢ ܕܠܡܣܡܘ ܒܣܡܐ ܠܚܝܠܘܬܐ 18
ܕܫܡܝܐ: ܘܠܡܢܣܟܘ ܠܗ ܢܣܟܐ: ܣܢܝܩܝܢ ܠܢ ܟܠܡܕܡ. ܘܒܚܪܒܐ ܘܒܟܦܢܐ ܫܠܡܢ.
* ܘܟܕ ܡܣܡܝܢ ܒܣܡܐ. ܘܐܡܪܝ. ܟܕ ܚܢܢ ܡܣܡܝܢ ܗܘܝܢ ܒܣܡܐ ܠܡܠܟܬ 19
ܫܡܝܐ. ܘܡܢܣܟܝܢ ܗܘܝܢ ܠܗ ܢܣܟܐ. ܠܐ ܗܘܐ ܕܠܒܪ ܡܢ ܓܒܪܝܢ ܥܒܕܢ
ܠܗ ܟܘܢܐ ܘܢܣܟܢ ܠܗ ܢܣܟܐ. * ܘܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܠܟܠܗ ܥܡܐ. ܠܓܒܪܐ 20
ܘܠܢܫܐ ܘܠܟܠܗ ܥܡܐ ܕܐܡܪܘ ܠܗ ܗܠܝܢ ܡܠܐ. * ܠܐ ܗܘܐ ܒܣܡܐ ܕܣܡܬܘܢ 21
ܒܡܕܝܢܬܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܒܫܘܩܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ: ܐܢܬܘܢ ܘܐܒܗܝܟܘܢ. ܘܡܠܟܝܟܘܢ. ܘܪܘܪܒܢܝܟܘܢ
ܘܥܡܐ ܕܐܪܥܐ. ܥܠܘܗܝ ܐܬܕܟܪ ܡܪܝܐ ܘܣܠܩ ܥܠ ܠܒܗ. * ܘܠܐ ܡܫܟܚ ܗܘܐ ܡܪܝܐ ܠܡܫܒܩ 22
ܠܟܘܢ. ܡܢ ܩܕܡ ܒܝܫܘܬ ܥܒܕܝܟܘܢ. ܘܡܢ ܩܕܡ ܛܢܦܘܬܐ ܕܥܒܕܬܘܢ. ܘܗܘܬ ܐܪܥܟܘܢ
ܠܚܘܪܒܐ ܘܠܬܡܗܐ. ܘܠܠܘܛܬܐ. ܕܠܝܬ ܕܥܡܪ ܒܗ. ܐܝܟ ܝܘܡܢܐ. * ܡܛܠ ܕܣܡܬܘܢ 23
ܒܣܡܐ ܘܚܛܝܬܘܢ ܠܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܫܡܥܬܘܢ ܒܩܠܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܒܢܡܘܣܗ ܘܒܩܝܡܘܗܝ
ܘܒܣܗܕܘܬܗ ܠܐ ܗܠܟܬܘܢ. ܡܛܠܗܢܐ ܐܪܥܬܟܘܢ ܒܝܫܬܐ ܗܕܐ ܐܝܟ ܝܘܡܢܐ.

* Adeóque non erit qui evadat aut ſuperſit è 14
reliquiis Judæ ingredientibus ad commorandum
ibi in terra Ægypti : & in terram Judæ,
quò iſti ſibi perſuadent ſe redituros, redeundo
nequaquam redibunt niſi pauci. Re- 15
ſpondentes autem dixerunt Jeremiæ omnes
viri qui ſciebant uxores ſuas adolere thura
diis alienis, & omnes mulieres quæ magno
cœtu aſtabant, totúſque populus qui degebant
in terra Ægypti & in Phathros ; Dixe- 16
runt inquam, illi ; Sermonem quem nobis retuliſti
nomine Domini, non recipiemus à te :
Sed faciemus omnem ſermonem qui egreſſus 17
eſt ex ore noſtro, adolendo thura exercitui
cœleſti, & libando ei libamina, quemadmodum
fecimus nos & majores noſtri, reges ac
principes noſtri in civitatibus Judæ & in
plateis Jeroſolymorum. Tum enim ſaturabamur
pane, fœlices eramus, nec ullum malum
experiebamur : Jam verò ex quo ceſſavimus 18
adolere exercitui cœleſti, eíque libare libamina ;
omnium rerum facti ſumus indigi, &
gladio ac fame conſumpti. Reſponderunt 19
quoque mulieres omnes, ac dixerunt ; Quando
* nos thura adolebamꝰ reginæ cœli, & libabamus
ei libamina, non abſque maritis noſtris
fecimus ei lagana & libavimus ei libamina.
Dixit autem Jeremia toti populo viris atque 20
mulieribus, toti turbæ quæ talibus eum verbis
allocuta fuerat ; Illius aromatũ ſuffitûs quem 21
adoleviſtis in civitatibus Judæ & plateis Jeroſolymorũ,
vos & majores veſtri, & reges ac
principes veſtri, terræque populus ; illiuſmet
recordatus eſt Dñs, ejuſque animo ſubiit :
Cúmque non poſſet Dominus ampliùs condonare 22
vobis propter nequitiam facinorum
veſtrorum, & propter abominationem quam
feciſtis, fuit terra veſtra ſtupori, maledictioni,
atque vaſtitati, habitatoribus exhauſta, ut eſt
hodie. Eò quòd thus adoleviſtis, & peccaviſtis 23
in Dominum, non obtemperâſtis voci
Domini, & ſecundùm legem, fœdus, & teſtimonia
ejus non ambulâſtis, idcirco aſſecutum
eſt vos tale malum quale eſt hodiernum,

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* فاين هم انبياوكم الذين يتنبون لكم * قايلين ان ملك بابل لا ياتي على هذه الارض * 19
* والان يا سيدي الملك لتسقط رحمتي لوجهك * ولا تردني الى بيت يوناثان الكاتب * ولا اموت 20
هناك * وامر الملك فالقوه في بيت الحبس * واعطوه خبز واحد كل يوم من الخارج * ولا 21
يخبزون * الى ان فني الخبز من المدينة * وجلس ارميا في دار الحبس *

* الفصل الخامس والاربعون *

* وسمع صافانياس بن ناثان * وعودولياس بن فسحور * ويواخال بن سالاميو الاقوال التي تكلم 1
بها ارميا على الشعب قايلا * هكذا قال الرب * الساكن في هذه المدينة يموت بالسيف 2
والجوع * والخارج الى الكلدانيين تعيش ويصير نفسه في الوجود * لان هكذا قال الرب * 3
مدفوعة تدفع هذه المدينة الى ايدي جيش ملك بابل وياخذوها * فقالوا للملك ليقتل 4
ذلك الانسان * لانه يرخي ايدي الناس المحاربين المتبقين في المدينة وايدي جميع
الشعب * اذ يتكلم معهم بمثل هذه الاقوال * لان هذا الانسان لا يخبر بسلامة لهذا الشعب
لكن بشرور * فقال الملك ها هو في ايديكم * لان الملك لم يقدر لهم * فطرحوه في جب 5 6
ملشيو بن الملك الذي هو في دار الحبس * ودلوه الى الجب * ولم يكن في الجب ماء لكن
حماة * وكان في الحماة * فسمع ابداملاخ الحبشي وهو في بيت الملك * انهم دفعوا ارميا 7
الى الجب * وكان الملك في دار بنيامين * فخرج اليه وتكلم مع الملك وقال * اسات بالذي 8 9
صنعته لتقتل هذا الانسان من وجه الجوع * لان ليس خبز موجود في المدينة ايضا *
* فامر الملك ابداملاخ قايلا * خذ بيدك من هاهنا ثلثين انسانا * واصعده من الجب 10
لكيلا يموت *

* *ubinam ſunt prophetæ veſtri qui prophetant* 19
vobis, dicentes ; Regem Babelis nequaquam
venturum contra terram iſtam ?
* *Nunc itaque O domine mi rex, contingat* 20
mihi miſericordia apud te, & ne me remittas
in domum Jonathanis ſcribæ, ne
moriar illic. Quare jubente rege con- 21
jecerunt eum in domum carceris, & dabant
ei panem unum ſingulis diebus ab
extra (non enim coquebant panem in carcere)
donec defeciſſet panis ab urbe: manſitque
Jeremia in atrio carceris.

CAP. XLV.

* *Cum autem audiſſent Sephanias filius* 1
Nathanis, Godolias filius Phashoris,
& Joachal filius Selamiæ ſermones quos
locutus fuerat Jeremia contra populum,
dicens ; Ita dixit Dominus, Qui man- 2
ſerit hac in urbe, gladio vel fame peribit
: qui autem exierit ad Chaldæos, hujus
anima vivet & ſuperſtes erit. Nam ita 3
dixit Dominus, Certiſſimè tradetur
hæc urbs in manus exercitûs regis Chaldæorum,
& capient eam : Dixerunt 4
ad regem, Occidatur hujuſmodi homo,
quia remittit manus hominum bellatorum
qui reliqui ſunt in urbe, & manus
totius populi, alloquendo eos hujuſcemodi
ſermonibus : quandoquidem
is homo nullam huic populo pacem,
ſed mala prædicit : Dixit rex ; Ecce in 5
manibus veſtris eſt : rex enim non potuit
reſiſtere eis. Itaque conjecerunt eum in 6
lacum Melchiæ filii regis, qui eſt in atrio
carceris, demittentes eum in lacum : in
eo autem lacu non erat aqua, ſed lutum
fœtidum : erat igitur in luto fœtido. Au- 7
diens autem Abdemelech Æthiops (& is
erat in domo regia) conjectum fuiſſe Jeremiam
in lacum : dum eſſet rex in atrio
Benjaminis, Adivit eum ; & re- 8
gem allocutus dixit ; Delinquis in eo 9
quod agis, hominem iſtum fame enecando,
cùm non extet ampliùs panis in urbe.
Tunc præcepit rex Abdemelecho, dicens ; 10
Ducito iſtinc manu tuâ triginta homines,
eúmque è lacu extrahito, ne moriatur.

ירמיה׃ מה

: mulieres univerſas ad & , populum omnem ad Irmejahu dixit Et
24 וַיֹּאמֶר יִרְמְיָהוּ אֶל־כָּל־הָעָם וְאֶל כָּל־הַנָּשִׁים
.Ægypti terra in qui , Jehudah omnis Domini verbum Audite
שִׁמְעוּ דְּבַר־יְהוָה כָּל־יְהוּדָה אֲשֶׁר בְּאֶרֶץ מִצְרָיִם׃
: dicendo , Iſrael Deus exercituum Dominus dixit Sic
25 כֹּה־אָמַר יְהוָה־צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל לֵאמֹר
veſtris manibus *in* & ,veſtro ore *in* eſtis *locutæ &* , veſtræ uxores & , Vos
אַתֶּם וּנְשֵׁיכֶם וַתְּדַבֵּרְנָה בְּפִיכֶם וּבִידֵיכֶם
vovimus quæ , noſtra vota faciemus Faciendo : dicendo , impleſtis
מִלֵּאתֶם ׀ לֵאמֹר עָשֹׂה נַעֲשֶׂה אֶת־נְדָרֵינוּ אֲשֶׁר נָדַרְנוּ
: libamina ei *libandum ad* & , cœlorum *opificio ſuffiendum ad*
לְקַטֵּר לִמְלֶכֶת הַשָּׁמַיִם וּלְהַסֵּךְ לָהּ נְסָכִים
feciſtis faciendo & , veſtra vota confirmaſtis confirmando
הָקֵים תָּקִימְנָה אֶת־נִדְרֵיכֶם וְעָשֹׂה תַעֲשֶׂינָה
Jehudah omnis Domini verbum audite Ideò .veſtra vota
26 אֶת־נִדְרֵיכֶם׃ לָכֵן שִׁמְעוּ דְּבַר־יְהוָה כָּל־יְהוּדָה
, magno meo nomine in juravi ego Ecce : Ægypti terra in *habitatores*
הַיֹּשְׁבִים בְּאֶרֶץ מִצְרָיִם הִנְנִי נִשְׁבַּעְתִּי בִּשְׁמִי הַגָּדוֹל
omnis ore in vocatum meum nomen ultra erit ſi , Dominus dixit
אָמַר יְהוָה אִם־יִהְיֶה עוֹד שְׁמִי נִקְרָא ׀ בְּפִי ׀ כָּל־
terra omni in DEUS Dominus *Vivens* : dicentis ,Iehudah viri
אִישׁ יְהוּדָה אֹמֵר חַי־אֲדֹנָי יְהוִה בְּכָל־אֶרֶץ
: bonum in non & , malum in eos ſuper *vigilans* ego Ecce .Ægypti
27 מִצְרָיִם׃ הִנְנִי שֹׁקֵד עֲלֵיהֶם לְרָעָה וְלֹא לְטוֹבָה
, gladio in Ægypti terra in qui , Jehudah *vir omnis* conſumētur &
וְתַמּוּ כָל־אִישׁ יְהוּדָה אֲשֶׁר בְּאֶרֶץ־מִצְרַיִם בַּחֶרֶב
terra è revertentur gladii evaſores Et.*eos conſumendum ad uſque* ,fame in &
28 וּבָרָעָב עַד־כְּלוֹתָם׃ וּפְלִיטֵי חֶרֶב יְשֻׁבוּן מִן־אֶרֶץ
reſiduum omne ſcient Et .*numeri viri* Jehudah terram Ægypti
מִצְרַיִם אֶרֶץ יְהוּדָה מְתֵי מִסְפָּר וְיָדְעוּ כָּל־שְׁאֵרִית
verbum , ibi peregrinandum ad,Ægypti terram in *ingredientes* ,Jehudah
יְהוּדָה הַבָּאִים לְאֶרֶץ־מִצְרַיִם לָגוּר שָׁם דְּבַר־
,Dominus ait , ſignum vobis hoc Et .*ipſis ab & me à* , *ſtabit* cujus
29 מִי יָקוּם מִמֶּנִּי וּמֵהֶם׃ וְזֹאת־לָכֶם הָאוֹת נְאֻם־יְהוָה
quia , ſciatis ut : iſto loco in vos *ſuper* ego *viſitans* quòd
כִּי־פֹקֵד אֲנִי עֲלֵיכֶם בַּמָּקוֹם הַזֶּה לְמַעַן תֵּדְעוּ כִּי
Sic .malum in vos ſuper mea verba confirmabuntur confirmando
30 קוֹם יָקוּמוּ דְבָרַי עֲלֵיכֶם לְרָעָה׃ כֹּה ׀
, Ægypti regem Chophrah Parhoh *dans* ego Ecce : Dominus dixit
אָמַר יְהוָה הִנְנִי נֹתֵן אֶת־פַּרְעֹה חָפְרַע מֶלֶךְ־מִצְרַיִם
ſicut , ejus animam quærentium manum in &,ejus inimicorum manum in
בְּיַד אֹיְבָיו וּבְיַד מְבַקְשֵׁי נַפְשׁוֹ כַּאֲשֶׁר
Nebuchadreſar manum in Jehudah regem Sidchijahu tradidi
נָתַתִּי אֶת־צִדְקִיָּהוּ מֶלֶךְ־יְהוּדָה בְּיַד נְבוּכַדְרֶאצַּר
.ejus animam quærentis & ,ſui inimici Babel regis
מֶלֶךְ־בָּבֶל אֹיְבוֹ וּמְבַקֵּשׁ נַפְשׁוֹ׃

CAP. XLV. מה

Baruch ad propheta Irmejahu eſt locutus quod Verbum
1 הַדָּבָר אֲשֶׁר דִּבֶּר יִרְמְיָהוּ הַנָּבִיא אֶל־בָּרוּךְ
ore ex libro *ſuper* hæc verba *ipſo ſcribendo in*,Nerijah filium
בֶּן־נֵרִיָּה בְּכָתְבוֹ אֶת־הַדְּבָרִים הָאֵלֶּה עַל־סֵפֶר מִפִּי
regis Joſijahu filii Jehojachim quarto anno in Irmejahu
יִרְמְיָהוּ בַּשָּׁנָה הָרְבִעִית לִיהוֹיָקִים בֶּן־יֹאשִׁיָּהוּ מֶלֶךְ
, Iſrael Deus Dominus dixit Sic : dicendo , Jehudah
2 יְהוּדָה לֵאמֹר׃ כֹּה־אָמַר יְהוָה אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל
addidit quoniam ,mihi nunc Væ : Dixiſti .Baruch te Ad
3 עָלֶיךָ בָּרוּךְ׃ אָמַרְתָּ אוֹי־נָא לִי כִּי־יָסַף
requiem & , meo gemitu in laboravi,meum dolorē ſuper *mærorem* Dominꝰ
יְהוָה יָגוֹן עַל־מַכְאֹבִי יָגַעְתִּי בְּאַנְחָתִי וּמְנוּחָה
.inveni non
לֹא מָצָאתִי׃

Verſio VULG. LAT.

24 Dixit autem Jeremias ad omnem populum, & ad univerſas mulieres; Audite verbum Domini omnis Juda, qui eſtis in terra Ægypti: 25 Hæc inquit Dominus exercituum, Deus Iſrael, dicens; Vos, & uxores veſtræ, locuti eſtis ore veſtro, & manibus veſtris implêſtis, dicentes; Faciamus vota noſtra, quæ vovimus, ut ſacrificemus reginæ cœli, & libemus ei libamina: implêſtis vota veſtra, & opere perpetrâſtis 26 ea. Ideò audite verbum Domini, omnis Juda, qui habitatis in terra Ægypti: Ecce ego juravi in nomine meo magno, ait Dominus; quia nequaquàm ultrà vocabitur nomen meum ex ore omnis viri Judæi, dicentis; Vivit Dominꝰ Deus in omni terra Æ- 27 gypti. Ecce ego vigilabo ſuper eos in malum, & non in bonum: & conſumentur omnes viri Juda, qui ſunt in terra Ægypti, gladio & fame, donec peni- 28 tùs conſumantur. Et qui fugerint gladium, revertentur de terra Ægypti in terram Juda viri pauci: & ſcient omnes reliquiæ Juda ingredientium terram Ægypti, ut habitent ibi, cujus ſermo compleatur, meus, an illo- 29 rum. Et hoc vobis ſignum, ait Dominus, quòd viſitem ego ſuper vos in loco iſto: ut ſciatis quia verè complebuntur ſermones mei contra vos in malum. 30 Hæc dixit Dominus; Ecce ego tradam Pharaonem Ephree regem Ægypti in manu inimicorum ejus, & in manu quærentium animam illius: ſicut tradidi Sedeciam regem Juda in manu Nabuchodonoſor regis Babylonis inimici ſui, & quærentis animam ejus.

CAP. XLV.

1 VErbum, quod locutus eſt Jeremias propheta ad Baruch filium Neriæ, cùm ſcripſiſſet verba hæc in libro ex ore Jeremiæ, anno quarto Joakim filii Joſiæ re- 2 gis Juda, dicens; Hæc dicit Dominus Deus Iſrael ad te, Ba- 3 ruch; Dixiſti; Væ miſero mihi, quoniam addidit Dominus dolorem dolori meo: laboravi in gemitu meo, & requiem non inveni.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

11 Καὶ ἔλαβεν Ἀβδεμέλεχ τοὺς ἀνθρώπους, καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὴν οἰκίαν τοῦ βασιλέως, τὴν ὑπόγαιον, καὶ ἔλαβεν ἐκεῖθεν παλαιὰ ῥάκη καὶ παλαιὰ σχοινία, καὶ ἔρριψεν αὐτὰ πρὸς (ι) Ἱερεμίαν εἰς τὸν λάκκον, 12 Καὶ εἶπε, Ταῦτα θὲς ὑποκάτω τῶν σχοινίων. καὶ ἐποίησεν (ι) Ἱερεμίας οὕτως. 13 Καὶ εἵλκυσαν αὐτὸν (κ) τοῖς σχοινίοις, καὶ ἀνήγαγον αὐτὸν ἐκ τοῦ λάκκου. καὶ ἐκάθισεν (λ) Ἱερεμίας ἐν τῇ αὐλῇ τῆς φυλακῆς. 14 Καὶ ἀπέστειλεν ὁ βασιλεὺς, καὶ ἐκάλεσεν αὐτὸν πρὸς ἑαυτὸν εἰς οἰκίαν (μ) ἀσελεισὴλ, τὴν ἐν οἴκῳ κυρίου· καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ βασιλεὺς, Ἐρωτήσω σε λόγον, καὶ (ν) μὴ δὴ κρύψῃς ἀπ᾽ ἐμοῦ ῥῆμα. 15 Καὶ εἶπεν Ἱερεμίας τῷ βασιλεῖ, Ἐὰν ἀναγγείλω σοι, οὐχὶ (ξ) θανάτῳ με θανατώσεις; καὶ ἐὰν συμβουλεύσω σοι, 16 οὐ μὴ (ο) ἀκούσῃς μου; Καὶ ὤμοσεν αὐτῷ ὁ βασιλεὺς, λέγων, Ζῇ κύριος, ὃς ἐποίησεν ἡμῖν τὴν ψυχὴν ταύτην, εἰ ἀποκτενῶ σε, καὶ εἰ (π) δώσω σε εἰς χεῖρας τῶν ἀνθρώπων τούτων. 17 Καὶ εἶπεν αὐτῷ Ἱερεμίας, Οὕτως εἶπε κύριος, Ἐὰν ἐξελθὼν ἐξέλθῃς πρὸς ἡγεμόνας βασιλέως Βαβυλῶνος, (ρ) ζήσεται ἡ ψυχή σου, καὶ ἡ πόλις αὕτη οὐ μὴ κατακαυθῇ ἐν πυρὶ, καὶ ζήσῃ σὺ καὶ ἡ οἰκία σου. 18 Καὶ ἐὰν μὴ ἐξέλθῃς, (σ) δοθήσεται ἡ πόλις αὕτη εἰς χεῖρας (τ) τῶν Χαλδαίων, καὶ καύσουσιν αὐτὴν ἐν πυρὶ, καὶ σὺ οὐ μὴ σωθῇς. 19 Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς τῷ Ἱερεμίᾳ, Ἐγὼ λόγον ἔχω τῶν Ἰουδαίων τῶν πεφευγότων πρὸς τοὺς Χαλδαίους, μὴ δώσειν με εἰς χεῖρας αὐτῶν, καὶ καταμωκήσονταί μου. 20 Καὶ εἶπεν Ἱερεμίας, Οὐ μὴ (υ) παραδῶσίν σε· ἄκουσον τὸν λόγον κυρίου, ὃν ἐγὼ λέγω πρὸς σὲ, καὶ βέλτιον ἔσται σοι, καὶ ζήσεται ἡ ψυχή σου. 21 Καὶ εἰ μὴ (φ) θέλῃς σὺ ἐξελθεῖν, οὗτος ὁ 22 λόγος ὃν ἔδειξέ μοι κύριος· Καὶ ἰδοὺ πᾶσαι αἱ γυναῖκες αἱ καταλειφθεῖσαι ἐν οἰκίᾳ βασιλέως Ἰούδα, ἐξήγοντο πρὸς ἄρχοντας βασιλέως Βαβυλῶνος· καὶ αὗται ἔλεγον, (χ) Ἠπάτησάν σε, καὶ δυνήσονταί σοι ἄνδρες εἰρηνικοί σου· καὶ καταλύσουσιν ἐν ὀλισθήμασι (ψ) πόδα σου, ἀπέστρεψαν ἀπὸ σοῦ, 23 Καὶ τὰς γυναῖκάς σου, καὶ τὰ τέκνα σου ἐξάξουσιν πρὸς τοὺς Χαλδαίους. καὶ σὺ οὐ μὴ σωθῇς, ὅτι (ω) ἐν χειρὶ βασιλέως Βαβυλῶνος (α) συλληφθήσῃ, καὶ ἡ πόλις αὕτη κατακαυθήσεται. 24 Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ βασιλεὺς, Ἄνθρωπος μὴ γνώτω ἐκ τῶν λόγων τούτων, καὶ σὺ οὐ μὴ ἀποθάνῃς. 25 Καὶ ἐὰν (β) οἱ ἄρχοντες ἀκούσωσιν, ὅτι ἐλάλησά σοι, καὶ ἔλθωσι πρὸς σὲ, καὶ εἴπωσίν σοι, Ἀνάγγειλον ἡμῖν, τί ἐλάλησέ σοι ὁ βασιλεὺς, (γ) μὴ κρύψῃς ἀφ᾽ ἡμῶν, καὶ οὐ μὴ ἀνέλωμέν σε, καὶ τί ἐλάλησε πρὸς σὲ ὁ βασιλεύς;

Et aſſumpſit Abdemelech homines, & ingreſſus eſt in domum regis ſubterraneam, & ſumpſit indè veteres pannos, & veteres funiculos, & projecit ea ad Hieremiam in lacum, 11 *Et dixit;* 12 *Iſta pone ſub funiculis. Et fecit Hieremias ita. Et traxerunt eum* 13 *funiculis, & eduxerunt eum è lacu. Et ſedit Hieremias in atrio carceris. Et miſit rex, & vocavit* 14 *eum ad ſe in domum (k) Aſeliſel, quæ in domo Domini. Et dixit ei rex; Interrogabo te ſermonem: & ne abſcondas, quæſo, à me verbum. Et dixit Hieremias* 15 *regi; Si annuntiavero tibi; nunquid morte me mortificabis? & ſi conſilium dedero tibi; nunquid audies me? Et juravit ei rex, di-* 16 *cens; Vivit Dominus, qui fecit nobis animam hanc; ſi interficiam te, & ſi dabo te in manus hominum iſtorum. Et dixit ei Here-* 17 *mias, Sic dixit Dominus; Si exiens exiveris ad Duces regis Babylonis; vivet anima tua, & civitas hæc non comburetur in igni, et vives tu, et domus tua. Quòd ſi non exieris: dabitur ci-* 18 *vitas hæc in manꝰ Chaldæorum, et incendent eam in igne, & tu non ſalvaberis. Et dixit rex H-* 19 *remiæ; Ego rationem habeo Judæorum, qui fugerunt ad Chaldæos, ne daturi ſint me in manus eorum: et illudent mihi. Et di-* 20 *xit Hieremias, Non tradent te. Audi verbum Domini, quod ego dico ad te: et melius erit tibi, et vivet anima tua. Quòd ſi no-* 21 *lueris tu exire; iſte eſt ſermo, quē oſtendit mihi Dominus. Et ecce o-* 22 *mnes mulieres, quæ remanſerunt in domo regis Juda, eductæ ſunt ad principes regis Babylonis: et hæ dicebant; Seduxerunt te, et (l) prævalebunt tibi viri pacifici tui. Et (m) deponent in lubricis pedem tuum; receſſerunt à te: Et uxores tuas, et filios tuos* 23 *educent ad Chaldæos: et tu non ſalvaberis: quia in manu regis Babylonis capieris: et civitas hæc comburetur. Et dixit ei rex,* 24 *Homo non ſciat de verbis his: et tu non morieris. Quòd ſi* 25 *principes audierint, quia loquutus ſum tibi, et venerint ad te, et dixerint tibi, Annuntia nobis, quid loquutus eſt tibi rex, ne celes à nobis, et non interficiemus te; et quid loquutus eſt ad te rex;*

MS. A. (ι) τὸν Ἱερεμίαν (ι) Ἰηρεμίας (κ) ἐν τοῖς (λ) Ἰηρεμίας ἐν αὐλῇ (μ) Σελαθιὴλ, (ν) μὴ κρύψῃς (ξ) θανατώσεις με; (ο) μου ἀκούσῃς; (π) παραδώσω (ρ) καὶ ζήσεται (σ) παραδοθήσεται (τ) βασιλέως Βαβυλῶνος, καὶ (υ) παραδώσουσίν σε· ἄκουσον λόγον (φ) βούλῃ (χ) *Ἠπάτησέν σε, (ψ) πόδας σου, καὶ ἀπέστρεψαν ἀπὸ σοῦ, Καὶ τὰ τέκνα σου, καὶ τὰς γυναῖκάς σου (ω) εἰς χεῖρας (α) παραδοθήσῃ, (β) ἀκούσωσιν οἱ ἄρχοντες, (γ) μὴ δὴ κρύψῃς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

24 וַאֲמַר יִרְמְיָה לְכָל עַמָּא וּלְכָל נְשַׁיָּא קַבִּילוּ פִּתְגָמָא דַיְיָ כָּל דְבֵית יְהוּדָה דִי בְּאַרְעָא
25 דְמִצְרָיִם׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל לְמֵימַר אַתּוּן וּנְשֵׁיכוֹן וּגְזַרְתּוּן בְּפוּמְכוֹן
וּבִרְעוּתְכוֹן קַיֵּמְתּוּן לְמֵימַר מֶעְבַּד נַעְבֵּיד יַת נִדְרָנָא דִי נְדַרְנָא לְאַסָּקָא בוּסְמִין לְכוֹכְבַת
שְׁמַיָּא וּלְנַסָּכָא לֵיהּ נִסְכִּין אֲקָמָא תְקַיְּמוּן יַת נִדְרֵיכוֹן וּמֶעְבַּד תַּעְבְּדוּן יַת נִסְכֵּיכוֹן׃
26 בְּכֵן קַבִּילוּ פִּתְגָמָא דַיְיָ כָּל דְבֵית יְהוּדָה דְיָתְבִין בְּאַרְעָא דְמִצְרָיִם הָא אֲנָא קַיֵּמִית בִּשְׁמִי
רַבָּא אֲמַר יְיָ אִם יְהֵי עוֹד שְׁמִי מִתְקְרֵי בְּפוּם כָּל אֱנָשׁ יְהוּדָה אָמַר קַיָּם הוּא יְיָ אֱלֹהִים
27 בְּכָל אַרְעָא דְמִצְרָיִם׃ הָא אֲנָא מַסְעַר עֲלֵיהוֹן לְבִישָׁא וְלָא לְטָבָא וִיסוּפוּן כָּל אֱנָשׁ
28 יְהוּדָה דִי בְּאַרְעָא דְמִצְרָיִם בְּחַרְבָּא וּבְכַפְנָא עַד דִּישְׁתֵּיצוּן׃ וּמְשֵׁיזְבֵי חַרְבָּא יְתוּבוּן מִן
אַרְעָא דְמִצְרָיִם לְאַרְעָא דְבֵית יְהוּדָה עַם דְּמִנְיָן וְיִדְעוּן כָּל שְׁאָרָא דְבֵית יְהוּדָה דַאֲתוֹ
29 לְאַרְעָא דְמִצְרָיִם לְאִתּוֹתָבָא תַמָּן פִּתְגָם דְמַן יִתְקַיַּם אִם דִילִי וְאִם דִי לְהוֹן׃ וְדָא לְכוֹן
אָתָא אֲמַר יְיָ אֲרֵי אֲנָא מַסְעַר עֲלֵיכוֹן בְּאַתְרָא הָדֵין בְּדִיל דְתִדְּעוּן אֲרֵי אִתְקָיָמָא יִתְקַיְּמוּן
30 פִּתְגָמַי עֲלֵיכוֹן לְבִישָׁא׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ הָא אֲנָא מָסַר יַת פַּרְעֹה תְּבִירָא מַלְכָּא דְמִצְרָיִם בְּיַד
בַּעֲלֵי דְבָבוֹהִי וּבְיַד דְּבָעַן לְמִקְטְלֵיהּ כְּמָא דִמְסָרֵית יַת צִדְקִיָּהוּ מַלְכָּא דְשִׁבְטָא דְבֵית
יְהוּדָה בְּיַד נְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא דְבָבֶל בְּעֵיל דְּבָבֵיהּ וּדְבָעֵא לְמִקְטְלֵיהּ׃

מה

1 פִּתְגָם נְבוּאָה דְּאִתְנַבֵּי יִרְמְיָה נְבִיָּא עַל בָּרוּךְ בַּר נֵרִיָּה כַּד כְּתַב יַת פִּתְגָמַיָּא הָאִלֵּין עַל
סִפְרָא מִפּוּמָא דְיִרְמְיָה בְּשַׁתָּא רְבִיעֵיתָא לִיהוֹיָקִים בַּר יֹאשִׁיָּה מֶלֶךְ שִׁבְטָא דְבֵית יְהוּדָה
2 לְמֵימַר׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל עֲלָךְ בָּרוּךְ׃ אֲמַרְתְּ וַי כְּעַן לִי אֲרֵי אוֹסִיף יְיָ
3 דְּוֹן עַל תַּבְרִי לֵאִיתִי בְּתֶנְחָתִי וּנְבוּאָה לָא אַשְׁכַּחִית׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et dixit Jeremias omni populo, & omnibus mulieribus: Suſcipite verbum 24 Dñi omnes viri domus Juda, qui eſtis in terra Ægypti. Hæc dicit Dñs 25 exercituum Deus Iſrael; dicendo: Vos & uxores veſtræ decreviſtis ore veſtro, & voluntate veſtra præſtitiſtis; dicentes: Faciendo faciamus vota noſtra quæ vovimus, ut adoleamus aromata ſyderi cœli, & libemus ei libamina: firmando firmatis vota veſtra, & faciendo facitis *libamina* veſtra. Propterea ſuſcipite verbum Dñi omnes viri domus Juda, qui habita- 26 tis in terra Ægypti: Ecce ego juravi in nomine meo magno, dicit Dñs, Si fuerit ultrà nomen meum invocatum in ore omnis viri domus Juda, dicentis, Vivus eſt Dñs Deus, in univerſa terra Ægypti. Ecce ego viſito ſu- 27 per eos in malum, & non in bonum; & conſumentur omnes viri Juda, qui ſunt in terra Ægypti, in gladio, & in fame; donec diſpereant. Et qui 28 liberati fuerint à gladio, revertentur de terra Ægypti in terram domus Juda, populus numeri: & ſcient omnes reliquiæ domus Juda, quæ ingreſſæ ſunt in terram Ægypti ut habitent ibi, cujus verbum firmabitur, meum an illorum. Et hoc erit vobis ſignum, dicit Dñs, quòd viſitaturus 29 ſim ſuper vos in loco iſto, ut ſciatis, quia confirmatione confirmabuntur ſermones mei contra vos in malum. Hæc dicit Dñs: Ecce ego tradam Pha- 30 raonem *fractum* regem Ægypti in manum inimicorum ſuorum, & in manum quærentium occidere eum, ſicut tradidi Sedechiam regem tribus domus Juda in manum Nabuchodonoſor regis Babylonis inimici ſui, & quærentis occidere eum.

CAP. XLV.

VErbum prophetiæ quam prophetavit Jeremias propheta de Baruch 1 filio Neriæ; quando ſcripſit verba hæc in libro ex ore Jeremiæ, anno quarto Joachim filii Joſiæ regis tribus domus Juda; dicendo: Hæc dicit Dñs 2 Deus Iſrael ſuper te Baruch. Dixiſti, Væ nunc mihi, quoniam addidit Dñs 3 dolorem ſuper contritionem meam: laboravi in gemitu meo, & prophetiam non inveni.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

ܘܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܠܟܠܗ ܥܡܐ ܠܓܒܪ̈ܐ ܘܠܢܫ̈ܐ. ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܠܟܘܢ * 24
ܝܗܘܕܝܐ ܕܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܐܢܬܘܢ ܘܢܫܝܟܘܢ. 25
ܡܠܠܬܘܢ ܒܦܘܡܟܘܢ ܘܒܐܝܕܝܟܘܢ ܫܡܠܝܬܘܢ. ܘܐܡܪܬܘܢ ܢܫܠܡ ܢܕܪ̈ܝܢ ܕܢܕܪܢ. ܠܡܣܡ
ܒܣܡ̈ܐ ܠܚܝܠܗ ܕܫܡܝܐ. ܘܠܡܢܣܟܘ ܠܗ ܢܘܣܟܐ. ܐܩܝܡܬܘܢ ܡܘܡܬܟܘܢ. ܘܫܡܠܝܬܘܢ
ܢܕܪ̈ܝܟܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܟܠܟܘܢ ܝܗܘܕܝܐ ܕܥܡܪܝܢ ܒܐܪܥܐ 26
ܕܡܨܪܝܢ. ܗܐ ܐܢܐ ܝܡܐ ܒܫܡܝ ܪܒܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܠܐ ܢܗܘܐ ܬܘܒ ܫܡܝ ܒܦܘܡܗܘܢ ܕܟܠܗ
ܝܗܘܕܐ ܕܒܟܠܗ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ ܘܠܐ ܢܐܡܪܘܢ. ܚܝ ܗܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. * ܐܢܐ ܓܝܪ ܡܣܪܗܒ 27
ܐܢܐ ܥܠܝܗܘܢ ܒܝܫܬܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܢܣܬܘܦܘܢ ܟܠܗܘܢ ܓܒܪ̈ܐ ܕܝܗܘܕܐ ܕܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ.
ܒܚܪܒܐ ܘܒܟܦܢܐ ܘܒܡܘܬܢܐ. ܥܕܡܐ ܕܐܓܡܪ ܐܢܘܢ. * ܘܕܦܠܛܝܢ ܡܢ ܚܪܒܐ ܢܗܦܟܘܢ ܡܢ 28
ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܠܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܡܢܝܢܐ ܒܨܝܪܐ. ܘܢܕܥܘܢ ܟܠܗܘܢ ܫܪܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܕܐܙܠܘ
ܠܡܥܡܪ ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܡܠܬܐ ܕܡܢܘ ܩܝܡܐ ܕܝܠܝ ܐܘ ܕܝܠܗܘܢ. * ܘܗܢܐ ܠܟܘܢ ܐܬܐ ܐܡܪ 29
ܡܪܝܐ. ܕܣܥܪ ܐܢܐ ܠܟܘܢ ܒܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܕܬܕܥܘܢ ܕܩܝܡܝܢ ܡܠܝ ܥܠܝܟܘܢ ܠܒܝܫܬܐ.
* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܡܫܠܡ ܐܢܐ ܠܦܪܥܘܢ ܚܓܝܪܐ ܡܠܟܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܒܐܝܕܐ 30
ܕܒܥܠܕܒܒܘܗܝ ܘܒܐܝܕܐ ܕܒܥܝܢ ܢܦܫܗ. ܐܝܟ ܕܐܫܠܡܬ ܠܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ.
ܒܐܝܕܐ ܕܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܒܥܠܕܒܒܗ ܘܒܥܐ ܢܦܫܗ.

* Dixit præterea Jeremia toti illi populo, viris 24
atque mulieribus, Audite ſermonem Domini
omnes Judæi qui eſtis in terra Ægypti : Sic 25
ait Dñs potentiſſimus Deus Iſraelis, Vos &
uxores veſtræ ore veſtro dixiſtis, & manibus
veſtris perfeciſtis : Dixiſtis inquam, Præſta-
bimus vota noſtra quæ vovimus, adolendo
thura exercitui cœleſti, & libando ei libami-
na: præſtitiſtis juramenta veſtra, & vota ve-
ſtra perfeciſtis. Propterea audite ſermonem 26
Dñi ô univerſi Judæi qui commoramini in
terra Ægypti : Ecce ego juro per nomen me-
um maximum, ait Dñs, haud futurum ampliùs
nomen meum in ore Judæorũ qui ſunt in to-
ta terra Ægypti, neque dicturos, Vivat Domi-
nus Deus. Ego enim accelerabo ſuper eos 27
malum, ait Dominus, & peribunt omnes viri
Judæ qui ſunt in terra Ægypti, gladio, fame,
& peſte, donec abſumam eos : Et qui gladiũ 28
effugient, remeabunt è terra Ægypti in ter-
ram Judæ, pauci numero. Ita ſcient omnes
reliqui Judæi qui abierunt commoratum in
terra Ægypti, cujuſnam ſermo ſit verus, meus
an ipſorum. Hoc autem vobis eſto ſignum, 29
ait Dominus, me animadverſurum eſſe in vos
hoc in loco ; ut ſciatis vera fore verba mea
contra vos in malum : Sic ait Dominus, Ecce 30
ego traditurus ſum Pharaonem claudum re-
gem Ægypti in manum inimicorum ejus, &
in manum quærentium animam ipſius; quem-
admodum tradidi Sedeciam regem Judæ in
manum Nebuchadnoſaris regis Babyloniæ
inimici ipſius & quærentis animam ipſius.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܗ *

ܦܬܓܡܐ ܕܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܠܒܪܘܟ ܒܪ ܢܪܝܐ. ܟܕ ܟܬܒ ܦܬܓܡ̈ܐ ܗܠܝܢ ܒܟܬܒܐ ܡܢ * 1
ܦܘܡܗ ܕܐܪܡܝܐ. ܒܫܢܬܐ ܕܐܪܒܥ ܕܝܘܝܩܝܡ ܒܪ ܝܘܫܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܟܕ ܐܡܪ.
ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܥܠܝܟ ܒܪܘܟ. * ܐܡܪܬ ܘܝ ܠܝ ܕܐܘܣܦ * 2 3
ܡܪܝܐ ܟܘܪܗܢܐ ܥܠ ܟܐܒܝ. ܠܐܝܬ ܒܬܢܚܬܝ ܘܢܝܚܐ ܠܐ ܐܫܟܚܬ.

CAP. XLV.

SErmo quem dixit Jeremia Barucho Neriæ 1
filio, cùm ſciberet ſermones iſtos in libro
dictante Jeremiâ, anno quarto Jojacimi filii
Joſiæ regis Judæ, dicendo ; Sic ait Dominus 2
potentiſſimus Deus Iſraelis de te ô Baruch :
Dixiſti, Me miſerum, quoniam adjecit Do- 3
minus afflictionem dolori meo : gemendo
feſſus ſum, nec ullam reperio quietem.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* فاخذ ابداملاخ الناس ودخل الي بيت الملك السفلي * واخذ من هناك خرقا باليه وحبالا 11
باليه وطرحها الي ارميا في الجب * وقال ضع هذه تحت الحبال * فصنع ارميا هكذا * وجذبوه 12 13
بالحبال واصعدوه من الجب وجلس ارميا في دار الحبس * وارسل الملك فاستدعاه اليه في 14
بيت صالاسيل الذي في بيت الرب * وقال له الملك اسالك قولا فلا تخف عني كلمة * فقال 15
ارميا للملك ان اخبرتك أليس تقتلني * وان اشرت عليك ليس تسمع مني * فحلف له الملك 16
قايلا * حي الرب الذي صنع هذه النفس لنا * لا اقتلك ولا اسلمك الي ايدي هولاء
الناس * فقال له ارميا هكذا قال الرب * ان خرجت خارجا الي قواد ملك بابل فتحيي نفسك * 17
ولا تحرق هذه المدينه بالنار وتعيش انت وبنيك * وان لم تخرج تسلم هذه المدينه الي 18
ايدي ملك بابل فيحرقوها بالنار * وانت لا تخلص * فقال الملك لارميا * انا عندي كلمه 19
من اليهود الهاربين الي الكلدانيين * ليلا يدفعوني الي ايديهم فيستهزون بي * فقال لا 20
يسلموك * اسمع قول الرب الذي انا اقوله لك * ويكون لك الخير وتحيي نفسك * وان لم 21
ترد انت ان تخرج هذا القول الذي اظهر لي الرب * وها جميع النسوه المتبقيات في بيت 22
ملك يهوذا يخرجن الي روساء ملك بابل وهن يقلن * اضلك وتقوى عليك الرجال
المسالمون لك * ويحلون في الزلق رجليك ويرجعون عنك * واولادك ونساك يخرجوهم الي 23
الكلدانيين * وانت لا تخلص لانك الي ايدي ملك بابل تدفع * وهذه المدينه تحرق *
* فقال له الملك * انسان لا يعلم من هذه الاقوال بشي * وانت فما تموت * وان سمعت 24 25
الروساء انني تكلمت معك فياتون اليك * ويقولون لك اخبرنا ما تكلم به الملك معك ولا
تخف عنا فما نقتلك * فماذا تكلم به الملك معك *

Quarè ductis Abdemelech hominibus il- 11
lis, ingreſſus eſt domum regis infimam,
tulitque inde pannos detritos & funi-
culos putrefactos, projecitque eos ad
Jeremiam in lacum, Et ait ; Hæc po- 12
ne ſub funibus : quod cùm feciſſet Je-
remia, Traxerunt eum funibus, & e- 13
duxerunt è lacu : manſitque Jeremia
in atrio carceris. Tum mittens rex ad- 14
vocavit eum ad ſe in domum Selaſelis,
quæ eſt in domo Domini, dixitque ad eum
rex ; Sermonem à te peto, nullum abſ-
condas à me verbum. Dixit Jeremia 15
ad regem ; Si indicavero tibi, annon oc-
cîdes me? & ſi conſilium tibi dedero,
non acquieſces mihi. Verùm juravit illi 16
rex, dicens ; Per Dominum vivum qui
animam iſtam fecit nobis, non occîdam te,
neque tradam in manus hominum iſto-
rum. Tunc ait illi Jeremia, Sic dixit 17
Dominus ; Si certò egrediaris ad duces
regis Babelis, vivam ſervabis animam
tuam, non comburetur igne hæc urbs, &
vives tu ac filii tui : Quòd ſi non e- 18
grediaris, tradetur hæc urbs in manus re-
gis Babelis, ignéque ſuccendetur ; &
tu non eripieris. Dixit rex ad Jere- 19
miam ; Num habeo verbum à Judæis
qui fugerunt ad Chaldæos, quòd non ſint
me proditurì in manus eorum, & illu-
dant mihi? Reſpondit, Nequaquam te 20
tradent : auſculta ſermoni Domini quem
tibi dico, & bene tibi cedet, ſervabiſque
animam tuam. Verùm ſi tu egredi 21
nolueris, hic eſt ſermo quem indicavit mi-
bi Dominus : En etiam mulieres omnes 22
quæ remanent in domo regis Judæ, pro-
ducentur ad principes regis Babelis, di-
centes ; Seduxerunt te, & prævalebunt
tibi viri pacifici tui : ponent in lubricis
pedes tuos, & recedent à te : Et filii 23
tui & uxores tuæ producentur ad Chal-
dæos ; & tu nequaquam effugies, quia in
manus regis Babelis tradêris : denique urbs
iſta ſuccendetur. Dixit ad eum rex, 24
Nemo quicquam ſciat ex his ſermoni-
bus ; ſic tu non morieris. Quòd ſi au- 25
dierint principes me locutum eſſe tecum,
venerintque ad te, & dixerint tibi ; In-
dica nobis quæ locutus eſt rex tecum ; &
ne celes nos, ne te occidamus : quid locu-
tus eſt rex tecum?

; destruens ego ,ædificavi quos Ecce : Dominus dixit Sic : eum ad dices Sic
4 כה תאמר אליו כה אמר יהוה הנה אשר־בניתי אני הרס
quæres tu Et .ipsam terram universam & : evellens ego ,plantavi quos &
5 ואת אשר־נטעתי אני נתש ואת־כל־הארץ היא : ואתה תבקש־
,carnem omnem super malum adducens ego ecce quia : quæras Ne ? grandia tibi
לך גדלות אל־תבקש כי הנני מביא רעה על־כל־בשר
quò locis omnibus super ,spolium in tuam animam tibi dabo & ,Dominus ait
נאם־יהוה ונתתי לך את־נפשך לשלל על כל־המקמות אשר־
.illuc iveris
תלך שם :

CAP. XLVI. מו

Ægyptum Ad .gentes super prophetam Irmejahu ad Domini verbum fuit Quod
1 2 אשר היה דבר־יהוה אל־ירמיהו הנביא על־הגוים : למצרים
Perath flumen super erat qui ,Ægypti regis Necho Parhoh virtutem super
על־חיל פרעה נכו מלך מצרים אשר־היה על־נהר־פרת
quarto anno in Babel rex Nebuchadresar percussit quem : Carchemis in
בכרכמש אשר הכה נבוכדראצר מלך בבל בשנת הרביעית
accedite & ,peltam & ,scutum Ordinate .Jehudah regis Josijahu filii Jehojachim
3 ליהויקים בן־יאשיהו מלך יהודה : ערכו מגן וצנה וגשו
: galeis in consistite & ,equites ascendite & ,equos Ligate .bellum ad
4 למלחמה : אסרו הסוסים ועלו הפרשים והתיצבו בכובעים
,consternati ipsi vidi Quare .loricas vos induite ,lanceas tergite
5 מרקו הרמחים לבשו הסרינות : מדוע ראיתי המה חתים
non & ,fugerunt fugam & ,sunt contriti eorum fortes & ,retrorsum se convertentes
נסוגים אחור וגבוריהם יכתו ומנוס נסו ולא
evadet non & ,levis fugiet Non .Dominus dixit ,undique ab terror : respexerunt
6 הפנו מגור מסביב נאם־יהוה : אל־ינוס הקל ואל־ימלט
iste Quis .ceciderunt & ,impegerunt Perath fluminis manum super aquilonem ad :fortis
7 הגבור צפונה על־יד נהר־פרת כשלו ונפלו : מי־זה
fluvius tanquã Ægyptus ?ejus aquæ commovebũtur flumina veluti :ascendet fluvi⁹ tanquã
8 כיאר יעלה כנהרות יתגעשו מימיו : מצרים כיאור
,terram operiam ,Ascendam ; dixit & : aquæ movebuntur flumina veluti & ,ascendet
יעלה וכנהרות יתגעשו מים ויאמר אעלה אכסה־ארץ
,currus insanite & ,equos Ascendite .ea in habitantes & ,civitatem perdam
9 אבידה עיר וישבי בה : עלו הסוסים והתהוללו הרכב
,apprehendentes Ludim & ,scutum apprehendentes Put & ,Chus : fortes egrediantur &
ויצאו הגבורים כוש ופוט תפשי מגן ולודים תפשי
ultionis dies ,exercituum Domini Domini ipsa dies Et .arcum tendentes
10 דרכי קשת : והיום ההוא לאדני יהוה צבאות יום נקמה
inebriabitur & ,saturabitur & ,gladius devorabit & ; suis hostibus de se ulciscendum ad
להנקם מצריו ואכלה חרב ושבעה ורותה
flumen ad aquilonis terra in exercituũ Domini Domini victima nam :eorũ sanguine de
מדמם כי זבח לאדני יהוה צבאות בארץ צפון אל־נהר־
multiplicavisti vanum in : Ægypti filia virgo resinam tolle &,Ghilhad Ascende .Perath
11 פרת : עלי גלעד וקחי צרי בתולת בת־מצרים לשוא הרביתי
tuus clamor & ,tuã ignominiã gentes Audierunt .tibi non curatio ,medicamina
12 רפאות תעלה אין לך : שמעו גוים קלונך וצוחתך
Verbum .ipsi ambo ceciderũt pariter ,impegerunt fortem in fortis quia : terram replevit
13 מלאה הארץ כי־גבור בגבור כשלו יחדיו נפלו שניהם : הדבר
Babel regem Nebuchadresar veniendo :prophetam Irmejahu ad Dominus est locut⁹ quod
אשר דבר יהוה אל־ירמיהו הנביא לבוא נבוכדראצר מלך בבל
,Mighdol in facite auditũ &,Ægypto in Annuntiate .Ægypti terram percutiendũ ad
14 להכות את־ארץ מצרים : הגידו במצרים והשמיעו במגדול
devorabit quia ,te præpara & , Sta ;dicite :Tachpanches in &,Noph in facite auditũ &
והשמיעו בנף ובתחפנחס אמרו התיצב והכן לך כי־אכלה
.eũ impulit Domin⁹ quoniã,subsistit non ? tui fortes est prostratus Quare .tuos circuitus gladius
15 חרב סביביך : מדוע נסחף אביריך לא עמד כי יהוה הדפו :

Versio VULG. LAT.

4 Hæc dicit Dominus, Sic dices ad
eum; Ecce quos ædificavi, ego destruo
: & quos plantavi, ego evello,
& universam terram hanc.
5 Et tu quæris tibi grandia ? noli
quærere: quia ecce ego adducam
malum super omnem carnem, ait
Dñs : & dabo tibi animam tuam
in salutem, in omnibus locis, ad
quæcunque perrexeris.

CAP. XLVI.

1 Quod factum est verbum Domini
ad Jeremiam prophetam
2 contra Gentes, Ad Ægyptum, adversũm
exercitum Pharaonis Nechao
regis Ægypti, qui erat juxta
fluvium Euphraten in Charcamis,
quem percussit Nabuchonosor
rex Babylonis, in quarto anno
Joakim filii Josiæ regis Juda.
3 Præparate scutum, & clypeum,
4 & procedite ad bellum. Jungite
equos, & ascendite equites: state
in galeis, polite lanceas, induite
5 vos loricis. Quid igitur ? vidi ipsos
pavidos, & terga vertentes,
fortes eorum cæsos : fugerunt
conciti, nec respexerunt : terror
6 undique, ait Dominus. Non fugiat
velox, nec salvari se putet
fortis : Ad Aquilonem juxta flumen
Euphraten victi sunt, & ruerunt.
7 Quis est iste, qui quasi
flumen ascendit : & veluti fluviorum,
intumescunt gurgites ejus?
8 Ægyptus fluminis instar ascendit,
& velut flumina movebuntur
fluctus ejus: & dicet ; Ascendens
operiam terram: perdam civitatem,
9 & habitatores ejus. Ascendite
equos, & exultate in curribus,
& procedant fortes, Æthiopia
& Libyes tenentes scutum,
& Lydii arripientes & jacientes
10 sagittas. Dies autem ille Domini
Dei exercituum, dies ultionis,
ut sumat vindictam de inimicis
suis : devorabit gladius, & saturabitur,
& inebriabitur sanguine eorum : victima enim Domini Dei exercituum in terra
11 Aquilonis juxta flumen Euphraten. Ascende in Galaad, & tolle resinam, virgo filia Ægypti:
12 frustrà multiplicas medicamina, sanitas non erit tibi. Audierunt gentes ignominiam
tuam, & ululat⁹ tuus replevit terram: quia fortis impegit in fortem, & ambo pariter conciderunt.
13 Verbum quod locutus est Domin⁹ ad Jeremiam prophetam, super eo quòd venturus
14 esset Nabuchodonosor rex Babylonis & percussurus terram Ægypti. Annuntiate
Ægypto, & auditum facite in Magdalo, & resonet in Memphis, & in Taphnis: dicite; Sta,
15 & præpara te: quia devorabit gladius ea, quæ per circuitum tuum sunt. Quarè computruit
fortis tuus ? non stetit : quoniam Dominus subvertit eum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

26 Καὶ ἐρεῖς αὐτοῖς, Ῥίπτω ἐγὼ τὸ ἔλεός μου κατ' ὀφθαλμοὺς τοῦ βασιλέως, πρὸς τὸ μὴ (δ) ἀποστρέψαι με εἰς οἰκίαν Ἰωνάθαν, ἀποθανεῖν
27 με ἐκεῖ. Καὶ ἤλθοσαν πάντες οἱ ἄρχοντες πρὸς Ἱερεμίαν, καὶ ἠρώτησαν αὐτόν. καὶ ἀνήγγειλεν αὐτοῖς κατὰ πάντας τοὺς λόγους τούτους, οὓς ἐνετείλατο αὐτῷ ὁ βασιλεύς. καὶ (ε) ἀπεσιώπησαν, ὅτι οὐκ ἠκούσθη (ζ) ὁ
28 λόγος κυρίου. Καὶ ἐκάθισεν Ἱερεμίας ἐν τῇ αὐλῇ τῆς φυλακῆς, ἕως χρόνου, οὗ συνελήφθη Ἱερουσαλήμ (η).

Et dices eis ; Projicio ego misericordiam meam ante oculos regis ad hoc, ut redire me non faciat in domum Jonathan, ad moriendum me ibi. Et venerunt omnes principes ad Hieremiam, & interrogaverunt eum. Et annuntiavit eis juxta omnia verba hæc, quæ præceperat ei rex. Et tacuerunt; quia non erat auditum verbum Domini. Et sedit Hieremias in atrio carceris, usque ad tempus quo capta est Hierusalem. 26 27 28

MS.A. (δ) ἐπιστρέψαι εἰς οἰκίαν Ἰωνάθαν, ἀποθανεῖν ἐκεῖ. Καὶ ἦλθαν (ε) ἐσιώπησαν, (ζ) λόγος (η) Ἡ ΠΌΛΕΙΣ.

Cap. 39. Vulg. Lat.

ΚΕΦ. μς'.

1 Καὶ ἐγένετο (α) τῷ μηνὶ τῷ ἐνάτῳ τοῦ Σεδεκία βασιλέως Ἰούδα, (β) παρεγένετο Ναβουχοδονόσορ βασιλεὺς Βαβυλῶνος, καὶ πᾶσα ἡ δύναμις αὐτοῦ ἐπὶ Ἱερουσαλήμ, καὶ (γ) ἐπολιόρκουν αὐτήν.
2 Καὶ ἐν τῷ ἑνδεκάτῳ ἔτει τοῦ Σεδεκία, ἐν τῷ μηνὶ τῷ τετάρτῳ, ἐνάτῃ τοῦ μηνός, ἐρράγη ἡ πόλις,
3 Καὶ εἰσῆλθον πάντες οἱ (δ) ἡγεμόνες βασιλέως Βαβυλῶνος, καὶ ἐκάθισαν ἐν (ʺ) πύλῃ τῇ μέσῃ (ε) Μαργανασάρ, καὶ Σαμαγώθ, καὶ Ναβουσάχαρ, καὶ Ναβουσαρείς, Ναγαργᾶς, Νασιρραβαμάθ, καὶ οἱ κατάλοιποι ἡγεμόνες βασιλέως Βαβυλῶνος.

CAP. XLVI.

1 *Et factum est (a) mense nono Sedeciæ, regis Juda, advenit Nabuchodonosor rex Babylonis, & omnis virtus ejus super Hierusalem: & obsidebant eam.* 2 *Et in undecimo anno Sedeciæ, in mense quarto, nonâ mensis, diffissa est civitas:* 3 *Et ingressi sunt omnes duces regis Babylonis: & sederunt in porta media, Marganasar, & Samagoth, & Nabusachar, & Nabusaris, Nagargas, Naserrabamath, & reliqui duces regis (b) Babylonis.*

MS.A. (α) ἐν τῷ ἔτει τῷ ἐνάτῳ (β) ἐν τῷ μηνὶ τῷ δεκάτῳ, παρεγένετο Ναβουχοδονόσορ * βασιλέως (γ) ἐπολιόρκει (δ) ἡγεμόνες (ʺ) τῇ πύλῃ (ε) Νηργελσουσασάρ, Εἰσαμαγάθ, καὶ Ναβουσάχαρ, καὶ Ναβουζαείς, καὶ Ναγαργᾶς, Νασερραμαβάχ, καὶ οἱ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 כדנן תימר ליה כדנן אמר יי הא די בניתי אנא אפגר וית די קימית אנא אטלטל
5 וית כל ארעא דישראל דילי היא : ודאת בעי לך רברבן לא תבעי ארי הא אנא מיתי
בישתא על כל בסרא אמר יי ואתן לך ית נפשך לשיזבא על כל אתריא די תהך לתמן :

מו

1 2 דהוה פתגם נבואה מן קדם יי על ירמיה נביא על עממיא : למצרים על משרית פרעה
חגירא מלכא דמצרים דהוה על נהר פרת בכרכמיש דמחא נבוכד נצר מלכא דבבל
3 בשתא רביעיתא ליהויקים בר יאשיה מלך שבטא דבית יהודה : סדרו עגלין ותריסין
4 ואתקרבו לאגחא קרבא : טקיסו סוסותא ויסקון פרשיא ויתעתדון בקולסיא צחצחו
5 מורניתא לבשו סריניא : מא דין חזיתי אנון תבירין מסתחרין לאחורא וגבריהון
תבירין ומערק ערקין ולא מתפנן למקם מן קדם דקטלין בחרבא דמתכנשין עליהון
6 מסחור סחור אמר יי : לא יערק דקליל ולא ישתיזב דגבר בארעא צפונא על כיף נהרא
7 פרת אתקלו ונפלו : מן דין דסליק במשריתיה כעננא דסליק וחפי ית ארעא כמבוע
8 דמיין דמטרפין מוהי : מלכא דמצרים דסליק במשריתיה כעננא דסליק חפי ית ארעא
כמבוע דמיין דמטרפין מוהי ואמר אסק אחפי ארעא ומלאה אוביד קרויא ודיתבין בהון :
9 יסקון סוסותא וישתגשון רתיכיא ויפקון גבריא כושאי ופוטאי אחדי תריסין ולודאי דנגדין
10 ומחן בקשתא : ויומא ההוא קדם יי צבאות יום פורענותא לאתפרע מסנאי עמיה ותקטיל
11 חרבא ותסבע ותרוי מדמהון ארי קטלא קדם יי צבאות בארעא צפונא על נהר פרת : סקי
לגלעד וסבי שעיף מלכות כנשתא דמצרים לא להנאה אסגית סממנין אסו לא סלקת
12 ליך : שמעו עממיא קלניך וצוחתיך אתמליאת ארעא ארי גבר בגבר אתקלו כחדא
13 אתקטלו תרויהון : פתגם נבואה דמליל יי עם ירמיה נביא למיתי נבוכד נצר מלכא
14 דבבל למחי ית ארעא דמצרים : חוו במצרים ובסרו במגדול ובסרו במפיס
15 ובתחפנחס אמרו אזדרזו ואתקן לך ארי קטילת חרבא סחרנך : מא דין אתברו גברך
ולא יכילו למקם ארי יי תברנון :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Hæc dices ei, Hæc dicit Dñs : Ecce ego quod ædificavi, ego destruam ; & 4
quod stabilivi ego transferam, & omnem terram Israel quæ mea est. Et tu 5
quæris tibi grandia ? ne quæras : quia ecce ego adducam mala super
omnem carnem, dicit Dominus : & dabo tibi animam tuam in salutem in
omnibus locis ad quæ ieris.

CAP. XLVI.

Quod factum est verbum prophetiæ à facie Dñi ad Jeremiam prophe- 1
tam contra gentes. Ad Ægyptum contra exercitum Pharaonis claudi regis 2
Ægypti, qui erat juxta fluvium Euphratem in Carchamis, quem percussit
Nabuchodonosor rex Babylonis in anno quarto Joachim filii Josiæ regis
tribus dom⁹ Juda. Ordinate scuta & clypeos ; accedite ad pugnandum. 3
Instruite equos, & ascendant equites & stent cum galeis ; polite lanceas, 4
induimini loricis. Quare vidi ipsos contritos & terga vertentes, & fortes 5
eorum confractos ? & fugiendo fugiunt, & non respiciunt ad resistendum
illis qui occidunt gladio, qui congregantur adversum eos undiquaque,
dicit Dñs. Non fugiet velox, nec evadet fortis. In terra Aquilonis 6
juxta ripam fluminis Euphratis impegerunt, & ceciderunt. Quis est iste 7
qui ascendit cum exercitu suo sicut nubes ; & operit terram ? & sicut fons
aquarum cujus aquæ turbatæ sunt ? Rex Ægypti qui ascendit cum exercitu, 8
quasi nubes quæ *ascendens* operit terram ; & sicut fons aquarum, cujus
aquæ commoventur : & dixit, Ascendam, cooperiam terram & plenitudinem
ejus ; perdam civitates, & illos qui habitant in eis. Ascendant 9
equi & sonent currus, & egrediantur fortes Æthiopes, & Libyi tenentes
clypeos, & Lydi extendentes & *ferientes arcu*. Dies enim ille coram Dño 10
exercituum dies ultionis est, ut vindictam sumat de inimicis populi sui :
& occidet eos gladio, & satiabitur, & inebriabitur sanguine eorum ; quia
occisio est coram Dño exercituum in terra Aquilonis juxta flumen Euphratem.
Ascende ad Galaad, & tolle resinam regnum cœtus Ægypti, in nul- 11
lam enim utilitatem multiplicas medicamina: medicina non ascendet tibi.
Audierunt populi ignominiam tuam, & clamore tuo repleta est terra, quia 12
fortis impegit in fortem, simul ambo interfecti sunt. Verbum prophetiæ 13
ꝙ locut⁹ est Dñs cum Jeremia propheta de adventu Nabuchodonosor regis
Babylonis, ad percutiendã terram Ægypti. Annuntiate in Ægypto, & nar- 14
rate in Magdalo, & annuntiate in Memphis, & in Taphnes dicite : Accingere
& præpara te, quia occidit gladi⁹ eos qui in circuitu tuo sunt. Quare 15
contriti sunt fortes tui, & non potuerunt consistere ? Quia Dñs contrivit eos.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܠܗ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܗ. ܗܐ ܡܕܡ ܕܒܢܝܬ ܐܢܐ ܣܬܪ. ܘܡܕܡ ܕܢܨܒܬ 4
ܐܢܐ ܥܩܪ. ܘܟܠܗ ܐܪܥܐ ܡܚܪܒ ܐܢܐ. * ܘܐܢܬ ܒܥܝܬ ܕܬܒܥܐ ܠܟ ܪܘܪܒܬܐ. ܠܐ ܬܒܥܐ 5
ܕܬܒܥܘܢ ܡܢܗ. ܡܛܠ ܕܗܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܒܝܫܬܐ ܥܠ ܟܠ ܒܣܪ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܬܠ ܠܟ
ܢܦܫܟ ܠܒܙܬܐ. ܒܟܠܗܘܢ ܐܬܪܘܬܐ ܕܐܙܠ ܐܢܬ ܠܬܡܢ. * ܫܠܡܘ * ܡܫܐ *
* ܡܫܩܠܐ ܕܡܨܪܝܢ * * ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ. ܕܢܬܢܒܐ 1
ܥܠ ܥܡܡܐ ܘܥܠ ܡܨܪܝܢ. * ܘܥܠ ܚܝܠܗ ܕܦܪܥܘܢ ܚܓܝܪܐ ܡܠܟܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܕܫܪܐ ܗܘܐ ܥܠ 2
ܢܗܪܐ ܦܪܬ ܒܟܪܟܡܝܫ. ܕܩܛܠܗ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܒܫܢܬܐ ܕܐܪܒܥ ܕܝܘܝܩܝܡ
ܒܪ ܝܘܫܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܐܝܠ. 3
ܣܒܘ ܙܝܢܐ ܘܬܪܣܐ ܘܩܪܘܒܘ ܠܩܪܒܐ. * ܐܣܘܪܘ ܣܘܣܘܬܐ ܘܪܟܒܘ ܦܪܫܐ. ܐܬܥܛܦܘ ܣܢܘܪܬܐ. 4
ܡܪܘܩܘ ܪܘܡܚܐ. ܠܒܫܘ ܫܪܝܢܐ. * ܡܛܠ ܕܚܙܝܬ ܕܬܒܝܪܝܢ. ܡܬܗܦܟܝܢ ܘܓܢܒܪܝܗܘܢ 5
ܡܬܚܒܠܝܢ. ܘܥܪܩܝܢ ܥܪܘܩܬܐ ܘܠܐ ܡܬܦܢܝܢ. ܡܛܠ ܕܡܩܦܝܢ ܗܘܘ
ܠܗܘܢ ܡܢ ܚܕܪܝܗܘܢ. * ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܐ ܢܥܪܘܩ ܩܠܝܠܐ. ܘܠܐ ܢܬܦܠܛ ܓܢܒܪܐ ܕܓܢܒܪܐ 6
ܒܓܒܪܐ. ܥܠ ܓܢܒ ܢܗܪܐ ܦܪܬ ܐܬܬܩܠܘ ܘܢܦܠܘ ܟܠܗܘܢ. * ܡܢܘ ܗܢܐ ܕܐܝܟ ܢܗܪܐ ܣܠܩ. 7
ܘܐܝܟ ܢܗܪܘܬܐ ܡܫܬܓܫܝܢ ܡܝܘܗܝ. * ܡܠܟܐ ܕܡܨܪܝܢ ܐܝܟ ܢܗܪܐ ܣܠܩ. ܘܐܝܟ ܢܗܪܘܬܐ 8
ܡܫܬܓܫܝܢ ܡܝܘܗܝ. ܘܐܡܪ ܐܣܩ ܐܟܣܐ ܐܪܥܐ. ܘܐܘܒܕ ܡܕܝܢܬܐ ܘܥܡܘܪܝܗ. * ܣܩܘ ܠܣܘܣܘܬܐ 9
ܘܐܫܬܒܗܪܘ ܒܡܪܟܒܬܐ. ܢܦܩܘܢ ܓܢܒܪܐ ܟܘܫܝܐ ܘܦܘܛܝܐ ܐܚܝܕܝ ܬܪܣܐ. ܘܠܘܕܝܐ ܕܕܪܟܝܢ
ܩܫܬܐ ܒܚܟܡܬܐ. * ܘܢܗܘܐ ܝܘܡܐ ܗܘ ܠܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܝܘܡܐ ܕܦܘܪܥܢܐ ܕܢܦܪܘܥ 10
ܠܒܥܠܕܒܒܘܗܝ. ܘܬܐܟܘܠ ܚܪܒܐ. ܘܬܣܒܥ ܘܬܪܘܐ ܡܢ ܕܡܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܚܪܒܐ ܢܥܝܪ
ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܒܐܪܥܐ ܕܓܪܒܝܐ ܥܠ ܢܗܪܐ ܦܪܬ. * ܣܩܝ ܠܓܠܥܕ ܘܣܒܝ ܪܛܝܢܐ 11
ܒܬܘܠܬܐ ܒܪܬ ܡܨܪܝܢ. ܣܓܝܐܬܐ ܐܣܘܬܐ ܕܠܐ ܗܘܐ ܠܟܝ. * ܫܡܥܘ 12
ܥܡܡܐ ܨܥܪܟܝ. ܘܡܢ ܝܠܠܬܟܝ ܐܬܡܠܝܬ ܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܓܒܪܐ ܒܓܒܪܐ ܐܬܬܩܠܘ. ܘܬܪܝܗܘܢ
ܒܚܪܒܐ ܢܦܠܘ. * ܦܬܓܡܐ ܕܡܠܠ ܡܪܝܐ ܠܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ. ܕܐܬܐ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. 13
ܘܢܚܪܒܝܗ ܠܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܚܘܘ ܒܡܨܪܝܢ. ܘܐܫܡܥܘ ܒܡܓܕܘܠ. ܘܐܫܡܥܘ ܒܡܦܝܣ 14
ܘܒܬܚܦܢܚܣ ܐܡܪܘ. ܐܬܬܩܢܘ ܘܐܬܛܝܒܘ. ܡܛܠ ܕܐܟܠܬ ܚܪܒܐ ܚܕܪܝܟܝ. * ܡܛܠ 15
ܡܢܐ ܐܬܚܒܠܘ ܓܢܒܪܝܟܝ ܘܢܦܠܘ ܘܠܐ ܩܡܘ. ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܚܒܠ ܐܢܘܢ.

Ita dic illi, Sic dicit illi Dñs, Ecce quod ædificaveram, 4
deſtructurus ſum; & quod plantaveram, evulſurus; totámque terram vaſtaturus.
Tu igitur qui ad arduæ aſpiras, ad ea 5
quæ majora te ſunt, ne aſpires: quoniam ecce
ego adducturus ſum malum ſuper univerſam
carnẽ, ait Dñs: tibi verò concedã ut teipſum
eripias in quibuſvis locis ad quæ perrexeris.

CAP. XLVI.

Onus Ægypti.

Fuit præterea ſermo Domini ad Jeremiam 1
prophetam, ut vaticinaretur de gentibus, &
de Ægyptiis, Deque exercitu Pharaonis Claudi 2
regis Ægypti, qui caſtra fixerat ſecus flumen
Euphratem in Carcemus, quem interfecit Nebuchadnoſar
rex Babylonis, anno quarto Jojacim
filii Joſiæ regis Judæ, dicendo; Sic ait 3
Dominus potentiſſimus Deus Iſraelis; Sumite
arma & clypeum, & accedite ad bellum: Injicite 4
fræna equis, equites conſcendere jubete:
imponite galeas, extergite lanceas, induite
loricas: Quoniam video iſtos profligatos & 5
terga vertentes; & robuſtiſſimos eorum vulneratos
fugere neque reſpicere, eò quòd undiq;
cingerent eos. Dicit Dominꝰ, Haudquaquam 6
fugiet qui leviſſimus eſt, nec eripiet ſe qui robuſtorum
eſt robuſtiſſimꝰ: ſecus fluvium Euphratem
impegerunt & corruerunt omnes.
Quis eſt iſte qui ceu flumen aſcendit, cujus 7
undæ ceu fluminum obſtrepunt? Rex Ægypti 8
ceu flumẽ aſcendit, & ut fluminũ obſtrepunt
undæ illius, ac dicit, Aſcendam, operiámque
terram, & urbem cum civibus ejus perdam:
Conſcendite equos, gloriamini in curribus: 9
prodeant viri Æthiopes & Putæi clypeos tractantes,
& Lydii jaculandi arcu periti. Erit 10
autem dies illa Domino potentiſſimo, dies
retributionis, quam rependet hoſtibus ſuis,
vorabitque gladius, & ſaturabitur atque inebriabitur
ſanguine eorum: nam gladium excitabit
Dominus potentiſſimꝰ in terra Aquilonari
ſecus fluvium Euphratem. Aſcende in 11
Gelaad, & ſume tibi reſinam virgo filia Ægypti:
fruſtrà multas adhibes medicinas, nec
emolumentũ percipis. Audient gentes ignominiam 12
tuam, & ululatu tuo implebitur terra,
quoniam vir in virum irruet, ambóque
gladio corruent. Sermo quem dixit Dominus 13
Jeremiæ prophetæ, venturum Nebuchadnoſarem
regem Babylonis, & terram Ægypti
vaſtaturum. Indicate in Ægypto, & annuntiate 14
in Migdol, promulgate in Mephes, &
in Tahphis dicite, Prompti ſitis ac parati,
quoniam voravit gladius adjacentia tibi loca.
Qua de cauſa deturbati ſunt heroes tui, 15
& ciciderunt, neque ſurrexerunt? quia Dominus
deturbavit eos.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* فتقول لهم * انا طرحت رحمتي لعيني الملك الا يردني الي بيت يوناثان لاموت هناك * واتي 26 27
جميع الروساء الي ارميا وسالوه فاخبرهم بجميع هذه الاقوال التي اوصاه بها الملك فسكتوا
لان قول الرب لم يسمع * وجلس ارميا في دار الحبس الي الزمان الذي اخذت فيه ايروسليم 28
المدينة * * الفصل السادس والاربعون * * وكان في السنة التاسعة لصدقيا 1
ملك يهودا في الشهر العاشر حضر بختنصر ملك بابل وكل جيشه الي ايروسليم وحاصرها * وفي 2
السنة الحادية عشر لصدقيا في الشهر الرابع في التاسع من الشهر سقطت المدينة * ودخل 3
جميع قواد ملك بابل وجلسوا في الباب الاوسط نرجل صاصاصار وصامامغات وابوصاحار
وابوراريس وباعرعاس * وناسار ورامابات * وبقية قواد ملك بابل [MS.Ox. * فلما راهم صادقيا 4
ملك يهودا وجميع الرجال الابطال هربوا وخرجوا من القرية ليلا في طريق بستان الملك من
باب السور وخرجوا في طريق الصحراء * وركض خيل الكلدانيين خلفهم * فادركوا صادقيا في قاع 5
اريحا وتفرقت اجناده كلها واخذوه واتوا به الي بختنصر ملك بابل الي دبلت في ارض حماة *
* وخاصمه هناك وحاكمه وذبح ملك بابل بني صادقيا بدبلت بين يديه وذبح ملك بابل 6
جميع قواد ملك يهودا في دبلت * واعمي عيني صادقيا وشد بسلاسل الحديد * وانطلق 7
به الي بابل * فاما قصر الملك وبيوت الشعب فاحرقوه الكلدانيون بالنار وهدموا سور اورشليم بما يدور * 8

Dices illis, Ego propoſui miſericordiam 26
*mei coram rege, ut non remitteret me in
domum Jonathanis ad moriendum illic.
Cùm itaque veniſſent omnes principes ad* 27
*Jeremiam, & interrogâſſent eum; retulit
eis omnes hoſce ſermones quos præceperat
ei rex: quapropter tacuerunt: quia ſermo
Domini non fuit auditus. Manſit autem* 28
*Jeremia in atrio carceris uſque ad tempus
quo capta fuit urbs Jeruſalem.*

CAP. XLVI.

Deinde contigit anno nono Sedeciæ re- 1
*gis Judæ, menſe decimo, ut adveniens
Bochtonaſſar rex Babelis cum toto exercitu
ſuo in Jeruſalem, obſideret eam:
Et anno undecimo Sedeciæ, menſe quarto,* 2
*nono menſis die, perrumperetur urbs.
Quarè ingreſſi omnes duces regis Babelis* 3
*conſederunt in porta media, Nerghel-ſeſaſar,
Samagath, Nabuſachar, Nabuzaris,
Nagargas, Niſar, & Ramabac. cæterique
duces regis Babelis:* [MS. Ox. *Et cùm* 4
*vidiſſet eos Sedecia Rex Judæ, omnes
viri ſtrenui, fugientes egreſſi ſunt noctè
de civitate viâ horti regis, per portam
muri, & exierunt viâ campeſtrium. Per-* 5
*ſequentes autem eos equites Chaldæorum
aſſecuti ſunt Sedeciam in campeſtribus
Jericho, ubi toto ipſius exercitu ab eo diſſipato
tulerunt eum, deduxerúntque ad
Bochtonaſſar regem Babyloniæ Diblatham,
in terram Himathæ. Ubi poſtquam cum* 6
*eo altercatus eſſet, ſententiam in eum tulit:
& jugulavit Rex Babyloniæ filios
Sedeciæ Diblathæ coram ipſo: etiam omnes
Regis Judæ duces jugulavit rex Babyloniæ
in Diblathæ. Tum oculos Sedeciæ* 7
*excæcavit, & vinxit eum catenis ferreis,
ut deduceret eum in Babyloniam. Regis* 8
*autem palatium, & domos populi igne
combuſſerunt Chaldæi, murósque Jeruſalem
per circuitum demoliti ſunt.*

ירמיה: מז

,Surge : dixerunt & ,suum socium ad vir cecidit etiam : ruentem Multiplicavit
16 הִרְבָּה כּוֹשֵׁל גַּם־נָפַל אִישׁ אֶל־רֵעֵהוּ וַיֹּאמְרוּ קוּמָה ׀
faciebus à nostræ nativitatis terram ad & , nostrum populum ad revertamur &
וְנָשֻׁבָה אֶל־עַמֵּנוּ וְאֶל־אֶרֶץ מוֹלַדְתֵּנוּ מִפְּנֵי
, tumultum , Ægypti regem Parhoh , ibi Vocaverunt *.depopulatoris* gladii
17 חֶרֶב הַיּוֹנָה׃ קָרְאוּ שָׁם פַּרְעֹה מֶלֶךְ־מִצְרַיִם שָׁאוֹן
exercituum Dominus rex inquit ,ego *Vivens .statutum* tempus fecit transire
18 הֶעֱבִיר הַמּוֹעֵד׃ חַי־אָנִי נְאֻם־הַמֶּלֶךְ יְהֹוָה צְבָאוֹת
.veniet ,mari in Charmel sicut & , montibus in Thabor sicut quoniam:ejus nomen
שְׁמוֹ כִּי כְּתָבוֹר בֶּהָרִים וּכְכַרְמֶל בַּיָּם יָבוֹא׃
solitudinem in Noph quia : Ægypti filia habitatrix ,tibi fac transmigrationis Vasa
19 כְּלֵי גוֹלָה עֲשִׂי לָךְ יוֹשֶׁבֶת בַּת־מִצְרָיִם כִּי־נֹף לְשַׁמָּה
excidium : Ægyptus formosa Vitula *.habitatore absque* , desolabitur & , erit
20 תִהְיֶה וְנִצְּתָה מֵאֵין יוֹשֵׁב׃ עֶגְלָה יְפֵה־פִיָּה מִצְרַיִם קֶרֶץ
, *saginæ* vituli veluti ejus *interiori in ejus mercenarii* Etiam *.veniens,veniens* aquilone ab
21 מִצָּפוֹן בָּא בָא׃ גַּם־שְׂכִרֶיהָ בְקִרְבָּהּ כְּעֶגְלֵי מַרְבֵּק
dies quia : substiterunt non , simul fugerunt , se verterunt ipsi etiam quia
כִּי־גַם־הֵמָּה הִפְנוּ נָסוּ יַחְדָּיו לֹא עָמְדוּ כִּי יוֹם
serpentis quasi ejus Vox .eorum visitationis tempus , eos super *veniens* eorum *exitii*
22 אֵידָם בָּא עֲלֵיהֶם עֵת פְּקֻדָּתָם׃ קוֹלָהּ כַּנָּחָשׁ
cæsores tanquam ei venerunt securibus *in* & , *ibunt virtute in* quoniam , *ibit*
יֵלֵךְ כִּי־בְחַיִל יֵלֵכוּ וּבְקַרְדֻּמּוֹת בָּאוּ לָהּ כְּחֹטְבֵי
nam : investigabitur non quia , Dominus ait , ejus sylvam *Exscindent* .lignorum
23 עֵצִים׃ כָּרְתוּ יַעְרָהּ נְאֻם־יְהֹוָה כִּי לֹא יֵחָקֵר כִּי
: Ægypti filia est affecta Pudore .numerus eis non & , *locusta præ* sunt multiplicati
24 רַבּוּ מֵאַרְבֶּה וְאֵין לָהֶם מִסְפָּר׃ הֹבִישָׁה בַּת־מִצְרָיִם
Deus exercituum Dominus Dixit .aquilonis populi manum in est tradita
25 נִתְּנָה בְּיַד עַם־צָפוֹן׃ אָמַר יְהֹוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי
,Ægyptum *super* & ,Parhoh *super* & ,No de *Amon ad visitans ego* Ecce : Israel
יִשְׂרָאֵל הִנְנִי פוֹקֵד אֶל־אָמוֹן מִנֹּא וְעַל־פַּרְעֹה וְעַל־מִצְרַיִם
.eum in fidentes *super* & , Parhoh *super* & : ejus reges *super* & , ejus deos *super* &
וְעַל־אֱלֹהֶיהָ וְעַל־מְלָכֶיהָ וְעַל־פַּרְעֹה וְעַל־הַבֹּטְחִים בּוֹ׃
Nebuchadresar manum in & , eorum animam quærentium manum in eos dabo Et
26 וּנְתַתִּים בְּיַד מְבַקְשֵׁי נַפְשָׁם וּבְיַד נְבוּכַדְרֶאצַּר
dies secundùm habitabitur *hæc* post & : ejus servorum manum in & , Babel regis
מֶלֶךְ־בָּבֶל וּבְיַד עֲבָדָיו וְאַחֲרֵי־כֵן תִּשְׁכֹּן כִּימֵי־
ne & , Jahacob mi serve timeas ne tu Et .Dominus dixit , *quondam*
27 קֶדֶם נְאֻם־יְהֹוָה׃ וְאַתָּה אַל־תִּירָא עַבְדִּי יַעֲקֹב וְאַל־
tuum semen & , longinquo de te *servans ego* ecce quia , Israel *consterneris*
תֵּחַת יִשְׂרָאֵל כִּי הִנְנִי מוֹשִׁעֲךָ מֵרָחוֹק וְאֶת־זַרְעֲךָ
, erit *pacatus* & , requiescet & , Jahacob revertetur & : eorum captivitatis terra de
מֵאֶרֶץ שִׁבְיָם וְשָׁב יַעֲקוֹב וְשָׁקַט וְשַׁאֲנַן
, Dominus ait , Jahacob mi serve timeas ne Tu *.exterrens* non &
28 וְאֵין מַחֲרִיד׃ אַתָּה אַל־תִּירָא עַבְדִּי יַעֲקֹב נְאֻם־יְהֹוָה
quas , gentibus cunctis in consummationem faciam nam *: ego* tecum quia
כִּי אִתְּךָ אָנִי כִּי אֶעֱשֶׂה כָלָה בְּכָל־הַגּוֹיִם ׀ אֲשֶׁר
te castigabo & , consummationem faciam non te & , *illuc* te *propuli*
הִדַּחְתִּיךָ שָׁמָּה וְאֹתְךָ לֹא־אֶעֱשֶׂה כָלָה וְיִסַּרְתִּיךָ
.te *liberabo non liberando* & , judicio in
לַמִּשְׁפָּט וְנַקֵּה לֹא אֲנַקֶּךָּ׃

CAP. XLVII. מז

, Pelistim *ad* prophetam Irmejahu ad Domini verbum fuit Quod
1 אֲשֶׁר הָיָה דְבַר־יְהֹוָה אֶל־יִרְמְיָהוּ הַנָּבִיא אֶל־פְּלִשְׁתִּים
.Hazzah Parhoh percuteret antequam
בְּטֶרֶם יַכֶּה פַרְעֹה אֶת־עַזָּה׃

Versio VULG. LAT.

16 Multiplicavit ruentes, ceciditque vir ad proximum suum : & dicent ; Surge, & revertamur ad populum nostrum, & ad terram nativitatis nostræ, à facie gladii columbæ. 17 Vocate nomen Pharaonis regis Ægypti, Tumultum adduxit tempus. 18 Vivo ego (inquit rex, Domin⁹ exercituum nomen ejus,) quoniā sicut Thabor in montib⁹, & sicut Carmelus in mari, veniet. 19 Vasa transmigrationis fac tibi, habitatrix filia Ægypti : quia Memphis in solitudinem erit, & deseretur, & inhabitabilis erit. 20 Vitula elegans atque formosa Ægyptus : stimulator ab Aquilone veniet ei. 21 Mercenarii quoque ejus, qui versabantur in medio ejus, quasi vituli saginati versi sunt, & fugerunt simul, nec stare potuerunt : quia dies interfectionis eorum venit super eos, tempus visitationis eorum. 22 Vox ejus quasi æris sonabit : quoniam cum exercitu properabunt, & cum securibus venient ei, quasi cædentes ligna. 23 Succiderunt saltum ejus, ait Dominus, qui supputari non potest: multiplicati sunt super locustas, 24 & non est eis numerus. Confusa est filia Ægypti, & tradita in 25 manus populi Aquilonis. Dixit Domin⁹ exercituum, Deus Israel ; Ecce ego visitabo super tumultū Alexandriæ, & super Pharaonē, & super Ægyptum, & super deos ejus, & super reges ejus, & super Pharaonem, & super eos qui con- 26 fidunt in eo. Et dabo eos in manus quærentium animam eorum, & in manus Nabuchodonosor regis Babylonis, & in manus servorum ejus : & post hæc habitabitur sicut diebus pristinis, ait 27 Domin⁹. Et tu ne timeas, serve meus Jacob, & ne paveas, Israel: quia ecce ego salvum te faciam de longinquo, & semen tuum de terra captivitatis tuæ : & revertetur Jacob, & requiescet, & prosperabitur ; & non erit qui ex- 28 terreat eum. Et tu noli timere, serve meus Jacob, ait Dominus : quia tecum ego sum, quia ego consumam cunctas gentes, ad quas ejeci te : te verò non consumā, sed castigabo te in judicio, nec quasi innocenti parcam tibi.

CAP. XLVII.

1 Quod factum est verbū Domini ad Jeremiam prophetam contra Palæsthinos, antequàm percuteret Pharao Gazam :

Versio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

14 Καὶ ἀπέστειλαν, ϗ ἔλαβον τὸν Ἱερεμίαν ἐξ αὐλῆς τῆς φυλακῆς, ϗ ἔδωκαν αὐτὸν (ζ) πρὸς τὸν Γοδολίαν υἱὸν Ἀχικὰν, υἱοῦ Σαφὰν, ϗ ἐξήγαγον αὐτὸν, ϗ (η) ἐκάθισεν ἐν μέσῳ τοῦ λαοῦ. 15 Καὶ πρὸς Ἱερεμίαν ἐγένετο λόγος κυρίου ἐν τῇ αὐλῇ τῆς φυλακῆς, λέγων, 16 Πορεύου ϗ (θ) εἰπὲ πρὸς Ἀβδεμέλεχ τὸν Αἰθίοπα, Οὕτως εἶπε κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, Ἰδοὺ ἐγὼ φέρω τοὺς λόγους μου (ι) ἐπὶ τὴν πόλιν ταύτην εἰς κακὰ ϗ οὐκ εἰς ἀγαθά. 17 Καὶ σώσω σε ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ϗ οὐ μὴ (κ) δώσω σε εἰς χεῖρας (λ) τῶν ἀνθρώπων, ὧν σὺ φοβῇ ἀπὸ προσώπου αὐτῶν, 18 Ὅτι σώζων σώσω σε, ϗ ἐν ῥομφαίᾳ οὐ μὴ πέσῃς· ϗ ἔσται ἡ ψυχή σου εἰς (μ) εὕρημα, ὅτι ἐπεποίθεις ἐπ' ἐμοὶ, φησὶ κύριος.

14 Et miserunt, & tulerunt Hieremiam de atrio carceris, & dederunt eum ad Godoliam filium Achican filii Saphan : & eduxerunt eum : & sedit in medio populi. 15 Et ad Hieremiam factum est verbum Domini in atrio carceris, 16 dicens; Vade, & dic ad Abdemelech Æthiopem; Sic dixit Dominus Deus Israel; Ecce ego affero verba mea super civitatem hanc in mala, & non in bona : 17 Et salvabo te in die illa : & non dabo te in manus hominum, quos tu times à facie eorum. 18 Salvans enim salvabo te : & in gladio non cades : & erit anima tua in rem inventam : quoniam fidisti super me, ait Dominus.

MS. A. (ζ) πρὸς Γοδολίαν υἱὸν Ἀχικὰμ, *υἱὸν (η) ἐκάθισαν (θ) εἰπὸν (ι) εἰς τὴν γῆν ταύτην (κ) παραδώσω (λ) ἀνθρώπων, (μ) εὕρεμα,

ΚΕΦ. μζ'.

CAP. XLVII.

Cap. 40.
Vulg. Lat.

1 Ὁ Λόγος ὁ (α) γενόμενος παρὰ κυρίου πρὸς Ἱερεμίαν, (β) μετὰ τὸ ἀποστεῖλαι αὐτὸν Ναβουζαρδὰν τὸν ἀρχιμάγειρον (γ) τὸν ἐκ Ῥαμὰ, ἐν τῷ λαβεῖν αὐτὸν ἐν χειροπέδαις, ἐν μέσῳ ἀποικίας Ἰούδα τῶν (δ) ἠγμένων εἰς Βαβυλῶνα. 2 Καὶ ἔλαβεν αὐτὸν ὁ ἀρχιμάγειρος, ϗ εἶπεν αὐτῷ, Κύριος ὁ (ε) θεός σου ἐλάλησε τὰ κακὰ ταῦτα ἐπὶ τὸν 3 τόπον τοῦτον· Καὶ ἐποίησε κύριος, ὅτι (ϛ) ἡμάρτετε αὐτῷ, ϗ οὐκ (ζ) ἠκούσατε 4 τῆς φωνῆς αὐτοῦ. Ἰδοὺ ἔλυσά σε ἀπὸ τῶν χειροπέδων τῶν (η) ἐπὶ τὰς χεῖράς σου. εἰ καλὸν ἐναντίον σου ἐλθεῖν μετ' ἐμοῦ εἰς Βαβυλῶνα, (θ) ϗ θήσω τοὺς ὀφθαλμούς μου ἐπὶ σέ·

1 Verbum, quod factum est à Domino ad Hieremiam, postquam dimisit eum Nabuzardan princeps coquorum, ex Rama, quando tulit eum in manicis, in medio transmigrationis Juda, eorum, qui ducebantur in Babylonem. 2 Et tulit eum princeps coquorum, & dixit ei; Dominus Deus tuus loquutus est mala hæc super locum istum: 3 Et fecit (a) Dominus; quia peccastis ei, & non audistis vocem (b) ejus. 4 Ecce solvi te à manicis, quæ super manus tuas. Si bonum coram te venire mecum in (c) Babylonem; & ponam oculos meos super te :

MS. A. (α) ΓΕΝΑ'ΜΕΝΟΣ (β) ''ΥΣΤΕΡΟΝ ΜΕΤΑ' (γ) 'ΕΚ 'ΡΑΜΑ' (δ) 'ΑΠΑΓΟΜΕ'ΝΩΝ (ε) θεὸς ἐλάλησεν (ϛ) ἡμάρτετε (ζ) εἰσηκούσατε (η) ὑπὸ (θ) ἧκε, θήσω

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 אסגיאו מתקליהון אף אשתמעו גבר לחבריה ויימרון קומו ונתוב לעמנא ולארעא
17 ילדותנא מן קדם חרבא דסנאה דהיא כחמר מרויא : זמינו לתמן פרעה מלכא דמצרים
18 דסגיאין אתרגושתיה מעדי זמניא : קים אנא אמר מלכא יי צבאות שמיה ארי כמא
19 דיציב פתגמא דתבור בטוריא וכרמלא בימא כן ייתי תביריה : מני גלותא אתקני ליך
20 מלכות כנשתא דמצרים ארי ממפיס לצדו תהי ותצדי מבלי יתיב : מלכות יאיא הות
21 מצרים עממין קטולין מצפונא ייתון עלה למבזה : אף רברבהא בגוה כעגלי רבקא ארי
אף אנון אתפניאו ערקו כחדא לא יכילו למקם ארי יום תברהון אתא עליהון עדן
22 סעורן בישתהון : קל נקוש זיניהון כחיון זחלין ארי במשרין יהכון עליכון וכמא דעלין
23 בכשילין למקץ אעי חורשא : שיצו רברבהא אמר יי ארי לית להון סוף ארי סגיאין
24 מוחלא ולית להון מנין : בהיתת מלכות מצרים אתמסרת ביד עמא דאתא עלה
25 מצפונא : אמר יי צבאות אלהא דישראל הא אנא מסער על אתרגושת אלכסנדריא
ועל פרעה ועל מצרים ועל טעותהא ועל מלכהא ועל פרעה ועל דמתרחצין עלוהי :
26 ואמסרנון ביד דבען למקטלהון וביד נבוכדנצר מלכא דבבל וביד עבדוהי ובתר כן
27 תשרי כיומי קדם אמר יי : ואת לא תדחל עבדי יעקב ולא תתבר ישראל ארי הא אנא
פריק ליך מרחיק וית בנך מארע גלותהון ויתובון דבית יעקב וישקטון וישרון לרוחצן
28 ולית דמניד : את לא תדחל עבדי יעקב אמר יי ארי בסעדך מימרי ארי אעביד
גמירא בכל עממיא די אגליתך לתמן ועמך לא אעביד גמירא ואיתי עלך יסורין
לאלפותך ברם בדין חסוך ושיצאה לא אשיצנך :

מז

1 דהוה פתגם נבואה מן קדם יי עם ירמיה נביא על פלשתאי עד לא ייתי פרעה
וימחי ית יתבי עזה :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

16 Multiplicatæ sunt ruinæ eorum : etiam obedient unusquisq; proximo suo, & dicent : Surgite & revertamur ad populum nostrum, & ad terram na- 17 tivitatis nostræ à facie gladii inimici, qui est sicut vinum inebrians. Invitarunt ibi : Pharao rex Ægypti cujus copiosus tumultus est, transfert *tem-* 18 *pora*. Vivo ego ; dicit Rex, Dn̄s exercituum nomen ejus; quia sicut verum est verbum hoc, quòd Thabor est in montib⁹, & sicut Carmelus in 19 mari ; sic veniet interit⁹ ejus. Vasa transmigrationis præpara tibi regnum cœt⁹ Ægypti, quia Memphis in desolationem erit, & desolabitur absque 20 habitatore. Regnum speciosum fuit Ægyptus. Populi interfectores ve- 21 nient ab Aquilone contra eam, ad eam diripiendam. Principes quoque ejus in medio ejus quasi vituli saginati, ipsi enim versi sunt & fugerunt simul, & non potuerunt consistere ; quia dies interit⁹ eorum venit super 22 eos, temp⁹ visitationis malitiæ eorum. Vox collisionis armorum eorū quasi serpentum reptantiū, quoniam cum exercitu ibunt contra *vos* : & sicut ii 23 qui ingrediuntur cum securib⁹ ad succidenda ligna saltus. Consumpti sunt principes ej⁹, dicit Dn̄s : quia non habent finem, quia copiosiores sunt 24 locustis, & non est eis numer⁹. Confusum est regnum Ægypti ; traditum 25 est in manum populi qui venit contra illud ab Aquilone. Dicit Dn̄s exercituum Deus Israel : Ecce ego visito super tumultum Alexandriæ, & super Pharaonem, & super Ægyptios, & super idola eorum, et super reges 26 eorum, et super Pharaonem, et super omnes qui confidunt in eo. Et tradam eos in manum quærentium occidere eos, et in manum Nabuchodonosor regis Babylonis, et in manum servorum ej⁹. Et postea habitabi- 27 tur sicut in dieb⁹ antiquis, dicit Dn̄s. Tu autem ne timeas serve mi Jacob, et ne formides Israel : Quia ecce ego salvum te faciam à longè, et filios tuos de terra captivitatis eorum. Et revertentur viri dom⁹ Jacob, et qui- 28 escent, et habitabunt confidenter, et non erit qui exterreat. Tu autem ne timeas serve mi Jacob, dicit Dn̄s : quia in adjutoriū tuū est Verbum meum : faciam enim consumptionem in omnib⁹ populis ad quos *transtuli* te : non faciam in te consumptionē, sed adducam super te correptiones ut doceam te, veruntamen in judicio misericordiæ; et consumendo non consumam te.

CAP. XLVII.

1 Quod factum est verbum prophetiæ à facie Domini cum Jeremia propheta, contra Philistæos, antequam veniret Pharao, et percuteret habitatores Gazæ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܣܓܝܐܐ ܗܘܘ ܕܐܬܡܣܟܢܘ ܐܦ ܢܦܠܘ ܓܒܪܐ ܥܠ ܚܒܪܗ. ܘܐܡܪܘ: ܩܘܡܘ ܢܗܦܘܟ ܠܥܡܢ 16
ܘܠܐܪܥܐ ܕܝܠܕܘܬܢ. ܡܢ ܩܕܡ ܣܝܦܐ ܕܡܪܘܕܐ. * ܘܩܪܘ ܬܡܢ ܫܡܗ ܕܦܪܥܘܢ ܚܓܝܪܐ 17
ܡܠܟܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܕܫܘܓܫܐ ܘܡܥܒܪ ܙܒܢܐ. * ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܠܟܐ ܕܨܒܐܘܬ ܫܡܗ. ܕܐܝܟ 18
ܢܦܠ ܦܪܥܘܢ. ܐܝܟ ܬܒܪܐ ܕܛܘܪܐ. ܘܐܝܟ ܟܪܡܠܐ ܒܓܘ ܝܡܐ. * ܡܐܢܐ ܕܫܒܝܬܐ ܥܒܕܝ ܠܟܝ 19
ܒܬܘܠܬܐ: ܒܪܬ ܡܨܪܝܢ. ܡܛܠ ܕܡܦܝܣ ܠܚܘܪܒܐ ܬܗܘܐ. ܘܬܨܕܐ ܡܢ ܕܠܐ ܥܡܘܪܐ. * ܡܨܪܝܢ 20
ܥܓܠܬܐ ܫܦܝܪܬܐ ܡܨܝܪܬܐ. ܚܝܠܐ ܡܢ ܓܪܒܝܐ ܢܐܬܐ ܠܗ̇. * ܐܓܝܪܝܗ̇ ܕܒܓܘܗ̇ ܐܝܟ 21
ܥܓܠܐ ܕܦܛܡܐ. ܐܦ ܗܢܘܢ ܐܗܦܟܘ ܚܨܗܘܢ. ܘܥܪܩܘ ܐܟܚܕܐ ܘܠܐ ܩܡܘ. ܡܛܠ ܕܝܘܡܐ ܕܬܒܪܗܘܢ
ܐܬܐ ܠܗܘܢ. ܙܒܢܐ ܕܣܘܥܪܢܗܘܢ. * ܩܠܗ ܕܚܝܠܐ ܐܝܟ ܚܘܝܐ ܕܪܚܫ. ܡܛܠ ܕܒܚܝܠ 22
ܢܐܙܠܘܢ. ܘܒܢܪܓܐ ܢܐܬܘܢ ܠܗ̇ ܐܝܟ ܦܣܩܝ ܩܝܣܐ. * ܦܣܘܩܘ ܥܒܘܗ̇ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. 23
ܡܛܠ ܕܣܓܝܐܐ ܐܢܘܢ ܛܒ. ܡܛܠ ܕܣܓܝܐܝܢ ܡܢ ܩܡܨܐ ܘܡܢܝܢܐ ܠܝܬ ܠܗܘܢ. * ܒܗܬܬ 24
ܒܪܬ ܡܨܪܝܢ. ܘܐܫܬܠܡܬ ܒܐܝܕܝ ܥܡܐ ܕܓܪܒܝܐ: * ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܐ 25
ܕܐܝܣܪܝܠ. ܗܐ ܐܢܐ ܦܩܕ ܐܢܐ ܥܠ ܐܡܘܢ ܕܡܝܐ. ܘܥܠ ܦܪܥܘܢ. ܘܥܠ ܡܨܪܝܢ. ܘܥܠ ܐܠܗܝܗ̇.
ܘܥܠ ܚܝܠܗ̇. ܘܥܠ ܡܠܟܝܗ̇. ܘܥܠ ܦܪܥܘܢ. ܘܥܠ ܟܠ ܕܬܟܝܠܝܢ ܥܠܘܗܝ. * ܘܐܫܠܡ ܐܢܘܢ 26
ܒܐܝܕܝ ܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ. ܘܒܐܝܕܝ ܕܒܥܝܢ ܢܦܫܗܘܢ. ܒܐܝܕܝ ܕܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ
ܕܒܒܠ. ܘܒܐܝܕܝ ܥܒܕܘܗܝ. ܘܒܬܪܟܢ ܬܬܥܡܪ ܐܝܟ ܝܘܡܬܐ ܕܡܢ ܩܕܡ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܐܢܬ 27
ܠܐ ܬܕܚܠ ܥܒܕܝ ܝܥܩܘܒ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܬܬܬܒܪ ܐܝܣܪܝܠ. ܕܗܐ ܦܪܩ ܐܢܐ ܠܟ ܡܢ ܪܘܚܩܐ.
ܘܠܙܪܥܟ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܫܒܝܬܗܘܢ. ܘܢܗܦܘܟ ܝܥܩܘܒ ܘܢܫܠܐ. ܘܢܫܬܝܢ ܘܢܬܬܢܝܚ ܘܠܝܬ ܡܢ
ܕܡܙܝܥ ܠܗ. * ܘܐܢܬ ܠܐ ܬܕܚܠ ܥܒܕܝ ܝܥܩܘܒ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܥܡܟ ܐܢܐ. ܡܛܠ 28
ܕܐܥܒܕ ܓܡܝܪܘܬܐ ܒܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܒܕܪܬܟ ܠܬܡܢ. ܘܠܟ ܠܐ ܐܥܒܕ. ܘܐܪܕܝܟ ܒܕܝܢܐ
ܘܡܕܟܝܘ ܠܐ ܐܕܟܝܟ.
* ܦܣܩܐ * ܡܙ *

* ܥܠ ܦܠܫܬ *

* ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ 1
ܢܒܝܐ. ܕܢܬܢܒܐ ܥܠ ܦܠܫܬܝܐ. ܥܕܠܐ ܢܡܚܐ ܦܪܥܘܢ ܠܥܙܐ.

Complures eorum dejecti ſunt, & ceciderunt 16 alter ſuper alterū, ac dixerunt; Surgite, revertamur ad gentē noſtrā & ſolum natale noſtrū, à conſpectu gladii cruciantis. Et vocaverunt 17 ibi nomen Pharaonis Claudi regis Ægypti, Perturbatorem et conſumptorem temporum. Vivo ego, dicit ille Dñs cujus nomen eſt rex 18 Sebaoth, quòd ruiturus eſt Pharaon ceu fragmentum montis, & ut Charmelus in medium maris. Vaſa captivitatis fac tibi virgo filia 19 Ægypti: nam Mephes erit in vaſtitatē, & deſolabitur ob defectum civium: Super Ægyptū 20 vitulam ſpecioſam depictam, exercitus ab Aquilone veniet: Mercenarii ejus, *qui ſunt* in 21 ea quaſi vituli ſaginati, etiam ipſi terga vertentes fugient ſimul, neq; ſubſiſtent; quia dies fractionis eorum ſuperveniet eis, tempus viſitationis eorum. Tumultus exercitûs erit quaſi 22 coluber reptans: ſiquidē cum exercitu ibunt, & cum ſecuribus venient adverſùs eam tanquam cæſores lignorum: (Succidite ſylvas 23 ejus, dicit Dñs) ſiquidem infiniti ſunt; ſiquidem plures ſunt locuſtis, & nullus eſt eis numerus. Erubeſcet filia Ægypti, & tradetur in 24 manum populi Aquilonaris, Ait Dñs poten- 25 tiſſimus Deus Iſraelis. Ecce ego animadverſurus ſum in Amonem aquarum, & in Pharaonem, & in Ægyptū & deos ejus, & in exercitum regéſq; ipſius; deniq; in Pharaonem, & in omnes qui freti ſunt illo: Et traditurus 26 eos in manū hoſtiū eorū, & in manū quærentium animam ipſorum; in manū *ſcilicet* Nebuchadnoſaris regis Babylonii, & in manum ſervorum ejus: poſtmodum autem habitabit ut priſtinis diebus, ait Dñs. Tu verò ne time- 27 to ſerve mi Jacob, dicit Dñs, neque conſternator ô Iſrael: nam ecce liberabo te de *regione* longinqua, & ſemen tuum de terra captivitatis ſuæ: ſedebítque Jacob & ſilebit, tranquillus ac tutus erit nemine lædente. Tu in- 28 quam, ne timeto ſerve mi Jacob, dicit Dñs; quoniam tecum ſum: nam penitùs conſumpturus ſum cunctas gentes inter quas te diſperſi, te verò nequaquam conſumam: caſtigabo tamen te cùm modo, nec penitùs impunem te dimittam.

CAP. XLVII.

Contra Paleſtinam

Fuit etiam ſermo Domini ad Jeremiam 1 prophetam, ut vaticinaretur de Paleſtinis, antequam percuſſiſſet Pharaon Azam.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وساير الشعب الذي بقي في القرية، والقوم الذين استامنوا الي ملك بابل* ومن بقي من 9
الشعب سباهم نبوازردان صاحب الشرطة * وانطلق بهم الي بابل * فاما مساكين الشعب 10
الذين لم يكن عندهم شي فتركهم نبوزردان في ارض يهودا* فدفع اليهم الكروم والارضين*
وامرهم ان يستعملوها * فاما ارميا فامن به ملك بابل* وقال لنبوزردان صاحب الشرطة * وقال 11
له * خذ اليك ارميا وتعاهده* ولا تدع احدًا يقول له شي من السو* وما قال من شي فافعله* 12
* وارسل نبوزردان ونبوسزبن صاحب الخدم* ونرغل شار اصار* وربماغ الذي هو صاحب 13
المطبخ * وجميع قواد ملك بابل] *وَأَرسَلُوا فَأَخَذُوا ارمِيَا مِن دَارِ الحَبْسِ ودفعوه لِجُودُولِيَا 14
بنِ أَسِيكَام بنِ صَافَان* وأَخرَجُوه وأجلَسُوه في وَسطِ الشَّعبِ * وَكَانَ قَولُ الرَّبِّ الي ارمِيَا في دَارِ 15
الحَبسِ قَايِلًا * امضِ وقل لِابدِمَالَاخ الحَبَشِي* هكذا قَالَ الرَّبُّ الهُ اسرايِل* ها انا اجلب اقوالي 16
الي هذِهِ الارضِ للشرورِ ولَا لِلخيرات * وَاخَلِّصُكَ في ذلك اليَومِ وَلَا أُسلِمُكَ في أَيدِي النَّاس 17
الَّذِين تَخَاف مِن اجلِهِم * لِاني تَخلِيصًا اخلِّصُكَ* وَلَا تَسقط بِالسَّيفِ* ويكون نفسُكَ للوجود* 18
لِانَّكَ تَوَكَّلتَ عَلَيَّ قَالَ الرَّبُّ* * الفَصلُ السَّابِعُ وَالاربعون *
* القَولُ الصَّايِرُ مِن قِبَلِ الرَّبِّ الي ارمِيَا اخِيرًا* بَعدَ ان سَرَّحَهُ نابوزردان رَيِيس الطَّبَّاخِين 1
مِن الرَّامَةِ* عِندَمَا اخذَهُ بِالكُبُولِ فِي يَدَيهِ فِي وَسطِ جَلوَةِ يَهُودَا المُسَاقِين الي بَابِلَ*
* وَاخَذَهُ رَيِيس الطَّبَّاخِين وَقَالَ لَهُ * الرَّبُّ الالهُ تَكَلَّمَ بِهذِهِ الشُّرُورِ عَلَي هذَا المَوضِعِ * وَصَنَعَ 2 3
الرَّبُّ* لِانَّكُم اخطَاتُم اليهِ وَلَم تَسمَعُوا صَوتَهُ * هَا حَلَلتُكَ مِن هذِهِ الكُبُولِ الَّتِي فِي يَدَيكَ* 4
إِن كَانَ حَسَنٌ امَامَكَ ان تَاتِيَ مَعِي الي بَابِلَ اِيتِ * أَضَعُ عَينِي عَلَيكَ*

* *Populum verò omnem qui remanſerat in* 9 *urbe, unà cum iis qui ad regem Babyloniæ ſe receperant, univerſum populi reſiduum captivos abduxit Nebuzardan præfectus militiæ, deportavítque in Babyloniam. De populo autem pauperrimos,* 10 *quibus non erat quicquam, reliquit Nebuzardan in terra Judæ; dedítque eis vineas & agros, et præcepit eis ut illa colerent. Jeremiam autem ſecurum reddi-* 11 *dit rex Babyloniæ, & dixit Nebuzardan præfecto militiæ, dixit* inquam *ei; Tolle tibi Jeremiam, et curam illius ge-* 12 *re, neque patiaris quempiam ut dicat adverſùs eum quicquam mali: ſed quicquid tibi dixerit, illud facies. Miſit itaque* 13 *Nebuzardan, & Nebuſazban præfectus ſervorum, & Nergal-ſharazar et Rabmag qui præfectus coquorum fuit, omnéſque duces regis Babyloniæ:] Deinde mittentes* 14 *tulerunt Jeremiam ex atrio carceris, & tradiderunt eum Godoliæ filio Achicami filii Saphanis; eductúmque habitare fecerunt in medio populi. Fuerat autem* 15 *ſermo Domini ad Jeremiam in atrio carceris, dicens; Abi dictum Abdemelecho* 16 *Æthiopi; Sic dixit Dominus Deus Iſraelis: Ecce ego adducturus ſum ſermones meos huic terræ in mala, non autem in bona. Te verò ſalvabo in illo die, &* 17 *non tradam te in manus hominum quos times: Omnino ſalvabo te, & non occumbes* 18 *gladio, ſed erit anima tua ſuperſtes; quia mihi confiſus es, dixit Dominus.*

CAP. XLVII.

Sermo qui factus eſt à Domino 1 ad Jeremiam poſtremò, poſtquā dimiſiſſet eum Nebuzardan princeps coquorum, ex Rama; quandó *vinctas* manicis manus abduxit eum inter captivos Judæ qui ducebantur in Babelem.

Cùm ergò cepiſſet eum princeps coquorū, 2 *dixit illi; Dominus Deus locutus eſt hæc mala contra locum iſtum, Et fecit Do-* 3 *minus; quia peccâſtis in eum, & non auſcultâſtis voci ejus. Ecce ſolvo te his* 4 *manicis qui ſunt in manibus tuis: Si rectum tibi videtur venire mecum Babelem, veni; tui curam agam:*

ירמיה: מח

torrentem in erunt &, aquilone ab ascendentes aquæ Ecce : Dominus dixit Sic
2 כֹּה׀ אָמַר יְהוָה הִנֵּה־מַיִם עֹלִים מִצָּפוֹן וְהָיוּ לְנַחַל
: ea in habitantes &, urbem ; ejus plenitudinem &, terram inundabunt &, inundantem
שׁוֹטֵף וְיִשְׁטְפוּ אֶרֶץ וּמְלוֹאָהּ עִיר וְיֹשְׁבֵי בָהּ
ungularum [illegible] voce A .terræ habitator omnis ululabit &, homo clamabunt &
3 וְזָעֲקוּ הָאָדָם וְהֵילִל כֹּל יוֹשֵׁב הָאָרֶץ׃ מִקּוֹל שַׁעֲטַת פַּרְסוֹת
ad patres respexerunt non : ejus rotarum *tumultu*, ejus *currus strepitu* à , ejus fortium
אַבִּירָיו מֵרַעַשׁ לְרִכְבּוֹ הֲמוֹן גַּלְגִּלָּיו לֹא־הִפְנוּ אָבוֹת אֶל־
, Pelistim omnes vastandum ad venientem diem *Super* .manuum *remissione* à filios
4 בָּנִים מֵרִפְיוֹן יָדָיִם׃ עַל־הַיּוֹם הַבָּא לִשְׁדוֹד אֶת־כָּל־פְּלִשְׁתִּים
vastans nam : auxiliatorem superstitem omnem Sidon & , Sor succidendum ad
לְהַכְרִית לְצֹר וּלְצִידוֹן כֹּל שָׂרִיד עֹזֵר כִּי־שֹׁדֵד
ad calvitium Venit .Caphtor insulæ residuum , Pelistim Dominus
5 יְהוָה אֶת־פְּלִשְׁתִּים שְׁאֵרִית אִי כַפְתּוֹר׃ בָּאָה קָרְחָה אֶל־
? te incides quo usque : earum vallis residuum Aschelon est succisa , Hazzah
עַזָּה נִדְמְתָה אַשְׁקְלוֹן שְׁאֵרִית עִמְקָם עַד־מָתַי תִּתְגּוֹדָדִי׃
; tuam vaginam *ad* te collige ? quiesces non quo usque Domini *gladie Heu*
6 הוֹי חֶרֶב לַיהוָה עַד־אָנָה לֹא תִשְׁקֹטִי הֵאָסְפִי אֶל־תַּעְרֵךְ
, Aschelon ad : ei *præcepit* Dominus & , *quiesces* Quomodo .sile & , quiesce
7 הֵרָגְעִי וָדֹמִּי׃ אֵיךְ תִּשְׁקֹטִי וַיהוָה צִוָּה־לָהּ אֶל־אַשְׁקְלוֹן
.eum *constituit* ibi maris *portum* ad &
וְאֶל־חוֹף הַיָּם שָׁם יְעָדָהּ׃

CAP. XLVIII. מח

, Nebo *ad* Væ : Israel Deus exercituum Dominus dixit sic Moab Ad
1 לְמוֹאָב כֹּה־אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל הוֹי אֶל־נְבוֹ
est affecta pudore : Chiriathaim est capta , est affecta pudore , est vastata quoniam
כִּי שֻׁדָּדָה הֹבִישָׁה נִלְכְּדָה קִרְיָתָיִם הֹבִישָׁה
cogitaverunt , Chesbon *in* , Moab laus ultra Non *.est consternata &* , *Missgab*
2 הַמִּשְׂגָּב וָחָתָּה׃ אֵין עוֹד תְּהִלַּת מוֹאָב בְּחֶשְׁבּוֹן חָשְׁבוּ
, *silebis* Madmen etiam : gente de eam disperdamus & , venite , malum *eam super*
עָלֶיהָ רָעָה לְכוּ וְנַכְרִיתֶנָּה מִגּוֹי גַּם־מַדְמֵן תִּדֹּמִּי
contritio & , vastitas : Choronaim de clamoris Vox .gladius ibit te post
3 אַחֲרַיִךְ תֵּלֶךְ חָרֶב׃ קוֹל צְעָקָה מֵחֹרוֹנָיִם שֹׁד וָשֶׁבֶר
Quia .ejus parvulorum clamorem facite audire : Moab est Contrita .magna
4 5 גָּדוֹל׃ נִשְׁבְּרָה מוֹאָב הִשְׁמִיעוּ זְּעָקָה צְעִירֶיהָ׃ כִּי
hostes Choronaim descensu in quoniam : *fletus* ascendet fletu in Luchith *ascensu*
מַעֲלֵה הַלֻּחוֹת בִּבְכִי יַעֲלֶה־בֶּכִי כִּי בְּמוֹרַד חוֹרֹנַיִם צָרֵי
eritis & : vestram animam eruite , Fugite .audierunt contritionis clamorem
6 צַעֲקַת־שֶׁבֶר שָׁמֵעוּ׃ נֻסוּ מַלְּטוּ נַפְשְׁכֶם וְתִהְיֶינָה
, tuis thesauris *in* &, tuis operib⁹ in *tua fiducia* quod eo *Quia* .deserto in *juniper⁹* veluti
7 כַּעֲרוֹעֵר בַּמִּדְבָּר׃ כִּי יַעַן בִּטְחֵךְ בְּמַעֲשַׂיִךְ וּבְאוֹצְרוֹתַיִךְ
, ejus sacerdotes, transmigrationem in Chemos egredietur & : capieris tu etiam
גַּם־אַתְּ תִּלָּכֵדִי וְיָצָא כְמִישׁ בַּגּוֹלָה כֹּהֲנָיו
; evadet non urbs &, urbem omnem ad vastator veniet Et .simul ejus principes &
8 וְשָׂרָיו יַחַד׃ וְיָבֹא שֹׁדֵד אֶל־כָּל־עִיר וְעִיר לֹא תִמָּלֵט
alas Date .Dominus dixit *quod* : planities *disperdetur* & , vallis peribit &
9 וְאָבַד הָעֵמֶק וְנִשְׁמַד הַמִּישֹׁר אֲשֶׁר אָמַר יְהוָה׃ תְּנוּ־צִיץ
non à erunt desolationem in ejus civitates & : volabit volando quia , Moab
לְמוֹאָב כִּי נָצֹא תֵּצֵא וְעָרֶיהָ לְשַׁמָּה תִהְיֶינָה מֵאֵין
prohibens execratus & : *fraude* Domini opus *faciens Execratus* .eis in *habitatore*
10 יוֹשֵׁב בָּהֵן׃ אָרוּר עֹשֶׂה מְלֶאכֶת יְהוָה רְמִיָּה וְאָרוּר מֹנֵעַ
in ipse *quiescens &* , *suis pueritiis à* Moab *fuit Pacatus* .sanguine à suum gladium
11 חַרְבּוֹ מִדָּם׃ שַׁאֲנַן מוֹאָב מִנְּעוּרָיו וְשֹׁקֵט הוּא אֶל־
: ivit non transmigrationem in &, vas *ad* vase de fuit evacuat⁹ non &, suis fæcib⁹
שְׁמָרָיו וְלֹא־הוּרַק מִכְּלִי אֶל־כֶּלִי וּבַגּוֹלָה לֹא הָלָךְ
.est mutatus non ejus odor & , eo in ejus gustus stetit idcirco
עַל־כֵּן עָמַד טַעְמוֹ בּוֹ וְרֵיחוֹ לֹא נָמָר׃

Versio VULG. LAT.

2 Hæc dicit Dominus; Ecce aquæ ascendunt ab Aquilone, & erunt quasi torrens inundans, & operient terram & plenitudinem ejus, urbem & habitatores ejus : clamabunt homines, & ululabunt 3 omnes habitatores terræ, A strepitu pompæ armorum, & bellatorum ejus, à commotione quadrigarum ejus, & multitudine rotarum illius. Non respexerunt patres filios manibus dissolutis 4 Pro adventu diei, in quo vastabuntur omnes Philisthiim, & dissipabitur Tyrus, & Sidon cum omnib⁹ reliquis auxiliis suis : depopulat⁹ est enim Domin⁹ Palæsthinos, reliquias insulæ Cappa- 5 dociæ. Venit calvitium super Gazam : conticuit Ascalon, & reliquiæ vallis earum : usquequò con- 6 ciderîs? O mucro Domini usquequò non quiesces? Ingredere in vaginã tuam, refrigerare, & sile. 7 Quomodò quiescet, cùm Domin⁹ præceperit ei adversùs Ascalonē, & adversùs maritimas ejus regiones, ibique condixerit illi?

CAP. XLVIII.

1 AD Moab hæc dicit Dominus exercituum, Deus Israel; Væ super Nabo, quoniam vastata est, & confusa : capta est Cariathaim : confusa est fortis, & tremuit. 2 Non est ultrà exultatio in Moab contra Hesebon : cogitaverunt malum. Venite, & disperdamus eam de gente, ergò silens conticesces, sequetúrque te gladius. 3 Vox clamoris de Oronaim : va- 4 stitas, & contritio magna. Contrita est Moab : annuntiate cla- 5 morem parvulis ejus. Per ascensum enim Luith plorans ascendet in fletu : quoniam in descensu Oronaim hostes ululatum con- 6 tritionis audierunt : Fugite, salvate animas vestras : & eritis 7 quasi myricæ in deserto. Pro eo enim quòd habuisti fiduciam in munitionib⁹ tuis, & in thesauris tuis, tu quoque capieris : & ibit Chamos in transmigrationem, sacerdotes ejus, & principes ejus 8 simul. Et veniet prædo ad omnem urbem, & urbs nulla salvabitur : & peribunt valles, & dissipabuntur campestria : quo- 9 niam dixit Domin⁹ : Date flo- 10 rem Moab, quia florens egredietur : & civitates ejus desertæ erunt, & inhabitabiles. Maledictus, qui facit opus Domini fraudulenter : & maledictus, qui prohibet gladium suum 11 à sanguine. Fertilis fuit Moab ab adolescentia sua, & requievit in fæcibus suis : nec transfusus est de vase in vas, & in transmigrationem non abiit : idcircò permansit gustus ejus in eo, et odor ejus non est immutatus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

5 Εἰ δὲ μὴ, (ι) ἀπότρεχε, ἀνάστρεψον πρὸς τὸν Γοδολίαν υἱὸν Ἀχεικὰμ, (κ) υἱοῦ Σαφὰν, ὃν κατέστησε βασιλεὺς Βαβυλῶνος ἐν γῇ Ἰούδα, καὶ οἴκησον μετ᾽ αὐτοῦ ἐν μέσῳ τοῦ λαοῦ ἐν γῇ Ἰούδα, εἰς ἅπαντα τὰ ἀγαθὰ ἐν ὀφθαλμοῖς σου τοῦ (λ) πορευθῆναι ἐκεῖ, πορεύου. καὶ ἔδωκεν αὐτῷ ὁ ἀρχιμάγειρος δῶρα, καὶ ἀπέστειλεν αὐτόν. 6 Καὶ ἦλθε πρὸς Γοδολίαν εἰς Μασσηφὰ, καὶ ἐκάθισεν ἐν μέσῳ τοῦ λαοῦ (μ) αὐτοῦ, τοῦ καταλειφθέντος ἐν τῇ γῇ. 7 Καὶ ἤκουσαν πάντες οἱ ἡγεμόνες τῆς δυνάμεως τῆς ἐν ἀγρῷ, αὐτοὶ (ν) καὶ οἱ ἄνδρες αὐτῶν, ὅτι κατέστησε βασιλεὺς Βαβυλῶνος τὸν Γοδολίαν ἐν τῇ γῇ, καὶ (ʹ) παρακατέθεντο αὐτῷ ἄνδρας καὶ γυναῖκας αὐτῶν, οὓς οὐ κατῴκισεν 8 εἰς Βαβυλῶνα. Καὶ ἦλθε πρὸς Γοδολίαν εἰς Μασσηφὰ Ἰσμαὴλ υἱὸς Ναθανίου, καὶ (ξ) Ἰωάναν υἱὸς Κάρηε, καὶ Σαραίας υἱὸς Θαναεμὲθ, καὶ υἱοὶ (ο) Ἰωφὲ τοῦ Νετωφαθὶ, καὶ Ἐζονίας υἱὸς τοῦ Μωχαθὶ, αὐτοὶ, καὶ οἱ ἄνδρες αὐ- 9 τῶν. Καὶ ὤμοσεν αὐτοῖς Γοδολίας, καὶ τοῖς ἀνδράσιν αὐτῶν, λέγων, Μὴ φοβηθῆτε ἀπὸ προσώπου τῶν παίδων τῶν Χαλδαίων, κατοικήσατε ἐν τῇ γῇ, καὶ (") ἐργάσασθε τῷ βασιλεῖ Βαβυλῶνος, 10 καὶ βέλτιον ἔσται ὑμῖν. Καὶ ἰδοὺ ἐγὼ κάθημαι ἐναντίον ὑμῶν εἰς Μασσηφὰ, στῆναι κατὰ πρόσωπον τῶν Χαλδαίων, οἳ (π) ἂν ἔλθωσιν ἐφ᾽ ὑμᾶς. καὶ ὑμεῖς (ρ) συναγάγετε οἶνον καὶ ὀπώραν καὶ (σ) ἔλαιον, καὶ βάλετε εἰς τὰ ἀγγεῖα ὑμῶν, καὶ (·) οἰκήσατε ἐν ταῖς πόλεσιν αἷς 11 κατεκρατήσατε. Καὶ πάντες οἱ Ἰουδαῖοι οἱ (τ) ἐν Μωὰβ, καὶ ἐν υἱοῖς Ἀμμὼν, καὶ οἱ ἐν τῇ Ἰδουμαίᾳ, καὶ οἱ ἐν πάσῃ τῇ γῇ, ἤκουσαν ὅτι ἔδωκε βασιλεὺς Βαβυλῶνος (υ) κατάλειμμα τῷ Ἰούδα, καὶ ὅτι κατέστησεν ἐπ᾽ αὐ- 12 τοὺς τὸν Γοδολίαν υἱὸν Ἀχεικάμ. Καὶ ἦλθον πρὸς Γοδολίαν εἰς γῆν Ἰούδα εἰς Μασσηφὰ, καὶ συνήγαγον οἶνον καὶ ὀπώραν πολλὴν σφόδρα, καὶ ἔλαιον.

Sin minùs; recurre. (d) redi ad Godoliam filium Achicam filii Saphan, quem constituit rex Babylonis in terra Juda : & habita cum eo in medio populi in terra Juda : ad omnia quæ bona in oculis tuis ad eundum ibi, (e) vade. Et dedit ei magister coquorum (f) dona, & dimisit eum. 5 *Et venit ad Godoliam in Massepha : & sedit in medio populi sui : qui remanserat in terra.* 6 *Et audierunt omnes duces virtutis, quæ in agro, ipsi, & viri eorum, quia constituit rex Babylonis Godoliam in terra, & (g) commendârunt ei viros, & uxores (h) eorum, quos non transtulerat in Babylonem.* 7 *Et venit ad Godoliam in Massepha Ismael filius Nathaniæ, & Joanam filius Caree, & Saræas filius Thanaemeth, & filii Jophe Netophathitæ, & Ezonias filius Mochathi, ipsi, & viri eorum.* 8 *Et juravit eis Godolias, et viris eorum, dicens; Ne timeatis à facie puerorum Chaldæorum. Habitate in terra, & operamini regi Babylonis : & melius erit vobis.* 9 *Et ecce ego sedeo coram vobis in Massepha ad standum ante faciem Chaldæorum, quicunque venerint super vos. Et vos colligite vinum, & fructus, & oleum, & mittite in vasa vestra : & habitate in urbibus, quas tenuistis.* 10 *Et omnes Judæi qui in Moab, & in filiis Ammon, & qui in Idumæa, & qui in omni terra, audierunt, quia dedit rex Babylonis reliquias Juda, & quia constituit super eos Godoliam filium Achicam.* 11 *(ι) Et venerunt ad Godoliam in terram Juda in Massepha : & collegerunt vinum, & fructus multos valdè, & oleum.* 12

MS.A. (ι) ἀπόστρεψον καὶ ἀπότρεχε πρὸς Γοδολίαν (κ)* υἱὸν (λ) πορευθῆναι, καὶ πορεύου. (μ) τοῦ καταλειφθέντος (ν) καὶ ἡ δύναμις αὐτῶν, καὶ οἱ (ʹ) παρεκατέθεντο (ξ) Ἰωάνναν (ο) Ὠφὲτ τοῦ Νετωφατεὶ, καὶ Ἰεζονίας υἱὸς τοῦ Μωχατεὶ, (") ἐργάζεσθε (π) ἐὰν (ρ) συναγάγετε (σ) συναγάγατε ἔλαιον, (·) οἰκήσατε (τ) ἐν γῇ Μωὰβ, καὶ οἱ ἐν (υ) τὰ καταλείμματα

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

2 כדנן אמר יי הא עממיא אתן מצפונא ויהון כנחל מגבר ויבזון ארעא ומלאה קרויא
3 ודיתבין בהון ויצוחון בני אנשא ויללון כל יתבי ארעא: מקל מפסועית פרסת גברוהי
מזיע לרתיכוהי אתרגושת גלגלוהי לא מתפנן אבהן לרחמא על בנין מאתר שלורת
4 ידין: על יומא דאתי למבזית כל ארעא פלשתאי לשצאה לצור ולצידון כל שאר סעיד
5 ארי אביז יי ית ארע פלשתאי שאר נגות קפוטקאי: מטת פורענותא ליתבי עזה
6 אתברו אשקלנאי שאר תוקפהון עד אימתי תתהממון: וי חרבא דשליחא מן קדם
7 יי עד אימתי לא תנוחין אתכנשי לנדניך לבית זמנא תנוחין: איכדין תנוחין ויי
פקיד עלה על אשקלון ועל ספר ימא לתמן מזמנה:

מח

1 למואב כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל וי על נבו ארי אתבזיזת בהיתת אתכבישת
2 קריתים בהיתו מבית רוחצנהון ואתברו: לית עוד תושבחא למואב בחשבון חשיבו
עלה בישא אתו ונשיצנה מלמהוי עמא אף מדמן תתברין בתרך יהכון קטולי חרבא:
3 4 קל צוחתא מחורונים בזא ותברא רבא: אתברת מלכות מואב בסרו צוחתא
5 שלטוניהון: ארי מסוקית לוחית כד בכן יסקון בכן ארי במחתית חורונים צוחת
6 תבירי קרב יבסרון: ערקו שיזיבו נפשכון והוו כמגדל ערער דשרן בשכונין במדברא:
7 ארי חלף דאתרחיצת באוצרך ובבירת גנזך אף את תתאחדין ויפוק כמוש בגלותא
8 פלחוהי ורברבוהי כחדא: וייתון בוזזין על כל קרויהון וקרויא מנהון לא תשתזיב
9 וייבדון דיתבין בעומקא וישתיצון דשרן במישרא דאמר יי: אעדו כתרא מן מואב
10 ארי מגלא תגלי וקרוהא לצדו יהוין מבלי יתיב בהן: ליט די עביד עלה עובדא מן
11 קדם יי בנכלא וליט דמנע חרביה מקטול: שלן מואבאי מעוריהון ושקטין אנון על
נכסיהון ולא אתגליאו מאתר לאתר ובגלותא לא הליכו על כן אוריכו שליותא נכסיהון
כחמרא דנטיר על שמריה וריחיה לא פג:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Hæc dicit Dñs, Ecce populi venient ab Aquilone, & erunt quasi torrens 2
inundans, & diripient terram & plenitudinem ejus; urbes, & habitantes in
eis. Et clamabunt filii hominum, & ululabunt omnes habitatores terræ.
A voce gressus ungularum fortium ejus, à commotione curruum ejus, tu- 3
multu rotarum ejus, non respiciunt patres ut misereantur filiorum, propter
remissionem manuum. Propter diem qui ventur⁹ est, in quo diripietur 4
omnis terra Philistæorum, & disperdentur Tyrus & Sidon, & omnes re-
liquiæ auxilii; quia diripuit Dñs terram Philistæorum, reliquias insulæ *Cap-*
padocum. Pervenit vindicta habitatorib⁹ Gazæ : contriti sunt Ascalonitæ, 5
& reliquiæ roboris eorum : quousq; tandem vos ipsos incidetis? Væ mu- 6
cro, qui missus es à facie Dñi, usque quo non quiesces? Recipe te in vaginam
tuam, in domo temporis quiesce. Quomodo quiescet? quia Dñs præcepit 7
de eo contra Ascalonem, & contra portum maris, ibíque præparavit eum.

CAP. XLVIII.

AD Moab hæc dicit Dñs exercituum Deus Israel; Væ super Nebo, quo- 1
niam direpta est, & confusa est : subjugata est Cariathaim : confusi sunt
à domo fiduciæ suæ, & confracti sunt. Non est ultrà laus Moab. In Hesbon 2
cogitaverunt contra eam malum : Venite & consumem⁹ eam, ne sit po-
pulus. Etiam Madmen contererîs; post te ibunt occisores gladio. Vox 3
clamoris de Horonaim, direptio & confractio magna. Contritum est re- 4
gnum Moab; annuntiarunt clamorem dominatores ejus. Quia ascensum 5
Luith dum flent ascendunt flentes : nam per descensum Horonaim cla-
morem confractorum à prælio annuntiabunt. Fugite, liberate animas ve- 6
stras, & estote sicut turris Aroer, & sicut qui morantur in tentoriis in de-
serto. Quia pro eo quòd confisa es in thesauris tuis, & in domo opum 7
tuarum, tu quoque capieris. Et egredietur Chamos in transmigrationem;
cultores ejus, & principes ejus simul. Et venient direptores contra omnes 8
urbes eorum, neque earum ulla liberabitur; & peribunt qui habitant in
valle, & disperdentur qui habitant in campestribus, quia dixit Dominus.
Auferte coronam à Moab; quia transmigrando transmigrabit, & urbes 9
ejus in desolationem erunt, ita ut non sit qui habitet in eis. Maledict⁹ qui 10
facit in ea opus à facie Dñi in dolo : & maledict⁹ qui prohibet gladiũ suum
ab occisione. Abundantes fuerant Moabitæ ab adolescentia sua, & quieti 11
in substantiis suis : nec fuerant translati de loco in locũ, nec in transmigra-
tionẽ abiverant : propterea prorogarunt prosperitatem facultates eorum;
sicut vinum quod conservatum est super fæces suas, & odor ejus non est immutatus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܥܠܝ̈ܡܐ ܡܢ ܓܪܒܝܐ. ܘܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܢܚܠܐ ܕܪܗܛ: 2
ܘܢܫܛܦܘܢ ܐܪܥܐ. ܘܡܠܝܗ̇. ܡܕܝܢܬܐ ܘܥܡܘܪ̈ܝܗ̇. ܘܢܩܥܘܢ ܒܢܝ̈ܢܫܐ. ܘܢܝܠܠܘܢ. ܟܠܗܘܢ
ܥܡܘܪ̈ܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ. * ܡܢ ܩܠ ܕܪܦܣܬܐ ܕܦܪ̈ܣܬܐ ܕܓܢܒܪ̈ܘܗܝ. ܘܡܢ ܙܘܥܐ ܕܡܪ̈ܟܒܬܗ 3
ܘܡܢ ܩܠ ܕܓܝܓܠܘܗܝ. ܠܐ ܐܬܦܢܝܘ ܐܒܗ̈ܬܐ ܥܠ ܒܢ̈ܝܐ. ܡܛܠ ܕܐܬܪܦܝ ܐܝ̈ܕܝܗܘܢ. * ܗܐ 4
ܝܘܡܐ ܐܬܐ. ܠܡܒܙ ܠܟܠܗܘܢ ܦܠܫ̈ܬܝܐ. ܘܢܬܦܣܩܘܢ ܨܘܪ ܘܨܝܕܢ. ܘܟܠ ܕܐܫܬܚܪܘ
ܢܬܒܕܪܘܢ. ܡܛܠ ܕܒܙܙ ܡܪܝܐ ܠܦܠܫ̈ܬܝܐ. ܠܫܪܟܐ ܕܓܙܪ̈ܬܐ ܕܩܦܕܩܝܐ. * ܡܚܘܬܐ 5
ܡܛܬ ܠܥܙܐ. ܐܬܬܒܪܬ ܐܫܩܠܘܢ. ܘܟܠ ܕܐܫܬܚܪܘ ܡܢ ܥܡܘܪ̈ܝܗܘܢ. * ܐܘ ܣܝܦܗ ܕܡܪܝܐ. 6
ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܠܐ ܬܫܠܐ. ܘܠܐ ܬܬܢܝܚ ܡܢ ܩܛܠܐ. ܐܬܟܢܫ ܠܢܕܢܟ. ܐܬܟܢܫ
ܘܫܠܝ. * ܐܝܟܢܐ ܬܫܠܐ. ܕܡܪܝܐ ܦܩܕܗ ܥܠ ܐܫܩܠܘܢ. ܘܥܠ ܣܦܘ̈ܬ ܝܡܐ. ܬܡܢ ܐܫܠܛܗ. 7

Sic ait Dominus, Ecce juvenes adducam ex Aquilone, eruntq; tanquam torrens rapidus, abripientque terrã & quicquid eſt in ea, urbem & cives ejus; ita ut exclament homines, & ejulent omnes habitatores terræ. 2 Ob ſonitũ inceſſûs ungularum *equorum* gigantum ejus, & ob commotionem curruũ ejus, ſtrepitúmque rotarũ ejus, non reſpicient patres ad filios; quia remittentur manus eorum. 3 Ecce dies veniet quo diripientur omnes Paleſtini, excindetur Tyrus & Sidon, & quotquot reliqui manſerunt, diſpergentur: vaſtaturus eſt enim Dñs Paleſtinos, reliquas inſulas Cappadocum. 4 Perveniet plaga ad Azam, conteretur Aſcalon, & quotquot ſupererint de civibus earum. 5 O gladie Domini, quouſque tandem non quieſces neque deſiſtes à cæde? recipe te in vaginam tuam, recipe te, & quieſce. 6 Quomodo quieſceret, quum Dominus præfecerit eum Aſcaloni, & ſuper litora maris ibi dederit ei poteſtatem? 7

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܚ * ܥܠ ܢܒܘ *

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ. ܘܝ ܠܢܒܘ ܕܐܬܒܙܙܬ. ܒܗܬܬ ܘܐܬܚܪܬ 1
ܩܪܝܬܝܡ. ܒܗܬ ܚܣܝܢܐ ܘܐܬܒܙܙ. * ܘܠܝܬ ܬܘܒ ܫܘܒܗܪܐ ܠܡܘܐܒ ܒܚܫܒܘܢ. 2
ܐܬܚܫܒܘ ܥܠܝܗ̇ ܒܝܫܬܐ. ܘܐܡܪܘ. ܬܘ ܢܘܒܕܝܘܗܝ ܡܢ ܥܡܐ. ܐܦ ܡܕܡ ܬܫܬܩܝܢ.
ܒܬܪܟܝ ܬܐܙܠ ܚܪܒܐ. * ܩܠܐ ܕܓܥܬܐ ܡܢ ܚܘܪܢܝܡ. * ܒܙܬܐ ܘܬܒܪܐ ܪܒܐ ܐܬܬܒܪܬ ܡܘܐܒ 3
ܐܫܡܥܘ ܓܥܬܐ ܡܣܟ̈ܢܝܗ̇. * ܒܡܣܩܬܐ ܕܠܘܚܝܬ. ܒܒܟܝܐ ܢܣܩܘܢ. ܘܒܡܚܕܪܬܐ 4 5
ܕܚܘܪܢܝܡ. ܐܘܠܨܢܐ ܘܩܥܬܐ ܕܬܒܪܐ ܢܫܡܥܘܢ. * ܫܡܥܘ ܘܥܪܘܩܘ. ܘܦܨܘ ܢܦܫܟܘܢ. ܘܗܘܘ 6
ܐܝܟ ܥܪܥܪܐ ܒܡܕܒܪܐ. * ܡܛܠ ܕܐܬܬܟܠܬܝ ܥܠ ܫܩܝ̈ܦܝܟܝ ܘܥܠ ܓܙ̈ܝܟܝ. ܐܦ ܐܢܬܝ 7
ܬܬܐܚܕܝܢ. ܘܢܦܘܩ ܟܡܘܫ ܒܫܒܝܬܐ. ܘܟܗܢܘܗܝ ܘܪܘܪܒܢܘܗܝ ܐܟܚܕܐ. * ܘܢܐܬܐ 8
ܒܙܘܙܐ ܥܠ ܟܠܗܝܢ ܩܘܪ̈ܝܟܝ. ܘܠܐ ܢܬܦܨܘܢ. ܘܢܐܒܕ ܚܠܩܐ ܘܢܚܪܒ ܦܩܥܬܐ. ܐܝܟܢܐ
ܕܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܗܒܘ ܟܠܝܠܐ ܠܡܘܐܒ. ܡܛܠ ܕܡܚܪܒܘ ܚܪܒܬ. ܘܟܠܗܝܢ ܩܘܪ̈ܝܗ̇ ܢܗܘܝܢ 9
ܠܚܘܪܒܐ ܡܢ ܕܠܐ ܥܡܘܪܐ. * ܠܝܛ ܗܘ ܡܢ ܕܥܒܕ ܥܒܕܗ ܕܡܪܝܐ ܒܢܟܠܐ. ܘܠܝܛ ܗܘ 10
ܡܢ ܕܟܠܐ ܣܝܦܗ ܡܢ ܕܡܐ. * ܫܠܝܢ ܡܘܐܒ̈ܝܐ. ܡܢ ܛܠܝܘܬܗܘܢ. ܘܫܠܝܢ ܥܠ 11
ܬܠܚ̈ܝܗܘܢ. ܘܠܐ ܐܬܪܩܘ ܡܢ ܡܐܢܐ ܠܡܐܢܐ. ܘܠܫܒܝܬܐ ܠܐ ܐܙܠܘ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܩܡ
ܛܥܡܗܘܢ ܒܗܘܢ. ܘܪܝܚܗܘܢ ܠܐ ܦܓ.

CAP. XLVIII.

Contra Nobu.

Sic ait Dominus potentiſſimus Deus Iſraelis, Væ Nobu, quoniam direpta eſt; rubore & ignominiâ ſuffuſa eſt Curiathim, erubuit & diſſipata eſt magnificentia ejus: 1 Nec eſt quod glorietur ampliùs Moab de Heſbone, meditati ſunt malum adverſùs eam, & dixerunt, Agite, populũ ejus extinguamus, etiamſi omnino reticeas, ſequetur te gladius. 2 Vox ejulatûs è Hornim: 3 Direptione & contritione magnâ contrita eſt Moab: ediderunt ejulatũ pauperes ejus: 4 Clivum Luhith flentes conſcendent, & in declivitate Hornim anguſtiam & clamorem profligationis edent. 5 Auſcultate, fugite, & voſmetipſos eripite, & ſimiles eſtote ſtipiti in deſerto. 6 Quia confiſa es in arcibus & theſauris tuis, tu quoque capieris; & Chamos in captivitatem abibit unà cum ſacerdotibus & principibus ejus: 7 Veniétq; direptor contra cunctas civitates tuas, & non evadent; imò peribit convallis, & planities vaſtabitur, quemadmodum edixit Dominus. 8 Date coronam Moabo, quia funditùs evertetur, & omnes civitates ejus ibunt in deſolationem ob defectum incolarum. 9 Maledictus qui fecerit opus Domini cum fraude, & maledictus qui cohibuerit gladium ſuum à ſanguine. 10 Tuti ſunt Moabitæ inde à pueritia ſua, & ſuper fæces ſuas tranquilli, neque exhauſerunt è vaſe in vas, & in captivitatem non abierunt: propterea durat in eis ſapor eorum, & odor eorum non eſt remiſſus. 11

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وان كان لا * فارجع وامض الي عودوليا ابن اسيكام ابن صافان الذي اقامه ملك بابل في 5
ارض يهودا * واسكن معه في وسط الشعب في ارض يهودا * لكل الخيرات التي في عينيك ان
تمضي فامض * ودفع له رييس الطباخين هدايا وسرحه * فاتي الي عودوليا الي مسيفا * وجلس 6
في وسط الشعب المتبقي في الارض * وسمع جميع قواد الجيش الذي في الحقل هم وجيشهم 7
ورجالهم * ان ملك بابل اقام عودوليا في الارض * فاعادوا له رجاله ونساه الذين لم يسبهم الي
بابل * واتي الي عودوليا الي مسيفا اسمعيل ابن ناثونيو ويونان ابن كاريا * وصاراه ابن ثاناماث * 8
وبنو يوفاث الذين من ناطوفاث * ويارونياس بن موخاثي هم ورجالهم * وحلف لهم عودوليا 9
ولرجالهم قايلا * لا تخافوا من وجه عبيد الكلدانيين * اسكنوا في الارض واعملوا لملك
بابل فيكون لكم الخير * وها انا اجلس امامكم في مسيفا * لاقوم في وجه الكلدانيين الذين 10
عساهم ان ياتوا عليكم * وانتم اجمعوا خمرا وفاكهه واجمعوا زيتا وضعوا في اوعيتكم *
ويسكنون في المدن اللاتي مسكتموها *

Sin minùs, revertere, & confer te ad Godoliam filium Achicami filii Saphanis, quem rex Babelis præfecit terræ Judæ, & habita cum eo in medio populi in terra Judæ: ad omnia bona ad quæ eundum tibi videtur, abi: Cúmque dediſſet illi munera princeps coquorum, & dimiſiſſet eum; 5 *Venit ad Godoliam in Maſepham, habitavitque in medio populi qui reliquus erat in terra.* 6 *Audientes autem cuncti copiarum duces qui erant in agro, ipſi & exercitus ac viri eorum, quòd rex Babelis præfeciſſet Godoliam in ea terra; reſtituerunt ei viros ejus & mulieres ejus, qui non fuerant abducti Babelem.* 7 *Et venerunt ad Godoliam in Maſepham Iſmael filius Nathaniæ, Jonan filius Careæ, Saraa filius Thanamath, & filii Jophath qui erant ex Netophath, & Jezonias filius Machathi, tam ipſi quàm viri ipſorum.* 8 *His juravit Godolia & viris eorum, dicens; Ne timeatis ſervos Chaldæorum: habitate in terra & operamini regi Babelis, & proſperè ſuccedet vobis.* 9 *En ego manebo apud vos in Maſepha, ut me opponam Chaldæis qui fortè venient contra vos: vos interim colligite vinum & fructus, & colligite oleum, & reponite in vaſis veſtris: ſic habitabitis in urbibus quas tenuiſtis.* 10

* الاصحاح الثلاثون *

Textus trigeſimus.

* وجميع اليهود الذين في ارض مواب * والذين في بني عمون * والذين في ادوم * والذين في 11
كل الارض * سمعوا ان ملك بابل دفع البقايا ليهودا * وانه اقام عليهم عودوليا ابن اسيكام *
* فاتوا الي عودوليا الي ارض يهودا في مسيفا * وجمعوا خمرا وفاكهه كثيره جدا وزيتا * 12

Omnes quoque Judæi qui erant in terra Moab; qui erant inter filios Ammon, qui erant in Edom, qui denique erant in univerſa terra, audientes quòd rex Babelis reliquias dediſſet Judæ, & præfeciſſet eis Godoliam filium Achicami; 11 *Venerunt ad Godoliam in terram Judæ in Maſepham, & collegerunt vinum & fructus plurimos oleúmque.* 12

יִרְמְיָה : מח

,tranſmigratores ei mittam & , Dominus dixit ,*venientes* dies ecce Propterea
12 לָכֵן הִנֵּה־יָמִים בָּאִים נְאֻם־יְהוָה וְשִׁלַּחְתִּי־לוֹ צֹעִים
.*conterent ſparſim* eorum uteres & , *exinanient* ejus vaſa &:eum facient tranſmigrare &
וְצֵעֻהוּ וְכֵלָיו יָרִיקוּ וְנִבְלֵיהֶם יְנַפֵּצוּ׃
Iſrael domus ſunt affecti pudore ſicut : Chemos à Moab afficietur pudore Et
13 וּבֹשׁ מוֹאָב מִכְּמוֹשׁ כַּאֲשֶׁר־בֹּשׁוּ בֵּית יִשְׂרָאֵל
virtutis viri & *: nos* Fortes , *dicetis* Quomodo .eorum fiducia el---Beth à
14 מִבֵּית אֵל מִבְטֶחָם׃ אֵיךְ תֹּאמְרוּ גִּבּוֹרִים אֲנָחְנוּ וְאַנְשֵׁי־חַיִל
ejus *juvenum electio &* , *conſcendit ejus civitates* & ,Moab eſt Vaſtatus ? bellum ad
15 לַמִּלְחָמָה׃ שֻׁדַּד מוֹאָב וְעָרֶיהָ עָלָה וּמִבְחַר בַּחוּרָיו
.ejus nomen exercituum Dominus , rex ait : jugulationem ad deſcenderunt
יָרְדוּ לַטָּבַח נְאֻם־הַמֶּלֶךְ יְהוָה צְבָאוֹת שְׁמוֹ׃
.valde feſtinavit ejus malum & *: veniendum ad* Moab contritio Propinqua
16 קָרוֹב אֵיד־מוֹאָב לָבוֹא וְרָעָתוֹ מִהֲרָה מְאֹד׃
Quomodo ,dicite :ejus nomen *ſcientes* univerſi & ,ej⁹ *circuitus* omnes ei *Commoveamini*
17 נֻדוּ לוֹ כָּל־סְבִיבָיו וְכֹל יֹדְעֵי שְׁמוֹ אִמְרוּ אֵיכָה
ſede *&* , gloria de Deſcende *? decoris* baculus , *fortitudinis* virga eſt confracta
18 נִשְׁבַּר מַטֵּה־עֹז מַקֵּל תִּפְאָרָה׃ רְדִי מִכָּבוֹד ישְׁבִי
corrupit ; te *in* aſcendit Moab vaſtator quoniam : Dibon filia habitatrix , ſiti in
בַצָּמָא יֹשֶׁבֶת בַּת־דִּיבוֹן כִּי־שֹׁדֵד מוֹאָב עָלָה בָךְ שִׁחֵת
interroga : Haroher habitatrix proſpice & , ſta *viam Ad* .tuas munitiones
19 מִבְצָרָיִךְ׃ אֶל־דֶּרֶךְ עִמְדִי וְצַפִּי יוֹשֶׁבֶת עֲרוֹעֵר שַׁאֲלִי־
, Moab eſt affectus Pudore ? eſt factum quid , dic *: evaſam &* fugientem
20 נָס וְנִמְלָטָה אִמְרִי מַה־נִּהְיָתָה׃ הֹבִישׁ מוֹאָב
eſt vaſtatus quòd , Arnon in annuntiate:clamate & ,ululate ;eſt *confractus* quoniam
כִּי־חַתָּה הֵילִילִי וּזְעָקִי הַגִּידוּ בְאַרְנוֹן כִּי שֻׁדַּד
, Jehaſah *ad* & , Cholon *ad : planitiei* terram *ad* venit judicium Et .Moab
21 מוֹאָב׃ וּמִשְׁפָּט בָּא אֶל־אֶרֶץ הַמִּישֹׁר אֶל־חֹלוֹן וְאֶל־יַהְצָה
.Diblathaim domum *ſuper* & ,Nebo *ſuper* & ,Dibon ſuper Et .Mephahath *ſuper* &
22 וְעַל־מוֹפָעַת׃ וְעַל־דִּיבוֹן וְעַל־נְבוֹ וְעַל־בֵּית דִּבְלָתָיִם׃
,Cherioth *ſuper* Et .Mehon-Beth *ſuper* & ghamul-Beth *ſuper* & ,Chiriathaim ſuper Et
23 וְעַל קִרְיָתַיִם וְעַל־בֵּית גָּמוּל וְעַל־בֵּית מְעוֹן׃ וְעַל־קְרִיּוֹת
24 .propinquas & ,longinquas ,Moab terræ civitates omnes *ſuper* & : Boſrah *ſuper* &
וְעַל־בָּצְרָה וְעַל כָּל־עָרֵי אֶרֶץ מוֹאָב הָרְחֹקוֹת וְהַקְּרֹבוֹת׃
,eum Inebriate.Dominus dixit:eſt contritū ej⁹ brachiū &,Moab cornu eſt Abſciſſum
25 נִגְדְּעָה קֶרֶן מוֹאָב וּזְרֹעוֹ נִשְׁבָּרָה נְאֻם יְהוָה׃ הַשְׁכִּירֻהוּ
26 erit & ,ſuo vomitu in Moab *ſe volutabit* & : magnificavit Dominum *ſuper* quoniam
כִּי עַל־יְהוָה הִגְדִּיל וְסָפַק מוֹאָב בְּקִיאוֹ וְהָיָה
furibus in ſi ? Iſrael tibi fuit *deriſui non ſi* Et .ipſe etiam deriſum in
27 לִשְׂחֹק גַּם־הוּא׃ וְאִם לוֹא הַשְּׂחֹק הָיָה לְךָ יִשְׂרָאֵל אִם־בְּגַנָּבִים
,civitates Relinquite.*commovebis te eo in tuorum verborum ſufficientia à* quia ? eſt inventus
28 נִמְצָאָה כִּי־מִדֵּי דְבָרֶיךָ בּוֹ תִּתְנוֹדָד׃ עִזְבוּ עָרִים
oris tranſit:b⁹in nidificabit colūba veluti eſtote &:Moab habitatores,petra in habitate &
וְשִׁכְנוּ בַּסֶּלַע יֹשְׁבֵי מוֹאָב וִהְיוּ כְיוֹנָה תְּקַנֵּן בְּעֶבְרֵי פִי־
,ejus ſuperbiam &,ejus elationem:valde eſt ſuperb⁹,Moab ſuperbiā Audivim⁹ .foveæ
29 פָחַת׃ שָׁמַעְנוּ גְאוֹן־מוֹאָב גֵּאֶה מְאֹד גָּבְהוֹ וּגְאוֹנוֹ
,ej⁹ *iracundiā*,Dominus ait , novi Ego .ejus cordis exaltationē &,ej⁹ extollētiā &
30 וְגַאֲוָתוֹ וְרֻם לִבּוֹ׃ אֲנִי יָדַעְתִּי נְאֻם־יְהוָה עֶבְרָתוֹ
, ejulabo Moab ſuper Ideò .fecerunt ſic non,ejus *nugæ:firmitudo* non *&*
31 וְלֹא־כֵן בַּדָּיו לֹא־כֵן עָשׂוּ׃ עַל־כֵּן עַל־מוֹאָב אֲיֵלִיל
fletu A *.gemet* Cheres--Chir viros *ad* : clamabo *ipſam* univerſam Moab *ad* &
32 וּלְמוֹאָב כֻּלֹּה אֶזְעָק אֶל־אַנְשֵׁי קִיר־חֶרֶשׂ יֶהְגֶּה׃ מִבְּכִי
mare ad uſq; ;mare tranſierūt tuæ propagines ,Sibmah vitis *tibi* flebo Jahazer
יַעְזֵר אֶבְכֶּה־לָּךְ הַגֶּפֶן שִׂבְמָה נְטִישֹׁתַיִךְ עָבְרוּ יָם עַד יָם
.*cecidit vaſtans* tuam vindemiam ſuper & ,*tuam æſtatem* ſuper : pervenerunt Jahazer
יַעְזֵר נָגָעוּ עַל־קֵיצֵךְ וְעַל־בְּצִירֵךְ שֹׁדֵד נָפָל׃

Verſio VULG. LAT.

12 Propterea ecce dies veniunt,dicit Dominus ; & mittam ei ordinatores, & ſtratores laguncularum, & ſternent eum, & vaſa ejus exhaurient, & lagunculas eorum collident. 13 Et confundetur Moab à Chamos;ſicut confuſa eſt domus Iſrael à Bethel, in qua habebat fiduciam. 14 Quomodò dicitis ; Fortes ſumus, & viri robuſti ad præliandū? 15 Vaſtata eſt Moab, & civitates illius ſucciderunt: & electi juvenes ejus deſcenderunt in occiſionem : ait rex, Dominus exercituum nomen ejus. 16 Propè eſt interitus Moab ut veniat : & malum ejus velociter accurret nimis. 17 Conſolamini eum omnes, qui eſtis in circuitu ejus ; & univerſi, qui ſcitis nomen ejus, dicite ;Quomodò confracta eſt virga fortis, baculus glorioſus ? 18 Deſcende de gloria, & ſede in ſiti, habitatio filiæ Dibon : quoniam vaſtator Moab aſcendit ad te,diſſipavit munitiones tuas. 19 In via ſta, & proſpice habitatio Aroër: interroga fugientem : & ei qui evaſit, dic;Quid accidit? 20 Confuſus eſt Moab,quoniam victus eſt: ululate,& clamate,annuntiate in Arnon,quoniā vaſtata eſt Moab. 21 Et judiciū venit ad terram campeſtrem ; ſuper Helon, & ſuper 22 Jaſa, & ſuper Mephaath, Et ſuper Dibon, & ſuper Nabo, & ſuper domum Deblathaim, 23 Et ſuper Cariathaim,& ſuper Bethgamul, & ſuper Bethmaon, 24 Et ſuper Carioth,& ſuper Boſra,& ſuper omnes civitates terræ Moab, quæ longè, & quæ propè ſunt. 25 Abſciſſum eſt cornu Moab, & brachium ejus contritum eſt, ait Dominus. 26 Inebriate eum, quoniam contra Dominum erectus eſt : & allidet manum Moab in vomitu ſuo, & erit in deriſum etiam ipſe. 27 Fuit enim in deriſum tibi Iſrael, quaſi inter fures reperiſſes eum : propter verba ergò tua quæ adverſùm illum locutus es, captivus ducêris. 28 Relinquite civitates, & habitate in petra,habitatores Moab:et eſtote quaſi columba nidificans in ſummo ore foraminis. 29 Audivimus ſuperbiā Moab:ſuperbus eſt valdè, ſublimitatē ejus, & arrogan- 30 tiam, & ſuperbiam, & altitudinem cordis ejus. Ego ſcio, ait Dominus, jactantiam ejus: & 31 quòd non ſit juxta eam virtus ej⁹,nec juxta quod poterat conata ſit facere. Ideò ſuper Moab 32 ejulabo,& ad Moab univerſam clamabo, ad viros muri fictilis lamentantes. De planctu Jazer plorabo tibi,vinea Sabama:propagines tuæ tranſierunt mare, uſque ad mare Jazer pervenerunt : ſuper meſſem tuam, & vindemiam tuam, prædo irruit.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

13 Καὶ(′)Ἰωάναν υἱὸς Κάρηε, καὶ πάντες οἱ ἡγεμόνες τῆς δυνάμεως, οἱ ἐν τοῖς ἀγροῖς, (φ) ἦλθον πρὸς τὸν Γοδολίαν εἰς Μασσηφὰ, 14 Καὶ εἶπον αὐτῷ, Εἰ γνώσει γινώσκεις, ὅτι (χ) Βελισσὰ βασιλεὺς υἱὸς Ἀμμὼν ἀπέστειλε πρὸς σὲ τὸν Ἰσμαὴλ πατάξαι σου ψυχήν; καὶ οὐκ ἐπίστευσεν αὐτοῖς Γοδολίας. 15 Καὶ (ψ) εἶπε Ἰωάναν τῷ Γοδολίᾳ κρυφαίως (ω) ἐν Μασσηφᾷ, Πορεύσομαι δὴ καὶ πατάξω τὸν Ἰσμαὴλ, καὶ μηδεὶς γνώτω, (α) μὴ πατάξῃ σου ψυχὴν, καὶ (β) διασπαρῇ πᾶς Ἰούδα οἱ συνηγμένοι πρὸς σὲ, καὶ ἀπολοῦνται οἱ κατάλοιποι Ἰούδα. 16 Καὶ εἶπε Γοδολίας πρὸς (γ) Ἰωάναν, Μὴ ποιήσῃς τὸ πρᾶγμα (δ), ὅτι ψευδῆ σὺ λέγεις (ε) ὑπὲρ Ἰσμαήλ.

13 Et Joanan filius Caree, & omnes duces virtutis, qui in agris, venerunt ad Godoliam in Maſſpha, 14 Et dixerunt ei ; Si cognitione cognoſcis, quia (k) Beliſſa rex filius Ammon miſit ad te Iſmael ad percutiendum animam tuam? Et non credidit eis Godolias. 15 Et dixit Joanan Godoliæ occultè in Maſſpha ; Ibo nunc, & percutiam Iſmael, & nemo ſciat : ne percutiat animam tuam, & diſpergatur omnis Juda, qui convenerunt ad te : & peribunt reſidui Juda. 16 Et dixit Godolias ad Joanan; Ne facias (l) rem: quia falſa tu dicis ſuper Iſmael.

MS.A. (′) Ἰωάνναν (φ) ἦλθαν πρὸς Γοδολίαν εἰς Μάσσηφα, Καὶ εἶπαν (χ) βασιλεὺς υἱῶν Ἀμμὼν Βεελισὰ (ψ) Ἰωάνναν εἶπεν (ω) εἰς (α) μήποτε (β) διασπαρήσονται πάντες οἱ Ἰουδαῖοι οἱ (γ) Ἰωάνναν (δ) τοῦτο, (ε) κατὰ τοῦ Ἰσμαήλ.

Cap. 41. ΚΕΦ. μη'. CAP. XLVIII.

1 Vulg.Lat. ΚΑὶ ἐγένετο τῷ μηνὶ τῷ ἑβδόμῳ, ἦλθεν Ἰσμαὴλ υἱὸς Ναθανίου υἱοῦ (α) Ἐλεασὰ, ἀπὸ γένους τοῦ βασιλέως, καὶ δέκα ἄνδρες μετ' αὐτοῦ πρὸς Γοδολίαν εἰς Μασσηφὰ, καὶ ἔφαγον ἐκεῖ ἄρτον ἅμα. 2 Καὶ ἀνέστη Ἰσμαὴλ, καὶ οἱ δέκα ἄνδρες οἳ ἦσαν μετ' αὐτοῦ, καὶ ἐπάταξαν τὸν Γοδολίαν, ὃν κατέστησε (′) βασιλεὺς Βαβυλῶνος ἐπὶ τῆς γῆς, 3 Καὶ πάντας τοὺς Ἰουδαίους τοὺς ὄντας μετ' αὐτοῦ (β) ἐν Μασσηφὰ, καὶ πάντας τοὺς Χαλδαίους τοὺς εὑρεθέντας ἐκεῖ. 4 Καὶ ἐγένετο τῇ ἡμέρᾳ τῇ δευτέρᾳ πατάξαντος αὐτοῦ τὸν Γοδολίαν, 5 καὶ ἄνθρωπος οὐκ ἔγνω. Καὶ ἦλθοσαν ἄνδρες ἀπὸ Συχὲμ, καὶ ἀπὸ (γ) Σαλὴμ, καὶ ἀπὸ Σαμαρείας, ὀγδοήκοντα ἄνδρες, ἐξυρημένοι πώγωνας, καὶ (δ) διεῤῥηγμένοι τὰ ἱμάτια, καὶ κοπτόμενοι, καὶ μάννα, καὶ λίβανος ἐν (ε) χερσὶν αὐτῶν, τοῦ εἰσενεγκεῖν εἰς οἶκον κυρίου. 6 Καὶ ἐξῆλθεν εἰς ἀπάντησιν αὐτοῖς Ἰσμαήλ· (″) αὐτοὶ ἐπορεύοντο, καὶ ἔκλαιον· καὶ εἶπεν αὐτοῖς, (″) Εἰσέλθετε πρὸς 7 Γοδολίαν. Καὶ ἐγένετο, εἰσελθόντων αὐτῶν εἰς τὸ μέσον τῆς πόλεως, ἔσφαξεν αὐτοὺς εἰς τὸ φρέαρ.

1 ET factum eſt, menſe ſeptimo venit Iſmael filius Nathaniæ filii Eleaſa de genere (a) regis, & decem viri cum eo ad Godoliam in Maſſepha : & comederunt ibi panem ſimul. 2 Et ſurrexit Iſmael, & decem viri, qui erant cum eo; & percuſſerunt (b) Godoliam, quem conſtituerat rex Babylonis ſuper terram, 3 Et omnes Judæos qui erant cum eo in Maſſepha, & omnes Chaldæos qui reperti ſunt (c) ibi. 4 Et factum eſt die ſecundâ, cùm ipſe percuſſiſſet Godoliam ; & homo non cognovit. 5 Et venerunt viri de Sychem, & de Salem,et de Samaria,octuaginta viri, raſi barbas, & ſciſſis veſtibus, & plangentes : & (d) manna, et thus in manibus eorum ad inferendum in domum Domini. 6 Et egreſſus eſt in occurſum illis Iſmael : ipſi ibant, et flebant. Et dixit eis, Ingredimini ad Godoliam. 7 Et factum eſt, ingreſſis illis in medium civitatis ; (e) jugulavit eos in puteo.

MS.A.(α)Ἐλασά,(′)ὁ βασιλεὺς(ς)εἰς(γ)Σαλώμ,(δ)διεῤῥηχότες(ε)ταῖς χερσὶν αὐτῶν, τοῦ εἰσενέγκαι(″)καὶ αὐτοὶ(″)Εἰσέλθατε

תַּרְגּוּם יוֹנָתָן Targum JONATHAN.

12 בְּכֵן הָא יוֹמַיָא אָתַן אֲמַר יְיָ וְאֶשְׁלַח עֲלֵיהוֹן בָּזוֹזִין וִיבַזּוּנִנּוּן וְנִכְסֵיהוֹן יְרוֹקְנוּן וְטוּב
13 אַרְעֲהוֹן יְגַמְּרוּן׃ וְיִבְהֲתוּן מוֹאֲבָאֵי דְּפָלְחִין לִכְמוֹשׁ כְּמָא דִּבְהִיתוּ בֵּית יִשְׂרָאֵל מִבֵּית
14 15 אֵל רוֹחֲצָנְהוֹן׃ אֵיכְדֵין תֵּימְרוּן גִּבָּרִין אֲנַחְנָא וְגַבְרִין דְּחֵילָא לְמֶעְבַּד קְרָבָא׃ אִתְבְּזִיזוּ
מוֹאֲבָאֵי וְקִרְוֵיהוֹן חֲרוּבָא וּשְׁפַר עוּלֵמֵיהוֹן יִתְמַסְרוּן לְקִטְלָא אֲמַר מַלְכָּא יְיָ צְבָאוֹת
16 17 שְׁמֵיהּ׃ קָרִיב תְּבָרְהוֹן דְּמוֹאֲבָאֵי לְמֵיתֵי וּבִשְׁתְּהוֹן מוֹחְיָא לַחֲדָא׃ דְּווֹ עֲלוֹהִי כָּל
18 סַחְרָנוֹהִי וְכָל יָדְעֵי שְׁמֵיהּ אֲמַרוּ אֵיכְדֵין אִתְּבַר מֶלֶךְ מַבְאִישׁ שִׁלְטוֹן מְעִיק׃ חוּתִי
מִיקָרָא וְתוּבִי בְּצַחְיָא מַלְכוּת כְּנִשְׁתָּא דְּדִיבוֹן אֲרֵי בָזוֹזִין אֲתוֹ עַל מוֹאָב סְלִיקוּ עֲלַךְ
19 חַבִּילוּ כְּרַכַּיִךְ׃ עַל אוֹרְחָא קוּמוּ וּסְכוּ דְּיָתְבִין בַּעֲרוֹעֵר שְׁאִילוּ לִמְעַרְקַיָא וּלְמִשֵּׁיזְבַיָא
20 אֲמַרוּ מָה הֲוָה עַל תְּבָרָא דֵּיכִי׃ בְּהִיתוּ מוֹאֲבָאֵי אֲרֵי אִתְּבַרוּ אַיְלִילוּ וּצְוַחוּ חַוּוֹ
21 בְּאַרְנוֹן אֲרֵי אִתְבְּזִיזוּ מוֹאֲבָאֵי׃ וְעָבְדֵי פוּרְעָנוּתָא מְטוֹ לַאֲרַע מֵישְׁרָא לְחוֹלוֹן וּלְיַהַץ
22 23 וְעַל מֵיפָעַת׃ וְעַל דִּיבוֹן וְעַל נְבוֹ וְעַל בֵּית דִּבְלָתַיִם׃ וְעַל קִרְיָתַיִם וְעַל בֵּית גָּמוּל וְעַל
24 בֵּית מְעוֹן׃ וְעַל קְרִיוֹת וְעַל בָּצְרָה וְעַל כָּל קִרְוֵי אֲרַע מוֹאָב דִּרְחִיקִין וּדְקָרִיבִין׃
25 26 אִתְקַטְּפַת מַלְכוּת מוֹאָב וְשִׁלְטוֹנֵיהוֹן אִתְּבַרוּ אֲמַר יְיָ׃ אַיְתָא עֲלֵיהוֹן עָקָא וִיהוֹן
דָּמַן לְרַוְיָא אֲרֵי עַל עַמָּא דַּייָ אִתְרַבְרַבוּ וְיִדְרְשׁוּן מוֹאֲבָאֵי בְּאַתְרֵיהוֹן וִיהוֹן לְלַעֵיב
27 אַף אִנּוּן׃ וְעַל דַּחֲדֵיתוּן עַל תְּבִירֵיהּ דְּיִשְׂרָאֵל כַּד לָא חָטוּ לְכוֹן כְּאִלּוּ בְּגַנָּבִין
28 אִשְׁתְּכַחוּ וְעַל דְּאַסְגֵּיתוּן עֲלֵיהוֹן פִּתְגָּמִין בְּכֵן תִּטַּלְטְלוּן׃ שְׁבַקוּ קִרְוַיָא וּשְׁרוֹ בְּכֵיפָא
29 יָתְבֵי מוֹאָב וַהֲווֹ כְּיוֹנָא דְּשָׁבְקָא פוּם שׁוֹבְכַהּ וְנָחֲתָא וְשָׁרְיָא בְּאַרְעִית גּוּבָּא׃ שְׁמַעְנָא
רַבְרְבֵי מוֹאָב דְּמִתְגָּאַן לַחֲדָא רַבְרְבֵיהוֹן וּמְפַנְּקֵיהוֹן וְגֵיוְתָנוּתְהוֹן וְרָמוּת לִבְּהוֹן׃
30 31 קֳדָמַי גְּלַן אֲמַר יְיָ עוֹבָדֵי רַבְרְבָנֵיהוֹן וְלָא תַקְנִין יַקִּירֵיהוֹן לָא כִדְכָשַׁר עֲבַדוּ׃ עַל כֵּן
32 עַל מוֹאֲבָאֵי מְיַלְלִין וְעַל מוֹאֲבָאֵי כּוּלְּהוֹן מְצַוְּחִין עַל אֱנָשׁ כְּרַךְ תּוּקְפְהוֹן דָּוָן׃ בְּכֵן
כְּמָא דְּאַיְתֵיתִי מַשִּׁרְיָן עַל יַעְזֵר כֵּן אַיְתֵי קָטוֹלִין עַל שִׂבְמָה מְטַלְטְלָךְ גְּזוֹ עֲבַרוּ יַמָּא
עַד יַם יַעְזֵר מְטוֹ עַל חֲצָדִיךְ וְעַל קִטָפִיךְ בָּזוֹזִין נְפַלוּ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Propterea, Ecce dies veniunt, dicit Dominus, & mittam in eos deprædatores, & deprædabuntur eos, & ſubſtantias eorum evacuabunt, & bona 12
terræ eorum abſument. Et confundentur Moabitæ qui colebant Chamos : 13
ſicut confuſa eſt domus Iſrael à Bethel fiducia ſua. Quomodo dicitis, For- 14
tes ſumus, & viri robuſti ad præliandum ? Direpti ſunt Moabitæ, & ur- 15
bes eorum deſolatæ ; & pulchri juvenes eorum tradentur occiſioni, dicit
rex, Dominus exercituum nomen ejus. Propinquus eſt interitus Moabi- 16
tarum ut veniat, & malum eorum accelerat admodum. Dolete ſuper eo 17
omnes qui in circuitu ejus eſtis : & univerſi qui ſcitis nomen ejus, dicite,
Quomodo confractus eſt rex malignus, dominator tribulans ? Deſcende 18
de gloria & ſede in ſiti regnum cœtus Dibon ; quia deprædatores venerunt contra Moab : aſcenderunt contra te, vaſtarunt arces tuas. Ad viam 19
ſtate, & contemplamini qui habitatis in Aroer ; interrogate fugientes ; &
eis qui liberati ſunt, dicite : Quænam confractio hæc fuit ? Confuſi ſunt 20
Moabitæ,quia contriti ſunt. Ululate & clamate, annuntiate in Arnon:quia
direpti ſunt Moabitæ. Et facientes vindictam pervenerunt in terram cam- 21
peſtrem,in Holon, & in Jahats, & ſuper Mephaat. Et ſuper Dibon,& ſu- 22
per Nebo, & ſuper domum Deblathaim. Et ſuper Cariathaim, & ſuper 23
Bethgamul,& ſuper Bethmaon. Et ſuper Kerioth, & ſuper Boſrah, & ſu- 24
per omnes urbes terræ Moab,quæ longè ſunt, & quæ propè. Succiſum eſt 25
regnum *Moab,* & dominatores eorum contriti ſunt, dicit Dñs. Adduc ſu- 26
per eos anguſtiam,ut ſint ſimiles ebrio; quia contra populum Dñi magnificati ſunt : & *quærent Moabitas in locis ſuis,* & erunt in deriſum etiam
ipſi. Et quia lætati eſtis ſuper interitum Iſrael,cùm non peccaverint in vos, 27
quaſi inventi eſſent inter latrones ; & quia multa verba locuti eſtis contra
eos : propterea tranſmigrabitis. Relinquite civitates, & habitate in petra 28
habitatores Moab ; eſtote quaſi columba quæ dimittit oſtium columbaris
ſui, & deſcendit & moratur in pavimento laci. Audivimus principes Mo- 29
ab qui ſuperbi ſunt valdè,& principes eorum,& delicatos eorum,& ſuperbiam eorum,& altitudinem cordis eorum. Coram me manifeſta ſunt, di- 30
cit Dñs, opera principum eorum : & non ſunt recti nobiles eorum, nec
fecerunt quod decebat. Propterea ſuper Moabitas ululabunt, & ſuper Mo- 31
abitas omnes clamabunt, ſuper viros civitatis fortitudinis eorum dolebunt. Idcircò ſicut adduxi exercitum contra Jazer, ſic adducam interfe- 32
ctores contra Sibma : migrantes ex te, tranſvadarunt, tranſierunt mare ;
uſque ad mare Jazer pervenerunt : ſuper meſſem tuam, et ſuper vindemiam tuam direptores irruerunt.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܫܕܪ ܥܠܝܗܘܢ ܒܙܘܙܐ. ܘܢܒܙܘܢ ܐܢܘܢ. 12
ܘܡܐܢܝܗܘܢ ܢܣܦܩܘܢ. ܘܩܢܩܢܝܗܘܢ ܢܬܒܪܘܢ. * ܘܢܒܗܬ ܡܘܐܒ ܡܢ ܟܡܘܫ. ܐܝܟ 13
ܕܒܗܬܘ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܡܢ ܒܝܬ ܐܝܠ ܬܘܟܠܢܗܘܢ. * ܐܝܟܢܐ ܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܕܓܢܒܪܐ 14
ܚܢܢ. ܘܓܒܪܐ ܚܝܠܬܢܐ ܠܩܪܒܐ. * ܐܬܒܙܙ ܡܘܐܒ. ܘܩܘܪܝܗ ܣܠܩܝ. ܘܓܒܝܐ ܕܥܠܝܡܘܗܝ 15
ܢܚܬܘ ܠܩܛܠܐ. ܐܡܪ ܡܠܟܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ. * ܩܪܝܒ ܬܒܪܗ ܕܡܘܐܒ 16
ܠܡܐܬܐ. ܘܒܝܫܬܗ ܡܣܪܗܒܐ ܛܒ. * ܐܬܕܠܚܘ ܘܙܥܘ ܟܠ ܕܚܕܪܘܗܝ. ܘܟܠ ܕܝܕܥܝܢ 17
ܫܡܗ ܐܡܪܘ. ܐܝܟܢܐ ܐܬܬܒܪ ܫܒܛܐ ܥܫܝܢܐ. ܘܚܘܛܪܐ ܕܫܘܒܗܪܐ. * ܚܘܬ ܡܢ ܐܝܩܪܐ 18
ܘܬܒ ܒܨܗܝܐ ܒܨܥܪܐ ܝܬܒܬܐ ܕܒܪܬ ܪܝܒܘܢ. ܡܛܠ ܕܒܙܘܙܐ ܕܡܘܐܒ ܣܠܩ ܥܠܟܝ. ܘܐܚܪܒ
ܟܪܟܝܟܝ. * ܥܠ ܐܘܪܚܐ ܩܘܡܝ ܘܚܘܪܝ ܝܬܒܬܐ ܕܥܪܘܥܝܪ. ܫܐܠܝ ܠܥܪܘܩܐ. 19
ܘܠܡܦܠܛܬܐ ܐܡܪܝ ܡܢܐ ܗܘܐ. * ܒܗܬ ܡܘܐܒ ܡܛܠ ܕܐܬܬܒܪ. ܐܝܠܠܘ ܘܐܙܥܩܘ ܒܐܪܢܘܢ. 20
ܡܛܠ ܕܐܬܬܒܪ ܡܘܐܒ. * ܘܕܝܢܐ ܐܬܐ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܡܝܫܘܪ. ܥܠ ܚܠܘܢ. ܘܥܠ ܝܗܨ. ܘܥܠ 21
ܡܦܥܬ. * ܘܥܠ ܕܝܒܘܢ. ܘܥܠ ܢܒܘ. ܘܥܠ ܒܝܬ ܕܒܠܬܝܡ. * ܘܥܠ ܩܘܪܝܬܝܡ 22 23
ܘܥܠ ܒܝܬ ܓܡܘܠ. ܘܥܠ ܒܝܬ ܡܥܘܢ. * ܘܥܠ ܩܪܝܘܬ. ܘܥܠ ܒܘܨܪܐ. ܘܥܠ 24
ܟܠܗܝܢ ܩܘܪܝܐ ܕܐܪܥܐ ܕܡܘܐܒ ܕܪܚܝܩܢ ܘܕܩܪܝܒܢ. * ܐܬܓܕܥܬ ܩܪܢܗ 25
ܕܡܘܐܒ ܘܕܪܥܗ ܐܬܬܒܪ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܪܘܘܝܗܝ ܡܛܠ ܕܥܠ ܡܪܝܐ ܐܬܪܘܪܒ. 26
ܘܢܬܚܦܩ ܡܘܐܒ ܒܬܝܒܘܬܗ. ܘܢܗܘܐ ܠܓܘܚܟܐ ܐܦ ܗܘ. * ܘܐܢ ܠܐ ܗܘܐ ܠܓܘܚܟܐ 27
ܗܘܐ ܠܟ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܒܝܬ ܓܢܒܐ ܐܫܬܟܚ. ܟܕ ܟܬܫ ܗܘܝܬ ܥܡܗ ܩܪܒܐ.
* ܫܒܘܩܘ ܩܘܪܝܐ. ܘܥܡܪܘ ܒܫܘܥܝܐ ܥܡܘܪܐ ܕܡܘܐܒ. ܘܗܘܘ ܐܝܟ ܝܘܢܐ ܕܡܩܢܢܐ 28
ܒܥܒܪܐ. * ܫܡܥܢ ܪܘܪܒܢܐ ܕܡܘܐܒ ܕܡܬܪܘܪܒܝܢ ܛܒ. ܪܘܪܒܘܬܗܘܢ ܘܫܘܒܗܪܗܘܢ ܘܪܡܘܬܗ 29
ܕܠܒܗܘܢ. ܐܢܐ ܝܕܥܬ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܥܒܕܝܗܘܢ ܕܠܐ ܗܘܘ ܬܪܝܨܝܢ. ܘܩܨܘܡܝܗܘܢ ܠܐ ܗܘܐ 30
ܗܟܢܐ ܥܒܕܘ ܠܗܘܢ. * ܡܛܠܗܢܐ ܥܠ ܡܘܐܒ ܐܝܠܠܘ. ܘܥܠ ܡܘܐܒ ܟܠܗ. ܡܢ 31
ܟܠ ܐܬܪ ܩܥܘ. ܘܥܠ ܐܢܫܐ ܕܥܡܪܝܢ ܒܒܝܬܗ. ܒܝܫܬܐ ܢܬܚܫܒ. * ܡܢ ܒܟܬܐ 32
ܕܝܥܙܝܪ ܐܒܟܐ ܠܟܝ ܓܦܬܐ ܕܫܒܡܐ. ܫܒܫܒܝܟܝ ܥܒܪܘ ܝܡܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܝܡܐ ܕܝܥܙܝܪ
ܡܛܘ. ܡܛܠ ܕܥܠ ܚܨܕܟܝ ܘܥܠ ܩܛܝܦܟܝ ܒܙܘܙܐ ܢܦܠ.

* Idcirco ecce dies venturi ſunt, ait Dominus, 12
quibus mittam in eos direptores, ut diripiant
eos, vaſa eorum evacuent, & lagenas
eorum comminuant. Et pudefiet Moab cauſâ 13
Chamoſi, quemadmodum pudefacti ſunt
Iſraelitæ cauſâ Bethelis fiduciæ ſuæ. Quonam 14
pacto dicitis, Gigantes ſumus & viri ad
bella ſtrenui? Direptus eſt Moab, civitates 15
ejus *captivæ* aſcenderunt, & ſelectiſſimi heroum
ejus traditi ſunt ad necem, dicit rex
ille Dominus, cujus nomen eſt Deus potentiſſimus:
Contritio Moabi brevi eſt ventura, 16
& malum ejus properat admodum. Conturbati 17
trepidaverunt omnes eum circunſtantes,
& quotquot nôrunt famam ejus, dixerunt,
Quomodo fractus eſt baculus fortiſſimus
& truncus glorioſiſſimus? Deſcende 18
de faſtu, & in ignominia ſede ô habitatrix
filiæ Ribonis, quoniam direptor Moabi aſcendit
contra te, & vaſtavit urbes tuas. Juxta 19
vias conſiſte & ſpeculare habitatrix Adoeris:
ſciſcitare fugientem, & evadenti dicito,
Quid accidit? Pudefactus eſt Moab, quia 20
confractus eſt: & ululaverunt atque exclamaverunt
in Arnona, quia contritꝰ eſt Moab.
Venit enim judicium contra terram Maſor, 21
contra Halonem, contra Jahſum, & contra
Mephiath, Contra Ribonem, contra Nobum, 22
& contra Beth-deblathim, Contra Curjathim, 23
contra Beth-gamulum, & contra Bethmaonem,
Contra Cerioth, contra Boſarem, 24
& contra omnes civitates terræ Moabiticæ
longinquas & propinquas. Reſectum eſt cornu 25
Moabi, & brachium ejus confractum,
dicit Dominus. Affligite eum, quia contra 26
Dominum ſuperbivit: exagitet ſeſe Moab
in vomitu ſuo, ſitque riſui etiam ipſe. Et an 27
non riſui tibi fuit ô Iſrael, & inter fures inventus
eſt, cùm bellum gereres in eum? Relinquite 28
civitates, & in petris habitate ô incolæ
Moabi, & eſtote ſimiles columbæ nidificanti
in prominenti. Audivimus principes 29
Moabi multùm inſoleſcere: inſolentiam &
arrogantiam eorum, & ſuperbiam cordis eorum
ego novi, dicit Dominus, *Et* opera illorum 30
non eſſe recta: licèt harioli ejus non
ita prædixerint de ipſo. Propterea contra 31
Moabum clamate, & adverſùs totũ Moabum
ex omni loco vociferate, & adverſùs homines
commorantes in domo ipſius, malum excogitetur.
Pluſquam fletu Jazeris defleo te 32
ô vitis Sebmæ: propagines tuæ tranſierunt
mare, & ad mare Jazeris uſque pervenerunt:
ſuper meſſem enim tuam & ſuper vindemiam
tuam irruet direptor:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ويوان ابن كاريا وجميع الجيش الذي في الحقول اتوا الي عودوليا في مسيفا وقالوا له * 13
* أعرفت أعلمت ان ملك بني عمون بالبصا ارسل اليك اسمعيل ليضرب نفسك * فلم 14
يصدقهم عودوليا * فقال يوان لعودوليا انا امضي سرا الي مسيفا واضرب اسمعيل ولا يعلم 15
واحد * لان لا يضرب نفسك فيتفرق جميع اليهود المجتمعين اليك وتهلك بقايا يهودا * فقال 16
عودوليا ليوان * لا تصنع هذا الامر لانك انت تقول الكذب على اسمعيل *

* Deinde Jonan Careæ filius & totus exercitus 13
qui erat in agris, venerunt ad Godoliam
in Maſepham, & dixerunt ei;
* Sciſne, noſtine quòd rex Ammonitarum 14
Beliſa miſerit ad te Iſmaelem ut percutiat
animam tuam? at non præbuit eis fidem
Godolia. Imò cùm dixiſſet Jonan ad 15
Godoliam, Ego clanculùm ibo in Maſepham,
& percutiam Iſmaelem nemine
ſciente; ne percutiat animam tuam, &
diſpergantur omnes Judæi apud te congregati,
pereántque reliquiæ Judæ. Reſpondit 16
Godolia Jonani, Ne facias hanc
rem, quia tu falſum dicis de Iſmaele.*

* الفصل الثامن والاربعون *

CAP. XLVIII.

* وكان في الشهر السابع جاء اسمعيل بن ناثونيوا بن الاصا من جنس الملك * ومعه عشرة 1
رجال الذين كانوا معه * وضربوا عودوليا في مسيفا * واكلوا هناك خبزا معا * وقام اسمعيل 2
والعشرة رجال الذين كانوا معه * وضربوا عودوليا الذي اقامه ملك بابل على الارض * وجميع 3
اليهود الذين معه في مسيفا * وجميع الكلدانيين الموجودين هناك * وكان في اليوم الثاني 4
حين ضرب عودوليا وانسان لم يعلم * واتوا رجال من سخيم ومن صالوم ومن سامرية 5
ثمانون رجلا يحلقون اللحي * ويشقون الثياب ويقطعونها * ومن ولبان في ايديهم ليقدموه
الي بيت الرب * فخرج لاستقبالهم اسمعيل * وهاولاء مضوا وبكوا * فقال لهم ادخلوا الي 6
عودوليا * وكان اذ دخلوا الي وسط المدينة ذبحهم عند البير * 7

*DEinde contigit menſe ſeptimo, ut 1
veniens Iſmael filius Nathaniæ filii
Elaſæ de ſtirpe regia ſtipatus decem
viris qui comitabantur eum; Percuterent 2
Godoliam in Maſepha. Cùm enim panem
ibi ſimul comediſſent, ſurrexerunt
Iſmael & decem illi viri qui cum eo erant,
& percuſſerunt Godoliam quem
rex Babelis præfecerat illi terræ. Cunctóſque 3
Judæos qui cum eo erant in Maſepha,
& omnes Chaldæos ibi exiſtentes.
Fuit autem die ſecundâ poſtquam percuſſus 4
fuiſſet Godolia nemine ſciente, ut 5
venirent quidam è Sechim, è Salom, &
è Samaria, nempe octoginta viri raſis
barbis, & diſciſſis laceriſque veſtibus,
manna & thus manibus portantes ad offerendum
illud domui Domini. Quibus 6
obviàm procedens Iſmael (hi autem flebant
ambulantes) dixit; Ingredimini ad
Godoliam. Et factum eſt cùm ingreſſi 7
fuiſſent in mediam urbem, ut jugularet eos
apud puteum.*

ירמיה׃ מט

torcularib⁹ de vinũ &:Moab terra de &,*Charmel* de exultatio &,lætitia *contrahetur* Et
33 וְנֶאֶסְפָה שִׂמְחָה וָגִיל מִכַּרְמֶל וּמֵאֶרֶץ מוֹאָב וְיַיִן מִיקָבִים
Cheſbon clamore A .celeuſma non celeuſma,celeuſmate calcabit Non.faciam ceſſare
34 הִשְׁבַּתִּי לֹא־יִדְרֹךְ הֵידָד הֵידָד לֹא הֵידָד׃ מִזַּעֲקַת חֶשְׁבּוֹן
Choronaim ad uſque Sohar à,ſuam vocem dederunt Jahas ad uſque Elhaleh ad uſque
עַד־אֶלְעָלֵה עַד־יַהַץ נָתְנוּ קוֹלָם מִצֹּעַר עַד־חֹרֹנַיִם
faciam ceſſare Et.erunt deſolationes in Nimrim aquæ etiam quia : triennem vitulam
35 עֶגְלַת שְׁלִשִׁיָּה כִּי גַּם־מֵי נִמְרִים לִמְשַׁמּוֹת יִהְיוּ׃ וְהִשְׁבַּתִּי
Propterea .ejus diis ſuffientem & ,excelſo *facientem aſcendere*,Dominus ait ,Moab *ipſi*
36 לְמוֹאָב נְאֻם־יְהֹוָה מַעֲלֶה בָמָה וּמַקְטִיר לֵאלֹהָיו׃ עַל־כֵּן
, cheres--Chir viros ad meum cor & ,*perſtrepet* tibiæ veluti Moab ad meum cor
לִבִּי לְמוֹאָב כַּחֲלִלִים יֶהֱמֶה וְלִבִּי אֶל־אַנְשֵׁי קִיר־חֶרֶשׂ
caput omne Quia .perierunt ,fecit *augmentum* idcirco *: perſtrepet* tibiæ tanquam
37 כַּחֲלִילִים יֶהֱמֶה עַל־כֵּן יִתְרַת עָשָׂה אָבָדוּ׃ כִּי כָל־רֹאשׁ
lumbos ſuper &,inciſiones manus omnes ſuper :diminuta barba omnis & ,calvitium
קָרְחָה וְכָל־זָקָן גְּרֻעָה עַל כָּל־יָדַיִם גְּדֻדֹת וְעַל־מָתְנַיִם
contrivi quoniã:plãctus *ipſe* omnis ej⁹ plateis in &,Moab tecta omnia Super .ſaccus
38 שָׂק׃ עַל כָּל־גַּגּוֹת מוֹאָב וּבִרְחֹבֹתֶיהָ כֻּלֹּה מִסְפֵּד כִּי־שָׁבַרְתִּי
?eſt conſternatus Quomodo .Dominus dixit ,*eo in voluntas* non ,vas ſicut Moab
39 אֶת־מוֹאָב כִּכְלִי אֵין־חֵפֶץ בּוֹ נְאֻם־יְהֹוָה׃ אֵיךְ חַתָּה
Moab eritque ? eſt affectus pudore ,Moab cervicem vertit quomodo : ululaverunt
הֵילִילוּ אֵיךְ הִפְנָה־עֹרֶף מוֹאָב בּוֹשׁ וְהָיָה מוֹאָב
Ecce : Dominus dixit ſic Quia .ejus circuitibus omnib⁹ *contritionẽ* in &,deriſum in
40 לִשְׂחֹק וְלִמְחִתָּה לְכָל־סְבִיבָיו׃ כִּי־כֹה אָמַר יְהֹוָה הִנֵּה
, civitates *eſt Capta* .Moab ad ſuas alas extendet &:volabit aquila tanquam
41 כַּנֶּשֶׁר יִדְאֶה וּפָרַשׂ כְּנָפָיו אֶל־מוֹאָב׃ נִלְכְּדָה הַקְּרִיּוֹת
cor ſicut ,illa die in Moab fortium cor erit & *: eſt apprehenſa* munitiones &
וְהַמְּצָדוֹת נִתְפָּשָׂה וְהָיָה לֵב גִּבּוֹרֵי מוֹאָב בַּיּוֹם הַהוּא כְּלֵב
.magnificavit Dñm *ſuper* quoniam:*populo à* Moab diſperdetur Et *miſeræ* mulieris
42 אִשָּׁה מְצֵרָה׃ וְנִשְׁמַד מוֹאָב מֵעָם כִּי עַל־יְהֹוָה הִגְדִּיל׃
faciebus à Fugiens. Dominus dicit,Moab habitator te ſuper laqueus &,fovea &,Pavor
43 44 פַּחַד וָפַחַת וָפָח עָלֶיךָ יוֹשֵׁב מוֹאָב נְאֻם־יְהֹוָה׃ הַנִּיס מִפְּנֵי
adducã nam:laqueo *in* capietur ,fovea de *aſcendens* & : foveam in cadet ,pavoris
הַפַּחַד יִפֹּל אֶל־הַפַּחַת וְהָעֹלֶה מִן־הַפַּחַת יִלָּכֵד בַּפָּח כִּי־אָבִיא
Cheſbon umbra In .Dominus ait ,eorum viſitationis annum Moab ad *eam ad*
45 אֵלֶיהָ אֶל־מוֹאָב שְׁנַת פְּקֻדָּתָם נְאֻם־יְהֹוָה׃ בְּצֵל חֶשְׁבּוֹן
inter ex flamma & , Cheſbon de eſt egreſſus ignis quia : fugientes *vi à* ſteterunt
עָמְדוּ מִכֹּחַ נָסִים כִּי־אֵשׁ יָצָא מֵחֶשְׁבּוֹן וְלֶהָבָה מִבֵּין
, Moab tibi Væ .*ſonitus* filiorum verticem & ,Moab angulum devoravit &,Sichon
46 סִיחוֹן וַתֹּאכַל פְּאַת מוֹאָב וְקָדְקֹד בְּנֵי שָׁאוֹן׃ אוֹי־לְךָ מוֹאָב
tuæ filiæ & ,captivitatem in tui filii ſunt comprehenſi quia : Chemos populus periit
אָבַד עַם־כְּמוֹשׁ כִּי־לֻקְּחוּ בָנֶיךָ בַּשֶּׁבִי וּבְנֹתֶיךָ
: Dñs ait , dierum noviſſimo in Moab captivitatem convertam Et.*captivitatẽ* in
47 בַּשִּׁבְיָה׃ וְשַׁבְתִּי שְׁבוּת־מוֹאָב בְּאַחֲרִית הַיָּמִים נְאֻם־יְהֹוָה
.Moab judicium huc uſque
עַד־הֵנָּה מִשְׁפַּט מוֹאָב׃

CAP. XLIX. מט

hæres an ? Iſrael non filii Nunquid : Dominus dixit Sic,Hammon filios Ad
1 לִבְנֵי עַמּוֹן כֹּה אָמַר יְהֹוָה הֲבָנִים אֵין לְיִשְׂרָאֵל אִם־יוֹרֵשׁ
ejus urbibus in ejus populus &;Ghad eorum rex accepit hæreditate cur ? ei non
אֵין לוֹ מַדּוּעַ יָרַשׁ מַלְכָּם אֶת־גָּד וְעַמּוֹ בְּעָרָיו
Rabbath in faciam audire & ,Dominus dixit ,*venientes* dies ecce Ideo ? habitavit
2 יָשָׁב׃ לָכֵן הִנֵּה יָמִים בָּאִים נְאֻם־יְהֹוָה וְהִשְׁמַעְתִּי אֶל־רַבַּת
ejus *filiæ* & ,deſolationis tumulũ in erit & , prælii clamorem Hammon filiorum
בְּנֵי־עַמּוֹן תְּרוּעַת מִלְחָמָה וְהָיְתָה לְתֵל שְׁמָמָה וּבְנֹתֶיהָ
.Dominus dixit , *eos hæreditantes* Iſrael accipiet hæreditate &:ſuccẽdetur igni *in*
בָּאֵשׁ תִּצַּתְנָה וְיָרַשׁ יִשְׂרָאֵל אֶת־יֹרְשָׁיו אָמַר יְהֹוָה׃

Verſio VULG. LAT.

33 Ablata eſt lætitia & exultatio de Carmelo, & de terra Moab, & vinum de torcularibus ſuſtuli: nequaquam calcator uvæ ſolitum celeuma cantabit. 34 De clamore Heſebon uſque Eleale, & Jaſa, dederunt vocem ſuam; à Segor uſque ad Oronaim vitulâ conternante: aquæ quoque Nemrim peſſimæ erunt. 35 Et auferam de Moab, ait Dominus, offerentem in excelſis, & ſacrificantem diis ejus. 36 Proptereà cor meum ad Moab quaſi tibiæ reſonabit: & cor meum ad viros muri fictilis dabit ſonitum tibiarum: quia plus fecit quàm potuit, idcircò perierunt. 37 Omne enim caput calvitiũ, & omnis barba raſa erit: in cunctis manibus colligatio, & ſuper omne dorſum cilicium. 38 Super omnia tecta Moab, & in plateis ejus, omnis planctus: quoniã contrivi Moab ſicut vas inutile, ait Dominus. 39 Quomodò victa eſt, & ululaverunt? quomodò dejecit cervicem Moab, & confuſus eſt? Erítque Moab in deriſum, & in exemplum omnibus in circuitu ſuo. 40 Hæc dicit Dominus; Ecce quaſi aquila volabit, & extendet alas ſuas ad Moab. 41 Capta eſt Carioth, & munitiones comprehenſæ ſunt: & erit cor fortium Moab in die illa, ſicut cor mulieris parturientis. 42 Et ceſſabit Moab eſſe populus: quoniam contra Dominum gloriatus eſt. 43 Pavor, & fovea, & laqueus ſuper te, ô habitator Moab, dicit Dominus. 44 Qui fugerit à facie pavoris, cadet in foveam: & qui conſcenderit de fovea, capietur laqueo: adducam enim ſuper Moab annum viſitationis eorum, ait Dominus. 45 In umbra Heſebon ſteterunt de laqueo fugientes: quia ignis egreſſus eſt de Heſebon, & flamma de medio Seon, & devorabit partem Moab, & verticem filiorum tumultûs. 46 Væ tibi Moab, periiſti popule Chamos: quia comprehenſi ſunt filii tui, & filiæ tuæ in captivitatem. 47 Et convertam captivitatem Moab in noviſſimis diebus, ait Dominus. Hucuſque judicia Moab.

CAP. XLIX.

1 AD filios Ammon. Hæc dicit Dominus; Numquid non filii ſunt Iſrael? aut hæres non eſt ei? Cur igitur hæreditate poſſedit Melchom, Gad: & populus ejus in urbibus ejus habitavit? 2 Ideò ecce dies veniunt, dicit Dominus; & auditum faciam ſuper Rabbath filiorum Ammon fremitum prælii, & erit in tumulum diſſipata, filiæque ejus igni ſuccendentur, & poſſidebit Iſrael poſſeſſores ſuos, ait Dominus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

8 Καὶ δέκα ἄνδρες εὑρέθησαν ἐκεῖ, καὶ (ζ) εἶπον τῷ Ἰσμαὴλ, Μὴ ἀνέλῃς ἡμᾶς, ὅτι εἰσὶν ἡμῖν θησαυροὶ ἐν ἀγρῷ, πυροὶ καὶ κριθαὶ, μέλι καὶ ἔλαιον. καὶ παρῆλθε, καὶ οὐκ ἀνεῖλεν αὐτοὺς ἐν μέσῳ τῶν ἀδελφῶν αὐτῶν. 9 Καὶ τὸ φρέαρ, εἰς ὃ ἔρριψεν ἐκεῖ Ἰσμαὴλ πάντας οὓς ἐπάταξε, φρέαρ μέγα τοῦτό ἐστιν, ὃ ἐποίησεν ὁ βασιλεὺς Ἀσὰ ἀπὸ προσώπου Βαασὰ βασιλέως Ἰσραὴλ, τοῦτο ἐνέπλησεν Ἰσμαὴλ τραυματιῶν. 10 Καὶ ἀπέστρεψεν Ἰσμαὴλ πάντα τὸν λαὸν τὸν καταλειφθέντα εἰς Μασσηφὰ, καὶ τὰς θυγατέρας τοῦ βασιλέως, ἃς (″) παρακατέθετο ὁ ἀρχιμάγειρος τῷ Γοδολίᾳ υἱῷ Ἀχεικὰμ, καὶ ᾤχετο εἰς τὸ πέραν υἱῶν Ἀμμών. 11 Καὶ ἤκουσεν Ἰωάναν υἱὸς Κάρηε, καὶ πάντες οἱ ἡγεμόνες τῆς δυνάμεως οἱ μετ' αὐτοῦ, πάντα τὰ κακὰ ἃ ἐποίησεν Ἰσμαὴλ, 12 Καὶ ἤγαγον ἅπαν τὸ στρατόπεδον αὐτῶν, καὶ ᾤχοντο πολεμεῖν αὐτὸν, καὶ εὗρον αὐτὸν ἐπὶ ὕδατος πολλοῦ ἐν Γαβαών. 13 Καὶ ἐγένετο, ὅτε (η) εἶδε πᾶς ὁ λαὸς ὁ μετὰ Ἰσμαὴλ τὸν (θ) Ἰωάναν καὶ τοὺς ἡγεμόνας τῆς δυνάμεως τῆς μετ' αὐτοῦ, 14 Καὶ ἀνέστρεψαν πρὸς (ι) Ἰωάναν. 15 Καὶ Ἰσμαὴλ ἐσώθη σὺν ὀκτὼ ἀνθρώποις, καὶ ᾤχετο πρὸς τοὺς υἱοὺς Ἀμμών. 16 Καὶ ἔλαβεν (κ) Ἰωάναν, καὶ πάντες οἱ ἡγεμόνες τῆς δυνάμεως οἱ μετ' αὐτοῦ, πάντας τοὺς καταλοίπους τοῦ λαοῦ, οὓς (λ) ἀπέστρεψεν ἀπὸ Ἰσμαὴλ, δυνατοὺς ἄνδρας ἐν πολέμῳ, καὶ τὰς γυναῖκας, καὶ τὰ λοιπὰ, καὶ τοὺς εὐνούχους, οὓς ἀπέστρεψαν ἀπὸ Γαβαὼν, 17 Καὶ ᾤχοντο, καὶ ἐκάθισαν (μ) ἐν Γαβηρωχαμάα, τῇ πρὸς Βηθλεὲμ, τοῦ πορευθῆναι (ν) εἰς Αἴγυπτον 18 Ἀπὸ προσώπου τῶν Χαλδαίων· ὅτι ἐφοβήθησαν ἀπὸ προσώπου αὐτῶν, ὅτι ἐπάταξεν Ἰσμαὴλ τὸν Γοδολίαν, ὃν κατέστησεν (¨) ὁ βασιλεὺς Βαβυλῶνος ἐν τῇ γῇ.

8 Et decem viri reperti ſunt ibi, & dixerunt ad Iſmael; Noli occidere nos, quia ſunt nobis theſauri in agro, frumenta, & hordea, mel, & oleum. Et præteriit, & non interfecit eos in medio fratrum eorum. 9 Et puteus, in quem projecit illuc Iſmael omnes quos percuſſerat, (puteus magnus hic eſt, quem fecit rex Aſa à facie Baaſa regis Iſrael,) hunc implevit Iſmael occiſis. 10 Et abduxit Iſmael omnem populum, qui remanſerat in Maſſepha, & filias regis, quas commendaverat magiſter coquorum Godoliæ filio Achicam: & abiit, ut tranſiret ad filios Ammon. 11 Et audivit Joanan filius Caree, & omnes duces virtutis, qui cum eo, omnia mala quæ fecerat Iſmael: 12 Et adduxerunt omnem exercitum ſuum: & abierunt impugnare eum: & invenerunt eum ſuper aquam multam, in Gabaon. 13 Et factum eſt, quando vidit omnis populus, qui cum Iſmael, Joanam, & duces virtutis, (ſ) quæ cum eo, 14 Et redierunt ad Joanam. 15 Et Iſmael evaſit cum octo hominibus, & abiit ad filios Ammon. 16 Et tulit Joanan, & omnes duces virtutis, qui cum eo, omnes reſiduos populi, quos reduxerat ab (g) Iſmael, potentes viros in bello, & mulieres, & reliqua, & eunuchos, quos reduxerant de Gabaon: 17 Et abierunt, & ſederunt in (h) Gaberochamaa, quæ ad Bethleem, ut irent in Ægyptum 18 A facie Chaldæorum: quia timuerunt à facie eorum: quia percuſſerat Iſmael Godoliam, quem conſtituerat rex Babylonis in terra.

MS.A. (ζ) εἶπαν (″) παρεκατέθετο (η) ἴδον αὐτὸν πᾶς ὁ λαὸς μετὰ (θ) Ἰωάνναν καὶ πάντας τοὺς (ι) Ἰωάνναν. (κ) Ἰωάνναν, (λ) ἀπέστρεψαν (μ) ἐν Γηβηρωθχαμάαμ, * τοῦ πρὸς (ν) εἰσελθεῖν εἰς (¨) βασιλεὺς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

33 וְתִתְכְּנֵישׁ בִּיעַ וְחֶדְוָא מִכַּרְמְלָא וּמֵאֲרַע מוֹאָב וַחֲמַר מִמַּעְצְרַיָּא אֲבַטְּלֵית לָא יְעֻצְרוּן
34 עָצוּרִין וְלָא יְרִימוּן בְּקָלְהוֹן׃ מִצְּוָחַת חֶשְׁבּוֹן עַד אֶלְעָלֵה עַד יַהַץ אִשְׁתְּמַע קָלְהוֹן מִצֹּעַר
35 עַד חוֹרוֹנַיִם עֶגְלַת תַּלְתִּית רַבְּתָא אֲרֵי אַף מֵי נִמְרִים לְצָדוּ יְהוֹן׃ וַאֲבַטֵּל מִן מוֹאָב אֲמַר
36 יְיָ מַקְרִיב קוּרְבָּן עַל בָּמְתָא וּמַסֵּיק בּוּסְמִין לְטַעֲוָתֵיהּ׃ עַל כֵּן בְּלִבְּהוֹן מוֹאָבָאֵי כְּכִנּוֹרָא
הָמָן וְלִבְּהוֹן עַל אֱנָשׁ כְּרַךְ תּוּקְפְּהוֹן כִּזְמַר אַבּוּבִין דָּוֵי עַל כֵּן שְׁאַר נִכְסֵיהוֹן דִּקְנוֹ יִתְבַּזְּזוּן׃
37 38 אֲרֵי כָל סְעַר רֵישׁ נְתַר וְכָל דְּקַן גְּלוֹחַ עַל כָּל סִיעָן מִתְהַמְמִין וְעַל חַרְצִין סַק׃ עַל כָּל
אִגָּרֵיהוֹן דְּמוֹאָבָאֵי וּבִרְחוֹבֵיהוֹן כּוּלְּהוֹן עָבְדִין מִסְפְּדָא אֲרֵי תַבְרֵית יָת מַלְכוּת מוֹאָב
39 כְּמָנָא דְלֵית צְרוֹךְ בֵּיהּ אֲמַר יְיָ׃ אֵיכְדֵין אִתְבָּרוּ אַיְלִילוּ אֵיכְדֵין אַחֲזַרוּ קְדָלְהוֹן מוֹאָבָאֵי
40 בְּהִיתוּ וִיהוֹן מוֹאָבָאֵי לְחוּךְ וְלִתְבִיר לְכָל סַחְרָנֵיהוֹן׃ אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ הָא כְּנִשְׁרָא
41 דְּמִשְׁתְּדִי כֵּן יִסַּק מֶלֶךְ בְּמַשִׁרְיָתֵיהּ וְיִשְׁרֵי עַל מוֹאָב׃ וְתִתְכְּבֵישׁ כְּרַכָּא וּמְצָדָתָא יִתְאַחֲדָן
41 וִיהֵי לֵב גִּבָּרֵיהוֹן דְּמוֹאָבָאֵי בְּיוֹמָא הַהוּא כְּלֵב אִתְּתָא דְּעָקָא לַהּ בְּחֶבְלָהָא׃ וְיִשְׁתֵּיצוּן
43 מוֹאָבָאֵי מִלְמֶהֱוֵי עַם אֲרֵי עַל עַמֵּיהּ דַּיְיָ אִתְרְבָרַבוּ׃ דַּחְלָא וְכוּמְצָא וּמְצָדָא עֲלָךְ יָתֵיב
44 מוֹאָב אֲמַר יְיָ׃ דְּיֶעְרוֹק מִן קֳדָם דַּחְלָא יִפּוֹל לְגוֹ כוּמְצָא וּדְיִסַּק מִגוֹ כוּמְצָא אִתְאֲחַד
45 בִּסְרִגְתָּא אֲרֵי אַיְתֵי עֲלֵיהוֹן עַל מוֹאָבָאֵי שְׁנַת סְעוֹרַן חוֹבֵיהוֹן אֲמַר יְיָ׃ עַל דְּאִשְׁתְּמַעוּ
לְיָתְבֵי חֶשְׁבּוֹן גְּלוֹ אִתְקְצַר חֵילְהוֹן עֲרַקוּ אֲרֵי קִדוּם תַּקִּיף כְּאֶשָּׁתָא נְפַק מֵחֶשְׁבּוֹן וְעָבְדֵי
46 קְרָבָא כְּשַׁלְהוֹבִיתָא מִבֵּין סִיחוֹן וְקַטִּילוּ רַבְרְבֵי מוֹאָב וְיַקִּירֵי בְּנֵי אִתְרְגוּשְׁתָּא׃ וַי לְכוֹן
מוֹאָבָאֵי אֲבַדְתּוּן עַמָּא דְּפָלְחִין לִכְמוֹשׁ אֲרֵי אִדַּבַּרוּ בְנָךְ בְּשִׁבְיָא וּבְנָתָךְ בְּגָלוּתָא׃
47 וְאָתֵיב גָּלוּת מוֹאָב בְּסוֹף יוֹמַיָּא אֲמַר יְיָ עַד הָכָא לְמֶעְבַּד פּוּרְעֲנוּת דִּין מִן מוֹאָב׃

מט

1 לִבְנֵי עַמּוֹן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ הַבְנִין לֵית לְיִשְׂרָאֵל אִם יָרֵית לֵית לֵיהּ מָא דֵין אַחְסִין מַלְכְּהוֹן
2 יַת אֲרַע גָּד וְעַמֵּיהּ בְּקִרְוֹהִי יָתֵיב׃ בְּכֵן הָא יוֹמַיָּא אָתַן אֲמַר יְיָ וְאַשְׁמַע לְרַבַּת בְּנֵי עַמּוֹן
יַבָּבוּת עָבְדֵי קְרָבָא וּתְהֵי לְתֵל צְדוּ וְיָתְבֵי כַּפְרָנַהָא בְּנוּרָא יִתּוֹקְדוּן וְיַחְסְנוּן בְּנֵי יִשְׂרָאֵל
נִכְסֵי עַמְמַיָּא דַּהֲווֹ מַחְסְנִין לְהוֹן אֲמַר יְיָ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et colligetur exultatio & gaudium de Carmelo, & de terra Moab; & vi- 33
num de torcularibus ceſſare faciam: non calcabunt calcantes, nec atollent
vocem ſuam. A clamore Eſebon, uſq; ad Eleale, uſq; ad Jahats audita eſt vox 34
eorum; à Segor uſq; Horonaim, vitula triennis grandis: quia etiam aquæ
Nemrim in deſolationem erunt. Et ceſſare faciam de *Moab*, dicit Dñs, of- 35
ferentem oblationem in excelſis, & adolentem aromata idolis ſuis. Propter- 36
eà in corde ſuo Moabitæ quaſi cithara ſonabunt, & cor eorum ſuper viros
civitatis munitionis eorum quaſi cantus organorum mœrebit: ideò reli-
quæ facultates eorum quas poſſederunt diripientur. Quia omnes capilli 37
capitis defluent, & omnis barba radetur: in cunctis turmis conturbantur,
& in lumbis cilicium. Super omnia tecta Moabitarum, & in plateis eorum 38
omnes faciunt planctum, quia contrivi regnum Moab, ſicut vas inutile,
dicit Dñs. Quomodo contriti ſunt & ululaverunt? quomodo verterunt 39
terga ſua Moabitæ? confuſi ſunt, erúntq; Moabitæ in deriſum, & in con-
fractionem omnibus qui in circuitu eorum ſunt. Quia hæc dicit Dñs: 40
Ecce ſicut aquila quæ volat, ſic aſcendet rex cum exercitu ſuo, & caſtrame-
tabitur ſuper Moab. Subjicietúrque civitas, & munitiones capientur. Et 41
erit cor fortium Moabitarum illa die ſicut cor mulieris, cui eſt tribulatio
in doloribus ſuis. Et conſumentur Moabitæ ne ſint populus; quia contra 42
populum Dñi magnificati ſunt. Timor, & fovea, & rete contra te habitator 43
Moab, ait Dñs. Qui fugerit à facie timoris, cadet in medium foveæ: & qui 44
aſcenderit à fovea, capietur in rete. Quia adducam ſuper ipſos Moabitas
annum viſitationis peccatorum ſuorum, dicit Dñs. Pro eo quòd obedierunt 45
habitatorib⁹ Hesbon: tranſmigraverunt, abbreviata eſt virt⁹ eorum; fuge-
runt: quia vent⁹ urens, fortis ſicut ignis, egreſſus eſt de Hesbon, & bella-
tores ſicut flamma de medio Sehon: & interfecerunt principes Moab, &
nobiliores filiorum turbæ. Væ vobis Moabitæ, periiſtis populi, qui ſervie- 46
batis Chamos; quia abducti ſunt filii tui in captivitatem, & filiæ tuæ in
tranſmigrationem. Et convertam tranſmigrationem Moab in fine dierum 47
dicit Dñs. Hucuſq; ad faciendum vindictam judicii de Moab.

CAP. XLIX.

AD filios Ammon hæc dicit Dñs: Num filios non habet Iſrael, aut hæ- 1
res non eſt ei? Quare hæreditate poſſedit rex eorum terram Gad, & popu-
lus ejus in civitatib⁹ ejus habitaverunt? Proptereà ecce dies veniunt, di- 2
cit Dñs, & audire faciam apud Rabbath filiorum Ammon ſtrepitum bella-
torum; & erit in acervum deſolationis, & habitatores vicorum ejus igni
comburentur: & poſſidebunt filii Iſrael ſubſtantias populorum qui poſſidebant eas, dicit Dominus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܢܥܒܪ ܚܕܘܬܐ ܘܕܘܨܐ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܟܪܡܠܐ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܘܐܒ. ܘܚܡܪܐ ܡܢ ܡܥܨܪܬܐ ܢܒܛܠ. 33
ܘܠܐ ܢܕܪܟܘܢ ܕܪܘܟܐ. ܘܠܐ ܢܥܢܘܢ: ܘܠܐ ܢܐܡܪܘܢ. ܗܘܗ ܗܘܗ. * ܡܢ ܩܥܬܐ ܕܚܫܒܘܢ 34
ܥܕܡܐ ܠܐܠܥܠܐ. ܥܕܡܐ ܠܝܗܨ ܝܗܒܘ ܩܠܗܘܢ. ܡܢ ܨܥܪ. ܥܕܡܐ ܠܚܘܪܢܝܡ. ܥܕܡܐ
ܠܩܪܝܬܐ ܕܐܠܥܣ ܥܓܠܬܐ ܬܠܝܬܝܬܐ. ܡܛܠ ܕܡܝܐ ܕܢܡܪܝܡ ܢܚܪܒܘܢ. * ܘܐܒܛܠ ܡܢ 35
ܡܘܐܒ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܡܩܪܒ ܕܒܚܐ ܘܣܐܡ ܒܣܡܐ ܠܐܠܗܘܗܝ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܠܒܝ ܥܠ 36
ܡܘܐܒ ܐܝܟ ܟܢܪܐ ܢܡܠܠ. ܡܛܠ ܕܒܝܫܬܐ ܥܒܕܘ. ܘܐܒܕܘ. * ܪܫܝܗܘܢ ܓܝܪ ܡܩܪܚܝܢ. 37
ܘܕܩܢܝܗܘܢ ܓܙܝܙܢ. ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܐܝܕܝܗܘܢ ܡܪܩܕܢ. ܘܥܠ ܚܨܝܗܘܢ ܣܩܐ. * ܘܥܠ ܟܠ 38
ܐܓܪܐ ܕܡܘܐܒ ܘܒܫܘܩܝܗ ܟܠܗܘܢ ܡܪܩܕܢܐ. ܡܛܠ ܕܬܒܪܬ ܠܡܘܐܒ. ܐܝܟ ܡܐܢܐ ܕܠܝܬ ܒܗ ܨܒܘ
ܨܒܝܢܗ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܐܝܟܢܐ ܐܬܬܒܪܘ ܘܐܝܠܠܘ. ܐܝܟܢܐ ܐܗܦܟ ܩܕܠܗ ܡܘܐܒ ܘܒܗܬ. 39
ܘܗܘܐ ܡܘܐܒ ܠܓܘܚܟܐ ܘܠܬܒܪܐ ܠܟܠܗܘܢ ܕܚܕܪܝܗܘܢ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܐܝܟ 40
ܢܫܪܐ ܢܣܩ ܘܢܦܪܚ. ܘܢܦܪܘܣ ܟܢܦܘܗܝ ܥܠ ܡܘܐܒ. * ܐܬܬܚܕܬ ܩܪܝܘܬ. ܘܡܨܪܘܬ 41
ܐܬܟܒܫܬ. ܘܢܗܘܐ ܠܒܗܘܢ ܕܓܢܒܪܐ ܕܡܘܐܒ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܐܝܟ ܠܒܐ ܕܐܢܬܬܐ ܕܡܚܒܠܐ
ܒܡܘܠܕ: * ܘܢܐܒܕ ܡܘܐܒ ܡܢ ܥܡܐ. ܡܛܠ ܕܥܠ ܡܪܝܐ ܐܬܪܘܪܒ. * ܕܚܠܬܐ ܘܦܚܬܐ 42
ܘܦܚܐ ܥܠܝܟ ܥܡܘܪܐ ܕܡܘܐܒ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܡܢ ܕܢܥܪܘܩ ܡܢ ܩܠܐ ܕܕܚܠܬܐ. ܢܦܠ 43 44
ܒܦܚܬܐ. ܘܡܢ ܕܢܣܩ ܡܢ ܓܘ ܦܚܬܐ. ܢܬܐܚܕ ܒܦܚܐ. ܡܛܠ ܕܡܝܬܐ ܐܢܐ ܗܠܝܢ
ܥܠ ܡܘܐܒ. ܫܢܬܐ ܕܣܘܥܪܢܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܕܢܘܪܐ ܢܦܘܩ ܡܢ ܚܫܒܘܢ. 45
ܘܫܠܗܒܝܬܐ. ܡܢ ܩܪܝܬܐ ܕܣܝܚܘܢ. ܘܬܐܟܘܠ ܦܐܬܗ ܕܡܘܐܒ. ܘܫܠܝܛܢܐ ܕܒܢܝ ܫܐܘܢ. * ܘܝ ܠܟ 46
ܡܘܐܒ: ܐܒܕ ܥܡܐ ܕܟܡܘܫ. ܡܛܠ ܕܐܬܕܒܪܘ ܒܢܝܟ ܘܒܢܬܟ ܒܫܒܝܐ. * ܘܐܦܢܐ ܫܒܝܬܗ 47
ܕܡܘܐܒ. ܒܚܪܬܐ ܕܝܘܡܬܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܕܡܐ ܠܗܪܟܐ ܕܝܢܗ ܕܡܘܐܒ.

Et præteribit lætitia & exultatio de terra 33
Charmeli, de terra Moabi: & vinũ è lacu ceſſabit,
& non caſcabunt calcantes, neque *mutuò ſibi* reſpondebunt, neq; dicent, Hem hem.
Ob clamorem Hesbonis ad Elealam uſque & 34
ad Jahaſum uſque vocẽ ſuã extulerunt, à Soar
ad Hornim uſque, & uſque ad urbẽ Eles vitulam
trimã: quoniam aquæ Nemrim deficient.
Et abolebo à Moabo, dicit Dñs, offerentẽ victimã, 35
& adolentẽ thura deo ipſius. Propterea 36
cor meum de Moabo tanquam lyra loquetur,
quia malũ cõmiſerunt & perierunt. Capita 37
enim eorũ ſunt abraſa, & barbæ detonſæ, ſup
omnes eorũ manꝰ lamentationes, & ſup dorſa
ciliciũ: Super omnia tecta Moabi & in plateis 38
omnibꝰ luctus: fracturus enim ſum Moabum
tanquã vas quod nullius eſt uſûs, ait Dominꝰ:
(Quomodo fracti ſunt & ululaverunt? quomodo 39
cervicẽ ſuã vertit Moab, & erubuit?)
erítq; Moab riſui & contritioni apud omnes
conterminos ſuos. Sic ait Dñs, Ecce velut 40
aquila aſcendet, & volabit, explicabítq; alas
ſuas ſuper Moabum. Capieris ô Cerioth, 41
Meſroth ſubjugaberis: erítq; animus robuſtiſſimorum
Moabi die illo, ſicut animꝰ mulieris
partûs dolores patientis: Deniq; peribit Moab 42
ex mortalibus, eò quòd contra Dñm ſuperbierit.
Pavor, & fovea, laqueúſque imminet 43
tibi ô incola Moabi, Dicit Dominus: Et qui 44
ſtrepitum pavoris effugerit, cadet in foveam;
& qui emerſerit è fovea, laqueo capietur:
ſiquidem adducturus ſum iſta ſuper Moabum,
annũ viſitationis eorum, ait Dominus. Nam 45
ignis egredietur de Heſbone, & flamma ex
urbe Sihone, vorabítque myſtacem Moabi,
& primates filiorum Seon. Væ tibi Moab, 46
periiſti popule Chamoſi: nam filii filiæque
tuæ in captivatem diſpergentur. Reducam 47
autem captivos Moabi poſtremis temporibus,
ait Dominus. Hactenus ſententia
Moabi.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܛ *

* ܥܠ ܒܢܝ ܥܡܘܢ *

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܒܢܝܐ ܠܝܬ ܠܐܝܣܪܝܠ. ܐܘ ܝܪܬܐ ܠܝܬ ܠܗ. ܡܛܠ ܡܢܐ ܝܪܬ 1
ܡܠܟܘܡ ܠܓܕ. ܘܥܡܗ ܒܩܘܪܝܗ ܝܬܒ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܐܡܪ 2
ܡܪܝܐ. ܘܐܫܡܥ ܥܠ ܪܒܬ ܕܒܢܝ ܥܡܘܢ ܩܠܐ ܕܩܪܒܐ. ܘܬܗܘܐ ܠܬܠܐ ܕܚܪܒܐ.
ܘܟܦܪܢܝܗ ܒܢܘܪܐ ܢܬܘܩܕܢ. ܘܢܐܪܬ ܐܝܣܪܝܠ ܠܝܪܘܬܘܗܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.

CAP. XLIX.

Contra Ammonitas.

Sic ait Dominus, Num liberi deſunt Iſraeli? 1
an hæredem non habet? cur Malchom Gadem
poſſedit, & populus illius hujus civitates
occupavit? Propterea, ecce dies venturi 2
ſunt, ait Dominus, quibus faciam ut audiatur
contra Rabath Ammonitarum clamor bellicus,
& redigatur in tumulũ ruderum, ejuſq;
rura igne comburantur, fiátque Iſrael hæres
hæredum ſuorum, Dicit Dominus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ووجد هناك عشر رجال فقالوا لاسمعيل لا تقتلنا ان لنا كنوز موجودة في الحقل حنطة 8
وشعير عسل وزيت * فمضى ولم يقتلهم في وسط اخوتهم * والبير الذي طرح فيه هناك 9
اسمعيل جميع الذين ضربهم بير عظيم * هذا هو الذي صنعه الملك اصا من وجه باعشا
ملك اسرايل * الذي ملاه اسمعيل جرحا * ورد اسمعيل جميع الشعب المبقى في مسيفا * 10
وبنات الملك اللاتي اعادهن رييس الطباخين لعودليا بن اخيكام وفر الي عبر بني امون *
* وسمع يوحان بن كاريا وجميع مقدمي الجيش الذين معه بجميع الشرور الذي صنعها 11
اسمعيل * وجلبوا جميع معسكرهم * وجاوا ليحاربوه * فوجدوه على ماء كبير في غاباون * 12
* * وكان لما راي كل الشعب الذي مع اسمعيل يوحان وجميع قواد الجيش الذين معه * 13 14
فرجعوا الي يوحان * واسمعيل تخلص مع ثمانية اناس وفر الي بني عمون * واخذ يوحان 15 16
وجميع قواد الجيش الذين معه * جميع بقايا الشعب الذين رجعوا عن اسمعيل * رجالا اقوياء
في الحرب * والنساء والبقايا * والخصيان الذين رجعوا من غاباون * وهربوا وجلسوا في ارض 17
بيروت خامام التي عند بيت لحم * ليذهبوا ويدخلوا الي مصر من وجه الكلدانيين * 18
لانهم خافوا من وجههم * لان اسمعيل ضرب عودليا الذي اقامه ملك بابل في الارض *

Sed extiterunt ibi decem viri qui dixerunt 8
Iſmaeli; Ne occidas nos, quoniam habemus
theſauros exiſtentes in agro, frumentum,
hordeum, mel, & oleum: ſic abiit,
nec interfecit eos unà cum fratribus eorum.
Puteus autem in quem projecit 9
Iſmael eos omnes quos percuſſerat, puteus
ingens eſt (ille nimirum quem fecerat
rex Aſa propter Baaſam regem Iſraelis)
hunc implevit Iſmael vulneratis.
Et abduxit Iſmael totum populum qui 10
remanſerat in Miſephi, & filias regis
quas remiſerat princeps coquorum ad Godoliam
filium Achicami: deinde fugit ad
alteram partem filiorum Ammon. Audiens 11
autem Jonan Careæ filius omnéſque
duces exercitûs qui erant cum eo,
cuncta mala quæ fecerat Iſmael; Adduxerunt 12
omnes copias ſuas, & venerunt
ad oppugnandum eum, & invenerunt
eum ſecus aquam copioſam in Gabaone.
Et factum eſt, cùm vidiſſet 13
omnis ille populus qui erat cum Iſmaele, 14
Jonanem & omnes duces exercitûs qui
cum ipſo erant; redierunt ad Jonanem.
Iſmael autem evadens cum octo hominibus, 15
fugit ad Ammonitas. Jonan verò 16
& omnes duces exercitûs qui erant cum
ipſo, tulerunt omnes populi reliquias quæ
regreſſæ fuerant ab Iſmaele, viros in bello
robuſtos, & fœminas, reliquias, atque
eunuchos quos è Gabaone reduxerant:
Et fugientes ſederunt in terra Biroth- 17
chamam quæ eſt prope Beth-lehem; ut 18
irent, & ingrederentur Ægyptum à facie
Chaldæorum: timebant enim illos, eò
quòd Iſmael percuſſiſſet Godoliam quem
præfecerat rex Babelis in terra.

,ſaccis vos accingite ; Rabbah *filiæ* clamate ; Hai eſt vaſtata quia ,Cheſbon Ulula
הֵילִילִי חֶשְׁבּוֹן כִּי שֻׁדְּדָה־עַי צְעַקְנָה בְּנוֹת רַבָּה חֲגֹרְנָה שַׂקִּים 3
,ej⁹ ſacerdotes, abiit tráſmigrationē in eorū rex quia *:maceriis in* *oberrate* & ,plangite
סְפֹדְנָה וְהִתְשׁוֹטַטְנָה בַּגְּדֵרוֹת כִּי מַלְכָּם בַּגּוֹלָה יֵלֵךְ כֹּהֲנָיו
,*refractaria* filia tua vallis fluxit ?vallib⁹ in *gloriaberis* Quid .ſimul ej⁹ principes &
וְשָׂרָיו יַחְדָּיו׃ מַה־תִּתְהַלְלִי בָּעֲמָקִים זָב עִמְקֵךְ הַבַּת הַשּׁוֹבֵבָה 4
ait ,*pavorem* te ſuper *adducens* ego Ecce ? me ad veniet quis ,ſuis theſauris *in* *fidens*
הַבֹּטְחָה בְּאֹצְרֹתֶיהָ מִי יָבוֹא אֵלָי׃ הִנְנִי מֵבִיא עָלַיִךְ פַּחַד נְאֻם־ 5
,*ſuas facies ad* *vir* eritis expulſi & :tuis circuitib⁹ omnib⁹ ab exercituū Dominus Domin⁹
אֲדֹנָי יְהוִה צְבָאוֹת מִכָּל־סְבִיבָיִךְ וְנִדַּחְתֶּם אִישׁ לְפָנָיו
,Hammon ,filiorū captivitatem faciā reverti hæc poſt Et .vagantem *congregans* non &
וְאֵין מְקַבֵּץ לַנֹּדֵד׃ וְאַחֲרֵי־כֵן אָשִׁיב אֶת־שְׁבוּת בְּנֵי־עַמּוֹן 6
?Teman in ſapientia ultrà Eſtne :exercituū Dominus dixit ſic Edom Ad .Domin⁹ dixit
נְאֻם־יְהוָה׃ לֶאֱדוֹם כֹּה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת הַאֵין עוֹד חָכְמָה בְּתֵימָן 7
profundaverunt ,ſunt verſi ,Fugite .eorū ſapientia eſt corrupta , filiis à conſilium periit
אָבְדָה עֵצָה מִבָּנִים נִסְרְחָה חָכְמָתָם׃ נֻסוּ הָפְנוּ הֶעְמִקוּ 8
.*eum viſitabo* tempus,eū ſuper adduxi Heſau *exitiū* quoniā :Dedan habitatores habitādū ad
לָשֶׁבֶת יֹשְׁבֵי דְּדָן כִּי אֵיד עֵשָׂו הֵבֵאתִי עָלָיו עֵת פְּקַדְתִּיו׃
, nocte in fures ſi :racemos relinquent non ,tibi venerint vindemiatores Si
אִם־בֹּצְרִים בָּאוּ לָךְ לֹא יַשְׁאִרוּ עוֹלֵלוֹת אִם־גַּנָּבִים בַּלַּיְלָה 9
,ejus abſcondita revelavi ,Heſau diſcooperui *ego* Quia .*ſuā ſufficientiam corrumpent*
הִשְׁחִיתוּ דַיָּם׃ כִּי־אֲנִי חָשַׂפְתִּי אֶת־עֵשָׂו גִּלֵּיתִי אֶת־מִסְתָּרָיו 10
.*ipſe* non &,ejus vicini &,ejus fratres &,ejus ſemen eſt vaſtatū :poterit non ſe *abſcondens* &
וְנֶחְבָּה לֹא יוּכָל שֻׁדַּד זַרְעוֹ וְאֶחָיו וּשְׁכֵנָיו וְאֵינֶנּוּ׃
dixit ſic Quia .ſperabunt me *ſuper* tuæ viduæ & :vivificabo ego,tuos pupillos Relinque
עָזְבָה יְתֹמֶיךָ אֲנִי אֲחַיֶּה וְאַלְמְנוֹתֶיךָ עָלַי תִּבְטָחוּ׃ כִּי־כֹה אָמַר 11 12
tu & : bibent bibendo ,calicem *bibendum ad* ,*eorum* judicium non quorum Ecce :Dominus
יְהוָה הִנֵּה אֲשֶׁר־אֵין מִשְׁפָּטָם לִשְׁתּוֹת הַכּוֹס שָׁתוֹ יִשְׁתּוּ וְאַתָּה
, juravi me *in* Quia .bibes bibendo ſed ,*liberaberis* non ?*liberaberis liberando* *ipſe*
הוּא נָקֹה תִּנָּקֶה לֹא תִנָּקֶה כִּי שָׁתֹה תִּשְׁתֶּה׃ כִּי בִי נִשְׁבַּעְתִּי 13
erit maledictionē in & ,deſertum in,opprobriū in ,ſolitudinē in quòd ,Dominus dixit
נְאֻם־יְהוָה כִּי־לְשַׁמָּה לְחֶרְפָּה לְחֹרֶב וְלִקְלָלָה תִּהְיֶה
à audivi Auditum .*ſeculi* deſolationes in erunt ejus civitates omnes & :Boſrah
בָצְרָה וְכָל־עָרֶיהָ תִּהְיֶינָה לְחָרְבוֹת עוֹלָם׃ שְׁמוּעָה שָׁמַעְתִּי מֵאֵת 14
.prælium in conſurgite &,eā *ſuper* venite &,vos Cōgregate:miſſus gentes in legat⁹ & ,Dñs
יְהוָה וְצִיר בַּגּוֹיִם שָׁלוּחַ הִתְקַבְּצוּ וּבֹאוּ עָלֶיהָ וְקוּמוּ לַמִּלְחָמָה׃
, te decepit *tuus Terror* .homines inter contemptū :gentes inter te dabo *parvum* ecce Nam
כִּי־הִנֵּה קָטֹן נְתַתִּיךָ בַּגּוֹיִם בָּזוּי בָּאָדָם׃ תִּפְלַצְתְּךָ הִשִּׁיא אֹתָךְ 15 16
exaltaveris cùm:collis altitudinē *apprehēdens* ,*rupis foraminib⁹* in *habitās*,tui cordis ſuperbia
זְדוֹן לִבֶּךָ שֹׁכְנִי בְּחַגְוֵי הַסֶּלַע תֹּפְשִׂי מְרוֹם גִּבְעָה כִּי־תַגְבִּיהַּ
Edom erit Et .Dominus dixit ,te faciā deſcendere inde ,tuū nidum aquila veluti
כַּנֶּשֶׁר קִנֶּךָ מִשָּׁם אוֹרִידְךָ נְאֻם־יְהוָה׃ וְהָיְתָה אֱדוֹם 17
.ejus plagas omnes ſuper ſibilabit & ,ſtupebit ,eam *ſuper* *tranſiens* omnis : ſolitudinē in
לְשַׁמָּה כֹּל עֹבֵר עָלֶיהָ יִשֹּׁם וְיִשְׁרֹק עַל־כָּל־מַכּוֹתֶהָ׃
ibi habitabit non :Dominus ait ,ejus vicinas &,Hamorah &,Sedom ſubverſionē Secūdùm
כְּמַהְפֵּכַת סְדֹם וַעֲמֹרָה וּשְׁכֵנֶיהָ אָמַר יְהוָה לֹא־יֵשֵׁב שָׁם 18
Jarden elevatione de aſcēdet leo tanquā Ecce .hominis filius *ea in hoſpitabitur* non & , *vir*
אִישׁ וְלֹא־יָגוּר בָּהּ בֶּן־אָדָם׃ הִנֵּה כְּאַרְיֵה יַעֲלֶה מִגְּאוֹן הַיַּרְדֵּן 19
,electus quiſquis & ,ea ab eū faciā accurrere ,faciā quieſcere quia *: robuſti* habitaculū ad
אֶל־נְוֵה אֵיתָן כִּי־אַרְגִּיעָה אֲרִיצֶנּוּ מֵעָלֶיהָ וּמִי בָחוּר
paſtor iſte quis & ?tempus mihi præſcribet quis & ,ego ſicut quis nam :præficiam *eam ad*
אֵלֶיהָ אֶפְקֹד כִּי מִי כָמוֹנִי וּמִי יֹעִידֶנִּי וּמִי־זֶה רֹעֶה
, Edom *ad conſultavit* quod ,Domini conſiliū audite Propterea ?*meas facies ad* ſtet qui
אֲשֶׁר יַעֲמֹד לְפָנָי׃ לָכֵן שִׁמְעוּ עֲצַת־יְהוָה אֲשֶׁר יָעַץ אֶל־אֱדוֹם 20
parvuli eos traxerint non ſi : Teman habitatores *ad* cogitavit quas ej⁹ cogitationes &
וּמַחְשְׁבוֹתָיו אֲשֶׁר חָשַׁב אֶל־יֹשְׁבֵי תֵימָן אִם־לֹא יִסְחָבוּם צְעִירֵי
,eorū *vox ei audita* *Suph* mari in clamor : terra eſt commota *eorum cadere* voce A .eorū habitacula eis *ſuper* deſolaverit non ſi , *pecoris*
הַצֹּאן אִם־לֹא יַשִּׁים עֲלֵיהֶם נְוֵהֶם׃ מִקּוֹל נִפְלָם רָעֲשָׁה הָאָרֶץ צְעָקָה בְּיַם־סוּף נִשְׁמַע קוֹלָהּ׃ 21

Verſio VULG. LAT.

3 Ulula Heſebon, quoniam vaſtata
eſt Hai: clamate filiæ Rabbath, accingite vos ciliciis : plangite &
circuite ꝑ ſepes : quoniam Melchom in tranſmigrationem ducetur,
ſacerdotes ejus & principes
4 ejus ſimul. Quid gloriaris in vallib⁹? defluxit vallis tua, filia delicata,
quæ confidebas in theſauris
tuis, & dicebas ; Quis veniet ad
5 me? Ecce ego inducā ſuꝑ te terrorem,
ait Dñs Deus exercituū, ab
omnib⁹ qui ſunt in circuitu tuo :
& diſpergemini ſinguli à conſpectu
veſtro, nec erit qui congreget
6 fugientes. Et poſt hæc reverti faciam
captivos filiorū Ammon, ait
7 Dñs. Ad Idumæā. Hæc dicit Dñs
exercituum ; Numquid non ultrà
eſt ſapientia in Theman ? Periit
conſilium à filiis, inutilis facta eſt
8 ſapientia eorum. Fugite & terga
vertite: deſcendite in voraginem,
habitatores Dedan : quoniā perditionē
Eſau adduxi ſuꝑ eū, tem-
9 pus viſitationis ejus. Si vindemiatores
veniſſent ſuper te, non reliquiſſent
racemū: ſi fures in nocte,
rapuiſſent quod ſufficeret ſibi.
10 Ego verò diſcooperui Eſau, revelavi
abſcondita ej⁹, & celari non
poterit: vaſtatū eſt ſemen ejus, &
fratres ejus, & vicini ejus, & non
11 erit. Relinque pupillos tuos: ego
faciā eos vivere: & viduæ tuæ in
12 me ſperabūt. Quia hæc dicit Dñs ;
Ecce quib⁹ non erat judicium ut
biberent calicē, bibentes bibent:
& tu quaſi innocens relinquêris?
non eris innocens, ſed bibens bi-
13 bes. Quia ꝑ memetipſū juravi,
dicit Dñs, quòd in ſolitudinē, &
in opprobriū, & in deſertū, & in
maledictionem erit Boſra : et omnes
civitates ejus erunt in ſoli-
14 tudines ſempiternas. Auditū audivi
à Dño, & legatus ad Gentes
miſſus eſt: Congregamini, & venite
contra eam, & conſurgamus
15 in prælium: Ecce enim parvulū
dedi te in Gentib⁹, contemptibi-
16 lem inter homines. Arrogantia
tua decepit te, & ſuperbia cordis
tui: qui habitas in cavernis petræ,
& apprehendere niteris altitudinē collis: cùm exaltaveris quaſi aquila nidum tuum, indè de-
17 traham te, dicit Dñs. Et erit Idumæa deſerta: omnis qui tranſibit ꝑ eam, ſtupebit, & ſibilabit
18 ſuꝑ omnes plagas ejus. Sicut ſubverſa eſt Sodoma, & Gomorrha, & vicinæ ej⁹, ait Dñs: non
19 habitabit ibi vir, & non incolet eam fili⁹ hominis. Ecce quaſi leo aſcendet de ſuperbia Jordanis
ad pulchritudinē robuſtā: quia ſubitò currere faciā eū ad illā: et quis erit elect⁹, quē præponā
ei? quis enim ſimilis mei ? & quis ſuſtinebit me? & quis eſt iſte paſtor, qui reſiſtat vultui
20 meo? Propterea audite conſiliū Dñi, ꝙ iniit de Edom; & cogitationes ej⁹, quas cogitavit de
habitatorib⁹ Theman: Si non dejecerint eos parvuli gregis, niſi diſſipaverint cum eis habi-
21 taculū eorum. A voce ruinæ eorum commota eſt
terra : clamor in mari rubro audit⁹ eſt vocis ej⁹.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

Cap. 42. ΚΕΦ. μθʹ.

1 Vulg. Lat. ΚΑὶ προσῆλθον πάντες
οἱ ἡγεμόνες τῆς δυνάμεως, καὶ (α)
Ἰωάναν, καὶ Ἀζαρίας υἱὸς (β) Μαασαίου,
καὶ πᾶς ὁ λαὸς ἀπὸ μικροῦ
2 (γ) καὶ ἕως μεγάλου, Πρὸς Ἱερεμίαν
τὸν προφήτην, καὶ εἶπαν αὐτῷ, (*) Πεσέτω
δὴ τὸ ἔλεος ἡμῶν κατὰ πρόσωπόν
σου, καὶ πρόσευξαι πρὸς κύριον
τὸν θεόν σου περὶ τῶν καταλοίπων
τούτων· ὅτι κατελείφθημεν ὀλίγοι
ἀπὸ πολλῶν, καθὼς οἱ ὀφθαλμοί
3 σου βλέπουσι. Καὶ ἀναγγειλάτω ἡμῖν
κύριος ὁ (δ) θεός σου τὴν ὁδὸν ᾗ
πορευσόμεθα ἐν αὐτῇ, καὶ λόγον ὃν
4 ποιήσομεν. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς Ἱερεμίας,
Ἤκουσα· ἰδοὺ ἐγὼ (*) προσεύξομαι
ὑπὲρ ὑμῶν πρὸς κύριον τὸν
θεὸν ἡμῶν, κατὰ τοὺς λόγους ὑμῶν· καὶ
ἔσται, ὁ λόγος ὃν (ε) ἂν ἀποκριθήσεται
κύριος ὁ θεός, ἀναγγελῶ ὑμῖν,
5 οὐ μὴ κρύψω ἀφ᾽ ὑμῶν ῥῆμα. Καὶ
αὐτοὶ εἶπαν τῷ Ἱερεμίᾳ, Ἔστω
κύριος (ζ) ἐν ἡμῖν εἰς μάρτυρα δίκαιον
καὶ πιστόν, εἰ μὴ κατὰ πάντα τὸν
λόγον, (η) ὃν ἐὰν ἀποστείλῃ κύριος
πρὸς ἡμᾶς, (θ) οὕτως ποιήσωμεν.
6 Καὶ ἐὰν ἀγαθὸν καὶ ἐὰν κακόν, τῆς
φωνῆς κυρίου τοῦ θεοῦ ἡμῶν, οὗ ἡμεῖς
ἀποστέλλομέν σε πρὸς αὐτόν, ἀκουσόμεθα,
ἵνα βέλτιον ἡμῖν γένηται,
ὅτι ἀκουσόμεθα τῆς φωνῆς κυρίου τοῦ θεοῦ
7 ἡμῶν. Καὶ ἐγενήθη μετὰ ἡμέρας δέκα,
ἐγενήθη λόγος κυρίου πρὸς Ἱερεμίαν.
8 Καὶ ἐκάλεσε τὸν Ἰωάναν, καὶ (*)
τοὺς ἡγεμόνας τῆς δυνάμεως, καὶ πάντα
τὸν λαὸν ἀπὸ μικροῦ (ι) καὶ ἕως
9 μεγάλου, Καὶ εἶπεν αὐτοῖς, Οὕτως
10 εἶπε κύριος, Ἐὰν καθίσαντες καθίσητε
ἐν τῇ γῇ ταύτῃ, οἰκοδομήσω
ὑμᾶς, καὶ οὐ μὴ καθελῶ, καὶ φυτεύσω
ὑμᾶς, καὶ οὐ μὴ ἐκτίλω, ὅτι
ἀναπέπαυμαι (κ) ἐπὶ τοῖς κακοῖς
οἷς ἐποίησα ὑμῖν.

CAP. XLIX.

ET acceſſerunt omnes 1
*duces virtutis, & Joanan,
& Azarias filius
Maſia, & omnis populus
à parvo & uſque ad magnū,
Ad Hieremiam prophetam:
& dixerunt ei ;* 2
*Cadat nunc miſericordia
noſtra ante faciem tuam:
& ora ad Dominum Deum
tuum pro reſiduis his:
quia relicti ſumus pauci
è multis ; ſicut oculi tui
(a) vident. Et annuntiet* 3
*nobis Dominus Deus tuus
viam, quā ibimus in ea,
et verbum, quod faciemus.
Et dixit eis Hieremias,* 4
*Audivi: Ecce ego
orabo pro vobis ad Dominum
Deum noſtrum ſecundùm
verba veſtra: et
erit, verbum quodcunque
reſpondebit Dominus Deus,
annuntiabo vobis: non
celabo à vobis verbum.
Et ipſi dixerūt Hieremiæ;* 5
*Sit Dominus in nobis in
teſtem juſtum, et fidelem;
ſi non juxta omne verbum,
quod miſerit Dominus
ad nos, ſic fecerimus:
Et ſive bonū, et ſive ma-* 6
*lum ; vocem Domini Dei
noſtri, ad quem nos mittimus
te ad eum, audiemus:
ut meliùs nobis fiat,
quia audiemus vocem
Domini Dei noſtri. Et fa-* 7
*ctum eſt poſt dies decem,
factum eſt verbum Domini
ad Hieremiam. Et* 8
*vocavit Joanan, et duces
virtutis, et univerſum
populum à parvo et uſque
ad magnum : Et di-* 9
*xit eis, Sic dixit (b) Dominus;
Si ſedentes ſede-* 10
*ritis in terra hac; ædificabo
vos, et non deſtruam :
et plantabo vos, et non evellā:
quia requievi ſuper
malis, quæ (c) feci vobis.*

MS.A. (α) Ἰωάνναν, (β) Μασαίου, (γ) ἕως μεγάλου, ἐπὶ Ἱερεμίαν (*) Πεσάτω (δ) θεὸς τὴν ὁδὸν ἐν ᾗ (*) προσεύξομαι πρὸς (ε) ἀποκριθήσεται κύριος, ἀναγγελῶ (ζ) ἡμῖν (η) ὃν ἀπέστειλεν (θ) οὐ ποιήσομεν. (*) πάντας τοὺς (ι) ἕως (κ) ἀπὸ τῶν κακῶν οἷς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

אֵילִילוּ יָתְבֵי חֶשְׁבּוֹן אֲרֵי אִתְבְּזִיזַת עַי צְוַחוּ יָתְבֵי כַּפְרָנֵי רַבָּה אֱסַרוּ סַקִּין סְפוּדוּ 3
וְאִתְחַמָּמוּ בְּסִיעָן אֲרֵי מַלְכְּהוֹן בְּגָלוּתָא יְהָךְ פַּלְחוֹהִי וְרַבְרְבוֹהִי כַּחֲדָא : מָה אַתְּ 4
מִשְׁתַּבַּח בְּמֵישְׁרָךְ חֲרוּבוּ תוּקְפָּךְ מַלְכוּתָא טַפְשְׁתָּא דְמִתְרַחֲצָא בְּבֵית גִּנְזָהָא אָמְרָא מַן
יֵעוּל עֲלָי : הָא אֲנָא מַיְתֵי עֲלָךְ דַּחֲלָא אָמַר יְיָ אֱלֹהִים צְבָאוֹת מִכָּל סַחְרָנָךְ וְתִתְבַּדְּרוּן 5
גְּבַר לָקֳבֵיל אַפּוֹהִי וְלֵית דִּמְכַנֵּישׁ לִמְבַדְּרַיָּא : וּבָתַר כֵּן אָתֵיב יַת גָּלוּת בְּנֵי עַמּוֹן אָמַר יְיָ : 6
לֶאֱדוֹם כִּדְנַן אָמַר יְיָ צְבָאוֹת הֲלֵית עוֹד חוּכְמָא בְּדָרוֹמָא פְּסַק מַלְכָּא מִבְּנַיָּא אִתְקַלְקְלַת 7
חוּכְמַתְהוֹן : עֲרוּקוּ גְּלוֹ אַרְחִיקוּ לְמִתַּב יָתְבֵי דְדָן אֲרֵי תְבִיר עֵשָׂו אַיְתֵיתִי עֲלוֹהִי עִדָּן 8
סְעוֹרַת חוֹבוֹהִי : אִם חָטוֹפִין כִּקְטוֹפִין אֲתוֹ עֲלָךְ לָא אַשְׁאֲרוּ עוֹלְלָן אִם גַּנָּבַיָּא בְּלֵילְיָא 9
חַבִּילוּ מִסַּתְהוֹן : אֲרֵי אֲנָא אַיְתֵיתִי בָלוֹשִׁין עַל עֵשָׂו גַּלֵּיתִי יַת מַטְמְרוֹהִי דְּאִם יִבְעֵי 10
לְאִטַּמְרָא לָא יִכּוֹל אִתְבְּזִיזוּ בְנוֹהִי וַאֲחוֹהִי וְקָרִיבוֹהִי וְלֵיתְנוּן : אַתּוּן בֵּית יִשְׂרָאֵל לָא 11
תִשְׁתַּבְקוּן יַתְמֵיכוֹן אֲנָא אֲקַיֵּם וְאַרְמְלָתְכוֹן עַל מֵימְרִי יִתְרַחֲצָן : אֲרֵי כִדְנַן אָמַר יְיָ הָא 12
דְּלָא חֲזֵי לְהוֹן לְמִשְׁתֵּי כָּסָא דְלוּטָא מִשְׁתָּא יִשְׁתּוֹן וְאַתּוּן מִדְמַן דִּמְזַכָּא תִזְכּוֹן לָא תִזְכּוֹן
אֲרֵי מִשְׁתָּא תִשְׁתּוֹן : אֲרֵי בְמֵימְרִי קַיֵּמִית אָמַר יְיָ אֲרֵי לְצָדוּ לְחִסּוּדִין לְחוֹרֶב וּלְלוּטָא 13
תְּהֵי בָצְרָה וְכָל קִרְוָהָא יֶהֶוְיָן לְחוֹרְבָּא לְעָלַם : בְּסוֹרָא שְׁמַעִית מִן קֳדָם יְיָ וְאִזְגַּד 14
בְּעַמְמַיָּא שְׁלִיחַ אִתְכַּנִּישׁוּ וַאֲתוֹ עֲלַהּ וְקוּמוּ לַאֲגָחָא קְרָבָא : אֲרֵי הָא חַלָּשׁ יְהַבְתָּךְ 15
בְּעַמְמַיָּא בְּסִיר בִּבְנֵי אֱנָשָׁא : טִפְשׁוּתָךְ אַטְעִיאַת יָתָךְ רֶשַׁע לִבָּךְ דְּאַתְּ דָּמֵי לְנִשְׁרָא דְּשָׁרֵי 16
בְּשִׁנֵּי כֵּיפַיָּא מוֹתְבֵיהּ בִּתְקוֹף רוּמָא אֲרֵי תָרִים כְּנִשְׁרָא מְדוֹרָךְ מִתַּמָּן בְּמֵימְרִי אַחֲתִנָּךְ
אָמַר יְיָ : וּתְהֵי אֱדוֹם לְצָדוּ כָּל דְּיֶעְבַּר עֲלַהּ יִכְלֵי וִינִיד עַל כָּל מַחְתַּהָא : כְּהַפֵּכְתָּא 17
דִּסְדוֹם וַעֲמוֹרָה וְקָרִיבַהָא אָמַר יְיָ לָא יְתֵיב תַּמָּן אֱנָשׁ וְלָא יִתּוֹתַב בַּהּ בַּר אֱנָשׁ : הָא מֶלֶךְ 18 19
בְּמַשְׁרְיָתֵיהּ יִסַּק עֲלֵיהוֹן כְּאַרְיָא דְּסָלֵיק מֵרוּם יַרְדְּנָא וַהֲוֵי לְדִיר רָעַיָּן אֲרֵי בִזְמַן אַיְתִנּוּן
עֲלַהּ וְשִׁלְטוֹנִין אֲמַנֵּי עֲלַהּ אֲרֵי מַן כְּוָתִי וּמַן דְּיַעַרְעִנַּנִי וְלֵית מֶלֶךְ דְּאִית לֵיהּ תְּקוֹף קֳדָמַי :
בְּכֵן שְׁמַעוּ מִלְּכָּא דַּייָ דִּמְלַךְ עַל אֱדוֹם וּמַחְשַׁבְתֵּיהּ דְּחַשֵּׁיב עַל יָתְבֵי אַרְעָא דָרוֹמָא אִם 20
לָא יִגְרְרוּן וִיקַטְּלוּן תַּקִּיפֵי עַמָּא אִם לָא יִצְדוּן עֲלֵיהוֹן מְדוֹרֵיהוֹן : מִקָּל מַפַּלְתְּהוֹן זָעַת 21
אַרְעָא צְוָחְתָא בְּיַמָּא דְסוּף אִשְׁתְּמַע קָלְהוֹן :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ululate habitatores Heſbon; quia direpta eſt Hai: clamate habitatores vil- 3
larum Rabbah, accingite ſaccos, plangite & lacerate vos in turbis ; quia
rex eorū in tranſmigrationem ibit, miniſtri ej⁹, & principes ej⁹ ſimul. Quid 4
tu gloriaris in valle tua? Deſolata eſt fortitudo tua, regnū inſipiēs, quod confidebat
in domo theſaurorū ſuorum, & dicebat : Quis ingredietur ad me ?
Ecce ego inducam ſuꝑ te timorem, dicit Dñs Deus exercituum, ab omnib⁹ 5
qui in circuitu tuo ſunt ; & diſpergemini unuſquiſq; contra faciem ſuam ;
& non erit qui congreget diſperſos. Et poſt hæc reducam tranſmigrationē 6
filiorū Ammon, dicit Dñs. Ad Idumæam. Hæc dicit Dñs exercituū: An non 7
adhuc eſt ſapientia in Meridie? ceſſavit conſiliū à filiis, corrupta eſt ſapientia
eorū. Fugite, migrate, longè recedite ut habitetis habitatores Dedan ; 8
quia interitū Eſau induxi ſuꝑ eum, tempus viſitationis peccatorū ejus. Si 9
deprædatores quaſi vindemiatores veniſſent ſuꝑ te, num reliquiſſent racemos?
nónne latrones in nocte diripuiſſent quod ſibi ſuffeciſſet ? Quia ecce 10
ego adducam ſcrutatores contra Eſau, revelavi abſcondita ejus : quòd ſi
quæſierit abſcondi, non poterit. Vaſtati ſunt filii ejus, & fratres ejus, & proximi
ejus, & non erunt. Vos autē domus Iſrael, non relinquentur orphani 11
veſtri, ego enim ſuſtentabo eos ; & viduæ veſtræ in verbo meo ſperabunt.
Quia hæc dicit Dñs : Ecce quorū non erat bibere calicē maledictionis, bibendo 12
bibent : & vos putatis omnino eſſe innocentes? non eritis innocentes,
quia bibendo bibetis. Quia in verbo meo juravi, dicit Dñs : quia in deſolationē, 13
& in opprobria, & in ſolitudinē, & in maledictionē erit Boſra,
& oēs urbes ejus erunt in ſolitudinē in æternū. Nuntiū audivi à facie Dñi, 14
& legatus in populis miſſus eſt : Congregamini, & venite contra eam, &
ſurgite ad præliandū. Quia ecce infirmū poſui te in populis; contemptibilē 15
in filiis hominū. Inſipientia tua ſeduxit te, malitia cordis tui: tu enim ſimilis 16
es aquilæ, quæ habitat in ſcopulis petrarū, in fortitudine excelſa habitatio
ejus. Si exaltaveris quaſi aquila habitaculū tuū, inde verbo meo detraham
te, dicit Dñs. Et erit Idumæa in ſolitudinē : omnis qui tranſierit per eam 17
clamabit, & movebit caput ſuū ob oēs plagas ej⁹. Juxta ſubverſionē Sodomæ 18
& Gomorræ, & vicinorū ejus, dicit Dñs: non ſedebit ibi homo, nec habitabit
in ea filius hominis. Ecce rex cum exercitu ſuo aſcendet contra eos, 19
ſicut leo qui aſcendit ab altitudine Jordanis, & redigetur in caſam paſtorū,
quia in momento adducam illos adverſùs eam, & dominatores conſtituam
ſuꝑ eam ; quia quis eſt ſicut ego? & quis occurret mihi? Et non eſt rex qui
habeat fortitudinē coram me. Propterea audite conſiliū Dñi, quod conſultavit 20
contra Idumæam, & cogitationes ejus quas cogitavit contra habitatores
terræ Auſtri, Si non detrahant, & occidant fortes populi, ſi non deſolabuntur
ſuper eos habitacula eorum. A voce ruinæ eorum contremuit terra, clamor in mari carectoſo, audita eſt vox *eorum*. 21

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܐܝܠܠܝ ܚܫܒܘܢ܂ ܡܛܠ ܕܐܬܒܙܙܬ ܥܝ܂ ܓܥܘ ܩܘܪܝܬܐ ܕܪܒܬ܂ ܐܠܒܫܘ ܣܩܐ܂ ܘܪܩܘܕܘ 3
ܘܐܬܟܬܫܘ ܒܣܝܓܐ܂ ܡܛܠ ܕܡܠܟܘܡ ܒܫܒܝܬܐ ܢܐܙܠ܂ ܘܟܘܡܪܘܗܝ ܘܪܘܪܒܢܘܗܝ ܐܟܚܕܐ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ * ܡܢܐ ܡܫܬܒܗܪܐ ܒܥܘܡܩܝܟܝ ܒܚܘܠܩܝܟܝ܂ ܘܡܬܬܟܠܐ ܥܠ ܕܡܬܒܝܐܝܢ ܒܪܬܐ 4
ܫܒܝܒܬܐ ܕܬܟܠܬ ܥܠ ܓܙܝܗ ܘܐܡܪܐ܂ ܡܢܘ ܢܐܬܐ ܥܠܝ܂ * ܗܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟܝ ܕܚܠܬܐ܂ 5
ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܚܕܪܝܟܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ܂ ܘܐܒܕܪ ܐܢܘܢ ܓܒܪ ܠܘܩܒܠ ܚܒܪܗ܂ ܘܠܝܬ ܕܡܟܢܫ 6
ܠܡܒܕܪܐ܂ * ܘܡܢ ܒܬܪ ܗܟܢ ܐܗܦܟ ܫܒܝܬܐ ܕܒܢܝ ܥܡܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂

* ܥܠ ܐܕܘܡ *

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ܂ ܠܡܢܐ ܠܝܬ ܚܟܡܬܐ ܒܬܝܡܢ܂ ܐܒܕܬ ܡܠܟܐ ܡܢ ܣܘܟܠܬܢܐ܂ 7
ܐܣܬܪܚܬ ܚܟܡܬܗܘܢ܂ * ܥܪܩܘ ܘܐܬܗܦܟܘ ܘܥܡܩܘ ܠܡܬܒ ܥܡܘܪܐ ܕܕܕܢ܂ ܡܛܠ ܕܬܒܪܗ 8
ܕܥܣܘ ܐܝܬܝܬ ܥܠܘܗܝ܂ ܒܙܒܢܐ ܕܣܥܪܬܗ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ * ܐܢ ܩܛܘܦܐ ܐܬܘ ܥܠܝܟܝ܂ ܠܐ 9
ܡܫܒܩܝܢ ܗܘܘ ܩܛܦܬܐ܂ ܘܐܢ ܓܢܒܐ ܒܠܠܝܐ ܢܚܒܠܘܢ ܐܝܟ ܕܨܒܘ܂ * ܐܢܐ ܓܠܝܬ ܠܥܣܘ܂ ܘܓܠܝܬ 10
ܟܣܝܬܗ ܘܡܬܛܫܐ܂ ܘܠܐ ܢܫܟܚ܂ ܘܐܬܒܙܪ ܙܪܥܗ ܘܐܚܘܗܝ ܘܫܒܒܘܗܝ܂
ܘܠܝܬ ܠܗ܂ * ܫܒܘܩ ܝܬܡܝܟ ܐܢܐ ܐܚܐ܂ ܘܐܪܡܠܬܟ ܥܠܝ ܢܬܬܟܠܢ܂ * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ 11 12
ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܗܐ ܕܠܐ ܕܝܢ ܗܘܐ ܠܗܘܢ ܠܡܫܬܐ ܟܣܐ܂ ܡܫܬܐ ܫܬܘ܂ ܘܐܢܬ ܡܙܟܐ ܬܙܕܟܐ܂ ܠܐ
ܠܐ ܬܙܕܟܐ܂ ܐܠܐ ܡܫܬܐ ܬܫܬܐ܂ * ܡܛܠ ܕܒܝ ܝܡܝܬ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܕܠܫܡܡܐ ܘܠܚܘܪܒܐ 13
ܘܠܚܣܕܐ ܘܠܠܘܛܬܐ ܬܗܘܐ ܒܘܨܪܐ܂ ܘܟܠܗܝܢ ܩܘܪܝܗ ܢܗܘܝܢ ܠܚܘܪܒܐ ܕܠܥܠܡ܂ * ܫܡܥܬܐ 14
ܫܡܥܬ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ܂ ܘܐܝܙܓܕܐ ܠܥܡܡܐ ܫܕܪ܂ ܩܘܡܘ ܢܩܘܡ ܥܠܝܗ ܠܩܪܒܐ܂
* ܡܛܠ ܕܗܐ ܙܥܘܪܐ ܝܗܒܬܟ ܒܥܡܡܐ܂ ܘܡܫܝܛܐ ܒܝܬ ܒܢܝ ܐܢܫܐ܂ * ܒܨܝܪܘܬܟ ܐܛܥܝܬܟ 15
ܘܡܪܚܘܬܗ ܕܠܒܟ܂ ܕܫܪܐ ܒܫܩܝܦܐ ܕܟܐܦܐ܂ ܘܐܚܝܕ ܪܘܡܐ ܕܪܡܬܐ܂ ܘܐܡܪ ܒܠܒܟ ܡܢܘ 16
ܢܚܬܢܝ ܠܐܪܥܐ܂ ܐܢ ܬܣܝܡ ܒܟܘܟܒܐ ܩܢܟ܂ ܘܐܢ ܬܪܝܡ ܐܝܟ ܢܫܪܐ ܩܢܟ܂ ܡܢ ܬܡܢ
ܐܚܬܟ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ * ܘܬܗܘܐ ܐܕܘܡ ܠܚܘܪܒܐ܂ ܘܟܠ ܕܥܒܪ ܥܠܝܗ܂ ܢܬܕܡܪ ܘܢܫܪܘܩ 17
ܥܠ ܟܠܗܝܢ ܡܚܘܬܗ܂ * ܘܬܬܗܦܟ ܐܝܟ ܕܐܬܗܦܟܬ ܣܕܘܡ ܘܥܡܘܪܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܠܐ 18
ܢܬܒ ܬܡܢ ܐܢܫ܂ ܘܠܐ ܢܥܡܪ ܬܡܢ ܒܪܢܫܐ܂ * ܗܐ ܐܝܟ ܐܪܝܐ ܢܣܩ ܡܢ ܥܒܝܐ ܕܝܘܪܕܢܢ 19
ܠܡܕܝܪܐ ܕܐܝܬܢ܂ ܘܒܪܦܦ ܥܝܢܐ ܐܛܪܕ ܐܢܘܢ ܡܢܗ܂ ܘܠܥܠܝܡܐ ܐܫܠܛ ܥܠܝܗ܂ ܡܢܘ ܓܝܪ ܐܟܘܬܝ܂
ܘܡܢܘ ܢܩܒܠܢܝ܂ ܘܡܢܘ ܪܥܝܐ ܕܢܩܘܡ ܩܕܡܝ܂ * ܡܛܠ ܗܢܐ ܫܡܥܘ ܡܠܟܗ ܕܡܪܝܐ 20
ܕܡܠܟ ܥܠ ܐܕܘܡ܂ ܘܡܚܫܒܬܗ ܕܐܬܚܫܒ ܥܠ ܥܡܘܪܝ ܬܝܡܢ܂ ܕܢܓܪܘܪܘܢ ܐܢܘܢ
ܨܥܘܪܐ ܕܥܢܐ܂ ܘܢܚܪܒܘܢ ܥܠܝܗܘܢ ܡܕܝܪܗܘܢ܂ * ܡܢ ܩܠ ܡܦܘܠܬܗܘܢ ܐܬܙܝܥܬ ܐܪܥܐ܂ 21
ܘܩܠ ܓܥܬܗܘܢ ܡܢ ܝܡܐ ܕܣܘܦ ܐܫܬܡܥ܂

3 Ululet Heſbon, quia contrita eſt Ai: vociferamini rura Rabath, accingimini ciliciis, plangite, & alter in alterum dimicate: quia Malchom ibit in captivitatem unà cum ſacerdotibus & principibus ſuis, ait Dominus. 4 Quid gloriaris de vallibus tuis, & convallib⁹ tuis confidis filia dilecta, quæ ſpem collocas in theſauris tuis, ac dicis, Quis invaderet me? 5 Ecce ego inductur⁹ ſum ſuper te pavorem undequaque, dicit Domin⁹ potentiſſim⁹, & diſpergam eos quemque ſeorſim, nec erit qui diſperſos congreget. 6 Sed poſtmodum reducam captivos Ammonitarum, dicit Dñs.

Contra Edom.

7 Sic ait Domin⁹ potentiſſim⁹, Nulla ſupereſt ſapientia in Theman, periit conſilium à prudentib⁹, ablata eſt ſapientia eorum: 8 Fugerunt, terga verterunt, & ima petierunt ut habitarent incolæ Daranis; quia contritionem Eſau inducam ſuper eum, quo tempore viſitabo illum, dicit Domin⁹. 9 Si te vindemiatores invaderent, an non relinquerent racemationem? vel ſi fures noctu, num vaſtarent prout vellent? 10 At ego ſcrutabor Eſau, & publica faciam abdita ipſi⁹: abdet ſe, & non invenietur: diſpergetur ſemen ej⁹, & fratres, ac vicini ej⁹, ita ut non extent. 11 Deſine, pupillos tuos ego ſervabo vivos, & viduæ tuæ mihi confidant. 12 Nam ſic dicit Domin⁹, Ecce ii quos æquum non erat calicem hunc bibere, biberunt: tu autem impunem te fore crederes? nequaquam eris impunis, ſed tu quoq; calicem bibes. 13 Nam per me juro, dicit Domin⁹, ſtupori, vaſtitati, ignominiæ, & execrationi fore Boſarem; & omnes civitates ej⁹ in perpetuam deſolationem redigendas. 14 Rumorem audivi à Domino, & legatus ad gentes miſſus eſt, *dicens*; Surgite, invadam⁹ eam prælio. 15 Nam ecce parvum te redditurus ſum inter gentes, & abjectum inter mortales. 16 Iniquitas tua & arrogantia animi tui te fallit ô qui habitas in rupe petræ, verticem tenes collis, & apud temetipſũ dicis, Quis me in terrã devolvat? Etiamſi inter ſidera collocares nidũ tuum, & elevares ut aquila nidum tuum; inde te devolverem, ait Dñs: 17 Eritque Edom deſolationi, & quicunque ſecus eam tranſierit, obſtupeſcet, & ſibilabit propter tantas plagas ej⁹. 18 Subvertetur enim quemadmodum ſubvertit Deus Sodomam & Gomorram, ait Dominus: Non habitabit ibi quiſquam, nec quiſquam mortalium commorabitur illic. 19 Ecce ſicut leo aſcendet è robore Jordanis in habitaculum Ethan, & brevi expellam eos ex ipſa; juvenibus enim poteſtatem dabo ſuper ipſam. Nam quis mihi par eſt? aut quis me commonefaciat? aut quis eſt paſtor qui mihi reſiſtat? 20 Idcirco audite conſilium Domini quod cepit contra Edom, & cogitationem ejus quam cogitavit contra habitatores Theman: Raptandos eos eſſe à viliſſimis inter gregem, & ab his evertendam ſuper eos habitationem eorum: 21 A fragore caſûs eorum concutiendam terram, vocem ululatûs eorum ex mari Suph audiendam.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* الفصل التاسع والاربعون * وتقدم جميع قواد الجيش ويوان وعزاريا بن 1
ماساو * وجميع الشعب من صغيرهم الي كبيرهم الي ارميا النبي * وقالوا له ليهبط رحمتنا 2
لوجهك * فصلي الي الرب الهك من اجل هذه البقايا * لانا بقينا قليلون من كثيرين
كما تنظر عينك * فليخبر لنا الرب الاله الطريق التي نسير اليها والقول الذي نصنعه * 3
* فقال لهم ارميا * سمعت ها انا اصلي الي الرب الهنا ككلماتكم * ويكون القول 4
الذي يجاوبني به الرب به اخبركم ولا اخفي عنكم كلمة * وهم قالوا لارميا * ليكن 5
الرب لنا شاهدا عدلا امينا * كل القول الذي يرسله الرب الهنا الينا هكذا نصنع *
* ان كان خيرا وان كان شرا صوت الرب الهنا الذي نحن نرسلك اليه نسمع منه * 6
كي يكون لنا الخير ان سمعنا صوت الرب الهنا * وكان من بعد عشر ايام صار قول 7
الرب الي ارميا * فدعا يوان وجميع قواد الجيش * وكل الشعب من صغيرهم الي كبيرهم 8
وقال لهم * هكذا قال الرب * ان جلستم جالسين في الارض ابنيكم ولا اهدمكم * 9 10
واغرسكم ولا اقلعكم * لاني كففت من الشرور التي صنعتها بكم *

CAP. XLIX.

1 DEinde acceſſerunt omnes duces exercitûs, & Jonan, & Azaria filius Maaſiæ, totuſque populus à minimo ad maximum uſque, ad Jeremiam prophetam; 2 Et dixerunt ei, Tangat te miſericordia noſtri, & ora Dominum Deum tuum pro iſtis reliquiis, (nam pauci remanſimus ex multis, ut vident oculi tui) 3 ut indicet nobis Dominus Deus viam per quam eamus, & rem quam agere debemus. 4 Dixit illis Jeremia; Audivi, ecce ego rogabo Dominum Deum noſtrum ſecundùm verba veſtra; & oraculũ quod reſpondebit mihi Dominus, idem vobis indicabo, nec ullum à vobis verbum abſcondam. 5 Tum ipſi dixerunt Jeremiæ; Sit nobis Dominus teſtis juſtus ac fidelis, nos quemcunque ſermonem miſerit ad nos Dominus Deus noſter, prorſus facturos: 6 Sive bonus fuerit, ſive malus, voci Domini Dei noſtri ad quem nos mittimus te, auſcultabimus; ut bene ſuccedat nobis cùm audierimus vocem Domini Dei noſtri. 7 Poſt decem ergò dies cùm factus eſſet ſermo Domini ad Jeremiam, 8 Advocavit Jonanem, & omnes duces exercitûs, totumque populum à minimo ad maximum, & ait illis; 9 Sic dixit Dominus; 10 Si firmi permanſeritis in hac terra, ædificabo vos & non deſtruam, plantabo vos & non evellam; quia deſtiti à malis quæ intuli vobis.

erit & : Bosrah super suas alas expandet & ;volabit &,ascendet aquila tanquā Ecce
22 הִנֵּה כַנֶּשֶׁר יַעֲלֶה וְיִדְאֶה וְיִפְרֹשׂ כְּנָפָיו עַל־בָּצְרָה וְהָיָה
: Dammesec Ad .*misere* mulieris cor sicut illa die in Edom fortium cor
23 לֵב גִּבּוֹרֵי אֱדוֹם בַּיּוֹם הַהוּא כְּלֵב אִשָּׁה מְצֵרָה׃ לְדַמֶּשֶׂק
:sunt dissoluti,audierūt malum auditū quoniā,Arphad &,Chamath est affecta Pudore
בּוֹשָׁה חֲמָת וְאַרְפָּד כִּי־שְׁמֻעָה רָעָה שָׁמְעוּ נָמֹגוּ
,fugiendū ad se vertit,Dammesec est *Debilitata* .poterit non *quiescere* ,*solicitudo* mari in
24 בַּיָּם דְּאָגָה הַשְׁקֵט לֹא יוּכָל׃ רָפְתָה דַמֶּשֶׂק הִפְנְתָה לָנוּס
Quomodo .parturientis tanquā eam *tenuit funes* & angustia ;apprehendit tremor &
25 וְרֶטֶט הֶחֱזִיקָה צָרָה וַחֲבָלִים אֲחָזַתָּה כַּיּוֹלֵדָה׃ אֵיךְ
ejus juvenes cadent Ideo ? mei gaudii urbs ,laudis civitas est derelicta non
26 לֹא־עֻזְּבָה עִיר תְּהִלָּה קִרְיַת מְשׂוֹשִׂי׃ לָכֵן יִפְּלוּ בַחוּרֶיהָ
Dominus ait ,illa die in *conticescent* – *belli* viri omnes & ,ejus plateis in
בִּרְחֹבֹתֶיהָ וְכָל־אַנְשֵׁי הַמִּלְחָמָה יִדַּמּוּ בַּיּוֹם הַהוּא נְאֻם יְהוָה
-Ben ædes consumet & :Dammesec muro in ignem faciā succēdere Et .exercituū
27 צְבָאוֹת׃ וְהִצַּתִּי אֵשׁ בְּחוֹמַת דַּמֶּשֶׂק וְאָכְלָה אַרְמְנוֹת בֶּן־
rex resar-Nebuchad percussit quæ Chasor regna ad & ,Chedar Ad .hadad
28 הֲדָד׃ לְקֵדָר וּלְמַמְלְכוֹת חָצוֹר אֲשֶׁר הִכָּה נְבוּכַדְרֶאצּוֹר מֶלֶךְ־
filios vastate & ,Chedar ad ascendite ,Surgite :Dominus dixit sic ,Babel
בָּבֶל כֹּה אָמַר יְהוָה קוּמוּ עֲלוּ אֶל־קֵדָר וְשָׁדְדוּ אֶת־בְּנֵי־
,eorū vasa omnia & ,eorum cortinas ,capient eorū *pecus* & ,eorum *Tentoria* .Chedem
29 קֶדֶם׃ אָהֳלֵיהֶם וְצֹאנָם יִקָּחוּ יְרִיעוֹתֵיהֶם וְכָל־כְּלֵיהֶם
,Fugite .undique formidinem eos super vocabunt & : sibi tollent eorū camelos &
30 וּגְמַלֵּיהֶם יִשְׂאוּ לָהֶם וְקָרְאוּ עֲלֵיהֶם מָגוֹר מִסָּבִיב׃ נֻסוּ
:Dominus dixit ,Chasor habitatores habitandū ad *profundârunt*,vehementer *evagamini*
נֻּדוּ מְאֹד הֶעְמִיקוּ לָשֶׁבֶת יֹשְׁבֵי חָצוֹר נְאֻם־יְהוָה
vos *super* cogitavit &,consiliū Babel rex Nebuchadresar vos *super* consultavit quia
כִּי־יָעַץ עֲלֵיכֶם נְבוּכַדְרֶאצַּר מֶלֶךְ־בָּבֶל עֵצָה וְחָשַׁב עֲלֵיהֶם
: Dñs ait ,*fiducia in* habitantē pacificā gentem ad ascendite,Surgite .cogitationē
31 מַחֲשָׁבָה׃ קוּמוּ עֲלוּ אֶל־גּוֹי שְׁלֵיו יוֹשֵׁב לָבֶטַח נְאֻם־יְהוָה
,direptionē in eorū cameli erunt Et .*habitabunt solùm* ,ei vectis nec ,*fores* non
32 לֹא־דְלָתַיִם וְלֹא־בְרִיחַ לוֹ בָּדָד יִשְׁכֹּנוּ׃ וְהָיוּ גְמַלֵּיהֶם לָבַז
: *anguli extremificatos ventum omnem* in eos dispergā & ;*spolium* in eorū pecudū *turba* &
וַהֲמוֹן מִקְנֵיהֶם לְשָׁלָל וְזֵרִתִים לְכָל־רוּחַ קְצוּצֵי פֵאָה
Chasor erit Et .Dominus dixit ,eorū interitū adducam ejꝰ laterib⁹ omnib⁹ ex &
33 וּמִכָּל־עֲבָרָיו אָבִיא אֶת־אֵידָם נְאֻם־יְהוָה׃ וְהָיְתָה חָצוֹר
hospitabitur nec ,*vir* ibi manebit non :seculū in usq; solitudo,draconū habitaculū *in*
לִמְעוֹן תַּנִּים שְׁמָמָה עַד־עוֹלָם לֹא־יֵשֵׁב שָׁם אִישׁ וְלֹא־יָגוּר
ad prophetam Irmejahu ad Domini verbum fuit Quod .hominis filius *ea in*
34 בָּהּ בֶּן־אָדָם׃ אֲשֶׁר הָיָה דְבַר־יְהוָה אֶל־יִרְמְיָהוּ הַנָּבִיא אֶל־
dixit Sic : *dicendum ad* Jehudah regis Sidchijah regni principio in : Helam
35 עֵילָם בְּרֵאשִׁית מַלְכוּת צִדְקִיָּה מֶלֶךְ־יְהוּדָה לֵאמֹר׃ כֹּה אָמַר
principium : Helam arcum *confringens ego* Ecce : exercituum Dominus
יְהוָה צְבָאוֹת הִנְנִי שֹׁבֵר אֶת־קֶשֶׁת עֵילָם רֵאשִׁית
extremitatib⁹ quatuor à ventos quatuor Helam ad adducam Et .eorū fortitudinis
36 גְּבוּרָתָם׃ וְהֵבֵאתִי אֶל־עֵילָם אַרְבַּע רוּחוֹת מֵאַרְבַּע קְצוֹת
non *quo* gens erit non & : istos ventos omnes in eos *spargam* & ,cœlorum
הַשָּׁמַיִם וְזֵרִתִים לְכֹל הָרֻחוֹת הָאֵלֶּה וְלֹא־יִהְיֶה הַגּוֹי אֲשֶׁר לֹא־
,*eorū inimicorum facies ad* Helam *consternabo* Et .Helam *expulsi illuc veniat*
37 יָבוֹא שָׁם נִדְּחֵי עוֹלָם׃ וְהַחְתַּתִּי אֶת־עֵילָם לִפְנֵי אֹיְבֵיהֶם
,mei *nasi* iram ,malum eos super adducam & ,eorū animā *quærentium facies ad* &
וְלִפְנֵי מְבַקְשֵׁי נַפְשָׁם וְהֵבֵאתִי עֲלֵיהֶם רָעָה אֶת־חֲרוֹן אַפִּי
.eos *me consumere ad usque* gladium eos post mittam Et .Dominus dixit
נְאֻם־יְהוָה וְשִׁלַּחְתִּי אַחֲרֵיהֶם אֶת־הַחֶרֶב עַד כַּלּוֹתִי אוֹתָם׃
.Dominus dixit ,principes & ,regem inde perdam & :Helam in meū soliū ponam Et
38 וְשַׂמְתִּי כִסְאִי בְּעֵילָם וְהַאֲבַדְתִּי מִשָּׁם מֶלֶךְ וְשָׂרִים נְאֻם־יְהוָה׃
.Dominus dixit ,Helam captivitatem faciam reverti ,dierum novissimo in erit Et
39 וְהָיָה בְּאַחֲרִית הַיָּמִים אָשׁוּב אֶת־שְׁבִית עֵילָם נְאֻם־יְהוָה׃

Versio VULG. LAT.

22 Ecce quasi aquila adscendet, &
avolabit : & expandet alas suas
super Bosran : & erit cor fortium
Idumææ in die illa, quasi cor
23 mulieris parturientis. Ad Da-
mascum : Confusa est Emath, &
Arphad : quia auditum pessi-
mum audierunt, turbati sunt in
mari : præ solicitudine quie-
24 scere non potuit. Dissoluta est
Damascus, versa est in fugam,
tremor apprehendit eam : angu-
stia & dolores tenuerunt eam
25 quasi parturientem. Quomodò
dereliquerunt civitatem lauda-
26 bilem, urbem lætitiæ! Ideò ca-
dent juvenes ejꝰ in plateis ejꝰ :
& omnes viri prælii conti-
cescent in die illa, ait Dominꝰ
27 exercituum. Et succendam ignē
in muro Damasci, & devorabit
28 mœnia Benadad. Ad Cedar, &
ad regna Asor, quæ percussit Na-
buchodonosor rex Babylonis.
Hæc dicit Dominꝰ; Surgite, &
adscendite ad Cedar, & vastate
29 filios Orientis. Tabernacula eo-
rum, & greges eorum capient :
pelles eorum, & omnia vasa eo-
rum, & camelos eorum tollent
sibi : & vocabunt super eos for-
30 midinem in circuitu. Fugite,
abite vehementer, in voraginibꝰ
sedete, qui habitatis Asor, ait
Dominꝰ : iniit enim contra vos
Nabuchodonosor rex Babylonis
consilium, & cogitavit adversùm
31 vos cogitationes. Consurgite, &
ascendite ad gentem quietam, &
habitantem confidenter, ait Do-
minus : non ostia, nec vectes eis:
32 soli habitant. Et erunt cameli
eorum in direptionē, & multitu-
tudo jumentorum in prædam: &
dispergam eos in omnem ventū,
qui sunt attonsi in comam: & ex
omni confinio eorum adducam
33 interitū sup eos, ait Dominꝰ. Et
erit Asor in habitaculū draconū,
deserta usq; in æternū : non ma-
34 nebit ibi vir, nec incolet eam filiꝰ hominis. Quod factum est verbum Dñi ad Jeremiam prophe-
35 tam adversùs Ælam, in principio regni Sedeciæ regis Juda, dicens; Hæc dicit Dominꝰ exercituum;
36 Ecce ego confringam arcum Ælam, & summam fortitudinem eorum. Et inducam super Ælam
quatuor ventos à quatuor plagis cœli: & ventilabo eos in omnes ventos istos: & non erit gens,
37 ad quam non perveniant profugi Ælam. Et pavere faciā Ælam corā inimicis suis, & in conspectu
quærentium animam eorum : & adducam super eos malum, iram furoris mei, dicit Dominus : &
38 mittam post eos gladium donec consumam eos. Et ponam solium meum in Ælam, & perdam indè
39 reges & principes, ait Dominus. In novissimis autem diebus reverti faciam captivos Ælam, di-
cit Dominus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

11 Μὴ φοβηθῆτε ἀπὸ προσώπου βασιλέ-
ως Βαβυλῶνος, οὗ ὑμεῖς φοβεῖσθε·
ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ μὴ φοβηθῆτε, φη-
σὶ κύριος, ὅτι μεθ' ὑμῶν ἐγὼ (λ),
ἐξαιρεῖσθαι ὑμᾶς, καὶ σώζειν ὑμᾶς ἐκ
12 χειρὸς αὐτῶν. Καὶ δώσω ὑμῖν ἔλεος,
καὶ ἐλεήσω ὑμᾶς, καὶ ἐπιστρέψω ὑμᾶς
13 εἰς τὴν γῆν ὑμῶν. Καὶ εἰ λέγετε ὑμεῖς,
Οὐ μὴ καθίσωμεν ἐν τῇ γῇ ταύτῃ,
πρὸς τὸ μὴ ἀκοῦσαι φωνῆς κυρίου,
14 Ὅτι εἰς γῆν Αἰγύπτου εἰσελευσόμεθα,
καὶ οὐ μὴ ἴδωμεν πόλεμον, καὶ φωνὴν
σάλπιγγος οὐ μὴ (μ) ἀκούσωμεν, καὶ
ἐν ἄρτοις οὐ μὴ πεινάσωμεν, καὶ ἐκεῖ
15 οἰκήσομεν· Διὰ τοῦτο ἀκούσατε λόγον
κυρίου· οὕτως εἶπε κύριος, Ἐὰν ὑμεῖς
δῶτε τὸ πρόσωπον ὑμῶν εἰς Αἴγυ-
πτον, καὶ εἰσέλθητε ἐκεῖ κατοικεῖν,
16 Καὶ ἔσται, ἡ ῥομφαία ἣν ὑμεῖς φοβεῖσθε
ἀπὸ προσώπου αὐτῆς, εὑρήσει ὑμᾶς
ἐν γῇ (ν) Αἰγύπτου, καὶ ὁ λιμὸς οὗ ὑ-
μεῖς λόγον ἔχετε ἀπὸ προσώπου αὐ-
τοῦ, καταλήψεται ὑμᾶς ὀπίσω ὑμῶν
ἐν Αἰγύπτῳ, καὶ ἐκεῖ ἀποθανεῖσθε.
17 Καὶ ἔσονται πάντες οἱ ἄνθρωποι, καὶ
πάντες οἱ ἀλλογενεῖς, οἱ θέντες τὸ
πρόσωπον αὐτῶν εἰς γῆν Αἰγύπτου
ἐνοικεῖν ἐκεῖ, ἐκλείψουσιν ἐν τῇ ῥομ-
φαίᾳ, καὶ ἐν τῷ λιμῷ, καὶ οὐκ ἔσται αὐ-
τῶν (ξ) οὐδεὶς σωζόμενος ἀπὸ τῶν κα-
18 κῶν, ὧν ἐγὼ ἐπάγω ἐπ' αὐτούς. Ὅτι
οὕτως εἶπε κύριος, (ο) Καθὼς ἔσταξεν
ὁ θυμός μου ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας Ἱερου-
σαλήμ, οὕτως στάξει ὁ θυμός μου ἐφ'
ὑμᾶς, εἰσελθόντων ὑμῶν εἰς Αἴγυπτον·
καὶ ἔσεσθε εἰς ἄβατον, καὶ ὑποχείριοι,
καὶ εἰς ἀρὰν, (π) καὶ εἰς ὀνειδισμὸν, καὶ
οὐ μὴ ἴδητε οὐκέτι τὸν τόπον τοῦτον.

Nolite timere à facie regis 11
Babylonis, quem vos time-
tis: à facie ejus ne timeatis,
dicit Dominus : quia vobis-
cum ego, ut eruam vos, &
salvem vos de manu eorum.
Et dabo vobis misericordi- 12
am, & miserebor vestri :
& reducam vos in terram
vestram. Quòd si dicitis 13
vos; Non sedebimus in terra
hac, ut non audiamus vo-
cem (d) Domini, Quia in 14
terram Ægypti ingredie-
mur, & non videbimus
bellum, & vocem tubæ non
audiemus, & in panibus
non esuriemus, & ibi habi-
tabimus : Propter hoc au- 15
dite verbum Domini : (e)
Sic dixit Dominus; Si vos
dederitis faciem vestram in
Ægyptum, & intraveritis
illuc ad habitandum; Et 16
erit, gladius, quem vos ti-
metis à facie ejus, inveniet
vos in terra Ægypti : &
fames, cujus vos rationem
habetis à facie ejus, com-
prehendet vos post vos in
Ægypto, & ibi moriemini.
Et erunt omnes homines, & 17
omnes alienigenæ, qui posu-
erint faciem suam ad ter-
ram Ægypti ad inhabitan-
dum ibi, deficient in gladio,
& in (f) fame : & non e-
rit eorum quisquam salvus
à malis, quæ ego induco su-
per eos. Quia sic dixit Do- 18
minus; Sicut stillavit fu-
ror meus super habitatores
Hierusalem : sic stillabit
furor meus super vos, ingres-
sis vobis in Ægyptum: &
eritis in invium, & subje-
cti, & in maledictionem,
& in opprobrium : et non videbitis ultrà locum istum :

MS.A. (λ) εἰμὶ, τοῦ ἐξαιρεῖσθαι (μ) ἀκούσομεν, (ν) Αἰγύπτῳ,
(ξ) οὐθεὶς (ο) Ὅτι καθὼς (π) καὶ ὀνειδισμὸν,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

22 הָא כְנִשְׁרָא דְּסָלֵיק וּמִשְׁתְּדֵי כֵּן יִסַּק מֶלֶךְ בְּמַשְׁרְיָתֵיהּ וְיִשְׁרֵי עַל בָּצְרָה וִיהֵי לֵב גִּבָּרֵיהוֹן
23 דֶּאֱדוֹמָאֵי בְּיוֹמָא הַהוּא כְּלֵב אִתְּתָא דְּעָקָא לַהּ בְּחֶבְלָהָא׃ לְדַמֶּשֶׂק בְּהִיתוּ יָתְבֵי חֲמָת
וְאַרְפַּד אֲרֵי בְסוֹרָא בִישָׁא שְׁמַעוּ אִתְּבָרוּ דַּחֲלָא בְיַמָּא וְיִצְפָּא אַחֲדַתְנוּן הָא כְנַחְתֵי יַמָּא
24 דְּשָׁקְטִין וְלָא יָכְלִין לִמְנָח׃ אִתְרַשְׁלוּ יָתְבֵי דַמֶּשֶׂק אִתְפְּנִיאוּ לְמֶעְרַק וְשִׁפְלוּתָא אַחֲדַתְנוּן
25 עָקָא וְחֶבְלִין אַחֲדוּנוּן הָא כְחֶבְלִין לִילַדְתָּא׃ אֵיכְדֵין לָא אִשְׁתְּבִיקַת קַרְתָּא מְשַׁבַּחְתָּא
26 כְּרַכָּא חֶדְוָה׃ בְּכֵן יִתְרְמוּן עוּלֵימָהָא בִּרְחוֹבָהָא וְכָל גַּבְרֵי עָבְדֵי קְרָבָא יִתַּבְּרוּן בְּעִדָּנָא
27 הַהִיא אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת׃ וְאַדְלֵיק אֶשָּׁתָא בְּשׁוּרֵי דַמֶּשֶׂק וּתְשֵׁיצֵי בִירָנְיָת בַּר הֲדָד׃ לְקֵדָר
28 וּלְמַמְלְכוּת חָצוֹר דִּמְחָא נְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא דְבָבֶל כִּדְנַן אֲמַר יְיָ קוּמוּ סַקוּ עַל קֵדָר וּבוֹזוּ
29 יָת בְּנֵי מַדִּנְחָא׃ מַשְׁכְּנֵיהוֹן וְעָנְהוֹן יִשְׁבּוֹן יְרִיעָתְהוֹן וְכָל מָנֵיהוֹן וְגַמְלֵיהוֹן יִסְבוּן לְהוֹן
30 וְיִתְכַּנְשׁוּן עֲלֵיהוֹן דְּקָטְלִין בְּחַרְבָּא מִסְחוֹר סְחוֹר׃ עֲרוֹקוּ גְלוֹ לַחֲדָא אַרְחִיקוּ לְמִתַּב
יָתְבֵי חָצוֹר אֲמַר יְיָ אֲרֵי מְלַךְ עֲלֵיכוֹן נְבוּכַדְרֶאצַּר מַלְכָּא דְבָבֶל מַלְכָּא וַחֲשִׁיב עֲלֵיכוֹן
31 מַחְשְׁבָא׃ קוּמוּ סַקוּ עַל עַמָּא דְיָתְבִין שְׁלֵיוָא שָׁרָן לְרוּחְצָן אֲמַר יְיָ לֵית לְהוֹן דָּשִׁין
32 וְעַבְרִין בִּלְחוֹדֵיהוֹן שָׁרָן׃ וִיהוֹן גַּמְלֵיהוֹן לְבִזָּא וַהֲמוֹן גֵּיתֵיהוֹן לַעֲדִי וְאֶבַדְּרִנּוּן לְכָל
33 רוּחַ מַקְּפֵי פַּתָּא וּמִכָּל עִבְרֵיהוֹן אַיְתֵי תְבִרְהוֹן אֲמַר יְיָ׃ וּתְהֵי חָצוֹר לִמְדוֹר יְרוֹדִין
34 צַדוּ עַד עָלְמָא לָא יְתֵיב תַּמָּן אֱנָשׁ וְלָא יִתְיְתֵיב בַּהּ בַּר אֱנָשׁ׃ דַּהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן
קֳדָם יְיָ עִם יִרְמְיָה נְבִיָּא עַל עֵילָם בְּרֵישׁ מַלְכוּת צִדְקִיָּה מֶלֶךְ שִׁבְטָא דְבֵית יְהוּדָה
35 לְמֵימַר׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת הָא אֲנָא תָבַר יָת תְּקוֹף עֵילָם רֵישׁ גְּבוּרְתְהוֹן׃ וְאַיְתֵי
36 עַל עֵילָם אַרְבַּע מַלְכְּוָן מֵאַרְבַּע רוּחֵי שְׁמַיָּא וְאֶבַדְּרִנּוּן לְכָל רוּחַיָּא הָאִלֵּין וְלָא יְהֵי עַם
37 דְּלָא יְהָכוּן לְתַמָּן מְטַלְטְלֵי עֵילָם׃ וְאֶתְבַּר יָת עֵילָם קֳדָם בַּעֲלֵי דְבָבֵיהוֹן וְקֳדָם דְּבָעַן
לְמִקְטַלְהוֹן וְאַיְתֵי עֲלֵיהוֹן בִּישָׁא יָת תְּקוֹף רוּגְזִי אֲמַר יְיָ וְאֶגְרֵי בָתְרֵיהוֹן דְּקָטְלִין
38 בְּחַרְבָּא עַד דְּאֱשֵׁיצֵי יָתְהוֹן׃ וַאֲשַׁוֵּי כוּרְסֵי מַלְכוּתִי בְּעֵילָם וְאוֹבֵיד מִתַּמָּן מֶלֶךְ וְשִׁלְטוֹן
39 אֲמַר יְיָ׃ וִיהֵי בְּסוֹף יוֹמַיָּא אֲתִיב יָת גָּלוּת עֵילָם אֲמַר יְיָ׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Ecce sicut aquila quæ ascendit & volat, sic ascendet rex cum exercitu suo; 22
& castrametabitur super Bosrā. Et erit cor fortiū Idumæorum in die illa,
sicut cor mulieris, cui est tribulatio in doloribꝰ suis. Ad Damascum. Con- 23
fusi sunt habitatores Hemath & Arphad; quia nuntiū malum audierunt :
contriti sunt; timor *in mari* & solicitudo apprehendit eos : ecce sicut de-
scendentes in mare, qui non quiescūt, nec possunt *requiescere*. Dissoluti sunt 24
habitatores Damasci : respexerunt ut fugerent, & ruina apprehendit eos;
tribulatio & dolores tenuerunt eos, sicut dolores parturientis. Quomodo 25
non fuit derelicta civitas laudabilis, arx læta? Propterea projicientur ju- 26
venes ejꝰ in plateis ejus, & omnes *viri* bellatores conterentur in tempore
illo, dicit Dñs exercituū. Et succendā ignem in muris Damasci, & disperdet 27
palatia filii Hadad. Ad Cedar, & ad regna Hasor, quæ percussit Nabucho- 28
donosor rex Babylonis; Hæc dicit Dñs, Surgite & ascendite ad Cedar, &
vastate filios Orientis. Tabernacula eorū, & oves eorum capient, cortinas 29
eorū, & omnia vasa eorum, & camelos eorū tollent sibi. Et congregabuntur
contra eos, qui occidunt gladio, per circuitū. Fugite & migrate vehemen- 30
ter: procul abite ad habitandum habitatores Hasor, dicit Dñs : Quia iniit
contra vos consilium Nabuchodonosor rex Babylonis, & cogitavit adver-
sùs vos cogitationē. Surgite, ascendite ad populū qui habitant tranquillè, 31
& morantur confidenter, dicit Dñs : quibꝰ non sunt portæ & vectes, soli
enim habitant. Et erunt cameli eorū in direptionē, & multitudo pecorū eo- 32
rum in prædā : & dispergā eos in omnē ventum circumeuntes angulum :
& ab omnibꝰ eorū lateribꝰ adducā interitum eorum, dicit Dñs. Et erit 33
Hasor in habitaculū draconum, deserta usque in æternum : non sedebit ibi
homo, nec habitabit in ea filiꝰ hominis. Quod factum est verbum prophe- 34
tiæ à facie Dñi cum Jeremia propheta adversùs Helam, in principio regni
Sedechiæ regis tribꝰ domus Juda, dicens: Hæc dicit Dominꝰ exercituum : 35
Ecce ego conterā fortitudinē Helā, caput roboris eorū. Et inducam super 36
Helam quatuor regna à quatuor ventis cœli, & dispergā eos in omnes ven-
tos istos, & non erit populꝰ quò non abeant profugi Helam. Et conteram 37
Helā corā inimicis suis, & corā iis qui quærunt occidere eos, & inducā sup
eos malū, irā furoris mei, dicit Dñs: & mittā post eos illos qui occidunt gla-
dio, donéc consumā eos. Et ponā thronū regni mei in Helā, et perdā inde 38
regem et dominatorem, dicit Dominus. Et erit in fine dierum convertam 39
captivitatem Helam, dicit Dominus.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܗܐ ܐܝܟ ܢܫܪܐ ܢܣܩ ܘܢܦܪܚ. ܘܢܦܪܘܣ ܓܦܘܗܝ ܥܠ ܒܘܨܪܐ. ܘܢܗܘܐ ܠܒܗܘܢ 22
ܕܓܢܒܪܐ ܕܐܕܘܡ ܒܝܘܡܐ ܗܘ .. ܐܝܟ ܠܒܐ ܕܐܢܬܬܐ ܕܡܚܒܠܐ ܒܡܝܠܕܗ.

* ܥܠ ܕܪܡܣܘܩ *

* ܒܗܬܬ ܚܡܬ ܘܐܪܦܕ. ܡܛܠ ܕܫܡܥܬܐ ܒܝܫܬܐ ܫܡܥܘ ܘܐܬܬܙܝܥܘ. ܒܝܡܐ ܕܚܠܬܗ. 23
ܘܢܝܚܐ ܠܐ ܢܫܟܚ. * ܐܬܪܦܝܬ ܕܪܡܣܘܩ. ܘܐܬܦܢܝܬ ܠܡܥܪܩ. ܘܪܬܝܬܐ ܐܚܕܬܗ. 24
ܘܥܩܬܐ ܘܚܒܠܐ ܐܚܕܘܗ ܐܝܟ ܕܝܠܕܬܐ. * ܐܝܟܢܐ ܠܐ ܫܒܩܘܗ ܡܕܝܢܬܐ ܕܫܘܒܚܬܐ 25
ܡܕܝܢܬܐ ܕܚܕܘܬܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܦܠܘܢ ܥܠܝܡܝܗ ܒܫܘܩܝܗ .. ܘܟܠܗܘܢ ܓܒܪܝܗ 26
ܩܪܒܬܢܐ ܢܫܬܬܩܘܢ. * ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ .. ܘܐܫܠܚ ܢܘܪܐ ܒܫܘܪܝܗ 27
ܕܕܪܡܣܘܩ. ܘܬܐܟܘܠ ܗܝܟܠܘܗܝ ܕܒܪ ܗܕܪ.

* ܥܠ ܩܕܪ ܘܥܠ ܡܠܟܘܬܐ ܕܚܨܘܪ ܕܡܚܐ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ *

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܩܘܡܘ ܣܩܘ ܥܠ ܩܕܪ. ܘܒܙܘ ܠܒܢܝ ܡܕܢܚܐ. * ܡܫܟܢܝܗܘܢ 28 29
ܘܥܢܗܘܢ ܢܫܒܘܢ. ܘܝܪܝܥܬܗܘܢ. ܘܟܠܗܘܢ ܡܐܢܝܗܘܢ ܘܓܡܠܝܗܘܢ ܢܕܒܪܘܢ ܠܗܘܢ.
ܘܢܩܪܘܢ ܥܠܝܗܘܢ ܡܫܢܝܢܐ ܡܢ ܚܕܪܝܗܘܢ. * ܥܪܘܩܘ ܢܘܕܘ. ܘܐܥܡܩܘ ܠܡܥܡܪ ܥܡܘܪܝ ܚܨܘܪ 30
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܐܬܡܠܟ ܥܠܝܗܘܢ. ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܐܬܚܫܒ ܥܠܝܗܘܢ
ܡܚܫܒܬܐ ܘܐܡܪ. * ܩܘܡܘ ܣܩܘ ܥܠ ܥܡܐ ܫܠܝܐ ܕܝܬܒ ܠܬܘܟܠܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܠܐ ܬܪܥܐ 31
ܘܠܐ ܡܘܟܠܐ ܠܗ. ܘܒܠܚܘܕܝܗܘܢ ܫܪܝܢ. * ܘܢܗܘܘܢ ܓܡܠܝܗܘܢ ܠܒܙܬܐ. ܘܣܘܓܐܐ 32
ܕܩܢܝܢܗܘܢ ܠܒܙܬܐ. ܘܐܒܕܪ ܐܢܘܢ ܠܟܠ ܪܘܚ ܩܨܝܨܝ ܦܐܬܐ. ܘܡܢ ܟܠܗܘܢ ܥܒܪܝܗܘܢ.
ܐܝܬܐ ܬܒܪܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܬܗܘܐ ܚܨܘܪ. ܡܥܡܪܐ ܠܬܢܝܢܐ. ܘܚܘܪܒܐ ܥܕܡܐ ܠܥܠܡ. ܠܐ 33
ܢܬܒ ܬܡܢ ܒܪܢܫ.

* ܥܠ ܥܝܠܡ *

* ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܕܗܘܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܕܢܬܢܒܐ ܥܠ ܥܝܠܡ .. ܒܪܝܫ ܡܠܟܘܬܗ 34
ܕܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܗܐ ܬܒܪ ܐܢܐ ܩܫܬܗ ܕܥܝܠܡ ܪܝܫ 35
ܓܢܒܪܘܬܗܘܢ. * ܘܐܝܬܐ ܥܠ ܥܝܠܡ ܐܪܒܥ ܪܘܚܐ .. ܡܢ ܐܪܒܥ ܙܘܝܬ ܫܡܝܐ. ܘܐܒܕܪ ܐܢܘܢ 36
ܠܟܠܗܝܢ ܪܘܚܐ ܗܠܝܢ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܥܡܐ. ܕܠܐ ܢܗܘܘܢ ܬܡܢ ܡܒܕܪܐ ܕܥܝܠܡ. * ܘܐܬܒܪ 37
ܠܥܝܠܡ ܩܕܡ ܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ .. ܘܩܕܡ ܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܢܦܫܗܘܢ. ܘܐܝܬܐ. ܥܠܝܗܘܢ
ܒܝܫܬܐ ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܫܕܪ ܒܬܪܗܘܢ ܚܪܒܐ. ܥܕܡܐ ܕܐܫܠܡ ܐܢܘܢ. * ܘܐܣܝܡ 38
ܟܘܪܣܝ ܒܥܝܠܡ .. ܘܐܘܒܕ ܡܢ ܬܡܢ ܡܠܟܐ ܘܫܠܝܛܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܒܚܪܬܐ 39
ܕܝܘܡܬܐ ܐܗܦܘܟ ܫܒܝܬܗ ܕܥܝܠܡ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.

Ecce ſicut aquila aſcendet, ac volabit, expan- 22
detque alas ſuper Boſarem : fietque anim⁹
heroum Edom die illo, ſicut anim⁹ mulieris
partûs dolores patientis.

Contra Damaſcum.

Erubuit Hamath & Rephad, qui rumorem 23
infauſtum audientes conſternatæ ſunt : ex ma-
ri erit terror ipſius, & quietem non inveniet.
Animis cadet Damaſcus, tergáque vertet ad 24
fugiendum : tremore corripietur, & anxie-
tas atque dolores occupabunt eam ut partu-
rientem. Quomodo non pepercerunt urbi 25
ſplendoris, urbi delitiarum? Hac de cauſa 26
corruent juvenes ej⁹ in plateis ipſi⁹, & omnes
ipſi⁹ viri bellatores ſilentio involventur. In 27
illo die, ait Dñs potentiſſimus, ignem dimit-
tam in mœnia Damaſci, devorabitque palatia
filii Hadadis.

Contra Cedar, & contra regna Haſoris quæ cæde vaſtavit Nebuchadnoſar rex.

Sic ait Dñs, Surgite, invadite Cedarē, & Ori- 28
entales diripite. Tentoria & pecudes eorum 29
auferent ; aulæa, totam ſupellectilem, & ca-
melos eorum abducent ſibi ; & adverſùs eos
ſeditioſi undique clamabunt. Fugerunt, mi- 30
grârunt, & profunda petierunt ad habitan-
dum incolæ Haſoris, ait Domin⁹ : quia con-
ſilium inivit adverſùs eos Nebuchadnoſar rex
Babelis, & cogitationē cogitavit adverſ⁹ eos,
ac dixit ; Surgite, aſcendite contra populum 31
opulentū ſecurè habitantē, ait Dñs, nec oſtia
nec ſeras habentem, ſed ſeorſim habitantē. Et 32
erunt cameli eorū in direptionē, et multitudo
pecorum eorum in prædā : & diſperdā eos in
omnem ventum, inter detonſos barbâ : & ex
omnib⁹ terminis eorum inferā contritionē eo-
rum, dicit Dñs. Deniq; fiet Haſor habitatio 33
canum ſylveſtrium, & in ſeculum uſque de-
ſerta ; nemo illic habitabit.

Contra Ilamitas.

Sermo Domini qui fuit ad Jeremiam prophe- 34
tam, ut vaticinaretur contra Ilamum, initio
regni Sedeciæ regis Judæ. Sic ait Domin⁹ po- 35
tentiſſimus, Ecce fracturus ſum arcum Ilami-
tarum, quo illi præcipuè valent : Et adductu- 36
rus contra Ilamitas quatuor ventos è quatuor
angulis cœli, eoſque diſperſurus in omnes
ventos iſtos ; ita ut nulla ſit gens ubi non re-
periantur diſperſi Ilamitæ : Et frangam Ila- 37
mitas coram hoſtib⁹ eorum, & coram iis qui
quærunt animam eorum : adducam ſuper eos
malum, æſtum iræ meæ, dicit Domin⁹ : immit-
tam in eos gladium, donec abſumam illos :
Et collocabo ſolium meum in Ilamo, & 38
perdam illinc reges ac principes ait Domin⁹ :
Deinde poſtremis dieb⁹ reducam captivos Ila- 39
mi, dicit Dominus.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* لا تخافوا من وجه ملك بابل الذي انتم تخافون من وجهه * لا تخافوا قال الرب * لاني 11
معكم انا انا لانقذكم واخلصكم من ايديهم * واعطي لكم رحمه وارحمكم واردكم 12
الي ارضكم * وان قلتم انتم لا نجلس في هذه الارض لنسمع صوت الرب * لانا ندخل 13 14
الي مصر * ولا نعاين حربا * ولا نسمع صوت بوق * ولا نجوع من الخبز وهناك نسكن *

* الاصحاح الحادي والثلاثون *

* لاجل هذا اسمعوا قول الرب * هكذا قال الرب * ان انتم اعطيتم وجوهكم الي مصر 15
ودخلتم لتسكنوا هناك * ويكون السيف الذي انتم تخافون من وجهه يجدكم 16
في ارض مصر * والجوع الذي قلتم انتم تهربون من وجهه * ياخذكم ويعدوا خلفكم
في مصر * وهناك تموتون * ويكون جميع الناس وجميع الاجناس الغريبة الواضعين 17
وجوههم الي ارض مصر ليسكنوا هناك يفنون بالسيف والجوع * ولا يكون منهم ولا
واحد يخلص من الشرور التي انا اجلبها عليهم * لان هكذا قال الرب * انه كما قطر 18
غضبي على سكان ايروسليم * هكذا يقطر غضبي عليكم اذ تدخلون الي مصر *
وتكونون للقفر وغلمان * وللعنة والتعيير * ولا ترون هذا الموضع ايضا *

Ne metuatis regem Babelis quem vos 11
pertimeſcitis ; ne metuatis, inquit Do-
minus, quia ego vobiſcum ſum ut
eruam & liberem vos è manibus eo-
rum : Et impendam vobis miſericor- 12
diam, & miſerebor veſtri, reducamque
vos in terram veſtram. Quòd ſi vos 13
dixeritis, Non manebimus hac in terra
obtemperantes voci Domini : Imò in- 14
grediemur Ægyptum ut non videamus
bellum, nec audiamus ſonitum buccinæ,
neque panis famem patiamur ; ibique ha-
bitabimus :

Textus trigeſimus primus.

Iccirco audite ſermonem Domini. Sic 15
dixit Dominus ; Si vos faciem veſtram
verteritis ad Ægyptum, & ingreſſi
fueritis ad habitandum ibi ; Gladius 16
ille quem vos timetis, inveniet vos in
terra Ægypti ; & fames quam vos
fugere dicitis, corripiet vos curretque
poſt vos in Ægyptum uſque ; ibique
moriemini. Denique continget ut omnes 17
homines & omnes alienigenæ faciem
ſuam vertentes ad terram Ægypti ut
habitent illic, gladio & fame conſu-
mantur ; nemoque ex eis effugiat mala
quæ ego adducam ſuper eos. Nam ita 18
dixit Dominus ; Quemadmodum ſtil-
lavit ira mea ſuper cives Jeruſalem,
ita ſtillabit ira mea ſuper vos ubi
Ægyptum ingrediemini : & eritis de-
ſolationi, & famuli, maledictioni, &
opprobrio : nec videbitis ampliùs locum
iſtum.

CAP. L. נ

Irmejahu manu in : Chaſdim terram ad ,Babel Ad Dominus eſt locutus quod Verbum
1 הַדָּבָר אֲשֶׁר דִּבֶּר יְהוָה אֶל־בָּבֶל אֶל־אֶרֶץ כַּשְׂדִּים בְּיַד יִרְמְיָהוּ
: celetis ne ,facite audire ,vexillū levate &,facite audire & gentibꝰ in Annūtiate .propheta
2 הַנָּבִיא׃ הַגִּידוּ בַגּוֹיִם וְהַשְׁמִיעוּ וּשְׂאוּ־נֵס הַשְׁמִיעוּ אַל־תְּכַחֵדוּ
,ejꝰ dolores ſunt pudefacti,Merodach eſt fractꝰ,Bel eſt affectꝰ pudore,Babel eſt Capta : dicite
אִמְרוּ נִלְכְּדָה בָבֶל הֹבִישׁ בֵּל חַת מְרֹדָךְ הֹבִישׁוּ עֲצַבֶּיהָ
ejus terram ponet ipſa ,aquilone ab gens eā ſuper aſcēdit Quoniā .ejus idola ſunt fracta
3 חַתּוּ גִּלּוּלֶיהָ׃ כִּי עָלָה עָלֶיהָ גּוֹי מִצָּפוֹן הוּא־יָשִׁית אֶת־אַרְצָהּ
.abierunt,ſunt moti animal ad uſq; & homine ab :ea in habitans erit non & ,ſolitudinē in
לְשַׁמָּה וְלֹא־יִהְיֶה יוֹשֵׁב בָּהּ מֵאָדָם וְעַד־בְּהֵמָה נָדוּ הָלָכוּ׃
filii & , ipſi Iſrael filii venient ,Dominꝰ ait , illo tempore in & ,illis diebus In
4 בַּיָּמִים הָהֵמָּה וּבָעֵת הַהִיא נְאֻם־יְהוָה יָבֹאוּ בְנֵי־יִשְׂרָאֵל הֵמָּה וּבְנֵי־
Sijon .quærent ſuum Deum Dominum & ,ibunt flendo & Ambulando .ſimul Jehudah
5 יְהוּדָה יַחְדָּו הָלוֹךְ וּבָכוֹ יֵלֵכוּ וְאֶת־יְהוָה אֱלֹהֵיהֶם יְבַקֵּשׁוּ׃ צִיּוֹן
, ſeculi fœdere Dominum ad vos copulate & ,venite :eorū facies huc viam interrogabūt
יִשְׁאָלוּ דֶּרֶךְ הֵנָּה פְנֵיהֶם בֹּאוּ וְנִלְווּ אֶל־יְהוָה בְּרִית עוֹלָם
,eas fecerūt errare earū paſtores,meꝰ populꝰ fuerunt perditæ Oves.tradetur oblivioni non
6 לֹא תִשָּׁכֵחַ׃ צֹאן אֹבְדוֹת הָיוּ עַמִּי רֹעֵיהֶם הִתְעוּם
Omnes .ſui accubitus ſunt oblitæ ,abierunt collem ad monte de :eas abegerunt montibꝰ
7 הָרִים שׁוֹבְבִים מֵהַר אֶל־גִּבְעָה הָלָכוּ שָׁכְחוּ רִבְצָם׃ כָּל־
peccaverūt quòd eo pro:deliquimꝰ Non:dixerūt earū hoſtes &,eas comederūt,eas invenientes
מוֹצְאֵיהֶם אֲכָלוּם וְצָרֵיהֶם אָמְרוּ לֹא נֶאְשָׁם תַּחַת אֲשֶׁר חָטְאוּ
,Babel medio de Avolate .Domino eorū patrū expectationi &,juſtitiæ habitaculo Domino
8 לַיהוָה נְוֵה־צֶדֶק וּמִקְוֵה אֲבוֹתֵיהֶם יְהוָה׃ נֻדוּ מִתּוֹךְ בָּבֶל
ego ecce Quoniā .pecoris facies ad hirci tanquā eſtote &:egredimini Chaſdim terra de &
9 וּמֵאֶרֶץ כַּשְׂדִּים יֵצֵאוּ וִהְיוּ כְּעַתּוּדִים לִפְנֵי־צֹאן׃ כִּי הִנֵּה אָנֹכִי
diſponent &,aquilonis terra de magnarū gentiū cœtum Babel ſuper faciens aſcēdere &,ſuſcitans
מֵעִיר וּמַעֲלֶה עַל־בָּבֶל קְהַל־גּוֹיִם גְּדֹלִים מֵאֶרֶץ צָפוֹן וְעָרְכוּ
erit Et .vacui revertetur non,proſperantis fortis tanquā ejꝰ ſagittæ :capietur inde ;ei
10 לָהּ מִשָּׁם תִּלָּכֵד חִצָּיו כְּגִבּוֹר מַשְׁכִּיל לֹא יָשׁוּב רֵיקָם׃ וְהָיְתָה
quoniā,fuiſtis læti Quoniā .Dñs dixit ,ſaturabūtur eā ſpoliantes omnes :ſpolium in Chaſdim
11 כַשְׂדִּים לְשָׁלָל כָּל־שֹׁלְלֶיהָ יִשְׂבָּעוּ נְאֻם־יְהוָה׃ כִּי תִשְׂמְחוּ כִּי
,germinis vitula ſicut incrementum ſumpſiſtis quoniā : meā hæreditatē diripientes exultâſtis
תַעַלְזוּ שֹׁסֵי נַחֲלָתִי כִּי תָפוּשִׁי כְּעֶגְלָה דָשָׁה
ecce :veſtra genitrix erubuit ,valde veſtra mater eſt affecta Pudore.fortes ſicut exultâſtis &
12 וְתִצְהֲלִי כָּאַבִּרִים׃ בּוֹשָׁה אִמְּכֶם מְאֹד חָפְרָה יוֹלַדְתְּכֶם הִנֵּה
,habitabitur non Domini iram,Propter .ſolitudo & ,vaſtitas,deſertum gentiū noviſſimum
13 אַחֲרִית גּוֹיִם מִדְבָּר צִיָּה וַעֲרָבָה׃ מִקֶּצֶף יְהוָה לֹא תֵשֵׁב
univerſis ſuper ſibilabit &,ſtupebit Babel ſuper tranſiens omnis :ipſa tota ſolitudo erit &
וְהָיְתָה שְׁמָמָה כֻּלָּהּ כֹּל עֹבֵר עַל־בָּבֶל יִשֹּׁם וְיִשְׁרֹק עַל־כָּל־
ne ,eam ad jacite,arcum tendentes omnes circuitu Babel ſuper aciem Struite .ejus plagis
14 מַכּוֹתֶיהָ׃ עִרְכוּ עַל־בָּבֶל סָבִיב כָּל־דֹּרְכֵי קֶשֶׁת יְדוּ אֵלֶיהָ אַל־
dedit ,undique eam ſuper Clamate .peccavit Dominū contra quia : ſagitta in parcatis
15 תַּחְמְלוּ אֶל־חֵץ כִּי לַיהוָה חָטָאָה׃ הָרִיעוּ עָלֶיהָ סָבִיב נָתְנָה
, ipſa Domini ultio quia :ejus muri ſunt deſtructi,ejꝰ fundamenta ceciderunt ,ſuā manū
יָדָהּ נָפְלוּ אָשְׁוִיֹּתֶיהָ נֶהֶרְסוּ חוֹמוֹתֶיהָ כִּי נִקְמַת יְהוָה הִיא
falcē tenentē & ,Babel de ſatorē Succidite .ei facite , fecit ſicut :eā in ulciſcamini
16 הִנָּקְמוּ בָהּ כַּאֲשֶׁר עָשְׂתָה עֲשׂוּ־לָהּ׃ כִּרְתוּ זוֹרֵעַ מִבָּבֶל וְתֹפֵשׂ מַגָּל
ſuā terrā ad vir &,reſpicient ſuū populū ad vir depopulatoris gladii faciebꝰ à :meſſis tēpore in
בְּעֵת קָצִיר מִפְּנֵי חֶרֶב הַיּוֹנָה אִישׁ אֶל־עַמּוֹ יִפְנוּ וְאִישׁ לְאַרְצוֹ
, Aſſur rex eū devoravit Primus .expulerunt leones , Iſrael diſperſum Pecus .fugient
17 יָנֻסוּ׃ שֶׂה פְזוּרָה יִשְׂרָאֵל אֲרָיוֹת הִדִּיחוּ הָרִאשׁוֹן אֲכָלוֹ מֶלֶךְ אַשּׁוּר
Dominus dixit ſic Propterea .Babel rex Nebuchadreſar eum exoſſavit noviſſimus iſte &
18 וְזֶה הָאַחֲרוֹן עִצְּמוֹ נְבוּכַדְרֶאצַּר מֶלֶךְ בָּבֶל׃ לָכֵן כֹּה־אָמַר יְהוָה
.Aſſur regem ad viſitavi ſicut : ſuā terram ad & ,Babel regem ad viſitans ego Ecce : Iſrael Deus exercituum
צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל הִנְנִי פֹקֵד אֶל־מֶלֶךְ בָּבֶל וְאֶל־אַרְצוֹ כַּאֲשֶׁר פָּקַדְתִּי אֶל־מֶלֶךְ אַשּׁוּר׃

Verſio VUL. LAT.

CAP. L.

1 VErbū, quod locutus eſt Dñs de Babylone, & de terra Chaldæorum, in manu Jeremiæ prophetæ. 2 Annuntiate in Gentibꝰ, & auditum facite: levate ſignū, prædicate, & nolite celare: dicite; Capta eſt Babylon, confuſus eſt Bel, victus eſt Merodach, confuſa ſunt ſculptilia ejus, ſuperata ſunt idola eorū. 3 Quoniam aſcendit contra eam gens ab Aquilone, quæ ponet terrā ejus in ſolitudinem: & non erit qui habitet in ea ab homine uſque ad pecus: & moti ſunt, & abierunt. 4 In diebus illis, & in tempore illo, ait Dñs: venient filii Iſrael, ipſi & filii Juda ſimul: ambulantes & flentes properabunt, & Dñm Deū ſuum quærent. 5 In Sion interrogabunt viā, huc facies eorū. Venient, & apponentur ad Dñm fœdere ſempiterno, quod nullâ oblivione 6 delebitur. Grex perditꝰ factꝰ eſt populꝰ meꝰ: paſtores eorū ſeduxerunt eos, fecerúntq; vagari in montibus: de monte in collem tranſierunt, obliti ſunt cubilis ſui. 7 Omnes, qui invenerunt, comederunt eos: & hoſtes eorū dixerunt, Non peccavimꝰ: pro eo quòd peccaverunt Dño decori juſtitiæ, & expectationi patrum 8 eorū Dño. Recedite de medio Babylonis, & de terra Chaldæorum egredimini: & eſtote quaſi 9 hœdi ante gregem. Quoniā ecce ego ſuſcito, & adducā in Babylonem congregationem gentium magnarum de terra Aquilonis: & præparabuntur adverſùs eam, & inde capietur: ſagitta ejꝰ, quaſi viri fortis interfectoris, non re- 10 vertetur vacua. Et erit Chaldæa in prædam: omnes vaſtantes eā 11 replebuntur, ait Dñs. Quoniam exultatis, & magna loquimini, diripientes hæreditatem meam: quoniam effuſi eſtis ſicut vituli 12 ſup herbā, & mugîſtis ſicut tauri. Confuſa eſt mater veſtra nimis, & adæquata pulveri, quæ 13 genuit vos: ecce noviſſima erit in Gentibꝰ, deſerta, invia, & arens. Ab ira Dñi non habitabitur, ſed redigetur tota in ſolitudinem: omnis, qui tranſibit per Babylonem ſtupebit, & 14 ſibilabit ſup univerſis plagis ejꝰ. Præparamini contra Babylonem per circuitum omnes qui 15 tenditis arcum; debellate eam, non parcatis jaculis: quia Dño peccavit. Clamate adverſꝰ eā, ubiq; dedit manū, ceciderunt fundamenta ejꝰ, deſtructi ſunt muri ejus, quoniam ultio Do- 16 mini eſt: ultionem accipite de ea; ſicut fecit, facite ei. Diſperdite ſatorem de Babylone, & tenentem falcem in tempore meſſis: à facie gladii columbæ unuſquiſque ad po- 17 pulum ſuum convertetur, & ſinguli ad terram ſuam fugient. Grex diſperſus Iſrael, leones ejecerunt eum: primus comêdit eum rex Aſſur: iſte noviſſimus exoſſavit eum, Nabuchodo- 18 noſor rex Babylonis. Propterea hæc dicit Dominus exercituum, Deus Iſrael; Ecce ego viſitabo regem Babylonis, & terram ejus, ſicut viſitavi regem Aſſur.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

19 Ἃ ἐλάλησε κύριος ἐφ' ὑμᾶς τοὺς καταλοίπους Ἰούδα· μὴ εἰσέλθητε εἰς Αἴγυπτον. καὶ νῦν γνόντες γνώσεσθε, 20 Ὅτι ἐπονηρεύσασθε ἐν (ρ) ψυχαῖς ὑμῶν, ἀποστείλαντές με, λέγοντες, Πρόσευξαι περὶ ἡμῶν πρὸς κύριον, καὶ κατὰ πάντα (σ) ἃ ἐὰν λαλήσει σοι 21 κύριος, ποιήσομεν· Καὶ οὐκ (τ) ἠκούσατε τῆς φωνῆς κυρίου, ἧς ἀπέστειλέ 22 με πρὸς ὑμᾶς. Καὶ νῦν ἐν ῥομφαίᾳ καὶ ἐν λιμῷ ἐκλείψετε ἐν τῷ τόπῳ, (υ) ᾧ ὑμεῖς βούλεσθε εἰσελθεῖν κατοικεῖν ἐκεῖ.

19 *Quæ loquutus eſt Dominus ſuper vos reſiduos Judæ: nolite intrare in Ægyptum. Et nunc cognoſcentes cognoſcetis,* 20 *(g) Quia malignè egiſtis in animas veſtras, mittentes me, dicentes; Ora pro nobis ad Dominum, & juxta omnia, quæcunque loquetur tibi Dominus, (h) faciemus:* 21 *Et non audîſtis vocem Domini, quâ miſit me ad vos:* 22 *Et nunc in gladio, & in (i) fame deficietis in loco, quò vos vultis intrare ad habitandum ibi.*

MS.A. (ρ) ταῖς ψυχαῖς (σ) ἃ ἂν λαλήσῃ (τ) εἰσηκούσατε (υ) οὗ ὑμεῖς βούλεσθαι

Cap. 43. Vulg. Lat. ΚΕΦ. ν'.

1 ΚΑὶ ἐγενήθη, ὡς ἐπαύσατο Ἱερεμίας λέγων πρὸς τὸν λαὸν πάντας τοὺς λόγους κυρίου (α), οὓς ἀπέστειλεν αὐτὸν κύριος (β) πρὸς αὐτούς, πάντας τοὺς λόγους 2 τούτους, Καὶ εἶπεν Ἀζαρίας υἱὸς (γ) Μαασαίου, καὶ Ἰωάναν υἱὸς Κάρηε, καὶ πάντες οἱ ἄνδρες, οἱ εἰπόντες τῷ Ἱερεμίᾳ, λέγοντες, Ψευδῆ, οὐκ ἀπέστειλέ σε κύριος πρὸς ἡμᾶς, (δ) λέγων, Μὴ εἰσέλθητε εἰς Αἴγυ- 3 πτον (ˊ)οἰκεῖν ἐκεῖ, Ἀλλ' ἢ Βαροὺχ υἱὸς Νηρίου συμβάλλει σε πρὸς ἡμᾶς, ἵνα δῷς ἡμᾶς εἰς χεῖρας τῶν Χαλδαίων, τοῦ θανατῶσαι ἡμᾶς, (ϛ) καὶ ἀποικισθῆναι ἡμᾶς εἰς Βαβυλῶ- 4 να. Καὶ οὐκ (¨)ἤκουσεν Ἰωάναν, καὶ πάντες (ζ) ἡγεμόνες τῆς δυνάμεως, καὶ πᾶς ὁ λαὸς τῆς φωνῆς κυρίου, κατ- 5 οικῆσαι ἐν γῇ Ἰούδα. Καὶ ἔλαβεν Ἰωάναν, καὶ πάντες οἱ ἡγεμόνες τῆς δυνάμεως (η) πάντας τοὺς καταλοίπους Ἰούδα, τοὺς ἀποστρέψαντας κατοικεῖν ἐν τῇ (θ) γῇ,

CAP. L.

1 *ET factum eſt, ut ceſſavit Hieremias dicens ad populum omnes ſermones Domini, quibus miſerat eum Dominus ad eos, omnia verba hæc;* 2 *Et dixit Azarias filius Maaſiæ, et Joanan filius Caree, & omnes (a) viri: qui dixerunt Hieremiæ, dicentes; Mendacia: non miſit te Dominus ad nos, dicens, Ne ingrediamini in Ægyptum ad habitandum illic:* 3 *Sed Baruch filius Neriæ concitat te adverſùs nos; ut des nos in manus Chaldæorum ad occidendum nos, et transferendum nos in Babylonem:* 4 *Et non audivit Joanan, & omnes duces virtutis, & omnis populus vocem Domini, ut habitarent in terra Juda.* 5 *Et aſſumpſit Joanan, & univerſi duces virtutis omnes reſiduos Juda, qui (b) reverterant habitare in terra,*

MS.A. (α) θεοῦ αὐτῶν, οὓς (β) ὁ θεὸς αὐτῶν πρὸς (γ) Μασαίου, (δ) εἰπεῖν, Μὴ (ˊ) κατοικεῖν (ϛ) καὶ τοῦ (¨) ἤκουσε (ζ) οἱ ἡγεμόνες (η) ἅπαντας τοὺς λοιποὺς (θ) γῇ Ἰούδα, Τοὺς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

נ

1 פִּתְגָמָא דְמַלֵּיל יְיָ עַל בָּבֶל וְעַל אֲרַע כַּסְדָּאֵי בְּיַד יִרְמְיָה נְבִיָּא׃ 2 חַוּוֹ בְעַמְמַיָּא וּבַסַּרוּ וּזְקוּפוּ
אָתָא בַּסַּרוּ לָא תִמְנְעוּן אֲמַרוּ אִתְכְּבִישַׁת בָּבֶל בְּהִיתוּ דְפָלְחִין לְבֵל אִתְּבַרוּ דְפָלְחִין
3 לִמְרוֹדַךְ בְּהִיתוּ צַלְמָנַהָא אִתַּבְּרָא טַעֲוָתַהָא׃ אֲרֵי סָלִיק עֲלַהּ עַם מֵאַרְעָא צִפּוּנָא הוּא
4 יְשַׁוֵּי יַת אַרְעַהּ לְצָדוּ וְלָא יְהֵי יָתֵיב בַּהּ מֵאֱנָשָׁא וְעַד בְּעִירָא אִטַּלְטַלוּ גְלוֹ׃ בְּיוֹמַיָּא
הָאִנּוּן וּבְעִדָּנָא הַהִיא אֲמַר יְיָ וְיִתְחַבְּרוּן בְּנֵי יִשְׂרָאֵל אִנּוּן וּבְנֵי יְהוּדָה כַּחֲדָא בְּמִגְלֵיהוֹן
5 כַּד הֲווֹ בָכַן גָּלוֹ וּבִמְתוּבֵיהוֹן מֵאֲרַע גָּלוּתְהוֹן פּוּלְחָנָא דַיְיָ אֱלָהֲהוֹן יִתְבְּעוּן׃ לְצִיּוֹן
יִשְׁאֲלוּן לְמֵיזַל אוֹרְחָא מְכַבְּשָׁא קֳדָמֵיהוֹן יֵיתוּן וְיִתּוֹסְפוּן עַל עַמֵּיהּ דַּיְיָ וְיִגְזַר לְהוֹן קְיָם
6 עָלַם דְּלָא יִפְסוֹק׃ עָאן מְבַדְּרָא הֲווֹ עַמִּי מַלְכַיָּא טַלְטְלוּנוּן שִׁלְטוֹנַיָּא בַּזּוּנוּן מִטּוּר לְרָמָא
7 גְּלוֹ אִתְנְשִׁיאוּ מִבֵּית רוֹחֲצָנְהוֹן׃ כָּל דְּאַשְׁכְּחוּנוּן בַּזּוּנוּן וְסָנְאֵיהוֹן אָמְרִין לֵית עֲלָנָא
8 חוֹבָא חֲלָף דְּחַבוּ קֳדָם יְיָ אִתְרְחִקוּ מִמְּדוֹר קוּדְשֵׁהּ וְסִבּוּר אֲבָהָתְהוֹן יְיָ׃ גְּלוֹ מִגּוֹ בָבֶל
9 וּמֵאֲרַע כַּסְדָּאֵי פּוּקוּ וַהֲווֹ כְּרַבְרְבִין בְּרֵישׁ עַמָּא׃ אֲרֵי הָא אֲנָא מַיְתֵי וּמַסֵּיק עַל בָּבֶל
מַשְׁרְיָת עַמְמִין סַגִּיאִין מֵאַרְעָא צִפּוּנָא וְיִסַּדְּרוּן עֲלַהּ קְרָב מִתַּמָּן תִּתְאֲחַד גִּרְרוֹהִי כְּגִבָּר
10 11 מְתַכֵּיל לָא תְתִיבִין רֵיקָן׃ וּתְהֵי אֲרַע כַּסְדָּאֵי לְבִזָּא כָּל בָּזְזָהָא יִסְבְּעוּן אֲמַר יְיָ׃ אֲרֵי תֶחְדוּן
12 וַאֲרֵי תְבוּעוּן בָּזְזֵי אַחְסַנְתִּי אֲרֵי תְדוּצוּן כְּעֶגְלֵי רִבְקָא וּתְטוּלוּן כְּגִבָּרַיָּא׃ בְּהִיתַת כְּנִישַׁתְכוֹן
13 לַחֲדָא אִתְבְּרַת מְדִינַתְכוֹן הָא סוֹפְהוֹן דְּעַמְמַיָּא מַדְבַּר צָדֵי וַחֲרוּב׃ עַל דְּאַרְגֵּזְתְּ בָּבֶל
14 קֳדָם יְיָ לָא תִתְּיְתֵב וּתְהֵי לְצָדוּ כֻּלַּהּ כֹּל דְּיִעְבַּר עַל בָּבֶל יִכְלֵי וִינִיד עַל כָּל מַחְתַהָא׃ סַדַּרוּ
עַל בָּבֶל סְחוֹר סְחוֹר כָּל מָתְחֵי קַשְׁתָּא שְׁדוֹ בַהּ לָא תְחוּסוּן עַל גִּרְרַיָּא אֲרֵי קֳדָם יְיָ חָבַת׃
15 יַבִּיבוּ עֲלַהּ סְחוֹר סְחוֹר אִתְמְסַרַת בִּידֵיהוֹן נְפָלָא אֲשִׁיתַהָא אִתְפַּגַּרָא שׁוּרַהָא אֲרֵי
16 פּוּרְעָנוּת עַמָּא דַיְיָ הִיא אִתְפְּרַעוּ מִנַּהּ כְּמָא דַעֲבַדַת עֲבִידוּ לַהּ׃ שֵׁיצוּ מַלְכָּא מִבָּבֶל
וַאֲחִידוּ חַרְבָּא בְּעִדָּן קְטוֹל מִן קֳדָם חֶרֶב סָנְאָה דְּהִיא כַּחֲמַר מְרַוְיָא גְּבַר לְעַמֵּיהּ יִתְפְּנוּן
17 וּגְבַר לְאַרְעֵיהּ יְעָרְקוּן׃ עַם מְבַדְּרָא יִשְׂרָאֵל מַלְכַיָּא טַלְטְלוּנוּן קַדְמָאָה שְׁלִיט בְּהוֹן מַלְכָּא
18 דְּאַתּוּר וְדֵין בַּתְרָאָה אַסְפְּנוּן נְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא דְבָבֶל׃ בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת אֱלָהָא
דְּיִשְׂרָאֵל הָא אֲנָא מַסְעַר עַל מַלְכָּא דְבָבֶל וְעַל אַרְעֵיהּ כְּמָא דְּאַסְעָרִית עַל מַלְכָּא דְאַתּוּר׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. L.

1 VErbum quod locutꝰ eſt Dñs contra Babylonem, & contra terram Chaldæorum in manu Jeremiæ prophetæ. 2 Narrate in populis, & annuntiate & levate ſignum, anuntiate & nolite ceſſare: dicite, Capta eſt Babylon, confuſi ſunt qui colebant Bel, confracti qui colebant Merodach: confuſa ſunt ſimulachra ejꝰ, contrita ejꝰ idola. 3 Quia aſcendit contra eam populꝰ de terra Aquilonis; ipſe ponet terram ejꝰ in deſolationem, & non erit qui habitet in ea; ab homine uſque ad pecꝰ, moti ſunt & migraverunt. 4 In diebus illis & in tempore illo, dicit Dñs, jungentur filii Iſrael, ipſi & filii Juda ſimul: cùm migrarent, flentes migrarunt; at cùm revertentur de terra tranſmigrationis ſuæ, cultum Dñi Dei ſui quærent. 5 De Sion interrogabunt ut eant via trita ante ſe ibunt, & addentur ad populum Dñi: & inibit cum eis pactum ſempiternum, quod nunquam ceſſabit. 6 Oves diſperſæ fuerunt populꝰ meꝰ; reges abduxerunt eos, dominatores deprædati ſunt eos: de monte in collem migraverunt, obliti ſunt domꝰ confidentiæ ſuæ. 7 Omnes qui invenerunt eos, diripuerunt eos: & inimici eorum dicunt, Non reputabitur nobis peccatum: quia pro eo quòd peccaverunt coram Dño, longè receſſerunt ab habitaculo veritatis ejꝰ, & ab expectatione patrū ſuorū Dño. 8 Recedite de medio Babylonis, & de terra Chaldæorū egredimini: eſtote quaſi principes in capite populi. 9 Quia ecce ego adducā & aſcendere faciā contra Babylonē copias populorū multorū de terra Aquilonis, & ordinabunt contra eā prœliū; inde capietur: ſagitta ejꝰ quaſi fortis orbans, non revertetur vacua. 10 Et erit terra Chaldæorū in direptionē; omnes diripientes eā ſaturabuntur, dicit Dñs. 11 Quia gaudetis & lætamini diripientes hæreditatē meā, quia exultatis quaſi *vituli ſaginati*, & hinnitis quaſi fortes. 12 Confuſa eſt congregatio veſtra nimis, contrita eſt provincia veſtra: ecce finis populorū deſertū, deſolatio & ſolitudo. 13 Eò quod tu Babylon irritâſti Dñm, nō habitaberis, & eris in deſolationē univerſa. Omnis enim qui tranſierit per Babylonē, clamabit, & movebit caput ſuū ob univerſas plagas ejꝰ. 14 Ordinate contra Babylonē per circuitū omnes tendentes arcū, projicite in eā, & ne parcatis ſagittis; quia corā Dño peccavit. 15 Ululate ſup eā per circuitū, tradita eſt in manꝰ eorū, ceciderūt fundamenta ejꝰ, deſtructi ſunt muri ejꝰ; quoniā ultio populi Dñi eſt: ulciſcimini eā: ſicut fecit, facite ei. 16 Diſperdite regē de Babylone, & *tenete* gladiū in tempore occiſionis, à facie gladii inimici, qui eſt ſicut vinū inebrians; unuſquiſque ad populū ſuū convertetur, & unuſquiſque ad terrā ſuā fugiet. 17 Populꝰ diſperſus Iſrael. Reges tranſtulerūt eos: primꝰ dominatꝰ eſt eis rex Aſſur, & iſte noviſſimè conſumpſit eos Nabuchodonoſor rex Babylonis. 18 Propterea hæc dicit Dñs exercituū Deꝰ Iſrael: Ecce ego viſitabo ſup regē Babylonis, & ſuper terrā ejꝰ, ſicut viſitavi ſuper regem Aſſur.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

*ܩܦܠܐܘܢ * ܢ * * ܥܠ ܒܒܠ *

ܦܬܓܡܐ ܕܡܠܠ ܡܪܝܐ ܥܠ ܒܒܠ ܘܥܠ ܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ. ܒܐܝܕ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ. * ܚܘܘ 1 2
ܒܥܡܡܐ ܘܐܫܡܥܘ. ܘܐܩܝܡܘ ܢܝܣܐ. ܐܫܡܥܘ ܘܠܐ ܬܟܣܘܢ. ܐܡܪܘ ܕܐܬܐܚܕܬ ܒܒܠ:
ܢܦܠ ܒܝܠ. ܘܐܬܒܗܬ ܡܪܘܕܟ. ܒܗܬܘ ܦܬܟܪܝܗ̇. ܘܐܬܬܒܪܘ ܨܠܡܝܗ̇. * ܡܛܠ ܕܣܠܩ 3
ܥܠܝܗ̇ ܥܡܐ ܡܢ ܓܪܒܝܐ. ܗܘ ܢܥܒܕ ܠܐܪܥܐ ܗ̇ܝ ܠܚܘܪܒܐ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܥܡܪ ܒܗ̇ ⁖ ܡܢ
ܒܢܝܢܫܐ ܘܥܕܡܐ ܠܒܥܝܪܐ. ܢܕܘ ܘܐܙܠܘ. * ܒܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ ܘܒܙܒܢܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ⁖ 4
ܢܐܬܘܢ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܗܢܘܢ ܘܒܢܝ ܝܗܘܕܐ ܐܟܚܕܐ. ܡܗܠܟܝܢ ܘܒܟܝܢ. ܘܠܡܪܝܐ
ܐܠܗܗܘܢ ܒܥܝܢ. * ܥܠ ܐܘܪܚܬܐ ܕܨܗܝܘܢ ܢܫܐܠܘܢ. ܠܘܩܒܠ ܐܦܝܗܘܢ. ܐܬܘ ܢܬܢܩܦ ܠܡܪܝܐ 5
ܒܩܝܡܐ ܕܠܥܠܡ ܕܠܐ ܢܬܛܥܐ. * ܐܝܟ ܥܢܐ ܐܒܝܕܐ ܗܘܐ ܥܡܝ. ܪܥܘܬܗܘܢ ܐܛܥܝܘ ܐܢܘܢ. ܘܥܠ 6
ܛܘܪܐ ܪܡܐ ܐܙܠܘ. ܘܛܥܘ ܡܪܒܥܬܗܘܢ. * ܟܠ ܡܢ ܕܐܫܟܚ ܐܢܘܢ. ܐܟܠ ܐܢܘܢ. 7
ܘܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ ܐܡܪܝܢ. ܠܐ ܢܫܒܘܩ ܐܢܘܢ. ܥܠ ܕܚܛܘ ܠܡܪܝܐ ܘܒܡܪܒܥܐ ܕܩܘܕܫܐ.
ܘܣܒܪܐ ܕܐܒܗܬܗܘܢ. ܡܪܝܐ ܗܘ. * ܥܪܘܩܘ ܡܢ ܓܘ ܒܒܠ. ܘܡܢ ܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ ܦܘܩܘ. 8
ܘܗܘܘ ܐܝܟ ܬܝܫܐ ܩܕܡ ܥܢܐ. * ܡܛܠ ܕܗܐ ܡܥܝܪ ܐܢܐ ܘܡܣܩ ܐܢܐ ܥܠ ܒܒܠ ⁖ ܟܢܫܐ 9
ܕܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܓܪܒܝܐ. ܘܢܣܕܪܘܢ ܥܠܝܗ̇. ܘܡܢ ܬܡܢ ܬܬܐܚܕ. ܓܐܪܝܗܘܢ ܐܝܟ
ܓܒܪܐ ܕܡܟܫܪ ܘܠܐ ܢܗܦܟܘܢ ܣܦܝܩܐܝܬ. * ܘܬܗܘܐ ܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ ܠܒܙܬܐ. ܘܟܠܗܘܢ 10
ܒܐܙܘܝܗ̇ ܢܣܒܥܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܕܚܕܝܬܘܢ. ܘܡܛܠ ܕܐܫܬܒܗܪܬܘܢ ⁖ ܒܙܘ 11
ܙܝ ܝܪܬܘܬܝ ⁖ ܘܐܬܒܣܡܬܘܢ ܐܝܟ ܥܓܠܐ ܕܒܛܡܐ. ܘܐܪܓܫܬܘܢ ܐܝܟ ܕܟܪܐ ܕܥܢܐ. * ܒܗܬܬ ܐܡܟܘܢ 12
ܛܒ. ܘܐܬܚܦܝܬ ܝܠܕܬܟܘܢ. ܗܐ ܚܪܬܐ ܕܥܡܡܐ ܐܝܟ ܡܕܒܪܐ. ܚܪܒܐ. ܘܨܕܝܐ. * ܡܢ ܪܘܓܙܗ 13
ܕܡܪܝܐ ܠܐ ܬܬܝܬܒ. ܘܬܗܘܐ ܨܕܝܐ ܟܠܗ̇. ܘܟܠ ܕܢܥܒܪ ܥܠ ܒܒܠ ⁖ ܢܬܗܡܗ ܘܢܫܪܘܩ
ܥܠ ܟܠܗܝܢ ܡܚܘܬܗ̇. * ܐܣܬܕܪܘ ܥܠ ܒܒܠ. ܟܠ ܕܡܫܚܝܢ ܩܫܬܐ. ܫܕܘ ܓܐܪܐ 14
ܥܠܝܗ̇. ܠܐ ܬܚܘܣܘܢ ܥܠ ܓܐܪܐ. * ܝܒܒܘ ܥܠܝܗ̇ ܡܢ ܚܕܪܝܗ̇. ܝܗܒܬ ܐܝܕܐ. ܢܦܠܘ 15
ܫܬܐܣܝܗ̇. ܐܬܗܦܟܘ ܫܘܪܝܗ̇. ܡܛܠ ܕܬܒܥܬܗ ܕܡܪܝܐ ⁖ ܐܬܦܪܥܘ ܡܢܗ̇. ܐܝܟ ܡܐ
ܕܥܒܕܬ ܥܒܕܘ ܠܗ̇. * ܘܐܘܒܕܘ ܙܪܘܥܐ ܡܢ ܒܒܠ ⁖ ܘܐܚܝܕ ܡܓܠܐ ܒܙܒܢܐ ܕܚܨܕܐ. 16
ܡܛܠ ܚܪܒܐ ܕܢܟܝܬܐ ⁖ ܐܢܫ ܠܥܡܗ ܢܬܦܢܐ. ܘܐܢܫ ܠܐܪܥܗ ܢܥܪܘܩ. * ܥܢܐ 17
ܛܥܝܬܐ ܐܝܣܪܝܠ ⁖ ܐܪܝܘܬܐ ܐܛܥܝܘ ܐܢܘܢ. ܩܕܡܝܐ ܐܟܠܗ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. ܘܗܢܐ ܐܚܪܝܐ
ܚܪܡ ܓܪܡܘܗܝ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ 18
ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܗܐ ܦܩܕ ܐܢܐ ܥܠ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܘܥܠ ܐܪܥܗ ⁖ ܐܝܟ ܕܦܩܕܬ ܥܠ
ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ.

CAP. L.

Contra Babylonem.

* SErmo quem prædixit Dominus de Baby- 1
lone & de terra Chaldæorum, per Jeremiam
prophetam. Annuntiate inter gentes, prædi- 2
cate, & attollite vexillum : prædicate, ne ce-
letis : dicite, Capta eſt Babel, cecidit Bil,
erubuit Merodach, pudefacta ſunt idola ejꝰ,
& ſculptilia ejꝰ confracta. Nam invaſit il- 3
lam populꝰ ex Aquilone : is reddet terram
illam deſolatam, adeo ut non remaneat in illa
habitator : tam homines quàm jumenta mi-
grabunt & abibunt. Diebꝰ illis & tempore 4
illo, ait Dominꝰ, advenient Iſraelitæ unà cum
Judæis ambulantes, & flentes, & Dominum
Deum ſuum quærentes. De viis Sionis in- 5
terrogabunt in facies ſuas *provoluti, dicen-*
tes; Venite, ſequamur Dominum fœdere per-
petuo nunquam oblivioni tradendo. Simi- 6
lis gregi perdito fuit populus meꝰ, paſtores
eorum ſeduxerunt eos, & ſuper montes ad ex-
celſa migraverunt, & obliti ſunt caulæ ſuæ.
Quicunque invenit eos, devoravit illos : & 7
hoſtes eorum dicunt, Non dimittemus eos,
quia peccaverunt in Dominum & in habita-
culum ejus ſanctum; quum ſpes patrum eo- 8
rum fuerit Dominꝰ. Fugite de medio Baby-
lonis, et de terra Chaldæorum egredimini,
et eſtote ut hirci ante gregem : Quoniam 9
ecce concitaturꝰ et educturus ſum contra Ba-
bylonem turmam populorum multorum è ter-
ra Aquilonari, qui *in aciem* diſponent ſeſe
contra eam, et ſubinde capietur : quorum
ſagittæ ſunt ut viri dexteri nec vacuè redeun-
tis. Et erit terra Chaldæorum direptioni, 10
et omnes direptores ejꝰ ſatiabuntur, ait Do-
minus. Ut lætemini, et ut exultetis, O primi- 11
tiæ hæreditatis meæ, ſubſiliatis ut vituli ſagi-
nati, et ut arietes ovium ſaltetis ; Erubeſcet 12
admodum mater veſtra, et pudefiet genitrix
veſtra : ecce poſtrema *regio* populorum vel-
uti deſertum vaſtabitur et deſolabitur. Pro- 13
pter indignationem Domini non habitabitur,
ſed erit tota deſolata : et quicunque tranſierit
ſecꝰ Babylonem, ſtupebit et ſibilabit propter
omnes plagas ejꝰ. Inſtruite vos contra Baby- 14
lonem : omnes qui arcu jaculari nôſtis, jacu-
lamini adverſùs eam : ne parcatis ſagittis. Vo- 15
ciferamini contra eam undequaque ; manum
dedit, corruerunt fundamenta ejꝰ, deſtructi
ſunt muri ejꝰ : quandoquidem retributio Do-
mini eſt, ultionem ſumite de ea : quemadmodũ
fecit, facite illi; Et extinguite ex Babylone ſa- 16
torem et tractantem falcem tempore meſſis :
metu gladii infeſtantis, quilibet ad gentem
ſuam revertatur, et quiſque ad terram ſuam
fugiat. Ovis errans eſt Iſrael, leones ſedu- 17
xerunt eos : prior devoravit eum rex Aſſyriæ,
hic autem poſterior Nebuchadnoſar rex Ba-
bylonis, *crudelitate* ſuperavit illum. Propter- 18
ea ſic ait Dominus potentiſſimus Deus Iſrae-
lis, Ecce animadverſurus ſum in regem Baby-
lonis & in terram ejus, quemadmodum ani-
madverti in regem Aſſyriæ :

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

19 20 * هذا ما تكلم به الرب عليكم يا بقايا يهودا * لا تدخلوا الي مصر * والآن عالمون
تعلمون انكم جنيتم في نفوسكم * وارسلتموني قايلين صلّ عنا للرب * بكل ما عساه
21 22 يتكلم الرب معك نصنع * ولم تسمعوا صوت الرب الذي ارسله بي لكم * والآن بالسيف
وبالجوع تفنون في الموضع الذي انتم تريدون ان تدخلوا لتسكنوا هناك *

Hæc ſunt quæ locutus eſt Dominus de 19
vobis, O reliquiæ Judæ : Ne ingredia- 20
mini Ægyptum. Jam verò certiſſimè
ſcitote vos in voſmetipſos peccare, ſi cùm
miſeritis me, dicentes, Ora pro nobis
Dominum: quicquid locutus fuerit tecum
Dominus, exequemur : Non auſcultetis 21
voci Domini quam per me miſit ad vos :
Demum gladio & fame vos perituros 22
in loco quem adire vultis ad habitan-
dum ibi.

* الفصل الخمسون *

1 * وكان لما فرغ ارميا قايلا للشعب جميع اقوال الرب الههم * الذي ارسله الرب الههم
2 اليهم بجميع هذه الاقوال * فقال زخرياس بن ماساو ويونان بن كاريا * وجميع الرجال قالوا
لارميا قايلين * كذبا * لم يرسلك الرب الينا لتقول لا تدخلوا الي مصر لتسكنوا
3 هناك * لكن باروخ بن نيريوا يمالئك علينا كي تسلمنا الي ايدي الكلدانيين
4 ليميتونا ويسبونا الي بابل * ولم يسمع يونان وجميع قواد الجيش وكل الشعب صوت الرب
5 ليقطنوا بارض يهودا * واخذ يونان وجميع مقدمي الجيش * جميع بقايا يهودا الراجعين
ليقطنوا بارض يهودا *

CAP. L.

* *FActum eſt autem, cùm ceſſaſſet Je-* 1
remia dicere populo cunctos ſermones
Domini Dei ipſorũ; (quippe quem miſiſſet
ad eos Dominus Deus eorum cum omnibus
ejuſcemodi ſermonibus) Dixit Zuba- 2
rias filius Maaſiæ, & Jonan filius Ca-
reæ, omneſque viri locuti ſunt ad Jere-
miam, dicentes ; Falſum eſt, non miſit
te Dominus ad nos ut diceres, Ne in-
grediamini Ægyptum ut habitetis illic :
Sed Baruch Neriæ filius animat te contra 3
nos, ad tradendum nos in manus Chaldæ-
orum, ut morte nos afficiant, aut capti-
vos abducant nos in Babelem. Sic non 4
auſcultaverunt Jonan, neque omnes duces
exercitûs, neque totus ille populus, voci
Domini, ut commorarentur in terra Judæ:
Sed Jonan & omnes duces exercitûs, 5
deductis omnibus reliquiis Judæ rede-
untibus ad habitandum in terra Judæ,

ירמיה : נ

:Basan & ,Charmel pascetur & ,suũ habitaculũ ad Israel reducam Et
19 ושבבתי את־ישראל אל־נוהו ורעה הכרמל והבשן 19
tempore in & ,illis diebus In .ej⁹ anima saturabitur Ghilhad &,Ephraim monte in &
20 ובהר אפרים והגלעד תשבע נפשו: בימים ההם ובעת 20
peccata & ;ipsa non & , Israel iniquitas quæretur ,Dominus ait ,illo
ההיא נאם־יהוה יבקש את־עון ישראל ואיננו ואת־חטאת
terram *Super* .*faciam reliquam quem* ei parcam quoniã : *invenientur* non & ,Jehudah
21 יהודה ולא תמצאינה כי אסלח לאשר אשאיר: על־הארץ 21
, eos post *anathematiza* & ,*desola* : *visita* habitatores *ad* &,*eam super* ascende rebellantiũ
מרתים עלה עליה ואל־יושבי פקד חרב והחרם אחריהם
: terra in belli *Vox* .tibi præcepi quæ omnia juxta fac & : Dominus dixit
22 נאם־יהוה ועשה ככל אשר צויתיך: קול מלחמה בארץ 22
? terræ universæ malleus est contritus & ,est abscissus Quomodo .magna contritio &
23 ושבר גדול: איך נגדע וישבר פטיש כל־הארץ 23
es capta etiam & , te Illaqueavi ? gentibus in Babel *desolationem* in fuit Quomodo
24 איך היתה לשמה בבל בגוים: יקשתי לך וגם־נלכדת 24
Dominũ *in* quoniã ,es comprehensa etiam & ,es inventa : novisti non tu & ,Babel
בבל ואת לא ידעת נמצאת וגם־נתפשת כי ביהוה
:suæ *indignationis* vasa protulit & ,suũ thesaurũ Dominus Aperuit .*litem miscuisti*
25 התגרית: פתח יהוה את־אוצרו ויוצא את־כלי זעמו 25
Venite .Chasdim terra in exercituum *Domini* Domini hoc opus quoniã
26 כי־מלאכה היא לאדני יהוה צבאות בארץ כשדים: באו־ 26
ne :eã *excidione delete* & , *acervos* sicut eã calcate ,ejus *horrea* aperite , *fine à* ei
לה מקץ פתחו מאבסיה סלוה כמו־ערמים והחרימוה אל־
: occisionẽ ad descendent ,ejus vitulos universos Occidite .residuum ei sit
27 תהי־לה שארית: חרבו כל־פריה ירדו לטבח 27
,*fugentium* Vox .eorũ visitationis tempus ,eorũ dies venit quia , eis *super* væ
28 הוי עליהם כי־בא יומם עת פקדתם: קול נסים 28
,nostri Dei Domini ultionem Sijon in *annuntiandũ ad* : Babel terra de *evasorum* &
ופלטים מארץ בבל להגיד בציון את־נקמת יהוה אלהינו
, arcum tendentes omnes *multos* Babel *ad facite Audire* .ejus templi ultionem
29 נקמת היכלו: השמיעו אל־בבל רבים כל־דרכי קשת 29
,suũ opus secũdm ei reddite : *evasio* ei sit ne ,*undique eam super* castrametamini
חנו עליה סביב אל־יהי־ פליטה שלמו־לה כפעלה
ad fecit temere Dominum *ad* quia : illi facite , fecit quæ omnia juxta
ככל אשר עשתה עשו־לה כי אל־יהוה זדה אל־
viri omnes & : ejus plateis in ejus juvenes cadent Idcirco .Israel sanctum
30 קדוש ישראל: לכן יפלו בחוריה ברחבתיה וכל־אנשי 30
te ad ego Ecce .Dominus ait , illa die in succidentur ejus *belli*
31 מלחמתה ידמו ביום ההוא נאם־יהוה: הנני אליך 31
tempus ,tuus dies venit quia : exercituum *Dominus* Dominus dixit ,*superbe*
זדון נאם־אדני יהוה צבאות כי בא יומך עת
ignem succendam & : *suscitans* ei non & ,cadet & superbus impinget Et .te visitem
32 פקדתיך: וכשל זדון ונפל ואין לו מקים והצתי אש 32
:exercituum Dominus dixit Sic .ejus *circuitus omnes* consumet &,ejus urbibus in
33 בעריו ואכלה כל־סביבתיו: כה אמר יהוה צבאות 33
apprehenderũt eos captivantes omnes & :simul Jehudah filii & , Israel filii Oppressi
עשוקים בני־ישראל ובני־יהודה יחדו וכל־שביהם החזיקו
exercituum Dominus fortis eorum Redemptor .eos dimittere renuerunt , eos *in*
34 בם מאנו שלחם: גאלם חזק יהוה צבאות 34
, terram faciat quiescere ut : eorum *litem* *litigabit* *lite* ,ejus nomen
שמו ריב יריב את־ריבם למען הרגיע את־הארץ
:Dominus dixit , Chasdim *super* Gladius .Babel habitatores faciat commovere &
35 והרגיז לישבי בבל: חרב על־כשדים נאם־יהוה 35
.ejus sapientes ad & ,ejus principes ad & , Babel habitatores ad &
ואל־ישבי בבל ואל־שריה ואל־חכמיה:

Versio VULG. LAT.

19 Et reducam Israel ad habitaculum suum: & pascetur Carmelum & Basan, & in monte Ephraim & 20 Galaad saturabitur anima ejus. In diebus illis, & in tempore illo, ait Dominus, quæretur iniquitas Israel, & non erit; & peccatum Juda, & non invenietur: quoniam propitius ero eis, quos reliquero. 21 Super terram dominantium ascende, & super habitatores ejus visita, dissipa, & interfice quæ post eos sunt, ait Dominus: & fac jux- 22 ta omnia quæ præcepi tibi. Vox belli in terra, & contritio magna. 23 Quomodò confractus est, & contritus malleus universæ terræ? Quomodò versa est in desertum 24 Babylon in Gentib⁹? Illaqueavi te, & capta es, Babylon, & nesciebas: inventa es & apprehensa: 25 quoniã Dñm provocâsti. Aperuit Domin⁹ thesaurum suũ, & protulit vasa iræ suæ: quoniam opus est Domino Deo exercituum in 26 terra Chaldæorum. Venite ad eam ab extremis finib⁹, aperite ut exeant qui conculcent eam: tollite de via lapides, & redigite in acervos, & interficite eam: 27 nec sit quidquam reliquum. Dissipate universos fortes ejus, descendant in occisionem: væ eis, quia venit dies eorum, tempus 28 visitationis eorum. Vox fugientium, & eorum qui evaserunt de terra Babylonis, ut annuntient in Sion ultionem Domini Dei no- 29 stri, ultionem templi ej⁹. Annuntiate in Babylonem plurimis, omnib⁹ qui tendunt arcum: consistite adversùs eam per gyrum, & nullus evadat: reddite ei secundùm opus suum: juxta omnia quæ fecit, facite illi: quia contra Dominum erecta est, adversùm 30 Sanctum Israel. Idcircò cadent juvenes ejus in plateis ejus: & omnes viri bellatores ejus conticescent in die illa, ait Dominus. 31 Ecce ego ad te superbe, dicit Dominus Deus exercituum: quia venit dies tuus, tempus visitatio- 32 nis tuæ. Et cadet superb⁹, & corruet, & non erit qui suscitet eum: & succendam ignem in urbib⁹ ejus, & devorabit omnia 33 in circuitu ejus. Hæc dicit Dominus exercituum; Calumniam sustinent filii Israel, & filii Juda simul: omnes, qui ceperunt eos, tenent, nolunt dimittere eos. 34 Redemptor eorum fortis, Dominus exercituũ nomen ejus, judicio defendet causam eorũ, ut exterreat 35 terram, & commoveat habitatores Babylonis. Gladius ad Chaldæos, ait Dominus, & ad habitatores Babylonis, & ad principes, & ad sapientes ejus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

6 Τοὺς δυνατοὺς ἄνδρας, καὶ τὰς γυναῖκας, καὶ τὰ νήπια (ι) τὰ λοιπὰ, καὶ τὰς θυγατέρας τοῦ βασιλέως, (κ) καὶ τὰς ψυχὰς ἃς κατέλιπε Ναβουζαρδὰν μετὰ Γοδολίου υἱοῦ Ἀχεικὰμ, καὶ Ἱερεμίαν τὸν 7 προφήτην, καὶ Βαροὺχ υἱὸν Νηρίου. Καὶ εἰσῆλθον εἰς Αἴγυπτον, ὅτι οὐκ ἤκουσαν τῆς φωνῆς κυρίου, καὶ εἰσῆλθον (λ) εἰς Τάφνας. 8 Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς Ἱερεμίαν 9 ἐν Τάφνας, λέγων, Λάβε σεαυτῷ λίθους μεγάλους, καὶ κατάκρυψον αὐτοὺς ἐν προθύροις, ἐν πύλῃ τῆς οἰκίας (μ) Φαραὼ ἐν Τάφνας, κατ' ὀφθαλμοὺς ἀνδρῶν Ἰού- 10 δα, Καὶ ἐρεῖς, Οὕτως εἶπε κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἀποστέλλω, καὶ ἄξω Ναβουχοδονόσορ βασιλέα Βαβυλῶνος, καὶ θήσει αὐτοῦ τὸν θρόνον ἐπάνω τῶν λίθων τούτων ὧν κατέκρυψας, καὶ ἀρεῖ τὰ (ν) ὅπλα ἐπ' αὐτούς, 11 Καὶ εἰσελεύσεται, καὶ πατάξει γῆν Αἰγύπτου, οὓς εἰς θάνατον εἰς θάνατον, καὶ οὓς εἰς ἀποικισμὸν εἰς ἀποικισμὸν, καὶ οὓς 12 εἰς ῥομφαίαν εἰς ῥομφαίαν. Καὶ καύσει πῦρ ἐν οἰκίαις (ξ) τῶν θεῶν αὐτῶν, καὶ ἐμπυριεῖ αὐτὰς, καὶ ἀποικιεῖ αὐτοὺς, καὶ (ο) φθειριεῖ γῆν Αἰγύπτου, ὥσπερ φθειρίζει ποιμὴν τὸ ἱμάτιον αὐτοῦ. καὶ ἐξε- 13 λεύσεται ἐν εἰρήνῃ, Καὶ συντρίψει τοὺς στύλους Ἡλιουπόλεως, τοὺς (π) ἐν Ὢν, καὶ τὰς οἰκίας αὐτῶν κατακαύσει ἐν πυρί.

Potentes viros, & mulieres, 6 & parvulos reliquos, & filias regis, & animas quas reliquerat Nabuzardan cum Godolia filio Achicam, & Hieremiam prophetam, & Baruch filium Neriæ: Et ingres- 7 si sunt in Ægyptum, quia non audierunt vocem Domini, & intrârunt in Taphnas. Et fa- 8 ctum est verbum Domini ad Hieremiam in Taphnas, dicens; Sume tibi lapides gran- 9 des, & absconde eos (c) in vestibulis in porta domûs Pharaonis in Taphnas, ante oculos virorum Juda, Et dices; 10 Sic dixit Dominus; Ecce ego mitto, & adducam Nabuchodonosor regem (d) Babylonis: & ponet suum thronum super lapides istos, quos abscondisti: & elevabit arma super eos: Et ingredietur, & 11 percutiet terram Ægypti, quos in mortem, in mortem, & quos in transmigrationem, in transmigrationem, & quos in gladium, in gladium. Et suc- 12 cendet ignem in domibus deorum eorum, & comburet eos, & transferet eos, & pediculis excutiet terram Ægypti, sicut excutit pastor vestimentum suum. Et egredietur in pace: Et conteret titulos Helio- 13 polis, (e) qui in On: & domos (f) eorum comburet in igni.

MS. A. (ι) καὶ τὰ λοιπὰ, (κ) καὶ πάσας τὰς ψυχὰς (λ) ἐν (μ) ἐν Τάφνας, (ν) ὅπλα αὐτοῦ ἐπ' (ξ) θεῶν αὐτῶν, καὶ ἐνπυριεῖ (ο) φθειριεῖ γῆν αὐτοῦ, ὥσπερ φθειρίζει ὁ ποιμὴν (π) ἐν Ἐνὼν,

Cap. 44. Vulg. Lat.

ΚΕΦ. να'.

1 Ο ΛΟ'ΓΟΣ Ο (α) ΓΕΝΟ'ΜΕΝΟΣ ΠΡΟ'Σ ἹΕΡΕΜΙ'ΑΝ ἅπασι τοῖς Ἰουδαίοις τοῖς κατοικοῦσιν ἐν γῇ (β) Αἰγύπτου, καὶ τοῖς καθημένοις ἐν Μαγδώλῳ, καὶ ἐν Τάφνας, καὶ (γ) ἐν γῇ Παθούρης, λέγων, 2 Οὕτως εἶπε κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, Ὑμεῖς ἑωράκατε πάντα τὰ κακὰ, ἃ ἐπήγαγον ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐπὶ τὰς πόλεις Ἰούδα· καὶ ἰδοὺ εἰσὶν ἔρημοι ἀ- 3 πὸ (δ) ἐνοίκων Ἀπὸ προσώπου πονηρίας αὐτῶν, ἧς ἐποίησαν παραπικρᾶναί με, πορευθέντες θυμιᾶν θεοῖς ἑτέροις, οἷς οὐκ ἔγνωτε.

CAP. LI.

VERBUM, quod factum est ad Hieremiam omnibus Judæis habitantibus in terra Ægypti, & sedentibus in Magdolo, & in (a) Taphnas, & in terra Pathures: dicens; Sic dixit Dominus 1 *Deus Israel; Vos vidistis omnia mala, quæ induxi super* 2 *Hierusalem, & super civitates Juda: & ecce sunt (b) desertæ ab habitatoribus A facie* 3 *malitiæ ipsorum, quam fecerunt ad exacerbandum me, euntes adolere diis aliis, quos (c) nesciebatis.*

MS. A. (α) ΓΕΝΑ'ΜΕΝΟΣ (β) Αἰγύπτῳ, (γ) ἐν Παθούρης, (δ) ἐνοικούντων

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

19 ואתיב ית ישראל לאתריהון ויתפרנסון בארעא כרמלא מתנן ובטור בית אפרים וגלעד 19
20 ומקדשא תסבע נפשהון: ביומיא האנון ובעדנא ההיא אמר יי יתבעון ית חובי ישראל 20
21 וליתנון וחטאי בית יהודה ולא ישתכחון ארי אשבוק לשארא דאשאר: על ארעא 21
דעמא סרבן סקו עלה ועל יתבי פקוד דקטלין בחרבא ייתון לגמרא שאריתהון אמר
22 23 יי ועביד ככל דפקדתך: קל קרבא בארעא ותברא רבא: איכדין אתקטיף ואתבר 22 23
24 מלכא דהוה מזיח לכל ארעא איכדין הות לצדו בבל בעממיא: אתצידת ליך ואף 24
אתאחדת בבל ואת לא ידעת אתבעיאו חובך אשתכחו ואף אתאחדת ארי בעמא דיי
25 אתגרית: גלא יי ית בית גנזיה ואפק ית מני כס דלוט קדמוהי ארי עבידא היא קדם יי 25
26 אלהים צבאות בארעא כסדאי: עולו לה מסטרא פתחו אבולהא גמירו נכסהא כמא 26
27 דמגמרין ית ערימת עבורא כן גמרוהא לא יהי לה שארא: שציאו כל גברהא 27
28 יתמסרון לקטלא וי עליהון ארי מטא יום תבירהון עדן סעורן בישתהון: קל 28
דערקין ומשתזבין מארעא דבבל לחואה בציון ית פורענותא דיי אלהנא פורענות
29 היכליה: בסרו על בבל סגיאין כל מתחי קשתא שרו עלה סחור סחור לא יהא לה 29
שיזבא שלימו לה כאגרה ככל דעבדת עבידו לה ארי על עמא דיי בסרת אמרת מלין
30 דלא כשרן קדם קדישא דישראל: בכן יתרמון עולימהא ברחובהא וכל אנשי 30
31 עבדי קרבא יתברון בעדנא ההיא אמר יי: הא אנא שלח רוגזי עלך מלכא רשיעא 31
32 אמר יי אלהים צבאות ארי מטא יום תבירך עדן סעורן בישתיך: ויתקל מלכא 32
33 רשיעא ויפול ולית ליה מקים ואדליק אשתא בקרוהי ותשיצי כל סחרניהון: כדנן 33
אמר יי צבאות אניסין בית ישראל ובית יהודה כחדא וכל שביהון אתקיפו בהון
34 מסרבין לשלחותהון: פריקהון תקיפא יי צבאות שמיה אתפרעא אתפרע ית עולבניהון 34
35 בדיל למתבר רשיעי ארעהון ולאיתאא זועא לכל יתבי בבל: דקטלין בחרבא ייתון 35
על ארעא כסדאי אמר יי ועל יתבי בבל ועל רברבהא ועל חכימהא:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et reducam Israel ad locum suum, & nutrientur in terra Charmel, Basan, & 19 in monte dom⁹ Ephraim & Ghilgad, & sanctuarii, saturabitur anima eorum. In dieb⁹ illis, & in tempore illo, dicit Dñs: quærentur iniquitates 20 Israel; & non erunt: & peccata dom⁹ Juda, & non invenientur: quoniã parcã reliquiis quas reliquero. Sup terrã populi rebellis; ascendite adversùs eã, 21 & advers⁹ habitatores Pecod: qui occidũt gladio, veniant ad consumendas reliquias eorũ, dicit Dñs: & fac juxta omnia quæ præcepi tibi. Vox belli de 22 terra, & interit⁹ magn⁹. Quomodo succisus est & contritus est rex qui com- 23 movebat universam terrã? quomodo facta est in desertũ Babylon in populis? Venat⁹ sũm te & etiã capta es Babylon, & tu nesciebas; quæsita sunt 24 peccata tua, & inventa sunt, et etiã capta es: quia contra populũ Dñi irruisti. Revelavit Dñs domũ thesauri sui, & eduxit vasa calicis maledictionis corã 25 eo, quia op⁹ est corã Dño Deo exercituũ in terra Chaldæorũ. Ingredimini 26 ad eam à latere; aperite horrea ej⁹, absumite facultates ej⁹: sicut absumunt acervos tritici, sic absumite eam, non sint ei reliquiæ. Disperdite omnes for- 27 tes ej⁹, tradantur occisioni. Væ eis, quia pervenit dies interit⁹ eorũ, tempus visitationis malitiæ eorũ. Vox fugientiũ & eorum qui evadunt de terra Ba- 28 bylonis, ad annuntiandũ in Sion vindictã Dñi Dei nostri, ultionẽ templi ej⁹. Annuntiate in Babylonẽ plurimi, omnes tendentes arcũ, castrametamini 29 contra eã p circuitũ, ne sit ei liberatio: reddite ei juxta mercedem ej⁹; juxta omnia quæ fecit facite ei; quia contra populũ Dñi exprobravit, dicens verba quæ non sunt recta corã sancto Israelis. Propterea projicientur juvenes 30 ej⁹ in plateis ej⁹, & omnes *viri* bellatores ejus conterentur in tempore illo, dicit Dñs. Ecce ego mitto furorẽ meũ contra te rex impie, dicit Dñs Deus 31 exercituũ: Quia pervenit dies interitus tui, tempus visitationis malitiæ tuæ. Et impinget rex impius, & cadet, & non erit qui suscitet eum: & suc- 32 cendam ignem in urbibus ejus, & consumet omnia quæ in circuitu *eis* sunt. Hæc dicit Dñs exercituum: Vi oppressi sunt domus Israel, & domus Juda 33 simul: & omnes qui captivaverunt eos tenent violenter eos, nolunt dimittere eos. Redemptor eorum fortis est, Dominus exercituum nomen ejus. 34 Vindicans vindicabit injuriam eorum, ut conterat impios terræ *eorum*, & ut adducat commotionem omnibus habitatoribus Babylonis. Occi- 35 sores gladio venient contra terram Chaldæorum, dicit Dominus: & contra habitatores Babylonis, & contra principes ejus, & contra sapientes ejus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܗܦܘܟ ܠܐܝܣܪܝܠ ܠܕܝܪܗܘܢ. ܘܢܪܥܘܢ ܒܟܪܡܠܐ. ܘܒܡܬܢܝܢ. ܘܒܛܘܪܐ ܕܐܦܪܝܡ. 19
ܘܒܓܠܥܕ. ܘܬܣܒܥ ܢܦܫܗܘܢ. * ܒܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ. ܘܒܙܒܢܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. 20
ܢܬܒܥܐ ܥܘܠܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܠܝܬܘܗܝ. ܘܚܛܗܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܠܐ ܢܫܬܟܚ. ܡܛܠ
ܕܐܫܒܘܩ ܠܫܪܟܐ ܕܐܫܬܚܪܘ ܡܢܗܘܢ. * ܣܩܘ ܥܠ ܐܪܥܐ ܡܡܪܡܪܢܝܬܐ. ܣܩܘ ܥܠܝܗ 21
ܘܥܠ ܥܡܘܪܝܗ. ܐܬܬܥܝܪܝ ܚܪܒܐ: ܘܚܪܘܒ ܐܢܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܥܒܕ ܐܝܟ ܕܦܩܕܬܟ.
* ܩܠܐ ܕܩܪܒܐ ܒܐܪܥܐ. ܘܬܒܪܐ ܪܒܐ. * ܐܝܟܢܐ ܐܬܬܒܪܬ ܘܐܫܬܩܠܬ ܡܪܙܦܬܐ ܕܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܐܝܟܢܐ 22 23
ܗܘܬ ܠܬܡܗܐ ܒܒܠ ܒܝܬ ܥܡܡܐ. * ܐܬܬܩܠܬ ܒܒܠ ܘܐܦ ܐܬܬܚܕܬ. ܘܠܐ ܝܕܥܬ. ܕܥܡ 24
ܡܪܝܐ ܩܡܬ. * ܦܬܚ ܡܪܝܐ ܐܘܨܪܗ. ܘܐܦܩ ܡܐܢܝ ܪܘܓܙܗ. ܡܛܠ ܕܥܒܕܐ ܗܘ ܠܡܪܝܐ 25
ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ ܒܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ. * ܥܘܠܘ ܒܗ ܡܢ ܣܘܦܗ. ܦܬܚܘ ܐܘܨܪܝܗ. ܒܨܘܗ ܐܝܟ 26
ܥܪܛܠܝܬܐ. ܘܚܪܒܘܗ. ܘܠܐ ܢܫܬܒܩ ܠܗ ܫܪܟܐ. * ܚܪܘܒܘܗ ܘܟܠܗܘܢ ܥܘܠܝܗ
ܢܬܚܪܡܘܢ ܠܩܛܠܐ. ܘܝ ܠܗܘܢ ܕܡܛܐ ܝܘܡܗܘܢ. ܙܒܢܐ ܕܣܘܥܪܢܗܘܢ. * ܩܠܐ ܕܥܪܘܩܝܢ 27
ܘܕܡܬܦܠܛܝܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܒܒܠ. ܠܡܚܘܝܘ ܒܨܗܝܘܢ. ܬܒܥܬܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. ܘܬܒܥܬܐ 28
ܕܗܝܟܠܗ. * ܐܫܡܥܘ ܥܠ ܒܒܠ ܣܓܝܐܐ. ܟܠ ܕܡܬܚܝܢ ܒܩܫܬܐ. ܫܕܘ ܒܗ 29
ܡܢ ܚܕܪܝܗ. ܠܐ ܢܫܬܒܩ ܠܗ ܫܪܟܐ. ܦܪܘܥܘܗ ܐܝܟ ܥܒܕܗ. ܘܐܝܟ ܕܥܒܕܬ ܥܒܕܘ
ܠܗ. ܡܛܠ ܕܥܠ ܡܪܝܐ ܐܬܡܪܚܬ ܘܥܠ ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܦܠܘܢ ܥܠܝܡܝܗ 30
ܒܓܘܗ. ܘܟܠܗܘܢ ܓܒܪܝ ܩܪܒܗ ܢܫܬܬܩܘܢ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. * ܗܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟ 31
ܡܪܝܚܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܡܛܠ ܕܐܬܐ ܝܘܡܟ ܙܒܢܐ ܕܣܘܥܪܢܟ. * ܘܢܬܬܩܠ 32
ܡܪܝܚܐ ܘܢܦܠ. ܘܠܝܬ ܕܡܩܝܡ ܠܗ. ܘܐܫܕܪ ܢܘܪܐ ܒܩܘܪܝܘܗܝ. ܘܬܐܟܘܠ
ܟܠ ܚܕܪܘܗܝ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܥܫܝܩܝܢ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܘܒܢܝ ܝܗܘܕܐ 33
ܐܟܚܕܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܕܫܒܘ ܐܢܘܢ. ܐܚܕܘ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܨܒܝܢ ܠܡܫܒܩܘ ܐܢܘܢ. * ܦܪܘܩܗܘܢ 34
ܚܝܠܬܢܐ. ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ. ܡܕܢ ܕܐܢ ܕܝܢܗܘܢ. ܘܢܢܝܚ ܠܐܪܥܐ. ܘܢܪܓܙ
ܠܥܡܘܪܝܗ ܕܬܒܝܠ. * ܚܪܒܐ ܥܠ ܟܠܕܝܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܥܠ ܥܡܘܪܝܗ 35
ܕܒܒܠ. ܘܥܠ ܪܘܪܒܢܝܗ ܘܥܠ ܚܟܝܡܝܗ.

Et reducam Iſraelitas in caulam ſuam, & paſcentur in Charmelo, & in Mathnin, in monte Aphremi, & in Gelaad, & ſatiabitur anima eorum. 19 Dieb' illis & tempore illo, dicit Domin' potentiſſim', quæretur iniquitas Iſraelis, & non extabit; & peccatum Judæ, & non invenietur: quia parcam reliquis qui remanſerint ex eis. 20 Aggredimini terram exaſperantem, aggredimini eam & habitatores ejus: expergiſcere gladie, & perime eos, ait Domin', & fac ut præcepi tibi. 21 Rumor belli in terra, & conſternatio magna. 22 Quomodo confracta et ablata eſt fortiſſima toti' terræ? quomodo Babel ſtupori facta eſt inter gentes? 23 Impegit Babel, & capta eſt ſe inſciâ; eò quòd Domino reſtiterit. 24 Aperuit Domin' armamentarium ſuum, & protulit vaſa iræ ſuæ. Quia res eſt Domino Deo potentiſſimo contra terram Chaldæorum; 25 Invadite eam undequaque, aperite portas ejus, ſcrutamini eam ut nudam, deſtruite eam, & ne relinquatis ei veſtigium: 26 Vaſtate eam, & omnes fœt' ejus internecioni devoveantur. Væ illis, quoniam inſtat dies eorum, temp' viſitationis eorum. 27 Vox fugientium, et evadentium de terra Babelis, ad indicandum in Sione ultionem Domini Dei noſtri et ultionem templi ejus. 28 Convocate multos contra Babelem: quicunque nôſtis arcu jaculari, jaculamini in eam undequaque; ne relinquatis ei veſtigium, rependite ei ſecundùm mercedem ſuam, & quemadmodum fecit, facite illi: quia contra Dominum inſolenter egit, & contra Sanctum Iſraelis. 29 Propterea cadent juvenes ejus intra ipſam, & omnes viri bellatores ejus ſilentio involventur die illo. 30 Ecce me adverſùm te O inſolens, ait Domin' Deus potentiſſim'; quia advenit dies tuus, tempus viſitationis tuæ: 31 Et deſtruetur inſolens, cadétque, nec erit qui erigat illum: & dimittam ignem in civitates ejus, qui conſumet quicquid adjacet illi. 32 Sic ait Domin' exercituum, Opprimuntur Iſraelitæ & Judæi pariter, et omnes qui captivos fecerunt eos, detinent eos, nec dimittere volunt. 33 Vindex eorum fortiſſim', cujus nomen eſt Domin' potentiſſim' omnino aget cauſam eorum, & pacatam reddet terram, et indignabitur in omnes habitatores orbis. 34 Gladius in Chaldæos, ait Domin', & in omnes cives Babelis, & in principes atque ſapientes ejus: 35

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الرجال الاقوياء * والنساء والاطفال والمرضعين * وبنات الملك * وجميع النفوس التي 6
تركها نابوزردان مع عودوليا بن اسيكام * وارمياء النبي وباروخ بن نيريو * ودخلوا الي 7
مصر * لانهم لم يسمعوا صوت الرب * ودخلوا الي طفناس * 8

Tam viris fortibus, quàm mulieribus, pueris, atque lactentibus, & filiabus regis, cunctiſque animabus quas reliquerat Nabuzardan, unà cum Godolia Achicami filio, necnon Jeremiâ prophetâ, & Barucho Neriæ filio; 6 *Ingreſſi ſunt Ægyptum (non enim auſcultârunt voci Domini) ingreſſi ſunt inquam, in Taphnas.* 7

* وصار قول الرب الي ارميا في طفناس قايلا * 8

Tum fuit ſermo Domini ad Jeream in Taphnas, dicens; 8

* خذ لك حجارة عظاما * واخفها قبالة الابواب في باب البيت في طفناس لعيني رجال 9
يهودا * وتقول هكذا قال الرب * ها انا ارسل واسوق بختنصر ملك بابل * ويضع 10
كرسيه فوق هذه الحجارة التي اخفيتها * ويرفع اسلحته عليها * ويدخل ويضرب ارض 11
مصر * الذين للموت للموت * والذين للسبي للسبي * والذين للسيف للسيف * ويشعل النار 12
في بيوت الهتهم ويحرقها ويسبيهم ويفسد ارضهم كما يفسد الراعي ثوبه * ويخرج بسلام *
* ويحطم عمد عين شمس الذين في اون * وبيوتهم يحرقها بالنار * 13

Sume tibi lapides magnos, & abſconde illos è regione portarum in oſtio domûs in Taphnas, ante oculos virorum Judæ: 9 *Et dicas; Ita dixit Dominus, Ecce ego mittam & adducam Bochtonaſſarem regem Babelis, imponetque thronum ſuum hiſce lapidibus quos abſcondi, attolletq; arma ſua ſuper illos:* 10 *Et ingredietur, percutietque terram Ægypti, quos in mortem ad mortem, quos in captivitatem ad captivitatem, & quos in gladium ad gladium:* 11 *Et ignem accendet in ædibus deorum eorum, & comburet eas; ipſos autem captivos abducet, & terram eorum vaſtabit, quemadmodum deterit paſtor veſtem ſuam; tum egredietur incolumis:* 12 *Et confringet columnas Ainſimes quæ ſunt in Enon, & domos eorum igne ſuccendet.* 13

* الفصل الحادي والخمسون *

CAP. LI.

* القول الصاير الى ارميا في جميع اليهود السكان بارض مصر * والجلوس في مغدولو وفي 1
طفناس وفي باثوريس قايلا *

SErmo factus ad Jeremiam de omnibus Judæis habitantibus in terra Ægypti, & commorantibus in Magdolo, & in Taphnas, et in Pathures, dicens; 1

* هكذا قال الرب اله اسرايل * انتم رايتم جميع الشرور التي جلبتها على اورشليم وعلي 2
مدن يهودا * وها هي مقفرات من السكان * من وجه شرهم الذي صنعوه ليمرمروني * 3
ذهبتم لتبخروا لالهة اخر هذه التي لم تعرفوها *

Ita dixit Dominus Deus Iſraelis; Vos vidiſtis omnia mala quæ intuli Jeroſolymæ & urbibus Judæ; (ecce enim ſunt habitatoribus exhauſtæ 2 *Propter ſcelus eorum quod perpetraverunt ad exacerbandũ me) attamen ivistis ut adoleretis diis alienis, iis quos ignorabatis.* 3

יִרְמְיָה : נא

.conſternabuntur & ,ejus fortes ad gladius : inſanient & ,*nugatores* ad Gladius
36 חֶרֶב אֶל־הַבַּדִּים וְנֹאָלוּ חֶרֶב אֶל־גִּבּוֹרֶיהָ וָחָתּוּ׃
quod vulgus *promiſcuum* omne ad & ,ejus *currum* ad & ,ejus equos ad Gladius
37 חֶרֶב אֶל־סוּסָיו וְאֶל־רִכְבּוֹ וְאֶל־כָּל־הָעֶרֶב אֲשֶׁר
Siccitas .diripientur &,ejus theſauros ad gladius :mulieres *in* erunt &,ejꝰ medio in
38 בְּתוֹכָהּ וְהָיוּ לְנָשִׁים חֶרֶב אֶל־אוֹצְרֹתֶיהָ וּבֻזָּזוּ׃ חֹרֶב
.inſanient *Emim* in & ,*ipſa* ſculptiliū terra quia : areſcent & ,ejus aquas ad
אֶל־מֵימֶיהָ וְיָבֵשׁוּ כִּי אֶרֶץ פְּסִלִים הִיא וּבָאֵימִים יִתְהֹלָלוּ׃
non & *: ululæ* filiæ ea in habitabunt & ,*iim cum ziim* habitabūt Propterea
39 לָכֵן יֵשְׁבוּ צִיִּים אֶת־אִיִּים וְיָשְׁבוּ בָהּ בְּנוֹת יַעֲנָה וְלֹא־
.generationē & ,generationē ad uſque habitabitur nec ,*æternum* in ultrà habitabitur
תֵשֵׁב עוֹד לָנֶצַח וְלֹא תִשְׁכּוֹן עַד־דּוֹר וָדֹר׃
ait ,ejus vicinas & ,Hamorah & ,Sedom *Dei ſubverſionē Juxta*
40 כְּמַהְפֵּכַת אֱלֹהִים אֶת־סְדֹם וְאֶת־עֲמֹרָה וְאֶת־שְׁכֵנֶיהָ נְאֻם־
populus Ecce .hominis filius ea in habitabit nec , *vir* ibi habitabit non :Dominus
41 יְהֹוָה לֹא־יֵשֵׁב שָׁם אִישׁ וְלֹא־יָגוּר בָּהּ בֶּן־אָדָם׃ הִנֵּה עַם
.terræ lateribus à ſuſcitabuntur multi reges & ,magna gens & :aquilone ab *veniens*
בָּא מִצָּפוֹן וְגוֹי גָּדוֹל וּמְלָכִים רַבִּים יֵעֹרוּ מִיַּרְכְּתֵי־אָרֶץ׃
mare ſicut eorū *vox* :miſerebūtur non & , *ipſi crudelis* ,apprehēdent *haſtile* & Arcum
42 קֶשֶׁת וְכִידֹן יַחֲזִיקוּ אַכְזָרִי הֵמָּה וְלֹא יְרַחֵמוּ קוֹלָם כַּיָּם
filia te *ſuper* prælium ad *vir* tanquā *ordinatus* :equitabūt equos ſuper & ,*tumultuabit*
יֶהֱמֶה וְעַל־סוּסִים יִרְכָּבוּ עָרוּךְ כְּאִישׁ לַמִּלְחָמָה עָלַיִךְ בַּת־
anguſtia :ejus manus ſe debilitaverūt & ,eorū famam Babel rex Audivit .Babel
43 בָּבֶל׃ שָׁמַע מֶלֶךְ־בָּבֶל אֶת־שִׁמְעָם וְרָפוּ יָדָיו צָרָה
elevatione de aſcendet leo tanquā Ecce .parturientis tanquā *tormen*,eū apprehendit
44 הֶחֱזִיקַתְהוּ חִיל כַּיּוֹלֵדָה׃ הִנֵּה כְּאַרְיֵה יַעֲלֶה מִגְּאוֹן
: ea *deſuper* eos faciā currere ,faciā quieſcere quia ,robuſtum habitaculū ad Jarden
הַיַּרְדֵּן אֶל־נְוֵה אֵיתָן כִּי־אַרְגִּעָה אֲרוּצֵם מֵעָלֶיהָ
,mihi tempus conſtituet quis & ,ego ſicut quis nam *: recenſebo eam ad* electus qui &
וּמִי בָחוּר אֵלֶיהָ אֶפְקֹד כִּי מִי כָמוֹנִי וּמִי יוֹעִדֶנִּי
,Domini conſilium audite Propterea *? meas facies ad* ſtet qui ,paſtor iſte quis &
45 וּמִי־זֶה רֹעֶה אֲשֶׁר יַעֲמֹד לְפָנָי׃ לָכֵן שִׁמְעוּ עֲצַת־יְהֹוָה
: Chaſdim *terram ad* cogitavit quas ejus cogitationes & ,Babel *ad* conſuluit quod
אֲשֶׁר יָעַץ אֶל־בָּבֶל וּמַחְשְׁבוֹתָיו אֲשֶׁר חָשַׁב אֶל־אֶרֶץ כַּשְׂדִּים
.*tugurium* eis *ſuper* fecerit deſolari niſi , *pecoris* parvuli eos traxerint niſi
אִם־לֹא יִסְחָבוּם צְעִירֵי הַצֹּאן אִם־לֹא יַשִּׁים עֲלֵיהֶם נָוֶה׃
.eſt auditus gentibus in clamor & : terra eſt commota ,Babel eſt capta voce A
46 מִקּוֹל נִתְפְּשָׂה בָבֶל נִרְעֲשָׁה הָאָרֶץ וּזְעָקָה בַּגּוֹיִם נִשְׁמָע׃

CAP. LI. נא

cor ,*habitatores ad* & , Babel ſuper *ſuſcitans* ego Ecce : Dominus dixit Sic
1 כֹּה אָמַר יְהֹוָה הִנְנִי מֵעִיר עַל־בָּבֶל וְאֶל־יֹשְׁבֵי לֵב
,eā ventilabūt &,ventilatores Babel in mittam Et .corrumpentē ventū ,*me in ſurgentiū*
2 קָמָי רוּחַ מַשְׁחִית׃ וְשִׁלַּחְתִּי לְבָבֶל זָרִים וְזֵרוּהָ
Ad .mala die in undique *ab* eam *ſuper* erunt quoniā :ejus terram evacuabūt &
3 וִיבֹקְקוּ אֶת־אַרְצָהּ כִּי־הָיוּ עָלֶיהָ מִסָּבִיב בְּיוֹם רָעָה׃ אֶל־
ſuper parcatis ne & :ſua *lorica* in ſe *attollet* ad & ,ſuū arcū *tendentem* *tendet*
יִדְרֹךְ יִדְרֹךְ הַדֹּרֵךְ קַשְׁתּוֹ וְאֶל־יִתְעַל בְּסִרְיֹנוֹ וְאַל־תַּחְמְלוּ אֶל־
:Chaſdim terra in interfecti cadent Et .ejꝰ exercitū omnē *excidione delete*,ejꝰ juvenibꝰ
4 בַּחֻרֶיהָ הַחֲרִימוּ כָּל־צְבָאָהּ׃ וְנָפְלוּ חֲלָלִים בְּאֶרֶץ כַּשְׂדִּים
,ſuo Deo à Jehudah & , Iſrael *viduus* non Quoniā .ejus plateis in confoſſi &
5 וּמְדֻקָּרִים בְּחוּצוֹתֶיהָ׃ כִּי לֹא־אַלְמָן יִשְׂרָאֵל וִיהוּדָה מֵאֱלֹהָיו
Fugite .Iſrael *ſancto à* delicto eſt repleta *eorum* terra quia :exercituū Domino à
6 מֵיְהֹוָה צְבָאוֹת כִּי אַרְצָם מָלְאָה אָשָׁם מִקְּדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל׃ נֻסוּ
:ejꝰ iniquitatē propter diſperdamini ne ,ſuā animā *vir* eruite & ,Babel medio de
מִתּוֹךְ בָּבֶל וּמַלְּטוּ אִישׁ נַפְשׁוֹ אַל־תִּדַּמּוּ בַּעֲוֹנָהּ
.ei *reddens ipſe* retributionem ; Domino *illud* ultionis tempus quoniam
כִּי עֵת נְקָמָה הִיא לַיהֹוָה גְּמוּל הוּא מְשַׁלֵּם לָהּ׃

Verſio VUL. LAT.

36 Gladius ad divinos ejus, qui ſtulti erunt : gladius ad fortes 37 illius, qui timebunt. Gladius ad equos ejus, & ad currꝰ ejus, & ad omne vulgus, quod eſt in medio ejus : & erunt quaſi mulieres : gladiꝰ ad theſauros ejꝰ, 38 qui diripientur. Siccitas ſuper aquas ejus erit, & areſcent: quia terra ſculptilium eſt, & in 39 portentis gloriantur. Propterea habitabunt dracones cum faunis ficariis : & habitabunt in ea ſtruthiones : & non inhabitabitur ultrà uſque in ſempiternum, nec extruetur uſq; ad gene- 40 rationem & generationē. Sicut ſubvertit Dñs Sodomam & Gomorrhā, et vicinas ejus, ait Dñs : non habitabit ibi vir, & non in- 41 colet eā filius hominis. Ecce populus venit ab Aquilone, & gens magna, & reges multi conſurgent 42 à finibus terræ. Arcū & ſcutum apprehendent : crudeles ſunt & immiſericordes : vox eorū quaſi mare ſonabit: & ſup equos aſcendent, ſicut vir paratus ad præliū 43 contra te, filia Babylon. Audivit rex Babylonis famam eorum, & diſſolutæ ſunt manꝰ ejꝰ : anguſtia apprehendit eū, dolor quaſi par- 44 turientē. Ecce quaſi leo aſcendet de ſuperbia Jordanis ad pulchritudinē robuſtā : quia ſubitò currere faciā eū ad illā: & quis erit electus, quē præponā ei? quis eſt enim ſimilis meî? & quis ſuſtinebit me? & quis eſt iſte paſtor, 45 qui reſiſtat vultui meo? Propterea audite cōſiliū Dñi, ꝙ mente concepit adverſū Babylonē; & cogitationes ejus, quas cogitavit ſup terrā Chaldæorū: Niſi detraxerint eos parvuli gregū, niſi diſſipatū fuerit cū ipſis habitaculū 46 eorū. A voce captivitatis Babylonis commota eſt terra, & clamor inter Gentes auditus eſt.

CAP. LI.

1 HÆc dicit Dñs; Ecce ego ſuſcitabo ſuper Babylonē, & ſuper habitatores ejus, qui cor ſuū levaverunt contra me, quaſi ventū 2 peſtilentem. Et mittā in Babylonem ventilatores, & ventilabunt eam & demolientur terrā ejus : quoniā venerunt ſuper eā undiq; 3 in die afflictionis ejꝰ. Non tendat qui tendit arcū ſuū, & nō aſcēdat loricatꝰ, nolite parcere juvenibꝰ 4 ejꝰ, interficite omnē militiā ejus. Et cadent interfecti in terra Chaldæorū, & vulnerati in regioni- 5 bus ejus. Quoniam non fuit viduatus Iſrael & Juda à Deo ſuo Dño exercituū : terra autem eorū 6 repleta eſt delicto à Sancto Iſrael. Fugite de medio Babylonis, & ſalvet unuſquiſq; animam ſuā : nolite tacere ſuper iniquitatē ejꝰ : quoniā tempꝰ ultionis eſt à Dño, viciſſitudinē ipſe retribuet ei.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

4 Καὶ ἀπέστειλα πρὸς ὑμᾶς τοὺς (ε) παῖδάς μου τοὺς προφήτας ὄρθρου, ϗ ἀπέστειλα (ζ), λέγων, Μὴ ποιήσητε τὸ πρᾶγμα τῆς μολύνσεως ταύτης, ἧς ἐμίσησα. 5 Καὶ οὐκ ἤκουσάν μου, ϗ οὐκ ἔκλιναν τὸ οὖς αὐτῶν ἀποστρέψαι ἀπὸ τῶν κακῶν αὐτῶν, πρὸς τὸ μὴ θυμιᾷν θεοῖς ἑτέροις. 6 Καὶ ἔσταξεν (η) ἡ ὀργή μου ϗ ὁ θυμός μου, ϗ ἐξεκαύθη ἐν πύλαις Ἰούδα, ϗ ἔξωθεν Ἱερουσαλήμ· ϗ ἐγενήθησαν εἰς ἐρήμωσιν ϗ εἰς ἄβατον ὡς ἡ ἡμέρα αὕτη. 7 Καὶ νῦν οὕτως εἶπε κύριος παντοκράτωρ, Ἱνατί ὑμεῖς ποιεῖτε κακὰ μεγάλα ἐπὶ ψυχαῖς ὑμῶν; (θ) ἐκκόψαι ὑμῶν ἄνθρωπον ϗ γυναῖκα, νήπιον ϗ θηλάζοντα ἐκ μέσου Ἰούδα, πρὸς τὸ μὴ καταλειφθῆναι ὑμῶν μηδένα, 8 Παραπικρᾶναί με ἐν τοῖς ἔργοις τῶν χειρῶν ὑμῶν, θυμιᾷν θεοῖς ἑτέροις ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, εἰς ἣν (ι) ἤλθετε κατοικεῖν ἐκεῖ, ἵνα (κ) κοπῆτε, ϗ ἵνα γένησθε εἰς κατάραν ϗ εἰς ὀνειδισμὸν (*) ἐν πᾶσι τοῖς ἔθνεσι τῆς γῆς. 9 Μὴ ἐπιλέλησθε ὑμεῖς τῶν (λ) κακῶν, τῶν πατέρων ὑμῶν, ϗ τῶν κακῶν, τῶν βασιλέων Ἰούδα, ϗ τῶν κακῶν, τῶν ἀρχόντων ὑμῶν, ϗ τῶν κακῶν, τῶν γυναικῶν ὑμῶν, ὧν ἐποίησαν ἐν (μ) γῇ Ἰούδα, 10 ϗ ἔξωθεν Ἱερουσαλήμ; Καὶ οὐκ ἐπαύσαντο ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης, ϗ οὐκ ἀντείχοντο τῶν προσταγμάτων μου, ὧν ἔδωκα κατὰ πρόσωπον τῶν πατέρων 11 αὐτῶν. Διατοῦτο οὕτως εἶπε κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ (ν) ἐφίστημι τὸ πρόσωπόν 12 μου τοῦ ἀπολέσαι Πάντας τοὺς καταλοίπους τοὺς ἐν Αἰγύπτῳ, ϗ πεσοῦνται ἐν ῥομφαίᾳ ϗ ἐν λιμῷ, (ξ) ϗ ἐκλείψουσιν ἀπὸ μικροῦ (ο) ἕως μεγάλου, ϗ ἔσονται εἰς ὀνειδισμὸν, ϗ εἰς ἀπώλει- 13 αν, ϗ εἰς κατάραν. Καὶ ἐπισκέψομαι ἐπὶ τοὺς καθημένους (π) ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, ὡς ἐπεσκεψάμην ἐπὶ Ἱερουσαλήμ, 14 ἐν ῥομφαίᾳ ϗ ἐν (ρ) λιμῷ. Καὶ οὐκ ἔσται σεσωσμένος οὐδεὶς τῶν ἐπιλοίπων Ἰούδα τῶν παροικούντων ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, τοῦ ἐπιστρέψαι εἰς γῆν Ἰούδα, ἐφ' ἣν αὐτοὶ ἐλπίζουσι ταῖς ψυχαῖς αὐτῶν τοῦ ἐπιστρέψαι ἐκεῖ· οὐ μὴ (*) ἐπιστρέψωσιν, ἀλλ' ἢ οἱ ἀνασεσωσμένοι.

4 Et miſi ad vos pueros meos prophetas diluculò, & miſi dicens; Nolite facere rem contaminationis hujus, quā odi. 5 Et non audierunt me, & non inclinaverunt aurem ſuam, ut averterent ſe à malis ſuis, ad non adolendum diis alienis. 6 Et ſtillavit ira mea, & furor meus: & ſuccenſus eſt in portis Juda, & extra Hieruſalem. Et facti ſunt in deſolationem, & in invium, ſicut dies hæc. 7 Et nunc ſic dixit Dominus omnipotens; ut quid vos facitis mala magna in animas veſtras? ad ſuccidendum vobis hominem, & mulierem, parvulū, & lactentē, de medio Juda, ut non relinquatur ex vobis ullus, 8 Exacerbando me in operibus manuum veſtrarū, adolendo diis alienis in terra Ægypto, ad quam veniſtis habitare illic; ut excidamini, & ut fiatis in maledictionem, & in opprobrium in omnibus gentibus terræ. 9 Nunquid obliti eſtis vos malorū, patrū veſtrorū; & malorū, regū Juda; & malorū, principū veſtrorū; & malorū, mulierū veſtrarū, quæ fecerunt in terra Juda; 10 & extra Hieruſalem? Et non ceſſaverunt uſq; ad diē (d) hanc, & non adhæſerūt præceptis meis, quæ dedi ante faciē (e) patrū eorū. 11 Idcircò ſic dixit (f) Dominus; Ecce ego ſtatuo faciem meā ad (g) diſperdendū 12 Omnes reſiduos, qui in Ægypto: & cadent in gladio, & in fame: & deficient à parvo uſque ad magnū: & erunt in opprobriū, & in perditionē, & in maledictionē. 13 Et viſitabo ſuper ſedentes in terra Ægypto, ſicut viſitavi ſuper Hieruſalem in gladio, et in (h) fame: 14 Et non erit ſalvꝰ quiſquam de reſiduis Juda, qui incolunt in terra Ægypto, ad revertendū in terrā Juda, ad quā ipſi ſperant animabus ſuis reverti illuc: non revertentur; niſi qui evaſerint.

MS. A. (ε) δούλους (ζ) ἐγὼ πρὸς ὑμᾶς, λέγων, (η) ὁ θυμός μου, ϗ ἡ ὀργή μου, (θ) ϗ ἐκκόψω ἀφ' ὑμῶν (ι) εἰσήλθατε ἐνοικεῖν (κ) ἐκκοπῆτε, (*) πᾶσιν (λ) ἔργων, (μ) πόλεσιν (ν) ἐπίστημι (ξ) ἐκλείψουσιν (ο) ϗ ἕως (π) ἐν Αἰγύπτῳ, (ρ) λιμῷ ϗ ἐν θανάτῳ. Καὶ (*) ἐπιστρέψουσιν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

36 דְקָטְלִין בְּחַרְבָּא יֵיתוּן עַל קַסָּמָהָא וְיִשְׁתַּבְּשׁוּן דְקָטְלִין בְּחַרְבָּא יֵיתוּן עַל גִּבָּרָהָא וְיִתַּבְּרוּן׃
37 דְקָטְלִין בְּחַרְבָּא יֵיתוּן עַל סוּסָוָתְהוֹן וְעַל רְתִיכֵיהוֹן וְעַל כָּל סוּמְכְוָתָא דִי בְגַוַּהּ וִיהוֹן חַלָּשִׁין
38 כִּנְשַׁיָּא דְקָטְלִין בְּחַרְבָּא יֵיתוּן עַל בֵּית גִּנְזָהָא וְיִתְבַּזְּזוּן׃ שַׁרְבָא בְמוֹהָא וְיִבְשׁוּן אֲרֵי
39 אַרְעָא צַלְמָנַיָּא הִיא וּבְטַעֲוָתָא מִשְׁתַּבְּחִין׃ בְּכֵן יְעַרְעוּן תַּמָּן בַּחֲתוּלִין וְיִשְׁרוּן בַּהּ בְּנַת
40 נַעֲמִין וְלָא תִתֵּב עוֹד לַעֲלָם וְלָא תִשְׁרֵי עַד דָּר וְדָר׃ רָחִיק מֵימְרִי יַתְכוֹן כְּמָא דְרַחִיק יְיָ
41 יַת סְדוֹם וְיַת עֲמוֹרָה וְקִרְוַהָא אֲמַר יְיָ לָא יִתֵּב תַּמָּן אֱנָשׁ וְלָא יִתוֹתַב בַּהּ בַּר אֱנָשׁ׃ הָא
42 עַמָּא אָתֵא מִצִּפּוּנָא וְעַמְמִין רַבְרְבִין וּמַלְכִין סַגִּיאִין יֵיתוּן בִּגְלֵי מִסְּיָפֵי אַרְעָא׃ קַשְׁתָּא
וּתְרֵיסִין אֲחִידִן אַכְזְרָאִין אִנּוּן וְלֵית לְהוֹן רַחֲמִין קָלְהוֹן כְּיַמָּא בְּאִתְרְגוּשְׁתֵּיהּ וְעַל סוּסָוָתָא
43 רָכְבִין מְסַדְּרִין אִנּוּן כִּגְבַר עָבֵיד קְרָבִין עֲלָךְ כְּנִשְׁתָּא דְבָבֶל׃ שְׁמַע מַלְכָּא דְבָבֶל יַת
44 שִׁמְעֲהוֹן וְאִתְרַשְׁלָא יְדוֹהִי עָקָא אַחֲדָתֵיהּ הָא כְחֶבְלִין לִילֶדְתָּא׃ הָא מֶלֶךְ בְּמַשִׁרְיָתֵיהּ
יִסַּק עֲלֵיהוֹן כְּאַרְיָא דְסָלֵיק מֵרוּם יַרְדְּנָא וַהֲוֵי לִדְיַר רָעֲיָן אֲרֵי בִזְמַן דְאַיְתֵנוּן עֲלַהּ
45 וְשִׁלְטוֹנִין אֲמַנֵּי עֲלַהּ אֲרֵי מַן כְּוָתִי וּמַן דִּיעַרְעִנַּנִי וְלֵית מֶלֶךְ דְאִית לֵיהּ תְּקוֹף קֳדָמַי׃ בְּכֵן
שְׁמַעוּ מַלְכָּא דַיְיָ דִי מְלַךְ עַל בָּבֶל וּמַחְשַׁבְתֵּיהּ דְחָשֵׁיב עַל יָתְבֵי אַרְעָא כַסְדָּאֵי אִם לָא
46 יִגְרְרוּן וְיִקְטְלוּן תַּקִּיפֵי עַמָּא אִם לָא יִצְדוּן עֲלֵיהוֹן מְדוֹרֵיהוֹן׃ מִקָּל דְאִתְאֲחֶדַת בָּבֶל
וְעַת אַרְעָא וְצְוָחְתָא בְעַמְמַיָּא אִשְׁתְּמַעַת׃ נא
1 כִּדְנַן אֲמַר יְיָ הָא אֲנָא מַיְתֵי עַל בָּבֶל וְעַל יָתְבֵי אַרְעָא כַסְדָּאֵי עַמְמִין קָטוֹלִין דְּרָם לִבְּהוֹן
2 וְשַׁפִּירִין בְּקוֹמָה רוּחֲהוֹן מְחַבְּלָא׃ וְאֶשְׁלַח עַל בָּבֶל בָּזוֹזִין וְיִבְזוּנַהּ וִירוֹקְנוּן יַת אַרְעָא
3 אֲרֵי הֲווֹ עֲלַהּ מִסְחוֹר סְחוֹר בְּיוֹם בִּישׁ׃ לָא יִמְתַּח דִמְתַח קַשְׁתֵּיהּ וְלָא יִסַּק בְּסִרְיָנֵיהּ
4 וְלָא תְחוּסוּן עַל עוּלֵימָהָא גַּמִּירוּ כָּל נִכְסָהָא׃ וְיִתְרְמוֹן קְטִילִין בְּאַרְעָא כַסְדָּאֵי וּמְטַעֲנִין
5 בְּשׁוּקָהָא׃ אֲרֵי לָא שְׁבִיקִין בֵּית יִשְׂרָאֵל וִיהוּדָה מֵאֱלָהֲהוֹן מֵיְיָ צְבָאוֹת אֲרֵי אַרְעֲהוֹן
6 אִתְמְלִיאַת חַיָּבֵי קְטוֹל מִמֵּימַר קַדִּישָׁא דְיִשְׂרָאֵל׃ עֲרוֹקוּ מִגּוֹ בָבֶל וְשֵׁיזִיבוּ גְּבַר נַפְשֵׁיהּ לָא
תִלְקוּן בְּחוֹבַהּ אֲרֵי עִדָּן פּוּרְעָנוּתָא הִיא קֳדָם יְיָ גְּמֻלָא הוּא מְשַׁלֵּם לַהּ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

36 Qui occidunt gladio, venient contra divinos ejꝰ, & inſanient: qui occidunt 37 gladio, venient contra fortes ejꝰ, & conterentur. Qui occidunt gladio, venient contra equos & contra currꝰ eorū, & contra omnia auxilia quæ ſunt in medio ejꝰ, & erunt infirmi ſicut mulieres : qui occidunt gladio, venient 38 contra domū theſaurorū ejꝰ, & diripientur. Siccitas ſuper aquas ejus, & 39 areſcent: quia terra ſimulachrorum eſt, & in idolis gloriantur. Propterea occurrent cercopitheci felibꝰ, & habitabunt in ea filiæ ſtruthionū: non habitabitur ultrà in æternū, nec incoletur uſque in generationē & generationē. 40 Projiciet vos Verbū meū, ſicut projecit Dñs Sodomā & Gomorrā, & vicinas ejꝰ, ait Dñs: non habitabit ibi homo, nec erit incola in ea filiꝰ hominis. 41 Ecce populus venit de *Aquilone*, & populi magni & reges multi venient 42 publicè à finibꝰ terræ. Arcꝰ & ſcuta tenentes, crudeles ſunt, nec eſt eis miſericordia. Vox eorū quaſi maris cùm tumultuatur: & ſuper equos vehuntur, 43 ordinati ſunt, quaſi vir bellator, contra te cœtꝰ Babylonis. Audivit rex Babylonis famā eorū, remiſſæ ſunt manꝰ ejꝰ, anguſtia apprehendit eum quaſi 44 dolores parturientis. Ecce rex cum exercitu ſuo aſcendet contra eos ſicut leo, qui aſcendit de altitudine Jordanis: & eſt in habitaculū paſtorū. Quia in tempore quo adducā ipſos in eā, dominatores conſtituā ſuper eam: quoniam quis eſt ſimilis mei? & quis eſt qui occurrat mihi? & non eſt rex qui 45 habeat fortitudinē corā me. Propterea audite conſiliū Dñi quod conſultavit ſup Babylonē, & cogitationē ejꝰ quā cogitavit ſuper habitatores terræ Chaldæorū: Niſi detraxerint eos, & occiderint fortes populi, niſi deſolaverint 46 ſuper eos habitacula eorū. A voce qua capta eſt Babylon, commota eſt terra: & clamor in populis auditus eſt.

CAP. LI.

1 HÆc dicit Dñs : Ecce ego adducā ſuper Babylonē, & ſuper habitatores terræ Chaldæorū populos interfectores, quorū cor elevatū eſt, & ele- 2 gantes ſtatura, quorū ſpiritꝰ diſſipat. Et mittam ſuper Babylonē direptores qui diripiant eā, & exhauriant terrā ejꝰ; quoniā fuerunt ſuper eā per circuitū in die mala. 3 Non tendat qui tendit arcū ſuū, nec aſcendat in lorica ſua: 4 nec parcatis juvenibus ejus: conſumite omnē ſubſtantiā ejus. Et projicientur 5 interfecti in terra Chaldæorū, & vulnerati in vicis ejus. Non enim ſunt derelictæ domus Iſrael & Juda, à Deo ſuo, à Dño exercituū. Quia terra eorū 6 impleta eſt peccatis homicidii à verbo ſancti Iſrael. Fugite de medio Babylonis, & liberate quiſque animā ſuā; ne occidamini in peccato ejus: quia tempus vindictæ eſt coram Domino, retributionem ipſe reddit ei.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

36 * ܚܪܒܐ ܥܠ ܩܨܘܡܘܗܝ ܘܢܬܛܪܦܘܢ. ܚܪܒܐ ܥܠ ܓܢܒܪܘܗܝ ܘܢܬܬܒܪܘܢ. * ܚܪܒܐ 37
ܥܠ ܪܟܫܗ. ܘܥܠ ܡܪܟܒܬܗ. ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܒܓܘܗ. ܘܢܗܘܘܢ. ܐܝܟ ܢܫܐ.
ܚܪܒܐ ܥܠ ܓܙܘܗܝ. ܘܢܬܒܙܘܢ. * ܚܪܒܐ ܥܠ ܡܝܘܗܝ. ܘܢܝܒܫܘܢ. ܡܛܠ ܕܐܪܥܐ ܕܦܣܠܝ 38
ܦܬܟܪܐ. ܘܒܨܠܡܐ ܡܫܬܒܗܪܝܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܥܡܪܘܢ ܒܗ ܣܝܪܢܐ. ܘܢܥܡܪܢ
39 ܒܗ ܒܢܬ ܢܥܡܝܬܐ. ܠܐ ܬܬܒ. ܠܥܠܡ. ܘܠܐ ܬܬܥܡܪ. ܠܕܪ ܕܪܝܢ. * ܘܬܗܘܐ ܐܝܟ ܗܦܘܟܝܐ ܕܣܕܘܡ 40
ܘܕܥܡܘܪܐ. ܕܗܦܟ ܐܢܘܢ ܐܠܗܐ ܘܠܥܡܘܪܝܗܝܢ. ܠܐ ܢܬܒ ܬܡܢ ܐܢܫ. ܘܠܐ ܢܬܥܡܪ ܒܗ ܒܪ
ܐܢܫ. * ܗܐ ܥܡܐ ܐܬܐ ܡܢ ܓܪܒܝܐ. ܥܡܐ ܪܒܐ. ܘܡܠܟܐ ܣܓܝܐܐ ܢܬܬܥܝܪܘܢ ܡܢ ܣܘܦܝܗ 41
ܕܐܪܥܐ. * ܒܩܫܬܐ ܘܒܪܘܡܚܐ ܡܙܝܢܝܢ. ܒܝܫܝܢ ܐܢܘܢ ܘܠܐ ܡܪܚܡܝܢ. ܩܠܗܘܢ ܐܝܟ 42
ܝܡܐ ܕܡܬܬܙܝܥ. ܘܥܠ ܪܟܫܐ ܪܟܝܒܝܢ ܘܡܛܝܒܝܢ. ܐܝܟ ܓܢܒܪܐ ܠܩܪܒܐ. ܥܠܝܟܝ ܒܪܬ
ܒܒܠ. * ܫܡܥ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܫܡܥܗܘܢ. ܘܐܬܪܫܠ ܐܝܕܘܗܝ. ܘܥܩܬܐ ܐܚܕܬܗ 43
ܘܚܒܠܐ ܐܝܟ ܕܝܠܕܬܐ. * ܗܐ ܐܝܟ ܐܪܝܐ ܢܣܩ ܡܢ ܓܐܘܬܗ ܕܝܘܪܕܢܢ ܠܡܕܝܪܐ ܕܐܝܬܢ. ܡܛܠ 44
ܕܡܚܕܐ ܐܪܗܛ ܐܢܘܢ ܡܢܗ. ܘܠܥܠܝܡܐ ܐܦܩܕ ܒܗ. ܡܢܘ ܓܝܪ ܕܕܡܐ ܠܝ. ܐܘ ܡܢܘ
ܕܢܬܟܬܫ ܥܡܝ. ܐܘ ܐܝܢܘ ܪܥܝܐ ܕܢܩܘܡ ܠܘܩܒܠܝ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܫܡܥܘ ܡܠܟܗ ܕܡܪܝܐ 45
ܕܐܡܠܟ ܥܠ ܒܒܠ. ܘܡܚܫܒܬܗ ܕܐܬܚܫܒ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ. ܕܢܣܚܒܘܢ ܐܢܘܢ ܙܥܘܪܝ
ܥܢܐ. ܘܢܚܪܒܘܢ ܥܠܝܗܘܢ ܡܫܪܝܗܘܢ. * ܡܢ ܩܠܐ ܕܐܬܐܚܕܬ ܒܒܠ. ܐܬܬܙܝܥܬ ܐܪܥܐ. ܘܩܥܬܗ 46
ܐܬܡܠܝܬ ܐܪܥܐ.

* ܫܠܡܘ * ܢ *

1 * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܗܐ ܡܫܠܛ ܐܢܐ ܥܠ ܒܒܠ ܘܥܠ ܥܡܘܪܝܗ.
2 ܠܒܐ ܩܫܝܐ. ܘܪܘܚܐ ܡܚܒܠܢܝܬܐ. * ܘܐܫܕܪ ܥܠ ܒܒܠ ܒܙܘܙܐ. ܘܢܒܙܘܢܗ. ܘܢܕܘܫܘܢ
3 ܐܪܥܗ. ܘܢܬܟܢܫܘܢ ܥܠܝܗ ܡܢ ܚܕܪܝܗ ܒܝܘܡܐ ܕܒܝܫܬܗ. * ܠܐ ܢܬܢܝܚ ܕܡܫܕܐ ܒܩܫܬܐ.
4 ܘܠܐ ܢܫܕܐ ܫܪܝܢܗ ܩܪܒܬܢܐ. ܘܠܐ ܬܚܘܣܘܢ ܥܠ ܥܠܝܡܝܗ. ܚܪܘܒܘ ܟܠܗ ܚܝܠܗ.
5 * ܘܢܦܠܘܢ ܩܛܝܠܐ ܒܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ. ܘܡܚܝܐ ܒܫܘܩܝܗ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܪܡܠ ܐܝܣܪܐܝܠ
ܘܝܗܘܕܐ ܡܢ ܐܠܗܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܐܪܥܗܘܢ ܡܠܝܐ ܥܘܠܐ ܩܕܡ ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ.
6 * ܥܪܘܩܘ ܡܢ ܓܘ ܒܒܠ. ܘܦܨܘ ܓܒܪ ܢܦܫܗ. ܠܐ ܬܬܦܪܥܘܢ ܒܚܛܝܬܗ. ܡܛܠ
ܕܙܒܢܐ ܕܦܘܪܥܢܗ ܡܢ ܡܪܝܐ. ܐܝܟ ܥܒܕܝܗ ܗܘ ܦܪܥ ܠܗ.

* Gladius in hariolos ejus, & exagitabuntur : 36
gladius in heroes ejus, & confringentur :
Gladius in equos & currus ejus, & in omnes 37
advenas qui in ea ſunt, eruntque ſicut fœminæ : gladius in theſauros ejus, & diripientur :
Gladius in aquas ejus, & areſient : quia terra 38
eſt ſculpentium idola, & in ſimulacris gloriantur.
Propterea habitabunt in ea ſirenes, 39
& commorabuntur in ea filiæ ſtruthionum :
non habitabitur in æternum, neque incoletur in generationem generationum :
Sed erit ſimilis Sodomæ & Gomorræ quas ſubvertit 40
Deus cum incolis earum : non habitabit ibi quiſquam, neque commorabitur ibi ull' mortalium.
Ecce populus veniet ex Aquilone, 41
popul' ingens & reges multi excitabuntur ab extremis terræ :
Arcubus & lanceis armati, 42
maligni ſunt & immites, vox eorum ut mare agitatum ; equis inſident, & parati ſunt ut gigantes ad prælium contra te filia Babylonis.
Ut audivit rex Babelis famam eorum, 43
elanguerunt manus ejus, & triſtitiâ corrept' eſt atque doloribus ut parturientis.
Ecce 44
ſicut leo aſcendet è magnitudine Jordanis ad habitaculum Ethan : quia citò expellam eos ex ipſa, & juvenib' poteſtatem dabo in ipſâ. Quis enim mihi par eſt ? aut quis confligat mecum ? aut quiſnam eſt paſtor qui mihi reſiſtat ?
Iccircò audite conſilium Domini 45
quod cepit contra Babelem, & cogitationem quam cogitavit contra terram Chaldæorum : quòd raptabunt eos infimi inter gregem, & vaſtabunt ſuper eos habitationem eorum.
Præ fragore captæ Babelis contremuit terra, 46
clamore ejus impletus eſt orbis.

CAP. LI.

SIc ait Domin' Deus potentiſſimus, Ecce 1
immiſſurus ſum in Babalem & in cives ejus, cor durum & ſpiritum perniciosum :
Et 2
mittam contra Babelem direptores qui diripient eam, & conculcabunt terram ejus, & congregabuntur adverſùs eam circunquaque in die calamitatis.
Ne deſiſtat qui jaculatur 3
arcu, neque deponat loricam ſuam bellator : ne parcatis juvenibus ejus, interficite totum exercitum ejus,
Cadántque confoſſi in terra 4
Chaldæorum, & vulnerati in plateis ejus :
Quia non ſunt viduati Iſraelitæ & Judæi Deo 5
ſuo : quia terra illorum plena eſt iniquitate coram ſancto Iſraelis.
Fugite de medio Ba- 6
belis, & eripite quiſque ſeipſum, ne ſcelerũ ejus pœnas luatis : tempus eſt enim retributionis ejus à Domino, ſecundùm actiones ejus ipſe rependet eĩ.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

4 *وارسلت اليكم عبيدي الانبياء سحرا * وارسلت انا اليكم قايلا * لا تصنعوا امر هذا
5 الدنس الذي ابغضه *فلم يسمعوني ولا امالوا اذنهم ليرجعوا من شرورهم الا يبخروا لالهة
6 اخر *فقطر غضبي ورجزي واشتعل في مدن يهودا ومن خارج ايروسليم * وصاروا للخراب وللقفر
7 مثل هذا اليوم *والان هكذا قال الرب ضابط الكل * لماذا انتم تصنعون شرورا عظيمة في
نفوسكم *فساقطع منكم انسانا وامراة طفلا ومرضعا من وسط يهودا * ليلا يبقي منكم ولا واحد *
8 *لتمرمروني باعمال ايديكم وتبخروا لالهة اخر في ارض مصر التي دخلتم اليها لتسكنوا
9 هناك * لكي تقطعوا ولكي تكونوا للعنة وللتعيير في جميع امم الارض *لا تتناسوا انتم
اعمال ايديكم * وشرور ملوك يهودا * وشرور روسايكم * وشرور نسايكم * التي صنعوها في مدن
10 يهودا ومن خارج ايروسليم *ولم يكفوا الي هذا اليوم * ولم يمسكوا باوامري التي اعطيتها لوجه
11 اباييهم *لاجل هذا هكذا قال الرب * ها انا اقف بوجهي لاهلك جميع البقايا التي في مصر *
12 *ويسقطون بالسيف وبالجوع يفنون من صغيرهم الي كبيرهم * ويكونون للتعيير والهلاك
13 واللعنة *واطلع علي الجلوس في مصر كما تطلعت علي ايروسليم * بالسيف وبالجوع
14 وبالموت *ولا يكون من يخلص ولا واحد من بقايا يهودا المقيمين بارض مصر *
ليرجعوا الي ارض يهودا التي هم يرجونها بنفوسهم ليرجعوا هناك * لا يرجعون الا
المخلصون ثانية *

Et ad vos miſi ſervos meos prophetas diluculò ; miſi inquã, ego ad vos, dicens, Ne faciatis rem iſtã abominandam quã odi : 4
Attamen non audierunt me, nec aurem ſuam inclinaverunt, ne retraherent ſe à ſceleribus ſuis, ne adolerent diis alienis. 5
Ideoque ſtillavit ira mea & furor meus, exarſitq; in urbes Judæ & in extrinſeca Jeroſolymæ ; ita ut redactæ ſint in ruinam & ſolitudinem, quales ſunt hodierno die. 6
Nunc ergò ſic ait Dominus omnipotens, Quare vos tanta mala committitis in voſipſos, ut excindam è vobis hominem & fœminam ; puerum atq; lactentem de medio Judæ ; ut nemo veſtrum ſuperſit ? 7
Ad exacerbandum me operibus manuum veſtrarũ, & adolendum diis alienis in terra Ægypti quam ingreſſi eſtis ut habitaretis ibi : ut excindamini, et ut ſitis maledictioni atque probro inter omnes terræ gentes ? 8
Ne tradatis vos oblivioni opera manuum veſtrarum, flagitia regum Judæ, flagitia principum veſtrorum, & flagitia uxorum veſtrarum, quæ commiſerunt in urbibus Judæ & extra Jeruſalem, 9
Nunquam deſiſtentes ad hanc uſque diem, neque tenentes præcepta mea quæ propoſueram patribus eorum. 10
Propterea ſic ait Dominus ; En ego ſiſtam faciem meam, ut perdam cunctas reliquias quæ ſunt in Ægypto ; 11
Occumbant gladio, & fame pereant à minimo eorum ad maximum uſque, ſintque probro, excidio, & maledictioni. 12
Et viſitam degentes in Ægypto, quemadmodum inviſi Jeroſolymam, gladio, fame, & peſte ; 13
Nemoq; erit qui evadat, nec unus quidem, ex reliquiis Judæ degentibus in terra Ægypti, ut revertantur in terram Judæ, ad quam ipſi redire ſe ſperant : haud revertentur niſi qui ſecundò evaſerint. 14

ej⁹ vino de : terram omnem inebrians Domini manu in Babel auri Calix
7 כּוֹס־זָהָב בָּבֶל בְּיַד־יְהוָה מְשַׁכֶּרֶת כָּל־הָאָרֶץ מִיֵּינָהּ
, Babel cecidit Subitò .gentes inſanient ideo , gentes biberunt
8 שָׁתוּ גוֹיִם עַל־כֵּן יִתְהֹלְלוּ גוֹיִם׃ פִּתְאֹם נָפְלָה בָבֶל
.ſanetur fortè ſi,ej⁹ dolorem ad *reſinam* tollite :eā ſuper ululate :eſt cōtrita &
וַתִּשָּׁבֵר הֵילִילוּ עָלֶיהָ קְחוּ צֳרִי לְמַכְאוֹבָהּ אוּלַי תֵּרָפֵא׃
:ſuā terrā in *vir* eamus &,eā derelinquite:eſt curata non &,Babel Curavimus
9 רִפִּאנוּ אֶת־בָּבֶל וְלֹא נִרְפָּתָה עִזְבוּהָ וְנֵלֵךְ אִישׁ לְאַרְצוֹ
.*æthera* ad uſque eſt elevatum & ,ejus judicium cœlos ad *pertigit* quoniā
כִּי־נָגַע אֶל־הַשָּׁמַיִם מִשְׁפָּטָהּ וְנִשָּׂא עַד־שְׁחָקִים׃
opus Sijon in narrem⁹ &,venite:noſtras juſtitias Dominus Eduxit
10 הוֹצִיא יְהוָה אֶת־צִדְקֹתֵינוּ בֹּאוּ וּנְסַפְּרָה בְצִיּוֹן אֶת־מַעֲשֵׂה
ſuſcitavit : ſcuta congregate , ſagittas *Exacuite* .noſtri Dei Domini
11 יְהוָה אֱלֹהֵינוּ׃ הָבֵרוּ הַחִצִּים מִלְאוּ הַשְּׁלָטִים הֵעִיר
,ejus cogitatio Babel *ſuper* quia , Madai regum ſpiritum Dominus
יְהוָה אֶת־רוּחַ מַלְכֵי מָדַי כִּי־עַל־בָּבֶל מְזִמָּתוֹ
muros *Ad* .ſui templi ultio , *ipſa* Domini ultio quoniā :eā *corrumpendū ad*
12 לְהַשְׁחִיתָהּ כִּי־נִקְמַת יְהוָה הִיא נִקְמַת הֵיכָלוֹ׃ אֶל־חוֹמֹת
facite præparare ,cuſtodes ſtatuite ,cuſtodiam *roborate* ,*vexillum* levate Babel
בָּבֶל שְׂאוּ־נֵס הַחֲזִיקוּ הַמִּשְׁמָר הָקִימוּ שֹׁמְרִים הָכִינוּ
eſt locutus quæ fecit etiam,Dominus *eſt molitus* etiā quoniā : *inſidiatores*
הָאֹרְבִים כִּי גַּם־זָמַם יְהוָה גַּם־עָשָׂה אֵת אֲשֶׁר־דִּבֶּר
:theſaurorum *multa* ,multas aquas *ſuper tu Habitans* .Babel habitatores *ad*
13 אֶל־יֹשְׁבֵי בָבֶל׃ שֹׁכַנְתְּ עַל־מַיִם רַבִּים רַבַּת אוֹצָרֹת
:*ſua anima in* exercituū Dominus Juravit .*tuæ appetentiæ cubitus*,tu⁹ finis venit
14 בָּא קִצֵּךְ אַמַּת בִּצְעֵךְ׃ נִשְׁבַּע יְהוָה צְבָאוֹת בְּנַפְשׁוֹ
Faciens .celeuſma te ſuper *concinent &*,*brucho* velut,*homine* te replevero Niſi
15 כִּי אִם־מִלֵּאתִיךְ אָדָם כַּיֶּלֶק וְעָנוּ עָלַיִךְ הֵידָד׃ עֹשֵׂה
ſua prudentia in & : ſua ſapientia in orbem *firmans* ,ſua fortitudine in terram
אֶרֶץ בְּכֹחוֹ מֵכִין תֵּבֵל בְּחָכְמָתוֹ וּבִתְבוּנָתוֹ
faciet aſcēdere & ,cœlis in aquarū *tumultū ipſum dare* vocē Ad .cœlos extendit
16 נָטָה שָׁמָיִם׃ לְקוֹל תִּתּוֹ הֲמוֹן מַיִם בַּשָּׁמַיִם וַיַּעֲלֶה
ventum eduxit & ,fecit pluviam in fulgura : terræ extremo ab *vapores*
נְשִׂאִים מִקְצֵה־אֶרֶץ בְּרָקִים לַמָּטָר עָשָׂה וַיֹּצֵא רוּחַ
eſt affectus pudore:ſcientia à homo omnis eſt effectus *Brutus* .ſuis theſauris de
17 מֵאֹצְרֹתָיו׃ נִבְעַר כָּל־אָדָם מִדַּעַת הֹבִישׁ
.eis in ſpiritus non & ,ej⁹ conflatio mendaciū quia : *ſculptili* à aurifex omnis
כָּל־צוֹרֵף מִפָּסֶל כִּי שֶׁקֶר נִסְכּוֹ וְלֹא־רוּחַ בָּם׃
Non .peribunt eorū viſitationis tempore in : errorum opus , *ipſi* Vanitas
18 הֶבֶל הֵמָּה מַעֲשֵׂה תַּעְתֻּעִים בְּעֵת פְּקֻדָּתָם יֹאבֵדוּ׃ לֹא־
19 :ej⁹ hæreditatis ſceptrum & ,*ipſe* omniū plaſmator quia,Jahacob pars hæc ſicut
כְאֵלֶּה חֵלֶק יַעֲקוֹב כִּי־יוֹצֵר הַכֹּל הוּא וְשֵׁבֶט נַחֲלָתוֹ
inſtrumenta ,mihi *tu ſpargens* Malleus .ej⁹ nomen exercituū Dominus
20 יְהוָה צְבָאוֹת שְׁמוֹ׃ מַפֵּץ־אַתָּה לִי כְּלֵי
.regna te *in corrumpam* &,gentes te *in* diſperſione conteram & : *belli*
מִלְחָמָה וְנִפַּצְתִּי בְךָ גּוֹיִם וְהִשְׁחַתִּי בְךָ מַמְלָכוֹת׃
,currum te *in* conteram & : ejus *equitantem* &,equum te *in contritum ſpargam* Et
21 וְנִפַּצְתִּי בְךָ סוּס וְרֹכְבוֹ וְנִפַּצְתִּי בְךָ רֶכֶב
conteram & ; mulierem & , virum te *in contritum ſpargam* Et .ej⁹ *equitantem* &
22 וְרֹכְבוֹ׃ וְנִפַּצְתִּי בְךָ אִישׁ וְאִשָּׁה וְנִפַּצְתִּי
conteram Et .virginem & ,juvenem te *in* conteram & : puerum & ſenem te *in*
23 בְךָ זָקֵן וָנָעַר וְנִפַּצְתִּי בְךָ בָּחוּר וּבְתוּלָה׃ וְנִפַּצְתִּי
:ej⁹ jugalē & agricolam te *in ſpargam contritum* & ,ej⁹ gregem & ,paſtorem te *in*
בְךָ רֹעֶה וְעֶדְרוֹ וְנִפַּצְתִּי בְךָ אִכָּר וְצִמְדּוֹ
cunctis & ,Babel *ipſi* reddam Et .*magiſtratus* & , duces te *in* conteram &
24 וְנִפַּצְתִּי בְךָ פַּחוֹת וּסְגָנִים׃ וְשִׁלַּמְתִּי לְבָבֶל וּלְכֹל
Sijon in fecerunt quod eorum malum omne Chaſdim habitatoribus
יוֹשְׁבֵי כַשְׂדִּים אֵת כָּל־רָעָתָם אֲשֶׁר־עָשׂוּ בְצִיּוֹן
.Dominus dixit ,veſtris oculis in
לְעֵינֵיכֶם נְאֻם יְהוָה׃

Verſio VULG. LAT.

7 Calix aureus Babylon in manu Domini, inebrians omnem terram: de vino ej⁹ biberunt Gentes, & ideò commotæ ſunt. 8 Subitò cecidit Babylon, & contrita eſt: ululate ſuper eam, tollite reſinam ad dolorem ej⁹, ſi fortè 9 ſanetur. Curavim⁹ Babylonem, & non eſt ſanata: derelinquam⁹ eam, & eamus unuſquiſque in terram ſuam: quoniam pervenit uſque ad cœlos judicium ejus, & elevatum eſt uſque ad 10 nubes. Protulit Domin⁹ juſtitias noſtras: venite, & narremus in Sion opus Domini Dei noſtri. 11 Acuite ſagittas, implete pharetras: ſuſcitavit Domin⁹ ſpiritū regum Medorum: & contra Babylonem mens ejus eſt ut perdat eam, quoniā ultio Domini eſt, ul- 12 tio templi ſui. Super muros Babylonis levate ſignū, augete cuſtodiā: levate cuſtodes, præparate inſidias: quia cogitavit Domin⁹, & fecit quæcunq; locutus eſt contra habitatores Babylo- 13 nis. Quæ habitas ſuper aquas multas, locuples in theſauris, venit finis tu⁹ pedalis præciſionis tuæ. 14 Juravit Domin⁹ exercituum per animam ſuā; Quoniā replebo te hominib⁹ quaſi brucho, & ſu- 15 per te celeuma cantabitur. Qui fecit terrā in fortitudine ſua, præparavit orbem in ſapientia ſua, & prudentiâ ſuâ extendit cœlos. 16 Dante eo vocē, multiplicantur aquæ in cœlo: qui levat nubes ab extremo terræ, fulgura in pluviam fecit: & produxit ventū de 17 theſauris ſuis. Stult⁹ factus eſt omnis homo à ſcientia: cōfuſ⁹ eſt omnis conflator in ſculptili: quia mendax eſt conflatio eorū, nec 18 eſt ſpirit⁹ in eis. Vana ſunt opera, & riſu digna, in tempore vi- 19 ſitationis ſuæ peribunt. Non ſicut hæc, pars Jacob: quia qui fecit omnia ipſe eſt, & Iſrael ſceptrum hæreditatis ejus: Domin⁹ 20 exercituum nomen ej⁹. Collidis tu mihi vaſa belli, & ego collidā in te Gentes, & diſperdā in te 21 regna: Et collidā in te equum & equitem ej⁹: & collidā in te cur- 21 rum & aſcenſorem ej⁹: Et collidam in te virum & mulierem: & collidā in te ſenem et puerū: & collidam in te juvenem & vir- 23 ginem: Et collidam in te paſtorem & gregem ejus: & collidam in te agricolam & jugales ejus: & 24 collidam in te duces & magiſtratus. Et reddam Babyloni, & cunctis habitatoribus Chaldææ, omne malum ſuum, quod fecerunt in Sion, in oculis veſtris, ait Dominus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

15 Καὶ ἀπεκρίθησαν τῷ Ἱερεμίᾳ (σ) πάντες οἱ ἄνδρες οἱ γνόντες, ὅτι θυμιῶσιν αἱ γυναῖκες (") αὐτῶν, ϗ πᾶσαι αἱ γυναῖκες, συναγωγὴ μεγάλη, ϗ πᾶς ὁ λαὸς οἱ καθήμενοι (τ) ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, ἐν Παθουρῆ, 16 λέγοντες, Ὁ λόγος ὃν ἐλάλησας πρὸς ἡμᾶς τῷ ὀνόματι κυρίου, οὐκ (υ) ἀκούσομέν σου, 17 Ὅτι ποιοῦντες ποιήσομεν πάντα τὸν λόγον, ὃς ἐξελεύσεται ἐκ τοῦ στόματος ἡμῶν, θυμιᾶν τῇ βασιλίσσῃ τοῦ οὐρανοῦ, ϗ σπένδειν αὐτῇ σπονδὰς, καθὰ ἐποιήσαμεν ἡμεῖς ϗ οἱ πατέρες ἡμῶν, καὶ οἱ βασιλεῖς ἡμῶν, ϗ οἱ ἄρχοντες ἡμῶν, ἐν πόλεσιν Ἰούδα ϗ ἔξωθεν Ἱερουσαλήμ· ϗ ἐπλήσθημεν ἄρτων, καὶ (φ) ἐγενόμεθα χρηστοὶ, ϗ κακὰ οὐκ εἴδομεν. 18 Καὶ ὡς διελίπομεν θυμιῶντες τῇ βασιλίσσῃ τοῦ οὐρανοῦ, (χ) ἠλαττώθημεν πάντες, ϗ ἐν ῥομφαίᾳ ϗ ἐν λιμῷ ἐξελίπομεν. 19 Καὶ ὅτι (ψ) ἡμεῖς ἐθυμιῶμεν τῇ βασιλίσσῃ τοῦ οὐρανοῦ, (ω) ϗ ἐσπείσαμεν αὐτῇ σπονδὰς, μὴ ἄνευ τῶν ἀνδρῶν ἡμῶν ἐποιήσαμεν αὐτῇ χαυῶνας, ϗ ἐσπείσαμεν αὐτῇ σπονδάς; 20 Καὶ εἶπεν Ἱερεμίας παντὶ τῷ λαῷ, τοῖς δυνατοῖς ϗ ταῖς γυναιξὶ, ϗ παντὶ τῷ λαῷ τοῖς 21 ἀποκριθεῖσιν αὐτῷ λόγους, λέγων, Οὐχὶ τοῦ θυμιάματος οὗ (α) ἐθυμιάσατε ἐν ταῖς πόλεσιν Ἰούδα, ϗ ἔξωθεν Ἱερουσαλὴμ, ὑμεῖς ϗ οἱ πατέρες ὑμῶν, ϗ οἱ βασιλεῖς ὑμῶν, ϗ οἱ ἄρχοντες ὑμῶν, ϗ ὁ λαὸς τῆς γῆς, ἐμνήσθη κύριος; ϗ ἀνέβη ἐπὶ τὴν 22 καρδίαν αὐτοῦ; Καὶ οὐκ ἠδύνατο κύριος ἔτι φέρειν ἀπὸ προσώπου πονηρίας πραγμάτων (β) ὑμῶν, ϗ ἀπὸ τῶν (γ) βδελυγμάτων ὑμῶν ὧν ἐποιήσατε. ϗ (δ) ἐγενήθη ἡ γῆ ὑμῶν εἰς ἐρήμωσιν, ϗ εἰς ἄβατον, ϗ εἰς ἀρὰν, ὡς ἐν τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ, 23 Ἀπὸ προσώπου ὧν ἐθυμιᾶτε, ϗ ὧν ἡμάρτετε τῷ κυρίῳ. ϗ οὐκ ἠκούσατε τῆς φωνῆς κυρίου, ϗ ἐν τοῖς προστάγμασιν αὐτοῦ, ϗ ἐν τῷ (ε) νόμῳ, ϗ ἐν τοῖς μαρτυρίοις αὐτοῦ οὐκ ἐπορεύθητε, ϗ ἐπελάβετο ὑμῶν τὰ κακὰ ταῦτα. 24 Καὶ εἶπεν Ἱερεμίας τῷ λαῷ, ϗ ταῖς γυναιξὶν, Ἀκούσατε λόγον κυρίου·

Et reſponderunt Hieremiæ omnes viri, qui ſciebant, quia adolent uxores ſuæ, & omnes mulieres, ſynagoga magna, & omnis populus ſedentes in terra Ægypto in Pathure, dicentes; 15 *Verbum, quod loquutus es ad nos nomine Domini, non audiemus te:* 16 *Quia (i) facientes faciemus omne verbum, quod egredietur ex ore noſtro, adolendo reginæ cœli, & libando ei libamina; ſicut fecimus nos, & patres noſtri, & reges noſtri, & principes noſtri in civitatibus Juda, & (k) extra Hieruſalem: & impleti ſumus panibus, & fuimus jucundi, & mala non vidimus.* 17 *Et ut omiſimus adolentes reginæ cœli; imminuti ſumus omnes: & in gladio, & in fame defecimus.* 18 *Et quia nos adolebamus reginæ cœli, & libavimus ei libamina; nunquid ſine viris noſtris fecimus ei placentas, & libavimus ei libamina?* 19 *Et dixit Hieremias omni populo, potentibus, & mulieribus, & omni populo iis qui reſponderant ei verba, dicens;* 20 *Nónne incenſi, quod adolebatis in civitatibus Juda, & extra Hieruſalem, vos, & patres veſtri, & reges veſtri, & principes veſtri, & populus terræ, meminit Dominus? & aſcendit ſuper cor ipſius?* 21 *Et non potuit Dominus ultrà ferre à facie malitiæ rerum veſtrarum, & à veſtris abominationibus, quas feciſtis. Et facta eſt terra veſtra in deſolationem, & in invium, & in maledictum, ſicut dies hæc,* 22 *A facie eorum, quæ adolebatis, & quæ peccabatis Domino. Et non audîſtis vocem Domini: & in præceptis ejus, & in lege, & in teſtimoniis ejus non ambulâſtis: & apprehenderunt vos mala hæc.* 23 *Et dixit Hieremias populo, & mulieribus; Audite verbum (l) Domini:* 24

MS.A. (σ) ἅπαντες (") αὐτῶν θεοῖς ἑτέροις, ϗ (τ) ἐν Αἰγύπτῳ, (υ) ἀκουσόμεθά (φ) ἐγενάμεθα (χ) ἠλαττονώθημεν ἡμεῖς, ϗ ἐν (ψ) θυμιῶμεν ἡμεῖς (ω) ϗ εἰ ἐσπείσαμεν (α) ἐθυμιάσατο (β) ὑμῶν, ἀπὸ (γ) βδελυγμάτων ὧν (δ) ἐγένετο (ε) νόμῳ αὐτοῦ,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

7 הָא כְּכָסָא דְדַהֲבָא דְהוּא רְגִיג מִכָּל מָנַיָא כֵּן עֲלֵי חוֹבַהּ דְבָבֶל בְּכֵן פּוּרְעָנוּת תַּקִיפָא
עֲתִידָא דְיֵיתֵי לַהּ מִן קֳדָם יְיָ עֲתִידִין דְיִתְרַוּוֹן מִנַהּ רַוָן כָּל מַלְכֵי עַמְמַיָא וּמִכָּס פּוּרְעָנוּתָא
8 יִשְׁתּוֹן עַמְמַיָא עַל כֵּן יִשְׁתַּגְשׁוּן עַמְמַיָא׃ בִּתְכֵיף נְפַלַת בָּבֶל וְאִתְבְּרַת אֲלִילוּ עֲלַהּ סַבוּ
9 שְׁעִיף לִתְבִירַהּ מָאִים תִּתַּסֵי׃ אַסֵינָא יַת בָּבֶל וְלָא מִתַּסְיָא שְׁבוּקוּהָא וְנֵיזֵיל גְבַר לְאַרְעֵיהּ
10 אֲרֵי קְרֵיב לִשְׁמַיָא תְּבִירַהּ וּמִנְטַל עַד שְׁמֵי שְׁמַיָא׃ גְלָא יְיָ יַת זְכוּתָנָא אִיתוֹ וּנְשְׁתָּעֵי בְצִיוֹן
11 יַת עוֹבָדָא דִי עֲבִיד יְיָ אֱלָהָנָא׃ שַׁנִינוּ גִירַיָא מְלוֹ שַׁלְטַיָא אַעִיר יְיָ יַת רוּחַ מַלְכֵי מָדַי אֲרֵי
12 עַל בָּבֶל רְעוּתֵיהּ לְחַבָּלוּתַהּ אֲרֵי פּוּרְעָנוּתָא דַיְיָ הִיא פּוּרְעָנוּת הֵיכְלֵיהּ׃ עַל שׁוּרֵי בָבֶל
וְקוּפוּ אָתָא אַתְקִיפוּ מַטַּרְתָּא אֲקִימוּ נָטְרַיָא אַתְקִינוּ חוּצְנַיָא אֲרֵי אַף חֲשִׁיב יְיָ אַף עֲבַד יַת
13 דְמַלֵיל עַל יָתְבֵי בָבֶל׃ דְשָׁרְיָא עַל מַיִן סַגִיאִין סַגִיאִין בֵּית גִנְזָהָא מְטָא יוֹם תַּבְרִיךְ עִדָן
14 סְעוֹרַת בִּישׁוּתִיךְ׃ קַיֵים יְיָ צְבָאוֹת בְּמֵימְרֵיהּ אֱלָהֵן אֲמַלֵינִיךְ מַשִׁרְיַת עַמְמִין סַגִיאִין כְּזַחֲלָא
15 וִירִימוּן עֲלִיךְ קָלְהוֹן׃ אֲמַר אִלֵין דַעֲבַד אַרְעָא בְּחֵילֵיהּ שַׁכְלֵיל תֵּבֵל בְּחוּכְמְתֵיהּ
16 וּבְסוּכְלְתָנוּתֵיהּ תְּלָא שְׁמַיָא׃ לְקַל מִתְּנֵיהּ רִכְפַּת דְמַיִן בִּשְׁמַיָא וּמַסֵיק עֲנָנִין מִסְּיָפֵי אַרְעָא
17 בַּרְקִין לִזְמַן מִטְרָא עֲבִיד וּמַפֵּיק רוּחִין מִבֵּית גִנְזוֹהִי׃ אִטַפְּשׁוּ כָּל עַמְמַיָא מִלְמִדַע
18 חוּכְמְתָא בְּהֵיתוּ כָּל קֵינֵי מִלְמֶעְבַּד צְלַם אֲרֵי שִׁקְרָא אַתִּיכוּנוּן וְלָא רוּחָא בְהוֹן׃ לְמָא
19 אִנוּן עוֹבַד תּוּלְעֲבָא בְּעִדַן דְאַסְעַר עֲלֵיהוֹן חוֹבֵיהוֹן יֵיבְדוּן׃ לָא כְאִלֵין חוּלָקֵיהּ דְיַעֲקֹב
20 אֲרֵי דִי בְרָא כוֹלָא הוּא וְיִשְׂרָאֵל חוּלַק שִׁבְטָא דְאַחְסַנְתֵּיהּ יְיָ צְבָאוֹת שְׁמֵיהּ׃ מְבַדַר אַתְּ
21 קֳדָמַי כַּרְכָּא דִי בֵיהּ מָנֵי קְרָבָא וַאֲבַדַר בָּךְ עַמְמִין וַאֲחַבֵּיל בָּךְ מַלְכְוָן׃ וַאֲבַדַר בָּךְ סוּסָוָן
22 וּרְתִיכֵיהוֹן וַאֲבַדַר בָּךְ רְתִיכִין וְרִכְבֵּיהוֹן׃ וַאֲבַדַר בָּךְ גְבַר וְאִתְּתָא וַאֲבַדַר בָּךְ סָב וְיָנִיק
23 וַאֲבַדַר בָּךְ עוּלֵימִין וּבְתוּלָן׃ וַאֲבַדַר בָּךְ רָעְיָא וְעֶדְרֵיהּ וַאֲבַדַר בָּךְ אִכָּר וּפַדָנֵיהּ וַאֲבַדַר בָּךְ
24 שִׁלְטוֹנִין וְטוּרְנִין׃ וַאֲשַׁלֵם לְבָבֶל וּלְכָל יָתְבֵי אַרְעָא כַּסְדָאֵי יַת כָּל בִּישַׁתְהוֹן דַעֲבַדוּ
בְצִיוֹן לְעֵינֵיכוֹן אֲמַר יְיָ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ecce ſicut calix aure⁹ qui eſt deſiderabilis præ cunctis vaſis; ſic ſupremum eſt peccatum Babylonis: ideò ultio gravis ventura eſt contra eam à facie Dñi. Futurum eſt ut inebrientur ex ea ebrii omnes reges populorum, & de calice ultionis bibent populi; propterea conturbabuntur populi. 7 Subitò cecidit Babylon, & contrita eſt. 8 Ululate ſuꝑ eam: tollite reſinam confractioni ej⁹, ſi fortè ſanabitur. Curavim⁹ Babylonem, & non eſt ſanata: relinquite 9 eam, & eam⁹ unuſquiſque in terram ſuam: quoniam appropinquavit uſque ad cœlos confractio ej⁹, & ſublata eſt uſque ad cœlos cœlorum. Revelavit 10 Domin⁹ juſtitiam noſtram, venite et annuntiem⁹ in Sion op⁹ quod fecit Dñs Deus noſter. Acuite ſagittas & implete pharetras. Suſcitavit Dñs ſpiritum 11 regū Medorū, quia contra Babylonē eſt voluntas ej⁹ ut diſperdat eā: quia ultio Dñi eſt, ultio templi ej⁹. Suꝑ muros Babylonis levate ſignū; roborate cuſto- 12 diam; ſuſcitate cuſtodes; præparate inſidias: quia cogitavit Dñs, etiam fecit ꝙ locut⁹ eſt ſuꝑ habitatores Babylonis. Quæ habitat ſuꝑ aquas multas, multæ 13 ſunt dom⁹ theſaurorum ej⁹: pervenit dies interit⁹ tui, temp⁹ viſitationis malitiæ tuæ. Juravit Domin⁹ exercituū in verbo ſuo, Niſi implevero te exer- 14 citib⁹ populorū multorū quaſi reptiliū, & tollent ſuꝑ te vocē ſuam. Dixit 15 hæc, qui fecit terrā virtute ſua, fundavit orbē ſapientia ſua, & prudentia ſua appendit cœlos. Ad vocē ej⁹ qui dat tumultū aquarū in cœlis; & ſubve- 16 hit nubes ab extremis terræ; fulgura in tempore pluviæ fecit; & adducit ventos de domo theſaurorū ſuorū. Inſipientes facti ſunt omnes populi, ita 17 ut neſciant ſapientiā. Confuſus eſt omnis argentarius à faciendo ſimulachro; quia falſa ſunt quæ *conflaverunt*, nec eſt ſpirit⁹ in eis. Vana ſunt, opera irri- 18 ſionis: in tempore quo viſitavero ſuꝑ eos peccata ipſorū, peribunt. Non 19 ejuſmodi eſt pars Jacob: quia qui creavit omnia, ipſe eſt, & Iſrael eſt portio tribus hæreditatis ejus, Dominus exercituū nomen ejus. Diſſipator tu es co- 20 ram me, civitas in qua ſunt arma bellica, & diſpergā in te populos, & diſſipabo in te regna. Et diſpergam in te equos & currus *eorum*; & diſpergam 21 in te *currus*, & *aſcenſores eorum*. Et diſpergā in te virum & mulierem: & 22 diſpergam in te ſenem & infantem: & diſpergam in te juvenes & virgines. Et diſpergam in te paſtorem et gregem ejus; & diſpergam in te agricolam 23 et par boum ejus: et diſpergam in te dominatores et duces. Et reddam Ba- 24 byloni et omnibus habitatoribus terræ Chaldæorum omne malum ſuum quod fecerunt in Sion, in oculis veſtris, dicit Dominus.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܟܣܐ ܕܕܗܒܐ ܒܒܠ ܒܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ ܀ ܕܡܪܘܐ ܠܟܠܗ ܐܪܥܐ ܡܢ ܚܡܪܗ. ܫܬܝܘ 7
ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. ܘܐܬܕܠܚܘ. * ܡܢ ܫܠܝܐ ܢܦܠܬ ܒܒܠ ܘܐܬܬܒܪܬ. ܐܝܠܠܘ ܥܠܝܗ. 8
ܣܒܘ ܣܡܡܢܐ ܠܟܐܒܗ. ܟܒܪ ܬܬܐܣܐ. * ܐܣܝܢܢ ܠܒܒܠ. ܘܠܐ ܐܬܐܣܝܬ. 9
ܢܫܒܩܝܗ. ܘܢܐܙܠ ܓܒܪ ܠܐܪܥܗ. ܡܛܠ ܕܡܛܐ ܠܫܡܝܐ ܕܝܢܗ. ܘܐܬܬܪܝܡ
ܥܕܡܐ ܠܥܢܢܐ. * ܐܦܩ ܡܪܝܐ ܙܕܝܩܘܬܢ. ܬܘ ܢܫܬܥܐ ܒܨܗܝܘܢ ܥܒܕܘܗܝ ܕܡܪܝܐ 10
ܐܠܗܢ. * ܟܢܫܘ ܫܠܛܐ. ܡܠܘ ܓܐܪܐ. ܐܥܝܪ ܡܪܝܐ ܪܘܚܐ ܕܡܠܟܐ ܕܡܕܝ. ܡܛܠ 11
ܕܥܠ ܒܒܠ ܐܬܪܥܝܬܗ ܠܡܚܪܒܘܬܗ. ܡܛܠ ܕܦܘܪܥܢܗ ܗܘ ܕܡܪܝܐ. ܘܬܒܥܬܐ
ܕܗܝܟܠܗ. * ܥܠ ܫܘܪܝܗ ܕܒܒܠ ܐܩܝܡܘ ܐܬܐ. ܐܩܝܡܘ ܡܛܪܬܐ. ܘܛܒܥܘܗ 12
ܒܡܝܐ. ܡܛܠ ܕܓܡܪ ܡܪܝܐ ܡܕܡ ܕܐܬܪܥܝ ܥܠ ܒܒܠ ܕܝܬܒܐ ܗܘܬ ܥܠ ܡܝܐ ܣܓܝܐܐ.
* ܣܓܝܐܝܢ ܓܙܝܟܝ. ܡܛܠ ܕܡܛܐ ܣܘܦܟܝ. ܘܚܣܝܢܐ ܡܚܘܬܟܝ. * ܝܡܐ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ 13
ܒܢܦܫܗ ܀ ܕܐܡܠܝܟܝ ܐܢܫܐ. ܐܝܟ ܩܡܨܐ. ܘܢܥܢܘܢ ܥܠܝܟܝ ܘܢܐܡܪܘܢ ܀ ܗܘܝ. 14
ܗܘܝ. * ܡܪܝܐ ܥܒܕ ܐܪܥܐ ܒܚܝܠܗ. ܘܬܩܢ ܬܒܝܠ ܒܚܟܡܬܗ. ܘܒܣܘܟܠܗ 15
ܡܬܚ ܫܡܝܐ. * ܢܬܠ ܩܠܐ ܕܪܥܡܐ ܕܡܝܐ ܒܫܡܝܐ. ܡܣܩ ܥܢܢܐ ܡܢ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. 16
ܘܒܪܩܐ ܠܡܛܪܐ ܥܒܕ. ܘܡܦܩ ܪܘܚܐ ܡܢ ܐܘܨܪܘܗܝ. * ܐܫܬܛܝ ܟܠ ܒܪܢܫܐ ܡܢ ܝܕܥܬܐ. 17
ܒܗܬܘ ܟܠ ܢܣܟܐ ܡܢ ܦܬܟܪܐ ܕܥܒܕܘ. ܡܛܠ ܕܕܓܠܘܬܐ ܢܣܟܘ ܕܠܝܬ ܒܗܘܢ
ܪܘܚܐ. * ܠܐ ܡܕܡ ܐܢܘܢ. ܘܥܒܕܐ ܐܢܘܢ ܡܫܛܝܐ. ܒܝܘܡܐ ܕܡܬܦܩܕܝܢ. ܢܐܒܕܘܢ. * ܠܐ 18 19
ܐܝܟ ܕܗܠܝܢ ܡܢܬܗ ܕܝܥܩܘܒ. ܐܠܐ ܡܢ ܕܒܪܐ ܟܠ. ܗܘܝܘ ܡܢܬܗܘܢ. ܘܫܒܛܐ
ܕܝܪܬܘܬܗܘܢ. ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ. * ܛܝܒܘ ܠܝ ܡܐܢܐ ܕܩܪܒܐ. ܐܘܒܕ ܒܟܝ 20
ܥܡܡܐ. ܘܐܒܛܠ ܒܟܝ ܡܠܟܘܬܐ. * ܘܐܒܕܪ ܒܟܝ ܪܟܫܐ ܘܪܟܒܝܗܘܢ. ܘܐܒܕܪ ܒܟܝ 21
ܡܪܟܒܬܐ ܘܪܟܒܝܗܘܢ. * ܘܐܒܕܪ ܒܟܝ ܓܒܪܐ ܘܢܫܐ. ܘܐܒܕܪ ܒܟܝ ܣܒܐ ܘܥܠܝܡܐ. 22
ܘܐܒܕܪ ܒܟܝ ܛܠܝܐ ܘܒܬܘܠܬܐ. * ܘܐܒܕܪ ܒܟܝ ܪܥܝܐ ܘܥܢܗ. ܘܐܒܕܪ ܒܟܝ ܐܟܪܐ 23
ܘܦܕܢܗ. ܘܐܒܕܪ ܒܟܝ ܗܓܡܘܢܐ ܘܫܠܝܛܢܐ. * ܘܐܦܪܘܥ ܠܒܒܠ ܘܠܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ 24
ܟܠܕܝܐ ܀ ܟܠܗ ܒܝܫܬܐ ܕܥܒܕܘ ܒܨܗܝܘܢ. ܠܥܝܢܝܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.

* Calix aureus eſt Babel in manu Domini, in- 7
ebrians totam terram vino ſuo: biberunt o-
mnes gentes, & turbatæ ſunt. Repentè cor- 8
ruit Babel, & confracta eſt: ululate propter
eam: capite medicamina doloribus ejus, ſi
fortè ſanetur. Curavimus Babelem, & non 9
eſt ſanata: relinquamus eam, & abeamus
quiſque in patriam ſuam: (nam pervenit ad
cœlum uſque judicium ejus, & extulit ſe ad
nubes uſque) Proferet Dominus innocen- 10
tiam noſtram. Venite, narremus in Sione fa-
cinora Domini Dei noſtri. Cogite phare- 11
tras, implete ſagittis: excitavit Dominus ſpi-
ritum regis Mediæ, quia Babelem deſtruere
deſtinavit: nam retributio Domini eſt, &
ultio templi ſui. Super muros Babelis eri- 12
gite vexillum, ſtatuite excubias, & eam aquis
immergite: nam perfecit Dominus quod de-
creverat contra Babelem quæ ſita erat inter
aquas multas. Multi ſunt theſauri tui, *ſed* ap- 13
propinquavit finis tuus, & invaluit plaga tua.
Juravit Domin⁹ potentiſſimus p ſemetipſum, 14
dicens; Implebo te hominibus ut locuſtis, qui
de te concinent ac dicent; Hem, hem. Do- 15
minus terram fecit potentiâ ſuâ, condidit or-
bem ſapientiâ ſuâ, & prudentiâ ſuâ cœlum
extendit. Qui edit ſonum fragoris aquarum 16
in cœlo, elicit nubes è terræ finibus, fulgura
in pluviam vertit, profert ventos ex horreis
ſuis. Stultus factus eſt omnis homo potiùs 17
quàm ut cognitionem aſſequatur: pudefacti
ſunt omnes fuſores propter ſculptilia quæ fe-
cerunt, quia mendacia fuderunt quibus nul-
lus ineſt ſpiritus. Nihil ſunt, opificia ſunt 18
ſtolida: quo die viſitabuntur, peribunt. Non 19
ut iſtorum (*opificum*) eſt portio Jacobi; ſed
qui omnia creavit, is eſt eorum portio; &
virga hæreditatis eorum, Dominus potentiſ-
ſimus vocatur. Parate mihi vaſa bellica: diſ- 20
perdam propter te gentes, & extinguam pro-
pter te regna: Diſperdam propter te equos 21
& iis inſidentes, & propter te diſperdā curr⁹
& ſeſſores eorum: Diſpergam propter te 22
viros ac mulieres, & diſpergam propter te
ſenes juvenéſque, & propter te diſpergā ado-
leſcentes ac virgines: Diſperdam pro te 23
paſtorem & gregem ejus, diſperdā pro te
aratorem & jugum boum ejus, & pro te diſ-
perdam tyrannos ac principes: Denique 24
rependam Babeli & cunctis habitatoribus
Chaldæis, totum malum quo Sionem affece-
rant, ſpectantibus vobis, ait Dominus.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الاصحاح الثاني والثلاثون *

* فاجاب ارميا جميع الرجال العارفين ان نساهم بخرن لالهة اخري * وجميع النسوة جمع 15
عظيم * وكل الشعب الجلوس بمصر في باتوريس قايلين * القول الذي تكلمت 16
معنا به باسم الرب لم نسمعه منك * لاننا صانعين نصنع كل القول الذي يخرج من 17
فمنا لنبخر لملكة السماء ونريق لها قوارير * كما صنعنا نحن واباونا وملوكنا
وروساونا في مدن يهودا ومن خارج ايروسليم * وامتلانا خبزا وصرنا طيبين * ولم نعاين
سرورا * ولما فرغنا نبخر لملكة السماء عوزنا نحن * وبالسيف والجوع فنينا * ولانا 18 19
نحن نبخر لملكة السماء * وان كنا فرغنا لها قوارير * هل من دون رجالنا صنعنا
لها قرابين وافرغنا لها قوارير * فقال ارميا لكل الشعب * للاقوياء وللنساء ولكل 20
الشعب الذين جاوبوه بهذه الاقوال قايلا * اليس البخور الذي بخر به في مدن 21
يهودا ومن خارج ايروسليم انتم واباوكم وملوككم وروساوكم وشعب الارض *
ذكره الرب وصعد على قلبه * ولم يستطيع الرب ان يحتمل ايضا من وجه شر اعمالكم 22
ومن الرذالات التي صنعتموها * وصارت ارضكم للخراب وللقفر وللعنة * كما في هذا اليوم *
* من وجه ما بخرتم به وما اخطاتم به للرب * ولم تسمعوا صوت الرب * وفي اوامره وفي ناموسه 23
وفي شهاداته لم تسيروا * فادركتكم هذه الشرور * وقال ارميا للشعب وللنسوة * اسمعوا 24
قول الرب *

Textus trigeſimus ſecundus.

Reſponderunt autem Jeremiæ omnes vi- 15
ri qui ſciebant uxores ſuas adoleviſſe
diis alienis, & omnes mulieres, turba
magna, totuſque populus qui commo-
rabantur in Ægypto in Bathure, dicen-
tes; Sermonem quo nos allocutus es no- 16
mine Domini, non auſcultabimus à te:
Imò planè facturi ſumus omnem ſermo- 17
nem qui egredietur ex ore noſtro, ado-
lentes reginæ cœli, & fundentes ei
alabaſtra, quemadmodum fecimus nos
& majores noſtri, & reges ac principes
noſtri in urbibus Judæ & extra Jeru-
ſalem: nam pane abundabamus, proſperi
eramus, nec ſentiebamus incommoda.
Poſtquam verò deſivimus adolere reginæ 18
cœli, indigi facti ſumus, & gladio ac
fame defecimus. Quòd autem adolea- 19
mus reginæ cœli, eique fuderimus ala-
baſtra, num abſque maritis noſtris feci-
mus ei oblationes, & alabaſtra fudimus
illi? Dixit Jeremia toti populo, tam 20
fortibus quàm fœminis totique turbæ
quæ reſponderat ei hujuſcemodi ſermo-
nibus, dicens; An non thuris illius, 21
quod in urbibus Judæ & extra Jeru-
ſalem adoleviſtis vos ac patres veſtri,
& reges ac principes veſtri, terræque
populus; recordatus eſt Dominus, eique
venit in memoriam? Cúmque non 22
poſſet ampliùs tolerare Dominus propter
nequitiam operum veſtrorum, & propter
abominationes quas egiſtis; facta eſt
terra veſtra in vaſtitatem, ſolitudinem,
& maledictionem, quemadmodum eſt
hodierno die. Eò quòd adoleviſtis & 23
peccâſtis in Dominum, neque paruiſtis
voci Domini, & in præceptis, lege, atque
teſtimoniis ejus non ambulâſtis; propter-
ea evenerunt vobis hæc mala. Dixit 24
etiam Jeremia populo & mulieribus;
Audite ſermonem Domini.

ירמיה: נא

:terram omnem *corrumpens* Dominus dixit , *corruptor* mons te ad ego Ecce
25 הִנְנִי אֵלֶיךָ הַר הַמַּשְׁחִית נְאֻם־יְהוָה הַמַּשְׁחִית אֶת־כָּל־הָאָרֶץ
te *dabo* & , petris de te evolvam & , te ſuper meam manum extendam &
וְנָטִיתִי אֶת־יָדִי עָלֶיךָ וְגִלְגַּלְתִּיךָ מִן־הַסְּלָעִים וּנְתַתִּיךָ
lapidem & , angulo lapidem te de tollent non Et .combuſtionis montem *in*
26 לְהַר שְׂרֵפָה׃ וְלֹא־יִקְחוּ מִמְּךָ אֶבֶן לְפִנָּה וְאֶבֶן
vexillum Levate .Dominus dixit , eris *ſeculi* deſolationes ſed : fundamentis
27 לְמוֹסָדוֹת כִּי־שִׁמְמוֹת עוֹלָם תִּהְיֶה נְאֻם־יְהוָה׃ שְׂאוּ־נֵס
illā *ſuper promulgate* , gentes eam *ſuper conſecrate* :gentibus in buccina clangite,terra in
בָּאָרֶץ תִּקְעוּ שׁוֹפָר בַּגּוֹיִם קַדְּשׁוּ עָלֶיהָ גּוֹיִם הַשְׁמִיעוּ עָלֶיהָ
facite aſcēdere,principem *ea ſuper* præficite :Aſchenaz & ,Minni , Ararat regna
מַמְלְכוֹת אֲרָרַט מִנִּי וְאַשְׁכְּנָז פִּקְדוּ עָלֶיהָ טִפְסָר הַעֲלוּ־
, Madai reges gentes eam *ſuper Sanctificate* .*horripilantem bruchum ſicut equum*
28 סוּס כְּיֶלֶק סָמָר׃ קַדְּשׁוּ עָלֶיהָ גוֹיִם אֶת־מַלְכֵי מָדַי
.ejus poteſtatis terram cunctámque ,ejus *magiſtratus* univerſos & ,ejus duces
אֶת־פַּחוֹתֶיהָ וְאֶת־כָּל־סְגָנֶיהָ וְאֵת כָּל־אֶרֶץ מֶמְשַׁלְתּוֹ׃
Domini *cogitationes* Babel *ſuper* eſt firmata quia :dolebit & , terra contremiſcet Et
29 וַתִּרְעַשׁ הָאָרֶץ וַתָּחֹל כִּי קָמָה עַל־בָּבֶל מַחְשְׁבוֹת יְהוָה
fortes Ceſſaverunt .*habitatore abſque* ,ſolitudinem in Babel terram *ponendum ad*
30 לָשׂוּם אֶת־אֶרֶץ בָּבֶל לְשַׁמָּה מֵאֵין יוֹשֵׁב׃ חָדְלוּ גִבּוֹרֵי
fuerunt ,eorum fortitudo *defecit* , munitionibus in ſederunt , pugnare Babel
בָבֶל לְהִלָּחֵם יָשְׁבוּ בַּמְּצָדוֹת נָשְׁתָה גְבוּרָתָם הָיוּ
occurſum in Curſor .ejus vectes ſunt contriti ,ejus habitacula incenderunt :mulieres *in*
31 לְנָשִׁים הִצִּיתוּ מִשְׁכְּנֹתֶיהָ נִשְׁבְּרוּ בְרִיחֶיהָ׃ רָץ לִקְרַאת־
quòd , Babel regi nuntiandum ad :nuntii occurſum in nuntius & ,curret curſoris
רָץ יָרוּץ וּמַגִּיד לִקְרַאת מַגִּיד לְהַגִּיד לְמֶלֶךְ בָּבֶל כִּי־
arundines & ,ſunt comprehenſa vada Et .*fine à* ejus civitas ſit capta
32 נִלְכְּדָה עִירוֹ מִקָּצֶה׃ וְהַמַּעְבָּרוֹת נִתְפָּשׂוּ וְאֶת־הָאֲגַמִּים
dixit ſic Quia .fuerunt territi *belli* viri & : igni *in* combuſſerunt
33 שָׂרְפוּ בָאֵשׁ וְאַנְשֵׁי הַמִּלְחָמָה נִבְהָלוּ׃ כִּי כֹה אָמַר
: eam *calcare* tempus ; area tanquam Babel filia , Iſrael Deus exercituū Dominus
יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל בַּת־בָּבֶל כְּגֹרֶן עֵת הִדְרִיכָהּ
me *contrivit* , me Comedit ei meſſis tempus veniet & , paululum adhuc
34 עוֹד מְעַט וּבָאָה עֵת־הַקָּצִיר לָהּ׃ אֲכָלַנוּ הֲמָמַנוּ
replevit,draco veluti me abſorbuit ,inane vas me ſtatuit,Babel rex Nebuchadreſar
נְבוּכַדְרֶאצַּר מֶלֶךְ בָּבֶל הִצִּיגַנוּ כְּלִי רִיק בְּלָעַנוּ כַּתַּנִּין מִלָּא
, Babel ſuper *,mea caro &* *,mei Rapina* .me *expulit* : meis deliciis ſuum ventrem
35 כְרֵשׂוֹ מֵעֲדָנָי הֱדִיחָנוּ׃ חֲמָסִי וּשְׁאֵרִי עַל־בָּבֶל
.Jeruſalaim dicat , Chaſdim habitatores *ad* meꝰ ſanguis & :Sijon habitatrix dicat
תֹּאמַר יֹשֶׁבֶת צִיּוֹן וְדָמִי אֶל־יֹשְׁבֵי כַשְׂדִּים תֹּאמַר יְרוּשָׁלִָם׃
:tuam ultionem ulciſcar &,tuā *litem litigans* ego Ecce:Dominus dixit ſic Propterea
36 לָכֵן כֹּה אָמַר יְהוָה הִנְנִי־רָב אֶת־רִיבֵךְ וְנִקַּמְתִּי אֶת־נִקְמָתֵךְ
Babel erit Et .ejus venam faciam areſcere & ,ejus mare faciam ſiccare &
37 וְהַחֲרַבְתִּי אֶת־יַמָּהּ וְהוֹבַשְׁתִּי אֶת־מְקוֹרָהּ׃ וְהָיְתָה בָבֶל
leones ut Simul .*habitatore abſque* ,ſibilus & ,ſtupor ,draconum habitatio,tumulos in
38 לְגַלִּים מְעוֹן־תַּנִּים שַׁמָּה וּשְׁרֵקָה מֵאֵין יוֹשֵׁב׃ יַחְדָּו כַּכְּפִרִים
,eorū convivia ponam eorum calore In .*leænarum* catuli ut *fremuere* : rugient
39 יִשְׁאָגוּ נָעֲרוּ כְּגוֹרֵי אֲרָיוֹת׃ בְּחֻמָּם אָשִׁית אֶת־מִשְׁתֵּיהֶם
,evigilent non & ,*ſeculi* ſomnum dormiant & ,exultent ut ,eos faciam inebriare &
וְהִשְׁכַּרְתִּים לְמַעַן יַעֲלֹזוּ וְיָשְׁנוּ שְׁנַת־עוֹלָם וְלֹא יָקִיצוּ
cum arietes tanquā,jugulandum ad agnos veluti eos faciā Deſcendere .Dominus dixit
40 נְאֻם יְהוָה׃ אוֹרִידֵם כְּכָרִים לִטְבוֹחַ כְּאֵילִים עִם־
quomodo ? terræ omnis laus eſt cōprehenſa &,Seſach eſt capta Quomodo .hircis
41 עַתּוּדִים׃ אֵיךְ נִלְכְּדָה שֵׁשַׁךְ וַתִּתָּפֵשׂ תְּהִלַּת כָּל־הָאָרֶץ אֵיךְ
tempeſtate in : mare Babel ſuper Aſcendit ! *gentibus in* Babel ſtuporem in fuit
42 הָיְתָה לְשַׁמָּה בָּבֶל בַּגּוֹיִם׃ עָלָה עַל־בָּבֶל הַיָּם בַּהֲמוֹן
.eſt operta ejus fluctuum
גַּלָּיו נִכְסָתָה׃

Verſio VULG. LAT.

25 Ecce ego ad te,mons peſtifer, ait
Dominꝰ, qui corrumpis univer-
ſam terram : & extendam ma-
num meam ſuper te, & evolvam
te de petris, & dabo te in mon-
26 tem combuſtionis, Et non tol-
lent de te lapidem in angulum,
& lapidem in fundamenta, ſed
perditꝰ in æternum eris, ait Do-
27 minꝰ. Levate ſignum in terra :
clangite buccinâ in Gentibꝰ,ſan-
ctificate ſuper eam Gentes: an-
nuntiate contra illam regibꝰ A-
rarat, Menni, & Aſcenez : nu-
merate contra eam Taphſar, ad-
ducite equum quaſi bruchum a-
28 culeatum. Sanctificate contra eā
Gētes,reges Mediæ,duces ejꝰ,&
univerſos magiſtratus ejus, cun-
ctámque terram poteſtatis ejus.
29 Et commovebitur terra, & con-
turbabitur : quia evigilabit con-
tra Babylonē cogitatio Domini,
ut ponat terram Babylonis deſer-
30 tam & inhabitabilem. Ceſſave-
runt fortes Babylonis à prælio ;
habitaverunt in præſidiis : devo-
ratū eſt robur eorū, & facti ſunt
quaſi mulieres : incenſa ſunt ta-
bernacula ejus, contriti ſunt ve-
31 ctes ejus. Currens obviā curren-
ti veniet: & nuntius obviꝰ nun-
tianti: ut annuntiet regi Babylo-
nis, quia capta eſt civitas ejus à
32 ſummo uſque ad ſummū: Et va-
da præoccupata ſunt, & paludes
incenſæ ſunt igni : & viri bella-
33 tores conturbati ſunt. Quia hæc
dicit Dominus exercituum,Deus
Iſrael;Filia Babylonis quaſi area,
tempus trituræ ejus: adhuc mo-
dicum,& veniet tempus meſſio-
34 nis ejus. Comêdit me,devoravit
me Nabuchodonoſor rex Baby-
lonis: reddidit me quaſi vas ina-
ne,abſorbuit me quaſi draco, re-
plevit ventrem ſuum teneritudi-
35 ne meâ, & ejecit me. Iniquitas
adverſùm me, & caro mea ſuper
Babylonē,dicit habitatio Sion :
& ſanguis meus ſuper habitato-
res Chaldææ, dicit Jeruſalem.
36 Propterea hæc dicit Dominus ; Ecce ego judicabo cauſam tuam, & ulciſcar ultionem tuam,
37 & deſertum faciam mare ejus, & ſiccabo venam ejus Et erit Babylon in tumulos,habitatio
38 draconum, ſtupor, & ſibilus, eò quòd non ſit habitator. Simul ut leones rugient, excutient
39 comas veluti catuli leonum. In calore eorum ponam potus eorum, & inebriabo eos, ut ſo-
40 piantur, & dormiant ſomnum ſempiternum , & non conſurgant, dicit Dominus. Dedu-
41 cam eos quaſi agnos ad victimam, & quaſi arietes cum hœdis. Quomodò capta eſt Se-
ſach, & comprehenſa eſt inclyta vniverſæ terræ ? quomodò facta eſt in ſtuporem Babylon
42 inter Gentes. Aſcendit ſuper Babylonem mare,multitudine fluctuum ejus operta eſt.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

25 Οὕτως εἶπε κύριος ὁ θεὸς Ἰσραήλ,
Ὑμεῖς γυναῖκες τῷ στόματι ὑμῶν ἐ-
λαλήσατε, καὶ ταῖς χερσὶν ὑμῶν ἐ-
πληρώσατε, λέγουσαι, Ποιοῦσαι (ζ) ποι-
ήσομεν τὰς ὁμολογίας ἡμῶν ἃς (η) ὡ-
μολογήκαμεν, θυμιᾷν τῇ βασιλίσσῃ
τοῦ οὐρανοῦ καὶ σπένδειν αὐτῇ σπονδάς·
ἐμμείνασαι ἐνεμείνατε ταῖς ὁμολογί-
26 αις ὑμῶν, καὶ ποιοῦσαι ἐποιήσατε. Διὰ
τοῦτο ἀκούσατε λόγον κυρίου, πᾶς Ἰ-
ούδα οἱ καθήμενοι ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, Ἰ-
δοὺ ὤμοσα τῷ ὀνόματί μου τῷ μεγά-
λῳ, (θ) εἶπε κύριος, ἐὰν γένηται
ἔτι ὄνομά μου ἐν τῷ στόματι παντὸς
Ἰούδα εἰπεῖν, (ι) Ζῇ κύριος, ἐπὶ πά-
27 σῃ γῇ Αἰγύπτῳ. Ὅτι (κ) ἐγὼ ἐγρήγο-
ρα ἐπ' αὐτοὺς, τοῦ κακῶσαι αὐτοὺς, καὶ
οὐκ (λ) ἀγαθῶσαι· καὶ ἐκλείψουσι πᾶς
Ἰούδα, οἱ κατοικοῦντες ἐν γῇ (μ) Αἰ-
γύπτῳ, ἐν ῥομφαίᾳ καὶ ἐν λιμῷ, ἕως
28 ἂν ἐκλείπωσιν. Καὶ οἱ σεσωσμένοι ἀ-
πὸ ῥομφαίας ἐπιστρέψουσιν εἰς γῆν Ἰ-
ούδα ὀλίγοι (ν) ἀριθμῷ, καὶ γνώσονται
οἱ κατάλοιποι Ἰούδα (ξ) οἱ καταστάν-
τες ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, κατοικῆσαι ἐκεῖ,
29 λόγος τίνος ἐμμενεῖ. Καὶ τοῦτο (ο)
τὸ σημεῖον ὑμῖν, ὅτι ἐπισκέψομαι ἐ-
30 γὼ ἐφ' ὑμᾶς εἰς πονηρά. Οὕτως εἶπε
κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ δίδωμι τὸν Οὐαφρῆ
βασιλέα Αἰγύπτου εἰς χεῖρας ἐχθροῦ
αὐτοῦ, καὶ εἰς χεῖρας (π) ζητοῦντος τὴν
ψυχὴν αὐτοῦ, καθὰ ἔδωκα τὸν Σεδε-
κίαν βασιλέα Ἰούδα εἰς χεῖρας Να-
βουχοδονόσορ βασιλέως Βαβυλῶνος
ἐχθροῦ αὐτοῦ, καὶ ζητοῦντος τὴν ψυχὴν
αὐτοῦ.

1 Cap. 45. Vulg. Lat. Ὁ ΛΌ-
ΓΟΣ ὋΝ ἘΛΆΛΗΣΕΝ ἹΕΡΕ-
ΜΊΑΣ ὁ προφήτης πρὸς Βαροὺχ υἱὸν
Νηρίου, ὅτε (ρ) ἔγραφε τοὺς λόγους τού-
τους ἐν τῷ βιβλίῳ ἀπὸ στόματος Ἱ-
ερεμίου, ἐν τῷ ἐνιαυτῷ τῷ τετάρτῳ
(σ) Ἰωακεὶμ υἱῷ Ἰωσία βασιλέως
Ἰούδα·

Sic dixit Dominus Deus Iſ- 25
rael; Vos (m) mulieres ore
veſtro loquutæ eſtis, & ma-
nibus veſtris implêſtis, di-
centes; Facientes faciemus
confeſſiones noſtras, quas
confeſſæ ſumus, adolendo
reginæ cœli, & libando ei
libamina. Perſeverantes per-
ſeverâſtis in confeſſionibus 26
veſtris, & facientes feci-
ſtis. Ideò audite verbum
Domini, omnis Juda,
qui ſedetis in terra Ægy-
pto; Ecce juravi nomine
meo magno, ait Dominus; ſi
erit ultrà nomen meum in
ore univerſi Juda ad dicen-
dum, Vivit Dominus, in
omni terra Ægypto: Quia 27
ego vigilavi ſuper eos, ad
affligendum eos, & non be-
nefaciendum. Et deficient
omnis Juda, habitantes in
terra Ægypto, in gladio, &
in fame, donec defecerint. Et 28
qui evaſerint à gladio, re-
vertentur in terram Juda,
pauci numero: & agnoſcent
reſidui Juda, qui ſteterunt
in terra Ægypto ad habitan-
dum ibi, verbum cujus (n)
permaneat. Et hoc ſignum 29
vobis; quia viſitavi ego ſu-
per vos in (o) mala: Sic 30
dixit Dominus, Ecce ego do
(p) Vaphre regem Ægypti
in manus inimici ejus, &
in manus quærentis ani-
mam ejus; ſicut dedi Se-
deciam regem Juda in ma-
nus Nabuchodonoſor regis
Babylonis inimici ejus, &
quærentis animam ejus.

(q) VERBUM, quod 1
loquutus eſt Hieremias pro-
pheta ad Baruch, filium
Neriæ; quando ſcripſit
verba hæc in libro ex o-
re Hieremiæ, in anno quar-
to Joacim filio Joſiæ regis
Juda:

MS. A. (ζ) ποιήσωμεν (η) ὡμολογήσαμεν, (θ) λέγει κύριος, (ι) Ζῇ κύριος κύριος, (κ) ἰδοὺ ἐγὼ (λ) ἀγαθῦναι. (μ) Αἰγύπτου, (ν) ἀριθμοί, (ξ) καὶ οἱ καταβαίνοντες ἐν γῇ Αἰγύπτου, παροικῆσαι ἐκεῖ, (ο) * ἡμῖν τὸ σημεῖον, (π) ζητούντων (ρ) ἜΓΡΑΨΕΝ (σ) Τῼ͂ ἸΩΑΚΕΊΜ,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

25 הָא אֲנָא שְׁלַח רוּגְזִי עֲלָךְ כַּרְכָּא מְחַבְּלָא אֲמַר יְיָ דִמְחַבֵּיל יַת כָּל אַרְעָא וַאֲרִים יַת מְחַת
26 גְבוּרְתִּי עֲלָךְ וַאֲטַגְרְנָךְ מִן תּוּקְפָּא וְאֶתְּנִנָךְ לִכְרַךְ יְקִידָא ׃ וְלָא יִסְּבוּן מִנָּךְ מְלַךְ לְמַלְכוּ
27 וּשְׁלְטוֹן לְשׁוּלְטָנוּ אֲרֵי צָדוּת עָלַם תְּהֵי אֲמַר יְיָ ׃ זְקוּפוּ אָתָא בְּאַרְעָא תְקַעוּ שׁוֹפָרָא
בְעַמְמַיָא זַמִּינוּ עֲלַהּ עַמְמַיָא בַּשַׂרוּ עֲלַהּ מַלְכְוָת אַרְעָא דְקַרְדוּ מַשְׁרְיַת חוּרְמִינֵי וְהַדֵיב
28 זַמִּינוּ עֲלַהּ עָבְדֵי קְרָבָא דִיהוֹן סָלְקִין סוּסְוָתְהוֹן מְפַנְּכִין הָא כּוּחֲלָא דִמְצַלְהָב ׃ זַמִּינוּ
29 עֲלַהּ עַמְמַיָא יַת מַלְכֵי מָדַי יַת שִׁלְטוֹנְהָא וְיַת כָּל טוּרְנָהָא וְיַת כָּל אֲרַע שׁוּלְטָנֵיהּ ׃ וּתְזוּעַ
אַרְעָא וְתִתְמַרְעַ אֲרֵי קָמָא עַל בָּבֶל מַחְשְׁבָתָא דַיְיָ לְשַׁוָאָה יַת אַרְעָא דְבָבֶל לְצָדוּ מִבְּלִי
30 יָתִיב ׃ אִתְמְנִיעוּ גִבָּרֵי בָבֶל מִלְאַגָחָא קְרָבָא יְתִיבוּ בִּמְצָדַיָא אִתְבְּרַת גְבוּרְתְּהוֹן הֲווֹ
31 חַלִּישִׁין כִּנְשַׁיָא אִתְדְּלַקָא בִּירָנְיָתְהָא אִתַּבָּרוּ עַבְּרָהָא ׃ רָהִיט לִקְדָמוּת רָהִיט יְרְהוֹט
32 וּמְחַוֵי לִקְדָמוּת מְחַוֵי לְחַוָאָה לְמַלְכָּא דְבָבֶל אֲרֵי אִתְכְּבִישַׁת קַרְתֵּיהּ מִסּוֹפֵיהּ ׃ וּמְגִיזָתָא
33 אִתְאַחֲדָא וְיַת אַגְמַיָא אוֹקִידוּ בְנוּרָא וְגַבְרֵי עָבְדֵי קְרָבָא אִתְבְּהִילוּ ׃ אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ
צְבָאוֹת אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל כְּנִשְׁתָּא דְבָבֶל דָמְיָא לְאִדְּרָא דִמְטָא עִדָּן אַדְרִיכוּתֵיהּ עוֹד צִיב
34 חַד כִּזְעֵיר וְיֵיתוּן בָּזוּזִין עֲלַהּ ׃ אֲמַרַת יְרוּשְׁלֵם בַּז נִכְסַי וְשֵׁיצַנִי נְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא דְבָבֶל
35 נַפְּצַנִי כְּמָן רֵיקָן בַּלְעַנִי כְּתַנִּינָא מַלֵא בֵית גְנַזֵיהּ מִטּוּב אַרְעִי טַלְטְלַנִי ׃ חֲטוּפִי וּבִזּוּזִי עַל
בָבֶל תֵּימַר כְּנִשְׁתָּא דְצִיּוֹן וְחוֹבַת דַם זַכַּי דְאִתְּשַׁד בִּי עַל יָתְבֵי אַרְעָא כַסְדָאֵי תֵּימַר
36 יְרוּשְׁלֵם ׃ בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ הָא אֲנָא דָאֵין יַת דִינִיךְ וּמִתְפְּרַע יַת פּוּרְעֲנוּתִיךְ וְאַחְרֵיב יַת
37 יַמַּהּ וְאוֹבִישׁ יַת מַבּוּעָהָא ׃ וּתְהֵי בָבֶל לְיַגְרִין מְדוֹר יְרוֹדִין צָדוּ וְאִשְׁתְּמָמוּ מִבְּלִי יָתִיב ׃
38 39 כַּחֲדָא כְּאַרְיָוָן יְנַהֲמוּן כִּבְנֵי אַרְיָוָן יְרִימוּן קָלְהוֹן ׃ אַיְתָא עֲלֵיהוֹן עָקָא וִיהוֹן דָמַן לְרַוְיָא
40 בְּדִיל דְלָא יְהוֹן תַּקִּיפִין וִימוּתוּן מוֹתָא תִנְיָנָא וְלָא יֵחוֹן לְעָלְמָא דְאָתֵי אֲמַר יְיָ ׃ אֲמַסְרִנּוּן
41 כְּתוֹרִין לִקְטָלָא כִּדְכְרִין עִם גַּדְיָן ׃ אֵיכְדֵין אִתְכְּבִישַׁת בָּבֶל וְאִתְאַחֲדַת תּוּשְׁבַּחַת כָּל
42 אַרְעָא אֵיכְדֵין הֲוַת לְצָדוּ בָבֶל בְּעַמְמַיָא ׃ סְלִיק עַל בָּבֶל מֶלֶךְ בְּמַשְׁרְיָתֵיהּ דְסַגִּי כְּמֵי יַמָּא
בְּאַתְרְגוּשַׁת גַּלּוֹהִי חַפָּא ׃

PARAPH. CHALD Verſio Latina.

Ecce ego mitto furorem meum contra te civitas diſſipans. dicit Dñs : quæ 25
diſſipas univerſam terram: & levabo plagam fortitudinis meæ contra te, &
conſumam te à *fortitudine*, & dabo te in civitatē combuſtionis. Et non tol- 26
lent ex te regem in regnum, & principē in principatum: quia deſolatio æter-
na eris, dicit Dñs. Levate ſignum in terra, clangite buccina in populis, præ- 27
parate contra eam populos, annuntiate contra illam regnis terræ Cardu, ex-
ercitui Armeniæ & Hadeb ; præparate cōntra eam bellatores, qui aſcen-
dant equos ſuos hinnientes inſtar bruchi inflammati. Præparate contra 28
eam populos, reges Medorum, & dominatores eorum, & omnes duces eo-
rum, & omnem terram dominii eorum. Et commovebitur terra & infirma- 29
bitur, quoniam confirmatæ ſunt contra Babylonem cogitationes Domini, ut
ponat terram Babylonis in deſolationem abſque habitatore. Ceſſaverunt 30
fortes Babylonis à prælio, habitaverunt in munitionibus: contritum eſt ro-
bur eorum, facti ſunt infirmi ſicut mulieres: ſuccenſa ſunt palatia ejus, contri-
ti ſunt vectes ejus. Currens obviā currenti curret, & nuntians obviā nuntian- 31
ti ad annuntiandū regi Babylonis ; quia capta eſt civitas ejus à ſummo ejus.
Et vada capta ſunt, & ſtagna ſuccenſa ſunt igni, & viri bellatores turbati 32
ſunt. Quia hæc dicit Dñs exercituum Deus Iſrael: Cœtus Babylonis ſimilis 33
eſt areæ cujus trituræ tempus pervenit. Ad paululū modicúmque, & venient
direptores ad eam. Dixit Jeruſalem, Diripuit ſubſtantiam meam, & conſum- 34
pſit me Nabuchodonoſor rex Babylonis, comminuit me quaſi vas vacuum;
abſorbuit me quaſi draco : implevit domum theſauri ſui bonis terræ meæ,
tranſmigrare me fecit. Depopulatio mea & deprædatio mea ſuper Babylo- 35
nem, dicit cœtus Sion : & peccatum ſanguinis innocentis qui effuſus eſt in
me, ſup habitatores terræ Chaldæorū, dicit Jeruſalem. Propterea hæc dicit 36
Dñs: Ecce ego judico cauſā tuā, & ulciſcar ultionē tuam, & arefaciā mare
ejus, & ſiccabo fontes ejus. Et erit Babylon in acervos, & habitaculū draco- 37
num, deſertū & deſolatio, abſq; habitatore. Simul quaſi leones rugient, & 38
quaſi filii leonum attollent vocē ſuam. Adducā ſup eos tribulationē, & erunt 39
ſimiles ebriis, ut non ſint fortes, ſed moriantur morte ſecunda, & non vivant
in ſeculo futuro, dicit Dñs. Tradam eos quaſi tauros occiſioni, & quaſi ari- 40
etes cum hircis. Quomodo ſubjugata eſt Babylon, & captū eſt decus univer- 41
ſæ terræ ! quomodo facta eſt Babel in deſolationem inter populos ! Aſcen- 42
dit contra Babylonem rex cum copiis ſuis numeroſis, quaſi aquis maris ; tu-
multu fluctuum ejus cooperta eſt.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܗܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟܝ ܛܘܪܐ ܡܚܒܠܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܡܚܒܠ ܠܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܘܐܪܝܡ 25
ܐܝܕܝ ܥܠܝܟܝ. ܘܐܦܟܝ ܡܢ ܟܐܦܐ. ܘܐܥܒܕܟܝ ܠܛܘܪܐ ܝܩܝܕܐ. * ܘܠܐ ܢܣܒܘܢ ܡܢܟܝ 26
ܟܐܦܐ ܠܙܘܝܬܐ. ܘܟܐܦܐ ܠܫܬܐܣܬܐ. ܐܠܐ ܠܚܘܪܒܐ ܠܥܠܡ ܬܗܘܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
* ܐܩܝܡܘ ܐܬܐ ܒܐܪܥܐ. ܘܩܥܘ ܒܩܪܢܐ ܒܥܡܡܐ. ܙܡܢܘ ܥܠܝܗ ܥܡܡܐ. ܐܫܡܥܘ 27
ܥܠܝܗ ܡܠܟܘܬܐ ܕܐܪܪܛ ܘܕܡܢܝ. ܘܕܐܫܟܢܙ. ܦܩܘܕܘ ܥܠܝܗ ܐܒܕܢܐ. ܐܣܩܘ
ܪܟܫܐ ܐܝܟ ܩܡܨܐ. * ܙܡܢܘ ܥܠܝܗ ܥܡܡܐ. ܠܡܠܟܐ ܕܡܕܝ. ܘܠܫܠܝܛܢܝܗ 28
ܘܠܟܠܗܘܢ ܫܠܝܛܢܘܗܝ. * ܘܬܙܘܥ ܐܪܥܐ ܘܬܬܬܙܝܥ. ܡܛܠ ܕܩܡܬ ܥܠ ܒܒܠ 29
ܡܚܫܒܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܠܡܚܪܒܘ ܐܪܥܐ ܕܒܒܠ ܡܢ ܕܠܝܬ ܕܢܥܡܪ. * ܫܠܝܘ 30
ܓܢܒܪܐ ܕܒܒܠ ܠܡܬܟܬܫܘ ܥܡ ܥܡܘܪܝ ܡܣܪܘܬ. ܐܬܬܒܪܬ ܓܢܒܪܘܬܗܘܢ ܘܗܘܘ
ܐܝܟ ܢܫܐ. ܐܘܩܕܘ ܡܫܟܢܝܗ. ܬܒܪܘ ܡܘܟܠܝܗ. * ܪܗܛܐ ܠܘܩܒܠ ܪܗܛܐ ܪܗܛ. 31
ܘܡܒܣܪܢܐ ܠܘܩܒܠ ܡܒܣܪܢܐ. ܠܡܒܣܪܘ ܠܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܕܐܬܐܚܕܬ ܡܕܝܢܬܗ ܡܢ
ܣܘܦܗ. * ܘܡܥܠܢܝܗ ܐܬܐܚܕܘ. ܘܐܓܡܝܗ ܐܘܩܕܘ ܒܢܘܪܐ. ܘܓܒܪܝ ܩܪܒܐ 32
ܐܬܕܠܚܘ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܒܪܬ 33
ܒܒܠ ܐܝܟ ܐܕܪܐ ܕܡܛܐ ܙܒܢ ܕܪܟܗ. ܟܕ ܩܠܝܠ ܘܡܛܐ ܩܛܦܗ. * ܐܡܪܬ ܐܘܪܫܠܡ. 34
ܐܟܠܢܝ ܘܒܙܢܝ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܐܩܝܡܢܝ ܐܝܟ ܡܐܢܐ ܣܪܝܩܐ. ܒܠܥܢܝ
ܐܝܟ ܬܢܝܢܐ. ܡܠܐ ܟܪܣܗ ܡܢ ܒܘܣܡܝ. ܘܐܘܒܕܢܝ. * ܚܛܘܦܝ ܘܒܥܝܪܝ ܠܒܒܠ ܐܬܕܒܪܘ. 35
ܘܕܡܝ ܥܠ ܥܡܘܪܝ ܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ ܬܐܡܪ ܐܘܪܫܠܡ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. 36
ܗܐ ܐܢܐ ܕܐܢ ܕܝܢܟܝ. ܘܬܒܥ ܐܢܐ ܬܒܥܬܟܝ. ܘܐܚܪܒ ܝܡܐ ܕܒܒܠ.
ܘܐܘܒܫ ܡܒܘܥܘܗܝ. * ܘܬܗܘܐ ܒܒܠ ܠܚܘܪܒܐ. ܡܥܡܪܐ ܠܝܪܘܪܐ. 37
ܠܬܡܗܐ ܘܠܫܪܝܩܘܬܐ. ܡܢ ܕܠܝܬ ܕܢܥܡܪ ܒܗ. * ܐܝܟ ܐܪܝܘܬܐ ܢܢܗܡܘܢ. 38
ܘܢܓܥܘܢ ܐܝܟ ܓܘܪܝ ܐܪܝܘܬܐ. * ܒܚܡܬܐ ܐܣܝܡ ܡܫܬܝܗܘܢ. ܘܐܪܘܐ ܐܢܘܢ. ܘܢܬܬܙܝܥܘܢ. 39
ܘܢܕܡܟܘܢ ܫܢܬܐ ܕܥܠܡ. ܘܠܐ ܢܬܬܥܝܪܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܐܚܬܡ ܐܢܘܢ. ܐܝܟ 40
ܡܦܛܡܐ ܠܢܟܣܬܐ. ܘܐܝܟ ܕܟܪܐ ܥܡ ܥܬܘܕܐ. * ܐܝܟܢܐ ܐܬܐܚܕܬ ܪܒܬ 41
ܡܠܟܘܬܐ ܕܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܐܝܟܢܐ ܗܘܬ ܠܬܡܗܐ ܒܒܠ ܒܥܡܡܐ. * ܣܠܩ ܥܠ 42
ܒܒܠ ܝܡܐ. ܘܒܣܘܓܐ ܕܓܠܠܘܗܝ ܐܬܟܣܝܬ.

Ecce me adverſum te mons pernicioſe, dicit 25
Dominus, qui totam terram corrupiſti: attol-
lam contra te manum meam, exhauriam te
lapidibus, & redigam te in montem exuſtum;
Ut ſumi de te *nequeat* lapis ad angulum, aut 26
lapis ad fundamentum; ſed in ſolitudinem
eris perpetuam, ait Dominus. Attollite ve- 27
xillum in terra, clangite buccinâ inter popu-
los, comparate contra eam gentes, promul-
gantes convocate contra eam regna Aradat,
& Armeniæ, & Aſchenaz: præcipite contra
eam exitium, adducite equos ut bruchum:
Comparate contra eam gentes, regem Me- 28
diæ, inclytos ejus, & omnes principes ejus:
Ita ut quatiatur terra & obſtupeſcat: quia 29
ſtabile manſit contra Babelem conſilium Do-
mini de terra Babelis deſtruenda, ut non ſit
habitabilis. Deſierunt viri Babelis certare 30
contra habitatores Meſroth, conſternata eſt
fortitudo eorum, & facti ſunt ſicut fœminæ.
Evertite habitationes ejus, confringite ja-
nuas ejus. Curſor certatim cum curſore cur- 31
rat, & nuntius cum nuntio, ad indicandum
regi Babelis captam eſſe urbem ejus ex omni
parte: Aditus ejus occupatos, paludes igne 32
combuſtas, omnéſque viros ejus bellatores
attonitos. Nam ſic ait Dominus potentiſſimᵘˢ 33
Deᵘˢ Iſraelis, Filia Babelis ſimilis eſt areæ cujᵘˢ
triturandæ tempus imminet, ejúſque vinde-
mia jamjam inſtat, Dixit Jeruſalem, De- 34
voravit ac diripuit me Nebuchadnoſar rex
Babelis, reddidit me ſimilem vaſi vacuo, de-
glutivit me tanquam draco, implevit abdo-
men ſuum deliciis meis, perdidit me; Spo- 35
lia mea & armenta mea in Babelem depor-
tata ſunt: ſanguis meus in habitatores *terræ*
Chaldæorum *recidat*, inquit Jeruſalem. Pro- 36
pterea ſic ait Dominus; Ecce cauſam tuam
patrocinabor, & ulciſcar ultionem tuam:
mare Babelis exhauriam, & exſiccabo fontes
ejus: Fiétque Babel deſolata, habitatio ca- 37
num ſylveſtrium, in ſtuporem ac ſibilum, ha-
bitatoribus deſtituta. Ut leones rugient, & 38
vociferabuntur ut catuli leonum. Furore 39
componam potum eorum, inebriabo eos, &
conſternabuntur, dormient ſomno perpetuo,
nec evigilabunt, dicit Dominus: Tradam 40
eos ut ſaginatos, ad necem; & ut arietes hir-
cóſque, ad mactationem. Quomodò capta 41
eſt reginarum maxima, gloria totius terræ?
quomodò ſtupori facta eſt Babel apud gen-
tes? Babelem mare ſuperabit, & multitu- 42
dine fluctuum ejus obruetur.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* هكذا قال الرب اله اسرايل * انتم ايها النسوة بفيكم تكلمتم وبايديكم اكملتم 25
قايلات * صانعات نصنع اعترافنا الذي اعترفنا به * لنبخر لملكة السماء ونريق لها
قوارير * ثابتات ثبتم باعترافكم * وصانعات صنعتم * ولاجل هذا اسمعوا قول الرب يا كل 26
يهودا الجالسون في ارض مصر * ها حلفت باسمي العظيم يقول الرب * لن يصير بعد اسمي
في فم جميع يهودا ليقول حي الرب * في كل ارض مصر * لاني ها انا سهرت عليهم لاضربهم 27
وليس لاصلحهم * ويفني كل يهودا القاطنون بارض مصر بالسيف وبالجوع الي ان يفنوا *
* والمتخلصون من السيف يرجعون الي ارض يهودا عدد قليلون * ويعلم بقايا يهودا والنازلون 28
بارض مصر ليسكنوا هناك * قول من يثبت * وهذه العلامة لكم انني انا اطلع 29
عليكم للسرور * هكذا قال الرب * ها انا ادفع اوافريس ملك مصر الي ايدي 30
عدوه والي ايدي طالبي نفسه * كما دفعت صداقيا ملك يهودا لايدي بختنصر ملك
بابل عدوه وطالب نفسه *

Sic dixit Dominus Deus Iſraelis; Vos 25
O mulieres, ore veſtro locutæ eſtis,
& manibus veſtris peregiſtis, dicen-
tes; Omnino perficiemus confeſſionem
noſtram quam confeſſæ ſumus, adole-
turas nos reginæ cœli, eique alabaſtra
fuſuras: firmæ perſeveràſtis in con-
feſſione veſtra, & opere complêſtis.
Ideoque audite ſermonem Domini O 26
omnes Judæi degentes in terra Ægy-
pti; Ecce juro per nomen meum ma-
gnum, dicit Dominus, haudquaquam
fore deinceps nomen meum in ore to-
tius Judæ, ut dicat, Vivat Domi-
nus, in tota terra Ægypti. Quoni- 27
am ecce ego vigilavi ſuper eos ut per-
cutiam eos, non ut reſtaurem eos:
& omnes Judæi qui commorantur in
terra Ægypti, gladio & fame con-
ſumentur donec deficiant: Qui gladium 28
effugerint, ii revertentur in terram
Judæ, numero perpauci: & cogno-
ſcent reliquiæ Judæ, & degentes in
terra Ægypti ut illic habitent, cujuſ-
nam ſermo ſit ſtabilis. Atque hoc ſi- 29
gnum vobis eſto, me viſitaturum vos
ad mala: Sic dixit Dominus, Ecce 30
ego tradam Evaphre regem Ægypti
in manus hoſtis ejus, & in manum
quærentium animam ipſius; quemad-
modum tradidi Sedeciam regem Judæ
in manus Bochtonaſſaris regis Babe-
lis hoſtis ejus & quærentis animam
ipſius.

* القول الذي تكلم به ارميا النبي لباروخ بن نيريو * لما كتب هذه الاقوال في سفر 1
من فم ارميا * في السنة الرابعة ليواقيم بن يوسيا ملك يهودا *

Sermo quem locutus eſt Jere- 1
mia propheta ad Baruchum Ne-
riæ filium; quando ſcripſit ho-
ſce ſermones in libello ex ore
Jeremiæ, anno quarto Joacimi
filii Joſiæ regis Judæ.

ירמיה׃ נא

eis in habitabit non ,terra :*deſolationis & ,ſiccitatis* terra ,ſtuporē in ejꝰ civitates Fuerunt
43 הָיוּ עָרֶיהָ לְשַׁמָּה אֶרֶץ צִיָּה וַעֲרָבָה אֶרֶץ לֹא־יֵשֵׁב בָּהֵן
,Babel in Bel ſuper viſitabo Et .hominis filius *eas in* tranſibit nec , *vir omnis*
44 כָּל־אִישׁ וְלֹא־יַעֲבֹר בָּהֵן בֶּן־אָדָם׃ וּפָקַדְתִּי עַל־בֵּל בְּבָבֶל
murus etiam :gentes ultrà eum ad confluent non &,ejꝰ ore de *ejus deglutitionē* educam &
וְהֹצֵאתִי אֶת־בִּלְעוֹ מִפִּיו וְלֹא־יִנְהֲרוּ אֵלָיו עוֹד גּוֹיִם גַּם־חוֹמַת
,*ſuam* animam *vir* eruite & ,mi popule ejꝰ medio de Egredimini .corruit Babel
45 בָּבֶל נָפָלָה׃ צְאוּ מִתּוֹכָהּ עַמִּי וּמַלְּטוּ אִישׁ אֶת־נַפְשׁוֹ
auditu in timeatis &,veſtrum cor molleſcat fortè ne Et .Domini *naſi* ira ab
46 מֵחֲרוֹן אַף־יְהוָה׃ וּפֶן־יֵרַךְ לְבַבְכֶם וְתִירְאוּ בַּשְּׁמוּעָה
, auditio anno in eum poſt & , auditus anno in veniet Et .terra in *audito*
הַנִּשְׁמַעַת בָּאָרֶץ וּבָא בַשָּׁנָה הַשְּׁמוּעָה וְאַחֲרָיו בַּשָּׁנָה הַשְּׁמוּעָה
, *venientes* dies ecce Propterea .dominatorem ſuper dominator ,terra in rapacitas &
47 וְחָמָס בָּאָרֶץ מֹשֵׁל עַל־מֹשֵׁל׃ לָכֵן הִנֵּה יָמִים בָּאִים
univerſi & : afficietur pudore ejꝰ terra omnis & , Babel ſculptilia *ſuper* viſitabo &
וּפָקַדְתִּי עַל־פְּסִילֵי בָבֶל וְכָל־אַרְצָהּ תֵּבוֹשׁ וְכָל־
,terra & , cœli Babel ſuper dicent *præconia* Et .ejꝰ medio in cadent ejꝰ interfecti
48 חֲלָלֶיהָ יִפְּלוּ בְתוֹכָהּ׃ וְרִנְּנוּ עַל־בָּבֶל שָׁמַיִם וָאָרֶץ
.Dominus ait , vaſtatores ei *veniet* aquilone ab quia : eis in quæ omnia &
וְכֹל אֲשֶׁר בָּהֶם כִּי מִצָּפוֹן יָבוֹא־לָהּ הַשּׁוֹדְדִים נְאֻם־יְהוָה׃
.terræ univerſæ occiſi ceciderūt Babel *ad* etiā : Iſrael *vulneratos cadendū ad* Babel Etiam
49 גַּם־בָּבֶל לִנְפֹּל חַלְלֵי יִשְׂרָאֵל גַּם־לְבָבֶל נָפְלוּ חַלְלֵי כָל־הָאָרֶץ׃
Jeruſalaim &,Domini longè à recordamini : ſtetis ne ,venite gladio à Evaſores
50 פְּלֵטִים מֵחֶרֶב הִלְכוּ אַל־תַּעֲמֹדוּ זִכְרוּ מֵרָחוֹק אֶת־יְהוָה וִירוּשָׁלַ͏ִם
,opprobrium audivimus quoniam ,ſumus affecti Pudore .veſtrum cor ſuper aſcendat
51 תַּעֲלֶה עַל־לְבַבְכֶם׃ בֹּשְׁנוּ כִּי־שָׁמַעְנוּ חֶרְפָּה
.Domini domus *ſanctuaria* ſuper alieni venerūt quia :noſtras facies ignominia operuit
כִּסְּתָה כְלִמָּה פָּנֵינוּ כִּי בָּאוּ זָרִים עַל־מִקְדְּשֵׁי בֵּית יְהוָה׃
omni in &:ejꝰ ſculptilia *ſuper* viſitabo &,Dominus dixit,*venientes* dies ecce Propterea
52 לָכֵן הִנֵּה־יָמִים בָּאִים נְאֻם־יְהוָה וּפָקַדְתִּי עַל־פְּסִילֶיהָ וּבְכָל־
excelſo munierit *cùm* & , cœlos Babel aſcenderit *Cùm* .*ſaucius* gemet ejꝰ terra
53 אַרְצָהּ יֶאֱנֹק חָלָל׃ כִּי־תַעֲלֶה בָבֶל הַשָּׁמַיִם וְכִי תְבַצֵּר מְרוֹם
: Babel de clamoris Vox .Dominus dixit ,ei prædatores venient me à :ſuū robur
54 עֻזָּהּ מֵאִתִּי יָבֹאוּ שֹׁדְדִים לָהּ נְאֻם־יְהוָה׃ קוֹל זְעָקָה מִבָּבֶל
, Babel Dominus vaſtat Quoniam .Chaſdim terra de magna contritio &
55 וְשֶׁבֶר גָּדוֹל מֵאֶרֶץ כַּשְׂדִּים׃ כִּי־שֹׁדֵד יְהוָה אֶת־בָּבֶל
: multæ aquæ tanquam eorū fluctus *tumultuabunt* & : magnam vocem ea ex perdidit &
וְאִבַּד מִמֶּנָּה קוֹל גָּדוֹל וְהָמוּ גַלֵּיהֶם כְּמַיִם רַבִּים
ſunt apprehenſi &,vaſtator Babel ſuper *eā ſuper* venit Quia.eorum *vocis ſonitus eſt datus*
56 נִתַּן שְׁאוֹן קוֹלָם׃ כִּי בָא עָלֶיהָ עַל־בָּבֶל שׁוֹדֵד וְנִלְכְּדוּ
reddendo Dominus retributionū Deus quia : eorum arcus eſt confractus ,ejus fortes
גִּבּוֹרֶיהָ חִתְּתָה קַשְּׁתוֹתָם כִּי אֵל גְּמֻלוֹת יְהוָה שַׁלֵּם
,ejꝰ *magiſtratus* &,ejꝰ duces,ejus ſapientes &,ejus principes faciam inebriare Et .reddet
57 יְשַׁלֵּם׃ וְהִשְׁכַּרְתִּי שָׂרֶיהָ וַחֲכָמֶיהָ פַּחוֹתֶיהָ וּסְגָנֶיהָ
Dominus rex ait ; expergiſcentur non & , *ſeculi* ſomnum dormient &,ejꝰ fortes &
וְגִבּוֹרֶיהָ וְיָשְׁנוּ שְׁנַת־עוֹלָם וְלֹא יָקִיצוּ נְאֻם־הַמֶּלֶךְ יְהוָה
latus Babel *Muri* : exercituū Dominus dixit Sic .ejus nomen exercituum
58 צְבָאוֹת שְׁמוֹ׃ כֹּה־אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת חֹמוֹת בָּבֶל הָרְחָבָה
populi laborabūt &:cōburētur igne *in* excelſæ ejus portæ &,confringetur cōfringendo
עַרְעֵר תִּתְעַרְעָר וּשְׁעָרֶיהָ הַגְּבֹהִים בָּאֵשׁ יִצַּתּוּ וְיִגְעוּ עַמִּים
propheta Irmejahu præcepit quod Verbū.laſſabūtur &,igni *in nationes &,vanum in*
59 בְּדֵי־רִיק וּלְאֻמִּים בְּדֵי־אֵשׁ וְיָעֵפוּ׃ הַדָּבָר אֲשֶׁר־צִוָּה יִרְמְיָהוּ הַנָּבִיא
rege Sidchijahu cum *ipſum eundo in* Machaſejah filio Nerijah filio Serajah
אֶת־שְׂרָיָה בֶן־נֵרִיָּה בֶּן־מַחְסֵיָה בְּלֶכְתּוֹ אֶת־צִדְקִיָּהוּ מֶלֶךְ־
.*quietis* princeps Serajah & :*eum regnando in* quarto anno in , Babel Jehudah
יְהוּדָה בָּבֶל בִּשְׁנַת הָרְבִעִית לְמָלְכוֹ וּשְׂרָיָה שַׂר מְנוּחָה׃

Verſio VULG. LAT.

43 Factæ ſunt civitates ejꝰ in ſtuporem, terra inhabitabilis & deſerta, terra in qua nullꝰ habitet, nec tranſeat per eam filius hominis. 44 Et viſitabo ſuper Bel in Babylone, & ejiciam quod abſorbuerat de ore ejus, & non confluent ad eum ultrà Gentes, ſiquidem & murꝰ Babylonis corruet. 45 Egredimini de medio ejus, populus meus: ut ſalvet unuſquiſque animam ſuam ab ira furoris Domini. 46 Et ne fortè molleſcat cor veſtrum, & timeatis auditum, qui audietur in terra: & veniet in anno auditio, & poſt hunc annum auditio; & iniquitas in terra, & dominator ſuper dominatorem. 47 Propterea ecce dies veniunt, & viſitabo ſuper ſculptilia Babylonis: & omnis terra ejus confundetur, & univerſi interfecti ejus cadent in medio ejus. 48 Et laudabunt ſuper Babylonem cœli & terra, & omnia quæ in eis ſunt: quia ab Aquilone venient ei prædones, ait Dominꝰ. 49 Et quomodò fecit Babylon ut caderent occiſi in Iſrael: ſic de Babylone cadent occiſi in univerſa terra. 50 Qui fugiſtis gladium, venite, nolite ſtare: recordamini procul Domini, & Jeruſalem aſcendat ſup cor veſtrum. 51 Confuſi ſumus, quoniam audivimus opprobrium: operuit ignominia facies noſtras: quia venerunt alieni ſup ſanctificationem domûs Domini. 52 Propterea ecce dies veniunt, ait Dominus: & viſitabo ſuper ſculptilia ejus, & in omni terra ejus mugiet vulneratus. 53 Si aſcenderit Babylon in cœlum, et firmaverit in excelſo robur ſuum: à me venient vaſtatores ejus, ait Dominꝰ. 54 Vox clamoris de Babylone, et contritio magna de terra Chaldæorum: 55 Quoniam vaſtavit Dn̄s Babylonem, et perdidit ex ea vocem magnam, et ſonabunt fluctus eorum quaſi aquæ multæ: dedit ſonitum vox eorum: 56 Quia venit ſuper eam, id eſt, ſuper Babylonem, prædo, et apprehenſi ſunt fortes ejus, et emarcuit arcus eorum, quia fortis ultor Dominꝰ reddens retribuet. 57 Et inebriabo principes ejus, & ſapientes ejus, & duces ejus, & magiſtratus ejus, & fortes ejus: & dormient ſomnum ſempiternum, & non expergiſcentur, ait rex, Dominus exercituum nomen ejus. 58 Hæc dicit Dominus exercituum; Murus Babylonis iſte latiſſimus ſuffoſſione ſuffodietur, & portæ ejus excelſæ igni comburentur, & labores populorum ad nihilum, & gentium in ignem erunt, & diſperibunt. 59 Verbum, quod præcepit Jeremias propheta, Saraiæ filio Neriæ filii Maaſiæ, cùm pergeret cum Sedecia rege in Babylonem, in anno quarto regni ejus: Saraias autem erat princeps prophetiæ.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

2 Οὕτως εἶπε κύριος ἐπὶ σοὶ Βαρούχ, 3 Ὅτι εἶπας, (τ) Οἴμοι οἴμοι, ὅτι (υ) προσέθηκε κύριος κόπον ἐπὶ πόνον μοι, ἐκοιμήθην ἐν στεναγμοῖς, ἀνάπαυσιν οὐχ εὗρον· 4 Εἰπὸν αὐτῷ, Οὕτως εἶπε κύριος, Ἰδοὺ οὓς ἐγὼ ᾠκοδόμησα, ἐγὼ καθαιρῶ· ϗ (φ) οὓς ἐγὼ ἐφύτευσα, ἐγὼ ἐκτίλλω. 5 Καὶ σὺ ζητήσεις σεαυτῷ (χ) μεγάλα; μὴ ζητήσῃς, ὅτι ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω κακὰ ἐπὶ πᾶσαν σάρκα, λέγει κύριος· ϗ δώσω τὴν ψυχήν σου εἰς (ψ) εὕρημα ἐν παντὶ τόπῳ, οὗ ἐὰν βαδίσῃς ἐκεῖ.

Sic dixit Dominus ſuper te, 2 *Baruch; Quia dixiſti, Heu* 3 *mihi, heu mihi; quia addidit Dominus laborem ſuper dolorem meum: dormivi in gemitibus: requiem non inveni: Dic ei, Sic* 4 *dixit Dominus; Ecce, quos ego ædificavi, ego deſtruam: & quos ego plantavi, ego (r) evello: Et tu* 5 *quæres tibi grandia? Noli quærere: quia ecce ego induco mala ſuper omnem carnem, ait Dominus: & dabo animam tuam in rem inventam in omni loco, quocunque iveris illuc.*

MS. A. (τ) Ὤμμοι ὤμμοι, (υ) προσέθηκέν μοι κύριος (φ) οὓς ἐφύτευσα, (χ) μεγάλας; * ὅτι ἰδοὺ (ψ) εὕρεμα

Cap. 52. Vulg. Lat. ΚΕΦ. νβʹ.

1 ὌΝΤΟΣ (α) εἰκοστοῦ ϗ ἑνὸς ἔτους Σεδεκίου, ἐν τῷ βασιλεύειν αὐτὸν, ϗ ἕνδεκα ἔτη ἐβασίλευσεν ἐν Ἱερουσαλήμ· ϗ ὄνομα τῇ μητρὶ αὐτοῦ Ἀμιτάαλ, θυγάτηρ Ἱερεμίου, ἐκ Λοβενά. 4 Καὶ ἐγένετο (β) τῷ ἔτει τῷ ἐνάτῳ τῆς βασιλείας αὐτοῦ, (γ) ἐν μηνὶ τῷ ἐνάτῳ, δεκάτῃ τοῦ μηνός, ἦλθε Ναβουχοδονόσορ βασιλεὺς Βαβυλῶνος, ϗ πᾶσα ἡ δύναμις αὐτοῦ ἐπὶ Ἱερουσαλήμ, ϗ (δ) περιεχαράκωσαν αὐτὴν, ϗ περιῳκοδόμησαν αὐτὴν τετραπέδοις λίθοις κύκλῳ. 5 Καὶ ἦλθεν ἡ πόλις εἰς συνοχὴν, ἕως ἑνδεκάτου 6 ἔτους τῷ βασιλεῖ Σεδεκίᾳ, (ε) Ἐν τῇ ἐνάτῃ τοῦ μηνός, ϗ ἐστερεώθη ὁ λιμὸς ἐν τῇ πόλει, ϗ οὐκ ἦσαν ἄρτοι τῷ 7 λαῷ τῆς γῆς. Καὶ διεκόπη ἡ πόλις, ϗ πάντες οἱ ἄνδρες οἱ πολεμισταὶ ἐξῆλθον νυκτὸς κατὰ τὴν ὁδὸν τῆς πύλης, ἀναμέσον (ζ) τοῦ τείχους, καὶ τοῦ προτειχίσματος, ὃ ἦν κατὰ τὸν κῆπον τοῦ βασιλέως, ϗ οἱ Χαλδαῖοι ἐπὶ τῆς πόλεως (η) κύκλῳ, ϗ ἐπορεύθησαν ὁδὸν τὴν εἰς ἄραβα.

CAP. LII.

1 *Cum (a) viginti unius annorum eſſet Sedecias in regnando ipſum: & undecim annis regnavit in Hieruſalem: & nomen matri ejus Amitaal, filia Hieremiæ de (b) Lobena. Et factum eſt* 4 *anno nono regni ipſius, in menſe (c) nono, decimâ menſis, venit Nabuchodonoſor rex Babylonis, et omnis virtꝰ ejus ſuper Hieruſalem: & circumvallârunt eam, & circumædificârunt eam (d) quadratis lapidibus in circuitu. Et venit civitas in* 5 *obſidionem uſque ad annum undecimum regi (e) Sedeciæ In nona menſis: & invaluit* 6 *fames in civitate, & non erant panes populo terræ. Et dirupta eſt civitas, &* 7 *omnes viri bellatores exierunt nocte per viam portæ inter murum, & antemurale, quod erat ad hortum regis: (Et Chaldæi ſuper civitatem in circuitu:) & iverunt viam quæ ad Araba.*

MS. A. (α) δευτέρου ϗ εἰκοστοῦ ἔτους (β) ἐν τῷ (γ) ἐν τῷ μηνὶ τῷ ἑβδόμῳ, (δ) περιεχαράκωσεν αὐτὴν, ϗ περιῳκοδόμησεν αὐτὴν τετραπόδοις κύκλῳ. (ε) Ἐνάτῃ τοῦ (ζ) τῆς πύλης, (η) ἐκύκλωσαν, ϗ ᾤχοντο ὁδὸν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

43 הֲוָאָה קִרְוַהָא לְצָדוּ אַרְעָא צַדְיָא וְחָרְבָא אַרְעָא לָא יָתֵיב בַּהּ כָּל אֱנָשׁ וְלָא יֶעְבַר בַּהּ בַּר
44 אֱנָשׁ׃ וְאַסְעַר עַל דְּפָלְחִין לְבֵל בְּבָבֶל וְאַבִּיז יַת נִכְסוֹהִי מִנַּהּ וְלָא יִשְׁתַּמְעוּן לֵיהּ עוֹד
45 עַמְמַיָּא אַף שׁוּרֵי בָבֶל יִתְרְמוּן׃ פּוּקוּ מִגַּוַּהּ עַמִּי וְשֵׁיזִיבוּ גְּבַר יַת נַפְשֵׁיהּ מִתְּקוֹף רוּגְזָא
46 דַיְיָ׃ וְדִלְמָא יְזוּעַ לִבְּכוֹן וְתִדְחֲלוּן מִן קֳדָם בְּסוֹרְתָא דְּתִשְׁתְּמַע בְּאַרְעָא וְתֵיתֵי בְשַׁתָּא
47 בְסוֹרְתָא וּבָתְרוֹהִי בְשַׁתָּא בְסוֹרְתָא וְיִסְגוּן חָטוֹפִין בְּאַרְעָא וִיקוּם שִׁלְטוֹן עַל שִׁלְטוֹן׃ בְּכֵן
הָא יוֹמַיָּא אָתַן וְאַסְעַר עַל צַלְמֵי בָבֶל וְכָל אַרְעַהּ תֶּחֱרוּב וְכָל קְטִילָהָא יִתְרְמוֹן בְּגַוַּהּ׃
48 וִישַׁבְּחוּן עַל בָּבֶל שְׁמַיָּא וְאַרְעָא וְכָל דִּי בְהוֹן אֲרֵי מִצִּפּוּנָא יֵיתוֹן עֲלַהּ בָּזוֹזִין אֲמַר יְיָ׃ אַף 49
50 בְּבָבֶל אִתְרְמִיאוּ קְטִילֵי יִשְׂרָאֵל אַף לְבָבֶל יִתְרְמוֹן קְטִילֵי כָל אַרְעָא׃ מְשֵׁיזְבַיָּא מֵחַרְבָּא
51 גְּלוֹ לָא תִתְעַכְּבוּן אִדְּכַרוּ מֵרָחִיק יַת פָּלְחָנָא דַיְיָ וִירוּשְׁלֵם תִּסַּק עַל לִבְּכוֹן׃ בְּהִתְנָא אֲרֵי
שְׁמַעְנָא חִסּוּדִין חֲפַת אִתְכְּנָעוּתָא אַפָּנָא אֲרֵי עָלוּ נוּכְרָאִין וְסָאִיבוּ יַת בֵּית מַקְדְּשָׁא דַיְיָ׃
52 בְּכֵן הָא יוֹמַיָּא אָתַן אֲמַר יְיָ וְאַסְעַר עַל צַלְמַהָא וּבְכָל אַרְעַהּ יִתְרְמוֹן קְטִילַיָּא׃ אֲרֵי תִבְנֵי
53 בָבֶל בִּנְיָנִין דְּרָמִין עַד צֵית שְׁמַיָּא וַאֲרֵי תַכְרוּךְ כְּרַכִּין תַּקִּיפִין עַד רוּמָא מִן קֳדָמַי יֵיתוֹן
54 בָּזוֹזִין עֲלַהּ אֲמַר יְיָ׃ קָל צְוָחְתָא מִבָּבֶל וְתִבְרָא רַבָּא מֵאַרְעָא כַסְדָּאֵי׃ אֲרֵי אַבֵּיז יְיָ יַת בָּבֶל
55 וְאַבֵּיד מִנַּהּ מַשְׁרְיָן סַגִּיאִין וְיִתְכַּנְּשׁוּן עֲלֵיהוֹן מַשְׁרְיַת עַמְמִין סַגִּיאִין וְיִרִימוּן בְּאִתְרְגוֹשַׁת
56 קָלְהוֹן׃ אֲרֵי אֲתוֹ עֲלַהּ עַל בָּבֶל בָּזוֹזִין וְאִתְאֲחִידוּ גִּבָּרָהָא אִתְּבַרָא קַשְּׁתוֹתֵיהוֹן אֲרֵי
57 אֱלָהָא מָרֵי גְּמָלַיָּא יְיָ שַׁלָּמָא יְשַׁלֵּם לְהוֹן גְּמוּלְהוֹן׃ וַאֲרַוֵּי רַבְרְבָהָא וְחַכִּימָהָא וְשׁוּלְטָנָהָא
וְטוּרְנָהָא וְגִבָּרָהָא וִימוּתוּן מוֹתָא תִנְיָנָא דְּלָא יֵיתוּן לְעָלְמָא דְאָתֵי אֲמַר מַלְכָּא יְיָ צְבָאוֹת
58 שְׁמֵיהּ׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת שׁוּרֵי בָבֶל פְּתַיָּא אִתְחַתָּרָא יִתְחַתְּרוּן וְתַרְעָהָא רָמַיָּא
59 בְּנוּרָא יִתּוֹקְדוּן וְיֶהֶלְכוּן עַמְמַיָּא לְרֵיקָנוּ וּמַלְכְּוָתָא תְסוּף אֶשָּׁתָא וְיִשְׁתַּלְהוּן׃ פִּתְגָּמָא דִּי
פַּקֵּיד יִרְמְיָה נְבִיָּא יַת שְׂרָיָה בַּר נֵרִיָּה בַּר מַחְסֵיָה כַּד אֲזַל בִּשְׁלִיחוּת צִדְקִיָּה מֶלֶךְ שִׁבְטָא
דְבֵית יְהוּדָה לְבָבֶל בְּשַׁתָּא רְבִיעֲתָא לְמַלְכֵיהּ וּשְׂרָיָה רַב תּוּקְרָבְתָּא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

43 Factæ ſunt civitates ejus in deſolationem, terra deſolata, & deſerta, terra in qua non habitabit omnis homo, nec tranſibit per eam filius hominis. 44 Et viſitabo ſuper eos qui colunt Bel in Babylone, & diripere faciam ſubſtantiam ejus ab ea, & non obedient ei ampliùs populi; muri quoque Babylonis corruent 45 Egredimini de medio ejus popule mi, & liberate unuſquiſq; animam ſuam ab ira furoris Domini. 46 Et forſitan commovebitur cor veſtrum, & timebitis à facie nuntii qui audietur in terra. Et veniet in anno nuntius, & poſtea in anno ſequenti nuntius, & multiplicabuntur raptores in terra, & ſurget dominator ſuper dominatorem. 47 Propterea ecce dies veniunt, & viſitabo ſuper ſimulachra Babylonis, & deſtruetur univerſa terra ejus; & omnes occiſi ejus projicientur in medio ejus. 48 Et laudabunt ſuper Babylonem cœli & terra, & omnia quæ in eis ſunt; quia ab Aquilone venient contra eam direptores, dicit Dn̄s. 49 Etiam in Babylone projecti ſunt occiſi Iſrael: in Babylone quoque projicientur occiſi univerſæ terræ. 50 Et qui liberati eſtis à gladio, migrate, ne moremini; recordamini ex longinquo cultus Dn̄i; & Jeruſalem aſcendat ſuper cor veſtrum. 51 Confuſi ſumus quia audivimus opprobria, operuit ignominia faciem noſtram; quia ingreſſi ſunt extranei, & polluerunt domum ſanctuarii Dn̄i. 52 Propterea ecce dies veniunt, dicit Dominus: & viſitabo ſuper ſimulachra ejꝰ, & in univerſa terra ejꝰ projicientur occiſi. 53 Quia ſi ædificaverit Babylon ædificia excelſa uſque ad cœlum, & munierit quoque arces validas uſque in excelſum; à facie mea venient direptores contra eam, dicit Dn̄s. 54 Vox clamoris de Babylone, & contritio magna de terra Chaldæorum. 55 Quoniam vaſtavit Dominus Babylonem, & perdidit exercitus multos ex ea; & congregabuntur ſuper eos exercitus populorum multorum, & tollent in tumultu vocem ſuam. 56 Quia venerunt ſuper ipſam Babylonem direptores, & capti ſunt fortes ejus, confracti ſunt arcus eorum: quia Deus Dominus retributionum eſt Dominus; reddendo reddet eis retributionem eorum. 57 Et inebriabo principes ejus, & ſapientes, & dominatores ejus, & duces ejus, & fortes ejꝰ; & morientur morte ſecunda, & non vivent in ſeculo venturo; dicit rex, Dominꝰ exercituum nomen ejus. 58 Hæc dicit Dominꝰ exercituum: Muri Babylonis lati ſuffoſſione ſuffodientur, & portæ ejus excelſæ igni comburentur: & laborabunt populi in vanū, & regna conſumet ignis & deficient. 59 Verbum quod præcepit Jeremias propheta Saraiæ filio Neriæ, filii Maaſiæ, quando pergebat in legatione Sedechiæ regis tribus domus Juda, in Babylonem, in anno quarto regni ejus. Saraias autem erat princeps munerum.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܗܘܝ ܩܘܪܝܗ̇ ܠܬܡܗܐ. ܐܝܟ ܐܪܥܐ ܚܪܒܬܐ ܘܨܕܝܬܐ. ܠܐ ܢܬܒ ܒܗܝܢ ܐܢܫ. ܘܠܐ ܢܥܡܪ 43
ܒܗܘܢ ܒܪܢܫܐ. * ܘܐܣܥܘܪ ܥܠ ܒܝܠ ܒܒܒܠ. ܘܐܦܩ ܠܓܢܘܗܝ ܡܢ ܦܘܡܗ. 44
ܘܠܐ ܢܣܓܕܘܢ ܠܗ ܬܘܒ ܥܡܡܐ. ܐܦ ܫܘܪܝܗ̇ ܕܒܒܠ ܢܦܠ ܢܦܠܘܢ. * ܦܘܩܘ 45
ܡܢ ܓܘܗ̇ ܥܡܝ. ܘܦܠܛܘ ܓܒܪ ܢܦܫܗ ܡܢ ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ. * ܕܠܡܐ 46
ܢܬܪܟܟ ܠܒܟܘܢ: ܘܬܕܚܠܘܢ ܡܢ ܫܡܥܐ ܕܡܫܬܡܥ ܒܐܪܥܐ. ܘܢܐܬܐ ܒܗ̇ ܒܫܢܬܐ ܗܝ
ܫܡܥܐ. ܘܒܬܪܗ̇ ܕܫܢܬܐ ܢܐܬܐ ܐܚܪܢܐ. ܘܢܗܘܐ ܚܛܘܦܝܐ ܒܐܪܥܐ. ܘܢܩܘܡ ܫܠܝܛܐ
ܥܠ ܫܠܝܛܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܣܥܘܪ ܥܠ ܓܠܝܦܘܗ̇ 47
ܕܒܒܠ. ܘܟܠܗ̇ ܐܪܥܐ ܬܒܗܬ. ܘܟܠܗܘܢ ܩܛܝܠܝܗ̇ ܢܦܠܘܢ ܒܓܘܗ̇. * ܢܫܒܚܘܢ 48
ܥܠ ܒܒܠ. ܫܡܝܐ ܘܐܪܥܐ. ܘܟܠ ܕܒܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܡܢ ܓܪܒܝܐ ܢܐܬܘܢ ܥܠܝܗ̇
ܒܙܘܙܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܐܦ ܒܒܒܠ ܢܦܠܘܢ ܩܛܝܠܐ ܒܟܠܗ̇ ܐܪܥܐ. * ܐܝܠܝܢ 49 50
ܕܐܫܬܘܙܒܬܘܢ ܡܢ ܚܪܒܐ. ܙܠܘ ܘܠܐ ܬܩܘܡܘܢ. ܐܬܕܟܪܘ ܡܢ ܪܘܚܩܐ ܠܡܪܝܐ. ܘܐܘܪܫܠܡ
ܬܣܩ ܥܠ ܠܒܟܘܢ. * ܘܢܐܡܪܘܢ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܒܗܬܢ ܛܒ. ܡܛܠ ܕܫܡܥܢ 51
ܚܣܕܐ. ܘܟܣܝܬ ܒܗܬܬܐ ܐܦܝܢ. ܡܛܠ ܕܥܠܘ ܢܘܟܪܝܐ ܠܡܩܕܫܗ ܕܡܪܝܐ.
* ܡܛܠܗܢܐ ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܣܥܘܪ ܥܠ ܒܒܠ. ܘܥܠ ܓܠܝܦܘܗ̇. 52
ܘܒܟܠܗ̇ ܐܪܥܐ ܢܦܠܘܢ ܩܛܝܠܝܗ̇. * ܐܢ ܬܣܩ ܒܒܠ ܠܫܡܝܐ. ܘܐܢ ܬܚܣܢ 53
ܒܪܘܡܐ ܠܥܘܫܢܗ̇. ܡܢ ܠܘܬܝ ܢܐܬܘܢ ܥܠܝܗ̇ ܒܙܘܙܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܩܠܐ ܕܝܠܠܬܐ ܡܢ 54
ܒܒܠ. ܘܬܒܪܐ ܪܒܐ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ. * ܡܛܠ ܕܒܙ ܡܪܝܐ ܠܒܒܠ. ܘܐܘܒܕ 55
ܡܢܗ̇ ܒܢܝܢܫܐ ܘܒܥܝܪܐ. ܩܠܐ ܪܒܐ ܐܝܟ ܡܝܐ ܣܓܝܐܐ ܕܐܙܠ ܩܠܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܐܬܘ 56
ܥܠ ܒܒܠ ܒܙܘܙܐ. ܘܐܬܐܚܕܘ ܓܢܒܪܝܗ̇. ܘܐܬܬܒܪܘ ܩܫܬܬܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ
ܦܪܘܥܐ ܡܪܝܐ. ܡܦܪܥ ܢܦܪܘܥ ܐܢܘܢ. * ܘܐܪܘܐ ܪܘܪܒܢܝܗ̇. ܘܚܟܝܡܝܗ̇. ܘܚܐܪܝܗ̇ 57
ܘܫܠܝܛܢܝܗ̇. ܘܓܢܒܪܝܗ̇. ܘܢܕܡܟܘܢ ܫܢܬܐ ܕܥܠܡ ܘܠܐ ܢܬܬܥܝܪܘܢ. ܐܡܪ
ܡܠܟܐ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܫܘܪܝܗ̇ ܕܒܒܠ 58
ܘܦܬܝܐ. ܡܬܬܥܩܪܘ ܢܬܬܥܩܪܘܢ. ܘܬܪܥܝܗ̇ ܪܡܐ. ܒܢܘܪܐ ܢܐܩܕܘܢ. ܘܢܠܐܘܢ ܥܡܡܐ
ܒܣܪܝܩܘܬܐ. ܘܐܘܡܘܬܐ ܒܢܘܪܐ ܢܬܗܦܟܘܢ. * ܦܬܓܡܐ ܕܦܩܕ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ. ܠܣܪܝܐ ܒܪ 59
ܢܪܝܐ ܒܪ ܡܚܣܝܐ. ܟܕ ܐܙܠ ܥܡ ܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܠܒܒܠ. ܒܫܢܬ ܚܕܥܣܪܐ
ܕܡܠܟܘܬܗ. ܘܣܪܝܐ ܪܒ ܡܫܪܝܬܐ ܗܘܐ.

43 Erunt civitates ejus ſtupori, ſicut terra deſerta & ſolitaria: nemo inhabitabit eas, & nemo commorabitur in eis. 44 Viſitabo etiam Bil in Babele, & extraham lagana ejus ex ore ipſius, & non colent eum ampliùs gentes: quin & lata Babelis mœnia corruent. 45 Egredimini ex ea popule meus, & eripite quiſque ſeipſum ab æſtu furoris Domini; 46 Ne fortè conſternetur animus veſter, & paveatis ad rumorem qui audietur in terra: veniet enim eodem illo anno rumor, & poſt annum illum rumor alius, eritque violentia in terra, & ſurget princeps contra principem. 47 Propterea ecce dies venient, dicit Dominus, quibus animadvertam in ſculptilia Babelis, tota illa terra peribit, & omnes confoſſi ejus cadent in medio ipſius: 48 Gaudebunt de Babele cœli & terra, & quicquid in eis eſt; quia ex Aquilone venient ſuper eam direptores, ait Dominus. 49 Atque etiam in Babele caſuri ſunt confoſſi in tota terra illa. 50 Qui gladium effugiſtis, abite, ne ſubſiſtatis: memores eſtote Domini de longinquo, & Jeruſalem vobis in mentem veniat. 51 Et dicent Iſraelitæ, Erubeſcimus vehementer, quoniam audivimus opprobrium; & operuit ignominia vultus noſtros, quoniam intraverunt alienigenæ in ſanctuarium Domini. 52 Propterea ecce dies venient, ait Dominus, quibus animadvertam in Babelem & in ſculptilia ejus, & in tota terra cadent confoſſi ejus. 53 Etiamſi aſcenderet Babel in cœlum, & quanvis in ſublimi collocaret robur ſuum; à me venirent adverſùs eam vaſtatores, ait Dominus. 54 Vox ululatûs è Babele, & confractio magna de terra Chaldæorum: 55 Quia vaſtavit Dominus Babelem, & perdidit ex ea homines & jumenta. Strepitus magnus ut aquarum multarum quarum ſonitus latè diffunditur: 56 Quia venerunt contra Babelem vaſtatores, capti ſunt heroes ejus, & arcus eorum confracti: nam Deus ultor Dominꝰ omnino rependet eis. 57 Et inebriabo magnates ejus, ſapientes, nobiles, principes, & potentes ejus, dormiéntque ſomno perpetuo, nec evigilabunt, ait rex cujus nomen eſt Dominus potentiſſimꝰ, 58 Sic ait Dominꝰ potentiſſimus, Mœnia Babylonis latiſſima funditùs evertentur, & portæ ejus altiſſimæ igni ſuccendentur; & fruſtrà fatigabuntur gentes, & nationes igne exagitabuntur. 59 Sermo quem præcepit Jeremia propheta Seriæ filio Neriæ filii Maaſiæ, quando cum Sedecia rege Judæ abiit Babylonem anno undecimo regni ejus; erat autem Seria princeps militiæ.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* هكذا قال الرب عليك يا باروخ * لانك قلت الويل لي الويل لي * لان الرب زادني تعبا على 2 3
تعبي * اضطجعت بتنهدات ولم اجد نياحا * قل له هكذا قال الرب * ها الذين بنيتهم انا 4
انا اهدمهم * والذين غرستهم انا اقلعهم * وانت تطلب لذاتك عظايم * لاني ها انا اجلب 5
شرورا على كل ذي لحم يقول الرب * واعطي نفسك للوجود في كل موضع حيث ما تسير هناك *

* الفصل الثاني والخمسون *

* ولما كانت اثنان وعشرون سنة لصداقيا من مملكه * وملك احدى عشر سنة في ايروسليم * 1
واسم امه اميطال ابنة ارميا من لوبانا [.Ox. MS * وارتكب القبيح والسييات امام الرب مثل 2
ما ارتكب يواقيم * من اجل هذه الامور غضب الرب * ونزل غضبه باورسليم ويهودا حتى رمي بهم 3
وقذفهم من بين يديه * وعصي صادقيا الملك ولم يخضع لبختنصر ملك بابل] * وكان في 4
السنة التاسعة من ملكه في الشهر السابع في العاشر من الشهر * واتي بختنصر ملك بابل وكل
جيشه الي ايروسليم * واحاط بها سياجا وبني عليها مجانيق * واقبلت المدينة للضيق الي السنة 5
العاشرة للملك صداقيا * في الشهر الرابع في التاسع من الشهر * واشتد الجوع في المدينة ولم 6
يكن لشعب الارض خبز * وشقت المدينة * وجميع الرجال المحاربين خرجوا ليلا في طريق 7
الباب بين الباب والسور الذي كان عند بستان الملك * والكلدانيون احاطوا بالمدينة * وفروا في الطريق التي للاعراب *

2 Ita dixit Dominus de te O Baruch. 3 Quia tu dixiſti; Væ mihi, væ mihi, quia Dominꝰ adjecit laborem ad laborem meũ, cũ ſuſpiriis cubo nec ullã invenio requiẽ: 4 Dic illi, Sic ait Dominus, Ecce eos quos ego ædificaveram, egomet demolior; & quos plantaverã, ego evello; 5 Et tu grandia tibi quæreres? Nam en ego mala ſum illaturus omni carne prædito, dicit Dominus: animam verò tuam dabo ſuperſtitem in omni loco ad quem perrexeris.

CAP. LII.

1 Cùm autem haberet annos viginti duos Sedecia poſt regnum ſuum, & annos undecim regnâſſet in Jeruſalem; (nomen matris ejus erat Amitaal filia Jeremiæ de Lobena) [MS. Ox. *2 Iſte turpitudinem & ſcelera perpetravit corã Domino prout perpetraverat Joacim. 3 Ob haſce cauſas excanduit Dominus, et erupit furor ejus contra Jeruſalem, & contra Judam, donec projecerat eos, & expulerat à facie ſua. Rebellante enim rege Sedeciâ, & non obtemperante Bochtonaſſari regi Babelis,*] *4 Factum eſt anno regni ipſiꝰ nono, menſe ſeptimo, decimâ menſis, ut veniens Bochtonaſſar rex Babelis cum toto exercitu ſuo in Jeruſalem, obſidione vallaret eam, & fabricaret adverſùs eam moles ad contorquenda ſaxa: 5 Procederetq; urbs in obſidione, uſq; ad annum decimum regis Sedeciæ. 6 Menſe quarto, nonâ menſis invaluit fames in urbe, ita ut nullus eſſet populo terræ panis: 7 Perrupta eſt urbs, & omnes viri bellatores exierunt noctu per viam portæ, inter portam & murum qui erat prope hortum regium (Chaldæis interim urbem obſidentibus) & fugerunt per viam quæ pergit ad Arabes.*

ירמיה : נב

libro in Babel *ad* erat venturũ quod ,malum omne Irmejahu ſcripſit Et
60 וַיִּכְתֹּב יִרְמְיָהוּ אֵת כָּל־הָרָעָה אֲשֶׁר־תָּבוֹא אֶל־בָּבֶל אֶל־סֵפֶר
Irmejahu dixit Et .Babel *ad* ſcripta hæc verba omnia : uno
61 אֶחָד אֵת כָּל־הַדְּבָרִים הָאֵלֶּה הַכְּתֻבִים אֶל־בָּבֶל׃ וַיֹּאמֶר יִרְמְיָהוּ
verba omnia leges & ,videbis & ,Babel *te venire Secundum* : Serajah ad
אֶל־שְׂרָיָה כְּבֹאֲךָ בָבֶל וְרָאִיתָ וְקָרָאתָ אֵת כָּל־הַדְּבָרִים
,eũ *ſuccidendũ ad* iſtum locum *ad* es locutus tu Domine ,dices Et .hæc
62 הָאֵלֶּה׃ וְאָמַרְתָּ יְהוָה אַתָּה דִבַּרְתָּ אֶל־הַמָּקוֹם הַזֶּה לְהַכְרִיתוֹ
ſolitudines *quia* : animal ad uſque & homine ab *habitatorem* eo in *exiſtendum non ad*
לְבִלְתִּי הֱיוֹת־בּוֹ יוֹשֵׁב לְמֵאָדָם וְעַד־בְּהֵמָה כִּי־שִׁמְמוֹת
ligabis : hunc librum legere *te complere ſecundum* ,erit Et .erit *ſeculi*
63 עוֹלָם תִּהְיֶה׃ וְהָיָה כְּכַלֹּתְךָ לִקְרֹא אֶת־הַסֵּפֶר הַזֶּה תִּקְשֹׁר
infigetur Sic : dices Et .Perath medium in *eum* projicies &,lapidem eum ſuper
64 עָלָיו אֶבֶן וְהִשְׁלַכְתּוֹ אֶל־תּוֹךְ פְּרָת׃ וְאָמַרְתָּ כָּכָה תִּשְׁקַע
,eam ſuper *adducens* ego quod ,mali *faciebus à* conſurget non & ,Babel
בָּבֶל וְלֹא־תָקוּם מִפְּנֵי הָרָעָה אֲשֶׁר אָנֹכִי מֵבִיא עָלֶיהָ
.Irmejahu verba Hucuſque .Laſſabuntur &
וְיָעֵפוּ עַד־הֵנָּה דִּבְרֵי יִרְמְיָהוּ׃

CAP. LII. נב

annis decim--un & *,ipſum regnando in* ,Sidchijahu anni unius & viginti Filius
1 בֶּן־עֶשְׂרִים וְאַחַת שָׁנָה צִדְקִיָּהוּ בְמָלְכוֹ וְאַחַת עֶשְׂרֵה שָׁנָה
.Libnah de Irmejahu filia Chamutal ejus matris nomen & : Jeruſalaim in regnavit
מָלַךְ בִּירוּשָׁלִָם וְשֵׁם אִמּוֹ חֲמִיטַל בַּת־יִרְמְיָהוּ מִלִּבְנָה׃
ſuper Quia .Jehojachim fecit quæ omnia juxta :Domini oculis in malum Fecitque
2 3 וַיַּעַשׂ הָרַע בְּעֵינֵי יְהוָה כְּכֹל אֲשֶׁר־עָשָׂה יְהוֹיָקִים׃ כִּי עַל־
deſuper ipſos eũ projiciendũ ad uſque,Jehudah & ,Jeruſalaim *in fuit Domini* furore
אַף יְהוָה הָיְתָה בִּירוּשָׁלִַם וִיהוּדָה עַד־הִשְׁלִיכוֹ אוֹתָם מֵעַל
nono anno in ,fuit Et .Babel regem *in* Sidchijahu rebellavitque :*ſuis faciebus*
4 פָּנָיו וַיִּמְרֹד צִדְקִיָּהוּ בְּמֶלֶךְ בָּבֶל׃ וַיְהִי בַשָּׁנָה הַתְּשִׁעִית
rex reſar-Nebuchad venit menſis decima in decimo menſe in ,*ipſum regnando*
לְמָלְכוֹ בַּחֹדֶשׁ הָעֲשִׂירִי בֶּעָשׂוֹר לַחֹדֶשׁ בָּא נְבוּכַדְרֶאצַּר מֶלֶךְ־
: eam *ſuper* ſunt caſtrametati & ,Jeruſalaim *ſuper* ejus *virtus* omnis & , ipſe Babel
בָּבֶל הוּא וְכָל־חֵילוֹ עַל־יְרוּשָׁלִַם וַיַּחֲנוּ עָלֶיהָ
ad uſque,obſidionẽ in civitas venit Et .undique *ligneam turrim* eã *ſuper* ædificaverũt &
5 וַיִּבְנוּ עָלֶיהָ דָּיֵק סָבִיב׃ וַתָּבֹא הָעִיר בַּמָּצוֹר עַד
nona *in* quarto menſe In .Sidchijahu regis annum undecimum
6 עַשְׁתֵּי עֶשְׂרֵה שָׁנָה לַמֶּלֶךְ צִדְקִיָּהוּ׃ בַּחֹדֶשׁ הָרְבִיעִי בְּתִשְׁעָה
eſt dirupta Et .terræ populo panis erat non & ,civitate in fames invaluit & menſis
7 לַחֹדֶשׁ וַיֶּחֱזַק הָרָעָב בָּעִיר וְלֹא־הָיָה לֶחֶם לְעַם הָאָרֶץ׃ וַתִּבָּקַע
portæ *via* nocte civitate de exierũtq; ,fugerunt *belli* viri omnes &,civitas
הָעִיר וְכָל־אַנְשֵׁי הַמִּלְחָמָה יִבְרְחוּ וַיֵּצְאוּ מֵהָעִיר לַיְלָה דֶּרֶךְ שַׁעַר
: *undique* civitatem *ſuper* Chaſdim & ,regis hortum *ſuper* quæ ,muros duos inter
בֵּין־הַחֹמֹתַיִם אֲשֶׁר עַל־גַּן הַמֶּלֶךְ וְכַשְׂדִּים עַל־הָעִיר סָבִיב
, regem *poſt* Chaſdim *virtus* ſunt perſecuti Et .ſolitudinis *via* abierunt &
8 וַיֵּלְכוּ דֶּרֶךְ הָעֲרָבָה׃ וַיִּרְדְּפוּ חֵיל־כַּשְׂדִּים אַחֲרֵי הַמֶּלֶךְ
.eo *deſuper ſunt diſperſi ej⁹ virtus* omnis &:Jerecho deſertis in Sidchijahu attigerũt &
וַיַּשִּׂיגוּ אֶת־צִדְקִיָּהוּ בְּעַרְבֹת יְרֵחוֹ וְכָל־חֵילוֹ נָפֹצוּ מֵעָלָיו׃
Babel regem ad eum fecerunt aſcendere & , regem comprehenderunt Et
9 וַיִּתְפְּשׂוּ אֶת־הַמֶּלֶךְ וַיַּעֲלוּ אֹתוֹ אֶל־מֶלֶךְ בָּבֶל
rex jugulavit Et .judicia eo cũ eſt locutus &:Chamath terram in Riblah in
10 רִבְלָתָה בְּאֶרֶץ חֲמָת וַיְדַבֵּר אִתּוֹ מִשְׁפָּטִים׃ וַיִּשְׁחַט מֶלֶךְ־
Jehudah principes omnes etiam & : ej⁹ oculis in Sidchijahu filios Babel
בָּבֶל אֶת־בְּנֵי צִדְקִיָּהוּ לְעֵינָיו וְגַם אֶת־כָּל־שָׂרֵי יְהוּדָה
eum vinxit & , cæcavit Sidchijahu oculos Et .Riblah in jugulavit
11 שָׁחַט בְּרִבְלָתָה׃ וְאֶת־עֵינֵי צִדְקִיָּהוּ עִוֵּר וַיַּאַסְרֵהוּ
domo in eum *dedit* & ,Babel in Babel rex eum fecit adducere & ,compedibus in
בַנְחֻשְׁתַּיִם וַיְבִאֵהוּ מֶלֶךְ־בָּבֶל בָּבֶלָה וַיִּתְּנֵהוּ בְבֵית־
.*cum mori* diem ad uſque *præfecturarum*
הַפְּקֻדֹּת עַד־יוֹם מוֹתוֹ׃

Verſio VULG. LAT.

60 Et ſcripſit Jeremias omne malũ, quod venturum erat ſuper Babylonem,in libro uno:omnia verba hæc, quæ ſcripta ſunt contra Babylonem. 61 Et dixit Jeremias ad Saraiam; Cùm veneris in Babylonẽ, & videris,& legeris omnia 62 verba hæc, Dices ; Domine, tu locut⁹ es contra locum iſtum ut diſperderes eum : ne ſit qui in eo habitet ab homine uſque ad pecus,& ut ſit perpetua ſolitudo. 63 Cúmque compleveris legere librum iſtum,ligabis ad eum lapidem, & projicies illum in mediũ 64 Euphraten : Et dices ; Sic ſubmergetur Babylon, & non conſurget à facie afflictionis, quam ego adduco ſuper eam, & diſſolvetur. Hucuſque verba Jeremiæ.

CAP. LII.

1 Filius viginti & unius anni erat Sedecias cùm regnare cœpiſſet : & undecim annis regnavit in Jeruſalem, & nomen matris ejus Amital, filia Jeremiæ de Lobna. 2 Et fecit malũ in oculis Dñi,juxta 3 omnia quæ fecerat Joakim. Quoniam furor Domini erat in Jeruſalem & in Juda, uſquequò projiceret eos à facie ſua : & receſſit 4 Sedecias à rege Babylonis. Factũ eſt autem in anno nono regni ejus, in menſe decimo, decimâ menſis : Venit Nabuchodonoſor rex Babylonis, ipſe & omnis exercitus ejus, adverſùs Jeruſalem, & obſederunt eam, & ædificaverunt contra eam munitiones in 5 circuitu. Et fuit civitas obſeſſa uſque ad undecimũ annum regis 6 Sedeciæ. Menſe autem quarto, nonâ menſis, obtinuit fames civitatem:& non erant alimenta po- 7 pulo terræ. Et dirupta eſt civitas, & omnes viri bellatores ejus fugerunt, exierúntque de civitate nocte,per viam portæ,quæ eſt inter duos muros, & ducit ad hortũ regis, (Chaldæis obſidentib⁹ urbem in gyro,) & abierunt per 8 viam, quæ ducit in eremum. Perſecut⁹ eſt autem Chaldæorum exercitus regem:et apprehenderunt Sedeciam in deſerto, ꝙ eſt juxta Jericho:& omnis comitatus ejus 9 diffugit ab eo. Cúmque comprehendiſſent regẽ, adduxerunt eum ad regem Babylonis in Reblatha, quæ eſt in terra Emath : & locut⁹ eſt ad eum judicia. 10 Et jugulavit rex Babylonis filios Sedeciæ in oculis ejus : ſed & omnes principes Juda oc- 11 cîdit in Reblatha. Et oculos Sedeciæ eruit, & vinxit eum compedibus, & adduxit eum rex Babylonis in Babylonem, & poſuit eum in domo carceris uſque ad diem mortis ejus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

8 Καὶ κατεδίωξεν ἡ δύναμις τῶν Χαλδαίων ὀπίσω τοῦ βασιλέως, ϗ (ϑ) κατέλαβον αὐτὸν ἐν τῷ πέραν Ἱεριχὼ, ϗ πάντες οἱ παῖδες αὐτοῦ διεσπάρησαν ἀπ' αὐτοῦ. 9 Καὶ συνέλαβον τὸν βασιλέα, ϗ ἤγαγον αὐτὸν πρὸς τὸν βασιλέα Βαβυλῶνος εἰς Δεβλαθὰ, ϗ ἐλάλησεν αὐτῷ μετὰ κρίσεως. 10 Καὶ ἔσφαξε βασιλεὺς Βαβυλῶνος τοὺς υἱοὺς Σεδεκίου κατ' ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ, ϗ πάντας τοὺς ἄρχοντας Ἰούδα ἔσφαξεν ἐν Δεβλαθά. 11 Καὶ τοὺς ὀφθαλμοὺς Σεδεκίου ἐξετύφλωσε, ϗ ἔδησεν αὐτὸν ἐν πέδαις. ϗ ἤγαγεν αὐτὸν βασιλεὺς Βαβυλῶνος εἰς Βαβυλῶνα, ϗ ἔδωκεν αὐτὸν εἰς οἰκίαν (ι) μύλωνος, ἕως ἡμέρας ἧς ἀπέθανε. 12 Καὶ ἐν μηνὶ (κ) πέμπτῳ, δεκάτῃ τοῦ μηνὸς, ἦλθε Ναβουζαρδὰν ὁ ἀρχιμάγειρος (λ) ἑστηκὼς κατὰ πρόσωπον τοῦ βασιλέως Βαβυλῶνος, εἰς Ἱερουσαλήμ. 13 Καὶ ἐνέπρησε τὸν οἶκον κυρίου, ϗ τὸν οἶκον τοῦ βασιλέως, ϗ πάσας τὰς οἰκίας τῆς πόλεως, ϗ πᾶσαν οἰκίαν μεγάλην ἐνέπρησεν ἐν 14 πυρί. Καὶ πᾶν τεῖχος (μ) Ἱερουσαλὴμ κύκλῳ καθεῖλεν ἡ δύναμις τῶν Χαλδαίων, ἡ μετὰ τοῦ ἀρχιμαγείρου. 15 16 Καὶ τοὺς καταλοίπους τοῦ λαοῦ κατέλιπεν ὁ ἀρχιμάγειρος εἰς ἀμπελουργοὺς ϗ εἰς 17 γεωργούς. Καὶ τοὺς στύλους τοὺς χαλκοῦς τοὺς ἐν (ν) οἴκῳ κυρίου, καὶ τὰς βάσεις, καὶ τὴν θάλασσαν τὴν χαλκῆν τὴν ἐν οἴκῳ κυρίου συνέτριψαν οἱ Χαλδαῖοι, ϗ ἔλαβον τὸν χαλκὸν αὐτῶν, 18 ϗ ἀπήνεγκαν εἰς Βαβυλῶνα. Καὶ τὴν στεφάνην, ϗ τὰς φιάλας, ϗ τὰς κρεάγρας, ϗ πάντα τὰ σκεύη τὰ χαλκᾶ, ἐν 19 οἷς (ξ) ἐλειτούργουν ἐν αὐτοῖς, Καὶ τὰς (ο) ἀπφὼθ, ϗ τὰς μασμαρὼθ, καὶ τοὺς ὑποχυτῆρας, καὶ τὰς λυχνίας, καὶ τὰς θυΐσκας, καὶ τοὺς κυάθους, ἃ ἦν χρυσᾶ χρυσᾶ, καὶ ἃ ἦν ἀργυρᾶ ἀργυρᾶ, ἔλαβεν ὁ ἀρχιμάγειρος.

Et perſequuta eſt virtus Chaldæorum poſt regem : & apprehenderunt eum trans Hiericho : & omnes pueri ejus diſperſi ſunt ab eo. Et ceperunt regem, & 9 *duxerunt eum ad regem Babylonis in (ſ) Deblatha. Et loquutus eſt ei cum judicio. Et jugulavit rex* 10 *Babylonis filios Sedeciæ ante oculos ejus : & omnes principes Juda jugulavit in Deblatha. Et oculos* 11 *Sedeciæ exæcavit, & ligavit eum in compedibus. Et duxit eum rex Babylonis in Babylonem, & dedit eum in domum piſtrini uſque in diem, quâ mortuus eſt. Et in menſe quinto,* 12 *decimâ menſis, venit Nabuzardan princeps coquorum, qui ſtabat ante faciem regis Babylonis, in Hieruſalem : Et incendit domum* 13 *Domini, & domum regis, & omnes domos civitatis : & omnem domum magnam incendit in igne : Et omnem* 14 *murum Hieruſalem in circuitu deſtruxit virtus Chaldæorum, quæ cum principe coquorum.* 15 *Et (g) reliquos de populo reliquit* 16 *princeps coquorum in vinearum & agrorum cultores. Et columnas æneas,* 17 *quæ in domo Domini, & baſes, & mare æneum, quæ in domo Domini, contriverunt Chaldæi : & tulerunt æs eorum ; & aſportârunt in Babylonem : Et coronam,* 18 *& phialas, & creagras, & omnia vaſa ænea, in quibus miniſtrabant in eis, Et ipſas (h) Apphoth,* 19 *& ipſas Maſmaroth, & pelves, & candelabra, & mortariola, & cyathos, quæ erant aurea aurea, & quæ erant argentea argentea, tulit princeps coquorum.*

MS. A. (ϑ) κατέλαβεν (ι) μύλωνος, ἕως ἀπέθανεν. (κ) τῷ πέμπτῳ, δεκάτῃ (λ) ὁ ἑστηκὼς κατὰ πρόσωπον βασιλέως (μ) ἐν Ἱερουσαλὴμ (ν) οἴκῳ κυρίου, * Συνέτριψαν οἱ (ξ) ἐλιτούργων (ο) ἀφφὼθ,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

60 וּכְתַב יִרְמְיָה יָת כָּל בִּישְׁתָא דַעֲתִידָא לְמֵיתֵי עַל בָּבֶל עַל סִפְרָא חַד יָת כָּל פִּתְגָמַיָא
61 הָאִלֵין דִכְתִיבִין עַל בָּבֶל׃ וַאֲמַר יִרְמְיָה לִשְׂרָיָה כְּמֵיתָךְ לְבָבֶל וְתֶחֱזֵי וְתִקְרֵי יָת כָּל
62 פִּתְגָמַיָא הָאִלֵין׃ וְתֵימַר יְיָ אַתְּ גְזַרְתָּא עַל אַתְרָא הָדֵין לְשֵׁיצָיוּתֵיהּ בְּדִיל דְלָא לְמֶהֱוֵי בֵיהּ
63 יָתֵיב לְמֵאֱנָשָׁא וְעַד בְּעִירָא אֲרֵי צָדוּת עָלַם תְּהֵי׃ וִיהֵי כְּשֵׁיצָיוּתָךְ לְמִקְרֵי יָת סִפְרָא הָדֵין
64 תִּקְטַר בֵּיהּ אַבְנָא וְתִרְמְנֵיהּ לְגוֹ פְרָת׃ וְתֵימַר כְּדֵין תִּשְׁתְּקַע בָּבֶל וְלָא תְקוּם מִן קֳדָם
בִּישְׁתָא דִי אֲנָא מַיְתֵי עֲלַהּ וְיִשְׁתַּלְהוֹן עַד הָכָא נְבוּאַת פִּתְגָמֵי יִרְמְיָה׃

נב

1 בַּר עַסְרִין וַחֲדָא שְׁנִין צִדְקִיָה כַּד מְלַךְ וַחֲדָא עַשְׂרֵי שְׁנִין מְלַךְ בִּירוּשְׁלֶם וְשׁוּם אִמֵיהּ
2 3 חֲמוּטַל בַּת יִרְמְיָה מִלִבְנָה׃ וַעֲבַד דְבִישׁ קֳדָם יְיָ כְּכֹל דִי עֲבַד יְהוֹיָקִים׃ אֲרֵי עַל דְאַרְגִיז
קֳדָם יְיָ הֲוַת בִּירוּשְׁלֶם וּבִיהוּדָה עַד דְאַגְלֵי יָתְהוֹן מֵאַרְעָא בֵית שְׁכִנְתֵּיהּ וּמְרַד צִדְקִיָה
4 בְּמַלְכָּא דְבָבֶל׃ וַהֲוָה בְשַׁתָּא תְשִׁיעֵיתָא לְמַלְכוּתֵיהּ בְּיַרְחָא עֲשִׂירָאָה בְּעַסְרָא לְיַרְחָא
אֲתָא נְבוּכַדְרֶצַּר מַלְכָּא דְבָבֶל הוּא וְכָל מַשְׁרְיָתֵיהּ עַל יְרוּשְׁלֶם וּשְׁרוֹ עֲלַהּ וּבְנוֹ עֲלַהּ
5 כַּרְקוֹם סְחוֹר סְחוֹר׃ וַעֲלַת קַרְתָּא בְּצָיְרָא עַד חֲדָא עַסְרֵי שְׁנִין לְמַלְכָּא צִדְקִיָה׃
6 בְּיַרְחָא רְבִיעָאָה בְּתִשְׁעָא לְיַרְחָא וּתְקֵיף כַּפְנָא בְּקַרְתָּא וְלָא הֲוַת מֵיכַל לְעַמָא
7 דְאַרְעָא׃ וְאִתְרָעַת קַרְתָּא וְכָל גַבְרֵי עָבְדֵי קְרָבָא עֲרַקוּ וּנְפַקוּ מִן קַרְתָּא בְּלֵילְיָא בְּאוֹרַח
תְּרַע בֵּין שׁוּרַיָא דִי עַל גִנְתָא דְמַלְכָּא וְכַסְדָאֵי שָׁרַן עַל קַרְתָּא סְחוֹר סְחוֹר וַאֲזַלוּ בְּאוֹרַח
8 מֵישְׁרָא׃ וּרְדָפוּ מַשְׁרְיַת כַּסְדָאֵי בָּתַר מַלְכָּא וְאַדְבִּיקוּ יַת צִדְקִיָה בְּמֵישְׁרֵי יְרֵחוֹ וְכָל
9 מַשְׁרְיָתֵיהּ אִתְבַּדַרָא מִנֵיהּ׃ וַאֲחִידוּ יַת מַלְכָּא וְאַסִיקוּ יָתֵיהּ לְוָת מַלְכָּא דְבָבֶל לְרִבְלַת
10 בְּאַרְעָא דַחֲמָת וּמַלֵיל עִמֵיהּ פִּתְגָמֵי דִינִין׃ וּנְכֵס מַלְכָּא דְבָבֶל יַת בְּנֵי צִדְקִיָה בְּרִבְלָתָה
11 לְעֵינוֹהִי וְאַף יַת כָּל רַבְרְבֵי יְהוּדָה נְכַס בְּרִבְלָתָה׃ וְיַת עֵינֵי צִדְקִיָה עַוַר וְאַסְרֵיהּ
בְּשַׁלְשְׁלָן דִנְחָשׁ וְאוֹבְלֵיהּ מַלְכָּא דְבָבֶל לְבָבֶל וִיהָבֵיהּ בְּבֵית אֲסִירֵי עַד יוֹם מוֹתֵיהּ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

60 Et ſcripſit Jeremias omne malum quod venturum erat ſuper Babylonem, in libro uno;omnia verba hæc quæ ſcripta ſunt contra Babylonem. 61 Et dixit Jeremias ad Saraiam,Cùm veneris in Babylonem,& videbis et leges omnia verba hæc. 62 Et dices:Dñe tu decreviſti contra locum iſtum, ut diſperderes eum, ne ſit in eo habitator ab homine uſque ad jumentum:ut perpetua ſit vaſtitas. 63 Et erit cùm conſummaveris legere librum iſtum, ligabis in eo lapidem, & projicies eum in medium Euphratis. 64 Et dices : Sic mergetur Babylon, & non conſurget, propter malum quod ego adducam ſuper eam, & deficient. Hucuſque prophetia ſermonum Jeremiæ.

CAP. LII.

1 Filius viginti & unius anni erat Sedechias quando regnavit,& undecim annis regnavit in Jeruſalem: & nomen matris ejus Hamutal filia Jeremiæ de Lobna. 2 Et fecit quod malum eſt coram Dño, juxta omnia quæ fecerat Joachim. 3 Quia pro eo quòd irritaſſent Dñm, fuit [*ira Domini*] in Jeruſalem & Juda, donec tranſmigrare fecit eos de terra domus majeſtatis ſuæ. Et rebellavit Sedechias in regem Babylonis. 4 Et factum eſt anno nono regni ejus,menſe decimo, decima die menſis, venit Nabuchodonoſor rex Babylonis, ipſe & omnis exercitus ejus contra Jeruſalem, & caſtrametati ſunt contra eam, & ædificaverunt adverſùs eam machinas per circuitum. 5 Venítque civitas in obſidionem uſque ad undecimum annum regis Sedechiæ. 6 Menſe quarto, nona die menſis, prævaluit fames in civitate, adeò ut non eſſent alimenta populo terræ. 7 Et dirupta eſt civitas, & omnes viri bellatores fugerunt, & egreſſi ſunt de civitate nocte per viam portæ inter muros qui erant juxta hortum Regis. (Chaldæi autem caſtrametati erant per circuitum civitatis:) & abierunt per viam campeſtrem. 8 Et perſecuti ſunt exercitus Chaldæorum poſt regem, & apprehenderunt Sedechiam in campeſtribus Jericho : & omnis exercitus ejus diſperſus eſt ab eo. 9 Et comprehenderunt Regem,& adduxerunt eum ad regem Babylonis in Riblath in terram Hemath : & locutus eſt cum eo verba judiciorum. 10 Et jugulavit rex Babylonis filios Sedechiæ *in Riblah* in oculis ejus, & etiam omnes principes Juda jugulavit in Riblah. 11 Oculos autem Sedechiæ excæcavit ; & vinxit eum catenis æreis, & duxit eum rex Babylonis in Babylonem, & poſuit eum in domo vinctorum uſque in diem mortis ejus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܟܬܒ ܐܪܡܝܐ ܟܠܗ ܒܝܫܬܐ ܕܐܬܝܐ ܥܠ ܒܒܠ ܒܟܬܒܐ ܚܕ: ܟܠܗܘܢ ܡ̈ܠܐ ܗܠܝܢ 60
ܕܟܬܝܒܢ ܥܠ ܒܒܠ. * ܘܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܠܣܪܝܐ. ܡܐ ܕܥܠܬ ܠܗ ܠܒܒܠ ܀ ܩܪܝ 61
ܘܚܙܝ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓ̈ܡܐ ܗܠܝܢ. ܘܐܡܪ. * ܡܪܝܐ ܀ ܐܢܬ ܐܡܪܬ ܥܠ ܐܬܪܐ ܗܢܐ 62
ܠܡܘܒܕܘ ܀ ܕܠܐ ܢܗܘܐ ܒܗ ܥܡܘܪܐ ܡܢ ܒܢ̈ܝ ܐܢܫܐ ܘܥܕܡܐ ܠܒܥܝܪܐ. ܡܛܠ
ܕܠܚܘܪܒܐ. ܕܠܥܠܡ ܢܗܘܐ. * ܘܡܐ ܕܫܠܡܬ ܠܡܩܪܐ ܟܬܒܐ ܗܢܐ ܀ ܐܣܘܪ ܒܗ 63
ܟܐܦܐ. ܘܫܕܝܗܝ ܠܦܪܬ. * ܘܐܡܪ ܀ ܗܟܢܐ ܬܛܒܥ ܒܒܠ ܘܠܐ ܬܩܘܡ ܀ ܡܢ ܩܕܡ 64
ܒܝܫܬܐ ܕܡܝܬܐ ܐܢܐ ܥܠܝܗܘܢ ܘܡܬܛܪܦܝܢ.

* Nam poſtquam ſcripſiſſet Jeremia totum malum 60
quod eventurum erat Babyloni, in libro
uno, omnia verba iſta quæ ſcripta ſunt contra
Babylonem; Dixit Jeremia Seriæ, 61
Quum ingreſſus fueris Babylonem, lege &
conſidera omnes ſermones iſtos, & dic;
Domine, tu dixiſti te locum hunc perditurum, 62
ita ut non maneat in eo ullus habitator
tam ex hominibus quàm jumentis, eò
quòd futurus ſit deſolationi perpetuæ. Cúmque 63
hujus libelli lectionem abſolveris, alligato
ei lapidem, & in Euphratem projicito,
Ac dicito; Ita cadat Babylon, neque reſurgat 64
à malo quod inducturus ſum ſuper eos, ſed
deturbentur.

* ܥܕܡܐ ܠܗܪܟܐ ܦܬܓ̈ܡܘܗܝ ܕܐܪܡܝܐ *

Hactenus ſermones Jeremiæ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܢܒ *

CAP. LII.

* ܒܪ ܥܣܪܝܢ ܗܘܐ ܘܚܕܐ ܫܢܝܢ ܨܕܩܝܐ ܟܕ ܐܡܠܟ. ܘܚܕܥܣܪܐ ܫܢܝܢ ܐܡܠܟ ܒܐܘܪܫܠܡ ܀ 1
ܘܫܡܗ ܕܐܡܗ ܚܡܘܛܠ ܀ ܒܪܬ ܐܪܡܝܐ ܡܢ ܠܒܢܐ. * ܘܥܒܕ ܕܒܝܫ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. 2
ܐܝܟ ܕܥܒܕ ܝܗܘܝܩܝܡ. * ܡܛܠ ܕܪܘܓܙܐ ܗܘܐ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ ܘܥܠ 3
ܝܗܘܕܐ ܀ ܥܕܡܐ ܕܫܕܐ ܐܢܘܢ ܡܢ ܩܕܡ ܐܦܘܗܝ. ܘܡܪܕ ܨܕܩܝܐ ܥܠ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ.
* ܘܒܫܢܬܐ ܕܬܫܥ ܠܡܠܟܘܬܗ ܒܝܪܚܐ ܕܥܣܪܐ ܀ ܒܥܣܪܐ ܒܗ ܒܝܪܚܐ ܗܢܐ ܀ ܐܬܐ 4
ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܗܘ ܘܟܠܗ ܚܝܠܗ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ. ܘܫܪܘ ܥܠܝܗ.
ܘܒܢܘ ܥܠܝܗ ܟܠܟܘܡܐ ܚܕܪ ܚܕܪܐ. * ܘܥܠܬ ܡܕܝܢܬܐ ܒܐܘܚܕܢܐ. ܥܕܡܐ ܠܫܢܬ ܚܕܥܣܪܐ 5
ܠܡܠܟܐ ܨܕܩܝܐ. * ܘܒܝܪܚܐ ܕܚܡܫܐ ܒܬܫܥܐ ܒܗ ܒܝܪܚܐ ܀ ܟܕ ܬܩܦ ܟܦܢܐ ܒܡܕܝܢܬܐ. 6
ܘܠܝܬ ܗܘܐ ܠܚܡܐ ܠܥܡܐ ܕܐܪܥܐ. * ܘܐܬܬܪܥܬ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܓܒܪ̈ܐ ܡܩܛܠܢܐ ܀ 7
ܥܪܩܘ ܘܢܦܩܘ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ ܒܠܠܝܐ ܀ ܒܐܘܪܚܐ ܕܬܪܥܐ ܕܒܝܬ ܫܘܪܐ ܕܥܠ ܓܢܬܐ
ܕܡܠܟܐ. ܘܟܠܕܝܐ ܚܕܪܝܢ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܐܙܠܘ ܒܐܘܪܚܐ ܕܦܩܥܬܐ. * ܘܪܕܦܘ ܚܝܠܐ 8
ܕܟܠܕܝܐ ܒܬܪ ܡܠܟܐ ܀ ܘܐܕܪܟܘܗܝ ܠܨܕܩܝܐ ܒܦܩܥܬܐ ܕܐܝܪܝܚܘ. ܘܟܠܗ ܚܝܠܗ ܐܬܒܕܪ
ܡܢܗ. * ܘܐܚܕܘܗܝ ܠܡܠܟܐ ܀ ܘܐܣܩܘܗܝ ܠܘܬ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܠܕܒܠܬ ܒܐܪܥܐ 9
ܕܚܡܬ. ܘܡܠܠ ܥܡܗ ܕܝܢܐ. * ܘܢܟܣ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܠܒܢܘܗܝ ܕܨܕܩܝܐ 10
ܠܥܝܢܘܗܝ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܪ̈ܘܪܒܢܐ ܕܝܗܘܕܐ ܢܟܣ ܒܕܒܠܬ. * ܘܠܥܝ̈ܢܘܗܝ ܕܨܕܩܝܐ ܥܘܪ. 11
ܘܐܣܪܗ ܒܫܫܠܬܐ. ܘܐܘܒܠܗ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܠܒܒܠ. ܘܐܫܠܡܗ ܠܒܝܬ
ܡܛܪܬܐ. ܥܕܡܐ ܠܝܘܡܐ ܕܡܝܬ.

* NAtus erat annos viginti unum Sedecia 1
quando regnavit, & annis undecim regnavit
in Jeruſalem: nomen autem matris ejus erat
Hamtol filia Armejæ de Lebna. Is malum 2
perpetravit coram Domino, quemadmodum
fecerat Jojacimus. Horum cauſâ fuit ira Domini 3
contra Jeruſalem & contra Judam, adeò
ut projiceret eos à facie ſua. Cùm enim rebellâſſet
Sedecia contra Nebuchadnoſarem
regem Babylonis; Anno nono regni ipſius, 4
menſe decimo, *die* decimâ hujus ejuſdem menſis,
venit Nebuchadnoſar rex Babylonis unà
cum omnibus copiis ſuis contra Jeruſalem,
obſederunt eam, & aggeribus cinxerunt eam
circunquaque; Fuitque civitas obſidione 5
detenta uſque ad annum undecimum regis
Sedeciæ. Menſe autem quinto, nonâ die 6
ejuſdem menſis, cùm invaluiſſet fames in civitate,
ita ut non eſſet panis populo terræ,
Et perrupta eſſet civitas; omnes viri bellatores 7
fugerunt, egreſſique ſunt è civitate noctu
per illam portæ viam inter muros ſitæ,
quæ erat ſecus hortos regios, Chaldæis civitatem
obſidentibus; & abierunt viâ campeſtri.
Copiæ verò Chaldæorum, regem inſecutæ, 8
prehenderunt Sedeciam in campis Jericho,
& totus exercitus ejus diſſipatus eſt ab
eo. Captúmque regem deduxerunt ad regem 9
Babylonis Deblatham in terra Hamathæ;
ubi initis cum eo rationibus, Jugulari 10
juſſit rex Babelis filios Sedeciæ ipſo ſpectante,
omnéſque nobiles Judæ interfecit in
Deblatha: Sedeciam verò oculis excæcatum 11
vinxit catenis, perduxítque eum rex Babylonis
in Babylonem, & tradidit carceri uſque
ad diem quâ mortuus eſt.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وَطَرَدَ جَيْشُ ٱلْكَلْدَانِيِّينَ خَلْفَ ٱلْمَلِكِ * وَأَدْرَكُوهُ فِي عِبْرِ أَرِيحَا * وَجَمِيعُ عَبِيدِهِ تَفَرَّقُوا 8
عَنْهُ * فَقَبَضُوا ٱلْمَلِكَ وَسَاقُوهُ إِلَي مَلِكِ بَابِلَ إِلَي دَبْلَاثَا * فَتَكَلَّمَ مَعَهُ بِحُكْمٍ * وَذَبَحَ مَلِكُ 9 10
بَابِلَ بَنِي صَدَاقِيَا لِعَيْنَيْهِ * وَذَبَحَ جَمِيعَ رُؤَسَاءِ يَهُودَا فِي دَبْلَاثَا * وَأَعْمَي عَيْنَي صَدَاقِيَا * 11
وَرَبَطَهُ بِقُيُودٍ وَسَاقَهُ مَلِكُ بَابِلَ إِلَي بَابِلَ * وَأَسْلَمَهُ لِبَيْتِ ٱلرَّحَي حَتَّي مَاتَ * وَفِي ٱلشَّهْرِ ٱلْخَامِسِ 12
فِي ٱلْعَاشِرِ مِنَ ٱلشَّهْرِ * أَتَي نَابُوزَرْدَانُ رَيِّسُ ٱلطَّبَّاخِينَ ٱلْوَاقِفُ لِوَجْهِ مَلِكِ بَابِلَ إِلَي
أَيْرُوسَلِيمَ * وَأَحْرَقَ بَيْتَ ٱلرَّبِّ وَبَيْتَ ٱلْمَلِكِ وَكُلَّ مَسَاكِنِ ٱلْمَدِينَةِ * وَكُلَّ مَنْزِلٍ كَبِيرٍ 13
أَحْرَقَهُ بِٱلنَّارِ * وَهَدَمَ كُلَّ سُورٍ فِي أَيْرُوسَلِيمَ مِنْ حَوْلِهَا جَيْشُ ٱلْكَلْدَانِيِّينَ ٱلَّذِي مَعَ رَيِّسِ 14
ٱلطَّبَّاخِينَ * * وَتَرَكَ رَيِّسُ ٱلطَّبَّاخِينَ بَقَايَا ٱلشَّعْبِ كَرَّامِينَ وَفَلَّاحِينَ * وَكَسَرَ ٱلْكَلْدَانِيُّونَ 15 16 17
ٱلْعُمُدَ ٱلنُّحَاسَ ٱلَّذِي فِي بَيْتِ ٱلرَّبِّ * وَأَخَذُوا نُحَاسَهُمْ وَجَلَبُوهُ إِلَي بَابِلَ * وَٱلتَّاجَةَ 18
وَٱلْهَدَّابَاتِ وَٱلْمَصَافِي وَكُلَّ ٱلْأَوَانِي ٱلنُّحَاسِ ٱلَّذِينَ يَخْدِمُونَ بِهِمْ * وَٱلْقِصَاعَ وَٱلْقَوَارِيرَ * وَٱلْمَرَاحِلَ 19
وَٱلْمَنَابِرَ * وَٱلْأَحْقَافَ وَٱلْمَنَاشِلَ * ٱلَّتِي كَانَتْ ذَهَبًا ذَهَبًا وَٱلَّتِي كَانَتْ فِضَّةً فِضَّةً * أَخَذَهَا
رَيِّسُ ٱلطَّبَّاخِينَ *

At exercitus Chaldæorum perſecutus 8
regem, aſſecuti ſunt eum in altera parte
Jericho: cúmque omnes ſervi ejus
diſperſi eſſent ab eo, Ceperunt regem, 9
duxeruntque eum ad regem Babelis
in Deblatham; qui allocutus
eum cum imperio. Deinde jugulavit rex 10
Babelis filios Sedeciæ ob oculos ejus,
& jugulavit omnes principes Judæ in
Deblatha: Sedeciæ oculos excæcavit, 11
& compedibus vinctum abduxit rex
Babelis in Babelem, poſuitque in domo
piſtrini quoad mortuus eſt. Menſe 12
quinto, decimâ menſis, Nabuzardan
coquorum præfectus, qui ſtabat ante
faciem regis Babelis, venit Jeroſolymam,
Combuſſitque domum Domini, domum 13
regis, & omnes urbis habitationes,
omneque palatium magnum igne ſuccendit:
Omnes quoque muros qui erant 14
in Jeruſalem circunquaque, deſtruxit
exercitus Chaldæorum qui erat cum
præfecto coquorum. Reliquias verò populi 15 16
reliquit præfectus coquorum in vinitores
& aratores. Et fregerunt Chaldæi 17
columnas æneas quæ erant in domo
Domini, acceperunt æs illarum, &
aſportaverunt in Babelem. Item coronam, 18
aquaria, cola, cunctaque vaſa
ænea quibus miniſtrabant, Diſcos, 19
alabaſtra, cacabos, candelabra, pixides,
& fuſcinulas tam aureas quàm
argenteas; tulit præfectus coquorum:

regis annus decimus nonus annus ipse ,mensis decima *in* quinto mense *in* Et

12 וּבַחֹדֶשׁ הַחֲמִישִׁי בֶּעָשׂוֹר לַחֹדֶשׁ הִיא שְׁנַת תְּשַׁע־עֶשְׂרֵה שָׁנָה לַמֶּלֶךְ

facies ad stabat laniorum princeps Nebuzaradan venit ,Babel regis Nebuchadresar

נְבוּכַדְרֶאצַּר מֶלֶךְ־בָּבֶל בָּא נְבוּזַרְאֲדָן רַב־טַבָּחִים עָמַד לִפְנֵי

:regis domum & ,Domini domum incendit Et .Jerusalaim in Babel *regis*

13 מֶלֶךְ־בָּבֶל בִּירוּשָׁלִָם׃ וַיִּשְׂרֹף אֶת־בֵּית־יְהוָה וְאֶת־בֵּית הַמֶּלֶךְ

Et .igni *in* combussit magnam domum omnem & ,Jerusalaim domos omnes &

14 וְאֵת כָּל־בָּתֵּי יְרוּשָׁלִַם וְאֶת־כָּל־בֵּית הַגָּדוֹל שָׂרַף בָּאֵשׁ׃ וְאֶת־

cum qui ,Chasdim *virtus* omnis destruxerunt :undique Jerusalaim muros omnes

כָּל־חֹמוֹת יְרוּשָׁלִַם סָבִיב נָתְצוּ כָּל־חֵיל כַּשְׂדִּים אֲשֶׁר אֶת־

relictis populi residuo & ,populi *tenuitatibus* de Et .laniorum magistro

15 רַב־טַבָּחִים׃ וּמִדַּלּוֹת הָעָם וְאֶת־יֶתֶר הָעָם הַנִּשְׁאָרִים

: *turbæ* residuo & ,Babel regem ad *incubuerunt* qui ,*incumbentibus* & ,civitate in

בָּעִיר וְאֶת־הַנֹּפְלִים אֲשֶׁר נָפְלוּ אֶל־מֶלֶךְ בָּבֶל וְאֵת יֶתֶר הָאָמוֹן

fecit remanere ,terræ *tenuitatibus* de Et .laniorum magister Nebuzaradan fecit transmigrare

16 הֶגְלָה נְבוּזַרְאֲדָן רַב־טַבָּחִים׃ וּמִדַּלּוֹת הָאָרֶץ הִשְׁאִיר

columnas Et .agricolas *in* & , vinitores *in* :laniorum magister Nebuzaradan

17 נְבוּזַרְאֲדָן רַב־טַבָּחִים לְכֹרְמִים וּלְיֹגְבִים׃ וְאֶת־עַמּוּדֵי

domo in quod , æreum mare & , bases & ,Domini domo quæ ,*æris*

הַנְּחֹשֶׁת אֲשֶׁר לְבֵית־יְהוָה וְאֶת־הַמְּכֹנוֹת וְאֶת־יָם הַנְּחֹשֶׁת אֲשֶׁר בְּבֵית־

.Babel in eorum æs omne detulerunt & : Chasdim confregerunt ,DOMINI

יְהוָה שִׁבְּרוּ כַשְׂדִּים וַיִּשְׂאוּ אֶת־כָּל־נְחֻשְׁתָּם בָּבֶלָה׃

,cochlearia & ,pelves & , psalteria & ,scopas & , lebetes Et

18 וְאֶת־הַסִּרוֹת וְאֶת־הַיָּעִים וְאֶת־הַמְזַמְּרוֹת וְאֶת־הַמִּזְרָקֹת וְאֶת־הַכַּפּוֹת

, *hydrias* Et .tulerunt *eis in* ministrabant quibus ,*æris* vasa omnia &

19 וְאֵת כָּל־כְּלֵי הַנְּחֹשֶׁת אֲשֶׁר־יְשָׁרְתוּ בָהֶם לָקָחוּ׃ וְאֶת־הַסִּפִּים

, *cochlearia* & ,*lucernas* & , ollas & , pelves & ,thuribula &

וְאֶת־הַמַּחְתּוֹת וְאֶת־הַמִּזְרָקוֹת וְאֶת־הַסִּירוֹת וְאֶת־הַמְּנֹרוֹת וְאֶת־הַכַּפּוֹת

.laniorum magister tulit :*argentum argentum* quæ & ,*aurum aurum* quæ *purificatoria* &

וְאֶת־הַמְּנַקִּיּוֹת אֲשֶׁר זָהָב זָהָב וַאֲשֶׁר־כֶּסֶף כָּסֶף לָקַח רַב טַבָּחִים׃

sub qui , *æris* decim---duo boves & ,unum mare ,duas Columnas

20 הָעַמּוּדִים שְׁנַיִם הַיָּם אֶחָד וְהַבָּקָר שְׁנֵים־עָשָׂר נְחֹשֶׁת אֲשֶׁר־תַּחַת

pondus erat non ,Domini domo in Selomoh rex fecerat quos , basibus

הַמְּכֹנוֹת אֲשֶׁר עָשָׂה הַמֶּלֶךְ שְׁלֹמֹה לְבֵית יְהוָה לֹא־הָיָה מִשְׁקָל

statura cubitorũ decem octo columnas Et .istorum vasorum omnium æris

21 לִנְחֻשְׁתָּם כָּל־הַכֵּלִים הָאֵלֶּה׃ וְהָעַמּוּדִים שְׁמֹנֶה עֶשְׂרֵה אַמָּה קוֹמָה

digitorũ quatuor *ejꝰ* crassitudo &:eã circuibat cubitorũ decim-duo filum & ,unius columnæ

הָעַמֻּד הָאֶחָד וְחוּט שְׁתֵּים־עֶשְׂרֵה אַמָּה יְסֻבֶּנּוּ וְעָבְיוֹ אַרְבַּע אֶצְבָּעוֹת

quinque unius *coronamenti statura &* ,*æs* ,eam super *coronamentum* Et .concava

22 נָבוּב׃ וְכֹתֶרֶת עָלָיו נְחֹשֶׁת וְקוֹמַת הַכֹּתֶרֶת הָאַחַת חָמֵשׁ

hæc sicut & : *æs* *omne* ,*circum* *coronamentum* super malogranata &,retiaculũ & : cubitorũ

אַמּוֹת וּשְׂבָכָה וְרִמּוֹנִים עַל־הַכּוֹתֶרֶת סָבִיב הַכֹּל נְחֹשֶׁת וְכָאֵלֶּה

:*ventum ad* ,sex & nonaginta malogranata fuerunt Et .malogranata & ,secunda columna in

23 לָעַמּוּד הַשֵּׁנִי וְרִמּוֹנִים׃ וַיִּהְיוּ הָרִמֹּנִים תִּשְׁעִים וְשִׁשָּׁה רוּחָה

laniorum magister tulit Et .*undique* retiaculum super centum malogranata omnia

24 כָּל־הָרִמּוֹנִים מֵאָה עַל־הַשְּׂבָכָה סָבִיב׃ וַיִּקַּח רַב־טַבָּחִים אֶת־

.liminis custodes tres & : secundum sacerdotẽ Sephanjah & , *caput* sacerdotẽ Serajah

שְׂרָיָה כֹּהֵן הָרֹאשׁ וְאֶת־צְפַנְיָה כֹּהֵן הַמִּשְׁנֶה וְאֶת־שְׁלֹשֶׁת שֹׁמְרֵי הַסַּף׃

, *belli* viros super præpositus erat qui ,unum eunuchum tulit civitate de Et

25 וּמִן־הָעִיר לָקַח סָרִיס אֶחָד אֲשֶׁר־הָיָה פָקִיד עַל־אַנְשֵׁי הַמִּלְחָמָה

principẽ scribam & ,civitate in sunt invẽti qui ,regis *facies videntibꝰ* ex viros septem &

וְשִׁבְעָה אֲנָשִׁים מֵרֹאֵי פְנֵי־הַמֶּלֶךְ אֲשֶׁר נִמְצְאוּ בָעִיר וְאֵת סֹפֵר שַׂר

inventis , terræ populo de viros sexaginta & : terræ populum *exercentem* ,militiæ

הַצָּבָא הַמַּצְבִּא אֶת־עַם הָאָרֶץ וְשִׁשִּׁים אִישׁ מֵעַם הָאָרֶץ הַנִּמְצְאִים

eos fecit ire & : laniorum magister Nebuzaradan eos tulit Et .civitatis medio in

26 בְּתוֹךְ הָעִיר׃ וַיִּקַּח אוֹתָם נְבוּזַרְאֲדָן רַב־טַבָּחִים וַיֹּלֶךְ אוֹתָם

.sua *humo desuper* Jehudah est translatus & : Chamath terra in ,Riblah in eos interfecit & , Babel rex eos fecit percutere Et .Riblah in Babel regem ad

27 אֶל־מֶלֶךְ בָּבֶל רִבְלָתָה׃ וַיַּכֶּה אוֹתָם מֶלֶךְ בָּבֶל וַיְמִתֵם בְּרִבְלָה בְּאֶרֶץ חֲמָת וַיִּגֶל יְהוּדָה מֵעַל אַדְמָתוֹ׃

Versio VULG. LAT.

12 In mense autem quinto, decimâ mensis, ipse est annꝰ nonusdecimꝰ Nabuchodonosor regis Babylonis: venit Nabuzardan princeps militiæ, qui stabat corã rege Babylonis in Jerusalem. 13 Et incendit domum Domini, & domum regis, & omnes domos Jerusalẽ, & omnẽ domum magnam igni combussit. 14 Et totum murum Jerusalem ꝑ circuitum destruxit, cunctꝰ exercitꝰ Chaldæorum, qui erat cum magistro militiæ. 15 De pauperibus autẽ populi, & de reliquo vulgo, quod remanserat in civitate, & de perfugis, qui transfugerant ad regẽ Babylonis, & cæteros de multitudine, transtulit Nabuzardan princeps militiæ. 16 De pauperibus verò terræ reliquit Nabuzardan princeps militiæ vinitores, & agricolas, 17 Columnas quoque æreas, quæ erant in domo Domini, & bases, & mare æneum, ꝙ erat in domo Domini, confregerunt Chaldæi, & tulerunt omne æs eorum in Babylonem. 18 Et lebetes, & creagras, & psalteria, & phialas, & mortariola, & omnia vasa ærea, quæ in ministerio fuerant, tulerunt: 19 & Hydrias, & thymiamateria, & urceos, & pelves, & candelabra, & mortaria, & cyathos: quotquot aurea, aurea; & quotquot argentea, argentea, tulit magister militiæ: 20 Et columnas duas, & mare unum, & vitulos duodecim æreos, qui erant sub basibus, quas fecerat rex Salomon in domo Domini: nõ erat pondus æris omnium horum vasorum. 21 De columnis autẽ, decẽ & octo cubiti altitudinis erãt in columna una, & funiculus duodecim cubitorum circuibat eã: porrò grossitudo ejus quatuor digitorum, & intrinsecùs cava erat. 22 Et capitella super utramq; ærea: altitudo capitelli uniꝰ quinque cubitorum: & retiacula, & malogranata sup coronã in circuitu, oĩa ærea. Similiter columnæ secundæ, & malogranata. 23 Et fuerũt malogranata nonagintasex depẽdentia: & oĩa malogranata centũ, retiaculis circumdabantur. 24 Et tulit magister militiæ Saraiã sacerdotẽ primum, & Sophoniã sacerdotem secundum, & tres custodes vestibuli. 25 Et de civitate tulit eunuchum unum, qui erat præpositus super viros bellatores: & septem viros de his, qui videbant faciem regis, qui inventi sunt in civitate: & scribam principem militum, qui probabat tyrones: & sexaginta viros de populo terræ, qui inventi sunt in medio civitatis. 26 Tulit autem eos Nabuzardan magister militiæ, & duzit eos ad regem Babylonis in Reblatha. 27 Et percussit eos rex Babylonis, & interfecit eos in Reblatha in terra Emath: & translatus est Juda de terra sua.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

20 Καὶ οἱ στύλοι δύο, καὶ ἡ θάλασσα μία, καὶ οἱ μόσχοι δώδεκα χαλκοῖ ὑποκάτω τῆς θαλάσσης, ἃ ἐποίησεν ὁ βασιλεὺς Σαλωμὼν εἰς οἶκον κυρίου, (π) οὐκ ἦν σταθμὸς τοῦ χαλκοῦ αὐτῶν. 21 Καὶ οἱ στύλοι τριακονταπέντε (ˢ) πηχῶν ὕψος τοῦ στύλου τοῦ ἑνός, καὶ σπαρτίον δώδεκα πήχεων (ρ) περιεκύκλου αὐτόν, καὶ τὸ πάχος αὐτοῦ (σ) δακτύλων τεσσάρων κύκλῳ. 22 Καὶ γεῖσος ἐπ' αὐτοῖς χαλκοῦν, καὶ πέντε πήχεων τὸ μῆκος, ὑπεροχὴ τοῦ γείσους τοῦ ἑνός, καὶ δίκτυον καὶ ῥοαὶ (τ) ἐπὶ τοῦ γείσους κύκλῳ τὰ πάντα χαλκᾶ, καὶ κατὰ ταῦτα τῷ στύλῳ τῷ δευτέρῳ, ὀκτὼ ῥοαὶ τῷ πήχει τοῖς δώδεκα πήχεσι. 23 Καὶ ἦσαν αἱ ῥοαὶ ἐνενηκονταὲξ τὸ ἓν μέρος, καὶ ἦσαν αἱ πᾶσαι ῥοαὶ ἑκατὸν ἐπὶ τοῦ δικτύου κύκλῳ. 24 Καὶ ἔλαβεν ὁ ἀρχιμάγειρος τὸν ἱερέα τὸν πρῶτον, καὶ τὸν ἱερέα τὸν δευτερεύοντα, καὶ τοὺς τρεῖς τοὺς (υ) φυλάττοντας τὴν ὁδόν, 25 (φ) Καὶ εὐνοῦχον ἕνα ὃς ἦν ἐπιστάτης τῶν ἀνδρῶν τῶν πολεμιστῶν, καὶ ἑπτὰ ἄνδρας ὀνομαστούς, τοὺς ἐν προσώπῳ τοῦ βασιλέως, τοὺς εὑρεθέντας ἐν τῇ πόλει, καὶ τὸν γραμματέα τῶν δυνάμεων, τὸν γραμματεύοντα τῷ λαῷ τῆς γῆς, καὶ ἑξήκοντα ἀνθρώπους ἐκ τοῦ λαοῦ τῆς γῆς, τοὺς εὑρεθέντας ἐν μέσῳ τῆς πόλεως. 26 Καὶ ἔλαβεν αὐτοὺς Ναβουζαρδὰν ὁ (ʳ) ἀρχιμάγειρος τοῦ βασιλέως, καὶ ἤγαγεν (χ) αὐτοὺς πρὸς βασιλέα Βαβυλῶνος εἰς Δεβλαθά.

20 Et columnæ duæ, & mare unum, & vituli duodecim ænei subter mare, quæ fecerat rex Salomon in domo Domini, cujus non erat pondus æris eorum: 21 Et columnæ (i) triginta quinq; cubitorum altitudo columnæ unius: et funiculus duodecim cubitorũ circundabat eam: & crassities ejus digitorum quatuor in circuitu: 22 Et (k) gisum super eas æneum, & quinq; cubitorum longitudo, excessus gisi unius; & rete, & malogranata super gisum in circuitu, omnia ænea: & juxta hæc columnæ secundæ, (l) octo malogranata cubito, duodecim cubitis. 23 Et erant malogranata nonaginta sex latus unum: & erant omnia malogranata centum super rete in circuitu. 24 Et tulit princeps coquorum (m) sacerdotẽ primum, & sacerdotẽ secundũ, & tres illos, qui custodiebant viã, 25 Et eunuchum unũ, qui erat præfectus virorũ bellatorum, & septem viros nominatos, qui in facie regis, inventos in civitate, & scribam virtutũ scribentẽ populo terræ, et sexaginta homines de populo terræ, inventos in medio civitatis. 26 Et tulit eos Nabuzardan princeps coquorũ regis: & duxit eos ad regẽ Babylonis in Deblatha.

MS. A. (π) οὐκ ἦν (ˢ) πήχεων (ρ) περικυκλοῦν (σ) τεσσάρων δακτύλων· (τ) ἐπὶ γείσους (υ) φυλάσσοντας (φ) Καὶ ἐκ τῆς πόλεως ἔλαβεν εὐνοῦχον (ʳ) ἀρχιμαγείρος, καὶ (χ) * αὐτὸν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

12 וּבְיַרְחָא חֲמִישָׁאָה בְּעַסְרָא לְיַרְחָא הִיא שְׁנַת תְּשַׁע עַשְׂרֵי שְׁנִין לְמַלְכָּא נְבוּכַדְרֶאצַּר

13 מַלְכָּא דְבָבֶל אֲתָא נְבוּזַר אֲדָן רַב קָטוֹלַיָא קָם קֳדָם מַלְכָּא דְבָבֶל בִּירוּשְׁלֶם : וְאוֹקֵיד יַת

בֵּית מַקְדְּשָׁא דַיְיָ וְיַת בֵּית מַלְכָּא וְיַת כָּל בָּתֵּי יְרוּשְׁלֶם וְיַת כָּל בָּתֵּי רַבְרְבַיָא אוֹקֵיד בְּנוּרָא:

14 15 וְיַת כָּל שׁוּרֵי יְרוּשְׁלֶם סְחוֹר סְחוֹר תְּרַעוּ כָּל מַשְׁרְיַת כַּסְדָאֵי דְּעִם רַב קָטוֹלַיָא : וּמֵחֲשִׁיכֵי

עַמָּא וְיַת שְׁאָרָא דְעַמָּא דְאִשְׁתְּאַרָא בְּקַרְתָּא וְיַת שְׁמִיעַיָא דְאִשְׁתְּמַעוּ עַל מַלְכָּא דְבָבֶל וְיַת

16 שְׁאַר הֲמוֹנָא אַגְלֵי נְבוּזַר אֲדָן רַב קָטוֹלַיָא : וּמֵחֲשִׁיכֵי עַמָּא דְאַרְעָא אַשְׁאַר נְבוּזַר אֲדָן רַב

17 קָטוֹלַיָא לְמֶהֱוֵי מְפַלְחִין בְּחַקְלִין וּבְכַרְמִין : וְיַת עַמּוּדֵי נְחָשָׁא דִּי בְּבֵית מַקְדְּשָׁא דַיְיָ וְיַת

בְּסִיסַיָא וְיַת יַמָּא דִנְחָשָׁא דִּי בְּבֵית מַקְדְּשָׁא דַיְיָ תַּבַּרוּ כַסְדָאֵי וְאוֹבִילוּ יַת כָּל נְחָשְׁהוֹן

18 לְבָבֶל : וְיַת דּוּדַיָא וְיַת מַגְרוֹפְיָתָא וְיַת מְזַמְּרַיָא וְיַת מִזְרְקַיָא וְיַת בָּזִיכַיָא וְיַת כָּל מָנֵי נְחָשָׁא

19 דַּהֲווֹ מְשַׁמְּשִׁין בְּהוֹן נְסִיבוּ : וְיַת קוּלַיָא וְיַת מַחְתְּיָתָא וְיַת מִזְרְקַיָא וְיַת דּוּדַיָא וְיַת

מְנָרָתָא וְיַת בָּזִיכַיָא וְיַת מְכִילָתָא דְּדַהֲבָא דַהֲבָא וְדִי כַסְפָּא כַּסְפָּא נְסִיב רַב קָטוֹלַיָא :

20 עַמּוּדַיָא תְּרֵין יַמָּא חַד וְתוֹרֵי תְּרֵי עֲסַר דִּנְחָשָׁא דִּתְחוֹת בְּסִיסַיָא דַּעֲבַד מַלְכָּא שְׁלֹמֹה

21 בְּבֵית מַקְדְּשָׁא דַיְיָ לָא הֲוָה מַתְקַל לִנְחָשְׁהוֹן דְּכָל מָנַיָא הָאִלֵּין : וְעַמּוּדַיָא תַּמְנְיָא עַסְרֵי

אַמִּין רוּמֵיהּ דְּעַמּוּדָא חַד וְחוּט מְשַׁח תַּרְתָּא עַסְרֵי אַמִּין מַקִּיף לֵהּ סְחוֹר סְחוֹר וְסוּמְכֵיהּ

22 אַרְבַּע אֶצְבְּעָן חֲלִיל : וְקָרוּנְתְּהוֹן עֲלוֹהִי דִּנְחָשָׁא וְרוּמָא דְקָרוּנְתְּהוֹן חֲדָא חֲמֵשׁ אַמִּין

וְסָרְגְתָא וְרִמּוֹנַיָא עַל קָרוּנְתְּהוֹן סְחוֹר סְחוֹר כּוּלָּא נְחָשָׁא וּכְאִלֵּין לְעַמּוּדָא תִּנְיָנָא

23 וְרִמּוֹנַיָא: וַהֲווֹ רִמּוֹנַיָא תִּשְׁעִין וְשִׁתָּא בְּעִבְרְתָא כָּל רִמּוֹנַיָא מְאָה עַל סְרִגְתָא סְחוֹר סְחוֹר:

24 25 וּדְבַר רַב קָטוֹלַיָא יַת שְׂרָיָה כַּהֲנָא רַבָּא וְיַת צְפַנְיָה סְגַן כַּהֲנַיָא וְיַת תְּלָתָא אַמַּרְכְּלַיָא : וּמִן

קַרְתָּא דְבַר גַּוָּאָה חַד דַּהֲוָה מְמַנָּא עַל גַּבְרֵי עָבְדֵי קְרָבָא וְשַׁבְעָא גַבְרִין דְּחָזָן אַפֵּי מַלְכָּא

דְאִשְׁתְּכַחוּ בְקַרְתָּא וְיַת סַפְרָא רַב חֵילָא דִּכְנֵישׁ יַת עַמָּא דְאַרְעָא וְשִׁתִּין גַּבְרָא מֵעַמָּא

26 דְאַרְעָא דְאִשְׁתְּכַחוּ בְּגוֹ קַרְתָּא : וּדְבַר יַתְהוֹן נְבוּזַר אֲדָן רַב קָטוֹלַיָא וְאוֹבִיל יַתְהוֹן לְוַת

27 מַלְכָּא דְבָבֶל לְרִבְלָת : וּמְחָא יַתְהוֹן מַלְכָּא דְבָבֶל וְקַטְלִנּוּן בְּרִבְלָה בְּאַרְעָא דַחֲמָת

וְאִתְגְּלִיאוּ דְבֵית יְהוּדָה מֵעַל אַרְעֲהוֹן:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

12 Mense autem quinto decima die mensis (ipse est annus decimus nonus regis Nabuchodonozor regis Babylonis) venit Nabuzardan princeps occidentium, & stetit ante regem Babylonis in Jerusalem. 13 Et succendit domum sanctuarii Dñi, & domum Regis, & omnes domos Jerusalem, & cunctas domos principum succendit igni: 14 Et omnes muros Jerusalem per circuitum destruxit omnis exercitus Chaldæorum qui [*venerat*] cum principe occidentium. 15 Et de pauperibꝰ populi, & reliquum populum qui remanserat in civitate, & profugos qui transfugerant ad regem Babylonis, & reliquam multitudinem transmigrare fecit Nabuzardan princeps occidentium. 16 Et de pauperibꝰ populi terræ reliquit Nabuzardan princeps occidentium, ut colerent agros & vineas. 17 Et columnas æreas quæ erant in domo sanctuarii Domini, & bases, & mare æreum ꝙ erat in domo sanctuarii Domini, confregerunt Chaldæi, & detulerunt omne æs eorum in Babylonem: 18 Et lebetes, & scopas, & psalteria, & phialas, & cochlearia, & omnia vasa ærea quibꝰ ministrabant, tulerunt: 19 Et hydrias, & thuribula, & pelves, & ollas, & candelabra, & mortariola, & cyathos: quæ aurea, aurea; & quæ argentea, argentea, tulit princeps occidentium. 20 Columnas duas, mare unum, & duodecim boves æneos qui sub basibus erant, quæ fecerat rex Salomon in domo sanctuarii Dñi: non erat pondus æris omnium vasorum istorum. 21 Columnarum autem, decem & octo cubitorum erat altitudo columnæ uniꝰ; & funiculꝰ mensuræ duodecim cubitorum ambiebat eam circumquaque, & grossitudo ejus erat quatuor digitorum, & concava erat. 22 Et capitella erant sup eam ærea, & altitudo capitelli uniꝰ quinque cubitorum erat: & retiaculum, & malogranata super capitella in circuitu, omnia ærea: & similia erant columnæ secundæ & malogranata. 23 Fuerunt autem malogranata nonaginta & sex in latere uno: omnia malogranata centũ super retiaculum per circuitũ. 24 Et tulit princeps occidentium Saraiam sacerdotem magnum, & Sophoniam principem Sacerdotum secundum, & tres thesaurarios. 25 Et de civitate tulit eunuchum unum qui erat præpositꝰ viris bellatoribꝰ, & septem viros qui videbant faciem Regis, qui inventi sunt in civitate, & scribam principem exercitꝰ, qui congregabat populum terræ, & sexaginta viros de populo terræ, qui inventi sunt in medio civitatis. 26 Et tulit eos Nabuzardan princeps occidentium, & duxit eos ad regem Babylonis in Riblath. 27 Et percussit eos rex Babylonis, & occidit eos in Riblah in terra Hemath: & translati sunt viri domus Juda de terra sua.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܒܝܪܚܐ ܕܚܡܫܐ ܒܥܣܪܐ ܒܗ ܒܝܪܚܐ . ܗܘܬ ܫܢܬ ܬܫܥܣܪܐ ܠܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ 12
ܕܒܒܠ . ܐܬܐ ܢܒܘܙܪܕܢ ܪܒ ܕܚܫܐ . ܘܩܡ ܩܕܡ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܒܐܘܪܫܠܡ . * ܘܐܘܩܕ 13
ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܘܠܒܝܬܗ ܕܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ . ܘܠܟܠܗܘܢ ܒܬܐ ܕܐܘܪܫܠܡ . ܘܠܟܠܗܘܢ
ܒܬܐ ܕܪܘܪܒܢܐ . ܐܘܩܕ ܒܢܘܪܐ . * ܘܠܟܠܗܘܢ ܫܘܪܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ ܕܡܢ ܚܕܪ . ܣܚܦܘ 14
ܟܠܗ ܚܝܠܐ ܕܟܠܕܝܐ ܕܥܡ ܪܒ ܕܚܫܐ . * ܘܡܢ ܡܣܟܢܐ ܕܥܡܐ : ܘܫܪܟܐ ܕܥܡܐ 15
ܕܐܫܬܚܪܘ ܒܡܕܝܢܬܐ : ܘܗܢܘܢ ܕܢܦܩܘ ܠܘܬ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ . ܘܫܪܟܐ ܕܥܡܐ ܐܫܒܝ
ܢܒܘܙܪܕܢ . ܪܒ ܕܚܫܐ . * ܘܡܢ ܡܣܟܢܐ ܕܐܪܥܐ . ܫܒܩ ܢܒܘܙܪܕܢ ܪܒ ܕܚܫܐ 16
ܠܟܪܡܐ . ܘܠܦܠܚܘܬܐ . * ܘܥܡܘܕܐ ܕܢܚܫܐ ܘܟܘܪܐ . ܘܝܡܐ ܕܢܚܫܐ ܕܒܒܝܬܗ 17
ܕܡܪܝܐ . ܬܒܪܘ ܟܠܕܝܐ . ܘܫܩܠܘ ܟܠܗ ܢܚܫܗܘܢ ܘܐܘܒܠܘܗܝ ܠܒܒܠ . * ܘܩܕܪܐ 18
ܘܙܝܪܐ ܘܦܝܠܐ . ܘܡܫܚܠܐ ܘܟܣܐ . ܘܟܠܗܘܢ ܡܐܢܐ ܕܢܚܫܐ ܕܡܫܡܫܝܢ ܒܗܘܢ .
ܢܣܒܘ . * ܘܡܚܬܘܬܐ ܘܦܝܪܡܐ . ܘܡܙܪܩܐ ܘܩܕܪܐ . ܘܡܢܪܬܐ ܘܦܝܠܐ . 19
ܘܡܢܝܩܝܬܐ ܕܕܗܒܐ ܘܕܣܐܡܐ . * ܘܢܣܒ ܪܒ ܕܚܫܐ . ܥܡܘܕܐ ܬܪܝܢ ܕܢܚܫܐ ܕܐܝܬܝܗܝܢ 20
ܬܚܝܬܗܘܢ ܕܝܡܐ . ܕܥܒܕ ܡܠܟܐ ܫܠܝܡܘܢ ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ . ܘܠܐ ܗܘܐ ܡܬܬܩܠ
ܢܚܫܗܘܢ ܕܡܐܢܐ ܗܠܝܢ . * ܘܥܡܘܕܐ ܚܕ ܬܡܢܥܣܪܐ . ܐܡܝܢ ܪܘܡܗ 21
ܕܥܡܘܕܐ ܚܕ ܡܢܗܘܢ . ܘܚܘܛܐ ܕܬܪܬܥܣܪܐ ܐܡܝܢ . ܚܕܪ ܠܗ ܡܢ ܚܕܪ . ܘܥܒܝܘܗ
ܐܪܒܥ ܨܒܥܢ . ܘܚܠܝܠ ܠܓܘ . * ܘܟܘܪܐ ܥܠܘܗܝ ܕܢܚܫܐ . ܘܪܘܡܗ ܕܟܘܪܐ ܚܕ . 22
ܚܡܫ ܐܡܝܢ . ܘܡܨܝܕܬܐ ܘܪܘܡܢܐ . ܥܠ ܟܘܪܐ ܡܢ ܚܕܪ . ܘܟܠܗ ܕܢܚܫܐ . ܘܐܝܟ ܗܠܝܢ
ܠܥܡܘܕܐ ܐܚܪܢܐ . ܘܪܘܡܢܐ . * ܘܗܘܘ ܪܘܡܢܐ ܬܫܥܝܢ ܘܫܬܐ . ܘܟܠܗܘܢ ܪܘܡܢܐ 23
ܡܐܐ ܥܠ ܡܨܝܕܬܐ ܡܢ ܚܕܪ . * ܘܕܒܪ ܪܒ ܕܚܫܐ ܠܣܪܝܐ ܟܗܢܐ ܪܫܐ . ܘܠܨܦܢܝܐ 24
ܟܗܢܐ ܕܬܪܝܢ . ܘܠܬܠܬܐ ܢܛܪܝ ܬܪܥܐ . * ܘܡܢ ܡܕܝܢܬܐ ܕܒܪ ܡܗܝܡܢܐ ܚܕ . 25
ܕܗܘ ܡܦܩܕ ܗܘܐ ܥܠ ܓܒܪܐ ܩܪܒܬܢܐ . ܘܫܒܥܐ ܓܒܪܝܢ ܝܕܝܥܐ ܕܩܝܡܝܢ ܗܘܘ
ܩܕܡ ܡܠܟܐ . ܕܐܫܬܚܪܘ ܒܡܕܝܢܬܐ . ܘܣܦܪܐ ܘܪܒ ܚܝܠܐ ܕܥܡܐ ܕܐܪܥܐ . ܘܫܬܝܢ 26
ܓܒܪܝܢ ܡܢ ܥܡܐ ܕܐܪܥܐ . ܕܐܫܬܟܚܘ ܒܓܘ ܡܕܝܢܬܐ . * ܕܒܪ ܐܢܘܢ ܢܒܘܙܪܕܢ
ܪܒ ܕܚܫܐ . ܘܐܝܬܝ ܐܢܘܢ ܠܘܬ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܠܕܒܠܬ ܒܐܪܥܐ ܕܚܡܬ . * ܘܩܛܠ 27
ܐܢܘܢ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ . ܘܩܛܠ ܐܢܘܢ ܒܕܒܠܬ ܒܐܪܥܐ ܕܚܡܬ . ܘܐܫܬܒܝ
ܝܗܘܕܐ ܡܢ ܐܪܥܗ .

* Menſe quinto, decimâ ejuſdem menſis (is 12
erat annus decim⁹ nonus Nebuchadnoſaris
regis Babyloniæ) venit Nebuzardan princeps
ſatellitum, ſtetítque coram rege Babelis
in Jeruſalem: Deinde combuſſit domum Domini, 13
& domum regis Judæ; omnes etiam
domos Jeruſalem, hoc eſt, omnes magnatum
domos igne combuſſit: Et omnes muros 14
Jeruſalem per circuitum, deſtruxerunt omnes
Chaldæorum copiæ quæ erant cum principe
ſatellitum. Ex pauperrima verò plebe, & 15
tam reliquum populum qui remanſerat in civitate,
quàm illos qui profugerant ad regem
Babyloniæ, & reliquum vulg⁹, captivos abduxit
Nebuzardan princeps ſatellitum. Ex 16
pauperrima etiam terræ plebe reliquit Nebuzardan
princeps ſatellitum, in vinitores, &
pro agricultura. Præterea columnas æneas, 17
lagenas, & mare æneum quæ erant in domo
Domini, fregerunt Chaldæi, vexerúntque
totum æs eorum, & detulerunt Babylonem.
Ollas etiam, caldaria, cacabos, trullas, di- 18
ſcos, & omnia vaſa ænea quib⁹ miniſtrabant,
abſtulerunt: Item acerras, thuribula, extra- 19
ctoria, & ahena, lychnuchos, & candelabra,
lances, atque libatoria aurea & argentea.
Abſtulit etiam princeps ſatellitum columnas 20
duas æreas quæ erant ſub laterib⁹ maris, quas
fecerat Salomon rex pro domo Domini: non
erat autem pond⁹ æri vaſorum iſtorum. Ha- 21
rum enim duarum columnarum unaquæque
columna erat altitudinis decem & octo cubitorum,
& filum duodecim cubitorum cingebat
eam circunquaque: denſitas autem ejus
erat quatuor digitorum, & cava intrinſecùs:
Lagena erat ſuper ipſam ænea, & altitudo cu- 22
juſlibet lagenæ erat quinque cubitorum, &
rete atque malogranata ſuper lagenam undequaque,
totaque erat ænea: hæc eadem habebat
altera columna cum malogranatis. Por- 23
rò malogranata erant nonaginta ſex, omnia
autem malogranata centum erant ſuper rete
circunquaque. Abduxit quoque princeps 24
ſatellitum Seriam ſummum ſacerdotem, &
Sephaniam ſacerdotem ab eo ſecundum, ac
tres liminum cuſtodes. E civitate verò ab- 25
duxit eunuchum unum qui præerat viris bellatorib⁹;
ſeptem viros inſignes & apud regem
conſpicuos, qui reliqui erant in civitate;
ſcribam & ducem exercitûs populi terræ;
& ſexaginta viros de populo terræ, qui inventi
ſunt intra civitatem, Abduxit Nebu- 26
zardan princeps ſatellitum, perduxítque ad
regem Babylonis in Deblatham in terram Hamathæ:
Quos percutiens rex Babylonis in- 27
terfecit in Deblatha in terra Hamathæ: ita
captivus eſt abductus Juda de terra ſua.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* والعمودان * والبحر الواحد * والاثنا عشر عجل النحاس الذين تحت البحر * الذين 20
صنعهم سليمن الملك في بيت الرب * لم يكن قيمة لنحاسهم * وثلاثون عمودا * ارتفاع 21
العمود الواحد خمسة اذرع * وخيط اثني عشر ذراعا يدور عليه * وثخنه اربعة
اصابع داير * وعليهم اجانة نحاس * وطول الاجانة الواحدة خمسة اذرع * وشبكة 22
ورمانين على الاجانة من حولها كلها نحاس * وهكذا للعمود الثاني ثمان رمانين
للذراع لاثني عشر ذراعا * وكانت الرمانين ستة وتسعين جزوا واحدا * وكانت 23
جميع الرمانين مائة على الشبكة من حولها * واخذ رييس الطباخين الكاهن 24
الاول والكاهن الثاني * وحفظة الطريق الثلاثة * واخذ من المدينة خصيا واحدا 25
الذي كان عظيم المحاربين * وسبعة رجال مسميين الذين في وجه الملك الموجودين
في المدينة * وكاتب الجيوش الذي يكتب لشعب الارض * وستين انسانا من شعب
الارض الموجودين في وسط المدينة * واخذهم نابورزدان رييس الطباخين * وساقهم الي 26
ملك بابل الي دبلاثا *

Item duas columnas, mare unum, duo- 20
decim vitulos æneos qui erant ſub
mari, quos poſuerat Salomon rex in
domo Domini, quorum æri non erat
pretium: Et columnas triginta, quarum 21
altitudo cujuſque erat quinque cubitorum;
& filum duodecim cubitorum
cujus denſitas erat quatuor digitorum,
ambiebat illam per circuitum. Super- 22
poſita his erat lagena ænea, & longitudo
lagenæ unius quinque cubitorum;
& reticulum atque malogranata lagenam
undique cingebant, tota ænea:
idemque erat columne alteri, octo
ſcilicet malogranata in ſingulis cubitis,
per duodecim cubitos. Erant autem ma- 23
logranata nonaginta ſex, pars una:
omnia verò malogranata centum erant
ſuper reticulum circunquaque. Item 24
cepit coquorum præfectus ſacerdotem
primarium, & ſacerdotem ſecundanum,
treſque viæ cuſtodes. Cepit 25
etiam ex urbe eunuchum unum qui præfectus
erat militum, ſeptemque viros
inſignes qui aſſiſtebant regi, qui
inventi ſunt in urbe; & ſcribam exercituum,
qui ſcribebat populum terræ;
denique ſexaginta homines de
populo terræ, qui inventi ſunt intra
urbem. Hos cepit Nabuzardan præ- 26
fectus coquorum, abduxitque ad regem
Babelis in Deblatham:

ſeptimo anno in : Nebuchadreſar fecit *migrare* quem , populus Iſte
28 זֶה הָעָם אֲשֶׁר הֶגְלָה נְבוּכַדְרֶאצַּר בִּשְׁנַת־שֶׁבַע
anno In .tres & , viginti & ,millia tria Jehudæos
29 יְהוּדִים שְׁלֹשֶׁת אֲלָפִים וְעֶשְׂרִים וּשְׁלֹשָׁה׃ בִּשְׁנַת
animas Jeruſalaim de ; Nebuchadreſar decimo octavo
שְׁמוֹנֶה עֶשְׂרֵה לִנְבוּכַדְרֶאצַּר מִירוּשָׁלִַם נֶפֶשׁ
vigeſimo & ,tertio anno In .duas & , triginta , octingentas
30 שְׁמֹנֶה מֵאוֹת שְׁלֹשִׁים וּשְׁנָיִם׃ בִּשְׁנַת שָׁלֹשׁ וְעֶשְׂרִים
Jehudæorum laniorū magiſter Nebuzaradan fecit *migrare* Nebuchadreſar
לִנְבוּכַדְרֶאצַּר הֶגְלָה נְבוּזַרְאֲדָן רַב־טַבָּחִים יְהוּדִים
quatuor animæ omnes : quinque & quadraginta , ſeptingentas animas
נֶפֶשׁ שְׁבַע מֵאוֹת אַרְבָּעִים וַחֲמִשָּׁה כָּל־נֶפֶשׁ אַרְבַּעַת
anno ſeptimo & trigeſimo in fuit Et .ſexcentæ & , millia
31 אֲלָפִים וְשֵׁשׁ מֵאוֹת׃ וַיְהִי בִּשְׁלֹשִׁים וְשֶׁבַע שָׁנָה
,menſe duodecimo in ,Jehudah regis Jehojachin tranſmigrationis
לְגָלוּת יְהוֹיָכִן מֶלֶךְ־יְהוּדָה בִּשְׁנֵים עָשָׂר חֹדֶשׁ
Babel rex Merodach Evil elevavit ; menſis quinta & vigeſima in
בְּעֶשְׂרִים וַחֲמִשָּׁה לַחֹדֶשׁ נָשָׂא אֱוִיל מְרֹדַךְ מֶלֶךְ בָּבֶל
eum eduxit & ,Jehudah regis Jehojachin caput ,ſui regni anno in
בִּשְׁנַת מַלְכֻתוֹ אֶת־רֹאשׁ יְהוֹיָכִין מֶלֶךְ־יְהוּדָה וַיֵּצֵא אֹתוֹ
ejꝰ thronum *dedit* & : bona eo cum eſt locutus Et .carceris domo de
32 מִבֵּית הַכְּלִיא׃ וַיְדַבֵּר אִתּוֹ טֹבוֹת וַיִּתֵּן אֶת־כִּסְאוֹ
veſtimenta mutavit Et .Babel in ſecum qui regum thronum *deſuper*
33 מִמַּעַל לְכִסֵּא מְלָכִים אֲשֶׁר אִתּוֹ בְּבָבֶל׃ וְשִׁנָּה אֵת בִּגְדֵי
.ejꝰ *vitarum* diebus omnibus ,*ſuæ mortis* diem ad uſque ,*ſuo die in* *dieiverbum* ,Babel rege *cum* à ei dabatur *juge* *viaticum* ejus *viaticum* Et .*ſuarū vitarū* diebus omnibꝰ ſemper ejꝰ *facies ad* panē comedit &:ejꝰ *carceris*
34 כִלְאוֹ וְאָכַל לֶחֶם לְפָנָיו תָּמִיד כָּל־יְמֵי חַיָּו׃ וַאֲרֻחָתוֹ אֲרֻחַת תָּמִיד נִתְּנָה־לּוֹ מֵאֵת מֶלֶךְ־בָּבֶל דְּבַר־יוֹם בְּיוֹמוֹ עַד־יוֹם מוֹתוֹ כֹּל יְמֵי חַיָּיו׃

Verſio VULG. LAT.

28 Iſte eſt populus, quem tranſtulit Nabuchodonoſor : In anno ſeptimo, Judæos tria millia & 29 viginti tres : In anno octavodecimo Nabuchodonoſor, de Jeruſalem animas octingentas trigin- 30 ta duas : In anno vigeſimotertio Nabuchodonoſor, tranſtulit Nabuzardā magiſter militiæ animas Judæorum ſeptingentas quadraginta quinque: omnes ergò animæ, quatuor millia ſexcentæ. 31 Et factum eſt in trigeſimoſeptimo anno tranſmigrationis Joachin regis Juda, duodecimo menſe, vigeſimaquintâ menſis, elevavit Evilmerodach rex Babylonis ipſo anno regni ſui, caput Joachin regis Juda, & edu- 32 xit eum de domo carceris. Et locutus eſt cum eo bona, & poſuit thronū ejꝰ ſup thronos regū, qui 33 erāt poſt ſe in Babylone. Et muta- 34 vit veſtimenta carceris ejꝰ, & comedebat panē corā eo ſemp cunctis diebꝰ vitæ ſuæ. Et cibaria ejꝰ, cibaria perpetua dabantur ei à rege Babylonis, ſtatuta p ſingulos dies, uſq; ad diē mortis ſuæ, cunctis diebꝰ vitæ ejꝰ.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

27 Καὶ ἐπάταξεν αὐτοὺς βασιλεὺς Βαβυλῶνος ἐν Δεβλαθὰ, ἐν γῇ (↓) Αἰμάθ. 31 Καὶ ἐγένετο (*) ἐν τῷ τριακοστῷ καὶ ἑβδόμῳ ἔτει, ἀποικισθέντος τοῦ Ἰωακεὶμ βασιλέως Ἰούδα, ἐν τῷ δωδεκάτῳ μηνὶ, ἐν τῇ τετράδι καὶ εἰκάδι τοῦ μηνὸς, ἔλαβεν (ω) Οὐλαιμαδάχαρ βασιλεὺς Βαβυλῶνος, ἐν τῷ ἐνιαυτῷ ᾧ ἐβασίλευσε, τὴν κεφαλὴν Ἰωακεὶμ βασιλέως Ἰούδα, (α) καὶ ἔκειρεν αὐτὸν, καὶ ἐξήγα- 32 γεν αὐτὸν ἐξ οἰκίας ἧς ἐφυλάσσετο. Καὶ ἐλάλησεν αὐτῷ χρηστὰ, καὶ ἔδωκε τὸν θρόνον αὐτοῦ ἐπάνω τῶν (β) βασιλέων τῶν μετ' αὐ- 33 τοῦ ἐν Βαβυλῶνι. Καὶ ἤλλαξε τὴν στολὴν τῆς φυλακῆς αὐτοῦ, καὶ ἤσθιεν ἄρτον διαπαντὸς κατὰ πρόσωπον αὐτοῦ πάσας τὰς ἡμέρας, ἃς 34 ἔζησε. Καὶ ἡ σύνταξις αὐτῷ ἐδίδοτο διαπαντὸς παρὰ τοῦ βασιλέως Βαβυλῶνος (γ) ἐξ ἡμέρας εἰς ἡμέραν, ἕως ἡμέρας ἧς ἀπέθανεν. (δ)

Et percuſſit eos rex Babylonis in Deblatha in terra (n) Æmath. 27 *Et factum eſt in trigeſimo & ſeptimo anno tranſmigrationis Joacim regis Juda, in duodecimo menſe, in vigeſima quarta menſis, accepit Ulæmadachar rex Babylonis, in anno, quo regnum adiit, caput Joacim regis Juda; (o) & totondit eum, & eduxit eum de domo, in qua cuſtodiebatur: Et loquutus eſt ei bona;* 31 *& dedit thronum ejus ſuper reges qui ſecum in Babylone : Et* 32 *mutavit ſtolam carceris ejus: & comedebat panem ſemper ante faciem ejus cunctis diebus, quibus vixit.* 33 *Et demenſum ei dabatur perpetuò à rege Babylonis de die in diem, uſque ad diem quâ mortuus eſt.* 34

MS.A. (↓) Λιμαάθ. (*) ἐν τεσσαρακοστῷ (ω) Οὐλαιμβαδάχ (α) καὶ ἐξήγαγεν (β) θρόνων τῶν βασιλέων (γ) ἐξ ἡμερῶν εἰς ἡμέρας, (δ) Ἱερεμίας προφήτης ιδ′.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

28 דֵּין עַמָּא דְּאַגְלִי נְבוּכַדְנֶצַּר בִּשְׁנַת שְׁבַע יְהוּדָאֵי תְּלָתָא אַלְפִין וְעַסְרִין וּתְלָתָא׃ בִּשְׁנַת
29 תְּמָנֵי עַסְרֵי לִנְבוּכַדְנֶצַּר מִירוּשְׁלֶם נַפְשָׁתָא תְּמָנֵי מְאָה תְּלָתִין וְתַרְתֵּין׃ בִּשְׁנַת עַסְרִין
30 וּתְלָת לִנְבוּכַדְנֶצַּר אַגְלֵי נְבוּזַרְאֲדָן רַב קָטוֹלַיָּא יְהוּדָאֵי נַפְשָׁתָא שְׁבַע מְאָה אַרְבְּעִין
31 וְחַמֵשׁ כָּל נַפְשָׁתָא אַרְבְּעָא אַלְפִין וְשִׁית מְאָה׃ וַהֲוָה בִּתְלָתִין וּשְׁבַע שְׁנִין לְגָלוּת
יְהוֹיָכִין מֶלֶךְ שִׁבְטָא דְּבֵית יְהוּדָה בִּתְרֵי עֲסַר יַרְחִין בְּעַסְרִין וְחַמְשָׁא לְיַרְחָא רַבִּי אֱוִיל
מְרוֹדַךְ מַלְכָּא דְבָבֶל בִּשְׁנַת מַלְכוּתֵיהּ יַת רֵישׁ יְהוֹיָכִין מֶלֶךְ שִׁבְטָא דְּבֵית יְהוּדָה וְאַפֵּיק
32 יָתֵיהּ מִבֵּית אֲסִירֵי׃ וּמַלֵּיל עִמֵּיהּ פִּתְגָּמִין תַּקְנִין וִיהַב יַת כּוּרְסוֹהִי מֵעִיל לְכוּרְסֵי מַלְכַיָּא
33 דִּי עִמֵּיהּ בְּבָבֶל׃ וְשַׁנִּי יַת לְבוּשֵׁי אֲסוּרֵיהּ וַאֲכַל לַחְמָא קֳדָמוֹהִי תְּדִירָא כָּל יוֹמֵי חַיּוֹהִי׃
34 וְשֵׁרוּיתֵיהּ שֵׁרְוַת תְּדִירָא מִתְיַהֲבִין לֵיהּ מִן קֳדָם מַלְכָּא דְבָבֶל פִּתְגָּם יוֹם בְּיוֹמֵיהּ עַד יוֹם מוֹתֵיהּ כָּל יוֹמֵי חַיּוֹהִי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Iſte eſt populus quem tranſtulit Nabuchodonozor in anno ſeptimo, Judæos 28 ter mille & viginti tres. Anno decimo octavo Nabuchodonozor, [*tranſtulit*] 29 de Jeruſalem animas octingentas & triginta duas. Anno vigeſimo tertio 30 Nabuchodonozor, tranſtulit Nabuzardan princeps occidentium Judæorum animas ſeptingentas quadraginta quinque. Omnes animæ, quater mille & ſexcentæ. Et factum eſt triceſimo & ſeptimo anno tranſmigrationis Joachin 31 regis tribus domus Juda, duodecimo menſe, viceſima quinta die menſis, magnificavit Evilmerodach rex Babylonis, in ipſo anno regni ſui, caput Joachin regis tribus domus Juda, & eduxit eum de domo carceris. Et locutus eſt 32 cum eo verba recta: & poſuit thronū ejꝰ ſup thronos Regū qui erant cum eo in Babylone. Et mutavit veſtimenta carceris ejus, & comedebat panem co- 33 ram eo ſemper omnibꝰ diebus vitæ ſuæ. Et cibaria ejus continua dabantur 34 ei à facie regis Babylonis ſtatuta per ſingulos dies, uſq; ad diem mortis ſuæ, omnibꝰ diebꝰ quibꝰ vixit.

ספר קינות

CAPUT I. א

: vidua veluti eſt facta ,populo *multa* , civitas *ſola* *ſedit* Quomodo
1 אֵיכָה ׀ יָשְׁבָה בָדָד הָעִיר רַבָּתִי עָם הָיְתָה כְּאַלְמָנָה
Plorando .*tributum in* eſt facta provinciis in *princeps* ,gentibus in *multa*
2 רַבָּתִי בַגּוֹיִם שָׂרָתִי בַּמְּדִינוֹת הָיְתָה לָמַס׃ בָּכוֹ
conſolator ei non : ejꝰ maxillis *ſuper* ejꝰ lachrymæ &,nocte in plorabit
תִבְכֶּה בַּלַּיְלָה וְדִמְעָתָהּ עַל לֶחֱיָהּ אֵין־לָהּ מְנַחֵם
fuerunt,eam *in ſunt prævaricati* ejus *ſocii* omnes : ejꝰ amatoribus omnibꝰ ex
מִכָּל־אֹהֲבֶיהָ כָּל־רֵעֶיהָ בָּגְדוּ בָהּ הָיוּ
multitudine præ &,afflictione præ Jehudah Tranſmigravit .inimicos in ei
3 לָהּ לְאֹיְבִים׃ גָּלְתָה יְהוּדָה מֵעֹנִי וּמֵרֹב
omnes : requiem invenit nec , gentes inter habitavit ipſa : ſervitutis
עֲבֹדָה הִיא יָשְׁבָה בַגּוֹיִם לֹא מָצְאָה מָנוֹחַ כָּל־
.*anguſtias* inter eā apprehenderunt ejus perſecutores
רֹדְפֶיהָ הִשִּׂיגוּהָ בֵּין הַמְּצָרִים׃

Verſio VULG. LAT.

THRENI, id eſt, LAMENTATIONES JEREMIÆ PROPHETÆ.

Et factū eſt, poſtquā in captivitatē redactꝰ eſt Iſrael, & Jeruſalem deſerta eſt, ſedit Jeremias propheta flens, & planxit lamentatione hac in Jeruſalē, & amaro animo ſuſpirans & ejulans dixit:

CAP. I.

1 *Aleph*. QUOMODO ſedet ſola civitas plena populo: facta eſt quaſi vidua domina Gentium: princeps provinciarum facta eſt 2 ſub tributo. *Beth*. Plorans ploravit in nocte, & lachrymæ ejus in maxillis ejus : non eſt qui conſoletur eam ex omnibus charis ejus : omnes 3 amici ejus ſpreverunt eam, & facti ſunt ei inimici. *Ghimel*. Migravit Judas propter afflictionem, & multitudinem ſervitutis : habitavit inter gentes, nec invenit requiem : omnes perſecutores ejus apprehenderunt eam inter anguſtias.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. cum Tranſl. LAT.

(*) ΘΡΗΝΟΙ ἹΕΡΕΜΙΟΥ.

ΚΕΦ. α′.

ΚΑὶ ἐγένετο μετὰ τὸ αἰχμαλωτισθῆναι τὸν Ἰσραὴλ, καὶ Ἱερουσαλὴμ ἐρημωθῆναι, ἐκάθισεν Ἱερεμίας κλαίων, καὶ ἐθρήνησε τὸν θρῆνον τοῦτον ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, καὶ εἶπεν· ἈΛΕΦ. 1 Πῶς ἐκάθισε μόνη ἡ πόλις ἡ πεπληθυμμένη λαῶν; ἐγενήθη ὡς χήρα, πεπληθυμμένη ἐν ἔθνεσιν, ἄρχουσα ἐν χώραις 2 ἐγενήθη εἰς φόρον. ΒΗΘ. Κλαίουσα (α) ἔκλαυσεν ἐν νυκτὶ, καὶ τὰ δάκρυα αὐτῆς ἐπὶ τῶν σιαγόνων αὐτῆς, καὶ οὐχ ὑπάρχει ὁ παρακαλῶν αὐτὴν, ἀπὸ πάντων τῶν ἀγαπώντων αὐτήν· πάντες οἱ φιλοῦντες αὐτὴν ἠ- 3 θέτησαν ἐν αὐτῇ, ἐγένοντο αὐτῇ εἰς ἐχθρούς. ΓΙΜΕΛ. Μετῳκίσθη (·) Ἰουδαία ἀπὸ ταπεινώσεως αὐτῆς, καὶ ἀπὸ πλήθους δουλείας αὐτῆς· ἐκάθισεν ἐν ἔθνεσι, οὐχ εὗρεν ἀνάπαυσιν. πάντες οἱ καταδιώκοντες αὐτῆς, κατέλαβον αὐτὴν ἀναμέσον τῶν (β) θλιβόντων.

(a) LAMENTATIONES HIEREMIÆ.

CAP. I.

ET factū eſt, poſtquàm in captivitatem redactus eſt Iſrael, & Hieruſalem deſerta eſt; ſedit Hieremias flens : & lamentatus eſt lamentationem hanc ſuper Hieruſalē, & dixit; ALEPH. Quomodò ſedit ſola civitas, quæ repleta fuit populis? facta eſt quaſi vidua, plena in gentibus: princeps in provinciis facta eſt in tributū. 1 *BETH. Plorans ploravit in nocte,* 2 *& lachrymæ ejꝰ in maxillis ejꝰ: & non eſt qui conſoletur eam, ex omnibꝰ diligentibꝰ eā: omnes amici ejꝰ ſpreverunt eā: facti ſunt ei in inimicos.* 3 *GIMEL. Migravit Judæa propter humiliationē ſuam, & propter multitudinē ſervitutis ſuæ: ſedit in gentibus, non invenit requiem : omnes perſequutores ejus apprehenderunt eā in medio tribulantium.*

MS.A. (*) ΘΡΗΝΟΙ. (α) ἐδάκρυσεν (·) ἡ Ἰουδαία (β) θλιβόντων αὐτήν.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

1 אֲמַר יִרְמְיָהוּ נְבִיָּא וְכַהֲנָא רַבָּא אֵיכְדֵין יִתְגְּזַר עַל יְרוּשְׁלֶם וְעַל עַמָּהָא לְאִתְדָּנָא בִּתְרוּכִין
וּלְמִסְפַּד עֲלֵיהוֹן אֵיכָה הֵיכְמָה דְּאִתְדָּנוּ אָדָם וְחַוָּה דְּאִתְתָּרְכוּ מִגִּנְּתָא דְעֵדֶן וְאַסְפֵּיד מָרֵי
עָלְמָא עֲלֵיהוֹן אֵיכָה עֲנַת מִדַּת דִּינָא וְכֵן אֲמַרַת עַל סְגִיאוּת חוֹבָאָה אִשְׁתְּדוּר דִּי בְגַוָּהָא
וּבְגִין כֵּן תְּהֵי יָתְבָה בִּלְחוֹדָהָא כִּגְבַר דִּמְכַתַּשׁ סְגִירוּ עַל בִּסְרֵיהּ דִּי בִלְחוֹדֵיהּ יָתֵיב
וְקַרְתָּא הֲוַת מַלְיָא אוּכְלוּסִין וְעַמְמִין סַגִּיאִין אִתְרוֹקְנַת מִנְּהוֹן וַהֲוַת דַּמְיָא לְאַרְמַלְתָּא
וְדִי מִתְרַבְרְבָא בְעַמְמַיָּא וְשַׁלִּיטַיָּא בְּאַפַּרְכַיָּא וַהֲווֹ מַסְּקִין לָהּ מִסִּין הֲדָרַת לְמֶהֱוֵי מַכִּיכָא
2 וּלְמִתַּן כְּרַגָּא לְהוֹן בָּתַר דְּנָא׃ כַּד שְׁלַח מֹשֶׁה נְבִיָּא אִזְגַּדִּין לְאַלָּאָה יַת אַרְעָא וְתָבוּ
אִזְגַּדַּיָּא וְאַפִּיקוּ שׁוּם בִּישׁ עַל אַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל [וְהַהִיא לֵילְיָא תְּשַׁע יוֹמִין בְּאָב הֲוָה] וְכַד
שְׁמַעוּ עַמָּא בֵּית יִשְׂרָאֵל יַת בְּשׂוֹרְתָא בִישָׁא הָדָא דְאִתְבַּשַּׂרוּ עַל אַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל נְטַלוּ
עַמָּא יַת קָלְהוֹן וּבְכוּ בְּלֵילְיָא הַהוּא מִן יַד תְּקֵיף רוּגְזָא דַיְיָ בְּהוֹן וּגְזַר לְמֶהֱוֵי בָכָן בְּלֵילְיָא
הָדָא לְדָרֵיהוֹן עַל חוּרְבַּן בֵּית מוּקְדְּשָׁא וּכְדוּ אִתְאֲמַר בִּנְבוּאָה לְיִרְמְיָהוּ כַּהֲנָא רַבָּא
לְמֶהֱוֵי חֲרִיבָא יְרוּשְׁלֶם עַל יְדוֹי דִּנְבוּכַדְנֶצַּר רַשִׁיעָא אִין לָא תְתִיבִין בִּתְיוּבְתָּא מִן יַד עָאל
וְאוֹכַח יַת עַמָּא בֵּית יִשְׂרָאֵל וְסָרִיבוּ לְקַבָּלָא בְמֵימְרֵיהּ בְּכֵן עַל נְבוּכַדְנֶצַּר רַשִׁיעָא וְצַדְיָא
יַת יְרוּשְׁלֶם וּבֵית מַקְדְּשָׁא אוֹקִיד בְּנוּרָא בִּתְשַׁע יוֹמִין בְּיַרְחָא דְאָב וּבֵיהּ בָּכְיָא כְּנִשְׁתָּא
דְיִשְׂרָאֵל בְּכוּתָא וְדִמְעֲהָא וְלֵיג עַל לֵיסְתָהָא וְלֵית דִּי יְמַלֵּל תַּנְחוּמִין עַל לִבָּהָא מִן כָּל
טַעֲוָתָא דִּי רְחִמְתָּא לְמֵיזַל בַּתְרֵיהוֹן וּבְגִין כֵּן כָּל חַבְרָהָא אַרְשִׁיעוּ בָהּ אִתְהַפִּיכוּ לְמֶהֱוֵי
3 לָהּ לְבַעֲלֵי דְבָבִין׃ אֲזַלוּ בֵּית יְהוּדָה בְּגָלוּתָא עַל דַּהֲווֹ מְעַנִּין יַתְמִין וְאַרְמְלָן וְעַל
סְגִיאוּת פּוּלְחָנָא דַּהֲווֹ מְפַלְּחִין בַּאֲחוּהוֹן בְּנֵי יִשְׂרָאֵל דְּאִזְדַּבְּנוּ לְהוֹן לָא קְרוֹ חֵירוּתָא
לְעַבְדֵיהוֹן וְאַמְהָתְהוֹן דַּהֲווֹ מִזַּרְעִית יִשְׂרָאֵל וּבְגִין כֵּן אַף אִנּוּן אִתְמְסַרוּ בְּיַד עַמְמַיָּא
וּכְנִשְׁתָּא דְבֵית יְהוּדָה יָתְבָא בְגוֹ עַמְמַיָּא וְלָא אַשְׁכְּחַת נְיָחָא מִפּוּלְחָנָא קַשְׁיָא דְשַׁעְבִּידוּ
יָתָהּ וְכָל דַּהֲוָה רָדֵיף יָתָהּ אַדְבִּיקוּ יָתָהּ כַּד הִיא מִתְחַבְּאָה בֵּין תְּחוּמַיָּא וְאָעִיקוּ לָהּ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAPUT I.

DIxit Jeremias Propheta & Sacerdos magnus: ALEPH. Quomodo 1 decretum eſt ſuper Jeruſalem & ſuper populum ejus ut damnaretur exiliis, & ut fieret planctus ſuper eis, איכה, i. Quomodo? quemadmodum judicati ſunt Adam & Eva qui ejecti ſunt de paradiſo voluptatis & lamentatus eſt dominator ſeculi ſuper eis, איכה i. Quomodo? Reſpondit menſura judicii, & ſic ait: Propter multitudinem peccatorum ejus, & conjurationem, quæ ſunt in medio ejus, ideò habitabit ſola, ſicut vir in cujus carne eſt plaga lepræ qui ſolus habitat. Et civitas quæ erat plena turbis & populis multis, evacuata eſt ab eis, & facta eſt ſimilis viduæ : & quæ erat magnifica inter populos, & dominabatur provinciis, qui reddebant ei tributa, reverſa eſt ut ſit depreſſa, dètque eis tributum poſthac. BETH. Quando miſit 2 Moſes Propheta nuntios ad explorandam terram, reverſi ſunt nuntii, & eduxerunt nomen peſſimum de terra Iſrael, *atque ipſa nox erat nona dierum Ab*: & quando audierunt populus domus Iſrael nuntium hoc peſſimum quod nuntiatum eſt eis de terra Iſrael, levavit populus vocem ſuam, & flevit in nocte illa. Illicò iratus eſt furor Domini in eos, & decrevit ut plangerent in nocte illa in generationibus ſuis propter devaſtationem domus ſanctuarii: & quando dictum fuit in prophetia Jeremiæ Sacerdoti magno, quod deſtruenda eſſet Jeruſalem per manum Nabuchodonoſor impii, ſi non converterentur ad pœnitentiam; confeſtim perrexit & increpavit populum Iſrael, & noluerunt ſuſcipere verbum ejus. Tunc venit Nabuchodonoſor impius & deſtruxit Jeruſalem, & domum ſanctuarii ſuccendit igne in nona die menſis Auguſti: & in ipſo [*tempore*] flebat cœtus Iſrael fletu, & lachrymæ ejus decurrebant per maxillas ejus: non erat qui loqueretur conſolationes ad cor ejus ex omnibꝰ idolis quæ amaverat ſequi, et ideò omnes ſocii ejꝰ impiè egerunt in eam, & converſi ſunt ut eſſent ei inimici. GHIMEL. Abierunt 3 viri domꝰ Juda in tranſmigrationem, pro eo ꝙ affligebant pupillos & viduas : & ob multitudinē ſervitutis ad quā adigebant fratres ſuos filios Iſrael qui venditi fuerant eis, & non prædicaverunt libertatē ſervis ſuis & ancillis ſuis qui erant de cognatione Iſrael: et ideò traditi ſunt in manū populorū, & cœtꝰ domꝰ Juda habitavit in medio populorū, et non invenit requiē propter ſervitutē durā cui ſubjecerunt eam: et omnes qui perſequebantur eam apprehenderunt eam cùm ſe occultaret inter terminos, et ad anguſtiam adegerūt eā.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܢܘ ܥܡܐ ܕܫܒܐ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ . ܒܫܢܬ ܫܒܥ ܕܡܠܟܘܬܗ .܆ ܝܗܘܕܝܐ ܬܠܬܐ 28
ܐܠܦܝܢ ܘܥܣܪܝܢ ܘܬܠܬܐ. * ܘܒܫܢܬ ܬܡܢܥܣܪܐ ܕܡܠܟܘܬܗ ܕܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ 29
ܕܒܒܠ .܆ ܫܒܐ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ . ܢܦܫܬܐ ܬܡܢܡܐܐ ܘܬܠܬܝܢ ܘܬܪܬܝܢ. * ܘܒܫܢܬ ܥܣܪܝܢ 30
ܘܬܠܬ ܫܢܝܢ ܕܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ .܆ ܫܒܐ ܢܒܘܙܪܕܢ ܪܒ ܚܝܠܐ .܆ ܝܗܘܕܝܐ ܢܦܫܬܐ
ܫܒܥܡܐܐ ܘܐܪܒܥܝܢ ܘܚܡܫ. ܘܟܠܗܝܢ ܢܦܫܬܐ ܐܪܒܥܐ ܐܠܦܝܢ ܘܫܬܡܐܐ. * ܘܒܫܢܬ 31
ܬܠܬܝܢ ܘܫܒܥ ܠܫܒܝܬܗ ܕܝܘܝܟܝܢ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ .܆ ܒܝܪܚܐ ܕܬܪܥܣܪ ܒܥܣܪܝܢ
ܘܚܡܫܐ ܒܗ ܒܝܪܚܐ .܆ ܐܪܝܡ ܐܘܝܠ ܡܪܘܕܟ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܒܫܢܬܐ ܕܡܠܟܘܬܗ .܆ ܪܫܗ 32
ܕܝܘܝܟܝܢ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܐܦܩܗ ܡܢ ܒܝܬ ܐܣܝܪܐ. ܘܡܠܠ ܥܡܗ ܛܒܬܐ. ܘܐܪܡܝ
ܟܘܪܣܝܗ ܠܥܠ ܡܢ ܟܘܪܣܘܬܐ ܕܡܠܟܐ ܕܐܝܬ ܥܡܗ ܒܒܒܠ. * ܘܫܢܝ ܠܒܘܫܐ 33
ܕܐܣܝܪܘܬܗ. ܘܐܟܠ ܠܚܡܐ ܩܕܡܘܗܝ ܐܡܝܢܐܝܬ ܟܠ ܝܘܡܝ ܚܝܘܗܝ. * ܘܡܫܘܚܬܗ ܢܦܩܐ 34
ܗܘܬ ܡܢ ܠܘܬ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ .܆ ܐܡܝܢܐܝܬ ܒܟܠܝܘܡ .܆ ܥܕܡܐ ܠܝܘܡܐ ܕܡܝܬ. ܒܟܠܗܘܢ
ܝܘܡܝ ܚܝܘܗܝ.

28 Hic eſt populus quem captivum duxit Nebuchadnoſar rex Babylonis anno ſeptimo regni ſui, Judæorum tria millia viginti tres. 29 Anno decimo octavo regni Nebuchadnoſaris regis Babyloniæ, captivas duxit è Jeruſalem animas octingentas triginta duas. 30 Anno demum vigeſimo tertio Nebuchadnoſaris regis Babyloniæ, captivas duxit Nebuzardan princeps ſatellitum Judæorum animas ſeptingentas quadraginta quinque: omnium animarum *ſumma*, quater mille ſexcentæ. 31 Anno trigeſimo ſeptimo à captivitate Jojacini regis Judæ, menſe duodecimo, vigeſimâ quintâ ejuſdem menſis; exaltavit Ulmerodach rex Babylonis anno regni ſui *primo*, caput Jojacini regis Judæ. 32 Eductum enim è carcere humanis excepit verbis, & collocavit ſolium ejus ſupra ſolia regum qui ſecum erant in Babylone: 33 Et mutatis veſtibus vinculorum ejus, panem comedebat ſemper coram eo cunctis diebus vitæ ſuæ: 34 Et demenſum ejus egrediebatur à rege Babylonis ſingulis ſemper diebus, ad uſque diem obitûs ejus, cunctis diebus vitæ ipſius.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

27 *وضربهم ملك بابل في دبلاثا بارض حماة [MS. Ox. وهذا الشعب الذي سبي بختنصر ملك بابل *وفي 28
السنة السابعة من ملكه سبي من اليهود ثلثة الالف وثلثة عشرين *وفي سنة ثمان عشر من ملك 29
بختنصر ملك بابل *سبي من اورسليم ثمان ماية واثنين وثلثين نفسا *وفي سنة ثلثة وعشرين من 30
ملك بختنصر ملك بابل سبي نبوزردان صاحب الشرطة سبع ماية وخمسة واربعين نفسا من
اليهود *فجميع من سبي اربعة الف وستماية *وكان في السنة السابعة والثلثين *اذ سبي يوافيم ملك 31
يهوذا في الشهر الثاني عشر في الرابع والعشرين من الشهر *اخذ اوايل الماروداخ ملك بابل في
السنة التي ملك فيها براس يوافيم ملك يهوذا *واخرجه من البيت الذي احتفظ فيه *وتكلم 32
معه بالخير *واعطي كرسيه فوق كراسي الملوك الذين معه في بابل *وغير حلة حبسه * 33
واكل خبزا كل حين لوجهه *جميع الايام التي عاشها *ورتب له قوت اعطي له كل حين 34
من عند ملك بابل من ايام الي ايام *الي اليوم الذي مات فيه *

27 *Et percuſſit eos rex Babelis in Deblatha in terra Hamath.* 28 [MS. Ox. *Hic eſt populus quem deportavit Bochtonaſſar rex Babelis: anno ſeptimo regni ſui, Judæorum tria millia viginti tres captivos abduxit.* 29 *Anno decimo octavo regni Bochtonaſſaris regis Babelis captivas duxit è Jeruſalē animas octingentas triginta duas.* 30 *Anno viceſimo tertio regni Bochtonaſſaris regis Babelis captivas duxit Nebuzardan dux militiæ Judeorum animas ſeptingentas quadraginta quinq; : Omnes animas quas deportavit quatuor mille ſexcentæ ſunt.*] 31 *Deinde factum eſt anno trigeſimo ſeptimo, poſtquam captivus abductus eſſet Joacim rex Judæ; menſe duodecimo, vigeſimâ quartâ menſis; ut efferret Evajelmerodach rex Babelis, eodem anno quo inauguratus eſt regno, caput Joacimi regis Judæ.* 32 *Educens enim illum è domo in qua aſſervabatur, allocutus eſt eum bona verba, poſuitque thronum ejus ſuper thronos regum qui ſecum erant in Babele:* 33 *Mutavit ſtolam carceris ejus, comedebatque ſemper panem coram ipſo, cunctis diebus quos vixit:* 34 *Et diſpoſitum fuit illi demenſum quod jugiter dabatur ei à rege Babelis de die in diem, uſque ad eum diem quo mortuus eſt.*

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܘܠܝܬܐ ܕܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ *   * ܩܝܢܬܐ * ܐ *

1 * ܐ * ܐܝܟܢܐ ܝܬܒܐ ܒܠܚܘܕܝܗ ܡܕܝܢܬܐ ܣܓܝܐܬ ܥܡܐ. ܗܘܬ ܐܝܟ ܐܪܡܠܬܐ
ܣܓܝܐܬ ܒܥܡܡܐ. ܘܫܠܝܛܬ ܒܡܕܝܢܬܐ ܗܘܬ ܠܡܟܣܐ. * ܒ * ܡܒܟܐ ܒܟܝܐ ܒܠܠܝܐ. ܘܕܡܥܝܗ 2
ܥܠ ܦܟܝܗ. ܘܠܝܬ ܠܗ ܡܒܝܐܢܐ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܪܚܡܝܗ. ܟܠܗܘܢ ܪܚܡܝܗ
ܕܓܠܘ ܒܗ. ܘܗܘܘ ܠܗ ܠܒܥܠܕܒܒܐ. * ܓ * ܐܬܓܠܝܬ ܝܗܘܕܐ ܡܢ ܫܥܒܕܐ ܡܢ 3
ܣܓܝܐܘܬ ܦܘܠܚܢܐ. ܗܝ ܝܬܒܐ ܒܝܬ ܥܡܡܐ .܆ ܘܠܐ ܐܫܟܚܬ ܠܗ ܢܝܚܐ. ܟܠܗܘܢ
ܪܕܘܦܝܗ ܐܕܪܟܘܗ ܒܝܬ ܐܘܠܨܢܐ.

LAMENTATIONES JEREMIÆ Prophetæ.

CAP. I.

1 Quomodo ſedet ſolitaria civitas illa frequens populo? facta eſt ſimilis viduæ affluens populis? caput urbium facta eſt tributaria? 2 Plorat noctu, & lachrymæ ejus diffluunt ſuper genas ejus, nullo eam conſolante ex omnibus amatoribus ejus? omnes amici ejus fefellerunt eam, & verſi ſunt ei in hoſtes? 3 Migravit Judæa propter ſubjectionem, propter nimiam ſervitutem: ipſa inter gentes habitavit, nec invenit ſibi quietem? omnes perſecutores ejus apprehenderunt eam inter anguſtias?

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بدو المراثي *   * الفصل الاول *   * الاصحاح الخامس والثلاثون *   وكان من
بعد ان سبي اسرائيل وخربت ايروسليم *جلس ارمياء باكيا وناح هذا النوح على ايروسليم وقال *
1 *كيف جلست المدينة وحدها المملوة الشعوب *صارت مثل ارملة المملوة بالامم *الريسه
2 في الكور صارت للجزية *ادرفت الدموع باكيه في الليل *دموعها على خديها *وليس لها
3 من يعزيها من جميع محبيها *جميع الذين يحبونها غدروا بها *وصاروا لها اعداء *جلت
اليهودية من ذلها من كثرة عبوديتها *جلست في الامم ولم تجد نياحا *جميع الذين
يطردونها ادركوها وسط محزنيها *

INITIUM LAMENTATIONUM

CAPUT PRIMUM.

Textus trigeſimus quintus.

FActum eſt autem poſtquā captivus abductus eſſet Iſrael, et Jeruſalem deſtructa; ut ſederet Jeremia plorans, et Jeroſolymā hac lamentatione lamentaretur, ac diceret;

1 *Quomodo manſit ſolitaria urbs illa populis affluens? facta eſt quaſi vidua quæ plena erat gentibus? præcipua inter provincias facta eſt ſub tributū?* 2 *Effundit lachrymas plorans in nocte, lachrymæ ej⁹ ſuper utramque genam ejus, nec eſt qui conſoletur eā ex tot amicis ejus: omnes qui amabant eam, deceperunt eam, & facti ſunt ei inimici?* 3 *Migravit Judæa propter depreſſionem ſuam ex nimia ſervitute ſua: ſedet inter gentes, nec invenit requiem: omnes qui perſequuntur eam, aſſecuti ſunt eam in medio affligentium eam.*

ejus portæ omnes ,ſolemnitatem *venientibus non à* ,*lugentes* Sijon Viæ
4 דַּרְכֵי צִיּוֹן אֲבֵלוֹת מִבְּלִי בָּאֵי מוֹעֵד כָּל־שְׁעָרֶיהָ
.*ei* amaritudo *ipſa* &,afflictæ ejꝰ virgines: ſuſpirantes ejꝰ ſacerdotes, deſolatæ
שׁוֹמֵמִין כֹּהֲנֶיהָ נֶאֱנָחִים בְּתוּלֹתֶיהָ נוּגוֹת וְהִיא מַר־לָהּ׃
Dominus quia ,*fuere ſecuri* ejus inimici ,capite in ejus hoſtes Fuerunt
5 הָיוּ צָרֶיהָ לְרֹאשׁ אֹיְבֶיהָ שָׁלוּ כִּי־יְהוָה
abierunt ejus parvuli : ejus prævaricationũ multitudinẽ *ſuper* eã *anxiavit*
הוֹגָהּ עַל־רֹב־פְּשָׁעֶיהָ עוֹלָלֶיהָ הָלְכוּ
:ejꝰ decor omnis Sijon filia à eſt egreſſus Et .*anguſtiatoris facies ad* captivitatẽ
6 שְׁבִי לִפְנֵי־צָר׃ וַיֵּצֵא מִן־בַּת־צִיּוֹן כָּל־הֲדָרָהּ
abierunt & ,*paſcuum* invenerunt non cervi veluti ejꝰ principes fuerunt
הָיוּ שָׂרֶיהָ כְּאַיָּלִים לֹא־מָצְאוּ מִרְעֶה וַיֵּלְכוּ
dierũ Jeruſalaim eſt Recordata .perſecutorẽ ante fortitudine abſque
7 בְלֹא־כֹחַ לִפְנֵי רוֹדֵף׃ זָכְרָה יְרוּשָׁלַםִ יְמֵי
fuerunt quæ , ſuorũ deſiderabiliũ omniũ ,ſuarũ *rebellionum* & ,ſuæ *afflictionis*
עָנְיָהּ וּמְרוּדֶיהָ כֹּל מַחֲמֻדֶיהָ אֲשֶׁר הָיוּ
: ei auxiliator non &,hoſtis manu in ejꝰ *populum cadendo in*,*quondam* diebꝰ à
מִימֵי קֶדֶם בִּנְפֹל עַמָּהּ בְּיַד־צָר וְאֵין עוֹזֵר לָהּ
,Jeruſalaim peccavit Peccatum.ejꝰ ſabbatha *ſuper riſerunt* ,hoſtes eã viderũt
8 רָאוּהָ צָרִים שָׂחֲקוּ עַל־מִשְׁבַּתֶּהָ׃ חֵטְא חָטְאָה יְרוּשָׁלַםִ
viderũt quia,eã *vilifecerunt* eã *glorificantes* omnes :fuit *comotionem* in propterea
עַל־כֵּן לְנִידָה הָיָתָה כָּל־מְכַבְּדֶיהָ הִזִּילוּהָ כִּי־רָאוּ
ejꝰ *Immunditia* .retrorſum eſt converſa &,ſuſpiravit ipſa etiam:ejꝰ *nuditatẽ*
9 עֶרְוָתָהּ גַּם־הִיא נֶאֶנְחָה וַתָּשָׁב אָחוֹר׃ טֻמְאָתָהּ
non ,*mirabilibus* deſcendit & ,ſui noviſſimi eſt recordata non ,ejꝰ fimbriis in
בְּשׁוּלֶיהָ לֹא זָכְרָה אַחֲרִיתָהּ וַתֵּרֶד פְּלָאִים אֵין
.*inimicus* magnificavit quoniã,meã afflictionẽ Domine vide : ei conſolator
מְנַחֵם לָהּ רְאֵה יְהוָה אֶת־עָנְיִי כִּי הִגְדִּיל אוֹיֵב׃
vidit quia ; ejꝰ deſiderabilia omnia ſuper *oppreſſor* extendit ſuã Manum
10 יָדוֹ פָּרַשׂ צָר עַל כָּל־מַחֲמַדֶּיהָ כִּי־רָאֲתָה
intrabunt non ,præcepiſti quo ,ejus ſanctuarium ſunt ingreſſæ , gentes
גוֹיִם בָּאוּ מִקְדָּשָׁהּ אֲשֶׁר צִוִּיתָה לֹא־יָבֹאוּ
: panem quærentes , ſuſpirantes ejus populus Omnis .*tibi* Eccleſiam in
11 בַקָּהָל לָךְ׃ כָּל־עַמָּהּ נֶאֱנָחִים מְבַקְּשִׁים לֶחֶם
,Domine vide : animam *reducendũ ad* , *cibo in* ſua deſiderabilia dederunt
נָתְנוּ מַחֲמוֹדֵּיהֶם בְּאֹכֶל לְהָשִׁיב נָפֶשׁ רְאֵה יְהוָה
tranſeuntes omnes , *vos ad Haud* .vilis fui quia , aſpice &
12 וְהַבִּיטָה כִּי הָיִיתִי זוֹלֵלָה׃ לוֹא אֲלֵיכֶם כָּל־עֹבְרֵי
eſt factus qui ,meꝰ dolor ſicut dolor ſit an ,videte &,aſpicite ,viam
דֶרֶךְ הַבִּיטוּ וּרְאוּ אִם־יֵשׁ מַכְאוֹב כְּמַכְאֹבִי אֲשֶׁר עוֹלַל
excelſo De .ſui *naſi* iræ die in Dominus affecit *mæſtitia* quoniam :mihi
13 לִי אֲשֶׁר הוֹגָה יְהוָה בְּיוֹם חֲרוֹן אַפּוֹ׃ מִמָּרוֹם
,meis pedibus rete expandit : *ei* eſt dominatus &,mea oſſa in ignem miſit
שָׁלַח־אֵשׁ בְּעַצְמֹתַי וַיִּרְדֶּנָּה פָּרַשׂ רֶשֶׁת לְרַגְלַי
.mœrentem die tota ,deſolatam me *dedit* : retrorſum me fecit redire
הֱשִׁיבַנִי אָחוֹר נְתָנַנִי שֹׁמֵמָה כָּל־הַיּוֹם דָּוָה׃
,ſunt perplexæ ejus *manu in* ,mearum *prævaricationum* jugum eſt Ligatum
14 נִשְׂקַד עֹל פְּשָׁעַי בְּיָדוֹ יִשְׂתָּרְגוּ
me dedit : *meam vim* fecit *corruere* ; meum collum ſuper aſcenderunt
עָלוּ עַל־צַוָּארִי הִכְשִׁיל כֹּחִי נְתָנַנִי
.ſurgere potero non ,manus in Dominus
אֲדֹנָי בִּידֵי לֹא־אוּכַל קוּם׃

Verſio VULG. LAT.

4 *Daleth.* Viæ Sion lugent, eò quòd
non ſint qui veniant ad ſolennitatem
: omnes portæ ejus deſtructæ:
ſacerdotes ejꝰ gementes: virgines
ejꝰ ſqualidæ, & ipſa oppreſſa
5 amaritudine. *He.* Facti ſunt
hoſtes ejus in capite, inimici ejꝰ
locupletati ſunt : quia Dominꝰ
locutꝰ eſt ſuper eam propter multitudinem
iniquitatum ejꝰ : parvuli
ejꝰ ducti ſunt in captivitatẽ
6 ante faciem tribulantis. *Vau.* Et
egreſſꝰ eſt à filia Sion omnis decor
ejus : facti ſunt principes ejꝰ
velut arietes non invenientes paſcua
: & abierunt abſque fortitudine
ante faciem ſubſequentis.
7 *Zain.* Recordata eſt Jeruſalem
dierum afflictionis ſuæ, & prævaricationis
omnium deſiderabilium
ſuorum, quæ habuerat à diebus
antiquis, cùm caderet populus
ejus in manu hoſtili, & non
eſſet auxiliator : viderunt eam
hoſtes, & deriſerunt ſabbata ejꝰ.
8 *Heth.* Peccatum peccavit Jeruſalem,
propterea inſtabilis facta
eſt : omnes, qui glorificabant eã,
ſpreverunt illam, quia viderunt
ignominiam ejus : ipſa autem
gemens converſa eſt retrorſùm.
9 *Theth.* Sordes ejus in pedibꝰ ejus,
nec recordàta eſt finis ſui :
depoſita eſt vehementer, non habens
conſolatorem : vide, Domine,
afflictionem meam, quoniam
10 erectꝰ eſt inimicꝰ. *Jod.* Manum
ſuam miſit hoſtis ad omnia deſiderabilia
ejus : quia vidit Gentes
ingreſſas Sanctuarium ſuum,
de quibꝰ præceperas ne intrarent
11 in eccleſiam tuam. *Caph.* Omnis
populꝰ ejus gemens, &
quærens panem : dederunt pretioſa
quæque pro cibo ad refocillandã
animam : vide, Domine,
& conſidera, quoniam facta ſum
12 vilis. *Lamed.* O vos omnes, qui
tranſitis per viam, attendite, &
videte ſi eſt dolor ſicut dolor
meus : quoniam vindemiavit me
ut locutꝰ eſt Dominꝰ in die iræ
13 furoris ſui. *Mem.* De excelſo
miſit ignem in oſſibꝰ meis, et erudivit
me : expandit rete pedibꝰ
meis, convertit me retrorſùm
: poſuit me deſolatam,
totâ die mœrore confectam.
14 *Nun.* Vigilavit jugum iniquitatum
mearum : in manu ejꝰ convolutæ ſunt, et impoſitæ collo meo : infirmata eſt virtꝰ
mea : dedit me Dominꝰ in manu, de qua non potero ſurgere.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

4 ΔΑ'ΛΕΘ. Ὁδοὶ Σιὼν πενθοῦσι παρὰ τὸ
μὴ εἶναι ἐρχομένους ἐν ἑορτῇ· πᾶσαι αἱ πύλαι
αὐτῆς ἠφανισμέναι, οἱ ἱερεῖς αὐτῆς ἀναστενάζουσιν,
αἱ παρθένοι αὐτῆς ἀγόμεναι,
ϗ αὐτὴ πικραινομένη ἐν (γ) ἑαυτῇ. Ἤ.
5 Ἐγένοντο οἱ θλίβοντες αὐτὴν εἰς κεφαλὴν,
ϗ οἱ ἐχθροὶ αὐτῆς εὐθηνοῦσιν, ὅτι κύριος ἐταπείνωσεν
αὐτὴν ἐπὶ τὸ πλῆθος τῶν ἀσεβειῶν
αὐτῆς. τὰ νήπια αὐτῆς ἐπορεύθησαν ἐν
αἰχμαλωσίᾳ κατὰ πρόσωπον θλίβοντος.
6 ΟΥ'ΑΥ. Καὶ (δ) ἐξήρθη ἐκ θυγατρὸς Σιὼν
πᾶσα ἡ εὐπρέπεια αὐτῆς. ἐγένοντο οἱ
ἄρχοντες αὐτῆς ὡς κριοὶ (ε) οὐχ εὑρίσκοντες
νομὴν, ϗ ἐπορεύοντο ἐν οὐκ ἰσχύϊ (ζ) κατὰ
7 πρόσωπον διώκοντος. ΖΑΙ'Ν. Ἐμνήσθη
Ἱερουσαλὴμ ἡμερῶν ταπεινώσεως αὐτῆς, ϗ
ἀπωσμῶν αὐτῆς· πάντα τὰ ἐπιθυμήματα
αὐτῆς ὅσα ἦν ἐξ ἡμερῶν ἀρχαίων, ἐν τῷ πεσεῖν
τὸν λαὸν αὐτῆς εἰς χεῖρας θλίβοντος,
ϗ οὐκ ἦν ὁ βοηθῶν αὐτῇ. ἰδόντες οἱ ἐχθροὶ
αὐτῆς, ἐγέλασαν ἐπὶ (η) κατοικεσίᾳ αὐτῆς.
8 ἭΘ. Ἁμαρτίαν ἥμαρτεν Ἱερουσαλὴμ, διὰ τοῦτο
εἰς σάλον ἐγένετο. πάντες οἱ δοξάζοντες
αὐτὴν, ἐταπείνωσαν αὐτήν· (θ) εἶδον
γὰρ τὴν ἀσχημοσύνην αὐτῆς, καί γε αὐτὴ στενάζουσα
9 ϗ ἀπεστράφη (ι) ὀπίσω. ΤΗ'Θ. Ἀκαθαρσία
αὐτῆς (κ) πρὸ ποδῶν αὐτῆς· οὐκ ἐμνήσθη
(λ) ἔσχατα αὐτῆς, ϗ κατεβίβασεν ὑπέρογκα·
οὐκ ἔστιν ὁ παρακαλῶν αὐτήν. ἴδε
κύριε τὴν ταπείνωσίν μου, ὅτι ἐμεγαλύνθη ὁ
10 ἐχθρός. ἸΩ'Δ. Χεῖρα αὐτοῦ ἐξεπέτασεν
θλίβων ἐπὶ πάντα τὰ ἐπιθυμήματα αὐτῆς·
(μ) εἶδε γὰρ ἔθνη εἰσελθόντα εἰς τὸ ἁγίασμα
αὐτῆς, ἃ ἐνετείλω μὴ (·) εἰσελθεῖν αὐτὰ
11 εἰς ἐκκλησίαν σου. ΧΑ'Φ. Πᾶς ὁ λαὸς
αὐτῆς καταστενάζοντες, ζητοῦντες ἄρτον· ἔδωκαν
τὰ ἐπιθυμήματα αὐτῆς ἐν βρώσει, τοῦ
ἐπιστρέψαι ψυχήν. (°) ἴδε κύριε ϗ ἐπίβλεψον,
12 ὅτι (ν) ἐγενήθη ἠτιμωμένη. ΛΑ'ΜΕΔ. Οἱ
πρὸς ὑμᾶς, πάντες οἱ παραπορευόμενοι ὁδὸν,
ἐπιστρέψατε ϗ ἴδετε εἰ ἔστιν ἄλγος (ξ) κατὰ τὸ
ἄλγος μου, ὃ ἐγενήθη. φθεγξάμενος ἐν ἐμοὶ
ἐταπείνωσέ με κύριος ἐν ἡμέρᾳ ὀργῆς θυμοῦ
13 αὐτοῦ. ΜΗ'Μ. Ἐξ ὕψους αὐτοῦ ἀπέστειλε
πῦρ, ἐν τοῖς ὀστέοις μου κατήγαγεν αὐτό· διεπέτασε
δίκτυον τοῖς ποσί μου, ἀπέστρεψέ
με εἰς τὰ ὀπίσω· ἔδωκέ (ο) με ἠφανισμένην,
ὅλην τὴν ἡμέραν (π) ὀδυνωμένην. ΝΟ'ΥΝ.
14 Ἐγρηγορήθη ἐπὶ τὰ ἀσεβήματά μου, ἐν χερσί
μου συνεπλάκησαν. ἀνέβησαν ἐπὶ τὸν τράχηλόν
μου· ἠσθένησεν ἡ ἰσχύς μου· ὅτι ἔδωκε κύριος
ἐν χερσί μου ὀδύνας, οὐ δυνήσομαι στῆναι.

DALETH. Viæ Sion lugent, eò 4
quòd non ſint qui veniant ad ſolennitatẽ : omnes portæ ejus deſtructæ: Sacerdotes ejus gemunt:
virgines ejꝰ (b) abductæ: & ipſa
oppreſſa amaritudine in ſe. HE. 5
Facti ſunt tribulantes eam in (c)
caput: & inimici ejus locupletati
ſunt; quia Dominꝰ humiliavit eã
propter multitudinem impietatum
ejꝰ. Parvuli ejꝰ abierunt in captivitatem ante faciem tribulantis.
VAV. Et (d) ablatus eſt à filia 6
Sion omnis decor ejus. Facti ſunt
principes ejꝰ velut arietes non invenientes
paſcuã: & abibant abſque
fortitudine ante faciẽ perſequentis.
ZAIN. Recordata eſt 7
Hieruſalem dierum humiliationis
ſuæ, & rebellionũ ſuarũ, omniũ
deſiderabiliũ ſuorũ, quæ fuerunt
à diebus antiquis, cùm caderet
populꝰ ejus in manꝰ tribulantis, et
non eſſet, qui auxiliaretur ei. Vidẽtes
inimici ejꝰ riſerũt ſuper (e)
habitatione ejꝰ. HETH. Peccatũ 8
peccavit Hieruſalẽ : propterea in
fluctuationem facta eſt. Omnes
qui glorificabant eam, humiliaverunt
illã. Viderunt enim ignominiã
ejꝰ: atq; ipſa gemens, & converſa
eſt retrorſũ. TETH. Immunditia 9
ejus ante pedes ejus: nõ
eſt recordata noviſſimorũ ſuorũ,
& fecit ſe deſcendere immenſè :
non eſt qui conſoletur eam. Vide,
Domine, humiliationẽ meã ; quoniam
magnificatus eſt inimicus.
JOD. Manũ ſuã extendit tribulans 10
ad omnia deſiderabilia ejus:
vidit enim gentes ingreſſas in
Sanctuariũ ejus: quas præceperas
non intrare eas in eccleſiam tuã.
CHAPH. Omnis populus ejꝰ gementes, 11
quærentes panem : dederunt
deſiderabilia ejus in cibum
ad revocandã animã. Vide, Domine,
et cõſidera, quoniã (f) facta
eſt vilis. LAMED. Qui (g) ad 12
vos, omnes qui tranſitis per viã,
convertite vos, & videte, ſi eſt
dolor (h) juxta dolorem meũ, qui
factꝰ eſt. Loquutꝰ in me (i) humiliavit
me Dñs in die iræ furoris ſui.
MEM. De excelſo ſuo miſit ignẽ, 13
in oſſa mea deduxit eũ: expandit
rete pedibꝰ meis: convertit me retrorſũ:
dedit me deſolatam, totã
die mœrore confectã. NUN. Vigilavit 14
ſuper impietates meas :
(k) in manibus meis complicatæ
ſunt : aſcenderunt ſuper collum
meum. Infirmata eſt virtus mea:
quia dedit Dominus in manibus
meis dolores : non potero ſtare.

MS.A. (γ) αὐτῇ. (δ) ἐξῆλθεν (ε) μὴ εὑρίσκοντες (ζ) ἐνώπιον διώκοντος.
(η) μετοικεσίας (θ) ἰδόντες (ι) εἰς τὰ ὀπίσω. (κ) πρὸς (λ) ἐσχάτων (μ) ἴδον (·) εἰσελθεῖν εἰς ἐκκλησίαν (°) ἰδὲ ϗ (ν) ἐγενήθην (ξ)* ϗ τὸ (ο) με κύριος ἠφανισμένην, (π) ὀδυνωμένην.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 כל זמן דהוה ירושלם מתבניא סריבו ישראל למסק לירושלם לאתחזאה קדם יי תלת
זמנין בשתא ועל חוביהון דישראל אצטדיאת ירושלם ואתעבידו שבילי ציון אבלין
מדלית עאל בה בזמן מועדיא כל תרעהא צדין וכהנהא אנחין על די בטילו קורבניא
בתולתהא ספדן על די פסקו למפק בחמשא עסר יומין באב וביומא דכפוריא די הוא
בעסרא יומין בתשרי לחנגא בחנגין אף איהי מריר לבא לחדא : 5 הוו מעיקהא מתמנן
עלהא לרישין ובעלי דבבהא הוו יתבין בשלוה ארום יי תבר יתה על סגיאת מרודהא
רביהא אזלו בשביתא קדם מעיקהא : 6 ונפק מן כנשתא דציון כל זיוהא הוו רברבנהא
מסתחרן על מיכלא היכמא דמסחרן איליא במדברא ולא אשכחו אתר כשר
למרעהון ואזלו בחשות כוחא ולא הוה להון חילא למערק לאשתזבא קדם רדיף :
7 הות דכירא ירושלם יומין קדמאין די הות מדורה בכרכיא ובפציחין תקיפין ומרדה
ושלטה בכל עלמא וכל רגוגהא דהוו לה מן יומין קדמאין ועל חובא נפל עמה בידוי
דנבוכדנצר רשיעא ואעיק להון ולית דסיע לה חזוהא מעיקיא דאזלא בשביתא חיכו
8 על טובהא די פסק מבינהא : חובא רבא חבת ירושלם בגין כן בטלטול הות כל
עממיא דהוו מיקרין לה מלקדמין נהגו בה זילותא ארום חזו בדקהא ברם היא
9 מתאנחא ותיעת לאחורא : סואבות דם ריחוקהא בשפולהא לא אדכיאת מנה ולא
תהרת על חובהא ולא דכירת מה דעתיד למיתי עלהא בסוף יומיא ונחתת ונפלת
והות פרישן ולית דמלל תנחומין לה חזי יי ותהי מסתכל ארום אתרברב עלי בעל
10 דבבא : ידיה אושיט נבוכדנצר רשיעא ושלף סיפא וקטע כל רגוגהא אף כנשתא
דישראל שריאת ליללא ארום חזת עממין נוכראין עלו לבית מוקדשה די פקדת על
11 ידוי דמשה נביאה על עמון ומואב דלא ידכון למעל בקהלא דילך : כל עמהא
דירושלם אניחן מכפנא ותבעין לחמא למיכל יהבו רגוגיהון בסעיד לחמא לקימא נפש
12 חזי יי ותהי מסתכל ארום הויתי נרגרניתא : אשבעית לכון כל דעברין באורחא זורו
הכא אסתכלו וחזו אין אית כיבא ככיבי דאסתקף לי דתבר יי יתי ביום תקוף רוגזיה :
13 מן שמיא שלח אשתא בכרכי תקיפין וכבש יתהון פרש מצדתא לרגלי ארתיעני קדל
14 בעלי דבבי יהבני למהוי צדיא כל יומא מרחקא וחלישא : אתיקר ניר מרודי
בידיה אשתבשו כשבשין דגופנא סלקו על צורי אתקל חילי מסר יי יתי בידי מן דלית
יכיל אנא למקם :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

DALETH. Omni tempore quo erat Jeruſalem ædificata, noluerunt filii Iſrael 4
aſcendere in Jeruſalem ut apparerent coram Dño tribꝰ vicibꝰ in anno :
& ꝓpter peccata Iſrael deſerta eſt Jeruſalem, & factæ ſunt viæ Sion lugentes,
eò quòd non ſit qui veniat in eam tempore feſtivitatum: omnes portæ ejꝰ
deſtructæ, & Sacerdotes ejꝰ gementes, pro eo quòd ceſſaverunt oblationes :
virgines ejꝰ plangentes, eò quòd deſierunt egredi in quinta decima die menſis
Auguſti, & in die propitiationis, quæ erat in decima die menſis Septembris
ad ducendos choros : ipſa quoque eſt amara corde valdè. HE. Fuerunt 5
hoſtes ejꝰ conſtituti ſup eam in principes, & inimici ejꝰ habitaverũt in tranquillitate:
quia Dñs confregit eam propter multitudinẽ tranſgreſſionũ ejꝰ :
parvuli ejꝰ iverunt in captivitatẽ corã tribulante. VAU. Et egreſſus eſt à 6
cœtu Sion omnis ſplendor ejꝰ : fuerunt principes ejꝰ diſcurrentes ad quærendum
cibũ, ſicut diſcurrunt cervi in deſerto, & non invenerunt locũ aptũ
paſcuis ſuis : & abierunt in infirmitate fortitudinis, & non fuit eis virtꝰ ad
fugiendũ ut liberarentur à perſequente. ZAIN. Recordata eſt Jeruſalẽ dierum 7
antiquorũ cùm habitatio ejꝰ eſſet in arcibꝰ et in villis fortiſſimis et prævaricaretur
et dominaretur in omni ſeculo, & omniũ deſiderabiliũ ſuorũ quæ
fuerũt ei à diebꝰ antiquis: & propter peccata ſua cecidit populꝰ ejꝰ in manũ
Nabuchodonoſor impii, qui tribulavit eos ; & non fuit qui adjuvaret eã. Viderunt
eam hoſtes cùm iret in captivitatẽ, & irriſerũt ſup bona ejꝰ quæ ceſſaverũt
de medio ejꝰ. CHETH. Peccatũ grande peccavit Jeruſalẽ: propterea 8
vaga facta eſt inter omnes populos; qui glorificabant eam ab initio, uſi ſunt
contemptu contra illã, quia viderunt ſciſſuras ejus : ipſa autẽ gemens &
converſa eſt retrorſũ. TETH. Immunditia ſanguinis menſtrui ejus in oris 9
veſtimenti ejus: non eſt mundata ab ea, neq; obſtupuit propter peccata ſua,
neque recordata eſt quod eventurũ eſſet ſup ipſam in fine dierũ. Et deſcendit,
& cecidit mirabiliter ; & non eſt qui loquatur ei conſolationes. Vide
Dñe & contemplare, quia prævaluit ſup me inimicus. JOD. Manũ ſuã extendit 10
Nabuchodonoſor impius, et evaginavit gladiũ, et ſuccidit omnia deſiderabilia
ejus: cœtus quoq; Iſrael cœpit ululare, quia vidit populos extraneos
ingredientes in domũ ſanctuarii ipſius, de quibus præcepiſti ꝑ manus
Moſis prophetæ ſup Ammon et Moab, quòd non eſſent digni ingredi in Eccleſiã
tuam. CAPH. Omnis populꝰ Jeruſalẽ gemunt propter famem, et quærunt 11
panẽ ad comedendũ: dederunt deſiderabilia ſua pro alimento panis ad
ſuſtentandũ animam. Vide Domine et conſidera quia facta ſum voratrix.
LAMED. Adjuro vos omnes tranſeuntes ꝑ viam, declinate huc, aſpicite et 12
videte ſi eſt dolor ſicut dolor meus, quoniã occaſionẽ quæſivit contra me, ut
confringeret me Dñs in die iræ furoris ſui. MEM. De cœlis miſit ignẽ in civitates 13
meas, et ſubjugavit eas; expandit rete pedibꝰ meis : vertere fecit me
dorſum coram inimicis meis: poſuit me ut ſim deſolata tota die abjecta et infirma.
NUN. Aggravatũ eſt jugũ prævaricationũ mearũ in manu ejus ; convolutæ 14
ſunt quaſi propagines vitis: aſcenderunt ſuper collum meum : corruit
virtus mea : tradidit me Dominus in manum de qua non potero ſurgere.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܕ * ܐܘܪܚܬܗ̇ ܕܨܗܝܘܢ ܐܒܝܠܢ ܡܢ ܕܠܐ ܐܬܝܢ ܠܥܐܕܐ܂ ܟܠܗܘܢ ܬܪܥܝܗ̇
ܚܪܒܢ܂ 4
ܘܟܘܡܪܝܗ̇ ܡܬܬܥܢܚܝܢ܂ ܘܒܬܘܠܬܗ̇ ܡܬܡܟܟܢ܂ ܘܗܝ ܡܪܝܪܐ ܠܗ̇܂ * ܗ * ܗܘܘ 5
ܠܡܐܟܝܢܘܗ̇ ܠܪܝܫܐ܂ ܘܒܥܠܕܒܒܝܗ̇ ܫܠܝܘ܂ ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܡܟܟܗ̇ ܥܠ ܣܘܓܐܐ
ܕܚܛܗܝܗ̇܂ ܘܛܠܝܗ̇ ܐܙܠܘ ܒܫܒܝܬܐ ܩܕܡ ܐܠܘܨܐ܂ * ܘ * ܘܢܦܩ ܡܢ ܒܪܬ ܨܗܝܘܢ 6
ܟܠܗ ܫܘܦܪܗ̇܂ ܗܘܘ ܪܘܪܒܢܝܗ̇ ܐܝܟ ܐܝܠܐ܂ ܕܠܐ ܡܫܟܚܝܢ ܡܪܥܝܬܐ܂ ܘܐܙܠܘ ܕܠܐ ܚܝܠܐ ܩܕܡ
ܪܕܘܦܐ܂ * ܙ * ܐܬܕܟܪܬ ܐܘܪܫܠܡ ܝܘܡܬܐ ܕܡܘܟܟܗ̇ ܘܕܡܪܕܘܬܗ̇܂ ܘܟܠܗܘܢ ܪܓܝܓܬܗ̇ 7
ܕܗܘܝ ܡܢ ܝܘܡܬܐ ܩܕܡܝܐ܂ ܟܕ ܢܦܠ ܥܡܗ̇ ܒܐܝܕ ܐܠܘܨܐ܂ ܘܠܝܬ ܠܗ̇ ܡܥܕܪܢܐ܂
ܚܙܐܘܗ̇ ܐܠܘܨܝܗ̇܂ ܘܓܚܟܘ ܥܠ ܬܒܪܗ̇܂ * ܚ * ܚܛܗܐ ܚܛܬ ܐܘܪܫܠܡ܂ ܡܛܠ 8
ܗܢܐ ܗܘܬ ܠܙܘܥܐ܂ ܟܠܗܘܢ ܡܝܩܪܢܝܗ̇ ܒܣܪܘܗ̇܂ ܡܛܠ ܕܚܙܘ ܨܥܪܗ̇܂ ܐܦ ܗܝ
ܐܬܬܢܚܬ ܘܗܦܟܬ ܠܒܣܬܪܗ̇܂ * ܛ * ܛܢܦܘܬܗ̇ ܒܫܘܦܘܠܝܗ̇܂ ܘܠܐ ܐܬܕܟܪܬ 9
ܚܪܬܗ̇܂ ܘܢܚܬܬ ܠܬܚܘܬܗ̇܂ ܘܠܝܬ ܠܗ̇ ܡܒܝܐܢܐ܂ ܚܙܝ ܡܪܝܐ ܡܘܟܟܝ ܕܐܬܪܘܪܒ
ܒܥܠܕܒܒܐ܂ * ܝ * ܐܝܕܗ ܦܪܣ ܐܠܘܨܐ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܪܓܝܓܬܗ̇܂ ܘܚܙܝܬ ܥܡܡܐ 10
ܕܥܠܘ ܠܡܩܕܫܗ̇܂ ܕܦܩܕܬ ܕܠܐ ܢܥܠܘܢ ܠܟܢܘܫܬܟ܂ * ܟ * ܟܠܗ ܥܡܐ ܡܬܬܢܚܝܢ 11
ܘܒܥܝܢ ܠܚܡܐ܂ ܝܗܒܘ ܪܓܝܓܬܗܘܢ ܒܡܐܟܘܠܬܐ܂ ܠܡܦܢܝܘ ܢܦܫܐ܂ ܚܙܝ ܡܪܝܐ܆
ܘܣܘܟ ܕܗܘܝܬ ܡܣܠܝܐ܂ * ܠ * ܠܐ ܠܘܬܟܘܢ ܟܠ ܥܒܪܝ ܐܘܪܚܐ܂ ܐܬܦܢܘ܂ ܘܚܙܘ 12
ܐܢ ܐܝܬ ܟܐܒܐ ܐܝܟ ܟܐܒܝ ܕܣܥܪ ܒܝ ܡܪܝܐ܂ ܘܡܟܟܢܝ ܡܪܝܐ ܒܝܘܡܐ ܕܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ܂
* ܡ * ܡܢ ܡܪܘܡܐ ܫܕܪ ܢܘܪܐ ܒܓܪܡܝ܂ ܘܐܪܕܝܢܝ܂ ܦܪܣ ܡܨܝܕܬܐ ܠܪܓܠܝ 13
ܘܗܦܟܢܝ ܠܒܣܬܪܝ܂ ܘܝܗܒܢܝ ܠܚܪܒܐ܂ ܘܟܠܗ ܝܘܡܐ ܕܘܝܐ܂ * ܢ * ܐܬܬܥܝܪܘ 14
ܥܠܝ ܣܟܠܘܬܝ܂ ܘܒܐܝܕܘܗܝ ܐܬܩܛܪܘ ܢܝܪܘܗܝ ܥܠ ܨܘܪܝ܂ ܘܐܬܟܪܝ ܚܝܠܝ܂ ܘܐܫܠܡܢܝ
ܡܪܝܐ ܒܐܝܕܐ ܕܥܡ ܠܐ ܡܨܝܐ ܐܢܐ ܚܝܠܗ܂

* Viæ Sionis in luctu *verſantur* ob defectum venientium ad ſolennitatem? omnes portæ ejus ſunt deſolatæ, ſacerdotes ejus gementes, virgines ejus humiliatæ, & ipſa amaritudine confecta? 4
Oppreſſores ejus effecti ſunt ſuperiores, & inimici ejus tranquillè agunt? Quia Dominus depreſſit eam propter multitudinem peccatorum ejus, ideò nati ejus abierunt in captivitatem coram oppreſſore: 5
Et exceſſit è filia Sionis totus decor ejus: facti ſunt magnates ejus ſimiles cervis, & non invenientes paſcuum, abierunt languidi coram abigente. 6
Recordata eſt Jeruſalem dierum depreſſionis & punitionis ſuæ, & omnium delitiarum ſuarum quæ erant à priſcis diebus; ubi cecidit populus ejus manu hoſtili nemine auxiliante; viderunt eam oppreſſores ejus, & de ipſius contritione riſerunt. 7
Flagitium perpetravit Jeruſalem, ideò facta eſt horrori: omnes qui honorabant eam, vituperaverunt eam, quia viderunt turpitudinem ejus: etiam ipſa gemuit, & retroceſſit. 8
Sordes ejus in fimbriis ejus, ac non eſt recordata finis ſui: dejecta eſt gloria ejus, & non eſt illi conſolator. Vide Domine depreſſionē meam, quòd elatus ſit hoſtis. 9
Manus ſuas extendit oppreſſor ad optatiſſima quæq; ipſius: & vidi gentes ingreſſas in ſanctuariū tuum, quas præceperas ne ingrederentur in congregationem tuam. 10
Totus populus anhelant, & panem quærunt, ederunt chariſſimam quamque rem pro cibo, ad recuperandam animam. Reſpice Domine & intuere, ut ſum fœdata. 11
Nihilne ad vos omnes viatores? animadvertite, & videte num ſit dolor ſimilis dolori meo quo me Dominus affecit, depreſſítque me Dominus in die æſtûs iræ ſuæ. 12
Ab alto miſit ignem in oſſa mea, dejecítque me: pandit rete pedibus meis, meque ſupinam evertit: tradidit me gladio, totâque die mœrore conficior. 13
Experrecta ſunt contra me peccata mea, & manibus ejus aptata ſunt juga ejus collo meo, & elanguit virtus mea, tradidítque me Dominus in manum ejus cujus viribus impar ſum. 14

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* طرقات صهيون تنوح من اجل انه لم يكن آتون في العيد * جميع ابوابها فنيت * 4
كهنتها يتنهدون * عذاراها مساقون * وهي ممرمرين في ذاتها * صاروا مخربوها راسا * واعداوها 5
مخصبون * لان الرب اذلها لكثرة نفاقها * اطفالها ذهبوا في السبي لوجه المحزن * وخرج من 6
الابنة صهيون كل حسن بهائها * صارت روساوها مثل كباش لم تجد مرعي * وذهبوا بغير
قوة امام الطارد * ذكرت ايروسليم ايام مذلتها * وبعدت عنها جميع شهواتها التي كانت 7
منذ الايام الاولي * عندما سقط شعبها في ايدي المحزن ولم يكن لها معين * نظروا
اعداوها وضحكوا بسبتها * اخطات ايروسليم خطية * لاجل هذا صارت للزلل * جميع 8
ممجديها اذلوها * لانهم نظروا فضيحتها * وهي متنهدة ورجعت الي خلف * نجاستها من 9
قدميها * لم تذكر اواخرها * حطها النساخ وليس لها من يعزيها * انظر يا رب مذلتي * لان
عدوي عظم * المحزن بسط يده على جميع شهواتها * لاني نظرت الامم الداخلة الي مقدسها * 10
التي امرت ان لا يدخلوا الي كنيستك * كل شعبها يتنهدون يطلبون خبزا * دفعوا شهواتها 11
في طعام ليرد النفس * انظر واطلع لاني صرت مهانة * يا جميع ماري الطريق الينا * 12
ارجعوا وانظروا هل وجع هو مثل وجعي الذي صار لي * تكلم الرب في * واذلني في يوم
رجز غضبه * من علوه ارسل نارا * انزلها في عظامي * بسط شبكة لقدمي * وردني الي 13
خلف * اسلمني الرب هالكة * كل النهار باكية * سهر على فواحشي * كمعوني في 14
يدي * صعدوا علي عنقي * ضعفت قوتي * لان الرب اعطي في يدي اوجاعا لا
استطيع ان اقف *

Viæ Sionis lamentantur, quia nulli ſunt qui veniant in feſto: omnes portæ ejus conſumptæ ſunt, ſacerdotes ejus gemunt, virgines ejus abductæ; ipſa verò amaritudine oppreſſa in ſemetipſa. 4
Affligentes eam facti ſunt caput, & hoſtes ejus locupletes; quia Dominus depreſſit illam propter multitudinem impietatis ejus: pueruli ejus abierunt in captivitatem ante faciem affligentis. 5
Et abſceſſit à filia Sione tota venuſtas decoris ejus: facti ſunt principes ejus velut arietes non invenientes paſcua, & abierunt ſine viribus coram abigente. 6
Recordata eſt Jeruſalem dierū depreſſionis ſuæ; & receſſerunt ab ea omnes voluptates ejus quæ erant à priſcis diebus, ubi cecidiſſet populus ejus in manus affligentis, nemine ei auxilium ferente: viderunt hoſtes ejus, & deriſerunt ſabbathum ejus. 7
Peccavit Jeruſalem peccatum, iccirco lapſationi expoſita eſt: omnes qui glorificabant eam, deprimūt eam, quia viderunt ignominiam ejus: ipſa quoque ſuſpirans verſa eſt ſupina. 8
Immunditia ejus ex pedibus ejus eſt, non eſt recordata poſtremorum ſuorum: dejecit eam arrogantia, & non habet qui conſoletur eam. Vide O Domine dejectionem meam, quoniam inimicus meus magnificatus eſt. 9
Affligens extendit manum ſuam ad optatiſſima quæque ipſius: quia vidi gentes ingredientes in ſanctuarium ejus, quas præceperas ne ingrederentur in Eccleſiam tuam. 10
Totus populus ejus ſuſpirantes quærunt panem, dederunt optatiſſima quæque ipſius pro cibo ad reſtituendum animam. Vide & aſpice quòd facta ſim vilis. 11
O quotquot viam tranſitis ad nos, convertimini & videte num dolor ullus ſit ſimilis dolori meo qui factus eſt mihi. Locutus eſt de me Dominus, & humiliavit me in die furoris iræ ſuæ. 12
Ab excelſo ſuo miſit ignem, immiſit eum in oſſa mea: tetendit rete pedibus meis, evertitque me ſupinam: dedit me Dominus perditam, totâ die lugentem. 13
Vigilavit ſuper turpitudines meas, revinxerunt manus meas, aſcenderunt ſuper collum meum, infirmatæ ſunt vires meæ; quia Dominus poſuit in manibus meis dolores, nequeo reſiſtere. 14

me ſuper vocavit ; meo interiori in Dominus meos validos omnes Proſtravit
15 סלה כל־אבירי אדני בקרבי קרא עלי
virgini Dominꝰ calcavit torcular: meos electos conterẽdũ ad, conventum
מועד לשבר בחורי גת דרך אדני לבתולת
,aquas deſcendens meꝰ oculꝰ, meꝰ oculus ,flens ego hæc Super .Jehudah filiæ
16 בת־יהודה: על־אלה אני בוכיה עיני עיני ירדה מים
mei filii fuerunt: meã animã reducens conſolator me à eſt elongatus quia
כי־רחק ממני מנחם משיב נפשי היו בני
,ſuis manibus in Sijon Expandit .inimicus prævaluit quia , deſolati
17 שוממים כי גבר אויב: פרשה ציון בידיה
:ejꝰ hoſtes ejꝰ circuitus ,Jahacob Dominus præcepit ; ei conſolator non
אין מנחם לה צוה יהוה ליעקב סביביו צריו
ejꝰ ori quia, Dominꝰ ipſe Juſtus .eos inter elongationẽ in Jeruſalaim fuit
18 היתה ירושלם לנדה ביניהם: צדיק הוא יהוה כי־פיהו
,meæ virgines: meũ dolorẽ videte & ,populi omnes nunc audite : rebellavi
מריתי שמעו־נא כל־עמים וראו מכאבי בתולתי
ipſi , meos amicos ad Clamavi .captivitatẽ in abierunt mei juvenes &
19 ובחורי הלכו בשבי: קראתי למאהבי המה
quæſierũt quoniã ;obierũt urbe in mei ſenes &, mei ſacerdotes, me deceperũt
רמוני כהני וזקני בעיר גועו כי־בקשו
,mihi tribulatio quia Domine Vide .ſuã animam reducerent & ,ſibi cibum
20 אכל למו וישיבו את־נפשם: ראה יהוה כי־צר־לי
rebellando quia, meo interiori in meum cor ſe vertit :ſunt conſtipata mea viſcera
מעי חמרמרו נהפך לבי בקרבי כי מרו
quòd Audierunt .mors tanquã domo in, gladius orbavit foris : rebellavi
21 מריתי מחוץ שכלה־חרב בבית כמות: שמעו כי
,meũ malũ audierũt mei inimici omnes; mihi cõſolator non , ego ſuſpirans
נאנחה אני אין מנחם לי כל־איבי שמעו רעתי
.ego ſicut erunt & ,vocâſti diem adduxiſti : feciſti tu quia, ſunt gaviſi
ששו כי אתה עשית הבאת יום־קראת ויהיו כמוני:
fuiſti cauſa queadmodũ eis cauſa ſis &, tuas facies ad eorũ malũ omne Ingrediatur
22 תבא כל־רעתם לפניך ועולל למו כאשר עוללת
.mœrẽs meũ cor &, mea ſuſpiria multa quia; meas prævaricationes oẽs ſuper mihi
לי על כל־פשעי כי־רבות אנחתי ולבי דוי:

CAP. II. ב

fecit projicere ,Sijon filiam Dominus ſuo naſo in obnubilavit Quomodo
1 איכה יעיב באפו אדני את־בת־ציון השליך
ſuorũ pedũ ſcabelli eſt recordatꝰ nõ & : Iſrael decorem terram cœlis de
משמים ארץ תפארת ישראל ולא־זכר הדם־רגליו
tabernacula omnia pepercit nõ & ,Dominus Abſorbuit ? ſui naſi die in
2 ביום אפו: בלע אדני לא חמל את כל נאות
fecit pertingere, Jehudah filiæ munitiones ſuo furore in deſtruxit ,Jahacob
יעקב הרס בעברתו מבצרי בת־יהודה הגיע
omne naſi ira in Concidit .ejꝰ principes & , regnum polluit , terram
3 לארץ חלל ממלכה ושריה: גדע בחרי־אף כל
;inimici faciebus à ſuam dexteram retrorſum fecit redire , Iſrael cornu
קרן ישראל השיב אחור ימינו מפני אויב
.undique conſumpſit flamma, ignis veluti Jahacob in eſt accenſus &
ויבער ביעקב כאש להבה אכלה סביב:

Verſio VULG. LAT.

15 *Samech.* Abſtulit omnes magnificos
meos Dñs de medio meî: vocavit
adverſùm me tempꝰ, ut contereret
electos meos, torcular calcavit
Dominus virgini filiæ Juda.
16 *Ain.* Idcircò ego plorans, & oculus
meus deducens aquas: quia
longè factus eſt à me conſolator,
convertens animã meã: facti ſunt
filii mei ꝑditi, quoniam invaluit
17 inimicꝰ. *Phe.* Expandit Sion manꝰ
ſuas, nõ eſt qui cõſoletur eã: mandavit
Dñs adverſùm Jacob in circuitu
ejꝰ hoſtes ejꝰ: facta eſt Jeruſalẽ
quaſi polluta menſtruis inter
18 eos. *Sade.* Juſtꝰ eſt Dñs, quia os ejꝰ
ad iracundiam provocavi: audite,
obſecro, univerſi populi, & videte
dolorẽ meum: virgines meæ, &
juvenes mei abierũt in captivitatem.
19 *Coph.* Vocavi amicos meos,
& ipſi deceperunt me: ſacerdotes
mei, & ſenes mei in urbe conſumpti
ſunt: quia quæſierũt cibũ ſibi
20 ut refocillarẽt animã ſuã. *Res.* Vide,
Dñe, quoniã tribulor, conturbatꝰ
eſt venter meus: ſubverſũ eſt
cor meũ in memetipſa, quoniã amaritudine
plena ſum: foràs interficit
gladiꝰ, & domi mors ſimilis
21 eſt. *Sin.* Audierunt quia ingemiſco
ego, & non eſt qui conſoletur
me: omnes inimici mei audierũt
malũ meũ, lætati ſunt, quoniam
tu feciſti: adduxiſti diẽ conſolationis,
& fient ſimiles meî.
22 *Thau.* Ingrediatur omne malum
eorũ corã te: & vindemia eos, ſicut
vindemiâſti me propter omnes
iniquitates meas: multi enim gemitus
mei, & cor meum mœrens.

CAP. II.

1 *Aleph.* Quomodò obtexit caligine
in furore ſuo Dominꝰ filiã
Sion: projecit de cœlo in terram
inclytã Iſrael, et non eſt recordatꝰ
ſcabelli pedũ ſuorũ in die furoris
2 ſui. *Beth.* Præcipitavit Dñs, nec
pepercit, omnia ſpecioſa Jacob:
deſtruxit in furore ſuo munitiones
virginis Juda, & dejecit in
terrã: polluit regnũ, & principes
3 ejꝰ. *Ghimel.* Confregit in ira furoris
ſui omne cornu Iſrael: avertit
retrorſùm dexterã ſuã à facie inimici: & ſuccendit in Jacob quaſi ignẽ flammæ devorantis in gyro.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. cum Tranſl. LAT.

15 ΣΑ'ΜΕΧ. Ἐξῆρε πάντας τοὺς ἰσχυρούς μου ὁ
κύριος ἐκ μέσου μου, ἐκάλεσεν ἐπ' ἐμὲ καιρὸν
τοῦ συντρῖψαι ἐκλεκτούς μου· ληνὸν ἐπάτησε
16 κύριος παρθένῳ θυγατρὶ Ἰούδα. Ἐπὶ
τούτοις ἐγὼ κλαίω. 'ΑΙ'Ν. Ὁ ὀφθαλμός
μου κατήγαγεν ὕδωρ, ὅτι ἐμακρύνθη ἀπ' ἐμοῦ
ὁ παρακαλῶν με, ὁ ἐπιστρέφων ψυχήν
μου· ἐγένοντο οἱ υἱοί μου ἠφανισμένοι, ὅτι ἐκραταιώθη
17 ὁ ἐχθρός. ΦΗ'. Διεπέτασε Σιὼν
(ρ) χεῖρα αὐτῆς, οὐκ ἔστιν ὁ παρακαλῶν αὐτήν.
ἐνετείλατο κύριος τῷ Ἰακώβ, (σ) κύκλῳ
αὐτοῦ οἱ θλίβοντες αὐτόν· ἐγενήθη
Ἱερουσαλὴμ εἰς ἀποκαθημένην ἀναμέσον
18 αὐτῶν. ΤΣΑΔΗ'. Δίκαιός ἐστι κύριος, ὅτι
(τ) στόμα αὐτοῦ παρεπίκρανα. ἀκούσατε δὴ
πάντες οἱ λαοί, καὶ ἴδετε τὸ ἄλγος μου. παρθένοι
μου καὶ νεανίσκοι μου ἐπορεύθησαν ἐν αἰχμαλωσίᾳ.
19 ΚΩ'Φ. Ἐκάλεσα τοὺς ἐραστάς μου,
αὐτοὶ δὲ παρελογίσαντό με. οἱ ἱερεῖς μου καὶ
οἱ πρεσβύτεροί μου ἐν τῇ πόλει ἐξέλιπον, ὅτι
ἐζήτησαν βρῶσιν αὐτοῖς ἵνα ἐπιστρέψωσι
20 ψυχὰς αὐτῶν, καὶ οὐχ εὗρον. ΡΗ'ΧΣ. Ἴδε κύριε,
ὅτι θλίβομαι, (υ) ἡ κοιλία μου ἐταράχθη,
καὶ ἡ καρδία μου ἐστράφη ἐν ἐμοί, ὅτι παραπικραίνουσα
παρεπικράνθην, ἔξωθεν ἠτέκνωσέ
με μάχαιρα, ὥσπερ θάνατος ἐν
21 οἴκῳ. ΧΣΕ'Ν. Ἀκούσατε δή, ὅτι στενάζω ἐγώ,
οὐκ ἔστιν ὁ παρακαλῶν με. πάντες οἱ ἐχθροί
μου ἤκουσαν τὰ κακά μου, καὶ ἐχάρησαν, ὅτι
σὺ ἐποίησας· ἐπήγαγες ἡμέραν, ἐκάλεσας
καιρόν, (φ) ἐγένοντο ὅμοιοι ἐμοί.
22 ΘΑ'Υ. Εἰσέλθοι πᾶσα ἡ κακία αὐτῶν
κατὰ πρόσωπόν σου, καὶ (χ) ἐπιφύλλισον αὐτοῖς,
ὃν τρόπον ἐποίησαν ἐπιφυλλίδα περὶ
πάντων τῶν ἁμαρτημάτων μου, ὅτι πολλοὶ
οἱ στεναγμοί μου, καὶ ἡ καρδία μου λυπεῖται.

ΚΕΦ. β'.

1 'ΑΛΕΦ. Πῶς ἐγνόφωσεν ἐν ὀργῇ (α) αὐτοῦ
κύριος τὴν θυγατέρα Σιών; κατέρριψεν
ἐξ οὐρανοῦ εἰς γῆν δόξασμα Ἰσραήλ, καὶ οὐκ
2 ἐμνήσθη ὑποποδίου ποδῶν (β) αὐτοῦ. ΒΗ'Θ.
Ἐν ἡμέρᾳ ὀργῆς αὐτοῦ κατεπόντισε κύριος,
οὐ φεισάμενος· πάντα τὰ ὡραῖα Ἰακὼβ
καθεῖλεν ἐν θυμῷ αὐτοῦ, τὰ ὀχυρώματα
τῆς θυγατρὸς Ἰούδα ἐκόλλησεν εἰς τὴν
γῆν, ἐβεβήλωσεν (γ) βασιλέα αὐτῆς, καὶ ἄρ-
3 χοντας αὐτῆς. ΓΙ'ΜΕΛ. Συνέκλασεν ἐν ὀργῇ
θυμοῦ αὐτοῦ πᾶν κέρας Ἰσραήλ, ἀπέστρεψεν
(δ) ὀπίσω δεξιὰν αὐτοῦ ἀπὸ προσώπου ἐχθροῦ, καὶ (ε) ἀνῆψεν ἐν Ἰακὼβ ὡς πῦρ φλόγα, καὶ κατέφαγεν πάντα τὰ κύκλῳ.

15 SAMECH. Abſtulit omnes fortes
meos Dominus de medio mei:
vocavit ſuper me tempus conterendi
electos meos. Torcular calcavit
Dominus virgini filiæ Juda.
16 (l) Super his ego ploro. AIN.
Oculus meus deduxit aquam:
quia longè factus eſt à me, qui
conſoletur me, (m) qui reducat animam
meam: facti ſunt filii mei
(n) perditi: quoniam invaluit inimicus.
17 PHE. Expandit Sion manum
ſuam: non eſt, qui conſoletur
eam. (o) Mandavit Dominus
ipſi Jacob: in circuitu ejus tribulantes
eum: facta eſt Hieruſalem
in pollutam menſtruis inter eos.
18 TSADE. Juſtus eſt Dominus:
quia os ejus ad iracundiam provocavi.
Audite, obſecro, univerſi
populi, & videte dolorem meum.
Virgines meæ, & juvenes mei
abierunt in captivitatem. COPH.
19 Vocavi amatores meos: ipſi autem
deceperunt me. Sacerdotes
mei, & ſeniores mei in urbe defecerunt:
quia quæſierunt cibum
ſibi, ut refocillarent animas ſuas,
& (p) non invenerunt. RECHS.
20 Vide, Domine, quoniam tribulor:
conturbatus eſt venter meus: &
cor meum verſum eſt in me: quoniam
exacerbans (q) exacerbata
ſum; foris orbavit me filiis gladius,
ſicut mors in domo. CHSEN.
21 Audite, obſecro, quia ingemiſco
ego: non eſt, qui conſoletur me. Omnes
inimici mei audierunt mala
mea, & lætati ſunt, quoniam tu
feciſti: adduxiſti diem, vocâſti
tempus: (r) facti ſunt ſimiles mibi.
22 THAU. Ingrediatur omnis malitia
eorum ante faciem tuam, &
vindemia eos; ſicut (ſ) vindemiam
fecerunt pro omnibus peccatis
meis. Multi enim gemitus mei: & cor meum mœret.

CAP. II.

1 ALEPH. Quomodò obtexit
caligine in ira ſua Dominus filiam
Sion? projecit de cœlo in terram
gloriationem Iſrael: & non
eſt recordatus ſcabelli pedum ſuorum.
2 BETH. In (a) die iræ ſuæ
abſorbuit Dominus, non parcens,
omnia ſpecioſa Jacob: deſtruxit
in furore ſuo munitiones filiæ
Juda; adhærere fecit ad terram:
polluit (b) regem ejus, & principes
3 ejus. GIMEL. Confregit in
ira furoris ſui omne cornu Iſrael:
avertit retrorſùm dexteram
ſuã à facie inimici: & accendit
in Jacob quaſi ignem, (c) flammam: & devoravit omnia, quæ in gyro.

MS.A. (ρ) τὰς χεῖρας (σ) κύκλῳ οἱ (τ) τὸ στόμα (υ) καὶ ἡ κοιλία (φ) καὶ ἐγένετο οἴμμοι οἴμμοι. (χ) ἐπιφαύλισον

MS.A. Κεφ. β'. (α) αὐτοῦ τὸν (β) αὐτοῦ ἐν ἡμέρᾳ ὀργῆς θυμοῦ αὐτοῦ. ΒΗ'Θ. Κατεπόντισεν (γ) εἰς τὴν γῆν βασιλέα αὐτῆς, καὶ ἄρχοντα (δ) εἰς τὰ ὀπίσω (ε) ἀνῆψεν Ἰακώβ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

15 כנש כל תקיפי יי ביני ארע וזמן עלי לתבירא חיל עולמי ועלו עממיא על גזירת מימרא
דיי וסאיבו בתולתא דבית יהודה די הוה דמהון דבתולתהון מתשד היך כחמר מן
16 מעצרתא בעדן דגבר מבעט ית ענבין חמר ענבוהי שרין: על טפליא דאתרטשו ועל
נשיא מעדיתא דאתבקעו כרסיהון אמרת כנשתא דישראל אנא בכיא ותרין עיני זלגין
דמעתא היך מבועא דמיא ארום אתרחק מני מנחם דמקים יתי וממלל תנחומין על נפשי
17 הוו בנוי צדין ארום אתגבר עליהון בעל דבבא: פרסת ציון ידהא מן עקתא היכמה
דמפרסא אתתא על מתברא פגינת וליתֿ דממלל תנחומין על לבה פקד יי לבית יעקב
פקודיא ואוריתא למנטר והנון עברו על גזירת מימריה בגין כן אסתחרו חזור חזור
18 ליעקב מעיקוהי הות ירושלם דמיא לאתתא מרחקא ביניהון: אמר יי במימריה לעמא
בית ישראל דלא יעבר קטלין בחרבא בארעהון אזל יאשיהו מלכא שלף סיפא על
פרעה חגירא בבקעת מגדו מה דלא אתפקד ולא תבע אולפן מן קדם יי בגין כן רגמו
רגומיא גירין למלכא יאשיהו ומית תמן עד דלא נפקת נשמתיה הוה רחש בספותיה
וכן אמר זכי הוא יי ארום על מימריה עברית שמעו כען כל עמיא אספדא דאספד
ירמיהו על יאשיהו וחזו כיבי די ערעני בתר מותיה בתולתי ורביי אזלו בשביתא:
19 אמרת ירושלם כד אתמסרת בידוי דנבוכדנצר קריתי למרחמי ביני עממיא דקימית
עמהון קים דיסיעוני ואנון חכימו מני אתהפכו לחבלא יתי הנון רומאי דעלו עם
טיטוס ואספסינוס ובנו כרכומין על ירושלם כהני וסבי בגו קרתא אתנגידו ארום תבעו
20 סעיד לחמא להון למיכל ויקימון ית נפשיהון: חזי יי ארום אעיק לי בגין כן מעי אדגרו
אתהפך לבבי בגוי ארום מעבר עברית על גזירת מימרא דיי ומן בגלל הכי מן ברא
21 תכלי חרבא ומלגיו הרגת כפנא כמלאכא חבלא די ממני על מותא: שמעו אומיא
ארום מתאנחא אנא ולית דמנחם לי כל בעלי דבבי שמעו בישתא די מטת עלי בדחו
ארום את הוא יי דעבדת איתיתא עלי יום פורענותא ערעתא עלי מערע לצדיאותני
22 כדין תערע עליהון ויהון צדיאן כותי: תעול ליום דינא רבא כל בישתהון די אבאישו
לי קדמך ותסתקף להון היכמה דאסתקפתא עלי על כל סניאות מרודי ארום סגיאו
אנחתי ולבי חליש:

ב

1 איכדין יקוץ יי בתקוף רוגזיה ית כנשתא דציון טלק משמיא לארעא תושבחתא
דישראל ולא דכיר בית מוקדשא דהוה גלודקא דרגלוהי לא חס עלוהי ביום תקוף
2 רוגזיה: שיצי יי לא חס ית כל עדית יעקב פגר ברוגזיה כרכי כנשתא דבית יהודה
3 אמטי לארעא אפיס מלכותהא ורברבנהא: קצץ בתקוף רגזית כל יקריה דישראל
ארתע לאחורא יד ימיניה ולא סיע לעמיה מן קדם בעיל דבבא ואדליק בבית יעקב
כאשתא דמשלהבא אכלת חזור חזור:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

15 SAMECH. Collegit omnes fortes meos Dñs in medio mei: vocavit adverſum
me tempꝰ ut contereret fortitudinẽ juvenũ meorũ, & ingreſſi ſunt populi
per decretum verbi Dñi, & polluerunt virgines domꝰ Juda, donec ſanguis
virginitatis earũ effunderetur ſicut vinũ de torculari, in tempore quo
16 homo calcat uvas, & vinum de uvis defluit. AIN. Suꝑ parvulos qui alliſi
ſunt, & ſuꝑ mulieres prægnantes quarũ venter ſciſſus eſt, dixit cœtꝰ Iſrael,
ego ploro, & duo oculi mei defluunt lachrymis ſicut fons aquarum: quia
longè factꝰ eſt à me conſolator qui ſuſtentaret me, & loqueretur conſolationes
animæ meæ: facti ſunt filii mei deſolati, quia prævaluit ſuꝑ eos inimi-
17 cus. PE. Expandit Sion manꝰ ſuas præ anguſtia, ſicut expandit mulier quæ
ſedet ad pariendũ: clamavit, & non eſt qui loquatur conſolationes ad cor
ejꝰ: præcepit Dñs domui Jaacob præcepta & Legẽ ut cuſtodirent: ipſi autẽ
tranſgreſſi ſunt decretũ verbi ejus; ideò circuierunt domũ Jaacob per circuitum
inimici ejus: facta eſt Jeruſalẽ ſimilis mulieri menſtruatæ in medio
18 eorum. SADE. Dixerat Dñs in verbo ſuo populo domus Iſrael, quòd non
tranſirẽt qui occidunt gladio, per terrã eorum: perrexit Joſias rex evaginato
gladio contra Pharaonẽ claudum in campo Magedo, quod non præceptum
fuerat ei, nec quæſiverat oraculũ à facie Dñi: ideò miſerunt ſagittarii ſagittas
in regẽ Joſiam, & mortuus eſt ibi: antequàm egrederetur anima ejꝰ,
muſſitabat labiis ſuis, & ſic dicebat: Juſtus eſt Dñs, quia tranſgreſſus ſum
verbum ejus. Audite obſecro omnes populi hanc lamentationem qua lamentatus
eſt Jeremias ſuꝑ Joſiam, & videte dolorẽ meum, qui accidit mihi
19 poſt mortem ejus: virgines & pueri mei abierunt in captivitatẽ. COPH.
Dixit Jeruſalẽ quando tradita eſt in manus Nabuchodonoſor: Vocavi amicos
meos *inter populos* cum quibus inieram pactum ut adjuvarent me; ipſi
autem doloſè egerunt contra me, & converſi ſunt ut nocerent mihi illi Romani
qui venerunt cum Tito & Veſpaſiano, & extruxerunt machinas contra
Jeruſalẽ: & Sacerdotes mei & ſenes mei in medio civitatis expirarunt:
quia quæſierunt alimenta panis ſibi ut comederent & ſuſtentarent animas
20 ſuas. RES. Vide Dñe quia anguſtia eſt mihi, ideò viſcera mea conturbata
ſunt, ſubverſum eſt cor meũ in medio mei: quia tranſgrediendo tranſgreſſa
ſum decretum verbi Dñi: & propterea foris conſumit gladiꝰ, & intus occî-
21 dit fames, ſicut angelꝰ diſperdẽs qui conſtitutꝰ eſt ſuꝑ mortẽ. SIN. Audierũt
nationes quia gemebã ego, & non eſt qui cõſoletur me: omnes inimici
mei audierũt malũ ꝙ pervenit ad me: lætati ſunt quoniã tu Dñe feciſti: induxiſti
ſuꝑ me diẽ ultionis: cõvocâſti ſuꝑ me cõvocationẽ in deſolationẽ
22 meã: ſic cõvocabis ſuꝑ eos, & erũt deſolati ſicut ego. THAU. Ingrediatur
in die judicii magni omne malũ eorũ quo malignati ſunt mihi corã te, &
quære occaſiones in eos, ſicut quæſiiſti occaſiones cõtra me propter multitudinẽ
prævaricationũ mearũ: quia multi ſunt gemitꝰ mei, & cor meũ infirmum.

CAP. II. ALEPH.

1 Quomodo deteſtatꝰ eſt Dñs in ira furoris ſui cœtũ Sion! projecit de
cœlo in terrã pulchritudinẽ Iſrael, & non eſt recordatꝰ domꝰ ſanctuarii,
quæ erat ſcabellum pedum ejus; nec pepercit ei in die iræ furoris ſui.
2 BETH. Conſumpſit Dñs, & non pepercit; omne ornamentũ domus Jacob
deſtruxit in furore ſuo, arces cœtꝰ domꝰ Juda pertingere fecit ad terrã, &
3 prophanavit regnũ ejꝰ & principes ejus. GIMEL. Succidit in furoræ iræ
omnem gloriã Iſrael: convertit retrorſum manũ dexterã ſuam, & non eſt
auxiliatus populo ſuo à facie inimici: & ſuccendit in domo Jaacob ſicut ignis flammæ, quæ conſumit per circuitum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܛ * ܕܒܫ ܟܠܗܘܢ ܥܫܝܢ̈ܝ ܡܪܝܐ ܒܓܘܝ. ܩܪܐ ܥܠܝ ܟܢܘܫܬܐ ܠܡܬܒܪܘ ܥܠܝܡ̈ܝ. 15
ܡܥܨܪܬܐ ܕܫ ܡܪܝܐ ܠܒܬܘܠܬܐ ܒܪܬ ܝܗܘܕܐ. * ܥ * ܥܠ ܗܠܝܢ ܐܢܐ ܒܟܝܐ ܘܥܝ̈ܢܝ 16
ܢܚ̈ܬܢ ܡܝ̈ܐ. ܕܪܚܩ ܡܢܝ ܡܒܝܐܢܐ ܡܦܢܝܢܐ ܢܦܫܝ. ܗܘܘ ܒܢ̈ܝ ܦܓ̈ܥܐ. ܡܛܠ
ܕܥܫܢ ܒܥܠܕܒܒܐ. * ܦ * ܦܪܣܬ ܨܗܝܘܢ ܐܝܕ̈ܝܗ. ܘܠܝܬ ܠܗ ܡܒܝܐܢܐ. ܦܩܕ 17
ܡܪܝܐ ܥܠ ܝܥܩܘܒ. ܘܚܕܪܘܗܝ ܐܠܘ̈ܨܘܗܝ. ܗܘܬ ܐܘܪܫܠܡ ܐܝܟ ܕܕܫܬܢܐ ܒܝܢܬܗܘܢ.
* ܨ * ܙܕܝܩܘ ܡܪܝܐ ܕܠܗ ܐܡܪܪܬ. ܫܡܥܘ ܟܠܟܘܢ ܥܡܡ̈ܐ: ܘܚܙܘ ܟܐܒܝ. ܒܬܘܠܬ̈ܝ 18
ܘܥܠܝܡ̈ܝ. ܐܙܠܘ ܒܫܒܝܐ. * ܩ * ܩܪܝܬ ܠܪ̈ܚܡܝ. ܘܗܢܘܢ ܛܥܘܢܝ. ܟܗܢ̈ܝ ܘܩܫܝ̈ܫܝ 19
ܫܠܡܘ ܒܓܘܝ. ܕܒܥܘ ܠܗܘܢ ܡܐܟܘܠܬܐ ܕܢܦܢܘܢ ܢܦܫܗܘܢ. ܘܠܐ ܐܫܟܚܘ. * ܪ * ܚܙܝ 20
ܡܪܝܐ.: ܕܐܬܐܠܨܬ ܠܝ. ܘܡܥ̈ܝ ܐܬܕܠܚܘ. ܐܬܗܦܟ ܠܒܝ ܒܓܘܝ. ܡܛܠ ܕܡܪܡܪܬ
ܡܪܡܪܬ. ܡܢ ܠܒܪ ܐܬܟܠܬܢܝ ܚܪܒܐ. ܘܡܢ ܠܓܘ ܡܘܬܐ. * ܫ * ܫܡܥܘ ܕܡܬܬܢܚܐ ܐܢܐ. 21
ܘܠܝܬ ܠܝ ܡܒܝܐܢܐ. ܟܠܗܘܢ ܒܥܠܕܒܒ̈ܝ ܫܡܥܘ ܒܒܝܫܬܝ. ܘܚܕܝܘ ܕܐܢܬ ܥܒܕܬ ܠܝ.
ܐܝܬܝܬ ܝܘܡܐ ܕܩܪܝܬ. ܘܢܗܘܘܢ ܐܟܘܬܝ. * ܬ * ܬܥܘܠ ܟܠܗ ܒܝܫܬܗܘܢ ܩܕܡܝܟ. ܘܥܘܠ 22
ܥܠܝܗܘܢ. ܐܝܟܢܐ ܕܥܠܠܬ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܚܛܗ̈ܝ. ܡܛܠ ܕܣܓܝܐܢ ܬܢܚ̈ܬܝ. ܘܠܒܝ ܟܪܝܐ.

* ܩܝܢ̈ܬܐ * ܒ *

* ܐ * ܐܝܟܢܐ ܐܚܫܟ ܡܪܝܐ ܒܪܘܓܙܗ ܠܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. ܐܪܡܝ ܡܢ ܫܡܝܐ ܠܐܪܥܐ ܫܘܒܚܗ 1
ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܠܐ ܐܬܕܟܪ ܟܘܒܫܐ ܕܪ̈ܓܠܘܗܝ ܒܝܘܡܐ ܕܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ. * ܒ * ܒܠܥ 2
ܡܪܝܐ ܘܠܐ ܚܣ. ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܪ̈ܝ ܕܝܥܩܘܒ. ܗܦܟ ܒܚܡܬܗ ܠܡܕܝܢܬܐ ܕܒܪܬ ܝܗܘܕܐ. ܐܪܡܝ
ܠܐܪܥܐ ܩܛܝܠܘܗܝ ܡܠܟܘܗܝ ܘܪܘܪܒܢܘܗܝ. * ܓ * ܓܕܡ ܒܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ ܟܠܗ 3
ܩܪܢܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܗܦܟ ܠܝܡܝܢܗ ܠܒܣܬܪܗ. ܡܢ ܩܕܡ ܒܥܠܕܒܒܐ. ܘܐܚܕ ܢܘܪܐ
ܒܝܥܩܘܒ. ܘܫܠܗܒܝܬܐ ܐܟܠܬ ܐܝܕ̈ܘܗܝ.

15 Subjûgavit omnes robuſtos meos Dominus intra me, convocavit contra me conventum ad perdendum juvenes meos, *ut* torcular calcavit Dominus virginem filiam Judæ. 16 Horum causâ lugeo, & oculi mei profundunt aquas, quòd procul abſit à me conſolator qui animam mihi reſtituat: facti ſunt filii mei fructus immaturi, quia prævaluit hoſtis. 17 Extendit Sion manus ſuas, nec adeſt ei conſolator: præcepit Dominus contra Jacobum, & circundederunt eum oppreſſores ejus: facta eſt Jeruſalem horrori inter eos. 18 Juſtus eſt Dominus; ipſum enim exaſperavi. Audite omnes populi, & videte dolorem meum: virgines meæ & adoleſcentes mei abierunt in captivitatem. 19 Invocavi amicos meos, & ipſi fefellerunt me: ſacerdotes mei, & ſeniores mei extincti ſunt in medio mei: quæſierunt enim ſibi cibum ut ſeipſos reficerent, & non invenerunt. 20 Aſpice Domine afflictam me eſſe, & viſcera mea conturbata, ſubverſum intra me cor meum; quia graviter exaſperavi: foris extinxit gladius, & eos qui domi erant, peſtis. 21 Audi quomodo gemam, nec adſit mihi conſolator: omnes inimici mei audito malo meo, gaviſi ſunt te *id* feciſſe mihi, adduc diẽ quem promulgâſti, fiantque mihi ſimiles. 22 Ingrediatur omnis eorũ malitia in conſpectum tuum: exagita eos, quemadmodum exagitâſti me propter omnia peccata mea: multi enim ſunt gemitus mei, & cor meum anxium.

CAP. II.

1 Quomodo obſcuravit Dominus in ira ſua filiam Sionis? de cœlo in terram dejecit gloriam Iſraelis? & non eſt recordatus ſcabelli pedum ſuorum in die æſtûs iræ ſuæ? 2 Demerſit Dominus citra indulgentiam univerſam habitationem Jacobi? deſtruxit in furore ſuo urbem filiæ Judæ? humi proſtravit occiſos ejus, reges ac principes ejus? 3 Amputavit in æſtu iræ ſuæ totum cornu Iſraelis, reflexit dexteram ejus retrorſum ab inimico? ignem dimiſit in Jacobum, & flamma devoravit manus ejus?

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الرب نزع جميع اقوياي من وسطي * دعا علي زمانا ليكسر مختاري * داسني الرب 15
مثل معصرة ايها العذري ابنة يهودا * على هذه انا ابكي * عيني تهمل دموعا * لان 16
من يعزيني بعد عني ومن يرد نفسي * صارت بني هالكين لان العدو تقوى * بسطت 17
صهيون يديها ولم يكن من يعزيها * امر الرب بيعقوب * تحوط به مخربوه * صارت
اورشليم حايضة وسطهم * عدل هو الرب لاني مرمرت فمه * اسمعوا يا جميع الشعوب 18
وانظروا وجعي * عذاراي وشباني مضوا في السبي * ادعوا اصدقاي فهم مكروا بي * 19
كهنتي ومشايخي فنيوا في المدينة * لانهم طلبوا لهم طعاما كي يرجعوا نفوسهم فلم
يجدوا * انظر يا رب لاني احزن * وبطني اضطربت * وقلبي انقلب في * لاني مرمرت 20
مرمرت * اثكلني السيف من خارج مثل موت في بيت * اسمعوا لاني انا متنهدة وليس 21
من يعزيني * جميع اعداي سمعوا بسروري وفرحوا لانك انت صنعت * جلبت يوما دعوت
زمانا * فصار وا ويلاه وا ويلاه علي * دخل كل شرهم لوجهك * ادحضهم كما صنعوا لي 22
عما عن جميع خطاياي * لان تنهداتي كثيرة وقلبي يكتئب *

* الفصل الثاني * الثاني من المراثي *

* كيف ظلم بغضبه على ابنة صهيون * طرح من السماء الى الارض شرف اسرايل * 1
ولم يذكر موطي قدميه في يوم زجر غضبه * غرق الرب جميع بهاء يعقوب ولم 2
يشفق * هدم بغضبه حصون ابنة يهودا * الصقها بالارض * نجس بالارض ملكها ورييسها *
* كسر بزجر غضبه كل قرن اسرايل * رد يمينه الى خلف من وجه العدو * واشعل في 3
يعقوب مثل نار تلتهب * واكلت جميع ما حوله *

15 *Abſtulit Dominus omnes robuſtos meos de medio mei: conduxit contra me tempus, ad conterendum electos meos: calcavit me Dominus ceu torcular, O virgo filia Judæ.* 16 *Ob hæc ego lugeo, oculus meus lachrymas fundit; quia procul abſceſſit à me qui conſoletur me, & qui reſtituat animam meam: facti ſunt filii mei perditi, quia inimicus invaluit.* 17 *Extendit Sion manus ſuas, nec fuit qui conſolaretur eam: permiſſum dedit Dominus in Jacobum, circundederunt eum affligentes eum: facta eſt Jeruſalem menſtruum patiens inter eos.* 18 *Juſtus eſt Dominus, quoniam exaſperavi os ejus. Audite O populi omnes, & conſiderate dolorem meum: virgines meæ & juvenes mei abierunt in captivitatem.* 19 *Invoco amicos meos, at ipſi deceperunt me: ſacerdotes mei & ſeniores mei defecerunt in urbe; quia quæſierunt ſibi cibum ad reparandas animas ſuas, & non invenerunt.* 20 *Vide O Domine quòd doleam, venter meus conturbatus ſit, & cor meũ ſeſe volutet intra me, quia atrociter exaſperavi: orbavit me gladius foris, ceu peſtis in domo.* 21 *Audite quòd ego ſuſpirem, nec ſit qui me conſoletur: omnes inimici mei audientes mala mea lætati ſunt, quia tu feciſti: adduxiſti diem, condixiſti tempus; & evênit, eheu eheu, ſuper me.* 22 *Introduc omnia ſcelera eorum in conſpectum tuum; diſpelle eos, quemadmodum genuerunt mihi mœrorem pro cunctis peccatis meis: nam ſuſpiria mea multa ſunt, & cor meum mœrore conficitur.*

CAP. II.

Lamentatio ſecunda.

1 *Quomodo obtenebratus eſt in ira ſua erga filiam Sionis? è cœlo in terram dejecit faſtum Iſraelis, neque recordatus eſt ſcabelli pedum ſuorum in die furoris iræ ſuæ?* 2 *Immerſit Dominus totum nitorem Jacobi, neque pepercit? deſtruxit in ira ſua arces filiæ Judæ? agglutinavit eam terræ? polluit in terra regem ac principem ejus?* 3 *Fregit in furore iræ ſuæ totum cornu Iſraelis? retraxit dexteram ſuam à facie inimici, & accendit in Jacobo quaſi ignem flagrantem qui devoravit quicquid adjacebat ei?*

איכה : ב

,hoſtis tanquã ejus dextera ſtetit ; inimicus veluti ſuum arcum Tetendit
4 דָּרַךְ קַשְׁתּוֹ כְּאוֹיֵב נִצָּב יְמִינוֹ כְּצָר
effudit , Sijon filiæ *tentorio* in ; oculi deſiderabilia omnia occidit &
וַיַּהֲרֹג כֹּל מַחֲמַדֵּי־עָיִן בְּאֹהֶל בַּת־צִיּוֹן שָׁפַךְ
abſorbuit ,inimicus veluti Dominus Fuit .ſuã *excandeſcentiam* ignem tanquã
5 כָּאֵשׁ חֲמָתוֹ׃ הָיָה אֲדֹנָי ׀ כְּאוֹיֵב בִּלַּע
multiplicavit &;ejꝰ munitiones *corrupit* ,ejꝰ palatia omnia *abſorbuit* ,Iſrael
יִשְׂרָאֵל בִּלַּע כָּל־אַרְמְנוֹתֶיהָ שִׁחֵת מִבְצָרָיו וַיֶּרֶב
,ſuum *tegmen hortum ut diſſipavit* Et .*quærelam &* ,*planctum* Jehudah filia in
6 בְּבַת־יְהוּדָה תַּאֲנִיָּה וַאֲנִיָּה׃ וַיַּחְמֹס כַּגַּן שֻׂכּוֹ
,ſolemnitatem Sijon in Dominus fecit obliviſci : *ſuum conventum corrupit*
שִׁחֵת מוֹעֲדוֹ שִׁכַּח יְהוָה ׀ בְּצִיּוֹן מוֹעֵד
Elongavit .ſacerdotem & ,regem ſui furoris ira in ſprevit &,ſabbathum &
7 וְשַׁבָּת וַיִּנְאַץ בְּזַעַם־אַפּוֹ מֶלֶךְ וְכֹהֵן׃ זָנַח
fecit *claudi* ,ſuum ſanctuarium corde è projecit ,ſuum altare Dominus
אֲדֹנָי ׀ מִזְבְּחוֹ נִאֵר מִקְדָּשׁוֹ הִסְגִּיר
,Domini domo in dederunt vocem ;ejus palatiorũ muros inimici manu in
בְּיַד־אוֹיֵב חוֹמֹת אַרְמְנוֹתֶיהָ קוֹל נָתְנוּ בְּבֵית־יְהוָה
filiæ murum *corrumpere* Dominus Cogitavit .ſolemnitatis die ſicut
8 כְּיוֹם מוֹעֵד׃ חָשַׁב יְהוָה ׀ לְהַשְׁחִית חוֹמַת בַּת־
: *abſorbendo ab* ſuam manum fecit redire non ,*lineam* extendit ; Sijon
צִיּוֹן נָטָה קָו לֹא־הֵשִׁיב יָדוֹ מִבַּלֵּעַ
ſunt Demerſæ .ſunt *infirmati* pariter *murus* & ,antemurale deſolavit &
9 וַיַּאֲבֶל־חֵל וְחוֹמָה יַחְדָּו אֻמְלָלוּ׃ טָבְעוּ
,ejus regem : ejus vectes contrivit & ,perdidit ; ejus portæ terra in
בָאָרֶץ שְׁעָרֶיהָ אִבַּד וְשִׁבַּר בְּרִיחֶיהָ מַלְכָּהּ
invenerũt non ejus prophetæ etiam , lex non ,gentibus in ejꝰ principes &
וְשָׂרֶיהָ בַגּוֹיִם אֵין תּוֹרָה גַּם־נְבִיאֶיהָ לֹא־מָצְאוּ
,Sijon filiæ ſenes conticuerunt ,terra in Sederunt .Domino à viſionem
10 חָזוֹן מֵיְהוָה׃ יֵשְׁבוּ לָאָרֶץ יִדְּמוּ זִקְנֵי בַת־צִיּוֹן
; ſaccis ſe accinxerunt ; ſuum caput ſuper pulverem fecerunt aſcendere
הֶעֱלוּ עָפָר עַל־רֹאשָׁם חָגְרוּ שַׂקִּים
Defecerunt .Jeruſalaim filiæ ſuum caput terram in depoſuerunt
11 הוֹרִידוּ לָאָרֶץ רֹאשָׁן בְּתוּלֹת יְרוּשָׁלִָם׃ כָּלוּ
terra in eſt effuſum ; mea viſcera *ſunt conſtipata* ,mei oculi *lachrymis in*
בַדְּמָעוֹת עֵינַי חֳמַרְמְרוּ מֵעַי נִשְׁפַּךְ לָאָרֶץ
parvulum animo delinqui in ,mei populi filiæ contritionem propter meũ jecur
כְּבֵדִי עַל־שֶׁבֶר בַּת־עַמִּי בֵּעָטֵף עוֹלֵל
,triticum Ubi , *dicent* ſuis Matribus .civitatis plateis in *ſugentem &*
12 וְיוֹנֵק בִּרְחֹבוֹת קִרְיָה׃ לְאִמֹּתָם יֹאמְרוּ אַיֵּה דָּגָן
ſe effundendo in,civitatis plateis in *ſauciũ tanquã eos animo delinqui in* ?vinũ &
וָיָיִן בְּהִתְעַטְּפָם כֶּחָלָל בִּרְחֹבוֹת עִיר בְּהִשְׁתַּפֵּךְ
,tibi faciam teſtificari Quid .ſuarum matrum ſinum in eorum *animam*
13 נַפְשָׁם אֶל־חֵיק אִמֹּתָם׃ מָה־אֲעוֹדֵךְ
te conſolabor & ,tibi æquabo quid ? Jeruſalaim filia ô tibi aſſimilabo quid
מָה אֲדַמֶּה־לָּךְ הַבַּת יְרוּשָׁלִַם מָה אַשְׁוֶה־לָּךְ וַאֲנַחֲמֵךְ
medebitur quis :tua contritio mare velut magna nam ? Sijon filia virgo
בְּתוּלַת בַּת־צִיּוֹן כִּי־גָדוֹל כַּיָּם שִׁבְרֵךְ מִי יִרְפָּא־
non & : inſulſum & , *mendacium* tibi viderunt tui Prophetæ ? tibi
14 לָךְ׃ נְבִיאַיִךְ חָזוּ לָךְ שָׁוְא וְתָפֵל וְלֹא־
: tuam *captivitatem convertendum ad* ,tuam iniquitatem ſuper revelaverunt
גִלּוּ עַל־עֲוֺנֵךְ לְהָשִׁיב שְׁבִיתֵךְ
.*expulſiones &* , *mendacii onera* tibi viderunt &
וַיֶּחֱזוּ לָךְ מַשְׂאוֹת שָׁוְא וּמַדּוּחִים׃

Verſio VUL. LAT.

4 *Daleth.* Tetendit arcũ ſuũ quaſi
inimicus, firmavit dexteram ſuã
quaſi hoſtis : & occîdit omne
ꝙ pulchrũ erat viſu in tabernaculo
filiæ Sion, effudit quaſi ignẽ
5 indignationẽ ſuã. *He.* Factꝰ eſt
Dñs velut inimicꝰ : præcipitavit
Iſrael, præcipitavit omnia mœnia
ejus : diſſipavit munitiones
ejꝰ, & replevit in filia Juda humiliatũ
6 & humiliatã. *Vau.* Et
diſſipavit quaſi hortũ tentorium
ſuũ, demolitꝰ eſt tabernaculum
ſuum : oblivioni tradidit Dñs in
Sion feſtivitatẽ, & ſabbatũ ; &
in opprobriũ, & in indignationẽ
furoris ſui, regẽ, & ſacerdotem.
7 *Zain.* Repulit Dñs altare ſuum,
maledixit ſanctificationi ſuæ :
tradidit in manu inimici muros
turrium ejus : vocẽ dederunt in
domo Dñi, ſicut in die ſolenni.
8 *Heth.* Cogitavit Dñs diſſipare
murũ filiæ Sion : tetendit funiculum
ſuum, & non avertit manum
ſuam à perditione: luxítque
antemurale, & murꝰ pariter diſſipatus
9 eſt. *Theth.* Defixæ ſunt in
terra portæ ejus : perdidit, &
contrivit vectes ejus ; regem ejꝰ
& principes ejꝰ in Gentibꝰ: non
eſt lex, & prophetæ ejꝰ non invenerunt
viſionem à Domino.
10 *Jod.* Sederunt in terra, conticuerunt
ſenes filiæ Sion : conſperſerunt
cinere capita ſua, accincti
ſunt ciliciis, abjecerunt in
terram capita ſua virgines Jeruſalem.
11 *Caph.* Defecerunt præ lachrymis
oculi mei, conturbata
ſunt viſcera mea : effuſum eſt in
terra jecur meum ſuper contritione
filiæ populi mei, cùm deficeret
parvulus & lactens in plateis
12 oppidi. *Lamed.* Matribꝰ ſuis dixerunt
; Ubi eſt triticum & vinum?
cùm deficerent quaſi vulnerati
in plateis civitatis : cùm
exhalarent animas ſuas in ſinu
13 matrum ſuarum. *Mem.* Cui
comparabo te ? vel cui aſſimilabo
te, filia Jeruſalem ? cui exæquabo
te, & conſolabor te, virgo
filia Sion? magna eſt enim velut
mare contritio tua : quis medebitur
14 tuî ? *Nun.* Prophetæ tui
viderunt tibi falſa, & ſtulta, nec
aperiebant iniquitatem tuam, ut
te ad pœnitentiam provocarent:
viderunt autem tibi aſſumptiones
falſas, & ejectiones.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp.

4 ΔΑ'ΛΕΘ. (ζ) Ἐνέτεινε τόξον αὐτοῦ ὡς ἐχθρὸς
ὑπεναντίος, ἐστερέωσε δεξιὰν αὐτοῦ
ὡς ὑπεναντίος, καὶ ἀπέκτεινε πάντα τὰ
ἐπιθυμήματα τῶν ὀφθαλμῶν μου (η) ἐν σκηνῇ
θυγατρὸς Σιὼν, ἐξέχεεν ὡς πῦρ τὸν θυμὸν
5 αὐτοῦ. ἭΗ. Ἐγενήθη κύριος ὡς ἐχθρὸς,
κατεπόντισεν Ἰσραὴλ, κατεπόντισε (ϑ)
τὰς βάρεις αὐτῆς, διέφθειρε τὰ ὀχυρώματα
(ι) αὐτοῦ, καὶ ἐπλήθυνε τῇ θυγατρὶ Ἰούδα
(κ) ταπεινουμένην καὶ τεταπεινωμένην.
6 ΟΥΑΥ͂. Καὶ διεπέτασεν ὡς ἄμπελον τὸ
σκήνωμα αὐτοῦ, διέφθειρεν ἑορτὴν αὐτοῦ.
ἐπελάθετο κύριος (ʺ)ἃ ἐποίησεν ἐν Σιὼν
ἑορτῆς καὶ σαββάτου, καὶ παρώξυνεν ἐμβριμήματι
ὀργῆς αὐτοῦ βασιλέα καὶ ἱερέα καὶ
7 ἄρχοντα. ΖΑΙ'Ν. Ἀπώσατο (λ) κύριος
θυσιαστήριον αὐτοῦ, ἀπετίναξεν ἁγίασμα
αὐτοῦ, συνέτριψεν ἐν χειρὶ ἐχθροῦ τεῖχος
βάρεων αὐτῆς. φωνὴν (μ) ἔδωκαν ἐν οἴκῳ
8 κυρίου ὡς ἐν ἡμέρᾳ ἑορτῆς. ἭΘ. Καὶ ἀπέστρεψε
(ν) διαφθεῖραι τεῖχος θυγατρὸς
Σιών· ἐξέτεινε μέτρον, οὐκ ἀπέστρεψε (ξ)
χεῖρα αὐτοῦ ἀπὸ καταπατήματος, καὶ ἐπένθησε
τὸ προτείχισμα, καὶ τεῖχος ὁμοθυμαδὸν
9 (ο) ἠσθένησε. ΤΗ'Θ. Ἐνεπάγησαν εἰς
(π) γῆν πύλαι αὐτῆς, ἀπώλεσε καὶ συνέτριψε
μοχλοὺς αὐτῆς, βασιλέα αὐτῆς καὶ (ʺ)ἄρχοντα
αὐτῆς ἐν τοῖς ἔθνεσιν. οὐκ ἔστι νόμος,
καί γε προφῆται αὐτῆς οὐκ εἶδον ὅρασιν παρὰ
10 κυρίου. ΙΩ'Δ. Ἐκάθισαν εἰς τὴν γῆν, ἐσιώπησαν
πρεσβύτεροι θυγατρὸς Σιὼν,
ἀνεβίβασαν χοῦν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτῶν, περιεζώσαντο
σάκκους, κατήγαγον εἰς (ϱ) γῆν
ἀρχηγοὺς παρθένους ἐν Ἱερουσαλήμ. ΧΑ'Φ.
11 Ἐξέλιπον ἐν δάκρυσιν οἱ ὀφθαλμοί μου, ἐταράχθη
ἡ καρδία μου, ἐξεχύθη (σ) εἰς τὴν
γῆν ἡ δόξα μου, ἐπὶ τὸ σύντριμμα τῆς θυγατρὸς
(τ) λαοῦ μου, ἐν τῷ ἐκλείπειν νήπιον
καὶ θηλάζοντα ἐν πλατείαις πόλεως.
12 ΛΑ'ΜΕΔ. Ταῖς μητράσιν αὐτῶν εἶπαν,
Ποῦ σῖτος, καὶ οἶνος; ἐν τῷ ἐκλύεσθαι αὐτοὺς
ὡς τραυματίας ἐν πλατείαις πόλεως,
ἐν τῷ ἐκχεῖσθαι ψυχὰς αὐτῶν εἰς κόλπον
13 μητέρων αὐτῶν. ΜΗ'Μ. Τί μαρτυρήσω
σοι, ἢ τί ὁμοιώσω σοι θύγατερ Ἱερουσαλήμ;
τίς (υ) σώσει καὶ παρακαλέσει σε παρθένος
θύγατερ Σιών; ὅτι ἐμεγαλύνθη
ποτήριον συντριβῆς σου, τίς ἰάσεταί σε;
14 ΝΟΥ'Ν. Προφῆταί σου (φ) εἴδοσάν σοι
μάταια καὶ ἀφροσύνην, καὶ οὐκ ἀπεκάλυψαν
ἐπὶ τὴν ἀδικίαν σου, τοῦ ἐπιστρέψαι αἰχμαλωσίαν
σου, καὶ εἴδοσάν σοι λήμματα μάταια
καὶ ἐξάσματα.

MS.A. (ζ) Ἐνέτειλεν (η) σκηνῇ (ϑ) πάσας τὰς (ι) αὐτῆς, (κ) ταπεινούμενον (ʺ) ὃ (λ) θυσιαστήριον αὐτοῦ κύριος, (μ) ἔδωκεν (ν) κύριος τοῦ διαφθεῖραι (ξ) κύριος χεῖρα (ο) ἠσθένησαν. (π) τὴν γῆν αἱ πύλαι (ʺ) ἄρχοντας (ϱ) τὴν γῆν (σ) εἰς γῆν (τ) τοῦ λαοῦ (υ) σώσει σε, (φ) ἴδον μάταια

cum Tranſ. LAT.

DALETH. Tetendit arcum ſuum 4
quaſi inimicus (d) adverſarius:
firmavit dexteram ſuam quaſi
adverſarius: & occîdit omnia
deſiderabilia oculorum meorum
in tabernaculo filiæ Sion: effudit
quaſi ignem indignationem ſuam.
HE. Factus eſt Dominꝰ velut inimicus: 5
abſorbuit Iſrael, abſorbuit
(e) palatia ejus: diſſipavit munitiones
ejus: & multiplicavit filiæ
Juda (f) humiliatam, et humiliatam.
VAU. Et fecit avolare 6
quaſi vitem, tabernaculum ſuum:
corrupit feſtivitatem ſuam. Oblitus
eſt Dominꝰ, quæ fecit in Sion,
feſtivitatis, & ſabbati: & irritavit
fremitu iræ ſuæ regem, &
ſacerdotem, & (g) principem.
ZAIN. Repulit Dominus altare 7
ſuum: excuſſit ſanctificationem
ſuam: contrivit in manu inimici
murum turrium ejus. (h) Vocem
dederunt in domo Domini, ſicut
in die feſtivitatis. HETH. Et convertit 8
ſe ad diſſipandum murum
filiæ Sion, tetendit menſuram:
non avertit manũ ſuã à conculcatione:
luxitque antemurale, &
murꝰ pariter infirmatꝰ eſt. TETH. 9
Defixæ ſunt in terram portæ ejus:
perdidit, et contrivit vectes ejus,
regem ejus, & principem ejus in
gentibus. Non eſt lex: & etiam
prophetæ ejus non viderunt viſionem
à Domino. JOD. Sederunt in 10
terra, conticuerunt ſenes filiæ Sion:
impoſuerunt cinerẽ ſuper caput
ſuũ: accincti ſunt ciliciis: deduxerunt
in terrã principes virgines
in Hieruſalem. CHAPH. 11
Defecerunt in lachrymis oculi
mei: conturbatum eſt cor meum:
effuſa eſt in terram gloria mea,
ſuper contritionem filiæ populi
mei, cùm deficeret parvulus, &
lactens in plateis civitatis. LAMED. 12
Matribus ſuis dixerunt,
ubi eſt triticum, & vinum? Cùm
diſſolverentur, quaſi vulnerati in
plateis civitatis, cùm effunderent
animas ſuas in ſinum matrũ ſuarũ.
MEM. Quid teſtificabor tibi, 13
aut quid aſſimilabo tibi, filia Hieruſalem?
Quis ſalvabit, & conſolabitur
te, virgo filia Sion? quoniam
magnificatum eſt poculum
contritionis tuæ: quis medebitur
tuî? NUN. Prophetæ tui viderunt 14
tibi vana, & ſtultitiã: & non revelârunt
ſuper iniquitatem tuã,
ad reducendam captivitatem tuam:
& viderunt tibi aſſumptiones
falſas, & ejectiones.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 מְתַח קַשְׁתֵּיהּ וּרְנַם עֲלַי גִּירִין כִּבְעֵל דְּבָבָא אִתְעַתַּד עַל יַד יְמִינֵהּ דִּנְבוּכַדְנֶצַּר וְסַיְעֵיהּ
כַּאֲלוּ הֲוָה מְעִיק לְעַמֵּיהּ יִשְׂרָאֵל וּקְטַל כָּל עוּלֵם וְכָל דְּמַרְגְּנִין לְחֵזוּ עֵינָא בְּמַשְׁכַּן
5 כְּנִשְׁתָּא דְצִיּוֹן שְׁדָא כִּבְעוּר אֶשָּׁא רוּגְזֵיהּ׃ הֲוָה יְיָ דָּמֵי כִּבְעֵל דְּבָבָא שֵׁיצֵי יִשְׂרָאֵל שֵׁיצֵי כָּל
בִּרְנְיָתְהָא חַבֵּל כָּל קִרְוֵי פַּצִּיחָתְהָא וְאַסְגֵּי בִּכְנִשְׁתָּא דְבֵית יְהוּדָה אֲבֵלוּתָא וַאֲנִינוּתָא׃
6 וְשָׁרֵשׁ כְּגִנְּתָא בֵּית מוּקְדְּשֵׁיהּ חַבֵּל אֲתַר מְזוּמַּן לְכַפָּרָא עַל עַמֵּיהּ אַנְשֵׁי יְיָ בְּצִיּוֹן חֶדְוַת
7 יוֹמָא טָבָא וְשַׁבְּתָא וּשְׁנָא בִּתְקוֹף רוּגְזֵיהּ מַלְכָּא וְכַהֲנָא רַבָּא׃ אַשְׁלֵי יְיָ מַדְבְּחֵיהּ בְּעַט
מַקְדְּשֵׁיהּ מְסַר בְּיַד בְּעֵל דְּבָבָא שׁוּרֵי בִּירָנְיָתָא קָלָא יְהַבוּ בְּבֵית מוּקְדְּשָׁא דַייָ כְּקָל
8 עַמָּא בֵּית יִשְׂרָאֵל דִּמְצַלַּן בְּגַוֵּיהּ בְּיוֹמָא דְפִסְחָא׃ חֲשַׁב יְיָ לְחַבָּלָא שׁוּר כְּנִשְׁתָּא דְצִיּוֹן
סְט מִשְׁקוֹלְתָּא וְלָא אֲתֵיב יְדֵיהּ מִלְּשֵׁיצָאָה וַאֲבֵל מַקְפָנָא וְשׁוּרָא כַּחֲדָא אִתְפַּגַּרוּ׃
9 טַמַּעוּ בְּאַרְעָא תַּרְעָהָא [עַל דִּי נְכַסוּ חֲזִירָא וְאוֹבִילוּ מִן דְּמֵיהּ עֲלַוֵּיהוֹן] הוֹבִיד וְתַבַּר
מְזוּזָתְהָא מַלְכָּהָא וְרַבְרְבָנָהָא גְּלוֹ בֵּינֵי עַמְמַיָּא עַל דְּלָא נְטַרוּ פִּתְגָּמֵי אוֹרַיְתָא כַּאֲלוּ
לָא קַבִּלוּ יָתַהּ בְּטוּרָא דְסִינַי אַף נְבִיאָהָא אִתְמְנַע מִנְּהוֹן רוּחַ נְבוּאַת קוּדְשָׁא וְלָא
10 אִתְאֲמַר לְהוֹן פִּתְגַּם נְבוּאֲתָא מִן קֳדָם יְיָ׃ יָתְבִין עַל אַרְעָא שָׁתְקִין סָבֵי כְּנִשְׁתָּא דְצִיּוֹן
אַסִּיקוּ עֲפַר מִקְלָה עַל רֵישֵׁיהוֹן קְמַרוּ סַקִּין עַל בִּסְרֵיהוֹן אַחִיתוּ לְעַפְרָא דְאַרְעָא
11 רֵישֵׁיהוֹן בְּתוּלָתָא דִירוּשְׁלֶם׃ סַפִּקוּ בִדְמָעִין עֵינַי אִדַּגְרוּ מְעַי יִתְּשַׁד לְאַרְעָא כַּבְדִי
12 עַל תְּבִיר כְּנִשְׁתָּא דְעַמִּי כַּד צַחוּ עוּלֵמַיָּא וְיַנְקַיָּא בִּפְתָאוַת קַרְתָּא׃ לְאִמְּהוֹן אָמְרִין
רוֹבַיָּא דְיִשְׂרָאֵל אָן עֲבוּר וַחֲמַר כַּד הֲווֹ צָחָן כִּקְטַל דְּחַרְבָּא מִן צְחוּתָא בִּפְתָאוַת
13 קַרְיְתָא כַּד יִתְּשַׁד נַפְשְׁהוֹן מִן כַּפְנָא לְגוֹ עֲטִיף אִמְּהוֹן׃ מָה אַסְעֵיד בָּךְ מָה אֱהֵי מְדַמֵּה
לָךְ כְּנִשְׁתָּא דִירוּשְׁלֶם מָה אַחְבִּיר לָךְ אֱהֵי מְנַחֵם לִיךְ בְּתוּלְתָּא דִכְנִשְׁתָּא דְצִיּוֹן אֲרוּם
סַגִּי תְבָרִיךְ כִּסְגִיאוּת תְּבִיר גַּלְלֵי יַמָּא רַבָּא בְּעִדָּן נַחְשׁוֹלֵיהּ וּמַן הוּא אַסְיָא דִּי יַסֵּי יָתִיךְ
14 מִן מַרְעִיךְ׃ נְבִיאַיִךְ שִׁקְרָא דִּי בֵינִיךְ הִנּוּן אִתְנַבִּיאוּ לִיךְ שִׁקְרָא וְלֵית מַמָּשׁ לִנְבוּאַתְהוֹן
וְלָא פַרְסִימוּ יָת פּוּרְעָנוּתָא דַעֲתִיד לְמֵיתֵי עֲלַיִךְ בְּגִין חוֹבַיִךְ לְאַהֲדָרוּתָךְ בִּתְיוּבְתָּא
אֱלָהֵן נַבִּיאוּ לִיךְ נְבוּאַת מַגָּן וּמִלֵּי טַעֲוָתָא׃

PARAPH. CHALD. Verrſio Latina.

DALETH. Tetendit arcum ſuum, & projecit contra me ſagittas ſicut inimicꝰ 4
: ſtetit ad manum dexteram Nabuchodonozor, & auxiliatus eſt ei
quando coarctabat populũ ſuũ domũ Iſrael: & occîdit omnem juvenem,
& omnia deſiderabilia aſpectu oculi in tabernaculo cœtꝰ Sion: effudit quaſi
lampadem ignis furorẽ ſuum. HE. Factꝰ eſt Dñs ſimilis inimico, conſumpſit 5
Iſrael, conſumpſit omnia palatia ejꝰ, diſſipavit omnes urbes & villas ejꝰ: &
multiplicavit in cœtu domꝰ Juda lamentationẽ & luctum. VAU. Et eradicavit 6
quaſi hortum domum ſanctuarii ſui, diſſipavit locum præparatum ad
propitiandũ pro populo ſuo: obliviſci fecit Dñs in Sion lætitiã diei feſti &
Sabbathi, & projecit in furore iræ ſuæ Regẽ & Sacerdotẽ magnũ. ZAIN. 7
Repulit Dñs altare ſuum, concnlcavit ſanctuariũ ſuum : tradidit in manu
inimici muros turriũ ejꝰ : vocem dederunt in domo ſanctuarii Dñi, quaſi
vocem populi domꝰ Iſrael quando precabantur in medio ejus in die Phaſe.
CHETH. Cogitavit Dñs diſperdere murũ cœtꝰ Sion: extendit perpendiculum; 8
nec retraxit manũ ſuã ab excidio; & luxit antemurale & murus, ſimul
ſuffoſſa ſunt. TETH. Defixæ ſunt in terram portæ ejus, *eò quòd mactato* 9
porco attulerunt de ſanguine ejus ad eas : perdidit & contrivit poſtes
ejus. Rex & principes ejus migraverunt inter populos, eò quòd non cuſtodierunt
verba Legis, quaſi non ſuſcepiſſent eam in monte Sinai: & etiam
à Prophetis ejus prohibitus eſt ſpiritus prophetiæ ſanctæ, & non fuit
dictum eis verbum propheticum à facie Dñi. JOD. Sederunt in terra, & 10
tacuerunt ſenes cœtus Sion; impoſuerunt cinerem ignominiæ ſuper capita
ſua, accinxeruut ſe ſaccis ſuper carnem ſuam: demiſerunt in pulverem
terræ capita ſua virgines Jeruſalẽ. CAPH. Conſumpti ſunt lachrymis oculi 11
mei; conturbata ſunt viſcera mea: effuſum eſt in terram jecur meum propter
contritionem cœtus populi mei, cùm ſiti deficerent juvenes & lactentes
in plateis civitatis. LAMED. Matribus ſuis dicebant juvenes Iſrael : 12
Ubi eſt frumentum & vinum ? quando deficiebant, quaſi occiſi gladio, præ
ſiti in plateis civitatis; quando effundebatur anima eorum præ fame in
medio ſinuum matrum ſuarum. MEM. Quem conteſtabor tibi, & cui aſſimilabo 13
te cœtꝰ Jeruſalem ? cui exæquabo te, & conſolabor te virgo cœtus
Sion ? quia magna eſt contritio tua ſicut multitudo confractionis fluctuum
maris magni in tempore tempeſtatis ſuæ: & quis eſt medicus qui ſanet
te ab infirmitate tua? NUN. Pſeudoprophetæ qui ſũt in te, ipſi prophetaverunt 14
tibi falſa, & nõ eſt ſubſtantia prophetiæ eorũ: nec manifeſtaverunt ultionẽ
quæ ventura erat tibi propter peccata tua, ut converterent te ad pœnitentiam;
ſed prophetaverunt tibi prophetiam vanam, & verba erroris.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܕ * ܡܬܚ ܩܫܬܗ ܐܝܟ ܣܢܐܐ. ܐܩܝܡ ܝܡܝܢܗ ܐܝܟ ܒܥܠܕܒܒܐ. ܘܩܛܠ ܟܠ ܪ̈ܓܝܓܝ 4
ܥܝ̈ܢܐ. ܒܡܫܟܢܐ ܕܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. ܐܫܕ ܐܝܟ ܢܘܪܐ ܚܡܬܗ. * ܗ * ܗܘܐ ܡܪܝܐ ܐܝܟ 5
ܒܥܠܕܒܒܐ. ܘܒܠܥܗ ܠܐܝܣܪܝܠ. ܘܒܠܥ ܟܠܗܘܢ ܒܝܪ̈ܬܗ. ܘܚܒܠ ܩܘܪ̈ܝܗ. ܘܐܣܓܝ
ܒܒܪܬ ܝܗܘܕܐ ܐܘܠܝܐ ܘܐܘܠܝܬܐ. * ܘ * ܦܫܛ ܐܝܟ ܓܢܬܐ ܡܛܠܬܗ. ܘܒܛܠ ܥܐܕ̈ܘܗܝ. 6
ܐܛܥܝ ܡܪܝܐ ܡܢ ܨܗܝܘܢ ܥܐܕܐ ܘܫܒܬܐ. ܘܐܣܠܝ ܒܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ ܡ̈ܠܟܐ. ܘܟܗ̈ܢܐ.
* ܙ * ܛܥܐ ܡܪܝܐ ܡܕܒܚܗ. ܐܣܠܝ ܡܩܕܫܗ. ܐܫܠܡ ܒܐܝܕܐ ܕܒܥܠܕܒܒܐ. ܫܘܪܐ ܕܒܝܪ̈ܬܗ. 7
ܩܠܐ ܝܗܒܘ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܐܝܟ ܝܘܡܐ ܕܥܐܕܐ. * ܚ * ܐܬܚܫܒ ܡܪܝܐ ܠܡܚܒܠܘ 8
ܫܘܪܐ ܕܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. ܐܪܡܝ ܚܒܠܐ. ܘܠܐ ܐܗܦܟ ܐܝܕܗ ܡܢ ܡܚܒܠܘܬܗ. ܘܐܘܒܠ ܒܐܒܠܐ ܚܝܠܗ.
ܘܫܘܪ̈ܝܗ ܐܟܚܕܐ ܚܪܒܘ. * ܛ * ܛܒܥܘ ܒܐܪܥܐ ܬܪ̈ܥܝܗ. ܐܘܒܕܘ ܘܬܒܪܘ ܡܘܟܠ̈ܝܗ. 9
ܡ̈ܠܟܝܗ ܘܪ̈ܘܪܒܢܝܗ ܒܥܡ̈ܡܐ. ܠܝܬ ܢܡܘܣܐ. ܐܦ ܢܒܝ̈ܝܗ ܠܐ ܐܫܟܚܘ ܚܙܘܐ ܡܢ ܡܪܝܐ.
* ܝ * ܝܬܒܘ ܒܐܪܥܐ ܘܫܬܩܘ. ܣ̈ܒܐ ܕܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. ܐܣܩܘ ܥܦܪܐ ܥܠ ܪ̈ܫܝܗܘܢ. 10
ܘܐܣܪܘ ܣ̈ܩܐ. ܡܟܟܘ ܠܐܪܥܐ ܪ̈ܫܝܗܝܢ. ܒܬܘ̈ܠܬܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. * ܟ * ܣܡܝ ܒܕ̈ܡܥܐ 11
ܥܝ̈ܢܝ. ܘܐܬܕܠܚܘ ܡܥ̈ܝ. ܐܬܗܦܟ ܠܐܪܥܐ ܐܝܩܪܝ. ܥܠ ܬܒܪܗ ܕܒܪܬ ܥܡܝ. ܟܕ ܐܬܢܓܕܘ
ܛܠܝ̈ܐ ܘܝܢܘܩ̈ܐ ܒܫܘܩ̈ܐ ܕܡܕܝܢܬܐ. * ܠ * ܠܐܡܗ̈ܬܗܘܢ ܐܡܪܝܢ. ܐܝܟܘ ܥܒܘܪܐ ܘܚܡܪܐ 12
ܘܡܫܚܐ. ܟܕ ܐܬܢܓܕܘ ܐܝܟ ܩܛܝ̈ܠܐ ܒܫܘܩ̈ܐ ܕܡܕܝܢܬܐ. ܟܕ ܐܫܬܦܟܘ ܢܦܫܬܗܘܢ ܒܥܘܒܐ
ܕܐܡܗ̈ܬܗܘܢ. * ܡ * ܡܢܐ ܐܣܗܕܟܝ. ܘܡܢܐ ܐܕܡܐ ܠܟܝ ܒܪܬܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܠܡܢ ܐܫܘܐ 13
ܠܟܝ ܘܐܒܝܐܟܝ. ܒܬܘܠܬܐ ܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. ܕܣܓܝ ܐܝܟ ܝܡܐ ܬܒܪܟܝ. ܡܢܘ ܢܐܣܘܟܝ.
* ܢ * ܢܒܝ̈ܝܟܝ ܚܙܘ ܠܟܝ ܕܓܠܘܬܐ. ܘܡܛܥܝܢܘܬܐ. ܠܐ ܓܠܘ ܠܟܝ 14
ܚܛܗ̈ܝܟܝ. ܕܬܬܘܒܝܢ. ܘܐܗܦܘܟ ܫܒܝܬܟܝ. ܘܚܙܘ ܠܟܝ ܢܒܝܘܬܐ ܕܓܠܬܐ
ܘܡܛܥܝܢܘܬܐ.

Tetendit arcum ſuum velut infenſus, erexit dexteram ſuam velut hoſtis, & occidit omnem oculorum voluptatem in tabernaculo filiæ Sionis, effuditque velut ignem iram ſuam? 4
Factus eſt Dominus ut inimicus, & immerſit Iſraelem, demerſitque omnia palatia ejus, & vaſtavit urbes ejus, & multiplicavit in filia Judæ querelam & lamentationes? 5
Et evulſit ut hortum tugurium ejus, & abolevit ſolennitates ejus? oblivione delevit Dominus è Sione feſtum & ſabbathum, & aſpernatus eſt in æſtu iræ ſuæ reges atque ſacerdotes? 6
Oblitus eſt Dominus altaris ſui, abominatus eſt ſanctuarium ſuum, tradidit in manum hoſtis muros palatiorum ejus, vocem ediderunt in domo Domini, ut in die ſolennitatis? 7
Conſtituit Dominus vaſtare muros filiæ Sionis, jecit funiculum, & non retraxit manum ſuam ab ea demergenda: fecit ut in luctu ſederet exercitus ejus, & muri ejus pariter deſolati ſunt? 8
Demerſerunt in terram portas ejus, perdiderunt & contriverunt ſeras ejus? reges & principes ejus ſunt inter gentes, non eſt lex, & prophetæ ejus non inveniunt viſionem à Domino? 9
Sederunt humi & conticuerunt ſeniores filiæ Sionis, pulverem jecerunt ſuper capita ſua, ſeſeque ciliciis accinxerunt: reclinaverunt humi capita ſua virgines Jeruſalem? 10
Caligaverunt lachrymis oculi mei, & conturbata ſunt viſcera mea, everſus eſt in terram honor meus propter contritionem filiæ populi mei, dum languerent pueri & infantes in plateis civitatis, 11
Matribus ſuis dicentes, Ubi eſt frumentum, vinum, & oleum? dum occiſorum inſtar agitarent ſeſe in plateis civitatis: dum effunderent ſeſe animæ eorum in ſinum matrum ſuarum. 12
Quibus *verbis* hortabor te, aut cujus ſimilitudinem afferam tibi filia Jeruſalem? cui te comparabo, ut conſoler te virgo filia Sionis? ampliſſima enim eſt velut mare labes tua; quis obſtruat? 1
Prophetæ tui viderunt tibi mendacium & ſeductionem, non retexerunt tibi peccata tua, ut te pœniteret, & averterem captivitatem tuam; ſed viderunt tibi prophetias mendaces atque fallaces. 14

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* اوتر قوسه مثل عدو معاند * وشدد يمينه مثل معاند * اباد جميع شهوات عيني * 4
افاض على مسكن ابنة صهيون مثل نار غضبه * صار الرب مثل عدو * غرق 5
ايروسليم * غرق كل قصورها * فسد حصونها * وكثر لابنة يهودا ذليلا وذليلة * وبسط 6
مثل كرم مسكنه * افسد عيده * نسي الرب ما صنع في صهيون عيدا وسبتا *
وحرد بغضب سخطه على ملك وكاهن ورئيس * اقصي الرب مذبحه * نقض مقدسه * 7
كسر بيد العدو سور قصورها * اعطي صوتا في بيت الرب مثل في يوم العيد *
* ورجع الرب ليفسد سور ابنة صهيون * مد قياسا * ولم يصرف الرب يده عن دوسها * 8
واحزنها مقاتلها * وسورها ضعفوا معا * انغمست الي الارض ابوابها * اهلك وسحق اقفالها * 9
ملكها ورئيسها في الامم ليس لهم ناموس * وانبياوهم لم يروا رويا من قبل الرب *
* جلسوا على الارض * صمتت شيوخ ابنة صهيون * اصعدوا التراب على راسهم * 10
منطقوا مسوحا * انزلوا الي الارض العذاري الرئيسات في ايروسليم * فنيتا عيناي 11
بالدموع * قلق قلبي * انسكب مجدي على الارض لانكسار ابنة شعبي * عند ما فني
طفل ورضيع في رحاب المدينة * قالوا لامهاتهم اين القمح والخمر * عند ما انحلوا مثل 12
الجرحا في شوارع المدينة * عند ما عرفت نفوسهم في حضن امهاتهم * بماذا اشهد لك 13
او بماذا اشبهك يا ابنة ايروسليم * من يخلصك ويعزيك ايها العذري ابنة صهيون *
لان كاس كسرتك عظم فمن يشفيك * انبياوك راوا باطلا وجهلا * ولم يكشفوا 14
عن ظلمك ليرد سبيك * راوا لك مناظر كاذبة وهبيات *

Tetendit arcum ſuum ut hoſtis infenſus? firmavit dexteram ſuam velut adverſarius? extinxit omnes delicias oculorum meorum? profudit ſuper habitationem filiæ Sionis velut ignem iram ſuam? 4
Factus eſt Dominus ut inimicus, demerſit Jeroſolymam, demerſit omnia palatia ejus, vaſtavit arces ejus, & multiplicavit filiæ Judæ abjectum & abjectam? 5
Et explanavit ſicut vineam habitaculum ſuum, abolevit feſtum ſuum, oblitus eſt Dominus quæ fecerat in Sione, feſtum ac ſabbathum, & ſuccenſuit in furore iræ ſuæ regi, ſacerdoti, atque principi? 6
Exterminavit Dominus aram ſuam, deſtruxit ſanctuarium ſuum, perrupit manu hoſtili murum palatiorum ejus; vocem dedit in domo Domini, ut in die feſto? 7
Converſus eſt iterum Dominus ad vaſtandum murum filiæ Sionis, menſuram tetendit, neque retraxit Dominus manum ſuam ab ea conculcanda, afflixit eam impugnator ipſius, & muri ejus ſimul infirmati ſunt? 8
Defixæ ſunt in terram portæ ejus, perdidit, & contrivit vectes ejus? rex & principes ejus inter gentes nullam habent legem, & prophetæ ejus non vident viſionem à Domino? 9
Sederunt humi, tacuerunt ſeniores filiæ Sionis, impoſuerunt pulverem capiti ſuo, accincti ſunt ciliciis; demiſerunt in terram virgines præcipuas in Jeruſalem? 10
Conſumpti ſunt lachrymis oculi mei, perturbatum eſt cor meum, effuſa eſt ſuper terram gloria mea, propter conquaſſationem filiæ populi mei, dum deficeret parvulus ac lactens in plateis urbis. 11
Matribus ſuis dicebant, ubi eſt triticum & vinum? quum diſſolverentur ſicut vulnerati in vicis urbis, quum dilaniarentur animæ eorum in ſinu matrum ſuarum. 12
Quânam te teſtimoniam afferam tibi, aut cui comparabo te O filia Jeroſolymæ? quis te liberet, & quis te conſoletur O virgo filia Sionis? quandoquidem calix contritionis tuæ magnus eſt, quis te curabit? 13
Prophetæ tui vanitatem & ſtultitiam viderunt, & non retexerunt impietatem tuam, ut amoveretur captivitas tua: viderunt tibi viſiones falſas, & phantaſmata. 14

איכה : ג

moverũt &, ſibilaverunt, viam tranſeuntes omnes *volæ* te ſuper Plauſerũt
15 סָפְקוּ עָלַיִךְ כַּפַּיִם כָּל־עֹבְרֵי דֶרֶךְ שָׁרְקוּ וַיָּנִעוּ
abſolutam dicebãt quam civitas hæc num : Jeruſalaim filiam ſuper ſuũ caput
רֹאשָׁם עַל־בַּת יְרוּשָׁלִָם הֲזֹאת הָעִיר שֶׁיֹּאמְרוּ כְּלִילַת
omnes ſuũ os te ſuper *Patefecerunt* ? terræ univerſæ gaudium, *pulchritudine*
16 יֹפִי מָשׂוֹשׂ לְכָל־הָאָרֶץ׃ פָּצוּ עָלַיִךְ פִּיהֶם כָּל־
equidem : *Abſorbuimus*, dixerunt, dente *frenduerunt* &, ſibilaverũt ; tui inimici
אֹיְבַיִךְ שָׁרְקוּ וַיַּחַרְקוּ־שֵׁן אָמְרוּ בִּלָּעְנוּ אַךְ
Dominus Fecit . vidimus, invenimus ; *eam* expectabamus quam dies hæc
17 זֶה הַיּוֹם שֶׁקִּוִּינֻהוּ מָצָאנוּ רָאִינוּ׃ עָשָׂה יְהוָה
diebus à præceperat quem , ſuũ ſermonẽ complevit , *eſt machinatus* quæ
אֲשֶׁר זָמָם בִּצַּע אֶמְרָתוֹ אֲשֶׁר צִוָּה מִימֵי־
, inimicum te ſuper fecit lætificari & ; pepercit non & , deſtruxit : *quondam*
קֶדֶם הָרַס וְלֹא חָמָל וַיְשַׂמַּח עָלַיִךְ אוֹיֵב
, Dominum ad eorum cor Clamavit . tuorum hoſtium cornu exaltavit
18 הֵרִים קֶרֶן צָרָיִךְ׃ צָעַק לִבָּם אֶל־אֲדֹנָי
, *interdiu* lachrymam torrentem veluti fac deſcendere Sijon filiæ Mure
חוֹמַת בַּת־צִיּוֹן הוֹרִידִי כַנַּחַל דִּמְעָה יוֹמָם
, Surge . tui oculi *filia* taceat non , tibi *ſedationem* des non : *noctu &*
19 וָלַיְלָה אַל־תִּתְּנִי פוּגַת לָךְ אַל־תִּדֹּם בַּת־עֵינֵךְ׃ קוּמִי
coram tuum cor aquam ſicut effunde ; *cuſtodiarum capite* in nocte in *prædica*
רֹנִּי בַלַּיְל° לְרֹאשׁ אַשְׁמֻרוֹת שִׁפְכִי כַמַּיִם לִבֵּךְ נֹכַח
tuorũ parvulorum anima *ſuper* tuas *volas* eum ad leva : Domini *faciebus*
פְּנֵי אֲדֹנָי שְׂאִי אֵלָיו כַּפַּיִךְ עַל־נֶפֶשׁ עוֹלָלַיִךְ
, Domine Vide . platearum omniũ capite in *fame in patientiũ animi deliquiũ*
20 הָעֲטוּפִים בְּרָעָב בְּרֹאשׁ כָּל־חוּצוֹת׃ רְאֵה יְהוָה
, ſuum fructum mulieres *comedent an* : ſic *cauſâſti* quem ad aſpice &
וְהַבִּיטָה לְמִי עוֹלַלְתָּ כֹּה אִם־תֹּאכַלְנָה נָשִׁים פִּרְיָם
, ſacerdos Domini ſanctuario in *occidetur an* ? *educationum* parvulos
עֹלֲלֵי טִפֻּחִים אִם־יֵהָרֵג בְּמִקְדַּשׁ אֲדֹנָי כֹּהֵן
, meæ virgines ; ſenex & , puer plateis , terra in Jacuerunt ? propheta &
21 וְנָבִיא׃ שָׁכְבוּ לָאָרֶץ חוּצוֹת נַעַר וְזָקֵן בְּתוּלֹתַי
, jugulâſti ; tui furoris die in interfeciſti : gladio in ceciderũt mei juvenes &
וּבַחוּרַי נָפְלוּ בֶחָרֶב הָרַגְתָּ בְּיוֹם אַפֶּךָ טָבַחְתָּ
, circuitu de meos timores *ſolemnitatis* diem tanquã Vocâſti . pepercisti non
22 לֹא חָמָלְתָּ׃ תִּקְרָא כְיוֹם מוֹעֵד מְגוּרַי מִסָּבִיב
, *obvinxi palmis* quos : ſuperſtes & , evaſor Domini *naſi* die in fuit non &
וְלֹא הָיָה בְּיוֹם אַף־יְהוָה פָּלִיט וְשָׂרִיד אֲשֶׁר־טִפַּחְתִּי
. *eos* conſumpſit meus inimicus ; auxi &
וְרִבִּיתִי אֹיְבִי כִלָּם׃

CAP. III. ג

, duxit Me . ejus indignationis virga in afflictionem *vidit* vir Ego
1 אֲנִי הַגֶּבֶר רָאָה עֳנִי בְּשֵׁבֶט עֶבְרָתוֹ׃ אוֹתִי נָהַג
2 , eſt converſus me *in* Profectò . lucem non & , *tenebroſitatem* fecit ire &
3 וַיֹּלַךְ חֹשֶׁךְ וְלֹא־אוֹר׃ אַךְ בִּי יָשֻׁב
, meam carnem *reddidit Vetuſtam* . die tota ſuam manum vertit
4 יַהֲפֹךְ יָדוֹ כָּל־הַיּוֹם׃ בִּלָּה בְשָׂרִי
. mea oſſa confregit , meam pellem &
וְעוֹרִי שִׁבַּר עַצְמוֹתָי׃

Verſio VULG. LAT.

15 *Samech.* Plauſerunt ſuper te manibus omnes tranſeuntes per viã: ſibilaverunt, & moverunt caput ſuum ſuper filiã Jeruſalem; Hæccine eſt urbs, dicentes, perfecti decoris, gaudium univerſæ terræ? 16 *Phe.* Aperuerunt ſuper te os ſuum omnes inimici tui: ſibilaverunt, & fremuerunt dentibus, & dixerunt; Devorabimus: en iſta eſt dies, quam expectabamus: invenimus, vidimus. 17 *Ain.* Fecit Dominus quæ cogitavit, complevit ſermonem ſuum, quem præceperat à diebus antiquis: deſtruxit, & non pepercit, & lætificavit ſuper te inimicum, & exaltavit cornu hoſtium tuorum. 18 *Sade.* Clamavit cor eorum ad Dominum ſuper muros filiæ Sion; Deduc quaſi torrentem lachrymas, per diem & noctem: non des requiem tibi, neq; taceat pupilla oculi tui. 19 *Coph.* Conſurge, lauda in nocte, in principio vigiliarum: effunde ſicut aquã cor tuum ante conſpectum Domini: leva ad eum manus tuas pro anima parvulorum tuorum, qui defecerunt in fame in capite omnium compitorum. 20 *Res.* Vide, Domine, & conſidera quem vindemiaveris ita: ergóne comedent mulieres fructum ſuum, parvulos ad menſuram palmæ? ſi occiditur in Sanctuario Domini ſacerdos, & propheta? 21 *Sin.* Jacuerunt in terra foris puer, & ſenex: virgines meæ, & juvenes mei ceciderunt in gladio: interfeciſti in die furoris tui: percuſſiſti, nec miſertus es. 22 *Thau.* Vocâſti quaſi ad diem ſolennem, qui terrerent me de circuitu, & non fuit in die furoris Domini qui effugeret, & relinqueretur: quos educavi, & enutrivi, inimicus meus conſumpſit eos.

CAP. III.

1 *Aleph.* Ego vir videns paupertatem meam in virga indignationis ejus. 2 *Aleph.* Me minavit, & adduxit in tenebras, & non in lucem. 3 *Aleph.* Tantùm in me vertit, & convertit manum ſuam totâ die. 4 *Beth.* Vetuſtam fecit pellem meam & carnem meam, contrivit oſſa mea.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

15 ΣΑ'ΜΕΧ. Ἐκρότησαν ἐπὶ σὲ χεῖρας πάντες οἱ παραπορευόμενοι ὁδὸν, ἐσύρισαν ϗ ἐκίνησαν τὴν κεφαλὴν αὐτῶν ἐπὶ τὴν θυγατέρα Ἱερουσαλήμ. (χ) Αὕτη ἡ πόλις, ἐροῦσι, στέφανος εὐφροσύνης πάσης τῆς γῆς; 16 'ΑΙ'Ν. Διήνοιξαν ἐπὶ σὲ στόμα αὐτῶν πάντες οἱ ἐχθροί σου, ἐσύρισαν ϗ ἔβρυξαν ὀδόντας, ϗ εἶπαν, Καταπίομεν αὐτήν· πλὴν αὕτη ἡ ἡμέρα, ἣν προσεδοκῶμεν, εὕρομεν αὐτὴν, εἴδομεν. 17 ΦΗ˜. Ἐποίησε κύριος ἃ ἐνεθυμήθη, συνετέλεσε (ψ) ῥῆμα αὐτοῦ, ἃ ἐνετείλατο ἐξ ἡμερῶν ἀρχαίων· καθεῖλε, ϗ οὐκ ἐφείσατο, ϗ ηὔφρανεν ἐπὶ σὲ ἐχθρὸν, ὕψωσε (ω) κέρας θλίβοντός σε. 18 ΤΣΑ'ΔΗ. Ἐβόησε καρδία αὐτῶν πρὸς κύριον, Τείχη Σιὼν (α) καταγάγετε ὡς χειμάῤῥους δάκρυα ἡμέρας ϗ νυκτός· μὴ δῷς ἔκνηψιν σεαυτῇ, μὴ σιωπήσαιτο (β) θυγάτηρ ὀφθαλμῶν σου. 19 ΚΩ'Φ. Ἀνάστα, ἀγαλλίασαι ἐν νυκτὶ εἰς ἀρχὰς φυλακῆς σου, ἔκχεον ὡς ὕδωρ καρδίαν σου ἀπέναντι προσώπου κυρίου, (γ) ἆρον πρὸς αὐτὸν χεῖράς σου περὶ ψυχῆς νηπίων σου, τῶν ἐκλυομένων λιμῷ ἐπ' ἀρχῆς πασῶν ἐξόδων. 20 ΡΗ'ΧΣ. Ἴδε κύριε ϗ ἐπίβλεψον τίνι (δ) ἐπεφύλλισας οὕτως. εἰ φάγονται γυναῖκες καρπὸν κοιλίας αὐτῶν; ἐπιφυλλίδα ἐποίησε μάγειρος, φονευθήσονται νήπια θηλάζοντα (ε) μαστούς; ἀποκτενεῖς ἐν ἁγιάσματι κυρίου ἱερέα ϗ προφήτην; 21 ΧΣΕ'Ν. Ἐκοιμήθησαν εἰς τὴν ἔξοδον παιδάριον ϗ πρεσβύτης· παρθένοι μου ϗ νεανίσκοι μου ἐπορεύθησαν ἐν αἰχμαλωσίᾳ, ἐν ῥομφαίᾳ ϗ ἐν λιμῷ ἀπέκτεινας, ἐν ἡμέρᾳ ὀργῆς σου ἐμαγείρευσας, οὐκ ἐφείσω. 22 ΘΑΥ˜. Ἐκάλεσεν ἡμέραν ἑορτῆς παροικίας μου κυκλόθεν, ϗ οὐκ (ζ) ἐγένοντο ἐν ἡμέρᾳ ὀργῆς κυρίου ἀνασωζόμενος ϗ καταλελειμμένος, ὡς ἐπεκράτησα, ϗ ἐπλήθυνα ἐχθρούς μου πάντας.

15 SAMECH. *Plauſerunt ſuper te manib' omnes tranſeuntes per viam: ſibilaverunt, & moverũt caput ſuũ ſuper filiam Hieruſalem. Haccine eſt urbs, dicent, (i) corona (k) lætitiæ univerſæ terræ?* 16 AIN. *Aperuerũt ſuper te os ſuũ omnes inimici tui: ſibilaverunt, et fremuerũt dentib', et dixerũt; (l) Abſorbuim' eam, profectò hæc eſt dies, quã expectabam': invenim' eã, vidim'.* 17 PHE. *Fecit Domin', quæ cogitavit: complevit ſermonem ſuũ, (m) quæ præceperat à dieb' antiquis: deſtruxit, & non pepercit: et lætificavit ſuper te inimicum: exaltavit cornu tribulantis te.* 18 TSADE. *Clamavit cor eorũ ad Dominũ; Muri Sion deducite quaſi torrentes, lachrymas per diẽ, et noctẽ: non des requiẽ tibi: non taceat (n) filia oculorũ tuorũ.* 19 COPH. *Surge, exulta in nocte in principiis cuſtodiæ tuæ: effunde ſicut aquã cor tuum ante faciem Domini: leva ad eum manus tuas pro anima parvulorum tuorum, qui diſſolvuntur fame in principio omnium compitorum.* 20 RECHS. *Vide, Domine, & conſidera, quẽ vindemiâris ita. Si comedent mulieres fructum ventris ſui? vindemiam fecit coquus: occidentur parvuli ſugentes ubera? (o) Occĩdes in Sanctuario Domini ſacerdotem, et prophetã?* 21 CHSEN. *Dormierunt (p) in via parvul' & ſenex: virgines meæ, & juvenes mei abierunt in captivitatẽ, in gladio, & in fame occidiſti in die iræ tuæ, mactâſti, non pepercisti.* 22 THAU. *(q) Vocavit (r) diem ſolennitatis (ſ) parœcias meas de circuitu: & non fuerunt in die iræ Domini, qui effugeret ſalvus, & qui relinqueretur: (t) ſicut invaleſcere feci, & multiplicavi inimicos meos omnes.*

MS.A. (χ) Ἡ αὐτὴ ἡ πόλις ἣν ἐροῦσιν, στέφανος δόξης εὐφροσύνης (ψ) ῥήματα αὐτοῦ, ἃ ἐνεθυμήθη ἐξ (ω) κεφαλὰς (α) καταγαγέτωσαν (β) θυγάτηρ ὁ ὀφθαλμός σου. (γ) ἆρον ἆρον (δ) ἐπεφαύλισας (ε) μαστούς; (ζ) ἐγένετο

ΚΕΦ. γ'.

1 ᾿ΑΛΕΦ. Ἐγὼ ἀνὴρ ὁ βλέπων πτωχείαν, 2 ἐν ῥάβδῳ θυμοῦ αὐτοῦ ἐπ' ἐμέ. Παρέλαβέ με ϗ ἀπήγαγέ με εἰς σκότος, ϗ οὐ φῶς. 3 Πλὴν ἐν ἐμοὶ ἐπέστρεψε χεῖρα αὐτοῦ ὅλην 4 τὴν ἡμέραν, Ἐπαλαίωσε (α) σάρκα μου ϗ δέρμα μου, (β) ὀστέα μου συνέτριψεν.

MS.A. (α) τὰς σάρκας (β) ὀστᾶ

CAP. III.

1 ALEPH. *Ego vir videns paupertatem, in virga furoris ejus ſuper me.* 2 *Minavit me, et abduxit me in tenebras, & non lucem.* 3 *Tantùm in me convertit manum ſuam totâ die:* 4 *Vetuſtam fecit carnem meam, & pellem meam: oſſa mea contrivit.*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

15 שְׁפַקוּ עֲלַיִךְ יְדֵיהוֹן כָּל עָבְרֵי אוֹרְחָא שְׁרִיקוּ בְּסִפְוָתְהוֹן וְטַלְטִילוּ בְרֵישֵׁיהוֹן עַל כְּנִשְׁתָּא
דִירוּשְׁלֶם אֲמַרוּ בְּפוּמְהוֹן הֲדָא הִיא קַרְתָּא דַּהֲווֹ אָמְרִין אֲבָהָתַן דְּמִלְקַדְמִין דְּהִיא גְמִירַת
16 נוֹאֵי וְשׁוּפְרָא חֶדְוָה לְכָל יָתְבֵי אַרְעָא׃ פְּתַחוּ עֲלַיִךְ פּוּמְהוֹן כָּל בַּעֲלֵי דְבָבִיךְ שְׁרַקוּ
בְּסִפְוָתְהוֹן וְעַסִּיאוּ בְשִׁנֵּיהוֹן וַאֲמַרוּ שֵׁיצֵינָא בְּרַם דֵּין יוֹמָא דַהֲוֵינָא מְתִינָן אַשְׁכַּחְנָא חֲזֵינָא׃
17 עֲבַד יְיָ מַה דַּחֲשִׁיב גְּמַר מֵימַר פּוּמֵיהּ דִּי פַּקִּיד לְמֹשֶׁה נְבִיָּא מִן יוֹמִין קַדְמָאִין דְּאִי לָא
נָטְרִין בְּנֵי יִשְׂרָאֵל יַת פִּקּוֹדַיָּא דַּיְיָ עָתִיד לְאִתְפְּרַע מִנְּהוֹן פַּגַּר וְלָא חָס וְאַחְדֵּי עֲלַיִךְ בְּעִיל
18 דְּבָבָא אֲרִים יְקַר מְעִיקָיִךְ׃ צְוַח לִבְּהוֹן קֳדָם יְיָ דְּרָחֵם עֲלֵיהוֹן שׁוּרָא דִיקָרָא דְצִיּוֹן וַלְגִי
כְּנַחֲלָא דִמְעִין יְמָם וְלֵילְיָא לָא תִתְּנִין תַּנְחוּמִין לְצַעֲרַיִךְ לְפַיְּנָא צְלוֹתָא דִי לָךְ וְלָא תִשְׁתּוֹק
19 עֵינָךְ מִלְּמִדְמַע׃ קוּמִי כְּנִשְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל שָׁרְיָא בְּגָלוּתָא עֲסוּקִי בְּמִשְׁנָה בְּלֵילְיָא אֲרוּם
שְׁכִנְתָּא דַיְיָ שָׁרְיָא לְקִבְלִיךְ וּבְפִתְגָּמֵי אוֹרַיְתָא בְּשֵׁירוּי שְׁפַרְפָּרָא שְׁדִיאִי הֵיךְ מַיָּא עַקְמוּמִית
לִבֵּיךְ וַהֲדָרִי בִתְיוּבְתָּא וְצַלַּאִי בְּבֵית כְּנִשְׁתָּא כָּל קֳבֵל אַפֵּי יְיָ טוֹלִי לְוָתֵיהּ בִּצְלוֹ יְדַיִךְ עַל
20 נַפְשַׁת עוּלֵמַיִךְ דְּצָחִין בְּכַפְנָא בְּרִישׁ כָּל מְחוֹזִין׃ חֲזֵי יְיָ וְתֶהֱוֵי מִסְתַּכֵּל מִן שְׁמַיָּא לְמַן
אִסְתַּקְפְּתָא כְדְנַן אִם חֲזֵי לִבְנָתָא דְיִשְׂרָאֵל לְמֵיכַל פֵּרֵי בִטְנֵיהוֹן עוּלֵמַיָּא רְבִיבַיָּא דַהֲווֹ
מְלַפְּפִין בִּסְדִינִין דְּמִילָתָא עֲנַת מִדַּת דִּינָא וְכֵן אֲמָרַת אִם חֲזֵי לְמִקְטַל בְּבֵית מוּקְדְּשָׁא דַיְיָ
כָּהֲנָא וּנְבִיָּא כְּמָה דִקְטַלְתּוֹן יַת זְכַרְיָה בַר עִדּוֹ כַּהֲנָא רַבָּא וּנְבִיָּא מְהֵימָן בְּבֵית מוּקְדְּשָׁא
21 דַיְיָ בְּיוֹמָא דְכִפּוּרַיָּא עַל דְּאוֹכַח יַתְכוֹן דְּלָא תַעַבְדוּן דְּבִישׁ קֳדָם יְיָ׃ דְּמַכוּ עַל אַרְעָא
בְּמַחוֹזִין עוּלֵמַיָּא וְסָבַיָּא דַהֲווֹ רְגִילִין לְמִשְׁכּוּב עַל כָּרִין דְּמֵילָת וְעַל עַרְסִין דְּשֵׁן דְּפִיל
22 בְּתוּלָתַי וְרוֹבַי נְפַלוּ קְטִילִין בְּחַרְבָּא קְטַלְתָּא בְּיוֹם רוּגְזָךְ נְכַסְתָּא וְלָא חַסְתָּא׃ תִּהְוֵי
קָרֵי חֵירוּתָא לְעַמָּךְ בֵּית יִשְׂרָאֵל עַל יַד מְשִׁיחָא הֵיכְמָה דַעֲבַדְתְּ עַל יַד מֹשֶׁה וְאַהֲרֹן
בְּיוֹמָא דְפִסְחָא וְיִתְכַּנְשׁוּן עוּלֵמַי חֲזוֹר חֲזוֹר מִן כָּל אֲתַר דְּאִתְבַּדַּרוּ תַמָּן בְּיוֹמָא
תְּקִיף רוּגְזָךְ יְיָ וְלָא הֲוָה בְהוֹן שֵׁיזָבָא וּשְׁאָרָא דְלַפֵּפִית בִּסְדִינִין וּדְרַבֵּיתִי בְתַפְנוּקֵי
מַלְכִין בַּעֲלֵי דְבָבִי שֵׁיצִיאוּנוּן׃

ג

1 אֲנָא גַבְרָא דַחֲזָא עֳנִי בְּחוּטְרָא דְרָדֵי בִרְוָגְזֵיהּ׃ יָתִי דְבַר וְאוֹבִיל חֲשׁוֹכָא וְלָא לְאַנְהָרָא׃
2
3 בְּרַם בִּי יְתוּב יִגַלְגֵּל עֲלַי מַחְתֵיהּ כָּל יוֹמָא׃ עַתִּיק בִּסְרִי מִמַּכְתָּשִׁין וּמַשְׁכִּי מִן
4 מַחְתָּא תְּבַר גַּרְמֵי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

15 SAMECH. Plauſerunt ſuper te manib' ſuis omnes tranſeuntes viã, ſibilaverunt labiis ſuis, & moverunt capita ſua ſuper cœtũ Jeruſalẽ: dixerunt in ore ſuo, Hæccine eſt civitas de qua dicebant patres noſtri antiqui, ꝙ eſſet perfecti decoris & pulchritudo gaudii habitatorib' terræ? 16 PE. Aperuerunt ſuper te os ſuũ omnes inimici tui, ſibilaverunt labiis ſuis, fremuerunt dentib' ſuis: dixerunt, Conſumpſim': veruntamen hic eſt dies quẽ expectavimus; invenim', vidim'. 17 AIN. Fecit Dñs id quod cogitaverat, conſummavit verbum oris ſui, ꝙ præceperat Moſi prophetæ à dieb' antiquis; quòd ſi non cuſtodirent filii Iſrael præcepta Dñi, ultionẽ ſumeret ex eis: deſtruxit & non pepercit, & lætificavit ſuper te inimicum, exaltavit gloriam tribulantiũ te. 18 SADICH. Clamavit cor eorũ corã Dño, qui miſeretur ipſorũ: Mure gloriæ Sion dimana inſtar torrentis lacrymas die ac nocte, ne des conſolationes tuis doloribus; ut ceſſes ab oratione tua, nec taceat oculus tuus à fletu. 19 COPH. Surge cœt' Iſrael qui habitas in captivitate, & da operã lectioni in nocte, quoniã majeſtas Dñi habitat in conſpectu tuo, & verbis Legis in principio cuſtodiæ matutinæ: effunde ſicut aquã perverſitatẽ cordis tui, & convertere ad pœnitentiã, & ora in domo congregationis ante faciẽ Dñi: leva ad eũ in oratione man' tuas propter animas juvenũ tuorũ qui deficiũt fame in capite omniũ vicorũ. 20 RES. Vide Dñe & contemplare de cœlis in quẽ occaſiones quæſiſti ita: nũ decens eſt ut comedant filiæ Iſrael fructum ventris ſui, parvulos deſiderabiles qui involvebantur ſindonib' ſericeis? Reſpondit menſura judicii, & ſic ait: Nunquid decens eſt ut occidatur in domo ſanctuarii Dñi Sacerdos & *Prophetæ?* quemadmodũ interfeciſtis Zachariã filiũ Addo ſacerdotẽ magnũ & prophetã fidelẽ in domo ſanctuarii Dñi in die propitiationum, eò quòd caſtigabat vos ne faceretis quod malũ eſt corã Dño? 21 SIN. Dormierunt humi in vicis juvenes, & ſenes qui aſſueti erant dormire in culcitris ſericeis, & in lectulis eburneis. Virgines meæ & juvenes mei ceciderunt interfecti gladio: occidiſti in die furoris tui, jugulâſti & non pepercisti. 22 THAU. Vocabis libertatẽ populo tuo domui Iſrael ꝑ manum Meſſiæ, ſicut feciſti per manũ Moſis & Aaron in die Phaſe, & congregabuntur juvenes mei per circuitum de omni loco ad quem diſperſi ſunt in die iræ furoris tui Dñe, & non fuit in eis qui liberaretur & relinqueretur: quos involvi ſindonibus, & nutrivi in deliciis regum, inimici mei conſumpſerunt eos.

CAP.III. ALEPH.

1 Ego ille vir qui vidi afflictionem in virga illius qui caſtigat in ira ſua. 2 Me duxit & adduxit ad tenebras, & non ad lucem. 3 Veruntamen in me ſe convertit, & revolvit ſuper me plagam ſuam tota die. 4 BETH. Vetuſta facta eſt caro mea à plagis, & pellis mea à percuſſione, confregit oſſa mea.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܣ * ܢܩܫܘ ܥܠܝܟܝ ܐܝ̈ܕܝܗܘܢ. ܟܠ ܥܒ̈ܪܝ ܐܘܪܚܐ. ܐܫܪܩܘ ܘܐܢܝܕܘ ܪ̈ܫܝܗܘܢ ܥܠ 15
ܒܪܬ ܐܘܪܫܠܡ. ܘܐܡܪܘ. ܗܕܐ ܗܝ ܡܕܝܢܬܐ ܕܐܡܪܝܢ ܗܘܘ ܕܫܟܝܠܬ ܫܘܦܪܐ. ܘܚܕܘܬܐ ܕܟܠܗ
ܐܪܥܐ. * ܥ * ܥܒܕ ܡܪܝܐ ܡܕܡ ܕܐܬܚܫܒ. ܘܫܠܡ ܡܠܬܗ. ܐܝܟ ܕܦܩܕ ܡܢ ܝܘܡܬܐ 16
ܩܕܡܝܐ. ܣܚܦܗ ܘܠܐ ܚܣ. ܘܐܚܕܝ ܒܟܝ ܒܥܠܕܒܒܝܟܝ. ܘܐܪܝܡ ܩܪܢܐ ܕܐܠܘܨܝܟܝ.
* ܦ * ܦܬܚܘ ܥܠܝܟܝ ܦܘܡܗܘܢ. ܟܠܗܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝܟܝ. ܐܫܪܩܘ ܘܚܪܩܘ 17
ܫܢܝܗܘܢ. ܘܐܡܪܘ ܢܒܠܥܝܗ. ܗܢܐ ܗܘ ܝܘܡܐ ܕܣܟܝܢܢ ܐܫܟܚܢ ܘܚܙܝܢ. * ܨ * ܓܥܐ 18
ܠܒܗܘܢ ܠܘܬ ܡܪܝܐ ܕܫܘܪܐ ܕܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. ܐܪܕܝ ܐܝܟ ܢܚܠܐ ܕܡܥܬܐ ܒܐܝܡܡܐ ܘܒܠܠܝܐ.
ܠܐ ܬܬܠܝܢ ܠܟܝ ܦܘܢܝܐ. ܘܠܐ ܬܫܠܐ ܒܒܬ ܥܝܢܟܝ. * ܩ * ܩܘܡܝ ܫܒܚܝ ܒܠܠܝܐ 19
ܒܪܫ ܡܛܪܬܐ. ܘܐܫܘܕܝ ܐܝܟ ܡܝܐ ܠܒܟܝ. ܩܕܡ ܦܪܨܘܦܗ ܕܡܪܝܐ. ܐܪܝܡܝ ܠܘܬܗ
ܐܝܕܝܟܝ ܥܠ ܢܦܫܐ ܕܥܘܠܠܝܟܝ. ܕܥܛܦܝܢ ܒܟܦܢܐ. ܒܪܫ ܟܠܗܘܢ ܫܘܩܐ. * ܪ * ܚܙܝ 20
ܡܪܝܐ ܘܚܘܪ. ܠܡܢ ܥܒܕܬ ܗܟܢܐ. ܐܢ ܐܟܠܢ ܢܫܐ ܦܐܪܐ ܕܟܪܣܗܝܢ. ܥܘܠܠܐ ܕܡܫܬܦܝܢ.
ܐܢ ܢܬܩܛܠ ܒܡܩܕܫܗ ܕܡܪܝܐ ܟܗܢܐ ܘܢܒܝܐ. * ܫ * ܫܟܒܘ ܥܠ ܐܪܥܐ ܒܫܘܩܐ 21
ܛܠܝܐ ܘܣܒܐ. ܒܬܘܠܬܝ ܘܥܠܝܡܝ ܢܦܠܘ ܒܚܪܒܐ. ܩܛܠܬ ܒܝܘܡܐ ܕܪܘܓܙܟ.
ܢܟܣܬ ܘܠܐ ܚܣܬ. * ܬ * ܩܪܝܬ ܐܝܟ ܝܘܡܐ ܕܥܐܕܐ ܠܒܥܠܕܒܒܝ ܡܢ ܚܕܪܝ. ܘܠܐ ܗܘܐ 22
ܒܝܘܡܐ ܕܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ. ܦܠܝܛܐ ܘܫܪܝܕܐ. ܕܥܒܬ ܘܪܒܝܬ ܒܥܠܕܒܒܝ ܫܠܡܘ ܐܢܘܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܓ *

* ܐ * ܐܝܠ ܚܝܠܬܢܐ. ܚܙܝ ܫܥܒܕܘܬܝ. ܒܫܒܛܐ ܕܪܘܓܙܗ. * ܠܝ ܕܒܪ. ܘܐܘܒܠܢܝ 1 2
ܠܚܫܘܟܐ. ܘܠܐ ܠܢܘܗܪܐ. * ܒܪܡ ܒܝ ܗܦܟ. ܘܗܦܟ ܐܝܕܗ. ܟܠܗ ܝܘܡܐ. 3
* ܒ * ܒܠܝ ܒܣܪܝ ܘܡܫܟܝ. ܘܬܒܪ ܓܪܡܝ. 4

Plauſerunt ſuper te manus ſuas omnes viato- 15
res, ſibilârunt, capita ſua motaverunt ſuper
filiam Jeruſalem, ac dixerunt; Hæccine eſt
illa civitas quam perfectiſſimè pulchram, to-
tiuſque terræ delitias eſſe prædicabant? Fe- 16
cit Dominus quod conſtituerat, perfecitque
verbum ſuum, quemadmodum præceperat à
priſcis diebus; deſtruxit eam citra clementi-
am, exhilaravit de te inimicos, & extulit cor-
nu oppreſſorum tuorum. Aperuerunt contra 17
te os ſuum omnes inimici tui, ſibilaverunt,
dentibuſque ſuis frenduerunt dicentes, Deglu-
tivimus eam: hic ſanè dies eſt quem expecta-
bamus, *jam* invenimus, & vidimus: Mugivit 18
cor eorum contra Dominum murorum filiæ
Sionis. Dimana ceu torrentem lachrymas
diu noctuque, ne des tibi refrigerium, néve
ceſſet pupilla oculi tui. Surge, dic laudes 19
noctu in principio vigiliæ, & effunde velut
aquas cor tuum ante faciem Domini, attolle
ad eum manus tuas pro anima natorum tuo-
rum qui fame langueſcunt in compitis omni-
um platearum, *dicens*; Reſpice Domine, & 20
conſidera quibus talia feceris, itáne, come-
derent mulieres fœtus ſuos, infantes alliſos?
itáne, occideretur in ſanctuario Domini ſacer-
dos & propheta? Jacuerunt humi in pla- 21
teis pueri & ſenes, virgines meæ & adole-
ſcentes mei gladio ceciderunt, trucidâſti in
die furoris tui, mactâſti, & non peper-
ciſti. Convocâſti ut in die ſolennitatis ini- 22
micos meos circunquaque, nec remanſit in
die furoris Domini profuga aut ſuperſtes:
quos portaveram & educaveram, hos inimici
mei conſumpſerunt.

CAP. III.

DEus potentiſſime, intuere ſubjectionem 1
meam. Virgâ furoris ſui Me duxit, egitque 2
in tenebras, non autem in lucem: Imò con- 3
tra me rediens, & reflectens manum ſuam to-
tâ die; Conſumpſit cutem carnemque meam, 4
& comminuit oſſa mea.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

15 * صفقت عليك بايديها جميع مار الطريق * صفروا وحركوا راسهم علي ابنة ايروسليم *
17 ويقولون هذه المدينة التي كانت اكليل مجد وسرور لكل الارض * فتحوا عليك فاهم
جميع اعدائك * صفروا وسنوا اسنانهم وقالوا * نبتلعها لان هذا اليوم الذي كنا
16 ننتظر وجدناه ورأيناه * صنع الرب ما افكر فيه * انجز كلماته التي افكر فيها
18 منذ الايام الاولي * هدم ولم يشفق * واشمت بك العدو * رفع روس محزنيك * صرخ قلبهم
الي الرب يا اسوار صهيون * فليذرفوا مثل الوادي دموعا نهارا وليلا * لا تعطي لذاتك راحة *
19 لا تغفل ايتها الابنة عينك * قومي هللي في الليل في مبادي محارسك * اهرقي قلبك
مثل ماء قدام وجه الرب * ارفعي ارفعي اليه يديك من اجل نفس اطفالك الذين
20 انحلوا بالجوع على مبداء جميع مخارجك * انظر يا رب واطلع لماذا فضحتنا هكذا *
اتاكل النساء ثمر بطونهن * عمل الطباخ بعان * يقتلون الاطفال والذين يرضعون
21 الثدي * تقتل في قدس الرب كاهنا ونبيا * رقد في المخرج صبي وشيخ * عذاري وشباني
22 مضوا في السبي بالسيف والجوع قتلتهم في يوم رجزك * طبختهم ولم تشفق * دعا يوم
عيد غريبي من حولي * ولم يصر في يوم رجز الرب متخلص ومتروك * كما مسكت
واكثرت جميع اعدائي *

* الفصل الثالث *

* الاصحاح السادس والثلاثون *

* الثالث من المراثي *

1 2 * انا رجل انظر المسكنة * بعصي غضبه علي * اخذني وساقني الي الظلام وليس للنور *
3 6 * رد يده علي النهار كله * عتق لحماني وجلدي * وكسر عظامي *

Plauſerunt ſuper te manibus ſuis omnes 15
tranſeuntes viam, ſibilaverunt & caput
ſuum agitaverunt ſuper filiam Jeroſo-
lymæ, dicentes, Hæc eſt urbs illa quæ erat
corona gloriæ & lætitiæ toti terræ.

Tranſponit hos duos Verſ. ut in
Hebr. & Lxx.

Aperuerunt ſuper te os ſuum omnes inimi- 17
ci tui, ſibilaverunt & exacuerunt den-
tes ſuos, ac dixerunt: Deglutiamus
eam, quia diem hunc quem expecta-
bamus, invenimus ac vidimus. Fecit 16
Dominus quod cogitaverat, perfecit
verba ſua quæ cogitaverat à priſtinis
diebus: deſtruxit, neque pepercit, &
lætificavit de te inimicum, extulit capi-
ta affligentium te. Clamavit ad Domi- 18
num cor eorum O muri Sionis: pro-
fundant quaſi torrentem lachrymas die
nocteque: ne des tibi requiem, ne dor-
miſcat O filia, oculus tuus. Surge, ju- 19
bila in nocte in principiis excubiarum
tuarum, effunde cor tuum velut aquam
ante faciem Domini: attolle, attolle ad
eum manus tuas pro anima parvu-
lorum tuorum qui ſunt fame diſſoluti
in aditu omnium compitorum tuorum.
Aſpice Domine, & intuere cur nos ita 20
contumelioſos reddideris: comedéntne
mulieres fructum ventris ſui? faciet
coquus racemationem? occidentur par-
vuli & qui ubera ſugunt? occîdes in
ſanctuario Domini ſacerdotem & pro-
phetam? Jacuit in compito puer & 21
ſenex, virgines meæ & juvenes mei
abierunt in captivitatem, gladio & fame
peremiſti eos in die furoris tui, coxiſti
eos & non pepereiſti. Convocavit diem 22
feſtum peregrinorum à me è circumja-
centibus mihi regionibus, & non fuit
in die furoris Domini, qui evaderet aut
ſupereſſet; quantùm ſuſtinuiſti, & mul-
tiplicâſti omnes inimicos meos!

CAP. III.

Textus trigeſimus ſextus.

Lamentatio tertia.

M*E virum qui paupertatem experior,* 1
baculo furoris ſui mihi imminente, Duxit 2
& abegit ad tenebras, non autem ad lu- 3
cem. Repetiit manũ ſuã ſuper me totâ die.
Tranſpoſiti peculiari ordine Verſiculi.
Vetuſtas reddidit carnes meas & pellem 6
meam, & comminuit oſſa mea.

איכה : ג

locis tenebroſis In .fatigatione & ,felle circundedit & ,me ſuper Ædificavit
5 6 בָּנָה עָלַי וַיַּקַּף רֹאשׁ וּתְלָאָה׃ בְּמַחֲשַׁכִּים
non & ,me pro ſtruxit Maceriam .ſeculi mortuos veluti me fecit manere
7 הוֹשִׁיבַנִי כְּמֵתֵי עוֹלָם׃ גָּדַר בַּעֲדִי וְלֹא
,vociferabar &,clamabā quādo Etiā .meū compedē fecit aggravari ;egrediar
8 אֵצֵא הִכְבִּיד נְחָשְׁתִּי׃ גַּם כִּי אֶזְעַק וַאֲשַׁוֵּעַ
meas ſemitas :lapide exciſo in meas vias Circūſepſit .meā orationē obſtruxit
9 שָׂתַם תְּפִלָּתִי׃ גָּדַר דְּרָכַי בְּגָזִית נְתִיבֹתַי
meas Vias .abſconditis in leo ,mihi ipſe inſidians Urſus .pervertit
10 11 עִוָּה׃ דֹּב אֹרֵב הוּא לִי אַרְיֵה בְּמִסְתָּרִים׃ דְּרָכַי
Tetendit .deſolatam me poſuit ,me minutim concidit & fecit divertere
12 סוֹרֵר וַיְפַשְּׁחֵנִי שָׂמַנִי שֹׁמֵם׃ דָּרַךְ
fecit Ingredi .ſagittam ad ſcopum tanquam me ſtatuit & ,ſuum arcum
13 קַשְׁתּוֹ וַיַּצִּיבֵנִי כַּמַּטָּרָא לַחֵץ׃ הֵבִיא
eorū canticū,meo populo omni riſus Fui .ſuæ pharetræ filios meos renes in
14 בְּכִלְיוֹתָי בְּנֵי אַשְׁפָּתוֹ׃ הָיִיתִי שְׂחֹק לְכָל־עַמִּי נְגִינָתָם
me fecit inebriare ,amaritudinibus in me fecit Saturari .die tota
15 כָּל־הַיּוֹם׃ הִשְׂבִּיעַנִי בַמְּרוֹרִים הִרְוַנִי
.pulvere in me immerſit,meos dētes lapillo in fecit cōfringere Et .abſinthio
16 לַעֲנָה׃ וַיַּגְרֵס בֶּחָצָץ שִׁנָּי הִכְפִּישַׁנִי בָּאֵפֶר׃
Periit ,dixi Et .boni ſum oblitus ,mea anima pace à ſe elongavit Et
17 18 וַתִּזְנַח מִשָּׁלוֹם נַפְשִׁי נָשִׁיתִי טוֹבָה׃ וָאֹמַר אָבַד
,meæ rebellionis &,meæ afflictionis Recordare .Dño à mea ſpes &,mea duratio
19 נִצְחִי וְתוֹחַלְתִּי מֵיְהוָה׃ זְכָר־עָנְיִי וּמְרוּדִי
me ſuper incurvabitur & ,recordabitur Recordando .fellis & ,abſinthii
20 לַעֲנָה וָרֹאשׁ׃ זָכוֹר תִּזְכּוֹר וְתָשִׁיחַ עָלַי
Miſericordiæ .expectabo idcirco ,meū cor ad faciā redire Hoc .mea anima
21 22 נַפְשִׁי׃ זֹאת אָשִׁיב אֶל־לִבִּי עַל־כֵּן אוֹחִיל׃ חַסְדֵי
,ej⁹ miſericordiæ defecerunt non quia ,conſumpti ſumus non quòd,Domini
יְהוָה כִּי לֹא־תָמְנוּ כִּי לֹא־כָלוּ רַחֲמָיו׃
dixit ,Dominus mea Pars .tua fides multa ,matutinis Novæ
23 24 חֲדָשִׁים לַבְּקָרִים רַבָּה אֱמוּנָתֶךָ׃ חֶלְקִי יְהוָה אָמְרָה
,eū expectantibus Dominus Bonus .eum expectabo propterea ,mea anima
25 נַפְשִׁי עַל־כֵּן אוֹחִיל לוֹ׃ טוֹב יְהוָה לְקֹוָו
.Domini ſalute in ſilens & ,expectet & Bonum .eum quæſierit animæ
26 לְנֶפֶשׁ תִּדְרְשֶׁנּוּ׃ טוֹב וְיָחִיל וְדוּמָם לִתְשׁוּעַת יְהוָה׃
,ſolitarius Manebit .ſuis pueritiis in jugum portaverit cùm ,viro Bonum
27 28 טוֹב לַגֶּבֶר כִּי־יִשָּׂא עֹל בִּנְעוּרָיו׃ יֵשֵׁב בָּדָד
fortè ſi ,ſuum os pulvere in Dabit .ſe ſuper portavit quia ,ſilebit &
29 וְיִדֹּם כִּי נָטַל עָלָיו׃ יִתֵּן בֶּעָפָר פִּיהוּ אוּלַי
.probro in ſaturabitur ,maxillam ſe percutienti Dabit .præſtolatio ſit
30 יֵשׁ תִּקְוָה׃ יִתֵּן לְמַכֵּהוּ לֶחִי יִשְׂבַּע בְּחֶרְפָּה׃
,affecit mœrore ſi Quia .Dominus ſeculum in elongabit non Quia
31 32 כִּי לֹא יִזְנַח לְעוֹלָם אֲדֹנָי׃ כִּי אִם־הוֹגָה
afflixit non Nam .ſuarū miſericordiarū multitudinē ſcdm miſerebitur &
33 וְרִחַם כְּרֹב חֲסָדָיו׃ כִּי לֹא עִנָּה
ſuis pedibus ſub conterendum Ad .viri filios affecit mœrore &,ſuo corde de
34 מִלִּבּוֹ וַיַּגֶּה בְּנֵי־אִישׁ׃ לְדַכֵּא תַּחַת רַגְלָיו
coram viri judicium faciendum declinare Ad .terræ vinctos omnes
35 כֹּל אֲסִירֵי אָרֶץ׃ לְהַטּוֹת מִשְׁפַּט־גָּבֶר נֶגֶד
non Dominus ,ſua rixa in hominem pervertendum Ad .altiſſimi faciebus
36 פְּנֵי עֶלְיוֹן׃ לְעַוֵּת אָדָם בְּרִיבוֹ אֲדֹנָי לֹא
? præcepit non Dominus ,fuit Et ,dixit ille Quis .vidit
37 רָאָה׃ מִי זֶה אָמַר וַתֶּהִי אֲדֹנָי לֹא צִוָּה׃

Verſio VUL. LAT.

5 *Beth.* Ædificavit in gyro meo,&
circumdedit me felle,& labore.
6 *Beth.* In tenebroſis collocavit
me,quaſi mortuos ſempiternos.
7 *Ghimel.*Circumædificavit adverſùm
me, ut non egrediar: aggravavit
8 compedē meū.*Ghimel.*Sed
& cùm clamavero , & rogavero,
excluſit orationem meam.
9 *Ghimel.* Concluſit vias meas lapidibus
quadris , ſemitas meas
10 ſubvertit.*Daleth.*Urſus inſidians
factus eſt mihi: leo in abſconditis.
11 *Daleth.* Semitas meas ſubvertit,
& confregit me : poſuit
12 me deſolatam. *Daleth.* Tetendit
arcū ſuū,& poſuit me quaſi ſignū
13 ad ſagittam. *He.* Miſit in renib⁹
14 meis filias pharetræ ſuæ.*He.* Factus
ſum in deriſū omni populo
meo, canticum eorum totâ die.
15 *He.* Replevit me amaritudinib⁹,
16 inebriavit me abſinthio. *Vau.*Et
fregit ad numerū dentes meos,
17 cibavit me cinere. *Vau.* Et repulſa
eſt à pace anima mea,oblitus
18 ſum bonorū. *Vau.* Et dixi ;
Periit finis me⁹ , & ſpes mea à
19 Dño. *Zain.* Recordare paupertatis,
& tranſgreſſionis meæ, abſinthii,
20 & fellis. *Zain.* Memoriâ
memor ero , & tabeſcet in me
21 anima mea. *Zain.*Hæc recolens
in corde meo, ideò ſperabo.
22 *Heth.* Miſericordiæ Dñi quia
non ſumus conſumpti : quia
non defecerunt miſerationes ej⁹.
23 *Heth.*Novi diluculò, multa eſt
24 fides tua. *Heth.*Pars mea Dñs,
dixit anima mea : propterea expectabo
25 eū.*Theth.*Bon⁹ eſt Dñs
ſperantib⁹ in eū, animæ quærenti
26 illū.*Theth* Bonū eſt præſtolari cū
27 ſilentio ſalutare Dei. *Theth.* Bonum
eſt viro, cùm portaverit jugū
28 cū adoleſcentia ſua.*Jod.*Sedebit
ſolitari⁹ , & tacebit:quia levavit
29 ſup ſe.*Jod.*Ponet in pulvere
30 os ſuū,ſi fortè ſit ſpes.*Jod.*Dabit
percutienti ſe maxillā,ſaturabitur
31 opprobriis. *Caph.* Quia
non repellet in ſempiternū Dñs.
32 *Caph.* Quia ſi abjecit,& miſerebitur
ſecūdū multitudinē miſericordiarū
33 ſuarū.*Caph.* Non enim
humiliavit ex corde ſuo,& abjecit
34 filios hominū, *Lamed.*Ut contereret
ſub pedibus ſuis omnes
35 vinctos terræ, *Lamed.*Ut declinaret
judiciū viri in cōſpectu vult⁹
36 Altiſſimi.*Lamed.* Ut perverteret
hominē in judicio ſuo,Dñs ignoravit.
37 *Mem.*Quis eſt iſte,qui dixit ut fieret, Dño non jubente ?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

5 ΒΗΘ. Ἀνῳκοδόμησε κατ' ἐμοῦ, καὶ ἐκύκλωσε
6 κεφαλήν μου, καὶ ἐμόχθησεν Ἐν σκοτεινοῖς,
7 ἐκάθισέ με (γ) ὡς νεκροὺς αἰῶνος. Ἀνῳκοδόμησε
κατ' ἐμοῦ, καὶ οὐκ ἐξελεύσομαι,
8 ἐβάρυνε χαλκόν μου. ΓΙΜΕΛ. Καί γε κεκράξομαι
(δ) καὶ βοήσω, ἀπέφραξε προσευχήν μου.
9 ΔΑΛΕΘ. Ἀνῳκοδόμησεν ὁδούς μου, ἐνέφραξε
10 τρίβους μου, ἐτάραξεν. Ἄρκος ἐνεδρεύουσα
11 αὐτός μοι λέων ἐν κρυφαίοις, Κατεδίωξεν
ἀφεστηκότα, καὶ (ε) κατέπαυσέ με, ἔθετό με
12 ἠφανισμένην. Η. Ἐνέτεινε τόξον αὐτοῦ, καὶ
13 ἐστήλωσέ με ὡς σκοπὸν εἰς βέλος. Εἰσήγαγεν
(ζ) ἐν τοῖς νεφροῖς μου ἰοὺς φαρέτρας αὐτοῦ.
14 Ἐγενήθην γέλως παντὶ (η) λαῷ μου,
ψαλμὸς αὐτῶν ὅλην τὴν ἡμέραν. ΟΥΑΥ.
15 Ἐχόρτασέ με πικρίας, ἐμέθυσέ με χολῆς,
16 (θ) Καὶ ἐξέβαλε ψήφῳ (˜) ὀδόντας μου· ἐψώμισέ
17 με σποδόν, Καὶ ἀπώσατο ἐξ εἰρήνης
18 ψυχήν μου· ἐπελαθόμην ἀγαθά. Καὶ ἀπώλετο
νεῖκός μου, καὶ ἡ ἐλπίς μου ἀπὸ κυρίου.
19 ΖΑΙΝ. Ἐμνήσθην ἀπὸ πτωχείας μου, καὶ ἐκ
20 διωγμοῦ (ι) πικρία καὶ χολή μου Μνησθήσεται,
21 καὶ καταδολεσχήσει ἐπ' ἐμὲ ἡ ψυχή μου. Ταύτην
τάξω εἰς τὴν καρδίαν μου, διὰ τοῦτο ὑπομενῶ.
22 ΗΘ. (ς) Τὰ ἐλέη κυρίου, ὅτι οὐκ ἐξέλιπέ με, ὅτι οὐ συνετελέσθησαν οἱ οἰκτιρμοὶ
αὐτοῦ· μῆνας εἰς τὰς πρωΐας ἐλέησον κύριε,
ὅτι οὐ συνετελέσθημεν, ὅτι οὐ συνετελέσθησαν
23 οἱ οἰκτιρμοὶ αὐτοῦ. Καινὰ εἰς τὰς πρωΐας,
24 πολλὴ ἡ πίστις σου. Μερίς μου κύριος, εἶπεν
ἡ ψυχή μου· διὰ τοῦτο ὑπομενῶ αὐτῷ. ΤΗΘ.
25 Ἀγαθὸς κύριος τοῖς ὑπομένουσιν αὐτὸν,
26 ψυχὴ ἣ ζητήσει αὐτὸν, Ἀγαθὸν καὶ ὑπομενεῖ, καὶ ἡσυχάσει εἰς τὸ σωτήριον κυρίου.
27 ΤΗΘ. Ἀγαθὸν ἀνδρὶ, ὅταν ἄρῃ ζυγὸν ἐν
28 νεότητι αὐτοῦ, Καθήσεται κατὰ μόνας, καὶ σιωπήσεται,
30 ὅτι ἦρεν ἐφ' ἑαυτῷ. ΙΩΔ. Δώσει τῷ
παίοντι αὐτὸν σιαγόνα, χορτασθήσεται ὀνειδισμῶν·
31 Ὅτι οὐκ εἰς τὸν αἰῶνα ἀπώσεται
32 κύριος. ΧΑΦ. Ὅτι ὁ ταπεινώσας (κ) οἰκτειρήσει,
καὶ κατὰ τὸ πλῆθος τοῦ ἐλέους αὐτοῦ.
33 Οὐκ ἀπεκρίθη ἀπὸ καρδίας αὐτοῦ, καὶ ἐταπείνωσεν
34 υἱοὺς ἀνδρός. ΛΑΜΕΔ. Τοῦ ταπεινῶσαι
ὑπὸ τοὺς πόδας αὐτοῦ πάντας δεσμίους
35 γῆς, Τοῦ ἐκκλῖναι κρίσιν ἀνδρὸς κατέναντι
36 προσώπου ὑψίστου, Καταδικάσαι ἄνθρωπον
ἐν τῷ κρίνεσθαι αὐτὸν, κύριος οὐκ εἶπε.
37 (μ) Τίς οὕτως εἶπε, καὶ ἐγενήθη; κύριος οὐκ
ἐνετείλατο,

BETH. Ædificavit contra me, 5
& circumdedit caput meum, & laborare
fecit:In tenebroſis collocavit 6
me, quaſi mortuos ſeculi.
Ædificavit contra me, & non 7
egrediar: aggravavit (a) æs meum.
GIMEL.Etiam vociferabor, 8
& clamabo: obſtruxit orationem
meam. DALETH. Circumædificavit 9
vias meas, obſtruxit ſemitas
meas, conturbavit. Urſus inſidians 10
ipſe mihi,leo in abſconditis:
Perſecutus eſt recedentem,et 11
ceſſare me fecit: poſuit me deſolatā.
HE.Tetendit arcum ſuū,et 12
ſtatuit me quaſi ſignum ad ſagittam:
Immiſit in renes meos(b)ſagittas 13
pharetræ ſuæ. Factus ſum 14
(c) riſus omni populo meo, pſalmus
eorum totâ die. VAU. Saturavit 15
me amaritudine, inebriavit
me felle, Et ejecit (d)calculo 16
dentes meos: cibavit me cinere:
Et repulit à pace animā meā:oblit⁹ 17
ſum bonorū: Et(e)periit victoria 18
mea,& ſpes mea à Domino.
ZAIN. Recordatus ſum à 19
paupertate mea : & de perſequutione
(f)amaritudo,& fel meum
In memoria erit :& recolet ſuper 20
me anima mea. Hanc ponam in 21
cor meum: propter hoc ſuſtinebo.
HETH. Miſericordiæ Domini 22
[quia (g) non fecit deficere me :
quia non ſunt conſumptæ miſerationes
ejus, Menſes in matutinis
miſerere, Domine,] quia (h)
conſumpti non ſumus : quia non
ſunt conſummatæ miſerationes
ejus. (i)Novæ in matutinis: multa 23
eſt fides tua. Pars mea Dominus, 24
dixit anima mea: propterea
expectabo eum . TETH.Bonus 25
eſt Dominus ſuſtinentibus eum: anima,
quæ quæret illū, (k) Bonū: 26
Et ſuſtinebit,& ſilebit in ſalutare
Domini.TETH.Bonum eſt viro, 27
cùm portaverit jugum in juventute
ſua: Sedebit ſingulariter, 28
& ſilebit, (l)quia tulit ſuper ſe.
JOD. Dabit percutienti ſe maxillam: 30
ſaturabitur opprobriis :
Quia non repellet in ſempiternū 31
Dominus. CHAPH Quoniam qui 32
humiliavit; miſerebitur et(m)ſecundùm
multitudinem miſericordiæ
ſuæ. Non reprobavit ex 33
corde ſuo, & humiliavit filios
viri. LAMED.Ad humiliandum 34
ſub pedib⁹ ej⁹ omnes vinctos terræ:
Ad declinare faciendū judiciū 35
viri corā facie Altiſſimi : Ad condemnandū hominem, cū ipſe judicatur : 36
Dominus non dixit. Quis ita dixit ; & factum eſt ? Dominus non mandavit. 37

MS. A. (γ) ἐν σκοτινοῖς αἰῶνος. (δ) καί γε (ε) κατέπαυσεν, ἔθετό (ζ) τοῖς νεφροῖς (η) τῷ λαῷ (θ) Ἐξέβαλεν (˜) τοὺς ὀδόντας (ι) μου πικρία γὰρ καὶ (ς) Deſiderantur verſus 22,23,24. uſque ad Ἀγαθὸς κύριος (λ) οἰκτειρήσει κατὰ (μ) Κύριος οὕτως

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 6 בנה עלי כרכומין ואקף קרתא ועקר רישי עממיא ושלהי אנון : בבית יסורין דחשוכא
7 אותבני כמיתין דאזלין לעלמא אוחרן : סנר בתרי בנין דלא אפוק מן טריקא יקר על
8 9 רגלי כבלין דנחשא : אף ארום אצוח ואצלי אסתתים בית צלותי : סנר אורחי
10 11 במרמירין פסילן שבילי סרך : דובא מכמן הוא לי אריא דמטמר בכבישא : אורחי סרך
12 ושסעני שויני צדו : מתח קשתיה ועתדני היך פלגיסא לגירא : אעל בכליתי גירי
13 14 תיקיה : הויתי חוכא לכל פריצי עמי ומזמרן עלי כל יומא : אשביעני מרירת חיון ארוני
15 16 גירא : ורצץ בפרידן שני כנע יתי בקטמא : וקצת מלמשאל שלם נפשי אנשיתי
17 טיבותא : ואמרית אובד תוקפי וטובא דהויתי אוריך מן קדם יי : אדכר עניי נפשי ומה
18 19 דאמרירו בי סנאי ואשקיאו יתי גידין ורישי חיון : מדכר תדכר ותצלי עלי נפשי על
20 סנופא : דא נחמתא אתיב על לבי בגין כן אוריך : טיבותא דיי ארום לא פסקו ארום לא
21 22 אתמניעו רחמוהי : נסין חדתין מרחיש בצפריא סגיאה היא הימנותך : חולקי יי
23 אמרית נפשי על כן אוריך לה : טוב יי לסוברין לפורקניה לנפשא דתבעא אלפניה :
24 25 טב לאורכא ולמשתק עד דמטי פורקנא דיי : טב הוא לגברא ארום יאלף נפשיה
26 27 לסוברא ניר פקודיא בטליותיה : יתיב בלחודוהי וישתוק ויסבול יסורין דאתין
28 בגין יחודא דשמא דיי דמשתלחין לאתפרע מניה על חובא קלילא דחב בעלמא הדין
29 עד כד יחוס עלוהי ויטלנון מניה ויקבל אפי שלים לעלמא דאתי : יתן בעפרא פומיה
30 וישתטח קדם רבוניה מאים אית סבר : יושיט למחי ליה ליסתא בגין דחלתא דיי יסבע
31 32 קלנא : ארום לא ישלי יי לעבדוי לעלם לממסרנון בידא דסנאיהון : ארום אלהין
33 ברישא יתבר ובתר כן יתוב וירחם לצדיקיא כסגיאות טיבותיה : ארום מן בגלל דלא
עני גבר ית נפשיה ואעדי זחוחא מלביה בגין כן גרם לאסתקפא תבירא בבני אנשא :
34 35 למכבא לכבשא תחות רגלוי כל אסירי ארעא : ולמצלי דין דגבר מסכן כל קביל
36 אפי עלאה: לסרכא אנש מסכן במצותיה אפשר דמן קדם יי לא יתגלי: מן הוא אנש אמר
37 והות בישתא מתעבדא בעלמא אלהין מן בגלל דעבדו מה דלא אתפקדו מן פומא דיי :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ædificavit ſuper me machinas, & circundedit civitatē, evulſitque caput 5
populorū,& deficere fecit eos. In domo carceris tenebroſa collocavit me, 6
ſicut mortuos qui vadunt in aliud ſeculū. GHIMEL. Clauſit poſt me ut non 7
egrediar de cuſtodia : aggravavit ſuper pedes meos compedes æreos. Etiā 8
ſi clamavero & oravero, concluſa eſt dom⁹ orationis meæ. Clauſit vias meas 9
lapidib⁹ marmoreis dolatis, *ſemitas meas pervertit.* DALETH. Urſus inſidians 10
fact⁹ eſt mihi, leo ſe abſcondens in ſemita. Vias meas ſubvertit, & ſuccîdit 11
me, poſuit me in deſolationē. Tetendit arcū ſuū, & ſtatuit me quaſi 12
ſcopū ad ſagittā. HE. Induxit in renes meos ſagittas pharetræ ſuæ. Fact⁹ 13
ſum in deriſū omnib⁹ diſſipatoribus populi mei, & pſallebant de me tota 14
die. Saturavit me felle ſerpentū, inebriavit me abſinthio. VAU. Et confregit 15
lapidib⁹ dentes meos, humiliavit me in cinere. Et deteſtata eſt ut quæreret 16
pacem anima mea, oblit⁹ ſum bonorū. Et dixi: Periit fortitudo mea, & 17
bonū quod expectabā à facie Dñi. ZAIN Recordare afflictionis animæ meæ, 18
& quòd ad amaritudinē duxit me inimic⁹ me⁹ ; & potavit me abſinthio & 19
veneno ſerpentis. Recordans recordabitur, & curvabitur ſuper me anima 20
mea propter afflictionē. Hanc conſolationē reducā ad cor meū, propterea 21
expectabo: CHETH. Benignitates Dñi quia nō defecerunt, quia nō ceſſarunt 22
miſericordiæ ej⁹. Miracula nova depromit diluculò, multa eſt fides tua. 23
Pars mea Dñs, *dixi*, anima mea, propterea expectabo eum. TETH. Bon⁹ eſt 24
Dñs expectantib⁹ ſalutē ej⁹; animæ quæ quæſivit doctrinā ej⁹. Bonū eſt expectare 25
& ſilere donec perveniat ſal⁹ Dñi. Bonū eſt viro ſi docuerit animā 27
ſuā ut portet jugū præceptorū in adoleſcentia ſua. JOD. Sedebit ſol⁹ & 28
tacebit, & ſuſtinebit caſtigationes quæ eveniunt, propter unitatē nominis
Dñi, quæ quidē mittuntur ab eo, ut reddat ei pœnā propter peccatū leve
ꝙ peccavit in hoc ſeculo: uſquedū parcat ei, & auferat eas [*pœnas:*] & *accipiat
perſonā perfecti* in ſeculo venturo. Dabit in pulverē os ſuū, & proſternetur 29
corā Dño ſuo ; an fortè ſit ſpes. Præbebit percutienti ſe maxillā 30
propter timorē Dñi : ſaturabitur ignominia. CAPH. Quoniā non repellet 31
Dñs ſervos ſuos in ſeculū, ut tradat eos in manū inimicorū ſuorū. Sed ſi in 32
principio confregerit, & poſteà converſ⁹ miſerebitur juſtorū pro abundantia
benignitatis ſuæ. Quoniā propterea quòd non affligit vir animā ſuā, & 33
abſtulit ſuperbiā de corde ſuo, ideo hoc fecit ut devolveretur interitus in
filios hominū. LAMED. Ad humiliandū & ad ſubjugandum ſub pedib⁹ ſuis 34
omnes vinctos terræ. Ad pervertendum judicium viri pauperis in conſpectu 35
vultus Altiſſimi : Ad pervertendum hominem pauperem in lite ſua. 36
Fierine poteſt ut non reveletur in conſpectu Dñi? MEM. Quis eſt ille vir qui dixit: Et fuit hoc malū factū in ſeculo, niſi pro eo ꝙ fecerunt ꝙ nō fuit præceptū eis ab ore Dñi? 37

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

5 ܒܢܐ ܥܠܝ. ܘܐܚܕܪܢܝ ܡܪܪܬܐ ܘܥܡܠܐ. * ܒܚܫܘܟܐ ܐܘܬܒܢܝ. ܐܝܟ ܡܝܬܐ ܕܥܠܡ.
6 7 * ܓ * ܐܩܦ ܥܠܝ ܕܠܐ ܐܦܘܩ. ܘܐܥܫܢ ܫܫܠܬܝ. * ܘܐܦܢ ܐܩܥܐ ܘܐܬܟܫܦ. ܠܐ ܫܡܥ
8 9 ܨܠܘܬܝ. * ܣܓܪ ܐܘܪܚܬܝ ܒܟܐܦܐ. ܘܫܒܝܠܝ ܥܩܡ. * ܕ * ܕܒܐ ܟܡܝܢܐ
10 11 ܗܘܐ ܠܝ. ܘܐܪܝܐ ܒܡܛܫܝܐ. * ܐܘܪܚܬܝ ܥܩܡ. ܦܫܚܢܝ ܘܫܡܢܝ ܠܚܒܠܐ.
12 13 * ܡܬܚ ܩܫܬܗ. ܘܐܩܝܡܢܝ ܐܝܟ ܢܝܫܐ ܠܓܐܪܐ. * ܗ * ܗܐ ܐܥܠ ܒܟܘܠܝܬܝ
14 ܓܐܪܘܗܝ. * ܗܘܝܬ ܓܘܚܟܐ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. ܘܙܡܝܪܬܗܘܢ. ܟܠܗ ܝܘܡܐ.
15 16 * ܐܣܒܥܢܝ ܡܪܪܬܐ. ܘܐܪܘܝܢܝ ܓܕܐ. * ܘ * ܘܬܒܪ ܒܚܨܦܐ ܫܢܝ. ܦܠܦܠܢܝ ܒܩܛܡܐ.
17 18 * ܘܐܬܛܥܝܬ ܡܢ ܫܠܡܐ ܢܦܫܝ. ܘܐܬܛܥܝܬ ܛܒܬܐ. * ܘܐܡܪܬ. ܐܒܕ ܢܨܚܢܝ ܘܣܒܪܝ ܡܢ
19 ܡܪܝܐ. * ܙ * ܐܬܕܟܪ ܫܘܥܒܕܝ ܘܡܪܕܘܬܝ ܡܪܪܬܐ ܘܓܕܐ. * ܐܬܕܟܪ ܘܐܦܢܐ ܢܦܫܝ
20 21 ܠܝ. * ܗܕܐ ܐܬܐ ܠܝ ܠܠܒܝ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܣܟܐ ܠܗ. * ܚ * ܛܝܒܘܬܗ
22 23 ܕܡܪܝܐ ܕܠܐ ܫܠܡܝܢ. ܘܠܐ ܫܠܡܝܢ ܪܚܡܘܗܝ. * ܚܕܬܐ ܕܨܦܪܐ. ܣܓܝܐܐ ܗܝܡܢܘܬܟ
24 25 ܡܪܝܐ. * ܐܡܪܬ ܢܦܫܝ. ܡܢܬܝ ܗܘ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܣܟܐ ܠܗ. * ܛ * ܛܒ ܡܪܝܐ
26 ܠܡܢ ܕܡܣܟܐ ܠܗ. ܘܠܢܦܫܐ ܕܒܥܝܐ ܠܗ. * ܛܒ ܠܡܢ ܕܡܣܟܐ ܒܫܠܝܐ.
27 28 ܠܦܘܪܩܢܗ ܕܡܪܝܐ. * ܛܒ ܠܓܒܪܐ ܕܢܫܩܘܠ ܢܝܪܟ ܡܢ ܛܠܝܘܬܗ. * ܝ * ܢܬܒ
29 ܠܚܘܕܘܗܝ. ܘܢܫܬܘܩ. ܡܛܠ ܕܫܩܠ ܥܠܘܗܝ ܢܝܪܟ. * ܢܬܠ ܠܥܦܪܐ ܦܘܡܗ
30 31 ܡܛܠ ܕܐܝܬ ܣܒܪܐ. * ܢܬܠ ܦܟܗ ܠܡܢ ܕܡܚܐ ܠܗ. ܘܢܣܒܥ ܚܣܕܐ. * ܟ * ܡܛܠ
32 33 ܕܠܐ ܢܫܒܘܩ ܡܪܝܐ ܠܥܠܡ. * ܐܠܐ ܡܡܟܟ ܘܡܪܚܡ. ܐܝܟ ܣܘܓܐܐ ܕܛܝܒܘܬܗ. * ܡܛܠ ܕܠܐ
34 ܥܢܐ ܡܢ ܠܒܗ. ܘܡܡܟܟ ܒܢܝ ܓܒܪܐ. * ܠ * ܠܡܕܟܟܘ ܬܚܝܬ ܪܓܠܘܗܝ.
35 36 ܟܠܗܘܢ ܐܣܝܪܝ ܐܪܥܐ. * ܠܡܨܠܝܘ ܕܝܢܗ ܕܓܒܪܐ. ܠܩܘܒܠ ܐܦܝ ܡܪܝܡܐ. * ܠܡܚܝܒܘ
37 ܒܪܢܫܐ ܒܕܝܢܗ. ܡܪܝܐ ܠܐ ܚܙܐ. * ܡ * ܡܢܘ ܗܢܐ ܕܐܡܪ ܘܗܘܐ. ܘܡܪܝܐ ܠܐ ܦܩܕ.

Extruxit contra me, & circunvallavit me fel- 5
le & labore. In tenebris collocavit me, ut 6
ſempiternè mortuum. Circunſepivit me ne 7
evaderem, & vincula mea roboravit. Et 8
quanvis rogem ac deprecer, non exaudit ſup-
plicationem meam. Sepſit vias meas ſpinis, 9
& ſemitas meas obliquavit. Urſus inſidians 10
factus eſt mihi, & leo in latibulo. Vias meas 11
obliquas reddidit, diſcerpſit me, & ad corru-
ptionem redegit. Tetendit arcum ſuum, ſta- 12
tuítque me ut ſcopum ſagittæ. Ecce immiſit 13
in renes meos ſagittas ſuas. Factus ſum riſus 14
apud omnes gentes, & cantiones earum totâ
die. Satiavit me felle, & inebriavit me ab- 15
ſynthio. Et comminuit lapidibus dentes 16
meos : conſperſit me cinere. Demum obli- 17
vione deleta eſt à pace anima mea, & oblitus
ſum proſperitatis : Et dixi, Periit ſplendor 18
meus & ſpes mea à Domino. Memento de- 19
jectionis & punitionis meæ felle & abſyn-
thio : Memento, & reſtitue mihi animam 20
meam. Hoc in mentem meam revocabo, 21
(propterea expectabo eum,) Quòd miſeri- 22
cordiæ Domini nullum habent finem, neque
deficiunt miſerationes ejus. Ad renovatio- 23
nem *cujuſlibet* matutini plurima eſt fides tua
Domine. Dixit anima mea, Portio mea eſt, 24
ideo expectabo eum. Bonus eſt Dominus 25
expectanti eum, & animæ quærenti ipſum.
Bene cedet verè ſperanti ſalutem Domini. 26
Benè cedet viro cùm tulerit jugum tuum à 27
pueritia ſua. Sedebit ſolitarius ac tacebit, 28
eò quòd ſuſceperit ſuper ſe jugum tuum. Ap- 29
ponet pulveri os ſuum, eò quòd ſuperſit
ſpes. Præbebit genam ſuam percutienti ſe, 30
& ſatiabitur opprobrio. Nam non oblivi- 31
ſcitur Dominus in perpetuum : Sed deprimit, 32
tum miſereſcit ſecundùm multitudinem cle-
mentiæ ſuæ. Quia *homo* non reſpondet ex 33
animo ſuo, ideo deprimit filios robuſtorum.
Terere ſub pedibus ſuis omnes terræ vinctos, 34
Pervertere jus alicujus coram facie Altiſſimi, 35
Condemnare aliquem in *juſta* ipſius cauſa ; 36
nonne videret Dominus ? Quis eſt qui *rem* 37
ullam proponat, eaque fiat, niſi Dominus
permittat ?

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

5 4 * بني علي * وأحاط برأسي * وأتعبني في المظلمات * أجلسني في مظلمات الأبد * بني علي
7 8 فلست أخرج * ثقل علي * مع ما أنني أصرخ * ومع ما أنني أهتف صرف صلاتي * بني
9 10 وسد طريقي * الذئب أقلق سبلي مكمنا * والأسد طردني في الخفايا * إذا كنت
11 12 13 واقفا كف * ووضعني فانيا * أوتر قوسه * وأقامني هدفا مثل نصب للسهم * أدخل في
14 15 كليتي بني جعبته * صرت ضحكا لكل شعبي * ترميرهم النهار كله * أشبعني حنظلا * أسكرني
16 17 مرارة * أخرج أسناني بحكم * أطعمني رمادا * أقصى من السلامة نفسي * نسيت الخيرات *
18 19 * وباد ظفري ورجائي من الرب * ذكرت من مسكنتي وطردي * لأن علقمي ومرارتي *
20 21 * يذكران * تهدي نفسي علي * هذه أربيها في قلبي * لأجل هذا أترجى *
22 23 [* MS. Oxon. لان نعم الرب * ورحمته * والاه كثيرة لا تزول * ايمانك يا رب عظيم * ونحن
24 نرجوا ان تطلع علينا * كطلوع الفجر بغتة * وقالت نفسي * ان هذا هو سهمي *
25 26 لذلك ارجوا ربي] * الرب صالح للذين يرجونه * للنفس التي تطلبه * ويرجوا الخير *
27 28 ويطمئن بخلاص الرب * خير للرجل إذا حمل النير في شبابه * يجلس متوحدا ويسكت *
29 لأنه حمله من ذاته [* MS. Oxon. ويجعل فاه في التراب * لان رجاه قايم بيدك *]
30 31 32 * يعطي لضاربه خديه * يشبع تعييرات * لأن الرب لا يقصي إلى الأبد * لأن الذي
33 34 نزل يترأف * ككثرة رحمته * لم يجب من قلبه * وأذل بني الرجل * ليتواضع تحت أقدامه
35 36 جميع أسرى الأرض * ليميل حكم الرجل أمام وجه العلي * ليدين الإنسان عند ما
37 يحاكمه * ولم يقل * الرب * هكذا قال وصار * أليس الرب أمر *

Ædificavit contra me, vallavit caput 5
meum, & fatigavit me in tenebricoſis
locis. *Collocavit me in tenebricoſis per-* 4
petuis; Ædificavit contra me, & non 7
egredior : auxit pondus meum. Licèt 8
clamem & licèt vociferem, repellit ora-
tionem meam. Ædificavit & occluſit 9
viam meam. Urſus perturbavit ſemitas 10
meas, inſidians; & leo perſecutus eſt
me in abditis. Cùm conſiſterem, contra- 11
hebat ſeſe, at conſumptum reddidit me:
Tetendit arcum ſuum, ſtatuitque me 12
ſcopum, ut metam ſagittæ : Immiſit in 13
renes meos, filios pharetræ ſuæ. Factus 14
ſum riſus apud univerſum populum me-
um, modulatio eorum totâ die. Satiavit 15
me colocynthide, inebriavit me felle.
Evulſit dentes meos in juſtitia, cibavit 16
me cinere. Procul amovit à pace animam 17
meam, oblitus ſum bonorum : Periitque 18
victoria mea & ſpes mea à Domino.
Recordatus ſum propter paupertatem me- 19
am & perſecutionem meam; quoniam
abſynthium meum & fel meum In me- 20
moria ſunt : quieſcat apud me anima
mea. Hæc diſpono in corde meo, ideo 21
ſperabo. [MS. Oxon. *Quoniam bonus eſt* 22
Dominus, & miſericordia ejus & longa-
nimitas multa nequaquã deficit. Fides
tua Domine maxima; Ideo nos ex- 23
pectamus ut exoriatur illa ſuper nos,
ſicut exoritur aurora ſubitò. Dixit etiam 24
anima mea, quòd portio mea eſt, ideo ex-
pectabo Dominum meum.] *Bonus eſt Do-* 25
minus iis qui præſtolantur eum, animæ
quæ quærit illum, Et bonum ſperat, ac 26
certa eſt de ſalute Domini. Bonum eſt 27
viro cùm jugum portaverit ab adoleſcen-
tia ſua: Sedebit ſeorſim, & ſilebit quia 28
portavit illud ſponte ſuâ. [MS. Oxon. *In-* 29
dit etiam os ſuum pulveri, quoniã ſpes
ejus poſita eſt in manu tua.] *Præbebit* 30
percutienti ſe genas ſuas, ſaturabitur
contumeliis. Nam Dominus non propulſa- 31
bit in æternũ. Nam qui depreſſit, clementiâ 32
utetur : juxta multitudinem miſericordiæ
ſuæ, Non reſpondet ex animo ſuo: ſed de- 33
primit filios viri, ut humiliet ſub pedibus 34
ſuis omnes terræ vinctos : ut deflectat 35
judicium viri coram facie Altiſſimi : ut 36
hominem condemnet quum judicium cum
eo conſtituit. Attamen non dicit, Domi-
nus ita dixit, & factum eſt. Nonne 3
Dominus præcepit?

38 homo se afflictabit Cur ? bonum & , mala egredietur non altissimi ore De
מִפִּי עֶלְיוֹן לֹא תֵצֵא הָרָעוֹת וְהַטּוֹב : מַה־יִּתְאוֹנֵן אָדָם 39
,inquiramus & ,nostras vias Scrutemur ? suo peccato super vir ,vivens
חַי גֶּבֶר עַל־חֲטָאוֹ : נַחְפְּשָׂה דְרָכֵינוּ וְנַחְקֹרָה 40
Deum ad volas ad nostra corda Levemus .Dominum ad revertamur &
וְנָשׁוּבָה עַד־יְהוָה : נִשָּׂא לְבָבֵנוּ אֶל־כַּפַּיִם אֶל־אֵל 41
.pepercisti non tu ,fuimus rebelles & ,sumus prævaricati Nos .cœlis in
בַּשָּׁמָיִם : נַחְנוּ פָשַׁעְנוּ וּמָרִינוּ אַתָּה לֹא סָלָחְתָּ : 42
Operuisti .pepercisti non ,occidisti ;nos es persecutus & ,furore in Operuisti
סַכֹּתָה בָאַף וַתִּרְדְּפֵנוּ הָרַגְתָּ לֹא חָמָלְתָּ : סַכּוֹתָה 43 44
nos posuisti abjectionē & ,Nauseam .orationem transeundo à , te nube in
בֶעָנָן לָךְ מֵעֲבוֹר תְּפִלָּה : סְחִי וּמָאוֹס תְּשִׂימֵנוּ 45
.nostri inimici omnes suum os nos super Patefecerunt .populorum interiori in
בְּקֶרֶב הָעַמִּים : פָּצוּ עָלֵינוּ פִּיהֶם כָּל־אֹיְבֵינוּ : 46
descendet aquarū Rivis .contritio & ,vastatio ,nobis fuit fovea &,Formido
פַּחַד וָפַחַת הָיָה לָנוּ הַשֵּׁאת וְהַשָּׁבֶר : פַּלְגֵי־מַיִם תֵּרַד 47 48
non &,defluxit meus Oculus.mei populi filiæ contritionē super,meus oculus
עֵינִי עַל־שֶׁבֶר בַּת־עַמִּי : עֵינִי נִגְּרָה וְלֹא 49
.cœlis de Dñs videret & ,aspiceret Donec .intermissionibus non à ;tacuit
תִדְמֶה מֵאֵין הֲפֻגוֹת : עַד־יַשְׁקִיף וְיֵרֶא יְהוָה מִשָּׁמָיִם : 50
Venando .meæ urbis filiabus omnibus ab meæ animæ fuit causa meus Oculus
עֵינִי עוֹלְלָה לְנַפְשִׁי מִכֹּל בְּנוֹת עִירִי : צוֹד 51 52
,meas vitas lacu in Succiderunt .gratis mei inimici,avem veluti,me sunt venati
צָדוּנִי כַּצִּפּוֹר אֹיְבַי חִנָּם : צָמְתוּ בַבּוֹר חַיָּי 53
, dixi :meū caput super aquæ Supernatârunt .me in lapidē projecerūt &
וַיַּדּוּ־אֶבֶן בִּי : צָפוּ־מַיִם עַל־רֹאשִׁי אָמַרְתִּי 54
meā Vocem .inferorum lacu è Domine tuū nomen Invocavi .sum excisus
נִגְזָרְתִּי : קָרָאתִי שִׁמְךָ יְהוָה מִבּוֹר תַּחְתִּיּוֹת : קוֹלִי 55
56 .meū clamorem ad meā respirationē ad tuā aurem abscondas ne ,audisti
שָׁמָעְתָּ אַל־תַּעְלֵם אָזְנְךָ לְרַוְחָתִי לְשַׁוְעָתִי :
Domine es Rixatus .timeas Ne ,dixisti :te invocavi die in Appropinquâsti
קָרַבְתָּ בְּיוֹם אֶקְרָאֶךָּ אָמַרְתָּ אַל־תִּירָא : רַבְתָּ אֲדֹנָי 57 58
,meā perversitatē Domine Vidisti .meas vitas redemisti ,meæ animæ rixas
רִיבֵי נַפְשִׁי גָּאַלְתָּ חַיָּי : רָאִיתָה יְהוָה עַוָּתָתִי 59
eorū cogitationes omnes,eorū ultionē omnē Vidisti .meū judiciū judica
שָׁפְטָה מִשְׁפָּטִי : רָאִיתָה כָּל־נִקְמָתָם כָּל־מַחְשְׁבֹתָם 60
.me super eorū cogitationes omnes,Domine eorū opprobriū Audisti .mihi
לִי : שָׁמַעְתָּ חֶרְפָּתָם יְהוָה כָּל־מַחְשְׁבֹתָם עָלָי : 61
,eorū Sessionē .die tota me super eorū meditationē &,me in surgentiū Labia
שִׂפְתֵי קָמַי וְהֶגְיוֹנָם עָלַי כָּל־הַיּוֹם : שִׁבְתָּם 62 63
retributionē eis Reddes .eorū modulamen ego ; aspice eorū resurrectionē &
וְקִימָתָם הַבִּיטָה אֲנִי מַנְגִּינָתָם : תָּשִׁיב לָהֶם גְּמוּל 64
tuā imprecationē,cordis tegumentū eis Dabis .eorū manuū opus scdm Dñe
יְהוָה כְּמַעֲשֵׂה יְדֵיהֶם : תִּתֵּן לָהֶם מְגִנַּת־לֵב תַּאֲלָתְךָ 65
.Domine ,cœlis sub à eos disperdes & ,furore in Persequêris .eis
לָהֶם : תִּרְדֹּף בְּאַף וְתַשְׁמִידֵם מִתַּחַת שְׁמֵי יְהוָה : 66

CAP. IV. ד

fuerūt projecti ? boni auri massa mutabitur ,aurū obducetur rubigine Quomodo
אֵיכָה יוּעַם זָהָב יִשְׁנֶא הַכֶּתֶם הַטּוֹב תִּשְׁתַּפֵּכְנָה 1
, pretiosi Sijon Filii .platearum omnium capite in sanctitatis lapides
אַבְנֵי־קֹדֶשׁ בְּרֹאשׁ כָּל־חוּצוֹת : בְּנֵי צִיּוֹן הַיְקָרִים 2
opus ,testæ lagenas in sunt reputati quomodo :puro auro in æquiparati
הַמְסֻלָּאִים בַּפָּז אֵיכָה נֶחְשְׁבוּ לְנִבְלֵי־חֶרֶשׂ מַעֲשֵׂה
? figuli manuum
יְדֵי יוֹצֵר :

Versio VUL. LAT.

38 *Mem.* Ex ore Altissimi non egredientur nec mala nec bona?
39 *Mem.* Quid murmuravit homo vivens, vir pro peccatis suis?
40 *Nun.* Scrutemur vias nostras, & quæramꝰ, & revertamur ad Dñm.
41 *Nun.* Levemꝰ corda nostra cum manibus ad Dominū in cœlos.
42 *Nun.* Nos iniquè egimꝰ, & ad iracundiā provocavimꝰ: idcircò
43 tu inexorabilis es. *Samech.* Operuisti in furore, & percussisti nos: occidisti, nec pepercisti.
44 *Samech.* Opposuisti nubem tibi,
45 ne transeat oratio. *Samech.* Eradicationē, & abjectionē posuisti
46 me in medio populorū. *Phe.* Aperuerunt sup nos os suū omnes
47 inimici. *Phe.* Formido & laqueus facta est nobis vaticinatio, &
48 contritio. *Phe.* Divisiones aquarum deduxit oculꝰ meꝰ, in con-
49 tritione filiæ populi mei. *Ain.* Oculus meus afflictus est, nec tacuit, eò quòd non esset requies,
50 *Ain.* Donec respiceret & videret
51 Dñs de cœlis. *Ain.* Oculꝰ meus deprædatꝰ est animā meā in cun-
52 ctis filiabꝰ urbis meæ. *Sade.* Venatione ceperunt me quasi avem
53 inimici mei gratis. *Sade.* Lapsa est in lacū vita mea, & posuerunt
54 lapidem sup me. *Sade.* Inundaverunt aquæ sup caput meum:
55 dixi, Perii. *Coph.* Invocavi nomen tuū, Dñe, de lacu novissimo.
56 *Coph.* Vocē meā audîsti: ne avertas aurem tuā à singultu meo, &
57 clamoribꝰ. *Coph.* Appropinquâsti in die, quâdo invocavi te: dixisti,
58 Ne timeas. *Res.* Judicâsti, Dñe, causā animæ meæ, redemptor vi-
59 tæ meæ. *Res.* Vidisti, Dñe, iniquitatē illorū adversū me: judica ju-
60 diciū meū. *Res.* Vidisti omnē furorem, universas cogitationes e-
61 orū adversū me. *Sin.* Audîsti opprobriū eorū, Dñe, omnes cogi-
62 tationes eorū adversū me: *Sin.* Labia insurgentiū mihi, & meditationes eorū adversū me totâ die.
63 *Sin.* Sessionē eorū, & resurrectionē eorū vide, ego sū psalmꝰ eo-
64 rum. *Thau.* Reddes eis vicē, Dñe, juxta opera manuum suarum.
65 *Thau.* Dabis eis scutū cordis la-
66 borē tuū. *Thau.* Persequêris in furore, & conteres eos sub cœlis, Domine.

CAP. IV.

1 *Aleph.* Quomodò obscuratum est aurū, mutatꝰ est color optimꝰ,
2 dispersi sunt lapides Sanctuarii in capite omnium plateaurū? *Beth.* Filii Sion inclyti, & amicti auro primo: quomodò reputati sunt in vasa testea, opus manuum figuli?

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

38 Ἐκ στόματος ὑψίστου οὐκ ἐξελεύσεται τὰ κα-
39 κὰ καὶ τὸ ἀγαθόν. ΜΗΜ. Τί γογγύσει ἄνθρωπος ζῶν, ἀνὴρ περὶ τῆς ἁμαρτίας αὐτοῦ;
40 ΝΟΥΝ. Ἐξηρευνήθη ἡ ὁδὸς ἡμῶν καὶ ἠτά-
41 σθη, καὶ (μ) ἐπιστρέψωμεν ἕως κυρίου. Ἀναλάβωμεν καρδίας ἡμῶν ἐπὶ χειρῶν πρὸς ὑψηλὸν
42 ἐν οὐρανῷ. Ἡμαρτήσαμεν, ἠσεβήσαμεν,
43 καὶ (ν) οὐχ ἱλάσθης. ΣΑΜΕΧ. Ἐπεσκέπασας ἐν θυμῷ, καὶ ἀπεδίωξας ἡμᾶς, ἀπέκτεινας,
44 (ξ) οὐκ ἐφείσω. Ἐπεσκέπασας νεφέλην σεαυ-
45 τῷ (ο) ἕνεκεν προσευχῆς, καμμύσαι με καὶ (π) ἀπωσθῆναι. ΑΙΝ. Ἔθηκας ἡμᾶς ἐν μέ-
46 σῳ τῶν λαῶν. Διήνοιξαν ἐφ' ἡμᾶς (ρ) τὸ στό-
47 μα αὐτῶν πάντες οἱ ἐχθροὶ ἡμῶν. Φόβος καὶ θυμὸς ἐγενήθη ἡμῖν, ἔπαρσις καὶ συντρι-
48 βή. Ἀφέσεις ὑδάτων κατάξει ὁ ὀφθαλμός μου ἐπὶ τὸ σύντριμμα τῆς θυγατρὸς τοῦ λαοῦ
49 μου. ΦΗ. Ὁ ὀφθαλμός μου κατεπόθη, καὶ οὐ
50 (σ) σιγήσομαι τοῦ μὴ εἶναι ἔκνηψιν, Ἕως οὗ δια-
51 κύψῃ καὶ ἴδῃ κύριος ἐξ οὐρανοῦ. Ὁ ὀφθαλμός μου ἐπιφυλλιεῖ ἐπὶ τὴν ψυχήν μου παρὰ
52 πάσας θυγατέρας πόλεως. ΤΣΑΔΗ. Θηρεύοντες ἐθήρευσάν με ὡς στρουθίον (τ) πάν-
53 τες οἱ ἐχθροί μου δωρεάν. Ἐθανάτωσαν ἐν λάκκῳ ζωήν μου, καὶ ἐπέθηκαν λίθον ἐπ' ἐ-
54 μοί. (υ) Ὑπερεχύθη ὕδωρ ἐπὶ τὴν κεφαλήν
55 μου· εἶπα, Ἄπωσμαι. ΚΩΦ. (˜) Ἐπεκαλεσάμην τὸ ὄνομά σου κύριε ἐκ λάκκου κατωτάτου·
56 Φωνήν μου ἤκουσας· μὴ κρύψῃς τὰ ὦτά σου εἰς
57 τὴν δέησίν μου· Εἰς τὴν βοήθειάν μου ἤγγισας· ἐν ἡμέρᾳ ᾗ ἐπεκαλεσάμην σε εἶπάς μοι, Μὴ
58 φοβοῦ. ΡΗΧΣ. Ἐδίκασας κύριε τὰς (φ) δίκας τῆς ψυχῆς μου, ἐλυτρώσω τὴν ζωήν μου.
59 Ἴδες κύριε τὰς ταραχάς μου, ἔκρινας τὴν κρί-
60 σιν μου. Εἶδες πᾶσαν τὴν ἐκδίκησιν αὐτῶν, εἰς πάντας διαλογισμοὺς αὐτῶν ἐν ἐμοί. ΧΣΕΝ.
61 Ἤκουσας τὸν ὀνειδισμὸν αὐτῶν, πάντας τοὺς δια-
62 λογισμοὺς αὐτῶν κατ' ἐμοῦ, Χείλη (χ) ἐπανισταμένων μοι, καὶ μελέτας αὐτῶν κατ' ἐμοῦ ὅλην
63 τὴν ἡμέραν, Καθέδραν αὐτῶν, καὶ ἀνάστασιν αὐτῶν. ἐπίβλεψον ἐπὶ (ψ) ὀφθαλμοὺς αὐτῶν.
64 Ἀποδώσεις αὐτοῖς ἀνταπόδομα κύριε κατὰ
65 τὰ ἔργα τῶν χειρῶν αὐτῶν. ΘΑΥ. Ἀποδώσεις αὐτοῖς ὑπερασπισμὸν, καρδίας (ω) μου μόχθον.
66 Σὺ αὐτοὺς καταδιώξεις ἐν ὀργῇ, καὶ ἐξαναλώσεις αὐτοὺς (α) ὑποκάτωθεν τοῦ οὐρανοῦ κύριε.

ΚΕΦ. δ'.

1 ΑΛΕΦ. Πῶς ἀμαυρωθήσεται (α) χρυσίον, ἀλλοιωθήσεται τὸ ἀργύριον τὸ ἀγαθόν; ἐξεχύθησαν λίθοι ἅγιοι ἐπ' ἀρχῆς πασῶν
2 ἐξόδων. ΒΗΘ. (β) Οἱ υἱοὶ Σιὼν οἱ τίμιοι, οἱ ἐπηρμένοι ἐν χρυσίῳ, πῶς ἐλογίσθησαν εἰς ἀγγεῖα ὀστράκινα, ἔργα χειρῶν κεραμέως;

Ex ore Altissimi non egredientur 38
mala, & bonum. MEM. Quid 39
murmurabit homo vivens, vir
pro peccatis sui? NUN. Investi- 40
gata est via nostra, & examina-
ta; & (n) revertemur usque ad Do-
minum. Levemus corda nostra cū 41
manibus ad Excelsum in cœlo.
Peccavimꝰ, impiè egimꝰ: & non es 42
placatus. SAMECH. Operuisti in 43
furore, & persequutus es nos: oc-
cidisti, non pepercisti: Opposuisti 44
nubem tibi propter orationem, ad
claudendū mihi oculos, Et abji- 45
ciendū. AIN Posuisti nos in me-
dio populorum: Aperuerunt su- 46
per nos os suum omnes inimici
nostri: (o) Timor, et (p) furor factꝰ 47
est nobis, tumor, & contritio. E- 48
missiones aquarū deducet oculus
meꝰ super contritionē filiæ populi
mei. PHE. (q) Oculꝰ meꝰ absorptꝰ 49
est, & non tacebo, eò quòd nō sit
requies: Donec respiciat, et videat 50
Dominus de cœlo. (r) Oculus meus 51
racemabit super animā meam præ
cunctis filiabus urbis. TSADE.
Venantes venati sunt me, quasi 52
avem, omnes inimici mei gratis.
Occiderunt in lacu vitā meā: & 53
imposuerunt lapidē super me. Su- 54
perfusa est aqua super caput
meū: dixi, Repulsus sum. COPH.
Invocavi nomen tuū, Domine, de 55
lacu infimo: Vocem meā audîsti. 56
Nè abscondas aures tuas ad de-
precationē meā: In auxiliū meū 57
appropinquâsti; in die, quâ invo-
cavi te dixisti mihi, Nè timeas.
RESCH. Judicâsti, Domine, ju- 58
dicia animæ meæ: redemisti vitā
meā: Vidisti, Domine, turbationes 59
meas: judicâsti judicium meum.
Vidisti omnem ultionem eorum, 60
(s) in omnes cogitationes eorū in
me. CHSEN. Audîsti opprobriū 61
eorum, omnes cogitationes eorum
adversū me, Labia insurgentium 62
mihi, & meditationes eorum ad-
versùm me totâ die, Sessionē eo- 63
rū, & resurrectionē eorū: (t) in-
spice in oculos eorū. Retribues eis 64
retributionē, Domine, juxta ope-
ra manuū suarū. THAU. Reddes 65
eis tegumentū, cordis mei laborē.
Tu persequêris eos in ira, & 66
absumes eos de sub cœlo, Domine.

CAP. IV.

ALEPH. Quomodò obscura- 1
bitur aurū, mutabitur argentum
bonū? Effusi sunt lapides sancti
in principio omniū viarū. BETH.
Filii Sion inclyti elevati in auro, 2
quomodò reputati sunt in vasa
testea, opera manuū figuli?

MS. A. (μ) ἐπιστρέψωμεν ἕως * τ. Ἀναλάβωμεν καρδίας ἡμῶν πρὸς ὑψηλὸν ἐπὶ χειρῶν ἐν οὐρανῷ. (ν) οὐκ (ξ) καὶ οὐκ (ο) εἵνεκεν (π) ἀπεωσθῆναι. (ρ) στόμα (σ) σιωπήσωμαι (τ) οἱ ἐχθροί μου (υ) Ἐπεχύθη (˜) Desiderantur versus 55, 56, 57. usq; ad Ἐδίκασας (φ) ἀδικίας (χ) ἐπανισταμένων (ψ) τοὺς ὀφθαλμοὺς (ω) μόχθον. Σὺ αὐτοὺς καταξεις (ω) ὑποκάτω ΚΕΦ. δ'. MS. A. (α) τὸ χρυσίον, (β) Υἱοὶ Σιὼν τίμιοι, ἐπηρμένοι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

מפי אלהא לא תפוק בישתא אלהן על ברת קלא רמיזא בגין חטופין דאתמליאת ארעא 38
ובעדן דבעי למגזר טובא בעלמא מן פום קודשא נפקא : מה ממון ישכח אנש דיהוב 39
על יומי חיוהי גברא רשיעא על חובוהי : נבלוש אורחנא ונבקר ונתוב בתיובתא קדם 40
יי : נטול לבבנא בריר ונרמי חטוף וגזילן מן ידנא ונתיב קדם יי אלהנא שכנתיה בשמי 41
מרומא : נחנא מרדנא סרבנא ומן בגלל דלא הדרנא לותך אנת לא שבקת : טלליתא 42 43
עלנא ברגז ורדפתנא בגלותא קטלתא ולא חסתא : טללתא שמיא בענני יקרא דילך 44
מן בגלל דלא תעבר לותך צלותנא : טלטולין ורטושין שויתא יתנא בגו עממיא : 45
פתחו עלנא פומהון כל בעלי דבבנא למגזר עלנא גזירין בישין : ואימתא וזיעא הוה 46 47
לנא מנהון רתיתא ותבירא : היך יבלין דמיא זלגת עיני דמען על תבירא דכנישת עמי : 48
עיני זלגת דמעין ולא תשתוק מלמבכי מדלית פאג עקתי וממלל תנחומין לי : עד כדו 49 50
דיסתכי ויחזי עולבני יי מן שמיא : בכותא דעיני אסתקפת למרע נפשי על חורבן פלכי 51
דעמי וניוול בנתא דירושלם קרתי : כמנא כמנו לי היך כצפרא בעלי דבבי על מגן : 52
עברו בגובא חיי ורגמו אבנא בי : שטו מיא על רישי אמרית במימרי אתגזרית מן עלמא : 53 54
צליתי לשמך יי מן גוב ארעיתא : צלותי קבלתא בזמנא ההיא וכען לא תכסי ארנך 55
מלקבלא צלותי לארווחותני בגין בעותי : קרבתא מלאכא לשזבותי ביום דצליתי לך 56
אמרת במימרך לא תדחל : נציתא יי לעבדין מצותא לנפשי פרקתא מן ידיהון חיי : 57 58
חזיתא יי סרוך דסריכו לי דון דיני : גלי קדמך כל נקמתהון כל מחשבתהון עלי : שמיע 59 60
קדמך כסופהון יי כל מחשבתהון עלי : ספות קמין עלי והגיונהון עלי כל יומא : מותבהון 61
וקיפתהון אסתכל אנא זמרהון : תתיב להון גמולא בישא יי כעובדי ידיהון : תתן 62 63
להון תבירות לבא ושלהוותך שלהי להון : תרדקנון ברוגזא ותשיצנון מתחות 64
שמי מרומא דיי : 65 66

ד

היכדין עמא דהב בית מוקדשא אשתני זיו פלטין בחיר משתדין מרגלאין קדישין 1
בריש כל מחוזין : בני ציון יקירין דמתילין איקוניהון לדהב טב היכדין הוו עממין 2
מסאבין מחתין יתהון מלקבל ערסיהון ומסתכלין בהון בגין דילדן נשיהון בנין שפיריא
כשופרהון ואתחשבו ללגינין דחסף עובדי ידי פחרא :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Ex ore Dei non egredietur malū, nisi per filiā vocis manifestatā ob rapinas 38
quibꝰ impleta est terra: & in tempore quo quærit decernere bonū in seculo,
ex ore sanctissimi egreditur. Quā utilitatē inveniet homo qui peccaverit 39
in dies vitæ suæ, vir impius super peccato suo? NUN. Scrutemur vias no- 40
stras & investigemus; et revertamur in pœnitentiā corā Dño. Levemꝰ corda 41
nostra munda, & projiciamꝰ rapinā & deprædationē de manibꝰ nostris: &
revertamur corā Dño Deo nostro, cujꝰ majestas habitat in cœlis excelsis. Nos 42
prævaricati sumꝰ & rebelles fuimꝰ; & propterea quòd non sumꝰ conversi
ad te, non dimisisti [*peccata nostra.*] SAMECH. Obūbrâsti nos in ira, & per- 43
secutꝰ es nos in captivitate, occidisti & non pepercisti. Operuisti cœlos nu- 44
bibꝰ gloriæ tuæ, ut nō transiret ad te oratio nostra. Transmigrantes & dere- 45
lictos posuisti nos inter populos. PE. Aperuerunt sup nos os suū omnes ini- 46
mici nostri, ut decernerent contra nos decreta mala. Timor & commotio 47
fuit nobis ab eis, tremor & contritio. Sicut rivi aquarū, defluunt oculi mei 48
lachrymis propter excidiū cœtꝰ populi mei. AIN. Oculꝰ meꝰ defluxit lachry- 49
mis, et nō quiescit à fletu, eò quòd nō sit qui remissā faciat tribulationē meā;
& loquatur consolationes mihi. Donec aspiciat & videat injuriā meā Dñs 50
de cœlis. Fletꝰ oculorū meorū fuit occasio ut malè haberet anima mea pro- 51
pter destructionē provinciæ populi mei, & deturpationē filiarū Jerusalē ci-
vitatis meæ. SADE. Insidias struxerūt mihi, sicut passeri, inimici mei frustrà. 52
Transiit in lacū vita mea: & projecerunt lapidē in me. Inundaverunt aquæ 53
sup caput meū: dixi in verbo meo, Succisꝰ sū à seculo. COPH. Oravi in no- 54
mine tuo Dñe de lacu inferiori. Orationē meā suscepisti in tempore illo: et 55
nunc ne obtures aurē tuā ad suscipiendā orationē meā, ut in spatiū deducas 56
me propter deprecationē meā. Applicâsti angelū ut liberaret me in die qua 57
oravi te: dixisti in verbo tuo, Ne timeas. RES. Contendisti Dñe cū agentibus 58
litē in animā meā: redemisti de manibꝰ eorū vitā meā. Vidisti Dñe exacti- 59
onē qua usi sunt contra me: judica judiciū meū. Manifesta est corā te omnis 60
vindicta eorū, omnis cogitatio eorū contra me. SIN. Auditū est corā te op- 61
probriū eorū, Dñe: omnis cogitatio eorū contra me. Labia insurgentiū con- 62
tra me & meditationes eorū contra me tota die. Sessionē eorū et resurrecti- 63
onē eorū respice: ego sum psalmꝰ eorū. THAU. Reddes eis retributionē ma- 64
lā Dñe juxta opera manuū suarū. Dabis eis contritionē cordis, & defatigatio 65
tua defatigabit illos. Persequêris eos in furore, & consumes eos de sub 66
cœlis excelsis Domine.

CAP. IV. ALEPH.

Quomodo obscuratū est aurū domꝰ sanctuarii, mutatꝰ est splendor palatii 1
electi, effusæ sunt margaritæ sanctæ in capite omniū vicorū! BETH. Fi- 2
lii Sion pretiosi, quorū figura comparatur auro optimo, quomodo fuerunt
populi immundi positi contra lectulos eorū; & aspicientes eos ut parerent
uxores ipsorum filios pulchros juxta pulchritudinem eorum! & reputati sunt in lagenas testeas opera manuum figuli!

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

38 * ܡܢ ܦܘܡܗ ܕܥܠܝܐ. ܠܐ ܢܦܩܢ ܒܝܫܬܐ ܘܛܒܬܐ. * ܡܢܐ ܡܬܬܢܚ ܒܪܢܫܐ ܕܚܝ.
39 40 ܘܓܒܪܐ ܥܠ ܚܛܗܘܗܝ. * ܢ * ܢܒܨܐ ܐܘܪܚܬܢ. ܘܢܒܩܝܗ. ܘܢܬܦܢܐ ܠܘܬ ܡܪܝܐ.
41 42 * ܢܫܩܘܠ ܠܒܢ ܥܠ ܐܝܕܝܢ ܠܘܬ ܐܠܗܐ ܕܒܫܡܝܐ. * ܚܢܢ ܐܣܟܠܢ ܘܡܪܡܪܢ. ܘܐܢܬ ܠܐ
43 ܚܣܬ. * ܣ * ܛܠܠܬ ܒܪܘܓܙܟ ܘܪܕܦܬܢ. ܘܩܛܠܬܢ ܘܠܐ ܚܣܬ. * ܛܠܠܬ ܥܢܢܐ
44 45 ܘܣܟܪܬ ܨܠܘܬܢ. * ܣܚܝܐ ܘܡܣܠܝܐ ܣܡܬܢ ܒܝܬ ܥܡܡܐ. * ܥ * ܥܝܢܝ ܕܡܥܬ ܘܠܐ
46 47 ܫܠܝܐ. ܡܢ ܕܠܐ ܦܘܢܝܐ. * ܥܕܡܐ ܕܢܕܝܩ ܘܢܚܙܐ ܡܪܝܐ ܡܢ ܫܡܝܐ. * ܥܝܢܝ ܐܬܛܪܦܬ
48 ܥܠ ܢܦܫܝ. ܡܢ ܟܠܗܝܢ ܒܢܬ ܡܕܝܢܬܐ. * ܦ * ܦܬܚܘ ܥܠܝܢ ܦܘܡܗܘܢ
49 50 ܟܠܗܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝܢ. * ܕܚܠܬܐ ܘܪܬܝܬܐ ܗܘܬ ܠܢ. ܦܚܬܐ ܘܬܒܪܐ. * ܦܠܓܐ ܕܡܝܐ ܐܪܕܝ
51 52 ܥܝܢܝ ܥܠ ܬܒܪܐ ܕܒܪܬ ܥܡܝ. * ܨ * ܨܕܘ ܨܕܘܢܝ ܐܝܟ ܨܦܪܐ ܒܥܠܕܒܒܝ. ܡܓܢ
53 54 * ܚܢܩܘ ܒܓܘܒܐ ܚܝܝ. ܘܫܕܘ ܒܝ ܟܐܦܐ. * ܛܦܘ ܡܝܐ ܥܠ ܪܫܝ. ܐܡܪܬ ܐܬܓܙܪܬ.
55 * ܩ * ܩܪܝܬ ܫܡܟ ܡܪܝܐ ܡܢ ܓܘܒܐ ܬܚܬܝܐ. * ܩܠܝ ܫܡܥܬ. ܠܐ ܬܟܣܐ ܐܕܢܟ. ܐܠܐ
56 57 ܐܪܘܚ ܠܝ ܘܦܪܘܩܝܢܝ. * ܩܪܒܬ ܠܝ ܒܝܘܡܐ ܕܩܪܝܬܟ. ܘܐܡܪܬ ܠܝ ܠܐ ܬܕܚܠ. * ܪ * ܕܢܬ
58 59 ܡܪܝܐ ܕܝܢܐ ܕܢܦܫܝ. ܘܦܪܩܬ ܚܝܝ. * ܚܙܝܬ ܡܪܝܐ. ܡܘܟܟܝ ܘܕܢܬ ܕܝܢܝ. * ܚܙܝܬ ܟܠܗ
60 61 ܢܩܡܬܗܘܢ. ܘܟܠܗܝܢ ܡܚܫܒܬܗܘܢ ܥܠܝ. * ܫ * ܫܡܥܬ ܚܣܕܗܘܢ ܡܪܝܐ. ܘܟܠܗܝܢ ܡܚܫܒܬܗܘܢ
62 ܥܠܝ. * ܣܦܘܬܐ ܕܩܝܡܝܢ ܘܪܢܝܢ ܥܠܝ ܟܠܗ ܝܘܡܐ. * ܡܘܬܒܗܘܢ ܘܡܩܝܡܗܘܢ.
63 64 ܐܫܟܚܬ ܐܢܐ ܡܢ ܪܢܝܗܘܢ. * ܬ * ܬܦܪܘܥ ܠܗܘܢ ܦܘܪܥܢܗܘܢ. ܡܪܝܐ. ܐܝܟ ܥܒܕܐ
65 66 ܕܐܝܕܝܗܘܢ. * ܬܬܠ ܠܗܘܢ ܬܘܢܚܐ ܕܠܒܐ. ܘܡܚܘܬܟ ܠܗܘܢ. * ܬܪܕܘܦ ܐܢܘܢ ܒܪܘܓܙܟ ܘܬܘܒܕ
ܐܢܘܢ. ܡܢ ܬܚܝܬ ܫܡܝܟ ܡܪܝܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܕ̄ *
1 * ܐ * ܐܝܟܢܐ ܡܫܬܛܐ ܕܗܒܐ ܛܒܐ. ܘܡܫܬܢܐ ܓܘܢܐ ܫܦܝܪܐ. ܘܡܫܬܕܝܢ ܟܐܦܐ ܕܩܘܕܫܐ
2 ܒܪܝܫ ܟܠܗܘܢ ܫܘܩܐ. * ܒ * ܒܢܝ ܨܗܝܘܢ ܕܡܝܩܪܝܢ ܗܘܘ ܡܢ ܟܐܦܐ ܛܒܬܐ.
ܐܝܟܢܐ ܐܬܚܫܒܘ ܐܝܟ ܡܐܢܐ ܕܚܨܦܐ. ܥܒܕ ܐܝܕܝܐ ܕܦܚܪܐ.

* Ex ore Altiſſimi nonne prodierũt mala & bona? 38 Quid ſentit homo vivens & vir de peccatis ſuis? 39 Scrutemur ac publicemus vias noſtras, 40 & revertamur ad Dñm. Portem' corda noſtra 41 ſuper manus noſtras ad Deum in cœlum. Nos 42 iniquè egimus, & exaſperavimus te; & tu non pepercisti. Irâ tuâ obruiſti & perſecut' es nos, 43 peremiſti, nec uſus es clementiâ. Obtexiſti 44 nube tuâ, & rejeciſti orationẽ noſtrá. Everſos 45 & execrabiles reddidiſti nos inter gentes. Oculus meus inceſſanter lachrymatur; quia nul- 46 lum eſt refrigeriũ, Donec aſpiciat & intueatur 47 Dñs de cœlo. Oculus meus exagitatus eſt ſup 48 animã meã, propter omnes filias civitatũ mearũ. Aperuerunt contra nos os ſuum omnes 49 inimici noſtri. Timor & tremor evenit nobis, 50 fovea & contritio. Rivos aquarum effuderunt 51 oculi mei propter contritionem filiæ populi mei. Venando venati ſunt me, ſicut aviculã, 52 inimici mei immeritò: Silentio involverunt 53 in fovea vitã meã, jaculati ſunt in me lapides. Exundaverunt aquæ ſuper caput meũ: dixi, 54 Procul amotus ſum. Invocavi nomẽ tuũ Dñe, 55 è fovea infima. Vocem meã audiſti: ne decli- 56 nes aurẽ tuam, ſed refocilla me, & libera me. Appropinquâſti quo die invocavi te, et dixiſti 57 mihi, Ne timeto. Defendiſti Dñe cauſam ani- 58 mæ meæ, & ſervâſti vitam meam. Vidiſti Dñe 59 depreſſionem meam, & egiſti cauſam meam. Vidiſti omnem vindictam eorum, & omnia 60 quæ machinati ſunt contra me. Audiſti pro- 61 brum eorum Dñe, & omnia quæ cogitaverunt contra me, Labia inſurgentia & medi- 62 tantia adverſùm me totâ die. Seſſionem & 63 ſurrectionem eorum deprehendi ego ex eorum meditatione. Reddes illis retributionem 64 eorum Dñe: ſecundùm opus manuũ ipſorum, 65 Dabis eis triſtitiã cordis: & plaga tua Per- 66 ſequatur eos, & in ira tua perdes eos de ſub cœlis tuis Domine.

CAP. IV.

* Quomodo contemnitur aurum optimum, 1 mutatur color pulcherrimus, & diſjiciuntur lapides ſanctuarii per compita omnium platearum? Filii Sionis qui pretioſiores erant 2 lapidibus optimis, quomodo reputantur pro vaſis fictilibus, opere manuum figuli?

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

38 * أليس من فم العلي تخرج السرور والخير * لماذا يتذمر الانسان الحي والرجل من اجل
39 40 خطيته * فتشت طريقنا واستفحصت * نرجع * حتي ناخذ قلوبنا الي العلو مع ايدينا في
41 42 43 السماء * اخطانا نافقنا ولم تغفر * ظللت علينا بالغضب وطردتنا * قتلتنا ولم تشفق * سترت
44 45 ذاتك بسحابة من اجل صلاتي * لتغمض عيني فانصرف * وضعتنا في وسط الشعوب * فتحت
49 50 51 علينا فمها جميع اعدائنا * خوف وغضب صار لنا * وتسلح وانكسار وفيض المياه * عيني
46 تنكسر على انكسار ابنة شعبي * عيني ابتلعت * ولست اسكت * من ان لا يكون لها
47 48 تقطع * الي ان يطلع الرب وينظر من السماء * عيني على الغمة * لا على نفسي * على جميع
52 53 بنات المدينة * الصيادون اصطادوني مثل عصفور * اعداي مجانا * اماتوا حياتي في جب *
54 55 وضعوا على حجرا * انهرق الماء على راسي * قلت اقصيت [* MS.Oxon. دعوت باسمك يا رب *
56 57 وسمعت صوتي من اسفل الجب * لا تبعد سماعك عني * ولكن فرج وخلصني * دنوت يوم
58 59 دعوتك * وقلت لي لا تخف] * دنت يا رب ظلامات نفسي * انقذت حياتي * نظرت يا رب اضطراباتي *
60 61 حكمت حكمي * نظرت كل انتقامهم * وجميع فكراتهم في * سمعت تعييرهم * جميع افكارهم
62 63 علي * شفاه القائمين علي * وتلاوتهم علي النهار كله * جلستهم وقومتهم * انظر على عينيهم *
64 65 * واعطهم مكافاة يا رب كاعمال ايديهم * اجرهم تعب القلب ملازما * انت تحذرهم بالغضب *
66 وتبيدهم من تحت السماء يا رب * الفصل الرابع * الرابع من المراثي *
1 * كيف يسود الذهب * ويتبدل الفضة الخالصة * تبددت الحجارة المقدسة على بدو
2 جميع المخارج * بنو صهيون الكرام المرتفعون بالذهب * كيف حسبوا اوعية خزفية عمل
يدي القرموصي *

Nónne ex ore Altiſſimi prodeunt mala & bonum? 38 *Cur murmurat homo vivens & vir, propter peccatum ſuum?* 39 *Pervestigata eſt via noſtra, & examinata.* 40 *Convertamur, ut feramus corda noſtra in altum, unà cum manibus noſtris in cœlum.* 41 *Peccavimus, impiè geſſimus; & non parceres?* 42 *Obruiſti nos in ira, & perſecutus es nos, occidiſti nos; & non parceres?* 43 *Velâſti teipſum nube, propter orationem meam; ut clauderes oculos meos & perirem.* 44 *Poſuiſti nos in medio gentium.* 45

Præponit literam Phe Literæ Ain,
ut in Hebr. & Græco.

Aperuerunt contra nos os ſuum omnes inimici noſtri. 49 *Timor & ira evenit nobis: arrogantia, & contritio, & eluvies aquarum.* 50 *Oculus meus frangitur, propter fractionem filiæ populi mei.* 51 *Oculus meus abſorptus eſt, & non tacebo, eò quòd nullum ſit ei intervallum:* 46 *Donec aſpiciat Dominus, & videat de cœlo.* 47 *Oculus meus in triſtitia* verſatur, *non propter meipſum,* ſed *propter omnes filias urbis.* 48 *Venatores venati ſunt me tanquam aviculam. Inimici mei gratìs* 52 *Morte affecerunt vitam meam in fovea, poſuerunt ſuper me lapidem.* 53 *Effuſa eſt aqua ſuper caput meum: dixi, Exterminatus ſum.* 54 [MS. Ox. *Invocavi nomen tuum* Domine, *& exaudîſti vocem meam de fovea infima.* 55 *Ne amoveas aurem tuã à me, ſed refocilla & libera me.* 56 *Appropinquâſti quo die invocavi te, & dixiſti mihi; Ne timeto.*] 57 *Judicâſti O Domine oppreſſiones animæ meæ, ſervâſti vitam meam.* 58 *Vidiſti* O Domine *perturbationes meas, egiſti cauſam meam.* 59 *Vidiſti totam ultionem eorum, & omnes cogitationes eorum de me.* 60 *Audîſti opprobrium eorum, omnes cogitationes eorum adverſùm me,* 61 *Labia inſurgentium contra me, & meditationẽ eorum contra me totâ die,* 62 *Seſſionem eorum, & reſurrectionem eorũ.* 63 *Inſpice ſuper oculos eorum, Et redde illis retributionem* O Domine, *ſecundùm opera manuum ſuarum.* 64 *Repende illis laborem cordis inſeparabilẽ.* 65 *Tu terrebis eos in ira, & perdes eos de ſub cœlo* O Domine. 66

CAP. IV.

Lamentatio quarta.

Quomodo nigreſcit aurum, & immutatur argentũ purum, diſperſi ſunt lapides ſancti ad initium omnium compitorum? 1 *Filii Sionis honorandi, auro eminentes, quomodo reputati ſunt vaſa teſtacea, opus manuum figuli?* 2

mei populi filia: ſuos catulos lactaverunt, mammam *ſolverunt* *draco* Etiam
גַּם־תַּנִּין חָלְצוּ שַׁד הֵינִיקוּ גּוּרֵיהֶן בַּת־עַמִּי 3
ejus *palatum ad* lactentis lingua Adhæſit .deſerto in *ululæ* veluti *crudelē in*
לְאַכְזָר כִּי עֵנִים בַּמִּדְבָּר׃ דָּבַק לְשׁוֹן יוֹנֵק אֶל־חִכּוֹ 4
Veſcentes .eis non *frangens* ,panem petierunt parvuli : *ſiti in*
בַּצָּמָא עוֹלָלִים שָׁאֲלוּ לֶחֶם פֹּרֵשׂ אֵין לָהֶם׃ הָאֹכְלִים 5
ſunt amplexati,coccinū ſuper *nutriti* : plateis in *ſunt deſolati* , *delicias ad*
לְמַעֲדַנִּים נָשַׁמּוּ בַּחוּצוֹת הָאֱמֻנִים עֲלֵי תוֹלָע חִבְּקוּ
, Sedom *peccato præ* , mei populi filiæ *iniquitas* fuit *ingens* Et .ſtercora
אַשְׁפַּתּוֹת׃ וַיִּגְדַּל עֲוֹן בַּת־עַמִּי מֵחַטַּאת סְדֹם 6
fuerunt *Mundi* .*manus ea in reſederunt* non & , repentè *quaſi* *ſubverſæ*
הַהֲפוּכָה כְמוֹ־רָגַע וְלֹא־חָלוּ בָהּ יָדָיִם׃ זַכּוּ 7
Sapphir,margaritis præ corpore rubuere:lacte *præ canduerunt*,nive *præ* ejꝰ Nazaræi
נְזִירֶיהָ מִשֶּׁלֶג צַחוּ מֵחָלָב אָדְמוּ עֶצֶם מִפְּנִינִים סַפִּיר
ſunt agniti non ,eorum forma nigredine præ eſt Obſcurata .eorum exciſio
גִּזְרָתָם׃ חָשַׁךְ מִשְּׁחוֹר תָּאֳרָם לֹא נִכְּרוּ 8
fuit , aruit ; eorum *oſſa* *ſuper* eorum pellis *ſe agglutinavit* : plateis in
בַּחוּצוֹת צָפַד עוֹרָם עַל־עַצְמָם יָבֵשׁ הָיָה
iſti quia ;fame interfectis *præ* gladio interfecti fuerūt *Felices* .lignū tanquā
כָעֵץ׃ טוֹבִים הָיוּ חַלְלֵי־חֶרֶב מֵחַלְלֵי רָעָב שֶׁהֵם 9
miſericordium mulierum Manꝰ .agrorum *frugibus à* perfoſſi fluxerunt
יָזוּבוּ מְדֻקָּרִים מִתְּנוּבֹת שָׂדָי׃ יְדֵי נָשִׁים רַחֲמָנִיּוֹת 10
.mei populi filiæ cōtritione in eis comedendū ad fuerūt:ſuos natos coxerūt
בִּשְּׁלוּ יַלְדֵיהֶן הָיוּ לְבָרוֹת לָמוֹ בְּשֶׁבֶר בַּת־עַמִּי׃
ignē ſuccendit &;ſui furoris iram effudit,ſuam iram Dominus Complevit
כִּלָּה יְהוָה אֶת־חֲמָתוֹ שָׁפַךְ חֲרוֹן אַפּוֹ וַיַּצֶּת־אֵשׁ 11
univerſi &,terræ reges crediderunt Non .ejus fundamenta *exedit* &,Sijon:in
בְּצִיּוֹן וַתֹּאכַל יְסוֹדֹתֶיהָ׃ לֹא הֶאֱמִינוּ מַלְכֵי־אֶרֶץ וְכֹל 12
.Jeruſalaim portas per inimicꝰ & ,hoſtis ingrederetur ꝙ ,orbis habitatores
יֹשְׁבֵי תֵבֵל כִּי יָבֹא צַר וְאוֹיֵב בְּשַׁעֲרֵי יְרוּשָׁלָ͏ִם׃
effundentium ; ejꝰ ſacerdotū iniquitates,ejꝰ prophetarum peccata Propter
מֵחַטֹּאת נְבִיאֶיהָ עֲוֹנוֹת כֹּהֲנֶיהָ הַשֹּׁפְכִים 13
ſe polluerūt,plateis in cæci ſe Moverunt .juſtorum ſanguinē ejꝰ *interiori* in
בְּקִרְבָּהּ דַּם צַדִּיקִים׃ נָעוּ עִוְרִים בַּחוּצוֹת נְגֹאֲלוּ 14
,*immunde* Recedite.eorum veſtimenta *in tangent poterunt non in* , ſanguine in
בַּדָּם בְּלֹא יוּכְלוּ יִגְּעוּ בִּלְבֻשֵׁיהֶם׃ סוּרוּ טָמֵא 15
etiam,*evolarunt* quippe:tangatis ne ,recedite ,recedite : eos ad clamaverūt
קָרְאוּ לָמוֹ סוּרוּ סוּרוּ אַל־תִּגָּעוּ כִּי נָצוּ גַּם־
Domini *Facies* .*hoſpitari* addent Non,gentibus in dixerunt:ſunt commoti
נָעוּ אָמְרוּ בַּגּוֹיִם לֹא יוֹסִפוּ לָגוּר׃ פְּנֵי יְהוָה 16
ſenum,*ſuſceperunt* non ſacerdotum *facies*;eos *aſpicere* addet non,eos diviſit
חִלְּקָם לֹא יוֹסִיף לְהַבִּיטָם פְּנֵי כֹהֲנִים לֹא נָשָׂאוּ זְקֵנִים
noſtrū auxilium ad noſtri oculi defecerunt nobis *Adhuc*.ſunt miſerti non
לֹא חָנָנוּ׃ עוֹדֵינָה תִּכְלֶינָה עֵינֵינוּ אֶל־עֶזְרָתֵנוּ 17
ſunt Venati.*ſalvabit* non gentē *ad ſpeculati ſumꝰ* noſtra *ſpeculatione* in:*vanitatem*
הָבֶל בְּצִפִּיָּתֵנוּ צִפִּינוּ אֶל־גּוֹי לֹא יוֹשִׁעַ׃ צָדוּ 18
,noſter finis appropinquavit : noſtras plateas per *eundo ab* ,noſtros greſſus
צְעָדֵינוּ מִלֶּכֶת בִּרְחֹבֹתֵינוּ קָרַב קִצֵּנוּ
fuerunt *Leves* .noſter finis venit quia , noſtri dies ſunt completi
מָלְאוּ יָמֵינוּ כִּי־בָא קִצֵּנוּ׃ קַלִּים הָיוּ 19
,nos ſunt perſecuti montes ſuper ; cœlorum aquilis *præ* noſtri perſecutores
רֹדְפֵינוּ מִנִּשְׁרֵי שָׁמָיִם עַל־הֶהָרִים דְּלָקֻנוּ
.nobis ſunt inſidiati deſerto in
בַּמִּדְבָּר אָרְבוּ לָנוּ׃

Verſio VULG. LAT.

3 *Ghimel.* Sed & lamiæ nudaverūt
mammā, lactaverūt catulos ſuos:
filia populi mei crudelis, quaſi
4 ſtruthio in deſerto. *Daleth.* Ad-
hæſit lingua lactentis ad palatum
ejꝰ in ſiti: parvuli petierunt panē,
& non erat qui frangeret eis.
5 *He.* Qui veſcebantur voluptuo-
ſè, interierunt in viis: qui nutrie-
bantur in croceis, amplexati ſunt
6 ſtercora. *Vau.* Et major effecta eſt
iniquitas filiæ populi mei peccato
Sodomorum, quæ ſubverſa eſt in
momento, & non ceperunt in ea
7 manꝰ. *Zain.* Candidiores Naza-
ræi ejus nive, nitidiores lacte, ru-
bicundiores ebore antiquo, ſap-
8 phiro pulchriores. *Heth.* Deni-
grata eſt ſup carbones facies eo-
rum, & non ſunt cogniti in pla-
teis: adhæſit cutis eorum oſſibꝰ:
aruit, & facta eſt quaſi lignum.
9 *Theth.* Melius fuit occiſis gladio,
quàm interfectis fame: quoniam
iſti extabuerūt conſumpti à ſteri-
10 litate terræ. *Jod.* Manꝰ mulierum
miſericordiū coxerūt filios ſuos:
facti ſunt cibꝰ earum, in contriti-
11 one filiæ populi mei. *Caph.* Com-
plevit Dn̄s furorem ſuum, effudit
iram indignationis ſuæ: & ſuc-
cendit ignē in Sion, & devoravit
12 fundamenta ejus. *Lamed.* Non
crediderunt reges terræ, & uni-
verſi habitatores orbis, quoniam
ingrederetur hoſtis & inimicꝰ ꝑ
13 portas Jeruſalē: *Mem.* Propter
peccata prophetarū ejus, & ini-
quitates ſacerdotū ejus, qui effu-
derunt in medio ejus ſanguinem
14 juſtorū. *Nun.* Erraverunt cæci in
plateis, polluti ſunt in ſanguine:
cúmque non poſſent, tenuerunt
15 lacinias ſuas. *Samech.* Recedite
polluti, clamaverunt eis: recedi-
te, abite, nolite tangere: jurgati
quippe ſunt, & commoti dixerūt
inter Gentes; Non addet ultrà ut
16 habitet in eis. *Phe.* Facies Dn̄i di-
viſit eos, non addet ut reſpiciat
eos: facies ſacerdotū non erubue-
runt, neque ſenum miſerti ſunt.
17 *Ain.* Cùm adhuc ſubſiſteremus,
defecerunt oculi noſtri ad auxi-
lium noſtrū vanū, cùm reſpicere-
mus attenti ad gentē, quæ ſalvare
18 non poterat. *Sade.* Lubricaverūt
veſtigia noſtra in itinere platearū
noſtrarum, appropinquavit finis
noſter: completi ſunt dies noſtri,
19 quia venit finis noſter. *Coph.* Ve-
lociores fuerunt perſecutores noſtri aquilis cœli: ſuper montes perſecuti ſunt nos, in deſer-
to inſidiati ſunt nobis.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. cum Tranſ. LAT.

3 ΓΙ'ΜΕΛ. Καί γε δράκοντες ἐξέδυσαν μαστοὺς,
ἐθήλασαν σκύμνοι αὐτῶν θυγατέρας λαοῦ
μου εἰς ἀνίατον, ὡς στρουθίον ἐν ἐρήμῳ.
4 ΔΑ'ΛΕΘ. Ἐκολλήθη ἡ γλῶσσα θηλάζον-
τος πρὸς τὸν φάρυγγα αὐτοῦ ἐν δίψει, νήπια
ᾔτησαν ἄρτον, (γ) ὁ διακλῶν οὐκ ἔστιν αὐτοῖς.
5 Ἤ. Οἱ (δ) ἔσθοντες τὰς τρυφὰς, ἠφανίσθησαν
ἐν ταῖς ἐξόδοις, οἱ τιθηνούμενοι ἐπὶ (ε) κόκκων,
6 περιεβάλλοντο κοπρίας. ΟΥΑΥ̃. Καὶ ἐμε-
γαλύνθη (ϛ) ἀνομία θυγατρὸς λαοῦ μου ὑπὲρ
ἀνομίας Σοδόμων τῆς κατεστραμμένης ὥσπερ
σπουδῇ, καὶ οὐκ ἐπόνεσαν ἐν αὐτῇ χεῖρας.
7 ΖΑΙ'Ν. Ἐκαθαριώθησαν Ναζιραῖοι αὐτῆς
ὑπὲρ χιόνα, ἔλαμψαν ὑπὲρ (ζ) γάλα, ἐπυ-
ρώθησαν, ὑπὲρ λίθου σαπφείρου τὸ ἀπόσπα-
8 σμα αὐτῶν. ἫΘ. Ἐσκότασεν ὑπὲρ ἀσβό-
λην τὸ εἶδος αὐτῶν, οὐκ ἐπεγνώσθησαν ἐν
ταῖς ἐξόδοις· ἐπάγη δέρμα αὐτῶν ἐπὶ τὰ (η)
ὀστέα αὐτῶν, ἐξηράνθησαν, ἐγενήθησαν
9 ὥσπερ ξύλον. ΤΗ'Θ. Καλοὶ ἦσαν οἱ τραυ-
ματίαι ῥομφαίας, ἢ οἱ τραυματίαι λιμοῦ· ἐ-
πορεύθησαν ἐκκεκεντημένοι ἀπὸ (ʺ) γεννη-
10 μάτων ἀγρῶν. ΙΩ'Δ. Χεῖρες γυναικῶν οἰ-
κτιρμόνων ἥψησαν τὰ παιδία αὐτῶν, ἐ-
γενήθησαν εἰς βρῶσιν αὐταῖς, ἐν τῷ συν-
11 τρίμματι τῆς θυγατρὸς τοῦ λαοῦ μου. ΧΑ'Φ.
Συνετέλεσε κύριος θυμὸν αὐτοῦ, ἐξέχεε
(θ) θυμὸν ὀργῆς αὐτοῦ, καὶ ἀνῆψε πῦρ ἐν
Σιὼν, καὶ κατέφαγε τὰ θεμέλια αὐτῆς.
12 ΛΑ'ΜΕΔ. Οὐκ ἐπίστευσαν βασιλεῖς γῆς,
πάντες οἱ κατοικοῦντες τὴν οἰκουμένην, ὅτι
εἰσελεύσεται ἐχθρὸς καὶ ἐκθλίβων διὰ τῶν πυ-
13 λῶν Ἰερουσαλήμ. ΜΗ'Μ. Ἐξ ἁμαρτιῶν
προφητῶν (ι) αὐτῆς, ἀδικιῶν ἱερέων αὐτῆς,
τῶν ἐκχεόντων αἷμα δίκαιον ἐν μέσῳ αὐ-
14 τῆς. ΝΟΥ'Ν. Ἐσαλεύθησαν ἐγρήγοροι αὐ-
τῆς (κ) ἐν ταῖς ἐξόδοις, ἐμολύνθησαν ἐν αἵ-
ματι, ἐν τῷ μὴ δύνασθαι αὐτοὺς, (λ) ἥψαντο
15 ἐνδυμάτων αὐτῶν. ΣΑ'ΜΕΧ. Ἀπόστητε
(μ) ἀκαθάρτων, καλέσατε αὐτοὺς, ἀπόστητε,
ἀπόστητε, μὴ ἅπτεσθε, ὅτι ἀνήφθησαν, καὶ
γε ἐσαλεύθησαν· εἴπατε ἐν τοῖς ἔθνεσιν, Οὐ
16 μὴ προσθῶσι τοῦ παροικεῖν. ΑΙ'Ν. Πρόσω-
πον κυρίου μερὶς αὐτῶν, οὐ προσθήσει ἐπι-
βλέψαι αὐτοῖς. πρόσωπον ἱερέων οὐκ ἔ-
λαβον, (ν) προφήτας οὐκ ἠλέησαν.
17 ΦΗ̃. Ἔτι ὄντων ἡμῶν ἐξέλιπον οἱ ὀ-
φθαλμοὶ ἡμῶν, εἰς τὴν βοήθειαν ἡμῶν μά-
ταια ἀποσκοπευόντων ἡμῶν. ΤΣΑΔΗ'.
Ἀπεσκοπεύσαμεν εἰς ἔθνος οὐ σῷζον, ἐ-
θηρεύσαμεν μικροὺς ἡμῶν, τοῦ μὴ (ξ) πορεύ-
18 εσθαι ἐν ταῖς πλατείαις ἡμῶν. ΚΩ'Φ. Ἤγγικεν
ὁ καιρὸς ἡμῶν, ἐπληρώθησαν αἱ ἡμέραι ἡ-
19 μῶν, πάρεστιν ὁ καιρὸς ἡμῶν. Κοῦφοι ἐγέ-
νοντο οἱ διώκοντες ἡμᾶς ὑπὲρ ἀετοὺς οὐρανοῦ,
ἐπὶ τῶν ὀρέων (ο) ἐξέπτησαν, ἐν ἐρήμῳ
ἐνήδρευσαν ἡμᾶς.

GIMEL. Etiam (a) dracones nu- 3
daverunt mammas: lactaverunt
(b) catuli eorū filias populi mei in
incurabile, quaſi (c) ſtruthio in
deſerto. DALETH. Adhæſit lin- 4
gua lactentis ad palatum ejus in
ſiti, parvuli petierunt panem: qui
frangat, non eſt eis. HE. Qui ve- 5
ſcebantur deliciis, perierunt in vi-
is: qui nutriebantur ſuper cocci-
nea; amplexati ſunt ſtercora.
VAU. Et magnificata eſt iniqui- 6
tas filiæ populi mei ſuper iniqui-
tatē Sodomorū, quæ ſubverſa eſt
quaſi (d) repentè: & non labora-
verunt in ea (e) manibus. ZAIN. 7
Mundati ſunt Naziræi ejus (f)
ſuper nivē, ſplenduerūt ſuper lac,
(g) rubuerunt, ſuper lapide Sap-
phiri exciſio eorū. HETH. Obte- 8
nebrata eſt ſuper fuliginem ſpeci-
es eorum: non ſunt cogniti in pla-
teis: adhæſit pellis eorum ſuper oſ-
ſa eorū: aruerunt, facti ſunt quaſi
lignū. TETH. Boni fuerunt occiſi 9
gladio, quàm occiſi peſte: abierunt
perfoſſi à frugibus agrorū. JOD. 10
Manus mulierum miſericordium
(h) coxerunt filios ſuos: facti ſunt
in eſcam illis, in contritione filiæ
populi mei. CAPH. Complevit Do- 11
minus furorē ſuū: effudit indi-
gnationem iræ ſuæ: & ſuccendit
ignem in Sion, & devoravit fun-
damenta ejus. LAMED. Non cre- 12
diderunt reges tetræ, univerſi ha-
bitatores orbis; quoniam ingredi-
etur inimicꝰ, et tribulans per por-
tas Hieruſalem. MEM. Propter 13
peccata prophetarū ejꝰ, iniquita-
tes ſacerdotum ejus, effundentiū
ſanguinem juſtum in medio ejus.
NUN. (i) Commoti ſunt vigiles e- 14
jus in plateis: polluti ſunt in ſan-
guine: cùm ipſi non poſſent; (k) te-
tigerunt veſtimenta eorum. SA- 15
MECH. Recedite ab immundis,
vocate eos, recedite, recedite, noli-
te tangere: quia ſuccenſi ſunt, atq;
etiam commoti ſunt: dicite in gen-
tibꝰ, Non addent habitare. AIN. 16
Facies Domini pars eorū, non ad-
det reſpicere eos. Facies ſacerdo-
tū non acceperunt, (l) propheta-
rū miſerti non ſunt. PHE. Cùm 17
adhuc ſubſiſteremus; defecerunt o-
culi noſtri ad auxiliū noſtrū va-
na ſpeculantibus nobis. TSADE.
Reſpeximꝰ in gentem non ſalvan-
tem: (m) venati ſumꝰ parvulos
noſtros, ne irent in plateis noſtris.
COPH. Appropinquavit tempus 18
noſtrum: completi ſunt dies no-
ſtri: adeſt (n) tempꝰ noſtrum: Le- 19
ves facti ſunt perſequutores no-
ſtri ſuper aquilas cœli: ſuper
montes (o) evolaverunt: in de-
ſerto inſidiati ſunt nobis.

MS.A. (γ) καὶ ὁ κλῶν (δ) ἐσθίοντες τὰς τροφὰς, (ε) κόλπων, περιεβάλλοντο (ϛ) ἡ ἀνομία (ζ) γάλα ἐπυρρώθησαν, ὑπὲρ λίθους (η) ὀστᾶ (ʺ) γεννημάτων (θ) ὀργὴν θυμοῦ
αὐτοῦ, (ι) αὐτῶν, (κ) ἐπὶ τῆς (λ) ἥψατο (μ) ἀπὸ ἀκαθάρτων, (ν) πρεσβύτας (ξ) παραπορεύεσθαι (ο) ἐξήφθησαν, ἐπὶ τῶν ὀρέων ἐνήδρευσαν ἡμᾶς.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

אַף בְּנָתָא דְיִשְׂרָאֵל מְפַנְּקָתָא לִבְנֵי עַמְמַיָא דְדָמִין לְחוּרְמָנָא טַלְעַן תְּדֵיהֶן וְרַבֵּי כְּנִשְׁתָּא 3
דְעַמִּי מְסִירִין לְאַכְזְרָאִין וְאִמְּהוֹן סָפְדָן עֲלֵיהוֹן כְּנַעֲמַיָא בְּמַדְבְּרָא : אַדְבֵּיק לְשַׁן עוּלֵמָא 4
לְמוּרִיגֵיהּ בְּצַהוּתָא טַלְיַיָא תְּבַעוּ לַחְמָא מוֹשִׁיט לֵית לְהוֹן : דַּהֲווֹ אָכְלִין תַּפְנוּקִין אִשְׁתְּמַמוּ 5
בְּמַחְווֹיָא דְאִתְרְבִּיאוּ עַל צְבַע זְהוֹרֵי גַּפִּיפוּ קִקְלָתָן : וּסְגִיאַת חוֹבַת כְּנִשְׁתָּא דְעַמִּי מִן חוֹבַת 6
סְדוֹם דְאִתְהַפְכַת כְּשַׁעְתָּא וְלָא שְׁרִיאוּ בַהּ נְבִיאַיָא לְאִתְנַבָּאָה לְאַהְדְרוּתָהּ בְּתִיוּבְתָּא :
הֲווֹ בְּרִירִין נְזִירָהָא יַתִּיר מִתַּלְגָא שְׁעַעוּ יַתִּיר מִן חַלְבָּא סַמִּיקוּ חֵיזוּ יַתִּיר מִן יוֹהֲרִין 7
וּכְשַׁבְזִיזָא פַּרְצוּפֵיהוֹן : חֲשַׁךְ מִן אוּכְמְתָא דְגָלוּתָא רֵוִיהוֹן לָא אִשְׁתְּמוֹדְעוּ בְּמַחְווֹין 8
אֲדִיק מִשְׁכְּהוֹן עַל גַּרְמְהוֹן פְּרִיךְ הֲוָה כְּקִיסָא : מַעֲלֵי הֲווֹ קְטִילֵי סַיְפָא יַתִּיר מִן קְטִילֵי 9
כַּפְנָא דִקְטִילֵי סַיְפָא דִיבִין כַּד אִנּוּן מְבַזְעִין בְּכְרֵיסֵיהוֹן מִן מָה דַאֲכַלוּ מֵעֲלַל חַקְלָא
וּנְפִיחֵי כַפְנָא פְּרִיק כְּרֵיסֵיהוֹן מִן מֵיכְלָא : יְדֵי נְשַׁיָא דַהֲוֹן מְרַחֲמָן עַל מִסְכְּנִין בַּשִּׁילוּ 10
עוּלֵמֵיהוֹן וַהֲווֹ לְהוֹן לְמִסְעַד בְּיוֹם תְּבַר דִי אִתְּבָרַת כְּנִשְׁתָּא דְעַמִּי : סַף יְיָ יַת חֵמְתֵיהּ 11
שְׁדָא עַל יְרוּשְׁלֶם יַת תְּקוֹף רוּגְזֵיהּ וְאַסֵּיק בְּאוּר אֶשָּׁתָא בְּצִיּוֹן וְאַכְלַת אֲשָׁוָתָהָא : לָא הֲווֹ 12
מְהֵימְנִין מַלְכְוָת אַרְעָא וְכָל דָיְרֵי תֵבֵל אֲרוּם יֵעוּל נְבוּכַדְנֶצַּר רַשִׁיעָא וּנְבוּזַרְאֲדָן בְּעִיל
דְבָבָא לְנַכְסָא עַמָּא בֵּית יִשְׂרָאֵל בְּתַרְעַיָא דִירוּשְׁלֶם : עֲנָת מִדַּת הַדִּין וְכֵן אֲמַרַת לָא 13
הֲוָת כָּל דָא אֱלָהֵן מְחוֹבַת נְבִיאַהָא דְמִתְנַבַּן לַהּ נְבִיאוּת שִׁקְרָא וּמֵעֲוָיַת כַּהֲנָהָא דְאַסִּיקוּ
קְטוֹרֶת בּוּסְמִין לְטַעֲוָתָא וְאִנּוּן גְרַמוּ לְאִתְאֲשַׁד בְּגַוָּהּ דַּם זַכָּאִין : אִתְטַלְטַלוּ עַוִּירִין 14
בְּמַחְווֹין אִטְּנַפוּ בְּדַם קְטוּלִין בְּחַרְבָּא וְעַל דְלָא הֲווֹ יָכְלִין לְמֶחְמֵי קְרִיבוּ בִלְבוּשֵׁיהוֹן :
זוּרוּ מִמְּסַאֲבָא קְרוֹ לְהוֹן עַמְמַיָא זוּרוּ זוּרוּ לָא תִקְרְבוּן בְּהוֹן אֲרוּם אִתְקוֹטַטוּ אַף אִתְטַלְטַלוּ 15
אֲמַרוּ בְּמֶהֱוֵיהוֹן בְּשַׁלְוְתְהוֹן דְבֵינֵי עַמְמַיָא לָא יוֹסִיפוּן לְמֵדַר : מִן קֳדָם אַפֵּי יְיָ אִתְפְּלִיגוּ 16
לָא יוֹסִיף לְאִסְתַּכָּלָא בְּהוֹן בְּגִין כֵּן אוּמַּיָא רַשִׁיעַיָא אַפֵּי כַהֲנַיָא לָא סַבַּרוּ וְעַל סָבַיָא לָא
חַסוּ : עוֹד סָפַן עֵינַנָא לְאִסְתַּכָּלָא לְסַיְעָנָא דַהֲוֵינָא מְתִינַן לְרוֹמָאֵי וְאִתְהַפַּךְ לָנָא לְהַבְלוּ 17
בְּמִסְכוּתַנָא דְאִסְתַּכַּלְנָא לְרוֹמָאֵי דְאִנּוּן עַמָּא דְלָא יִפְרוֹק : הֲנוֹן צָדִין שְׁבִילָנָא מִלְּמֵהָךְ 18
לִרְוָחַן בִּפְלַטְיָתָנָא אֲמַרְנָא קְרֵב סוֹפָנָא אִתְמַלִיאוּ יוֹמָנָא אֲרוּם מְטָא סוֹפָנָא : קְלִילִין 19
הֲווֹ רָדְפָנָא יַתִּיר מִנִּשְׁרֵי שְׁמַיָא עַל טוּרַיָא אַדְלִיקוּ יָתָנָא בְּמַדְבְּרָא כְּמַנוּ לָנָא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

GHIMEL. Filiæ quoque Iſrael delicioſæ filiis populorum, qui ſimiles ſunt 3
draconibꝰ, nudabant mammillas ſuas, & pueri cœtꝰ populi mei traditi ſunt
crudelibus, & matres eorum lamentantur ſuper eis ſicut lamiæ in deſerto.
DALETH. Adhæſit lingua juvenis palato ſuo in ſiti: pueri petierunt panē, 4
& non eſt qui porrigat eis. HE. Qui aſſueti erant comedere in deliciis va- 5
ſtati ſunt in vicis: qui nutriebātur in croceis, amplexati ſunt ſtercora. VAU. 6
Et majꝰ factū eſt peccatū cœtꝰ populi mei peccato Sodomæ, quæ ſubverſa
eſt in momēto: & non māſerūt in ea Prophetæ, ut prophetarēt & cōverterēt
eā ad pœnitentiā. ZAIN. Fuerunt candidiores Nazaræi ejꝰ nive, leniores 7
lacte, rubicundiores ſunt aſpectu quàm pyropi, & ſicut ſapphirꝰ vultꝰ eorū.
CHETH. Obſcuratꝰ eſt magis quàm nigredo captivitatis aſpectꝰ eorū: non 8
ſunt agniti in vicis, contracta eſt pellis ſuper oſſa eorū, aruit & facta eſt ſi-
cut lignū. TETH. Feliciores fuerunt occiſi gladio mortuis fame: quia oc- 9
ciſi gladiis defluebāt, cùm rumperentur ventres eorū ab eo quod comede-
rant de fructu agri: & qui inflati erāt fame, ſciſſus eſt venter eorum propter
[*defectum*] cibi. JOD. Manꝰ mulierū quæ erāt miſericordes ſup pauperes, 10
coxerunt parvulos ſuos: facti ſunt eis in alimentū in die excidii quo attritꝰ
eſt cœtꝰ populi mei. CAPH. Conſummavit Dn̄s furorē ſuū, & fudit ſuper 11
Jeruſalē irā indignationis ſuæ, & ſuccendit lampadē ignis in Sion, & con-
ſumpſit fundamēta ejꝰ. LAMED. Non credebāt regna terræ, nec omnes ha- 12
bitatores orbis, ꝙ ingrederetur Nabuchodonoſor impius & Nabuzardan
inimicus ad jugulandū populū domꝰ Iſrael in portis Jeruſalē. MEM. Re- 13
ſpondit menſura judicii, & ſic ait: Non fuerunt omnia hæc niſi propter pec-
cata Prophetarum ejꝰ, qui prophetabāt ei prophetiā falſam, & propter de-
licta Sacerdotū qui adolebant incenſum aromatū idolis; ipſi enim fuerunt
cauſa ut effunderetur in medio ejꝰ ſanguis innocentū. NUN. Vacillarunt 14
cæci in plateis, inquinati ſunt ſanguine occiſorum gladio; & eo quòd non
poterāt videre, adhæſerunt veſtibꝰ ſuis. SAMECH. Recedite à pollutis, cla- 15
maverunt eis populi, recedite recedite; ne accedatis ad eos: quia abomina-
biles, & vagi ſunt: dixerunt cùm eſſēt in abundantia ſua, quòd non addent
morari inter populos. PE. A facie vultꝰ Dn̄i diviſi ſunt: non addet ut reſpi- 16
ciat eos: propterea gentes impiæ non acceptaverunt faciē Sacerdotū, & ſup
ſenes non ſunt miſerti. AIN. Adhuc deficiunt oculi noſtri reſpiciendo ad ad- 17
jutoriū noſtrum ꝙ ſperabamꝰ in *Romanis*, & cōverſum eſt nobis in nihilū:
cùm è ſpecula noſtra contēplaremur *Romanos*, qui ſunt populꝰ qui non ſal-
vat. SADIC. Ipſi diſſipaverūt ſemitas noſtras, ne ambulemꝰ confidēter in 18
plateis noſtris. Diximꝰ, Appropinquavit finis noſter, impleti ſunt dies
noſtri, quia pervenit finis noſter. COPH. Leviores fuerunt perſecutores noſtri aquilis cœli: ſuper montes perſecuti ſunt nos; in deſerto inſidiati ſunt nobis. 19

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

3 * ܓ * ܓܠܝܘ ܐܝܟ ܬܢܝܢܐ ܕܒܪܐ ܬܕܝܗܘܢ. ܘܐܝܢܩܘ ܠܓܘܪܝܗܘܢ. ܗܘܬ ܒܪܬ ܥܡܝ ܠܡܚܘܬܐ
4 ܕܠܝܬ ܠܗ ܐܣܝܘܬܐ. ܘܐܝܟ ܢܥܡܝܬܐ ܒܡܕܒܪܐ. * ܕ * ܕܒܩ ܠܫܢܗ ܕܝܠܘܕܐ ܠܚܟܗ ܒܨܗܝܐ.
5 ܥܘܠܐ. ܛܠܝܐ ܫܐܠܘ ܠܚܡܐ. ܘܠܝܬ ܕܦܪܣ ܘܝܗܒ ܠܗܘܢ. * ܗ * ܗܢܘܢ ܕܐܟܠܝܢ
6 ܗܘܘ ܦܘܢܩܐ. ܗܐ ܪܒܝܥܝܢ ܒܩܩܠܬܐ. * ܘ * ܘܣܓܝ ܚܘܒܗܿ ܕܒܪܬ ܥܡܝ. ܡܢ ܚܛܝܬܗܿ
7 ܕܣܕܘܡ. ܕܐܬܗܦܟܬ ܡܢ ܫܥܬܐ ܘܠܐ ܐܬܝܗܒ ܒܗܿ ܐܝܕܐ. * ܙ * ܕܟܘ ܢܙܝܪܝܗܿ ܡܢ ܬܠܓܐ.
ܘܚܘܪܘ ܡܢ ܚܠܒܐ ܒܡܪܥܝܬܗܘܢ. ܣܡܩܘ ܓܪܡܝܗܘܢ ܡܢ ܣܪܕܘܢ. ܘܡܢ ܣܦܝܠܐ
8 ܓܘܫܡܝܗܘܢ. * ܚ * ܚܫܟ. ܡܢ ܟܘܫܝܐ ܚܙܘܗܘܢ. ܘܠܐ ܐܫܬܘܕܥܘ ܒܫܘܩܐ. ܩܦܕ
9 ܡܫܟܗܘܢ ܥܠ ܓܪܡܝܗܘܢ. ܝܒܫ ܘܗܘܐ ܐܝܟ ܩܝܣܐ. * ܛ * ܛܒܝܢ ܗܘܘ ܩܛܝܠܝ
10 ܚܪܒܐ. ܡܢ ܩܛܝܠܝ ܟܦܢܐ. ܕܗܢܘܢ ܐܝܟ ܕܢܦܘ ܘܡܚܝܠܝܢ ܒܚܩܠܐ. * ܝ * ܐܝܕܝ
ܢܫܐ ܡܪܚܡܢܝܬܐ. ܒܫܠ ܒܢܝܗܝܢ. ܗܘܘ ܠܗܝܢ ܠܡܐܟܘܠܬܐ ܒܬܒܪܗ ܕܒܪܬ ܥܡܝ.
11 * ܟ * ܫܡܠܝ ܡܪܝܐ ܚܡܬܗ. ܘܐܫܕ ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ. ܘܐܫܠܚ ܢܘܪܐ ܒܨܗܝܘܢ.
12 ܘܐܟܠܬ ܫܬܐܣܝܗܿ. * ܠ * ܠܐ ܗܝܡܢܘ ܡܠܟܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܘܟܠܗܘܢ
ܥܡܘܪܝܗܿ ܕܬܐܒܝܠ. ܕܢܐܬܐ ܥܠܘܠܐ ܘܒܥܠܕܒܒܐ. ܒܬܪܥܝܗܿ ܕܐܘܪܫܠܡ.
13 * ܡ * ܡܛܠ ܚܛܗܐ ܕܢܒܝܝܗܿ. ܘܥܘܠ ܕܟܘܡܪܝܗܿ. ܕܐܫܕܘ ܒܓܘܗܿ ܕܡܐ ܕܙܕܝܩܐ.
14 * ܢ * ܢܕܘ ܪܘܪܒܢܝܗܿ ܒܫܘܩܝܗܿ. ܘܐܬܛܘܫܘ ܒܕܡܐ. ܘܠܐ ܐܫܟܚܘ ܕܢܩܪܒܘܢ
15 ܠܠܒܘܫܝܗܘܢ. * ܣ * ܣܪܘܩܘ ܡܢܗܘܢ. ܘܛܢܦܐ ܩܪܘ ܐܢܘܢ. ܥܒܪܘ ܥܒܪܘ ܘܠܐ ܬܬܩܪܒܘܢ
ܠܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܐܬܪܓܙܘ ܐܦ ܐܬܢܟܝܘ. ܐܡܪܘ ܒܥܡܡܐ ܕܠܐ ܢܬܘܣܦܘܢ ܠܡܥܡܪ.
16 * ܥ * ܥܕ ܩܝܡܝܢ ܚܢܢ. ܣܟܝ ܥܝܢܝܢ ܠܥܘܕܪܢܢ. ܣܪܝܩܐܝܬ ܕܘܩܘ ܕܘܩܝܢ ܠܥܡܐ
17 ܕܠܐ ܦܪܘܩ. * ܦ * ܦܪܨܘܦܗ ܕܡܪܝܐ ܦܠܓ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܢܘܣܦ ܠܡܚܙܐ ܠܗܘܢ.
18 ܐܦܝ ܟܘܡܪܐ ܠܐ ܢܣܒܘ. ܘܥܠ ܣܒܐ ܠܐ ܚܣܘ. * ܨ * ܨܕܘ ܙܥܘܪܝܢ. ܕܡܗܠܟܝܢ
19 ܒܫܘܩܐ. ܩܪܒ ܩܨܢ. ܡܠܘ ܝܘܡܝܢ. ܡܛܠ ܕܐܬܐ ܙܒܢܢ. * ܩ * ܩܠܝܠܝܢ ܗܘܘ ܪܕܘܦܝܢ
ܡܢ ܢܫܪܝ ܫܡܝܐ. ܥܠ ܛܘܪܐ ܪܕܦܘܢ. ܘܒܡܕܒܪܐ ܐܬܟܡܢܘ ܠܢ.

* Nudaverunt ut canes ſylveſtres ubera ſua, & 3
lac præbuerunt catulis ſuis: expoſita eſt filia
populi mei plagæ cui non eſt medela, & quaſi
ſtruthio in deſerto. Adhæſit lingua infantis 4
palato ipſius præ ſiti: pueri petierunt panem,
nec fuit qui frangeret & daret eis. Ii qui comedebant 5
delitiás, ecce cubant in ſterquiliniis.
Et ſuperavit iniquitas filiæ populi mei peccatũ 6
Sodomæ, quæ ſubitò ſubverſa fuit ſine
labore manuum. Puriores erant Nazaræi ejus 7
nive, & candidiores lacte in paſcuis ſuis, rubicundiora
oſſa eorũ ſardio, & ſapphiro corpus
eorum. *Jam verò* obſcurior facta eſt carbonibus 8
ſpecies eorum, nec agnoſcuntur in
plateis: rugata eſt pellis eorum ſuper oſſibus
eorum, aruit, & ligno ſimilis evaſit. Meliùs 9
habuerunt confoſſi gladio, quàm enecati fame,
quòd hi liquefacti ſint velut ii qui ſaucii
jacent in agro. Manus mulierum benignarum 10
coxerunt natos earum, facti ſunt eis alimento
in contritione filiæ populi mei. Explevit Dominus 11
furorẽ ſuum, & effudit æſtum iræ ſuæ:
dimiſit ignẽ in Sionem, & flamma devoravit
fundamenta ejus. Nunquam crediciſſent reges 12
terræ & omnes habitatores orbis, venturum
atq; ingreſſurum oppreſſorẽ & inimicũ
per portas Jeruſalem. Propter peccata prophetarum 13
ejus, & crimen ſacerdotum ejus,
qui effuderunt in ea ſanguinem innocentium;
Vacillârunt magnates ejus in plateis ipſius, 14
fuerúntque ſanguine conſperſi, nec potuerunt
tangere veſtes eorum. Recedite ab eis, & immundos 15
vocate eos: tranſite, tranſite, & ne attingatis
eos: quoniã irritantes cruciati etiam
fuerunt, dixerunt inter gentes ſe non futuros
ampliùs incolas. Dum adhuc ſubſiſterem⁹, caligaverunt 16
oculi noſtri præ *expectatione* auxilii
noſtri: fruſtrà ſpeculati ſunt ſpeculatores
noſtri verſùs populum minimè liberaturum.
Vultus Domini diviſit illos, nec eſt ampliùs 17
intuiturus eos; *quia* vultus ſacerdotum non
ſunt reveriti, neque ſenum miſerti. Venati 18
ſunt minutiſſimos quoſque, eos qui ambulabant
in plateis, *dicentes*, Appropinquavit
terminus noſter, impleti ſunt dies noſtri,
quòd jam advenit tempus noſtrum. Velociores 19
erant perſecutores noſtri aquilis cœli,
ſuper montes perſecuti ſunt nos, & in deſerto
inſidiati ſunt nobis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* والتنانين خلعوا ثديهم * اشبالهم رضعوا * بنات شعبي لغير شفا * مثل عصفور في الفلاة * 3
* لصق لسان المرضع بحنجرته بالعطش * الاطفال طلبوا خبزا ولم يكن لهم من يكسر * 4
* الذين ياكلون الاطعمة فنيوا في المخارج * المربيون احتضنوا من المزابل في احضانهم * وعظم 5 6
اثم ابنة شعبي * اكثر من اثام سدوم المخسوفة بسرعة * ولم تتعب الايادي فيها * نقيت اطهارها 7
اكثر من الثلج * اشرقوا اكثر من اللبن تجبنوا * اكثر من حجارة الفيروزج جرحهم * اظلم 8
منظرهم اكثر من الفحم * لم يعرفوا في المخارج * لصق جلدهم بعظامهم * يبسوا وصاروا
مثل الخشبة * صارت جرحى السيف احسن من جرحى الجوع * ذهبوا مطعونين من غلات 9
الحقول * ايدي النسوة المترافات طبخن اولادهن * صاروا طعاما لهن في انكسار ابنة 10
شعبي * اكمل الرب غضبه * افاض رجز غضبه * واشعل نارا في صهيون * فاكلت اساساتها * 11
* لم تصدق ملوك الارض * جميع سكان المسكونة * ان العدو يدخل والمحزن من ابواب 12
ايروشليم * من خطايا انبيائهم * وظلامات كهنتها * الذين اهرقوا دما زكيا في وسطها * 13
* اضطرب ساهروها في المخارج * تدنسوا بالدم * اذ لا يستطيعون ان يلمسوا ثيابهم * ابتعدوا 14 15
من الانجاس * ادعوهم * ابتعدوا ابتعدوا لا تلمسوهم * لانهم اشتعلوا وتزعزعوا * قولوا في الامم * لا
يعودون ان يسكنوا * وجه الرب نصيبهم * لا يعود ان ينظرهم * لم ياخذوا بوجه الكهنة * 17
ولم يرحموا المشايخ * حين كنا فنيت اعيننا الى معونتنا * باطل الذين يرقبوننا * رمقنا امة 16
لا تخلص * اصطادنا صغارنا * ان لا يعبروا في شوارعنا * اقترب زماننا * كملت ايامنا * حضر وقتنا * 18
* صار طاردونا خفافا اكثر من نسور السماء على الجبال * كمنوا على الجبال واختلسونا * 19

* *Vel dracones ipſi nudant mammas ſuas,* 3
catuli eorum lac ſugunt: filiæ populi mei
ſunt incurabiles, ut avis in aëre. Adhæ- 4
ſit lingua lactentis faucibus ejus in ſiti:
parvuli petierunt panem, nec fuit eis qui
frangeret. Qui cibos comedebant, defece- 5
runt in foris: qui nutriebant ſeſe, amplexati
ſunt è ſterquiliniis in ſinibus ſuis. Et ma- 6
jus extitit flagitiũ filiæ populi mei, quàm
flagitia Sodomæ quæ ſubitò abſorpta fuit,
non laborantibus in ea manibus. Puriores 7
erant ſancti ejus nive, fulgebant, pluſ-
quam lac coagulati erant, præſtantior erat
quàm lapidum ſapphiri inciſio eorum. Ob- 8
ſcurior nunc *eſt aſpectus eorum carboni-*
bus, non agnoſcuntur in foris, adhæſit cu-
tis eorum oſſibus eorum, exaruerunt, & li-
gno ſimiles facti ſunt. Vulnerati gladio 9
pulchriores ſunt vulneratis fame, inter-
ierunt confoſſi propter defectum *frugum*
agrorum. Manus mulierum clementium 10
coxerunt filios ſuos, facti ſunt illis cibus
in contritione filiæ populi mei. Complevit 11
Dominus iram ſuam, profudit furorem iræ
ſuæ, & accendit ignem in Sione, qui fun-
damenta ejus conſumpſit. Non credidiſ- 12
ſent reges terræ, & omnes orbis incolæ, in-
greſſurum hoſtem & affligentem in portas
Jeroſolymorum. Propter peccata prophe- 13
tarum ejus, & perverſitates ſacerdotum
ejus, qui effuderunt ſanguinem innoxium
in medio ipſius; Exagitati ſunt vigiles e- 14
jus in foris, contaminati ſunt ſanguine, ita
ut non poſſent tangere veſtes eorum. Re- 15
cedite ab immundis; proclamate eis, Re-
cedite, recedite, ne tangatis eos. Quia ſuc-
cenſi & concuſſi ſunt, dicite inter gentes;
Non habitabunt ampliùs;

Tranſponit Literas Phe & Ain, ut
in Hebr. & Græco.

Facies Domini quæ eſt pars eorum, non 17
videbit eos ampliùs: non enim *venerati*
ſunt vultum ſacerdotum, neque miſerti
ſunt ſenum. Dum adhuc ſubſiſteremus, 16
defecerunt oculi noſtri ad auxilium no-
ſtrum reſpicientes: *fallaces fuerunt qui*
ſpeculati ſunt nobis: reſpeximus gentem
minimè ſalvaturam. Venati ſumus par- 18
vulos noſtros, ut non tranſirent per vicos
noſtros. Appropinquavit tempus noſtrum,
finiti ſunt dies noſtri, adeſt momentum no-
ſtrum: Facti ſunt perſecutores noſtri ve- 19
lociores aquilis cæli ſuper montes; inſidia-
ti ſunt ſuper montes, et prædati ſunt nos.

cujus : eorum foveis in eſt captus Domini unctum noſtrarū nariū Spiritus
20 רוּחַ אַפֵּינוּ מְשִׁיחַ יְהוָה נִלְכַּד בִּשְׁחִיתוֹתָם אֲשֶׁר
, Edom filia lætare &, Gaude .gentes inter vivemus ejus umbra in diximꝰ
21 אָמַרְנוּ בְּצִלּוֹ נִחְיֶה בַגּוֹיִם׃ שִׂישִׂי וְשִׂמְחִי בַּת־אֱדוֹם
, inebriaberis , calix tranſibit te ſuper etiam ; Hus terra in habitans
יוֹשֶׁבְתִּי בְּאֶרֶץ עוּץ גַּם־עָלַיִךְ תַּעֲבָר־כּוֹס תִּשְׁכְּרִי
:te deportandū ad addet non,Sijon filia tua iniquitas eſt Cōſumpta .te denudabis &
22 וְתִתְעָרִי׃ תַּם־עֲוֹנֵךְ בַּת־צִיּוֹן לֹא יוֹסִיף לְהַגְלוֹתֵךְ
.tua peccata ſuper diſcooperuit,Edom filia tuam iniquitatem viſitavit
פָּקַד עֲוֹנֵךְ בַּת־אֱדוֹם גִּלָּה עַל־חַטֹּאתָיִךְ׃

CAP. V. ה

.noſtrum opprobriū vide & , aſpice ;nobis fuerit quid Domine Recordare
1 זְכֹר יְהוָה מֶה־הָיָה לָנוּ הַבִּיטָ וּרְאֵה אֶת־חֶרְפָּתֵנוּ׃
.alienigenas ad noſtræ domus , extraneos ad eſt verſa noſtra Hæreditas
2 נַחֲלָתֵנוּ נֶהֶפְכָה לְזָרִים בָּתֵּינוּ לְנָכְרִים׃
noſtras Aquam .viduæ veluti noſtræ matres,patre abſque fuimus Pupilli
3 יְתוֹמִים הָיִינוּ אֵין אָב אִמֹּתֵינוּ כְּאַלְמָנוֹת׃ מֵימֵינוּ 4
noſtra colla Super .venerunt pretio in noſtra ligna ,bibimus argento in
5 בְּכֶסֶף שָׁתִינוּ עֵצֵינוּ בִּמְחִיר יָבֹאוּ׃ עַל צַוָּארֵנוּ
Ægypto .nobis dabatur requies non,laboravimꝰ;ſumꝰ paſſi perſecutionē
6 נִרְדָּפְנוּ יָגַעְנוּ לֹא הוּנַח־לָנוּ׃ מִצְרַיִם
;ipſi non,peccaverūt noſtri Patres.pane ſaturari ad Aſſyrio,manum dedimus
7 נָתַנּוּ יָד אַשּׁוּר לִשְׂבֹּעַ לָחֶם׃ אֲבֹתֵינוּ חָטְאוּ אֵינָם
liberans non in ſunt dominati Servi .portavimus eorum iniquitates nos &
8 אֲנַחְנוּ עֲוֹנֹתֵיהֶם סָבָלְנוּ׃ עֲבָדִים מָשְׁלוּ בָנוּ פֹּרֵק
faciebus à noſtrum panem afferebamus noſtra anima In .eorum manu è non
9 אֵין מִיָּדָם׃ בְּנַפְשֵׁנוּ נָבִיא לַחְמֵנוּ מִפְּנֵי
horrorum faciebus à incaluerunt clibanꝰ tanquā noſtra Pellis .deſerti gladii
10 חֶרֶב הַמִּדְבָּר׃ עוֹרֵנוּ כְּתַנּוּר נִכְמָרוּ מִפְּנֵי זַלְעֲפוֹת
Principes.Jehudah civitatibꝰ in virgines,cōpreſſerūt Sijō in Mulieres .famis
11 רָעָב׃ נָשִׁים בְּצִיּוֹן עִנּוּ בְּתֻלֹת בְּעָרֵי יְהוּדָה׃ שָׂרִים 12
Juvenes .ſunt honoratæ non ſenum facies,fuerunt ſuſpenſi eorum manu in
13 בְּיָדָם נִתְלוּ פְּנֵי זְקֵנִים לֹא נֶהְדָּרוּ׃ בַּחוּרִים
;ceſſaverūt porta de Senes .impegerunt lignum in pueri &,tulerunt molā
14 טְחוֹן נָשָׂאוּ וּנְעָרִים בָּעֵץ כָּשָׁלוּ׃ זְקֵנִים מִשַּׁעַר שָׁבָתוּ
luctū in eſt verſus,noſtri cordis gaudiū Ceſſavit .ſua modulatione à juvenes
15 בַּחוּרִים מִנְּגִינָתָם׃ שָׁבַת מְשׂוֹשׂ לִבֵּנוּ נֶהְפַּךְ לְאֵבֶל
.peccavimꝰ quia,nobis nunc væ :noſtri capitis corona Cecidit.noſter chorꝰ
16 מְחֹלֵנוּ׃ נָפְלָה עֲטֶרֶת רֹאשֵׁנוּ אוֹי־נָא לָנוּ כִּי חָטָאנוּ׃
.noſtri oculi ſūt obtenebrati iſtaPropter,noſtrū cor mœſtū fuit hocPropter
17 עַל־זֶה הָיָה דָוֶה לִבֵּנוּ עַל־אֵלֶּה חָשְׁכוּ עֵינֵינוּ׃
Tu .eo in ambulaverunt vulpes,eſt deſolatꝰ quia,Sijon montē Propter
18 עַל הַר־צִיּוֹן שֶׁשָּׁמֵם שׁוּעָלִים הִלְּכוּ־בוֹ׃ אַתָּה 19
quid Ut.generationē & generationē in tuū ſoliū,permanebis ſeculū in Dn̄e
20 יְהוָה לְעוֹלָם תֵּשֵׁב כִּסְאֲךָ לְדֹר וָדוֹר׃ לָמָּה
?dierum longitudinem in nos derelinques,noſtri obliviſceris perpetuū in
לָנֶצַח תִּשְׁכָּחֵנוּ תַּעַזְבֵנוּ לְאֹרֶךְ יָמִים׃
.quondā ſicut noſtros dies innova:cōvertemur &,te ad Domine nos Cōverte
21 הֲשִׁיבֵנוּ יְהוָה אֵלֶיךָ וְנָשׁוּב חַדֵּשׁ יָמֵינוּ כְּקֶדֶם׃
.valde uſque nos contra es iratus ,nos reprobâſti reprobando Quinimo
22 כִּי אִם־מָאֹס מְאַסְתָּנוּ קָצַפְתָּ עָלֵינוּ עַד־מְאֹד׃

Verſio VULG. LAT.

20 *Res.* Spiritꝰ oris noſtri Chriſtus
Dn̄s captꝰ eſt in peccatis noſtris:
cui diximꝰ; In umbra tua vivemꝰ
21 in Gentibꝰ. *Sin.* Gaude, & lætare
filia Edom, quæ habitas in terra
Hus: ad te quoq; perveniet calix,
inebriaberis, atque nudaberis.
22 *Thau.* Completa eſt iniquitas tua
filia Sion, non addet ultrà ut
tranſmigret te: viſitavit iniqui-
tatem tuam filia Edom, diſcoo-
peruit peccata tua.

Oratio *Jeremiæ* Prophetæ.

CAP. V.

1 Recordare, Domine, quid acci-
derit nobis: intuere, & reſpice
2 opprobriū noſtrum. Hæreditas
noſtra verſa eſt ad alienos, domꝰ
3 noſtræ ad extraneos. Pupilli facti
ſumus abſque patre, matres no-
4 ſtræ quaſi viduæ. Aquam noſtrā
pecuniâ bibimꝰ: ligna noſtra pre-
5 tio comparavimus. Cervicibꝰ no-
ſtris minabamur, laſſis non daba-
6 tur requies. Ægypto dedimꝰ ma-
num, & Aſſyriis ut ſaturaremur
7 pane. Patres noſtri peccaverunt,
& non ſunt: & nos iniquitates
8 eorū portavimus. Servi dominati
ſunt noſtrî: non fuit qui redime-
9 ret de manu eorum. In animabus
noſtris afferebamus panē nobis, à
10 facie gladii in deſerto. Pellis no-
ſtra, quaſi clibanus exuſta eſt à fa-
11 cie tempeſtatū famis. Mulieres in
Sion humiliaverunt, & virgines
12 in civitatibꝰ Juda. Principes ma-
nu ſuſpenſi ſunt: facies ſenū non
13 erubuerunt. Adoleſcentibus im-
pudicè abuſi ſunt: & pueri in li-
14 gno corruerunt. Senes defecerunt
de portis, juvenes de choro pſal-
15 lentium. Defecit gaudiū cordis
noſtri: verſus eſt in luctum chorꝰ
16 noſter. Cecidit corona capitis
noſtri: væ nobis, quia peccavimꝰ.
17 Proptereà mœſtum factū eſt cor
noſtrum, ideò contenebrati ſunt
18 oculi noſtri. Propter montē Sion
quia diſperiit, vulpes ambulave-
19 rūt in eo. Tu autē, Dn̄e, in æternū
ꝑmanebis, ſoliū tuum in genera-
20 tionē & generationē. Quarè in
ꝑpetuū obliviſcĕris noſtrî? dere-
linques nos in longitudine dierū?
21 Converte nos, Dn̄e, ad te, & con-
vertemur: innova dies noſtros,
22 ſicut à principio. Sed projiciens repuliſti nos, iratus es contra nos vehementer.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. cum Tranſ. LAT.

20 ΡΗ'ΧΣ. Πνεῦμα προσώπου ἡμῶν χριστὸς
κύριος συνελήφθη ἐν ταῖς διαφθοραῖς αὐτῶν,
(π) οὗ εἴπαμεν, Ἐν τῇ σκιᾷ αὐτοῦ ζησόμεθα
21 ἐν τοῖς ἔθνεσι. ΧΣΕ'Ν. Χαῖρε καὶ εὐφραίνου
θύγατερ Ἰδουμαίας ἡ κατοικοῦσα (ϙ)ἐπὶ γῆς,
καί γε ἐπὶ σὲ διελεύσεται (ρ) τὸ ποτήριον κυ-
22 ρίου, (σ)μεθυσθήσῃ καὶ ἀποχεεῖς. ΘΑΥ'. Ἐξέ-
λιπεν ἡ ἀνομία σου θύγατερ Σιὼν, οὐ προσ-
θήσει (τ) τοῦ ἀποικίσαι σε. ἐπεσκέψατο (υ)
ἀνομίας σου θύγατερ Ἐδὼμ, ἀπεκάλυψεν
ἐπὶ τὰ ἀσεβήματά σου. MS.A. (π) οἷ
(ϙ) ἐπὶ τῆς γῆς, (ρ) ποτήριον (σ) καὶ μεθυσθήσῃ (τ) ἔτι ἀποικίσαι (υ) ἀδικίαν

ΚΕΦ. ε'.

1 Μνήσθητι κύριε, ὅ,τι ἐγενήθη ἡμῖν· ἐπί-
2 βλεψον, καὶ ἴδε τὸν ὀνειδισμὸν ἡμῶν. Κλη-
ρονομία ἡμῶν μετεστράφη ἀλλοτρίοις, οἱ οἶ-
3 κοι ἡμῶν ξένοις. Ὀρφανοὶ ἐγενήθημεν, οὐχ
ὑπάρχει πατὴρ, μητέρες ἡμῶν (α) ὡς αἱ χῆ-
4 ραι. Ὕδωρ ἡμῶν ἐν ἀργυρίῳ ἐπίομεν, ξύλα
5 ἡμῶν ἐν ἀλλάγματι (β) ἦλθεν. Ἐπὶ τὸν τρά-
χηλον ἡμῶν ἐδιώχθημεν, ἐκοπιάσαμεν, οὐκ
6 ἀνεπαύθημεν. Αἴγυπτος ἔδωκε χεῖρα, Ἀσ-
7 σοὺρ εἰς πλησμονὴν αὐτῶν. Οἱ πατέρες ἡ-
μῶν ἥμαρτον, οὐχ ὑπάρχουσιν, ἡμεῖς τὰ
8 ἀνομήματα αὐτῶν ὑπέσχομεν. Δοῦλοι ἐκυ-
ρίευσαν ἡμῶν, λυτρούμενος οὐκ ἔστιν ἐκ τῆς χει-
9 ρὸς αὐτῶν. Ἐν ταῖς ψυχαῖς ἡμῶν εἰσοίσομεν
ἄρτον ἡμῶν, ἀπὸ προσώπου ῥομφαίας τῆς ἐ-
10 ρήμου. Τὸ δέρμα ἡμῶν ὡς κλίβανος ἐπελι-
ώθη, συνεσπάσθησαν ἀπὸ προσώπου καταιγί-
11 δων λιμοῦ. Γυναῖκας ἐν Σιὼν ἐταπείνωσαν,
12 παρθένους ἐν πόλεσιν Ἰούδα. Ἄρχοντες ἐν
χερσὶν αὐτῶν ἐκρεμάσθησαν, πρεσβύτεροι οὐκ
13 ἐδοξάσθησαν. Ἐκλεκτοὶ κλαυθμὸν ἀνέλαβον,
14 καὶ νεανίσκοι ἐν ξύλῳ ἠσθένησαν. Καὶ πρε-
σβῦται ἀπὸ πύλης κατέπαυσαν, ἐκλεκτοὶ ἐκ
15 ψαλμῶν αὐτῶν κατέπαυσαν. Κατέλυσε
χαρὰ καρδίας ἡμῶν, ἐστράφη εἰς πένθος ὁ
16 χορὸς ἡμῶν· Ἔπεσεν ὁ στέφανος (γ) ἡμῶν
17 τῆς κεφαλῆς· οὐαὶ δὴ ἡμῖν, ὅτι ἡμάρτομεν. Περὶ
τούτου ἐγενήθη (δ) ὀδύνη, ὀδυνηρὰ ἡ καρδία
ἡμῶν, περὶ τούτου ἐσκότασαν οἱ ὀφθαλμοὶ ἡ-
18 μῶν. Ἐπ' ὄρος Σιὼν, ὅτι ἠφανίσθη, ἀλώ-
19 πεκες διῆλθον ἐν αὐτῇ. Σὺ δὲ κύριε εἰς τὸν
αἰῶνα κατοικήσεις, ὁ θρόνος σου εἰς γενεὰν
20 καὶ γενεάν. Ἵνα τί εἰς νῖκος ἐπιλήσῃ ἡμῶν,
καταλείψεις ἡμᾶς εἰς μακρότητα ἡμερῶν;
21 Ἐπίστρεψον ἡμᾶς κύριε πρὸς σὲ, καὶ ἐπι-
στραφησόμεθα· καὶ ἀνακαίνισον ἡμέρας ἡμῶν
22 καθὼς ἔμπροσθεν. Ὅτι ἀπωθούμενος ἀπώ-
σω ἡμᾶς, ὠργίσθης ἐφ' ἡμᾶς ἕως σφόδρα.
(†)

MS.A. (α) ὡς χῆραι [illegible] ἡμερῶν ἡμῶν, ξύλα (β) ἦλθον, (γ) τῆς κεφαλῆς ἡμῶν· (δ) ὀδυνηρὰ

RECHS. Spiritus faciei noſtræ 20
Chriſtꝰ Dominus captus eſt in cor-
ruptionibꝰ(p)ipſorum, de quo di-
ximus; In umbra ejus vivemus in
gentibus. CHSEN. Gaude, & læ- 21
tare, filia Idumææ, quæ habitas
ſuper(q)terrā: etiā ſuper te tranſ-
ibit calix Domini: inebriaberis,
& effundes. THAU. Defecit ini- 22
quitas tua, filia Sion: non adjiciet
(r)tranſmigrare te. Viſitavit ini-
quitates tuas, filia Edom: revela-
vit ſuper impietates tuas.

CAP. V.

Recordare, Domine, quod fa- 1
ctum eſt nobis: Reſpice, & vide
opprobrium noſtrum. Hæreditas 2
noſtra verſa eſt ad alienos, domꝰ
noſtræ ad extraneos. Pupilli facti 3
ſumꝰ, non eſt pater: matres noſtræ
quaſi viduæ. Aquā noſtram in ar- 4
gento bibimus: ligna noſtra in
commutatione(a)venerunt Super 5
collum noſtrum: paſſi ſumus per-
ſequutionem, laboravimꝰ non ha-
buimus requiem. (b)Ægyptus de- 6
dit manum: Aſſur ad ſatietatem
ipſorum. Patres noſtri peccave- 7
runt, non ſunt: nos iniquitates eo-
rum portavimus. Servi dominati 8
ſunt noſtrî: qui redimat, non eſt,
de manu eorum. In animabꝰ no- 9
ſtris afferemꝰ panē noſtrum, à(c)
facie gladii deſerti. Pellis noſtra 10
quaſi clibanus(d)exuſta eſt: con-
vulſa ſunt à facie tempeſtatum
famis. Mulieres in Sion humilia- 11
verunt, virgines in civitatibus
Juda. Principes in manibꝰ ipſorū 12
ſuſpenſi fuerūt; ſeniores non ſunt
glorificati. Electi ploratū aſſum- 13
pſerunt, et adoleſcentes in ligno
infirmati ſunt. Et ſenes à porta 14
ceſſaverunt: electi à pſalmis ſuis
ceſſaverūt. Defecit gaudiū cordis 15
noſtri: verſus eſt in luctū chorus
noſter: Cecidit corona capitis no- 16
ſtri. Væ autē nobis, quia peccavi-
vimus. Proptereà fuit(e)mœror, 17
mœſtum cor noſtrum: ideò conte-
nebrati ſunt oculi noſtri. Super 18
montē Sion, quia diſperiit, vulpes
ambulaverunt in ea. Tu autē, Do- 19
mine, in æternū habitabis: Soliū
tuū in generationē, et generatio-
nem. Quarè in finē obliviſcĕris 20
noſtri? derelinques nos in longitu-
dine dierū? Cōverte nos, Domine, 21
ad te, et convertemur: et innova
dies noſtros, ſicut à principio. Re- 22
pellens enim repuliſti nos: iratus es ſuper nos uſq; valdè.

(†) Θρῆνοι Ἱερεμίου.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

20 מַלְכָּא יֹאשִׁיָּהוּ דַּהֲוָה חַבִּיב לָנָא כְּנִשְׁמַת רוּחַ חַיִּין דִּבְאַפָּנָא וַהֲוָה מִתְרַבֵּי בִּמְשַׁח רְבוּתָא
דַּיְיָ אִתְּחַד בְּמֵצַד חִבּוּלֵיהוֹן דְּמִצְרָאֵי דַּהֲוֵינָא אָמְרִין עֲלוֹהִי בִּטְלַל זְכוּתֵיהּ נְחֵי בֵּינֵי
21 עַמְמַיָּא׃ חֲדִיאִי וּבְדִיחִי בְּרַתָּא דֶּאֱדוֹם דְּמִתְבַּנְיָא בְּאַרְעָא דְעוּץ בִּסְגִיאִין אוֹכְלוֹסִין אַף
עֲלַיִךְ עֲתִיד לְמֵיתֵי פּוּרְעֲנוּתָא וִיצַדְּיָן יָתִיךְ פַּרְכְּוָאֵי וְתֶעְבַּר עֲלַיִךְ כָּס דִּלְוָט תִּרְוֵי וְתִתְרוֹקְנִי׃
22 וּבָתַר כֵּן יִשְׁלַם עֲוָיָתִיךְ כְּנִשְׁתָּא דְצִיּוֹן וְתִתְפָּרְקִין עַל יְדוֹי דִּמְשִׁיחָא וְאֵלִיָּהוּ כַּהֲנָא רַבָּא וְלָא
יוֹסִיף יְיָ תּוּב לְאַגְלוּתִיךְ וּבְהַהִיא זִמְנָא אַסְעַר עֲוָיָתִיךְ בְּרַתָּא דֶּאֱדוֹם וְיֵיתוּן פַּרְסָאֵי וִיעִיקוּן
לִיךְ וִיצַדּוּן יָתִיךְ אֲרוּם אִתְפַּרְסַם קֳדָם יְיָ עַל חוֹבָתִיךְ׃

ה

1 הֲוִי דְכִיר יְיָ מָה דְּאִתְגְּזַר לְמֶהֱוֵי לָנָא אִסְתַּכַּל מִן שְׁמַיָּא וַחֲזֵי יָת כִּסוּפָנָא׃ אַחְסַנְתָּנָא
2 אִתְהַפְּכַת לְחִלּוֹנָאֵי בֵּיתָנָא לְעַמְמִין נוּכְרָאִין׃ הֲוֵינָא מְתִילִין לְיַתְמִין דְּלֵית לְהוֹן אַבָּא 3
4 אִמְּהָתָנָא כְּאַרְמְלָן דַּאֲזַלוּ גַּבְרֵיהוֹן בְּקִרְוֵי יַמָּא וּמְסַפְּקָא לְהוֹן אִם אִנּוּן קַיָּמִין׃ מֵימָנָא
5 בְּכַסְפָּא שְׁתֵינָא קִסָּנָא בִּדְמִין יֵיתוֹן׃ עַל פִּרְקַת צַוְּרָנָא אִטְעַנְנָא כַּד הֲוֵינָא אָזְלִין בְּשִׁבְיָתָא
חֲמָא נְבוּכַדְנֶצַּר רַשִּׁיעָא סַרְכַיָּא דִבְנֵי יִשְׂרָאֵל דְּאָזְלִין רֵיקָנִין פַּקֵּד לְחַיָּטָא סִפְרֵי אוֹרַיְתָא
וּלְמֶעְבַּד מִנְּהוֹן גּוּאַלְקָן וּמַלִּיאוּ יָתְהוֹן מִן פְּרִידְאָ דִּי עַל סְפַר פְּרָת וּטְעַנוּ יָתְהוֹן עַל
6 צַוְּרֵיהוֹן בְּהַהִיא זִמְנָא לְעֵינָא לָא הֲוָת נְיָחָא לָנָא׃ מִצְרַיִם יְהַבְנָא סְטַר לְאִתְפַּרְנָסָא תַּמָּן
7 וּלְאַתּוּר לְמִסְבַּע לַחְמָא׃ אֲבָהָתָנָא חָבוּ וְלֵיתְהוֹן בְּעָלְמָא וַאֲנַחְנָא בַּתְרֵיהוֹן עֲוָיָתְהוֹן
8 סוֹבַרְנָא׃ בְּנוֹי דְּחָם דְּאִתְיְהִיבוּ עַבְדִּין לִבְנוֹי דְשֵׁם אִנּוּן שַׁלִּיטוּ בָנָא פָּרִיק לֵית מִיְּדֵיהוֹן׃
9 בְּנַפְשָׁנָא נַיְתֵי לְחֵם פַּרְנָסוּתָנָא מִן קֳדָם קְטוֹל דְּחַרְבָּא דְּאָתֵי מִן סְטַר מַדְבְּרָא׃ מַשְׁכְּנָא 10
11 הֵיךְ תַּנּוּרָא אִתְקַדְּרוּ מִן קֳדָם מַפַּח כַּפְנָא׃ נְשַׁיָּא דַּהֲווֹ נְסִיבָן לִגְבַר בְּצִיּוֹן אִתְעַנִּיאוּ מִן
12 נוּכְרָאֵי וּבְתוּלָתָא בְּקִרְוֵי יְהוּדָה מִן כַּשְׂדָּאֵי׃ רַבְרְבָנִין בִּידֵיהוֹן אִצְטְלִיבוּ אַפֵּי סָבַיָּא לָא
13 סַבַּרוּ׃ רוּבִין רֵיחַיָּא נְטַלוּ וְטַלְיָא בִּצְלִיבַת קֵיסָא תְּקַלוּ׃ סָבַיָּא מִתְּרַע סַנְהֶדְרִין אִתְבַּטִּילוּ 14
15 וְרוּבִין מִן בֵּית זְמָרֵיהוֹן׃ בְּטֵילַת חֶדְוַת לִבְּנָא אִתְהַפֵּךְ לְאֶבְלָא חִנּוּגְנָא׃ נְפַלַת כְּלִילָא 16
17 דְרֵישָׁנָא וַי לָנָא אֲרוּם חַבְנָא׃ עַל דֵּין בֵּית מוּקְדְּשָׁא דְּאִצְטְדֵי הֲוָה חֲלִישׁ לִבְּנָא וְעַל
18 אִלֵּין עַמָּא בֵּית יִשְׂרָאֵל דְּאָזְלוּ בְּגָלוּתָא מִתַּמָּן הֲווֹ חֲשִׁיכָן עֵינָנָא׃ עַל טוּרָא דְצִיּוֹן דְּהוּא
19 צָדֵי תַּעֲלִין הַלִּיכוּ בֵיהּ׃ אַתְּ הוּא יְיָ לַעֲלַם בֵּית מוֹתְבָךְ בִּשְׁמֵי מְרוֹמָא כּוּרְסֵי יְקָרָךְ לְדָרֵי
20 דָרַיָּא׃ לְמָה לַעֲלְמִין תַּשְׁלֵינָנָא תִּשְׁבְּקִנָנָא לְאוֹרִיכוּת יוֹמִין׃ אֲתִיב יְיָ יָתָנָא לְוָתָךְ וּנְתִיב 21
22 בִּתְיוּבְתָּא שְׁלֵמְתָא תְּחַדֵּית יוֹמָנָא לְטָב כְּזִמַּן יוֹמַיָּא טָבַיָּא דַּהֲווֹ מִלְּקַדְמִין׃ אֲרוּם אֱלָהֵן
מִקָּץ תְּקוּץ בָּנָא רְגוֹתָא עֲלָנָא עַד לַחֲדָא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

RES. Rex *Joſias* qui erat dilectꝰ nobis ſicut ſpiraculū ſpiritꝰ vitæ qui eſt 20
in naribꝰ noſtris, & erat unctꝰ oleo unctionis Dn̄i, captꝰ eſt in rete occiſio-
nis *Ægyptiorum*: de quo dicebamꝰ, In umbra juſtitiæ ejus vivemus inter
populos. SIN. Gaude, & lætare *filia* Idumeæ, quæ ædificata es in terra *Hus* 21
inter multas turmas: ſuꝑ te quoq; futurū eſt ut veniat ultio: & deſolabunt
te Parchevæi, & tranſibit ſuꝑ te calix maledictionis: inebriaberis & evacu-
aberis. THAU. Et poſteà complebitur iniquitas tua cœtꝰ Sion, & libe- 22
raberis per manū Meſſiæ & Eliæ ſacerdotis magni: & non addet ultrà Dn̄s
ut tranſmigrare faciat te: & in illo tempore viſitabo iniquitatē tuam *filia*
Edom: & venient Perſæ, & anguſtiabunt te, & deſolabunt te; quia manifeſta
ſunt coram Dn̄o peccata tua.

CAP. V.

Recordare Dn̄e quid decretū ſit ut eveniret nobis: contemplare de cœlis, 1
& vide opprobriū noſtrū. Hæreditas noſtra verſa eſt prophanis; domꝰ 2
noſtræ populis extraneis. Similes facti ſumꝰ pupillis, qui non habent patrē: 3
matres noſtræ quaſi viduæ, quarū mariti perrexerunt ad civitates maris, &
dubitatur de eis utrùm vivant. Aquam noſtram argento bibimꝰ, & ligna 4
noſtra pecuniis adducebantur. Super juncturā cervicis noſtræ onerati ſumꝰ 5
quando pergebamꝰ in captivitatē, vidit Nabuchodonoſor impiꝰ præfectos
filiorū Iſrael, qui ibant vacui; & præcepit ut conſuerent libros Legis, & ut
facerent ex eis manticas: & impleverunt eas lapillis qui erant in ripa Eu-
phratis, & oneraverunt eos ſuꝑ colla eorū: & in illo tempore laborabamꝰ,
non erat nobis requies. Ægypto dedimꝰ latꝰ ut nutriremur illic, & Aſſy- 6
riis ut ſaturaremur pane. Patres noſtri peccaverunt, & non ſunt in ſeculo, 7
& nos poſt eos iniquitates eorū portavimꝰ. Filii Cham qui traditi ſunt ſer- 8
vi filiis Sem, dominati ſunt in nos, nec eſt qui redimat de manibꝰ eorū. In 9
animabꝰ noſtris adducebamꝰ panē alimenti noſtri, propter occidentes gla-
dio qui veniebāt de latere deſerti. Pelles noſtræ ſicut furnus denigratæ ſunt 10
propter inflationem famis. Mulieres quæ erant nuptæ viro in Sion, affli- 11
ctæ ſunt *ab alienigenis*, & virgines in civitatibꝰ Juda à Chaldæis. Principes 12
manibꝰ eorū ſuſpenſi ſunt; faciē ſenū non ſunt reveriti. Juvenes molas tu- 13
lerunt, & pueri in patibulo ligneo corruerunt. Senes à porta judicū ordi- 14
nariorū ceſſaverunt, & juvenes à domo cantici ſui. Ceſſavit lætitia cordis 15
noſtri, verſus eſt in luctum chorꝰ noſter. Cecidit corona capitis noſtri: væ 16
nobis quia peccavimꝰ. Propter domū ſanctuarii quæ deſerta eſt, infirmatū 17
eſt cor noſtrū: & propter iſtum populum domus Iſrael, qui abiit indè in
tranſmigrationē, obſcurati ſunt oculi noſtri. Propter montē Sion quia deſo- 18
latus eſt; vulpes ambulaverūt in eo. Tu ipſe Dn̄e in æternū es: domꝰ habita- 19
tionis tuæ in cœlis excelſis, ſoliū gloriæ tuæ in generationes generationū.
Quare in æternū repellis nos? relinquis nos in longitudinem dierū? Con- 20
verte nos Dn̄e ad te, & convertemur ad pœnitentiam perfectam: innovabis 21
dies noſtros in bonū, juxta tempus dierum bonorum qui fuerunt ab initio.
Quamvis deteſtatione deteſtatus ſis nos, iratus es contra nos jam plus ſatis. 22

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

20 * ܪ * ܪܘܚܐ ܕܐܦܝܢ. ܡܫܝܚܗ ܕܡܪܝܐ. ܐܬܬܨܝܕ ܒܚܒܠܝܗܘܢ. ܗܘ ܕܐܡܪܢ. ܕܒܛܠܠܗ
21 ܢܚܐ ܒܝܢ ܥܡܡܐ. * ܫ * ܚܕܝ ܘܒܣܘܡܝ ܒܪܬ ܐܕܘܡ. ܕܝܬܒܐ ܒܐܪܥܐ ܕܥܘܨ. ܐܦ ܥܠܝܟܝ
22 ܢܥܒܪ ܟܣܐ. ܘܬܪܘܝܢ ܘܬܬܦܪܥܝܢ. * ܬ * ܫܠܡ ܚܛܗܝܟܝ ܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. ܘܠܐ ܬܘܣܦ
ܠܡܫܒܝܟܝ. ܢܬܦܩܕܘܢ ܥܘܠܝܟܝ ܒܪܬ ܐܕܘܡ. ܢܬܓܠܘܢ ܚܛܗܝܟܝ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܗ *   * ܨܠܘܬܗ ܕܐܪܡܝܐ *

1 * ܐܬܕܟܪ ܡܪܝܐ. ܡܢܐ ܗܘܐ ܠܢ. ܚܘܪ ܘܚܙܝ ܚܣܕܢ. * ܝܪܬܘܬܢ ܐܬܗܦܟܬ ܠܢܘܟܪܝܐ
2 ܘܒܬܝܢ ܠܢܘܟܪܝܐ. * ܝܬܡܐ ܗܘܝܢ ܕܠܐ ܐܒܐ. ܘܐܡܗܬܢ ܐܝܟ ܐܪܡܠܬܐ. * ܡܝܢ ܒܟܣܦܢ
3 ܐܫܬܝܢ. ܘܩܝܣܝܢ ܒܕܡܝܐ. * ܐܬܪܕܦܢ ܥܠ ܨܘܪܢ: ܐܬܪܕܦܢ ܘܠܐܝܢ. ܘܠܐ ܐܬܬܢܝܚܢ. * ܡܨܪܝܐ
4 ܝܗܒܘ ܐܝܕܐ. ܘܐܬܘܪܝܐ ܠܡܣܒܥܘܬܗ ܠܚܡܐ. * ܐܒܗܝܢ ܚܛܘ. ܘܠܝܬ ܐܢܘܢ. ܘܚܢܢ
5 ܚܛܗܝܗܘܢ ܣܒܠܢ. * ܥܒܕܐ ܐܫܬܠܛܘ ܒܢ. ܘܠܝܬ ܕܦܪܩ ܠܢ ܡܢ ܐܝܕܝܗܘܢ. * ܒܢܦܫܢ
6 ܢܝܬܐ ܠܚܡܢ ܡܢ ܩܕܡ ܚܪܒܐ ܕܡܕܒܪܐ. * ܡܫܟܝܢ ܐܝܟ ܕܡܢ ܬܢܘܪܐ ܐܬܩܡܛܘ. ܘܐܬܘܟܡܘ ܡܢ
7 ܩܕܡ ܥܠܥܠܐ ܕܟܦܢܐ. * ܢܫܐ ܒܨܗܝܘܢ ܛܢܦܘ. ܘܒܬܘܠܬܐ ܒܡܕܝܢܬܐ ܕܝܗܘܕܐ. * ܪܘܪܒܢܐ
8 ܒܐܝܕܝܗܘܢ ܐܬܬܠܝܘ. ܘܐܦܐ ܕܣܒܐ ܠܐ ܐܬܢܟܦܘ. * ܥܠܝܡܐ ܪܚܝܐ ܛܥܢܘ. ܘܛܠܝܐ ܒܩܝܣܐ
9 ܐܬܬܩܠܘ. * ܣܒܐ ܡܢ ܬܪܥܐ ܒܛܠܘ. ܘܥܠܝܡܐ ܡܢ ܙܡܪܗܘܢ. * ܒܛܠܬ ܚܕܘܬܐ ܕܠܒܢ.
10 ܐܬܗܦܟܬ ܠܐܒܠܐ ܚܕܘܬܢ. * ܢܦܠܬ ܟܠܝܠܐ ܕܪܝܫܢ. ܘܝ ܠܢ ܕܚܛܝܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܘܐ
11 ܕܘܝܐ ܠܒܢ. ܘܡܛܠ ܗܠܝܢ ܚܫܟ ܥܝܢܝܢ. * ܥܠ ܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ. ܕܚܪܒ. ܘܬܥܠܐ ܗܠܟܘ ܒܗ.
12 * ܘܐܢܬ ܡܪܝܐ ܠܥܠܡ ܝܬܒܬ. ܘܟܘܪܣܝܟ ܠܕܪ ܕܪܝܢ. * ܠܐ ܠܥܠܡ ܬܫܒܩܢ ܘܬܛܥܝܢ
13 ܠܢܘܓܪܐ ܕܝܘܡܬܐ. * ܐܦܢܝܢ ܡܪܝܐ ܠܘܬܟ. ܘܢܬܦܢܐ. ܚܕܬ ܝܘܡܬܢ. ܐܝܟ ܕܡܢ ܩܕܝܡ.
14 * ܡܛܠ ܕܡܣܠܝܘ ܐܣܠܝܬܢ. ܘܪܓܙܬ ܥܠܝܢ ܛܒ.

* ܫܠܡ ܟܬܒܐ ܕܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ *

Spiritus facierum noſtrarum unctus Domini, 20
capt' eſt in fovea ectum, ille ſub cujus umbra
dicebamus nos victuros inter gentes. Gaude 21
& lætare filia Adum, quæ habitas in terra Us:
etiam ad te perveniet calix, & inebriaberis,
& cordolium patieris. Conſumpta ſunt peccata 22
tua filia Sionis, non abducet te ultrà in
captivitatem: viſitabuntur ſcelera tua filia
Adum, retegentur peccata tua.

CAP. V.

Oratio Jeremiæ.

Recordare Domine quid acciderit nobis, 1
intuere & conſidera opprobrium noſtrum.
Hæreditas noſtra devoluta eſt ad extraneos, 2
& dom' noſtræ ad alienigenas. Pupilli facti 3
ſumus abſq; patre, & matres noſtræ ſicut viduæ.
Aquâ noſtrâ pecuniâ bibimus, & ligna 4
noſtra pretio. Impetunt cervices noſtras, jactamur, 5
fatigamur, & non quieſcim'. Ægyptii 6
præbent manû & Aſſyrii, ut *nos* pane ſaturent.
Patres noſtri peccaverunt, & non ſunt; nos 7
verò peccata eorum ſuſtinemus. Servi dominantur 8
in nos, nec eſt qui nos eripiat è manibus
eorû. Vitæ noſtræ periculo afferimus panem 9
noſtrû, propter gladiû qui eſt in deſerto.
Cutes noſtræ ut à conſpectu fornacis corrugatæ 10
ſunt, & ob cruciatû famis, atratæ. Mulieres 11
in Sione ſtupratæ ſunt, & virgines in civitatibus
Judæ. Magnates manib' eorû ſuſpenſi fuerunt, 12
& vultus ſenum non ſunt reveriti. Adoleſcentes 13
agitant molas, & juvenes ad ligna
impingunt. Senes è porta ceſſaverunt, & juvenes 14
à lætitia ſua. Deſiit hilaritas cordis 15
noſtri, verſum eſt in luctû gaudium noſtrum.
Cecidit corona capitis noſtri; væ nobis, quia 16
peccavimus. Iccirco en mœret cor noſtrum, 17
& ob id ecce tenebreſcunt oculi noſtri: Propter 18
montê Sionis, quòd ſit deſolatus, & vulpes
ambulent in eo. Tu verò Dñe, in æternû 19
es & ſolium tuû in generationem generationum.
Ne in perpetuum derelinquas nos, & 20
obliviſcaris noſtrî diuturnis temporib'. Converte 21
nos Dñe ad te, & convertemur; reſtaura
dies noſtros ut olim. Jam enim ſatis diu abominatus 22
es nos, et in nos admodû indignatus.

Libri Jeremiæ Prophetæ finis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

20 * روح وجهنا مسيح الرب أخذ بمفاسدهم * الذي قالوا أنا نعيش في ظله في الأمم * افرحي
21 وسري يا ابنة الأدومية الساكنة على الأرض * فان عليك يجوز كاس الرب * فتسكرين
22 وتسقين * انقطع اثمك يا ابنة صهيون * لا يعود أيضا أن يسبيك * تعهد ظلمك يا ابنة
أدوم * هتك فواحشك *   * الفصل الخامس *   * صلاة ارمياء *
1 2 * اذكر يا رب ما صار لنا * اطلع وانظر تعييرنا * ميراثنا انتقل للغرباء * بيوتنا للغرباء *
3 4 * صرنا أيتاما * ليس أب * أمهاتنا مثل أرامل منذ أيامنا * أحسابنا بالثمن أتوا على عنقنا *
5 6 * طردنا * تعبنا ولم نسترح * مصر دفعتنا ليد الموصل لشبعهم * آباؤنا أخطأوا فلم يوجدوا *
7 8 9 ولكن ابتلينا بآثامهم * العبيد أحدقوا بنا * وليس منقذ من يدهم * في نفوسنا ندخل خبزنا *
10 11 من وجه سيف البرية * جلودنا شيطت مثل تنور * تسحجوا من وجه عواصف الجوع * أذلوا
12 النساء في صهيون * العذارى في مدن يهوذا * علقت الرؤساء بأيديهم * المشايخ لم يسرفوا *
13 14 * المختارون أخذوا بكاء * والشبان ضعفت بالخشبة * والأشياخ فرغوا من الباب * المختارون
15 16 كفوا من مزاميرهم * انحل فرح قلبنا * انقلب مزمارنا الى حزن * سقط إكليل رأسنا * فالويل
17 18 لنا لأنا أخطأنا * من أجل هذا صار قلبنا موجعا * من أجل هذا أظلمت عيوننا * على جبل
19 صهيون * لأنه فني * جازت الثعالب فيها * وانت يا رب تسكن الى الأبد * كرسيك الى جيل
20 21 وجيل * لماذا تنسانا بالظفر * تتركنا الى طول الأيام * ردنا يا رب فنرجع اليك * وجدد أيامنا
22 كما تقدم * لأنك مقصي أقصيتنا * غضبت علينا الى الغاية *

Spiritus facierum noſtrarum Chriſtus Domini, captus eſt dolis eorum, in cujus umbra dicebant nos victuros inter gentes. 20
Lætare & exulta O filia Idumææ quæ ſuper terram habitas: nam ſuper te tranſibit calix Domini, & inebriaberis, potúmque dabis. 21
Amputata eſt iniquitas tua O filia Sionis, non addet ultrà captivam te ducere, viſitabit perverſitatem tuam O filia Edom, deducet velum turpitudinum tuarum. 22

CAP. V.

Oratio Jeremiæ.

Recordare O Domine quid factum ſit nobis, vide, & conſidera opprobrium noſtrum. 1
Hæreditas noſtra tranſlata eſt ad alienos, domus noſtræ ad extraneos. 2
Facti ſumus pupilli, non eſt pater, matres noſtræ tanquam viduæ, inde à diebus noſtris. 3
Ligna noſtra pretio venerunt ſuper collum noſtrum. 4
Perſecutionem paſſi ſumus, laboravimus, & non quievimus. 5
Ægyptus tradidit nos in manû Aſſyriæ, propter ſatietatem ſuam. 6
Patres noſtri peccaverunt, & non exiſtunt: nos verò pœnam luimus iniquitatum eorum. 7
Servi cuſtodiunt nos, & non eſt qui eripiat è manu eorum. 8
Animarum noſtrarum periculo advehimus panem noſtrum, à facie gladii deſerti. 9
Pelles noſtræ uſtulatæ ſunt ut clibanus, corrugatæ ſunt à facie procellarum famis. 10
Humiliaverunt mulieres in Sione, virgines in urbibus Judæ. 11
Suſpenſi ſunt principes è manibus ſuis, ſenes haud honorantur. 12
Electi luctum aſſumpſerunt, juvenes infirmati ſunt in ligno, 13
Et ſenes defecerunt à porta, electi deſtiterunt à cantibus ſuis. 14
Evanuit gaudium cordis noſtri, verſa eſt tibia noſtra in mœrorem. 15
Corruit corona capitis noſtri. Væ nobis, quia peccavimus. 16
Ob hoc factum eſt cor noſtrû dolens, ob hoc obtenebrati ſunt oculi noſtri; 17
Propter montem Sionis, quòd ille *periit, vulpes per hanc tranſierunt.* 18
Tu verò O Domine, manes in æternum, ſolium tuum in generationem & generationem. 19
Cur obliviſceris ſalutem noſtram, derelinquis nos in longitudinem dierum? 20
Reduc nos O Domine, ut redeamus ad te: & renova dies noſtros, ut antea. 21
Nam omninò repuliſti nos, iratus nobis es præter modum. 22

EZECHIEL.

ספר יחזקאל : א

CAP. I. א

medio in *ego* & , mensis quinta *in* , quarto *in* ,anno trigesimo *in* fuit Et
1 וַיְהִי בִּשְׁלֹשִׁים שָׁנָה בָּרְבִיעִי בַּחֲמִשָּׁה לַחֹדֶשׁ וַאֲנִי בְתוֹךְ־
vidi & , cœli sunt aperti : Chebar fluvium *super* transmigrationis
הַגּוֹלָה עַל־נְהַר כְּבָר נִפְתְּחוּ הַשָּׁמַיִם וָאֶרְאֶה
quintus annus ipse) , mensis quinta *In* .Dei visiones
2 מַרְאוֹת אֱלֹהִים : בַּחֲמִשָּׁה לַחֹדֶשׁ הִיא הַשָּׁנָה הַחֲמִישִׁית
ad Domini verbum fuit Essendo (.Jojachin regis transmigrationis
3 לְגָלוּת הַמֶּלֶךְ יוֹיָכִין : הָיֹה הָיָה דְבַר־יְהוָה אֶל־
:Chebar flumen *super* ,Chasdim terra in sacerdotem ,Buzi filium,Jechezchel
יְחֶזְקֵאל בֶּן־בּוּזִי הַכֹּהֵן בְּאֶרֶץ כַּשְׂדִּים עַל־נְהַר כְּבָר
turbinis ventus ecce & ,vidi Et .Domini *manus* ibi eum super fuit &
4 וַתְּהִי עָלָיו שָׁם יַד־יְהוָה : וָאֵרֶא וְהִנֵּה רוּחַ סְעָרָה
ei splendor & ,*sese reciprocans* ignis & ,magna nubes ,Aquilone ab *veniens*
בָּאָה מִן־הַצָּפוֹן עָנָן גָּדוֹל וְאֵשׁ מִתְלַקַּחַת וְנֹגַהּ לוֹ
.ignis medio de *flammæ crepitantis oculus* veluti ejus medio de & : *undique*
סָבִיב וּמִתּוֹכָהּ כְּעֵין הַחַשְׁמַל מִתּוֹךְ הָאֵשׁ :
,eorum aspectus hic & : animalium quatuor similitudo ejus medio de Et
5 וּמִתּוֹכָהּ דְּמוּת אַרְבַּע חַיּוֹת וְזֶה מַרְאֵיהֶן
quatuor & : uni facies quatuor Et .eis hominis similitudo
6 דְּמוּת אָדָם לָהֵנָּה : וְאַרְבָּעָה פָנִים לְאֶחָת וְאַרְבַּע
planta & : *rectus* *pes* eorum pedes Et .*eis* unicuique alæ
7 כְּנָפַיִם לְאַחַת לָהֶם : וְרַגְלֵיהֶם רֶגֶל יְשָׁרָה וְכַף
æris *oculus* tanquam scintillantes &,vituli pedis planta veluti eorum *pedum*
רַגְלֵיהֶם כְּכַף רֶגֶל עֵגֶל וְנֹצְצִים כְּעֵין נְחֹשֶׁת
eorũ quadrilateris quatuor *super* eorum alis *desubter* hominis man⁹ Et .politi
8 קָלָל : וִידֵו אָדָם מִתַּחַת כַּנְפֵיהֶם עַל אַרְבַּעַת רִבְעֵיהֶם
ad *femina* Junctæ .ipsis quatuor in eorum alæ & , eorum facies &
9 וּפְנֵיהֶם וְכַנְפֵיהֶם לְאַרְבַּעְתָּם : חֹבְרֹת אִשָּׁה אֶל־
latus ad *vir* , *ipsa eundo in* revertebantur non :eorum alæ *suam sororem*
אֲחוֹתָהּ כַּנְפֵיהֶם לֹא־יִסַּבּוּ בְלֶכְתָּן אִישׁ אֶל־עֵבֶר
facies &,hominis facies eorum facierum similitudo Et .*bant suarum facierum*
10 פָּנָיו יֵלֵכוּ : וּדְמוּת פְּנֵיהֶם פְּנֵי אָדָם וּפְנֵי
sinistra à bovis facies & ; ipsorum quatuor dexteram ad , leonis
אַרְיֵה אֶל־הַיָּמִין לְאַרְבַּעְתָּם וּפְנֵי־שׁוֹר מֵהַשְּׂמֹאול
eorum alæ & ,eorum facies Et .ipsis quatuor aquilæ facies &:ipsis quatuor
11 לְאַרְבַּעְתָּן וּפְנֵי־נֶשֶׁר לְאַרְבַּעְתָּן : וּפְנֵיהֶם וְכַנְפֵיהֶם
duæ & ,uniuscujusque junctæ duæ : unicuique , desuper *disjunctæ*
פְּרֻדוֹת מִלְמָעְלָה לְאִישׁ שְׁתַּיִם חֹבְרוֹת אִישׁ וּשְׁתַּיִם
:*ibãt suarũ facierum latus* *ad* unumquodque Et.eorum corpora *tegentes*
12 מְכַסּוֹת אֵת גְּוִיֹּתֵיהֶנָה : וְאִישׁ אֶל־עֵבֶר פָּנָיו יֵלֵכוּ
revertebãtur non:ambulabãt,ambulandi *animus* *illuc* erat quò
אֶל אֲשֶׁר יִהְיֶה־שָׁמָּה הָרוּחַ לָלֶכֶת יֵלֵכוּ לֹא יִסַּבּוּ
prunarum veluti eorum aspectus animalium similitudo Et.*illa ambulando in*
13 בְּלֶכְתָּן : וּדְמוּת הַחַיּוֹת מַרְאֵיהֶם כְּגַחֲלֵי־
inter *perambulans* ipsa , lampadarum aspectus tanquam,ardentium ignis
אֵשׁ בֹּעֲרוֹת כְּמַרְאֵה הַלַּפִּדִים הִיא מִתְהַלֶּכֶת בֵּין
.fulgur *egrediens* igne de & , igni splendor & : animalia
הַחַיּוֹת וְנֹגַהּ לָאֵשׁ וּמִן־הָאֵשׁ יוֹצֵא בָרָק :

Versio VULG. LAT.

PROPHETIA EZECHIELIS.

CAP. I.

1 ET factum est in trigesimo anno, in quarto,in quinta mensis, cùm essem in medio captivorum juxta fluvium Chobar,aperti sunt cœli,& vidi visiones Dei.
2 In quinta mensis, ipse est annus quintus transmigrationis regis
3 Joachin, Factum est verbũ Domini ad Ezechielem filium Buzi sacerdotem in terra Chaldæorũ, secus flumen Chobar: & facta est
4 super eum ibi manus Domini. Et vidi, & ecce ventus turbinis veniebat ab Aquilone , & nubes magna, & ignis involvens , & splendor in circuitu ejus : & de medio ejus quasi species electri,
5 id est,de medio ignis : Et in medio ejus similitudo quatuor animalium : & hic aspectus eorum,
6 similitudo hominis in eis. Quatuor facies uni, & quatuor pen-
7 næ uni. Pedes eorum pedes recti, & planta pedis eorum quasi planta pedis vituli, & scintillæ
8 quasi aspectus æris candentis. Et manus hominis sub pennis eorũ in quatuor partibus : & facies & pennas per quatuor partes habe-
9 bant. Junctæque erant pennæ eorum alterius ad alterum:non revertebantur cùm incederent:sed unumquodq; ante faciẽ suã gra-
10 diebatur. Similitudo autem vultûs eorũ:facies hominis,et facies leonis à dextris ipsorũ quatuor;
11 facies autem bovis, à sinistris ipsorum quatuor; & facies aquilæ desupèr ipsorum quatuor. Facies eorum, & pennæ eorum extentæ desupér : duæ pennæ singulorum jungebantur , & duæ tegebant
12 corpora eorum : Et unumquodque eorum coram facie sua ambulabat : ubi erat impetus spiritûs, illuc gradiebantur, nec revertebantur cùm ambularent,
13 Et similitudo animalium, aspect⁹ eorum quasi carbonum ignis ardentium,& quasi aspectus lampadarum. Hæc erat visio discurrens in medio animaliũ, splendor ignis,& de igne fulgur egrediens.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

(†)'IΕΖΕΚΙΗ'Λ.

ΚΕΦ. α'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο ἐν τῷ τριακοστῷ ἔτει ἐν τῷ τετάρτῳ μηνὶ πέμπτῃ τοῦ μηνός, καὶ ἐγὼ ἤμην ἐν μέσῳ τῆς αἰχμαλωσίας ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ τοῦ Χοβάρ· καὶ ἠνοίχθησαν οἱ οὐρανοί, καὶ ἴδον ὁράσεις Θεοῦ.
2 Πέμπτῃ τοῦ μηνός· τοῦτο τὸ ἔτος (α) τὸ πέμπτον τῆς αἰχμαλωσίας τοῦ βασιλέως Ἰωακείμ·
3 Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς Ἰεζεκιὴλ υἱὸν Βουζεί, τὸν ἱερέα, ἐν γῇ Χαλδαίων, ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ τοῦ Χοβάρ· καὶ ἐγένετο
4 (β) ἐπ' ἐμὲ χεὶρ κυρίου. Καὶ ἴδον, καὶ ἰδοὺ πνεῦμα ἐξαῖρον ἤρχετο ἀπὸ Βορρᾶ, καὶ νεφέλη μεγάλη ἐν αὐτῷ, καὶ φέγγος κύκλῳ αὐτοῦ καὶ πῦρ ἐξαστράπτον. καὶ ἐν τῷ μέσῳ αὐτοῦ ὡς (γ) ὅρασις ἠλέκτρου ἐν μέσῳ τοῦ πυ-
5 ρός, καὶ φέγγος ἐν αὐτῷ. Καὶ ἐν τῷ μέσῳ ὡς ὁμοίωμα τεσσάρων ζώων· καὶ αὕτη ἡ ὅρασις αὐτῶν· ὁμοίωμα ἀνθρώπου ἐπ' αὐ-
6 τοῖς. Καὶ τέσσαρα πρόσωπα τῷ ἑνί, καὶ
7 τέσσαρες πτέρυγες τῷ ἑνί. Καὶ τὰ σκέλη αὐτῶν ὀρθά, καὶ πτερωτοὶ οἱ πόδες αὐτῶν, καὶ σπινθῆρες, ὡς ἐξαστράπτων χαλκός· καὶ ἐλα-
8 φραὶ αἱ πτέρυγες αὐτῶν. Καὶ χεὶρ ἀνθρώπου ὑποκάτωθεν τῶν πτερύγων αὐτῶν ἐπὶ τὰ
9 τέσσαρα μέρη αὐτῶν. Καὶ τὰ πρόσωπα αὐτῶν (δ) τῶν τεσσάρων οὐκ ἐπεστρέφοντο ἐν τῷ βαδίζειν αὐτά· ἕκαστον (ε) ἀπέναντι τοῦ προσώπου
10 αὐτῶν ἐπορεύοντο. Καὶ (ζ) ὁμοίωσις τῶν προσώπων αὐτῶν, πρόσωπον ἀνθρώπου (η), καὶ πρόσωπον τοῦ λέοντος ἐκ δεξιῶν τοῖς τέσσαρσι, καὶ πρόσωπον μόσχου ἐξ ἀριστερῶν τοῖς τέσσαρσι, καὶ πρόσωπον ἀετοῦ
11 τοῖς τέσσαρσι. Καὶ αἱ πτέρυγες αὐτῶν ἐκτεταμέναι ἄνωθεν τοῖς τέσσαρσιν, ἑκατέρῳ δύο συνεζευγμέναι πρὸς ἀλλήλας, καὶ δύο ἐπεκάλυπτον ἐπάνω τοῦ σώματος αὐ-
12 τῶν. Καὶ ἑκάτερον κατὰ πρόσωπον αὐτοῦ ἐπορεύετο· οὗ ἂν (θ) ἦν τὸ πνεῦμα πορευόμενον (ι) ἐπορεύοντο, καὶ οὐκ ἐπέστρεφον. Καὶ ἐν
13 μέσῳ τῶν ζώων ὅρασις (ʹ) ὡς ἀνθράκων πυρὸς καιομένων, ὡς ὄψις λαμπάδων συστρεφομένων ἀναμέσον τῶν ζώων, καὶ φέγγος τοῦ πυρός, καὶ ἐκ τοῦ πυρὸς ἐξεπορεύετο (κ) ἀστραπή.

MS.A. (†) ..ζεκιὴλ προφήτης ιε'.

MS. A. (α) πέμπτον (β) ἐκεῖ ἐπ' (γ) ὁμοίωμα (δ) καὶ αἱ πτέρυγες αὐτῶν τῶν τεσσάρων ἐχόμεναι ἑτέρα τῆς ἑτέρας, καὶ τὰ πρόσωπα αὐτῶν οὐκ ἐπεστρέφοντο (ε) κατέναντι (ζ) ἡ ὁμοίωσις (η) αὐτοῖς, καὶ πρόσωπον λέοντος ἐκ δεξιῶν τοῖς τεσσάροις, (θ) ἦ (ι) ἐπορεύετο, καὶ οὐκ ἐπέστρεφεν. (ʹ) ἀνθράκων (κ) ὡς ἀστραπή· καὶ τὰ ζῶα ἔτρεχον, καὶ ἀνέκαμπτον ὡς εἶδος τοῦ Βεζέκ. Καὶ ἴδον

IEZECIEL.

CAP. I.

ET factum est in tricesimo anno, in quarto mense, quintâ mensis; & ego eram in medio captivitatis super fluviũ Chobar: et aperti sunt cœli : & vidi visiones 1
Dei: Quintâ mensis: (hic est annus quintus captivitatis regis 2
Joacim:) Et factum est verbum Domini ad Iezeciel filium Buzi sacerdotem, in terra Chaldæorum, super fluvium Chobar. Et facta 3
est super me manus Domini. Et 4
vidi: Et ecce spiritus (a) auferens veniebat ab Aquilone : & nubes magna in eo: (b) & splendor in circuitu ejus, & ignis fulgurans: Et in (c) medio ejus quasi visio electri in medio ignis, & (d) splendor in eo. Et in medio quasi simi- 5
litudo quatuor animalium: et hæc visio eorũ. Similitudo hominis in 6
eis : Et quatuor facies uni, & 7
quatuor alæ uni: Et crura eorum recta; & pedes eorum pennati, et scintillæ, quasi (e) fulgurans æs: 8
Et leves pennæ eorum: Et manus hominis sub pennis eorum in quatuor partibus ipsorum : E (f) fa- 9
cies eorum quatuor, non revertebantur , cùm incederent ipsa : unumquodque ante faciem suam gradiebantur. Et similitudo faci- 10
erum eorum, facies hominis, & facies leonis à dextris, ipsis quatuor : & facies vituli à sinistris, ipsis quatuor , & facies aquilæ ipsis quatuor. (g) Et alæ eorum 11
extentæ desuper ipsis quatuor: unicuique duæ, conjunctæ ad se invicèm, et duæ cooperiebant desuper corp⁹ ipsorũ; Et unumquod- 12
que coram facie sua ambulabat : quocumque ambulabat spiritus; ibant , & non revertebantur. 13
Et in medio animalium visio quasi carbonum ignis ardentium, quasi visio lampadarum discurrentium inter medium animalium : & splendor ignis : & de igne egrediebatur (h) fulgur.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

1 וַהֲוָה בִּתְלָתִין שְׁנִין לִזְמַן דְּאַשְׁכַּח חִלְקִיָּה כַּהֲנָא רַבָּא סִפְרָא דְאוֹרַיְתָא בְּבֵית מַקְדְּשָׁא
בַּעֲזָרְתָא תְּחוֹת אוּלָמָא בְּפַלְגוּת לֵילְיָא בָּתַר מַעְלָנֵי סִיהֲרָא בְּיוֹמֵי יֹאשִׁיָּה בַּר אָמוֹן מֶלֶךְ
שִׁבְטָא דְבֵית יְהוּדָה בְּתַמּוּז בְּחַמְשָׁא לְיַרְחָא אֲמַר נְבִיָּא וַאֲנָא בְּגוֹ בְּנֵי גָלוּתָא עַל נְהַר
2 כְּבָר אִתְפְּתַחוּ שְׁמַיָּא וַחֲזֵית בְּחֵזוּ נְבוּאָה דִשְׁרַת עֲלַי חֵיזוּ יְקָר שְׁכִנְתָּא דַיְיָ : בְּחַמְשָׁא
3 לְיַרְחָא הִיא שַׁתָּא חֲמֵשְׁתָּא לְגָלוּת מַלְכָּא יוֹיָכִין : מְהֵוֵי הֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִם
יְחֶזְקֵאל בַּר בּוּזִי כַּהֲנָא בְּאַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל תָּב תִּנְיָנוּת וְאִתְמַלֵּל עִמֵּיהּ בִּמְדִינַת אֲרַע
4 כַּסְדָּאֵי עַל נְהַר כְּבָר וּשְׁרַת עֲלוֹהִי תַּמָּן רוּחַ נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ : וַחֲזֵית וְהָא רוּחַ עַלְעוֹלָא
אָתְיָא מִן צִפּוּנָא עֲנַן רַב וְאֶשָּׁתָא מִשְׁתַּלְהֲבָא וְזִיהוֹרָא לֵיהּ סְחוֹר סְחוֹר וּמִגּוֹ עֲנָנָא וּמִגּוֹ
5 עַלְעוֹלָא כְּעֵין חַשְׁמְלָא מִגּוֹ אֶשָּׁתָא : וּמִגַּוַּהּ דְּמוּת אַרְבַּע בִּרְיָן וְדֵין חֶזְוֵהוֹן דְּמוּת אֱנָשָׁא
6 לְהֵין : וְאַרְבְּעָא אַפִּין לַחֲדָא וְאַרְבַּע אַפִּין לְכָל חַד וְחַד שִׁתַּת עֲסַר אַפִּין לְבִרְיְתָא חֲדָא
מִנְיַן אַפַּיָּא דְאַרְבַּע בִּרְיָן שִׁתִּין וְאַרְבְּעָה אַפִּין וְאַרְבְּעָא גַּפִּין לַחֲדָא וְאַרְבְּעָא גַּפִּין לְכָל
חַד וְחַד שִׁתַּת עֲסַר גַּפִּין לְכָל אַפָּא וְאַפָּא שִׁתִּין וְאַרְבְּעָא גַּפִּין לְבִרְיְתָא חֲדָא וַהֲווֹ מִנְיַן
7 גַּפַּיָּא דְאַרְבַּע בִּרְיָן מָאתַן וְחַמְשִׁין וְשִׁתָּא גַּפִּין : וְרַגְלֵיהוֹן רַגְלִין כֵּיוָנָן וּפַרְסַת רַגְלֵיהוֹן
8 כְּפַרְסַת רַגְלִין סַגְלְגְלָן וּמְזִיעָן עָלְמָא בְּמַהְכְהֵין וּמְנַצְנְצָן כְּעֵין נְחָשׁ מְצַלְהַב : וִידִין כִּידֵי
אֱנָשָׁא עֲבִיד לְהוֹן מִתְּחוֹת גַּפֵּיהוֹן עַל אַרְבַּע סִטְרֵיהוֹן לְמֶהֱתֵי בְהֵין גּוּמְרִין דְּאֶשָּׁא
מִבֵּינֵי כְרוּבַיָּא מִתְּחוֹת רְקִיעָא דְּעַל רֵישֵׁיהוֹן לְמִתַּן עַל חוּפְנֵי סְרָפַיָּא לְמִזְרַק עַל
אֲתַר רַשִּׁיעַיָּא לְאַבָּדָא חַיָּבַיָּא עָבְרֵי מֵימְרֵיהּ וְאַפֵּיהוֹן וְגַפֵּיהוֹן שָׁוֵי לְאַרְבַּעְתְּהֵין :
9 מְכַוְּנָן חֲדָא לָקֳבֵיל חֲדָא גַּפֵּיהוֹן לָא מִתְחַזְרִין בְּמֵיזַלְהֵן בִּרְיָא לָקֳבֵיל אַפַּהָא אָזְלָן :
10 וּדְמוּת אַפֵּיהוֹן אַפֵּי אֱנָשָׁא וְאַפֵּי אַרְיָא עֲבִיד מִימִּינָא לְאַרְבַּעְתְּהֵין וְאַפֵּי תוֹרָא עֲבִיד
11 מִסְּמָלָא לְאַרְבַּעְתְּהֵין וְאַפֵּי נִשְׁרָא לְאַרְבַּעְתְּהֵין : וְאַפֵּיהֵן וְגַפֵּיהֵן פְּרִישָׁן מִלְּעֵלָּא לַחֲדָא
12 תַּרְתֵּין מְכַוְּנָן הֲדָא וְתַרְתֵּין מְכַסְּיָן יָת גְּוִיָּתְהֵין : וּבִרְיָא לָקֳבֵל אַפָּהָא אָזְלָא לַאֲתַר
13 דִּתְהֵוֵי תַמָּן רַעֲוָא לְמֵיזַל אָזְלָן לָא מִתְחַזְרָן בְּמֵיזַלְהֵן : וּדְמוּת בִּרְיָתָא חֶזְוֵיהֵן כְּגוּמְרִין
דְּאֶשָּׁא בָּעֲרָן כְּחֵזוּ בְעוּרַיָּא אֶשָּׁתָא מִשְׁתַּלְהֲבָא בֵּין בִּרְיָתָא וְזִיהוֹרַיָּא לְאֶשָּׁתָא וּמִן
אֶשָּׁתָא נָפֵיק בַּרְקָא :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAPUT. I.

ET factum est triginta *annis* postquàm invenisset Helchias sacerdos 1
magnus librum Legis in domo sanctuarii in atrio sub porticu,media nocte post occasum Lunæ,in dieb⁹ Josiæ filii Amon regis trib⁹ dom⁹ Juda,in mense Thammuz,quinta die mensis,dixit Propheta: cũ essẽ in medio transmigrationis juxta fluviũ Chobar,aperti sunt cœli,& vidi in visione prophetiæ quæ resedit sup me,visionẽ gloriæ majestatis Dñi : Quinta die mensis, 2
ipse est ann⁹ quint⁹ transmigrationis regis Joachin : Factũ est verbũ pro- 3
phetiæ à facie Dñi ad Ezechielem filiũ Buzi sacerdotẽ in terra Israel. Iterũ secundò locut⁹ est cum eo in provincia terræ Chaldæorũ juxta fluviũ Chobar, & resedit sup eum ibi spiritus prophetiæ à facie Dñi. Et vidi & ecce 4
vent⁹ turbinis veniebat ab Aquilone,& nubes magna & ignis inflammat⁹, & splendor ei undiquaque , & de medio nubis & turbinis quasi species electri ex medio ignis. Ex medio verò ej⁹ similitudo quatuor creaturarum, 5
quarũ hic erat aspectus, ut similitudo hominis esset eis. Et quatuor facies 6
uni,& quatuor *vultus* unicuique:sedecim facies unicuiq; creaturæ: numer⁹ vultuũ quatuor creaturarũ,sexaginta & quatuor facies erant. *Et quatuor alæ uni,& quatuor pennæ unicuiq;:sedecim pennæ singulis faciebus,sexaginta & quatuor pennæ creaturæ uni: numer⁹ pennarũ quatuor creaturarum,ducentæ & quinquaginta & sex pennæ erant.* Et pedes earũ pedes 7
recti,& planta pedis earũ quasi planta pedũ rotundorũ: & movebãt orbẽ *cùm incederent*,& splendebant in morẽ æris candentis. Et man⁹ quasi ma- 8
n⁹ hominis factæ erãt eis sub pennis earũ ad quatuor latera earũ,ut haurirẽt in eis prunas ignis de medio Cherubim sub firmamento quod erat sup capita earũ;ad dandũ sup pugillos Seraphim,ut dispergerent eas sup locũ impiorũ,ad dispergendos sceleratos qui transgrediuntur verbũ ej⁹: & facies earũ & pennæ earum æquales erãt ipsis quatuor. Directæ erãt pennæ ea- 9
rum una ex adverso alterius: non reflectebantur cùm ambularent creaturæ, sed ante faciem suam gradiebantur. Et similitudo vultus earum,facies ho- 10
minis,& facies leonis factæ erant à dextera illis quatuor, facies autem bovis facta erat à sinistra illis quatuor,& facies aquilæ illis quatuor. Et faci- 11
es earum & pennæ earum extensæ desuper : duæ pennæ uniuscujusque directæ erant è regione alterius, & duæ tegebant corpora earum. Creaturæ 12
autem ante faciem suam ambulabant, ad locum, quò volebant ire, ibant : non convertebantur cùm ambularent. Et similitudo creaturarum & 13
aspectus earum quasi carbonum ignis ardentium , quasi aspectus lampadum : ignis inflammatus [*erat*] inter creaturas, & splendor [*erat*] igni, & de igne egrediebatur fulgur.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

ܬܘܒ ܟܬܒܐ ܕܢܒܝܘܬܗ ܕܚܙܩܝܐܝܠ ܢܒܝܐ *

* ܩܦܠܐܘܢ * ܐ̄ *

* ܘܗܘܐ ܒܫܢܬ ܬܠܬܝܢ ܒܚܡܫܐ ܒܝܪܚܐ ܪܒܝܥܝܐ. ܘܐܢܐ ܒܓܘ ܫܒܝܬܐ ܗܘܝܬ. ܥܠ ܢܗܪ 1
ܟܒܪ. ܘܐܬܦܬܚܘ ܫܡܝܐ. ܘܚܙܝܬ ܚܙܘܐ ܕܐܠܗܐ. * ܒܚܡܫܐ ܒܝܪܚܐ. ܫܢܬ ܚܡܫ 2
ܕܫܒܝܬܗ ܕܝܘܝܟܝܢ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. * ܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܚܙܩܝܐܝܠ ܒܪ ܒܘܙܝ 3
ܟܗܢܐ: ܒܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ ܥܠ ܢܗܪ ܟܒܪ. ܘܗܘܬ ܥܠܘܗܝ ܬܡܢ ܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܚܙܝܬ ܘܗܐ 4
ܪܘܚܐ ܕܥܠܥܠܐ ܐܬܝܐ ܡܢ ܓܪܒܝܐ. ܥܢܢܐ ܪܒܐ. ܘܢܘܪܐ ܕܡܫܬܩܠܐ ܘܢܘܗܪܐ ܚܕܪܝܗ. ܘܡܢ
ܓܘܗ. ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܡܢ ܓܘ ܢܘܪܐ. * ܘܡܢ ܓܘܗ. ܕܡܘܬܐ ܕܐܪܒܥ ܚܝܘܢ. ܘܗܢܘ ܚܙܘܗܝܢ. ܐܝܟ 5
ܕܡܘܬܐ ܕܒܪܢܫܐ. * ܘܐܪܒܥܐ ܐܦܝܢ ܠܚܕ. ܘܐܪܒܥ ܟܢܦܝܢ. * ܘܪܓܠܝܗܘܢ. ܦܫܝܛܢ. 6 7
ܘܦܪ̈ܣܬܐ ܕܪ̈ܓܠܝܗܘܢ. ܐܝܟ ܦܪ̈ܣܬܐ ܕܥܓܠܐ. ܘܡܙܠܓܢ. ܐܝܟ ܢܚܫܐ ܕܡܨܪܦ. * ܘܐܝܕܐ 8
ܕܒܪܢܫܐ ܠܬܚܬ ܟܢܦܝܗܘܢ. ܡܢ ܐܪܒܥܐ ܓܒܝܗܘܢ. ܘܐܦܝܗܘܢ ܘܟܢܦܝܗܘܢ. ܒܓܒܝܗܘܢ.
* ܘܟܢܦܝܗܘܢ. ܢܩܝܦܢ ܗܘܝ ܚܕ ܒܚܕ. ܘܡܐ ܕܐܙܠܝܢ ܗܘܘ. ܠܘܩܒܠ ܐܦܝܗܘܢ ܐܙܠܝܢ ܗܘܘ. ܘܠܐ 9
ܡܬܗܦܟܝܢ ܗܘܘ. * ܘܕܡܘܬܐ ܕܐܦܝܗܘܢ. ܐܦܐ ܕܒܪܢܫܐ. ܘܐܦܐ ܕܐܪܝܐ. ܡܢ ܓܒܝܗܘܢ ܕܝܡܝܢܐ. 10
ܘܐܦܐ ܕܬܘܪܐ. ܘܐܦܐ ܕܢܫܪܐ. ܡܢ ܓܒܝܗܘܢ ܕܣܡܠܐ. * ܘܐܦܝܗܘܢ ܘܟܢܦܝܗܘܢ. ܦܪܝܣܢ ܗܘܘ 11
ܡܢ ܠܥܠ. ܬܪܬܝܢ ܢܩܝܦܢ ܚܕ ܒܚܕ. ܘܬܪܬܝܢ ܡܟܣܝܢ ܦܓܪܝܗܘܢ. * ܘܡܬܗܠܟܝܢ 12
ܐܢܫ ܗܘܘ ܠܐܝܟܐ ܕܐܙܠܐ ܗܘܬ ܪܘܚܐ. ܘܠܐ ܡܬܗܦܟܝܢ ܗܘܘ. * ܘܕܡܘܬܐ ܕܚܝܘܬܐ. ܐܝܟ 13
ܚܙܘܐ ܕܓܘܡܪܐ ܕܢܘܪܐ ܕܝܩܕܐ. ܘܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܠܡܦܐܕܐ ܡܬܗܠܟܐ ܗܘܬ ܒܝܢܝ ܚܝܘܬܐ. ܘܙܗܪܐ
ܗܘܬ ܢܘܪܐ. ܘܡܢ ܢܘܪܐ ܢܦܩ ܗܘܐ ܒܪܩܐ.

LIBER PROPHETIÆ
HEZECIELIS
PROPHETÆ.

CAPUT I.

Vertente anno trigeſimo, quintâ *die* menſis 1
quarti, dum ego inter captivos eſſem ad fluvium
Chebar; aperti ſunt cœli, & vidi viſionem
Dei. Quintâ *inquam* menſis, anno quinto 2
à captivitate Jojacimi regis Judæ, Fuit ſermo 3
Dñi ad Hezecielem filium Buzi ſacerdotem,
in terra Chaldæorum ſecus fluvium Chebar.
Fuit itaque ſuper me ibi manus Domini; Et 4
cùm aſpexiſſem, ecce ventus turbineus veniebat
ab Aquilone, & nubes magna: circa
hanc ignis ardebat fulgebâtque; in medio
autem ipſius erat quaſi viſio, intra ignem. In 5
medio enim ipſius erat ſimilitudo quatuor
animalium, quorum hæc erat ſpecies: Speciem
referebant humanam: Quaterni vultus 6
erant unicuique, & quaternæ alæ: Pedes eorum 7
porrecti, & ungulæ pedum ſimiles ungulis
vitulinis, ſcintillantes ut æs rutilans:
Manus humana ſub alis eorum è quaternis 8
eorum lateribus, et vultus alæque eorum
erant in lateribus eorum: Alæ eorum conjunctæ 9
erant altera cum altera; & quoquoverſùm
inceſſiſſent, ante ſe incedebant, nec
vertendùm ſibi erat. Figura verò vultuũ eorum 10
hæc erat, vultus hominis & vultus leonis
in lateribus eorum dexteris, & vultus bovis
vultúſque aquilæ in lateribus eorum ſiniſtris.
Facies eorum & alæ eorum porrectæ erant 11
ſurſum, duæ erant invicèm conjunctæ, duæ
verò tegebant corpora eorum: Et ante ſe incedebant 12
quocunque ibat ille ventus, nec
vertebant ſeſe. Similitudo autem horum animalium 13
erat velut aſpectus carbonum ignis
ardentium: & quaſi quædam ſpecies lampadis
diſcurrebat inter animalia: porrò ignis
ſcintillabat, & fulgur ex eo prodibat.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بسم الله الرحمن الرحيم * نبتدي بمعونة الله جل جلاله بكتاب حزقيال
النبي بن بوزي * بركاته تكون معنا الي الابد امين *

* الفصل الاول * * الاصحاح الاول *

* وكان في السنة الثلاثين في الشهر الرابع * في الخامس من الشهر * وانا كنت في وسط السبي 1
علي نهر خوبار * فانفتحت السموات ورايت رويا الله * في الخامس من الشهر * هذه السنة 2
الخامسة من سبي يواقيم الملك * وكان قول الرب الي حزقيال بن بوزي الكاهن في ارض 3
الكلدانيين علي نهر خوبار * وكانت هناك علي يد الرب * ونظرت واذا ريح مرتفعة اقبلت 4
من الجربياء * وفيها سحابة عظيمة * ونور حولها * ونار تبرق وفي وسطها مثل منظر الكهربا
في وسط النار * ونور فيها * وفي الوسط مثل شبه اربعة حيوانات * وهذا منظرها * شبه 5
انسان فيها * واربعة وجوه للواحد * واربعة اجنحة للواحد * وسوقانها مستقيمة * وارجلها 6 7
طاير * وشرار مثل نحاس يبرق * واجنحتها خفيفة * ويد انسان من تحت اجنحتها علي 8
جوانبها الاربعة * ووجوهها واجنحتها الاربعة ملتصقة الاخر بالاخر * ووجوهها لا ترجع 9
عند ما تسير * كل واحد قدام وجهه يسير * واشباه وجوهها * وجه انسان لها * ووجه 10
اسد عن اليمين للاربعة * ووجه عجل عن اليسار للاربعة * ووجه نسر للاربعة * ووجوهها 11
واجنحتها منبسطة من فوق للاربعة * لكل واحد اثنان مزدوجان الي بعضها بعض *
واثنان مستوران فوق جسدها * وكل واحد لوجهه يسير * حيث ان تكون الريح سايرة 12
يسيرون ولا يرجعون * وفي وسط الحيوانات منظر مثل جمر نار متوقد * مثل منظر مصابيح 13
سايرة بين الحيوانات * ونور نار * ومن النار يخرج مثل برق *

IN NOMINE DEI
Miſericordis, Clementiſſimi.

Aggredimur *freti* auxilio Dei ſummè glorioſi librum Hezecielis Prophetæ filii Buzi, cujus benedictiones ſint ſuper nos in perpetuum. Amen.

CAP. I.
Textus primus.

Et fuit anno trigeſimo, menſe quarto, 1
quintâ menſis, dum ego eſſem in medio
captivitatis ad fluvium Chobar, ut aperirentur
cœli, & viderem viſionem Dei:
Quintâ menſis (hic erat annus quintus à 2
captivitate Joacimi regis) Fuit ſermo 3
Domini ad Hezecielem filium Buzi ſacerdotem,
in terra Chaldæorum, ſecus
fluvium Chobar: & fuit ibi ſuper me
manus Domini, Vidique, & ecce ventus 4
excitatus advenit ex Aquilone, & in
illo nubes ingens circa quam lux erat &
ignis fulgurans, & in hujus meditullio
quaſi quidam *aſpectus ſuccini in medio*
ignis, & lux in eo. Et in meditullio veluti 5
ſpecies quatuor animalium quorum
hujuſmodi erat aſpectus: Forma humana
inerat eis; Et quatuor facies unicuique, 6
& quatuor alæ unicuique: Crura 7
eorum recta, & pedes volantes: & ſcintillæ
æris inſtar fulgurantes: alæque eorum
leviſſimæ: Manus hominis ſub alis 8
eorum ad quaterna ipſorum latera: Facies 9
eorum & alæ ipſorum quaternæ cohærebant
altera cum altera: & facies eorum
non vertebantur cum ambularent; unumquodque
ante faciem ſuam gradiebatur.
Formæ autem facierum eorum tales 10
erant: *Faciem hominis, faciémque leonis*
habebant ipſa quatuor à dextera; *faciem*
autem vituli habebant ipſa quatuor
à ſiniſtra, faciémque aquilæ eadem quatuor:
Et tam facies quàm alæ ipſorum 11
quatuor porrectæ erant ſupernè. Unumquodque
duas alas *habebat ſimul conjunctas,*
duas verò ſuper corpus ſuum expanſas:
Et unumquodque ante faciem 12
ſuam gradiebatur: quocunque ventus ille
pergebat, ibant, nec vertebant ſeſe.
In medio autem animalium erat aſpectus 13
quaſi carbonum ignis accenſorum, quaſi
lampadarum diſcurrentium inter animalia;
& ſplendor ignis; & ex igne procedebant quaſi fulgura.

. vidi Et .corruſcationis aſpectum ſecundùm ; redire & ,currere animalia Et
14 וְהַחַיּוֹת רָצוֹא וָשׁוֹב כְּמַרְאֵה הַבָּזָק׃ וָאֵרֶא 15
quatuor ad animalia juxta terra in una rota ecce & ; animalia
הַחַיּוֹת וְהִנֵּה אוֹפַן אֶחָד בָּאָרֶץ אֵצֶל הַחַיּוֹת לְאַרְבַּעַת
, Tarſis oculus tanquam earum opus & , rotarum Aſpectus .ejus facies
16 פָּנָיו׃ מַרְאֵה הָאוֹפַנִּים וּמַעֲשֵׂיהֶם כְּעֵין תַּרְשִׁישׁ
ſi ac earum opus &,earum aſpectus &:ipſis quatuor una ſimilitudo &
וּדְמוּת אֶחָד לְאַרְבַּעְתָּן וּמַרְאֵיהֶם וּמַעֲשֵׂיהֶם כַּאֲשֶׁר
, ſuâ quadrilatera quatuor Ad .rotæ medio in rota eſſet
17 יִהְיֶה הָאוֹפַן בְּתוֹךְ הָאוֹפָן׃ עַל־אַרְבַּעַת רִבְעֵיהֶן
altitudo &,eorũ cambi Et .ipſa eundo in revertebãtur non :ibant ,ipſa eundo in
18 בְּלֶכְתָּם יֵלֵכוּ לֹא יִסַּבּוּ בְּלֶכְתָּן׃ וְגַבֵּיהֶן וְגֹבַהּ
undique oculis plena eorum dorſa &:eas propter pavor & ,eis
לָהֶם וְיִרְאָה לָהֶם וְגַבֹּתָם מְלֵאֹת עֵינַיִם סָבִיב
: ea juxta rotæ ambulabant ,animalia eundo in Et .ipſis quatuor
19 לְאַרְבַּעְתָּן׃ וּבְלֶכֶת הַחַיּוֹת יֵלְכוּ הָאֹפַנִּים אֶצְלָם
Ad .rotæ ſe elevabant ,terram deſuper animalia ſe extollendo in &
20 וּבְהִנָּשֵׂא הַחַיּוֹת מֵעַל הָאָרֶץ יִנָּשְׂאוּ הָאוֹפַנִּים׃ עַל
: eundum ad animus illuc , ibant , eundum ad animus illuc erat quod
אֲשֶׁר יִהְיֶה־שָּׁם הָרוּחַ לָלֶכֶת יֵלֵכוּ שָׁמָּה הָרוּחַ לָלֶכֶת
.rotis in animalis ſpiritus nam , ea contra ſe elevabant rotæ &
וְהָאוֹפַנִּים יִנָּשְׂאוּ לְעֻמָּתָם כִּי רוּחַ הַחַיָּה בָּאוֹפַנִּים׃
deſuper ſe elevando in & : ſtabant , ipſa ſtando in & ,ibant ,ipſa ambulando In
21 בְּלֶכְתָּם יֵלֵכוּ וּבְעָמְדָם יַעֲמֹדוּ וּבְהִנָּשְׂאָם מֵעַל
.rotis in animalis ſpiritus quia,ea contra rotæ ſe elevabant , terra
הָאָרֶץ יִנָּשְׂאוּ הָאוֹפַנִּים לְעֻמָּתָם כִּי רוּחַ הַחַיָּה בָּאוֹפַנִּים׃
,terribilis gelu oculus ut , expanſio animalis capita ſuper ſimilitudo Et
22 וּדְמוּת עַל־רָאשֵׁי הַחַיָּה רָקִיעַ כְּעֵין הַקֶּרַח הַנּוֹרָא
eorum alæ expanſione ſub Et .deſuper eorum capita ſuper extenta
23 נָטוּי עַל־רָאשֵׁיהֶם מִלְמָעְלָה׃ וְתַחַת הָרָקִיעַ כַּנְפֵיהֶם
, ſe tegentes duæ unicuique : ſuam ſororẽ ad unaquæque rectæ
יְשָׁרוֹת אִשָּׁה אֶל־אֲחוֹתָהּ לְאִישׁ שְׁתַּיִם מְכַסּוֹת לָהֵנָּה
audivi Et .ſua corpora ſibi tegentes duæ unicuique &
24 וּלְאִישׁ שְׁתַּיִם מְכַסּוֹת לָהֵנָּה אֵת גְּוִיֹּתֵיהֶם׃ וָאֶשְׁמַע
vocem tanquam multarum aquarum vocem tanquã,eorum alarum vocem
אֶת־קוֹל כַּנְפֵיהֶם כְּקוֹל מַיִם רַבִּים כְּקוֹל־
,ipſa ſtando in : turmæ vocem tanquam loquelæ vocem ,ipſa eundo in , Saddai
שַׁדַּי בְּלֶכְתָּם קוֹל הֲמֻלָּה כְּקוֹל מַחֲנֶה בְּעָמְדָם
ſuper quod firmamento deſuper vox erat Et .ſuas alas dimittebant
25 תְּרַפֶּינָה כַנְפֵיהֶן׃ וַיְהִי־קוֹל מֵעַל לָרָקִיעַ אֲשֶׁר עַל־
firmamentum deſuper Et .ſuas alas dimittebant ipſa ſtando in : eorũ caput
26 רֹאשָׁם בְּעָמְדָם תְּרַפֶּינָה כַנְפֵיהֶן׃ וּמִמַּעַל לָרָקִיעַ
ſimilitudo ,Sapphiri lapidis aſpectus tanquam eorum caput ſuper quod
אֲשֶׁר עַל־רֹאשָׁם כְּמַרְאֵה אֶבֶן־סַפִּיר דְּמוּת
hominis aſpectus tanquã ſimilitudo throni ſimilitudinem ſuper & : throni
כִּסֵּא וְעַל דְּמוּת הַכִּסֵּא דְּמוּת כְּמַרְאֵה אָדָם
aſpectũ tanquã ,flammæ crepitantis oculum ut vidi Et .deſuper eum ſuper
27 עָלָיו מִלְמָעְלָה׃ וָאֵרֶא כְּעֵין חַשְׁמַל כְּמַרְאֵה־
aſpectu ab & : ſupra &,ejus lumborũ aſpectu ab circum ipſi domus ignis
אֵשׁ בֵּית־לָהּ סָבִיב מִמַּרְאֵה מָתְנָיו וּלְמָעְלָה וּמִמַּרְאֵה
ſplendorem &,ignis aſpectum tanquam vidi , infra & , ejus lumborum
מָתְנָיו וּלְמַטָּה רָאִיתִי כְּמַרְאֵה־אֵשׁ וְנֹגַהּ
die in , nube in fuerit cùm arcus aſpectum Velut .circum ei
28 לוֹ סָבִיב׃ כְּמַרְאֵה הַקֶּשֶׁת אֲשֶׁר יִהְיֶה בֶעָנָן בְּיוֹם
.circum ſplendoris aſpectus ſic , pluviæ
הַגֶּשֶׁם כֵּן מַרְאֵה הַנֹּגַהּ סָבִיב

Verſio VULG. LAT.

14 Et animalia ibant & revertebantur,
in ſimilitudinem fulguris coruſcantis.
15 Cúmque aſpicerem
animalia,apparuit rota una ſuper
terram juxta animalia, habens
16 quatuor facies. Et aſpectus rotarum,
& opus earum, quaſi viſio
maris : & una ſimilitudo ipſarũ
quatuor : & aſpectus earum &
opera, quaſi ſit rota in medio rotæ.
17 Per quatuor partes earũ euntes
ibant, & non revertebantur
18 cùm ambularent. Statura quoq;
erat rotis, & altitudo,& horribilis
aſpectus : & totum corpus oculis
plenum in circuitu ipſarum
19 quatuor. Cúmque ambularent
animalia, ambulabant pariter &
rotæ juxta ea : & cùm elevarentur
animalia de terra, elevabantur
20 ſimul & rotæ. Quocunque
ibat ſpiritus, illuc eunte ſpiritu,
& rotæ pariter elevabantur, ſequentes
eum. Spiritus enim vitæ
21 erat in rotis. Cum euntib⁹ ibant,
& cum ſtantibus ſtabant:& cum
elevatis à terra, pariter elevabantur
& rotæ, ſequentes ea :
quia ſpiritus vitæ erat in rotis.
22 Et ſimilitudo ſuper capita animalium
firmamenti, quaſi aſpectus
cryſtalli horribilis,& extenti
ſuper capita eorum deſupér.
23 Sub firmamento autem pennæ
eorum rectæ alterius ad alterum:
unumquodque duabus alis velabat
corpus ſuum,& alterum ſimiliter
24 velabatur. Et audiebant ſonum
alarum, quaſi ſonum aquarum
multarum, quaſi ſonum ſublimis
Dei : cùm ambularent quaſi
ſonus erat multitudinis,ut ſonus
caſtrorum : cúmque ſtarent, demittebantur
25 pennæ eorum. Nam
cùm fieret vox ſuper firmamentum,
quod erat ſuper caput eorum,
ſtabant, & ſubmittebant
26 alas ſuas. Et ſuper firmamentum,
quod erat imminens capiti eorũ,
quaſi aſpectus lapidis ſapphiri ſimilitudo
throni : & ſuper ſimilitudinem
throni, ſimilitudo quaſi
27 aſpectus hominis deſupér. Et
vidi quaſi ſpeciem electri, velut
aſpectum ignis, intrinſecus ejus
per circuitũ:à lumbis ejus & deſupèr,
& à lumbis ejus uſque deorſum,
vidi quaſi ſpeciem ignis
28 ſplendentis in circuitu. Velut
aſpectum arcûs cùm fuerit in
nube in die pluviæ:hic erat aſpectus
ſpendoris per gyrum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

15 Καὶ ἴδον, καὶ ἰδοὺ τροχὸς εἷς ἐπὶ τῆς γῆς ἐχόμενος
16 τῶν ζώων τοῖς τέσσαρσι. Καὶ τὸ
εἶδος τῶν τροχῶν ὡς εἶδος θαρσεΐς. καὶ
ὁμοίωμα ἐν τοῖς τέσσαρσι· καὶ τὸ ἔργον
αὐτῶν ἦν καθὼς ἂν εἴη τροχὸς (λ) ἐν τροχῷ.
17 Ἐπὶ τὰ (*) τέσσαρα μέρη αὐτῶν ἐπορεύοντο.
οὐκ ἐπέστρεφον ἐν τῷ πορεύεσθαι αὐτά,
18 Οὐδ' οἱ νῶτοι αὐτῶν. καὶ ὕψος ἦν
αὐτοῖς. καὶ ἴδον αὐτά, καὶ οἱ νῶτοι αὐτῶν
πλήρεις ὀφθαλμῶν κυκλόθεν τοῖς τέσσαρσιν.
19 Καὶ ἐν τῷ πορεύεσθαι τὰ ζῶα, ἐπορεύοντο
οἱ τροχοὶ ἐχόμενοι αὐτῶν· καὶ ἐν τῷ
ἐξαίρειν τὰ ζῶα ἀπὸ τῆς γῆς, ἐξήροντο
20 οἱ τροχοί. Οὗ ἂν ἦν ἡ νεφέλη, ἐκεῖ τὸ
πνεῦμα τοῦ πορεύεσθαι, ἐπορεύοντο (μ) οἱ
τροχοὶ καὶ ἐξήροντο σὺν αὐτοῖς, διότι
21 πνεῦμα ζωῆς (ν) ἐν τοῖς τροχοῖς. Ἐν τῷ
πορεύεσθαι αὐτὰ ἐπορεύοντο, καὶ ἐν τῷ ἑστάναι
αὐτὰ εἱστήκεισαν, καὶ ἐν τῷ ἐξαίρειν αὐτὰ
ἀπὸ τῆς γῆς, ἐξήροντο σὺν αὐτοῖς,
ὅτι πνεῦμα ζωῆς (ξ) ἦν ἐν τοῖς τροχοῖς.
22 Καὶ ὁμοίωμα ὑπὲρ κεφαλῆς (ο) αὐτῶν τῶν
ζώων ὡσεὶ στερέωμα, ὡς ὅρασις κρυστάλλου,
ἐκτεταμένον ἐπὶ τῶν πτερύγων αὐτῶν ἐπάνωθεν.
23 Καὶ (π) ὑποκάτωθεν τοῦ στερεώματος
αἱ πτέρυγες αὐτῶν ἐκτεταμέναι,
πτερυσσόμεναι ἑτέρα τῇ ἑτέρᾳ, ἑκάστῳ
δύο (ρ) συγκαλύπτουσαι τὰ σώματα αὐτῶν.
14 Καὶ ἤκουον τὴν φωνὴν τῶν πτερύγων αὐτῶν
ἐν τῷ πορεύεσθαι αὐτά, ὡς φωνὴν ὕδατος
(σ) πολλοῦ· καὶ ἐν τῷ ἑστάναι αὐτά,
25 κατέπαυον αἱ πτέρυγες αὐτῶν. Καὶ ἰδοὺ
26 φωνὴ (τ) ὑπεράνωθεν τοῦ στερεώματος Τοῦ
ὄντος ὑπὲρ κεφαλῆς αὐτῶν, (υ) ὡς ὅρασις
λίθου σαπφείρου, ὁμοίωμα θρόνου (φ)
ἐπ' αὐτοῦ, καὶ ἐπὶ τοῦ ὁμοιώματος τοῦ θρόνου
27 ὁμοίωμα ὡς εἶδος ἀνθρώπου ἄνωθεν. Καὶ
ἴδον ὡς ὄψιν ἠλέκτρου (χ) ἀπὸ ὁράσεως
ὀσφύος καὶ ἐπάνω, καὶ ἀπὸ ὁράσεως
ὀσφύος καὶ ἕως κάτω ἴδον (ψ) ὅρασιν
28 πυρός, καὶ τὸ φέγγος αὐτοῦ κύκλῳ. Ὡς
ὅρασις τόξου ὅταν ᾖ ἐν τῇ νεφέλῃ ἐν
ἡμέραις ὑετοῦ, οὕτως ἡ στάσις τοῦ φέγγους
κυκλόθεν.

Et vidi, & ecce rota una ſuper 15
terram juxta animalia, ipſis
*quatuor: Et ſpecies * rotarum* 16
quaſi ſpecies (i) Tharſis. Et ſimilitudo
(k) una ipſis quatuor. (l) Et
opus earum erat, quaſi ſi eſſet
rota in rota. In quatuor partes 17
earum ambulabant; non revertebantur,
cùm ambularent, (m)
Neque dorſa earum: Et altitudo 18
erat (n) eis. Et vidi ea: &
dorſa earum plena oculis in circuitu
ipſis quatuor. Et cùm ambularent 19
animalia; ambulabant
rotæ juxta ea. Et cùm elevarentur
animalia de terra; elevabantur
rotæ. ubicunq; erat nubes; 20
illic (o) & ſpiritus ad eundum:
ibant rotæ, & elevabantur cum
eis: Spiritus enim vitæ erat in
rotis: Cùm illa irent, ibant; &
cùm illa ſtarent, ſtabant; & cùm 21
illa elevarentur à terra; elevabãtur
cũ eis: quia ſpiritus vitæ erat
in rotis. Et ſimilitudo ſuper caput 22
ipſorum animalium quaſi firmamentum,
quaſi aſpectus (p) cryſtalli,
extentum ſuper alas eorum
deſupér: Et ſub firmamento 23
alæ eorum extentæ, volantes
altera alteri: unicuique duæ (q)
tegentes corpora ipſorum. Et audivi 24
vocem alarum ipſorum, (r)
dum ipſa irent, quaſi vocem (ſ)
aquæ multæ: cúmque ipſa ſtarent,
ceſſabant alæ eorum. Et 25
ecce vox deſuper firmamento,
Quod erat ſuper (t) caput eorum, 26
quaſi aſpectus lapidis ſapphiri;
ſimilitudo throni ſuper illud: &
ſuper ſimilitudinem throni ſimilitudo
quaſi ſpecies hominis deſupér.
Et vidi quaſi aſpectum 27
(u) electri à viſione lumbi, &
ſupra: & à viſione lumbi, &
uſque deorſum vidi viſionem
ignis: & ſplendor ejus in circuitu,
Velut viſio arcûs, cùm 28
fuerit in nube in diebus pluviæ.
(x) Sic ſtatio ſplendoris per
gyrum.

MS.A. (λ) ἐπὶ (*) τέσσερα (μ) τὰ ζῶα, καὶ οἱ τροχοὶ ἐξήροντο (ν) ἦν ἐν τοῖς (ξ) ἐν τοῖς τροχοῖς ἦν. (ο) αὐτοῖς (π) ὑποκάτω (ρ) Συνεζευγμέναι ἐπικαλύπτουσαι τῷ σώματι τὰ πρόσωπα αὐτῶν. (σ) πολλοῦ, ὡς φωνὴν ἱκανοῦ, ἐν τῷ πορεύεσθαι αὐτά, φωνὴ τοῦ λόγου ὡς φωνὴ παρεμβολῆς· καὶ ἐν τῷ ἑστάναι (τ) ὑπεράνω (υ) ἐν τῷ ἑστάναι αὐτά, ἀνίεντο αἱ πτέρυγες αὐτῶν. Καὶ ὑπεράνω τοῦ στερεώματος τοῦ ὑπὲρ κεφαλῆς αὐτῶν, ὡς ὅρασις (φ) ἐπ' αὐτῷ, (χ) ὡς ὅρασις πυρὸς ἔσωθεν αὐτοῦ κύκλῳ ἀπὸ ὁράσεως (ψ) ὡς ὅρασιν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 וּבְרִיָּתָא בְּאִשְׁתַּלְּחוּתְהֵין לְמֶעְבַּד רְעוּת רִבּוֹנְהֵין דְּאַשְׁרֵי שְׁכִנְתֵּיהּ בִּמְרוֹמָא עֵלָּא מִנְּהֵין
בְּאַנְפָּא עֵינָא לְמֶחֱזֵי חָזְרָן וּמְקַפְּן וּמְכַסְּן יַת עַלְמָא וְתָיְבָן בִּרְיָתָא כַּחֲדָא וְקַלִּילָן כְּחֵיזוּ
15 בַּרְקָא׃ וַחֲזֵית בִּרְיָתָא וְהָא גַּלְגַּל חַד מִשְׁתְּוֵי כְּמִלְּרַע לְרוּם שְׁמַיָּא בִּסְטַר בִּרְיָתָא לְאַרְבַּע
16 אַפּוֹהִי׃ חֵיזוּ גַלְגַּלַּיָּא וְעוֹבָדֵיהוֹן כְּעֵין אֶבֶן טָבָא וּדְמוּת חַד לְאַרְבַּעְתְּהֵין וְחֶזְוֵיהֵן וְעוֹבָדֵיהֵן
17 כְּמָא דַהֲוֵי גַלְגַּל בְּגוֹ גַלְגַּל׃ עַל אַרְבְּעָא סִטְרֵיהֵן בְּמֵיזַלְהֵן אָזְלִין לָא מִתְחַזְרִין בְּמֵיזַלְהֵן׃
18 וְגַבֵּיהֵן שָׁוָן לְקִבְלָא רְקִיעָא וְרוּמָא לְהֵין וּדְחִילִין אִנּוּן וְגַבֵּיהֵן מַלְיָן עֵינִין סְחוֹר סְחוֹר
19 לְאַרְבַּעְתְּהֵין׃ וּבְמֵיזַל בִּרְיָתָא אָזְלִין גַּלְגַּלַּיָּא לָקֳבְלֵיהֵן וּבְאִתְרְמָא בִּרְיָתָא כְּמִלְּרַע לְרוּם
20 שְׁמַיָּא מִתְרְמִין לְגַלְגַּלַּיָּא׃ עַל אֲתַר דַּהֲוֵי תַמָּן רַעֲוָא לְמֵיזַל אָזְלִין לְתַמָּן רַעֲוָא לְמֵיזַל
21 וְגַלְגַּלַּיָּא מִתְרְמִין לָקֳבְלֵהֵן אֲרֵי כְּרוּחַ בִּרְיָתָא בְּגַלְגַּלַּיָּא׃ בְּמֵיזַלְהוֹן אָזְלִין וּבְמִקָּמְהוֹן
קָיְמִין וּבְאִתְרְמְהוֹן כְּמִלְּרַע לְרוּם שְׁמַיָּא מִתְרְמִין גַּלְגַּלַּיָּא לָקֳבְלֵהוֹן אֲרֵי כְּרוּחַ בִּרְיָתָא
22 בְּגַלְגַּלַּיָּא׃ וּדְמוּת עַל רֵישֵׁי בִּרְיָתָא רְקִיעָא כְּעֵין גְּלִיד חֲסִין מַרְכֵן עַל רֵישֵׁיהוֹן מִלְּעֵלָּא׃
23 וּתְחוֹת רְקִיעָא גַּדְפֵּיהוֹן מְכַוְּנָן חֲדָא לָקֳבֵיל חֲדָא לַחֲדָא תַּרְתֵּין מְכַסְּיָן לְהֵין וְלַחֲדָא תַּרְתֵּין
24 מְכַסְּיָן לְהֵין יַת גְּוִיָּתְהֵין׃ וּשְׁמַעִית יַת קָל גַּדְפֵּיהֵן כְּקָל מַיִין סַגִּיאִין כְּקָלָא מִן קֳדָם שַׁדַּי
בְּמֵהַכְהֵין קָל מְלּוּלֵיהֵן כַּד מוֹדָן וּמְבָרְכִין יַת רִבּוֹנְהוֹן קַיָּמָא מֶלֶךְ עָלְמַיָּא כְּקָל מַשְׁרְיָת
25 מַלְאֲכֵי מְרוֹמָא בְּמִקָּמְהֵן מַשְׁתְּקָן גַּדְפֵּיהֵן מִן קֳדָם דִּבּוּרָא׃ וּבְעִדָּן דַּהֲוֵי רַעֲוָא קֳדָמוֹהִי
לְאַשְׁמָעָא דִּבּוּרָא לְעַבְדוֹהִי נְבִיֵּי יִשְׂרָאֵל הֲוֵי קָלָא וּמִשְׁתְּמַע מֵעִלָּוֵי רְקִיעָא מִבֵּין
26 כְּרוּבַיָּא מִתְּחוֹת רְקִיעָא דִּי עַל רֵישֵׁיהוֹן בְּמִקָּמְהֵן מַשְׁתְּקָן גַּדְפֵּיהֵן מִן קֳדָם דִּבּוּרָא׃ וּמֵעִלָּוֵי
רְקִיעָא דִּי עַל רֵישֵׁיהוֹן כְּחֵיזוּ אֶבֶן טָבָא דְּמוּת כּוּרְסְיָא וְעַל דְּמוּת כּוּרְסְיָא דְּמוּת כְּחֵיזוּ
27 אֱנָשָׁא עִלּוֹהִי מִלְּעֵלָּא׃ וַחֲזֵית כְּעֵין חַשְׁמְלָא כְּחֵיזוּ אֶשָּׁתָא מִגָּיו לַהּ סְחוֹר סְחוֹר חֵיזוּ יְקָר
דְּלָא יָכְלָא עֵינָא לְמֶחֱזֵי וְלָא אֶפְשַׁר לְאִסְתַּכָּלָא בֵּיהּ וּלְעֵלָּא חֵיזוּ יְקָר דְּלָא יָכְלָא עֵינָא
לְמֶחֱזֵי וְלָא אֶפְשַׁר לְאִסְתַּכָּלָא בֵיהּ וּלְרַע חֲזֵיתִי כְּחֵיזוּ אֶשָּׁתָא וְזִיהוֹרָא לֵיהּ סְחוֹר סְחוֹר׃
28 כְּחֵיזוּ קַשְׁתָּא דַּהֲוֵי בַעֲנָנָא בְּיוֹמָא דְמִטְרָא כֵּן חֵיזוּ זִיהוֹרָא סְחוֹר סְחוֹר

PARAPH. CHALD. Verſio Latinâ.

Et creaturæ,cùm mitterentur ad exequendũ voluntatem Dñi ſui,qui collocavit 14
majeſtatem ſuã in excelſo ſupra ipſas; in *ictu oculi* convertebantur,
& circuibant,& operiebant orbem:revertebantúrq; ſimul creaturæ,& veloces
erant quaſi aſpect⁹ fulguris. Et vidi creaturas,& ecce rota una poſita 15
erat quaſi ſub altitudine cœli, in latere creaturarũ ad quatuor facies ejus.
Aſpect⁹ rotarũ & op⁹ earũ quaſi ſpecies lapidis pretioſi:& ſimilitudo una 16
erat ipſis quatuor:& viſio earũ & op⁹ earũ quaſi eſſet rota in medio rotæ.
Super quatuor latera earũ euntes ibãt,non convertebãtur cum ambularẽt. 17
Et dorſa earũ æqualia erãt verſus firmamentũ:& altitudo eis erat,& terribilia 18
erãt; & dorſa earũ plena erant oculis per circuitũ ipſarũ quatuor.
Et cùm ambularẽt creaturæ,ibant rotæ è regione earũ; & cùm elevarẽtur 19
creaturæ quaſi ſub altitudine cœli,elevabãtur rotæ. In quemcunq; locũ ire 20
vellent ibãt,illuc ire volentes,& rotæ elevabãtur è regione earũ:quia *quaſi*
ſpirit⁹ creaturarũ erat in rotis. Cùm ambularent ambulabãt,& cùm ſtarẽt 21
ſtabãt,& cùm elevarẽtur quaſi ſub altitudine cœli,elevabãtur rotæ è regione
earũ:quia *quaſi* ſpirit⁹ creaturarũ erat in rotis. Et ſimilitudo ſup capita 22
creaturarũ firmamẽti quaſi aſpect⁹ gelu fortiſſimi, inclinati ſup capita earũ
ſupernè. Sub firmamento verò alæ earũ directæ erãt una è regione alteri⁹; 23
uni duæ tegebãt eas,& uni duæ tegebant eas,nempe earũ corpora. Et audivi 24
vocem alarũ earũ tanquam vocem aquarũ multarũ, velut vocẽ à facie
omnipotentis,cùm graderentur : & vox ſermonũ earũ cùm confiterentur
& benedicerent Dñm ſuum viventem regem *ſeculorũ*,quaſi vox erat copiarũ
angelorum ſupernorũ:cùm ſtarent,quieſcebant alæ earũ à facie ſermonis.
Et in tempore quo erat voluntas corã eo ut audire faceret verbum ſuũ 25
ſervis ſuis prophetis Iſrael,audiebatur vox deſuper firmamentũ inter Cherubim
ſub firmamento quod erat ſuper capita earum : cùm ſtarent, quieſcebant
pennæ earum à facie ſermonis. Et deſuper firmamentum quod 26
erat ſupra capita earum, quaſi aſpect⁹ lapidis pretioſi, ſimilitudo throni :
& ſuper ſimilitudinẽ throni ſimilitudo tanquam aſpect⁹ hominis ſuper eum
deſuper. Et vidi quaſi ſpeciem electri quaſi aſpectũ ignis in medio ej⁹ per 27
circuitũ,aſpectũ gloriæ quam non poſſit ocul⁹ videre, neq; contemplari in
eã;& ſupernè aſpectũ gloriæ quam ocul⁹ non poſſit videre,aut contẽplari :
& inferiùs vidi quaſi viſionẽ ignis,& ſplendor ei in circuitu. Velut aſpect⁹ 28
arcus qui eſt in nube in die pluviæ, ſic erat aſpectus ſplendoris in circuitu.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

14 ܘܚܝܘܬܐ ܪܗܛܢ ܗܘܝ. ܘܠܐ ܡܬܗܦܟܢ ܗܘܝ. ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܙܠܝܩܐ. * ܘܚܙܝܬ ܚܝܘܬܐ. ܘܗܘܐ
15 ܓܝܓܠܐ ܚܕ ܒܐܪܥܐ ܠܘܬ ܐܪܒܥܬܝܗܝܢ ܚܝܘܬܐ. * ܘܚܙܘܐ ܕܓܝܓܠܐ ܘܥܒܕܝܗܘܢ. ܐܝܟ ܚܙܘܐ 16
ܕܬܪܫܝܫ. ܘܕܡܘܬܐ ܚܕܐ ܠܐܪܒܥܬܝܗܘܢ. ܘܚܙܘܗܘܢ ܘܥܒܕܝܗܘܢ. ܐܝܟ ܓܝܓܠܐ ܒܓܘ ܓܝܓܠܐ.
* ܥܠ ܐܪܒܥܬ ܓܒܝܗܘܢ ܐܙܠܝܢ ܗܘܝ. ܘܠܐ ܡܬܗܦܟܝܢ ܗܘܝ. ܘܠܐܬܪ ܕܦܢܝܐ ܗܘܬ ܪܫܝܬܗܘܢ 17
ܒܬܪܗ ܐܙܠܝܢ ܗܘܝ. ܘܠܐ ܡܬܗܦܟܝܢ ܗܘܝ. * ܘܪܘܡܐ ܐܝܬ ܠܚܢܝܬܗܘܢ. ܘܚܙܝܢ 18
ܗܘܝ. ܘܚܢܝܬܗܘܢ ܡܠܝܐ ܥܝܢܐ ܗܘܬ ܕܐܪܒܥܬܝܗܘܢ ܡܢ ܚܕܪܝܗܘܢ. * ܘܟܕ ܐܙܠܝܢ ܗܘܝ ܚܝܘܬܐ. 19
ܐܙܠܝܢ ܗܘܝ ܓܝܓܠܐ ܥܡܗܘܢ. ܘܟܕ ܡܬܥܠܝܢ ܗܘܝ ܚܝܘܬܐ ܡܢ ܐܪܥܐ. ܡܬܥܠܝܢ ܗܘܝ ܓܝܓܠܐ
ܥܡܗܘܢ. * ܘܠܐܬܪ ܕܐܙܠܐ ܗܘܬ ܪܘܚܐ. ܐܙܠܝܢ ܗܘܝ. ܘܓܝܓܠܐ ܡܬܥܠܝܢ ܗܘܝ ܥܡܗܘܢ. ܡܛܠ 20
ܕܪܘܚܐ ܚܝܬܐ ܐܝܬ ܗܘܬ ܒܓܝܓܠܐ. * ܘܟܕ ܕܐܙܠܝܢ ܗܘܝ. ܘܟܕ ܕܩܝܡܝܢ ܗܘܝ. ܩܝܡܝܢ 21
ܗܘܝ. ܘܟܕ ܡܬܥܠܝܢ ܗܘܝ ܡܢ ܐܪܥܐ. ܡܬܥܠܝܢ ܗܘܝ ܓܝܓܠܐ ܥܡܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܪܘܚܐ
ܚܝܬܐ ܐܝܬ ܗܘܬ ܒܓܝܓܠܐ. * ܘܡܬܡܬܚ ܥܠ ܡܢ ܪܝܫܐ ܕܚܝܘܬܐ. ܐܝܟ ܕܡܘܬܐ ܕܚܙܘܐ 22
ܕܩܘܪܫܐ ܕܚܝܠܐ. * ܘܬܚܝܬܗ ܓܦܝܗܘܢ ܬܪܝܨܢ. ܗܘܝ ܚܕܐ ܠܘܩܒܠ ܚܕܐ. ܡܢ 23
ܠܥܠ ܘܡܢ ܠܬܚܬ. ܬܪܬܝܢ ܡܟܣܝܢ ܠܗܘܢ. ܘܬܪܬܝܢ ܡܟܣܝܢ ܦܓܪܝܗܘܢ. * ܘܫܡܥܬ 24
ܩܠܐ ܕܓܦܝܗܘܢ. ܐܝܟ ܩܠܐ ܕܡܝܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܐܝܟ ܩܠܐ ܕܐܠܗܐ. ܟܕ ܐܙܠܝܢ ܗܘܝ. ܘܐܝܟ ܩܠܐ
ܕܡܡܠܠܐ ܒܓܘ ܡܫܪܝܬܐ. ܘܟܕ ܕܩܝܡܝܢ ܗܘܝ. ܡܟܠܝܢ ܗܘܝ ܓܦܝܗܘܢ. * ܘܗܘܐ ܩܠܐ 25
ܠܥܠ ܡܢ ܡܛܠܠܐ ܕܥܠ ܡܢ ܪܫܝܗܘܢ. * ܘܠܥܠ ܡܢ ܡܛܠܠܐ ܕܥܠ ܡܢ ܪܫܝܗܘܢ. ܐܝܟ 26
ܚܙܘܐ ܕܟܐܦܐ ܕܣܦܝܠܐ. ܘܐܝܟ ܕܡܘܬܐ ܕܟܘܪܣܝܐ. ܘܥܠ ܕܡܘܬܐ ܕܟܘܪܣܝܐ. ܐܝܟ ܕܡܘܬܐ ܘܐܝܟ
ܚܙܘܐ ܕܒܪܢܫܐ ܝܬܒ ܥܠܘܗܝ ܡܢ ܠܥܠ. * ܘܚܙܝܬ. ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܐܠܗܐ. ܘܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܢܘܪܐ 27
ܡܢ ܠܓܘ ܚܕܪ ܠܗ. ܡܢ ܚܙܘܐ ܕܚܨܘܗܝ ܘܠܥܠ. ܘܡܢ ܚܨܘܗܝ ܘܠܬܚܬ. ܚܙܝܬ
ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܢܘܪܐ. ܘܙܠܝܩܐ ܚܕܝܪ ܠܗ. * ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܩܫܬܐ ܕܗܘܝܐ ܒܥܢܢܐ ܒܝܘܡܐ ܕܡܛܪܐ. 28
ܗܟܢܐ ܗܘܐ ܚܙܘܐ ܕܙܠܝܩܐ ܕܚܕܝܪ ܠܗ.

Animalia verò currebant abſq; eo quòd ver- 14
terent ſeſe, tanquam aſpectus ſtellæ volantis.
Poſtquam vidiſſem animalia, ecce rotas in 15
terra ſecus quatuor illa animalia. Aſpectus 16
rotarũ & factura earũ, ſimilis erat aſpectui
chryſolithi: eadémque ſpecies erat iis quatu-
or: & aſpectus atque factura earum, ac ſi eſſet
rota rotæ interſerta. Super quaterna ſua la- 17
tera ibant, & non reflectebantur: quocunque
flectebat præcipua earum ad progrediendum,
reliqua ſequebantur eam, neque reflectebantur.
Altitudinem habebant abſides earum, & 18
videbant; abſis enim earum quatuor plena
erat oculis circunquaque. Cùm irent anima- 19
lia, ibant rotæ; cùm attollerent ſe animalia de
terra, attollebant ſe rotæ cum eis. Quocunq; 20
ibat ventus, ibant illa, & rotæ proficiſcebantur
cum eis; quia ſpiritus vitalis erat in rotis.
Quoties ibant illa, ibant iſtæ; quoties con- 21
ſiſtebant illa, conſiſtebant iſtæ; & quoties illa
ſe attollebant à terra, attollebant ſe rotæ cum
eis; quia ſpiritus vitalis erat in rotis. Ex- 22
panſa autem erat ſuper caput animalium
quædam quaſi ſpecies aſpectûs cryſtalli formi-
dabilis: Et ſub hac, alæ earum rectæ erant 23
una ex adverſo alterius, tam supernè quàm
inferné: binæ tegentes *vultum* eorum, binæ
verò tegentes corpus eorum. Et audivi ſo- 24
nitum alarum eorum ut ſonitum aquarũ mul-
tarũ, & ut vocem Domini, quum illa incede-
rent; vel ut murmur loquelæ in caſtris:
quum autem conſiſterent, retinebant alas ſu-
as; Sed ſonus edebatur ſuper umbraculum 25
quod imminebat capitib⁹ eorum. Super um- 26
braculum autem quod imminebat capitibus
eorum, erat quaſi aſpectus lapidis ſapphiri,
& quaſi figura throni: & ſuper throni figu-
ram, quaſi ſpecies & quaſi aſpectus hominis
inſidebat ſuperné. Et vidi quaſi aſpectum 27
Dei, & quaſi aſpectum ignis intrinſecus cir-
cundantis eum à ſpecie lumborum ejus ſur-
ſum verſùs: à lumbis autem ejus deorſum
verſùs, vidi tanquam aſpectum ignis: & ful-
gor cingebat eum. Qualis eſt aſpectus arcûs 28
illius qui fit in nubibus die pluvio, talis erat
aſpectus fulgoris qui cingebat eum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

14 * والحيوانات تركض ولا ترجع * مثل منظر البرق * ونظرت واذا بكرة واحدة على الارض
15 بجانب الحيوانات للاربعة * ومنظر البكرات وصنعها مثل منظر المسن * وشبه واحد في 16
الاربعة * ومنظرها وعملها كان كما تكون بكرة في بكرة * على جوانبها الاربعة تسير ولا تلتفت 17
عند ما تسير * وحيث ظهورها فكان ارتفاعها * ونظرتها وظهورها مملوءة اعينا من حولها 18
للاربعة * وعند ما تسير الحيوانات * تسير البكرات بجانبها * وعند ما ترتفع الحيوانات من 19
الارض * ترتفع البكرات * وحيث تكون السحابة * هناك تكون * وعند ما تسير الريح * 20
تسير الحيوانات * والبكرات ترتفع معها * من اجل انه كانت حياة في البكرات * عند ما تسير 21
تسير البكرات * وعند ما تقف تقف * وعند ما ترتفع من الارض ترتفع معها البكرات * لانه
كان في البكرات روح حياة * وشبه فوق راس الحيوانات مثل الجلد * مثل منظر جليد مخوف * 22
منبسط على اجنحتها من فوق * ومن تحت الجلد اجنحتها منبسطة * طايرات احد للاخر لكل 23
واحد اثنان مزدوجان يغطيان اجسادها * وسمعت صوت اجنحتها مثل صوت ماء كثير * 24
مثل صوت الله شداي الكافي * عند ما تسير * بصوت كلام مثل صوت المعسكر * وعند ما
25 تقف تسكن اجنحتها * واذا صوت من فوق الجلد الكاين فوق راسها * ومن فوق الجلد 26
الذي فوق راسها * مثل منظر حجر الفيروزج * وشبه عرش فوقه * وعلى شبه العرش شبه مثل
منظر انسان من فوق * ونظرت مثل منظر المها * ومثل منظر نار من داخله حوله * من منظر 27
حقوه والى فوق * ومن منظر حقوه والى اسفل نظرت منظر نار ونور حولها * مثل منظر القوس 28
اذا كان في السحاب في يوم المطر * هكذا موقع النور من حوله *

Porro animalia currebant, nec vertebant 14
ſeſe tanquam aſpectus fulguris. Præterea 15
aſpexi, & ecce rotæ ſingulæ ſuper terram
ad latus quatuor illorum animalium. A- 16
ſpectus autem rotarum & artificium ea-
rum erat velut aſpectus jaſpidis, eadémque
ipſis quatuor figura: & aſpectus atque
opificium earum erat, ac ſi eſſet rota in ro-
ta. Super quatuor latera ſua incedebant, 17
neque reflectebantur cùm incederent: Et 18
ubi erant dorſa earum, erat etiam altitudo
earum. Vidi quoque ipſas & dorſa ipſa-
rum quatuor, oculis plena circunquaque:
Quoties ibant animalia, ibant rotæ ad la- 19
tus illorum: et quoties attollebant ſe ani-
malia de terra, attollebant ſe rotæ: Ubi- 20
cunque erat illa nubes, illic erant: et quo-
ties abibat ventus, ibant animalia, et rotæ
attollebant ſe cum eis, quoniam vita inerat
rotis. Quoties diſcedebant, diſcedebant 21
rotæ; et quoties conſiſtebant, conſiſtebant;
& quoties attollebant ſe à terra, attolle-
bant ſe rotæ cum eis, quoniam inerat rotis
ſpiritus vitæ. Præterea ſpecies quædam 22
erat ſuper caput animalium ſimilis firma-
mento, ſimilis aſpectui glaciei formidabi-
lis, expanſa ſuper alas eorum ſupernè;
Et ſub firmamento alæ eorum erant ex- 23
tenſæ, volantes altera ad alteram: uni-
cuique duæ conjunctæ tegentes corpora
ipſorum. Et audivi ſtrepitum alarum i- 24
pſorum tanquam ſtrepitum aquæ multæ,
quaſi vocem Dei potentiſſimi ſufficientiſ-
ſimi (quum incedebant) cum voce locutio-
nis ſimili fremitui caſtrorum: quum autem
conſiſtebant, ſilebant alæ ipſorum. Et ec- 25
ce vox è ſuprema firmamenti parte, quod
erat ſuper capita eorum. Nam ſuper fir- 26
mamentum quod imminebat capiti eorum,
erat quidam velut aſpectus lapidis ſap-
phiri, & ſuper hunc forma quædam ſo-
lii, & ſuper ſolii formam tanquam ſpe-
cies hominis, deſupér. Et vidi quandam 27
veluti ſpeciem cryſtalli, & veluti ſpe-
ciem ignis ab interiore illius parte circa
ipſam, ab aſpectu lumbi ejus ſurſum
verſùs: ab aſpectu verò lumbi ejus de-
orſum verſùs vidi ſpeciem ignis quem
lux circundabat. Qualis eſt ſpecies ar- 28
cûs cùm eſt in nubibus die pluvio, talis
erat conditio ſplendoris circa ipſum.

יחזקאל׃ ב ג

ſuper cecidi & , vidi & : Domini gloriæ ſimilitudinis viſio Hæc
הוּא מַרְאֵה דְּמוּת כְּבוֹד־יְהוָה וָאֶרְאֶה וָאֶפֹּל עַל־
.loquentis vocem audivi & ,*meas facies*
פָּנַי וָאֶשְׁמַע קוֹל מְדַבֵּר׃

CAP. II. ב

.tecum loquar & ,tuos pedes ſuper ſta ,hominis Fili ,me ad dixit Et
וַיֹּאמֶר אֵלָי בֶּן־אָדָם עֲמֹד עַל־רַגְלֶיךָ וַאֲדַבֵּר אֹתָךְ׃ 1
ſuper me ſtatuit & ,me ad eſt locut' quando,ſpirit' me in eſt ingreſſus Et
וַתָּבֹא בִי רוּחַ כַּאֲשֶׁר דִּבֶּר אֵלַי וַתַּעֲמִדֵנִי עַל־ 2
,hominis Fili,me ad dixit Et .me ad dictum audivi & ; meos pedes
רַגְלָי וָאֶשְׁמַע אֵת מִדַּבֵּר אֵלָי׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי בֶּן־אָדָם 3
quæ ,rebelles gentes ad , Iſrael filios ad te *ego Mittens*
שׁוֹלֵחַ אֲנִי אוֹתְךָ אֶל־בְּנֵי יִשְׂרָאֵל אֶל־גּוֹיִם הַמּוֹרְדִים אֲשֶׁר
ad uſque me in ſunt prævaricati eorũ patres & ipſi: me contra rebellaverũt
מָרְדוּ־בִי הֵמָּה וַאֲבוֹתָם פָּשְׁעוּ בִי עַד־
mittens ego ,corde duri & ,*faciebus* duri filii Et .*iſtius diei corpus*
עֶצֶם הַיּוֹם הַזֶּה׃ וְהַבָּנִים קְשֵׁי פָנִים וְחִזְקֵי־לֵב אֲנִי שׁוֹלֵחַ 4
.Deus Dominus dixit Sic , eos ad dices & *: illos ad* te
אוֹתְךָ אֲלֵיהֶם וְאָמַרְתָּ אֲלֵיהֶם כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה׃
, *ipſi rebellionis* domus quia ,ceſſaverint ſi & , audierint ſi ipſi Et
וְהֵמָּה אִם־יִשְׁמְעוּ וְאִם־יֶחְדָּלוּ כִּי בֵּית מְרִי הֵמָּה 5
, hominis fili tu Et .eorum medio in fuit propheta quòd ſcient &
וְיָדְעוּ כִּי נָבִיא הָיָה בְתוֹכָם׃ וְאַתָּה בֶן־אָדָם 6
,*retractantes* quoniam,metuas ne eorum verbis à & , eis ab timeas ne
אַל־תִּירָא מֵהֶם וּמִדִּבְרֵיהֶם אַל־תִּירָא כִּי סָרָבִים
eorum verbis A : *habitans tu ſcorpionibus* cum & ,tecum ſpinæ &
וְסַלּוֹנִים אוֹתָךְ וְאֶל־עַקְרַבִּים אַתָּה יוֹשֵׁב מִדִּבְרֵיהֶם
rebellionis domus quia ,*conſterneris* ne eorum *faciebus* à & ,timeas ne
אַל־תִּירָא וּמִפְּנֵיהֶם אַל־תֵּחָת כִּי בֵּית מְרִי
ſi & , audiant ſi : eos ad mea verba Loquerisque .*ipſi*
הֵמָּה׃ וְדִבַּרְתָּ אֶת־דְּבָרַי אֲלֵיהֶם אִם־יִשְׁמְעוּ וְאִם־ 7
quæ audi hominis fili tu Et .*ipſi rebellio* quoniã :ceſſent
יֶחְדָּלוּ כִּי מְרִי הֵמָּה׃ וְאַתָּה בֶן־אָדָם שְׁמַע אֵת אֲשֶׁר־ 8
Aperi .*rebellionis* domus ſicut,rebellis ſis Ne : te ad *dicens ego*
אֲנִי מְדַבֵּר אֵלֶיךָ אַל־תְּהִי־מֶרִי כְּבֵית הַמֶּרִי פְּצֵה
ecce & , vidi Et .*te ad dans ego* quæ comede & ,tuum os
פִיךָ וֶאֱכֹל אֵת אֲשֶׁר־אֲנִי נֹתֵן אֵלֶיךָ׃ וָאֶרְאֶה וְהִנֵּה־ 9
expandit Et .libri volumen ea in ecce & : me ad miſſa manus
יָד שְׁלוּחָה אֵלָי וְהִנֵּה־בוֹ מְגִלַּת־סֵפֶר׃ וַיִּפְרֹשׂ 10
eo in *ſcriptum* & : retro & ,antè ſcriptum *ipſum & ,meas facies ad* illud
אוֹתָהּ לְפָנַי וְהִיא כְתוּבָה פָּנִים וְאָחוֹר וְכָתוּב אֵלֶיהָ
.væ & ,gemitus & ,lamentationes
קִנִים וָהֶגֶה וָהִי׃

CAP. III. ג

comede : comede ,inveneris quod , hominis Fili:me ad dixit Et
וַיֹּאמֶר אֵלַי בֶּן־אָדָם אֵת אֲשֶׁר־תִּמְצָא אֱכוֹל אֱכוֹל 1
aperui Et .Iſrael *domum* ad loquere,vade &,iſtud volumen
אֶת־הַמְּגִלָּה הַזֹּאת וְלֵךְ דַּבֵּר אֶל־בֵּית יִשְׂרָאֵל׃ וָאֶפְתַּח 2
: me ad dixit Et .illud volumen me fecit comedere & : meum os
אֶת־פִּי וַיַּאֲכִלֵנִי אֵת הַמְּגִלָּה הַזֹּאת׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי 3
volumine *replebis* tua viſcera & ,*cibabis* tuum ventrem,hominis Fili
בֶּן־אָדָם בִּטְנְךָ תַאֲכֵל וּמֵעֶיךָ תְמַלֵּא אֵת הַמְּגִלָּה
mel ſicut meo ore in fuit & ,comedi Et .*te ad dans* ego quod , iſto
הַזֹּאת אֲשֶׁר אֲנִי נֹתֵן אֵלֶיךָ וָאֹכְלָה וַתְּהִי בְּפִי כִּדְבַשׁ
domum ad ingredere ,vade ,hominis Fili :me ad dixit Et .dulcedine *in*
לְמָתוֹק׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי בֶּן־אָדָם לֶךְ־בֹּא אֶל־בֵּית 4
populum ad non Nam : eos ad *meis verbis in loquêris &* , Iſrael
יִשְׂרָאֵל וְדִבַּרְתָּ בִדְבָרַי אֲלֵיהֶם׃ כִּי לֹא אֶל־עַם 5
.Iſrael domum ad *: miſſus tu lingua graves & , labio profundos*
עִמְקֵי שָׂפָה וְכִבְדֵי לָשׁוֹן אַתָּה שָׁלוּחַ אֶל־בֵּית יִשְׂרָאֵל׃

Verſio VULG. LAT.

CAP. II.

1 HÆc viſio ſimilitudinis gloriæ Dñi: & vidi, & cecidi in faciem meam, & audivi vocẽ loquentis. Et dixit ad me; Fili hominis,ſta ſuper pedes tuos, & loquar tecum. 2 Et ingreſſus eſt in me ſpiritus poſtquàm locutus eſt mihi, & ſtatuit me ſupra pedes meos: 3 & audivi loquentem ad me, Et dicentem; Fili hominis, mitto ego te ad filios Iſrael, ad gentes apoſtatrices, quæ receſſerunt à me: ipſi & patres eorũ prævaricati ſunt pactum meum uſque ad 4 diem hanc. Et filii durâ facie, & indomabili corde ſunt, ad quos ego mitto te: & dices ad eos; 5 Hæc dicit Dominus Deus; Si fortè vel ipſi audiant, & ſi fortè quieſcant, quoniam domus exaſperans eſt: & ſcient quia propheta fuerit in medio eorum. 6 Tu ergò, fili hominis, ne timeas eos, neque ſermones eorum metuas: quoniam increduli & ſubverſores ſunt tecum, & cum ſcorpionibus habitas: verba eorum ne timeas, & vultus eorum ne formides, quia domus exaſperans 7 eſt. Loquêris ergò verba mea ad eos, ſi fortè audiant, & quieſcant: quoniam irritatores ſunt. 8 Tu autem, fili hominis, audi quæcunque loquor ad te: & noli eſſe exaſperans, ſicut domus exaſperatrix eſt: aperi os tuum & com- 9 ede quæcunque ego do tibi. Et vidi, & ecce manus miſſa ad me, in qua erat involutus liber: & expandit illum coram me, qui erat ſcriptus intùs & foris: & ſcriptæ erant in eo lamentationes, & carmen, & væ.

CAP. III.

1 ET dixit ad me; Fili hominis, quodcunque inveneris comede: comede volumen iſtud, & vadens 2 loquere ad filios Iſrael. Et aperui os meum, & cibavit me 3 volumine illo: Et dixit ad me; Fili hominis, venter tuus comedet, & viſcera tua complebuntur volumine iſto, quod ego do tibi. Et comêdi illud: & factum eſt in ore meo ſicut mel dulce. 4 Et dixit ad me; Fili hominis, vade ad domum Iſrael, & loquêris verba mea ad eos. 5 Non enim ad populum profundi ſermonis & ignotæ linguæ tu mitteris, ad domum Iſrael:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. β'.

1 ΑΥΤΗ ἡ ὅρασις (α) ὁμοιώματος δόξης κυρίου. καὶ ἴδον, καὶ πίπτω ἐπὶ πρόσωπόν μου, καὶ ἤκουσα φωνὴν λαλοῦντος. Καὶ εἶπε πρός με, Υἱὲ ἀνθρώπου, στῆθι ἐπὶ 2 τοὺς πόδας σου, καὶ λαλήσω πρὸς σέ. Καὶ ἦλθεν ἐπ' ἐμὲ πνεῦμα, καὶ ἀνέλαβέ με, καὶ (β) ἐξῆρέ με, καὶ ἔστησέ με ἐπὶ τοὺς πόδας μου, καὶ ἤκουον αὐτοῦ λαλοῦντος πρὸς 3 μέ. Καὶ εἶπε πρός με, Υἱὲ ἀνθρώπου, (γ) ἐξαποστέλλω ἐγώ σε πρὸς τὸν οἶκον τοῦ Ἰσραήλ, τοὺς παραπικραίνοντάς με, οἵτινες παρεπίκρανάν με, αὐτοὶ καὶ οἱ πατέρες 4 αὐτῶν (δ) ἕως τῆς σήμερον ἡμέρας. (ε) Καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτούς, Τάδε λέγει (ζ) κύριος, 5 Ἐὰν ἄρα ἀκούσωσιν ἢ πτοηθῶσι. διότι οἶκος παραπικραίνων ἐστί, καὶ γνώσονται ὅτι 6 προφήτης εἶ σὺ ἐν μέσῳ αὐτῶν. Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, μὴ φοβηθῇς αὐτούς, μηδὲ ἐκστῇς ἀπὸ προσώπου αὐτῶν· διότι παροιστρήσουσι, καὶ ἐπισυστήσονται ἐπὶ σὲ κύκλῳ, καὶ ἐν μέσῳ σκορπίων σὺ κατοικεῖς. τοὺς λόγους αὐτῶν μὴ φοβηθῇς, καὶ ἀπὸ προσώπου αὐτῶν μὴ ἐκστῇς, διό- 7 τι οἶκος παραπικραίνων ἐστί. Καὶ λαλήσεις τοὺς λόγους μου πρὸς αὐτούς, ἐὰν ἄρα ἀκούσωσιν ἢ πτοηθῶσιν, (η) ὅτι οἶκος 8 παραπικραίνων ἐστί. Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, ἄκουε τοῦ λαλοῦντος πρὸς σέ, μὴ γίνου παραπικραίνων (θ), καθὼς ὁ οἶκος ὁ παραπικραίνων. χάνε τὸ στόμα σου, καὶ 9 φάγε (ι) ὃ ἐγὼ δίδωμί σοι. Καὶ ἴδον, καὶ ἰδοὺ χεὶρ ἐκτεταμένη πρός με, καὶ ἐν αὐτῇ κεφαλὶς βιβλίου. Καὶ ἀνείλησεν αὐτὴν ἐνώπιόν (κ) μου, καὶ ἦν ἐν αὐτῇ γεγραμμένα τὰ ἔμπροσθεν καὶ τὰ ὀπίσω· καὶ ἐγέγραπτο (λ) θρῆνος καὶ μέλος καὶ 1 οὐαί. Καὶ εἶπε πρός με, Υἱὲ ἀνθρώπου, κατάφαγε τὴν κεφαλίδα ταύτην, καὶ πορεύθητι καὶ λάλησον τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ. 2 Καὶ διήνοιξε τὸ στόμα μου, καὶ ἐψώμισέ με τὴν κεφαλίδα.

CAP. II.

1 HÆc viſio ſimilitudinis gloriæ Domini. Et vidi, & cado in faciem meam. Et audivi vocem loquentis, & dixit ad me; Fili hominis, ſta ſuper pedes tuos: & loquar ad 2 te. Et venit ad me ſpiritus, & aſſumpſit me, & elevavit me, & ſtatuit me ſuper pedes meos, & audiebam eum loquentem ad 3 me. Et dixit ad me; Fili hominis, mitto ego te ad domum Iſrael, exacerbantes me, qui quidem exacerbaverunt me, ipſi, & patres (a) eorum uſque ad hodiernam (b) diem. 4 Et dices ad eos; Hæc dicit (c) Dominus; 5 Si fortè audiant, aut paveant, quia domus exacerbans eſt: & ſcient, quia propheta es tu in 6 medio eorum. Et tu, fili hominis, non timeas eos, nec formides à facie eorum: quoniam inſanient, & congregabuntur contra te in circuitu: & in medio ſcorpionum tu habitas. Verba eorum ne timeas; & à facie eorum ne formides: quia domus exaſperans eſt. 7 Et loquêris verba mea ad eos: ſi fortè audiant, aut timeant: quia domus exacerbans eſt. 8 Et tu, fili hominis, audi loquentem ad te: noli eſſe exaſperans, ſicut domus exaſperatrix eſt. Aperi os tuum, & comede quod ego do tibi. 9 Et vidi: et ecce manus extenta ad me: & in ea (d) capitulum libri: & expandit illud coram me: & erant in eo ſcripta anteriora, & poſteriora: & inſcripta erat (e) lamentatio, & carmen, & væ. 1 Et dixit ad me; Fili hominis, comede capitulum iſtud: & vade, & loquere filiis Iſrael. 2 Et aperuit os meum, & cibavit me capitulo.

MS.A. (α) ὁμοίωμα τῆς δόξης (β) ἐξήγειρέν (γ) ἐξαποστελῶ (δ) ἠθέτησαν ἐν ἐμοὶ ἕως (ε) Καὶ υἱοὶ σκληροπρόσωποι καὶ στερεοκάρδιοι ἐγὼ ἀποστέλλω σε πρὸς αὐτούς· καὶ ἐρεῖς (ζ) κύριος κύριος. (η) διότι (θ) καὶ σύ, καθὼς (ι) ἃ (κ) ἐμοῦ, καὶ ἐν αὐτῇ γεγραμμένα ἦν τὰ ὄπισθεν καὶ τὰ ἔμπροσθεν· καὶ (λ) εἰς αὐτὴν θρῆνος

ΚΕΦ. γ'.

3 ΚΑὶ εἶπε πρός με, Υἱὲ ἀνθρώπου, τὸ στόμα σου φάγεται, καὶ ἡ κοιλία σου πλησθήσεται τῆς κεφαλίδος ταύτης τῆς δεδομένης εἰς σέ. καὶ ἔφαγον αὐτήν, καὶ ἐγένετο ἐν τῷ στόματί μου, ὡς μέλι 4 γλυκάζον. Καὶ εἶπε πρός με, Υἱὲ ἀνθρώπου, (α) βάδιζε καὶ εἴσελθε πρὸς τὸν οἶκον τοῦ Ἰσραήλ, καὶ λάλησον τοὺς λόγους 5 μου πρὸς αὐτούς. Διότι οὐ πρὸς λαὸν (β) βαθύγλωσσον σὺ ἐξαποστέλλῃ πρὸς τὸν οἶκον τοῦ Ἰσραήλ·

CAP. III.

3 ET dixit ad me; Fili hominis, os tuum comedet, & venter tuus implebitur capitulo iſto tibi dato. Et comêdi illud: & factum eſt in ore meo, ſicut mel, dulceſcens. 4 Et dixit ad me; Fili hominis, vade, & ingredere ad domum Iſrael, & loquere verba mea ad eos. 5 Non enim ad populum (a) profundæ linguæ tu mitteris ad domum Iſrael,

MS.A. (α) βάδιζε, εἴσελθε (β) βαθύχειλον καὶ βαρύγλωσσον σὺ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

הוּא חֵזוּ דְמוּת יְקָרָא דַיְיָ וַחֲזֵית וְאִשְׁתְּטָחִית עַל אַפַּי וּשְׁמַעִית קָל דְּמִתְמַלֵּיל׃
ב
1 וַאֲמַר לִי בַּר אָדָם קוּם עַל רַגְלָךְ וַאֲמַלֵּל עִמָּךְ׃ וְעָלַת בִּי רוּחָא כַּד מַלֵּל עִמִּי וַאֲקִימַתְנִי
2 3 עַל רַגְלַי וּשְׁמַעִית יָת דְּמִתְמַלֵּל עִמִּי׃ וַאֲמַר לִי בַּר אָדָם שָׁלַח אֲנָא יָתָךְ לְוָת בְּנֵי יִשְׂרָאֵל
לְוָת עַמְמַיָּא סַרְבָנַיָּא דִּסְרִיבוּ עַל מֵימְרִי אִנּוּן וַאֲבָהָתְהוֹן מְרַדוּ בְּמֵימְרִי עַד כְּדַן יוֹמָא
4 הָדֵין׃ וּמִתְקְרַן בְּנַיָּא אִנּוּן חֲצִיפֵי אַפַּיָּא וְתַקִּיפֵי לִבָּא אֲנָא שָׁלַח יָתָךְ לְוָתְהוֹן וְתֵימַר לְהוֹן
5 כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים׃ וְאִנּוּן אִם יְקַבְּלוּן אוּלְפָן וְאִם יִתְמַנְעוּן מִלְּמֶחְטֵי אֲרֵי עַם סַרְבָן
6 אִנּוּן וְיֵדְעוּן דִּי נְבִיָּא הֲוָה בֵּינֵיהוֹן׃ וְאַתְּ בַּר אָדָם לָא תִדְחַל מִנְּהוֹן וּמִפִּתְגָּמֵיהוֹן לָא
תִדְחַל אֲרֵי מְסָרְבִין וּמַקְשָׁן לְקִבְלָךְ וּבְנוֹ עַמָּא דְעוֹבָדֵיהוֹן דָּמָן לְעַקְרַבִּין אַתְּ יָתֵיב
7 וּמִפִּתְגָּמֵיהוֹן לָא תִדְחַל וּמִן קֳדָמֵיהוֹן לָא תִתְּבַר אֲרֵי עַם סַרְבָן אִנּוּן׃ וְתִתְנַבֵּי יָת
פִּתְגָּמֵי נְבוּאָתִי לְהוֹן אִם יְקַבְּלוּן אוּלְפָן וְאִם יִתְמַנְעוּן מִלְּמֶחְטֵי אֲרֵי עַם סַרְבָן אִנּוּן׃
8 וְאַתְּ בַּר אָדָם קַבֵּל יָת דִּי אֲנָא מְמַלֵּל עִמָּךְ לָא תְהֵי סַרְבָן כְּעַמָּא סַרְבָנָא אַרְכֵין נַפְשָׁךְ
9 וְקַבֵּל יָת דִּי אֲנָא יָהֵב לָךְ׃ וַחֲזֵית וְהָא דְמוּת יַד מְתוֹשְׁטָא לְצַד לְוָתִי וְהָא בֵיהּ מְגִלַּת
10 סִפְרָא׃ וּפְרַס יָתַהּ קֳדָמַי וְהִיא כְתִיבָא מֵאַפָּהָא וּמֵאֲחוֹרָהָא מַה דַּהֲוָה מִן שֵׁרוּיָא
וּמַה דַּעֲתִיד לְמֶהֱוֵי בְסוֹפָא וּכְתִיב בַּהּ דְּאִם יֶעְבְּרוּן בֵּית יִשְׂרָאֵל עַל אוֹרַיְתָא יִשְׁלְטוּן
בְּהוֹן עַמְמַיָּא וְאִם יֶעְבְּדוּן יָת אוֹרַיְתָא יְסוּף מִנְּהוֹן אִלְיָא וּדְוָנָא וְתֵינַהְתָּא׃
ג
1 וַאֲמַר לִי בַּר אָדָם יָת דְּמִתְיְהֵיב לָךְ קַבֵּל קַבֵּל מָא דִכְתִיב בִּמְגִלְּתָא הָדָא וְאֵיזִיל וְאִתְנַבֵּי
2 3 עַל בֵּית יִשְׂרָאֵל׃ וְאַרְכֵינִית יָת נַפְשִׁי וְאַחְכִּימַנִי מַה דִּכְתִיב בִּמְגִלְּתָא הָדָא׃ וַאֲמַר לִי
בַּר אָדָם נַפְשָׁךְ תִּסְבַּע וּמְעָךְ תְּמַלֵּי אִם תְּקַבֵּל מַה דִּכְתִיב בִּמְגִלְּתָא הָדָא דִּי אֲנָא יָהֵיב לָךְ
4 וְקַבֵּלְתַּהּ וַהֲווֹ פִתְגָּמָהָא בְּפוּמִי כִּדְבַשׁ חֲלֵי׃ וַאֲמַר לִי בַּר אָדָם אֶתָא אֵיזִיל לְוָת בְּנֵי
5 יִשְׂרָאֵל וְתִתְנַבֵּי בְּפִתְגָּמֵי נְבוּאָתִי לְהוֹן׃ אֲרֵי לָא לְוָת עַם עַמִּיקֵי מַמְלַל וְיַקִּירֵי לִישָׁן אַתְּ
שְׁלִיחַ לְאִתְנַבָּאָה אֱלָהֵן לְוָת בֵּית יִשְׂרָאֵל׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Hæc eſt viſio ſimilitudinis gloriæ Domini: & vidi, & cecidi pronus in faciem meam, & audivi vocem loquentis.

CAP. II.

1 ET dixit ad me: Fili hominis, ſta ſuper pedes tuos, & loquar tecum. 2 Et ingreſſus eſt in me ſpiritus cùm loqueretur mecum, & ſtatuit me ſuper pedes meos, & audivi loquentem mecum. 3 Et dixit ad me: Fili hominis, ego mitto te ad filios Iſrael, ad populos rebelles qui refractarii ſunt verbo meo: ipſi & patres eorum tranſgreſſi ſunt verbũ meum uſq; ad hujuſce diei articulum. 4 Filii autem vocati ſunt impudentes facie & duri corde ad quos ego mitto te: & dices ad eos, Hæc dicit Dñs Deus. 5 Si fortè ipſi ſuſcipiant diſciplinam, & deſinant peccare; quia popul' rebellis eſt: & ſciant quia propheta fuerit in medio eorum. 6 Tu autem fili hominis ne timeas eos, neque ſermones eorum metuas, quia rebelles ſunt & duri contra te: & in medio populi, cujus opera ſimilia ſunt ſcorpionibus, tu habitas: & à verbis eorum ne timeas, neq; formides à facie eorum, quoniam popul' contumax eſt. 7 Et prophetabis verba prophetiæ meæ eis, ſi fortè ſuſcipiant diſciplinam, & ſi quieſcant peccare, quia populus contumax eſt. 8 Tu autem fili hominis audi quod loquor tecum; ne ſis contumax ſicut populus rebellis: inclina animam tuam & ſuſcipe quod ego do tibi. 9 Et vidi, & ecce ſimilitudo manus extenſa eſt ad latus ad me: & ecce in ea erat volumen libri. 10 Et expandit illud coram me, & erat ſcriptum in fronte ſua & poſteriori ſuo, id quod fuit ab initio, & quod futurum eſt in fine: & ſcriptum erat in eo, Quòd ſi tranſgreſſi fuerint domus Iſrael Legem, dominarentur eis populi: & ſi facerent Legem, deficeret ab eis lamentatio, & gemitus & mœror.

CAP. III.

1 ET dixit ad me: Fili hominis, quod datur tibi ſuſcipe; ſuſcipe quod ſcriptum eſt in volumine iſto: & vade & vaticinare ſuper domum Iſrael. 2 Et inclinavi animam meam & docuit me quod ſcriptum erat in volumine iſto. 3 Et dixit ad me: Fili hominis, animam tuam ſatiabis & ventrem implebis, ſi ſuſceperis quod ſcriptum eſt in volumine iſto quod do tibi: & ſuſcepi illud, & fuerunt verba ejus in ore meo quaſi mel dulce. 4 Et dixit mihi: Fili hominis veni, & vade ad filios Iſrael, & prophetabis verba prophetiæ meæ illis. 5 Quia non ad populum profundæ linguæ & gravis eloquii tu mitteris ad prophetandum, ſed ad domum Iſrael.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

1 * ܩܦܠܐܘܢ * ܒ * ܘܗܟܢܐ ܗܘܐ ܚܙܘܐ ܕܕܡܘܬܐ ܕܐܝܩܪܐ ܕܡܪܝܐ. ܘܚܙܝܬ ܘ
ܢܦܠܬ ܥܠ ܐܦܝ. ܘܫܡܥܬ ܩܠܐ ܕܡܡܠܠ. ܘܐܡܪ ܠܝ. ܒܪܢܫܐ. ܩܘܡ ܥܠ ܪܓܠܝܟ ܘܐܡܠܠ
2 ܥܡܟ. * ܘܥܠܬ ܒܝ ܪܘܚܐ ܟܕ ܡܡܠܠ ܥܡܝ. ܘܐܩܝܡܬܢܝ ܥܠ ܪܓܠܝ. ܘܫܡܥܬܗ
3 ܕܡܡܠܠ ܥܡܝ. ܘܐܡܪ ܠܝ. ܒܪܢܫܐ. * ܡܫܕܪ ܐܢܐ ܠܟ. ܠܘܬ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܠܘܬ ܥܡܐ
4 ܡܪܘܕܐ ܕܡܪܕܘ ܒܝ ܗܢܘܢ ܘܐܒܗܝܗܘܢ. ܘܐܥܘܠܘ ܒܝ ܥܕܡܐ ܠܝܘܡܢܐ. * ܘܠܘܬ ܒܢܝܐ
5 ܕܩܫܝܢ ܐܦܝܗܘܢ ܘܥܫܝܢ ܠܒܘܬܗܘܢ. ܡܫܕܪ ܐܢܐ ܠܟ. ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ.
* ܟܒܪ ܢܫܡܥܘܢ. ܘܢܙܘܥܘܢ. ܡܛܠ ܕܒܝܬܐ ܐܝܬܝܗܘܢ ܡܡܪܡܪܢܐ. ܘܢܕܥܘܢ. ܕܢܒܝܐ ܐܝܬ
6 ܒܝܢܬܗܘܢ. * ܘܐܢܬ ܒܪܢܫܐ. ܠܐ ܬܕܚܠ ܡܢܗܘܢ. ܘܡܢ ܡܠܝܗܘܢ ܠܐ ܬܬܪܗܒ. ܕܡܪܝܢ
ܘܡܒܣܪܝܢ ܠܟ. ܡܛܠ ܕܒܝܢܝ ܥܩܪܒܐ ܥܡܪ ܐܢܬ. ܠܐ ܬܕܚܠ ܡܢ ܡܠܝܗܘܢ. ܘܡܢ ܐܦܝܗܘܢ.
7 ܠܐ ܬܬܪܗܒ. ܡܛܠ ܕܒܝܬܐ ܐܝܬܝܗܘܢ ܡܡܪܡܪܢܐ. * ܐܠܐ ܐܡܪ ܠܗܘܢ ܦܬܓܡܝ. ܟܒܪ ܢܫܡܥܘܢ.
8 ܘܢܙܘܥܘܢ. ܡܛܠ ܕܒܝܬܐ ܐܝܬܝܗܘܢ ܡܡܪܡܪܢܐ. * ܐܢܬ ܕܝܢ ܒܪܢܫܐ. ܫܡܥ ܡܕܡ ܕܐܡܪ ܐܢܐ ܠܟ.
ܠܐ ܬܗܘܐ ܡܡܪܡܪܢ ܐܝܟ ܒܝܬܐ ܡܡܪܡܪܢܐ. ܐܠܐ ܦܬܚ ܦܘܡܟ. ܘܐܟܘܠ ܡܕܡ ܕܝܗܒ ܐܢܐ
9 10 ܠܟ. * ܘܚܙܝܬ. ܘܗܐ ܐܝܕܐ ܦܫܝܛܐ ܠܘܬܝ. ܘܐܝܬ ܒܗ ܟܪܟܐ ܕܟܬܒܐ. * ܘܦܫܛܗ ܩܕܡܝ.
ܘܟܬܝܒ ܗܘܐ ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ ܘܡܢ ܒܣܬܪܗ. ܘܟܬܝܒܢ ܒܗ ܩܝܢܬܐ ܘܐܘܠܝܬܐ. ܘܐܘܝܐ.

1 * ܩܦܠܐܘܢ * ܓ * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܒܪܢܫܐ. ܡܕܡ ܕܡܫܟܚܬ ܐܟܘܠ. ܐܟܘܠ
2 ܟܪܟܐ ܗܢܐ. ܘܙܠ ܡܠܠ ܥܡ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. * ܘܦܬܚܬ ܦܘܡܝ.
3 ܘܐܘܟܠܢܝ ܟܪܟܐ ܗܘ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܒܪܢܫܐ. ܟܪܣܟ ܬܡܠܐ ܘܡܥܝܟ ܡܢ ܟܪܟܐ ܗܢܐ ܕܝܗܒ
4 ܐܢܐ ܠܟ. ܘܐܟܠܬܗ. ܘܗܘܐ ܒܦܘܡܝ ܐܝܟ ܕܒܫܐ ܚܠܝܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܒܪܢܫܐ. ܙܠ
5 ܥܘܠ ܠܫܒܝܬܐ ܠܘܬ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ ܦܬܓܡܝ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܐ ܠܘܬ
ܥܡܐ ܥܡܝܩ ܡܡܠܠܐ ܘܝܩܝܪ ܠܫܢܐ ܫܕܝܪ ܐܢܬ. ܐܠܐ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ.

CAP. II.

Itaque hujuſmodi erat aſpectus gloriæ Dñi, 1
quem cùm vidiſſem, procidi in faciem meam,
Deinde audivi vocem loquentem ac dicentem
mihi; Fili hominis, conſiſte in pedes tuos, &
alloquar te. Tunc ingreſſus eſt in me ſpirit⁹, 2
alloqueretur me, erexítq; me in pedes meos:
& audivi eum alloquentem me, & dicentem
mihi; Fili hominis, Miſſurus te ſum ad filios 3
Iſraelis & ad populum rebellem, qui contra
me rebellârunt, tam ipſi quàm majores eorũ,
& iniquè mecũ egerunt ad hunc uſque diem.
Ad filios inquam obſtinati vultûs & præduri 4
cordis ſum te miſſurus. Dic eis, Sic ait Dñs
dominorum. Fortè audient, ac trepidabunt 5
(familia ſunt enim exaſperans) & ſcient te
prophetam eſſe inter eos. Tu ergò fili hominis, 6
ne timeas eos, & verba eorũ ne formides:
inſoleſcent enim & aſpernabuntur te, quia
inter ſcorpiones habitas. Ne timeas eorũ verba,
& facies eorum ne formides; quia familia
ſunt exaſperans: Sed dic eis ſermones meos: 7
forſitan audient ac trepidabunt: quoniam familia
ſunt exaſperans. Tu vero fili hominis, 8
auſculta quod ſum tibi dicturus; Ne ſis contumax
ut familia iſta exaſperans, ſed aperi os
tuum, & comede quod ſum tibi daturus. Et 9
cùm aſpexiſſem, ecce manus ad me extendit
ſeſe, tenens volumen libri: Et explicavit illud 10
coram me (ſcriptum autem erat à fronte &
à tergo, ſcriptíque erant in eo concentus, carmina
lugubria, & lamentationes.)

CAP. III.

Dixítque mihi; Fili hominis, quod reperis, 1
comede: comede volumen iſtud, & vade, alloquere
filios Iſraelis. Cùm itaque aperuiſ- 2
ſem os meum, cibavit me volumine illo, Et 3
dixit mihi; Fili hominis, imple ventrem tuum
& viſcera tua volumine iſto quod tibi do:
quod ubi comedi, factum eſt in ore meo ſicut
mel dulce. Deinde dixit mihi; Fili hominis, 4
Vade, ingredere ad captivos, apud filios Iſraelis,
& refer illis ſermones meos. Quia ne- 5
quaquam ad populum profundæ loquelæ, aut
linguâ balbutientem te mitto; *ſed* ad domum
Iſraelis:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

1 * الفصل الثاني * هذه رويا مثل مجد الرب * فنظرت وسقطت على وجهي *
2 فسمعت صوت متكلم وقال لي * يا ابن الانسان قف على قدميك فاتكلم معك * فاتت علي
3 روح واخذتني وانهضتني واقامتني على قدمي * وسمعته يتكلم معي وقال لي * يا ابن الانسان
انا ارسلك لبيت اسرائيل الذين مرمروني * القوم الذين مرمروني * هم واباوهم شكوا في الى
4 نهار اليوم * وبنون وجوههم صفيقه وقلوبهم قاسيه * انا ارسلك اليهم فتقول لهم * هكذا
5 يقول الرب الرب * ان لعلهم يسمعون ويخافون * من اجل انهم بيت ممرمر هو * ويعلمون انك
6 انت نبي في وسطهم * وانت يا ابن الانسان لا تخفهم * ولا تفزع من وجههم * من اجل انهم
سيقاومونك ويقومون عليك * من حولك * وفي وسط عقارب انت تسكن * فلا تخش كلامهم * ومن
7 وجوههم لا تفزع * من اجل انهم بيت ممرمر هو * وانت يا ابن الانسان تكلم باقوالي معهم * ان
8 لعلهم يسمعون فيفزعون * من اجل انهم بيت ممرمر هو * وانت يا ابن الانسان اسمع المتكلم
9 معك * ولا تكن انت ممرمرا كما هم بيت ممرمر * افتح فمك وكل ما انا اعطيك اياه * فنظرت
10 واذا يد ممدوده نحوي وفيها طي سفر * فنشرها امامي * والمكتوبات فيها كانت من قدام
ومن خلف * وكتب فيها نوح ولحن وويل *

* الفصل الثالث *

1 2 * وقال لي يا ابن الانسان كل هذا الطي * وامض فتكلم مع بني اسرائيل * وفتح فمي
3 واطعمني هذا الطي * وقال لي * يا ابن الانسان فمك ياكل وبطنك يمتلي من هذا الطي
4 المعطاه لك * فاكلتها وصارت في فمي مثل عسل حلو * وقال لي * يا ابن الانسان امض
5 ادخل الى بيت اسرائيل * وتكلم باقوالي معهم * من اجل اني لست الى شعب عميق الشفه
وثقيل اللسان ارسلك * بل الى بيت اسرائيل *

CAP. II.

Hujuſmodi erat viſio ſimilitudinis gloriæ 1
Domini, quâ viſâ procubui in faciem
meam. Tum audivi vocem loquentis
qui dixit mihi; O fili hominis, ſta pedibus
tuis, ut colloquar tecum. Tunc advenit 2
ſuper me ſpiritus, qui me apprehenſum elevavit,
ſtatuítque ſuper pedes meos: &
audivi eum colloquentem mecum, & dicentem
mihi; O fili hominis, ego te mitto 3
ad domum Iſraelis qui exacerbaverunt
me; gentem qui exacerbaverunt me, tam
ipſi quàm patres eorum, in me dubitantes
ad hodiernum uſque diem: Filios quorum 4
facies impudentes & corda proterva. Ad
hos te mitto ut dicas eis, Sic dicit Dominus
Deus. Nam fortaſſis audient & expaveſcent 5
(domus enim refractaria ſunt
iſti) cognoſcéntque te prophetam eſſe in
medio ſui. Tu itaque O fili hominis, ne 6
formides eos, neque pertimeſcas vultum
eorum; licèt adverſaturi ſint tibi, & inſurrecturi
contra te undequaque. In medio
ſcorpionum tu habitas, at ne timeas verba
eorum, et ab eorum vultu ne terrearis: nam
domus refractaria ſunt iſti. Tu ergò O 7
fili hominis, refer ſermones meos ipſis:
fortaſſis enim audient, & paveſcent: nam
domus refractaria iſti ſunt. Et tu O 8
fili hominis, audi colloquentem tecum, et
ne ſis tu refractarius, quemadmodum iſti
ſunt domus refractaria: aperi os tuum, et
comede quod ego ſum tibi daturus. Cùmque 9
vidiſſem, ecce manum ad me porrectam,
tenentem libri pagellam: Explicavitque 10
eam ob oculos meos: ſcriptura autem
in ea, erant à fronte & à tergo; ſcriptúmque
erat in ea lamentatio, carmen,
& væ.

CAP. III.

Tum dixit mihi, O fili hominis, comede 1
pagellam iſtam, & abi locutum cum
filiis Iſraelis. Et aperuit os meum, deditque 2
mihi comedendum pagellam iſtam,
Et dixit mihi; O fili hominis, os tuum 3
comedet, & venter tuus implebitur hac
pagellâ tibi porrectâ: quam cùm comediſſem,
& facta eſſet in ore meo velut
mel dulce; Rurſus dixit mihi, O fili 4
hominis, vade ingredere ad domum Iſraelis,
& loquere cum eis ſermones meos.
Neque verò ad populum profundi labii & 5
gravis linguæ te mitto; ſed ad domum
Iſraelis:

יחזקאל : ג

non quorum *linguâ graves & labio profundos* multos populos ad Non
6 לֹא׀ אֶל־עַמִּים רַבִּים עִמְקֵי שָׂפָה וְכִבְדֵי לָשׁוֹן אֲשֶׁר לֹא־
audient ipsi , te *misero* eos ad *non si* : *eorum* verba *audias*
תִשְׁמַע דִּבְרֵיהֶם אִם־לֹא אֲלֵיהֶם שְׁלַחְתִּיךָ הֵמָּה יִשְׁמְעוּ
ipsi non quia , te *ad* audire *cupient non* Israel domus Et *.te ad*
7 אֵלֶיךָ׃ וּבֵית יִשְׂרָאֵל לֹא יֹאבוּ לִשְׁמֹעַ אֵלֶיךָ כִּי־אֵינָם
duri & ,fronte *rigidi* Israel domus omnis nam :me *ad* audire *cupientes*
אֹבִים לִשְׁמֹעַ אֵלָי כִּי כָּל־בֵּית יִשְׂרָאֵל חִזְקֵי־מֵצַח וּקְשֵׁי־
;eorum facies contra *fortes tuas facies* dedi Ecce *.ipsi* corde
8 לֵב הֵמָּה׃ הִנֵּה נָתַתִּי אֶת־פָּנֶיךָ חֲזָקִים לְעֻמַּת פְּנֵיהֶם
petra præ fortem adamantē Ut *.eorū* frontem contra fortem tuā frontē &
9 וְאֶת־מִצְחֲךָ חָזָק לְעֻמַּת מִצְחָם׃ כְּשָׁמִיר חָזָק מִצֹּר
,eorū *faciebus* à *consterneris* neque , eos timeas ne : tuā frontem dedi
נָתַתִּי מִצְחֶךָ לֹא־תִירָא אוֹתָם וְלֹא־תֵחַת מִפְּנֵיהֶם
omnia ,hominis Fili : me ad dixit Et *.ipsi rebellionis* domus quia
10 כִּי בֵּית־מְרִי הֵמָּה׃ וַיֹּאמֶר אֵלָי בֶּן־אָדָם אֶת־כָּל־
tuis auribus in & ,tuo corde in assume , te ad loquar quæ mea verba
דְּבָרַי אֲשֶׁר אֲדַבֵּר אֵלֶיךָ קַח בִּלְבָבְךָ וּבְאָזְנֶיךָ
,tui populi filios ad ,transmigrationem ad ingredere ,vade Et .audi
11 שְׁמָע׃ וְלֵךְ בֹּא אֶל־הַגּוֹלָה אֶל־בְּנֵי עַמֶּךָ
: Deus Dominus dixit Sic *: eos ad dices* & , eos ad *loquêris* &
וְדִבַּרְתָּ אֲלֵיהֶם וְאָמַרְתָּ אֲלֵיהֶם כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה
audivi & ,spiritus me assumpsit Et .cessaverint si & ,audierint Si
12 אִם־יִשְׁמְעוּ וְאִם־יֶחְדָּלוּ׃ וַתִּשָּׂאֵנִי רוּחַ וָאֶשְׁמַע
.suo loco de Domini gloria Benedicta *: magni fragoris* vocem me post
אַחֲרַי קוֹל רַעַשׁ גָּדוֹל בָּרוּךְ כְּבוֹד־יְהוָה מִמְּקוֹמוֹ׃
,suam sororem ad unaquæque contingentium ,animalium alarum *vocem* Et
13 וְקוֹל׀ כַּנְפֵי הַחַיּוֹת מַשִּׁיקוֹת אִשָּׁה אֶל־אֲחוֹתָהּ
spiritus Et *.magni fragoris* vocem & , ea contra rotarum vocem &
14 וְקוֹל הָאוֹפַנִּים לְעֻמָּתָם וְקוֹל רַעַשׁ גָּדוֹל׃ וְרוּחַ
manus & ,mei spiritus ira in amarus abii & :me assumpsit & ,me elevavit
נְשָׂאַתְנִי וַתִּקָּחֵנִי וָאֵלֵךְ מַר בַּחֲמַת רוּחִי וְיַד־
Abib--Tel transmigrationē ad veni Et .fortis me super Domini
15 יְהוָה עָלַי חָזָקָה׃ וָאָבוֹא אֶל־הַגּוֹלָה תֵּל אָבִיב
sedi & : ibi sedentibus ipsis sedi & ,Chebar flumen *ad* habitantium
הַיֹּשְׁבִים אֶל־נְהַר־כְּבָר וָאֵשֶׁר הֵמָּה יוֹשְׁבִים שָׁם וָאֵשֵׁב
septem fine à fuit Et .eorū medio in *stupefactus* diebus septem ibi
16 שָׁם שִׁבְעַת יָמִים מַשְׁמִים בְּתוֹכָם׃ וַיְהִי מִקְצֵה שִׁבְעַת
,hominis Fili : dicendo me ad Domini verbum fuit Et .dierum
17 יָמִים ° וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם
admonebis &,verbū meo ore de audies & :Israel domui te dedi speculatorē
צֹפֶה נְתַתִּיךָ לְבֵית יִשְׂרָאֵל וְשָׁמַעְתָּ מִפִּי דָּבָר וְהִזְהַרְתָּ
,eū admonueris non &,morieris moriēdo,impio *me dicendo In .me à* eos
18 אוֹתָם מִמֶּנִּי׃ בְּאָמְרִי לָרָשָׁע מוֹת תָּמוּת וְלֹא הִזְהַרְתּוֹ
,eū vivificandū ad impia sua via à impium *monendum ad*,fueris locutus nec
וְלֹא דִבַּרְתָּ לְהַזְהִיר רָשָׁע מִדַּרְכּוֹ הָרְשָׁעָה לְחַיֹּתוֹ
tua manu de ejus sanguinem & ,morietur *sua iniquitate in* impius ipse
הוּא רָשָׁע בַּעֲוֹנוֹ יָמוּת וְדָמוֹ מִיָּדְךָ
conversus fuerit non & ,impium admonueris *cùm* tu Et .requiram
19 אֲבַקֵּשׁ׃ וְאַתָּה כִּי־הִזְהַרְתָּ רָשָׁע וְלֹא־שָׁב
,morietur *sua iniquitate in* ipse : impia sua via à & ,sua impietate ab
מֵרִשְׁעוֹ וּמִדַּרְכּוֹ הָרְשָׁעָה הוּא בַּעֲוֹנוֹ יָמוּת
,sua justitia à *justum se avertendo in* Et .liberâsti tuam animam tu sed
20 וְאַתָּה אֶת־נַפְשְׁךָ הִצַּלְתָּ׃ וּבְשׁוּב צַדִּיק מִצִּדְקוֹ
: morietur ipse ; *ejus facies ad* offendiculū dabo & ,iniquitatē fecerit &
וְעָשָׂה עָוֶל וְנָתַתִּי מִכְשׁוֹל לְפָנָיו הוּא יָמוּת
memorabuntur non & ,morietur *suo peccato in* ,eum admonuisti non quia
כִּי לֹא הִזְהַרְתּוֹ בְּחַטָּאתוֹ יָמוּת וְלֹא תִזָּכַרְןָ
.requiram tua manu de ejus sanguinē & : fecit quas ,ejus justitiæ
צִדְקֹתוֹ אֲשֶׁר עָשָׂה וְדָמוֹ מִיָּדְךָ אֲבַקֵּשׁ׃

Versio VULG. LAT.

6 Neque ad populos multos profundi
sermonis,& ignotæ linguæ,
quorum non possis audire sermones
: & si ad illos mittereris, ipsi
7 audirent te. Domus autem Israel
nolunt audire te:quia nolunt audire
me:omnis quippe domus Israel
attritâ fronte est, & duro
8 corde. Ecce dedi faciem tuam
valentiorem faciebus eorum, &
frontem tuam duriorem frontib⁹
9 eorum. Ut adamantem, & ut silicem
dedi faciem tuam : ne timeas
eos, neque metuas à facie
eorum : quia domus exasperans
10 est. Et dixit ad me ;Fili hominis,
omnes sermones meos, quos ego
loquor ad te,assume in corde tuo,
11 & auribus tuis audi : Et vade,
ingredere ad transmigrationem,
ad filios populi tui, & loquêris
ad eos, & dices eis ; Hæc dicit
Dominus Deus : si fortè audiant,
12 & quiescant. Et assumpsit me
spiritus, & audivi post me vocem
commotionis magnæ ; Benedicta
gloria Domini de loco suo:
13 Et vocem alarum animalium percutientium
alteram ad alteram,
& vocem rotarum sequentium
animalia, & vocem commotionis
14 magnæ. Spiritus quoque levavit
me, & assumpsit me : &
abii amarus in indignatione spiritûs
mei : manus enim Domini
15 erat mecum, confortans me. Et
veni ad transmigrationem, ad acervum
novarum frugum,ad eos
qui habitabāt juxta flumen Chobar,
& sedi ubi illi sedebant : &
mansi ibi septem diebus mœrens
16 in medio eorum. Cùm autem
pertransissent septem dies,factum
est verbum Domini ad me, dicens;
17 Fili hominis,speculatorem
dedi te domui Israel : & audies
de ore meo verbum, & annuntiabis
18 eis ex me. Si dicente me
ad impium; Morte morieris :non
annuntiaveris ei, neque locutus
fueris ut avertatur à via sua impia,
& vivat : ipse impius in iniquitate
sua morietur, sanguinem
autem ejus de manu tua requirā.
19 Si autem tu annuntiaveris impio,
& ille non fuerit convers⁹ ab impietate
sua,et à via sua impia:ipse
quidem in iniquitate sua morietur,
tu autem animam tuam liberâsti.
20 Sed & si conversus justus à
justitia sua fuerit, & fecerit iniquitatem
: ponam offendiculum
coram eo,ipse morietur,quia non
annuntiâsti ei : in peccato suo
morietur, & non erunt in memoria
justitiæ ejus, quas fecit :
sanguinē verò ejus de manu tua
requiram.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

6 Οὐδὲ πρὸς λαοὺς πολλοὺς ἀλλοφώνους ἢ ἀλλογλώσσους,
οὐδὲ στιβαροὺς τῇ γλώσσῃ ὄντας,
ὧν οὐκ ἀκούσῃ τοὺς λόγους (γ)· καὶ εἰ πρὸς
τοιούτους ἐξαπέστειλά σε, οὗτοι ἂν εἰσήκουσάν
7 σου. Ὁ δὲ οἶκος τοῦ (ᵈ) Ἰσραὴλ οὐ μὴ θελήσουσιν
εἰσακοῦσαί σου, διότι οὐ βούλονται εἰσακούειν
μου, ὅτι πᾶς ὁ οἶκος Ἰσραὴλ φιλόνεικοί
8 εἰσι καὶ σκληροκάρδιοι. Καὶ ἰδοὺ δέδωκα
τὸ πρόσωπόν σου δυνατὸν κατέναντι τῶν
προσώπων αὐτῶν, καὶ τὸ νεῖκός σου κατισχύσω
9 κατέναντι τοῦ νείκους αὐτῶν· Καὶ ἔσται
διαπαντὸς κραταιότερον πέτρας (δ). μὴ
φοβηθῇς ἀπ᾽ αὐτῶν, μηδὲ πτοηθῇς ἀπὸ
προσώπου αὐτῶν, διότι οἶκος παραπικραίνων
10 ἐστί. Καὶ εἶπε πρὸς μέ, Υἱὲ ἀνθρώπου,
πάντας τοὺς λόγους οὓς λελάληκα μετὰ σοῦ,
λάβε εἰς τὴν καρδίαν σου, καὶ τοῖς ὠσί σου
11 ἄκουε. Καὶ βάδιζε, εἴσελθε εἰς τὴν αἰχμαλωσίαν
πρὸς τοὺς υἱοὺς τοῦ λαοῦ σου, καὶ λαλήσεις
πρὸς αὐτούς, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτούς,
Τάδε λέγει (ε) κύριος, ἐὰν ἄρα ἀκούσωσιν,
12 ἐὰν ἄρα ἐνδῶσι. Καὶ ἀνέλαβέ με
πνεῦμα, καὶ ἤκουσα κατόπισθέν μου φωνὴν
σεισμοῦ μεγάλου, (ζ) Εὐλογημένη ἡ δόξα
13 κυρίου ἐκ τοῦ τόπου αὐτοῦ. Καὶ ἴδον φωνὴν
(·) τῶν πτερύγων τῶν ζώων πτερυσσομένων ἑτέρα
πρὸς τὴν ἑτέραν, καὶ φωνὴ τῶν τροχῶν ἐχομένη
14 αὐτῶν, καὶ φωνὴ τοῦ σεισμοῦ. Καὶ τὸ πνεῦμα
(η) ἐξῆρέ με, καὶ ἀνέλαβέ με, καὶ ἐπορεύθην
(θ) ἐν ὁρμῇ τοῦ πνεύματός μου, καὶ χεὶρ
15 κυρίου ἐγένετο ἐπ᾽ ἐμὲ κραταιά. Καὶ εἰσῆλθον
εἰς τὴν αἰχμαλωσίαν μετέωρος, καὶ
περιῆλθον τοὺς κατοικοῦντας ἐπὶ τῷ ποταμῷ
τοῦ Χοβὰρ τοὺς ὄντας ἐκεῖ· καὶ ἐκάθισα ἐκεῖ
ἑπτὰ ἡμέρας, ἀναστρεφόμενος ἐν μέσῳ αὐτῶν.
16 Καὶ ἐγένετο μετὰ τὰς ἑπτὰ ἡμέρας λόγος
17 κυρίου πρὸς μέ, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου,
σκοπὸν δέδωκά σε τῷ οἴκῳ Ἰσραήλ,
καὶ ἀκούσῃ ἐκ στόματός μου λόγον,
18 καὶ διαπειλήσῃ αὐτοῖς παρ᾽ ἐμοῦ. Ἐν τῷ
λέγειν με τῷ ἀνόμῳ, Θανάτῳ θανατωθήσῃ·
καὶ οὐ διεστείλω αὐτῷ (ι) τοῦ διαστείλασθαι
τῷ ἀνόμῳ, ἀποστρέψαι ἀπὸ τῶν ὁδῶν
αὐτοῦ, τοῦ (κ) ζῆσαι αὐτόν· ὁ ἄνομος ἐκεῖνος
τῇ ἀδικίᾳ αὐτοῦ ἀποθανεῖται, καὶ τὸ αἷμα
αὐτοῦ (λ) ἐκ τῆς χειρός σου ἐκζητήσω.
19 Καὶ σὺ ἐὰν διαστείλῃ τῷ ἀνόμῳ, καὶ μὴ
ἀποστρέψῃ ἀπὸ τῆς ἀνομίας αὐτοῦ, καὶ (μ) ἀπὸ
τῆς ὁδοῦ αὐτοῦ, ὁ ἄνομος ἐκεῖνος ἐν τῇ
ἀδικίᾳ αὐτοῦ ἀποθανεῖται, καὶ σὺ τὴν ψυχήν σου
20 (ν) ῥύσῃ. Καὶ ἐν τῷ ἀποστρέφειν δίκαιον
ἀπὸ (ξ) τῶν δικαιοσυνῶν αὐτοῦ, καὶ (¨) ποιήσει
παράπτωμα, καὶ δώσω τὴν βάσανον εἰς πρόσωπον
αὐτοῦ, αὐτὸς ἀποθανεῖται, ὅτι οὐ διεστείλω
αὐτῷ· καὶ ἐν ταῖς ἁμαρτίαις αὐτοῦ ἀποθανεῖται,
διότι οὐ μὴ μνησθῶσιν αἱ δικαιοσύναι
αὐτοῦ (ο), καὶ τὸ αἷμα αὐτοῦ ἐκ τῆς χειρός σου ἐκζητήσω.

Neque ad populos multos alterius 6
vocis , aut alterius linguæ,
neque, qui graves linguâ sint,
quorum non audias sermones. Et
si ad tales misissem te ; hi utique
exaudissent te. Domus autem 7
Israel nolent exaudire te ; quia
nolunt exaudire me. Omnis quippe
domus Israel contentiosi sunt,
& duri corde. Et ecce dedi faciem 8
tuam potentem contra facies
eorum : & pervicaciam tuam
confortabo contra pervicaciam
eorum : Et erit semper (b) firmior 9
petrâ. Ne timeas ab eis,neque
metuas à facie eorum : quia
domus exasperans est. Et dixit 10
ad me; Fili hominis , omnes sermones,
quos loquutus sum tecum,
assume in cor tuum : & auribus
tuis audi. Et vade, ingredere ad 11
captivitatem, ad filios populi tui,
& loquêris ad eos , & dices ad
eos ; Hæc dicit Dominus; si fortè
audiant, si fortè remittant se.
Et assumpsit me spiritus: & audivi 12
post me vocem commotionis
magnæ ; Benedicta gloria Domini
de loco suo. Et (c) vidi vocem 13
alarum animalium percutientium;
altera ad alteram : &
vox rotarum juxta ea, & vox
commotionis. Et spiritus elevavit 14
me, & suscepit me, & (d)
abii in impetu spiritûs mei. Et
manus Domini facta est super me
fortis , Et intravi ad captivitatem 15
(e) sublimis:& circuivi habitantes
super fluvium Chobar,
qui erant ibi. Et sedi ibi septem
diebus (f) conversans in medio eorum.
Et factum est post septem 16
dies verbum Domini ad me, dicens ;
Fili hominis,speculatorem 17
dedi te domui Israel : & audies
de ore meo verbum, & comminaberis
eis ex me : In dicendo 18
me iniquo ; Morte morieris, &
non distinxisti (g) ei ad distinguendum
iniquo, ut avertat se à
viis suis , ut vivat; iniquus ille
in sua iniquitate morietur : &
sanguinem ejus de manu tua requiram.
Et tu, si distinxeris iniquo 19
, & non se averterit ab iniquitate
sua, & à via sua ; iniquus
ille in sua injustitia morietur:
& tu animam tuam liberabis.
Et in avertendo se justum à 20
justitiis suis, & faciet delictum,
& dabo (h) tormentum in faciem
ejus; ipse morietur , quia
non distinxisti ei : & in peccatis
suis morietur, quia non erunt in
memoria justitiæ ejus : et sanguinem
ejus de manu tua requiram.

MS.A. (γ) αὐτῶν· (ᵈ) τοῦ Ἰσραὴλ (δ) δέδωκα τὸ νεῖκός σου. μὴ (ε)
κύριος κύριος, (ζ) λεγόντων, (·) πτερύγων (η) κυρίου (θ) μετέωρος ἐν (ι)
οὐδὲ ἐλάλησας τοῦ (κ) ζητῆσαι (λ) ἐκ χειρὸς (μ) τῆς ὁδοῦ (ν) ἐρύσω. (ξ)
τῆς δικαιοσύνης (¨) ποιήσῃ (ο) ἃς ἐποίησεν, καὶ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

6 לָאלְוָת עַמְמַיָא סַגִיאִין תַּקִיפֵי מַמְלַל וְיַקִירֵי לִישָׁן דְּלָא תִשְׁמַע פִּתְגָמֵיהוֹן אִלּוּ לְוָתְהוֹן
7 שְׁלַחְתָּךְ אִנוּן יְקַבְּלוּן מִנָךְ׃ וּבֵית יִשְׂרָאֵל לָא יֵיבוּן לְקַבָּלָא מִנָךְ אֲרֵי לֵית אִנוּן צָבַן
8 לְקַבָּלָא לְמֵימְרִי אֲרֵי כָּל בֵּית יִשְׂרָאֵל חֲצִיפֵי אַפִּין וְתַקִיפֵי לִבָּא אִנוּן׃ הָא יְהָבֵית יַת אַפָּךְ
9 תַּקִיף כִּקְבֵיל בֵּית אַפֵּיהוֹן וְיַת בֵּית עֵינָךְ חֲסִין כִּקְבֵיל בֵּית עֵינֵיהוֹן׃ כְּמָא דְשָׁמִירָא תַּקִיף
מִטִינָרָא כֵּן יְהָבֵית יַת בֵּית עֵינָךְ חֲסִין כִּקְבֵיל בֵּית אַפֵּיהוֹן לָא תִדְחַל מִנְהוֹן וְלָא תִתְּבַר
10 מִן קֳדָמֵיהוֹן אֲרֵי עַם סָרְבָן אִנוּן׃ וַאֲמַר לִי בַּר אָדָם יַת כָּל פִּתְגָמֵי דַאֲמַלֵל עִמָּךְ קַבֵּיל
11 בְּלִבָּךְ וּבְאוּדְנָךְ שְׁמַע׃ וְאֶתָא אֱזֵיל לְוָת בְּנֵי גָלוּתָא לְוָת בְּנֵי עַמָּךְ וְתִתְנַבֵּי לְהוֹן וְתֵימַר
12 לְהוֹן כִּדְנָן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים אִם יְקַבְּלוּן אוּלְפָן וְאִם יִתְמַנְעוּן מִלְמֶחְטֵי׃ וּנְטַלְתַנִי רוּחָא
13 וּשְׁמָעִית בַּתְרַי קָל זִיעַ סַגִיא דִמְשַׁבְּחִין וְאָמְרִין בְּרִיךְ יְקָרָא דַיְיָ מֵאֲתַר בֵּית שְׁכִנְתֵּיהּ׃ וְקָל
14 גַּפֵּי בְרִיָתָא נָקְשָׁן חַד לְחַד וְקָל גַּלְגַלַיָא לְקִבְלֵיהוֹן וְקָל זִיעַ סַגִי׃ וְרוּחָא נְטַלְתַנִי וּנְסֵבְתַנִי
15 וַאֲזַלִית בִּמְרִיר בִּתְקוֹף רוּחִי וּנְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עֲלַי תַּקִיפַת׃ וַאֲתֵית לְוָת בְּנֵי גָלוּתָא לְתֵל
אָבִיב דְיָתְבִין עַל נְהַר כְּבָר וְנָחֵית בֵּינֵיהוֹן וְאִנוּן יָתְבִין תַּמָּן וִיתִיבִית תַּמָּן שַׁבְעָא יוֹמִין
16 שָׁתֵיק בֵּינֵיהוֹן׃ וַהֲוָה מִסוֹף שַׁבְעָא יוֹמִין וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי לְמֵימַר׃
17 בַּר אָדָם מַלִיף מַנִיתָךְ לְבֵית יִשְׂרָאֵל וּתְקַבֵּיל מִמֵּימְרִי פִּתְגָם וְתַזְהֵיר יַתְהוֹן מִלְמֶחְטֵי
18 קֳדָמַי׃ כַּד אֲמַרִית לְרַשִׁיעָא מֵמָת תְּמוּת וְלָא אַזְהַרְתֵּיהּ וְלָא מַלֵּלְתָּא לְאַזְהָרָא רַשִׁיעָא
19 מֵאָרְחֵיהּ דְרִשְׁעָא לְקַיָמוּתֵיהּ הוּא רַשִׁיעָא בְּחוֹבֵיהּ יְמוּת וּדְמֵיהּ מִן יְדָךְ אֶתְבַּע׃ וְאַתְּ
אֲרֵי אַזְהַרְתָּא רַשִׁיעָא וְלָא תָב מֵחוֹבֵיהּ וּמֵאָרְחֵיהּ דְרִשְׁעָא הוּא בְּחוֹבֵיהּ יְמוּת וְאַתְּ יַת
20 נַפְשָׁךְ שֵׁיזֵבְתָּא׃ וְכַד יְתוּב זַכָּאָה מִזְּכוּתֵיהּ וְיַעֲבֵיד שְׁקַר וְאֶתֵּן תַּקְלַת חוֹבִין קֳדָמוֹהִי הוּא
יְמוּת אֲרֵי לָא אַזְהַרְתֵּיהּ בְּחוֹבֵיהּ יְמוּת וְלָא יִדַּכְּרָן זַכְוָתֵיהּ דַעֲבַד וּדְמֵיהּ מִן יְדָךְ אֶתְבַּע׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Non ad populos multos duri sermonis & gravis linguæ, cujus verba non 6
possis audire : si enim ad eos misissem te, ipsi obedirent tibi. Domus autem 7
Israel nolunt obedire tibi, quia nolunt obedire verbo meo : quia
omnes Israelitæ impudentes facie, & duro corde sunt. Ecce dedi faciem 8
tuam duram contra facies eorum, & frontem tuam robustam contra frontem
eorum. Ut adamantem fortiorem petra, sic dedi frontem tuam fortiorem 9
contra *facies* eorum : ne timeas eos, nec formides à facie eorum, quia populus
contumax est. Et dixit ad me : Fili hominis, omnia verba mea quæ loquar 10
tecum, suscipe in corde tuo, & aurib⁹ tuis audi. Et veni, vade ad filios 11
transmigrationis ad filios populi tui, & prophetabis eis, & dices ad eos :
Hæc dicit Dñs Deus, Si fortè suscipiant disciplinam, & desinant peccare.
Et sustulit me spiritus, & audivi post me vocem commotionis magnæ laudantium 12
& dicentium : Benedicta gloria Dñi de loco majestatis suæ : Et 13
vocem alarum creaturarum sese invicem *complodentiū*, & vocem rotarum
contra eas, & vocem commotionis magnæ. Et spirit⁹ levavit me, & assumpsit 14
me, & abii in amaritudine in indignatione spirit⁹ mei, & prophetia à
facie Dñi super me confortata est. Et veni ad filios transmigrationis ad 15
acervum novarum frugum, qui habitant juxta fluvium Chobar : & quievi
inter eos, & ipsi sedebant ibi : & sedi ibi septem dieb⁹ tacens inter eos. Et 16
factum est in fine septem dierum, & factum est verbum prophetiæ à facie
Dñi, dicendo: Fili hominis, doctorem constitui te domui Israel, & suscipies 17
à verbo meo sermonem, & exhortaberis eos ne peccent coram me. Quando 18
dixero impio, Morte morieris, & non monueris eum, nec locut⁹ fueris ad exhortandum
impium à via sua mala ut vivat: ipse impi⁹ in peccato suo morietur,
& sanguinem ej⁹ de manu tua requiram. Si autem exhortat⁹ fueris 19
impium, & non fuerit aversus à peccato suo & à via sua impia, ipse in
peccato suo morietur: & tu animâ tuam liberâsti. Et quando aversus fuerit 20
just⁹ à justitia sua, & fecerit iniquitatē, ponam offendiculū peccatorum corā
eo: ipse morietur; quia non exhortat⁹ es eū: in peccato suo morietur, & non
eī ūt in memoria justitiæ ej⁹ quas fecit, & sanguinē ej⁹ de manu tua requirā.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܦ ܠܐ ܠܘܬ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ ܕܠܐ ܫܡܥ ܐܢܬ ܡܡܠܠܗܘܢ. ܘܐܠܘ ܠܘܬܗܘܢ ܫܕܪܬܟ. 6
ܫܡܥܝܢ ܗܘܘ ܠܟ. * ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܕܝܢ ܠܐ ܫܡܥܝܢ ܠܟ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܨܒܝܢ ܠܡܫܡܥܢܝ. 7
ܕܟܠܗ ܓܝܪ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܩܫܝܢ ܒܝܬ ܓܒܝܢܝܗܘܢ. ܘܩܫܝܢ ܠܒܗܘܢ. * ܗܐ ܝܗܒܬ 8
ܐܦܝܟ ܠܘܩܒܠ ܐܦܝܗܘܢ. ܘܒܝܬ ܓܒܝܢܝܟ ܐܥܫܢܬ ܠܘܩܒܠ ܒܝܬ ܓܒܝܢܝܗܘܢ. * ܐܝܟ 9
ܫܡܝܪܐ ܕܥܫܝܢ ܡܢ ܛܪܢܐ ܥܒܕܬ ܒܝܬ ܓܒܝܢܝܟ. ܠܐ ܬܕܚܠ ܡܢܗܘܢ. ܘܠܐ ܬܬܒܪ ܡܢ ܐܦܝܗܘܢ.
ܡܛܠ ܕܒܝܬܐ ܐܢܘܢ ܡܡܪܡܪܢܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܒܪ ܐܢܫܐ. ܟܠܗܘܢ ܡܠܝ ܕܐܡܪ ܐܢܐ ܠܟ. 10
ܩܒܠ ܒܠܒܟ. ܘܫܡܥ ܒܐܕܢܝܟ. * ܘܙܠ ܥܘܠ ܠܘܬ ܫܒܝܬܐ ܠܘܬ ܒܢܝ ܥܡܟ. ܘܡܠܠ 11
ܥܡܗܘܢ. ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܕܠܡܐ ܢܫܡܥܘܢ. ܘܢܙܘܥܘܢ. * ܘܫܩܠܬܢܝ 12
ܪܘܚܐ. ܘܫܡܥܬ ܡܢ ܒܣܬܪܝ ܩܠܐ ܕܙܘܥܐ ܪܒܐ ܕܐܡܪ. ܒܪܝܟ ܐܝܩܪܗ ܕܡܪܝܐ ܡܢ ܐܬܪܗ. * ܘܩܠܐ 13
ܕܓܦܝ ܚܝܘܬܐ. ܕܢܩܫܢ ܚܕܐ ܒܚܕܐ. ܘܩܠܐ ܕܓܝܓܠܐ ܥܡܗܘܢ. ܘܩܠܐ ܕܙܘܥܐ ܪܒܐ. * ܘܫܩܠܬܢܝ 14
ܪܘܚܐ ܘܕܒܪܬܢܝ. ܘܐܙܠܬ ܒܚܡܬܐ ܕܪܘܚܝ. ܘܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ ܥܫܝܢܐ ܥܠܝ. * ܘܐܬܝܬ 15
ܠܘܬ ܫܒܝܬܐ ܠܬܠ ܐܒܝܒ ܕܝܬܒ ܥܠ ܢܗܪ ܟܒܪ. ܘܝܬܒܬ ܬܡܢ ܫܒܥܐ ܝܘܡܝܢ. ܟܕ
ܡܬܡܗ ܐܢܐ ܒܝܢܬܗܘܢ. * ܘܡܢ ܒܬܪ ܫܒܥܐ ܝܘܡܝܢ. ܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ 16
ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ. ܕܘܩܐ ܝܗܒܬܟ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܕܬܗܘܐ ܫܡܥ ܡܢ ܦܘܡܝ 17
ܦܬܓܡܐ. ܘܬܙܗܪ ܐܢܘܢ ܡܢܝ. * ܟܕ ܐܡܪ ܐܢܐ ܠܚܛܝܐ. ܕܡܡܬ ܬܡܘܬ. ܘܠܐ ܐܙܗܪܬܝܗܝ ܘܠܐ 18
ܐܡܪܬ ܠܗ ܠܚܛܝܐ. ܕܢܙܕܗܪ ܡܢ ܐܘܪܚܗ ܘܢܚܐ. ܗܘ ܚܛܝܐ ܒܚܘܒܘܗܝ ܢܡܘܬ. ܘܕܡܗ ܡܢ
ܐܝܕܝܟ ܐܬܒܥܝܘܗܝ. * ܐܢ ܕܝܢ ܐܢܬ ܐܙܗܪܬ ܠܚܛܝܐ. ܘܠܐ ܗܦܟ ܡܢ ܚܛܝܬܗ ܘܡܢ ܐܘܪܚܗ ܒܝܫܬܐ. 19
ܗܘ ܒܚܛܗܘܗܝ ܢܡܘܬ. ܘܐܢܬ ܢܦܫܟ ܦܨܝܬ. * ܘܟܕ ܢܗܦܘܟ ܙܕܝܩܐ ܡܢ ܙܕܝܩܘܬܗ 20
ܘܢܥܒܕ ܥܘܠܐ. ܘܐܬܠ ܬܘܩܠܬܐ ܩܕܡܘܗܝ. ܘܢܡܘܬ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܙܗܪܬܝܗܝ. ܒܚܛܗܘܗܝ
ܢܡܘܬ. ܘܠܐ ܢܬܕܟܪܢ ܠܗ ܙܕܝܩܘܬܗ ܕܥܒܕ. ܘܕܡܗ ܡܢ ܐܝܕܝܟ ܐܬܒܥܐ.

6 Neque ad populos multos quorum tu loquelam minimè intelligas: (& quidem ſi ad hos mitterem te, auſcultarent tibi: 7 At Iſraelitæ non auſcultabunt tibi, quia nolunt auſcultare mihi: omnium enim Iſraelitarũ dura frons eſt & cor obſtinatum.) 8 Ecce durã reddo faciem tuam contra faciem eorum, & frontem tuam firmã reddo contra frontes eorum: 9 Ut adamantem ſilice duriorem reddo frontẽ tuam: ne formides eos, néve terrearis ab eis, quia familia ſunt contumax. 10 Præterea dixit mihi; Fili hominis, cunctos ſermones meos quos tibi dico, corde percipe, & auribus auſculta: 11 Et abiens ingredere ad captivos, apud populares tuos, alloquere eos, & dic eis; Sic ait Dominus dominorum: fortaſſis audient, & trepidabunt. 12 Tum ſuſtulit me ſpirit9, & audivi à tergo meo vocẽ cõmotionis magnæ dicentẽ, Benedicta ſit gloria Dñi de loco ſuo: 13 Strepitum alarum animaliũ illorũ alterius in alterã illidentium, & cum eis ſtrepitũ rotarũ, & vocẽ commotionis magnæ. 14 Cúmque ſuſtuliſſet me ſpirit9 & perduxiſſet me, abii impetu ſpiritûs mei: & manu Dñi ſuper me invaleſcente, 15 Ingreſſus ſum ad captivos in collẽ Chib (*i. doloris*) ſitũ juxta fluviũ Cebar, ibiq; ſedi ſeptem diebus attonitus inter eos. 16 Poſt ſeptem verò dies fuit ad me ſermo Dñi, dicendo; 17 Fili hominis, ſpeculatorẽ dedi te Iſraelitis, ut ſis audiens ex ore meo ſermones, & moneas eos nomine meo. 18 Quum dixero peccatori, Certiſſimè morieris; tu autem non monueris eum, neque dixeris peccatori illi ut ſibi caveat à via ſua, ut vivat: peccator ille in ſua *quidem* iniquitate morietur, at ſanguinem ejus è manib9 tuis exigam. 19 Verùm ſi monueris peccatorẽ, & non extrahat ſe à peccato ſuo, & à via ſua peſſima: iſte *quidem* in peccatis ſuis morietur, & tu animam tuam liberaveris. 20 Item quum juſtus *aliquis* averterit ſe à juſtitia ſua, & iniquitatem commiſerit; offendiculum ponam ante ipſum, & moriatur: eò quòd minimè monueris eum, in peccatis *quidem* ſuis morietur, & juſtitiæ quam fecerat, non erit illi recordatio, at ſanguinem ejus è manibus tuis repoſcam.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ولا الي شعوب كثيرة غريبة الاصوات ولا غريبة الالسنة * وليست ذي لسان ثقيل الذين لم 6
تسمع كلامهم * ولو ارسلتك الي هولاء لسمعوا منك * واما بيت اسرايل فلا يريدون ان يسمعوا 7
منك * من اجل انهم لا يشاوون ان يسمعوا مني * لان كل بيت اسرايل مشاجرون * وقلوبهم قاسية *
* وها اعطيت لوجهك امكانا قدام وجوههم * واقوي طرفك قدام طرفهم * وتكون كل حين 8 9
اشد من الصخر * اذ اعطيتك طرفا لا تخف منهم ولا تفزع من وجههم * من اجل انهم بيت
ممرمر هو * وقال لي * يا ابن الانسان جميع الاقوال التي تكلمت بها معك * خذها في قلبك 10
واسمعها باذنيك * وامض ادخل الي السبي الي بني شعبك * وتكلم معهم وقول لهم * هكذا 11
يقول الرب الرب * ان لعلهم يسمعون * ان لعلهم يفزعون * واخذني الروح * وسمعت من خلفي 12
صوت زلزلة عظيمة يقولون * مبارك مجد الرب من موضعه * وتطرب صوت اجنحة الحيوانات 13
طايرات احد الي احد * وصوت البكرات بجانبها * وصوت الزلزلة * وروح الرب رفعني واخذني * 14
فمضيت مرتفعا بوثبة روحي * ويد الرب العزيز صارت علي * فدخلت الي السبي مرتفعا * 15
وعبرت بالساكنين علي نهر خوبار الكاينين هناك * وجلست هناك سبعة ايام مترددا في وسطهم *
* الاصحاح الثاني * * وكان من بعد سبعة ايام قول الرب الي قايلا * 16
* يا ابن الانسان اعطيتك رقيبا لبيت اسرايل * فتسمع القول من فمي وتخاطبهم عني * عند 17 18
ما اقول للاثيم * بالموت تموت ولم تنذره ولم تتكلم معه * ليتعظ الاثيم ويرجع من طرقه ليحيي *
ذلك الاثيم بظلمه يموت * ودمه اطلبه من يدك * وان انت انذرت الاثيم * ولم يرجع عن 19
اثمه وطريقه * فذلك الاثيم يموت بظلمه * وانت تحيي نفسك * وعند ما يرجع الصديق 20
من عدله * ويصنع زلة * فاعطي عثرة لوجهه * وهو يموت لانك لم تنذره * ويموت بخطاياه *
من اجل ان معدلاته التي صنعها لا تذكر * ودمه اطلبه من يدك *

6 *Neque ad populos multos peregrinæ vocis, aut exterarum linguarum: neque ad habentes gravem linguam, quorum loquelam non audias. Vel ſi ad tales mitterem te, ſanè te audirent:* 7 *Verùm domus Iſraelis nolunt audire te, quia nolunt audire me: tota enim domus Iſraelis contentioſi ſunt, & corda eorum prædura.* 8 *Et ecce do faciei tuæ firmitatem contra facies eorum, & firmam reddo confidentiam tuam contra confidentiam eorum;* 9 *Erisque ſemper ſaxo durior: quandoquidem do tibi confidentiam, ne timeas eos, neque formides vultum eorum; quoniam domus refractaria ſunt iſti.* 10 *Et dixit mihi; O fili hominis, Omnes ſermones quos tecum habui, corde tuo percipe, & auribus tuis audi:* 11 *Tum vade, ingredere ad captivos, ad populares tuos, quos alloquêris, & dices eis; Sic ait Dominus Deus: fortaſſis enim audient, fortaſſis verebuntur.* 12 *Deinde aſſumpſit me ſpiritus, & audivi à tergo meo vocem concuſſionis magnæ, dicentium; Benedicta gloria Domini de loco ſuo.* 13 *Et vidi vocem alarum animalium, volantium alterius in alterum, & vocem rotarum juxta illa, vocémque concuſſionis.* 14 *Deinde ſpiritus Domini ſuſtulit accepitque me, abiique elevatus eruptione ſpiritûs mei: & manus Domini robuſta facta eſt ſuper me,* 15 *Ingreſſúſque ſum ad captivos elevatus, tranſivi per habitantes juxta flumen Chobar ibi exiſtentes, ibique ſedi ſeptem diebus verſans in medio eorum.*

Textus ſecundus.

16 *Poſt ſeptem autem dies fuit ſermo Domini ad me, dicens;* 17 *O fili hominis, conſtituo te ſpeculam domui Iſraelis, ut cùm audieris ſermonem ex ore meo, alloquaris eos vice mei.* 18 *Quum dixero iniquo, Morte morieris; & tu non monueris eum, nec allocutus eum fueris, quatenus monitum ſuſcipiens iniquus ille revertatur à viis ſuis, ut vivat: iniquus ille in ſcelere ſuo morietur, ſed ſanguinem ejus requiram de manu tua.* 19 *Quòd ſi tu monueris iniquum, neque revertatur ab iniquitate ſua & viâ ſuâ: is iniquus morietur in ſcelere ſuo, at tu quidem liberaveris animam tuam.* 20 *Similiter quum receſſerit juſtus ab æquitate ſua, culpámque commiſerit; ſupplicium ponam ante faciem ejus, & ipſe morietur eò quòd non monueris eum: (& verò morietur in peccatis ſuis, quoniam juſtitiarum ipſius quas fecerat, non erit memoria:) at ſanguinem ejus requiram de manu tua.*

, *juſtum* *peccandum* *non ad* , juſtum *eum* admonueris *cùm* tu Et
21 וְאַתָּה כִּי הִזְהַרְתּוֹ צַדִּיק לְבִלְתִּי חֲטֹא צַדִּיק
tu & , eſt admonitus quia , vivet vivendo : peccaverit non ipſe &
וְהוּא לֹא־חָטָא חָיוֹ יִחְיֶה כִּי נִזְהָר וְאַתָּה
:me ad dixit &:Domini *manus* ibi me ſup fuit Et .liberâſti tuam animam
22 אֶת־נַפְשְׁךָ הִצַּלְתָּ׃ וַתְּהִי עָלַי שָׁם יַד־יְהוָה וַיֹּאמֶר אֵלַי
, ſurrexi Et .tecum loquar ibi & , campum in egredere , Surge
23 קוּם צֵא אֶל־הַבִּקְעָה וְשָׁם אֲדַבֵּר אוֹתָךְ׃ וָאָקוּם
ſtans , Domini gloria ibi ecce & : campum in ſum egreſſus &
וָאֵצֵא אֶל־הַבִּקְעָה וְהִנֵּה־שָׁם כְּבוֹד־יְהוָה עֹמֵד
.*meas facies* in cecidi Et .Chebar fluvium juxta vidi quam ,gloria ſicut
כַּכָּבוֹד אֲשֶׁר רָאִיתִי עַל־נְהַר־כְּבָר וָאֶפֹּל עַל־פָּנָי׃
eſt allocûtus & :meos pedes ſup me ſtatuit & ,ſpiritus me in eſt ingreſſ' &
24 וַתָּבֹא־בִי רוּחַ וַתַּעֲמִדֵנִי עַל־רַגְלָי וַיְדַבֵּר
tu & .tuæ domus medio in te include ,Ingredere :me ad dixit & , me
25 אֹתִי וַיֹּאמֶר אֵלַי בֹּא הִסָּגֵר בְּתוֹךְ בֵּיתֶךָ׃ וְאַתָּה
non & : eis in te ligabunt & , funes te ſuper *dabunt* ecce ; hominis fili
בֶן־אָדָם הִנֵּה נָתְנוּ עָלֶיךָ עֲבוֹתִים וַאֲסָרוּךָ בָּהֶם וְלֹא
ad faciam adhærere tuam linguam Et .eorum medium in egredieris
26 תֵצֵא בְּתוֹכָם׃ וּלְשׁוֹנְךָ אַדְבִּיק אֶל־
: *arguentem virum in* eis eris non & ,mutus eris & , *tuum palatum*
חִכֶּךָ וְנֶאֱלַמְתָּ וְלֹא־תִהְיֶה לָהֶם לְאִישׁ מוֹכִיחַ
aperiam , tibi *me loquendo in* Et .*ipſi rebellionis* domus quia
27 כִּי בֵּית מְרִי הֵמָּה׃ וּבְדַבְּרִי אוֹתְךָ אֶפְתַּח אֶת־
Audiens : Deus Dominus dixit Sic : eos ad dices & , tuum os
פִּיךָ וְאָמַרְתָּ אֲלֵיהֶם כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה הַשֹּׁמֵעַ ׀
.*ipſi rebellionis* domus quia , ceſſet *ceſſans* & , audiat
יִשְׁמָע וְהֶחָדֵל ׀ יֶחְדָּל כִּי בֵּית מְרִי הֵמָּה׃

CAP. IV. ד

: *tuas facies ad* eum *dabis* & , laterem tibi ſume,hominis fili tu Et
1 וְאַתָּה בֶן־אָדָם קַח־לְךָ לְבֵנָה וְנָתַתָּה אוֹתָהּ לְפָנֶיךָ
eam adverſum *dabis* Et .Jeruſalaim civitatem eum ſuper *exarabis* &
2 וְחַקּוֹתָ עָלֶיהָ עִיר אֶת־יְרוּשָׁלִָם׃ וְנָתַתָּה עָלֶיהָ
eam contra *fundes* & ,*ligneam turrim* eam contra *ædificabis* & , obſidionem
מָצוֹר וּבָנִיתָ עָלֶיהָ דָּיֵק וְשָׁפַכְתָּ עָלֶיהָ
arietes eam adverſus pone & , caſtra eam *ſuper* *dabis* & : aggerem
סֹלְלָה וְנָתַתָּה עָלֶיהָ מַחֲנוֹת וְשִׂים־עָלֶיהָ כָּרִים
eam *dabis* & , *ferri* ſartaginem tibi ſume tu Et ,undique
3 סָבִיב׃ וְאַתָּה קַח־לְךָ מַחֲבַת בַּרְזֶל וְנָתַתָּה אוֹתָהּ
tuas facies *obſirmabis* & : civitatem inter &,te inter ferreum parietem
קִיר בַּרְזֶל בֵּינְךָ וּבֵין הָעִיר וַהֲכִינֹתָה אֶת־פָּנֶיךָ
ipſum ſignum ,eam *contra* *coarctabis* & , obſidionem in erit & , eam *ad*
אֵלֶיהָ וְהָיְתָה בַמָּצוֹר וְצַרְתָּ עָלֶיהָ אוֹת הִיא
pones & , ſiniſtrum tuum latus ſuper *jace* tu Et .Iſrael domui
4 לְבֵית יִשְׂרָאֵל׃ וְאַתָּה שְׁכַב עַל־צִדְּךָ הַשְּׂמָאלִי וְשַׂמְתָּ
quibus , dierum numerum ,illud ſuper Iſrael domus iniquitatem
אֶת־עֲוֺן בֵּית־יִשְׂרָאֵל עָלָיו מִסְפַּר הַיָּמִים אֲשֶׁר
tibi dedi ego Et .eorum iniquitatem portabis , illud ſuper *jacueris*
5 תִּשְׁכַּב עָלָיו תִּשָּׂא אֶת־עֲוֺנָם׃ וַאֲנִי נָתַתִּי לְךָ
trecentos , dierum numerum *ad* eorum iniquitatis annos
אֶת־שְׁנֵי עֲוֺנָם לְמִסְפַּר יָמִים שְׁלֹשׁ־מֵאוֹת
conſummabis Et .Iſrael dom' iniquitatẽ portabis &:dies nonaginta &
6 וְתִשְׁעִים יוֹם וְנָשָׂאתָ עֲוֺן בֵּית־יִשְׂרָאֵל׃ וְכִלִּיתָ
portabis & ,ſecundò dexterum tuum latus ſuper *jacebis* & , *hæc*
אֶת־אֵלֶּה וְשָׁכַבְתָּ עַל־צִדְּךָ הַיְמָנִי שֵׁנִית וְנָשָׂאתָ
diem , *annum in* *Diem* .diebus quadraginta ,Jehudah domus iniquitatem
אֶת־עֲוֺן בֵּית־יְהוּדָה אַרְבָּעִים יוֹם יוֹם לַשָּׁנָה יוֹם
.tibi *illud* dedi *annum in*
לַשָּׁנָה נְתַתִּיו לָךְ׃

Verſio VULG. LAT.

21 Si autem tu annuntiaveris juſto ut non peccet juſtus, & ille non peccaverit: vivens vivet, quia annuntiâſti ei, & tu animam tuã 22 liberâſti. Et facta eſt ſuper me manus Domini, & dixit ad me; Surgens egredere in campum, 23 & ibi loquar tecum. Et ſurgens egreſſus ſum in campum: & ecce ibi gloria Domini ſtabat quaſi gloria, quam vidi juxta fluvium Chobar: & cecidi in faciem meã. 24 Et ingreſſus eſt in me ſpiritus, & ſtatuit me ſuper pedes meos: & locutus eſt mihi, & dixit ad me; Ingredere, & includere in me-25 dio domûs tuæ. Et tu, fili hominis, ecce data ſunt ſuper te vincula, & ligabunt te in eis: & non egredieris de medio eorum. 26 Et linguam tuam adhærere faciam palato tuo, & eris mutus, nec quaſi vir objurgans: quia do-27 mus exaſperans eſt. Cùm autem locutus fuero tibi, aperiam os tuum, & dices ad eos; Hæc dicit Dominus Deus; Qui audit, audiat: & qui quieſcit, quieſcat: quia domus exaſperans eſt.

CAP. IV.

1 ET tu, fili hominis, ſume tibi laterem, & pones eum coram te, & deſcribes in eo civitatem Je-2 ruſalem. Et ordinabis adverſùs eam obſidionem. & ædificabis munitiones, & comportabis aggerem, & dabis contra eam caſtra, & pones arietes in gyro. 3 Et tu ſume tibi ſartaginem ferream, & pones eam in murum ferreum inter te, & inter civitatem: & obſirmabis faciem tuam ad eam, & erit in obſidionem, & circumdabis eam: ſignum eſt 4 domui Iſrael. Et tu dormies ſuper latus tuum ſiniſtrum, & pones iniquitates domûs Iſrael ſuper eo, numero dierum quibus dormies ſuper illud, & aſſu-5 mes iniquitatem eorum. Ego autem dedi tibi annos iniquitatis eorum, numero dierum trecentos & nonaginta dies: & portabis iniquitatem domûs Iſrael. 6 Et cùm compleveris hæc, dormies ſuper latus tuum dexterum ſecundó: & aſſumes iniquitatem domûs Juda quadraginta diebus: diem pro anno, diem, inquam, pro anno dedi tibi.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

21 Σὺ δὲ ἐὰν διαστείλῃ τῷ δικαίῳ τοῦ μὴ (π) ἁμαρτεῖν, ϗ αὐτὸς μὴ ἁμάρτῃ, ὁ δίκαιος ζωῇ ζήσεται, ὅτι διεστείλω αὐτῷ, ϗ σὺ (ρ) τὴν σεαυτοῦ ψυχὴν ῥύσῃ. 22 Καὶ ἐγένετο ἐπ' ἐμὲ χεὶρ κυρίου· ϗ εἶπε πρός με, Ἀνάστηθι, ϗ ἔξελθε εἰς τὸ πεδίον, ϗ ἐκεῖ λαληθήσεται πρὸς σέ. 23 Καὶ ἀνέστην ϗ ἐξῆλθον πρὸς τὸ πεδίον· ϗ ἰδοὺ ἐκεῖ δόξα κυρίου εἱστήκει, καθὼς ἡ ὅρασις, ϗ καθὼς ἡ (σ) δόξα κυρίου, ἣν ἴδον ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ τοῦ Χοβάρ· ϗ πίπτω ἐπὶ πρόσωπόν μου. 24 Καὶ ἦλθεν ἐπ' ἐμὲ πνεῦμα, ϗ ἔστησέ με (τ) ἐπὶ τοὺς πόδας μου, ϗ ἐλάλησε πρός με, ϗ εἶπέ μοι, Εἴσελθε, ϗ ἐγκλείσθητι ἐν μέσῳ τοῦ οἴκου σου. 25 Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, ἰδοὺ δέδονται ἐπὶ σὲ δεσμοὶ, ϗ δήσουσί σε ἐν αὐτοῖς, ϗ (υ) οὐ μὴ ἐξέλθῃς (φ) ἐκ μέσου αὐτῶν. 26 Καὶ τὴν γλῶσσάν σου συνδήσω, ϗ ἀποκωφωθήσῃ, ϗ οὐκ ἔσῃ αὐτοῖς εἰς ἄνδρα ἐλέγχοντα, διότι οἶκος παραπικραίνων ἐστί. 27 Καὶ ἐν τῷ λαλεῖν με πρὸς σὲ, ἀνοίξω τὸ στόμα σου, ϗ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, Τάδε λέγει (χ) κύριος, Ὁ ἀκούων ἀκουέτω, ϗ ὁ ἀπειθῶν (ψ) ἀπειθείτω, διότι οἶκος παραπικραίνων ἐστί.

21 *Tu autem ſi diſtinxeris juſto, ut non peccet, & ipſe non peccaverit; juſt' vitâ vivet, quia diſtinxiſti ei: & tu animam tuam* 22 *liberabis. Et facta eſt ſuper me manus Domini, & dixit ad me; Surge, & egredere in campum: et ibi alloquutio fiet* 23 *ad te. Et ſurrexi, et egreſſus ſum ad campum. Et ecce ibi gloria Domini ſtabat, (i) ſicut aſpectus, et ſicut gloria Domini, quam vidi, ſuper fluvium Chobar. Et cado in faciem meam:* 24 *Et venit in me ſpiritus: et ſtatuit me ſuper pedes meos: et loquutus eſt ad me, et dixit mihi; Ingredere, et includere in medio domûs tuæ.* 25 *Et tu, fili hominis, ecce data ſunt ſuper te vincula: et ligabunt te in eis: et non egredieris de medio eorum:* 26 *Et linguam tuam (k) colligabo, et eris mutus; et non eris eis in virum objurgantem: quia domus exaſperans eſt.* 27 *Et in loquendo me ad te, aperiam os tuum, et dices ad eos; Hæc dicit Dominus; Qui audit, audiat: et qui eſt inobediens, non obediat: quia domus exaſperans eſt.*

MS.A. (π) ἁμαρτάνειν, (ρ) τὴν ψυχήν σου (σ) δόξα, ἣν ἴδον (τ) ἐπὶ πόδας (υ) σὺ οὐ μὴ (φ) ἐξ αὐτῶν. Καὶ τὴν (χ) κύριος κύριος, (ψ) ἀπιθέτω,

ΚΕΦ. δ'.

1 ΚΑὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, λάβε σεαυτῷ πλίνθον, ϗ θήσεις αὐτὴν πρὸ προσώπου σου, ϗ διαγράψεις ἐπ' αὐτὴν πόλιν τὴν 2 Ἱερουσαλήμ. Καὶ δώσεις ἐπ' αὐτὴν περιοχὴν, ϗ οἰκοδομήσεις ἐπ' αὐτὴν προμαχῶνας, ϗ περιβαλεῖς ἐπ' αὐτὴν χάρακα, ϗ δώσεις ἐπ' αὐτὴν παρεμβολὰς, ϗ 3 τάξεις τὰς βελοστάσεις κύκλῳ. Καὶ σὺ λάβε σεαυτῷ τήγανον σιδηροῦν, καὶ θήσεις αὐτὸ τοῖχον σιδηροῦν ἀναμέσον σου ϗ ἀναμέσον τῆς πόλεως, ϗ ἑτοιμάσεις τὸ πρόσωπόν σου ἐπ' αὐτὴν, ϗ ἔσται ἐν συγκλεισμῷ, ϗ συγκλείσεις αὐτήν. σημεῖόν 4 ἐστι τοῦτο τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ. Καὶ σὺ κοιμηθήσῃ ἐπὶ τὸ πλευρόν σου τὸ ἀριστερὸν, ϗ θήσεις τὰς ἀδικίας τοῦ οἴκου Ἰσραὴλ ἐπ' αὐτοῦ, κατὰ ἀριθμὸν τῶν ἡμερῶν πεντήκοντα ϗ ἑκατὸν (α) ἃς κοιμηθήσῃ ἐπ' αὐτοῦ, ϗ λήψῃ τὰς ἀδικίας αὐτῶν. 5 Καὶ ἐγὼ δέδωκά σοι τὰς (β) ἀδικίας αὐτῶν εἰς ἀριθμὸν ἡμερῶν, ἐνενήκοντα ϗ ἑκατὸν ἡμέρας, ϗ λήψῃ τὰς ἀδικίας τοῦ 6 οἴκου Ἰσραήλ. Καὶ συντελέσεις (γ) ταῦτα, ϗ κοιμηθήσῃ ἐπὶ τὸ πλευρόν σου τὸ δεξιὸν, ϗ λήψῃ τὰς ἀδικίας τοῦ οἴκου Ἰούδα (δ) τεσσαράκοντα ἡμέρας· ἡμέραν εἰς ἐνιαυτὸν τέθεικά σοι.

CAP. IV.

1 *ET tu, fili hominis, ſume tibi (a) laterem: et pones eum ante faciem tuam: et deſcribes in eo civitatem Hieruſalem:* 2 *Et dabis ſuper eam obſidionem: et ædificabis ſuper eam propugnacula, et circumjacies ſuper eam vallum, et dabis ſuper eam caſtra, et ordinabis machinas miſſilium in gyro.* 3 *Et tu ſume tibi ſartaginem ferream: et pones eam murum ferreum inter te et civitatem: et parabis faciem tuam ſuper eam: et erit in concluſione, et concludes eam. Signum eſt hoc filiis Iſrael.* 4 *Et tu dormies ſuper latus tuum ſiniſtrum: et pones iniquitates domûs Iſrael ſuper eo, juxta numerum dierum (b) quinquaginta et centum, quos dormies ſuper illud: et aſſumes iniquitates eorum.* 5 *Et ego dedi tibi (c) iniquitates eorum in numero dierum (d) nonaginta, et centum dies; et ſumes iniquitates domûs Iſrael.* 6 *Et conſummabis hæc, et dormies ſuper latus tuum dextrum: et aſſumes iniquitates domûs Juda quadraginta diebus. Diem in annum poſui tibi.*

MS.A. (α) ἡμέρας ἃς (β) δύο ἀδικίας (γ) αὐτὰ πάντα, (δ) τεσσεράκοντα

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

21 וְאַתְּ אֲרֵי אַזְהַרְתְּ לְצַדִּיקָא בְּדִיל דְּלָא לְמֶחֱטֵי צַדִּיקָא וְהוּא לָא חָטֵי מֵחֵי יְחֵי אֲרֵי
22 אִזְדְּהַר וְאַתְּ יַת נַפְשָׁךְ שֵׁיזֵבְתָּא׃ וּשְׁרָת עֲלַי תַּמָּן רוּחַ נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ וַאֲמַר לִי קוּם
23 פּוּק לְבִקְעֲתָא וְתַמָּן אֲמַלֵּל עִמָּךְ׃ וְקָמֵית וּנְפַקִית לְבִקְעֲתָא וְהָא תַמָּן יְקָרָא דַיְיָ שְׁרֵיָא
24 כִּיקָרָא דַחֲזֵיתִי עַל נְהַר כְּבָר וְאִשְׁתְּטַחִית עַל אַפַּי׃ וְעַלַת בִּי רוּחָא וַאֲקִימַתְנִי עַל רַגְלָי
25 וּמַלֵּל עִמִּי וַאֲמַר עוּל אִטְּמַר בְּגוֹ בֵיתָךְ׃ וְאַתְּ בַּר אָדָם הָא גְזֵרִית פִּתְגָמֵי פוּמִי עֲלָךְ כְּאֵסוּר
26 גְּדִילָן דְּאָסְרִין בְּהֵן וְלָא תִפּוּק בֵּינֵיהוֹן׃ וְלִישָׁנָךְ אַדְבֵּיק לְחִכָּךְ וְתִשְׁתּוֹק וְלָא תְהֵי
27 לְהוֹן לִגְבַר מוֹכַח אֲרֵי עַם סָרְבָן אִנּוּן׃ וּבְמַלָּלוּתִי עִמָּךְ אַרְכִּין יַת נַפְשָׁךְ וְתֵימַר לְהוֹן
כִּדְנָן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים דִּמְקַבֵּל יְקַבֵּל אוּלְפָן וְדִי יִתְמְנַע מִלְמֶחֱטֵי אֲרֵי עַם
סָרְבָן אִנּוּן׃

ד

1 וְאַתְּ בַּר אָדָם סַב לָךְ אַבְנָא וְתִתֵּן יָתַהּ קֳדָמָךְ וְתִצּוּר עֲלַהּ קַרְתָּא יַת יְרוּשְׁלֵם׃
2 וְתִתֵּן עֲלַהּ צִיַר וְתִבְנֵי עֲלַהּ כַּרְקוֹם וְתִצְבּוֹר עֲלַהּ מְלֵיתָא וְתִשְׁרֵי עֲלַהּ מַשְׁרְיָן
3 וּמַנֵּי עֲלַהּ אֶפְרוֹרְיָן סְחוֹר סְחוֹר׃ וְאַתְּ סַב לָךְ מַסְרֵית בַּרְזֶל וְתִתֵּן יָתַהּ כּוֹתֶל
בַּרְזֶל בֵּינָךְ וּבֵין קַרְתָּא וְתַתְקֵין יַת אַפָּךְ לַהּ וּתְהֵי בִצְיָרָא וְתִצּוּר עֲלַהּ אָת הִיא
4 לְבֵית יִשְׂרָאֵל׃ וְאַתְּ שְׁכוּב עַל סִטְרָךְ דִּסְמָלָא וּתְשַׁוֵּי יַת חוֹבֵי בֵית יִשְׂרָאֵל עֲלוֹהִי
5 מִנְיַן יוֹמַיָּא דְּתִשְׁכּוּב עֲלוֹהִי תְּקַבֵּל יַת חוֹבֵיהוֹן׃ וַאֲנָא יְהַבִית לָךְ עַל חַד תְּרֵין
6 כְּחוֹבֵיהוֹן לְמִנְיַן יוֹמַיָּא תְּלָת מְאָה וְתִשְׁעִין יוֹמִין וּתְקַבֵּל חוֹבֵי בֵית יִשְׂרָאֵל׃ וְתַשְׁלֵים
יַת אִלֵּין וְתִשְׁכּוּב עַל סִטְרָךְ דִּימִינָא תִּנְיָנוּת וּתְקַבֵּיל יַת חוֹבֵי בֵית יְהוּדָה אַרְבְּעִין
יוֹמִין יוֹמָא לְשַׁתָּא יוֹמָא לְשַׁתָּא יְהַבְתִּנּוּן לָךְ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Tu autem ſi exhortatus fueris juſtum ut non peccet juſtus, & ipſe non peccaverit; vivens vivet, quia monitus eſt; tu autem animam tuam liberâſti. 21
Et manſit ſuper me ibi ſpirit' prophetiæ à facie Dñi, & dixit ad me: Surge 22
& egredere in campum, & ibi loquar tecum. Et ſurrexi & egreſſus ſum 23
in campum, & ecce ibi gloria Dñi reſidebat, quaſi gloria quam vidi juxta fluvium Chobar: & pronus cecidi ſuper faciem meam. Et ingreſſus eſt 24
in me ſpiritus, & ſtatuit me ſuper pedes meos, & locutus eſt mecum, & dixit: Ingredere & abſconde te in medio domus tuæ. Tu autem fili ho- 25
minis, ecce ſtatui *verba oris mei* ſuper te, ſicut vinculum funiculorum quibus ligant: & non egredieris in medium eorum. Et linguam tuam adhæ- 26
rere faciam palato tuo, & tacebis, & non eris eis vir increpans: quia populus contumax eſt. Et cùm locutus fuero tecum, inclinabo animam tuam, 27
& dices eis: Hæc dicit Dominus Deus: Qui ſuſcipit, ſuſcipiat diſciplinam; & qui ceſſat, ceſſet peccare; quia populus contumax eſt.

CAP. IV.

ET tu fili hominis ſume tibi lapidem, & pones coram te, & figurabis ſu- 1
per eum civitatem Jeruſalem: Et pones ſuper eam obſidionem, & ædifi- 2
cabis ſuper eam machinam, & comportabis adverſùs eam aggerem: & collocabis contra eam caſtra, & conſtitues contra eam duces per circuitum. Et tu tolle tibi ſartaginem ferream, & pones eam murum ferreum 3
inter te & civitatem: & diriges faciem tuam ad eam, & erit in obſidione, & obſidebis eam: ſignum eſt domui Iſrael. Et tu cuba ſuper latus tuum 4
ſiniſtrum, & pones peccata domus Iſrael ſuper illud: numero dierum quibus cubaveris ſuper illud, ſuſcipies peccata eorum. Et ego dedi tibi pro 5
uno duo *pro* peccatis eorum juxta numerum dierum trecentorum & nonaginta dierum: & ſuſcipies iniquitates domus Iſrael. Ubi enim hæc abſol- 6
veris, cubabis ſuper latus tuum dextrum ſecundò, & ſuſcipies iniquitates domus Juda quadraginta dieb', diem pro anno, diem pro anno dedi eos tibi.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܢ ܕܝܢ ܐܢܬ ܬܙܗܪ ܠܙܕܝܩܐ ܕܠܐ ܢܚܛܐ. ܘܠܐ ܢܚܛܐ .. ܙܕܝܩܐ ܚܝܐ ܢܚܐ ܕܐܬܙܗܪ .. ܘܐܢܬ ܢܦܫܟ ܐܦܨܬ. 21
* ܘܗܘܬ ܥܠܝ ܬܡܢ ܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܐܡܪ ܠܝ. ܩܘܡ ܦܘܩ ܠܒܩܥܬܐ. ܘܬܡܢ ܐܡܠܠ ܥܡܟ. 22
* ܘܩܡܬ ܢܦܩܬ ܠܒܩܥܬܐ. ܘܬܡܢ ܩܐܡ ܗܘܐ ܫܘܒܚܗ. ܕܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ .. ܐܝܟ ܫܘܒܚܐ 23
ܕܚܙܝܬ ܥܠ ܢܗܪܐ ܟܒܪ: ܘܢܦܠܬ ܥܠ ܐܦܝ. * ܘܥܠܬ ܒܝ ܪܘܚܐ. ܘܐܩܝܡܬܢܝ ܥܠ ܪ̈ܓܠܝ. 24
ܘܡܠܠ ܥܡܝ. ܘܐܡܪ ܠܝ. ܥܘܠ ܐܬܚܒܫ ܒܓܘ ܒܝܬܟ. * ܘܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ .. ܗܐ ܝܗܒܝܢ ܥܠܝܟ 25
ܐܣܘܪ̈ܐ. ܘܢܐܣܪܘܢܟ ܒܗܘܢ. ܕܠܐ ܬܦܘܩ ܒܝܢܬܗܘܢ. * ܘܠܫܢܟ ܐܕܒܩ ܒܚܢܟܟ ܘܬܫܬܘܩ. 26
ܘܠܐ ܬܗܘܐ ܠܗܘܢ ܠܓܒܪܐ ܡܟܣܢܐ. ܡܛܠ ܕܒܝܬܐ ܡܪܡܪܢܐ ܐܢܘܢ. * ܘܡܐ 27
ܕܡܡܠܠ ܐܢܐ ܥܡܟ: ܐܦܬܚ ܐܢܐ ܦܘܡܟ ܕܬܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ.
ܕܫܡܥ ܢܫܡܥ. ܘܕܙܐܥ ܢܙܘܥ. ܡܛܠ ܕܒܝܬܐ ܡܪܡܪܢܐ ܐܢܘܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܕ *

* ܐܢܬ ܕܝܢ ܒܪ ܐܢܫܐ .. ܣܒ ܠܟ ܠܒܢܬܐ. ܘܣܝܡܝܗ ܩܕܡܝܟ. ܘܨܘܪ ܥܠܝܗ ܡܕܝܢܬܐ 1
ܐܘܪܫܠܡ. * ܘܣܝܡ ܥܠܝܗ ܨܪܐ. ܘܒܢܝ ܥܠܝܗ ܚܠܩܘܡܐ. ܘܐܪܡܝ ܥܠܝܗ ܟܡܐܢܐ. 2
ܘܣܝܡ ܥܠܝܗ ܡܫܪܝܬܐ. ܘܥܒܕ ܠܗ ܟܘ̈ܐ ܥܨܝܪ̈ܬܐ ܚܕܪܝܗ. * ܘܐܢܬ ܣܒ ܠܟ ܛܓܢܐ 3
ܕܦܪܙܠܐ .. ܘܥܒܕܝܗܝ ܫܘܪܐ ܕܦܪܙܠܐ ܒܝܢܝܟ ܠܒܝܢ ܡܕܝܢܬܐ .. ܘܛܝܒ ܐܦܝܟ ܠܘܬܗ. ܘܬܗܘܐ
ܒܚܒܘܫܝܐ. ܘܬܬܟܪܝܗ. ܐܬܐ ܗܝ ܠܒܝܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܘܐܢܬ ܕܡܟ ܥܠ ܓܒܟ 4
ܕܣܡܠܐ .. ܘܣܝܡ ܥܘܠܐ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܥܠܘܗܝ. ܒܡܢܝܢ ܝܘܡܬܐ ܕܕܡܟ ܐܢܬ ܥܠܘܗܝ.
ܬܫܩܘܠ ܥܘܠܗܘܢ. * ܘܐܢܐ ܝܗܒܬ ܠܟ. ܬܪܬܝܢ ܥܘ̈ܠܝܢ ܠܡܢܝܢܐ ܕܝܘܡܬܐ. ܬܠܬܡܐܐ 5
ܘܬܫܥܝܢ ܝܘܡܝܢ. ܘܬܫܩܘܠ ܥܘܠܗ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. * ܘܡܐ ܕܫܠܡܬ ܗܠܝܢ. ܘܬܕܡܟ ܥܠ 6
ܓܒܟ ܕܝܡܝܢܐ. ܘܬܫܩܘܠ ܥܘܠܗ ܕܒܝܬ ܝܗܘܕܐ. ܐܪܒܥܝܢ ܝܘܡܝܢ. ܝܘܡܐ ܠܫܢܬܐ
ܝܗܒܬ ܠܟ.

Verùm ſi monueris juſtum ne peccet, & non peccaverit: juſtus ille vivet quòd monitus fuerit, & tu animam tuam liberaveris. 21 Deinde fuit ibi ſuper me manus Domini, dixítque mihi; Surge egredere in campum, & ibi te alloquar. 22 Quarè ſurgens egreſſus ſum in campum, ibíque ſtabat gloria Dei Iſraelis, ſimilis gloriæ quam videram juxta fluvium Cebar: unde procidi in faciem meam. 23 Sed ingreſſus in me ſpiritus erexit me in pedes meos: tum allocutus eſt me *Dominus*, dixítque mihi; Ingredere, include te intra domum tuam. 24 Tibi autem fili hominis, ecce injecturi ſunt tibi vincula, iiſque te ligaturi, ut non egrediaris inter eos. 25 Quapropter linguam tuam adhæreſcere faciam cœlo palati tui, ut obmuteſcas, & non ſis eis vir objurgator; quia familia ſunt contumax. 26 Sed quum alloquar te, aperiam os tuum ut dicas eis; Sic ait Dominus dominorum, *Si* quis audiat, audiat; & *ſi* quis trepidet trepidet: nam domus ſunt contumax. 27

CAP. IV.

CÆterùm tu fili hominis, accipe tibi laterem, pone ante te, & incîde in eum urbem Jeroſolymam: 1 Deinde obſidionem pone contra illam, extrue contra eam aggeres, inſidias tende contra eam, caſtra fige contra eam, & fac illi obliquas per circuitum feneſtellas. 2 Tu deinde ſume tibi ſartaginem ferream, eamque compone in murum ferreum inter te & urbem, faciem tuam compara adverſùs eam, ſit intra ſeptum, & obſide eam. Hoc ſignum eſto Iſraelitis. 3 Tu autem incumbe lateri tuo ſiniſtro, imponens ei iniquitatem Iſraelitarum: numero dierum quibus incumbes ei, feres iniquitatem illorum. 4 Ego enim do tibi duas iniquitates ad numerum dierum, *nempe* trecentorum nonaginta dierum, quibus feres iniquitatem Iſraelitarum. 5 Cùm hos abſolveris, incumbes iterum lateri tuo dextero, feréſque iniquitatem domûs Judæ quadraginta diebus: diem pro anno do tibi. 6

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وَان انت انذرت الصديق ان لا يخطي * وهو فلا يخطي * فالصديق يحيي حياة لانك 21
انذرته * وانت تنجي نفسك * وصارت علي يد الرب وقال لي * قم واخرج الي الصحرا * وهناك 22
يتكلم معك * فقمت وخرجت الي الصحرا * واذا هناك مجد الرب قايم * كمثل المنظر وكمثل 23
المجد الذي رايته علي نهر خوبار * فسقطت علي وجهي * فاتي علي روح * واقامني علي قدمي * 24
وتكلم معي وقال لي * ادخل واحبس في وسط بيتك * وانت يا ابن الانسان ها اعطيت 25
عليك رباطات فيربطونك بها * وانت فلا تخرج منها * واشكل لسانك فتخرس * ولا تكن 26
لهم رجلا موبخا * من اجل انهم بيت ممرمر هو * وعند ما اتكلم معك افتح فمك * فتقول 27
لهم * هكذا يقول الرب الرب * السامع ليسمع * والعاصي ليعصي * من اجل انهم
بيت ممرمر هو *

* الفصل الرابع *

* وانت يا ابن الانسان خذ لك لبنة * وضعها قدام وجهك * وخط عليها مدينة ايروسليم * 1
* وضع عليها رماما * وتبني عليها مجانيق * وتحيط عليها سياجا * وتعطي عليها معسكرا * 2
وتربت من حولها مرامي * وانت خذ لنفسك طاجنا من حديد * وضع له حايطا من حديد 3
بينك وبين المدينة * تستعد بوجهك عليها * وتصير في حبس وتحبسها * هذه هي علامة لبني
اسراييل * وانت ترقد علي جنبك الايسر * وتضع مظالم بيت اسراييل عليه * كعدد الايام 4
مايه وخمسين يوما التي تضطجع فيها عليه * وتاخذ ظلاماتهم * وانا اعطيتك ظلاماتهم 5
بعدد الايام مايه وتسعين يوما * وتاخذ ظلامات بيت اسراييل * وتكملها جميعا * وتضطجع 6
علي جنبك الايمن * وتاخذ مظالم بيت يهودا اربعين يوما * اليوم بسنة وضعت لك *

Quòd ſi tu juſtum illum monueris ne peccet, & ipſe non peccaverit; is quidem juſtus omnino vivet eò quòd monueris eum, & tu liberaveris animam tuam. 21 *Præterea facta eſt ſuper me manus Domini, qui dixit mihi; Surge, egredere in deſertum, ibique ſermo tecum habebitur.* 22 *Quapropter ſurgens egreſſus ſum in deſertum, & ecce ibi gloriam Domini ſtantem, juxta viſionem & juxta gloriam illam quam videram ſuper flumen Chobar: tum procidi in faciem meam.* 23 *Venit autem ſuper me ſpiritus, & erexit me ſuper pedes meos, allocutus eſt me, & dixit mihi; Ingredere, teque include in medio domûs tuæ.* 24 *Tu verò O fili hominis, ecce injecta ſunt tibi vincula quibus te ligabunt, è quibus tu non evades:* 25 *En innodabo linguam tuam, & obmuteſces, ut non ſis eis vir objurgator; quia domus refractaria iſti ſunt.* 26 *Cùm autem colloquar tecum, aperiam os tuum, & dices eis; Sic ait Dominus Deus; Qui audit, audiat; & qui rebellis eſt, rebellet: nam domus refractaria ſunt iſti.* 27

CAP. IV.

ET tu O fili hominis, accipe tibi laterem, ponito eum ante faciem tuam, & delineato ſuper eum urbem Jeroſolymam: 1 *Obſidionem pones adverſùs eam, ædificabis adverſùs eam machinas ad jaculanda ſaxa, cinges eam ſepto, pones adverſùs eam caſtra, & diſpones circa eam aggeres ad jaculanda tela.* 2 *Tu prætereà ſume tibi ſartaginem ferream, & pones eam murum ferreum inter te & inter urbem: parabis faciem tuam adverſùs eam, ut ſit in obſidione & obſideas eam. Hoc eſt ſignum filiis Iſraelis.* 3 *Et tu jacebis ſuper latus tuum lævum, eique impones ſcelera domûs Iſraelis, juxta numerum dierum, centum ſcilicet quinquaginta dierum, quibus jacebis ſuper illud, feréſque ſcelera eorum.* 4 *Ego enim dedi tibi ſcelera eorum juxta numerum dierum, centum ſcilicet nonaginta dierum, feréſque ſcelera domûs Iſraelis,* 5 *His integrè abſolutis, jacebis ſuper latus tuum dexterum, feréſque ſcelera domûs Judæ quadraginta diebus: diem pro anno poſui tibi.* 6

יחזקאל: ה

tuum brachium & , *tua facies* obfirmabis Jeruſalaim obſidionē ad Et
7 וְאֶל־מְצוֹר יְרוּשָׁלִַם תָּכִין פָּנֶיךָ וּזְרֹעֲךָ
te ſuper dedi ecce Et .eā adverſus prophetabis & : diſcoopertum
8 חֲשׂוּפָה וְנִבֵּאתָ עָלֶיהָ׃ וְהִנֵּה נָתַתִּי עָלֶיךָ
te conſummandum ad,tuum latus ad *tuo* latere à te vertes non & : funes
עֲבוֹתִים וְלֹא־תֵהָפֵךְ מִצִּדְּךָ אֶל־צִדֶּךָ עַד־כַּלּוֹתְךָ
, *fabam* & , hordea & , *frumenta* tibi cape tu Et .*tuæ obſidionis* dies
9 יְמֵי מְצוּרֶךָ׃ וְאַתָּה קַח־לְךָ חִטִּין וּשְׂעֹרִים וּפוֹל
facies &, uno vaſe in ea *dabis* & : *ſpeltas* & , milium &, lentes &
וַעֲדָשִׁים וְדֹחַן וְכֻסְּמִים וְנָתַתָּה אוֹתָם בִּכְלִי אֶחָד וְעָשִׂיתָ
ſuper *dormiens* tu quibus dierum numerum panem in tibi eis
אוֹתָם לְךָ לְלָחֶם מִסְפַּר הַיָּמִים אֲשֶׁר־אַתָּה שׁוֹכֵב עַל־
.illum comedes diebus nonaginta & centis---tre , tuum latus
צִדְּךָ שְׁלֹשׁ־מֵאוֹת וְתִשְׁעִים יוֹם תֹּאכְלֶנּוּ׃
.die in ſecli viginti pondere in *,eo* veſceris quo tuus cibus Et
10 וּמַאֲכָלְךָ אֲשֶׁר תֹּאכְלֶנּוּ בְּמִשְׁקוֹל עֶשְׂרִים שֶׁקֶל לַיּוֹם
menſura in aquam Et .illum comedes tempus ad uſque tempore A
11 מֵעֵת עַד־עֵת תֹּאכְלֶנּוּ׃ וּמַיִם בִּמְשׂוּרָה
libum Et .bibes tempus ad uſque tempore A .hin ſextum bibes
12 תִשְׁתֶּה שִׁשִּׁית הַהִין מֵעֵת עַד־עֵת תִּשְׁתֶּה׃ וְעֻגַת
hominis egeſtionis ſtercoribus in ipſum & : illum comedes *hordeorum*
שְׂעֹרִים תֹּאכְלֶנָּה וְהִיא בְּגֶלְלֵי צֵאַת הָאָדָם
filii comedent Sic : Dominus dixit Et .eorum oculis in illum coques
13 תְּעֻגֶנָה לְעֵינֵיהֶם׃ וַיֹּאמֶר יְהוָה כָּכָה יֹאכְלוּ בְנֵי־
.*illuc* eos *propellam quò* gentes inter ,pollutum ſuū panem Iſrael
יִשְׂרָאֵל אֶת־לַחְמָם טָמֵא בַּגּוֹיִם אֲשֶׁר אַדִּיחֵם שָׁם׃
: polluta non mea anima Ecce ; Deus Domine Ahah : dixi Et
14 וָאֹמַר אֲהָהּ אֲדֹנָי יֱהוִה הִנֵּה נַפְשִׁי לֹא מְטֻמָּאָה
: *nunc* ad uſque & *meis pueritiis* ab comedi non raptum &,morticinium &
וּנְבֵלָה וּטְרֵפָה לֹא־אָכַלְתִּי מִנְּעוּרַי וְעַד־עַתָּה
: me ad dixit Et .*putridæ rei* caro meum os *in* eſt ingreſſa non &
15 וְלֹא־בָא בְּפִי בְּשַׂר פִּגּוּל׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי
: *hominis* ſtercoribus pro *bovis* ſtercora tibi dedi , Vide
רְאֵה נָתַתִּי לְךָ אֶת־צְפוּעֵי הַבָּקָר תַּחַת גֶּלְלֵי הָאָדָם
,hominis Fili : me ad dixit Et .eis *ſuper* tuū panem facies &
16 וְעָשִׂיתָ אֶת־לַחְמְךָ עֲלֵיהֶם׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי בֶּן־אָדָם
panem comedent & , Jeruſalaim in panis baculum *frangens ego* Ecce
הִנְנִי שֹׁבֵר מַטֵּה־לֶחֶם בִּירוּשָׁלִַם וְאָכְלוּ־לֶחֶם
.bibent ſtupore in & menſura in aquam & ; *ſolicitudine* & ,pondere in
בְּמִשְׁקָל וּבִדְאָגָה וּמַיִם בִּמְשׂוּרָה וּבְשִׁמָּמוֹן יִשְׁתּוּ׃
,*ejꝰ frater &* unuſquiſque obſtupeſcent Et .aqua & ,pane careant Ut
17 לְמַעַן יַחְסְרוּ לֶחֶם וָמָיִם וְנָשַׁמּוּ אִישׁ וְאָחִיו
.*ſua iniquitate in liqueſcent &*
וְנָמַקּוּ בַּעֲוֹנָם׃

CAP. V. ה

eā capies tonſorum novaculā, acutū gladiū tibi tolle hominis fili tu Et
1 וְאַתָּה בֶן־אָדָם קַח־לְךָ חֶרֶב חַדָּה תַּעַר הַגַּלָּבִים תִּקָּחֶנָּה
tibi *capies* & : tuā barbam ſuper &,tuū caput ſuper *facies* tranſire & ,tibi
לָּךְ וְהַעֲבַרְתָּ עַל־רֹאשְׁךָ וְעַל־זְקָנֶךָ וְלָקַחְתָּ לְךָ
medio in *incendes* igni *in* partē Tertiā .eos *divides* & ,ponderis *bilances*
2 מֹאזְנֵי מִשְׁקָל וְחִלַּקְתָּם׃ שְׁלִשִׁית בָּאוּר תַּבְעִיר בְּתוֹךְ
percuties,partē tertiā *capies* Et .obſidionis dies *cōplere ſecundū*,civitatis
הָעִיר כִּמְלֹאת יְמֵי הַמָּצוֹר וְלָקַחְתָּ אֶת־הַשְּׁלִשִׁית תַּכֶּה
evacuabo gladiū &,ventū in diſperges partē tertiā &,ejꝰ *circuitibus* gladio in
בַחֶרֶב סְבִיבוֹתֶיהָ וְהַשְּׁלִשִׁית תִּזְרֶה לָרוּחַ וְחֶרֶב אָרִיק
.*ſuis alis* in eos *ſtringes* &:numero in *parum* inde *capies* Et .eos poſt
3 אַחֲרֵיהֶם׃ וְלָקַחְתָּ מִשָּׁם מְעַט בְּמִסְפָּר וְצַרְתָּ אוֹתָם בִכְנָפֶיךָ׃
combures & ,ignis medium in eos *projicies* & , *capies* rurſus eis ex Et
4 וּמֵהֶם עוֹד תִּקָּח וְהִשְׁלַכְתָּ אוֹתָם אֶל־תּוֹךְ הָאֵשׁ וְשָׂרַפְתָּ
.Iſrael domum omnem in ignis egredietur eo ex : igni in eos
אֹתָם בָּאֵשׁ מִמֶּנּוּ תֵצֵא־אֵשׁ אֶל־כָּל־בֵּית יִשְׂרָאֵל׃

Verſio VULG. LAT.

7 Et ad obſidionem Jeruſalem convertes
faciem tuam, & brachium
tuum erit extentum : & prophetabis
8 adverſùs eam. Ecce circumdedi
te vinculis : & non te convertes
à latere tuo in latꝰ aliud,
donec compleas dies obſidionis
9 tuæ. Et tu ſume tibi frumentum,
& hordeum, & fabam, & lentē,
& miliū, & viciā : & mittes ea
in vas unum, & facies tibi panes
numero dierū quibꝰ dormies ſuper
latꝰ tuū : trecentis & nonaginta
10 diebꝰ comedes illud. Cibus
autem tuꝰ quo veſcêris, erit in
pondere viginti ſtateres in die :
à tempore uſque ad tempꝰ comedes
11 illud. Et aquam in menſura
bibes, ſextā partem hin : à tempore
uſque ad tempꝰ bibes illud.
12 Et quaſi ſubcinericium hordeaceum
comedes illud : & ſtercore,
quod egreditur de homine, operies
13 illud in oculis eorū. Et dixit
Dn̄s ; Sic comedent filii Iſrael
panem ſuum pollutū inter Gentes,
14 ad quas ejiciam eos. Et
dixi, A,a,a, Domine Deus, ecce
anima mea non eſt polluta : &
morticînum, & laceratum à beſtiis
non comêdi ab infantia mea
uſque nunc, & non eſt ingreſſa in
os meum omnis caro immunda.
15 Et dixit ad me; Ecce dedi tibi
fimum boum pro ſtercoribus humanis
: & facies panem tuum in
16 eo. Et dixit ad me; Fili hominis:
Ecce ego conteram baculū panis
in Jeruſalem : & comedent panē
in pondere, & in ſolicitudine :
& aquam in menſura, & in anguſtia
17 bibent : Ut deficientibus
pane & aquâ, corruat unuſquiſque
ad fratrem ſuum : & contabeſcant
in iniquitatibus ſuis.

CAP. V.

1 ET tu, fili hominis, ſume tibi
gladium acutum, radentem pilos
: & aſſumes eū, & duces per
caput tuum, & per barbam tuā:
& aſſumes tibi ſtateram ponderis,
2 & divides eos. Tertiam partem
igni combures in medio civitatis,
juxta completionem dierum
obſidionis : & aſſumes tertiam
partem, & concîdes gladio
in circuitu ejꝰ: tertiam verò aliam
diſperges in ventum, & gladium
3 nudabo poſt eos. Et ſumes
indè parvum numerum : et ligabis
eos in ſummitate pallii tui.
4 Et ex eis rurſum tolles, et projicies
eos in medio ignis, et combures
eos igni: & ex eo egredietur
ignis in omnem domū Iſrael,

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

7 Καὶ (ζ) εἰς τὸν συγκλεισμὸν Ἱερουσαλὴμ ἑτοιμάσεις
τὸ πρόσωπόν σου, ϗ τὸν βραχίονά
σου στερεώσεις, ϗ προφητεύσεις ἐπ᾽ αὐτήν.
8 Καὶ (η) ἐγὼ ἰδοὺ δέδωκα ἐπὶ σὲ δεσμοὺς,
ϗ (θ) μὴ στραφῇς ἀπὸ τοῦ πλευροῦ σου
ἐπὶ τὸ πλευρόν σου, ἕως οὗ συντελεσθῶσιν (ι)
9 ἡμέραι τοῦ συγκλεισμοῦ σου. Καὶ σὺ λάβε
σεαυτῷ πυροὺς, ϗ κριθὰς, ϗ κύαμον, ϗ φακὸν,
ϗ κέγχρον, ϗ ὀλύραν, καὶ ἐμβαλεῖς
αὐτὰ εἰς ἄγγος ἓν ὀστράκινον, ϗ ποιήσεις
αὐτὰ σεαυτῷ εἰς ἄρτους· ϗ κατὰ ἀριθμὸν
τῶν ἡμερῶν, ἃς σὺ καθεύδεις ἐπὶ τοῦ πλευροῦ
σου, ἐνενήκοντα ϗ ἑκατὸν ἡμέρας φάγεσαι
10 αὐτά. Καὶ τὸ βρῶμά σου (κ) φάγεσαι
ἐν σταθμῷ, εἴκοσι σίκλους τὴν ἡμέραν (λ), ἀπὸ
11 καιροῦ ἕως καιροῦ φάγεσαι αὐτά. Καὶ ὕδωρ ἐν
μέτρῳ πίεσαι, (μ) ϗ τὸ ἕκτον τοῦ εἶν ἀπὸ
12 καιροῦ ἕως καιροῦ πίεσαι. Καὶ ἐγκρυφίαν
κρίθινον φάγεσαι αὐτὰ, ἐν βολβίτοις κόπρου
ἀνθρωπίνης (ν) ἐγκρύψεις αὐτὰ κατ᾽ ὀφθαλμοὺς
13 αὐτῶν. Καὶ ἐρεῖς, Τάδε λέγει κύριος
ὁ θεὸς τοῦ Ἰσραὴλ, Οὕτως φάγονται οἱ
υἱοὶ (˜) τοῦ Ἰσραὴλ ἀκάθαρτα ἐν τοῖς ἔθνεσιν.
14 Καὶ εἶπα, Μηδαμῶς (ξ) κύριε θεὲ Ἰσραήλ·
εἰ ἡ ψυχή μου οὐ μεμίανται ἐν ἀκαθαρσίᾳ, ϗ
θνησιμαῖον ϗ θηριάλωτον οὐ βέβρωκα ἀπὸ
(ο) γενέσεώς μου ἕως τοῦ νῦν, οὐδὲ εἰσελήλυθεν
15 εἰς τὸ στόμα μου πᾶν κρέας (π) ἕωλον. Καὶ
εἶπε (ρ) πρός με, Ἰδοὺ δέδωκά σοι βόλβιτα
βοῶν ἀντὶ τῶν βολβίτων τῶν ἀνθρωπίνων,
ϗ ποιήσεις τοὺς ἄρτους σου ἐπ᾽ αὐτῶν.
16 Καὶ εἶπε (σ) πρός με, Υἱὲ ἀνθρώπου,
ἰδοὺ ἐγὼ συντρίβω στήριγμα ἄρτου ἐν
Ἱερουσαλὴμ, ϗ φάγονται ἄρτον ἐν σταθμῷ ϗ
ἐν ἐνδείᾳ, ϗ ὕδωρ ἐν μέτρῳ, ϗ ἐν ἀφανισμῷ
17 πίονται. Ὅπως ἐνδεεῖς γένωνται ἄρτου
ϗ ὕδατος· ϗ ἀφανισθήσεται ἄνθρωπος ϗ
ἀδελφὸς αὐτοῦ, ϗ (τ) ἐντακήσονται ἐν ταῖς
ἀδικίαις αὐτῶν.

MS. A. (ζ) εἰς συγκλεισμὸν (η) ἰδοὺ ἐγὼ (θ) οὐ μὴ (ι) αἱ ἡμέραι (κ) ὃ φάγεσαι ἐν σταθμίῳ, (λ) φάγεσαι, ἀπὸ καιροῦ ϗ ἕως (μ) τὸ ἕκτον (ν) κατακρύψῃς (˜) Ἰσραὴλ (ξ) κύριε κύριε, θεὲ τοῦ Ἰσραήλ· (ο) τῆς γενέσεώς (π) βέβηλον. (ρ) κύριος πρὸς (σ) κύριος πρὸς (τ) τακήσονται

Et ad concluſionem Hieruſalem 7
parabis faciem tuam, & brachiū
tuum roborabis, & prophetabis
ſuper eam. Et ego ecce dedi ſuper 8
te vincula : & non te convertas
de latere tuo in latus tuum, donec
completi fuerint dies concluſionis
tuæ. Et tu ſume tibi triticum, & 9
hordeum, & fabam, & lentē, &
milium, & (e) olyram : & mittes
ea in vas unum teſteum : & facies
ea tibi in panes : & juxta numerum
dierum, quibus tu dormis
ſuper latus tuum, nonaginta &
centum diebus comedes ea. Et cibum 10
tuum comedes in pondere,
viginti (f) ſiclos die : à tempore
uſq; ad tempus comedes ea. Et 11
aquam in menſura bibes : & ſextam
partem (g) In à tempore uſque
ad tempus bibes. (h) Et ſubcinericium 12
hordeaceum, comedes
ea : in fimo ſtercoris humani abſcondes
ea ante oculos eorum ; Et 13
dices ; Hæc dicit Dominus Deus
Iſrael, Sic comedent filii Iſrael
immunda in (i) gentibus. Et dixi; 14
Nequaquàm Domine Dee Iſrael
: ſi anima mea non eſt polluta
in immunditia, & morticinum,
& à beſtiis laceratum non
comêdi à nativitate mea uſque
nunc : & nō eſt ingreſſa in os meum
omnis caro (k) rancida. Et dixit 15
ad me; Ecce dedi tibi ſtercora
boū pro ſtercoribus humanis : &
facies panes tuos ſuper ea. Et dixit 16
ad me; Fili hominis, ecce ego
contero (l) fulcimentum panis in
Hieruſalem : & comedent panē in
pondere, & in penuria : & aquam
in menſura, & in interitu bibent :
Ut egentes fiant panis (c) & aquæ 17
: & delebitur homo, &
frater ejus, & contabeſcent in
iniquitatibus ſuis.

ΚΕΦ. ε'.

1 ΚΑὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, λάβε σεαυτῷ ῥομφαίαν
ὀξεῖαν ὑπὲρ ξυρὸν κουρέως, (α) κτήσῃ
αὐτὴν σεαυτῷ, ϗ ἐπάξεις αὐτὴν ἐπὶ τὴν
κεφαλήν σου, ϗ ἐπὶ τὸν πώγωνά σου· ϗ λήψῃ
ζυγὸν σταθμίων, ϗ διαστήσεις αὐτούς.
2 Τὸ τέταρτον (β) ἐν πυρὶ ἀνακαύσεις ἐν μέσῃ
τῇ πόλει κατὰ τὴν πλήρωσιν τῶν ἡμερῶν
τοῦ συγκλεισμοῦ· ϗ λήψῃ τὸ τέταρτον, καὶ
κατακαύσεις αὐτὸ ἐν μέσῳ αὐτῆς· ϗ τὸ τέταρτον
κατακόψεις ἐν ῥομφαίᾳ κύκλῳ αὐτῆς·
ϗ τὸ τέταρτον διασκορπιεῖς τῷ πνεύματι.
ϗ μάχαιραν ἐκκενώσω ὀπίσω αὐτῶν.
3 Καὶ λήψῃ ἐκεῖθεν ὀλίγους ἐν ἀριθμῷ, καὶ
4 συμπεριλήψῃ αὐτοὺς τῇ ἀναβολῇ σου. Καὶ
ἐκ τούτων λήψῃ ἔτι, ϗ ῥίψεις αὐτοὺς εἰς
μέσον τοῦ πυρὸς, ϗ κατακαύσεις αὐτοὺς ἐν
πυρί· ἐξ αὐτῆς ἐξελεύσεται πῦρ. ϗ ἐρεῖς παντὶ οἴκῳ Ἰσραήλ,

MS. A. (α) κτῆσαι (β) τὸ ἐν

CAP. V.

ET tu, fili hominis, ſume tibi 1
gladiū acutū ſuper novaculā tonſoris
: poſſide eā tibi : & duces eā
ſuper caput tuū, & ſuper barbā
tuā. Et aſſumes ſtaterā ponderū;
& divides eos : (a) Quartā partē 2
in igni combures in media civitate
juxta completionem dierū
concluſionis : & aſſumes quartā,
& combures eā in medio ejꝰ : &
quartā concîdes in gladio in circuitu
ejus : & quartam diſperges
vento : Et gladium nudabo poſt eos.
Et aſſumes indè paucos in numero, 3
& circumligabis eos indumento
tuo. Et ex his ſumes adbuc, 4
& projicies eos in medium
ignis, & combures eos in igni. Ex
ea egredietur ignis. (b) Et dices
omni domui Iſrael;

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

7 וּלְצִיר יְרוּשְׁלֵם תְּתַקֵּן אַפָּךְ וּדְרָעָךְ תַּתְקֵיף וְתִתְנַבֵּי עֲלַהּ׃ וְהָא גְזֵירַת פִּתְגָמִי עֲלָךְ כֶּאֱסוּר
8 גְדִילִין וְלָא תִתְהַפֵּיךְ מִסִּטְרָךְ לְסִטְרָךְ עַד אַשְׁלָמוּתָךְ יוֹמֵי צֵירָךְ׃ וְאַתְּ סַב לָךְ חִטִּין 9
וּסְעוֹרִין וּפוּלָא וְטָלוֹפְחִין וְדוּחַן וְכוּנָתִין וְתִתֵּן יָתְהוֹן בְּמָנָא חַד וְתַעְבֵּיד יָתְהוֹן לָךְ לְמֵיכַל
10 מִנְיַן יוֹמַיָּא דְּאַתְּ שְׁכֵיב עַל סִטְרָךְ תְּלָת מְאָה וְתִשְׁעִין יוֹמִין תֵּיכְלִנֵּיהּ׃ וּמֵיכְלָךְ דְּתֵיכְלִנֵּיהּ
11 בְּמַתְקַל עַסְרִין פִּילְסִין לְיוֹם מֵעִדָּן עַד עִדָּן תֵּיכְלִנֵּיהּ׃ וּמַיָּא בִּמְכִילָא תִּשְׁתֵּי חַד מִן שִׁתָּא
12 בְּהִינָא מֵעִדָּן עַד עִדָּן תִּשְׁתֵּי׃ וַחֲרָרָא דִּלְחֵים שְׂעוֹרִין תֵּיכְלִנַּהּ וְהִיא עַל גְּלֵי מַפְּקַת אֱנָשָׁא
13 תְּחָרְרִנַּהּ לְעֵינֵיהוֹן׃ וַאֲמַר יְיָ כְּדֵין יֵיכְלוּן בְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָת מֵיכַלְהוֹן מְסָאַב בֵּינֵי עַמְמַיָּא
14 דְּאַגְלִינוּן לְתַמָּן׃ וַאֲמָרִית קַבֵּל בָּעוּתִי יְיָ אֱלֹהִים הָא נַפְשִׁי לָא מְסָאֲבָא וּנְבֵילָא וּתְבִירָא
15 לָא אֲכָלֵית מִזְּעוּרִי וְעַד כְּעַן וְלָא אֲכָלֵית בְּסַר מְרַחַק׃ וַאֲמַר לִי חֲזִי דִּיהָבֵית לָךְ יָת גְּלֵי
16 תוֹרַיָּא חֲלַף גְּלֵי אֱנָשָׁא וְתַעְבֵּיד יָת מֵיכְלָךְ עֲלֵיהוֹן׃ וַאֲמַר לִי בַּר אָדָם הָא אֲנָא תָבַר
סְעִיד מֵיכְלָא בִּירוּשְׁלֵם וְיֵיכְלוּן לַחְמָא בְּמַתְקַל וּבְיִצְפָּא וּמַיָּא בִּצְדוּ וּבְאִשְׁתְּמָמוּ יִשְׁתּוּן׃
17 בְּדִיל דְּיַחְסַר לְהוֹן מֵיכַל וּמִשְׁתֵּי וְיִצְדּוּן גְּבַר וַאֲחוּהִי וְיִתְמַסּוּן בְּחוֹבֵיהוֹן׃

ה

1 וְאַתְּ בַּר אָדָם סַב לָךְ חַרְבָּא חֲרִיפָא מִסְפַּר גַּלָּבַיָּא תִּסַּב לָךְ וְתַעְבַּר עַל רֵישָׁךְ וְעַל דִּקְנָךְ
2 וְתִסַּב לָךְ מוֹזְנָוָן דְּמַתְקַל וְתַפְלְגִנּוּן׃ תִּלְתָּא בְּנוּרָא תַּדְלֵיק בְּגוֹ קַרְתָּא כְּמִשְׁלַם יוֹמֵי צֵירָא
וְתִסַּב יָת תִּלְתָּא תִּקְטֵיל בְּחַרְבָּא סְחָרְנַהָא וְתִלְתָּא תְּבַדַּר לְכָל רוּחַ דְּכֵן יִתְבַּדְּרוּן
3 וּדְקָטְלִין בְּחַרְבָּא אֲגָרֵי בַּתְרֵיהוֹן׃ וְתִסַּב מִתַּמָּן זְעֵיר בְּמִנְיָן וְתָצוּר יָתְהוֹן בִּכְנָפָךְ׃ וּמִנְּהוֹן 4
עוֹד תִּסַּב וְתִרְמֵי יָתְהוֹן לְגוֹ נוּרָא וְתוֹקִיד יָתְהוֹן בְּנוּרָא בְּכֵן תִּפּוֹק אֶשָּׁתָא עַל כָּל
בֵּית יִשְׂרָאֵל׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et ad obſidionem Jeruſalem diriges faciem tuam, & brachium tuum robora- 7
bis: & prophetabis adverſùs eam. Et ecce decretum Verbi mei erit ſuper te 8
quaſi vinculum funiculorum; & non te convertes de latere tuo in latus tu-
um, donec compleveris dies tuæ obſidionis. Et tu ſume tibi triticum, & hor- 9
deum, & fabam, & lentes, & milium, & ſpeltam, & mittes ea in vaſe uno,
& facies ea tibi in cibum numero dierum quibus cubaveris ſuper latus tu-
um; trecentis & nonaginta diebus comedes illum. Cibus autem tuus quo ve- 10
ſcêris, erit in pondere viginti ſtateres in diem, à tempore uſque ad tempus
comedes illum. Et aquam in menſura bibes, ſextam partem hin : à tempore 11
uſque ad tempus bibes illam. Et ſubcinericium panem hordeaceum comedes 12
illum : ſuper excrementum ſtercoris humani ſubiges illum in oculis eorum.
Et dixit Dominus : Sic comedent filii Iſrael cibum pollutum ſuum inter po- 13
pulos ad quos tranſmigrare eos feci. Et dixi: Suſcipe deprecationem meam 14
Domine Deus: ecce anima mea non eſt polluta, & morticinium & confra-
ctum à beſtia non comedi ab infantia mea uſque nunc : & non comedi car-
nem abominabilem. Et dixit mihi: Vide ut dederim tibi ſtercus boum pro 15
ſtercore hominis, & facies cibum tuum ſuper illud. Et dixit ad me: Fili ho- 16
minis, ecce ego conteram ſuſtentaculum cibi in Jeruſalem, & comedent ci-
bum ſuum in pondere & in ſolicitudine ; & aquam in deſolatione & ſtupo-
re bibent. Ut deficiat eis cibus & potus: & vaſtabuntur vir et frater ejus, et 17
tabeſcent in iniquitatibus ſuis.

CAP. V.

ET tu fili hominis tolle tibi gladium acutum, novaculam tonſorum tolles 1
tibi; et traduces ſuper caput tuum et ſuper barbam tuam, et aſſumes tibi lan-
ces ponderis et divides eos. Tertiam partem igne combures in medio civi- 2
tatis, cùm completi fuerint dies obſidionis: et tolles tertiam partem, et oc-
cides gladio quæ in circuitu ejus ſunt ; et tertiam partem diſperges omni ven-
to ; ſic enim diſpergentur : et occidentes gladio immittam poſt eos. Et tolles 3
indè paucos numero, et ligabis eos in extremitate pallii tui. Et ex eis rurſus 4
tolles et projicies illos in medium ignis, et combures eos igni : tunc egredie-
tur ignis in omnem domum Iſrael.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

7 8 * ܘܠܘܬ ܟܪܟܘܡܝܐ ܕܐܘܪܫܠܡ ܬܛܝܒ ܐܦܝܟ. ܘܕܪܥܟ ܬܥܫܢ. ܘܬܬܢܒܐ ܥܠܝܗ̇. * ܘܗܐ ܝܗܒܬ
ܥܠܝܟ ܫܫܠܬܐ. ܘܠܐ ܬܬܗܦܟ ܡܢ ܓܒܐ ܠܓܒܐ. ܥܕܡܐ ܕܢܫܠܡܘܢ ܝܘܡܬܐ ܕܐܣܘܪܟ.
9 * ܘܐܢܬ ܣܒ ܠܟ ܚܛܐ. ܘܣܥܪܐ. ܘܦܘܠܐ. ܘܛܠܦܚܐ. ܘܕܘܚܢܐ ܘܟܘܢܬܐ. ܘܪܡܝ ܐܢܘܢ
ܒܡܐܢܐ ܚܕ. ܘܥܒܕ ܐܢܘܢ ܠܟ ܠܚܡܐ. ܠܡܢܝܢܐ ܕܝܘܡܬܐ ܕܕܡܟ ܐܢܬ ܥܠ ܓܒܟ. ܬܠܬܡܐܐ
10 ܘܬܫܥܝܢ ܝܘܡܝܢ ܬܐܟܠܝܘܗܝ. * ܘܡܐܟܘܠܬܟ ܬܗܘܐ ܒܡܬܩܠܐ ܥܣܪܝܢ ܡܬܩܠܝܢ ܒܝܘܡ
11 ܡܢ ܙܒܢ ܠܙܒܢ. * ܘܡܝܐ ܒܡܫܘܚܬܐ ܬܫܬܐ. ܚܕ ܡܢ ܫܬ ܡܢܘܬܗ ܕܗܝܢܐ ܡܢ ܙܒܢ ܠܙܒܢ
12 13 ܬܫܬܐ. * ܘܓܪܝܨܬܐ ܕܣܥܪܐ ܬܐܟܘܠ. ܘܬܐܦܐ ܥܠ ܙܒܠܐ ܕܒܪܢܫܐ ܠܥܝܢܝܗܘܢ. * ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
ܗܟܢܐ ܢܐܟܠܘܢ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܠܚܡܗܘܢ ܒܛܢܦܘܬܐ. ܒܝܬ ܥܡܡܐ ܕܐܒܕܪ ܐܢܘܢ
14 ܬܡܢ. * ܘܐܡܪܬ. ܐܠܗܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܢܦܫܝ ܠܐ ܗܘܬ ܡܛܢܦܐ. ܘܢܒܝܠܬܐ ܘܬܒܝܪܬ
ܚܝܘܬܐ. ܠܐ ܐܟܠܬ ܡܢ ܛܠܝܘܬܝ. ܘܥܕܡܐ ܠܝܘܡܢܐ. ܘܠܐ ܥܠ ܒܦܘܡܝ ܒܣܪܐ ܡܛܢܦܐ.
15 * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܗܐ ܝܗܒܬ ܠܟ ܟܒܝܢܐ ܕܬܘܪܐ ܚܠܦ ܟܒܝܢܐ ܕܒܪܢܫܐ. ܕܬܥܒܕ ܠܚܡܟ
16 ܥܠܝܗܘܢ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܒܪ ܐܢܫܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܬܒܪ ܐܢܐ ܚܘܛܪܐ ܕܠܚܡܐ ܒܐܘܪܫܠܡ. ܘܢܐܟܠܘܢ
17 ܠܚܡܐ ܒܡܬܩܠܐ. ܘܡܝܐ ܒܨܗܝܘܬܐ. ܒܡܫܘܚܬܐ ܢܫܬܘܢ. * ܘܢܗܘܘܢ ܚܣܝܪܝܢ ܠܚܡܐ
ܘܡܝܐ. ܘܢܬܚܒܠܘܢ ܓܒܪ ܘܐܚܘܗܝ. ܘܢܬܡܣܘܢ ܒܚܘܒܝܗܘܢ. * ܦܣܩܘܗܝ * ܗ *

1 * ܘܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ. ܣܒ ܠܟ ܣܝܦܐ ܕܚܪܝܦ ܐܝܟ ܡܣܦܪܐ ܕܓܪܥܐ. ܘܐܥܒܪܝܗܝ ܥܠ ܪܫܟ
ܘܥܠ ܕܩܢܟ. ܘܣܒ ܠܟ ܡܣܐܬܐ ܕܡܬܩܠܐ. ܘܦܠܓ ܐܢܘܢ ܠܬܠܬ ܡܢܘܢ. * ܘܚܕܐ ܡܢ
2 ܬܠܬ ܡܢܘܢ. ܐܘܩܕ ܒܢܘܪܐ ܒܓܘ ܡܕܝܢܬܐ. ܡܐ ܕܫܠܡܘ ܝܘܡܬܐ ܕܐܣܘܪܟ.
ܘܣܒ ܡܢܬܐ ܐܚܪܬܐ. ܘܦܣܘܩ ܒܣܝܦܐ ܚܕܪܝܗ̇ ܕܡܕܝܢܬܐ. ܘܡܢܬܐ ܕܬܠܬ
3 ܕܪܘ ܠܪܘܚܐ. ܘܣܝܦܐ ܢܪܕܘܦ ܒܬܪܝܗܘܢ. * ܘܣܒ ܡܢ ܬܡܢ ܩܠܝܠ ܒܡܢܝܢܐ.
4 ܘܨܪ ܐܢܘܢ ܒܟܢܦܟ. * ܘܡܢܗܘܢ ܬܘܒ ܣܒ. ܘܐܪܡܐ ܐܢܘܢ ܒܓܘ ܢܘܪܐ. ܘܐܘܩܕ ܐܢܘܢ
ܒܢܘܪܐ. ܘܡܢܗܘܢ ܬܦܘܩ ܢܘܪܐ ܠܟܠܗܘܢ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ.

Ad obſidionem verò Jeroſolymæ comparabis faciem tuam, & brachium tuum confirmabis, & prophetabis contra illam. [7] Ecce catenas injiciam tibi, ne te vertas ab uno latere in alterum, donec abſolvantur dies ergaſtuli tui. [8] Sume tibi frumentum, & hordeum, fabas, lentes, milium, atque zeam, eaque in vas unum inde, & ex iis confice tibi panem pro numero dierum quibus incubiturus es lateri tuo : trecentis ac nonaginta diebus comedes illum. [9] Cibus autem tuus ſit viginti ſiclorum indies, de tempore in tempus : [10] Aquam etiam cum menſura bibas ; unam è ſex partibus heminæ de tempore in tempus bibes. [11] Placentam hordei comedes aſſatam ſuper ſtercus humanum in præſentia eorum. [12] Dicit Dominus, Ita comedent Iſraelitæ panem ſuum in immunditia, inter gentes quò diſpellam eos. [13] Dicenti verò mihi, Deus dominorum Domine, anima mea non fuit unquam polluta, morbidum aut à bellua diſcerptum nunquam comedi à pueritia mea ad hodiernum uſque diem, neque ingreſſa eſt in os meum caro immunda : [14] Reſpondit, Ecce do tibi ſtercora bovina pro ſtercoribus humanis, ut conficias ſuper iis panem tuum. [15] Tum dixit mihi ; Fili hominis, ecce fracturus ſum culmum frumenti in Jeruſalem, ita ut panem in pondere comedant, & aquam tempore ſitis in menſura bibant : [16] Patientur enim penuriam panis & aquæ, vir cum fratre ſuo deficient, & in iniquitate ſua tabeſcent. [17]

CAP. V.

Tu autem fili hominis, accipe tibi gladiolum acutum ut novaculam tonſoriam, eumque traduc ſuper caput tuum & ſuper barbam tuam : deinde cape tibi trutinam libræ, eóſque *pilos* divide tres in partes. [1] Unam è tribus illis partibus igni combure intra urbem, cùm exacti fuerint dies ergaſtuli tui : alteram partem capiens, gladio concîdes circum urbem : tertiam denique partem diſperges in ventum : nam gladius nece perſequetur eos. [2] Inde tamen excipies paucos numero, quos in fimbria tua colligabis : [3] Et ex his rurſum capies *aliquot*, eóſque in ignem projicies, ignéque combures : atque ex his prodibit ignis contra omnes Iſraelitas. [4]

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

7 8 * وكبس ايروسليم تهيي وجهك ويسدد ساعدك* وتنبي عليها* وها انا اعطيت عليك رباطات*
9 فلا تنقلب من جنبك الي جنبك* الي ان تكمل ايام حبسك* وانت خذ لنفسك قمحا وشعيرا*
وفولا وعدسا ودخنا وسوفين* وتضعها في اناء واحد خزفي* وتصنعها لذاتك قوتا كعدد الايام
10 التي انت تنامها على جنبك* مائه وتسعين يوما تاكلها* وطعامك الذي تاكله بالميزان*
11 عشرين مثقالا تاكله في اليوم* من وقت الي وقت تاكلها* والماء بالكيل تشربه* سدس قسط
12 من وقت الي وقت تشربه* ورغيفا ململا من شعير تاكله* تخبزه برجيع زبل الناس لعيونهم*
13 14 وتقول* هكذا يقول الرب اله اسرائيل* هكذا ياكل بنو اسرائيل النجاسات في الامم* فقلت حاش
لي يا رب يا اله اسرائيل* ان نفسي لم تنجس بنجاسة ورمة* وفريسة الوحش لم اكلها منذ
15 نشاتي والي الان* ولم يدخل في فمي لحم نجس بالكلية* فقال لي الرب* ها اعطيتك رجيع البقر
16 عوضا من رجيع الناس* فتضع خبزك عليه* وقال لي الرب* يا ابن الانسان ها انا اكسر رزق
الخبز في ايروسليم* وياكلون الخبز بالوزن وبالقحط* ويشربون الماء بالكيل وبالفناء*
17 * كيف يصيروا مفلسين من الخبز والماء* ويهلك الانسان واخوه* ويذوبون بطلاماتهم*

* الفصل الخامس *

1 * وانت يا ابن الانسان خذ لذاتك سيفا
حدا اكثر من موسي الحلاق* اقتنه لذاتك* وتمر به على راسك ولحيتك* وخذ ميزان
2 الصنجات فتعيرهم* الربع تحرقه بالنار في وسط المدينة لكمال ايام حبسك* وخذ الربع
وتحرقه في وسطها* والربع تقطعه بالسيف حولها* والربع تذريه للريح* فاني افرغ سيفا خلفهم*
3 4 * وتاخذ من هناك قليلا بالعدد* وتلفه في كساءك* وتاخذ ايضا منه وتطرحه في وسط
النار وتحرقه بالنار* لان منها تخرج النار* وتقول لكل بيت اسرائيل*

Et ad obſidionem Jeroſolymæ parabis faciem tuam, brachium tuum confirmabis, et prophetabis adverſùs eam. [7] *Ecce autem ego injiciam tibi vincula, ne te vertas ab* uno *latere ad* aliud *latus, quoad abſolvantur dies carceris tui.* [8] *Quapropter tu accipe tibi frumentum, hordeum, fabas, lentes, milium atque viciam ; eaque repones in vaſe uno teſtaceo, ſervabiſq; tibi in alimentum juxta numerum dierum quibus cubaturus es ſuper latus tuum, centum nonaginta diebus comedes ea.* [9] *Cibum autem tuum quem comedes, ſtatera* à ponderabis; *viginti ſiclorũ* pondere *comedes eum ſingulis diebus : de tempore in tempus comedes illa.* [10] *Aquã etiam menſurâ bibes, ſextam partem hin, quam à tempore ad tempus bibes.* [11] *Panem ſubcinericium hordeaceum comedes eum, in excremento ſtercoris humani coques illum ante oculos eorum, & dices;* [12] *Sic ait Dominus Deus Iſraelis; Ita comeſturi ſunt filii Iſraelis immunditias inter gentes.* [13] *Et dixi, Abſit à me O Domine, O Deus Iſraelis: nam anima mea nunquam contaminata eſt immunditie aut cadavere, & prædam feræ nunquam comedi ab adoleſcentia mea hucuſque, neque ingreſſa eſt in os meum caro immunda, omnino.* [14] *Dixit autem mihi Dominus, Ecce do tibi excrementa bovina pro excrementis humanis, ut ponas panem tuum ſuper ea.* [15] *Dixit quoque mihi Dominus ; O fili hominis, ecce ego fracturus ſum ſubſidium panis in Jeruſalem ; comedentque panem in pondere & penuriâ, bibentque aquam in menſura & interitu.* [16] *Quomodo fient egentes panis & aquæ, & peribit homo cum fratre ſuo, & colliqueſcent propter ſcelera ſua?* [17]

CAP. V.

Et tu O fili hominis, ſume tibi gladium acutiorem novaculã tonſoris, poſſide eum tibi, & traduc eum ſuper caput tuum & barbam tuam : deinde ſumes bilances, & ponderabis eos (pilos:) [1] *Quartam partem igne combures in medio urbis poſt finem dierum carceris tui : & quartam partem capies, combureſque eam in medio ipſius : quartam partem gladio concîdes circa ipſam: & quartam partem diſperges in ventum: nam gladium nudaturus ſum poſt eos.* [2] *Et accipies inde paucos numero, quos involves in veſte tua.* [3] *Et ex his accipies adhuc, projicieſq; in medium ignis, igneq; combures: nã ex his egredietur ignis. Et dices toti domui Iſraelis,* [4]

יחזקאל : ה

tuum brachium & , *tuæ facies* obfirmabis Jeruſalaim obſidionē ad Et
וְאֶל־מְצוֹר יְרוּשָׁלַםִ תָּכִין פָּנֶיךָ וּזְרֹעֲךָ 7
te ſuper dedi ecce Et .eā adverſus prophetabis & : diſcoopertum
חֲשׂוּפָה וְנִבֵּאתָ עָלֶיהָ׃ וְהִנֵּה נָתַתִּי עָלֶיךָ 8
te conſummandum ad,tuum latus ad *tuo* latere à te vertes non & : funes
עֲבוֹתִים וְלֹא־תֵהָפֵךְ מִצִּדְּךָ אֶל־צִדֶּךָ עַד־כַּלּוֹתְךָ
, *fabam* & , hordea & , *frumenta* tibi cape tu Et .*tuæ obſidionis* dies
יְמֵי מְצוּרֶךָ׃ וְאַתָּה קַח־לְךָ חִטִּין וּשְׂעֹרִים וּפוֹל 9
facies &,uno vaſe in ea *dabis* & : *ſpeltas* &,milium &,lentes &
וַעֲדָשִׁים וְדֹחַן וְכֻסְּמִים וְנָתַתָּה אוֹתָם בִּכְלִי אֶחָד וְעָשִׂיתָ
ſuper *dormiens* tu quibus dierum numerum panem in tibi eis
אוֹתָם לְךָ לְלָחֶם מִסְפַּר הַיָּמִים אֲשֶׁר־אַתָּה שׁוֹכֵב עַל־
.illum comedes diebus nonaginta & centis---tre , tuum latus
צִדְּךָ שְׁלֹשׁ־מֵאוֹת וְתִשְׁעִים יוֹם תֹּאכְלֶנּוּ׃
.die in ſecli viginti pondere in ,*eo* veſceris quo tuus cibus Et
וּמַאֲכָלְךָ אֲשֶׁר תֹּאכְלֶנּוּ בְּמִשְׁקוֹל עֶשְׂרִים שֶׁקֶל לַיּוֹם 10
menſura in aquam Et .illum comedes tempus ad uſque tempore A
מֵעֵת עַד־עֵת תֹּאכְלֶנּוּ׃ וּמַיִם בִּמְשׂוּרָה 11
libum Et .bibes tempus ad uſque tempore A .hin ſextum bibes
תִּשְׁתֶּה שִׁשִּׁית הַהִין מֵעֵת עַד־עֵת תִּשְׁתֶּה׃ וְעֻגַת 12
hominis egeſtionis ſtercoribus in ipſum & : illum comedes *hordeorum*
שְׂעֹרִים תֹּאכְלֶנָּה וְהִיא בְּגֶלְלֵי צֵאַת הָאָדָם
filii comedent Sic : Dominus dixit Et .eorum oculis in illum coques
תְּעֻגֶנָה לְעֵינֵיהֶם׃ וַיֹּאמֶר יְהוָה כָּכָה יֹאכְלוּ בְנֵי־ 13
.*illuc* eos *propellam quò* gentes inter ,pollutum ſuū panem Iſrael
יִשְׂרָאֵל אֶת־לַחְמָם טָמֵא בַּגּוֹיִם אֲשֶׁר אַדִּיחֵם שָׁם׃
: polluta non mea anima Ecce ; Deus Domine Ahah : dixi Et
וָאֹמַר אֲהָהּ אֲדֹנָי יֱהוִה הִנֵּה נַפְשִׁי לֹא מְטֻמָּאָה 14
: *nunc* ad uſque & *meis pueritiis* ab comedi non raptum &,morticinium &
וּנְבֵלָה וּטְרֵפָה לֹא־אָכַלְתִּי מִנְּעוּרַי וְעַד־עַתָּה
: me ad dixit Et .*putridæ rei* caro meum os *in* eſt ingreſſa non &
וְלֹא־בָא בְּפִי בְּשַׂר פִּגּוּל׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי 15
: *hominis* ſtercoribus pro *bovis* ſtercora tibi dedi , Vide
רְאֵה נָתַתִּי לְךָ אֶת־צְפוּעֵי הַבָּקָר תַּחַת גֶּלְלֵי הָאָדָם
,hominis Fili : me ad dixit Et .eis *ſuper* tuū panem facies &
וְעָשִׂיתָ אֶת־לַחְמְךָ עֲלֵיהֶם׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי בֶּן־אָדָם 16
panem comedent & , Jeruſalaim in panis baculum *frangens ego* Ecce
הִנְנִי שֹׁבֵר מַטֵּה־לֶחֶם בִּירוּשָׁלַםִ וְאָכְלוּ־לֶחֶם
.bibent ſtupore in & menſura in aquam & ;*ſolicitudine* & ,pondere in
בְּמִשְׁקָל וּבִדְאָגָה וּמַיִם בִּמְשׂוּרָה וּבְשִׁמָּמוֹן יִשְׁתּוּ׃
,*ej' frater &* unuſquiſque obſtupeſcent Et .aqua & ,pane careant Ut
לְמַעַן יַחְסְרוּ לֶחֶם וָמָיִם וְנָשַׁמּוּ אִישׁ וְאָחִיו 17
.*ſua iniquitate in liqueſcent &*
וְנָמַקּוּ בַּעֲוֹנָם׃

CAP. V. ה

eā capies *tonſorum* novaculā,acutū gladiū tibi tolle hominis fili tu Et
וְאַתָּה בֶן־אָדָם קַח־לְךָ חֶרֶב חַדָּה תַּעַר הַגַּלָּבִים תִּקָּחֶנָּה 1
tibi *capies* & : tuā barbam ſuper &,tuū caput ſuper *facies* tranſire & ,tibi
לָךְ וְהַעֲבַרְתָּ עַל־רֹאשְׁךָ וְעַל־זְקָנֶךָ וְלָקַחְתָּ לְךָ
medio in *incendes* igni *in* partē Tertiā .eos *divides* & ,ponderis *bilances*
מֹאזְנֵי מִשְׁקָל וְחִלַּקְתָּם׃ שְׁלִשִׁית בָּאוּר תַּבְעִיר בְּתוֹךְ 2
percuties,partē tertiā *capies* Et .obſidionis dies *cōplere ſecundū*,civitatis
הָעִיר כִּמְלֹאת יְמֵי הַמָּצוֹר וְלָקַחְתָּ אֶת־הַשְּׁלִשִׁית תַּכֶּה
evacuabo gladiū &,ventū in diſperges partē tertiā &,ej' *circuitibus* gladio in
בַחֶרֶב סְבִיבוֹתֶיהָ וְהַשְּׁלִשִׁית תִּזְרֶה לָרוּחַ וְחֶרֶב אָרִיק
.*tuis alis* in eos *ſtringes* &:numero in *parum* inde *capies* Et .eos poſt
אַחֲרֵיהֶם׃ וְלָקַחְתָּ מִשָּׁם מְעַט בְּמִסְפָּר וְצַרְתָּ אוֹתָם בִכְנָפֶיךָ׃ 3
combures & ,ignis medium in eos *projicies* & , *capies* rurſus eis ex Et
וּמֵהֶם עוֹד תִּקָּח וְהִשְׁלַכְתָּ אוֹתָם אֶל־תּוֹךְ הָאֵשׁ וְשָׂרַפְתָּ 4
.Iſrael domum omnem in ignis egredietur eo ex : igni in eos
אֹתָם בָּאֵשׁ מִמֶּנּוּ תֵצֵא־אֵשׁ אֶל־כָּל־בֵּית יִשְׂרָאֵל׃

Verſio VULG. LAT.

7 Et ad obſidionem Jeruſalem convertes
faciem tuam, & brachium
tuum erit extentum : & prophetabis
8 adverſùs eam. Ecce circumdedi
te vinculis : & non te convertes
à latere tuo in lat' aliud,
donec compleas dies obſidionis
9 tuæ. Et tu ſume tibi frumentum,
& hordeum, & fabam, & lentē,
& miliū, & viciā : & mittes ea
in vas unum, & facies tibi panes
numero dierū quib' dormies ſuper
lat' tuū : trecentis & nonaginta
10 dieb' comedes illud. Cibus
autem tu' quo veſcêris, erit in
pondere viginti ſtateres in die :
à tempore uſque ad temp' comedes
11 illud. Et aquam in menſura
bibes, ſextā partem hin : à tempore
uſque ad temp' bibes illud.
12 Et quaſi ſubcinericium hordeaceum
comedes illud: & ſtercore,
quod egreditur de homine, operies
13 illud in oculis eorū. Et dixit
Dñs ; Sic comedent filii Iſrael
panem ſuum pollutū inter Gentes,
14 ad quas ejiciam eos. Et
dixi, A,a,a, Domine Deus, ecce
anima mea non eſt polluta : &
morticînum, & laceratum à beſtiis
non comêdi ab infantia mea
uſque nunc, & non eſt ingreſſa in
os meum omnis caro immunda.
15 Et dixit ad me; Ecce dedi tibi
fimum boum pro ſtercoribus humanis
: & facies panem tuum in
16 eo. Et dixit ad me; Fili hominis:
Ecce ego conteram baculū panis
in Jeruſalem : & comedent panē
in pondere, & in ſolicitudine :
& aquam in menſura, & in anguſtia
17 bibent : Ut deficientibus
pane & aquâ, corruat unuſquiſque
ad fratrem ſuum : & contabeſcant
in iniquitatibus ſuis.

CAP. V.

1 ET tu, fili hominis, ſume tibi
gladium acutum, radentem pilos
: & aſſumes eū, & duces per
caput tuum, & per barbam tuā:
& aſſumes tibi ſtateram ponderis,
2 & divides eos. Tertiam partem
igni combures in medio civitatis,
juxta completionem dierum
obſidionis : & aſſumes tertiam
partem, & concîdes gladio
in circuitu ej': tertiam verò aliam
diſperges in ventum, & gladium
3 nudabo poſt eos. Et ſumes
indè parvum numerum : et ligabis
eos in ſummitate pallii tui.
4 Et ex eis rurſum tolles, et projicies
eos in medio ignis, et combures
eos igni: & ex eo egredietur
ignis in omnem domū Iſrael,

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

7 Καὶ (ζ) εἰς τὸν συγκλεισμὸν Ἱερουσαλὴμ ἑτοιμάσεις
τὸ πρόσωπόν σου, καὶ τὸν βραχίονά
σου στερεώσεις, καὶ προφητεύσεις ἐπ᾽ αὐτήν.
8 Καὶ (η) ἐγὼ ἰδοὺ δέδωκα ἐπὶ σὲ δεσμοὺς,
καὶ (θ) μὴ στραφῇς ἀπὸ τοῦ πλευροῦ σου
ἐπὶ τὸ πλευρόν σου, ἕως οὗ συντελεσθῶσιν (ι)
9 ἡμέραι τοῦ συγκλεισμοῦ σου. Καὶ σὺ λάβε
σεαυτῷ πυροὺς, καὶ κριθὰς, καὶ κύαμον, καὶ φακὸν,
καὶ κέγχρον, καὶ ὀλύραν, καὶ ἐμβαλεῖς
αὐτὰ εἰς ἄγγος ἓν ὀστράκινον, καὶ ποιήσεις
αὐτὰ σεαυτῷ εἰς ἄρτους· καὶ κατὰ ἀριθμὸν
τῶν ἡμερῶν, ἃς σὺ καθεύδεις ἐπὶ τοῦ πλευροῦ
σου, ἐνενήκοντα καὶ ἑκατὸν ἡμέρας φάγεσαι
10 αὐτά. Καὶ τὸ βρῶμά σου (κ) φάγεσαι
ἐν σταθμῷ, εἴκοσι σίκλους τὴν ἡμέραν (λ), ἀπὸ
11 καιροῦ ἕως καιροῦ φάγεσαι αὐτά. Καὶ ὕδωρ ἐν
μέτρῳ πίεσαι, (μ) καὶ τὸ ἕκτον τοῦ εἶν ἀπὸ
12 καιροῦ ἕως καιροῦ πίεσαι. Καὶ ἐγκρυφίαν
κρίθινον φάγεσαι αὐτὰ, ἐν βολβίτοις κόπρου
ἀνθρωπίνης (ν) ἐγκρύψεις αὐτὰ κατ᾽ ὀφθαλμοὺς
13 αὐτῶν. Καὶ ἐρεῖς, Τάδε λέγει κύριος
ὁ θεὸς τοῦ Ἰσραὴλ, Οὕτως φάγονται οἱ
υἱοὶ (˜) τοῦ Ἰσραὴλ ἀκάθαρτα ἐν τοῖς ἔθνεσιν.
14 Καὶ εἶπα, Μηδαμῶς (ξ) κύριε θεὲ Ἰσραήλ·
εἰ ἡ ψυχή μου οὐ μεμίανται ἐν ἀκαθαρσίᾳ, καὶ
θνησιμαῖον καὶ θηριάλωτον οὐ βέβρωκα ἀπὸ
(ο) γενέσεώς μου ἕως τοῦ νῦν, οὐδὲ εἰσελήλυθεν
15 εἰς τὸ στόμα μου πᾶν κρέας (π) ἕωλον. Καὶ
εἶπε (ρ) πρός με, Ἰδοὺ δέδωκά σοι βόλβιτα
βοῶν ἀντὶ τῶν βολβίτων τῶν ἀνθρωπίνων,
καὶ ποιήσεις τοὺς ἄρτους σου ἐπ᾽ αὐτῶν.
16 Καὶ εἶπε (σ) πρός με, Υἱὲ ἀνθρώπου,
ἰδοὺ ἐγὼ συντρίβω στήριγμα ἄρτου ἐν
Ἱερουσαλὴμ, καὶ φάγονται ἄρτον ἐν σταθμῷ καὶ
ἐν ἐνδείᾳ, καὶ ὕδωρ ἐν μέτρῳ, καὶ ἐν ἀφανισμῷ
17 πίονται. Ὅπως ἐνδεεῖς γένωνται ἄρτου
καὶ ὕδατος· καὶ ἀφανισθήσεται ἄνθρωπος καὶ
ἀδελφὸς αὐτοῦ, καὶ (τ) ἐντακήσονται ἐν ταῖς
ἀδικίαις αὐτῶν.

Et ad concluſionem Hieruſalem 7
parabis faciem tuam, & brachiū
tuum roborabis, & prophetabis
ſuper eam. Et ego ecce dedi ſuper 8
te vincula : & non te convertas
de latere tuo in latus tuum; donec
completi fuerint dies concluſionis
tuæ. Et tu ſume tibi triticum, & 9
hordeum, & fabam, & lentē, &
milium, & (e) olyram : & mittes
ea in vas unum teſteum: & facies
ea tibi in panes : & juxta numerum
dierum, quibus tu dormis
ſuper latus tuum, nonaginta &
centum diebus comedes ea. Et cibum 10
tuum comedes in pondere,
viginti (f) ſiclos die : à tempore
uſq; ad tempus comedes ea. Et 11
aquam in menſura bibes: & ſextam
partem (g) In à tempore uſque
ad tempus bibes. (b) Et ſubcinericium 12
hordeaceum, comedes
ea: in fimo ſtercoris humani abſcondes
ea ante oculos eorum ; Et 13
dices; Hæc dicit Dominus Deus
Iſrael, Sic comedent filii Iſrael
immunda in (i) gentibus. Et dixi; 14
Nequaquàm Domine Dee Iſrael
: ſi anima mea non eſt polluta
in immunditia, & morticinum,
& à beſtiis laceratum non
comêdi à nativitate mea uſque
nunc: & nō eſt ingreſſa in os meum
omnis caro (k) rancida. Et dixit 15
ad me; Ecce dedi tibi ſtercora
boū pro ſtercoribus humanis: &
facies panes tuos ſuper ea. Et dixit 16
ad me; Fili hominis, ecce ego
contero (l) fulcimentum panis in
Hieruſalem: & comedent panē in
pondere, & in penuria: & aquam
in menſura, & in interitu bibent:
Ut egentes fiant panis (c) & aquæ 17
: & delebitur homo, &
frater ejus, & contabeſcent in
iniquitatibus ſuis.

MS. A. (ζ) εἰς συγκλεισμὸν (η) ἰδοὺ ἐγὼ (θ) οὐ μὴ (ι) αἱ ἡμέραι (κ) ὃ
φάγεσαι ἐν σταθμίῳ, (λ) φάγεσαι, ἀπὸ καιροῦ καὶ ἕως (μ) τὸ ἕκτον (ν) κατακρύψεις
(˜) Ἰσραὴλ (ξ) κύριε κύριε, θεὲ τοῦ Ἰσραήλ· (ο) τῆς γενέσεώς (π) βέβηλον.
(ρ) κύριος πρὸς (σ) κύριος πρὸς (τ) τακήσονται

ΚΕΦ. ε'.

1 ΚΑὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, λάβε σεαυτῷ ῥομφαίαν
ὀξεῖαν ὑπὲρ ξυρὸν κουρέως, (α) κτήσῃ
αὐτὴν σεαυτῷ, καὶ ἐπάξεις αὐτὴν ἐπὶ τὴν
κεφαλήν σου, καὶ ἐπὶ τὸν πώγωνά σου· καὶ λήψῃ
ζυγὸν σταθμίων, καὶ διαστήσεις αὐτούς.
2 Τὸ τέταρτον (β) ἐν πυρὶ ἀνακαύσεις ἐν μέσῃ
τῇ πόλει κατὰ τὴν πλήρωσιν τῶν ἡμερῶν
τοῦ συγκλεισμοῦ· καὶ λήψῃ τὸ τέταρτον, καὶ
κατακαύσεις αὐτὸ ἐν μέσῳ αὐτῆς· καὶ τὸ τέταρτον
κατακόψεις ἐν ῥομφαίᾳ κύκλῳ αὐτῆς·
καὶ τὸ τέταρτον διασκορπιεῖς τῷ πνεύματι.
καὶ μάχαιραν ἐκκενώσω ὀπίσω αὐτῶν.
3 Καὶ λήψῃ ἐκεῖθεν ὀλίγους ἐν ἀριθμῷ, καὶ
4 συμπεριλήψῃ αὐτοὺς τῇ ἀναβολῇ σου. Καὶ
ἐκ τούτων λήψῃ ἔτι, καὶ ῥίψεις αὐτοὺς εἰς
μέσον τοῦ πυρὸς, καὶ κατακαύσεις αὐτοὺς ἐν
πυρί· ἐξ αὐτῆς ἐξελεύσεται πῦρ. καὶ ἐρεῖς παντὶ οἴκῳ Ἰσραήλ,
MS. A. (α) κτῆσαι (β) τὸ ἐν

CAP. V.

ET tu, fili hominis, ſume tibi 1
gladiū acutū ſuper novaculā tōſoris:
poſſide eā tibi: & duces eā
ſuper caput tuū, & ſuper barbā
tuā. Et aſſumes ſtaterā ponderū;
& divides eos: (a) Quartā partē 2
in igni combures in media civitate
juxta completionem dierū
concluſionis: & aſſumes quartā,
& combures eā in medio ej': &
quartā concîdes in gladio in circuitu
ejus: & quartam diſperges
vento: Et gladium nudabo poſt eos.
Et aſſumes indè paucos in numero, 3
& circumligabis eos indumento
tuo. Et ex his ſumes adhuc, 4
& projicies eos in medium
ignis, & combures eos in igni. Ex
ea egredietur ignis. (b) Et dices
omni domui Iſrael;

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

וּלְצִיר יְרוּשְׁלֶם תְּתַקֵּן אַפָּךְ וּדְרָעָךְ תְּתַקֵּיף וְתִתְנַבֵּי עֲלַהּ : וְהָא גְּזֵרַת פִּתְגָּמִי עֲלָךְ כְּאֵסוּר 7 8
גְּדִילָן וְלָא תִתְהַפֵּיךְ מִסִּטְרָךְ לְסִטְרָךְ עַד אַשְׁלָמוּתָךְ יוֹמֵי צֵירָךְ : וְאַתְּ סַב לָךְ חִטִּין 9
וְסַעֲרִין וּפוּלָא וּטְלוּפְחִין וְדוּחַן וְכוּנָתִין וְתִתֵּן יַתְהוֹן בְּמָנָא חַד וְתַעְבֵּיד יַתְהוֹן לָךְ לְמֵיכַל
מִנְיַן יוֹמַיָּא דְּאַתְּ שְׁכֵיב עַל סִטְרָךְ תְּלַת מְאָה וְתִשְׁעִין יוֹמִין תֵּיכְלִנֵּיהּ : וּמֵיכְלָךְ דְּתֵיכְלִנֵּיהּ 10
בְּמַתְקַל עַסְרִין פִּילְסִין לְיוֹם מֵעִדָּן עַד עִדָּן תֵּיכְלִנֵּיהּ : וּמַיָּא בִּמְכִילָא תִשְׁתֵּי חַד מִן שִׁתָּא 11
בְּהִינָא מֵעִדָּן עַד עִדָּן תִּשְׁתֵּי : וַחֲרָרָא דִלְחֵים שְׂעוֹרִין תֵּיכְלִנַּהּ וְהִיא עַל גְּלֵי מַפְּקַת אֱנָשָׁא 12
תַּחַרְרִנַּהּ לְעֵינֵיהוֹן : וַאֲמַר יְיָ כְּדֵין יֵיכְלוּן בְּנֵי יִשְׂרָאֵל יַת מֵיכַלְהוֹן מְסָאַב בֵּינֵי עַמְמַיָּא 13
דְּאַגְלֵינוּן לְתַמָּן : וַאֲמָרִית קַבֵּל בָּעוּתִי יְיָ אֱלֹהִים הָא נַפְשִׁי לָא מְסָאֲבָא וּנְבֵילָא וּתְבִירָא 14
לָא אֲכָלֵית מִזְּעוּרִי וְעַד כְּעַן וְלָא אֲכָלֵית בְּסַר מְרַחָק : וַאֲמַר לִי חֲזֵי דִּיהָבֵית לָךְ יַת גְּלֵי 15
תוֹרַיָּא חֲלַף גְּלֵי אֱנָשָׁא וְתַעְבֵּיד יַת מֵיכְלָךְ עֲלֵיהוֹן : וַאֲמַר לִי בַּר אָדָם הָא אֲנָא תָבַר 16
סְעִיד מֵיכְלָא בִּירוּשְׁלֶם וְיֵיכְלוּן לַחְמָא בְּמַתְקַל וּבִיצְפָא וּמַיָּא בִּצְדוּ וּבְאִשְׁתְּמָמוּ יִשְׁתּוּן :
בְּדִיל דְּיֶחְסַר לְהוֹן מֵיכַל וּמִשְׁתֵּי וְיִצְדּוּן גְּבַר וַאֲחוּהִי וְיִתְמַסּוּן בְּחוֹבֵיהוֹן : 17

ה

וְאַתְּ בַּר אָדָם סַב לָךְ חַרְבָּא חֲרִיפָא מְסַפַּר גַּלָּבַיָּא תִּסַּב לָךְ וְתַעְבַּר עַל רֵישָׁךְ וְעַל דִּקְנָךְ 1
וְתִסַּב לָךְ מוֹזְנָן דְּמַתְקַל וְתִפְלְגִנּוּן : תִּלְתָּא בְּנוּרָא תַּדְלִיק בְּגוֹ קַרְתָּא כְּמִשְׁלַם יוֹמֵי צֵירָא 2
וְתִסַּב יַת תִּלְתָּא וְתִקְטוֹל בְּחַרְבָּא סַחֲרָנַהָא וְתִלְתָּא תְּבַדַּר לְכָל רוּחַ דְּכֵן יִתְבַּדְּרוּן
דְּקָטְלִין בְּחַרְבָּא אֲגָרֵי בָּתְרֵיהוֹן : וְתִסַּב מִתַּמָּן זְעֵיר בְּמִנְיָן וְתָצוּר יַתְהוֹן בִּכְנָפָךְ : וּמִנְּהוֹן 3 4
עוֹד תִּסַּב וְתִרְמֵי יַתְהוֹן לְגוֹ נוּרָא וְתוֹקִיד יַתְהוֹן בְּנוּרָא מִנַּהּ תִּפּוֹק אִשָּׁתָא עַל כָּל
בֵּית יִשְׂרָאֵל :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et ad obſidionem Jeruſalem diriges faciem tuam, & brachium tuum roborabis: 7
& prophetabis adverſùs eam. Et ecce decretum Verbi mei erit ſuper te 8
quaſi vinculum funiculorum; & non te convertes de latere tuo in latus tuum,
donec compleveris dies tuæ obſidionis. Et tu ſume tibi triticum, & hordeum, 9
& fabam, & lentes, & milium, & ſpeltam, & mittes ea in vaſe uno,
& facies ea tibi in cibum numero dierum quibus cubaveris ſuper latus tuum;
trecentis & nonaginta diebus comedes illum. Cibus autem tuus quo veſcêris, 10
erit in pondere viginti ſtateres in diem, à tempore uſque ad tempus
comedes illum. Et aquam in menſura bibes, ſextam partem hin : à tempore 11
uſque ad tempus bibes illam. Et ſubcinericium panem hordeaceum comedes 12
illum : ſuper excrementum ſtercoris humani ſubiges illum in oculis eorum.
Et dixit Dominus : Sic comedent filii Iſrael cibum pollutum ſuum inter populos 13
ad quos tranſmigrare eos feci. Et dixi: Suſcipe deprecationem meam 14
Domine Deus: ecce anima mea non eſt polluta, & morticinium & confractum
à beſtia non comedi ab infantia mea uſque nunc : & non comedi carnem
abominabilem. Et dixit mihi: Vide ut dederim tibi ſtercus boum pro 15
ſtercore hominis, & facies cibum tuum ſuper illud. Et dixit ad me: Fili hominis, 16
ecce ego conteram ſuſtentaculum cibi in Jeruſalem, & comedent cibum
ſuum in pondere & in ſolicitudine ; & aquam in deſolatione & ſtupore
bibent. Ut deficiat eis cibus & potus: & vaſtabuntur vir et frater ejus, et 17
tabeſcent in iniquitatibus ſuis.

CAP. V.

ET tu fili hominis tolle tibi gladium acutum, novaculam tonſorum tolles 1
tibi; et traduces ſuper caput tuum et ſuper barbam tuam, et aſſumes tibi lances 2
ponderis et divides eos. Tertiam partem igne combures in medio civitatis,
cùm completi fuerint dies obſidionis: et tolles tertiam partem, et occides
gladio quæ in circuitu ejus ſunt; et tertiam partem diſperges omni vento;
ſic enim diſpergentur; et occidentes gladio immittam poſt eos. Et tolles 3
inde paucos numero, et ligabis eos in extremitate pallii tui. Et ex eis rurſus 4
tolles et projicies illos in medium ignis, et combures eos igni: tunc egredietur
ignis in omnem domum Iſrael.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

ܘܠܘܬ ܟܪܟܘܡܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ ܬܛܝܒ ܐܦܝܟ. ܘܕܪܥܟ ܬܥܫܢ. ܘܬܬܢܒܐ ܥܠܝܗ. * ܗܐ ܓܝܪ ܝܗܒܬ 7 8
ܥܠܝܟ ܫܫܠܬܐ. ܘܠܐ ܬܬܗܦܟ ܡܢ ܓܒܐ ܠܓܒܐ. ܥܕܡܐ ܕܢܫܬܠܡܘܢ ܝܘܡܬܐ ܕܐܣܝܪܘܬܟ.
* ܘܣܒ ܠܟ ܚܛܐ. ܘܣܥܪܐ. ܦܘܠܐ. ܘܛܠܦܚܐ. ܘܕܘܚܢܐ ܘܟܘܢܬܐ .. ܘܪܡܝ ܐܢܘܢ 9
ܒܡܐܢܐ ܚܕ. ܘܥܒܕ ܐܢܘܢ ܠܟ ܠܚܡܐ. ܠܡܢܝܢܐ ܕܝܘܡܬܐ ܕܐܢܬ ܕܡܟ ܥܠ ܓܒܟ. ܬܠܬܡܐܐ
ܘܬܫܥܝܢ ܝܘܡܝܢ ܬܐܟܠܝܘܗܝ. * ܘܡܐܟܘܠܬܟ ܬܗܘܐ ܒܡܬܩܠܐ ܥܣܪܝܢ ܣܐܬܝܢ ܒܝܘܡ. ܡܢ 10
ܙܒܢ ܠܙܒܢ. * ܘܡܝܐ ܒܡܫܘܚܬܐ ܬܫܬܐ. ܚܕ ܡܢ ܫܬܐ ܡܢܘܢ ܕܗܝܢܐ. ܡܢ ܙܒܢ ܠܙܒܢ 11
ܬܫܬܐ. * ܘܓܪܨܬܐ ܕܣܥܪܐ ܬܐܟܘܠ. ܘܬܛܘܝܗ̇ ܥܠ ܙܒܠܐ ܕܒܪܢܫܐ ܠܥܝܢܝܗܘܢ. * ܐܡܪ ܡܪܝܐ. 12 13
ܗܟܢܐ ܢܐܟܠܘܢ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܠܚܡܗܘܢ ܒܛܡܐܘܬܐ. ܒܝܬ ܥܡܡܐ ܕܐܒܕܪ ܐܢܘܢ
ܠܬܡܢ. * ܘܐܡܪܬ. ܐܠܗܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ .. ܢܦܫܝ ܠܐ ܗܘܬ ܡܬܛܡܝܐ. ܘܢܒܝܠܬܐ ܘܬܒܝܪܬܐ 14
ܕܚܝܘܬܐ .. ܠܐ ܐܟܠܬ ܡܢ ܛܠܝܘܬܝ. ܘܥܕܡܐ ܠܝܘܡܢܐ. ܘܠܐ ܥܠ ܒܦܘܡܝ ܒܣܪܐ ܛܢܦܐ.
* ܘܐܡܪ ܠܝ. ܗܐ ܝܗܒܬ ܠܟ ܙܒܠܐ ܕܬܘܪܐ ܚܠܦ ܙܒܠܐ ܕܒܪܢܫܐ. ܘܬܥܒܕ ܠܚܡܟ 15
ܥܠܝܗܘܢ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܒܪ ܐܢܫܐ .. ܗܐ ܐܢܐ ܬܒܪ ܐܢܐ ܣܒܝܪܐ ܕܠܚܡܐ ܒܐܘܪܫܠܡ. ܘܢܐܟܠܘܢ 16
ܠܚܡܐ ܒܡܬܩܠܐ. ܘܡܝܐ ܒܨܗܝܐ. ܒܡܫܘܚܬܐ ܢܫܬܘܢ. * ܘܢܣܘܪܘܢ ܕܢܚܣܪܘܢ ܠܚܡܐ 17
ܘܡܝܐ. ܘܢܫܬܚܩܘܢ ܓܒܪ ܘܐܚܘܗܝ. ܘܢܬܡܣܘܢ ܒܚܘܒܝܗܘܢ. * ܫܠܡ * ܗ *
* ܐܢܬ ܕܝܢ ܒܪ ܐܢܫܐ .. ܣܒ ܠܟ ܣܦܣܪܐ ܕܚܪܝܦܐ ܐܝܟ ܡܣܦܪܐ ܕܓܪܥܐ .. ܘܐܥܒܪܝܗ ܥܠ ܪܝܫܟ 1
ܘܥܠ ܕܩܢܟ. ܘܣܒ ܠܟ ܡܘܙܢܝܐ ܕܡܬܩܠܐ .. ܘܦܠܓ ܐܢܘܢ ܬܠܬ ܡܢܘܢ. * ܘܚܕܐ ܡܢ 2
ܬܠܬ ܡܢܘܢ .. ܐܘܩܕ ܒܢܘܪܐ ܒܓܘ ܡܕܝܢܬܐ .. ܡܐ ܕܡܫܬܠܡܝܢ ܝܘܡܬܐ ܕܐܣܝܪܘܬܟ.
ܘܬܣܒ ܡܢܬܐ ܐܚܪܬܐ .. ܘܬܦܣܩܝܗ ܒܣܦܣܪܐ ܚܕܪܝܗ ܕܡܕܝܢܬܐ. ܘܡܢܬܐ ܕܬܠܬ
ܬܕܪܐ ܒܪܘܚܐ. ܘܣܦܣܪܐ ܬܫܠܘܦ ܒܬܪܗܘܢ. * ܘܬܣܒ ܡܢ ܬܡܢ ܡܢܝܢܐ ܙܥܘܪܐ .. 3
ܘܬܨܪ ܒܟܢܦܟ. * ܘܡܢܗܘܢ ܬܘܒ ܬܣܒ .. ܘܬܪܡܐ ܐܢܘܢ ܒܓܘ ܢܘܪܐ. ܘܬܘܩܕ ܐܢܘܢ 4
ܒܢܘܪܐ. ܘܡܢܗܘܢ ܬܦܘܩ ܢܘܪܐ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ.

Ad obſidionem verò Jeroſolymæ comparabis 7
faciem tuam, & brachium tuum confirmabis,
& prophetabis contra illam. Ecce catenas 8
injiciam tibi, ne te vertas ab uno latere in alterum,
donec abſolvantur dies ergaſtuli tui.
Sume tibi frumentum, & hordeum, fabas, 9
lentes, milium, atque zeam, eaque in vas unum
inde, & ex iis confice tibi panem pro
numero dierum quibus incubiturus es lateri
tuo : trecentis ac nonaginta diebus comedes
illum. Cibus autem tuus ſit viginti ſiclorum 10
indies, de tempore in tempus : Aquam 11
etiam cum menſura bibas ; unam è ſex
partibus heminæ de tempore in tempus bibes.
Placentam hordei comedes aſſatam 12
ſuper ſtercus humanum in præſentia eorum.
Dicit Dominus, Ita comedent Iſraelitæ panem 13
ſuum in immunditia, inter gentes quò
diſpellam eos. Dicenti verò mihi, Deus dominorum 14
Domine, anima mea non fuit unquam
polluta, morbidum aut à bellua diſcerptum
nunquam comedi à pueritia mea ad hodiernum
uſque diem, neque ingreſſa eſt in os
meum caro immunda : Reſpondit, Ecce do 15
tibi ſtercora bovina pro ſtercoribus humanis,
ut conficias ſuper iis panem tuum. Tum 16
dixit mihi ; Fili hominis, ecce fracturus ſum
culmum frumenti in Jeruſalem, ita ut panem
in pondere comedant, & aquam tempore ſitis
in menſura bibant : Patientur enim penuriam 17
panis & aquæ, vir cum fratre ſuo deficient,
& in iniquitate ſua tabeſcent.

CAP. V.

Tu autem fili hominis, accipe tibi gladiolum 1
acutum ut novaculam tonſoriam, eumque
traduc ſuper caput tuum & ſuper barbam
tuam : deinde cape tibi trutinam libræ,
eóſque *pilos* divide tres in partes. Unam è 2
tribus illis partibus igni combure intra urbem,
cùm exacti fuerint dies ergaſtuli tui :
alteram partem capiens, gladio concîdes circum
urbem : tertiam denique partem diſperges
in ventum : nam gladius nece perſequetur 3
eos. Inde tamen excipies paucos numero,
quos in fimbria tua colligabis : Et ex 4
his rurſum capies *aliquot*, eóſque in ignem
projicies, ignéque combures : atque ex his
prodibit ignis contra omnes Iſraelitas.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

*ولحبس ايروسليم تهيي وجهك وتشدد ساعدك وتنبي عليها *وها انا اعطيت عليك رباطات* 7 8
فلا تنقلب من جنبك الي جنبك* الي ان تكمل ايام حبسك *وانت خذ لنفسك قمحا وشعيرا* 9
وفولا وعدسا ودخنا وسوفين* وتضعها في اناء واحد خزفي* وتصنعها لذاتك قوتا كعدد الايام
التي انت تنامها علي جنبك* مايه وتسعين يوما تاكلها *وطعامك الذي تاكله بالميزان* 10
عشرين مثقالا تاكله في اليوم* من وقت الي وقت تاكلها *والماء بالكيل تشربه* سدس قسط 11
من وقت الي وقت تشربه *ورغيفا مليلا من شعير تاكله* تخبز برجيع زبل الناس لعيونهم* 12
وتقول *هكذا يقول الرب اله اسرائيل* هكذا ياكل بنو اسرائيل النجاسات في الامم *فقلت حاش 13 14
لي يا رب يا اله اسرائيل* ان نفسي لم تتنجس بنجاسة ورمة* وفريسة الوحش لم اكلها منذ
نشاتي والي الان* ولم يدخل في فمي لحم نجس بالكلية *فقال لي الرب* ها اعطيتك رجيع البقر 15
عوضا من رجيع الناس* فتصنع خبزك عليه *وقال لي الرب* يا ابن الانسان ها انا اكسر رفد 16
الخبز في ايروسليم* وياكلون الخبز بالوزن وبالقحط* ويشربون الماء بالكيل وبالفناء*
كيف يصيروا مقلين من الخبز والماء ويهلك الانسان واخوه* ويذوبون بظلاماتهم* 17

*وانت يا ابن الانسان خذ لذاتك سيفا * الفصل الخامس * 1
حادا اكثر من موسي الحلاق* اقتنه لذاتك* وعبر به علي راسك ولحيتك* وخذ ميزان
الصنجات فتعيرهم *الربع تحرقه بالنار في وسط المدينة لكمال ايام حبسك* وخذ الربع 2
وتحرقه في وسطها* والربع تقطعه بالسيف حولها* والربع تذريه للريح* فاني افرغ سيفا خلفهم*
وخذ من هناك قليلا بالعدد وتلفه في كساءك *وخذ ايضا منه وتطرحه في وسط 3 4
النار وتحرقه بالنار* لان منها تخرج النار* وتقول لكل بيت اسرائيل*

Et ad obſidionem Jeroſolymæ parabis faciem 7
tuam, brachium tuum confirmabis, et
prophetabis adverſùs eam. Ecce autem 8
ego injiciam tibi vincula, ne te vertas ab
uno *latere ad* aliud *latus, quoad abſolvantur*
dies carceris tui. Quapropter 9
tu accipe tibi frumentum, hordeum,
fabas, lentes, milium atque viciam ; eaque repones in vaſe uno teſtaceo,
ſervabiſq; tibi in alimentum juxta numerum
dierum quibus cubaturus es ſuper
latus tuum, centum nonaginta diebus
comedes ea. Cibum autem tuum quem 10
comedes, ſtaterâ ponderabis; *viginti ſiclorũ* pondere *comedes eum ſingulis diebus :*
de tempore in tempus comedes illa. Aquã 11
etiam menſurâ bibes, ſextam partem hin,
quam à tempore ad tempus bibes. Panem 12
ſubcinericium hordeaceum comedes eum,
in excremento ſtercoris humani coques
illum ante oculos eorum, & dices; Sic ait 13
Dominus Deus Iſraelis; Ita comeſturi ſunt
filii Iſraelis immunditias inter gentes. Et 14
dixi, Abſit à me O Domine, O Deus Iſraelis:
nam anima mea nunquam contaminata
eſt immunditie aut cadavere, & prædam
feræ nunquam comedi ab adoleſcentia
mea huc uſque, neque ingreſſa eſt in os meum
caro immunda, omnino. Dixit autem 15
mihi Dominus, Ecce do tibi excrementa
bovina pro excrementis humanis, ut ponas
panem tuum ſuper ea. Dixit quoque 16
mihi Dominus ; O fili hominis, ecce ego
fracturus ſum ſubſidium panis in Jeruſalem;
comedentque panem in pondere &
penuriâ, bibentque aquam in menſura &
interitu. Quomodo fient egentes panis 17
& aquæ, & peribit homo cum fratre ſuo,
& colliqueſcent propter ſcelera ſua?

CAP. V.

Et tu O fili hominis, ſume tibi gladium 1
acutiorem novaculâ tonſoris, poſſide
eum tibi, & traduc eum ſuper caput tuum
& barbam tuam : deinde ſumes bilances,
& ponderabis eos (pilos:) *Quartam* 2
partem igne combures in medio urbis
poſt finem dierum carceris tui : & quartam
partem capies, combureſque eam in
medio ipſius : quartam partem gladio
concîdes circa ipſam: & quartam partem
diſperges in ventum: nam gladium nudaturus
ſum poſt eos. Et accipies inde paucos 3
numero, quos involves in veſte tua.
Et ex his accipies adhuc, projicieſq; in medium 4
ignis, igneq; combures: nã ex his egredictur
ignis. Et dices toti domui Iſraelis,

gentium medio in , Jerusalaim Ista : Deus Dominus dixit Sic
5 כה אמר אדני יהוה זאת ירושלם בתוך הגוים
impietatẽ in mea judicia mutavit Et .terras ej' *circuitibus* & :eam posui
6 שמתיה וסביבותיה ארצות: ותמר את־משפטי לרשעה
quia : ej' *circuitibus* quæ terris præ mea statuta & ,gentibus præ
מן־הגוים ואת־חקותי מן־הארצות אשר סביבותיה כי
.eis in ambulaverunt non meis *statutis* & ,*reprobaverunt* mea judicia *in*
במשפטי מאסו וחקותי לא־הלכו בהם:
quæ , gentibus de *vos multiplicare Propter*:Deus Dominus dixit sic Idcirco
7 לכן כה־אמר אדני יהוה יען המנכם מן־הגוים אשר
non mea judicia & ,ambulâstis non meis *statutis in* , *vestris circuitibus*
סביבותיכם בחקותי לא הלכתם ואת־משפטי לא
.fecistis non *vestris circuitibus* quæ ,gentium judicia juxta & ; fecistis
עשיתם וכמשפטי הגוים אשר סביבותיכם לא עשיתם:
faciam & : ego etiam , te ad ego Ecce : Deus Dominus dixit sic Ideo
8 לכן כה אמר אדני יהוה הנני עליך גם־אני ועשיתי
quod te in faciam Et .gentium oculis in judicia tui medio in
9 בתוכך משפטים לעיני הגוים: ועשיתי בך את אשר
omnes propter,ultrà *illud sicut* sum facturus non quòd & , feci non
לא־עשיתי ואת אשר־לא־אעשה כמהו עוד יען כל־
filii & ,tui medio in filios comedent patres Ideo .tuas abominationes
10 תועבתיך : לכן אבות יאכלו בנים בתוכך ובנים
omne ventilabo & , judicia te in faciam Et .suos patres comedent
יאכלו אבותם ועשיתי בך שפטים וזריתי את־כל־
, Deus Dominus dixit ,ego *vivens* Idcirco .*ventum omnem* in tuã residuã
11 שאריתך לכל־רוח : לכן חי־אני נאם אדני יהוה
,tuis cõtaminationib' omnib' *in polluisti* meũ sanctuariũ quòd eo pro nisi
אם־לא יען את־מקדשי טמאת בכל־שקוציך
parcet non &,diminuam ego etiam &:tuis abominationib' cunctis *in* &
ובכל־תועבתיך וגם־אני אגרע ולא תחוס
peste in tui tertia Pars .miserebor non ego etiam &,meus oculus
12 עיני וגם־אני לא אחמול: שלשתיך בדבר
gladio in tertia pars & ,tui medio in *consummabuntur* fame in & ,*morientur*
ימותו וברעב יכלו בתוכך והשלשית בחרב
gladiũ &,dispergam ventum omnẽ in partẽ tertiam & :*tuis circuitibus cadent*
יפלו סביבותיך והשלשית לכל־רוח אזרה וחרב
faciã requiescere & ,meus furor *consummabitur* Et .eos post *evacuabo*
13 אריק אחריהם: וכלה אפי והנחותי
Dominus ego quòd scient & :ero consolatus & ,eis in meã *excandescentiam*
חמתי בם והנחמתי וידעו כי־אני יהוה
.eis in meam indignationem *me consummando in* ,meo zelo in sum locutus
דברתי בקנאתי בכלותי חמתי בם:
:*tuis circuitibus* quæ , gentibus in opprobrium in & ,desertum in te dabo Et
14 ואתנך לחרבה ולחרפה בגוים אשר סביבותיך
,*castigatio*,*convitium* & ,opprobrium erit Et .transeuntis omnis oculis in
15 לעיני כל־עובר: והיתה חרפה וגדופה מוסר
judicia te in *me faciendo in* ,*tuis circuitibus* quæ , gentibus stupor &
ומשמה לגוים אשר סביבותיך בעשותי בך שפטים
.sum locutus Dominus Ego .iræ increpationib' in & ,ira in &,furore in
באף ובחמה ובתכחות חמה אני יהוה דברתי:
,*corruptione* in erunt quæ ,eis in malas famis sagittas *me mittendo In*
16 בשלחי את־חצי הרעב הרעים בהם אשר־היו למשחית
,vos super *colligam* famem & :vos *corrumpendum ad* ,*eas* mittam quas
אשר־אשלח אותם לשחתכם ורעב אסף עליכם
,famem vos super mittam Et .panis baculum vobis conteram &
17 ושברתי לכם מטה־לחם: ושלחתי עליכם רעב
:te per transibit sanguis &,pestilentia & ; te orbabunt & ,*malam feram* &
וחיה רעה ושכלך ודבר ודם יעבר־בך
.sum locutus Dominus Ego .te super inducam gladium &
וחרב אביא עליך אני יהוה דברתי:

Versio VULG. LAT.

5 Hæc dicit Dominus Deus; Ista est Jerusalem, in medio Gentium posui eam, & in circuitu ejus 6 terras. Et cõtempsit judicia mea, ut plus esset impia quàm Gentes; & præcepta mea, ultrà quàm terræ quæ in circuitu ejus sunt: judicia enim mea projecerunt, & in præceptis meis non ambulaverunt. 7 Idcircò hæc dicit Dñs Deus; Quia superâstis Gentes, quæ in circuitu vestro sunt, & in præceptis meis non ambulâstis, & judicia mea non fecistis, & juxta judicia Gentiũ, quæ in circuitu vestro sunt, non estis operati: 8 Ideò hæc dicit Dñs Deus; Ecce ego ad te, & ipse ego faciã in medio tuî judicia in oculis 9 Gentium. Et faciam in te quod non feci, & quibus similia ultrà non faciam, propter omnes abo-10 minationes tuas. Ideò patres comedent filios in medio tuî, & filii comedent patres suos, & faciam in te judicia, & ventilabo universas reliquias tuas in omnẽ 11 ventum. Idcircò, Vivo ego, dicit Dñs De': Nisi pro eo quòd Sanctum meum violâsti in omnibus offensionib' tuis, & in cunctis abominationib' tuis: ego quoq; confringam, & non parcet ocul' 12 meus, & non miserebor: Tertia pars tuî peste morietur, & fame consumetur in medio tuî: & tertia pars tuî in gladio cadet in circuitu tuo: tertiam verò partem tuam in omnem ventum dispergam, & gladium evaginabo 13 post eos. Et complebo furorem meum, & requiescere faciam indignationem meam in eis, & consolabor: & scient quia ego Dominus locutus sum in zelo meo, cùm implevero indignatio-14 nem meam in eis. Et dabo te in desertũ & in opprobrium Gentibus, quæ in circuitu tuo sunt, in conspectu omnis prætereuntis. 15 Et eris opprobrium, & blasphemia, exemplum & stupor in Gentibus quæ in circuitu tuo sunt, cùm fecero in te judicia in furore, & in indignatione, & 16 in increpationibus iræ. Ego Dominus locutus sum: Quando misero sagittas famis pessimas in eos; quæ erunt mortiferæ, & quas mittam ut disperdam vos: & famem congregabo super vos, & conteram in vobis baculum pa-17 nis. Et immittam in vos famem, & bestias pessimas usque ad internecionem: & pestilentia, & sanguis transibunt per te, & gladium inducam super te. Ego Dominus locutus sum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

5 Τάδε λέγει (γ) κύριος, Αὕτη ἡ Ἱερουσαλὴμ, ἐν μέσῳ τῶν ἐθνῶν τέθεικα αὐτὴν, 6 ϗ τὰς κύκλῳ αὐτῆς χώρας. Καὶ ἐρεῖς τὰ δικαιώματά μου τῇ ἀνόμῳ ἐκ τῶν ἐθνῶν, καὶ τὰ νόμιμά μου (˜) τῶν χωρῶν τῶν κύκλῳ αὐτῆς· διότι τὰ δικαιώματά μου ἀπώσαντο, ϗ ἐν τοῖς νομίμοις μου οὐκ ἐπορεύθησαν ἐν αὐτοῖς. 7 Διατοῦτο τάδε λέγει (δ) κύριος, Ἀνθ᾽ ὧν ἡ ἀφορμὴ ὑμῶν ἐκ τῶν ἐθνῶν τῶν κύκλῳ ὑμῶν, ϗ ἐν τοῖς νομίμοις μου οὐκ ἐπορεύθητε, καὶ τὰ δικαιώματά μου οὐκ ἐποιήσατε, ἀλλ᾽ οὐδὲ κατὰ τὰ δικαιώματα τῶν ἐθνῶν τῶν κύκλῳ ὑμῶν (ε) οὐ πεποιήκατε, 8 Διατοῦτο τάδε λέγει (ζ) κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπὶ σὲ, καὶ ποιήσω ἐν μέσῳ σου κρίμα ἐνώπιον τῶν 9 ἐθνῶν. Καὶ ποιήσω ἐν σοὶ ἃ (η) οὐ πεποίηκα, ϗ (θ) ἃ οὐ ποιήσω ὅμοια αὐτοῖς, ἔτι 10 κατὰ πάντα τὰ βδελύγματά σου. Διατοῦτο πατέρες φάγονται τέκνα ἐν μέσῳ σου, καὶ τέκνα φάγονται πατέρας· καὶ ποιήσω ἐν σοὶ κρίματα, ϗ διασκορπιῶ πάντας τοὺς καταλοίπους σου εἰς πάντα ἄνεμον. 11 Διατοῦτο, Ζῶ ἐγὼ, λέγει (ι) κύριος, ἦ μὴν ἀνθ᾽ ὧν τὰ ἅγιά μου ἐμίανας ἐν πᾶσι τοῖς (κ) βδελύγμασί σου, κἀγὼ ἀπώσομαί σε, (λ) οὐ φείσεταί μου ὁ ὀφθαλμὸς, 12 (μ) κἀγὼ οὐκ ἐλεήσω. Τὸ τέταρτόν σου ἐν θανάτῳ ἀναλωθήσεται, καὶ τὸ τέταρτόν σου ἐν λιμῷ συντελεσθήσεται ἐν μέσῳ σου, ϗ τὸ τέταρτόν σου εἰς πάντα ἄνεμον (ν) σκορπιῶ αὐτοὺς, ϗ τὸ τέταρτόν σου ἐν ῥομφαίᾳ πεσοῦνται κύκλῳ σου, ϗ 13 μάχαιραν ἐκκενώσω ὀπίσω αὐτῶν. Καὶ συντελεσθήσεται ὁ θυμός μου, ϗ ἡ ὀργή μου ἐπ᾽ αὐτοὺς, καὶ ἐπιγνώσῃ, διότι ἐγὼ κύριος λελάληκα ἐν (ξ) ζήλῳ μου, ἐν τῷ συν-14 τελέσαι με τὴν ὀργήν μου ἐπ᾽ αὐτούς. Καὶ θήσομαί σε εἰς ἔρημον, καὶ τὰς θυγατέρας σου κύκλῳ σου ἐνώπιον παντὸς διο-15 δεύοντος. Καὶ ἔσῃ στενακτὴ ϗ (ο) δηλαϊστὴ ἐν τοῖς ἔθνεσι τοῖς κύκλῳ σου, ἐν τῷ ποιῆσαί με ἐν σοὶ κρίματα (π) ἐν ἐκδι-16 κήσει θυμοῦ μου· Ἐγὼ κύριος λελάληκα. (ρ) καὶ ἐν τῷ ἀποστεῖλαί με βολίδας τοῦ λιμοῦ ἐπ᾽ αὐτοὺς, καὶ ἔσονται εἰς ἔκλειψιν, 17 ϗ συντρίψω στήριγμα ἄρτου σου. Καὶ ἐξαποστελῶ ἐπὶ σὲ λιμὸν καὶ θηρία πονηρὰ, ϗ τιμωρήσομαί σε, καὶ θάνατος ϗ αἷμα διελεύσονται ἐπὶ σὲ, καὶ ῥομφαίαν ἐπάξω ἐπὶ σὲ κυκλόθεν· ἐγὼ κύριος λελάληκα.

5 Hæc dicit Dominus; Ista est Hierusalem: in medio gentium posui eam, & quæ sunt in circuitu ejus, terras. 6 Et dices (c) justificationes meas ipsi iniquæ ex gentibus, & legitima mea de regionibus, quæ sunt in circuitu ejus. Justificationes enim meas projecerunt, & in legitimis meis non ambulaverunt in eis. 7 Idcircò hæc dicit Dominus; (d) Quia occasio vestra de gentibus, quæ in circuitu vestro sunt, & in legitimis meis non ambulastis, & justificationes meas non fecistis: sed neque juxta justificationes gentium, quæ in circuitu vestro sunt, fecistis: 8 Ideò hæc dicit Dominus; Ecce ego super te, & faciam in medio tuî judicium coram gentibus: 9 Et faciam in te, quæ non feci, & quæ non faciam similia eis ultrà secundùm omnes abominationes tuas. 10 Idcircò patres comedent filios in medio tuî: & filii comedent patres. Et faciam in te judicia: & dispergam omnes residuos tuos in omnem ventum. 11 Idcircò, Vivo ego, dicit Dominus, (e) profectò pro eo quòd Sancta mea (f) polluisti in omnibus abominationibus tuis, & ego abjiciam te: non parcet oculus meus: & ego non miserebor. 12 Quarta tuî pars in morte consumetur: & (g) quarta tuî pars in fame consumetur in medio tuî: & quartam tuî partem in omnem ventum dispergam eos: & (h) quarta pars tuî in gladio cadent in circuitu tuo: & gladium nudabo post eos. 13 Et complebitur furor meus, & ira mea super (i) eos: & scies, quia ego Dominus loquutus sum in zelo meo, in complendo me iram meam super eos. 14 Et ponam te in (k) desertum, & filias tuas in circuitu tuo in conspectu omnis prætereuntis. 15 Et eris gemibilis, (l) & misera in gentibus, quæ in circuitu tuo, in faciendo me judicia in te (m) in ultione furoris mei. 16 Ego Dominus loquutus sum. Et in emittendo me sagittas famis super eos, & erunt in (n) defectionem, & conteram firmamentum panis tui: 17 Et emittam super te famem, & bestias pessimas: & puniam te: & mors & sanguis transibunt super te: & gladium inducam super te in circuitu. Ego Dominus loquutus sum.

MS. A. (γ) ἀδωναὶ κύριος τῇ Ἱερουσαλὴμ, Ἐμμέσῳ (˜) ἐκ τῶν (δ) ἀδωναὶ κύριος, (ε) οὐκ ἐποιήσατε, (ζ) ἀδωναὶ κύριος, (η) οὐκ ἐποίησα, (θ) οὐ μὴ ποιήσω (ι) ἀδωναὶ κύριος, εἰ μὴ ἀνθ᾽ ὧν (κ) προσοχθίσμασίν σου, ϗ ἐν πᾶσιν τοῖς βδελύγμασίν σου, ϗ ἐγὼ (λ) ϗ οὐ (μ) ϗ ἐγὼ οὐκ ἐλεήσω σε. (ν) διασπερῶ (ξ) τῷ ζήλῳ (ο) δηλαία (π) ἐν ὀργῇ ϗ ἐν θυμῷ ϗ ἐν (ρ) ἐν τῷ ἐξαποστεῖλαί με τὰς βολίδας μου τοῦ θυμοῦ ἐπ᾽

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 כדנן אמר יי אלהים דא ירושלם בגו עממיא שויתהא וסחור סחור לה מדינתא:
6 ואשניאת ית דיני למחבביהון מן עממיא וית קימי מן מדינתא די בסחרנהא ארי בדיני
7 קצו וקימי לא הליכו בהון: בכן כדנן אמר יי אלהים חלף דחבתון מן עממיא די
בסחרניכון בקימי לא הלכתון וית דיני לא עבדתון וכנימוסי עממיא די בסחרניכון
8 לא עבדתון: בכן כדנן אמר יי אלהים הא אנא שלח רוגזי עלך אף אנא ואעביד בגויך
9 פורענות דינין לעיני עממיא: ואעביד ביך ית דלא עבדית וית דלא אעביד דכותיה עוד
10 חלף כל תועבתיך: בכן אבהן יכלון בסר בניהון בגויך ובניא יכלון בסר אבהתהון
11 ואעביד ביך פורענות דינין ואבדר ית כל שאר עמיך לכל רוח: בכן קים אנא אמר יי
אלהים אם לא חלף דמקדשי סאיבת בכל שקוציך ובכל תועבתיך ואף אנא אקטוף
12 תקוף דרעיך ולא יחוס מימרי ואף אנא לא ארחם: תלתיך במותא ימותון ובכפנא
ישתיצון בגויך ותלתא בחרבא יתקטלון סחרניך ותלתא לכל רוח אבדר ודקטלין
13 בחרבא אגרי בתריהון: ויחול רוגזי ואניח חמתי בהון ואסיף וידעון ארי אנא יי גזרית
14 במימרי ואקים כד יחול רוגזי בהון: ואתננך לחרבא ולחסודין בין עממיא די בסחרנך
15 לעיני כל דעדי: ותהין לחסודין ולאתרברבא עלך צדו ואשתממו לעממיא דבסחרנך
16 כד אעביד ביך פורענות דינין ברגז ובחמה ובתקוף רגז אנא יי גזרית במימרי: בגריותי
ית מחת כפנא מכתשין בישין דמתקנין לחבלא דאשלח יתהון לחבלותכון וכפנא
17 אוסיף עליכון ואתבר לכון סעד מיכלא: ואשלח עליכון כפנא וחיתא בישתא
ויתכלונך ומותא וקטלא יעדון ביך ודקטלין בחרבא איתי עלך אנא יי גזרית במימרי:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

5 Hæc dicit Dñs De': Ista est Hierusalẽ: in medio populorũ posui eã, & in circuitu *ejus provincias*. 6 Et mutavit judicia mea, ut peccaret in eis magis quàm populi, & pacta mea magis quàm provinciæ quæ in circuitu ejus sunt; quia judicia mea detestati sunt, & in pactis meis non ambulaverũt. 7 Propterea hæc dicit Dñs De': Pro eo quòd peccastis magis quàm populi qui in circuitu vestro sunt, & in pactis meis non ambulastis, & judicia mea non fecistis, & juxta leges populorũ qui sunt in circuitu vestro, non fecistis; 8 Ideò hæc dicit Dñs Deus: Ecce ego immitto furorẽ meũ contra te etiam ego, & faciã in medio tui ultionem judiciorum in oculis populorum. 9 Et faciam in te id quod non feci, & cui simile non faciam ultrà pro omnibus abominationib' tuis. 10 Ideò patres comedent carnes filiorum suorum in medio tui, & filii comedent carnem patrum suorum: & faciã in te ultionẽ judiciorum, & dispergã omnes reliquias populi tui in omnem ventum. 11 Propterea vivo ego, dicit Dñs Deus, nisi pro eo quòd sanctuarium meum polluisti in omnib' immunditiis tuis, & in omnib' abominationib' tuis, ego quoq; conterã *robur brachii tui*, & non parcet Verbum meum, & ego quoq; non miserebor. 12 Tertia pars tui peste morietur, & fame consumetur in medio tui: & tertia pars tui gladio occidetur in circuitu tuo, & tertiã partem in omnem ventum dispergã, & occidentes gladio immittã post eos. 13 Et manebit furor meus, & requiescere faciã indignationem meã in eis, & finiã: & scient quia ego Dñs decrevi in verbo meo, & exequar cùm resederit ira mea in eis. 14 Et dabo te in solitudinem & in opprobria inter populos qui in circuitu tuo sunt in oculis omnis transeuntis. 15 Et eris in opprobria & ut magnificentur super te, & in desolationem et stuporem populis qui in circuitu tuo sunt, cùm fecero in te ultionem judiciorum in furore et indignatione, et in ira furoris: ego Dñs decrevi in verbo meo. 16 Cùm misero percussionem famis, et plagas malas quæ parata sunt ad disperdendum, quas mittam ut disperdam vos: et famem adjiciam super vos, et conteram vobis sustentaculum panis. 17 Et mittam in vos famem, et bestias pessimas, et absque liberis te facient: pestilentia et *cædes* transibunt per te: et occidentes gladio inducam super te. Ego Dominus decrevi in verbo meo.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘ̈ܬܐ. ܗܕܐ ܐܘܪܫܠܡ ܒܝܢܝ ܥܡ̈ܡܐ ܣܡܬܗ̇. ܘܟܠܗܝܢ ܡܕܝ̈ܢܬܐ 5
ܚܕܪܝܢ ܠܗ̇. * ܘܫܚܠܦܬ ܕܝ̈ܢܝ ܠܚܛܝܬܐ ܝܬܝܪ ܡܢ ܥܡ̈ܡܐ. ܘܦܘܩܕ̈ܢܝ ܝܬܝܪ ܡܢ ܡܕܝ̈ܢܬܐ ܕܚܕܪܝܢ 6
ܠܗ̇. ܡܛܠ ܕܕܝ̈ܢܝ ܐܣܠܝܘ. ܘܒܦܘܩܕ̈ܢܝ ܠܐ ܗܠܟܘ. * ܡܛܠ ܗܢܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ 7
ܡܪܝܐ ܡܪܘ̈ܬܐ. ܚܠܦ ܕܐܬܚܫܒܬܘܢ ܡܢ ܥܡ̈ܡܐ ܕܚܕܪܝܢ ܠܟܘܢ: ܘܒܦܘܩܕ̈ܢܝ ܠܐ ܗܠܟܬܘܢ:
ܘܕܝ̈ܢܝ ܠܐ ܥܒܕܬܘܢ: ܘܥܒܕܬܘܢ ܕܝ̈ܢܐ ܕܥܡ̈ܡܐ ܕܚܕܪܝܢ ܠܟܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ. ܗܟܢܐ 8
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘ̈ܬܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟܝ. ܘܐܥܒܕ ܒܓܘܟܝ. ܕܝ̈ܢܐ. ܩܕܡ ܟܠܗܘܢ ܥܡ̈ܡܐ.
* ܘܐܥܒܕ ܒܟܝ. ܡܕܡ ܕܠܐ ܥܒܕܬ. ܘܡܕܡ ܕܠܐ ܐܥܒܕ ܬܘܒ ܐܟܘܬܗ. ܡܛܠ ܟܠܗܝܢ 9
ܛܢܦܘ̈ܬܟܝ. * ܡܛܠ ܗܢܐ. ܐܒܗ̈ܐ ܢܐܟܠܘܢ ܒ̈ܢܝܗܘܢ ܒܓܘܟܝ. ܘܒ̈ܢܝܐ ܢܐܟܠܘܢ 10
ܠܐܒܗ̈ܝܗܘܢ. ܘܐܥܒܕ ܒܟܝ ܕܝ̈ܢܐ. ܘܐܕܪܐ ܠܟܠܗܘܢ ܕܡܫܬܚܪܝܢ ܒܓܘܟܝ. ܒܟܠ ܪܘܚ.
* ܡܛܠ ܗܢܐ. ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘ̈ܬܐ. ܠܐ ܕܛܢܦܬܝ ܡܩܕܫܝ. ܒܟܠ ܛܢܦܘ̈ܬܟܝ. 11
ܘܒܟܠܗ ܛܢܦܘܬܟܝ. ܐܦ ܐܢܐ ܐܣܠܝܟܝ. ܘܠܐ ܬܚܘܣ ܥܝܢܝ ܥܠܝܟܝ. ܘܠܐ ܐܪܚܡ. * ܚܕܐ 12
ܡܢܟܝ. ܒܡܘܬܐ ܢܡܘܬܘܢ. ܘܒܟܦܢܐ ܢܣܘܦܘܢ ܒܓܘܟܝ. ܘܐܚܪܬܐ. ܒܚܪܒܐ ܢܦܠܘܢ
ܚܕܪ̈ܝܟܝ. ܘܬܠܝܬܝܬܐ. ܒܟܠ ܪܘܚ ܐܕܪܐ. ܘܣܝܦܐ ܐܫܠܘܦ ܒܬܪܗܘܢ. * ܘܐܫܡܠܐ ܪܘܓܙܝ. 13
ܘܐܢܝܚ ܚܡܬܝ ܒܗܘܢ. ܘܐܬܒܝܐ. ܘܢܕܥܘܢ. ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܕܡܠܠܬ ܒܛܢܢܝ. ܡܐ
ܕܫܡܠܝܬ ܒܗܘܢ ܪܘܓܙܝ. * ܘܐܬܠܟܝ ܠܚܘܪܒܐ ܘܠܚܣܕܐ ܒܥܡ̈ܡܐ ܕܚܕܪܝܟܝ. ܠܥܝܢ 14
ܩܕܡ ܟܠ ܕܥܒܪ. * ܘܬܗܘܝܢ ܠܚܣܕܐ ܘܠܓܘܕܦܐ. ܘܠܡܪܕܘܬܐ ܘܠܬܡܗܐ. ܠܥܡ̈ܡܐ 15
ܕܚܕܪܝܟܝ. ܡܐ ܕܥܒܕܬ ܒܟܝ ܕܝ̈ܢܐ. ܒܪܘܓܙܐ ܘܒܚܡܬܐ ܘܒܡܟܣܢܘܬܐ ܕܪܘܓܙܝ. ܐܢܐ
ܡܪܝܐ ܐܡܪܬ. * ܡܐ ܕܫܕܪܬ ܒܟܘܢ ܓܐܪ̈ܐ ܒܝ̈ܫܐ ܕܟܦܢܐ. ܕܗܘܘ ܠܚܒܠܐ. ܕܐܫܕܪ ܐܢܘܢ 16
ܠܡܚܒܠܘܬܟܘܢ. ܘܟܦܢܐ ܐܘܣܦ ܥܠܝܟܘܢ. ܘܐܬܒܪ ܠܟܘܢ ܩܢܝܐ ܕܠܚܡܟܘܢ. * ܘܐܫܕܪ ܥܠܝܟܘܢ 17
ܟܦܢܐ. ܘܚܝܘܬܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܐܬܟܠܟܘܢ. ܘܡܘܬܢܐ ܘܕܡܐ ܢܥܒܪܘܢ ܒܟܘܢ. ܘܚܪܒܐ ܐܝܬܐ
ܥܠܝܟܘܢ. ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܡܪܬ.

* Sic ait Dominus dominorum, Hanc Jeroſo- 5
lymam inter gentes poſui, & omnes urbes
circunjacent ei; Sed judicia mea commu- 6
tavit in peccatum pluſquam gentes, & præ-
cepta mea pluſquam urbes ſibi circumjacen-
tes: nam judicia mea ſpreverunt, & in præ-
ceptis meis non ambulaverunt. Propterea 7
ſic ait Dominus dominorum, Quandoquidem
voſmetipſos cenſuiſtis de *numero* gentium
quæ circa vos ſunt, in præceptis meis non
ambulâſtis, & judicia mea non perfeciſtis,
ſed perfeciſtis judicia gentium quæ vos cir-
cunſtant: Ideò ſic ait Dominus domino- 8
rum; Ecce me contra te, & faciam intra te
judicia coram cunctis gentibus: Faciámque 9
in te quod nondum feci, & cujuſmodi non
ſum facturus inpoſterùm, propter omnem
ſpurcitiam tuam. Ideò patres comedent fi- 10
lios ſuos in te, & filii comedent patres ſuos:
exercebo in te judicia, & eos qui reſidui ſunt
in te, in omnem ventum diſpergam. Ideò 11
ut vivo, dicit Dominus dominorum; Quia
polluiſti ſanctuarium meum tot ſpurcitiis tuis
tantâque fœditate tuâ, ego viciſſim rejiciam
te, neque clementiâ movebitur oculus meus
erga te, neque miſerebor. Una tui pars pe- 12
ſte morientur, & fame conficientur intra te:
altera gladio occumbent circa te: tertiam
verò in omnem ventum diſpergam: & gla-
dius clade perſequetur eos. Ita conſumma- 13
bo iracundiam meam, & placabo furorem
meum in iſtis, atque conſolabor: & experi-
entur me eſſe Dominum qui locutus ſum in
zelo meo, quum conſummavero in eis iracun-
diam meam, Et expoſuero te gladio & op- 14
probrio inter gentes quæ circa te ſunt, ob o-
culos omnis tranſeuntis: Fueríſque con- 15
tumeliæ atque blaſphemiæ, eruditioni atque
ſtupori gentibus quæ te circunſtant: quum
exercuero in te judicia in ira atque furore,
et correptione excandeſcentiæ meæ: (ego Do-
minus dixi) Quum in vos immiſero ſagit- 16
tas meas famis peſſimas quæ ſunt ad perni-
ciem, quas mittam ad extinguendum vos: fa-
mem auxero ſuper vos, & fregero culmum
frumenti veſtri: Immiſero inquam, in vos 17
famē beſtiáſq; peſſimas, & conſumpſero vos:
peſtíſque & cædes pervaſerit vos, & gladium
adduxero ſuper vos: ego Dominus dixi.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* هكذا يقول ادوناي الرب * لايروسليم في وسط الامم وضعتها * وحولها بلادا * ويقول حقوقي 5 6
للاثمة من الامم * وسرايعي من البلدان التي حولها * من اجل انهم اقصوا حقوقي * ولم
يسيروا بنواميسي فيهم * لاجل هذا هكذا يقول ادوناي الرب * من اجل ان عللتكم 7
من الامم الذين حولكم * وبنواميسي لم تسيروا * وحقوقي لم تصنعوا * لكن ولا
كحقوق الامم الذين حولكم لم تصنعوا * لاجل هذا هكذا يقول ادوناي الرب * ها انا 8
عليك * واصنع في وسطك حكما امام الامم * واصنع فيك ما لم اصنعه * ولا اصنع شبهه ايضا * 9
كجميع رذالاتك * لاجل هذا الاباء ياكلون الاولاد في وسطك * والاولاد ياكلون الاباء * 10
واصنع فيك قضايا * وافرق جميع بقاياك لكل ريح * لاجل هذا حي انا يقول ادوناي 11
الرب * من اجل انك نجست اقداسي بجميع نجاساتك وبجميع رذالاتك * وانا اقصيك ولا
تشفق عيني * وانا فلا ارحمك * ربعك بالموت يهلك * وربعك بالجوع ينقضي في وسطك * 12
وربعك لكل ريح ابدده * وربعك بالسيف يسقط حولك * واشرع سيفا خلفهم * ويستكمل 13
رجزي وغضبي عليهم * ويعلمون اني انا الرب تكلمت بغيرتي * عند ما اكمل رجزي عليهم *
* واضعك للقفر وبناتك حولك امام كل عابر * وتصيري منتهكة وسبية في الامم الذين حولك * 14 15
عند ما اصنع فيك الاحكام برجز وبغضب وبانتقام غضبي * انا الرب تكلمت بهذا * عند 16
ما ارسل نصال غضبي عليهم * ويصيرون للفناء * واسحق رفد خبزك * وارسل عليك جوعا 17
ووحوشا خبيثة * واعاقبك * والموت والدم يجوزان عليك * واجلب عليك سيفا من حولك *
انا الرب تكلمت *

Sic ait Adonai Dominus, Jeroſolymam 5
in medio gentium collocavi, & circa eam
regiones. Et dices decreta mea iſti ini- 6
quæ pluſquam gentes, & leges meas
ſceleratæ pluſquam regiones quæ circun-
ſtant eam: quandoquidem repulerunt de-
creta mea, & non ambulaverunt in legi-
bus meis. Iccirco ſic ait Adonai Domi- 7
nus; Quoniam occaſio veſtra à gentibus
eſt quæ circa vos ſunt, & in legibus meis
non ambulâſtis, & decreta mea minimè
feciſtis, imò ne decreta quidem gentium
quæ circa vos ſunt, feciſtis. Propterea 8
ſic ait Adonai Dominus, Ecce me contra
te, ponamque in medio tui judicium coram
gentibus: Et faciam in te quod nondum 9
feci, & cui ſimile non ſum poſthac
facturus, juxta omnes abominationes tu-
as. Propterea patres comedent filios in 10
medio tui, & filii comedent patres [illegible]
ciamque in te judicia, & diſpergam
cunctas reliquias tuas in omnem ventum.
Idcirco, Ut *vivus ego ſum, ait Adonai* 11
Dominus, Quia contaminâſti ſancta mea
cunctis impuritatibus tuis, cunctiſque
abominationibus tuis; ego etiam repel-
lam te, neque parcet oculus meus, & ego
non miſerebor tui. Quarta pars tui mor- 12
te peribit: quarta pars tui fame conſu-
metur in medio tui: quartam tui par-
tem in omnem ventum diſpergam: quar-
ta denique tui pars gladio circum te
occumbet: & gladium diſtringam poſt
eos: Et explebitur ira & excandeſcen- 13
tia mea contra ipſos: & ſcies me Do-
minum locutum eſſe in zelo meo, quum
explevero excandeſcentiam meam con-
tra ipſos. Et redigam te in deſertum, fi- 14
liaſque tuas circa te, corā omni pertranſ-
euntē: Fieſque ſuſpirabunda & miſera 15
inter gentes quæ circa te ſunt, quum
fecero in te judicia in ira & excande-
ſcentiâ & ultione furoris mei: (Ego Do-
minus locutus ſum hæc) Quum immiſero 16
cuſpides furoris mei in ipſos, redacti
fuerint in excidium, contrivero ſubſidium
panis tui, Miſero contra te famem & 17
belluas pernicioſas, teque punivero, mors
& ſanguis tranſierint ſuper te, & ad-
duxero contra te gladium ex adjacen-
tibus tibi locis. *Ego Dominus locutus*
ſum.

יחזקאל : ו

CAP. VI. ו

,hominis Fili : dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et
1 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם 2
.eos ad propheta & ,Israel montes ad *tuas facies* pone
שִׂים פָּנֶיךָ אֶל־הָרֵי יִשְׂרָאֵל וְהִנָּבֵא אֲלֵיהֶם׃
dixit Sic .Dei Domini verbum audite ,Israel Montes *: dices* Et
3 וְאָמַרְתָּ הָרֵי יִשְׂרָאֵל שִׁמְעוּ דְּבַר־אֲדֹנָי יֱהוִה כֹּה־אָמַר
: vallibus & , torrentibus ,collibus & montibus Deus Dominus
אֲדֹנָי יֱהוִה לֶהָרִים וְלַגְּבָעוֹת לָאֲפִיקִים וְלַגֵּאָוֹת
.vestra excelsa perdam & ,gladium vos super *adducens* ego ego Ecce
הִנְנִי אֲנִי מֵבִיא עֲלֵיכֶם חֶרֶב וְאִבַּדְתִּי בָּמוֹתֵיכֶם׃
: vestra aprica confringentur & , vestræ aræ desolabuntur Et
4 וְנָשַׁמּוּ מִזְבְּחוֹתֵיכֶם וְנִשְׁבְּרוּ חַמָּנֵיכֶם
dabo Et *.vestrorum idolorum facies ad* vestros *vulneratos* faciam cadere &
5 וְהִפַּלְתִּי חַלְלֵיכֶם לִפְנֵי גִּלּוּלֵיכֶם׃ וְנָתַתִּי
dispergam & : eorum *idolorum facies ad* Israel filiorum cadavera
אֶת־פִּגְרֵי בְּנֵי יִשְׂרָאֵל לִפְנֵי גִּלּוּלֵיהֶם וְזֵרִיתִי
omnibus In *.vestrorum altarium circuitibus* vestra ossa
6 אֶת־עַצְמוֹתֵיכֶם סְבִיבוֹת מִזְבְּחוֹתֵיכֶם׃ בְּכֹל
:devastabuntur excelsa & ,erunt desertæ civitates vestris habitationibus
מוֹשְׁבוֹתֵיכֶם הֶעָרִים תֶּחֱרַבְנָה וְהַבָּמוֹת תִּישָׁמְנָה
cessabunt & ,cõfringẽtur & : vestræ aræ *devastentur* &,desolentur ut
לְמַעַן יֶחֶרְבוּ וְיֶאְשְׁמוּ מִזְבְּחוֹתֵיכֶם וְנִשְׁבְּרוּ וְנִשְׁבְּתוּ
.vestra opera delebuntur & ,*vestra aprica* succidentur & ,vestra idola
גִּלּוּלֵיכֶם וְנִגְדְּעוּ חַמָּנֵיכֶם וְנִמְחוּ מַעֲשֵׂיכֶם׃
.Dominus *ego* quod scietis & : vestri medio in *saucius* cadet Et
7 וְנָפַל חָלָל בְּתוֹכְכֶם וִידַעְתֶּם כִּי־אֲנִי יְהוָה׃
; gentibus in *gladii* evasores vobis *existendo in* , faciam remanere Et
8 וְהוֹתַרְתִּי בִּהְיוֹת לָכֶם פְּלִיטֵי חֶרֶב בַּגּוֹיִם
mei vestri evasores recordabuntur Et .terras in vos *dispergi in*
9 בְּהִזָּרוֹתֵיכֶם בָּאֲרָצוֹת׃ וְזָכְרוּ פְלִיטֵיכֶם אוֹתִי
eorũ *corde cum* fuerim fractus quia , *ibi* erunt captivi *cùm* gentes inter
בַּגּוֹיִם אֲשֶׁר נִשְׁבּוּ־שָׁם אֲשֶׁר נִשְׁבַּרְתִּי אֶת־לִבָּם
fornicantibus eorum *oculis cum* & ,me *desuper* declinavit quod *fornicante*
הַזּוֹנֶה אֲשֶׁר־סָר מֵעָלַי וְאֵת עֵינֵיהֶם הַזֹּנוֹת
quæ mala *ad suis faciebus in ingemiscent* Et .sua idola post
אַחֲרֵי גִּלּוּלֵיהֶם וְנָקֹטּוּ בִּפְנֵיהֶם אֶל־הָרָעוֹת אֲשֶׁר
.Dominus *ego* quòd scient Et .suis abominationib⁹ omnib⁹ in fecerunt
10 עָשׂוּ לְכֹל תּוֹעֲבֹתֵיהֶם׃ וְיָדְעוּ כִּי־אֲנִי יְהוָה
.hoc malum eis *faciendum ad* ,sum locutus *gratis ad* Non
לֹא אֶל־חִנָּם דִּבַּרְתִּי לַעֲשׂוֹת לָהֶם הָרָעָה הַזֹּאת׃
,tuo pede in extende &,tua *vola in* Percute : Deus Dominus dixit Sic
11 כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה הַכֵּה בְכַפְּךָ וּרְקַע בְּרַגְלְךָ
quia : Israel domus malorum abominationes omnes *ad* Heu dic &
וֶאֱמָר־אָח אֶל כָּל־תּוֹעֲבוֹת רָעוֹת בֵּית יִשְׂרָאֵל אֲשֶׁר
;morietur peste *in* ,*Longinquus* .sunt ruituri peste in & fame in ,gladio in
12 בַּחֶרֶב בָּרָעָב וּבַדֶּבֶר יִפֹּלוּ׃ הָרָחוֹק בַּדֶּבֶר יָמוּת
:morietur fame in ,*servatus* & ,relictus & ; corruet gladio in ,*propinquus* &
וְהַקָּרוֹב בַּחֶרֶב יִפּוֹל וְהַנִּשְׁאָר וְהַנָּצוּר בָּרָעָב יָמוּת
ego quòd scietis Et .eis in meam indignationem complebo &
13 וְכִלֵּיתִי חֲמָתִי בָּם׃ וִידַעְתֶּם כִּי־אֲנִי
circuitibus ,eorum idolorum medio in *eorum vulneratos existendo in*,Dominus
יְהוָה בִּהְיוֹת חַלְלֵיהֶם בְּתוֹךְ גִּלּוּלֵיהֶם סְבִיבוֹת
capitibus cunctis in , excelso colle omni in ,eorum ararum
מִזְבְּחוֹתֵיהֶם אֶל כָּל־גִּבְעָה רָמָה בְּכֹל רָאשֵׁי
quercum omnem subtus & , viride lignum omne subtus & ,montium
הֶהָרִים וְתַחַת כָּל־עֵץ רַעֲנָן וְתַחַת כָּל־אֵלָה
universis *quietis* odorem *ibi* dederunt quo locum , *implicatam*
עֲבֻתָּה מְקוֹם אֲשֶׁר נָתְנוּ־שָׁם רֵיחַ נִיחֹחַ לְכֹל
.suis idolis
גִּלּוּלֵיהֶם׃

Versio VULG. LAT.

CAP. VI.

1 ET factus est sermo Domini,
2 ad me, dicens; Fili hominis, pone faciem tuam ad montes Israel,
3 & prophetabis ad eos, Et dices;
Montes Israel, audite verbum Domini Dei: Hæc dicit Dominus
Deus montibus, & collibus, rupibus, & vallibus; Ecce ego inducam super vos gladium, & dis-
4 perdam excelsa vestra. Et demoliar aras vestras, et confringentur
simulacra vestra: & dejiciam interfectos vestros ante idola ve-
5 stra. Et dabo cadavera filiorum
Israel ante faciem simulacrorũ
vestrorum: & dispergam ossa
6 vestra circum aras vestras, In omnibus habitationib⁹ vestris. Urbes desertæ erunt, & excelsa demolientur, & dissipabuntur: &
interibunt aræ vestræ, & confringentur: & cessabunt idola
vestra, & conterentur delubra
vestra, & delebuntur opera ve-
7 stra. Et cadet interfectus in medio vestrî: & scietis quia ego
8 sum Dominus. Et relinquam in
vobis eos, qui fugerint gladium
in Gentibus, cùm dispersero vos
9 in terris. Et recordabuntur meî
liberati vestri in Gentibus, ad
quas captivi ducti sunt: quia contrivi cor eorum fornicans, & recedens à me: & oculos eorum
fornicantes post idola sua: &
displicebunt sibimet super malis
quæ fecerunt in universis abomi-
10 nationibus suis. Et scient, quia
ego Dominus non frustrà locutus
sum, ut facerem eis malum hoc.
11 Hæc dicit Dominus Deus; Percute manum tuam, & allide pedem tuum, & dic; Heu, ad omnes
abominationes malorum domûs
Israel: quia gladio, fame, & peste
12 ruituri sunt. Qui longè est, peste
morietur: qui autem propè, gladio corruet: & qui relictus fuerit, & obsessus, fame morietur:
et complebo indignationem meã
13 in eis. Et scietis quia ego Dominus, cùm fuerint interfecti vestri in medio idolorum vestrorũ,
in circuitu ararum vestrarum, in
omni colle excelso, & in cunctis
summitatibus montium, & subtus omne lignum nemorosum, &
subtus universam quercum frondosam, locum ubi accenderunt
thura redolentia universis idolis
suis.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

ΚΕΦ. ϛʹ.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρός με, λέ-
2 γων, Υἱὲ ἀνθρώπου, στήρισον τὸ πρόσωπόν
σου ἐπὶ τὰ ὄρη Ἰσραήλ, καὶ προφήτευσον
3 ἐπ᾽ αὐτά, Καὶ ἐρεῖς, Τὰ ὄρη Ἰσραὴλ ἀκούσατε (α) λόγον κυρίου· τάδε λέγει (β)
κύριος τοῖς ὄρεσι καὶ τοῖς βουνοῖς (γ) καὶ ταῖς
φάραγξι καὶ ταῖς νάπαις, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω
ἐφ᾽ ὑμᾶς ῥομφαίαν, καὶ (δ) ἐξολοθρευθήσε-
4 ται τὰ ὑψηλὰ ὑμῶν. Καὶ συντριβήσονται
τὰ θυσιαστήρια ὑμῶν, καὶ τὰ τεμένη ὑμῶν, καὶ
καταβαλῶ τραυματίας ὑμῶν ἐνώπιον
5 τῶν εἰδώλων ὑμῶν, (ε) Καὶ διασκορπιῶ τὰ
ὀστᾶ ὑμῶν κύκλῳ τῶν θυσιαστηρίων ὑμῶν, (ζ)
6 Καὶ ἐν πάσῃ τῇ κατοικίᾳ ὑμῶν. αἱ πόλεις ἐξερημωθήσονται, καὶ τὰ ὑψηλὰ ἀφανισθήσεται, ὅπως (ϛ) ἐξολοθρευθῇ τὰ θυσιαστήρια ὑμῶν, καὶ συντριβήσονται τὰ εἴδωλα
ὑμῶν, καὶ (η) ἐξαρθῇ τὰ τεμένη (θ) ὑμῶν·
7 Καὶ πεσοῦνται τραυματίαι ἐν μέσῳ ὑμῶν,
8 καὶ ἐπιγνώσεσθε, ὅτι ἐγὼ κύριος. (ι) Ἐν τῷ
γενέσθαι ἐξ ὑμῶν ἀνασωζομένους ἐκ ῥομφαίας ἐν τοῖς ἔθνεσι, καὶ ἐν τῷ διασκορπι-
9 σμῷ ὑμῶν ἐν ταῖς χώραις, Καὶ μνησθήσονταί μου οἱ ἀνασωζόμενοι ἐξ ὑμῶν ἐν τοῖς
ἔθνεσιν, οὗ ᾐχμαλωτεύθησαν ἐκεῖ· ὀμώμοκα
τῇ καρδίᾳ αὐτῶν τῇ ἐκπορνευούσῃ (κ) ἀπ᾽ ἐμοῦ, καὶ τοῖς ὀφθαλμοῖς αὐτῶν τοῖς ἐκπορνεύουσιν ὀπίσω τῶν ἐπιτηδευμάτων αὐτῶν· καὶ
κόψονται (λ) πρόσωπα αὐτῶν ἐν πᾶσι τοῖς
10 βδελύγμασιν αὐτῶν (μ). Καὶ ἐπιγνώσον-
11 ται (ν) διότι ἐγὼ κύριος λελάληκα. Τάδε λέγει κύριος, Κρότησον τῇ χειρὶ καὶ
ψόφησον τῷ ποδί, καὶ εἰπόν, Εὖγε εὖγε ἐπὶ πᾶσι τοῖς βδελύγμασιν οἴκου Ἰσραήλ· ἐν ῥομφαίᾳ καὶ ἐν θανάτῳ καὶ ἐν λι-
12 μῷ πεσοῦνται. Ὁ ἐγγὺς ἐν ῥομφαίᾳ (ξ)
πεσεῖται, ὁ δὲ μακρὰν ἐν θανάτῳ τελευτήσει·
(ο) καὶ ὁ περιεχόμενος ἐν λιμῷ συντελεσθήσεται· καὶ συντελέσω τὴν ὀργήν μου
13 ἐπ᾽ αὐτούς. Καὶ γνώσεσθε διότι ἐγὼ κύριος, ἐν τῷ εἶναι τοὺς τραυματίας ὑμῶν ἐν
μέσῳ τῶν εἰδώλων ὑμῶν κύκλῳ τῶν θυσιαστηρίων ὑμῶν, ἐπὶ πάντα βουνὸν ὑψηλόν,
(π) καὶ ὑποκάτω δένδρου συσκίου, (ρ) οὗ
ἔδωκαν ἐκεῖ ὀσμὴν εὐωδίας πᾶσι τοῖς εἰδώλοις αὐτῶν.

CAP. VI.

ET factus est sermo Domi- 1
ni ad me, dicens; Fili homi- 2
nis, firma faciem tuam ad montes Israel, & propheta ad eos,
Et dices; Montes Israel, audite 3
verbum Dñi: Hæc dicit Dominus montibus, & collibus, &
vallibus, & rupibus; Ecce ego
induco super vos gladium: &
disperdentur excelsa vestra, Et 4
conterentur altaria vestra, & (a)
delubra vestra: & dejiciam
interfectos vestros ante idola (b)
vestra. Et dispergam ossa ve- 5
stra in circuitu altarium vestrorum, Et in omni habitatione 6
vestra. Urbes desertæ erunt, &
excelsa delebuntur, ut exterminentur altaria vestra, & (c)
conterentur idola vestra, & auferentur delubra (d) vestra:
Et cadent interfecti in medio 7
vestrî: & scietis, quia ego Dominus. (e) Dum fuerint ex vo- 8
bis evadentes à gladio in gentibus, & in dispersione vestra in
regionibus; Et recordabuntur 9
meî, qui evaserint ex vobis in
gentibus, quò captivi ducti fuerint illuc. Juravi cordi eorum
fornicanti à me, & oculis eorum
fornicantibus post adinventiones
suas. (f) Et percutient facies
suas in omnibus abominationibus
suis: Et scient, (g) quia ego 10
Dominus loquutus sum. Hæc 11
dicit Dominus; Plaude manu,
& obstrepe pede. (h) Et dic;
Euge, Euge, super omnibus abominationibus domûs Israel. In
gladio, & in morte, & in fame cadent: Qui propè, in 12
gladio cadet: qui verò longè,
in morte peribit: (i) & qui circundatus fuerit, in fame consumetur: & implebo iram meam super eos. Et scietis, quia 13
ego Dominus; cùm fuerint interfecti vestri in medio idolorum
vestrorum in circuitu altarium
vestrorum super omnem collem
(k) excelsum, & (l) subter arborem umbrosam; ubi dederunt
illìc odorem suavitatis universis
idolis suis.

MS. A. (α) λόγον ἀδωναῒ κυρίου· (β) ἀδωναῒ κύριος (γ) καὶ ταῖς νάπαις καὶ ταῖς φάραγξι, (δ) ἐξολεθρευθήσεται (ε) Καὶ δώσω τὰ πτώματα τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ κατὰ πρόσωπον τῶν εἰδώλων αὐτῶν· καὶ διασκορπιῶ (ζ) Ἐν πάσῃ (ϛ) ἐξολεθρευθῇ (η) ἐξαρθήσεται (θ) ὑμῶν, καὶ ἐξαλιφθῶσιν τὰ ἔργα ὑμῶν, Καὶ πεσοῦνται (ι) Καὶ ὑπολείψομαι ἐν τῷ (κ) ἀπ᾽ ἐμοῦ, τῇ ἀποστάσῃ ἀπ᾽ ἐμοῦ, καὶ τοῖς (λ) τὰ πρόσωπα αὐτῶν περὶ τῶν κακιῶν ὧν ἐποίησαν ἐν πᾶσιν (μ) καὶ ἐν πᾶσιν τοῖς ἐπιτηδεύμασιν αὐτῶν. Καὶ ἐπιγνώσονται (ν) ὅτι ἐγὼ κύριος οὐκ εἰς δωρεὰν λελάληκα τοῦ ποιῆσαι αὐτοῖς ἅπαντα τὰ κακὰ ταῦτα. Τάδε λέγει ἀδωναῒ κύριος, Κρότησον (ξ) τελευτήσει, (ο) καὶ ὁ ὑπολειφθείς, καὶ ὁ (π) καὶ ἐν πάσαις κορυφαῖς τῶν ὀρέων, καὶ ὑποκάτω (ρ) καὶ ὑποκάτω πάσης δρυὸς δασείας, οὗ ἔδωκαν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ו

1 וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי לְמֵימַר׃ בַּר אָדָם קַבֵּל נְבוּאָה עַל טוּרֵי יִשְׂרָאֵל 2
3 וְאִתְנַבֵּי עֲלֵיהוֹן׃ וְתֵימַר טוּרֵי יִשְׂרָאֵל קַבִּילוּ פִּתְגָמָא דַייָ אֱלֹהִים כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים
לְטוּרַיָא וּלְרָמָתָא וּלְפַצִּידַיָא וּלְחֵילַיָא הָא אֲנָא מַיְתֵי עֲלֵיכוֹן דְּקָטְלִין בְּחַרְבָּא וְאוֹבֵיד
4 בָּמָתֵיכוֹן׃ וְיִצְדוֹן אֱגוֹרֵיכוֹן וְיִתְבָּרוּן חֲנִיסְנְסֵיכוֹן וְאֶרְמֵי קְטִילֵיכוֹן קֳדָם פִּגּוּר טַעֲוָתְכוֹן׃
5 וְאֶתֵּן יָת פִּגְרֵי בְּנֵי יִשְׂרָאֵל קֳדָם פִּגּוּר טַעֲוָתְהוֹן וַאֲבַדַּר יָת גַּרְמֵיכוֹן סַחְרָנוּת אֱגוֹרֵיכוֹן׃
6 בְּכֹל מוֹתְבָנֵיכוֹן קִרְוַיָא יֶחֶרְבָן וּבָמָתָא יִצְדְּיָן בְּדִיל דְּיֶחֶרְבוּן וְיִצְדוֹן אֱגוֹרֵיכוֹן וְיִתְבָּרָן
7 וְיִבְטְלָן טַעֲוָתְכוֹן וְיִתְקַטְּפוּן חֲנִסְנְסֵיכוֹן וְיִתְמְחוּן עוֹבָדֵיכוֹן׃ וְיִתְרְמוֹן קְטִילִין בֵּינֵיכוֹן
8 וְתִדְּעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ׃ וְאַשְׁאַר בִּמְהֱוֵי לְכוֹן מְשֵׁזְבֵי חַרְבָּא בֵּינֵי עַמְמַיָא בְּאִתְבַּדָּרוּתֵיכוֹן
9 בִּמְדִינָתָא׃ וְיִדְכְּרוּן מְשֵׁיזְבֵיכוֹן דְּחַלְתִּי בֵּינֵי עַמְמַיָא דְּאִשְׁתְּבִיאוּ לְתַמָּן דִּתְבָרֵית יָת
לִבְּהוֹן טַפְשָׁא דִּסְטָא מִבָּתַר פּוּלְחָנִי וְיָת חֵיזוּ עֵינֵיהוֹן דִּטְעָא בָּתַר טַעֲוָתְהוֹן וְיִדַּנְקוּן
10 וִיהוֹן חָזָן עַל בִּישָׁתָא דַּעֲבַדוּ לְכָל תּוֹעֲבָתְהוֹן׃ וְיִדְּעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ לָא לְמַגָּן גְּזֵרִית
11 בְּמֵימְרִי לְמֶעְבַּד לְהוֹן בִּישְׁתָא הָדָא׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים טְפַח בִּידָךְ וּרְפוֹס בְּרִגְלָךְ
וֶאֱמַר וַי עַל כָּל תּוֹעֲבָתָא בִּישָׁתָא בֵּית יִשְׂרָאֵל דִּי בְּחַרְבָּא בְּכַפְנָא וּבְמוֹתָא יִתְרְמוֹן׃
12 דְּרָחִיק בְּמוֹתָא יְמוּת וּדְקָרִיב בְּחַרְבָּא יִתְקְטֵיל וּדְיִשְׁתְּאַר וּדְיֵעוֹל לִכְרַכֵּי צַיְרָא בְּכַפְנָא
13 יְמוּת וְיָחוּל רוּגְזִי בְּהוֹן׃ וְתִדְּעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ בִּמְהֱוֵי קְטִילֵיהוֹן בְּגוֹ פִּגּוּר טַעֲוָתְהוֹן
סַחְרָנוּת אֱגוֹרֵיהוֹן עַל כָּל רָמָא מְנַטְלָא בְּכֹל רֵישֵׁי טוּרַיָא תְּחוֹת כָּל אִילָן עֲבוֹף וּתְחוֹת
כָּל בּוּטְמָא מְעַפְיָא אֲתַר דִּיהַבוּ תַמָּן קוּרְבָּנִין לְפוּלְחָן לְכָל טַעֲוָתְהוֹן׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAP. VI.

ET factum est verbum prophetiæ à facie Domini ad me, dicens: Fili ho- 1
minis suscipe prophetiam in montes Israel, & vaticinare in eos. Et dices: 2
Montes Israel suscipite verbum Dñi Dei: Hæc dicit Dñs Deus montibus & 3
collibus, rivis & vallibus: Ecce ego inducam super vos occidentes gladio,
& disperdam excelsa vestra: Et desolabuntur aræ vestræ, & conterentur de- 4
lubra vestra, & projiciam interfectos vestros ante cadavera idolorum vestrorum. Et dabo cadavera filiorum Israel ante cadavera idolorum suorum; 5
& dispergam ossa vestra in circuitu ararum vestrarum. In omnibus habita- 6
tionibus vestris civitates desertæ erunt: & excelsa desolabuntur, ut destruantur & vastentur aræ vestræ, & conterantur & cessent idola vestra, & succidantur delubra vestra, & deleantur opera vestra. Et projicientur interfecti 7
inter vos: & scietis quia ego Dñs. Et reliquum faciam ut vobis sint super- 8
stites à gladio inter populos, cùm dispersi fueritis in provinciis. Et recor- 9
dabuntur, qui superstites fuerint in vobis, timoris mei inter populos ad quos
captivi ducti sunt: quia confregi cor eorum insipiens, quod declinavit à cultu meo, & aspectum oculorum suorum qui erraverunt post idola eorum, & gement ipsi spectantes ob mala quæ fecerunt in omnibus abominationibus suis. Et scient quia ego Dominus non frustrà decrevi in verbo meo, ut face- 10
rem eis malum hoc. Hæc dicit Dominus Deus: Complode manu tua, & allide 11
pede tuo: & dic Væ super omnes abominationes malas domus Israel; quia in
gladio, in fame, & peste ruent. Qui longè fuerit, peste morietur; & qui pro- 12
pè fuerit, gladio occidetur: & qui relictus fuerit & ingressus fuerit arces obsidionis, fame morietur: & manebit furor meus in eis. Et scietis quia ego 13
Dominus, cùm fuerint interfecti eorum in medio *cadaverum* idolorum eorum, in circuitu ararum eorum super omnem collem excelsum, & in cunctis
summitatibus montium, & sub omni arbore virente, & sub universa quercu ramosa, loco ubi posuerunt oblationes cultui omnium idolorum suorum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܘ̄ *

1 2 ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ܂ * ܒܪܢܫܐ܂ ܣܝܡ ܐܦܝܟ ܠܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ܂
3 ܘܐܬܢܒܐ ܥܠܝܗܘܢ܂ ܘܐܡܪ܂ * ܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ܂ ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ܂ ܗܟܢܐ
ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ ܠܛܘܪܐ ܘܠܪܡܬܐ܂ ܘܠܢܚܠܐ ܘܠܡܒܘܥܐ܂ ܗܐ ܐܢܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟܘܢ
4 ܣܝܦܐ܂ ܘܐܘܒܕ ܒܝܬ ܦܘܠܚܢܟܘܢ܂ * ܘܢܚܪܒܘܢ ܡܕܒܚܝܟܘܢ܂ ܘܢܬܬܒܪܘܢ ܦܬܟܪܝܟܘܢ܂ ܘܐܪܡܐ
5 ܩܛܝܠܝܟܘܢ܂ ܩܕܡ ܕܚܠܬܟܘܢ܂ * ܘܐܪܡܐ ܫܠܕܐ ܕܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܩܕܡ ܦܬܟܪܝܗܘܢ܂ ܘܐܒܕܪ
6 ܓܪܡܝܟܘܢ܂ ܚܕܪ ܡܕܒܚܝܟܘܢ܂ * ܘܡܕܝܢܬܐ ܕܟܠܗ ܡܘܬܒܟܘܢ܂ ܢܚܪܒܢ܂ ܘܒܝܬ ܦܘܠܚܢܐ ܢܨܕܘܢ܂
ܡܛܠ ܕܢܚܪܒܘܢ ܘܢܨܕܘܢ ܡܕܒܚܝܟܘܢ܂ ܘܢܬܬܒܪܘܢ ܘܢܬܒܛܠܘܢ ܦܬܟܪܝܟܘܢ܂ ܘܢܬܓܕܥܘܢ
7 ܓܠܝܦܝܟܘܢ܂ ܘܢܬܥܛܘܢ ܥܒܕܝܟܘܢ܂ * ܘܢܦܠܘܢ ܩܛܝܠܐ ܒܝܢܬܟܘܢ܂ ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ
8 ܐܢܐ ܡܪܝܐ܂ * ܘܐܫܒܘܩ ܡܢܟܘܢ ܒܥܡܡܐ܂ ܐܝܠܝܢ ܕܐܫܬܘܙܒܘ ܡܢ ܚܪܒܐ܂ ܘܐܬܒܕܪܘ
9 ܒܡܕܝܢܬܐ܂ * ܘܢܬܕܟܪܘܢܢܝ ܐܝܠܝܢ ܕܐܫܬܘܙܒܘ ܡܢܟܘܢ܂ ܒܝܢܬ ܥܡܡܐ ܕܐܫܬܒܝܘ
ܠܬܡܢ܂ ܟܕ ܐܬܒܪ ܠܠܒܗܘܢ ܙܢܝܐ ܕܣܛܐ ܡܢܝ܂ ܘܠܥܝܢܝܗܘܢ ܕܛܥܝ ܒܬܪ ܦܬܟܪܝܗܘܢ܂
10 ܘܢܬܟܡܪܘܢ ܐܦܝܗܘܢ ܒܒܝܫܬܐ ܕܥܒܕܘ܂ ܘܒܟܠܗ ܛܢܦܘܬܗܘܢ܂ * ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ
11 ܡܪܝܐ܂ ܘܠܐ ܗܘܐ ܣܪܝܩܐܝܬ ܐܡܪܬ ܕܐܥܒܕ ܠܗܘܢ ܒܝܫܬܐ ܗܕܐ܂ * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ܂
ܛܪܘܦ ܒܟܦܟ܂ ܘܪܦܘܣ ܒܪܓܠܟ܂ ܘܐܡܪ܂ ܐܘܚ ܥܠ ܟܠܗܝܢ ܛܢܦܘܬܐ ܘܒܝܫܬܐ ܕܒܝܬ
12 ܐܝܣܪܝܠ܂ ܕܒܚܪܒܐ ܘܒܟܦܢܐ ܘܒܡܘܬܢܐ ܢܦܠܘܢ܂ * ܕܩܪܝܒ܂ ܒܚܪܒܐ ܢܦܠ
13 ܘܕܡܫܬܚܪ܂ ܘܕܡܫܬܘܙܒ ܒܟܦܢܐ ܢܡܘܬ܂ ܘܐܫܠܡ ܚܡܬܝ ܒܗܘܢ܂ * ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ
ܡܪܝܐ܂ ܟܕ ܢܗܘܘܢ ܩܛܝܠܝܗܘܢ ܒܝܢܬ ܦܬܟܪܝܗܘܢ ܚܕܪ ܡܕܒܚܝܗܘܢ܂ ܥܠ ܟܠ ܪܡܬܐ
ܪܡܬܐ܂ ܘܬܚܝܬ ܟܠ ܪܝܫܝ ܛܘܪܐ܂ ܘܬܚܝܬ ܟܠ ܐܝܠܢ ܕܡܛܠܠ܂ ܘܬܚܝܬ ܟܠ ܒܛܡܬܐ
ܥܒܝܬܐ܂ ܐܬܪܐ ܕܣܡܘ ܬܡܢ ܒܣܡܐ ܠܟܠܗܘܢ ܦܬܟܪܝܗܘܢ܀

CAP. VI.

Rursum fuit ad me sermo Domini, dicendo; 1
Fili hominis, porrige faciem tuam versus 2
montes Iſraelis,& propheta de eis, ac dicito;
Montes Iſraelis, audite ſermonem 3
Domini dominorum. Ita dicit Dominus dominorum
ad montes & colles, torrentes fonteſque:
Ecce adducturus ſum contra vos gladium,
& fana veſtra perditurus: Altaria 4
veſtra deſolabuntur, & idola veſtra confringentur:
proſternam confoſſos veſtros coram
numinibus veſtris, Et projiciam cadavera 5
Iſraelitarum ante idola ſua,& diſpergam oſſa
veſtra circum altaria veſtra: Urbes totius 6
ſedis veſtræ deſtruentur, & fana deſolabuntur.
Nam deſtruentur & vaſtabuntur altaria
veſtra, confringentur & abolebuntur ſimulacra
veſtra, ſuccidentur ſculptilia veſtra, &
opera veſtra delebuntur: Et confoſſi inter 7
vos cadent, & experiemini me eſſe Dominum.
Sed reliquos faciam ex vobis inter 8
gentes, eos qui è vobis gladium evaſerint,&
in urbes diſperſi fuerint.Et qui ex vobis eva- 9
ſerint, recordabuntur mei inter gentes quò
captivi ſunt abducti; quumfregero meretricium
cor eorum qui deflexerunt à me, & oculos
qui aberrârunt poſt idola ipſorum; & corrugati
fuerint vultus eorum ſcelere quod perpetrârunt,
omníque ſpurcitiâ ſuâ. Et expe- 10
rientur me eſſe Dominum, nec fruſtrà dixiſſe
me affecturum eos hujuſmodi calamitate. Sic 11
ait Dominus dominorum, Volâ tuâ plaude,
& pede tuo *tellurem* quate, & dic; Serva
nos, *(i. euge)* ob tantam turpitudinem &
flagitium Iſraelitarum; quia gladio, fame, &
peſte caſuri ſunt. Qui prope adeſt, gladio 12
corruet; & qui ſuperſtes fuerit & evaſerit,
fame peribit: denique conſummabo irâ meâ
in eis. Et experientur me eſſe Dominũ,quum 13
fuerint confoſſi eorum inter idola ipſorũ circum
altaria ipſorum,ſuper omnem collem ſublimem,
ſubter omnia montiũ cacumina,ſubter
omnem arborem umbriferam,& ſubter omnem
terebinthum denſam, ubicunque thura
adoleverunt omnibus idolis ſuis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل السادس * الاصحاح الثالث *

1 2 * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان ثبت وجهك على جبال اسرايل * وتنبا عليها وتقول *
3 * يا جبال اسرايل اسمعوا قول ادوناي الرب * هكذا يقول ادوناي الرب للجبال والاكام والتلال
4 والاودية * ها انا اجلب عليكم سيفا * فتستاصل عواليكم * وتنكسر مذابحكم وهياكلكم *
5 والقي جرحاكم امام اوثانكم * واعطي جثث بني اسرايل لوجه اصنامهم * وافرق عظامكم
6 حول مذابحكم في كل مساكنكم * المدن يخربون * والعوالي يفقدون * كي تستاصل مذابحكم
7 في كل مساكنكم * وتنكسر اصنامكم * وتنزع هياكلكم * وتمحي اعمالكم * وتسقط الجرحا
8 في وسطكم * وتعلمون اني انا الرب * وابقي بقية * عند ما يصير منكم المخلصون من السيف
9 في الامم * وبتفريقكم في الكور * ويذكروني المخلصون منكم في الامم حيث سبيوا هناك *
المحاربون بقلبهم الفاسق المتباعد عني * وبعيونهم الفاسقة خلف اعمالهم * ويقطعون وجوههم
10 من اجل قبايحهم التي صنعوها بجميع رذالاتهم وبجميع اعمالهم * ويعلمون اني انا الرب لم
11 اتكلم مجانا * لاصنع بهم هذه الشرور كلها * هكذا يقول ادوناي الرب * صفق باليد
واخفق بالرجل * وقل نعما نعما على جميع رذالات بيت اسرايل * بالسيف والموت والجوع يسقطون *
12 * القريب بالسيف يقضي اجله * والبعيد بالموت يقضي اجله * والمتبقي والقريب بالجوع
13 يستكمل حياته * واكمل رجزي عليهم * ويعلمون اني انا الرب عند ما تكون جرحاكم
في وسط اوثانكم حول مذابحكم * وعلى كل اكمة عالية * وفي جميع رووس الجبال *
وتحت كل شجرة ظليلة * وتحت كل بلوطة حسنة * حيث اعطوا هناك رايحة طيب
لجميع اصنامهم *

CAP. VI.

Textus tertius.

Fuit etiam ſermo Domini ad me, di- 1
cens; O fili hominis,confirma faciem tuam 2
contra montes Iſraelis, vaticinare contra
eos, & dicas; O montes Iſraelis, audite 3
ſermonem Adonai Domini. Sic dicit Adonai
Dominus montibus,collibus,clivis, &
vallibus; Ecce ego inducam ſuper vos
gladium, & evellentur excelſa veſtra,
Confringentur altaria templáque veſtra, 4
dejiciã vulneratos veſtros ante ſimulacra
veſtra, Exponã cadavera filiorũ Iſraelis 5
ante faciem idolorũ ſuorũ, diſpergã oſſa
veſtra circa aras veſtras in omnibus habitationibus
veſtris, urbes deſtruentur,et 6
excelſa peribũt:ut extirpentur altaria veſtra
in cunctis habitationibus veſtris,frangantur
idola veſtra, tollantur templa veſtra,
deleantur facinora veſtra, Corruant 7
vulnerati in medio veſtrî, & ſciatis me
eſſe Dominum.Reſervabo tamen reliquias, 8
quum fuerint ex vobis qui gladium evaſerint,
inter gentes; quumq; diſperſi fueritis
in regiones.Et qui evaſerint ex vobis, 9
recordabuntur mei inter gentes ibi quò
captivi ducti fuerint: qui repugnant corde
ſuo fornicario à me remoto, oculiſq;
ſuis fornicantibus poſt opera ipſorum: &
incident facies ſuas ob turpitudines ſuas 10
quas fecerunt in omnibus abominationibus
ſuis,cunctiſq; facinoribus ſuis: Et
agnoſcent me Dominum haudquaquam
gratìs dixiſſe me affecturum eos tot hiſce
malis. Sic ait Adonai Dominus; Plaude 11
manu, & tunde ſolum pede, & dic;
Euge, euge propter omnes abominationes
domûs Iſraelis. Gladio, peſte, & fame
cadent: Propinqui finis gladio termi- 12
nabitur, & remoti finis peſte concludetur,
& ſuperſtes atque propinquus
fame finiet vitam ſuam: ita explebo
excandeſcentiam meam contra ipſos.
Et ſcietis me eſſe Dominum, quum 13
fuerint vulnerati veſtri in medio idolorum
veſtrorum circa aras veſtras,
& ſuper omnem collem ſublimem, &
in cunctis montium verticibus, ſub omni
arbore umbrifera, & ſub omni quercu
pulchra, ubi obtulerunt odorem aromaticum
omnibus idolis ſuis.

יחזקאל : ז

,desolatam terram dabo & ,eos super meā manum extendam Et
14 וְנָטִיתִי אֶת־יָדִי עֲלֵיהֶם וְנָתַתִּי אֶת־הָאָרֶץ שְׁמָמָה
scient & :eorū habitationibus cunctis in ,Diblathah deserto à desertam &
וּמְשַׁמָּה מִמִּדְבַּר דִּבְלָתָה בְּכֹל מוֹשְׁבוֹתֵיהֶם וְיָדְעוּ
.Dominus *ego* quòd
כִּי־אֲנִי יְהוָה׃

CAP. VII. ז

Sic :hominus fili tu Et :dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et
1 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ וְאַתָּה בֶן־אָדָם כֹּה־ 2
super finis venit :finis Israel *Humo* ,Deus Dominus dixit
אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה לְאַדְמַת יִשְׂרָאֵל קֵץ בָּא הַקֵּץ עַל־
meū *nasum* mittam & ,te super finis Nunc .terræ *alas* quatuor
3 אַרְבַּעַת כַּנְפוֹת הָאָרֶץ׃ עַתָּה הַקֵּץ עָלַיִךְ וְשִׁלַּחְתִּי אַפִּי
omnes te super *dabo* & :tuas vias juxta te judicabo & ,te in
בָּךְ וּשְׁפַטְתִּיךְ כִּדְרָכָיִךְ וְנָתַתִּי עָלַיִךְ אֵת כָּל־
:indulgebo nec ,*te super* meus oculus parcet non Et .tuas abominationes
4 תּוֹעֲבֹתָיִךְ׃ וְלֹא־תָחוֹס עֵינִי עָלַיִךְ וְלֹא אֶחְמוֹל
;erunt tui medio in tuæ abominationes & ,*dabo* te super tuas vias *nam*
כִּי דְרָכַיִךְ עָלַיִךְ אֶתֵּן וְתוֹעֲבוֹתַיִךְ בְּתוֹכֵךְ תִּהְיֶיןָ
Malum :Deus Dominus dixit Sic .Dominus *ego* quòd scietis &
5 וִידַעְתֶּם כִּי־אֲנִי יְהוָה׃ כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה רָעָה
evigilavit :finis venit ,venit Finis .venit ecce malum ,unum
6 אַחַת רָעָה הִנֵּה בָאָה׃ קֵץ בָּא בָּא הַקֵּץ הֵקִיץ
:terræ habitator *te ad matutina cidaris* Venit .venit ecce ,te adversum
7 אֵלָיִךְ הִנֵּה בָּאָה׃ בָּאָה הַצְּפִירָה אֵלֶיךָ יוֹשֵׁב הָאָרֶץ
.montium *repercussio* non & ,*tumultus* dies *propinqua* ,tempus venit
בָּא הָעֵת קָרוֹב הַיּוֹם מְהוּמָה וְלֹא־הֵד הָרִים׃
complebo & ,te super meam iram effundam propinquo de Nunc
8 עַתָּה מִקָּרוֹב אֶשְׁפּוֹךְ חֲמָתִי עָלַיִךְ וְכִלֵּיתִי
te super *dabo* & :tuas vias secundùm te judicabo & ,te in meū *nasum*
אַפִּי בָּךְ וּשְׁפַטְתִּיךְ כִּדְרָכָיִךְ וְנָתַתִּי עָלַיִךְ אֵת
:indulgebo nec ,meus oculus parcet non Et .tuas abominationes omnes
9 כָּל־תּוֹעֲבוֹתָיִךְ׃ וְלֹא־תָחוֹס עֵינִי וְלֹא אֶחְמוֹל
:erunt tui medio in tuæ abominationes & ,dabo te super tuas vias juxta
כִּדְרָכַיִךְ עָלַיִךְ אֶתֵּן וְתוֹעֲבוֹתַיִךְ בְּתוֹכֵךְ תִּהְיֶיןָ
:venit ecce ,dies Ecce .*percutiens* Dominus *ego* quòd scietis &
10 וִידַעְתֶּם כִּי אֲנִי יְהוָה מַכֶּה׃ הִנֵּה הַיּוֹם הִנֵּה בָאָה
Violentia .superbia *gemmuit* ,virga floruit ,*matutina cidaris* est egressa
11 יָצְאָה הַצְּפִרָה צָץ הַמַּטֶּה פָּרַח הַזָּדוֹן׃ הֶחָמָס
,eorum *multitudine à* neque ,eis ex non :impietatis virgam in surrexit
קָם לְמַטֵּה־רֶשַׁע לֹא־מֵהֶם וְלֹא מֵהֲמוֹנָם
,tempus Venit .eis in lamentum non & ,eorum *tumultu è* neque
12 וְלֹא מֶהֱמֵהֶם וְלֹא־נֹהַּ בָּהֶם׃ בָּא הָעֵת
quia :lugeat ne ,*vendens* & ;lætetur ne ,*Emens* .dies *attigit*
הִגִּיעַ הַיּוֹם הַקּוֹנֶה אַל־יִשְׂמָח וְהַמּוֹכֵר אַל־יִתְאַבָּל כִּי
venditionem ad vendens Quoniam .ejus *turbam* omnem *ad* ira
13 חָרוֹן אֶל־כָּל־הֲמוֹנָהּ׃ כִּי הַמּוֹכֵר אֶל־הַמִּמְכָּר
ad visio Quia .eorum *vita viventibus* in etiam Et .revertetur non
לֹא יָשׁוּב וְעוֹד בַּחַיִּים חַיָּתָם כִּי־חָזוֹן אֶל־
non suæ vitæ sua iniquitate in unusquisque & ,revertetur non ejus *turbam* omnē
כָּל־הֲמוֹנָהּ לֹא יָשׁוּב וְאִישׁ בַּעֲוֺנוֹ חַיָּתוֹ לֹא־
vadens non & ,omnia *præparare* & ,tuba in *Clanxerunt* .*confortabunt se*
14 יִתְחַזָּקוּ׃ תָּקְעוּ בַתָּקוֹעַ וְהָכִין הַכֹּל וְאֵין הֹלֵךְ
,foris Gladius .ejus *turbam universam* ad mea ira nam :prælium ad
15 לַמִּלְחָמָה כִּי חֲרוֹנִי אֶל־כָּל־הֲמוֹנָהּ׃ הַחֶרֶב בַּחוּץ
qui & ;morietur gladio in ,agro in Qui .*domo à* fames & pestis &
וְהַדֶּבֶר וְהָרָעָב מִבָּיִת אֲשֶׁר בַּשָּׂדֶה בַּחֶרֶב יָמוּת וַאֲשֶׁר
.*eum perdet* pestis & ,fames ,civitate in
בָּעִיר רָעָב וָדֶבֶר יֹאכְלֶנּוּ׃

Versio VULG. LAT.

14 Et extendam manum meam super
eos : & faciam terram desolatam & destitutam, à deserto
Deblatha, in omnibus habitationibus eorum : & scient quia ego
Dominus.

CAP. VII.

1 ET factus est sermo Domini ad
2 me, dicens; Et tu, fili hominis,
hæc dicit Dominus Deus terræ
Israel ; Finis venit, venit finis
super quatuor plagas terræ.
3 Nunc finis super te, & immittam furorem meum in te : & judicabo te juxta vias tuas : & ponam contra te omnes abominationes
4 tuas. Et non parcet oculus meus super te, & non miserebor : sed vias tuas ponam super te, & abominationes tuæ in
medio tuî erunt : & scietis quia
5 ego Dominus. Hæc dicit Dominus Deus ; Afflictio una, afflictio
6 ecce venit. Finis venit, venit finis, evigilavit adversùm te:
7 ecce venit. Venit contritio super te, qui habitas in terrà : venit tempus, propè est dies occisionis, & non gloriæ montium.
8 Nunc de propinquo effundam
iram meam super te, & complebo furorem meum in te : & judicabo te juxta vias tuas, & imponam tibi omnia scelera tua:
9 Et non parcet oculus meus, nec
miserebor : sed vias tuas imponam tibi, & abominationes tuæ
in medio tuî erunt : & scietis
quia ego sum Dominus percuti-
10 ens. Ecce dies, ecce venit : egressa est contritio, floruit virga,
11 germinavit superbia : Iniquitas surrexit in virga impietatis ;
non ex eis, & non ex populo,
neque ex sonitu eorum : & non
12 erit requies in eis. Venit tempus, appropinquavit dies : qui
emit, non lætetur : & qui vendit, non lugeat : quia ira super
13 omnem populum ejus. Quia
qui vendit, ad id quod vendidit,
non revertetur, & adhuc in viventibus vita eorum : visio enim
ad omnem multitudinem ejus
non regredietur : & vir in iniquitate vitæ suæ non conforta-
14 bitur. Canite tubâ, præparentur omnes, & non est qui vadat
ad prælium : ira enim mea super
15 universum populum ejus. Gladius foris ; & pestis & fames intrinsecùs : qui in agro est, gladio
morietur : & qui in civitate, pestilentiâ & fame devorabuntur.

Vers. GRÆ. LXX. Interp. cum Transl. LAT.

14 Καὶ ἐκτενῶ τὴν χεῖρά μου ἐπ᾽ αὐτοὺς, καὶ θήσομαι τὴν γῆν εἰς ἀφανισμὸν καὶ εἰς ὄλεθρον
ἀπὸ τῆς ἐρήμου Δεβλαθὰ ἐκ πάσης τῆς (σ)
κατοικεσίας αὐτῶν. Ἐπιγνώσεσθε ὅτι ἐγὼ κύριος.

MS.A. (σ) κατοικίας. καὶ ἐπιγνώσονται

ΚΕΦ. ζʹ.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέ-
2 γων, Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου εἰπὸν, Τάδε (a)
λέγει κύριος, Τῇ γῇ τοῦ Ἰσραὴλ πέρας ἥκει, τὸ πέρας ἥκει ἐπὶ τὰς τέσσαρας πτέρυγας τῆς γῆς.
3 (β) Ἥκει τὸ πέρας ἐπὶ σὲ
7 Τὸν κατοικοῦντα τὴν γῆν· ἥκει ὁ καιρὸς, ἤγγικεν ἡ ἡμέρα, οὐ μετὰ θορύβων, οὐδὲ μετὰ ὠδίνων.
8 Νῦν ἐγγύθεν ἐκχεῶ τὴν ὀργήν μου ἐπὶ σὲ, καὶ συντελέσω τὸν θυμόν μου ἐν σοὶ, καὶ κρινῶ σε ἐν ταῖς ὁδοῖς σου, καὶ δώσω ἐπὶ σὲ
9 Πάντα τὰ βδελύγματά σου. Οὐ φείσεται ὁ ὀφθαλμός (˜) μου, οὐδὲ μὴ ἐλεήσω· διότι (˜) τὰς ὁδούς σου ἐπὶ σὲ δώσω, καὶ τὰ βδελύγματά σου ἐν μέσῳ σου (γ) ἔσονται, καὶ ἐπιγνώσῃ, διότι ἐγώ εἰμι κύριος ὁ τύπτων.
3 Νῦν τὸ πέρας πρὸς σὲ, καὶ ἀποστελῶ ἐγὼ ἐπὶ σὲ, καὶ ἐκδικήσω ἐν ταῖς ὁδοῖς σου, καὶ δώσω ἐπὶ σὲ πάντα τὰ βδελύγματά σου,
4 Οὐ φείσεται ὁ ὀφθαλμός μου, οὐδὲ μὴ ἐλεήσω· διότι τὴν ὁδόν σου ἐπὶ σὲ δώσω, καὶ τὰ βδελύγματά σου ἐν μέσῳ σου ἔσται, καὶ ἐπιγνώσῃ διότι ἐγὼ
5 κύριος. Διότι τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ τὸ
10 πέρας ἥκει. Ἰδοὺ ἡ ἡμέρα κυρίου· εἰ καὶ ἡ
11 ῥάβδος ἤνθηκεν, ἡ ὕβρις ἐξανέστηκεν, Καὶ συντρίψει στήριγμα ἀνόμου, καὶ οὐ μετὰ (δ)
12 θορύβου, οὐδὲ μετὰ (ε) σπουδῆς. Ἥκει ὁ καιρὸς, ἰδοὺ ἡ ἡμέρα. ὁ κτώμενος μὴ χαι-
13 ρέτω, καὶ ὁ πωλῶν μὴ (ζ) θρηνείτω· Διότι ὁ κτώμενος πρὸς τὸν πωλοῦντα οὐκέτι (η) μὴ ἐπιστρέψει, καὶ ἄνθρωπος ἐν ὀφθαλ-
14 μῷ ζωῆς αὐτοῦ οὐ κρατήσει. Σαλπίσατε ἐν σάλπιγγι, (θ) καὶ κρίνατε τὰ (ι) σύμπαν-
15 τα. Ὁ πόλεμος ἐν ῥομφαίᾳ ἔξωθεν, καὶ ὁ λιμὸς καὶ ὁ θάνατος ἔσωθεν· (κ) ὁ ἐν τῷ πεδίῳ ἐν ῥομφαίᾳ (λ) τελευτήσει, τοὺς δ᾽ ἐν τῇ πόλει λιμὸς καὶ θάνατος συντελέσει.
autem, qui in civitate.

14 *Et extendam manum meam super eos: & ponam terram in desolationem, & in perditionem, à deserto Deblatha ex omni habitatione eorum. Scietis quia ego Dominus.*

CAP. VII.

1 ET *factum est verbum Domini ad me, dicens; Et tu, fili homi-*
2 *nis, (a) dic; Hæc dicit Dominus terræ Israel; Finis venit, finis venit super quatuor alas terræ:*
3 *(b) Veni finis*
7 *(c) super te, Qui habitas terram: venit tempus, appropinquavit dies, non cum perturbationibus, neque cum doloribus.*
8 *Nunc de propinquo effundam iram meam super te: & complebo furorem meum in te: & judicabo te in viis tuis: & dabo super te omnes abominationes tuas:*
9 *Non parcet oculus meus, neque miserebor: quia vias tuas super te dabo: & abominationes tuæ in medio tuî erunt: & scies, quia ego Dominus, qui percutio.*
3 *Nunc finis ad te: & mittam (d) ego super te, & ulciscar in vias tuas, & dabo super te omnes abominationes tuas:*
4 *Non parcet oculus meus, neque miserebor: quia viam tuam super te dabo, & abominationes tuæ in medio tuî erunt: & scies, quia ego Dñs.*
5 *Hæc enim dicit (e) Dominus; Ecce finis (f) venit, ecce (g) dies Domini:*
10 *si & virga floruit, contumelia surrexit.*
11 *Et conteret firmamentum iniqui, & non cum perturbatione, neque cum festinatione. Venit tempus, ecce dies.*
12 *Qui emit, non lætetur: & qui vendit, non (h) lugeat:*
13 *Quia emens ad vendentem non ultrà (i) revertetur: & homo in oculo vitæ suæ non obtinebit. Clangite in tuba,*
14 *& judicate (k) omnia.*
15 *(l) Bellum in gladio foris, & fames, & mors intrinsecùs. Qui in campo est, in gladio morietur: eos fames, & mors consumet.*

3 MS. A. (α) λέγει ἀδωναῒ κύριος, (β) Ἥκει τὸ πέρας, νῦν τὸ πέρας
πρὸς σὲ, καὶ ἀποστελῶ ἐγὼ ἐπὶ σὲ, καὶ ἐκδικήσω σε ἐν ταῖς ὁδοῖς
σου, καὶ δώσω ἐπὶ σὲ πάντα (˜) μου ἐπὶ σὲ, οὐδὲ (˜) τὴν ὁδόν (γ) ἔ-
5 7 σται, καὶ γνώσῃ ὅτι ἐγὼ κύριος. Διότι τάδε λέγει κύριος ἐπὶ σὲ,* * τὸν
κατοικοῦντα τὴν γῆν, ἥκει ὁ καιρὸς, ἤγγικεν ἡ ἡμέρα οὐ μετὰ θορύβων,
8 οὐδὲ μετ᾽ ὠδίνων. Νῦν ἐγγύθεν ἐκχεῶ τὴν ὀργήν μου ἐπὶ σὲ, καὶ συν-
τελέσω τὸν θυμόν μου ἐν σοὶ, καὶ κρινῶ σε ἐν ταῖς ὁδοῖς σου, καὶ δώσω
9 ἐπὶ σε πάντα τὰ βδελύγματά σου· Οὐ φείσεται ὁ ὀφθαλμός μου, οὐδὲ μὴ
ἐλεήσω. διότι τὰς ὁδούς σου ἐπὶ σὲ δώσω, καὶ τὰ βδελύγματά σου ἐμ
10 μέσῳ σου ἔσονται· καὶ ἐπιγνώσῃ διότι ἐγώ εἰμι κύριος ὁ τύπτων. Ἰδοὺ ἡ-
μέρα κυρίου, ἰδοὺ τὸ πέρας ἥκει, ἐξῆλθεν ἡ πλοκὴ, καὶ ἤνθηκεν ἡ ῥάβδος,
ἐξανέστηκεν ἡ ὕβρις, Καὶ συντρίψει (δ) θορύβων, (ε) σπουδῆς. καὶ οὐκ ἐξ αὐτῶν
εἰσιν, οὐδὲ ὡραϊσμὸς ἐν αὐτοῖς. Ἥκει (ζ) θρηνείτω· ὅτι ὀργὴ εἰς πᾶν τὸ
13 πλῆθος αὐτῆς· Διότι (η) οὐ μὴ ἐπιστρέψῃ, καὶ ἔτι ἐν ζωῇ τὸ ζῆν αὐτῶν,
ὅτι ὅρασις εἰς πᾶν τὸ πλῆθος αὐτῆς οὐκ ἀνακάμψει, καὶ ἄνθρωπος (θ)
14 κρίνατε (ι) σύμπαντα, καὶ οὐκ ἔστιν πορευόμενος εἰς τὸν πόλεμον, ὅτι ἡ ὀργή
μου εἰς πᾶν τὸ πλῆθος αὐτῆς. Ὁ πόλεμος (κ) οἱ ἐν (λ) τελευτήσουσι,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 וְאָרִים יַת מְחַת גְבוּרְתִּי עֲלֵיהוֹן וְאֶתֵּן יַת אַרְעָא לְצָדוּ וְאִשְׁתְּמָמוּ מִמַּדְבַּר דִּבְלַת בְּכֹל
מוֹתְבָנֵיהוֹן וְיִדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ׃

ז

1 וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי לְמֵימַר׃ וְאַתְּ בַּר אָדָם כִּדְנָן אָמַר יְיָ אֱלֹהִים לְאַרְעָא
2 דְיִשְׂרָאֵל קִצָּא מְטָא מְטַת פּוּרְעָנוּת קִצָּא לְמֵיתֵי עַל אַרְבַּע רוּחֵי אַרְעָא׃ כְּעַן מְטַת
3 פּוּרְעָנוּת קִצָּא לְמֵיתֵי עֲלָךְ וְאֶשַׁלַּח רוּגְזִי בִּיךְ וְאֶתְפְּרַע מִנִּיךְ כְּאוֹרְחָתַיִךְ וְאֶתֵּן עֲלָךְ יַת כָּל
4 תּוֹעֲבָתַיִךְ׃ וְלָא יֵחוּס מֵימְרִי עֲלָךְ וְלָא אֶרַחֵם אֲרֵי חוֹב אָרְחָתַיִךְ עֲלָךְ אֶתֵּן וּפוּרְעָנוּת
5 תּוֹעֲבָתַיִךְ בְּגַוִּיךְ יְהֶוְיָן וְתִדְעִין אֲרֵי אֲנָא יְיָ׃ כִּדְנָן אָמַר יְיָ אֱלֹהִים בִּישְׁתָא בָתַר בִּישְׁתָא
6 7 הָא אָתְיָא׃ קִצָּא מְטָא מְטַת פּוּרְעָנוּת קִצָּא לְמֵיתֵי עֲלָךְ הָא אָתְיָא׃ אִתְגְּלִיאַת מַלְכוּתָא
עֲלָךְ יָתֵיב אַרְעָא מְטָא עִדָּן תְּבִירַת קָרִיב יוֹם אִתְרְגוֹשָׁא וְלֵית לְאִשְׁתֵּיזָבָא בְּמַצָּדֵי טוּרַיָּא׃
8 כְּעַן מִקָּרִיב אֶשְׁפּוֹךְ חֵימְתִי עֲלָךְ וְיֵחוּל רוּגְזִי בִּיךְ וְאֶתְפְּרַע מִנִּיךְ כְּאָרְחָתַיִךְ וְאֶתֵּן עֲלָךְ יַת
9 כָּל תּוֹעֲבָתַיִךְ׃ וְלָא תָחוּס מֵימְרִי וְלָא אֶרַחֵים בְּחוֹבֵי אָרְחָתַיִךְ עֲלָךְ אֶתֵּן וּפוּרְעָנוּת
10 תּוֹעֲבָתַיִךְ בְּגַוִּיךְ יְהֶוְיָן וְתִדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ אַיְתֵיתִי עֲלֵיכוֹן מְחָא׃ הָא יוֹם פּוּרְעָנוּתָא מְטָא
11 הָא אָתְיָא אִתְגְּלִיאַת מַלְכוּתָא צְמַח שׁוּלְטָנָא הוֹפַע רַשִׁיעָא׃ חָטוֹפִין קָמוּ לְמִסְעַר רַשִׁיעִין
12 לָא מִנְּהוֹן וְלָא מֵאִתְרְגוֹשְׁתְּהוֹן וְלָא מִבְּנֵיהוֹן וְלָא מִבְּנֵי בְנֵיהוֹן׃ מְטָא עִדָּן תּוֹשְׁלְמַת
חוֹבִין קָרִיב יוֹם פּוּרְעָנוּת חֶטְאִין זָבְנָא לָא יֶחְדֵּי וּמְזַבְּנָא לָא יִתְאַבַּל אֲרֵי רְגַז מִן קֳדָמַי עַל
13 כָּל אִתְרְגוֹשְׁתְּהוֹן׃ אֲרֵי מְזַבְּנָא לְזִבִּינָא לָא יְתוּב וְעַד דְּאִנּוּן חַיִּין יִרְדּוּן בִּגְוִיָּתְהוֹן אֲרֵי
נְבִיַּיָּא מִתְנַבַּן עַל כָּל אִתְרְגוֹשְׁתְּהוֹן לְמֵתַב בִּתְיוּבְתָּא וְלָא תָיְבִין גְּבַר בְּחוֹבֵי נַפְשֵׁיהּ
14 מִתְרְעַן וְעַד דְּאִנּוּן קַיָּמִין בִּתְיוּבְתָּא לָא מִתַּקְפִין׃ נָפְקִין בְּאַצְוָחַת קַרְנָא וּמִתַּקְּנִין בְּמָנֵי
15 זֵינָא וְלֵית דְּאָזֵיל לִקְרָבָא אֲרֵי רְגַז מִן קֳדָמַי עַל כָּל אִתְרְגוֹשְׁתְּהוֹן׃ חַרְבָּא מִלְּבָרָא וּמוֹתָא
וְכַפְנָא מִלְּגָיו דִּבְחַקְלָא בְּחַרְבָּא יִתְקְטִיל וְדִי בְקַרְתָּא כַּפְנָא וּמוֹתָא יְשֵׁיצְנֵיהּ׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et levabo plagam potentiæ meæ super eos, & dabo terram in desolationem 14
et stuporem à deserto Deblata in cunctis habitationibus suis : & scient quia
ego Dominus.

CAP. VII.

ET factum est verbum prophetiæ à facie Dñi ad me, dicens : Et tu fili ho- 1
minis, hæc dicit Dñs Deus terræ Israel : Finis pervenit, pervenit ultio finis 2
ut veniat sup quatuor ventos terræ. Nunc pervenit ultio definita ut veniat 3
contra te, & mittam furorē meum in te, & ultionē sumam à te juxta vias tuas,
& dabo super te omnes abominationes tuas. Et non parcet Verbum me- 4
um tibi, nec miserebor. Quia peccatum viæ tuæ sup te dabo, & abominationum
tuarum ultio in medio tui erit : & *scies* quia ego Dñs. Hæc dicit Dñs 5
Deus: Malū post malum ecce venit. Pervenit finis, pervenit ultio definita, ut 6
veniat sup te, ecce venit. Revelatum est regnum sup te qui habitas in terra: 7
pervenit tempus interitus, propè est dies tumultus, nec licet èvadere in vertices
montium. Nunc de propinquo effundam furorem meum sup te, & qui- 8
escet ira mea in te, & ultionem sumam ex te juxta vias tuas, & dabo sup te
omnes abominationes tuas. Non parcet Verbum meum, nec miserebor: juxta 9
peccata viarum tuarum dabo super te ; & ultio abominationum tuarum in
medio tui erit : & scietis quia ego Dñs adduxi sup vos percussionem. Ecce 10
dies ultionis appetiit, ecce venit, revelatum est regnum, germinavit dominator,
apparuit impius. Direptores surrexerunt ad visitandum impios: non ex 11
eis, neque ex sonitu eorum, neque ex filiis eorum, neque ex filiis filiorum
eorum. Pervenit tempus retributionis delictorum, propè est dies ultionis 12
peccatorum: qui emit non lætetur, & qui vendit non lugeat, quia ira à facie
mea super omnem tumultum eorum. Quia qui vendit, ad id quod vendidit 13
non revertetur ; & dum ipsi vivunt, dominabitur eis in corporibus eorum:
quia cùm prophetæ prophetarent ad omnem multitudinem eorum ut pœnitentia
redirent, non redierunt : quisque in sceleribus animæ suæ sibi placet,
& interea dum ipsi permanent, non apprehendunt pœnitentiam. Egre- 14
diuntur in clangore cornu & accincti sunt armis bellicis, & non est qui
vadat ad prælium , quia ira à facie mea super omnem tumultum eorum.
Gladius foris, & pestis & fames intus : qui in agro est, gladio occidetur ; & 15
qui in civitate, fames & pestis eum perdent.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܪܝܡ ܐܝܕܝ ܥܠܝܗܘܢ ܀ ܘܐܥܒܕܝܗ ܠܐܪܥܐ ܘܬܗܘܐ ܚܪܒܬܐ ܝܬܝܪ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܕܒܠܬ. 14
ܘܟܠܗ ܕܘܟ ܡܥܡܪܝܗܘܢ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܙ *
* ܘܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܐܢܬ ܕܝܢ ܒܪܢܫܐ ܀ ܐܡܪ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܐ 1 2
ܡܪܘܬܐ. ܡܛܝ ܩܨܐ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܝܣܪܝܠ. ܘܡܛܝ ܫܘܠܡܐ ܥܠ ܐܪܒܥ ܦܢܝܬܗ ܕܐܪܥܐ. * ܗܫܐ 3
ܩܨܐ ܥܠܝܟܝ. ܘܐܫܕ ܥܠܝܟܝ ܪܘܓܙܝ. ܘܐܕܘܢܟܝ ܐܝܟ ܐܘܪܚܬܟܝ. ܘܐܝܬܐ ܥܠܝܟܝ ܟܠܗ
ܛܢܦܘܬܟܝ. * ܘܠܐ ܬܚܘܣ ܥܝܢܝ ܥܠܝܟܝ. ܘܠܐ ܐܪܚܡ. ܡܛܠ ܕܐܘܪܚܬܟܝ ܥܠܝܟܝ ܐܬܠ. 4
ܘܛܢܦܘܬܟܝ ܒܓܘܟܝ ܬܗܘܐ. ܘܬܕܥܝܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܐ ܐܬܝܐ 5
ܒܝܫܬܐ ܚܠܦ ܒܝܫܬܐ. * ܕܡܛܐ ܩܨܐ. ܘܐܒܐܫ ܠܟܝ. * ܘܢܐܬܐ ܨܦܝܪܐ ܥܡܘܪܐ ܕܐܪܥܐ ܥܠܝܟܝ. 6 7
ܡܛܝ ܙܒܢܐ. ܘܩܪܒ ܝܘܡܐ ܕܫܓܘܫܝܐ. * ܗܫܐ ܡܢ ܩܪܝܒ ܐܫܘܕ ܚܡܬܝ ܥܠܝܟܝ. ܘܐܫܘܕ 8
ܪܘܓܙܝ ܥܠܝܟܝ. ܘܐܕܘܢܟܝ ܐܝܟ ܐܘܪܚܬܟܝ. ܘܐܬܠ ܥܠܝܟܝ ܟܠܗ ܛܢܦܘܬܟܝ. * ܘܠܐ ܬܚܘܣ 9
ܥܝܢܝ ܥܠܝܟܝ. ܘܠܐ ܐܪܚܡ. ܐܠܐ ܐܝܟ ܐܘܪܚܬܟܝ ܐܦܪܥܟܝ. ܘܛܢܦܘܬܟܝ ܒܓܘܟܝ ܬܗܘܐ.
ܘܬܕܥܝܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܕܡܚܝܬܟܝ. * ܗܐ ܡܛܐ ܝܘܡܐ. ܢܦܩ ܨܦܝܪܐ. ܘܦܪܚ ܚܘܛܪܐ. ܘܦܪܥ 10
ܨܥܪܐ. * ܘܥܘܠܐ ܩܡ ܥܠ ܫܒܛܗ ܕܥܘܠܐ. ܠܐ ܡܢܗܘܢ. ܘܠܐ ܡܢ ܪܘܓܫܗܘܢ. ܘܠܐ ܡܢ 11
ܡܥܒܕܢܘܬܗܘܢ. ܘܠܐ ܢܬܬܢܝܚ ܒܗܘܢ. * ܡܛܝ ܙܒܢܐ ܘܩܪܒ ܝܘܡܐ. ܕܙܒܢ ܠܐ ܢܚܕܐ. 12
ܘܕܡܙܒܢ ܠܐ ܢܬܐܒܠ. ܡܛܠ ܕܪܘܓܙܐ ܥܠ ܟܠܗ ܩܢܝܢܗܘܢ. * ܘܙܒܘܢܐ ܠܐ ܢܗܦܘܟ ܠܘܬ 13
ܡܙܒܢܢܐ. ܘܠܐ ܬܘܒ ܚܝܐ ܒܚܝܝܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܚܙܘܐ ܠܐ ܢܬܗܦܟ ܥܠ ܟܠܗ ܩܢܝܢܗܘܢ.
ܘܓܒܪܐ ܒܥܘܠܗ. ܠܐ ܢܚܣܢ ܚܝܘܗܝ. * ܩܪܘ ܒܩܪܢܐ ܘܐܬܛܝܒܘ ܟܠ. ܘܠܝܬ ܕܐܙܠ 14
ܠܩܪܒܐ. ܡܛܠ ܕܪܘܓܙܝ ܥܠ ܟܠܗ ܩܢܝܢܗܘܢ. * ܚܪܒܐ ܒܫܘܩܐ. ܘܡܘܬܢܐ ܘܟܦܢܐ 15
ܒܒܬܐ. ܐܝܢܐ ܕܒܚܩܠܐ ܗܘܐ. ܒܚܪܒܐ ܢܡܘܬ. ܘܐܝܢܐ ܕܒܡܕܝܢܬܐ ܗܘܐ ܀ ܟܦܢܐ ܘܡܘܬܢܐ
ܢܐܟܠܘܢܗ.

Levabo enim manum meam ſuper eos, & red- 14
dam terram iſtam magìs deſolatā quàm terrā
Deblathæ ; ac omnem locum habitationis eo-
rum : & experientur me eſſe Dominum.

CAP. VII.

Fuit etiam ad me ſermo Domini, dicendo ; 1
Tu verò fili hominis, dicito ; Sic ait Dominus 2
dominorum ; Advenit finis ſuper terram Iſ-
raelis, & advenit exitium ſuper quatuor ter-
ræ oras. Nunc finis ſuper te, & effundam 3
ſuper te iram meam, judicabo te ſecundùm
vias tuas, & adducam ſuper te omnem tur-
pitudinem tuam. Non parcet oculus meus 4
tibi, neque miſericordiâ commovebor ; quia
vias tuas ſuper te reponam, & turpitudo tua
in medio tui erit : & experieris me eſſe Do-
minum. Sic ait Dominus dominorum; Ecce 5
malum pro malo venturum eſt. Adveniet 6
enim finis, & affligam te : Veniétque hir- 7
cus incola terræ ſuper te. Advênit tempus, &
propinquus eſt dies vexationis. Jamjam co- 8
minùs effundam furorem meum ſuper te, ef-
fundam ſuper te iracundiam meam, judicabo
te ſecundùm vias tuas, & reponam ſuper te
totam abominationem tuam. Non parcet tibi 9
oculus meus, nec utar clementiâ; ſed juxta vias
tuas rependam tibi, & abominatio tua in me-
dio tui erit : & experieris me Dominum eſſe
qui te percuſſi. Ecce dies advênit, prodiit 10
hircus, germinavit fuſtis, ramos emiſit contu-
melia, Et iniquitas ſtetit ſuper virgam iniqui: 11
non ab eis, neque à tumultu eorum, neque ab
operatione eorum : & non placabitur illis.
Advênit tempus, acceſſit dies : qui comparat, 12
ne lætetur ; & qui vendit, ne moleſtè ferat :
nam ira impendet omnibus poſſeſſionibꝰ eo-
rum. Emptor non redibit ad venditorem, 13
& ampliùs non erit vita in vita eorum : quo-
niam inſpectio non repetetur ſuper ullam
poſſeſſionem eorum, neque vir per iniquita-
tem ſuam conſervabit vitam ſuam. Clan- 14
gent buccinâ, & parabunt omnia, nec erit
qui ad prælium eat ; quoniam ira mea impen-
det omnibus poſſeſſionibus eorum. Gladius 15
erit in plateis, & peſtis ac fames in domibus:
qui fuerit in deſerto, gladio peribit; qui autem
in urbe, fame ac peſte conſumetur.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وامد يدي عليهم * واصنع الارض للفناء وللهلاك * من برية دبلاثا * من كل مسكن * 14
ويعلمون اني انا الرب * * الفصل السابع *
* وكان قول الرب الي قايلا * وانت يا ابن الانسان قل * هكذا يقول ادوناي الرب لارض اسرايل * 1 2
الانتهاء اتى على اربعة اجنحة الارض * اتى الانتهاء * الان الانتهاء اتى على اربعة اجنحة الارض *
اتى الانتهاء * الان الانتهاء اليك * وارسل انا عليك وانتقم منك بطرقك * واعطي عليك 3
جميع رداءاتك * ولا تشفق عيني عليك ولا ارحمك * من اجل ان طريقك ادفعها عليك * 4
ورداءاتك في وسطك تصير * وتعلمين اني انا الرب * من اجل انه هكذا يقول الرب * عليك 5 6
ايها الساكن الارض اتى الزمان * اقترب اليوم * لا بقلق ولا بطلقات * لان من قريب اسكب 7 8
رجزي عليك * واكمل غضبي فيك * وادينك بطرقك * وادفع عليك جميع رداءاتك * لا 9
تشفق عيني ولا ارحم * من اجل ان طرقك ادفعها عليك * ورداءاتك في وسطك تصير * وتعلم
اني انا الرب الضارب * ها يوم الرب * ها الانتهاء اتى * خرجت الطغين * وازهرت العصا * نهضت 10
العظمة * فتكسر رفد الاثيم * ولا بقلق ولا بحرص * وليس هم منهم * ولا التباهي فيهم * 11
* اتى الزمان * ها اليوم * المقتني لا يفرح * والبايع لا ينح * لان الرجز على كل كثرتها * 12
* من اجل ان المقتني لا يرجع على البايع ايضا * ولا معاش لحياتهم ايضا * لان الرويا 13
على كل كثرتها * ولا ترجع * والانسان في عين حياته لا يقبض * بوقوا بالبوق * دينوا 14
الجميع * فليس من يخرج للحرب * لان رجزي على كل كثرتها * الحرب بالسيف من 15
خارج * والجوع والموت من داخل * الذين في البقعة بالسيف يموتون * والذين في المدينة
الجوع والموت يفنيهم *

Et extendens manum meam ſuper ipſos, 14
terram omnem habitatam redigam in ex-
cidium & exterminium, inde à deſerto
Deblathæ: & ſcietis me eſſe Dominum.

CAP. VII.

Rurſus fuit ſermo Domini ad me, di- 1
cens ; Et tu O fili hominis, dicito ; Sic 2
ait Adonai Dominus ad terram Iſraelis ;
Finis venit ſuper quatuor alas terræ,
venit finis : inſtat jam finis ſuper quatuor
alas terræ, venit finis. Jam finis ad te 3
pervenit : miſſurus enim ego ſum adver-
ſùm te, & vindictam à te ſumpturus
propter vias tuas ; & reflexurus in te
cunctas abominationes tuas. Non parcet 4
oculus meus tibi, neque miſerebor tui ;
quia viam tuam in te retundam, & abo-
minationes tuæ in medio tui erunt : ſcieſ-
que me eſſe Dominum. Nam ſic dicit 5
Dominus ; Super te O incola terræ, ad- 6
venit tempus, appropinquavit dies :
Non prævio quidem faſtidio, neque dolo- 7
ribus partûs : Quia cominùs effundam 8
iram meam in te, & perficiam in te fu-
rorem meum ; judicabo te ſecundùm
vias tuas, & retundam in te cunctas
abominationes tuas. Nequaquam parcet 9
oculus meus, neque miſerebor, quoniam
vias tuas in te retundam, & abomina-
tiones tuæ in medio tui erunt : & agno-
ſces me eſſe Dominum percutientem. Ecce 10
dies Domini, ecce finis adeſt : prodiit
germen, floruit virga, excrevit magni-
tudo ; Conteretque ſubſidium iniqui, 11
atque id ſine tumultu, & ſine ſolici-
tudine : & non exiſtent ex eis, neque
faſtus erit in ipſis. Advenit tempus, ecce 12
diem : qui poſſidet, ne gaudeat ; & qui
vendit, ne gemat ; quoniam ira immi-
net omni harum rerum multitudini :
Quoniam poſſeſſor non revertetur am- 13
pliùs ad venditorem, nec erit ampliùs
vita vitæ ipſorum : quia viſio erit ſuper
totam harum rerum multitudinem, &
non revertentur, neque homo pro oculo
vitæ ſuæ quicquam obtinebit. Clangite 14
buccinâ, judicate omnes, quia nemo eſt
qui prodeat ad bellum : nam iracundia
mea imminet omni earum rerum copiæ.
Gladio bellum erit extrinſecùs, & fa- 15
mes ac peſtis intrinſecùs : qui fuerint in
campo, gladio morientur : qui autem in
urbe, hos fames ac peſtis conficiet.

יחזקאל : ח

vallium columbæ veluti montes ſuper erunt & ,eorũ evaſores evadent Et
16 וּפָלְטוּ פְּלִיטֵיהֶם וְהָיוּ אֶל־הֶהָרִים כְּיוֹנֵי הַגֵּאָיוֹת
Omnes ,ſua iniquitate in unuſquiſque , gementes ipſi univerſi
17 כֻּלָּם הֹמוֹת אִישׁ בַּעֲוֺנוֹ׃ כָּל־
.aquæ ibunt genua omnia & : debilitabuntur manus
הַיָּדַיִם תִּרְפֶּינָה וְכָל־בִּרְכַּיִם תֵּלַכְנָה מָּיִם׃
facies omnes ad & :formido eos operiet & , ſaccis ſe accingent Et
18 וְחָגְרוּ שַׂקִּים וְכִסְּתָה אוֹתָם פַּלָּצוּת וְאֶל כָּל־פָּנִים
ſuũ Argentum .calvitium eorum capitibus omnibus in & , pudor
19 בּוּשָׁה וּבְכָל־רָאשֵׁיהֶם קָרְחָה׃ כַּסְפָּם
,eorum Argentum .erit elongationem in eorum aurum &,projicient plateas in
בַּחוּצוֹת יַשְׁלִיכוּ וּזְהָבָם לְנִדָּה יִהְיֶה כַּסְפָּם
; Domini indignationis die in eos liberare valebit non eorum aurum &
וּזְהָבָם לֹא־יוּכַל לְהַצִּילָם בְּיוֹם עֶבְרַת יְהוָה
offendiculum quia : implebunt non ſua viſcera & ,ſaturabunt non ſuã animam
נַפְשָׁם לֹא יְשַׂבֵּעוּ וּמֵעֵיהֶם לֹא יְמַלֵּאוּ כִּי־מִכְשׁוֹל
,eum poſuit excellentiam in ejus ornamenti decor Et .fuit eorum iniquitatis
20 עֲוֺנָם הָיָה׃ וּצְבִי עֶדְיוֹ לְגָאוֹן שָׂמָהוּ
: eo in fecerunt ſuarum ſpurcitiarum , ſuarum abominationum imagines &
וְצַלְמֵי תוֹעֲבֹתָם שִׁקּוּצֵיהֶם עָשׂוּ בוֹ
manum in illud dabo Et .elongationẽ in ipſis illud dedi hoc propter
21 עַל־כֵּן נְתַתִּיו לָהֶם לְנִדָּה׃ וּנְתַתִּיו בְּיַד־
.illud cõtaminabunt & :ſpolium in terræ impiis &,diripiendũ ad alienorũ
הַזָּרִים לָבַז וּלְרִשְׁעֵי הָאָרֶץ לְשָׁלָל וְחִלְּלוּהָ׃
introibunt & :meũ abditum violabũt & , eis ab meas facies avertam Et
22 וַהֲסִבּוֹתִי פָנַי מֵהֶם וְחִלְּלוּ אֶת־צְפוּנִי וּבָאוּ־
quoniam : catenam Fac .illud polluent & , effractores illud in
23 בָהּ פָּרִיצִים וְחִלְּלוּהָ׃ עֲשֵׂה הָרַתּוֹק כִּי
.extorſione eſt plena civitas & , ſanguinum judicio eſt plena terra
הָאָרֶץ מָלְאָה מִשְׁפַּט דָּמִים וְהָעִיר מָלְאָה חָמָס׃
: eorum domos poſſidebunt & , gentium peſſimos adducam Et
24 וְהֵבֵאתִי רָעֵי גוֹיִם וְיָרְשׁוּ אֶת־בָּתֵּיהֶם
.eorum ſanctuaria polluentur & , fortium ſuperbiam faciam ceſſare &
וְהִשְׁבַּתִּי גְּאוֹן עַזִּים וְנִחֲלוּ מְקַדְשֵׁיהֶם׃
ſuper Contritio .non & , pacem quærent & : venit Præciſio
25 26 קְפָדָה בָא וּבִקְשׁוּ שָׁלוֹם וָאָיִן׃ הֹוָה עַל־
viſionẽ quærent & : erit auditum ad auditus & ,veniet contritionẽ
הֹוָה תָּבוֹא וּשְׁמֻעָה אֶל־שְׁמוּעָה תִּהְיֶה וּבִקְשׁוּ חָזוֹן
.ſenioribus à conſilium & ,ſacerdote à peribit lex & , propheta à
מִנָּבִיא וְתוֹרָה תֹּאבַד מִכֹּהֵן וְעֵצָה מִזְּקֵנִים׃
terræ populi manus &,deſolatione induetur princeps & ,lugebit Rex
27 הַמֶּלֶךְ יִתְאַבָּל וְנָשִׂיא יִלְבַּשׁ שְׁמָמָה וִידֵי עַם־הָאָרֶץ
,eos judicabo eorũ judiciis in & , eis faciam eorum via à : terrebuntur
תִּבָּהַלְנָה מִדַּרְכָּם אֶעֱשֶׂה אֹתָם וּבְמִשְׁפְּטֵיהֶם אֶשְׁפְּטֵם
.Dominus ego quòd ſcient &
וְיָדְעוּ כִּי־אֲנִי יְהוָה׃

CAP. VIII. ח

ego , menſis quinta in , ſexto in ; ſexto anno in fuit Et
1 וַיְהִי בַּשָּׁנָה הַשִּׁשִּׁית בַּשִּׁשִּׁי בַּחֲמִשָּׁה לַחֹדֶשׁ אֲנִי
cecidit & :meas facies ad ſedentes Jehudah ſeniores &,mea domo in ſedens
יוֹשֵׁב בְּבֵיתִי וְזִקְנֵי יְהוּדָה יוֹשְׁבִים לְפָנָי וַתִּפֹּל
ſimilitudo ecce & , vidi Et .Dei Domini manus ibi me ſuper
2 עָלַי שָׁם יַד אֲדֹנָי יֱהוִה׃ וָאֶרְאֶה וְהִנֵּה דְמוּת
: ignis infrà & , ejus lumborum aſpectu ab , ignis aſpectus tanquam
כְּמַרְאֵה־אֵשׁ מִמַּרְאֵה מָתְנָיו וּלְמַטָּה אֵשׁ
oculus tanquam , ſplendoris aſpectus tanquam , ſuprà & ,ejꝰ lumbis à &
וּמִמָּתְנָיו וּלְמַעְלָה כְּמַרְאֵה־זֹהַר כְּעֵין
.flammæ crepitantis
הַחַשְׁמַלָה׃

Verſio VULG. LAT.

16 Et ſalvabuntur qui fugerint ex eis : & erunt in montibꝰ quaſi columbæ convallium omnes trepidi, unuſquiſque in iniquitate 17 ſua. Omnes manꝰ diſſolventur,& 18 omnia genua fluent aquis. Et accingent ſe ciliciis,& operiet eos formido , & in omni facie confuſio, & in univerſis capitibꝰ eo19rum calvitiũ. Argentum eorũ foràs projicietur, & aurũ eorũ in ſterquiliniũ erit : Argentum eorũ, & aurũ eorũ non valebit liberare eos in die furoris Dñi. Animam ſuam non ſaturabunt, & ventres eorũ non implebuntur : quia ſcandalũ iniquitatis 20 eorũ factũ eſt. Et ornamentum monilium ſuorum in ſuperbiam poſuerunt , & imagines abominationũ ſuarũ & ſimulacrorum fecerunt ex eo: propter hoc dedi 21 eis illud in immunditiam : Et dabo illud in manꝰ alienorum ad diripiendũ , & impiis terræ in prædam, & contaminabunt il22lud. Et avertam faciẽ meã ab eis, & violabunt arcanum meũ: & introibunt in illud emiſſarii, 23 & contaminabunt illud. Fac concluſionem : quoniam terra plena eſt judicio ſanguinũ,& ci24vitas plena iniquitate. Et adducã peſſimos de Gentibus, & poſſidebunt domos eorum : & quieſcere faciam ſuperbiam potentium , & poſſidebunt Sanctuaria 25 eorũ. Anguſtiâ ſuperveniente, requirent pacem , & non erit. 26 Conturbatio ſuper conturbationem veniet , & auditus ſuper auditũ : & quærent viſionem de propheta, & lex peribit à ſacer27dote,& conſiliũ à ſenioribꝰ. Rex lugebit , & princeps induetur mœrore, & manꝰ populi terræ conturbabuntur. Secundùm viã eorũ faciã eis, & ſecundùm judicia eorum judicabo eos : & ſcient quia ego Dominus.

CAP. VIII.

1 ET factum eſt in anno ſexto, in ſexto menſe, in quinta menſis : ego ſedebam in domo mea, & ſenes Juda ſedebant coram me, & cecidit ibi ſuper me ma2nus Domini Dei. Et vidi, & ecce ſimilitudo quaſi aſpectus ignis : ab aſpectu lumborum ejus, & deorſum , ignis : et à lumbis ejus, et ſurſum , quaſi aſpectus ſplendoris, ut viſio electri.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

16 Καὶ ἀνασωθήσονται οἱ ἀνασωζόμενοι ἐξ αὐτῶν, ϗ ἔσονται ἐπὶ τῶν (μ) ὀρέων. ϗ πάντας ἀποκτενῶ, ἕκαστον ἐν ταῖς ἀδικίαις 17 αὐτοῦ. Πᾶσαι χεῖρες ἐκλυθήσονται, ϗ πάν18τες μηροὶ μολυνθήσονται ὑγρασίᾳ. Καὶ περιζώσονται σάκκους, ϗ καλύψει αὐτοὺς θάμβος· ϗ ἐπὶ πᾶν πρόσωπον αἰσχύνη ἐπ' αὐτοὺς, ϗ ἐπὶ πᾶσαν κεφαλὴν φαλά19κρωμα. Τὸ ἀργύριον αὐτῶν ῥιφήσεται ἐν ταῖς πλατείαις, ϗ τὸ χρυσίον αὐτῶν (ν) ὑπεροφθήσεται. αἱ ψυχαὶ αὐτῶν οὐ μὴ ἐμπλησθῶσι, ϗ αἱ κοιλίαι αὐτῶν οὐ μὴ πληρωθῶσι, διότι βάσανος τῶν ἀδικιῶν αὐτῶν ἐ20γένετο. Ἐκλεκτὰ κόσμου εἰς ὑπερηφανίαν ἔθεντο αὐτὰ, ϗ εἰκόνας τῶν βδελυγμάτων αὐτῶν ἐποίησαν ἐξ αὐτῶν· ἕνεκεν τούτου δέδωκα αὐτὰ αὐτοῖς εἰς ἀκαθαρσίαν. 21 Καὶ παραδώσω αὐτὰ εἰς χεῖρας ἀλλοτρίων, τοῦ (ξ) διαρπάσαι αὐτὰ, ϗ τοῖς λοιμοῖς τῆς γῆς εἰς σκῦλα, ϗ βεβηλώσουσιν αὐ22τά. Καὶ ἀποστρέψω τὸ πρόσωπόν μου ἀπ' αὐτῶν, ϗ μιανοῦσι τὴν ἐπισκοπήν μου, καὶ εἰσελεύσονται εἰς αὐτὰ ἀφυλάκτως, ϗ βε23βηλώσουσιν αὐτά· Καὶ ποιήσουσι φυρμόν· διότι ἡ γῆ πλήρης λαῶν, ϗ ἡ πόλις 24 πλήρης (ο) ἀνομίας. Καὶ ἀποστρέψω τὸ φρύαγμα τῆς ἰσχύος αὐτῶν, ϗ μιανθήσε25ται τὰ ἅγια (π) αὐτῶν. Καὶ ἐξιλασμὸς ἥ26ξει, ϗ ζητήσει (ρ) εἰρήνην, ϗ οὐκ ἔσται. Οὐαὶ ἐπὶ οὐαὶ ἔσται· ϗ ἀγγελία ἐπὶ ἀγγελίαν ἔσται. ϗ ζητηθήσεται ὅρασις ἐκ προφήτου, ϗ νόμος ἀπολεῖται ἐξ ἱερέως, ϗ βου27λὴ ἐκ πρεσβυτέρων. (σ) Ἄρχων ἐνδύσεται ἀφανισμὸν, ϗ αἱ χεῖρες τοῦ λαοῦ τῆς γῆς παραλυθήσονται. κατὰ τὰς ὁδοὺς αὐτῶν ποιήσω αὐτοῖς, (τ) καὶ ἐν τοῖς κρίμασιν αὐτῶν ἐκδικήσω αὐτοὺς, καὶ γνώσονται ὅτι ἐγὼ κύριος.

MS.A. (μ) ὀρέων, ὡς περιστεραὶ μελετητικαί. πάντας (ν) ὑπεροφθήσεται· τὸ ἀργύριον αὐτῶν ϗ τὸ χρυσίον αὐτῶν οὐ δυνηθήσεται ἐξελέσθαι αὐτοὺς ἐν ἡμέρᾳ ὀργῆς κυρίου. αἱ ψυχαὶ (ξ) διαφθεῖραι (ο) ἀνομίας. Καὶ ἄξω πονηροὺς ἐθνῶν, ϗ κληρονομήσουσιν τοὺς οἴκους αὐτῶν, καὶ ἀποστρέψω (π) αὐτῶν. Ἐξιλασμὸς (ρ) εἰς εἰρήνην, (σ) Ὁ βασιλεὺς πενθήσει, ϗ ὁ ἄρχων (τ) καὶ τοῖς

ΚΕΦ. η'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἕκτῳ ἔτει ἐν τῷ πέμπτῳ μηνὶ, πέμπτῃ τοῦ (α) μηνὸς, ἐγὼ ἐκαθήμην ἐν τῷ οἴκῳ, ϗ οἱ πρεσβύτεροι Ἰούδα ἐκάθηντο (β) ἐνώπιόν μου· καὶ ἐ2γένετο ἐπ' ἐμὲ (γ) χεὶρ κυρίου. Καὶ ἴδον, ϗ ἰδοὺ ὁμοίωμα ἀνδρὸς, ἀπὸ τῆς ὀσφύος αὐτοῦ ϗ ἕως κάτω πῦρ, καὶ ἀπὸ τῆς ὀσφύος αὐτοῦ (δ) ὑπεράνω αὐτοῦ ὡς (ε) ὅρασις ἠλέκτρου.

MS.A. (α) μηνὸς, ἐκαθήμην (β) ἐνώπιον ἐμοῦ· (γ) χεὶρ ἀδωναῒ κυρίου. (δ) τὰ ὑπεράνω (ε) ὅρασις αὔρας, ὡς ἴδος ἠλέκτρου.

Et ſalvi evadent, qui evadunt ex eis, & erunt ſuper (m) montes. Et omnes occîdam, unumquemque in iniquitatibus ſuis. 16
Omnes manus diſſolventur, & omnia femora polluentur (n) humore: Et accingent ſe ciliciis: 17 *& operiet eos formido. Et ſuper omnem faciem confuſio ſuper eos, & ſuper omne caput calvitium.* 18 *Argentum eorum in plateis projicietur: & aurum eorum erit (o) contemptui: Animæ eorum non ſaturabuntur, & ventres eorum non implebuntur: quia cruciatus iniquitatum eorũ fuit.* 19 *Electa (p) mundi in ſuperbiam poſuerunt ea: & imagines abominationum (q) ſuarum fecerunt ex eis. Propter hoc dedi ea illis in immunditiam:* 20 *Et tradam ea in manus alienorum, ut diripiant ea, & peſtilentibus terræ in ſpolia: & polluent ea.* 21 *Et avertam faciem meam ab eis: & violabunt (r) viſitationem meam: & ingredientur in ea (ſ) temerè, & contaminabunt ea,* 22 *Et (t) facient perturbationem: quia terra plena (u) populorum, & civitas plena (x) iniquitatis.* 23 *Et avertam fremitum fortitudinis eorum: & polluentur Sancta eorum.* 24 *Et (y) propitiatio veniet: & quæret pacẽ: & non erit.* 25 *Væ ſup væ erit: & nuntiꝰ ſuper nuntiũ erit: & quæretur viſio de propheta: & lex peribit à ſacerdote, & conſilium à ſenioribus.* 26 *(z) Princeps induetur interitu: & manus populi terræ diſſolventur. Secundùm vias eorum faciam eis: & in judiciis eorum ulciſcar eos. Et ſcient, quia ego Dominus.* 27

CAP. VIII.

ET factum eſt in ſexto anno in (a) quinto menſe, quintâ menſis; ego ſedebam in domo: & ſeniores Juda ſedebant coram me. Et facta eſt ſuper me manus (b) Domini: 1 *Et vidi: & ecce ſimilitudo (c) viri: à lumbo ejus, & uſque deorſum, ignis: & à lumbo ejus, ſupra eum, (d) quaſi viſio electri.* 2

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 וּמְשֵׁיזְבַיָא יִשְׁתֵּיזְבוּן מִנְהוֹן וִיהוֹן עַל טוּרַיָא כְּיוֹנֵי חֵילַיָא כּוּלְהוֹן מְנַהֲמִין גְּבַר בְּחוֹבֵי
17 נַפְשֵׁיהּ׃ כָּל יְדַיָא יִתְרַשְׁלָן וְכָל רְכוּבַיָא יִתְאַשְׁדָן מַיָא׃ 18 וְיֵסְרוּן סַקִין וְתַחְפֵי יַתְהוֹן
19 אִתְכְּנָעוּתָא וְעַל כָּל אַפֵּיהוֹן בַּהֲתָא וּבְכָל רֵישֵׁיהוֹן מְרַט׃ כַּסְפְּהוֹן בְּשׁוּקִין יִרְמוֹן
וְדַהַבְהוֹן לְבוּסְרָן יְהֵי כַּסְפְּהוֹן וְדַהַבְהוֹן לָא יִכּוֹל לְשֵׁיזָבוּתְהוֹן בְּיוֹם רוּגְזָא דַיְיָ נַפְשְׁהוֹן
20 לָא יִסְבְּעוּן וּמְעֵיהוֹן לָא יִמְלוֹן אֲרֵי לְתַקְלַת חוֹבֵיהוֹן יְהֵי׃ וְחֶדְוַת תִּקּוּנֵיהּ לִיקַר יְהַבְתֵּיהּ
21 וְאִנּוּן צַלְמֵי תוֹעֲבָתְהוֹן שִׁקּוּצֵיהוֹן עֲבַדוּ בֵיהּ עַל כֵּן יְהַבְתֵּיהּ לְהוֹן לְבוּסְרָן׃ וְאֶמְסְרִנֵּיהּ
22 בְּיַד רַשִׁיעִין לְמִבַּז וּלְחַיָּבֵי אַרְעָא לַעֲדֵי וִיחַלְּלוּנֵיהּ׃ וְאַסְלֵיק שְׁכִנְתִּי מִנְּהוֹן עַל דְּאַחִילוּ
23 יָת אַרְעָא בֵּית שְׁכִנְתִּי וְיֵעֲלוּן בַּהּ רַשִׁיעִין וִיחַלְּלוּנַהּ׃ עֲבֵיד שַׁלְשְׁלָן אֲרֵי אַרְעָא
24 אִתְמְלִיאַת חַיָּבֵי קְטוֹל וְקַרְתָּא אִתְמְלִיאַת חֲטוֹפִין׃ וְאַיְתֵי מִבְאֲשֵׁי עַמְמַיָא וְיַחְסְנוּן יָת
25 בָּתֵּיהוֹן וַאֲבַטֵּל רְבוּת רַשִׁיעִין וְיִתְחַלְּלוּן מַקְדְּשֵׁיהוֹן׃ אִתְקַפְּדַת מְטַת וְיִבְעוּן שְׁלָמָא
26 וְלֵית׃ תְּבַר עַל תְּבַר יֵיתֵי וּבְסוּרְתָא עַל בְּסוּרְתָא תְּהֵא וְיִבְעוּן אוּלְפָן מִסָּפַר וְאוֹרָאָה
27 תִּפְסוֹק מִכָּהֵן וּמְלַךְ מֵחַכִּים׃ מַלְכָּא יִתְאַבַּל וְרַבָּא יִלְבַּשׁ צְדוּ וִידֵי עַמָּא דְאַרְעָא יִתְבַּהֲלָן
מֵאָרְחָתְהוֹן אַעְבֵּיד עִמְּהוֹן וּבְנִימוֹסֵיהוֹן אֶתְפְּרַע מִנְּהוֹן וְיִדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ׃

ח

1 וַהֲוָה בְּשַׁתָּא שְׁתִיתֵי בְּשְׁתִיתָאָה בְּחַמְשָׁא לְיַרְחָא אֲמַר נְבִיָא אֲנָא יָתֵיב בְּבֵיתִי וְסָבֵי
2 בֵית יְהוּדָה יָתְבִין קֳדָמַי וּשְׁרָת עֲלַי תַּמָּן רוּחַ נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ אֱלֹהִים׃ וַחֲזֵית וְהָא
דְמוּת כְּחֵזוּ אֶשָּׁתָא חֵיזוּ יְקָר דְּלָא יָכְלָא עֵינָא לְמֶחֱזֵי וְלֵית אֶפְשַׁר לְאִסְתַּכָּלָא בֵיהּ וּלְרַע
חֵזוּ אֶשָּׁתָא וְחֵזוּ יְקָר דְּלָא יָכְלָא עֵינָא לְמֶחֱזֵי וְלָא אֶפְשַׁר לְאִסְתַּכָּלָא בֵיהּ וּלְעֵלָּא כְּחֵיזוּ
זִהֲרָא כְּעֵין חַשְׁמַל׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et ſuperſtites qui ſalvi fuerint ex eis,erunt ſuper montes quaſi columbæ convallium,omnes gementes, unuſquiſque in peccatis animæ ſuæ. 16 Omnes manus diſſolventur, & omna genua defluent aquis. 17 Et accingentur ſaccis, & operiet eos opprobrium, & ſuper omnem faciem eorum confuſio , & in omnibus capitibus eorum depilatio. 18 Argentum ſuum in viis projicient, & aurum eorum erit in contemptum. 19 Argentum eorum & aurum eorum non valebit liberare eos in die furoris Domini : animas ſuas non ſatiabunt, & viſcera ſua non implebunt, quia in ſcandalum peccatorum erit : Et gaudium ornamenti 20 ejus quod in honorem poſuit : at ipſi in eo ſimulachra abominationum ſuarum & deteſtationum ſuarum fecerunt : propterea dedi illud eis in contemptum. Et tradam illud in manum impiorum ad diripiendum, & impiis terræ 21 in prædam, & prophanabunt illud. Et auferam majeſtatem meam ab eis, 22 pro eo quòd violaverunt terram domus majeſtatis meæ : & ingredientur in eam impii, & prophanabunt illam. Fac catenas, quia terra impleta eſt pecca23tis homicidii, & civitas plena eſt rapinis. Et adducam malignos populorum, 24 & poſſidebunt domos eorum: & ceſſare faciam ſuperbiam impiorum,& prophanabuntur ſanctuaria eorum. Succiſio pervenit; & quærent pacem,& non 25 erit. Interitus ſuper interitum veniet, & nuntium ſuper nuntium erit : & 26 quærent à ſcriba diſciplinam, & doctrina ceſſabit à ſacerdote, & conſilium à ſapiente. Rex lugebit, & princeps induetur deſolatione : & manus popu27li terræ turbabuntur : ſecundùm viam eorum faciam cum eis, & in inſtitutis eorum ultionem ſumam ab eis : & ſcient quia ego Dominus.

CAP. VIII.

ET factum eſt anno ſexto, ſexto [*menſe,*] quinta die menſis, *ait propheta,* 1 ego ſedebam in domo mea, & ſenes Juda ſedebant coram me : & manſit ſuper me ibi ſpiritus prophetiæ à facie Domini Dei. Et vidi, & ecce ſimilitudo 2 quaſi aſpectus ignis, aſpectus gloriæ quam oculus non poſſit videre, neque contemplari in illam : & infrà aſpectus ignis & aſpectus gloriæ quam non poſſit intueri oculus, & quam contemplari ſit impoſſibile : & ſuprà velut aſpectus ſplendoris quaſi ſpecies electri,

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

16 *ܘܢܬܦܨܘܢ ܐܝܠܝܢ ܕܡܬܦܨܝܢ ܡܢܗܘܢ ܠܛܘܪܐ. ܐܝܟ ܝܘܢܐ ܠܫܩܝܦܐ. ܟܠܗܘܢ ܢܡܘܬܘܢ܆
17 ܐܢܫ ܒܚܛܗܝܗܘܢ. * ܟܠܗܝܢ ܐܝܕܝܐ ܢܬܪܦܝܢ : ܘܟܠܗܝܢ ܒܘܪܟܐ. ܢܪܕܝܢ ܡܝܐ.
18 * ܘܢܬܚܙܩܘܢ ܣܩܐ. ܘܢܚܦܘܢ ܐܢܘܢ ܙܘܥܐ. ܒܗܬܬܐ ܒܟܠ ܦܪܨܘܦܝܗܘܢ. ܘܡܪܝܛܘܬܐ ܒܟܠ
19 ܪܫܝܗܘܢ.. * ܣܐܡܗܘܢ ܒܫܘܩܐ ܢܫܕܘܢ.. ܘܕܗܒܗܘܢ ܠܡܣܠܝܘ ܢܗܘܐ. ܣܐܡܗܘܢ
ܘܕܗܒܗܘܢ.. ܠܐ ܢܫܟܚܘܢ ܠܡܦܪܩܘ ܐܢܘܢ ܒܝܘܡܐ ܕܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ. ܢܦܫܗܘܢ ܠܐ
20 ܢܣܒܥܘܢ. ܘܟܪܣܬܗܘܢ ܠܐ ܢܡܠܘܢ.. * ܗܢܐ ܫܘܢܩܐ ܦܘܪܥܢܐ ܕܥܘܠܗܘܢ. ܘܫܘܒܚܐ
21 ܕܨܒܬܗܘܢ ܕܥܒܕܘ ܒܪܡܘܬܐ.. ܨܠܡܐ ܕܛܢܦܘܬܗܘܢ ܘܕܦܬܟܪܝܗܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ
ܠܫܝܛܐ ܐܥܒܕܝܘܗܝ. ܘܐܬܠܝܘܗܝ ܒܐܝܕܐ ܕܢܘܟܪܝܐ ܠܒܙܬܐ. ܘܠܚܛܝܐ ܕܐܪܥܐ
22 ܠܚܛܘܦܝܐ. ܘܢܛܡܐܘܢܝܗܝ. * ܘܐܗܦܟ ܐܦܝ ܡܢܗܘܢ. ܘܢܛܡܘܢ ܕܘܟܝ. ܘܢܥܠܘܢ ܒܗ
23 ܦܪܘܨܐ ܘܢܛܡܐܘܢܗ. ܘܢܥܒܪܘܢ ܒܟܬܠܝܗ. * ܡܛܠ ܕܐܪܥܐ ܐܬܡܠܝܬ ܕܝܢܐ ܕܕܡܐ. ܘܡܕܝܢܬܐ
24 ܐܬܡܠܝܬ ܥܘܠܐ. * ܘܐܝܬܐ ܪܥܘܬܐ ܕܥܡܡܐ. ܘܢܐܪܬܘܢ ܒܬܝܗܘܢ. ܘܐܒܛܠ ܫܘܒܗܪܐ ܕܥܫܝܢܐ.
25 ܘܢܐܪܬܘܢ ܡܩܕܫܝܗܘܢ. * ܪܘܓܙܐ ܐܬܐ. ܘܢܒܥܘܢ ܫܠܡܐ ܘܠܐ ܢܫܟܚܘܢ. * ܐܘܠܝ ܥܠ ܐܘܠܝ ܢܐܬܐ.
26 ܘܫܡܘܥܬܐ ܥܠ ܫܡܘܥܬܐ ܬܫܬܡܥ. ܘܢܒܥܘܢ ܚܙܘܐ ܡܢ ܢܒܝܐ. ܘܢܡܘܣܐ ܢܐܒܕ ܡܢ ܟܗܢܐ.
27 ܘܡܠܟܐ ܡܢ ܩܫܝܫܐ. * ܡܠܟܐ ܢܬܒ ܒܐܒܠܐ.. ܘܪܫܐ ܢܠܒܫ ܚܒܠܐ. ܘܐܝܕܝܗܘܢ ܕܥܡܐ ܕܐܪܥܐ
ܢܬܪܦܢ. ܐܝܟ ܐܘܪܚܬܗܘܢ ܐܥܒܕ ܠܗܘܢ. ܘܒܕܝܢܝܗܘܢ ܐܕܘܢ ܐܢܘܢ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ.

* ܫܠܡ * ܣܛ *

1 * ܘܗܘܐ ܒܫܢܬܐ ܫܬܝܬܐ. ܒܚܡܫܐ ܒܝܪܚܐ ܫܬܝܬܝܐ.. ܐܢܐ ܝܬܒ ܗܘܝܬ ܒܒܝܬܝ..
2 ܘܣܒܐ ܕܝܗܘܕܐ ܝܬܒܝܢ ܗܘܘ ܩܕܡܝ. ܘܢܦܠܬ ܥܠܝ ܬܡܢ ܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. * ܘܚܙܝܬ
ܘܗܐ ܕܡܘܬܐ ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܢܘܪܐ. ܡܢ ܚܙܘܐ ܕܚܨܘܗܝ ܘܠܬܚܬ ܢܘܪܐ. ܘܡܢ ܚܨܘܗܝ ܘܠܥܠ.
ܚܙܝܬ. ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܙܗܪܐ. ܘܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܐܠܗܐ.

Qui ex eis evadent, eripient ſeſe in montes, 16
ceu columbæ in prominentes *rupes* : omnes
morientur, quiſque propter peccata ſua.
Omnes manus torpeſcent, & omnia genua 17
aquis manabunt. Saccis accingentur, & 18
vertigines obruent eos : pudor erit in omnibus
faciebus eorum, & avulſio pilorum in omnibus
capitibus eorum. Argentum ſuum 19
per plateas abjicient, & aurum eorum contemptibile
erit : argentum & aurum eorum
non poterit ſervare illos in die furoris Domini
: ſeipſos non ſaturabunt, & ventres
ſuos non explebunt. Hoc ſupplicium erit 20
compenſatio pro ſcelere ipſorum, & gloriâ
ornatûs eorum, quem cum faſtu fecerunt idolis
abominationum & numinum ſuorum :
Ideò contemptibile reddam *aurum* illud, tra- 21
dámque in manum alienorum in direptionem,
& peccatoribus terræ in prædam; &
polluent illud. Avertam faciem meam ab 22
eis, & prophanabunt ſpeculas meas, & ingredientur
urbem ipſam effractores, & contaminabunt
eam, & lateres *ipſos* permeabunt :
Quia terra impleta eſt judicio ſanguinis, & 23
urbs impleta eſt iniquitate. Et adducam pa- 24
ſtores gentium, & poſſidebunt domos eorum:
auferam faſtum potentium, & poſſidebunt
ſanctuarium eorum. Adveniente irâ pacem 25
quærent, & non reperietur. Ærumna ſuper- 26
veniet ærumnæ, & rumor *infauſtus* poſt rumorem
audietur : peténtque viſionem à prophetis,
& lex deficiet à ſacerdotibus, & conſilium
à ſenibus : Rex ſedebit in luctu, & 27
princeps induet corruptionem, & manus populi
terræ torpeſcent : ſecundùm vias eorum
faciam eis, & judiciis eorum judicabo illos :
& experientur me eſſe Dominum.

CAP. VIII.

PRæntereà contigit anno ſexto, quintâ men- 1
ſis ſexti, ut ſedente me domi meæ, & ſenioribus
Judæ coram me ſedentibus; caderet ibi
ſuper me manus Domini dominorum. Nam 2
aſpiciente me, ecce imago ſimilis ſpeciei ignis
: ab aſpectu lumborum ejus deorſum
versùs, ignis erat; à lumbis autem ejus ſurſum
versùs, vidi quaſi aſpectum fulgoris, &
quaſi aſpectum Dei,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

16 * ويتخلص المتخلصون منهم * ويصيرون على الجبال مثل الحمام تهدر * واقتل الجميع * كل
17 18 واحد بظلامته * جميع الايدي تنحل * وجميع الافخاذ تتدنس بالرطوبة * ويمنطقون
19 مسوحا * ويغشاهم الجزع * والخزي على كل وجه عليهم وعلى كل راس قرع * فضتهم
تطرح في الشوارع * وذهبهم ينشهر * فضتهم وذهبهم لا يقدران ان يخلصاهم في يوم رجز
20 الرب * نفوسهم لا تشبع * وبطونهم لا تمتلي * من اجل ان عقاب مظالمهم صار *
21 مختاري العالم وضعوهم للكبرياء * وصور رذائلهم صنعوها منهم * من اجل هذا
اسلمها للنجاسة * وسادفعها لايدي الغرباء ليفسدوها * ولمفسدي الارض للنهب
22 ويدنسوها * وارد وجهي عنهم * ويدنسون تعهدي * ويدخلون اليها بغير تحفظ
23 ويدنسوها * ويصنعون امتزاجا * من اجل ان الارض مملوة شغبا * والمدينة مملوة اثما *
24 25 * واجلب اشرار الامم فيرثون بيوتهم * واصرف ارتجاج قوتهم * ويتدنس مقادسهم * الغفران
26 ياتي * ويطلب سلامة فلا تكون * الويل على الويل يكون * خبر على خبر يكون * ويطلب
27 الرويا من نبي * والناموس يبيد من الكاهن * والشور من الشيوخ * الرئيس يلبس الهلاك *
وايدي شعب الارض تسترخي * كطرقهم اصنع لهم * وباحكامهم انتقم منهم * ويعلمون
اني انا الرب *

Evadent autem qui ſe ex eis eripient, 16
*eruntque ſuper montes ceu columba gementes
: omnes interficiam, quemque proprias
ob culpas. Omnes manus remitten-* 17
*tur, omniaque femora polluentur humore
: Accingent ſe ciliciis, & operiet* 18
*eos pavor: pudor erit ſuper omnem faciem
ſuper eos, & ſuper omne caput
calvitium. Argentum eorum proijcietur* 19
*in plateas, & aurum eorum publicabitur;
argentum & aurum eorum non poterunt
ſalvare eos in die furoris Domini: animæ
eorum non ſaturabuntur, & ventres
eorum non explebuntur: Quia ſuppli-* 20
*cium perverſitatum eorum factum eſt.
Electos orbis poſuerunt ad ſuperbiam, &
imagines abominationem ſuarum fecerunt
ex eis. Propterea immunditiæ tra-* 21
*dam illa, daboque illa in manum exterorum
ut corrumpant illa, & corruptoribus
terræ in prædam ut polluant
illa. Et avertam faciem meam ab eis,* 22
*& violabunt viſitationem meam, &
ingredientur in eam ſine ulla moderatione,
& polluent eam, facientque
commiſtionem: Quoniam terra plena* 23
eſt populo, & urbs plena ſcelere: Et 24
*adducam nequiſſimos terræ, & poſſidebunt
domos eorum: abolebo turbulentiam
roboris eorum, & prophanabuntur
ſanctuaria eorum. Indulgentia veniet,* 25
pacemque quæret, ſed non erit. Væ ſuper 26
*væ erit, nuntium ſuper nuntium erit;
& poſtulabitur viſio ab aliquo propheta,
ſed lex peribit à ſacerdote, & conſilium
à ſenibus: Princeps induetur exi-* 27
*tio, & manus populi terræ remittentur.
Secundùm vias eorum faciam eis, &
in judiciis eorum vindictam ſumam ab
eis: & agnoſcent me eſſe Dominum.*

* الفصل الثامن *

1 * وكان في السنة السادسة * في الشهر الخامس * في الخامس من الشهر * جلست في البيت * ومشايخ
2 يهودا جلسوا امامي * فكانت على يد ادوناي الرب * فنظرت واذا شبه رجل من حقوه والى
اسفل نار * ومن حقوه والى فوق مثل رويا الجو * مثل منظر المها *

CAP. VIII.

Fuit etiam anno ſexto, menſe quinto, 1
*quintâ die ejus menſis, ut me domi ſedente,
& ſenioribus Judæ coram me
ſedentibus; eſſet ſuper me manus Adonai
Domini. Tum vidi, & ecce formam* 2
*viri qui à lumbo ſuo deorſum verſus
ignis erat, à lumbo verò ſurſum verſus
ſimilis erat aſpectui aëris, ſimilis aſpectui
chryſtalli.*

יחזקאל : ח

me elevavit & : mei capitis cincinno in me tulit & , manus *inſtar* miſit Et
3 וישלח תבנית יד ויקחני בציצת ראשי ותשא אתי
, Jeruſalaim in me adduxit & , cœlos inter & terram inter ſpiritus
רוח בין־הארץ ובין־השמים ותבא אתי ירושלמה
reſpicientis , interioris portæ oſtium ad , Dei viſionibus in
במראות אלהים אל־פתח שער הפנימית הפונה
. facientis zelare zeli *imaginis* habitatio *ibi* *quo* , aquilonem ad
צפונה אשר־שם מושב סמל הקנאה המקנה :
vidi quam viſionem ſecundùm : Iſrael Dei gloria ibi ecce Et
4 והנה־שם כבוד אלהי ישראל כמראה אשר ראיתי
, tuos oculos nunc leva , hominis Fili : me ad dixit Et . campo in
5 בבקעה : ויאמר אלי בן־אדם שא־נא עיניך
ecce & , aquilonē ad viam meos oculos levavi & : aquilonem ad viam
דרך צפונה ואשא עיני דרך צפונה והנה
. introitu in *hæc* zeli *ſimilitudo* , altaris portam ad , aquilone ab
מצפון לשער המזבח סמל הקנאה הזה בבאה :
: *facientes* iſti quid tu *videns* nonne , hominis Fili : me ad dixit Et
6 ויאמר אלי בן־אדם הראה אתה מהם עשים
fieri longè ad , hic *facientes* Iſrael domus quas , magnas abominationes
תועבות גדלות אשר בית־ישראל עשים פה לרחקה
abominationes videbis *converteris* adhuc & ? meo ſanctuario *deſuper*
מעל מקדשי ועוד תשוב תראה תועבות
ecce & , vidi & : atrii oſtium ad me adduxit Et . magnas
7 גדלות : ויבא אתי אל־פתח החצר ואראה והנה
hominis Fili , me ad dixit Et . pariete in unum foramen
8 חר־אחד בקיר : ויאמר אלי בן־אדם
. unum oſtium ecce & , parietem *in* fodi & : parietem *in* nunc fode
חתר־נא בקיר ואחתר בקיר והנה פתח אחד :
quas , malas abominationes vide & , Ingredere : me ad dixit Et
9 ויאמר אלי בא וראה את־התועבות הרעות אשר
omnis ecce & , vidi & , ſum ingreſſus Et . hic *facientes* iſti
10 הם עשים פה : ואבוא ואראה והנה כל־
domus idola univerſa & , abominatio , animalis & , reptilis ſimilitudo
תבנית רמש ובהמה שקץ וכל־גלולי בית
ſeptuaginta Et . *circum circum* pariete *ſuper exaratum* : Iſrael
11 ישראל מחקה על־הקיר סביב סביב : ושבעים
ſtans , Saphan filius Jazanjahu & , Iſrael domus ſenioribus de viri
איש מזקני בית־ישראל ויאזניהו בן־שפן עמד
: ſua manu in *ſuum* thuribulū *vir &* , *eorū facies ad* , ſtantium *eorū* medio in
בתוכם עמדים לפניהם ואיש מקטרתו בידו
vidiſti Nonne : me ad dixit Et . *aſcendens* ſuffimenti nebulæ vapor &
12 ועתר ענן־הקטרת עלה : ויאמר אלי הראית
, *obſcuritate in facientes* , Iſrael domus ſeniores quæ , hominis fili
בן־אדם אשר זקני בית־ישראל עשים בחשך
videns Dominus Non : *dicentes* quia ? ſuæ *proſpecturæ conclavibus* in vir
איש בחדרי משכיתו כי אמרים אין יהוה ראה
Adhuc : me ad dixit Et . terram Dominus dereliquit , nos
13 אתנו עזב יהוה את־הארץ : ויאמר אלי עוד
. *facientes* iſti quas magnas abominationes videbis , *converteris*
תשוב תראה תועבות גדלות אשר־המה עשים :
ad quod , Domini domus portæ oſtium ad me adduxit Et
14 ויבא אתי אל־פתח שער בית־יהוה אשר אל־
. Tammuz *flentes ſedentes* mulieres ibi ecce & : aquilonem
הצפונה והנה־שם הנשים ישבות מבכות את־התמוז :
videbis *converteris* Adhuc ? hominis fili vidiſti Nónne : me ad dixit Et
15 ויאמר אלי הראית בן־אדם עוד תשוב תראה
. his *præ magnas* abominationes
תועבות גדלות מאלה :

Verſio VULG. LAT.

3 Et emiſſa ſimilitudo man' apprehendit me in cincinno capitis mei : & elevavit me ſpiritus inter terram & cœlum : & adduxit me in Jeruſalem in viſione Dei, juxta oſtium interius, quod reſpiciebat ad Aquilonem, ubi erat ſtatutum idolum zeli ad provocandam 4 æmulationem. Et ecce ibi gloria Dei Iſrael, ſecundùm viſionem quam videram in campo. 5 Et dixit ad me ; Fili hominis, leva oculos tuos ad viam Aquilonis. Et levavi oculos meos ad viam Aquilonis : & ecce ab Aquilone portæ altaris, idolum 6 zeli in ipſo introitu. Et dixit ad me ; Fili hominis, putáſne, vides tu quid iſti faciunt, abominationes magnas, quas domus Iſrael facit hîc, ut procul recedam à Sanctuario meo ? & adhuc converſus videbis abo- 7 minationes majores. Et introduxit me ad oſtium atrii : & vidi, & ecce foramen unum in 8 pariete. Et dixit ad me ; Fili hominis, fode parietem. Et cùm fodiſſem parietem, apparuit 9 oſtium unum. Et dixit ad me ; Ingredere, & vide abominationes peſſimas, quas iſti faciunt 10 hîc. Et ingreſſus vidi, & ecce omnis ſimilitudo reptilium & animalium, abominatio, & univerſa idola domûs Iſrael depicta erant in pariete in cir- 11 cuitu per totum. Et ſeptuaginta viri de ſenioribus domûs Iſrael, & Jezonias filius Saphan ſtabat in medio eorum, ſtantium ante picturas : & unuſquiſque habebat thuribulum in manu ſua : & vapor nebulæ de 12 thure conſurgebat. Et dixit ad me ; Certè vides, fili hominis, quæ ſeniores domûs Iſrael faciunt in tenebris, unuſquiſque in abſcondito cubiculi ſui : dicunt enim ; Non videt Dominus nos, 13 dereliquit Dominus terram. Et dixit ad me ; Adhuc converſus videbis abominationes majores, 14 quas iſti faciunt. Et introduxit me per oſtium portæ domûs Domini, quod reſpiciebat ad Aquilonem : & ecce ibi mulieres ſedebant plangentes Adoni- 15 dem. Et dixit ad me ; Certè vidiſti, fili hominis : adhuc converſus videbis abominationes majores his.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

3 Καὶ ἐξέτεινεν ὁμοίωμα χειρὸς, ϗ ἀνέλαβέ με τῆς κορυφῆς μου, ϗ ἀνέλαβέ με πνεῦμα ἀναμέσον τῆς γῆς ϗ ἀναμέσον τοῦ οὐρανοῦ, ϗ ἤγαγέ με εἰς Ἱερουσαλὴμ ἐν ὁράσει Θεοῦ ἐπὶ τὰ πρόθυρα τῆς πύλης (ζ) τῆς βλεπούσης εἰς Βοῤῥᾶν, οὗ ἦν ἡ στήλη τοῦ κτωμένου. 4 Καὶ (η) ἰδοὺ ἦν ἐκεῖ δόξα κυρίου Θεοῦ Ἰσραὴλ κατὰ τὴν ὅρασιν ἣν ἴδον ἐν τῷ πεδίῳ. 5 Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Υἱὲ ἀνθρώπου, ἀνάβλεψον τοῖς ὀφθαλμοῖς σου πρὸς Βοῤῥᾶν. ϗ ἀνέβλεψα τοῖς ὀφθαλμοῖς μου πρὸς Βοῤῥᾶν, ϗ ἰδοὺ ἀπὸ Βοῤῥᾶ ἐπὶ τὴν (θ) πύλην τὴν πρὸς ἀνατολάς. 6 Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Υἱὲ ἀνθρώπου, (ι) ἑώρακας τί οὗτοι ποιοῦσιν; ἀνομίας (κ) μεγάλας ποιοῦσιν ὧδε τοῦ ἀπέχεσθαι ἀπὸ τῶν ἁγίων μου. ϗ ἔτι (˜) ὄψῃ ἀνομίας μείζονας. 7 Καὶ εἰσήγαγέ με ἐπὶ τὰ πρόθυρα τῆς (λ) αὐλῆς. 8 Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Υἱὲ ἀνθρώπου, ὄρυξον (μ). ϗ ὤρυξα, ϗ ἰδοὺ θύρα. 9 Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Εἴσελθε, ϗ ἴδε τὰς (ν) ἀνομίας, ἃς οὗτοι ποιοῦσιν (ξ) ὧδε. 10 Καὶ εἰσῆλθον, ϗ ἴδον, ϗ (ο) ἰδοὺ μάταια, βδελύγματα, καὶ (π) πάντα τὰ εἴδωλα οἴκου Ἰσραὴλ διαγεγραμμένα ἐπ' (ρ) αὐτοῦ κύκλῳ. 11 Καὶ ἑβδομήκοντα ἄνδρες ἐκ τῶν πρεσβυτέρων οἴκου Ἰσραὴλ, ϗ (σ) Ἰεχονίας ὁ τοῦ Σαφὰν ἐν μέσῳ αὐτῶν εἱστήκει πρὸ προσώπου αὐτῶν, ϗ ἕκαστος θυμιατήριον αὐτοῦ εἶχεν (τ) ἐν τῇ χειρὶ, ϗ ἡ ἀτμὶς τοῦ θυμιάματος ἀνέβαινε. 12 Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, (υ) Ἑώρακας υἱὲ ἀνθρώπου, ἃ οἱ πρεσβύτεροι οἴκου Ἰσραὴλ (φ) ποιοῦσιν, ἕκαστος αὐτῶν ἐν τῷ κοιτῶνι τῷ κρυπτῷ αὐτῶν, διότι (χ) εἶπαν, Οὐχ ὁρᾷ ὁ κύριος, ἐγκαταλέλοιπε κύριος τὴν γῆν. 13 Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Ἔτι (˜) ὄψει ἀνομίας μείζονας ἃς οὗτοι ποιοῦσι. 14 Καὶ εἰσήγαγέ με ἐπὶ τὰ πρόθυρα τῆς πύλης οἴκου κυρίου τῆς βλεπούσης πρὸς Βοῤῥᾶν· ϗ ἰδοὺ ἐκεῖ γυναῖκες καθήμεναι θρηνοῦσαι τὸν Θαμμούζ. 15 Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Υἱὲ ἀνθρώπου (ψ) ἑώρακας, ϗ ἔτι ὄψῃ ἐπιτηδεύματα μείζονα τούτων.

Et extendit ſimilitudinem manûs, & aſſumpſit me (e) vertice meo : & aſſumpſit me ſpiritus inter terram, & cœlum. Et adduxit me in Hieruſalem in viſione Dei ad veſtibula (f) portæ, quæ reſpicit ad Aquilonem ; ubi erat ſtatua (g) Poſſidentis. 3 *Et ecce erat ibi gloria Domini Dei Iſrael ſecundùm viſionem, quam vidi in campo.* 4 *Et dixit ad me ; Fili hominis, reſpice oculis tuis ad Aquilonem : Et reſpexi oculis meis ad Aquilonē : & ecce ab Aquilone (h) ad portā Orientalē.* 5 *Et dixit ad me ; Fili hominis, vidiſti quid hi faciunt ? iniquitates magnas (i) faciunt hîc, ut abſtineant à Sanctis meis : & adhuc videbis iniquitates majores.* 6 *Et introduxit me ad veſtibula atrii,* 7 *Et dixit ad me ; Fili hominis, (k) fode. Et fodi : & ecce oſtium.* 8 *Et dixit ad me ; Ingredere, & vide (l) iniquitates, quas iſti faciunt hîc.* 9 *Et introivi, & vidi. Et ecce (m) vana, abominationes, & univerſa idola domûs Iſrael deſcripta (n) ſuper eos in circuitu.* 10 *Et ſeptuaginta viri de ſenioribus domûs Iſrael : & Jechonias filius Saphan in medio eorum ſtabat ante faciem eorum : & unuſquiſque thuribulum ſuum habebat in manu : & vapor incenſi aſcendebat.* 11 *Et dixit ad me ; Vidiſti, fili hominis, quæ ſeniores domûs Iſrael faciunt, unuſquiſque ipſorum in cubiculo abſcondito ſuo : quia dixerunt ; Non videt Dominus, dereliquit Dominus terram.* 12 *Et dixit ad me ; Adhuc videbis iniquitates majores, quas iſti faciunt.* 13 *Et introduxit me in veſtibula portæ domûs Domini, quæ reſpicit ad Aquilonem. Et ecce ibi mulieres ſedentes plangentes (o) Thammuz.* 14 *Et dixit ad me ; Fili hominis, vidiſti : & adhuc videbis adinventiones majores his.* 15

MS. A. (ζ) τῆς ἐσωτέρας τῆς βλεπούσης πρὸς Βοῤῥᾶν, (η) ἰδοὺ ἐκεῖ ἦν δόξα (θ) πύλην τοῦ θυσιαστηρίου, ἡ εἰκὼν τοῦ * ζήλους τύπου ἐν τῷ εἰσπορεύεσθαι αὐτὴν τὴν βλέπουσαν πρὸς ἀνατολάς. (ι) ἑόρακας (κ) μεγάλας ἃς ὁ οἶκος Ἰσραὴλ ποιοῦσιν (˜) ὄψῃ ἁμαρτίας (λ) αὐλῆς. καὶ ἴδον, ϗ ἰδοὺ ὀπὴ μία ἐν τῷ τοίχῳ. Καὶ εἶπε (μ) δὴ ἐν τῷ τοίχῳ. ϗ ὤρυξα, ϗ ἰδοὺ θύρα μία. Καὶ εἶπε (ν) ἀνομίας τὰς πονηρὰς, ἃς (ξ) ὧδε σήμερον. Καὶ (ο) ἰδοὺ πᾶσα ὁμοίωσις ἑρπετοῦ καὶ κτήνους, μάταια, (π) εἶδον πάντα (ρ) αὐτοῦ (σ) Ἰεζονίας (τ) ἐν χειρὶ αὐτοῦ, ϗ (υ) Υἱὲ ἀνθρώπου, ἑώρακας (φ) ποιοῦσιν ὧδε, ἕκαστος (χ) εἶπαν, Ἐγκαταλέλοιπεν κύριος, οὐκ ἐφορᾷ ὁ κύριος τὴν γῆν. (˜) ὄψῃ (ψ) ἑώρακας, μὴ μικρὰ τῷ οἴκῳ Ἰούδα τοῦ ποιεῖν τὰς ἀνομίας, ἃς πεποιήκαν αὐτοὶ ὧδε, καὶ ἔτι ὄψῃ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 ואושיט דמות יד ואחדני בסער רישי ונטלת יתי רוחא בין ארעא ובין שמיא ואעלת יתי
לירושלם בחיזו נבואה דשרת עלי מן קדם יי במעלנא דתרעא גואה דפתיח לצפונא
4 דתמן מותב צלם קנאתא דמרגזין : והא תמן יקר אלהא דישראל כחיזוא דחזיתי
5 בבקעתא : ואמר לי בר אדם זקוף כען עינך לאורח צפונא וזקפית עיני לאורח צפונא
6 והא מצפונא לתרע מדבחא צלם קנאתא הדין במעלנא : ואמר לי בר אדם חזי את מה
דאנון עבדין תועיבן רברבן דבית ישראל עבדין כא לאתרחקא מעל מקדשי ועוד
7 תתוב תחזי תועיבן רברבן : ואעל יתי לתרע דרתא וחזית והא חורא חד בכותלא :
8 9 ואמר לי בר אדם חתור כען בכותלא וחתרית בכותלא והא תרעא חד : ואמר לי עול
10 וחזי ית תועבתא בישתא דאנון עבדין כא : ועלית וחזית והא כל דמות רחיש ובעירא
11 שקוצין וכל טעותא דפלחין להן בית ישראל מציירן על כתלא סחור סחור : ושבעין
גברא מסבי בית ישראל ויאזניה בר שפן קאם ביניהון קימין קדמיהון וגבר מחתיתיה
12 דקטרתא בידיה ויטור ענן קטרתא סליק : ואמר לי החזיתא בר אדם דסבי בית ישראל
עבדין בקבלא גבר באדרון בית משכביה ארי אמרין לא גלן עובדנא קדם יי רחיק יי
13 14 ית ארעא : ואמר לי עוד תתוב תחזי תועיבן רברבן דאנון עבדין : ואעיל יתי
במעלנא דתרע בית מקדשא דיי דפתיח לצפונא והא תמן נשיא יתבן מבכן ית תמוזא :
15 ואמר לי החזיתא בר אדם עוד תתוב תחזי תועבן רברבן מאלין :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et extendit ſimilitudinem manus, & apprehendit me capillis capitis mei, & ſuſtulit me ſpiritus inter cœlum & terram ; & introduxit me in Jeruſalem in viſione prophetiæ, quæ reſidebat ſuper me à facie Domini, in introitum portæ interioris quæ aperta erat ad Aquilonem, ubi erat ſedes idoli Zeli quo provocabant. 3 Et ecce ibi erat gloria Dei Iſrael, ſicut viſio quam vidi in campo. 4 Et dixit mihi : Fili hominis, tolle nunc oculos tuos ad viam Aquilonis : & ſuſtuli oculos meos ad viam Aquilonis : & ecce ab Aquilone in porta altaris idolum Zeli in ipſo introitu. 5 Et dixit ad me : Fili hominis, vide tu quid iſti faciunt ; abominationes magnas, quas domus Iſrael faciunt hîc, ut procul recedam à ſanctuario meo : & adhuc redi, & videbis abominationes majores. 6 Et introduxit me ad oſtium atrii, & vidi, et ecce foramen unum in pariete. 7 Et dixit mihi : Fili hominis, age fode in pariete : 8 & fodi in pariete, & ecce oſtium unum. Et dixit ad me : Ingredere & 9 vide abominationem peſſimam quam ipſi faciunt hic. Et ingreſſus 10 ſum & vidi, & ecce omnis ſimilitudo reptilis & beſtiæ : abominationes, & omnia idola quibus ſerviebant domus Iſrael, depicta erant in pariete per circuitum. Et ſeptuaginta viri de ſenioribus domus Iſrael, 11 & Jezonia filio Saphan ſtante inter eos, ſtabant ante ea, & unuſquiſque habebat thuribulum incenſi in manu ſua, & columna nubis incenſi aſcendebat. Et dixit ad me : Nunquid vidiſti fili hominis quid 12 ſenes domus Iſrael faciunt in tenebris quiſque in cubiculo domus lectuli ſui ? quia dicunt, Non ſunt revelata coram Domino opera noſtra ; projecit Dominus *terram*. Et dixit ad me : Adhuc converſus videbis abo- 13 minationes majores quas ipſi faciunt. Et introduxit me per oſtium por- 14 tæ domus ſanctuarii, quæ aperta erat ad Aquilonem, et ecce ibi mulieres ſedebant plangentes Thammuz. Et dixit ad me : Nunquid vidiſti fili hominis ? adhuc converſus videbis abominationes majores his. 15

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

3 ܘܐܘܫܛ ܕܡܘܬܐ ܕܐܝܕܐ. ܘܐܚܕܢܝ ܒܟܘܟܠܐ ܕܪܝܫܝ. ܘܫܩܠܬܢܝ ܪܘܚܐ ܒܝܬ ܐܪܥܐ *
ܠܫܡܝܐ. ܘܐܝܬܝܬܢܝ ܠܐܘܪܫܠܡ ܒܚܙܘܐ ܕܐܠܗܐ. ܠܡܥܠܢܐ ܕܬܪܥܐ ܕܓܘܝܐ ܕܚܐܪ
ܠܓܪܒܝܐ. ܘܬܡܢ ܩܐܡ ܨܠܡܐ ܕܩܢܐܢܐ. * ܘܗܐ ܬܡܢ ܗܘܐ ܫܘܒܚܗ ܕܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. 4
ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܚܙܝܬ ܒܦܩܥܬܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܒܪܢܫܐ. ܐܪܝܡ ܥܝܢܝܟ ܠܐܘܪܚܐ ܕܓܪܒܝܐ. 5
ܘܗܐ ܡܢ ܓܪܒܝܗ ܕܬܪܥܐ ܡܕܢܚܝܐ. ܨܠܡܐ ܕܩܢܐܢܐ ܒܡܥܠܢܗ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. 6
ܒܪܢܫܐ. ܚܙܝܬ. ܡܢܐ ܥܒܕܝܢ. ܬܘܥܝܒܬܐ ܪܘܪܒܬܐ ܕܥܒܕܝܢ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܕܢܪܚܩܘܢ
ܡܢ ܡܩܕܫܝ. ܬܘܒ ܬܗܦܘܟ ܬܚܙܐ ܬܘܥܝܒܬܐ ܪܘܪܒܬܐ ܕܥܒܕܝܢ. * ܘܐܥܠܢܝ ܠܬܪܥܐ ܕܕܪܬܐ. 7
ܘܚܙܝܬ ܢܩܒܐ ܚܕ ܒܫܘܪܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܒܪܢܫܐ. ܚܦܘܪ ܒܫܘܪܐ. ܘܚܦܪܬ ܒܫܘܪܐ. 8
ܘܐܫܟܚܬ ܬܪܥܐ ܚܕ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܥܘܠ. ܘܚܙܝ ܬܘܥܝܒܬܐ ܘܣܢܝܩܘܬܐ ܕܥܒܕܝܢ ܗܪܟܐ. 9
ܘܥܠܬ ܘܚܙܝܬ ܟܠ ܕܡܘܬܐ ܕܪܚܫܐ ܘܕܚܝܘܬܐ ܘܕܬܘܥܝܒܬܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܕܚܠܬܐ ܕܒܝܬ * 10
ܐܝܣܪܝܠ. ܕܨܝܪܝܢ ܥܠ ܫܘܪܐ ܚܕܪ ܚܕܪ. * ܘܫܒܥܝܢ ܓܒܪܝܢ ܡܢ ܩܫܝܫܐ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. 11
ܘܝܙܢܝܐ ܒܪ ܫܦܢ. ܩܐܡ ܗܘܐ ܒܡܨܥܬܗܘܢ. ܘܗܢܘܢ ܩܝܡܝܢ ܗܘܘ ܩܕܡܘܗܝ. ܘܐܢܫ
ܦܝܪܡܗ ܒܐܝܕܗ. ܘܥܛܪܐ ܕܥܢܢܐ ܕܒܣܡܐ ܣܠܩ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܚܙܝܬ ܐܝܟ ܒܪܢܫܐ. ܡܢܐ 12
ܥܒܕܝܢ ܩܫܝܫܐ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܒܚܫܘܟܐ. ܐܢܫ ܒܬܘܢܗ ܟܣܝܐ. ܘܐܡܪܝܢ. ܠܐ ܚܙܐ
ܠܢ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܫܒܩܗ ܡܪܝܐ ܠܐܪܥܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܬܘܒ ܬܗܦܘܟ ܬܚܙܐ ܬܘܥܝܒܬܐ 13
ܪܘܪܒܬܐ ܕܥܒܕܝܢ. * ܘܐܝܬܝܢܝ ܠܡܥܠܢܐ ܕܬܪܥܐ ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܕܠܓܪܒܝܐ. ܘܚܙܝܬ 14
ܬܡܢ ܢܫܐ ܕܝܬܒܢ. ܘܡܒܟܝܢ ܠܬܡܘܙ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܚܙܝܬ ܐܝܟ ܒܪܢܫܐ. ܬܘܒ 15
ܬܗܦܘܟ ܬܚܙܐ ܬܘܥܝܒܬܐ ܪܘܪܒܬܐ ܡܢ ܗܠܝܢ.

Is extendens formam manûs, apprehendit me cincinnis capitis mei : & ſuſtollens me ventus terram inter ac cœlum, perduxit me Jeroſolymam in viſione Dei ad veſtibulum oſtii anguli, quod reſpicit Aquilonem, ubi erecta erat ſtatua zelotypiæ. 3 Et ecce ibi gloriam Dei Iſraelis, ſimilem ſpeciei quam videram in planitie : 4 Dixítque mihi, Fili hominis, attolle oculos tuos Aquilonem verſûs : ecce autē ab Aquilonari plaga oſtii Orientalis ſtatuam zelotypiæ in ejus veſtibulo erectam. 5 Tum dixit mihi ; Fili hominis, vidéſne quid agant ? abominationes maximas quas faciunt Iſraelitæ? quòd receſſerint à ſanctuario meo ? Sed iterum converſus videbis abominationes majores quas faciunt. 6 Cùm igitur introduxiſſet me per oſtium atrii, vidi foramen quoddam in pariete : 7 Dixítque mihi ; Fili hominis, fode in pariete : cúmque fodiſſem in pariete, inveni portam quandam. 8 Tum dixit mihi ; Ingredere, & vide abominationes & flagitia quæ iſtic perpetrant. 9 Ingreſſus vidi omnigenas reptilium, ferarum, atque abominationum ſpecies, omniáque numina Iſraelis depicta ſuper parietem circunquaque, 10 Et ſeptuaginta viros de ſenioribus Iſraelitarum (Jazania fili' Saphanis ſtabat inter ipſos, ipſi verò ſtabant ante illum) quemque thuribulum ſuum manu tenentem, & fumum ſuffitûs aromatici aſcendentem. 11 Tunc dixit mihi ; Vidéſne fili hominis, quid faciant ſeniores Iſraelitarum in tenebris, quiſque in conclavi ſuo occulto? & dicunt ; Nequaquam videt nos Dominus, quia dereliquit Dominus terram. 12 Rurſùm dixit mihi ; Adhuc videbis abominationes majores quas faciunt : 13 Et cùm adduxiſſet me ad veſtibulum oſtii domûs Domini, quod eſt ad Aquilonem ; vidi ibi mulieres ſedentes, & Thamuzum (*Adonidem*) plangentes. 14 Poſteà dixit mihi ; Vidéſne fili hominis ? adhuc videbis abominationes hiſce majores. 15

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

3 * فامتدّ شبه يد * واخذني من هامتي واخذني روح وسط الارض ووسط السماء * وقادني
الي اورشليم بمنظر الله * الي مداخل الباب الداخل الناظر الي الجربياء * حيث كانت
4 نصبة المقتني * واذا هناك كان مجد الرب اله اسرائيل * كالرويا التي نظرتها في
5 البقعة * وقال لي * يا ابن الانسان * انظر بعينيك الي الجربياء * فنظرت بعيني الي
الجربياء * واذا من الجربياء الي باب المذبح صورة هذه الغيرة عند ما تدخل * ناظر
6 نحو الشرق * وقال لي * يا ابن الانسان * ارايت ما هولاء يصنعون * هذه الاثام
العظيمة التي يصنعها بيت اسرائيل هاهنا ليبتعدوا من اقداسي * وستعاين ايضا
خطايا اعظم *

Deinde extendens ſe figura quædam manûs, prehendit me vertice meo : & aſſumens me ſpiritus inter terram & inter cœlum, perduxit me Jeroſolymam in viſione Dei, ad veſtibulum januæ intimæ reſpicientis Aquilonem, ubi erat ſtatua Poſſidentis. 3 *Et ecce ibi aderat gloria Domini Dei Iſraelis, juxta viſionem quam videram in planitie.* 4 *Qui dixit mihi ; O fili hominis, reſpice oculis tuis Aquilonem verſús : cúmque reſpexiſſem oculis meis Aquilonem verſús, ecce ab Aquilone, ad januam altaris, imaginem illius zelotypiæ ſtatim ad ingreſſum tuum, reſpicientem Orientem verſús.* 5 *Dixitque mihi ; O fili hominis, vidéſne quid iſti faciant ? has iniquitates maximas quas perpetrat domus Iſraelis iſtic, ut recedant à ſacris meis ? At videbis adhuc peccata majora.* 6

* الاصحاح الرابع *

Textus quartus.

7 8 * وادخلني الي مدخل الدار * ونظرت * واذا نقب واحد في الحائط * وقال لي * يا ابن الانسان
9 انقب في الحائط * فنقبت واذا باب واحد * وقال لي * ادخل وانظر الاثام الشريرة التي هم
10 يصنعونها هاهنا اليوم * فدخلت ونظرت * واذا كل شبه هامة وبهيمة * والرذالات الباطلة *
11 ونظرت كل اوثان بيت اسرائيل مصورة عليه من حوله * وسبعون رجلا من اشياخ بيت اسرائيل *
ويازونياس بن صافان في وسطهم قايم قدام وجههم * وكل واحد معه مجمر في يده * ودخان
12 البخور صعد * وقال لي * يا ابن الانسان رايت ما تصنعه اشياخ بيت اسرائيل هاهنا * كل واحد
13 منهم في مرقده المخفي * من اجل انهم قالوا * الرب ترك * وليس ينظر الرب الارض * وقال
14 لي * سوف تعاين اثاما اعظم التي هم يصنعونها * وادخلني الي مداخل باب بيت الرب
15 الناظر الي الجربياء * واذا هناك نسوة جالسات يندبن تموز * وقال لي * يا ابن الانسان رايت *
ليس صغير لبيت يهودا ان يصنعوا الاثام التي صنعوها هم هاهنا * وسوف تعاين اعمالا
اعظم من هذه *

Itaque introduxit me ad veſtibulum atrii ; vidique, & ecce foramen quoddam in pariete. 7 *Tum dixit mihi ; O fili hominis, fode in pariete : cúmque fodiſſem, ecce januam quandam.* 8 *Rurſus dixit mihi ; Ingredere, & vide iniquitates peſſimas quas iſti committunt hîc hodiè.* 9 *Quare ingreſſus vidi omnigenas ſpecies inſectorum & jumentorum, atque abominationum vanarum ; & vidi omnia ſimulacra domûs Iſraelis depicta ſuper eum circumquaque :* 10 *Et ſeptuaginta viros de ſenioribus domûs Iſraelis, & Jezoniam filium Saphanis inter eos ſtantem ante faciem ipſorum, & unumquenque thuribulum manu ſuâ tenentem, fumumque thuris aſcendentem.* 11 *Dixitque mihi ; O fili hominis, vidéſne quid iſtic faciant ſeniores domûs Iſraelis, quiſque in cubili ſuo ſecreto ? dicunt enim, Dereliquit Dominus, neq; videt Dominus terram.* 12 *Præterea dixit mihi ; Adhuc viſurus es majores iniquitates quas iſti committunt :* 13 *Tum introduxit me in veſtibulum januæ domûs Domini, ſpectantis Aquilonem verſùs ; & ecce ibi mulieres ſedentes lamentabantur Tamuzum.* 14 *Tum dixit mihi ; O fili hominis, vidiſtine ? Haud parvum crimen eſt domui Judæ perpetrare iniquitates quas hi iſtic perpetrant : at adhuc viſurus es facinora iſtis atrociora.* 15

יחזקאל : ט

oſtio ecce & ,interius Domini domus atrium ad me adduxit Et
16 וַיָּבֵא אֹתִי אֶל־חֲצַר בֵּית־יְהוָה הַפְּנִימִית וְהִנֵּה פֶּתַח
quinque & viginti circiter altare inter &,veſtibulũ inter Domini templi
הֵיכַל יְהוָה בֵּין הָאוּלָם וּבֵין הַמִּזְבֵּחַ כְּעֶשְׂרִים וַחֲמִשָּׁה
,orientẽ ad eorũ facies &,Domini templum ad *eorum* poſteriora : viri
אִישׁ אֲחֹרֵיהֶם אֶל־הֵיכַל יְהוָה וּפְנֵיהֶם קֵדְמָה
vidiſti Nónne :me ad dixit Et .ſolis ortum ad ſe *incurvantes* ipſi &
17 וְהֵמָּה מִשְׁתַּחֲוִיתֶם קֵדְמָה לַשָּׁמֶשׁ׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי הֲרָאִיתָ
abominationes *faciendo à* Jehudah domui eſt leve Nunquid?hominis fili
בֶּן־אָדָם הֲנָקֵל לְבֵית יְהוּדָה מֵעֲשׂוֹת אֶת־הַתּוֹעֵבוֹת
ſunt cõverſi &,iniquitate terram repleverunt quia : hic fecerunt quas
אֲשֶׁר עָשׂוּ־פֹה כִּי־מָלְאוּ אֶת־הָאָרֶץ חָמָס וַיָּשֻׁבוּ
etiã Et *? ſuũ naſum ad ramum mittentes* ipſi ecce &,me irritandũ ad
18 לְהַכְעִיסֵנִי וְהִנָּם שֹׁלְחִים אֶת־הַזְּמוֹרָה אֶל־אַפָּם׃ וְגַם־
:miſerebor nec ,meus oculus parcet non : *excandeſcentia* in faciam ego
אֲנִי אֶעֱשֶׂה בְחֵמָה לֹא־תָחוֹס עֵינִי וְלֹא אֶחְמוֹל
.eos exaudiam non & ,magna voce meis auribus in clamabunt &
וְקָרְאוּ בְאָזְנַי קוֹל גָּדוֹל וְלֹא אֶשְׁמַע אוֹתָם׃

CAP. IX. ט

Appropinquaverunt:dicendo ,magna voce meis auribus in clamavit Et
1 וַיִּקְרָא בְאָזְנַי קוֹל גָּדוֹל לֵאמֹר קָרְבוּ
ecce Et .ſua manu in *ſuæ perditionis* inſtrumentũ *vir* & :civitatis *viſitationes*
2 פְּקֻדּוֹת הָעִיר וְאִישׁ כְּלִי מַשְׁחֵתוֹ בְּיָדוֹ׃ וְהִנֵּה
reſpiciens quæ ,ſuperioris portæ via de *venientes* viri ſex
שִׁשָּׁה אֲנָשִׁים בָּאִים מִדֶּרֶךְ־שַׁעַר הָעֶלְיוֹן אֲשֶׁר מָפְנֶה
eorũ medio in unus vir &,*ſua manu in ſuæ diſſipationis vas* vir &,aquilonẽ ad
צָפוֹנָה וְאִישׁ כְּלִי מַפָּצוֹ בְּיָדוֹ וְאִישׁ־אֶחָד בְּתוֹכָם
juxta ſteterũt &,ſunt ingreſſi&:ejꝰ *renibꝰ in* ſcribæ *tabella* &,lineis veſtitus
לָבֻשׁ בַּדִּים וְקֶסֶת הַסֹּפֵר בְּמָתְנָיו וַיָּבֹאוּ וַיַּעַמְדוּ אֵצֶל
deſuper elevata eſt Iſrael Dei gloria Et .æreum altare
3 מִזְבַּח הַנְּחֹשֶׁת׃ וּכְבוֹד אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל נַעֲלָה מֵעַל
virum *ad* vocavit & : domus limen ad,*eum ſuper* erat quem , Cherub
הַכְּרוּב אֲשֶׁר הָיָה עָלָיו אֶל מִפְתַּן הַבָּיִת וַיִּקְרָא אֶל־הָאִישׁ
Dominus dixit Et.ſuis lumbis in ſcribæ *tabella* qui , lineis *indutum*
4 הַלָּבֻשׁ הַבַּדִּים אֲשֶׁר קֶסֶת הַסֹּפֵר בְּמָתְנָיו׃ וַיֹּאמֶר יְהוָה
Tau *ſignabis* & ,Jeruſalaim mediũ per,civitatis medium per Tranſi :eũ ad
אֵלָו עֲבֹר בְּתוֹךְ הָעִיר בְּתוֹךְ יְרוּשָׁלִָם וְהִתְוִיתָ תָּו
cunctis ſuper *vociferantium* & ,*ſuſpirantium* virorum frontes ſuper
עַל־מִצְחוֹת הָאֲנָשִׁים הַנֶּאֱנָחִים וְהַנֶּאֱנָקִים עַל כָּל־
:meis auribꝰ in dixit illis Et .ejꝰ medio in *factis* abominationibꝰ
5 הַתּוֹעֵבוֹת הַנַּעֲשׂוֹת בְּתוֹכָהּ׃ וּלְאֵלֶּה אָמַר בְּאָזְנַי
,veſter oculus parcat non : percutite & ,eum poſt civitatem per Tranſite
עִבְרוּ בָעִיר אַחֲרָיו וְהַכּוּ עַל־תָּחוֹס עֵינֵיכֶם
,mulieres & ,*parvulum &* ,*virginem &* ,*electum* ,*Senem* .miſereamini nec
6 וְאַל־תַּחְמֹלוּ׃ זָקֵן בָּחוּר וּבְתוּלָה וְטַף וְנָשִׁים
,Tau *eum ſuper* quem ,virum omnem ad ſed : perditionem ad *occidetis*
תַּהַרְגוּ לְמַשְׁחִית וְעַל־כָּל־אִישׁ אֲשֶׁר־עָלָיו הַתָּו
viris *in* inceperunt Et .incipietis meo ſanctuario à & , accedatis ne
אַל־תִּגַּשׁוּ וּמִמִּקְדָּשִׁי תָּחֵלּוּ וַיָּחֵלּוּ בָּאֲנָשִׁים
Contaminate : eos ad dixit Et .*domus facies ad* qui , ſenioribus
7 הַזְּקֵנִים אֲשֶׁר לִפְנֵי הַבָּיִת׃ וַיֹּאמֶר אֲלֵיהֶם טַמְּאוּ
,ſunt egreſſi Et.Egredimini.*vulneratis* atria implete &,domum
אֶת־הַבַּיִת וּמַלְאוּ אֶת־הַחֲצֵרוֹת חֲלָלִים צֵאוּ וַיֵּצְאוּ
remanſi & ,eos *percutere juxta* ,fuit Et .civitatem *per* percuſſerunt &
8 וְהִכּוּ בָעִיר׃ וַיְהִי כְּהַכּוֹתָם וְנֵאשֲׁאַר
.Deus Domine Ahah :dixique,clamavi &,*meas facies* ſuper rui & , ego
אֲנִי וָאֶפְּלָה עַל־פָּנַי וָאֶזְעַק וָאֹמַר אֲהָהּ אֲדֹנָי יְהוִה
te effundendo in ,Iſrael reſiduum omne *tu corrumpens* Nunquid
הֲמַשְׁחִית אַתָּה אֵת כָּל־שְׁאֵרִית יִשְׂרָאֵל בְּשָׁפְכְּךָ אֶת־
? Jeruſalaim ſuper tuum furorem
חֲמָתְךָ עַל־יְרוּשָׁלִָם׃

Verſio VULG. LAT.

16 Et introduxit me in atrium domꝰ Domini interius: & ecce in oſtio templi Domini inter veſtibulum & altare, quaſi vigintiquinque viri, dorſa habentes contra templum Domini, & facies ad Orientem: & adorabant ad ortum 17 Solis, Et dixit ad me; Certè vidiſti, fili hominis: numquid leve eſt hoc domui Juda, ut facerent abominationes iſtas, quas fecerunt hîc: quia replentes terram iniquitate converſi ſunt ad irritandum me? & ecce applicant 18 ramum ad nares ſuas. Ergò & ego faciam in furore: non parcet oculꝰ meus, nec miſerebor: & cùm clamaverint ad aures meas voce magnâ, non exaudiam eos.

CAP. IX.

1 ET clamavit in auribus meis voce magnâ, dicens; Appropinquaverunt viſitationes urbis, & unuſquiſque vas interfectionis 2 habet in manu ſua. Et ecce ſex viri veniebant de via portæ ſuperioris, quæ reſpicit ad Aquilonem: & uniuſcujuſque vas interitûs in manu ejus: vir quoque unus in medio eorum veſtitus erat lineis, & atramentarium ſcriptoris ad renes ejus: & ingreſſi ſunt, & ſteterunt juxta al3tare æreum: Et gloria Domini Iſrael aſſumpta eſt de Cherub, quæ erat ſuper eum ad limen domûs: & vocavit virum, qui indutus erat lineis, & atramentarium ſcriptoris habebat in lum4bis ſuis. Et dixit Dominus ad eum; Tranſi per mediam civitatem in medio Jeruſalem: & ſigna Thau ſuper frontes virorũ gementium, & dolentium ſuper cunctis abominationibus, quæ 5 fiunt in medio ejꝰ. Et illis dixit, audiente me; Tranſite per civitatem ſequentes eum, & percutite: non parcat oculus veſter, 6 neque miſereamini. Senem, adoleſcentulum, & virginem, parvulum, & mulieres, interficite uſque ad internecionem: omnem autẽ, ſuper quem videritis Thau, ne occidatis, et à Sanctuario meo incipite. Cœperunt ergò à viris ſenioribus, qui erant ante faciem 7 domûs. Et dixit ad eos; Contaminate domum, & implete atria interfectis: egredimini. Et egreſſi ſunt, & percutiebant eos 8 qui erant in civitate. Et cæde completâ, remanſi ego: ruíque ſuper faciem meam, & clamans aio; Heu, heu, heu, Domine Deus: ergóne diſperdes omnes reliquias Iſrael, effundens furorem tuum ſuper Jeruſalem?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

16 Καὶ εἰσήγαγέ με εἰς τὴν αὐλὴν οἴκου κυρίου τὴν ἐσωτέραν, ϗ (ω) ἐπὶ τῶν προθύρων (˜) τοῦ ναοῦ κυρίου ἀναμέσον τῶν αἰλὰμ, ϗ ἀναμέσον τοῦ θυσιαστηρίου, ὡς (α) εἴκοσι ἄνδρες τὰ ὀπίσθια αὐτῶν (β) πρὸς τὸν ναὸν τοῦ κυρίου, ϗ τὰ πρόσωπα αὐτῶν ἀπέναντι, 17 ϗ οὗτοι (γ) προσκυνοῦσι τῷ ἡλίῳ. Καὶ εἶπε πρὸς μέ, Ἑώρακας υἱὲ ἀνθρώπου. μὴ μικρὰ τῷ οἴκῳ (δ) Ἰούδα τοῦ ποιεῖν τὰς ἀνομίας ἃς πεποιήκασιν ὧδε; διότι ἔπλησαν τὴν γῆν ἀνομίας· (ε) ϗ ἰδοὺ αὐτοὶ ὡς 18 μυκτηρίζοντες. Καὶ ἐγὼ ποιήσω αὐτοῖς μετὰ θυμοῦ· οὐ φείσεται ὁ ὀφθαλμός μου, οὐδὲ μὴ (ζ) ἐλεήσω.

16 *Et introduxit me in atrium domûs Domini interius: & ſuper veſtibula templi Domini (p) inter Ælam, & altare, quaſi (q) viginti viri poſteriora ſua ad templum Domini, & facies ſuas (r) contrà: & hi adorant Solem.* 17 *Et dixit ad me; Vidiſti, fili hominis. Nunquid parva domui Juda, ut facerent iniquitates, quas fecerunt hîc; quia repleverunt terram iniquitate? (ſ) Et ecce ipſi quaſi ſubſannantes.* 18 *Et ego faciam eis cum furore. Non parcet oculus meus, nec (t) miſerebor.*

MS. A. (ω) ἰδοὺ ἐπὶ (˜) ναοῦ (α) εἴκοσι ϗ πέντε ἄνδρες (β) δεδωκότες πρὸς (γ) προσεκύνουν κατ' ἀνατολὰς τῷ ἡλίῳ. (δ) Ἰσραὴλ (ε) ϗ ἐπέστρεψαν παροργίσαι με, ϗ ἰδοὺ αὐτοὶ ἐκτείνουσιν τὸ κλῆμα ὡς (ζ) ἐλεήσω. καὶ καλέσουσιν ἐν τοῖς ὠσίν μου, ϗ οὐ μὴ εἰσακούσω αὐτῶν.

ΚΕΦ. θ'.

1 ΚΑὶ ἀνέκραξεν εἰς τὰ ὦτά μου φωνῇ μεγάλῃ, λέγων, Ἤγγικεν ἡ ἐκδίκησις τῆς πόλεως. ϗ (α) ἕκαστος εἶχε τὰ σκεύη τῆς (β) 2 ἐξολοθρεύσεως ἐν χειρὶ αὐτοῦ. Καὶ ἰδοὺ ἓξ ἄνδρες ἤρχοντο ἀπὸ τῆς ὁδοῦ τῆς πύλης τῆς ὑψηλῆς τῆς βλεπούσης πρὸς Βοῤῥᾶν, ϗ ἑκάστου πέλυξ ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ. ϗ εἷς ἀνὴρ ἐν μέσῳ αὐτῶν ἐνδεδυκὼς ποδήρη, ϗ (γ) ζώνη σαπφείρου ἐπὶ τῆς ὀσφύος αὐτοῦ, ϗ εἰσήλθοσαν ϗ ἔστησαν (δ) ἐχόμενοι τοῦ θυσιαστηρίου 3 τοῦ χαλκοῦ. Καὶ δόξα (ε) θεοῦ τοῦ Ἰσραὴλ ἀνέβη ἀπὸ τῶν χερουβὶμ, ἡ οὖσα ἐπ' αὐτῶν, εἰς τὸ αἴθριον τοῦ οἴκου. καὶ ἐκάλεσε τὸν ἄνδρα τὸν ἐνδεδυκότα τὸν ποδήρη, ὃς εἶχεν ἐπὶ 4 τῆς ὀσφύος αὐτοῦ τὴν ζώνην, Καὶ (ζ) εἶπε πρὸς αὐτὸν, Δίελθε μέσην (η) Ἱερουσαλὴμ, ϗ δὸς σημεῖον ἐπὶ τὰ μέτωπα τῶν ἀνδρῶν τῶν καταστεναζόντων ϗ τῶν κατοδυνωμένων ἐπὶ πάσαις ταῖς ἀνομίαις ταῖς 5 γινομέναις ἐν μέσῳ (θ) αὐτῶν. Καὶ τούτοις εἶπεν ἀκούοντός μου, Πορεύεσθε ὀπίσω αὐτοῦ εἰς τὴν πόλιν, ϗ κόπτετε, ϗ μὴ (ι) φείδεσθε τοῖς ὀφθαλμοῖς ὑμῶν, ϗ μὴ ἐλεήση6τε. Πρεσβύτερον ϗ νεανίσκον ϗ παρθένον ϗ νήπια ϗ γυναῖκας ἀποκτείνατε εἰς ἐξάλειψιν· ἐπὶ δὲ πάντας ἐφ' οὓς ἐστι τὸ σημεῖον, μὴ ἐγγίσητε· (κ) ἀπὸ τῶν ἁγίων μου ἄρξασθε. καὶ ἤρξαντο (λ) ἀπὸ τῶν ἀνδρῶν τῶν πρεσβυτέρων οἳ ἦσαν ἔσω ἐν τῷ οἴκῳ. 7 Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, Μιάνατε τὸν οἶκον, καὶ (μ) πλήσατε τὰς ὁδοὺς νεκρῶν ἐκπορευόμενοι, καὶ κόπτετε. 8 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ κόπτειν αὐτοὺς, καὶ πίπτω ἐπὶ πρόσωπόν μου, καὶ ἀνεβόησα, καὶ εἶπα, (ν) Οἴμοι κύριε, ἐξαλείφεις σὺ τοὺς καταλοίπους τοῦ Ἰσραὴλ, ἐν τῷ (ξ) ἐκχέαι σε τὸν θυμόν σου ἐπὶ Ἱερουσαλήμ;

CAP. IX.

1 *ET clamavit in aures meas voce magnâ, dicens; Appropinquavit ultio urbis. Et unuſquiſque habebat vaſa exterminationis in manu ſua.* 2 *Et ecce ſex viri veniebant de via portæ excelſæ, quæ reſpicit ad Aquilonem: & uniuſcujuſque (a) ſecuris in manu ejus. Et unus vir in medio eorum indutus (b) podere: & (c) zona ſapphiri ſuper lumbum ejus: ingreſſique ſunt, & ſteterunt juxta altare æneum.* 3 *Et gloria Dei Iſrael aſcendit de (d) Cherubim, quæ erat ſuper ipſa, in (e) ſub dio domûs. Et vocavit virum indutum podere, qui habebat ſuper lumbum ſuum zonam,* 4 *Et dixit ad eum; Tranſi (f) mediam Hieruſalem: & da (g) ſignum ſuper frontes virorum gementium, & dolentium ſuper cunctis iniquitatibus, quæ fiunt in medio ipſorum.* 5 *Et illis dixit audiente me; Ite poſt eum in civitatem, & percutite: & non parcite oculis veſtris, & non miſeremini:* 6 *Senem, & adoleſcentem, & virginem, & parvulos, & mulieres interficite ad internecionem: Super omnes autem, ſuper quos eſt ſignum, ne appropinquetis. A (h) ſanctis meis incipite. Et ceperunt à viris ſenioribus, qui erant intùs in domo.* 7 *Et dixit ad eos; Contaminate domum: & implete (i) vias interfectis exeuntes, & percutite.* 8 *Et factum eſt, dum ipſi (k) percuterent; & cado in faciem meam; & exclamavi, & dixi; Heu mihi, Domine, deles tu reſiduos Iſrael, in effundendo te furorem tuum ſuper Hieruſalem?*

MS. A. (α) αὐτὸς (β) ἐξολεθρεύσεως (γ) ζώνην (δ) ἐχόμενα τοῦ (ε) θεοῦ Ἰσραὴλ ἀνέβη ἐπὶ τῶν χερουβεὶν, (ζ) εἶπεν κύριος πρὸς (η) τὴν Ἱερουσαλὴμ, ϗ δὸς τὸ σημεῖον (θ) αὐτῆς. (ι) φείσησθε (κ) καὶ ἀπὸ (λ) ἀπὸ τῶν πρεσβυτέρων (μ) πληρώσατε (ν) Οἴμμοι ἀδωναὶ κύριε, (ξ) ἐκχέαι τὸν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 וְאָעֵיל יָתִי לְדָרַת בֵּית מַקְדְשָׁא דַיְיָ גַוָּיְתָא וְהָא תְּרַע הֵיכְלָא דַיְיָ בֵּין אוּלָמָא וּבֵין מַדְבְּחָא
כְּעֶשְׂרִין וְחַמְשָׁא גַּבְרָא אֲחוֹרֵיהוֹן לְהֵיכְלָא דַיְיָ וְאַפֵּיהוֹן לְמַדִנְחָא וְהָא אִנּוּן מִתְחַבְּלִין
17 סָגְדִין לְמַדִנְחָא לְשִׁמְשָׁא׃ וַאֲמַר לִי הָא חֲזֵיתָא בַּר אָדָם הַזְעֵיר לְבֵית יְהוּדָה מִלְמֶעְבַּד
יַת תּוֹעֵבָתָא דַעֲבַדוּ כָא אֲרֵי מְלוֹ יַת אַרְעָא חֲטוֹפִין וְתָבוּ לְאַרְגָזָא קֳדָמַי וְהָא אִנּוּן מַיְתָן
18 בַּהֲתָא לְאַפֵּיהוֹן׃ וְאַף אֲנָא אַעְבֵיד בִּרְגַז לָא יְחוּס מֵימְרִי וְלָא אֶרְחַם וִיצַלּוֹן קֳדָמַי בְּקָל
רַב וְלָא אֲקַבֵּל צְלוֹתְהוֹן׃

ט

1 וְאַכְלֵי וַאֲנָא שָׁמַע קָל רַב לְמֵימַר אִתְקְרַבוּ דִּמְמַנַן עַל קַרְתָּא וּגְבַר מָן חִבּוּלֵי בִּידֵיהּ׃
2 וְהָא שִׁתָּא גַּבְרִין אָתַן מֵאוֹרַח תַּרְעָא עִלָּאָה דִּפְתִיחַ לְצִפּוּנָא וּגְבַר מָן בְּדוּרֵיהּ בִּידֵיהּ
וְגַבְרָא חַד בֵּינֵיהוֹן לְבֵישׁ לְבוּשִׁין וּפִנְקַס סַפְרָא בְּחַרְצֵיהּ וְעָלוּ וְקָמוּ בִּסְטַר מַדְבְּחָא
3 דִּנְחָשָׁא׃ וִיקָר אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל אִסְתַּלַּק בִּכְרוּבָא דַהֲוָה שָׁרֵי עֲלוֹהִי בֵּית קֹדֶשׁ קוּדְשַׁיָּא
וּשְׁרָא מֵעַל לָקֳבֵל סְקוֹפַת בֵּיתָא וּקְרָא לְגַבְרָא דִּלְבֵישׁ לְבוּשַׁיָּא דְּפִנְקַס סַפְרָא בְּחַרְצֵיהּ׃
4 וַאֲמַר יְיָ לֵיהּ עֲבַר בְּגוֹ קַרְתָּא בְּגוֹ יְרוּשְׁלֶם וְתִרְשׁוֹם תְּוָא עַל בֵּית עֵינֵי גַבְרַיָּא דְּמִתְאַנְחִין
5 וּדְמַאַנְקִין עַל כָּל תּוֹעֲבָתָא דְּאִתְעֲבִידָא בְּגַוַּהּ׃ וּלְאִלֵּין אֲמַר וַאֲנָא שָׁמַע עֲבַרוּ בְקַרְתָּא
6 בַּתְרוֹהִי וּקְטוֹלוּ לָא תְחוּס עֵינֵיכוֹן וְלָא תְרַחְמוּן׃ סָב עוּלֵים וּבְתוּלָה וְטַפְלָא וּנְשַׁיָּא
תִּקְטְלוּן לְחַבָּלָא וְעַל כָּל גַּבְרָא דַעֲלוֹהִי רוֹשֶׁם תְּוָא לָא תִקְרְבוּן וּמִבֵּית מַקְדְּשִׁי תִּשְׁרוֹן
7 וּשְׁרִיאוּ בְּגַבְרַיָּא סָבַיָּא דִּקְדָם בֵּיתָא׃ וַאֲמַר לְהוֹן סָאִיבוּ יַת בֵּיתָא וּמְלוֹ יַת דָּרָתָא קְטִילִין
8 פּוּקוּ וּנְפַקוּ וְקַטְלוּ בְקַרְתָּא׃ וַהֲוָה כְּקַטָּלוּתְהוֹן וְאִשְׁתְּאָרִית אֲנָא וְאִשְׁתְּטַחִית עַל אַפַּי
וּצְוָחִית וַאֲמָרִית קַבֵּל בָּעוּתִי יְיָ אֱלֹהִים הַמְחַבֵּל אַתְּ יַת כָּל שְׁאָרָא דְיִשְׂרָאֵל בְּמִשְׁפְּכָךְ יַת
חֵימְתָךְ עַל יְרוּשְׁלֶם׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

16 Et introduxit me in atrium domus ſanctuarii Dñi interius: & ecce in oſtio templi Domini inter veſtibulum & altare quaſi viginti & quinque viri, quorum poſteriora erant ad templum Domini, & facies eorum ad Orientem, et ecce ipſi corrumpebant ſe adorantes ad Ortum Solis. 17 Et dixit ad me: Nonne vides fili hominis? nunquid parum eſt domui Juda facere abominationes quas fecerunt hîc? quia impleverunt terram rapinis, & reverſi ſunt ut irritarent me, & ecce ipſi adducunt confuſionem ad faciem ſuam. 18 Ego quoque faciam in furore, & non parcet Verbum meum, nec miſerebor: & orabunt coram me voce magna, & non ſuſcipiam orationem eorum.

CAP. IX.

1 ET clamavit, audiente me, voce magna dicens: Appropinquaverunt qui conſtituti ſunt ſuper civitatem, & unuſquiſque vas diſſipationis habebat in manu ſua. 2 Et ecce ſex viri veniebant de via portæ ſuperioris quæ patet ad Aquilonem, & unuſquiſque vas diſperſionis in manu ſua: & vir unus erat inter eos indutus veſtimentis, & atramentarium ſcriptoris erat in lumbis ejus: & ingreſſi ſunt, & ſteterunt in latere altaris ærei. 3 Et gloria Dei Iſrael recedebat in Cherub ſuper quo reſidebat in domo ſancti ſanctorum: & reſedit ſuperiùs contra limen domus: & vocavit virum qui indutus erat veſtibus, in cujus lumbis erat atramentarium ſcribæ. 4 Et dixit Dominus ad eum: Tranſi per medium civitatis per medium Jeruſalem, & ſigna *ſignum* ſuper frontes virorum gementium, & dolentium, ſuper omnes abominationes quæ factæ ſunt in medio ejus. 5 Illis autem dixit audiente me; Tranſite per civitatem poſt eum, & occidite: non parcat oculus veſter, nec miſereamini. 6 Senem, adoleſcentem, & virginem, & parvulos, & mulieres ad internecionem occidite: & ad omnem virum, ſuper quem fuerit impreſſio *ſigni*, ne accedatis, & de domo ſanctuarii mei incipite. 7 Et cœperunt à viris ſenioribus qui erant ante domum. Et dixit eis: Contaminate domum, & implete atria occiſis: egredimini: & egreſſi ſunt & occiderunt in civitate. 8 Et factum eſt cùm occidiſſent eos, & relictus ſum ego, & cecidi pronus ſuper faciem meam, & clamavi & dixi: Suſcipe deprecationem meam Domine Deus: nunquid diſperdes tu oẽs reliquias Iſrael cùm effuderis furorem tuum ſup Jeruſalem?

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

16 * ܘܐܥܠܢܝ ܠܕܪܬܐ ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܓܘܝܬܐ. ܘܚܙܝܬ ܒܬܪܥܐ ܕܗܝܟܠܗ ܕܡܪܝܐ܆ ܒܝܬ
ܡܫܩܦܘܬܐ ܠܡܕܒܚܐ. * ܐܝܟ ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ ܓܒܪܝܢ ܩܝܡܝܢ. ܘܚܨܝܗܘܢ ܠܗܝܟܠܐ
17 ܕܡܪܝܐ. ܘܐܦܝܗܘܢ ܠܡܕܢܚܐ. ܘܡܩܕܡܝܢ ܘܣܓܕܝܢ ܠܫܡܫܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܚܙܝܬ
ܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ. ܕܙܥܘܪܐ܆ ܠܒܝܬ ܝܗܘܕܐ ܬܘܥܝܬܐ ܗܕܐ ܕܥܒܕܝܢ ܗܪܟܐ܆ ܕܡܠܘ ܐܪܥܐ.
18 ܥܘܠܐ. ܘܗܦܟܘ ܠܡܪܓܙܘܬܝ. * ܘܗܢܘܢ ܡܦܚܝܢ ܒܢܚܝܪܝܗܘܢ. ܐܦ
ܐܢܐ ܐܥܒܕ ܒܚܡܬܐ. ܘܠܐ ܬܚܘܣ ܥܝܢܝ ܘܠܐ ܐܪܚܡ. ܘܢܩܥܘܢ ܒܐܕܢܝ ܒܩܠܐ ܪܡܐ ܘܠܐ ܐܫܡܥ
ܐܢܘܢ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܛ * ܘܩܪܐ ܒܐܕܢܝ ܒܩܠܐ ܪܡܐ ܘܐܡܪ. 1
2 ܩܪܒܘ ܦܘܪܥܢܗ܆ ܕܡܕܝܢܬܐ. ܘܐܢܫ ܡܐܢܐ ܕܚܘܪܒܢܗ ܒܐܝܕܗ. * ܘܚܙܝܬ ܫܬܐ
ܓܒܪܝܢ ܐܬܝܢ ܡܢ ܐܘܪܚܐ ܕܬܪܥܐ ܥܠܝܐ ܕܚܙܐ ܠܓܪܒܝܐ. ܘܐܢܫ ܡܐܢܐ ܕܚܘܪܒܢܗ ܒܐܝܕܗ.
ܘܓܒܪܐ ܚܕ ܒܝܢܬܗܘܢ. ܠܒܝܫ ܒܘܨܐ. ܘܐܣܝܪ ܚܨܐ ܕܣܦܝܠܐ ܒܚܨܘܗܝ. ܘܥܠܘ ܘܩܡܘ ܠܘܬ
3 ܓܢܒ ܡܕܒܚܐ ܕܢܚܫܐ. * ܘܫܘܒܚܗ ܕܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܣܠܩ ܡܢ ܟܪܘܒܐ ܕܩܐܡ ܗܘܐ
ܥܠ ܙܘܝܬܐ ܕܒܝܬܐ. ܘܩܪܐ ܠܓܒܪܐ ܕܠܒܝܫ ܒܘܨܐ. ܘܐܣܝܪ ܚܨܐ ܕܣܦܝܠܐ ܒܚܨܘܗܝ.
4 * ܘܐܡܪ ܠܗ ܡܪܝܐ. ܥܒܪ ܒܓܘ ܡܕܝܢܬܐ ܒܓܘ ܐܘܪܫܠܡ. ܘܪܫܘܡ ܪܘܫܡܐ ܥܠ ܒܝܬ
ܥܝܢܝܗܘܢ ܕܓܒܪܐ ܕܡܬܬܢܚܝܢ ܘܡܬܟܪܝܢ. ܥܠ ܟܠܗܝܢ ܬܘܥܝܬܐ ܘܨܢܝܥܬܐ
5 ܕܡܬܥܒܕܢ ܒܓܘܗ. * ܘܠܗܠܝܢ ܕܥܡܗ ܐܡܪ ܟܕ ܫܡܥ ܐܢܐ. ܥܒܪܘ ܒܓܘ
6 ܡܕܝܢܬܐ ܒܬܪܝ. ܘܩܛܘܠܘ. ܘܠܐ ܬܚܘܣ ܥܝܢܝܟܘܢ. ܘܠܐ ܬܪܚܡܘܢ. * ܘܣܒܐ ܘܥܠܝܡܐ
ܘܒܬܘܠܬܐ ܘܛܠܝܐ ܘܢܫܐ ܩܛܘܠܘ ܠܚܒܠܐ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܕܐܝܬ ܥܠܝܗܘܢ ܪܘܫܡܐ
ܠܐ ܬܬܩܪܒܘܢ. ܘܡܢ ܡܩܕܫܝ ܫܪܘ. ܘܫܪܝܘ ܡܢ ܣܒܐ ܩܫܝܫܐ ܕܩܝܡܝܢ ܗܘܘ ܩܕܡ ܒܝܬܐ.
7 * ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ ܛܡܐܘ ܒܝܬܐ. ܘܡܠܘ ܕܪܬܐ ܩܛܝܠܐ. ܦܘܩܘ ܩܛܘܠܘ ܒܡܕܝܢܬܐ.
8 * ܘܟܕ ܩܛܠܘ ܐܢܘܢ. ܐܫܬܚܪܬ ܐܢܐ ܘܢܦܠܬ ܥܠ ܐܦܝ. ܘܩܥܝܬ ܒܩܠܐ ܪܡܐ ܘܐܡܪܬ. ܐܘܗ
ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ. ܡܚܒܠ ܐܢܬ ܠܟܠܗܘܢ ܕܐܫܬܚܪܘ ܡܢ ܐܝܣܪܝܠ. ܟܕ ܐܫܕ ܐܢܬ ܚܡܬܟ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ.

Et cùm introduxiſſet me in atrium domûs Domini interius, vidi in oſtio templi Domini inter gradus & altare, circiter viginti quinque viros ſtantes; qui dorſis contra templum Domini, faciebus autem ad Orientem *verſis*, ſummo manè ſolem adorabant. 16

Et dixit mihi; Vidéſne fili hominis? num levis eſt apud Judæos abominatio iſta quam hîc perpetrant? impleverunt enim terram ſcelere, ſeſéque converterunt ad irritandum me. 17

Ipſi quidem naribus anhelant, ego quoque iracundè agam, & non parcet oculus meus, neque miſerebor; clamabunt in auribus meis elatâ voce, & non exaudiam eos. 18

CAP. IX.

DEinde clamavit audiente me altâ voce, dixítque; Adeſte ultores urbis, quiſque inſtrumenta ultionis ſuæ manu *tenens*. 1 Tum vidi ſex viros venientes de via portæ ſuperioris quæ ſpectat Aquilonem, quemque inſtrumenta ultionis ſuæ manu *portantem*; inter quos vir unus erat indutus byſſo, zonâ ſapphirinâ lumbos præcinctus: hi venientes ſteterunt ad latus altaris ænei. 2 Gloria autem Dei Iſraelis aſcendens è Cherubino qui ſtabat ſuper angulo domûs, vocavit illum virum qui byſſo indutus erat, & zonâ ſapphirinâ lumbos præcinctus: 3 Et dixit ad eum Dominus; Tranſi per urbem, per Jeroſolymam, & imprime notam ſuper frontes virorum qui ſuſpirant & excruciantur ob tot abominationes & flagitia quæ perpetrantur in ea. 4 Illis ergò qui ſecum erant, dixit me præſente; Tranſite per urbem poſt me, & interficite: ne clementiâ moveantur oculi veſtri, neque miſereamini: 5 Senes & juvenes, ac virgines, pueros fœmináſque ad internecionem trucidate: at ullum qui notam ſuper ſe habuerit, ne tangitote: à ſanctuario meo incipite. Cùm itaque cœpiſſét à viris illis ſeniorib' qui ſtabant ante domũ, 6 Dixit ad eos, Prophanate domum, & atria confoſſis implete: egredimini, trucidate in urbe. 7 Et cùm trucidâſſent illos, & ſuperſtes ego manſiſſẽ: procidi in faciẽ meam, & elatâ voce exclamans, dixi; Ah dominorũ Dñe, an extincturus es omnes qui reliqui manſerunt ex Iſraele, & effuſurus furorẽ tuũ ſuper Jeruſalẽ? 8

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

16 * وادخلني الى دار بيت الرب الداخلة * واذا على مداخل هيكل الرب * بين الهيكل وبين
المذبح * نحو من خمسة وعشرين رجلا * اعطوا ظهورهم لهيكل الرب ووجوههم قبالته * وهم
17 يسجدون نحو المشارق للشمس * وقال لي * رايت يا ابن الناس * ليس صغير لبيت اسرائيل ان
18 يصنعوا الاثام التي صنعوها هاهنا * من اجل انهم ملوا الارض اثما * ورجعوا ليغضبوني * وها هم
يمدون الغصن مثل مستهزئين * وانا ساصنع لهم بغضبي * ولا تشفق عيني ولا ارحم * ويدعون
في اذني ولا استجيب لهم *

* الفصل التاسع *

1 * وصرخ في اذني بصوت عظيم قايلا * اقترب انتقام المدينة * وهو كان بيده اواني الاستيصال *
2 * واذا ستة رجال اقبلوا من طريق الباب المرتفع الناظر الى الجربياء * وقدوم كل واحد بيده *
ورجل واحد في وسطهم لابس مدرعة * ومنطقة من فيروزج على حقوه * ودخلوا ووقفوا الى
3 جانب المذبح النحاس * ومجد اله اسرائيل صعد على الساروبيم الذي كان عليها في مقدمة
4 الباب * ودعا الرجل اللابس المدرعة * الذي كان على حقوه المنطقة * وقال له الرب * جز في
وسط ايروسليم * واعط علامة على جباه الرجال الذين يتنهدون ويتوجعون على جميع الاثام
5 الصائرة في وسطها * وقال لهاولاء اذ انا اسمع * اذهبوا خلفي الى المدينة * واقطعوا ولا تشفقوا
6 بعيونكم * ولا ترحموا شيخا ولا شابا ولا عذري * والاطفال والنسوان اقتلوهم للهلاك * انظروا
جميع الذين عليهم هذه السمة لا تقربوهم * وابتدوا من اقداسي * فابتدوا من المشايخ
7 الذين كانوا داخلا في البيت * وقال لهم * نجسوا البيت * واملاوا الطريق امواتا * واخرجوا
8 واقطعوا * وكان فيما هم يقطعون * سقطت على وجهي وصرخت وقلت * الويل لي يا ادوناي
الرب * تمحوا انت بقايا اسرائيل عندما تفيض غضبك على ايروسليم *

Introduxitque me in atrium domûs Domini intimum, & ecce ſuper veſtibulum templi Domini inter templum & altare, quaſi vigintiquinque viri terga dederant templo Domini, & faciebus contra illud verſis *ſolem adorabant verſùs Orientem.* 16

Et dixit mihi; Vidiſtine fili hominum? nequaquam leve flagitium *eſt domui Iſraelis perpetrare iniquitates quas hîc perpetrant: nam repleverunt terram iniquitate, & averſi ſunt ut me ad iram provocarent.* 17

Et ecce ipſi ramum extendunt ut irriſores. At ego agam cum eis in furore meo, & non parcet oculus meus, neque miſerebor: clamabunt in auribus meis, & non exaudiam eos. 18

CAP. IX.

ET clamavit in auribus meis voce magnâ, dicens; Appropinquavit ultio urbis: is autem habebat manu ſuâ inſtrumenta excidii. 1 *Et ecce ſex viri venerunt de via portæ ſupremæ ſpectantis Aquilonem, aſciam quiſq; manu ſuâ tenens: & hos inter vir unus erat indutus tunicâ laneâ, & balteo ſapphirino præcinctus lumbũ: hi ingredientes, ſteterunt ad latus altaris ænei.* 2 *Et gloria Dei Iſraelis aſcendit ſuper Cherubinos ſuper quos erat in limine portæ; vocatoque viro illo tunicâ laneâ induto, qui lumbum præcinctus erat balteo,* 3 *Dixit ei Dominus; Tranſi per mediam Jeroſolymam, ſignumque ponito ſuper frontes virorum illorum qui ſuſpirant & dolent propter omnes iniquitates quæ fiunt in medio ipſius.* 4 *Deinde dixit illis, me audiente; Ite poſt me in urbem, & excindite; ne parcatis in oculis veſtris,* 5 *Neque miſereamini ſenis, aut juvenis, aut virginis: parvulos & mulieres occidite ad internecionem: (Cavete omnes quibus inerit hæc nota, ne tangatis eos) incipite autem à mihi ſacris: Cœperunt ergò ab iis ſenioribus qui intus erant in domo.* 6 *Et dixit eis, Polluite domum, & implete viam mortuis: exite, & excindite.* 7 *Dum ii excinderent, procidi in faciem meam, & exclamavi, ac dixi; Heu mihi O Adonai Domine, deleres tu reſiduos Iſraelis effundendo furorem tuum ſuper Jeruſalem?* 8

יחזקאל: י

vehementer in magna Jehudah & Iſrael domus Iniquitas :me ad dixit Et
9 וַיֹּאמֶר אֵלַי עֲוֺן בֵּית־יִשְׂרָאֵל וִיהוּדָה גָּדוֹל בִּמְאֹד
Nam .perverſo eſt plena civitas & ,*ſanguinibus* terra eſt repleta & ,valde
מְאֹד וַתִּמָּלֵא הָאָרֶץ דָּמִים וְהָעִיר מָלְאָה מֻטֶּה כִּי
.*videns* Dominus non & ,terram Dominus Dereliquit : dixerunt
אָמְרוּ עָזַב יְהוָה אֶת־הָאָרֶץ וְאֵין יְהוָה רֹאֶה׃
eorũ Viam .miſerebor neque ,meus oculus parcet Non .ego etiam Et
10 וְגַם אֲנִי לֹא־תָחוֹס עֵינִי וְלֹא אֶחְמֹל דַּרְכָּם
tabellam qui ,lineis indutus vir ecce Et .dedi eorũ caput in
11 בְּרֹאשָׁם נָתַתִּי׃ וְהִנֵּה הָאִישׁ לְבֻשׁ הַבַּדִּים אֲשֶׁר הַקֶּסֶת
.mihi præcepiſti quæ juxta Feci : dicendo verbum *reddens* ,ſuis lumbis in
בְּמָתְנָיו מֵשִׁיב דָּבָר לֵאמֹר עָשִׂיתִי כַּאֲשֶׁר צִוִּיתָנִי׃

CAP. X. י

Cherubim caput ſuper *quæ* ,*expanſionem ad* ecce & ,vidi Et
1 וָאֶרְאֶה וְהִנֵּה אֶל־הָרָקִיעַ אֲשֶׁר עַל־רֹאשׁ הַכְּרֻבִים
.eos ſuper apparuit ,ſolii ſimilitudinis *aſpectus* veluti ſapphiri lapis tãquã
כְּאֶבֶן סַפִּיר כְּמַרְאֵה דְּמוּת כִּסֵּא נִרְאָה עֲלֵיהֶם׃
inter ad Ingredere :dixit & ,lineis indutum virum ad dixit Et
2 וַיֹּאמֶר אֶל־הָאִישׁ לְבֻשׁ הַבַּדִּים וַיֹּאמֶר בֹּא אֶל־בֵּינוֹת
inter de ignis prunis tuas *volas* imple & ,*Cherub ſubter ad rotam*
לַגַּלְגַּל אֶל־תַּחַת לַכְּרוּב וּמַלֵּא חָפְנֶיךָ גַחֲלֵי־אֵשׁ מִבֵּינוֹת
.*meos oculos ad* eſt ingreſſus & : civitatem ſuper ſparge & ,Cherubim
לַכְּרֻבִים וּזְרֹק עַל־הָעִיר וַיָּבֹא לְעֵינָי׃
nubes & ,*virum illum intrando in*,domus dextera à *ſtantes* Cherubim Et
3 וְהַכְּרֻבִים עֹמְדִים מִימִין לַבַּיִת בְּבֹאוֹ הָאִישׁ וְהֶעָנָן
deſuper Domini gloria *ſe extulit* Et .interius atrium implevit
4 מָלֵא אֶת־הֶחָצֵר הַפְּנִימִית׃ וַיָּרָם כְּבוֹד־יְהוָה מֵעַל
atrium & ,nube domus eſt repleta &;domus limen ad Cherub
הַכְּרוּב עַל מִפְתַּן הַבָּיִת וַיִּמָּלֵא הַבַּיִת אֶת־הֶעָנָן וְהֶחָצֵר
Cherubim alarum *vox* Et .Domini gloriæ ſplendore eſt repletum
5 מָלְאָה אֶת־נֹגַהּ כְּבוֹד יְהוָה׃ וְקוֹל כַּנְפֵי הַכְּרֻבִים
.*ipſo loquendo in Sadai* Dei vox tanquã ,exterius atrium ad uſque eſt *audita*
נִשְׁמַע עַד־הֶחָצֵר הַחִיצֹנָה כְּקוֹל אֵל־שַׁדַּי בְּדַבְּרוֹ׃
ignem Tolle : dicendo ,lineis induto viro *ipſo præcipiendo in* ,fuit Et
6 וַיְהִי בְּצַוֹּתוֹ אֶת־הָאִישׁ לְבֻשׁ־הַבַּדִּים לֵאמֹר קַח אֵשׁ
juxta ſtetit &,eſt ingreſſus & : Cherubim *inter* de *rotam inter* de
מִבֵּינוֹת לַגַּלְגַּל מִבֵּינוֹת לַכְּרֻבִים וַיָּבֹא וַיַּעֲמֹד אֵצֶל
ignem ad ,Cherubim *inter* de ſuã manum Cherub miſit Et .rotam
7 הָאוֹפָן׃ וַיִּשְׁלַח הַכְּרוּב אֶת־יָדוֹ מִבֵּינוֹת לַכְּרֻבִים אֶל־הָאֵשׁ
;lineis induti *volis* in *dedit* & ,*tulit* & ,Cherubim inter qui
אֲשֶׁר בֵּינוֹת הַכְּרֻבִים וַיִּשָּׂא וַיִּתֵּן אֶל־חָפְנֵי לְבֻשׁ הַבַּדִּים
hominis manus *exemplar* Cherubim in apparuit Et .eſt egreſſus &,accepit &
8 וַיִּקַּח וַיֵּצֵא׃ וַיֵּרָא לַכְּרֻבִים תַּבְנִית יַד־אָדָם
juxta rotæ quatuor ecce & ,vidi Et .eorum alas ſubtus
9 תַּחַת כַּנְפֵיהֶם׃ וָאֶרְאֶה וְהִנֵּה אַרְבָּעָה אוֹפַנִּים אֵצֶל
juxta *una* rota & ,unum Cherub juxta una Rota .Cherubim
הַכְּרֻבִים אוֹפַן אֶחָד אֵצֶל הַכְּרוּב אֶחָד וְאוֹפַן אֶחָד אֵצֶל
.Tarſis lapidis color tanquam rotarum aſpectus & *: unum* Cherub
הַכְּרוּב אֶחָד וּמַרְאֵה הָאוֹפַנִּים כְּעֵין אֶבֶן תַּרְשִׁישׁ׃
rota fuiſſet ſi ac ; ipſis quatuor una ſimilitudo earũ aſpectus Et
10 וּמַרְאֵיהֶם דְּמוּת אֶחָד לְאַרְבַּעְתָּם כַּאֲשֶׁר יִהְיֶה הָאוֹפַן
,ambulabãt ſuis *quadraturis* quatuor in *eas eundo In* .rotæ medio in
11 בְּתוֹךְ הָאוֹפָן׃ בְּלֶכְתָּם אֶל־אַרְבַּעַת רִבְעֵיהֶם יֵלֵכוּ
caput ſe vertebat quem locum ſed ,*ipſis eundo in circuibant* non
לֹא יִסַּבּוּ בְּלֶכְתָּם כִּי הַמָּקוֹם אֲשֶׁר־יִפְנֶה הָרֹאשׁ
.*eas eundo in* ,*circuibant* nec ,ibant *illud* poſt
אַחֲרָיו יֵלֵכוּ לֹא יִסַּבּוּ בְּלֶכְתָּם׃

Verſio VULG. LAT.

9 Et dixit ad me; Iniquitas domûs Iſrael & Juda, magna eſt nimis valdè, & repleta eſt terra ſanguinibus, & civitas repleta eſt averſione: dixerunt enim; Dereliquit Dominus terram, & Dominus non videt. 10 Igitur & meus non parcet oculus, neque miſerebor: viam eorum ſuper caput eorum reddam. 11 Et ecce vir, qui erat indutus lineis, qui habebat atramentarium in dorſo ſuo, reſpondit verbum, dicens; Feci ſicut præcepiſti mihi.

CAP. X.

1 Et vidi, et ecce in firmamento, quod erat ſuper caput Cherubim, quaſi lapis ſapphirus, quaſi ſpecies ſimilitudinis ſolii, apparuit ſuper ea. 2 Et dixit ad virum, qui indutus erat lineis, & ait; Ingredere in medio rotarum, quæ ſunt ſubter Cherubim, & imple manum tuam prunis ignis, quæ ſunt inter Cherubim, & effunde ſuper civitatem. Ingreſſuſque eſt in conſpectu meo: 3 Cherubim autem ſtabant à dextris domûs cùm ingrederetur vir, & nubes implevit atrium interius. 4 Et elevata eſt gloria Domini deſup Cherub ad limen domûs: & repleta eſt domus nube, & atrium repletum eſt ſplendore gloriæ Domini. 5 Et ſonitus alarum Cherubim audiebatur uſque ad atrium exterius, quaſi vox Dei omnipotentis loquentis. 6 Cùmque præcepiſſet viro, qui indutus erat lineis, dicens; Sume ignem de medio rotarum, quæ ſunt inter Cherubim: ingreſſus ille ſtetit juxta rotam. 7 Et extendit Cherub manum de medio Cherubim, ad ignem, qui erat inter Cherubim: & ſumpſit, & dedit in manus ejus, qui indutus erat lineis: qui accipiens egreſſus eſt. 8 Et apparuit in Cherubim ſimilitudo manûs hominis ſubtus pennas eorum. 9 Et vidi, & ecce quatuor rotæ juxta Cherubim: rota una juxta Cherub unum, & rota alia juxta Cherub unum: ſpecies autem rotarum erat quaſi viſio lapidis chryſolithi. 10 Et aſpectus earum ſimilitudo una quatuor: quaſi ſit rota in medio rotæ. 11 Cùmque ambularent, in quatuor partes gradiebantur: & non revertebantur ambulantes; ſed ad locum, ad quem ire declinabat quæ prima erat, ſequebantur & cæteræ, nec convertebantur.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

9 Καὶ εἶπε πρός με, Ἀδικία τοῦ οἴκου Ἰσραὴλ καὶ Ἰούδα μεμεγάλυνται σφόδρα σφόδρα, ὅτι ἐπλήσθη ἡ γῆ λαῶν πολλῶν, καὶ ἡ πόλις ἐπλήσθη ἀδικίας καὶ ἀκαθαρσίας, ὅτι εἶπαν, (ο) Ἐγκατέλιπε κύριος τὴν (π) γῆν, οὐκ ἐφορᾷ ὁ κύριος. 10 Καὶ οὐ φείσεταί μου ὁ ὀφθαλμὸς, οὐδὲ μὴ ἐλεήσω, τὰς ὁδοὺς αὐτῶν εἰς κεφαλὰς αὐτῶν δέδωκα. 11 Καὶ ἰδοὺ ὁ ἀνὴρ ὁ ἐνδεδυκὼς τὸν ποδήρη, καὶ (ρ) ἐζωσμένος τῇ ζώνῃ τὴν ὀσφὺν αὐτοῦ, καὶ ἀπεκρίνατο (σ) λέγων, Πεποίηκα καθὼς ἐνετείλω μοι.

MS. A. (ο) Ἐγκαταλέλοιπεν ὁ κύριος (π) γῆν. καὶ ἐγὼ εἶπα, Ἐγώ εἰμι, Οὐ φείσεται ὁ ὀφθαλμός μου, οὐδὲ μὴ (ρ) περιεζωσμένος (σ) λόγον, λέγων, Πεποίηκα καθὼ

Et dixit ad me; Iniquitas domûs Iſrael & Juda magnificata eſt valdè valdé: quia repleta eſt terra (l) populis multis: & civitas repleta eſt iniquitate, & immunditiâ: quia dixerunt; Dereliquit Dominus terram: non inſpicit Dominus. 9 *Et non parcet oculus meus, neque miſerebor: vias eorum ſuper caput eorum dedi.* 10 *Et ecce vir, qui indutus erat podere, & accinctus zonâ lumbum ſuum: & reſpondit, dicens; Feci, ſicut mandâſti mihi.* 11

ΚΕΦ. ι'.

1 Καὶ ἴδον, καὶ ἰδοὺ ἐπάνω τοῦ στερεώματος τοῦ ὑπὲρ κεφαλῆς τῶν χερουβὶμ, ὡς λίθος σαπφείρου ὁμοίωμα θρόνου ἐπ' (α) αὐτῶν. 2 Καὶ εἶπε πρὸς τὸν ἄνδρα τὸν ἐνδεδυκότα τὴν στολὴν, Εἴσελθε εἰς τὸ μέσον τῶν τροχῶν, τῶν ὑποκάτω τῶν χερουβὶμ, καὶ πλῆσον τὰς (β) δράκας σου ἀνθράκων πυρὸς ἐκ μέσου τῶν (¨) χερουβὶμ, καὶ διασκόρπισον ἐπὶ τὴν πόλιν. καὶ εἰσῆλθεν ἐνώπιον ἐμοῦ. 3 Καὶ τὰ (²) χερουβὶμ εἱστήκει ἐκ δεξιῶν τοῦ οἴκου ἐν τῷ εἰσπορεύεσθαι τὸν ἄνδρα, καὶ ἡ νεφέλη ἔπλησε τὴν αὐλὴν τὴν ἐσωτέραν. 4 Καὶ ἀπῆρεν ἡ δόξα κυρίου ἀπὸ τῶν χερουβὶμ εἰς τὸ αἴθριον τοῦ οἴκου, καὶ ἔπλησε τὸν οἶκον ἡ νεφέλη· καὶ ἡ αὐλὴ ἐπλήσθη τοῦ φέγγους τῆς δόξης κυρίου. 5 Καὶ φωνὴ τῶν πτερύγων τῶν (⁴) χερουβὶμ ἠκούετο ἕως τῆς αὐλῆς τῆς ἐξωτέρας, ὡς φωνὴ θεοῦ Σαδδαὶ λαλοῦντος. 6 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἐντέλλεσθαι αὐτὸν τῷ ἀνδρὶ τῷ ἐνδεδυκότι τὴν στολὴν τὴν ἁγίαν, λέγων, Λάβε πῦρ ἐκ μέσου τῶν τροχῶν ἐκ μέσου (γ) τῶν χερουβὶμ, καὶ εἰσῆλθε καὶ ἔστη ἐχόμενος τῶν τροχῶν. 7 Καὶ (δ) ἐξέτεινεν τὴν χεῖρα αὐτοῦ εἰς μέσον τοῦ πυρὸς τοῦ ὄντος (ε) εἰς μέσον τῶν χερουβὶμ, καὶ ἔλαβε, καὶ ἔδωκεν εἰς τὰς χεῖρας τοῦ ἐνδεδυκότος τὴν στολὴν τὴν ἁγίαν, καὶ ἔλαβε καὶ ἐξῆλθε. 8 Καὶ (ζ) ἴδον τὰ χερουβὶμ ὁμοίωμα χειρῶν ἀνθρώπων ὑποκάτωθεν τῶν πτερύγων αὐτῶν. 9 Καὶ ἴδον, καὶ ἰδοὺ τροχοὶ τέσσαρες εἱστήκεισαν ἐχόμενοι τῶν (ˢ) χερουβίμ· τροχὸς εἷς ἐχόμενος (η) χερουβ ἑνός. καὶ ἡ ὄψις τῶν τροχῶν, ὡς ὄψις λίθου ἄνθρακος. 10 Καὶ (θ) ὄψις αὐτῶν ὁμοίωμα ἓν τοῖς τέσσαρσιν, ὃν τρόπον ὅταν ᾖ τροχὸς ἐν μέσῳ τροχοῦ. 11 Ἐν τῷ πορεύεσθαι αὐτὰ, εἰς τὰ (˜) τέσσαρα μέρη αὐτῶν ἐπορεύοντο, οὐκ ἐπέστρεφον ἐν τῷ πορεύεσθαι αὐτά· ὅτι εἰς ὃν ἂν τόπον ἐπέβλεψεν ἡ ἀρχὴ ἡ μία, ἐπορεύοντο, καὶ οὐκ ἐπέστρεφον ἐν τῷ πορεύεσθαι αὐτά·

MS.A. (α) αὐτῷ. (β) χεῖράς σου (¨) χερουβεὶν, (²) χερουβεὶν (⁴) χερουβεὶν (γ) τῶν τροχῶν τῶν χερουβεὶμ, (δ) ἐξέτεινεν ὁ χερουβ τὴν (ε) ἐμ μέσῳ τῶν χερουβεὶν, (ζ) ἰδοὺ τὰ χερουβεὶν (ˢ) χερουβεὶν· (η) τοῦ χερουβ τοῦ ἑνὸς, καὶ τροχὸς εἷς ἐχόμενος τοῦ χερουβ. ἡ ὄψις (θ) ἡ ὄψις (˜) τέσσερα

CAP. X.

Et vidi: & ecce ſuper firmamentum, quod ſupra caput ipſorum Cherubim, quaſi lapis ſapphiri ſimilitudo throni ſuper ea. 1 *Et dixit ad virum indutum ſtolâ; Ingredere in medio rotarum, quæ ſunt ſubtus Cherubim: & imple pugnos tuos carbonibus ignis de medio Cherubim, & diſperge ſuper civitatem. Ingreſſúſque eſt in conſpectu meo:* 2 *Et Cherubim ſtabant à dextris domûs, cùm ingrederetur vir. Et nubes implevit atrium interius.* 3 *Et elevata eſt gloria Domini ab ipſis Cherubim in ſub dio domûs. Et implevit domum nubes: & atrium repletum eſt ſplendore gloriæ Domini.* 4 *Et vox alarum Cherubim audiebatur uſque ad atriũ exterius, quaſi (a) vox Dei Saddai loquentis.* 5 *Et factũ eſt in mandando ipſũ viro induto ſtolâ ſanctâ, dicens; Sume ignem de medio rotarum, de medio Cherubim; & intravit, & ſtetit juxta rotas.* 6 *Et (b) extendit manum ſuam in medio ignis, qui erat inter Cherubim: & ſumpſit, & dedit in manus ejus qui indutus erat ſtolâ ſanctâ. Et accepit, & egreſſus eſt.* 7 *Et vidi ipſa Cherubim ſimilitudinem manûs hominum ſubtus alas eorum.* 8 *Et vidi: & ecce rotæ quatuor ſtabant juxta Cherubim: rota una juxta Cherub (c) unum. Et aſpectus rotarum, quaſi aſpectus lapidis carbunculi:* 9 *Et aſpectus earum, ſimilitudo una ipſis quatuor; quemadmodùm cùm fuerit rota in medio rotæ.* 10 *In eundo ipſa, in quatuor ſuas partes ibant: non revertebantur in eundo ipſa: quoniam in quemcunque locum reſpiciebat principium unum: (d) ibant, & non revertebantur in eundo ipſa.* 11

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

9 ואמר לי חובי בית ישראל ויהודה תקיפו בה לחדא ואתמליאת ארעא חיבי קטול
וקרתא אתמליאת אסטיות דין ארי אמרו רחיק יי ית יתבי ארעא ולית דאגליא קדם
יי׃ 10 ואף אנא לא אחוס מימרי ולא ארחים פורענות אורחתהון ברישיהון יהבית׃
11 והא גברא דלביש לבושא דפנקסא בחרציה מתיב פתגמא למימר עבדית כמא
דפקדתני׃

י

1 וחזית והא ברקיעא די על ריש כרוביא כאבן טבא כחיזו דמות כורסיא אתחזי
עליהון׃ 2 ואמר לגברא דלביש לבושיא ואמר עול לביני גלגליא לתחות כרובא
ומלי חופנך גומרין דאשא מביני כרוביא וזרוק על קרתא ועל ואנא חזי׃ 3 וכרוביא
קימין מדרום לביתא במעל גברא וענן אמטתא אתמליאת ית דרתא גויתא׃ 4 ואסתלק
יקרא דיי בכרובא דהוה שרי עלוהי ושרא מעיל לקביל סקופת ביתא ואתמליאת
ביתא ית ענן אמטתא ודרתא אתמליאת ית זהור יקרא דיי׃ 5 וקל כנפי כרוביא אשתמע
עד דרתא בריתא כקלא מן קדם שדי במלולא׃ 6 והוה בפקדותיה ית גברא דלביש
לבושיא למימר סב אשתא מביני גלגליא מביני כרוביא ועל וקם בסטר גלגלא׃
7 ואושיט כרובא ית ידיה מביני כרוביא לאשתא די ביני כרוביא ונסיב ויהב לחפני
8 דלביש לבושיא ונסיב ונפק׃ ואתחזי לכרוביא דמות יד אנשא תחות גפיהון׃ 9 וחזית
והא ארבעא גלגליא בסטר כרוביא גלגל חד בסטר כרובא חד וגלגל חד בסטר
10 כרובא חד וחיזו גלגליא כעין אבן טבא׃ וחזויהון דמות חד לארבעתהון כמא דהוי
11 גלגל בגו גלגל׃ במיזלהון על ארבעת סטריהון אזלין לא מתחזרין במיזלהון ארי
לאתרא דמתפני קדמאה בתרוהי אזלין ולא מתחזרין במיזלהון׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et dixit ad me: Peccata domus Iſrael & Juda prævaluerunt in ea valdè, & impleta eſt terra homicidiis, & civitas plena eſt perverſione judicii. Quia dixerunt, Projecit Dominus habitatores terræ, & non eſt hoc revelatum coram Domino. 9 Et ego quoque non miſerebor, nec parcet Verbum meum: ultionem viarum ſuarum in caput eorum dabo. 10 Et ecce vir qui indutus erat veſtimentis, in cujus lumbis erat atramentarium, reſpondit verbum dicens: Feci ſicut præcepiſti mihi. 11

CAP. X.

Et vidi et ecce in firmamento quod erat ſuper caput Cherubim, velut lapis pretioſus, & quaſi ſpecies ſimilitudinis throni apparuit ſuper illa. 1 Et dixit viro qui indutus erat veſtimentis, & ait: Ingredere inter rotas quæ ſunt ſubtus Cherub, & volas tuas imple carbonibus ignis ex medio Cherubim, & ſparge ſuper civitatem: & ingreſſus eſt vidente me. 2 Et Cherubim ſtabant ad Auſtralem partem domus cùm ingrederetur vir, & nubes caliginoſa implevit atrium interius. 3 Et elevata eſt gloria Domini in Cherub ſuper quo reſidebat, & reſedit deſuper ex adverſo liminis domus, & impleta eſt domus nube caliginoſa, & atrii impletum eſt ſplendore gloriæ Domini. 4 Et vox alarum Cherubim audita eſt uſque ad atrium exterius, ſicut vox a facie omnipotentis cùm loquitur. 5 Et factum eſt cùm præcepiſſet viro qui indutus erat veſtimentis, dicens: Tolle ignem de medio rotarum & de medio Cherubim: & ingreſſus eſt & ſtetit juxta rotam. 6 Et extendit Cherub manum ſuam de medio Cherubim ad ignem qui erat inter Cherubim, & tulit & dedit in pugillos ejus qui indutus erat veſtimentis: qui cùm accepiſſet egreſſus eſt. 7 Et apparuit in Cherubim ſimilitudo manus hominis ſubtus pennas eorum. 8 Et vidi, & ecce quatuor rotæ juxta Cherubim: rota una erat in latere Cherub unius, & rota altera erat in latere Cherub alterius, & aſpectus rotarum quaſi ſpecies lapidis pretioſi. 9 Et aſpectus earum ſimilitudo una ipſis quatuor ſicut erat rota in medio rotæ. 10 Cùm ambularent, in quatuor latera ſua gradiebantur, non revertebantur cùm ambularent, quoniam ad locum ad quem declinabat primus, poſt eum ibant, & non revertebantur cùm ambularent, 11

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܡܪ ܠܝ. ܥܘܠܐ ܕܒܝܬ ܝܣܪܐܝܠ ܘܕܝܗܘܕܐ ܣܓܝ ܛܒ. ܘܐܬܡܠܝܬ ܐܪܥܐ ܕܡܐ. ܘܡܕܝܢܬܐ 9
ܐܬܡܠܝܬ ܢܟܠܐ. ܘܐܡܪܘ: ܫܒܩܗ ܡܪܝܐ ܠܐܪܥܐ. ܘܠܐ ܚܙܐ ܠܢ ܡܪܝܐ. * ܘܐܦ ܐܢܐ ܠܐ ܐܚܘܣ 10
ܥܠܝܗܘܢ. ܘܠܐ ܐܪܚܡ. ܐܘܪܚܬܗܘܢ ܒܪܫܗܘܢ ܐܦܢܐ. * ܘܚܙܝܬ ܠܓܒܪܐ ܕܠܒܝܫ ܒܘܨܐ 11
ܕܦܢܝ ܘܐܡܪ. ܥܒܕܬ ܐܝܟ ܕܦܩܕܬܢܝ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܝ *

* ܘܚܙܝܬ ܡܛܠܠܐ ܕܥܠ ܪܫ ܟܪܘܒܐ. ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܟܐܦܐ ܕܫܦܝܠܐ. ܘܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܕܡܘܬܐ 1
ܕܟܘܪܣܝܐ ܥܠܝܗܘܢ. * ܘܩܪܐ ܠܓܒܪܐ ܕܠܒܝܫ ܒܘܨܐ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܥܘܠ ܠܡܨܥܬ 2
ܓܝܓܠܐ ܕܬܚܝܬ ܟܪܘܒܐ. ܘܡܠܝ ܚܘܦܢܝܟ ܓܘܡܪܐ ܕܢܘܪܐ ܡܢ ܒܝܬ ܟܪܘܒܐ. ܘܒܕܘܪ ܥܠ
ܡܕܝܢܬܐ. ܘܥܠ ܠܥܝܢܝ. * ܘܟܪܘܒܐ ܩܝܡܝܢ ܗܘܘ ܡܢ ܝܡܝܢܗ ܕܒܝܬܐ. ܟܕ ܥܐܠ ܓܒܪܐ 3
ܗܘ. ܘܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ ܐܬܡܠܝܬ ܗܘܬ ܥܢܢܐ. * ܘܐܬܬܪܝܡ ܫܘܒܚܗ ܕܐܠܗܐ ܡܢ ܟܪܘܒܐ 4
ܕܥܠ ܡܢ ܙܘܝܬܐ ܕܒܝܬܐ. ܘܐܬܡܠܝ ܒܝܬܐ ܥܢܢܐ. ܘܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ ܐܬܡܠܝܬ ܗܘܬ ܙܗܪܐ
ܕܫܘܒܚܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܩܠܐ ܕܓܦܝܗܘܢ ܕܟܪܘܒܐ ܡܫܬܡܥ ܗܘܐ. ܥܕܡܐ ܠܕܪܬܐ ܒܪܝܬܐ. ܐܝܟ 5
ܩܠܗ ܕܐܠܗܐ ܟܕ ܡܡܠܠ. * ܘܟܕ ܦܩܕ ܠܓܒܪܐ ܕܠܒܝܫ ܒܘܨܐ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܣܒ ܢܘܪܐ 6
ܡܢ ܒܝܬ ܓܝܓܠܐ ܡܢ ܒܝܬ ܟܪܘܒܐ. ܘܐܬܐ ܘܩܡ ܠܘܬ ܓܒܝܗܘܢ ܕܓܝܓܠܐ. * ܘܐܘܫܛ ܟܪܘܒܐ 7
ܐܝܕܗ ܡܢ ܒܝܬ ܟܪܘܒܐ ܠܢܘܪܐ ܕܒܝܬ ܟܪܘܒܐ. ܘܫܩܠ ܘܐܪܡܝ ܒܚܘܦܢܘܗܝ ܕܓܒܪܐ
ܕܠܒܝܫ ܒܘܨܐ. ܘܢܣܒ ܘܢܦܩ. * ܘܚܙܝܬ ܠܟܪܘܒܐ. ܕܡܘܬܐ ܕܐܝܕܐ ܕܒܪܢܫܐ ܠܬܚܬ 8
ܓܦܝܗܘܢ. * ܘܚܙܝܬ ܐܪܒܥܐ ܓܝܓܠܝܢ ܠܘܬ ܓܒ ܟܪܘܒܐ. ܚܕ ܚܕ ܓܝܓܠܐ. ܠܘܬ 9
ܓܒ ܟܪܘܒܐ ܚܕ. ܘܚܙܘܗܘܢ ܕܓܝܓܠܐ. ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܟܐܦܐ ܕܛܪܫܝܫ. * ܘܚܕ ܗܘܐ 10
ܚܙܘܗܘܢ ܘܕܡܘܬܗܘܢ ܕܐܪܒܥܬܝܗܘܢ. ܐܝܟ ܓܝܓܠܐ ܒܓܘ ܓܝܓܠܐ. * ܘܡܐ ܕܐܙܠܝܢ 11
ܗܘܘ. ܥܠ ܐܪܒܥܐ ܣܛܪܝܗܘܢ ܐܙܠܝܢ ܗܘܘ. ܘܠܐ ܗܦܟܝܢ ܗܘܘ. ܐܠܐ ܠܐܬܪܐ ܕܐܙܠ ܗܘܐ ܪܝܫܐ ܢܩܦܝܢ ܗܘܘ.
ܒܬܪܗ ܐܙܠܝܢ ܗܘܘ. ܘܠܐ ܡܬܗܦܟܝܢ ܗܘܘ.

Et dixit mihi; Iniquitas domûs Iſraelis & Ju- 9
dæ ſupra modum multa eſt, impleta eſt terra
ſanguine, urbs impleta eſt dolo, & dixerunt
Dereliquit Dñs terram neque videt nos Dñs.
Ideo ego non parcam eis, nec utar clementiâ : 10
vias eorum in caput eorum retundam. Tum 11
vidi virum illum byſſo veſtitum reſpondiſſe
ac dixiſſe, Feci quemadmodum præceperas
mihi.

CAP. X.

DEinde vidi umbraculum quod imminebat 1
capiti Cherubinorum, ſimile colori lapi-
dis ſapphirini : & quaſi aſpectum formæ ſolii
ſuper ipſos : Vocavitque virum illum indu- 2
tum byſſo, & dixit illi; Ingredere inter rotas
ſubter Cherubinos, imple volas tuas carboni-
bus ignitis de medio Cherubinorum, & ſpar-
ge ſuper urbem : qui ingreſſus eſt me ſpectan-
te. Porrò Cherubini ſtabant à dextera do- 3
mûs, cùm ingrederetur vir ille : & atrium in-
terius impletum fuerat nube. Tum extulit ſe 4
gloria Dei à Cherubino qui erat ſuper angulo
domûs, & impleta eſt domus nube, atrium
verò interius impletum eſt ſplendore gloriæ
Domini. Et ſonus alarum Cherubinorum 5
audiebatur uſque ad atrium exterius, quaſi vox
Dei quum loquitur. Cùm itaque præcepiſſet 6
illi viro qui byſſo veſtit9 erat, dixit illi; Accipe
ignem de medio rotarum intra Cherubinos.
Quare veniente illo, ſeſeque ad latus rotarum
ſiſtente, Extendit manum ſuam Cherubinus è 7
Cherubinis illis, ad ignem qui erat intra Che-
rubinos, deſumpſit, poſuitque in volas illius
viri byſſo induti : qui accipiens exivit. Tum 8
vidi Cherubinis formam manûs humanæ ſub
alis eorum. Præterea vidi quatuor rotas ad 9
latus Cherubinorum, ſingulas rotas ad latus
cujuſque Cherubini : color autem rotarum ſi-
milis erat colori lapidis adamantini : Idemq; 10
erat color & forma earum quatuor, acſi eſſet
rota in medio rotæ : Et cùm ibant, ſuper 11
quaterna latera ſua ibant, nec retrocedebant;
ſed quocunque ibat præcipua illarum, *reli-
qua* ſequebantur eam, nec retrocedebant.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* فقال لي مظالم بيت اسرايل ويهودا عظمت جدا جدا * لان الارض امتلات شعوبا كثيرين * 9
والمدينة امتلات ظلما ونجاسة * لانهم قالوا * الرب اهمل الارض * وانا قلت * انا انا لا 10
تشفق عيني ولا ارحم * طرقاتهم اعطيها على رووسهم * واذا الرجل اللابس المدرعة * 11
الممنطق بالمنطقة على حقوه * فاجاب بكلمة قايلا * صنعت كما امرتني *

* الفصل العاشر * * ونظرت واذا فوق الجلد الذي على راس الشاروبيم مثل 1
حجر الفيروزج * شبه عرش عليه * وقال للرجل اللابس الحلة * ادخل الى وسط البكرات 2
التي فوق الشاروبيم واملا كفيك جمر نار من بين الشاروبيم وبدده على المدينة *
ودخل قدامي * والشاروبيم قايمة عن يمين البيت * وعند ما دخل الرجل * وسحابة ملات 3
الدار الداخلة * وارتفع مجد الرب من الشاروبيم الى مقدمة البيت * والسحابة ملات البيت * 4
والدار امتلات من مجد الرب * وصوت اجنحة الشاروبيم سمع حتى الدار الخارجة * مثل 5
صوت الله الكافي متكلما * وكان عند ما اكمل الرجل اللابس الحلة المقدسة قايلا * 6
خذ نارا من وسط البكرات من وسط الشاروبيم * فدخل ووقف الى جانب البكرات * ومد 7
الشاروب يده الى وسط النار الكاينة في وسط الشاروبيم * فاخذ واعطى في يدي اللابس
الحلة المقدسة فاخذ وخرج * واذا للشاروبيم شبه ايدي البشر من تحت اجنحتها * ونظرت 8 9
واذا بكرات اربعة وقفن الى جانب الشاروبيم * بكرة واحدة الى جانب الشاروب الواحد *
وبكرة واحدة الى جانب الشاروب الاخر * ومنظر البكرات مثل منظر حجر البهرمان * ومنظرهن 10
شبه واحد للاربعة * كما اذا كانت بكرة في وسط بكرة * عند ما تسير * باربعة جوانبها 11
تسير * ولا ترجع عند ما تسير * لانها الى اي موضع نظرته الواحدة الاولى تسير * ولا
ترجع عند ما تسير *

*Dixit mihi; Flagitia domûs Iſraelis & 9
Judæ gravia facta ſunt præter modum:
quia terra multis populis impleta eſt, urbs
etiam repleta eſt impietate & impuritate:
dixerunt enim, Dominus terram negle-
xit. Quapropter ego dixi; Mei, mei 10
inquam oculi non parcent, neque miſe-
rebor : vias eorum reflectam in capita
ipſorum. Tum ecce vir ille laneâ tunicâ 11
veſtitus, lumbum balteo præcinctus, ver-
bo reſpondit dicens; Feci prout man-
daveras mihi.*

C A P. X.

*ET vidi, & ecce ſuper firmamentum 1
illud quod erat ſuper caput Cherubino-
rum, ſimilitudo lapidis ſapphirini in
ſolii modum elaborati, eidem firmamento
impoſiti. Et dixit viro illi ſtolâ induto; 2
Ingredere in medium rotarum quæ ſunt
ſuper Cherubinos, imple volas tuas car-
bonibus ignis qui extat inter Cherubinos,
& diſperge ſuper urbem : ingreſſuſque
eſt me præſente. (Stabant autem Cheru- 3
bini à dextera domûs.) Et cùm ingreſſus
eſſet vir ille, nubes implevit atrium
intimum : Et ſublata eſt gloria Domini à 4
Cherubinis ad limen domûs; & nubes
implevit domum, & atrium impletum eſt
gloriâ Domini. Et ſtrepitus alarum 5
Cherubinorum auditus eſt uſque ad atrium
eximii, quaſi vox Dei ſufficientiſſimi lo-
quentis. Itaque perfecturus vir ille ſtolâ 6
ſanctâ veſtitus* mandatum *dicentis, Cape
ignem de medio rotarum, de medio Cheru-
binorum; ingreſſus eſt ſtetitque ad latus
rotarum. Tum extendens Cherub manum
ſuam in medium ignem exiſtentem in 7
medio Cherubinorum, cepit, deditque
in manus induti ſtolâ ſanctâ : qui ac-
cipiens egreſſus eſt. Et ecce Cherubinis 8
erat ſpecies manuum humanarum ſub
alis eorum. Et vidi, & ecce rotæ qua- 9
tuor ſtabant ad latus Cherubinorum, rota
una ad latus Cherubini unius, & rota
una ad latus Cherubini alterius: aſpectus
autem rotarum ſimilis erat aſpectui lapi-
dis carbunculi; Et aſpectus earum eadem 10
figura ipſis quatuor, ac ſi eſſet rota in
medio rotæ. Cùm ibant, in quaterna ſua 11
latera ibant; neque revertebantur cùm
irent, quia quemcunque in locum reſpicie-
bat una prior, cæteræ pergebant; & non
revertebantur cùm pergerent.*

יְחֶזְקֵאל : יא

,earum alæ & ,earum manus & ,earum dorsa & , earum caro omnis Et
12 וְכָל־בְּשָׂרָם וְגַבֵּהֶם וִידֵיהֶם וְכַנְפֵיהֶם
.rotarum ipsarum quatuor *circum* oculis plenæ rotæ &
וְהָאוֹפַנִּים מְלֵאִים עֵינַיִם סָבִיב לְאַרְבַּעְתָּם אוֹפַנֵּיהֶם׃
quatuor Et .meis auribus in , rota ô , est clamatum ipsis Rotis
13 לָאוֹפַנִּים לָהֶם קֹרָא הַגַּלְגַּל בְּאָזְנָי׃ 14 וְאַרְבָּעָה
secundæ facies & , Cherub facies unius facies : unicuique facies
פָנִים לְאֶחָד פְּנֵי הָאֶחָד פְּנֵי הַכְּרוּב וּפְנֵי הַשֵּׁנִי
.aquilæ facies quartæ & , leonis facies tertiæ & ,hominis facies
פְּנֵי אָדָם וְהַשְּׁלִישִׁי פְּנֵי אַרְיֵה וְהָרְבִיעִי פְּנֵי־נָשֶׁר׃
flumine in vidi quod animal ipsum : Cherubim se exaltaverũt Et
15 וַיֵּרֹמּוּ הַכְּרוּבִים הִיא הַחַיָּה אֲשֶׁר רָאִיתִי בִּנְהַר־
: eos juxta rotæ ambulabant , Cherubim *eundo in* Et .Chebar
16 כְּבָר׃ וּבְלֶכֶת הַכְּרוּבִים יֵלְכוּ הָאוֹפַנִּים אֶצְלָם
non ,terram *desuper se elevandũ ad* ,suas alas Cherubim *elevando in* &
וּבִשְׂאֵת הַכְּרוּבִים אֶת־כַּנְפֵיהֶם לָרוּם מֵעַל הָאָרֶץ לֹא־
,*ipsos stando* In .eos apud ipsæ etiam , rotæ revertebantur
17 יִסַּבּוּ הָאוֹפַנִּים גַּם־הֵם מֵאֶצְלָם׃ בְּעָמְדָם
animalis spiritus nam : eis cum se elevabant se *elevando in* & : stabant
יַעֲמֹדוּ וּבְרוֹמָם יֵרוֹמּוּ אוֹתָם כִּי רוּחַ הַחַיָּה
stetit & : domus limine *desuper* Domini gloria est egressa Et .eis in
18 בָּהֶם׃ וַיֵּצֵא כְּבוֹד יְהוָה מֵעַל מִפְתַּן הַבָּיִת וַיַּעֲמֹד
, suas alas Cherubim elevaverunt Et .Cherubim super
19 עַל־הַכְּרוּבִים׃ וַיִּשְׂאוּ הַכְּרוּבִים אֶת־כַּנְפֵיהֶם
rotæ & ,*ipsos egrediendo in* : meis oculis in terra à sunt elevati &
וַיֵּרוֹמּוּ מִן־הָאָרֶץ לְעֵינַי בְּצֵאתָם וְהָאוֹפַנִּים
gloria & ,orientalis Domini domus portæ *ostio* stetit & : eos juxta
לְעֻמָּתָם וַיַּעֲמֹד פֶּתַח שַׁעַר בֵּית־יְהוָה הַקַּדְמוֹנִי וּכְבוֹד
quod animal Hoc .desuper eos super Israel Dei
20 אֱלֹהֵי־יִשְׂרָאֵל עֲלֵיהֶם מִלְמָעְלָה׃ הִיא הַחַיָּה אֲשֶׁר
quòd cognovi & : Chebar flumine in Israel Deum subter vidi
רָאִיתִי תַּחַת אֱלֹהֵי־יִשְׂרָאֵל בִּנְהַר כְּבָר וָאֵדַע כִּי
quatuor & , *uni* facies *quatuor* Quatuor .*ipsi* Cherubim
21 כְרוּבִים הֵמָּה׃ אַרְבָּעָה אַרְבָּעָה פָנִים לְאֶחָד וְאַרְבַּע
.eorum alis sub hominis *manuum* similitudo Et .*uni* alæ
כְּנָפַיִם לְאֶחָד וּדְמוּת יְדֵי אָדָם תַּחַת כַּנְפֵיהֶם׃
juxta vidi quas facierum *earundem* eorum facierum similitudo Et
22 וּדְמוּת פְּנֵיהֶם הֵמָּה הַפָּנִים אֲשֶׁר רָאִיתִי עַל־
transitum ad unusquisque ,ipsæmet & earum aspectus ,Chebar fluvium
נְהַר כְּבָר מַרְאֵיהֶם וְאוֹתָם אִישׁ אֶל־עֵבֶר
.*ibant ipsius facierum*
פָּנָיו יֵלֵכוּ׃

CAP. XI. יא

Domini domus portam ad me introduxit & ,spiritus me elevavit Et
1 וַתִּשָּׂא אֹתִי רוּחַ וַתָּבֵא אֹתִי אֶל־שַׁעַר בֵּית־יְהוָה
viginti portæ ostio in ecce Et .orientem ad *respicientem* ,orientalem
הַקַּדְמוֹנִי הַפּוֹנֶה קָדִימָה וְהִנֵּה בְּפֶתַח הַשַּׁעַר עֶשְׂרִים
,Hazur filium Jaazanjah eorum medio in vidi & , viri quinque &
וַחֲמִשָּׁה אִישׁ וָאֶרְאֶה בְתוֹכָם אֶת־יַאֲזַנְיָה בֶן־עַזֻּר
: me ad Dixitque .populi principes ,Benajahu filium Pelathjahu &
2 וְאֶת־פְּלַטְיָהוּ בֶן־בְּנָיָהוּ שָׂרֵי הָעָם׃ וַיֹּאמֶר אֵלָי
consulentes & ,iniquitatem *cogitantes* viri isti ,hominis Fili
בֶּן־אָדָם אֵלֶּה הָאֲנָשִׁים הַחֹשְׁבִים אָוֶן וְהַיֹּעֲצִים
ædificare propinquo in Non : *Dicentes* .ista urbe in malum consilium
3 עֲצַת־רָע בָּעִיר הַזֹּאת׃ הָאֹמְרִים לֹא בְקָרוֹב בְּנוֹת
,eos super vaticinare Idcirco .caro nos & , lebes hæc : domos
4 בָּתִּים הִיא הַסִּיר וַאֲנַחְנוּ הַבָּשָׂר׃ לָכֵן הִנָּבֵא עֲלֵיהֶם
.hominis fili vaticinare
הִנָּבֵא בֶּן־אָדָם׃

Versio VULG. LAT.

12 Et omne corpus earum, & colla, & man⁹, & pennæ, & circuli,
plena erant oculis, in circuitu
13 quatuor rotarum. Et rotas istas
vocavit Volubiles, audiente me.
14 Quatuor autem facies habebat
unum: facies una, facies Cherub:
& facies secunda, facies hominis: & in tertio facies leonis:
15 & in quarto facies aquilæ. Et
elevata sunt Cherubim: ipsum
est animal, quod videram juxta
16 fluvium Chobar. Cúmque ambularent Cherubim, ibant pariter & rotæ juxta ea: & cùm
elevarent Cherubim alas suas ut
exaltarentur de terra, non residebant rotæ, sed & ipsæ juxtà
17 erant. Stantib⁹ illis, stabant: &
cum elevatis elevabantur: spirit⁹
18 enim vitæ erat in eis. Et egressa
est gloria Domini à limine templi: & stetit super Cherubim.
19 Et elevantia Cherubim alas suas,
exaltata sunt à terra coram me:
& illis egredientib⁹, rotæ quoq;
subsecutæ sunt: & stetit in introitu portæ dom⁹ Dñi Orientalis: & gloria Dei Israel erat super
20 ea. Ipsum est animal, quod vidi subter Deum Israel juxta fluvium Chobar: & intellexi quia
21 Cherubim essent. Quatuor vultus uni, & quatuor alæ uni: &
similitudo manûs hominis sub
22 alis eorum. Et similitudo vultuum eorum, ipsi vult⁹ quos videram juxta fluvium Chobar, &
intuitus eorum, & impetus singulorum ante faciem suam ingredi.

CAP. XI.

1 ET elevavit me spiritus, & introduxit me ad portam domûs
Domini Orientalem, quæ respicit
ad Solis ortum: & ecce in introitu portæ vigintiquinque viri:
& vidi in medio eorum Jezoniam filium Azur, & Pheltiam
filium Banaiæ, principes popu-
2 li. Dixitque ad me; Fili hominis, hi sunt viri, qui cogitant iniquitatem, & tractant consilium
3 pessimum in urbe ista, Dicentes;
Nónne dudum ædificatæ sunt
domus? hæc est lebes, nos au-
4 tem carnes. Idcircò vaticinare
de eis; vaticinare, fili hominis.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

12 Καὶ οἱ νῶτοι αὐτῶν, ϗ αἱ χεῖρες αὐτῶν, ϗ
αἱ πτέρυγες αὐτῶν, ϗ οἱ τροχοὶ πλήρεις (ι) ὀ-
φθαλμῶν κυκλόθεν τοῖς τέσσαρσι (κ) τρο-
13 χοῖς. Τοῖς δὲ τροχοῖς (λ) τούτοις ἐπεκλήθη
15 Γελγὲλ ἀκούοντός μου. Καὶ τὰ χερουβὶμ
ἦν τοῦτο τὸ ζῶον ὃ ἴδον ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ τοῦ
16 Χοβάρ. Καὶ ἐν τῷ πορεύεσθαι τὰ (μ) χερουβὶμ,
ἐπορεύοντο οἱ τροχοὶ, ϗ οὗτοι ἐχόμενοι αὐ-
τῶν· ϗ ἐν τῷ ἐξαίρειν τὰ (ν) χερουβὶμ τὰς
πτέρυγας αὐτῶν τοῦ μετεωρίζεσθαι ἀπὸ τῆς
17 γῆς, οὐκ ἐπέστρεφον οἱ τροχοὶ (ξ) αὐτῶν. Ἐν
τῷ ἑστάναι αὐτὰ, εἱστήκεισαν· ϗ ἐν τῷ μετεω-
ρίζεσθαι αὐτὰ (ο) μετεωρίζοντο μετ' αὐτῶν·
18 διότι πνεῦμα ζωῆς ἐν αὐτοῖς ἦν. Καὶ ἐξῆλ-
θε δόξα κυρίου ἀπὸ (π) τοῦ οἴκου, ϗ ἐπέβη
19 ἐπὶ τὰ (ρ) χερουβίμ. Καὶ ἀνέλαβον τὰ
(σ) χερουβὶμ τὰς πτέρυγας αὐτῶν, ϗ ἐμε-
τεωρίσθησαν ἀπὸ τῆς γῆς ἐνώπιον ἐμοῦ ἐν τῷ
(τ) ἐξελθεῖν αὐτὰ, ϗ οἱ τροχοὶ ἐχόμενοι
αὐτῶν. ϗ ἔστησαν ἐπὶ τὰ πρόθυρα τῆς πύλης
οἴκου κυρίου τῆς ἀπέναντι, ϗ δόξα (υ) θεοῦ
20 Ἰσραὴλ ἦν ἐπ' αὐτῶν ὑπεράνω. Τοῦτο τὸ
ζῶόν ἐστιν ὃ ἴδον ὑποκάτω θεοῦ Ἰσραὴλ
ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ τοῦ Χοβὰρ, ϗ ἔγνων ὅτι χε-
21 ρουβίμ ἐστι. (φ) Τέσσαρα πρόσωπα τῷ ἑνὶ,
ϗ ὀκτὼ πτέρυγες τῷ ἑνὶ, ϗ ὁμοίωμα χει-
ρῶν (χ) ἀνθρώπων ὑποκάτωθεν τῶν πτερύ-
22 γων αὐτῶν. Καὶ (ψ) ὁμοίωσις τῶν προσώ-
πων αὐτῶν, ταῦτα τὰ πρόσωπά ἐστιν ἃ
ἴδον ὑποκάτω τῆς δόξης (ω) τοῦ θεοῦ Ἰσραὴλ
ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ τοῦ Χοβάρ. (α) ϗ αὐτὰ ἕ-
καστον κατὰ πρόσωπον αὐτῶν ἐπορεύοντο.

(e) Et dorsa eorum, & manus eorum, & alæ eorum, & rotæ 12
plenæ erant oculis in circuitu in
quatuor rotis. Rotis autem istis 13
acclamatum est (f) Gelgel, audi-
ente (g) me. Et ipsa Cherubim e- 15
rant, idipsum animal, quod vide-
ram super fluvium Chobar. Cúm- 16
que ambularent Cherubim, ibant
rotæ, & hæ juxta ea. Et, cùm e-
levarent Cherubim alas suas, ut
exaltarentur de terra; non rever-
tebantur rotæ (h) eorum: Stanti- 17
bus illis, stabant; & cùm illa ele-
varentur; elevabantur cum eis.
Spiritus enim vitæ erat in eis.
Et egressa est gloria Domini (i) 18
de domo: & conscendit super
Cherubim. Et assumpserunt Che- 19
rubim alas suas, & elevati sunt
de terra coram me. Illis egredi-
entibus, etiam rotæ juxta illa. Et
steterunt super vestibula portæ
domûs Domini, quæ è (k) regi-
one: et gloria Dei Israel erat su-
per ea desupèr. Ipsum est animal, 20
quod vidi subter Deum Israel
super fluvium Chobar: & intel-
lexi, quia Cherubim essent. Qua- 21
tuor facies uni, & (l) octo alæ
uni: et similitudo manuum homi-
num sub alis eorum. Et similitu- 22
do facierum eorum, ipsi vultus
erant, quos videram subtus glo-
riam Dei Israel super fluvium
(m) Chobar. Et hæc, unumquod-
que ante faciem suam ibant.

MS.A. (ι) ὀφθαλμῶν τοῖς (κ) τροχοῖς αὐτῶν. (λ) τοῦτο ἐπεκλήθη Γελ-
14 γέλ. Καὶ τέσσαρα πρόσωπα τῷ ἑνί· τὸ πρόσωπον τοῦ ἑνὸς πρόσωπον
χερούβ, ϗ τὸ πρόσωπον τοῦ δευτέρου πρόσωπον ἀνθρώπου, ϗ τὸ πρόσω-
15 πον τοῦ τρίτου πρόσωπον λέοντος, ϗ τὸ τέταρτον πρόσωπον ἀετοῦ. Καὶ
ἐπῆραν τὰ χερουβεὶν· τοῦτο τὸ ζῶον (μ) χερουβεὶν, ἐπορεύοντο ϗ οἱ τροχοὶ,
(ν) χερουβεὶν (ξ) αὐτῶν, καί γε αὐτοὶ ἀπὸ τῶν ἐχόμενα αὐτῶν. Ἐν τῷ (ο) ἐμε-
τεωρίζοντο (π) τοῦ αἰθρίου τοῦ οἴκου, (ρ) χερουβεὶν. (σ) χερουβεὶν (τ) ἐξαίρειν
(υ) κυρίου θεοῦ (φ) Τέσσαρα (χ) ἀνθρώπου (ψ) ὁμοίωμα (ω) θεοῦ
(α) τῇ ὁράσει αὐτῶν, ϗ

ΚΕΦ. ιαʹ.

1 ΚΑὶ ἀνέλαβέ με πνεῦμα, ϗ ἤγαγέ με
ἐπὶ τὴν πύλην τοῦ οἴκου κυρίου τὴν κατέναντι,
τὴν βλέπουσαν κατὰ ἀνατολάς. ϗ ἰδοὺ ἐπὶ τῶν
προθύρων τῆς πύλης ὡς εἴκοσι ϗ πέντε ἄν-
δρες· ϗ ἴδον ἐν μέσῳ αὐτῶν τὸν Ἰεχονίαν
τὸν τοῦ (α) Ἔζερ, ϗ Φαλτίαν τὸν τοῦ Βαναίου,
2 τοὺς ἀφηγουμένους τοῦ λαοῦ. Καὶ εἶπε κύριος
πρός με, Υἱὲ ἀνθρώπου, οὗτοι οἱ ἄνδρες
οἱ λογιζόμενοι μάταια ϗ βουλευόμενοι βου-
3 λὴν πονηρὰν ἐν τῇ πόλει ταύτῃ· Οἱ λέ-
γοντες, Οὐχὶ προσφάτως ᾠκοδόμηνται αἱ
οἰκίαι; αὕτη ἐστὶν ὁ λέβης, ἡμεῖς δὲ τὰ
4 κρέα. Διατοῦτο προφήτευσον ἐπ' αὐτοὺς,
προφήτευσον υἱὲ ἀνθρώπου.

CAP. XI.

ET assumpsit me spiritus, & 1
duxit me ad portam domûs
Domini, quæ è regione, quæ re-
spicit ad Orientem. Et ecce super
vestibula portæ quasi viginti &
quinque viri: & vidi in medio
eorum Jechoniam filiũ Ezer, &
Phaltiã filiũ Banææ, principes po-
puli. Et dixit Dñs ad me; Fili ho- 2
minis, Hi viri, qui cogitant vana,
et tractant consilium pessimum in
urbe ista, Dicentes; Nónne re- 3
center ædificatæ sunt domus?
Hæc est lebes, nos autem carnes.
Idcircò propheta super eos, pro- 4
pheta, fili hominis.

MS. A. (α) Ἰαζερ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

12 וְכָל בִּסְרֵיהוֹן וְגַבֵּיהוֹן וְאֶשְׁרַתְהוֹן וְכַנְפֵיהוֹן וְגַלְגַּלַיָא מְלַן עַיְנִין סְחוֹר סְחוֹר
13 לְאַרְבַּעְתְּהוֹן דְגַלְגַּלַיָא׃ לְאוֹפַנַיָא לְהוֹן אִתְקְרֵי גַלְגְּלָא וַאֲנָא שְׁמַע׃ 14 וְאַרְבְּעָא אַפִּין
לְחַד אַפֵּי חַד אַפֵּי כְרוּבָא וְאַפֵּי תִנְיָנָא אַפֵּי אֱנָשָׁא וּתְלִיתָאָה אַפֵּי אַרְיָא וּרְבִיעָאָה אַפֵּי
15 נִשְׁרָא׃ וְאִתְרְמוּ כְּרוּבַיָא אִנּוּן בְּרִיְתָא דִּי חֲזֵיתִי בִּנְהַר כְּבָר׃ 16 וּבְמֵיזַל כְּרוּבַיָא אָזְלִין
גַלְגַּלַיָא לְקִבְלֵיהוֹן וּבְמִטַּל כְּרוּבַיָא יַת גַּפֵּיהוֹן לְאִתְרָמָא כְּמִלְּרַע לְרוּם שְׁמַיָא
17 לָא מִתְחַזְּרִין גַלְגַּלַיָא אַף אִנּוּן מִקִּבְלֵיהוֹן׃ בְּמִקָּמְהוֹן קָיְמִין וּבְאִתְרָמוּתְהוֹן
18 מִתְרָמִין עִמְּהוֹן אֲרֵי כְּרוּחַ בְּרִיְתָא בְּהוֹן׃ וְאִסְתַּלַּק יְקָרָא דַיְיָ דַּהֲוָה שָׁרֵי עֲלוֹהִי מֵעִיל
19 לִקְבֵיל סְקוֹפַת בֵּיתָא וּשְׁרָא עַל כְּרוּבַיָא׃ וּנְטַלוּ כְרוּבַיָא יַת גַּפֵּיהוֹן וְאִתְרָמוּ כְּמִלְּרַע
לְרוּם שְׁמַיָא וַאֲנָא חָזֵי בְּמִפַּקְהוֹן וְגַלְגַּלַיָא לָקֳבְלֵיהוֹן וְקָם בְּמַעֲלָנָא דִתְרַע בֵּית מַקְדְּשָׁא
20 דַיְיָ מַדִּנְחָאָה וִיקָר אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל עֲלֵיהוֹן מִלְעֵלָא׃ אִנּוּן בְּרִיְתָא דַחֲזֵיתִי תְּחוֹת יְקַר
21 אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל בִּנְהַר כְּבָר וִידַעִית אֲרֵי כְרוּבַיָא אִנּוּן׃ אַרְבַּע אַרְבַּע אַפִּין לְחַד וְאַרְבַּע
22 גַּפִּין לְחַד וּדְמוּת יַד אֱנָשָׁא תְּחוֹת גַּפֵּיהוֹן׃ וּדְמוּת אַפֵּיהוֹן אִנּוּן אַפַּיָא דִּי חֲזֵיתִי עַל נְהַר
כְּבָר חֶזְוֵיהוֹן וְאִנּוּן בִּרְיָא לָקֳבֵל אַפָּהָא אָזְלָא׃

יא

1 וּנְטַלַתְנִי רוּחָא וְאַעֲלַת יָתִי לִתְרַע בֵּית מַקְדְּשָׁא דַיְיָ מַדִּנְחָאָה דִּפְתִיחַ לְמַדִּנְחָא וְהָא
בְּמַעֲלָנָא דִתְרַע עַסְרִין וְחַמְשָׁא גֻּבְרִין וַחֲזֵית בֵּינֵיהוֹן יַת יַאֲזַנְיָה בַּר עַזוּר וְיַת פְּלַטְיָה בַּר
2 בְּנָיָה רַבְרְבֵי עַמָּא׃ וַאֲמַר לִי בַּר אָדָם אִלֵּין גֻּבְרַיָא דִּמְחַשְּׁבִין לְמֵינַס וּדְמַלְּכִין מְלַךְ בִּישׁ
3 בְּקַרְתָּא הָדָא׃ דְּאָמְרִין לָא בְּקָרִיב לְמִבְנֵי בָתִּין הִיא חֲשִׁיבָא לָנָא כְּדוּדָא וַאֲנַחְנָא חֲשִׁיבִין
4 בְּגַוַּהּ כְּבִסְרָא דִּבְשִׁיל בְּגוֹ דוּדָא׃ בְּכֵן אִתְנַבֵּי עֲלֵיהוֹן אִתְנַבֵּי בַּר אָדָם׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et omnis caro eorum, & dorsum eorum, & expansio & pennæ eorum, 12
& rotæ plenæ erant oculis per circuitum in quatuor eorum rotis. Rotæ 13
sunt appellatæ Volubiles, audiente me. Et erant cuique facies quaternæ: 14
facies uni⁹, facies Cherub; & facies secundi, facies hominis; & tertii, facies
leonis; & quarti, facies aquilæ. Et sublati sunt Cherubim: ipsæ sunt 15
creaturæ quas videram in fluvio Chobar. Et cùm ambularent Cherubim, 16
ambulabant rotæ è regione eorum; & cùm elevarent Cherubim alas suas,
ut sese elevarent quasi sub altitudine cœli, ipsæ quoque rotæ non reverte-
bantur à conspectu eorum. Cùm starent, stabant; & cùm elevarentur, 17
elevabantur cum eis; quia *quasi* spirit⁹ creaturarum erat in eis. Et elevata 18
est gloria Dñi quæ residebat super illud desuper contra limen dom⁹, &
resedit super Cherubim. Et sustulerunt Cherubim alas suas, & elevati 19
sunt quasi sub altitudine cœli; & ego vidi, cùm egrederentur, & rotæ è
regione eorum. Et stetit in introitu portæ dom⁹ sanctuarii Domini Orien-
talis, & gloria Dei Israel erat eis desuper. Ipsæ erant creaturæ quas vidi 20
sub gloria Dei Israel juxta fluvium Chobar, & cognovi quòd Cheru-
bim essent. Quatuor quatuor vultus uni, & quatuor alæ uni; & similitudo 21
manus hominis sub alis eorum. Et similitudo vultuum eorum, ipsi 22
sunt vultus quos videram juxta fluvium Chobar, aspectus earum & ipsæ,
quæque creatura ante faciem suam gradiebatur.

CAP. XI.

ET sustulit me spiritus, & introduxit me ad portam Orientalem domus 1
sanctuarii Domini quæ aperta erat ad Orientem & ecce in introitu por-
tæ erant viginti et quinque viri: et vidi inter eos Jezoniam filium Azur,
et Phaltiam filium Banaiæ, principes populi. Et dixit ad me: Fili hominis, 2
isti sunt viri qui cogitant vim facere, et qui consulunt consilium malum
in civitate hac. Qui dicunt, Non propè est ut ædificentur domus: ipsa 3
est reputata nobis quasi lebes, et nos reputati sumus in medio ejus sicut
caro quæ coquitur in medio lebetis. Propterea vaticinare super eos, vati- 4
cinare fili hominis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

12 * ܘܟܠܗ ܒܣܪܗܘܢ ܘܚܨܝܗܘܢ ܘܐܝܕܝܗܘܢ ܘܓܦܝܗܘܢ ܕܓܝܓܠܐ . ܡܠܝܢ ܥܝܢܐ ܗܘܝ ܡܢ
13 ܚܕܪ ܗܘܝ. ܒܐܣܦܝܗܝܢ. * ܘܠܐܘܦܢܐ ܩܪܐ ܐܢܘܢ ܓܝܓܠܐ. ܩܕܡܝ. * ܘܐܪܒܥܐ ܐܦܝܢ ܠܚܕ
14 ܚܕ ܡܢܗܘܢ. ܚܕ ܐܦܐ ܟܪܘܒܐ. ܘܕܬܪܝܢ ܐܦܐ ܕܒܪܢܫܐ. ܘܕܬܠܬܐ ܐܦܐ ܕܐܪܝܐ. ܘܕܐܪܒܥܐ ܐܦܐ
15 ܕܢܫܪܐ. * ܘܐܬܬܪܝܡܘ ܟܪܘܒܐ. ܗܢܘ ܚܝܘܬܐ ܕܚܙܝܬ ܥܠ ܢܗܪܐ ܕܟܒܪ. * ܘܟܕ ܐܙܠܝܢ ܗܘܘ ܟܪܘܒܐ.
16 ܐܙܠܝܢ ܗܘܝ ܓܝܓܠܐ ܥܡܗܘܢ. ܘܟܕ ܡܫܩܠܝܢ ܗܘܘ ܟܪܘܒܐ ܓܦܝܗܘܢ. ܠܡܬܬܪܝܡܘ ܡܢ
17 ܐܪܥܐ. ܠܐ ܗܦܟܝܢ ܗܘܝ ܓܝܓܠܐ ܡܢܗܘܢ. * ܘܟܕ ܩܝܡܝܢ ܗܘܘ. ܩܝܡܝܢ ܗܘܝ. ܘܟܕ
ܡܬܬܪܝܡܝܢ ܗܘܘ. ܡܬܬܪܝܡܢ ܗܘܝ. ܘܟܕ ܡܫܩܠܝܢ ܗܘܘ ܟܪܘܒܐ ܓܦܝܗܘܢ. ܡܫܬܩܠܝܢ ܗܘܝ
18 ܓܝܓܠܐ ܥܡܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܪܘܚܐ ܕܚܝܐ ܐܝܬ ܗܘܬ ܒܗܘܢ. * ܘܢܦܩ ܫܘܒܚܗ ܕܡܪܝܐ ܡܢ
19 ܙܘܝܬܗ ܕܒܝܬܐ . ܘܩܡ ܥܠ ܟܪܘܒܐ. * ܘܫܩܠܘ ܟܪܘܒܐ ܓܦܝܗܘܢ. ܘܐܬܬܪܝܡܘ ܡܢ ܐܪܥܐ
ܠܥܝܢܝ. ܘܟܕ ܢܦܩܘ ܓܝܓܠܐ ܥܡܗܘܢ ܗܘܝ. ܘܩܡܘ ܒܡܥܠܢܐ ܕܬܪܥܐ ܡܕܢܚܝܐ
20 ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܫܘܒܚܗ ܕܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܥܠܝܗܘܢ ܡܢ ܠܥܠ. * ܗܕܐ ܗܝ ܚܝܘܬܐ ܕܚܙܝܬ
21 ܬܚܝܬ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܥܠ ܢܗܪ ܟܒܪ. ܘܝܕܥܬ ܕܟܪܘܒܐ ܐܢܘܢ. * ܐܪܒܥܐ ܐܪܒܥܐ ܐܦܝܢ
ܠܚܕ ܚܕ ܡܢܗܘܢ. ܘܐܪܒܥ ܓܦܝܢ ܠܚܕ ܡܢܗܘܢ. ܘܕܡܘܬܐ ܕܐܝܕܐ ܕܒܪܢܫܐ ܬܚܝܬ
22 ܓܦܝܗܘܢ. * ܘܕܡܘܬܐ ܕܐܦܝܗܘܢ. ܐܝܟ ܗܠܝܢ ܐܦܐ ܕܚܙܝܬ ܥܠ ܢܗܪ ܟܒܪ. ܘܚܙܘܗܘܢ
ܚܙܘܗܘܢ. ܘܚܕ ܚܕ ܠܘܩܒܠ ܐܦܘܗܝ ܐܙܠܝܢ ܗܘܘ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܐ *

1 * ܘܫܩܠܬܢܝ ܪܘܚܐ. ܘܐܥܠܬܢܝ ܠܬܪܥܐ ܡܕܢܚܝܐ ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܕܚܐܪ ܠܡܕܢܚܐ.
ܘܚܙܝܬ ܒܡܥܠܢܗ ܕܬܪܥܐ. ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ ܓܒܪܝܢ. ܘܚܙܝܬ ܒܡܨܥܬܗܘܢ. ܠܝܙܢܝܐ
2 ܒܪ ܥܙܘܪ. ܘܠܦܠܛܝܐ ܒܪ ܒܢܝܐ ܪܫܝ ܥܡܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܒܪ ܐܢܫܐ. ܗܠܝܢ ܐܢܘܢ
3 ܓܒܪܐ ܕܡܬܪܥܝܢ ܥܘܠܐ. ܘܡܡܠܟܝܢ ܡܠܟܐ ܒܝܫܬܐ ܒܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܘܐܡܪܝܢ. * ܠܐ ܗܘܐ .
4 ܒܩܪܝܒ ܒܢܝܢ ܒܬܐ. ܗܝ ܩܕܪܐ ܘܚܢܢ ܒܣܪܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܬܢܒܐ ܥܠܝܗܘܢ. ܐܬܢܒܐ ܒܪ ܐܢܫܐ :

Tota verò caro, dorſa, manus, & alæ rotarum, plena erant oculis per circuitum, in abſidibus earum: 12 Cochleas autem ipſas, vocavit Rotas, me præſente. 13 Quaternas verò facies habebat unuſquiſque illorum *Cherubinorum*; una erat facies Cherubini, altera facies hominis, alia facies leonis, alia demum facies aquilæ. 14 Ita extulerunt ſe Cherubini, *hoc eſt*, illud animal quod videram ad fluvium Cebar. 15 Euntibus Cherubinis, ibant rotæ cum eis: & attollentibus Cherubinis alas ſuas ad efferendum ſe de terra, non recedebant ab eis rotæ: 16 Conſiſtentibus illis, conſiſtebant iſtæ: efferentibus ſe illis, efferebant ſe iſtæ: & attollentibus Cherubinis alas ſuas, proficiſcebantur rotæ cum eis; quoniam ſpiritus vitalis inerat eis. 17 Egreſſâ itaque gloriâ Domini ex angulo domûs, ſtetit ſuprà Cherubinos: 18 Et Cherubini ſublatis alis ſuis extulerunt ſe de terra, me ſpectante, (& cùm exirent, rotæ cum eis erant,) ſteteruntque ad veſtibulum portæ Orientalis dom⁹ Domini, & gloria Dei Iſraelis erat ſuper eos. 19 Hoc eſt illud animal quod videram ſub Deo Iſraelis ad fluvium Cebar, & cognovi Cherubinos eos eſſe. 20 Quaternas facies habebat unuſquiſque eorum, & quaternas alas unuſquiſque eorum, et formam man⁹ humanæ ſub alis ſuis. 21 Forma verò facierum eorum, ſimilis erat faciebus illis quas videram juxta fluvium Cebar; eodemque modo aſpect⁹ eorum: & unuſquiſque ibat in latere ſuo *quod occupabat*. 22

CAP. XI.

Tum attollens me ſpirit⁹, adduxit me ad portam Orientalem dom⁹ Domini, quæ ſpectat Orientem: & vidi in veſtibulo portæ vigintiquinque viros; inter quos vidi Jazaniam filium Azuris, & Pelatiam filium Benaiæ, primores populi. 1 Dixitque mihi Domin⁹, Fili hominis, hi ſunt viri qui dolum architectantur, & dant conſilia prava in hac urbe, ac dicunt 2 Nonne in ipſa domos ædificavim⁹? ipſa erit olla, nos verò caro. 3 Itaque vaticinare contra iſtos, vaticinare fili hominis. 4

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

12 13 * وظهورها وايديها واجنحتها والبكرات مملوة اعينا لاربعة بكراتها * وللبكرات دعي هذا
14 سريعة سريعة * واربعة وجوه للواحد * وجه الواحد وجه ساروب * ووجه الثاني وجه انسان *
15 ووجه الثالث وجه اسد * والرابع وجه نسر * وارتفعت الساروبيم * وهذا الحيوان الذي رايته
16 على نهر حوبار * وعند ما تسير الساروبيم تسير البكرات * وهي بجانبها * وعند ما ترفع
17 الساروبيم اجنحتها لتتعالى من الارض * لا ترجع بكراتها * مع ما انها من جوانبها * عند ما
18 تقف يقفون * وعند ما تتعالى يتعالون معها * من اجل ان روح حياة كانت فيها * وخرج
19 مجد الرب من عتبة البيت * وركب على الساروبيم * واخذت الساروبيم اجنحتها * وتعالت
من الارض امامي * عند ما ارتفعت البكرات الى جانبها * ووقف على مداخل باب بيت الرب
20 الذي مقابلي * ومجد الرب اله اسرائيل كان عليها من فوق * هذا الحيوان هو الذي
21 رايته تحت اله اسرائيل على نهر حوبار * وعلمت ان الساروبيم هو * اربعة وجوه للواحد * وستة
22 اجنحة للواحد * وشبه ايدي انسان من تحت اجنحتها * وشبه وجوهها * هذه الوجوه
هي التي رايتها تحت مجد اله اسرائيل على نهر حوبار * ومنظرها * وهذه كل واحد يسير لوجهه *

* الفصل الحادي عشر * * الاصحاح الخامس *

1 * وحملتني ريح * واتت بي الى باب بيت الرب الذي مقابلي * الناظر نحو المشارق * واذا على
مداخل الباب نحو من خمسة وعشرين رجلا * ونظرت في وسطهم ياحونيان بن يازار * وفلتيان
2 بن باناو مقدمي الشعب * وقال لي الرب * يا ابن الانسان * هاولاء الرجال الذين يفكرون
3 الافك * ويرون رايا شريرا في هذه المدينة * ويقولون * اليس ببنيت البيوت جديدا * هذه
4 هي المرجل ونحن اللحم * لاجل هذا تنبا عليهم * تنبا يا ابن الناس *

Et tam illorum dorſa, manus, & alæ ipſorum, quàm rotæ plenæ erant oculis per quaternas abſides ſuas. 12 *Rotæ verò ſic appellatæ fuerunt, Veloces, velociſſimæ.* 13 *Quatuor autem facies habebat unumquodque: facies una, facies Cherubini: facies ſecunda, facies hominis: facies tertia, facies leonis: quarta verò, facies aquilæ.* 14 *Et elevati ſunt Cherubini, (atque hoc eſt illud animal quod videram ſecus flumen Chobar:)* 15 *Quoties ibant Cherubini, ibant rotæ ad latus eorum exiſtentes: & cùm elevarent Cherubini alas ſuas ut efferrent ſe ab humo, non recedebant rotæ eorum, quippe quæ eſſent ad latera eorum.* 16 *Cùm iſtæ conſiſterent, conſiſtebant illa: cùmque elevarent ſe iſtæ, elevabant ſe illa cum iſtis; quoniam ſpiritus vitalis inerat iſtis.* 17 *Et egreſſâ gloriâ Domini è limine domûs, conſcendit Cherubinos:* 18 *Et ſublatis Cherubini alis ſuis, elevaverunt ſe ab humo coram me (elevantibus ſe rotis ad ipſorum latera) ſteteruntque ſupra veſtibulum januæ domûs Domini, quæ erat ex adverſo mihi; & gloria Domini Dei Iſraelis erat ſuper eos deſupèr.* 19 *Hoc animal eſt illud quod videram ſub Deo Iſraelis juxta flumen Chobar, & agnovi Cherubinos illud eſſe.* 20 *Quatuor erant facies cuilibet, & ſex alæ cuilibet, & figura manuum humanarum ſub alis eorum.* 21 *Quod autem ad formam facierum eorum, eædem erant facies quas videram ſubter gloriam Dei Iſraelis juxta flumen Chobar, & idem aſpectus eorum: atque horum unumquodque ante faciem ſuam procedebat.* 22

CAP. XI.

Textus quintus.

Deinde tulit me ventus quidam, perduxitque me ad januam domûs Domini, quæ erat ex adverſo mihi, quæ ſpectabat Orientem verſùs: & ecce ad veſtibulum januæ circiter vigintiquinque viros: & vidi in medio eorũ Jechoniam filiũ Jezeris, & Phaltiam filiũ Banai, anteſignanos populi. 1 *Tum dixit ad me Dominus; O fili hominis, iſti ſunt viri qui fraudem cogitant, & perniciosum conſilium machinantur hac in urbe, & dicunt;* 2 *Nõne recens ædificatæ ſunt hæ domus? iſtæ erunt cacabus, nos autem caro.* 3 *Propterea prophetato de iſtis, prophetato O fili hominum.* 4

יחזקאל : יא

dixit Sic : Dic : me ad dixit & ,Domini ſpiritus me ſuper cecidit Et
5 וַתִּפֹּל עָלַי רוּחַ יְהוָה וַיֹּאמֶר אֵלַי אֱמֹר כֹּה־אָמַר
ego *veſtri ſpiritus aſcenſiones* & : Iſrael domus *dixiſtis* ſic ,Dominus
יְהוָה כֵּן אֲמַרְתֶּם בֵּית יִשְׂרָאֵל וּמַעֲלוֹת רוּחֲכֶם אֲנִי
: hac urbe in veſtros interfectos feciſtis Multiplicare .*illud* novi
6 יְדַעְתִּיהָ׃ הִרְבֵּיתֶם חַלְלֵיכֶם בָּעִיר הַזֹּאת
Dominus dixit ſic Propterea .*occiſo* ejus plateas impleſtis &
7 וּמִלֵּאתֶם חוּצוֹתֶיהָ חָלָל׃ לָכֵן כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי
,caro ipſi ,ejus medio in *poſuiſtis* quos veſtri Interfecti : Deus
יְהוִה חַלְלֵיכֶם אֲשֶׁר שַׂמְתֶּם בְּתוֹכָהּ הֵמָּה הַבָּשָׂר
; metuiſtis Gladium .ejus medio de *eduxit* vos Et .lebes ipſa &
8 וְהִיא הַסִּיר וְאֶתְכֶם הוֹצִיא מִתּוֹכָהּ׃ חֶרֶב יְרֵאתֶם
educam Et .Deus Dominus dixit ,vos ſuper inducam gladium &
9 וְחֶרֶב אָבִיא עֲלֵיכֶם נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה׃ וְהוֹצֵאתִי
faciam & ,alienorum manu in vos dabóque ,ejus medio de vos
אֶתְכֶם מִתּוֹכָהּ וְנָתַתִּי אֶתְכֶם בְּיַד־זָרִים וְעָשִׂיתִי
judicabo Iſrael termino in ; cadetis gladio In .judicia vobis in
10 בָכֶם שְׁפָטִים׃ בַּחֶרֶב תִּפֹּלוּ עַל־גְּבוּל יִשְׂרָאֵל אֶשְׁפּוֹט
vobis erit non Hæc .Dominus *ego* quòd ſcietis & : vos
11 אֶתְכֶם וִידַעְתֶּם כִּי־אֲנִי יְהוָה׃ הִיא לֹא־תִהְיֶה לָכֶם
Iſrael termino in *: carnem in* ejus medio in eritis vos & ,*lebetem in*
לְסִיר וְאַתֶּם תִּהְיוּ בְתוֹכָהּ לְבָשָׂר אֶל־גְּבוּל יִשְׂרָאֵל
meis ſtatutis in quia : Dominus *ego* quòd ſcietis Et .vos judicabo
12 אֶשְׁפֹּט אֶתְכֶם׃ וִידַעְתֶּם כִּי־אֲנִי יְהוָה אֲשֶׁר בְּחֻקַּי
,gentium judicia juxta ſed : feciſtis non mea judicia & ,ambulâſtis non
לֹא הֲלַכְתֶּם וּמִשְׁפָּטַי לֹא עֲשִׂיתֶם וּכְמִשְׁפְּטֵי הַגּוֹיִם
Pelatjahu & ,*me prophetare juxta* ,fuit Et .feciſtis ,*veſtris circuitibus* quæ
13 אֲשֶׁר סְבִיבוֹתֵיכֶם עֲשִׂיתֶם׃ וַיְהִי כְּהִנָּבְאִי וּפְלַטְיָהוּ
clamavi & ,*meas facies* ſuper cecidi & : eſt mortuus ,Benajah filius
בֶן־בְּנָיָה מֵת וָאֶפֹּל עַל־פָּנַי וָאֶזְעַק
tu conſummationem ,Deus Domine Ahah : dixi & ,magna voce
קוֹל־גָּדוֹל וָאֹמַר אֲהָהּ אֲדֹנָי יְהוִה כָּלָה אַתָּה
,me ad Domini verbum fuit Et .Iſrael reſidui *faciens*
14 עֹשֶׂה אֵת שְׁאֵרִית יִשְׂרָאֵל׃ וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי
,*tuæ redemptionis* viri tui fratres ,tui fratres ,hominis Fili : dicendo
15 לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם אַחֶיךָ אַחֶיךָ אַנְשֵׁי גְאֻלָּתֶךָ
habitatores *eis* dixerunt quibus ,ipſa tota Iſrael domus omnis &
וְכָל־בֵּית יִשְׂרָאֵל כֻּלֹּה אֲשֶׁר אָמְרוּ לָהֶם יֹשְׁבֵי
terra eſt data ipſa nobis ,Domino *deſuper* vos Elongate : Jeruſalaim
יְרוּשָׁלַםִ רַחֲקוּ מֵעַל יְהוָה לָנוּ הִיא נִתְּנָה הָאָרֶץ
Quia : Deus Dominus dixit ſic : dic Propterea .poſſeſſionem in
16 לְמוֹרָשָׁה׃ לָכֵן אֱמֹר כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה כִּי
fui & ,*terras* in eos diſpergere feci *quia* & ,gentes in eos elongare feci
הִרְחַקְתִּים בַּגּוֹיִם וְכִי הֲפִיצוֹתִים בָּאֲרָצוֹת וָאֱהִי
.*illuc* venerunt *quo* terris in ,parvum ſanctuarium in eis
לָהֶם לְמִקְדָּשׁ מְעַט בָּאֲרָצוֹת אֲשֶׁר־בָּאוּ שָׁם׃
vos congregabo Et : Deus Dominus dixit Sic : dic Propterea
17 לָכֵן אֱמֹר כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה וְקִבַּצְתִּי אֶתְכֶם
eſtis diſperſi quibus ,terris de vos *colligam* & ,populis de
מִן־הָעַמִּים וְאָסַפְתִּי אֶתְכֶם מִן־הָאֲרָצוֹת אֲשֶׁר נְפֹצוֹתֶם
, illuc ingredientur Et .Iſrael humum vobis dabo & *: eis in*
18 בָּהֶם וְנָתַתִּי לָכֶם אֶת־אַדְמַת יִשְׂרָאֵל׃ וּבָאוּ שָׁמָּה
ejus abominationes cunctáſque ,ejus *contaminationes omnes* removebũt &
וְהֵסִירוּ אֶת־כָּל־שִׁקּוּצֶיהָ וְאֶת־כָּל־תּוֹעֲבוֹתֶיהָ
dabo novum ſpiritum & ,unum cor eis dabo Et .illa de
19 מִמֶּנָּה׃ וְנָתַתִּי לָהֶם לֵב אֶחָד וְרוּחַ חֲדָשָׁה אֶתֵּן
dabo & ,eorum carne de *lapidis* cor removebo & : eorum *interiori* in
בְּקִרְבְּכֶם וַהֲסִרֹתִי לֵב הָאֶבֶן מִבְּשָׂרָם וְנָתַתִּי
.*carnis* cor eis
לָהֶם לֵב בָּשָׂר׃

Verſio VULG. LAT.

5 Et irruit in me ſpiritus Domini,
& dixit ad me; Loquere; Hæc
dicit Dominus; Sic locuti eſtis,
domus Iſrael, & cogitationes
6 cordis veſtri ego novi. Plurimos
occidiſtis in urbe hac, et impléſtis
7 vias ejus interfectis. Propterea
hæc dicit Dominus Deus; Inter-
fecti veſtri, quos poſuiſtis in
medio ejus, hi ſunt carnes, &
hæc eſt lebes : & educam vos
8 de medio ejus. Gladium metui-
ſtis, & gladium inducam ſuper
9 vos, ait Dominus Deus. Et eji-
ciam vos de medio ejus, dabóque
vos in manu hoſtium, & faciam
10 in vobis judicia. Gladio cadetis :
in finibus Iſrael judicabo vos,
& ſcietis quia ego Dominus.
11 Hæc non erit vobis in lebetem,
& vos non eritis in medio ejus
in carnes : in finibus Iſrael judi-
12 cabo vos. Et ſcietis quia ego
Dominus : quia in præceptis
meis non ambulâſtis, & judicia
mea non feciſtis, ſed juxta judi-
cia Gentium, quæ in circuitu
13 veſtro ſunt, eſtis operati. Et fa-
ctum eſt, cùm prophetarem,
Pheltias filius Banaiæ mortuus eſt :
& cecidi in faciem meam cla-
mans voce magnâ, & dixi, Heu,
heu, heu, Dñe Deus : conſumma-
tionem tu facis reliquiarum Iſ-
14 rael? Et factum eſt verbum Dñi
15 ad me, dicens; Fili hominis, fra-
tres tui, fratres tui, viri propinqui
tui, & omnis domus Iſrael, uni-
verſi, quibus dixerunt habitato-
res Jeruſalem; Longè recedite
à Domino, nobis data eſt terra
16 in poſſeſſionem. Propterea hæc
dicit Dominus Deus, Quia longè
feci eos in Gentibus, & quia
diſperſi eos in terris : ero eis in
ſanctificationẽ modicam in ter-
17 ris, ad quas venerunt. Propterea
loquere; Hæc dicit Dominus
Deus; Congregabo vos de po-
pulis, & adunabo de terris, in
quibus diſperſi eſtis, dabóque
18 vobis humum Iſrael. Et ingre-
dientur illuc, & auferent omnes
offenſiones, cunctáſque abomi-
19 nationes ejus de illa. Et dabo
eis cor unum, & ſpiritum novum
tribuam in viſceribus eorum :
& auferam cor lapideum de
carne eorum, & dabo eis cor
carneum :

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

5 Καὶ ἔπεσεν ἐπ' ἐμὲ πνεῦμα κυρίου, ϗ εἶπε
πρὸς μὲ, Λέγε, Τάδε λέγει κύριος, Οὕ-
τως εἴπατε (β) οἶκος Ἰσραὴλ, ϗ τὰ δια-
βούλια τοῦ πνεύματος ὑμῶν ἐγὼ ἐπίστα-
6 μαι. Ἐπληθύνατε νεκροὺς ὑμῶν ἐν τῇ πό-
λει ταύτῃ, ϗ ἐνεπλήσατε τὰς ὁδοὺς (γ)
7 αὐτῶν τραυματιῶν. Διατοῦτο τάδε λέ-
γει (δ) κύριος, Τοὺς νεκροὺς ὑμῶν οὓς
(ε) ἐπατάξατε ἐν μέσῳ αὐτῆς, οὗτοί
εἰσι τὰ κρέα, αὐτὴ δὲ ὁ λέβης ἐστὶ, ϗ
8 ὑμᾶς ἐξάξω ἐκ μέσου αὐτῆς. Ῥομ-
φαίαν φοβεῖσθε, ϗ ῥομφαίαν ἐπάξω ἐφ'
9 ὑμᾶς, λέγει (ζ) κύριος. Καὶ ἐξάξω
ὑμᾶς ἐκ μέσου αὐτῆς, ϗ παραδώσω
ὑμᾶς εἰς χεῖρας ἀλλοτρίων, ϗ ποιήσω
10 ἐν ὑμῖν κρίματα. Ἐν ῥομφαίᾳ πεσεῖσθε,
(η) ἐπὶ τῶν ὀρέων τοῦ Ἰσραὴλ κρινῶ ὑμᾶς,
ϗ ἐπιγνώσεσθε ὅτι ἐγὼ κύριος. (θ)
13 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ προφητεύειν με, καὶ
Φαλτίας ὁ τοῦ Βαναίου ἀπέθανε· ϗ πίπτω
ἐπὶ πρόσωπόν μου, ϗ ἀνεβόησα φωνῇ
μεγάλῃ, ϗ εἶπα, (ι) Οἴμοι οἴμοι κύριε,
εἰς συντέλειαν ποιεῖς σὺ τοὺς καταλοί-
14 πους τοῦ Ἰσραήλ; Καὶ ἐγένετο λόγος κυ-
15 ρίου πρὸς μὲ, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου,
οἱ ἀδελφοί σου ϗ οἱ ἄνδρες τῆς αἰχμαλω-
σίας σου καὶ πᾶς ὁ οἶκος τοῦ Ἰσραὴλ
συντετέλεσται, οἷς εἶπαν αὐτοῖς οἱ κα-
τοικοῦντες Ἱερουσαλὴμ, Μακρὰν ἀπέχετε
ἀπὸ τοῦ κυρίου, ἡμῖν δέδοται ἡ γῆ εἰς κλη-
16 ρονομίαν. Διατοῦτο εἰπὸν, Τάδε λέγει
(κ) κύριος, Ὅτι ἀπώσομαι αὐτοὺς εἰς τὰ
ἔθνη, ϗ διασκορπιῶ αὐτοὺς εἰς πᾶσαν
(λ) γῆν, ϗ ἔσομαι αὐτοῖς εἰς ἁγίασμα
μικρὸν ἐν ταῖς χώραις οὗ ἐὰν εἰσέλθωσιν
17 ἐκεῖ. Διατοῦτο (μ) εἰπὸν, Τάδε λέγει
κύριος, Καὶ εἰσδέξομαι αὐτοὺς ἐκ τῶν
ἐθνῶν, ϗ συνάξω αὐτοὺς ἐκ τῶν χωρῶν
οὗ διέσπειρα αὐτοὺς ἐν αὐταῖς· ϗ δώσω
18 αὐτοῖς τὴν γῆν τοῦ Ἰσραήλ. Καὶ εἰσελεύ-
σονται ἐκεῖ, ϗ ἐξαροῦσι πάντα τὰ βδε-
λύγματα αὐτῆς, ϗ πάσας τὰς ἀνομίας
19 αὐτῆς ἐξ αὐτῆς. Καὶ δώσω αὐτοῖς
καρδίαν ἑτέραν, ϗ πνεῦμα καινὸν δώσω
ἐν αὐτοῖς, ϗ ἐκσπάσω τὴν καρδίαν (ν)
τὴν λιθίνην ἐκ τῆς σαρκὸς αὐτῶν, ϗ δώ-
σω αὐτοῖς καρδίαν σαρκίνην·

Et irruit in me ſpiritus Domini, 5
& dixit ad me; Dic; Hæc
dicit Dominus; Sic dixiſtis, do-
mus Iſrael : & cogitationes
ſpiritûs veſtri ego novi : Mul- 6
tiplicâſtis mortuos veſtros in
urbe hac, & impléſtis vias (a)
earum interfectis. Propterea hæc 7
dicit Dominus; Mortuos veſtros,
quos percuſſiſtis in medio ejus,
hi ſunt carnes, hæc autem lebes
eſt. Et vos educam de medio
ejus. Gladium timetis : & 8
gladium inducam ſuper vos, ait
Dominus. Et educam vos de 9
medio ejus : & tradam vos in
manus alienorum : & faciam
in vobis judicia : In gladio ca- 10
detis : in (b) montibus Iſrael ju-
dicabo vos : & ſcietis, quia ego
(c) Dominus. Et factum eſt, cùm 13
prophetarem; & Phaltias filius
Banææ mortuus eſt : & cado in
faciem meam : & exclamavi
voce magnâ, & dixi; Heu,
heu, Domine, in conſummationem
tu facis reſiduos Iſrael? Et fa- 14
ctus eſt ſermo Domini ad me,
dicens; Fili hominis, fra- 15
tres tui, & viri captivitatis
tuæ, & omnis domus Iſrael
conſummata eſt : quibus dixe-
runt eis habitatores Hieruſa-
lem; Longè abeſtis à Domino :
nobis data eſt terra in hæredita-
tem. Propterea dic, Hæc dicit 16
Dominus; Quia repellam eos
in gentes, et diſpergam eos in
omnem terram : et ero eis in
ſanctificationem parvulam in re-
gionibus, quocunque ingreſſi fue-
rint illuc. Propterea dic, Hæc di- 17
cit Dominus; Et ſuſcipiam eos de
gentibus, & congregabo eos de
regionibus, quò diſſeminavi eos
in illas : et dabo eis terram
Iſrael. Et ingredientur illuc : 18
et auferent omnes abominationes
ejus, cunctáſque iniquitates
ejus de illa. Et dabo eis cor al- 19
terum, et ſpiritum novum da-
bo in eis : et extraham cor la-
pideum de carne eorum : et da-
bo eis cor carneum :

MS. A. (β) ὁ οἶκος (γ) αὐτῆς (δ) ἀδωναῒ κύριος, (ε) ἐφονεύσατε
11 (ζ) ἀδωναῒ κύριος. (η) ϗ ἐπὶ (θ) Αὕτη ὑμῖν οὐκ ἔσται εἰς λέβητα, ϗ ὑ-
μεῖς οὐ μὴ γένησθε ἐμ μέσῳ αὐτῆς εἰς κρέα· ἐπὶ τῶν ὀρέων τοῦ
12 Ἰσραὴλ κρινῶ ὑμᾶς. Καὶ ἐπιγνώσεσθε διότι ἐγὼ κύριος. Καὶ ἐγέ-
νετο (ι) Οἴμμοι, οἴμμοι, ἀδωναῒ κύριε, εἰς συντέλειαν σὺ ποιεῖς (κ)
ἀδωναῒ κύριος, (λ) τὴν γῆν, (μ) τάδε λέγει ἀδωναῒ κύριος, (ν)
αὐτῶν τὴν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 ושרת עלי רוח נבואה מן קדם יי ואמר לי אמר כדנן אמר יי כן אמרתון בית ישראל
6 ודי אתון מהרהרין ודסליקת על לבכון קדמי גלן׃ אסגיתון קטיליכון בקרתא
7 הדא ומליתון שוקהא קטילין׃ בכן כדנן אמר יי אלהים קטיליכון דשויתון בגוה
8 אנון כבסרא והיא כדודא ויתכון אגלי מגוה׃ מן קדם דקטלין בחרבא דחלתון
9 ודקטלין בחרבא איתי עליכון אמר יי אלהים׃ ואגלי יתכון מגוה ואמסר יתכון
10 ביד נוכראין ואעבד בכון פורענות דינין׃ בחרבא תתקטלון על תחום ארעא
11 דישראל אתפרע מנכון ותדעון ארי אנא יי׃ היא לא תהי לכון כדודא ברם אתון
תהון בגוה כבסרא דבשיל בגו דודא על תחום ארעא דישראל אתפרע מנכון׃
12 ותדעון ארי אנא יי די בקימי לא הלכתון ודיני לא עבדתון ובנימוסי עממיא די
13 בסחרניכון עבדתון׃ והוה באתנביותי ופלטיה בר בניה מית ואשתטחית על אפי
וצוחית בקל רב ואמרית קביל בעותי יי אלהים גמירא את עביד עם שארא דישראל׃
14 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר׃ בר אדם אחך אחך אנש קריבך וכל בית
15 ישראל כולהון דאמרין להון יתבי ירושלם אתרחקו מדחלתא דיי דילנא היא
16 אתיהיבת ארעא למירתה׃ בכן כדנן אמר יי אלהים ארי ארחקתנון לביני עממיא וארי
בדרתנון במדינתא ויהבית להון בתי כנשתא תנין לבית מקדשי ואנון כזעיר במדינתא
17 דאתגליאו לתמן׃ בכן אמר כדנן אמר יי אלהים ואקריב יתכון מן ביני עממיא ואכניש
18 יתכון מן מדינתא דאתבדרתון בהון ואתן לכון ית ארעא דישראל׃ ויעלון לתמן ויעדון
19 ית כל שקוצהא וית כל תועבתהא מנה׃ ואתן להון לב דחיל ורוח דחילא אתן במעיהון
ואתבר לבא דרשיעא דהוא תקיף כאבנא מבסרהון ואתן להון לב דחיל קדמי
למעבד רעותי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et reſedit ſuper me ſpiritus prophetiæ à facie Domini, & dixit ad me : 5
Dic, Hæc dicit Dominus; ſic dixiſtis domus Iſrael, & quod vos cogitatis,
& quod aſcendit in cor veſtrum, revelatum eſt coram me. Multiplicâſtis 6
interfectos veſtros in civitate iſta, & impleſtis vicos ejus interfectis.
Propterea hæc dicit Dominus Deus : Interfecti veſtri quos poſuiſtis in me- 7
dio ejus, ipſi ſunt ſicut caro, & ipſa eſt quaſi lebes, & vos tranſmigrare
faciam de medio ejus. A facie eorum qui occidunt gladio timuiſtis, & oc- 8
cidentes gladio adducam ſuper vos, dicit Dominus Deus. Et tranſmigrare 9
faciam vos de medio ejus, & tradam vos in manum alienorum, & faciam
in vobis ultionem judiciorum. Gladio occidemini; in termino terræ 10
Iſrael vindictam ſumam ex vobis, & ſcietis quia ego Dominus. Ipſa non 11
erit vobis tanquam lebes, ſed vos intra eam eritis velut caro quæ in
lebete coquitur : in limite terræ Iſrael vos ulciſcar. Scietiſque, quia ego 12
Dominus, qui in pactis meis non ambulâſtis, & judicia mea non feciſtis,
ſed ſecundùm mores populorum qui in circuitu veſtro ſunt, feciſtis. Et 13
factum eſt cùm prophetarem, Phaltias filius Banaiæ mortuus eſt : & corrui
pronus in faciem meam, & clamavi voce magna, & dixi: Suſcipe depreca-
tionem meam Domine Deus, conſummationem tu facis cum reliquiis Iſrael.
Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini ad me dicens : Fili ho- 14
minis, fratres tui, fratres tui, viri propinqui tui & omnis domus Iſrael 15
univerſi de quibus dicunt habitatores Jeruſalem; Longè facti ſunt à timore
Domini : nobis data eſt terra in poſſeſſionem. Propterea hæc dicit Do- 16
minus Deus, quia elongavi eos inter populos, & quia diſperſi eos per pro-
vincias, dedi eis domos congregationis ſecundæ domui ſanctuarii mei, &
ipſi ſunt quaſi pauci in provinciis ad quas tranſmigraverũt. Propterea dic, 17
Hæc dicit Dominus Deus, & applicabo vos de medio populorum, & congre-
gabo vos de provinciis ad quas diſperſi eſtis, & dabo vobis terram Iſrael.
Et ingredientur illuc & auferent omnia inquinamenta & abominationes 18
ejus ab ea. Et dabo eis cor timens, & ſpiritum timoris dabo in viſceri- 19
bus eorum, & conteram cor impietatis, quod erat durum ſicut lapis, de
carne eorum, & dabo eis cor timens coram me, ut faciant voluntatem
meam.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

5 * ܘܢܦܠܬ ܥܠܝ ܪܘܚܗ ܕܡܪܝܐ ܘܐܡܪ ܠܝ. ܐܡܪ ܗܟܢܐ. ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܘܗܟܢܐ ܪܚܡܬܘܢ
ܠܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܡܚܫܒܬܐ ܕܪܥܝܢܟܘܢ. ܐܢܐ ܝܕܥ ܐܢܐ ܠܗܝܢ. * ܐܣܓܝܬܘܢ ܩܛܝܠܝܟܘܢ 6
ܒܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܘܡܠܝܬܘܢ ܫܘܩܝܗ ܚܪܝܒܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. 7
ܚܪܝܒܝܟܘܢ ܕܐܪܡܝܬܘܢ ܒܓܘܗ. ܗܢܘܢ ܐܢܘܢ ܒܣܪܐ. ܘܗܝ ܩܕܪܐ. ܘܠܟܘܢ ܐܦܩ
ܐܢܐ ܡܢ ܓܘܗ. * ܡܢ ܚܪܒܐ ܕܚܠܬܘܢ. ܘܚܪܒܐ ܐܝܬܐ ܥܠܝܟܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. 8
* ܘܐܦܩܟܘܢ ܡܢ ܓܘܗ. ܘܐܫܠܡܟܘܢ ܒܐܝܕܐ ܕܢܘܟܪܝܐ. ܘܐܥܒܕ ܒܟܘܢ ܕܝܢܐ. * ܒܚܪܒܐ 9 10
ܬܦܠܘܢ. ܘܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܐܕܘܢܟܘܢ. * ܗܝ ܠܐ ܬܗܘܐ ܠܟܘܢ ܩܕܪܐ. ܘܐܢܬܘܢ ܠܐ 11
ܬܗܘܘܢ ܒܓܘܗ ܒܣܪܐ. ܠܬܚܘܡܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܐܕܘܢܟܘܢ. * ܘܬܕܥܘܢ. ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. 12
ܕܒܦܘܩܕܢܝ ܠܐ ܗܠܟܬܘܢ. ܘܕܝܢܝ ܠܐ ܥܒܕܬܘܢ. * ܘܟܕ ܐܬܢܒܝܬ. ܡܝܬ ܦܠܛܝܐ ܒܪ 13
ܒܢܝܐ. ܘܢܦܠܬ ܥܠ ܐܦܝ. ܘܩܥܝܬ ܒܩܠܐ ܪܡܐ. ܘܐܡܪܬ. ܐܘ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܫܘܠܡܐ
ܥܒܕ ܐܢܬ. ܠܫܪܟܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܠܘܬܝ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ. 14 15
ܐܚܝܟ ܐܚܝܟ. ܐܢܫܐ ܕܫܒܝܬܟ: ܘܟܠܗܘܢ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܢܫܬܩܠܘܢ. ܕܐܡܪܘ ܠܗܘܢ.
ܥܡܘܪܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܐܬܪܚܩܘ ܡܢ ܡܪܝܐ. ܠܢ ܗܘ ܝܗܝܒܐ ܐܪܥܐ ܠܝܪܬܘܬܐ.
* ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܕܐܪܚܩ ܐܢܘܢ ܒܥܡܡܐ. ܘܐܒܕܪ ܐܢܘܢ ܒܐܪܥܬܐ. 16
ܘܐܗܘܐ ܠܗܘܢ ܠܡܩܕܫܐ ܙܥܘܪܐ ܒܐܪܥܬܐ ܕܐܙܠܘ ܠܗܝܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܐ 17
ܡܪܘܬܐ. ܕܐܟܢܫܟܘܢ ܡܢ ܥܡܡܐ. ܘܐܩܪܒܟܘܢ ܡܢ ܐܪܥܬܐ ܕܐܬܒܕܪܬܘܢ ܒܗܝܢ. ܘܐܬܠ
ܠܟܘܢ ܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܘܢܥܠܘܢ ܠܗ. ܘܢܥܒܪܘܢ ܡܢܗ ܟܠܗܘܢ ܦܬܟܪܘܗܝ ܘܟܠܗܘܢ 18
ܛܢܦܘܬܗ ܡܢܗ. * ܘܐܬܠ ܠܗܘܢ ܠܒܐ ܚܕܬܐ. ܘܪܘܚܐ ܚܕܬܐ ܐܬܠ ܒܗܘܢ. ܘܐܥܒܪ ܠܒܐ 19
ܕܟܐܦܐ ܡܢ ܒܣܪܗܘܢ. ܘܐܬܠ ܠܗܘܢ ܠܒܐ ܕܒܣܪܐ.

Tum cecidit ſuper me ſpiritus Domini, dixit- 5
que mihi; Dic, Sic ait Dominus domino-
rum; Hoccine modo dilexiſtis filios Iſrae-
lis? nam cogitationes animi veſtri ego novi.
Multiplicâſtis occiſos veſtros hac in urbe, 6
& confoſſis impleviſtis plateas ejus. Iccir- 7
cò ſic ait Dominus dominorum; Confoſſi ve-
ſtri quos in ea proſtraviſtis, ipſi caro ſunt,
iſta verò *urbs* eſt olla: vos autem ex ipſa e-
ducam. Gladium timuiſtis, & gladium ad- 8
ducam ſuper vos, ait Dominus dominorum:
Nam vos educam ex ipſa, tradámque vos in 9
manum alienorum, & exercebo contra vos
judicia. Gladio cadetis, & ad limites Iſrae- 10
lis judicabo vos. Hæc non erit vobis olla, 11
neque vos eritis in ea caro: ad limites Iſrae-
lis judicabo vos: Ita experiemini me eſſe 12
Dominum, quicunque in præceptis meis non
ambulâſtis, & judicia mea non feciſtis. Cùm 13
autem prophetâſſem, mortuus eſt Pelatia fili-
us Benaiæ: quapropter in faciem meam pro-
cidens, altâque voce exclamans, dixi; Ah
Domine dominorum, num conſummationem
faceres reliquiis Iſraelis? Tum fuit ad me 14
ſermo Domini, dicendo; Fili hominis, fra- 15
tres tui, fratres *inquam* tui, homines con-
captivi tui, & omnes Iſraelitæ delebuntur;
quia dixerunt eis, O habitatores Jeruſalem,
recedite à Domino; nobis enim data eſt *hæc*
terra in hæreditatem. Iccirco ſic ait Domi- 16
nus dominorum; Expellam eos inter gen-
tes, & diſperdam eos per terras, eroque
illis ſanctuarium exiguum in terris ad quas
abierint. Iccirco ſic ait Dominus domino- 17
rum; Colligam vos è gentibus, & admo-
vebo vos de terris in quas diſperſi eſtis, da-
bóque vobis terram Iſraelis: Quam cùm
ingreſſi fuerint, amovebunt ab ea cuncta 18
ipſius numina cunctaſque abominationes
ejus. Nam dabo illis cor novum, & ſpi- 19
ritum novum indam ipſis: amovebo cor
lapideum à carne eorum, daboque ipſis cor
carneum:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ونزلت على روح الرب * وقال لي * قل * هذا ما يقوله الرب * هكذا قولوا يا بيت اسرايل * 5
انا اعلم مواسن روحكم * كثرتم امواتكم في هذه المدينة * وملاتم طرقاتها من الجرحا * 6
* لاجل هذا هكذا يقول ادوناي الرب * امواتكم الذين قتلتموهم في وسطها هولاء 7
هم اللحم * وهذه هي المرجل * واخرجكم من وسطها * اتخافون السيف * فاجلب عليكم 8
سيفا يقول ادوناي الرب * واخرجكم من وسطها * واسلمكم الي ايدي الغرباء * واصنع 9
فيكم احكاما * وتسقطون بالسيف * وعلي جبال اسرايل ادينكم * وتعلمون اني انا الرب * 10
* وهذه ليست لكم مرجلا * وانتم لا تكونون في وسطها لحما * على جبال اسرايل ادينكم * 11
* وتعلمون اني انا الرب [MS. Oxon. لانكم لم تسلكوا في وصاياي واحكامي لم 12
تعلموا * وكمثل احكام الشعوب التي حولكم فعلتم] * وكان لما تنبيت مات فلتياس 13
بن باناو * فسقطت على وجهي * وصرخت بصوت عظيم وقلت * الويل لي الويل لي يا
ادوناي الرب * للانقضاء انت تصنع بقايا اسرايل * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن 14 15
الانسان * اخوتك ورجال سبيك * وكل بيت اسرايل انقضي * الذين قالوا لهم سكان
ايروسليم * ابعدوا بعيدا من الرب * الارض اعطيت لكم ميراثا * لاجل هذا قل * 16
هكذا يقول ادوناي الرب * اني اقصيهم في الامم * وافرقهم في كل الارض * واصير لهم
مقدسا صغيرا في البلاد حيث يدخلون هناك * لاجل هذا هكذا يقول ادوناي الرب * 17
واقبلهم من الامم واجمعهم من البلدان حيث بددتهم فيها * واعطيهم ارض اسرايل *
* ويدخلون هناك * وينزعون جميع رذالاتها وجميع اثامها منها * واعطيهم قلبا اخر * 18 19
وروحا جديدة اعطي فيهم * وانزع قلبهم الحجري من لحمهم * واعطيهم قلبا لحميا *

Tum deſcendit ſuper me ſpiritus Domini, 5
dixitque mihi; Dic, Hoc eſt quod dicit
Dominus: Ita dicite O domus Iſraelis;
ego novi conſilium animi veſtri. Mul- 6
tiplicâſtis mortuos veſtros hac in urbe, &
impleviſtis vias ejus vulneratis. Ideo ſic 7
dicit Adonai Dominus; Mortui veſtri
quos occidiſtis in medio ejus, hi ſunt
caro, & iſta eſt cacabus. At vos edu-
cam de medio ejus: (Gladium perti- 8
meſcitis? at adducam ſuper vos gladi-
um, dicit Adonai Dominus.) Et cùm 9
eduxero vos de medio ejus, tradam
vos in manus exterorum, & agam vo-
biſcum judicia, Et occumbetis gladio: & 10
ſuper montes Iſraelis judicabo vos: &
ſcietis me eſſe Dominum. Hac nequa- 11
quam erit vobis cacabus, neque vos
eritis caro in medio ejus: ſuper montes
Iſraelis judicabo vos, Et ſcietis me 12
eſſe Dominū.[MS. Oxon. *Vos enim in præ-*
ceptis meis non ambulâſtis, & judicia
mea minimè obſervâſtis, ſed juxta judi-
cia populorū, qui in circuitu veſtro ſunt,
feciſtis.] *Contigit autem cùm prophe-* 13
tâſſem, ut moreretur Phaltias Banai fi-
lius: quare procidens in faciem meam,
exclamavi voce magnâ, & dixi; Heu
me miſerum, heu me miſerum Adonai
Domine: num excidio tu traditurus es
reſiduos Iſraelis? Tum fuit ad me ſer- 14
mo Domini, dicens; O fili hominis, fra- 15
tres tui, & concaptivi tui, totáque do-
mus Iſraelis excindentur, quibus dixe-
runt cives Jeruſalem, Recedite procul à
Domino, terra data vobis eſt in hæredi-
tatem. Propterea dic, Sic ait Adonai 16
Dominus; Equidem exterminabo eos
inter gentes, & diſpergam illos in uni-
verſam terram, eroque ipſis ſanctuarium
exiguū in regionibus quas ingreſſuri ſunt.
Propterea ſic dicit Adonai Dominus; 17
Et recipiam eos de gentibus, & con-
gregabo eos de regionibus in quas diſper-
ſero eos, daboque eis terram Iſraelis.
Et cùm ingreſſi fuerint illuc, auferent 18
omnes abominationes ejus omneſque ini-
quitates ejus ex ipſa. Et dabo eis cor 19
aliud, & ſpiritum novum indam eis:
auferam cor eorum lapideum ex eorum
carne, daboque eis cor carneum;

יחזקאל : יב

faciant & ,cuſtodiant mea judicia & ,ambulent meis ſtatutis in Ut
20 לְמַעַן בְּחֻקֹּתַי יֵלֵכוּ וְאֶת־מִשְׁפָּטַי יִשְׁמְרוּ וְעָשׂוּ
ad Et .Deum in eis ſim ego & ,populum in mihi ſint & : ea
אֹתָם וְהָיוּ־לִי לְעָם וַאֲנִי אֶהְיֶה לָהֶם לֵאלֹהִים׃ וְאֶל־ 21
eorum cor ſuarum abominationum & ,ſuarum contaminationum cor
לֵב שִׁקּוּצֵיהֶם וְתוֹעֲבוֹתֵיהֶם לִבָּם
.Deus Dominus dixit , dabo eorum caput in eorum viam *: vadens*
הֹלֵךְ דַּרְכָּם בְּרֹאשָׁם נָתַתִּי נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה׃
: eos contra rotæ & , ſuas alas Cherubim elevaverunt Et
22 וַיִּשְׂאוּ הַכְּרוּבִים אֶת־כַּנְפֵיהֶם וְהָאוֹפַנִּים לְעֻמָּתָם
gloria *aſcendit* Et .deſuper eos ſuper Iſrael Dei gloria &
וּכְבוֹד אֱלֹהֵי־יִשְׂרָאֵל עֲלֵיהֶם מִלְמָעְלָה׃ וַיַּעַל כְּבוֹד 23
oriente ab qui ,montem ſuper ſtetitque ,civitatis medio *deſuper* Domini
יְהוָה מֵעַל תּוֹךְ הָעִיר וַיַּעֲמֹד עַל־הָהָר אֲשֶׁר מִקֶּדֶם
ad Chaſdim in me adduxitque ,me elevavit ſpiritus Et .urbis
24 לָעִיר׃ וְרוּחַ נְשָׂאַתְנִי וַתְּבִיאֵנִי כַשְׂדִּימָה אֶל־
viſio me *deſuper aſcendit* & : Dei ſpiritu in viſione in tranſmigrationē
הַגּוֹלָה בַּמַּרְאֶה בְּרוּחַ אֱלֹהִים וַיַּעַל מֵעָלַי הַמַּרְאֶה
verba omnia tranſmigrationē ad ſum locutus Et .vidi quam
25 אֲשֶׁר רָאִיתִי׃ וָאֲדַבֵּר אֶל־הַגּוֹלָה אֵת כָּל־דִּבְרֵי
.mihi oſtenderat quæ ,Domini
יְהוָה אֲשֶׁר הֶרְאָנִי׃

CAP. XII. יב

medio in hominis Fili : dicendo me ad Domini verbum fuit Et
1 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם בְּתוֹךְ 2
non & ,*videndum ad eis* oculi quibus *: ſedens* tu *rebellionis* domus
בֵּית־הַמֶּרִי אַתָּה יֹשֵׁב אֲשֶׁר עֵינַיִם לָהֶם לִרְאוֹת וְלֹא
domus quia ,audierunt non & ,audiendum ad eis aures : viderunt
רָאוּ אָזְנַיִם לָהֶם לִשְׁמֹעַ וְלֹא שָׁמֵעוּ כִּי בֵּית
,tranſmigrationis vaſa tibi fac hominis fili tu Et *.ipſi rebellionis*
3 מְרִי הֵם׃ וְאַתָּה בֶן־אָדָם עֲשֵׂה לְךָ כְּלֵי גוֹלָה
ad tuo loco de tranſmigrabis Et .eorum oculis in *interdiu* tranſmigra &
וּגְלֵה יוֹמָם לְעֵינֵיהֶם וְגָלִיתָ מִמְּקוֹמְךָ אֶל־
rebellionis domus quia ,aſpiciant fortè ſi ,eorum oculis in alterum locum
מָקוֹם אַחֵר לְעֵינֵיהֶם אוּלַי יִרְאוּ כִּי בֵּית מְרִי
interdiu tranſmigrationis vaſa tanquam tua vaſa *educes* Et *.ipſi*
4 הֵמָּה׃ וְהוֹצֵאתָ כֵלֶיךָ כִּכְלֵי גוֹלָה יוֹמָם
ex tus ſecundū eorū oculis in veſpera in egredieris tu Et .eorū oculis in
לְעֵינֵיהֶם וְאַתָּה תֵּצֵא בָעֶרֶב לְעֵינֵיהֶם כְּמוֹצָאֵי
exire facies & ,parietem *in tibi* perfode eorum oculis In .tranſmigrationis
5 גּוֹלָה׃ לְעֵינֵיהֶם חֲתָר־לְךָ בַקִּיר וְהוֹצֵאתָ
: efferes caligine in ,portabis humerum ſuper eorum oculis In .eum per
6 בּוֹ׃ לְעֵינֵיהֶם עַל־כָּתֵף תִּשָּׂא בָּעֲלָטָה תוֹצִיא
te dedi portentum quia : terram videbis non & ,velabis *tuas facies*
פָּנֶיךָ תְכַסֶּה וְלֹא תִרְאֶה אֶת־הָאָרֶץ כִּי־מוֹפֵת נְתַתִּיךָ
protuli mea Vaſa.*ſum juſſus* quemadmodū ,ſic feci Et .Iſrael domui
7 לְבֵית יִשְׂרָאֵל׃ וָאַעַשׂ כֵּן כַּאֲשֶׁר צֻוֵּיתִי כֵּלַי הוֹצֵאתִי
parietem *in* mihi perfodi *veſpera in* & ,*interdiu* trāſmigrationis vaſa tanquā
כִּכְלֵי גוֹלָה יוֹמָם וּבָעֶרֶב חָתַרְתִּי־לִי בַקִּיר
.eorum oculis in portavi humerum ſuper , *protuli* caligine In .manu in
בְּיָד בָּעֲלָטָה הוֹצֵאתִי עַל־כָּתֵף נָשָׂאתִי לְעֵינֵיהֶם׃
nónne ,hominis Fili : dicendo ,mane in me ad Domini verbum fuit Et
8 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי בַּבֹּקֶר לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם הֲלֹא 9
: faciens tu quid ,*rebellionis* domus ,Iſrael domus te ad dixerant
אָמְרוּ אֵלֶיךָ בֵּית יִשְׂרָאֵל בֵּית הַמֶּרִי מָה אַתָּה עֹשֶׂה׃
hoc onus Prælato : Deus Dominus dixit Sic : eos ad Dic
10 אֱמֹר אֲלֵיהֶם כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה הַנָּשִׂיא הַמַּשָּׂא הַזֶּה
.eorum medio in *ipſi* quæ , Iſrael *domui omni* & ,Jeruſalaim in
בִּירוּשָׁלִַם וְכָל־בֵּית יִשְׂרָאֵל אֲשֶׁר־הֵמָּה בְתוֹכָם׃

Verſio VULG. LAT.

20 Ut in præceptis meis ambulent,
& judicia mea cuſtodiant, faci-
ántque ea: & ſint mihi in po-
pulum, & ego ſim eis in Deum.
21 Quorum cor poſt offendicula &
abominationes ſuas ambulat, ho-
rum viam in capite ſuo ponam,
22 dicit Dominus Deus. Et eleva-
verūt Cherubim alas ſuas, & ro-
tæ cum eis: & gloria Dei Iſrael
23 erat ſuper ea. Et aſcendit gloria
Domini de medio civitatis, ſte-
títque ſuper montem, qui eſt ad
24 Orientem urbis. Et ſpiritus le-
vavit me, adduxítque in Chal-
dæam ad tranſmigrationem, in
viſione, in ſpiritu Dei: & ſub-
lata eſt à me viſio, quam vide-
25 ram. Et locutus ſum ad tranſmi-
grationem omnia verba Domini,
quæ oſtenderat mihi.

CAP. XII.

1 ET factus eſt ſermo Domini ad
2 me, dicens; Fili hominis, in me-
dio domûs exaſperantis tu ha-
bitas: qui oculos habēt ad viden-
dum, & non vident: & aures ad
audiendum, & non audiunt: quia
3 domus exaſperans eſt. Tu ergò,
fili hominis, fac tibi vaſa tranſ-
migrationis, & tranſmigrabis
per diem coram eis: tranſmi-
grabis autem de loco tuo ad lo-
cum alterum, in conſpectu eorū,
ſi fortè aſpiciant: quia domus
4 exaſperans eſt. Et efferes foràs
vaſa tua quaſi vaſa trahſmigran-
tis per diem in conſpectu eorū:
tu autem egredieris veſperè co-
ram eis, ſicut egreditur migrans.
5 Ante oculos eorum perfode tibi
parietem: & egredieris per eum.
6 In conſpectu eorum in humeris
portaberis, in caligine efferêris:
faciem tuam velabis, & non vi-
debis terram: quia portentum
7 dedi te domui Iſrael. Feci ergò
ſicut præceperat mihi Dominus:
vaſa mea protuli quaſi vaſa tranſ-
migrantis per diem: & veſperè
perfodi mihi parietem manu:
& in caligine egreſſus ſum, in
humeris portatus in conſpectu
8 eorum. Et factus eſt ſermo Do-
9 mini manè ad me, dicens; Fili
hominis, numquid non dixerunt
ad te domus Iſrael, domus ex-
10 aſperans; Quid tu facis? Dic
ad eos; Hæc dicit Dominus
Deus; Super ducem onus iſtud,
qui eſt in Jeruſalem, & ſuper
omnem domum Iſrael, quæ eſt
in medio eorum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

20 Ὅπως ἐν τοῖς προστάγμασί μου πορεύων-
ται, καὶ τὰ δικαιώματά μου φυλάσσων-
ται καὶ (ξ) ποιῶσιν αὐτὰ, καὶ ἔσονταί μοι
εἰς λαὸν, καὶ ἐγὼ ἔσομαι αὐτοῖς εἰς (ο) Θε-
21 όν. Καὶ εἰς τὴν καρδίαν τῶν βδελυγμά-
των αὐτῶν, καὶ τῶν ἀνομιῶν (π) αὐτῶν,
ὡς ἡ καρδία αὐτῶν ἐπορεύετο, τὰς ὁδοὺς
αὐτῶν (ρ) εἰς τὰς κεφαλὰς αὐτῶν δέδω-
22 κα, (σ) λέγει κύριος. Καὶ ἐξῆραν τὰ χε-
ρουβὶμ τὰς πτέρυγας αὐτῶν, καὶ οἱ τροχοὶ
ἐχόμενοι αὐτῶν, καὶ ἡ δόξα Θεοῦ (τ) Ἰσ-
23 ραὴλ ἐπ' αὐτὰ ὑπεράνω αὐτῶν. Καὶ (υ) ἀ-
νέβη ἡ δόξα κυρίου ἐκ μέσης τῆς πόλεως,
καὶ ἔστη ἐπὶ τοῦ ὄρους ὃ ἦν ἀπέναντι τῆς πό-
24 λεως. Καὶ ἀνέλαβέ με πνεῦμα, καὶ ἤγαγέ
με εἰς γῆν Χαλδαίων εἰς τὴν αἰχμαλωσί-
αν ἐν ὁράσει ἐν πνεύματι Θεοῦ, καὶ ἀνέβην
25 ἀπὸ τῆς ὁράσεως ἧς ἴδον. Καὶ ἐλάλησα πρὸς
τὴν αἰχμαλωσίαν πάντας τοὺς (φ) λόγους τοῦ
κυρίου οὓς ἔδειξέ μοι.

MS. A. (ξ) ποιήσουσιν (ο) Θεὸν, λέγει κύριος. Καὶ κατὰ τὰς καρ-
δίας τῶν (π) αὐτῶν, καὶ τῶν πονηρῶν ὧν ἐποίησαν, ὡς ἡ (ρ) εἰς κεφα-
λὰς (σ) λέγει ἀδωναῒ κύριος. (τ) Ἰσραὴλ ἦν ἐπ' αὐτοῖς (υ) ἀνέβη δόξα
κυρίου ἐκ μέσου τῆς πόλεως, (φ) λόγους κυρίου, οὓς ἔδειξέν μοι κύριος.

Ut in præceptis meis ambulent, et 20
juſtificationes meas cuſtodiant,
faciántque eas: & erunt mihi in
populum: & ego ero eis in De-
um. Et ad cor abominationum 21
ſuarum, & iniquitatum ſuarum,
(d) quomodò cor eorum ibat; vi-
as eorum in capita eorum dedi,
dicit Dominus. Et ſuſtulerunt 22
Cherubim alas ſuas, & rotæ jux-
ta ea: & gloria Dei Iſrael (e)
ſuper ea deſuper ea. Et aſcendit 23
gloria Domini de medio civita-
tis: ſtetitque ſuper montem, qui
eſt è regione civitatis. Et aſſum- 24
pſit me ſpiritus, & duxit me in
terram Chaldæorum ad captivi-
tatem in viſione in ſpiritu Dei.
Et aſcendi à viſione, quam vi- 25
di, Et loquutus ſum ad captivi-
tatem omnia verba Domini, quæ
oſtenderat mihi.

ΚΕΦ. ιβ'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέ-
2 γων, Υἱὲ ἀνθρώπου, ἐν μέσῳ τῶν ἀδικι-
ῶν αὐτῶν σὺ κατοικεῖς, οἳ ἔχουσιν ὀφθαλ-
μοὺς τοῦ (α) βλέπειν, καὶ οὐ βλέπουσι, καὶ ὦτα
ἔχουσι τοῦ ἀκούειν, καὶ οὐκ ἀκούουσι, διότι οἶ-
3 κος παραπικραίνων ἐστί. Καὶ σὺ υἱὲ ἀν-
θρώπου ποίησον σεαυτῷ σκεύη (β) αἰχμα-
λωσίας ἡμέρας ἐνώπιον αὐτῶν, καὶ αἰχμα-
λωτευθήσῃ ἐκ τοῦ (γ) τόπου σου εἰς ἕτε-
ρον τόπον ἐνώπιον αὐτῶν, ὅπως ἴδωσι, δι-
4 ότι οἶκος παραπικραίνων ἐστί. Καὶ ἐξοί-
σεις τὰ σκεύη σου σκεύη αἰχμαλωσίας ἡμέ-
ρας κατ' ὀφθαλμοὺς αὐτῶν, καὶ (δ) σὺ ἐξ-
ελεύσῃ ἑσπέρας, ὡς ἐκπορεύεται αἰχμάλω-
5 τος Ἐνώπιον αὐτῶν. Διόρυξον σεαυτῷ
6 εἰς τὸν τοῖχον, καὶ διεξελεύσῃ δι' αὐτοῦ Ἐν-
ώπιον αὐτῶν. ἐπ' ὤμων ἀναληφθήσῃ, καὶ
κεκρυμμένος ἐξελεύσῃ, τὸ πρόσωπόν
σου συγκαλύψεις, καὶ οὐ μὴ ἴδῃς τὴν
7 γῆν, διότι τέρας δέδωκά σε τῷ οἴκῳ Ἰσ-
ραήλ. Καὶ ἐποίησα οὕτως κατὰ πάντα ὅ-
σα ἐνετείλατό μοι· (ε) καὶ σκεύη ἐξήνεγ-
κα αἰχμαλωσίας ἡμέρας, καὶ ἑσπέρας (ζ)
διώρυξα ἐμαυτῷ τὸν (η) τοῖχον, καὶ κε-
8 κρυμμένος ἐξῆλθον, ἐπ' ὤμων ἀνελήφθην
9 ἐνώπιον αὐτῶν. Καὶ ἐγένετο λόγος κυ-
ρίου (θ) τοπρωῒ πρὸς μὲ, λέγων, Υἱὲ
ἀνθρώπου, οὐκ εἶπαν πρὸς σὲ ὁ οἶκος (ι)
τοῦ Ἰσραὴλ, οἶκος ὁ παραπικραίνων, Τί σὺ
10 ποιεῖς; Εἰπὸν πρὸς αὐτοὺς, Τάδε λέγει
κύριος κύριος, (κ) Ὁ ἄρχων καὶ ὁ ἀφηγού-
μενος ἐν Ἱερουσαλὴμ, καὶ παντὶ οἴκῳ Ἰσ-
ραὴλ, οἵ εἰσιν ἐν μέσῳ αὐτῶν,

MS. A. (α) ὁρᾷν, (β) αἰχμαλωσίας, καὶ αἰχμαλωτίσθητι ἡμέρας (γ)
οἴκου σου (δ) ἐξελεύσῃ σὺ ἑσπέρας ἐνώπιον αὐτῶν, ὡς ἐκπορεύεται
(ε) ἐξήνεγκα ὡς σκεύη αἰχμαλωσίας (ζ) ὤρυξα (η) τοῖχον τῇ χει-
ρὶ, καὶ (θ) πρὸς μὲ τοπρωῒ, (ι) Ἰσραὴλ ὁ παραπικραίνων, (κ) Εἰπὸν τῷ
ἄρχοντι καὶ τῷ ἀφηγουμένῳ Ἱερουσαλὴμ, καὶ

CAP. XII.

ET factus eſt ſermo Domini 1
ad me, dicens; Fili hominis, (a) 2
in medio iniquitatum eorum tu
habitas: qui oculos habent ad vi-
dendum, & non vident: & au-
res habent ad audiendum, & non
audiunt; quia domus (b) exaſpe-
rans eſt. Et tu, fili hominis, fac 3
tibi vaſa captivitatis, per diem
coram eis: & captivaberis de lo-
co tuo in locum alterum in con-
ſpectu eorum; ut videant, quia
domus exaſperans eſt. Et profe- 4
res vaſa tua, vaſa captivitatis,
per diem in oculis eorum: &
tu egredieris veſperè, ſicut egre-
ditur (c) captivus, In conſpe- 5
ctu eorum. Perfode tibi parie-
tem, & tranſibis per eum, In 6
conſpectu eorum. Super humeros
aſſumêris, & abſconditus egre-
dieris: faciem tuam cooperies,
& non videbis terram: quia
portentum dedi te domui Iſrael.
Et feci ſic juxta omnia, quæ man- 7
daverat mihi: vaſáq; protuli (d)
captivitatis ꝑ diē: & ad veſperā
perfodi mihi parietem: & abſ-
conditus egreſſus ſum: Super
humeros aſſumptus ſum in con-
ſpectu eorum. Et factus eſt ſer- 8
mo Domini manè ad me, dicens;
Fili hominis, non dixerunt ad te 9
domus Iſrael, domus exaſperans,
Quid tu facis? Dic ad eos; 10
Hæc dicit Dominus Dominus;
(c) Princeps, & dux in Hieruſa-
lem, & omni domui Iſrael, qui
ſunt in medio eorum,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

20 בְּדִיל דִּבְקְיָמַי יְהָכוּן וְיָת דִּינַי יִטְּרוּן וְיַעְבְּדוּן יָתְהוֹן וִיהוֹן קֳדָמַי לְעַם וַאֲנָא אֱהֵוֵי לְהוֹן
21 לֶאֱלָהּ׃ בָּתַר פּוּלְחַן שִׁקּוּצֵיהוֹן וְתוֹעֲבָתְהוֹן לִבְּהוֹן טָעֵי פּוּרְעָנוּת אָרְחָתְהוֹן בְּרֵישֵׁיהוֹן
22 יְהָבֵית אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים׃ וּנְטַלוּ כְרוּבַיָּא יָת גַּדְפֵּיהוֹן וְגַלְגַּלַיָּא לָקֳבְלֵיהוֹן וִיקָר אֱלָהָא
23 דְּיִשְׂרָאֵל עֲלֵיהוֹן מִלְּעֵילָּא׃ וְאִסְתַּלַּק יְקָרָא דַּייָ מִן גּוֹ קַרְתָּא וּשְׁרָא עַל טוּר
24 זֵיתָא דְּמִמַּדְנַח לְקַרְתָּא׃ וְרוּחַ נְטַלְתַּנִי וְאוֹבֵילַתְנִי לִמְדִינַת אַרְעָא כַסְדָּאֵי לְוָת בְּנֵי
גָלוּתָא בְּחֶזְוָא בְּרוּחַ נְבוּאָה דִּשְׁרַת עֲלַי מִן קֳדָם יְיָ וְאִסְתַּלַּק מִנִּי חֶזְוָא דַּחֲזֵיתִי׃
25 וְאִתְנַבֵּיתִי לִבְנֵי גָלוּתָא יָת כָּל פִּתְגָמַיָּא דַּייָ דְּאַחְזְיַנִי׃

יב

1 וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי לְמֵימָר׃ בַּר אָדָם בְּגוֹ עַמָּא סָרְבָנָא אַתְּ יָתֵיב דִּי עֵינִין
2 לְהוֹן לְמֶחֱזֵי וְלָא חָזַן וְאוּדְנִין לְהוֹן לְמִשְׁמַע וְלָא שָׁמְעִין אֲרֵי עַם סָרְבָן אִנּוּן׃ וְאַתְּ בַּר
3 אָדָם אַתְקֵין לָךְ מָנֵי גָלוּתָא וּגְלֵי בִּימָמָא לְעֵינֵיהוֹן וְתִגְלֵי מֵאַתְרָךְ לַאֲתַר אוֹחֲרָן לְעֵינֵיהוֹן
4 מָאִם יִדְחֲלוּן אֲרֵי עַם סָרְבָן אִנּוּן׃ וְתַפֵּיק מָנָךְ כְּמָנֵי גָלוּתָא בִּימָמָא לְעֵינֵיהוֹן וְאַתְּ
5 תִּפּוֹק בְּרַמְשָׁא לְעֵינֵיהוֹן כְּמַפְּקֵי גָלוּתָא׃ לְעֵינֵיהוֹן חֲתַר לָךְ בְּכוּתְלָא וְתִפּוֹק בֵּיהּ׃
6 לְעֵינֵיהוֹן עַל כַּתְפָּא תִּטּוֹל בְּקִבְלָא תִּפּוֹק אַפָּךְ תְּכַסֵּי וְלָא תֶחֱזֵי יָת אַרְעָא אֲרֵי אָת יְהַבְתָּךְ
7 לְבֵית יִשְׂרָאֵל׃ וַעֲבַדִית כֵּן כְּמָא דְּאִתְפַּקְּדִית מָנַי אַפֵּיקִית כְּמָנֵי גָלוּתָא בִּימָמָא
וּבְרַמְשָׁא אִתְחַתְרִית לִי בְּכוּתְלָא בְּיַד בְּקִבְלָא נְפַקִית עַל כַּתְפָּא נְטָלִית לְעֵינֵיהוֹן׃
8 וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי בְּצַפְרָא לְמֵימָר׃ בַּר אָדָם הֲלָא אִם יֵימְרוּן 9
10 לָךְ בֵּית יִשְׂרָאֵל עַמָּא סָרְבָנָא מָא אַתְּ עָבֵיד׃ אֱמַר לְהוֹן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים עַל רַבָּא
מַטַּל נְבוּאֲתָא הָדָא בִּירוּשְׁלֶם וְכָל בֵּית יִשְׂרָאֵל דְּאִנּוּן בֵּינֵיהוֹן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ut ambulent in pactis meis, & judicia mea ſervent & faciant ea: 20
& erunt coram me in populum, & ego ero eis in Deum. Et poſt cul- 21
tum idolorum ſuorum & abominationum ſuarum cor eorum errat: ul-
tionem viarum ſuarum in caput eorum dabo, dicit Dominus Deus. Et 22
levaverunt Cherubim alas ſuas & rotæ è regione eorum, & gloria Dei
Iſrael ſuper eis deſuper. Et elevata eſt gloria Domini de medio civita- 23
tis, & reſedit ſuper montem Oliveti qui eſt ad Orientem civitatis. Et
ſpiritus ſuſtulit me, & adduxit me in provinciam terræ Chaldæorum ad fi- 24
lios tranſmigrationis in viſione ſpiritus prophetiæ qui reſedit ſuper me à
facie Domini: & receſſit à me viſio quam vidi. Et prophetavi filiis tranſ- 25
migrationis omnia verba Domini quæ oſtenderat mihi.

CAP. XII.

ET factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini ad me, dicens: Fili 1
hominis, in medio populi contumacis tu habitas, qui oculos habent ad 2
videndum, & non vident; & aures ad audiendum, & non audiunt: quia
populus contumax eſt. Tu autem fili hominis præpara tibi vaſa tranſmi- 3
grationis, & tranſmigra in die ante oculos eorum, & tranſmigrabis de
loco tuo ad locum alium in oculis eorum: fortè timebunt, quia populus
contumax eſt. Et efferes vaſa tua ſicut vaſa tranſmigrationis per diem in 4
oculis eorum, & tu egredieris veſperè in oculis eorum ſicut egrediuntur
tranſmigrantes. Ante oculos eorum perfode tibi in pariete, & egredieris 5
per eum. Ante oculos eorum in humero tolles, in tenebris egredieris, 6
faciem tuam operies & non videbis terram, quia ſignum dedi te domui
Iſrael. Et feci ſicut juſſus fueram, vaſa mea eduxi ſicut vaſa tranſmigrati- 7
onis per diem, & veſperi fodi mihi in pariete manu, in tenebris exii, &
ſuper humerum ſuſtuli ante oculos eorum. Et factum eſt verbum prophe- 8
tiæ à facie Domini ad me manè dicens: Fili hominis, ſi utique dixerint 9
tibi domus Iſrael populus contumax, Quid tu facis? Dic tu eis: Hæc dicit 10
Dñs Deus, Super principem eſt onus prophetiæ hujus in Jeruſalem, &
ſuper omnem domum Iſrael qui ſunt in medio ejus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

20 ܘܢܗܠܟܘܢ ܒܦܘܩܕܢܝ. ܘܢܛܪܘܢ ܕܝܢܝ. ܘܢܥܒܕܘܢ ܐܢܘܢ. ܘܢܗܘܘܢ ܠܝ ܠܥܡܐ. ܘܐܢܐ *
21 ܐܗܘܐ ܠܗܘܢ ܠܐܠܗܐ. *ܘܕܒܬܪ ܪܓܬܐ ܕܦܬܟܪܝܗܘܢ ܘܕܛܢܦܘܬܗܘܢ ܐܙܠ ܗܘܐ ܠܒܗܘܢ..
22 ܐܘܪܚܬܗܘܢ ܒܪܫܝܗܘܢ ܦܪܥܬ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. * ܘܐܪܝܡܘ ܟܪܘܒܐ ܟܢܦܝܗܘܢ. ܘܓܝܓܠܐ
23 ܥܡܗܘܢ. ܘܫܘܒܚܗ ܕܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܥܠܝܗܘܢ ܠܥܠ ܡܢܗܘܢ. * ܘܐܬܪܝܡ ܫܘܒܚܗ ܕܡܪܝܐ
24 ܡܢ ܓܘ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܩܡ ܥܠ ܛܘܪܐ ܕܡܕܢܚܗ ܕܡܕܝܢܬܐ. * ܘܪܘܚܐ ܫܩܠܬܢܝ.
ܘܐܝܬܝܬܢܝ ܠܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ ܠܫܒܝܬܐ. ܒܚܙܘܐ ܘܒܪܘܚܐ ܕܐܠܗܐ. ܘܣܠܩ ܠܗ ܡܢܝ
25 ܚܙܘܐ ܕܚܙܝܬ. * ܘܡܠܠܬ ܥܡ ܫܒܝܬܐ. ܠܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܕܚܘܝܢܝ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܒ *

1 * ܘܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪܗ ܕܐܢܫܐ. ܒܓܘ ܒܝܬܐ ܡܡܪܡܪܢܐ ܝܬܒ ܐܢܬ.
2 ܕܥܝܢܐ ܐܝܬ ܠܗܘܢ ܘܠܐ ܚܙܝܢ. ܘܐܕܢܐ ܐܝܬ ܠܗܘܢ ܘܠܐ ܫܡܥܝܢ. ܡܛܠ ܕܒܝܬܐ ܗܢܘܢ
3 ܡܡܪܡܪܢܐ. * ܐܢܬ ܕܝܢ ܒܪܢܫܐ. ܥܒܕ ܠܟ ܡܐܢܐ ܕܫܒܝܬܐ. ܘܐܫܬܢܐ ܒܐܝܡܡܐ
4 ܠܥܝܢܝܗܘܢ : ܡܢ ܐܬܪܟ ܠܐܬܪܐ ܐܚܪܢܐ ܕܢܚܙܘܢ. ܡܛܠ ܕܒܝܬܐ ܗܢܘܢ ܡܡܪܡܪܢܐ. * ܘܐܦܩ
ܡܐܢܝܟ ܐܝܟ ܡܐܢܐ ܕܫܒܝܬܐ ܒܐܝܡܡܐ ܠܥܝܢܝܗܘܢ. ܘܐܢܬ ܦܘܩ ܒܪܡܫܐ ܐܝܟ ܕܫܒܝܐ.
5 * ܘܐܬܪܘܥ ܫܘܪܐ ܠܥܝܢܝܗܘܢ. ܘܦܘܩ ܒܗ. * ܘܫܩܘܠ ܡܫܩܠܐ ܥܠ ܟܬܦܟ. ܘܦܘܩ
6 ܒܚܫܘܟܐ. ܘܦܪܨܘܦܟ ܟܣܝ ܘܠܐ ܬܚܙܐ ܠܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܐܬܐ ܝܗܒܬܟ ܠܒܝܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ.
7 * ܘܥܒܕܬ ܗܟܢܐ ܐܝܟ ܕܦܩܕܢܝ. ܡܐܢܝ ܐܦܩܬ ܒܐܝܡܡܐ. ܐܝܟ ܡܐܢܐ ܕܫܒܝܬܐ. ܘܐܫܝܬܐ
8 ܐܬܪܥܬ ܒܪܡܫܐ. ܘܒܚܫܘܟܐ ܢܦܩܬ. ܘܥܠ ܟܬܦܝ ܫܩܠܬ ܠܥܝܢܝܗܘܢ. * ܘܗܘܐ ܠܘܬܝ
9 ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܒܨܦܪܐ. ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ. ܠܐ ܐܡܪܘ ܠܟ ܒܝܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ
10 ܒܝܬܐ ܡܡܪܡܪܢܐ. ܡܢܐ ܥܒܕ ܐܢܬ. * ܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܪܒܐ
ܢܫܩܘܠ ܡܫܩܠܐ ܗܢܐ ܒܐܘܪܫܠܡ. ܘܟܠܗܘܢ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܥܡܗ.

Et ambulabunt in præceptis meis, judicia 20 mea obſervabunt ac perficient, eruntque mihi populus, & ego ero illis Deus. Quorum e- 21 nim cor ſtudio idolorum & ſpurcitiarum ſuarum ferebatur, horum viam rependam in caput ipſorum, ait dominorum Dominus. De- 22 inde cùm extuliſſent Cherubini alas ſuas, & rotæ cum eis eſſent, & gloria Dei Iſraelis eſſet ſuper eos; Extulit ſe glória Domini de 23 medio urbis, ſubſtititque ſupèr montem qui eſt ad plagam urbis Orientalem. Me autem 24 ſuſtulit ſpiritus, perduxitque in terram Chaldæorum ad captivos, in viſione & ſpiritu Dei : ſic receſſit à me viſio quam videbam : Et retuli captivis cunctos Domini ſermones quos indicaverat mihi.

CAP. XII.

Et fuit ad me ſermo Domini, dicendo; 1 Fili hominis, in medio domûs contumacis tu 2 ſedes, qui oculos habent, nec vident; aures habent, nec audiunt, quia domus ſunt contumax. Tu ergò fili hominis, para tibi vaſa 3 migrationis, & migra interdiu, ſpectantibus ipſis de loco tuo in alium locum, ut videant; nam domus ſunt rebellis. Vaſa tua, 4 ut vaſa migrationis educito, *idque* interdiu, ſpectantibus ipſis; tu deinde egreditor ſub veſperam, ut migraturus. Effringe parietem 5 cernentibus ipſis, perque ipſum egredere. Sarcinam bajulato ſuper humerum tuum, & 6 tenebroſâ *nocte* egreditor; faciem tuam tegito, ne terram aſpicias : nam typum propono te Iſraelitis. Sic itaque feci, quemadmo- 7 dum præcepit mihi : vaſa mea interdiu eduxi ut vaſa migrationis : parietem ſub veſperam perrupi, & obſcurâ *nocte* egreſſus ſum, ſuper humerum meum *ſarcinam* bajulans, cernentibus ipſis. Deinde fuit ad me ſermo Domini 8 matutino tempore, dicendo; Fili hominis, 9 Si tibi dixerint Iſraelitæ, domus iſta rebellis, Quid agis? Dic illis; Sic ait Do- 10 minus dominorum, Maximus *inter vos* bajulabit hujuſcemodi ſarcinam in Jeruſalem, & omnes Iſraelitæ cum ipſo.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لكي يسيروا في أوامري * ويحفظوا حقوقي ويصنعوها * ويكونوا لي شعبا * وانا اكون 20
لهم الها يقول الرب * وكقلوب رذائلهم وآثامهم والشرور التي صنعوها * كما سار قلبهم * 21
اعطيت طرقهم على رؤوسهم يقول ادوناي الرب * ورفعت الشاروبيم اجنحتها * والبكرات الى 22
جانبها * ومجد اله اسرائيل كان عليها من فوقها * وصعد مجد الرب من وسط المدينة * 23
ووقف على الجبل الذي كان مقابل المدينة * واخذتني روح واتت بي الى ارض 24
الكلدانيين الى السبي * بوحي بروح الله * واستيقظت من الرويا التي رايتها * وتكلمت في 25
السبي بجميع اقوال الرب التي اظهرها الى الرب *

* الفصل الثاني عشر *

* وكان قول الرب الى قايلا * يا ابن الانسان * في وسط 1 2
ظلاماتهم انت تسكن * هولاء الذين لهم اعين لينظروا فلا ينظرون * ولهم اذان
ليسمعوا فلا يسمعون * من اجل انهم بيت ممرمر هو * وانت يا ابن الانسان * اصنع لذاتك 3
آلات السبي * وانسبي نهارا امامهم * فتنسبي من بيتك الى موضع اخر امامهم كي
ينظروا * من اجل انهم بيت ممرمر هو * وتخرج آلاتك آلة السبي نهارا لعيونهم * وتخرج 4
انت مساء قدامهم * كما يخرج المسبي قدامهم * وانقب لذاتك في الحايط وتخرج منه قدامهم * 5
* وتصعد على الاكتاف * وتخرج مختفيا * اذ تغطي وجهك ولا تنظر الارض * من اجل اني 6
اعطيتك آية لبيت اسرائيل * وصنعت هكذا بجميع ما امرني واخرجت آلتي نهارا * 7
مثل آلة السبي * ونقبت الحايط بيدي مساء لذاتي * وخرجت مختفيا * وصعدت على
الاكتاف قدامهم * وكان قول الرب الى بالغداة قايلا * يا ابن الانسان * اليس قالوا لك 8 9
بيت اسرائيل الممرمر * ماذا تصنع انت * فقل لهم * هكذا يقول الرب الرب * قل للرئيس 10
ولمقدم اورشليم * ولكل بيت اسرائيل الذين هم في وسطها *

ut ambulent in præceptis meis, cuſtodiant 20 *legitima mea, & perficiant ea, ſintque mihi populus, & ego ſim ipſis Deus, ait Dominus. Sed ſecundùm corda eorum* 21 *abominanda & iniqua, & ſcelera quæ commiſerunt, prout ambulavit cor eorum; reflexi vias eorum in capita ipſorum, dicit Adonai Dominus. Deinde extu-* 22 *lerunt Cherubini alas ſuas, rotis ad ipſorum latera, & gloriâ Dei Iſraelis ſuper ipſos deſupèr exiſtentibus. Aſcen-* 23 *ditque gloria Domini è medio urbis, & conſtitit ſuper montem qui erat ex adverſo urbis. Tum aſſumpſit me ſpiri-* 24 *tus, perduxitque me in terram Chaldæorum ad captivos, in revelatione in ſpiritu Dei : & cùm evigilâſſem ex viſione quam videram; Locutus ſum* 25 *inter captivos omnes Domini ſermones quos indicaverat mihi Dominus.*

CAP. XII.

Præterea fuit ſermo Domini ad me, 1 *dicens; O fili hominis, in medio impie-* 2 *tatum iſtorum tu habitas : iſtorum inquam, qui oculos habent ad videndum, nec vident; aures habent ad audiendum, nec audiunt; eò quòd domus refractaria ſunt iſti. Quarè tu O fili ho-* 3 *minis, fac tibi inſtrumenta migrationi accommoda, & migra interdiu coram eis : migrabis autem è domo tua in alium locum coram ipſis ita ut videant : quandoquidem domus refractaria hi ſunt. Inſtrumenta tua, nempè inſtrumenta mi-* 4 *grationis educes interdiu ob oculos eorum; tum egredieris tu veſpere coram eis, quemadmodum egredi ſolet captivus, idque coram ipſis. Foramen aperi tibi* 5 *in pariete, & egreditor inde coram eis. Conſcendes humeros, & egredieris clan-* 6 *culùm obvelatâ facie ita ut non videas terram : nam dedi te ſignum domui Iſraelis. Feci ergò ſic, omnino prout* 7 *præceperat mihi : nam eduxi inſtrumenta mea interdiu velut inſtrumenta captivitatis, parietem meâ manu veſpere mihi perfodi, clanculùm egreſſus ſum, humeroſque conſcendi coram eis. Rurſus* 8 *fuit ſermo Domini ad me in matutino, dicens; O fili hominis, annon dicturi* 9 *tibi ſunt refractaria domus Iſraelis, Quid agis tu? Dic eis; Ita dicit Do-* 10 *minus Deus : dic inquam principi, & præpoſito Jeroſolymæ, totique domui Iſraelis qui ſunt in medio ejus;*

יְחֶזְקֵאל : יב

.eis fiet sic ,feci Sicut :vestrum portentum Ego , Dic
11 אֱמֹר אֲנִי מוֹפֶתְכֶם כַּאֲשֶׁר עָשִׂיתִי כֵּן יֵעָשֶׂה לָהֶם
,corū medio in qui *prælatus* Et .ibunt captivitate in ,transmigrationē In
12 בַּגּוֹלָה בַשְּׁבִי יֵלֵכוּ׃ וְהַנָּשִׂיא אֲשֶׁר־בְּתוֹכָם
,perfodient ,parietem per egredietur & ,caligine in portabit humerū *ad*
אֶל־כָּתֵף יִשָּׂא בָּעֲלָטָה וְיֵצֵא בַּקִּיר יַחְתְּרוּ
oculo *in* videat non *quod propter* ,operiet *suas facies* :ipsum per *educendū ad*
לְהוֹצִיא בוֹ פָּנָיו יְכַסֶּה יַעַן אֲשֶׁר לֹא־יִרְאֶה לַעַיִן
prehendetur & ,eum super meum rete extendam Et .terram ipse
13 הוּא אֶת־הָאָרֶץ׃ וּפָרַשְׂתִּי אֶת־רִשְׁתִּי עָלָיו וְנִתְפַּשׂ
ipsam & ,Chasdim terram , Babel in eum adducam & : mea sagena in
בִּמְצוּדָתִי וְהֵבֵאתִי אֹתוֹ בָבֶלָה אֶרֶץ כַּשְׂדִּים וְאוֹתָהּ
ejus *circuitibus* qui omnes Et .morietur ibi & , videbit non
14 לֹא־יִרְאֶה וְשָׁם יָמוּת׃ וְכֹל אֲשֶׁר סְבִיבֹתָיו
: ventum omnem in dispergam ejus *militum alas omnes* & ,ejus auxilium
עֶזְרֹה וְכָל־אֲגַפָּיו אֱזָרֶה לְכָל־רוּחַ
me spargendo in ,Dominus *ego* quòd scient Et .eos post *evacuabo* gladium &
15 וְחֶרֶב אָרִיק אַחֲרֵיהֶם׃ וְיָדְעוּ כִּי־אֲנִי יְהוָה בַּהֲפִיצִי
relinquam Et .terras in eos ventilavero & , gentes in eos
16 אוֹתָם בַּגּוֹיִם וְזֵרִיתִי אוֹתָם בָּאֲרָצוֹת׃ וְהוֹתַרְתִּי
narrent ut ; peste à & , fame à , gladio à , *numeri* viros eis ex
מֵהֶם אַנְשֵׁי מִסְפָּר מֵחֶרֶב מֵרָעָב וּמִדָּבֶר לְמַעַן יְסַפְּרוּ
, *illuc* ingredientur *quò* , gentibus in suas abominationes omnes
אֶת־כָּל־תּוֹעֲבוֹתֵיהֶם בַּגּוֹיִם אֲשֶׁר־בָּאוּ שָׁם
me ad Domini verbum fuit Et .Dominus *ego* quòd scient &
17 וְיָדְעוּ כִּי־אֲנִי יְהוָה׃ וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי
tuas aquas & , *comedes* tremore in tuum panem ,hominis Fili : dicendo
18 לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם לַחְמְךָ בְּרַעַשׁ תֹּאכֵל וּמֵימֶיךָ
: terræ populum ad *dices* Et .*bibes solicitudine &* commotione in
19 בְּרָגְזָה וּבִדְאָגָה תִּשְׁתֶּה׃ וְאָמַרְתָּ אֶל־עַם הָאָרֶץ
humum ad , Jerusalaim *habitatoribus* Deus Dominus dixit Sic
כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה לְיוֹשְׁבֵי יְרוּשָׁלַםִ אֶל־אַדְמַת
desolatione in suas aquas & ,comedent *solicitudine in* suū Panem : Israel
יִשְׂרָאֵל לַחְמָם בִּדְאָגָה יֹאכֵלוּ וּמֵימֵיהֶם בְּשִׁמָּמוֹן
iniquitatē propter ,sua plenitudine à ejus terra desoletur ut : bibent
יִשְׁתּוּ לְמַעַן תֵּשַׁם אַרְצָהּ מִמְּלֹאָהּ מֵחֲמַס
,desolabuntur habitatæ civitates Et .ea in habitantium omnium
20 כָּל־הַיֹּשְׁבִים בָּהּ׃ וְהֶעָרִים הַנּוֹשָׁבוֹת תֶּחֱרַבְנָה
fuit Et .Dominus *ego* quòd scietis & : erit deserta terra &
21 וְהָאָרֶץ שְׁמָמָה תִהְיֶה וִידַעְתֶּם כִּי־אֲנִי יְהוָה׃ וַיְהִי
proverbium quod ,hominis Fili : dicendo me ad Domini verbum
22 דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם מָה־הַמָּשָׁל
, dies Prolongabūtur : dicendo , Israel *humo super* vobis istud
הַזֶּה לָכֶם עַל־אַדְמַת יִשְׂרָאֵל לֵאמֹר יַאַרְכוּ הַיָּמִים
Dominus dixit Sic : eos ad dic Ideo ? visio omnis *peribit* &
23 וְאָבַד כָּל־חָזוֹן׃ לָכֵן אֱמֹר אֲלֵיהֶם כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי
illud proverbiū dicent non & ,istud proverbium feci Cessare : Deus
יֱהוִה הִשְׁבַּתִּי אֶת־הַמָּשָׁל הַזֶּה וְלֹא־יִמְשְׁלוּ אֹתוֹ
, dies Appropinquaverūt : eos ad loquere *quinimo* : Israel in ultrà
עוֹד בְּיִשְׂרָאֵל כִּי אִם־דַּבֵּר אֲלֵיהֶם קָרְבוּ הַיָּמִים
,frustra visio omnis ultrà erit non Quia .visionis omnis verbum &
24 וּדְבַר כָּל־חָזוֹן׃ כִּי לֹא יִהְיֶה עוֹד כָּל־חֲזוֹן שָׁוְא
Dominus ego Quia .Israel domus medio in : *lenientis* divinatio &
25 וּמִקְסַם חָלָק בְּתוֹךְ בֵּית יִשְׂרָאֵל׃ כִּי אֲנִי יְהוָה
: amplius protrahetur nec , fiet & ,verbum loquar quod , loquar
אֲדַבֵּר אֵת אֲשֶׁר אֲדַבֵּר דָּבָר וְיֵעָשֶׂה לֹא תִמָּשֵׁךְ עוֹד
,illud faciam & ,verbum loquar ,*rebellionis* domus ,vestris diebus in sed
כִּי בִימֵיכֶם בֵּית הַמֶּרִי אֲדַבֵּר דָּבָר וַעֲשִׂיתִיו
.Deus Dominus dixit
נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִה׃

Versio VULG. LAT.

11 Dic; Ego portentum vestrum: quomodò feci, sic fiet illis: in transmigrationem, & in captivitatem ibunt. 12 Et dux, qui est in medio eorum, in humeris portabitur, in caligine egredietur: parietem perfodient ut educant eum: facies ejus operietur ut non videat oculo terram. 13 Et extendam rete meum super eum, et capietur in sagena mea: & adducam eum in Babylonem in terram Chaldæorum: & ipsam non videbit, ibíque morietur. 14 Et omnes qui circa eum sunt, præsidium ejus, & agmina ejus, dispergam in omnem ventum: & gladium evaginabo post eos. 15 Et scient quia ego Dominus, quando dispersero illos in Gentibus, & disseminavero eos in terris. 16 Et relinquam ex eis viros paucos, à gladio, et fame, & pestilentia: ut enarrent omnia scelera eorum in Gentibus, ad quas ingredientur: & scient quia ego Dominus. 17 Et factus est sermo Domini ad me, dicens; 18 Fili hominis, panem tuum in conturbatione comede: sed & aquam tuam in festinatione & mœrore bibe. 19 Et dices ad populum terræ; Hæc dicit Dominus Deus ad eos, qui habitant in Jerusalem in terra Israel; Panem suum in solicitudine comedent, & aquam suam in desolatione bibent; ut desoletur terra à multitudine sua, propter iniquitatem omnium qui habitant in ea. 20 Et civitates, quæ nunc habitantur, desolatæ erunt, terráque deserta: & scietis quia ego Dn̄s. 21 Et factus est sermo Dn̄i ad me, 22 dicens; Fili hominis, quod est proverbium istud vobis in terra Israel, dicentium; In longum differentur dies, et peribit omnis visio? 23 Ideò dic ad eos; Hæc dicit Dominus Deus; Quiescere faciam proverbium istud, neque vulgò dicetur ultrà in Israel: & loquere ad eos quòd appropinquaverint dies, & sermo omnis visionis. 24 Non enim erit ultrà omnis visio cassa, neq; divinatio ambigua in medio filiorū Israel. 25 Quia ego Dn̄s loquar: & quodcunque locutus fuero verbum, fiet, et non prolongabitur ampliús: sed in diebus vestris, domus exasperans, loquar verbum, et faciam illud, dicit Dominus Deus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

11 Εἰπὸν, Ὅτι ἐγὼ τέρατα (λ) ποιῶ, ὃν τρόπον πεποίηκα, οὕτως ἔσται (μ) αὐτῷ. ἐν μετοικεσίᾳ ϗ ἐν αἰχμαλωσίᾳ πορεύσονται. 12 Καὶ ὁ (ν) ἄρχων ἐν μέσῳ αὐτῶν ἐπ' ὤμων ἀρθήσεται, καὶ κεκρυμμένος ἐξελεύσεται διὰ τοῦ τοίχου, ϗ (ξ) διορύξει τοῦ ἐξελθεῖν αὐτὸν δι' αὐτοῦ, τὸ πρόσωπον αὐτοῦ συγκαλύψει, ὅπως μὴ ὁραθῇ ὀφθαλμῷ, ϗ αὐτὸς τὴν γῆν οὐκ ὄψεται. 13 Καὶ ἐκπετάσω τὸ δίκτυόν μου ἐπ' αὐτὸν, ϗ συλληφθήσεται ἐν τῇ περιοχῇ μου, ϗ ἄξω αὐτὸν εἰς Βαβυλῶνα εἰς γῆν Χαλδαίων, ϗ αὐτὴν οὐκ ὄψεται, ϗ ἐκεῖ τελευτήσει. 14 Καὶ πάντας τοὺς κύκλῳ αὐτοῦ τοὺς βοηθοὺς αὐτοῦ, ϗ πάντας τοὺς ἀντιλαμβανομένους αὐτοῦ διασπερῶ εἰς πάντα ἄνεμον, ϗ ῥομφαίαν (ο) ἐκκενώσω ὀπίσω αὐτῶν. 15 Καὶ γνώσονται διότι ἐγὼ κύριος, ἐν τῷ διασκορπίσαι με αὐτοὺς ἐν τοῖς ἔθνεσι, ϗ διασπερῶ αὐτοὺς ἐν ταῖς χώραις. 16 Καὶ ὑπολείψομαι ἐξ αὐτῶν ἄνδρας ἀριθμῷ ἐκ ῥομφαίας, ϗ ἐκ λιμοῦ, ϗ ἐκ θανάτου, ὅπως (π) ἐκδιηγῶνται πάσας τὰς ἀνομίας αὐτῶν ἐν τοῖς ἔθνεσιν οὗ εἰσήλθοσαν ἐκεῖ, ϗ γνώσονται ὅτι ἐγὼ κύριος. 17 Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου 18 πρός με, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, τὸν ἄρτον σου μετὰ ὀδύνης φάγεσαι, ϗ τὸ (ρ) ὕδωρ μετὰ βασάνου ϗ θλίψεως πίεσαι. 19 Καὶ ἐρεῖς πρὸς τὸν λαὸν τῆς γῆς, Τάδε (σ) λέγει κύριος τοῖς κατοικοῦσιν Ἱερουσαλὴμ ἐπὶ τῆς γῆς τοῦ Ἰσραὴλ, Τοὺς ἄρτους αὐτῶν (") μετ' ἐνδείας φάγονται, ϗ τὸ ὕδωρ αὐτῶν μετ' ἀφανισμοῦ πίονται, ὅπως ἀφανισθῇ ἡ γῆ σὺν (τ) πληρώματι αὐτῆς· ἐν ἀσεβείᾳ γὰρ 20 πάντες οἱ κατοικοῦντες ἐν αὐτῇ. Καὶ αἱ πόλεις αὐτῶν αἱ κατοικούμεναι ἐξερημωθήσονται, ϗ ἡ (υ) γῆ εἰς ἀφανισμὸν ἔσται, 21 ϗ ἐπιγνώσεσθε διότι ἐγὼ κύριος. Καὶ ἐγένετο 22 λόγος κυρίου πρός με, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, (φ) τίς ἡ παραβολὴ ὑμῖν ἐπὶ τῆς γῆς τοῦ Ἰσραὴλ, λέγοντες, (χ) Μακραὶ αἱ ἡμέραι, ἀπόλωλεν ὅρασις; 23 Διατοῦτο εἰπὸν πρὸς αὐτοὺς, Τάδε (ψ) λέγει κύριος, Καὶ ἀποστρέψω τὴν παραβολὴν ταύτην, ϗ οὐκέτι μὴ εἴπωσι τὴν παραβολὴν ταύτην οἶκος τοῦ Ἰσραὴλ, ὅτι λαλήσεις πρὸς αὐτοὺς, Ἠγγίκασιν αἱ ἡμέραι, ϗ λόγος πάσης ὁράσεως. 24 (ω) Ὅτι οὐκ ἔσται ἔτι πᾶσα ὅρασις ψευδὴς, ϗ μαντευόμενος τὰ πρὸς χάριν 25 ἐν μέσῳ τῶν υἱῶν Ἰσραήλ. Διότι ἐγὼ κύριος λαλήσω τοὺς λόγους μου, λαλήσω καὶ ποιήσω, ϗ οὐ μὴ μηκύνω (α) ἔτι· ὅτι ἐν ταῖς ἡμέραις ὑμῶν (β) οἶκος ὁ παραπικραίνων, λαλήσω λόγον ϗ ποιήσω, (γ) λέγει κύριος.

11 Dic, Quia ego portenta facio: quomodò feci, sic erit ei. In transmigrationem, & in captivitatem ibunt: 12 Et princeps in medio eorum in humeris portabitur, & absconditus egredietur per parietem, & perfodiet, ut exeat ipse per eum: faciem suam cooperiet, ut non aspiciatur oculo: & ipse terram non videbit. 13 Et expandam rete meum super eum, & capietur in septo meo: & ducam eum in Babylonem, in terram Chaldæorum: & ipsam non videbit: & ibi morietur. 14 Et omnes, qui circa eum sunt, auxiliatores ejus, & omnes suscipientes eum disseminabo in omnem ventum: & gladium effundam post eos: 15 Et scient, quia ego Dominus, in dispergendo me eos in gentibus. Et disseminabo eos in regionibus: 16 Et relinquā ex eis viros numero à gladio, & à fame, et à morte: ut narrent omnes iniquitates suas in gentibus, quò ingressi fuerint illuc: & scient, quia ego Dominus. 17 Et factus est sermo Domini ad me, dicens; 18 Fili hominis, panem tuum cum dolore comedes: & aquam cum tormento & tribulatione bibes. 19 Et dices ad populum terræ; Hæc dicit Dominus habitatoribus Hierusalem super terram Israel; Panes suos cum egestate comedent: & aquam suam cum dissipatione bibent: ut dissipetur terra cum plenitudine ejus. In impietate enim omnes, qui habitant in ea: 20 Et civitates eorum, quæ habitantur, in desolationem erunt: & terra in dissipationem erit: & cognoscetis, quia ego Dominus. 21 Et factus est sermo Domini ad me, dicens; 22 Fili hominis, quæ est (f) parabola vobis super terram Israel, dicentes; Longi dies, (g) periit visio? 23 Ideò dic ad eos; Hæc dicit Dominus; Et avertam parabolam istam: & non dicent ultrà parabolam istam domus Israel. Quia loqueris ad eos; Appropinquaverunt dies, & verbum omnis visionis. 24 Non enim erit ultrà omnis visio falsa, & divinans, (h) quæ ad gratiam, in medio filiorum Israel. 25 Quia ego Dominus loquar verba mea, loquar & faciam, & non prolongabo ampliùs: quia in diebus vestris, domus exasperans, loquar verbum, & faciam, dicit Dominus.

MS. A. (λ) ποιῶ ἐμμέσῳ αὐτῶν, ὃν (μ) αὐτοῖς. (ν) ἄρχων αὐτῶν ἐμμέσῳ αὐτῶν ἐπ' ὤμων (ξ) ὀρύξει (ο) ἐκχεῶ (π) ἐκδιηγήσωνται τὰς ἀνομίας (ρ) ὕδωρ σου μετὰ βασάνου ϗ ἐκθλίψεως πίεσαι. (σ) λέγει ἀδωναῒ κύριος (") μετ' ἐνδείας (τ) τῷ πληρώματι (υ) γῆ αὐτῆς εἰς (φ) τίς ὑμῖν ἡ παραβολὴ αὕτη ἐπὶ (χ) Μακρὰν (ψ) λέγει ἀδωναῒ κύριος, Ἀποστρέψω τὴν (ω) Καὶ οὐκ ἔτι ἔσται πᾶσα (α) ἔτι· ἐν τῷ (β) οἶκος ὁ παραπικραίνων, (γ) λέγει ἀδωναῒ κύριος.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 אֱמַר אֲנָא אָתְכוֹן כְּמָא דַעֲבֵדִית כֵּן יִתְעֲבֵיד לְהוֹן בְּגָלוּתָא בְּשִׁבְיָא יְהָכוּן׃ וְרַבָּא
12 דְּבֵינֵיהוֹן עַל כַּתְפָּא יִטּוֹל בְּקַבְלָא יִפּוֹק בְּכוּתְלָא יַחְתְּרוּן לְאַפָּקוּתֵיהּ בֵּיהּ אַפּוֹהִי יְכַסֵּי
13 חֲלָף דְּחָב הוּא וְלָא יֶחֱזֵי יַת אַרְעָא׃ וְאֶפְרוֹס יַת מְצָדְתִּי עֲלוֹהִי וְיִתְאֲחֵד בְּסַרִינְתִּי
14 וְאַגְלֵי יָתֵיהּ לְבָבֶל לִמְדִינַת אַרְעָא כַּסְדָּאֵי וְיָתַהּ לָא יֶחֱזֵי וְתַמָּן יְמוּת׃ וְכֹל דִּי
בְּסַחְרָנוּהִי סַעֲדוֹהִי וְכָל מַשִּׁרְיָתֵיהּ אֲבַדַּר לְכָל רוּחָא וּדְקָטְלִין בְּחַרְבָּא אַגְרֵי בָּתְרֵיהוֹן׃
15 וְיִדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ כַּד אַגְלֵי יָתְהוֹן לְבֵינֵי עַמְמַיָּא וַאֲבַדַּר יָתְהוֹן בִּמְדִינָתָא׃ וְאַשְׁאַר 16
מִנְהוֹן גַּבְרִין דְּמִנְיָן מֵחַרְבָּא מִכַּפְנָא וּמִמּוֹתָא בְּדִיל דִּישְׁתְּעוֹן יַת כָּל תּוֹעֲבָתְהוֹן
17 בְּעַמְמַיָּא דְּאִתְגְּלִיאוּ לְתַמָּן וְיִדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ׃ וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ
18 עִמִּי לְמֵימַר׃ בַּר אָדָם מֵיכְלָךְ בְּזִיעַ תֵּיכוֹל וּמִשְׁתָּךְ בִּצְדוּ וּבְאִשְׁתְּמָמוּ תִּשְׁתֵּי׃ וְתֵימַר
19 לְעַמָּא דְאַרְעָא כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים לְיָתְבֵי יְרוּשְׁלֵם עַל אַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל מֵיכַלְהוֹן
בְּזִיעַ יֵיכְלוּן וּמִשְׁתְּהוֹן בְּאִשְׁתְּמָמוּ יִשְׁתּוֹן בְּדִיל דְּתִצְדֵּי אַרְעָא מִמְּלוֹאָהּ מֵחֲטוֹף
20 כָּל דְּיָתְבִין בַּהּ׃ וְקִרְוַיָּא דַּהֲוָאָה יָתְבָן יֶחֶרְבָן וְאַרְעָא לְצָדוּ תְּהֵי וְתִדְעוּן אֲרֵי
21 אֲנָא יְיָ׃ וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי לְמֵימַר׃ בַּר אָדָם מָא מַתְלָא 22
23 הָדֵין לְכוֹן עַל אַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל לְמֵימַר יוֹרְכוּן יוֹמַיָּא וְתִבְטֵיל כָּל נְבוּאָה׃ בְּכֵן
אֱמַר לְהוֹן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים אֲבַטֵּיל יַת מַתְלָא הָדֵין וְלָא יִמְתְּלוּן יָתֵיהּ עוֹד
24 בְּיִשְׂרָאֵל אֱלָהֵן אִתְנַבֵּי לְהוֹן אִתְקְרַבוּ יוֹמַיָּא וּפִתְגָם כָּל נְבוּאָה׃ אֲרֵי לָא תְהֵי עוֹד
25 כָּל נְבוּאָה שְׁקַר וְקֶסֶם כַּדְבִין בְּגוֹ בְּנֵי יִשְׂרָאֵל׃ אֲרֵי אֲנָא יְיָ אֲמַלֵּיל יַת דַּאֲמַלֵּיל
פִּתְגָמָא וְיִתְקַיַּם וְלָא יִבַּטֵּל עוֹד אֲרֵי בְיוֹמֵיכוֹן עַמָּא סָרְבָנָא אֲמַלֵּל פִּתְגָמָא
וְאַקֵּימִנֵּיהּ אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Dic, Ego signum vestrum : sicut feci sic fiet eis; in transmigrationem & 11
in captivitatem ibunt. Et princeps qui est inter eos in humero portabit, in 12
tenebris egredietur, in pariete fodient ut educant illum per eum : faciem
suam operiet, pro eo quòd peccavit ipse, & non videbit terram. Et ex- 13
tendam rete meum super eum, & capietur in sagena mea; & transferam
eum in Babylonem in provinciam terræ Chaldæorū, & ipsam non videbit,
& ibi morietur. Et omnes qui in circuitu ejus sunt, & adjutores ejus, 14
& omnem exercitum ejus dispergam in omnem ventum : & eos qui oc-
cidunt gladio immittam post eos. Et scient quia ego Dominus, cùm 15
transmigrare fecero eos inter populos, & dispersero eos per provincias.
Et relinquam ex eis viros numeri pauci à gladio, & à fame, & à peste, 16
ut narrent omnes abominationes suas in populis ad quos transmigrave-
runt, & scient quia ego Dominus. Et factum est verbum prophetiæ à fa- 17
cie Domini ad me, dicens : Fili hominis, cibum tuum in tremore come- 18
des, & potum tuum in desolatione & stupore bibes. Et dices populo 19
terræ : Hæc dicit Dominus Deus habitatoribus Jerusalem super terram
Israel, Cibum suum in tremore comedent, & potum suum in stupore bi-
bent, ut desoletur terra à plenitudine ejus propter rapinam omnium ha-
bitantium in ea. Et civitates quæ habitatæ fuerunt, desertæ erunt, & 20
terra in desolationem erit : & scietis quia ego Dominus. Et factum est 21
verbum prophetiæ à facie Dn̄i mecum, dicens : Fili hominis, quod est pro- 22
verbium istud vobis in terra Israel dicendo : In longum differentur dies,
& cessabit omnis prophetia ? Propterea dic eis : Hæc dicit Dn̄s Deus : 23
Cessare faciam proverbium istud, neque erit in proverbium ultrà in Israel:
sed vaticinare eis; Appropinquaverūt dies, & sermo omnis prophetiæ. Non 24
enim erit ultrà omnis prophetia falsa, & divinatio mendacii in medio fili-
orum Israel. Quia ego Dominus loquar, & verbum quod ego locutus fu- 25
ero, firmabitur, & non irritum fiet ampliùs, quia in diebus vestris po-
pule contumax, loquar verbum & confirmabo illud, dicit Dominus
Deus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ.· ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܐܬܟܘܢ. ܐܝܟ ܕܥܒܕܬ ܗܟܢܐ ܢܬܥܒܕ ܠܟܘܢ. ܘܒܫܒܝܬܐ ܬܐܙܠܘܢ. 11
* ܘܪܒܐ ܕܒܟܘܢ ܥܠ ܟܬܦܗ ܢܫܩܘܠ. ܘܒܚܫܘܟܐ ܢܦܘܩ. ܘܢܦܠܘܫ ܫܘܪܐ ܘܢܦܘܩ 12
ܒܗ. ܘܐܦܘܗܝ ܢܟܣܐ. ܕܠܐ ܢܚܙܝܘܗܝ ܠܐܪܥܐ. * ܘܐܦܪܘܣ ܡܨܝܕܬܝ ܥܠܘܗܝ. ܘܢܬܐܚܕ ܒܗ. 13
ܘܐܘܒܠܝܘܗܝ ܠܒܒܠ ܠܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ. ܘܠܐ ܢܚܙܝܗ ܠܐܪܥܐ. ܘܐܦ ܬܡܢ ܢܡܘܬ. * ܘܟܠܗܘܢ 14
ܕܚܕܪܝܢ ܠܗ. ܘܡܥܕܪܝܢ ܠܗ. ܘܡܬܚܝܠܝܢ ܠܗ.· ܐܒܕܪ ܠܟܠ ܪܘܚ. ܘܚܪܒܐ ܐܫܠܘܦ ܒܬܪܗܘܢ. 15
* ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ.· ܕܒܕܪܬ ܐܢܘܢ ܒܝܢܬ ܥܡܡܐ.· ܘܙܪܩܬ ܐܢܘܢ ܒܐܪܥܬܐ. * ܘܐܫܒܘܩ 16
ܡܢܗܘܢ ܓܒܪܐ ܡܢܝܢܐ. ܡܢ ܚܪܒܐ ܘܡܢ ܟܦܢܐ ܘܡܢ ܡܘܬܢܐ. ܕܢܫܬܥܘܢ ܟܠܗܘܢ
ܛܢܦܘܬܗܘܢ ܒܝܢ ܥܡܡܐ ܕܐܙܠܘ ܠܘܬܗܘܢ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܘܗܘܐ ܥܠܝ 17
ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ.· ܠܚܡܟ ܒܪܘܓܙܐ ܬܐܟܘܠ. ܘܡܝܟ ܒܪܘܓܙܐ 18
ܘܒܫܓܘܫܝܐ ܐܫܬܝ. * ܘܐܡܪ ܠܥܡܐ ܕܐܪܥܐ.· ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܠܥܡܘܪܝܗ 19
ܕܐܘܪܫܠܡ. ܘܠܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܠܚܡܗܘܢ ܒܪܘܓܙܐ ܢܐܟܠܘܢ. ܘܡܝܗܘܢ ܒܬܗܪܐ
ܢܫܬܘܢ. ܡܛܠ ܕܬܚܪܒ ܐܪܥܐ ܡܢ ܡܠܝܘܬܗ.· ܡܢ ܥܘܠܐ ܕܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ. * ܘܡܕܝܢܬܐ 20
ܕܡܬܝܬܒܢ ܢܚܪܒܢ. ܘܐܪܥܐ ܠܚܘܪܒܐ ܬܗܘܐ.· ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܘܗܘܐ ܥܠܝ 21
ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ.· ܡܢܘ ܡܬܠܐ ܗܢܐ ܕܡܬܡܬܠܝܢ ܠܟܘܢ ܒܐܪܥܐ 22
ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܐܡܪܝܢ. ܢܓܪܘܢ ܝܘܡܬܐ ܘܬܐܒܕ ܟܠܗ ܚܙܘܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܡܪ ܠܗܘܢ.· 23
ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܡܒܛܠ ܐܢܐ ܠܗ ܠܡܬܠܐ ܗܢܐ. ܘܠܐ ܢܬܡܬܠܘܢ ܬܘܒ
ܒܐܝܣܪܝܠ. ܐܠܐ ܐܡܪ ܠܗܘܢ.· ܕܩܪܒܘ ܝܘܡܬܐ ܘܨܒܘܬܐ ܕܟܠܗ ܚܙܘܐ. * ܘܠܐ ܬܘܒ ܢܗܘܐ 24
ܟܠ ܚܙܘܐ ܕܓܠܐ.· ܘܡܬܚܙܝܢܘܬܐ ܕܦܠܓܘܬܐ ܒܝܢܬ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. * ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܐܢܐ 25
ܡܪܝܐ ܐܡܠܠ. ܘܐܡܪ ܐܢܐ ܡܠܬܐ. ܘܥܒܕ ܐܢܐ ܠܗ. ܘܠܐ ܡܬܘܚܪ ܐܢܐ. ܘܒܝܘܡܝܟܘܢ
ܒܝܬܐ ܡܡܪܡܪܢܐ.· ܐܡܪ ܡܠܬܐ ܘܐܥܒܕܝܗ.· ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ.

* Dic etiam illis, Ego ſum typus veſter: quemadmodum feci, ſic fiet vobis. In captivitatem abibitis, 11
Et qui maximus eſt inter vos, ſuper humerum ſuum bajulabit, & obſcurâ *nocte* egredietur: parietem perrumpet, & per ipſum egredietur: faciem ſuam operiet, ne terram videat. 12
At expandam rete meum ſuper ipſum, eóque capietur: & deducam ipſum in Babylonem terram Chaldæorum, nec terram videbit, quin etiam ibi morietur. 13
Et omnes ipſi circunjacentes, quique ſubſidio & munimini ſunt ipſi, diſpergam in omnem ventum, gladiúmque mittam poſt eos: 14
Et experientur me eſſe Dominum qui diſſipavi eos inter gentes, perque terras diſperſi. 15
Reliquos tamen faciam ex eis viros aliquot à gladio fame & peſte; ut enarrent omnes abominationes ſuas inter gentes ad quas perrexerint, & cognoſcant me eſſe Dominum. 16
Rurſus fuit ad me ſermo Domini, dicendo; 17
Fili hominis, panem tuum cum tremore comedito, & aquam tuam tremens ac pavidus bibito: 18
Tum dicito populo *hujus* terræ; Sic dicit dominorum Dominus habitatoribus Jeruſalem & terræ Iſraeliticæ; Panem ſuum pavidi comedent, & aquam ſuam attoniti bibent. Nam vaſtanda eſt univerſa terra propter ſcelus omnium incolarum ejus: 19
Urbes habitatæ vaſtabuntur, & terra in conſumptionem erit: ſcietíſque me eſſe Dominum. 20
Iterum fuit ad me ſermo Domini, dicendo; 21
Fili hominis, quid ſibi vult proverbium iſtud quod de vobis vertunt in terra Iſraelis, dicentes; Protrahentur dies, & peribit omnis viſio? 22
Propterea dic eis, Sic ait Dominus dominorum, Efficiam ut ceſſet hujuſmodi proverbium, nec ampliùs vertant illud in Iſraele: quin potiùs dic eis, Imminent dies, & eventu comprobabitur omnis viſio, 23
Nec erit ampliùs ulla viſio falſa, aut prædictio dubia inter filios Iſraelis. 24
Nam ego Dominus dixi, & dico verbum quod facturus ſum, nec diu moraturus; ſed in diebus veſtris ô domus contumax, verbum dicam & exequar, ait Dominus dominorum. 25

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* قل اني انا اصنع في وسطها ايات * كما صنعت هكذا يكون لهم * في الجلوة والسبي 11
يمضون * ورييسهم في وسطها يحمل على الاكتاف * ويخرج مختفيا من الحايط * وينقب ليخرج 12
منه * ويغطي وجهه كي لا ينظر بعين * وهو لا يعاين الارض * واطرح شبكتي عليه * 13
ويوخذ بزمامي * واسوقه الى بابل الى ارض الكلدانيين * ولا يعاينها * ويموت هناك * وجميع 14
معينيه الذين حوله * وجميع الذين يساعدونه * ابددهم لكل ريح * واسكب خلفهم سيفا *
* ويعلمون اني انا الرب * عند ما افرقهم في الامم * وابددهم في البلدان * واترك منهم رجالا 15 16
من السيف بعدد * ومن الجوع والموت * كي يخبروا باثامهم بالامم حيث يدخلون هناك *
ويعلمون اني انا الرب * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان * تاكل خبزك بوجع * 17 18
وتشرب ماءك بعذاب وضيقة * وتقول لشعب الارض * هكذا يقول ادوناي الرب لسكان 19
ايروشليم على سكان اسرايل * ياكلون خبزهم بالقلة * ويشربون ماءهم بفناء * كي تفني
الارض بكمالها * لان جميع السكان فيها بالنفاق * ومدنهم العامرة تخرب * وارضهم تصير 20
للفناء * ويعلمون اني انا الرب * وكان قول الله الي قايلا * يا ابن الانسان * ما هذا المثل 21 22
الذي لكم على ارض اسرايل * قايلين * طالت الايام * وانقطعت الرويا * لاجل هذا قل لهم * 23
هكذا يقول ادوناي الرب * اصرف هذا المثل * ولا يقولون هذا المثل ايضا بيت اسرايل *
لانك تتكلم معهم * اقتربت الايام وقول كل رويا * ولا تكون ايضا رويا كاذبة * ولا من يتكهن 24
تكهنا في وسط بني اسرايل * من اجل اني انا الرب اتكلم باقوالي * اتكلم واصنع * ولا تبطي 25
ايضا في ايامكم ايها البيت المرمر * اتكلم بقول واصنع * يقول ادوناي الرب *

Dic, Ego facio in medio ejus ſigna, quemadmodum feci, ita continget eis. In captivitatem & migrationem abibunt: 11
Et princeps eorum in medio ipſius geſtabitur ſuper humeros, egredietur clanculùm per parietem, perfodiétque ut per eum egrediatur: velabit faciem ſuam ne pateat ulli oculo, & ipſe terram non aſpiciet. 12
Verùm jaciam rete meum ſuper illum, & capiſtro meo capietur, abigámque illum in Babelem ad terram Chaldæorum, quam non videbit; ibique morietur. 13
Omnes auxiliares ejus qui circa eum ſunt, & omnes qui opem ferunt ei, diſpergam in omnem ventum, & effundam poſt eos gladium: 14
Et ſentient me eſſe Dominum, quum eos diſperſero inter gentes, & per regiones diſſipavero. 15
Attamen reſervabo ex eis exigui numeri viros à gladio, fame, & peſte; ut narrent iniquitates ſuas inter gentes quò ſunt ingreſſuri: ita ſentient me eſſe Dominum. 16
Fuit etiam ſermo Domini ad me, dicens; 17
O fili hominis, panem tuum cum dolore comedes, & aquam tuam cum tormento & afflictione bibes: 18
Deinde dices populo terræ, Sic dicit Adonai Dominus ad cives Jeruſalem de habitatoribus Iſraelis; Panem ſuum cum penuria comedent, & aquam ſuam cum exitio bibent, ita ut pereat univerſa terra: quoniam habitantes in ea omnes, in impietate verſantur. 19
Urbes eorum habitatæ deſtruentur, et terra eorum erit in excidium: & ſentient me eſſe Dominum. 20
Præterea fuit ſermo Dei ad me, dicens; 21
O fili hominis, Quódnam eſt proverbium iſtud quod habetis ſuper terram Iſraelis, dicentes; Protracti ſunt dies, & ceſſavit viſio? 22
Propterea dic eis, Sic ait Adonai Dominus; Amovebo hujuſmodi proverbium domûs Iſraelis. Alloquêris enim eos, dicéſque; Dies, & ſermo quicunque viſionis appropinquaverunt: 23
Nec erit ampliùs viſio mendax, neque qui ex aſtris futura prædicat in medio filiorum Iſraelis. 24
Nam ego Dominus loquar ſermones meos, loquar & faciam, nec ampliùs tardabunt: In diebus veſtris O domus refractaria, loquar ſermonem et faciam, dicit Adonai Dominus. 25

יחזקאל : יג

ecce ,hominis Fili : dicendo me ad Domini verbum fuit Et
26 ויהי דבר־יהוה אלי לאמר : בן־אדם הנה 27
,multos dies ad *videns* hic quam Viſio *: dicentes* Iſrael domus
בית־ישראל אמרים החזון אשר־הוא חזה לימים רבים
Sic : eos ad dic Propterea *.prophetans* ipſe longa tempora in &
28 ולעתים רחוקות הוא נבא : לכן אמר אליהם כה
Quod *.mea verba omnia* ultrà protrahetur Non : Deus Dominus dixit
אמר אדני יהוה לא־תמשך עוד כל־דברי אשר
.Deus Dominus dixit , fiet & ,verbum loquar
אדבר דבר ויעשה נאם אדני יהוה :

CAP. XIII. יג

vaticinare hominis Fili : dicendo , me ad Domini verbum fuit Et
1 ויהי דבר־יהוה אלי לאמר : בן־אדם הנבא
2 : ſuo corde de prophetantibus *dices* & , *vaticinantes* , Iſrael prophetas ad
אל־נביאי ישראל הנבאים ואמרת לנביאי מלבם
ſuper Væ : Deus Dominus dixit Sic : Domini verbum Audite
3 שמעו דבר־יהוה : כה אמר אדני יהוה הוי על־
nihil & ,ſuum ſpiritum poſt *ambulantes* qui ,*caducis* prophetis
הנביאים הנבלים אשר הלכים אחר רוחם ולבלתי
.fuerunt Iſrael tui prophetæ ,deſertis in vulpes Tanquam .viderunt
4 ראו : כשעלים בחרבות נביאיך ישראל היו :
, Iſrael domum ſuper ſepem ſepiviſtis *&* ,fracturas in aſcendiſtis Non
5 לא עליתם בפרצות ותגדרו גדר על־בית ישראל
, vanum Viderunt .Domini die in prælio in *ſtandum ad*
6 לעמד במלחמה ביום יהוה : חזו שוא
Dominus Et .Dominus Dixit : dicentes , *mendacii* divinationem &
וקסם כזב האמרים נאם־יהוה ויהוה
viſionem Nónne .verbum *firmandum ad* ſperare fecerunt & :eos miſit non
7 לא שלחם ויחלו לקים דבר : הלא מחזה־
, *dicentes* & : dixiſtis *mendacii* divinationem & , vidiſtis *vanitatis*
שוא חזיתם ומקסם כזב אמרתם ואמרים
dixit ſic Propterea ? ſum locutus non ego & , Dominus Dixit
8 נאם־יהוה ואני לא דברתי : לכן כה אמר
ideo , mendacium vidiſtis & , vanum *vos loqui Propter* : Deus Dominus
אדני יהוה יען דברכם שוא וחזיתם כזב לכן
ad mea *manus* erit Et .Deus Dominus dixit , vos ad ego ecce
9 הנני אליכם נאם אדני יהוה : והיתה ידי אל־
mei populi *ſecreto* In :mendacium *divinantes* & ,vanum *videntes* prophetas
הנביאים החזים שוא והקסמים כזב בסוד עמי
ad & , ſcribentur non Iſrael domus ſcriptura in & ,erunt non
לא־יהיו ובכתב בית־ישראל לא יכתבו ואל־
.Deus Dominus *ego* quòd ſcietis & :ingredientur non Iſrael *humum*
אדמת ישראל לא יבאו וידעתם כי־אני אדני יהוה :
, pax , dicendo meum populum fecerunt errare quòd eo pro & ,eo Pro
10 יען וביען הטעו את־עמי לאמר שלום
.*inſulſo* eum *oblinentes* ipſi ecce &,parietem *ædificans* ipſe & ; pax non &
ואין שלום והוא בנה חיץ והנם טחים אתו תפל :
: inundans imber fuit , eſt caſurus Et :*inſulſo* complanantes ad Dic
11 אמר אל־טחי תפל ויפל היה גשם שוטף
.ſcindet turbinum ventus & , *cadetis Elgabis lapidibus vos* &
ואתנה אבני אלגביש תפלנה ורוח סערות תבקע :
quam , *litura* Ubi , *vos ad* dicetur nónne : paries cecidit ecce Et
12 והנה נפל הקיר הלוא יאמר אליכם איה הטיח אשר
faciam ſcindere Et : Deus Dominus dixit ſic Propterea ? *liniſtis*
13 טחתם : לכן כה אמר אדני יהוה ובקעתי
, erit *meo naſo* in inundans imber & , mea ira in turbinum ſpiritum
רוח־סערות בחמתי וגשם שטף באפי יהיה
.*conſumptionem* ad ira in *Elgabis* lapides &
ואבני אלגביש בחמה לכלה :

Verſio VULG. LAT.

26 Et factꝰ eſt ſermo Domini ad me,
27 dicens; Fili hominis, ecce domus
Iſrael dicentiũ; Viſio, quam
hic videt, in dies multos: & in
tempora longa iſte prophetat.
28 Propterea dic ad eos; Hæc dicit
Dominus Deus; Non prolongabitur
ultrà omnis ſermo meus:
verbũ, quod locutus fuero, complebitur,
dicit Dominus Deus.

CAP. XIII.

1 ET factus eſt ſermo Domini ad
2 me, dicens; Fili hominis, vaticinare
ad prophetas Iſrael, qui
prophetant: & dices prophetantibus
de corde ſuo; Audite verbum
3 Domini: Hæc dicit Dominus
Deus; Væ prophetis inſipientibus,
qui ſequuntur ſpiritum
4 ſuum, & nihil vident. Quaſi
vulpes in deſertis, prophetæ tui,
5 Iſrael, erant. Non aſcendiſtis ex
adverſo, neque oppoſuiſtis murum
pro domo Iſrael, ut ſtaretis
6 in prælio in die Domini. Vident
vana, & divinant mendacium,
dicentes; Ait Dominus: cùm
Dominus non miſerit eos: &
perſeveraverunt confirmare ſermonem.
7 Numquid non viſionem
caſſam vidiſtis, & divinationem
mendacem locuti eſtis: &
dicitis; Ait Dominus, cùm ego
8 non ſim locutus? Propterea hæc
dicit Dominus Deus; Quia locuti
eſtis vana, & vidiſtis mendacium:
ideò ecce ego ad vos, dicit
9 Dominus Deus: Et erit manus
mea ſuper prophetas, qui
vident vana, & divinant mendacium:
in conſilio populi mei
non erunt, & in ſcriptura domûs
Iſrael non ſcribentur, nec in terram
Iſrael ingredientur: & ſcietis
10 quia ego Dominus Deus. Eò
quòd deceperint populũ meum,
dicentes; Pax, & non eſt pax:
& ipſe ædificabat parietem, illi
autem liniebant eum luto abſque
11 paleis. Dic ad eos, qui liniunt
abſque temperatura, quòd caſurus
ſit: erit enim imber inundans,
& dabo lapides prægrandes
deſupèr irruentes, & ventum
12 procellæ diſſipantem. Siquidem
ecce cecidit paries: numquid
non dicetur vobis; Ubi eſt litura,
13 quam liniſtis? Propterea
hæc dicit Dominus Deus; Et erumpere
faciam ſpiritum tempeſtatum
in indignatione mea, &
imber inundans in furore meo
erit: & lapides grandes in ira in
conſumptionem.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

26 Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέγων,
27 Υἱὲ ἀνθρώπου, ἰδοὺ ὁ οἶκος Ἰσραὴλ ὁ παραπικραίνων,
λέγοντες λέγουσιν, Ἡ ὅρασις ἣν
οὗτος ὁρᾷ, εἰς ἡμέρας πολλὰς, καὶ εἰς καιροὺς
28 μακροὺς οὗτος προφητεύει. Διατοῦτο εἰπὸν
πρὸς αὐτοὺς, Τάδε λέγει (δ) κύριος, Οὐ μὴ
μηκύνωσιν οὐκέτι πάντες οἱ λόγοι μου, οὓς
ἂν λαλήσω· (ε) λαλήσω καὶ ποιήσω, λέγει (ζ)
κύριος.

Et factus eſt ſermo Domini ad 26
me, dicens; Fili hominis, ecce 27
domus Iſrael exaſperans, dicentes
dicunt; Viſio, quam hic videt,
in dies multos, et in tempora longa
iſte prophetat. Propterea 28
dic ad eos, Hæc dicit Dominus;
Non prolongabuntur ultrà omnia
verba mea, quæcunque loquutus
fuero: loquar, & faciam, dicit
Dominus.

MS.A. (δ) ἀδωναῒ κύριος, (ε) ὅτι λαλήσω λόγον (ζ) ἀδωναῒ κύριος.

ΚΕΦ. ιγʹ.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέγων,
2 Υἱὲ ἀνθρώπου, προφήτευσον ἐπὶ τοὺς
προφήτας τοῦ Ἰσραὴλ (α), καὶ προφητεύσεις,
καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, Ἀκούσατε λόγον κυρίου·
3 Τάδε λέγει (β) κύριος, Οὐαὶ τοῖς
προφητεύουσιν ἀπὸ καρδίας αὐτῶν, καὶ τὸ
4 καθόλου μὴ βλέπουσιν. (γ) Ὡς ἀλώπεκες
ἐν ταῖς ἐρήμοις οἱ προφῆταί σου Ἰσραήλ·
5 Οὐκ ἔστησαν ἐν στερεώματι· καὶ συνήγαγον ποίμνια
(δ) ἐπὶ τὸν οἶκον τοῦ Ἰσραήλ. οὐκ ἀνέστησαν
6 οἱ λέγοντες, Ἐν ἡμέρᾳ κυρίου, Βλέποντες
ψευδῆ, μαντευόμενοι μάταια, οἱ
λέγοντες, (ε) Λέγει κύριος, καὶ κύριος οὐκ
ἀπέσταλκεν αὐτοὺς, καὶ ἤρξαντο τοῦ ἀναστῆσαι
7 λόγον. Οὐχὶ ὅρασιν ψευδῆ ἑωράκατε; καὶ
8 μαντείας ματαίας εἰρήκατε; Καὶ (ζ) διατοῦτο
εἰπὸν, Τάδε λέγει (η) κύριος, Ἀνθ' ὧν
οἱ λόγοι ὑμῶν ψευδεῖς, καὶ αἱ μαντεῖαι ὑμῶν
μάταιαι, διατοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ ἐφ' ὑμᾶς,
9 λέγει (θ) κύριος. Καὶ ἐκτενῶ τὴν χεῖρά μου
ἐπὶ τοὺς προφήτας τοὺς ὁρῶντας ψευδῆ, καὶ
τοὺς ἀποφθεγγομένους μάταια· ἐν παιδείᾳ
τοῦ λαοῦ μου οὐκ ἔσονται, οὐδὲ ἐν γραφῇ οἴκου
Ἰσραὴλ οὐ γραφήσονται, καὶ εἰς τὴν γῆν τοῦ Ἰσραὴλ
οὐκ εἰσελεύσονται, καὶ γνώσονται (ι) διότι
10 ἐγὼ κύριος. Ἀνθ' ὧν ἐπλάνησαν τὸν λαόν
μου, λέγοντες, (κ) Εἰρήνη, καὶ οὐκ ἔστιν εἰρήνη·
καὶ οὗτος οἰκοδομεῖ (λ) τοῖχον, καὶ (μ) αὐτοὶ ἀλείφουσιν
11 (ν) αὐτὸν, πεσεῖται. Εἰπὸν πρὸς
τοὺς ἀλείφοντας, Πεσεῖται, καὶ ἔσται ὑετὸς
κατακλύζων, καὶ δώσω λίθους πετροβόλους εἰς
τοὺς ἐνδέσμους αὐτῶν, καὶ πεσοῦνται, καὶ πνεῦμα
12 ἐξαῖρον, καὶ ῥαγήσεται. Καὶ ἰδοὺ πέπτωκεν
ὁ τοῖχος, (ξ) καὶ οὐκ ἐροῦσι πρὸς ὑμᾶς,
13 Ποῦ ἐστιν ἡ ἀλοιφὴ ὑμῶν ἣν ἠλείψατε; Διατοῦτο
τάδε λέγει (ο) κύριος, Καὶ ῥήξω
πνοὴν ἐξαίρουσαν μετὰ θυμοῦ, καὶ ὑετὸς κατακλύζων
ἐν ὀργῇ μου ἔσται· καὶ τοὺς λίθους τοὺς
πετροβόλους (π) ἐν θυμῷ ἐπάξω εἰς συντέλειαν.

CAP. XIII.

ET factus eſt ſermo Domini ad 1
me, dicens; Fili hominis, vaticinare 2
ſuper prophetas Iſrael: &
prophetabis, & dices ad eos; Audite
verbum Domini. Hæc dicit 3
Dominus; Væ his qui prophetant
de corde ſuo, & omninò non vident.
(a) Sicut vulpes in deſertis, 4
prophetæ tui, Iſrael: Non ſteterunt 5
in firmamento: & (b) congregaverunt
greges ſuper domũ
Iſrael. Non (c) reſurrexerunt
qui dicunt, In die Domini, Videntes 6
mendacia, divinantes
vana, qui dicunt; Dicit Dominus:
& Dominus non miſit eos: &
cœperunt ſuſcitare ſermonem.
Nónne viſionem falſam vidiſtis, 7
& divinationes vanas loquuti
(d) eſtis? Et ideò dic, Hæc dicit 8
Dominus; Quoniam verba veſtra
mendacia, & divinationes
veſtræ vanæ; idcircò ecce ego
ſuper vos, dicit Dominus: Et 9
extendam manum meam ſuper
prophetas, qui vident mendacia,
& qui loquuntur vana: In (e)
diſciplina populi mei non erunt:
nec in ſcriptura domûs Iſrael
ſcribentur: & in terram Iſrael
non intrabunt: & ſcient, quia
ego Dominus. Quoniam deceperunt 10
populum meum, dicentes;
Pax, & non eſt pax. Et iſte ædificat
(f) parietem: & iſti linunt
eum, (g) cadet. Dic ad eos 11
qui linunt, Cadet: & erit pluvia
*inundans: & dabo lapides * magnos*
in juncturas eorum; & cadent:
& ventum auferentem: &
diſrumpetur. Et ecce cecidit paries; 12
& non dicent ad vos, Ubi
eſt litura veſtra, quam liniviſtis?
Propterea hæc dicit Dominus; 13
Et diſrumpam ſpiritum auferentē
in furore, et pluvia inundans
in ira mea erit: et lapides magnos
in furore inducam in conſummationem:

MS.A. (α) τοὺς προφητεύοντας, καὶ ἐρεῖς τοῖς προφήταις τοῖς προφητεύουσιν ἀπὸ καρδίας αὐτῶν, καὶ προφητεύσεις, (β) ἀδωναῒ κύριος, (γ) Οἱ προφῆταί σου Ἰσραὴλ ὡσεὶ ἀλώπεκες ἐν ταῖς ἐρήμοις· Οὐκ (δ) καὶ ἐπὶ (ε) Τάδε λέγει κύριος, καὶ ὁ κύριος (ζ) λέγεται, φησὶν κύριος, καὶ ἐγὼ οὐκ ἐλάλησα. Διατοῦτο (η) ἀδωναῒ κύριος, (θ) ἀδωναῒ κύριος. (ι) ὅτι ἐγώ εἰμι ἀδωναῒ κύριος. (κ) Εἰρήνη εἰρήνη, (λ) τὸν τοῖχον, (μ) ἄλλοι (ν) αὐτόν. Εἰπὸν πρὸς τοὺς ἀλείφοντας αὐτὸν, (ξ) καὶ ἐροῦσιν (ο) ἀδωναῒ κύριος, (π) ἐπάξω ἐν θυμῷ εἰς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

26 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר : בר אדם הא בית ישראל אמרין אולפן דהוא
27 מליף ליומין סגיאין ולעדן רחיק הוא מתנבי : בכן אמר להון כדנן אמר יי אלהים
28 לא יבטיל עוד כל פתגמי דאמלל פתגמא ויתקים אמר יי אלהים :

יג

1 2 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר : בר אדם אתנבי על נביי שקרא דמתנבן
3 ותימר לדמתנבן ברעות לבהון קבילו פתגמא דיי : כדנן אמר יי אלהים וי על נביי
4 שקרא דמשתטן דאזלין בתר הרהור לבהון ומדעם לא חזן : כתעלין בחרבתא נביי
5 שקרך ישראל הוו : לא קמתון בתרעתא ולא עבדתון לכון עובדין טבין למבעי על בית
ישראל למקם למבעי עליהון רחמין בעדן דאתו עליהון עבדי קרבא ביום רוגזא דיי :
6 מתנבן שקר ומלפין כדבין אמרין אמר יי ויי לא שלחנון ומחצפין דתתקים מלתהון :
7 הלא נבואן דשקר אתנביתון וקסם כדבין אמרתון ואמרין אמר יי ומן קדם יי לא
8 אתמלל : בכן כדנן אמר יי אלהים חלף דאתנביתון שקר ואלפתון כדבין בכן הא אנא
9 שלח רוגזי עליכון אמר יי אלהים : ותהי מחת גבורתי על נביי שקרא דמתנבן שקר
ומלפין כדיבין ברז טב דגניז לעמי לא יהון ובכתב חיי עלמא דכתיב לצדיקי בית
10 ישראל לא יתכתבון ולארעא דישראל לא יעלון ותדעון ארי אנא יי אלהים : חלף
דאתנביאו שקר והלף דאטעיאו ית עמי למימר שלמא ולית שלם ואנון דמן לדבני
11 מחיצא ושעע ליה טין פטיר דלא תבן : אמר לדבני מחיצא ושעיע ליה טין פטיר דלא
12 תבן נפיל הוא כען יהי מטר מגבר וית אבני אלגביש יחתן ורוח עלעולין תבזע : והא
13 נפל כתלא הלא יתאמר לכון אן שיעא דשעתון : בכן כדנן אמר יי אלהים ואיתי מלך
דתקיף ברוח עלעולין בחמתי ועממין קטולין כמטר מגבר ברוגזי ייתון ומלכין דחסינין
כאבני אלגביש ברגזי לשיצאה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Dñi mecum dicens: Fili hominis, 26
ecce domus Iſrael dicunt, Doctrinam quam ipſe docet, in dies multos & 27
in tempus longum ipſe prophetat. Propterea dic ad eos: Hæc dicit Dñs 28
Deus, non ceſſabunt ultrà omnia verba mea: verbum enim quod locutus
fuero, confirmabitur, dicit Dñs Deus.

CAP. XIII.

ET factum eſt verbũ prophetiæ à facie Dñi mecũ dicens: Fili hominis, 1
vaticinare ad pſeudoprophetas qui prophetant: & dices prophetantibꝰ 2
juxta voluntatem cordis ſui, Suſcipite verbum Dñi. Hæc dicit Dñs Deus, 3
Væ pſeudoprophetis qui ſtulti ſunt, qui ambulant poſt cogitationes cordis
ſui, & nihil vident. Sicut vulpes in ſolitudine pſeudoprophetæ tui Iſrael 4
ſunt. Non ſtetiſtis in ruptura muri, nec feciſtis vobis opera bona ad deprecandum 5
pro domo Iſrael, ut ſtaretis ad exorandam miſericordiam pro
eis, quando venerunt contra eos bellatores in die furoris Dñi. Prophetant 6
falſa & docent mendacia, dicentes, Dicit Dñs, & Dñs non miſit eos,
& impudenter aſſerunt ſuum ſermonem confirmandum. Nónne prophetias 7
falſas prophetâſtis, & divinationem mendacii dixiſtis? dicentes, Dicit
Dñs, cum à facie *Domini* nullꝰ ſermo ſit factꝰ. Propterea hæc dicit Dñs 8
Deus: Pro eo quòd prophetâſtis falſa & docuiſtis mendacia, ideo ecce
ego mitto iram meam in vos, dicit Dñs Deus. Et erit plaga potentiæ meæ 9
ſuper pſeudoprophetas qui prophetant falſa, & docent mendacia. In ſecreto
bono quod abſconditum eſt populo meo non erunt; & in ſcriptura
vitæ æternæ quæ ſcripta eſt juſtis domus Iſrael non ſcribentur; & in terram
Iſrael non ingredientur: & ſcietis quia ego Dñs Deus. Pro eo quòd prophetaverunt 10
falſa, & pro eo quòd ſeduxerunt populum meum, dicentes,
Pax, cùm non ſit pax. Et ipſi ſimiles ſunt ædificanti parietem, qui linit eum
luto ſimplici abſq; paleis. Dic ædificanti parietē, & linienti eum luto ſimplici 11
abſq; paleis, cadet ipſe [*paries*.] nunc erit pluvia inundans, & lapides
grandes deſcendent, & ventus tempeſtatum dirumpet. Et ecce cecidit paries: 12
nónne dicetur vobis, Ubi eſt litura quam liniſtis? Idcircò hæc dicit 13
Dñs Deus, Et adducam regem fortem *cum ſpiritu* tempeſtatũ in indignatione
mea: & populi occidẽtes quaſi pluvia inũdans in furore meo veniẽt,
& reges qui robuſti ſunt ſicut lapides grãdes in furore ad conſumendũ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

26 ܘܗܘܐ * ܥܡܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ. ܗܐ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܐܡܪܝܢ. ܚܙܘܐ
27 ܕܚܙܐ ܗܢܐ. ܠܝܘܡܬܐ ܣܓܝܐܐ ܘܠܙܒܢܐ ܪܚܝܩܐ ܡܬܢܒܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܡܪ ܠܗܘܢ.
28 ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܠܐ ܢܓܪܘܢ ܬܘܒ ܦܬܓܡܝ ܟܠܗܘܢ. ܡܠܬܐ ܕܐܡܪ ܐܢܐ. ܥܒܕ ܐܢܐ
ܠܗ. ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܒ *

1 ܘܗܘܐ * ܥܡܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ. ܐܬܢܒܝ ܥܠ ܢܒܝܐ ܕܐܝܣܪܝܠ
2 ܕܡܬܢܒܝܢ ܠܗܘܢ. ܘܐܡܪ ܠܐܝܠܝܢ ܕܡܬܢܒܝܢ ܡܢ ܠܒܗܘܢ. ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ
3 ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. * ܘܝ ܠܢܒܝܐ ܣܟܠܐ. ܕܐܙܠܝܢ ܒܬܪ ܪܘܚܗܘܢ. ܕܠܐ ܚܙܘ ܚܙܘܐ. * ܐܝܟ ܬܥܠܐ
4 ܒܡܕܒܪܐ ܗܘܘ ܢܒܝܝܟ ܐܝܣܪܝܠ. * ܠܐ ܣܠܩܬܘܢ ܠܬܘܪܥܬܐ. ܘܠܐ ܟܪܟܬܘܢ ܣܝܓܐ
5 ܥܠ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܠܡܩܡ ܒܩܪܒܐ ܒܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ. * ܕܐܡܪܝܢ ܘܐܡܪܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
6 ܘܡܪܝܐ ܠܐ ܫܕܪ ܐܢܘܢ. ܘܫܪܝܘ ܠܡܩܝܡܘ ܡܠܬܐ ܕܟܕܒܘܬܐ. * ܚܙܘܐ ܣܪܝܩܐ ܚܙܝܬܘܢ. ܘܩܣܡܐ
7 ܕܟܕܒܘܬܐ ܐܡܪܬܘܢ. ܘܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܢܐ ܠܐ ܐܡܪܬ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ
8 ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܚܙܝܬܘܢ ܣܪܝܩܘܬܐ ܘܡܠܠܬܘܢ ܕܓܠܘܬܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܠܘܩܒܠܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܐ
9 ܡܪܘܬܐ. * ܘܬܗܘܐ ܐܝܕܝ ܥܠ ܢܒܝܐ ܕܚܙܝܢ ܣܪܝܩܘܬܐ ܘܩܣܡܝܢ ܕܓܠܘܬܐ. ܒܓܘ ܥܡܝ ܠܐ
ܢܗܘܘܢ. ܘܒܟܬܒܐ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܠܐ ܢܬܟܬܒܘܢ. ܘܠܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܠܐ ܢܥܠܘܢ. ܘܬܕܥܘܢ
10 ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. * ܡܛܠ ܕܐܛܥܝܘ ܠܥܡܝ. ܘܐܡܪܘ ܫܠܡܐ. ܘܠܝܬ ܫܠܡܐ. ܘܗܘ
11 ܒܢܐ ܗܘܐ ܐܣܬܐ. ܘܗܢܘܢ ܫܝܥܝܢ ܗܘܘ ܠܗ ܕܢܦܠ. * ܐܡܪ ܠܗܘܢ ܕܫܝܥܝܢ ܠܗ ܕܢܦܠ
12 ܗܐ ܐܢܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܡܛܪܐ ܕܓܪܦ. ܘܟܐܦܐ ܕܒܪܕܐ ܢܦܠܢ. ܘܪܘܚܐ ܕܥܠܥܠܐ. * ܘܬܬܪܥ
13 ܘܬܦܠ ܐܣܬܐ. ܘܢܐܡܪܘܢ ܠܟܘܢ. ܐܝܟܐ ܗܘ ܫܝܥܐ ܕܫܥܬܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ
ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܐܥܝܪ ܪܘܚܐ ܕܥܠܥܠܐ ܒܚܡܬܝ. ܘܡܛܪܐ ܕܓܪܦ ܢܗܘܐ ܒܪܘܓܙܝ.
ܘܟܐܦܐ ܕܒܪܕܐ ܒܚܡܬܝ ܢܣܘܦܢ.

* Fuit etiam ad me ſermo Domini, dicendo; 26
Fili hominis, en Iſraelitæ dicunt; Viſionem 27
quam iſte videt, ad multos dies & longinqua
tempora prophetat. Iccirco dic eis; Sic ait 28
Dominus dominorum; non erit amplius mora verbis meis: verbum quod dico, facturus
ſum, ait Dominus dominorum.

CAP. XIII.

DEinde fuit ad me ſermo Domini, dicen- 1
do; Fili hominis, vaticinare contra prophe- 2
tas Iſraelitarum qui prophetant eis; & dic iis
qui ſuopte ex animo prophetant; Audite
ſermonem Dñi, Domini *inquam* dominorũ.
Væ ſtolidis prophetis qui ſuam ſequuntur 3
phantaſiam, qui viſionem non viderunt. Si- 4
miles vulpibus in deſerto facti ſunt prophetæ tui, ô Iſrael. Non aſcendiſtis ad rupturam, 5
neque ſepe circundediſtis Iſraelitas, ut in prælio ſtarent in die Domini. Qui dicunt, Sic ait 6
Dñs, quum Dominus non miſerit eos, & cœperunt aſſeverare verbum falſum. Viſionem 7
vanam vidiſtis, & vaticinium falſum prædixiſtis: attamen dicitis, Dominus dixit, quum
ego non dixerim. Propterea ſic ait Dominus 8
dominorũ; Quia vidiſtis, & falſum locuti
eſtis, ecce me contra vos, dicit Dominus dominorum: Eritque manꝰ mea ſuper prophe- 9
tas qui vident vanitatem, & vaticinantur falſitatem: in medio populi mei non erunt, in
libro Iſraelitarum non ſcribentur, & in terram Iſraelis non ingredientur, & ſcietis me
eſſe Dominum dominorum. Quia ſeduxerunt 10
populũ meum, & dixerunt, Pax, quum nulla
eſſet pax, ille parietem extruebat iſti verò
liniebant eum ut corrueret: Dic linientibus 11
eum ut corruat, Ecce ego dabo imbrem abripientem, & lapides ſilicis cum vento procelloſo cadent: Sic rumpetur corruétque paries, dicetúrque vobis, Ubi eſt litura quam 12
liniviſtis? Iccirco ſic ait Dominus domino- 13
rum, Excitabo ventum procelloſum in ira
mea, & imber abripiens erit in furore meo,
lapidéſque ſilicei in excandeſcentia mea diſperdent:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

26 * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان * ها بيت اسرايل الممرمر قايلون يقولون * الرويا
27 التي راها هذا الي ايام كثيرة والي ازمنة بعيدة هذا يتنبي * لاجل هذا قل لهم * هكذا 28
يقول ادوناي الرب * لا تبطي ايضا جميع اقوالي التي اتكلم بها * لاني اتكلم بقول واصنعه *
يقول ادوناي الرب * * الفصل الثالث عشر * * الاصحاح السادس *

1 * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان تنبا علي انبياء اسرايل الذين يتنبون * وتقول
2 للانبياء الذين يتنبون من قلبهم * وتنبي وتقول لهم * اسمعوا قول الرب * هكذا يقول ادوناي
3 الرب * الويل للذين يتنبون من قلبهم * وانبياوك يا اسرايل لم ينظروا شيا البتة * مثل الثعالب
4 في البراري * [MS.Ox. كانوا انبياك يا اسرايل *] * لم يقفوا في جلد * وجمعوا القطعان علي بيت
5 اسرايل * لم يقوموا القايلون في يوم الرب * ننظر الكذب نتنجم الاباطيل * القايلون هكذا يقول
6 الرب * والرب لم يرسلهم * وابتدوا ان يقيموا قولا * اليس رويا كذب رايتم * وعرافات باطلة قلتم *
7 ويقولون قال الرب * ولم اتكلم * لاجل هذا قل * هكذا يقول ادوناي الرب * من اجل ان
8 كلماتكم كاذبة * وعرافاتكم باطلة * لاجل هذا ها انا عليكم يقول ادوناي الرب * وامد
9 يدي علي الانبياء الذين يرون الكذب وينطقون بالباطل في بقعة شعبي * ولا يكونون ولا
يكتبون في كتاب بيت اسرايل * والي ارض اسرايل لا يدخلون * ويعلمون اني انا انا ادوناي الرب
10 * من اجل انهم اضلوا شعبي قايلين * سلامة سلامة * وليس هي سلامة * وهذا يبني الجدار واخرون
11 يلبسونه * قل للذين يلبسونه يسقط * ويكون مطر مغرقا * واعطي حجارة ذي صخور مبثثة في
12 رباطاتهم ويسقطون * وريحا مزعزعة فيتشقق * واذا سقط الحايط فيقولون لكم * اين هو تلبيسكم
13 الذي لبستموه * لاجل هذا هكذا يقول ادوناي الرب * واشق ريحا مزعزعة بغضب * والمطر
المغرق يكون في غضبي * الحجارة ذي الصخور المبثثة * اجلبها بغضب للابادة *

Deinde fuit ſermo Domini ad me, dicens; 26
O fili hominis, ecce domus Iſraelis refractaria dicentes dicunt; Viſio quam vidit 27
iſte, ad plurimos dies eſt; et ad longinqua
tempora iſte prophetat. Propterea dic eis, 28
Ita dicit Adonai Dominus; Nequaquam
tardabunt amplius cuncti ſermones mei
quos loquor: nam ſermonem dico, & faciam illum, ait Adonai Dominus.

CAP. XIII.
Textus ſextus.

ET *fuit ſermo Domini ad me, dicens;* 1
O fili hominis, vaticinare de prophe- 2
tis Iſraelis, qui vaticinantur: & dices
prophetis qui ſuopte ex corde vaticinantur: prophetabis inquam, & dices eis;
Audite ſermonem Domini: ſic ait Adonai
Dominus, Væ iis qui ſuopte ingenio pro- 3
phetant. Et quidem prophetæ tui O Iſrael, nihil penitus viderunt. Sicut vulpes 4
in deſertis [MS. Ox. *facti ſunt prophetæ*
tui, O Iſrael.] *Non ſteterunt in firma-* 5
mento, & congregaverunt greges contra
domum Iſraelis. Non reſurgent qui dicunt
in die Domini, Videamus falſum, vana
præſagiamus: Qui dicunt, Sic dicit Do- 6
minus, quum Dominus nequaquam miſerit
eos: & cœperunt ſuſcitare ſermonem.
Nonne viſionem falſam vidiſtis, & divi- 7
nationes vanas prædixiſtis? tamen dicitis, Ait Dominus, quum ego non ſim locutus. Propterea dic, Sic ait Adonai Do- 8
minus; Quia verba veſtra falſa ſunt, et
divinationes veſtræ vanæ; ideò ecce me
contra vos, dicit Adonai Dominus: Et 9
extendam manum meam ſuper prophetas
qui falſum vident & loquuntur vanitatem in regione populi mei: hi non erunt,
neque ſcribentur in libro domûs Iſraelis,
& in terram Iſraelis non ingredientur:
& ſcient quòd ego ſim Adonai Dominus.
Quoniam iſti ſeduxerunt populum me- 10
um, dicentes; Pax, pax, quum nulla eſſet
pax: is parietem ædificat, alii verò liniunt eum: Dic eis qui liniunt eum; Ca- 11
det: erit enim pluvia inundans, dabóque
lapides ſaxeos diſperſos in nexus eorum,
& cadent; ventúmque concitatum, &
diſrumpetur. Et cùm ceciderit paries, 12
dicent vobis, Ubinam eſt litura veſtra quâ
liniviſtis eum? Propterea ſic dicit Ado- 13
nai Dominus; Et diſrumpam ventum in
ira concitatum, & pluvia ſubmergens
erit in furore meo; lapides ſaxeos diſperſos inferam in iracundia, ad exitium:

יחזקאל : יד

eum faciam pertingere & ,*insulso* *livistis* quem parietem diruam Et
14 וְהָרַסְתִּי אֶת־הַקִּיר אֲשֶׁר־טַחְתֶּם תָּפֵל וְהִגַּעְתִּיהוּ
consumemini & ,cadet & : ejus fundamentum discooperietur &, terram ad
אֶל־הָאָרֶץ וְנִגְלָה יְסֹדוֹ וְנָפְלָה וּכְלִיתֶם
complebo Et .Dominus *ego* quòd scietis & , ejus medio in
15 בְּתוֹכָהּ וִידַעְתֶּם כִּי־אֲנִי יְהוָה׃ וְכִלֵּיתִי אֶת־
: vobis Dicámque .*insulso* *eum* *linentibus* in & , pariete in meum furorem
חֲמָתִי בַּקִּיר וּבַטָּחִים אֹתוֹ תָּפֵל וְאֹמַר לָכֶם
vaticinantes Israel Prophetæ .eum complanantes non & ,paries Non
16 אֵין הַקִּיר וְאֵין הַטָּחִים אֹתוֹ׃ נְבִיאֵי יִשְׂרָאֵל הַנִּבְּאִים
dixit ,pax non & ,pacis visionem ei *videntes* & , Jerusalaim ad
אֶל־יְרוּשָׁלִַם וְהַחֹזִים לָהּ חֲזוֹן שָׁלֹם וְאֵין שָׁלֹם נְאֻם
filias ad *tuas facies* pone , hominis fili tu Et .Deus Dominus
17 אֲדֹנָי יְהוִה׃ וְאַתָּה בֶן־אָדָם שִׂים פָּנֶיךָ אֶל־בְּנוֹת
: *dices* Et .eas super vaticinare &,suo corde de *vaticinantes* , tui populi
18 עַמְּךָ הַמִּתְנַבְּאוֹת מִלִּבְּהֶן וְהִנָּבֵא עֲלֵיהֶן׃ וְאָמַרְתָּ
omnibus *super* pulvinaria *consuentibus* Væ : Deus Dominus dixit Sic
כֹּה־אָמַר ׀ אֲדֹנָי יְהוִה הוֹי לִמְתַפְּרוֹת כְּסָתוֹת עַל ׀ כָּל־
omnis caput super velamina *facientibus* & ,*mearum* manuum axillis
אַצִּילֵי יָדַי וְעֹשׂוֹת הַמִּסְפָּחוֹת עַל־רֹאשׁ כָּל־
, mei populi venabimini animas Nunquid .animas venandum ad staturæ
קוֹמָה לְצוֹדֵד נְפָשׁוֹת הַנְּפָשׁוֹת תְּצוֹדֵדְנָה לְעַמִּי
meo populo in me prophanastis Et ? vivificabitis vobis animas &
19 וּנְפָשׁוֹת לָכֶנָה תְחַיֶּינָה׃ וַתְּחַלֶּלְנָה אֹתִי אֶל־עַמִּי
interficiendum ad , panis *buccellis in* & , hordei . pugillos propter
בְּשַׁעֲלֵי שְׂעֹרִים וּבִפְתוֹתֵי לֶחֶם לְהָמִית
non quæ , animas *vivificandum ad* & ,*morientur* non quæ animas
נְפָשׁוֹת אֲשֶׁר לֹא־תְמוּתֶנָה וּלְחַיּוֹת נְפָשׁוֹת אֲשֶׁר לֹא־
Propterea .mendacium *audientibus* meo populo *vos mentiendo in* ,*vivent*
20 תִחְיֶינָה בְּכַזֶּבְכֶם לְעַמִּי שֹׁמְעֵי כָזָב׃ לָכֵן
quibus vestra cervicalia ad ego Ecce : Deus Dominus dixit sic
כֹּה־אָמַר ׀ אֲדֹנָי יְהוִה הִנְנִי אֶל־כִּסְּתוֹתֵיכֶנָה אֲשֶׁר
dirumpam Et .*evolandum ad* animas ibi *venantes* vos
אַתֵּנָה מְצֹדְדוֹת שָׁם אֶת־הַנְּפָשׁוֹת לְפֹרְחוֹת וְקָרַעְתִּי
vos quas animas dimittam & ,vestris brachiis *desuper* ea
אֹתָם מֵעַל זְרוֹעֹתֵיכֶם וְשִׁלַּחְתִּי אֶת־הַנְּפָשׁוֹת אֲשֶׁר אַתֶּם
, vestra velamina dirumpam Et .*avolantes in* animas *venantes*
21 מְצֹדְדוֹת אֶת־נְפָשִׁים לְפֹרְחֹת׃ וְקָרַעְתִּי אֶת־מִסְפְּחֹתֵיכֶם
vestra manu in ultrà erunt non &,vestra manu de meũ populũ liberabo &
וְהִצַּלְתִּי אֶת־עַמִּי מִיֶּדְכֶן וְלֹא־יִהְיוּ עוֹד בְּיֶדְכֶן
conterere Pro .Dominus *ego* quòd scietis & : venationem in
22 לִמְצוּדָה וִידַעְתֶּן כִּי־אֲנִי יְהוָה׃ יַעַן הַכְאוֹת
manus *confortando* & :illud affeci dolore non ego &,mendaciter justi cor
לֵב־צַדִּיק שֶׁקֶר וַאֲנִי לֹא הִכְאַבְתִּיו וּלְחַזֵּק יְדֵי
Propterea .eum vivificando , mala sua via à *redeundum* non *ad* , impii
23 רָשָׁע לְבִלְתִּי־שׁוּב מִדַּרְכּוֹ הָרָע לְהַחֲיֹתוֹ׃ לָכֵן
: amplius divinabitis non divinationem & ,videbitis non vanum
שָׁוְא לֹא תֶחֱזֶינָה וְקֶסֶם לֹא־תִקְסַמְנָה עוֹד
.Dominus *ego* quod scietis & : vestra manu de meum populum eruam &
וְהִצַּלְתִּי אֶת־עַמִּי מִיֶּדְכֶן וִידַעְתֶּן כִּי־אֲנִי יְהוָה׃

CAP. XIV. יד

.*meas facies ad* sedebunt & , Israel senioribus de viri me ad *venit* Et
1 וַיָּבוֹא אֵלַי אֲנָשִׁים מִזִּקְנֵי יִשְׂרָאֵל וַיֵּשְׁבוּ לְפָנָי׃
viri , hominis Fili : dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et
2 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם הָאֲנָשִׁים
3 offendiculum & ,suum cor super sua idola fecerunt ascendere isti
הָאֵלֶּה הֶעֱלוּ גִלּוּלֵיהֶם עַל־לִבָּם וּמִכְשׁוֹל
? eis *requirar requirendo* nunquid :*suas facies* contra *dederunt* suæ iniquitatis
עֲוֺנָם נָתְנוּ נֹכַח פְּנֵיהֶם הַאִדָּרֹשׁ אִדָּרֵשׁ לָהֶם׃

Versio VULG. LAT.

14 Et destruam parietem, quem linîstis
absque temperamento : &
adæquabo eum terræ, & revelabitur
fundamentum ejus : & cadet,& consumetur in medio ejus:
& scietis quia ego sum Dominus.
15 Et complebo indignationẽ meã
in pariete, & in his qui liniunt
eum absque temperamento, dicámque
vobis ; Non est paries,
& non sunt qui liniunt eum.
16 Prophetæ Israel, qui prophetant
ad Jerusalem, & vident ei visionem
pacis : & non est pax, ait
17 Dominus Deus. Et tu,fili hominis,
pone faciem tuam contra filias
populi tui, quæ prophetant
de corde suo: & vaticinare super
18 eas, Et dic ; Hæc dicit Dominus
Deus ; Væ quæ consuunt pulvillos
sub omni cubito manûs ; &
faciunt cervicalia sub capite universæ
ætatis ad capiendas animas:
& cùm caperent animas populi
mei,vivificabant animas eorum.
19 Et violabant me ad populum
meum , propter pugillum
hordei, & fragmen panis, ut interficerent
animas, quæ non moriuntur,
& vivificarent animas,
quæ non vivunt, mentientes populo
meo credenti mendaciis.
20 Propter hoc hæc dicit Dominus
Deus ; Ecce ego ad pulvillos vestros,
quibus vos capitis animas
volantes: & dirumpã eos de brachiis
vestris : & dimittam animas,
quas vos capitis, animas ad
21 volandum. Et dirumpam cervicalia
vestra, & liberabo populum
meum de manu vestra,neque
erunt ultrà in manibus vestris ad
prædandum : & scietis quia ego
22 Dominus. Pro eo quòd mœrere
fecistis cor justi mendaciter,
quem ego non contristavi : &
confortâstis manus impii, ut non
reverteretur à via sua mala, &
23 viveret : Propterea vana non
videbitis, & divinationes non
divinabitis ampliùs, & eruam
populum meum de manu vestra :
& scietis quia ego Dominus.

CAP. XIV.

1 ET venerũt ad me viri seniorum
Israel, & sederunt coram
2 me. Et factus est sermo Domini
3 ad me, dicens; Fili hominis,
viri isti posuerunt immunditias
suas in cordibus suis, & scandalum
iniquitatis suæ statuerunt
contra faciem suam : numquid
interrogatus respondebo eis?

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

14 Καὶ κατασκάψω τὸν τοῖχον ὃν ἠλείψατε, καὶ
πεσεῖται. καὶ θήσω αὐτὸν ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ ἀποκαλυφθήσεται
τὰ θεμέλια αὐτοῦ, καὶ πεσεῖται,
καὶ (π)συντελεσθήσεσθε μετ᾽ ἐλέγχων, καὶ
15 ἐπιγνώσεσθε διότι ἐγὼ κύριος. Καὶ συντελέσω
τὸν θυμόν μου ἐπὶ τὸν τοῖχον, καὶ ἐπὶ
τοὺς ἀλείφοντας αὐτὸν, (ρ) πεσεῖται· καὶ εἶπα
πρὸς ὑμᾶς, Οὐκ ἔστιν ὁ τοῖχος, οὐδὲ
16 οἱ ἀλείφοντες αὐτὸν, Προφῆται τοῦ Ἰσραὴλ,
οἱ προφητεύοντες ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, καὶ
(σ)οἱ ὁρῶντες αὐτῇ εἰρήνην, καὶ οὐκ ἔστιν εἰρήνη,
17 λέγει (τ)κύριος. Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, στήρισον
τὸ πρόσωπόν σου ἐπὶ τὰς θυγατέρας
τοῦ λαοῦ σου, τὰς προφητευούσας ἀπὸ καρδίας
18 αὐτῶν, καὶ προφήτευσον ἐπ᾽ αὐτὰς, Καὶ
ἐρεῖς (υ), Τάδε λέγει κύριος, Οὐαὶ ταῖς συρραπτούσαις
προσκεφάλαια (φ) ὑπὸ πάντα
ἀγκῶνα χειρὸς, καὶ ποιούσαις ἐπιβόλαια ἐπὶ
πᾶσαν κεφαλὴν πάσης ἡλικίας, τοῦ διαστρέφειν
ψυχάς. (χ)αἱ ψυχαὶ διεστράφησαν τοῦ λαοῦ μου·
19 καὶ ψυχὰς περιεποιοῦντο. Καὶ ἐβεβήλουν με
πρὸς τὸν λαόν μου, ἕνεκεν δρακὸς κριθῶν, (ψ)
καὶ ἕνεκεν κλασμάτων ἄρτων, τοῦ ἀποκτεῖναι
ψυχὰς ἃς οὐκ ἔδει ἀποθανεῖν, καὶ (ω) τοῦ
περιποιήσασθαι ψυχὰς ἃς οὐκ ἔδει (α) ζῆσαι,
ἐν τῷ ἀποφθέγγεσθαι ὑμᾶς λαῷ εἰσ-
20 ακούοντι μάταια ἀποφθέγματα. Διατοῦτο
τάδε λέγει κύριος κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ
ἐπὶ τὰ προσκεφάλαια ὑμῶν, ἐφ᾽ ἃ ὑμεῖς
(β) ἐκεῖ συστρέφετε ψυχάς· καὶ διαῤῥήξω
αὐτὰ ἀπὸ τῶν βραχιόνων ὑμῶν, καὶ ἐξαποστελῶ
τὰς ψυχὰς ἃς ὑμεῖς ἐκστρέφετε τὰς
21 ψυχὰς αὐτῶν εἰς διασκορπισμόν. Καὶ
διαῤῥήξω τὰ (γ) ἐπιβόλαια ὑμῶν, καὶ ῥύσομαι
τὸν λαόν μου ἐκ χειρὸς ὑμῶν, καὶ οὐκέτι
ἔσονται ἐν χερσὶν ὑμῶν εἰς συστροφήν· καὶ
22 ἐπιγνώσεσθε(¨)διότι ἐγὼ κύριος. Ἀνθ᾽ ὧν
(·)διεστρέφετε καρδίαν δικαίου (δ), καὶ ἐγὼ
οὐ διέστρεφον αὐτὴν, καὶ τοῦ κατισχῦσαι χεῖρας
ἀνόμου τὸ καθόλου μὴ ἀποστρέψαι (ε) ἀπὸ τῆς
ὁδοῦ αὐτοῦ τῆς πονηρᾶς, (ζ) καὶ ζῆσαι αὐτόν·
23 Διατοῦτο ψευδῆ οὐ μὴ ἴδητε, καὶ (η)μαντείας
οὐ μὴ (θ) μαντεύσησθε ἔτι· καὶ ῥύσομαι τὸν
λαόν μου ἐκ χειρὸς ὑμῶν, καὶ (ι) γνώσεσθε
ὅτι ἐγὼ κύριος.

MS.A. (π)συντελεσθήσεται(ρ) καὶ πεσεῖται. (σ)ὁρῶντες(τ) ἀδωναῒ κύριος. (υ) πρὸς αὐτὰς, Τάδε λέγει ἀδωναῒ κύριος, (φ) ἐπὶ (χ) καὶ αἱ (ψ) καὶ κλάσματος ἄρτου, ἀποκτεῖναι (ω) περιεποιοῦντο (α)ζῆν, (β) συστρέφετε ἐκεῖ (γ)περιβόλαια(¨)ὅτι(·)διαστρέφετε(δ)ἀδίκως, καὶ(ε)* τῆς ἀπὸ(ζ)ἀποστρέψαι καὶ *ζητῆσαι αὐτόν·(η)μαντείαν(θ)μαντεύσησθε, ὅτι ῥύσομαι(ι)ἐπιγνώσεσθε

ΚΕΦ. ιδʹ.

1 ΚΑὶ ἦλθον πρός με (α) ἐκ τῶν πρεσβυτέρων
ἄνδρες τοῦ λαοῦ Ἰσραὴλ, καὶ ἐκάθι-
2 σαν πρὸ προσώπου μου. Καὶ ἐγένετο (β)
3 πρός με λόγος κυρίου, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου,
οἱ ἄνδρες οὗτοι ἔθεντο τὰ διανοήματα
αὐτῶν ἐπὶ τὰς καρδίας αὐτῶν, καὶ
τὴν κόλασιν τῶν ἀδικιῶν αὐτῶν ἔθηκαν πρὸ
προσώπου αὐτῶν· εἰ ἀποκρινόμενος ἀποκριθῶ αὐτοῖς;

MS.A. (α) ἄνδρες ἀπὸ τῶν πρεσβυτέρων Ἰσραὴλ, (β) λόγος κυρίου πρός με,

Et suffodiam parietem, quem linivistis: & cadet. Et ponam eum 14
super terram, & revelabuntur
fundamenta ejus ; & cadet: &
consumemini cum increpationib⁹:
& cognoscetis, quia ego Dominus. Et complebo furorem meum 15
super parietẽ : et super eos qui linunt eũ, cadet. Dixiq; ad vos;
Non est paries, neque qui linunt
eum, Prophetæ Israel, qui prophetant 16
super Hierusalem, et qui vident illi pacem, & non est pax,
dicit Dominus. Et tu, fili hominis, 17
obfirma faciem tuam super filias
populi tui , quæ prophetant de
corde suo: & propheta super eas,
Et dices ; Hæc dicit Dominus ; 18
(b) Væ his, quæ consuunt cervicalia sub omni cubito manûs, &
quæ faciunt velamina super omne caput universæ ætatis, ut
pervertant animas. Animæ subversæ sunt populi mei. Et animas
salvabant, Et contaminabant me 19
ad populum meum propter pugillum hordei, & propter fragmenta
panum, ut occiderent animas quas
non oportuit mori, & salvarent
animas, quas non oportuit vivere,
dum loquimini vos populo audienti vanos sermones. Propterea 20
hæc dicit Dominus Dñs; *Ecce ego*
super cervicalia vestra, super quæ
vos illîc colligitis animas: et disrumpam ea de brachiis vestris. Et
emittam animas quas vos pervertitis animas eorum, in dispersionem:
Et disrumpam velamina 21
vestra: & liberabo populum meũ
de manu vestra : & non erunt
ultrà in manibus vestris in congregationem: & cognoscetis, quia
ego Dominus. Pro eo quòd (i) per- 22
vertebatis cor (k) justi, & ego non
pervertebam eum, & confortabatis manus iniqui, ut penitùs
non converteretur à via sua pessima, & viveret ipse ; Propterea 23
mendacia non videbitis, & divinationes nequaquam divinabitis
ampliùs : & liberabo populum
meum de manu vestra : & scietis, quia ego Dominus.

CAP. XIV.

ET venerunt ad me de senioribus (a) viri populi Israel, & se- 1
derunt ante faciem meam. Et factus est ad me sermo Domini, di- 2
cens; Fili hominis, viri isti posuerunt cogitationes suas in cordib⁹ 3
suis : & tormentum iniquitatum suarum posuerunt ante faciem suam : si respondens respondebo eis?

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 ואפגר ית קרתא דאתנביתון בה נבואן דשקר וארמנה לארעא ויתגלון אושהא ותפל
15 ותשתיצון בגוה ותדעון ארי אנא יי׃ ויחול רוגזי בקרתא ובנביי שקרא דאתנביאו
16 בה נבואן דשקר ויתאמר לכון לית קרתא ולית נביי שקרא׃ נביי שקרא דישראל
17 דמתנבן על ירושלם ומטעין לה באולפן שלם ולית שלם אמר יי אלהים׃ ואת בר אדם
18 קביל נבואה על בנת עמך דמתנבן כרעות לבהן ואתנבי עליהן׃ ותימר כדנן אמר
יי אלהים וי עליהן על דמחטטן רקיעי חשוך על כל מרפקי ידין ועבדן פת כומרין על
ריש כל קומה לאבדא נפשן הנפשת עמי אתן יכלן לאבדא ולקימא הלא נפשתכן
19 דילכן הלא יכלתן לקימא׃ ואחלתן רעותי בעמי בשעלי סערין ובמנוסין דלחים
לאמתא נפשן דלא חזי להן דימותון לא אתן ממיתן ולקימא נפשן דלא חזי להן לקימא
20 דתתקימן לא אתן מקימן בכדבותכן לעמי שמעי כדבין׃ בכן כדנן אמר יי אלהים הא
אנא שלח רוגזי על רקיעי חשיכין דאתן מטעין למימר בהון אנחנא מחרשן ית נפשן
לאבדא ואפסיק יתהן מעל דרעיכון ואשיזיב ית נפשתא דאתון מחרשן ית נפשיהן
21 לאבדותהא׃ ואפסיק ית פת כומריכון ואשיזיב ית עמי מידכון ולא יתמסרון עוד בידכון
22 לאשתיצאה ותדעון ארי אנא יי׃ חלף דאכהיתן לב זכי למהוי שקר ומן קדם מימרי
23 לא אתכהי ולתקפא ידי רשיעא בדיל דלא למתב מאורחיה בישתא לקימותיה׃ בכן
שקר לא תתנבאון ואולפן לא תילפון עוד ואשיזיב ית עמי מידכון ותדעון ארי אנא יי׃

יד

1 אמר נביא אתו לותי גברין מסבי ישראל ויתיבו קדמי׃ והוה פתגם נבואה מן קדם יי 2
3 עמי למימר׃ בר אדם גבריא האלין אסיקו פולחן טעותהון על לבהון ותקלת חוביהון
יהבו לקביל אפיהון האשתאלא ישתאל במימרי להון׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et destruam civitatem in qua vos prophetâstis prophetias falsas, & corrue- 14
re faciam eam in terram, & revelabuntur fundamenta ejus; & cadet : &
consummabimini in medio ejus, & scietis quia ego Dñs. Et residebit in- 15
dignatio mea in civitate & pseudoprophetis qui prophetarunt in ea pro-
phetias falsas, & dicetur vobis : Non est civitas nec pseudoprophetæ. Pro- 16
phetæ falsi Israel qui prophetant ad Jerusalem, & decipiunt eam oraculo
pacis, cùm non sit pax, dicit Dominus Deus. Et tu fili hominis assume pro- 17
phetiam super filias populi tui, quæ prophetant juxta voluntatem cordis
sui, & vaticinare super eas. Et dices : Hæc dicit Dominus Deus: Væ eis 18
quæ consuunt pulvillos inopis super omnes *axillas* manuum, & faciunt cer-
vicalia ad caput universæ staturæ ad perdendas animas. Nunquid animas
populi mei vos potestis perdere aut vivificare? nunquid animas vestras quæ
ad vos spectant, vos potestis vivificare? Et violâstis voluntatem meam in 19
populo meo pugillis hordei & fragmentis panis, ad occidendas animas
quas non decebat mori, *non* vos occiditis; & ad vivificandas animas quas
omninò non decebat vivere, *non* vos vivificatis; cùm mentimini populo meo
qui audit mendacia. Propterea hæc dicit Dominus Deus : Ecce ego mitto 20
furorem meum ad pulvillos inopum, quos decipitis, dicentes: In his nos in-
cantamus animas ut pereant: & dirumpam eos ex brachiis vestris, & libe-
rabo animas, quas animas ut perdatis, veneficiis utimini. Et dirumpam cer- 21
vicalia vestra, & liberabo populum meum de manu vestra, & non tradentur
ultrà in manũ vestram ut perdantur; & scietis quia ego Dñs. Pro eo quòd 22
dolore affecistis cor justi, ut sit falsum, & à facie Verbi mei non est percus-
sum, & ad confortandas manus impii, ut non converteretur à via sua mala,
ut viveret. Propterea falsa non prophetabitis & doctrinam non docebitis 23
amplius: & eruam populum meum de manu vestra, & scietis quia ego Dñs.

CAP. XIV.

DIxit propheta: Venerunt ad me viri de senioribus Israel, & sederunt 1
coram me. Et factum est verbum prophetiæ à facie Domini ad me, dicens: 2
Fili hominis, viri isti ascendere fecerunt cultum idolorum suorum in cor- 3
suum et scandalum scelerum suorum posuerunt contra faciem suam: nunquid interrogatus respondebo eis in verbo meo?

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܣܚܘܦܝܗ ܠܫܘܪܐ ܕܛܫܥܬܘܢ. ܘܢܦܠ. ܘܐܪܡܝܘܗܝ ܠܐܪܥܐ. ܘܢܬܓܠܘܢ ܫܬܐܣܘܗܝ. 14
ܘܬܦܠܘܢ. ܘܬܣܬܝܦܘܢ ܒܓܘܗ. ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܘܐܫܡܠܐ ܚܡܬܝ ܒܫܘܪܐ. 15
ܘܒܐܝܠܝܢ ܕܛܫܝܢ ܗܘܘ ܠܗ ܟܕ ܢܦܠ. * ܘܢܐܡܪ ܠܟܘܢ ܕܐܝܟܘ ܫܘܪܐ. ܘܐܝܟܐ ܐܢܘܢ 16
ܢܒܝܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܕܡܬܢܒܝܢ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ. ܘܚܙܝܢ ܠܗ ܚܙܘܐ ܕܫܠܡܐ. ܘܠܝܬ ܫܠܡܐ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ. * ܘܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ. ܣܝܡ ܐܦܝܟ ܥܠ ܒܢܬܗ ܕܥܡܟ ܕܡܬܢܒܝܢ ܡܢ 17
ܠܒܗܝܢ. ܘܐܬܢܒܐ ܥܠܝܗܝܢ. ܘܐܡܪ ܠܗܝܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ. * ܘܝ ܠܗܝܢ ܠܡܚܝܛܢ 18
ܟܣܬܐ ܠܟܠܗܝܢ ܕܐܝܕܝܐ. ܘܥܒܕܢ ܡܟܣܝܬܐ ܥܠ ܪܝܫܐ ܕܟܠ ܩܘܡܐ. ܠܡܨܕ ܢܦܫܬܐ.
ܢܦܫܬܗ ܕܥܡܝ ܨܕܝܢ ܐܢܬܝܢ. ܘܢܦܫܬܟܝܢ ܡܚܝܢ ܐܢܬܝܢ. * ܘܛܢܦܬܝܢܢܝ 19
ܠܥܡܝ ܒܚܘܦܢܐ ܕܣܥܪܐ. ܘܒܦܪܝܬܐ ܕܠܚܡܐ. ܠܡܩܛܠ ܢܦܫܬܐ ܕܠܐ ܚܝܒܢ ܗܘܝ
ܠܡܡܬ. ܘܠܡܚܝܘ ܢܦܫܬܐ ܕܠܐ ܚܝܒܢ ܗܘܝ ܠܡܚܐ. ܘܟܕܒܬܝܢ ܠܥܡܐ ܕܫܡܥ
ܟܕܒܘܬܐ. * ܡܛܠܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܥܠ ܟܣܬܟܝܢ ܕܨܕܝܢ ܐܢܬܝܢ 20
ܒܗܝܢ ܢܦܫܬܐ. ܘܐܨܪܘܐ ܐܢܝܢ ܡܢ ܕܪܥܝܟܝܢ. ܘܐܫܪܐ ܢܦܫܬܐ ܐܝܠܝܢ ܕܨܕܝܢ ܐܢܬܝܢ. ܘܐܦܪܚ
ܐܢܝܢ. * ܘܐܨܪܐ ܡܨܝܕܬܟܝܢ. ܘܐܦܨܐ ܠܥܡܝ ܡܢ ܐܝܕܝܟܝܢ. ܘܠܐ ܢܬܬܨܝܕܘܢ ܠܡܨܝܕܬܐ 21
ܒܐܝܕܝܟܝܢ. ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܕܐܟܐܒܬܝܢ ܠܒܗ ܕܙܕܝܩܐ ܒܕܓܠܘܬܐ. ܘܐܢܐ ܠܐ 22
ܐܟܐܒܬܗ. ܘܐܚܣܢܬܝܢ ܐܝܕܝܗ ܕܥܘܠܐ. ܕܠܐ ܢܬܘܒ ܡܢ ܐܘܪܚܗ ܒܝܫܬܐ ܘܢܚܐ.
* ܡܛܠܗܢܐ ܫܪܓܪܓܐ ܠܐ ܬܚܙܝܢ. ܘܩܘܣܡܐ ܠܐ ܬܩܣܡܢ. ܘܐܦܨܐ ܠܥܡܝ ܡܢ ܐܝܕܝܟܝܢ. 23
ܘܬܕܥܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ.
* ܫܠܡ * ܝܓ *
* ܘܐܬܘ ܠܘܬܝ ܐܢܫܝܢ ܡܢ ܩܫܝܫܐ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܠܡܫܐܠ ܡܢ ܡܪܝܐ. ܘܝܬܒܘ ܩܕܡܝ. 1
* ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ. ܓܒܪܐ ܗܠܝܢ ܐܣܩܘ ܕܚܠܬܗܘܢ ܥܠ 2 3
ܠܒܗܘܢ. ܘܠܡܬܩܠܢܘܬܐ ܕܥܘܠܗܘܢ. ܣܡܘ ܠܘܩܒܠ ܐܦܝܗܘܢ. ܘܐܬܒܥ ܦܘܪܥܢܐ ܡܢܗܘܢ.

Et deſtruam parietẽ quem liniviſtis, ruẽtque: 14
humi proſternam eum, & retegentur funda-
menta ipſius: cadetis & deſtruemini in medio
ejus, & ſcietis me eſſe Dñm. Ita complebo 15
iram meam in parietem & in illos qui linie-
bant eum, quum ceciderit. Et dicetur vobis, 16
Ubi eſt paries, & ubi ſunt prophetæ Iſraelis,
qui prophetabant de Jeruſalem, & videbant
ei viſiones pacis, quum nulla pax eſſet, ait
Dñs dominorũ? Jam verò, fili hominis, vultũ 17
tuum adjice ad filias populi tui, quæ ex animo
ſuo prophetant. Propheta contra eas, & dic
illis; Sic ait Dñs dominorũ; Væ illis quæ con- 18
ſuunt pulvillos pro cubitis brachiorum, &
operimenta conficiunt pro quolibet capite, &
quâcunq; ſtaturâ, ad venandas animas: animas
populi mei venamini, animas autem veſtras
vivas ſervatis. Contaminatis populũ meũ pro 19
pugillis hordei & fruſtulis panis, ad peri-
mendas animas quæ mori non debebant: &
vivas ſervandas animas quæ vivere non debe-
bant: & mentitæ eſtis apud populum qui au-
ſcultat mendacio. Propterea ſic ait Dñs do- 20
minorum; Ecce me contra pulvillos veſtros
quibus animas venamini, & lacerabo eos à
brachiis veſtris, dimittámq; animas quas ve-
namini, & avolare faciam illas: Et lacerabo 21
inſtrumenta veſtra, populúmq; meum de ma-
nibus veſtris liberabo, ne reti ſe committant
ampliùs inter manus veſtras: & experiamini
me eſſe Dñm. Quia cor juſti mendacio tranſ- 22
verberâſtis, quem ego dolore non affeceram;
& manus iniquorum confirmâſtis, ne reverte-
rentur à viis ſuis pravis ac viverent: Dein- 23
ceps vanitatem non videbitis, & divinationẽ
non divinabitis ampliùs: ita populum meum
eripiam è manibus veſtris, & agnoſcetis me
eſſe Dominum.

CAP. XIV.

DEinde venientes ad me quidam è ſeniori- 1
bus Iſraelitarum ad conſulendum Dominum,
ſederunt coram me. Factúſq; eſt ad me ſermo 2
Domini, dicendo; Fili hominis, viri iſti deos 3
ſuos induxerunt in animum ſuum, & offendi-
culum iniquitatis ſuæ ob oculos ſibi propo-
ſuerunt: ideo ultionem ſumam ab eis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

14 * واهدم الحايط الذي لبستموه فيسقط * واضعه علي الارض * فتنكشف اساساته ويسقط *
15 ويمضي بتبكيتات * وتعلمون اني انا الرب * واكمل غضبي علي الحايط وعلي الذين
16 لبسوه فيسقط * وقلت لكم * اليس هذا الحايط * واليس الذين لبسوه انبياء اسرايل * الذين
17 يتنبون علي ايروسليم * ويرون لها السلامة وليس يكون سلامة * يقول ادوناي الرب * وانت يا
18 ابن الانسان * شدد وجهك علي بنات شعبك المتنبيات من قلبهم * وتنبا عليهم وتقول * هكذا
يقول ادوناي الرب * الويل للاتي يخيطن وسايد لكل مرفق يد * ويصنعن عمايم لكل راس كل
19 قامة * ليصطدن الانفس * وانفس شعبي صيدت * واقتنوا نفوسا * ونجسوني لشعبي من اجل
حفنة شعير * ومن اجل كسر خبز * ليقتلوا النفوس التي لا يجب لها ان تموت * واقتنوا نفوسا
20 الذي لا ينبغي لها ان تعيش * عندما تنطقون للشعب المصغي للنغمات الباطلة * لاجل
هذا هكذا يقول الرب الرب * ها انا علي وسايدكم التي بها انتن تصطدن هناك النفوس *
21 فامزقها من اذرعتكم * وارسل النفوس التي انتم تقوتون نفوسها للتفريق * وامزق ارديتكم *
22 وانجي شعبي من يدكم * ولا يكونون في يديكم ايضا للشرك * وتعلمون اني انا الرب * من
اجل انكم اصطدتم قلب الصديق بالظلم * وانا لم اصطده * وقويتم ايدي الاثيم ان لا
23 يرجع بالكلية من طريقه الشرير * ليرجع ويحيي * لاجل هذا لا تنظرون الكذب * ولا تنجمون
تنجيما * لاني انجي شعبي من يدكم * وتعلمون اني انا الرب *

* الفصل الرابع عشر *

1 * واتي الي رجال من مشايخ اسرايل * وجلسوا قدام وجهي * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن
2 3 الانسان * هاولاء الرجال وضعوا ضمايرهم علي قلوبهم * وعقوبة ظلاماتهم وضعوها قدام
وجوههم * اجاوب اجاوبهم *

Evertâmque parietem quem liniviſtis, & 14
cadet; & æquabo illum ſolo, & rete-
gentur fundamenta ipſius, cadétque; &
abſumetur increpationibus: & ſentietis
me eſſe Dominum. Et explebo iram 15
meam ſuper parietem, & ſuper eos qui
liniverunt eum, cadétque. Tum dicam 16
vobis; Annon hic eſt paries ille? &
nonne qui liniverunt eum, prophetæ Iſ-
raelis? qui prophetant de Jeruſalem, &
vident ei pacem, cùm non ſit pax, dicit
Adonai Dominus. Tu itaque O fili 17
hominis, obſirma faciem tuam contra fi-
lias populi tui ſuopte ingenio prophetan-
tes; & propheta contra eas, ac dicas;
Ita dicit Adonai Dominus; Væ iis quæ 18
conſuunt cervicalia cuivis cubito manûs,
& conficiunt vittas cuivis capiti cujuſ-
cunque ſtaturæ, ad captandas animas.
Animæ quidem populi mei captæ ſunt,
animas autem quaſdam acquiſiverunt:
Et contaminaverunt me apud popu- 19
lum meum pro pugillo hordei, &
pro fragmento panis; ut occiderent ani-
mas quas mori non decebat, & acqui-
rerent animas quas vivere non decebat;
dum alloquimini populum ad muſas va-
nas intentum. Propterea ſic ait Do- 20
minus Deus; Ecce me contra cervicalia ve-
ſtra quibus vos captatis illic animas, &
lacerabo ea de brachiis veſtris, dimittám-
que animas quarum vos nutritis animas,
in diſperſionem: Et lacerabo vela ve- 21
ſtra, eripiámque populum meum de ma-
nu veſtra, ne ſint ampliùs inter manus ve-
ſtras ad laqueos: & ſentietis me eſſe Do-
minum. Quia cor juſti iniquitate ve- 22
nati eſtis, quod ego minimè venatus fue-
ram; & confortâſtis manus iniqui, ne
reverteretur omnino à via ſua mala, ut
converſus viveret: Ideò nec falſum 23
videbitis, neque divinationes prædicetis:
quia populum meum eripiam è manu ve-
ſtra, & ſcietis me eſſe Dominum.

CAP. XIV.

VEnerunt autem ad me viri quidam 1
è ſenioribus Iſraelis, & ſederunt coram
facie mea. Tum fuit ſermo Domini ad 2
me, dicens; O fili hominis, viri iſti po- 3
ſuerunt conſilia ſua in cordibus ſuis, &
pœnam impietatum ſuarum poſuerunt antè
facies ſuas: reſpondénſne reſpondebo eis?

: Deus Dominus dixit Sic : eos ad *dices* & , eos alloquere Propterea
4 לָכֵן דַּבֵּר־אוֹתָם וְאָמַרְתָּ אֲלֵיהֶם כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה
in sua idola fecerit ascendere *qui* Israel domo de *vir* *Vir*
אִישׁ אִישׁ מִבֵּית יִשְׂרָאֵל אֲשֶׁר יַעֲלֶה אֶת־גִּלּוּלָיו אֶל־
venerit &, *suas facies* contra posuerit suæ iniquitatis offendiculũ & , suũ cor
לִבּוֹ וּמִכְשׁוֹל עֲוֹנוֹ יָשִׂים נֹכַח פָּנָיו וּבָא
multitudine in venienti ipsi respondebo Dominus Ego : Prophetam ad
אֶל־הַנָּבִיא אֲנִי יְהוָה נַעֲנֵיתִי לוֹ בָה בְּרֹב
quòd, suo corde in Israel domum *capiendum Ad* . suorum idolorum
5 גִּלּוּלָיו׃ לְמַעַן תְּפֹשׂ אֶת־בֵּית־יִשְׂרָאֵל בְּלִבָּם אֲשֶׁר
ad dic Propterea . ipsi universi suis idolis in me *desuper* se *alienaverunt*
6 נָזֹרוּ מֵעָלַי בְּגִלּוּלֵיהֶם כֻּלָּם׃ לָכֵן אֱמֹר אֶל־
cõverti facite &, Convertimini : Deus Domin° dixit Sic : Israel domum
בֵּית יִשְׂרָאֵל כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה שׁוּבוּ וְהָשִׁיבוּ
facite cõverti, vestris abominationib° universis *desuper* &, vestris idolis *desuper*
מֵעַל גִּלּוּלֵיכֶם וּמֵעַל כָּל־תּוֹעֲבֹתֵיכֶם הָשִׁיבוּ
qui , *peregrino* de & , Israel domo de *vir* *vir* *Cùm* . vestras facies
7 פְנֵיכֶם׃ כִּי אִישׁ אִישׁ מִבֵּית יִשְׂרָאֵל וּמֵהַגֵּר אֲשֶׁר־
fecerit ascendere & , me post à se separaverit & , Israel in *peregrinabitur*
יָגוּר בְּיִשְׂרָאֵל וְיִנָּזֵר מֵאַחֲרַי וְיַעַל
contra posuerit suæ iniquitatis offendiculum &, suum cor in sua idola
גִּלּוּלָיו אֶל־לִבּוֹ וּמִכְשׁוֹל עֲוֹנוֹ יָשִׂים נֹכַח
Domin° Ego: me pro eum *inquirendum ad*, prophetam ad venerit &, *suas facies*
פָּנָיו וּבָא אֶל־הַנָּבִיא לִדְרָשׁ־לוֹ בִי אֲנִי יְהוָה
eum *vastabo* & , ipsum virum *in meas facies* dabo Et . me *in* ei *respondebitur*
8 נַעֲנֶה־לּוֹ בִּי׃ וְנָתַתִּי פָנַי בָּאִישׁ הַהוּא וַהֲשִׂמֹתִיהוּ
: mei populi medio è eum faciam succidere & , proverbia in & , signum in
לְאוֹת וְלִמְשָׁלִים וְהִכְרַתִּיו מִתּוֹךְ עַמִּי
fuerit locut° &, fuerit seduct° cùm propheta Et. Domin° *ego* quòd scietis &
9 וִידַעְתֶּם כִּי־אֲנִי יְהוָה׃ וְהַנָּבִיא כִי־יְפֻתֶּה וְדִבֶּר
extendam & : illum prophetam seduxi Dominus ego , verbum
דָּבָר אֲנִי יְהוָה פִּתֵּיתִי אֵת הַנָּבִיא הַהוּא וְנָטִיתִי אֶת־
. Israel mei populi medio è eum faciam delere &, eum super meam manũ
יָדִי עָלָיו וְהִשְׁמַדְתִּיו מִתּוֹךְ עַמִּי יִשְׂרָאֵל׃
. erit prophetæ *iniquitas* sic, quærentis *iniquitas* Sicut . *suã iniquitatẽ ferent* Et
10 וְנָשְׂאוּ עֲוֹנָם כַּעֲוֹן הַדֹּרֵשׁ כַּעֲוֹן הַנָּבִיא יִהְיֶה׃
ultrà polluãtur non &, *me post à* , Israel domus ultrà errent non Ut
11 לְמַעַן לֹא־יִתְעוּ עוֹד בֵּית־יִשְׂרָאֵל מֵאַחֲרַי וְלֹא־יִטַּמְּאוּ עוֹד
ero ego &, populũ in mihi erunt Et . suis prævaricationib° universis in
בְּכָל־פִּשְׁעֵיהֶם וְהָיוּ־לִי לְעָם וַאֲנִי אֶהְיֶה
, me ad Domini verbum fuit Et . Deus Dominus dixit , Deum in eis
12 לָהֶם לֵאלֹהִים נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה׃ וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי
prævaricando , mihi peccaverit cum terra , hominis Fili : dicendo
13 לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם אֶרֶץ כִּי תֶחֱטָא־לִי לִמְעָל־
virgam ei conteram & , eam super meã manũ extendã & , prævaricationẽ
מַעַל וְנָטִיתִי יָדִי עָלֶיהָ וְשָׁבַרְתִּי לָהּ מַטֵּה־
, *hominem* ea ex succidere faciam & , famem eam in mittam & : panis
לֶחֶם וְהִשְׁלַחְתִּי־בָהּ רָעָב וְהִכְרַתִּי מִמֶּנָּה אָדָם
, Noach, ejus medio in isti viri tres fuerint Et . *jumentum* &
14 וּבְהֵמָה׃ וְהָיוּ שְׁלֹשֶׁת הָאֲנָשִׁים הָאֵלֶּה בְּתוֹכָהּ נֹחַ
dixit , suam animam liberabunt sua justitia in ipsi ; Ijob & , Daniel
דָּנִאֵל וְאִיּוֹב הֵמָּה בְצִדְקָתָם יְנַצְּלוּ נַפְשָׁם נְאֻם
, terram in fecero transire malam bestiam Si . Deus Dominus
15 אֲדֹנָי יְהוִה׃ לוּ־חַיָּה רָעָה אַעֲבִיר בָּאָרֶץ
. *bestiæ faciebus* à transeunte absque desolata fuerit & , eam orbaverit &
וְשִׁכְּלָתָּה וְהָיְתָה שְׁמָמָה מִבְּלִי עוֹבֵר מִפְּנֵי הַחַיָּה׃
Dominus dixit , ego *vivens*, ejus medio in isti viri Tres
16 שְׁלֹשֶׁת הָאֲנָשִׁים הָאֵלֶּה בְּתוֹכָהּ חַי־אָנִי נְאֻם אֲדֹנָי
, liberabuntur ipsi soli ipsi : liberabunt filias *si &* , filios si , Deus
יְהוִה אִם־בָּנִים וְאִם־בָּנוֹת יַצִּילוּ הֵמָּה לְבַדָּם יִנָּצֵלוּ
. desolata erit terra &
וְהָאָרֶץ תִּהְיֶה שְׁמָמָה׃

Versio VULG. LAT.

4 Propter hoc loquere eis, & dices ad eos; Hæc dicit Dominus Deus; Homo homo de domo Israel, qui posuerit immunditias suas in corde suo, & scandalum iniquitatis suæ statuerit contra faciem suam, & venerit ad prophetam interrogans per eum me : ego Dominus respondebo ei in multitudine immunditiarum suarum : 5 Ut capiatur domus Israel in corde suo, quo recesserunt à me in cunctis idolis suis. 6 Propterea dic ad domum Israel; Hæc dicit Dominus Deus; Convertimini, & recedite ab idolis vestris, & ab universis contaminationibus vestris avertite facies vestras. 7 Quia homo homo de domo Israel, & de proselytis quicunque advena fuerit in Israel, si alienatus fuerit à me, & posuerit idola sua in corde suo, & scandalum iniquitatis suæ statuerit contra faciem suam, & venerit ad prophetam ut interroget per eum me: ego Dominus respondebo ei per me. 8 Et ponam faciem meam super hominẽ illum, & faciam eum in exemplũ, & in proverbium, & disperdam eum de medio populi mei : & scietis quia ego Domin°. 9 Et propheta cùm erraverit, & locutus fuerit verbum: ego Dominus decepi prophetam illum : & extendam manum meam super illum : & delebo eum de medio populi mei Israel. 10 Et portabunt iniquitatem suam : juxta iniquitatem interrogantis, sic iniquitas prophetæ erit : 11 Ut non erret ultrà domus Israel à me, neque polluatur in universis prævaricationibus suis : sed sint mihi in populum, & ego sim eis in Deum, ait Dominus exercituum. 12 Et factus est sermo Domini ad me, dicens; 13 Fili hominis, terra cùm peccaverit mihi, ut prævaricetur prævaricans, extendam manum meam super eam, & conteram virgam panis ejus : & immittam in eam famem, & interficiam de ea hominem, & jumentum. 14 Et si fuerint tres viri isti in medio ejus, Noe, Daniel, & Job: ipsi justitiâ suâ liberabunt animas suas, ait Dominus exercituum. 15 Quòd si & bestias pessimas induxero super terram ut vastem eam: et fuerit invia, eò quòd non sit pertransiens propter bestias : 16 Tres viri isti si fuerint in ea, Vivo ego, dicit Dominus Deus ; quia nec filios, nec filias liberabunt : sed ipsi soli liberabuntur, terra autem desolabitur.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

4 Διὰ τοῦτο λάλησον αὐτοῖς, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτούς, Τάδε λέγει (γ) κύριος, Ἄνθρωπος ἄνθρωπος ἐκ τοῦ οἴκου Ἰσραήλ, ὃς ἂν θῇ τὰ διανοήματα αὐτοῦ ἐπὶ τὴν καρδίαν αὐτοῦ, καὶ τὴν κόλασιν τῆς ἀδικίας αὐτοῦ τάξῃ πρὸ προσώπου αὐτοῦ, καὶ ἔλθῃ πρὸς τὸν προφήτην, ἐγὼ κύριος ἀποκριθήσομαι αὐτῷ ἐν οἷς ἐνέχεται ἡ διάνοια αὐτοῦ, 5 Ὅπως (δ) πλαγιάσῃ τὸν οἶκον τοῦ Ἰσραὴλ κατὰ τὰς καρδίας αὐτῶν τὰς ἀπηλλοτριωμένας ἀπ' ἐμοῦ ἐν τοῖς ἐνθυμήμασιν αὐτῶν. 6 Διὰ τοῦτο εἰπὸν (ε) εἰς τὸν οἶκον τοῦ Ἰσραήλ, Τάδε λέγει κύριος κύριος (ζ), Ἐπιστράφητε καὶ ἀποστρέψατε ἀπὸ τῶν ἐπιτηδευμάτων ὑμῶν, καὶ ἀπὸ πασῶν τῶν ἀσεβειῶν ὑμῶν, καὶ (η) ἐπιστρέψατε τὰ πρόσωπα ὑμῶν. 7 Διότι ἄνθρωπος ἄνθρωπος ἐκ τοῦ οἴκου Ἰσραήλ, (θ) καὶ ἐκ τῶν προσηλύτων τῶν (ι) προσηλυτευόντων ἐν τῷ Ἰσραήλ, ὃς ἂν ἀπαλλοτριωθῇ ἀπ' ἐμοῦ, καὶ θῆται (κ) τὰ ἐνθυμήματα αὐτοῦ ἐπὶ τὴν καρδίαν αὐτοῦ, καὶ τὴν κόλασιν τῆς ἀδικίας αὐτοῦ τάξῃ πρὸ προσώπου αὐτοῦ, καὶ ἔλθῃ πρὸς τὸν προφήτην τοῦ ἐπερωτῆσαι αὐτὸν ἐν ἐμοί, ἐγὼ κύριος ἀποκριθήσομαι αὐτῷ, 8 ἐν ᾧ ἐνέχεται ἐν αὐτῷ. Καὶ στηριῶ τὸ πρόσωπόν μου ἐπὶ τὸν ἄνθρωπον ἐκεῖνον, καὶ (λ) θήσομαι αὐτὸν εἰς ἔρημον καὶ εἰς ἀφανισμόν, καὶ ἐξαρῶ αὐτὸν ἐκ μέσου τοῦ λαοῦ μου, 9 καὶ ἐπιγνώσεσθε ὅτι ἐγὼ κύριος. Καὶ ὁ προφήτης ἐὰν πλανήσῃ καὶ λαλήσῃ, ἐγὼ κύριος (μ) πεπλάνηκα τὸν προφήτην ἐκεῖνον, καὶ ἐκτενῶ τὴν χεῖρά μου ἐπ' αὐτόν, καὶ ἀφανιῶ 10 αὐτὸν ἐκ μέσου τοῦ λαοῦ μου Ἰσραήλ. Καὶ (ν) λήψονται τὴν ἀδικίαν αὐτῶν, κατὰ τὸ ἀδίκημα τοῦ ἐπερωτῶντος, καὶ κατὰ τὸ ἀδίκημα ὁμοίως τῷ 11 προφήτῃ ἔσται· Ὅπως μὴ πλανᾶται ἔτι ὁ οἶκος (ξ) τοῦ Ἰσραὴλ ἀπ' ἐμοῦ, καὶ ἵνα μὴ μιαίνωνται ἔτι ἐν πᾶσι τοῖς παραπτώμασιν αὐτῶν· καὶ ἔσονταί μοι εἰς λαόν, καὶ ἐγὼ ἔσο12μαι αὐτοῖς εἰς θεόν, λέγει (ο) κύριος. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μέ, λέγων, 13 Υἱὲ ἀνθρώπου, (π) γῆ ἢ ἐὰν ἁμάρτῃ μοι τοῦ παραπεσεῖν (ρ) παράπτωμα, καὶ ἐκτενῶ τὴν χεῖρά μου ἐπ' αὐτήν, καὶ συντρίψω (σ) αὐτῆς στήριγμα ἄρτου, καὶ ἐξαποστελῶ ἐπ' αὐτὴν λιμόν, καὶ ἐξαρῶ (τ) ἐξ αὐτῆς ἄνθρω14πον καὶ κτήνη. Καὶ ἐὰν ὦσιν οἱ τρεῖς ἄνδρες οὗτοι ἐν μέσῳ αὐτῆς, Νῶε καὶ Δανιὴλ καὶ Ἰώβ, (υ) αὐτοὶ ἐν τῇ δικαιοσύνῃ αὐτῶν σω15θήσονται, λέγει (φ) κύριος. Ἐὰν καὶ θηρία πονηρὰ (χ) ἐπάγω ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ τιμωρήσομαι αὐτήν, καὶ ἔσται εἰς ἀφανισμόν, (ψ) οὐκ ἔσται ὁ διοδεύων ἀπὸ προσώπου τῶν θηρίων, 16 Καὶ οἱ τρεῖς ἄνδρες οὗτοι ἐν μέσῳ αὐτῆς ὦσι, Ζῶ ἐγώ, λέγει κύριος, εἰ υἱοὶ (ω) ἢ θυγατέρες σωθήσονται, ἀλλ' ἢ αὐτοὶ μόνοι σωθήσονται, ἡ δὲ γῆ ἔσται εἰς ὄλεθρον.

Propterea loqueris eis, & dices ad eos; Hæc dicit Dominus; Homo, homo de domo Israel, qui posuerit cogitationes suas in corde suo, et tormentum iniquitatis suæ posuerit ante faciem suam, et venerit ad (b) prophetam; ego Dominus respondebo ei in his, quibus tenetur mens ejus: ut (c) averteret domum Israel secundùm corda eorũ, quæ abalienata sunt à me in cogitationibus ipsorum. Propterea dic ad domum Israel; Hæc dicit Dominus Domin°; Convertimini, & recedite ab adinventionibus vestris, & ab omnibus impietatibus vestris : & convertite facies (d) vestras. Quia homo, homo de domo Israel, et de advenis; qui peregrinantur in Israel, qui abalienatus fuerit à me, & posuerit cogitationes suas in corde suo, et tormentũ iniquitatis suæ posuerit ante faciem suam, et venerit ad prophetam, ut interroget eum in me; ego Dñs respondebo ei in eo, quo tenetur in ipso: Et obfirmabo faciem meam super hominẽ illũ: & ponã eum in (e) desertum, & in exterminium: & auferam eũ de medio populi mei: et cognoscetis, quia ego Dominus. Et propheta, si (f) errare fecerit, & loqutus (g) fuerit, ego Dominus errare feci prophetam illũ. Et extendã manũ meam super eum; & exterminabo illum de medio populi mei Israel. Et accipient iniquitatem suam: secundùm iniquitatẽ interrogantis; (h) et juxta iniquitatem similiter prophetæ erit: ut nequaquã erret ultrà domus Israel à me, & ut non polluantur adhuc in cunctis delictis suis. Et erunt mihi in populũ: & ego ero eis in Deum, dicit Dominus. Et factus est sermo Domini ad me, dicens; Fili hominis, terra, quæcunq; peccaverit mihi, delinquendo delictũ; et extendã manũ meam super eam: & conterã fulcimentũ panis ejus: & immittã in eam famẽ; et auferã de ea hominem, & jumenta. Et, si fuerint tres viri isti in medio ejus, Noe, & Daniel, et Job; ipsi in sua justitia salvabuntur, ait Dominus. Quòd si bestias pessimas inducã super terram, & puniam eam, & erit in dissipationem, non erit pertransiens à facie bestiarũ, Et tres viri isti in medio ej° fuerint; Vivo ego, dicit Dominus ; si filii, aut filiæ salvabuntur: sed ipsi soli salvabuntur : terra autem erit in exterminium. 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16

MS.A. (γ) ἀδωναῒ κύριος, (δ) μὴ διαστρέψωσιν τὸν (ε) πρὸς τὸν (ζ) ὁ θεός, (η) ἐπιστράφητε πρός με. Διότι (θ) καὶ τῶν (ι) προσκειμένων ἐν Ἰσραήλ, ὃς ἐὰν ἀπαλλοτριωθῇ (κ) ἐνθυμήματα (λ) θήσω (μ) ἐπλάνησα (ν) λήψομαι τὴν ἀδικίαν αὐτοῦ, (ξ) Ἰσραὴλ (ο) ἀδωναῒ κύριος. (π) γῆ ἐὰν (ρ) παραπτώματι, (σ) ἀπ' αὐτῆς (τ) ἀπ' αὐτῆς (υ) οὗτοι (φ) ἀδωναῒ κύριος. Ἐὰν δὲ καὶ (χ) ἐπαγάγω (ψ) καὶ οὐκ (ω) καὶ θυγατέρες αὐτῶν σωθήσονται,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 בכן אתנבי להון ותימר להון כדנן אמר יי אלהים גבר גבר מבית ישראל דיסיק פולחן
טעותיה על לביה ותקלת חוביה ישוי לקביל אפוהי וייתי לות נביא אנא יי משתאל
ליה במימרי דאתי למתבע אולפן מן קדמי אף על גב דמתערב בסני פולחן טעותיה׃
5 בדיל לקרבא ית בית ישראל למתן תיובתא בלבהון דסטו מבתר פולחני ואסתאבו
6 בפולחן טעותהון כולהון׃ בכן אמר לבית ישראל כדנן אמר יי אלהים תובו לפולחני
ואעדו מנכון פולחן טעותכון וית כל חובי פולחן טעות תועבתכון ארחיקו מקביל
7 אפיכון׃ ארי גבר גבר מבית ישראל ומן גיוריא דיתגירון בישראל ויסטי מבתר פולחני
ויסק פולחן טעותיה על לביה ותקלת חובוהי ישוי לקביל אפוהי וייתי לות נביא
8 למשאל ליה במימרי אנא יי משתאל ליה במימרי׃ ואתן רגזי בגברא ההוא ואשוניה
9 לאת ולמתלין ואשצניה מגו עמי ותדעון ארי אנא יי׃ ונביא ארי יטעי וימלל פתגמא
אנא יי אטעיתי ית נביא ההוא ואארים ית מחת גבורתי עלוהי ואשצניה מגו עמי ישראל׃
10 ויקבלון חוביהון כחוב דאתי למילף ולא אליף כחוב נביי שקרא יהי׃ בדיל דלא יטעון
11 עוד בית ישראל מבתר פולחני ולא יסתאבון עוד בכל מרדיהון ויהון קדמי לעם ואנא
12 אהוי להון לאלהא אמר יי אלהים׃ והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר׃ בר אדם
13 ארעא ארי תחוב קדמי לשקרא שקר ואארים מחת גבורתי עלה ואתבר בה סעיד מיכלא
14 ואשלח בה כפנא ואשיצי מנה אנשא ובעירא׃ ויהון תלתא גבריא האלין בגוה נח
15 דניאל ואיוב אנון בזכותהון ישיזבון נפשהון אמר יי אלהים׃ אלו חיתא בישתא אעבר
16 בארעא ותתכלנה ותהי לצדו מבלי עדי מן קדם חיתא׃ תלתא גבריא האלין בגוה
קים אנא אמר יי אלהים אם בנין ואם בנן ישיזבון אנון בלחודיהון ישתזבון וארעא
תהי לצדו׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Propterea vaticinare eis, & dices ad eos : Hæc dicit Dñs Deus, Vir vir de domo Israel, qui ascendere fecerit cultum idolorum suorum in cor suum, & scandalum iniquitatis suæ posuerit contra faciem suam, & venerit ad prophetam ; ego Dñs respondebo ei in verbo meo, qui venerit ad quærendum oraculum à facie mea, quamvis implicit° sit in multitudine cultus idolorum suorum. 4
Ut applicem domum Israel; ut ponat pœnitentiam in corde suo, quia declinaverunt à cultu meo, & polluti sunt omnes cultu idolorum suorum. 5
Propterea dic domui Israel : Hæc dicit Dñs Deus, Convertimini ad cultum meum, & auferte à vobis cultum idolorum vestrorum, & omnes iniquitates cult° idolorum abominationum vestrarũ projicite à facie vestra. 6
Quia vir vir de domo Israel, & de peregrinis qui peregrinantur in Israel, qui declinaverit à cultu meo, & ascendere fecerit cultũ idolorũ suorum in cor suũ, & scandalũ iniquitatis suæ posuerit ante faciem suam, & venerit ad prophetam ut interroget eum in verbo meo : ego Dñs respondebo ei in verbo meo. 7
Et dabo furorem meum in hominem illum, & ponam illum in signum & in proverbium ; & disperdam eum de medio populi mei : & scietis quia ego Dñs. 8
Et propheta cùm erraverit & locut° fuerit verbum, ego Dñs errare prophetam illum feci : & levabo plagam potentiæ meæ super eum, & disperdã eũ de medio populi mei Israel. 9
Et suscipient iniquitatem suã: juxta iniquitatẽ venientis ad discendum, & non discit ; juxta iniquitatẽ pseudoprophetæ erit: 10
Ut non decipiantur ampliùs dom° Israel à cultu meo, nec polluantur ultrà in omnibus prævaricationib° suis: sed sint coram me in populum, & ego sim eis in Deum, dicit Dñs Deus. 11
Et factũ est verbũ prophetiæ à facie Dñi mecum dicens: 12
Fili hominis, terra cum peccaverit coram me ut prævaricetur prævaricationẽ, & levabo plagã potentiæ meæ sup eam, & conterã in ea sustentaculũ cibi, & mittã in eam famẽ, & disperdam ex ea hominem & jumentũ. 13
Et si fuerint tres viri isti in medio ej°, Noe, Daniel, & Job: ipsi in justitia sua liberabũt animas suas, dicit Dñs Deus. 14
Si bestias pessimas adduxero in terrã, ut absq; liberis faciant [*habitatores*] ej°, & sit in desolationem, eò quòd non sit pertransiens propter bestias: 15
Et tres viri isti fuerint in medio ejus : vivo ego, dicit Dñs Deus, si liberabunt filios aut filias : sed ipsi soli liberabuntur, & terra erit in desolationem. 16

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

4 * ܡܛܠ ܗܢܐ ܡܠܠ ܥܡܗܘܢ ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܓܒܪ ܓܒܪ ܡܢ ܒܝܬ
ܐܝܣܪܝܠ. ܕܢܣܩ ܕܚܠܬܗ ܥܠ ܠܒܗ. ܘܬܘܩܠܬܐ ܕܥܘܠܗ ܢܣܝܡ ܠܘܩܒܠ ܐܦܘܗܝ.
ܘܢܐܬܐ ܠܘܬ ܢܒܝܐ. ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܗܘܐ ܠܗ ܣܗܕܐ ܒܗ. ܒܣܘܓܐܐ ܕܕܚܠܬܗ. * ܡܛܠ 5
ܕܐܚܘܕ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܒܠܒܗܘܢ. ܕܐܬܢܟܪܘ ܡܢܝ ܒܟܠܗܘܢ ܕܚܠܬܗܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܡܪ 6
ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܬܘܒܘ ܘܐܬܦܢܘ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܕܚܠܬܟܘܢ.
ܘܡܢ ܟܠܗܝܢ ܛܢܦܘܬܟܘܢ. ܐܦܢܘ ܐܦܝܟܘܢ. * ܡܛܠ ܕܓܒܪܐ ܡܢ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܡܢ ܓܝܘܪܐ 7
ܕܡܬܬܘܬܒܝܢ ܒܗܘܢ. ܕܢܬܢܟܪ ܒܐܝܣܪܝܠ. ܕܢܬܦܢܐ ܡܢܝ. ܘܢܣܩ ܕܚܠܬܗ ܥܠ ܠܒܗ:
ܘܬܘܩܠܬܐ ܕܥܘܠܗ ܢܣܝܡ ܠܘܩܒܠ ܐܦܘܗܝ: ܘܢܐܬܐ ܠܘܬ ܢܒܝܐ ܠܡܫܐܠܘܗܝ. ܐܢܐ
ܡܪܝܐ ܐܗܘܐ ܠܗ ܣܗܕܐ ܒܗ. * ܘܐܬܠ ܪܘܓܙܝ ܥܠ ܓܒܪܐ ܗܘ. ܘܐܣܝܡܝܘܗܝ ܠܐܬܐ ܘܠܡܬܠܐ. 8
ܘܐܘܒܕܝܘܗܝ ܡܢ ܓܘ ܥܡܝ. ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܘܢܒܝܐ ܟܕ ܢܛܥܐ. ܘܢܡܠܠ 9
ܡܠܬܐ. ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܛܥܝܬܗ ܠܢܒܝܐ ܗܘ. ܘܐܪܝܡ ܐܝܕܝ ܥܠܘܗܝ. ܘܐܘܒܕܝܘܗܝ. ܡܢ ܓܘ
ܥܡܝ ܐܝܣܪܝܠ. * ܘܢܩܒܠܘܢ ܚܘܒܝܗܘܢ. ܐܟ ܚܘܒܗ ܕܗܘ ܕܫܐܠ. ܐܟܘܬ ܚܘܒܗ ܕܢܒܝܐ 10
ܢܗܘܐ. * ܘܠܐ ܬܘܒ ܢܛܥܘܢ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܡܢܝ. ܘܠܐ ܬܘܒ ܢܬܛܢܦܘܢ ܒܟܠܗܘܢ ܚܘܒܝܗܘܢ. 11
ܐܠܐ ܢܗܘܘܢ ܠܝ ܠܥܡܐ. ܘܐܢܐ ܐܗܘܐ ܠܗܘܢ ܐܠܗܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. * ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܐ 12
ܕܡܪܝܐ ܘܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ. ܐܪܥܐ ܐܢ ܬܚܛܐ ܠܝ. ܘܬܥܘܠ ܥܘܠܐ ܩܕܡܝ. ܐܪܝܡ ܐܝܕܝ 13
ܥܠܝܗ. ܘܐܬܒܪ ܒܗ ܣܡܟܐ ܕܠܚܡܐ. ܘܐܫܕܪ ܥܠܝܗ ܟܦܢܐ. ܘܐܘܒܕ ܡܢܗ. ܒܢܝܢܫܐ 14
ܘܒܥܝܪܐ. * ܘܐܢ ܢܗܘܘܢ ܒܗ ܬܠܬܐ ܓܒܪܝܢ: ܢܘܚ ܘܕܢܝܐܝܠ ܘܐܝܘܒ. ܗܢܘܢ 15
ܒܙܕܝܩܘܬܗܘܢ ܢܦܨܘܢ ܢܦܫܗܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. * ܘܐܢ ܚܝܘܬܐ ܒܝܫܬܐ ܐܥܠ
ܥܠ ܐܪܥܐ ܘܬܚܪܒܝܗ. ܘܬܗܘܐ ܠܚܘܪܒܐ ܡܢ ܕܠܐ ܥܒܪ ܒܗ ܡܢ ܩܕܡ ܚܝܘܬܐ. * ܘܗܠܝܢ ܬܠܬܐ 16
ܓܒܪܝܢ ܢܗܘܘܢ ܒܗ. ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܕܠܐ ܢܦܨܘܢ ܠܐ ܒܢܝܐ ܘܠܐ ܒܢܬܐ.
ܐܠܐ ܗܢܘܢ ܒܠܚܘܕܝܗܘܢ ܢܦܨܘܢ. ܘܐܪܥܐ ܬܗܘܐ ܠܚܘܪܒܐ.

* Quapropter alloquere eos, & dic eis; Sic ait 4
Dominus dominorum; Quotieſcunque aliquis ex Iſraelitis deum ſuum induxerit in animum ſuum, & offendiculum iniquitatis ſuæ ſibi ipſe propoſuerit, tum ad prophetam acceſſerit; ego Dominus teſtis ero adverſùs eum de multitudine deorum ipſius: Ut Iſrae- 5
litas in corde ipſorũ deprehendam, eos à me receſſiſſe per tot deos ſuos. Quare dic Iſrae- 6
litis, Sic ait Dominus dominorum; pœniteat vos, & retrahite vos ab omnibus diis veſtris, & ab omni ſpurcitia veſtra reflectite facies veſtras. Nam ſi quis ex Iſraelitis, aut ex his 7
qui ad me converſi degunt inter Iſraelitas, avertatur à me, & deum ſuum inducens in animum ſuum, ſuæque iniquitatis offendiculum proponens ante faciem ſuam, venerit ad conſulendum prophetam; ego Dominus teſtis ero adverſùs iſtum. Dabóque iram meam ſuper 8
hujuſcemodi hominem, & exponam eum in ſignum atque proverbium, denique perdam eum de medio populi mei: & experiemini me eſſe Dominum. Item cùm quis propheta 9
erraverit, & locutus fuerit verbum, ego Dominus faciam ut aberret ille propheta, exertâque manu meâ ſuper eum, perdam eum de medio populi mei Iſraelis. Ita portabunt ini- 10
quitatẽ ſuam (iniquitas conſulentis par erit iniquitati prophetæ) Nec aberrabunt am- 11
pliùs tot ſceleribus ſuis; ſed erunt mihi populus, & ego ero ipſis Deus, ait Dominus dominorum. Fuit etiam ad me ſermo Do- 12
mini dicendo; Fili hominis, Siqua terra 13
peccaverit in me, & ſcelus coram me perpetraverit; attollam manum meam ſuper illam, frangam in ea culmum frumenti, famem immittam in eam, & perdam ex ea tam homines quàm jumenta: Et licèt fuerint in ea tres 14
iſti viri, Nohe, Daniel, & Job, iſti per juſtitiam ſuam eripient ſeipſos, ait Dominus dominorum. Si beſtias malas ſuper terram ad- 15
duxero, eámque vaſtaverint adeò ut abeat in excidiũ, nemóque *per illam* tranſeat propter beſtias, Et tres iſti viri fuerint in ea: *Ut* vivo, 16
dicit Dominus dominorũ, neque filios neque filias eriperent, ſed ipſi ſe ſolos eriperent, terra autem eſſet in excidium.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

4 * لاجل هذا كلمهم وقل لهم * هكذا يقول ادوناي الرب * انسان فانسان من بيت اسرايل
الذي يضع صنمائه على قلبه * وعقوبة ظلاماته يرتب قدام وجهه * وياتي الى النبي * انا
5 الرب اجاوبه بتلك التي احتوى عليها قلبه * لكيلا يضل بيت اسرايل كقلوبهم المتغربة
6 مني بفكراتهم * لاجل هذا قل لبيت اسرايل * هكذا يقول الرب الرب الاله * ارجعوا
7 وانصرفوا من اعمالكم ومن جميع نفاقكم * وارجعوا بوجوهكم الي * من اجل ان انسانا
فانسانا من بيت اسرايل * ومن الدخلاء المدخولين في بيت اسرايل * الذي يتغرب مني *
ويضع فكراته على قلبه * وعقوبة ظلاماته يرتبها قدام وجهه * وياتي الى النبي ليساله بي * انا
8 الرب اجاوبه بما حواه في ذاته * واشدد وجهي على ذلك الانسان * واضعه للخراب والفناء * وانزعه
9 من وسط شعبي * وتعلمون اني انا الرب * والنبي اذ اضل وتكلم * انا الرب اضللت ذلك
10 النبي * وامدد يدي عليه * وابيده من وسط شعبي اسرايل * واخذ ظلاماته كظلم السايل *
11 وكظلمه هكذا يكون للنبي * كيلا يضل بيت اسرايل عني * ولكيلا يتدنسون ايضا
12 بجميع زلاتهم * ويكونون لي شعبا * وانا اكون لهم الها * يقول ادوناي الرب * وكان قول الرب
13 الي قايلا * يا ابن الانسان * الارض اذا اخطات لي تسقط بزلتها * وامدد يدي عليها واكسر
14 منها رفد الخبز * وارسل عليها جوعا * وانزع منها الانسان والبهيمة * واذا كانت هاولاء الثلاثة
15 الرجل في وسطها * نوح ودانيال وايوب * هاولاء بعدلهم يخلصون * يقول ادوناي الرب * واذا
جلبت وحوشا خبيثة على الارض * فاعدمها وتكون للفناء * ولا يكون مارا من الوحوش *
16 * وهاولاء الثلاثة الرجال في وسطها * حي انا يقول ادوناي الرب * لا البنون ولا البنات
يخلصون * الا هاولاء وحدهم يخلصون * والارض تكون للهلاك *

* *Iccircò alloquere eos, & dicas eis; Ita* 4
dicit Adonai Dominus; Quicunque de domo Iſraelis poſuerit conſilia ſua in corde ſuo, pœnámque impietatum ſuarum diſpoſuerit ante faciem ſuam, & venerit ad prophetam; ego Dominus reſpondebo illi ſecundùm ea quæ continet mens ejus: ut non aberret domus Iſraelis ſe- 5
cundùm corda ipſorum à me abalienata, in cogitationibus ſuis. Proptereà dic 6
domus Iſraelis; Ita dicit Dominus, Dominus inquam Deus; Convertimini, & recedite ab actionibus veſtris & ab omnibus impietatibus veſtris, & convertite facies veſtras ad me. Nam homo qui- 7
cunque de domo Iſraelis, aut ex advenis admiſſis in domum Iſraelis, qui ſe abalienaverit à me, poſuerit conſilia ſua in corde ſuo, & pœnam impietatis ſuæ diſpoſuerit ante faciem ſuam, veneritque ad prophetam ut eum de me interroget; huic ego reſpondebo ſecundùm ea quæ continet in ſemetipſo: Et obfirmabo faciem meam 8
adverſùs hominem illum, exponam eum ruinæ & exitio; auferámque de medio populi mei: & ſcietis me eſſe Dominum. Propheta verò cùm ſeduxerit & locutus 9
fuerit, ego Dominus faciam ut erret hujuſmodi propheta, & extendam manum meam ſuper eum, perdámque eum de medio populi mei Iſraelis: Ferétque ini- 10
quitates ſuas ut iniquitatem interrogantis: & ſecundùm iniquitatem iſtius, ita fiet prophetæ: ut non aberret domus 11
Iſraelis à me, & ut non polluant ſeſe poſthac omnibus culpis ſuis; ſed ſint mihi populus, & ego ſim illis Deus, ait Adonai Dominus. Deinde fuit ſermo Domini 12
ad me, dicens; O fili hominis, terra 13
cùm peccaverit in me, cadet culpâ ſuâ: & ego, manu meâ ſuper ipſam extenſâ, frangam ex ea ſubſidium panis, mittam in eam famem, & extinguam ex ea hominem atque jumentum: Et quamvis fuerint 14
tres iſti viri in medio ejus, Nohe, Daniel, & Job; iſti per juſtitiam ſuam ſalvarentur, dicit Adonai Dominus. Item 15
cùm feras pernicioſas adduxero ſuper terram, eámque punivero, ita ut abeat in excidium, neque ſuperſit ullus viator cauſâ ferarum; Et iſti tres viri fuerint in 16
medio ejus: Per vitam meam, dicit Adonai Dominus, neque filii neque filiæ ſalvarentur; ſed hi ſoli ſalvarentur, reliqua verò terra abiret in excidium.

יחזקאל : טו

tranſeas ,*gladie* dixero & ,ipſam terram ſuper induxero gladium Vel
17 אוֹ חֶרֶב אָבִיא עַל־הָאָרֶץ הַהִיא וְאָמַרְתִּי חֶרֶב תַּעֲבֹר
tres Et .*jumentum & ,hominem* ea ex fecero ſuccidere & ,terram per
18 בָּאָרֶץ וְהִכְרַתִּי מִמֶּנָּה אָדָם וּבְהֵמָה׃ וּשְׁלֹשֶׁת
, Deus Dominus dixit : ego *vivens* ,ejus medio in iſti viri
הָאֲנָשִׁים הָאֵלֶּה בְּתוֹכָהּ חַי־אָנִי נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִֹה
Vel .liberabuntur *ipſi* ſoli ipſi *quia* ,filias & , filios liberabunt non
19 לֹא יַצִּילוּ בָּנִים וּבָנוֹת כִּי הֵם לְבַדָּם יִנָּצֵלוּ׃ אוֹ
eam ſuper meã iram effudero & ,iſtam terram *ad* immiſero peſtilentiã
דֶּבֶר אֲשַׁלַּח אֶל־הָאָרֶץ הַהִיא וְשָׁפַכְתִּי חֲמָתִי עָלֶיהָ
,Daniel,Noach Et .*jumentum & ,hominem* ea ex *ſuccidendum ad*,ſanguine in
20 בְּדָם לְהַכְרִית מִמֶּנָּה אָדָם וּבְהֵמָה׃ וְנֹחַ דָּנִאֵל
ſi ,filium ſi , Deus Dominus dixit ,ego *vivens* :ejus medio in Ijob &
וְאִיּוֹב בְּתוֹכָהּ חַי־אָנִי נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִֹה אִם־בֵּן אִם־
ſic Nam .ſuã animam liberabunt ſua juſtitia in ipſi : liberabũt filiam
21 בַּת יַצִּילוּ הֵמָּה בְצִדְקָתָם יַצִּילוּ נַפְשָׁם׃ כִּי כֹה
,gladium , mala mea judicia quatuor quòd *etiam* : Deus Dominus dixit
אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִֹה אַף כִּי־אַרְבַּעַת שְׁפָטַי הָרָעִים חֶרֶב
, Jeruſalaim ad miſi peſtilentiam & ,malam beſtiam & ,famem &
וְרָעָב וְחַיָּה רָעָה וָדֶבֶר שִׁלַּחְתִּי אֶל־יְרוּשָׁלִָם
ea in remanebit ecce Et .*jumentum & ,hominem* ea ex ſuccidendum ad
22 לְהַכְרִית מִמֶּנָּה אָדָם וּבְהֵמָה׃ וְהִנֵּה נוֹתְרָה־בָּהּ
, vos ad *egredientes* ipſi ecce : filiæ & filii eductorum evaſio
פְּלֵטָה הַמּוּצָאִים בָּנִים וּבָנוֹת הִנָּם יוֹצְאִים אֲלֵיכֶם
malo ſuper conſolabimini & :eorũ *actiones* & ,eorũ viam videbitis &
וּרְאִיתֶם אֶת־דַּרְכָּם וְאֶת־עֲלִילוֹתָם וְנִחַמְתֶּם עַל־הָרָעָה
.eam ſuper induxi quæ omnibus cum ,Jeruſalaim ſuper induxi quod
אֲשֶׁר הֵבֵאתִי עַל־יְרוּשָׁלִַם אֵת כָּל־אֲשֶׁר הֵבֵאתִי עָלֶיהָ׃
:eorum *conatus* & ,eorũ viam videritis cùm ,vos conſolabũtur Et
23 וְנִחֲמוּ אֶתְכֶם כִּי־תִרְאוּ אֶת־דַּרְכָּם וְאֶת־עֲלִילוֹתָם
dixit ,ea in feci quæ omnia feci *gratis* non quòd ,ſcietis &
וִידַעְתֶּם כִּי לֹא חִנָּם עָשִׂיתִי אֵת כָּל־אֲשֶׁר־עָשִׂיתִי בָהּ נְאֻם
.Deus Dominus
אֲדֹנָי יֱהוִֹה׃

CAP. XV. טו

lignum erit quid ,hominis Fili : dicendo,me ad Domini verbum fuit Et
1 2 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם מַה־יִּהְיֶה עֵץ־
? ſylvæ ligna inter fuit *qui* *palmite* ? *ligno omni præ* vitis
הַגֶּפֶן מִכָּל־עֵץ הַזְּמוֹרָה אֲשֶׁר הָיָה בַּעֲצֵי הַיָּעַר׃
eo ex tollent *Si* ? opus faciendũ ad lignũ eo ex tolletur Nũquid
3 הֲיֻקַּח מִמֶּנּוּ עֵץ לַעֲשׂוֹת לִמְלָאכָה אִם־יִקְחוּ מִמֶּנּוּ
eſt datum igni Ecce ? vas omne illo in *dependendum ad* ,paxillum
4 יָתֵד לִתְלוֹת עָלָיו כָּל־כֶּלִי׃ הִנֵּה לָאֵשׁ נִתַּן
: eſt *exuſtũ* ejꝰ *mediũ* & ,ignis *comedit* ejꝰ *extremitates* Duas .conſumendũ ad
לְאָכְלָה אֵת שְׁנֵי קְצוֹתָיו אָכְלָה הָאֵשׁ וְתוֹכוֹ נָחָר
non ,integrum *ipſum eſſendo in* Ecce ? opus ad proſperabitur nunquid
5 הֲיִצְלַח לִמְלָאכָה׃ הִנֵּה בִּהְיוֹתוֹ תָמִים לֹא
fiet & ,ſit combuſtũ &,illud *comederit* ignis *quia etiam* , operi *fiebat*
יֵעָשֶׂה לִמְלָאכָה אַף כִּי־אֵשׁ אֲכָלַתְהוּ וַיֵּחָר וְנַעֲשָׂה
Quemadmodũ : Deus Dominus dixit ſic Propterea ? operi *adhuc*
6 עוֹד לִמְלָאכָה׃ לָכֵן כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִֹה כַּאֲשֶׁר
,conſumendum ad igni *illud* dedi quod ſylvæ *ligno in* vitis lignum
עֵץ־הַגֶּפֶן בְּעֵץ הַיַּעַר אֲשֶׁר־נְתַתִּיו לָאֵשׁ לְאָכְלָה
.eos *in meas facies* dabo Et .Jeruſalaim habitatores tradidi ſic
7 כֵּן נָתַתִּי אֶת־יֹשְׁבֵי יְרוּשָׁלִָם׃ וְנָתַתִּי אֶת־פָּנַי בָּהֶם
,Dominus *ego* quòd ſcietis Et .eos *comedet* ignis & ,ſunt egreſſi igne De
מֵהָאֵשׁ יָצָאוּ וְהָאֵשׁ תֹּאכְלֵם וִידַעְתֶּם כִּי־אֲנִי יְהוָה
,deſolatam terram dabo Et .eos contra *meas facies* *me ponendo in*
8 בְּשׂוּמִי אֶת־פָּנַי בָּהֶם׃ וְנָתַתִּי אֶת־הָאָרֶץ שְׁמָמָה
.Deus Dominus dixit ,prævaricationem ſunt prævaricati quòd eò
יַעַן מָעֲלוּ מַעַל נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִֹה׃

Verſio VULG. LAT.

17 Vel ſi gladium induxero ſuper
terram illam, & dixero gladio;
Tranſi per terram: & interfece-
ro de ea hominem, & jumentum:
18 Et tres viri iſti fuerint in medio
ejus: Vivo ego, dicit Dominus
Deꝰ, non liberabunt filios, neque
filias: ſed ipſi ſoli liberabuntur.
19 Si autem & peſtilentiam immiſe-
ro ſuper terram illam, & effude-
ro indignationem meam ſuper
eam in ſanguine, ut auferam ex
20 ea hominem, & jumentum: Et
Noe, & Daniel, & Job fuerint in
medio ejus: Vivo ego, dicit Do-
minus Deus, quia filium & filiam
non liberabunt: ſed ipſi juſtitiâ
21 ſuâ liberabũt animas ſuas. Quo-
niam hæc dicit Dominus Deus;
Quòd & ſi quatuor judicia mea
peſſima, gladium, & famem, ac
beſtias malas, & peſtilentiam, im-
miſero in Jeruſalem, ut interfi-
ciam de ea hominem, & pecus:
22 Tamen relinquetur in ea ſalvatio
educentium filios, & filias: ecce
ipſi ingredientur ad vos, & vide-
bitis viam eorum, & adinventio-
nes eorum, & conſolabimini ſu-
per malo, quod induxi in Jeruſa-
lem, in omnibus quæ importavi
23 ſuper eam. Et conſolabuntur
vos, cùm videritis viam eorum,
& adinventiones eorum: & cog-
noſcetis quòd non fruſtrà fece-
rim omnia, quæ feci in ea, ait
Dominus Deus.

CAP. XV.

1 ET factus eſt ſermo Domini ad
2 me, dicens; Fili hominis, quid
fiet de ligno vitis, ex omnibus li-
gnis nemorum, quæ ſunt inter li-
3 gna ſylvarum? Numquid tolle-
tur de ea lignum, ut fiat opus, aut
fabricabitur de ea paxillus, ut de-
pendeat in eo quodcunque vas?
4 Ecce igni datum eſt in eſcam: u-
tramque partem ejus conſumpſit
ignis, & medietas ejus redacta
eſt in favillam: numquid utile
5 erit ad opus? Etiam cùm eſſet
integrũ, non erat aptum ad opus:
quantò magis cùm illud ignis de-
voraverit, & combuſſerit, nihil
6 ex eo fiet operis? Proptereà
hæc dicit Dominus Deus; Quo-
modò lignum vitis inter ligna
ſylvarum, quod dedi igni ad de-
vorandum, ſic tradam habitato-
7 res Jeruſalem. Et ponam faciem
meam in eos: de igne egredien-
tur, & ignis conſumet eos: &
ſcietis quia ego Dominus, cùm
8 poſuero faciem meam in eos, Et
dedero terram inviam, & deſo-
latam: eò quòd prævaricatores
extiterint, dicit Dominus Deus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

17 Ἢ ϗ (α) ῥομφαίαν ἐὰν ἐπάγω ἐπὶ τὴν γῆν
ἐκείνην, ϗ εἴπω, Ῥομφαία διελθάτω διὰ
τῆς γῆς, ϗ ἐξαρῶ ἐξ (β) αὐτῆς ἄνθρωπον
18 ϗ (γ) κτῆνος, Καὶ οἱ τρεῖς ἄνδρες οὗτοι
ἐν μέσῳ αὐτῆς (δ), Ζῶ ἐγὼ, λέγει κύριος,
οὐ μὴ (ε) ῥύσονται υἱοὺς οὐδὲ θυγατέρας, ἀλλ'
19 ἢ αὐτοὶ μόνοι σωθήσονται. Ἢ ϗ θάνατον (ζ)
ἐπαποστέλλω ἐπὶ τὴν γῆν ἐκείνην, ϗ ἐκχεῶ
τὸν θυμόν μου ἐπ' αὐτὴν ἐν αἵματι τοῦ (η) ἐξ-
ολοθρεῦσαι ἐξ αὐτῆς ἄνθρωπον ϗ κτῆνος,
20 Καὶ Νῶε ϗ Δανιὴλ ϗ Ἰὼβ ἐν μέσῳ αὐ-
τῆς (θ), Ζῶ ἐγὼ, λέγει κύριος, ἐὰν υἱοὶ ἢ
θυγατέρες ὑπολειφθῶσιν (ι), αὐτοὶ ἐν τῇ
δικαιοσύνῃ αὐτῶν ῥύσονται τὰς ψυχὰς αὐ-
21 τῶν. Τάδε λέγει (κ) κύριος, Ἐὰν δὲ ϗ τὰς
τέσσαρας ἐκδικήσεις μου τὰς πονηρὰς, ῥομ-
φαίαν, ϗ λιμὸν, ϗ θηρία πονηρὰ, ϗ θάνα-
τον (λ) ἐξαποστείλω ἐπὶ Ἰερουσαλὴμ, τοῦ (μ)
ἐξολοθρεῦσαι ἐξ αὐτῆς ἄνθρωπον ϗ κτῆνος,
22 Καὶ ἰδοὺ ὑπολελειμμένοι ἐν αὐτῇ οἱ ἀνασε-
σωσμένοι (ν) αὐτῆς, οἳ ἐξάγουσιν ἐξ αὐτῆς
υἱοὺς ϗ θυγατέρας, ἰδοὺ (ξ) ἐκπορεύονται πρὸς
ὑμᾶς, ϗ ὄψεσθε τὰς ὁδοὺς αὐτῶν ϗ τὰ ἐν-
θυμήματα αὐτῶν, ϗ μεταμεληθήσεσθε ἐπὶ
τὰ κακὰ ἃ ἐπήγαγον ἐπὶ Ἰερουσαλὴμ, πάν-
23 τα τὰ κακὰ ἃ ἐπήγαγον ἐπ' αὐτήν. Καὶ
παρακαλέσουσιν ὑμᾶς, διότι ὄψεσθε τὰς ὁ-
δοὺς αὐτῶν ϗ τὰ ἐνθυμήματα αὐτῶν, ϗ
ἐπιγνώσεσθε διότι οὐ μάτην πεποίηκα
πάντα ὅσα ἐποίησα ἐν αὐτῇ, λέγει κύριος.

MS.A. (α) ἐὰν ῥομφαίαν ἐπαγάγω (β) αὐτῆς (γ) κτήνη, (δ) ὦσιν,
(ε) ῥύσωνται υἱοὺς ἢ θυγατέρας, (ζ) ἐπάγω (η) ἐξολεθρεῦσαι (θ) ὦσιν, (ι)
αὐτοῖς, αὐτοὶ (κ) ἀδωναῒ κύριος, (λ) ἐπαποστελῶ (μ) ἐξολεθρεῦσαι (ν) ἐξ
αὐτῆς, οὗτοι ἐξάξουσιν υἱοὺς (ξ) αὐτοὶ ἐκπορεύονται

Vel etiam gladium ſi inducã ſu- 17
per terram illam, & dicam; Gla-
dius tranſeat per terram, & au-
feram ex eis hominem, & jumen-
tum, Et tres viri iſti in medio e- 18
jus; Vivo ego, dicit Dominus, non
liberabunt filios, neque filias: ſed
ipſi ſoli ſalvabuntur. Vel etiam 19
mortem immittam ſuper terram
illam, & effundam furorẽ meum
ſuper eam in ſanguine ad exter-
minandum ex ea hominem, et ju-
mentum, Et Noe, & Daniel, & 20
Job in medio ejus; Vivo ego, dicit
(i) Dominus, ſi filii, aut filiæ re-
linquentur: ipſi in ſua juſtitia li-
berabunt animas ſuas. Hæc dicit 21
Dominus; Quòd ſi & quatuor
ultiones meas peſſimas, gladium,
& famem, & beſtias peſſimas, et
mortem emiſero ſuper Hieruſalẽ,
ad exterminandum ex ea homi-
nem, & jumentum; Et ecce reſi- 22
dui in ea ſalvati ejꝰ, qui educunt
ex ea filios, & filias. Ecce egredi-
untur ad vos: & videbitis vias
eorum, & cogitationes eorum: et
pœnitebit vos ſuper malis, quæ in-
duxi ſuper Hieruſalẽ, omnibꝰ ma-
lis quæ induxi ſuper illã. Et con- 23
ſolabuntur vos: quia videbitis
vias eorum, & cogitationes eorũ:
et cognoſcetis, quòd non fruſtrà
feci omnia, quæ feci in ea, dicit
Dominus.

ΚΕΦ. ιε'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ,
2 λέγων, (α) Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, τί ἂν
γένοιτο τὸ ξύλον τῆς ἀμπέλου ἐκ πάντων τῶν
ξύλων τῶν κλημάτων τῶν ὄντων ἐν τοῖς ξύ-
3 λοις τοῦ δρυμοῦ; Εἰ λήψονται ἐξ αὐτῆς ξύ-
λον τοῦ ποιῆσαι εἰς ἐργασίαν; εἰ λήψονται ἐξ
αὐτῆς πάσσαλον τοῦ κρεμάσαι ἐπ' (β) αὐ-
4 τὸν πᾶν σκεῦος; Πάρεξ ὃ πυρὶ δέδοται εἰς
ἀνάλωσιν, τὴν κατ' ἐνιαυτὸν κάθαρσιν (γ)
ἀπ' αὐτῆς ἀναλίσκει τὸ πῦρ, ϗ ἐκλείπει εἰς
τέλος· μὴ χρήσιμον ἔσται εἰς ἐργασίαν;
5 Οὐδὲ ἔτι αὐτοῦ ὄντος ὁλοκλήρου οὐκ ἔσται εἰς
ἐργασίαν· (δ) μὴ ὅτι ἐὰν ϗ πῦρ αὐτὸ ἀνα-
λώσῃ εἰς τέλος, (ε) εἰ ἔτι ἔσται εἰς ἐργασίαν;
6 Διὰ τοῦτο εἰπὸν, Τάδε λέγει (ζ) κύριος,
Ὃν τρόπον τὸ ξύλον τῆς ἀμπέλου ἐν τοῖς ξύ-
λοις τοῦ δρυμοῦ ὃ δέδωκα αὐτὸ (η) πυρὶ εἰς
ἀνάλωσιν, οὕτως δέδωκα τοὺς κατοικοῦντας
7 (θ) Ἰερουσαλήμ. Καὶ δώσω τὸ πρόσωπόν
μου ἐπ' αὐτούς. ἐκ τοῦ πυρὸς ἐξελεύσονται, ϗ
πῦρ αὐτοὺς καταφάγεται, ϗ ἐπιγνώσονται ὅτι
ἐγὼ κύριος ἐν τῷ στηρίσαι με τὸ πρόσω-
8 πόν μου ἐπ' αὐτούς. Καὶ δώσω τὴν γῆν εἰς
ἀφανισμὸν ἀνθ' ὧν παρέπεσον παραπτώ-
ματι, λέγει κύριος.

MS.A. (α) Υἱὲ ἀνθρώπου, (β) αὐτοῦ (γ) αὐτῆς (δ) διότι ἐὰν ϗ μὴ πῦρ (ε) μὴ
ἔσται ἔτι εἰς (ζ) ἀδωναῒ κύριος, (η) τῷ πυρὶ (θ) ἐν Ἰερουσαλήμ. Καὶ στηριῶ τὸ

CAP. XV.

ET factꝰ eſt ſermo Domini ad 1
me, dicens; Et tu, fili hominis, quid 2
fiet lignũ vitis ex omnibus lignis
ſarmentorum, quæ ſunt inter li-
gna ſylvæ? Si tollent de illa li- 3
gnum ad faciendum in opus?
ſi tollent de ea paxillum ad
ſuſpendendum ſuper eum omne
vas? (a) Tantùm datá eſt igni in 4
conſumptionẽ; (b) annuã purga-
tionẽ ex ea conſumit ignis, et (c)
dimittit in finem. Nunquid utile
erit ad opꝰ? Neq; etiã dũ adhuc 5
eſt integrũ, erit ad opꝰ? Nunquid
quandocunque etiam ignis illud
conſumpſerit in finẽ, *ſi erit adhuc*
ad opus? Propterea dic; Hæc dicit 6
Dominus; Quomodò lignum vitis
inter ligna ſylvæ, quod dedi illud
igni in conſumptionem; ſic dedi
habitatores Hieruſalem. Et dabo 7
faciem meam ſuper eos. De igne
egredientur; & ignis devorabit
eos. Et ſcient, quia ego Dominus,
cùm obfirmavero faciem meam
in eos. Et dabo terram in deſo- 8
lationem; eò quòd deliquerunt
delicto, dicit Dominus.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

17 אוֹ דְקָטְלִין בְּחַרְבָּא אַיְתֵי עַל אַרְעָא הַהִיא וְאֵימַר דְּקָטְלִין בְּחַרְבָּא יֶעְדוּן בְּאַרְעָא וְאֵשֵׁיצֵי
18 מִנַּהּ אֱנָשָׁא וּבְעִירָא ׃ וּתְלָתָא גַּבְרַיָּא הָאִלֵּין בְּגַוַּהּ קַיָּם אֲנָא אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים לָא יְשֵׁיזְבוּן
19 בְּנִין וּבְנָן אֱלָהֵן אִנּוּן בִּלְחוֹדֵיהוֹן יִשְׁתֵּיזְבוּן ׃ אוֹ מוֹתָא אֲשַׁלַּח עַל אַרְעָא הַהִיא וְאֶשְׁפּוֹךְ
20 חֶמְתִּי עֲלַהּ בִּקְטוֹל לְשֵׁיצָאָה מִנַּהּ אֱנָשָׁא וּבְעִירָא ׃ וְנֹחַ דָּנִיֵּאל וְאִיּוֹב בְּגַוַּהּ קַיָּם אֲנָא אֲמַר
21 יְיָ אֱלֹהִים אִם בַּר אִם בְּרַתָּא יְשֵׁיזְבוּן אִנּוּן בִּזְכוּתְהוֹן יְשֵׁיזְבוּן נַפְשְׁהוֹן ׃ אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ
אֱלֹהִים אַף אֲרֵי אַרְבַּע פּוּרְעָנִין בִּישָׁן חַרְבָּא וְכַפְנָא וְחֵיוְתָא בִּישְׁתָא וּמוֹתָא שַׁלְּחֵית עַל
21 יְרוּשְׁלֶם לְשֵׁיצָאָה מִנַּהּ אֱנָשָׁא וּבְעִירָא ׃ וְהָא אִשְׁתְּאַרַת בַּהּ שֵׁיזְבְתָּא דְּמַתַּפְקִין בְּנִין וּבְנָן
אִנּוּן נָפְקִין לְוָתְכוֹן וְתֶחֱזוֹן יַת אוֹרְחֵיהוֹן וְיַת עוֹבָדֵיהוֹן וְתִתְנַחֲמוּן עַל בִּישְׁתָא דְּאַיְתֵיתִי
23 עַל יְרוּשְׁלֶם יַת כָּל דְּאַיְתֵיתִי עֲלַהּ ׃ וִינַחֲמוּן יַתְכוֹן אֲרֵי תֶחֱזוֹן יַת אוֹרְחֵיהוֹן וְיַת עוֹבָדֵיהוֹן
וְתִדְעוּן אֲרֵי לָא לְמַגָּן עֲבַדֵית יַת כָּל דַּעֲבָדֵית בַּהּ אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים ׃

טו

1 2 וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי לְמֵימַר ׃ בַּר אָדָם מַה שְׁנָא אִילָן גּוּפְנָא מִכָּל אִילָנַיָּא
3 שַׁבְשְׁבָתָא דַּהֲוָת בַּאֲעֵי חוּרְשָׁא ׃ הֲיִסְּבוּן מִנֵּיהּ אָעָא לְמֶעְבַּד עֲבִידָא אִם יִסְּבוּן מִנֵּיהּ
4 סִכְּתָא לְמִתְלֵי בַהּ כָּל מָן ׃ הָא לְאֶשָּׁתָא אִתְמְסַר לְאִשְׁתֵּיצָאָה יַת תְּרֵין סִטְרוֹהִי אָכְלָא
5 אֶשָּׁתָא וּגְוִיֵּהּ חָר הֲיִכְשַׁר לַעֲבִידָא ׃ הָא כַּד הֲוָה שְׁלִים לָא כְשַׁר לַעֲבִידָא אַף אֱלָהֵן
6 דְּאֶשָּׁתָא אֲכַלְתֵּיהּ וְחַר הֲיִכְשַׁר עוֹד לַעֲבִידָא ׃ בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים כְּמָא דְאִילָן
7 גּוּפְנָא בַּאֲעֵי חוּרְשָׁא דִּמְסַרְתֵּיהּ לְאֶשָּׁתָא לְאִשְׁתֵּיצָאָה כֵּן מְסָרֵית יַת יָתְבֵי יְרוּשְׁלֶם ׃ וְאֶתֵּן
יַת פּוּרְעָנוּתִי בְּהוֹן עַל פִּתְגָמֵי אוֹרַיְתָא דִּיהִיבִין מִגּוֹ אֶשָּׁתָא עֲבַרוּ וְעַמְמַיָּא דְתַקִּיפִין
8 כְּאֶשָּׁתָא יְשֵׁיצְנוּן וְתִידְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ כַּד יְחוּל רוּגְזִי בְּהוֹן ׃ וְאֶתֵּן יַת אַרְעָא לְצָדוּ חֲלָף
דְּשַׁקַּרוּ שְׁקַר אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Aut ſi eos qui occidunt gladio, adduxero ſuper terram illam, & dixero ut 17
qui occidunt gladio tranſeant per terram, & diſperdam ex ea hominem &
jumentum: Et tres viri iſti fuerint in medio ejus: vivo ego, dicit Dñs Deus, 18
quia non liberabunt filios nec filias; ſed ipſi ſoli liberabuntur. Vel peſtem 19
ſi miſero in terram illam, & effudero ſuper eam indignationem meam in
occiſione, ut conſumam ex ea hominem & jumentum. Et Noe, & Daniel, & 20
Job fuerint in medio ejus, vivo ego, dicit Dñs Deus, ſi filium aut filiam li-
berabunt, ſed ipſi in juſtitia ſua liberabunt animas ſuas. Quia hæc dicit 21
Dñs Deus: Si quatuor ultiones peſſimas, gladium & famem, & beſtias
peſſimas, & peſtem miſero contra Jeruſalem, ad diſperdendum ex ea ho-
minem & jumentum. Et ecce relinquentur in ea reliquiæ; qui educentur 22
filii & filiæ, ipſi egredientur ad vos, & videbitis vias eorum & opera eo-
rum, & conſolabimini ſuper omne malum quod adduxi ſuper Jeruſalem,
quodcunque adduxi ſuper eam. Et conſolabuntur vos cùm videritis 23
vias eorum & opera eorum; & ſcietis quòd non fruſtrà fecerim omnia
quæ feci in ea, dicit Dñs Deus.

CAP. XV.

ET factum eſt verbum prophetiæ à facie Dñi mecum dicens: Fili homi- 1
nis, in quo differt arbor vitis ab omnibus arboribus, palmite, qui eſt in li- 2
gnis ſylvæ? Nunquid tollent ex ea lignum ad faciendum opus, aut aſſu- 3
ment ex ea paxillum, ut pendeat in eo quodcunq; vas? Ecce igni traditum 4
eſt ut abſumatur, & duas ſummitates ejus conſumpſit ignis, & medium ejus
aruit: nunquid aptum erit ampliùs operi? Ecce cùm eſſet integrum, non 5
erat aptum operi, quanto minus cùm illud ignis conſumpſerit, & aruerit?
nunquid aptum erit ampliùs operi? Idcircò hæc dicit Dñs Deus: Sicut 6
arbor vitis in lignis ſylvæ, quam tradidi igni ut abſumatur, ſic tradidi
habitatores Jeruſalem. Et dabo ultionem meam in eos, eò quòd tranſ- 7
greſſi ſunt verba Legis meæ quæ data ſunt ex medio ignis; & populi fortes
ſicut ignis conſument eos: & ſcietis quia ego Dñs, cùm quieverit furor
meus in eis. Et dabo terram in deſolationem, eò quòd prævaricati ſunt 8
prævaricationem, dicit Dominus Deus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

17 * ܐܘ ܐܢ ܐܝܬܐ ܚܪܒܐ ܥܠ ܐܪܥܐ ܗܝ. ܘܐܡܪ ܕܬܥܒܪ ܚܪܒܐ ܒܐܪܥܐ ܗܝ: ܘܐܘܒܕ ܡܢܗ ܒܢܝܢܫܐ
18 ܘܒܥܝܪܐ: * ܘܢܗܘܘܢ ܬܠܬܐ ܓܒܪܝܢ ܗܠܝܢ ܒܓܘܗ. ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܕܠܐ ܢܦܨܘܢ. ܠܐ
19 ܒܒܢܝܐ ܘܠܐ ܒܒܢܬܐ. ܐܠܐ ܗܢܘܢ ܒܠܚܘܕܝܗܘܢ ܢܦܨܘܢ. * ܐܘ ܐܢ ܐܫܕܪ ܡܘܬܢܐ ܥܠ ܐܪܥܐ
20 ܗܝ: ܘܐܫܘܕ ܚܡܬܝ ܥܠܝܗ ܒܕܡܐ: ܘܐܘܒܕ ܡܢܗ ܒܢܝܢܫܐ ܘܒܥܝܪܐ: * ܘܢܘܚ ܘܕܢܝܐܝܠ
ܘܐܝܘܒ ܢܗܘܘܢ ܒܓܘܗ. ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܕܠܐ ܒܪܐ ܘܠܐ ܒܪܬܐ ܢܦܨܘܢ. ܐܠܐ ܗܢܘܢ
21 ܒܙܕܝܩܘܬܗܘܢ ܢܦܨܘܢ ܢܦܫܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܐܪܒܥܐ ܕܝܢܝܢ ܒܝܫܝܢ
ܐܫܕܪ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ. ܚܪܒܐ ܘܟܦܢܐ. ܘܚܝܘܬܐ ܒܝܫܬܐ ܘܡܘܬܢܐ. ܘܐܘܒܕ ܡܢܗ ܒܢܝܢܫܐ
22 ܘܒܥܝܪܐ. * ܘܢܫܬܚܪܘܢ ܒܗ ܐܝܠܝܢ ܕܦܠܛܘ ܘܢܦܩܘܢ ܒܢܝܐ ܘܒܢܬܐ. ܘܗܢܘܢ ܢܦܩܘܢ
ܠܘܬܟܘܢ. ܘܬܚܙܘܢ ܐܘܪܚܬܗܘܢ ܘܥܒܕܝܗܘܢ. ܘܬܬܒܝܐܘܢ ܥܠ ܒܝܫܬܐ ܕܐܝܬܝܬ ܥܠ
23 ܐܘܪܫܠܡ. ܘܥܠ ܟܠ ܕܐܝܬܝܬ ܥܠܝܗ. * ܘܢܒܝܐܘܢܟܘܢ ܟܕ ܬܚܙܘܢ ܐܘܪܚܬܗܘܢ
ܘܥܒܕܝܗܘܢ. ܘܬܕܥܘܢ ܕܠܐ ܗܘܐ ܣܪܝܩܐܝܬ ܥܒܕܬ ܟܠ ܕܥܒܕܬ ܒܗ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ.

1 * ܩܦܠܐܘܢ * ܝܗ *   * ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܠܘܬܝ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ. ܡܢܐ
2 ܢܗܘܐ ܠܩܝܣܐ ܕܓܦܬܐ ܡܢ ܟܠ ܩܝܣܐ. ܫܒܘܫܬܐ ܕܗܘܬ ܒܩܝܣܐ ܕܥܒܐ. * ܕܠܡܐ ܢܣܒܝܢ
3 ܡܢܗ ܩܝܣܐ ܠܡܥܒܕ ܡܢܗ ܥܒܕܐ. ܐܘ ܢܣܒܝܢ ܡܢܗ ܣܟܬܐ ܠܡܬܠܐ ܒܗ ܡܐܢܐ. * ܐܠܐ
4 ܠܡܐܟܘܠܬܐ ܡܬܝܗܒ ܠܢܘܪܐ. ܘܬܪܬܝܗܝܢ ܫܒܘܫܘܗܝ ܐܟܠܬ ܢܘܪܐ. ܘܡܘܚܗ ܚܪܒ. ܕܠܡܐ
5 ܠܥܒܕܐ. * ܘܟܕ ܕܠܐ ܡܘܡ ܗܘܐ. ܠܐ ܐܬܚܫܚ ܗܘܐ ܠܥܒܕܐ: ܗܫܐ ܕܐܟܠܬܗ ܢܘܪܐ ܘܚܪܒܬܗ. ܐܝܟܢܐ
6 ܕܠܐ ܠܥܒܕܐ. * ܡܛܠܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܐܝܟ ܕܝܗܒܬܗ ܩܝܣܐ ܕܓܦܬܐ ܡܢ
7 ܒܝܬ ܩܝܣܐ ܕܥܒܐ. ܠܡܐܟܘܠܬܐ ܕܢܘܪܐ. ܗܟܢܐ ܝܗܒܬ ܠܥܡܘܪܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. * ܘܐܬܠ
ܪܘܓܙܝ ܒܗܘܢ. ܡܢ ܢܘܪܐ ܢܦܩܘ. ܘܢܘܪܐ ܐܚܪܬܐ ܬܐܟܘܠ ܐܢܘܢ. ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܡܐ ܕܣܡܬ
8 ܪܘܓܙܝ ܒܗܘܢ. * ܘܐܬܠ ܐܪܥܐ ܠܚܘܪܒܐ ܘܠܬܡܗܐ. ܡܛܠ ܕܥܘܠܐ ܥܒܕܘ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ.

Si gladium adduxero ſuper eandẽ terrã, & juſſero 17
ut gladius terrã illam pervadat, adeóque 18
perdam ex ea homines atq; jumenta: Etiamſi
tres iſti viri eſſent in ea; *Ut* vivo, ait Dñs dominorũ,
neq; filios, neq; filias eriperent; ſed
ipſi ſe ſolos eriperent. Si peſtem immiſero ſuper 19
terrã illã, & effundens iram meã ſuper illam
ad cædem; perdidero ex ea homines & jumenta:
Licèt Nohe, Daniel, & Job eſſent in ea; 20
Ut vivo, ait Dñs dominorũ, neque filiũ neque
filiã eriperent, ſed ipſi ſe ſolos per juſtitiam
ſuam eriperent. Nam ita dicit Dñs dominorũ, 21
Quatuor judicia mala immiſſurus ſum in Jeruſalem,
gladiũ, famem, beſtias malas, & peſtem,
& extinguam ex ea homines atque jumenta:
Sed reſidui manebunt in ea qui ſeſe eripuerint, 22
qui filios filiáſque producent: hi ad vos
egredientur, vias atque ſtudia eorũ videbitis,
& conſolationem percipietis ex malo quod
ſuper Jeruſalem adduxero, & ex omni re quam
adduxero ſuper eam. Conſolabuntur inquam 23
vos, quum vias & ſtudia eorum conſideraveritis:
& cognoſcetis me non immeritò feciſſe
quicquid feci contra ipſam, ait Dominus
dominorum.

CAP. XV.

Et fuit ad me ſermo Domini, dicendo, Fili 1
hominis, quid fiet de ligno vitis præ omnibus 2
lignis, palmite qui eſt inter ligna ſylvæ? Num 3
aſſumitur ex eo lignum ad fabrefaciendum ullum
opus, aut capiunt ex eo paxillum ad appendendum
ei vas ullum? Imò in eſcam traditur 4
igni. Cùm ergò utrumque ramuſculum
ejus voraverit ignis, & medulla ejus vaſtata
fuerit, num prodeſt ad ullum opus? Dum adhuc 5
ſine vitio eſſet, non proderat ad opus, jam
quum voraverit eum ignis & vaſtatus ſit, quomodo
prodeſſet ad opus? Iccirco ſic ait Dñs 6
dominorum, Quemadmodum dedi lignũ vitis
præ omnibus lignis ſylvæ, in eſcam igni,
ſic tradidi habitatores Jeruſalem, Et iram meã 7
collocabo in eis. Ex igne emerſerunt, & ignis
alius devorabit eos: & ſcietis me eſſe Dñm,
quum eis impoſuero iram meam, Et expoſuero 8
terram *iſtam* vaſtitati & ſtupori: eò quòd
ſceleratè ſe geſſerint, ait Dom.nº dominorum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

17 * وان انا جلبت على تلك الارض سيفا * فاقول للسيف ليعبر في الارض * وانزع منها الانسان
18 والبهيمه * وهاولاء الثلاثه الرجال في وسطها * حي انا يقول ادوناي الرب * لا يخلصون بنين ولا
19 بنات * الا وحدهم يخلصون * واذ انا جلبت على تلك الارض موتا * وافيض غضبي عليها بدم
20 لاستاصل منها الانسان والبهيمه * ونوح ودانيال وايوب يكونون في وسطها * حي انا يقول
ادوناي الرب لم تبق منهم بنون ولا بنات * هاولاء بعدلهم يخلصون نفوسهم *   * الاصحاح السابع *
21 * هكذا يقول ادوناي الرب * اربعه نقمات شرين * سيفا وجوعا * ووحوشا خبيثه وموتا * ارسلها على
22 ايروسليم * لاستاصل منها الانسان والبهيمه * واما المبقون فيها المتخلصون منها * هم يخرجون
بنين وبنات * ها هاولاء يخرجون اليكم * وتعاينون طرقهم وفكراتهم * وتتعزون على الشرور التي
23 جلبتها على ايروسليم * وجميع الشرور التي جلبتها عليها * ويعزونكم * من اجل انكم تعاينون
طرقهم وفكراتهم * وتعلمون اني لم اصنع باطلا كلما صنعت فيها * يقول ادوناي الرب *

1 * الفصل الخامس عشر *   * وكان قول الرب الي قايلا * وانت يا ابن الانسان * ماذا
2 يكون عود الكرم * من جميع عيدان الاغصان الكاينه في اشجار الغاب * اياخذون منها عودا
3 ليصنعوه للعمل * او ياخذون منها وتدا * ليعلقوا عليه كل اناء * غير انها تعطى للهلاك *
4 ويفنيها في كل سنه تحرقها النار * وتفنى الي الغايه * ولا يكون منها شي نافعا للعمل * ولا
5 اذ هي كاينه صحيحه لا تكون للعمل * من اجل انها وان لم تبدها النار الي الغايه لا
6 تكون ايضا للعمل * لاجل هذا قل * هكذا يقول ادوناي الرب * كما عود الكرمه في
7 عيدان الغاب الذي دفعته للهلاك بالنار * هكذا دفعت سكان ايروسليم * وساعطي
وجهي عليهم * من النار يخرجون والنار تاكلهم * ويعلمون اني انا الرب عندما اشدد وجهي
8 عليهم * وادفع الارض للفناء * من اجل انهم سقطوا بزلاتهم يقول ادوناي الرب *

Item ſi ego adduxero gladium ſuper ejuſmodi 17
terram, & gladio dixero ut pervadat terram illam, & extinxero ex ea hominem atque jumentum;
Et hi tres viri 18
fuerint in medio ejus: Per vitam meam, dicit Adonai Dominus, non ſervarent filios neque filias; ſed ipſi ſoli ſe ſervarent.
Denique cùm adduxero ſuper terram 19
illam, peſtem; & effudero furorem meum ſuper illam in ſanguine, ut extirpem ex ea hominem atque jumentum;
Et Nohe, Daniel, ac Job fuerint in medio ejus: Per vitã 20
meam, dicit Adonai Dominus, non remanerent ex eis ſuperſtites filii neque filiæ; ſed hi juſtitiâ ſuâ ſeipſos ſervarent.

Textus ſeptimus.

Sic ait Adonai Dominus; Quatuor ultionum atrocium genera, gladium, & famem, feras pernicioſas, & peſtem immiſſurus ſum contra Jeruſalem; ut extirpem ex ea hominem & jumentum. 21
Verùm 22
qui reſidui fuerint in ea, qui ſe eripuerint ex ea; ipſi educent filios & filias: ecce iſti ad vos egredientur, videbitis vias & cogitationes eorum, & pænitebit vos malorum quæ adduxero contra Jeruſalem, omniúmque calamitatum quas adduxero ſuper eam:
Et conſolabuntur vos, quia 23
videntes vias & cogitationes eorum, ſcietis me haud gratis feciſſe quicquid feci in ea, dicit Adonai Dominus.

CAP. XV.

Fuit etiam ſermo Domini ad me, dicens; 1
Et tu O fili hominis, quid eſt lignum vineæ ex omnibus lignis ramorum exiſtentium in arboribus ſylvarum? 2
Num 3
accipiunt ex eo lignum ad concinnandum in ullum opus? an verò capiunt ex eo paxillum, ut appendant ei vas ullum?
Imò potiùs conſumptioni traditur, ejus ſarmenta ſingulis annis comburit ignis, penitúſque conſumitur, neque fit ex eo quicquam uſui accommodum. 4
Ne dum 5
quidem integrum eſt, prodeſt ad opus; quia licèt ignis haud penitùs conſumpſerit illud, non tamen accommodum eſt ulli operi.
Propterea dic, Sic ait Adonai Dominus; ut lignum vitis inter ligna ſylvæ, quod igni conſumendum tradidi; ita tradidi cives Jeruſalem. 6
Diſponam 7
faciem meam adverſùs eos: ex igne egredientur, & ignis devorabit eos: & ſentient me eſſe Dominum, cùm obduravero faciem meam adverſus eos,
Et tradidero terram in excidium, eò quòd culpâ ſuâ ceciderint, ait Adonai Dominus. 8

CAP. XVI. יו

Jerusalaim fac notas,hominis Fili : dicendo,me ad Domini verbum fuit Et
1 2 ויהי דבר־יהוה אלי לאמר : בן־אדם הודע את־ירושלם
: Jerusalaim Deus Dominus dixit Sic : dices Et .suas abominationes
3 את־תועבתיה : ואמרת כה־אמר אדני יהוה לירושלם
tua mater &,Emoræus tuꝰ pater:Chenabanæa terra de *tui natales & ,tuæ Mãsiones*
מכרתיך ומלדתיך מארץ הכנעני אביך האמרי ואמך
fuisset præcisus non , *te nasci* die in tuæ nativitates Et .Chittæa
4 חתית : ומולדותיך ביום הולדת אתך לא־כרת
,fuisses salita non *saliendo* & *:lenimen* ad fuisses lota non aquis in &,tuꝰ umbilicꝰ
שרך ובמים לא־רחצת למשעי והמלח לא המלחת
tibi *faciendum ad* ,oculus *te super* pepercit Non .fores *fasciata* non involvendo &
5 והחתל לא חתלת : לא־חסה עליך עין לעשות לך
abjectione In ,agri *facies ad* es projecta & *:te super indulgendũ ad* , his ex unum
אחת מאלה לחמלה עליך ותשלכי אל־פני השדה בגעל
conculcatam te vidi &,te juxta transivi Et *.te nasci* die in,tuæ animæ
6 נפשך ביום הלדת אתך : ואעבר עליך ואראך מתבוססת
tuis sanguinibꝰ In:tibi dixi &,*vive tuis sanguinibus* In,tibi dixi &*:tuis sanguinibus* in
בדמיך ואמר לך בדמיך חיי ואמר לך בדמיך
, es multiplicata & , te dedi agri germen veluti millia Decem *.vive*
7 חיי : רבבה כצמח השדה נתתיך ותרבי
,*sunt facta firma* ubera:ornamentorũ ornamento in es ingressa &,es magnificata &
ותגדלי ותבואי בעדי עדיים שדים נכנו
, te juxta transivi Et .discooperta & ,nuda tu & , germinavit tuus pilus &
8 ושערך צמח ואת ערם ועריה : ואעבר עליך
, te super *meam alam* expandi & ,amorum tempus tuũ tempus ecce &,te vidi &
ואראך והנה עתך עת דדים ואפרש כנפי עליך
ait ,tecum pactum in sum ingressus & ,tibi juravi &:tuam *nuditatem* operui &
ואכסה ערותך ואשבע לך ואבוא בברית אתך נאם
tuos sanguines inundavi & , *aquis in* te lavi Et *.mihi* fuisti & ,Deus Dominus
9 אדני יהוה ותהיי־לי : וארחצך במים ואשטף דמיך
: taxo te calceavi & , *acupicto* te vestivi Et .oleo in te unxi & :te *desuper*
10 מעליך ואסכך בשמן : ואלבישך רקמה ואנעלך תחש
armillas dedi &:ornamẽto te ornavi Et.serico te operui &,bysso *in te stravi &*
11 ואחבשך בשש ואכסך משי : ואעדך עדי ואתנה צמידים
,*tua nare super inaurem* dedi Et .tuo *gutture super* torquem & ,tuis manibus *super*
12 על־ידיך ורביד על־גרונך : ואתן נזם על־אפך
auro es ornata Et *.tuo capite in* gloriæ coronam &:tuis auribꝰ *super circulos &*
13 ועגילים על־אזניך ועטרת תפארת בראשך : ותעדי זהב
oleũ & ,mel &,similam;polymitum &,sericum &,byssus tua vestis & ,argento &
וכסף ומלבושך שש ומשי ורקמה סלת ודבש ושמן
.regnum in es prosperata & ,*valde vehementia in* es facta decora & : comedisti
אכלתי ותיפי במאד מאד ותצלחי למלוכה :
ipsa perfecta quia:tuam speciem propter gentes in nomen tibi est egressum Et
14 ויצא לך שם בגוים ביפיך כי כליל הוא
fidisti Et .Deus Dominus dixit ,te super posueram quem,meo decore in
15 בהדרי אשר־שמתי עליך נאם אדני יהוה : ותבטחי
tuas fornicationes effudisti &:tuũ nomẽ ꝑpter es fornicata &,*tua pulchritudine in*
ביפיך ותזני על־שמך ותשפכי את־תזנותיך
fecisti &,tuis vestimẽtis de sumpsisti Et.erat eũ erga :transeuntem omnem suꝑ
16 על־כל־עובר לו־יהי : ותקחי מבגדיך ותעשי
.erit non & ,*ventura* non : eis *super* es fornicata & ,*maculosa* excelsa tibi
לך במות טלאות ותזני עליהם לא באות ולא יהיה :

Versio VULG. LAT.

CAP. XVI.

1 ET factus est sermo Dñi ad me,
2 dicens; Fili hominis,notas fac Jerusalem
3 abominationes suas: Et
dices; Hæc dicit Dñs Deus Jerusalẽ;
Radix tua, & generatio tua
de terra Chanaan:pater tuus Amorrhæus,
& mater tua Cethæa.
4 Et quando nata es,in die ortꝰ tui,
non est præcisꝰ umbilicꝰ tuus, &
aquâ non es lota in salutem, nec
sale salita, nec involuta pannis.
5 Non pepercit suꝑ te oculus ut faceret
tibi unũ de his,misertꝰ tuî :
sed projecta es suꝑ faciẽ terræ in
abjectione animæ tuæ, in die quâ
6 nata es. Transiens autẽ ꝑ te,vidi
te conculcari in sanguine tuo: &
dixi tibi cùm esses in sanguine
tuo;Vive:dixi, inquã,tibi;In sanguine
7 tuo vive.Multiplicatã quasi
germen agri dedi te:& multiplicata
es, & grandis effecta, & ingressa
es, & ꝑvenisti ad mundum
muliebrẽ:ubera tua intumuerũt,
& pilus tuus germinavit:& eras
8 nuda, & confusione plena. Et
transivi per te, & vidi te:& ecce
tempꝰ tuũ, tempꝰ amantiũ:& expandi
amictũ meũ suꝑ te,& operui
ignominiã tuã.Et juravi tibi,
& ingressꝰ sum pactũ tecum,(ait
9 Dñs Deꝰ:)& facta es mihi. Et lavi
te aquâ,& emundavi sanguinem
10 tuum ex te:& unxi te oleo. Et vestivi
te discoloribꝰ,& calceavi te
ianthino:& cinxi te bysso, & indui
11 te subtilibꝰ. Et ornavi te ornamento,
& dedi armillas in manibus
tuis,& torquẽ circa collum
12 tuũ. Et dedi inaurẽ suꝑ os tuũ,&
circulos auribꝰ tuis,& coronã decoris
13 in capite tuo. Et ornata es
auro,& argento,& vestita es bysso,
& polymito,et multicoloribꝰ:
similã, & mel, & oleũ comedisti,
et decora facta es vehementer nimis:
14 & profecisti in regnũ. Et egressũ
est nomẽ tuũ in Gẽtes propter
speciẽ tuã : quia ꝑfecta eras
in decore meo, quẽ posuerã suꝑ
15 te, dicit Dñs Deꝰ. Et habẽs fiduciã
in pulchritudine tua,fornicata
es in nomine tuo: & exposuisti
fornicationẽ tuã omni transeunti,
16 ut ejꝰ fieres. Et sumens de vestimẽtis
tuis,fecisti tibi excelsa hinc
indè consuta: & fornicata es suꝑ
eis,sicut nõ est factũ,neq; futurũ est.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

ΚΕΦ. ιϛ'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρός με, λέγων,
2 Υἱὲ ἀνθρώπου, διαμάρτυραι τῇ Ἱερουσαλὴμ
3 τὰς ἀνομίας αὐτῆς, Καὶ ἐρεῖς, Τάδε
λέγει κύριος τῇ Ἱερουσαλὴμ, Ἡ ῥίζα σου καὶ
ἡ γένεσίς σου ἐκ γῆς Χαναάν· ὁ πατήρ σου
4 Ἀμορραῖος, καὶ ἡ μήτηρ σου Χετταία. Καὶ ἡ
γένεσίς σου ἐν ᾗ ἡμέρᾳ ἐτέχθης, οὐκ (α) ἔδησας
τοὺς μαστούς σου, καὶ ἐν ὕδατι οὐκ ἐλούσθης
(β), οὐδὲ ἁλὶ ἡλίσθης, (γ) καὶ ἐν σπαργάνοις
5 οὐκ ἐσπαργανώθης, (δ) Οὐδὲ ἐφείσατο
ὁ ὀφθαλμός μου ἐπὶ σοὶ, τοῦ ποιῆσαί σοι ἓν
ἐκ πάντων τούτων, τοῦ παθεῖν τι ἐπὶ σοί. καὶ
ἀπερρίφης ἐπὶ πρόσωπον τοῦ πεδίου τῇ σκολιότητι
τῆς ψυχῆς σου ἐν (ε) ἡμέρᾳ ᾗ ἐτέχθης.
6 Καὶ διῆλθον ἐπὶ σὲ, καὶ ἴδον σε πεφυρμένην
ἐν τῷ αἵματί σου· καὶ εἶπά σοι, Ἐκ τοῦ αἵματός
7 σου (ζ) ζωή· Πληθύνου, καθὼς ἡ ἀνατολὴ
τοῦ ἀγροῦ δέδωκά σε. καὶ ἐπληθύνθης καὶ ἐμεγαλύνθης,
καὶ εἰσῆλθες εἰς πόλεις πόλεων. οἱ
μαστοί σου ἀνωρθώθησαν, καὶ ἡ θρίξ σου ἀνέτειλε·
8 (η) σὺ δὲ ἦσθα γυμνὴ καὶ ἀσχημονοῦσα. Καὶ
διῆλθον διὰ σοῦ, καὶ ἴδον σε· καὶ ἰδοὺ καιρός
σου, (θ) καὶ καιρὸς καταλυόντων. καὶ διεπέτασα
τὰς πτέρυγάς μου ἐπὶ σὲ, καὶ ἐκάλυψα
τὴν ἀσχημοσύνην σου, καὶ ὤμοσά σοι· καὶ εἰσῆλθον
ἐν διαθήκῃ μετὰ σοῦ, λέγει (ι) κύριος. καὶ
9 ἐγένου μοι, Καὶ ἔλουσά σε ἐν ὕδατι, καὶ ἀπέπλυνα
τὸ αἷμά σου ἀπὸ σοῦ, καὶ ἔχρισά σε ἐν
10 ἐλαίῳ. Καὶ ἐνέδυσά σε ποικίλα, καὶ (κ) ὑπέδυσά
σε ὑάκινθον· καὶ ἔζωσά σε βύσσῳ, καὶ
11 περιέβαλόν σε τριχάπτῳ. Καὶ ἐκόσμησά σε
κόσμῳ, καὶ περιέθηκα ψέλια περὶ τὰς χεῖράς
12 σου, καὶ κάθεμα περὶ τὸν τράχηλόν σου· Καὶ
ἔδωκα ἐνώτιον (λ) περὶ τὸν μυκτῆρά σου, καὶ
τροχίσκους ἐπὶ τὰ ὦτά σου, καὶ στέφανον καυχήσεως
13 ἐπὶ τὴν κεφαλήν σου. Καὶ ἐκοσμήθης
(μ) χρυσίῳ καὶ (ν) ἀργυρίῳ, καὶ τὰ περιβόλαιά
σου βύσσινα, καὶ τρίχαπτα, καὶ ποικίλα, σεμίδαλιν
καὶ ἔλαιον καὶ μέλι ἔφαγες, καὶ ἐγένου καλὴ
14 (ξ) σφόδρα. Καὶ ἐξῆλθέ σου ὄνομα ἐν τοῖς
ἔθνεσιν (ο) ἐν τῷ κάλλει σου, διότι συντετελεσμένον
ἦν ἐν εὐπρεπείᾳ ἐν τῇ ὡραιότητι
15 ᾗ ἔταξα ἐπὶ σὲ, λέγει (π) κύριος. Καὶ
ἐπεποίθεις ἐν τῷ κάλλει σου, καὶ ἐπόρνευσας
ἐπὶ τῷ ὀνόματί σου, καὶ ἐξέχεας τὴν πορνείαν
16 σου ἐπὶ πάντα πάροδον (ρ)· Καὶ ἔλαβες ἐκ
τῶν ἱματίων σου, καὶ ἐποίησας σεαυτῇ εἴδωλα
ῥαπτὰ, καὶ ἐξεπόρνευσας ἐπ' αὐτὰ, καὶ οὐ μὴ
εἰσέλθῃς (σ) οὐδὲ μὴ γένηται.

CAP. XVI.

ET factus est sermo Domini 1
ad me,dicens; Fili hominis,testificare 2
Hierusalem (a) iniquitates
suas,Et dices;Hec dicit Dominus 3
ad Hierusalẽ;Radix tua,et generatio
tua de terra Chanaan. Pater
tuus Amorrhæus, & mater tua
Chettæa. Et generatio tua in die 4
quâ nata es,(b) non ligavisti mãmillas
tuas,et in aqua non es (c)
lota,nec sale salita, nec fasciis es
fasciata: Nec pepercit super te oculꝰ 5
(d) meꝰ,ut facerẽ tibi unũ ex
omnibꝰ istis,ad patiendũ quippiã
super te. Et projecta es super faciẽ
campi pravitate animæ tuæ
in die quâ nata es.Et transivi super 6
te, & vidi te mixtam (e) in
sanguine tuo:et dixi tibi;De sanguine
tuo vita: Multiplicare:sicut 7
ortus agri, dedi te. Et multiplicata
es,& magnificata es,& ingressa
es in civitates civitatum.
Ubera tua recta sunt: & pilꝰ tuꝰ
ortus est. Tu autẽ eras nuda, &
plena ignominiæ. Et transivi per 8
te,et vidi te:& ecce tempus tuũ,
& (f) tempus divertentiũ.Et expandi
alas meas super te:et operui
ignominiã tuã. Et juravi tibi;&
ingressus sum in testamentũ tecũ,
dicit Dominus. Et facta es mihi:
Et lavi te in aqua, & ablui sanguinẽ 9
tuũ à te:et unxi te in oleo.
Et indui te variis:& calceavi te 10
(g) hyacintho:& cinxi te bysso:et
circundedi te (h) trichapto:Et ornavi 11
te ornamento:et circundedi
armillas manꝰ tuas,et torquẽ circa
collum tuum:Et dedi inaurem 12
circa nares tuas,& rotulas super
aures tuas,et coronã gloriationis
super caput tuũ. Et ornata es auro, 13
& argento:& amictus tui byssini,
& trichapta,et versicoloria:
similã, & oleum, & mel comedisti:
et facta es pulchra* valdè.
Et exivit nomẽ tuũ in gentes in 14
specie tua : quia completũ erat in
(i) decore,in pulchritudine,quam
posui super te , dicit Dominus.
Confidisti in pulchritudine tua, 15
& fornicata es in nomine tuo,
et effudisti fornicationẽ tuam ad
omnem (k) transeuntem.Et tulisti 16
de vestibus tuis:et fecisti tibi (l)
idola consuta : et fornicata es
super eis : et non ingredieris, neque
fiet.

MS.A. (α) ἔδησας (β) τοῦ ΧΡΙΣΤΟΥ μου, οὐδὲ (γ) καὶ σπαργάνοις (δ) Οὐ φείσεται (ε) ᾗ ἡμέρᾳ ἐτέχθης. (ζ) ἡ ζωή σου· Καὶ πληθύνου, (η) καὶ ἦσθα (θ) ὡς καιρὸς (ι) ἀδωναῒ κύριος. (κ) ὑπέδησά (λ) ἐπὶ τὸν (μ) κόσμῳ χρυσῷ (ν) ἀργυρῷ, (ξ) σφόδρα σφόδρα. (ο) ἐπὶ τῷ (π) ἀδωναῒ κύριος. Καὶ κατεπεποίθεις ἐπὶ τῷ (ρ) ὃ οὐκ ἔσται· Καὶ (σ) οὐδ' οὐ μὴ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

יו

2 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר : בר אדם הוכח ית יתבי ירושלם וחוי להון
3 ית תועבתהון: ותימר כדנן אמר יי אלהים ליתבי ירושלם תותבתכון וילדותכון מארעא
כנענאי תמן אתגליתי על אברהם אבוכון בין בתריא ואודעתיה דאתון נחתין למצרים
בדרע מרומם אנא פריק יתכון ובזכות אבהתכון אנא מתריך מן קדמיכון ית אמוראי
4 ומשיצי ית חתאי : ואף כד נחתו אבהתכון למצרים תותבין בארעא דלא דילהון
משעבדין ומענן להון הות כנשתא דישראל דמיא לולדא די רטיש על אפי ברא דלא
אתפסק שורירה ובמיא לא אשתטיף לאתנקאה ובמלח לא אתמלח ובאסורין לא
5 אתאסר: לא חסת עליכון עינא דפרעה למעבד לכון טבא חדא לאנחא לכון משעבודכון
לרחמא עליכון וגזר עליכון גזירת גמירא למרמי דכוריכון בנהרא לאבדא יתכון בעדן
6 דהויתון במצרים: ועל דכרן קים אבהתכון קדמי אתגליתי למפרקכון ארי גלי קדמי ארי
אתון מענן בשעבודכון ואמרית לכון בדמא דמהולתא אחוס עליכון ואמרית לכון בדם
7 פסחא אפרוק יתכון : רבבת כצמחי חקלא יהבתיכון וסגיתון ותקפתון והויתון לזרעין
ולשבטין ובעובדי אבהתכון תקניא עדן פורקן כנישתכון מטא ארי אתון משעבדין
8 ומענן : ואתגליתי על משה באסנא ארי גלי קדמי ארי מטא זמן פורקניכון ואגנית
במימרי עליכון ואעדיתי חוביכון וקימית במימרי למפרק יתכון כמא דקימית לאבהתכון
9 אמר יי אלהים למהויכון עם משמש קדמי : ופריקית יתכון משעבוד מצראי ואעדיתי
10 תקוף מרותא מנכון ודברית יתכון בחירותא : ואלבישית יתכון לבושי ציורין מחמדת
סנאיכון ויהבית מסן דיקר ברגליכון וקדשית מנכון כהניא למהוי משמשין קדמי
11 במצנפן דבוץ וית כהנא רבא בלבושי צבעונין : ותקנית יתכון תקון פתגמי אוריתא
כתיבין על תרין לוחי אבניא ויהיבין על ידי משה ובקדושת שמי רבא קדישית יתכון :
12 ויהבית ארון קימי ביניכון וענן יקרי מטל עליכון ומלאך שליח מן קדמי מדבר
13 ברישכון : ויהבית משכני ביניכון מתקן בדהב ובכסף ויריעת בוץ וצבעונין וציורין ומנא
דטב כסולתא וכדבש וכמשח אוכלית יתכון ועתרתון ותקפתון לחדא ואצלחתון
14 ושלטתון בכל מלכותא: ונפק לך שום כנשתא דישראל ביני עממיא בשופריך ארי גמיר
15 הוא יקרי דשויתי עליך אמר יי אלהים: ואתרחצת בשופריך וטעית על שמיך ואתחברת
16 ליך למפלח לטעותא עם כל דעדי ולא כשר ליך למעבד כן : ונסיבת מלבושיך ועבידת
ליך במן מחפין פתכומרין וטעית עליהון לא כדכשר ולא כדחזי :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAP. XVI.

ET factũ est verbũ prophetiæ à facie Dñi mecũ dicens:Fili hominis,corripe 1
habitatores Jerusalẽ,& annuntiabis eis abominationes suas.Et dices:Hæc dicit 2
Dñs Deꝰ habitatoribꝰ Jerusalẽ:Habitatio vestra & generatio vestra de terra 3
Canaanæorũ ubi revelatꝰ fui Abrahæ patri vestro inter divisiones, & indicavi
ei quòd vos descensuri essetis in Ægyptũ,& in brachio excelso ego redẽpturꝰ
essem vos,& in justitia patrũ vestrorũ ego ejicerẽ à facie vestra Amorræos,&
consumerẽ Ethæos Et etiã quando descenderũt patres vestri in Ægyptũ, incolæ 4
terræ non suæ servitute pressi & afflicti , similis erat cœtus Israel puero qui
projectꝰ est suꝑ faciẽ agri,cujꝰ umbilicꝰ non est præcisꝰ,& in aquis non est lotꝰ
ut emũdaretur,& sale non est cõditꝰ,neq; est alligatꝰ fasciis. Non pepercit vobis 5
oculꝰ Pharaonis ut aliquod bonũ faceret vobis,& ut requiẽ daret vobis à
servitute vestra ut misereretur vestri: & decrevit contra vos decretũ definitũ
ut projiceret masculos vestros in flumẽ,& ut perderet vos in tempore quo eratis
in Ægypto. Et subiit memoria fœderis patrũ vestrorũ corã me,& revelatꝰ 6
sum ut redimerẽ vos, quia manifestũ erat corã me ꝙ vos essetis afflicti in servitute
vestra:& dixi vobis;In sanguine circumcisionis miserebor vestri,& dixi
vobis:In sanguine Phase redimã vos.Myriades velut germina agri dedi vos,& 7
multiplicati estis & corroborati estis, & fuistis in cognationes & in tribꝰ, &
propter opera recta patrũ vestrorũ advenit tempꝰ redemptionis cœtꝰ vestri,
quia eratis servitute pressi & afflicti.Et revelatꝰ sum Moysi in rubo,quia manifestũ 8
fuit corã me ꝙ pervenisset tempꝰ redemptionis vestræ, & protexi vos
verbo meo,et abstuli iniquitates vestras, et juravi ꝑ verbũ meũ ut redimerem
vos,sicut juraverã patribꝰ vestris,dicit Dñs Deꝰ,ut essetis populꝰ ministrãs corã
me.Et redemi vos de servitute Ægyptiorũ,et abstuli duritiẽ dominii à vobis, 9
et duxi vos in libertatẽ. Et indui vos variis vestibꝰ et desiderabilibꝰ inimicorũ 10
vestrorũ,et posui calciamẽta pretiosa in pedibꝰ vestris, et sanctificavi
ex vobis Sacerdotes,ut ministrarẽt corã me in tiaris byssinis,et Sacerdotẽ magnũ
in vestimẽtis diversorũ colorum. Et ornavi vos ornamento verborũ Legis, 11
quæ scripta sunt super duas tabulas lapideas,et data sunt per manus Moysi,
et in sanctitate nominis mei maximi sanctificavi vos. Et dedi arcam fœderis 12
mei inter vos, & nubes gloriæ meæ obumbrabat vos, & angelꝰ missus à facie
mea ducebat in capite vestro. Et dedi tabernaculũ meũ in medio vestri ornatũ 13
auro,argento,& cortinis byssinis,& tincturis variisq; coloribꝰ:& manna,ꝙ
erat bonum instar similæ, & mellis, & olei,cibavi vos : & divites facti estis,&
corroborati estis valdè,& profecistis & dominati estis omnibꝰ regnis. Exiitq; 14
tibi, cœtus Israel, nomen inter populos ob pulchritudinem tuam,quia perfecta
erat gloria mea quam posueram super te, dicit Dominus Deus. Et freta 15
pulchritudine tua , fornicata es ob nomen tuum,atque adjunxisti te ut coleres
idola cum omni transeunte,quod non decebat te ita facere. Et tulisti de vestimentis 16
tuis , & fecisti tibi excelsa cooperta polymitis , et fornicata es super
ea præter fas et decorum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܘ *

* ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ܂ * ܒܪܢܫܐ܂ ܐܘܕܥ ܠܐܘܪܫܠܡ ܛܢܦܘܬܗ 1 2
ܘܐܡܪ܂ * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ ܠܐܘܪܫܠܡ܂ ܥܩܪܝܟܝ ܘܡܘܠܕܝܟܝ܂ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܟܢܥܢ܂ 3
ܐܒܘܟܝ ܐܡܘܪܝܐ܂ ܘܐܡܟܝ ܚܬܝܬܐ܂ * ܘܝܠܕܬܟܝ ܒܝܘܡܐ ܕܝܠܕܬܟܝ܂ ܠܐ 4
ܦܣܩܬ ܫܪܟܝ܂ ܘܒܡܝܐ ܠܐ ܐܣܚܬܟܝ܂ ܘܒܡܠܚܐ ܠܐ ܡܠܚܬܟܝ܂ ܘܒܥܙܪܘܪܐ ܠܐ ܥܙܪܬܟܝ܂
* ܘܠܐ ܚܣܬ ܥܠܝܟܝ ܥܝܢܗ܂ ܕܬܥܒܕ ܠܟܝ ܚܕܐ ܡܢ ܗܠܝܢ܂ ܘܬܚܘܣ ܥܠܝܟܝ܂ ܐܠܐ 5
ܐܫܬܕܝܬܝ ܒܡܕܒܪܐ܂ ܒܛܠܘܡܝܐ ܕܢܦܫܟܝ܂ ܒܝܘܡܐ ܕܝܠܕܬܟܝ܂ * ܘܥܒܪܬ ܥܠܝܟܝ܂ 6
ܘܚܙܝܬܟܝ ܕܡܬܦܠܦܠܐ ܒܕܡܟܝ܂ ܘܐܡܪܬ ܠܟܝ ܒܕܡܟܝ܂ * ܚܝܝ ܘܣܓܝ ܐܝܟ 7
ܡܘܥܝܬܐ ܕܚܩܠܐ܂ ܘܣܓܝܬܝ܂ ܘܪܒܝܬܝ܂ ܘܥܠܬܝ ܠܡܕܝܢܬܐ܂ ܬܕܝܟܝ ܩܡܘ܂ ܘܣܥܪܟܝ
ܢܒܛ܂ ܘܗܘܝܬܝ ܥܪܛܠܝܐ ܘܥܪܝܬܐ܂ * ܘܥܒܪܬ ܥܠܝܟܝ ܘܚܙܝܬܟܝ܂ ܘܐܫܟܚܬ 8
ܙܒܢܟܝ ܕܓܘܪܘܬܐ܂ ܘܦܪܣܬ ܐܝܕܝ ܥܠܝܟܝ܂ ܘܟܣܝܬ ܦܘܪܣܟܝ܂ ܘܝܡܝܬ ܠܟܝ܂ ܘܥܠܬ
ܥܡܟܝ ܒܩܝܡܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ܂ ܘܗܘܝܬܝ ܠܝ܂ * ܘܐܣܚܬܟܝ ܒܡܝܐ܂ ܘܐܫܝܓܬ 9
ܕܡܟܝ ܡܢܟܝ܂ ܘܡܫܚܬܟܝ ܒܡܫܚܐ܂ * ܘܐܠܒܫܬܟܝ ܦܝܬܟܐ܂ ܘܐܣܐܢܬܟܝ ܡܣܢܐ܂ ܘܐܣܪܬ 10
ܚܨܝܟܝ ܒܘܨܐ܂ ܘܟܣܝܬܟܝ ܐܣܛܠܐ܂ * ܘܨܒܬܟܝ ܨܒܬܐ܂ ܘܝܗܒܬ ܫܝܪܐ ܒܐܝܕܝܟܝ܂ ܘܗܡܝܢܟܐ 11
ܒܨܘܪܟܝ܂ * ܘܩܕܫܐ ܕܕܗܒܐ ܒܐܕܢܝܟܝ܂ ܘܒܪܘܠܐ ܥܠ ܒܝܬ ܥܝܢܝܟܝ܂ ܘܟܠܝܠܐ ܕܫܘܒܚܐ ܒܪܫܟܝ܂ 12
* ܘܐܨܛܒܬܝ ܒܕܗܒܐ ܘܡܪܓܢܝܬܐ܂ ܘܠܒܫܬܝ ܒܘܨܐ܂ ܘܫܝܪܝܩܝܐ ܘܦܝܬܟܐ܂ ܘܣܡܝܕܐ 13
ܘܕܒܫܐ܂ ܘܡܫܚܐ ܐܟܠܬܝ܂ ܘܫܦܪܬܝ ܛܒ ܛܒ܂ ܘܐܬܟܫܪܬܝ ܠܡܠܟܘܬܐ܂ * ܘܢܦܩ ܫܡܟܝ 14
ܒܥܡܡܐ ܒܫܘܦܪܟܝ܂ ܡܛܠ ܟܠܝܠܐ ܕܫܘܒܚܝ ܕܣܡܬ ܥܠܝܟܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ܂
* ܘܐܬܬܟܠܬܝ ܥܠ ܫܘܦܪܟܝ܂ ܘܙܢܝܬܝ ܥܠ ܫܡܟܝ܂ ܘܐܫܕܬܝ ܙܢܝܘܬܟܝ ܥܠ ܟܠ 15
ܕܥܒܪ܂ * ܘܢܣܒܬܝ ܡܢ ܢܚܬܝܟܝ܂ ܘܥܒܕܬܝ ܠܟܝ ܨܠܡܐ܂ ܘܙܢܝܬܝ ܒܗܘܢ܂ ܠܐ 16
ܬܐܬܝܢ܂ ܘܠܐ ܢܗܘܝܢ ܕܝܠܟܝ܂

CAP. XVI.

ITerum fuit ad me ſermo Domini, dicendo; 1
Fili hominis, Notam fac Jeroſólymæ 2
abominationem ejus, & dic; Sic dicit Dominus 3
dominorum ad Jeruſalem; Origo tua
& natalia tua ſunt ex terra Chanaan: pater
tuus Amoræus eſt, & mater tua Hethæa.
Genitrix tua, quo die te peperit, non amputavit 4
umbilicum tuum, aquâ non lavit te,
ſale non ſalivit, neq; faſciis involvit: Neque 5
misericordiâ motus eſt erga te oculus ipſius,
ut quicquā ex his tibi præſtaret, tui miſerta:
ſed projecta fuiſti in deſertum in oppreſſione
animæ tuæ, quo die te peperit. Cúmque 6
prope te tranſiſſem, téque vidiſſem ſanguine
tuo conſperſam; dixi tibi *dum eſſes* in sanguine
tuo, Vive & multiplicare ſicut germen 7
agri: & multiplicata es, atque creviſti, & ingreſſa
es in urbes; ubera tua erexerānt ſeſe,
& pilus tuus germinârat, & eras nuda & frigens.
Cûmque prope te tranſiens vidiſſem te, 8
& deprehendiſſem ætatem tuam ætatem eſſe
nubilem; manu meâ ſuper te protenſâ operui
turpitudinem tuam, juravi tibi, & inivi tecum
fœdus, ait Dominus dominorum, & facta
es mea. Lavi te aquâ, ablui ſanguinem tuum 9
à te, & unxi te unguento: Indui te verſicoloribus, 10
calceavi te calceis, accinxi lumbos
tuos byſſo, operuíque te ſtolâ: Decoravi te 11
ornatu, poſuique armillas in manibus tuis,
torquem tollo tuo, Inaures aureas auribus 12
tuis, beryllos in fronte tua, & coronam glorioſiſſimam
in capite tuo: Auro & globulis 13
ornata fuiſti, byſſo, ſerico, & verſicoloribus
induta: ſimilam, mel, & oleum comediſti:
pulchra ſupra modum evaſiſti, & fœlix prædicata
fuiſti inter regna: Exiit fama pulchritudinis 14
tuæ inter gentes, propter coronam
gloriæ meæ quam impoſueram capiti tuo,
ait Dominus dominorum. Tum confiſa pulchritudini 15
tuæ, ſcortata es ob *hanc* famam
tuam, et profudiſti ſcortationem tuam cuicunque
prætereunti. Et ſumpſiſti de veſtibus 16
meis, et feciſti tibi pupas, inque iis fornicata
es, non progredieris, neque tuæ erunt,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل السادس عشر *

* وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان * اشهد لايروسليم باثامها وتقول * هكذا 1 2
يقول ادوناي الرب لايروسليم * اصلك ومولدك من ارض كنعان * ابوك اموري * وامك 3
حيثانية * ومولدك في اليوم الذي ولدت فيه * لم يربطوا ثدييك * وبالماء لم تغسلي 4
من دمك * ولم تملحي * ولم تقمطي باقماط * لا تشفق عيني عليك * لاصنع بك واحدا 5
من جميع هاولاء لاتالم عليك * وطرحت علي وجه الصحراء * باعوجاج نفسك * في اليوم
الذي ولدت فيه * وجازوا عليك ونظروك مخضبة بدمك * وقلت لك * بدمك حياتك * 6
* فاكثري كطلوع الحقل * اعطيتك وكثرت وعظمت * ودخلت الي مدن المدن * ثدياك 7
نهدت * وشعرك نبت * وانت صرت عريانة ومفتضحة * وجازوا بك ونظروك * واذا زمانك 8
كزمان الذين يحلون * وبسطت اجنحتي عليك * وغطيت فضيحتك * وحلفت لك * ودخلت
في العهد معك * يقول ادوناي الرب وصرت لي * وحميتك بالماء * وغسلت دمك منك * 9
ومسحتك بالزيت * والبستك منوعات * وحذيتك بالياقوت * ومنطقتك بالارجوان * ورديتك 10
بالوشي * وزينتك بزينة * ووضعت اسورة في يديك * وقلادة علي عنقك * وزردة في انفك * 11
* واقرطة في اذنيك * واكليل فخر علي راسك * وزينت بزينة فضة وذهب * وارديتك ارجوان 12 13
وموشاه ومنوعة * واكلت سميذا وعسلا وزيتا * وصرت حسنة جدا جدا * وخرج اسمك في الامم 14
بحسنك * من اجل انه كان مكملا بالبهاء الذي زينته عليك * يقول ادوناي الرب * ووثقت 15
بحسنك * وزنيت باسمك * وافضت زناك علي كل مار في الطريق * واخذت من ثيابك * وصنعت 16
لذاتك اوثانا مخيطة * وزنيت بها * ولم تدخلي * ولا تصير *

CAP. XVI.

ET fuit ſermo Domini ad me, dicens; 1
O fili hominis, conteſtare Jeroſolymæ 2
iniquitates ejus, ac dicas; Sic dicit 3
Adonai Dominus ad Jeruſalem; Origo
tua & natalia tua ſunt ex terra Chanaan: pater tuus Amoræus eſt, & mater
tua Hethæa. Et in nativitate tua, die 4
quo nata es, non alligaverunt ubera tua,
aquâ non fuiſti lota de ſanguine tuo, non
fuiſti ſalita, neque faſciis obligata: Non 5
pepercit oculus meus tibi, ut facerem tibi
unum ex his omnibus, ut compaterer tibi:
ſed projecta fuiſti ſuper faciem deſerti
propter obliquitatem animæ tuæ, die quo
nata es: Et prope te tranſierunt, téque 6
viderunt ſanguine tuo oblitam. Et dixi tibi, 7
In ſanguine tuo vita tua: Ideò creſce 7
velut germen agri. Conceſſi tibi; & multa
ac magna evaſiſti, & ingreſſa es urbes
urbium: at ubi ubera tua prominuerunt,
& pilus tuus ortus eſt, tu facta es nuda
& ignominioſa. Prope te tranſierunt, téque 8
viderunt; & ecce tempus tuum quaſi
tempus eorum qui commorantur. Tum extendens
alas meas ſuper te, operui ignominiam
tuam, juravi tibi, & fœdus inivi
tecum, dicit Adonai Dominus, & facta
es mea. Lavi te aquâ, ablui à te ſan 9
guinem tuum; & unxi te oleo: Indui te 10
verſicoloribus, calceavi te hyacintho, cinxi
te byſſo, & acupictu amicivi: Ornavi 11
te ornamento, poſui armillas in manibus
tuis, torquem in collo tuo, & annulum in
naſo tuo, Inaures in auribus tuis, & 12
diadema pretioſiſſimum ſuper caput tuum:
Demum ornata fuiſti ornamentis argenteis 13
& aureis: et amicivi te byſſo, acupictis,
et verſicoloribus: et comediſti ſimilam,
mel, atque oleum, factáque es admodum
pulchra: Et exivit nomen tuum 14
inter gentes propter pulchritudinem
tuam, eò quòd perfecta eſſet ſplendore
quem ſuper te poſueram, dicit Adonai
Dominus. Tu verò freta pulchritudine 15
tuâ, ſcortata es propter tantum nomen
tuum, et effudiſti ſcortationem tuam ad
omnem viatorem. Præterea ſumens de 16
veſtibus tuis, compoſuiſti tibi idola conſuta,
iiſque fornicata es; et non es ingreſſa,
neque fiet.

dedi quæ ,meo argento de & ,meo auro de tuæ gloriæ vasa tulisti Et
17 וַתִּקְחִי כְּלֵי תִפְאַרְתֵּךְ מִזְּהָבִי וּמִכַּסְפִּי אֲשֶׁר נָתַתִּי
sumpsisti Et .eis *in* es fornicata & :*masculi* imagines tibi fecisti & ,tibi
18 לָךְ וַתַּעֲשִׂי־לָךְ צַלְמֵי זָכָר וַתִּזְנִי־בָם׃ וַתִּקְחִי אֶת־
meum suffimentũ & ,meũ oleũ & :eas operuisti &,*tuæ recamationis* vestimẽta
בִּגְדֵי רִקְמָתֵךְ וַתְּכַסִּים וְשַׁמְנִי וּקְטָרְתִּי
,oleum & ,similam ,tibi dedi, quem meum panẽ Et *.earum facies ad dedisti*
19 נָתַתִּי לִפְנֵיהֶם׃ וְלַחְמִי אֲשֶׁר־נָתַתִּי לָךְ סֹלֶת וָשֶׁמֶן
, quietis odorem in,*earum facies ad illud dedisti* & , te comedere feci , mel &
וּדְבַשׁ הֶאֱכַלְתִּיךְ וּנְתַתִּיהוּ לִפְנֵיהֶם לְרֵיחַ נִיחֹחַ
tuas filias & , tuos filios tulisti Et .Deus Dominus ait , fuit &
20 וַיֶּהִי נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִה׃ וַתִּקְחִי אֶת־בָּנַיִךְ וְאֶת־בְּנוֹתַיִךְ
parum Nunquid:*comedendum* ad eis eos immolâsti & ,mihi generâsti quos
אֲשֶׁר יָלַדְתְּ לִי וַתִּזְבָּחִים לָהֶם לֶאֱכוֹל הַמְעַט
, eos dedisti & : meos filios immolâsti Et ? tuis fornicationibus de
21 מִתַּזְנֻתָךְ׃ וַתִּשְׁחֲטִי אֶת־בָּנַי וַתִּתְּנִים
tuis abominationibus omnibus cum Et .illis eos *faciendo transire in*
22 בְּהַעֲבִיר אוֹתָם לָהֶם׃ וְאֵת כָּל־תּוֹעֲבֹתַיִךְ
te existendo in:tuarũ pueritiarũ dierum es recordata non tuis fornicationib⁹ &
וְתַזְנֻתַיִךְ לֹא זָכַרְתְּ אֶת־יְמֵי נְעוּרַיִךְ בִּהְיוֹתֵךְ
post fuit Et .fuisti tuo sanguine in *conculcatam* ,*discoopertam & ,nudam*
23 עֵירֹם וְעֶרְיָה מִתְבּוֹסֶסֶת בְּדָמֵךְ הָיִית׃ וַיְהִי אַחֲרֵי
tibi ædificâsti Et .Deus Dominus dixit,tibi væ væ :tuam malitiã omnem
24 כָּל־רָעָתֵךְ אוֹי אוֹי לָךְ נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִה׃ וַתִּבְנִי־לָךְ
viæ caput omne Ad .platea omni in excelsum tibi fecisti & :*fornicem*
25 גֶּב וַתַּעֲשִׂי־לָךְ רָמָה בְּכָל־רְחוֹב׃ אֶל־כָּל־רֹאשׁ דֶּרֶךְ
divaricâsti & ,tuum decorem es abominata &,tuũ excelsum ædificâsti
בָּנִית רָמָתֵךְ וַתְּתַעֲבִי אֶת־יָפְיֵךְ וַתְּפַשְּׂקִי אֶת־
.tuas fornicationes multiplicâsti & : transeunti omni tuos pedes
רַגְלַיִךְ לְכָל־עוֹבֵר וַתַּרְבִּי אֶת־תַּזְנוּתָךְ׃
multiplicâsti & : *carne magnos tuos vicinos* Ægypti *filios ad* es fornicata Et
26 וַתִּזְנִי אֶל־בְּנֵי־מִצְרַיִם שְׁכֵנַיִךְ גִּדְלֵי בָשָׂר וַתַּרְבִּי
,te super meã manũ extendi ecce Et .me irritandum ad tuam fornicationẽ
27 אֶת־תַּזְנֻתֵךְ לְהַכְעִסֵנִי׃ וְהִנֵּה נָטִיתִי יָדִי עָלַיִךְ
filiarum te habentium odio *animam in* te dedi & :*tuum* statutum diminui &
וָאֶגְרַע חֻקֵּךְ וָאֶתְּנֵךְ בְּנֶפֶשׁ שֹׂנְאוֹתַיִךְ בְּנוֹת
filios ad es fornicata Et .*sceleris* tua via de *confusarum* , Pelistim
28 פְּלִשְׁתִּים הַנִּכְלָמוֹת מִדַּרְכֵּךְ זִמָּה׃ וַתִּזְנִי אֶל־בְּנֵי
.saturata eras non *etiã &* ,eis es fornicata & : *tua saturitate absque* Assur
אַשּׁוּר מִבִּלְתִּי שָׂבְעָתֵךְ וַתִּזְנִים וְגַם לֹא שָׂבָעַתְּ׃
: Chasdim *in* , Chenahan terra in tuam fornicationem multiplicâsti Et
29 וַתַּרְבִּי אֶת־תַּזְנוּתֵךְ אֶל־אֶרֶץ כְּנַעַן כַּשְׂדִּימָה
dixit , tuum cor est infirmatum Quàm .es satiata non hoc in etiam &
30 וְגַם־בְּזֹאת לֹא שָׂבָעַתְּ׃ מָה אֲמֻלָה לִבָּתֵךְ נְאֻם
meretricis mulieris opus , ista omnia *te faciendo in*:Deus Domin⁹
אֲדֹנָי יֱהוִה בַּעֲשׂוֹתֵךְ אֶת־כָּל־אֵלֶּה מַעֲשֵׂה אִשָּׁה־זוֹנָה
, viæ omnis capite in tuum excelsum *te ædificando In* .*imperiosæ*
31 שַׁלָּטֶת׃ בִּבְנוֹתַיִךְ גַּבֵּךְ בְּרֹאשׁ כָּל־דֶּרֶךְ
meretrix tanquam fuisti non & :platea omni in fecisti tuum excelsum &
וְרָמָתֵךְ עָשִׂיתִי בְּכָל־רְחוֹב וְלֹא־הָיִיתִי כַּזּוֹנָה
suscipiet suo viro pro adultera Mulier .mercedem spernendo
32 לְקַלֵּס אֶתְנָן׃ הָאִשָּׁה הַמְּנָאֶפֶת תַּחַת אִישָׁהּ תִּקַּח
dedisti tu & *: donum* dabunt meretricibus Omnibus .alienos
33 אֶת־זָרִים׃ לְכָל־זֹנוֹת יִתְּנוּ־נֵדֶה וְאַתְּ נָתַתְּ
inirandum ad , illos remunerabas &,tuis amatoribus cunctis tua *præmia*
אֶת־נְדָנַיִךְ לְכָל־מְאַהֲבַיִךְ וַתִּשְׁחֳדִי אוֹתָם לָבוֹא
.tuis fornicationibus in undique te ad
אֵלַיִךְ מִסָּבִיב בְּתַזְנוּתָיִךְ׃

Versio VULG. LAT.

17 Et tulisti vasa decoris tui de auro
meo, atque argento meo, quæ de-
di tibi: & fecisti tibi imagines
masculinas, & fornicata es in eis.
18 Et sumpsisti vestimenta tua mul-
ticoloria, & operuisti illas: & o-
leum meum, & thymiama meum
19 posuisti coram eis. Et panem
meum, quem dedi tibi, similam,
& oleum, & mel, quibus enutri-
vi te, posuisti in conspectu eorum
in odorem suavitatis, & factum
20 est, ait Dominus Deus. Et tulisti
filios tuos, & filias tuas, quas ge-
nerâsti mihi: & immolâsti eis ad
devorandum. Numquid parva est
21 fornicatio tua? Immolâsti filios
meos, & dedisti, illos consecrans,
22 eis. Et post omnes abominatio-
nes tuas, & fornicationes, non es
recordata dierum adolescentiæ
tuæ, quando eras nuda, & confu-
sione plena, conculcata in sangui-
23 ne tuo. Et accidit post omnem
malitiam tuam, (væ, væ tibi, ait
24 Dominus Deus,) Et ædificâsti
tibi lupanar, & fecisti tibi prosti-
25 bulum in cunctis plateis. Ad o-
mne caput viæ ædificâsti signum
prostitutionis tuæ: & abomina-
bilem fecisti decorem tuum: &
divisisti pedes tuos omni trans-
eunti, & multiplicâsti fornicatio-
26 nes tuas. Et fornicata es cum fi-
liis Ægypti vicinis tuis magnarũ
carnium: & multiplicâsti fornica-
tionem tuam ad irritandum me.
27 Ecce ego extendam manum meã
super te, & auferam justificatio-
nem tuam: & dabo te in animas
odientium te, filiarum Palæstina-
rum, quæ erubescũt in via tua sce-
28 lerata. Et fornicata es in filiis As-
syriorum, eò quòd necdum fueris
expleta: et postquàm fornicata es,
29 nec sic es satiata. Et multiplicâsti
fornicationẽ tuam in terra Cha-
naan cum Chaldæis: & nec sic sa-
30 tiata es. In quo mundabo cor
tuum, ait Dominus Deus; cùm
facias omnia hæc opera mulieris
31 meretricis, & procacis? Quia
fabricâsti lupanar tuum in capi-
te omnis viæ, & excelsum tuum
fecisti in omni platea: nec facta es
quasi meretrix fastidio augens
32 pretium, Sed quasi mulier adul-
tera, quæ super virum suum in-
33 ducit alienos. Omnibus mere-
tricibus dantur mercedes: tu au-
tem dedisti mercedes cunctis a-
matoribus tuis, & dona donabas
eis, ut intrarent ad te undique ad
fornicandum tecum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

17 Καὶ ἔλαβες τὰ σκεύη τῆς καυχήσεώς σου (τ)
ἐκ τοῦ χρυσίου μου καὶ ἐκ τοῦ ἀργυρίου μου, ἐξ ὧν
ἔδωκά σοι, καὶ ἐποίησας σεαυτῇ εἰκόνας ἀρ-
18 σενικὰς, καὶ ἐξεπόρνευσας ἐν αὐταῖς. Καὶ ἔ-
λαβες τὸν ἱματισμὸν τὸν ποικίλον σου, καὶ περι-
έβαλες (υ) αὐτὰς, καὶ τὸ ἔλαιόν μου καὶ τὸ θυ-
19 μίαμά μου ἔθηκας πρὸ προσώπου αὐτῶν. Καὶ
τοὺς ἄρτους μου οὓς ἔδωκά σοι, σεμίδαλιν καὶ
ἔλαιον καὶ μέλι ἐψώμισά σε, καὶ ἔθηκας αὐτὰ
πρὸ προσώπου αὐτῶν εἰς ὀσμὴν εὐωδίας. καὶ
20 ἐγένετο (φ), λέγει κύριος, Καὶ ἔλαβες τοὺς
υἱούς σου καὶ τὰς θυγατέρας (χ) σου ἃς ἐγέννη-
σας, καὶ ἔθυσας αὐτοῖς εἰς ἀνάλωσιν. ὡς μι-
21 κρὰ ἐξεπόρνευσας, Καὶ ἔσφαξας τὰ τέκνα
σου, καὶ ἔδωκας αὐτὰ ἐν τῷ ἀποτροπιάζε-
22 σθαί σε (ψ) αὐτὰ αὐτοῖς. Τοῦτο παρὰ πᾶσαν
τὴν πορνείαν σου, (ω) καὶ οὐκ ἐμνήσθης (α) τῆς νη-
πιότητός σου, ὅτε ἦσθα γυμνὴ καὶ ἀσχημονοῦσα,
(β) πεφυρμένη ἐν τῷ αἵματί σου ἔζησας.
23 Καὶ ἐγένετο μετὰ πάσας τὰς κακίας σου, (γ)
24 λέγει κύριος, Καὶ ᾠκοδόμησας σεαυτῇ οἴ-
κημα πορνικὸν, καὶ ἐποίησας σεαυτῇ ἔκθε-
25 μα ἐν πάσῃ πλατείᾳ, Καὶ ἐπ᾽ (δ) ἀρχῆς
πάσης ὁδοῦ ᾠκοδόμησας τὰ πορνεῖά σου, καὶ
ἐλυμήνω τὸ κάλλος σου, καὶ (ε) διήγαγες τὰ
σκέλη σου παντὶ παρόδῳ, καὶ ἐπλήθυνας τὴν
26 πορνείαν σου, Καὶ ἐξεπόρνευσας ἐπὶ τοὺς υἱοὺς
Αἰγύπτου τοὺς (ζ) ὁμοροῦντάς σοι τοὺς μεγα-
λοσάρκους, καὶ πολλαχῶς ἐξεπόρνευσας τοῦ
27 παροργίσαι με. Ἐὰν δὲ ἐκτείνω τὴν χεῖρά
μου ἐπὶ σὲ, (η) καὶ ἐξαρῶ τὰ νόμιμά σου, καὶ
παραδώσω (θ) εἰς ψυχὰς μισούντων σε, θυ-
γατέρας ἀλλοφύλων τὰς ἐκκλινούσας σε
28 ἐκ τῆς ὁδοῦ (ι) σου ἧς ἠσέβησας. Καὶ ἐξεπόρ-
νευσας ἐπὶ τὰς θυγατέρας Ἀσσοὺρ, καὶ οὐδ᾽
οὕτως ἐνεπλήσθης, (κ) καὶ ἐξεπόρνευσας καὶ
29 οὐκ ἐνεπίπλω. Καὶ ἐπλήθυνας (λ) τὰς διαθή-
κας σου πρὸς γῆν Χαλδαίων, καὶ οὐδὲ ἐν τού-
30 τοις ἐνεπλήσθης. Τί διαθῶ τὴν θυγατέρα
σου, λέγει κύριος, ἐν τῷ ποιῆσαί σε (μ)
πάντα ταῦτα ἔργα γυναικὸς πόρνης; καὶ
ἐξεπόρνευσας τρισσῶς ἐν ταῖς θυγατράσι σου·
31 Τὸ πορνεῖον ᾠκοδόμησας ἐν πάσῃ ἀρχῇ ὁ-
δοῦ, καὶ τὴν βάσιν σου ἐποίησας ἐν πάσῃ
πλατείᾳ· καὶ ἐγένου ὡς πόρνη συνάγουσα
32 μισθώματα. (ν) Ἡ γυνὴ ἡ μοιχωμένη ὁ-
μοία σοι, παρὰ τοῦ ἀνδρὸς αὐτῆς λαμβά-
33 νουσα μισθώματα, Πᾶσι τοῖς (ξ) ἐκπορνεύ-
σασιν αὐτὴν προσεδίδου μισθώματα· (ο) καὶ
σὺ δέδωκας μισθώματα πᾶσι τοῖς ἐρα-
σταῖς σου, καὶ ἐφόρτιζες αὐτοὺς τοῦ ἔρχεσθαι
πρὸς σὲ κυκλόθεν ἐν τῇ πορνείᾳ σου.

Et tulisti vasa gloriationis tuæ de 17
auro meo, & de argento meo, de
iis quæ dederam tibi: & fecisti
tibi imagines masculinas: & for-
nicata es in eis. Et sumpsisti ve- 18
stimentum variũ tuũ, et operuisti
illas: Et oleũ meum, & thymia-
ma meum posuisti ante faciem eo-
rum: Et panes meos, quos dedi ti- 19
bi, similã, & oleum, et mel, (m)
cibavi te: et posuisti ea ante faciẽ
eorũ in odorem suavitatis. Et fa-
ctum (π) est, dicit Dominus, Et 20
tulisti filios tuos, et filias tuas,
quas genuisti, et immolâsti eis in
consumptionẽ. Quasi parum for-
nicata sis; Et interfecisti filios 21
tuos, et dedisti eos in (o) expiando
te ipsos eis. Hoc est super omnem 22
fornicationẽ (p) tuam: et non es
recordata (q) infantiæ tuæ: quan-
do eras nuda, et ignominiosa:
mixta in sanguine tuo vixisti. Et 23
factum est post omnes malitias (r)
tuas, ait Domin⁹; Et ædificâsti ti- 24
bi (s) habitaculum fornicationis:
et fecisti tibi (t) prostitutionem in
omni platea. Et in principio omnis 25
viæ ædificâsti (u) lupanaria tua:
et corrupisti decorem tuum: et di-
varicâsti crura tua omni transe-
unti: et multiplicâsti fornicatio-
nẽ tuam: Et fornicata es (x) cum 26
filiis Ægypti vicinis tuis, qui sũt
magnarum carniũ: et multiplici-
ter fornicata es, ut me ad iracun-
diam provocares. (y) Si autem ex- 27
tendero manum meã super te; et
auferam legitima tua, et tradam
in animas odientiũ te, filias alie-
nigenarum, (z) declinantes te de
via tua, quâ impiè egisti. Et for- 28
nicata es (ω) super filias Assur: et
nec sic satiata es: et fornicata es,
et non es repleta. Et multiplicâsti 29
(aa) testamenta tua ad terram (b)
Chaldæorũ: et neque in istis ex-
pleta es. (c) Quomodò disponam 30
filiam tuã, dicit Domin⁹, cùm fa-
cias tu omnia hæc opera mulieris
(d) fornicariæ? Et fornicata es
tripliciter in filiabus tuis: Lupa- 31
nar ædificâsti in omni principio
viæ, et (e) basim tuam fecisti in
omni platea. Et (f) facta es quasi 32
meretrix congregans mercedes:
Mulier adultera (g) similis tuî, à
viro suo accipiens mercedes, O 33
mnibus qui fornicabuntur cũ ea,
dabat mercedes: et tu dedisti mer-
cedes cunctis amatoribus tuis, et
onerabas illos, ut venirent ad te
per circuitum in fornicatione tua.

MS.A. (τ) καὶ ἐκ τοῦ (υ) αὐτὰ, (φ) μετὰ ταῦτα, λέγει κύριος, Ἔλαβες (χ) σου, καὶ ἔθυσας αὐτὰ αὐτοῖς (ψ) ἐν αὐτοῖς. (ω) καὶ τὰ βδελύγματά σου, καὶ οὐκ (α) τὰς ἡμέρας τῆς (β) καὶ πεφυρμένη (γ) οὐαὶ οὐαί σοι, λέγει (δ) ἀρχὴν πασῶν ἐξόδων (ε) ἤγαγες (ζ) *ὁμοροῦντάς (η) ἐξαρῶ (θ) σε εἰς (ι) σου. Ἐξεπόρνευσας καὶ ἠσέβησας ἐπὶ (κ) ἐξεπόρνευσας καὶ οὐκ ἐνεπίμπλω. (λ) τὴν διαθήκην σου πρὸς γῆν Χαναναίων καὶ Χαλδαίων, καὶ οὐδ᾽ ἐν (μ) ἔργα γυναικὸς πόρνης; ἐξεπόρνευσας τρισσῶς ἐπὶ ταῖς θυγατράσιν σου, καὶ τὸ πορνεῖον ᾠκοδόμησας ἐπὶ πάσης ἀρχῆς ὁδοῦ· τὴν βάσιν (ν) Ὡς γυνὴ μοιχωμένη (ξ) ἐκπορνεύουσιν (ο) πᾶσι τοῖς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

17 ונסיבת מני תושבחתיך מדהבי ומכספי די יהבית ליך ועבדת ליך צלמי דכורא וטעית
18
19 בהון: ונסבת ית לבושי ציוריך וכסיתנון ומשחי וקטורת בוסמי שוית קדמיהון: וטובי
דיהבית ליך סולתא ומשח ודבש אוכלתיך ויהבתנון קדמיהון קורבנין לפולחן הלא
20 הואה כל אלין אמר יי אלהים: איכא אסגית לארגזא קדמי כנשתא דישראל די דברת
ית בנך וית בנתך דעתידין למפק מנהון תולדרת קודשא קדמי ונכסתנון להן קורבנין
21 לפולחן הזעירא הות בעינך טעותיך: ונכסת ית בניא ויהבתנון באעברא יתהון להן:
22 וית כל חובי תועבתיך וטעותיך לא אדכרת ית יומין דמלקדמין כד הוית מטלטלא
23 ושביקא מתעניא בשעבודיך הוית: מה יהי בסופיך על כל בישתיך נביא אמר לה
24 ווי ליך על דחבת ווי ליך על דלא תבת אמר יי אלהים: ובנית ליך אגורין ועבדת ליך
25 רמן בכל רחוב: בריש כל פרשות אורח בנית רמתיך ואחלת ית קדושתיך ואתחברת
26 ליך למפלח לטעותא ואסגית ית טעותיך עם כל דעדי ואסגית ית טעותיך: וטעית בתר
27 בני מצרים קריביך מסרבלי בסר ואסגית ית טעותיך לארגזא קדמי: והא ארימית ית
מחת גבורתי עלך ומנעית טוביך ואמסרניך ביד בעלי דבביך כפרני פלשתאי דאלו
28 שלחית להון נביי אתכנעו ואת לא תבת מאורחיך דעיצת חטאין: וטעית בתר בני
29 אתור מדלא ידעת אוריתא וטעית בהון ואף לא ידעת תיובתא: ואסגית ית טעותיך
30 לאתחברא לעמא דכנען למהך בנימוסי כסדאי ואף בדא לא ידעת אוריתא: מה תקיף
הוה רשע לבך אמר יי אלהים במעבדיך ית כל אלין כעובדי אתתא נפקת ברא דשליט
31 לה בנפשה: במבנך אגורך בריש כל פרשות אורח ורמתך עבדת בכל רחוב ולא
32 הוית כנפקת ברא דמתהניא באגרא: כנשתא דישראל דמיא לאתתא דרחימא
33 על בעלה ומזניא עלוהי שבקת ית בעלה וטעת בתר נוכראין: לכל נפקת ברא
יהבין אגר ואת אהנית ית אגריך לכל רחימך ושחדת יתהון למיתי עלך מסחור
סחור בטעותיך:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et tulisti vasa tua laudabilia ex auro meo & argento meo quæ dederam tibi, 17
& fecisti tibi imagines masculas, & fornicata es in eis. Et tulisti vestimen- 18
ta tua varii coloris, & operuisti ea; & oleum meum & incensum aromatis
mei posuisti coram eis: Et bona mea quæ dedi tibi, similam, & oleum & 19
mel, quibus cibavi te, posuisti coram eis in oblationes & in cultum. Nónne
facta sunt omnia hæc? dicit Dñs Deus. Quomodo multiplicâsti irritare me 20
cœtus Israel? qui tulisti filios tuos & filias tuas, ex quibus futurum erat ut
egrederetur generatio sancta coram me, & immolâsti eos illis in oblationem
& cultum: Nunquid parum est in oculis tuis fornicatio tua? Et immolâsti 21
filios, & tradidisti eos ut traducerentur illis. Non es recordata omnium pec- 22
catorum abominationum tuarum & idolorum tuorum, nec dierum antiquo-
rum cùm esses transmigrans & derelicta, & afflicta in servitute tua esses.
Quid erit in fine tuo ob omnia mala tua? Propheta dic ei: Væ tibi quia 23
peccâsti, væ tibi quia non es conversa, dicit Dñs Deus. Et ædificâsti tibi 24
aras, & fecisti tibi excelsa in omni platea. In capite omnis divisionis iti- 25
neris construxisti excelsum tuum, & prophanâsti sanctitatem tuam, & tete
conjunxisti ut coleres idola. Et multiplicâsti omnia idola tua cum omni
transeunte, & multiplicâsti idola tua. Et fornicata es post filios Ægypti pro- 26
pinquos tuos opertos carne; & multiplicâsti idola tua ut irritares me.
Et ecce levavi plagam potentiæ meæ super te, & prohibui bonum tuum, 27
& tradam te in manum inimicorum tuorum villarum Philistinorum; ad
quos si misissem prophetas meos, erubescerent: tu autem non es conver-
sa à via tua scelerata. Et fornicata es post filios Assur, eò quòd non sci- 28
ebas Legem; & fornicata es cum eis, & etiam ignorâsti pœnitentiam. Et 29
multiplicâsti idola tua ut conjungereris cum populo Chanaan, & ut ambu-
lares in legibus Chaldæorum: & etiam in hoc non cognovistis Legem.
Quàm fortis fuit malitia cordis tui, dicit Dñs Deus: cùm faceres omnia 30
hæc sicut opera mulieris meretricis quæ potestatem habet suiipsius. Et 31
cùm ædificares aras tuas in capite omnis bivii itineris, & excelsa tua face-
res in omni platea. Nec fuisti sicut meretrix quæ utilitatem percipit ex mer-
cede. Cœtus Israel similis est mulieri quæ dilecta est marito, quæ fornicata 32
est super eum, & reliquit virum suum, & mœchatur cum alienis. Omni 33
meretrici dant mercedem, tu autem mercedem tuam contulisti omnibus
amatoribus tuis, & muneribus conduxisti eos ut venirent ad te per circui-
tum, propter fornicationes tuas.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

17 * ܘܢܣܒܬܝ ܡܐܢܐ ܕܫܘܒܚܟܝ ܀ ܡܢ ܕܗܒܐ ܘܡܢ ܣܐܡܐ ܕܝܗܒܬ ܠܟܝ܂ ܘܥܒܕܬܝ
ܠܟܝ ܨܠܡܐ ܕܕܟܪܐ܂ ܘܙܢܝܬܝ ܒܗܘܢ܂ * ܘܢܣܒܬܝ ܡܐܢܐ ܕܬܟܫܝܛܟܝ܂ ܘܟܣܝܬܝ ܐܢܘܢ܂ 18
ܘܡܫܚܝ ܘܒܣܡܝ ܣܡܬܝ ܩܕܡܝܗܘܢ܂ * ܘܠܚܡܐ ܕܝܗܒܬ ܠܟܝ܂ ܣܡܝܕܐ ܘܕܒܫܐ 19
ܘܡܫܚܐ ܠܡܐܟܘܠܬܐ ܀ ܣܡܬܝܗܝ ܩܕܡܝܗܘܢ ܠܪܝܚܐ ܕܒܣܡܐ܂ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ܂
* ܘܢܣܒܬܝ ܠܒܢܝܟܝ ܘܠܒܢܬܟܝ ܕܝܠܕܬܝ ܠܝ ܀ ܘܕܒܚܬܝ ܠܗܘܢ ܠܡܐܟܘܠܬܐ܂ ܣܓܝ 20
ܡܢ ܙܢܝܘܬܟܝ܂ * ܘܢܟܣܬܝ ܠܒܢܝ܂ ܘܝܗܒܬܝ ܐܢܘܢ ܠܗܘܢ܂ ܡܢ ܕܐܬܪܥܝܬܝ ܒܗܘܢ܂ * ܘܒܟܠܗܝܢ 21
22 ܛܢܦܘܬܟܝ ܘܙܢܝܘܬܟܝ ܀ ܠܐ ܐܬܕܟܪܬܝ ܝܘܡܬܐ ܕܛܠܝܘܬܟܝ܂ ܟܕ ܥܪܛܠܝܐ ܗܘܝܬܝ ܘܩܪܝܪܐ
ܘܡܬܦܠܦܠܐ ܒܕܡܐ܂ * ܘܡܢ ܒܬܪ ܟܠܗܝܢ ܒܝܫܬܟܝ ܀ ܘܝ ܠܟܝ ܘܝ ܠܟܝ܂ ܐܡܪ ܡܪܐ 23
ܡܪܘܬܐ܂ * ܒܢܝܬܝ ܠܟܝ ܒܝܬܐ ܪܒܐ܂ ܘܥܒܕܬܝ ܠܟܝ ܡܕܒܚܐ ܒܟܠ ܫܘܩ܂ * ܘܒܟܠ 24
25 ܪܝܫ ܐܘܪܚܐ܂ ܒܢܝܬܝ ܦܪܟܝܟܝ܂ ܘܛܢܦܬܝ ܫܘܦܪܟܝ܂ ܘܦܫܛܬܝ ܪ̈ܓܠܝܟܝ ܠܟܠ
ܕܥܒܪ܂ ܘܐܣܓܝܬܝ ܙܢܝܘܬܟܝ܂ * ܘܙܢܝܬܝ ܥܡ ܒܢܝ̈ ܡܨܪܝܢ ܫܒܒܝܟܝ ܪܘܪܒܝ ܒܣܪܐ܂ 26
ܘܐܣܓܝܬܝ ܙܢܝܘܬܟܝ܂ ܘܐܪܓܙܬܝܢܝ܂ * ܘܐܪܝܡܬ ܐܝܕܝ ܥܠܝܟܝ܂ ܘܐܘܒܕܬ ܫܘܠܛܢܟܝ܂
27 ܘܐܫܠܡܬܟܝ ܒܐܝܕܝ̈ ܣܢܐܝܟܝ ܒܢܬ ܦܠܣܛܝܐ܂ ܕܡܦܢܝܢ ܗܘܝ ܠܟܝ ܡܢ ܐܘܪܚܬܟܝ ܕܙܢܝܘܬܐ܂
* ܘܙܢܝܬܝ ܥܡ ܒܢܝ̈ ܐܬܘܪ܂ ܘܠܐ ܣܒܥܬܝ܂ * ܘܐܣܓܝܬܝ ܙܢܝܘܬܟܝ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܟܢܥܢ 28
29 ܘܕܟܠܕܝ̈ܐ܂ ܘܐܦ ܒܗܠܝܢ ܠܐ ܣܒܥܬܝ܂ * ܡܢܐ ܐܕܘܢ ܠܒܪܬܟܝ܂ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ܂
30 ܕܥܒܕܬܝ ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ ܥܒܕ̈ܐ ܕܐܢܬܬܐ ܙܢܝܬܐ ܘܡܪܝܚܬܐ܂ * ܟܕ ܒܢܝܬܝ ܦܪܟܝܟܝ
31 ܒܟܠ ܪܝܫ ܐܘܪܚܐ܂ ܘܡܕܒܚܝܟܝ ܒܟܠ ܫܘܩ܂ * ܘܠܐ ܗܘܝܬܝ ܐܝܟ ܐܢܬܬܐ ܙܢܝܬܐ
32 ܕܡܟܢܫܐ ܐܓܪܐ܂ ܐܦܠܐ ܐܝܟ ܐܢܬܬܐ ܓܝܪܬܐ ܕܢܣܒܐ ܡܢ ܢܘܟܪ̈ܝܐ܂ * ܠܟܠܗܝܢ ܙܢܝܬܐ
33 ܝܗܒܝܢ ܐܓܪܐ܂ ܘܐܢܬܝ ܝܗܒܬܝ ܐܓܪܐ ܠܟܠܗܘܢ ܪܚܡܝܟܝ܂ ܘܫܚܕܬܝ ܐܢܘܢ ܒܙܢܝܘܬܟܝ܂
ܕܢܐܬܘܢ ܠܘܬܟܝ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܚܕܪ̈ܝܟܝ܂

Sumpſiſti quoque vaſa decôris tui, ex auro 17
nimirum & argento quod dederam tibi; &
faciens tibi ſimulacra maſculina, ſcortata es
cum eis. Sumpſiſti veſtes ornatûs tui, & ope- 18
ruiſti ea: unguentum meum & aromata mea
poſuiſti coram eis: Cibum quem dederam 19
tibi, ſimilam, mel, & oleum) in eſcam, po-
ſuiſti coram eis in odorem ſuffitûs, ait Do-
minus dominorum. Sumpſiſti filios filiáſque 20
tuas, quos mihi genueras, & ſacrificâſti eis in
cibum; præter ſcortationem tuam: Et jugu- 21
lâſti filios meos, & obtuliſti eis poſtquam la-
ſciviſſes cum eis. Inter tot abominationes & 22
ſcortationes tuas non es recordata dierum
adoleſcentiæ tuæ, quum nuda eſſes, algens,
& ſanguine conſperſa. Ad hæc omnia flagi- 23
tia tua (væ tibi, væ tibi, ait Dominus do-
minorum) Extruxiſti tibi ædem ampliſſi- 24
mam, & altaria feciſti tibi in omni platea:
In omnibus compitis ædificâſti fana tua, & 25
contaminâſti pulchritudinē tuam, extendens
crura tua cuicunque prætereunti: multipli-
câſti ſcortationes tuas, Et ſcortata es cum 26
Ægyptiis vicinis tuis ingenti carne præditis.
Cúmq; multiplicibus ſcortationibus tuis *adeò*
me provocâſſes ad iram, Ut attollerem ſuper 27
te manū meum, imperia tua perderem, téque
traderem in manum hoſtium tuorum filiarum
Paleſtinorum, quæ te avocabant à viis tuis
meretriciis; Iterum fornicata es cum filiis 28
Aſſur, & non es ſatiata: Multiplicâſti forni- 29
cationem tuam ſuper terram Chanaan &
Chaldæorum, & ne his quidem contenta fu-
iſti. Quorſum judicarem filiam tuam, ait Do- 30
minus dominorum, quum feceris has omnes
actiones mulieris fornicariæ & impudentis?
Quum ædificaveris templa tua in omnibus 31
compitis, & altaria tua in cunctis plateis?
Nedum mulieri fornicariæ ſimilis es, quòd 32
hæc mercedem congreget; neque adulteræ
uxori *alicujus* viri, quòd *hæc* ab extraneis
accipiat. Omnibus ſcortis dant *alii* merce- 33
dem; tu verò mercedem ſolvis omnibus ama-
toribus tuis; & munerata es eis ſcortationes
tuas, ut ad te confluerent undequaque.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

17 * واخذت اواني فخرك * ومن ذهبي ومن فضتي الذين اعطيتك اياهم * وصنعت لك صورا
18 ذكورية وزنيت بهن * واخذت ثيابك المنوعة ورديتها * وزيتي وبخوري وضعتيهما امام وجوهها *
19 * وخبزي الذي اعطيته لك * سميذا وزيتا وعسلا اطعمتك * وضعتيهم امام وجوهها لرايحة
20 طيب * وكان بعد هذا يقول ادوناي الرب * فاخذت بنيك وبناتك الذين ولدتيهم
21 وذبحتيهم لها للهلاك * هل زنيت قليلا * وذبحت اولادك واسلمتيهم عند ما زنيت بها *
22 * هذا اعظم من كل زناك ورذالاتك * ولم تذكري ايام شبيبتك * لما كنت عريانة
23 ومفضوحة * مخضبة بدمك عشت * وكان بعد جميع شرورك * يقول ادوناي الرب *
24 25 * وبنيت لذاتك بيتا للزنا * وصنعت لذاتك مذبحا في كل شارع * وعلي راس كل طريق
بنيت مواخيرك * وافسدت حسنك * واخرجت ساقيك لكل مار الطريق * واكثرت زناك *
26 27 * وزنيت ببني مصر جيرانك العظيمي الاجسام * وبضروب كثيرة زنيت لتغضبيني * وها
امدد يدي عليك * وانزع شرايعك * واسلمك الي نفوس مبغضيك بنات الغرباء *
28 القبايل التي امالتك عن طريقك التي نافقت فيها * وزنيت مع بنات اشور * واليس
29 هكذا امتليت * وزنيت ولم تشبعي * واكثرت عهودك الي ارض الكلدانيين * ولا
30 بهذ شبعت * بماذا اصنع عهودك يقول ادوناي الرب * عند ما صنعت جميع هذه اعمال
31 امراة زانية * زنيت مثلثا مع بناتك * وبنيت ماخورك علي كل راس طريق * وصنعت اسه
32 في كل شارع * ولم تكوني كزانية تجمع الاجر * المراة الزانية شبيهة بك * من رجلها تاخذ
33 الاجر * ولجميع الذين زنوا بها تدفع اجرها * وانت اعطيت الاجر لجميع الذين يرضون
بك * وارعبتيهم ليانوا اليك من حولك في زناك *

Sumpſiſti quoque ſupellectilem tuam pre- 17
tioſiſſimam, & ex auro argentóve meo
quæ tibi dederam; confeciſtíque tibi ima-
ginibus maſculeis, iis fornicata es: Ad 18
hæc ſumpſiſti veſtes tuas verſicolores, &
operuiſti eas: & oleum meum, thúſque
meum poſuiſti ante facies earum: Panem 19
meum quem dederam tibi, ſimilam, oleū,
& mel, quibus te cibaveram, poſuiſti an-
te facies earum in odorem ſuaveolentem.
Fuit etiam poſthæc, dicit Adonai Domi- 20
nus, ut accipiens filios tuos & filias tuas,
quos genueras, jugulaveris eos ipſis in in-
teritum, num parum fornicata es? Ju- 21
gulâſti filios tuos, & tradidiſti eos poſt-
quam fornicata eſſes in ipſis. Hæc eſt ma-
xima omnium ſcortationum & abomina-
tionum tuarum. Et non es recordata die- 22
rum adoleſcentiæ tuæ, quum eſſes nuda
& turpis, tuóque ſanguine conſperſa vi-
veres. Fuit etiam poſt omnia ſcelera tua, 23
dicit Adonai Dominus, ut extrueres tibi 24
domum pro fornicatione, faceréſque tibi
aram in omni platea: Ad initium cujuſ- 25
cunque viæ ædificâſti cauponas tuas, &
corrupiſti pulchritudinem tuam: produxiſti
crura tua omnibus viam tranſeuntibus, &
multiplicâſti fornicationem tuam: For- 26
nicata es cum filiis Ægypti vicinis tuis
qui magnis ſunt corporibus: denique modis
permultis fornicata es, ut me ad iracundiā
provocares. Quapropter en extendam ſu- 27
per te manum meam, auferam leges tuas,
tradámque te animabus odientium te, filia-
rum Alienorum, nationū quæ te averterunt
à via tua in qua impiè te gerebas. For- 28
nicata quoque es cum filiabus Aſſur, & ne
ita quidem explevisti libidinem tuam?
fornicata es, & nondum ſatiata? Multi- 29
plicâſti fœdera tua cum terra Chaldæorū,
& nihilominùs haud ſaturata es. In qua- 30
nam æſtimatione ponam fœdera tua, dicit
Adonai Dominus, quandoquidem feciſti o-
mnes hujuſmodi actiones mulieris fornica-
riæ? Fornicata es tripliciter cum filiabus 31
tuis: & ædificâſti cauponam tuam ad o-
mne viæ initium, & feciſti fundamentum
ejus in omni platea. Non fuiſti ſicut for- 32
nicaria mercedem congregans: mulier for-
nicaria tibi ſimilis eſt: à marito ſuo acci-
pit mercedem, Et omnibus cum ea for- 33
nicantibus dat mercedem ſuam. Sic tu de-
diſti mercedem omnibus iis qui te diligे-
bant, & fornicatione tuā concitâſti libi-
dinem eorum, ut venirent ad te è circuitu
tuo.

non te poſt & ,tuis fornicationibus in *mulieribus* à oppoſitum te in fuit Et
34 וַיְהִי־בָךְ הֵפֶךְ מִן־הַנָּשִׁים בְּתַזְנוּתַיִךְ וְאַחֲרַיִךְ לֹא
fuiſti & ,tibi data ſit non merces & ,mercedem *te dando in* & :fuit fornicatū
זוּנָּה וּבְתִתֵּךְ אֶתְנַן וְאֶתְנַן לֹא נִתַּן־לָךְ וַתְּהִי
dixit Sic .Domini verbum audi meretrix Propterea .*oppoſitum in*
35 36 לְהֶפֶךְ׃ לָכֵן זוֹנָה שִׁמְעִי דְּבַר־יְהוָה׃ כֹּה־אָמַר
tua *nuditas* eſt revelata & , *tuum æs effundi* Pro : Deus Dominus
אֲדֹנָי יֱהוִה יַעַן הִשָּׁפֵךְ נְחֻשְׁתֵּךְ וַתִּגָּלֶה עֶרְוָתֵךְ
idola omnia ſuper & : tuos amatores ſuper tuis fornicationibus in
בְּתַזְנוּתַיִךְ עַל־מְאַהֲבָיִךְ וְעַל כָּל־גִּלּוּלֵי
.eis dediſti quos tuorū filiorū *ſanguines* juxta &,tuarū abominationū
תוֹעֲבוֹתַיִךְ וְכִדְמֵי בָנַיִךְ אֲשֶׁר נָתַתְּ לָהֶם׃
, *eis ſuper dulcuiſti quibus* tuos amatores omnes *congregans* ego ecce Ideò
37 לָכֵן הִנְנִי מְקַבֵּץ אֶת־כָּל־מְאַהֲבַיִךְ אֲשֶׁר עָרַבְתְּ עֲלֵיהֶם
: habebas odio quos univerſis *ſuper* dilexiſti quos omnes &
וְאֵת כָּל־אֲשֶׁר אָהַבְתְּ עַל כָּל־אֲשֶׁר שָׂנֵאת
, *eos ad* tuā *nuditatem* revelabo & ,undique te adverſus eos congregabo &
וְקִבַּצְתִּי אֹתָם עָלַיִךְ מִסָּבִיב וְגִלֵּיתִי עֶרְוָתֵךְ אֲלֵהֶם
,adulterarum judiciis te judicabo Et .tuam *nuditatē* omnem videbunt &
38 וְרָאוּ אֶת־כָּל־עֶרְוָתֵךְ׃ וּשְׁפַטְתִּיךְ מִשְׁפְּטֵי נֹאֲפוֹת
dabo Et .zeli & iræ ſanguinem te dabo & :ſanguinem effundentium &
39 וְשֹׁפְכֹת דָּם וּנְתַתִּיךְ דַּם חֵמָה וְקִנְאָה׃ וְנָתַתִּי
,tua excelſa *demolientur* &,tuū excelſum deſtruent &,eorum manum in te
אוֹתָךְ בְּיָדָם וְהָרְסוּ גַבֵּךְ וְנִתְּצוּ רָמֹתַיִךְ
te dimittent &:tuæ gloriæ vaſa *capient* &,tuis veſtimentis te *exſpoliabunt* &
וְהִפְשִׁיטוּ אוֹתָךְ בְּגָדַיִךְ וְלָקְחוּ כְּלֵי תִפְאַרְתֵּךְ וְהִנִּיחוּךְ
obruent & ,concionem te ſuper facient aſcendere Et .diſcoopertam & ,nudam
40 עֵירֹם וְעֶרְיָה׃ וְהֶעֱלוּ עָלַיִךְ קָהָל וְרָגְמוּ
tuas domos comburent Et .ſuis gladiis in te perfodient &:lapide in te
41 אוֹתָךְ בָּאָבֶן וּבִתְּקוּךְ בְּחַרְבוֹתָם׃ וְשָׂרְפוּ בָתַּיִךְ
: plurimarum mulierum oculis in judicia te in facient & , igni in
בָּאֵשׁ וְעָשׂוּ־בָךְ שְׁפָטִים לְעֵינֵי נָשִׁים רַבּוֹת
.ultra dabis non mercedem etiam & , *meretrice à* te faciam ceſſare &
וְהִשְׁבַּתִּיךְ מִזּוֹנָה וְגַם־אֶתְנַן לֹא תִתְּנִי־עוֹד׃
: te à meus zelus recedet & , te in meam iram faciam requieſcere Et
42 וַהֲנִחֹתִי חֲמָתִי בָּךְ וְסָרָה קִנְאָתִי מִמֵּךְ
fueris recordata non quòd eo Pro .amplius iraſcar non & , quieſcam &
43 וְשָׁקַטְתִּי וְלֹא אֶכְעַס עוֹד׃ יַעַן אֲשֶׁר לֹא־זָכַרְתִּי
etiam & : his omnibus in me provocaveris &,*tuarum pueritiarum* dierum
אֶת־יְמֵי נְעוּרַיִךְ וַתִּרְגְּזִי־לִי בְּכָל־אֵלֶּה וְגַם־
non Et .Deus Dominus dixit , dedi caput in tuam viam ecce ego
אֲנִי הֵא דַּרְכֵּךְ בְּרֹאשׁ נָתַתִּי נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִה וְלֹא
Ecce .tuis abominationibus omnibus ſuper cogitationem feciſti
44 עָשִׂיתִי אֶת־הַזִּמָּה עַל כָּל־תּוֹעֲבֹתָיִךְ׃ הִנֵּה
.ejus filia ,mater Sicut : dicendo ,*parabolizabit* ,te ſuper *parabolizans* omnis
כָּל־הַמֹּשֵׁל עָלַיִךְ יִמְשֹׁל לֵאמֹר כְּאִמָּה בִּתָּהּ׃
ſoror & : ſuos filios & ,ſuum virum *reſpuens* , tu tuæ matris Filia
45 בַּת־אִמֵּךְ אַתְּ גֹּעֶלֶת אִישָׁהּ וּבָנֶיהָ וַאֲחוֹת
veſtra Mater.ſuos filios &,ſuos viros ſunt abominatæ quæ ,tu tuæ ſororis
אֲחוֹתֵךְ אַתְּ אֲשֶׁר גָּעֲלוּ אַנְשֵׁיהֶן וּבְנֵיהֶן אִמְּכֶן
Someron *magna* tua ſoror Et .Emoræus veſter pater & , Chittæa
46 חִתִּית וַאֲבִיכֶן אֱמֹרִי׃ וַאֲחוֹתֵךְ הַגְּדוֹלָה שֹׁמְרוֹן
parva tua ſoror Et .tuam ſiniſtram *ſuper habitans* , ejus *filiæ &* ,ipſa
הִיא וּבְנוֹתֶיהָ הַיּוֹשֶׁבֶת עַל־שְׂמֹאולֵךְ וַאֲחוֹתֵךְ הַקְּטַנָּה
earum viis in non Et .ejus *filiæ* & ,Sedom ,tuis dexteris à *habitans* ,te *præ*
47 מִמֵּךְ הַיּוֹשֶׁבֶת מִימִינֵךְ סְדֹם וּבְנוֹתֶיהָ׃ וְלֹא בְדַרְכֵיהֶן
paululum velut : feciſti earum abominationes ſecundùm & , ambulâſti
הָלַכְתְּ וּכְתוֹעֲבוֹתֵיהֶן עָשִׂיתִי כִּמְעַט
.tuis viis omnibus in illis præ es corrupta & , *pauxillum*
קָט וַתַּשְׁחִתִי מֵהֵן בְּכָל־דְּרָכָיִךְ׃

Verſio VULG. LAT.

34 Factúmque eſt in te contra conſuetudinem mulierum in fornicationibus tuis, & poſt te non erit fornicatio : in eo enim quòd dediſti mercedes, & mercedes non accepiſti, factum eſt in te contrarium. 35 Proptereà, meretrix, audi 36 verbum Domini : Hæc dicit Dominus Deus ; Quia effuſum eſt æs tuum, & revelata eſt ignominia tua in fornicationibus tuis ſuper amatores tuos, & ſuper idola abominationū tuarum in ſanguine filiorum tuorum, quos dediſti eis : 37 Ecce ego congregabo omnes amatores tuos, quibus commiſta es ; & omnes quos dilexiſti, cum univerſis quos oderas : & congregabo eos ſuper te undique, & nudabo ignominiā tuam coram eis, & videbunt omnem turpitudinē 38 tuā. Et judicabo te judiciis adulterarum, & effundentium ſanguinem : & dabo te in ſanguinem fu- 39 roris & zeli. Et dabo te in manꝰ eorum, & deſtruent lupanar tuū : & demolientur proſtibulū tuum : & denudabunt te veſtimentis tuis, & auferent vaſa decoris tui : & derelinquent te nudam, ple- 40 námque ignominiâ : Et adducent ſuper te multitudinem, & lapidabunt te lapidibus, & truci- 41 dabunt te gladiis ſuis. Et comburent domos tuas igni, & facient in te judicia in oculis mulierum plurimarum : & deſines fornicari, & mercedes ultrà non da- 42 bis. Et requieſcet indignatio mea in te : & auferetur zelus meus à te, et quieſcā, nec iraſcar ampliús. 43 Eò quòd non fueris recordata dierum adoleſcentiæ tuæ, & provocâſti me in omnibus his : quapropter & ego vias tuas in capite tuo dedi, ait Dominus Deus, et non feci juxta ſcelera tua in omnibus abominationibus tuis. 44 Ecce omnis, qui dicit vulgò proverbium, in te aſſumet illud, dicens ; Sicut mater, ita & filia e- 45 jus. Filia matris tuæ es tu, quæ projecit virū ſuum, & filios ſuos : & ſoror ſororum tuarum es tu, quæ projecerunt viros ſuos, & filios ſuos : mater veſtra Cethæa, 46 & pater veſter Amorrhæus. Et ſoror tua major, Samaria, ipſa et filiæ ejus, quæ habitant ad ſiniſtram tuam : ſoror autem tua minor te, quæ habitat à dextris tuis, 47 Sodoma, & filiæ ejus. Sed nec in viis earū ambulâſti, neque ſecundùm ſcelera earū feciſti pauxillū minús : penè ſceleratiora feciſti illis in omnibus viis tuis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

34 Καὶ (π) ἐγένετο ἐν σοὶ διεστραμμένον παρὰ τὰς γυναῖκας ἐν τῇ πορνείᾳ σου, καὶ μετὰ σοῦ πεπορνεύκασιν, ἐν τῷ (ρ) προσδιδόναι σε μισθώματα, καὶ σοὶ μισθώματα οὐκ ἐδόθη, καὶ 35 ἐγένετο ἐν σοὶ (σ) διεστραμμένα. Διὰ τοῦτο 36 πόρνη ἄκουε λόγον κυρίου. Τάδε λέγει (τ) κύριος, Ἀνθ' ὧν ἐξέχεας τὸν χαλκόν σου, καὶ ἀποκαλυφθήσεται ἡ αἰσχύνη σου ἐν τῇ πορνείᾳ σου πρὸς τοὺς ἐραστάς σου, καὶ (υ) εἰς πάντα τὰ ἐνθυμήματα τῶν ἀνομιῶν σου, καὶ ἐν τοῖς αἵμασι τῶν τέκνων σου ὧν ἔδωκας 37 αὐτοῖς· Διὰ τοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ (φ) ἐπισυνάγω πάντας τοὺς ἐραστάς σου ἐν οἷς ἐπεμίγης ἐν αὐτοῖς, καὶ πάντας οὓς ἠγάπησας, σὺν πᾶσιν οἷς ἐμίσεις, καὶ συνάξω αὐτοὺς ἐπὶ σὲ κυκλόθεν, καὶ ἀποκαλύψω τὰς κακίας σου πρὸς αὐτούς, καὶ ὄψονται πᾶσαν τὴν αἰσχύνην σου, 38 Καὶ ἐκδικήσω σε ἐκδικήσει μοιχαλίδος, (χ) καὶ θήσω σε ἐν αἵματι θυμοῦ καὶ ζήλου. 39 Καὶ παραδώσω σε εἰς χεῖρας αὐτῶν, καὶ (ψ) κατασκάψουσι τὸ πορνεῖόν σου, καὶ καθελοῦσι τὴν βάσιν σου, καὶ ἐκδύσουσί σε (ω) τὰ ἱμάτιά σου, καὶ λήψονται τὰ σκεύη τῆς καυχήσεώς σου· καὶ ἀφήσουσί σε γυμνὴν, καὶ 40 ἀσχημονοῦσαν. Καὶ ἄξουσιν ἐπὶ σὲ ὄχλους, καὶ λιθοβολήσουσί σε ἐν λίθοις, καὶ κατασφάξουσί σε ἐν τοῖς ξίφεσιν αὐτῶν. 41 Καὶ ἐμπρήσουσι τοὺς οἴκους σου (″) πυρί, καὶ ποιήσουσιν ἐν σοὶ ἐκδικήσεις ἐνώπιον γυναικῶν πολλῶν· καὶ ἀποστρέψω σε (α) ἐκ πορνείας, καὶ 42 μισθώματα οὐ μὴ (β) δώσω οὐκέτι. Καὶ ἐπαφήσω τὸν θυμόν μου ἐπὶ σέ, καὶ ἐξαρθήσεται ὁ ζῆλός μου ἐκ σοῦ· καὶ ἀναπαύσομαι, καὶ οὐ μὴ 43 μεριμνήσω οὐκέτι. Ἀνθ' ὧν οὐκ ἐμνήσθης (γ) τῆς νηπιότητός σου, καὶ ἐλύπεις με ἐν πᾶσι τούτοις· καὶ (δ) ἰδοὺ ἐγὼ τὰς ὁδούς σου εἰς κεφαλήν σου δέδωκα, λέγει κύριος. καὶ οὕτως ἐποίησας τὴν (ε) ἀσέβειαν ἐπὶ πάσαις ταῖς ἀνομίαις 44 σου. Ταῦτά ἐστι πάντα ὅσα εἶπαν κατὰ σοῦ ἐν παραβολῇ, λέγοντες, Καθὼς ἡ (ζ) μήτηρ 45 θυγάτηρ· Καὶ ἡ θυγάτηρ τῆς μητρός σου σὺ εἶ, ἡ ἀπωσαμένη τὸν ἄνδρα αὐτῆς καὶ τὰ τέκνα αὐτῆς, καὶ (η) ἀδελφαὶ τῶν ἀδελφῶν σου αἱ ἀπωσάμεναι τοὺς ἄνδρας αὐτῶν καὶ τὰ τέκνα αὐτῶν. ἡ μήτηρ ὑμῶν Χετταία, καὶ ὁ 46 πατὴρ (θ) Ἀμορραῖος. Ἡ ἀδελφὴ ὑμῶν ἡ πρεσβυτέρα Σαμάρεια, αὐτὴ καὶ αἱ θυγατέρες αὐτῆς, ἡ κατοικοῦσα ἐξ εὐωνύμων σου· καὶ ἡ ἀδελφή σου ἡ νεωτέρα σου, ἡ κατοικοῦσα ἐκ δεξιῶν σου, Σόδομα καὶ αἱ θυγατέ- 47 ρες αὐτῆς. Καὶ οὐδ' ὡς ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν ἐπορεύθης, οὐδὲ κατὰ τὰς ἀνομίας αὐτῶν ἐποίησας παρὰ μικρόν, καὶ ὑπέρκεισαι αὐτὰς (ι) ἐν πάσαις ταῖς ὁδοῖς σου.

34 Et factū eſt in te perverſum præter mulieres in fornicatione tua : et (b) tecum ſunt fornicatæ, in eo, quòd dares mercedes, & mercedes non ſunt datæ tibi : & facta ſunt in te perverſa. 35 Proptereà, meretrix, audi verbum Domini : 36 Hæc dicit Dominus ; Quia effudiſti æs tuū, et revelabitur ignominia tua in fornicatione tua ad amatores tuos, & in omnes cogitationes iniquitatum tuarū, et in ſanguinibus filiorum tuorū, quos dediſti eis. 37 Ideò ecce ego (i) ſupercongrego omnes amatores tuos, in quibus commiſta es in eis, & omnes, quos dilexiſti, cum univerſis, quos oderas. Et congregabo eos ſuper te per circuitū : et revelabo malitias tuas ad eos : & videbunt cunctam ignominiam tuā : 38 Et ulciſcar te ultione (k) adulteræ : & ponā te in ſanguine furoris, & zeli. 39 Et tradam te in manus eorum : & ſuffodient lupanar tuum, & deſtruent baſim tuam, & nudabunt te veſtimentis tuis, & tollent vaſa gloriationis tuæ : & dimittent te nudam, & plenam ignominiæ. 40 Et adducent ſuper te turbas, & lapidabunt te in lapidibus : & jugulabunt te in gladiis ſuis : 41 Et ſuccendent domos tuas igni : & facient in te ultiones coram mulieribus plurimis. Et avertam te à fornicatione, & mercedes ultrà (l) non dabo : 42 Et immittam furorem meū ſuper te : & auferetur zelus meus à te : & requieſcam, & non ero ultrà ſolicitus : 43 Quia non es recordata infantiæ tuæ, & contriſtabas me in his omnibus. Et ecce ego vias tuas in caput tuū dedi, dicit Dominꝰ : et (m) ſic feciſti impietatem ſuper cunctis iniquitatibus tuis. 44 Hæc ſunt omnia, quæ dixerunt contrà te in parabola, dicentes ; Sicut mater ; et filia : 45 Et (n) filia matris tuæ tu es, quæ repulit virum ſuum, et filios ſuos : et (o) ſorores ſororum tuarū, quæ repulerunt viros ſuos, et filios ſuos. Mater (p) veſtra Chettæa, et pater Amorrhæus : 46 Soror veſtra ſenior Samaria, hæc, et filiæ ejus, quæ habitat à ſiniſtris tuis : et ſoror tua junior te, quæ habitat à dextris tuis, Sodoma, et filiæ ejus. 47 Sed ne ſic quidem in viis earū ambulâſti, neque ſecundùm iniquitates illarū egiſti : paulominùs et ſupergreſſa es eas in omnibus viis tuis.

MS. A. (π) ἐγένετό σοι ἐξεστραμμένον (ρ) προσδιδόναι (σ) ἐξεστραμμένα, (τ) ἀδωναῒ κύριος, (υ) ἐπὶ (φ) ἐπὶ σὲ συνάγω (χ) καὶ *ἐκχεούσης αἷμα, καὶ θήσομαί σε ἐν τῷ αἵματί σου, καὶ δώσω σε εἰς αἷμα θυμοῦ καὶ *ζήλους. (ψ) *κατασκάψουσιν (ω) τὸν ἱματισμόν (″) ἐν πυρί, (α) ἀπὸ τῆς πορνείας σου, (β) δῶ (γ) τὰς ἡμέρας τῆς (δ) ἐγὼ ἰδοὺ (ε) ἀσέβειάν σου ἐπὶ (ζ) μήτηρ καὶ ἡ θυγάτηρ τῆς μητρὸς σὺ εἶ, (η) αἱ ἀδελφαί σου τῶν ἀδελφῶν αἱ (θ) ὑμῶν (ι) *παραπικρὸν ἐν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

34 והוה ביך שנו כנשתא דישראל מן מדינתא בטעותיך ובתריך לא הות דטעת כותיך
35 ובמתניך אגר ואגר לא אתיהב ליך והוית לשנו : בכן דעובדהא כנפקת ברא כנשתא
36 דישראל קבילי פתגמא דיי : כדנן אמר יי אלהים חלף דאגליאת בהתתיך ואתחוית
קלוניך בדטעית בתר רחמיך וית כל חובי פולחן טעות תועבתיך ובחובת דם בניך
37 דנכסת להן ; בכן הא אנא מכניש ית כל רחמיך דאתרעית למטעי בתריהון וית כל
דרחימת עם כל דשנית ואכניש יתהון עלך מסחור סחור ואגלי בהתתיך להון ויחזון ית
38 כל קלוניך : ואתפרע מניך פורענות גיפן ואשדת דם ואמסרנך לקטול ברגז ובחימה :
39 ואמסר יתיך בידיהון ויפגרון שורך ויתרעון רמתיך וישלחון יתיך לבושי יקריך ויסבון
40 מני תושבחתיך וישבקוניך מטלטלא ושביקא : ויסקון עלך משרין ויירגמון יתיך באבני
41 קלע ויבזעוניך בסיפיהון : ויוקדון בתיך בנורא ויעבדון ביך פורענות דינין לעיני מדינן
42 סגיאן ואבטלניך מלמהוי כנפקת ברא ואף אגר לא תתנין עוד : ואניח חמתי ביך ותעדי
43 קנאתי מניך ואסיף ולא יהי רוגזי עוד : חלף דלא אדכרת ית יומין דמלקדמין והוית
מרגזא קדמי בכל אלין ואף אנא פורענות אורחתיך בריש יהבית אמר יי אלהים לא
44 עבדת ליך עיצה למתב מן כל תועבתיך : הא כל דמתיל עלך ימתול למימר כעובדי
45 אמא כן ברתא : למא הוית ברתא לארעא דכנען למעבד כעובדי עמא דאתרבו אבהן עם
בנין ואחתא לסדום ועמרה דאשתיצי עמהון אבהן עם בנין הלא אמכון שרה ביני
חתאי הות ולא עבדת כעובדיהון ואבוכון אברהם ביני אמוראי ולא הליך בעיצתהון :
46 ואחתיך רבתא שמרון היא וכפרנהא דיתבא על סמאליך ואחתיך דזעירא מניך דיתבא
47 מימיניך סדום וכפרנהא : ואלו באורחתהון הלכת וכתועבתהון עבדת חסוך הוה
חוביך אלהן דאסגית לחבלא מנהון בכל אורחתך :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et fuit in te diverſum, cœtꝰ Iſrael, ab aliis provinciis in fornicationibꝰ tuis, 34
& poſt te non fuit quæ fornicata fuerit ſicut tu, in eo quòd dediſti merce-
dem, & merces non eſt data tibi, & facta es in contrarium. Proptereà tu 35
cujꝰ opera ſunt ſicut meretricis, ô cœtus Iſrael, ſuſcipe verbum Dñi. Hæc 36
dicit Dñs Deus : Pro eo quòd revelata eſt confuſio tua, & apparuit igno-
minia tua, cùm fornicata fueris poſt amatores tuos, & in omnibꝰ peccatis
cultus idolorū & abominationum tuarū, & in peccato ſanguinis filiorum
tuorū quos immolâſti eis. Proptereà ecce ego congrego oēs amatores tuos 37
quos dilexiſti ut errares poſt eos, & oēs quos dilexiſti, cùm omnibꝰ quos
odiſti, & congregabo eos ſup te per circuitū, & revelabo confuſionem tuā
eis, & videbūt oēm ignominiā tuā. Et ultionē ſumam ex te, ultionē adul- 38
terantiū & effundentiū ſanguinē ; & tradā te in occiſionē in ira & in fu-
rore. Et tradā te in manꝰ eorū, & deſtruēt muros tuos, & demolientur ex- 39
celſa tua, & expoliabūt te veſtibꝰ tuis pretioſis, et tollēt vaſa laudabilia tua,
& relinquent te tranſmigrantē & derelictā. Et aſcendēt contra te exercitꝰ, 49
& lapidabūt te lapidibꝰ fundæ, & præſcindēt te gladiis ſuis. Et comburēt 41
domos tuas igne ; & facient in te ultionē judiciorū in oculis provinciarū
multarū ; & faciā ut deſinas eſſe velut meretrix, & etiam mercedē non dabis
ampliꝰ. Et requieſcere faciā indignationē meā in te, & auferetur zelꝰ meꝰ 42
à te : & colligā furorē meū, & non erit ampliꝰ. Pro eo quòd non es recor- 43
data dierū priſcorū, & irritâſti me omnibꝰ his : ego quoq; ultionē viæ tuæ
in caput dedi, dicit Dñs Deꝰ, & non iniſti tibi conſiliū ut convertereris ab
omnibꝰ abominationibꝰ tuis. Ecce omnis qui proverbiū ſumit, ſup te aſſu- 44
met illud, dicens : Qualia opera matris, talia filiæ. Quare facta es filia terræ 45
Chanaan, ut faceres juxta opera populi ubi *educati* ſunt patres cum filiis,
& ſorores Sodomæ & Gomorræ, quæ conſumptæ ſūt cum eis, & patres cum
filiis? Nónne mater veſtra Sara erat inter Hitthæos, & non fecit juxta opera
eorū? Et pater veſter Abraham fuit inter Amorræos, & non ambulavit in
conſiliis eorū ; Et ſoror tua major Samaria ipſa, & villæ ejꝰ, quæ habitabat 46
ad ſiniſtram tuam, & ſoror tua minor te, quæ habitabat ad dexteram tuam,
Sodoma, & villæ ejus. Si enim in viis earū ambulaſſes, & juxta abominati- 47
ones earum feciſſes, tolerabile eſſet peccatum tuum : ſed longè corruptior fuiſti quàm illæ in omnibus viis tuis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܫܬܢܝܬܝ ܡܢ ܢܫܐ ܒܙܢܝܘܬܟܝ. ܡܛܠ ܕܐܢܬܝ ܝܗܒܬܝ ܐܓܪܐ܆ ܘܐܓܪܐ ܠܐ ܡܬܝܗܒ ܠܟܝ. 34
* ܡܛܠ ܗܢܐ ܙܢܝܬܐ܆ ܫܡܥܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܐܫܕܝܬܝ 35 36
ܢܚܫܟܝ : ܘܐܬܓܠܝܬ ܥܪܛܠܝܘܬܟܝ ܒܙܢܝܘܬܟܝ ܠܘܬ ܪܚܡܝܟܝ. ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܦܬܟܪܝ
ܛܢܦܘܬܟܝ : ܘܒܕܡܐ ܕܒܢܝܟܝ ܕܝܗܒܬܝ ܠܗܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ ܡܟܢܫ ܐܢܐ 37
ܠܟܠܗܘܢ ܪܚܡܝܟܝ ܕܒܣܡܬܝ ܒܗܘܢ. ܘܠܟܠ ܕܪܚܡܬܝ ܥܡ ܕܣܢܝܬܝ. ܘܐܟܢܫ ܐܢܘܢ
ܥܠܝܟܝ ܡܢ ܚܕܪܝܟܝ. ܘܐܓܠܐ ܥܪܛܠܝܘܬܟܝ ܩܕܡܝܗܘܢ. ܘܢܚܙܘܢ ܟܠܗ ܥܪܛܠܝܘܬܟܝ.
* ܘܐܕܘܢܟܝ ܕܝܢܐ ܕܓܝܪܬܐ. ܘܕܝܢܐ ܕܐܫܕܢ ܕܡܐ. ܘܐܬܠܟܝ ܠܩܛܠܐ : ܘܠܚܡܬܐ. 38
ܘܠܛܢܢܐ. * ܘܐܫܠܡܟܝ ܒܐܝܕܝܗܘܢ. ܘܢܣܚܦܘܢ ܒܝܬ ܓܒܝܟܝ. ܘܢܥܩܪܘܢ ܒܝܬ ܦܘܠܚܢܟܝ. 39
ܘܢܫܠܚܘܢ ܠܒܘܫܝܟܝ. ܘܢܣܒܘܢ ܡܐܢܝ ܫܘܒܗܪܟܝ. ܘܢܫܒܩܘܢܟܝ ܥܪܛܠܝܬܐ. * ܘܢܣܩܘܢ 40
ܥܠܝܟܝ ܟܢܫܐ. ܘܢܪܓܡܘܢܟܝ ܒܟܐܦܐ. ܘܢܦܫܚܘܢܟܝ ܒܣܝܦܝܗܘܢ. * ܘܢܘܩܕܘܢ 41
ܒܝܬܟܝ ܒܢܘܪܐ. ܘܢܥܒܕܘܢ ܒܟܝ ܕܝܢܐ ܠܥܝܢܝ ܢܫܐ ܣܓܝܐܬܐ. ܘܐܒܛܠܟܝ ܡܢ ܙܢܝܘܬܐ. ܘܐܦ
ܠܐ ܬܬܠܝܢ ܐܓܪܐ. * ܘܐܢܝܚ ܚܡܬܝ ܒܟܝ. ܘܢܥܒܪ ܛܢܢܝ ܡܢܟܝ. ܘܐܫܬܠܝ. ܘܠܐ ܐܪܓܙ 42
ܬܘܒ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܬܕܟܪܬܝ ܝܘܡܬܐ ܕܛܠܝܘܬܟܝ. ܘܐܪܓܙܬܝܢܝ ܒܟܠܗܝܢ ܗܠܝܢ. ܘܐܦ ܐܢܐ 43
ܗܐ ܦܪܥ ܐܢܐ ܐܘܪܚܟܝ ܒܪܫܟܝ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܥܒܕܬܝ ܛܢܦܘܬܐ ܘܙܢܝܘܬܐ. * ܘܟܠ ܡܢ 44
ܕܡܬܠ ܡܬܠܐ ܥܠܝܟܝ ܢܡܬܠ. ܘܢܐܡܪ܆ ܐܝܟ ܐܡܐ ܐܝܟ ܒܪܬܗ. * ܒܪܬܐ ܐܢܬܝ ܕܐܡܟܝ. 45
ܕܫܒܩܬ ܠܒܥܠܗ ܘܠܒܢܝܗ. ܘܚܬܐ ܐܢܬܝ ܕܚܬܘܬܟܝ ܕܫܒܩܝ ܠܒܥܠܝܗܝܢ ܘܠܒܢܝܗܝܢ. ܐܡܟܝܢ
ܚܬܝܬܐ. ܘܐܒܘܟܝܢ ܐܡܘܪܝܐ. * ܘܚܬܟܝ ܪܒܬܐ ܫܡܪܝܢ. ܗܝ ܘܒܢܬܗ. ܕܝܬܒܐ 46
ܡܢ ܣܡܠܟܝ. ܘܚܬܟܝ ܙܥܘܪܬܐ ܕܝܬܒܐ ܡܢ ܝܡܝܢܟܝ. ܣܕܘܡ ܘܒܢܬܗ. * ܘܠܐ ܗܘܐ 47
ܐܝܟ ܐܘܪܚܬܗܝܢ ܗܠܟܬܝ. ܘܠܐ ܗܘܐ ܐܝܟ ܛܢܦܘܬܗܝܢ ܥܒܕܬܝ. ܐܠܐ ܒܪ ܩܠܝܠ ܘܡܛܝ
ܡܢܗܝܢ ܚܒܠܬܝ. ܒܟܠܗܝܢ ܐܘܪܚܬܟܝ.

Differs, à *cæteris* mulieribus in ſcortatione 34
tua: nam tu mercedem dabas, non autem mercedem tibi dabant. Iccirco ô ſcortum, audi 35
ſermonem Domini. Sic ait Dominus domi- 36
norum; Quia æs tuum dediſti, turpitudinem
tuam in ſcortatione tua retexiſti amatoribus
tuis, & omnibus idolis abominationem tuam,
& ſanguinem filiorum tuorum his obtuliſti.
Propterea ecce congregabo omnes amatores 37
tuos quibus oblectata es, & quoſcunque amaviſti, cum iis quos odio proſecuta es: congregabo inquam, eos contra te ex omnibus adjacentibus tibi *locis*, retegam turpitudinem tuã
coram ipſis, & videbunt totam turpitudinem
tuam: Et judicabo te judicio adulterarum, & 38
judicio earum quæ ſanguinem effundunt: &
exponam te cædi, furori, & zelotypiæ. Tra- 39
dámq; te in manus illorum, ut deſtruant loca
templorũ tuorum, funditùs evertant fana tua,
detrahant veſtes tuas, rapiant inſtrumenta
ornatûs tui, & nudam te relinquant. Deinde 40
aſcendent contra te turmæ, obruent te lapidi-
b⁹, & gladiis ſuis confodient te; Igne te com- 41
burent, & exercebunt contra te judicia præ-
ſentibus fœminis multis: & faciam ut ceſſes
à ſcortatione, neque des ampliùs mercedem:
Ita ſedabo iram meã contra te, recedet à te 42
zelotypia mea, mitigabor, & non indignabor
ampliùs. Eò quòd non memineris dierum 43
adoleſcentiæ tuæ, & omnibus hujuſmodi reb⁹
irritaveris me; etiam ego ecce rependam vias
tuas in caput tuum, ait Dñs dominorum, eò
quòd abominationem & ſcortationem com-
miſeris. Et quicunq; proverbio uſus fuerit, de 44
te utetur, ac dicet; Filia matri ſuæ ſimilis eſt.
Filia es matris tuæ deſerentis maritũ ſuum & 45
filios ſuos: & ſoror ſororũ quæ maritos filióſque ſuos deſeruerunt: mater veſtra Hethæa
eſt, & pater veſter Amoræus. Soror tua natu 46
major eſt Samaria cum filiabus ſuis, quæ ſedet
ad lævam tuam: ſoror verò tua minor, quæ
ſedet ad dexteram tuam, Sodoma cum filiabus
ſuis. Neque verò ſecundùm vias earum am- 47
bulâſti, neque ſecundùm abominationes earũ
feciſti, ſed fermè plures quàm illæ perpetrâſti
corruptiones in omnibus viis tuis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وصار فيك الاعوجاج اكثر من النساء في زناك * وبعدك لا يزنون * عندما تعطي الاجر * 34
ولك الاجر فلا يعطى * وصار فيك الاعوجاج * لاجل هذا ايتها الزانية اسمعي قول الرب * هكذا 35 36
يقول ادوناي الرب * من اجل انك سكبت نحاسك * وظهر فضيحتك بزناك لاخلائك * وبكل
فكرات اثامك * وبدماء اولادك الذين اعطيتهم لها * لاجل هذا ها انا اجمع عليك جميع 37
اصحابك الذين اختلطت فيهم * وجميع الذين احببتهم * مع جميع الذين ابغضتهم *
واجمعهم عليك من حولك * واكشف مناحسك لهم * ويعاينون كل فضيحتك * وانتقم منك 38
انتقام زانية ومهرقة دم * واذبحك بدم غضب وغيرة * واسلمك الى ايديهم * ويهدمون ماخورك * 39
ويهدمون اساسك * ويخلعون عنك ثوبك * وياخذون اواني فخرك * ويتركونك عريانة ومفضوحة *
* الاصحاح الثامن * ويجعلون عليك جموعا * ويرجمونك بالحجارة * ويذبحونك 40
بسيوفهم * ويحرقون بيوتك بالنار * ويصنعون فيك النقمات امام نسوة كثيرات * واصرفك من 41
زناك * ولا تعطين الاجر ايضا * وارسل غضبي عليك * وينزع غيرتك منك * واكف ولا اهتم 42
بك ايضا * من اجل انك لم تذكري يوم شبيبتك * واحزنتني بجميع هذه * وها انا 43
اعطيت طرقك على راسك * يقول ادوناي الرب * وهكذا صنعت النفاق في جميع اثامك *
* هذه هي كلها التي قالوها عليك مثل * قايلين * كمثل الام والابنة * ابنة امك انت * 44 45
التي اقصت رجلها واولادها * واخوات اخواتك اقصوا رجالهن واولادهن * امكم حثانية *
وابوكم اموري * اختكم الكبيرة سامرة هي وبناتها * الساكنة عن يسارك * واختك 46
الصغيرة الساكنة عن يمينك * سادوم وبناتها * اليس هكذا في طرقاتهن سرت * واليس 47
مثل اثامهن صنعت * عن قليل تفوقيهن في كل طرقاتك *

Itaque fuit in te perverſitas major quàm 34
cæterarum *mulierum, in fornicatione tua,
ut præter quam tecum non fornicarentur:
quandoquidem dabas eis mercedem, tibi
verò merces non dabatur. Fuit inquam, in
te perverſitas. Propterea O ſcortum, audi* 35
ſermonem Domini. Sic dicit Adonai Do- 36
*minus; Quia æs tuũ prodegiſti, patet igno-
minia tua in ſcortatione tua amatoribus
tuis, & in omnibus cogitationibus iniqui-
tatum tuarum, & in ſanguinibus filiorum
tuorum quos obtuliſti eis: Proptereà ecce* 37
*ego congregabo adverſùm te omnes amaſios tuos quibuſcum te miſcuiſti, & omnes
eos quos dilexiſti, cum iis omnibus quos odiſti: congregabo inquam, eos adverſùm
te ex circunjacentibus tibi* locis, *detegámque eis malignitates tuas, & videbunt omnem ignominiam tuam: Et exigam à* 38
te pœnas fornicariæ, et effundentis ſanguinem; & jugulabo te cæde furoris & zelotypiæ: Tradámque te in manus eorum, & 39
*demolientur cauponã tuam, deſtruent fundamentum tuum, detrahent à te veſtem
tuam, auferent vaſa gloriationis tuæ, &
relinquent te nudam & ignominioſam.*

Textus octavus.

Tum collocabunt adverſùm te turbas, quæ 40
*te lapidibus obruent, gladiis ſuis jugulabũt
te, Domos tuas igne comburent, exigéntque à te pœnas coram multis mulieribus:* 41
*atque ita avocabo te à fornicatione tua,
nec dabis ampliùs mercedem. Denique di-* 42
*mittam furorem meum contra te, & ceſſabit à te zelotypia tua: me retraham, nec tui
curâ tangar ampliùs. Quandoquidem tu* 43
*non es recordata diei adoleſcentiæ tuæ,
meque mœrore affeciſti in his omnibus: en
ego viciſſim rependi vias tuas in caput
tuum, dicit Adonai Domin⁹, atque ita impietatẽ commiſiſti in omnibus flagitiis tuis.
Hæc ſunt omnia illa quæ proverbio de te* 44
*tulerunt, dicentes; Qualis eſt mater, talis
filia. Filia tu es matris tuæ, quæ repulit* 45
*maritum ſuum & liberos ſuos: ſorores etiam ſororum tuarum repulerunt maritos
ac liberos ſuos. Mater veſtra Hethæa, &
pater veſter Amoræus eſt. Soror veſtra* 46
*natu major, Samaria eſt & filiæ ipſius, quæ
habitat à ſiniſtra tua: ſoror autem tua natu
minor, quæ habitat à dextera tua, Sodoma
eſt & filiæ ipſius. Annon hoc pacto in* 47
viis earum ambulâſti? & nonne juxta ſcelera earum feciſti? parum abeſt quin ſuperaveris eas in omnibus viis tuis.

tua soror Sedom fecit Si : Deus Dominus dixit , ego *Vivens*
48 חַי־אָנִי נְאֻם אֲדֹנָי יֱהֹוִה אִם־עָשְׂתָה סְדֹם אֲחוֹתֵךְ
fuit ista Ecce .tuæ *filiæ* & , tu fecisti sicut , ejus *filiæ* & ,ipsa
49 הִיא וּבְנוֹתֶיהָ כַּאֲשֶׁר עָשִׂית אַתְּ וּבְנוֹתָיִךְ : הִנֵּה־זֶה הָיָה
abundantia & ,panis saturitas ,superbia : tuæ sororis Sedom iniquitas
עֲוֺן סְדֹם אֲחוֹתֵךְ גָּאוֹן שִׂבְעַת־לֶחֶם וְשַׁלְוַת
non *mendici* & , egeni manum & ;ejus *filiabus* & , ei fuit : otii
הַשְׁקֵט הָיָה לָהּ וְלִבְנוֹתֶיהָ וְיַד־עָנִי וְאֶבְיוֹן לֹא
: meæ facies ad abominationem fecerunt & , sunt elevatæ Et *.firmavit*
50 הֶחֱזִיקָה : וַתִּגְבְּהֶינָה וַתַּעֲשֶׂינָה תוֹעֵבָה לְפָנָי
dimidiū secundùm Someron Et .vidi sicut eas feci removere &
51 וָאָסִיר אֶתְהֶן כַּאֲשֶׁר רָאִיתִי : וְשֹׁמְרוֹן כַּחֲצִי
tuas abominationes multiplicâsti & : peccavit non tuorum peccatorum
חַטֹּאתַיִךְ לֹא חָטָאָה וַתַּרְבִּי אֶת־תּוֹעֲבוֹתַיִךְ
tuis abominationibus omnibus in tuas sorores justificâsti & ; illis præ
מֵהֵנָּה וַתְּצַדְּקִי אֶת־אֲחוֹתַיִךְ בְּכָל־תּוֹעֲבֹתַיִךְ
judiciū pronuntiâsti quæ tuum pudorem porta tu Etiam .fecisti quas
52 אֲשֶׁר עָשִׂיתִי : גַּם־אַתְּ שְׂאִי כְלִמָּתֵךְ אֲשֶׁר פִּלַּלְתְּ
, eis præ fecisti abominationes quibus , tuis peccatis in *tuæ sorori*
לַאֲחוֹתֵךְ בְּחַטֹּאתַיִךְ אֲשֶׁר־הִתְעַבְתְּ מֵהֵן
,tuam ignominiam porta &,erubesce tu etiam Et .te præ *erunt* justificatæ
תִּצְדַּקְנָה מִמֵּךְ וְגַם־אַתְּ בּוֹשִׁי וּשְׂאִי כְלִמָּתֵךְ
captivitatem ,earum captivitatem convertā Et .tuas sorores *te justificādo in*
53 בְּצַדֶּקְתֵּךְ אַחְיוֹתֵךְ : וְשַׁבְתִּי אֶת־שְׁבִיתְהֶן אֶת־שְׁבִית
: ejus *filiarum* & , Someron captivitatem & , ejus *filiarum* & , Sedom
סְדֹם וּבְנוֹתֶיהָ וְאֶת־שְׁבִית שֹׁמְרוֹן וּבְנוֹתֶיהָ
portes Ut .earum medio in tuarum captivitatum captivitatem &
54 וּשְׁבִית שְׁבִיתַיִךְ בְּתוֹכָהְנָה : לְמַעַן תִּשְׂאִי
te consolando in :fecisti quæ omnibus de erubescas & , tuam ignominiam
כְלִמָּתֵךְ וְנִכְלַמְתְּ מִכֹּל אֲשֶׁר עָשִׂית בְּנַחֲמֵךְ
.suam antiquitatē ad revertentur ejus *filiæ* & ,Sedom ,tuæ sorores Et .eas
55 אֹתָן : וַאֲחוֹתַיִךְ סְדֹם וּבְנוֹתֶיהָ תָּשֹׁבְןָ לְקַדְמָתָן
tuæ *filiæ* & tu &:suam antiquitatē ad revertentur ejus *filiæ* &,Someron Et
וְשֹׁמְרוֹן וּבְנוֹתֶיהָ תָּשֹׁבְןָ לְקַדְמָתָן וְאַתְּ וּבְנוֹתַיִךְ
tua soror Sedom fuit non Et.vestram antiquitatem ad revertimini
56 תְּשֻׁבֶינָה לְקַדְמַתְכֶן : וְלוֹא הָיְתָה סְדֹם אֲחוֹתֵךְ
revelaretur Antequam.tuarum superbiarum die in tuo ore in auditu in
57 לִשְׁמוּעָה בְּפִיךְ בְּיוֹם גְּאוֹנָיִךְ : בְּטֶרֶם תִּגָּלֶה
ejus circuituum omnium & ,Aram *filiarum* opprobrii tempore sicut,tua malitia
רָעָתֵךְ כְּמוֹ עֵת חֶרְפַּת בְּנוֹת־אֲרָם וְכָל־סְבִיבוֹתֶיהָ
& , *tuum Scelus* .undique te *spernentium* , Pelistim *filiarum*
58 בְּנוֹת פְּלִשְׁתִּים הַשָּׁאטוֹת אוֹתָךְ מִסָּבִיב : אֶת־זִמָּתֵךְ וְאֶת־
dixit sic Quia .Dominus dixit , *ea* portâsti tu tuas abominationes
59 תּוֹעֲבוֹתַיִךְ אַתְּ נְשָׂאתִים נְאֻם יְהֹוָה : כִּי כֹה אָמַר
contempsisti quæ ;fecisti sicut tecum faciam Et : Deus Domin'
אֲדֹנָי יֱהֹוִה וְעָשִׂית אוֹתָךְ כַּאֲשֶׁר עָשִׂית אֲשֶׁר־בָּזִית
mei pacti ego recordabor Et .pactum *infringendum ad*,juramentum
60 אָלָה לְהָפֵר בְּרִית : וְזָכַרְתִּי אֲנִי אֶת־בְּרִיתִי
.seculi pactum tibi confirmabo & *: tuarum pueritiarum* diebus in tecum
אוֹתָךְ בִּימֵי נְעוּרָיִךְ וַהֲקִמוֹתִי לָךְ בְּרִית עוֹלָם :
tuas sorores *te capiendo in* ,erubesces & ,tuarum viarum recordaberis Et
61 וְזָכַרְתְּ אֶת־דְּרָכַיִךְ וְנִכְלַמְתְּ בְּקַחְתֵּךְ אֶת־אֲחוֹתַיִךְ
,filias in tibi eas dabo Et .te *præ parvas ad* , te *præ magnas*
הַגְּדֹלוֹת מִמֵּךְ אֶל־הַקְּטַנּוֹת מִמֵּךְ וְנָתַתִּי אֶתְהֶן לָךְ לְבָנוֹת
scies & : tecum meum pactum ego confirmabo Et .tuo pacto ex non &
62 וְלֹא מִבְּרִיתֵךְ : וַהֲקִימוֹתִי אֲנִי אֶת־בְּרִיתִי אִתָּךְ וְיָדַעַתְּ
non & , afficiaris pudore & , recorderis Ut .Dominus *ego* quòd
63 כִּי־אֲנִי יְהֹוָה : לְמַעַן תִּזְכְּרִי וָבֹשְׁתְּ וְלֹא
tibi *me propitiando in*,*tui pudoris faciebus à* ,*oris apertio* ultrà tibi sit
יִהְיֶה־לָּךְ עוֹד פִּתְחוֹן פֶּה מִפְּנֵי כְּלִמָּתֵךְ בְּכַפְּרִי־לָךְ
.Deus Dominus dixit , fecisti quæ omnibus in
לְכָל־אֲשֶׁר עָשִׂית נְאֻם אֲדֹנָי יֱהֹוִה :

Versio VULG. LAT.

48 Vivo ego, dicit Dominus Deus, quia non fecit Sodoma soror tua ipsa, & filiæ ejus, sicut fecisti tu, 49 & filiæ tuæ. Ecce hæc fuit iniquitas Sodomæ sororis tuæ, superbia, saturitas panis & abundantia, & otium ipsius, & filiarum ejus: & manum egeno & 50 pauperi non porrigebant. Et elevatæ sunt, & fecerunt abominationes coram me: & abstuli eas 51 sicut vidisti. Et Samaria dimidium peccatorum tuorum non peccavit: sed vicisti eas sceleribus tuis, & justificâsti sorores tuas in omnibus abominationi-52 bus tuis, quas operata es. Ergò & tu porta confusionem tuam, quæ vicisti sorores tuas peccatis tuis, sceleratiùs agens ab eis: justificatæ sunt enim à te: ergò & tu confundere, & porta ignominiam tuam, quæ justificâsti so-53 rores tuas. Et convertam restituens eas conversione Sodomorum cum filiabus suis, & conversione Samariæ, & filiarum ejus: & convertam reversionem tuam 54 in medio earum, Ut portes ignominiam tuam, & confundaris in omnibus, quæ fecisti consolans 55 eas. Et soror tua Sodoma, & filiæ ejus revertentur ad antiquitatem suam: & Samaria, & filiæ ejus revertentur ad antiquitatem suam: & tu, & filiæ tuæ, revertemini ad antiquitatem vestram. 56 Non fuit autem Sodoma soror tua audita in ore tuo, in die su-57 perbiæ tuæ, Antequàm revelaretur malitia tua: sicut hoc tempore in opprobrium filiarum Syriæ, & cunctarum in circuitu tuo filiarum Palæstinarum, quæ am-58 biunt te per gyrum. Scelus tuum, & ignominiam tuam tu portâsti, 59 ait Dominus Deus. Quia hæc dicit Dominus Deus; Et faciam tibi, sicut despexisti juramentum, ut irritum faceres pactum: 60 Et recordabor ego pacti mei tecum in diebus adolescentiæ tuæ: & suscitabo tibi pactum sempi-61 ternum. Et recordaberis viarum tuarum, & confundêris: cùm receperis sorores tuas te majores cum minoribus tuis: & dabo eas tibi in filias, sed non 62 ex pacto tuo. Et suscitabo ego pactum meum tecum: & scies 63 quia ego Dominus, Ut recorderis, & confundaris, & non sit tibi ultrà aperire os præ confusione tua, cùm placatus tibi fuero in omnibus quæ fecisti, ait Dominus Deus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

48 Ζῶ ἐγώ, λέγει κύριος, εἰ πεποίηκε Σόδομα (κ) αὕτη καὶ αἱ θυγατέρες αὐτῆς, ὃν τρόπον (λ) ἐποίησας σὺ καὶ αἱ θυγατέρες σου. 49 Πλὴν τοῦτο τὸ ἀνόμημα Σοδόμων τῆς ἀδελφῆς σου, ὑπερηφανία, ἐν πλησμονῇ ἄρτων καὶ ἐν εὐθηνίᾳ (μ) ἐσπατάλων αὕτη καὶ αἱ θυγατέρες αὐτῆς· τοῦτο ὑπῆρχεν αὐτῇ καὶ ταῖς θυγατράσιν αὐτῆς, καὶ χεῖρα πτωχοῦ καὶ πένητος οὐκ (ʺ) ἀντελαμβάνοντο. 50 Καὶ ἐμεγαλαύχουν, καὶ ἐποίησαν (ν) ἀνομήματα ἐνώπιον ἐμοῦ· 51 καὶ ἐξῆρα (ξ) αὐτὰς καθὼς εἶδον. Καὶ Σαμάρεια κατὰ τὰς ἡμίσεις τῶν ἁμαρτιῶν σου οὐχ ἥμαρτε· καὶ ἐπλήθυνας τὰς (ʺ) ἀνομίας σου ὑπὲρ αὐτάς, καὶ ἐδικαίωσας τὰς ἀδελφάς σου ἐν 52 πάσαις ταῖς ἀνομίαις σου αἷς ἐποίησας. Καὶ σὺ κόμισαι βάσανόν σου, ἐν ᾗ (ο) ἔφθειρας τὰς ἀδελφάς σου ἐν ταῖς ἁμαρτίαις σου αἷς ἠνόμησας ὑπὲρ αὐτάς, καὶ ἐδικαίωσας αὐτὰς ὑπὲρ σεαυτήν· καὶ σὺ αἰσχύνθητι, καὶ λάβε τὴν ἀτιμίαν σου ἐν τῷ δικαιῶσαί σε τὰς ἀδελ-53 φάς σου. Καὶ ἀποστρέψω τὰς ἀποστροφὰς αὐτῶν, τὴν ἀποστροφὴν Σοδόμων καὶ τῶν θυγατέρων αὐτῆς· καὶ ἀποστρέψω τὴν ἀποστροφὴν Σαμαρείας καὶ τῶν θυγατέρων αὐτῆς· καὶ ἀποστρέ-54 ψω τὴν ἀποστροφήν σου ἐν μέσῳ αὐτῶν· Ὅπως κομίσῃ τὴν βάσανόν σου, καὶ ἀτιμωθήσῃ ἐκ πάντων ὧν ἐποίησας ἐν τῷ (π) πα-55 ροργίσαι με. Καὶ ἡ ἀδελφή σου Σόδομα καὶ αἱ θυγατέρες αὐτῆς ἀποκατασταθήσονται καθὼς ἦσαν ἀπ' ἀρχῆς· (ρ) καὶ σὺ καὶ αἱ θυγατέρες σου ἀποκατασταθήσεσθε καθὼς ἀπ' 56 ἀρχῆς ἦτε. Καὶ εἰ μὴ ἦν Σόδομα ἡ ἀδελφή σου εἰς ἀκοὴν ἐν τῷ στόματί σου ἐν ταῖς ἡμέραις 57 ὑπερηφανίας σου, Πρὸ τοῦ ἀποκαλυφθῆναι τὰς κακίας σου, ὃν τρόπον νῦν ὄνειδος εἶ θυγατέρων Συρίας, καὶ πάντων τῶν κύκλῳ αὐτῆς θυγατέρων ἀλλοφύλων τῶν 58 περιεχουσῶν σε κύκλῳ. (σ) Τὰς ἀσεβείας σου καὶ τὰς ἀνομίας σου σὺ κεκόμισαι αὐ-59 τάς, λέγει κύριος. Τάδε λέγει (τ) κύριος, Καὶ ποιήσω ἐν σοὶ καθὼς ἐποίησας, ὡς (·) ἠτίμωσας ταῦτα τοῦ παραβῆναι 60 τὴν διαθήκην μου. Καὶ μνησθήσομαι ἐγὼ τῆς διαθήκης μου τῆς μετὰ σοῦ ἐν ἡμέραις νηπιότητός σου, καὶ ἀναστήσω σοι διαθήκην αἰώνιον. 61 Καὶ μνησθήσῃ τὴν ὁδόν σου, καὶ (υ) ἐξατιμωθήσῃ ἐν τῷ ἀναλαβεῖν σε τὰς ἀδελφάς σου τὰς πρεσβυτέρας σου σὺν ταῖς νεωτέραις σου, καὶ δώσω αὐτάς σοι εἰς οἰκοδομήν, καὶ οὐκ ἐκ 62 διαθήκης (φ) σου. Καὶ ἀναστήσω ἐγὼ τὴν διαθήκην μου μετὰ σοῦ, καὶ ἐπιγνώσῃ ὅτι ἐ-63 γὼ κύριος· Ὅπως μνησθῇς καὶ αἰσχυνθῇς, καὶ μὴ ᾖ σοι ἔτι ἀνοῖξαι τὸ στόμα (χ) σου ἀπὸ προσώπου τῆς ἀτιμίας σου, (ψ) ἐν τῷ ἐξιλάσκεσθαί με σοι κατὰ πάντα ὅσα ἐποίησας, λέγει κύριος.

Vivo ego, dicit Dominus; Si fecit (q) Sodoma, hæc, & filiæ ejus; sicut fecisti tu, et filiæ tuæ. 48

Veruntamen hæc fuit iniquitas Sodomæ sororis tuæ, superbia in saturitate panū, & in abundantia. Deliciis diffluebant ipsa, & filiæ ejus: hæc habebat ipsa, & filiæ ejus: & manū pauperis & egeni non assumebant, 49

Et gloriabantur magnificè, & fecerunt iniquitates in conspectu meo: Et abstuli eas, sicut (r) vidi. 50

Et Samaria secundū dimidia peccatorū tuorū non peccavit: et multiplicâsti iniquitates tuas super eas: & justificâsti sorores tuas in omnib' iniquitatibus tuis, quas operata es. 51

Et tu sustine tormentū tuū in eo, quòd corruperis sorores tuas in peccatis tuis, quibus iniquè egisti super eas, & justificâsti illas super te. Et tu confundere, & suscipe ignominiā tuā, eò quòd justificaveris sorores tuas. 52

Et (s) convertam conversiones earū, conversionē Sodomæ, & filiarum ejus. Et convertam conversionem Samariæ, & filiarum ejus: & convertam conversionē tuam in medio earum: 53

ut portes tormentum tuū, & habeas ignominiā ex omnib' quæ fecisti, ut me ad iracundiam provocares. 54

Et soror tua Sodoma, et filiæ ejus restituentur, sicut fuerunt à (t) principio. Et tu, & filiæ tuæ restituemini, sicut fuistis à principio. 55

Et (u) nisi fuisset Sodoma soror tua in auditum in ore tuo, in diebus superbiæ tuæ, 56

Antequàm revelarentur malitiæ tuæ; sicut nunc opprobrium es filiarum Syriæ, & omnium quæ in circuitu ejus, filiarum alienigenarum, quæ circundant te per gyrum. 57

Impietates tuas, et iniquitates tuas tu (x) portâsti eas, dicit Dominus. 58

Hæc dicit Dominus; Et faciam in te, sicut fecisti, sicut despexisti hæc, ut præterires testamentum meum. 59

Et recordabor ego testamenti mei, quod feci tecum in diebus adolescentiæ tuæ: & suscitabo tibi testamentum sempiternum. 60

Et recordaberis viæ tuæ, & despicieris, cùm (y) receperis sorores tuas te majores cum junioribus tuis: & dabo eas tibi in ædificationem, et non ex testamento tuo. 61

Et suscitabo ego testamentum meum tecum: & cognosces, quia ego Dominus: 62

Ut recorderis, & confundaris, et non sit tibi ultrà aperire os tuum à facie ignominiæ tuæ; cùm propitius fuero tibi juxta omnia quæ fecisti, dicit Dominus. 63

MS.A. (κ) ἡ ἀδελφή σου, αὕτη (λ) πεποίηκας (μ) οἴνου ἐσπατάλων (ʺ) ἀντελάβοντο. (ν) ἄνομα (ξ) αὐτάς. Καθὼς καὶ Σαμάρεια (ʺ) ἁμαρτίας (ο) διέφθειρας (π) τοῦ παροργίσαι με. (ρ) καὶ Σαμάρεια καὶ αἱ θυγατέρες αὐτῆς ἀποκατασταθήσονται καθὼς ἦσαν ἀπ' ἀρχῆς· καὶ σὺ (σ) Ἐν ταῖς ἀσεβείαις σου καὶ ταῖς ἀνομίαις σου σὺ κεκόσμησαι αὐτάς, (τ) ἀδωναῒ κύριος, Καὶ ποιήσω σοι (·) ἠτίμασας (υ) ἀτιμωθήσῃ (φ) μου. Καὶ ἀναστήσω τὴν (χ) ἀπὸ προσώπου ἀτιμίας (ψ) καὶ ἐν τῷ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

48 קְיָם אֲנָא אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים אִם עֲבַדַת סְדוֹם אֲחָתִיךְ הִיא וְכַפְרָנָהָא כְּמָא דַעֲבַדְתְּ אַתְּ
49 וְכַפְרָנַיִךְ : הָא דֵין הֲוָה חוֹב סְדוֹם אֲחָתִיךְ גֵּאוּתָנִין סָבְעִין לַחְמָא וּשְׁלֵיוָא וּשְׁרוֹכְיָא הֲוָה
50 לַהּ וּלְכַפְרָנָהָא וִיַד מִסְכֵּן וַחֲשׁוֹךְ לָא אַתְקִיפַת : וְאִתְרַבְרַבָא וַעֲבַדָא תוֹעֵיבָא קֳדָמַי
51 וְאַגְלֵיתִי יָתְהֶן כְּמָא דִגְלֵי קֳדָמַי : וְשֹׁמְרוֹן כְּפַלְגוּת חוֹבַיִךְ לָא חָבַת וְאַסְגֵית יַת תוֹעֲבָתַיִךְ
52 מִנְּהֶן וְזַכֵּית יַת אֲחָתַיִךְ בְּכָל תוֹעֲבָתַיִךְ דַעֲבַדְתְּ : אַף אַתְּ קַבִּילִי אִתְכְּנָעוּתִיךְ דִּי בְעֵית
לַאֲחָתַיִךְ בְּחוֹבַיִךְ דְּאִתְעֲבַתְּ מִנְּהֶן וְזַכְּיָן מִנִּיךְ וְאַף אַתְּ בַּהֲתִי וְקַבִּלִי אִתְכְּנָעוּתִיךְ בִּדְזַכֵּית
53 אַחְוָתַיִךְ : וַאֲתִיב יַת עַמְּהֶן לְלְהֶן יַת עַמָּא דִסְדוֹם וְכַפְרָנָהָא וְיַת עַמָּא דְשֹׁמְרוֹן וְכַפְרָנָהָא
54 וַאֲתִיב גָּלוּת עַמִּיךְ בֵּינֵיהוֹן : בְּדִיל דִּתְקַבְּלִין אִתְכְּנָעוּתִיךְ וְתִתְכַּנְעִין מִכֹּל דַּעֲבַדְתְּ
55 בְּנַחֲמוּתִיךְ יָתְהֶן : וַאֲחָתַיִךְ סְדוֹם וְכַפְרָנָהָא יְתוּבָן לְאוּלְהֶן וְשֹׁמְרוֹן וְכַפְרָנָהָא יְתוּבוּן
56 לְאוּלְהֶן וְאַתְּ וְכַפְרָנַיִךְ תְּתוּבוּן לְאוּלְכֶן : וְלָא הֲוַת סְדוֹם אֲחָתִיךְ לְאוּלְפַן בְּפוּמִיךְ בְּיוֹם
57 אִתְרַבְרְבוּתִיךְ : עַד לָא תִתְגְּלֵי בִישְׁתִיךְ כְּעִדָּן דְּחַסִּידוּ כַּפְרָנֵי אֲרָם וְכָל סְחְרָנָהָא כַּפְרָנֵי
58 פְּלִשְׁתָּאֵי דְּבַזּוּ יָתִיךְ מִסְּחוֹר סְחוֹר : יַת חוֹבֵי עֵיצַת חֶטְאִךְ וְיַת פּוּלְחָן תוֹעֲבָתַיִךְ אַתְּ
59 קַבֶּלְתִּנּוּן אֲמַר יְיָ : אֲרֵי כִדְנָן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים וְאִתְפְּרַע מִנִּיךְ כְּמָא דַעֲבַדְתְּ דְּבַסַּרְתְּ עַל מוֹמֵי
60 לְאַשְׁנָאָה קְיָם : וְדָכֵרְנָא אֲנָא יַת קְיָמִי דְּעִמָּךְ בְּיוֹמֵי קֳדָם וַאֲקִים לָךְ קְיָם עָלַם : וְתִדְכְּרִין 61
יַת אָרְחָתַיִךְ וְתִתְכַּנְעִין בְּקָרְבוּתִיךְ יַת מְדִינָן דְּרַבְרְבָן מִנִּיךְ עִם דַּעְדְקָן מִנִּיךְ וּמְסָרִית
62 יָתְהוֹן לִיךְ לְאִשְׁתַּמָּעָא וְאַתְּ לָא עֲבַדְתְּ יַת אוֹרַיְתָא : וַאֲקִים אֲנָא יַת קְיָמִי עִמָּךְ וְתֵידְעִין
63 אֲרֵי אֲנָא יְיָ : בְּדִיל דְּתִדְכְּרִין וְתִבְהֲתִין וְלָא יְהֵי לִיךְ עוֹד לְאִתְרַבְרָבָא בְּמִלֵּי פוּמִיךְ מִן קֳדָם
אִתְכְּנָעוּתִיךְ כַּד אֶשְׁבּוֹק לִיךְ לְכָל דַּעֲבַדְתְּ אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Vivo ego, dicit Dñs; si fecit Sodoma soror tua ipsa & villæ ej', sicut fecisti tu & villæ tuæ. 48 Ecce hoc fuit peccatū Sodomæ sororis tuæ, superbi & saturi pane, & abundantia & quies fuit ei & villis ejus, & manū pauperis & inopis non confortavit. 49 Et sese extulit, & fecit abominationes coram me. 50 Et transmigrare feci eos sicut manifestū est corā me. 51 Et Samaria juxta dimidiū peccatorū tuorū non peccavit, & multiplicâsti abominationes tuas magis quàm illæ, & justificâsti sorores tuas in omnib' abominationib' tuis quas fecisti. 52 Tu quoq; suscipe confusionē tuā quæ deprecata es sorores tuas, in peccatis tuis, quib' te abominabiliorē illis præbuisti; & justiores te sunt. Tu quoq; confundere, & suscipe ignominiā tuā cùm justificaveris sorores tuas. 53 Et convertam populū earū ad illas, populū Sodomæ & villarū ejus, populū Samariæ & villarū ej', & reducam captivitatē populi tui in medio earū. 54 Ut suscipias ignominiā tuā & erubescas ab omnib' [*abominationib'*] quas fecisti, cùm consolaberis eas. 55 Et soror tua Sodoma & villæ ej' revertentur ad principiū suū, & Samaria ac villæ ej' revertentur ad principium suū, & tu & villæ tuæ revertemini ad principiū vestrū. 56 Et non fuit Sodoma soror tua in doctrinā in ore tuo in die superbiæ tuæ. 57 Antequam revelaretur malū tuū, *sicut* tēpore quo exprobaverūt villæ Syriæ & cunctæ quæ in circuitu ej' sunt, villæ Philistinorū qui diripuerunt te undiquaq;. 58 Scelera consilii peccatorū tuorum & cultū abominationum tuarū tu suscipies ea, dicit Dñs. 59 Hæc enim dicit Dñs De': Vindictā sumā ex te sicut fecisti; nam sprevisti juramentū ut mutares pactū. 60 Et recordabor ego fœderis mei tecum in dieb' antiquis, & statuam tibi pactū sempiternū. 61 Et recordaberis viarū tuarū, & erubesces cùm contuleris provincias majores te cum minorib' te. Et tradidi eas tibi in obsequiū, cùm tamē tu non feceris legē. 62 Et suscitabo ego pactū meū tecum, & scies quia ego Dñs. 63 Ut recorderis & confundaris, & non sit tibi amplius quod tete efferas in verbis oris tui propter ignominiā tuam, cùm dimisero tibi omnia quæ fecisti, ait Dñs Deus.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܚܝ ܐܢܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܕܠܐ ܥܒܕܬ ܣܕܘܡ ܚܬܟܝ ܗܝ ܘܒܢܬܗ. ܐܝܟ ܕܥܒܕܬܝ 48
ܐܢܬܝ ܘܒܢܬܟܝ. * ܗܢܘ ܓܝܪ ܕܣܕܘܡ ܚܬܟܝ ܪܡܬܐ. ܕܣܒܥܐ ܗܘܬ ܠܚܡܐ. ܘܫܠܝܐ 49
ܗܘܬ ܫܠܝܐ ܗܝ ܘܒܢܬܗ. ܘܐܝܕܐ ܕܡܣܟܢܐ ܘܕܡܚܝܠܐ ܠܐ ܐܚܕܘ. * ܐܠܐ ܐܬܪܝܡܝ. ܘܥܒܕܝ 50
ܒܝܫܬܐ ܩܕܡܝ. ܘܟܕ ܚܙܝܬ ܣܢܝܬܐ ܒܗܝܢ. ܘܥܩܪܬ ܐܢܝܢ. * ܘܫܡܪܝܢ ܐܦ ܦܠܓܗ 51
ܕܚܛܗܝܟܝ. ܠܐ ܚܛܬ. ܐܣܓܝܬܝ ܕܝܢ ܛܘܥܝܬܟܝ ܝܬܝܪ ܡܢܗܝܢ. ܘܙܟܝܬܝ ܠܐܚܘܬܟܝ
ܒܣܘܓܐ ܚܛܗܝܟܝ. ܕܐܛܢܦܬܝ ܝܬܝܪ ܡܢܗܝܢ. ܘܐܙܕܕܩܝ ܝܬܝܪ ܡܢܟܝ. * ܐܦ ܐܢܬܝ 52
ܩܒܠܝ ܟܘܐܒܟܝ ܘܩܒܠܝ ܚܣܕܟܝ. ܕܙܟܝܬܝܢ ܠܐܚܘܬܟܝ ܝܬܝܪ ܡܢܟܝ. * ܘܐܗܦܘܟ ܫܒܝܬܗܝܢ. 53
ܫܒܝܬܐ ܕܣܕܘܡ. ܘܕܒܢܬܗ. ܘܫܒܝܬܐ ܕܫܡܪܝܢ. ܘܕܒܢܬܗ. ܘܐܗܦܘܟ ܫܒܝܬܟܝ
ܒܝܢܬܗܝܢ. * ܕܬܩܒܠܝܢ ܨܥܪܟܝ. ܘܬܒܗܬܝܢ ܒܟܠܡܕܡ ܕܥܒܕܬܝ ܕܐܪܓܙܬܝܢܝ. 54
* ܘܣܕܘܡ ܚܬܟܝ ܘܒܢܬܗ ܢܬܩܢܢ. ܐܝܟ ܕܡܢ ܩܕܝܡ. ܘܫܡܪܝܢ ܘܒܢܬܗ ܢܬܩܢܢ. 55
ܐܝܟ ܕܡܢ ܩܕܝܡ. ܘܐܢܬܝ ܘܒܢܬܟܝ ܬܗܘܝܢ. ܐܝܟ ܕܡܢ ܩܕܝܡ. * ܘܠܐ ܗܘܬ ܫܡܝܥܐ ܣܕܘܡ 56
ܚܬܟܝ ܒܦܘܡܟܝ ܒܝܘܡܐ ܕܪܡܘܬܟܝ: * ܥܕ ܠܐ ܬܬܓܠܐ ܒܝܫܘܬܟܝ. ܐܝܟ ܚܣܕܐ 57
ܕܒܢܬܐ ܕܐܕܘܡ. ܘܕܟܠܗܝܢ ܒܢܬܐ ܦܠܫܬܝܐ ܕܚܕܪܝܢ ܗܘܝ ܠܗ. * ܘܚܛܗܝܟܝ ܘܛܢܦܘܬܟܝ. 58
ܐܢܬܝ ܩܒܠܬܝ ܐܢܝܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. * ܡܛܠܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܥܒܕ ܐܢܐ 59
ܠܟܝ ܐܝܟ ܕܥܒܕܬܝ. ܥܠ ܕܫܛܬܝ ܡܘܡܬܝ ܘܒܛܠܬܝ ܩܝܡܝ. * ܐܢܐ ܕܝܢ ܐܬܕܟܪ ܩܝܡܝ 60
ܕܥܡܟܝ. ܒܝܘܡܬܐ ܕܛܠܝܘܬܟܝ. ܘܐܩܝܡ ܠܟܝ ܩܝܡܐ ܕܠܥܠܡ. * ܘܬܬܕܟܪܝܢ ܐܘܪܚܬܟܝ 61
ܘܬܬܒܗܬܝܢ. ܕܢܣܒܬ ܠܐܚܘܬܟܝ ܠܪܒܬܐ ܘܠܙܥܘܪܬܐ. ܘܝܗܒܬ ܐܢܝܢ ܠܟܝ ܠܒܢܬܐ. ܠܐ
ܡܢ ܩܝܡܟܝ. * ܘܐܩܝܡ ܐܢܐ ܩܝܡܝ ܥܡܟܝ. ܘܬܕܥܝܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܕܬܬܕܟܪܝܢ 62 63
ܘܬܬܒܗܬܝܢ. ܘܠܐ ܬܦܬܚܝܢ ܦܘܡܟܝ ܡܢ ܩܕܡ ܒܗܬܬܟܝ. ܡܐ ܕܫܒܩܬ ܠܟܝ ܟܠܡܕܡ
ܕܥܒܕܬܝ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ.

Per vitam meam, dicit Dominus dominorum, 48
nequaquam fecit Sodoma ſoror tua cum filiabus ſuis, quemadmodum feciſti tu cum filiabus tuis. Hoc erat crimen Sodomæ ſororis 49
tuæ arrogantis: ſaturabatur pane, & otioſè deſidebat ipſa & filiæ ejus: manum egenorum & pauperum non tenuerunt; Sed ſu- 50
perbientes deſignaverunt malum coram me: quæ cùm vidiſſem in eis, ſubverti eas. Sama- 51
ria ad dimidium peccatorũ tuorum non peccavit: plures quàm ipſæ abominationes commiſiſti, & ſuperâſti ſorores tuas peccatis tuis: pluſquam ipſæ tu te contaminâſti, adeoque ipſæ juſtiores te ſunt. Tu ſaltem erubeſce, & 52
fer ignominiam tuam, quòd ſorores tuæ juſtiores te fuerint. Et ego reducam captivita- 53
tem earum, *nempe* captivitatem Sodomæ & filiarum ejus, & captivitatem Samariæ atque filiarum ejus, & captivitatem tuam abducam inter eas: Ut feras ignominiam, & erubeſcas 54
pro rebus omnibus quas feciſti ut me ad iracundiam provocares. Soror tua Sodoma & 55
filiæ ejus reſtaurabuntur ut olim, & Samaria atque filiæ ejus reſtaurabuntur ut antea; tu verò ac filiæ tuæ eris ut antea. Neque enim 56
fuit ſoror tua Sodoma famoſa in ore tuo die arrogantiæ tuæ, Antequam detegeretur ma- 57
lum tuum, qualis erat infamia filiarum Edom, & omnium filiarum Paleſtinorum, quæ circunſtabant illam: Ideò peccata tua & abo- 58
minationes tuas tu reportabis, dicit Dominus dominorum. Propterea, ſic ait Dominus do- 59
minorum, Facturus ſum tibi prout feciſti; eò quòd ſpreveris juramentum meum, & violaveris fœdus meum. Ego tamen recordabor 60
fœderis mei tecum *initi* diebus adoleſcentiæ tuæ, & præſtabo tibi fœdus perpetuum: Ut 61
recordata viarum tuarum, pudefias quòd acceperim ſorores tuas tam *natu* majorẽ quàm minorem, dederímque eas tibi filias, non ex 62
fœdere tuo. Et confirmabo ego fœdus meum tecum, & agnoſces me eſſe Dominum: Ut 63
recorderis & erubeſcas, nec aperias ampliùs os tuum præ pudore tuo; quum dimiſero tibi quicquid feciſti, ait Dominus dominorum.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* حي انا يقول ادوناي الرب * ان كانت هذه اختك سدوم صنعت وبناتها * كما صنعت انت 48
وبناتك * لكن هذا اثم سدوم اختك الكبرياء * بشبع الخبز وخصب الخمر لهت هي وبناتها * 49
هذا كان لها ولبناتها * ولم يعضدن يد فقير ومسكين * وتعظمن وصنعن اثاما امامي * ونزعتهن 50
كما رايت * وسامرة لم تخطي بنصف خطاياك * واكثرت اثامك اكثر منها * وبررت اخواتك 51
بجميع اثامك التي صنعتيها * وانت تحملين عقابك التي به افسدت اخواتك بخطاياك * التي
اعبت بها اكثر منهن * وبررتهن اكثر منك * وانت افتضحي وخذي هوانك عند ما 52
بررت اخواتك * واصرف انصرافهن كانصراف سدوم وبناتها * واصرف انصراف سامرة وبناتها * 53
واصرف انصرافك في وسطهن * لكي تاخذي عقابك * وتهانين من جميع ما صنعتيه 54
لتغضبيني * واختك سدوم وبناتها يعودون كما كانوا منذ البدء * وسامرة وبناتها يعودون كما 55
كانوا منذ البدء * وانت وبناتك تعدن كما بداتن * وكما كانت اختك سدوم للسماع بفمك في 56
ايام عظمتك * قبل ان تنكشف قبائحك * وكما انك الان عار لبنات سورية وجميع من حولها 57
من البنات العرباء القبايل * الذين استحوذوا عليك من حولك * نفاقك واثامك انت تحملينهم 58
يقول الرب * هكذا يقول ادوناي الرب * واصنع بك كما صنعت * كما زريت بهن لتتجاوزي 59
عهدي * واذكر انا عهدي الذي معك في ايام طفوليتك * واقيم لك عهدا ابديا * 60
* وتذكرين طريقك وتهانين * عند ما تاخذين اخواتك العجائز مع شاباتك * واعطيهن لك 61
للامتحان * وليس من عهدك * واقيم انا عهدي معك * وتعلمين اني انا الرب * كي تذكري 62 63
وتفتضحي * ولا تقدري ان تفتحي فاك من وجه اهانتك * عند ما تستعطفيني لك على كل
ما صنعتيه * يقول ادوناي الرب *

Ut *vivo ego, dicit Adonai Dominus, hæc* 48
ſoror tua Sodoma & filiæ ipſius, non fecerunt quemadmodum feciſti tu & filiæ tuæ. Enimverò hæc erat iniquitas Sodo- 49
mæ ſororis tuæ; ſuperbia: in abundantia panis & affluentia vini, delitiis indulgebat ipſa & filiæ ejus: hoc vitium *habebat ipſa & filiæ ejus: prætereà non ſuffulſerunt manũ inopis ac pauperis: Ergò ſuper-* 50
bientes fecerunt varias *iniquitates coram me: proinde avulſi eas, ut vidiſti. Sama-* 51
ria verò ne dimidiam quidem partem peccatorum tuorum perpetravit; ſed multiplicâſti iniquitates tuas pluſquam ipſa: adeoque juſtificâſti ſorores tuas per tot crimina quæ commiſiſti. Ideo pœnas lues, eò quòd ſorores tuas corruperis flagitiis tuis, quibus eas (cùm plura quàm ipſæ perpetraveris) juſtiores te reddidiſti. Tu 52
itaque erubeſce, & fer ignominiam tuam, quandoquidem juſtificâſti ſorores tuas. Et 53
amovebo averſionem earum, ut averſionẽ Sodomæ & filiarum ejus: & amovebo averſionem Samariæ & filiarum ejus: & amovebo averſionem tuam in medio earũ: ut pœnam tuam luas, & deprimaris pro 54
omnibus quæ feciſti ad irritandum me. Soror tua Sodoma & filiæ ejus redibunt 55
ut erant à principio: & Samaria ac filiæ ejus redibunt ut erant ab initio: & tu filiæq; tuæ redibitis uti cœperatis: Et quem- 56
*admodum erat ſoror tua Sodoma in ma-*lam *famam in ore tuo, in diebus ſuperbiæ tuæ, Priuſquã detegerentur turpitudines* 57
tuæ: & quemadmodum tu jam es vituperium apud filias Syriæ, & omnes circunjacentes ei filias nationum exterarum quæ te undiq; circundant. Impietatem tu- 58
am & iniquitates tuas tu portabis, ait Dominus. Sic ait Adonai Dominus; Faci- 59
ámq; tibi quemadmodum feciſti, quemadmodum ſpreviſti illas, ut præterires fœdus meum. Verùm ego recordatus fœderis mei 60
quod tecum inieram *diebus pueritiæ tuæ, ſtatuam tibi fœdus perpetuum: Et recor-* 61
daberis viæ tuæ, atque humiliaberis, cùm receperis ſorores tuas anus cum puellis tuis: & dabo eas tibi ad experimentum, non autem ex fœdere tuo. Ego inquam, ſtatuam 62
fœdus meum tecum, & ſcies me eſſe Dominum: ut recordata rubore ſuffundaris, 63
nec poſſis aperire os tuum præ ignominia tua; quum indulgentiam meam imploraveris tibi pro rebus omnibus quas feciſti, dicit Adonai Dominus.

יחזקאל : יז

CAP. XVII. יז

, hominis Fili : dicendo , me ad Domini verbum fuit Et
1 2 ויהי דבר־יהוה אלי לאמר: בן־אדם
ad parabolam loquere parabolicè & , ænigma loquere Ænigmaticè
חוד חידה ומשל משל אל־
Aquila : Deus Dominus dixit Sic : dices Et .Israel domum
3 בית ישראל: ואמרת כה־אמר אדני יהוה הנשר
ei quibus , pluma plena , penna longa , alis magna , grandis
הגדול גדול הכנפים ארך האבר מלא הנוצה אשר־לו
.cedri summitatem tulit & , Lebanon ad venit ; variegatio
הרקמה בא אל־הלבנון ויקח את־צמרת הארז:
terram ad illud adduxit & : avulsit ejus ramorum tenerorum Caput
4 את ראש יניקותיו קטף ויביאהו אל־ארץ
,terræ semine de tulit Et .illud posuit negotiatorum urbe in.Chenahan
5 כנען בעיר רכלים שמו: ויקח מזרע הארץ
salicem ,multas aquas juxta Tulit .seminis agro in illud dedit &
ויתנהו בשדה־זרע קח על־מים רבים צפצפה
, statura humilem ,luxuriantem vitem in fuit &,germinavit Et .illud posuit
6 שמו: ויצמח ויהי לגפן סרחת שפלת קומה
fuit Et .sint ea sub ejus radices &,eam ad ejus ramos respiciendum ad
לפנות דליותיו אליו ושרשיו תחתיו יהיו ותהי
una aquila fuit Et .ornamenta emisit & , palmites fecit & , vitem in
7 לגפן ותעש בדים ותשלח פארות: ויהי נשר־אחד
inflectebat hæc vitis ecce Et .pluma multa & , alis magna ,grandis
גדול גדול כנפים ורב נוצה והנה הגפן הזאת כפנה
eam irrigandum ad ,eam ad emittebat suos ramos & , eam ad suas radices
שרשיה עליו ודליותיו שלחה־לו להשקות אותה
ipsa multas aquas ad bono agro In .suæ plantationis lineis de
8 מערגות מטעה: אל־שדה טוב אל־מים רבים היא
.magnificā vitem in existendū ad,fructū ferendū ad &,frondem faciendū ad,plantata
שתולה לעשות ענף ולשאת פרי להיות לגפן אדרת:
ejus radices Nonne ? prosperabitur : Deus Dominus dixit Sic : Dic
9 אמר כה אמר אדני יהוה תצלח הלוא את־שרשיה
frondes omnes , arescet & , excidet ejus fructum & , evellet
ינתק ואת־פריה יקוסס ויבש כל־טרפי
,multo populo in &,grandi brachio in non & , arescet ejus germinis
צמחה תיבש ולא בזרוע גדולה ובעם רב
?prosperabitur nūquid plantata ecce Et?suis radicibꝰ à eam tollendum ad
10 למשאות אותה משרשיה: והנה שתולה התצלח
? siccando siccabitur , orientalis ventus eam in tangere juxta Nonne
הלא כגעת בה רוח הקדים תיבש יבש
,me ad Domini verbum fuit Et .arescet sui germinis lineis In
11 על־ערגת צמחה תיבש: ויהי דבר־יהוה אלי
cognovistis Nonne : rebellionis domum ad nunc Dic : dicendo
12 לאמר: אמר־נא לבית המרי הלא ידעתם
cepit & , Jerusalaim Babel rex venit Ecce : Dic ? hæc quid
מה־אלה אמר הנה־בא מלך־בבל ירושלם ויקח את־
.Babel in se ad eos adduxit & ; ejus principes & , ejꝰ regem
מלכה ואת־שריה ויבא אותם אליו בבלה:
induxit & : fœdus eo cum excidit & , regni semine de tulit Et
13 ויקח מזרע המלוכה ויכרת אתו ברית ויבא
existendum Ad .cepit terræ arietes & , jusjurandum in eum
14 אתו באלה ואת־אילי הארץ לקח: להיות
,ejus pactum custodiendum ad , se elevare non pro , humile regnum
ממלכה שפלה לבלתי התנשא לשמר את־בריתו
,Ægyptum suos nuntios mittendo ,eā contra rebellavit Et .ei astandum ad
15 לעמדה: וימרד־בו לשלח מלאכיו מצרים
? prosperabitur nunquid : multum populum & , equos sibi dandum ad
לתת־לו סוסים ועם־רב היצלח
? effugiet & ,pactum irritavit & ? hæc faciens evadet nunquid
הימלט העשה אלה והפר ברית ונמלט:

Versio VULG. LAT.

CAP. XVII.

1 ET factum est verbum Domini
2 ad me, dicens; Fili hominis, pro-
pone ænigma, & narra parabo-
3 lam ad domum Israel, Et dices;
Hæc dicit Dn̄s Deus; Aquila
grandis magnarum alarū, longo
membrorū ductu, plena plumis,
& varietate, venit ad Libanum,
4 & tulit medullam cedri. Summi-
tatem frondium ejus avulsit: &
transportavit eam in terram
Chanaan, in urbe negotiatorum
5 posuit illam. Et tulit de semine
terræ, & posuit illud in terra
pro semine, ut firmaret radicem
super aquas multas: in superficie
6 posuit illud. Cúmque germinás-
set, crevit in vineam latiorem
humili staturâ, respicientibus
ramis ejus ad eam: & radices
ejus sub illa erant, facta est ergò
vinea, & fructificavit in palmi-
7 tes, & emisit propagines. Et
facta est aquila altera grandis,
magnis alis, multísque plumis:
& ecce vinea ista quasi mittens
radices suas ad eam, palmites
suos extendit ad illam, ut irriga-
ret eam de areolis germinis sui.
8 In terra bona sup aquas multas
plantata est: ut faciat frondes,
& portet fructum, ut sit in vi-
9 neam grandem. Dic; Hæc dicit
Dn̄s Deus; Ergóne prospera-
bitur? nónne radices ejus e-
vellet, & fructus ejus distringet,
et siccabit omnes palmites ger-
minis ejus, & arescet: & non in
brachio grandi, neque in populo
multo, ut evelleret eam radici-
10 tús? Ecce plantata est: ergóne
prosperabitur? nónne cùm te-
tigerit eam ventus urens siccabi-
tur, & in areis germinis sui are-
11 scet? Et factum est verbum Do-
12 mini ad me, dicens; Dic ad
domum exasperantem; Nescitis
quid ista significent? Dic; Ecce
venit rex Babylonis in Jerusa-
lem: & assumet regem, & prin-
cipes ejus, & adducet eos ad
13 semetipsum in Babylonem. Et
tollet de semine regni, feriétque
cum eo fœdus: & ab eo acci-
piet jusjurandum: sed & fortes
14 terræ tollet, Ut sit regnum hu-
mile, & non elevetur, sed custo-
diat pactum ejus, & servet illud.
15 Qui recedens ab eo misit nun-
tios ad Ægyptum, ad daret sibi
equos, & populū multū. Num-
quid prosperabitur, vel conse-
quetur salutem qui fecit hæc?
& qui dissolvit pactum, num-
quid effugiet?

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

ΚΕΦ. ιζʹ.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέ-
2 γων, Υἱὲ ἀνθρώπου, διήγησαι διήγημα,
καὶ εἰπὸν παραβολὴν πρὸς τὸν οἶκον τοῦ Ἰσ-
3 ραὴλ, Καὶ ἐρεῖς, Τάδε λέγει κύριος, (α)
Ἀετὸς ὁ μέγας ὁ μεγαλοπτέρυγος, ὁ μα-
κρὸς τῇ (ʺ) ἐκτάσει, πλήρης ὀνύχων, ὃς ἔχει
τὸ ἥγημα εἰσελθεῖν εἰς τὸν Λίβανον, καὶ ἔ-
4 λαβε τὰ (β) ἐπίλεκτα τῆς κέδρου, Τὰ
ἄκρα τῆς ἁπαλότητος ἀπέκνισε, καὶ ἤνεγ-
κεν αὐτὰ εἰς γῆν (γ) Χαναὰν, εἰς πόλιν
5 τετειχισμένην ἔθετο αὐτά. Καὶ ἔλαβεν
ἀπὸ τοῦ σπέρματος τῆς γῆς, καὶ ἔδωκεν
αὐτὸ εἰς τὸ πεδίον φυτὸν ἐφ᾽ ὕδατι πολ-
6 λῷ, ἐπιβλεπόμενον ἔταξεν αὐτό. Καὶ ἀν-
έτειλε, καὶ ἐγένετο εἰς ἄμπελον (δ) ἀσθενοῦ-
σαν καὶ (ε) μικρὰν, τοῦ ἐπιφαίνεσθαι αὐτὴν
τὰ κλήματα αὐτοῖς ἐπ᾽ αὐτό· καὶ ῥίζαι
αὐτῆς ὑποκάτω αὐτῆς ἦσαν· καὶ ἐγένετο εἰς
(ζ) ἄμπελον, καὶ ἐποίησεν ἀπώρυγας, καὶ
7 ἐξέτεινε τὰς ἀναδενδράδας αὐτῆς. Καὶ ἐγέ-
νετο ἀετὸς ἕτερος μέγας, μεγαλοπτέρυ-
γος, πολὺς ὄνυξι· καὶ ἰδοὺ ἡ ἄμπελος αὕτη
περιπεπλεγμένη πρὸς αὐτὸν, καὶ (η) ῥίζαι
αὐτῆς πρὸς αὐτὸν, καὶ τὰ κλήματα αὐτῆς
(θ) ἐξαπέστειλεν αὐτῷ, τοῦ ποτίσαι αὐτὴν
8 σὺν τῷ (ʺ) βόλῳ τῆς φυτείας αὐτῆς. Εἰς πεδίον
καλὸν ἐφ᾽ ὕδατι πολλῷ αὕτη πιαίνεται, τοῦ (ι)
ποιεῖν βλαστοὺς, καὶ φέρειν καρπὸν, τοῦ εἶναι
9 εἰς ἄμπελον μεγάλην. Διὰ τοῦτο εἰπὸν, Τάδε
λέγει κύριος, Εἰ (κ) κατευθυνεῖ; οὐχὶ
αἱ ῥίζαι τῆς ἁπαλότητος αὐτῆς καὶ ὁ καρ-
πὸς σαπήσεται; καὶ ξηρανθήσεται πάντα
τὰ προανατέλλοντα αὐτῆς, καὶ οὐκ ἐν βρα-
χίονι μεγάλῳ, οὐδὲ ἐν λαῷ πολλῷ, τοῦ ἐκ-
10 σπάσαι αὐτὴν ἐκ ῥιζῶν αὐτῆς. Καὶ ἰδοὺ
πιαίνεται. μὴ κατευθυνεῖ; οὐχὶ ἅμα τῷ
(ʺ) ἅψασθαι αὐτῆς ἄνεμον τὸν καύσωνα
(λ) ξηρανθήσεται; σὺν τῷ (ʺ) βόλῳ ἀνατολῆς
11 (μ) αὐτῆς ξηρανθήσεται. Καὶ ἐγένετο λόγος
12 κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου,
εἰπὸν δὴ πρὸς τὸν (ν) οἶκον τὸν παραπικραίνον-
τα, Οὐκ ἐπίστασθε τί (ξ) ἦν ταῦτα; εἰ-
πὸν, Ὅταν ἔλθῃ βασιλεὺς Βαβυλῶνος
(ο) ἐπὶ Ἰερουσαλὴμ, καὶ λήψεται τὸν βασιλέα
αὐτῆς, καὶ τοὺς ἄρχοντας αὐτῆς, καὶ ἄξει αὐ-
13 τοὺς πρὸς ἑαυτὸν εἰς Βαβυλῶνα. Καὶ λή-
ψεται ἐκ τοῦ σπέρματος τῆς βασιλείας, καὶ
διαθήσεται πρὸς αὐτὸν διαθήκην, καὶ εἰσ-
άξει αὐτὸν ἐν ἀρᾷ, καὶ τοὺς (π) ἡγεμόνας τῆς
14 γῆς λήψεται, Τοῦ γενέσθαι εἰς βασιλείαν ἀσθε-
νῆ, τὸ καθόλου μὴ ἐπαίρεσθαι, τοῦ φυλάσσειν
15 τὴν διαθήκην αὐτοῦ, (ρ) καὶ ἱστάνειν αὐτήν. Καὶ
ἀποστήσεται ἀπ᾽ αὐτοῦ, τοῦ ἐξαποστέλλειν ἀγγέ-
λους ἑαυτοῦ εἰς Αἴγυπτον, τοῦ δοῦναι αὐτῷ ἵπ-
πους καὶ λαὸν πολύν. εἰ κατευθυνεῖ, εἰ δια-
σωθήσεται ὁ ποιῶν ἐναντία; καὶ παραβαίνων διαθήκην εἰ (σ) διασωθήσεται;

CAP. XVII.

ET factus est sermo Domini ad 1
me, dicens, Fili hominis, narra 2
narrationem, & dic parabolam ad
domum Israel, Et dices; Hæc di- 3
cit Dominus; Aquila magna ma-
gnarum alarum, longa extensio-
ne, plena unguium, quæ habet du-
ctum intrandi in Libanum; &
tulit electa cedri: Summitates 4
teneritudinis avellit: & attulit
eas in terram Chanaan: in civita-
te murata posuit illas. Et tulit 5
de semine terræ: & dedit illud
in campo (a) plantationem super
aquam multam: (b) ut respicere-
tur, posuit illud: Ortúmque est, 6
& factum in vitem infimam, &
parvulam: ut (c) ipsa extare fa-
ceret ramos suos super illum: &
radices illius subter illam erant.
Et facta est in vitē, & fecit pro-
pagines, & extendit ramos suos.
Et facta est aquila altera gran- 7
dis, magnarum alarum, multa un-
guibus: & ecce vitis hæc impli-
cata erat ad eam: & radices ejus
ad illam: & ramos suos extendit
ad illam, ut irrigaretur ab illa
cum gleba plantationis suæ. In 8
campo bono super aquam multam
ipsa impinguatur, ut faciat ger-
mina: & afferat fructum; ut sit in
vitem grandem. Propterea dic; 9
Hæc dicit Dominus; Si dirige-
tur? Nónne radices teneritudi-
nis ejus, & fructus putrescent, &
arescent omnia, quæ ex ea proger-
minant, & non in brachio ma-
gno, neque in populo multo, ut
evellat eam à radicibus suis? Et 10
ecce impinguatur. Nunquid di-
rigetur? Nónne statim ut teti-
gerit eam ventus urens; arescet?
cū gleba germinis sui arescet. Et 11
factum est verbū Domini ad me,
dicens; Fili hominis, dic nunc ad 12
domum exasperantem: Nescitis
quid sint ista? (d) Dic; Cùm
venerit rex Babylonis super Hie-
rusalem: & capiet regem ejus,
& principes ejus: & ducet eos
ad (e) se in Babylonem. Et tollet 13
de semine regni, & disponet ad
eum testamentum, & introducet
eum in maledictione: & prin-
cipes terræ tollet, ut sit in re- 14
gnum infirmum, omninoque non
elevetur custodiendo testamentū
ipsius, & statuat illud. Et rece- 15
det ab eo, mittendo nuntios su-
os in Ægyptum, ut sibi daret
equos, & populum multum. Si
dirigetur, si salvabitur, qui
facit contraria? Et, qui trans-
greditur testamentum, si salva-
bitur?

MS. A. (α) Ὁ ἀετὸς (ʺ) * ἐκστάσει, (β) ἔκλεκτα (γ) Χαλδαίων, (δ) εὐ-
σθενοῦσαν (ε) μικρὰν τῷ μεγέθει, τῷ ἐπιφαίνεσθαι αὐτῇ τὰ κλήματα αὐτῆς
ἐπ᾽ αὐτήν· καὶ αἱ ῥίζαι (ζ) ἄμπελον μεγάλην, καὶ (η) αἱ ῥίζαι (θ) καὶ
ἐξαπέστειλεν αὐτὴν τοῦ ποτίσαι (ʺ) βώλῳ (ι) ποιῆσαι καρπὸν, καὶ ἐνέγκαι
βλαστὸν, τοῦ εἶναι (κ) κατευθυνθήσεται; (ʺ) ἅψασθαι (λ) ξηρανθήσεται ξηρασίᾳ
σὺν (ʺ) βώλῳ (μ) αὐτῆς. Καὶ ἐγένετο (ν) οἶκον Ἰσραὴλ τὸν (ξ) ἐστιν ταῦτα ἃ
εἶπον, ὅταν (ο) εἰς Ἰερουσαλὴμ, λήμψεται τὸν βασιλέα αὐτῆς, * καὶ ἄξει αὐτοὺς πρὸς αὐτὸν εἰς Βαβυλῶνα. (π) ἡγουμένοις (ρ) τοῦ ἱστάνειν (σ) σωθήσεται; Διὰ τοῦτο, Ζῶ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

יז

1 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר: בר אדם חוד חידתא ומתל מתלא על בית
2 3 ישראל: ותימר כדנן אמר יי אלהים נשרא רבא רב גפין אריך אברין חפי כנפין דיליה
4 ציורין אתא ללבנן ונסיב ית עוברתא דארזא רמא: ית ריש שבשתיה נסיב ואובליה
לארעא דבטלא מפולחנא בארעא דכנען ועד לא יעלון לה בית ישראל בקרית תגרין
5 שוייה: ונסיב מזרעא דארעא ויהביה בחקל טב למזרע נצביה על מיין סגיאין גפן
6 נצבא שוייה: וצמח והוה לגפן תקיף מכיך בקומא לכפפא עוברתיה ליה ושרשוהי
7 תחותוהי יהון והוה לגפן ועבד שבקין ושלח עוברן: והוה נשרא חד רבא רב גפין
וחפי כנפין והא גופנא הדא כפת שרשוהי עלוהי ועוברתיה שלחת ליה לאשקאה
8 יתה מעוגית נצבתה: בחקל טב עלי מיין סגיאין היא שתילה למעבד ענף ולמטען
9 פרין למהוי לגפן תקיף: אמר כדנן אמר יי אלהים תצלח הלא ית שורשהא יפסיק
וית אבה יקטיף ויבשון כל טרפי צמחה יתרון ולא במשרין סגיאין ובעם סגי ייתון
10 למעקר יתה משורשהא: והא שתילא התצלח הלא כמקרב בה רוח קדומא תיבש
11 12 מיבש על עוגית נצבתה תיבש: והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר: אמר כען
לעמא סרבנא הלא ידעתון מה אלין אמר הא אתא מלכא דבבל לירושלם ודבר ית
13 מלכה וית רברבהא ואוביל יתהון לותיה לבבל: ודבר מזרעא דמלכותא וגזר עמיה
14 קים ואעיל יתיה במומי וית רברבי ארעא דבר: למהוי מלכו חלשא בדיל דלא
15 לאתרברבא למטר ית קימיה למפלחיה: ומרד ביה לשלחא אזגדוהי למצרים למתן
ליה סוסון ועם סגי היצלח הישתיזב דעביד אלין ומשני קים הישתיזב:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAP. XVII.

ET factum est verbum prophetiæ à facie Domini mecum, dicens: Fili ho- 1
minis propone ænigma & narra parabolam super domum Israel. Et dices: 2
Hæc dicit Dominus Deus; Aquila grandis, magna pennis, longa membris, 3
operta plumis figuratis, venit ad Libanum, & tulit propaginem cedri excel-
sæ. Summitatem ramorum ejus tulit, & transportavit eam in terram incul- 4
tam in terram Chanaan; & antequam ingrederetur in eam domus Israel, in
civitate negotiatorum posuit illam. Et tulit de semine terræ, & posuit illud 5
in agro apto sementi: seminavit illud ad aquas multas, vitem plantatam po-
suit illud. Et germinavit, & fuit in vitem fortem, humilem statura, ut incur- 6
varent sese propagines ei, & radices ejus sub ea essent: factáque est in vi-
tem, & fecit propagines, & emisit palmites. Et fuit aquila altera ma- 7
gna, magna pennis & cooperta alis; & ecce vitis ista incurvavit super eam ra-
dices suas, & propagines suas misit ad eam, ut irrigaret eam de areolis planta-
tionis suæ. In agro bono super aquas multas est transplantata, ut faceret ra- 8
mos & portaret fructum, ut esset in vitem fortem. Dic: Hæc dicit Dominus 9
Deus; Prosperabitur? an non radices ejus succidet, & fructum ejus decerpet,
& arescent? omnes frondes germinis ejus defluent: & non cum exercitu
multo neque cum populo grandi venient, ut evellant eam à radicibus suis. Et 10
ecce plantata num prosperabitur? nonne cùm tetigerit eam ventus urens, are-
scendo arescet? super areis plantationis suæ arescet. Et factum est verbum 11
prophetiæ à facie Domini mecum, dicens: Dic nunc populo contumaci: Non- 12
ne scitis quæ sunt hæc? Dic: Ecce venit rex Babylonis ad Jerusalem, & as-
sumpsit regem & principes ejus, & traduxit eos ad se in Babylonem. Et tulit 13
de semine regio, & pepigit cum eo pactum, & introduxit eum in juramen-
tum, & principes terræ tulit. Ut esset regnum infirmum, & non magnificare- 14
tur; ut custodiret pactum ejus, & serviret ei. Et rebellavit in eum, ut mitte- 15
ret legatos suos in Ægyptum, ut daret sibi equos & populum multum; nun-
quid prosperabitur aut liberabitur qui fecit hæc? & qui mutavit pactum, nun-
quid liberabitur?

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܙ * ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ ܀ ܐܚܘܕ 1 2
ܐܘܚܕܬܐ. ܘܐܡܬܠ ܡܬܠܐ ܥܠ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܘܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ. ܢܫܪܐ ܪܒܐ 3
ܕܪܘܪ̈ܒܢ ܓܦ̈ܘܗܝ. ܘܐܪ̈ܝܟܢ ܐܒܪ̈ܘܗܝ. ܘܡܠܝܢ ܛܦܪ̈ܘܗܝ. ܘܥܒܝܢ ܡܚܒ̈ܘܗܝ ܀ ܐܬܐ
ܠܠܒܢܢ ܘܢܣܒ ܡܢ ܓܒ̈ܝܐ ܕܒܪ̈ܘܬܐ. * ܘܦܣܩ ܪܝܫ ܡܪܒܝܬܗ. ܘܐܣܩܗ ܠܐܪܥܐ ܕܟܢܥܢ. 4.
ܘܣܡܗ ܒܡܕܝܢܬܐ ܕܬܓܪ̈ܐ. * ܘܢܣܒ ܡܢ ܙܪܥܐ ܕܐܪܥܐ. ܘܐܪܡܝܗ ܒܡܕܒܪܐ. ܒܢܨܒܬܐ ܥܠ 5
ܡ̈ܝܐ ܣܓܝ̈ܐܐ. ܘܣܡܗ ܒܕܘܟܐ. * ܘܝܥܐ ܘܗܘܐ ܓܦܬܐ ܡܟܝܟܬܐ ܘܡܟܝܟܬ ܩܘܡܬܐ. 6.
ܕܢܬܚܙܘܢ ܫܒܘ̈ܫܝܬܗ ܠܥܠ ܡܢܗ. ܘܥܩܪ̈ܝܗ ܬܚܬܝܗ. ܘܗܘܬ ܓܦܬܐ. ܘܐܦܩܬ ܫܒܘ̈ܫܝܬܐ.
ܘܦܫܛܬ ܥܩܪ̈ܝܗ. * ܘܗܐ ܢܫܪܐ ܐܚܪܢܐ ܪܒܐ ܕܪܘܪ̈ܒܢ ܓܦ̈ܘܗܝ ܘܣܓܝ̈ܐܢ ܛܦܪ̈ܘܗܝ. 7.
ܘܓܦܬܐ ܗܕܐ ܐܟܪܟܬ ܥܩܪ̈ܝܗ ܥܠܘܗܝ. ܘܫܒܘ̈ܫܝܬܗ ܐܪܡܝܬ ܥܠܘܗܝ. ܕܢܫܩܝܗ ܡܢ ܪܓܒܐ
ܕܢܨܒܬܗ. * ܒܚܩܠܐ ܫܦܝܪܐ ܘܥܠ ܡ̈ܝܐ ܣܓܝ̈ܐܐ ܢܨܝܒܐ. ܕܬܦܪܥ ܛܪ̈ܦܐ. ܘܬܥܒܕ ܦܐܪ̈ܐ. ܘܬܗܘܐ 8
ܓܦܬܐ ܡܫܒܚܬܐ. * ܐܡܪ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ. ܠܐ ܬܨܠܚ. ܐܠܐ ܥܩܪ̈ܝܗ ܢܬܦܣܩܘܢ. 9.
ܘܦܐܪ̈ܝܗ ܢܬܡܣܡܣܘܢ ܘܢܬܝܒܫܘܢ. ܘܟܠܗܘܢ ܛܪ̈ܦܐ ܕܡܪܒܝܬܗ ܢܬܝܒܫܘܢ. ܘܠܐ ܒܕܪܥܐ ܪܡܐ.
ܘܠܐ ܒܥܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܢܥܩܪܘܢܗ ܡܢ ܥܩܪ̈ܝܗ. * ܘܗܐ ܢܨܝܒܐ. ܐܠܐ ܠܐ ܬܨܠܚ. ܡܚܕܐ ܕܢܫܒ ܒܗ 10
ܪܘܚܐ ܕܫܘܕܦܢܐ. ܬܝܒܫ ܒܪܓܒܐ ܕܡܘܠܕܗ. * ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ. 11 12
ܐܡܪ ܠܒܝܬܐ ܡܪܡܪܢܐ. ܠܐ ܝܕܥܝܢ ܐܢܬܘܢ ܡܢܐ ܐܢܝܢ ܗܠܝܢ. ܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܐ ܐܬܐ ܡܠܟܐ
ܕܒܒܠ ܠܐܘܪܫܠܡ. ܘܢܕܒܪ ܠܡܠܟܐ ܘܠܪ̈ܘܪܒܢܝܗ. ܘܢܝܬܐ ܐܢܘܢ ܠܘܬܗ ܠܒܒܠ. * ܘܢܣܒ 13
ܡܢ ܙܪܥܐ ܕܡܠܟܘܬܐ. ܘܢܩܝܡ ܥܡܗ ܩܝܡܐ. ܘܢܥܠ ܥܡܗ ܒܡܘܡܬܐ. * ܘܢܕܒܪ 14
ܠܥܫܝܢܐ ܕܐܪܥܐ ܕܠܐ ܢܬܬܪܝܡܘܢ. ܐܠܐ ܬܗܘܐ ܡܠܟܘܬܗܘܢ ܡܟܝܟܐ. ܘܢܛܪܘܢ. ܘܢܩܝܡܘܢ
ܩܝܡܗ ܥܡܗ. * ܘܢܡܪܕ ܒܗ. ܘܢܫܕܪ ܐܝܙܓܕ̈ܘܗܝ ܠܡܨܪܝܢ ܀ ܕܢܬܠܘܢ ܠܗ 15
ܪ̈ܟܫܐ. ܘܥܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܠܐ ܬܨܠܚ: ܘܠܐ ܢܬܦܨܐ ܡܢ ܕܥܒܕ ܗܠܝܢ.

CAP. XVII.

Et factus eſt ad me ſermo Domini, dicendo; 1
Fili hominis,compone ænigma, & effinge 2
proverbium de domo Iſraelis,ac dicito;
Sic ait Dominus dominorum ; Aquila quædam 3
maxima ingentibus alis, longis pennis,
integris unguibꝰ,denſiſq; plumulis inſtructa,
venit ad Libanum, ſumpſitque ex electiſſimis
abietibus : Truncavit faſtigium germinis ejus, 4
aſportavit illud in terram Chanaan, collocavit
in urbe mercatorum. Et accipiens 5
de ſemine terræ, jecit illud in deſertum, in
plantarium ſecus aquas multas, poſuitque illud
in ſpeculam. Germinavit hoc, factúmque 6
eſt vitis tenella & humilis ſtaturâ, ita ut
conſpicerentur ſurculi ejus ſuper illam *aquilam*,
& radices ejus ſubter illam : & cùm facta
eſſet vitis, emiſit ſurculos,porrexítque radices
ſuas. Rurſus ecce aquilam aliam ingentem 7
magnis alis & multis unguibus inſtructã,
quam vitis illa circunvolvit radicibꝰ ſuis,palmitéſque
ſuos jecit ſuꝑ eam, ut irrigaret eam
de gleba plantarii ſui. In agro pulcherrimo, 8
& ſecus aquas multas plantata fuit,ut frondeſceret
& fructus ferret,eſſétque vitis egregia.
Dic, Sic ait Dominus dominorum ; Non proſperabitur, 9
ſed radices ejus ſuccidentur,fructꝰ
ejus marceſcent & arefient, omniáque folia
germinis ejus exſiccabuntur;& brachio haud
ſublimi, populíſque haud multis evellet eam
ab radicibꝰ. Ecce plantata quidem eſt,at non 10
proſperabitur;imò ſtatim atque flaverit in eã
ventus uredinis, areſcet in gleba ſua natali.
Deinde fuit ad me ſermo Domini, dicendo ; 11
Fili hominis, dic domui *iſti* rebelli ; Neſcitis 12
quid iſta ſibi velint?Dic eis,Ecce venturus eſt
rex Babylonis in Jeruſalẽ,& regẽ,ac principes
ejus abducturus, & Babylonem perducturus.
Et accipiens de ſtirpe regia, inibit cum illa 13
fœdus, & intrabit cum illa in jusjurandum ;
Abducet autem potentiores terræ,ne ſe *denuò* 14
extollant, ſed humile maneat regnũ ipſorum,
ac *proinde* ſervent præſtentque fœdus *initum*
cum ipſo. Rebellabit autem illa contra hunc, 15
mittétque legatos ſuos in Ægyptum ut ſuppeditet
ſibi equos populúmque copioſũ : *at* non
proſperabitur nec eripiet ſe qui talia fecerit.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل السابع عشر *

1 2 * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان أخبر اخبارا * وقل مثلا لبيت اسرائيل * ويقول * هكذا
3 يقول ادوناي الرب * النسر العظيم الجناحين * الطويل مدهما * المملو مخالب * الذي له الظن
4 ليدخل الي لبنان ودخل * قال واخذ خيار الارز * ومن البسطة قطعها * وجا بها الي كنعان * في
5 مدينة مسورة وضعها * واخذ من زرع الارض * واعطاه لبقعة غرسا على ماء كثير * ربة منظورا *
6 * فطلع وصار كرمة ضعيفة * وضعيف في قدرها * لتظهر هذه اغصانها عليها * وكانت اصولها
7 تحتها * وصارت كرمة عظيمة * وصنعت قضبا * ومدت اغصانها * وكان النسر العظيم * العظيم
الجناحين * الكثير المخالب * واذا هذه الكرمة ضمت عليه * واصولها عليه * وارسلت اغصانها
8 له * ليسقيها مع طينة غرسها * في البقعة الحسنة على الماء الكثير هذه تدسمت * لتصنع فروعا
9 وتحمل ثمرا * لتكون كرمة عظيمة * لاجل هذا قل * هكذا يقول ادوناي الرب * لا تستقيم
كلا * اصول بساطتها وثمرها تيبس * ويجف نباتها * وليس بذراع عظيمة * ولا بشعب كثير *
10 ليخرجوها من اصولها * واذا تدسمت ولا تستقيم * اليس اذا يلمسها ريح سموم تجف جفافا * مع
11 12 طينة نباتها تجف * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان * قل لبيت اسرائيل المرمر * ليس
تعلمون ما هي هذه التي قلتها * اذا جاء ملك بابل الي ايروسليم * ويأخذ روساها * ويأتي بهم
13 14 معه الي بابل * ويأخذ من زرع المملكة * ويعهدون معه عهدا * ويدخله في اللعنة * ويأخذ
مقدمي الارض * ويصيروا مملكة ضعيفة بالكلية * ان لعلهم يرتفعوا * ليحفظوا عهده ويتمموه *
15 * ويبتعد منه ليرسل رسلا الي مصر * ليعطوه خيلا وشعبا كثيرا * لا يستقيم ولا يخلص
الذي يصنع بالخلاف * ويخالف العهد لا يخلص *

CAP. XVII.

Deinde fuit ſermo Domini ad me dicens; 1
O fili hominis,narra narrationem,& 2
dic proverbiũ domui Iſraelis;inquã dicas, 3
Sic ait Adonai Dominus ; Aquila illa maximarum
alarum, longiſſimæ extenſionis,
plena unguibus, cujus mens eſt ingrediendi
Libanum (& quidem ingreſſa eſt) dixit;
Equidem accipiam optimas cedrorum.
Ab expanſione ramorum *ſuccîdit eas, aſportavitque* 4
in Chanaan, in urbe murata
collocavit eas. Accepit etiam de ſemine 5
terræ, poſuitque illud in planitie quadam
in plantarium ſecus aquam copioſam,
ſpectabile diſpoſuit illud : Cúmque exortum 6
fuiſſet, factum eſt vitis infima &
exiguæ molis, ut hæc produceret ramos
ſuos ſuper illam ; radices autem ejus eſſent
ſub illa.Deinde facta eſt vitis magna,
protulitque pampinos, & extendit ramos
ſuos. Et fuit ut aquilæ illi magnæ, ſummarum 7
alarum,et multarum unguium,vitis
hæc ſtatim ſe radiceſque ſuas agglutinaret,
mitteretque ramos ſuos ad eam ; ut
irrigaret ſe cum gleba plantarii ſui. In 8
pulcherrima planitie, ſecus aquam copioſam
hæc impinguata eſt, ut proferret pampinos,
ferretque fructum ; ut fieret vitis
magna. Propterea dic, Ita dicit Adonai 9
Dominus ; Nequaquam dirigetur, minimè
gentium:radices expanſionis ramorum
ejus & fructus ejus areſcent, & marceſcet
germen ejus, neq; magnum brachium,
neque multum populum adhibebunt *ut*
evellant eam ab radicibus.Cùm impinguata 10
ſit, nec tamen redintegrata ; annon ubi
tetigerit eam ventus calidus,areſcet?cum
gleba ſui germinis areſcet. Tum fuit ſermo 11
Domini ad me,dicens ; O fili hominis, 12
dic domui Iſraelis refractariæ ; Neſcitis
quæ ſint iſta quæ dixi ? Cùm venerit rex
Babelis in Jeruſalem,capiet principes ejus,
abducetque eos ſecum in Babelem : Et accipiet 13
de ſemine regni,pangentque cum eo
fœdus,& introducet illud in maledictionem
: Accipiet etiam primores terræ, ut 14
fiant regnum omnino debile,ne fortè elevent
ſeſe,ſed ut ſervent fœdus ejus,et præſtent
illud. Recedet autem ab illo, mittendo 15
legatos in Ægyptum,ut copiam ſibi faciant
equorum & populi multi. Non dirigetur,
neque ſalvabitur qui perfidè agit,
& qui fœdus violat,non eripiet ſeſe.

יחזקאל : יח

, regis loco in niſi , Deus Dominus dixit , ego *Vivens*
16 חַי־אָנִי נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִֹה אִם־לֹא בִּמְקוֹם הַמֶּלֶךְ
irritavit cujus & ,*ejus* juramentum ſprevit cujus eũ *facientis* regnare
הַמַּמְלִיךְ אֹתוֹ אֲשֶׁר בָּזָה אֶת־אָלָתוֹ וַאֲשֶׁר הֵפֵר אֶת־
exercitu in non Et .morietur Babel medio in eo cum ,*ejus* pactum
17 בְּרִיתוֹ אִתּוֹ בְּתוֹךְ־בָּבֶל יָמוּת׃ וְלֹא בְחַיִל
effundendo in , prælio in Parhoh eo cum faciet multo cœtu *in* & ,grandi
גָּדוֹל וּבְקָהָל רָב יַעֲשֶׂה אוֹתוֹ פַרְעֹה בַמִּלְחָמָה בִּשְׁפֹּךְ
.multas animas *ſuccidendum ad* : *ligneam turrim ædificando in* & , aggerem
סֹלְלָה וּבִבְנוֹת דָּיֵק לְהַכְרִית נְפָשׁוֹת רַבּוֹת׃
,ſuã manũ dedit ecce & : pactum *irritandum ad* ,juramentum ſprevit Et
18 וּבָזָה אָלָה לְהָפֵר בְּרִית וְהִנֵּה נָתַן יָדוֹ
Dominus dixit ſic Propterea ?evadet non ,fecit hæc omnia &
19 וְכָל־אֵלֶּה עָשָׂה לֹא יִמָּלֵט׃ לָכֵן כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי
meũ fœdus & ,ſprevit quod meũ juramentũ niſi , ego *Vivens* : Deus
יְהוִֹה חַי־אָנִי אִם־לֹא אָלָתִי אֲשֶׁר בָּזָה וּבְרִיתִי
eum ſuper expandam Et .ejus caput in *illud* dedero & :irritavit quod
20 אֲשֶׁר הֵפִיר וּנְתַתִּיו בְּרֹאשׁוֹ׃ וּפָרַשְׂתִּי עָלָיו
eum faciam adducere & : mea ſagena in comprehendetur & , meum rete
רִשְׁתִּי וְנִתְפַּשׂ בִּמְצוּדָתִי וַהֲבִיאוֹתִיהוּ
eſt prævaricatus qua ,*ejꝰ prævaricatione* , ibi eo cum judicabor &,Babel in
בָבֶלָה וְנִשְׁפַּטְתִּי אִתּוֹ שָׁם מַעֲלוֹ אֲשֶׁר מָעַל־
gladio in ſuis *alis* omnibus cum ,ejus profugi omnes Et .me contra
21 בִּי׃ וְאֵת כָּל־מִבְרָחָו בְּכָל־אֲגַפָּיו בַּחֶרֶב
ego quòd ſcietis & : *expandentur* ventũ omnẽ in reſidui & ,cadent
יִפֹּלוּ וְהַנִּשְׁאָרִים לְכָל־רוּחַ יִפָּרֵשׂוּ וִידַעְתֶּם כִּי אֲנִי
ſumam Et : Deus Dominus dixit Sic .ſum locutus Dominus
22 יְהוָֹה דִּבַּרְתִּי׃ כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִֹה וְלָקַחְתִּי
,ejꝰ *tenerorum ramorum capite de dabo* & ,ſublimis cedri ſummitate de ego
אָנִי מִצַּמֶּרֶת הָאֶרֶז הָרָמָה וְנָתַתִּי מֵרֹאשׁ יֹנְקוֹתָיו
.elevatũ &,excelſum montem ſuper ego plantabo &,excindam tenerum
רַךְ אֶקְטֹף וְשָׁתַלְתִּי אָנִי עַל הַר־גָּבֹהַּ וְתָלוּל׃
faciet & ,ramum elevabit & ,illud plantabo Iſrael ſublimi monte In
23 בְּהַר מְרוֹם יִשְׂרָאֵל אֶשְׁתֳּלֶנּוּ וְנָשָׂא עָנָף וְעָשָׂה
, *avis omnis* ea ſub habitabunt Et .*illuſtrem cedrum in erit* & ,fructum
פֶרִי וְהָיָה לְאֶרֶז אַדִּיר וְשָׁכְנוּ תַחְתָּיו כֹּל צִפּוֹר
omnia ſcient Et *habitabunt* ejꝰ ramorum umbra in *ala omnis*
24 כָּל־כָּנָף בְּצֵל דָּלִיּוֹתָיו תִּשְׁכֹּנָּה׃ וְיָדְעוּ כָּל־
,ſublime lignum feci humiliare Dominus ego quòd , agri ligna
עֲצֵי הַשָּׂדֶה כִּי אֲנִי יְהוָֹה הִשְׁפַּלְתִּי עֵץ גָּבֹהַּ
feci florere & ,viride lignum feci ſiccare : humile lignum feci ſublimare
הִגְבַּהְתִּי עֵץ שָׁפָל הוֹבַשְׁתִּי עֵץ לָח וְהִפְרַחְתִּי
.feci & , ſum locutus Dominus Ego .aridum lignum
עֵץ יָבֵשׁ אֲנִי יְהוָֹה דִּבַּרְתִּי וְעָשִׂיתִי׃

CAP. XVIII. יח

vos vobis Quid : *dicendum ad* , me ad Domini verbum fuit Et
1 וַיְהִי דְבַר־יְהוָֹה אֵלַי לֵאמֹר׃ מַה־לָּכֶם אַתֶּם 2
Patres : dicendo , Iſrael *humo* ſuper iſtam parabolam *parabolizantes*
מֹשְׁלִים אֶת־הַמָּשָׁל הַזֶּה עַל־אַדְמַת יִשְׂרָאֵל לֵאמֹר אָבוֹת
,ego *Vivens* ? obſtupeſcent filiorum dentes & ,acerbam uvam comedent
3 יֹאכְלוּ בֹסֶר וְשִׁנֵּי הַבָּנִים תִּקְהֶינָה׃ חַי־אָנִי
parabolam *parabolizare* ultrà vobis erit ſi : Deus Dominus dixit
נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִֹה אִם־יִהְיֶה לָכֶם עוֹד מְשֹׁל הַמָּשָׁל
,patris anima Sicut .*ipſæ mihi* animæ omnes *En* .Iſrael in iſtam
4 הַזֶּה בְּיִשְׂרָאֵל׃ הֵן כָּל־הַנְּפָשׁוֹת לִי הֵנָּה כְּנֶפֶשׁ הָאָב
.morietur ipſa , *peccans* anima : *ipſæ mihi* filii anima ſic &
וּכְנֶפֶשׁ הַבֵּן לִי־הֵנָּה הַנֶּפֶשׁ הַחֹטֵאת הִיא תָמוּת׃
.juſtitiam & ,judicium fecerit & ,juſtus fuerit *cùm* vir Et
5 וְאִישׁ כִּי־יִהְיֶה צַדִּיק וְעָשָׂה מִשְׁפָּט וּצְדָקָה׃

Verſio VULG. LAT.

16 Vivo ego, dicit Dominus Deus: quoniam in loco regis, qui conſtituit eum regem, cujus fecit irritum juramentum, & ſolvit pactum, quod habebat cum eo, in medio Babylonis morietur. 17 Et non in exercitu grandi, neque in populo multo faciet contra eum Pharao prælium: in jactu aggeris, & in extructione vallorum, ut interficiat animas multas. 18 Spreverat enim juramentũ ut ſolveret fœdꝰ, & ecce dedit manum ſuam: & cùm omnia hæc fecerit, non effugiet. 19 Proptereà hæc dicit Dominus Deus; Vivo ego, quoniam juramentum quod ſprevit, & fœdus quod prævaricatus eſt, ponam in caput ejus. 20 Et expandam ſuper eum rete meum, & comprehendetur in ſagena mea: & adducam eum in Babylonem, & judicabo eum ibi, in prævaricatione quâ deſpexit me. 21 Et omnes profugi ejꝰ, cũ univerſo agmine ſuo, gladio cadent: reſidui autem in omnem ventum diſpergentur: & ſcietis quia ego Dominus locutus ſum. 22 Hæc dicit Dominus Deus; Et ſumam ego de medulla cedri ſublimis, & ponam: de vertice ramorum ejus tenerũ diſtringam, & plantabo ſuper montem excelſum & eminentem. 23 In monte ſublimi Iſrael plantabo illud, & erumpet in germen, & faciet fructum, & erit in cedrum magnam: & habitabunt ſub ea omnes volucres, & univerſum volatile ſub umbra frondium ejus nidificabit. 24 Et ſcient omnia ligna regionis, quia ego Dominus humiliavi lignum ſublime, & exaltavi lignum humile: & ſiccavi lignum viride, & frondere feci lignum aridum. Ego Dominus locutus ſum, & feci.

CAP. XVIII.

1 ET factus eſt ſermo Domini ad 2 me, dicens; Quid eſt quòd inter vos parabolam vertitis in proverbium iſtud in terra Iſrael, dicentes; Patres comederunt uvam acerbam, & dentes filiorum obſtupeſcunt? 3 Vivo ego, dicit Dominus Deus, ſi erit ultrà vobis parabola hæc in proverbium in Iſrael. 4 Ecce omnes animæ, meæ ſunt: ut anima patris, ita & anima filii mea eſt: anima, quæ peccaverit, ipſa morietur. 5 Et vir ſi fuerit juſtus, & fecerit judicium & juſtitiam,

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

16 Ζῶ ἐγὼ, λέγει κύριος, ἐὰν μὴ (τ) ἐν τόπῳ ὁ βασιλεὺς ὁ βασιλεύσας αὐτὸν, ὃς ἠτίμωσε τὴν ἀράν μου, καὶ ὃς παρέβη τὴν διαθήκην μου, μετ' αὐτοῦ ἐν μέσῳ Βαβυλῶνος τελευτήσει. 17 Καὶ οὐκ ἐν δυνάμει μεγάλῃ οὐδὲ ἐν ὄχλῳ πολλῷ ποιήσει πρὸς αὐτὸν Φαραὼ πόλεμον, ἐν χαρακοβολίᾳ καὶ ἐν οἰκοδομῇ (υ) βελοστάσεων, τοῦ ἐξᾶραι 18 ψυχάς. (φ) Καὶ ἠτίμωσεν ὁρκωμοσίαν τοῦ παραβῆναι διαθήκην. καὶ ἰδοὺ (χ) δέδωκε τὴν χεῖρα αὐτοῦ, καὶ πάντα ταῦτα ἐποίησεν αὐτῷ, μὴ σωθήσεται. 19 Διὰ τοῦτο εἰπὸν, Τάδε λέγει κύριος, Ζῶ ἐγὼ, ἐὰν μὴ (ψ) τὴν ὁρκωμοσίαν μου ἣν ἠτίμωσε, καὶ τὴν διαθήκην μου ἣν παρέβη, καὶ δώσω αὐτὴν 20 εἰς κεφαλὴν αὐτοῦ. Καὶ ἐκπετάσω ἐπ' αὐτὸν τὸ (ω) δίκτυον, καὶ ἁλώσεται ἐν τῇ 21 περιοχῇ (α) αὐτοῦ. Ἐν πάσῃ παρατάξει αὐτοῦ ἐν ῥομφαίᾳ πεσοῦνται· καὶ τοὺς καταλοίπους εἰς πάντα ἄνεμον διασπερῶ, καὶ ἐπιγνώσεσθε διότι ἐγὼ κύριος λελάληκα. (β) 22 Διότι τάδε λέγει κύριος, Καὶ λήψομαι ἐγὼ ἐκ τῶν (γ) ἐκλεκτῶν τῆς κέδρου ἐκ κορυφῆς, καρδίας (δ) αὐτῶν ἀποκνιῶ, καὶ καταφυτεύσω ἐγὼ ἐπ' ὄρος ὑψηλὸν, καὶ 23 κρεμάσω αὐτὸν Ἐν ὄρει μετεώρῳ (ε) Ἰσραήλ· καὶ καταφυτεύσω, καὶ ἐξοίσει βλαστὸν, καὶ ποιήσει καρπὸν, καὶ ἔσται εἰς κέδρον μεγάλην· καὶ ἀναπαύσεται ὑποκάτω αὐτοῦ πᾶν (ζ) ὄρνεον, καὶ πᾶν πετεινὸν ὑπὸ τὴν σκιὰν αὐτοῦ ἀναπαύσεται· (η) τὰ κλήματα 24 αὐτοῦ ἀποκατασταθήσεται. Καὶ γνώσονται πάντα τὰ ξύλα τοῦ (θ) πεδίου, διότι ἐγὼ κύριος ὁ ταπεινῶν ξύλον ὑψηλὸν, καὶ (ι) ὑψῶν ξύλον ταπεινὸν, καὶ ξηραίνων ξύλον χλωρὸν, καὶ ἀναθάλλων ξύλον ξηρόν. ἐγὼ κύριος λελάληκα, καὶ ποιήσω.

16 Vivo ego, dicit Dominus, niſi in loco, (f) ubi rex, qui regnare fecit eum, qui ſprevit maledictionem meam, & qui tranſgreſſus eſt teſtamentum meum cum eo, in medio Babylonis morietur. 17 Et non in virtute magna, neque in turba multa faciet adverſus eũ Pharao prælium, in jactu aggeris, & in ædificatione vallorum, ut auferat animas. 18 Et vilipendit juramentum tranſgrediendo teſtamentum. Et ecce (g) dedi manum ejus: & hæc omnia fecit ei: non ſalvabitur. 19 Propterea dic; Hæc dicit Dominus; Vivo ego, niſi juramentum meum, quod ſprevit, & teſtamentum meum, quod tranſgreſſus eſt, & dabo illud in caput ejus. 20 Et extendam ſuper eum (h) rete: & capietur in (i) circunſtrictione ejus. 21 In omni acie ejus in gladio cadent: & reſiduos in omnem ventum diſſeminabo: & ſcietis, quia ego Dominus loquutus ſum. 22 Quia hæc dicit Dominus; Et ſumam ego de electis (k) cedri de vertice: (l) de corde eorum avellam, & plantabo ego ſuper montem excelſum, & ſuſpendam illud 23 In monte ſublimi Iſrael. Et plantabo, & proferet germen, & faciet fructum, & erit in cedrũ magnam. Et requieſcet ſub ea omnis avis: & omne volatile ſub umbra ejus requieſcet. (m) Rami ejus reſtituentur: 24 Et ſcient omnia ligna campi; quia ego Dominus: qui humilio lignum excelſum, & exalto lignum humile: & areſacio lignum viride, & germinare facio lignum aridum. Ego Dominus loquutus ſum, & faciam.

MS. A. (τ) ἐν τῷ τόπῳ ᾧ ὁ βασιλεὺς (υ) βελοστάσεως, (φ) Ὅτι ἠτίμασεν (χ) δέδωκεν (ψ) διαθήκην μου ἣν παρέβη, καὶ τὴν ὁρκωμοσίαν μου ἣν ἠτίμωσεν, καὶ δώσω αὐτὰ εἰς κεφαλὴν (ω) δίκτυόν μου, (α) αὐτοῦ. καὶ ἄξω αὐτὸν εἰς Βαβυλῶνα, καὶ διακριθήσομαι μετ' αὐτοῦ ἐκεῖ τὴν ἀδικίαν αὐτοῦ ἣν ἠδίκησεν ἐν ἐμοί. Καὶ πάσας φυγαδείας αὐτοῦ ἐν πάσῃ τῇ παρατάξει αὐτοῦ (β) Διὰ τοῦτο εἰπὸν, Τάδε (γ) ἐπιλεκτῶν τῆς κέδρου κορυφῆς, (δ) αὐτῶν, καὶ δώσω ἀπὸ κεφαλῆς παραφυάδων αὐτῆς, καρδίας αὐτῶν ἀποκνιῶ, καὶ (ε) τοῦ Ἰσραήλ· (ζ) θηρίον, καὶ τὰ πετεινὰ (η) καὶ τὰ κλήματα (θ) ἀγροῦ, (ι) ὁ ὑψῶν

ΚΕΦ. ιη'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, 2 λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, τί ὑμῖν ἡ παραβολὴ (α) αὕτη ἐν τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, λέγοντες, Οἱ πατέρες ἔφαγον ὄμφακα, καὶ οἱ 3 ὀδόντες τῶν τέκνων ἐγομφίασαν; Ζῶ ἐγὼ, (β) λέγει κύριος, ἐὰν γένηται ἔτι λεγομένη ἡ παραβολὴ αὕτη ἐν τῷ Ἰσραήλ· 4 Ὅτι πᾶσαι αἱ ψυχαὶ ἐμαί εἰσιν, ὃν τρόπον ἡ ψυχὴ τοῦ πατρὸς, οὕτως καὶ ἡ ψυχὴ τοῦ υἱοῦ, ἐμαί εἰσιν. ἡ ψυχὴ ἡ (γ) ἁμαρτάνουσα, 5 αὕτη ἀποθανεῖται. Ὁ δὲ ἄνθρωπος ὃς ἔσται δίκαιος, ὁ ποιῶν κρίμα καὶ δικαιοσύνην,

CAP. XVIII.

1 ET factus eſt ſermo Domini ad 2 me, dicens; Fili hominis, quid vobis parabola hæc inter filios Iſrael, dicentes; Patres comederũt uvã acerbã, & dentes filiorũ (a) obſtupuerunt? 3 Vivo ego, dicit Dominus; ſi fuerit ultrà, ut dicatur parabola hæc in Iſrael: 4 Quia omnes animæ meæ ſunt: quomodò anima patris; ita & anima filii, meæ ſunt. Anima, quæ peccaverit, ipſa morietur. 5 Homo autem, qui fuerit juſtus, qui facit judicium, & juſtitiam,

MS. A. (α) αὕτη ἐπὶ τῆς γῆς ἐν τοῖς (β) λέγει ἀδωναῒ κύριος, (γ) ἁμαρτάνουσα, ἀποθανεῖται. καὶ οὐ φάγοντος τὸν ὄμφακα, αἱμωδιάσουσιν οἱ ὀδόντες αὐτοῦ. Ὁ δὲ ἄνθρωπος ἔσται δίκαιος,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 קְיָם אֲנָא אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים אִם לָא בְּאַתְרָא דְמַלְכָּא דְאַמְלִיךְ יָתֵיהּ דְבַסַר עַל מוֹמָתֵיהּ
17 וּדְאַשְׁנֵי יַת קְיָמֵיהּ עִמֵּיהּ בְּגוֹ בָבֶל יְמוּת׃ וְלָא בְמַשְׁרְיָין סַגִּיאָן וּבְעַם סַגִּי יַעֲבֵיד עִמֵּיהּ
18 פַּרְעֹה קְרָבָא בְּמִצְבַּר מְלֵיתָא וּבְמִבְנֵי כַרְקוֹם לְשֵׁיצָאָה מְדִינָן סַגִּיאָן׃ וּבְסַר עַל מוֹמֵי
19 לְאַשְׁנָאָה קְיָם וְהָא אַמְטֵי יְדֵיהּ לְפַרְעֹה וְכָל אִלֵּין עֲבַד לָא יִשְׁתֵּיזֵיב׃ בְּכֵן כִּדְנָן אֲמַר יְיָ
אֱלֹהִים קְיָם אֲנָא אִם לָא מוֹמָתִי דְבַסַר וּקְיָמִי דְשַׁנֵּי וְאֶתֵּן פּוּרְעָנוּת אוֹרְחֵיהּ בְּרֵישֵׁיהּ׃
20 וְאֶפְרוֹס עֲלוֹהִי מְצָדְתִּי וְיִתְאֲחֵד בִּסְרִינְתִּי וְאַגְלְנֵיהּ לְבָבֶל וְאֶתְפְּרַע מִנֵּיהּ תַּמָּן שִׁקְרֵיהּ
21 דְשַׁקַּר קֳדָמַי׃ וְיַת כָּל גִּבָּרוֹהִי בְּכָל מַשְׁרְיָתֵיהּ בְּחַרְבָּא יִתְקַטְלוּן וּדְיִשְׁתַּאֲרוּן לְכָל רוּחַ
22 יִתְבַּדְּרוּן וְתִדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ גְזָרִית בְּמֵימְרִי׃ כִּדְנָן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים וַאֲקָרֵב אֲנָא
מִמַּלְכוּתָא דְבֵית דָוִד דִמְתִיל כְּאַרְזָא רָמָה וַאֲקִימִנֵּיהּ מִבְּנֵי בְנוֹהִי יָנִיק וַאֲרַבֵּי וַאֲקִימִנֵּיהּ
23 בְּמֵימְרִי בְּטוּר רָם וּמְנַטַּל׃ בְּטוּר קוּדְשָׁא דְיִשְׂרָאֵל אֲקִימִנֵּיהּ וְיִכְנוֹשׁ מַשְׁרְיָין וְיַעְבֵּיד
סוֹמְכָוָן וִיהֵי לְמֶלֶךְ תַּקִּיף וְיִסְתַּמְכוּן עֲלוֹהִי כָּל צַדִּיקַיָּא וְכָל עִנְוְתָנַיָּא בִּטְלַל מַלְכוּתֵיהּ
24 יִשְׁרוּן׃ וְיִדְעוּן כָּל מַלְכֵי עַמְמַיָּא אֲרֵי אֲנָא יְיָ אַמְאֵיכִית מַלְכוּת דַהֲוָת תַּקִּיפָא וְתַקֵּיפִית
מַלְכוּת דַהֲוָת חַלָּשָׁא אַמְאֵיכִית מַלְכוּת עַמְמַיָּא דַהֲוָת תַּקִּיפָא כְּאָעָא רַטִּיב וְתַקֵּיפִית
מַלְכוּת בֵּית יִשְׂרָאֵל דַהֲוָת חַלָּשָׁא כְּאָעָא יַבִּישׁ אֲנָא יְיָ גְזָרִית בְּמֵימְרִי וַאֲקַיֵּים׃

יח

1 וַהֲוָה פִתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי לְמֵימַר׃ מָא לְכוֹן דְאַתּוּן מַתְלִין יַת מַתְלָא הָדֵין 2
3 עַל אַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל לְמֵימַר אֲבָהָתָא חָטוֹ וּבְנַיָּא לְקוֹ׃ קְיָם אֲנָא אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים אִם יְהֵי
4 לְכוֹן עוֹד מְתַל מַתְלָא הָדֵין בְּיִשְׂרָאֵל׃ הָא כָל נַפְשָׁתָא דִילִי אִנּוּן כְּנַפְשׁ אַבָּא וּכְנַפְשׁ
5 בְּרָא קֳדָמַי אִנּוּן אֱנָשׁ דְיֶחֱטֵי הוּא יְמוּת׃ וּגְבַר אֲרֵי יְהֵי זַכַּי וְיַעְבֵּיד דִין דִקְשׁוֹט וְזָכוּ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

16 Vivo ego, dicit Dominus Deus, ſi non in loco in quo conſtituit eum regem, cujus juramentum ſprevit, & violavit pactum, cum eo in medio Babylonis morietur. 17 Et non in exercitu grandi & in populo multo faciet contra eum Pharao prælium, cùm comportaverit aggerem & ædificaverit machinam ad diſperdendas provincias multas. 18 Sprevit enim juramentum ut mutaret pactum: & ecce extendit manum ſuam ad Pharaonem. Et quia omnia hæc fecit, non liberabitur. 19 Proptereà hæc dicit Dominus Deus: Vivo ego, ſi non [*ob*] juramentum meum quod ſprevit, & pactum meum quod mutavit, dabo ultionem viæ ejus in caput ejus. 20 Et extendam ſuper eum rete meum, & comprehendetur in ſagena mea: & migrare faciam eum in Babylonem, & ſumam vindictam ex eo ibi [*ob*] prævaricationem ejus, qua prævaricatus eſt coram me. 21 Et omnes fortes ejus cùm omni exercitu ejus gladio occidentur, & qui remanſerint, in omnem ventum diſpergentur: & ſcietis quia ego Dominus decrevi in verbo meo. 22 Hæc dicit Dominus Deus: Et applicabo ego [*quempiam*] de regno domus David ꝗ comparatur cedro excelſæ, & ſuſcitabo eum: de filiis filiorum ejus infantem magnificabo; & ſtatuam eum verbo meo in monte excelſo & elevato. 23 In monte ſancto Iſrael ſtatuam eum, & congregabit exercitum, & faciet auxilia, & erit in regem fortem, & innitentur ſuper eum omnes juſti, & omnes manſueti in umbra regni ejus habitabunt. 24 Et ſcient omnes reges populorum, quia ego Dominus humiliavi regnum quod erat forte, & roboravi regnum quod erat infirmum; humiliavi regnum populorum quod erat forte ſicut lignum viride; & roboravi regnum *domus* Iſrael quod erat infirmum ſicut lignum aridum. Ego Dominus decrevi in verbo meo, & confirmabo illud.

CAP. XVIII.

1 ET factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini ad me, dicens: 2 Quid vobis eſt quòd vos parabolam iſtam aſſumitis de terra Iſrael, dicentes: Patres peccaverunt, & filii percuſſi ſunt. 3 Vivo ego, dicit Dominus, ſi fuerit vobis ultrà aſſumens proverbium iſtud in Iſrael. 4 Ecce omnes animæ meæ ſunt; tam anima patris quàm anima filii coram me ſunt: homo qui peccaverit, ipſe morietur. 5 Vir autem qui fuerit juſtus & fecerit judicium verum & juſtitiam;

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

16 *ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܕܒܐܬܪܐ ܕܐܡܠܟܘܗܝ ܡܠܟܐ. ܕܫܛ ܠܡܘܡܬܝ. ܘܥܒܪ ܥܠ
ܩܝܡܝ. ܒܓܘ ܒܒܠ ܢܡܘܬ. * ܘܠܐ ܒܚܝܠܐ ܪܒܐ. ܘܠܐ ܒܥܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܢܥܒܕ ܥܡܗ 17
ܦܪܥܘܢ ܩܪܒܐ. ܐܠܐ ܒܡܫܦܟܘܬܐ ܘܒܡܟܪܡܐ. ܢܘܒܕ ܢܦܫܬܐ ܣܓܝܐܬܐ. * ܕܫܛ ܠܡܘܡܬܐ 18
ܘܥܒܪ ܥܠ ܩܝܡܐ. ܢܬܠ ܐܝܕܗ. ܘܠܐ ܢܬܦܠܛ. ܕܥܒܕ ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ 19
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܚܝ ܐܢܐ ܕܫܛ ܠܡܘܡܬܝ. ܘܥܒܪ ܥܠ ܩܝܡܝ. ܐܦܢܝܘܗܝ ܒܪܫܗ.
*ܘܐܦܪܘܣ ܡܨܝܕܬܝ ܥܠܘܗܝ. ܘܢܬܐܚܕ ܒܗ. ܘܐܥܠܝܘܗܝ ܠܒܒܠ ܠܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ. 20
ܘܐܬܕܝܢܝܘܗܝ ܬܡܢ ܥܠ ܥܘܠܐ ܕܥܘܠ ܒܝ. * ܘܟܠܗܘܢ ܓܢܒܪܘܗܝ. ܘܟܠܗܘܢ ܩܪܝܒܘܗܝ 21
ܒܚܪܒܐ ܢܦܠܘܢ. ܘܐܝܠܝܢ ܕܡܫܬܚܪܝܢ ܢܬܒܕܪܘܢ ܠܟܠ ܪܘܚ. ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ
ܡܠܠܬ. * ܘܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܐܣܒ ܐܢܐ ܡܢ ܓܒܝܐ ܕܒܪܘܬܐ ܪܡܐ. ܘܡܢ ܪܝܫܗ ܐܦܣܘܩ 22
ܠܒܗ. ܘܐܢܨܒ ܥܠ ܛܘܪܐ ܪܡܐ ܘܡܥܠܝܐ. * ܒܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܐܢܨܒܝܘܗܝ. ܘܢܦܩ 23
ܛܪܦܐ. ܘܢܥܒܕ ܦܐܪܐ. ܘܢܗܘܐ ܐܪܙܐ ܫܒܝܚܐ. ܘܢܫܪܘܢ ܒܗ. ܟܠܗ ܦܪܚܬܐ ܕܓܦܐ.
ܘܒܛܠܠܐ ܕܣܘܟܘܗܝ ܢܫܪܘܢ. * ܘܢܕܥܘܢ ܟܠܗܘܢ ܐܝܠܢܐ ܕܕܒܪܐ. ܕܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܡܟܟ 24
ܩܝܣܐ ܪܡܐ. ܘܐܪܝܡ ܩܝܣܐ ܡܟܝܟܐ. ܘܐܘܒܫ ܩܝܣܐ ܪܛܝܒܐ. ܘܐܦܪܥ ܩܝܣܐ
ܝܒܝܫܐ. ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܡܠܠܬ ܘܥܒܕܬ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܚ *

1 * ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ. ܠܡܢܐ ܡܬܡܬܠܝܢ ܐܢܬܘܢ ܡܬܠܐ 2
ܗܢܐ ܒܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܘܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܐܒܗܐ ܐܟܠܘ ܒܣܪܐ. ܘܫܢܝܐ ܕܒܢܝܐ ܩܗܝ. * ܚܝ 3
ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܐܢ ܢܗܘܐ ܬܘܒ ܕܢܡܬܠ ܡܬܠܐ ܗܢܐ ܒܐܝܣܪܝܠ. * ܡܛܠ 4
ܕܟܠܗܝܢ ܢܦܫܬܐ ܕܝܠܝ ܐܢܝܢ. ܢܦܫܐ ܕܐܒܐ. ܐܝܟ ܢܦܫܐ ܕܒܪܐ ܕܝܠܝ ܐܢܝܢ. ܢܦܫܐ ܕܚܛܝܐ.
ܗܝ ܬܡܘܬ. * ܘܓܒܪܐ ܐܢ ܢܗܘܐ ܙܕܝܩ: ܘܢܥܒܕ ܕܝܢܐ ܘܙܕܝܩܘܬܐ: 5

Per vitam meam, dicit Dominus domino- 16
rum, Loco conſervandi eum regem (quum
juramentum meum ſpreverit, & violaverit
fœdus meum) in Babylone morietur. Ne- 17
que copiis ingentibus aut equis permultis
bellum geret cum eo Pharaon; ſed inſidiis
& ſpeculis (*aggeribus*) perdet animas mul-
tas. Quia ſprevit juramentum, & fœdus ir- 18
ritum fecit; dabit manus, & non evadet; quòd
hæc omnia fecerit. His de rebus, ſic ait Do- 19
minus dominorum; Per vitam meam, quia
ſprevit juramentum meum, & irritum fecit
fœdus meum; reflectam id in caput ejus.
Expandam enim ſuper eum rete meum, eo- 20
que capietur: perducam illum in Babylonem
terram Chaldæorum, ibíque judicabo eum de
ſcelere quod contra me commiſit: Et omnes 21
nobiles ejus, omnéſque propinqui ejus gla-
dio corruent: & qui ſuperſtites fuerint, diſ-
pandentur in omnem ventum: & experiemi-
ni me Dominum locutum eſſe. Sic ait Do- 22
minus dominorum; Accipiam è ſelectiſſimis
abietibus altiſſimam, & ex hujus faſtigio ex-
cerpam meditullium ejus, & plantabo ſuper
montes excelſos atque ſublimes: In monti- 23
bus Iſraelis plantabo illud, ferétque frondes,
& producet fructus; fiétque cedrus glorioſiſſi-
ma, et habitabunt in ea omnes volucres alatæ,
& ſub umbra ramorum ejus habitabunt. Et 24
agnoſcent omnes arbores deſerti, me Domi-
num humiliare arborem elatam, & exaltare
arborem humilem; arefacere arborem viren-
tem, & facere ut germinet arbor ſicca. Ego
Dominus locutus ſum, & faciam.

CAP. XVIII.

Fuit etiam ad me ſermo Domini, dicendo; 1
Fili hominis, qua de cauſa vertitis hoc pro- 2
verbium in terra Iſraelis, & dicitis; Patres
comederunt uvas agreſtes, & dentes filiorum
obſtupeſcunt? Per vitam meam inquit Do- 3
minus dominorum, non erit ampliùs qui ver-
tat hujuſmodi proverbium in Iſrael. Nam 4
omnes animæ, meæ ſunt: tam anima patris
quàm anima filii, meæ ſunt: anima quæ pec-
caverit, ipſamet morietur. Cùm quis fuerit 5
juſtus, fecerítque judicium & juſtitiam:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

16 * حي انا يقول ادوناي الرب * الا في الموضع الذي فيه ملّكه الملك * الذي اهان لعنتي *
17 والذي تجاوز عهدي معه * في وسط بابل يموت * وليس بقوة عظيمة * ولا بجمع كثير يصنع
18 معه فرعون حربا * برمي مجانيق ولا ببني مرامي ليستاصل النفوس * واهان بالحلف ليتجاوز
19 العهد واذا اعطى يده * وكل هذه صنعها له * لا يخلص * لاجل هذا قل * هكذا يقول ادوناي
الرب * حي انا * من اجل عهدي الذي تجاوز * وحلفي الذي اهانه * وساعطيها على راسه *
20 21 * واطرح عليه شبكتي * ويهلك بزمانه * في كل قتاله بالسيف يسقطون * والمتبقين ابددهم
مع كل ريح * ويعلمون اني انا الرب تكلمت * الاصحاح التاسع *
22 * من اجل انه هكذا يقول ادوناي الرب * وانا اخذ من خيار الارز * من راس قلبهم اقطع *
23 واغرس انا على جبل عال * واعلقه في جبل شاهق لاسرائيل * واغرسه فيخرج فرعا * ويصنع
24 ثمرا * ويصير ارزا عظيما * ويستريح تحته كل وحش * وكل طاير تحت ظله يستريح * واغصانه
تستقيم * ويعلم جميع اشجار الغاب اني انا الرب الذي يواضع شجرا مرتفعا * ويرفع شجرا
متضعا * ويجفف شجرا خضراء * ويخصب الشجر اليابسة * انا الرب تكلمت واصنع *

* الفصل الثامن عشر *

1 2 * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان * لماذا لكم هذا المثل في بني اسرائيل قايلين *
3 الاباء اكلوا الحصرم * واسنان الاولاد ضرست * حي انا يقول ادوناي الرب * ان يكون هذا
4 المثل ايضا مقولا في اسرائيل * لان جميع النفوس هم لي * كما نفس الاب هكذا ونفس
5 الابن هم لي * النفس التي تخطي هي التي تموت * والانسان الذي يكون صديقا * الذي
يصنع حكما وعدلا :

Vivo ego, dicit Adonai Dominus, niſi eo- 16
dem in loco in quo rex ille conſtituit hunc
regem; iſte qui ſprevit maledictionem
meam, quique fœdus meum prætergreſſus
eſt erga illum; in medio Babelis moriatur.
Neque verò magnâ vi, neq; turbâ multâ 17
bellum geret contra eũ Pharaon, jaciendo
aggeres, neque moles fabricando ad ex-
tirpandas animas. Quippe qui ſpreverit 18
juramentũ tranſgrediendo fœdus, etiamſi
manum ſuam dederit, & hæc omnia ege-
rit cum illo, nequaquam ſalvabitur. Pro 19
pterea dic; Sic ait Adonai Dominus, Vivo
ego propter fœdus meum quod tranſgreſ-
ſus eſt, & juramentum meum quod ſpre-
vit; retundam hæc in caput ejus. Faciam 20
ſuper eum rete meum, ſuoque tempore per-
ibit. In omnibus præliis ſuis gladio ca- 21
dent: & reſiduos diſſeminabo in omnem
ventum: & agnoſcetis quòd ego Domi-
nus locutus ſim.

Textus Nonus.

Nam ita dicit Adonai Dominus; Equi- 22
dem accipiam ex optimis cedris, è vertice
cordis earum abſcindam, & plantabo ego
ſuper montem excelſum, appendamque il-
lud in monte ſublimi Iſraelis: Et cum 23
plantavero illud, proferet germen, facietque
que fructum, et fiet illud cedrus maxima,
adeoque requieſcent ſub eo omnes beſtiæ,
& omnes volucres ſub ejus umbra requi-
eſcent: Rami ejus dirigentur; & ſcient 24
omnes arbores ſylvæ me eſſe Dominũ qui
humilio arborem elatam, & elevo arbo-
rem humilem, arefacio arborem viridem,
& fertilem reddo arborem ſiccam. Ego
Dominus locutus ſum, & faciam.

CAP. XVIII.

Deinde fuit ſermo Domini ad me, di- 1
cens; O fili hominis, cur habetis hoc pro- 2
verbium inter filios Iſraelis, dicentes; Pa-
tres manducaverunt omphacem, & den-
tes filiorum obſtupuerunt? ut vivo, ait 3
Adonai Dominus, haudquaquam dictita-
bitur ampliùs proverbium iſtud in Iſra-
ele. Omnes enim animæ meæ ſunt: ut 4
anima patris, ita etiam anima filii, meæ
ſunt: anima quæ peccabit, ipſamet erit
quæ morietur. Et homo qui fuerit juſtus, 5
qui fecerit judicium & juſtitiam,

יחזקאל : יח

domus idola ad levaverit non ſuos oculos &,comederit non montes *Ad*
6 אל־ההרים לא אכל ועיניו לא נשא אל־גלולי בית
non *elongatā* mulierē ad & ,violaverit non ſui *ſocii* uxorem & : Iſrael
ישראל ואת־אשת רעהו לא טמא ואל־אשה נדה לא
raptum,reddiderit debitori ſuū pignus,*depopularit* non quempiā Et.acceſſerit
7 יקרב: ואיש לא יונה חבלתו חוב ישיב גזלה
.veſtimento operuit nudum & ,dederit eſurienti ſuū panem : rapuerit non
לא יגזל לחמו לרעב יתן ועירם יכסה־בגד:
averterit iniquitate ab : acceperit non amplius & ,dederit non uſura Cum
8 בנשך לא־יתן ותרבית לא יקח מעול ישיב
meis *ſtatutis* In .virum *ad* virum inter fecerit *veritatis* judicium :ſuā manū
9 ידו משפט אמת יעשה בין איש לאיש: בחקותי
, *ipſe* juſtus :veritatē *faciendum ad*,cuſtodierit mea judicia &,ambulaverit
יהלך ומשפטי שמר לעשות אמת צדיק הוא
,*effractorem* filium genuerit Et .Deus Dominus dixit , vivet vivendo
10 חיה יחיה נאם אדני יהוה: והוליד בן־פריץ
omnia ipſe Et .iſtis ex *uno ab fratrem* fecerit & :ſanguinē effundentē
11 שפך דם ועשה אח מאחד מאלה: והוא את־כל־
uxorem & ,comederit montes *ad* etiam ſed : fecerit non hæc
אלה לא עשה כי גם אל־ההרים אכל ואת־אשת
pignus ,rapuerit *rapinas* ,oppreſſerit pauperē & ,Egenū .*profanaverit ſui ſocii*
12 רעהו טמא: עני ואביון הונה גזלות גזל חבל
.fecerit abominationē,ſuos oculos levaverit idola ad & :reddiderit non
לא ישיב ואל־הגלולים נשא עיניו תועבה עשה:
Omnes .vivet Non ? vivet *&*,acceperit *augmentū* &,dederit uſura Cum
13 בנשך נתן ותרבית לקח וחי לא יחיה את כל־
.erit ipſo in ejꝰ *Sanguines* .morietur moriendo,fecit iſtas abominationes
התועבות האלה עשה מות יומת דמיו בו יהיה:
,fecit quæ ſui patris peccata omnia viderit & ,filium genuerit *ecce* Et
14 והנה הוליד בן וירא את־כל־חטאת אביו אשר עשה
,comederit non montes Super *.illa ſicut* fecerit non & ,timuerit &
15 ויראה ולא יעשה כהן: על־ההרים לא אכל
ſui *ſocii* uxorem ;Iſrael domus idola ad levaverit nō ſuos oculos&
ועיניו לא נשא אל־גלולי בית ישראל את־אשת רעהו
,*pignori* acceperit non pignus ,oppreſſerit non quenquā Et .*profanaverit* non
16 לא טמא: ואיש לא הונה חבל לא חבל
operuerit nudum &,dederit eſurienti ſuum panem ;rapuerit non *raptum* &
וגזלה לא גזל לחמו לרעב נתן ועירם כסה־
non *augmentum* & ,uſuram ; ſuam manum *converterit afflicto Ab* .veſtimento
17 בגד: מעני השיב ידו נשך ותרבית לא
non ipſe : ambulaverit meis *ſtatutis* in ,fecerit mea judicia ,acceperit
לקח משפטי עשה בחקותי הלך הוא לא
oppreſſit quia ,ejus Pater .vivet vivendo ,ſui patris *iniquitate in* morietur
18 ימות בעון אביו חיה יחיה: אביו כי־עשק
medio in fecit bonum non quod & ,*fratris* rapinam rapuit ,oppreſſionē
עשק גזל גזל אח ואשר לא־טוב עשה בתוך
non Cur : dixiſtis Et .*ſua iniquitate in* eſt mortuus ecce & :ſui populi
19 עמיו והנה־מת בעונו: ואמרתם מדע לא־
.fecit juſtitiam & judicium filius Et ? patris *iniquitate in* filius portabit
נשא הבן בעון האב והבן משפט וצדקה עשה
.vivet vivendo : ea fecit & ,cuſtodivit mea *ſtatuta* Omnia
את כל־חקותי שמר ויעשה אתם חיה יחיה:
,patris *iniquitate in* portabit non Filius .morietur ipſa *peccans* Anima
20 הנפש החטאת היא תמות בן לא־ישא בעון האב
, erit eum ſuper juſti Juſtitia .filii *iniquitate in* portabit non pater &
ואב לא ישא בעון הבן צדקת הצדיק עליו תהיה
fuerit averſus *cùm* impius At .erit eum ſuper impii impietas &
21 ורשעת רשע עליו תהיה: והרשע כי ישוב
,mea *ſtatuta* omnia cuſtodierit & , fecit quæ ſuis peccatis omnibus ab
מכל־חטאתו אשר עשה ושמר את־כל־חקותי
.morietur non , vivet vivendo ; juſtitiam & ,judicium fecerit &
ועשה משפט וצדקה חיה יחיה לא ימות:

Verſio VULG. LAT.

6 In montibus non comederit, &
oculos ſuos non levaverit ad ido-
la domûs Iſrael : & uxorem pro-
ximi ſui non violaverit, & ad
mulierem menſtruatam non ac-
7 ceſſerit : Et hominē non contri-
ſtaverit : pignus debitori reddi-
derit, per vim nihil rapuerit :
panem ſuum eſurienti dederit,
& nudum operuerit veſtimento :
8 Ad uſuram non commodaverit,
& amplius non acceperit :ab ini-
quitate averterit manum ſuam,
& judicium verum fecerit inter
9 virum & virum : In præceptis
meis ambulaverit,& judicia mea
cuſtodierit ut faciat veritatē : hic
juſtus eſt, vitâ vivet, ait Dominꝰ
10 Deus. Quòd ſi genuerit filium
latronem effundentem ſanguinē,
11 & fecerit unum de iſtis : Et hæc
quidem omnia non facientē, ſed
in montibus comedentem, & u-
xorem proximi ſui polluentem :
12 Egenum & pauperem contriſtan-
tem, rapientem rapinas, pignus
non reddentem, & ad idola le-
vantem oculos ſuos, abominati-
13 onem facientē: Ad uſuram dan-
tem,& ampliùs accipientē:num-
quid vivet?non vivet : cùm uni-
verſa hæc deteſtanda fecerit,
morte morietur, ſanguis ejus in
14 ipſo erit. Quòd ſi genuerit filiū,
qui videns omnia peccata patris
ſui quæ fecit, timuerit,& non fe-
15 cerit ſimile eis : Super montes
non comederit, & oculos ſuos
non levaverit ad idola domûs Iſ-
rael, & uxorem proximi ſui non
16 violaverit : Et virum non con-
triſtaverit, pignus non retinue-
rit, & rapinam non rapuerit,pa-
nem ſuum eſurienti dederit, &
17 nudum operuerit veſtimento: A
pauperis injuria averterit manū
ſuam, uſuram & ſuperabundan-
tiam non acceperit, judicia mea
fecerit, in præceptis meis ambu-
laverit: hic non morietur in ini-
quitate patris ſui, ſed vitâ vivet.
18 Pater ejus quia calumniatus eſt,et
vim fecit fratri,& malum opera-
tus eſt in medio populi ſui, ecce
19 mortuus eſt in iniquitate ſua. Et
dicitis ; Quarè non portavit filiꝰ
iniquitatē patris?Videlicèt, quia
filius judicium & juſtitiam ope-
ratus eſt,omnia præcepta mea cu-
ſtodivit, & fecit illa, vivet vitâ.
20 Anima,quæ peccaverit, ipſa mo-
rietur:filius non portabit iniqui-
tatem patris,& pater non porta-
bit iniquitatem filii: juſtitia juſti
ſuper eum erit, & impietas impii
21 erit ſuper eum. Si autem impius
egerit pœnitentiam ab omnibus
peccatis ſuis,quæ operatus eſt,&
cuſtodierit omnia præcepta mea,
& fecerit judicium,& juſtitiam :
vitâ vivet, & non morietur.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

6 Ἐπὶ τῶν ὀρέων οὐ φάγεται, καὶ τοὺς ὀφθαλμοὺς
αὐτοῦ οὐ μὴ ἐπάρῃ (δ) πρὸς τὰ ἐνθυμήματα
οἴκου Ἰσραήλ, καὶ τὴν γυναῖκα τοῦ πλησίον
αὐτοῦ οὐ μὴ μιάνῃ, καὶ πρὸς γυναῖκα ἐν ἀφέ-
7 δρῳ οὖσαν οὐ προσεγγιεῖ, Καὶ ἄνθρωπον οὐ μὴ
καταδυναστεύσῃ, ἐνεχυρασμὸν ὀφείλοντος
ἀποδώσει, καὶ ἅρπαγμα οὐχ ἁρπᾶται, τὸν
ἄρτον αὐτοῦ τῷ πεινῶντι δώσει, καὶ γυμνὸν
8 (ε) περιβαλεῖ, Καὶ τὸ ἀργύριον αὐτοῦ ἐπὶ τό-
κῳ οὐ δώσει, καὶ πλεονασμὸν οὐ λήψεται, καὶ ἐξ
ἀδικίας ἀποστρέψει τὴν χεῖρα αὐτοῦ, κρίμα
δίκαιον ποιήσει ἀναμέσον ἀνδρὸς καὶ ἀνα-
9 μέσον τοῦ πλησίον αὐτοῦ, Καὶ τοῖς προστάγ-
μασί μου πεπόρευται, καὶ τὰ δικαιώματά μου
πεφύλακται, τοῦ ποιῆσαι αὐτά· (ζ) δίκαιος
10 οὗτός ἐστι, ζωῇ ζήσεται, (η) λέγει κύριος. Καὶ
ἐὰν γεννήσῃ υἱὸν λοιμὸν, ἐκχέοντα αἷμα καὶ
11 ποιοῦντα ἁμαρτήματα, Ἐν τῇ ὁδῷ τοῦ πα-
τρὸς αὐτοῦ τοῦ δικαίου οὐκ ἐπορεύθη, ἀλλὰ καὶ
ἐπὶ τῶν ὀρέων ἔφαγε, καὶ τὴν γυναῖκα τοῦ πλησί-
12 ον αὐτοῦ ἐμίανε, Καὶ πτωχὸν καὶ πένητα κατ-
εδυνάστευσε, καὶ ἅρπαγμα ἥρπασε, καὶ ἐνεχυ-
ρασμὸν οὐκ ἀπέδωκε, καὶ εἰς τὰ εἴδωλα ἔθε-
το τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ, ἀνομίαν πεποίηκε,
13 Μετὰ τόκου ἔδωκε, καὶ πλεονασμὸν ἔλαβεν·
οὗτος ζωῇ οὐ ζήσεται, πάσας τὰς ἀνομίας ταύ-
τας ἐποίησε, θανάτῳ (θ) θανατωθήσεται·
14 τὸ αἷμα αὐτοῦ ἐπ' αὐτὸν ἔσται. Ἐὰν δὲ (ι) γεν-
νήσῃ υἱὸν, καὶ ἴδῃ πάσας τὰς ἁμαρτίας τοῦ πα-
τρὸς αὐτοῦ ἃς ἐποίησε, καὶ φοβηθῇ, καὶ μὴ ποι-
15 ήσῃ κατ' αὐτὰς, Ἐπὶ τῶν ὀρέων (κ) οὐ βέ-
βρωκε, καὶ τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ οὐκ ἔθετο
εἰς τὰ ἐνθυμήματα οἴκου Ἰσραήλ, καὶ τὴν γυ-
16 ναῖκα τοῦ πλησίον αὐτοῦ οὐκ ἐμίανε, Καὶ ἄν-
θρωπον οὐ κατεδυνάστευσε, καὶ ἐνεχυρασμὸν
οὐκ ἐνεχύρασε, καὶ ἅρπαγμα οὐχ ἥρπασε, τὸν
ἄρτον αὐτοῦ τῷ πεινῶντι ἔδωκε, καὶ γυμνὸν
17 περιέβαλεν, Καὶ ἀπὸ ἀδικίας ἀπέστρεψε τὴν
χεῖρα αὐτοῦ, τόκον οὐδὲ πλεονασμὸν οὐκ ἔλα-
βε, δικαιοσύνην ἐποίησε, καὶ ἐν τοῖς προστάγ-
μασί μου ἐπορεύθη· οὐ (λ) τελευτήσῃ ἐν ἀδι-
18 κίαις πατρὸς αὐτοῦ, ζωῇ ζήσεται. Ὁ δὲ πατὴρ
αὐτοῦ (μ) ἐὰν θλίψει θλίψῃ καὶ ἁρπάσῃ ἅρ-
παγμα, ἐναντία ἐποίησεν ἐν μέσῳ τοῦ λαοῦ
19 μου, καὶ ἀποθανεῖται ἐν τῇ ἀδικίᾳ αὐτοῦ. Καὶ
ἐρεῖτε, (ν) Τί ὅτι οὐκ ἔλαβεν τὴν ἀδικίαν ὁ υἱ-
ὸς τοῦ πατρός; ὅτι ὁ υἱὸς δικαιοσύνην καὶ ἔ-
λεος (ξ) πεποίηκε, πάντα τὰ νόμιμά μου
συνετήρησε, καὶ ἐποίησεν αὐτά, ζωῇ ζήσεται.
20 Ἡ δὲ ψυχὴ ἡ ἁμαρτάνουσα, (ο) ἀποθανεῖται. ὁ
δὲ υἱὸς οὐ λήψεται τὴν ἀδικίαν τοῦ (π) πατρὸς,
οὐδὲ ὁ πατὴρ λήψεται τὴν ἀδικίαν τοῦ (ρ) υἱοῦ·
δικαιοσύνη δικαίῳ ἐπ' αὐτὸν ἔσται, καὶ ἀνο-
21 μία (σ) ἀνόμῳ ἐπ' αὐτὸν ἔσται. (τ) Καὶ ὁ ἄ-
νομος ἐὰν ἀποστρέψῃ ἐκ πασῶν τῶν ἀνομιῶν
αὐτοῦ ὧν ἐποίησε, καὶ (υ) φυλάξηται πάσας τὰς
ἐντολάς μου, καὶ ποιήσῃ (φ) δικαιοσύνην καὶ ἔλεος, ζωῇ ζήσεται, καὶ οὐ μὴ ἀποθάνῃ.

MS. A. (δ) ἐπὶ τὰ (ε) περιβαλεῖ ἱμάτιον, Καὶ (ζ) δίκαιός ἐστιν, (η) λέγει ἀδωναῒ κύριος. Ἐὰν δὲ γεννήσῃς υἱὸν (θ) ἀποθανεῖται· (ι) γεννήσῃς (κ) οὐκ ἔφαγεν, καὶ τοὺς (λ) τελευτήσει (μ) ἐν θλίψῃ θλίψῃ καὶ ἁρπάσῃ (ν) Ὅτι οὐκ ἔλαβεν ἀδικίαν υἱὸς πατρὸς αὐτοῦ; ὅτι ὁ υἱὸς (ξ) ἐποίησεν, (ο) αὐτὴ ἀποθανεῖται. υἱὸς οὐ (π) πατρὸς αὐτοῦ, (ρ) υἱοῦ αὐτοῦ· δικαιοσύνη δικαίου ἐπ' (σ) ἀνόμου (τ) Ἐὰν δὲ ἀποστραφῇ ἄνομος ἀπὸ πασῶν τῶν (υ) φυλάξῃ (φ) τὰ δικαιώματά μου, ζωῇ ζήσεται,

*Super montes non comederit, & 6
oculos ſuos non levaverit ad co-
gitationes domûs Iſrael, & uxo-
rē proximi ſui non contaminave-
rit, & ad mulierem fluentē ſan-
guine non acceſſerit, Et hominem 7
per potentiā non oppreſſerit, pignꝰ
debitori reddiderit, & rapinā nō
rapuerit, panē ſuū eſurienti dede-
rit, et nudū (b) operuerit, Et pecu- 8
niā ſuā ad uſuram non dederit,
& amplius non acceperit, & ab
iniquitate averterit manum ſuā,
juſtū judiciū fecerit inter virū,
& inter proximū ejꝰ, Et præce- 9
ptis meis ambulaverit, & juſtifi-
cationes meas cuſtodierit, ut faci-
at ea ; hic juſtus eſt: vitâ vivet,
dicit Dominus. Quòd ſi genuerit 10
filiū peſtilentē, effundentem ſan-
guinē, & facientem peccata, (In 11
via patris ſui juſti non ambula-
vit, ſed & ſuper montes comê-
dit, & uxorē proximi ſui polluit,
Et egenū & pauperē oppreſſit per 12
potentiam, & rapinam rapuit, &
pignꝰ non reddidit, & ad idola
poſuit oculos ſuos, iniquitatē fe-
cit, Cū uſura dedit, & ampliꝰ ac- 13
cepit ;) hic vitâ nō vivet: omnes
has iniquitates fecit: morte mor-
tificabitur: ſanguis ejꝰ ſuper ipſū
erit. Si autē genuerit filiū, & vi- 14
derit omnia peccata patris ſui,
quæ fecit, & timuerit, & non fe-
cerit ſecundū ea, (Super montes 15
non manducavit, & oculos ſuos
non poſuit ad cogitationes domꝰ
Iſrael, & uxorē proximi ſui non
violavit, Et hominē nō oppreſſit, 16
& pignus non retinuit, & rapinā
nō rapuit, panē ſuū eſurienti de-
dit, & nudū operuit, Et ab inju- 17
ſtitia averſit manū ſuā, uſuram,
& ſuperabundantiā non accepit,
juſtitiā fecit, & in præceptis meis
ambulavit ;) non morietur in ini-
quitatibus patris ſui: vitâ vivet.
Pater autē ejꝰ, ſi tribulatione tri- 18
bulaverit, & rapuerit rapinam ;
contraria fecit in medio populi
mei ; & morietur in ſua iniquita-
te. Et dicetis ; Quid, quòd non ac- 19
cepit iniquitatem filius (c) patris?
Quoniā filiꝰ juſtitiā & miſeri-
cordiā fecit, omnia legitima mea
conſervavit, & fecit ea: vitâ vi-
vet. Anima autē peccans morie- 20
tur: Filiꝰ autē nō accipiet iniqui-
tatē patris: neq; pater accipiet in-
iquitatē filii. Juſtitia (d) juſto ſu-
per ipſū erit: & iniquitas iniquo
ſuper ipſū erit. Et iniquꝰ ſi averte- 21
rit ſe ab omnibus iniquitatibꝰ ſu-
is, quas fecit, & cuſtodierit o-
mnia præcepta mea, & fecerit
juſtitiam, & miſericordiam: vi-
tâ vivet, & non morietur.*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

6 בטוריא לא פלח לטעותא ועינוהי לא זקף לפולחן טעות בית ישראל וית אתת
7 חבריה לא סאיב ולות אתא מסאבא לא על: ואנש לא אוני משכון דחובתא אתיב
8 גזלא לא גזל מלחמיה לכפנא יהב וערטלאה כסי מכסותיה: בחבוליא לא יהב
9 ורביתא לא נסיב משקרא אתיב ידיה דין דקשוט עביד בין גבר לגבר: בקימי הליך
10 ודיני נטר למעבד קשוט צדיקא הוא מחא יחי אמר יי אלהים: ואוליד בר רשיעא
11 אשיד דם ויעביד לאחוהי מחדא מאלין: והוא ית כל אלין לא עבד אלהן בטוריא
12 פלח לטעותא וית אתת חבריה סאב: מסכן וחשיך אוני גזלא גזל משכונא לא אתיב
13 ולפולחן טעותא זקף עינוהי תועבא עבד: בחבוליא יהב ורביתא נסיב האתקים לא
14 יתקים ית כל תועבתא האלין עבד ממת ימות חובת קטוליה ביה תהי: והא אוליד
15 בר וחזא ית כל חובי אבוהי דעבד וחזא ולא עבד כותהון: על טוריא לא פלח
16 לטעותא ועינוהי לא זקף לפולחן טעות בית ישראל וית אתת חבריה לא סאב: ואנש
לא אוני משכונא לא נסיב וגזלא לא גזל מלחמיה לכפנא יהב וערטלאה כסי
17 מכסותיה: ממסכנא לא אתיב ידיה חבוליא ורביתא לא נסיב דיני עביד בקימי הליך
18 הוא לא ימות בחובי אבוהי מחא יחי: אבוהי ארי עשק עשקא גזל גזלא לחד מאחוהי
19 ודלא תקין עבד בגו עמיה והא מית בחוביה: ותימרון מא דין לא לקי ברא בחובי
20 אבא וברא דין וקשוט וזכו עבד ית כל קימי נטר ועבד יתהון מחא יחי: אנש דיחוב
הוא ימות ברא לא לקי בחובי אבא ואבא לא לקי בחובי ברא זכות זכאה ביה יתקים
21 וחובת חיבא עלוהי תהי: ורשיעא ארי יתוב מכל חובוהי דעבד ויטר ית כל קימי
ויעביד דין דקשוט וזכו מחא יחי לא ימות:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

In montibus non ſervierit idolis,& oculos ſuos non ſuſtulerit ad cultum ido- 6
lorum domus Iſrael, & uxorem proximi ſui non polluerit,& ad mulierem im-
mundam non fuerit ingreſſus. Et hominē non oppreſſerit, pignus debiti reddi- 7
derit, rapinam non rapuerit, de pane ſuo eſurienti dederit, & nudum coope-
ruit veſtimento ſuo. Fœnori non dederit, & uſuram non acceperit; à falſita- 8
te averterit manum ſuam, judicium verum fecerit inter virum & virum. Et in 9
pactis meis ambulaverit, & judicia mea ſervaverit ut faceret veritatem; juſtus
eſt, vita vivet, dicit Dominus Deus. Et ſi genuerit filium impium effunden- 10
tem ſanguinem,& fecerit fratri ſuo unum ex his. Et ipſe omnia hæc non fece- 11
rit, ſed in montibus ſerviverit idolis & uxorem proximi ſui polluerit. Ege- 12
num & pauperem oppreſſerit, rapinam rapuerit, pignus non reddiderit,& ad
cultum idolorum levarit oculos ſuos, abominationem fecerit. Fœnori dede- 13
rit, & uſuram acceperit, num vivet? non vivet: univerſas has abominationes
fecit, morte morietur, reatus mortis ejus in ipſo erit. Et ſi genuerit filium, & 14
viderit omnia peccata patris ſui quæ fecit, & videns non fecerit ſimilia. In 15
montibus non ſervierit idolis, & oculos ſuos non ſuſtulerit ad cultum idolo-
rum *domus* Iſrael, & uxorem proximi ſui non polluerit. Et hominem non op- 16
preſſerit, pignus non *acceperit*, & rapinam non rapuerit; de pane ſuo eſuri-
enti dederit, et nudum operuerit veſtimento ſuo. A paupere averterit manum 17
ſuam, fœnus & uſuram non acceperit, judicia mea fecerit, in pactis meis am-
bulaverit : ipſe non morietur in peccatis patris ſui, ſed vivens vivet. Pater 18
ejus quia calumniam exercuit, & rapinam rapuit ab uno de fratribus ſuis, &
quod non eſt rectum in medio populi ſui fecit, & ecce mortuus eſt in pecca-
to ſuo. Et dicetis : Quare non punitur filius in peccatis patris ? filius enim 19
judicium *& veritatem* & juſtitiam fecit, omnia pacta mea ſervavit & fecit
ea : vivens vivet. Homo qui peccaverit, ipſe morietur. Filius non punietur 20
in peccatis patris, nec pater punietur in peccatis filii. Juſtitia juſti in ipſo
permanebit, & peccatum impii ſuper eum erit. Impius autem cùm conver- 21
ſus fuerit ab omnibus peccatis ſuis quæ fecit, & cuſtodierit omnia pacta mea,
& fecerit judicium verum & juſtitiam; vivens vivet, non morietur.

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܘܥܠ ܛܘܪܐ ܠܐ ܐܟܠ : ܘܠܐ ܐܪܝܡ ܥܝܢܘܗܝ ܠܦܬܟܪܐ ܘܠܕܚܠܬܐ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ : 6
ܘܠܐܢܬܬܐ ܕܚܒܪܗ ܠܐ ܛܢܦ : ܘܠܐܢܬܬܐ ܒܕܘܬܗ̇ ܠܐ ܐܬܩܪܒ : * ܘܠܐܢܫ ܠܐ ܛܠܡ : ܘܠܐܢܫ ܠܐ 7
ܗܪ : ܘܦܢܝ ܡܫܟܢܐ ܕܢܣܒ : ܘܝܗܒ ܠܚܡܗ ܠܟܦܢܐ : ܘܟܣܝ ܥܪܛܠܝܐ ܒܠܒܘܫܐ :
* ܘܒܪܒܝܬܐ ܠܐ ܐܘܙܦ : ܘܬܪܒܝܬܐ ܠܐ ܢܣܒ : ܘܡܢ ܥܘܠܐ ܐܗܦܟ ܐܝܕܗ : ܘܕܝܢܐ ܕܩܘܫܬܐ ܥܒܕ 8
ܒܝܬ ܓܒܪܐ ܠܚܒܪܗ : * ܘܒܦܘܩܕܢܝ ܗܠܟ : ܘܕܝܢܝ ܢܛܪ : ܘܥܒܕ ܩܘܫܬܐ . ܟܠ ܕܗܟܢܐ ܥܒܕ 9
ܙܕܝܩ ܗܘ . ܘܡܚܐ ܢܚܐ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ . * ܘܐܢ ܢܘܠܕ ܒܪܐ ܥܘܠܐ ܐܫܘܕ ܕܡܐ . ܘܢܥܒܕ ܚܕܐ 10
ܡܢ ܗܠܝܢ . * ܘܢܐܟܘܠ ܥܠ ܛܘܪܐ : ܘܢܛܢܦ ܐܢܬܬܐ ܕܚܒܪܗ : * ܘܢܛܠܘܡ ܠܡܣܟܢܐ 11 12
ܘܠܒܝܫܐ . ܘܢܛܠܘܡ ܠܚܒܪܗ : ܘܠܐ ܢܗܦܟ ܡܫܟܢܐ ܠܡܪܘܗܝ . ܘܠܦܬܟܪܐ ܢܪܝܡ
ܥܝܢܘܗܝ . ܘܢܥܒܕ ܛܢܦܘܬܐ : * ܘܒܪܒܝܬܐ ܢܘܙܦ : ܘܬܪܒܝܬܐ ܢܣܒ . ܕܢܚܐ ܚܝܐ ܠܐ ܢܚܐ . 13
ܡܛܠ ܕܥܒܕ ܟܠܗܝܢ ܣܢܝܬܐ ܗܠܝܢ . ܡܡܬ ܢܡܘܬ ܘܕܡܗ ܒܪܫܗ ܢܗܘܐ . * ܘܐܢ 14
ܢܘܠܕ ܒܪܐ : ܘܢܚܙܐ ܟܠܗܘܢ ܚܛܗܐ ܕܥܒܕ ܐܒܘܗܝ : ܘܠܐ ܢܥܒܕ ܐܟܘܬܗܘܢ : * ܘܥܠ ܛܘܪܐ 15
ܠܐ ܢܐܟܘܠ : ܘܠܐ ܢܪܝܡ ܥܝܢܘܗܝ ܠܦܬܟܪܐ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ : ܘܠܐܢܬܬܐ ܕܚܒܪܗ ܠܐ ܢܛܢܦ :
* ܘܠܐܢܫ ܠܐ ܢܛܠܘܡ : ܘܡܫܟܢܐ ܠܐܢܫ ܠܐ ܢܣܒ . ܘܚܛܘܦܝܐ ܠܐ ܢܚܛܘܦ : ܘܠܚܡܗ ܢܬܠ 16
ܠܟܦܢܐ . ܘܥܪܛܠܝܐ ܢܟܣܐ : * ܘܡܢ ܡܣܟܢܐ ܠܐ ܢܗܦܘܟ ܐܝܕܗ : ܘܪܒܝܬܐ ܠܐ ܢܣܒ : 17
ܘܕܝܢܝ ܢܥܒܕ : ܘܒܦܘܩܕܢܝ ܢܗܠܟ . ܠܐ ܢܡܘܬ ܒܚܘܒܐ ܕܐܒܘܗܝ . ܐܠܐ ܡܚܐ ܢܚܐ .
* ܐܒܘܗܝ ܕܝܢ ܡܛܠ ܕܛܠܡ ܛܠܘܡܝܐ . ܘܛܥܐ ܠܐܚܘܗܝ . ܘܡܕܡ ܕܫܦܝܪ ܠܐ ܥܒܕ 18
ܒܥܡܗ . ܢܡܘܬ ܒܚܛܗܘܗܝ . * ܘܐܢ ܐܡܪܝܢ : ܡܛܠ ܡܢܐ ܠܐ ܡܬܦܪܥ ܒܪܐ ܚܛܗܐ ܕܐܒܘܗܝ . 19
ܐܡܪ ܠܗܘܢ . ܡܛܠ ܕܥܒܕ ܒܪܐ ܕܝܢܐ ܘܙܕܝܩܘܬܐ . ܘܢܛܪ ܟܠܗܘܢ ܦܘܩܕܢܝ . ܡܚܐ
ܢܚܐ . * ܢܦܫܐ ܕܚܛܝܐ ܗܝ ܬܡܘܬ . ܠܐ ܡܬܦܪܥ ܒܪܐ ܚܛܗܐ ܕܐܒܘܗܝ . ܘܠܐ ܐܒܐ ܡܬܦܪܥ 20
ܚܛܗܐ ܕܒܪܗ . ܙܕܝܩܘܬܐ ܕܙܕܝܩܐ ܥܠܘܗܝ ܬܗܘܐ . ܘܥܘܠܗ ܕܚܛܝܐ ܥܠܘܗܝ ܬܗܘܐ .
* ܥܘܠܐ ܕܝܢ ܐܢ ܢܬܦܢܐ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܚܛܗܘܗܝ ܕܥܒܕ : ܘܢܛܪ ܦܘܩܕܢܝ . ܘܢܥܒܕ 21
ܕܝܢܐ ܘܙܕܝܩܘܬܐ . ܡܚܐ ܢܚܐ . ܘܠܐ ܢܡܘܬ .

6 Super montes non comederit, neque ſuſtulerit oculos ſuos ad ſimulacra & deos Iſraelitarum: uxorem ſocii ſui non polluerit, & ad mulierem in ſuis menſtruis *exiſtentem* non acceſſerit: 7 Neminem oppreſſerit, nemini damnum intulerit, reſtituerit pignus quod accepit, dederit panem ſuum eſurienti, & nudum veſte operuerit: 8 Ad uſuram nihil mutuò dederit, & ex conventione nihil commodaverit, ſed ab iniquitate retraxerit manum ſuam, & judicium verum exercuerit inter virum & ſocium ejus: 9 In præceptis meis ambulaverit, judicia mea cuſtodierit, & veritatem fecerit: quiſquis ita fecerit, juſtus eſt, et omninò vivet, dicit Dominus dominorum. 10 Quòd ſi is filium genuerit ſceleratum, effuſorem ſanguinis, qui unum aliquod ex his commiſerit: 11 Super montes comederit, polluerit uxorem ſocii ſui, 12 Pauperem & egenum oppreſſerit, ſocium ſuum fraudaverit, pign⁹ dominis ſuis minimè reſtituerit, ad idola ſuſtulerit oculos ſuos, & fecerit abominationem, 13 Cum uſura mutuum dederit, & ex conventione acceperit; nunquid viveret? nequaquam vivet, quum hæc omnia mala fecerit, ſed omnino morietur, & ſanguis ejus in ipſum recidet. 14 Quòd ſi filiũ genuerit, qui *licèt* videat omnia peccata quæ facit pater ſuus, tamen non faciat ſicut illa: 15 Super montes non comedat, nec attollat oculos ſuos ad idola Iſraelitarũ, uxorem ſocii ſui non polluat: 16 Neminẽ opprimat, pignus à nemine tollat, fraudẽ non committat, panẽ ſuum det eſurienti, & nudũ veſtiat: 17 A paupere manũ ſuam non retrahat, uſurã non accipiat, judicia mea faciat, & in præceptis meis ambulet; is nequaquam morietur propter iniquitatẽ patris ſui, ſed omninò vivet: 18 Pater verò ipſius, qui oppreſſione oppreſſit, fraudem commiſit in fratrem ſuum, & quod honeſtum erat non fecit inter populum ſuum; morietur propter peccata ſua. 19 Quòd ſi dicant; Quonam pacto non rependerentur filio peccata patris ejus? Dic illis, Quia fecit filius judicium & juſtitiam, & ſervavit omnia præcepta mea, omninò vivet. 20 Anima quæ peccaverit, ipſamet morietur: non rependentur filio peccata patris ſui, neque patri rependentur peccata filii ſui: juſtitia juſti in ipſum recidet, & ſcelus peccatoris in ipſum recidet. 21 Improbus autem ſi convertatur ab omnibus peccatis ſuis quæ fecit, cuſtodiat mandata mea, & faciat judicium atque juſtitiam; omninò vivet, & non morietur:

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

6 * لا يأكل على الجبال * ولا يرفع عينيه الى فكرات بيت اسرائيل * ولا ينجس امراة قريبه * ولا
7 يقترب من امراة طامث * ولا يقوي على الانسان * ويرد الرهن لصاحبه * ويكسوا العريان
8 ثوبا * ولا يعطي فضته بالربا * ولا ياخذ تضعيفا * ويرد يده عن الظلم * ويصنع حكما عدلا
9 بين الرجل وبين قريبه * ويسير باوامري * ويحفظ حقوقي ليصنعها * هذا هو الصديق * يحيا
10 حياة يقول ادوناي الرب * وان اولد ابنا مفسدا مهرق دم * ويصنع الخطايا * ولم يسلك في
11 12 طريق ابيه الصديق * لكن اكل على الجبال * ونجس امراة قريبه * ويقوي على الفقير
13 والمسكين * واختطف اختطافا * ولم يرد الرهن * ووضع عينيه الى الاصنام * وصنع الاثم * واعطي
بالربا * واخذ التضعيف * هذا يحيي حياة بجميع هذه الاثام التي صنعها * فبالموت يموت * ودمه عليه *
14 15 * وان اولد ابنا * وراى جميع خطاياه التي صنعها * فخاف ولم يصنع كمثلها * ولم ياكل على
16 الجبال * ولا وضع عينيه لفكرات بيت اسرائيل * ولا نجس امراة قريبه * ولا تقوي على انسان * ولا
17 ارتهن رهنا * ولا اختطف اختطافا * واعطي خبزه للجايع * وكسي العريان ثوبا * ورد يده عن
الظلم * ولا ياخذ ربا ولا تضعيفا * وصنع العدل * وسلك في اوامري * لا يموت بمظالم ابيه * بل يحيي
18 حياة * واما ابوه ان ضيق ضيقة * واختطف اختطافا * وصنع العناد في وسط شعبي * فيموت بخطيته *
19 * ويقولون * لماذا ان الابن لم ياخذ ظلم الاب * لان الابن صنع العدل والرحمة * وحفظ جميع سنني
20 وصنعها * يحيي حياة * والنفس التي تخطي هي التي تموت * والابن لا ياخذ ظلم ابيه * ولا الاب لا
21 ياخذ ظلم ابنه * عدل الصديق عليه يكون * واثم الاثيم عليه يكون * والاثيم اذا هو رجع من
جميع اثامه التي صنعها * وحفظ جميع وصاياي * وصنع العدل والرحمة * يحيي حياة ولا يموت *

6 Non comederit ſuper montes, non extulerit oculos ſuos ad commenta domûs Iſraelis, non polluerit uxorem proximi ſui, neque acceſſerit ad mulierem immundam, 7 Nemini vim intulerit, pignus domino ſuo reddiderit, nudum veſte induerit, 8 Non dederit pecuniam ſuam ad uſuram, neque duplum exegerit, manum ſuam ab oppreſſione repreſſerit, judicium æquum inter virum & proximum ejus decreverit; 9 Denique in mandatis meis ambulaverit, et ſtatuta mea cuſtodierit exercendo illa: is juſtus eſt, vitam vivet, dicit Adonai Dominus. 10 Quòd ſi filium genuerit corruptorem, effuſorem ſanguinis, qui faciat peccata, et non ambulet in viis patris ſui juſti; 11 Sed comedat ſuper montes, & polluat uxorem proximi ſui; 12 Vim inferat egeno & pauperi, rapinam rapiat, non reddat pignus, oculoſque ſuos ad idola ponat, & iniquitatem committat, 13 Fœnori det, & duplum exigat: iſténe vitam vivet et poſt tot iniquitates quas commiſit? imò verò morte morietur, & ſanguis ejus ſuper ipſum erit. 14 Rurſum ſi filium genuerit, & is videns omnia peccata illius quæ perpetrârit, tamen timeat, neq; faciat ut illa, 15 Nõ comedat ſuper montes, non advertat oculos ſuos ad commenta domûs Iſraelis, non polluat uxorem proximi ſui, 16 Nemini vim inferat, pignus non accipiat, non rapiat rapinã, panem ſuum det eſurienti, & nudum induat veſte, 17 Manũ ſuam ab oppreſſione retrahat, neque uſurã neq; duplum repetat, juſtitiam faciat, & in mandatis meis ambulet: is nequaquam morietur ob impietates patris ſui, ſed vitã vivet. 18 At verò pater iſtius, ſi quempiam tribulatione vexaverit, rapinam rapuerit, repugnantiam fecerit in medio populi mei; ſanè morietur pro peccato ſuo. 19 Dicetis autem, Qua de re filius non ferret impietatem patris? Quia filius æquitatem & miſericordiam exercuit, cuſtodivit omnes leges meas, & perfecit illas; vitam vivet: 20 Anima autem quæ peccaverit, ipſa eſt quæ morietur: & filius non feret impietatẽ patris ſui, neque pater feret impietatem filii ſui: æquitas juſti ſuper ipſum erit, & iniquitas iniqui ſuper ipſum erit. 21 Imò cùm iniquus ipſe converterit ſe ab omnibus iniquitatibus ſuis quas commiſit, & cuſtodierit omnia mandata mea, & æquitatem atque miſericordiam exercuerit; vitam vivet, & non morietur.

quam *sua justitia in* :ei memorabūtur non ,fecit quas ej⁹ prævaricationes Omnes
22 כל־־פשעיו אשר עשה לא יזכרו לו בצדקתו אשר־
? Deus Dominus dixit , *impii mortem volam* volendo Nunquid .vivet ,fecit
23 עשה יחיה: החפץ אחפץ מות רשע נאם אדני יהוה
,sua justitia à *justum se avertendo in* Et ? vivet &,suis viis à *se avertendo in* Nónne
24 הלא בשובו מדרכיו וחיה: ובשוב צדיק מצדקתו
,fecerit &,impius fecit quas abominationes oēs secundū,iniquitatē fecerit &
ועשה עול ככל התועבות אשר־עשה הרשע יעשה
sua prævaricatione in:memorabūtur non ,fecit quas ej⁹ justitiæ Omnes ?vivet &
וחי כל־צדקתו אשר־עשה לא תזכרנה במעלו
.morietur *eis in* ,peccavit quod suū peccatū propter & ,est prævaricatus quam
אשר־מעל ובחטאתו אשר־חטא בם ימות:
.Israel domus nunc Audite .Domini via *dirigetur* non , dixistis Et
25 ואמרתם לא יתכן דרך אדני שמעו־נא בית ישראל
se avertendo In ?firmabuntur non vestræ viæ Nónne ?*dirigetur* non mea via Nunquid
26 הדרכי לא יתכן הלא דרכיכם לא יתכנו: בשוב־־
sua iniquitate in : ea super morietur & ,iniquitatē fecerit & ,sua justitia à *justum*
צדיק מצדקתו ועשה עול ומת עליהם בעולו
quam sua impietate ab *impium se avertendo in* Et .morietur , fecit quam
27 אשר־עשה ימות: ובשוב רשע מרשעתו אשר
,vidit Et .vivificabit suā animam ipse ; justitiam &,judicium fecerit & , fecit
28 עשה ויעש משפט וצדקה הוא את־נפשו יחיה: ויראה
non ,vivet vivendo : fecit quas suis prævaricationib⁹ omnib⁹ ab est aversus &
וישוב מכל־־פשעיו אשר עשה חיו יחיה לא
.Domini via *dirigetur* Non : Israel domus dixerunt Et .morietur
29 ימות: ואמרו בית ישראל לא יתכן דרך אדני
?*dirigetur* non vestræ viæ Nónne ? Israel domus *dirigentur* non meæ viæ Nunquid
הדרכי לא יתכנו בית ישראל הלא דרכיכם לא יתכן:
dixit , Israel domus vos judicabo suas vias juxta unumquēque Idcirco
30 לכן איש כדרכיו אשפט אתכם בית ישראל נאם
,vestris *prævaricationib⁹* omnib⁹ ab facite converti &,Cōvertimini .Deus Dominus
אדני יהוה שובו והשיבו מכל־־פשעיכם
vobis *desuper* Projicite .iniquitas offendiculū in vobis erit non &
31 ולא־יהיה לכם למכשול עון: השליכו מעליכם את־
cor vobis facite & ,*eis in* estis prævaricati quibus vestras *prævaricationes* omnes
כל־־פשעיכם אשר פשעתם בם ועשו לכם לב
Quia ? Israel domus moriemini quid ut & : novum spiritum & ,novum
32 חדש ורוח חדשה ולמה תמותו בית ישראל: כי
.vivetis &,facite reverti & : Deus Dominus dixit ,mortui *morte in volam non*
לא אחפץ במות המת נאם אדני יהוה והשיבו וחיו:

CAP. XIX. יט

tua mater *Quid : dices* Et .Israel *prælatos* super planctum *tolle* tu Et
1 ואתה שא קינה אל־נשיאי ישראל: ואמרת מה אמך
2 .suos catulos multiplicavit leunculorū medio In ? cubavit leones inter leæna
לביא בין אריות רבצה בתוך כפרים רבתה גוריה:
rapere didicit & : fuit leunculus ,suis catulis de unum fecit ascendere Et
3 ותעל אחד מגריה כפיר היה וילמד לטרף־
:est captus eorū *scrobe in* ,gentes eum *ad* audierunt Et .*comedit hominem* ,*prædam*
4 טרף אדם אכל: וישמעו אליו גוים בשחתם נתפש
,*expectata, quia vidit* Et .Ægypti terram ad *hamis* in eū adduxerunt &
5 ויבאהו בחחים אל־ארץ מצרים: ותרא כי נוחלה
.eum posuit leunculum,suis catulis de unum tulit & : sua expectatio periit
אבדה תקותה ותקח אחד מגריה כפיר שמתהו:
,rapinam rapere didicit & : fuit leunculus , leonum medio in *ambulabat* Et
6 ויתהלך בתוך־אריות כפיר היה וילמד לטרף־טרף
:fecit desolare eorū civitates & ,ejus viduas cognovit Et .*comedit hominem*
7 אדם אכל: וידע אלמנותיו ועריהם החריב
.ejus rugitus voce à ej⁹ plenitudo & ,terra est desolata &
ותשם ארץ ומלאה מקול שאגתו:

Versio VULG. LAT.

22 Omniū iniquitatū ej⁹, quas operat⁹ est, nō recordabor: in justitia 23 sua, quā operat⁹ est, vivet. Numquid voluntatis meæ est mors impii, dicit Dñs De⁹, & non ut convertatur à viis suis, et vivat? 24 Si autē averterit se just⁹ à justitia sua, & fecerit iniquitatē secundùm omnes abominationes, quas operari solet impi⁹, numquid vivet? omnes justitiæ ej⁹, quas fecerat, nō recordabūtur: in prævaricatione, quâ prævaricat⁹ est, & in peccato suo, ꝙ peccavit, in ipsis morietur. 25 Et dixistis; Non est æqua via Dñi. Audite ergò, domus Israel: Numquid via mea non est æqua, & nō 26 magis viæ vestræ pravæ sūt? Cùm enim averterit se justus à justitia sua, et fecerit iniquitatē, morietur in eis: in injustitia, quā operat⁹ est, 27 morietur. Et cùm averterit se impi⁹ ab impietate sua, quā operat⁹ est, & fecerit judiciū, & justitiā: 28 ipse animā suā vivificabit. Considerans enim, & avertens se ab omnib⁹ iniquitatib⁹ suis, quas operat⁹ est, vitâ vivet, & non morie- 29 tur. Et dicunt filii Israel; Non est æqua via Dñi. Numquid viæ meæ non sunt æquæ, dom⁹ Israel, et nō 30 magis viæ vestræ pravæ? Idcircò unumquemque juxta vias suas judicabo, domus Israel, ait Dñs De⁹. Convertimini, & agite pœnitentiā ab omnib⁹ iniquitatib⁹ vestris: & nō erit vobis in ruinā iniqui- 31 tas. Projicite à vobis omnes prævaricationes vestras, in quib⁹ prævaricati estis, & facite vobis cor novū, & spiritū novum: & quarè 32 moriemini, domus Israel? Quia nolo mortē morientis, dicit Dñs Deus: revertimini, & vivite.

CAP. XIX.

1 ET tu assume planctū sup prin- 2 cipes Israel, Et dices; Quarè mater tua leæna inter leones cubavit, in medio leunculorū enutrivit catu- 3 los suos? Et eduxit unū de leunculis suis, & leo fact⁹ est: & didicit capere prædam, hominémque 4 comedere. Et audierūt de eo Gentes, & non absq; vulnerib⁹ suis ceperunt eū: & adduxerūt eū in ca- 5 tenis in terrā Ægypti. Quæ cùm vidisset quoniā infirmata est, & periit expectatio ej⁹: tulit unū de leunculis suis, leonē constituit eū. 6 Qui incedebat inter leones, et fact⁹ est leo: & didicit prædā cape- 7 re, & homines devorare: Didicit viduas facere, et civitates eorū in desertū adducere: & desolata est terra, & plenitudo ejus, à voce rugitûs illius.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. cum Tranſ. LAT.

22 (χ)Πάντα τὰ παραπτώματα αὐτοῦ ὅσα ἐποίησεν, οὐ μνησθήσονται· (ψ)ἐν τῇ δικαιοσύνῃ αὐτοῦ ᾗ (ω)ἐποίησε, ζήσεται. 23 Μὴ θελήσει θελήσω τὸν θάνατον τοῦ ἀνόμου, λέγει (α) κύριος, ὡς τὸ ἀποστρέψαι αὐτὸν ἐκ 24 τῆς (β)ὁδοῦ τῆς πονηρᾶς, ϗ ζῆν αὐτόν; Ἐν δὲ τῷ ἀποστρέψαι δίκαιον (″)ἐκ τῆς δικαιοσύνης αὐτοῦ, ϗ (γ)ποιῆσαι ἀδικίαν κατὰ πάσας τὰς ἀνομίας ἃς ἐποίησεν ὁ ἄνομος, πᾶσαι αἱ δικαιοσύναι αὐτοῦ ἃς ἐποίησεν, οὐ μὴ μνησθῶσιν· ἐν τῷ παραπτώματι αὐτοῦ ᾧ παρέπεσε, ϗ ἐν ταῖς ἁμαρτίαις αὐτοῦ αἷς 25 ἥμαρτεν, ἐν αὐταῖς ἀποθανεῖται. Καὶ εἴπατε, Οὐ (δ)κατευθύνει ἡ ὁδὸς κυρίου. ἀκούσατε δὴ (ε)πᾶς ὁ οἶκος Ἰσραήλ· μὴ ἡ ὁδός μου οὐ κατευθύνει; οὐχὶ ἡ ὁδὸς ὑμῶν 26 (ʒ)κατευθύνει; Ἐν τῷ (ζ)ἀποστρέψαι τὸν δίκαιον ἐκ τῆς δικαιοσύνης αὐτοῦ, ϗ (″)ποιήσει παράπτωμα, ϗ ἀποθάνῃ ἐν τῷ παραπτώματι ᾧ ἐποίησεν, ἐν αὐτῷ ἀποθανεῖται. 27 Καὶ ἐν τῷ ἀποστρέψαι ἄνομον ἀπὸ τῆς ἀνομίας αὐτοῦ ἧς ἐποίησε, ϗ (·)ποιήσει κρίμα ϗ δικαιοσύνην, οὗτος τὴν ψυχὴν αὐτοῦ ἐφύλα- 28 ξε, (η)Καὶ ἀπέστρεψεν ἐκ πασῶν ἀσεβειῶν αὐτοῦ ὧν ἐποίησε, ζωῇ ζήσεται, οὐ μὴ ἀπο- 29 θάνῃ. Καὶ λέγουσιν ὁ (θ)οἶκος τοῦ Ἰσραήλ, Οὐ κατορθοῖ ἡ ὁδὸς κυρίου. μὴ ἡ ὁδὸς μου οὐ κατορθοῖ οἶκος Ἰσραήλ; οὐχὶ ἡ ὁ- 30 δὸς ὑμῶν οὐ κατορθοῖ; (ι)Ἕκαστον κατὰ τὴν ὁδὸν αὐτοῦ κρινῶ (κ)ὑμᾶς οἶκος Ἰσραήλ, (λ)λέγει κύριος. ἐπιστράφητε ϗ ἀποστρέψατε ἐκ πασῶν τῶν ἀσεβειῶν ὑμῶν, ϗ οὐκ 31 ἔσονται ὑμῖν εἰς κόλασιν ἀδικίας. Ἀπορρίψατε (μ)ἀφ' ἑαυτῶν πάσας τὰς ἀσεβείας ὑμῶν (ν)ἃς ἠσεβήσατε εἰς ἐμέ, ϗ ποιήσατε ἑαυτοῖς καρδίαν καινὴν ϗ πνεῦμα (ξ) καινόν. ϗ ἵνα τί ἀποθνήσκετε οἶκος 32 (ο)Ἰσραήλ; Διότι οὐ θέλω τὸν θάνατον τοῦ ἀποθνήσκοντος, λέγει (π)κύριος.

ΚΕΦ. ιθ΄.

1 ΚΑὶ σὺ (α)λάβε θρῆνον ἐπὶ τοὺς ἄρχον- 2 τας τοῦ Ἰσραήλ, Καὶ ἐρεῖς, Τί ἡ μήτηρ σου σκύμνος ἐν μέσῳ λεόντων ἐγενήθη; (β) ἐν μέσῳ λεόντων ἐπλήθυνε σκύμνους αὐ- 3 τῆς. Καὶ (γ)ἀπεπήδησεν εἷς τῶν σκύμνων αὐτῆς, λέων ἐγένετο, ϗ ἔμαθεν τοῦ ἁρπάζειν 4 ἁρπάγματα, ἀνθρώπους ἔφαγε. Καὶ ἤκουσαν κατ' αὐτοῦ ἔθνη, ἐν τῇ διαφθορᾷ αὐτῶν συνελήφθη, ϗ ἤγαγον αὐτὸν ἐν κημῷ εἰς 5 γῆν Αἰγύπτου. Καὶ εἶδεν ὅτι (δ)ἀπῶσται ἀπ' αὐτῆς, ἀπώλετο ἡ ὑπόστασις αὐτῆς· ϗ ἔλαβεν ἄλλον ἐκ τῶν σκύμνων αὐτῆς, λέοντα 6 ἔταξεν αὐτόν. Καὶ ἀνεστρέφετο ἐν μέσῳ λεόντων, λέων ἐγένετο, ϗ ἔμαθεν ἁρπά- 7 ζειν ἁρπάγματα. ἀνθρώπους ἔφαγε, Καὶ ἐνέμετο (ε) τῷ θράσει αὐτοῦ, ϗ τὰς πόλεις αὐτῶν (ζ) ἐξηρήμωσε, ϗ ἠφάνισε γῆν, ϗ τὸ πλήρωμα αὐτῆς ἀπὸ φωνῆς (η)ὠρυώματος αὐτοῦ.

Omnia delicta ejus, quæcunq; fecit, (e)non memorabuntur: in sua justitia, quam fecit, vivet. 23 *Nunquid voluntate volā mortē iniqui, dicit Dominus, sicut averti ipsū à via sua pessima, & ipsū vivere? Cū autē aver-* 24 *terit se just⁹ à justitia sua, et fecerit injustitiā secundū omnes iniquitates, quas fecit iniquus; omnes justitiæ ejus, quas fecit, nō erunt in memoria: in delicto suo, quo deliquit, & in peccatis suis, quæ peccavit, in ipsis morietur. Et dixistis; Non rectè pergit via Domini. Audite nūc* 25 *omnis domus Israel; Nunquid via mea nō rectè perget? Nunquid via vestra rectè pergit? In* 26 *avertendo se justum à justitia sua, & faciet delictū, & morietur in delicto, quod fecit; in ipso morietur. Et in averten-* 27 *do se iniquū ab iniquitate sua, quā fecit, & faciet judiciū, et justitiā; hic animā suā custodivit, Et avertit se ab omnib⁹* 28 *impietatibus suis, quas fecerat; vitâ vivet, non morietur. Et di-* 29 *cunt dom⁹ Israel, Non recta est via Domini. Nunquid via mea nō recta est, dom⁹ Israel? nónne via vestra nō recta est? Unum-* 30 *quemq; secundū viā suā, judicabo vos, dom⁹ Israel, ait Domin⁹. Convertimini, & avertite vos ab omnib⁹ impietatib⁹ vestris: & non erunt vobis in supplicium iniquitatis. Projicite* 31 *à vobis omnes impietates vestras, in quib⁹ impiè egistis in me, & facite vobis cor novū, & spiritū novum. Et ut quid morimini, domus Israel? (f)* 32 *Quia nolo mortem morientis, ait Dominus.*

CAP. XIX.

ET tu accipe lamentum super principē Israel, 1 *Et dices;* 2 *Quid mater tua (a)catul⁹ in medio leonum (b)facta est? In medio leonū multiplicavit catulos suos. Et exilivit un⁹ de* 3 *catulis ej⁹: leo fact⁹ est, & didicit rapere rapinas: homines comēdit. Et audierunt (c)contra eum gentes:* 4 *in corruptione earū capt⁹ est: & adduxerunt eū in camo in terrā Ægypti. Et vidit, quoniā ablat⁹ esset ab* 5 *ea, periisset substantia ejus: & tulit aliū de catulis suis: leonē constituit eū. Et conversaba-* 6 *tur in medio leonū: leo factus est, & didicit rapere rapinas. Homines comēdit, Et pasceba-* 7 *tur in audacia sua, & civitates eorum desolavit, & vastavit terram, & plenitudinem ejus, à voce rugitûs sui.*

MS.A. (χ)Πᾶσαι αἱ ἀδικίαι ἃς ἐποίησεν οὐ μὴ μνησθῶσιν. (ψ)ἀλλ' ἐν τῇ (ω)ἐποίησεν, ἐν αὐτῇ ζήσεται. Ὅτι οὐ βούλομαι τοῦ (α)κύριος κύριος, (β)ὁδοῦ αὐτοῦ τῆς (″)ἀπὸ (γ)ποιήσῃ (δ)κατορθοῖ ἡ (ε)πᾶς οἶκος (ʒ)οὐ κατευθύνει (ζ) ἀποστρέψαι δίκαιον (″)ποιήσῃ (·) ποιήσῃ (η)Καὶ ἴδεν ϗ ἀπέστρεψεν ἐκ πασῶν τῶν ἀσεβειῶν (θ) οἶκος Ἰσραήλ, (ι)Διὰ τοῦτο ἕκαστον (κ)ὑμεῖς (λ)λέγει ἀδωναῒ κύριος. (μ)ἀπὸ ἑαυτῶν (ν)ἃς ἐποιήσατε, ϗ (ξ) καινόν, ϗ ποιήσατε πάσας τὰς ἐντολάς μου. ϗ (ο) Ἰσραήλ; λέγει κύριος. (π)ἀδωναῒ κύριος, ϗ ἐπιστρέψατε ϗ ζήσατε. Κεφ. ιθ΄. MS.A. (α)υἱὲ ἀνθρώπου λάβε, (β) ϗ ἐν (γ)* ἀπεδήμησεν (δ)ἀπεώσατο ἀπ' αὐτῆς, ϗ ἀπώλετο ἡ (ε) ἐν τῷ θράσει (ζ) ἐξηρήμωσεν (η) ὠρύματος

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

22 כל חובוהי דעבד לא ידכרון ליה בזכותיה דעבד יתקים: המרעא רעינא במותיה
23 24 דרשיעא אמר יי אלהים הלא כד יתוב מאורחיה ויתקים: וכד יתוב זכאה מזכותיה
ויעביד שקר ככל תועבתא די עבד רשיעא יעביד דאתקים כל זכותיה דעבד לא ידכרון
25 בשקריה דשקר ובחובוהי דיחב בהון ימות: ואמרתון לא מפרשן לנא אורחת טובא
דיי שמעו כען בית ישראל האורחת טובי לא מפרשן לכון הלא אורחתכון דילכון לא
26 תקנן: וכד יתוב זכאה מזכותיה ויעביד שקר וימות עליהון בשקריה די עבד ימות:
27 28 וכד יתוב רשיעא מחובוהי די עבד ויעביד דין דקשוט וזכו הוא ית נפשיה יקים: וחזא
29 ותב מכל חובוהי די עבד מחא יחי לא ימות: ואמרו בית ישראל לא מפרשן לנא
אורחת טובא דיי האורחת טובי לא מפרשן לכון בית ישראל הלא אורחתכון דילכון
30 לא תקנן: בכן אנש כאורחתיה אתפרע מנכון בית ישראל אמר יי אלהים תובו
31 לפולחני ואעדו מנכון פולחן טעותא ולא יהי לכון לתקלת חובין: ארחיקו מנכון ית
כל חוביכון דחבתון בהון ועבידו לכון לב דחיל ורוח דחלא ולמה תמותון בית
32 ישראל: ארי לא רעינא במותא דחיב לממת אמר יי אלהים תובו לפולחני
ואתקימו:

יט

1 2 ואת טול אליא על רברבי ישראל: ותימר מה כנשתא דישראל דהות דמיא ללביתא
3 בין מלכיא רבא בין שלטוניא רביאת בנהא: ורביאת חד מבנהא מלכא הוה
4 ואליף למקטל קטול אנשא קטל: ושמעו עלוהי עממיא בסריגתהון אתאחד
5 ואיתיאוהי בשלשלן לארעא דמצרים: וחזת ארי פסק אבד סבורה ורביאת חד
6 מבנהא מלכא שויתיה: והליך בנו מלכיא מלכא הוה ואליף למקטל קטול אנשא
7 קטל: ואצדי ברניתיה וקרויהון אחריב וצדיאת ארעא ומלואה מקל אתרגושתיה:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Omnes iniquitates ejus quas fecit, non erunt in memoria ei : in justitia sua 22
quam fecit permanebit. Nunquid volens volo mortem impii, dicit Domi- 23
nus Deus ? nónne cùm conversus fuerit à via sua, vivet? Et cùm aversus fue- 24
rit justus à justitia sua & fecerit iniquitatem, juxta omnes abominationes quas
fecit impius, fecerit ipse, nunquid vivet ? Omnes justitiæ ej⁹ quas fecit, non
erunt in memoria : in prævaricatione qua prævaricat⁹ est, & in peccatis quib⁹
peccavit, in ipsis morietur. Et dixistis : Non sunt expositæ nobis viæ bonita- 25
tis Domini. Audite nunc dom⁹ Israel : An viæ bonitatis meæ non declaratæ
sunt vobis? nónne viæ vestræ non sunt rectæ? Cùm avers⁹ fuerit just⁹ à justitia 26
sua & fecerit iniquitatem & mortu⁹ fuerit ob ea, in iniquitate sua quam fecit
morietur. Et cùm avers⁹ fuerit impi⁹ ab *iniquitatibus suis quas* fecit, et fecerit 27
judiciū verū & justitiā, ipse animā suā vivificabit. Vidit enim & convers⁹ est 28
ab omnib⁹ iniquitatib⁹ suis quas fecit : vivens vivet & non morietur. Et di- 29
xerunt dom⁹ Israel : Non declaratæ sunt nobis viæ bonitatis Domini. An viæ
bonitatis meæ non sunt declaratæ vobis dom⁹ Israel ? utique viæ vestræ non
sunt rectæ. Propterea juxta vias uniuscujusque vindictam sumam ex vobis do- 30
m⁹ Israel, dicit Domin⁹ De⁹. Convertimini ad cultum meum, & auferte ex
vobis cultum idolorum, & non sit vobis in offendiculum peccatorum. Proji- 31
cite à vobis omnia peccata vestra quæ commisistis, & facite vobis cor timens
& spiritum timoris : & quare moriemini dom⁹ Israel ? Quia nolo mortem 32
peccatoris, qui re⁹ est mortis, dicit Dñs Deus. Convertimini ad cultum meum,
& vivite.

CAP. XIX.

ET tu assume lamentationem super principes Israel, Et dices : Quid cœtus 1
Israel, quæ similis *erat* leænæ, inter reges crevit, & inter principes nutrivit fi- 2
lios suos. Et evexit unum de filiis suis, rex fuit, & didicit occidere occisio- 3
nem, hominem occīdit. Et audierunt de eo populi, in reti eorum captus est, 4
& adduxerunt eum in catenis in terram Ægypti. Et vidit quia cessavit & 5
periit expectatio ejus, & nutrivit unum de filiis suis, regem constituit eum. Et 6
ambulavit inter reges, rex fuit, & didicit occidere occisionem, hominem in-
terfecit. Et desolavit palatia ejus, & civitates eorum destruxit, & desolata 7
est terra & plenitudo ejus à voce tumultus ejus.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

22 * ܘܟܠܗܘܢ ܚܛܗܘܗܝ ܕܥܒܕ. ܠܐ ܢܬܕܟܪܘܢ ܠܗ. ܐܠܐ ܒܙܕܝܩܘܬܐ ܕܥܒܕ ܢܚܐ. * ܠܐ ܨܒܐ
23 ܐܢܐ ܒܡܘܬܗ ܕܚܛܝܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܐܠܐ ܕܢܬܦܢܐ ܡܢ ܐܘܪܚܗ ܒܝܫܬܐ ܘܢܚܐ. * ܘܐܢ
24 ܢܬܦܢܐ ܙܕܝܩܐ ܡܢ ܙܕܝܩܘܬܗ ܘܢܥܒܕ ܥܘܠܐ ܘܛܢܦܘܬܐ ܐܝܟ ܟܠܗܝܢ ܕܥܒܕ ܚܛܝܐ.
ܟܠܗ ܙܕܝܩܘܬܗ ܕܥܒܕ ܠܐ ܬܬܕܟܪ ܠܗ. ܐܠܐ ܒܥܘܠܐ ܕܥܒܕ ܘܒܚܛܗܘܗܝ ܕܚܛܐ ܒܗܘܢ ܢܡܘܬ.
* ܘܐܡܪܬܘܢ. ܠܐ ܬܩܢܝܢ ܐܘܪܚܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܫܡܥܘ ܗܫܐ ܒܝܬ ܐܝܣܪܐܝܠ. ܐܘܪܚܬܝ ܕܝܠܝ
25 ܬܩܢܢ ܐܢܝܢ. ܐܠܐ ܐܘܪܚܬܟܘܢ ܗܝ ܕܝܠܟܘܢ ܠܐ ܬܩܢܢ. * ܟܕ ܢܬܦܢܐ ܙܕܝܩܐ ܡܢ ܙܕܝܩܘܬܗ
26 ܘܢܥܒܕ ܥܘܠܐ. ܡܛܠ ܥܘܠܐ ܕܥܒܕ ܢܡܘܬ. * ܘܟܕ ܢܬܦܢܐ ܥܘܠܐ ܡܢ ܥܘܠܗ. ܘܢܥܒܕ
27 ܕܝܢܐ ܘܙܕܝܩܘܬܐ. ܢܦܫܗ ܢܚܐ. * ܘܟܕ ܢܚܙܐ ܘܢܬܦܢܐ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܚܛܗܘܗܝ ܕܥܒܕ.
28 ܡܚܐ ܢܚܐ. ܘܠܐ ܢܡܘܬ. * ܘܐܡܪܝܢ ܒܝܬ ܐܝܣܪܐܝܠ. ܠܐ ܬܩܢܝܢ ܐܘܪܚܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܐܘܪܚܬܝ
29 ܕܝܠܝ ܬܩܢܢ ܐܢܝܢ ܒܝܬ ܐܝܣܪܐܝܠ. ܐܠܐ ܐܘܪܚܬܟܘܢ ܗܝ ܕܝܠܟܘܢ ܠܐ ܬܩܢܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ
30 ܐܢܫ ܐܢܫ ܐܝܟ ܐܘܪܚܬܗ ܐܕܘܢܟܘܢ ܒܝܬ ܐܝܣܪܐܝܠ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܬܘܒܘ ܘܗܦܘܟܘ ܡܢ ܟܠܗ
ܥܘܠܟܘܢ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܟܘܢ ܬܘܩܠܬܐ ܠܚܛܗܝܟܘܢ. * ܫܕܘ ܡܢܟܘܢ ܟܠܗ ܥܘܠܐ
31 ܕܥܒܕܬܘܢ. ܘܥܒܕܘ ܠܟܘܢ ܠܒܐ ܚܕܬܐ ܘܪܘܚܐ ܚܕܬܐ. ܘܠܐ ܬܡܘܬܘܢ ܒܝܬ ܐܝܣܪܐܝܠ.
* ܡܛܠ ܕܠܐ ܨܒܐ ܐܢܐ ܒܡܘܬܗ ܕܡܝܬܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܐܠܐ ܬܘܒܘ ܘܚܝܘ. * ܦܬܓܡܐ * ܝܛ
32 * ܐܢܬ ܕܝܢ ܒܪ ܐܢܫܐ. ܫܩܘܠ ܐܘܠܝܬܐ ܥܠ ܪ̈ܘܪܒܢܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ ܘܐܡܪ. * ܡܢܐ ܗܝ ܐܡܟ
1 ܓܘܪܝܐ ܕܐܪܝܐ. ܕܒܝܢܝ ܐܪ̈ܝܘܬܐ ܪܒܥܐ. ܘܒܝܢܝ ܐܪ̈ܝܘܬܐ ܪܒܝܬ ܓܘܪ̈ܝܗ. * ܘܪܒܐ
2 ܚܕ ܡܢ ܓܘܪ̈ܝܗ. ܘܗܘܐ ܐܪܝܐ. ܘܝܠܦ ܠܡܛܪܦ ܛܪܦܐ. ܘܒܢܝܢܫܐ ܐܟܠ. * ܘܫܡܥܘ ܥܠܘܗܝ
3 ܥܡ̈ܡܐ. ܘܒܡܚܒܠܢܘܬܗܘܢ ܐܬܬܚܕ. ܘܐܝܬܝܘܗܝ ܒܫܘܫܠܬܐ. ܠܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܘܟܕ ܚܙܬ
4 ܐܡܗ ܕܐܬܡܚܠܬ. ܘܐܒܕ ܣܒܪܗ. ܢܣܒܬ ܚܕ ܡܢ ܓܘܪ̈ܝܗ. ܘܥܒܕܬܗ ܐܪܝܐ.
5 * ܘܗܠܟ ܒܝܢܝ ܐܪ̈ܝܘܬܐ. ܘܗܘܐ ܐܪܝܐ. ܘܝܠܦ ܠܡܛܪܦ ܛܪܦܐ. ܘܒܢܝܢܫܐ ܐܟܠ. * ܘܗܠܟ
6 ܒܚܝܠܗ. ܘܡܕܝܢ̈ܬܐ ܐܚܪܒ. ܘܐܚܒܠ ܐܪܥܐ ܒܡܠܝܗ ܒܩܠܐ ܕܢܗܡܬܗ.
7

Et omnia peccata quæ fecit, non commemo- 22
rabuntur ei; ſed per juſtitiam quam fecerit, vi-
vet. Haudquaquam oblector morte peccato- 23
ris, ait Domin' dominorum, ſed ut retrahat ſe
à via ſua prava, & vivat. Quòd ſi avertat ſe 24
juſtus à juſtitia ſua, & iniquitatem atque abo-
minationem committat quales commiſit pec-
cator; tota juſtitia quam fecerat, non comme-
morabitur ei; ſed propter iniquitatem quam
commiſit, & peccata quæ perpetravit, propter
eadem morietur. Quòd autẽ dicitis, Non ſunt 25
rectæ viæ Domini; audite jam Iſraelitæ: Viæ
quidem meæ rectæ ſunt, at viæ veſtræ non ſunt
rectæ. Cùm avertit ſe juſtus à juſtitia ſua, & 26
iniquitatem committit; propter ipſam iniqui-
tatem quam commiſit, morietur. Cùm autem 27
converterit ſe improb' ab improbitate ſua, &
fecerit judicium atque juſtitiam; animã ſuam
vivam conſervabit. Cúmque conſiderave- 28
rit, & retraxerit ſe ab omnibus peccatis ſuis
quæ fecit; omnino vivet, & non morietur.
Attamen dicunt Iſraelitæ, Non ſunt æquæ viæ 29
Domini. Viæ meæ æquæ ſunt O Iſraelitæ, ſed
viæ veſtræ non ſunt æquæ. Propterea quemq; 30
ſecundùm vias ſuas judicabo vos Iſraelitæ,
dicit Domin' dominorum. Pœnitentiam agi-
te, & revertimini ab omni iniquitate veſtra,
& ne ſit vobis offendiculũ ad peccata veſtra.
Abjicite à vobis omnem iniquitatem quam 31
commiſiſtis, & facite vobis cor novũ & ſpiri-
tum novũ, & ne moriamini O Iſraelitæ. Non 32
enim delector morte mortui, ait Dominus do-
minorum: ſed pœniteat vos, & vivite.

CAP. XIX.

Tu autem fili hominis, ſume lamentationẽ 1
de principibus Iſraelis, & dic; Quid eſt 2
mater tua catule leonis, quòd inter leones cu-
bat, & inter leones educavit catulos ſuos?
Cúmque creviſſet unus è catulis ejus, & leo 3
factus eſſet, didicit prædam diripere, homi-
némque devoravit: Et audientes famam e- 4
jus populi, reti ſuo captum perduxerunt cum
paſtomide in terram Ægypti. Cùm autem 5
vidiſſet mater ejus infirmam ſe redditam, &
periiſſe expectationem ſuam; accepit unum è
catulis ſuis, fecítque leonem: Iſque inter leo- 6
nes ambulans, & leo factus, didicit prædam
diripere, hominémque devoravit. Cumque 7
fortitudine proficiens, urbes vaſtâſſet, totám-
que terram voce rugitûs ſui deſtruxiſſet;

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

22 * وجميع زلاته التي صنعها لا تذكر له * بعدله الذي صنعه يحيي * لاني لا اشاء موت الاثيم
23 يقول الرب * مثل ان يرجع من طريقه السوء ويحيا * واذا رجع الصديق عن عدله * وصنع
24 ظلما كجميع الاثام التي صنعها الاثيم * كل معدلاته التي صنعها لا تذكر له * بزلته سقط *
وبخطاياه التي اخطأ بها يموت * ويقولون ليس يستقيم طريق الرب * اسمعوا يا كل بيت اسرائيل *
25 هل طريقي لا يستقيم * كلا طرقكم لا تستقيم * اذا رجع الصديق من عدله * وصنع زلة * ومات
26 بزلته التي صنعها فيها يموت * واذا رجع الاثيم عن اثمه الذي صنعه * وصنع حكما وعدلا * هذا
27 حفظ نفسه * ورجع من جميع نفاقه الذي صنعه * يحيا حياة ولا يموت * ويقولون بيت اسرائيل *
28 لا يقوم طريق الرب * هل طريقي لا يقوم يا بيت اسرائيل * كلا طريقكم لا يقوم * اذينكم
29 كل واحد كطريقه يا بيت اسرائيل يقول ادوناي الرب * ارجعوا وانصرفوا من جميع نفاقكم *
30 ولا تصيرون اثما للعقوبة * اطرحوا الظلم عنكم * وجميع نفاقكم الذي نافقتم به علي *
31 واصنعوا لكم قلبا جديدا وروحا جديدة * ولماذا تموتون يا بيت اسرائيل * من اجل اني لا
32 اريد موت المايت يقول ادوناي الرب *

* الفصل التاسع عشر *

1 * وانت يا ابن الانسان خذ نوحا على رييس اسرائيل وتقول * ما بال امك صارت شبلا في وسط
2 الاسود * اكثرت اشبالها * فشب واحد من اشبالها * وصار اسدا * وتعلم ان يختطف اختطافا *
3 واكل الناس * وسمعت عنه الامم * فقبض بفساده * وساقوه بحكمة الى ارض مصر * ونظرت انه
4 ابعد عنها * وهلك قوامها * فاخذت اخر من اشبالها * ربته اسدا * وتردد في وسط الاسود *
5 وصار اسدا * وتعلم ان يختطف اختطافا * واكل الناس * وامتلى بجراته * واخرب بلادهم *
6 واهلك الارض بكمالها من صوت زييره *
7

Omnia delicta quæ cõmiſerit, non cõme- 22
morabuntur ei: per æquitatem ſuã quam
fecerit, vivet. Non enim volo mortem ini- 23
qui, dicit Dominus, ut volo ipſum converti
à via ſua prava, & vivere. Econtrà, cùm 24
retraxerit ſe juſtus ab æquitate ſua, et im-
piè ſe geſſerit ſecundùm omnes iniquitates
quas cõmittit iniquus; æquitates ej' omnes
quas fecerat, non cõmemorabuntur ei: cul-
pâ ſuâ cecidit, ideo pro peccatis ſuis quæ
cõmiſit, pro iiſdem morietur. Dicetis autem, 25
Non eſt recta via Domini. Audite O tota
domus Iſraelis. Num viæ meæ non eſſent
rectæ? imò verò viæ veſtræ non ſunt re-
ctæ. Cùm retraxerit ſe juſtus ab æquitate 26
ſua, culpã cõmiſerit, & mortuus fuerit in
culpa quã cõmiſit; propter eandem morie-
tur. Similiter, cùm retraxerit ſe iniquus ab 27
iniquitate ſua quã fecit, & exercuerit ju-
dicium & æquitatem; is animã ſuã ſer-
vabit: Retrahens enim ſe ab omnibus im- 28
pietatibus quas cõmiſit, vitam vivet, &
non morietur. Dicerent jam domus Iſrae- 29
lis haud rectam eſſe viã Domini? An via
mea non eſt recta O domus Iſraelis? imò
verò veſtra non eſt recta. Judicabo vos, 30
quemq; ſecundùm viã ſuã O dom' Iſrae-
lis, inquit Adonai Domin'. Convertimini, et
recedite ab omnibus impietatibus veſtris;
ut ne ſupplicio addicamini. Abjicite à vo- 31
bis iniquitatem & omnes impietates quas
in me perpetrâſtis, & facite vobis cor no-
vum & ſpiritum novum. Quorſum enim
moreremini O domus Iſraelis, Quando- 32
quidem ego nolo mortem moribundi? in-
quit Adonai Dominus.

CAP. XIX.

Et tu O fili hominis, adhibe lamentum 1
ſuper principem Iſraelis, ac dicas; Quid 2
rei eſt quòd mater tua facta eſt leunculus
in medio leonum? multiplicavit leunculos
ſuos; Et cùm adoleviſſet unus è leunculis 3
ejus, factuſq; eſſet leo, didicit prædam ra-
pere, & devorabat homines. Audierunt 4
autem de eo gentes, & propter perniciem
ejus ceperunt eum, eamque deduxerunt
ad terram Ægypti. Quapropter videns 5
illa hunc à ſe amotum, & periiſſe ſubſi-
ſtentiam ſuam; alium accepit è leuncu-
lis ſuis, & in leonem inſtruxit: Qui cum 6
leonibus conſueſcens, & leo factus; di-
dicit prædam capere, homineſque devo-
rabat, Audaciâ ſuâ ſe ſaturabat, & re- 7
giones eorum vaſtabat, totamque terram
voce rugitûs ſui perdebat.

יחזקאל: כ

eũ ſuper expanderunt & :provinciis de *circum* gentes eum *ſuper dederunt* Et
8 וַיִּתְּנוּ עָלָיו גּוֹיִם סָבִיב מִמְּדִינוֹת וַיִּפְרְשׂוּ עָלָיו
, *hamis* in *clauſtrum* in eum *dederunt* Et .eſt captus earũ *ſcrobe in*,ſuũ rete
רִשְׁתָּם בְּשַׁחְתָּם נִתְפָּשׂ׃ וַיִּתְּנֻהוּ בַסּוּגַר בַּחַחִים 9
ut ,munitiones *in* eũ adduxerunt : Babel regem ad eũ adduxerunt &
וַיְבִאֻהוּ אֶל־מֶלֶךְ בָּבֶל יְבִאֻהוּ בַּמְּצֹדוֹת לְמַעַן
vitis tanquã tua Mater .Iſrael montes *ad* ultrà ejꝰ vox audiretur non
10 לֹא־יִשָּׁמַע קוֹלוֹ עוֹד אֶל־הָרֵי יִשְׂרָאֵל׃ אִמְּךָ כַגֶּפֶן
fuit *frondeſcens* & ,fructificans : plantata aquas juxta *tuo ſanguine in*
בְּדָמְךָ עַל־מַיִם שְׁתוּלָה פֹּרִיָּה וַעֲנֵפָה הָיְתָה
ſceptra ad fortitudinis virgæ ei fuerunt Et .multas aquas propter
11 מִמַּיִם רַבִּים׃ וַיִּהְיוּ־לָהּ מַטּוֹת עֹז אֶל־שִׁבְטֵי
eſt cõſpecta &:*perplexitates* inter *ſupra* ejꝰ ſtatura eſt exaltata Et.dominantiũ
מֹשְׁלִים וַתִּגְבַּהּ קוֹמָתוֹ עַל־בֵּין עֲבֹתִים וַיֵּרָא
eſt evulſa Et .ſuorum ramorum multitudine in ,ſua altitudine in
12 בְגָבְהוֹ בְּרֹב דָּלִיֹּתָיו׃ וַתֻּתַּשׁ
:ejꝰ fructũ fecit ſiccare orientalis ventus &,eſt projecta terram in ,ira in
בְּחֵמָה לָאָרֶץ הֻשְׁלָכָה וְרוּחַ הַקָּדִים הוֹבִישׁ פִּרְיָהּ
.*eam* conſumpſit ignis ejus roboris virgam ,aruerunt & , ſunt confracti
הִתְפָּרְקוּ וְיָבֵשׁוּ מַטֵּה עֻזָּהּ אֵשׁ אֲכָלָתְהוּ׃
ignis eſt egreſſus Et .*ſitis &*,*ariditatis* terra in ;deſerto in plantata nunc Et
13 14 וְעַתָּה שְׁתוּלָה בַמִּדְבָּר בְּאֶרֶץ צִיָּה וְצָמָא׃ וַתֵּצֵא אֵשׁ
virga *ea in fuit non &* ,*comedit* ejus fructum ,ejus *membrorum* virga de
מִמַּטֵּה בַדֶּיהָ פִּרְיָהּ אָכָלָה וְלֹא־הָיָה בָהּ מַטֵּה
.planctum in erit & , *ipſa* planctus : dominandum ad ſceptrum ,*roboris*
עֹז שֵׁבֶט לִמְשׁוֹל קִינָה הִיא וַתְּהִי לְקִינָה׃

CAP. XX.

venerunt ,menſis decima in , quinto in , ſeptimo anno in fuit Et
1 וַיְהִי בַּשָּׁנָה הַשְּׁבִיעִית בַּחֲמִשִׁי בֶּעָשׂוֹר לַחֹדֶשׁ בָּאוּ
.*meas facies ad* ſederũt &:Dominum inquirẽdũ ad,Iſrael ſenioribꝰ de viri
אֲנָשִׁים מִזִּקְנֵי יִשְׂרָאֵל לִדְרֹשׁ אֶת־יְהוָה וַיֵּשְׁבוּ לְפָנָי׃
alloquere,hominis Fili *: dicendum ad*,me ad Domini verbum fuit Et
2 3 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם דַּבֵּר אֶת־
: Deus Dominus dixit Sic : eos ad *dices* & ,Iſrael ſeniores
זִקְנֵי יִשְׂרָאֵל וְאָמַרְתָּ אֲלֵהֶם כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה
, vobis *requirar* ſi ego *vivens ?venientes* vos me inquirendũ ad Nũquid
הֲלִדְרֹשׁ אֹתִי אַתֶּם בָּאִים חַי־אָנִי אִם־אִדָּרֵשׁ לָכֶם
?hominis fili judicabis nũquid?eos judicabis Nũquid .Deus Dominꝰ dixit
4 נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה׃ הֲתִשְׁפֹּט אֹתָם הֲתִשְׁפּוֹט בֶּן־אָדָם
dixit Sic : eos ad *dices* Et .eos ſcire fac eorũ patrũ Abominationes
5 אֶת־תּוֹעֲבֹת אֲבוֹתָם הוֹדִיעֵם׃ וְאָמַרְתָּ אֲלֵיהֶם כֹּה־אָמַר
ſemine pro meã manũ levavi & ,Iſrael in *me eligendi* die In : Deus Dominꝰ
אֲדֹנָי יְהוִה בְּיוֹם בָּחֳרִי בְיִשְׂרָאֵל וָאֶשָּׂא יָדִי לְזֶרַע
meã manũ levavi & : Ægypti terra in eis ſum cognitꝰ & ,Jahacob domꝰ
בֵּית יַעֲקֹב וָאִוָּדַע לָהֶם בְּאֶרֶץ מִצְרָיִם וָאֶשָּׂא יָדִי
meã manũ levavi illa die In .veſter Deus Dominus Ego :dicendo ,eis
6 לָהֶם לֵאמֹר אֲנִי יְהוָה אֱלֹהֵיכֶם׃ בַּיּוֹם הַהוּא נָשָׂאתִי יָדִי
exploravi quam terram ad , Ægypti terra de eos *educendum ad* , eis
לָהֶם לְהוֹצִיאָם מֵאֶרֶץ מִצְרָיִם אֶל־אֶרֶץ אֲשֶׁר־תַּרְתִּי
.terris omnibus in *ipſa ornamentum* ; melle & lacte fluentem , eis
לָהֶם זָבַת חָלָב וּדְבַשׁ צְבִי הִיא לְכָל־הָאֲרָצוֹת׃
,projicite *ſuorum* oculorũ abominationes Unuſquiſque : eos ad dixi Et
7 וָאֹמַר אֲלֵהֶם אִישׁ שִׁקּוּצֵי עֵינָיו הַשְׁלִיכוּ
.veſter Deus Dominus Ego .vos polluatis ne Ægypti idolis in &
וּבְגִלּוּלֵי מִצְרַיִם אַל־תִּטַּמָּאוּ אֲנִי יְהוָה אֱלֹהֵיכֶם׃

Verſio VULG. LAT.

8 Et convenerunt adverſus eum
Gentes undique de provinciis, &
expanderunt ſuper eum rete ſuũ,
9 in vulneribus earũ captus eſt. Et
miſerunt eũ in caveam, in catenis
adduxerunt eum ad regem
Babylonis : miſerúntque eum in
carcerem, ne audiretur vox ejus
10 ultrà ſuper montes Iſrael. Mater
tua quaſi vinea in ſanguine tuo
ſuper aquam plantata eſt : fructus
ejus, & frondes ejus creverunt
11 ex aquis multis. Et factæ
ſunt ei virgæ ſolidæ in ſceptra
dominantiũ, & exaltata eſt ſtatura
ejus inter frondes : & vidit
altitudinem ſuam in multitudine
12 palmitũ ſuorũ. Et evulſa eſt in
ira, in terrámque projecta, &
ventꝰ urens ſiccavit fructum ejꝰ:
marcuerunt,& arefactæ ſunt virgæ
roboris ejus : ignis comêdit
13 eam. Et nunc tranſplantata eſt in
deſertum, in terra invia & ſitienti.
14 Et egreſſus eſt ignis de virga
ramorũ ejꝰ, qui fructum ejus
comêdit : & non fuit in ea virga
fortis, ſceptrum dominantiũ.
Planctꝰ eſt, & erit in planctum.

CAP. XX.

1 ET factum eſt in anno ſeptimo,
in quinto, in decima menſis :
venerunt viri de ſenioribus
Iſrael,ut interrogarent Dominũ,
2 & ſederunt corã me. Et factus
eſt ſermo Dñi ad me, dicens ;
3 Fili hominis, loquere ſenioribus
Iſrael, & dices ad eos ; Hæc dicit
Dñs Deꝰ; Numquid ad interrogandum
me vos veniſtis ?
Vivo ego quia non reſpondebo
4 vobis, ait Dñs Deꝰ. Si judicas
eos, ſi judicas, fili hominis, abominationes
patrũ eorũ oſtende
5 eis. Et dices ad eos ; Hæc dicit
Dñs Deꝰ; In die,quâ elegi Iſrael,
& levavi manũ meã pro ſtirpe
domꝰ Jacob,et apparui eis in terra
Ægypti , & levavi manũ meã
pro eis,dicens; Ego Dñs Deꝰ veſter:
6 In die illa levavi manũ meã
pro eis,ut educerem eos de terra
Ægypti in terram, quam provideram
eis , fluentem lacte &
melle : quæ eſt egregia inter
7 omnes terras. Et dixi ad eos ;
Unuſquiſque offenſiones oculorum
ſuorum abjiciat, & in idolis
Ægypti nolite pollui : ego
Dominus Deus veſter.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

8 Καὶ ἔδωκαν ἐπ' αὐτὸν ἔθνη (θ) ἐκ χωρῶν
κυκλόθεν, καὶ ἐξεπέτασαν ἐπ' αὐτὸν (ι) δίκτυα
αὐτῶν, ἐν διαφθορᾷ αὐτῶν (κ) συνελήφθη.
9 Καὶ ἔθεντο αὐτὸν ἐν κημῷ (λ) καὶ ἐν γαλεάγρᾳ,
ἦλθε πρὸς βασιλέα Βαβυλῶνος, καὶ (μ)
εἰσήγαγεν αὐτὸν εἰς φυλακὴν, ὅπως μὴ ἀκουσθῇ
10 ἡ φωνὴ αὐτοῦ ἐπὶ τὰ ὄρη τοῦ Ἰσραήλ. Ἡ
μήτηρ σου ὡς (ˮ) ἄμπελος καὶ ὡς ἄνθος ἐν ῥοᾷ,
ἐν ὕδατι πεφυτευμένη, ὁ καρπὸς αὐτῆς καὶ ὁ
βλαστὸς αὐτῆς ἐγένετο ἐξ ὕδατος πολλοῦ.
11 Καὶ (ν) ἐγένετο αὐτῇ ῥάβδος ἐπὶ φυλὴν ἡγουμένων,
καὶ ὑψώθη (ξ) τῷ μεγέθει αὐτῆς ἐν
μέσῳ (ο) στελεχῶν· καὶ εἶδε τὸ μέγεθος αὐτῆς
12 ἐν πλήθει κλημάτων αὐτῆς. Καὶ κατεκλάσθη
ἐν θυμῷ, ἐπὶ γῆν (π) ἐῤῥίφη, καὶ ἄνεμος
(ρ) ὁ καύσων ἐξήρανε τὰ ἐκλεκτὰ αὐτῆς· (σ)
ἐξεδικήθησαν, καὶ ἐξηράνθη ἡ ῥάβδος ἰσχύος
13 αὐτῆς· πῦρ ἀνήλωσεν αὐτήν. Καὶ νῦν (τ)
πεφυτεύκασιν αὐτὴν ἐν τῇ ἐρήμῳ, ἐν γῇ ἀνύδρῳ.
14 Καὶ ἐξῆλθε πῦρ ἐκ ῥάβδου ἐκλεκτῶν
αὐτῆς, καὶ κατέφαγεν αὐτήν, καὶ οὐκ ἦν ἐν
αὐτῇ ῥάβδος (υ) ἰσχύος. φυλὴ εἰς παραβολὴν
θρήνου ἐστὶ, καὶ ἔσται εἰς θρῆνον.

Et dederunt ſuper eum gentes de 8
regionibus per circuitũ, & expanderunt
ſuper eũ retia ſua. In corruptione
earum captus eſt: Et po- 9
ſuerunt eum in camo, & in cavea:
venit ad regem Babylonis: &
(d) introduxit eũ in carcerem; ut
non audiretur vox (e) ejus ſuper
montes Iſrael. Mater tua, quaſi 10
vitis, & ſicut flos in (f) malogranato,
in aqua plantata: fructꝰ ejꝰ,
& germen illius factũ eſt ex aqua
multa. Et facta eſt hæc vir- 11
ga ſuper tribum ducum : & exaltata
eſt magnitudine ſuâ in
medio propaginum. Et vidit magnitudinem
ſuã in multitudine
palmitũ ſuorũ: Et confracta eſt 12
in furore: in terram projecta eſt;
& ventus urens areſecit electa ejus.
(g) Vindicati ſunt, & arefacta
eſt virga fortitudinis ejus.
Ignis conſumpſit eam: Et nunc 13
plantaverunt eã in deſerto in terra
(h) ſine aqua. Et exivit ignis de 14
virga electorũ ejus, & comêdit
eam: & non erat in ea virga (i)
fortitudinis. Tribꝰ in parabolã lamentationis
eſt: et erit in planctũ.

MS.A. (θ) ἀπὸ (ι) τὰ δίκτυα (κ) καὶ συνελήμφθη, (λ) καὶ ἤνεγκαν αὐτὸν
ἐν γαλεάγρᾳ πρὸς (μ) εἰσήγαγον (ˮ) ἄμπελος, ὡς (ν)* ἐγένοντο αὐτῇ ῥάβδος
ἰσχύος ἐπὶ (ξ) ἐν τῷ (ο) στελεχίων· (π) ἐῤῥίφη (ρ) καύσων (σ) ἐξεδικήθη
(τ) ἐφύτευσαν (υ) ἰσχύος αὐτῆς.

ΚΕΦ. κ'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἔτει τῷ ἑβδόμῳ (α)
τῇ πεντεκαιδεκάτῃ τοῦ μηνὸς, ἦλθον ἄνδρες
ἐκ τῶν πρεσβυτέρων (β) οἴκου Ἰσραὴλ, ἐπερωτῆσαι
τὸν κύριον, καὶ ἐκάθισαν πρὸ προσώπου
2 μου. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέγων,
3 Υἱὲ ἀνθρώπου, λάλησον πρὸς τοὺς
πρεσβυτέρους τοῦ οἴκου Ἰσραὴλ, καὶ ἐρεῖς πρὸς
αὐτοὺς, Τάδε λέγει κύριος, (γ) Εἰ ἐπερωτῆσαί
με ὑμεῖς ἔρχεσθε ; Ζῶ ἐγὼ, εἰ ἀποκριθήσομαι
4 ὑμῖν, (δ) λέγει κύριος. Εἰ ἐκδικήσω
αὐτοὺς ἐκδικήσει, υἱὲ ἀνθρώπου; τὰς ἀνομίας τῶν
5 πατέρων αὐτῶν διαμάρτυραι αὐτοῖς, Καὶ ἐρεῖς
πρὸς αὐτοὺς, Τάδε λέγει (ε) κύριος, Ἀφ' ἧς
ἡμέρας ᾑρέτισα τὸν οἶκον Ἰσραὴλ, καὶ ἐγνωρίσθην
τῷ σπέρματι (ζ) οἴκου Ἰακὼβ, καὶ ἐγνώσθην
αὐτοῖς ἐν γῇ (η) Αἰγύπτου, καὶ ἀντελαβόμην
τῇ χειρί μου αὐτῶν, λέγων, Ἐγὼ κύριος
6 ὁ θεὸς ὑμῶν· Ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ ἀντελαβόμην
τῇ χειρί μου αὐτῶν, τοῦ ἐξαγαγεῖν αὐτοὺς
(θ) ἐκ γῆς Αἰγύπτου εἰς τὴν γῆν ἣν (ι) ἡτοίμασα
αὐτοῖς, γῆν ῥέουσαν γάλα καὶ μέλι,
7 κηρίον ἐστὶ παρὰ πᾶσαν τὴν γῆν. Καὶ εἶπα πρὸς
αὐτοὺς, Ἕκαστος (κ) βδελύγματα τῶν ὀφθαλμῶν
αὐτοῦ (ˮ) ἀποῤῥιψάτω, καὶ ἐν τοῖς ἐπιτηδεύμασιν
Αἰγύπτου μὴ μιαίνεσθε· ἐγὼ κύριος ὁ θεὸς ὑμῶν.

CAP. XX.

ET factũ eſt in anno ſeptimo, 1
(a) quintâ decimâ menſis, venerunt
viri de ſenioribꝰ domꝰ Iſrael,
ad interrogandũ Dominũ, &
ſederunt ante faciẽ meã. Et factꝰ 2
eſt ſermo Domini ad me, dicens ;
Fili hominis, loquere ad ſeniores 3
domꝰ Iſrael, & dices ad eos; Hæc
dicit Dominꝰ; Si ad interrogandũ
me vos veniſtis? Vivo ego, (b) ſi 4
reſpondero vobis, ait Dominus: Si
ultus fuero eos ultione, fili hominis?
Iniquitates patrũ eorũ conteſtare
eis: Et dices ad eos; Hæc 5
dicit Dominus; Ex qua die elegi
domũ Iſrael, & notꝰ factus ſum
ſemini domꝰ Jacob, & cognitꝰ eis
in terra Ægypti, & ſuſcepi manu
meâ eos, dicens, Ego Dominꝰ Deꝰ
veſter; In die illa apprehendi eos 6
manu meâ; ut educerẽ eos de terra
Ægypti, in terrã quam paravi
eis, terrã fluentẽ lacte, & melle,
(c) favꝰ eſt ultra omnẽ terram. Et 7
dixi ad eos; Unuſquiſq; (d) abominationes
oculorũ ſuorũ projiciat,
& in (e) adinventionibus
Ægypti non polluamini. Ego Dominus
Deus veſter.

MS.A. (α) ἐν τῷ πέμπτῳ μηνὶ, δεκάτῃ τοῦ (β) τοῦ οἴκου (γ) Ἐπερωτῆσαί
(δ) λέγει ἀδωναῒ κύριος. (ε) κύριος ὁ θεὸς, Ἀφ' (ζ) τοῦ οἴκου (η) Αἰγύπτῳ,
(θ) * εἰς γῆν (ι) ὤμοσα (κ) τὰ βδελύγματα (ˮ) ἀποῤῥιψάτω,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

8 וְאִתְכְּנִישׁוּ עֲלוֹהִי עַמְמַיָא סְחוֹר סְחוֹר מִמְּדִינָתָא וּפְרַסוּ עֲלוֹהִי מְצַדְתְּהוֹן בִּסְרֵינָתְהוֹן
9 אִתְאֲחַד׃ וִיהַבוּהִי בְקוֹלָרִין בְּשַׁלְשְׁלָן וְאַיְתִיאוּהִי לְוָת מַלְכָּא דְבָבֶל אַיְתִיאוּהִי בִּמְצַדְיָא
10 בְּדִיל דְּלָא יִשְׁתְּמַע קָלֵיהּ עוֹד עַל טוּרֵי יִשְׂרָאֵל׃ כְּנִשְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל בְּמֶעְבְּדַהּ אוֹרַיְתָא
דָמְיָא כְגוּפַן דִּשְׁתִילָא עַל מַבּוּעַ דְּמַיִין דְּנוֹפְהּ שַׁפִּיר וְסוֹכְהּ מְטַלַּן הִיא שְׁתִילָה עַל מַיִין
11 סַגִיאִין׃ וַהֲווֹ בָהּ שִׁלְטוֹנִין תַּקִּיפִין מַלְכִין דִּגְבָרִין לְשַׁעְבָּדָא מַלְכוּ וְרָאֵם בְּתוּקְפֵיהּ עַל
12 מַלְכוּתֵיהּ וְאִתְנַצַּח בְּסוּמְכְוָתֵיהּ בִּסְנֵי גִּבָּרוֹהִי׃ וְאִתְעֲקָרַת בִּתְקוֹף מֵאַרְעָא בֵּית
שְׁכִנְתָּא לְאַרְעָא אוֹחֲרִי אִתְגְּלִיאַת וּמֶלֶךְ דְּתַקִּיף כְּרוּחַ קִדּוּמָא קְטִיל עַמָּהּ אִטַּלְטַלוּ
13 וּגְלוֹ שִׁלְטוֹנֵי תוּקְפַהּ וְעַמְמַיָא דְתַקִּיפִין כְּאֶשָּׁתָא שֵׁיצִיאוּנוּן׃ וּכְעַן דָּמְיָא לְגוּפַן דִּשְׁתִילָא
14 בְּמַדְבְּרָא בְּאַרְעָא צַדְיָא וַחֲרֵבָא׃ וַאֲתוֹ עַמְמַיָא דְתַקִּיפִין כְּאֶשָּׁתָא מֵחוֹבֵי זְדוֹנַהּ עַמַּהּ
קְטִילוּ וְלָא הֲווֹ בָהּ שִׁלְטוֹנִין תַּקִּיפִין מַלְכִין דִּגְבָרִין לְשַׁעְבָּדָא מַלְכוּ אֲמַר נְבִיָּא אִלְיָא
הִיא נְבוּאֲתָא וּתְהֵי לְאִלְיָא׃

כ

1 וַהֲוָה בְּשַׁתָּא שְׁבִיעֵתָא בְּחַמְשָׁא בְּעַסְרָא לְיַרְחָא אֲמַר נְבִיָּא אֲתוֹ גַבְרִין מִסָּבֵי יִשְׂרָאֵל
2 לְמִתְבַּע אוּלְפָן מִן קֳדָם יְיָ וִיתִיבוּ קֳדָמַי׃ וַהֲוָה פִּתְגַם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי לְמֵימַר׃
3 בַּר אָדָם אִתְנַבֵּי לְסָבֵי יִשְׂרָאֵל וְתֵימַר לְהוֹן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים הַלְמִתְבַּע אוּלְפָן מִן
4 קֳדָמַי אַתּוּן אָתַן קַיָּם אֲנָא אִם אֶשְׁתְּאֵיל לְכוֹן בְּמֵימְרִי אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים׃ הֲתוֹכַח יָתְהוֹן
5 הֲתוֹכַח בַּר אָדָם יַת תּוֹעֲבַת אֲבָהָתְהוֹן הוֹדְעִנּוּן׃ וְתֵימַר לְהוֹן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים
בְּיוֹמָא דְאִתְרְעִיתִי בְּיִשְׂרָאֵל וְקַיֵּמִית לְהוֹן בְּמֵימְרִי לְזַרְעָא דְבֵית יַעֲקֹב וְאִתְגְּלֵיתִי
6 לְמִפְרְקְהוֹן בְּאַרְעָא דְמִצְרַיִם וְקַיֵּמִית בְּמֵימְרִי לְהוֹן לְמֵימַר אֲנָא יְיָ אֱלָהֲכוֹן׃ בְּיוֹמָא
הַהוּא קַיֵּמִית לְהוֹן בְּמֵימְרִי לְאַפָּקוּתְהוֹן מֵאַרְעָא דְמִצְרַיִם לְאַרְעָא דִּיהַבִית לְהוֹן עָבְדָא
7 חֲלַב וּדְבַשׁ תּוּשְׁבַּחְתָּא הִיא לְכָל מְדִינָתָא׃ וַאֲמַרִית לְהוֹן גְּבַר יַת שִׁקּוּצוֹהִי אַרְחִיקוּ
מִקֳּבֵיל עֵינוֹהִי וּפוּלְחַן טַעֲוַת מִצְרָאֵי לָא תִסְתַּאֲבוּן אֲנָא יְיָ אֱלָהֲכוֹן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et congregati ſunt contra eum populi per circuitum de provinciis, & expan- 8
derunt ſuper eum rete ſuum, & in ſagena eorum captus eſt. Et poſuerunt eum 9
in collare, & in catenas, & adduxerunt eum ad regem Babylonis : adduxerunt
enim eum in caveam ut non audiretur vox ejus ultrà ſuper montes Iſrael.
Cœtus Iſrael cùm faceret legem, ſimilis erat viti quæ plantata eſt juxta 10
fontes aquarum , cujꝰ fructꝰ erat pulcher, & rami ejꝰ obumbrantes : & ipſa
plantata erat juxta aquas multas. Et fuerunt in ea dominatores fortes, re- 11
ges, qui potentes ſunt ad ſubjicienda regna : & elevatꝰ eſt robore ſuo ſuper
regnum ſuum, & ſuperavit cum adjutoribus ſuis in multitudine fortium ſuorum.
Et evulſa eſt in vehementia de terra domus majeſtatis , & in terram 12
alteram tranſlata eſt. Et rex fortis quaſi ventꝰ urens occîdit populum ejus;
migraverunt, & tranſlati ſunt dominatores fortitudinis ejꝰ, & populi qui
ſunt fortes ſicut ignis conſumpſerunt eos. Et nunc ſimilis eſt viti quæ planta- 13
ta eſt in deſerto in terra deſolata & deſerta. Et venerunt populi qui fortes ſunt 14
ſicut ignis, & propter peccata ſuperbiæ ejꝰ occiderunt populum ejꝰ, & non
fuerunt in ea dominatores fortes nec reges potentes ad ſubjicienda regna.
Dicit propheta, lamentatio eſt prophetia, & erit in lamentationem.

CAP. XX.

ET factum eſt anno ſeptimo, quinto [*menſe*,] decima die menſis, dixit pro- 1
pheta, venerunt viri de ſenioribꝰ Iſrael, ut quærerent doctrinam à facie Domini:
& ſederunt coram me. Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Domi- 2
ni ad me, dicens : Fili hominis, vaticinare ſenioribꝰ Iſrael, & dices eis : Hæc 3
dicit Dominꝰ Deꝰ; Nunquid ad interrogandam doctrinam à facie mea vos veniſtis
? vivo ego, dicit Dominꝰ, ſi interrogatꝰ in verbo meo reſpondero vobis,
dicit Dominꝰ Deꝰ. An argues eos, an argues fili hominis ? Abominati- 4
ones patrum ſuorum oſtende eis. Et dices ad eos: Hæc dicit Dñs Deus; In die 5
quo elegi Iſrael, & juravi *ipſis* in verbo meo, ſemini domus Jacob; & revelatus
ſum ut redimerem eos de terra Ægypti, & juravi eis in verbo meo, di-
cens : Ego Dominus Deus veſter. In die illa juravi illis in verbo meo, edu- 6
cturum me eos de terra Ægypti in terram quam dedi eis, fluentem lacte &
melle, quæ laudabilis eſt omnibꝰ provinciis. Et dixi eis : Quiſque abomina- 7
tiones ſuas projiciat à conſpectu oculorum ſuorum, & in cultu idolorum Ægyptiorum
ne polluamini. Ego Dominus Deus veſter.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

ܘܐܬܟܢܫܘ ܥܠܘܗܝ ܥܡ̈ܡܐ ܡܢ ܡܕܝܢ̈ܬܐ ܕܚܕܪܘܗܝ. ܘܦܪܣܘ ܥܠܘܗܝ ܡܨܝܕܬܗܘܢ. * 8
ܘܒܗ ܐܬܬܨܝܕ. *ܘܣܟܪܘܗܝ ܒܩܘܠܒܐ ܕܚܝܘ̈ܬܐ. ܘܐܘܒܠܘܗܝ ܠܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܐܥܠܗ ܠܒܝܬ 9
ܐܣܝܪ̈ܐ. ܕܠܐ ܢܫܬܡܥ ܬܘܒ ܩܠܗ ܒܛܘܪ̈ܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܐܡܟ ܐܝܟ ܓܦܬܐ ܒܕܡܟ. 10
ܥܠ ܡ̈ܝܐ ܢܨܝܒܐ. ܦܐܪ̈ܝܗ ܘܣܘܟܝܗ ܗܘܘ. ܒܡ̈ܝܐ ܣܓܝ̈ܐܐ. * ܘܗܘܘ ܠܗ ܫ̈ܒܛܐ 11
ܥܫܝ̈ܢܐ ܥܠ ܫ̈ܒܛܐ ܕܫܠܝ̈ܛܢܐ. ܘܐܬܬܪܝܡܬ ܩܘܡܬܗܘܢ ܡܢ ܒܝܬ ܣܘܟܝܗ. ܘܐܬܚܙܝܘ
ܒܪܘܡܗܘܢ. ܘܒܣܘܓܐܐ ܕܫܒ̈ܫܒܗܘܢ. * ܘܐܬܥܩܪܘ ܒܚܡܬܐ. ܘܥܠ ܐܪܥܐ ܐܫܬܕܝܘ. ܘܪܘܚܐ 12
ܚܡܝܡܬܐ. ܐܘܒܫܬ ܦܐܪ̈ܝܗ. ܘܐܬܦܪܫܘ ܘܝܒܫܘ ܫ̈ܒܛܐ ܕܥܘܫܢܗ. ܘܢܘܪܐ ܐܟܠܬܗ.
* ܘܗܫܐ ܢܨܝܒܐ ܒܡܕܒܪܐ. ܒܐܪܥܐ ܨܗܝܐ ܘܨܕܝܬܐ. * ܘܢܦܩܬ ܢܘܪܐ ܡܢ ܫܒܛܐ ܓܒܝܐ 13
ܕܝܠܗ. ܘܐܟܠܬ ܦܐܪ̈ܝܗ. ܘܠܐ ܐܫܬܟܚ ܒܗ ܬܘܒ ܫܒܛܐ ܥܫܝܢܐ. ܐܘ ܫܒܛܐ ܕܢܗܘܐ 14
ܫܠܝܛܐ. ܐܘܠܝܬܐ ܗܝ. ܘܠܐܘܠܝܬܐ ܬܗܘܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟ *

* ܘܗܘܐ ܒܫܢܬܐ ܫܒܝܥܝܬܐ. ܒܚܡܫܐ ܒܝܪܚܐ ܒܥܣܪܐ ܒܗ. ܐܬܘ ܓܒܪ̈ܐ ܡܢ ܩܫ̈ܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. 1
ܠܡܫܐܠ ܡܢ ܡܪܝܐ. ܘܝܬܒܘ ܩܕܡܝ. *ܘܗܘܐ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠܝ ܠܡܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ. 2
ܡܠܠ ܥܡ ܩܫ̈ܝܫܐ ܕܒܢܝ̈ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ. ܠܡܫܐܠܘܬܝ 3
ܐܢܬܘܢ ܐܬܝܢ. ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ. ܕܠܐ ܐܬܠ ܠܟܘܢ ܦܬܓܡܐ. * ܕܘܢ ܐܢܘܢ ܕܘܢ
ܐܢܘܢ ܒܪ ܐܢܫܐ: ܘܚܘܝ ܐܢܘܢ ܛܢܦܘܬܐ ܕܐܒܗ̈ܝܗܘܢ. ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ. 4
ܒܝܘܡܐ ܕܓܒܝܬ ܠܐܝܣܪܝܠ. ܐܪܝܡܬ ܐܝܕܝ ܠܙܪܥܐ ܕܒܝܬ ܝܥܩܘܒ. ܘܐܬܓܠܝܬ ܠܗܘܢ 5
ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܐܪܝܡܬ ܐܝܕܝ. ܘܐܡܪܬ ܠܗܘܢ. ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ. * ܒܝܘܡܐ ܗܘ
ܐܪܝܡܬ ܐܝܕܝ ܕܐܦܩ ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܠܐܪܥܐ ܕܝܗܒܬ ܠܗܘܢ. ܕܪܕܝܐ ܚܠܒܐ 6
ܘܕܒܫܐ. ܫܘܒܗܪܐ ܕܟܠܗܝܢ ܡܕܝܢ̈ܬܐ. * ܘܐܡܪܬ ܠܗܘܢ. ܐܢܫ ܦܬܟܪܘܗܝ ܡܢ
ܥܝܢ̈ܘܗܝ. ܢܪܚܩ. ܘܒܕܚܠ̈ܬܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܠܐ ܬܬܛܘܫܘܢ. ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ. 7

Congregatæ ſunt contra eum gentes ex urbibus 8
circunjacentibus, & expanderunt ſuper
illum rete ſuum, quo & captus fuit: Tum 9
includentes eum in caveam beſtiarū, deduxerunt
ad regem Babylonis; qui immiſit eum in
carcerem, ut non audiretur ampliùs vox ejus
in montibus Iſraelis. Mater tua erat ſicut 10
vitis in ſanguine tuo ſecus aquas plantata:
fructus & frondes ejus erant in aquis multis:
Erántque ei ſcipiones validi ſup virgas principum, 11
extuleratque ſe ſtatura eorum de medio
ſurculorum ejus, & conſpicui erant altitudine
ſuâ & multitudine palmitum ſuorum.
Sed avulſi ſunt in excandeſcentia, & in terram 12
dejecti: ventus calidus arefecit fructus ejus,
ſejuncti ſunt & aruerunt ſcipiones roboris
ejus, & ignis conſumpſit eam. Nunc plantata 13
eſt in deſerto, in terra ſiticuloſa & inculta:
Et egreſſus ignis è ſcipione ipſius electo, 14
conſumpſit fructus ejus, nec inventus eſt
ampliùs in ea ſcipio robuſtus, aut virga quæ
poſſit eſſe dominus. Lamentatio (*i. lamentabilis*)
eſt, & in lamentationem erit.

CAP. XX.

DEinde contigit anno ſeptimo, decimâ 1
menſis quinti, ut venientibus quibuſdam è ſenioribus
Iſraelis ad conſulendum Dominum,
& coram me ſedentibus; Fieret ad me ſermo 2
Domini, dicendo; Fili hominis, alloquere 3
ſeniores Iſraelitarum, & dic eis; Sic ait Dominus
dominorum, Ad conſulendum me venitis?
Per vitam meam, inquit Dominus dominorum,
nequaquam dabo vobis reſponſū.
Judica iſtos, judica iſtos fili hominis, indica 4
eis abominationem majorum ipſorum, & dic
illis; Sic ait Dominus dominorum; Quo die 5
elegi Iſraelem, levavi manum meam (*i. juravi*)
ſemini Jacobi, quum apparuiſſem ei in
terra Ægypti: levavi inquam, manum meam,
& dixi eis; Ego ſum Dominus Deus veſter.
Eo inquam, die levavi manum meam *jurans* 6
me educturum eos è terra Ægypti in terram
quam dederam eis, lacte & melle manantem,
quæ decus eſt omnium urbium: Et dixi eis, 7
Amovete quiſque idolum ſuum ab oculis ſuis,
& diis Ægypti ne contaminetis vos, ego ſum
Dominus Deus veſter.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* واعطوا عليه الامم من البلدان من حوله * وبسطوا عليه شباكهم * فمسك بمصيدتهم * 8
* ووضعوه بحكمة * وساقوه في قفص الي ملك بابل * وادخلوه الي الحبس * كيلا يسمع ايضا صوته 9
علي جبال اسرائيل * امك مثل كرمة * ومثل زهر في رمانة مغروسة في ماء كثير * فرعها 10
وثمرها صاروا من الماء الكثير * وصارت لها عصا قوة علي قبيلة المقدمين * وارتفعت بعظمها 11
في وسط الاغصان * ونظروا عظمها بكثرة اغصانها * وكسرت بغضب * وطرحت علي الارض * وريح 12
السموم جفف خيارها * وانتقم منها * ويبست وجفت عصا قوتها * وابادتها النار * والان غرسها في 13
البرية في ارض لا ماء فيها * وخرجت نار من عصا خيارها واكلتها * ولم يكن فيها عصا 14
قوة للقبيلة * هي مثل نوح * وتصير للنوح *

* الفصل العشرون *

* الاصحاح العاشر *

* وكان في السنة السابعة * في الشهر الخامس * في العاشر من الشهر * اتوا رجال من اشياخ اسرائيل 1
ليسالوا الرب * وجلسوا امام وجهي * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان * تكلم مع اشياخ 2 3
اسرائيل * وتقول لهم * هكذا يقول ادوناي الرب * هل اتيتم لتسالوني * حي انا لا اجاوبكم يقول
ادوناي الرب * اني انتقم منهم انتقاما * يا ابن الانسان * اشهد لهم باثام ابايهم وتقول لهم * 4
* هكذا يقول ادوناي الرب * منذ يوم ارضيت بيت اسرائيل * وعرفت لزرع بيت يعقوب * وعرفت 5
لهم في ارض مصر * وعضدتهم بيدي قايلا * انا الرب الهكم * في ذلك اليوم عضدتهم بيدي * 6
لاخرجهم من ارض مصر الي الارض التي هياتها لهم * ارضا تفيض لبنا وعسلا * هي شهد
اكثر من كل الارض * وقلت لهم ليطرح كل واحد رذالات عينيه * وفي اعمال مصر لا 7
تنجسوا * انا الرب الهكم *

Quare irruerunt in eum gentes è regionibus 8
circumjacentibus, & expanderunt ſuper
eum retia ſua, captuſque fuit plagis
earum: Deinde poſuerunt eum in camo, 9
& deduxerunt eum in cavea ad regem
Babelis; ubi detruſerunt eum in carcerem,
ne audiretur ampliùs vox ejus ſuper
montes Iſraelis. Mater tua ſimilis erat 10
viti, & ſimilis flori malogranati plantati
ſecus aquam copioſam: rami ejus & fructus
ejus facti ſunt ob aquam copioſam:
Factaq; eſt ei virga roboris ſuper familiā 11
primorum, & extulit ſeſe magnitudine
ſuâ in medio ramorum, ita ut viderent
magnitudinem ejus inter pluralitatem ramorum
ejus. Verùm confracta eſt in ira, 12
& in terram projecta; & ventus calidus
arefecit ſelectiſſima quæq; ipſius: ſumpta
eſt ab ea vindicta, & exiccata atque
arefacta eſt virga roboris ejus, demum
conſumpſit eam ignis. Et nunc plantaverunt 13
eam in deſerto, in terra in qua nullæ
ſunt aquæ: Et egreſſus ignis è virga ſelectiſſimorum 14
ejus, devoravit eam, & non
remanſit in ea virga roboris illi familiæ.
Ipſa eſt exemplar lamentationis, & erit in
lamentationem.

CAP. XX.

Textus decimus.

FUit autem anno ſeptimo, menſe quinto, 1
decimâ menſis, ut venientes viri
quidam *è ſenioribus Iſraelis ad interrogandum*
Dominum, *ſederent ante faciem*
meam. Fieretque ſermo Domini ad me, 2
dicens; O fili hominis, alloquere ſeniores 3
Iſraelis, & dicas eis; Ita dicit Adonai
Dominus; Num veniſtis interrogatum
me? ut vivens ſum, non reſpondebo vobis,
ait Adonai Dominus: Imò vindictam 4
ſumam ab iſtis. O fili hominis, conteſtare
eis iniquitates patrum ſuorum, & dicas
eis; Ita dicit Adonai Dominus; Ab 5
ea die quâ obſecundavi domui Iſraelis, &
innotui ſemini domûs Jacobi, & notus
factus ſum eis in terra Ægypti, opemque
tuli eis manu meâ, dicens; Ego ſum Dominus
Deus veſter: Eâdem die, cùm opem 6
tuliſſem eis manu meâ ut educerem eos è
terra Ægypti ad terram quam præparaveram
eis, terram lacte & melle affluentem;
quæque favus eſt præter univerſam
terram: Dixi quoque eis, Abjiciat quiſque 7
abominationes oculorum ſuorum, &
in operibus Ægypti ne perſiſtatis: ego
ſum Dominus Deus veſter:

יחזקאל: כ

unuſquiſque : *me ad audire cupierunt non* &,me contra rebellaverunt Et
8 וַיַּמְרוּ־בִי וְלֹא אָבוּ לִשְׁמֹעַ אֵלַי אִישׁ אֶת־
non Ægypti idola &,projecerunt non ſuorũ oculorũ abominationes
שִׁקּוּצֵי עֵינֵיהֶם לֹא הִשְׁלִיכוּ וְאֶת־גִּלּוּלֵי מִצְרַיִם לֹא
meũ naſum implendũ ad,eos ſuper meã irã *effundendũ ad* dixi Et .reliquerunt
עָזָבוּ וָאֹמַר לִשְׁפֹּךְ חֲמָתִי עֲלֵיהֶם לְכַלּוֹת אַפִּי
non *pro* ,meũ nomen propter feci Et .Ægypti terræ medio in eis in
9 בָּהֶם בְּתוֹךְ אֶרֶץ מִצְרָיִם: וָאַעַשׂ לְמַעַן שְׁמִי לְבִלְתִּי
innotui quorum : *earum medio in ipſæ quæ* , gentium oculis in *pollui*
הֵחֵל לְעֵינֵי הַגּוֹיִם אֲשֶׁר־הֵמָּה בְתוֹכָם אֲשֶׁר נוֹדַעְתִּי
eos eduxi Et .Ægypti terra à eos *educendũ ad* ,eorũ oculis in *eos ad*
10 אֲלֵיהֶם לְעֵינֵיהֶם לְהוֹצִיאָם מֵאֶרֶץ מִצְרָיִם: וָאוֹצִיאֵם
eis dedi Et .deſertum in eos adduxi & : Ægypti terra è
11 מֵאֶרֶץ מִצְרָיִם וָאֲבִאֵם אֶל־הַמִּדְבָּר: וָאֶתֵּן לָהֶם אֶת־
ea faciet qui : eos feci ſcire mea judicia &,mea *ſtatuta*
חֻקּוֹתַי וְאֶת־מִשְׁפָּטַי הוֹדַעְתִּי אוֹתָם אֲשֶׁר יַעֲשֶׂה אוֹתָם
, eis dedi mea ſabbatha inſuper Et *.eis in* vivet & , homo
12 הָאָדָם וָחַי בָּהֶם: וְגַם אֶת־שַׁבְּתוֹתַי נָתַתִּי לָהֶם
Dominus *ego* quòd *ſciendum ad* : eos inter &,me inter ſignũ in *exiſtendum ad*
לִהְיוֹת לְאוֹת בֵּינִי וּבֵינֵיהֶם לָדַעַת כִּי אֲנִי יְהוָה
;deſerto in Iſrael domus me contra rebellaverunt Et .eos *ſanctificans*
13 מְקַדְּשָׁם: וַיַּמְרוּ־בִי בֵית־יִשְׂרָאֵל בַּמִּדְבָּר
faciet qui :reprobaverũt mea judicia &,ambulaverunt non meis *ſtatutis* in
בְּחֻקּוֹתַי לֹא־הָלָכוּ וְאֶת־מִשְׁפָּטַי מָאָסוּ אֲשֶׁר יַעֲשֶׂה
:vehemẽter violaverũt mea ſabbatha & *: eis in* vivet & , homo *ea*
אֹתָם הָאָדָם וָחַי בָּהֶם וְאֶת־שַׁבְּתֹתַי חִלְּלוּ מְאֹד
.eos *conſumendum ad* ,deſerto in eos ſuper meã iram *effundendum ad* dixi Et
וָאֹמַר לִשְׁפֹּךְ חֲמָתִי עֲלֵיהֶם בַּמִּדְבָּר לְכַלּוֹתָם:
quarum,gentium oculis in *pollui* non *pro* ,meũ nomen propter feci Et
14 וָאֶעֱשֶׂה לְמַעַן שְׁמִי לְבִלְתִּי הֵחֵל לְעֵינֵי הַגּוֹיִם אֲשֶׁר
,deſerto in eis meã manũ levavi ego etiã Et .earũ oculis in eos eduxi
15 הוֹצֵאתִים לְעֵינֵיהֶם: וְגַם־אֲנִי נָשָׂאתִי יָדִי לָהֶם בַּמִּדְבָּר
lacte fluentem , dedi quam terram in eos *inducendum* non *ad*
לְבִלְתִּי הָבִיא אוֹתָם אֶל־הָאָרֶץ אֲשֶׁר־נָתַתִּי זָבַת חָלָב
mea judicia *in ꝗ* eo Pro .terris omnibꝰ in *ipſa ornamentum* ;melle &
16 וּדְבַשׁ צְבִי הִיא לְכָל־הָאֲרָצוֹת: יַעַן בְּמִשְׁפָּטַי
mea ſabbatha & ,*eis in* ambulaverunt non meis *ſtatutis* & ,abjecerunt
מָאָסוּ וְאֶת־חֻקּוֹתַי לֹא־הָלְכוּ בָהֶם וְאֶת־שַׁבְּתוֹתַי
meus oculus pepercit Et .*vadens* eorũ cor ſua idola poſt quia :*polluerunt*
17 חִלֵּלוּ כִּי אַחֲרֵי גִלּוּלֵיהֶם לִבָּם הֹלֵךְ: וַתָּחָס עֵינִי
.deſerto in cõſummationẽ eis cum feci non &:eos *corrumpendo à*,eis *ſuper*
עֲלֵיהֶם מִשַּׁחֲתָם וְלֹא־עָשִׂיתִי אוֹתָם כָּלָה בַּמִּדְבָּר:
,incedatis ne veſtrorũ patrũ *ſtatutis* In,deſerto in eorũ filios ad dixi Et
18 וָאֹמַר אֶל־בְּנֵיהֶם בַּמִּדְבָּר בְּחוּקֵּי אֲבוֹתֵיכֶם אַל־תֵּלֵכוּ
.vos polluatis ne eorum idolis in & : cuſtodiatis ne eorum judicia &
וְאֶת־מִשְׁפְּטֵיהֶם אַל־תִּשְׁמֹרוּ וּבְגִלּוּלֵיהֶם אַל־תִּטַּמָּאוּ:
,cuſtodite mea judicia &,ambulate meis *ſtatutis* In.veſter Deus Dominꝰ Ego
19 אֲנִי יְהוָה אֱלֹהֵיכֶם בְּחֻקּוֹתַי לֵכוּ וְאֶת־מִשְׁפָּטַי שִׁמְרוּ
,me inter ſignum in erunt &,ſanctificate mea ſabbatha Et .ea facite &
20 וַעֲשׂוּ אוֹתָם: וְאֶת־שַׁבְּתוֹתַי קַדֵּשׁוּ וְהָיוּ לְאוֹת בֵּינִי
rebellaverunt Et .veſter Deus Dominus *ego* quòd *ſciendum ad*,vos inter &
21 וּבֵינֵיכֶם לָדַעַת כִּי אֲנִי יְהוָה אֱלֹהֵיכֶם: וַיַּמְרוּ־
non mea judicia & ,ambulaverunt non meis *ſtatutis* In .filii me cõtra
בִי הַבָּנִים בְּחֻקּוֹתַי לֹא־הָלָכוּ וְאֶת־מִשְׁפָּטַי לֹא־
vivet & ,homo *ea faciet quòd* : ea *faciendum ad* ,cuſtodierunt
שָׁמְרוּ לַעֲשׂוֹת אוֹתָם אֲשֶׁר יַעֲשֶׂה אוֹתָם הָאָדָם וָחַי
meã iram *effundendum ad* dixi & : polluerunt mea Sabbatha *.eis in*
בָּהֶם אֶת־שַׁבְּתוֹתַי חִלֵּלוּ וָאֹמַר לִשְׁפֹּךְ חֲמָתִי
.deſerto in eis in *meum naſum complendum ad* ,eos ſuper
עֲלֵיהֶם לְכַלּוֹת אַפִּי בָּם בַּמִּדְבָּר:

Verſio VULG. LAT.

8 Et irritaverunt me, noluerúntq;
me audire : unuſquiſque abominationes
oculorum ſuorum non
projecit, nec idola Ægypti reliquerunt
: & dixi ut effunderem
indignationem meam ſuper eos,
& implerem iram meam in eis,
9 in medio terræ Ægypti. Et feci
propter nomen meum, ut non
violaretur coram Gentibus, in
quarum medio erant, & inter
quas apparui eis ut educerem
10 eos de terra Ægypti. Ejeci ergò
eos de terra Ægypti, & eduxi
11 eos in deſertum. Et dedi eis
præcepta mea, & judicia mea
oſtendi eis, quæ faciens homo,
12 vivet in eis. Inſupèr & ſabbata
mea dedi eis, ut eſſent ſignum
inter me & eos : & ſcirent quia
ego Dominus ſanctificans eos.
13 Et irritaverunt me domus Iſrael
in deſerto, in præceptis meis non
ambulaverunt , & judicia mea
projecerunt, quæ faciens homo
vivet in eis: & ſabbata mea violaverunt
vehementer : dixi ergò
ut effunderem furorem meum
ſuper eos in deſerto , & conſumerem
14 eos. Et feci propter
nomen meum, ne violaretur coram
Gentibus , de quibus ejeci
15 eos in conſpectu earum. Ego
igitur levavi manum meam ſuper
eos in deſerto , ne inducerẽ
eos in terram , quam dedi eis,
fluentem lacte & melle, præcipuam
16 terrarum omnium. Quia
judicia mea projecerunt , & in
præceptis meis non ambulaverunt,
& ſabbata mea violaverunt
: poſt idola enim cor eorũ
17 gradiebatur. Et pepercit oculus
meus ſuper eos, ut non interficerem
eos : nec conſumpſi eos
18 in deſerto. Dixi autem ad filios
eorum in ſolitudine; In præceptis
patrum veſtrorum nolite incedere,
nec judicia eorum cuſtodiatis,
nec in idolis eorum
19 polluamini. Ego Dominus Deꝰ
veſter : in præceptis meis ambulate,
judicia mea cuſtodite, &
20 facite ea : Et ſabbata mea ſanctificate,
ut ſint ſignum inter me
& vos, & ſciatis quia ego ſum
21 Dominus Deus veſter. Et exacerbaverunt
me filii : in præceptis
meis non ambulaverunt,
& judicia mea non cuſtodierunt
ut facerent ea : quæ cùm
fecerit homo, vivet in eis : &
ſabbata mea violaverunt : &
comminatus ſum ut effunderem
furorem meum ſuper eos , &
implerem iram meam in eis in
deſerto.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

8 Καὶ ἀπέστησαν ἀπ' ἐμοῦ, καὶ οὐκ ἠθέλησαν εἰσακοῦσαί
μου, τὰ βδελύγματα τῶν ὀφθαλμῶν
αὐτῶν οὐκ ἀπέρριψαν, καὶ τὰ ἐπιτηδεύματα Αἰγύπτου
οὐκ ἐγκατέλιπον. καὶ (λ) εἶπα τοῦ ἐκχέαι
τὸν θυμόν μου ἐπ' αὐτοὺς, τοῦ συντελέσαι
(μ) ὀργήν μου ἐν αὐτοῖς (ν) ἐν μέσῳ τῆς Αἰγύπτου.
9 Καὶ ἐποίησα ὅπως τὸ ὄνομά μου τὸ παράπαν
μὴ βεβηλωθῇ ἐνώπιον τῶν ἐθνῶν, ὧν
αὐτοί εἰσιν ἐν μέσῳ αὐτῶν, ἐν οἷς ἐγνώσθην
πρὸς αὐτοὺς ἐνώπιον αὐτῶν, τοῦ ἐξαγαγεῖν αὐτοὺς
10 ἐκ γῆς Αἰγύπτου. Καὶ (ξ) ἤγαγον αὐτοὺς
11 εἰς τὴν ἔρημον, Καὶ ἔδωκα αὐτοῖς τὰ προστάγματά
μου, καὶ τὰ δικαιώματά μου ἐγνώρισα αὐτοῖς,
ὅσα ποιήσει αὐτὰ ἄνθρωπος, καὶ ζήσεται
12 ἐν αὐτοῖς. Καὶ τὰ σάββατά μου ἔδωκα
αὐτοῖς, τοῦ εἶναι εἰς σημεῖον ἀναμέσον ἐμοῦ καὶ
ἀναμέσον αὐτῶν, τοῦ γνῶναι αὐτοὺς, διότι ἐγὼ
13 κύριος ὁ ἁγιάζων αὐτούς. Καὶ εἶπα πρὸς τὸν
οἶκον (") Ἰσραὴλ ἐν τῇ ἐρήμῳ, Ἐν τοῖς προστάγμασί
μου (ο) πορεύεσθε. καὶ οὐκ ἐπορεύθησαν· καὶ
τὰ δικαιώματά μου ἀπώσαντο, ἃ ποιήσει αὐτὰ
ἄνθρωπος καὶ ζήσεται ἐν αὐτοῖς· καὶ τὰ
σάββατά μου ἐβεβήλωσαν σφόδρα. καὶ εἶπα τοῦ
ἐκχέαι τὸν θυμόν μου ἐπ' αὐτοὺς ἐν τῇ ἐρήμῳ,
14 τοῦ ἐξαναλῶσαι αὐτούς. Καὶ (π) ἐποίησα ὅπως
τὸ ὄνομά μου τὸ παράπαν μὴ βεβηλωθῇ ἐνώπιον
τῶν ἐθνῶν, ὧν ἐξήγαγον αὐτοὺς (ρ) κατ'
15 ὀφθαλμοὺς αὐτῶν. Καὶ ἐγὼ ἐξῆρα τὴν χεῖρά μου
ἐπ' αὐτοὺς ἐν τῇ ἐρήμῳ τὸ παράπαν, τοῦ μὴ
εἰσαγαγεῖν αὐτοὺς εἰς τὴν γῆν ἣν ἔδωκα αὐτοῖς,
γῆν ῥέουσαν γάλα καὶ μέλι· κηρίον ἐστὶ παρὰ
16 πᾶσαν τὴν γῆν· Ἀνθ' ὧν τὰ δικαιώματά
μου ἀπώσαντο, καὶ ἐν τοῖς προστάγμασί μου οὐκ
ἐπορεύθησαν ἐν αὐτοῖς, καὶ τὰ σάββατά μου ἐβεβήλουν,
καὶ ὀπίσω τῶν ἐνθυμημάτων (σ) καρδίας
17 αὐτῶν ἐπορεύοντο. Καὶ ἐφείσατο ὁ ὀφθαλμός
μου ἐπ' αὐτοὺς, τοῦ ἐξαλεῖψαι αὐτοὺς, καὶ οὐκ
ἐποίησα αὐτοὺς εἰς συντέλειαν ἐν τῇ ἐρήμῳ.
18 Καὶ εἶπα πρὸς τὰ τέκνα αὐτῶν ἐν τῇ ἐρήμῳ,
Ἐν τοῖς νομίμοις τῶν πατέρων ὑμῶν
μὴ πορεύεσθε, καὶ τὰ δικαιώματα αὐτῶν μὴ φυλάσσεσθε,
καὶ ἐν τοῖς ἐπιτηδεύμασιν αὐτῶν μὴ
19 (τ) συναναμίσγεσθε, καὶ μὴ μιαίνεσθε. Ἐγὼ κύριος
ὁ θεὸς ὑμῶν. ἐν τοῖς προστάγμασί μου
πορεύεσθε, καὶ τὰ δικαιώματά μου φυλάσσεσθε,
20 καὶ ποιεῖτε αὐτά. Καὶ τὰ σάββατά μου ἁγιάζετε,
καὶ ἔστω εἰς σημεῖον ἀναμέσον ἐμοῦ
(υ) καὶ ὑμῶν, τοῦ γινώσκειν διότι ἐγὼ κύριος ὁ
21 θεὸς ὑμῶν. Καὶ παρεπίκρανάν με, καὶ τὰ τέκνα
(φ) αὐτῶν ἐν τοῖς προστάγμασί μου οὐκ ἐπορεύθησαν,
καὶ τὰ δικαιώματά μου οὐκ ἐφυλάξαντο
τοῦ ποιεῖν αὐτά, ἃ ποιήσει (χ) ἄνθρωπος
καὶ ζήσεται ἐν αὐτοῖς, καὶ τὰ σάββατά
μου ἐβεβήλουν. καὶ εἶπα τοῦ ἐκχέαι τὸν θυμόν
μου (ψ) ἐπ' αὐτοὺς ἐν τῇ ἐρήμῳ, τοῦ συντελέσαι τὴν ὀργήν μου ἐπ' αὐτούς.

MS. A. (λ) εἶπον (μ) τὴν ὀργήν (ν) ἐν μέσῳ γῆς Αἰγύπτου. (ξ) ἐξήγαγον αὐτοὺς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, καὶ ἤγαγον (") τοῦ Ἰσραὴλ (ο) πορεύεσθε, καὶ τὰ δικαιώματά μου φυλάσσεσθε τοῦ ποιεῖν αὐτά, ἃ ποιήσει αὐτὰ ἄνθρωπος καὶ ζήσεται ἐν αὐτοῖς. καὶ παρεπίκρανάν με ὁ οἶκος Ἰσραὴλ ἐν τῇ ἐρήμῳ, ἐν τοῖς προστάγμασίν μου οὐκ ἐπορεύθησαν· καὶ τὰ (π) οὐκ ἐποίησα, (ρ) καθ' (σ) τῶν καρδιῶν αὐτῶν (τ) συναναμίγνυσθαι, (υ) καὶ ἀναμέσον ὑμῶν, τοῦ γινώσκειν ὑμᾶς ὅτι (φ) αὐτῶν, καὶ ἐν τοῖς (χ) αὐτὰ ἄνθρωπος (ψ) ἐπ' αὐτούς. Καὶ οὐκ ἐποίησα,

Et receſſerunt à me, & noluerũt 8
exaudire me: abominationes oculorũ
ſuorum non projecerunt, &
adinventiones Ægypti non reliquerunt.
Et dixi effundere indignationem
meã ſuper eos, implere
irã meã in eis in medio Ægypti.
Et feci, ut nomen meũ omninò nõ 9
violaretur corã gentibus, quarũ
ipſi ſunt in medio earũ, in quibus
cognitꝰ erã ad eos corã illis, ut educerẽ
eos de terra Ægypti. (f) Et 10
adduxi eos in deſertum, Et dedi 11
eis præcepta mea, & juſtificationes
meas notas feci eis, quæ faciet
ea homo, & vivet in illis. Et ſabbata 12
mea dedi eis, ut eſſẽt in ſignũ
inter me, & eos, ut ſcirent ipſi,
quia ego Dominꝰ ſanctificans eos.
(g) Et dixi ad domum Iſrael in 13
deſerto; In præceptis meis ambulate.
(h) Et non ambulaverunt, &
juſtificationes meas repulerunt,
quas faciet eas homo, & vivet
in eis: & ſabbata mea violaverũt
vehementer. Et dixi, ut effunderẽ
furorẽ meũ ſuper eos in deſerto,
ut conſumerem eos. Et feci ut nomen 14
meũ omninò non violaretur
corã gentibꝰ, de quibus eduxi eos
ante oculos earum. Et ego levavi 15
manum meã ſuper eos in deſerto
omninò, ut non introducerem eos
in terram, quam dedi eis, terram
fluentem lacte, & melle: favus eſt
ultrà omnem terrã: Eò quòd juſtificationes 16
meas repulerunt, &
in præceptis meis non ambulaverunt
in eis, & ſabbata mea violaverunt,
& poſt cogitationes cordis
ſui ambulaverunt. Et pepercit 17
oculus meus ſuper eos, (i) delere
eos, & non feci eos in conſumptionem
in deſerto. Et dixi ad filios 18
eorum in deſerto; In legitimis
patrum veſtrorum nolite incedere,
& juſtificationes eorum non
cuſtodiatis, & in adinventionibus
eorum ne (k) commiſceamini,
& ne polluamini: Ego Dominus 19
Deus veſter. In præceptis meis
ambulate, & juſtificationes meas
cuſtodite, & facite eas: Et ſabbata 20
mea ſanctificate: et ſint in *ſignũ*
inter me & vos, ad ſciendum,
quia ego Dominus Deus veſter. Et 21
(l) exacerbaverunt me, & filii
eorum in præceptis meis non ambulârunt,
& juſtificationes meas
non cuſtodierunt ad faciendum
eas, quas faciet homo, & vivet
in eis: & ſabbata mea violaverunt.
Et dixi effundere furorem
meum ſuper eos in deſero: complere
iram meam ſuper eos.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

8 וְסָרִיבוּ עַל מֵימְרִי וְלָא אֲבוֹ לְקַבָּלָא לִנְבִיַי גְבַר יַת שִׁקוּצֵי עֵינֵיהוֹן לָא אַרְחִיקוּ וְיַת
פּוּלְחָן טַעֲוַת מִצְרָאֵי לָא שְׁבַקוּ וַאֲמַרִית לְמִשְׁפַּךְ חֵמְתִי עֲלֵיהוֹן דְיַחוּל רוּגְזִי בְהוֹן בְּגוֹ
9 אַרְעָא דְמִצְרָיִם: וַעֲבַדִית בְּדִיל שְׁמִי בְּדִיל דְלָא יִתְחַל לְעֵינֵי עַמְמַיָא דִי אִנוּן בֵּינֵיהוֹן
10 דְאִתְגְלֵיתִי לְמִפְרְקְהוֹן לְעֵינֵיהוֹן לְאַפָּקוּתְהוֹן מֵאַרְעָא דְמִצְרָיִם: וְאַפֵּקְתִּנוּן מֵאַרְעָא
11 דְמִצְרָיִם וְאַעֲלְתִּנוּן לְמַדְבְּרָא: וִיהַבִית לְהוֹן יַת קְיָמַי וְיַת דִינַי הוֹדְעִית יַתְהוֹן דְאִם
12 יַעְבֵּיד יַתְהוֹן אֱנָשָׁא וְיֵחֵי בְהוֹן בְּחַיֵי עָלְמָא: וְאַף יַת יוֹמֵי שַׁבַּיָא דִילִי יְהַבִית לְהוֹן לְמֶהֱוֵי
13 לְאָת בֵּין מֵימְרִי וּבֵינֵיהוֹן לְמִידַע אֲרֵי אֲנָא יְיָ מְקַדֵּשְׁהוֹן: וְסָרִיבוּ עַל מֵימְרִי בֵּית יִשְׂרָאֵל
בְּמַדְבְּרָא בִּקְיָמַי לָא הַלִיכוּ וְיַת דִינַי קְצוּ דְאִם יַעְבֵּיד יַתְהוֹן אֱנָשָׁא וְיֵיחֵי בְהוֹן חַיֵי עָלְמָא
וְיַת יוֹמֵי שַׁבַּיָא דִילִי אַחִילוּ לַחֲדָא וַאֲמַרִית לְמִשְׁפַּךְ חֵימְתִי עֲלֵיהוֹן בְּמַדְבְּרָא
14 לְשֵׁיצָיוּתְהוֹן: וַעֲבַדִית בְּדִיל שְׁמִי בְּדִיל דְלָא יִתְחַל לְעֵינֵי עַמְמַיָא דְאַפֵּקְתִּנוּן לְעֵינֵיהוֹן:
15 וְאַף אֲנָא קַיֵמִית בְּמֵימְרִי לְהוֹן בְּמַדְבְּרָא בְּדִיל דְלָא לְאָעָלָא יַתְהוֹן לְאַרְעָא דִי יְהַבִית
16 עָבְדָא חֲלַב וּדְבַשׁ תּוּשְׁבַּחְתָּא הִיא לְכָל מְדִינָתָא: חֲלַף דִי בְדִינַי קְצוּ וְיַת קְיָמַי לָא הַלִיכוּ
17 בְהוֹן וְיַת יוֹמֵי שַׁבַּיָא דִילִי אַחִילוּ אֲרֵי בָּתַר פּוּלְחָן טַעֲוָתְהוֹן לִבְּהוֹן טָעֵי: וְחָס מֵימְרִי
18 עֲלֵיהוֹן מִלְחַבָּלוּתְהוֹן וְלָא עֲבַדִית עִמְהוֹן גְמִירָא בְּמַדְבְּרָא: וַאֲמַרִית לִבְנֵיהוֹן בְּמַדְבְּרָא
בִּגְזֵירַת אֲבָהַתְכוֹן לָא תְהָכוּן וְיַת נִימוֹסֵיהוֹן לָא תִטְרוּן וּבְפוּלְחָן טַעֲוָתְהוֹן לָא
19 תִסְתַּאֲבוּן: אֲנָא יְיָ אֱלָהֲכוֹן בִּקְיָמַי הַלִיכוּ וְיַת דִינַי טְרוּ וַעֲבִידוּ יַתְהוֹן: וְיַת יוֹמֵי שַׁבַּיָא
20 דִילִי קַדִישׁוּ וִיהוֹן לְאָת בֵּין מֵימְרִי וּבֵינֵיכוֹן לְמִידַע אֲרֵי אֲנָא יְיָ אֱלָהֲכוֹן: וְסָרִיבוּ עַל
21 מֵימְרִי בְּנַיָא בִּקְיָמַי לָא הַלִיכוּ וְיַת דִינַי לָא נְטַרוּ לְמֶעְבַּד יַתְהוֹן דְאִם יַעְבֵּיד יַתְהוֹן
אֱנָשָׁא וְיֵחֵי בְהוֹן בְּחַיֵי עָלְמָא יַת יוֹמֵי שַׁבַּיָא דִילִי אַחִילוּ וַאֲמַרִית לְמִשְׁפַּךְ חֵימְתִי
עֲלֵיהוֹן דְיַחוּל רוּגְזִי בְהוֹן בְּמַדְבְּרָא:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

At refractarii fuerunt verbo meo, & noluerunt obedire prophetis meis; quiſ- 8
que non projecerunt abominationes oculorum ſuorum, neque reliquerunt
cultum idolorum Ægyptiorum. Et dixi quod effunderem indignationem meam
ſuper eos, & quod quieſceret ira mea in eis in medio terræ Ægypti. Et 9
feci propter nomen meum ut non violaretur ante oculos populorum, inter
quos erant, in quorum conſpectu innotueram ut redimerem eos, ut educerem
eos ex terra Ægypti. Et eduxi eos de terra Ægypti, atque in deſertum adduxi 10
eos. Et dedi eis pacta mea, & judicia mea oſtendi eis ; quæ ſi fecerint homines, 11
vivent in eis vita æterna. Et etiam dies ſabbatorum meorum dedi eis, 12
ut eſſent eis in ſignum inter Verbum meum & inter eos, ut cognoſcerent quia
ego Dominus qui ſanctifico eos. Et rebellaverunt contra verbum meum domus 13
Iſrael in deſerto ; in pactis meis non ambulaverunt, & judicia mea deteſtati
ſunt : quæ ſi fecerit homo, vivet in eis vita æterna. Et dies ſabbatorum
meorum violaverunt vehementer : & dixi quòd effunderem indignationem
meam in deſerto ſuper eos, ut conſumerem eos. Et feci propter nomen meum 14
ut non violaretur ante oculos populorum ante quorum oculos eduxi eos.
Ego quoque juravi eis in deſerto in verbo meo, ut non introducerem eos in 15
terram quam dedi lacte & melle manantem, quæ laudabilis eſt omnibus provinciis.
Pro eo quòd judicia mea deteſtati ſunt, & in pactis meis non ambulaverunt, 16
& dies ſabbatorum meorum violaverunt ; quia poſt cultum idolorum
ſuorum cor eorum errabat. Et pepercit Verbum meum illis, ut non 17
diſperderem eos, & non feci conſumptionem cum eis in deſerto. Et dixi filiis 18
eorum in deſerto : In decretis patrum veſtrorum ne ambuletis , & leges eorum
ne obſervetis, & in cultu idolorum eorum ne polluamini. Ego Dominus 19
Deus veſter : in pactis meis ambulate, & judicia mea ſervate, & facite ea.
Et dies ſabbatorum meorum ſanctificate, ut ſint in ſignum inter Verbum meum 20
& inter vos, ut ſciatis quia ego Dominus Deus veſter. Et prævaricati 21
ſunt in verbum meum filii; in pactis meis non ambulaverunt, & judicia mea
non ſervaverunt ut facerent ea : quæ ſi fecerit homo, vivet in eis vita æterna
: & dies ſabbatorum meorum violaverunt, & dixi me effuſurum in eos indignationem
meam, ut reſideret ira mea in eis in deſerto.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܡܪܡܪܘܢܝ . ܘܠܐ ܨܒܘ ܠܡܫܡܥܢܝ . ܘܠܐ ܐܥܒܪܘ ܦܬܟܪܐ ܡܢ ܥܝܢܝܗܘܢ . ܘܠܐ ܫܒܩܘ ܕܚܠܬܐ 8
ܕܡܨܪܝܢ . ܘܐܡܪܬ ܕܐܫܘܕ ܚܡܬܝ ܥܠܝܗܘܢ . ܘܐܫܡܠܐ ܪܘܓܙܝ ܒܗܘܢ . ܒܓܘ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ .
* ܘܥܒܕܬ ܡܛܠ ܫܡܝ ܕܠܐ ܢܬܛܘܫ ܩܕܡ ܥܡܡܐ . ܕܐܬܚܙܝܬ ܠܗܘܢ ܒܝܢܬܗܘܢ . 9
ܕܐܦܩ ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ . * ܘܐܦܩܬ ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ . ܘܐܝܬܝܬ ܐܢܘܢ ܠܡܕܒܪܐ . 10
* ܘܝܗܒܬ ܠܗܘܢ ܦܘܩܕܢܝ . ܘܕܝܢܝ ܐܘܕܥܬ ܐܢܘܢ . ܕܐܢ ܢܥܒܕ ܐܢܘܢ ܒܪܢܫܐ ܚܝܐ ܒܗܘܢ . 11
* ܘܐܦ ܫܒܬܝ ܝܗܒܬ ܠܗܘܢ . ܕܢܗܘܘܢ ܐܬܐ ܒܝܢܝ ܘܒܝܢܝܗܘܢ . ܘܢܕܥܘܢ . ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ 12
ܕܡܩܕܫ ܠܗܘܢ . * ܘܡܪܡܪܘܢܝ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܒܡܕܒܪܐ . ܘܒܦܘܩܕܢܝ ܠܐ ܗܠܟܘ . ܘܕܝܢܝ 13
ܐܣܠܝܘ . ܕܐܢ ܢܥܒܕ ܐܢܘܢ ܒܪܢܫܐ ܢܚܐ ܒܗܘܢ . ܘܫܒܬܝ ܛܢܦܘ . ܘܐܡܪܬ ܕܐܫܘܕ ܚܡܬܝ
ܥܠܝܗܘܢ ܒܡܕܒܪܐ . ܘܐܫܠܡ ܐܢܘܢ . * ܘܥܒܕܬ ܡܛܠ ܫܡܝ . ܕܠܐ ܢܬܛܘܫ ܩܕܡ ܥܡܡܐ 14
ܕܐܦܩܬ ܐܢܘܢ ܠܥܝܢܝܗܘܢ . * ܘܐܦ ܐܢܐ ܐܪܝܡܬ ܐܝܕܝ ܥܠܝܗܘܢ ܒܡܕܒܪܐ . ܕܠܐ ܐܥܠ ܐܢܘܢ 15
ܠܐܪܥܐ ܕܝܗܒܬ ܠܗܘܢ . ܕܪܕܝܐ ܚܠܒܐ ܘܕܒܫܐ . ܫܘܒܚܗ ܕܟܠܗܝܢ ܡܕܝܢܬܐ . * ܡܛܠ 16
ܕܐܣܠܝܘ ܕܝܢܝ . ܘܫܒܬܝ ܛܒ ܛܢܦܘ . ܘܒܬܪ ܦܬܟܪܝܗܘܢ . ܐܙܠ ܠܒܗܘܢ . * ܘܚܣܬ 17
ܥܝܢܝ ܥܠܝܗܘܢ . ܕܠܐ ܐܚܒܠ ܐܢܘܢ . ܘܠܐ ܐܫܠܡ ܐܢܘܢ ܒܡܕܒܪܐ . * ܘܐܡܪܬ ܠܒܢܝܗܘܢ 18
ܒܡܕܒܪܐ . ܒܦܘܩܕܢܐ ܕܐܒܗܝܟܘܢ . ܠܐ ܬܗܠܟܘܢ . ܘܕܝܢܝܗܘܢ ܠܐ ܬܛܪܘܢ . ܘܒܦܬܟܪܝܗܘܢ
ܠܐ ܬܬܛܘܫܘܢ . * ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ . ܒܦܘܩܕܢܝ ܗܠܟܘ . ܘܕܝܢܝ ܛܪܘ . ܘܥܒܕܘ 19
ܐܢܘܢ . * ܘܫܒܬܝ ܩܕܫܘ . ܘܢܗܘܘܢ ܐܬܐ ܒܝܢܝ ܘܒܝܢܝܟܘܢ . ܘܬܕܥܘܢ . ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ . 20
* ܘܡܪܡܪܘܢܝ ܒܢܝܐ . ܘܒܦܘܩܕܢܝ ܠܐ ܗܠܟܘ . ܘܕܝܢܝ ܠܐ ܢܛܪܘ . ܘܠܐ ܥܒܕܘ ܐܢܘܢ . ܕܐܢ ܢܥܒܕ 21
ܐܢܘܢ ܒܪܢܫܐ ܚܝܐ ܒܗܘܢ . ܘܫܒܬܝ ܛܢܦܘ . ܘܐܡܪܬ ܕܐܫܘܕ ܚܡܬܝ . ܘܐܫܡܠܐ
ܪܘܓܙܝ ܒܗܘܢ ܒܡܕܒܪܐ .

Ipſi verò me irritaverunt, & noluerunt ob- 8
temperare, non amoverunt idola ab oculis
ſuis, neque dereliquerunt deos Ægypti. Quarè
decreveram effundere ſuper eos iracundiam
meam, & conſummare in eis furorem meum
intra terram Ægypti: Sed peperci propter 9
nomen meum, ne prophanaretur inter gentes
illas coram quibus apparueram eis ut edu-
cerem eos è terra Ægypti. Poſtquam edu- 10
xiſſem eos de terra Ægypti, & perduxiſſē eos
ad deſertum; Dedi illis præcepta mea, & nota 11
feci eis judicia mea per quæ homo vivit ſi fa-
ciat ea: Ac etiam ſabbatha mea dedi ipſis, 12
ut eſſent ſigno inter me & ipſos, & ſcirent me
eſſe Dominum ſanctificantem eos. Sed cùm 13
exaſperâſſent me Iſraelitæ in deſerto, in præ-
ceptis meis non ambulâſſent, judicia mea per
quæ homo viveret ſi faceret ea, ſpreviſſent, &
ſabbatha mea prophanâſſent; decreveram ef-
fundere ſuper eos iracundiam meam in deſer-
to, & perdere eos: Sed peperci propter no- 14
men meum, ne pollueretur coram gentibus il-
lis in quarum conſpectu eduxeram eos. Ego 15
viciſſim levatâ in deſerto manu meâ *juravi*
eis, me non introducturū eos in terram quam
dederam eis lacte & melle manantem, decus
omnium urbium: Eò quòd ſpreviſſent judi- 16
cia mea, ſabbatha mea valdè prophanâſſent,
& idola ſua ſecutum eſſet cor eorum. Atta- 17
men pepercit eis oculus meus ne extinguerem
eos & conſumerem eos in deſerto. Item filiis 18
eorum dixeram in deſerto, Juxta mandata pa-
trum veſtrorum ne ambuletis, judicia eorum
ne obſervetis, & in idolis eorum ne contami-
nemini: Ego ſum Dominus Deus veſter, in 19
mandatis meis ambulate, judicia mea ſervate
ac facite, Et ſabbatha mea ſanctificate, ſint- 20
que ſigno inter me & vos: & experiemini me
eſſe Dominum Deum veſtrum. At exacerba- 21
verunt me filii, in præceptis meis non ambu-
laverunt, judicia mea neque ſervaverunt neq;
fecerunt, ꝑ quæ homo vivit ſi faciat ea, & ſab-
batha mea prophanaverunt: Quapropter ſta-
tueram effundere iram meam, & conſummare
ſuper eos furorem meum in deſerto:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وتباعدوا عني * ولم يشاوا ان يسمعوا مني * ولم يطرحوا رذالات اعينهم * ولم يتركوا اعمال مصر * 8
فقلت لافيض غضبي عليهم * لاكمل رجزي فيهم في وسط ارض مصر * وصنعت كيلا ينجس 9
اسمي امام الشعوب الذي هم في وسطهم * الذين فيهم عرفت لهم امامهم * لاخرجهم من ارض
مصر * واخرجتهم من ارض مصر * واتيت بهم الى البرية * ودفعت لهم اوامري * وعرفتهم حقوقي 10 11
التي يصنعها الانسان ويحيي بها * واعطيتهم سبوتي لتكون علامة بيني وبينهم * ليعرفوا 12
اني انا الرب الذي يقدسهم * وقلت لبيت اسرائيل في البرية * سيروا في اوامري * واحفظوا 13
حقوقي لتصنعوها * التي يصنعها انسان فيحيي بها * فمرمروني بيت اسرائيل في البرية * ولم يسيروا
في اوامري * وافضوا حقوقي التي يصنعها انسان فيحيي بها * ونجسوا سبوتي جدا * وقلت
لافيض غضبي عليهم في البرية لابيدهم * وما صنعت * كيلا ينجس اسمي الذي هو افضل 14
من كل شي * امام الامم الذين اخرجتهم لعيونهم * وانا رفعت يدي عليهم في البرية * الا 15
ادخلهم الى الارض التي اعطيتها لهم * ارضا تفيض لبنا وعسلا * شهد هي اكثر من كل
الارض * من اجل انهم افضوا حقوقي * وفي اوامري لم يسلكوا * ونجسوا سبوتي * وخلف 16
فكرات قلوبهم ذهبوا * وشفقت عيني عليهم لا اخربهم * ولم اجعلهم في البرية الى النهاية * 17
* وقلت لاولادهم في البرية * بسنن ابائكم لا تسيرن * ولا تحفظوا حقوقهم * ولا تختلطوا 18
باعمالهم * ولا تتنجسوا * انا الرب الهكم * سيروا في اوامري * واحفظوا حقوقي واصنعوها * 19
* وقدسوا سبوتي * ولتكن علامة بيني وبينكم * لتعرفوا اني انا الرب الهكم * فمرمروني 20 21
واولادهم * ولم يسيروا في اوامري * ولن يحفظوا حقوقي ليصنعوها * التي يصنعها
الانسان فيحيا بها * ونجسوا سبوتي * فقلت ان اهرق غضبي عليهم في البرية * لاكمل
رجزي عليهم *

Ipſi tamen receſſerunt à me, & renuerunt 8
audire me, non abjecerunt abominationes
oculorum ſuorum, neq; dereliquerunt ope-
ra Ægypti. Quapropter dixeram effuſu-
rum me ſuper eos iram meam, expleturum
in eis furorem meum in medio terræ Æ-
gypti. Sed præſtiti, ut non pollueretur no- 9
men meum coram gentibus quarum in me-
dio ipſi erant, inter quas & coram quibus
notum factum fuerat eis, ut educerem eos
è terra Ægypti. Et eduxi eos è terra 10
Ægypti, & adduxi eos ad deſertum: De- 11
dique eis mandata mea, & nota feci eis
ſtatuta mea, quæ faciens homo, per ea vi-
vit: Dediq; eis ſabbatha mea, ut eſſent 12
ſignum inter me & inter ipſos, ut ſcirent
me eſſe Dominum qui ſanctificat eos: Et 13
dixi domui Iſraelis in deſerto; Ambulate
in mandatis meis, & mea ſtatuta ſervate
ut faciatis ea, quæ quis faciens, vivit per
ipſa: tamen exaſperaverunt me domus Iſ-
raelis in deſerto, & non ambulaverunt in
mandatis meis; ſed rejecerunt ſtatuta mea,
quæ quis faciens, per ea vivit, & ſabba-
tha mea nimiùm prophanaverunt: ideoq;
dixeram effuſurum me ſuper eos iram
meam in deſerto, ut perderem eos. Verùm 14
non feci, ne pollueretur nomen meum quod
eſt præſtantiſſimum rerum omnium, coram
gentibus quibus cernentibus eduxeram
illos. Ego etiam levavi manum meam ſu- 15
per eos in deſerto, quòd non introduce-
rem eos in terram quam dederam eis, ter-
ram lacte & melle affluentem, quæ fa-
vus eſt pluſquam univerſa terra: Eò 16
quòd ſtatuta mea repudiâſſent, in manda-
tis meis non ambulâſſent, ſabbatha mea
violâſſent, & poſt cogitationes cordium
ſuorum abiiſſent. At pepercit eis oculus 17
meus delere eos, & non redegi eos in de-
ſerto ad exitium. Dixi quoque filiis eo- 18
rum in deſerto; In legibus patrum ve-
ſtrorum nullatenus incedatis, ſtatuta
eorum ne ſervetis, operibus eorum ne vos
immiſceatis, néve polluamini. Ego ſum 19
Dominus Deus veſter, ambulate in præ-
ceptis meis, ſervate ſtatuta mea, eaque
perficite: Sanctificate ſabbatha mea, 20
ſintque ſignum inter me & inter vos, ut
ſciatis me eſſe Dominum Deum veſtrum.
Sed & filii eorum exaſperaverunt me, 21
& non ambulaverunt in præceptis me-
is, neque ſervaverunt ſtatuta mea per-
ficiendo illa, quæ quis perficiendo, per
ipſa vivit; & polluerunt ſabbatha
mea. Quare dixi me effuſurum ſuper eos
iram meam in deſerto, ut explerem in eis
furorem meum.

polluendum non ad : meĩ nomen propter feci & ,meā manum averti Et
וַהֲשִׁבֹתִי אֶת־יָדִי וָאַעַשׂ לְמַעַן שְׁמִי לְבִלְתִּי הֵחֵל 22
ego Etiam .earum oculis eos eduxi quarum ,gentium oculis in
לְעֵינֵי הַגּוֹיִם אֲשֶׁר־הוֹצֵאתִי אוֹתָם לְעֵינֵיהֶם׃ גַּם־אֲנִי 23
, gentes in eos *dispergendum ad* : deserto in eis meā manum levavi
נָשָׂאתִי אֶת־יָדִי לָהֶם בַּמִּדְבָּר לְהָפִיץ אֹתָם בַּגּוֹיִם
,fecerunt non mea judicia quòd Eo .terras in eos *ventilandum ad* &
וּלְזָרוֹת אוֹתָם בָּאֲרָצוֹת׃ יַעַן מִשְׁפָּטַי לֹא־עָשׂוּ 24
idola post & :violaverunt mea sabbatha & ,abjecerunt mea *statuta* &
וְחֻקּוֹתַי מָאָסוּ וְאֶת־שַׁבְּתוֹתַי חִלֵּלוּ וְאַחֲרֵי גִּלּוּלֵי
statuta eis dedi ego etiam Et .eorũ oculi fuerunt suorũ patrum
אֲבוֹתָם הָיוּ עֵינֵיהֶם׃ וְגַם־אֲנִי נָתַתִּי לָהֶם חֻקִּים 25
eos pollui Et .*eis in* vivent non judicia & , bona non
לֹא טוֹבִים וּמִשְׁפָּטִים לֹא יִחְיוּ בָּהֶם׃ וָאֲטַמֵּא אוֹתָם 26
ut : *vulvæ apertionem omnem faciendo transire in* ,suis muneribus in
בְּמַתְּנוֹתָם בְּהַעֲבִיר כָּל־פֶּטֶר רָחַם לְמַעַן
Quamobrē .Dominus *ego* quòd scirent *quod propter*,eos facerē desolare
אֲשִׁמֵּם לְמַעַן אֲשֶׁר יֵדְעוּ אֲשֶׁר אֲנִי יְהוָה׃ לָכֵן 27
dixit Sic : eos ad *dices* & ,hominis fili ,Israel domum ad loquere
דַּבֵּר אֶל־בֵּית יִשְׂרָאֵל בֶּן־אָדָם וְאָמַרְתָּ אֲלֵיהֶם כֹּה אָמַר
, vestri patrēs me affecerunt probris hoc Adhuc : Deus Dominus
אֲדֹנָי יֱהוִה עוֹד זֹאת גִּדְּפוּ אוֹתִי אֲבוֹתֵיכֶם
quam terram in eos induxi Et.prævaricationē me in *ipsos prævaricando in*
בְּמַעֲלָם בִּי מָעַל׃ וָאֲבִיאֵם אֶל־הָאָרֶץ אֲשֶׁר 28
collem omnē viderunt & : illis eam *dandum ad* ,meā manum levavi
נָשָׂאתִי אֶת־יָדִי לָתֵת אוֹתָהּ לָהֶם וַיִּרְאוּ כָל־גִּבְעָה
,sua sacrificia ibi sacrificabant & ,*perplexum* lignum omne &,excelsum
רָמָה וְכָל־עֵץ עָבֹת וַיִּזְבְּחוּ־שָׁם אֶת־זִבְחֵיהֶם
odorem ibi posuerunt & .suæ *appropinquationis* iram ibi dederunt &
וַיִּתְּנוּ־שָׁם כַּעַס קָרְבָּנָם וַיָּשִׂימוּ שָׁם רֵיחַ
Quid : eos ad dixi Et .sua libamina ibi libaverunt & ,*suarũ quietum*
נִיחוֹחֵיהֶם וַיַּסִּיכוּ שָׁם אֶת־נִסְכֵּיהֶם׃ וָאֹמַר אֲלֵהֶם מָה 29
Bamah ejꝰ nomen est vocatum Et *? illuc ingredientes* vos quod ,excelsum
הַבָּמָה אֲשֶׁר־אַתֶּם הַבָּאִים שָׁם וַיִּקָּרֵא שְׁמָהּ בָּמָה
dixit Sic : Israel domũ ad dic Propterea .hanc diem ad usque
עַד הַיּוֹם הַזֶּה׃ לָכֵן אֱמֹר אֶל־בֵּית יִשְׂרָאֵל כֹּה אָמַר 30
post & : *polluti* vos vestrorũ patrum *via in* Nũquid:Deus Dominꝰ
אֲדֹנָי יֱהוִה הַבְדֶרֶךְ אֲבוֹתֵיכֶם אַתֶּם נִטְמְאִים וְאַחֲרֵי
faciendo transire in , *vestra dona elevando* in Et ?*fornicantes vos* eorũ *spurcitias*
שִׁקּוּצֵיהֶם אַתֶּם זֹנִים׃ וּבִשְׂאֵת מַתְּנֹתֵיכֶם בְּהַעֲבִיר 31
,hodie usque vestris idolis omnibꝰ in *polluti vos* ignē per vestros filios
בְּנֵיכֶם בָּאֵשׁ אַתֶּם נִטְמְאִים לְכָל־גִּלּוּלֵיכֶם עַד־הַיּוֹם
,Deus Dominus dixit ,ego *Vivens* ? Israel domus vobis *requirar* ego &
וַאֲנִי אִדָּרֵשׁ לָכֶם בֵּית יִשְׂרָאֵל חַי־אָנִי נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִה
: erit non *essendo* vestrũ spiritũ super *ascendens* Et .vobis *requirar* si
אִם־אִדָּרֵשׁ לָכֶם׃ וְהָעֹלָה עַל־רוּחֲכֶם הָיוֹ לֹא תִהְיֶה 32
, terrarum cognationes sicut ,gentes sicut Erimus , *dicentes* vos quia
אֲשֶׁר אַתֶּם אֹמְרִים נִהְיֶה כַגּוֹיִם כְּמִשְׁפְּחוֹת הָאֲרָצוֹת
non si : Deus Dominus dixit ,ego *Vivens* .lapidi & ligno *ministrandũ ad*
לְשָׁרֵת עֵץ וָאָבֶן׃ חַי־אָנִי נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִה אִם־לֹא 33
regnavero,effuso furore in & , extento brachio in & , forti manu in
בְּיָד חֲזָקָה וּבִזְרוֹעַ נְטוּיָה וּבְחֵמָה שְׁפוּכָה אֶמְלוֹךְ
de vos congregabo & , populis de vos educam Et .vos super
עֲלֵיכֶם׃ וְהוֹצֵאתִי אֶתְכֶם מִן־הָעַמִּים וְקִבַּצְתִּי אֶתְכֶם מִן־ 34
,extento brachio in &,valida manu in,*eas in* estis dispersi quas , terris
הָאֲרָצוֹת אֲשֶׁר נְפוֹצֹתֶם בָּם בְּיָד חֲזָקָה וּבִזְרוֹעַ נְטוּיָה
:populorum desertum ad vos adducam Et .effuso furore in &
וּבְחֵמָה שְׁפוּכָה׃ וְהֵבֵאתִי אֶתְכֶם אֶל־מִדְבַּר הָעַמִּים 35
.*facies ad faciebus* ibi vobiscum me judicabo &
וְנִשְׁפַּטְתִּי אִתְּכֶם שָׁם פָּנִים אֶל־פָּנִים׃

Verſio VULG. LAT.

21 Averti autem manum meam, &
feci propter nomen meum, ut
non violaretur coram Gentibus,
de quibus ejeci eos in oculis ea-
23 rum. Iterùm levavi manũ meam
in eos in ſolitudine, ut diſperge-
rem illos in nationes, & venti-
24 larem in terras: Eò quòd judi-
cia mea non feciſſent, & præ-
cepta mea reprobâſſent, & ſab-
bata mea violâſſent, & poſt ido-
la patrum ſuorum fuiſſent oculi
25 eorum. Ergò & ego dedi eis
præcepta non bona, & judicia in
26 quibus non vivent. Et pollui
eos in muneribus ſuis, cùm of-
ferrent omne quod aperit vulvã,
propter delicta ſua, & ſcient quia
27 ego Dominus. Quamobrèm lo-
quere ad domum Iſrael, fili ho-
minis: & dices ad eos; Hæc di-
cit Dominus Deus; Adhuc & in
hoc blaſphemaverunt me patres
veſtri, cùm ſpreviſſent me con-
28 temnentes: Et induxiſſem eos
in terrã, ſuper quam levavi ma-
num meam ut darem eis: vide-
runt omnem collem excelſum, &
omne lignum nemoroſum, & im-
molaverunt ibi victimas ſuas: &
dederunt ibi irritationem obla-
tionis ſuæ, & poſuêrunt ibi odo-
rem ſuavitatis ſuæ, & libaverunt
29 libationes ſuas. Et dixi ad eos;
Quid eſt excelſum, ad quod vos
ingredimini? & vocatum eſt no-
men ejus, Excelſũ, uſque ad hanc
30 diem. Propterea dic ad domum
Iſrael; Hæc dicit Dominus Deus;
Certè in via patrum veſtrorum
vos polluimini, & poſt offendi-
31 cula eorum vos fornicamini: Et
in oblatione donorum veſtrorũ,
cùm traducitis filios veſtros per
ignem, vos polluimini in omni-
bus idolis veſtris uſque hodié:
& ego reſpondebo vobis, domus
Iſrael? Vivo ego, dicit Dominus
Deus, quia non reſpondebo vo-
32 bis. Neque cogitatio mentis ve-
ſtræ fiet, dicentium; Erimus ſicut
Gentes, & ſicut cognationes ter-
ræ, ut colamus ligna & lapides.
33 Vivo ego, dicit Dominus Deus,
quoniam in manu forti, et in bra-
chio extento, & in furore effuſo
34 regnabo ſuper vos. Et educam
vos de populis: & congregabo
vos de terris, in quibus diſperſi
eſtis, in manu valida, & in bra-
chio extento, & in furore effu-
35 ſo regnabo ſuper vos. Et addu-
cam vos in deſertum populorum,
& judicabor vobiſcum ibi facie
ad faciem.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

22 Καὶ ἐποίησα ὅπως τὸ ὄνομά μου τὸ παρά-
παν μὴ βεβηλωθῇ ἐνώπιον τῶν ἐθνῶν, (ω) καὶ
ἐξήγαγον αὐτοὺς κατ' ὀφθαλμοὺς αὐτῶν. (α)
23 Ἐξῆρα τὴν χεῖρά μου ἐπ' αὐτοὺς ἐν τῇ ἐρή-
μῳ, τοῦ διασκορπίσαι αὐτοὺς ἐν τοῖς ἔθνεσι,
24 (β) διασπεῖραι αὐτοὺς ἐν ταῖς χώραις, Ἀνθ'
ὧν τὰ δικαιώματά μου οὐκ ἐποίησαν, καὶ τὰ
προστάγματά μου ἀπώσαντο, καὶ τὰ σάββα-
τά μου ἐβεβήλουν, καὶ ὀπίσω τῶν ἐνθυμημά-
των τῶν πατέρων αὐτῶν ἦσαν οἱ ὀφθαλμοὶ αὐ-
25 τῶν. Καὶ ἐγὼ ἔδωκα αὐτοῖς προστάγματα οὐ
καλά, καὶ δικαιώματα ἐν οἷς οὐ ζήσονται ἐν
26 αὐτοῖς. Καὶ μιανῶ αὐτοὺς ἐν τοῖς (γ) δόγ-
μασιν αὐτῶν, ἐν τῷ διαπορεύεσθαί με πᾶν δι-
ανοῖγον μήτραν, ὅπως ἀφανίσω (δ) αὐτούς.
27 Διατοῦτο λάλησον πρὸς τὸν οἶκον τοῦ Ἰσραὴλ
υἱὲ ἀνθρώπου, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτούς, Τάδε (ε)
λέγει κύριος, Ἕως τούτου παρώργισάν με οἱ
πατέρες ὑμῶν ἐν τοῖς παραπτώμασιν αὐτῶν
28 ἐν οἷς (ζ) παρέπεσον εἰς ἐμέ. Καὶ εἰσήγαγον
αὐτοὺς εἰς τὴν γῆν (η) ἣν ἦρα τὴν χεῖρά μου (θ)
δοῦναι αὐτὴν αὐτοῖς· καὶ ἴδον πάντα βουνὸν
ὑψηλόν, καὶ πᾶν ξύλον κατάσκιον, καὶ ἔθυσαν
ἐκεῖ τοῖς θεοῖς αὐτῶν, καὶ ἔταξαν ἐκεῖ ὀ-
σμὴν (ι) εὐωδίας, καὶ ἔσπεισαν ἐκεῖ τὰς σπον-
29 δὰς αὐτῶν. Καὶ (κ) εἶπον πρὸς αὐτούς, Τί
ἐστιν (λ) Ἀβαμά, ὅτι ὑμεῖς εἰσπορεύεσθε ἐκεῖ;
καὶ ἐπεκάλεσαν τὸ ὄνομα αὐτοῦ (ϛ) Ἀβαμά, ἕως
30 τῆς σήμερον ἡμέρας. Διατοῦτο εἰπὸν πρὸς τὸν
οἶκον τοῦ Ἰσραήλ, Τάδε λέγει (μ) κύριος, Εἰ
ἐν ταῖς ἀνομίαις τῶν πατέρων ὑμῶν ὑμεῖς μι-
αίνεσθε, καὶ ὀπίσω τῶν βδελυγμάτων αὐτῶν
31 ὑμεῖς ἐκπορνεύετε, Καὶ ἐν ταῖς ἀπαρχαῖς τῶν
δομάτων ὑμῶν, (ν) ἐν τοῖς ἀφορισμοῖς οἷς
ὑμεῖς μιαίνεσθε ἐν πᾶσι τοῖς ἐνθυμήμασιν
ὑμῶν ἕως τῆς σήμερον ἡμέρας, καὶ ἐγὼ ἀπο-
κριθῶ ὑμῖν, οἶκος τοῦ Ἰσραήλ; Ζῶ ἐγώ,
λέγει κύριος, εἰ ἀποκριθήσομαι ὑμῖν, καὶ εἰ
32 ἀναβήσεται ἐπὶ τὸ πνεῦμα ὑμῶν τοῦτο. Καὶ
οὐκ ἔσται ὃν τρόπον ὑμεῖς λέγετε, Ἐσόμεθα ὡς
τὰ ἔθνη, καὶ ὡς αἱ φυλαὶ τῆς γῆς, τοῦ λατρεύ-
33 ειν ξύλοις καὶ λίθοις. Διατοῦτο, Ζῶ ἐγώ, λέ-
γει (ξ) κύριος, ἐν χειρὶ κραταιᾷ καὶ ἐν βραχί-
ονι ὑψηλῷ καὶ ἐν θυμῷ κεχυμένῳ βασιλεύσω
34 ἐφ' ὑμᾶς. Καὶ ἐξάξω ὑμᾶς ἐκ τῶν λαῶν, καὶ
εἰσδέξομαι ὑμᾶς ἐκ τῶν χωρῶν οὗ διεσκορπί-
σθητε ἐν αὐταῖς, ἐν χειρὶ κραταιᾷ καὶ ἐν βρα-
35 χίονι ὑψηλῷ καὶ ἐν θυμῷ κεχυμένῳ. Καὶ
ἄξω ὑμᾶς εἰς τὴν ἔρημον τῶν λαῶν, καὶ διακρι-
θήσομαι πρὸς ὑμᾶς ἐκεῖ πρόσωπον κατὰ
πρόσωπον.

(m) Et feci, ut nomen meũ omni- 22
nò non violaretur coram genti-
bus; (n) & eduxi eos ante ocu-
los earum. Levavi manum me- 23
am ſuper eos in deſerto, ut diſper-
gerem illos in nationibus, diſſemi-
narem eos in regionibus, Eò quòd 24
juſtificationes meas non fece-
rant, & præcepta mea repulerant,
& ſabbata mea violaverant, &
poſt cogitationes patrum ſuorum
fuerant oculi ipſorum. Et ego 25
dedi eis præcepta non bona, & ju-
ſtificationes, in quibus non vi-
vent in eis. Et polluam eos in 26
(o) dogmatibus eorũ, in (p) tranſ-
ducendo me omne adaperiens
vulvam, ut delerem eos. Idcir- 27
cò loquere ad domum Iſrael, fili
hominis, & dices ad eos; Hæc
dicit Dominus; uſque ad hoc
ad iracundiam provocaverunt me
patres veſtri in delictis ſuis, in
quibus corruerunt in me: Et in- 28
troduxi eos in terram, ſuper quã
levavi manum meam, ut darem
eam illis. Videruntque omnem
collem excelſum, & omne li-
gnum nemoroſum, & immolave-
runt ibi diis (q) ſuis, & poſue-
runt ibi odorem fragrantiæ, &
libaverunt ibi libamina ſua. Et 29
dixi ad eos; Quid eſt (r) A-
bama; quia vos intratis illuc?
Et vocaverunt nomen ejus, Aba-
ma, uſque in hodiernum diem.
Propterea dic ad domum Iſrael, 30
Hæc dicit Dominus; Si in ini-
quitatibus patrum veſtrorum vos
polluimini, & poſt abominationes
eorum *vos fornicamini, Et in* 31
primitiis donorum veſtrorum, in
ſegregationibus, (ſ) quibus vos
polluimini in omnibus cogitatio-
nibus veſtris uſque in hodiernum
diem: & ego reſpondebo vobis,
domus Iſrael? Vivo ego, dicit Do-
minus, ſi reſpondebo vobis; &, ſi
aſcendit in ſpiritum veſtrum hoc:
Et non erit, quomodò vos dicitis, 32
Erimus ſicut gentes, & ſicut tri-
bus terræ, colendo ligna, & la-
pides. Propterea, Vivo ego, dicit 33
Dominus, in manu valida, & in
brachio excelſo, & in furore ef-
fuſo regnabo ſuper vos. Et edu- 34
cam vos de populis, & recipiam
vos de regionibus, ubi diſperſi e-
ſtis in eis, in manu valida, &
in brachio excelſo, & in furore
effuſo. Et adducam vos in de- 35
ſertum populorum, & judicabor
vobiſcum ibi facie ad faciem.

MS. A. (ω) ὧν ἐξήγαγον (α) Καὶ ἐξῆρα (β) καὶ τοῦ διασκορπίσαι αὐτοὺς
(γ) δόμασιν (δ) αὐτούς, ἵνα γνῶσιν ὅτι ἐγὼ κύριος. Διατοῦτο (ε) λέ-
γει ἀδωναῒ κύριος, (ζ) παρέπεσαν (η) εἰς ἣν (θ) τοῦ δοῦναι αὐτοῖς· καὶ
εἶδαν πάντα βουνὸν (ι) εὐωδίας αὐτῶν, (κ) εἶπα (λ) ἡ Ἀββανά, (ϛ) Ἀββανά,
(μ) κύριος κύριος ὁ θεός, (ν) καὶ ἐν τοῖς ἀφορισμοῖς ὧν ὑμῶν ἐν πυρὶ
ὑμεῖς μιαίνεσθε (ξ) ἀδωναῒ κύριος, ἐὰν μὴ ἐν χειρὶ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

וְאָתֵיב יָת מְחַת גְבוּרְתִּי וַעֲבַדִית בְּדִיל שְׁמִי בְּדִיל דְלָא יִתְחַל לְעֵינֵי עַמְמַיָא דְאַפֵּקִית 21
יַתְהוֹן לְעֵינֵיהוֹן : אַף אֲנָא קַיֵמִית בְּמֵימְרִי לְהוֹן בְּמַדְבְּרָא לְאַגְלָאָה יַתְהוֹן לְבֵינֵי 23
עַמְמַיָא וּלְבַדָרָא יַתְהוֹן בִּמְדִינָתָא : חֲלַף דְדִינַי לָא עֲבַדוּ וּבִקְיָמַי קָצוּ וְיָת יוֹמֵי שַׁבַּיָא 24
דִילִי אַחִילוּ וּבָתַר טַעֲוַת אֲבָהָתְהוֹן הֲוָאָה עֵינֵיהוֹן : וְאַף אֲנָא מִדְמָרַדוּ בְּמֵימְרִי וְלָא 25
אֲבוֹ לְקַבָּלָא לִנְבִיאַי אַרְחֵקְתִּנוּן וּמְסַרְתִּנוּן בְּיַד שָׂנְאֵיהוֹן וּבָתַר יִצְרֵיהוֹן טִפְּשָׁא אֲזַלוּ
וַעֲבַדוּ גְזֵירָן דְלָא תַקְנָן וְנִימוּסִין דְלָא אִתְקַיַמְתּוּן בְּהוֹן : וְסָאֵיבִית יַתְהוֹן בְּמַתְּנָתְהוֹן 26
בְּאַעְבָּרָא כָּל פְּתַח וַלְדָא בְּדִיל דְאַצְדִנוּן בְּדִיל דְיִדְעוּן דִי אֲנָא יְיָ : בְּכֵן אִתְנַבֵּי לְבֵית 27
יִשְׂרָאֵל בַּר אָדָם וְתֵימַר לְהוֹן כִּדְנָן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים עוֹד דָא אַרְגִיזוּ קֳדָמַי אֲבָהָתְכוֹן
בְּדְשַׁקַרוּ בְּמֵימְרִי שְׁקָר : וְאַעֲלְתִּנוּן לְאַרְעָא דְקַיֵמִית בְּמֵימְרִי לְמִתַּן יָתַהּ לְהוֹן וַחֲזוֹ כָּל 28
רָמָא מְנַטְלָא וְכָל אִילָן עֲבוֹף וּנְכִיסוּ תַמָן יַת נִכְסֵיהוֹן וִיהַבוּ תַמָן אַרְגָזָא קוּרְבָּנֵיהוֹן
וְשַׁוִיאוּ תַמָן פּוּלְחָן דִבְחֵיהוֹן וְנִסִיכוּ תַמָן יַת נִסְכֵּיהוֹן : וַאֲמַרִית לְהוֹן מָא בָמְתָא דְאַתּוּן 29
אָתָן לְאִשְׁתְּטָאָה תַמָן וְאִתְקְרֵי שְׁמַהּ בָּמְתָא עַד יוֹמָא הָדֵין : בְּכֵן אֱמַר לְבֵית יִשְׂרָאֵל 30
כִּדְנָן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים הַבְּאוֹרַח אֲבָהָתְכוֹן אַתּוּן מִסְתָּאֲבִין וּבָתַר שִׁקּוּצֵיהוֹן אַתּוּן טָעָן :
וּבְמִטַל מַתְּנָתְכוֹן בְּאַעְבָּרָא בְנֵיכוֹן בְּנוּרָא אַתּוּן מִסְתַּאֲבִין לְכָל פּוּלְחַן טַעֲוָתְכוֹן עַד 31
יוֹמָא דֵין וַאֲנָא אֶשְׁתְּאֵל לְכוֹן בְּמֵימְרִי בֵּית יִשְׂרָאֵל קַיָם אֲנָא אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים אִם
אֶשְׁתְּאֵל לְכוֹן בְּמֵימְרִי : וּדְאַתּוּן מְהַרְהֲרִין וְדִסְלִיקַת עַל לִבְּכוֹן קֳדָמַי גְלֵין דְאַתּוּן 32
אָמְרִין נְהֵי כְּעַמְמַיָא כְּזַרְעִית מְדִינָתָא לְשַׁמָשָׁא אָעָא וְאַבְנָא : קַיָם אֲנָא אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים 33
אִם לָא בְּיַד תַקִיפָא וּבִדְרָעָא מְרוֹמַם וּבִרְגַז שְׁפִיךְ אֶמְלוֹךְ עֲלֵיכוֹן : וְאַפֵּיק יַתְכוֹן מִבֵּינֵי 34
עַמְמַיָא וַאֲכְנֵישׁ יַתְכוֹן מִן מְדִינָתָא דְאִתְבַּדַרְתּוּן בְּהוֹן בְּיַד תַקִיפָא וּבִדְרָעָא מְרוֹמַם
וּבִרְגַז שְׁפִיךְ : וְאָעֵיל יַתְכוֹן לְמַדְבַּר עַמְמַיָא וְאֶתְפְּרַע מִנְכוֹן תַמָן אַפִּין בְּאַפִּין : 35

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et averti plagam potentiæ meæ; & feci propter nomen meum ut non violare- 21
tur ante oculos populorum ante quorum oculos eduxi eos. Ego quoque ju- 23
ravi in verbo meo eis in deſerto, me abducturum eos inter populos, & diſper-
ſurum eos per provincias. Pro eo quòd judicia mea non fecerunt, & pacta 24
mea deteſtati ſunt, & dies ſabbatorum meorum violaverunt, & poſt idola
patrum ſuorum fuerunt oculi eorum. Ego quoque quia prævaricati ſunt in 25
verbum meum, & noluerunt obedire prophetis meis, projeci eos, & tradidi
eos in manum *inimicorum ſuorum; & poſt concupiſcentiã ſuam inſipientẽ* abie-
runt, & fecerunt decreta non recta, & leges in quibus non *vivetis*. Et pollui 26
eos in muneribus ſuis, cùm transferrent omne quod aperit vulvam, ut deſo-
larem eos, ut ſcirent quia ego Dominus. Propterea vaticinare ad domum Iſ- 27
rael, fili hominis, & dices ad eos: Hæc dicit Dominus Deus: Adhuc in hoc
irritaverunt me patres veſtri, quod prævaricati ſunt in verbum meum præva-
ricationem. Et introduxi eos in terram quam juraveram verbo meo me da- 28
turum illis, & viderunt omnem collem elevatum, & omnem arborem viri-
dem; & immolaverunt ibi victimas ſuas, dederunt ibi irritationem oblatio-
num ſuarum, & poſuerunt ibi cultum ſacrificiorum ſuorum, & libaverunt ibi
libationes ſuas. Et dixi eis: Quod eſt excelſum ad quod vos venitis ut ſtul- 29
tè agatis ibi? & vocatum eſt nomen ejus Excelſum uſque in diem hanc.
Propterea dic domui Iſrael: Hæc dicit Dominus Deus; Nunquid in via pa- 30
trum veſtrorum vos polluimini, & poſt abominationes eorum vos erratis? Et 31
in oblatione donorum veſtrorum, transferendo filios veſtros per ignem, vos
polluimini; & in omni cultu idolorum veſtrorum uſque in diem hanc? Et
ego interrogatus verbo meo reſpondebo vobis domus Iſrael? Vivo ego, dicit
Dominus Deus, ſi interrogatus reſpondero vobis verbo meo. Et quod vos 32
cogitatis, & quod aſcendit in cor veſtrum, manifeſtum eſt coram me: quia
vos dicitis: Erimus ſicut populi, ſicut cognationes provinciarum, ut cola-
mus lignum & lapidem. Vivo ego, dicit Dominus Deus, ſi non in manu forti 33
& in brachio excelſo, & in furore effuſo regnabo ſuper vos. Et educam vos 34
de medio populorũ, & congregabo vos de provinciis ad quas diſperſi eſtis, in
manu forti, & in brachio excelſo, & in furore effuſo. Et introducam vos in 35
deſertum populorum, & vindictam ſumam ex vobis ibi facie ad faciem.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

22 * ܘܚܣܬ ܡܛܠ ܫܡܝ. ܕܠܐ ܢܬܛܘܫ ܩܕܡ ܥܡܡܐ ܕܐܦܩܬ ܐܢܘܢ ܠܥܝܢܝܗܘܢ. * ܐܠܐ
23 ܐܪܝܡܬ ܠܗܘܢ ܐܝܕܝ ܒܡܕܒܪܐ. ܕܐܒܕܪ ܐܢܘܢ ܒܥܡܡܐ. ܘܐܙܪܐ ܐܢܘܢ ܒܐܬܪܘܬܐ. * ܡܛܠ ܕܠܐ 24
ܥܒܕܘ ܕܝܢܝ. ܘܦܘܩܕܢܝ ܫܛܘ. ܘܫܒܬܝ ܛܢܦܘ. ܘܒܬܪ ܦܬܟܪܐ ܕܐܒܗ̈ܝܗܘܢ ܗܘ̈ܝ
ܥܝܢܝܗܘܢ. * ܘܐܦ ܐܢܐ ܝܗܒܬ ܠܗܘܢ ܦܘܩܕܢܐ ܕܠܐ ܫܦܝܪܝܢ. ܘܕܝܢܐ ܕܠܐ ܢܚܘܢ ܒܗܘܢ. 25
* ܘܛܢܦܬ ܐܢܘܢ ܒܡܘܗܒܬܗܘܢ. ܟܕ ܕܡܥܒܪܝܢ ܒܘܟܪܐ. ܘܐܘܒܕ ܐܢܘܢ. ܘܢܕܥܘܢ. ܕܐܢܐ ܐܢܐ 26
ܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܒܪ ܐܢܫܐ. ܡܠܠ ܥܡ ܒܝܬ ܝܣܪܝܠ. ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ 27
ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܬܘܒ ܒܗܕܐ ܓܕܦܘ ܥܠܝ ܐܒܗ̈ܝܟܘܢ. ܒܡܥܠܗܘܢ ܕܐܥܠܘ ܒܝ.
* ܘܐܥܠܬ ܐܢܘܢ ܠܐܪܥܐ ܕܐܪܝܡܬ ܐܝܕܝ ܠܡܬܠ ܠܗܘܢ. ܘܚܙܘ ܟܠ ܪܡܬܐ ܪܡܬܐ 28
ܘܟܠ ܐܝܠܢ ܥܒܝܬܐ. ܘܕܒܚܘ ܬܡܢ ܕܒܚܝܗܘܢ. ܘܩܪܒܘ ܬܡܢ ܩܘܪܒܢܝܗܘܢ. ܘܣܡܘ ܬܡܢ
ܪܝܚܐ ܕܒܣܡܝܗܘܢ. ܘܢܣܟܘ ܬܡܢ ܢܣܟܝܗܘܢ. * ܘܐܡܪܬ ܠܗܘܢ. ܡܢܘܗܝ ܦܪܟܐ ܕܐܬܝܢ ܐܢܬܘܢ 29
ܠܬܡܢ. ܘܐܬܩܪܝ ܫܡܗ ܦܪܟܐ. ܥܕܡܐ ܠܝܘܡܢܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܒܪ ܐܢܫܐ. ܐܡܪ 30
ܠܒܝܬ ܝܣܪܝܠ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܐܢ ܒܐܘܪܚܐ ܕܐܒܗ̈ܝܟܘܢ ܡܬܛܢܦܝܢ
ܐܢܬܘܢ. ܘܒܬܪ ܦܬܟܪܝܗܘܢ ܛܥܝܢ ܐܢܬܘܢ. * ܘܡܩܪܒܝܢ ܐܢܬܘܢ ܡܘܗܒܬܟܘܢ. 31
ܘܡܥܒܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܢܝܟܘܢ ܒܢܘܪܐ. ܘܡܬܛܢܦܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܦܬܟܪܝܟܘܢ. ܥܕܡܐ
ܠܝܘܡܢܐ. ܘܨܒܝܬܘܢ ܕܬܫܐܠܘܢ ܒܝ ܒܝܬ ܝܣܪܝܠ. ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܕܠܐ
ܐܬܠ ܠܟܘܢ ܦܬܓܡܐ. * ܘܗܘ ܕܒܪܥܝܢܟܘܢ. ܠܐ ܢܗܘܐ. ܕܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܢܗܘܐ ܐܝܟ ܥܡܡܐ 32
ܘܐܝܟ ܫܪܒܬܐ ܕܐܪܥܐ. ܘܢܦܠܘܚ ܠܩܝܣܐ ܘܠܟܐܦܐ. * ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܕܒܐܝܕܐ 33
ܥܫܝܢܬܐ ܘܒܕܪܥܐ ܪܡܐ: ܘܒܚܡܬܐ ܫܦܝܟܬܐ. ܐܡܠܘܟ ܥܠܝܟܘܢ. * ܘܐܦܩܟܘܢ ܡܢ ܥܡܡܐ. 34
ܘܐܟܢܫܟܘܢ ܡܢ ܐܬܪܘܬܐ ܕܐܬܒܕܪܬܘܢ ܒܗܝܢ. ܒܐܝܕܐ ܥܫܝܢܬܐ. ܘܒܕܪܥܐ ܪܡܐ: ܘܒܚܡܬܐ
ܫܦܝܟܬܐ. * ܘܐܝܬܝܟܘܢ ܠܡܕܒܪܐ ܕܥܡܡܐ. ܘܐܬܕܝܢ ܥܡܟܘܢ ܬܡܢ ܐܦܝܢ ܠܘܩܒܠ ܐܦܝܢ. 35

Sed peperci propter nomen meum, ne pollueretur 22
inter gentes coram quibus eduxeram
eos. Attamen ſublatâ manu meâ *juraveram* 23
eis in deſerto, me diſperſurum eos inter gentes,
& ſparſurum eos in regiones; Eò quòd 24
non feciſſent judicia mea, ſpreviſſent mandata
mea, prophanâſſent ſabbatha mea, & idola
patrum ſuorum ſecuti eſſent oculi eorum.
Et ego dedi eis præcepta minimè bona, & 25
judicia per quæ non vivant : Et pollui eos 26
in muneribus eorum, quum offerrent primogenitos
: perdam autem eos, & ſcient me eſſe
Dominum. Iccircò fili hominis, alloquere 27
Iſraelitas, & dic eis; Sic ait Dominus dominorum;
Etiam in hoc blaſphemaverunt corã
me patres veſtri, per ſcelus quod in me perpetraverunt.
Nam cùm perduxiſſem eos ad 28
terram quam ſublatâ manu *juraveram* me daturum
eis, videntes omnem collem excelſum,
& quamlibet arborem umbriferam; ſacrificaverunt
ibi victimas ſuas, ibi obtulerunt munera
ſua, ibi poſuerunt odorem ſuffitûs ſui,
ibíque libaverunt libamina ſua. Et dixi eis; 29
Quid eſt fanum quò convenitis; hinc vocatum
eſt nomen ejus Fanum, ad hunc uſque
diem. Iccircò fili hominis, dic Iſraelitis; Sic 30
ait Dominus dominorum; Quandoquidem in
via patrum veſtrorum vos polluitis, poſt idola
ipſorum aberrantes, Et offerentes munera 31
veſtra, traducentes filios veſtros per ignẽ,
& polluentes vos in idolis veſtris ad hunc
uſque diem; attamen vultis me conſulere O
Iſraelitæ? Per vitam meam, inquit Dominus
dominorum, non dabo vobis reſponſum :
Et id quod in animo habetis, non fiet. Dicitis 32
enim, Erimꝰ ut *reliquæ* gentes, & ut nationes
terræ; & miniſtrabimus lignis atque lapidibus.
Per vitam meam, dicit Dominꝰ dominorum, 33
manu validâ, brachio excelſo, &
iracundiâ effuſâ regnabo ſuper vos; Extrahámque 34
vos è gentibus, & colligam vos è regionibus
in quas diſperſi fueritis; & manu
robuſtâ, brachio ſublimi, atque irâ profuſâ,
Adducam vos in deſertum populorum, ibíque 35
diſceptabo vobiſcum facie coram facie.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

22 * فلم اصنع * كيلا يتنجس اسمي الذي هو افضل من كل شي * قدام الامم الذين
23 24 اخرجتهم لعيونهم * ورفعت يدي عليهم في البرية * لافرقهم في الامم * وابددهم في الكور * من
اجل انهم لم يصنعوا حقوقي * وانفصوا اوامري * ونجسوا سبوتي * وخلف فكرات ابائهم كانت
25 26 اعينهم * وانا اعطيتهم اوامر ليست حسنة * وحقوقا التي بها لا يعيشون * فانجسهم بعطاياهم *
27 فنجسوها باراييهم * حين عبوري بكل فاتح رحم * كي ابيدهم * ليعلموا اني انا الرب * لاجل
هذا تكلم مع بيت اسرايل يا ابن الانسان * وتقول لهم * هكذا يقول ادوناي الرب * هلم جدا
28 اغضبني اباوكم بزلاتهم التي سقطوا بها الي * وادخلتهم الى الارض التي رفعت يدي عليها
لاعطيها لهم * وراوا كل تل عال وكل شجر ظليلة * وذبحوا هناك لالهتهم * وربوا هناك
29 رايحة بخورهم * وافاضوا هناك قواريرهم * وقلت لهم * ما هي ابانا * لانكم انتم تدخلون اليها
30 الى ثم * ودعوا اسمه ابانا الى نهار هذا اليوم * لاجل هذا قل لبيت اسرايل * هكذا يقول الرب
31 الرب الاله * ان كنتم انتم بآثام ابايكم تتدنسون * وخلف رذالاتهم انتم زنيتم * وباوايل
عطاياكم * وبتعبير بنيكم بالنار * انتم تتدنسون بجميع فكراتكم الى نهار هذا اليوم * فانا
32 اجاوبكم يا بيت اسرايل * حي انا يقول الرب لا اجاوبكم * ولا يصعد الى روحكم هذا *
ولا يكون كما انتم تقولون * نصير مثل الامم * ومثل قبايل الارض * لنخدم الاخشاب والحجار *
33 * لاجل هذا حي انا يقول ادوناي الرب * اني بيد عزيزة * وبذراع رفيعة * وبغضب فايض
34 املك عليكم * واخرجكم من الشعوب * واقبلكم من البلدان حيث تفرقتم فيها * بيد
35 عزيزة * وبذراع رفيعة * وبغضب فايض * واسوقكم الى برية الشعوب * واحاكم معكم
هناك وجها لوجه *

*Verùm non feci, ut non pollueretur nomen 22
meum quod præſtantiſſimum eſt omnium
rerum, coram gentibus ante quarum
oculos eduxeram illos. Rurſum levavi 23
manum meam ſuper illos in deſerto, ut
diſperderem eos inter gentes, & diſſiparem
eos in regiones; Eò quòd non perfeciſſent 24
ſtatuta mea, ſed repuliſſent mandata
mea, violâſſent ſabbatha mea, &
poſt cogitationes patrum ſuorum fuiſſent
oculi eorum. Et ego dedi eis mandata 25
non bona, & ſtatuta per quæ non viverent.
Et polluam eos in muneribus ſuis 26
(polluerunt enim ea dogmatibus ſuis)
quum traduxero omne aperiens vulvam,
ut perdam eos; quatenus agnoſcant me
eſſe Dominum. Propterea alloquere domum 27
Iſraelis O fili hominis, & dicas
eis; Ita dicit Adonai Dominus; Agedum
graviſſimè irritârunt me patres veſtri
culpis ſuis in quas contra me lapſi
ſunt. Cùm enim introduxiſſem eos in terram, 28
pro qua levaveram manum meam
me daturum eis; videntes omnem collem
ſublimem & omnem arborem umbriferam,
ſacrificaverunt ibi diis ſuis, diſpoſuerunt
ibi ſui thuris odorem, & effuderunt
ibi alabaſtra ſua. Et dixi eis, 29
Quid eſt Abbana, quòd vos illuc ingredimini?
tamen vocaverunt nomen ejus
Abbana, uſque in hodiernum diem.
Propterea dic domui Iſraelis; Ita dicit 30
Dominus, Dominus Deus; Quandoquidem
vos iniquitatibus patrum veſtrorum
contaminâſtis vos, & poſt abominationes
eorum fornicati eſtis, Necnon in 31
primitiis donorum veſtrorum, & ſegregatione
filiorum veſtrorum in igne, vos
polluimini in cunctis cogitationibus veſtris
ad hodiernum uſque diem; egóne
reſponderem vobis O domus Iſraelis?
Vivo ego, dicit Dominus, haudquaquam
reſpondebo vobis. Et ne veniat hoc vobis 32
in mentem; non enim erit quemadmodum
dicitis, Fiemus ut gentes & ut
nationes terræ, ſervientes lignis atque
lapidibus. Propterea vivo ego, inquit 33
Adonai Dominus, manu potenti, brachio
elato, & irâ inundante regnabo ſuper vos;
Et educam vos è gentibus, et recipiam 34
vos è regionibus in quas diſperſi eſtis, manu
validâ, brachio elato, et irâ inundante
: Abigamque vos in deſertum gentium, 35
et litem inſtituam ibi vobiſcum facie
ad faciem.*

יחזקאל : כ

ſic : Ægypti terræ deſerto in veſtris patribus cum me judicavi Sicut
36 כַּאֲשֶׁר נִשְׁפַּטְתִּי אֶת־אֲבוֹתֵיכֶם בְּמִדְבַּר אֶרֶץ מִצְרַיִם כֵּן
vos faciam tranſire Et .Deus Dominus dixit ,vobiſcum me judicabo
37 אִשָּׁפֵט אִתְּכֶם נְאֻם אֲדֹנָי יֱהֹוִה׃ וְהַעֲבַרְתִּי אֶתְכֶם
repurgabo Et .fœderis vinculo in vos adducam & : virga ſub
38 תַּחַת הַשָּׁבֶט וְהֵבֵאתִי אֶתְכֶם בְּמָסֹרֶת הַבְּרִית׃ וּבָרוֹתִי
ſuarum peregrinationum terra è ,me in prævaricantes & , rebelles vobis ex
מִכֶּם הַמֹּרְדִים וְהַפּוֹשְׁעִים בִּי מֵאֶרֶץ מְגוּרֵיהֶם
quòd ſcietis & : *veniet* non Iſrael *humum* ad & , eos educam
אוֹצִיא אוֹתָם וְאֶל־אַדְמַת יִשְׂרָאֵל לֹא יָבוֹא וִידַעְתֶּם כִּי־
: Deus Dominus dixit ſic , Iſrael domus vos Et .Dominus *ego*
39 אֲנִי יְהוָה׃ וְאַתֶּם בֵּית־יִשְׂרָאֵל כֹּה־אָמַר ׀ אֲדֹנָי יֱהֹוִה
: me ad audientes vos non ſi poſt & ,ſervite ,ambulate ſua idola *Vir*
אִישׁ גִּלּוּלָיו לְכוּ עֲבֹדוּ וְאַחַר אִם־אֵינְכֶם שֹׁמְעִים אֵלָי
, veſtris *donis* in adhuc polluetis non *meæ ſanctitatis* nomen &
וְאֶת־שֵׁם קָדְשִׁי לֹא תְחַלְּלוּ־עוֹד בְּמַתְּנוֹתֵיכֶם
altitudinis monte in ,*meæ ſanctitatis* monte in Quia .veſtris idolis in &
40 וּבְגִלּוּלֵיכֶם׃ כִּי בְהַר־קָדְשִׁי בְּהַר ׀ מְרוֹם
, Iſrael domus omnis ,mihi ſervient ibi ,Deus Dominus dixit , Iſrael
יִשְׂרָאֵל נְאֻם אֲדֹנָי יֱהֹוִה שָׁם יַעַבְדֻנִי כָּל־בֵּית יִשְׂרָאֵל
,veſtras oblationes quæram ibi & ,eos volam ibi :terra in ipſa tota
כֻּלֹּה בָּאָרֶץ שָׁם אֶרְצֵם וְשָׁם אֶדְרוֹשׁ אֶת־תְּרוּמֹתֵיכֶם
.veſtris ſanctificationibus omnibus in *veſtrarum elevationum initium* &
וְאֶת־רֵאשִׁית מַשְׂאוֹתֵיכֶם בְּכָל־קָדְשֵׁיכֶם׃
, populis de vos *me educendo in* , vos volam quietis odorem In
41 בְּרֵיחַ נִיחֹחַ אֶרְצֶה אֶתְכֶם בְּהוֹצִיאִי אֶתְכֶם מִן־הָעַמִּים
: eas in eſtis diſperſi quas , terris de vos congregavero &
וְקִבַּצְתִּי אֶתְכֶם מִן־הָאֲרָצוֹת אֲשֶׁר נְפֹצֹתֶם בָּם
,Dominus *ego* quòd ſcietis Et .gentiũ oculis in vobis in me ſanctificabo &
42 וְנִקְדַּשְׁתִּי בָכֶם לְעֵינֵי הַגּוֹיִם׃ וִידַעְתֶּם כִּי־אֲנִי יְהוָה
qua terram in , Iſrael humum in vos *me inducendo in*
בַּהֲבִיאִי אֶתְכֶם אֶל־אַדְמַת יִשְׂרָאֵל אֶל־הָאָרֶץ אֲשֶׁר
recordabimini Et .veſtris patribus eam *dandum ad* ,meã manũ levavi
43 נָשָׂאתִי אֶת־יָדִי לָתֵת אוֹתָהּ לַאֲבוֹתֵיכֶם׃ וּזְכַרְתֶּם־
vos polluiſtis quibus veſtrorũ operum omnium & ,veſtrarũ viarum ibi
שָׁם אֶת־דַּרְכֵיכֶם וְאֵת כָּל־עֲלִילוֹתֵיכֶם אֲשֶׁר נִטְמֵאתֶם
.feciſtis quæ veſtra mala omnia ob ,*veſtris facieb⁹ in vos faſtidietis &* :*eis in*
בָּם וּנְקֹטֹתֶם בִּפְנֵיכֶם בְּכָל־רָעוֹתֵיכֶם אֲשֶׁר עֲשִׂיתֶם׃
propter vobiſcum *me faciendo in* ,Dominus *ego* quòd ſcietis Et
44 וִידַעְתֶּם כִּי־אֲנִי יְהוָה בַּעֲשׂוֹתִי אִתְּכֶם לְמַעַן
veſtra *ſtudia* ſecundùm & ,malas veſtras vias ſecundùm non ,meum nomen
שְׁמִי לֹא כְדַרְכֵיכֶם הָרָעִים וְכַעֲלִילוֹתֵיכֶם
verbum fuit Et .Deus Dominus dixit , Iſrael domus corrupta
45 הַנִּשְׁחָתוֹת בֵּית יִשְׂרָאֵל נְאֻם אֲדֹנָי יֱהֹוִה׃ וַיְהִי דְבַר־
,auſtrum ad viam *tuas facies* pone ,hominis Fili : dicendo me ad Domini
46 יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם שִׂים פָּנֶיךָ דֶּרֶךְ תֵּימָנָה
dices Et .*meridiei* agri ſylvam ad propheta & ,*auſtrum* ad ſtilla &
47 וְהַטֵּף אֶל־דָּרוֹם וְהִנָּבֵא אֶל־יַעַר הַשָּׂדֶה נֶגֶב׃ וְאָמַרְתָּ
: Deus Dominus dixit Sic : Domini verbum Audi ,*meridiei* ſylvæ
לְיַעַר הַנֶּגֶב שְׁמַע דְּבַר־יְהוָה כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יֱהֹוִה
,viride lignum omne te in *comedet* & ,ignem te in *ſuccendens* ego Ecce
הִנְנִי מַצִּית־בְּךָ ׀ אֵשׁ וְאָכְלָה בְךָ כָל־עֵץ־לַח
comburentur & , *flammæ* flamma extinguetur non aridũ lignum omne &
וְכָל־עֵץ יָבֵשׁ לֹא־תִכְבֶּה לַהֶבֶת שַׁלְהֶבֶת וְנִצְרְבוּ־
quòd , caro omnis *videbunt* Et .aquilonem ad *meridie à* facies omnes ea in
48 בָהּ כָּל־פָּנִים מִנֶּגֶב צָפוֹנָה׃ וְרָאוּ כָּל־בָּשָׂר כִּי
Domine Ahah : dixi Et .extinguetur nec ; eam ſuccendi Dominus ego
49 אֲנִי יְהוָה בִּעַרְתִּיהָ לֹא תִכְבֶּה׃ וָאֹמַר אֲהָהּ אֲדֹנָי
? iſte parabolas *parabolizans* Nónne : mihi *dicentes* Ipſi : Deus
יֱהֹוִה הֵמָּה אֹמְרִים לִי הֲלֹא מְמַשֵּׁל מְשָׁלִים הוּא׃

Verſio VULG. LAT.

36 Sicut judicio contendi adverſùm
patres veſtros in deſerto terræ
Ægypti, ſic judicabo vos, dicit
37 Domin⁹ Deus. Et ſubjiciam vos
ſceptro meo, & inducam vos in
38 vinculis fœderis. Et eligam de
vobis tranſgreſſores, & impios,
& de terra incolat⁹ eorum edu-
cam eos, & in terram Iſrael non
ingredientur : & ſcietis quia
39 ego Domin⁹. Et vos, domus Iſ-
rael, Hæc dicit Domin⁹ Deus; Sin-
guli poſt idola veſtra ambulate, et
ſervite eis. Quòd ſi & in hoc non
audieritis me, & nomen meum
ſanctum pollueritis ultrà in mu-
nerib⁹ veſtris & in idolis veſtris:
40 In monte ſancto meo, in monte
excelſo Iſrael, ait Domin⁹ Deus,
ibi ſerviet mihi omnis domus Iſ-
rael; omnes, inquam, in terra, in
qua placebunt mihi, & ibi quæ-
ram primitias veſtras, & initium
decimarum veſtrarum in omnib⁹
41 ſanctificationib⁹ veſtris. In odo-
rem ſuavitatis ſuſcipiam vos,
cùm eduxero vos de populis, &
congregavero vos de terris in
quas diſperſi eſtis, & ſanctifica-
bor in vobis in oculis nationum.
42 Et ſcietis quia ego Domin⁹, cùm
induxero vos ad terram Iſrael, in
terram, pro qua levavi manum
meam, ut darem eam patrib⁹ ve-
43 ſtris. Et recordabimini ibi via-
rum veſtrarum, & omnium ſce-
lerum veſtrorum, quib⁹ polluti
eſtis in eis : & diſplicebitis vo-
bis in conſpectu veſtro in omnib⁹
44 malitiis veſtris, quas feciſtis. Et
ſcietis quia ego Domin⁹, cùm
benefecero vobis propter nomen
meum, & non ſecundùm vias ve-
ſtras malas, neque ſecundùm ſce-
lera veſtra peſſima, domus Iſrael,
45 ait Domin⁹ Deus. Et fact⁹ eſt
ſermo Domini ad me, dicens;
46 Fili hominis, pone faciem tuam
contra viam Auſtri, & ſtilla ad
Africum, & propheta ad ſaltum
47 agri Meridiani. Et dices ſaltui
Meridiano; Audi verbum Do-
mini : hæc dicit Domin⁹ Deus;
Ecce ego ſuccendam in te ignem,
& comburam in te omne lignum
viride, & omne lignum aridum:
non extinguetur flamma ſuccen-
ſionis : & comburetur in ea o-
mnis facies ab Auſtro uſque ad
48 Aquilonem. Et videbit univer-
ſa caro, quia ego Domin⁹ ſuc-
49 cendi eam, nec extinguetur. Et
dixi; A, a, a, Domine Deus : ipſi
dicunt de me; Numquid non per
parabolas loquitur iſte?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

36 Ὃν τρόπον διεκρίθην πρὸς τοὺς πατέρας
ὑμῶν ἐν τῇ (ο) ἐρήμῳ γῆς Αἰγύπτου, οὕτως
37 κρινῶ ὑμᾶς, λέγει κύριος. Καὶ διάξω ὑμᾶς
ὑπὸ τὴν ῥάβδον μου, καὶ εἰσάξω ὑμᾶς ἐν ἀριθ-
38 μῷ, Καὶ ἐκλέξω ἐξ ὑμῶν τοὺς ἀσεβεῖς καὶ
τοὺς ἀφεστηκότας; διότι ἐκ τῆς παροικεσίας αὐ-
τῶν (π) ἐξάξω αὐτοὺς, καὶ εἰς τὴν γῆν τοῦ Ἰσρα-
ὴλ οὐκ εἰσελεύσονται· καὶ ἐπιγνώσεσθε διότι ἐγὼ
39 (ρ) κύριος κύριος. Καὶ ὑμεῖς οἶκος Ἰσρα-
ὴλ, τάδε λέγει κύριος κύριος, Ἕκαστος τὰ
ἐπιτηδεύματα αὐτοῦ ἐξάρατε, καὶ μετὰ ταῦτα
(σ) εἰ ὑμεῖς εἰσακούετέ μου, καὶ τὸ ὄνομά μου
τὸ ἅγιον οὐ βεβηλώσετε οὐκέτι ἐν τοῖς δώ-
ροις ὑμῶν καὶ ἐν τοῖς ἐπιτηδεύμασιν ὑμῶν·
40 Διότι ἐπὶ τοῦ ὄρους τοῦ ἁγίου μου, ἐπ' ὄρους (τ) ὑ-
ψηλοῦ, λέγει κύριος κύριος, ἐκεῖ δουλεύσουσί
μοι πᾶς οἶκος (υ) Ἰσραὴλ εἰς τέλος· καὶ ἐκεῖ
προσδέξομαι, καὶ ἐκεῖ ἐπισκέψομαι τὰς
ἀπαρχὰς ὑμῶν, καὶ τὰς ἀπαρχὰς τῶν ἀφορι-
σμῶν ὑμῶν, ἐν πᾶσι τοῖς ἁγιάσμασιν ὑμῶν.
41 Ἐν ὀσμῇ εὐωδίας προσδέξομαι ὑμᾶς, ἐν
τῷ (φ) ἐξαγαγεῖν με ὑμᾶς ἐκ τῶν λαῶν, καὶ (χ)
εἰσδέχεσθαι ὑμᾶς ἐκ τῶν χωρῶν (ψ) ἐν αἷς
διεσκορπίσθητε ἐν αὐταῖς, καὶ ἁγιασθήσομαι
42 ἐν ὑμῖν κατ' ὀφθαλμοὺς τῶν λαῶν. Καὶ ἐπι-
γνώσεσθε (ω) διότι ἐγὼ κύριος, ἐν τῷ εἰσ-
αγαγεῖν με ὑμᾶς εἰς τὴν γῆν τοῦ Ἰσραήλ, εἰς
τὴν γῆν εἰς ἣν ἦρα τὴν χεῖρά μου τοῦ δοῦναι (α)
43 αὐτὴν τοῖς πατράσιν ὑμῶν. Καὶ μνησθήσεσθε
ἐκεῖ τὰς ὁδοὺς ὑμῶν, καὶ τὰ ἐπιτηδεύματα ὑ-
μῶν ἐν οἷς ἐμιαίνεσθε ἐν αὐτοῖς, καὶ κόψε-
σθε τὰ πρόσωπα ὑμῶν ἐν πάσαις ταῖς κακίαις
44 ὑμῶν. Καὶ ἐπιγνώσεσθε διότι ἐγὼ κύριος,
ἐν τῷ ποιῆσαί με οὕτως ὑμῖν, ὅπως τὸ ὄνο-
μά μου μὴ βεβηλωθῇ κατὰ τὰς ὁδοὺς ὑμῶν
τὰς κακὰς, καὶ κατὰ τὰ ἐπιτηδεύματα ὑμῶν
45 τὰ διεφθαρμένα, (β) λέγει κύριος. Καὶ
46 ἐγένετο λόγος κυρίου πρός με, λέγων, Υἱὲ
ἀνθρώπου, στήρισον τὸ πρόσωπόν σου ἐπὶ Θαι-
μὰν, καὶ ἐπίβλεψον ἐπὶ (γ) Δαρὸμ, καὶ προφή-
47 τευσον ἐπὶ δρυμὸν ἡγούμενον Ναγὲβ, Καὶ ἐρεῖς
τῷ δρυμῷ Ναγὲβ, Ἄκουε λόγον κυρίου· τάδε
λέγει (δ) κύριος κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἀνάπτω
ἐν σοὶ πῦρ, καὶ καταφάγεται ἐν σοὶ πᾶν ξύλον
χλωρὸν καὶ πᾶν ξύλον ξηρὸν, οὐ σβεσθήσεται
ἡ φλὸξ ἡ ἐξαφθεῖσα, καὶ κατακαυθήσεται ἐν
αὐτῇ πᾶν πρόσωπον ἀπὸ ἀπηλιώτου ἕως
48 Βορρᾶ. Καὶ ἐπιγνώσεται πᾶσα σὰρξ, ὅτι ἐγὼ
49 κύριος ἐξέκαυσα αὐτὸ, (ε) οὐ σβεσθήσεται. Καὶ
εἶπα, Μηδαμῶς κύριε κύριε· αὐτοὶ λέγουσι
πρός με, Οὐχὶ παραβολή ἐστι λεγομένη
αὕτη;

Sicut judicio contendi adverſùs 36
patres veſtros in deſerto terræ
Ægypti: ſic judicabo vos, dicit
Dominus. Et tranſire faciam vos 37
ſub virga mea, & introducam
vos in (t) numero: Et ſeligam è 38
vobis impios, & rebelles: quo-
niam de terra incolatûs eorum e-
ducam eos: & in terram Iſrael
non ingredientur. Et ſcietis quia
ego Dominus Dominus. Et vos, 39
domus Iſrael, hæc dicit Dominus
Dominus; Unuſquiſq; adinven-
tiones ſuas afferte; & poſt hæc,
ſi vos exaudieritis me, & nomen
ſanctum meum non pollueritis ul-
trà in munerib⁹ veſtris, & in ſtu-
diis veſtris; Quia ſuper montem 40
ſanctum meum, ſuper montem
excelſum, ait Dominus Dominus,
ibi ſervient mihi omnis domus
Iſrael in finem. Et ibi ſuſcipiam,
& ibi requirã primitias veſtras, et
primitias ſegregationũ veſtrarum
in omnib⁹ ſanctificationib⁹ veſtris:
In odore ſuavitatis ſuſcipiam 41
vos; cũ eduxero ego vos de popu-
lis, & ſuſcepero vos de regioni-
bus, in quas diſperſi eſtis in eas:
& ſanctificabor in vobis ante
oculos populorum. Et ſcietis, quia 42
ego Dominus, in introducendo
me vos in terram Iſrael, in ter-
ram, in quam levavi manum
meam ad dandum eam patribus
veſtris. Et recordabimini ibi 43
viarum veſtrarum, & adinven-
tionum veſtrarum, in quibus
polluti eſtis in iis: & (u) per-
cutietis facies veſtras in omnibus
malitiis veſtris. Et ſcietis, quia 44
ego Dominus, in faciendo me vo-
bis ſic; ut nomen meum non pol-
luatur ſecundùm vias veſtras
malas, & ſecundùm adinventio-
nes veſtras corruptas, ait Domi-
nus. Et factus eſt ſermo Domini 45
ad me, dicens; Fili hominis, ob- 46
firma faciem tuã ſuper Thæman,
& reſpice ſuper Darom, & va-
ticinare ſuper ſaltum ducem (x)
Nageb, Et dices ſaltui Nageb; Au- 47
di ſermonem Domini: Hæc dicit
Dominus; Ecce ego ſuccendo in
te ignẽ, & devorabit in te omne
lignum viride, & omne lignum
aridũ. Non extinguetur flamma
ſuccenſa: & ardebit in ea omnis
facies à Subſolano uſque ad A-
quilonem. Et cognoſcet omnis 48
caro, quia ego Dominus ſuccen-
di illum: non extinguetur. Et 49
dixi; Nequaquàm, Domine, Do-
mine: ipſi dicunt ad me; Nón-
ne parabola eſt, quæ dicitur hæc?

MS.A. (ο) ἐρήμῳ, ὅτε ἐξήγαγον αὐτοὺς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, κἀγὼ κρινῶ ὑμᾶς, λέγει κύριος ὁ θεός. Καὶ (π) ἐξαρῶ (ρ) κύριος ὁ θεός. Καὶ ὑμεῖς (σ) εἰ μὴ ὑμεῖς εἰσακούεται, καὶ τὸ (τ) ὑψηλοῦ, ἐκεῖ δουλεύσουσίν (υ) Ἰσραήλ, λέγει κύριος κύριος, εἰς τέλος· (φ) ἐξάγειν (χ) εἰσδέξομαι (ψ) οὗ διεσκορπίσθητε (ω) ὅτι (α) αὐτὴν αὐτοῖς. Καὶ (β) λέγει ἀδωναῒ κύριος. (γ) Δαγὼν, (δ) κύριος ὁ θεὸς Ἰσραήλ, Ἰδοὺ ἐγὼ ἀνάπτω πῦρ, καὶ (ε) καὶ οὐ σβεσθήσεται ἔτι.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

36 כמא דאתפרעית מן אבהתכון במדברא ארעא דמצרים כן אתפרע מנכון אמר יי
37 אלהים׃ ואניח עליכון גזירת דיני ואעיל יתכון במסורת קימא׃ ואפריש מנכון די
38 מרדו ודי שקרו במימרי מארעא תותבותהון אפיק יתהון ולארעא דישראל לא יעלון
39 ותידעון ארי אנא יי׃ ואתון בית ישראל כדנן אמר יי אלהים גבר פולחן טעותיה
אזילו פלחו ובתר דתבתון ליתיכון צבן לקבלא למימרי וית שמא דקודשי לא תחלון
40 עוד במתנתכון ובטעותכון׃ ארי בטור קודשי בטור קודשא דישראל אמר יי אלהים
תמן יפלחון קדמי כל בית ישראל כולהון בארעא חייא תמן יתקבל קורבניהון
41 בפריע ותמן אתבע ית אפרשותכון וית ריש אצותכון בכל קודשיכון׃ קורבן לרעוא
יתקבל קורבנכון בפריע כד אפיק יתכון מביני עממיא ואכניש יתכון מן מדינתא
42 דאתבדרתון בהן ואתקדש בכון לעיני עממיא׃ ותדעון ארי אנא יי כד אעיל יתכון
43 לארעא דישראל לארעא די קימית במימרי למתן יתה לאבהתכון׃ ותדכרון תמן
ית אורחתכון וית כל עובדיכון דאסתאבתון בהון ותתנקון ותהון חזן בכל בישתכון
44 דעבדתון׃ ותידעון ארי אנא יי כד אעביד עמכון בדיל שמי לא כאורחתכון בישתא
45 וכעובדיכון מחבליא בית ישראל אמר יי אלהים׃ והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי
46 למימר׃ בר אדם קבל נבואה לאורח דרומא ואליף על דרומא ואתנבי על
47 חורשא דחקל דרומא׃ ותימר לחורשא דדרומא קביל פתגמא דיי כדנן אמר יי
אלהים הא אנא מדליק בך אשתא ותקטיל בך כל אילן רטיב וכל אילן יביש לא
48 תטפי לשלהוביתא דמשיציא ויתרשמון בה כל אפיא מדרום לצפונא׃ ויחזון כל בני
49 בסרא ארי אנא יי אדלקתה לא תטפי׃ ואמרית קביל בעותי יי אלהים הא אנון אמרין
ליהלא ממתיל מתלין הוא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Sicut vindictam ſumpſi de patribus veſtris in deſerto terræ Ægypti, ſic vin- 36
dictam ſumã ex vobis, dicit Dominus Deus. Et ponam in vobis decretum ju- 37
diciorum meorum, et introducã vos in vinculo fœderis. Et ſeparabo ex vobis 38
eos qui prævaricati ſunt, & tranſgreſſi ſunt verbum meum; de terra habita-
tionis eorum educam eos, & in terram Iſrael non ingredientur: & ſcietis quia
ego Domin⁹. Et vos dom⁹ Iſrael, hæc dicit Domin⁹ De⁹ : Quiſque cultum 39
idolorum ſuorum ite colite: et poſtquam converſi eſtis, non vultis obedire
verbo meo. Et nomen ſanctum meum ne violetis ampliùs in munerib⁹ veſtris,
& in idolis veſtris. Quia in monte ſancto meo, in monte ſancto Iſrael, dicit 40
Domin⁹ De⁹, ibi ſerviet coram me omnis dom⁹ Iſrael univerſa in terra vivo-
rum; ibi ſuſcipietur oblatio eorum citò. Et ibi quæram primitias veſtras &
initium ciborum veſtrorum, in omnib⁹ ſanctificationib⁹ veſtris. *Oblatio* vo- 41
luntariè ſuſcipietur oblatio veſtra citò, cùm eduxero vos de medio populo-
rum, & congregavero vos de provinciis in quib⁹ diſperſi eſtis; & ſanctifica-
bor in vobis in oculis populorum. Et ſcietis quia ego Domin⁹: cùm introdu- 42
xero vos in terram Iſrael, in terram quam juravi in verbo meo me daturum
patrib⁹ veſtris. Et recordabimini ibi viarum veſtrarum & omnium operum 43
veſtrorum in quib⁹ polluti eſtis, & gemetis : idque ſpectantes omnia mala
quæ feciſtis. Et ſcietis quia ego Dominus, cùm fecero vobiſcum propter no- 44
men meum, non ſecundùm vias veſtras malas, nec ſecundùm opera veſtra
corrupta dom⁹ Iſrael, dicit Domin⁹ De⁹. Et factum eſt verbum prophetiæ à 45
facie Domini ad me dicens : Fili hominis, ſuſcipe prophetiam ad viam Au- 46
ſtri, & doce ad Auſtrum, & vaticinare ſuper ſylvam agri meridiani. Et dices 47
ſaltui meridiano : ſuſcipe verbum Domini; Hæc dicit Domin⁹ De⁹ : Ecce
ego ſuccendam in te ignem, & comburet in te omnem arborem viridem &
omnem arborem aridam; neque extinguetur flamma conſumens, & ſigna
combuſtionis erunt in ea omni faciei ab Auſtro uſque ad Aquilonem. Et vide- 48
bunt univerſi filii carnis quia ego Dominus ſuccendi eam, non extinguetur.
Et dixi : Suſcipe deprecationem meam Domine Deus. Ecce ipſi dicunt mihi: 49
Nónne aſſumens parabolam iſte eſt?

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

36 ܐܝܟ ܕܕܢܬ ܥܡ ܐܒܗܝܟܘܢ ܒܡܕܒܪܐ ܕܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܗܟܢܐ ܐܕܘܢ ܥܡܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ *
37 38 ܡܪܘܬܐ. * ܘܐܥܒܪܟܘܢ ܬܚܝܬ ܫܒܛܐ. ܘܐܥܠܟܘܢ ܒܡܪܕܘܬܐ ܕܕܝܬܩܐ. * ܘܐܓܒܐ ܡܢܟܘܢ
ܐܝܠܝܢ ܕܡܪܕܝܢ ܘܡܥܒܕܝܢ ܒܝ. ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܬܘܬܒܘܬܗܘܢ ܐܦܩ ܐܢܘܢ. ܘܠܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܠܐ
39 ܢܥܠܘܢ. ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܐܢܬܘܢ ܕܝܢ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ.
ܐܢ ܠܐ ܡܫܬܡܥܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܝ. ܙܠܘ ܦܠܘܚܘ ܐܢܫ ܦܬܟܪܘܗܝ. ܘܠܫܡܝ ܠܐ ܬܛܢܦܘܢ ܬܘܒ
40 ܕܩܘܕܫܝ. ܒܩܘܪܒܢܝܟܘܢ ܘܒܦܬܟܪܝܟܘܢ. * ܡܛܠ ܕܒܛܘܪܐ ܕܩܘܕܫܝ ܒܛܘܪܐ ܪܡܐ
ܕܐܝܣܪܝܠ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܬܡܢ ܢܦܠܚܘܢܢܝ ܟܠܗܘܢ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܓܡܝܪܐܝܬ.
ܬܡܢ ܐܬܪܥܐ ܒܗܘܢ. ܘܬܡܢ ܐܣܥܘܪ ܪ̈ܫܝܬܗܘܢ. ܘܪܝܫ ܒ̈ܟܘܪܝܗܘܢ. ܘܪܝܫ ܡܘ̈ܗܒܬܗܘܢ.
41 ܒܟܠ ܩܘܕ̈ܫܝܗܘܢ. * ܒܪܝܚܐ ܒܣܝܡܐ ܐܩܒܠܟܘܢ. ܡܐ ܕܐܦܩܬܟܘܢ ܡܢ ܥܡܡ̈ܐ.
42 ܘܐܟܢܫܟܘܢ ܡܢ ܡܕܝܢ̈ܬܐ ܕܐܬܒܕܪܬܘܢ ܒܗܝܢ. ܘܐܬܩܕܫ ܒܟܘܢ ܩܕܡ ܥܡܡ̈ܐ. * ܘܬܕܥܘܢ
ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܡܐ ܕܐܥܠܬܟܘܢ ܠܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܠܐܪܥܐ ܕܐܪܝܡܬ ܐܝܕܝ ܠܡܬܠܗ ܠܐܒܗܝܟܘܢ.
43 * ܘܬܬܕܟܪܘܢ ܬܡܢ ܐܘܪ̈ܚܬܟܘܢ. ܘܥܒ̈ܕܝܟܘܢ ܕܐܬܛܢܦܬܘܢ ܒܗܘܢ. ܘܬܬܩܡܛܘܢ
44 ܐܦܝܟܘܢ ܒܚܘܒܝܟܘܢ ܒܝ̈ܫܬܐ ܕܥܒܕܬܘܢ. * ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܕܚܣܬ ܥܠܝܟܘܢ ܡܛܠ
ܫܡܝ. ܘܠܐ ܐܝܟ ܐܘܪ̈ܚܬܟܘܢ ܒܝ̈ܫܬܐ. ܘܠܐ ܐܝܟ ܥܒ̈ܕܝܟܘܢ ܣ̈ܟܠܐ ܥܒܕܬ ܥܡܟܘܢ ܒܝܬ
45 46 ܐܝܣܪܝܠ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. * ܘܗܘܐ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠܝ ܠܡܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ. ܣܝܡ
47 ܐܦܝܟ ܠܐܘܪܚܐ ܕܬܝܡܢܐ. ܘܚܘܪ ܠܬܝܡܢܐ. ܘܐܬܢܒܐ ܥܠ ܥܒܐ ܕܒܬܝܡܢܐ. * ܘܐܡܪ ܠܥܒܐ
ܕܒܬܝܡܢܐ. ܫܡܥܝ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܐ ܡܫܕܪ ܐܢܐ ܒܟܝ ܢܘܪܐ.
ܘܬܐܟܘܠ ܟܠܗܘܢ ܩܝ̈ܣܝܟܝ. ܪ̈ܛܝܒܐ ܘܝ̈ܒܝܫܐ. ܘܠܐ ܬܕܥܟ ܫܠܗܒܝܬܐ ܕܡܬܝܩܕܐ. ܘܢܬܟܘܘܢ
48 ܒܗ. ܟܠ ܐܦܝܢ. ܡܢ ܬܝܡܢܐ ܘܥܕܡܐ ܠܓܪܒܝܐ. * ܘܢܚܙܘܢܗ ܟܠܗ ܒܣܪܐ. ܕܐܢܐ ܡܪܝܐ
49 ܐܘܩܕܬܗ. ܘܠܐ ܕܥܟܬ. * ܘܐܡܪܬ. ܐܘ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܢܘܢ ܐܡܪܝܢ ܠܝ ܠܡ ܡܡܬܠ ܡܬ̈ܠܐ ܐܝܬܝܟ.

Quemadmodum diſceptavi cum patribus veſtris in deſerto terræ Ægypti, ita diſceptabo vobiſcum, ait Dñs dominorum: 36 Et tranſire faciam vos ſub virgam, inducamque vos ſub diſciplinam fœderis: 37 Et ſeligens è vobis eos qui rebellant & perverſè agunt in me, è terra incolatûs eorum educam eos, & in terram Iſraelis non ingredientur: & experiemini me eſſe Dñm. 38 Vos autem Iſraelitæ (ſic ait Dñs dominorum) niſi acquieſcatis mihi, ite, colite quiſque idola ſua, & ne polluatis ampliùs nomen ſanctitatis meæ muneribus veſtris et idolis veſtris. 39 Nam in monte ſanctitatis meæ, in montibus excelſis Iſraelis, ait Dominus dominorum, illic omnes Iſraelitæ perfectè me colent; ibi delectabor eis, & ibi viſitabo primitias eorum, & primas fruges, primaſque oblationes eorum in omnibus ſacris eorum. 40 Odore ſuavi accipiam vos, quum vos eduxero è gentibus, & collegero ex urbibus in quas diſperſi fueritis, & ſanctificatus fuero in vobis corã gentibus. 41 Et experiemini me eſſe Dñm, quum introduxero vos in terram Iſraelis, in terrã quam ſublatâ manu meâ *juraveram* me daturum patribus veſtris. 42 Ibique recordabimini viarũ veſtrarum & omniũ ſtudiorum veſtrorum quibus vos ipſos polluiſtis, & rugabuntur facies veſtræ propter tot ſcelera quæ perpetrâſtis. 43 Et cognoſcetis me eſſe Dominum qui peperci vobis propter nomen meum, & non ſecundùm vias veſtras pravas, neque ſecundùm ſtudia veſtra ſtulta egi vobiſcum Iſraelitæ, ait Dominus dominorum. 44 Et fuit ad me ſermo Domini, dicendo; 45 Fili hominis, verte faciem tuam verſùs Auſtrum, reſpice ad Auſtrum, & prophetato de ſylva quæ eſt in Auſtro, 46 Et dic ad ſylvam quæ eſt in Auſtro; Audi ſermonem Domini: Sic ait Dominus dominorum; Ecce ego dimiſſurus ſum in te ignem, & abſumet omnia ligna tua tam virentia quàm ſicca: non extinguetur flamma quæ accendetur, ſed eâ comburentur omnes facies ab Auſtro ad Aquilonem uſque: 47 Et videbunt omnes carnei, me Dominum accendiſſe illam, ideoque non extingui. 48 Me autem dicente, O Domine dominorum, ecce iſti dicunt mihi, Parabolarum effictor es tu. 49

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

36 * كما تحاكمت مع ابايكم في البرية * لما اخرجتهم من ارض مصر * هكذا اديتكم يقول
37 38 الرب الرب الاله * واجوز بكم تحت عصاي * وادخلكم في العدد * واختار منكم المنافقين
والمتباعدين من اجل اني من جلوتهم اخرجهم * والي ارض اسرايل لا يدخلون * وتعلمون
39 اني انا الرب الاله * وانتم يا بيت اسرايل * هكذا يقول الرب الرب * كل واحد لينزع اعماله *
وبعد هذا حقا انتم تسمعون لي * ولا تدنسون اسمي المقدس منذ الان بهداياكم واعمالكم *
40 * من اجل ان علي جبلي المقدس * علي جبل اسرايل المرتفع * يقول الرب الرب * هناك
يتعبد لي كل بيت اسرايل الي الانقضاء * وهناك اقبلهم * وهناك اتعهد اوايلكم واوايل
41 تفريزكم * في جميع اقداسكم * بعرف طيب اقبلكم * عند ما اخرجكم من الشعوب *
42 واقبلكم من البلدان التي تفرقتم فيها * واتقدس بكم لعيون الشعوب * وتعلمون اني
انا الرب * عند ما ادخلكم الي ارض اسرايل * الي الارض التي رفعت يدي عليها لاعطيها
43 لاباييكم * وتذكرون هناك طرقكم واعمالكم التي تدنستم بها * وتسحجون وجوهكم بجميع
44 قبايحكم * وتعلمون اني انا الرب * عند ما اصنع هكذا بكم * كيلا يتدنس اسمي
بطرقكم الردية واعمالكم الفاسدة * يقول ادوناي الرب * * الاصحاح الحادي عشر *
45 46 * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان * ثبت وجهك الي تامان * وانظر علي داعون *
47 وتنبا علي الغاب مقدم ناجاب * وتقول لغاب ناجاب * اسمع قول الرب * هكذا يقول الرب الرب
اله اسرايل * ها اشعل فيك نارا * فتاكل فيك كل عود اخضر وكل عود يابس * ولا
48 يطفي اللهيب المشتعل * ويحترق فيها كل وجه من المشرق الي الجربياء * ويعلم كل جسد
49 اني انا الرب احرقته * ولا يطفي ايضا * فقلت حاش يا رب يا رب * هاولاء يقولون لي *
ليس هذا المثل هو المقول *

Quemadmodum litem inſtitui cum patribus veſtris quando eduxi eos è terra Ægypti; ita judicabo vos, ait Dominus, Dominus Deus: 36 *Et tranſire faciam vos ſub virgam meam, & introducam vos in ſupputationem:* 37 *Et ſeligam è vobis impios & recedentes à me: nam è tranſmigratione eorum extraham eos, & in terram Iſraelis non ingredientur: & ſcietis me eſſe Dominum Deum.* 38 *Et vos O domus Iſraelis, ita dicit Dominus Dominus, unuſquiſque abdicet opera ſua, & poſt hæc verè vos audietis me, & non polluetis deinceps nomen meum ſacroſanctum muneribus veſtris & operibus veſtris.* 39 *Nam ſuper montem ſanctum meum, ſuper montem Iſraelis altum, dicit Dominus Dominus, ibi ſerviet mihi tota domus Iſraelis in finem uſque, ibi ſuſcipiam eos, ibique viſitabo primitias veſtras & primitias ſegregationum veſtrarum in quibuſcunque ſacris veſtris.* 40 *Odore ſuavi ſuſcipiam vos, quum eduxero vos è gentibus, & recepero vos è regionibus in quas diſperſi fueritis: & ſanctificabor in vobis ob oculos gentium:* 41 *Et ſcietis me eſſe Dominum, quum introduxero vos in terram Iſraelis, terram illam pro qua levavi manum meam, daturum me eam patribus veſtris.* 42 *Ibique recordabimini viarum veſtrarum & facinorum veſtrorum quibus contaminâſtis vos, & dilaniabitis facies veſtras propter omnes turpitudines veſtras.* 43 *Et experiemini me eſſe Dominum, quum ſic fecero vobis; ut non polluatur nomen meum viis veſtris pravis, & operibus veſtris corruptis; ait Adonai Dominus.* 44

Textus undecimus.

Deinde fuit ſermo Domini ad me, dicens; 45 *O fili hominis, obfirma faciem tuam adverſùs Themanem, reſpice contra Dagonem, & prophetato de ſaltu præcipuo Negebis;* 46 *Et dicas ad ſaltum Nagebis; Audi ſermonem Domini: Sic ait Dominus, Dominus Deus Iſraelis; En accendam in te ignem, devorabitque in te omne lignum viride & omne lignum aridum; & non extinguetur flamma accenſa, ſed ipſo igne comburetur omnis facies, ab Oriente ad Aquilonem:* 47 *Et cognoſcet omne corpus, quòd ego Dominus combuſſi eam: & non extinguetur ampliùs.* 48 *Et dixi; Abſit O Domine O Domine: iſti dicerent mihi, Hæc parabola non eſt id quod dictum eſt.* 49

יחזקאל : כא

CAP. XXI. כא

1 tuas facies pone hominis Fili : dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et
2 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם שִׂים פָּנֶיךָ
humum ad propheta & : sanctuaria ad stilla & ,Jerusalaim ad
אֶל־יְרוּשָׁלִַם וְהַטֵּף אֶל־מִקְדָּשִׁים וְהִנָּבֵא אֶל־אַדְמַת
ego Ecce :Dominꝰ dixit Sic : Israel humo dices Et .Israel
3 יִשְׂרָאֵל׃ וְאָמַרְתָּ לְאַדְמַת יִשְׂרָאֵל כֹּה אָמַר יְהוָה הִנְנִי
te ex faciam succidere & : sua vagina de meũ gladiũ educam & ,te ad
אֵלַיִךְ וְהוֹצֵאתִי חַרְבִּי מִתַּעְרָהּ וְהִכְרַתִּי מִמֵּךְ
: impiũ & ,justum te ex feci succidere quòd eo Pro .impium & ,justum
4 צַדִּיק וְרָשָׁע׃ יַעַן אֲשֶׁר־הִכְרַתִּי מִמֵּךְ צַדִּיק וְרָשָׁע
meridie à carnem omnem ad sua vagina de meus gladius egredietur idcirco
לָכֵן תֵּצֵא חַרְבִּי מִתַּעְרָהּ אֶל־כָּל־בָּשָׂר מִנֶּגֶב
eduxi Dominus ego quòd ,caro omnis scient Et .aquilonem ad
5 צָפוֹן׃ וְיָדְעוּ כָּל־בָּשָׂר כִּי אֲנִי יְהוָה הוֹצֵאתִי
,hominis fili tu Et .ultrà revertetur non :sua vagina de meum gladium
6 חַרְבִּי מִתַּעְרָהּ לֹא תָשׁוּב עוֹד׃ וְאַתָּה בֶן־אָדָם
.corũ oculis in ingemisces amaritudine in &,lumborũ contritione in suspira
הֵאָנַח בְּשִׁבְרוֹן מָתְנַיִם וּבִמְרִירוּת תֵּאָנַח לְעֵינֵיהֶם׃
ad , dices & ? suspirans tu quid propter ,te ad dixerint cùm erit Et
7 וְהָיָה כִּי־יֹאמְרוּ אֵלֶיךָ עַל־מָה אַתָּה נֶאֱנָח וְאָמַרְתָּ אֶל־
,manus universæ remittentur & ,cor omne liquefiet & ,venit quia : auditum
שְׁמוּעָה כִי־בָאָה וְנָמֵס כָּל־לֵב וְרָפוּ כָל־יָדַיִם
Ecce .aquæ ibunt genua omnia & ,spiritus omnis rugabitur &
וְכִהֲתָה כָל־רוּחַ וְכָל־בִּרְכַּיִם תֵּלַכְנָה מַּיִם הִנֵּה
Domini verbum fuit Et .Deus Dominus dixit , fiet & , venit
8 בָאָה וְנִהְיָתָה נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה׃ וַיְהִי דְבַר־יְהוָה
: Dominus dixit Sic : dices & ,propheta hominis Fili : dicendo,me ad
9 אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם הִנָּבֵא וְאָמַרְתָּ כֹּה אָמַר יְהוָה
jugulandum Ad .extersus etiam & ,est exacutus gladius ,Gladius , Dic
10 אֱמֹר חֶרֶב חֶרֶב הוּחַדָּה וְגַם־מְרוּטָה׃ לְמַעַן טְבֹחַ
Vel .est tersus ,fulgor ei sit ut ,est exacutus jugulationem
טֶבַח הוּחַדָּה לְמַעַן־הֱיֵה־לָהּ בָּרָק מֹרָטָּה אוֹ
eum dedit Et ? lignum omne spernente mei filii virga gaudebimus
11 נָשִׂישׂ שֵׁבֶט בְּנִי מֹאֶסֶת כָּל־עֵץ׃ וַיִּתֵּן אֹתָהּ
hic & ,gladius est exacutus hic : vola in tenendum ad ,tergendum ad
לְמָרְטָה לִתְפֹּשׂ בַּכָּף הִיא־הוּחַדָּה חֶרֶב וְהִיא
fili ulula & ,Clama .interficientis manu in eum dandum ad ,est tersus
12 מֹרָטָּה לָתֵת אוֹתָהּ בְּיַד־הוֹרֵג׃ זְעַק וְהֵילֵל בֶּן־
prælatis cunctis in iste ,meo populo in fuit iste quia ,hominis
אָדָם כִּי־הִיא הָיְתָה בְעַמִּי הִיא בְּכָל־נְשִׂיאֵי
percute idcirco ,meo populo fuerunt gladium ob Timores : Israel
יִשְׂרָאֵל מְגוּרֵי אֶל־חֶרֶב הָיוּ אֶת־עַמִּי לָכֵן סְפֹק
spernens tribum etiam si ,quid Et .probatio Quia .femur ad
13 אֶל־יָרֵךְ׃ כִּי בֹחַן וּמָה אִם־גַּם־שֵׁבֶט מֹאֶסֶת
,propheta hominis fili tu Et .Deus Dominus dixit : fuerit non
14 לֹא יִהְיֶה נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה׃ וְאַתָּה בֶן־אָדָם הִנָּבֵא
gladius , tertiò gladius duplicetur & : volam ad volam percute &
וְהַךְ כַּף אֶל־כָּף וְתִכָּפֵל חֶרֶב שְׁלִישִׁתָה חֶרֶב
.eos ad cubiculis in penetrans magni occisi gladius Hic .interfectorũ
חֲלָלִים הִיא חֶרֶב חָלָל הַגָּדוֹל הַחֹדֶרֶת לָהֶם׃
eorum portis omnibus in , offendicula multiplicare & ,cor liquifieri Propter
15 לְמַעַן לָמוּג לֵב וְהַרְבֵּה הַמִּכְשֹׁלִים עַל כָּל־שַׁעֲרֵיהֶם
.jugulationẽ ad involutus ,fulgorẽ ad factus heu : gladii terrorem dedi
נָתַתִּי אִבְחַת־חֶרֶב אָח עֲשׂוּיָה לְבָרָק מְעֻטָּה לְטָבַח׃
.paratæ tuæ facies quò : te sinistra , pone , te dextera te Uni
16 הִתְאַחֲדִי הֵימִנִי הָשִׂימִי הַשְׂמִילִי אָנָה פָּנַיִךְ מֻעָדוֹת׃

Versio VULG. LAT.

CAP. XXI.

1 ET factus est sermo Domini
2 ad me, dicens; Fili hominis, pone
faciem tuam ad Jerusalem, & stil-
la ad Sanctuaria, & propheta
3 contra humum Israel : Et dices
terræ Israel; Hæc dicit Dñs Deꝰ;
Ecce ego ad te, & ejiciã gladium
meum de vagina sua, & occîdam
4 in te justum & impiũ. Pro eo
autẽ quòd occîdi in te justum
& impium, idcircò egredietur
gladius meus de vagina sua ad
omnem carnẽ ab Austro usque
5 ad Aquilonem : Ut sciat omnis
caro, quia ego Dñs eduxi gladiũ
meũ de vagina sua irrevocabi-
6 lem. Et tu, fili hominis, inge-
misce in contritione lumborũ, &
in amaritudinibꝰ ingemisce corã
7 eis. Cúmq; dixerint ad te; Qua-
re tu gemis ? dices; Pro auditu :
quia venit, & tabescet omne cor,
et dissolventur universæ manꝰ, &
infirmabitur omnis spiritus, &
per cuncta genua fluent aquæ :
ecce venit, & fiet, ait Dñs Deꝰ.
8 Et factus est sermo Dñi ad me,
9 dicens; Fili hominis, propheta,
& dices; Hæc dicit Dñs Deus;
Loquere; Gladiꝰ, gladiꝰ exacutꝰ
10 est, & limatus. Ut cædat victi-
mas, exacutus est : ut splendeat,
limatus est : qui moves sceptrum
filii mei, succidisti omne lignum.
11 Et dedi eum ad lævigandũ, ut te-
neatur manu : iste exacutus est
gladius, & iste limatus est, ut sit
12 in manu interficientis. Clama, &
ulula, fili hominis, quia hic factus
est in populo meo, hic in cunctis
ducibus Israel qui fugerant: gla-
dio traditi sunt cũ populo meo,
13 idcircò plaude super femur, Quia
probatus est : & hoc cùm sce-
ptrum subverterit, & non erit,
14 dicit Dñs Deus. Tu ergò, fili ho-
minis, propheta, & percute manu
ad manum, & duplicetur gladi-
us, ac triplicetur gladius inter-
fectorum: hic est gladius occi-
sionis magnæ, qui obstupescere
15 eos facit, Et corde tabescere, &
multiplicat ruinas. In omnibus
portis eorum dedi conturbatio-
nem gladii acuti, & limati ad
fulgendum, amicti ad cædem.
16 Exacuere, vade ad dexteram, sive
ad sinistram, quocunque faciei
tuæ est appetitus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

ΚΕΦ. κα'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέ-
2 γων, (α) Διὰ τοῦτο προφήτευσον υἱὲ ἀνθρώ-
που, στήρισον τὸ πρόσωπόν σου ἐπὶ Ἱερουσα-
λὴμ, καὶ ἐπίβλεψον ἐπὶ τὰ ἅγια αὐτῶν, καὶ
3 προφητεύσεις ἐπὶ τὴν γῆν τοῦ Ἰσραὴλ, Καὶ
ἐρεῖς πρὸς τὴν γῆν τοῦ Ἰσραὴλ, Τάδε λέγει
κύριος (β), Ἰδοὺ ἐγὼ πρὸς σὲ, καὶ ἐκσπά-
σω τὸ ἐγχειρίδιόν μου ἐκ τοῦ κολεοῦ αὐτοῦ, καὶ
(γ) ἐξολοθρεύσω ἐκ σοῦ ἄνομον καὶ ἄδικον·
4 Ἀνθ' ὧν ἐξολοθρεύσω ἐκ σοῦ ἄδικον καὶ ἄ-
νομον, οὕτως ἐξελεύσεται τὸ ἐγχειρίδιόν μου
ἐκ τοῦ κολεοῦ αὐτοῦ ἐπὶ πᾶσαν σάρκα ἀπὸ
5 ἀπηλιώτου ἕως Βοῤῥᾶ, Καὶ ἐπιγνώσεται πᾶσα
σὰρξ, (δ) διότι ἐγὼ κύριος ἐξέσπασα τὸ
ἐγχειρίδιόν μου ἐκ τοῦ κολεοῦ αὐτοῦ, (ε) οὐκ ἀ-
6 ποστρέψει οὐκέτι. Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου κατα-
στέναξον ἐν συντριβῇ ὀσφύος σου, καὶ ἐν ὀδύ-
7 ναις στενάξεις κατ' ὀφθαλμοὺς αὐτῶν. Καὶ ἔ-
σται ἐὰν εἴπωσι πρὸς σὲ, Ἕνεκα τίνος σὺ
στενάζεις; καὶ ἐρεῖς, Ἐπὶ τῇ ἀγγελίᾳ, (ζ) διό-
τι ἔρχεται, καὶ θραυσθήσεται πᾶσα καρδία, καὶ
πᾶσαι χεῖρες παραλυθήσονται, καὶ ἐκψύξει
πᾶσα σὰρξ καὶ πᾶν πνεῦμα, καὶ πάντες μη-
ροὶ μολυνθήσονται ὑγρασίᾳ· ἰδοὺ ἔρχεται, (η)
8 λέγει κύριος. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου
9 πρὸς μὲ, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου προφήτευ-
σον, καὶ ἐρεῖς, Τάδε λέγει (θ) κύριος, Εἰ-
πὸν, Ῥομφαία, ῥομφαία ὀξύνου καὶ θυμώθη-
10 τι, Ὅπως σφάξῃς σφάγια, ὀξύνου ὅπως
γένῃ εἰς στίλβωσιν, ἑτοίμη εἰς παράλυσιν·
σφάζε, ἐξουδένει, (ι) ἀπωθοῦ πᾶν ξύλον.
11 Καὶ ἔδωκεν αὐτὴν ἑτοίμην τοῦ κρατεῖν
χεῖρα αὐτοῦ. (ϰ) ἐξηκονήθη ἡ ῥομφαία, ἔστιν
ἑτοίμη, τοῦ (κ) δοῦναι αὐτὴν εἰς χεῖρα ἀπο-
12 κεντοῦντος. Ἀνάκραγε, καὶ ὀλόλυξον υἱὲ ἀν-
θρώπου, ὅτι αὕτη ἐγένετο ἐν τῷ λαῷ μου,
αὕτη ἐν πᾶσι τοῖς ἀφηγουμένοις τοῦ Ἰσρα-
ὴλ· παροικήσουσιν. ἐπὶ ῥομφαίᾳ ἐγένετο ἐν
τῷ λαῷ μου. διὰ τοῦτο κρότησον ἐπὶ τὴν χεῖ-
13 ρά σου, Ὅτι δεδικαίωται. καὶ (λ) τί εἰ καὶ φυ-
λὴ ἀπωσθῇ; οὐκ ἔσται, λέγει κύριος κύριος.
14 Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου προφήτευσον, καὶ κρότη-
σον (μ) χεῖρα ἐπὶ χεῖρα, καὶ διπλασίασον
ῥομφαίαν· ἡ τρίτη ῥομφαία τραυματιῶν ἐστι,
ῥομφαία τραυματιῶν ἡ μεγάλη. καὶ (ν) ἐκστήσεις
15 αὐτοὺς, (ξ) Ὅπως μὴ θραυσθῇ ἡ καρδία,
καὶ πληθυνθῶσιν οἱ ἀσθενοῦντες ἐπὶ πᾶσαν πύ-
λην (ο), παραδέδονται εἰς σφάγια ῥομφαί-
ας· εὖ γέγονεν εἰς σφαγὴν, εὖ γέγονεν εἰς
16 στίλβωσιν. (π) Καὶ διαπορεύου, ὀξύνου ἐκ
δεξιῶν καὶ ἐξ εὐωνύμων, οὗ ἂν τὸ πρόσωπόν σου ἐξεγείρηται.

MS.A. (α) Υἱὲ ἀνθρώπου, διὰ τοῦτο προφήτευσον, καὶ στήρισον (β) ὁ θεὸς, (γ) ἐξολεθρεύσω ἐκ σοῦ ἄδικον καὶ ἄνομον, οὕτως (δ) ὅτι (ε) καὶ οὐκ (ζ) ὅτι (η) καὶ ἔσται, λέγει κύριος ὁ θεός. (θ) ἀδωναὶ κύριος, (ι) ἀπωθοῦ (ϰ) ἐξηκονήθη ῥομφαία, (κ) δοθῆναι αὐτὴν εἰς χεῖρας (λ) ὅτι εἰ καὶ φυλὴ ἀπωσθῇς; (μ) τῇ χειρὶ ἐπὶ (ν) ἐκστήσει (ξ) Ὅπως θραυσθήσεται πᾶσα καρδία, (ο) αὐτῶν, καὶ παραδοθήσονται (π) Διαπορεύου,

CAP. XXI.

ET factꝰ est sermo Domini ad 1
me, dicens; Idcircò vaticinare, 2
fili hominis, obfirma faciem tuam
super Hierusalem, & aspice ad
Sancta eorum: et prophetabis su-
per terram Israel, Et dices ad 3
terram Israel; Hæc dicit Domi-
nus; Ecce ego ad te : & educam
gladium meum de vagina sua, &
interficiam ex te iniquum, et inju-
stum, Eò quòd exterminabo ex te 4
injustum, & iniquum; sic egredie-
tur gladius meus de vagina sua
super omnem carnẽ à Subsolano
usq; ad Aquilonẽ : Et cognoscet 5
omnis caro; quia ego Dominus e-
duxi gladiũ meũ de vagina sua:
non revertetur ultrá. Et tu, fili ho- 6
minis, ingemisce in contritione
lumborũ tuorũ : & in doloribus
gemes ante oculos eorũ. Eritq;, si 7
dixerint ad te, Quarè tu gemis?
& dices, Propter nuntium: quia
venit, & quassabitur omne cor, et
universæ manus dissolventur, &
exanimabitur omnis caro, &
omnis spiritus: & omnia femora
polluentur humore. Ecce venit,
(a) ait Dominus. Et factus est ser- 8
mo Domini ad me, dicens; Fili 9
hominis, propheta, & dices; Hæc
dicit Dominꝰ, Dic, Gladiꝰ, gladius
acuere, & irascere, ut jugules ju- 10
gulationes: acuere, ut sis in fulgo-
rẽ, paratꝰ ad dissolutionẽ: interfi-
ce, cõtemne, repelle omne lignũ. Et 11
dedit eum paratum, (b) ut teneat
manus ipsiꝰ. Exacutꝰ est gladius,
est paratꝰ, ut detur ipse in manũ
interficientis. Clama, et ulula, fili 12
hominis: quia hic factꝰ est in popu-
lo meo, hic in cunctis ducibꝰ Isra-
el: (c) inhabitabũt propter gladiũ
fuit in populo meo. Idcircò plaude
super manũ tuam : Quia (d) ju- 13
stificatus est. Et quid, si etiam tri-
bus repulsa fuerit? Non erit, dicit
Dominus Dominus. Et tu, fili ho- 14
minis, propheta, & plaude manu
ad manum, & duplica gladium:
tertius gladius interfectorũ est,
gladius interfectorum magnus.
Et obstupescere facies eos, ut (e) 15
non quassetur cor, & multipli-
centur infirmi super omnem por-
tam : traditi sunt in jugulatio-
ones gladii: (f) benè factus est ad
jugulationem, bene factus est ad 16
fulgorem. (g) Et transi, exacuere
à dextris, & à sinistris, quocun-
que facies tua exurrexerit.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

כא

1 וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי לְמֵימַר : בַּר אָדָם קַבֵּל נְבוּאָה עַל יְרוּשְׁלֶם וְאַלֵּיף עַל 2
3 מַקְדְּשִׁין וְאִתְנַבֵּי עַל אַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל : וְתֵימַר לְאַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל כִּדְנַן אֲמַר יְיָ הָא אֲנָא
4 שָׁלַח רוּגְזִי עֲלָךְ וְאַפֵּיק חַרְבִּי מִלִּדְנַהּ וְאַגְלֵי מִנִּיךְ זַכָּאָךְ בְּדִיל לְשֵׁיצָאָה חַיָּבָךְ : חֲלַף דְּאַגְלֵי
מִנִּיךְ זַכָּאָךְ בְּדִיל לְשֵׁיצָאָה חַיָּבָךְ בְּכֵן תִּפּוֹק חַרְבִּי מִלִּדְנַהּ עַל כָּל בִּסְרָא מִדָּרוֹם לְצִפּוּנָא :
5 וְיִדְעוּן כָּל בְּנֵי בִסְרָא אֲרֵי אֲנָא יְיָ אַפֵּקִית חַרְבִּי מִלִּדְנַהּ לָא תְתוּב עוֹד : וְאַתְּ בַּר אָדָם 6
7 אִתְאַנַּח בְּזִיעַ חַרְצִין וּבְמֶרֶר תִּתְאַנַּח לְעֵינֵיהוֹן : וִיהֵי אֲרֵי יֵימְרוּן לָךְ עַל מָה אַתְּ מִתְאַנַּח
וְתֵימַר עַל בְּסוֹרְתָא אֲרֵי אָתְיָא וְיִתְמְסֵי כָל לֵב וְיִתְרַשְׁלָן כָּל יְדַיִן וְתֶעֱמֵי כָל רוּחַ וְכָל
8 רְכוּבַיָּא יִתְאַשְׁדָן מַיָּא הָא אָתְיָא וְתִתְקַיַּם אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים : וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם
9 יְיָ עִמִּי לְמֵימַר : בַּר אָדָם אִתְנַבֵּי וְתֵימַר כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים אֱמַר חַרְבָּא דְמַלְכָּא
10 דְבָבֶל תִּקְטוֹל וְחַרְבָּא דִבְנֵי עַמּוֹן תִּתְּנֵי וּתְשֵׁיצֵי : בְּדִיל לְמִקְטַל קְטוֹל אִשְׁתְּלִיפַת בְּדִיל
לְמֶעְבַּד פּוּרְעָנוּת אִשְׁתְּנִינַת עַל דַּחֲדִיאוּ שִׁבְטָא דְבֵית יְהוּדָה וּבִנְיָמִן לְשִׁבְטֵי יִשְׂרָאֵל כַּד
11 גְּלוֹ עַל דִּפְלַחוּ לְטַעֲוָתָא וְתָבוּ אִנּוּן לְמִטְעֵי בָּתַר צַלְמֵי אָעַיָּא : וִיהַב פּוּרְעָנוּתְהוֹן
לְאִתְמְסָרָא בְּיַד מַלְכָּא דְבָבֶל הִיא מְחַת חַרְבָּא תְּהֵי פּוּרְעָנוּתְהוֹן לְמִמְסַר יָתְהוֹן בְּיַד
12 קָטוֹלִין : צְוַח וְאֵילֵיל בַּר אָדָם אֲרֵי הִיא הֲוָת בְּעַמִּי הִיא וְכָל רַבְרְבֵי יִשְׂרָאֵל קָטוֹלֵי חַרְבָּא
13 אִתְכַּנְּשׁוּ וַאֲתוֹ עַל עַמִּי מִסְחוֹר סְחוֹר בְּכֵן טְפַח עַל יַרְכָּא : אֲרֵי אִתְנַבִּיאוּ עֲלֵיהוֹן נְבִיַּא
וְלָא תָבוּ וּמָה יְהֵי בְסוֹפֵיהוֹן אֱמַר וְאַף שִׁבְטָא דְבֵית יְהוּדָה וּבִנְיָמִן מִגְלָא יִגְלוֹן
14 וּבְעוֹבָדֵיהוֹן בִּישַׁיָּא לָא יִתְקַיְּמוּן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים : וְאַתְּ בַּר אָדָם אִתְנַבֵּי וּטְפַח יַד עַל
יַד וְתִתְכְּפֵיל חַרְבָּא תְלִיתָאָה חֲרַב קָטוֹלִין הִיא חֲרַב פּוּרְעָנוּת קְטוֹלָא רַבָּא דִמְזִיעָא לְהוֹן :
15 בְּדִיל לְמִתְבַּר לִבְּהוֹן וּלְאַסְגָּאָה מַתְקְלְהוֹן עַל כָּל קִרְוֵיהוֹן מַנֵּיתִי קָטְלֵי חַרְבָּא
16 וַי חַרְבָּא אִשְׁתְּלִיפַת לְמִקְטַל אִשְׁתְּנִינַת לְשֵׁיצָאָה : אִשְׁתְּלִיפִי וְקַטִּילִי מִדָּרוֹמָא
וְשֵׁיצִי מִן צִפּוּנָא לְאָן אַפָּךְ מְזַמְּנִין :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAP. XXI.

ET factum est verbũ prophetiæ à facie Dñi ad me, dicens: Fili hominis 1
suscipe prophetiã in Jerusalẽ, & doce ad sanctuaria, & vaticinare contra 2
terrã Israel. Et dices terræ Israel: Hæc dicit Dñs : Ecce ego mitto furorem 3
meũ contra te, & educam gladiũ meũ de vagina sua, & migrare faciã ex te
justos tuos ut consumam peccatores tuos. Pro eo ꝙ migrare faciã ex te ju- 4
stos tuos ut consumã peccatores tuos; ideò egredietur gladiꝰ meꝰ de vagina
sua contra omnem carnẽ ab Austro usque ad Aquilonẽ. Et scient omnes fi- 5
lii carnis, quia ego Dñs eduxi gladiũ meũ de vagina sua, non revertetur ul-
trà. Et tu fili hominis ingemisce in commotione lumborũ, & in amaritudine 6
ingemisce ante oculos eorum. Et erit, si dixerint tibi : Quare tu gemis ? & 7
dices: Propter nuntiũ quod venit, & dissolvetur omne cor, & remissæ erunt
universæ manꝰ, & obscurabitur omnis spiritꝰ, & omnia genua defluent sicut
aquæ. Ecce venit & firmabitur dicit Dñs Deꝰ. Et factũ est verbũ prophe- 8
tiæ à facie Dñi ad me dicens: Fili hominis, vaticinare, & dices: Hæc dicit 9
Dñs Deꝰ : Dic ; Gladiꝰ regis Babylonis occidet, & gladiꝰ filiorũ Ammon
exacuetur, & consumet. Ut occidat occisionẽ, evaginatꝰ est; ut faciat ultio- 10
nem, exacutꝰ est, pro eo quòd lætatæ sunt tribꝰ domꝰ Juda & Benjamin ob
tribꝰ Israel, quando migraverunt, eò quòd servissent idolis: & conversæ sunt
ipsæ ut errarent post simulachra lignea. Deditque ultionẽ eorũ ut traderen- 11
tur in manum regis Babylonis : ipsa est percussio gladii, erit ultio eorum,
ut tradantur in manũ interficientiũ. Clama & ulula fili hominis, quia ista 12
fuit in populo meo; ista *& universi principes* Israel : occidentes gladio
congregati sunt, & venerunt contra populum meũ per circuitum : idcirco
plaudes super femur. Quia prophetaverunt ad eos prophetæ, & non sunt 13
conversi: & quid futurũ sit in fine eorũ, dic. Etiam tribꝰ domꝰ Juda & Ben-
jamin migrando migrabunt, & propter opera sua mala non permanebunt,
dicit Dñs Deꝰ. Et tu fili hominis vaticinare, & percute manũ ad manum, 14
& duplicetur gladus tertiò, gladius interfectorum : ipse est gladius ultio-
nis & interfectionis magnæ qui contremiscere facit eos. Ut conteratur cor 15
eorum, & multiplicentur offendicula eorum, in omnibus civitatibus eorum
constitui occidentes gladio. Væ gladio, evaginatus est ad occidendum, exa-
cutus est ad excidendum. Evaginare & occide ab Austro, & consume ab 16
Aquilone, quocunque facies tua est parata.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܐ *

1 * ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ. ܣܝܡ ܐܦܝܟ ܠܐܘܪܫܠܡ. ܘܚܘܪ
2 ܒܡܩܕܫܗܘܢ. ܘܐܬܢܒܐ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܘܐܡܪ ܠܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
3 ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟܝ. ܘܐܦܩ ܣܦܣܝܪܝ ܡܢ ܬܥܠܗ. ܘܐܘܒܕ ܡܢܟܝ ܙܕܝܩܐ ܘܚܛܝܐ.
4 * ܘܡܛܠ ܕܐܘܒܕ ܡܢܟܝ ܙܕܝܩܐ ܘܚܛܝܐ. ܡܛܠܗܢܐ ܢܦܘܩ ܣܦܣܝܪܝ ܡܢ ܬܥܠܗ ܥܠ
5 ܟܠ ܒܣܪ ܡܢ ܬܝܡܢܐ ܘܥܕܡܐ ܠܓܪܒܝܐ. * ܘܢܕܥܘܢ ܟܠ ܒܣܪ. ܕܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܦܩܬ ܣܦܣܝܪܝ
6 ܡܢ ܬܥܠܗ. ܘܠܐ ܬܗܦܘܟ ܬܘܒ. * ܘܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ. ܐܬܬܢܚ ܒܬܒܪܐ ܕܚܨܐ. ܘܒܡܪܝܪܘܬܐ
7 ܐܬܬܢܚ ܩܕܡܝܗܘܢ. * ܘܐܢ ܢܐܡܪܘܢ ܠܟ. ܡܢܐ ܡܬܬܢܚ ܐܢܬ. ܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܥܠ ܫܡܥܐ
ܕܐܬܐ. ܘܢܬܡܣܐ ܟܠܗ ܠܒܐ. ܘܢܬܪܦܝܢ ܟܠܗܝܢ ܐܝܕܝܐ. ܘܬܬܟܪܐ ܟܠܗ
8 ܪܘܚܐ. ܘܟܠܗܝܢ ܒܘܪܟܐ ܢܪܕܝܢ ܡܝܐ. ܗܐ ܐܬܝܐ ܘܗܘܝܐ: ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. * ܘܗܘܐ ܥܠܝ
9 ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ. ܐܬܢܒܐ ܘܐܡܪ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܣܦܣܝܪܐ ܣܦܣܝܪܐ
10 ܐܬܚܪܦ * ܘܐܬܛܝܒ ܠܡܩܛܠ ܩܛܠܐ. ܕܬܒܪܩ. ܘܐܬܛܝܒ ܠܡܥܩܪܘܬܗ ܠܫܒܛܗ ܕܒܪܝ.
11 ܘܐܫܠܛ ܟܠܗ ܩܝܣܐ. * ܘܝܗܒܗ ܠܡܛܝܒܘܬܐ. ܘܠܩܒܬܐ ܕܐܝܕܐ ܕܣܦܣܝܪܐ ܕܡܬܡܪܩ ܘܡܛܝܒ.
12 ܕܢܬܠܥܒܘܗܝ ܒܐܝܕܐ ܕܩܛܘܠܐ. * ܩܥܝ ܘܐܝܠܠ ܒܪܢܫܐ: ܡܛܠ ܕܗܘ ܗܘܐ ܥܠ ܥܡܝ.
13 ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܪܘܪܒܢܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܛܪܘܦ ܟܦܐ. ܡܛܠ ܕܐܙܕܕܩܬ ܗܕܐ. ܘܐܢ ܫܒܛܐ
14 ܐܣܬܠܝ. ܠܐ ܢܗܘܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. * ܘܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ. ܐܬܢܒܐ. ܘܛܪܘܦ ܟܦܐ
ܥܠ ܐܝܕܐ. ܘܢܬܥܦܦ ܣܦܣܝܪܐ. ܘܣܦܣܝܪܐ ܬܠܝܬܝܐ ܕܩܛܝܠܐ. ܘܣܦܣܝܪܐ ܕܩܛܝܠܐ
15 ܪܒܐ ܗܘ ܕܡܬܒܗܠ ܠܗܘܢ. * ܕܢܬܬܒܪ ܠܒܗܘܢ. ܘܢܣܓܘܢ ܟܪܝܗܐ ܒܟܠ ܬܪܥܝܗܘܢ.
16 ܐܫܠܡܬ ܐܢܘܢ ܠܣܦܣܝܪܐ ܕܡܬܡܪܩ. ܘܡܒܪܩ. ܘܡܛܝܒ ܠܩܛܠܐ. * ܐܬܚܝܠܝ
ܝܡܝܢܝ. ܘܐܬܚܝܠܝ ܣܡܠܝ: ܠܐܬܪ ܕܡܛܝܒܝܢ ܐܦܝ.

CAP. XXI.

Fuit ad me ſermo Dñi, dicendo; Fili hominis, 1
verte faciem tuam ad Jeruſalem, & in- 2
tuere ſanctuarium eorum: Vaticinare de terra
Iſraelis, Et dic ad terram Iſraelis; Sic ait 3
Dñs dominorum; Ecce me adverſùm te, exeramque
gladium meum è vagina ſua, & perdam
ex te juſtum ac peccatorem. Et quia per- 4
didero ex te juſtum et peccatorem, ideo prodibit
gladius meus è vagina ſua contra omnẽ
carnem, ab Auſtro ad Aquilonem uſque: Et 5
experientur omnis caro, me Dñm exeruiſſe
gladium meum è vagina ſua, nec ampliùs *in
eam* reverſurum. Tu verò fili hominis, ſuſpira 6
cum fractione (i. *contortione*) lumborum,
& *quidem* amarè ſupira coram eis. Quòd ſi 7
dicant tibi, Quare ſuſpiras? Dic eis, Propter
rumorem qui advenit, quo contabeſcent omnia
corda, manus omnes torpeſcent, omnes
ſpiritus dolore conficientur, omniaque genua
manabunt aquis: ecce advenit, ac fiet, ait Dñs
dominorum. Deinde fuit ad me ſermo Dñi, 8
dicendo; Fili hominis, vaticinare, & dic; Sic 9
ait Dñs dominorum, Gladie, gladie, acue te,
Teque compara ad cædem faciendam & co- 10
ruſcandum: compara te ad exagitandam ſtirpem
filii mei, & ſperne omne lignum. Et dedit 11
præparationẽ illam, (i. *paratum illum enſem*)
& capulũ manubrii enſis expoliti atq; parati
ad tradendum in manum occiſoris. Clama & 12
ejula fili hominis, quoniam ipſe eſt contra populum
meum, & contra omnes magnates Iſraelis.
Plaude volâ, quoniam hoc jam verifica- 13
tum eſt: quandoquidem enim ſtirps iſta ſpreta
eſt, an non fieret id, ait Dñs dominorum?
Tu itaque fili hominis, vaticinare & complo- 14
de volâ, manu ſuper manu: nam duplicabitur
gladius, & gladius tertius erit confoſſorum;
& gladius hic confoſſorum erit maximus qui
adeo terrebit eos, Ut frangatur cor eorum, et 15
multiplicentur ægroti in omnibus januis eorum.
Tradidi eos gladio expolito, coru- 16
ſcanti, et ad cædem parato. Strenuè agas dextera
mea, ſtrenuè etiam *ibi* agas ſiniſtra mea,
quò diſpoſita eſt facies (i. *ira*) mea.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

1 * الفصل الحادي والعشرون *
2 * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان *
لاجل هذا تنبا وتنبا وجهك علي ايروسليم * وانظر علي مقادسهم * وتنبي علي ارض اسرايل *
3 * وتقول لارض اسرايل * هكذا يقول الرب * ها انا اليك * واخرج سكيني من غلافه *
4 واستاصل منك الظالم والاثيم * لاجل اني استاصل منك الظالم والاثيم * هكذا يخرج
5 سكيني من غلافه علي كل جسد من المشرق الي الجربيا * ويعلم كل جسد اني انا الرب
6 انتضيت سكيني من غمده * ولا يرجع ايضا * وانت يا ابن الانسان تنهد بانكسار حقوك *
7 وبالاوجاع تنهد لعيونهم * ويكون اذ يقولون لك * من اجل ماذا تتنهد * فتقول * بالخبر
لانه ياتي وينكسر كل قلب * وكل الايدي تنحل * ويموت كل جسد وكل روح * وكل الافخاذ
8 تتدنس بالرطوبة * اذ ياتي ويكون * يقول الرب الاله * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن
9 الانسان تنبا وقول * هكذا يقول ادوناي الرب * قل للسيف * ايها السيف احتد واغضب *
10 * لكي تذبح ذبحا احتد لكي تصير للصقال * استعد للاستيصال * اذبح * ارذل * واطرح كل
11 خشبة * واعطاه مستعدا ليمسك بيده * السيف هو مستعد مصقول ليدفع الي يد القتال *
12 * اصرخ وولول يا ابن الانسان * لان هذا صار في شعبي * هذا في كل مقدمي اسرايل السكان
13 علي السيف * صار في شعبي * لاجل هذا صفق بيدك * لانه تبرر ايضا * ان كانت قبيلة
14 اقصيت * لا يكون * يقول الرب الرب * وانت يا ابن الانسان تنبا * وصفق بيد علي يد *
15 وضاعف السيف * السيف الثالث هو للجرحا * سيف الجرحا عظيم * ويحيرهم * كي يستاصل
كل قلب ويكثر الضعفاء علي كل بابهم * ويسلمون لذبح السيف * صار حسنا للذبح *
16 صار حسنا للصقال * امض احتد عن اليمين * وعن اليسار * حيث يقوم وجهك *

CAP. XXI.

Fuit autem ſermo Domini ad me, di- 1
cens; O fili hominis, icciroo vaticinare, 2
*& obfirma faciem tuam contra Jeruſalem
reſpice verſùs ſanctuaria eorum, &
vaticineris contra terram Iſraelis, Di-* 3
*caſque terræ Iſraelis; Ita dicit Dominus;
Ecce me adverſùm te, & exeram
verutum meum è vagina ſua, & extirpabo
ex te ſceleratum & iniquum.
Quoniam exterminabo ex te ſceleratum* 4
*& iniquum, pari ratione egredietur
verutum meum è vagina ſua contra
omne corpus, ab Oriente ad Aquilonem
uſque: Et cognoſcet omne corpus quòd* 5
*ego Dominus exerui verutum meum è
vagina ſua, nec avertetur ampliùs.
Quare tu O fili hominis, geme cum* 6
*fractione lumbi tui, & cum doloribus
gemas cernentibus ipſis. Eritque cùm* 7
*dixerint tibi; Quam ob cauſam gemis?
ut dicas, Propter nuntium, quo
veniente frangetur omnis animus, manus
omnes diſſolventur, morietur omne
corpus omniſque ſpiritus, & coxæ omnes
humore ſordeſcent, cum venerit ac fuerit,
dicit Dominus Deus. Rurſus fuit* 8
*ſermo Domini ad me, dicens; O fili hominis,
prophetato ac dicito; Sic ait* 9
*Adonai Dominus; Dic gladio, O gladie
acuere & iraſcere, Ad jugulan-* 10
*dum jugulationem: acuere ut ſis ad
expoliendum, para te ad extirpandum,
jugula, contemne, & abjice omne lignum.
Reddiditque eum paratum ad* 11
*manu tenendum. Gladius eſt paratus expolitus
ad tradendum in manum interfectoris.
Clama & ulula O fili hominis,* 12
*quòd hæc evenerint populo meo, hæc
omnibus præcipuis Iſraelis habitantibus
ſuper gladium, hæc inquam evenerint
populo meo. Hac de re plaude* 13
*manu tuâ, quoniam hæc adhuc juſtificata
ſunt. Quandoquidem familia repulſa
eſt, annon fierent hæc, dicit Dominus
Dominus? Et tu O fili hominis* 14
*vaticinare, & manum ad manum complode,
& duplica gladiũ: gladius tertius
erit vulneratorũ, gladiꝰ vulneratorũ maximus
erit: & eos ita reddet attonitos,
ut extirpentur corda quaq;, & multipli-* 15
*centur infirmi ad oſtia quaq; ipſorũ: deniq;
tradentur jugulatione gladii: factꝰ eſt
optimꝰ ad jugulandũ, factꝰ eſt optimꝰ ad
fulgendũ. Vade, exacuere à dextra et à* 16
ſiniſtra, ubicunque ſteterit facies tua.

faciā requieſcere & ,meā manū ad meam *volam* percutiam ego etiam Et
17 וגם־אני אכה כפי אל־כפי והנחתי
,me ad Domini verbum fuit Et .ſum locutus Dominus ego :meā iram
18 חמתי אני יהוה דברתי : ויהי דבר־יהוה אלי
veniendum ad , vias duas tibi pone ,hominis fili tu Et :dicendo
19 לאמר : ואתה בן־אדם שים־לך שנים דרכים לבוא
, elige *manū* & :ipſæ ambæ egrediantur una terra E : Babel regis *gladium*
חרב מלך־בבל מארץ אחד יצאו שניהם ויד ברא
,*gladium veniendum ad* ,pones Viam .elige civitatis viæ *capite in*
בראש דרך־עיר ברא : דרך תשים לבוא חרב את 20
.munita Jeruſalaim in Jehudah & : Hammon filiorum Rabbath
רבת בני־עמון ואת־יהודה בירושלם בצורה :
, viarum duarum capite in , viæ *matrem ad* Babel rex ſtetit Nam
21 כי־עמד מלך־בבל אל־אם הדרך בראש שני הדרכים
reſpexit , *Teraphim in petiit* ,*ſagittis in* terſit :divinationē divinandū ad
לקסם־קסם קלקל בחצים שאל בתרפים ראה
, *arietes ponendum ad* ,Jeruſalaim divinatio fuit ejus dextera In .jecore in
22 בכבד : בימינו היה הקסם ירושלם לשום כרים
ponendū ad :vociferatione in vocem *elevandū ad* ,cædem ad os *aperiendū ad*
לפתח פה ברצח להרים קול בתרועה לשום
.*ligneam turrim ædificandum ad* ,aggerem *fundendum ad* , portas *ſuper* arietes
כרים על־שערים לשפך סללה לבנות דיק :
juramenta *jurantes* ,eorum oculis in *mendacium divinare ſecundum* eis erit Et
23 והיה להם כקסום־שוא בעיניהם שבעי שבעות
Dominus dixit ſic Idcirco .*prehendi ad*,*iniquitatē commemorans* hoc & : eis
24 להם והוא־מזכיר עון להתפש : לכן כה־אמר אדני
,*veſtras prævaricationes detegi in* ,veſtræ iniquitatis *vos recordari Pro* : Deus
יהוה יען הזכרכם עונכם בהגלות פשעיכם
, *vos recordari pro* : veſtris *ſtudiis* omnibus in *veſtra peccata videri ad*
להראות חטאותיכם בכל עלילותיכם יען הזכרכם
venit cujus : Iſrael dux ,impie prophane tu Et .capiemini *vola in*
25 בכף תתפשו : ואתה חלל רשע נשיא ישראל אשר־בא
: Deus Dominus dixit Sic .*finis* iniquitatis tempore in ,*ejus* dies
26 יומו בעת עון קץ : כה אמר אדני יהוה
humilem : hæc non hæc : *diadema leva* & , cidarim Remove
הסיר המצנפת והרים העטרה זאת לא־זאת השפלה
.eam ponam *perverſam* ,*perverſam* ,*Perverſam* .humiliando *altum* &,ſublevādo
27 הגבה והגבה השפיל : עוה עוה עוה אשימנה
.eam tradam & ,judicium *ei* cui *venire uſque* fuit non hoc Etiam
גם־זאת לא היה עד־בא אשר־לו המשפט ונתתיו :
Deus Dominus dixit Sic : *dices* & ,propheta hominis fili tu Et
28 ואתה בן־אדם הנבא ואמרת כה אמר אדני יהוה
mucro ,Mucro : *dices* & ,eorū opprobrium ad & ,Hammon filios ad
אל־בני עמון ואל־חרפתם ואמרת חרב חרב
videndo In .*fulgur propter* ,*ſuſtinendum ad terſus* ,jugulationē ad *ſolutus*
29 פתוחה לטבח מרוטה להכיל למען ברק : בחזות
colla ad te *dandum ad* ,mendacium tibi *divinando in* ,vanum tibi
לך שוא בקסם־לך כזב לתת אותך אל־צוארי
iniquitatis tempore in *eorum* dies venit quorum ,impiorum vulneratorum
חללי רשעים אשר־בא יומם בעת עון
, es creatus quo loco In ? ſuam vaginam *ad Reducendum* .finis
30 קץ : השב אל־תערה במקום אשר־נבראת
te ſuper effundam Et .te judicabo tuarum *manſionum* terra in
31 בארץ מכרותיך אשפט אתך : ושפכתי עליך
te dabo Et .te *ſuper* faciam ſufflare mei furoris ignem *Per* .meā *indignationē*
זעמי באש עברתי אפיח עליך ונתתיך
.*corruptionis* artificum inſipientium virorum manum in
ביד אנשים בערים חרשי משחית :

Verſio VULG. LAT.

17 Quin & ego plaudam manu ad manū, & implebo indignationē 18 meā, ego Dñs locutꝰ ſum. Et factus eſt ſermo Dñi ad me, dicens; 19 Et tu, fili hominis, pone tibi duas vias, ut veniat gladiꝰ regis Babylonis: de terra una egredientur ambæ: & manu capiet conjecturā, in capite viæ civitatis 20 conjiciet. Viam pones ut veniat gladiꝰ ad Rabbath filiorū Ammon, & ad Judā in Jeruſalē mu- 21 nitiſſimā. Stetit enim rex Babylonis in bivio, in capite duarum viarū, divinationē quærens, commiſcens ſagittas: interrogavit 22 idola, exta conſuluit. Ad dexterā ejꝰ facta eſt divinatio ſuper Jeruſalem, ut ponat arietes, ut aperiat os in cæde, ut elevet vocē in ululatu, ut ponat arietes contra portas, ut cōportet aggerē, ut ædi- 23 ficet munitiones. Eritque quaſi conſulens fruſtrà oraculū in oculis eorū, & ſabbatorū otiū imitans: ipſe autē recordabitur ini- 24 quitatis ad capiendū. Idcircò hæc dicit Dñs Deꝰ; Pro eo ꝙ recordati eſtis iniquitatis veſtræ, & revelâſtis prævaricationes veſtras, & apparuerunt peccata veſtra in omnibꝰ cogitationibus veſtris: pro eo, inquā, ꝙ recordati eſtis, 25 manu capiemini. Tu autem profane, impie dux Iſrael, cujꝰ venit dies in tempore iniquitatis præ- 26 finita: Hæc dicit Dñs Deꝰ; Aufer cidarim, tolle coronā: nónne hæc eſt, quæ humilē ſublevavit, 27 & ſublimem humiliavit? Iniquitatem, iniquitatem, iniquitatem ponam eam: & hoc non factum eſt, donec veniret cujus eſt ju- 28 dicium, & tradam ei. Et tu, fili hominis, propheta, & dic; Hæc dicit Dominus Deus ad filios Ammon, & ad opprobrium eorum, & dices; Mucro, mucro, evagina te ad occidendum, lima 29 te ut interficias, & fulgeas, Cùm tibi viderentur vana, & divinarentur mendacia: ut dareris ſuper colla vulneratorum impiorum, quorum venit dies in tem- 30 pore iniquitatis præfinita. Revertere ad vaginam tuam, in loco in quo creatus es, in terra 31 nativitatis tuæ judicabo te, Et effundam ſuper te indignationem meam: in igne furoris mei ſufflabo in te, dabóque te in manus hominum inſipientium, & fabricantium interitum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

17 Καὶ ἐγὼ δὲ κροτήσω χεῖρά μου πρὸς χεῖρά μου, καὶ ἐναφήσω (ρ) θυμόν μου, ἐγὼ κύριος 18 λελάληκα. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς 19 μὲ, λέγων, Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, διάταξον σεαυτῷ δύο ὁδοὺς, τοῦ εἰσελθεῖν ῥομφαίαν βασιλέως Βαβυλῶνος, ἐκ χώρας μιᾶς ἐξελεύσονται (σ) αἱ δύο, καὶ χεὶρ ἐν ἀρχῇ ὁδοῦ 20 πόλεως, ἐπ' ἀρχῆς ὁδοῦ διατάξεις, Τοῦ εἰσελθεῖν ῥομφαίαν ἐπὶ Ῥαββὰθ (τ) υἱῶν Ἀμμὼν, καὶ ἐπὶ τὴν Ἰουδαίαν, καὶ ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ 21 ἐν μέσῳ αὐτῆς. Διότι στήσεται βασιλεὺς Βαβυλῶνος ἐπὶ τὴν ἀρχαίαν ὁδὸν, ἐπ' ἀρχῆς τῶν δύο ὁδῶν, τοῦ μαντεύσασθαι μαντείαν, τοῦ ἀναβράσαι (υ) ῥάβδον, καὶ ἐπερωτῆσαι ἐν 22 τοῖς γλυπτοῖς, καὶ ἡπατοσκοπήσασθαι. Ἐκ δεξιῶν αὐτοῦ ἐγένετο τὸ μαντεῖον ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, τοῦ βαλεῖν χάρακα, (") τοῦ διανοῖξαι στόμα ἐν βοῇ, ὑψῶσαι φωνὴν μετὰ κραυγῆς, τοῦ βαλεῖν χάρακα ἐπὶ τὰς πύλας αὐτῆς, καὶ βαλεῖν χῶμα, καὶ οἰκοδομῆσαι βελοστάσεις. 23 Καὶ αὐτὸς αὐτοῖς ὡς μαντευόμενος μαντείαν ἐνώπιον αὐτῶν, καὶ αὐτὸς ἀναμιμνήσκων 24 ἀδικίας (φ) αὐτοῦ μνησθῆναι. Διατοῦτο τάδε λέγει (χ) κύριος, Ἀνθ' ὧν ἀνεμνήσατε τὰς ἀδικίας ὑμῶν, ἐν τῷ ἀποκαλυφθῆναι τὰς ἀσεβείας ὑμῶν, τοῦ ὁραθῆναι ἁμαρτίας ὑμῶν, ἐν πάσαις ταῖς ἀσεβείαις ὑμῶν καὶ ἐν τοῖς ἐπιτηδεύμασιν ὑμῶν, ἀνθ' ὧν ἀνεμνή- 25 σατε, ἐν τούτοις (ψ) ἁλώσεσθε. Καὶ σὺ βέβηλε, ἄνομε, ἀφηγούμενε τοῦ Ἰσραὴλ, οὗ ἥ- 26 κει ἡ ἡμέρα ἐν καιρῷ ἀδικίας, πέρας, Τάδε λέγει (ω) κύριος, Ἀφείλου τὴν κίδαριν, καὶ ἐπέθου (α) τὸν στέφανον, αὕτη οὐ τοιαύτη ἔσται· ἐταπείνωσας τὸ ὑψηλὸν, καὶ (β) ὕψωσας τὸ 27 ταπεινόν. Ἀδικίαν, ἀδικίαν, ἀδικίαν θήσομαι αὐτήν, (γ) οὐαὶ αὐτῇ, τοιαύτη ἔσται ἕως οὗ ἔλθῃ ᾧ καθήκει, καὶ παραδώσω (δ) 28 αὐτῷ. Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου προφήτευσον, καὶ ἐρεῖς, Τάδε λέγει (ε) κύριος πρὸς τοὺς υἱοὺς Ἀμμὼν καὶ πρὸς τὸν ὀνειδισμὸν αὐτῶν· καὶ ἐρεῖς, Ῥομφαία, ῥομφαία (ζ) ἐσπασμένη εἰς σφάγια, καὶ ἐσπασμένη εἰς συντέλειαν, 29 ἐγείρου ὅπως στίλβῃς, Ἐν τῇ ὁράσει σου τῇ ματαίᾳ, καὶ ἐν τῷ μαντεύεσθαί σε ψευδῆ, τοῦ παραδοῦναί σε ἐπὶ τραχήλους τραυματιῶν ἀνόμων, (η) ἥκει ἡ ἡμέρα ἐν καιρῷ ἀδικίας, 30 πέρας. Ἀπόστρεφε, μὴ καταλύσῃς ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ ᾧ γεγέννησαι, ἐν τῇ γῇ τῇ ἰ- 31 δίᾳ σου κρινῶ σε. Καὶ ἐκχεῶ ἐπὶ (θ) σὲ ὀργήν μου, ἐν πυρὶ ὀργῆς μου ἐμφυσήσω ἐπὶ σὲ, καὶ παραδώσω σε εἰς χεῖρας ἀνδρῶν βαρβάρων τεκταινόντων (ι) διαφθοράς.

Et ego autem plaudā manu meâ 17 ad manum meam, & immittam furorem meum; ego Dominus loquutus ſum. Et factus eſt ſermo 18 Domini, ad me, dicens; Et tu, fili 19 hominis, ſtatue tibi duas vias, ut ingrediatur gladius regis Babylonis. De regione una egredientur (h) ambæ: & (i) manus in principio viæ civitatis: ſuper principium viæ conſtitues, ut ingrediatur 20 gladiꝰ ſuper Rabbath filiorū Ammon; & ſuper Judæā, & ſuper Hieruſalē (k) in medio ejus. Stabit 21 enim rex Babylonis ſuper antiquā viā, in principio duarū viarū ad divinandū divinationē, ad (l) faciendū ebullire virgam, et interrogandū in ſculptilibus, (m) & jecur ſpeculandū; A dexteris ſuis 22 facta eſt divinatio ſuper Hieruſalē, ad jaciendū vallum, ad aperiendū os in clamore, ad exaltandum vocem cum (n) vociferatione, ad jaciendū vallum ſuper portas ejus, & jaciendū aggerem, et ædificandas machinas jaculatrices. Et ipſe ipſis, quaſi divinans 23 divinationē (o) coram eis: et ipſe rememorās (p) iniquitatū ejus ad recordandum. Idcircò hæc dicit 24 Dominus; Pro eo, quòd in memoriam revocâſtis iniquitates veſtras, cū revelarentur impietates veſtræ, ut viderentur peccata veſtra, in (q) omnibꝰ impietatibꝰ veſtris, et in adinventionibꝰ veſtris, pro eo, quòd in memoriam revocâſtis; in iſtis capiemini. Et tu pro- 25 phane, inique, dux Iſrael, cujus venit dies, in tempore iniquitatis, finis: Hæc dicit Dñs; (r) Abſtuliſti 26 cidarim, et impoſuiſti coronā: (ſ) ei non erit talis. Humiliâſti excelſum; et ſublevâſti humile. Iniqui- 27 tatē, iniquitatē, (t) iniquitatē ponā eā. (u) Væ ei, talis erit, donec veniat, cui debetur, & tradā ei. Et tu, fili hominis, propheta, et di- 28 ces; Hæc dicit Dominus ad filios Ammon, et ad opprobriū eorū: Et dices; Gladius, gladius eductꝰ ad jugulationes, & eductus ad conſummationē, exurge, ut ſplendeas, In viſione tua vana, et in di- 29 vinando te falſa, ut dareris ſuper colla vulneratorū iniquorū: venit dies in tempore iniquitatis, finis. (x) Revertere, ne maneas: in 30 loco in quo genitus es, in terra propria tua judicabo te: Et 31 effundā ſuper te iram meam: in igne iræ meæ ſufflabo in te: & tradā te in manus virorū barbarorum fabricantium corruptiones.

MS.A. (ρ) τὸν θυμόν μου ἐν σοὶ, ἐγὼ κύριος λελάληκα. (σ) ἀρχαὶ δύο, καὶ χεῖρα ἑτοιμάσουσιν ἐπ' ἀρχῆς ὁδοῦ (τ) καὶ ἐπὶ υἱῶν (υ) ῥαβδία, (") καὶ τοῦ (φ) αὐτῶν (χ) κύριος κύριος, ὁ θεὸς, (ψ) ἁλωθήσεσθε. (ω) κύριος κύριος ὁ θεὸς, (α) αὐτῇ τὸν στέφανον, (β) τὸ ταπεινὸν ὕψωσας. Ἀδικίαν ἀδικίαν θήσομαι (γ) οὐ τοιαύτη ἔσται ἕως (δ) αὐτήν. (ε) κύριος ὁ θεὸς (ζ) ἑτοιμάζου ἐσπασμένη σφάγια, (η) ὧν ἥκει (θ) σοὶ (ι) διαφθοράν.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

17 ואף אנא איתי פורענות על פורענות ואניח חמתי אנא יי גזרית במימרי : והוה פתגם
18 נבואה מן קדם יי עמי למימר : ואת בר אדם אתקין לך תרתין אורחן דייתין בהון קטולי
19 חרבא דמלכא דבבל ממדינתא חדא יפקון תרויהון ואתרא אתקין בריש פרשות
אורח קרתא אתרא אתקין : אורחא אתקין דייתון בה קטולי חרבא מרבת בני עמון ועל
20 דבית יהודה די נפקו מירושלם למיתב בקרוין כריכן : ארי קם מלכא דבבל על אם
21 פרשות אורח בריש תרתין אורח למקסם קסם קשת בגרריא שאל בצלמניא חזא
בכבדא : בימיניה הוה קסמא נפיל למהך לירושלם למנאה אפרורין לפתחא תרעין
22 דיעלון בהון קטולין לארמא קל באצוחת קרנא למנאה אפרורין על תרעין למצבר
מליתא ולמבני כרקום : והוה להון קסומיהון כדיבין בעיניהון נחשין דהוה מנחש
23 להון ואנון לא ידעין דארבעין ותשע זמנין הוה כמן ומתתב על פתגמא עד דתיתי ליה
שעתא דיתמסרון בידיה : בכן כדנן אמר יי אלהים חלף דאדכרתון חוביכון באתגלאה
24 מרדיכון לאתחזאה חטאיכון בכל עובדיכון חלף דאדכרתון ביד מלכא דבבל
תתמסרון : ואת חיב קטלא רשיעא רבא דישראל דמטא יום תבריה עדן תושלמת
25 חובוהי : כדנן אמר יי אלהים אעדי מצנפתא משריה כהנא רבא ואבטל כתרא
26 מצדקיה מלכא אמר דין ודין באתריה לא יתקים מגלא יגלון גדליה בר אחיקם דלא
הות דיליה יסבנה צדקיה דדיליה היא תעדי מניה : חוביהון דחבו כחוביהון אתפרע
27 מנהון אף לדין לא יתקים ליה עד דאיתי עלוהי פורענות ישמעאל בר נתניה ואמסרניה
בידיה : ואת בר אדם אתנבי ותימר כדנן אמר יי אלהים על בני עמון ועל חסודיהון
28 ותימר חרבא חרבא אשתלפת למקטל אשתנינת לשיצאה בדיל למהוי לה צחצוחין :
29 באתנבאה לך שקר באלפא לך כדבין למסר ית צורך כצורי קטילי רשיעיא דמטא
30 יום תבירהון עדן סעורן בישתהון : אתיב חרבא לנדנה באתרא דאתבריתון בארע
31 תותבותכון אתפרע מנכון : ואשפוך עלך חימתי באשת פורענותי אתקיף עלך
ואמסרנך ביד גברין רשיעין דאומנין לחבלא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ego quoque adducā ultionē ſuper ultionē, & requieſcere faciā indignationem meā. 17 Ego Dñs decrevi in verbo meo. 18 Et factū eſt verbū prophetiæ à facie Dñi ad me, dicens: 19 Et tu fili hominis para tibi duas vias per quas veniant occidentes gladio regis Babylonis. Et de provincia una egredientur ambæ, & locū conſtitue, in capite bivii itineris civitatis locū conſtitue. 20 Viam conſtitue, ꝑ quā veniant occidentes gladio de Rabbath filiorū Ammon & ſuꝑ eos qui ſunt de domo Juda, qui egreſſi ſunt de Jeruſalem ut habitarent in civitatibꝰ munitis. 21 Quoniā ſtetit rex Babylonis in bivio itineris in capite duarū viarū, ad divinandū divinationē: arcu ejaculatꝰ eſt ſagittas, & conſuluit ſimulachra, inſpexit jecur. 22 In dexterā ejꝰ divinatio cecidit, ut iret in Jeruſalē ad conſtituendū duces, ad aperiendū portas ut ingrederentur per eas occiſores, & elevarent vocē in clangore tubæ, ad conſtituendos duces ſuꝑ portas, ad comportandū aggerē & ad exſtruendā machinā. 23 Et factæ ſunt eis divinationes eorū mendacia in oculis eorum, & auguria quibꝰ augurabatur eis, & ipſi neſciebant quòd quadraginta & novē vicibꝰ obſervaſſet & reſponſū ſibi eſſet ſuper verbū, donec veniſſet ei tempꝰ quo traderentur in manū ejꝰ. 24 Propterea hæc dicit Dñs Deꝰ: Pro eo quod recordati eſtis peccatorū veſtrorū cùm revelata ſunt ſcelera veſtra, ut appareant peccata veſtra in omnibꝰ operibꝰ veſtris, pro eo quòd recordati eſtis, in manū regis Babylonis trademini. 25 Et tu reus mortis impie princeps Iſrael, cujꝰ interitꝰ dies pervenit, tempꝰ retributionis peccatorū ſuorū. 26 Hæc dicit Dñs Deꝰ: Aufer cidarim à Saraia ſacerdote magno, & tollā coronā à Sedechia rege. Dic: Iſte & iſte non permanebunt in loco ſuo, ſed migrando migrabunt: Godolias filiꝰ Ahicā cujꝰ non erat [*corona,*] tollet eam; & auferetur à Sedechia cujꝰ erat [*corona.*] 27 Propter peccata ſua quibꝰ peccaverunt, ultionē ſumā ex eis. Etiā huic non permanebit [*corona,*] donec adduxero ſuꝑ eum ultionē Iſmaelis filii Nathaniæ, & tradidero eum in manū ejꝰ. 28 Et tu fili hominis vaticinare, & dic: Hæc dicit Dñs Deꝰ de filiis Ammon, & de opprobriis eorū: et dices: Gladiꝰ gladius evaginatꝰ eſt ad occidendū, exacutꝰ eſt ad conſumendū, ut ſplendorē habeat. 29 Cùm prophetarent tibi falſa, cùm docerent te mendacia, ut traderent cervicem tuam, ſicut cervices occiſorum impiorum, quorum dies interitus pervenit, tempus viſitationis malorum ſuorum. 30 Reduc ad vaginam gladium: in loco in quo creati eſtis, in terra habitationis veſtræ ultionem ſumam ex vobis. 31 Et effundam ſuper te indignationem meam, in igne ultionis meæ iraſcar contra te, et tradam te in manus virorum impiorum qui artifices ſunt ad diſſipandum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

17 ܐܦ ܐܢܐ ܐܩܫ ܟܦܐ ܐܝܕܝ ܥܠ ܐܝܕܝ. ܘܐܢܝܚ ܚܡܬܝ. ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܡܪܬ. * ܘܗܘܐ ܥܠܝ
18 ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ. ܥܒܕ ܠܟ ܬܪܬܝܢ ܐܘܪܚܢ. ܕܬܐܬܐ ܣܝܦܗ
19 ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܡܢ ܐܪܥܐ ܚܕܐ ܢܦܩܢ ܬܪܬܝܗܝܢ. ܘܐܝܕܐ ܓܒܝܬܐ ܒܪܫ ܐܘܪܚܐ
ܕܡܕܝܢܬܐ ܓܒܝܬܐ. * ܘܥܒܕ ܐܘܪܚܐ ܕܬܐܬܐ ܣܝܦܐ ܥܠ ܪܒܬ ܕܒܢܝ ܥܡܘܢ. ܘܥܠ ܝܗܘܕܐ 20
ܘܥܠ ܐܘܪܫܠܡ ܥܫܝܢܬܐ. * ܡܛܠ ܕܩܡ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܒܪܫ ܐܘܪܚܐ ܕܦܘܪܫܢܐ 21
ܐܘܪܚܬܐ. ܠܡܩܣܡ ܩܣܡܐ. ܫܕܐ ܓܐܪܐ. ܘܫܐܠ ܒܦܬܟܪܘܗܝ. ܚܙܐ ܫܘܒܚܗ. * ܘܒܝܡܝܢܗ 22
ܗܘܐ ܩܣܡܐ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ. ܕܢܩܝܡ ܟܡܐܢܐ. ܘܢܦܬܚ ܦܘܡܗ ܒܚܝܠܗ. ܘܢܪܝܡ
ܩܠܗ ܒܩܥܬܐ. ܘܢܩܝܡ ܣܘܟܐ ܥܠ ܬܪܥܝܗ. ܘܢܪܡܐ ܟܡܐܢܐ. ܘܢܒܢܐ ܕܝܩܐ. * ܘܬܗܘܐ 23
ܠܗܘܢ ܐܝܟ ܩܣܡܐ ܣܪܝܩܐ ܩܕܡ ܥܝܢܝܗܘܢ. ܘܗܘ ܡܥܗܕ ܥܘܠܐ ܘܡܬܐܚܕ. * ܡܛܠ ܗܢܐ 24
ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܐܬܕܟܪܬܘܢ ܥܘܠܟܘܢ. ܒܫܒܝܬܐ ܕܚܛܗܝܟܘܢ. ܘܚܙܝܬܘܢ
ܣܟܠܘܬܟܘܢ. ܘܟܠܗܘܢ ܨܒܝܢܝܟܘܢ. ܒܐܝܕܐ ܬܬܐܚܕܘܢ. * ܐܢܬ ܕܝܢ ܛܢܦܐ ܚܛܝܐ ܪܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. 25
ܕܡܛܐ ܝܘܡܟ. ܘܙܒܢܐ ܕܥܘܠܟ ܘܫܘܠܡܟ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܫܩܘܠ ܡܢܟ ܡܨܢܦܬܐ. 26
ܘܐܥܒܪ ܡܢܟ ܟܠܝܠܐ. ܡܟܝܟܐ ܐܪܝܡ. ܘܪܡܐ ܐܡܟ. * ܐܦ ܗܕܐ ܠܥܘܠܐ ܘܠܢܟܠܐ ܐܣܝܡܝܗ. 27
ܥܕܡܐ ܕܢܐܬܐ ܗܘ ܕܕܝܠܗ ܕܝܢܐ. ܘܐܫܠܡܝܘܗܝ. * ܐܢܬ ܕܝܢ ܒܪ ܐܢܫܐ. ܐܬܢܒܐ ܘܐܡܪ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ 28
ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܥܠ ܒܢܝ ܥܡܘܢ. ܘܥܠ ܚܣܕܗܘܢ. ܘܐܡܪ. ܣܝܦܐ ܣܝܦܐ. ܕܡܛܝܒ ܠܩܛܠܐ
ܡܫܝܥ ܘܡܒܪܩ. * ܥܠ ܚܙܘܟܘܢ ܣܪܝܩܐ. ܘܥܠ ܩܣܡܝܟܘܢ ܕܓܠܐ. ܠܡܫܠܡܟ ܥܠ ܨܘܪܝܗܘܢ 29
ܕܚܛܝܐ ܥܘܠܐ. ܕܡܛܐ ܝܘܡܗܘܢ. ܘܙܒܢܐ ܕܥܘܠܗܘܢ ܘܫܘܠܡܗܘܢ. * ܐܬܦܢܝ ܠܬܘܩܬܟ. ܒܐܬܪܐ 30
ܕܐܬܒܪܝܬ ܒܗ. ܬܡܢ ܐܕܘܢܟ. * ܘܐܫܘܕ ܥܠܝܟ ܪܘܓܙܝ. ܘܒܢܘܪܐ ܕܚܡܬܝ. ܐܦܘܚ ܒܟ. 31
ܘܐܫܠܡܟ. ܒܐܝܕܐ ܕܓܒܪܐ ܒܥܘܪܐ ܕܡܚܒܠܝܢ ܚܒܠܐ.

Ego quoque plaudam volâ, manu ſuper manum, & ſedabo iram meam: ego Dominus dixi. 17
Et fuit ad me ſermo Domini, dicendo; 18
Tu autem fili hominis, fac tibi duas vias, ut veniat gladius regis Babylonis: ex eadem terra egredientur ambo, & manus electa ad initium viæ urbis electæ. 19
Fac etiam viam, ut veniat gladius ſuper Rabath filiorum Ammon, & ſuper Judam, ſupérque Jeruſalem munitam. 20
Nam ſtetit rex Babylonis in principio viæ in compito viarum, ad divinandum divinationem, jecit ſagittam, conſuluit idolum ſuũ, inſpexit gloriam ſuam: 21
Et ad dexteram ipſius fuit divinatio contra Jeruſalem, ut contra eam tenderet inſidias, aperiret os ſuum potentiâ ſuâ, vocem attolleret cum clamore, aggeres erigeret contra portas ejus, poneret inſidias, & ſpeculas ædificaret. 22
Erit quidem apud iſtos quaſi vana quædam divinatio ante oculos eorum; & is recordatus iniquitatis, capietur. 23
Iccirco ſic ait Dominus dominorum; Quia recordati eſtis iniquitatis veſtræ in captivitate peccatorum veſtrorum, & ſcelera veſtra & cuncta ſtudia veſtra vidiſtis; manu capiemini. 24
Tu autem prophane, peccator, princeps Iſraelis, cujus advenit dies, & tempus iniquitatis tuæ, & finis tuus; 25
(Sic ait Dominus dominorum) tolle à te cidarim, & depone à te coronam, humilem exalta, & altum humilia. 26
Etiam hoc ſceleri et fraudi aſcribam, donec veniat is ad quem pertinet judicium, ac tum tradam eum. 27
Tu verò fili hominis, vaticinare et dic, Sic ait Dominus dominorum de filiis Ammon deque opprobrio eorum: Dic inquam, Gladie, gladie qui ad cædem paratus eras, expolitus, atque coruſcans, 28
(Propter viſionem veſtram vanam, et propter divinationem veſtram falſam) ut applicarem te cervicibus peccatorum ſceleratorum, quorum advenit dies, tempus iniquitatis eorum, et finis eorum; 29
Recipe te in vaginam tuam, *nempe* locum in quo natus es, ibique judicabo te: 30
Effundam ſuper te iracundiã meã, et in igne furoris mei inſufflabo in te, tradãq; te in manum virorum ferocium, artificum vaſtationis: 31

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

17 * وانا اصفق بيدي على يدي * واشعل غضبي فيك * انا الرب تكلمت * وكان قول
18 الرب الي قايلا * وانت يا ابن الانسان * ربت لذاتك طريقين ليدخل فيهما سيف ملك بابل *
19 من بلد واحد تخرج الرياستان * وهييان علي مبدا طريق المدينة يدا * وربت علي
20 مبدا الطريق * ليدخل السيف علي رباة * وعلي بني عمون * وعلي اليهودية * وعلي ايروسليم
في وسطها * من اجل ان ملك بابل يقف على الطريق الاولي * على مبدا الطريقين ينجم 21
22 تنجيما * ليرمي سهما * ويسال بالمنحوتات * ويتبع ليرمق عن يمينه * صار التنجيم علي
ايروسليم * ليضع عليها سياجا * وليفتح فمه بصراخ * ليرفع صوتا بعياط * ليضع سياجا
23 علي ابوابها * ويلقي ترابا * ويبني مرامي * وهو لهم مثل من ينجم تنجيما امامهم * وهو
24 يتذكر ظلاماتهم ليذكرها * لاجل هذا يقول الرب الرب الاله * من اجل انكم تذكرتم
ظلاماتكم عندما ينكشف نفاقكم لتري خطاياكم في جميع نفاقكم وفي اعمالكم *
25 من اجل انكم تذكروها فيها تهلكون * وانت ايها النجس الاثيم مقدم اسرايل * الذي
26 اتي يومه ونهايته في وقت ظلمه * هكذا يقول الرب الرب الاله * انزع الطيلسان * وضع
عنه الاكليل الذي له * هذا يكون الي ان ياتي الاتي وادفعه * اذللت المرتفع * ورفعت
27 المتواضع * ظلما ظلما اضعه * الذي له هذا يكون الي ان ياتي الاتي * وادفعه له * وانت
28 يا ابن الانسان تنبا وقل * هكذا يقول الرب الاله لبني عمون ولتعييرهم * وقل * السيف
29 السيف استعد منتضيا للذبح * ومجردا للهلاك * قم لكي تبرق * برؤيتك الباطلة * وتنجم
باطلا كاذبا * لاسلمك على رقاب الجرحا الاثمة الذين اتي يومهم وغايتهم في وقت ظلمهم *
30 * ارجع لا تحل في هذا الموضع الذي فيه صرت * في ارضك الخاصية اذينك * واريق
31 عليك غضبي * بنار رجزي انفخ عليك * واسلمك الي ايدي رجال عجم قتلة *

Et ego manum ad manum complodam, & accendam iram meam in te. Ego Dominus locutus ſum. 17
Deinde fuit ſermo Domini ad me, dicens; 18
Et tu O fili hominis, diſpone tibi duas vias, per quas ingrediatur gladius regis Babelis: ex eadem regione egredientur ambo principatus, & ad initium viæ urbis manum parabunt. 19
Diſpones etiam ſuper initium viæ, ut ingrediatur gladius contra Rabbath, & contra filios Ammon, contra Judæam, & contra Jeruſalem in medium ejus. 20
Stabit enim rex Babelis ſuper viam primam, ſuper initium utriuſque viæ divinando inquiret, jaculando ſagittam, & conſulendo ſculptilia, & inſiſtendo intueri ad dexteram ſuam. 21
Facta eſt divinatio contra Jeruſalem, ut applicaret ei vallũ, ut aperiret os ſuum cum clamore, ut vocem attolleret cum vociferatione, ut vallum applicaret portis ejus, terram aggeraret, & machinas jaculatrices ædificaret. 22
Sed eſt apud iſtos ut is qui divinat coram eis: ipſe verò recordabitur iniquitatum eorum, ut mentionem earum faciat. 23
Iccirco dicit Dominus, Dominus Deus; Quandoquidem recordati eſtis iniquitatum veſtrarum, quum detegeretur impietas veſtra, ut apparerent peccata veſtra in cunctis impietatibus veſtris & operibus veſtris; quandoquidem inquam recordati eſtis illarum, in iiſdem peribitis. 24
Et tu O impure, ſcelerate, princeps Iſraelis, cujus adenit dies ac finis in tempore iniquitatis ſuæ; 25
(Ita dicit Dominus, Dominus Deus) exue cidarim, & depone ab ea coronam quam habet. Hoc erit quoad veniat qui venturus eſt, tum tradam eum. Elatum depreſſiſti, & humilem exaltâſti. 26
Iniquitatem iniquitatem id ponam. Is cujus hæc ſunt, erit quoad veniat qui venturus eſt, ac tum huic tradam eum. 27
Tu autem O fili hominis, propheta, & dicas; Sic dicit Dominus Deus filiis Ammon & conviciis eorum: Dicas, inquam; Gladie gladie paratus eſto, evaginatus ad jugulandum, & diſtrictus ad excidium; ſurge ut ſplendeas. 28
In viſione tua vana, & vanum ac falſum divines; ut tradam te ſuper colla vulneratorum iniquorum, quorum dies & finis advenit in tempore impietatis ſuæ. 29
Revertere, ne maneas in iſto loco in quo factus es: in terra tua propria judicabo te, 30
Et effundam ſuper te furorem meum: in igne excandeſcentiæ meæ ſufflabo adverſùm te: tradamque te in manus virorum barbarorum homicidarum, 31

יחזקאל : כב

non : terræ medio in erit tuus ſanguis ,devorandum ad eris Igni
32 לָאֵשׁ תִּהְיֶה לְאָכְלָה דָּמֵךְ יִהְיֶה בְּתוֹךְ הָאָרֶץ לֹא
.ſum locutus Dominus ego quia ,memoraberis
תִזָּכֵרִי כִּי אֲנִי יְהוָה דִּבַּרְתִּי׃

CAP. XXII. כב

,hominis fili tu Et : dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et
1 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ וְאַתָּה בֶן־אָדָם
2 eā facies ſcire & : *ſanguinum* civitatem judicabis nónne,judicabis nónne
הֲתִשְׁפֹּט הֲתִשְׁפֹּט אֶת־עִיר הַדָּמִים וְהוֹדַעְתָּהּ
: Deus Dominus dixit Sic : *dices* Et ? ejus abominationes omnes
3 אֵת כָּל־תּוֹעֲבוֹתֶיהָ׃ וְאָמַרְתָּ כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה
: ejus tempus *veniendum ad* ,ſui medio in ſanguinem effundens Civitas
עִיר שֹׁפֶכֶת דָּם בְּתוֹכָהּ לָבוֹא עִתָּהּ
tuo ſanguine In .ſe polluendum ad ſcipſam contra idola fecit &
4 וְעָשְׂתָה גִלּוּלִים עָלֶיהָ לְטָמְאָה׃ בְּדָמֵךְ
,te polluiſti , feciſti quæ tuis idolis in & : deliquiſti ,effudiſti quem
אֲשֶׁר־שָׁפַכְתְּ אָשַׁמְתְּ וּבְגִלּוּלַיִךְ אֲשֶׁר־עָשִׂית טָמֵאת
propterea :tuos annos ad uſq; veniſti &,tuos dies feciſti appropinquare &
וַתַּקְרִיבִי יָמַיִךְ וַתָּבוֹא עַד־שְׁנוֹתַיִךְ עַל־כֵּן
, *Propinquæ* .terris omnibus irriſionē &,gentib⁹ in opprobriū te dedi
5 נְתַתִּיךְ חֶרְפָּה לַגּוֹיִם וְקַלָּסָה לְכָל־הָאֲרָצוֹת׃ הַקְּרֹבוֹת
multæ , nomine *polluta* : te in *ſubſannabunt* , te à *longinquæ &*
וְהָרְחֹקוֹת מִמֵּךְ יִתְקַלְּסוּ־בָךְ טְמֵאַת הַשֵּׁם רַבַּת
ſuū brachiū ſecundū unuſquiſq; , Iſrael *prælati* Ecce .contritionis
6 הַמְּהוּמָה׃ הִנֵּה נְשִׂיאֵי יִשְׂרָאֵל אִישׁ לִזְרֹעוֹ
,te in ſpreverunt matrem & Patrem .ſanguinē *effundendum ad* :te in fuerunt
7 הָיוּ בָךְ לְמַעַן שְׁפָךְ־דָּם׃ אָב וָאֵם הֵקַלּוּ בָךְ
oppreſſerūt viduam & pupillū :tui medio in oppreſſione *in* fecerūt *peregrino*
לַגֵּר עָשׂוּ בַעֹשֶׁק בְּתוֹכֵךְ יָתוֹם וְאַלְמָנָה הוֹנוּ
Viri .polluiſti mea ſabbatha & ,ſpreviſti mea Sanctuaria .te in
8 9 בָךְ׃ קָדָשַׁי בָּזִית וְאֶת־שַׁבְּתֹתַי חִלָּלְתְּ׃ אַנְשֵׁי
comederunt montes *ad* & :ſanguinē *effundendum ad* ,te in fuerunt *delationis*
רָכִיל הָיוּ בָךְ לְמַעַן שְׁפָךְ־דָּם וְאֶל־הֶהָרִים אָכְלוּ
: te in *revelavit* patris *Nuditatem* .tui medio in fecerunt *ſcelus* : te in
10 בָךְ זִמָּה עָשׂוּ בְתוֹכֵךְ׃ עֶרְוַת־אָב גִּלָּה־בָךְ
uxore cum unuſquiſq; Et .te in *compreſſerunt elongatione* immundam
11 טְמֵאַת הַנִּדָּה עִנּוּ־בָךְ׃ וְאִישׁ אֶת־אֵשֶׁת
: *ſcelere in* polluit ſuā nurum unuſquiſq; & ,abominationē fecit ſui *ſocii*
רֵעֵהוּ עָשָׂה תּוֹעֵבָה וְאִישׁ אֶת־כַּלָּתוֹ טִמֵּא בְזִמָּה
Munus .te in *compreſſit* ſui patris filiam ſuam ſororem unuſquiſque &
12 וְאִישׁ אֶת־אֲחֹתוֹ בַת־אָבִיו עִנָּה־בָךְ׃ שֹׁחַד
ſuperabundantiā & Uſuram .ſanguinē *effundendum ad* , te in acceperunt
לָקְחוּ־בָךְ לְמַעַן שְׁפָךְ־דָּם נֶשֶׁךְ וְתַרְבִּית
dixit ,es oblita mei & : oppreſſione *in* tuos *ſocios appetebas* & ,accepiſti
לָקַחַתְּ וַתְּבַצְּעִי רֵעַיִךְ בַּעֹשֶׁק וְאֹתִי שָׁכַחַתְּ נְאֻם
quam tuā avaritiam *ad* meam *volam* percuſſi ecce Et .Deus Dominus
13 אֲדֹנָי יְהוִה׃ וְהִנֵּה הִכֵּיתִי כַפִּי אֶל־בִּצְעֵךְ אֲשֶׁר
ſtabit Nūquid .tui medio in *fuerunt* qui ,tuū ſanguinē ſuper & : feciſti
14 עָשִׂית וְעַל־דָּמֵךְ אֲשֶׁר הָיוּ בְּתוֹכֵךְ׃ הֲיַעֲמֹד
faciens ego quos diebus in tuæ manus prævalebunt Num ? tuum cor
לִבֵּךְ אִם־תֶּחֱזַקְנָה יָדַיִךְ לַיָּמִים אֲשֶׁר אֲנִי עֹשֶׂה
faciam diſpergere Et .faciam & ,ſum locutus Dominus Ego ? tecum
15 אוֹתָךְ אֲנִי יְהוָה דִּבַּרְתִּי וְעָשִׂיתִי׃ וַהֲפִיצוֹתִי
tuā immunditiā faciā deficere & ; terras in te ventilabo & ,gentes in te
אוֹתָךְ בַּגּוֹיִם וְזֵרִיתִיךְ בָּאֲרָצוֹת וַהֲתִמֹּתִי טֻמְאָתֵךְ
.Dominus *ego* quòd ſcies & :gentium oculis in te in *hæreditabis* Et .te à
16 מִמֵּךְ׃ וְנִחַלְתְּ בָּךְ לְעֵינֵי גוֹיִם וְיָדַעַתְּ כִּי־אֲנִי יְהוָה׃
: dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et
17 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃

Verſio VULG. LAT.

32 Igni eris cibus, ſanguis tuus erit
in medio terræ, oblivioni tradêris : quia ego Dominus locutus ſum.

CAP. XXII.

1 ET factum eſt verbum Domini
2 ad me dicens; Et tu, fili hominis, nónne judicas, nónne judicas
3 civitatem ſanguinū? Et oſtendes
ei omnes abominationes ſuas,
& dices; Hæc dicit Dñs Deus;
Civitas effundens ſanguinem in
medio ſuî, ut veniat tempus ej⁹:
& quæ fecit idola contra ſemet-
4 ipſam, ut pollueretur. In ſanguine tuo, qui à te effuſus eſt,
deliquiſti : & in idolis tuis, quæ
feciſti, polluta es : & appropinquare feciſti dies tuos, & adduxiſti tempus annorū tuorū : proptereà dedi te opprobriū Gentib⁹, & irriſionē univerſis terris.
5 Quæ juxta ſunt, & quæ procul
à te, triumphabunt de te: ſordida, nobilis, grandis interitu.
6 Ecce principes Iſrael ſinguli in
brachio ſuo fuerunt in te, ad
7 effundendum ſanguinem. Patrē
& matrem contumeliis affecerunt in te, advenam calumniati
ſunt in medio tuî, pupillum &
viduam contriſtaverunt apud te:
8 Sanctuaria mea ſpreviſti, & ſab-
9 bata mea polluiſti. Viri detractores fuerunt in te ad effundendum ſanguinē, & ſuper montes
comederunt in te, ſcelus operati
10 ſunt in medio tuî. Verecundiora
patris diſcooperuerunt in te, immunditiam menſtruatæ humilia-
11 verunt in te : Et unuſquiſque in
uxorem proximi ſui operat⁹ eſt
abominationē, & ſocer nurū ſuā
polluit nefariè, frater ſororem
ſuā filiā patris ſui oppreſſit in te.
12 Munera acceperunt apud te ad
effundendū ſanguinem : uſuram
& ſuperabundantiam accepiſti,
& avarè proximos tuos calumniabaris: meîque oblita es, ait
13 Dñs Deus. Ecce comploſi man⁹
meas ſup avaritiam tuam, quam
feciſti ; & ſuper ſanguinem, qui
14 effuſus eſt in medio tuî. Numquid ſuſtinebit cor tuum, aut
prævalebunt manus tuæ, in diebus quos ego faciam tibi ? ego
15 Dñs locutus ſum, & faciam. Et
diſpergam te in nationes, & ventilabo te in terras, & deficere
faciam immunditiam tuam à te.
16 Et poſſidebo te in conſpectu
Gentium : & ſcies quia ego Do-
17 minus. Et factum eſt verbum
Domini ad me, dicens ;

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

32 Ἐν πυρὶ ἔσῃ κατάβρωμα, τὸ αἷμά σου ἔσται
ἐν μέσῳ τῆς γῆς σου. οὐ μὴ γένηταί σου μνεία,
διότι ἐγὼ κύριος λελάληκα.

ΚΕΦ. κβʹ.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέ-
2 γων, Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, (α) εἰ κρινεῖς τὴν
3 πόλιν τῶν αἱμάτων; Καὶ παράδειξον αὐτῇ
πάσας τὰς ἀνομίας αὐτῆς. καὶ ἐρεῖς, Τάδε
λέγει (β) κύριος κύριος, Ὦ πόλις ἐκχέ-
ουσα αἵματα ἐν μέσῳ αὐτῆς, τοῦ ἐλθεῖν και-
ρὸν αὐτῆς, καὶ (γ) ποιοῦσα ἐνθυμήματα (δ)
4 καθ᾽ ἑαυτῆς, τοῦ μιαίνειν αὐτήν, Ἐν τοῖς αἵμα-
σιν αὐτῶν οἷς ἐξέχεας. παραπέπτωκας, καὶ ἐν
τοῖς ἐνθυμήμασί σου οἷς ἐποίεις, ἐμιαίνου·
καὶ ἤγγισας τὰς ἡμέρας σου, καὶ ἤγαγες και-
ρὸν ἐτῶν σου. διὰ τοῦτο δέδωκά σε εἰς (ε) ὀ-
νειδισμὸν τοῖς ἔθνεσι, καὶ εἰς ἐμπαιγμὸν
5 πάσαις ταῖς χώραις, Ταῖς ἐγγιζούσαις πρὸς σὲ,
καὶ ταῖς μακρὰν ἀπεχούσαις ἀπὸ σοῦ, καὶ ἐμ-
παίξονται ἐν σοὶ, ἀκάθαρτος ἡ ὀνομαστὴ, καὶ
6 πολλὴ ἐν ταῖς ἀνομίαις. Ἰδοὺ οἱ ἀφηγούμενοι
οἴκου Ἰσραὴλ, ἕκαστος πρὸς τοὺς συγγενεῖς
αὐτοῦ (ζ) συνεφύροντο ἐν σοὶ, ὅπως ἐκχέω-
7 σιν αἷμα. Πατέρα καὶ μητέρα ἐκακολόγουν
ἐν σοὶ, καὶ πρὸς τὸν προσήλυτον ἀνεστρέφοντο
ἐν ἀδικίαις ἐν σοὶ, ὀρφανὸν καὶ χήραν (η)
8 κατεδυνάστευον, Καὶ τὰ ἅγιά μου ἐξουθέ-
νουν, καὶ τὰ σάββατά μου ἐβεβήλουν ἐν σοί.
9 Ἄνδρες (θ) λῃσταὶ ἐν σοὶ, ὅπως ἐκχέωσιν
ἐν σοὶ αἷμα, καὶ ἐπὶ τῶν ὀρέων ἤσθιον (ι) ἐπὶ
10 σοὶ, ἀνόσια ἐποίουν ἐν μέσῳ σου. Αἰσχύνην
πατρὸς ἀπεκάλυψαν ἐν σοὶ, καὶ ἐν ἀκαθαρσί-
11 αις (κ) ἀποκαθημένην ἐταπείνουν ἐν σοί. Ἕ-
καστος τὴν γυναῖκα τοῦ πλησίον αὐτοῦ ἠνο-
μοῦσαν, καὶ ἕκαστος τὴν (λ) νύμφην αὐτοῦ ἐμίαι-
νεν ἐν ἀσεβείᾳ, καὶ ἕκαστος τὴν ἀδελφὴν αὐτοῦ
θυγατέρα τοῦ πατρὸς αὐτοῦ ἐταπείνουν ἐν
12 σοί. Δῶρα (μ) ἐλαμβάνοσαν ἐν σοὶ, ὅπως
ἐκχέωσιν αἷμα, τόκον καὶ πλεονασμὸν ἐλαμ-
βάνοσαν ἐν σοὶ, καὶ συνετελέσω συντέλειαν
κακίας σου τὴν ἐν (ν) καταδυναστείᾳ, ἐμοῦ δὲ
13 ἐπελάθου, λέγει (ξ) κύριος. Ἐὰν δὲ (ο) ἐπάξω
χεῖρά μου ἐφ᾽ οἷς συντετέλεσαι οἷς ἐποίησας,
καὶ ἐπὶ τοῖς αἵμασί σου τοῖς (˜) γεγενημένοις
14 ἐν μέσῳ σου, Εἰ ὑποστήσεται ἡ καρδία σου; εἰ
κρατήσουσιν αἱ χεῖρές σου ἐν ταῖς ἡμέραις αἷς
ἐγὼ ποιῶ ἐν σοί; ἐγὼ κύριος λελάληκα,
15 καὶ ποιήσω. Καὶ διασκορπιῶ σε ἐν τοῖς ἔ-
θνεσι, καὶ διασπερῶ σε ἐν ταῖς χώραις, καὶ ἐκ-
16 λείψει ἡ ἀκαθαρσία σου ἐκ σοῦ. Καὶ κατα-
κληρονομήσω (π) ἐν σοὶ κατ᾽ ὀφθαλμοὺς τῶν
17 ἐθνῶν, καὶ γνώσεσθε διότι ἐγὼ κύριος. Καὶ
ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέγων,

In igne eris cibus : ſanguis tuus 32
erit in medio terræ tuæ. Non erit
tuî memoria : quia ego Dominus
loquutus ſum.

CAP. XXII.

ET factum eſt verbū Domini 1
ad me, dicens ; Et tu, fili homi- 2
nis, ſi judicas civitatem ſangui-
num ? Et oſtende ei omnes ini- 3
quitates ſuas, & dices ; Hæc di-
cit Dominus Dominus ; O civi-
tas effundens ſanguinem in me-
dio ſuî, ut veniat tempus ej⁹, &
faciens cogitationes contra ſemet-
ipſam, ut pollueretur ipſa. In ſan- 4
guinibus eorum, quos effudiſti,
deliquiſti: et in cogitationib⁹ tuis,
quas faciebas, polluta es: & appro-
pinquare feciſti dies tuos, & ad-
duxiſti temp⁹ annorū tuorū. Pro-
pterea dedi te in opprobriū genti-
bus, & in irriſionem omnibus re-
gionibus, Quæ ſunt juxta te, & 5
quæ procul abſunt à te : & (a)
illudent in te, immunda, nomina-
ta, & multa in iniquitatibus. Ec- 6
ce duces domûs Iſrael, unuſquiſ-
que ad cognatos ſuos, miſcuerunt
ſe in te, ut effundant ſanguinem.
Patrem & matrem maledice- 7
bant in te: et adverſùs advenam
converſabantur in iniquitatibus
in te : pupillum, & viduam op-
primebant : Et Sancta mea ſper- 8
nebant, & ſabbata mea pollue-
bant in te. Viri (b) latrones in 9
te, ut effunderent in te ſangui-
nem : & ſuper montes comede-
bant in te : ſcelerata faciebant in
medio tuî. Verecundiam patris 10
diſcooperuerunt in te, & in im-
munditiis menſtruis deſidentem
humiliabant in te : Unuſquiſque 11
in uxorem proximi ſui iniquè a-
gebant ; & unuſquiſque nurum
ſuam polluebat in impietate : &
unuſquiſque ſororem ſuam filiam
patris ſui humiliabant in te. Mu- 12
nera accipiebant in te, ut effun-
derent ſanguinem : uſuram, &
ſuperabundantiam accipiebant in
te : & (c) conſummâſti conſum-
mationem malitiæ tuæ, (d) quæ
in oppreſſione : meî autem oblita
es, ait Dominus. Si autem (e) in- 13
ducam manum meam ſuper iis
quæ conſummâſti, quæ feciſti, &
ſuper ſanguinibus tuis, qui facti
ſunt in medio tuî ; Si ſubſiſtet 14
cor tuum ? ſi prævalebunt ma-
nus tuæ in diebus, quos ego facio
in te ? Ego Dominus loquutus
ſum, & faciam. Et diſpergam 15
te in gentibus, & diſſeminabo
te in regionibus : & deficiet im-
munditia tua ex te : Et (f) he- 16
reditabo in te ante oculos genti-
um : & ſcietis, quia ego Dominus. Et factum eſt verbum Domini ad me, dicens ; 17

MS. A. (α) οὐ κρινεῖς (β) κύριος κύριος ὁ θεὸς, (γ) ποιοῦσαι (δ) κατ᾽ αὐτῆς, (ε) ὄνειδος (ζ) συνανεφύροντο (η) κατεδυνάστευον ἐν σοὶ, (θ) λῃσταὶ ἦσαν (ι) ἐν σοὶ, (κ) ἀποκαθημένης (λ) ἀδελφὴν αὐτοῦ ἐμίαινον (μ) ἐλάμβανον (ν) καταδυναστείᾳ σου, ὅτι ἐμοῦ ἐπελάθου, (ξ) κύριος, κύριος. (ο) πατάξω χεῖρά μου πρὸς χεῖρά μου ἐφ᾽ (˜) γεγενημένοις (π) σε ἐνώπιον τῶν ἐθνῶν, καὶ γνώσῃ ὅτι ἐγὼ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

32 לעממיא דתקיפין כאשתא תתמסרון לאשתיצאה חובת קטולך תהי בגו ארעא לא
יעול דכרניך ארי אנא יי גזרית במימרי׃ כב
1 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר׃ ואת בר אדם התוכח התוכח ית קרתא
2 3 דאשדי דם זכי בגוה וחוי לה ית כל תועבתהא׃ ותימר כדנן אמר יי אלהים קרתא
4 דאשדי דם זכי בגוה מטא עדן תברה ודפלחין לטעותא בגוה בדיל לסאבותה׃
בחובת דם זכי דאשדת חבת ובפולחן טעותיך דפלחת אסתאבת וקריב יום תבריך
5 ומטא עדן בישתיך על כן יהבתיך חסודין לעממיא ולעיב לכל מדינתא׃ דקריבין
6 ודרחיקין מניך יתלעבון ביך סואבת שמא דסגיאין אתרגושתהא׃ הא רברבי ישראל
7 גבר לתוקפיה הוו ביך בדיל למשפך דם זכי׃ אבא ואמא אקילו בך לגיורא אניסו
8 אנסא בגויך יתמין וארמלן אוניאו ביך׃ על קודשי בסרת וית יומי שביא דילי אחלת׃
9 גברי אכלי קרצא הוו ביך בדיל למשפך דם זכי ובטוריא פלחו ביך לטעותא ארי עצת
10 11 חטאין עבדו בגויך׃ ערית אבא גליאו ביך אתתא טומאה עניאו ביך׃ וגבר ית אתת
חבריה עבד תועיבא וגבר ית כלתיה סאב בעצת חטאין וגבר ית אחתיה בת אבוהי עני
12 ביך׃ שוחדא קבילו ביך בדיל למשפך דם זכי חבוליא ורביתא נסבת ואהנית רחימך
13 באונסא ופולחני שבקת אמר יי אלהים׃ והא איתיתי פורענותי עלך בחובי ממון
14 אונסיך דאנסת ועל דם זכי דאשתפיך בגויך׃ היתקף לביך אם יתחסנן ידיך ליומיא
15 דאנא עתיד למעבד עמך אנא יי גזרית במימרי ואקים׃ ואגלי יתיך לביני עממיא
16 ואבדרנך במדינתא ואסיף סאובתיך מניך׃ ואתקדש ביך לעיני עממיא ותדעין ארי
17 אנא יי׃ והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Populis qui fortes ſunt ſicut ignis, trademini ad conſumendū. Peccatū in- 32
terficientiū te erit in medio terræ : non ſubibit memoria tui; quia ego Do-
minus decrevi in verbo meo.

CAP. XXII.

ET factum eſt verbum prophetiæ à facie Dñi ad me, dicens : Et tu fili ho- 1
minis nónne argues, nónne reprehendes civitatem in cuj⁹ medio effun- 2
ditur ſanguis innocens ? & annuntiabis ei omnes abominationes ſuas. Et 3
dices: Hæc dicit Dñs De⁹: Civitas effundens ſanguinē innocentē in medio
ſui, ut perveniat temp⁹ interit⁹ ej⁹, & colentium idola in medio ej⁹, ut pol-
luant eam. In peccato ſanguinis innocentis quem effudiſti peccâſti, & cul- 4
tu idolorum tuorū quæ coluiſti polluta es: & appropinquavit dies interit⁹
tui, & pervenit temp⁹ mali tui. Proptereà dedi te in opprobria populis, &
in irriſionē omnib⁹ provinciis. Qui propè ſunt & qui longè ſunt, irridebunt 5
te pollutā nomine, cuj⁹ tumult⁹ ſunt multi. Ecce principes Iſrael ſinguli in 6
fortitudine ſua fuerunt in te ad effundendum ſanguinē innocentem. Patrē 7
& matrē inhonoraverunt in te, advenam violenter oppreſſerunt in medio
tui; pupillos & viduas contriſtaverunt in te. Sanctuaria mea ſpreviſti, et dies 8
ſabbatorū meorū violâſti. Viri calumniatores fuerunt in te ad effundendū 9
ſanguinē innocentē, et in montib⁹ ſervierunt in te idolis: quia conſiliū pec-
catorū fecerunt in medio tui. Verenda patris diſcooperuerunt in te ; muli- 10
erē immundā humiliaverunt in te. Et unuſquiſque cum uxore proximi ſui 11
fecit abominationē, & unuſquiſque nurū ſuā polluit ſceleratè, & unuſquiſq;
ſororē ſuā filiā patris ſui humiliavit in te. Munera ſuſceperūt in te ad effun- 12
dendū ſanguinē innocentē: fœn⁹ & uſurā accepiſti, & profuiſti amicis tuis
in rapina, & cultū meū dereliquiſti, dicit Dñs De⁹. Et ecce induxi ultionem 13
meā ſuper te propter peccata pecuniarū violentiæ tuæ, quas violenter ab-
ſtuliſti; & propter ſanguinē innocentē qui effuſus eſt in medio tui. Nunquid 14
confortabitur cor tuū, aut roborabuntur man⁹ tuæ in *diebus quos* ego faciā
tecū? Ego Dñs decrevi in verbo meo, & firmabo. Et migrare te faciā inter 15
populos: & diſpergā te per provincias, & conſummabo immunditiā tuā à
te. Et ſanctificabor in te in oculis populorū ; & ſcies quia ego Dominus. 16
Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini ad me, dicens : 17

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܠܢܘܪܐ ܬܗܘܝܢ ܡܐܟܘܠܬܐ. ܘܕܡܟܝ ܢܗܘܐ ܒܓܘ ܐܪܥܐ. ܘܠܐ ܬܬܕܟܪܝܢ. ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܡܪܝܐ 32
ܡܠܠܬ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܟܒ *

1 * ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܐܢܬ ܕܝܢ ܒܪ ܐܢܫܐ. ܕܘܢ ܠܡܕܝܢܬܐ ܕܕܡܐ.
2 ܘܐܘܕܥܝܗ ܟܠܗܝܢ ܛܢܦܘܬܗ. ܘܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܡܕܝܢܬܐ ܕܐܫܕܐ ܕܡܐ
3 ܒܓܘܗ. ܕܢܐܬܐ ܙܒܢܗ. ܘܥܒܕܐ ܦܬܟܪܐ ܒܓܘܗ. ܘܐܬܛܢܦܬ. * ܒܕܡܐ ܕܐܫܕܬܝ
4 ܐܬܚܝܒܬܝ. ܘܒܦܬܟܪܐ ܕܥܒܕܬܝ ܐܬܛܢܦܬܝ. ܘܩܪܒܘ ܝܘܡܝܟܝ. ܘܡܛܝ ܙܒܢܐ ܕܫܢܝܟܝ.
5 ܡܛܠ ܗܢܐ ܝܗܒܬܟܝ ܚܣܕܐ ܠܥܡܡܐ. ܘܓܘܚܟܐ ܠܟܠܗܝܢ ܡܕܝܢܬܐ. * ܕܩܪܝܒܢ
ܘܕܪܚܝܩܢ ܡܢܟܝ. ܢܓܚܟܢ ܒܟܝ. ܛܡܐܬ ܫܡܐ ܘܣܓܝܐܬ ܫܓܘܫܝܐ. * ܗܐ ܪܝܫܢܐ
6 ܕܐܝܣܪܐܝܠ ܐܢܫ ܠܒܝܬ ܐܒܘܗܝ ܗܘܘ ܒܟܝ. ܕܢܐܫܕܘܢ ܕܡܐ. * ܐܒܐ ܘܐܡܐ ܨܥܪܘ ܒܟܝ.
7 ܘܠܬܘܬܒܐ ܥܠܘܒܘ ܒܓܘܟܝ. ܝܬܡܐ ܘܐܪܡܠܬܐ ܐܘܢܘ ܒܟܝ. * ܠܩܘܕܫܝ ܫܛܝܬܝ. ܘܠܫܒܬܝ
8 ܛܢܦܬܝ. * ܓܒܪܐ ܬܓܪܐ ܗܘܘ ܒܟܝ. ܕܢܐܫܕܘܢ ܕܡܐ. ܘܥܠ ܛܘܪܐ ܐܟܠܘ ܒܟܝ. ܘܥܘܠܐ ܥܒܕܘ ܒܓܘܟܝ. 9
10 * ܥܪܛܠܝܘܬܐ ܕܐܒܐ ܓܠܝܘ ܒܟܝ. ܘܛܢܦܘܬܐ ܕܕܣܬܘܢܝܬܐ ܥܒܕܘ ܒܓܘܟܝ. * ܓܒܪ
11 ܒܐܢܬܬ ܚܒܪܗ ܛܢܦܘ. ܘܓܒܪ ܒܟܠܬܗ ܛܢܦܘ ܒܙܢܝܘܬܐ. ܘܓܒܪ ܒܚܬܗ ܒܪܬ ܐܒܘܗܝ
12 ܨܥܪܘ ܒܟܝ. * ܫܘܚܕܐ ܢܣܒܘ ܒܟܝ ܕܢܐܫܕܘܢ ܕܡܐ. ܘܪܒܝܬܐ ܢܣܒܘ ܒܟܝ. ܘܝܬܝܪܐ ܥܠܘܒܘ
13 ܒܟܝ. ܘܠܚܒܪܝܟܝ ܒܢܟܝܠܘܬܐ. ܘܠܝ ܛܥܝܬܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. * ܐܦ ܐܢܐ
14 ܐܡܚܐ ܟܦܐ ܥܠ ܟܦܐ. ܥܠ ܥܘܠܐ ܕܥܒܕܬܝ. ܘܥܠ ܕܡܐ ܕܐܫܬܕܝ ܒܓܘܟܝ. * ܐܢ ܩܐܡ ܠܒܟܝ.
15 ܐܘ ܐܢ ܡܫܟܚܢ ܐܝܕܝܟܝ ܒܝܘܡܬܐ ܕܐܢܐ ܥܒܕ ܐܢܐ ܒܟܝ. ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܡܠܠܬ ܘܥܒܕܬ. * ܘܐܒܕܪܟܝ
16 ܒܥܡܡܐ. ܘܐܙܪܥܟܝ ܒܡܕܝܢܬܐ. * ܘܐܬܪܝܟܝ ܒܝܢܝ ܥܡܡܐ. ܘܬܕܥܝܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ.
17 * ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ.

Eris eſca igni, & ſanguis tuus erit intra terram, nec erit memoria tui: nam ego Dominus locutus ſum. 32

CAP. XXII.

Fuit etiam ad me ſermo Domini, dicendo; 1 Tu autem fili hominis, judica urbem ſanguinariam, & notas fac illi cunctas abominationes ejus, 2 & dic; Sic ait Dominus dominorum; 3 Urbs in qua ſanguis effuſus eſt, advenit tempus tuum; quæ fabricavit idola intra ſe, ſeſeque polluit; Sanguine quem fudiſti, rea 4 facta es; & idolis quæ fabricâſti, polluta es. Acceſſerunt dies tui, & advenit tempus annorum tuorum: ideo exponam te probro apud gentes, & deriſui apud omnes urbes. Tam 5 illæ quæ ſunt à te remotæ, quàm quæ tibi proximæ ſunt, deridebunt te, ac dicent; O infamis nomine, & immodica in flagitiis tuis: Ecce principes Iſraelis, quiſque in familiam 6 ſuam, ſunt in te ad effundendum ſanguinem: Patrem matremque contumeliis affecerunt in 7 te: & eum qui ad me convertitur, oppreſſerunt in medio tui: pupillis ac viduis vim intulerũt in te. Sancta mea ſpreviſti, et ſabbatha mea 8 prophanâſti. Homines mercatores ſunt in te, 9 ut effundant ſanguinem: ſuper montes comederunt in te, & facinus perpetraverunt in medio tui. Pudenda patris retexerunt in te, & 10 ſtuprũ menſtrua patientis commiſerũt in medio tui. Quiſque uxorem ſocii ſui polluerunt, 11 quiſque nurum ſuam fornicatione contaminaverunt, & quiſque ſororem ſuam filiam patris ſui ſtupraverunt in te. Munus acceperunt in 12 te ut effunderent ſanguinem, uſuram acceperunt in te, plus æquo acceperunt in te, perfidè fraudaverunt amicos ſuos, denique oblita es mei, dicit Dominus dominorum. Etiam 13 ego manu ſuper manum complodam propter ſcelus quod commiſiſti, & propter ſanguinem qui effuſus eſt in te. An reſiſtet cor tuum? an 14 ſuſtinebunt man⁹ tuæ in diebus quibus agam? ego Dominus locutus ſum, & faciam. Diſ- 15 perdam te inter gentes, et diſpergam te in urbes, Et exterrebo te inter populos: ſci- 16 éſque me eſſe Dominum. Et fuit ad me ſer- 17 mo Domini, dicendo;

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ليفسدوك بالنار وتصير طعاما * دمك يصير في وسط ارضك * ولا يكون لك ذكر * 32
من اجل اني انا الرب تكلمت * الفصل الثاني والعشرون *

1 * وكان قول الرب الي قايلا * وانت يا ابن الانسان * اليس تحاكم مدينة الدماء * فاشهر 2
لها اثامها وتقول * هكذا يقول الرب الرب الاله * ايها المدينة المهرقة الدماء في وسطها 3
لياتي زمانها * وتصنع الفكرات عليها * لتتنجسي بدمائهم التي اهرقتيهم * سقطت 4
وبفكراتك التي صنعتيهم تنجست * قربت ايامك * واتيت بزمان سنيك * لاجل هذا دفعتك
عارا للامم * ولعبا في كل الكور * القريبة اليك * والبعيدات بعيدا منك * ويلعبون بك ايها 5
النجسة المسماة والكثيرة الاثام * ها مقدموا بيت اسرايل * كل واحد مع قريبه اجتمعوا فيك 6
لكي يسفكوا دما * وتكلموا بالسوء في الاب والام فيك * ومع الدخيل ترددوا بالمظالم فيك * 7
وتعدوا على اليتيم والارملة فيك * واستهانوا اقداسي * ونجسوا سبوتي فيك * الرجال اللصوص 8 9
صاروا فيك لكي يسفكوا فيك دما * واكلوا على الجبال فيك * صنعوا الخطية في وسطك *
10 * كشفوا فضيحة الاب فيك * وبنجاسات الطامث اذلوا فيك * كل واحد زني بامراة 11
صاحبه * وكل واحد نجس احته بالنفاق * وكل واحد اذل اخته ابنة ابيه فيك * اخذوا 12
الرشا فيك لكي يسفكوا دما * الربا والتضعيف اخذوهما فيك * وساكمل كمال قبحك
الذي بكل قوتك * لانهم نسوني يقول الرب الرب * وانا اضرب بيدي على يدي 13
لاقصيك بما صنعتيه وبدمائك الصاير في وسطك * هل يقف قلبك * او تمسك يداك 14
في الايام التي اصنع فيها بك * انا الرب تكلمت وساصنع * وافرقك في الامم * وابددك في 15
البلدان * ويفني نجاستك منك * وارثك امام الامم * وتعلمين اني انا الرب * 16
17 * وكان قول الرب الي قايلا * الاصحاح الثاني عشر *

Ut igne te conſumant, fiaſque cibus: ſanguis tuus erit in medio terræ tuæ, neque remanebit tui memoria; quia ego Dominus locutus ſum. 32

CAP. XXII.

Et fuit ſermo Domini ad me dicens; 1 *Et tu O fili hominis, annon judicium* 2 *inires cum urbe ſanguinum? imò retege illi iniquitates ejus, ac dicas;* *Ita dicit* 3 *Dominus, Dominus Deus; O urbs quæ ſanguinem fundis in medio tui, ut veniat tempus tuum; & commenta fabricas adverſùm te, ut contamineris eorum* 4 *ſanguinibus quos fudiſti: lapſa es, & & commentis quæ fabricâſti, contaminata es: accelerâſti dies tuos, & tempus annorum tuorum adduxiſti. Propterea tradidi te opprobrium gentibus, & luſum in omnibus regionibus* *Tibi vicinis, &* 5 *procul à te diſſitis; illudentque tibi O impudica, famoſa, & ſceleribus abundans.* *Ecce præcipui domûs Iſraelis,* 6 *quiſque cum proximo ſuo intra te convenerunt ad effundendum ſanguinem:* *Obloquuti ſunt contra patrem & ma-* 7 *trem in te: cùm advena tyrannicè ſe geſſerunt in te: & pupillum ac viduam in te oppreſſerunt:* *Sancta mea ſpreverunt,* 8 *& ſabbatha mea violaverunt in te.* *Viri* 9 *latrones ſe receperunt in te, ut effunderent in te ſanguinem: comederunt ſuper montes in te: commiſerunt ſcelus in medio tui:* *Detexerunt verecundiam patris* 10 *in te, & cum impudicitiis menſtruatam humiliaverunt in te.* *Unuſquiſque ſtu-* 11 *pravit uxorem ſocii ſui: unuſquiſque ſororem ſuam impiè fœdavit, & unuſquiſque ſororem ſuam filiam patris ſui in te depreſſit.* *Acceperũnt munus in te, ut* 12 *ſanguinem effunderent: uſuram & duplum acceperunt in te: ideo finem ponam ſummo turpitudinis tuæ cui totis viribus indulges: eò quòd mei obliti ſint, ait Dominus, Dominus.* *Et ego* 13 *percutiam manum meam ad manum meam, ut conſumam te ob ea quæ feciſti, & ob cædes tuas quæ factæ ſunt in medio tui.* *Num ſubſiſtet cor tuum? an* 14 *ſuſtinebunt manus tuæ in diebus quibus hæc facturus ſum tibi? Ego Dominus locutus ſum, & præſtabo:* *Nam* 15 *diſperdam te inter gentes, & diſpergam te per regiones: cùmque turpitudo tua à te deſierit,* *Tum hæreditate poſſidebo te* 16 *coram gentibus: & agnoſces me eſſe Dominum.*

Textus duodecimus.

Fuit etiam ſermo Domini ad me, dicens; 17

יחזקאל : כג

, æs iſti Omnes .ſcoriam in Iſrael domus mihi fuerunt ,hominis Fili
18 בן־אדם היו־לי בית־ישראל לסוג כלם נחשת
argenti ſcoriæ , fornacis medio in plumbum & , ferrum & ,ſtannum &
ובדיל וברזל ועופרת בתוך כור סגים כסף
vos omnes *fuiſſe* Pro : Deus Dominus dixit ſic Propterea .fuerunt
19 היו׃ לכן כה אמר אדני יהוה יען היות כלכם
.Jeruſalaim medium in vos *congregans ego* ecce propterea : *ſcorias in*
לסגים לכן הנני קבץ אתכם אל־תוך ירושלם׃
medium ad ſtanni & ,plumbi & , ferri & , æris & ,argenti Cōgregatione
20 קבצת כסף ונחשת וברזל ועופרת ובדיל אל־תוך
congregabo ſic : fundendum ad ,ignem ea *ſuper* ſufflandum ad ,fornacis
כור לפחת־עליו אש להנתיך כן אקבץ
.vos fundere faciā & ,faciam requieſcere & ,mea ira in & ,meo *naſo* in
באפי ובחמתי והנחתי והתכתי אתכם׃
: mei furoris igne in , vobis *ſuper* ſufflabo & , vos congregabo Et
21 וכנסתי אתכם ונפחתי עליכם באש עברתי
,fornacis medio in argentum *fundi Secundum* .ejus medio in eritis fuſi &
22 ונתכתם בתוכה׃ כהתוך כסף בתוך כור
effudi Dominus ego quòd ſcietis & : ejus medio in eritis fuſi ſic
כן תתכו בתוכה וידעתם כי־אני יהוה שפכתי
Fili : dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et .vos ſuper meā iram
23 24 חמתי עליכם׃ ויהי דבר־יהוה אלי לאמר׃ בן־
ejus pluvia nec : *ipſa mundata* non terra Tu : ei dic hominis
אדם אמר־לה את ארץ לא מטהרה היא לא גשמה
leo ſicut :ejus medio in ejus prophetarum Conjuratio .*indignationis* die in
25 ביום זעם׃ קשר נביאיה בתוכה כארי
,acceperunt gloriam & *robur* ,comederūt animam :rapinam rapiens ,rugiens
שואג טרף טרף נפש אכלו חסן ויקר יקחו
violaverunt ejus Sacerdotes .ejus medio in multiplicaverunt ejus viduas
26 אלמנותיה הרבו בתוכה׃ כהניה חמסו
prophanum *ad* ſanctum inter ;mea ſanctuaria polluerunt & ,meam legem
תורתי ויחללו קדשי בין־קדש לחל
:ſcire fecerunt non mundum *ad* immundum inter & ; *diſcreverunt* non
לא הבדילו ובין־הטמא לטהור לא הודיעו
coinquinabar & , ſuos oculos occultaverunt meis ſabbathis à &
ומשבתותי העלימו עיניהם ואחל
,rapinam rapientes lupi tanquā,ej⁹ *interiori* in ej⁹ Principes .eorū medio in
27 בתוכם׃ שריה בקרבה כזאבים טרפי טרף
.*concupiſcentiā appetendum ad* ,animas perdendū ad,ſanguinē effundendū ad
לשפך־דם לאבד נפשות למען בצע בצע׃
divinantes & ,vanum videntes , *inſulſo* eos *linebant* ejus prophetæ Et
28 ונביאיה טחו להם תפל חזים שוא וקסמים
Dominus & , Deus Dominus dixit Sic : dicentes : mendaciū eis
להם כזב אמרים כה אמר אדני יהוה ויהוה
rapiebant &,oppreſſione opprimebant terræ Populum .eſt locutus non
29 לא דבר׃ עם הארץ עשקו עשק וגזלו
opprimebant advenam & ,populabantur *egenum & afflictum* & :rapinam
גזל ועני ואביון הונו ואת־הגר עשקו
ſtantem & ,ſepem ſepientem virum eis ex quæſivi Et .judicio abſque
30 בלא משפט׃ ואבקש מהם איש גדר־גדר ועמד
non & : eam *corrumpendum non ad* terra pro *meas facies ad* fractura in
בפרץ לפני בעד הארץ לבלתי שחתה ולא
meæ iræ igne in ,meam *indignationem* eos ſuper effudi Et .inveni
31 מצאתי׃ ואשפך עליהם זעמי באש עברתי
.Deus Dominus dixit , dedi eorū caput in eorum viam :eos conſumpſi
כליתים דרכם בראשם נתתי נאם אדני יהוה׃

CAP. XXIII. כג

Duæ :hominis Fili : dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et
1 2 ויהי דבר־יהוה אלי לאמר׃ בן־אדם שתים
.fuerunt unius matris filiæ mulieres
נשים בנות אם־אחת היו׃

Verſio VULG. LAT.

18 Fili hominis, verſa eſt mihi domus
Iſrael in ſcoriam: omnes
iſti æs, & ſtannum, & ferrum, &
plumbum in medio fornacis:
19 ſcoria argenti facti ſunt. Propterea
hæc dicit Dominus De⁹; Eò
quòd verſi eſtis omnes in ſcoriam,
propterea ecce ego congregabo
vos in medio Jeruſalem,
20 Congregatione argenti, & æris,
& ſtanni, & ferri, & plumbi in
medio fornacis: ut ſuccendā in
ea ignem ad conflandū: ſic congregabo
in furore meo, & in ira
mea, & requieſcam: & conflabo
21 vos. Et congregabo vos, & ſuccendā
vos in igne furoris mei,
& conflabimini in medio ejus.
22 Ut conflatur argentum in medio
fornacis, ſic eritis in medio ej⁹:
& ſcietis quia ego Dñs, cùm effuderim
indignationē meā ſuper
23 vos. Et factū eſt verbū Dñi ad
24 me, dicens; Fili hominis, dic ei;
Tu es terra immunda, & non
25 compluta in die furoris. Conjuratio
prophetarū in medio ej⁹,
ſicut leo rugiens, rapiénſque prædam,
animas devoraverunt, opes
& pretiū acceperunt, viduas ej⁹
multiplicaverunt in medio illi⁹.
26 Sacerdotes ej⁹ contempſerunt legem
meā, & polluerunt Sanctuaria
mea: inter ſanctū & profanū
non habuerunt diſtantiā: & inter
pollutum & mundum non intellexerunt:
& à ſabbatis meis
averterunt oculos ſuos, & coinquinabar
27 in medio eorum. Principes
ejus in medio illi⁹, quaſi
lupi rapientes prædam ad effundendū
ſanguinē, & ad perdendas
animas, & avarè ad ſectanda lucra.
28 Prophetæ autē ejus liniebant
eos abſque temperamento, videntes
vana, & divinantes eis
mendacium, dicentes; Hæc dicit
Dñs Deus, cùm Dñs non ſit locutus.
29 Populi terræ calumniabantur
calumniam, & rapiebant
violenter: egenum & pauperem
affligebant, & advenā opprimebant
calumniâ abſque judicio.
30 Et quæſivi de eis virū, qui interponeret
ſepem, & ſtaret oppoſitus
contra me pro terra, ne diſ-
31 ſiparem eam: & non inveni. Et
effudi ſuper eos indignationem
meam, in igne iræ meæ conſumpſi
eos: viam eorum in caput
eorum reddidi, ait Dñs Deus.

CAP. XXIII.

1 ET factus eſt ſermo Domini ad
2 me, dicens; Fili hominis, duæ
mulieres filiæ matris unius fuerunt,

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

18 Υἱὲ ἀνθρώπου, ἰδοὺ (ρ) γεγόνασί μοι ὁ οἶκος
Ἰσραὴλ ἀναμεμιγμένοι πάντες χαλκῷ, καὶ
σιδήρῳ, καὶ κασσιτέρῳ, καὶ (σ) μολίβῳ, ἐν μέ-
19 σῳ ἀργυρίου ἀναμεμιγμένος ἐστί. Διὰ τοῦτο εἰπὸν,
Τάδε λέγει (τ) κύριος κύριος, Ἀνθ'
ὧν (υ) ἐγένεσθε εἰς σύγκρασιν μίαν, διὰ τοῦτο
(φ) ἐγὼ εἰσδέχομαι ὑμᾶς εἰς μέσον Ἱερουσαλήμ.
20 Καθὼς εἰσδέχεται ἄργυρος, καὶ
χαλκὸς, καὶ σίδηρος, καὶ κασσίτερος, καὶ (χ)
μόλιβος εἰς μέσον καμίνου (ψ), τοῦ ἐκφυσῆσαι
εἰς αὐτὸ πῦρ τοῦ χωνευθῆναι, οὕτως εἰσδέξομαι
(ω) ἐν ὀργῇ μου, καὶ συνάξω καὶ χωνεύσω
21 ὑμᾶς, Καὶ ἐκφυσήσω (α) ἐφ' ὑμᾶς ἐν
πυρὶ ὀργῆς μου, καὶ χωνευθήσεσθε ἐν μέσῳ
22 αὐτῆς. Ὃν τρόπον χωνεύεται ἀργύριον ἐν μέσῳ
καμίνου, οὕτως χωνευθήσεσθε ἐν μέσῳ αὐτῆς,
καὶ ἐπιγνώσεσθε διότι ἐγὼ κύριος ἐξέχεα
23 τὸν θυμόν μου ἐφ' ὑμᾶς. Καὶ ἐγένετο λόγος
24 κυρίου πρός με, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, εἰπὸν
αὐτῇ, Σὺ εἶ (β) γῆ ἡ οὐ βρεχομένη, οὐδὲ ὑετὸς
25 (γ) ἐγένετο ἐπὶ σὲ ἐν ἡμέρᾳ ὀργῆς. Ἧς
οἱ ἀφηγούμενοι ἐν μέσῳ αὐτῆς ὡς λέοντες (δ)
ὠρυόμενοι ἁρπάζοντες ἁρπάγματα, ψυχὰς
κατεσθίοντες (ε) ἐν δυναστείᾳ, καὶ τιμὰς λαμβάνοντες.
καὶ χῆραί σου ἐπληθύνθησαν ἐν μέ-
26 σῳ σου. Καὶ οἱ ἱερεῖς αὐτῆς ἠθέτησαν (ζ) νόμον
μου, καὶ ἐβεβήλουν τὰ ἅγιά μου· ἀναμέσον
ἁγίου καὶ βεβήλου οὐ διέστελλον, καὶ ἀναμέσον ἀκαθάρτου
καὶ τοῦ καθαροῦ οὐ διέστελλον, καὶ ἀπὸ
τῶν σαββάτων μου παρεκάλυπτον τοὺς ὀφθαλμοὺς
αὐτῶν, (η) καὶ ἐβεβηλούμην ἐν μέσῳ
27 αὐτῶν. Οἱ ἄρχοντες αὐτῆς ἐν μέσῳ αὐτῆς
ὡς λύκοι ἁρπάζοντες ἁρπάγματα, τοῦ ἐκχέ-
28 αι αἷμα, ὅπως πλεονεξίᾳ πλεονεκτῶσι. Καὶ
οἱ προφῆται αὐτῆς (θ) ἀλείφοντες αὐτοὺς πεσοῦνται,
(ι) ὁρῶντες μάταια, μαντευόμενοι
ψευδῆ, λέγοντες, Τάδε λέγει κύριος· καὶ κύ-
29 ριος οὐκ ἐλάλησε. (κ) Λαὸν τῆς γῆς ἐκπιέζοντες
(λ) ἀδικίᾳ, καὶ διαρπάζοντες ἁρπάγματα,
πτωχὸν καὶ πένητα καταδυναστεύοντες, καὶ
πρὸς τὸν προσήλυτον οὐκ ἀναστρεφόμενοι μετὰ
30 κρίματος. Καὶ ἐζήτουν ἐξ αὐτῶν ἄνδρα ἀναστρεφόμενον
ὀρθῶς, καὶ ἑστῶτα πρὸ προσώπου
μου (μ) ὁλοσχερῶς ἐν τῷ καιρῷ τῆς ὀργῆς, τοῦ
μὴ εἰς τέλος ἐξαλεῖψαι αὐτὴν, καὶ οὐχ εὗρον.
31 Καὶ ἐξέχεα ἐπ' αὐτὴν (ν) θυμόν μου ἐν πυρὶ
ὀργῆς μου τοῦ συντελέσαι (ξ)· τὰς ὁδοὺς αὐτῶν
εἰς κεφαλὰς αὐτῶν δέδωκα, λέγει κύριος
κύριος.

Fili hominis, ecce facti ſunt mihi 18
domus Iſrael, admiſti omnes ære,
& ferro, & ſtanno, & plumbo:
in medio argenti (g) admiſta eſt.
Propterea dic; Hæc dicit Domi- 19
nus Dominus; Eò quòd facti eſtis
in (h) commiſtionem unam; Id-
circò ego recipiam vos in mediū
Hieruſalem; Sicut recipitur ar- 20
gentum, & æs, & ferrum, & ſtan-
num, & plumbum in medium
fornacis ad ſufflandum ignem in
(i) illud, ut conflettur: Sic recipi-
am in ira mea, & congregabo, &
conflabo vos: Et ſufflabo in vos 21
in igne iræ meæ: & conflabimini
in medio ejus. Sicut conflatur 22
argentum in medio fornacis; ſic
conflabimini in medio ejus: &
ſcietis, quia ego Dominus effudi
indignationem meam ſuper vos.
Et factum eſt verbum Domini ad 23
me, dicens; Fili hominis, dic ei; 24
Tu es terra non irrigata, neque
pluvia facta eſt ſuper te in die
iræ. Cujus duces in medio ejus, 25
ſicut leones rugientes, rapinas ra-
pientes, devorantes animas in po-
tentia, & pretia accipientes.
(k) Et viduæ tuæ multiplicatæ
ſunt in medio tui. Et ſacer- 26
dotes ejus contempſerunt le-
gem meam, & polluerunt Sancta
mea. Inter ſanctum & propha-
num non diſtinguebant, & inter
immundum & mundum non di-
ſtinguebant, & à ſabbatis meis
cooperiebant oculos ſuos: & co-
inquinabar in medio eorum. Prin- 27
cipes ejus in medio illius, quaſi
lupi rapientes rapinas, ad effun-
dendum (l) ſanguinem, ut per a-
varitiā plus acquirant. Et prophe- 28
tæ ejus (m) ungentes eos, cadent,
videntes vana, divinantes men-
dacia, dicentes; Hæc dicit Domi-
nus, & Dominus non eſt loquu-
tus: Populum terræ vexantes in- 29
juſtitiā, & diripentes rapinas, ege-
nū & pauperem per potentiā op-
primentes, & erga advenam non
converſantes cū judicio. Et quæ- 30
rebā de eis virū, qui converſare-
tur rectè, & (n) ſtaret ante faciē
meā integrè in tempore (o) iræ, ut
non in finē delerē eā: & non in-
veni. Et effudi ſuper eā furorem 31
meū in igne iræ meæ ad conſum-
mandum. Vias eorū in capita eo-
rū dedi, dicit Dominus Domin⁹.

MS.A. (ρ) γέγονεν ὁ οἶκος Ἰσραὴλ ἀναμεμιγμένος χαλκῷ, (σ) μολίβδῳ, (τ) κύριος κύριος ὁ θεὸς, (υ) ἐγένεσθε πάντες εἰς (φ) ἰδοὺ ἐγὼ (χ) μόλιβδος (ψ) πυρὸς, τοῦ ἐμφυσῆσαι εἰς αὐτὰ πῦρ τοῦ χωνεῦσαι, (ω) ὑμᾶς ἐν ὀργῇ μου, ἐν τῷ θυμῷ μου, καὶ (α) εἰς ὑμᾶς ἐκφύσημα ἐν πυρὶ (β) γῆ οὐ (γ) καταβήσεταί σοι. Οἱ ἀφηγούμενοι αὐτῆς ἐμμέσῳ (δ) ἐρευγόμενοι (ε) ἐδυνάστευσαν ἐν δυναστείᾳ, δῶρα ἐλάμβανον ἐν ἀδικίᾳ. καὶ χῆραί (ζ) τὸν νόμον (η) καὶ τὰ σάββατά μου ἐβεβήλουν (θ) οἱ ἀλείφοντες (ι) οἱ ὁρῶντες (κ) Τὸν λαὸν (λ) ἐν ἀδικίᾳ, (μ) τὸ ὁλοσχερὲς ἐν καιρῷ τῆς ὀργῆς μου, τοῦ (ν) τὸν θυμὸν (ξ) αὐτοῦ.

ΚΕΦ. κγ'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρός με, λέ-
2 γων, Υἱὲ ἀνθρώπου, δύο γυναῖκες ἦσαν θυγατέρες
μητρὸς μιᾶς,

CAP. XXIII.

ET factus eſt ſermo Domini 1
ad me, dicens; Fili hominis, duæ 2
mulieres fuerunt filiæ matris
unius:

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

18 בר אדם הוו קדמי בית ישראל לפסולא כולהון כמא דמערב נחש ובעיץ וברזל ואבר
19 בגו כורא לפסולת כספא הוו׃ בכן כדנן אמר יי אלהים חלף דהויתון כולכון לפסולא
20 בכן הא אנא כניש יתכון לגו ירושלם׃ כמכנש כסף ונחש וברזלא ואבר ובעיץ לגו
כורא לאתקפא עלוהי נורא לאמסיותיה כן אכניש ברוגזי ובחמתי ואסיף ואשיצי
21 22 יתכון׃ ואכניש יתכון ואתקיף עליכון באשתא פורענותי ותתמסון בגוה׃ כאתמסאה
23 כסף בגו כורא כן תתמסון בגוה ותידעון ארי אנא יי שפכית חמתי עליכון׃ והוה
24 פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר׃ בר אדם אמר לה את ארעא דישראל ארעא
25 לא מדכיא היא ולא אתעבידו בה עובדין טבין דיגנון עלה ביום לוט׃ סיעת ספרהא
בגוה כאריון נהמין למקטל קטול אנשא קטלו עותר ויקר נסיבו ארמלתהא אסגיאו
26 בגוה׃ כהנהא חטפין באוריתי ומפסין קדשי בין קודשא לחולא לא אפרישו ובין
מסאבא לדכיא לא הודיעו ומיומי שביא דילי כבשו עיניהון וחלת רעותי ביניהון׃
27 רברבהא בגוה כדיבין חטפי חטוף למשפך דם זכי לאבדא נפשן בדיל לקבלא ממון
28 דשקר׃ ונביי שקרא די בגוה דמן לדבני מחיצא ושעעליה טין פטיר דלא תבן מתנבן
29 שקר ומלפין להון כדבין אמרין כדנן אמר יי אלהים ומן קדם יי לא אתמלל׃ עמא
דארעא עשקו עושקא וגזלו גזלה ומסכן וחשיך אוניאו ולגיורא אנסו בלא כדחזי׃
30 ואתבע מנהון קדמי גבר דליה עובדין טבין דיקום בתרעתא קדמי ויבעי רחמין על
31 עמא דארעא בדיל דלא לחבלותה ולא אשכחית׃ ושפכית עליהון חמתי באשת
פורענותי שציתנון פורענות אורחהון ברישיהון יהבית אמר יי אלהים׃

כג

1 2 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר׃ בר אדם אתנבי על תרתין מדינן דאנון
כתרתין נשין די בנת אמא חדא הואה׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Fili hominis, facti ſunt coram me dom⁹ Iſrael in ſcoriam univerſi, ſicut com- 18
miſcetur æs & ſtannum & ferrum & plumbum in medio fornacis, in ſco-
riam argenti fuerunt. Propterea hæc dicit Dñs De⁹: Pro eo quòd facti eſtis 19
univerſi in ſcoriam, ideo ecce ego congregabo vos in medio Jeruſalem.
Sicut congregatur argentum & æs & ferrum & plumbum & ſtannum in 20
medio fornacis, ut prævaleat contra ea ignis, & liquefaciat ea; ſic congre-
gabo vos in furore meo, & in indignatione mea, & conſumam & diſper-
dam vos. Et congregabo vos, & prævalebo contra vos igne ultionis 21
meæ, & liquefietis in medio ej⁹. Sicut liquefit argentum in medio fornacis, 22
ſic colliqueſcetis in medio ej⁹; & ſcietis quòd ego Dñs effuderim in vos
meam indignationem. Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Dñi ad me, 23
dicens: Fili hominis, dic ei: Tu terra Iſrael terra immunda es, in qua non 24
ſunt facta opera bona, ut protegant eam in die maledictionis. Turba ſcri- 25
barum ej⁹ in medio ej⁹ quaſi leones rugientes ad occidendum occiſionem;
homines occidunt, divitias & gloriam accipiunt; viduas ej⁹ multiplicant
in medio ej⁹. Sacerdotes ej⁹ rapiunt legem meam, & violant ſacra mea, in- 26
ter ſanctum & prophanum non ſeparant, & inter pollutum & mundum non
dignoſcunt, & à dieb⁹ ſabbatorum meorum comprimunt oculos ſuos, &
prophanatur voluntas mea in medio eorum. Principes ej⁹ in medio illi⁹, 27
quaſi lupi rapientes rapinam ad effundendum ſanguinem innocentem &
ad perdendas animas, ut ſuſcipiāt mammona iniquitatis. Et pſeudopropheæ, 28
qui ſunt in medio ej⁹, ſimiles ſunt ei qui ædificat parietem, & oblinit luto
ſimplici abſque paleis; prophetant falſitatem & docent eos mendacia: di-
cunt, Hæc dicit Dñs De⁹: & à facie Dñi non dicitur eis. Popul⁹ terræ ca- 29
lumniatur calumniā, et diripiunt direptionē, et egenū et pauperem oppri-
munt, et advenæ vim inferunt, non ſicut decet. Et quæſivi mihi ex eis virum 30
cuj⁹ opera eſſent bona, et qui ſtaret in ruptura muri coram me, et quæreret
miſericordiā pro populo terræ, ut non diſperderē eam; et non inveni. Et ef- 31
fudi ſup eos indignationē meā: in igne ultionis meæ conſumpſi eos: ultio-
nem viæ ſuæ in caput eorum dedi, ait Dñs Deus.

CAP. XXIII.

ET factū eſt verbū prophetiæ à facie Dñi ad me, dicens: Fili hominis va- 1
ticinare ſuper duas provincias, quæ ſunt ſicut duæ mulieres quæ fue- 2
runt filiæ matris unius.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܒܪܢܫܐ. ܗܘܘ ܠܝ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܡܣܠܝܐ ܟܠܗܘܢ. ܐܝܟ ܢܚܫܐ ܘܐܝܟ ܐܒܪܐ. ܘܐܝܟ ܦܪܙܠܐ. 18
ܘܐܝܟ ܐܒܪܐ ܒܓܘ ܟܘܪܐ ܕܡܚܠܛܝܢ ܒܣܐܡܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܚܠܦ 19
ܕܐܬܚܠܛܬܘܢ ܟܠܟܘܢ. ܗܐ ܡܟܢܫ ܐܢܐ ܠܟܘܢ ܒܓܘ ܐܘܪܫܠܡ. * ܐܝܟ ܕܡܬܟܢܫ ܣܐܡܐ 20
ܘܢܚܫܐ. ܘܦܪܙܠܐ. ܘܐܒܪܐ. ܘܐܒܪܐ ܒܓܘ ܟܘܪܐ: ܘܢܦܚܝܢ ܒܗܘܢ ܢܘܪܐ ܕܢܬܦܫܪܘܢ. ܗܟܢܐ
ܐܟܢܫܟܘܢ ܒܪܘܓܙܝ. ܘܒܚܡܬܝ ܐܦܫܪܟܘܢ. * ܘܐܦܘܚ ܒܟܘܢ ܢܘܪܐ ܕܚܡܬܝ. ܘܐܦܫܪܟܘܢ 21
ܒܓܘܗ. * ܐܝܟ ܕܡܬܦܫܪ ܣܐܡܐ ܒܓܘ ܟܘܪܐ. ܗܟܢܐ ܬܬܦܫܪܘܢ ܒܓܘܗ. ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ 22
ܡܪܝܐ ܐܫܕܬ ܚܡܬܝ ܥܠܝܟܘܢ. * ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܠܘܬܝ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ. ܐܡܪ 23 24
ܠܗ. ܐܢܬܝ ܐܪܥܐ. ܠܐ ܗܘܝܬܝ ܕܟܝܐ. ܘܠܐ ܐܬܛܒܥܬܝ ܘܠܐ ܢܚܬ ܥܠܝܟܝ ܡܛܪܐ. * ܡܪܕܘ 25
ܢܒܝܐܗ ܒܓܘܗ. ܐܝܟ ܐܪܝܐ ܕܢܗܡ ܘܚܛܦ ܚܛܦܐ. ܐܟܠܘ ܢܦܫܬܐ ܒܥܘܫܢܗܘܢ. ܘܝܩܪܐ
ܕܗܝܟܠܝܗܘܢ ܢܣܒܘ. * ܟܗܢܝܗ ܐܥܠܘ ܢܡܘܣܝ. ܘܛܢܦܘ ܩܘܕܫܝ. ܘܒܝܢ ܩܘܕܫܐ 26
ܠܚܠܐ. ܠܐ ܦܪܫܘ. ܘܒܝܢ ܛܡܐܐ ܠܕܟܝܐ ܠܐ ܝܕܥܘ. ܘܡܢ ܫܒܬܝ ܐܥܠܝܘ ܥܝܢܝܗܘܢ.
ܘܐܬܛܢܦܬ ܒܝܢܝܗܘܢ. * ܘܪܘܪܒܢܝܗ ܒܓܘܗ. ܐܝܟ ܕܐܒܐ ܚܛܦܝܢ ܚܛܘܦܝܐ. ܠܡܐܫܕ ܕܡܐ. ܘܠܡܘܒܕܘ 27
ܢܦܫܬܐ. ܕܢܩܢܘܢ ܩܢܝܢܐ. * ܘܢܒܝܐܗ ܛܫܘ ܠܗܝܢ ܒܐܪܙܐ ܕܢܦܠܘܢ. ܚܙܘ ܠܗܘܢ ܕܓܠܬܐ. 28
ܘܐܡܪܝܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܡܪܝܐ ܠܐ ܐܡܪ. * ܥܡܐ ܕܐܪܥܐ ܛܠܡܘ ܛܠܘܡܐ. ܘܢܟܠܘ 29
ܠܡܣܟܢܐ ܘܠܒܝܫܐ. ܘܠܕܡܬܦܢܐ ܠܘܬܝ ܛܠܡܘ ܕܠܐ ܒܕܝܢܐ. * ܘܒܥܝܬ ܡܢܗܘܢ ܓܒܪܐ 30
ܕܢܣܝܓ ܣܝܓܐ. ܘܢܩܘܡ ܒܬܘܪܥܬܐ ܩܕܡܝ ܚܠܦ ܐܪܥܐ ܕܠܐ ܐܚܪܒܝܗ. ܘܠܐ ܐܫܟܚܬ.
* ܘܐܫܕܬ ܥܠܝܗܘܢ ܪܘܓܙܝ. ܘܒܢܘܪܐ ܕܚܡܬܝ ܫܝܨܝܬ ܐܢܘܢ. ܐܘܪܚܬܗܘܢ. ܦܪܥܬ 31
ܒܪܫܝܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܓ *

* ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܠܘܬܝ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ. ܬܪܬܝܢ ܢܫܝܢ ܐܝܬ ܗܘܝ ܒܢܬܐ ܚܕܐ ܐܡܐ. 1 2

Fili hominis, facti ſunt apud me Iſraelitæ 18
omnes abominandi velut æs, velut ſtannum,
velut ferrum, & velut plumbum in catino cum
argento commixta. Iccircò ait Dñs domino- 19
rum; Quia commixti eſtis omnes, ecce con-
gregabo vos intra Jeruſalem. Quemadmodum 20
congeritur argentum, æs, ferrum, ſtannum, atq;
plumbum intra catinum, & ſufflant in eâ ignē
ut liquefiant; ita congregabo vos in ira mea,
& in furore meo liquabo vos: Sufflabo enim 21
in vos ignem furoris mei, & liquefaciam vos
intra ipſam *urbem*. Quemadmodum liqueſcit 22
argentum intra catinum, ita liqueſcetis intra
ipſam: & experiemini, me Dñm effudiſſe fu-
rorē meū ſuper vos. Fuit etiam ad me ſermo 23
Dñi, dicendo; Fili hominis, dic iſti; Tu terra, 24
non es munda, intincta nondum fuiſti, neque
decidit ſuper te pluvia. Rebellaverunt pro- 25
phetæ ejus in ipſa, tanquam leo rugiens & præ-
dam diripiens: comederunt animas fortitudi-
ne ſuâ, & gloriam palatiorum eorum occupa-
verunt. Sacerdotes ejus impiè egerunt contrà 26
legē meam, & polluerunt ſanctuarium meum:
inter ſanctū & prophanum non diſcreverunt,
& impurum à puro non dignoſcunt: à ſab-
bathis meis demiſerunt oculos ſuos, denique
prophanatus ſum inter illos. Principes ejus 27
intra ipſam ut lupi rapiunt, ad effundendum
ſanguinem & perdendas animas, ut poſſeſſio-
nem acquirant. Prophetæ ejus obducunt eam 28
tectorio ut corruat: viderunt eis mendacium,
dicentes, Sic dicit Dñs, quum Dominus non
dixerit. Populum terræ tyrannicè & doloſè 29
tractârunt, pauperibus & egenis vim intule-
runt, & eum qui ad me convertitur, iniquè
oppreſſerunt. Denique virum inter eos quæ- 30
ſivi, qui ſepem obduceret, & conſiſteret in
ruptura coram me pro terra ne vaſtarem eam;
& non inveni. Quapropter effudi ſuper eos 31
iracundiam meam, & igne furoris mei con-
ſumpſi eos: vias eorum rependi in capita
ipſorum, ait Dominus dominorum.

CAP. XXIII.

ITem fuit ad me ſermo Domini, dicendo; 1
Fili hominis, duæ erant fœminæ filiæ ejuſ- 2
dem matris.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* يا ابن الانسان * ها قد صار بيت اسرايل مختلطا بنحاس وحديد * وقصدير ورصاص * في 18
وسط فضة مختلط هو * لاجل هذا قل * هكذا يقول الرب الرب الاله * من اجل انكم صرتم جميعا 19
امتزاجا واحدا * لاجل هذا ها انا اقبلكم في وسط اورشليم * كما تقبل الفضة والنحاس والحديد 20
والقصدير والرصاص في وسط قمين النار لتنفخ عليها النار لتسبكها * هكذا اقبلكم برجزي
وبغضبي * واجمعكم واسبككم * وانفخ عليكم نفخة بنار رجزي * وتسبكون في وسطه * كما 21 22
تسبك الفضة في وسط الاتون * هكذا تسبكون في وسطه * وتعلمون اني انا الرب اهرقت غضبي
عليكم * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان قل لها * انت الارض الغير ممطورة * ولا 23 24
ينزل عليك مطر * التي مقدموها في وسطها مثل اسد زاير يختطفون اختطافا * ياكلون 25
النفوس بقوة * ياخذون الرشا في الظلم * وارامك كثرن في وسطك * وكهنتها خالفوا ناموسي * 26
ونجسوا اقداسي * ولم يفرقوا بين الطاهر والنجس * ولم يفرقوا بين الغير نقي والنقي * وغطوا
عيونهم عن سبوتي * وتنجست في وسطهم * رؤساوها في وسطها مثل ذياب تختطف اختطافا 27
ليسفكوا دما لكي يستكثروا استكثارا * وانبياوها الذين دهنوهم يسقطون * ينظرون 28
الاباطيل ويكهنون الكذب * قايلين * هكذا يقول ادوناي الرب * والرب لم يتكلم * شعب 29
الارض يترصد الظلم * ويختطفون اختطافا * يتقوون على الفقير والمسكين * ومع الدخيل لا
يتصرفون بحكم * وطلبت منهم رجلا متصرفا باستقامة * وقايما بالانصاف امام وجهي * في 30
زمن الغضب من اجل الارض الا اهلكها الي الغاية * فلم اجد * واهرقت عليها غضبي بنار 31
رجزي لافنيها * واعطيت طرقهم على رووسهم * يقول الرب الرب *

* الفصل الثالث والعشرون *

* وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان * كان امراتان ابنتان لام واحدة * 1 2

O fili hominis, ecce jam facta eſt domus 18
Iſraelis mixta ære & ferro, ſtanno &
plumbo; in medio argenti permixta eſt.
Propterea dic, Ita dicit Dominus, Domi- 19
nus Deus; Quia vos facti eſtis omnes
mixturâ eâdem, ideò ecce ego recipiam
vos in medio Jeruſalem, Quemadmo- 20
dum recipitur argentum, æs, ferrum, ſtan-
num, & plumbum in medio camini ignis;
ut inſufflato in hæc igne, liqueſcant. Ita
recipiam vos in ira & furore meo, conge-
ram vos, & liquabo vos: Et flatum in 21
vos efflabo in igne furoris mei, & liqua-
bimini in medio ejus. Quemadmodum 22
liquatur argentum in medio fornacis, ita
liquefietis in medio ejus; & ſcietis me
Dominum effudiſſe ſuper vos furorem
meum. Rurſum fuit ſermo Domini ad 23
me, dicens; O fili hominis, dic ei; Tu 24
es terra ſine pluvia, ſuper quam nullus
decidit imber: Cujus principes in medio 25
tui, ſimiles leonibus rugientibus rapiunt
rapinam, animas violenter comedunt, mu-
nus iniquè accipiunt: unde viduæ tuæ
multiplicatæ ſunt in medio tui. Sacer- 26
dotes ejus adverſati ſunt legi meæ, pol-
luerunt ſancta mea, non habuerunt diſcri-
men inter mundum & immundum, neque
diſtinxerunt impurum à puro; imò ope-
ruerunt oculos ſuos à ſabbathis meis, &
contaminatus ſum in medio eorum. Prin- 27
cipes ejus in medio ipſius, tanquam lupi
rapinam rapiunt, ut effundant ſanguinem
quatenus multùm acquirant. Et prophe- 28
tæ ejus, qui ungebant eos, cadent: vident
vanitates, & divinant mendacium, di-
centes; Ita dicit Adonai Dominus, quum
Dominus non ſit locutus. Populus terræ 29
ſtudet iniquitati; nam rapinam rapiunt,
pauperem & egenum opprimunt, & cum
advena non converſantur cum judicio.
Et quæſivi ex eis virum rectè conver- 30
ſantem, qui per integritatem ſtaret co-
ram facie mea tempore furoris pro ter-
ra, ne funditùs delerem eam; & non
inveni. Igitur effudi ſuper eam furo- 31
rem meum in igne excandeſcentiæ meæ,
ut exciderem eam: & refudi vias eo-
rum in capita ipſorum, ait Dominus, Do-
minus.

CAP. XXIII.

Fuit etiam ſermo Domini ad me, di- 1
cens; O fili hominis, fuerunt duæ mulie- 2
res filiæ matris unius.

יחזקאל : כג

ibi : sunt fornicatæ *suis pueritiis* in , Ægypto in sunt fornicatæ Et
3 וַתִּזְנֶינָה בְמִצְרַיִם בִּנְעוּרֵיהֶן זָנוּ שָׁמָּה
.earum virginitatis mammas *compresserunt* ibi &,earum ubera sunt compressa
מֹעֲכוּ שְׁדֵיהֶן וְשָׁם עִשּׂוּ דַּדֵּי בְּתוּלֵיהֶן׃
fuerunt & ,ejus soror Aholibah & , major Aholah earum nomina Et
4 וּשְׁמוֹתָן אָהֳלָה הַגְּדוֹלָה וְאָהֳלִיבָה אֲחוֹתָהּ וַתִּהְיֶינָה
, Aholah Someron earum nomina & : filias & ,filios pepererunt & , *mihi*
לִי וַתֵּלַדְנָה בָּנִים וּבָנוֹת וּשְׁמוֹתָן שֹׁמְרוֹן אָהֳלָה
adamavit & : me sub Aholah est fornicata Et .Aholibah Jerusalaim &
5 וִירוּשָׁלַםִ אָהֳלִיבָה׃ וַתִּזֶן אָהֳלָה תַּחְתָּי וַתַּעְגַּב
,duces ,hyacintho Indutos .propinquos Assur *ad* , suos amatores *super*
6 עַל־מְאַהֲבֶיהָ אֶל־אַשּׁוּר קְרוֹבִים׃ לְבֻשֵׁי תְכֵלֶת פַּחוֹת
.equos equitantes equites ,ipsos universos *desiderii electos* , *magistratus* &
וּסְגָנִים בַּחוּרֵי חֶמֶד כֻּלָּם פָּרָשִׁים רֹכְבֵי סוּסִים׃
.*ipsorum omnium* Assur *filiorum electione* ,eis *super* suas fornicationes dedit Et
7 וַתִּתֵּן תַּזְנוּתֶיהָ עֲלֵיהֶם מִבְחַר בְּנֵי־אַשּׁוּר כֻּלָּם
Et .se polluit eorum idolis cunctis in ,adamavit quos *omnibus in* Et
8 וּבְכֹל אֲשֶׁר־עָגְבָה בְּכָל־גִּלּוּלֵיהֶם נִטְמָאָה׃ וְאֶת־
concubuerunt ei quia : dereliquit non , Ægypto ab suas fornicationes
תַּזְנוּתֶיהָ מִמִּצְרַיִם לֹא עָזָבָה כִּי אוֹתָהּ שָׁכְבוּ
effuderunt & : ejus *virginitatum* ubera compresserunt ipsi & ,*suis pueritiis in*
בִנְעוּרֶיהָ וְהֵמָּה עִשּׂוּ דַּדֵּי בְתוּלֶיהָ וַיִּשְׁפְּכוּ
manum in eam tradidi Propterea .eam super suam fornicationem
9 תַזְנוּתָם עָלֶיהָ׃ לָכֵן נְתַתִּיהָ בְּיַד־
.*ipsos super* adamavit quos Assur filiorum manum in ,suorum amatorum
מְאַהֲבֶיהָ בְּיַד בְּנֵי אַשּׁוּר אֲשֶׁר עָגְבָה עֲלֵיהֶם׃
, tulerunt ejus filias & , ejus filios ,ejus *nuditatem* discooperuerunt Ipsi
10 הֵמָּה גִּלּוּ עֶרְוָתָהּ בָּנֶיהָ וּבְנוֹתֶיהָ לָקָחוּ
judicia & , mulieribus nomen fuit &:occiderunt gladio in ipsam &
וְאוֹתָהּ בַּחֶרֶב הָרָגוּ וַתְּהִי־שֵׁם לַנָּשִׁים וּשְׁפוּטִים
suum amorem corrupit & , Aholibah ejus soror vidit Et .ea in fecerunt
11 עָשׂוּ בָהּ׃ וַתֵּרֶא אֲחוֹתָהּ אָהֳלִיבָה וַתַּשְׁחֵת עַגְבָתָהּ
Ad .suæ sororis fornicationibus præ suas prævaricationes & : illa præ
12 מִמֶּנָּה וְאֶת־תַּזְנוּתֶיהָ מִזְּנוּנֵי אֲחוֹתָהּ׃ אֶל־
indutos , propinquos ,*magistratus* & , duces , adamavit Assur filios
בְּנֵי אַשּׁוּר עָגָבָה פַּחוֹת וּסְגָנִים קְרֹבִים לְבֻשֵׁי
.ipsos universos *desiderii electos* : equos equitantes equites ,*vestitu absoluto*
מִכְלוֹל פָּרָשִׁים רֹכְבֵי סוּסִים בַּחוּרֵי חֶמֶד כֻּלָּם׃
ad addidit Et .*ipsis ambabus una via esset polluta* quòd vidi Et
13 14 וָאֵרֶא כִּי נִטְמָאָה דֶּרֶךְ אֶחָד לִשְׁתֵּיהֶן׃ וַתּוֹסֶף אֶל־
imagines , pariete in *depictum* viros vidit & : suas fornicationes
תַּזְנוּתֶיהָ וַתֵּרֶא אַנְשֵׁי מְחֻקֶּה עַל־הַקִּיר צַלְמֵי
,*suis lumbis in cingulo* Accinctos .*minio in descriptas* Chasdim
15 כַּשְׂדִּיִּים חֲקֻקִים בַּשָּׁשַׁר׃ חֲגוֹרֵי אֵזוֹר בְּמָתְנֵיהֶם
; ipsi universi *triariorum aspectu* , eorum capitibus in tinctas tiaras
סְרוּחֵי טְבוּלִים בְּרָאשֵׁיהֶם מַרְאֵה שָׁלִשִׁים כֻּלָּם
.eorum nativitatis terræ Chasdim , Babel filiorum similitudinem
דְּמוּת בְּנֵי־בָבֶל כַּשְׂדִּים אֶרֶץ מוֹלַדְתָּם׃
nuntios misit & :suorum oculorum aspectum ad eos *super* adamavit Et
16 וַתַּעְגֹּב עֲלֵיהֶם לְמַרְאֵה עֵינֶיהָ וַתִּשְׁלַח מַלְאָכִים
cubile ad Babel filii eam ad venerunt Et .Chasdim in eos ad
17 אֲלֵיהֶם כַּשְׂדִּימָה׃ וַיָּבֹאוּ אֵלֶיהָ בְנֵי־בָבֶל לְמִשְׁכַּב
,eis cum se polluit & : sua fornicatione in eam polluerunt & , amorum
דֹּדִים וַיְטַמְּאוּ אוֹתָהּ בְּתַזְנוּתָם וַתִּטְמָא־בָם
detexit & ,suas fornicationes *detexit* Et .eis ab ejus anima *est emota* &
18 וַתֵּקַע נַפְשָׁהּ מֵהֶם׃ וַתְּגַל תַּזְנוּתֶיהָ וַתְּגַל
quemadmodum , ea *desuper* mea anima *est remota* & : suam *nuditatem*
אֶת־עֶרְוָתָהּ וַתֵּקַע נַפְשִׁי מֵעָלֶיהָ כַּאֲשֶׁר
.ejus sorore *desuper* mea anima *se dimoverat*
נָקְעָה נַפְשִׁי מֵעַל אֲחוֹתָהּ׃

Versio VULG. LAT.

3 Et fornicatæ sunt in Ægypto, in adolescentia sua fornicatæ sunt: ibi subacta sunt ubera earum, & fractæ sunt mammæ pubertatis
4 earum. Nomina autem earum, Oolla major, & Ooliba soror ejus minor: & habui eas, & pepererunt filios & filias. Porrò earum nomina, Samaria Oolla,
5 & Jerusalem Ooliba. Fornicata est igitur super me Oolla, & insanivit in amatores suos, in
6 Assyrios propinquantes, Vestitos hyacintho, principes, & magistratus, juvenes cupidinis, universos equites, ascensores equo-
7 rum. Et dedit fornicationes suas super eos electos, filios Assyriorum universos: & in omnibus in quos insanivit, in immun-
8 ditiis eorum polluta est. Insuper & fornicationes suas, quas habuerat in Ægypto, non reliquit: nam & illi dormierunt cum ea in adolescentia ejus, & illi confregerunt ubera pubertatis ejus, & effuderunt fornicationem suam
9 super eam. Propterea tradidi eam in manus amatorum suorum, in manus filiorum Assur, super
10 quorum insanivit libidine. Ipsi discooperuerunt ignominiam ejus, filios & filias ejus tulerunt, & ipsam occiderunt gladio: & factæ sunt famosæ mulieres, & judicia perpetraverunt in ea.
11 Quod cùm vidisset soror ej⁹ Ooliba, plusquàm illa insanivit libidine: & fornicationem suam super fornicationem sororis suæ
12 Ad filios Assyriorum præbuit impudenter, ducibus & magistratibus ad se venientib⁹ indutis veste variâ, equitibus qui vectabantur equis, & adolescentibus formâ
13 cunctis egregiâ. Et vidi quòd polluta esset via una ambarum.
14 Et auxit fornicationes suas: cúmque vidisset viros depictos in pariete, imagines Chaldæorum ex-
15 pressas coloribus, Et accinctos balteis renes, & tiaras tinctas in capitibus eorũ, formam ducum omnium, similitudinem filiorum Babylonis, terræque Chaldæo-
16 rum, in qua orti sunt, Insanivit super eos concupiscentiâ oculorum suorum, & misit nuntios ad
17 eos in Chaldæam. Cúmq; venisset ad eã filii Babylonis ad cubile mammarũ, polluerunt eam stupris suis, & polluta est ab eis, & saturata est anima ejus ab illis.
18 Denudavit quoque fornicationes suas, & discooperuit ignominiam suam: & recessit anima mea ab ea, sicut recesserat anima mea à sorore ejus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

3 Καὶ ἐξεπόρνευσαν ἐν Αἰγύπτῳ ἐν τῇ νεότητι αὐτῶν, (α) ἐκεῖ ἔπεσον οἱ μασοὶ αὐτῶν, (β)
4 ἐκεῖ διεπαρθενεύθησαν. Καὶ τὰ ὀνόματα αὐτῶν ἦν (γ) Ὀολὰ ἡ πρεσβυτέρα, καὶ (δ) Ὀολιβὰ ἡ ἀδελφὴ αὐτῆς· καὶ ἐγένοντό μοι, καὶ ἔτεκον υἱοὺς καὶ θυγατέρας, καὶ τὰ ὀνόματα αὐτῶν, Σαμάρεια (ε) ἦν Ὀολά, καὶ Ἱερουσα-
5 λὴμ (ζ) ἦν Ὀολιβά. Καὶ ἐξεπόρνευσεν ἡ (η) Ὀολὰ ἀπ᾽ ἐμοῦ, καὶ ἐπέθετο ἐπὶ τοὺς ἐραστὰς αὐτῆς, ἐπὶ τοὺς Ἀσσυρίους τοὺς ἐγγί-
6 ζοντας αὐτῇ, (θ) Ἐνδεδυκότας ὑακίνθινα, ἡγουμένους καὶ στρατηγούς· (ι) νεανίσκοι καὶ ἐπίλεκτοι, πάντες ἱππεῖς ἱππαζόμενοι ἐφ᾽
7 ἵππων. Καὶ ἔδωκε τὴν πορνείαν (κ) αὐτῆς ἐπ᾽ αὐτούς· ἐπίλεκτοι υἱοὶ Ἀσσυρίων πάντες· καὶ ἐπὶ πάντας οὓς ἐπέθετο, ἐν πᾶσι τοῖς ἐνθυ-
8 μήμασιν (λ), αὐτοῖς ἐμιαίνετο. Καὶ τὴν πορνείαν αὐτῆς ἐξ Αἰγύπτου οὐκ ἐγκατέλιπεν, ὅτι μετ᾽ αὐτῆς ἐκοιμῶντο ἐν (μ) νεότητι αὐτῆς, καὶ αὐτοὶ διεπαρθένευσαν αὐτήν, καὶ ἐξέ-
9 χεαν τὴν πορνείαν αὐτῶν ἐπ᾽ αὐτήν. Διατοῦτο παρέδωκα αὐτὴν εἰς χεῖρας τῶν ἐραστῶν αὐτῆς, εἰς χεῖρας υἱῶν Ἀσσυρίων, ἐφ᾽ οὓς ἐπε-
10 τίθετο. Αὐτοὶ ἀπεκάλυψαν τὴν (ν) αἰσχύνην αὐτῆς, υἱοὺς καὶ θυγατέρας αὐτῆς ἔλαβον, καὶ αὐτὴν ἐν ῥομφαίᾳ ἀπέκτειναν. καὶ ἐγένετο λάλημα εἰς (ξ) γυναῖκας, καὶ ἐποίησαν ἐκδική-
11 σεις ἐν αὐτῇ εἰς τὰς θυγατέρας (ο). Καὶ εἶδεν ἡ ἀδελφὴ αὐτῆς (π) Ὀολιβά, καὶ διέφθειρε τὴν ἐπίθεσιν αὐτῆς ὑπὲρ (ϙ) αὐτήν, καὶ τὴν πορνείαν αὐτῆς ὑπὲρ τὴν πορνείαν τῆς ἀδελφῆς
12 αὐτῆς. Ἐπὶ τοὺς υἱοὺς τῶν Ἀσσυρίων ἐπέθετο, ἡγουμένους καὶ στρατηγούς, τοὺς ἐγγὺς αὐτῆς, (ρ) ἐνδεδυκότας εὐπάρυφα, ἱππεῖς (σ) ἱππαζομένους ἐφ᾽ ἵππων· νεανίσκοι ἐ-
13 πίλεκτοι πάντες. Καὶ ἴδον ὅτι μεμίανται ὁ-
14 δὸς μία τῶν δύο. Καὶ προσέθετο πρὸς τὴν πορνείαν αὐτῆς, καὶ εἶδεν ἄνδρας ἐζωγραφημένους ἐπὶ τοῦ τοίχου, εἰκόνας Χαλδαίων (τ)
15 ἐζωγραφημένους ἐν γραφίδι, (υ) Ἐζωσμένους ποικίλματα ἐπὶ τὰς ὀσφύας αὐτῶν, (φ) παραβαπτὰ ἐπὶ τῶν κεφαλῶν αὐτῶν, ὄψις τρισσὴ πάντων, ὁμοίωμα υἱῶν Χαλδαίων,
16 γῆς πατρίδος (χ) αὐτῶν· Καὶ ἐπέθετο ἐπ᾽ αὐτοὺς (") τῇ ὁράσει ὀφθαλμῶν αὐτῆς· καὶ ἐξαπέστειλεν ἀγγέλους πρὸς αὐτοὺς εἰς γῆν Χαλ-
17 δαίων. Καὶ (ψ) ἤλθοσαν πρὸς αὐτὴν υἱοὶ Βαβυλῶνος, εἰς κοίτην καταλυόντων, καὶ ἐμίαινον αὐτὴν ἐν τῇ πορνείᾳ αὐτῆς, καὶ ἐμιάνθη ἐν αὐτοῖς, καὶ ἀπέστη ἡ ψυχὴ αὐ-
18 τῆς ἀπ᾽ αὐτῶν. Καὶ ἀπεκάλυψε τὴν πορνείαν αὐτῆς, καὶ ἀπεκάλυψεν (ω) αἰσχύνην αὐτῆς. καὶ ἀπέστη ἡ ψυχή μου ἀπ᾽ αὐτῆς, ὃν τρόπον ἀπέστη ἡ ψυχή μου ἀπὸ τῆς ἀδελφῆς αὐτῆς.

MS.A. (α) ἐξεπόρνευσε, ἐκεῖ (β) καὶ ἐκεῖ (γ) Ὀλλὰ (δ) Ὀλιβὰ (ε) ἡ Ὀλλά, (ζ) ἡ Ὀλιβά. (η) Ὀλλὰ ἀπ᾽ ἐμοῦ, καὶ προσέθετο (θ) Ἐνδεδυμένους (ι) νεανίσκους ἐπιλέκτους, πάντες ἱππεῖς (κ) αὐτῶν (λ) αὐτῶν ἐμιαίνετο. (μ) τῇ νεότητι (ν) ἀσχημοσύνην (ξ) τὰς γυναῖκας, (ο) αὐτῆς. (π) ἡ Ὀλιβά, (ϙ) αὐτῇ, (ρ) ἐνδεδυμένους εὐπόρφυρα, (σ) ἱππαζόμενοι (τ) ἐζωγραφημένας, (υ) διεζωσμένους (φ) καὶ παραιβάπται ἐπὶ (χ) αὐτῶν· (") ἐν ὁράσει (ψ) ἦλθον (ω) τὴν ἀσχημοσύνην

Et fornicatæ sunt in Ægypto in adolescentia sua: ibi ceciderunt ubera earum: & ibi devirginatæ sunt. Et nomina earum fuerunt, Oola senior, & (a) Ooliba soror ejus. Et factæ sunt mihi, & pepererunt filios, et filias. Et nomina earũ, Samaria fuit Oola, & Hierusalem fuit Ooliba. Et fornicata est Oola à me, & adhæsit super amatores suos, super Assyrios, qui appropinquabant ei, Indutos hyacinthinis, principes, & duces: (b) juvenes, et electi, omnes equites equitantes super equos. Et dedit fornicationẽ suam super eos: (c) (electi filii Assyriorũ omnes:) et super omnes, ad quos adhæsit, in omnib⁹ adinventionib⁹ (d) ipsis polluebatur. Et fornicationem suam ex Ægypto non reliquit: quia cum ipsa dormiebant in adolescentia ejus, & ipsi devirginaverant eam, & effuderant fornicationem suam super eam. Propterea tradidi eam in manus amatorum ejus, in manus filiorum Assyriorũ, ad quos adhæsit. Ipsi discooperuerunt ignominiam ejus: filios & filias illius tulerunt, et ipsam in gladio occiderunt. Et facta est sermo apud mulieres: & fecerunt ultiones in ea in filias. Et vidit soror ejus Ooliba, & corrupit (e) applicationẽ suã super eã, et fornicationem suam super fornicationem sororis suæ: Super filios Assyriorum adhæsit, principes, & duces, qui propè eam, indutos (f) pretiosis, equites equitantes super equos: (g) adolescentes electi omnes. Et vidi, quia polluta est via una ambarum: Et adjecit ad fornicationem suam: & vidit viros depictos in pariete, imagines Chaldæorũ, (h) depictos in stylo, Accinctos variegatis super lumbos suos, (i) tincta & super capita eorum, aspectus (k) triplex omnium, similitudo filiorum Chaldæorum, terræ patriæ (l) ejus. Et adhæsit super eos aspectu oculorum suorum: & misit nuntios ad eos in terram Chaldæorum: Et venerunt ad eam filii Babylonis ad cubile divertentium: & polluerunt eam in fornicatione (m) ejus: & polluta est in eis: & recessit anima ejus ab illis. Et revelavit fornicationem suam, & revelavit ignominiam suam. Et recessit anima mea ab ea; sicut recessit anima mea à sorore ejus. 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 וטעאה במצרים בתר פולחן טעותהון טעאה תמן פלחא לטעותא ותמן קלקלא
4 עובדיהן : ושמהתהן אהלה רבתא ואהליבה אחתה והואה משמשן קדמי ואצלחא
5 בבנין ובנן ושמהתהן שמרון אהלה וירושלם אהליבה : וטעת אהלה מבתר
6 פולחני ואתרעיאת למטעי בתר רחימהא בתר בני אתור קריבהא : לבישי גמיר
7 שלטונין וטורנין עולמי חמדתא כולהון פרשין רכבי סוסון : ואתרעיאת למטעי
בתריהון עולמי בני אתור כולהון ובכל דאתרעיאת בכל פולחן טעותהון אסתאבת :
8 וית פלחן טעותא דהוה עמה ממצרים לא שבקת ארי יתה אפלחו לטעותה ואנון
9 אלפוהא עובדין בישין ושפכו טעותהון עלה : בכן מסרתהא ביד רחימהא ביד בני
10 אתור דאתרעיאת למטעי בתריהון : אנון גליאו קלנה בנהא ובנתהא שבו ועמה
11 בחרבא קטילו והות שום למדינתא ופורענות דינין עבדו בנוה : וחזת אחתה
12 אהליבה וחבילת רחמתא מנה וית טעותהא מטעות אחתה : בתר בני אתור
אתרעיאת למטעי שלטונין וטורנין קריבין לבושי גמר ופרשין רכבי סוסון עולמי
13 14 חמדתא כולהון : וגלי קדמי ארי אסתאבת אורחא חדא שוי לתרתיהן : ואוסיפת על
15 טעותה וחזת גברין מצירין על כתלא צלמי כסדאי מצירין בסממניא : אסירין זרזין
בחרצהון מחתין קולסין ברישהון חזו גברין כולהון דמות בני בבל מדינת כסדאי
16 ארע ילדותהון : ואתרעיאת למטעי בתריהון בתר חזו עינהא ושלחת אזגדין לותהון
17 למדינת ארע כסדאי : ואתו לותה בני בבל למעבד רחמו וסאיבו יתה בטעותהון
18 ואסתאבת בהון עד דקצת נפשה בהון : ואתגליאת בהתתה ואתחזי קלנה ורחיק
מימרי יתה כמא דרחיק מימרי ית אחתה :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et erraverunt in Ægypto, post cultum idolorum suorum erraverunt, ibi ser- 3
vierunt idolis, & ibi corruperunt opera sua. Et nomina earum Oola major, 4
& Ooliba soror ejus, & ministrabant coram me, & proficiebant in filiis &
filiabus: & nomina earum, Samaria Oola, & Jerusalem Ooliba. Et erravit 5
Oola à cultu meo, & elegit errare post amatores suos, post filios Assur sibi
vicinos; Vestitos hyacintho, principes & tyrannos, juvenes elegantissimos, 6
universos equites, ascensores equorum. Et elegit errare post eos juvenes filios 7
Assyriorum universos, & apud omnes quos elegit, omni cultu idolorum pol-
luta est. Et cultum idolorum quem habebat ex Ægypto, non reliquit: quia 8
eam servire fecerunt idolis *suis*, & docuerunt eam opera mala: & effude-
runt idola sua super illam. Propterea tradidi eam in manũ amatorum suorũ, 9
in manũ filiorũ Assur, quos elegit ut erraret post eos. Ipsi revelaverunt igno- 10
miniam ejus: filios ejus & filias ejus in captivitatem duxerunt, & populum
ejus gladio occiderunt; & factum est nomen provinciis, & ultionem judici-
orum fecerunt in ea. Et vidit soror ejus Ooliba, & corrupit *amorem* præ 11
illa, & fornicationes suas præ fornicationibus sororis suæ. Post filios Assur 12
elegit errare, post principes, & tyrannos propinquos, indutos perfectè, equi-
tes ascensores equorum, juvenes specie insignes universos. Et revelatum fuit 13
coram me quòd polluta esset via una *pariter* ambarum. Et addidit super er- 14
rores suos, & vidit viros depictos in pariete, imagines Chaldæorum, depi-
ctos colorib⁹: Et accinctos baltheis in lumbis suis, positis galeis in capitib⁹ 15
suis: aspectum fortium omnium, similitudinem filiorũ Babylonis, provinciæ
Chaldæorũ terræ nativitatis eorũ. Et elegit errare post eos post visioné ocu- 16
lorũ suorũ, & misit nuntios ad eos in provinciam terræ Chaldæorũ. Et vene- 17
runt ad eam filii Babylonis ut satisfacerent amori, & polluerunt eam in ido-
lis suis, & inquinata est eis, donec detestata est eos anima ejus. Et revelata 18
est confusio ejus, & apparuit ignominia ejus, & projecit eam Verbum me-
um, sicut projecit Verbum meum sororem ejus.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܙܢܝ ܒܡܨܪܝܢ ܒܛܠܝܘܬܗܝܢ. ܬܡܢ ܡܬܡܫܐ ܬܕܝܗܝܢ. ܘܬܡܢ ܐܬܚܒܠܝ. * ܫܡܗܝܢ 3
ܕܩܫܝܫܬܐ ܐܗܘܠܐ. ܘܫܡܗ ܕܙܥܘܪܬܐ ܐܗܘܠܝܒܐ. ܘܗܘܝ ܠܝ. ܘܝܠܕܝ ܒܢܝ̈ܐ ܘܒܢ̈ܬܐ. ܫܡܗܝܢ 4
ܕܫܡܪܝܢ ܐܗܘܠܐ. ܘܕܐܘܪܫܠܡ ܐܗܘܠܝܒܐ. * ܘܙܢܬ ܐܗܘܠܐ ܡܢܝ. ܘܢܩܦܬ ܠܪ̈ܚܡܝܗ ܠܐܬܘܪ̈ܝܐ 5
ܕܩܪܝܒܝܢ ܠܗ. * ܕܠܒܝܫܝܢ ܬܟܠܬܐ ܡܪ̈ܘܬܐ ܘܫܠܝ̈ܛܢܐ. ܥܠܝ̈ܡܐ ܕܪ̈ܓܬܐ. ܟܠܗܘܢ ܦܪ̈ܫܐ. 6
ܪܟܒܝ ܪ̈ܟܫܐ. * ܘܝܗܒܬ ܙܢܝܘܬܗ ܠܗܘܢ. ܠܓܒܝ̈ܐ ܕܒܢܝ̈ ܐܬܘܪ. ܘܠܟܠ ܗܠܝܢ 7
ܕܐܬܢܩܦܬ ܒܦܬܟܪ̈ܝܗܘܢ. ܘܐܬܛܘܫܬ. * ܘܙܢܝܘܬܗ ܕܡܢ ܡܨܪܝܢ ܠܐ ܫܒܩܬ. ܡܛܠ ܕܥܡܗ 8
ܫܟܒܘ ܒܛܠܝܘܬܗ. ܘܗܢܘܢ ܡܫܟܘܗ. ܘܐܫܕܘ ܥܠܝܗ ܙܢܝܘܬܗܘܢ. * ܡܛܠܗܢܐ ܗܐ 9
ܐܫܠܡܬܗ. ܒܐܝܕܐ ܕܪ̈ܚܡܝܗ. ܒܐܝܕܐ ܕܒܢܝ̈ ܐܬܘܪ ܕܐܬܢܩܦܬ ܠܗܘܢ. * ܘܗܢܘܢ ܓܠܝܘ 10
ܥܪܛܠܝܘܬܗ. ܘܕܒܪܘ ܒܢܝ̈ܗ ܘܒܢܬ̈ܗ. ܘܠܗ ܩܛܠܘ ܒܚܪܒܐ. ܘܗܘܬ ܬܡܢ ܡܬܠܐ ܒܢܫ̈ܐ.
ܘܕܝܢܐ ܥܒܕܘ ܒܗ. * ܘܚܙܬ ܚܬܗ ܐܗܘܠܝܒܐ. ܘܐܚܒܠܬ ܢܩܦܘܬܗ ܝܬܝܪ ܡܢܗ. ܘܙܢܝܘܬܗ 11
ܝܬܝܪ ܡܢ ܙܢܝܘܬܐ ܕܚܬܗ. * ܠܒܢܝ̈ ܐܬܘܪ ܢܩܦܬ. ܠܡܪ̈ܘܬܐ ܘܠܫܠܝ̈ܛܢܐ ܕܩܪܝܒܝܢ ܠܗ. 12
ܦܪ̈ܫܐ ܕܠܒܝܫܝܢ ܬܟܠܬܐ. ܘܪܟܒܝ ܪ̈ܟܫܐ. ܟܠܗܘܢ ܥܠܝ̈ܡܐ ܐܝܟ ܕܪ̈ܓܬܐ. * ܘܚܙܝܬ 13
ܕܐܬܛܡܝܬ ܐܘܪܚܐ ܚܕܐ ܕܬܪ̈ܬܝܗܝܢ. * ܘܐܘܣܦܬ ܥܠ ܙܢܝܘܬܗܝܢ. ܘܚܙܬ ܓܒܪ̈ܐ ܕܨܝܪܝܢ ܥܠ ܫܘܪܐ. 14
ܨܠܡܐ ܕܟܠܕܝ̈ܐ ܕܨܝܪܝܢ ܒܣܪܩܐ. * ܘܐܣܝܪܝܢ ܐܣܪ̈ܐ ܒܚܨܝܗܘܢ. ܘܟܘܒܥܐ ܡܨܒܥܐ 15
ܒܪ̈ܫܝܗܘܢ. ܚܙܘܐ ܐܝܬ ܠܗ̇ ܠܓܒܪ̈ܐ ܟܠܗܘܢ. ܕܡܘܬܐ ܐܝܬ ܠܗ̇ ܕܒܢܝ̈ ܒܒܠ. ܘܕܟܠܕܝ̈ܐ. ܐܪܥܐ
ܕܐܬܝܠܕܘ ܒܗ̇. * ܘܐܬܢܩܦܬ ܠܗܘܢ. ܒܚܙܘܐ ܕܥܝ̈ܢܝܗ. ܘܫܕܪܬ ܠܗܘܢ ܐܝܙܓܕ̈ܐ ܠܐܪܥܐ 16
ܕܟܠܕܝ̈ܐ. * ܘܐܬܘ ܠܘܬܗ ܒܢܝ̈ ܒܒܠ ܠܡܫܟܒ ܥܡܗ. ܘܛܡܐܘܗ ܒܙܢܝܘܬܗܘܢ. 17
ܘܐܬܛܡܝܬ ܥܡܗܘܢ. ܘܢܒܐܬ ܢܦܫܗ ܡܢܗܘܢ. * ܘܓܠܬ ܙܢܝܘܬܗ. ܘܓܠܬ ܥܪܛܠܝܘܬܗ. 18
ܘܢܒܐܬ ܢܦܫܝ ܡܢܗ. ܐܝܟ ܕܢܒܐܬ ܢܦܫܝ ܡܢ ܚܬܗ.

Hæ in Ægypto fornicatæ ſunt in pueritia ſua, 3
ibi attrectâverunt ubera earum, ibíque ſtu-
pratæ fuerunt. Nomen majoris Ahola, nomen 4
verò poſterioris Aholiba. Meæ fuerunt, & pe-
pererunt mihi filios ac filias. Nomen Samariæ
Ahola, Jeroſolymæ Aholiba. Scortata eſt au- 5
tem *cum aliis* præter me, adhæſítque amato-
ribus ſuis, *nempè* Aſſyriis ſibi vicinis, Indu- 6
tis hyacintho, dominis, & proceribus, juveni-
bus jucundiſſimis, qui equites erant omnes,
equis inſidentes: Iſtis proſtituit ſcortationem 7
ſuam, delectiſſimis Aſſyriorum, atque iis
omnibus, quorum idolis adhæſit, ſeſéque con-
taminavit. Scortationem autem ſuam, cui in
Ægypto *indulſerat*, minimè dereliquit; quòd 8
hi ſtuprâſſent eam in pueritia ejus, & hi de-
florâſſent eam, & jeciſſent ſuper eam ſcorta-
tionem ſuam. Propterea ecce tradidi eam in 9
manum amatorũ ejus, in manum Aſſyriorum
quibus adhæſit. Et iſti pudenda ejus retexe- 10
runt, filios & filias ejus abduxerunt, ipſámq;
gladio peremerunt: & facta eſt ibi fabula
mulierum, & judicia exercuerunt in eam. Vi- 11
dens autem ſoror ejus Aholiba, magis depra-
vavit familiaritatẽ ſuam quàm illa, & ſcorta-
tionem ſuam pluſquam ſcortationem ſororis
ſuæ. Aſſyriis adhæſit, dominis, ac potentibus 12
ſibi vicinis, equitib' hyacintho indutis & in-
ſidentibus equis, qui omnes juvenes erant ju-
cundiſſimi. Denique vidi pollutam fuiſſe vi- 13
am utriuſque. Acceſſit præterea ad ſcortatio- 14
nem earum, quòd videntes viros in pariete
depictos, figuras Chaldæorũ minio pictorum,
Cingulis accinctorũ lumbos ſuos, & vittis ca- 15
pita redimitorũ, qui omnes formã habebant
virilem, ſimilitudinẽ filiorũ Babylonis (*ſive
Chaldæorũ*) terræ in qua orti fuerant: Ad- 16
hæſit *hæc* illis ut aſpexit eos oculis ſuis, miſitq;
ad eos legatos in terrã Chaldæorũ. Quare ve- 17
nerunt ad eam Babylonii ad concumbendum
cum ipſa, & polluerunt eam ſcortatione ſuâ:
& poſtquam impurata eſt cum ipſis, abomi-
nata eſt eos anima ipſius. Cùm itaq; retexerit 18
ſcortationem ſuam, & retexerit pudenda ſua;
abominata eſt eam anima mea, quemadmo-
dum abominata eſt anima mea ſororẽ ipſius.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* فزنتا بمصر في شبيبتهما * هناك سقطت ثديهما * هناك فسدت عذرتهما * واسماهما واولا 3
الكبيرة * واولوليبا اختها * وصارتا لي * وولدتا بنين وبنات * واسماهما واولا سامرة * واولوليبا 4
ايروسليم * وزنت واولا عني * ومالت الى مشتاقيها * الى الموصليين القريبين لها * اللابسين 5 6
ياقوتيا * مقدمين * امراء * كلهم شبان مختارون * فرسان يركبون على الخيل * واعطت 7
زناها اليهم * بنو الموصليين مختارون كلهم * وبجميع الذين مالت اليهم * بجميع
اعمالها تنجست * ولم تترك زناها من مصر * لانهم ناموا معها في شبيبتها * وهم افسدوا 8
عذرتها * واهرقوا زناهم عليها * لاجل هذا اسلمتها الى ايدي مشتاقيها * الى ايدي 9
الموصليين الذين مالت اليهم * وهم كشفوا عورتها * اخذوا بنيها وبناتها * وقتلوها 10
بالسيف * وصارت حديثا للنساء * وصنعوا الانتقام فيها لبناتها * ونظرت اختها اولوليبا * 11
وافسدت وضعها اكثر منها * وزناها اكثر من زني اختها * الى بني الموصليين مالت * 12
المقدمين والامراء القريبين منها * اللابسين البرفير الحسن * الراكبون على الخيل * جميعهم
شبان مختارون * ورايت ان طريقا واحدا تنجست من الاثنين * وعادت الى زناها * ونظرت 13 14
رجالا مصورين على الحايط * صور كلدانيين مصورات بنقش * ممنطقات باصناف على 15
حقاهم * وعصايب مصبوغات على روسهم * منظر مثلث لجميعهن * شبه بني الكلدانيين
ارض بلدتهن * ومالت اليهن بنظر عينيها * وارسلت رسلا اليهم الى ارض الكلدانيين * 16
* فاتوا اليها بنو بابل الى مضجع المستريحين * ونجسوها بزناها * وتنجست بهم * وبعدت 17
نفسها منهم * وكشفت زناها * وكشفت فضيحتها * وبعدت نفسي منها * كما بعدت 18
نفسي من اختها *

Scortatæ ſunt ambæ in Ægypto in adole- 3
ſcentia ſua: ibi ceciderunt ubera earum,
ibi violata fuit virginitas earum. No- 4
mina earum erant, Vaola majoris, & Ava-
oliba ſororis ejus. Erant ambæ meæ, ge-
nuerántque filios & filias. Nomina autem
earum, Vaola Samaria, Avaoliba verò
Jeruſalem. Scortata eſt igitur Vaola 5
abs me, declinavitque ad amaſios ſuos,
ad Aſſyrios ſibi vicinos, Indutos hya- 6
cinthinu, principes ducéſque, omnes ju-
venes delectos, equites qui vehebantur
equis. His proſtituit ſcortationem ſuam, 7
(filii Aſſyriorum delecti ſunt univerſi) &
cum omnibus ad quos declinavit, in cun-
ctis actionibus ſuis ſeſe polluit. Neque 8
tamen ſcortari deſtitit cum Ægyptiis,
quoniam iſti concubuerant cum ea in ado-
leſcentia ipſius, iſti violaverant virginita-
tem ejus, & effuderant ſcortationem ſuam
ſuper eam. Hac de re tradidi eam in 9
manus amaſiorum ejus, in manus Aſſyrio-
rum ad quos declinavit: Atque hi de- 10
texerunt pudenda ejus, abſtulerunt filios
& filias ejus, & ipſam gladio trucidâ-
runt: factáque eſt fabella apud mulie-
res: & ultionem fecerunt in ea in filias
ejus. Videns autem hæc Avaoliba ſoror 11
ejus, corrupit conditionem ſuam pluſquam
illa, & ſcortationem ſuam pluſquam ſcor-
tationem ſororis ſuæ. Ad Aſſyrios de- 12
clinavit, principes ac ſatrapas, ſibi vici-
nos, indutos purpurâ pulcherrimâ, qui
equis vehuntur, omnes juvenes delectiſſi-
mos. Denique vidi quòd eâdem viâ pol- 13
luta fuiſſet ab utriſque. Rediit quo- 14
que ad ſcortationem ſuam: videns e-
nim viros in pariete depictos, ima-
gines Chaldæorum ſculpturâ expreſſas,
Variè cinctas ſuper lumbos ſuos, tinctáſ- 15
que vittas ſuper capita ſua (quibus o-
mnibus triplex erat aſpectus, ſimilitudo
filiorum Chaldæorum terræ patriæ ſuæ)
Declinavit ad eas aſpectu oculorum ſuo- 16
rum, miſitque eis nuntios in terram Chal-
dæorum. Et venientes ad eam filii Ba- 17
belis in cubile quieſcentium; polluerunt
eam in ſcortatione ipſius, & polluta eſt
cum eis: deinde averſus eſt animus ejus
ab ipſis, Et proſtituit ſcortationem ſuam, 18
detexitque pudenda ſua: ideò averſus eſt
ab ea animus meus, quemadmodum aver-
ſus fuerat animus meus à ſorore ipſius.

יחזקאל : כג

,suarum pueritiarū dies commemorandū ad:suas fornicationes multiplicavit Et
19 וַתַּרְבֶּה אֶת־תַּזְנוּתֶיהָ לִזְכֹּר אֶת־יְמֵי נְעוּרֶיהָ
super adamavit Et .Ægypti terra in est fornicata quibus
20 אֲשֶׁר זָנְתָה בְּאֶרֶץ מִצְרָיִם׃ וַתַּעְגְּבָה עַל
,equorum fluxus & ; eorum caro asinorum caro quorum , eorum pellices
פִּלַגְשֵׁיהֶם אֲשֶׁר בְּשַׂר חֲמוֹרִים בְּשָׂרָם וְזִרְמַת סוּסִים
comprimendo in : tuarum pueritiarum scelus visitâsti Et .eorum fluxus
21 זִרְמָתָם׃ וַתִּפְקְדִי אֵת זִמַּת נְעוּרָיִךְ בַּעֲשׂוֹת
Propterea .tuarum pueritiarum ubera propter tua ubera Ægypto ab
22 מִמִּצְרַיִם דַּדַּיִךְ לְמַעַן שְׁדֵי נְעוּרָיִךְ׃ לָכֵן
tuos amatores suscitans ego Ecce:Deus Dominus dixit sic ,Aholibah
אָהֳלִיבָה כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִֹה הִנְנִי מֵעִיר אֶת־מְאַהֲבַיִךְ
eos faciam venire & : eis ab tua anima est emota quibus , te super
עָלַיִךְ אֵת אֲשֶׁר־נָקְעָה נַפְשֵׁךְ מֵהֶם וַהֲבֵאתִים
,Schoah &,Pekod ,Chasdim omnes & ,Babel Filios .undique te adversum
23 עָלַיִךְ מִסָּבִיב׃ בְּנֵי בָבֶל וְכָל־כַּשְׂדִּים פְּקוֹד וְשׁוֹעַ
,magistratum &,duces ,desiderii electos , eos Assur filios omnes,Coah &
וְקוֹעַ כָּל־בְּנֵי אַשּׁוּר אוֹתָם בַּחוּרֵי חֶמֶד פַּחוֹת וּסְגָנִים
.ipsos omnes equorum ascensores ,invitatos & triarios , ipsos universos
כֻּלָּם שָׁלִשִׁים וּקְרוּאִים רֹכְבֵי סוּסִים כֻּלָּם׃
, scutum populorum cœtu in & ,rota & ,currus ,abeda te super venient Et
24 וּבָאוּ עָלַיִךְ הֹצֶן רֶכֶב וְגַלְגַּל וּבִקְהַל עַמִּים צִנָּה
eorum facies ad dabo & : undique te contra ponent galeam &,clypeum &
וּמָגֵן וְקוֹבַע יָשִׂימוּ עָלַיִךְ סָבִיב וְנָתַתִּי לִפְנֵיהֶם
,te in meum zelum dabo Et .suis judiciis in te judicabunt &,judicium
25 מִשְׁפָּט וּשְׁפָטוּךְ בְּמִשְׁפְּטֵיהֶם׃ וְנָתַתִּי קִנְאָתִי בָּךְ
, removebunt tuas aures & ,tuum nasum : furore in tecum facient &
וְעָשׂוּ אוֹתָךְ בְּחֵמָה אַפֵּךְ וְאָזְנַיִךְ יָסִירוּ
,capient tuas filias & ,tuos filios Ipsi .cadet gladio in tuū novissimum &
וְאַחֲרִיתֵךְ בַּחֶרֶב תִּפּוֹל הֵמָּה בָּנַיִךְ וּבְנוֹתַיִךְ יִקָּחוּ
:tuis vestimētis te faciēt exuere Et .igni in devorabitur tuū novissimum &
26 וְאַחֲרִיתֵךְ תֵּאָכֵל בָּאֵשׁ׃ וְהִפְשִׁיטוּךְ אֶת־בְּגָדָיִךְ
, te à tuam fœditatem faciam cessare Et .tuæ gloriæ vasa tollent &
27 וְלָקְחוּ כְּלֵי תִפְאַרְתֵּךְ׃ וְהִשְׁבַּתִּי זִמָּתֵךְ מִמֵּךְ
tuos oculos levabis non & : Ægypti terra de tuam fornicationem &
וְאֶת־זְנוּתֵךְ מֵאֶרֶץ מִצְרָיִם וְלֹא־תִשְׂאִי עֵינַיִךְ
dixit sic Quia .amplius recordaberis non Ægypti & , eos ad
28 אֲלֵיהֶם וּמִצְרַיִם לֹא תִזְכְּרִי־עוֹד׃ כִּי כֹה אָמַר
, manum in : odisti quos manum in te dans ego Ecce : Deus Dominus
אֲדֹנָי יֱהוִֹה הִנְנִי נֹתְנָךְ בְּיַד אֲשֶׁר שָׂנֵאת בְּיַד
tollent & , odio in tecum agent Et .eis ab tua anima est remota quibus
29 אֲשֶׁר־נָקְעָה נַפְשֵׁךְ מֵהֶם׃ וְעָשׂוּ אוֹתָךְ בְּשִׂנְאָה וְלָקְחוּ
nuditas revelabitur &:nudam &,nudam te dimittent &,tuū laborem omnem
כָּל־יְגִיעֵךְ וַעֲזָבוּךְ עֵירֹם וְעֶרְיָה וְנִגְלָה עֶרְוַת
ista Faciendo .tuæ fornicationes &,tua fœditas & ,tuarū fornicationū
30 זְנוּנַיִךְ וְזִמָּתֵךְ וְתַזְנוּתָיִךְ׃ עָשֹׂה אֵלֶּה
.earum idolis in te polluisti quibus super ,gentes post te fornicando in : tibi
לָךְ בִּזְנוֹתֵךְ אַחֲרֵי גוֹיִם עַל אֲשֶׁר־נִטְמֵאת בְּגִלּוּלֵיהֶם׃
Sic .tua manu in ejus calicem dabo & : ambulâsti tuæ sororis via In
31 32 בְּדֶרֶךְ אֲחוֹתֵךְ הָלָכְתְּ וְנָתַתִּי כוֹסָהּ בְּיָדֵךְ׃ כֹּה
: latum & ,profundum bibes tuæ sororis Calicem :Deus Dominus dixit
אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִֹה כּוֹס אֲחוֹתֵךְ תִּשְׁתִּי הָעֲמֻקָּה וְהָרְחָבָה
, Ebrietate .continendum ad magnus ,subsannandum ad & ,ridendum ad eris
33 תִּהְיֶה לִצְחֹק וּלְלַעַג מִרְבָּה לְהָכִיל׃ שִׁכָּרוֹן
tuæ sororis calice ,desolationis & ,stuporis calice : repleberis dolore &
וְיָגוֹן תִּמָּלֵאִי כּוֹס שַׁמָּה וּשְׁמָמָה כּוֹס אֲחוֹתֵךְ
, confringes ejus testas & , exprimes & , illum bibes Et .Someron
34 שֹׁמְרוֹן׃ וְשָׁתִית אוֹתָהּ וּמָצִית וְאֶת־חֲרָשֶׂיהָ תְּגָרֵמִי
.Deus Dominus dixit ,sum locutus ego quia : evelles tua ubera &
וְשָׁדַיִךְ תְּנַתֵּקִי כִּי אֲנִי דִבַּרְתִּי נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִֹה׃

Versio VULG. LAT.

19 Multiplicavit enim fornicationes
suas, recordans dies adolescentiæ
suæ, quibus fornicata est in terra
20 Ægypti. Et insanivit libidine
super concubitum eorum, quorū
carnes sunt ut carnes asinorum :
& sicut fluxus equorum, fluxus
21 eorum. Et visitâsti scelus adolescentiæ tuæ, quando subacta sunt
in Ægypto ubera tua, & confractæ sunt mammæ pubertatis tuæ.
22 Propterea Ooliba, hæc dicit Dominus Deus ; Ecce ego suscitabo
omnes amatores tuos contra te,
de quibus satiata est anima tua :
& congregabo eos adversùm te
23 in circuitu ; Filios Babylonis,&
universos Chaldæos, nobiles, tyrannósque & principes, omnes
filios Assyriorum, juvenes formâ
egregiâ,duces & magistratus universos, principes principum, &
nominatos ascensores equorum :
24 Et venient super te instructi curru & rotâ, multitudo populorum : loricâ, & clypeo, & galeâ
armabuntur contra te undique :
& dabo coram eis judicium, &
25 judicabunt te judiciis suis. Et
ponam zelum meum in te, quem
exercent tecum in furore: nasum
tuum, & aures tuas præcîdent :
& quæ remanserint, gladio concident : ipsi filios tuos, & filias
tuas capient;& novissimum tuum
26 devorabitur igni. Et denudabunt te vestimentis tuis, & tol-
27 lent vasa gloriæ tuæ. Et requiescere faciam scelus tuum de te,et
fornicationem tuam de terra Ægypti : nec levabis oculos tuos
ad eos, & Ægypti non recorda-
28 beris ampliús. Quia hæc dicit
Dominus Deus;Ecce ego tradam
te in manus eorum, quos odisti :
in manus, de quibus satiata est
29 anima tua. Et agent tecum in
odio, & tollent omnes labores
tuos, & dimittent te nudam, &
ignominiâ plenam, & revelabitur ignominia fornicationum
tuarum, scelus tuum, & fornica-
30 tiones tuæ. Fecerunt hæc tibi,
quia fornicata es post Gentes,
inter quas polluta es in idolis
31 earum. In via sororis tuæ ambulâsti : & dabo calicem ejus in
32 manu tua. Hæc dicit Dominus
Deus ; Calicem sororis tuæ bibes
profundum & latum : eris in derisum,& in subsannationem,quæ
33 est capacissima. Ebrietate, &
dolore repleberis : calice mœroris, & tristitiæ, calice sororis
34 tuæ Samariæ. Et bibes illum, &
epotabis usque ad fæces, & fragmenta ejus devorabis, & ubera
tua lacerabis : quia ego locutus
sum, ait Dominus Deus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

19 Καὶ ἐπλήθυνας τὴν πορνείαν σου, τοῦ ἀναμνῆ-
σαι (α) ἡμέραν νεότητός σου, ἐν αἷς ἐπόρνευ-
20 σας ἐν Αἰγύπτῳ, Καὶ ἐπέθου ἐπὶ τοὺς Χαλ-
δαίους, ὧν (β) ὡς ὄνων αἱ σάρκες αὐτῶν,
21 καὶ αἰδοῖα ἵππων τὰ αἰδοῖα αὐτῶν. Καὶ
ἐπεσκέψω τὴν ἀνομίαν νεότητός σου, ἃ ἐποί-
εις ἐν Αἰγύπτῳ ἐν τῷ καταλύματί σου, οὗ
22 οἱ μαστοὶ (γ) νεότητός σου. Διὰ τοῦτο (δ)
Ὀολιβὰ, τάδε λέγει (ε) κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ
ἐξεγείρω τοὺς ἐραστάς σου ἐπὶ σὲ, ἀφ᾽ ὧν
ἀπέστη ἡ ψυχή σου ἀπ᾽ αὐτῶν, καὶ ἐπάξω
23 αὐτοὺς ἐπὶ σὲ κυκλόθεν, Υἱοὺς Βαβυλῶ-
νος, καὶ πάντας τοὺς Χαλδαίους, (ζ) Φακοὺκ,
καὶ Σουὲ, καὶ Ὑχουὲ, καὶ πάντας υἱοὺς Ἀσσυρίων
μετ᾽ αὐτῶν, νεανίσκους ἐπιλέκτους, ἡγεμόνας
καὶ στρατηγοὺς, πάντας τριστάτας καὶ ὀνομαστοὺς,
24 ἱππεύοντας ἐφ᾽ ἵππων. (η) Καὶ πάντες
ἥξουσιν ἐπὶ σὲ ἀπὸ Βορρᾶ, ἅρματα καὶ τρο-
χοὶ (θ) μετ᾽ ὄχλου λαῶν, θυρεοὶ καὶ πέλται,
(ι) καὶ βαλεῖ φυλακὴν ἐπὶ σὲ κύκλῳ. καὶ δώσω
πρὸ προσώπου αὐτῶν κρίμα, καὶ ἐκδικήσουσί
25 σε ἐν τοῖς κρίμασιν αὐτῶν. Καὶ δώσω τὸν
ζῆλόν μου ἐν σοὶ, καὶ ποιήσουσι μετὰ σοῦ ἐν
ὀργῇ θυμοῦ (κ). μυκτῆρά σου καὶ ὦτά σου
ἀφελοῦσι, καὶ τοὺς καταλοίπους σου ἐν ῥομφαίᾳ
καταβαλοῦσιν. αὐτοὶ (λ) υἱούς σου καὶ θυγατέ-
ρας σου λήψονται, καὶ τοὺς καταλοίπους σου (μ)
26 πῦρ καταφάγεται. Καὶ ἐκδύσουσί σε τὸν ἱμα-
τισμόν σου, καὶ λήψονται τὰ σκεύη τῆς καυχή-
27 σεώς σου. Καὶ ἀποστρέψω τὰς ἀσεβείας σου
ἐκ σοῦ, καὶ τὴν πορνείαν σου ἐκ γῆς Αἰγύπτου·
καὶ οὐ μὴ ἄρῃς τοὺς ὀφθαλμούς σου ἐπ᾽ αὐτοὺς,
28 καὶ Αἰγύπτου οὐ μὴ μνησθῇς οὐκέτι. Διότι τά-
δε λέγει κύριος κύριος (ν), Ἰδοὺ ἐγὼ
παραδίδωμί σε εἰς χεῖρας ὧν μισεῖς, ἀφ᾽
29 ὧν ἀπέστη ἡ ψυχή σου ἀπ᾽ αὐτῶν. Καὶ ποι-
ήσουσιν ἐν σοὶ ἐν μίσει, καὶ λήψονται πάν-
τας τοὺς πόνους σου καὶ τοὺς μόχθους σου, καὶ
ἔσῃ γυμνὴ καὶ (ξ) αἰσχύνουσα, καὶ ἀποκαλυ-
φθήσεται (ο) αἰσχύνη πορνείας σου, καὶ ἀσέβεια
30 σου. καὶ ἡ πορνεία σου Ἐποίησε ταῦτά σοι,
ἐν τῷ ἐκπορνεῦσαί σε ὀπίσω ἐθνῶν, καὶ ἐ-
μιαίνου ἐν τοῖς (π) ἐνθυμήμασιν αὐτῶν.
31 Ἐν τῇ ὁδῷ τῆς ἀδελφῆς σου ἐπορεύθης· καὶ
δώσω τὸ ποτήριον αὐτῆς εἰς (˝) χεῖράς σου.
32 Τάδε λέγει (ρ) κύριος, Τὸ ποτήριον τῆς ἀ-
δελφῆς σου πίεσαι, τὸ βαθὺ καὶ τὸ πλατὺ,
(σ) καὶ τὸ πλεονάζον τοῦ συντελέσαι μέθην.
33 (τ) Καὶ ἐκλύσεως πλησθήσῃ, καὶ τὸ ποτή-
ριον ἀφανισμοῦ, ποτήριον ἀδελφῆς σου
34 Σαμαρείας, Πίεσαι αὐτό· καὶ τὰς ἑορτὰς
καὶ τὰς νουμηνίας αὐτῆς ἀποστρέψω· διότι
ἐγὼ (υ) λελάληκα, λέγει κύριος.

Et multiplicâsti fornicationem 19
tuam, recordando (n) diei adolescentiæ suæ, in quibus fornicata
es in Ægypto: Et adhæsisti super 20
Chaldæos, quorum, velut asinorū,
carnes eorum, & (o) verenda equorū, verenda eorum: Et (p) vi- 21
sitâsti iniquitatem adolescentiæ
tuæ, quæ faciebas in Ægypto in
diversorio tuo, ubi mammæ (q)
adolescentiæ tuæ. Propterea Ooli- 22
ba, hæc dicit Domin⁹; Ecce ego
suscito amatores tuos super te; à
quibus recessit anima tua ab eis :
& adducam eos super te per circuitū, Filios Babylonis, et omnes 23
Chaldæos, (r) Phacuc, & Suc, &
Hychue, & omnes filios Assyriorū
cum eis, juvenes electos, duces, et
magistratus, omnes (s) tristatas,
et nominatos equitantes in equis.
Et cuncti venient super te ab A- 24
quilone, currus, et rotæ cum multitudine populorū, clypei, & peltæ: & (t) mittet custodiā super te
in circuitu. Et dabo ante faciem
eorum judicium : & judicabunt
te in judiciis suis. Et dabo zelū 25
meū in te: & facient tecum in ira
furoris. Nasum tuū, et aures tuas
auferent: et reliquos tuos in gladio dejicient. Ipsi filios tuos, et
filias tuas tollent: et residuos tuos
devorabit ignis : Et denudabunt 26
te vestimento tuo, et tollent vasa
gloriationis tuæ. Et avertā impi- 27
etates tuas à te, et fornicationem
tuam de terra Ægypti: et non e-
levabis oculos tuos ad eos: et Ægypti non recordaberis ampliús.
Quia hæc dicit Dominus Domi- 28
nus ; Ecce ego trado te in manus
eorum, quos odio habes, à quibus
recessit anima tua ab eis. Et fa- 29
cient in te in odio: et tollent omnes labores tuos, et (u) ærumnas
tuas: et eris nuda, et ignominiæ
plena : et revelabitur ignominia
fornicationis tuæ. Et impietas tua,
et fornicatio tua Fecerunt hæc 30
tibi, in fornicando te post gentes:
et polluta es in cogitationibus e-
arum. In via sororis tuæ ambu- 31
lâsti: et dabo calicem ejus in ma-
nus tuas. Hæc dicit Dominus ; 32
Calicem sororis tuæ bibes, profundum, et (x) latū, et abundantē ad
complendam ebrietatē: Et disso- 33
lutione repleberis: et calicē perditionis, calicem sororis tuæ Samariæ Bibes (y) illum : et festivita- 34
tes, et neomenias ejus auferam :
quia ego loquut⁹ sum, ait Domin⁹.

MS.A. (α) ἡμέρας (β) ἦσαν ὡς (γ) ἔπεσαν νεότητός (δ) Ὀλιβὰ, (ε) κύριος κύριος ὁ θεὸς
ἐπὶ σὲ Ὀλιβὰ, Ἰδοὺ (ζ) καὶ Φουδ, καὶ Σουδ, καὶ Λουδ, καὶ πάντας τοὺς υἱοὺς (η) Πάν-
τες (θ) ἵπποι μετὰ (ι) καὶ περικεφαλαίαι, καὶ βαλεῖ ἐπὶ σὲ προφυλακὴν κύ-
κλῳ, (κ) μου. (λ) τοὺς υἱούς σου καὶ τὰς θυγατέρας (μ) ἐνπρήσουσιν ἐν πυ-
ρί. Καὶ (ν) ὁ θεός. (ξ) ἀσχημονοῦσα, (ο) ἡ αἰσχύνη σου, πορνεία σου, (π) ἐ-
πιθυμήμασιν (˝) τὰς χεῖράς (ρ) ἀδωναῒ κύριος, κύριος ὁ θεὸς, (σ) ἔσται
εἰς γέλωτα, καὶ εἰς μυκτηρισμὸν τὸ πλεονάζον (τ) Καὶ ἐκχεῶ ὅπως πληθή-
σῃ, καὶ τὸ ποτήριον τῆς ἀδελφῆς σου Σαμαρείας, ποτήριον ἀφανισμοῦ Πίεσαι
αὐτὸ, καὶ ἐκστραγγιεῖς· καὶ τὰς ἑορτὰς (υ) ἐλάλησα, λέγει κύριος κύριος ὁ θεός.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

19 וְאַסְגֵיאַת יַת טַעֲוָתַהּ לְאַדְכָּרָא יַת יוֹמִין דְמִלְקַדְמִין דִטְעַת בְּהוֹן כַּד הֲוַת בְּאַרְעָא
20 דְמִצְרָיִם׃ וְאִתְרְעִיאַת לְמֶהֱוֵי שְׁמוֹטְהָא לְהוֹן דִבְסַר חֲמָרִין בִּסְרֵיהוֹן וְצַחֲנַת סוּסְוָן
21 צַחֲנַתְהוֹן׃ וְאַדְכַּרְתְּ יַת חוֹבֵי עֵצַת חִטְאִךְ דְמִלְקַדְמִין בְּמֶעְבְּדִיךְ מִמִּצְרַיִם רַחְמוּ בְּדִיל
22 חֶטְאֵי יַנְקוּתִיךְ׃ בְּכֵן אָהֳלִיבָה כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים הָא אֲנָא מַיְתֵי בְּגַלֵּי יַת רְחִימַךְ עֲלָךְ
23 יַת דְקָצַת נַפְשִׁיךְ בְּהוֹן וְאַיְתִנוּן עֲלָךְ מִסְחוֹר סְחוֹר׃ בְּנֵי בָבֶל וְכָל כַּסְדָאֵי פְּקוֹדָאֵי וְשׁוֹעָאֵי
וְקוֹעָאֵי כָּל בְּנֵי אַתּוּר עִמְּהוֹן עוּלֵמֵי חֶמְדְתָא שִׁלְטוֹנִין וְטוּרְנִין כּוּלְהוֹן גִּבָּרִין מְזַמְּנִין
24 רָכְבֵי סוּסְוָן כּוּלְהוֹן׃ וְיֵיתוֹן עֲלָךְ בְּמָאנֵי זֵינָא בִּרְתִיכִין וְגַלְגְלִין וּמַשִּׁרְיַת עַמְמִין דִמְזַיְנִין
בַּעֲגִילִין וְקוּלְסִין יְמַנּוּן עֲלָךְ סְחוֹר סְחוֹר וְאֶתֵּן קֳדָמֵיהוֹן פּוּרְעֲנוּת דִינִין וְיִתְפָּרְעוּן מִנִּיךְ
25 בְּנִימוֹסֵיהוֹן׃ וְאֶתֵּן פּוּרְעֲנוּתִי בִּיךְ וְיִתְפָּרְעוּן מִנִּיךְ בִּרְגַז רַבְרְבַיִךְ וְיַקִּירַיִךְ יִגְלוֹן וְעַמִּיךְ
26 בְּחַרְבָּא יִתְקַטְלוּן אִנּוּן בְּנַךְ וּבְנָתַךְ יִשְׁבּוֹן וּשְׁפַר אַרְעִיךְ יִתּוֹקַד בְּנוּרָא׃ וְיַשְׁלְחוּנִיךְ
27 לְבוּשֵׁי יְקָרִיךְ וְיִסְבוּן מָאנֵי תוּשְׁבַּחְתִּיךְ׃ וַאֲבַטֵּל חוֹבֵי עֵצַת חִטְאִךְ מִנִּיךְ וְיַת פּוּלְחַן
טַעֲוָתִיךְ דַהֲוָת עִמִּיךְ כַּד הֲוֵית בְּאַרְעָא דְמִצְרַיִם וְלָא תִזְקְפִין עֵינִיךְ לְהוֹן וְטַעֲוַת
28 מִצְרָאֵי לָא תִדְכְּרִין עוֹד׃ אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים הָא אֲנָא מְסַר לִיךְ בְּיַד דְסָנֵית
29 בְּיַד דְקָצַת נַפְשִׁיךְ בְּהוֹן׃ וְיִתְפָּרְעוּן מִנִּיךְ בִּדְבָבוּ וְיִשְׁבּוֹן יַת כָּל לֵיאוּתִיךְ וְיִשְׁבְּקוּנִיךְ
30 מְטַלְטְלָא וּשְׁבִיקָא וְתִתְגְּלֵי בַּהֲתַת טַעֲוָתִיךְ וְחוֹבֵי עֵצַת חִטְאִךְ וְזָדוֹנִיךְ׃ חוֹבַיִךְ
31 גְרַמוּ אִלֵּין לִיךְ בִּדְטְעֵית בָּתַר עַמְמַיָא וְאִסְתְּאַבְתְּ בְּפוּלְחַן טַעֲוָתְהוֹן׃ בְּאוֹרַח
32 אֲחָתִיךְ הַלֵּיכְתְּ וְאֶתֵּן כָּס פּוּרְעֲנוּתַהּ בִּידִיךְ׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים כָּס פּוּרְעֲנוּת
אֲחָתִיךְ תִּשְׁתִּין תַּקִּיפָא וְחַסִּינְתָא תְּהֵין לְחוּךְ וְלִלְעֵיב מִסְּגֵי עָקָא דְתֵיתֵי עֲלָךְ׃
33 34 הָא כְרַוְיָא וְדָוָן תִּתְמַלְיָן כָּס צְדוּ וְאִשְׁתְּמָמוּ כָּס פּוּרְעֲנוּת אֲחָתִיךְ שֹׁמְרוֹן׃ וְתִשְׁתִּין
יָתַהּ וְתִגְמְרִין וְיַת פּוּרְעֲנוּתַהּ תְּקַבְּלִין וּבִסְרִיךְ תְּתַלְּשִׁין אֲרֵי אֲנָא גְזֵרִית בְּמֵימְרִי
אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et multiplicavit idola sua ut recordaretur dierum antiquorum, in quibus 19
errabat quando erat in terra Ægypti. Et elegit ut esset ministrans eis, 20
quorum carnes sunt sicut carnes asinorum, & sicut fluxus equorum est fluxus
eorum. Et recordata es delictorum nefandi consilii tui, quæ ab initio, 21
quando faciebas ex Ægypto *amorem* propter peccata adolescentiæ tuæ.
Propterea Ooliba hæc dicit Dn̄s Deus : Ecce ego inducam publicè ama- 22
tores tuos contra te, quos detestata fuerat anima tua : & adducam eos
contra te undequaque. Filios Babylonis, & omnes Chaldæos, Pecodaitas 23
& Soaitas, & Coaitas, omnes filios Assur cum eis, juvenes eximios,
principes & tyrannos, universos fortes & præparatos, ascensores equorum universos. Et venient contra te cum armis bellicis, cum curribus & 24
rotis; & copias populorum qui armati sunt scutis & galeis, constituent
super te in circuitu, & dabo coram eis ultionem judiciorum, & ultionem
sument ex te pro legibus suis. Et dabo ultionem meam in te, & ultionem 25
sument ex te in furore. Principes tui & nobiles tui transmigrabunt, &
populus tuus gladio occidetur : ipsi filios tuos & filias tuas in captivitatem ducent, & pulchritudo terræ tuæ succendetur igni. Et expoliabunt te 26
vestimentis gloriæ tuæ, & tollent vasa laudis tuæ. Et cessare faciam delicta 27
flagitiorum tuorum à te, & cultum idolorum tuorum quem habebas quando eras in terra Ægypti, & non levabis ad ea oculos tuos, & idolorum
Ægyptiorum non recordaberis amplius. Quia hæc dicit Dn̄s Deus : Ecce 28
ego tradam te in manum eorum quos odisti, & in manum eorum quos detestata est anima tua. Et ultionem sument ex te in odio, & capient omnes 29
labores tuos, & derelinquent te transmigrantem & derelictam, & revelabitur confusio scortationū tuarū, & delicta tuorum nefandorum consiliorū,
& superbia tua. Et peccata tua conciliârunt tibi hæc, eò quòd errâsti se- 30
quens populos, & polluta es cultu idolorū eorum. In via sororis tuæ am- 31
bulâsti: & dabo calicem ultionis ejus in manu tua. Hæc dicit Dn̄s Deus : 32
Calicem ultionis sororis tuæ bibes grandē & fortē, & eris in derisum & in
subsannationē præ multitudine tribulationis quæ veniet super te. Ecce sicut 33
ebri⁹, & mœrens impleberis calice desolationis & stuporis, calice ultionis sororis tuæ Samariæ. Et bibes illū, & consummabis, & ultionē recipies, 34
& carnes tuas lacerabis ; quia ego decrevi in verbo meo, dicit Dn̄s Deus.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

19 * ܘܐܣܓܝܬ ܙܢܝܘܬܗ. ܘܐܬܕܟܪܬ ܝܘܡܬܐ ܕܛܠܝܘܬܗ. ܕܙܢܝܬ ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܘܐܬܢܩܦܬ
20 ܠܚܛܗܝܗܘܢ. ܕܒܣܪܗܘܢ ܐܝܟ ܒܣܪܐ ܕܚܡܪܐ. ܘܫܒܝܗܘܢ ܐܝܟ ܫܒܝܐ ܕܪܟܫܐ. * ܘܦܩܕܬܝ
21 ܥܘܠܐ ܕܛܠܝܘܬܟܝ. ܟܕ ܐܬܛܠܡܬܝ ܒܡܨܪܝܢ. ܘܐܬܡܥܟܘ ܬܕܝܟܝ ܕܛܠܝܘܬܟܝ. * ܡܛܠ ܗܢܐ
22 ܐܘܗܠܝܒܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ ܡܥܝܪ ܐܢܐ ܥܠܝܟܝ ܠܪܚܡܝܟܝ. ܠܗܠܝܢ ܕܐܬܢܟܪܬ
ܢܦܫܟܝ ܡܢܗܘܢ. ܘܐܝܬܐ ܐܢܘܢ ܥܠܝܟܝ. * ܘܢܚܕܪܘܢܟܝ ܒܢܝ ܒܒܠ. ܘܟܠܗܘܢ ܟܠܕܝܐ.
23 ܦܘܛ ܘܠܘܕ ܘܩܘܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܒܢܝ ܐܬܘܪ ܥܡܗܘܢ. ܥܠܝܡܐ ܕܪܓܝܓܐ. ܡܪܘܬܐ ܘܫܠܝܛܢܐ.
ܟܠܗܘܢ ܓܒܪܐ ܕܩܕܪ ܪܟܒܝ ܣܘܣܘܬܐ. * ܘܢܐܬܘܢ ܥܠܝܟܝ ܡܢ ܓܪܒܝܐ. ܡܙܝܢܝܢ
24 ܥܡ ܪܟܫܐ. ܘܥܡ ܡܪܟܒܬܐ ܘܥܡ ܓܘܫܐ ܕܥܡܡܐ. ܒܪܘܡܚܐ ܘܒܬܪܣܐ ܘܒܟܘܒܥܐ ܢܚܕܪܘܢܟܝ. ܘܐܬܠ
ܩܕܡܝܗܘܢ ܕܝܢܐ. ܘܢܕܘܢܘܢܟܝ ܒܕܝܢܝܗܘܢ. * ܘܐܬܠ ܛܢܢܝ ܒܟܝ. ܘܢܩܛܥܘܢ ܐܢܦܝܟܝ
25 ܒܚܡܬܐ. ܘܐܕܢܝܟܝ ܢܦܣܩܘܢ. ܘܚܪܬܟܝ ܒܚܪܒܐ ܬܦܠ. ܗܢܘܢ ܢܕܒܪܘܢ ܒܢܝܟܝ ܘܒܢܬܟܝ.
ܘܚܪܬܟܝ ܬܬܐܟܠ ܒܢܘܪܐ. * ܘܢܫܩܠܘܢ ܡܐܢܐ ܕܫܘܒܚܟܝ. ܘܢܫܠܚܘܢܟܝ ܠܒܘܫܝܟܝ.
26 * ܘܐܒܛܠ ܛܢܦܘܬܟܝ ܡܢܟܝ. ܘܙܢܝܘܬܟܝ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܠܐ ܬܪܝܡܝܢ ܥܝܢܝܟܝ
27 ܠܘܬܗܘܢ. ܘܡܨܪܝܢ ܬܘܒ ܠܐ ܬܕܟܪܝܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ ܡܫܠܡ
28 ܐܢܐ ܠܟܝ ܒܐܝܕܝ ܐܬܘܪܝܐ ܕܐܬܢܟܪܬ ܢܦܫܟܝ ܡܢܗܘܢ. * ܘܢܣܪܘܢܟܝ ܒܣܢܝܐܘܬܗܘܢ. ܘܢܣܒܘܢ
29 ܟܠܗ ܥܡܠܟܝ. ܘܢܫܒܩܘܢܟܝ ܥܪܛܠܝܬܐ ܘܥܪܝܬܐ. ܘܢܬܓܠܐ ܨܥܪܐ ܕܙܢܝܘܬܟܝ ܘܕܛܘܠܫܟܝ.
* ܘܡܢ ܙܢܝܘܬܟܝ ܐܬܥܒܕ ܠܟܝ ܗܠܝܢ. ܕܙܢܝܬܝ ܒܬܪ ܥܡܡܐ. ܘܐܬܛܢܦܬܝ
30 ܒܦܬܟܪܝܗܘܢ. * ܘܡܛܠ ܕܐܙܠܬܝ ܒܐܘܪܚܐ ܕܚܬܟܝ. ܐܬܠ ܟܣܗ ܒܐܝܕܝܟܝ. * ܗܟܢܐ
31 ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܟܣܐ ܕܚܬܟܝ ܬܫܬܝܢ. ܥܡܝܩܬܐ ܘܪܘܝܚܬܐ. ܘܬܗܘܝܢ ܠܓܘܚܟܐ
32 ܘܠܡܒܙܚܢܘܬܐ ܪܒܐ ܘܡܫܡܠܝܐ. * ܪܘܝܘܬܐ ܘܕܘܘܢܐ ܬܬܡܠܝܢ. ܟܣܐ ܕܬܡܗܐ ܘܕܚܘܒܠܐ. ܟܣܐ
33 ܕܚܬܟܝ ܫܡܪܝܢ. ܬܫܬܝܢܗ ܘܬܡܨܝܢܗ. * ܘܣܥܪܟܝ ܬܓܙܝܢ. ܘܬܕܝܟܝ ܬܦܣܩܝܢ.
34 ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܡܠܠܬ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ.

Multiplicavit enim ſcortationem ſuam, in 19
memoriam revocans dies adoleſcentiæ ſuæ,
quibus fornicata fuerat in terra Ægypti, Et 20
adhæſerat facinoribus eorum quorum caro
velut aſinorum caro eſt, & ſexus velut ſexus
equorum. Et quidem viſitaveram tibi ſcelus 21
adoleſcentiæ tuæ, quando ſtuprata fuiſti in
Ægypto, & compreſſa fuerint ubera pueritiæ
tuæ. Iccirco ô Aholiba, ſic ait Dominus do- 22
minorum; Ecce concitaturus ſum adverſùm
te omnes amatores tuos, à quibus abhorrue-
rat anima tua, eóſque adducturus contra te:
Téque vallabunt Babylonii & omnes Chal- 23
dæi, Put, Lydia, & Coa, & omnes Aſſyrii
cum eis, juvenes deſideratiſſimi, domini, ac
potentes, omnes viri Cedar equis vecti. Hi 24
te invadentes armati, cum aurigis & rotis, &
turmis populorum, lanceis, ſcutis, galeíſque
circundabunt te: & proponam eis judicia, &
judicabunt te judiciis ſuis. Ponámque con- 25
tra te zelum meum, & confringent nares tuas
in furore, & aures tuas avellent, & ad extre-
mum gladio occumbes. Iidem filios filiáſque
tuas abducent, & tu tandē igne conſumêris:
Capient vaſa tua glorioſiſſima, & nudabunt 26
te veſtibus tuis. Sic ceſſare faciam cogita- 27
tionem tuam à te, & ſcortationem tuam de
terra Ægypti; adeò ut nec attollas oculos tu-
os ad eos, nec Ægypti poſt hac recorderis.
Idcirco, ſic ait Dominus dominorum; Ecce 28
tradam te in manum Aſſyriorum à quibus
abhorruit anima tua: Qui te odio ſuo per- 29
cutiant, totum laborem tuum rapiant, &
nudam gelidámque relinquant; atque ita re-
tegatur ignominia ſcortationis tuæ & flagitii
tui. Propter ſcortationem tuam hæc tibi fi- 30
ent, eò quòd ſcortata ſis poſt gentes, & ido-
lis earum contaminata. Et eò quòd ambula- 31
veris in viis ſororis tuæ, dabo tibi calicem
ejus in manus tuas. Sic ait Dominus domi- 32
norum, Calicem ſororis tuæ bibes, profun-
dum ac latum, eríſque deriſui et ludibrio
maximo et integro. Ebrietate et miſeriâ re- 33
pleberis: calicem ſtuporis et excidii, calicem
ſororis tuæ Samariæ bibes et exſuges: Crines 34
tuos tondebis, et ubera tua reſecabis: nam
ego locutus ſum, ait Dominus dominorum.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

19 * وأكثرت زناك لتذكري أيام صبيتك التي فيها زنيت في مصر * وملت الى الكلدانيين
20 الذين كانت أجسادهم مثل الحمير * ومذاكير الخيل مذاكيرهم * وتعهدت إثم صبيتك *
21 * لأجل هذا يا أوليبا هكذا يقول الرب الرب * ها أنا أثير عشاقك عليك * التي بعدت
22 نفسك منهم * وأجلبهم اليك من حولك * بني بابل * وجميع الكلدانيين * فاقوت وسوت
23 ولود * وجميع بني الموصليين معهم * الشبان المختارين * القواد والأمراء * جميع المثلثين
والمسميين * الفرسان على الخيل * جميعهم يأتون اليك من الجربياء * مركبات وفرسان مع
24 جميع الشعوب * أترسة ونبال * ويلقون عليك حرسا من حولك * وأعطي أمام وجههم حكما *
25 ويقتصون منك بأحكامهم * وأدفع غيرتي فيك * ويصنعون معك بزجر غضبي * وينزعون
أنفك وأذنيك * ويقتلون بقاياك بالسيف * هم يأخذون بنيك وبناتك * ويبيدون بقاياك بالنار *
26 * ويخلعون عنك ثوبك * ويأخذون أواني افتخارك * وأصرف عنك نفاقك * وزناك من
27 مصر * ولا ترفعين عينيك اليهم * ولا تذكرين مصر أيضا * لأجل هذا هكذا يقول
28 الرب الرب * ها أنا أدفعك الى أيدي مبغضيك الذين بعدت نفسك منهم * ويصنعون
29 فيك بالبغضة * ويأخذون جميع أتعابك وكدك * ويصيري عريانة ومفضوحة * وينكشف
فضيحة زناك ونفاقك * فزناك صنع بك هذه * عند ما زنيت خلف الأمم * وتنجست
30 بفكرانهم * وانطلقت في طريق أختك * وأدفع كأسها في يديك * هكذا يقول الرب
31 الرب * كأس أختك تشربي * العميق الواسع المفزع * لتكملي سكرا وتمتلي انحلالا * كأس
32 الإبادة * وكأس أختك سامرون تشربيه وتمصمصين * وأصرف أعيادها ورؤوس شهورها * من
33 أجل أني أنا تكلمت يقول أدوناي الرب *
34

Multiplicâſti ſcortationem tuam, recor- 19
dando te dierum adoleſcentiæ tuæ, qui-
bus fornicata fueras in Ægypto. Et 20
declinâſti ad Chaldæos quorum corpora
erant ut aſinorum, & virilia equorum
virilia ipſorum: Et reviſiſti iniquita- 21
tem adoleſcentiæ tuæ. Propterea O Ao- 22
liba, ſic ait Dominus Dominus; Ecce ego
concitabo amaſios tuos contra te, à qui-
bus averſus eſt animus tuus, & adducam
eos ad te de circuitu tuo; Filios Babelis, 23
omnéſque Chaldæos, Phacuth, Suth, &
Lud, omnéſque filios Aſſyriorum cum eis,
juvenes dilectos, duces & imperatores,
omnes triarios, atque celebres, equites ſu-
per equos. Hi omnes ad te venient ab 24
Aquilone, currus, & equites, cum uni-
verſis populis, clypeis, & ſagittis: &
collocabunt adverſùm te cuſtodes circun-
quaque: ponámque ante faciem eorum
judicium, & ultionem à te repetent in ju-
diciis ſuis. Ponam in te zelum meum, 25
agéntque tecum in ira furoris mei, aufe-
rent naſum tuum & aures tuas, & reli-
quias tuas gladio trucidabunt. Hi tollent
filios filiáſque tuas, & reliquias tuas
igne conſument: Detrahent à te veſtem 26
tuam, rapiéntque vaſa gloriationis tuæ.
Et avertam à te impietatem tuam, & 27
ſcortationem tuam ab Ægypto: & non
attolles oculos tuos ad eos, neque recor-
daberis ampliùs Ægypti. Propterea 28
ſic dicit Dominus Dominus; En ego tra-
diturus ſum te in manus oſorum tuorum,
à quibus averſus eſt animus tuus: Qui 29
cum odio tecum agent, capiéntque omnes
labores tuos & operam tuam: eríſque nu-
da, & verecunda: & retegetur verecun-
dia ſcortationis tuæ & impietatis tuæ.
Scortatio quidem tua hæc tibi fecit, quan- 30
doquidem ſcortata es poſt gentes, téque
polluiſti cogitationibus earum, Et ab- 31
iiſti in via ſororis tuæ: dabóque cali-
cem ejus in manus tuas. Ita dicit Do- 32
minus Dominus; Calicem ſororis tuæ bi-
bes, profundum, latum, horrendum. ut 33
perfectè inebrieris, & implearis torpo-
re; calicem perditionis, calicem ſororis
tuæ Samariæ bibes & exuges: Au- 34
feràmque feſtivitates ejus & principia
menſium ejus: quoniam ego locutus ſum,
dicit Adonai Dominus.

projeciſti & ,mei es oblita quòd eo Pro :Deus Domin⁹ dixit ſic Propterea
35 לָכֵן כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהֹוִה יַעַן שָׁכַחַתְּ אוֹתִי וַתַּשְׁלִיכִי
.tuas fornicationes & ,*tuum ſcelus* porta tu etiã & :tuũ corp⁹ poſt me
אוֹתִי אַחֲרֵי גַוֵּךְ וְגַם־אַתְּ שְׂאִי זִמָּתֵךְ וְאֶת־תַּזְנוּתָיִךְ׃
& ,Aholah judicabis nónne,hominis Fili :me ad Dominus dixit Et
36 וַיֹּאמֶר יְהוָה אֵלַי בֶּן־אָדָם הֲתִשְׁפּוֹט אֶת־אָהֳלָה וְאֶת־
,ſunt adulteratæ Quia .earũ abominationes eis nuntia Et ? Aholibah
37 אָהֳלִיבָה וְהַגֵּד לָהֶן אֵת תּוֹעֲבוֹתֵיהֶן׃ כִּי נִאֵפוּ
etiam & :ſunt fornicatæ ſuis idolis cum &,earũ manibus in ſanguis &
וְדָם בִּידֵיהֶן וְאֶת־גִּלּוּלֵיהֶן נִאֵפוּ וְגַם אֶת־
Amplius .*comedendũ* ad eis fecerãt tranſire,mihi genuerũt quos ,ſuos filios
38 בְּנֵיהֶן אֲשֶׁר יָלְדוּ־לִי הֶעֱבִירוּ לָהֶם לְאָכְלָה׃ עוֹד
& ,illa die in meũ ſanctuariũ polluerunt :mihi fecerunt hoc
זֹאת עָשׂוּ לִי טִמְּאוּ אֶת־מִקְדָּשִׁי בַּיּוֹם הַהוּא וְאֶת־
, ſuis idolis ſuos filios *eos immolando in* Et.prophanârunt mea ſabbatha
39 שַׁבְּתוֹתַי חִלֵּלוּ׃ וּבְשַׁחֲטָם אֶת־בְּנֵיהֶם לְגִלּוּלֵיהֶם
ecce & :illud *polluendũ ad* ,illa die in meũ ſanctuariũ ad ingrediebãtur &
וַיָּבֹאוּ אֶל־מִקְדָּשִׁי בַּיּוֹם הַהוּא לְחַלְּלוֹ וְהִנֵּה־
.venientes viros ad miſerunt *quia etiã* Et.meæ dom⁹ medio in fecerũt ſic
40 כֹה עָשׂוּ בְּתוֹךְ בֵּיתִי׃ וְאַף כִּי תִשְׁלַחְנָה לַאֲנָשִׁים בָּאִים
quos *ad* ,venerunt ecce & ,*eos ad* miſſus nuntius quos , longè à
מִמֶּרְחָק אֲשֶׁר מַלְאָךְ שָׁלוּחַ אֲלֵיהֶם וְהִנֵּה־בָאוּ לַאֲשֶׁר
ſuper ſediſti Et .ornamento te ornâſti & ,tuos oculos *coloraſti* ,te laviſti
41 רָחַצְתְּ כָּחַלְתְּ עֵינַיִךְ וְעָדִית עֶדִי׃ וְיָשַׁבְתְּ עַל־
,meũ thymiama & *: ejus facies ad diſpoſita* menſa & ,honorabilem lectum
מִטָּה כְבוּדָּה וְשֻׁלְחָן עָרוּךְ לְפָנֶיהָ וּקְטָרְתִּי
ad & ,ea in pacificæ multitudinis vox Et .eã ſuper poſuiſti,meũ unguentũ&
42 וְשַׁמְנִי שַׂמְתְּ עָלֶיהָ׃ וְקוֹל הָמוֹן שָׁלֵו בָהּ וְאֶל־
dederunt Et .deſerto è , Sabæi adducti ,*hominem multiplicando à* ,*viros*
אֲנָשִׁים מֵרֹב אָדָם מוּבָאִים סוֹבָאִים מִמִּדְבָּר וַיִּתְּנוּ
dixi Et .earũ capita ſuper gloriæ coronam & ,earũ manus *ad* armillas
43 צְמִידִים אֶל־יְדֵיהֶן וַעֲטֶרֶת תִּפְאֶרֶת עַל־רָאשֵׁיהֶן׃ וָאֹמַר
venit Et .*ipſa &* ejus fornicationes *exibunt* nunc : adulteriis inveteratæ
44 לַבָּלָה נִאוּפִים עַתָּה יִזְנֶה תַזְנוּתֶהָ וָהִיא׃ וַיָּבוֹא
,Aholah ad ſunt ingreſſi ſic ,meretricẽ mulierẽ ad *ingredi ſecundùm* :eam ad
אֵלֶיהָ כְּבוֹא אֶל־אִשָּׁה זוֹנָה כֵּן בָּאוּ אֶל־אָהֳלָה
judicabũt ipſi juſti viri Et .*ſceleris* mulieres Aholibah ad &
45 וְאֶל־אָהֳלִיבָה אִשֹּׁת הַזִּמָּה׃ וַאֲנָשִׁים צַדִּיקִם הֵמָּה יִשְׁפְּטוּ
quia :ſanguinẽ effundentium judicio & ,adulterarum judicio eas
אוֹתְהֶם מִשְׁפַּט נֹאֲפוֹת וּמִשְׁפַּט שֹׁפְכוֹת דָּם כִּי
: Deus Dominus dixit ſic Quia .earũ manib⁹ in ſanguis & ,*ipſæ* adulteræ
46 נֹאֲפֹת הֵנָּה וְדָם בִּידֵיהֶן׃ כִּי כֹה אָמַר אֲדֹנָי יֱהֹוִה
.rapinam in &,commotionẽ in eas *dare* & ,cœtum eas *ſuper facere* Aſcẽdere
הַעֲלֵה עֲלֵיהֶם קָהָל וְנָתֹן אֶתְהֶן לְזַעֲוָה וָלָבַז׃
: ſuis gladiis in eas ſuccident & ,*cœtus* lapide eas *ſuper obruent* Et
47 וְרָגְמוּ עֲלֵיהֶן אֶבֶן קָהָל וּבָרֵא אוֹתְהֶן בְּחַרְבוֹתָם
.comburent igni in earũ domos & ,interficient earum filias & ,earum filios
בְּנֵיהֶם וּבְנוֹתֵיהֶם יַהֲרֹגוּ וּבָתֵּיהֶן בָּאֵשׁ יִשְׂרֹפוּ׃
, mulieres omnes erudientur & : terra è fœditatem faciam ceſſare Et
48 וְהִשְׁבַּתִּי זִמָּה מִן־הָאָרֶץ וְנִוַּסְּרוּ כָּל־הַנָּשִׁים
,vos ſuper *veſtrum ſcelus dabunt* Et .veſtrã fœditatẽ ſcd̃m facient non &
49 וְלֹא תַעֲשֶׂינָה כְּזִמַּתְכֶנָה׃ וְנָתְנוּ זִמַּתְכֶנָה עֲלֵיכֶן
.Deus Dominus *ego* quòd ſcietis & *: portabitis veſtrorum idolorum peccata* &
וַחֲטָאֵי גִלּוּלֵיכֶן תִּשֶּׂאינָה וִידַעְתֶּם כִּי אֲנִי אֲדֹנָי יֱהֹוִה׃

CAP. XXIV. כד

, decimo menſe in , nono anno in me ad Domini verbum fuit Et
1 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי בַּשָּׁנָה הַתְּשִׁיעִית בַּחֹדֶשׁ הָעֲשִׂירִי
: dicendo , menſis decima in
בֶּעָשׂוֹר לַחֹדֶשׁ לֵאמֹר׃

Verſio VULG. LAT.

35 Propterea hæc dicit Dominus
Deus; Quia oblita es mei, &
projeciſti me poſt corpus tuum,
tu quoque porta ſcelus tuum, &
36 fornicationes tuas. Et ait Dominus ad me, dicens; Fili hominis,
numquid judicas Oollam, &
Oolibã, & annuntias eis ſcelera
37 earum? Quia adulteratæ ſunt, &
ſanguis in manibus earũ, & cum
idolis ſuis fornicatæ ſunt: inſuper & filios ſuos, quos genuerunt
mihi, obtulerunt eis ad devorandum.
38 Sed & hoc fecerunt mihi:
Polluerunt Sanctuarium meum in
die illa, & ſabbata mea profanaverunt.
39 Cúmque immolarent
filios ſuos idolis ſuis, & ingrederentur Sanctuarium meum in die
illa ut polluerent illud: etiam
hæc fecerunt in medio domûs
40 meæ. Miſerunt ad viros venientes de longè, ad quos nuntium
miſerant: itaque ecce venerunt:
quibus te laviſti, & circumliniſti
ſtibio oculos tuos, & ornata es
41 mundo muliebri. Sediſti in lecto pulcherrimo, & menſa ornata eſt ante te: thymiama meum,
& unguentum meum poſuiſti ſuper eam.
42 Et vox multitudinis
exultantis erat in ea: & in viris,
qui de multitudine hominum adducebantur, & veniebant de deſerto, poſuerunt armillas in manibus eorum, & coronas ſpecioſas in capitib⁹ eorum.
43 Et dixi
ei, quæ attrita eſt in adulteriis;
Nunc fornicabitur in fornicatione ſua etiam hæc.
44 Et ingreſſi
ſunt ad eam quaſi ad mulierem
meretricem: ſic ingrediebantur
ad Oollam & Oolibam, mulieres nefarias.
45 Viri ergò juſti ſunt:
hi judicabunt eas judicio adulterarum, & judicio effundentium
ſanguinem: quia adulteræ ſunt,
& ſanguis in manibus earum.
46 Hæc enim dicit Domin⁹ Deus;
Adduc ad eas multitudinem, &
trade eas in tumultum, & in rapinam:
47 Et lapidentur lapidib⁹
populorum, & confodiantur gladiis eorum: filios & filias earũ
interficient, & domos earũ igne
48 ſuccendent. Et auferam ſcelus
de terra, & diſcent omnes mulieres ne faciant ſecundùm ſcel⁹
49 earum. Et dabunt ſcelus veſtrũ
ſuper vos, & peccata idolorum
veſtrorum portabitis: & ſcietis
quia ego Domin⁹ Deus.

CAP. XXIV.

1 Et factum eſt verbum Domini
ad me, in anno nono, in menſe decimo, decimâ die menſis, dicens;

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

35 Διὰ τοῦτο τάδε λέγει (φ) κύριος, Ἀνθ' ὧν
ἐπελάθου μου, καὶ ἀπέρριψάς με ὀπίσω τοῦ σώματός σου, καὶ σὺ λάβε τὴν ἀσέβειάν σου καὶ τὴν
36 πορνείαν σου. Καὶ εἶπε κύριος πρὸς μὲ, Υἱὲ
ἀνθρώπου, οὐ κρινεῖς τὴν (χ) Ὀολὰν καὶ τὴν (ψ)
Ὀολιβὰν, καὶ ἀναγγελεῖς αὐταῖς τὰς ἀνο-
37 μίας αὐτῶν; Ὅτι ἐμοιχῶντο, καὶ αἷμα ἐν χερσὶν αὐτῶν, (ω) τὰ ἐνθυμήματα αὐτῶν ἐμοιχῶντο, καὶ τὰ τέκνα αὐτῶν ἃ ἐγέννησάν μοι, (α)
38 διήγαγον αὐτοῖς δι' ἐμπύρων. Ἕως καὶ ταῦτα ἐποίησάν μοι, (β) τὰ ἅγιά μου ἐμίαινον,
39 καὶ τὰ σάββατά μου ἐβεβήλουν. Καὶ ἐν τῷ
σφάζειν αὐτοὺς τὰ τέκνα αὐτῶν τοῖς εἰδώλοις αὐτῶν, καὶ εἰσεπορεύοντο εἰς τὰ ἅγιά
μου (ϛ), τοῦ βεβηλοῦν αὐτά· καὶ ὅτι οὕτως ἐποίουν
40 ἐν μέσῳ τοῦ οἴκου μου. (δ) Καὶ ὅτι τοῖς ἀνδράσι τοῖς ἐρχομένοις μακρόθεν, οἷς ἀγγέλους (ε) ἐξαπέστελλον πρὸς αὐτοὺς, καὶ ἅμα τῷ ἔρχεσθαι αὐτοὺς, εὐθὺς ἐλούου, καὶ ἐστίβιζου τοὺς ὀφθαλμούς σου, καὶ ἐκόσμου κόσμῳ,
41 Καὶ ἐκάθου ἐπὶ κλίνης ἐστρωμένης, καὶ τράπεζα κεκοσμημένη πρὸ προσώπου αὐτῆς, καὶ τὸ
(ζ) θυμίαμα, καὶ τὸ ἔλαιόν μου (η) εὐφραίνοντο
42 ἐν αὐτοῖς. Καὶ φωνὴν ἁρμονίας ἀνεκρούοντο,
καὶ πρὸς ἄνδρας ἐκ πλήθους ἀνθρώπων ἥκοντας (θ) ἐκ τῆς ἐρήμου· καὶ ἐδίδοσαν (ι) ψέλλια
ἐπὶ τὰς (κ) χεῖρας αὐτῶν, καὶ στέφανον καυ-
43 χήσεως ἐπὶ τὰς κεφαλὰς αὐτῶν. Καὶ (λ) εἶπα, Οὐκ ἐν τούτοις (μ) μοιχεύουσι; καὶ ἔργα
44 πόρνης καὶ αὐτὴ ἐξεπόρνευσε; Καὶ εἰσεπορεύοντο πρὸς αὐτὴν, ὃν τρόπον εἰσπορεύονται πρὸς γυναῖκα πόρνην, οὕτως εἰσεπορεύοντο πρὸς (ν) Ὀολὰν, καὶ πρὸς Ὀολιβὰν,
45 τοῦ ποιῆσαι ἀνομίαν. Καὶ ἄνδρες δίκαιοι
αὐτοὶ καὶ ἐκδικήσουσιν αὐτὰς ἐκδικήσει μοιχαλίδος, καὶ ἐκδικήσει αἵματος, ὅτι μοιχαλίδες εἰσὶ, καὶ (ξ) αἷμα ἐν χερσὶν αὐτῶν.
46 Τάδε λέγει (ο) κύριος κύριος, Ἀνάγαγε ἐπ'
αὐτὰς ὄχλον, καὶ δὸς (π) ἐν αὐταῖς ταρα-
47 χὴν καὶ διαρπαγὴν, Καὶ λιθοβόλησον (ρ)
ἐπ' αὐτὰς λίθοις ὄχλων, καὶ (σ) κατακέντει
αὐτὰς ἐν τοῖς ξίφεσιν αὐτῶν· υἱοὺς αὐτῶν
καὶ θυγατέρας αὐτῶν ἀποκτενοῦσιν, καὶ
48 τοὺς οἴκους αὐτῶν (τ) ἐμπρήσουσιν. Καὶ ἀποστρέψω ἀσέβειαν (υ) ἐκ τῆς γῆς, καὶ παιδευθήσονται πᾶσαι αἱ γυναῖκες, καὶ οὐ μὴ ποιή-
49 σουσι κατὰ τὰς ἀσεβείας αὐτῶν. Καὶ δοθήσεται ἡ ἀσέβεια ὑμῶν ἐφ' ὑμᾶς, καὶ τὰς ἁμαρτίας τῶν ἐνθυμημάτων ὑμῶν λήψεσθε, καὶ γνώσεσθε διότι ἐγὼ κύριος.

MS.A. (φ) ἀδωναῒ κύριος, (χ) Ὀλλὰν (ψ) Ὀλιβὰν, (ω) καὶ τὰ (α) διήγαγον αὐτὰ δι' (β) καὶ ἃ ἐμίσουν ἐποίησε, τὰ (ϛ) ἀφυλάκτως ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, τοῦ (δ) Καὶ τοῖς (ε) ἐξαπεστέλλοσαν (ζ) θυμίαμά μου, (η) ἐξευφραίνοντο (θ) οἰνωμένους ἐκ (ι) ψέλλια (κ) χεῖράς σου, σὺ δὲ στέφανον (λ) εἶπας, (μ) μοιχῶνται; ἔργα γυναικὸς πόρνης ἐποίεις, Καὶ εἰσεπορεύοντο πρὸς αὐτὴν, ὃν τρόπον εἰσεπορεύοντο (ν) Ὀλλὰν, καὶ πρὸς Ὀλιβὰν, (ξ) αἵματα (ο) ἀδωναῒ κύριος, (π) ἐπ' αὐτὰς (ρ) αὐτὰς (σ) κατακέντησον (τ) ἐνπυριοῦσιν. (υ) ἀπὸ

Propterea hæc dicit Dominus; 35
Quia oblita es mei, & projeciſti
me poſt corpus tuum, & tu accipe impietatem tuam, & fornicationẽ tuã. Et dixit Dominus ad 36
me; Fili hominis, (z) nónne judicabis Oolã, et Oolibã, et annũtiabis eis iniquitates earum; Quia 37
mœchabãtur, et ſanguis in manib⁹
ipſarum? Secundũ adinventiones
ſuas mœchabantur, & filios ſuos,
quos genuerãt mihi, traduxerunt
(ω) eis per ignita; Donec et iſta fe- 38
cerũt mihi: Sancta mea polluerũt,
& ſabbata mea prophanaverunt:
Et in jugulando ipſos filios ſuos 39
idolis ſuis, & ingrediebantur in
Sãcta mea ad prophanandũ illa:
& (aa) quia ſic faciebant in medio domûs meæ: Et (bb) quia vi- 40
ris venientibus de longè, quibus
nuntios miſerant ad eos; et ſimulac veniſſent, ſtatim lavabaris, &
ſtibio liniebas oculos tuos, & ornabaris ornatu: Et ſedebas ſuper 41
lectum ſtratum: & menſa ornata
ante faciem ipſius. Et thymiama,
et oleũ (cc) meum, lætabantur in
eis: Et vocem harmoniæ perſona- 42
bant, (dd) & ad viros ex multitudine hominũ (ee) venientes de
deſerto. Et dederunt armillas ſuper manus eorũ, & coronã gloriationis ſuper capita eorũ. Et dixi; 43
Nónne in his mœchantur? et opera fornicariæ etiã ipſa fornicata
eſt? Et ingrediebantur ad eam: 44
quemadmodùm ingrediuntur ad
mulierẽ meretricẽ, ita ingrediebantur ad Oolam, et ad Oolibam,
ut facerent iniquitatẽ. Et viri ju- 45
ſti hi: et ulciſcentur eas ultione adulteræ, et ultione (ff) ſanguinis:
quia adulteræ ſunt, & ſanguis
in manibus earũ. Hæc dicit Do- 46
minus Dominus; Adduc ſuper eas multitudinẽ: & da in eis tumultũ, & rapinã. (gg) Et lapida 47
ſuper eas lapides turbarũ: et confodito eas in gladiis eorũ. Filios
earũ & filias earũ interficient:
et domos earum incendent. Et a- 48
vertã impietatẽ de terra: et diſcent omnes mulieres; & non facient ſecundũ impietates earum.
Et dabitur impietas veſtra ſuper 49
vos: & peccata cogitationum
veſtrarum accipietis: & ſcietis,
quia ego Dominus.

ΚΕΦ. κδʹ.

1 Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, ἐν
τῷ ἔτει τῷ (α) ἐννάτῳ, ἐν τῷ μηνὶ τῷ δεκάτῳ, δεκάτῃ τοῦ μηνὸς, λέγων,

CAP. XXIV.

Et factus eſt ſermo Domini ad 1
me in anno nono, in menſe decimo, decimâ menſis, dicens;

MS.A. (α) ἐνάτῳ,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

35 בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים חֲלָף דִּשְׁבַקְתְּ פּוּלְחָנִי וְאַרְחֵיקְתְּ דַּחֲלְתִי מִקֳּבֵל עֵינָךְ וְאַף אַתְּ
36 קַבִּילִי חוֹבֵי עֲצַת חֶטְאָיִךְ וְטַעֲוָתִיךְ׃ וַאֲמַר יְיָ לִי בַּר אָדָם הֲתוֹכַח יָת אָהֳלָה וְיָת אָהֳלִיבָה
37 וְחַוִּי לְהֶן יָת תּוֹעֲבָתְהֶן׃ אֲרֵי זַנְאִין בְּהֶן וְדַם זַכַּי אֲשַׁדוּ בִּידֵיהֶן וּבָתַר פּוּלְחַן טַעֲוָתְהֶן
טְעוֹ וְאַף יָת בְּנֵיהֶן דַּעֲתִידִין לְמִפַּק מִנְּהֶן תּוֹלְדַת קוּדְשָׁא קֳדָמַי אַעֲבִירוּ לְהֶן לְפוּלְחָן׃
38 עוֹד אַרְגִּזוּ קֳדָמַי סָאִיבוּ יָת בֵּית מַקְדְּשִׁי בְּיוֹמָא הַהוּא וְיָת יוֹמֵי שַׁבַּיָּא דִילִי אַחִילוּ׃
39 וּבְמִכְּסוּתְהוֹן יָת בְּנֵיהוֹן לְפוּלְחַן טַעֲוָתְהוֹן וְעָלוּ לְבֵית מַקְדְּשִׁי בְּיוֹמָא הַהוּא לְאַחֲלוּתֵיהּ
40 וְהָא כְדֵין עֲבַדוּ בְּגוֹ בֵית מַקְדְּשִׁי׃ וְאַף אֲרֵי שְׁלַחַתְּ לְגֻבְרַיָּא דְּאָתַן מֵרַחִיק דְּאִזְגַּד
41 שְׁלִיחַ לְוָתְהוֹן וְהָא אֲתוֹ לַאֲתַר דְּזַמֵּינְתְּ אַתְקֵינְתְּ שׁוּקִין וּמַנֵּית פַּלְטוֹרִין׃ וּרְמֵית דַּרְגְּשִׁין
מַבִּיכִין דִּיקַר וּפָתוֹרִין מְלָן כָּל טוּב סַדַּרְתְּ קֳדָמֵיהוֹן וּקְטוֹרֶת בּוּסְמַי וּמְשַׁח שַׁוֵּית
42 עֲלֵיהוֹן׃ וְקָל אִתְרַגּוּשְׁתְּהוֹן דִּי שְׁלַן שַׁלְוָא בְהוֹן וְלִתְקוֹף גֻּבְרִין מִסְּגֵי אֱנָשָׁא אָתַן
מִסְּחוֹר סְחוֹר מִמַּדְבְּרָא וִיהַבוּ שֵׁירִין עַל יְדֵיהוֹן וּכְתַר דְּתוּשְׁבַּחְתָּא עַל רֵישֵׁיהוֹן׃
43 וַאֲמָרִית לִכְנִשְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל דִּבְלִיאַת עַמַּהּ בְּחוֹבִין כְּעַן תִּשְׁבּוֹק מִטַּעֲוָתַהּ וּתְתוּב
44 לְפוּלְחָנִי וְלָא תָבַת׃ וְעָלוּ לְוָתַהּ כְּמָא דְעָלִין לְוָת אִתְּתָא פּוּנְדְּקִיתָא כֵּן עָלוּ לְאָהֳלָה
45 וּלְאָהֳלִיבָה מְנַיָּתָא דַּעֲצַתְהוֹן חֶטְאִין׃ וְגֻבְרִין זַכָּאִין בְּקִבְלֵיהוֹן יִתְפַּרְעוּן מִנְּהֶן
46 פּוּרְעֲנוּת גִּיּוֹפִין וּפוּרְעֲנוּת אַשְׁדַת דַּם אֲרֵי זַנְאִין בְּהֶן וְדַם זַכַּי אֲשַׁדוּ בִּידֵיהוֹן׃ אֲרֵי כִּדְנַן
47 אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים אִתְנַבֵּי דְּיִסְּקוּן עֲלֵיהוֹן מַשְׁרְיָן וְאֶמְסַר יָתְהוֹן לִתְבִיר וּלְבִזָּא׃ וְיִרְגְּמוּן
יָתְהֶן בְּאַבְנֵי קֶלַע מַשְׁרְיָן וִיבַזְּעוּן יָתְהֶן בְּסַיְפֵיהוֹן בְּנֵיהוֹן וּבְנָתְהוֹן יִקְטְלוּן וּבָתֵּיהוֹן
48 יוֹקְדוּן בְּנוּרָא׃ וַאֲבַטֵּיל חוֹבֵי עֲצַת חֶטְאִין מִן אַרְעָא וְיִתְרַדְיָן כָּל מְדִינָתָא וְלָא יַעְבְּדָן
49 בַּעֲצַת חֶטְאֵיכוֹן׃ וְיִתְיַהֲבוּן חוֹבֵי עֲצַת חֶטְאֵיכוֹן עֲלֵיכוֹן וְחֶטְאֵי פּוּלְחַן טַעֲוָתְכוֹן תְּקַבְּלָן
וְתִדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ אֱלֹהִים׃

כד

1 וַהֲוָה פִּתְגַם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי בְּשַׁתָּא תְשִׁיעֵתָא בְּיַרְחָא עֲשִׂירָאָה בַּעֲסַרָא לְיַרְחָא
לְמֵימַר׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Propterea hæc dicit Dñs De⁹: Pro eo quòd reliquiſti cultum meum, & pro- 35
jeciſti timorem mei à conſpectu oculorũ tuorũ, tu quoq; ſuſcipe delicta ne-
fandorũ conſiliorũ tuorũ & idolorũ tuorũ. Et dixit Dñs ad me: Fili hominis, 36
nónne argues Oollam & Oolibam, & annuntiabis eis abominationes ſuas?
Quia ſcortatores ſunt apud illas, & ſanguinẽ innocẽtiũ effuderũt manib⁹ ſu- 37
is; & poſt cultũ idolorũ ſuorũ erraverunt: quin etiã filios ſuos, de quib⁹ futu-
rũ erat ut egrederetur generatio ſancta corã me, tranſtulerunt eis ad cultum.
Adhuc irritaverunt me, polluerũt domũ ſanctuarii mei in die illa, & dies ſab- 38
batorũ meorũ violaverunt. Et cùm immolarent filios ſuos in cultũ idolorũ 39
ſuorũ, ingreſſi ſunt eadem die in domũ ſanctuarii mei, ut prophanarent eã, &
ecce rem hujuſmodi intra domũ ſanctuarii mei deſignârunt. Et inſuper cùm 40
miſiſti ad viros venientes de longè, nuntio ad eos miſſo, & ecce venerunt ad
locũ quem ſtatuiſti: præparâſti vicos, & conſtituiſti plateas. Inſtraviſti lectu- 41
los ſtragulis pretioſis, & menſas plenas omni bono ordinâſti corã eis, & in-
cenſum aromatũ meorũ & oleũ meũ poſuiſti ſup eas. Et vox tumult⁹ eorum 42
qui ſumma fruebantur proſperitate, [*fuit*] in *eis*, & in fortitudine potentiũ
præ multitudine hominũ venientiũ undiquaq; à deſerto, & poſuerunt armil-
las in manib⁹ eorũ, & coronã laudis in capitib⁹ eorũ. Et dixi de cœtu Iſrael, 43
cuj⁹ popul⁹ inveterat⁹ eſt in peccatis: Nunc dimittet idola ſua, & converte-
tur ad cultũ meũ: & non eſt converſa. Et ingreſſi ſunt ad eã ſicut qui ingre- 44
diuntur ad mulierẽ hoſpitatricẽ, ſic ingreſſi ſunt ad Oolam & Oolibam *for-*
nicatrices ſceleratiſſimorũ conſiliorũ. Et viri juſti in conſpectu earũ ipſi ſu- 45
ment ultionẽ ex eis, ultionẽ adulterantiũ & ultionẽ effundentiũ ſanguinem:
quia apud eas ſunt qui fornicentur, & ſanguinẽ innocentẽ effuderunt manib⁹
ſuis. Quia hæc dicit Dñs De⁹: Vaticinare ut aſcendat contra eas exercit⁹, & 46
tradam eas in interitũ & in direptionẽ. Et lapidabunt exercit⁹ eas lapidibus 47
fundæ; & præſcindent eas gladiis ſuis; filios earũ & filias earum occident; &
domos earum ſuccendent igne. Et ceſſare faciam ſcelera nefarii conſilii de 48
terra, & corripientur omnes provinciæ, & non facient juxta ſcelera veſtra.
Et dabuntur peccata ſcelerati veſtri conſilii ſuper vos, & peccata cultus ido- 49
lorum veſtrorum ſuſcipietis: & ſcietis quia ego Dñs Deus.

CAP XXIV.

Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini ad me anno nono, menſe 1
decimo, decima die menſis, dicens:

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܕܛܥܝܬܝܢܝ ܘܫܕܝܬܝܟܝ ܒܬܪ ܕܚܠܬܟܝ. ܐܦ ܐܢܬܝ ܩܒܠܝ ܥܘܠܟܝ 35
ܘܙܢܝܘܬܟܝ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܒܪܢܫܐ. ܕܘܢ ܠܐܗܘܠܐ ܘܠܐܗܘܠܝܒܐ. ܘܚܘܐ ܐܢܝܢ ܛܢܦܘܬܗܝܢ؛ 36
* ܕܓܪ̈ ܘܕܡܐ ܐܝܬ ܒܐܝܕܝܗܝܢ. ܘܥܡ ܦܬܟܪ̈ܝܗܝܢ ܓܪܝ. ܘܒܢ̈ܝܗܝܢ ܕܝܠܕܢ ܠܝ. ܐܘܩܕܝܢ 37
ܠܗܘܢ ܒܢܘܪܐ. * ܘܬܘܒ ܗܕܐ ܥܒܕܝ ܠܝ. ܛܢܦܝ ܡܩܕܫܝ ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܘܫܒ̈ܬܝ 38
ܛܢܦܝ. * ܘܟܕ ܢܟܣܝ ܗܘܘ ܒܢ̈ܝܗܝܢ ܠܦܬܟܪ̈ܝܗܝܢ. ܥܠܝ ܠܡܩܕܫܝ ܒܗ ܒܝܘܡܐ 39
ܗܘ. ܘܛܢܦܘܗܝ. ܘܗܟܢܐ ܥܒܕܝ ܒܓܘ ܒܝܬܝ. * ܘܐܦ ܫܕܪܝ ܠܘܬ ܓܒܪ̈ܐ ܕܢܐܬܘܢ ܠܘܬܗܝܢ 40
ܡܢ ܪܘܚܩܐ. ܗܢܘܢ ܕܫܕܪܝ ܠܗܘܢ ܐܝܙܓܕܐ. ܘܟܕ ܐܬܘ. ܡܚܕܐ ܣܚܝ̈ ܗܘ̈ܝ ܘܟܚܠܝ
ܥܝܢ̈ܝܗܝܢ. ܘܐܨܛܒܬܝ ܨܒܬܗܝܢ. * ܘܝܬܒܢ ܗܘܝ ܥܠ ܥܪ̈ܣܬܐ ܕܡܦܪ̈ܣܢ. ܘܦܬܘܪ̈ܐ ܡܣܕܪܝܢ 41
ܩܕܡܝܗܝܢ. ܘܡܫܚܝ ܘܒܣܡ̈ܝ. ܣܡܝܢ ܥܠܝܗܝܢ. * ܘܩܠܐ. ܕܚܕܘܬܗܝܢ ܢܦܩ ܗܘܐ. ܘܐܦ 42
ܕܓܒܪ̈ܐ ܕܐܬܘ ܡܢ ܫܒܐ. ܘܡܢ ܡܕܒܪܐ. ܘܝܗܒܘ ܫܝܪ̈ܐ ܒܐܝܕܝܗܝܢ. ܘܟܠܝܠܐ ܕܫܘܒܚܐ
ܒܪ̈ܫܝܗܝܢ. * ܘܐܡܪܬ ܥܠ ܗܠܝܢ. ܓܝܪ̈ܢ. ܘܐܝܟ ܥܒܕ̈ܐ ܕܙܢܝܬܐ ܙܢܝ. * ܘܥܐܠܝܢ ܗܘܘ ܠܘܬܗܝܢ. 43 44
ܐܝܟ ܕܥܐܠܝܢ ܠܘܬ ܐܢܬܬܐ ܙܢܝܬܐ. ܗܟܢܐ ܥܐܠܝܢ ܗܘܘ ܥܠ ܐܗܘܠܐ ܘܥܠ ܐܗܘܠܝܒܐ. ܢܫ̈ܐ
ܙܢܝܬܐ. * ܘܓܒܪ̈ܐ ܙܕܝܩ̈ܐ ܢܕܘܢܘܢ ܐܢܝܢ. ܕܝܢܐ ܕܓܝܪ̈ܢܝܬܐ. ܘܕܝܢܐ ܕܐܫܕܝ ܕܡܐ. ܡܛܠ 45
ܕܓܝܪ̈ܢ ܐܢܝܢ. ܘܕܡܐ ܐܝܬ ܒܐܝܕܝܗܝܢ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ. ܐܣܩ ܥܠܝܗܝܢ 46
ܟܢܘܫܬܐ. ܘܗܒ ܐܢܝܢ ܠܙܘܥܬܐ ܘܠܒܙܬܐ. * ܘܢܪܓܘܡ ܐܢܝܢ ܟܢܘܫܬܐ ܒܟܐܦ̈ܐ. ܘܢܦܣܩܘܢ 47
ܐܢܝܢ ܒܣܝܦܝܗܘܢ. ܘܒܢ̈ܝܗܝܢ ܘܒܢܬ̈ܗܝܢ ܢܩܛܠܘܢ. ܘܒ̈ܬܝܗܝܢ ܢܘܩܕܘܢ ܒܢܘܪܐ.
* ܘܐܒܛܠ ܥܘܠܐ ܡܢ ܐܪܥܐ. ܘܢܬܪܕܝܢ ܟܠܗܝܢ ܢܫ̈ܐ. ܘܠܐ ܢܥܒܕܢ ܐܝܟ ܙܢܝܘܬܟܝܢ. 48
* ܘܐܗܦܟ ܙܢܝܘܬܟܝܢ ܥܠܝܟܝܢ. ܘܚܛܗ̈ܐ ܕܦܬܟܪ̈ܝܟܝܢ ܬܩܒܠܢ. ܘܬܕܥܢ. ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. 49

* ܫܠܡ * ܟܓ *

* ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܒܫܢܬܐ ܬܫܝܥܝܬܐ. ܒܥܣܪܐ ܒܝܪܚܐ ܕܥܣܪܐ ܟܕ ܐܡܪ. 1

* Quandoquidem oblita es mei, teque præcipi- 35
tâſti poſt deos tuos; tu quoque reporta ſcelus
tuũ & ſcortationẽ tuã. Deinde dixit mihi Dñs; 36
Fili hominis, judica Aholam & Aholibam, &
oſtende eis abominationẽ ipſarũ: Quòd adul- 37
* teratæ ſint, & ſanguis ſit in manib⁹ earũ, cum
idolis adulteratæ ſint, & filios ſuos quos mihi
pepererant, igne combuſſerint illis: Hoc aliud 38
præterea mihi fecerint; polluerint ſanctuarium
meũ eodẽ die, & ſabbatha mea prophanârint:
(Nam poſtquam jugulâſſent filios ſuos idolis 39
ſuis, ingreſſæ ſunt ſanctuariũ meũ eodẽ die, &
prophanaverunt illud: talia fecerunt in medio
dom⁹ meæ:) Præterea miſerint ad viros ut ad 40
ſe venirent è longinquo, eos *nimirùm* ad quos
mittebant legatos: quib⁹ venientib⁹, ſtatim la-
vabant ſe, collyrio illinebant oculos ſuos, &
ornabant ſe ornatu ſuo: Inſidebant lectis ſtra- 41
gulatis, & menſæ proponebantur eis: unguen-
tum meũ & ſuaves odores meos ſuper ſe geſta-
bant: Et vox lætitiæ earũ procedebat, itidémq; 42
virorũ illorũ qui veniebant è Saba & è deſer-
to, imponebántque armillas manib⁹ earũ, &
coronas glorioſiſſimas capitib⁹ earum. Et dixi 43
de iſtis; Adulteratæ ſunt, & ſecundùm actiones
meretricũ fornicatæ ſunt: Nam congredieban- 44
tur cum eis: ut congredi mos eſt cum muliere
fornicaria, ita congrediebantur cum Ahola &
cum Aholiba fœminis fornicariis. Jam viri 45
juſti judicent eas judicio adulterarũ et judicio
effundentiũ ſanguinem; quandoquidem adul-
teræ ſunt, et ſanguis eſt in manibus earum.
Nam ſic ait Dominus dominorum, Adduc 46
contra iſtas cœtum, et trade eas commotioni
et direptioni: Et obruat eas cœtus lapidibus, 47
percutiant eas gladiis ſuis, filios et filias earum
trucìdent, et domos earum igne comburant.
Ita ceſſare faciam ſcelus à terra, et erudientur 48
omnes fœminæ, ne facient ſecundùm ſcorta-
tionem veſtram: Reflectam ſcortationem ve- 49
ſtram in vos, et peccata idolorũ veſtrorum re-
portabitis; et experiemini me eſſe Dominum.

CAP. XXIV.

Fuit etiam ad me ſermo Domini anno nono, 1
decimâ menſis decimi, dicendo;

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لاجل هذا هكذا يقول ادوناي الرب * من اجل انك نسيتني * وطرحتيني وراء جسدك * 35
وانت خذي ضعفك وزناك *

* الاصحاح الثالث عشر *

* وقال الرب لي * يا ابن الانسان * انت تحاكم اوولا واوليبا * وتخبرهما باثامهما * لانهما 36
فسقتا * والدم في ايديهما مثل افكارهما فسقتا * واولادهما الذين ولدتاهم لي احرقتاهم بالنار 37
نهارا * وهذه صنعتا لي * نجستا اقداسي * ودنستا سبوتي * وعند ما ذبحتا اولادهما لاصنامهما * 38 39
فدخلتا الي اقداسي لتنجساها * ولانهما هكذا صنعتا في وسط بيتي * ولانهما للرجال الاتيين 40
من بعيد الذين اليهم ارسلتا رسلا * فلما اتوهما معا * للوقت استحمتا * واكتحلتا اعينهما *
وزينتا بزينة * وجلستا علي سرير معروش * ومايدة مزينة امام وجههما * وبخوري وطيبي فرحتا 41
بهما * واسمعتا صوت موصولهما للرجال من كثرة الناس الاتيين من البرية * فدفعوا لهما 42
اسورة علي ايديهما * واكليل فخر علي راسيهما * وقلت اليس بهولاء فسقتا * واعمال زانية زنتا * 43
* فدخلوا اليهما * كما دخلوا الي امراة زانية * هكذا دخلوا الي اوولا والي اوليبا ليصنعوا اثما * 44
* ورجال صديقون هم * وينتقمون منهما بانتقام فاسقات وبانتقام دم * لانهما فاسقتان * والدم في 45
ايديهما * لانه هكذا يقول الرب الرب * اصعد عليهما جمعا * واعط فيهما اضطرابا وخطفا * 46
* وارجمهما بحجارة جموع * فيطعنونهما بسيوفهم * ويقتلون بنيهن وبناتهن * ويحرقون 47
بيوتهن * واصرف النفاق من الارض * ويتادبن جميع النسوة * ولا يصنعن كنفاقهن * ويدفع 48 49
نفاقكما عليكما * وتاخذان خطايا فكراتكما * وتعلمان اني انا الرب الرب *

* الفصل الرابع والعشرون *

* وكان قول الرب الي في السنة التاسعة * في الشهر العاشر * في العاشر من الشهر * قايلا * 1

Proptereà ſic dicit Adonai Dominus; Quia tu oblita es mei, & abjeciſti me à 35
tergo corporis tui; tu etiam reporta infir-
mitatem tuam & ſcortationem tuam.

Textus decimuſtertius.

Tum dixit Dominus ad me; O fili homi- 36
nis, tu judicium inſtitues cum Avaola &
Avaoliba, & indicabis eis iniquitates
earum. Mœchatæ ſunt enim, & ſan- 37
guis hæret *manibus earum: juxta cogita-*
tiones ſuas mœchatæ ſunt, & filios ſuos
quos mihi genuerant, igne combuſſerunt in-
terdiu. Hæc etiam fecerunt mihi: ſan- 38
cta mea polluerunt, ſabbatha mea violâ-
runt; Et ſtatim atque mactâſſent filios 39
ſuos idolis ſuis, ingreſſæ ſunt in ſancta
mea, ut polluerent ea: tum quòd talia fe-
cerint in medio domûs meæ: Tum quòd 40
venientibus è longinquo viris ad quos
nuntios mittebant, ſimul inquam venien-
tibus ad eas, illicò ſe lavarent, ſtibio li-
nirent oculos ſuos, ornamentis ſe decora-
rent; Strato inſiderent lecto, & menſa 41
ornata eſſet ante conſpectum earum: thure
meo & unguento meo fruerentur: Et 42
audire facerent vocem harmoniæ ſuæ vi-
ris ex hominum multitudine venientibus è
deſerto: qui dabant eis armillas ſuper
manus earum, & coronam faſtûs ſuper
capita earum, Et dixi; Nonne cum iſtis 43
mœchatæ ſunt, & more fornicariæ for-
nicatæ ſunt? Nam ingreſſi ſunt ad eas; 44
quemadmodum ingredi ſolent *ad mulie-*
rem fornicariã, ita ingreſſi ſunt ad Ava-
olam & ad Avaolibam, ut ſcelus perpe-
trarent: Et viri juſti ſunt, & exigent 45
ab utraque pœnas mœchârum & pœnas
cædis, cùm ſint adulteræ, & ſanguis in
manibus earum. Sic enim dicit Domi- 46
nus Dominus; Aſcendere fac adversùs
iſtas turbam, & da in eis perturbationem
& direptionem, Et obrue eas lapidibus 47
turbarum: confodiant eas gladiis ſuis,
occîdant filios & filias earum, & do-
mos earum comburant. Sic auferam im- 48
pietatem à terra, & erudientur omnes
mulieres, ne faciant ſecundùm impieta-
tem iſtarum: Et refundetur impietas 49
veſtra in vos, & reportabitis peccata co-
gitationum veſtrarum: ſcietiſque me eſſe
Dominum Dominum.

CAP. XXIV.

DEinde fuit ſermo Domini ad me an- 1
no nono, menſe decimo, decimâ menſis,
dicens;

;iſtius diei corpus , diei nomen tibi ſcribe ,hominis Fili
2 בן־אדם כתוב־לך את־שם היום את־עצם היום הזה
.iſtius diei corpore in , Jeruſalaim ad Babel rex *ſe adjunxit*
סמך מלך־בבל אל־ירושלם בעצם היום הזה :
: eos ad *dices* &,parabolam rebellionis domum ad loquere parabolicè Et
3 ומשל אל־בית־המרי משל ואמרת אליהם
.aquas eā in funde etiā &, *inſtrue* ollam *inſtrue* : Deus Dominus dixit Sic
כה אמר אדני יהוה שפת הסיר שפת וגם־יצק בו מים :
electione:humerum & femur,bonū fruſtū omne ,eam in ejus fruſta Congere
4 אסף נתחיה אליה כל־נתח טוב ירך וכתף מבחר
oſſa incende etiam &,*aſſume pecoris Electionem* .imple *oſſium*
5 עצמים מלא : מבחר הצאן לקוח וגם דור העצמים
.ejus medio in ejus oſſa *coquantur* etiam,ejꝰ bullitiones ebullire fac:ea ſub
תחתיה רתח רתחיה גם־בשלו עצמיה בתוכה :
cujus ollæ ſanguinum civitati Væ : Deus Dominus dixit ſic Propterea
6 לכן כה־אמר אדני יהוה אוי עיר הדמים סיר אשר
ejus fruſta in ejus fruſta in : ea ex exivit non ejꝰ ſpuma &,ea in *ejus* ſpuma
חלאתה בה וחלאתה לא יצאה ממנה לנתחיה לנתחיה
,fuit ejus medio in ejꝰ ſanguis Quia .ſors illam ſuper cadat non,eam educ
7 הוציאה לא־נפל עליה גורל : כי דמה בתוכה היה
operiendū ad terram ſup illum effudit non:eū poſuit *petræ læve faſtigiū* ſup
על־צחיח סלע שמתהו לא שפכתהו על־הארץ לכסות
dedi;ultionē ulciſcendū ad irā *faciendū aſcendere Ad*.pulvere illū *ſuper*
8 עליו עפר : להעלות חמה לנקם נקם נתתי את־
dixit ſic Propterea .*operiri* *non ad:petræ læve faſtigium* ſup ejꝰ ſanguinē
9 דמה על־צחיח סלע לבלתי הכסות : לכן כה אמר
.pyram grandem faciam ego etiam :ſanguinū civitati Væ,Deus Dominꝰ
אדני יהוה אוי עיר הדמים גם־אני אגדיל המדורה :
condi & : carnem conſume , ignem ſuccende , ligna Multiplica
10 הרבה העצים הדלק האש התם הבשר והרקח
ejus prunas ſup eam ſtatue Et.comburātur oſſa & ,aromatibus condimentū
11 המרקחה והעצמות יחרו : והעמידה על־גחליה
ejus medio in fundetur &,ejus *æs* comburatur &,incaleſcat ut : vacuam
רקה למען תחם וחרה נחשתה ונתכה בתוכה
non & ,*ſe afflictavit Injuriis* .ejus ſpuma conſumetur,ejus inquinamentum
12 טמאתה תתם חלאתה : תאנים הלאת ולא־
tua immunditia In .ejus ſpuma igni in ,ejus ſpuma multa ea de exivit
13 תצא ממנה רבת חלאתה באש חלאתה : בטמאתך
non tua immunditia ab;te mundâſti non & ,te *mundavi* ꝙ eo pro : fœditas
זמה יען טהרתיך ולא טהרת מטמאתך לא
Ego .te in meam iram *me faciendum quieſcere ad uſque* ,amplius te mundabis
14 תטהרי־עוד עד־הניחי את־חמתי בך : אני
non &,parcam non &,*retractabo* non : feci & Venit ,ſum locutus Dominꝰ
יהוה דברתי באה ועשיתי לא־אפרע ולא־אחוס ולא
Dn̄s dixit,te judicabunt tua *ſtudia juxta* &,tuas vias juxta:*ducar pœnitentia*
אנחם כדרכיך וכעלילותיך שפטוך נאם אדני
ego ecce hominis Fili : dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et .Deus
15 יהוה : ויהי דבר־יהוה אלי לאמר : בן־אדם הנני
, plangas nec : percuſſione *in*,tuorū oculorū deſiderium te à *capiens*
16 לקח ממך את־מחמד עיניך במגפה ולא תספד
mortuorum ,tace Clamando .tua lachryma veniat neque , plores nec
17 ולא תבכה ולוא תבוא דמעתך : האנק דם מתים
pones tua calceamenta &,te ſuper liga tuam tiaram , facias ne luctum
אבל לא־תעשה פארך חבוש עליך ונעליך תשים
ne hominum panem & , *myſtacem ſuper involvus* ne &:tuis pedibus in
ברגליך ולא תעטה על־שפם ולחם אנשים לא
mea uxor eſt mortua &,mane in populum ad ſum locutus Et .comedas
18 תאכל : ואדבר אל־העם בבקר ותמת אשתי
.*ſum juſſus* ſicut mane in fecique : *veſpera in*
בערב ואעש בבקר כאשר צויתי :

Verſio VULG. LAT.

2 Fili hominis, ſcribe tibi nomē
diei hujus, in qua confirmatus eſt
rex Babylonis adverſùm Jeruſa-
3 ſalem hodiè. Et dices per pro-
verbium ad domum irritatricem
parabolam, & loquêris ad eos;
Hæc dicit Dominus Deus; Pone
ollam: pone, inquam, & mitte
4 in eam aquam: Congere fruſta
ejus in eam, omnem partem bo-
nam, femur & armum, electa &
5 oſſibus plena. Pinguiſſimum pe-
cus aſſume, compone quoque
ſtrues oſſium ſub ea: efferbuit
coctio ejus, & diſcocta ſunt oſſa
6 illius in medio ejus. Propterea
hæc dicit Dominꝰ Deus; Væ civi-
tati ſanguinum, ollæ, cujus rubi-
go in ea eſt, & rubigo ejus non
exivit de ea: per partes & per
partes ſuas ejice eam, non ceci-
7 dit ſuper eam ſors. Sanguis enim
ejus in medio ejus eſt, ſuper lim-
pidiſſimam petram effudit illum:
non effudit illum ſuper terram ut
8 poſſit operiri pulvere. Ut ſuper-
inducerem indignationē meam,
& vindictā ulciſcerer: dedi ſan-
guinem ejus ſuper petram limpi-
9 diſſimam ne operiretur. Pro-
pterea hæc dicit Dominus Deus;
Væ civitati ſanguinum, cujus ego
10 grandem faciam pyram. Con-
gere oſſa, quæ igne ſuccendam:
conſumentur carnes, & coquetur
univerſa compoſitio, & oſſa ta-
11 beſcent. Pone quoque eam ſup
prunas vacuam, ut incaleſcat, &
liquefiat æs ejus: & conflētur in
medio ejus inquinamentum ejus,
12 & conſumatur rubigo ejus: Mul-
to labore ſudatum eſt, & non exi-
vit de ea nimia rubigo ejꝰ, neque
13 per ignem. Immunditia tua exe-
crabilis: quia mundare te volui,
& non es mundata à ſordibus
tuis: ſed nec mundaberis priùs,
donec quieſcere faciam indigna-
14 tionem meam in te. Ego Dn̄s lo-
cutus ſum: Veniet, & faciam: non
tranſeam, nec parcam, nec placa-
bor: juxta vias tuas, & juxta adin-
ventiones tuas judicabo te, dicit
15 Dominus. Et factum eſt verbum
16 Dn̄i ad me, dicens; Fili hominis,
ecce ego tollo à te deſiderabile
oculorū tuorum in plaga: & non
planges, neq; plorabis, neque flu-
17 ent lachrymæ tuæ. Ingemiſce ta-
cens, mortuorū luctum no facies:
corona tua circumligata ſit tibi,
& calceamenta tua erunt in pedi-
bus tuis, nec amictu ora velabis,
18 nec cibos lugentiū comedes. Lo-
cutꝰ ſum ergò ad populū manè, et
mortua eſt uxor mea veſperé: fe-
cíq; manè ſicut præceperat mihi.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

2 Υἱὲ ἀνθρώπου, γράψον σεαυτῷ εἰς ἡμέραν
ἀπὸ τῆς ἡμέρας ταύτης, ἀφ᾽ ἧς ἀπηρείσατο
βασιλεὺς Βαβυλῶνος ἐπὶ Ἱερουσαλήμ, ἀπὸ
3 τῆς ἡμέρας τῆς σήμερον: Καὶ εἰπὸν ἐπὶ τὸν οἶκον
τὸν παραπικραίνοντα παραβολήν, καὶ ἐρεῖς
πρὸς αὐτούς, Τάδε λέγει (β) κύριος, Ἐ-
πίστησον τὸν λέβητα, καὶ ἔγχεον εἰς αὐτὸν ὕ-
4 δωρ, Καὶ ἔμβαλε εἰς αὐτὸν τὰ διχοτομή-
ματα, πᾶν διχοτόμημα καλόν, (γ) σκέ-
λος καὶ ὦμον ἐκσεσαρκισμένα (δ) ἀπὸ τῶν
5 ὀστῶν, Ἐξ ἐπιλέκτων κτηνῶν (ε) εἰλημμέ-
νων· καὶ ὑπόκαιε τὰ ὀστᾶ ὑποκάτω αὐτῶν.
(ζ) Ἔζεσε καὶ ἥψηται τὰ ὀστᾶ αὐτῆς ἐν μέσῳ
6 αὐτῆς. Διὰ τοῦτο τάδε λέγει (η) κύριος, Ὦ
πόλις αἱμάτων, λέβης, ἐν ᾧ ἐστιν ἰὸς ἐν
αὐτῷ, καὶ ὁ ἰὸς (θ) οὐκ ἐξῆλθεν ἐξ αὐτῆς, κατὰ
μέλος αὐτῆς ἐξήνεγκεν, οὐκ ἔπεσεν ἐπ᾽
7 αὐτὴν κλῆρος. Ὅτι αἷμα αὐτῆς ἐν μέσῳ
αὐτῆς ἐστιν, ἐπὶ (') λεωπετρίαν τέταχα αὐτό·
οὐκ ἐκκέχυκα αὐτὸ ἐπὶ τὴν γῆν, τοῦ καλύ-
8 ψαι (ι) ἐπ᾽ αὐτὸ γῆν, Τοῦ ἀναβῆναι θυμὸν
εἰς ἐκδίκησιν ἐκδικηθῆναι· δέδωκα τὸ
αἷμα αὐτῆς ἐπὶ λεωπετρίαν, τοῦ μὴ καλύ-
9 ψαι αὐτό. Διὰ τοῦτο τάδε λέγει (κ) κύριος,
10 Κἀγὼ μεγαλυνῶ τὸν δαλόν· Καὶ πληθυνῶ
τὰ ξύλα, καὶ (λ) ἀνακαύσω τὸ πῦρ, ὅπως
(μ) τακῇ τὰ κρέα, καὶ ἐλαττωθῇ ὁ ζωμός,
11 Καὶ στῇ ἐπὶ τοὺς ἄνθρακας (ν), ὅπως προσ-
καυθῇ καὶ θερμανθῇ ὁ χαλκὸς αὐτῆς, καὶ
τακῇ ἐν μέσῳ (ξ) ἀκαθαρσίας αὐτῆς, καὶ
12 ἐκλίπῃ ὁ (") ἰὸς αὐτῆς, Καὶ οὐ μὴ ἐξέλθῃ ἐξ
13 αὐτῆς πολὺς ὁ ἰὸς αὐτῆς. (ο) Καταισχυν-
θήσεται ὁ ἰὸς αὐτῆς, (π) ἀνθ᾽ ὧν ἐμιαίνου σύ.
καὶ τί ἐὰν μὴ καθαρισθῇς ἔτι ἕως οὗ ἐμπλήσω
14 τὸν θυμόν μου (ρ); Ἐγὼ κύριος λελάληκα, καὶ
ἥξει, καὶ ποιήσω, οὐ διαστελῶ, οὐδὲ μὴ ἐλεή-
σω· κατὰ τὰς ὁδούς σου, καὶ κατὰ τὰ ἐνθυμή-
ματά σου κρινῶ σε, λέγει (σ) κύριος. διὰ
τοῦτο ἐγὼ κρινῶ σε κατὰ τὰ αἵματά σου, καὶ
κατὰ τὰ ἐνθυμήματά σου κρινῶ σε, ἡ ἀκά-
θαρτος, ἡ ὀνομαστή, καὶ πολλὴ τοῦ παραπικραί-
15 νειν. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς με,
16 λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, ἰδοὺ ἐγὼ λαμβάνω
ἐκ σοῦ τὰ ἐπιθυμήματα (') τῶν ὀφθαλμῶν σου
ἐν παρατάξει, οὐ μὴ κοπῇς, οὐδ᾽ οὐ μὴ κλαυ-
17 σθῇς, Στεναγμὸς αἵματος, ὀσφύος (τ)
πένθος ἔσῃ. οὐκ ἔσαι τὸ τρίχωμά σου συμ-
πεπλεγμένον ἐπὶ σέ, καὶ τὰ ὑποδήματά
σου ἐν τοῖς ποσί σου· οὐ μὴ παρακληθῇς ἐν
χείλεσιν αὐτῶν, καὶ ἄρτον ἀνδρῶν οὐ μὴ
18 φάγῃς. Καὶ ἐλάλησα πρὸς τὸν λαὸν τὸ
πρωΐ, ὃν τρόπον ἐνετείλατό (υ) μοι ἑσπέ-
ρας, καὶ ἐποίησα τὸ πρωΐ, (φ) ὃν τρόπον
ἐπετάγη μοι.

Fili hominis, ſcribe tibi (a) in di- 2
em ab hac die, quâ obfirmatus eſt
rex Babylonis ſuper Hieruſalē, ab
hodierna die: Et dic ad domum 3
exaſperantem, parabolam, & di-
ces ad eos; Hæc dicit Dominus;
Pone lebetem, et infunde ſuper e-
um aquam: Et mitte in eum di- 4
viſiones, omnem inciſuram bonā,
crus, & humerum, carnibus ſepa-
ratis ab oſſibus, De electis pecori- 5
bus aſſumpta: & incende oſſa ſub
eis. Ferbuit, & ſunt cocta oſſa e-
jus in medio illiꝰ. Propterea hæc 6
dicit Dominus; O civitas ſangui-
num, lebes, in quo eſt rubigo in
eo, & rubigo non eſt egreſſa ex
eo: per partes ſuas protulit, non ce-
cidit ſuper eam ſors: Quia ſan- 7
guis ejus in medio illius eſt. Super
leviſſimam petram poſui illum:
non effudi illum ſuper terram, ad
operiendum ſuper ipſum terrā: ut 8
aſcenderet furor ad ulciſcendum
ultionē: dedi ſanguinē ejus ſuper
leviſſimam petram, ut non operi-
retur ipſe. Propterea hæc dicit
Dominus, Et (b) ego magnifica- 9
bo (c) torrem, Et multiplicabo li-
gna, et ſuccendam ignem; ut ta- 10
beſcant carnes, & imminuatur
(d) jus, Et ſtet ſuper (e) carbones; 11
ut exuratur, et concaleſcat æs e-
jus, et tabeſcat in medio immun-
ditiæ ſuæ, & deficiat rubigo e-
jus. Et non exiet de ea multa ru- 12
bigo illius: Confundetur rubigo e- 13
jus, pro (f) eo, quòd contaminata
es tu. Et quid erit, ſi non fueris
emundata ultrà, donec impleam
furorē meū? Ego Dominꝰ loquu- 14
tus ſum, & veniet, et faciam, non
differā, (g) nec miſerebor. Secun-
dum vias tuas, & ſecundum (h)
cogitationes tuas judicabo te, di-
cit Dominꝰ. Propterea ego judica-
bo te juxta ſanguines tuos: Et
juxta cogitationes tuas judicabo
te, immunda, famoſa, & nimia ad
irritandū. Et factꝰ eſt ſermo Do- 15
mini ad me, dicens: Fili hominis, 16
ecce ego aufero à te (i) deſideria
oculorum tuorum in (k) repara-
tione, non planges, nec (l) flebis:
Gemitus ſanguinis, renū luctus 17
(m) eris. (n) Non erunt crines tui
colligati ſuper te, & calceamenta
tua in pedibus tuis: non conſola-
beris in labiis eorum: & panem
hominū non comedes. Et loquutꝰ 18
ſum ad populum manè, ſicut præ-
ceperat mihi, (o) veſperi: feciq;
manè, ſicut præceptum eſt mihi.

MS.A (β) ἀδωναὶ κύριος, (γ) καὶ σκέλος (δ) ἐκ τῶν ὀστέων αὐτῶν, (ε) εἰλημμένα· (ζ) ἔζεσεν καὶ ἐξέζεσεν καὶ ἡψήθη τὰ (η) ἀδωναὶ κύριος, (θ) ἐν αὐτῷ οὐκ (') λεοπετρίαν (ι) αὐτὸ γῆν, (κ) ἀδωναὶ κύριος, Οὐαὶ πόλις τῶν αἱμάτων, Κἀγὼ (λ) ἐκκαύσω (μ) ἐλαττωθῇ ὁ ζωμός, καὶ ἐκτακῇ τὰ κρέα, καὶ τὰ ὀστᾶ συμφρυγήσονται, Καὶ στῇ (ν) αὐτῆς, ἐξήφθη ὅπως ἐκκαυθῇ, ὅπως συμφρυγῇ ὁ χαλκὸς (ξ) αὐτῆς ἡ ἀκαθαρσία αὐτῆς, καὶ (") ἰός, Καὶ (ο) Καὶ καταισχυνθήσεται (π) ἐν τῇ ἀκαθαρσίᾳ σου ζέμμα, ἀνθ᾽ ὧν ἐμιάνθης σύ, καὶ οὐκ ἐκαθαρίσθης ἀπὸ ἀκαθαρσίας σου, καὶ ἔτι ἔσαι ἐὰν μὴ καθαρισθῇς ἕως οὗ (ρ) ἐν σοί; (σ) ἀδωναὶ κύριος. (') ὀφθαλμῶν (τ) πένθους ἔσαι αὕτη. (υ) μοι, καὶ ἀπέθανεν ἡ γυνή μου ἑσπέρας, καὶ (φ) καθὼς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

2 בר אדם כתב לך ית שום יומא ית כרן יומא הדין סמך מלכא דבבל על ירושלם בכרן
3 יומא הדין : ואתנבי לעמא סרבנא נבואה ותימר להון כדנן אמר יי אלהים אתנבי
4 דיסקון משרין על קרתא הדא ואף יתיהיב לה ארכא לקבלא מצירא : כנוש רברבהא
5 לגוה כל גבר גבר אימתן וגבר עביד קרב משרית עממין מלי יתה : מלכי עממין
6 קריב ואף טקים סומכותהא עמהון אבע ומנה אף יתרמון קטילהא בגוה : בכן כדנן
אמר יי אלהים וי על קרתא דאשדי דם זכי בגוה דהיא כדודא דזיהומתיה ביה
7 וזיהומתיה לא נפקת מניה גלו על גלו אתפק עמה מדלא יתעביד בה תיובא : ארי
דם זכי דאתאשד בגוה בזידו ובדרע מרומם שפכתיה לא שפכתיה בשלו למעבד
8 עלוהי תיובא : למעבד פורענות לאתפרעא בתקוף גליתי חוביהון על דאשידו דם
9 זכי בגלי בדיל דלא לאשתבקא : בכן כדנן אמר יי אלהים וי על קרתא דאשידי דם
10 זכי בגוה אף אנא אסגי תבירה : אסגי מלכיא כנש משריתא טקס סומכותא וזמן
11 עלה עבדי קרבא וגבריהא ישתבשון : ואשאר ארעא צדיא בדיל דיצדון ויסופון תרעי
12 קרוהא ויתמסון בגוה עבדי סאובתה ויסופון חובהא : תסקופין אתמליאת ולא
13 יפקון מנה עבדי בישתא בנורא תתוקד מסגיות חובהא : בדאסתאבת בעצת חטאין
14 חלף דדכיתיך ולא דכית מסואבתיך לא תדכין עוד עד דאניח חמתי ביך : אנא יי
גזרית במימרי אתיא ותתקים לא אמנע ולא אחוס ולא ארחם כאורחתיך בישתא
15 וכעובדיך מקלקליא אתפרע מניך אמר יי אלהים : והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי
16 למימר : בר אדם הא אנא נסיב מנך ית רגגא דעינך במותא ולא תספוד ולא תבכי
17 ולא תשגר דמעין : אדנק שתוק על מיתך אבלא לא תעביד טוטפתך יהוין עלך ומסנך
18 תשוי ברגלך ולא תתעטיף על שפם ולחם אבלין לא תיכול : ואתנביתי לעמא
בצפרא ומיתת אתתי ברמשא ועבדית בצפרא כמא דאתפקדית :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Fili hominis ſcribe tibi nomen diei hujus, ipſummet diem quo confirmatus 2
eſt rex Babylonis adverſùs Jeruſalem, in ipſo diei articulo. Et propheta pro- 3
phetiam populo contumaci, & dices ad eos: Hæc dicit Dn̄s Deus; Vatici-
nare ut aſcendant exercitus contra civitatem, & etiam dabitur ei terminus ut
ſuſcipiat obſidionem. Congrega principes ejꝰ in medio ejus, unumquemque 4
virum terribilem & bellatorem; exercitu populorum imple eam. Reges po- 5
pulorum applica, & etiam junge cum eis auxilia, accelera tempꝰ ejus, etiam
projicientur interfecti ejꝰ in medio ejus. Propterea hæc dicit Dn̄s Deus: Væ 6
civitati quæ effundit ſanguinem innocentem in medio ſui, quæ eſt quaſi olla
cujus rubigo in ea eſt, & rubigo ejus non exivit ab ea; tranſmigratio ſuper
tranſmigrationem exivit cum ea, eò quòd non agatur in ea pœnitentia. Quia 7
ſanguis innocens qui effuſus eſt in medio ejus, in ſuperbia & in brachio ex-
celſo effudit illum, non effudit illum per ignorantiam ut ageret ſuper eum
pœnitentiam. Ad faciendam vindictam ut ulciſcerer in furore, revelavi 8
peccata eorum, pro eo quòd effuderunt ſanguinem innocentem manifeſtè, ut
non dimitteretur peccatum. Propterea hæc dicit Dn̄s Deus: Væ civitati quæ 9
effundit ſanguinem innocentem in medio ſui, ego quoque multiplicabo in-
teritum ejus. Multiplica reges, congrega exercitum, junge auxilia, & præpara 10
contra eam bellatores, & fortes ejus inſaniant. Et relinquam terram deſola- 11
tam, eò ut deſolentur & conſumantur portæ civitatis ejus, & tabeſcant in me-
dio ejꝰ operantes immunditiam ejus, & conſumantur peccata ejus. Occaſio- 12
nibꝰ plena eſt, & non egredientur ex ea operantes malum; igni ſuccendetur
præ multitudine peccatorū ejus. In eo quòd polluta es ſceleribꝰ: pro eo quòd 13
mundavi te & non es mundata ab immunditia tua; non mundaberis amplꝰ,
donec requiſcere fecero indignationē meam in te. Ego Dn̄s decrevi in verbo 14
meo; venit & firmabitur; non prohibebo, nec parcam, nec miſerebor. Juxta
vias tuas peſſimas & juxta opera tua corrupta ultionem *ſumam* ex te, dicit 15
Dn̄s Deus. Et factum eſt verbū prophetiæ à facie Dn̄i mecum, dicens: Fili 16
hominis, ecce ego tollo à te deſiderabile oculorū tuorū in peſte: non planges
nec plorabis, neq; emittes lachrymas. Diſpliceat tibi, tace ſup mortuū tuum, 17
luctū ne facias: frontalia tua ſint ſup te, & calciamēta tua pone in pedibꝰ tuis,
neq; amiciaris ſup labia tua, & panē lugentiū ne comedas. Et prophetavi ad 18
populū manè, & mortua eſt uxor mea veſperè: & feci manè ſicut juſſꝰ fuerā.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܒܪܢܫܐ. ܟܬܘܒ ܠܟ ܫܡܗ ܕܝܘܡܐ ܗܢܐ. ܕܣܡܟ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܠܐܘܪܫܠܡ ܒܗ ܒܝܘܡܐ 2
ܗܢܐ. * ܘܐܡܬܠ ܡܬܠܐ ܥܠ ܒܝܬܐ ܡܡܪܡܪܢܐ. ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. 3
ܐܫܦܝ ܩܕܪܐ ܘܫܦܘܟ ܒܗ ܡܝܐ. * ܘܪܡܝ ܒܗ ܢܬܚܐ ܕܒܣܝܡܝܢ ܘܡܦܛܡܝܢ. ܫܩܐ [illegible] 4
ܓܪܡܗ ܡܢ ܓܒܝܐ ܕܥܢܐ. * ܘܐܦ ܓܪܡܐ ܐܫܓܪ ܬܚܝܬ ܩܕܪܐ. ܘܐܘܩܕ ܐܢܘܢ ܬܚܬܝܗ. 5
* ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܘܝ ܠܡܕܝܢܬܐ ܕܕܡܐ. ܕܩܕܪܐ [illegible] ܒܗ. ܘܥܘܠܗ ܠܐ ܢܦܩ 6
ܡܢܗ. ܗܕܡ ܗܕܡ ܦܣܩܘܗ. ܘܦܣܐ ܠܐ ܢܦܠ ܥܠܝܗ. * ܡܛܠ ܕܕܡܗ ܒܓܘܗ ܗܘܐ. 7
ܘܥܠ ܫܘܥܐ ܣܡܬܗ. ܘܠܐ ܐܫܕܬܗ ܒܐܪܥܐ ܕܠܐ ܢܬܚܦܐ ܒܥܦܪܐ. * ܕܬܣܩ ܚܡܬܐ 8
ܠܡܬܒܥܘ ܬܒܥܬܐ. [illegible] ܕܡܗ ܥܠ ܫܘܥܐ ܫܥܝܥܐ. ܕܠܐ ܢܬܚܦܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ 9
ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܘܝ ܠܡܕܝܢܬܐ ܕܕܡܐ. ܐܦ ܐܢܐ ܐܘܪܒ ܡܕܘܪܐ. ܘܐܣܓܐ ܩܝܣܐ. * ܘܐܫܓܪ ܢܘܪܐ 10
ܘܢܬܒܫܠ ܒܣܪܐ. ܘܢܪܬܚ ܪܬܚܐ. ܘܓܪܡܐ ܢܬܘܩܕܘܢ. * ܘܐܣܝܡܝܗ ܥܠ ܓܘܡܪܐ [illegible] 11
ܢܚܫܐ. ܕܢܫܚܢ ܘܢܬܦܫܪ ܢܚܫܗ. ܘܬܬܚܒܠ ܒܓܘܗ ܛܢܦܘܬܗ. ܘܬܫܬܠܡ ܦܘܪܥܢܗ.
[MS. Armach. * ܐܝܟ ܬܐܢܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܠܐ ܢܦܩ ܡܢܗ ܣܘܓܐ ܕܥܘܠܐ. ܐܠܐ ܒܢܘܪܐ ܢܗܘܐ 12
ܦܘܪܥܢܗ.] * ܡܛܠ ܕܐܬܛܢܦܬܝ ܒܙܢܝܘܬܐ. ܘܡܛܠ ܕܕܟܝܬܟܝ. ܘܠܐ ܐܬܕܟܝܬܝ ܡܢ ܛܢܦܘܬܟܝ. 13
ܬܘܒ ܠܐ ܬܬܕܟܝܢ ܥܕܡܐ ܕܐܢܝܚ ܚܡܬܝ ܒܟܝ. * ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܡܪܬ. ܘܡܝܬܐ ܐܢܐ ܘܥܒܕ ܐܢܐ. 14
ܘܠܐ ܐܦܝܣ. ܘܠܐ ܐܚܘܣ. ܘܠܐ ܐܪܚܡ. ܐܝܟ ܐܘܪܚܬܟܝ ܘܐܝܟ ܥܒܕܝܟܝ ܐܕܘܢܟܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܡܪܘܬܐ. * ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ. ܗܐ ܢܣܒ ܐܢܐ ܡܢܟ ܪܓܬܐ 15 16
ܕܥܝܢܝܟ ܒܡܚܘܬܐ ܕܡܬܚܛܦܐ. ܘܠܐ ܬܪܩܘܕ ܘܠܐ ܬܒܟܐ. ܘܠܐ ܬܢܚܬ ܕܡܥܬܟ. * ܐܠܐ ܐܬܢܟܐ ܒܕܡܐ 17
ܕܡܝܬܐ. ܘܐܒܠܐ ܠܐ ܬܥܒܕ. ܘܡܐܢܝܟ ܐܣܘܪ ܥܠܝܟ. ܘܡܣܢܝܟ ܣܝܡ ܒܪܓܠܝܟ. ܘܠܐ
ܬܬܥܛܦ ܥܠ ܣܦܘܬܟ. ܘܠܚܡܐ ܕܒܢܝܢܫܐ ܠܐ ܬܐܟܘܠ. * ܘܡܠܠܬ ܥܡ ܥܡܐ ܒܨܦܪܐ. ܘܡܝܬܬ 18
ܐܢܬܬܝ ܒܪܡܫܐ. ܘܥܒܕܬ ܒܨܦܪܗ ܕܝܘܡܐ ܐܚܪܢܐ. ܐܝܟ ܡܐ ܕܐܬܦܩܕܬ.

2 Fili hominis, ſcribe tibi nomen huj⁹ diei, quoniam incumbit rex Babylonis in Jeroſolymam hoc ipſo die. 3 Et aſtrue parabolam contra domum rebellẽ, & dic eis; Sic ait Dñs dominorum; Foco imponito cacabũ, aquam in eum infundito, 4 Et injicito in eum victimas optimas & pingues, armũ cujus os avulſum ſit, è ſelectiſſimis ovibus: 5 Oſſa verò ſub cacabo accende, eáque ſub ipſo combure. 6 Sic enim ait Dñs dominorũ; Væ urbi ſanguinariæ in qua cacabus foco eſt aptatus, & iniquitas ſua non egreditur ex eâ: membratim concidite eam, & ſors non cadat ſuper eam. 7 Quia ſanguis ejus in medio ipſius eſt, & ſupra petram poſuit eum, nec in terrã effudit eum, ne impoſito pulvere operiretur; 8 Quatenus aſcenderet ira ad ultionem *ſumendam:* ponam ſanguinem ejus ſupra petram limpidam, ut non operiatur. 9 Iccirco ſic ait Dñs dominorum; Heu urbs ſanguinaria, ego domicilium ampliabo, & multiplicabo ligna; 10 Ignémq; ſupponam, & coquetur caro: effervebit fervor, & comburentur oſſa: 11 Ponam fervorem ſuper prunas, ut incaleſcat & diſſolvatur æs ejus, computreſcat in medio ejus iniquitas ipſius, & conſummetur punitio ipſius. 12 [*MS. Arm.* Inſtar morbidarum ficuum; neq; exibit ab ea multitudo iniquitatis: ſed erit in igne compenſatio ejus.] 13 Quia ſcortatione te impurâſti, & quia mundavi te, tu autem non te mundâſti ab impuritate tua; nequaquam mundaberis ampliùs, donec ſedavero in te excandeſcentiã meam. 14 Ego Dñs dixi, adducam, & faciam: non utar clementiâ, non parcam, neque miſerebor, ſed ſecundùm vias tuas, & ſecundùm facinora tua judicabo te, ait Dñs dominorũ. 15 Et fuit ad me ſermo Dñi, dicendo, 16 Fili hominis, ecce ſublaturus ſum à te plagâ repentinâ deſiderium oculorum tuorum: verùm ne lamenteris, neque fleas, neque ſtillet lachryma tua: 17 Sed crucia te ob ſanguinem mortuorũ, luctum autem ne facito, veſtes tuas ſuper te præcingito, calceos tuos pedibus tuis apponito, ne te amicito ſuper labia tua, & panem hominum ne comedito. 18 Quæ cùm manè dixiſſem populo, mortua eſt uxor mea veſperè: manè autem alterius diei, feci quemadmodum juſſus fueram.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* يَا ٱبْنَ ٱلْإِنْسَانِ * ٱكْتُبْ لِذَاتِكَ يَوْمًا * مُنْذُ هٰذَا ٱلْيَوْمِ ٱلَّذِي فِيهِ يَصِلُ مَلِكُ بَابِلَ إِلَى 2
أُيرُوسَلِيمَ * مِنْ نَهَارِ هٰذَا ٱلْيَوْمِ * وَقُلْ عَلَى ٱلْبَيْتِ ٱلْمُمَرْمِرِ مَثَلًا وَتَقُولُ لَهُمْ * هٰكَذَا يَقُولُ أَدُونَايِ 3
ٱلرَّبُّ * إِنْصِبِ ٱلْمِرْجَلَ * وَصُبَّ فِيهِ مَآءً * وَضَعْ فِيهِ بِضَعًا * كُلَّ بِضْعَةٍ جَيِّدَةٍ * سَاقٍ وَكَتِفٍ 4
مُجَرَّدَاتٍ مِنَ ٱلْعِظَامِ * مِنَ ٱلْبَهَائِمِ ٱلْمُخْتَارَةِ ٱلْمُسَمَّنَاتِ * وَقِدِ ٱلْعِظَامَ تَحْتَهُمْ * حَمِيَتْ حَمِيَتْ * وَٱحْتَرَقَتِ 5
ٱلْعِظَامُ تَحْتَهَا * لِأَجْلِ هٰذَا هٰكَذَا يَقُولُ ٱلرَّبُّ ٱلرَّبُّ * يَا مَدِينَةَ ٱلدِّمَآءِ * ٱلْمِرْجَلُ ٱلَّذِي فِيهِ * 6
[MS. Oxon. المنصوب فيها المرجل * واثمها لم يخرج منها * وصلاً وصلاً قطعوها والقرعة
لم تصيبها * لان دمها فيها كاين * وعلي حجر وضعته * ولم يجعله في الارض ليلا يغطيه التراب * 7
* ليصعد السخط للجازاة * صببت دمها علي حجر املس لكيلا يتغطي * من اجل ذلك هكذا 8 9
يقول رب الارباب * ايتها مدينة الدم انا اعظم الموضع واكثر الحطب * واسجّر النار * وينضج 10
اللحم * ويغلي غليانا * والعظام يحترقوا * ثبت الغليان علي الجمر * ويتماسا دنسها * وتذوب 11
نجاستها داخلها * ويتم جزاها * كمثل التين الظليل * ولا يخرج منها كثرة اثمها لكن بالنار 12
يكون جزاها * علي نجاستها بالزني * ولانك تنظفت ولم تستنقين من دنسك * وايضا لا 13
تتركين الي ان يهدي فيك غضبي * انا الرب قلت واتي بذلك وافعله ولا اترءف ولا 14
اشفق ولا ارحم وحسب طريقك وفعلك احاكمك يقول رب الارباب * وكان علي قول الرب اذ 15
يقول * يا ابن الانسان هذا انا اخذ منك شهوة عينيك بضربة بغتة ولا تنوح ولا تبكي ولا 16
تفيض دمعتك * لكنك تتعذب بدم الموتي * ومناحة ولا تصنع وثيابك فشد عليك 17
واجعل في رجليك خفيك ولا تلتثم علي شفتيك وخبز الانسان لا تاكل * وقلت بكرة للشعب 18
وماتت امراتي عشية * وللغد في اليوم الاخر فعلت كما امرت *

2 *O fili hominis, ſcribe tibi diem ab hac die quâ perventurus eſt rex Babelis in Jeruſalem, ab hodierna die:* 3 *Et dic de domo iſta irritatrice proverbium. Dices autem ad eos, Ita dicit Adonai Dominus* 3 *Apta lebetem, & infunde in eum aquam:* 4 *Pone in eum fruſta, omne fruſtum optimum cruris & humeri exoſſatorum, ex electiſſimis & pinguiſſimis animantibus,* 5 *Et oſſa ſub iis amburito. Inflammata, inflammata & exuſta ſunt ſub iis oſſa.* 6 *Propterea ſic dicit Dominus Dominus; O urbs ſanguinum, lebes in quo* [MS. Oxon. *In qua lebes eſt collatus: & iniquitas ejus non egreditur ex ea: articulatim concidite eam: & ſors non accidat in eam.* 7 *Quoniam ſanguis ejus in ea manet, & ſupra petram poſuit eum, & non in terram effudit eum, ut illum pulvere non tegeret.* 8 *Aſcendat ira in retributionem: effudi ſanguinem ejus ſuper levam petram ut non tegatur.* 9 *Propterea ſic dicit Dominus Dominorum, O Civitas ſanguinaria ego locum ampliabo, et multiplicabo ligna.* 10 *Et ſubjiciam ignem, & coquetur caro, effervebit etiam fervefactio, & comburentur oſſa.* 11 *Statui fervefactionem ſuper prunas, & liqueſiet pollutio ejus, et diſſolvetur immunditia ejus intra eam, & retributio ejus conſummetur.* 12 *Eſt inſtar umbroſæ fici: neque egredietur ex ipſa abundantia iniquitatis ſuæ: atqui in igne erit portio ejus.* 13 *Eò quòd fornicatione contaminata, etiam mundata fuiſti,* teipſam *autem à ſpurcitie tua noluiſti expurgare, ideò ampliùs haudquaquam emundaberis, donec furor meus in te reſtinguatur.* 14 *Ego Dominus dixi, & adducam iſtud, & faciam; & non propitiabor, neque miſerebor: ſed juxta vias tuas, & opera tua judicabo te, dicit Dominus dominorum.* 15 *Et fuit verbum Domini ad me, dicendo;* 16 *O fili hominis, ecce ego plagâ ſubitaneâ tollo à te deſiderium oculorum tuorum: attamen ne plangas, nec defleas, neque exundet lachryma tua.* 17 *Sed excrucia te ob ſanguinem mortuorum; planctum autem ne facias, ſed veſtimenta tua alliga ſuper te, & calceos tuos apponito pedibus tuis, neque obvelato ſuper labia tua, et panem hominum ne comedito.* 18 *Quæ cùm manè allocutus eſſem populum, mortua eſt uxor mea veſperè: manè autem ſequentis diei, feci prout juſſus fueram.*

quia ?nobis iſta quid nobis indicabis Nonne: populus me ad *dixerunt* Et
19 ויאמרו אלי העם הלא־תגיד לנו מה־אלה לנו כי
: dicendo ,me ad fuit Domini Verbum : eos ad dixi Et .*faciens* tu
20 אתה עשה : ואמר אליהם דבר־יהוה היה אלי לאמר :
polluens ego Ecce ,Deus Dominus dixit Sic : Iſrael domui Dic
21 אמר לבית ישראל כה־אמר אדני יהוה הנני מחלל
,veſtrorū oculorū *deſiderium*, veſtræ fortitudinis ſuperbiam ,meū ſanctuariū
את־מקדשי גאון עזכם מחמד עיניכם
,reliquiſtis quas veſtræ filiæ &,veſtri filii &:veſtræ animæ indulgentiam &
ומחמל נפשכם ובניכם ובנותיכם אשר עזבתם
non *myſtacem ſuper* : feci quemadmodum facietis Et .cadent gladio in
22 בחרב יפלו : ועשיתם כאשר עשיתי על־שפם לא
ſuper *veſtrum ornamentū* Et .comedetis non hominum panem & ,*obvolvetis*
23 תעטו ולחם אנשים לא תאכלו : ופארכם על־
neque,plangetis non;veſtris pedibus in veſtra calceamenta &,veſtra capita
ראשיכם ונעליכם ברגליכם לא תספדו ולא
ad vir gemetis & , veſtras iniquitates propter tabeſcetis & : flebetis
תבכו ונמקתם בעונתיכם ונהמתם איש אל־
fecit quæ omnia juxta:portentū in vobis Jechezchel Eritque .*ſuū fratrē*
24 אחיו : והיה יחזקאל לכם למופת ככל אשר־עשה
tu Et .Deus Dominus *ego* quòd ſcietis & , iſtud *veniendo in* : facietis
25 תעשו בבאה וידעתם כי אני אדני יהוה : ואתה
gaudium,eorum fortitudinē eis ab *me capere* die in nónne ,hominis fili
בן־אדם הלוא ביום קחתי מהם את־מעוזם משוש
eorum animæ elevationem &,eorum oculorum deſiderium : eorum gloriæ
תפארתם את־מחמד עיניהם ואת־משא נפשם
, te ad evaſor *veniet* ipſa die In ? eorum filias & ,eorum filios
26 בניהם ובנותיהם : ביום ההוא יבוא הפליט אליך
, evaſore cum tuum os aperietur illa die In .*aurium* auditum ad
27 להשמעות אזנים : ביום ההוא יפתח פיך את־הפליט
ſcient &,portentum in eis eris & : ultra eris mutus non & ,loqueris &
ותדבר ולא תאלם עוד והיית להם למופת וידעו
.Dominus *ego* quòd
כי־אני יהוה :

CAP. XXV. כה

ad tuas facies pone hominis Fili : dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et
1 2 ויהי דבר־יהוה אלי לאמר : בן־אדם שים פניך אל־
Audite :Hammon filiis *dices* Et .eos ſuper propheta &:Hammon filios
3 בני עמון והנבא עליהם : ואמרת לבני עמון שמעו
euge , *te dicere* Pro : Deus Dominus dixit Sic : Dei Domini verbum
דבר־אדני יהוה כה־אמר אדני יהוה יען אמרך האח
quia , Iſrael *humum ad* &,eſt pollutum quia , meum ſanctuarium *ad*
אל־מקדשי כי־נחל ואל־אדמת ישראל כי
.captivitatem in abierunt quoniam ,Jehudah domum *ad* & , eſt deſolata
נשמה ואל־בית יהודה כי הלכו בגולה :
facient inhabitare &,hæreditatem in orientis filiis te *dans* ego ecce Idcircò
4 לכן הנני נתנך לבני־קדם למורשה וישבו
,*tuū fructū* comedent ipſi : ſua habitacula te in *dabunt* &,te in ſuas *ædes*
טירותיהם בך ונתנו בך משכניהם המה יאכלו פריך
,camelorum habitaculum in Rabbah dabo Et .tuum lac bibent ipſi &
5 והמה ישתו חלבך : ונתתי את־רבה לנוה גמלים
.Dominus *ego* quòd ſcietis & : *pecoris* cubile in Hammon filios &
ואת־בני עמון למרבץ־צאן וידעתם כי־אני יהוה :
te dilatare & , manu *te plaudere* Pro : Deus Dominus dixit ſic Quia
6 כי כה אמר אדני יהוה יען מחאך יד ורקעך
humum ad animo in tuo contemptu omni *in* es gaviſa & : pede in
ברגל ותשמח בכל־שאטך בנפש אל־אדמת
te dabo & , te ſuper meam manum extendi ego ecce Idcircò .Iſrael
7 ישראל : לכן הנני נטיתי את־ידי עליך ונתתיך
te faciam perdere & ,populis è te faciam ſuccidere & ,gentibus *cibum in*
לבג לגוים והכרתיך מן־העמים והאבדתיך
.Dominus *ego* quòd ſcies & , te faciam *delere* : terris de
מן־הארצות אשמידך וידעת כי־אני יהוה :

Verſio VULG. LAT.

19 Et dixit ad me popul', Quarè non indicas nobis, quid iſta ſignificent, quæ tu facis? 20 Et dixi ad eos; Sermo Domini factus eſt ad me, 21 dicens; Loquere domui Iſrael; Hæc dicit Dñs Deus; Ecce ego polluam Sanctuarium meum, ſuperbiam imperii veſtri, & deſiderabile oculorum veſtrorum, & ſuper quo pavet anima veſtra: filii veſtri & filiæ veſtræ, quas reliquiſtis, gladio cadent. 22 Et facietis ſicut feci: Ora amictu non velabitis, & cibos lugentium non comedetis. 23 Coronas habebitis in capitib' veſtris, & calceamenta in pedibus: non plangetis neque flebitis, ſed tabeſcetis in iniquitatibus veſtris, & unuſquiſque gemet ad fratrem ſuum. 24 Eritque Ezechiel vobis in portentum: juxta omnia, quæ fecit, facietis cùm venerit iſtud: & ſcietis quia 25 ego Dominus Deus. Et tu, fili hominis, ecce in die, quâ tollam ab eis fortitudinem eorum, & gaudium dignitatis, & deſiderium oculorum eorum, ſuper quo requieſcunt animæ eorum, filios & fi- 26 lias eorum: In die illa cùm venerit fugiens ad te, ut annuntiet 27 tibi: In die, inquam, illa aperietur os tuum cum eo qui fugit: & loquêris, & non ſilebis ultrá: eriſque eis in portentum, & ſcietis quia ego Dominus.

CAP. XXV.

1 ET factus eſt ſermo Domini ad 2 me, dicens; Fili hominis, pone faciem tuā contra filios Ammon, et 3 prophetabis de eis. Et dices filiis Ammon; Audite verbum Domini Dei: Hæc dicit Dñs Deus; Pro eo quòd dixiſti; Euge, euge ſup Sanctuariū meum, quia pollutum eſt: & ſuper terram Iſrael, quoniam deſolata eſt: & ſuper domū Juda, quoniam ducti ſunt in captivita- 4 tem: Idcircò ego tradam te filiis Orientalibus in hæreditatem, & collocabunt caulas ſuas in te, & ponent in te tentoria ſua: ipſi comedent fruges tuas: & ipſi bi- 5 bent lac tuū. Dabóque Rabbath in habitaculum camelorum, & filios Ammon in cubile pecorum: 6 & ſcietis quia ego Dñs. Quia hæc dicit Dñs De'; Pro eo quòd plauſiſti manu, & percuſſiſti pede, & gaviſa es ex toto affectu ſup ter- 7 ram Iſrael: Idcircò ecce ego extendam manum meam ſuper te, & tradam te in direptioné Gentium, & interficiam te de populis, & perdam de terris, & conteram: & ſcies quia ego Dominus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

19 Καὶ εἶπε πρὸς μὲ ὁ λαός, (χ) Οὐκ ἀναγγέλλεις ἡμῖν τί ἐστι ταῦτα ἃ σὺ ποιεῖς; 20 Καὶ εἶπα πρὸς αὐτούς, (ψ) Λόγος κυρίου ἐγένετο πρὸς μέ, λέγων, 21 Εἰπὸν πρὸς τὸν οἶκον τοῦ Ἰσραήλ, Τάδε λέγει (ω) κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ βεβηλῶ τὰ ἅγιά μου, φρύαγμα ἰσχύος ὑμῶν, ἐπιθυμήματα ὀφθαλμῶν ὑμῶν, καὶ ὑπὲρ ὧν φείδονται αἱ ψυχαὶ ὑμῶν· καὶ οἱ υἱοὶ ὑμῶν καὶ αἱ θυγατέρες ὑμῶν, οὓς ἐγκαταλίπετε, ἐν ῥομφαίᾳ πεσοῦνται. 22 Καὶ (α) ποιήσετε ὃν τρόπον πεποίηκα· ἀπὸ στόματος αὐτῶν (β) οὐ παρακληθήσεσθε, καὶ ἄρτον ἀνδρῶν (γ) 23 οὐ φάγεσθε. Καὶ αἱ κόμαι ὑμῶν ἐπὶ τῆς κεφαλῆς ὑμῶν, καὶ τὰ ὑποδήματα ὑμῶν ἐν τοῖς ποσὶν ὑμῶν· (δ) οὔτε μὴ κόψησθε, οὔτε μὴ (ε) κλαύσητε, καὶ ἐντακήσεσθε ἐν ταῖς ἀδικίαις ὑμῶν, καὶ παρακαλέσετε ἕκαστος τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ. 24 Καὶ ἔσται Ἰεζεκιὴλ ὑμῖν εἰς τέρας. κατὰ πάντα ὅσα ἐποίησα, ποιήσετε, ὅταν ἔλθῃ ταῦτα, καὶ ἐπιγνώσεσθε διότι ἐγὼ 25 κύριος. Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, οὐχὶ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ὅταν λαμβάνω τὴν ἰσχὺν (ζ) παρ' αὐτῶν, τὴν ἔπαρσιν τῆς καυχήσεως αὐτῶν, τὰ ἐπιθυμήματα ὀφθαλμῶν αὐτῶν, καὶ τὴν ἔπαρσιν (") ψυχῆς 26 αὐτῶν, υἱοὺς αὐτῶν καὶ θυγατέρας αὐτῶν, Ἐν (η) τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἥξει ὁ ἀνασωζόμενος πρὸς 27 σέ, τοῦ ἀναγγεῖλαί σοι εἰς τὰ (") ὦτα; Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ διανοιχθήσεται τὸ στόμα σου πρὸς τὸν ἀνασωζόμενον· (θ) λαλήσεις, καὶ οὐ μὴ ἀποκωφωθῇς οὐκέτι, καὶ ἔσῃ αὐτοῖς εἰς τέρας, καὶ ἐπιγνώσονται διότι ἐγὼ κύριος.

ΚΕΦ. κε'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μέ, λέ- 2 γων, Υἱὲ ἀνθρώπου, στήρισον τὸ πρόσωπόν σου ἐπὶ τοὺς υἱοὺς Ἀμμών, καὶ προφήτευσον ἐπ' 3 αὐτούς, Καὶ ἐρεῖς τοῖς υἱοῖς Ἀμμών, Ἀκούσατε λόγον κυρίου· τάδε λέγει (α) κύριος, Ἀνθ' ὧν ἐπεχάρητε ἐπὶ τὰ ἅγιά μου, ὅτι (β) ἐβεβηλώθη, καὶ ἐπὶ τὴν γῆν τοῦ Ἰσραήλ, ὅτι ἠφανίσθη, καὶ ἐπὶ τὸν οἶκον τοῦ Ἰούδα, ὅτι ἐπο- 4 ρεύθησαν ἐν αἰχμαλωσίᾳ, Διατοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ παραδίδωμι ὑμᾶς τοῖς υἱοῖς κεδὲμ εἰς κληρονομίαν, καὶ κατασκηνώσουσιν (γ) ἐν τῇ ἀπαρτίᾳ αὐτῶν ἐν σοί, καὶ δώσουσιν ἐν σοὶ τὰ σκηνώματα αὐτῶν· αὐτοὶ φάγονται τοὺς καρπούς σου, καὶ αὐτοὶ πίονται τὴν πιότητά σου. 5 Καὶ δώσω τὴν πόλιν τοῦ Ἀμμὼν εἰς νομὰς καμήλων, καὶ τοὺς υἱοὺς Ἀμμὼν εἰς (δ) νομὴν προβάτων, καὶ ἐπιγνώσεσθε διότι ἐγὼ κύ- 6 ριος. Διότι τάδε λέγει (ε) κύριος, Ἀνθ' ὧν ἐκρότησας (ζ) τὴν χεῖρά σου, καὶ (η) ἐψόφησας τῷ ποδί σου, καὶ ἐπέχαρας ἐκ ψυχῆς σου 7 ἐπὶ τὴν γῆν τοῦ Ἰσραήλ, Διατοῦτο (θ) ἐκτενῶ τὴν χεῖρά μου ἐπὶ σέ, καὶ δώσω σε εἰς διαρπαγὴν ἐν τοῖς ἔθνεσι, καὶ (ι) ἐξολοθρεύσω σε ἐκ τῶν λαῶν, καὶ ἀπολῶ σε ἐκ τῶν χωρῶν ἀπωλείᾳ, καὶ ἐπιγνώσῃ διότι ἐγὼ κύριος.

Et dixit ad me populus; Non annuntias nobis quid ſunt hæc, quæ tu facis? 19 *Et dixi ad eos; Sermo Domini factus eſt ad me, dicens;* 20 *Dic ad domum Iſrael; Hæc dicit* 21 *Dominus; Ecce ego contaminabo Sancta mea, ſuperbiam fortitudinis veſtræ, deſiderabilia oculorū veſtrorū, et ſuper quibus parcunt animæ veſtræ. Et filii veſtri, et filiæ veſtræ, quos reliquiſtis, in gladio cadent: Et facietis, ſicut feci.* 22 *Ab ore eorū non conſolabimini, & panem virorū non comedetis, Et comæ veſtræ ſuper capita ve-* 23 *ſtra, et calceamenta veſtra in pedibus veſtris. Non plangetis, nec flebitis, et conſumemini in iniquitatibus veſtris; & conſolabimini unuſquiſque fratrē ſuum. Et erit* 24 *Iezechiel vobis in portentum. Secundū omnia quæ (p) feci, facietis, cùm venerint hæc; & cognoſcetis, quoniam ego Dominus. Et* 25 *tu, fili hominis, nō ne in die, quādo abſtulero fortitudinē ab eis, elationē gloriationis eorū, deſideria oculorū eorum, & elationem animæ eorum, filios eorū, et filias eorum; In die illa veniet, qui ſal-* 26 *vus factus fuerit, ad te; ut annuntiet tibi in auribus? In die illa a-* 27 *perietur os tuū ad eum qui evaſerit: loquêris, & nequaquàm ultrà reticebis: & eris eis in portentum; & cognoſcent quoniam ego Dominus.*

CAP. XXV.

ET factus eſt ſermo Domini ad 1 *me, dicens; Fili hominis, obfirma* 2 *faciem tuā ſuper filios Ammon, & propheta ſuper eos, Et dices fi-* 3 *liis Ammon; Audite verbum Domini: Hæc dicit Dominus; Pro eo, quòd gaviſi eſtis ſuper Sancta mea, quia polluta ſunt, & ſuper terram Iſrael, quia deſolata eſt, et ſuper domū Juda, quia abierunt in captivitatē: Idcircò ecce ego* 4 *trado vos (a) filiis Cedem in hæreditatem: & habitabunt in (b) impedimentis ſuis in te, & dabūt in te tentoria ſua: ipſi comedent fructus tuos: et ipſi bibent ubertatem tuam: Dabóque civitatē Am-* 5 *mon in paſcua camelorū, et filios Ammon in (c) paſcuam ovium: & ſcietis, quia ego Dominus. Quia* 6 *hæc dicit Dominus; Pro eo, quòd plauſiſti manu tuâ, & inſonuiſti pede tuo, & (d) gaviſa es ex anima tua ſuper terrā Iſrael: Idcir-* 7 *cò extendam manum meam ſuper te: & dabo te in direptionem in gentibus, & exterminabo te de populis: & perdam te de (e) terris perditione: & ſcies, quia ego Dominus.*

MS.A. Κεφ.κδ'. (χ) Οὐ μὴ ἀπαγγείλῃς (ψ) Τάδε λέγει ἀδωναῒ κύριος, Εἰπὸν (ω) κύριος κύριος ὁ θεός, (α) ποιήσω ὃν τρόπον ἐποίησα· (β) οὐ μὴ (γ) οὐ μὴ (δ) οὐ μὴ (ε) κλαυσθῆτε (ζ) αὐτῶν παρ' αὐτῶν, (") τῆς ψυχῆς (η) ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ (") ὦτά σου; (θ) καὶ ἐρεῖς, οὐ μὴ

MS.A. Κεφ.κε'. (α) ἀδωναῒ κύριος, (β) ἐβεβηλώθησαν, (γ) σὺν τῇ (δ) προνομὴν (ε) κύριος ὁ θεός, Ἀνθ' ὧν (ζ) τὰς χεῖράς (η) ἐπεψόφησας (θ) ἰδοὺ ἐγὼ ἐκτενῶ (ι) ἐξολεθρεύσω

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

19 ואמרו לי עמא הלא תחוי לנא מא אלין לנא ארי את עביד : ואמרית להון פתגם
20 נבואה מן קדם יי הוה עמי למימר : אמר לבית ישראל כדנן אמר יי אלהים הא אנא
21 מפיס ית בית מקדשי יקר תוקפכון רגנא דעיניכון וחבוב נפשכון ובניכון ובנתיכון
22 דשבקתון בחרבא יתקטלון : ותעבדון כמא דעבדית על שפם לא תתעטפון ולחם
23 אבלין לא תיכלון : וטוטפתכון ברישיכון ומסניכון ברגליכון לא תספדון ולא תבכון
24 ותתמסון בחוביכון ותתנהמון גבר לאחוהי : ויהי יחזקאל לכון לאת ככל די עבד
25 תעבדון במיתה ותדעון ארי אנא יי אלהים : ואת בר אדם הלא ביומא דאעדי מנהון
ית בית מקדשיהון יקר תוקפהון חדות תושבחתהון יתנסיב מנהון רגנא דעיניהון
26 וחבוב נפשהון דטב להין מבניהון ומבנתהון : ביומא ההוא ייתי משיזבא לותך
27 לאשמעותך בסורא : ביומא ההוא יתפתח פומך במיתי משיזבא ותתנבי ולא תשתוק
עוד ותהי להון לאת ותדעון ארי אנא יי :

כה

1 2 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר : בר אדם קבל נבואה על בני עמון ותתנבי
3 עליהון : ותימר לבני עמון קבילו פתגמא דיי אלהים כדנן אמר יי אלהים חלף דאמרתא
חדוא על מקדשי ארי אתחל ועל ארעא דישראל ארי צדיאת ועל דבית יהודה ארי
4 הליכו בגלותא : בכן הא אנא מסר ליך לבני מדנחא לירותא ויתבון בירניתהון ביך
5 ויגרון ביך משכניהון אנון ייכלון טוב ארעיך ואנון יבזון נכסך : ואתן ית רבה למדור
6 גמלין וית בני עמון לבית מישרי עדרין דען ותדעון ארי אנא יי : ארי כדנן אמר יי
אלהים חלף דטפחתא בידך ורפסתא ברגלך וחדיתא בכל צפיה נפש על ארעא
7 דישראל : בכן הא אנא מרים ית מחת גבורתי עלך ואתננך לביז לעממיא ואשיצנך
מביני עממיא ואבדנך מן מדינתא אצדנך ותידע ארי אנא יי :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et dixit ad me popul' : Nónne annuntiabis nobis, quid iſta ſignificent, quæ tu 19 facis? Et dixi ad eos : Verbum prophetiæ à facie Dñi factum eſt mecum, di- 20 cens : Dic domui Iſrael : Hæc dicit Dñs Deus : Ecce ego violabo domum 21 ſanctuarii mei, gloriam fortitudinis veſtræ, & deſiderabile oculorum veſtrorū, & quod dilectiſſimum eſt animo veſtro : filii veſtri & filiæ veſtræ quos reliquiſtis, gladio occidentur. Et facietis ſicut feci ; ſuper labia non amiciemini, 22 & panem lugentiū non comedetis. Et frontalia veſtra erunt in capite veſtro, 23 & calciamenta veſtra in pedib' veſtris. Non plangetis nec plorabitis, & tabeſcetis in peccatis veſtris, & gemetis quiſq; ſuper fratrem ſuū. Et erit Eze- 24 chiel vobis in ſignum : juxta omnia quæ fecit, facietis : cùm venerit ſcietis quia ego Dñs Deus. Et tu fili hominis, ecce in die qua auferam ab eis domum 25 ſanctuarii eorum, gloriam fortitudinis eorum, lætitiam laudis eorum, tollentur ab eis deliciæ oculorum eorum, & quod dilectiſſimum eſt eorum animo, quod illis melius eſt quàm filii & filiæ eorum. In die illa veniet ad te qui evaſerit, 26 ut annuntiet tibi nuntium. In die illa aperietur os tuum cùm venerit qui eva- 27 ſerit : & prophetabis & non tacebis amplius, & eris eis in ſignum, & ſcient quia ego Dominus.

CAP. XXV.

ET factum eſt verbum prophetiæ à facie Dñi ad me, dicens : Fili hominis, 1 ſuſcipe prophetiam ſuper filios Ammon, & vaticinare eis. Et dices filiis Am- 2 mon : Suſcipite verbum Dñi Dei ; hæc dicit Dñs Deus : Pro eo quòd dixiſti : 3 Euge ſuper ſanctuarium meum, quia prophanatum eſt ; & ſuper terram Iſrael quia deſerta eſt ; & ſuper domum Juda, quia abierunt in tranſmigrationem. Ideò ecce ego tradam te filiis Orientalibus in poſſeſſionem, & collocabunt 4 palatia ſua in te, & ponent in te habitacula ſua ; ipſi comedent bona terræ tuæ, & ipſi diripient ſubſtantiā tuam. Et dabo Rabba in habitaculū camelorum, & 5 filios Ammon in domum manſionis gregum ovium : & ſcietis quia ego Dñs. Quia hæc dicit Dñs Deus : Pro eo quòd plauſiſti manu tua, & calcâſti pede 6 tuo, & gaviſa es toto affectu animi ſup terrā Iſrael. Ideò ecce ego levo plagā 7 potentiæ meæ ſup te, & dabo te in direptionē populis, & diſperdā te de medio populorū : & perdā te de provinciis, deſertā faciā te, & ſcies quia ego Dñs.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܘܐܡܪ ܠܝ ܥܡܐ܂ ܠܐ ܡܚܘܐ ܐܢܬ ܠܢ ܡܢܘ ܗܢܐ ܕܥܒܕ ܐܢܬ܀ * ܘܐܡܪܬ ܠܗܘܢ܀ 19
20 ܕܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܗܘܐ ܠܘܬܝ ܟܕ ܐܡܪ܂ * ܐܡܪ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ܀ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ 21
ܡܪܘܬܐ܂ ܗܐ ܡܛܡܐ ܐܢܐ ܡܩܕܫܝ ܫܘܒܗܪܐ ܕܥܘܫܢܟܘܢ܀ ܘܪܓܬܐ ܕܥܝܢܝܟܘܢ܀ ܘܚܘܣܝܐ
ܕܢܦܫܟܘܢ܂ ܘܒܢܝܟܘܢ ܘܒܢܬܟܘܢ ܕܫܒܩܬܘܢ ܐܢܘܢ܂ ܒܚܪܒܐ ܢܦܠܘܢ܀ * ܘܬܥܒܕܘܢ 22
ܐܝܟ ܕܥܒܕܬ܂ ܘܥܠ ܣܦܘܬܟܘܢ ܠܐ ܬܬܥܛܦܘܢ܂ ܘܠܚܡܐ ܕܐܢܫܐ ܠܐ ܬܐܟܠܘܢ܂
* ܘܣܥܪܟܘܢ܂ ܠܐ ܢܣܬܦܪ܂ ܘܡܣܐܢܝܟܘܢ ܢܗܘܘܢ ܒܪܓܠܝܟܘܢ܂ ܘܠܐ ܬܒܟܘܢ܂ ܘܠܐ ܬܪܩܕܘܢ܂ 23
ܘܬܬܡܣܘܢ܂ ܒܚܛܗܝܟܘܢ܂ ܘܬܬܒܝܐܘܢ ܐܢܫ ܥܠ ܐܚܘܗܝ܂ [MS.Ar.* ܘܢܗܘܐ ܠܟܘܢ ܚܙܩܝܐܝܠ ܠܐܬܐ܂ 24
ܐܝܟ ܕܥܒܕ ܗܘ ܗܟܢܐ ܬܥܒܕܘܢ܂ ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ܂ * ܐܢܬ ܕܝܢ ܒܪ ܐܢܫܐ܂ ܒܝܘܡܐ ܕܐܣܒ 25
ܐܢܐ ܡܢܗܘܢ܂ ܥܘܫܢܐ ܕܚܕܘܬܐ ܕܫܘܒܚܗܘܢ܂ ܘܪܓܬܐ ܕܥܝܢܝܗܘܢ܂ ܘܚܘܣܝܐ ܕܢܦܫܬܗܘܢ܂
ܘܒܢܝܗܘܢ ܘܒܢܬܗܘܢ܂ * ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܢܐܬܐ ܠܘܬܟ ܡܦܠܛܐ܂ ܘܢܫܡܥܟ ܒܐܕܢܝܟ܂ 26
* ܘܢܬܦܬܚ ܦܘܡܟ ܥܡ ܡܦܠܛܐ ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ܂ ܘܬܡܠܠ ܘܠܐ ܬܫܬܘܩ ܬܘܒ܂ ܘܬܗܘܐ ܠܗܘܢ 27
ܠܐܬܐ܂ ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ܂] * ܩܦܠܐܘܢ * ܟܗ * ܥܠ ܒܢܝ ܥܡܘܢ܂ *
* ܘܗܘܐ ܬܘܒ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܘܬܝ ܟܕ ܐܡܪ܂ * ܒܪ ܐܢܫܐ܂ ܣܝܡ ܐܦܝܟ ܥܠ ܒܢܝ ܥܡܘܢ܂ 1
2 ܘܐܬܢܒܐ ܥܠܝܗܘܢ܂ * ܘܐܡܪ ܠܒܢܝ ܥܡܘܢ܂ ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ܂ ܗܟܢܐ 3
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ܂ ܚܠܦ ܕܐܡܪܬܘܢ ܐܚ ܥܠ ܡܩܕܫܝ ܕܐܬܛܡܝ܂ ܘܥܠ ܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ
ܕܐܬܚܪܒܬ܂ ܘܥܠ ܒܝܬ ܝܗܘܕܐ ܕܐܙܠܘ ܒܫܒܝܬܐ܀ * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ ܐܢܐ ܝܗܒ 4
ܠܟܝ ܠܒܢܝ ܡܕܢܚܐ ܠܝܪܬܘܬܐ܂ ܘܢܬܒܘܢ ܒܟܝ ܚܝܠܘܬܗܘܢ܂ ܘܢܩܒܥܘܢ ܒܟܝ ܡܫܟܢܝܗܘܢ܂ ܗܢܘܢ
ܢܐܟܠܘܢ ܦܐܪܝܟܝ܂ ܘܗܢܘܢ ܢܫܬܘܢ ܚܠܒܟܝ܂ * ܘܐܬܠ ܠܪܒܬ ܒܝܬ ܡܪܒܥܐ ܕܓܡܠܐ܂ 5
ܘܠܒܢܝ ܥܡܘܢ܂ ܠܡܪܒܥܐ ܕܥܢܐ܂ ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ܂ * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ܂ 6
ܚܠܦ ܕܢܩܫܬܝ ܒܐܝܕܝܟܝ܂ ܘܪܩܕܬܝ ܒܪܓܠܝܟܝ܂ ܘܚܕܝܬܝ ܒܢܦܫܟܝ܂ ܥܠ ܐܪܥܐ
ܕܐܝܣܪܝܠ܀ * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ܂ ܗܐ ܐܢܐ ܡܪܝܡ ܐܢܐ ܐܝܕܝ ܥܠܝܟܝ܂ 7
ܘܐܬܠܟܝ ܠܒܙܬܐ ܠܥܡܡܐ܂ ܘܐܫܩܘܦܟܝ ܡܢ ܥܡܡܐ܂ ܘܐܘܒܕܟܝ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ܂ ܘܐܚܪܒܟܝ܂ ܘܬܕܥܝܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ܂

Dicente verò mihi populo, Annon indicaturus es nobis quid hoc ſit quod agis? 19 Reſpondi eis, 20 Sermo quidem Domini fuit ad me, dicendo; Dic Iſraelitis; 21 Sic ait Dominus dominorum, Ecce prophanabo ſanctuariū meum, gloriam roboris veſtri, deſiderium oculorum veſtrorum, & expiationem animarum veſtrarum; & filii filiæque veſtræ quas relinquetis, gladio concident. 22 Et facietis quemadmodum feci: labia veſtra non amicietis, panem hominum non comedetis, 23 Pilus veſter minimè radetur, calcei veſtri erunt ad pedes veſtros, non flebitis, neque lamentabimini; ſed in ſcelere veſtro tabeſcetis, & conſolationem capietis quiſque de fratre ſuo. [*MS. Armach* 24 Eiſtque vobis Ezekiel in oſtentum: prout ille fecit, ita facietis: tunc ſcietis quòd ego ſum Dñs dominorū. 25 Tu autem fili hominis, quâ die tollã ab eis robur gaudii gloriæ eorū, & deſideriū oculorū ipſorū, et expiationē animarū eorum, filios ipſorum & filias ipſorū. 26 Eo ipſo die veniet qui evaſerit ad te, & audire te faciet in aurib⁹ tuis: 27 Eo ipſo die aperiet os ſuū evaſor ille, ut eloquaris, nec obmuteſcas ampliùs: Sic eris illis oſtento, ut cognoſcant me eſſe Dominum.]

CAP. XXV.

Contra Ammonitas.

1 ITterum fuit ad me ſermo Domini, dicendo; 2 Fili hominis, diſpone faciem tuam contra Ammonitas, vaticinare contra eos, 3 Et dic Ammonitis; Audite ſermonem Domini dominorum. Sic ait Dominus dominorum; Quia dixiſtis, Vivifica nos (i. *euge*) de ſanctuario meo quòd prophanatum ſit, & de terra Iſraelis quòd deſtructa ſit, déque domo Judæ quòd in captivitatem abierint: 4 Idcirco ecce traditurus ſum te Orientalibus in hæreditatem; & habitabit in te exercitus eorum, & figent in te tabernacula ſua: ipſi comedent fructus tuos, iidémque bibent lac tuum. 5 Redigámque Rabath in cubile camelorum & filios Ammon in caulam ovium: & ſcietis me eſſe Dominum. 6 Sic ait Dominus dominorum; Quia comploſiſti manibus tuis, & pedibus tuis ſaltâſti, & læta es in temetipſa de terra Iſraelis, 7 Propterea ſic ait Dominus dominorum, Ecce levabo manum meam ſuper te, tradam te in prædam gentibus, excindam ex populis, perdam ex urbibus, & deſtruam, ut experiaris me eſſe Dominum.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

19 20 * وقال لي الشعب * الا تخبرنا ما هذا الذي صنعت * قلت كلام الرب كان علي * اذ يقول قول لبيت
21 اسراييل * هكذا يقول رب الارباب * هوذا ادنس مقدسي مجد عزكم * وشهوة اعينكم * وكفارة
22 انفسكم * وبنيكم وبناتكم مخلفتكم بالحرب يتوقعون * وتصنعون كما صنعت وعلي شفاهكم
23 لا تلتثمون وخبز الانسان لا تاكلوا * ولا تقصوا شعوركم وخفافكم تكون في ارجلكم * ولا
24 تبكون * ولا تنودون * وتعففوا من اثمكم * ويتعزا الانسان علي اخيه * ويكون حزقيال لكم
25 علامة * وكالذي فعل * هكذا افعلوا * وتعلمون اني انا الرب * انت ايها الانسان في اليوم
26 الذي انتزع منهم مجد فرحهم * وشهوة اعينهم ومغفرة انفسهم * وبنيهم * وبناتهم * في ذلك
27 اليوم ياتيك المنقلب ويسمعك في مسامعك * ويفتح فاك المنقلب * في ذلك اليوم * وتتكلم
وايضا لا تخرس * وتكون لهم اية * وتعلمون اني انا الرب] * الفصل الخامس والعشرون * النبوة في عمون *
1 2 * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان * ثبت وجهك علي بني عمون * وتنبا عليهم *
3 * وتقول لبني عمون * اسمعوا قول ادوناي الرب * هكذا يقول ادوناي الرب * من اجل انك
شمتت باقداسي لانها تدنست * وبارض اسرايل لانها فنيت * وببيت يهوذا لانه مضي في السبي *
4 * لاجل هذا ها انا اسلمكم لبني قادم ميراثا * ويسكنون بكمالهم فيك * ويعطون
5 مساكنهم * هاولاء ياكلون غلاتك * وهاولاء يشربون دسمك * وادفع مدينة عمون لمراعي
6 الابل * وبني عمون لمراعي الخراف * وتعلمون اني انا الرب * من اجل انه هكذا يقول الرب
7 الرب * من اجل انك صفقت بيدك وخفقت برجلك * وشمت من نفسك بارض اسرايل * لاجل
هذا ها انا امد يدي عليك * وادفعك للخطف في الامم * واستاصلك من الشعوب *
واهلكك بالهلاك * وتعلمين اني انا الرب *

19 Tum dixit mihi populus, Annon indicabis nobis, quidnam iſtud ſit quod tu facis? 20 Dixi, Verbum Domini fuit ad me, 21 Cùm dicturus fuit ſermonem domui Iſrael: Sic dicit Dominus dominorum; Ecce polluo ſanctuarium meum, gloriam roboris veſtri, deſiderium oculorum veſtrorum, & expiationem animarum veſtrarum: & filii veſtri filiæque veſtræ vobis relictæ, gladio concident. 22 Tum facietis quemadmodum feci: & labia veſtra non obvelabitis, nec panem hominum comedetis. 23 Capillos veſtros non reſecabitis, calcei veſtri erunt ad pedes veſtros, non flebitis, neque plangetis; ſed propter ſcelera veſtra vagabimini, & ſolatio afficiemini unuſquiſque de fratre ſuo: 24 Sic erit Hezeciel vobis oſtento, et quemadmodum fecit, ſic facietis, & agnoſcetis me eſſe Dominum. 25 Tu autem O homo, quâ die tollam ab eis gloriam gaudii ipſorum, et deſiderium oculorum ipſorum, & propitiationem animarum ipſorū, et filios ipſorum, et filias ipſorum; 26 Eâ ipſâ die veniet qui reverſus fuerit ad te, et narrabit tibi in auribus tuis: 27 Et eodem ipſo die aperiet os tuum redux ille, ut eloquaris, nec obmuteſcas ampliùs: ſic eris illis oſtento, & cognoſcetis me eſſe Dominum.]

CAP. XXV.

Prophetia contra Ammonitas.

1 PRaetereà fuit ſermo Domini ad me, 2 dicens; O fili hominis, confirma faciem tuam contra filios Ammon, & vaticinare de ipſis, 3 Dicáſque filiis Ammon; Audite ſermonem Adonai Domini. Sic dicit Adonai Dominus; Eò quòd inſultaveris ſanctis meis quòd profanata ſint, & terræ Iſraelis quòd perierit, & domui Judæ quòd in captivitatem abierit: 4 Proptereà ecce ego tradam vos filiis Kedem in hereditatem, ut omnes omninò habitent in te, collocéntque domicilia ſua: iſti comedent fructus tuos, & iſti bibent ſuavitatem tuam. 5 Et redigam urbem Ammon in paſcua camelorum, & filios Ammon in paſcua agnorum: & experiemini me eſſe Dominum. 6 Nam ita dicit Dominus Dominus; Quia manu tuâ plauſiſti, & pulſâſti pede tuo, & inſultâſti ex animo tuo terræ Iſraelis; 7 Iccircò en ego extendam manum meam ſuper te, tradámque te direptioni in gentes, evellam te ex populis, téque planè perdam: et experieris me eſſe Dominum.

יחזקאל : כו

Ecce , Sehir & , Moab *dicere* Pro : Deus Dominus dixit Sic
8 כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה יַעַן אֲמֹר מוֹאָב וְשֵׂעִיר הִנֵּה
aperiens ego ecce Idcirco .Jehudah domus gentes omnes sicut
9 כְּכָל־הַגּוֹיִם בֵּית יְהוּדָה׃ לָכֵן הִנְנִי פֹתֵחַ אֶת־
terræ decorem ,ejus extremo *ab ejus urbibus ab urbibus ab* ,Moab *humerum*
כֶּתֶף מוֹאָב מֵהֶעָרִים מֵעָרָיו מִקָּצֵהוּ צְבִי אֶרֶץ
filios *Ad* .Chiriathaimah & ,mehon---Bahal ,hajesimoth---Beth
10 בֵּית הַיְשִׁימֹת בַּעַל מְעוֹן וְקִרְיָתָמָה׃ לִבְנֵי־
ut :hæreditatem in eam dabo & ,Hammon filios contra orientis
קֶדֶם עַל־בְּנֵי עַמּוֹן וּנְתַתִּיהָ לְמוֹרָשָׁה לְמַעַן
faciam Moab in Et .gentes inter Hammon *filiorum memoria sit* non
11 לֹא־תִזָּכֵר בְּנֵי־עַמּוֹן בַּגּוֹיִם׃ וּבְמוֹאָב אֶעֱשֶׂה
Dominus dixit Sic .Dominus *ego* quòd ſcient & :judicia
12 שְׁפָטִים וְיָדְעוּ כִּי־אֲנִי יְהוָה׃ כֹּה אָמַר אֲדֹנָי
domum contra ultionem *ulciſcendo in* ,Edom *facere* Pro :Deus
יֱהוִה יַעַן עֲשׂוֹת אֱדוֹם בִּנְקֹם נָקָם לְבֵית
ſic Idcirco .eis *in* ſunt ulti & ,delinquendo deliquerunt &:Jehudah
13 יְהוּדָה וַיֶּאְשְׁמוּ אָשׁוֹם וְנִקְּמוּ בָהֶם׃ לָכֵן כֹּה
,Edom ſuper meam manum extendam Et :Deus Dominus dixit
אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה וְנָטִתִי יָדִי עַל־אֱדוֹם
,deſolationem eam *dabo* & :*animal & hominem* ea ex ſuccidam &
וְהִכְרַתִּי מִמֶּנָּה אָדָם וּבְהֵמָה וּנְתַתִּיהָ חָרְבָּה
meam ultionem dabo Et .cadent gladio in Dedan & Teman à
14 מִתֵּימָן וּדְדָנֶה בַּחֶרֶב יִפֹּלוּ׃ וְנָתַתִּי אֶת־נִקְמָתִי
Edom in facient & ,Iſrael mei populi manum per Edom in
בֶּאֱדוֹם בְּיַד עַמִּי יִשְׂרָאֵל וְעָשׂוּ בֶאֱדוֹם
dixit ,meam vindictam ſcient & :meam iram juxta &,meũ *naſum* juxta
כְּאַפִּי וְכַחֲמָתִי וְיָדְעוּ אֶת־נִקְמָתִי נְאֻם
Peliſtim *facere* Pro :Deus Dominus dixit Sic .Deus Dominus
15 אֲדֹנָי יֱהוִה׃ כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה יַעַן עֲשׂוֹת פְּלִשְׁתִּים
corruptionem ad animo in contemptu cum ultionem ſunt ulti & ,*ultione in*
בִּנְקָמָה וַיִּנָּקְמוּ נָקָם בִּשְׁאָט בְּנֶפֶשׁ לְמַשְׁחִית
ego Ecce :Deus Dominus dixit ſic Propterea .*ſeculi inimicitia*
16 אֵיבַת עוֹלָם׃ לָכֵן כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה הִנְנִי
,Cherethæos faciam ſuccidere & ,Peliſtim ſuper meam manum *extendens*
נוֹטֶה יָדִי עַל־פְּלִשְׁתִּים וְהִכְרַתִּי אֶת־כְּרֵתִים
eis in Faciamque .maris portus reſiduum faciam diſperdere &
17 וְהַאֲבַדְתִּי אֶת־שְׁאֵרִית חוֹף הַיָּם׃ וְעָשִׂיתִי בָם
ego quòd ſcient Et .iræ increpationibus *in* magnas ultiones
נְקָמוֹת גְּדֹלוֹת בְּתוֹכְחוֹת חֵמָה וְיָדְעוּ כִּי־אֲנִי
.eis in meam vindictam *me dando in* ,Dominus
יְהוָה בְּתִתִּי אֶת־נִקְמָתִי בָּם׃

CAP. XXVI. כו

verbum fuit ,menſis una in ,anno undecimo in fuit Et
1 וַיְהִי בְּעַשְׁתֵּי־עֶשְׂרֵה שָׁנָה בְּאֶחָד לַחֹדֶשׁ הָיָה דְבַר־
dixit quòd eo Pro :hominis Fili :dicendo ,me ad Domini
2 יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם יַעַן אֲשֶׁר־אָמְרָה
,populorum *fores* eſt confracta ,euge ,Jeruſalaim ſuper Sor
צֹּר עַל־יְרוּשָׁלִַם הֶאָח נִשְׁבְּרָה דַּלְתוֹת הָעַמִּים
Dominus dixit ſic Propterea .eſt deſerta ,me replebo,me ad ſe convertit
3 נָסַבָּה אֵלָי אִמָּלְאָה הָחֳרָבָה׃ לָכֵן כֹּה אָמַר אֲדֹנָי
gentes te contra faciam aſcendere & :Sor te *ſuper* ego Ecce :Deus
יֱהוִה הִנְנִי עָלַיִךְ צֹר וְהַעֲלֵיתִי עָלַיִךְ גּוֹיִם
,Sor muros diſſipabunt Et .ſuis fluctibus mare *aſcendere juxta* ,multas
4 רַבִּים כְּהַעֲלוֹת הַיָּם לְגַלָּיו׃ וְשִׁחֲתוּ חֹמוֹת צֹר
eam *dabo* & :ea ex ejus pulverem detraham & ,ejus turres deſtruēt &
וְהָרְסוּ מִגְדָּלֶיהָ וְסִחֵיתִי עֲפָרָהּ מִמֶּנָּה וְנָתַתִּי אוֹתָהּ
.petræ *leve cacumen in*
לִצְחִיחַ סָלַע׃

Verſio VULG. LAT.

8 Hæc dicit Dominus Deus; Pro eo quòd dixerunt Moab & Seir; Ecce ſicut omnes Gentes, domus 9 Juda: Idcircò ecce ego aperiam humerum Moab de civitatib⁹, de civitatibus, inquam, ejus, & de finibus ejus, inclytas terræ Bethjeſimoth & Beelmeon & Cariathaim, 10 Filiis Orientis cum filiis Ammon, & dabo eam in hæreditatem: ut non ſit ultrà mémoria filiorum Ammon in Gentibus. 11 Et in Moab faciam judicia: & ſcient quia ego Dominus. 12 Hæc dicit Dominus Deus; Pro eo quòd fecit Idumæa ultionem ut ſe vindicaret de filiis Juda, peccavítque delinquens, & 13 vindictam expetivit de eis, Idcircò hæc dicit Dominus Deus; Extendam manum meam ſuper Idumæam, & auferam de ea hominem & jumentum, & faciam eam deſertam ab Auſtro: & qui ſunt in Dedan, gladio cadent. 14 Et dabo ultionem meam ſuper Idumæam per manũ populi mei Iſrael: & facient in Edom juxta iram meam, & furorem meum: & ſcient vindictam meam, dicit 15 Dominus Deus. Hæc dicit Dominus Deus; Pro eo quòd fecerunt Palæſtini vindictam, & ulti ſe ſunt toto animo, interficientes, & implentes inimicitias ve- 16 teres: Propterea hæc dicit Dominus Deus; Ecce ego extendam manum meam ſuper Palæſtinos, & interficiam interfectores, & perdam reliquias maritimæ re- 17 gionis: Faciámque in eis ultiones magnas arguens in furore: & ſcient quia ego Dominus cùm dedero vindictam meam ſuper eos.

CAP. XXVI.

1 ET factum eſt in undecimo anno, primâ menſis, factus eſt ſer- 2 mo Domini ad me, dicens; Fili hominis, pro eo quòd dixit Tyrus de Jeruſalem; Euge, confractæ ſunt portæ populorum, converſa eſt ad me: implebor, de- 3 ſerta eſt. Propterea hæc dicit Dominus Deus; Ecce ego ſuper te, Tyre, & aſcendere faciam ad te gentes multas, ſicut aſcendit 4 mare fluctuans. Et diſſipabunt muros Tyri, & deſtruent turres ejus: & radam pulverem ejus de ea, & dabo eam in limpidiſſimam petram.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

8 Τάδε λέγει (λ) κύριος, Ἀνθ' ὧν εἶπε Μωάβ, (μ) Ἰδοὺ, οὐχ ὃν τρόπον πάντα τὰ 9 ἔθνη, (ν) οἶκος Ἰσραὴλ καὶ Ἰούδα; Διατοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ παραλύω τὸν ὦμον Μωὰβ ἀπὸ (ξ) πόλεων ἀκρωτηρίων αὐτοῦ, ἐκλεκτὴν γῆν, οἶκον Βεθασιμοὺθ ἐπάνω πηγῆς πό- 10 λεως παραθαλασσίας, Τοὺς υἱοὺς Κεδὲμ ἐπὶ τοὺς υἱοὺς Ἀμμὼν δέδωκα αὐτῷ εἰς κληρονομίαν, ὅπως μὴ (ο) μνεία γένηται τῶν υἱῶν (π) 11 Ἀμμών. Καὶ εἰς Μωὰβ ποιήσω ἐκδίκη- 12 σιν, καὶ ἐπιγνώσονται διότι ἐγὼ κύριος. Τάδε λέγει (ρ) κύριος, Ἀνθ' ὧν ἐποίησεν ἡ Ἰδουμαία (σ) ἐν τῷ ἐκδικῆσαι αὐτοὺς ἐκδίκησιν εἰς τὸν οἶκον Ἰούδα, καὶ ἐμνησικάκη- 13 σαν, καὶ ἐξεδίκησαν δίκην, Διατοῦτο τάδε λέγει (τ) κύριος, Καὶ ἐκτενῶ τὴν χεῖρά μου ἐπὶ τὴν Ἰδουμαίαν, καὶ (υ) ἐξολοθρεύσω ἐξ αὐτῆς ἄνθρωπον καὶ κτῆνος, καὶ θήσομαι αὐτὴν ἔρημον· καὶ ἐκ Θαιμὰν διωκόμενοι ἐν ῥομφαίᾳ πεσοῦνται. 14 Καὶ δώσω (φ) ἐκδίκησίν μου ἐπὶ τὴν Ἰδουμαίαν ἐν χειρὶ λαοῦ μου Ἰσραὴλ, καὶ ποιήσουσιν ἐν τῇ Ἰδουμαίᾳ κατὰ τὴν ὀργήν (χ) μου καὶ κατὰ τὸν θυμόν μου, καὶ ἐπιγνώσονται τὴν 15 ἐκδίκησίν μου, λέγει κύριος. Διατοῦτο τάδε λέγει (ψ) κύριος, Ἀνθ' ὧν ἐποίησαν οἱ ἀλλόφυλοι ἐν ἐκδικήσει, καὶ ἐξανέστησαν ἐκδίκησιν ἐπιχαίροντες ἐκ ψυχῆς, τοῦ 16 ἐξαλεῖψαι ἕως (ω) ἑνὸς, Διατοῦτο τάδε λέγει (α) κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐκτείνω τὴν χεῖρά μου ἐπὶ τοὺς ἀλλοφύλους, καὶ (β) ἐξολοθρεύσω Κρῆτας, καὶ ἀπολῶ τοὺς καταλοίπους 17 τοὺς κατοικοῦντας τὴν (γ) παραλίαν. Καὶ ποιήσω ἐν αὐτοῖς ἐκδικήσεις μεγάλας, καὶ ἐπιγνώσονται διότι ἐγὼ κύριος, ἐν τῷ δοῦναι (δ) τὴν ἐκδίκησίν μου ἐπ' αὐτούς.

8 Hæc dicit Dominus; Pro eo, quòd dixit (f) Moab; Ecce, (g) nonne ſicut omnes gentes, dom⁹ Iſrael, et Juda? 9 Idcircò ecce ego diſſolvo humerum Moab de civitatibus promontoriorum ejus, electam terram, (h) domum Bethaſimuth ſuper fontem urbis maritimæ: 10 Filios Cedem ſuper filios Ammon: dedi (i) ei in hæreditatem; ut non ſit memoria filiorum (k) Ammon. 11 Et in Moab faciam ultionem: & cognoſcent, quoniam ego Dominus. 12 Hæc dicit Dominus; Pro eo, quòd fecit Idumæa, in ulciſcendo ipſos (l) ultionem de domo Juda, & memoriam retinuerunt mali, et ulti ſunt ultione: 13 Propterea hæc dicit Dominus; Et extendam manum meam ſuper Idumæam: & interficiam de ea hominem, et pecus: & ponam eam deſertum: & de Theman (m) fugientes in gladio cadent. 14 Et dabo ultionem meam ſuper Idumæam in manu populi mei Iſrael: & facient in Idumæa juxta irã meã, & juxta furorem meum: & cognoſcent ultionem meam, dicit Dominus. 15 Propterea hæc dicit Dominus; Pro eo, quòd fecerunt alienigenæ (n) in ultione, & ſuſcitaverunt vindictam inſultantes ex animo, ut delerent uſque (o) ad unum: 16 Propterea hæc dicit Dominus; Ecce ego extendo manum meam ſuper alienigenas: & diſperdam (p) Cretenſes, & perdam reliquos habitantes maritimam. 17 Et faciam in eis ultiones magnas: et cognoſcent, quia ego Dominus, cùm dedero ultionem meam ſuper eos.

MS.A. (λ) ἀδωναῒ κύριος, (μ) καὶ Σηεὶρ, Ἰδοὺ ὃν τρόπον (ν) ὁ οἶκος (ξ) τῶν πόλεων, ἀπὸ πόλεων (ο) γένηται μνεία (π) Ἀμμὼν ἐν τοῖς ἔθνεσιν. Καὶ ἐν Μωὰβ (ρ) ἀδωναῒ κύριος, (σ) τοῦ ἐκδικῆσαι (τ) ἀδωναῒ κύριος, (υ) ἐξολεθρεύσω (φ) τὴν ἐκδίκησίν (χ) τοῦ θυμοῦ μου, καὶ ἐπιγνώσονται (ψ) ἀδωναῒ κύριος, (ω) αἰῶνος, (α) ἀδωναῒ κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐκτενῶ (β) ἐξολεθρεύσω κρῆτας Σιδῶνος, καὶ (γ) παραθαλασσίαν. (δ) μου τὴν

ΚΕΦ. κϛʹ.

1 (α) ΚΑὶ ἐγενήθη ἐν τῷ ἑνδεκάτῳ ἔτει, μιᾷ τοῦ μηνὸς (β), ἐγένετο λόγος κυρίου 2 πρὸς μὲ, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, (γ) ἀνθ' οὗ εἶπε Σὸρ ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, Εὖγε συνετρίβη, ἀπόλωλε τὰ ἔθνη, ἐπεστράφη πρὸς μὲ, ἡ 3 πλήρης ἠρήμωται· Διατοῦτο τάδε λέγει (δ) κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπὶ σὲ Σὸρ, καὶ ἀνάξω ἐπὶ σὲ ἔθνη πολλὰ, ὡς ἀναβαίνει ἡ θάλασσα (ε) τοῖς κύμασιν αὐτῆς. 4 Καὶ καταβαλοῦσι τὰ τείχη Σὸρ, καὶ (ζ) καταβαλοῦσι τοὺς πύργους σου, καὶ (η) λικμήσω τὸν χοῦν αὐτῆς ἀπ' αὐτῆς, καὶ δώσω (θ) αὐτὴν εἰς λεωπετρίαν.

CAP. XXVI.

1 ET factum eſt in undecimo anno, unâ menſis, factus eſt ſermo Domini ad me, dicens; 2 Fili hominis, pro eo quòd dixit Sor ſuper Hieruſalem; Euge, confracta eſt, periit, gentes converſæ ſunt ad me; quæ fuit plena, deſerta eſt: 3 Propterea hæc dicit Dominus; Ecce ego ſuper te, Sor: & aſcendere faciam ſuper te gentes multas, ſicut aſcendit mare fluctibus ſuis. 4 Et dejicient muros Sor, & dejicient turres tuas: & ventilabo pulverem ejus de ea: et dabo eam in (a) nitidiſſimam petram:

MS.A. (α) Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ δωδεκάτῳ (β) τοῦ πρώτου, (γ) ἀνθ' ὧν (δ) ἀδωναῒ κύριος, (ε) ἐν τοῖς (ζ) καθελοῦσιν (η) λικμήσουσιν (θ) σὲ εἰς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

8 כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים חֲלַף דַּאֲמַרוּ מוֹאֲבָאֵי וְשֵׂעִיר מַה שְׁנוֹ מִכָּל עַמְמַיָא דְבֵית יְהוּדָה׃
9 בְּכֵן הָא אֲנָא תָּבַר יַת תְּקוֹף מוֹאָב מִקִּרְוֵיהוֹן מִכְּרַכֵּיהוֹן עַד פַּצִּיחֵיהוֹן חֶדְוַת אַרְעֲהוֹן
10 בֵּית יְשִׁימוֹת בַּעַל מְעוֹן וְקִרְיָתָיִם׃ לִבְנֵי קֶדֶם עַל בְּנֵי עַמּוֹן וְאֶמְסְרִנַּהּ לִירוּתָא בְּדִיל
11 דְּלָא יְהֵי דָכְרָן בְּנֵי עַמּוֹן בְּעַמְמַיָא׃ וּבְמוֹאָב אַעְבֵּיד פּוּרְעָנוּת דִּינִין וְיֵדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ׃
12 כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים חֲלַף דַּעֲבַדוּ אֱדוֹמָאֵי בִּתְקוֹף פּוּרְעָנוּת לְבֵית יְהוּדָה וְחָבוּ חוֹבָא
13 וְאִתְפְּרַעוּ מִנְּהוֹן׃ בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים וַאֲרִים מְחַת גְּבוּרְתִּי עַל אֱדוֹם וַאֲשֵׁיצֵי
14 מִנַּהּ אֱנָשָׁא וּבְעִירָא וְאֶתְּנִנַּהּ חוּרְבָּא מִדָּרוֹמָא וְיָתְבֵי דְדָן בְּחַרְבָּא יִתְקַטְלוּן׃ וְאֶתֵּן יַת
פּוּרְעָנוּתִי בֶּאֱדוֹם בְּיַד עַמִּי יִשְׂרָאֵל וְיִתְמַסְרוּן וְיִתְפַּרְעוּן מִן אֱדוֹם כְּרוּגְזִי וּכְחֵמְתִּי וְיֵדְעוּן
15 יַת פּוּרְעָנוּתִי אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים חֲלַף דַּעֲבַדוּ פְּלִשְׁתָּאֵי בִּדְבָבוּ
16 וְיִתְפַּרְעוּן פּוּרְעָנוּת בִּצְפוּחַ נְפַשׁ בְּדִיל לְחַבָּלָא דִּדְבָבוּת עָלָם׃ בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים
הָא אֲנָא מְרִים יַת מְחַת גְּבוּרְתִּי עַל פְּלִשְׁתָּאֵי וַאֲשֵׁיצֵי יַת עַמָּא דְחַיָּבִין לְאִשְׁתֵּיצָאָה
17 וְאוֹבֵיד יַת שְׁאָר סְפַר יַמָּא׃ וְאַעְבֵּיד בְּהוֹן פּוּרְעֲנִין רַבְרְבָן בִּתְקוֹף רְגָז וְיֵדְעוּן אֲרֵי אֲנָא
יְיָ בְּדְאֶתֵּן יַת פּוּרְעָנוּתִי בְּהוֹן׃

כו

1 וַהֲוָה בְּחַדָא עַסְרֵי שְׁנִין בְּחַד לְיַרְחָא הֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי לְמֵימַר׃ 2 בַּר
אָדָם חֲלַף דַּאֲמַרַת צוֹר עַל יְרוּשְׁלֵם חֶדְוָא אִתְבָּרַת דַּהֲוָת מְסַפְּקָא סְחוֹרָא לְכָל עַמְמַיָא
3 אִסְתְּחַרַת לְמֵיתֵי לְוָתִי דַּהֲוָת מַלְיָא חֲרוּבַת׃ בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים הָא אֲנָא שָׁלַח
רוּגְזִי עֲלָךְ צוֹר וְאַסֵּק עֲלָךְ מַשְׁרְיַת עַמְמִין סַגִּיאִין כְּמִסַּק יַמָּא בְּאִתְרְגוּשַׁת גַּלּוֹהִי׃
4 וִיחַבְּלוּן שׁוּרֵי צוֹר וִיפַגְּרוּן מִגְדְּלָהָא וְאַעְקַר עַפְרַהּ מִנַּהּ וְאֶתֵּן יָתַהּ לִשְׁעִיעוּת כֵּיף גְּלֵי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

8 Hæc dicit Dñs Deus: Pro eo quòd dixerunt Moabitæ & Seir; In quo differunt viri dom⁹ Juda ab omnib⁹ populis? 9 Propterea ecce ego conteram fortitudinem *Moab* ex civitatibus eorum, ex arcibus eorum, uſque ad villas ipſorum, gaudium terræ eorum, Beth-jeſimoth, Beelmeon & Cariathaim. 10 Filiis Orientalib⁹ contra filios Ammon; & tradam eam in hæreditatem, ut non ſit memoria filiorum Ammon in populis. 11 Et in *Moab* faciam ultionem judiciorum, & ſcient quia ego Dñs. 12 Hæc dicit Dñs Deus: Pro eo quòd fecerunt Idumæi in furore ultionem contra domum Juda, & peccaverunt peccatum, & vindictam ſumpſerunt ex eis: 13 Ideò hæc dicit Dñs Deus: Et levabo plagam fortitudinis meæ ſuper Idumæam, & diſperdam ex ea hominem & jumentum; & dabo eam deſertam ab Auſtro, & habitatores Dedan gladio occidentur. 14 Et dabo ultionem meam in Idumæam per manum populi mei Iſrael, *tradentúrque*: & ſument ultionem ab *Idumæa* pro furore meo, & ira mea; & ſcient ultionem meam, dicit Dñs Deus. 15 Hæc dicit Dñs Deus: Pro eo quòd fecerunt Philiſtæi hoſtiliter, & ulti ſunt ſeſe cum inſultatione animi ad diſperdendum propter inimicitiam antiquam. 16 Propterea hæc dicit Dñs Deus: Ecce ego levo plagam potentiæ meæ ſuper Philiſthæos, & diſperdam populum, qui rei ſunt, ut diſpereant; & perdam reliquias portus maris. 17 Et faciam in eis ultiones magnas in ira furoris: & ſcient quia ego Dominus, cùm dedero ultionem meam in eis.

CAP. XXVI.

1 ET factum eſt undecimo anno, prima [*die*] menſis, factum eſt verbum prophetiæ à facie Dñi ad me, dicens: 2 Fili hominis, pro eo quòd dixit Tyrus ſuper Jeruſalem: Euge confracta eſt quæ præbebat mercimonia omnibus populis, converſa eſt ut veniat ad me; quæ erat plena, deſerta eſt. 3 Propterea hæc dicit Dominus Deus: Ecce ego mitto furorem meum ſuper te Tyre, & aſcendere faciam contra te exercitus populorum multorum, ſicut aſcendit mare in fremitu fluctuum ſuorum. 4 Et diſſipabunt muros Tyri, & deſtruent turres ej⁹, & evellã pulverem ej⁹ ab ea: & dabo eam in politiẽ petræ apertæ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

8 * ܥܠ ܡܘܐܒ * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܥܠ ܕܐܡܪ ܡܘܐܒ ܘܣܥܝܪ. ܗܐ ܒܟܠܗܘܢ
ܥܡܡܐ ܕܒܝܬ ܝܗܘܕܐ.. * ܡܛܠܗܢܐ ܗܐ ܡܫܪܐ ܐܢܐ ܠܟܬܦܗ ܕܡܘܐܒ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ. ܡܢ 9
ܡܕܝܢܬܗ ܘܡܢ ܬܚܘܡܘܗܝ. ܫܘܒܚܐ ܕܐܪܥܐ ܕܒܝܬ ܝܫܝܡܘܬ. ܘܕܒܥܠܡܥܘܢ. ܘܕܩܘܪܝܬܝܡ.
* ܕܒܢܝ ܡܕܢܚܐ. ܘܕܒܢܝ ܥܡܘܢ. ܐܬܠܝܘܗܝ ܠܝܪܬܘܬܐ. ܕܠܐ ܬܬܕܟܪ ܪܒܬ ܕܒܢܝ ܥܡܘܢ ܒܥܡܡܐ. 10
11 * ܘܒܡܘܐܒ ܐܥܒܕ ܕܝܢܐ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܥܠ ܐܕܘܡ * ܗܟܢܐ ܐܡܪ 12
ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܥܠ ܕܥܒܕ ܐܕܘܡ ܦܘܪܥܢܐ ܠܒܝܬ ܝܗܘܕܐ: ܘܢܛܪ ܐܟܬܐ ܘܐܬܚܡܬ ܒܗܘܢ..
* ܡܛܠܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܡܪܝܡ ܐܢܐ ܐܝܕܝ ܥܠ ܐܕܘܡ.. ܘܡܘܒܕ ܐܢܐ 13
ܡܢܗ. ܒܢܝܢܫܐ ܘܒܥܝܪܐ. ܘܐܥܒܕܝܗ ܠܚܘܪܒܐ. ܡܢ ܬܝܡܢ. ܘܕܪܢ. ܘܒܣܝܦܐ ܢܦܠܘܢ.
* ܘܐܥܒܕ ܦܘܪܥܢܝ ܒܐܕܘܡ. ܒܝܕ ܥܡܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܢܬܦܪܥܘܢ ܡܢ ܐܕܘܡ ܐܝܟ ܪܘܓܙܝ 14
ܘܐܝܟ ܚܡܬܝ. ܘܢܕܥܘܢ ܦܘܪܥܢܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. * ܥܠ ܦܠܫܬ *
* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܥܠ ܕܥܒܕܘ ܦܠܫܬܝܐ ܦܘܪܥܢܐ: ܘܐܬܦܪܥܘ ܦܘܪܥܢܐ ܐܝܟ ܪܓܬܐ 15
ܕܢܦܫܗܘܢ. ܕܢܚܒܠܘܢ ܪܚܡܘܬܐ ܕܥܠܡ.. * ܡܛܠܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܐ 16
ܡܪܝܡ ܐܢܐ ܐܝܕܝ ܥܠ ܦܠܫܬܝܐ. ܘܡܘܒܕ ܐܢܐ ܠܟܪܝܬܝܐ. ܘܡܘܒܕ ܐܢܐ ܫܪܟܐ ܕܣܦܪ ܝܡܐ.
* ܘܐܥܒܕ ܒܗܘܢ ܦܘܪܥܢܐ ܪܘܪܒܐ ܒܡܟܣܢܘܬܐ ܘܒܚܡܬܐ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܡܐ 17
ܕܐܬܒܥܐ ܡܢܗܘܢ ܦܘܪܥܢܝ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܟܗ * ܥܠ ܨܘܪ *
* ܒܫܢܬ ܚܕܥܣܪܐ ܒܚܕ ܒܝܪܚܐ. ܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ. ܥܠ 1 2
ܕܐܡܪܬ ܨܘܪ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ ܐܚܝܢ.. ܐܬܬܒܪܘ ܬܪܥܐ ܕܥܡܡܐ ܘܦܢܘ ܠܘܬܝ: ܐܫܬܚܪܒܬ ܘܨܕܝܬ..
* ܡܛܠܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܠܘܬܟܝ. ܘܐܣܩ ܠܘܬܟܝ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ. 3
ܐܝܟ ܕܣܠܩ ܝܡܐ ܒܓܠܘܗܝ. * ܘܢܚܒܠܘܢ ܫܘܪܝܗ ܕܨܘܪ ܘܢܣܚܦܘܢ ܡܓܕܠܝܗ. 4
ܘܢܟܡܪܘܢ ܥܦܪܗ ܡܢܗ. ܘܐܥܒܕܝܗ ܐܝܟ ܟܐܦܐ ܫܥܝܥܬܐ.

Contra Moab. Sic ait Dominus dominorum; Quia dixit Moab & Sir, Ecce inter 8
omnes gentes ſunt Judæi; Iccirco ecce luxabo 9
humerum Moabi ab urbibus, ab urbibus ejus & confinibus ejus: decus terræ Beth-aſimonis,
Belmonis, & Curiathim, Orientalium, atque 10
Ammonitarum, dabo in hæreditatem, ut nulla
maneat memoria Rabathæ Ammonitarum in- 11
ter gentes. Etiam in Moabum exercebo judicium, & experiemini me eſſe Dominum.

Contra Edom. Sic ait Dominus do- 12
minorum; Eò quòd ultionem fecerit Edom contra Judæos, odium inteſtinum conceperit,
& zelaverit in eos; Iccirco ſic ait Dominus 13
dominorum, Ecce ego ſublatâ manu meâ contra Edom, perditurus ſum ex ea tam homines quàm jumenta, eámq; redacturus in ſolitudinem à Themane & Darane; & gladio concidet. Et exercebo ultionem meam in Edom, per 14
populum meum Iſraelem, & ultionem ſumen t ab Edom ſecundùm iram meam & ſecundùm excandeſcentiam meam, & experientur ultionem meam, ait Dominus dominorum.

Contra Paleſtinam. Sic ait Dominus 15
dominorum: Quia vindictam exercuerunt Paleſtini, & ſumpſerunt ultionem juxta cupiditatem animi ſui, ut violarent amicitiam perpetuam, Iccirco ſic ait Dominus dominorum, 16
Ecce levabo manum meam ſuper Paleſtinos, & perdam Ceretæos, perdámq; reliquas oras
maritimas. Et exercebo in eos ultiones meas 17
magnas in increpatione & excandeſcentia, et experientur me eſſe Dominum, cùm exegero ab eis pœnas meas.

CAP. XXVI.

Contra Tyrum.

ANno undecimo, primâ *die* menſis, fuit ad 1
me ſermo Domini, dicendo, Fili hominis, 2
quia dixit Tyrus de Jeruſalem, Vivifica nos, fractæ ſunt portæ populorum, et converſi ſunt
ad me, vaſtata et deſolata eſt: Iccirco ſic ait 3
Dominus dominorum, Ecce me contra te, et aſcendere faciam contra te gentes multas, quemadmodum aſcendit mare cum fluctibus
ſuis: Et vaſtabunt muros Tyri, deſtruent 4
turres ejus, et effodient ex ea pulveres ejus, et reddam eam ut lapidem expolitum:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الاصحاح الرابع عشر * النبوه في مواب * هكذا يقول ادوناي الرب * 8
من اجل ان مواب قالت ها كمثل جميع الامم كذلك بيت اسرايل ويهودا * من اجل هذا ها 9
انا احلع كتف مواب من مدن اطراف مصاريه * كالارض المختار بيت باسموت وفوق ينبوع
المدينة التي علي ساحل البحر * بني كادم علي بني عمون اعطيته ميراثا * كيلا يكون ذكر 10
بني عمون * وفي مواب ساصنع انتقاما * ويعلمون اني انا الرب * النبوه في ادوم * 11
* هكذا يقول الرب ادوناي * من اجل ان ادوم صنعت عند انتقامهم انتقاما ببيت يهودا * 12
وحقدوا وانتقموا انتقاما * لاجل هذا هكذا يقول ادوناي الرب * فامدد يدي علي ادوم * 13
واستاصل منها الانسان والبهيمة * واجعلها خرابا * والمطرودين من تامان يسقطون بالسيف * واعطي 14
انتقامي علي ادوم بيدي شعب اسرايل * ويصنعون كرجزي وكغضبي * ويعلمون انتقامي
يقول ادوناي الرب * النبوه في فلسطين * لاجل هذا هكذا يقول ادوناي الرب * 15
من اجل ان الغرباء القبايل صنعت بالانتقام * واقامت انتقاما * فرحين بالنفس ليفسدوا الي
الابد * لاجل هذا هكذا يقول ادوناي الرب * ها انا امدد بيدي علي القبايل الغريبة * 16
واستاصل القصاه * واهلك البقايا السكان عند ساحل البحر * واصنع فيهم انتقاما عظما * 17
ويعلمون اني ادوناي الرب * عندما اعطي انتقامي عليهم * الفصل السادس والعشرون *
* النبوه في صور * وصار في السنة الحادية عشر * في اول يوم من الشهر * كان 1
قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان * من اجل ان صور قالت علي ايروسليم نعما * كسرت 2
هلكت * الامم رجعت الي * المملوه افقرت * لاجل هذا يقول ادوناي الرب * ها انا عليك يا 3
صور * واصعد عليك امما كثيرين كما يصعد البحر بامواجه * ويخربون جبال صور * ويهدمون 4
بروجك * واذري ترابها عليها * واصيرها صخر ملساء *

Textus decimusquartus

Prophetia contra Moab.

Sic dicit Adonai Dominus; Quia Moab 8
dixit, Ecce quales ſunt omnes gentes,
talis domus Iſraelis & Judæ: Pro- 9
pterea en ego luxabo humerum Moabi ex urbibus extremorum viſcerum ejus: ut terram delectam, domum Beth-aſmuth ſitam ſuper fontem urbis quæ eſt ſecus
oras maritimas; Filiis Kedem ſuper 10
filios Ammon dedi in hæreditatem, ut nulla ſuperſit memoria filiorum Ammon.
Etiam contra Moab exercebo vindictam, 11
& ſcietis me eſſe Dominum.

Prophetia contra Edom.

Ita dicit Dominus Adonai; Quoniam 12
Edomæi, cùm ulciſcerentur, ultionem ſumpſerunt à domo Judæ, & odium
ſervantes vindictam exegerunt: Ideò 13
ſic dicit Adonai Dominus; Extendam manum meam ſuper Edom, extirpabo ex ea hominem & jumentum, redigámque eam in ruinam, & expulſi è Themane, gladio
concident. Et vindictam ſumam ab E- 14
dom per manus populi Iſraelitici, ut faciant ſecundùm iram meam & ſecundùm excandeſcentiam meam: atque ita experientur vindictam meam, dicit Adonai Dominus.

Prophetia contra Paleſtinam.

Iccircò ſic dicit Adonai Dominus; quo- 15
niam exteræ nationes ad ultionem fecerunt, & ſuſcitaverunt ultionem, animo inſultantes ut extinguerent in perpetuum;
Propterea ſic dicit Adonai Dominus; Ecce 16
ego extendam manum meam ſuper nationes exteras, extirpabo racemationem, & perdam reliquias habitantes ad oras mari-
timas; Et exercebo in eos ultionem ma- 17
gnam: ſciatque me eſſe Adonai Dominum, cùm dedero ultionem meam ſuper ipſos.

CAP. XXVI.

Prophetia contra Sur.

F*Actum eſt autem anno undecimo, pri-* 1
mâ die menſis, ut eſſet ſermo Domini ad
me, dicens; O fili hominis, Quia Sur 2
dixit de Jeruſalem; Euge, confracta eſt, periit, gentes converſæ ſunt ad me, quæ
plena erat incolis, deſerta eſt: Propter- 3
eà dicit Adonai Dominus; Ecce me contra te O Sur, & faciam ut aſcendant contra te gentes multæ, quemadmodum
aſcendit mare cum procellis ſuis: Et 4
deſtruent montes Sur, & demolientur turres tuas: diſpergam pulverem ejus ſuper ipſam, & reddam eam in petram nitidiſſimam;

יחזקאל: כו

ego quia ; maris medio in erit ſagenarum Extenſio
5 מִשְׁטַח חֲרָמִים תִּהְיֶה בְּתוֹךְ הַיָּם כִּי אֲנִי
direptionem in erit & : Deus Dominus dixit , ſum locutus
דִבַּרְתִּי נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה וְהָיְתָה לְבַז
: occidentur gladio in , agro in quæ ejus filiæ Et .gentibus
לַגּוֹיִם׃ וּבְנוֹתֶיהָ אֲשֶׁר בַּשָּׂדֶה בַּחֶרֶב תֵּהָרַגְנָה 6
: Deus Dominus dixit ſic Quia .Dominus ego quòd ſcient &
7 וְיָדְעוּ כִּי־אֲנִי יְהוָה׃ כִּי כֹה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה
Babel regem Nebuchadreſar Sor adverſum adducens ego Ecce
הִנְנִי מֵבִיא אֶל־צֹר נְבוּכַדְרֶאצַּר מֶלֶךְ־בָּבֶל
, equitibus in & , curru in & , equo in ,regum regem ,aquilone ab
מִצָּפוֹן מֶלֶךְ מְלָכִים בְּסוּס וּבְרֶכֶב וּבְפָרָשִׁים
: interficiet gladio in , agro in tuas Filias .multo populóque , cœtu &
וְקָהָל וְעַם־רָב׃ בְּנוֹתַיִךְ בַּשָּׂדֶה בַּחֶרֶב יַהֲרֹג 8
, aggerem te contra effundet & : ligneam turrim te contra dabit &
וְנָתַן עָלַיִךְ דָּיֵק וְשָׁפַךְ עָלַיִךְ סֹלְלָה
dabit ſuæ catapultæ ictum Et .ſcutum te contra faciet conſurgere &
9 וְהֵקִים עָלַיִךְ צִנָּה׃ וּמְחִי קָבָלּוֹ יִתֵּן
copia Præ .ſuis gladiis in deſtruet tuas turres & ; tuos muros contra
בְּחֹמוֹתָיִךְ וּמִגְדְּלֹתַיִךְ יִתֹּץ בְּחַרְבוֹתָיו׃ מִשִּׁפְעַת 10
currus & , rotæ & , equitis voce A .eorum pulvis te operiet ejus equorum
סוּסָיו יְכַסֵּךְ אֲבָקָם מִקּוֹל פָּרַשׁ וְגַלְגַּל וָרֶכֶב
introitus tanquam,tuas portas in illo ingrediendo in ,tui muri movebuntur
תִּרְעַשְׁנָה חוֹמוֹתַיִךְ בְּבֹאוֹ בִּשְׁעָרַיִךְ כִּמְבוֹאֵי
conculcabit ſuorum equorum ungulis In .diruptæ civitatis
עִיר מְבֻקָּעָה׃ בְּפַרְסוֹת סוּסָיו יִרְמֹס אֶת־ 11
ſtatuæ & , occidet gladio in tuum populum : tuas plateas omnes
כָּל־חוּצוֹתָיִךְ עַמֵּךְ בַּחֶרֶב יַהֲרֹג וּמַצְּבוֹת
, tuam facultatem prædabuntur Et .deſcendet terram in tuæ fortitudinis
עֻזֵּךְ לָאָרֶץ תֵּרֵד׃ וְשָׁלְלוּ חֵילֵךְ 12
domos & , tuos muros deſtruent & ,tuam negotiationem diripient &
וּבָזְזוּ רְכֻלָּתֵךְ וְהָרְסוּ חוֹמוֹתַיִךְ וּבָתֵּי
tuum pulverem & , tua ligna & ,tuos lapides & ; demolientur tui deſiderii
חֶמְדָּתֵךְ יִתֹּצוּ וַאֲבָנַיִךְ וְעֵצַיִךְ וַעֲפָרֵךְ
:tuorum canticorum turbam faciam ceſſare Et .ponent aquarum medio in
בְּתוֹךְ מַיִם יָשִׂימוּ׃ וְהִשְׁבַּתִּי הֲמוֹן שִׁירָיִךְ 13
te dabo Et .amplius audietur non tuarum cithararum vox &
וְקוֹל כִּנּוֹרַיִךְ לֹא יִשָּׁמַע עוֹד׃ וּנְתַתִּיךְ 14
:ultrà ædificaberis nec , eris ſagenarum expanſio , petræ læve cacumen in
לִצְחִיחַ סֶלַע מִשְׁטַח חֲרָמִים תִּהְיֶה לֹא תִבָּנֶה עוֹד
Sic .Deus Dominus dixit , ſum locutus Dominus ego quia
כִּי אֲנִי יְהוָה דִּבַּרְתִּי נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה׃ כֹּה 15
clamando in ,tuæ ruinæ voce à Nónne : Sor ipſi Deus Dominus dixit
אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה לְצוֹר הֲלֹא מִקּוֹל מַפַּלְתֵּךְ בֶּאֱנֹק
? inſulæ commovebuntur ,tui medio in occiſione occidi in , occiſum
חָלָל בֵּהָרֵג הֶרֶג בְּתוֹכֵךְ יִרְעֲשׁוּ הָאִיִּים׃
removebunt & ,maris prælati omnes ſuis ſoliis deſuper deſcendent Et
וְיָרְדוּ מֵעַל כִּסְאוֹתָם כֹּל נְשִׂיאֵי הַיָּם וְהֵסִירוּ 16
tremoribus : exuent ſuæ recamaturæ veſtimenta & , ſua pallia
אֶת־מְעִילֵיהֶם וְאֶת־בִּגְדֵי רִקְמָתָם יִפְשֹׁטוּ חֲרָדוֹת
admirabuntur &,momenta ad trement & ,ſedebunt terram ſuper ,induentur
יִלְבָּשׁוּ עַל־הָאָרֶץ יֵשֵׁבוּ וְחָרְדוּ לִרְגָעִים וְשָׁמְמוּ
periſti Quomodo :tibi dicent & ,lamentum te ſuper aſſument Et .te ſuper
עָלָיִךְ׃ וְנָשְׂאוּ עָלַיִךְ קִינָה וְאָמְרוּ לָךְ אֵיךְ אָבַדְתְּ 17
,mari in fortis fuit Quæ ? laudata urbs , maribus à habitata
נוֹשֶׁבֶת מִיַּמִּים הָעִיר הַהֻלָּלָה אֲשֶׁר הָיְתָה חֲזָקָה בַיָּם
.ejꝰ habitatoribꝰ omnibꝰ ſuũ terrorẽ dabant qui ,ejꝰ habitatores & ipſa
הִיא וְיֹשְׁבֶיהָ אֲשֶׁר־נָתְנוּ חִתִּיתָם לְכָל־יוֹשְׁבֶיהָ׃
quæ inſulæ terrebuntur & :tuæ ruinæ die inſulæ pavebunt Nunc
עַתָּה יֶחְרְדוּ הָאִיִּן יוֹם מַפַּלְתֵּךְ וְנִבְהֲלוּ הָאִיִּים אֲשֶׁר־ 18
.te egrediendo ab mari in
בַּיָּם מִצֵּאתֵךְ׃

Verſio VULG. LAT.

5 Siccatio ſagenarum erit in me-
dio maris, quia ego locutus ſum,
ait Dominus Deus ; & erit in di-
6 reptionem Gentibus. Filiæ quo-
que ejus, quæ ſunt in agro, gladio
interficientur : & ſcient quia ego
7 Dominus. Quia hæc dicit Do-
minus Deus ; Ecce ego adducam
ad Tyrum Nabuchodonoſor re-
gem Babylonis ab Aquilone, re-
gem regum, cum equis, & curri-
bus, & equitibus, & cœtu, po-
8 pulóque magno. Filias tuas, quæ
ſunt in agro, gladio interficiet :
& circumdabit te munitionibus,
& comportabit aggerem in gy-
ro : & elevabit contra te clype-
9 um. Et vineas, & arietes tem-
perabit in muros tuos, & turres
10 tuas deſtruet in armatura ſua. In-
undatione equorum ejus operiet
te pulvis eorum : à ſonitu equi-
tum, & rotarum, & curruum,
movebuntur muri tui, cùm in-
greſſus fuerit portas tuas quaſi
per introitum urbis diſſipatæ.
11 Ungulis equorum ſuorum concul-
cabit omnes plateas tuas, popu-
lum tuum gladio cædet, & ſtatuæ
tuæ nobiles in terram corruent.
12 Vaſtabunt opes tuas, diripient
negotiationes tuas : & deſtruent
muros tuos, & domos tuas præ-
claras ſubvertent : & lapides
tuos, & ligna tua, & pulverem
tuum in medio aquarum ponent.
13 Et quieſcere faciam multitudinẽ
canticorum tuorum, & ſonitus
cithararum tuarum non audietur
14 ampliùs. Et dabo te in limpi-
diſſimam petram, ſiccatio ſage-
narum eris, nec ædificaberis ul-
trá : quia ego locutus ſum, ait
15 Dominus Deus. Hæc dicit Do-
minus Deus Tyro; Numquid non
à ſonitu ruinæ tuæ, & gemitu in-
terfectorum tuorum, cùm occiſi
fuerint in medio tuî, commove-
16 buntur inſulæ ? Et deſcendent
de ſedibus ſuis omnes principes
maris : & auferent exuvias ſuas,
& veſtimenta ſua varia abjicient,
& induentur ſtupore : in terra
ſedebunt, & attoniti ſuper re-
pentino caſu tuo admirabuntur.
17 Et aſſumentes ſuper te lamen-
tum, dicent tibi; Quomodò per-
îſti, quæ habitas in mari, urbs
inclyta, quæ fuiſti fortis in mari
cum habitatoribus tuis, quos for-
18 midabant univerſi ? Nunc ſtu-
pebunt naves in die pavoris tui:
& turbabuntur inſulæ in mari, eò
quòd nullus egrediatur ex te.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

5 Ψυγμὸς σαγηνῶν ἔσται ἐν μέσῳ (ι) θα-
λάσσης, ὅτι ἐγὼ λελάληκα, λέγει κύριος·
6 καὶ ἔσται εἰς προνομὴν (κ) τοῖς ἔθνεσιν. Καὶ
αἱ θυγατέρες αὐτῆς (λ) ἐν πεδίῳ μαχαίρᾳ
ἀναιρεθήσονται, καὶ γνώσονται ὅτι ἐγὼ κύριος.
7 (μ) Ὅτι τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπά-
γω ἐπὶ σὲ Σὸρ τὸν Ναβουχοδονόσορ (ν) βασι-
λέα Βαβυλῶνος ἀπὸ τοῦ Βορρᾶ, βασιλεὺς
βασιλέων ἐστὶ, (ξ) μεθ' ἵππων καὶ ἁρμάτων
καὶ (ο) ἱππέων καὶ συναγωγῆς ἐθνῶν πολ-
8 λῶν σφόδρα. Οὗτος τὰς θυγατέρας σου
τὰς ἐν τῷ πεδίῳ μαχαίρᾳ ἀνελεῖ, καὶ δώ-
σει ἐπὶ σὲ προφυλακὴν, καὶ περιοικοδομήσει,
καὶ (π) ποιήσει ἐπὶ σὲ κύκλῳ (ρ) χάρακα, καὶ
περίστασιν ὅπλων, καὶ τὰς λόγχας αὐτοῦ (σ)
9 ἀπέναντί σου δώσει. Τὰ τείχη σου, καὶ τοὺς
πύργους σου καταβαλεῖ ἐν ταῖς μαχαίραις αὐ-
10 τοῦ. Ἀπὸ τοῦ πλήθους τῶν ἵππων αὐτοῦ (τ)
κατακαλύψει σε ὁ κονιορτὸς αὐτῶν· (υ) καὶ
ἀπὸ τῆς φωνῆς τῶν ἱππέων αὐτοῦ καὶ τῶν τροχῶν
τῶν ἁρμάτων αὐτοῦ σεισθήσονται τὰ τείχη σου,
εἰσπορευομένου αὐτοῦ τὰς πύλας σου, ὡς (φ)
11 εἰσπορευόμενος εἰς πόλιν ἐκ πεδίου. Ἐν
ταῖς ὁπλαῖς τῶν ἵππων αὐτοῦ (χ) καταπατή-
σουσί σου πάσας τὰς πλατείας· τὸν λαόν σου
μαχαίρᾳ ἀνελεῖ, καὶ τὴν ὑπόστασιν τῆς ἰσχύος
12 σου ἐπὶ τὴν γῆν κατάξει. Καὶ προνομεύσει
τὴν δύναμίν σου, καὶ σκυλεύσει (ψ) τὰ ὑπάρ-
χοντά σου, καὶ καταβαλεῖ τὰ τείχη σου, καὶ (ω)
τοὺς οἴκους σου τοὺς ἐπιθυμητοὺς καθελεῖ· καὶ
τοὺς λίθους σου, καὶ τὰ ξύλα σου, καὶ τὸν χοῦν
σου εἰς μέσον τῆς θαλάσσης (α) σου ἐμβαλεῖ.
13 Καὶ καταλύσει τὸ πλῆθος τῶν μουσικῶν σου,
καὶ ἡ φωνὴ τῶν ψαλτηρίων σου οὐ μὴ ἀκουσθῇ
14 (β) ἔτι. Καὶ δώσω σε (γ) λεωπετρίαν,
ψυγμὸς σαγηνῶν ἔσῃ, οὐ μὴ οἰκοδομηθῇς
ἔτι, ὅτι (ϛ) ἐγὼ κύριος ἐλάλησα, λέγει κύ-
15 ριος. Διότι τάδε λέγει (δ) κύριος κύριος
(ε) τῇ Σὸρ, Οὐκ ἀπὸ φωνῆς τῆς πτώσεώς σου,
ἐν τῷ στενάξαι τραυματίας (ζ), ἐν τῷ σπά-
σαι μάχαιραν ἐν μέσῳ σου, σεισθήσονται αἱ
16 νῆσοι; Καὶ καταβήσονται ἀπὸ τῶν θρόνων αὐ-
τῶν πάντες οἱ ἄρχοντες ἐκ τῶν ἐθνῶν τῆς
θαλάσσης, καὶ (η) ἀφελοῦνται τὰς μίτρας ἀπὸ τῶν
κεφαλῶν αὐτῶν, καὶ τὸν ἱματισμὸν τὸν ποικί-
λον αὐτῶν ἐκδύσονται· (θ) ἐκστάσει ἐκστή-
σονται, ἐπὶ (ι) γῆν καθεδοῦνται, καὶ φοβηθή-
σονται τὴν ἀπώλειαν αὐτῶν, καὶ στενάξουσιν
17 ἐπὶ σὲ, Καὶ λήψονται ἐπὶ σὲ θρῆνον, καὶ
ἐροῦσί σοι, Πῶς (κ) κατελύθης ἐκ θαλάσ-
σης ἡ πόλις ἡ ἐπαινετὴ, (λ) ἡ δοῦσα τὸν φό-
βον αὐτῆς πᾶσι τοῖς κατοικοῦσιν αὐτήν;
18 Καὶ (μ) φοβηθήσονται αἱ νῆσοι ἀπὸ ἡμέρας πτώσεώς (ν) σου·

Siccatio ſagenarum erit in medio 5
maris: quia ego loquutus ſum, ait
Dominus. Et erit in direptionem
gentibus: Et filiæ ejus in campo 6
gladio interficientur: & ſcient,
quia ego Dominus. Quia hæc di- 7
cit Dominus; Ecce ego adduco ad
te, Sor, Nabuchodonoſor regem
Babylonis ab Aquilone (rex re-
gum eſt) cum equis, & curribus,
& equitibus, & cœtu gentium
multarũ valdè. Hic filias tuas, 8
quæ in campo, gladio interficiet:
& dabit ſuper te propugnaculũ,
& circùm ædificabit, & faciet
ſuper te in circuitu vallũ, & cir-
cunſtantiam armorum: & lanceas
ſuas contra te dabit: Muros tuos, 9
& turres tuas dejiciet in (b) gla-
diis ſuis: A multitudine equorũ 10
ejus, operiet te pulvis eorum: & à
voce equitum ejus, et rotarũ cur-
ruum ejus commovebuntur muri
tui; ingrediente eo portas tuas,
quaſi ingrediens urbem de campo.
In ungulis equorũ ſuorũ concul- 11
cabunt omnes plateas tuas: popu-
lum tuum gladio interficiet: &
ſubſtantiã fortitudinis tuæ in ter-
ram deducet: Et deprædabitur 12
potentiam tuam, & ſpoliabit ſub-
ſtantiam tuam, et deſtruet muros
tuos: & domos tuas deſiderabiles
ſubvertet: et lapides tuos, et ligna
tua, & pulverem tuum in mediũ
maris (c) tui injiciet. Et (d) ceſ- 13
ſare faciet multitudinem muſi-
corum tuorum: & vox pſalterio-
rum tuorum non audietur am-
pliùs. Et dabo te nitidiſſimam pe- 14
trã: ſiccatio ſagenarum eris: non
ædificaberis ultrá: quia ego Do-
minus loquutus ſum, ait Domi-
nus. Quia hæc dicit Dominus 15
Dominus Sor; Nónne à voce rui-
næ tuæ, cùm ingemuerint vulne-
rati, cùm evaginatus fuerit gla-
dius in medio tuî, commovebun-
tur inſulæ, Et deſcendent de ſe- 16
dibus ſuis omnes principes (e) ex
gentibus maris, & auferent mi-
tras de capitibus ſuis, & veſti-
mento ſuo vario nudabuntur?
Stupore ſtupebunt, in terra ſede-
bunt, et formidabunt perditionem
ſuam: et gement ſuper te: Et 17
aſſument ſuper te lamentum, et
dicent tibi; Quomodò (f) diſſi-
pata es è mari urbs (g) lauda-
ta, quæ dedit timorem ſuum
omnibus habitatoribus ſuis? Et 18
formidabunt inſulæ à die ruinæ
(b) tuæ:

MS. A. (ι) τῆς θαλάσσης, ὅτι ἐγὼ ἐλάλησα, λέγει κύριος, κύριος· (κ) ἔθνεσιν. (λ) αἱ ἐν τῷ παιδίῳ μαχαίρᾳ πεσοῦνται, καὶ γνώσονται ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος. (μ) Διὰ τοῦτο τάδε λέγει ἀδωναΐ κύριος, (ν) * βασιλέα βασιλέα (ξ) μετὰ (ο) συναγωγῆς πολλῶν ἐθνῶν σφόδρα. (π) περιποιήσει (ρ) σου χάρακα καὶ βελοστάσεις ὅπλων, (σ) ἐπὶ σὲ δώσει. (τ) καλύψει (υ) ἀπὸ φωνῆς (φ) ὁ εἰσπορευόμενος (χ) καταπατήσουσιν πάσας τὰς πλατείας σου· (ψ) τὸν πλοῦτόν σου, καὶ (ω) καθελεῖ τοὺς οἴκους σου τοὺς ἐπιθυμητούς· καὶ (α) ἐμβαλεῖ. (β) ἐν σοὶ οὐκέτι. (γ) εἰς λεωπετρίαν, καὶ ψυγμὸς (ϛ) ἐγὼ ἐλάλησα, (δ) ἀδωναΐ κύριος κύριος (ε) ἐπὶ σὲ Σόρ, Οὐχὶ (ζ) σου, (η) καθελοῦσιν (θ) καὶ ἐκστάσει (ι) τὴν γῆν (κ) ἀπώλου καὶ κατελύθης (λ) ἥτις ἐγενήθη ἰσχυρὰ ἐν θαλάσσῃ, αὐτὴ καὶ οἱ κατοικοῦντες αὐτήν, ἡ δοῦσα (μ) νῦν φοβηθήσονται (ν) σου, καὶ ταραχθήσονται νῆσοι ἐν τῇ θαλάσσῃ ἀπὸ τῆς ἐξοδίας σου. Ὅτι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 משטח צידין תהי בגו ימא ארי אנא גזרית במימרי אמר יי אלהים ותהי לבזא לעממיא׃
6 ויתבי כפרנהא די בחקלא בחרבא יתקטלון וידעון ארי אנא יי׃ ארי כדנן אמר יי
7 אלהים הא אנא מיתי על צור נבוכד נצר מלכא דבבל מצפונא מלך מלכיא בסוסון
8 וברתיכין ובפרשין ומשרין ועם סגי׃ יתבי כפרנך די בחקלא בחרבא יקטיל ויבני עלך
9 כרקום ויצבור עלך מליתא ויקים עלך די מזינין בתריסין׃ ומחת פגוזוהי יהב בשורך
10 ומגדלך יתרע באבני ברזליה׃ מריפסת סוסותיה יחפנך אבקהון מקל פרשין
וגלגלין ורתיכין יזועון שורך במיעלוהי בתרעך כמא דעלין בקרתא דמתרעא משור׃
11 בפרסת סוסותיה ידוש ית כל שוקך עמיך בחרבא יקטיל וקמת תוקפיך לארעא ימגר׃
12 ויבזון נכסך וישבון סחורתיך ויפגרון שורך ובתי חמדתיך יתרעון ואבנך ואעך ועפרך
13 בגו ימא ישוון׃ ואבטל אתרגושת זמריך וקל נגון כנריך לא ישתמע עוד׃
14 ואתננך לשעיעות כיף גלי משטח צידין תהי לא תתבני עוד ארי אנא יי גזרית במימרי
15 אמר יי אלהים׃ כדנן אמר יי אלהים לצור הלא מקל מפלת קטילך בניהום
16 מטעני חרב כד יתרמון קטילין בגויך יזועון פרוריא׃ ויחתון מעל כורסותיהון כל
רברבי ימא ויעדון ית מעיליהון וית לבושי ציוריהון ישלחון זיע ילבשון על ארעא
17 יתבון ויזועון מן קדם תביריהון ויצדון עלך׃ ויטלון עלך אליא ויימרון לך איכדין
אבדת דהוית יתבא בגו ימיא קרתא משבחתא דהוית יתבא בתקוף ימא היא ויתבהא
18 איכדין אתמסרו לתבר כל יתבהא׃ כען יזועון פרוריא ביום מפלת קטלך ויתבהלון
נגותא די בימא במפק גלותיך׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Expanſio piſcatorum erit in medio maris, quia ego decrevi in verbo meo, 5
dicit Dñs Deus, & erit in direptionem populis. Et habitatores villarum ejus 6
quæ ſunt in agro, gladio occidentur, & ſcient quia ego Dñs. Sic enim dicit 7
Dñs Deus : Ecce ego adducam ad Tyrum Nabuchodonoſor regem Babylonis
ab Aquilone, regem regum cum equis & curribꝰ & equitibꝰ & exercitu &
populo grandi. Habitatores villarum tuarum quæ ſunt in agro, gladio oc- 8
cidet, & ædificabit contra te machinam, & comportabit contra te aggerem,
& ſtatuet contra te armatos clypeis. Et percuſſionem tormentorum ſuorum 9
dabit in muros tuos, & turres tuas deſtruet lapidibꝰ ſuis ferreis. Præ concul- 10
catione equorum ejꝰ operiet te pulvis eorum ; præ voce equitum & rotarum
& curruũ commovebuntur muri tui, cùm ingreſſus fuerit per portas tuas ſicut
qui ingrediuntur civitatem cujꝰ diſſipatꝰ eſt murꝰ. Unguibus equorum ſuorum 11
conculcabit omnes vicos tuos, populum tuum gladio occidet, & ſtatuas for-
titudinis tuæ in terram collidet. Et diripient ſubſtantiam tuam, & capient 12
negotiationes tuas, & diſſipabunt muros tuos, & domos deſiderabiles tuas
demolientur: & lapides tuos, & ligna tua & pulverem tuum in medio maris
ponent. Et ceſſare faciam ſonitum canticorum tuorum : & vox concentꝰ ci- 13
thararũ tuarum non audietur ultià. Et dabo te in politiem petræ apertæ: ex- 14
panſio piſcatorum eris ; non ædificaberis ultrà ; quia ego Dñs decrevi in ver-
bo meo, dicit Dñs Deus. Hæc dicit Dñs Deus Tyro : Nónne à voce ruinæ 15
occiſorum tuorum, in gemitu vulneratorum gladio, quando projicientur oc-
ciſi in medio tui, commovebuntur ſuburbia ? Deſcendent de ſoliis ſuis omnes 16
principes maris, & auferent pallium ſuum, & veſtimenta ſua varii coloris ſpo-
liabunt ; tremore induentur, ſuper terram ſedebunt, & contremiſcent propter
interitum ſuum, & deſolabuntur ſuper te. Et tollent ſuper te lamentum, & 17
dicent tibi : Quomodo periiſti, quæ habitabas in medio maris ; civitas lau-
dabilis, quæ habitabat in fortitudine maris, ipſa & habitatores ejus ? quo-
modo traditi ſunt in excidium omnes habitatores ejus ? Nunc commovebun- 18
tur ſuburbia in die ruinæ occiſorum tuorum, & turbabuntur inſulæ quæ ſunt in mari ; cùm egreſſa fuerit tranſmigratio tua.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

5 ܘܬܗܘܐ ܡܫܛܚܐ ܕܡܨܝܕܬܐ ܒܓܘ ܝܡܐ: ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܡܠܠܬ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. *
6 ܘܬܗܘܐ ܠܒܙܬܐ ܠܥܡܡܐ. * ܘܒܢܬܗ ܕܒܚܩܠܐ ܒܚܪܒܐ ܢܬܩܛܠܢ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ.
7 * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܥܠ ܨܘܪ: ܠܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ
ܡܢ ܓܪܒܝܐ. ܡܠܟ ܡܠܟܐ. ܒܣܘܣܘܬܐ. ܘܒܡܪܟܒܬܐ. ܘܒܦܪܫܐ. ܘܒܟܢܫܐ ܘܒܥܡܐ ܣܓܝܐܐ.
8 * ܒܢܬܟܝ ܕܒܚܩܠܐ ܒܚܪܒܐ ܢܩܛܘܠ. ܘܢܩܝܡ ܥܠܝܟܝ ܕܘܩܐ. ܘܢܥܒܕ ܥܠܝܟܝ ܟܡܝܢܐ.
9 ܘܢܩܝܡ ܥܠܝܟܝ ܬܪܣܐ. * ܘܡܚܘܬܐ ܕܢܝܙܟܘܗܝ ܢܬܠ ܥܠ ܫܘܪܝܟܝ. ܘܠܡܓܕܠܝܟܝ ܢܦܣܘܩ
10 ܒܣܝܦܘܗܝ. * ܡܢ ܣܓܝܐܘܬܐ ܕܪܟܫܘܗܝ ܢܟܣܝܟܝ ܚܠܐ. ܘܡܢ ܩܠܐ ܕܦܪܫܘܗܝ ܘܕܓܝܠܓܠ
ܡܪܟܒܬܗ ܢܙܘܥܘܢ ܫܘܪܝܟܝ. ܡܐ ܕܥܐܠ ܠܬܪܥܝܟܝ. ܐܝܟ ܗܘ ܕܥܐܠ ܠܡܕܝܢܬܐ
11 ܡܬܒܙܥܬܐ. * ܘܒܦܪܣܬܐ ܕܪܟܫܘܗܝ ܢܕܘܫ. ܟܠܗܘܢ ܫܘܩܝܟܝ. ܘܥܡܟܝ ܢܩܛܘܠ ܒܚܪܒܐ.
12 ܘܡܟܠܬܐ ܕܥܘܫܢܟܝ ܠܐܪܥܐ ܢܫܦܠ. * ܘܢܒܙܘܢ ܚܝܠܟܝ. ܘܢܒܙܘܢ ܩܢܝܢܟܝ.
ܘܢܣܚܦܘܢ ܫܘܪܝܟܝ. ܘܢܣܬܪܘܢ ܒܬܝܐ ܕܪܓܬܟܝ. ܘܟܐܦܝܟܝ ܘܩܝܣܝܟܝ ܘܥܦܪܟܝ ܒܓܘ
13 ܝܡܐ. * ܘܐܒܛܠ ܣܘܓܐܐ ܕܙܡܪܝܟܝ. ܘܩܠܐ ܠܐ ܢܫܬܡܥ ܬܘܒ ܕܟܢܪܝܟܝ. * ܘܐܥܒܕܟܝ
14 ܟܐܦܐ ܫܥܝܥܬܐ. ܘܡܫܛܚܐ ܕܡܨܝܕܬܐ. ܘܠܐ ܬܬܒܢܝܢ ܬܘܒ. ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܡܠܠܬ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
15 ܡܪܘܬܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ ܠܨܘܪ. ܡܢ ܩܠܐ ܕܡܦܘܠܬܟܝ. ܘܡܢ ܫܘܢܩܐ
16 ܕܩܛܝܠܝܟܝ. ܘܩܛܠܐ ܕܡܬܩܛܠܝܢ ܒܟܝ. ܢܙܘܥܢ ܓܙܪܬܐ. * ܘܢܚܬܘܢ ܡܢ
ܟܘܪܣܘܬܗܘܢ ܟܠܗܘܢ ܪܘܪܒܢܐ ܕܝܡܐ. ܘܢܥܒܪܘܢ ܡܢܗܘܢ ܐܣܛܠܝܗܘܢ. ܘܢܫܠܚܘܢ
ܡܐܢܐ ܕܨܒܬܗܘܢ. ܘܢܠܒܫܘܢ ܪܬܝܬܐ. ܘܢܬܒܘܢ ܥܠ ܐܪܥܐ ܘܢܬܕܡܪܘܢ. ܘܠܐ ܢܬܢܝܚܘܢ.
17 * ܘܢܬܕܡܪܘܢ ܥܠܝܟܝ. ܘܢܐܡܪܘܢ ܥܠܝܟܝ ܐܘܠܝܬܐ ܘܢܐܡܪܘܢ ܠܟܝ. ܐܝܟܢܐ ܐܒܕܬܝ
ܥܡܘܪܬܐ ܕܝܡܡܐ. ܡܕܝܢܬܐ ܚܣܝܢܬܐ ܕܚܣܝܢܐ ܗܘܬ ܒܝܡܐ. ܗܝ ܘܥܡܘܪܝܗ. ܕܝܗܒܘ
18 ܕܚܠܬܗܘܢ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ ܕܐܪܥܐ. * ܗܫܐ ܢܙܘܥܢ ܓܙܪܬܐ ܒܝܘܡܐ ܕܡܦܘܠܬܟܝ.
ܘܢܬܕܠܚܢ ܓܙܪܬܐ. ܒܝܘܡܐ ܕܡܦܘܠܬܟܝ.

* Fiétque locus ad expandenda retia in medio 5
mari: quoniam ego locutus ſum, ait Domi-
nus dominorum: eritque direptioni genti-
bus, Et filiæ ejus quæ ſunt in campo, gladio 6
trucidabuntur: & experientur me eſſe Do-
minum. Nam ſic ait Dominus dominorum; 7
Ecce ego adducturus ſum contra Tyrum, Ne-
buchadnoſarem regem Babylonis ex Aquilo-
ne, regem regum; cum equis, curribus, &
equitibus, cúmque turba & populo copioſiſſi-
mo. Filias tuas quæ in agro ſunt, gladio tru- 8
cidabit, eriget contra te ſpeculas, ponet ad-
verſùm te inſidias, & clypeum adverſùm te
ſtatuet: Cuſpides lancearum ſuarum indet 9
muris tuis, & turres evellent gladiis ſuis. Ex 10
inceſſu equorum ejus obruet te pulvis, & præ
ſtrepitu equitum & rotarũ curruum ejus con-
cutientur mœnia tua. Cùm ingredietur in
portas tuas, perinde erit ac ſi ingrederetur in
urbem diſruptam, Et ungulis equorum ſuo- 11
rum calcabit omnes vicos tuos, populum tu-
um gladio trucidabit, & excelſa roboris tui
ſolo æquabit: Diripient armenta tua, & de- 12
prædabuntur poſſeſſiones tuas; muros tuos de-
molientur, & deſtruent domos tuas expetibi-
les; lapides & ligna tua, opéſque tuas in mare
projicient. Ita faciam ut ceſſet multitudo mu- 13
ſicæ tuæ, nec audiatur inpoſterum vox citharæ
tuæ: Denique redigam te in lapidem expoli- 14
tum, & locum expandendis ſagenis, & non
ædificaberis ampliùs; nam ego locutus ſum,
ait Dominus dominorum. Sic ait Dominus 15
dominorum ad Tyrum; Præ fragore ruinæ
tuæ, cruciatu confoſſorum tuorum, & cædibus
eorum qui interficientur in te, contremiſcent
inſulæ: Et deſcendentes è ſoliis ſuis omnes 16
principes maritimi, tollent à ſe ſtolas ſuas,
depoſitíſque veſtibus ornatûs ſui, induentur
tremore, humi ſedebunt, erunt attoniti, & non
requieſcent. De te ſtupebunt, & lamentati- 17
ones de te proferent, ac dicent tibi, Quo-
modo periiſti habitatrix marium, urbs munita
quæ fortis eras in mari cum habitatoribus tu-
is qui terrorem ſuum incuſſerant omnibus ha-
bitatoribus terræ! Nunc contremiſcent in- 18
ſulæ in die ruinæ tuæ, & conturbabuntur in-
ſulæ in die caſûs tui.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

5 ويصير مصطح شباك في وسط البحر * لاني انا تكلمت * يقول الرب الرب * ويصير نهبا للامم *
6 وبناتها في الصحراء يقتلون * ويعلمون اني انا الرب * لانه هكذا يقول ادوناي الرب *
7 ها انا اجلب عليك يا صور بختنصر ملك بابل من الجربياء * ملك الملوك هو * بخيل
8 ومركبات وفرسان * وجمع وشعوب كثير جدا * هذا يقتل بناتك اللذين في الصحراء
بالسيف * ويعطي عليك مرقبا * ويبني عليك * ويصنع عليك من حولك سياجا ومرامي
9 السلاح * ويدفع حرابه عليك * ويهدم اسوارك وبروجك بسيوفه * ومن كثير خيوله يغشاك
10 غبارهم * ومن صوت فرسانه وبكرات مراكبه تتزلزل اسوارك * حين يدخل ابوابك * كما
11 يدخل الى المدينة من الصحراء * بحوافر خيله يدوسون جميع شوارعك * ويقتل شعبك
12 بالسيف * وينزل قوام قوتك على الارض * وينهب جيشك * ويغنم غناك * ويهدم اسوارك
13 وبيوتك المشتهاة * وحجارتك وخشابك * ويضع ترابك في وسط البحر * ويحل كثير ملاهيك *
14 وصوت عيدانك لا يسمع فيك ايضا * واصيرك صخر ملساء * تكونين مسطحا للشباك *
15 ولا تبنين بعد * لاني انا تكلمت يقول ادوناي الرب * من اجل انه هكذا يقول الرب
الرب لصور * أليس من صوت زلتك * عند ما تتنهد جرحاك * عند ما يتجرد السيف في
16 وسطك * تتزلزل الجزاير * وتنزل عن كراسيها جميع الروساء من امم البحر * وينزعون
التاجات عن روسهم * ويخلعون ثوبهم المنوع * ويذهلون ذهلا * وينامون علي الارض * ويحسون
17 هلاكهم * ويتنهدون عليك * وياخذون عليك نوحا ويقولون * كيف انخليت من البحر
18 ايها المدينة الممدوحة * المعطية خوفا لكل سكانها * والان تخاف الجزاير من يوم زلتك *
وتضطرب الجزاير في البحر من سياقك *

* *Fiétque locus pandendis retibus in medio* 5
mari: quoniam ego locutus ſum, dicit
Dominus Dominus; Et fiet in direptio-
* *nem gentibus: Et filias ejus in deſerto* 6
trucidabunt; ſciéntque me eſſe Dominum.
Sic enim dicit Adonai Dominus; Ecce ego 7
adducam contra te O Sur, Bochtonaſſarem
regem Babelis ex Aquilone (rex regum eſt)
cum equis, curribus, & equitibus, turmis,
populíſque perquam multis. Hic filias 8
tuas quæ ſunt in campo, gladio trucidabit:
ponet adverſùm te propugnaculum; extru-
et adverſùm te faciétque contra te cir-
cunquaque vallum & machinas ad arma
jaculanda: Tela ſua contra te vibrabit, 9
et muros turréſque tuas gladiis ſuis ever-
tet. Præ multitudine equorum ejus ope- 10
riet te pulvis eorum; & præ ſtrepitu equi-
tum ejus & rotarum curruum ejus contre-
miſcent muri tui; quum per tuas portas
intrabit acſi quis intraret in urbem è deſer-
to. Ungulis equorum ſuorum conculcabit 11
omnes vicos tuos, interficiet populum tuum
gladio, & ſubſiſtentiam fortitudinis tuæ
in terram dejicet: Deprædabitur turmas 12
tuas, diripiet divitias tuas, evertet muros
tuos & domos tuas deſiderabiles, lapides
ac ligna tua, ponétque pulverem tuum in
medio mari: Summovebit multitudinem 13
inſtrumentorum muſicorum tuorum, et vox
fidium tuarũ non audietur in te ampliús:
Demum reddam te petram nitidiſſimam, 14
eris locus pandendis retibus, & non æ-
dificaberis rurſús: quoniam ego locutus
ſum, dicit Adonai Dominus. Nam ita 15
dicit Dominus Dominus ad Sur; Nonne
à ſono lapſûs tui, cùm gemuerint vulne-
rati tui, cùm evaginatus fuerit gladius
in medio tui; concutientur inſulæ, Et 16
deſcendent è thronis ſuis omnes princi-
pes gentium maritimarum, deponent dia-
demata de capitibus ſuis, exuent ſe veſte
ſua verſicolore, ſtupore percellentur, humi
cubabunt, & exitium ſuum pertime-
ſcent? Propter te ſuſpirabunt, & la- 17
mentum de te component, ac dicent;
Quomodo deſtructa es è mari O urbs ce-
leberrima, quæ timorem incutiebas omni-
bus habitatoribus tuis: Jam verò ter- 18
rentur inſulæ à die lapſûs tui, & in-
ſulæ in mari commoventur ob agoniam
tuam!

יחזקאל : כז

,deſolatam urbem te *me ponendo In* : Deus Dominus dixit ſic Quia
19 כִּי כֹה אָמַר אֲדֹנָי יֱהֹוִה בְּתִתִּי אֹתָךְ עִיר נֶחֱרֶבֶת
te ſuper *faciendo aſcendere in* : habitantur non quæ civitates ſicut
כֶּעָרִים אֲשֶׁר לֹא־נוֹשָׁבוּ בְּהַעֲלוֹת עָלַיִךְ אֶת־
cum te fecero deſcendere Et .multæ aquæ te operuerint & ,voraginem
20 תְּהוֹם וְכִסּוּךְ הַמַּיִם הָרַבִּים׃ וְהוֹרַדְתִּיךְ אֶת־
terra in te fecero collocare & , ſeculi populum ad ,*lacum* deſcendentibꝰ
יוֹרְדֵי בוֹר אֶל־עַם עוֹלָם וְהוֹשַׁבְתִּיךְ בְּאֶרֶץ
non ut ,*lacum* deſcendentibus cum ſeculo à *ſolitudinibus in* ,*inferorum*
תַּחְתִּיּוֹת בְּחֳרָבוֹת מֵעוֹלָם אֶת־יוֹרְדֵי בוֹר לְמַעַן לֹא
:tu non & ,te *dabo Terrores* .viventiū terra in *decorem* dedero & :habiteris
21 תֵשֵׁבִי וְנָתַתִּי צְבִי בְּאֶרֶץ חַיִּים׃ בַּלָּהוֹת אֶתְּנֵךְ וְאֵינֵךְ
.Deus Dominus dixit ,ſeculum in ultrà invenieris non & ,*requireris* &
וּתְבֻקְשִׁי וְלֹא־תִמָּצְאִי עוֹד לְעוֹלָם נְאֻם אֲדֹנָי יֱהֹוִה׃

CAP. XXVII. כז

1 *tolle* hominis fili tu Et : dicendo me ad Domini verbum fuit Et
2 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ וְאַתָּה בֶן־אָדָם שָׂא
ingreſſibus ſuper habitanti ,Sor *ipſi dices* Et .lamentum Sor ſuper
3 עַל־צֹר קִינָה׃ וְאָמַרְתָּ לְצוֹר הַיֹּשֶׁבֶתי עַל־מְבוֹאֹת
Dominus dixit Sic .multas inſulas ad populorum negotiatrici ,maris
יָם רֹכֶלֶת הָעַמִּים אֶל־אִיִּים רַבִּים כֹּה אָמַר אֲדֹנָי
marium *corde* In .*pulchritudine abſoluta* Ego : dixiſti tu ,Sor : Deus
4 יֱהֹוִה צוֹר אַתְּ אָמַרְתְּ אֲנִי כְּלִילַת יֹפִי׃ בְּלֵב יַמִּים
Abietibus .tuum decorem perfecerunt tui Ædificatores .tui termini
5 גְּבוּלָיִךְ בֹּנַיִךְ כָּלְלוּ יָפְיֵךְ׃ בְּרוֹשִׁים
Lebanon de *cedrum* : tabulis omnibus cum tibi ædificaverunt Senir de
מִשְּׂנִיר בָּנוּ לָךְ אֵת כָּל־לֻחֹתָיִם אֶרֶז מִלְּבָנוֹן
fecerunt Baſan de *Alnis* .*te ſuper* malum faciendum ad ,tulerunt
6 לָקָחוּ לַעֲשׂוֹת תֹּרֶן עָלָיִךְ׃ אַלּוֹנִים מִבָּשָׁן עָשׂוּ
.Chitthim inſulis de ,Aſſurim *filia* ,*dente* fecerunt tuū *aſſerem* :tuos remos
מִשּׁוֹטָיִךְ קַרְשֵׁךְ עָשׂוּ־שֵׁן בַּת־אֲשֻׁרִים מֵאִיֵּי כִּתִּיִּם׃
tibi *exiſtendum ad* , *tuum velum* fuit Ægypto de *recamatione in* Byſſo
7 שֵׁשׁ בְּרִקְמָה מִמִּצְרַיִם הָיָה מִפְרָשֵׂךְ לִהְיוֹת לָךְ
.tuū operimentū fuit Eliſah inſulis de purpura &,hyacintho : *vexillū* in
לְנֵס תְּכֵלֶת וְאַרְגָּמָן מֵאִיֵּי אֱלִישָׁה הָיָה מְכַסֵּךְ׃
, Sor tui Sapientes .tibi remiges fuerunt Arvad & ,Sidon Habitatores
8 יֹשְׁבֵי צִידוֹן וְאַרְוַד הָיוּ שָׁטִים לָךְ חֲכָמַיִךְ צוֹר
fuerunt ejus ſapientes & ,Ghebal Senes .tui *gubernatores* ipſi te in fuerunt
9 הָיוּ בָךְ הֵמָּה חֹבְלָיִךְ׃ זִקְנֵי גְבַל וַחֲכָמֶיהָ הָיוּ
fuerunt earum *nautæ* & ,maris naves Omnes .*tuam fiſſuram roborantes* te in
בָךְ מַחֲזִיקֵי בִּדְקֵךְ כָּל־אֳנִיּוֹת הַיָּם וּמַלָּחֵיהֶם הָיוּ
fuerunt ,Put & ,Lud & ,Paras .tuam *fidejuſſionem fidejubendum* ad te in
10 בָךְ לַעֲרֹב מַעֲרָבֵךְ׃ פָּרַס וְלוּד וּפוּט הָיוּ
Ipſi .te in ſuſpenderūt *galeam &*,*Scutum* .tui *belli* viri tuo exercitu in
בְחֵילֵךְ אַנְשֵׁי מִלְחַמְתֵּךְ מָגֵן וְכוֹבַע תִּלּוּ־בָךְ הֵמָּה
,*undique* tuos muros ſuper *tua virium &* Arvad Filii .tuū decorem dederunt
11 נָתְנוּ הֲדָרֵךְ׃ בְּנֵי אַרְוַד וְחֵילֵךְ עַל־חוֹמוֹתַיִךְ סָבִיב
ſuper ſuſpenderunt ſua Scuta .fuerunt tuis turribus in Pygmæi &
וְגַמָּדִים בְּמִגְדְּלוֹתַיִךְ הָיוּ שִׁלְטֵיהֶם תִּלּוּ עַל־
Tarſis .tuam pulchritudinem perfecerunt ipſi *: undique* tuos muros
12 חוֹמוֹתַיִךְ סָבִיב הֵמָּה כָּלְלוּ יָפְיֵךְ׃ תַּרְשִׁישׁ
, ſtanno , ferro , argento in ,*affluentiæ omnis multitudine à* ,tuus negotiator
סֹחַרְתֵּךְ מֵרֹב כָּל־הוֹן בְּכֶסֶף בַּרְזֶל בְּדִיל
ipſi ,Meſech & , Tubal , Javan .*tuis ſubſidiis* dederunt plumbo &
13 וְעוֹפֶרֶת נָתְנוּ עִזְבוֹנָיִךְ׃ יָוָן תֻּבַל וָמֶשֶׁךְ הֵמָּה
.*tuo mercatu* dederunt *æris* vaſa & ,hominis *anima* in ,tui inſtitores
רֹכְלַיִךְ בְּנֶפֶשׁ אָדָם וּכְלֵי נְחֹשֶׁת נָתְנוּ מַעֲרָבֵךְ׃

Verſio VULG. LAT.

19 Quia hæc dicit Dominus Deus; Cùm dedero te urbem deſolatā, ſicut civitates quæ non habitantur: & adduxero ſuper te abyſſum, & operuerint te aquæ multæ: 20 Et detraxero te cum his qui deſcendunt in lacum ad populum ſempiternum, & collocavero te in terra noviſſima ſicut ſolitudines veteres, cum his qui deducuntur in lacum, ut non habiteris: porrò cùm dedero gloriam 21 in terra viventium, In nihilum redigam te, & non eris, & requiſita non invenieris ultrà in ſempiternum, dicit Dominus Deus.

CAP. XXVII.

1 ET factum eſt verbum Domini 2 ad me, dicens; Tu ergò, fili hominis, aſſume ſuper Tyrum lamentū: 3 Et dices Tyro, quæ habitat in introitu maris, negotiationi populorum ad inſulas multas: Hæc dicit Dominꝰ Deus; O Tyre, tu dixiſti; Perfecti decôris ego 4 ſum, Et in corde maris ſita. Finitimi tui, qui te ædificaverunt, 5 impleverunt decorē tuum: Abietibꝰ de Sanir extruxerunt te cum omnibus tabulatis maris: cedrum de Libano tulerunt ut facerent 6 tibi malū. Quercus de Baſan dolaverunt in remos tuos: & tranſtra tua fecerunt tibi ex ebore Indico, & prætoriola de inſulis Ita- 7 liæ. Byſſus varia de Ægypto texta eſt tibi in velum ut poneretur in malo: hyacinthus & purpura de inſulis Eliſa facta ſunt operi- 8 mentū tuum. Habitatores Sidonis & Aradii fuerūt remiges tui: ſapientes tui, Tyre, facti ſunt gu- 9 bernatores tui. Senes Giblii, & prudentes ejus, habuerunt nautas ad miniſterium variæ ſupellectilis tuæ: omnes naves maris, & nautæ earum, fuerunt in populo 10 negotiationis tuæ. Perſæ, & Lydii, & Libyes erant in exercitu tuo viri bellatores tui: clypeum, & galeam ſuſpenderunt in te pro 11 ornatu tuo. Filii Aradii cum exercitu tuo erant ſuꝑ muros tuos in circuitu: ſed & Pigmæi, qui erant in turribus tuis, pharetras ſuas ſuſpenderunt in muris tuis ꝑ gyrū: ipſi compleverunt pulchri- 12 tudinem tuam. Carthaginenſes negotiatores tui, à multitudine cunctarum divitiarum, argento, ferro, ſtanno, plumbóque, reple- 13 verunt nundinas tuas. Græcia, Thubal, & Moſoch, ipſi inſtitores tui: mancipia, & vaſa ærea advexerunt populo tuo.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

19 Ὅτι τάδε λέγει κύριος κύριος, Ὅταν δῶ (ξ) πόλιν ἠρημωμένην ὡς τὰς πόλεις τὰς μὴ (ο) κατοικισθησομένας, ἐν τῷ ἀναγαγεῖν με ἐπὶ σὲ τὴν ἄβυσσον, καὶ κατακαλύψῃ σε 20 ὕδωρ πολύ, Καὶ (π) καταβιβάσω σε πρὸς τοὺς καταβαίνοντας εἰς βόθρον πρὸς λαὸν αἰῶνος, καὶ κατοικιῶ σε εἰς (ρ) βάθη τῆς γῆς ὡς ἔρημον αἰώνιον μετὰ καταβαινόντων εἰς βόθρον, ὅπως μὴ κατοικηθῇς, μηδὲ (σ) 21 ἀναστῇς ἐπὶ γῆς ζωῆς, Ἀπώλειάν σε δώσω, καὶ οὐχ ὑπάρξεις ἔτι (τ) εἰς τὸν αἰῶνα, λέγει κύριος κύριος (υ).

MS.A. (ξ) σε πόλιν (ο) κατοικηθησομένας, (π) καταβιβῶ (ρ) τὰ βάθη (σ) ἀνασταθῇς (τ) καὶ ζητηθήσῃ εἰς (υ) ὁ θεός.

Quia hæc dicit Dominus Dominus; Cùm dedero te urbē deſolatam, ſicut civitates, quæ non habitabuntur, cùm adduxero ſuper te abyſſum; et operiet te aquā multâ, 20 *Et deſcendere faciā te ad eos qui deſcendunt in foveam, ad populum ſempiternū, et collocabo te in profundis terræ* ſicut ſolitudinem ſempiternam *cum his qui deſcendunt in foveam, ut non habiteris neque reſurgas ſuper terram vitæ;* 21 *Perditionem dabo te: et non eris (i) ultrà in ſempiternum, dicit Dominus Dominus.*

ΚΕΦ. κζʹ.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρός με, λέ- 2 γων, Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου λάβε (α) ἐπὶ 3 Σὸρ θρῆνον, Καὶ ἐρεῖς τῇ Σὸρ τῇ κατοικούσῃ ἐπὶ τῆς (β) εἰσόδου τῆς θαλάσσης, τῷ ἐμπορίῳ τῶν λαῶν, ἀπὸ νήσων πολλῶν, Τάδε λέγει (γ) κύριος τῇ Σόρ, Σὺ εἶπας, Ἐ- 4 γὼ περιέθηκα ἐμαυτῇ κάλλος μου, Ἐν καρδίᾳ θαλάσσης τῷ Βεελείμ, (δ) υἱοί σου περι- 5 έθηκάν σοι κάλλος. Κέδρος ἐκ (ʺ) Σενεὶρ ᾠκοδομήθη σοι, ταινίαι σανίδων (ε) κυπαρίσσου ἐκ τοῦ Λιβάνου ἐλήφθησαν, τοῦ ποιῆσαί 6 σοι ἱστοὺς ἐλατίνους, Ἐκ τῆς Βασανίτιδος ἐποίησαν τὰς κώπας σου, τὰ ἱερά σου ἐποίησαν ἐξ ἐλέφαντος, οἴκους ἀλσώδεις ἀπὸ νή- 7 σων τῶν (ζ) Χεττιείμ. Βύσσος μετὰ ποικιλίας ἐξ Αἰγύπτου ἐγένετό σοι στρωμνή, τοῦ περιθεῖναί σοι δόξαν, καὶ περιβαλεῖν σε ὑάκινθον καὶ πορφύραν ἐκ τῶν νήσων Ἐλισαί, καὶ 8 (η) ἐγένετο περιβόλαιά σου. Καὶ οἱ ἄρχοντές σου οἱ κατοικοῦντες (θ) Σιδῶνα, καὶ Ἀράδιοι ἐγένοντο κωπηλάται σου· οἱ σοφοί σου Σὸρ οἳ ἦσαν ἐν σοί, οὗτοι κυβερνῆταί σου. 9 Οἱ πρεσβύτεροι Βιβλίων, καὶ οἱ σοφοὶ αὐτῶν, (ι) οἳ ἦσαν ἐν σοί, οὗτοι ἐνίσχυον τὴν βουλήν σου· καὶ πάντα τὰ πλοῖα τῆς θαλάσσης καὶ οἱ κωπηλάται (κ) αὐτῶν ἐγένοντό σοι ἐπὶ 10 δυσμὰς δυσμῶν. Πέρσαι, καὶ Λυδοί, καὶ Λίβυες ἦσαν ἐν τῇ δυνάμει σου, ἄνδρες πολεμισταί σου πέλτας καὶ περικεφαλαίας ἐκρέμασαν ἐν σοί, οὗτοι ἔδωκαν τὴν δόξαν σου. 11 Υἱοὶ Ἀραδίων καὶ ἡ δύναμίς σου ἐπὶ τῶν τειχέων σου (λ)· φύλακες ἐν τοῖς πύργοις σου ἦσαν, τὰς φαρέτρας αὐτῶν ἐκρέμασαν ἐπὶ τῶν ὅρμων σου κύκλῳ, οὗτοι ἐτελείωσάν σου τὸ 12 κάλλος. Καρχηδόνιοι ἔμποροί σου ἀπὸ πλήθους πάσης ἰσχύος σου, ἀργύριον καὶ χρυσίον (μ) καὶ σίδηρον καὶ κασσίτερον καὶ (ν) 13 μόλιβον ἔδωκαν τὴν ἀγοράν σου. Ἡ Ἑλλάς, καὶ (ξ) ἡ σύμπασα, καὶ τὰ παρατείνοντα, (ο) οὗτοι ἐνεπορεύοντό σοι ἐν ψυχαῖς ἀνθρώπων, καὶ σκεύη χαλκᾶ ἔδωκαν τὴν ἐμπορίαν σου.

MS.A. (α) θρῆνον ἐπὶ Σόρ, (β) ὁδοῦ (γ) ἀδωναῒ κύριος κύριος ἐπὶ Σόρ, (δ) καὶ υἱοί (ʺ) Σανεὶρ (ε) κυπαρισσίνων (ζ) Χεττιείμ. (η) περιβόλαια ἐγένετό σοι. (θ) Σιδόνα (ι) ἦσαν (κ) αὐτῆς (λ) κύκλῳ· φύλακες (μ) καὶ χαλκὸν καὶ (ν) μόλιβδον, (ξ) τὰ σύμπαντα, (ο) αὐτοὶ ἐνεμπορεύονταί σοι

CAP. XXVII.

1 *ET factum eſt verbum Domini ad me, dicens;* 2 *Et tu, fili hominis, aſſume ſuper Sor lamentum,* 3 *Et dices Sor habitanti ſuper introitum maris, emporio populorū ab inſulis multis; Hæc dicit Dominus ad Sor; Tu dixiſti; Ego circundedi mihi decorem meum,* 4 *In corde maris (a) ipſi Beelim: filii tui circundederunt tibi decorem:* 5 *Cedrus de Senir ædificata eſt tibi: tæniæ tabularū cypreſſi de Libano ſumptæ ſunt, ad faciendum tibi malos abiegnos:* 6 *De Baſanitide fecerunt remos tuos, (b) templa tua fecerunt ex ebore, domos (c) ſylveſtres de inſulis Chetiim.* 7 *Byſſus cum varietate de Ægypto facta eſt tibi (d) ſtratū, ut circundaret tibi gloriam, & operiret te hyacintho, & purpurâ, de inſulis Eliſæ, (e) & facta ſunt opertoria tua.* 8 *Et (f) principes tui, qui habitabant in Sidone, et Aradii fuerūt remiges tui: Sapientes tui, Sor, qui erant in te, iſti gubernatores tui.* 9 *Seniores Bibliorum, & ſapientes eorum, qui erant in te, iſti confortabant conſilium tuum. Et omnes naves maris, & remiges (g) earū facti ſunt tibi in Occidentem Occidentiū.* 10 *Perſæ, & Lydi, & Libes erant in virtute tua, viri bellatores tui peltas & galeas ſuſpenderunt in te: ipſi dederunt gloriam tuam.* 11 *Filii Aradiorum, & virtus tua ſuper muros (h) tuos: cuſtodes in turribus tuis erant: pharetras ſuas ſuſpenderunt ſuper (i) propugnacula tua per gyrum: ipſi perfecerunt decorem tuum.* 12 *Carthaginenſes negotiatores tui à multitudine univerſæ fortitudinis tuæ, argentū, et aurū, et ferrū, & ſtannum, et plumbū dederunt forum tuum.* 13 *Græcia, (k) & univerſa, & adjacentia, hi negotiabantur tibi in animabus hominum: et vaſa ænea dederunt mercatum tuum.*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

19 אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים כַּד אֶתֵּן יָתִיךְ קַרְיָה חָרְבָא כְּקִרְוִין דְּלָא אִתּוֹתָבָא בְּאַסָּקוּתִי
20 עֲלָךְ מַשְׁרְיַת עַמְמִין דְּסַגִּיאִין כְּמֵי תְהוֹמָא וְיַחְפּוּנָךְ עַמְמִין סַגִּיאִין׃ וְאַחֲתִנִּיךְ עִם נָחֲתֵי
גוֹב בֵּית אֲבַדּוֹנָא לְוָת עַמָּא דְמֵעָלְמָא וְאַצְדְּנִיךְ בְּאַרְעָא אַרְעִיתָא כְּחָרְבָתָא דְמֵעָלְמָא עִם
21 נָחֲתֵי גוֹב בֵּית אֲבַדּוֹנָא בְּדִיל דְּלָא תִתְיַתְּבִין וְאֶתֵּן חֶדְוָא בְּאַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל׃ כִּדְלָא הֲוֵית
אֶתְּנִנֵּךְ וְכֵן תְּהֵי וְתִתְבְּעִין וְלָא תִשְׁתַּכְחִין עוֹד לַעֲלַם אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים׃

כז

1 2 וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי לְמֵימַר׃ וְאַתְּ בַּר אָדָם טוּל עַל צוֹר אִלְיָא׃ וְתֵימַר
3 לְצוֹר דְּיָתְבָא עַל מִגְרַשׁ מָחוֹזֵי יַמָּא מְסַפְּקָא סְחוֹרָא לְעַמְמַיָּא לְנַגְוָן סַגִּיאָן כִּדְנַן אֲמַר
4 יְיָ אֱלֹהִים צוֹר אַתְּ אֲמַרְתְּ אֲנָא מְשַׁכְלְלָא בְשׁוּפְרִי׃ בְּגוֹ יַמַּיָּא תְּחוּמִיךְ אַרְדִּיכְלַיִךְ
5 שַׁכְלִילוּ בִּנְיָנַיִךְ׃ בִּירָוָן מִשְּׂנִיר בְּנוֹ לִיךְ יַת כָּל גְּשָׁרַיִךְ אַרְזִין מִלִּבְנָן נְסִיבוּ לְמֶעְבַּד
6 תּוֹרְנִין עֲלַךְ׃ בְּלוּטִין מִמַּתְנָן עֲבַדוּ מְשׁוֹטֵי סְפִינָךְ תְּרוּמֵי תַרְעַךְ דַּפִּין דְּאֶשְׁכְּרוֹעִין
7 מְכַבְּשִׁין בְּשֵׁן דְּפִיל בֵּית חוֹפָאָה לְאִתְּיָטְרוֹן מִמְּדִינַת אַפּוּלְיָא׃ בּוּץ וְצִיּוּרִין מִמִּצְרַיִם
8 הֲוָה פְּרָסִיךְ לְמֶהֱוֵי לִיךְ לְאָת תִּכְלָא וְאַרְגְּוָנָא מִמְּדִינַת אִיטַלְיָא הֲוָת כְּסוּתִיךְ׃ יָתְבֵי
9 צִידוֹן וְאַרְוַד הֲווֹ שָׁיְטִין וּמַיְתָן סְחוֹרָא לְגַוִּיךְ חַכִּימַיִךְ צוֹר הֲווֹ בִיךְ אִנּוּן פַּרְנָסַיִךְ׃ סָבֵי
גְּבַל וְחַכִּימָהָא הֲווֹ בִיךְ מַתְקְפֵי צוֹרְכִיךְ כָּל נָחֲתֵי יַמָּא וְסַפָּנֵיהוֹן הֲווֹ שָׁיְטִין וּמַיְתָן סְחוֹרָא
10 לְגַוִּיךְ׃ פַּרְסָאֵי וְלוּדָאֵי וּפוּטָאֵי הֲווֹ בְּמַשְׁרְיָתִיךְ גַּבְרֵי עָבְדֵי קְרָבִיךְ עֲגִילִין וְקוֹלְסִין
11 תְּלוֹ בִיךְ אִנּוּן אַסְגִּיאוּ זִיוִיךְ׃ בְּנֵי אַרְוַד וְכָל מַשְׁרְיָתִיךְ עַל שׁוּרַיִךְ סְחוֹר סְחוֹר וְאַף
קַפּוּטְקָאֵי בְּמִגְדְּלַיִךְ הֲווֹ שִׁלְטֵיהוֹן תְּלוֹ עַל שׁוּרַיִךְ סְחוֹר סְחוֹר אִנּוּן שַׁכְלִילוּ
12 שׁוּפְרִיךְ׃ מִן יַמָּא מַיְתָן סְחוֹרְתָה לְגַוִּיךְ מִסְּגֵי כָל עוֹתַר בִּכְסַף בַּרְזֶל עֲבָץ וַאֲבָר
13 יְהַבוּ בְּבֵית גְּנַזַּיִךְ׃ יָוָן תּוּבַל וּמֶשֶׁךְ אִנּוּן תַּגָּרַיִךְ בְּנַפְשָׁא דֶאֱנָשָׁא וּמָנֵי נְחָשָׁא מַיְתָן
סְחוֹרְתָה לְגַוִּיךְ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

19 Quia hæc dicit Dn̄s Deꝰ: Cùm dedero te civitatem deſertā ſicut civitates inhabitabiles, cùm aſcendere fecero contra te exercitꝰ populorū multorū, ſicut aquas abyſſi, & operient te populi multi. 20 Et deſcendere faciam te cum deſcendentibꝰ in lacum domus perditionis ad populum qui à ſeculo eſt; & vaſtabo te in terra inferiori ſicut deſerta quæ à ſeculo ſunt, cum deſcēdentibꝰ in lacū domꝰ perditionis, ut non habiteris; & dabo gaudiū in terra Iſrael. 21 Quaſi non fueris dabo te, & ſic eris; & quærêris, & non invenieris ultrà in æternum, dicit Dominus Deus.

CAP. XXVII.

1 ET factum eſt prophetia à facie Dn̄i mecum, dicens: 2 Et tu fili hominis, aſſume ſuper Tyrum lamentationem. 3 Et dices Tyro, quæ ſita eſt in vicinia portuum maris, quæ ſuppeditat negotiationem populis & inſulis multis: Hæc dicit Dn̄s Deus: Tyre tu dixiſti: Ego ſum perfecta in decore meo. 4 In medio marium eſt terminꝰ tuus; architecti tui fundaverunt ædificia tua. 5 Abietibus de Sanir conſtruxerunt tibi omnes pontes tuos, cedros de Libano tulerunt ut facerent tibi malos navium. 6 Quercubꝰ de Baſſan fecerunt remos navium tuarum, ſuperliminaria portarum tuarum ex tabulis buxinis cælatis ebore, coopertoria in theatri morem de provincia Apuliæ. 7 Byſſus & varia tinctura de Ægypto fuit tibi velum, ut eſſet tibi in ſignum. Hyacinthus & purpura de provincia Italiæ fuit operimentum tuum. 8 Habitatores Sidon & Aradii fuerunt remiges & portantes mercimonia in medium tui. Sapientes tui Tyre fuerunt in te, & ipſi fuerunt gubernatores tui. 9 Senes Gebal & ſapientes ejus fuerunt in te, providentes neceſſaria, omnes deſcendentes in mare, & nautæ eorum fuerunt remiges & portantes mercimonia in medium tui. 10 Perſæ & Lydii & Libyes erant in exercitu tuo viri bellatores tui, ſcuta & galeas ſuſpenderunt in te; ipſi multiplicaverunt ſplendorem tuum. 11 Filii Aradii & *omnis* exercitus tuus ſuper muros tuos in exercitu tuo, & Cappadoces in turribꝰ tuis fuerunt; clypeos ſuos ſuſpenderunt in muris tuis per gyrum; ipſi compleverunt pulchritudinem tuam. 12 De mari adducebant mercimonia in medium tui, præ multitudine omnium divitiarum in argento, ferro, ſtanno & plumbo, quæ poſuerunt in domo theſaurorum tuorum. 13 Græcia & Tubal & Moſoch ipſi negotiatores tui in animabus hominum, & vaſa ærea adducebant in mercimonia in medium tui.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ ܠܨܘܪ. ܡܐ ܕܝܗܒܬܟܝ ܡܕܝܢܬܐ ܚܪܒܬܐ ܐܝܟ ܡܕܝܢܬܐ ܕܠܐ 19
ܡܬܬܘܬܒܢ ܀ ܘܐܣܩ ܥܠܝܟܝ ܠܬܗܘܡܐ ܀ ܘܢܚܦܘܢܟܝ ܡܝܐ ܣܓܝܐܐ. * ܘܐܚܬܟܝ ܥܡ 20
ܢܚܬܝ ܓܘܒܐ. ܠܘܬ ܥܡܐ ܕܥܠܡ. ܘܐܘܬܒܟܝ ܒܐܪܥܐ ܬܚܬܝܬܐ ܀ ܒܚܘܪܒܐ ܕܡܢ ܥܠܡ.
ܥܡ ܢܚܬܝ ܓܘܒܐ. ܘܠܐ ܬܬܝܬܒܝܢ. ܘܠܐ ܐܬܠܟܝ ܩܘܝܡܐ ܒܐܪܥܐ ܕܚܝܐ. * ܠܐܒܕܢܐ ܐܬܠܟܝ. 21
ܘܬܬܒܥܝܢ ܀ ܘܠܐ ܬܫܬܟܚܝܢ ܬܘܒ ܠܥܠܡ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܙ *

* ܘܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ ܀ ܐܡܪ ܐܘܠܝܬܐ ܥܠ ܨܘܪ. 1 2
* ܘܐܡܪ ܠܨܘܪ ܕܝܬܒܐ ܒܡܥܠܢܐ ܕܝܡܐ. ܬܐܓܘܪܬܐ ܕܥܡܡܐ ܘܕܓܙܪܬܐ ܣܓܝܐܬܐ ܀ ܗܟܢܐ ܐܡܪ 3
ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܨܘܪ ܀ ܐܢܬܝ ܐܡܪܬܝ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܟܠܝܠܐ ܕܫܘܒܚܐ. * ܬܚܘܡܝܟܝ ܒܠܒܐ ܕܝܡܡܐ. 4
ܘܒܢܝܟܝ ܫܡܠܝܘ ܫܘܦܪܟܝ. * ܒܪܘܬܐ ܘܕܦܐ ܐܝܬܝܘ ܠܟܝ ܡܢ ܣܢܝܪ. ܘܐܪܙܐ ܡܢ ܠܒܢܢ 5
ܢܣܒܘ. ܕܢܥܒܕܘܢ ܠܟܝ ܐܣܛܘܢܐ. * ܘܡܢ ܒܠܘܛܐ ܕܡܬܢܝܢ ܥܒܕܘ ܡܩܦܝܟܝ. ܘܕܦܝܟܝ ܥܒܕܘ 6
ܕܫܢܐ ܕܦܝܠܐ. ܕܡܢ ܓܙܪܬܐ ܕܟܬܝܐ. * ܘܡܦܪܣܬܐ ܕܒܘܨܐ ܕܨܒܬܟܝ. ܐܝܬܝܘ ܠܟܝ ܡܢ ܡܨܪܝܢ. ܕܢܗܘܐ 7
ܠܟܝ ܐܬܐ. ܬܟܠܬܐ ܘܐܪܓܘܢܐ. ܐܝܬܝܘ ܠܟܝ ܡܢ ܓܙܪܬܐ ܕܐܠܝܫ. ܠܡܟܣܝܬܟܝ. * ܥܡܘܪܐ 8
ܕܨܝܕܢ ܘܐܪܘܕ. ܗܘܘ ܕܒܪܝ ܡܩܦܝܟܝ. ܚܟܝܡܝܟܝ ܨܘܪ ܀ ܗܢܘܢ ܗܘܘ ܡܠܚܝܟܝ. * ܣܒܐ ܕܓܒܠ 9
ܘܚܟܝܡܝܗ. ܗܘܘ ܡܚܙܩܝܢ ܒܕܩܝܟܝ. ܟܠܗܝܢ ܐܠܦܐ ܕܝܡܐ. ܘܡܠܚܝܗܝܢ. ܗܘܘ ܡܢ
ܡܚܒܪܬܟܝ. * ܦܪܣܝܐ ܘܠܘܕܝܐ ܘܦܘܛܝܐ ܓܒܪܐ ܩܪܒܬܢܐ. ܗܘܘ ܒܚܝܠܟܝ. ܬܪܣܐ 10
ܘܩܘܢܣܐ ܬܠܘ ܒܟܝ. ܘܗܘܘ ܠܟܝ ܫܘܒܚܐ. * ܒܢܝ ܐܪܘܕ. ܘܚܝܠܟܝ ܩܝܡܝܢ ܗܘܘ ܥܠ 11
ܫܘܪܝܟܝ. ܘܢܛܪܝܢ ܡܓܕܠܝܟܝ. ܡܫܠܝܗܘܢ ܬܠܝܢ ܗܘܘ ܥܠ ܫܘܪܝܟܝ ܚܕܪܢܝܟܝ. ܘܡܫܡܠܝܢ
ܫܘܦܪܟܝ. * ܬܪܫܝܫ ܐܬܪ ܬܐܓܘܪܬܟܝ ܘܣܘܓܐܐ ܕܥܘܬܪܟܝ. ܣܐܡܐ ܘܦܪܙܠܐ ܀ ܘܐܒܪܐ ܘܐܢܟܐ. 12
ܐܝܬܝܘ ܠܟܝ ܠܙܒܢܐ. * ܝܘܢ ܘܬܘܒܠ ܘܡܫܟ. ܬܓܪܝܟܝ. ܒܢܦܫܬܐ ܕܒܢܝܢܫܐ ܘܡܐܢܐ ܕܢܚܫܐ. 13

19 Sic ait Domin⁹ dominorum ad Tyrum; Cùm reddidero te urbem deſertam, ſimilem urbibus quæ non habitantur, aſcendere fecero ſuper te abyſſum, & obruerint te aquæ multæ; 20 Dejecero te cum deſcendentibus in foveam, ad populum ſempiternũ, & collocavero te in infima terra, in deſertis æternis cum deſcendentibus in foveã, fueris inhabitabilis, neque fecero tibi ſubſiſtentiam in terra viventium: 21 Excidio te tradam, requireris, nec unquam ampliùs invenieris, ait Dominus dominorum.

CAP. XXVII.

1 DEinde fuit ad me ſermo Domini, dicendo; 2 Tu autem fili hominis profer lamentationem de Tyro, 3 Et dic Tyro ad maris aditum habitanti, emporio populorum & inſularum multarum: Sic ait Dominus dominorum; 4 Tyre, tu dixiſti; Ego ſum corona gloriæ: Termini tui ſunt in corde marium, & ædificatores tui perfecerunt pulchritudinẽ tuam: 5 Abietes & aſſeres attulêre tibi de Sonir, & cedros è Libano deſumpſerunt, ut malos *navales* tibi pararent: 6 E quercubus Baiſanis parârunt remos tuos, & tranſtra tua fecerunt ex ebore de Cethæorum inſulis *advecto*. 7 Stragula byſſina ornatûs tui attulerunt ex Ægypto, ut eſſent tibi in vexillum: hyacinthum & purpuram attulêre tibi ex inſulis Eles, in operimentum tuum. 8 Habitatores Sidonis et Arud erant ductores remorum tuorum; ſapientes tui Tyre, erant naucleri tui. 9 Senes Gebelis, & periti ejus inſtaurabant *quæ* in te inſtauranda *erant*: naves omnes maris, & nautæ earum, erant de miſcellaneis *turbis* tuis. 10 Perſæ, Lydii, & Putæi viri bellatores, erant in copiis tuis: clypeos & galeas appendebant in te, erántque tibi gloriæ. 11 Arudæi & copiæ tuæ ſtabant ſuper mœnia tua, et cuſtodiebant turres tuas: pharetras ſuas ſuſpendebant ſuper muros tuos circunquaque, et pulchritudinem tuam perficiebant. 12 Tharſis locus negotiationis tuæ et multitudinis divitiarum tuarum, argentum, ferrum, ſtannum, atque plumbum advehebant tibi emendum. 13 Javan, Thubel, et Moſoch mercatores tui, pro animabus humanis et vaſis æneis,

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* لانه هكذا يقول الرب الرب * واجعلك مدينة خربة مثل المدن الغير مسكونة * عند ما اصعد 19
عليك العمق ويغمرك الماء الكثير * وانزلك عند النازلين في الحفرة * عند شعب الدهر * واسكنك 20
في اعماق الارض مثل القفر الابدي مع النازلين في الحفرة * لكي لا تسكني * ولا تقومي على
ارض الحيوة * واسلمك الى الهلاك * ولا تكوني ايضا * يقول الرب الرب * 21

* الفصل السابع والعشرون * * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان * خذ على 1 2
صور نوحا * ويقول لصور الساكنة على مدخل البحر * لمتجر الشعوب من جزاير كثيرة * هكذا 3
يقول الرب لصور * انت قلت انا وضعت على حسني * لا اجور في قلب البحر * بنوك وضعوا لك حسنا * 4
* ارزة من سانير بنيت لك * تاجات من الواح السربين اخذت لك من لبنان * ليصنعوا لك عمدا * 5
* من ارض بيسان صنعوا مقاديفك * صنعوا هياكلك من العاج * والبيوت الصنمية من جزاير 6
الهند * ارجوان مع مشوعات من مصر صار لك فرشا * ليوضع لك شرفا * سربلك الياقوت * وبرفير 7
من جزاير اليسا صار ارديتك * ورؤساؤك الساكنون صيدا والاراديون صاروا قذافيك * حكماؤك 8
يا صور الذين كانوا فيك * هاولاء مدبروك * مشايخ الكتب وحكماوهم الذين كانوا فيك * هاولاء 9
قووا ارايك * وكل سفن البحر وقذافوهن * كانوا لك على مغارب المغارب * الفرس واللوديون 10
والليبيون كانوا في جيشك رجال محاربون * علقوا فيك نبالا وخوذا * هاولاء دفعوا شرفك * بنو 11
الاراديين وجيشك على اسوارك من حولك * كانوا حفظة في ابراجك * علقوا جعابهم على محارسك
من حولك * هاولاء كملوا حسنك * الخركيذونيون تجارك من كثرة كل قوتك فضة وذهبا * 12
ونحاسا وحديدا * واسربا ورصاصا * دفعوه في سوقك * هلس وكل حولها وما امتد اليها * هاولاء 13
اتوا لك بنفوس البشر * واواني نحاس دفعوا لتجارتك *

19 *Nam ita dicit Dominus Dominus; Faciamque te urbem deſertam velut urbes haud habitatas, quum aſcendere fecero ſuper te abyſſum, & obruerint te aquæ multæ;* 20 *Deduxero te apud deſcendentes in foveam, apud populum ſempiternũ, & collocavero te in profundis terræ veluti deſertum æternum cum deſcendentibus in foveam, ut non habiteris, neq; ſubſiſtas in terra vitæ;* 21 *Teque tradidero excidio, neq; fueris ampliùs, dicit Dominus Dominus.*

CAP. XXVII.

1 *Rurſus fuit ſermo Domini ad me, dicens;* 2 *O fili hominis, compone de Sur lamentum,* 3 *Dicaſq; ad Sur habitantem ſecus oſtium maris, emporium populorum ab inſulis multis* accedentium; *Ita dicit Dominus ad Sur; Tu dixiſti, Ego impoſui mihi pulchritudinem meam:* 4 *Non deſinam* fixa *in corde maris. Filii tui comparârunt tibi decorem:* 5 *Cedrus de Sanir fabricata eſt tibi: coronæ ex aſſeribus pineis deſumptæ ſunt tibi è Libano, ut fabricarent tibi columnas:* 6 *De terra Baiſan fecerunt remos tuos, fecerunt templa tua ex ebore, & fana idolorum ab inſulis Indiæ:* 7 *Byſſus cum verſicoloribus ex Ægypto* allatis *facti ſunt tibi lecti: ut apponeretur tibi decor, induerunt te hyacintho, & purpurâ ex inſulis Eliſæ* advectâ*: facta ſunt veſtimenta tua.* 8 *Principes tui habitantes in Saida, Aradæi erant remiges tui: ſapientes tui O Sur, qui erant in te, ipſi erant gubernatores tui:* 9 *Seniores librorũ* periti*, et ſapientes eorũ qui erant in te, ii cõfirmabant cõſilia tua: & omnes naves maris, earumque remiges, erant tibi ad Occidentalẽ plagã Occidentis.* 10 *Perſæ, Lydii, & Libes erant in exercitu tuo viri belligerantes: appendebant in te ſagittas & galeas: iſti gloriam tuam tibi tribuerunt.* 11 *Filii Aradæorum & copiæ tuæ ſuper muros tuos circunquaq; erant excubiæ in turribus tuis: ſuſpendebant pharetras ſuas ad propugnacula tua circunquaque: iſti perficiebant pulchritudinem tuam.* 12 *Charcidonienſes mercatores tui ob multitudinem roboris tui, argentum & aurum, æs atq; ferrum, ſtannum plumbumque ſuppeditabant in foro tuo.* 13 *Hellas, omniſque circuitus ejus, & quæ ad eam ſeſe protendunt regiones, iſtæ afferebant tibi animas hominum; & vaſa ænea exponebant mercatui tuo.*

יחזקאל: כז

.tuis ſubſidiis dederũt mulos & , equites & , equos Togharmah domo De
14 מִבֵּית תּוֹגַרְמָה סוּסִים וּפָרָשִׁים וּפְרָדִים נָתְנוּ עִזְבוֹנָיִךְ׃
: tuæ manus negotiatio multæ inſulæ , tui negotiatores Dedan Filii
15 בְּנֵי דְדָן רֹכְלַיִךְ אִיִּים רַבִּים סְחֹרַת יָדֵךְ
Aram .tuum *honorarium* reddiderunt *hebena* & , *dentis* Cornua
16 קַרְנוֹת שֵׁן וְהוֹבְנִים הֵשִׁיבוּ אֶשְׁכָּרֵךְ׃ אֲרָם
,purpura,carbunculo cũ ,tuorũ operũ multitudinẽ propter tua negotiatrix
סֹחַרְתֵּךְ מֵרֹב מַעֲשָׂיִךְ בְּנֹפֶךְ אַרְגָּמָן
.tuis nundinis in dederunt *rubinum* & ,coralliis & ,byſſo & ,*acupictura* &
וְרִקְמָה וּבוּץ וְרָאמֹת וְכַדְכֹּד נָתְנוּ בְּעִזְבוֹנָיִךְ׃
,Minnith frumentis cum : tui inſtitores ipſi , Iſrael terra & ,Jehudah
17 יְהוּדָה וְאֶרֶץ יִשְׂרָאֵל הֵמָּה רֹכְלָיִךְ בְּחִטֵּי מִנִּית
Dammeſec *.tuo mercatu* dederunt *reſinam* & ,oleum & ,mel & ,Pannag &
18 וּפַנַּג וּדְבַשׁ וָשֶׁמֶן וָצֹרִי נָתְנוּ מַעֲרָבֵךְ׃ דַּמֶּשֶׂק
multitudinem propter ,tuorũ operũ multitudine in tua negotiatrix
סֹחַרְתֵּךְ בְּרֹב מַעֲשַׂיִךְ מֵרֹב
Meuzal ,Javan & ,Dan Et .alba lana & ,Chelbon vino in ,*quæſtum omnis*
19 כָּל־הוֹן בְּיֵין חֶלְבּוֹן וְצֶמֶר צָחַר׃ וְדָן וְיָוָן מְאוּזָּל
.fuit *tuo foro in* calamus &,Caſia *:nitidum* ferrum dederũt tuis nundinis in
בְּעִזְבוֹנַיִךְ נָתָנּוּ בַּרְזֶל עָשׁוֹת קִדָּה וְקָנֶה בְּמַעֲרָבֵךְ הָיָה׃
,Harab *.currum ad ingenuitatis veſtimentis* in tua negotiatrix Dedan
20 21 דְּדָן רֹכַלְתֵּךְ בְּבִגְדֵי־חֹפֶשׁ לְרִכְבָּה׃ עֲרַב
,agnis cum tuæ manus negotiatores ipſi ,Chedar principes univerſi &
וְכָל־נְשִׂיאֵי קֵדָר הֵמָּה סֹחֲרֵי יָדֵךְ בְּכָרִים
Negotiatores .tui negotiatores *eis in* hircis & , arietibus &
22 וְאֵילִים וְעַתּוּדִים בָּם סֹחֲרָיִךְ׃ רֹכְלֵי
,*aromatis omnis capite In* .tui negotiatores ipſi , Rahamah & ,Seba
שְׁבָא וְרַעְמָה הֵמָּה רֹכְלָיִךְ בְּרֹאשׁ כָּל־בֹּשֶׂם
,Charan .tuis *ſubſidiis* dederunt *auro &* , *pretioſo* lapide *omni in &*
23 וּבְכָל־אֶבֶן יְקָרָה וְזָהָב נָתְנוּ עִזְבוֹנָיִךְ׃ חָרָן
.tua negotiatrix Chilmad ,Aſſur ,Sceba negotiatores,Heden &,Channeh &
וְכַנֵּה וָעֶדֶן רֹכְלֵי שְׁבָא אַשּׁוּר כִּלְמַד רֹכַלְתֵּךְ׃
,*recamationis & ,hyacinthi involucris in ,univerſitatibꝰ* in tui negotiatores Ipſi
24 הֵמָּה רֹכְלַיִךְ בְּמַכְלֻלִים בִּגְלוֹמֵי תְּכֵלֶת וְרִקְמָה
.tua *mercatura in cedri & ,ligatarum* funibus in ;pretioſarũ veſtiũ capſis in &
וּבְגִנְזֵי בְּרֹמִים בַּחֲבָלִים חֲבֻשִׁים וַאֲרָזִים בְּמַרְכֻלְתֵּךְ׃
, es repleta & : tua negotiatione *tuæ principes* Tarſis Naves
25 אֳנִיּוֹת תַּרְשִׁישׁ שָׁרוֹתַיִךְ מַעֲרָבֵךְ וַתִּמָּלְאִי
te adduxerunt multas aquas In .marium *corde* in valde es glorificata &
26 וַתִּכְבְּדִי מְאֹד בְּלֵב יַמִּים׃ בְּמַיִם רַבִּים הֱבִיאוּךְ
.marium *corde* in te contrivit orientalis Ventus *.te agentes remis*
הַשָּׁטִים אֹתָךְ רוּחַ הַקָּדִים שְׁבָרֵךְ בְּלֵב יַמִּים׃
,tui gubernatores & ,tui nautici ,tua *fidejuſſio* ,*tua ſubſidia &* ,*tuus Quæſtus*
27 הוֹנֵךְ וְעִזְבוֹנַיִךְ מַעֲרָבֵךְ מַלָּחַיִךְ וְחֹבְלָיִךְ
, tui *belli* viri omnes &,*tuæ fidejuſſionis fidejuſſores&,tuæ rupturæ fortificatores*
מַחֲזִיקֵי בִדְקֵךְ וְעֹרְבֵי מַעֲרָבֵךְ וְכָל־אַנְשֵׁי מִלְחַמְתֵּךְ
,maria *corde* in cadent,tui medio in qui ,tuo cœtu omni *in* &,te in qui
אֲשֶׁר־בָּךְ וּבְכָל־קְהָלֵךְ אֲשֶׁר בְּתוֹכֵךְ יִפְּלוּ בְּלֵב יַמִּים
contremiſcent tuorũ *rectorum* clamoris ſonitum Ad .tuæ ruinæ die in
28 בְּיוֹם מַפַּלְתֵּךְ׃ לְקוֹל זַעֲקַת חֹבְלַיִךְ יִרְעֲשׁוּ
, nautici , remum tenẽtes omnes ſuis navibus de deſcẽdent Et .ſuburbana
29 מִגְרֹשׁוֹת׃ וְיָרְדוּ מֵאָנִיּוֹתֵיהֶם כֹּל תֹּפְשֵׂי מָשׁוֹט מַלָּחִים
te ſuper facient audire Et .ſtabunt terram *ad* maris gubernatores omnes
30 כֹּל חֹבְלֵי הַיָּם אֶל־הָאָרֶץ יַעֲמֹדוּ׃ וְהִשְׁמִיעוּ עָלַיִךְ
, ſua capita ſuper pulverẽ faciẽt aſcẽdere & :amarè clamabũt & ,*ſua voce in*
בְּקוֹלָם וְיִזְעֲקוּ מָרָה וְיַעֲלוּ עָפָר עַל־רָאשֵׁיהֶם
ſe accingent & ,calvitium te *ad* decalvabunt Et *.ſe conſpergent* cinere in
31 בָּאֵפֶר יִתְפַּלָּשׁוּ׃ וְהִקְרִיחוּ אֵלַיִךְ קָרְחָה וְחָגְרוּ
.amaro *planctu* ,animæ amaritudine in , te *in flebunt* & : ſaccis
שַׂקִּים וּבָכוּ אֵלַיִךְ בְּמַר־נֶפֶשׁ מִסְפֵּד מָר׃

Verſio VULG. LAT.

14 De domo Thogorma, equos, &
equites,& mulos adduxerunt ad
15 forum tuũ. Filii Dedan negotia-
tores tui:inſulæ multæ, negotia-
tio manꝰ tuæ : dentes eburneos
& hebeninos commutaverunt in
16 pretio tuo. Syrus negotiator tuꝰ
propter multitudinẽ operũ tuo-
rum, gemmã,& purpurã, & ſcu-
tulata, & byſſum, & ſericum,&
chodchod propoſuerunt in mer-
17 catu tuo. Juda & terra Iſrael ipſi
inſtitores tui in frumento primo,
balſamũ, & mel,& oleũ,& reſi-
nã propoſuerũt in nundinis tuis.
18 Damaſcenus negotiator tuus in
multitudine operum tuorum, in
multitudine diverſarũ opum, in
vino pingui , in lanis coloris o-
19 ptimi. Dan,& Græcia,& Moſel,
in nundinis tuis propoſuerunt
ferrũ fabrefactũ : ſtacte & cala-
20 mus in negotiatione tua. Dedan
inſtitores tui in tapetibꝰ ad ſe-
21 dendũ. Arabia,& univerſi prin-
cipes Cedar, ipſi negotiatores
manûs tuæ : cum agnis, & arie-
tibus, & hœdis venerunt ad te
22 negotiatores tui. Venditores Sa-
ba, & Reema, ipſi negotiatores
tui : cum univerſis primis aro-
matibus , & lapide pretioſo, &
auro, ꝙ propoſuerunt in merca-
23 tu tuo. Haran,& Chene,et Eden,
negotiatores tui : Saba,Aſſur,&
24 Chelmad, venditores tui. Ipſi
negotiatores tui multifariàm in-
volucris hyacinthi, & polymito-
rum, gazarúmq; pretioſarũ, quæ
obvolutæ et aſtrictæ erãt funibꝰ:
cedros quoq; habebant in nego-
25 tiationibus tuis. Naves maris,
principes tui in negotiatione
tua : & repleta es, & glorificata
26 nimis in corde maris. In aquis
multis adduxerũt te remiges tui:
ventꝰ Auſter contrivit te in corde
27 maris. Divitiæ tuæ, & theſauri
tui, et multiplex inſtrumentum
tuum, nautæ tui et gubernatores
tui,qui tenebant ſupellectilẽ tuã,
et populo tuo præerãt:viri quoq;
bellatores tui, qui erant in te, cũ
univerſa multitudine tua,quæ eſt
in medio tuî:cadent in corde ma-
28 ris in die ruinæ tuæ. A ſonitu cla-
moris gubernatorũ tuorũ cõtur-
29 babuntur claſſes: Et deſcendent
de navibꝰ ſuis omnes qui tenebãt
remũ: nautæ et univerſi guber-
natores maris in terra ſtabunt:
30 Et ejulabunt ſuꝑ te voce magnâ,
et clamabunt amaré: et ſuperja-
cient pulverẽ capitibꝰ ſuis,et ci-
31 nere conſpergentur. Et radent
ſuꝑ te calvitiũ,et accingentur ci-
liciis:et plorabunt te in amaritu-
dine animæ ploratu amariſſimo.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

14 Ἐξ οἴκου (π) Θοργαμὰ ἵπποι καὶ ἱππεῖς ἔ-
15 δωκαν τὴν ἀγοράν σου. Υἱοὶ (ρ) Ῥοδίων ἔμπο-
ροί σου, ἀπὸ νήσων ἐπλήθυναν τὴν ἐμπορίαν
σου ὀδόντας ἐλεφαντίνους, καὶ τοῖς εἰσαγομέ-
16 νοις ἀντεδίδους τοὺς μισθούς σου, Ἀνθρώπους
ἐμπορίαν σου ἀπὸ πλήθους τοῦ συμμίκτου σου,
στακτὴν καὶ ποικίλματα ἐκ Θαρσὶς, καὶ (σ) Ῥα-
μμὼθ, καὶ Χορχὸρ ἔδωκαν τὴν ἀγοράν σου. (τ)
17 Ἰούδας καὶ οἱ υἱοὶ τοῦ Ἰσραὴλ, οὗτοι ἔμποροί
σου, ἐν (υ) πράσει σίτου καὶ μύρων καὶ κασίας,
καὶ πρῶτον μέλι καὶ ἔλαιον καὶ ῥητίνην ἔδωκαν
18 εἰς τὸν σύμμικτόν σου. Δαμασκὸς ἔμποροί σου,
ἐκ πλήθους πάσης δυνάμεώς σου· (φ) οἶνος
ἐκ Χελβὼν, καὶ ἔρια ἐκ Μιλήτου, καὶ οἶνον εἰς
19 τὴν ἀγοράν σου ἔδωκαν. Ἐξ (χ) Ἀσὴλ σίδη-
ρος εἰργασμένος, καὶ τροχιὰς ἐν τῷ συμμί-
20 κτῳ σου ἐστί. Δαιδὰν ἔμποροί σου, μετὰ κτη-
21 νῶν ἐκλεκτῶν εἰς ἅρματα. Ἡ Ἀραβία καὶ
πάντες οἱ ἄρχοντες Κηδὰρ, οὗτοι ἔμποροί σου
διὰ χειρός σου, καμήλοις (ψ) καὶ ἀμνοὺς καὶ κρι-
22 οὺς ἐν οἷς ἐμπορεύονταί σε. Ἔμποροι (ω)
Σαββὰ, καὶ Ῥαμμὰ, οὗτοι ἔμποροί σου, με-
τὰ πρώτων ἡδυσμάτων, καὶ λίθων (α) χρη-
στῶν, καὶ χρυσὸν ἔδωκαν τὴν ἀγοράν σου. (β)
23 Χαῤῥὰ, καὶ Χανάα, οὗτοι ἔμποροί σου· Ἀσ-
24 σοὺρ καὶ Χαρμὰν ἔμποροί σου, φέροντες ἐμπο-
ρίαν ὑάκινθον, (γ) καὶ θησαυροὺς ἐκλεκτοὺς
δεδεμένους σχοινίοις, (δ) καὶ κυπαρίσσινα.
25 Πλοῖα ἔμποροί σου, ἐν τῷ πλήθει, ἐν τῷ
συμμίκτῳ σου· καὶ ἐνεπλήσθης καὶ ἐβαρύνθης
26 σφόδρα ἐν καρδίᾳ θαλάσσης. Ἐν ὕδατι
πολλῷ ἦγόν σε οἱ κωπηλάται σου, τὸ πνεῦμα τοῦ
Νότου συνέτριψέ σε (ε) ἐν καρδίᾳ θαλάσσης.
27 Ἦσαν δυνάμεις σου, καὶ ὁ μισθός σου (ζ), καὶ τῶν
συμμίκτων σου, καὶ οἱ κωπηλάται σου, καὶ οἱ κυ-
βερνῆταί σου, καὶ οἱ σύμβουλοί σου, καὶ οἱ σύμμι-
κτοί σου ἐκ τῶν συμμίκτων σου, καὶ πάντες οἱ
ἄνδρες οἱ πολεμισταί (η) σου οἱ ἐν σοί· καὶ πᾶσα
συναγωγή σου ἐν μέσῳ σου πεσοῦνται ἐν καρ-
δίᾳ θαλάσσης, ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῆς πτώσεώς σου.
28 Πρὸς (θ) τὴν κραυγὴν τῆς φωνῆς σου οἱ κυβερνῆται
29 σου φόβῳ φοβηθήσονται. (ι) Καὶ καταβήσον-
ται ἀπὸ τῶν (κ) πλοίων πάντες οἱ (λ) κωπηλά-
ται καὶ οἱ ἐπιβάται, καὶ οἱ πρωρεῖς τῆς θαλάσσης
30 ἐπὶ (μ) τὴν γῆν στήσονται, Καὶ (ν) ἀλαλάξουσιν
ἐπὶ σὲ τῇ φωνῇ αὐτῶν, καὶ κεκράξονται (ξ) πι-
κρὸν, καὶ ἐπιθήσουσι (ο) γῆν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν
αὐτῶν, καὶ σποδὸν (π) στρώσονται.

*De domo *Thogarma (l) equi, &* 14
equites dederunt forũ tuum. Fi- 15
lii Rhodiorum negotiatores tui ex
inſulis multiplicaverunt negotia-
tionẽ tuã (m) dẽtes elephantinos:
et his, qui introducebantur, redde-
bas mercedes tuas, (n) Homines, 16
negotiationẽ tuã à multitudine
commiſti tui: (o) ſtacten, & (p)
varietates ex Tharſis, et (q) Rha-
moth, & Chorchor, dederunt fo-
rum tuũ. Judas, & filii Iſrael, 17
iſti negotiatores tui in venditione
frumenti, & unguentorũ, & ca-
ſiæ: (r) & primũ mel, & oleum;
& reſinã dederunt in commiſtũ
tuũ. Damaſcꝰ negotiatores (ſ) tui 18
ex multitudine omnis fortitudinis
tuæ: vinũ ex (t) Chelbon, et (u) la-
nas de Mileto: & (x) vinũ in fo-
rũ tuũ dederunt. Ex Aſel ferrũ 19
factum opere, & rota in commi-
ſto tuo eſt. Dædan negotiatores 20
tui cũ jumentis electis ad currus.
Arabia, & univerſi principes 21
Cedar, ipſi negotiatores tui per
manum tuã, camelos, & agnos, et
arietes, in quibus negotiantur tibi.
Negotiatores Sabba, & Ramma, 22
ipſi negotiatores tui cum pri-
mis ſuavitatibus , & lapidibus
(y) optimis , & aurum dede-
runt forum tuum. Charra, & (z) 23
Chanaa, iſti negotiatores tui. (ω)
Aſſur, & Charmã negotiatores tui
Ferentes negotiationẽ, (aa) hya- 24
cinthum, & theſauros electos fu-
nibus colligatos, & cypariſſina:
Naves, negotiatores tui in multi- 25
tudine in commiſto tuo. Et reple-
ta es, & aggravata es nimis in
corde maris: In aqua multa ad- 26
duxerunt te remiges tui : ſpiritus
Auſtri contrivit te in corde ma-
ris. (bb) Fuerunt virtutes tuæ, & 27
merces tua , & commiſtorum
tuorum, & remiges tui, & guber-
natores tui, & conſiliarii tui, &
(cc) commiſti tui ex commiſtis
tuis, & omnes viri bellatores tui,
qui in te, & omnis cœtus tuus in
medio tui cadent in corde maris,
in die ruinæ tuæ. Ad clamorem 28
vocis tuæ gubernatores tui timo-
re timebunt : Et deſcendent 29
de navibus omnes remiges, & e-
pibatæ: & proretæ maris in terra
ſtabunt, Et vociferabuntur ſuper 30
te voce ſuâ, & clamabunt amarè,
& imponent terram ſuper caput ſuũ, & cinerẽ (dd) ſternent ſibi.

MS. A. (π) Θοργαμὰ ἵπποις καὶ ἱππεῖς καὶ ἡμιόνους ἔδωκαν ἀγοράν (ρ) Ἀ-
ραδίων (σ) Ῥαμμὼθ, καὶ Κορχορὺς (τ) Ἰούδα καὶ οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, (υ) σίτου πράσει
(φ) οἶνον ἐκ Χεβρὼν, (χ) Ἀσὴλ σίδηρον εἰργασμένον, καὶ τροχιὰς ἔδωκαν ἐν
(ψ) καὶ κριοὺς, καὶ μόσχοις ἐν οἷς ἐνεπορεύοντό σοι. (ω) Σαβὰ, καὶ Ῥαγμὰ, (α) ἐκ-
λεκτῶν, καὶ χρυσίον (β) Χαῤῥὰν, καὶ Χαναὰν, καὶ Δαιδὰν, αὐτοὶ (γ) καὶ πορ-
φύραν, καὶ (δ) ἐν κυπαρισσίνοις πλοίοις ἐν αὐτοῖς. Καρχηδόνιοι ἔμποροί σου,
Θαρσὸς ἔμποροί σου, ἐν τῷ πλήθει (ε) ἐμμέσῳ θαλάσσης· (ζ) ἐν τῷ συμμί-
κτῳ σου, οἱ (η) σου· καὶ πᾶσα ἡ (θ) τὴν φωνὴν τῆς κραυγῆς σου (ι) Καταβήσονται
(κ) πλοίων αὐτῶν πάντες (λ) κωπηλάται σου (μ) τῆς γῆς (ν) ἀλαλάξονται ἐπὶ σὲ
τὴν κραυγὴν αὐτῶν, (ξ) πικρῶς, (ο) ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτῶν γῆν, (π) ὑπο-
31 στρώσονται. Καὶ φαλακρώσουσιν ἐπὶ σὲ φαλακρώματα, καὶ περιζώσονται σάκκον,
καὶ κλαύσονται περὶ σοῦ ἐν πικρασμῷ ψυχῆς, καὶ κοπετὸν πικρὸν ἐκστή-
σονται. Καὶ λήμψονται

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 15 ממדינת גרממיא סוסון ופרשין וכודנון מיתן סחורא לגויך׃ בני דדן תגריך יתבי נגון
16 סגיאן מיתן סחורה לגויך בקרנין דיעלין ושן דפיל וטוסין אתיבו קורבניך׃ מן ארם
מיתן סחורא לגויך מסגי עתריך בתכריכין דארגון ורקם ובוץ ציורין ואבנין טבין
17 ומרגלין יהבו בבית גנזך׃ יהודה וארעא דישראל אנון תגריך בחטי ריחוש וקוליא
18 ודבש ומשח ושעף יהבו בחנותיך׃ מן דמשק מיתן סחורא לגויך בסגי עתריך מסגי
19 כל עותר בחמר חילת מבשל ועמר מילת כבינא׃ ודן ויון בשירין סחורתיך מיתן
20 בערקין דברזל קדה וקנה בשם בחנותיך יהבו׃ מן דדן מיתן סחורא לגויך בלבוש
21 דיקר לרתיכין׃ ערב וכל רברבי נבט אנון תגריך בתורין ודכרין וגדין בהון הות
22 סחורתיך׃ תגרי שבא ורעמה אנון תגריך בריש כל בוסמין ובכל אבנין טבן ודהבא
23 24 יהבו בבית גנזיך׃ חרן ונציבין והדיב תגרי שבא מדינן אתור ומדי אנון תגריך׃ אנון
תגריך בגמר מני כל תושבחתא בגוזין דתכלא וכושפין דארזא באמלין די זהריתא
דמחתין בקומטרין חפן גלדין מאסרין באטונין די בוצא חתימין בעזקת גלף עבידת
25 ימא מחתין במגדלי אעי הדסין בהון הות סחורתיך׃ בספיני ימא הוו שיטין ומיתן
26 סחורה לגויך ועתרת ותקפת לחדא בגו ימיא׃ כמיין סגיאין עלו עלך ובזו יתיך מלך
27 דתקיף כרוח קדומא תבריך בגו ימיא׃ עותריך ונכסיך סחרתיך ספניך ופרנסיך מתקפי
צורכיך ומיתן סחורת חנותיך וכל גברי עבדי קרביך די ביך וכל משריתיך די בגויך
28 29 יתרמון בגו ימיא ביום מפלת קטיליך׃ לקל צוחת פרנסיך יזועון פרוריא׃ ויחתון
30 מספיניהון כל אחדי משוט ספנין כל פרנסי ימא על ארעא יקומון׃ וישמעון עלך
31 בקלהון ויצוחון במרר ויסקון עפרא על רישיהון בקטמא יהון חפיפין׃ וימרטון עלך
מרט ויסרון סקין ויבכון עלך במריר נפש ויעבדון מספד מריר׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

De provincia Germaniæ equos & equites & mulos adducebant merces in me- 14
dium tui. Filii Dedan negotiatores tui & habitatores inſularum multarum 15
adducebant merces in medium tui, in cornibus caprearum & dentibus ele-
phantinis; & pavones adduxerunt in munus tibi. De Syria adducebant mer- 16
cimonia in medium tui, præ multitudine divitiarum tuarum; chlamydes pur-
pureas & acupictas & ex byſſo varii coloris, & lapides pretioſos & margari-
tas poſuerunt in domo theſaurorum tuorum. Juda etiam & terra Iſrael, ipſi 17
inſtitores tui in tritico optimo & balſamo ; mel, oleum & reſinam poſuerunt
in officinis tuis. De Damaſco adducebant negotiationem in medium tui, in 18
multitudine divitiarum tuarum præ multitudine omnium divitiarum in vino
dulci condito, & lana ſericea ſubtili. Et Dan & Græcia turmatim mercimo- 19
nia adducebant; laminas ferreas, ſtacten & calamum aromaticum poſuerunt
in nundinis tuis. A Dedan afferebant negotiationes in medium tui, in veſti- 20
bus pretioſis ad equitaturam. Arabia, & omnes principes Nebat, ipſi fuerunt 21
negotiatores tui in bobꝰ & arietibꝰ & hœdis, in quibꝰ fuit negotiatio tua. In- 22
ſtitores Saba & Raama, ipſi negotiatores tui in primariis omnium aromatũ, &
in omnibꝰ lapidibꝰ pretioſis; aurum quoque poſuerunt in domo theſauri tui.
Charræi, Cannæi, & Hadibæi, negotiatores Saba, provinciæ Aſſyria & Me- 23
dia, ipſi fuerunt negotiatores tui. Et ipſi inſtitores tui in abſolutiſſimis omnis 24
generis rebus eximiis, palliis hyacinthinis, & ſcriniolis cedrinis, chlamydibus
coccineis, quæ repoſitæ ſunt in capſellis coopertis pellibus & ligatis funibus
byſſinis & ſignatis annulo ſculptorio, opere marino, poſitis in turribus myr-
tinis , in quibus fuit negotiatio tua. Navibus maris fuerunt remiges addu- 25
centes negotiationem in mediũ tui; & dives & potens evaſiſti nimis in medio
mariũ. *Ut aqua multa* venerunt contra te *ac* diripuerunt te: rex qui fortis eſt 26
ſicut ventꝰ orientalis contrivit te in medio mariũ. Divitiæ tuæ & ſubſtantia 27
tua, & negotiatio tua, nautæ tui, & gubernatores tui providentes neceſſaria
tua, & inferentes negotiationes in tabernas tuas, & omnes viri bellatores tui
qui apud te ſunt, & omnes exercitus tui qui ſunt in medio tui, projicientur in
mediũ maris in die ruinæ occiſorũ tuorũ. Ad vocẽ clamoris gubernatorũ tu- 28
orum commovebuntur ſuburbia. Et deſcendent de navibꝰ ſuis omnes tenen- 29
tes remum ; nautæ & omnes gubernatores maris ſuꝑ terram ſtabunt. Et au- 30
dire facient ſuꝑ te vocem ſuam, & clamabunt amarè & imponent pulverem
ſuꝑ capita ſua, & cinere operientur. Et radent ſuꝑ te calvitium, & accingentur ſaccis, & plorabunt ſuper te in amaritudine animæ, & agent ſuper te planctũ amarum. 31

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܢ ܒܝܬ ܬܘܓܪܡܐ. ܘܪ̈ܟܫܐ ܘܦܪ̈ܫܐ ܘܟܘܕ̈ܢܝܐ. ܐܝܬܝܘ ܠܟܝ ܠܙܒܢܐ. * ܒܢ̈ܝ ܕܪ̈ܢ 14
ܬܓܪ̈ܝܟܝ. ܘܓܙܪ̈ܬܐ ܣܓܝܐ̈ܬܐ. ܐܬܪܐ ܕܬܐܓܘܪܬܐ ܕܐܝܕ̈ܝܟܝ. ܩܪ̈ܢܬܐ ܕܡܫܚܐ. ܘܒܣ̈ܡܐ 15
ܐܝܬܝܘ ܠܟܝ ܡܘܗܒܬܐ. * ܐܕܘܡ ܐܬܪܐ ܕܬܐܓܘܪܬܟܝ ܘܣܘܓܐܐ ܕܥܒ̈ܕܝܟܝ. ܐܪܓܘܢܐ ܘܒܘܨܐ 16
ܘܦܟܠܐ ܘܬܟܠܬܐ. ܘܫܐܪܝܐ ܘܡܟܠܠܐ. ܐܝܬܝܘ ܠܟܝ ܠܙܒܢܐ. * ܝܗܘܕܐ ܘܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. 17
ܗܢܘܢ ܐܢܘܢ ܬܓܪ̈ܝܟܝ. ܚܛܐ. ܘܪܘܙܐ. ܘܕܘܚܢܐ. ܘܕܒܫܐ. ܘܡܫܚܐ. ܘܪܝܫܝܢܐ. ܐܝܬܝܘ ܠܟܝ
ܒܙܒܢܐ. * ܕܪܡܣܘܩ ܐܬܪܐ ܕܬܐܓܘܪܬܟܝ. ܘܣܘܓܐܐ ܕܬܐܓܘܪ̈ܝܟܝ ܘܣܘܓܐܐ ܕܥܘܬܪ̈ܟܝ. ܚܡܪܐ 18
ܘܫܘܡܢܐ. ܘܥܡܪܐ ܚܘܪܐ. * ܕܢ ܘܝܘܢ. ܡܢ ܐܘܙܠ ܐܝܬܝܘ ܠܟܝ ܠܙܒܢܐ. ܦܪܙܠܐ ܕܬܥܒܕܝܢ: 19
ܘܩܨܝܥܬܐ ܘܩܢܝܐ. ܐܝܬܝܘ ܠܟܝ ܠܙܒܢܐ. * * ܕܪܢ ܐܬܪܐ ܕܬܐܓܘܪܬܟܝ. ܐܝܬܝܘ ܠܟܝ ܣܘܓܐܐ 20 21
ܕܒܥܝܪܐ ܓܡܝܪܐ. ܘܕܟܪ̈ܐ ܘܐܡܪ̈ܐ ܘܓܕܝ̈ܐ ܐܝܬܝܘ ܠܟܝ. * ܬܓܪ̈ܐ ܕܫܒܐ ܘܕܪܥܡܐ. ܒܣ̈ܡܐ 22
ܓܒܝ̈ܐ ܘܟܐܦ̈ܐ ܝܩܝܪ̈ܬܐ. ܘܕܗܒܐ ܐܝܬܝܘ ܠܟܝ ܠܙܒܢܐ. * ܚܪܢ ܘܟܢܐ ܘܥܕܢ ܬܓܪ̈ܐ ܕܫܒܐ. 23
ܘܐܬܘܪ ܐܬܪܐ ܕܬܐܓܘܪܬܟܝ. * ܗܠܝܢ ܐܢܘܢ ܬܓܪ̈ܝܟܝ. ܕܡܝܬܝܢ ܠܟܝ ܡܐܢ̈ܐ ܕܬܟܠܬܐ 24
ܘܕܨܒܥܐ. ܘܣܝ̈ܡܬܐ ܓܒܝ̈ܬܐ ܕܐܣܝܪܢ ܒܚܒ̈ܠܐ ܘܒܐܠܦ̈ܐ ܕܒܪ̈ܘܬܐ. * ܒܢ̈ܝ ܬܪܫܝܫ 25
ܕܒܡܥܪܒ ܥܡܟܝ. ܐܝܬܝܘ ܠܟܝ ܡܘܒܠܐ. ܘܐܬܡܠܝܬܝ ܘܐܬܥܫܢܬܝ ܛܒ ܛܒ. * ܘܠܠܒܐ 26
ܕܝܡ̈ܡܐ ܘܠܡ̈ܝܐ ܣܓܝ̈ܐܐ. ܐܥܠܘܟܝ ܕܐܚܝܕܝܢ ܠܡܩ̈ܦܝܟܝ. ܪܘܚܐ ܕܬܝܡܢܐ ܬܒܪܬܟܝ ܒܠܒܐ ܕܝܡ̈ܡܐ.
* ܘܥܘܬܪܟܝ ܘܬܐܓܘܪܬܟܝ ܕܡܢ ܡܥܪ̈ܒܝܟܝ. ܟܠܗܘܢ ܓܒܪ̈ܐ ܡܬܟܬܫܢ̈ܝܟܝ. ܘܡܠܚ̈ܝܟܝ ܘܡܩ̈ܦܝ 27
ܡܩ̈ܦܝܟܝ ܕܡܢ ܡܥܪ̈ܒܝܟܝ. ܟܠܗܘܢ ܓܒܪ̈ܐ ܡܬܟܬܫܢ̈ܝܟܝ. ܘܟܠܗ ܟܢܫܐ ܕܒܓܘܟܝ
ܢܦܠܘܢ ܒܠܒܐ ܕܝܡ̈ܡܐ ܒܝܘܡܐ ܕܡܦܘܠܬܟܝ. * ܠܩܠܐ ܕܙܥܩܬܐ ܕܡܠܚ̈ܝܟܝ ܢܬܬܙܝܥܘܢ 28
ܚܕܪ̈ܝܟܝ. * ܘܢܚܬܘܢ ܡܢ ܐܠܦܝܗܘܢ. ܟܠܗܘܢ ܐܚܝܕ̈ܝ ܡܩ̈ܦܐ. ܘܡܠܚ̈ܐ ܘܟܠܗܘܢ 29
ܡܠܚ̈ܝ ܕܝܡܐ. ܥܠ ܐܪܥܐ ܢܩܘܡܘܢ. * ܘܢܝܠܠܘܢ ܥܠܝܟܝ ܒܩܠܐ ܪܒܐ. ܘܡܪܝܪܐ. ܘܢܪܡܘܢ 30
ܥܦܪܐ ܥܠ ܪ̈ܫܝܗܘܢ. ܘܢܬܒܠܒܠܘܢ ܒܩܛܡܐ. * ܘܢܓܪܘܢ ܥܠܝܟܝ ܪ̈ܫܝܗܘܢ. 31
ܘܢܬܥܛܦܘܢ ܣܩ̈ܐ. ܘܢܒܟܘܢ ܥܠܝܟܝ ܡܪܝܪܐܝܬ ܒܡܪܩܕܬܐ.

* E regione Togormæ, equos, equitéſque, ac 14
mulos afferebant ad te emendos. Filii Daratis 15
mercatores tui, & inſulæ multæ, locus negotiationis
manuum tuarum; cornua olei, &
incenſum afferebant tibi munus. Edom loc' 16
negotiationis tuæ & multitudinis operũ tuorum,
purpuram, byſſum, *pannum* verſicolorẽ,
hyacinthinum, ſericum, & acupictum advehebant
tibi emendum. Judæa & terra Iſraelitica, 17
ipſi ſunt mercatores tui: frumentum, oryzam,
milium, mel, oleum, & reſinam afferebant
tibi ad nundinas. Damaſcus erat emporium 18
tuum, multitudo negotiorum tuorum, &
copia divitiarum tuarum; quoad vinum, adipem,
& lanam candidam. Dan & Javan ex 19
Uzel advehebant tibi nundinatum ferrum, ut
fabrefaceres: & caſias calamóſque afferebant 20
tibi ad nundinas. Daran emporium tuum 21
aſportabant ad te multitudinem jumentorum
integerrimorum: & arietes, agnos, hœdóſque
aſportabant ad te. Mercatores Sabæ & Raamæ, 22
aromata egregia, lapides optimos, & aurum
afferebant tibi nundinatum. Haran, 23
Channe, & Aden, mercatores Sabæ, & Aſſur
locus negotiationis tuæ; Hi erant mercatores 24
tui, qui advehebant ad te veſtes hyacinthinas
& verſicolores, & theſauros optimos
funib' alligatos, & navibus abiegnis *incluſos*.
Filii Tharſis qui *jacent* ad plagã tuã Occidentalẽ, 25
afferebant ad te ſarcinas, & perquã plena
ac potens evaſiſti maximé. In cor marium & 26
aquas multas induxerũt te qui regebãt remos
tuos: vent' calid' confregit te in corde mariũ:
Opes tuæ & merces tua, quæ ex plaga tua Occidentali 27
afferebãtur, oẽs lectiſſimi bellatores
tui, nautæ tui, inſtauratores eorũ quæ in te inſtauranda
erãt, qui *jacent* ab Occidentali plaga
tua, omnes viri tui belligeri, totúſque cœt' qui
eſt in te, cadent in cor mariũ die caſûs tui. Ad 28
vocẽ clamoris nautarũ tuorũ contremiſcent
quæ circa te ſunt: Deſcendent de navib' ſuis 29
omnes remiges; & naucleri omnéſque nautæ
maris in terra conſiſtent: Et ululabunt ſup te 30
clamore ingenti & acerbo, imponent pulverem
capitibus ſuis, & volutabunt ſe in cinere:
Tondebunt ſuper te capita ſua, accingent ſe 31
ciliciis, acerbè te deflebunt cum planctibus:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* مِن بيت ترعاما خيلا وفرسانا وبغالا دفعوا لسوقك * بنوا الروديين تجارك من الجزاير 14 15
أكثروا تجارتك * الأنياب العاج والأنعاب يساقون * عوضت للمساقين أجرك * أناسا تجارتك 16
من كثر تخلطك * ميعة ومرقومات من ترسيس ورموث وحرحور * دفعوا لسوقك *

* الإصحاح الخامس عشر *

* يهوذا وبنو إسرائيل * هولاء تجارك ببيع الحنطة * أطيابا وسليخة * وأوايل العسل * والزيت 17
والقلفونيه * دفعوا لمخلطك * دمشق تجارك من كثر جيشك * خمرا من سلبون * وصوفا من 18
مليطس * وخمرا أعطوه لسوقك من آايل * حديد معمول * ويكون هي في تخلطك * دادان 19 20
تجارك ببهايم مختار للمركبات * أرابيا وجميع روساء قيدار * هولاء تجار بيدك * دخلوا فيك 21
بجمال وكباش وحملان * تجار سابا ورعما * هولاء تجارك بأوايل الأطياب والأحجار الطيبة * وأعطوا 22
ذهبا لسوقك * حران وحنا * هولاء تجارك * الموصل وحرمان تجارك * يحملون تجارة * بأثواب وذخاير 23 24
تجارة * محزومة بحبال في سفن سرينية * الكركيذونيين تجارك بيسار * تجارك بمخلطك * 25
وامتليت وثقلت جدا في قلب البحر * في ماء كثير ساقوا قذافوك * ريح الجنوب 26
هشمتك في قلب البحر * كانت جيوشك وأجرتك * ومن مخلطيك قذافوك 27
ومدبروك * وأصحاب أساراتك * ومخلطوك * من مخلطيك * وجميع رجالك محاربوك * فيك *
وكل جمعك في وسطك يسقطون في قلب البحر في يوم سقطتك * بصرخة صوتك مدبروك 28
يخافوا خوفا * وينحدرون عن سفنهم * وجميع قذافيك * وركابك ورؤساء البحر * يقفون على 29
الأرض * ويبدلون صوتهم عليك * ويتصارخون بمرارة * ويضعون التراب على روسهم * 30
ويفترشون الرماد *

De domo Thorgama equos, equiteſque, & 14
mulos ſuppeditabant nundinis tuis. Filii 15
Rhodiorum negotiatores tui, ex inſulis
multiplicaverunt merces tuas: dentes
eburnei & opificia advehebantur: reddidiſti
iis qui adducebantur, mercedem tuam,
Homines, negotiationem tuam ex multitudine 16
commixti tui: ſtacten & veſtes
virgatas è Tharſis, & Ramoth, & Chorchor,
afferebant ad nundinas tuas.

Textus decimus quintus.

Juda & filii Iſraelis, hi erant mercatores 17
tui in vendendo frumento: odores, & caſiam,
præſtantiſſima mellis, oleum, atque
reſinam ſuppeditabant commixto tuo.
Damaſcus mercatores tui propter multitudinem 18
exercitûs tui, vinum de Scelbon, &
lanam de Mileto, & vinum afferebant ad
nundinas tuas ex Aiil: Ferrum fabrefactum 19
& rota eſt in commixto tuo. Dedan 20
mercatores tui accedebant cum jumentis
delectiſſimis ad currus. Arabia & 21
omnes principes Cedar, iſti negotiatores
ad manum tuam inferebant in te camelos,
arietes, & agnos. Mercatores Sabæ et 22
Ragmæ, hi erant negotiatores tui pro odoribus
& lapidibus optimis, & aurum
ſuppeditabant foro tuo. Harran & Hanna, 23
iſti erant negotiatores tui. Manſel
& Charman negotiatores tui, Advehentes 24
merces, hyacinthum theſauroſque
delectos funibus alligatos, navibus cypreſſinis.
Chartidonii mercatores tui cum 25
opulentia, mercatores tui in commiſto tuo:
Denique plena ſumméque gravis facta es
in corde maris. In aquam multam deduxerunt 26
te remiges tui: ventus Auſtralis
confregit te in corde maris. Fuerunt 27
exercitus tui, & merces tua, et ex commiſtis
tuis; remiges tui, et gubernatores tui,
et conſiliarii tui, et commiſti tui ex commiſtis
tuis, omneſque viri tui bellatores
tui in te, et omnis cœtus tuus in medio
tui cadent in cor maris, die caſûs tui. Ad 28
clamorem vocis tuæ gubernatores tui
formidine perculſi, Deſcendent è navibus 29
ſuis: et omnes remiges tui, et conſcenſores
tui, ac principes maris in terra conſiſtent,
Et mutantes vocem ſuam causâ tui, 30
exclamabunt amarè, imponent pulverem
capitibus ſuis, ſternent cinerem:

Quæ:te super *lamentabuntur* &,lamentum,*suis querimoniis,in* te ad *tollent* Et
32 וְנָשְׂאוּ אֵלַיִךְ בְּנִיהֶם קִינָה וְקוֹנְנוּ עָלָיִךְ מִי
,maribus de *tua subsidia egrediendo In* ? maris medio in succisa sic,Sor sicut
33 כְּצוֹר כְּדֻמָה בְּתוֹךְ הַיָּם׃ בְּצֵאת עִזְבוֹנַיִךְ מִיַּמִּים
tuorũ emporiorum &,tui lucri multitudine *in* : multos populos saturabas
הִשְׂבַּעַתְּ עַמִּים רַבִּים בְּרֹב הוֹנַיִךְ וּמַעֲרָבַיִךְ
,aquarũ profundis in,maribus à contrita Tempore .terræ reges ditâsti
34 הֶעֱשַׁרְתְּ מַלְכֵי־אָרֶץ׃ עֵת נִשְׁבֶּרֶת מִיַּמִּים בְּמַעֲמַקֵּי־מָיִם
habitatores Universi .cadent tui medio in tuꝰ cœtus omnis &,*tuũ emporiũ*
35 מַעֲרָבֵךְ וְכָל־קְהָלֵךְ בְּתוֹכֵךְ נָפָלוּ׃ כֹּל יֹשְׁבֵי
,*crine horripilaverunt* earum reges & ,te super obstupuerunt ,insularum
הָאִיִּים שָׁמְמוּ עָלָיִךְ וּמַלְכֵיהֶם שָׂעֲרוּ שַׂעַר
.te super sibilaverunt populis in Negotiatores .*faciebus sunt turbati*
36 רָעֲמוּ פָּנִים׃ סֹחֲרִים בָּעַמִּים שָׁרְקוּ עָלָיִךְ
.seculum in usque *tu* non &,fuisti *Terrores*
בַּלָּהוֹת הָיִית וְאֵינֵךְ עַד־עוֹלָם׃

CAP. XXVIII. כח

duci Dic ,hominis Fili : dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et
1 2 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם אֱמֹר לִנְגִיד
,dixisti &,tuum cor est elevatũ ꝑ eo Pro : Deus Dominus dixit Sic : Sor
צֹר כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה יַעַן גָּבַהּ לִבְּךָ וַתֹּאמֶר
,homo tu & : marium medio in ,sedi Dei cathedra ,ego Deus
אֵל אָנִי מוֹשַׁב אֱלֹהִים יָשַׁבְתִּי בְּלֵב יַמִּים וְאַתָּה אָדָם
sapiens Ecce .Dei cor tanquam tuum cor *dedisti* & ,Deus non &
3 וְלֹא־אֵל וַתִּתֵּן לִבְּךָ כְּלֵב אֱלֹהִים׃ הִנֵּה חָכָם
,tua sapientia In .te *latuerunt* non absconditum Omne ? Daniele *præ* tu
4 אַתָּה מִדָּנִאֵל כָּל־סָתוּם לֹא עֲמָמוּךָ׃ בְּחָכְמָתְךָ
argentum & aurum *fecisti* & :*facultatem* tibi *fecisti* tua intelligentia in &
וּבִתְבוּנָתְךָ עָשִׂיתָ לְּךָ חָיִל וַתַּעַשׂ זָהָב וָכֶסֶף
tua negotiatione in ,tuæ sapientiæ multitudine *In* .tuis thesauris in
5 בְּאוֹצְרוֹתֶיךָ׃ בְּרֹב חָכְמָתְךָ בִּרְכֻלָּתְךָ
Propterea .*tua facultate in* tuũ cor est elevatum & :*tuã facultatẽ* multiplicâsti
6 הִרְבִּיתָ חֵילֶךָ וַיִּגְבַּהּ לְבָבְךָ בְּחֵילֶךָ׃ לָכֵן
.Dei cor sicut tuum cor *te dare* Pro : Deus Dominus dixit sic
כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה יַעַן תִּתְּךָ אֶת־לְבָבְךָ כְּלֵב אֱלֹהִים׃
evaginabunt & :gentiũ robustos,alienos te super *adducens* ego ecce Idcirco
7 לָכֵן הִנְנִי מֵבִיא עָלֶיךָ זָרִים עָרִיצֵי גּוֹיִם וְהֵרִיקוּ
.tuũ splendorẽ polluent & ,tuæ sapientiæ pulchritudinẽ super suos gladios
חַרְבוֹתָם עַל־יְפִי חָכְמָתֶךָ וְחִלְּלוּ יִפְעָתֶךָ׃
corde in *occisi* mortibus morieris & ,te facient descendere foveam Ad
8 לַשַּׁחַת יוֹרִדוּךָ וָמַתָּה מְמוֹתֵי חָלָל בְּלֵב
?te *occidentis facies ad* ,ego Deus ,dices dicendo Nunquid .marium
9 יַמִּים׃ הֶאָמֹר תֹּאמַר אֱלֹהִים אָנִי לִפְנֵי הֹרְגֶךָ
Mortibus .te *sauciantis* manu in ,Deus non & ,homo tu Et
10 וְאַתָּה אָדָם וְלֹא־אֵל בְּיַד מְחַלְלֶךָ׃ מוֹתֵי
,sum locutus ego Quia .alienorum manu in morieris incircuncisorum
עֲרֵלִים תָּמוּת בְּיַד־זָרִים כִּי אֲנִי דִבַּרְתִּי
Fili : dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et .Deus Dominus ait
11 12 נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִה׃ וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־
dixit Sic : ei *dices* & : Sor regem super lamentum *Tolle* : hominis
אָדָם שָׂא קִינָה עַל־מֶלֶךְ צוֹר וְאָמַרְתָּ לּוֹ כֹּה אָמַר
perfectus &,sapientia plenus *dispositionem sigillans* Tu : Deus Dominus
אֲדֹנָי יֱהוִה אַתָּה חוֹתֵם תָּכְנִית מָלֵא חָכְמָה וּכְלִיל
pretiosus lapis omnis ,fuisti Dei horti Heden In .decore
13 יֹפִי׃ בְּעֵדֶן גַּן־אֱלֹהִים הָיִיתָ כָּל־אֶבֶן יְקָרָה
,*jaspis* & ,onyx ,*hyacinthus* ,*adamas* & ,*smaragdus* ,*rubinus* ,tuũ operimentũ
מְסֻכָתֶךָ אֹדֶם פִּטְדָה וְיָהֲלֹם תַּרְשִׁישׁ שֹׁהַם וְיָשְׁפֵה
,tuorũ tympanorũ opus : aurum & ,smaragdus &,carbunculꝰ,sapphirus
סַפִּיר נֹפֶךְ וּבָרְקַת וְזָהָב מְלֶאכֶת תֻּפֶּיךָ
.fuerunt præparata *te creari* die in te in *tuorum foraminum* &
וּנְקָבֶיךָ בָּךְ בְּיוֹם הִבָּרַאֲךָ כּוֹנָנוּ׃

Versio VULG.LAT.

32 Et assument super te carmen lugubre,
& plangent te: Quæ est
ut Tyrus, quæ obmutuit in medio
33 maris? Quæ in exitu negotiationum
tuarum de mari implêsti
populos multos: in multitudine
divitiarum tuarũ, & populorum
tuorum, ditâsti reges
34 terræ. Nunc contrita es à mari, in
profundis aquarũ opes tuæ, &
omnis multitudo tua, quæ erat
35 in medio tui, ceciderunt. Universi
habitatores insularum obstupuerunt
super te: & reges
earũ omnes tempestate perculsi
36 mutaverunt vultus. Negotiatores
populorũ sibilaverunt super te:
ad nihilum deducta es, & non
eris usque in perpetuum.

CAP. XXVIII.

1 ET factꝰ est sermo Dñi ad me,
2 dicens; Fili hominis, dic principi
Tyri; Hæc dicit Dñs Deus;
Eò quòd elevatũ est cor tuum,
& dixisti; Deus ego sum, & in
cathedra Dei sedi in corde maris:
cùm sis homo, & non Deꝰ,
& dedisti cor tuũ quasi cor Dei.
3 Ecce sapientior es tu Daniele:
omne secretum non est absconditum
4 à te. In sapientia & prudentia
tua fecisti tibi fortitudinem:
& acquisisti aurum & argentum
5 in thesauris tuis. In multitudine
sapientiæ tuæ, & in negotiatione
tua multiplicâsti tibi
fortitudinẽ: & elevatũ est cor tuũ
6 in robore tuo. Propterea hæc dicit
Dñs Deꝰ; Eò ꝙ elevatũ est cor
7 tuũ quasi cor Dei, Idcircò ecce
ego adducã sup te alienos, robustissimos
Gentiũ: & nudabunt
gladios suos super pulchritudinẽ
sapientiæ tuæ, & polluent decorem
8 tuum. Interficient, & detrahent
te: & morieris in interitu
9 occisorum in corde maris. Nunquid
dicens loquêris; Deus ego
sum, corã interficientibus te: cùm
sis homo, & non Deus, in manu
10 occidentiũ te? Morte incircumcisorũ
morieris in manu alienorum:
quia ego locutꝰ sum, ait Dñs
11 Deꝰ. Et factus est sermo Dñi ad
me, dicens; Fili hominis, leva
12 planctũ sup regẽ Tyri: Et dices
ei; Hæc dicit Dñs Deꝰ; Tu signaculũ
similitudinis, plenꝰ sapientiâ,
13 & perfectꝰ decore, In deliciis
paradisi Dei fuisti: omnis lapis
pretiosus operimentũ tuũ: sardius,
topazius, & jaspis, chrysolithus,
& onyx, & beryllus, sapphirus,
& carbunculus, & smaragdus:
aurũ opus decoris tui:
& foramina tua in die, quâ conditus
es, præparata sunt.

Vers.GRÆ. LXX.Interp. cum Transl. LAT.

32 Καὶ λήψονται οἱ υἱοὶ αὐτῶν ἐπὶ σὲ θρῆνον, (ρ)
33 θρήνημα Σόρ· Πόσον τινὰ εὗρες μισθὸν ἀπὸ
τῆς θαλάσσης; (σ) Ἐνέπλησας ἔθνη ἀπὸ τοῦ
πλήθους σου, καὶ ἀπὸ τοῦ συμμίκτου σου (τ) ἐπλούτισας
34 πάντας βασιλεῖς τῆς γῆς. Νῦν συνετρίβης
ἐν θαλάσσῃ, ἐν βάθει ὕδατος ὁ σύμμικτός
σου, καὶ πᾶσα ἡ συναγωγή σου ἐν μέσῳ
35 σου ἔπεσον πάντες οἱ (υ) κωπηλάται σου. Πάντες
οἱ κατοικοῦντες τὰς νήσους ἐστύγνασαν ἐπὶ
σὲ, καὶ οἱ βασιλεῖς αὐτῶν ἐκστάσει ἐξέστησαν, καὶ
36 (φ) ἐδάκρυσε τὸ πρόσωπον αὐτῶν. Ἔμποροι
ἀπὸ ἐθνῶν ἐσύρισάν σε, ἀπώλεια ἐγένου, καὶ
οὐκέτι ἔσῃ εἰς τὸν (χ) αἰῶνα.

MS. A. (ρ) καὶ θρήνημά σοι· Τίς ὥσπερ Τύρος κατασιγηθεῖσα ἐμ μέσῳ θαλάσσης; πόσον καὶ τίνα (σ) * Ἐνεποίησας ἔθνη (τ) ἐπλούτισας (υ) κατοικοῦντες τὰς νήσους, καὶ οἱ κωπηλάται σου ἐστύγνασαν (φ) ἐδάκρυσαν τῷ προσώπῳ αὐτῶν. Ἐπὶ σοὶ ἔμποροι (χ) αἰῶνα, λέγει κύριος ὁ θεός. *

ΚΕΦ. κη΄.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρός με, λέγων,
2 (α) Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου εἰπὸν τῷ ἄρχοντι
Τύρου, Τάδε λέγει (β) κύριος, Ἀνθ' ὧν
ὑψώθη σου ἡ καρδία, καὶ εἶπας, Θεός εἰμι ἐγὼ,
κατοικίαν θεοῦ κατῴκηκα ἐν καρδίᾳ θαλάσσης,
σὺ δὲ εἶ ἄνθρωπος καὶ οὐ θεὸς, καὶ ἔδωκας
3 τὴν καρδίαν σου ὡς καρδίαν θεοῦ· Μὴ
σοφώτερος εἶ σὺ τοῦ Δανιήλ; (˜) σοφοὶ οὐκ ἐπαίδευσάν
4 σε (γ) τῇ ἐπιστήμῃ αὐτῶν. Μὴ ἐν τῇ
ἐπιστήμῃ σου ἢ (δ) τῇ φρονήσει σου ἐποίησας
σεαυτῷ δύναμιν, καὶ (ε) χρυσίον καὶ ἀργύριον
5 ἐν τοῖς θησαυροῖς σου; (ζ) Ἐν τῇ πολλῇ ἐπιστήμῃ
σου καὶ ἐμπορίᾳ σου ἐπλήθυνας (η) δύναμίν
σου, ὑψώθη ἡ καρδία σου ἐν τῇ δυνάμει
6 σου. Διὰ τοῦτο τάδε λέγει (θ) κύριος, Ἐπειδὴ
δέδωκας τὴν καρδίαν σου ὡς καρδίαν
7 θεοῦ, Ἀντὶ τούτου ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω ἐπὶ σὲ ἀλλοτρίους
λοιμοὺς ἀπὸ ἐθνῶν, καὶ ἐκκενώσουσι τὰς
μαχαίρας αὐτῶν ἐπὶ σὲ, καὶ ἐπὶ τὸ κάλλος τῆς
ἐπιστήμης σου, καὶ στρώσουσι τὸ κάλλος σου εἰς
8 ἀπώλειαν, Καὶ καταβιβάσουσί σε, καὶ ἀποθανῇ
θανάτῳ τραυματιῶν ἐν καρδίᾳ θαλάσσης.
9 Μὴ λέγων ἐρεῖς, Θεός εἰμι ἐγὼ, ἐνώπιον
τῶν ἀναιρούντων σε; σὺ δὲ εἶ ἄνθρωπος, καὶ
10 οὐ θεός. Ἐν πλήθει (ι) ἀπεριτμήτων ἀπολῇ
ἐν χερσὶν ἀλλοτρίων, ὅτι ἐγὼ ἐλάλησα, λέγει
11 κύριος. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρός με,
λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, λάβε θρῆνον ἐπὶ τὸν
12 ἄρχοντα Τύρου, Καὶ εἰπὸν αὐτῷ, Τάδε (κ) λέγει
κύριος κύριος, Σὺ ἀποσφράγισμα ὁμοιώσεως,
13 καὶ στέφανος κάλλους. Ἐν τῇ τρυφῇ τοῦ
παραδείσου τοῦ θεοῦ ἐγενήθης. πάντα λίθον
χρηστὸν ἐνδέδεσαι, σάρδιον (λ) καὶ τοπάζιον,
καὶ σμάραγδον καὶ (μ) ἄνθρακα, καὶ σάπφειρον
καὶ ἴασπιν, καὶ ἀργύριον καὶ χρυσίον, καὶ λιγύριον
καὶ ἀχάτην, καὶ ἀμέθυστον καὶ χρυσόλιθον, καὶ
βηρύλλιον, καὶ ὀνύχιον, καὶ χρυσίου ἐνέπλησας
τοὺς θησαυρούς σου καὶ τὰς ἀποθήκας σου ἐν
σοί. ἀφ' ἧς ἡμέρας ἐκτίσθης,

MS. A. (α) Υἱὲ ἀνθρώπου (β) κύριος ὁ θεός, Ἀνθ' ὧν (˜) οὐ σοφοὶ (γ) ἐν τῇ (δ) ἐν τῇ (ε) ἐποίησας χρυσίον (ζ) Ἠ ἐν τῇ (η) δυνάμεις (θ) κύριος κύριος ὁ θεὸς, Ἀνθ' ὧν ἔδωκας (ι) τραυματιζόντων σε θανάτοις ἀπεριτμήτοις ἀπολῇ (κ) λέγει κύριος, Σὺ εἶ ἀποσφράγισμα (λ) τοπάζιον, (μ) ἄνθρακαν,

Et assumẽt filii eorũ super se lamentum, 32
lamentationem Sor: (ee)
Quantã invenisti mercedem de
mari? Implêsti gentes de multitudine 33
tua, & à commistio tuo ditâsti
omnes reges terræ. Nunc cõtrita 34
es in mari: in profundo aquæ
commistus tuꝰ, & omnis cœtꝰ tuꝰ
in medio tuî ceciderunt: omnes
remiges tui, universi habitatores 35
insularũ contristati sunt super te:
& reges eorũ (ff) stupore stupuerunt,
& flevit facies eorũ. Negotiatores 36
de gentibus sibilaverunt
te: perditio facta es: & non
eris ultra in seculum.

CAP. XXVIII.

ET factꝰ est sermo Domini ad 1
me, dicens; Et tu, fili hominis, dic 2
principi Tyri, Hæc dicit Dominꝰ;
Pro eo qu[illegible] exaltatũ est cor tuum,
& dixi[illegible] Deꝰ ego sũ, habitatione
Dei habitavi in corde maris,
(tu autẽ es homo, & nõ Deus,)
& dedisti cor tuũ, quasi cor
Dei: Nunquid sapientior es tu 3
Daniele? (a) Sapientes nõ erudierũt
te disciplinâ suâ. Nunquid in 4
eruditione tua aut prudentia tua
fecisti tibi fortitudinẽ, (b) & aurũ,
& argentũ in thesauris tuis?
In multa eruditione tua, & negotiatione 5
tua multiplicâsti fortitudinẽ
tuã: elatũ est cor tuũ in fortitudine
tua. Propterea hæc dicit 6
Dñs; Quia dedisti cor tuũ, quasi
cor Dei, Pro hoc ecce ego adduco 7
super te alienos pestilẽtes de gentibꝰ:
& evaginabunt gladios suos
super te, & super pulchritudinẽ
doctrinæ tuæ: & sternent pulchritudinẽ
tuã in perditionem: (c) Et 8
descendere facient te: & morieris
morte vulneratorũ in corde maris.
Nunquid loquens dices, Deus ego 9
sum, in conspectu interficientium
te? Tu autẽ es homo, & nõ Deꝰ:
In (d) multitudine incircumcisorũ 10
morieris in manibꝰ alienorũ: quia
ego loqutꝰ sũ, dicit Dominꝰ. Et 11
factꝰ est sermo Domini ad me, dicens;
Fili hominis, sume planctũ
super principẽ Tyri, Et dic ei; Hæc 12
dicit Dominꝰ Dominꝰ; Tu signaculũ
(e) similitudinis, & corona decoris
In deliciis paradisi Dei fuisti. 13
Omni lapide bono circundatꝰ
es: sardio, & topazio, & (f) smaragdo,
& carbunculo, & sapphiro,
& iaspide, & argento, & auro, et
ligurio, & achate, & amethysto,
& chrysolitho, & beryllo, & onychino:
& auro replêsti thesauros
tuos, & horrea tua in te. A die
quâ (g) conditus es,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

32 וְיִטְּלוּן עֲלָךְ בְּעֵינֵיהוֹן אִלְיָא וִילִילוּן עֲלָךְ מַן כְּצוֹר לֵית דְּדָמֵי לַהּ בְּגוֹ יַמָּא׃ בְּמִפַּק
33 סְחָרְתִּיךְ מִבֵּינֵי עַמְמַיָּא שַׂבַּעַתְּ עַמְמִין סַגִּיאִין בִּסְנֵי עָתְרִיךְ וְנִכְסַיִךְ אַעְתַּרְתְּ מַלְכֵי
34 אַרְעָא׃ כְּעַן אִתְּבַרַת דַּהֲוָת מְסַפְּקָא סְחוֹרָה לְעַמְמַיָּא בְּעוּמְקֵי יַמָּא סְחָרְתִּיךְ וְכָל
35 מַשִּׁרְיָתַיִךְ בְּגַוִּיךְ נְפַלוּ׃ כָּל יָתְבֵי נַגְוָתָא צְדִיאוּ עֲלָךְ וּמַלְכֵיהוֹן זָעוּ זִיעַ אִתְרְשִׁימוּ אַפֵּיהוֹן׃
36 תַּגָּרִין בְּעַמְמַיָּא צְדִיאוּ עֲלַיִךְ כִּדְלָא הֲוֵית אֶתְּנִנִּךְ וְכֵן תְּהֵוִין עַד עָלְמָא׃

כח

1 2 וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי לְמֵימַר׃ בַּר אָדָם אֱמַר לְמַלְכָּא דְצוֹר כִּדְנַן אֲמַר יְיָ
אֱלֹהִים חֲלַף דְּרָם לִבָּךְ וַאֲמַרְתְּ דַּחֲלָא אֲנָא מוֹתַב תַּקִּיפִין יְתִיבִית בְּגוֹ יַמַּיָּא וְאַתְּ
3 אֱנָשָׁא וְלֵית בָּךְ צְרוֹךְ וְחַשַּׁבְתָּא בְּלִבָּךְ דְּאַתְּ דַּחֲלָא׃ הָא חַכִּים אַתְּ מִדָּנִיאֵל וְכָל רָז לָא
4 יִתְכַּסָּא מִנָּךְ׃ בְּחוּכְמְתָךְ וּבְסוּכְלְתָנוּתָךְ קְנֵיתָא לָךְ נִכְסִין וּכְנַשְׁתָּא דַּהֲבָא וְכַסְפָּא
5 6 בְּאוֹצְרָךְ׃ בִּסְנֵי חוּכְמְתָךְ וּבִסְחָרְתָּךְ סַגִּיאָה מַשִּׁרְיָתָךְ וְרָאֵם לִבָּךְ בְּמַשִּׁרְיָתָךְ׃ בְּכֵן כִּדְנַן
7 אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים חֲלַף דְּחַשַּׁבְתָּא בְלִבָּךְ דְּאַתְּ דַּחֲלָא׃ בְּכֵן הָא אֲנָא מַיְתֵי עֲלָךְ נוּכְרָאִין
8 תַּקִּיפֵי עַמְמַיָּא וְיִשְׁלְפוּן סַיְפֵיהוֹן עַל תִּקּוּן חוּכְמְתָךְ וִיחַבְּלוּן זִיו אֵימְתָךְ׃ לְחַבָּלָא
9 יַחְתּוּנָךְ וּתְמוּת מוֹת מְטַעֲנֵי חַרְבָּא בְּגוֹ יַמַּיָּא׃ הֲמֵימַר תֵּימַר דַּחֲלָא אֲנָא קֳדָם דְּקָטְלָךְ
10 וְאַתְּ אֱנָשָׁא וְלֵית בָּךְ צְרוֹךְ בְּיַד מְחַבְּלָךְ׃ מוֹת רַשִּׁיעִין תְּמוּת בְּיַד נוּכְרָאִין אֲרֵי אֲנָא
11 12 גְּזֵירִית בְּמֵימְרִי אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים׃ וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי לְמֵימַר׃ בַּר אָדָם
טוֹל אִלְיָא עַל מַלְכָּא דְצוֹר וְתֵימַר לֵיהּ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים אַתְּ דָּמֵי לְמָנָא דִּצְוִירְתָּא דִי
13 מְתַקַּן בְּחוּכְמָא וּמְשַׁכְלַל בְּשׁוּפְרֵיהּ׃ בִּסְנֵי טָבְוָן וְתַפְנוּקִין אַתְּ מִתְפַּנַּק כְּאִלּוּ בְּעֵדֶן
גִּנְּתָא דַיְיָ אֲרֵית שָׁרֵי כָּל עוּתְרָא צֵיוָתָא וִיקָרָא מִתְיְהַב לָךְ כָּל אַבְנִין טָבִין מְסַדְּרָן עַל
לְבוּשָׁךְ סַמְקִין יַרְקִין וְסַבְהֲלוֹם כְּרוּם יַמָּא וּבוּרְלָא וּפַנְתֵּירִין שַׁבְזִיז אוּמְרַגְדִּין וּבַרְקָן
מְשַׁקְּעָן בְּדַהֲבָא כָּל אִלֵּין עֲבִידַת תִּקּוּנָךְ בְּרַם רָאֵם לִבָּךְ בְּכֵן לָא אִסְתַּכַּלְתָּא בְּפִגְרָךְ
דְּאִתְעֲבֵיד חַלִּילִין חַלִּילִין וְנִקְבִּין נִקְבִּין דְּאִנּוּן צוֹרְכָךְ דְּלָא אֶפְשַׁר דְּלָא כְּהוֹן מִיּוֹמָא
דְּאִתְבְּרֵיתָא עִמָּךְ מִתְקְנִין׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et assument sup te lamentationem in *oculis eorum*, & ululabunt sup te: Quis 32
est sicut Tyrus? non est similis ei in medio maris. Cùm exirent mercimonia 33
tua ex nationibus, satiâsti populos multos, multitudine divitiarum tuarum
& substantiæ tuæ ditâsti reges terræ. Nunc contrita *est* quæ *suppeditabat negotiationem 34
populis*, in profundis maris negotiatio tua, & omnes exercitus tui
in medio tui ceciderunt. Universi habitatores insularum obstupuerunt super 35
te, & reges earum contremuerunt tremore, maculatæque sunt facies eorum.
Negotiatores in populis obstupuerunt super te: quasi non fuisses dabo te; & 36
sic eris usque in æternum.

CAP. XXVIII.

ET factum est verbum prophetiæ à facie Domini mecum, dicens: Fili hominis, 1
dic regi Tyri: Hæc dicit Dominus Deus: Pro eo quòd elevatum est 2
cor tuum, & dixisti: Terribilis ego sum, in sede fortium sedi in medio
marium; & tu es homo inutilis, & cogitâsti in corde tuo quòd tu sis terribilis.
Ecce sapientior es tu Daniele: & omne secretum non est occultatum à te. 3
In sapientia tua & in prudentia tua possedisti tibi divitias, & congregâsti 4
aurum & argentum in thesauris tuis. In multitudine sapientiæ tuæ & in negotiatione 5
tua multiplicati sunt exercitus tui, & elevatum est cor tuum ob
copias tuas. Propterea hæc dicit Dominus Deus: Pro eo quòd cogitâsti 6
in corde tuo quòd tu sis terribilis. Ideò ecce ego adducam super 7
te extraneos robustissimos populorum, & evaginabunt gladios suos in
ornamentum sapientiæ tuæ, & dissipabunt splendorem terroris tui. In dissipationem 8
detrahent te, & morieris in morte vulneratorum gladio in medio
marium. Nunquid dicendo dices: Terribilis ego sum coram interficientibus 9
te? cùm tu homo sis inutilis, in manu dissipantium te. Morte impiorum morieris
in manu alienorum, quia ego decrevi in verbo meo, dicit Dominus Deus. 10
Et factum est verbum prophetiæ à facie Domini mecum, dicens: Fili hominis, 11
tolle lamentum super regem Tyri, & dices illi: Hæc dicit Dñs Deus: 12
Tu similis es vasi figurato quod scitè compositum est & absolutum in
pulchritudine sua. Copia bonorum & deliciarum tu diffluis, acsi in voluptate 13
paradisi Domini habitares. Omnes divitiæ & altitudo & gloria data sunt
tibi: omnes lapides pretiosi & digesti in vestimentis tuis: Sardius, topazius
& adamas, chrysolithus, beryllus & jaspis, sapphirus, smaragdus & carbunculus,
inclusi auro, omnes isti opus ornamenti tui; ideò elevatum est cor
tuum. Verùm non considerâsti cadaver tuum, quòd factum sit concavitatibus
& foraminibus quæ sunt tibi necessaria, sine quibus impossibile est ut vivas:
à die quo conditus es, tecum composita sunt.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

32 *ܘܢܬܠܘܢ ܥܠܝܟܝ ܒܢܝܗܘܢ ܐܘܠܝܬܐ ܘܢܐܡܪܘܢ. ܡܢ ܗܘ ܐܝܬ ܗܘܐ ܐܝܟ ܨܘܪ ܕܝܬܒܐ ܗܘܬ
33 ܨܝܕ ܝܡܐ. * ܟܕ ܢܦܩܝܢ ܩܢܝܢܝܟܝ ܡܢ ܝܡܐ. ܐܣܒܥܬܝ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܡܢ ܣܘܓܐܐ
34 ܕܥܘܬܪܟܝ ܘܬܐܓܘܪܘܬܟܝ .· ܐܥܬܪܬܝ ܡܠܟܐ ܕܐܪܥܐ. * ܒܙܒܢܐ ܕܐܬܬܒܪܬܝ ܘܢܦܠܬܝ
35 ܒܥܘܡܩܐ ܕܝܡܐ. ܬܐܓܘܪܘܬܟܝ ܘܟܠܗ ܟܢܫܟܝ ܒܓܘܟܝ ܢܦܠܘ. * ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝ
36 ܓܙܪܬܐ ܬܡܗܘ ܥܠܝܟܝ. ܘܡܠܟܝܗܘܢ ܐܬܕܘܕܘ. ܘܐܬܟܡܪܘ ܐܦܝܗܘܢ. * ܬܓܪܐ ܕܥܡܡܐ
ܫܪܩܘ ܥܠܝܟܝ. ܠܐܒܕܢܐ ܗܘܝܬܝ. ܘܠܐ ܬܗܘܝܢ ܠܥܠܡ. ܫܠܡ ܦܘܪܫܐ ܩܕܡܝܐ ܕܥܠ ܨܘܪ. ܫܘܪܝܐ ܕܥܠ ܡܠܟܐ
1 ܕܨܘܪ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܟܚ * ܬܘܒ ܠܐ ܡܠܬܐ * *ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ
2 ܠܘܬܝ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ .· ܐܡܪ ܠܪܝܫܐ ܕܨܘܪ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܐܬܪܝܡ ܠܒܟ ܘܐܡܪܬ
ܕܐܠܗܐ ܐܢܐ: ܘܡܘܬܒܗ ܕܐܠܗܐ ܝܬܒܬ ܒܠܒܐ ܕܝܡܡܐ.· ܘܒܪܢܫܐ ܐܝܬ ܘܠܐ ܗܘܝܬ ܐܠܗܐ.
3 ܘܣܒܪܬ ܠܒܟ. ܐܝܟ ܠܒܐ ܕܐܠܗܐ. * ܕܠܡܐ ܚܟܝܡ ܐܢܬ ܡܢ ܕܢܝܐܝܠ .· ܐܘ ܟܣܝܬܐ ܚܙܝܬ
4 ܒܚܟܡܬܟ .· * ܘܒܣܘܟܠܟ ܩܢܝܬ ܠܟ ܚܝܠܐ :· ܘܟܢܫܬ ܣܐܡܐ ܘܕܗܒܐ ܒܝܬ ܓܙܝܟ
5 *ܒܣܘܓܐܐ ܕܚܟܡܬܟ ܘܕܬܐܓܘܪܘܬܟ ܐܣܓܝܬ ܥܘܬܪܟ. ܘܐܬܪܝܡ ܠܒܟ ܒܥܘܬܪܟ.* ܡܛܠ ܗܢܐ
6
7 ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܣܒܪܬ ܠܒܟ ܐܝܟ ܠܒܐ ܕܐܠܗܐ .· * ܗܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟ
ܢܘܟܪܝܐ. ܥܫܝܢܐ ܕܥܡܡܐ. ܘܢܫܡܛܘܢ ܣܝܦܝܗܘܢ ܥܠ ܫܘܦܪܐ ܕܚܟܡܬܟ. ܘܢܛܢܦܘܢ
8 ܫܘܒܚܟ.* ܘܢܚܬܘܢܟ ܠܚܒܠܐ. ܘܬܡܘܬ ܡܘܬܐ ܕܩܛܝܠܐ ܒܠܒܐ ܕܝܡܡܐ. *ܕܠܡܐ ܐܡܪ ܐܢܬ
9 ܩܕܡ ܩܛܘܠܝܟ. ܕܐܠܗܐ ܐܢܐ. ܡܛܠ ܕܒܪܢܫܐ ܐܝܬ ܒܐܝܕܝܐ ܕܩܛܘܠܝܟ. ܘܠܐ ܗܘܝܬ ܐܠܗܐ.·
10 *ܒܐܝܕܝ ܕܥܘܪܠܐ ܢܘܟܪܝܐ ܬܡܘܬ. ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܡܠܠܬ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ.*ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ
11
12 ܠܘܬܝ ܟܕ ܐܡܪ. *ܒܪܢܫܐ .· ܣܒ ܐܘܠܝܬܐ ܥܠ ܡܠܟܐ ܕܨܘܪ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
13 ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܐܢܬ ܚܬܡܐ ܕܕܡܘܬܐ ܘܡܠܐ ܚܟܡܬܐ. ܘܟܠܝܠܐ ܕܫܘܒܚܐ.* ܒܥܕܢ ܦܪܕܝܣܗ ܕܐܠܗܐ
ܗܘܝܬ. ܘܒܟܠܗܝܢ ܟܐܦܐ ܛܒܬܐ ܐܬܐܣܪܬ. ܣܪܕܘܢ. ܘܐܡܬܘܣܛܘܣ. ܘܙܡܪܓܕܐ. ܘܒܪܘܠܐ. ܘܣܦܝܠܐ. ܘܝܫܦܗ.
ܘܒܠܘܪܐ. ܘܡܪܓܢܝܬܐ. ܘܕܗܒܐ ܡܠܝܬ ܓܙܝܟ. ܘܟܐܦܐ ܛܒܬܐ ܒܝܬ ܣܝܡܝܟ. ܡܢ ܝܘܡܐ ܕܐܬܒܪܝܬ.

Et proferent de te filii eorum lamentationes, 32
ac dicent; Quænã par erat Tyro quæ habitabat in mari? Quando procedebant opes tuæ 33
è mari, ſatiabas gentes multas, & ex abundantia divitiarũ tuarũ & mercium tuarũ ditabas reges terræ. Quo tempore confracta es, & 34
cecidiſti in profunda maris; merces tuæ totúſque cœtꝰ tuꝰ intra te ceciderunt: Omnes ha- 35
bitatores inſularum obſtupuerunt de te, reges eorũ attoniti fuerũt, & lachrymatæ ſunt facies
eorũ: Mercatores populorũ ſibilaverunt de 36
te: in excidiũ fuiſti, neque exiſtes in æternum.

Abſoluta eſt ſectio prima contra Tyrum.

CAP. XXVIII.

Sequitur contra regem.

ET fuit ad me ſermo Dñi, dicendo; Fili ho- 1
minis, dic principi Tyri; Sic ait Dñs domi- 2
norũ; Quia elatũ eſt cor tuum, & dixiſti, Deus ſum, & ſedẽ Dei occupo in corde mariũ: quũ homo ſis, non autem Deus, tamen exiſtimâſti
cor tuum par cordi Dei: Num ſapientior es 3
Daniele, aut occulta vidiſti ſapientiâ tuâ, Et 4
prudentiâ tuâ comparâſti tibi robur, & con-
geſſiſti argentũ & aurum in æraria tua? Mul- 5
titudine ſapientiæ & commercii tui multiplicâſti divitias tuas, ut ſuperbiat cor tuũ propter
divitias tuas? Iccircò ſic ait Dñs dominorum; 6
Quoniam cenſuiſti cor tuum par cordi Dei,
Ecce adducturus ſum contra te extraneos for- 7
tiſſimos gentiũ, qui exertis gladiis ſuis contra pulchritudinem ſapientiæ tuæ, contaminabunt
gloriã tuam, Demittent te in corruptionẽ, & 8
morieris morte occiſorũ in corde mariũ. Num 9
dicturꝰ es corã interfectoribꝰ tuis, Deus ſum? Quia homo eris in manu interfectorũ tuorũ,
non autẽ Deus; Per manum incircunciſorũ 10
extraneorum morieris; nam ego locutus ſum,
ait Dñs dominorũ. Et fuit ad me ſermo Dñi, 11
dicendo; Fili hominis, profer lamentationẽ 12
de rege Tyri, & dic illi, Sic ait Dñs dominorum; Tu ſigillũ es exemplaris, plenꝰ ſapientiâ;
& corona gloriæ In Eden paradiſo Dei eras; 13
omnibus lapillis optimis te præcingebas; ſardio, amethyſto, ſmaragdo, beryllo, ſapphiro, jaſpide, chryſtallo, unionibus, & auro impleveras theſauros tuos, & lapillis optimis conditoria tua, ab eo die quo creatus es:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

32 *وياخذ بنوهم عليك نوحا· اذ سقط عليك العويل. MS.Ox. [ويقولون من كان مثل صور الحالة في داخل البحر] *ماذا
33 وجدت اجرا من البحر* اوعبت الامم من يسارك· ومن مخلطك اغنيت جميع ملوك الارض* والان انكسرت في البحر وفي
34 عمق الماء مخلطك· وكل مجمعك في وسطك سقط* جميع قذافيك وجميع سكان الجزاير تعربسوا
35 عليك* وملوكهم حاروا حين· ويبكي وجوههم* التجار من الامم صفروا عليك· وصرت هلكة· ولست
36 تصيري بعد الي الابد* *الفصل الثامن والعشرون* *النبوه في ملك صور*
1 *وكان قول الرب الي قايلا *وانت يا ابن الانسان قل لرييس صور· هكذا يقول الرب الرب· من
2 اجل ان قلبك ارتفع *وقلت انا اله· انا في بيت الله سكنت في قلب البحر *وانت انسان انت
3 ولست الها· واعطيت قلبك كقلب اله *هل انت احكم من دانيال· او لم تؤدبك حكماء
4 بفطنتهم *هل بفطنتك وبفهمك صنعت لذاتك جيشا· وصنعت ذهبا وفضة في كنوزك *بفطنتك
5 الكثيرة وبتجارتك صنعت قوتك· ارتفع قلبك بقوتك *لاجل هذا هكذا يقول الرب الرب
6 الاله· من اجل انك اعطيت قلبك كقلب اله *عوض هذا ها انا اجلب عليك الغرباء
7 المفسدين من الامم *ويسلون سيوفهم عليك وعلي حسن فطنتك· وينزلون حسنك للهلاك·
8 *ويهبطونك وتموت موت الجرحا في قلب البحر *هل تقول قايلا· انا اله انا· امام قاتليك·
9 فانت انسان ولست اله *في كثرة الغلف تموت *في يدي الغرباء· لاني انا تكلمت يقول
10 ادوناي الرب *وكان قول الرب الي قايلا *يا ابن الانسان اتخذ نوحا علي رييس صور وقل له·
11 هكذا يقول الرب الرب· انت طابع الشبه· واكليل حسن المجد *في نعيم فردوس الله كنت·
12 لبست كل حجر صالح *لازوردا وزبرجدا· وزمردا وبهرمانا· وفيروزجا ويشبا· وفضة وذهبا·
13 وجزعا وبجادي· والحجر الذهبي· والبلور وسبجا· ومن الذهب ملات كنوزك واهرايك بك·

Et component filii eorum de te lamen- 32
tum, cùm ceciderit ſuper te gemitus.
[MS.Ox. *Et dicent, Quænam erat par Tyro quæ habitat in medio mari.*] *Quid compa-* 33
râſti mercedis à mari? implêſti gentes opibus tuis, & è commiſto tuo ditâſti omnes
reges terræ: Jã verò confracta es in mari, 34
& in profundo aquarum jacet commiſtum tuum, totuſque cœtus tuus in medio tui
cecidit: Omnes remiges tui, omneſque ha- 35
bitatores inſularum humiliati ſunt propter te: reges eorũ attoniti ſtupuerunt, &
lachrymata eſt facies eorum: Negotiatores 36
gentium ſibilârunt te, & abiiſti in interitum, nec eris ampliùs in æternum.

CAP. XXVIII.

Prophetia contra regem Sur.

F*uit etiam ſermo Domini ad me, dicens;* 1
Et tu O fili hominis, dic principi Sur; Ita 2
dicit Dominus Dominus; Quia exaltatum eſt cor tuum, & dixiſti, Ego ſum Deus, ego in domo Dei habitavi in corde maris (quum tu homo ſis, & non Deus)
& æquâſti cor tuum cordi Dei: Num 3
ſapientior es Daniele, an verò non erudierunt te ſapientes prudentiâ ſuâ? Num 4
prudentiâ & intellectu tuo comparâſti tibi exercitum, & aurum argentumq; condidiſti in theſauris tuis? Prudentiâ tuâ 5
multâ, & negotiatione tuâ comparâſti potentiam tuam, exaltatum eſt cor tuum
propter potentiam tuam? Propterea ſic ait 6
Dominus, Dominus Deus; Quia tu æquâſti
cor tuũ cordi Dei, Hanc ob rẽ ecce ego ad- 7
ducam contra te extraneos vaſtatores de gentibus, qui evaginabunt gladios ſuos in te & in præſtantiã prudentiæ tuæ, & deducent pulchritudinem tuã ad interitum;
Deturbabunt te, & morieris morte vul- 8
neratorũ in corde maris. Num loquens di- 9
ces, Ego Deus ſum, corã interficientibus te,
quũ tu homo ſis, & non Deus? Inter mul- 10
titudinem incircunciſorum morieris, in manibus exterorum: quoniam ego locutus
ſum, dicit Adonai Dominus. Tum fuit ſer- 11
mo Domini ad me, dicens; O fili hominis, 12
compone lamentum de principe Sur, & dic ei; Sic ait Dominus Dominus; Tu ſignaculum ſimilitudinis & corona pulchritudinis
gloriæ, In delitiis paradiſi Dei eras, indue- 13
bas te omnigenis lapillis optimis, cyano, topazio, ſmaragdo, ſardonyche, amethyſto, jaſpide, argento, & auro, ligurio, granis verſicoloribus, chryſolitho, cryſtallo, & achate; et auro implevíſti theſauros tuos et hortea tua in te.

יחזקאל ׃ כט

ſanctitatis monte In .te *dedi* & : protegens unctus Cherub Tu
14 אַתְּ־כְּרוּב מִמְשַׁח הַסּוֹכֵךְ וּנְתַתִּיךָ בְּהַר קֹדֶשׁ
tu Perfectus .ambulâſti *ignis* lapidum medio in , fuiſti Dei
15 אֱלֹהִים הָיִיתָ בְּתוֹךְ אַבְנֵי־אֵשׁ הִתְהַלָּכְתָּ ׃ תָּמִים אַתָּה
.te in iniquitas eſt inventa donec : *te creari* die à , tuis viis in
בִּדְרָכֶיךָ מִיּוֹם הִבָּרְאָךְ עַד־נִמְצָא עַוְלָתָה בָּךְ ׃
,iniquitate *tui medium* repleverunt tuæ negotiationis multitudine In
16 בְּרֹב רְכֻלָּתְךָ מָלוּ תוֹכְךָ חָמָס
Cherub te perdam & , Dei monte de te prophanabo & : peccâſti &
וַתֶּחֱטָא וָאֲחַלֶּלְךָ מֵהַר אֱלֹהִים וָאַבֶּדְךָ כְּרוּב
: *tua pulchritudine in* tuũ cor eſt Elevatum .*ignis* lapidum medio de,protector
17 הַסֹּכֵךְ מִתּוֹךְ אַבְנֵי־אֵשׁ ׃ גָּבַהּ לִבְּךָ בְּיָפְיֶךָ
terram *ſuper* : tuum ſplendorem *ſuper* tuam ſapientiam perdidiſti
שִׁחַתָּ חָכְמָתְךָ עַל־יִפְעָתֶךָ עַל־אֶרֶץ
.te in *aſpiciendum ad* *te dabo* *regum* *facies ad* te projiciam
הִשְׁלַכְתִּיךָ לִפְנֵי מְלָכִים נְתַתִּיךָ לְרַאֲוָה בָךְ ׃
polluiſti tuæ negotiationis iniquitate in ,*tuarũ iniquitatum* multitudine Præ
18 מֵרֹב עֲוֺנֶיךָ בְּעֶוֶל רְכֻלָּתְךָ חִלַּלְתָּ
te *dabo* & ; te *comedet* *ipſe* ,tui medio de ignem producam &:*tua ſanctuaria*
מִקְדָּשֶׁיךָ וָאוֹצִא־אֵשׁ מִתּוֹכְךָ הִיא אֲכָלַתְךָ וָאֶתֶּנְךָ
te *ſcientes* Omnes .te videntium omnium oculis in terram ſuper cinerem in
19 לְאֵפֶר עַל־הָאָרֶץ לְעֵינֵי כָּל־רֹאֶיךָ ׃ כָּל־יוֹדְעֶיךָ
.ſeculum in uſque *tu* non & ,fuiſti *terrores* :te ſuper obſtupeſcẽt populis in
בָּעַמִּים שָׁמְמוּ עָלֶיךָ בַּלָּהוֹת הָיִיתָ וְאֵינְךָ עַד־עוֹלָם ׃
pone hominis Fili : dicendo me ad · Domini verbum fuit Et
20 21 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר ׃ בֶּן־אָדָם שִׂים
dixit Sic , *dices* Et .eam ſuper propheta & : Sidon *ad tuas facies*
22 פָּנֶיךָ אֶל־צִידוֹן וְהִנָּבֵא עָלֶיהָ ׃ וְאָמַרְתָּ כֹּה אָמַר
:tui medio in me glorificabo & ,Sidon te *ſuper* ego Ecce :Deus Dominus
אֲדֹנָי יֱהוִה הִנְנִי עָלַיִךְ צִידוֹן וְנִכְבַּדְתִּי בְּתוֹכֵךְ
, judicia ea in *me faciendo in* Dominus *ego* quòd ſcient &
וְיָדְעוּ כִּי־אֲנִי יְהוָה בַּעֲשׂוֹתִי בָהּ שְׁפָטִים
ſanguinem &,peſtilentiã eam in mittam Et .ea in me ſanctificavero &
23 וְנִקְדַּשְׁתִּי בָהּ ׃ וְשִׁלַּחְתִּי־בָהּ דֶּבֶר וָדָם
eam ſuper gladio in ej⁹ medio in *vulneratus* *cadet* & , ej⁹ plateis in
בְּחוּצוֹתֶיהָ וְנִפְלַל חָלָל בְּתוֹכָהּ בְּחֶרֶב עָלֶיהָ
ultrà erit non Et .Dominus *ego* quòd ſcient & : undique
24 מִסָּבִיב וְיָדְעוּ כִּי־אֲנִי יְהוָה ׃ וְלֹא־יִהְיֶה עוֹד
omnibus ex inferens dolorẽ ſpina & , pungens ſpina Iſrael domui
לְבֵית יִשְׂרָאֵל סִלּוֹן מַמְאִיר וְקוֹץ מַכְאִב מִכֹּל
.Deus Domin⁹ *ego* quòd ſcient & : eos *ſpernentium* eorũ circuitibus
סְבִיבֹתָם הַשָּׁאטִים אוֹתָם וְיָדְעוּ כִּי אֲנִי אֲדֹנָי יְהוִה ׃
,populis de Iſrael domũ *me cõgregando In* : Deus Dominus dixit Sic
25 כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה בְּקַבְּצִי אֶת־בֵּית יִשְׂרָאֵל מִן־הָעַמִּים
: gentium oculis in eis in me ſanctificabo & , *eos in* ſunt diſperſi quos
אֲשֶׁר נָפֹצוּ בָם וְנִקְדַּשְׁתִּי בָם לְעֵינֵי הַגּוֹיִם
.Jahacob meo ſervo dedi quam ,ſuã terram ſuper habitabunt &
וְיָשְׁבוּ עַל־אַדְמָתָם אֲשֶׁר נָתַתִּי לְעַבְדִּי לְיַעֲקֹב ׃
, vineas plantabunt &,domos ædificabũt &,*fiducia in* eã ſuper habitabũt Et
26 וְיָשְׁבוּ עָלֶיהָ לָבֶטַח וּבָנוּ בָתִּים וְנָטְעוּ כְרָמִים
eos *ſpernentibus* omnib⁹ in judicia *me faciendo in* ,*fiducia in* habitabũt &
וְיָשְׁבוּ לָבֶטַח בַּעֲשׂוֹתִי שְׁפָטִים בְּכֹל הַשָּׁאטִים אֹתָם
.eorum Deus Dominus *ego* quòd ſcient & : eorum circuitibus à
מִסְּבִיבוֹתָם וְיָדְעוּ כִּי אֲנִי יְהוָה אֱלֹהֵיהֶם ׃

CAP. XXIX. כט

verbum fuit : menſis duodecimo in , decimo in , decimo anno In
1 בַּשָּׁנָה הָעֲשִׂרִית בָּעֲשִׂרִי בִּשְׁנֵים עָשָׂר לַחֹדֶשׁ הָיָה דְבַר־
: dicendo ,me ad Domini
יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר ׃

Verſio VULG. LAT.

14 Tu Cherub extentus, & protegens, & poſui te in monte ſancto Dei, in medio lapidum ignitorum ambulâſti. 15 Perfectus in viis tuis à die conditionis tuæ, donec inventa eſt iniquitas in te. 16 In multitudine negotiationis tuæ repleta ſunt interiora tua iniquitate, & peccâſti: & ejeci te de monte Dei, & perdidi te, O Cherub protegens, de medio lapidum ignitorum. 17 Et elevatum eſt cor tuum in decore tuo: perdidiſti ſapientiam tuam in decore tuo, in terram projeci te: ante faciem regum dedi te ut cernerent te. 18 In multitudine iniquitatum tuarum, & iniquitate negotiationis tuæ, polluiſti ſanctificationem tuam: producam ergò ignem de medio tui, qui comedat te, & dabo te in cinerem ſuper terram in conſpectu omnium videntium te. 19 Omnes, qui viderint te in Gentibus, obſtupeſcent ſuper te: nihil factus es, & non eris in perpetuum. 20 Et factus eſt ſermo Domini ad me, dicens; 21 Fili hominis, pone faciem tuam contra Sidonem: & prophetabis de ea. 22 Et dices; Hæc dicit Dominus Deus; Ecce ego ad te, Sidon, & glorificabor in medio tuî: & ſcient quia ego Dominus, cùm fecero in ea judicia, & ſanctificatus fuero in ea. 23 Et immittam ei peſtilentiam, & ſanguinem in plateis ejus: & corruent interfecti in medio ejus gladio per circuitum: & ſcient quia ego Dominus. 24 Et non erit ultrà domui Iſrael offendiculum amaritudinis, & ſpina dolorem inferens undique per circuitum eorũ, qui adverſantur eis: & ſcient quia ego Dominus Deus. 25 Hæc dicit Dominus Deus; Quando congregavero domũ Iſrael de populis, in quibus diſperſi ſunt, ſanctificabor in eis coram Gentibus: & habitabunt in terra ſua, quam dedi ſervo meo Jacob. 26 Et habitabunt in ea ſecuri: & ædificabunt domos, & plantabunt vineas, & habitabunt confidenter, cùm fecero judicia in omnibus qui adverſantur eis per circuitum: & ſcient quia ego Dominus Deus eorum.

CAP. XXIX.

1 IN anno decimo, decimo menſe, undecimâ die menſis, factum eſt verbum Domini ad me, dicens;

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

14 Σὺ μετὰ τοῦ χερουβ, ἔθηκά σε ἐν ὄρει ἁγίῳ θεοῦ, (ν)ἐγενήθης ἐν μέσῳ λίθων πυρίνων. 15 Ἐγενήθης σὺ ἄμωμος ἐν ταῖς ἡμέραις σου, ἀφ᾽ ἧς ἡμέρας σὺ ἐκτίσθης ἕως (ξ) εὑρέθη τὰ ἀδικήματα ἐν σοί. 16 Ἀπὸ πλήθους τῆς ἐμπορείας σου (ο)ἔπλησας τὰ ταμιεῖά σου ἀνομίας, καὶ ἥμαρτες, καὶ ἐτραυματίσθης ἀπὸ ὄρους τοῦ θεοῦ· καὶ ἤγαγέ σε τὸ χερουβ (π) ἐκ μέσου λίθων πυρίνων. 17 Ὑψώθη ἡ καρδία σου ἐπὶ τῷ κάλλει σου, διεφθάρη ἡ ἐπιστήμη σου μετὰ τοῦ κάλλους σου. διὰ (ρ) πλῆθος ἁμαρτιῶν σου ἐπὶ τὴν γῆν (σ) ἔῤῥιψά σε, ἐναντίον βασιλέων ἔδωκά σε παραδειγματισθῆναι. 18 Διὰ τὸ πλῆθος τῶν ἁμαρτιῶν σου (τ) καὶ τῶν ἀδικιῶν τῆς ἐμπορείας σου, (˝)ἐβεβήλωσα τὰ ἱερά σου, καὶ ἐξάξω πῦρ(υ) ἐκ μέσου σου, τοῦτο καταφάγεταί σε· καὶ δώσω σε (φ) σποδὸν ἐπὶ τῆς γῆς σου ἐναντίον πάντων τῶν ὁρώντων σε. 19 Καὶ πάντες οἱ ἐπιστάμενοί σε ἐν τοῖς ἔθνεσι (χ) στενάξουσιν ἐπὶ σέ. ἀπώλεια ἐγένου, καὶ οὐχ ὑπάρξεις ἔτι εἰς τὸν αἰῶνα. 20 (˝)Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, 21 Υἱὲ ἀνθρώπου, στήρισον τὸ πρόσωπόν σου ἐπὶ Σιδῶνα, καὶ προφήτευσον ἐπ᾽ αὐτήν, 22 Καὶ εἰπὸν, Τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπὶ σὲ Σιδὼν, καὶ ἐνδοξασθήσομαι ἐν σοὶ, καὶ γνώσῃ ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος, ἐν τῷ ποιῆσαί με ἐν σοὶ κρίματα, καὶ ἁγιασθήσομαι ἐν(ψ)σοί. 23 Αἷμα καὶ θάνατος ἐν ταῖς πλατείαις (ω)σου, καὶ πεσοῦνται τετραυματισμένοι (α)μαχαίραις ἐν σοὶ περικύκλῳ σου, καὶ (β) γνώσονται διότι ἐγώ εἰμι κύριος. 24 Καὶ οὐκ (γ)ἔσονται οὐκέτι ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ Ἰσραὴλ σκόλοψ πικρίας καὶ ἄκανθα ὀδύνης ἀπὸ τῶν (δ)περικύκλῳ αὐτῶν, τῶν ἀτιμασάντων αὐτοὺς, καὶ γνώσονται ὅτι ἐγώ εἰμι (ε)κύριος. 25 Τάδε λέγει(ζ)κύριος κύριος, Καὶ συνάξω τὸν Ἰσραὴλ ἐκ τῶν (η)ἐθνῶν οὗ διεσκορπίσθησαν ἐκεῖ, καὶ ἁγιασθήσομαι ἐν αὐτοῖς(θ), καὶ ἐνώπιον τῶν (ι) λαῶν καὶ τῶν ἐθνῶν· καὶ κατοικήσουσιν ἐπὶ τῆς γῆς αὐτῶν, (κ)ἣν δέδωκα τῷ δούλῳ μου Ἰακὼβ, 26 Καὶ κατοικήσουσιν ἐπ᾽ αὐτῆς ἐν ἐλπίδι, καὶ οἰκοδομήσουσιν οἰκίας, καὶ (λ)φυτεύσουσιν ἀμπελῶνας, καὶ κατοικήσουσιν ἐν ἐλπίδι, ὅταν ποιήσω κρίμα ἐν πᾶσι τοῖς ἀτιμάσασιν αὐτοὺς ἐν τοῖς κύκλῳ αὐτῶν· καὶ γνώσονται ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος ὁ θεὸς αὐτῶν καὶ ὁ θεὸς τῶν πατέρων αὐτῶν.

MS.A. (ν)ἐμμέσῳ λίθων πυρίνων. ἐγενήθης ἄμωμος σὺ ἐν ταῖς (ξ)ἡμέρας εὑρέθη τὰ ἀδικήματά σου ἐν σοί. (ο) ἐπλήθυνας τὰ ταμιεῖά (π) ἐμμέσῳ (ρ)τὸ πλῆθος τῶν (σ) ἔριψά (τ)καὶ ἀδικιῶν(˝) ἐβεβήλωσας (υ)ἐκ μέσῳ (φ) εἰς σποδὸν (χ) στυγνάσουσιν (˝) ΕΠῚ ΣΙΔΩ͂ΝΑ. Καὶ (ψ) σοί. Καὶ ἐξαποστελῶ ἐπὶ σεαυτὴν θάνατον, καὶ αἷμα καὶ θάνατος (ω)σου ἔσται, (α)ἐν μαχαίραις (β)γνώσῃ ὅτι(γ)ἔτι ἔσονται τῷ οἴκῳ Ἰσραὴλ σκόλοψ (δ)κύκλῳ (ε) κύριος ὁ θεὸς αὐτῶν. (ζ)κύριος κύριος ὁ θεὸς, (η) χωρῶν (θ)ἐνώπιον (ι) λαῶν τῶν (κ)ἧς ἔδωκα (λ)φυτεύσωσιν

ΚΕΦ. κθʹ.

1 ἘΝ τῷ ἔτει τῷ (α) δωδεκάτῳ, ἐν τῷ (˙) δεκάτῳ μηνὶ, μιᾷ τοῦ μηνὸς, ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέγων,

MS. A. (α) δεκάτῳ (˙) ἐνδεκάτῳ

14 Tu (b) cum Cherub, poſui te in monte ſancto Dei; factus es in medio lapidũ ignitorũ. 15 Fuiſti tu (i) immaculatus in diebus tuis à die, quâ creatus es, donec inventæ ſunt iniquitates in te. 16 A multitudine negotiationis tuæ replêſti cellaria tua iniquitate, & peccâſti, & vulneratus es à monte Dei; & adduxit te (k) Cherub de medio lapidum ignitorũ. 17 Elatum eſt cor tuum in decore tuo: corrupta eſt diſciplina tua cũ decore tuo. Propter multitudinem peccatorũ tuorum in terrã projeci te: in conſpectu regum dedi te ut (l) dehoneſtareris. 18 Propter multitudinẽ peccatorum tuorum, & iniquitatum negotiationis tuæ (m) contaminavi Sancta tua. Et educã ignẽ de medio tuî: hic devorabit te. Et dabo te (n) cinerem ſuper terram tuam in conſpectu omnium videntium te. 19 Et omnes qui noverunt te in gentibus, (o) gement ſuper te. Perditio facta eſt & non eris ultrà in ſeculũ. 20 Et factus eſt ſermo Domini ad me, dicens; 21 Fili hominis, obfirma faciẽ tuã ſuper Sidonẽ, & propheta ſuper eã, 22 Et dic; Hæc dicit Dñs; Ecce ego ad te, Sidon, & glorificabor in te: & ſcies, quia ego ſum Dominus, cũ fecero in te judicia, & ſanctificabor in te. 23 (p) Sanguis & mors in plateis tuis: & cadent vulnerati gladiis in te per circuitũ tuũ: et ſcient, quia ego ſum Dominus. 24 Et non erunt ultrà in domo Iſrael offendiculum amaritudinis, et ſpina doloris, ab iis qui in circuitu eorum, qui contumeliã fecerint eis: & ſcient quia ego ſum Dominus. 25 Hæc dicit Dominus Domin⁹; Et congregabo Iſrael de gentibus ubi diſperſi ſunt illîc: & ſanctificabor in iis, (q) & corã populis, & gentibus: & habitabunt in terra ſua, quã dedi ſervo meo Jacob: 26 Et habitabunt in ea in ſpe: & ædificabunt domos, & plantabunt vineas. Et habitabunt in ſpe, cùm fecero judicium in omnibus, qui fecerint eis contumeliam, qui in circuitu eorum. Et ſcient, quia ego ſum Dominus Deus eorum, & Deus patrum eorum.

CAP. XXIX.

1 IN anno (a) duodecimo, in decimo menſe, unâ menſis, factũ eſt verbum Domini ad me, dicens;

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 אַתְּ מַלָךְ מְרַבָּא לְמַלְכוּ וִיהַבִית לָךְ רְבוּתָא וְאַתְּ עַל טוּר קוּדְשָׁא דַיְיָ בְּסַרְתָּא וּבְעַמָּא
15 קַדִּישָׁא סְבַרְתָּא לְמִשְׁלַט ׃ שְׁלִים אַתְּ בְּאָרְחָךְ מִיּוֹמָא דְאִתְבְּרֵיתָא עַד דְאִשְׁתְּכַח שְׁקַר
16 בָּיךְ ׃ בִּסְגִיאוּת סְחוֹרְתָךְ אִתְמְלִיאוּ אוֹצְרָךְ חֲטוֹף וְחַבְתָּא וַאֲפַסְנָךְ עַל דִבְסַרְתָּא עַל טוּר
17 קוּדְשָׁא דַיְיָ וְאַבְדְנָךְ מַלְכָּא דְרַבִּיתָנָא עַל דִי סְבַרְתָּא לְמִשְׁלַט בְּעַמָּא קַדִּישָׁא ׃ רָאֵם
לִבָּךְ בְּתוּקְפָךְ אִתְחַבַּלְתָּ בְּחוּכְמְתָךְ עַל זִיו אֵימְתָךְ עַל אַרְעָא רְטַשְׁתָּךְ אַזְהָרָא לְמַלְכַיָא
18 יְהַבְתָּךְ לְאִסְתַּכָּלָא בָךְ ׃ מִסְּגֵי חוֹבָךְ בְּשִׁקַר סְחוֹרְתָךְ אַפֵּסְתָּא מַקְדְשָׁךְ וְאַיְתֵי עַמְמַיָא
דְתַקִיפִין כְּאֶשָּׁתָא מֵחוֹבֵי זְדוֹנָךְ אִנּוּן יְשֵׁיצוּנָךְ וְאֶתְּנִנָּךְ כִּקְטַם עַל אַרְעָא לְעֵינֵי כָּל חֲזָךְ ׃
19 כָּל דְּיָדְעָךְ בְּעַמְמַיָא צְדִיאוּ עֲלָךְ כִּדְלָא הֲוֵית אֶתְּנִנָּךְ וְכֵן תְּהֵי עַד עָלְמָא ׃ וַהֲוָה פִתְגָם נְבוּאָה
20 מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי לְמֵימַר ׃ בַּר אָדָם קַבֵּיל נְבוּאָה עַל צִידוֹן וְאִתְנַבֵּי עֲלַהּ ׃ וְתֵימַר כִּדְנָן
21 22 אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים הָא אֲנָא שָׁלַח רוּגְזִי עֲלָךְ צִידוֹן וְאִתְיַקַּר בְּגַוִיךְ וְיֵדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ כַּד
23 אַעֲבֵיר בִּיךְ פּוּרְעֲנוּת דִּינִין וְאִתְקַדֵּשׁ בַּהּ ׃ וַאֲשַׁלַּח בַּהּ מוֹתָא וְקַטְלָא בְּשׁוּקָהָא כַּד
יִתְרְמוֹן קְטִילִין בְּגַוַּהּ בְּאַיְתָיוּתִי עֲלַהּ דְקָטְלִין בְּחַרְבָּא מִסְחוֹר סְחוֹר וְיֵדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ ׃
24 וְלָא יְהֵי עוֹד לְבֵית יִשְׂרָאֵל מְלַךְ מַבְאִישׁ וְשִׁלְטוֹן מְעִיק מִכֹּל סַחְרָנֵיהוֹן דְבָזְזִין יַתְהוֹן
25 וְיֵדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ אֱלֹהִים ׃ כִּדְנָן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים כַּד אַכְנֵישׁ יַת בֵּית יִשְׂרָאֵל מִבֵּינֵי
עַמְמַיָא דְאִתְבַּדַּרוּ לְתַמָּן וְאִתְקַדַּשׁ בְּהוֹן לְעֵינֵי עַמְמַיָא וִיתוּבוּן עַל אַרְעֲהוֹן דִיהַבִית
26 לְעַבְדִי לְיַעֲקֹב ׃ וִיתוּבוּן עֲלַהּ לְרוֹחְצָן וְיִבְנוּן בָּתִּין וְיִצְבוּן כַּרְמִין וְיֵתְבוּן לְרוֹחְצָן כַּד
אַעֲבֵיד פּוּרְעֲנוּת דִּינִין מִכֹּל דְבָזְזִין יַתְהוֹן מִסַּחְרָנֵיהוֹן וְיֵדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ אֱלָהֲהוֹן ׃

כט

1 בְּשַׁתָּא עֲשִׂירֵיתָא בְּעַשִׂירָאָה בִּתְרֵי עֲסַר לְיַרְחָא הֲוָה פִתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי
לְמֵימַר ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

14 Tu es rex unctus in regnum, & *dedi* tibi *magnitudinem*. Et tu montem ſanctum Domini ſpreviſti, & in populum ſanctum cogitâſti dominari. 15 Perfectus eras in via tua à die quo creatus es, donec inventa eſt iniquitas in te. 16 Ob multitudinem negotiationis tuæ impleti ſunt theſauri tui rapina: hinc deliquiſti; et violabo te, pro eo quòd ſpreviſti montẽ ſanctum Domini, & perdam te rex qui unctus es; pro eo quòd putâſti dominari in populum ſanctum. 17 Elevatum eſt cor tuum in fortitudine tua, & corrupt⁹ es in ſapientia tua, ob ſplendorem terroris tui: in terram projeci te, admonitionem regibus dedi te, ut conſiderent te. 18 Propter multitudinem peccatorum tuorum, ob perfidiam negotiationis tuæ profanâſti ſanctuarium tuum; & adducam populos qui fortes ſunt ſicut ignis, propter peccata ſuperbiæ tuæ ipſi conſument te. Et dabo te ſicut cinerem ſuper terram in conſpectu omnium videntium te. 19 Omnes qui noverunt te in populis obſtupuerunt ſuper te: quaſi non fueris dabo te, & ſic eris uſque in æternum. 20 Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini mecum, dicens: 21 Fili hominis, ſuſcipe prophetiam ſuper Sidon, & prophetabis in eam. 22 Et dices: Hæc dicit Dominus Deus: Ecce ego mitto furorem meum ſuper te Sidon, & glorificabor in medio tui, & ſcient quia ego Dominus, cùm fecero in *te* ultionem judiciorum, & ſanctificatus fuero in ea. 23 Et mittam in eam peſtem & occiſionem in vicos ejus, cùm projicientur interfecti in medio ejus, cùm induxero ſuper eam occidentes gladio per circuitum, & ſcient quia ego Dominus. 24 Et non erit ultrà domui Iſrael rex malefaciens, & princeps tribulans per omnem circuitum eorum, qui diripiebant eos: & ſcient quia ego Dominus Deus. 25 Hæc dicit Dominus Deus: Quando congregavero domũ Iſrael de medio populorũ per quos diſperſi ſunt, ſanctificabor in eis in oculis populorum, & habitabunt in terra ſua quam dedi ſervo meo Jacob. 26 Et habitabunt in ea confidenter, & ædificabunt domos & plantabunt vineas, & habitabunt ſecurè, cùm fecero ultionem judiciorum de omnibus qui deprædantur eos per circuitum; & ſcient quia ego Dominus Deus eorum.

CAP. XXIX.

1 ANno decimo, menſe decimo, duodecima die menſis, factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini mecum, dicens:

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

14 * ܘܗܘܝܬ ܥܡ ܟܪܘܒܐ ܕܡܫܝܚ ܘܡܛܠܠ. ܘܝܗܒܬܟ ܒܛܘܪܐ ܕܩܘܕܫܗ ܕܐܠܗܐ. ܘܗܘܝܬ
15 ܒܝܢܬ ܟܐܦܐ ܕܢܘܪܐ. * ܘܗܠܟܬ ܕܠܐ ܡܘܡ ܒܐܘܪܚܬܟ. ܡܢ ܝܘܡܐ ܕܐܬܒܪܝܬ ܥܕܡܐ ܕܐܫܬܟܚ
16 ܒܟ ܥܘܠܐ. * ܡܛܠ ܣܘܓܐܐ ܕܬܐܓܘܪܬܟ. ܡܠܝܬ ܓܘܝܟ ܥܘܠܐ. ܘܚܛܝܬ. ܘܐܘܒܕܟ ܡܢ ܛܘܪܗ
17 ܕܐܠܗܐ. ܘܐܘܒܕܟ ܟܪܘܒܐ ܕܡܛܠܠ ܡܢ ܒܝܬ ܟܐܦܐ ܕܢܘܪܐ. * ܐܬܬܪܝܡ ܠܒܟ ܒܫܘܦܪܟ.
ܘܐܬܚܒܠܬ ܚܟܡܬܟ ܥܡ ܫܘܦܪܟ. ܘܠܐܪܥܐ ܫܕܝܬܟ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. ܘܝܗܒܬܟ ܠܗܘܢ
18 ܚܙܘܐ. * ܡܛܠ ܣܘܓܐܐ ܕܥܘܠܟ. ܘܒܥܘܠܐ ܕܬܐܓܘܪܬܟ. ܛܢܦܬ ܡܩܕܫܝܟ. ܘܐܦܩ ܢܘܪܐ ܡܢ ܓܘܟ.
19 ܘܗܝ ܬܐܟܠܟ. ܘܐܬܠܟ ܩܛܡܐ ܒܐܪܥܐ. ܠܥܝܢ ܟܠ ܕܚܙܝܢ ܠܟ. * ܘܟܠ ܕܝܕܥܝܢ ܠܟ ܒܥܡܡܐ
ܢܬܕܡܪܘܢ ܥܠܝܟ. ܠܚܒܠܐ ܗܘܝܬ. ܘܠܐ ܬܗܘܐ ܠܥܠܡ. * ܥܠ ܨܝܕܢ *
20 * ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ. ܣܝܡ ܐܦܝܟ ܥܠ ܨܝܕܢ. ܘܐܬܢܒܐ
21 ܥܠܝܗ ܘܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܠܘܩܒܠܟܝ ܨܝܕܢ. ܘܐܫܬܒܚ ܒܟܝ.
22 ܘܢܕܥܘܢ. ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܡܐ ܕܥܒܕܬ ܒܗ ܕܝܢܐ ܘܐܬܩܕܫܬ ܒܗ. * ܘܡܫܕܪ ܐܢܐ ܒܗ ܡܘܬܢܐ
23 ܘܕܡܐ ܒܫܘܩܝܗ. ܘܢܦܠܘܢ ܩܛܝܠܝܗ ܒܓܘܗ ܒܚܪܒܐ ܕܐܚܝܕܘܬܗ. ܘܢܕܥܘܢ. ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ.
24 * ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܬܘܒ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܟܘܒܐ ܡܪܝܪܐ ܘܟܐܒܐ ܕܡܟܐܒ. ܡܢ ܟܠܗܘܢ
25 ܕܚܕܪܝܢ ܠܗܘܢ ܘܡܨܥܪܝܢ ܠܗܘܢ. ܘܢܕܥܘܢ. ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ
ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܡܐ ܕܟܢܫܬ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܡܢ ܥܡܡܐ ܕܐܬܒܕܪܘ ܒܝܢܬܗܘܢ.
ܘܐܬܩܕܫܬ ܒܗܘܢ ܩܕܡ ܥܡܡܐ: ܘܢܬܒܘܢ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܝܗܒܬ ܠܥܒܕܝ ܝܥܩܘܒ.
26 * ܘܢܬܒܘܢ ܒܗ ܠܫܠܝܐ. ܘܢܒܢܘܢ ܒܬܐ. ܘܢܢܨܒܘܢ ܟܪܡܐ. ܘܢܬܒܘܢ ܠܫܠܝܐ. ܡܐ ܕܥܒܕܬ
ܕܝܢܐ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܚܕܪܝܗܘܢ. ܕܡܨܥܪܝܢ ܠܗܘܢ. ܘܢܕܥܘܢ. ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ
ܐܠܗܗܘܢ.

* ܫܘܠܡܗ * ܟܚ *

* ܥܠ ܡܨܪܝܢ *

1 * ܒܫܢܬܐ ܕܥܣܪܝܬܐ. ܒܝܪܚܐ ܕܥܣܝܪܝܐ. ܒܬܪܥܣܪ ܒܗ. ܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ.

14 Et eras cum Cherubino uncto & obumbrante, & poſueram te in monte ſanctitatis Dei, & eras inter lapides ignitos : 15 Et ambulaveras ſine labe in viis tuis ab eo die quo creatus fuiſti, donec inventa eſt in te iniquitas. 16 Propter abundantiam negotiationis tuæ implevîſti præcordia tua iniquitate, & peccâſti: ideò perimam te de monte Dei, & perdam te O Cherubine obumbrans, de medio lapidũ ignitorum. 17 Quia ſuperbivit cor tuum propter pulchritudinem tuam, corrupta eſt ſapientia tua cum pulchritudine tua, & in terram dejeci te coram regibus, & expoſui te illis ſpectaculum. 18 Multitudine fraudis tuæ, & iniquitate mercaturæ tuæ prophanâſti ſanctuarium tuum: eliciam ignem è medio tui, qui te devorabit; & redigam te in cinerem in terra coram omnibus ſpectantibus te. 19 Quicunque te noverant inter populos, ſtupebunt de te: abibis in interitum, & nunquam futurus es.

Contra Sidonem.

20 Deinde fuit ad me ſermo Domini, dicendo; 21 Fili hominis, verte oculos tuos ad Sidonem, & prophetato contra eam, ac dicito; 22 Sic ait Dominus dominorum; Ecce me contra te Sidon, ut per te glorificer, & cognoſcant me eſſe Dominum, quum exercuero in eam judicia mea, & ſanctificatus fuero per eam; 23 Immiſero in eam peſtem, & ſanguinem in vicos ejus, & confoſſi ejus in medio ipſius corruerint gladio qui obſidebit eam: tum cognoſcent me eſſe Dominum. 24 Ita non erit ampliùs Iſraelitis abſinthium amarum & dolor excrucians, ab omnibus iis qui circunſtant eos & convitiantur eis: & experientur me eſſe Dominum dominorũ. 25 Sic ait Dominus dominorum; Quum collegero Iſraelitas è populis inter quos diperſi ſunt, & ſanctificatus fuero per eos inter gentes; tunc habitabunt in terra quã dedi ſervo meo Jacobo. 26 Securè habitabunt in ea, domos ædificabunt, plantabunt vineas, & ſedebunt in tuto, quum exercuero judicia in omnes gentes circunjacentes eis, ipſis infenſas: & ſcient me eſſe Dominũ Deum ipſorum.

CAP. XXIX.

Contra Ægyptum.

1 ANno decimo, menſe decimo, duodecimo *die*, fuit ad me ſermo Domini, dicendo;

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

14 * منذ يوم خلقت * مع الساروب دفعتك في جبل القدوس * صرت في وسط حجارة نارية * وصرت
15 غير معاب انت في ايامك * منذ يوم خلقت انت * حتى وجدت المظالم فيك * من كثرة تجارتك
16 ملات خادعك اثما * واخطات * وخرجت من جبل الله * واتى بك الساروب من وسط الحجارة
النارية * وارتفع قلبك بحسنك * وفسدت فطنتك مع حسنك * لاجل كثرة خطاياك طرحتك
17 على الارض * اسلمتك لتشهر امام الملوك * لاجل كثرة خطاياك وظلامات تجارتك * ودنست
18 اقداسك * واخرج نارا من وسطك * هي تاكلك * وادفعك رمادا على ارضك * امام جميع الذين
ينظرون اليك * وجميع العارفين بك في الامم يعبسون عليك * اذ قد صرت هلكة * ولا تكون
19 بعد الى الابد * * النبوة في صيدا * * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان ثبت
20 وجهك على صيدا * وتنبا عليها وقل * هكذا يقول الرب * ها انا عليك يا صيدا * واتمجد بك *
21 ويعلمون اني انا الرب * عند ما اصنع فيك احكاما * واتقدس بك * يصير الدم في شوارعك *
22 ويسقطون مجرحين بالسيوف فيك الذين من حولك * ويعلمون اني انا الرب * ولا يكون ايضا
23 لبيت اسرايل حسكة مرارة * ولا شوكة وجع * من جميع الذين يحيطون بهم ويهينونهم * ويعلمون
24 اني انا ادوناي الرب * هكذا يقول ادوناي الرب الاله * واجمع اسرايل من الامم حيث تفرقوا
25 هناك * واتقدس فيهم امام الشعوب والامم * ويسكنون في ارضهم التي اعطيت لعبدي يعقوب *
26 * ويسكنون عليها في طمانينة * ويبنون بيوتا * ويغرسون كروما * ويسكنون في طمانينة * اذ اصنع
حكما في جميع الذين اهانوهم * وفي الذين حولهم * ويعلمون اني انا الرب الههم واله ابايهم *

* الفصل التاسع والعشرون * * الاصحاح السادس عشر * * النبوة في فرعون ملك مصر *

1 * في الشهر الثاني عشر * في الثاني عشر من الشهر * كان قول الرب الي قايلا *

14 *Ab ea die quâ creatus es, cum Cherubino poſui te in monte Sanctiſſimi, & fuiſti in medio lapidũ ignitorũ:* 15 *Eraſq; tu minimè vitioſus in diebus tuis, ab ea die quâ tu creatus fuiſti, quoadusq; inventæ ſunt in te impietates.* 16 *Ob multitudinẽ negotiationis tuæ implevîſti cellaria tua iniquitate, peccâſti, & egreſſus es è monte Dei: adduxitque te Cherub è medio lapidũ ignitorũ:* 17 *Et exaltatũ eſt cor tuũ propter pulchritudinẽ tuã, & corrupta eſt prudentia tua cum pulchritudine tua.* 18 *Propter multitudinẽ peccatorũ tuorum in terrã projeci te; tradidi te ut ſis infamis apud reges. Propter multitudinẽ peccatorũ tuorum & iniquitatum negotiationis tuæ:* 19 *Et contaminavi Sancta tua: educamq; ignem de medio tui: hic te devorabit. Daboq; te cinerẽ ſuper terrã tuam corã omnibus iis qui te aſpicient: Et omnes cognoſcentes te inter gentes, mœrebunt de te, quum jam abieris in excidium, neq; ſis ampliùs futurus in æternum.*

Prophetia contra Saidam.

20 *Rurſus fuit ſermo Domini ad me, dicens;* 21 *O fili hominis, obfirma faciẽ tuã contra Saidã, vaticinare de ea, & dic;* 22 *Ita dicit Dominus; Ecce me adverſùm te O Saida, et glorificabor in te, ſcieſq; me eſſe Dominũ, quũ exercuero in te judicia, & ſanctificatus fuero in te.* 23 *Erit ſanguis in plateis tuis, & cadent vulnerati gladiis in te, qui circa te ſunt; ſcientq; me eſſe Dominũ.* 24 *Et nõ erit ampliùs domui Iſraelis ſtimulus amaritudinis, neq; ſpina doloris ab omnibus iis qui circunſtant eos & deprimunt eos: tum ſcient me eſſe Adonai Dominum.* 25 *Ita dicit Adonai Dominus Deus; Equidem colligam Iſraelem è gentibus, quocunque diſperſi ſunt, & ſanctificabor in eis corã populis & gentibus: & habitabunt in terra ſua, quam dedi ſervo meo Jacobo:* 26 *Habitabunt autem in ea ſecurè; & domos extruent, plantabunt vineas, & habitabunt ſecurè, quũ fecero judiciũ in omnes eos qui depreſſerunt illos, & in eos qui circunſtant ipſos: ſcientque me eſſe Dominum Deum eorum, & Deum patrum eorum.*

CAP. XXIX.

Textus decimus ſextus.

Prophetia contra Pharaonem regem Ægypti.

1 M*Enſe duodecimo, duodecimâ die menſis, fuit ſermo Domini ad me, dicens;*

יחזקאל: כט

propheta & : Ægypti regem Parhoh *ſuper tuas facies* pone ,hominis Fili
2 בֶּן־אָדָם שִׂים פָּנֶיךָ עַל־פַּרְעֹה מֶלֶךְ מִצְרָיִם וְהִנָּבֵא

dixit Sic *: dices* & ,Loquere .totam Ægyptum ſuper & ,eum ſuper
3 עָלָיו וְעַל־מִצְרַיִם כֻּלָּהּ׃ דַּבֵּר וְאָמַרְתָּ כֹּה־אָמַר

draco , Ægypti rex Parhoh te *ſuper ego* Ecce : Deus Dominus
אֲדֹנָי יֱהוִה הִנְנִי עָלֶיךָ פַּרְעֹה מֶלֶךְ־מִצְרַיִם הַתַּנִּים

,meꝰ fluviꝰ *Mihi* ,dixit qui : ſuorũ fluminũ medio in *cubans* , magnus
הַגָּדוֹל הָרֹבֵץ בְּתוֹךְ יְאֹרָיו אֲשֶׁר אָמַר לִי יְאֹרִי

piſcem faciã *adhærere* &,tuis maxillis in *hamos* dabo Et .me feci ego &
4 וַאֲנִי עֲשִׂיתִנִי׃ וְנָתַתִּי חַחִיִּים בִּלְחָיֶיךָ וְהִדְבַּקְתִּי דְגַת־

medio de te faciam aſcendere & : tuis ſquamis in tuorum fluminum
יְאֹרֶיךָ בְּקַשְׂקְשֹׂתֶיךָ וְהַעֲלִיתִיךָ מִתּוֹךְ

.*adhærebit* tuis ſquamis *in* tuorũ fluminum *piſcis omnis* & ,tuorũ fluminũ
יְאֹרֶיךָ וְאֵת כָּל־דְּגַת יְאֹרֶיךָ בְּקַשְׂקְשֹׂתֶיךָ תִּדְבָּק׃

ſuper,tuorũ fluminũ *piſcem omnem* & te ,deſerto in te derelinquã Et
5 וּנְטַשְׁתִּיךָ הַמִּדְבָּרָה אוֹתְךָ וְאֵת כָּל־דְּגַת יְאֹרֶיךָ עַל־

feræ : congregaberis nec , colligêris non , cades agri *faciebus*
פְּנֵי הַשָּׂדֶה תִּפּוֹל לֹא תֵאָסֵף וְלֹא תִקָּבֵץ לְחַיַּת

omnes ſcient Et .*cibum in* te dedi cœlorum *volatili* & , terræ
6 הָאָרֶץ וּלְעוֹף הַשָּׁמַיִם נְתַתִּיךָ לְאָכְלָה׃ וְיָדְעוּ כָּל־

cannæ fulcrum eos fuiſſe pro :Dominus *ego* quòd , Ægypti habitatores
יֹשְׁבֵי מִצְרַיִם כִּי אֲנִי יְהוָה יַעַן הֱיוֹתָם מִשְׁעֶנֶת קָנֶה

findes & ,confringêris *vola* in te *in eos prehendendo In* .Iſrael domui
7 לְבֵית יִשְׂרָאֵל׃ בְּתָפְשָׂם בְּךָ בַכַּפְּךָ תֵּרוֹץ וּבָקַעְתָּ

facies ſtare & ,conterêris , *te ſuper eos innitendo in* & : humerũ omnẽ eis
לָהֶם כָּל־כָּתֵף וּבְהִשָּׁעֲנָם עָלֶיךָ תִּשָּׁבֵר וְהַעֲמַדְתָּ

ego Ecce : Deus Dominus dixit ſic Propterea .lumbos omnes *eis*
8 לָהֶם כָּל־מָתְנָיִם׃ לָכֵן כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה הִנְנִי

.*animal* &,*hominem* te de faciam ſuccidere & : gladium te ſuper *adducens*
מֵבִיא עָלַיִךְ חֶרֶב וְהִכְרַתִּי מִמֵּךְ אָדָם וּבְהֵמָה׃

ego quòd ſcient &,ſolitudinem & deſertum in Ægypti terra erit Et
9 וְהָיְתָה אֶרֶץ־מִצְרַיִם לִשְׁמָמָה וְחָרְבָּה וְיָדְעוּ כִּי־אֲנִי

Idcirco .feci ego & ,*mihi* fluvius ,dixit quòd eo pro :Dominus
10 יְהוָה יַעַן אָמַר יְאֹר לִי וַאֲנִי עָשִׂיתִי׃ לָכֵן

ſolitudines in Ægypti terram dabóque *:tuũ fluvium* ad & ,te ad ego ecce
הִנְנִי אֵלֶיךָ וְאֶל־יְאֹרֶיךָ וְנָתַתִּי אֶת־אֶרֶץ מִצְרַיִם לְחָרְבוֹת

.Chus terminum ad uſque & Seveneh turre à deſolationis ſolitudinis
חֹרֶב שְׁמָמָה מִמִּגְדֹּל סְוֵנֵה וְעַד־גְּבוּל כּוּשׁ׃

:eã per tranſibit non *animalis* pes & ,hominis pes eam per tranſibit Non
11 לֹא תַעֲבָר־בָּהּ רֶגֶל אָדָם וְרֶגֶל בְּהֵמָה לֹא תַעֲבָר־בָּהּ

Ægypti terram Dabóque .annis quadraginta habitabitur neque
12 וְלֹא תֵשֵׁב אַרְבָּעִים שָׁנָה׃ וְנָתַתִּי אֶת־אֶרֶץ מִצְרַיִם

medio in ejus civitates & ,deſolatarum terrarum medio in deſolationem
שְׁמָמָה בְּתוֹךְ אֲרָצוֹת נְשַׁמּוֹת וְעָרֶיהָ בְּתוֹךְ

: annis quadraginta deſolationem erunt deſtructarum civitatum
עָרִים מָחֳרָבוֹת תִּהְיֶיןָ שְׁמָמָה אַרְבָּעִים שָׁנָה

.terras in eos ventilabo & ,gentes in Ægyptios faciã diſpergere &
וַהֲפִצֹתִי אֶת־מִצְרַיִם בַּגּוֹיִם וְזֵרִיתִים בָּאֲרָצוֹת׃

congregabo annorũ quadraginta fine A : Deus Dominus dixit ſic Quia
13 כִּי כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה מִקֵּץ אַרְבָּעִים שָׁנָה אֲקַבֵּץ

reducam Et .*illuc* fuerunt diſperſi *quò* populis de Ægyptios
14 אֶת־מִצְרַיִם מִן־הָעַמִּים אֲשֶׁר־נָפֹצוּ שָׁמָּה׃ וְשַׁבְתִּי

,Pathros terram eos faciam reducere & ,Ægyptiorum captivitatẽ
אֶת־שְׁבוּת מִצְרַיִם וַהֲשִׁבֹתִי אֹתָם אֶרֶץ פַּתְרוֹס

.humile regnum ibi erunt & : eorum *reſidentiæ* terram ſuper
15 עַל־אֶרֶץ מְכוּרָתָם וְהָיוּ שָׁם מַמְלָכָה שְׁפָלָה׃

:gentes ſuper ultrà elevabitur non &,humile erit regnis Præ
15 מִן־הַמַּמְלָכוֹת תִּהְיֶה שְׁפָלָה וְלֹא־תִתְנַשֵּׂא עוֹד עַל־הַגּוֹיִם

.gentibus *in dominandum* non *ad* , *eos* faciam imminuere &
וְהִמְעַטְתִּים לְבִלְתִּי רְדוֹת בַּגּוֹיִם׃

Verſio VULG. LAT.

2 Fili hominis, pone faciem tuam
contra Pharaonem regem Ægypti,
& prophetabis de eo, & de
3 Ægypto univerſa: Loquere, &
dices; Hæc dicit Dominus Deus;
Ecce ego ad te, Pharao rex Ægypti,
draco magne, qui cubas in
medio fluminũ tuorum, & dicis;
Meus eſt fluvius: & ego feci memetipſum.
4 Et ponam frænum in
maxillis tuis: & agglutinabo piſces
fluminum tuorum ſquamis
tuis: & extraham te de medio
fluminum tuorum, & univerſi piſces
tui ſquamis tuis adhærebunt.
5 Et projiciam te in deſertum, &
omnes piſces fluminis tui: ſuper
faciem terræ cades, non colligêris,
neque congregaberis: beſtiis
terræ, & volatilibus cœli,
6 dedi te ad devorandum: Et ſcient
omnes habitatores Ægypti
quia ego Dominus: pro eo quòd
fuiſti baculus arundineus domui
7 Iſrael. Quando apprehenderunt
te manu, & confractus es, & lacerâſti
omnem humerum eorum:
& innitentibꝰ eis ſuper te, comminutus
es, & diſſolviſti omnes
8 renes eorum. Propterea hæc dicit
Dominꝰ Deus; Ecce ego adducam
ſuper te gladium: & interficiam
de te hominem, & jumentum.
9 Et erit terra Ægypti in
deſertum, & in ſolitudinem: &
ſcient quia ego Dominꝰ: pro eo
quòd dixeris; Fluvius meus eſt,
10 & ego feci eum. Idcircò ecce
ego ad te, & ad flumina tua: dabóque
terram Ægypti in ſolitudines,
gladio diſſipatam, à turre
Syenes, uſque ad terminos Æthiopiæ.
11 Non pertranſibit eam pes
hominis, neque pes jumenti gradietur
in ea: & non habitabitur
12 quadraginta annis. Dabóque terram
Ægypti deſertam in medio
terrarum deſertarum, & civitates
ejus in medio urbium ſubverſarum,
& erunt deſolatæ quadraginta
annis: & diſpergam Ægyptios
in nationes, & ventilabo
13 eos in terras. Quia hæc dicit Dominus
Deus; Poſt finem quadraginta
annorum congregabo Ægyptum
de populis, in quibꝰ diſperſi fuerant.
14 Et reducam captivitatem
Ægypti, & collocabo
eos in terra Phathures, in terra
nativitatis ſuæ: & erunt ibi in
15 regnum humile: Inter cætera
regna erit humillima, & non elevabitur
ultrà ſuper nationes, &
imminuam eos ne imperent Gentibus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

2 Υἱὲ ἀνθρώπου, στήρισον τὸ πρόσωπόν σου ἐπὶ
Φαραὼ βασιλέα Αἰγύπτου, καὶ προφήτευσον
3 ἐπ᾽ αὐτὸν καὶ ἐπ᾽ Αἴγυπτον (β) ὅλην, Καὶ
εἰπὸν, Τάδε λέγει (γ) κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ (δ)
ἐπὶ Φαραώ, τὸν δράκοντα τὸν μέγαν τὸν ἐγκαθήμενον
ἐν μέσῳ ποταμῶν αὐτοῦ, τὸν λέγοντα,
Ἐμοί εἰσιν οἱ ποταμοί, καὶ ἐγὼ ἐποίησα αὐτούς.
4 (ε) Καὶ ἐγὼ δώσω παγίδας εἰς τὰς σιαγόνας
σου, καὶ προσκολλήσω τοὺς ἰχθύας τοῦ
ποταμοῦ σου πρὸς τὰς πτέρυγάς σου, καὶ ἀνάξω
5 σε ἐκ μέσου τοῦ (ζ) ποταμοῦ σου, Καὶ
καταβαλῶ σε ἐν τάχει καὶ πάντας τοὺς ἰχθύας
τοῦ ποταμοῦ σου. ἐπὶ πρόσωπον τοῦ πεδίου
πέσῃ, καὶ οὐ μὴ συναχθῇς, (η) καὶ οὐ μὴ περισταλῇς,
τοῖς θηρίοις (θ) τῆς γῆς καὶ τοῖς πετεινοῖς
6 τοῦ οὐρανοῦ δέδωκά σε εἰς (ι) κατάβρωμα. Καὶ
γνώσονται πάντες οἱ κατοικοῦντες Αἴγυπτον,
ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος. ἀνθ᾽ ὧν ἐγενήθης ῥάβδος
7 καλαμίνη τῷ οἴκῳ Ἰσραήλ, Ὅτε (κ)
ἐπελάβετό σου τῇ χειρὶ αὐτῶν, ἐθλάσθης· καὶ
ὅτε (λ) ἐπεκρότησεν ἐπ᾽ αὐτοὺς πᾶσα χείρ,
καὶ ὅτε ἐπανεπαύσαντο ἐπὶ σέ, συνετρίβης,
8 καὶ συνέκλασας αὐτῶν πᾶσαν ὀσφύν. Διὰ τοῦτο
τάδε λέγει (μ) κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω ἐπὶ
σὲ ῥομφαίαν, καὶ ἀπολῶ ἀπὸ σοῦ (ν) ἀνθρώπους
9 καὶ κτήνη. Καὶ (ξ) ἔσται ἡ γῆ Αἰγύπτου ἀπώλεια
καὶ ἔρημος· καὶ γνώσονται ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος.
ἀντὶ τοῦ λέγειν σε, (ο) Οἱ ποταμοὶ ἐμοί εἰσι,
10 καὶ ἐγὼ ἐποίησα αὐτούς, Διὰ τοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ
ἐπὶ σὲ καὶ ἐπὶ πάντας τοὺς ποταμούς σου,
καὶ δώσω (π) γῆν Αἰγύπτου εἰς (ρ) ἔρημον καὶ
ῥομφαίαν καὶ ἀπώλειαν ἀπὸ Μαγδώλου καὶ
11 (σ) Συήνης καὶ ἕως ὁρίων (τ) Αἰθιόπων. Οὐ
μὴ διέλθῃ ἐν αὐτῇ (υ) ποὺς ἀνθρώπου, καὶ ποὺς
κτήνους οὐ μὴ διέλθῃ αὐτήν, καὶ οὐ κατοικηθήσεται
12 τεσσαράκοντα ἔτη. Καὶ δώσω τὴν γῆν αὐτῆς
(φ) ἀπώλειαν ἐν μέσῳ γῆς ἠρημωμένης,
καὶ αἱ πόλεις αὐτῆς ἐν μέσῳ πόλεων ἠρημωμένων
(χ) ἔσονται τεσσαράκοντα ἔτη· καὶ διασπερῶ
Αἴγυπτον ἐν τοῖς ἔθνεσι, καὶ λικμήσω
13 αὐτοὺς εἰς τὰς χώρας. (ψ) Τάδε λέγει
κύριος, Μετὰ τεσσαράκοντα ἔτη συνάξω
(ω) Αἰγυπτίους ἀπὸ τῶν ἐθνῶν οὗ διεσκορπίσθησαν
14 ἐκεῖ, Καὶ ἀποστρέψω τὴν αἰχμαλωσίαν
(α) τῶν Αἰγυπτίων, καὶ κατοικίσω αὐτοὺς ἐν γῇ
Φαθωρῆς, ἐν τῇ γῇ ὅθεν ἐλήφθησαν, καὶ ἔσται
15 ἀρχὴ ταπεινὴ Παρὰ πάσας τὰς ἀρχάς· οὐ
μὴ ὑψωθῇ ἔτι ἐπὶ τὰ ἔθνη· καὶ ὀλιγοστοὺς αὐτοὺς
ποιήσω, τοῦ μὴ εἶναι αὐτοὺς πλείονας ἐν
τοῖς ἔθνεσι.

*Fili hominis, obfirma faciem tuam 2
ſuper Pharaonem regem Ægypti, & propheta ſuper eum, &
ſuper Ægyptum univerſam, Et 3
dic; Hæc dicit Dominus; Ecce ego
ſuper Pharaonem (b) draconem
magnum ſedentem in medio (c)
fluminum ſuorũ, dicentem; Mihi
ſunt flumina: & ego feci illa. Et 4
ego dabo (d) laqueos in maxillas
tuas: & agglutinabo piſces fluminis
tui ad pennas tuas: & educam
te de medio fluminis (e)
tui: Et deponam te velociter, & 5
omnes piſces fluminis tui. Super
faciem campi cades: neque congregaberis,
neque colligêris: beſtiis
terræ, & volatilibus cœli dedi
te in devorationem. Et ſcient 6
omnes habitatores Ægypti, quia
ego ſum Dominus. Pro eo, quòd
factus es virga arundinea domui
Iſrael: Quando apprehendit 7
te manu ſuâ, confractus es: &
quando plauſit ſuper eos omnis
manus, & quando requieverunt
ſuper te, contritus es, & confregiſti
omnes renes eorum. Propterea 8
hæc dicit Dominus; Ecce ego
induco ſuper te gladium, & perdam
de te homines, & jumenta:
Et erit terra Ægypti perditio, & 9
ſolitudo: & ſcient quia ego ſum
Dominus. Eò quòd dicis tu; Flumina
mea ſunt, & ego feci illa;
Idcircò ecce ego ſuper te, & ſuper 10
omnia flumina tua: & dabo
terram Ægypti in (f) ſolitudinem,
& gladium, & perditionem
à (g) Magdolo, & Syene, & uſque
ad terminos Æthiopũ. Non tranſibit 11
in ea pes hominis: & pes jumenti
non pertranſibit eã: & non
habitabitur quadraginta annis.
Et dabo terram ejus perditionem 12
in medio terræ deſertæ: & civitates
ejus in medio civitatũ deſertarum
erunt quadraginta annis.
Et diſſeminabo Ægyptum in
gentibus, & ventilabo eos in terras.
Hæc dicit Dominus; Poſt 13
quadraginta annos congregabo
Ægyptios de gentibus, in quibus
diſperſi erant illuc: Et reducam 14
captivitatem Ægyptiorum, &
collocabo eos in terra Phathores,
in terra, de qua aſſumpti ſunt. Et
erit principatus humilis Inter 15
omnes principatus. Non elevabitur
ultrà ſuper nationes: & pauciſſimos
eos faciam; ne plures
ſint ipſi inter gentes.*

MS.A. (β) ὅλην, Καὶ λάλησον, καὶ εἰπὸν (γ) κύριος ὁ θεός, (δ) ἐπὶ σὲ Φαραώ, βασιλεῦ Αἰγύπτου, τὸν (ε) Καὶ δώσω τὰς παγίδας (ζ) ποταμοῦ, καὶ πάντας τοὺς ἰχθύας τοῦ ποταμοῦ σου, Καὶ (η) οὐδ᾽ οὐ μὴ (θ) τοῦ ἀγροῦ καὶ (ι) βρῶσιν, (κ) ἐπελάβοντό (λ) ἐπεκράτησεν (μ) κύριος ὁ θεός, (ν) ἄνθρωπον καὶ κτῆνος. (ξ) ἔσται πᾶσα ἡ (ο) Ὅτι οἱ (π) τὴν γῆν (ρ) ἔρημον καὶ ἀπώλειαν ἀπὸ (σ) Σοήνης (τ) Αἰθιοπίας. (υ) ἄνθρωπος, καὶ κτῆνος, οὐδὲ κατοικηθήσεται τεσσεράκοντα (φ) εἰς ἀπώλειαν ἐμ μέσῳ τῆς ἐρήμου, καὶ αἱ πόλεις αὐτῶν (χ) ἔσονται, ἀφανισμὸς ἔσται· καὶ διασπερῶ (ψ) Ὅτι τάδε λέγει κύριος κύριος, Μετὰ τεσσεράκοντα (ω) τοὺς Αἰγυπτίους (α) Αἰγύπτου, καὶ κατοικιῶ αὐτοὺς ἐν γῇ Παθουρῆς,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

2 בַּר אָדָם קַבֵּיל נְבוּאָה עַל פַּרְעֹה מַלְכָּא דְמִצְרַיִם וְאִתְנַבֵּי עֲלוֹהִי וְעַל מִצְרָאֵי כּוּלְהוֹן׃
3 אִתְנַבֵּי וְתֵימַר כִּדְנָן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים הָא אֲנָא שָׁלַח רוּגְזִי עֲלָךְ פַּרְעֹה מַלְכָּא דְמִצְרַיִם
דְּאַתְּ דָּמֵי לְתַנִּינָא רַבָּא דִּי שָׁרֵי בְּגוֹ נַהֲרָוָתֵיהּ דִּי אֲמַר דִּילִי מַלְכוּתָא וַאֲנָא כַבֵּישִׁית׃
4 וְאֶתֵּן שִׁירִין בְּלִיסְתָךְ וְאֶקְטוֹל שִׁלְטוֹנֵי תוּקְפָּךְ עִם גִּבָּרָךְ וַאֲבַטֵּלִנָּךְ מִמַּלְכוּתָךְ וְיָת כָּל
5 שִׁלְטוֹנֵי תוּקְפָּךְ עִם גִּבָּרָךְ יִתְקַטְלוּן׃ וְאַרְטְשִׁנָּךְ לְמַדְבְּרָא יָתָךְ וְיָת כָּל שִׁלְטוֹנֵי תוּקְפָּךְ
עַל אַפֵּי חַקְלָא תִתְרְמֵי נְבֵלְתָךְ לָא תִתְכְּנֵישׁ וְלָא תִתְקְבַר לְחֵיוַת אַרְעָא וּלְעוֹפָא דִשְׁמַיָּא
6 מְסַרְתָּךְ לְאִשְׁתֵּיצָאָה׃ וְיִדְעוּן כָּל יָתְבֵי מִצְרַיִם אֲרֵי אֲנָא יְיָ חֲלַף דַּהֲווֹ סֶמֶךְ קַנְיָא רְעִיעָא
7 לְבֵית יִשְׂרָאֵל׃ בְּאִתְכְּנָיוּתְהוֹן בָּךְ בְּיַד מֶלֶךְ תַּקִּיף תִּתְמְסַר וְיֵיבַד בֵּית רוֹחְצָנֵיהוֹן
8 וּבְאִסְתְּמָכוּתְהוֹן עֲלָךְ תִּתְּבַר וְלָא תְהֵי לְהוֹן לְבֵית סוֹמְכָן׃ בְּכֵן כִּדְנָן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים
9 הָא אֲנָא מַיְתֵי עֲלָךְ דְּקָטְלִין בְּחַרְבָּא וְאֱשֵׁיצֵי מִנָּךְ אֱנָשָׁא וּבְעִירָא׃ וּתְהֵי אַרְעָא
דְמִצְרַיִם לְאִשְׁתְּמָמוּ וְחוּרְבָא וְיִדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ חֲלַף דַּאֲמִיר מַלְכוּתָא דִילִי וַאֲנָא
10 כַבֵּשִׁית׃ בְּכֵן הָא אֲנָא שָׁלַח רוּגְזִי עֲלָךְ וְעַל מַלְכוּתָךְ וְאֶתֵּן יָת אַרְעָא דְמִצְרַיִם לְחוּרְב
11 צְדוּ וּשְׁמָמוּ מִמִּגְדַּל סְוֵנֵה וְעַד תְּחוּם כּוּשׁ׃ לָא תֶעְבַּר בָּהּ רִגְלָא אֱנָשָׁא וְרִגְלָא דִי
12 בְעִירָא לָא תֶעְבַּר בָּהּ וְלָא תִתְיְתֵיב אַרְבְּעִין שְׁנִין׃ וְאֶתֵּן יָת אַרְעָא דְמִצְרַיִם לְצָדוּ בְּגוֹ
מְדִינָן צַדְיָן וְקִרְוָהָא בְּגוֹ קִרְוִין דַּהֲוָאָה חָרְבָן יְהֶוְיָן לְצָדוּ אַרְבְּעִין שְׁנִין וְאַגְלֵי יָת מִצְרָאֵי
13 לְבֵינֵי עַמְמַיָּא וְאֲבַדְּרִנּוּן בִּמְדִינָתָא׃ אֲרֵי כִדְנָן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים מִסּוֹף אַרְבְּעִין שְׁנִין
14 אֲכַנֵּישׁ יָת מִצְרָאֵי מִבֵּינֵי עַמְמַיָּא דְּאִתְבַּדַּרוּ לְתַמָּן׃ וְאָתֵיב יָת גָּלוּת מִצְרַיִם וְאוֹתֵיב
15 יָתְהוֹן לְאַרְעָא פַתְרוֹס עַל אַרְעָא תּוֹתָבוּתְהוֹן וִיהוֹן תַּמָּן מַלְכוּ חַלָּשָׁא׃ מִן מַלְכְוָתָא
תְּהֵי חַלָּשָׁא וְלָא תִתְרַבְרַב עוֹד עַל עַמְמַיָּא וַאֲזְעִירִנּוּן בְּדִיל דְּלָא יִפְלְחוּן בְּעַמְמַיָּא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Fili hominis, ſuſcipe prophetiam ſuper Pharaonem regem Ægypti, & vaticinare 2
ſuper eum & ſuꝑ univerſos Ægyptios. Vaticinare, & dices: Hæc dicit 3
Dominus Deus: Ecce ego mitto furorem meum ſuꝑ te Pharao rex Ægypti, qui
ſimilis es draconi magno qui cubat in medio fluminum ſuorum; qui dicis:
Meum eſt regnum, & ego ſubjugavi illud. Et dabo hamos in maxillas tuas, & 4
interficiam principes fortitudinis tuæ cum potentibus tuis. Et ceſſare faciam
regnum à te, & omnes principes fortitudinis tuæ cum potentibus tuis occidentur.
Et projiciam te in deſertum, te & omnes principes fortitudinis tuæ: 5
ſuper faciem agri projicietur cadaver tuum, non colligetur nec ſepelietur. Beſtiis
terræ & volucribus cœli tradidi te in exitium. Et ſcient omnes habitatores 6
Ægypti quia ego Dominus, pro eo quòd fuerunt ſuſtentaculum arundineum
conquaſſatum domui Iſrael. Cùm *nomen dederint* in te, in manum regis 7
robuſti tradêris, & peribit domus confidentiæ eorum: & cùm innitentur ſuper
te, confringêris, & non eris eis in domum præſidii. Propterea hæc dicit 8
Dñs Deus: Ecce ego adducam ſuper te occidentes gladio, & conſumam ex te
hominem & jumentum. Et erit terra Ægypti in ſolitudinem & deſertum; & 9
ſcient quia ego Dominus. Pro eo quòd dixit: Meum eſt regnum, & ego ſubjugavi
illud. Propterea ecce ego mitto furorem meum ſuper te & ſuper regnum 10
tuum, & dabo terram Ægypti in deſertum ſolitudinis & deſolationis,
à turri Syenes & uſque ad terminum Æthiopiæ. Non tranſibit per eam pes 11
hominis, neque pes jumenti tranſibit per eam, & non habitabitur quadraginta
annis. Et dabo terram Ægypti in vaſtitatem in medio provinciarum deſolatarum, 12
& civitates ejus in medio civitatum quæ fuerunt deſertæ, erunt in
deſolationem quadraginta annis. Et tranſmigrare faciam Ægyptios inter
populos, & diſpergam eos per provincias. Quia hæc dicit Dominus Deus: In 13
fine quadraginta annorum congregabo Ægyptios de medio populorum quò
diſperſi fuerunt. Et revocabo captivitatem Ægyptiorum, & reducam eos in 14
terram Phatures, in terram habitationis ſuæ: & erunt ibi in regnum infirmum.
Aliis regnis erit infirmius, & non magnificabitur ultrà ſuper populos, 15
& imminuam eos ne ſervire faciant ſibi populos.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܒܪ ܐܢܫܐ. ܣܝܡ ܐܦܝܟ ܥܠ ܦܪܥܘܢ. ܡܠܟܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܐܬܢܒܐ ܥܠܘܗܝ. ܘܥܠ ܟܠܗ 2
ܡܨܪܝܢ. ܡܠܠ. ܘܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟ ܦܪܥܘܢ. ܡܠܟܐ 3
ܕܡܨܪܝܢ. ܬܢܝܢܐ ܪܒܐ ܕܪܒܥ ܒܝܬ ܢܗܪܘܬܗ. ܘܐܡܪ: ܕܕܝܠܝ ܗܘ ܢܗܪܐ. ܘܐܢܐ ܥܒܕܬܗ.
* ܐܢܐ ܐܪܡܐ ܚܟܡܐ ܒܦܟܝܟ. ܘܐܕܒܩ ܒܓܦܝܟ ܢܘܢܐ ܕܢܗܪܟ. ܘܐܣܩܟ ܡܢ ܓܘ ܢܗܪܟ. 4
ܘܟܠܗܘܢ ܢܘܢܐ ܕܢܗܪܟ. ܒܓܦܝܟ ܢܕܒܩܘܢ. * ܘܐܪܡܝܟ ܒܡܕܒܪܐ ܠܟ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܢܘܢܐ 5
ܕܢܗܪܟ. ܘܥܠ ܐܦܝ ܚܩܠܐ ܬܦܠ. ܘܠܐ ܬܬܟܢܫ. ܘܠܐ ܬܬܩܒܪ. ܠܚܝܘܬܐ ܕܕܒܪܐ. ܘܠܦܪܚܬܐ
ܕܫܡܝܐ. ܝܗܒܬܟ ܠܡܐܟܘܠܬܐ. * ܘܢܕܥܘܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܘܗ ܕܡܨܪܝܢ. ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. 6
ܥܠ ܕܗܘܝܬ ܐܝܟ ܚܘܛܪܐ ܕܩܢܝܐ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. * ܟܕ ܐܚܕܘܟ ܒܐܝܕܝܗܘܢ. ܬܪܥܬ 7
ܐܝܕܝܗܘܢ. ܘܟܕ ܐܣܬܡܟܘ ܥܠܝܟ. ܐܬܬܒܪܬ ܘܐܪܦܝܬ ܚܨܝܗܘܢ. * ܡܛܠܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ 8
ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟ ܚܪܒܐ. ܘܐܘܒܕ ܡܢܟ ܒܢܝܢܫܐ ܘܒܥܝܪܐ. * ܘܬܗܘܐ ܐܪܥܐ 9
ܕܡܨܪܝܢ. ܠܚܘܪܒܐ ܘܠܫܘܡܡܐ. ܘܢܕܥܘܢ. ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܕܐܡܪܬ ܕܕܝܠܝ ܗܘ ܢܗܪܐ. ܘܐܢܐ
ܥܒܕܬܗ. * ܡܛܠܗܢܐ ܗܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟ. ܘܥܠ ܢܗܪܟ. ܘܐܬܠܝܗ ܠܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ ܠܚܘܪܒܐ 10
ܘܠܫܘܡܡܐ. ܡܢ ܡܓܕܠ ܕܣܘܢܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܬܚܘܡܐ ܕܟܘܫ. * ܠܐ ܬܥܒܪ ܒܗ ܪܓܠܐ ܕܒܪܢܫܐ. 11
ܐܦܠܐ ܦܪܣܬܐ ܕܒܥܝܪܐ. ܘܠܐ ܬܬܒ. ܐܪܒܥܝܢ ܫܢܝܢ. * ܘܐܬܠܝܗ ܠܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܠܚܘܪܒܐ ܒܝܬ 12
ܡܕܝܢܬܐ ܕܚܪܒ. ܘܐܒܕܪ ܠܡܨܪܝܐ ܒܥܡܡܐ. ܘܐܕܪܐ ܐܢܘܢ ܒܡܕܝܢܬܐ: * ܗܟܢܐ 13
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܒܬܪ ܐܪܒܥܝܢ ܫܢܝܢ. ܐܟܢܫ ܐܢܘܢ ܠܡܨܪܝܐ ܡܢ ܥܡܡܐ ܕܐܬܒܕܪܘ
ܒܝܢܬܗܘܢ. * ܘܐܗܦܘܟ ܫܒܝܬܗܘܢ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܐܘܬܒ ܐܢܘܢ ܒܐܪܥܐ ܕܦܬܪܘܣ ܒܐܪܥܐ 14
ܕܐܙܕܒܢܘ ܡܢܗ. ܘܢܗܘܘܢ ܬܡܢ ܡܠܟܘܬܐ ܡܟܝܟܬܐ. * ܘܬܗܘܐ ܡܟܝܟܐ 15
ܡܢ ܟܠܗܝܢ ܡܠܟܘܬܐ. ܘܠܐ ܬܬܬܪܝܡ ܬܘܒ ܥܠ ܥܡܡܐ. ܘܐܒܨܪ ܐܢܘܢ. ܕܠܐ
ܢܫܬܥܒܕܘܢ ܠܥܡܡܐ.

Fili hominis, pone faciem tuam verſùs Pharaonem regem Ægypti, & vaticinare contra eũ; & contra totam Ægyptum loquere, & dic; 2
Sic ait Dominus dominorum; Ecce me contra te Pharaon rex Ægypti, draco maxime cubans inter amnes, & dicens; Meus eſt fluvius, & ego feci eum. 3
Ego paſtomidem indam maxillis tuis, agglutinabo alis tuis piſces fluvii tui, & extraham te è fluvio tuo; & cunctis fluvii tui piſcib⁹ alis tuis inhærentibus, 4
Projiciam te in deſertum, te *inquam*, omnéſque piſces fluvii tui: ſuper faciem agri cades, & non recipieris, neque colligêris; *ſed* beſtiis terræ & volucrib⁹ cœli exponam te in cibum: 5
Ut experiantur omnes habitatores Ægypti me eſſe Dominum. Eò quòd fueris ut ſcipio arundineus Iſraelitis, 6
Qui cùm te manibus ſuis tenuiſſent, perfodiſti man⁹ eorum; cúmque tibi innixi fuiſſent, confract⁹ es, & lumbos eorum concuſſiſti: 7
Iccircò ſic ait Dominus dominorum; Ecce adducam ſuper te gladium, perdámque ex te homines & jumenta: 8
Erítque terra Ægypti in excidium & vaſtitatem, & experientur me eſſe Dominum. Eò quòd dixeris, Meus eſt fluvius, & ego feci eum; 9
Idcircò ecce me contra te & contra fluvium tuum, tradámque terram Ægypti excidio & vaſtitati. A turri Suna uſque ad limites Cus, 10
Non tranſibit per eam pes hominis, neque ungula jumenti; neque habitabitur quadraginta annis. 11
Tradam enim terram Ægypti excidio inter urbes dirutas, diſſipabo Ægyptios inter gentes, & diſpergam eos per urbes. 12
Sic ait Dominus dominorum; Poſt annos quadraginta colligam Ægyptios è gentib⁹ inter quas diſperſi fuerint, 13
Et reducam captivitatem Ægypti, & collocabo eos in terra Pathros, in terra ex qua empti fuerant, & erunt ibi regnum humile. 14
Erit inquam, regnorum omnium humillimum, ut non efferat ſe ampliùs ſuper gentes: & imminuam eos, ne ſubjiciant gentes: 15

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* يا ابن الانسان * ثبت وجهك على فرعون ملك مصر وتنبا عليه وعلي مصر كلها * 2
تكلم وقل * هكذا يقول الرب الرب * ها انا عليك يا فرعون التنين العظيم الرابض 3
في وسط انهارك * القايل * لي هي الانهار وانا صنعتها * اعطي فخاخا في خديك * والصق 4
سمك نهرك * والقيك بسرعة * وجميع حيتان نهرك * على وجه صحرايك تسقط * ولا تجمع 5
ولا تستر * فاني دفعتك لوحوش الحقل وطيور السماء طعاما * ويعلمون جميع سكان 6
مصر اني انا الرب * من اجل انك صرت عصا قصبية لبيت اسرائيل * لما اخذوك بيدهم 7
تكسرت * ولما قبضت عليهم كل يد * ولما استراحوا عليك تهشمت * وكسرت
كل حقوهم * لاجل هذا هكذا يقول الرب الرب * ها انا اجلب عليك سيفا * وابيد 8
منك الانسان والبهيمة * وتصير كل ارض مصر هلاكا وخرابا * ويعلمون اني انا 9
الرب * عوض انك تقول ان الانهار لي هم وانا صنعتهم * لاجل هذا ها انا اجلب 10
عليك وعلي انهارك * وادفع ارض مصر للخراب والسيف والهلاك * من مجدول واسوان
والي حدود الحبشة * لا يجوز فيها انسان ولا بهيمة * ولا تسكن اربعين سنة * 11
* وادفع ارضها للهلاك في وسط ارض البرية * ومدنها في وسط مدن الخراب تصير 12
اربعين سنة * وابدد مصر في الامم * واذريهم في الكور * لان هكذا يقول الرب 13
الرب * بعد اربعين سنة اجمع المصريين من الامم حيث تفرقوا هناك * وارد سبي 14
مصر * واسكنهم في ارض فاثوريس في الارض من حيث اخذوا * وتصير رياستهم 15
ذليلة * اكثر من جميع الرياسات * ولا ترتفع على الامم ايضا * واجعلهم قليلين * ولا
يكونوا كثيرين في الامم *

O fili hominis, obfirma faciem tuam contra Pharaonem regem Ægypti, vaticinare de ipſo & de tota Ægypto, loquere, & dic; 2
Sic ait Dominus Dominus; Ecce me adverſùm te O Pharaon draco magne, qui cubas in medio fluminum tuorum, qui dicis, Mea ſunt flumina, & ego feci ea. 3
Imponam laqueos genis tuis, & faciam ut hæreant piſces fluminis tui; projiciam te citò, omneſque piſces fluminis tui. 4
Super faciem ſolitudinis tuæ cades, & non recipies nec abdes te; quia beſtiis agri & volucribus cœli dedi te cibum: 5
Et ſcient omnes habitatores Ægypti me eſſe Dominum. Quia fuiſti baculus arundineus domui Iſraelis: 6
Cùm te manu ſuâ cepiſſent, confractus es: cúmque tenuiſſet eos omnis manus, & cùm in te ſpem collocâſſent, contritus es, & fregiſti omnes lumbos eorum: 7
Propterea ſic dicit Dominus Dominus; Ecce ego adducam ſuper te gladium, perdamque ex te hominem & jumentum: 8
Et abibit tota terra Ægypti in perditionem & ruinam, ſcientque me eſſe Dominum. Eò quòd dicas, Flumina mea ſunt, & ego feci ea; 9
Propterea ecce ego adducam ſuper te & ſuper flumina tua, tradamque terram Ægypti vaſtitati, gladio, & excidio. A Magdol & Aſuan uſque ad limites Æthiopiæ, 10
Non tranſibit per eam homo neque jumentum; nec habitabitur annis quadraginta: 11
Tradamque terram ejus perditioni in medio terræ deſerti, & urbes ejus inter urbes dirutas erunt annis quadraginta: & diſpergam Ægyptios inter gentes, & diſpellam eos per climata. 12
Nam ita dicit Dominus Dominus; Poſt annos quadraginta colligam Ægyptios è gentibus quoquoverſum diſperſi fuerint. 13
Et reſtituam captivitatem Ægyptiorum, & habitare faciam eos in terra Phathores, in terra è qua capti ſunt: 14
Eritque principatus eorum humillimus omnium principatuum, nec attollet ſe ampliùs ſuper gentes: & faciam ut pauci ſint, & non ſint multi inter gentes: 15

יחזקאל: ל

commonefactor confidentiam in Iſrael domui ultrà erit non Et
16 וְלֹא יִֽהְיֶה־עוֹד לְבֵית יִשְׂרָאֵל לְמִבְטָח מַזְכִּיר
.Deus Dominus *ego* quòd ſcient & : eos poſt *eos reſpiciendo in* ,iniquitatis
עָוֺן בִּפְנוֹתָם אַחֲרֵיהֶם וְיָדְעוּ כִּי אֲנִי אֲדֹנָי יְהוִה׃
: menſis *una* in ,primo in ,anno ſeptimo & vigeſimo in ,fuit Et
17 וַיְהִי בְּעֶשְׂרִים וָשֶׁבַע שָׁנָה בָּרִאשׁוֹן בְּאֶחָד לַחֹדֶשׁ
,hominis Fili : dicendo ,me ad DOMINI verbum fuit
18 הָיָה דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם
magna ſervitute *ſuam virtutem* fecit ſervire Babel rex Nebuchadreſar
נְבוּכַדְרֶאצַּר מֶלֶךְ־בָּבֶל הֶעֱבִיד אֶת־חֵילוֹ עֲבֹדָה גְדֹלָה
,depilatus humerus omnis & ,decalvatum caput Omne : Sor adverſus
אֶל־צֹר כָּל־רֹאשׁ מֻקְרָח וְכָל־כָּתֵף מְרוּטָה
quam ſervitutem *ſuper* Sor de ejus *virtuti* & ,ei fuit non merces &
וְשָׂכָר לֹא־הָיָה לוֹ וּלְחֵילוֹ מִצֹּר עַל־הָעֲבוֹדָה אֲשֶׁר־
dans ego Ecce : Deus Dominus dixit ſic Propterea .eâ adverſus ſervivit
19 עָבַד עָלֶיהָ׃ לָכֵן כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה הִנְנִי נֹתֵן
tollet & : Ægypti terram Babel regi Nebuchadreſar
לִנְבוּכַדְרֶאצַּר מֶלֶךְ־בָּבֶל אֶת־אֶרֶץ מִצְרַיִם וְנָשָׂא
erit & ,ejꝰ prædam prædabitur&,ejꝰ *ſpolium* ſpoliabit &,ejꝰ multitudinẽ
הֲמֹנָהּ וְשָׁלַל שְׁלָלָהּ וּבָזַז בִּזָּהּ וְהָיְתָה
terram ei dedi ,*eo in* ſervivit quo ejus Opus .ejꝰ *virtuti* merces
20 שָׂכָר לְחֵילוֹ׃ פְּעֻלָּתוֹ אֲשֶׁר־עָבַד בָּהּ נָתַתִּי לוֹ אֶת־אֶרֶץ
die In .Deus Dominus dicit ,*mihi* fecerunt quod ,Ægypti
21 מִצְרַיִם אֲשֶׁר עָשׂוּ לִי נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה׃ בַּיּוֹם
apertionem dabo tibi & ,Iſrael domus cornu faciam germinare illa
הַהוּא אַצְמִיחַ קֶרֶן לְבֵית יִשְׂרָאֵל וּלְךָ אֶתֵּן פִּתְחוֹן־
.Dominus *ego* quòd ſcient & : eorum medio in oris
פֶּה בְּתוֹכָם וְיָדְעוּ כִּי־אֲנִי יְהוָה׃

CAP. XXX. ל

,propheta,hominis Fili : dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et
1 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם הִנָּבֵא
2 Quia ..diei væ ,Ululate : Deus Dominus dixit Sic : *dices* &
3 וְאָמַרְתָּ כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה הֵילִילוּ הָהּ לַיּוֹם׃ כִּי־
.erit gentium tempus,nubis dies :Domini dies *propinqua* &,dies *propinqua*
קָרוֹב יוֹם וְקָרוֹב יוֹם לַיהוָה יוֹם עָנָן עֵת גּוֹיִם יִהְיֶה׃
cadendo in Chus in *vacillatio* erit & ,Ægyptum in gladius veniet Et
4 וּבָאָה חֶרֶב בְּמִצְרַיִם וְהָיְתָה חַלְחָלָה בְּכוּשׁ בִּנְפֹל
.ejꝰ fundamenta deſtruentur & ,ejꝰ *turbam* tollent & : Ægypto in *occiſum*
חָלָל בְּמִצְרָיִם וְלָקְחוּ הֲמוֹנָהּ וְנֶהֶרְסוּ יְסוֹדוֹתֶיהָ׃
eis cum fœderis terræ filii &,Chub &,vulgus omne &,Lud &,Put &,Chus
5 כּוּשׁ וּפוּט וְלוּד וְכָל־הָעֶרֶב וְכוּב וּבְנֵי אֶרֶץ הַבְּרִית אִתָּם
,Ægyptum fulcientes cadent Et ,Dominus dixit Sic .cadent gladio *in*
6 בַּחֶרֶב יִפֹּלוּ׃ כֹּה אָמַר יְהוָה וְנָפְלוּ סֹמְכֵי מִצְרַיִם
cadent gladio in Seveneh turre à : ejꝰ fortitudinis ſuperbia deſcendet &
וְיָרַד גְּאוֹן עֻזָּהּ מִמִּגְדֹּל סְוֵנֵה בַּחֶרֶב יִפְּלוּ־
:deſolatarũ terrarũ medio in deſolabuntur Et .Deus Dominus dixit,ea in
7 בָהּ נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה׃ וְנָשַׁמּוּ בְּתוֹךְ אֲרָצוֹת נְשַׁמּוֹת
quòd ſcient Et .erunt deſertarum urbium medio in ejus urbes &
8 וְעָרָיו בְּתוֹךְ עָרִים נַחֲרָבוֹת תִּהְיֶינָה׃ וְיָדְעוּ כִּי־
omnes attriti fuerint & ,Ægypto in ignem *me dando in* ,Dominus *ego*
אֲנִי יְהוָה בְּתִתִּי־אֵשׁ בְּמִצְרַיִם וְנִשְׁבְּרוּ כָּל־
navibꝰ in *meis faciebꝰ* à nuntii egredientur illa die In .ejꝰ auxiliatores
9 עֹזְרֶיהָ׃ בַּיּוֹם הַהוּא יֵצְאוּ מַלְאָכִים מִלְּפָנַי בַּצִּים
diẽ ſecundũ eis in *vacillatio* erit & : confidenter Chus terrendum ad
לְהַחֲרִיד אֶת־כּוּשׁ בֶּטַח וְהָיְתָה חַלְחָלָה בָהֶם כְּיוֹם
faciã ceſſare Et : Deus Dominus dixit Sic .venit ecce quia ,Ægypti
10 מִצְרַיִם כִּי הִנֵּה בָּאָה׃ כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה וְהִשְׁבַּתִּי
.Babel regis Nebuchadreſar manum per Ægypti *turbam*
אֶת־הֲמוֹן מִצְרַיִם בְּיַד נְבוּכַדְרֶאצַּר מֶלֶךְ־בָּבֶל׃

Verſio VULG. LAT.

16 Neque erunt ultrà domui Iſrael
in confidentia, docentes iniquitatẽ,
ut fugiant,& ſequantur eos:
17 & ſcient quia ego Dñs Deꝰ. Et
factũ eſt in vigeſimo & ſeptimo
anno, in primo , in una menſis:
factũ eſt verbũ Dñi ad me, dicens ;
18 Fili hominis,Nabuchodonoſor
rex Babylonis ſervire fecit
exercitũ ſuũ ſervitute magnâ adverſꝰ
Tyrũ : omne caput decalvatũ,
& omnis humerꝰ depilatꝰ
eſt: & merces non eſt reddita ei,
neq; exercitui ejꝰ, de Tyro,pro
ſervitute quâ ſervivit mihi adverſꝰ
19 eam. Propterea hæc dicit
Dñs Deꝰ; Ecce ego dabo Nabuchodonoſor
regem Babylonis in
terra Ægypti: & accipiet multitudinẽ
ejꝰ, & deprædabitur manubias
ejꝰ, et diripiet ſpolia ejꝰ:
20 & erit merces exercitui illiꝰ, Et
operi, quo ſervivit adverſꝰ eam:
dedi ei terrã Ægypti, pro eo ꝙ
21 laboraverit mihi,ait Dñs Deꝰ.In
die illo pullulabit cornu domui
Iſrael, & tibi dabo apertũ os in
medio eorum:& ſcient quia ego
Dominus.

CAP. XXX.

1 ET factũ eſt verbũ Dñi ad me,
2 dicens ; Fili hominis,propheta,
& dic ; Hæc dicit Dñs Deus ; Ululate,
3 væ,væ diei : Quia juxtà eſt
dies, & appropinquat dies Dñi:
dies nubis, tempus Gentiũ erit.
4 Et veniet gladius in Ægyptum :
& erit pavor in Æthiopia, cùm
ceciderint vulnerati in Ægypto,
& ablata fuerit multitudo illius,
5 & deſtructa fundamenta ejus. Æthiopia,
& Libya, & Lydi, &
omne reliquũ vulgus,& Chub,et
filii terræ fœderis, cũ eis gladio
6 cadent. Hæc dicit Dñs Deus; Et
corruent fulcientes Ægyptũ, &
deſtruetur ſuperbia imperii ejus:
à turre Syenes gladio cadent in
7 ea, ait Dñs Deus exercituũ. Et
diſſipabuntur in medio terrarũ
deſolatarũ, & urbes ejus in medio
8 civitatũ deſertarũ erunt. Et
ſcient quia ego Dñs:cùm dedero
ignẽ in Ægypto,& attriti fuerint
9 omnes auxiliatores ejus. In
die illa egredientur nuntii à facie
mea in trieribus , ad contendã
Æthiopiæ confidentiã, &
erit pavor in eis in die Ægypti,
10 quia abſque dubio veniet. Hæc
dicit Dominus Deus ; Ceſſare
faciam multitudinem Ægypti in
manu Nabuchodonoſor regis Babylonis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

16 Καὶ οὐκέτι ἔσονται τῷ οἴκῳ Ἰσραὴλ εἰς ἐλπίδα
(β) ἀναμιμνήσκουσαν ἀνομίαν, ἐν τῷ
ἀκολουθῆσαι αὐτοὺς ὀπίσω αὐτῶν, καὶ γνώσονται
17 ὅτι ἐγώ εἰμι (γ) κύριος. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ
ἑβδόμῳ καὶ εἰκοστῷ ἔτει, μιᾷ τοῦ μηνὸς τοῦ
πρώτου, ἐγένετο λόγος κυρίου πρός με, λέγων,
18 Υἱὲ ἀνθρώπου, Ναβουχοδονόσορ βασιλεὺς
Βαβυλῶνος κατεδουλώσατο τὴν δύναμιν
αὐτοῦ δουλείᾳ μεγάλῃ ἐπὶ (δ) Τύρου, πᾶσα
κεφαλὴ (ε) φαλακρά, καὶ πᾶς ὦμος μαδῶν·
καὶ μισθὸς οὐκ ἐγενήθη αὐτῷ καὶ τῇ δυνάμει
αὐτοῦ ἐπὶ Τύρον, καὶ τῆς δουλείας ἧς (ζ) ἐδούλευσαν
19 ἐπ' αὐτήν. Τάδε λέγει κύριος κύριος, Ἰδοὺ
ἐγὼ δίδωμι τῷ Ναβουχοδονόσορ βασιλεῖ
Βαβυλῶνος γῆν Αἰγύπτου, (η) καὶ προνομεύσει
τὴν προνομὴν αὐτῆς, καὶ σκυλεύσει τὰ σκῦλα
αὐτῆς· καὶ ἔσται μισθὸς τῇ δυνάμει αὐτοῦ,
20 Ἀντὶ τῆς (θ) λειτουργείας αὐτοῦ ἧς ἐδούλευσεν
ἐπὶ Τύρον, δέδωκα αὐτῷ γῆν (ι) Αἰγύπτου.
21 τάδε λέγει κύριος κύριος. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ
ἐκείνῃ ἀνατελεῖ κέρας παντὶ τῷ οἴκῳ Ἰσραήλ,
καὶ (κ) σοὶ δώσω στόμα ἀνεῳγμένον ἐν
μέσῳ αὐτῶν, καὶ γνώσονται ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος.

Et non erunt ultrà domui Iſrael 16
in ſpem reducentem in memoriam
iniquitatis, ut ſequantur ipſi poſt
illos : & ſcient,quia ego ſum
Dominus. Et factum eſt in ſeptimo 17
& vigeſimo anno, unâ menſis
primi,factum eſt verbum Domini
ad me,dicens ; Fili hominis,Nabuchodonoſor 18
rex Babylonis ſervire fecit exercitum ſuum
ſervitute magnâ ſuper Tyrum. Omnè
caput decalvatum, & omnis humerus
depilatus : & merces non
fuit ei, & exercitui ejus ſuper
Tyrum,(h)& ſervitutis,quâ ſervierunt
adverſùm eam. (i)Hæc 19
dicit Dominus Dominus ; Ecce
ego do Nabuchodonoſor regi Babylonis
terram Ægypti : (k) &
deprædabitur deprædationem ejus,
& ſpoliabit ſpolia ejus. Et
erit merces virtuti ejus : Pro 20
miniſterio ejus, quo ſervivit ſuper
Tyrum, dedi ei terram Ægypti.
Hæc dicit Dominus Dominus.
In die illa exorietur cornu 21
omni domui Iſrael : & tibi dabo
os apertum in medio eorum : &
ſcient, quia ego ſum Dominus.

MS. A. (β) ἀναμιμνήσκουσαν ἁμαρτίαν, ἐν τῷ αὐτοὺς ἀκολουθῆσαι ὀπίσω τῶν καρδιῶν αὐτῶν, (γ) κύριος ὁ θεός. (δ) Τύρον, (ε) φαλάκρωμα, (ζ) ἐδούλωσεν αὐτήν. Διὰ τοῦτο τάδε λέγει ἀδωναῒ κύριος, Ἰδοὺ δίδωμι (η) καὶ λήμψεται τὸ πλῆθος αὐτῆς, καὶ προνομεύσει (θ) δουλείας ἧς (ι) Αἰγύπτου, ὅσα ἐποίησάν μοι. τάδε λέγει ἀδωναῒ κύριος. (κ) δώσω σοι

ΚΕΦ. λʹ.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρός με, λέγων,
2 Υἱὲ ἀνθρώπου, προφήτευσον, καὶ εἰπόν,
3 Τάδε λέγει κύριος, Ὢ ὢ (α) ἡμέρα, Ὅτι
ἐγγὺς ἡμέρα τοῦ κυρίου, ἡμέρα νεφέλης, (β)
4 πέρας ἐθνῶν ἔσται· Καὶ ἥξει (*) μάχαιρα ἐπ'
(γ) Αἰγυπτίους, καὶ ἔσται ταραχὴ ἐν (δ) γῇ
Αἰθιοπίᾳ, καὶ (ε) συμπεσοῦνται τετραυματισμένοι
ἐν Αἰγύπτῳ, (ζ) καὶ συμπεσεῖται τὰ
5 θεμέλια αὐτῆς. Πέρσαι, καὶ Κρῆτες, καὶ Λυδοί,
καὶ Λίβυες, καὶ πάντες οἱ ἐπίμικτοι (η), καὶ τῶν
υἱῶν τῆς διαθήκης μου, (θ) μαχαίρᾳ πεσοῦνται
6 ἐν αὐτῇ. Καὶ πεσοῦνται τὰ ἀντιστηρίγματα Αἰγύπτου,
καὶ καταβήσεται ἡ ὕβρις τῆς ἰσχύος αὐτῆς
ἀπὸ Μαγδωλοῦ ἕως (ι) Συήνης, μαχαίρᾳ πεσοῦνται
7 ἐν αὐτῇ, λέγει κύριος. Καὶ ἐρημωθήσονται
ἐν μέσῳ χωρῶν (κ) ἠρημωμένων, καὶ αἱ
πόλεις αὐτῶν ἐν μέσῳ πόλεων ἠρημωμένων
8 ἔσονται. Καὶ γνώσονται (λ) ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος,
ὅταν δῶ πῦρ ἐπ' Αἴγυπτον, καὶ (μ) συντριβῶσι
9 πάντες οἱ βοηθοῦντες αὐτῇ. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ
ἐκείνῃ ἐξελεύσονται ἄγγελοι σπεύδοντες ἀφανίσαι
τὴν Αἰθιοπίαν, καὶ ἔσται ταραχὴ ἐν (ν) αὐτοῖς
ἐν τῇ ἡμέρᾳ Αἰγύπτου, ὅτι ἰδοὺ ἥκει.
10 Τάδε λέγει (ξ) κύριος κύριος, Καὶ ἀπολῶ
πλῆθος Αἰγυπτίων διὰ χειρὸς Ναβουχοδονόσορ
βασιλέως Βαβυλῶνος,

CAP. XXX.

ET factus eſt ſermo Domini 1
ad me,dicens ; Fili hominis, vaticinare, 2
& dic ; Hæc dicit Dominus ; 3
(a)O,ô dies : Quoniam
juxtà eſt dies Domini, (b) dies
nubis:(c)finis gentium erit.Et veniet 4
gladius ſuper Ægyptios: &
erit conturbatio in terra Æthiopia :
& cadent vulnerati in (d)
Ægypto,& concident fundamenta
ejus : Perſæ, & Cretenſes,& 5
Lydi, & (e) Libyes, & omnes
commiſti, & de filiis teſtamenti
mei gladio cadent in (f)ea. Et 6
cadent ſuſtentacula Ægypti: &
deſcendet contumelia fortitudinis
ejus à Magdolo uſq; ad Syenem:
gladio cadent in ea, dicit Dominus :
Et deſolabitur in medio 7
regionum deſolatarum : & civitates
(g) eorum in medio urbium
deſertarum erunt : Et ſcient, 8
quoniam ego ſum Dominus :
quando dedero ignem ſuper Ægyptũ,
& contriti fuerint omnes
qui auxiliantur ei. In die illa egredientur 9
(h)nuntii feſtinantes
diſperdere (i) Æthiopiam: & erit
conturbatio in eis in die Ægypti:quia
ecce venit.Hæc dicit Dominꝰ 10
Dominus ; Et diſperdã multitudinẽ
Ægyptiorum per manũ
Nabuchodonoſor regis Babylonis,

MS. A. (α) ἡ ἡμέρα, Ὅτι ἐγγὺς ἡ ἡμέρα (β) καιρὸς πέρας (*) ἡ μάχαιρα (γ) Αἴγυπτον, (δ) τῇ Αἰθιοπίᾳ, (ε) πεσοῦνται (ζ) καὶ λήμψονται τὸ πλῆθος αὐτῆς, καὶ (η) ἐπ' αὐτήν, καὶ ἀπὸ τῶν υἱῶν (θ) ἐν αὐτῇ μαχαίρᾳ πεσοῦνται. (ι) Σουήνης, (κ) ἠφανισμένων, (λ) πάντες ὅτι (μ) συντριβήσονται (ν) Αἰγύπτῳ ἐν τῇ (ξ) ἀδωναῒ κύριος, Καὶ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 וְלָא יְהוֹן עוֹד לְבֵית יִשְׂרָאֵל לְאִתְרְחָצָא עֲלֵיהוֹן לְאַדְכָּרָא חוֹבִין בְּאַפְּנָיוּתְהוֹן בַּתְרֵיהוֹן
17 וְיִדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ אֱלֹהִים׃ וַהֲוָה בְּעַסְרִין וּשְׁבַע שְׁנִין בְּקַדְמָאָה בְּחַד לְיַרְחָא הֲוָה פִּתְגָם
18 נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי לְמֵימַר׃ בַּר אָדָם נְבוּכַדְרֶאצַּר מַלְכָּא דְבָבֶל אַפְלַח יַת
מַשִׁרְיָתֵיהּ פּוּלְחָן רַב עַל צוֹר כָּל סְעַר רֵישׁ נְתַר וְכָל כְּתַף אִתְמְרַט וְאַגַר לָא הֲוָה לֵיהּ
19 וּלְמַשִׁרְיָתֵיהּ מִצּוֹר עַל פּוּלְחָנָא דְאַפְלַח עֲלַהּ׃ בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים הָא אֲנָא יָהֵיב
לִנְבוּכַדְרֶאצַּר מַלְכָּא דְבָבֶל יַת אַרְעָא דְמִצְרַיִם וְיִשְׁבֵּי אִתְרְגוּשְׁתַּהּ וְיִבּוֹז בִּזַּהּ וְיַעְדֵּי
20 עֲדָאַהּ וּתְהֵי אֲגַר לְמַשִׁרְיָתֵיהּ׃ אַגְרֵיהּ דְאַפְלַח בֵּיהּ יְהַבִית לֵיהּ יַת אַרְעָא דְמִצְרַיִם
21 דְּחַבוּ קֳדָמַי לְאִתְפְּרַע מִנְּהוֹן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים׃ בְּיוֹמָא הַהוּא אַיְתֵי פּוּרְקָן לְבֵית יִשְׂרָאֵל
וְלָךְ אֶתֵּן מִפְתַּח פּוּמָא בִּנְבוּאָה בֵּינֵיהוֹן וְיִדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ׃

ל

1 וַהֲוָה פִתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי לְמֵימַר׃ בַּר אָדָם אִתְנַבֵּי וְתֵימַר כִּדְנַן אֲמַר יְיָ 2
3 אֱלֹהִים אַיְלִילוּ וְאֵמְרוּ וַי מִן קֳדָם יוֹמָא׃ אֲרֵי קָרִיב יוֹמָא וְקָרִיב יוֹמָא דַעֲתִיד לְמֵיתֵי
4 מִן קֳדָם יְיָ יוֹם עֲנָן זִיעַ עִדָּן תְּבַר עַמְמַיָּא יְהֵי׃ וְתָחוֹל חַרְבָּא בְּמִצְרַיִם וִיהֵי זִיעַ בְּכוּשׁ כַּד
5 יִתְרְמוֹן קְטִילִין בְּמִצְרַיִם וְיִשְׁבּוֹן אִתְרְגוּשְׁתַּהּ וְיִתְפַּגְרוּן אוּשָׁהָא׃ כּוּשָׁאֵי וּפוּטָאֵי וְלוּדָאֵי
6 וְכָל סוּמְכְוָתָא וְכוּב וּבְנֵי אַרְעָא קְיָמָא עִמְּהוֹן בְּחַרְבָּא יִתְקַטְלוּן׃ כִּדְנָן אֲמַר יְיָ
וְיִתְקַטְלוּן סָעֲדֵי מִצְרַיִם וְיִבְטֵיל יְקַר תּוּקְפַהּ מִמִּגְדּוֹל סְוֵנֵה בְּחַרְבָּא יִתְקַטְלוּן בַּהּ אֲמַר
7 8 יְיָ אֱלֹהִים׃ וְיִצְדּוּן בְּגוֹ מְדִינָן דְּצַדְיָן וְקִרְוֹהִי בְּגוֹ קִרְוִין דַּהֲוָאָה חָרְבָן יְהֶוְיָן׃ וְיִדְעוּן
9 אֲרֵי אֲנָא יְיָ כַּד אֶתֵּן עַמְמַיָּא דְתַקִּיפִין כְּאֶשָּׁתָא עַל מִצְרַיִם וְיִתַּבְּרוּן כָּל סָעֲדָהָא׃ בְּעִדָּנָא
הַהִיא יִפְּקוּן אִזְגַּדִּין מִן קֳדָמַי בְּלִגְיוֹנִין לַאֲזָעָא יַת כּוּשׁ דְשַׁרְיָא לְרוֹחְצָן וִיהֵי זִיעָא בְהוֹן
10 כְּיוֹם מִצְרַיִם אֲרֵי הָא אָתְיָא׃ כִּדְנָן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים וַאֲבַטֵּל יַת אִתְרְגוּשַׁת מִצְרַיִם בְּיַד
נְבוּכַדְנֶאצַּר מַלְכָּא דְבָבֶל׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et non erunt ultrà domui Iſrael ut confidant in eis in recordationem pecca- 16
torum, cùm declinaverint poſt eos, & ſcient quia ego Dominus Deus. Et fa- 17
ctum eſt viceſimo & ſeptimo anno, primo [*menſe,*] prima die menſis, factum
eſt verbum prophetiæ à facie Domini mecum, dicens : Fili hominis, Nabu- 18
chodonoſor rex Babylonis ſervire fecit exercitum ſuum ſervitute multa adver-
ſus Tyrum. Omnes capilli capitis defluebant, & omnis humerus depilatus
eſt ; & merces non fuit ei & exercitui ejus de Tyro, pro ſervitute qua uſus
erat adverſus eam. Propterea hæc dicit Dominus Deus : Ecce ego dabo Na- 19
buchodonoſor regi Babylonis terram Ægypti, & in captivitatem ducet mul-
titudinem ejus, & deprædabitur prædam ejus, & auferet ſpolia, & erit mer-
ces exercitui ejus. Mercedem dedi ei terram Ægypti, pro eo quòd ſervivit 20
in ea, eò quòd peccaverunt coram me, ut ultionem ſumam ab eis, ait Domi-
nus Deus. In die illa *afferam* redemptionem domui Iſrael, & tibi dabo 21
apertionem oris in prophetiam inter eos ; & ſcient quia ego Dominus.

CAP. XXX.

ET factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini mecum, dicens : Fili ho- 1
minis vaticinare & dices : Hæc dicit Dominus Deus: Ululate & dicite : Væ 2
ob diem. Quia propè eſt dies, & juxtà eſt dies qui venturus eſt à facie Domi- 3
ni, dies nubilus tremoris, tempus interitus populorum erit. Et reſidebit gla- 4
dius in Ægypto, & erit tremor in Æthiopia, cùm proſternentur interfecti in
Ægypto, & capietur multitudo ejus, & deſtruentur fundamenta ejus. Æthio- 5
pes & Lydi & Libyes & omnes qui conjuncti ſunt eis, & Cub, & filii terræ
fœderis, cum eis gladio occidentur. Hæc dicit Dominus : Et occidentur 6
ſuſtentantes Ægyptũ, & abolebitur decus roboris ejus, à turre Syenes gladio
occidentur in ea, dicit Dominus Deus. Et deſolabuntur in medio provinci- 7
arum quæ ſunt deſolatæ, & urbes ejus erunt in medio civitatum earum quæ
deſertæ ſunt. Et ſcient quia ego Dominus, cùm *dedero* populos qui fortes 8
ſunt ſicut ignis ſuper Ægyptum, & contriti fuerint omnes auxiliatores ejus.
In tempore illo egredientur nuntii à facie mea cum legionibus ad terrendam 9
Æthiopiam quæ habitat confidenter, & erit tremor in eis ſicut in die Ægypti
quia ecce venit. Hæc dicit Dominus Deus : & ceſſare faciam tumultum Ægy- 10
pti in manu Nabuchodonoſor regis Babylonis.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

16 ܘܠܐ ܢܗܘܘܢ ܬܘܒ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܠܬܘܟܠܢܐ ܘܠܡܥܗܕܢܘܬܐ ܕܥܘܠܐ. ܟܕ ܪܕܦܝܢ ܒܬܪܗܘܢ. *
17 ܘܢܕܥܘܢ. ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܐܠܗܐ. * ܘܒܫܢܬ ܥܣܪܝܢ ܘܫܒܥ. ܒܝܪܚܐ ܩܕܡܝܐ. ܒܚܕ ܒܝܪܚܐ.
18 ܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ. ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܐܫܠܝ
ܠܚܝܠܗ ܦܘܠܚܢܐ ܪܒܐ ܥܠ ܨܘܪ. ܟܠ ܪܝܫ ܩܪܝܚܐ. ܘܟܠ ܟܬܦ ܡܫܪܛܐ. ܘܐܓܪܐ
19 ܠܐ ܐܬܝܗܒ ܠܗ ܘܠܚܝܠܗ ܡܢ ܨܘܪ. ܥܠ ܦܘܠܚܢܐ ܕܐܫܠܝ ܒܗ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܡܪܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ ܝܗܒ ܐܢܐ ܠܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܢܣܒ ܩܢܝܢܗ.
20 ܘܢܒܘܙ ܒܙܬܗ. ܘܢܒܘܙ ܒܙܬܗ. ܘܬܗܘܐ ܐܓܪܐ ܠܚܝܠܗ. * ܘܚܠܦ ܦܘܠܚܢܐ ܕܦܠܚ
21 ܒܨܘܪ. ܝܗܒܬ ܠܗ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܐܠܗܐ. * ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܐܕܢܚ ܩܪܢܐ ܠܒܝܬ
ܐܝܣܪܝܠ. ܘܐܦܬܚ ܦܘܡܟ ܒܝܢܬܗܘܢ. ܘܢܕܥܘܢ. ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܐܠܗܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠ *

1 * ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ.
2 ܐܬܢܒܐ. ܘܐܡܪ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܐܠܗܐ. ܐܝܠܠܘ ܘܐܡܪܘ. ܐܘܗ ܠܝܘܡܐ ܕܩܪܝܒ ܗܘ ܝܘܡܐ.
3 * ܩܪܝܒ ܗܘ ܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܝܘܡܐ ܕܥܢܢܐ. ܘܙܒܢܐ ܕܥܡܡܐ. * ܘܬܐܬܐ ܚܪܒܐ ܥܠ ܡܨܪܝܢ.
4 ܘܢܗܘܐ ܙܘܥܐ ܒܟܘܫ. ܟܕ ܢܦܠܘܢ ܩܛܝܠܐ ܒܡܨܪܝܢ. ܘܢܣܒܘܢ ܥܘܬܪܗ. ܘܢܥܩܪܘܢ
5 ܫܬܐܣܘܗܝ. * ܟܘܫܝܐ ܘܦܘܛܝܐ ܘܠܘܒܝܐ. ܘܟܠܗ ܥܪܒܝܐ ܘܟܘܒ. ܘܒܢܝ ܐܪܥܐ ܕܩܝܡܐ
6 ܥܡܗܘܢ. ܒܚܪܒܐ ܢܦܠܘܢ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܐܠܗܐ. ܢܦܠܘܢ ܣܡܘܟܘܗ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܢܬܒܪ
7 ܚܝܠܐ ܕܥܘܫܢܗ. ܡܢ ܡܓܕܠܐ ܕܣܘܢܐ. ܒܚܪܒܐ ܢܦܠܘܢ ܒܗ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܐܠܗܐ. * ܘܢܚܪܒܘܢ
8 ܒܝܢܝ ܐܪ̈ܥܬܐ ܕܚܪܒܢ. ܘܩܘܪܝܗܘܢ ܒܝܢܝ ܩܘܪܝܐ ܚܪܒܬܐ ܢܗܘܝܢ. * ܘܢܕܥܘܢ. ܕܐܢܐ
9 ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܕܫܕܪܬ ܢܘܪܐ ܒܡܨܪܝܢ. ܘܢܬܬܒܪܘܢ ܟܠܗܘܢ ܡܥܕܪܢܘܗܝ. * ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ.
ܢܦܩܘܢ ܐܙܓܕܐ ܡܢ ܩܕܡܝ ܒܣܘܪܗܒܐ. ܠܡܚܪܒܘ ܠܟܘܫ ܕܝܬܒܐ ܠܬܘܟܠܢܐ. ܘܢܗܘܐ
10 ܒܗܘܢ ܙܘܥܐ ܒܝܘܡܗ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܗܐ ܐܬܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܐܠܗܐ. ܐܥܒܪ ܐܢܐ
ܠܥܘܬܪܗ ܕܡܨܪܝܢ. ܒܐܝܕ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ.

Et non erunt ampliùs Iſraelitis in confiden- 16
tiam & memoriam iniquitatis, nam hi ſeque-
bantur illos: & experientur me eſſe Dominũ
dominorum. Anno vigeſimo ſeptimo, menſe 17
primo, primâ menſis, fuit ad me ſermo Domi-
ni, dicendo; Fili hominis, Nebuchadnoſar 18
rex Babylonis fatigavit omnes copias ſuas
magnâ ſervitute contra Tyrum, *adeo ut* in o-
mni capite *facta ſint* calvitia, & omnis hume-
rus exhauſtus: nulla tamen merces data fuit i-
pſi neque copiis ej⁹ à Tyro, pro ſervitute quâ
fatigavit eas. Iccircò ſic ait Dominus domi- 19
norum; Ecce do Nebuchadnoſari regi Baby-
lonis terram Ægypti, ut tollat poſſeſſionem
ejus, diripiat ſpolium ej⁹, & deprædetur præ-
dam ej⁹, cedátque in mercedem copiis ipſius.
Itaque pro opera cui deſudavit in Tyro, do 20
illi terram Ægypti, ait Dominus dominorum.
Eodem illo die oriri faciam cornu Iſraelitis, 21
& aperiam os tuum inter eos; & ſcient me
eſſe Dominum dominorum.

CAP. XXX.

Rurſus fuit ad me ſermo Domini, dicendo; 1
Fili hominis, vaticinare, & dic; Sic ait Do- 2
minus dominorum; Ejulate, & dicite; Ah de
die illa, nam proxima eſt illa dies: Proxima 3
eſt dies Domini, dies nubila, & tempus gen-
tium: Quum invadet gladius Ægyptum, 4
erítque ſtupor in Æthiopia; quum corruent
occiſi in Ægypto, & diripient divitias ejus, &
evellent fundamenta ejus: Æthiopes, Putæi, 5
& Lybii, tota Arabia, & Cubæi, atque terri-
genæ, cum quibus fœdere *conjuncti ſunt*, gla-
dio corruent. Sic ait Dominus dominorum; 6
Corruẽt ſuſtentacula Ægypti, & confringetur
fortitudo roboris ejus; inde à turri Suna gla-
dio corruent in ea, dicit Domin⁹ dominorum.
Et deſolabuntur inter regiones deſolatas, & 7
urbes earum inter urbes deſolatas erunt: Et 8
cognoſcent me eſſe Dominum qui ignem di-
miſi per Ægyptum, ut attererentur omnes au-
xiliarii ejus. Eodem illo die prodibunt nuntii 9
à conſpectu meo velociter, ad vaſtandam Æ-
thiopiam quæ ſecura deſidet: erítque inter il-
los tumultus in die Ægypti; & ecce advênit.
Sic ait Dominus dominorum; Tradam divi- 10
tias Ægypti in manum Nebuchadnoſaris re-
gis Babyloniæ,

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

16 * ولا يصيرون ايضا لبيت اسرايل رجآء مذكرا للخطية * عند ما يلحقون خلفهم * ويعلمون اني
17 انا ادوناي الرب * وكان في السنة السابعة والعشرين * في اول يوم من الشهر الاول * كان قول الرب
18 الي قايلا * يا ابن الانسان * ان بختنصر ملك بابل استعبد جيشه عبودية عظيمة على صور * كل
راس للشج * وكل كتف للجراحات * ولم تكن له اجرة ولا لجيشه على صور * من العبودية التي
19 استعبدوها عليها * لاجل هذا هكذا يقول الرب الرب * ها اعطي لبختنصر ملك بابل ارض مصر *
20 وياخذ كثرها * وينهب نهبها * ويغنم غنايمها * ويصير اجرة لجيشه * عوض جيشه الذي
21 استعبدك على صور * اعطي له ارض مصر * هكذا يقول الرب الرب * في ذلك اليوم يشرق قرن
لبيت كل آل اسرايل * واعطي لك فما مفتوحا في وسطهم * ويعلمون اني انا الرب *

Ita non erunt ampliùs Iſraelis ſpes mentionem faciens iniquitatis, ſectando il- 16
los: & ſcient me eſſe Adonai Dominum.
Præterea contigit anno vigeſimo ſeptimo, 17
primâ die menſis primi, ut eſſet ſermo
Domini ad me, dicens; O fili hominis, 18
Bochtonaſſar rex Babelis depreſſit exer-
citum ſuum ſervitute magnâ propter Sur:
omne caput vulneri, & omnis humerus
plagis expoſitus eſt; nullam tamen ha-
buit ipſe mercedem neque exercitus ejus
propter Sur, pro ſervitute cui ſe ſubje-
cerunt propter eam. Propterea ſic dicit 19
Dominus Dominus; Ecce ego do Boch-
tonaſſari regi Babelis terram Ægypti;
capietque multitudinem ejus, prædabitur
prædam ejus, & diripiet ſpolia ipſius;
ut ſit mercedi exercitui ejus. Pro ſervi- 20
tute quâ preſſit exercitum ſuum propter
Sur, do illi terram Ægypti. Sic ait Do-
minus Dominus; In illa die exorietur
cornu domui totius familiæ Iſraelis, da-
boque tibi os apertum in medio eorum, &
ſcient me eſſe Dominum.

* الفصل الثلثون *

1 * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان تنبا وقل * هكذا يقول ادوناي الرب * اف اف اليوم *
2
3 * لان يوم الرب قريب * يوم سحابة يكون انتهاء الامم * ويكون السيف على المصريين * ويكون
4
5 القلق في الحبشة * ويسقطون مجروحين في مصر * وياخذ يسارها الفرس * والاقريطسيون * واللوديون *
6 واهل النوبة * وجميع المختلطين * ومن بني عهدي فيها يسقطون بالسيف * وتسقط دعايم
مصر * وينحط كبرياء قوتها * من مجدول الي اسوان يسقطون فيها بالسيف يقول ادوناي الرب *
7 * وتخرب في وسط البلدان * وتصير مدنها في وسط مدن الخراب * ويعلمون اني انا الرب * اذ اعطي
8
9 نارا على مصر * وينكسر جميع معينيها * في ذلك اليوم يخرج مخبرون مسرعين ليهلكوا الحبشة *
10 ويكون القلق فيها في يوم مصر * لانه ها هو آتي * هكذا يقول الرب الرب * اهلك كثر
المصريين بيد بختنصر ملك بابل *

CAP. XXX.

Fuit etiam ſermo Domini ad me, dicens; 1
O fili hominis, propheta & dic; Ita 2
dicit Adonai Dominus; Heu, heu dies:
Nam dies Domini proximus eſt, dies 3
nubis erit finis gentium: Eritque gladius 4
ſuper Ægyptios, & erit perturbatio in
Æthiopia, cadentq; vulnerati in Ægypto:
Tollent divitias ejus Perſæ, & Creten- 5
ſes, Lydii, & Nubienſes, omneſque com-
mixti: atque de filiis fœderis mei, in ipſa
gladio cadent: Cadent etiam fulcra 6
Ægypti, & deprimetur ſuperbia potentiæ
ipſius: à Magdol ad Aſuan cadent in
ea gladio, dicit Adonai Dominus. Et 7
vaſtabitur inter regiones, eruntque urbes
ejus inter urbes dirutas: Scientque me 8
eſſe Dominum, quum ignem dedero ſuper
Ægyptum, & confracti fuerint omnes
adjutores ejus. In illa die exibunt nun- 9
tii feſtini ad perdendam Æthiopiam:
& erit in ea perturbatio in die Ægypti,
quoniam en ipſa inſtat. Ita dicit Dominus 10
Dominus, Perdam multitudinem Ægy-
ptiorum per manum Bochtonaſſaris regis
Babelis;

יחזקאל : ל

diſperdendũ ad *adducti* gentium fortes eo cum ejꝰ populus & ,Ipſe
11 הוּא וְעַמּוֹ אִתּוֹ עָרִיצֵי גוֹיִם מוּבָאִים לְשַׁחֵת
implebunt & ,Ægyptum ſuper ſuos gladios evaginabunt & : terram
הָאָרֶץ וְהֵרִיקוּ חַרְבוֹתָם עַל־מִצְרַיִם וּמָלְאוּ אֶת־
terram vendam & ,ſiccitatem flumina dabo Et *.occiſo* terram
12 הָאָרֶץ חָלָל׃ וְנָתַתִּי יְאֹרִים חָרָבָה וּמָכַרְתִּי אֶת־הָאָרֶץ
.alienorũ manu in ejꝰ plenitudinẽ &,terram *deſolabo* & : malorũ manu in
בְּיַד־רָעִים וַהֲשִׁמֹּתִי אֶרֶץ וּמְלֹאָהּ בְּיַד־זָרִים
faciã perdere Et : Deus Dominus dixit Sic .ſum locutus Dominus Ego
13 אֲנִי יְהוָה דִּבַּרְתִּי׃ כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה וְהַאֲבַדְתִּי
Ægypti terra de *prælatus* &,Noph de idola faciã ceſſare & ,ſimulachra
גִלּוּלִים וְהִשְׁבַּתִּי אֱלִילִים מִנֹּף וְנָשִׂיא מֵאֶרֶץ־מִצְרַיִם
faciã deſolare Et .Ægypti terra in timorem dabo &;ultrà erit non
14 לֹא יִהְיֶה־עוֹד וְנָתַתִּי יִרְאָה בְּאֶרֶץ מִצְרָיִם׃ וַהֲשִׁמֹּתִי אֶת־
effundam Et .No in judicia faciam & : Sohan in ignem dabo &,Pathros
15 פַּתְרֹס וְנָתַתִּי אֵשׁ בְּצֹעַן וְעָשִׂיתִי שְׁפָטִים בְּנֹא׃ וְשָׁפַכְתִּי
.No *turbam* ſuccidam & : Ægypti robur Sin ſuper meam iram
חֲמָתִי עַל־סִין מָעוֹז מִצְרָיִם וְהִכְרַתִּי אֶת־הֲמוֹן נֹא׃
: *ſcindi ad* erit No & ,Sin dolebit dolendo,Ægypto in ignem dabo Et
16 וְנָתַתִּי אֵשׁ בְּמִצְרַיִם חוּל תָּחִיל סִין וְנֹא תִּהְיֶה לְהִבָּקֵעַ
:cadent gladio in beſeth-Pi &,Aven Juvenes *.interdiu tormina* Noph ipſi &
17 וְנֹף צָרֵי יוֹמָם׃ בַּחוּרֵי אָוֶן וּפִי־בֶסֶת בַּחֶרֶב יִפֹּלוּ
prohibuit Techaphnehes in Et .ibunt captivitatem in *ipſæ* &
18 וְהֵנָּה בַּשְּׁבִי תֵלַכְנָה׃ וּבִתְחַפְנְחֵס חָשַׂךְ
ſuperbia ea in ceſſabit & ,Ægypti vectes ibi *me frangendo in* ,dies
הַיּוֹם בְּשִׁבְרִי־שָׁם אֶת־מֹטוֹת מִצְרַיִם וְנִשְׁבַּת־בָּהּ גְּאוֹן
captivitatem in ejus *filiæ* & ,*eam* operiet nubes ipſam :ejus fortitudinis
עֻזָּהּ הִיא עָנָן יְכַסֶּנָּה וּבְנוֹתֶיהָ בַּשְּׁבִי
.Dominus *ego* quòd ſcient & : Ægypto in judicia faciam Et .ibunt
19 תֵלַכְנָה׃ וְעָשִׂיתִי שְׁפָטִים בְּמִצְרָיִם וְיָדְעוּ כִּי־אֲנִי יְהוָה׃
fuit : menſis ſeptima in , primo in ,anno undecimo in fuit Et
20 וַיְהִי בְּאַחַת עֶשְׂרֵה שָׁנָה בָּרִאשׁוֹן בְּשִׁבְעָה לַחֹדֶשׁ הָיָה
Parhoh brachium ,hominis Fili : dicendo,me ad Domini verbum
21 דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם אֶת־זְרוֹעַ פַּרְעֹה
,medicamina ponẽdũ ad,alligatũ eſt non ecce & ,confregi Ægypti regis
מֶלֶךְ־מִצְרַיִם שָׁבַרְתִּי וְהִנֵּה לֹא־חֻבְּשָׁה לָתֵת רְפֻאוֹת
.gladiũ *in* tenẽdũ ad,illud roborãdũ ad,illud alligãd i ad ,faſciã ponẽdũ ad
לָשׂוּם חִתּוּל לְחָבְשָׁהּ לְחָזְקָהּ לִתְפֹּשׂ בֶּחָרֶב׃
, Ægypti regem Parhoh ad *ego* Ecce : Deus Dominus dixit ſic Propterea
22 לָכֵן כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה הִנְנִי אֶל־פַּרְעֹה מֶלֶךְ־מִצְרַיִם
faciã cadere & : confractũ & ,fortitudinẽ ejꝰ brachia conteram &
וְשָׁבַרְתִּי אֶת־זְרֹעֹתָיו אֶת־הַחֲזָקָה וְאֶת־הַנִּשְׁבָּרֶת וְהִפַּלְתִּי
:gentes in Ægyptios faciã diſpergere Et .ejus manu de gladium
23 אֶת־הַחֶרֶב מִיָּדוֹ׃ וַהֲפִיצוֹתִי אֶת־מִצְרַיִם בַּגּוֹיִם
,Babel regis brachia confortabo Et .terras in eos ventilabo &
24 וְזֵרִיתִם בָּאֲרָצוֹת׃ וְחִזַּקְתִּי אֶת־זְרֹעוֹת מֶלֶךְ בָּבֶל
, Parhoh brachia cõfringam & :ejus manu in meũ gladium dabóque
וְנָתַתִּי אֶת־חַרְבִּי בְּיָדוֹ וְשָׁבַרְתִּי אֶת־זְרֹעוֹת פַּרְעֹה
brachia confortabo Et .*ejus facies ad* interfectus clamoribꝰ clamabit &
25 וְנָאַק נַאֲקוֹת חָלָל לְפָנָיו׃ וְהַחֲזַקְתִּי אֶת־זְרֹעוֹת
,Dominus *ego* quòd ſcient Et .concident Parhoh brachia & ,Babel regis
מֶלֶךְ בָּבֶל וּזְרֹעוֹת פַּרְעֹה תִּפֹּלְנָה וְיָדְעוּ כִּי־אֲנִי יְהוָה
eum extenderit & , Babel regis manu in meum gladium *me dando in*
בְּתִתִּי חַרְבִּי בְּיַד מֶלֶךְ־בָּבֶל וְנָטָה אוֹתָהּ
, gentes in Ægyptios faciam diſpergere Et .Ægypti terram *ad*
26 אֶל־אֶרֶץ מִצְרָיִם׃ וַהֲפִיצוֹתִי אֶת־מִצְרַיִם בַּגּוֹיִם
.Dominus *ego* quòd ſcient & : terras in eos ventilabo &
וְזֵרִיתִי אוֹתָם בָּאֲרָצוֹת וְיָדְעוּ כִּי־אֲנִי יְהוָה׃

Verſio VULG. LAT.

11 Ipſe & populꝰ ejꝰ cũ eo, fortiſſimi Gentium, adducentur ad diſperdendã terram : & evaginabunt gladios ſuos ſuper Ægyptum: & 12 implebunt terrã interfectis. Et faciam alveos fluminũ aridos, & tradã terrã in manꝰ peſſimorum: & diſſipabo terrã & plenitudinem ejꝰ manu alienorũ, ego Dñs 13 locutꝰ ſum. Hæc dicit Dñs Deꝰ; Et diſperdã ſimulachra, & ceſſare faciam idola de Memphis: & dux de terra Ægypti non erit ampliùs: & dabo terrorem in terra 14 Ægypti. Et diſperdam terrã Phathures, & dabo ignẽ in Taphnis, & faciam judicia in Alexandria. 15 Et effundam indignationẽ meam ſuper Peluſiũ robur Ægypti, & interficiam multitudinẽ Alexan- 16 driæ, Et dabo ignẽ in Ægypto: quaſi parturiens dolebit Peluſiũ, & Alexandria erit diſſipata, & in Memphis anguſtiæ quo- 17 tidianæ. Juvenes Heliopoleos & Bubaſti gladio cadent, & ipſæ 18 captivæ ducentur. Et in Taphnis nigreſcet dies, cùm contrivero ibi ſceptra Ægypti, & defecerit in ea ſuperbia potentiæ ejꝰ: ipſã nubes operiet, filiæ autẽ ejꝰ in ca- 19 ptivitatem ducentur. Et judicia faciã in Ægypto : & ſcient quia 20 ego Dñs. Et factũ eſt in undecimo anno, in primo menſe, in ſeptima menſis, factũ eſt verbũ Dñi 21 ad me, dicens; Fili hominis, brachiũ Pharaonis regis Ægypti cõfregi : & ecce non eſt obvolutũ ut reſtitueretur ei ſanitas, ut ligaretur pannis, & faſciaretur linteolis, ut recepto robore poſ- 22 ſet tenere gladiũ. Propterea hæc dicit Dñs Deꝰ; Ecce ego ad Pharaonem regẽ Ægypti, & comminuam brachiũ ejꝰ forte, ſed confractũ : & dejiciã gladiũ de ma- 23 nu ejꝰ: Et diſpergam Ægyptum in Gentibꝰ, & ventilabo eos in 24 terris. Et confortabo brachia regis Babylonis, dabóq; gladium meũ in manu ejꝰ: et confringam brachia Pharaonis, et gement gemitibꝰ interfecti coram facie ejꝰ. 25 Et confortabo brachia regis Babylonis, et brachia Pharaonis concident : et ſcient quia ego Dñs, cùm dedero gladiũ meũ in manu regis Babylonis, et extenderit eum ſuper terram Ægypti. 26 Et diſpergam Ægyptum in nationes, et ventilabo eos in terras, et ſcient quia ego Dominus.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. cum Tranſl. LAT.

11 Αὐτοῦ καὶ τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, λοιμοὶ ἀπὸ ἐθνῶν ἀπεσταλμένοι (ο) ἀπολέσαι γῆν· καὶ ἐκκενώσουσι πάντες τὰς μαχαίρας αὐτῶν ἐπ' Αἴγυπτον, καὶ πλησθήσεται (π) ἡ γῆ τραυματιῶν. 12 Καὶ δώσω τοὺς ποταμοὺς αὐτῆς ἐρήμους, καὶ (ρ) ἀπολῶ τὴν γῆν, καὶ τὸ πλήρωμα αὐτῆς ἐν χερσὶν ἀλλοτρίων, ἐγὼ κύριος (σ) λελάληκα. 13 Ὅτι τάδε (τ) λέγει κύριος κύριος, Καὶ ἀπολῶ μεγιστᾶνας ἀπὸ Μέμφεως, καὶ ἄρχοντας (υ) Μέμφεως ἐκ γῆς Αἰγύπτου, καὶ οὐκ ἔσονται 14 (φ) ἔτι. Καὶ ἀπολῶ γῆν Φαθωρῆς, καὶ δώσω πῦρ ἐπὶ Τάνιν, καὶ ποιήσω ἐκδίκησιν ἐν Διοσπόλει. 15 Καὶ ἐκχεῶ τὸν θυμόν μου ἐπὶ (χ) Σαῒν τὴν ἰσχὺν Αἰγύπτου, καὶ ἀπολῶ (ψ) τὸ πλῆθος 16 Μέμφεως. Καὶ δώσω πῦρ ἐπ' Αἴγυπτον, καὶ (ω) ταραχῇ ταραχθήσεται ἡ Συήνη, καὶ ἐν Διοσπόλει ἔσται ἔκρηγμα, καὶ διαχυθήσεται ὕ- 17 δατα. Νεανίσκοι Ἡλιουπόλεως καὶ Βουβάστου (α) ἐν μαχαίρᾳ πεσοῦνται, καὶ (β) αἱ γυναῖκες 18 ἐν αἰχμαλωσίᾳ πορεύσονται. Καὶ ἐν Τάφναις συσκοτάσει ἡ ἡμέρα, ἐν τῷ συντρῖψαί με ἐκεῖ τὰ σκῆπτρα Αἰγύπτου· καὶ ἀπολεῖται ἐκεῖ ἡ ὕβρις (") ἰσχύος αὐτῆς, καὶ (γ) ταύτην νεφέλη καλύψει, καὶ αἱ θυγατέρες αὐτῆς αἰχμάλωτοι 19 (δ) ἀρθήσονται. Καὶ ποιήσω κρίμα ἐν Αἰγύ- 20 πτῳ, καὶ γνώσονται ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἑνδεκάτῳ ἔτει, ἐν τῷ πρώτῳ μηνὶ, ἑβδόμῃ τοῦ μηνὸς, ἐγένετο λόγος 21 κυρίου πρός με, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, τοὺς βραχίονας Φαραὼ βασιλέως Αἰγύπτου συνέτριψα, καὶ ἰδοὺ οὐ κατεδέθη (ε) τοῦ δοθῆναι ἴασιν (ζ), τοῦ δοθῆναι ἐπ' αὐτὸν μάλαγμα, τοῦ 22 δοθῆναι ἰσχὺν ἐπιλαβέσθαι μαχαίρας. Διὰ τοῦτο τάδε λέγει κύριος κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπὶ Φαραὼ βασιλέα Αἰγύπτου, καὶ συντρίψω τοὺς βραχίονας αὐτοῦ τοὺς ἰσχυροὺς, καὶ τοὺς τεταμένους, (η) καὶ καταβαλῶ τὴν μάχαιραν αὐτοῦ 23 ἐκ τῆς χειρὸς αὐτοῦ, Καὶ διασπερῶ Αἴγυπτον εἰς τὰ ἔθνη, καὶ λικμήσω αὐτοὺς εἰς τὰς χώρας. 24 (θ) Καὶ κατισχύσω τοὺς βραχίονας βασιλέως Βαβυλῶνος, καὶ (ι) δώσω τὴν ῥομφαίαν μου εἰς (κ) τὴν χεῖρα αὐτοῦ, καὶ ἐπάξει αὐτὴν ἐπ' Αἴγυπτον, καὶ προνομεύσει τὴν προνομὴν αὐτῆς, καὶ 25 σκυλεύσει τὰ σκῦλα αὐτῆς. Καὶ ἐνισχύσω τοὺς βραχίονας βασιλέως Βαβυλῶνος, οἱ δὲ βραχίονες Φαραὼ πεσοῦνται. καὶ γνώσονται ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος, ἐν τῷ δοῦναι τὴν ῥομφαίαν μου εἰς χεῖρας βασιλέως Βαβυλῶνος, καὶ ἐκτε- 26 νεῖ αὐτὴν ἐπὶ γῆν Αἰγύπτου. Καὶ διασπερῶ Αἴγυπτον εἰς τὰ ἔθνη, καὶ λικμήσω αὐτοὺς εἰς τὰς χώρας, καὶ (λ) γνώσονται πάντες ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος.

*11 Ipſius, & populi ejus : peſtilentes, qui de gentibus miſſi ſunt ad perdendam terram. Et evaginabunt omnes gladios ſuos ſuper Ægyptum: & replebitur terra vulneratorum. 12 Et dabo fluvios eorum (k) deſertos: & diſperdam terrã & plenitudinem ejus, in manibus alienorum. Ego Dominus loqutꝰ ſum. 13 Quia hæc dicit Dominus Dominus; Et (l) perdam optimates de Memphis, & principes (m) Mempheos de terra Ægypti: & non erunt ultrà. 14 Et (n) diſperdam terrã Phathores, & dabo ignem ſuper Tanin : & faciã ultionẽ in (o) Dioſpoli: 15 Et effundã furorem meũ ſuper Sain robur Ægypti: & diſperdã multitudinẽ Memphe- os. 16 Et dabo ignem ſuper Ægyptũ: & conturbatione conturbabitur Syene: & in Dioſpoli erit ſciſſura, et diffundentur (p) aquæ. 17 Juvenes Heliopoleos & Bubaſti in gladio cadent: & mulieres in captivitatem abibunt: 18 Et in Taphnis tenebreſcet dies ; quando contrivero ibi ſceptra Ægypti: & peribit ibi contumelia fortitudinis ejus: & ipſã nubes operiet ; & filiæ ejus captivæ (q) auferentur. 19 Et faciam * judiciũ in Ægypto: & ſcient, quoniã ego ſum Dominꝰ. 20 Et factũ eſt in undecimo anno, in primo menſe, ſeptimâ menſis, factũ eſt verbũ Domini ad me, dicens; 21 Fili hominis, brachia Pharaonis regis Ægypti contrivi : neq; ecce (r) deprecatus eſt, ut daretur medela, ut daretur ſuper eum malagma, (ſ) ut daretur robur ad tenendũ gladium. 22 Propterea hæc dicit Dominꝰ Dominꝰ ; Ecce ego ſuper Pharaonẽ regẽ Ægypti: & conterã brachia ejꝰ fortia, & (t) extenta: & dejiciã gladiũ ejꝰ de manu ejus: 23 Et diſſeminabo Ægyptũ in gentes, & ventilabo eos in terras. 24 Et confortabo brachia regis Babylonis: & dabo gladium meũ in manu ejus : & inducet eum ſuper Ægyptũ; & populabitur prædã ejus, & ſpoliabit ſpolia illiꝰ. 25 Et confortabo brachia regis Babylonis: brachia autẽ Pharaonis cadent. Et ſcient, quia ego ſũ Dominꝰ; cùm dedero gladiũ meum in manus regis Babylonis. Et (u) extendet eum ſuper terram Ægypti : 26 Et diſſeminabo Ægyptum in gentes, & ventilabo eos in terras. Et ſcient omnes, quia ego ſum Dominus.*

MS. A. (ο) ἀφανίσαι αὐτήν· (π) τραυματιῶν ἡ γῆ. (ρ) ἀποδώσομαι τὴν γῆν ἐν χειρὶ πονηρῶν, καὶ ἀπολῶ τὴν γῆν αὐτοῦ σὺν τῷ πληρώματι αὐτοῦ (σ) ἐλάλησα. (τ) λέγει ἀδωναῒ κύριος, Καὶ ἀπολῶ βδελύγματα, καὶ καταπαύσω μεγιστᾶνας (υ) Τάνεως (φ) οὐκέτι. Καὶ δώσω φόβον ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, καὶ ἀφανιῶ γῆν Παθουρῆς, καὶ (χ) Τάνιν, (ψ) πλῆθος (ω) ἀπολεῖται Συήνη, (α) μαχαίρᾳ (β) αἱ πόλεις αἰχμαλωτισθήσονται. Καὶ ἐν (") τῆς ἰσχύος (γ) αὐτῆς (δ) ἀχθήσονται. (ε) μου τὴν (ζ) ἐπ' αὐτὸν, τοῦ δοθῆναι μάλαγμα, (η) καὶ τοὺς συντριβομένους, καὶ (θ) Κατισχύσω (ι) θήσω (κ) τὰς χεῖρας αὐτοῦ, (λ) ἐπιγνώσονται πάντες οἱ Αἰγύπτιοι ὅτι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 הוּא וְעַמֵּיהּ עִמֵּיהּ תַּקִּיפֵי עַמְמַיָּא אֶתֵּן לְחַבָּלָא אַרְעָא וְיִשְׁלְפוּן סַיְפֵיהוֹן עַל מִצְרַיִם
12 וְיִמְלוֹן יַת אַרְעָא קְטִילִין׃ וְאֶתֵּן נַהֲרֵיהוֹן יַבֶּשְׁתָּא וְאֶמְסַר יַת אַרְעָא בְּיַד מַבְאִישִׁין
13 וְאַצְדֵּי אַרְעָא וּמְלָהָא בְּיַד רַשִּׁיעִין אֲנָא יְיָ גְּזָרִית בְּמֵימְרִי׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים וְאֵבֵיד
דְּפָלְחִין לְטַעֲוָתָא וַאֲשֵׁיצֵי דְּפָלְחִין לְצַלְמָנַיָּא מִמֹּפֶס וּמַלְכָּא מֵאַרְעָא דְמִצְרַיִם לָא יְהֵי
14 עוֹד וְאֶתֵּן דַּחְלָא בְּמִצְרַיִם׃ וְאַצְדֵּי יַת פַּתְרוֹס וְאַיְתֵי עַמָּא דְתַקִּיפִין כְּאֶשָּׁתָא עַל טָאנֵיס
15 וְאַעְבֵּיד פּוּרְעֲנוּת דִּינִין בְּאֲלַכְסַנְדְּרִיָא׃ וְאֶשְׁפּוֹךְ חֵימְתִי עַל סִין תְּקוֹף מִצְרַיִם וַאֲשֵׁיצֵי
16 יַת אִתְרְגוּשַׁת אֲלַכְסַנְדְּרִיָא׃ וְאַיְתֵי עַמְמַיָּא דְתַקִּיפִין כְּאֶשָּׁתָא בְּמִצְרַיִם מְזָע תְּזוּעַ
17 סִין וַאֲלַכְסַנְדְּרִיָא תְּהֵי מִתַּרְעָא מִשּׁוּר וּמֹפֵיס בַּעֲלֵי דְבָבוּ יַקְפוּנַהּ יוֹם יוֹם׃ עוּלֵימֵי אָוֶן
18 וּפִיבֶסֶת בְּחַרְבָּא יִתְקַטְלוּן וּפָלְחֵיהוֹן בְּשִׁבְיָא יְהָכוּן׃ וְעַל תַּחְפַּנְחֵס אֵיתֵי חֲשׁוֹךְ
בִּימָם כַּד אֶתְבַּר תַּמָּן יַת תְּקוֹף מִצְרַיִם וְיִבְטֵל בַּהּ יְקַר תּוֹקְפַהּ מֶלֶךְ בְּמַשְׁרְיָתֵיהּ
19 יַחְפְּנַהּ כַּעֲנָנָא דְסָלִיק וְחָפֵי יַת אַרְעָא וְיָתְבֵי כַפְרָנַהָא בְּשִׁבְיָא יְהָכוּן׃ וְאַעְבֵּיד
20 פּוּרְעָנוּת דִּינִין בְּמִצְרַיִם וְיִדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ׃ וַהֲוָה בְּחֲדָא עַסְרֵי שְׁנִין בְּקַדְמָאָה
21 בְּשִׁבְעָא לְיַרְחָא הֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי לְמֵימַר׃ בַּר אָדָם יַת תְּקוֹף פַּרְעֹה
מַלְכָּא דְמִצְרַיִם תַּבְרִית וְהָא לָא מִתַּקְּפָא לְאִתַּסָּאָה לְמִתַּן עֵיצָה לְמֶחְכַּם לְאִתַּקָּפָא
22 לְמֵיחַד מַלְכוּ׃ בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים הָא אֲנָא שָׁלַח רוּגְזִי עַל פַּרְעֹה מַלְכָּא דְמִצְרַיִם
וְאֶתְבַּר יַת סַעֲדוֹהִי וְיַת שִׁלְטוֹנוֹהִי תַּקִּיפַיָּא דִּבְהוֹן הוּא תָבַר יַת מַלְכְוָתָא וְאַרְמֵי יַת
23 24 תּוּקְפָּא מִנֵּיהּ׃ וְאַגְלֵי יַת מִצְרָאֵי בֵּינֵי עַמְמַיָּא וְאֲבַדְּרִנּוּן בִּמְדִינָתָא׃ וְאַתְקֵיף יַת מַלְכוּת
מַלְכָּא דְבָבֶל וְאֶתֵּן יַת תּוּקְפִּי בִּידֵיהּ וְאֶתְבַּר יַת תְּקוֹף פַּרְעֹה וְיִנְהֵם נְהוֹם מְטַעֲנֵי חֶרֶב
25 קֳדָמוֹהִי׃ וְאַתְקֵיף יַת מַלְכוּת מַלְכָּא דְבָבֶל וּמַלְכוּת פַּרְעֹה תִּבְטֵיל וְיִדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ
26 כַּד אֶתֵּן תּוּקְפִּי בְּיַד מַלְכָּא דְבָבֶל וְיִתְפְּרַע פּוּרְעֲנוּת מִן אַרְעָא דְמִצְרַיִם׃ וְאַגְלֵי יַת
מִצְרָאֵי לְבֵינֵי עַמְמַיָּא וַאֲבַדַּר יַתְהוֹן בִּמְדִינָתָא וְיִדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

11 *Ipſum* & *populum* ejus cum eo, fortes populorum *dabo* ad diſperdendam terram, & evaginabunt gladios ſuos ſuper Ægyptum, & implebunt terram interfectis. 12 Et dabo flumina eorum in ſiccum, & tradam terram in manum malignantium, & deſtruam terram & plenitudinem ejus in manu impiorum : ego Dominus decrevi in verbo meo. 13 Hæc dicit Dominus Deus: Et perdam colentes idola, & conſumã colentes ſimulachra de Memphis, & rex ex terra Ægypti non erit amplius: & dabo timorem in *Ægypto*. 14 Et deſolabo Phatures, & adducam populos qui fortes ſunt ſicut ignis, ſuper Tanes, & faciam ultionem judiciorum in Alexandriam. 15 Et effundam indignationem meam ſuper Peluſium robur Ægypti, & diſperdam multitudinem Alexandriæ. 16 Et *adducam* populos qui fortes ſunt ſicut ignis, ſup Ægyptũ; contremiſcens contremiſcet Peluſium, & Alexandria muris ſubruetur, & Memphim circundabunt inimici quotidie. 17 Juvenes Heliopoleos & Bubaſti gladio occidentur, & ſervientes eis in captivitatem ibunt. 18 Et in Taphnim tenebras adducam interdiu, cùm contrivero ibi fortitudinem Ægyptiorum, & ceſſaverit in ea gloria fortitudinis ejus. Rex cum exercitu ſuo operiet eam ſicut nubes quæ aſcendit & operit terrã ; & habitatores villarum ejus in captivitatem ibunt. 19 Et faciam ultionem judiciorum in Ægypto, & ſcient quia ego Dominus. 20 Et factum eſt anno undecimo, primo menſe, ſeptima menſis, factus eſt ſermo prophetiæ à facie Domini mecum, dicens : 21 Fili hominis, fortitudinem Pharaonis regis Ægypti, confregi, & ecce non confirmabitur ut ſanetur, ut det conſilium quò ſapienter agat, ut roboretur ad regnum tenendum. 22 Propterea hæc dicit Dominus Deus : Ecce ego mitto furorem meum ſuper Pharaonem regem Ægypti et conteram auxiliatores ejus, et principes ejus fortiſſimos quibus ille regna confregit ; et projiciam fortitudinem ab eo. 23 Et tranſmigrare faciam Ægyptios inter populos, et diſpergam eos per provincias. 24 Et roborabo regnum regis Babylonis, et dabo fortitudinem meam in manum ejus, et conteram fortitudinem Pharaonis. Et gemet gemitu eorum qui confoſſi ſunt gladio coram eo. 25 Et roborabo regnum regis Babylonis, et regnum Pharaonis ceſſabit ; et ſcient quia ego Dominus, cùm dedero fortitudinem meam in manum regis Babylonis, et ultus fuerit ultionem de terra Ægypti. 26 Ac demigrare faciam Ægyptios inter populos, et diſpergam eos per provincias, et ſcient quia ego Dominus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܘ ܘܥܫܝܢܐ ܕܥܡܗ. ܕܐܬܝܢ ܠܡܚܪܒܘܬܗ ܠܐܪܥܐ. ܘܢܫܠܦܘܢ ܣܦܣܝܪܝܗܘܢ ܥܠ ܡܨܪܝܢ. 11
ܘܢܡܠܘܢܗ ܠܐܪܥܐ ܩܛܝܠܐ. * ܘܐܥܒܕ ܢܗܪܘܬܐ ܚܪܒܐ. ܘܐܫܠܡܝܗ ܠܐܪܥܐ ܘܡܠܝܗ 12
ܒܐܝܕܐ ܕܢܘܟܪܝܐ. ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܡܠܠܬ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ. ܘܐܘܒܕ ܐܢܐ ܦܬܟܪܐ. ܘܐܒܛܠ 13
ܐܢܐ ܕܚܠܬܐ ܡܢ ܡܦܣ. ܘܪܫܐ ܠܐ ܢܗܘܐ ܬܘܒ ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܘܐܚܪܒܝܗ ܠܐܪܥܐ 14
ܕܦܬܪܘܣ. ܘܐܫܕܪ ܢܘܪܐ ܒܨܘܥܢ. ܘܐܥܒܕ ܕܝܢܐ ܒܢܘ. * ܘܐܫܘܕ ܚܡܬܝ ܥܠ ܣܝܢ 15
ܥܘܫܢܗ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܐܘܒܕ ܥܘܬܪܗ ܕܢܘ. * ܘܐܫܕܪ ܢܘܪܐ ܒܡܨܪܝܢ. ܘܬܬܙܝܥ ܣܝܢ 16
ܘܢܘ ܬܬܒܙܥ. ܘܡܦܣ ܬܗܘܐ ܠܚܘܪܒܐ. * ܘܐܝܟ ܡܝܐ ܢܗܘܘܢ ܥܠܝܡܐ ܕܡܦܝܒܣܬ. 17
ܒܣܝܦܐ ܢܦܠܘܢ. ܘܒܫܒܝܐ ܢܐܙܠܘܢ. * ܘܒܬܚܦܢܚܣ ܢܚܫܘܟ ܝܘܡܐ. ܟܕ ܐܬܒܪ ܬܡܢ 18
ܫܒܛܗ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܢܒܛܠ ܡܢܗ ܫܘܒܗܪܐ ܕܥܘܫܢܗ. ܘܢܟܣܝܗ ܥܢܢܐ. ܘܒܢܬܗ
ܒܫܒܝܐ ܢܐܙܠܢ. * ܘܐܥܒܕ ܕܝܢܐ ܒܡܨܪܝܢ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܒܫܢܬ ܚܕܥܣܪܐ. 19 20
ܒܫܒܥܐ ܒܝܪܚܐ ܩܕܡܝܐ. ܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ. ܕܪܥܗ 21
ܕܦܪܥܘܢ ܡܠܟܐ ܕܡܨܪܝܢ ܬܒܪܬ. ܘܠܐ ܡܬܚܒܫ ܕܢܗܘܐ ܠܗ ܐܣܝܘܬܐ. ܘܠܐ ܢܬܝܗܒܘܢ
ܠܗܘܢ ܡܠܓܡܐ. ܘܠܐ ܢܬܚܒܫ ܘܠܐ ܢܬܐܣܐ. ܕܢܐܚܘܕ ܣܝܦܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ 22
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܥܠ ܦܪܥܘܢ ܡܠܟܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܐܬܒܪ ܕܪܥܘܗܝ ܥܫܝܢܐ. ܘܐܪܡܐ
ܣܝܦܐ ܡܢ ܐܝܕܘܗܝ. * ܘܐܒܕܪܝܗ ܠܡܨܪܝܢ ܒܥܡܡܐ. ܘܐܙܪܐ ܐܢܘܢ ܒܡܕܝܢܬܐ. * ܘܐܚܣܢ 23 24
ܕܪܥܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܐܬܠ ܣܝܦܝ ܒܐܝܕܘܗܝ. ܘܢܦܣܘܩ ܕܪܥܘܗܝ ܕܦܪܥܘܢ.
ܘܢܬܐܢܚ ܐܢܚܬܐ ܕܩܛܝܠܐ ܩܕܡܘܗܝ. * ܘܐܚܣܢ ܕܪܥܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܕܪܥܘܗܝ 25
ܕܦܪܥܘܢ ܢܦܠܢ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܟܕ ܐܬܠ ܣܝܦܝ ܒܐܝܕܘܗܝ ܕܡܠܟܐ
ܕܒܒܠ. ܘܢܫܡܛܝܗ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܘܐܒܕܪܝܗ ܠܡܨܪܝܢ ܒܥܡܡܐ. ܘܐܙܪܐ ܐܢܘܢ 26
ܒܡܕܝܢܬܐ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ.

* Ipſius & robuſtorum qui cum ipſo erunt, qui 11 venturi ſunt ad vaſtandam terram, & exerentes gladios ſuos contra Ægyptum, repleturi ſunt terram confoſſis. Fluvios redigam ad 12 corruptionem, tradámque terram univerſam in manum exterorum : ego Dominus locutus ſum. Sic ait Dominus dominorum ; Perdam 13 idola, & abolebo deos è Mephes; & non manebit ampliùs princeps in terra Ægypti : Delebo 14 terram Pathros, dimittā ignem in Soanem, & exercebo judicium in No : Effundam 15 iram meam ſuper Sin robur Ægypti, & perdam opulentiam No : Dimittam ignem 16 in Ægyptum, conturbabitur Sin, No diſrumpetur, & Mephes abibit in ruinam. Aquæ 17 ſimiles erunt juvenes Mephibeſeth, gladio cadent, & in captivitatē abibunt. In Tahphis 18 obtenebreſcet dies, quum ibi fregero ſcipionem Ægypti, & deſierit ex ea faſtus roboris ejus, texerit illam nubes, & filiæ ejus abierint in captivitatem. Denique exercebo ju- 19 dicium in Ægyptum, & experientur me eſſe Dominum. Anno undecimo, ſeptimâ men- 20 ſis primi, fuit ad me ſermo Domini, dicendo; Fili hominis, brachium Pharaonis regis Ægy- 21 pti confregi, & non alligabitur ut ſit ei curatio, non apponetur illi malagma, non obligabitur, neque ſanabitur ut gladium tenere *poſſit*. Idcircò ſic ait Dominus dominorum ; 22 Ecce me contra Pharaonem regem Ægypti, et frangam brachia ejus robuſta, dejiciámque gladium è manibus ejus : Diſſipabo Ægy- 23 ptios inter gentes, & diſpergā eos per urbes. Confirmabo autem brachia regis Babyloniæ, 24 dabóque gladium meum in manus ejus, ut præcîdat brachia Pharaonis, & gemat coram eo gemitibus occiſorum. Confirmabo in- 25 quam, brachia regis Babyloniæ, brachia verò Pharaonis concident : & cognoſcent me eſſe Dominum, quum dedero gladium meum in man' regis Babyloniæ, & ſtrinxerit eum contra terram Ægypti : Et diſſipabo Ægyptios 26 inter gentes, & diſperdam eos per urbes ; & experientur me eſſe Dominum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وشعبه مفسدون من الامم * مرسلون ليبيدوها * ويسلّون جميعهم سيوفهم على مصر * 11
12 ويملي الارض من الجرحا * واجعل انهارهم مقفرات * واهلك الارض وكمالها بيد الغرباء انا
13 الرب تكلمت * لان هكذا يقول الرب الرب * واهلك العظماء من منف * والرؤساء من ارض
14 مصر * ولا يكونون بعد * وابيد ارض فاتوريس * واعطي نارا على صان * واصنع انتقاما
15 16 في مدينة المشتري * واسكب غضبي على صاين قوة مصر * واهلك كثرة منف * واعطي
17 نارا على مصر * وتهلك صان * وتصير الثلمة في مدينة المشتري * وتتفجر المياه * وشبان
18 مدينة الشمس وبسطة بالسيف يسقطون * والنساء في السبي يذهبن * وفي طفناص يظلم النهار *
عند ما اكسر هناك مساكن مصر * ويبيد هناك كبرياء قوتها * ويغشاها السحابة *
19 20 وبناتها مسبيون يساقون * واصنع احكاما في مصر * ويعلمون اني انا الرب * وكان في السنة
21 الحادية عشر * في الشهر الاول * في السابع من الشهر * كان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان *
كسرت ذراعي فرعون ملك مصر * وها هو ليس يسال ليعطي الشفا * ليعطي عليه
22 مرهما * ليعطي قوة ليتناول سيفا * لاجل هذا هكذا يقول الرب الرب * ها انا على
23 فرعون * ملك مصر * فاكسر ذراعيه الرفيعتين * وارمي بسيفه من يده * وابذر
24 مصر بين الامم * واذريهم في الكور * واقوي ذراعي ملك بابل * وادفع سيفي
25 في يده * وياتي به على مصر * وينهب نهبها * ويغنم غنايمها * واقوي ذراعي ملك
بابل * وذراعا فرعون تسقطان * ويعلمون اني انا الرب * عند ما اعطي سيفي بيد
26 ملك بابل ويمده * وابذر مصر في الامم * واذريهم في البلدان * ويعلم جميع المصريين
اني انا الرب *

* *In cujus populo erunt pernicioſiſſimi gen-* 11 *tium, miſſi ad perdendam illam: hi omnes exerent gladios ſuos contra Ægyptum, replebitur terra vulneratis. Reddamque* 12 *fluvios eorum deſertos, & perdam terram univerſam per manum alienorum : ego Dominus locutus ſum. Nam ita di-* 13 *cit Dominus Dominus ; Et extinguam magnates è Menphi, & principes è terra Ægypti, ita ut non ſint ampliùs : Per-* 14 *dam terram Phathores, ignemque dabo ſuper San : & exercebo vindictam in urbem Jovis : Effundam iram meam* 15 *ſuper Sain fortitudinem Ægypti : & perdam multitudinem Menphi : Dabo* 16 *ignem ſuper Ægyptum: peribit San : fietque hiatus in urbe Jovis. Diſrum-* 17 *pentur aquæ : & juvenes urbis Solis & Baſtæ, gladio cadent : & mulieres in captivitatem abibunt. Et in* 18 *Taphnes tenebreſcet dies, quum ibi contrivero habitationes Ægypti, & perierit ibi ſuperbia potentiæ ejus, obruerit eam nubes, & filiæ ejus captivæ fuerint abductæ. Demum judicia fa-* 19 *ciam in Ægypto ; ſcientque me eſſe Dominum. Præterea contigit anno* 20 *undecimo, menſe primo, ſeptimâ menſis ; ut fieret ſermo Domini ad me, dicens ; O fili hominis, fregi brachia* 21 *Pharaonis regis Ægypti ; en tamen ipſe non poſtulat ut præbeatur ſibi medela, ut applicetur ſibi malagma, ut reſtituantur ſibi vires ad capiendum gladium. Propterea ſic ait Dominus* 22 *Dominus ; Ecce me contra Pharaonem regem Ægypti, & frangam brachia ejus excelſa, dejiciamque gladium ejus è manu ipſius : Diſſeminabo Ægyptios* 23 *inter gentes, & diſpellam eos per provincias. Brachia verò regis Babelis ro-* 24 *borabo, tradamque gladium meum in manum ipſius, ut eo invadat Ægyptum, deprædetur prædam ejus, & diripiat ſpolia ejus. Roborabo inquam, bra-* 25 *chia regis Babelis, brachia verò Pharaonis concident : & experientur me eſſe Dominum, quum dedero gladium meum in manum regis Babelis, & extenderit eum. Ita diſſeminabo Æ-* 26 *gyptum inter gentes, & diſpellam eos per regiones : ſcientque omnes Ægyptii me eſſe Dominum.*

יחזקאל : לא

CAP. XXXI. לא

fuit : mensis *una* in , tertio in , anno undecimo in ,fuit Et
1 וַיְהִי בְּאַחַת עֶשְׂרֵה שָׁנָה בַּשְׁלִישִׁי בְּאֶחָד לַחֹדֶשׁ הָיָה
ad dic hominis Fili : dicendo , me ad Domini verbum
2 דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם אֱמֹר אֶל־
es similis *quem* *Ad* : ejus *turbam* ad & , Ægypti regem Parhoh
פַּרְעֹה מֶלֶךְ־מִצְרַיִם וְאֶל־הֲמוֹנוֹ אֶל־מִי דָּמִיתָ
,fronde pulchra ,Libano in cedrus Aſſur Ecce ? tua magnitudine in
3 בְגָדְלֶךָ׃ הִנֵּה אַשּׁוּר אֶרֶז בַּלְּבָנוֹן יְפֵה עָנָף
fuit *implicata* inter & : altitudine excelſa & ,inumbrans *ſylva cædua* &
וְחֹרֶשׁ מֵצַל וּגְבַהּ קוֹמָה וּבֵין עֲבֹתִים הָיְתָה
: illam exaltavit vorago ,eam fecerunt creſcere Aquæ .ejus cacumen
4 צַמַּרְתּוֹ׃ מַיִם גִּדְּלוּהוּ תְּהוֹם רֹמְמָתְהוּ
ſuos *aquæductus* & ,ejus plantationis circuitus *vadens* ejus flumina
אֶת־נַהֲרֹתֶיהָ הֹלֵךְ סְבִיבוֹת מַטָּעָהּ וְאֶת־תְּעָלֹתֶיהָ
ejus altitudo eſt elevata Propterea .agri ligna univerſa ad miſit
5 שִׁלְחָה אֶל כָּל־עֲצֵי הַשָּׂדֶה׃ עַל־כֵּן גָּבְהָא קֹמָתוֹ
, ejus rami ſunt multiplicati Et .agri lignis omnibus præ
מִכֹּל עֲצֵי הַשָּׂדֶה וַתִּרְבֶּינָה סַרְעַפֹּתָיו
.eam mittendo in multas aquas propter , ejus rami ſunt prolongati &
וַתֶּאֱרַכְנָה פֹארֹתָו מִמַּיִם רַבִּים בְּשַׁלְּחוֹ׃
ejus ramis ſub & ,cœlorum *volatile omne* nidificaverunt ejus ramis In
6 בִּסְעַפֹּתָיו קִנְנוּ כָּל־עוֹף הַשָּׁמַיִם וְתַחַת פֹּארֹתָיו
omnes habitaverunt illius umbra in & : agri *fera omnis* genuerunt
יָלְדוּ כֹּל חַיַּת הַשָּׂדֶה וּבְצִלּוֹ יֵשְׁבוּ כֹּל
longitudine in , ſua magnitudine in pulchruit Et .multæ gentes
7 גּוֹיִם רַבִּים׃ וַיִּיף בְּגָדְלוֹ בְּאֹרֶךְ
Cedri .multas aquas *ad* ejus radix fuit quia : ſuorum ramorum
8 דָּלִיּוֹתָיו כִּי־הָיָה שָׁרְשׁוֹ אֶל־מַיִם רַבִּים׃ אֲרָזִים
ſimiles fuerunt non abietes , Dei horto in eam obſcuraverunt non
לֹא־עֲמָמֻהוּ בְּגַן־אֱלֹהִים בְּרוֹשִׁים לֹא דָמוּ
arbor Omnis .ejus rami ſicut fuerunt non caſtaneæ & , ejus *ramos* *ad*
אֶל־סְעַפֹּתָיו וְעַרְמֹנִים לֹא־הָיוּ כְּפֹארֹתָיו כָּל־עֵץ
Pulchrum .ſua pulchritudine in *eum ad* ſimilis fuit non Dei horto in
9 בְּגַן־אֱלֹהִים לֹא־דָמָה אֵלָיו בְּיָפְיוֹ׃ יָפֶה
omnes eum ſunt æmulatæ & : ejus ramorum multitudine in eum feci
עֲשִׂיתִיו בְּרֹב דָּלִיּוֹתָיו וַיְקַנְאֻהוּ כָּל־
dixit ſic Propterea .Dei horto in quæ ,Heden arbores
10 עֲצֵי־עֵדֶן אֲשֶׁר בְּגַן הָאֱלֹהִים׃ לָכֵן כֹּה אָמַר
dedit & *: ſtatura in* es ſublimatus quòd eo Pro : Deus Dominus
אֲדֹנָי יֱהוִה יַעַן אֲשֶׁר גָּבַהְתָּ בְּקוֹמָה וַיִּתֵּן
.ſua celſitudine in ejus cor eſt elevatũ & *,implicata* inter *ad* ſuã ſummitatẽ
צַמַּרְתּוֹ אֶל־בֵּין עֲבוֹתִים וְרָם לְבָבוֹ בְּגָבְהוֹ׃
; ei faciet Faciendo .gentium *Dei* manum in eum tradidi Et
11 וְאֶתְּנֵהוּ בְּיַד אֵל גּוֹיִם עָשׂוֹ יַעֲשֶׂה לוֹ
,gentium fortes ,alieni eum ſucciderunt Et .eum ejeci ejus *impietate in*
12 בְּרִשְׁעוֹ גֵּרַשְׁתִּהוּ׃ וַיִּכְרְתֻהוּ זָרִים עָרִיצֵי גוֹיִם
corruerunt vallibus cunctis in & , montes *ad* eum dimiſerunt &
וַיִּטְּשֻׁהוּ אֶל־הֶהָרִים וּבְכָל־גֵּאָיוֹת נָפְלוּ
:terræ *omnibus* univerſis in ejus rami ſunt confracti & , ejus rami
דָלִיּוֹתָיו וַתִּשָּׁבַרְנָה פֹארֹתָיו בְּכֹל אֲפִיקֵי הָאָרֶץ
.eum reliquerunt & , terræ populi omnes ejus umbra ab deſcenderunt &
וַיֵּרְדוּ מִצִּלּוֹ כָּל־עַמֵּי הָאָרֶץ וַיִּטְּשֻׁהוּ׃
ejus ramos *ad* & : cœlorum *volatile omne* habitabant ejus ruinam Super
13 עַל־מַפַּלְתּוֹ יִשְׁכְּנוּ כָּל־עוֹף הַשָּׁמַיִם וְאֶל־פֹּארֹתָיו
.agri *fera omnis* erant
הָיוּ כֹּל חַיַּת הַשָּׂדֶה׃

Verſio VULG. LAT.

CAP. XXXI.

1 ET factum eſt in anno undecimo, tertio menſe, unâ menſis, factum eſt verbum Domini ad me, 2 dicens; Fili hominis, dic Pharaoni regi Ægypti, & populo ejus; Cui ſimilis factus es in magnitu- 3 dine tua? Ecce Aſſur quaſi cedrꝰ in Libano, pulcher ramis, & frondibus nemoroſus, excelſúſque altitudine, & inter condenſas fron- 4 des elevatum eſt cacumen ejꝰ. Aquæ nutrierunt illum, abyſſꝰ exaltavit illum: flumina ejus manabant in circuitu radicum ejus, & rivos ſuos emiſit ad univerſa li- 5 gna regionis. Propterea elevata eſt altitudo ejus ſuper omnia ligna regionis: et multiplicata ſunt arbuſta ejus, & elevati ſunt rami 6 ejus præ aquis multis. Cúmque extendiſſet umbram ſuam, in ramis ejꝰ fecerunt nidos omnia volatilia cœli, & ſub frondibꝰ ejus genuerunt omnes beſtiæ ſaltuum, & ſub umbraculo illiꝰ habitabat 7 cœtus Gentium plurimarum. Erátque pulcherrimus in magnitudine ſua, & in dilatatione arbuſtorum ſuorum: erat enim radix 8 illius juxta aquas multas. Cedri non fuerunt altiores illo in paradiſo Dei, abietes non adæquaverunt ſummitatem ejus, & platani non fuerunt æquæ frondibꝰ illius: omne lignum paradiſi Dei non eſt aſſimilatum illi, & pulchritu- 9 dini ejus. Quoniam ſpecioſum feci eum, & multis, condenſíſque frondibꝰ: & æmulata ſunt eum omnia ligna voluptatis, quæ e- 10 rant in paradiſo Dei. Propterea hæc dicit Dominꝰ Deus; Pro eo quòd ſublimatꝰ eſt in altitudine, & dedit ſummitatem ſuam virentem atque condenſam, & elevatum eſt cor ejus in altitudine 11 ſua: Tradidi eum in manu fortiſſimi Gentium, faciens faciet ei: juxta impietatem ejus ejeci eum. 12 Et ſuccident eum alieni, & crudeliſſimi nationum, & projicient eum ſuper montes, & in cunctis convallibus corruent rami ejus, & confringentur arbuſta ejus in univerſis rupibus terræ: & recedent de umbraculo ejus omnes populi terræ, & relinquent eum. 13 In ruina ejus habitaverunt omnia volatilia cœli, & in ramis ejus fuerunt univerſæ beſtiæ regionis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. λα'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἑνδεκάτῳ ἔτει, ἐν τῷ τρίτῳ μηνὶ, μιᾷ τοῦ μηνὸς, ἐγένετο 2 λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, εἰπὸν πρὸς Φαραὼ βασιλέα Αἰγύπτου καὶ τῷ πλήθει αὐτοῦ, Τίνι ὡμοίωσας 3 σεαυτὸν ἐν τῷ ὕψει σου; Ἰδοὺ Ἀσσοὺρ κυπάρισσος ἐν τῷ Λιβάνῳ, καὶ καλὸς ταῖς παραφυάσι, (α) καὶ ὑψηλὸς τῷ μεγέθει, (β) εἰς 4 μέσον νεφελῶν ἐγένετο ἡ ἀρχὴ αὐτοῦ, Ὕδωρ ἐξέθρεψεν αὐτὸν, ἡ ἄβυσσος ὕψωσεν αὐτὸν, τοὺς ποταμοὺς αὐτῆς ἤγαγε κύκλῳ τῶν φυτῶν αὐτοῦ, καὶ τὰ συστήματα αὐτῆς (γ) ἐξαπέστειλεν εἰς πάντα τὰ ξύλα τοῦ 5 πεδίου. Ἕνεκεν τούτου ὑψώθη τὸ μέγεθος αὐτοῦ παρὰ πάντα τὰ ξύλα τοῦ πεδίου, καὶ ἐπλατύνθησαν οἱ κλάδοι (δ) αὐτοῦ ἀφ' ὕδατος 6 πολλοῦ. Ἐν ταῖς παραφυάσιν αὐτοῦ ἐνόσσευσαν πάντα τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ὑποκάτω τῶν κλάδων αὐτοῦ ἐγεννῶσαν πάντα τὰ θηρία τοῦ πεδίου, (ε) ἐν τῇ σκιᾷ αὐτοῦ 7 κατῴκησε πᾶν πλῆθος ἐθνῶν. Καὶ ἐγένετο καλὸς ἐν τῷ ὕψει αὐτοῦ διὰ τὸ πλῆθος τῶν κλάδων αὐτοῦ, ὅτι (ζ) ἐγενήθησαν αἱ 8 ῥίζαι αὐτοῦ εἰς ὕδωρ πολύ. (η) Καὶ κυπάρισσοι τοιαῦται ἐν τῷ παραδείσῳ τοῦ θεοῦ, (θ) καὶ αἱ πίτυες οὐχ ὅμοιαι ταῖς παραφυάσιν αὐτοῦ, καὶ ἐλάται οὐκ ἐγένοντο (ι) ὅμοιαι τοῖς κλάδοις αὐτοῦ. πᾶν ξύλον ἐν τῷ παραδείσῳ τοῦ θεοῦ οὐχ ὡμοιώθη αὐτῷ ἐν τῷ 9 κάλλει αὐτοῦ, Διὰ τὸ πλῆθος τῶν κλάδων αὐτοῦ· καὶ ἐζήλωσαν αὐτὸν τὰ ξύλα τοῦ 10 παραδείσου τῆς τρυφῆς τοῦ θεοῦ. Διατοῦτο τάδε (κ) λέγει κύριος, Ἀνθ' ὧν ἐγένου μέγας τῷ μεγέθει, καὶ ἔδωκας τὴν ἀρχήν σου εἰς μέσον (λ) νεφελῶν, καὶ εἶδον ἐν τῷ ὑψωθῆναι 11 αὐτόν· Καὶ παρέδωκα αὐτὸν εἰς χεῖρας ἄρχοντος ἐθνῶν, καὶ ἐποίησε τὴν ἀπώλειαν 12 αὐτοῦ. Καὶ (μ) ἐξωλόθρευσαν αὐτὸν ἀλλότριοι λοιμοὶ ἀπὸ ἐθνῶν, καὶ κατέβαλον αὐτὸν ἐπὶ τῶν ὀρέων· ἐν πάσαις ταῖς φάραγξιν (ν) ἔπεσον οἱ κλάδοι αὐτοῦ, καὶ συνετρίβη τὰ στελέχη αὐτοῦ ἐν παντὶ πεδίῳ τῆς γῆς, καὶ κατέβησαν ἀπὸ τῆς σκέπης αὐτῶν πάντες οἱ λαοὶ τῶν ἐθνῶν, καὶ ἠδάφισαν 13 αὐτόν. Ἐπὶ τὴν πτῶσιν αὐτοῦ ἀνεπαύσαντο πάντα τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἐπὶ τὰ στελέχη αὐτοῦ (ξ) ἐγίνοντο πάντα τὰ θηρία τοῦ ἀγροῦ,

CAP. XXXI.

1 ET factum eſt in undecimo anno, in tertio menſe, unâ menſis, factum eſt verbum Domini ad me, dicens; 2 Fili hominis, dic ad Pharaonem regem Ægypti, & multitudini ejus; Cui aſſimilâſti te in altitudine tua? 3 Ecce Aſſur cypariſſus in Libano, & pulcher (a) propaginibus, & excelſus magnitudine, in medio nubium factum eſt principium ejus: 4 Aqua nutrivit eum, abyſſus exaltavit eum, fluvios ſuos duxit per circuitum plantarum ejus, & congregationes ſuas emiſit ad omnia ligna campi. 5 Propterea elevata eſt magnitudo ejus ſuper omnia ligna campi: & dilatati ſunt rami (b) ejus ab aqua (c) multa. 6 In propaginibus ejus nidificaverunt omnia volatilia cœli: & ſub ramis ejus genuerunt omnes beſtiæ campi. In umbra illius habitavit omnis multitudo gentiũ. 7 Et erat pulcher in altitudine ſua propter multitudinem ramorum ſuorum: erant enim radices illius in aqua multa. 8 Et cypariſſi (d) tales in paradiſo Dei, & pini non ſimiles propaginibus ejus, & abietes non fuerunt ſimiles ramis ejus. Omne lignum in paradiſo Dei non eſt aſſimilatum ei in pulchritudine ejus 9 Propter multitudinem ramorum (e) ejus. Et æmulata ſunt eum ligna paradiſi delitiarum Dei. 10 Propterea hæc dicit Dominus; Pro eo quòd factus (f) es magnus magnitudine; & dediſti principium tuum in medio (g) nubium; & vidi dum ipſe exaltaretur, 11 Et tradidi eum in manus principis gentium: & (h) fecit perditionem ejus. 12 Et exterminaverunt eum alieni peſtilentes de gentibus, & dejecerunt eum ſuper montes: in cunctis convallibus corruerunt rami ejus: & contritæ ſunt ſtirpes ejus in omni campo terræ: & deſcenderunt de tegmine (i) eorum omnes populi gentium: & ſtraverunt eum. 13 In ruina eius requieverunt omnia volatilia cœli: & ſuper truncos eius fuerunt omnes beſtiæ agri;

MS. A. (α) καὶ πυκνὸς ἐν τῇ σκέπῃ, καὶ ὑψηλὸς (β) καὶ εἰς μέσον τῶν νεφελῶν (γ) ἤγαγεν κύκλῳ τῶν φυτῶν αὐτοῦ, καὶ ἐξαπέστειλεν (δ) αὐτοῦ, καὶ ὑψώθησαν αἱ παραφυάδες αὐτοῦ ἐφ' ὕδατος (ε) ὑπὸ τὴν σκιὰν (ζ) ἐγέννησαν (η) Κυπάρισσοι τοιαῦται οὐκ ἐγενήθησαν ἐν τῷ (θ) καὶ πίτυες (ι) ὅμοιοι (κ) λέγει ἀδωναῒ κύριος, (λ) τῶν νεφελῶν, (μ) ἐξωλέθρευσαν (ν) ἔπεσον (ξ) ἐγένοντο

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

לא

1 וַהֲוָה בַּחֲדָא עַסְרֵי שְׁנִין בִּתְלִיתָאָה בְּחַד לְיַרְחָא הֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי
2 לְמֵימַר׃ בַּר אָדָם אֱמַר לְפַרְעֹה מַלְכָּא דְמִצְרַיִם וּלְאִתְרְגוֹשְׁתֵּיהּ לְמַן דְּמִיתָא בְּתוּקְפָךְ׃
3 הָא אַתּוּרָאָה דָּמְיָא לְאַרְזָא בְלִבְנָן דְּנוֹפֵיהּ שַׁפִּיר וְסוֹכֵיהּ מַטְלָן וְרָם בְּקוֹמָה וְעַל נִגְרִין
4 שְׁלַח שָׁרְשׁוֹהִי׃ בְּעַמְמַיָּא סַגִּי בְּסוֹמְכְוָתָא תַּקִּיף יַת מַלְכַיָּא שַׁעְבֵּיד לִתְחוֹת מַלְכוּתֵיהּ
5 וְיַת שִׁלְטוֹנוֹהִי מַנֵּי עַל כָּל מְדִינַת אַרְעָא׃ עַל כֵּן רָאֵם בְּתוּקְפֵיהּ מִכֹּל מַלְכֵי אַרְעָא
6 וּסְגִיאָה מַשְׁרְיָתֵיהּ וְאִתְנַצַּחוּ סוֹמְכְוָתֵיהּ עַל עַמְמִין סַגִּיאִין בְּאִתְנַצָּחוּתֵיהּ׃ בְּמַשְׁרְיָתֵיהּ
כְּבֵישׁ כָּל כְּרַכִּין תַּקִּיפִין וּתְחוֹת שִׁלְטוֹנוֹהִי שַׁעְבֵּיד כָּל מְדִינַת אַרְעָא וּבִטְלַל מַלְכוּתֵיהּ
7 יָתִיבוּ כָּל עַמְמִין סַגִּיאִין׃ וְאִתְנְצַח בְּסוֹמְכְוָתֵיהּ בִּסְגֵי גִּבָּרוֹהִי אֲרֵי הֲוָת אֵימְתֵיהּ עַל
8 עַמְמִין סַגִּיאִין׃ מַלְכִין תַּקִּיפִין לָא אִתְנַצַּחוּ לְקִבְלֵיהּ בִּתְקוֹף גְּבוּרָא דַהֲוָת עִמֵּיהּ מִן
קֳדָם יְיָ שִׁלְטוֹנִין לָא קָמוּ קֳדָם מַשְׁרְיָתֵיהּ וְגִבָּרִין לָא יְכִילוּ בְסוֹמְכְוָתֵיהּ בִּתְקוֹף גְּבוּרָא
9 דַהֲוָת עִמֵּיהּ מִן קֳדָם יְיָ לָא דָמֵי לֵיהּ בְּתוּקְפֵיהּ׃ שַׁפִּיר עֲבַדְתֵּיהּ בִּסְגֵי גִּבָּרוֹהִי וְזָעוּ מִן
10 קֳדָמוֹהִי כָּל מַלְכֵי קֶדֶם בִּתְקוֹף גְּבוּרָא דַהֲוָת עִמֵּיהּ מִן קֳדָם יְיָ׃ בְּכֵן כִּדְנָן אֲמַר
יְיָ אֱלֹהִים חֲלַף דִּרְמְתָא בְּקוֹמָה וִיהַב מַרְוָתֵיהּ עַל מַלְכְוָתָא וְרָם לִבֵּיהּ
11 12 בְּתוּקְפֵיהּ׃ וְאֶמְסְרִנֵּיהּ בְּיַד תַּקִּיף עַמְמַיָּא אִתְפְּרַע מִנֵּיהּ בְּחוֹבֵי תָרֵכְתֵּיהּ׃ וְשֵׁיצְיוּהִי
נוּכְרָאִין תַּקִּיפֵי עַמְמַיָּא וְרַטְשׁוּהִי עַל טוּרַיָּא וּבְכָל חֵילַיָּא נְפַלָּא מַשְׁרְיָתֵיהּ וְאִתְבַּדַּרוּ
סוֹמְכְוָתֵיהּ בְּכָל פַּצִּידֵי אַרְעָא וּנְחַתוּ מִטְּלַל מַלְכוּתֵיהּ כָּל עַמְמֵי אַרְעָא
13 וְרַטְשׁוּהִי׃ עַל מַפֹּלֶת קְטִילוֹהִי שְׁרוֹ כָּל עוֹפָא דִשְׁמַיָּא וְעַל פִּגְרֵי מַשְׁרְיָתֵיהּ נָחָא
כָּל חַיַּת בָּרָא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XXXI.

1 ET factum eſt undecimo anno, tertio menſe, prima die menſis, factum eſt 2 verbum prophetiæ à facie Domini mecum, dicens: Fili hominis, dic ad Pharaonem regem Ægypti, & ad multitudinem ejus: Cui ſimilis factus es in fortitudine tua? 3 Ecce Aſſur ſimilis erat cedro in Libano, cujus ramus pulcher eſt, & propagines ejus umbram faciunt, & excelſus ſtatura; & juxta torrentes miſit radices ſuas. 4 In populis multiplicatus eſt, auxiliis roboratus eſt, reges ſubjecit regno ſuo, & principes ſuos conſtituit ſuper omnes provincias terræ. 5 Ideò elatus eſt in fortitudine ſua ſupra omnes reges terræ, & multiplicati ſunt exercitus ejus, & prævaluerunt auxiliatores ejus populis multis victoriâ ejus. 6 Exercitu ſuo ſubjugavit omnes arces fortiſſimas, & ſub principibus ſuis ſubjecit omnes provincias terræ, & in umbra regni ejus habitaverunt omnes populi numeroſi. 7 Et ita invaluit auxiliatoribus ſuis, multitudine fortium ſuorum, ut factus ſit terror ejus ſuper populos multos. 8 Reges fortes non prævaluerunt adverſus eum, ob fortitudinem potentiæ quæ erat cum eo à facie Domini. Nulli duces conſtiterunt ante agmina ejus, nec fortes fuerunt ſuperiores ejus auxiliis, ob fortitudinem potentiæ qua præditus erat à Domino: nullus fuit ei ſimilis fortitudine. 9 Specioſum enim feci eum multitudine fortium ſuorum; & tremuerunt à facie ejus omnes reges Orientis, propter fortitudinem potentiæ quæ erat cum eo à facie Domini. 10 Propterea hæc dicit Dominus Deus: Pro eo quòd tete extuliſti ſtatura, & dedit ſubjectionem ſuam ſuper regna, & elevatum eſt cor ejus in fortitudine ſua. 11 Tradidi eum in manum fortiſſimi populorum, qui ultionem ſumpſit ex eo; in peccato ſuo ejeci eum. 12 Et conſumpſerunt eum alieni robuſtiſſimi populorum, & projecerunt eum ſuper montes, & in cunctis convallibus cecidit exercitus ejus, diſperſíque ſunt auxiliatores ejus in univerſis rivis terræ, & deſcenderunt ex umbra regni ejus omnes *populi* terræ, & projecerunt eum. 13 Super ruinam occiſorum ejus habitaverunt omnes volucres cœli, & ſuper cadavera exercitus ejus quieverunt omnes beſtiæ agri.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܐ *

1 * ܘܗܘܐ ܒܫܢܬ ܚܕܥܣܪܐ ܒܝܪܚܐ ܬܠܝܬܝܐ܂ ܒܚܕ ܒܝܪܚܐ܀ ܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ܀
2 * ܒܪܢܫܐ܀ ܐܡܪ ܠܦܪܥܘܢ܂ ܡܠܟܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܠܟܢܫܗ. ܠܡܢ ܕܡܝܬ ܒܪܒܘܬܟ܀ * ܗܐ
3 ܐܬܘܪܝܐ ܐܪܙܐ ܕܠܒܢܢ. ܕܫܦܝܪܝܢ ܣܘܟܘܗܝ. ܘܡܛܠܠ ܛܠܠܗ. ܘܪܡܐ ܩܘܡܬܗ. ܘܒܝܢܝ
4 ܥܒܝܬܐ ܗܘܐ ܪܝܫܗ. * ܡܝܐ ܪܒܝܘܗܝ. ܬܗܘܡܐ ܐܪܝܡܗ. ܘܠܘܬ ܢܨܒܬܗ ܗܘܘ ܡܟܪܟܢ ܢܗܪܘܬܐ
ܢܨܒܬܗ. ܘܫܒܝܠܘܗܝ ܐܪܡܝ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܐܝܠܢܐ ܕܕܒܪܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܬܬܪܝܡܬ
5 ܩܘܡܬܗ ܝܬܝܪ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܐܝܠܢܐ ܕܕܒܪܐ. ܘܣܓܝܘ ܣܘܟܘܗܝ. ܘܐܘܪܟܘ ܫܒܛܘܗܝ. ܡܢ
6 ܡܝܐ ܣܓܝܐܐ ܕܪܒܝܘܗܝ. * ܒܫܒܛܘܗܝ ܩܢܢܘ ܟܠܗ ܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܬܚܝܬ ܣܘܟܘܗܝ
7 ܝܠܕܢ ܗܘܝ ܟܠܗܝܢ ܚܝܘܬܐ ܕܕܒܪܐ. ܘܒܛܠܠܗ ܝܬܒܝܢ ܗܘܘ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ. * ܘܫܦܝܪ ܗܘܐ ܒܪܒܘܬܗ
8 ܘܒܣܘܓܐܐ ܕܫܒܛܘܗܝ. ܡܛܠ ܕܥܩܪܘܗܝ ܗܘܘ ܥܠ ܡܝܐ ܣܓܝܐܐ. * ܐܪܙܐ ܠܐ ܙܟܝܘܗܝ
ܒܦܪܕܝܣܐ ܕܐܠܗܐ. ܘܒܪܘܬܐ ܠܐ ܕܡܝܢ ܠܫܒܛܘܗܝ. ܘܐܝܠܢܐ ܠܐ ܗܘܘ ܐܟܘܬ ܣܘܟܘܗܝ.
9 ܘܟܠ ܐܝܠܢ ܒܦܪܕܝܣܐ ܕܐܠܗܐ ܠܐ ܕܡܐ ܠܗ ܒܫܘܦܪܗ. * ܫܦܝܪܐ ܥܒܕܬܗ ܒܣܘܓܐܐ
10 ܕܫܒܛܘܗܝ. ܘܛܢܘ ܒܗ. ܟܠܗܘܢ ܐܝܠܢܐ ܕܥܕܢ ܦܪܕܝܣܐ ܕܐܠܗܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ. ܚܠܦ ܕܐܬܬܪܝܡ ܒܩܘܡܬܗ. ܘܝܗܒ ܪܝܫܗ ܒܝܢܝ ܥܒܝܬܐ܀
11 ܘܐܬܬܪܝܡ ܠܒܗ ܒܪܘܡܗ܀ * ܐܫܠܡܝܘܗܝ ܒܐܝܕܝ ܥܫܝܢܐ ܕܥܡܡܐ. ܘܢܥܒܕ ܠܗ
12 ܐܝܟ ܚܛܝܬܗ. ܘܢܘܒܕܝܘܗܝ. * ܘܢܘܒܕܘܢܗ ܢܘܟܪܝܐ ܥܫܝܢܐ ܕܥܡܡܐ. ܘܢܪܡܘܢܗ
ܒܛܘܪܐ. ܘܒܟܠܗܘܢ ܢܚܠܐ ܢܦܠܘܢ ܣܘܟܘܗܝ. ܘܢܬܬܒܪܘܢ ܫܒܛܘܗܝ. ܒܟܠܗܘܢ
13 ܢܚܠܐ ܕܐܪܥܐ. ܘܢܚܬܘܢ ܡܢ ܛܠܠܗ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܐܪܥܐ. ܘܢܫܩܠܘܢܗ. * ܘܡܐ
ܕܢܦܠ܀ ܢܥܡܪܘܢ ܥܠܘܗܝ ܟܠܗ ܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܬܚܝܬ ܫܒܛܘܗܝ. ܢܗܘܝܢ ܟܠܗܝܢ
ܚܝܘܬܐ ܕܕܒܪܐ.

CAP. XXXI.

ANno undecimo, menſe tertio, primâ menſis, fuit ad me ſermo Domini, dicendo; Fili 1 2
hominis, dic Pharaoni regi Ægypti, & robori ejus; Cuinam ſimilis es in magnificentia
tua? Ecce Aſſyrius cedrus *erat* Libani, cujus pulchri erant ramuſculi, denſa umbra, alta 3
ſtatura, cujus cacumen erat inter condenſa *nemorum*: Aquæ nutriverant eam, abyſſus 4
extulerat: cujus plantarium flumina circunſepſerat: quæ virgulta ſua jecerat ſup omnes
arbores deſerti: Adeóque ſtatura ejus longè ſuperaverat omnes arbores deſerti, multiplicati 5
fuerant rami, & producta virgulta,
propter copiam aquarũ quæ nutriverant eam.
In ramuſculis ejus nidificabant omnes cœli 6
volucres, ſub frondibus parturiebant omnes
beſtiæ deſerti, & in umbra ejus ſedebant populi multi: Denique pulcherrima erat magnitudine 7
ſuâ & multitudine ramuſculorum
ſuorũ, quia radices ej⁹ erant ad aquas multas.
Cedri nequaquam ſuperabant eam in paradiſo 8
Dei, & abietes non erant ſimiles ramis ejus, neque populi *arbores* ſimiles erant frondibus
ejus, nulla denique arbor in paradiſo
Dei adæquabat eam pulchritudine. Pulchrã 9
effeceram eam multitudine ramorum ejus, ita
ut inviderent ei omnes arbores Eden paradiſi
Dei. Propterea ſic ait Dominus dominorũ; 10
Quandoquidẽ extulit ſe in ſtatura ſua, & germinavit cacumen ejus inter condenſa, & elevatum
eſt cor ejus in magnitudine ſua; Tradam 11
eum in manum fortiſſimi gentium, qui
tractabit eum ſecundùm peccatum ipſius, &
perdet eum. Perdéntque eum extranei fortiſſimi 12
gentium, & projicient eum in montibus; in omnibus vallibus decident virgulta
ipſius, & comminuentur rami ejus in omnibus
terræ vallibus; deſcendent ex umbra ejus
omnes populi terræ, & deferent eum: Cúmque 13
ceciderit, habitabunt ſuper eum omnes
cœli volucres, & ſub ramis ejus erunt omnes
beſtiæ deſerti:

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* الفصل الحادي والثلثون *

* الاصحاح السابع عشر *

1 * وكان في السنة الحادية عشر * في الشهر الثالث * في اول يوم من الشهر * كان قول الرب الي
2 قايلا * يا ابن الانسان * قل لفرعون ملك مصر ولكثرته * بماذا شبهت ذاتك في ترفعك * ها
3 الموصل سربينه في لبنان * وحسن في الاغصان * ومرتفع في عظمته * وفي وسط السحب صارت
4 رياسته * الماء انشاه * والعمق رفعه * جرت انهاره حول غروسه * وارسل شجوبه الي كل شجر
5 الغاب * من اجل هذا ارتفعت عظمته اكثر من جميع شجر الغاب * وطالت اغصانه من
6 الماء الكثير * في فروعه عششت كل طيور السماء * وتحت اغصانه ولدت وحوش الغاب * تحت
7 ظله استظل كل كثير الامم * وصار حسنا في ارتفاعه لاجل طول اغصانه * لان اصوله صارت
8 في الماء الكثير * هي نفسها ارزات في فردوس الله والصنوبرات ليست شبيهة بفروعه * والدلب
9 لم تكن شبيهات باغصانه * كل شجر في فردوس الله ليست شبيهة في حسنه * لاجل كثير
10 اغصانه * وعايروه شجر فردوس نعيم الله * لاجل هذا هكذا يقول الرب الرب * من
اجل انك صرت عظيما بعظمتك * واعطيت رياستك في وسط السحب * ونظرته
11 في ترفعه * واسلمته الي ايدي رييس الامم * وصنع هلاكه * واستاصلوه 12
الغرباء المفسدون من الامم * وانزلوه من الجبال * في جميع المدن سقطت
اغصانه * وتكسرت فروعه في كل بقعة من الارض * ونزلوا من سترهم شعوب
13 الامم وداسوه * على سقطته استراحت كل طيور السماء * وعلى فروعه صارت
كل وحوش الحقل *

CAP. XXXI.

Textus decimus ſeptimus.

DEinde factum eſt anno undecimo, 1
menſe tertio, primâ die menſis, ut eſſet ſermo Domini ad me, dicens; O fili hominis, 2
dic Pharaoni regi Ægypti, & multitudini
ejus; Cui rei comparâſti teipſum in
ſuperbia tua? Ecce Aſſur cupreſſus erat 3
in Libano, ſpecioſus ramis, altus magnitudine, ejuſque principatus in mediis nubibus.
Aqua nutrivit eum, abyſſus extulit 4
eum, deduxit flumina ſua circum
plantas ſuas, protulitque condenſos ramos ſuos ad omnes arbores ſylvarum:
Propterea extulit ſe magnitudo ejus 5
pluſquam omnium arborum ſylveſtrium,
& produxerunt ſe rami ejus ob aquam
multam. In apicibus ejus nidificârunt 6
omnes volucres cœli, & ſub ramis ejus
pepererunt beſtiæ ſylveſtres: ſub umbram
ejus recepit ſe omnis multitudo gentium: 7
Factuſque eſt pulcherrimus altitudine
ſuâ ob longitudinem ramorum ſuorum,
quòd radices ejus eſſent in aqua multa.
Ipſæmet cedri in paradiſo Dei, atque 8
pini, non erant comparandæ cacuminibus ejus, & populi non erant ſimiles
ramis ejus: nulla arbor in paradiſo Dei
adæquabatur ei pulchritudine, Propter 9
multitudinem ramorum ejus: imò invidebant ei arbores paradiſi delitiarum
Dei. Idcirco ſic dicit Dominus Dominus; 10
Quia magnificâſti te in magnitudine tua, & collocâſti principatum tuum
in mediis nubibus; ideo videns te in
exaltatione tua, Tradidi te in manus 11
principis gentium, qui excidium tibi
afferet: Extirpabunt eum exteri inter gentes 12
pernicioſiſſimi, & deturbabunt eum
de montibus: in omnibus urbibus cadent
rami ejus, & contererentur ſummitates
ejus in quavis terræ planitie: nam deſcendentes è tegmine ſuo populi gentium,
conculcabunt eum. Super ruinam ejus 13
requieſcent omnes cœli volucres, &
ſuper cacumina ejus erunt omnes beſtiæ
campi:

יחזקאל: לב

nec ,aquarum ligna omnia ſua *proceritate* in elevabûtur non Quamobrem
14 לְמַעַן אֲשֶׁר לֹא־יִגְבְּהוּ בְקוֹמָתָם כָּל־עֲצֵי־מַיִם וְלֹא־
eorum ulni ſtabunt neque ,*implicata* inter *ad ſuum cacumen* dabunt
יִתְּנוּ אֶת־צַמַּרְתָּם אֶל־בֵּין עֲבֹתִים וְלֹא־יַעַמְדוּ אֵלֵיהֶם
ſunt traditi ipſi omnes quia : aquarũ potatores omnes ,ſua ſublimitate in
בְּגָבְהָם כָּל־שֹׁתֵי מָיִם כִּי כֻלָּם נִתְּנוּ
.*lacum deſcendentes ad hominis* filiorũ medio in *inferiorem terram ad* ,morti
לַמָּוֶת אֶל־אֶרֶץ תַּחְתִּית בְּתוֹךְ בְּנֵי אָדָם אֶל־יוֹרְדֵי בוֹר׃
infernum ad *eum deſcendere* die In : Deus Dominus dixit Sic
15 כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יֱהֹוִה בְּיוֹם רִדְתּוֹ שְׁאוֹלָה
,ej⁹ flumina prohibui &,voraginem eum ſuper feci operire ,lugere feci
הֶאֱבַלְתִּי כִּסֵּתִי עָלָיו אֶת־תְּהוֹם וָאֶמְנַע נַהֲרוֹתֶיהָ
omnia &,Lebanon eum ſuper feci *denigrare* & : multæ aquæ ſunt *occluſæ* &
וַיִּכָּלְאוּ מַיִם רַבִּים וָאַקְדִּר עָלָיו לְבָנוֹן וְכָל־
ejus ruinæ *voce* A .*animi deliquium paſſum* eum ſuper agri ligna
16 עֲצֵי הַשָּׂדֶה עָלָיו עֻלְפֶּה׃ מִקּוֹל מַפַּלְתּוֹ
deſcendẽtib⁹ cum infernũ ad eum *me dimittere in* , gentes feci commovere
הִרְעַשְׁתִּי גוֹיִם בְּהוֹרִדִי אֹתוֹ שְׁאֹלָה אֶת־יוֹרְדֵי
, *electio* , Heden ligna omnia infima terra in ſunt cõſolata & : *lacum*
בוֹר וַיִּנָּחֲמוּ בְּאֶרֶץ תַּחְתִּית כָּל־עֲצֵי־עֵדֶן מִבְחַר
deſcenderũt eo cum ipſi Etiam .aquas bibentes omnes ,Libani bonum &
17 וְטוֹב־לְבָנוֹן כָּל־שֹׁתֵי מָיִם׃ גַּם־הֵם אִתּוֹ יָרְדוּ
ej⁹ umbra in ſederunt,ej⁹ brachium & : gladio interfectos ad ,infernũ ad
שְׁאֹלָה אֶל־חַלְלֵי־חָרֶב וּזְרֹעוֹ יָשְׁבוּ בְצִלּוֹ
magnitudine in &,gloria in ſic es aſſimilatus *quem Ad* .gentium medio in
18 בְּתוֹךְ גּוֹיִם׃ אֶל־מִי דָמִיתָ כָּכָה בְּכָבוֹד וּבְגֹדֶל
terram ad Heden lignis cum es factus deſcendere & : Heden ligna inter
בַּעֲצֵי־עֵדֶן וְהוּרַדְתָּ אֶת־עֲצֵי־עֵדֶן אֶל־אֶרֶץ
.gladio interfectis cum dormies incircuncisorum medio in , infimam
תַּחְתִּית בְּתוֹךְ עֲרֵלִים תִּשְׁכַּב אֶת־חַלְלֵי־חֶרֶב
.Deus Dominus dixit , ejus *turba* omnis & , Parhoh Hic
הוּא פַרְעֹה וְכָל־הֲמוֹנֹה נְאֻם אֲדֹנָי יֱהֹוִה׃

CAP. XXXII. לב

,menſis *una* in ,menſe duodecimo in , anno duodecimo in ,fuit Et
1 וַיְהִי בִּשְׁתֵּי עֶשְׂרֵה שָׁנָה בִּשְׁנֵי־עָשָׂר חֹדֶשׁ בְּאֶחָד לַחֹדֶשׁ
lamentũ leva ,hominis Fili : dicendo me ad Domini verbum fuit
2 הָיָה דְבַר־יְהֹוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם שָׂא קִינָה
:es aſſimilat⁹ gentiũ Catulo : eũ ad *dices* & ,Ægypti regem Parhoh ſuper
עַל־פַּרְעֹה מֶלֶךְ־מִצְרַיִם וְאָמַרְתָּ אֵלָיו כְּפִיר גּוֹיִם נִדְמֵיתָ
turbabas &,tua flumina *in* educebas & , maribus in cetus ſicut tu &
וְאַתָּה כַּתַּנִּים בַּיַּמִּים וַתָּגַח בְּנַהֲרוֹתֶיךָ וַתִּדְלַח־
Dominus dixit Sic .eorum flumina conculcabas &,tuis pedib⁹ *in* aquas
3 מַיִם בְּרַגְלֶיךָ וַתִּרְפֹּס נַהֲרוֹתָם׃ כֹּה אָמַר אֲדֹנָי
:multorũ populorũ cœtu in meum rete te ſuper expandam Et : Deus
יֱהֹוִה וּפָרַשְׂתִּי עָלֶיךָ אֶת־רִשְׁתִּי בִּקְהַל עַמִּים רַבִּים
ſuper ,terra in te dimittam Et .mea ſagena *in* te faciam aſcendere &
4 וְהֶעֱלוּךָ בְּחֶרְמִי׃ וּנְטַשְׁתִּיךָ בָאָרֶץ עַל־
te ſuper faciam habitare Et .te faciam projicere agri *facies*
פְּנֵי הַשָּׂדֶה אֲטִילֶךָ וְהִשְׁכַּנְתִּי עָלֶיךָ
.terræ univerſæ *feram* te de faciam ſaturare & , cœlorum *volatile omne*
כָּל־עוֹף הַשָּׁמַיִם וְהִשְׂבַּעְתִּי מִמְּךָ חַיַּת כָּל־הָאָרֶץ׃
.tua celſitudine valles implebo & : montes ſuper tuã carnẽ dabo Et
5 וְנָתַתִּי אֶת־בְּשָׂרְךָ עַל־הֶהָרִים וּמִלֵּאתִי הַגֵּאָיוֹת רָמוּתֶךָ׃
: montes ad tuo ſanguine de *tuæ natationis* terram faciam irrigare Et
6 וְהִשְׁקֵיתִי אֶרֶץ צָפָתְךָ מִדָּמְךָ אֶל־הֶהָרִים
, cœlos ,*te extinguendo in* ,operiam Et .te de implebuntur torrentes &
7 וַאֲפִקִים יִמָּלְאוּן מִמֶּךָּ׃ וְכִסֵּיתִי בְכַבּוֹתְךָ שָׁמַיִם
non luna & , *eum* tegam nube in Solem :eorũ ſtellas faciã nigreſcere &
וְהִקְדַּרְתִּי אֶת־כֹּכְבֵיהֶם שֶׁמֶשׁ בֶּעָנָן אֲכַסֶּנּוּ וְיָרֵחַ לֹא־
.ſuum lumen faciet luceſcere
יָאִיר אוֹרוֹ׃

Verſio VULG. LAT.

14 Quam ob rem non elevabuntur in altitudine ſua omnia ligna aquarum, nec ponent ſublimitatẽ ſuam inter nemoroſa atque frondoſa, nec ſtabunt in ſublimitate ſua omnia quæ irrigantur aquis: quia omnes traditi ſunt in mortem ad terram ultimam, in medio filiorum hominũ, ad eos qui 15 deſcendunt in lacum. Hæc dicit Domin⁹ Deus; In die quando deſcendit ad inferos, induxi luctũ, operui eum abyſſo: & prohibui flumina ejus, & coercui aquas multas: contriſtat⁹ eſt ſuper eum Liban⁹, & omnia ligna agri con- 16 cuſſa ſunt. A ſonitu ruinæ ejus commovi Gentes, cùm deducerem eum ad infernũ cum his qui deſcendebant in lacum: & conſolata ſunt in terra infima omnia ligna voluptatis egregia atque præclara in Libano, univerſa 17 quæ irrigabantur aquis. Nam & ipſi cum eo deſcendent in infernũ ad interfectos gladio: & brachium uniuſcujuſque ſedebit ſub umbraculo ej⁹ in medio nationũ. 18 Cui aſſimilat⁹ es, ô inclyte atque ſublimis inter ligna voluptatis? Ecce deduct⁹ es cum lignis voluptatis ad terram ultimam: in medio incircumciſorũ dormies, cum eis qui interfecti ſunt gladio: ipſe eſt Pharao, & omnis multitudo ejus, dicit Domin⁹ Deus.

CAP. XXXII.

1 Et factũ eſt, duodecimo anno, in menſe duodecimo, in una menſis, factum eſt verbũ Dñi ad me, 2 dicens; Fili hominis, aſſume lamentum ſuper Pharaonem regẽ Ægypti, & dices ad eum; Leoni Gentium aſſimilat⁹ es, & draconi qui eſt in mari: & ventilabas cornu in fluminib⁹ tuis, & conturbabas aquas pedib⁹ tuis, & con- 3 culcabas flumina earũ. Propterea hæc dicit Dñs De⁹; Expandã ſup te rete meum in multitudine populorũ multorum, & extrahã 4 te in ſagena mea. Et projiciam te in terram, ſuper faciem agri abjiciam te: & habitare faciam ſup te omnia volatilia cœli, & ſaturabo de te beſtias univerſæ terræ. 5 Et dabo carnes tuas ſuper montes, & implebo colles tuos ſanie 6 tuâ. Et irrigabo terram fœtore ſanguinis tui ſuper montes, & 7 valles implebuntur ex te. Et operiam, cùm extinct⁹ fueris, cœlum, & nigreſcere faciam ſtellas ejus: Solem nube tegam, & Luna non dabit lumen ſuum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

14 Ὅπως μὴ ὑψωθῶσιν ἐν τῷ μεγέθει αὐτῶν πάντα τὰ ξύλα τὰ ἐν τῷ ὕδατι· καὶ (ο) ἔδωκαν τὴν ἀρχὴν αὐτῶν εἰς μέσον νεφελῶν, καὶ οὐκ ἔστησαν ἐν τῷ ὕψει αὐτῶν πρὸς (π) αὐτά. πάντες οἱ πίνοντες ὕδωρ, (ρ) πάντες ἐδόθησαν εἰς θάνατον, εἰς (σ) γῆς βάθος, ἐν μέσῳ υἱῶν ἀνθρώπων πρὸς καταβαίνοντας εἰς βό- 15 θρον. Τάδε λέγει (τ) κύριος κύριος, Ἐν ᾗ ἡμέρᾳ κατέβη εἰς ᾅδου, (υ) ἐπένθησεν αὐτὸν ἡ ἄβυσσος. καὶ ἐπέστησα τοὺς ποταμοὺς αὐτῆς, καὶ ἐκώλυσα πλῆθος ὕδατος, καὶ ἐσκότασεν ἐπ' αὐτὸν ὁ Λίβανος, πάντα τὰ ξύ- 16 λα τοῦ πεδίου ἐπ' αὐτῷ ἐξελύθησαν. (φ) Ἀπὸ τῆς φωνῆς τῆς πτώσεως αὐτοῦ ἐσείσθησαν τὰ ἔθνη, ὅτε κατεβίβαζον αὐτὸν εἰς ᾅδου μετὰ τῶν καταβαινόντων εἰς λάκκον, καὶ παρεκάλουν αὐτὸν ἐν γῇ (χ) πάντα τὰ ξύλα τῆς τρυφῆς, καὶ τὰ ἐκλεκτὰ τοῦ Λιβάνου πάντα τὰ πί- 17 νοντα ὕδωρ. Καὶ γὰρ αὐτοὶ κατέβησαν μετ' αὐτοῦ εἰς ᾅδου (ψ) ἐν τοῖς τραυματίαις ἀπὸ μαχαίρας, καὶ τὸ σπέρμα αὐτοῦ (ω) οἱ κατοικοῦντες ὑπὸ τὴν σκέπην αὐτοῦ ἐν μέσῳ τῆς 18 ζωῆς αὐτῶν ἀπώλοντο. Τίνι ὡμοιώθης; κατάβηθι, καὶ καταβιβάσθητι μετὰ τῶν ξύλων τῆς τρυφῆς εἰς (α) γῆς βάθος. ἐν μέσῳ ἀπεριτμήτων κοιμηθήσῃ μετὰ τραυματιῶν μαχαίρας. οὕτως Φαραὼ καὶ (β) τὸ πλῆθος τῆς ἰσχύος αὐτοῦ, λέγει κύριος κύριος.

14 *ut non exaltentur in magnitudine ſua omnia ligna, quæ in aqua, & (k) dederunt principium ſuũ in medio nubium, nec ſteterunt in altitudine ſua (l) ad ſe omnes bibentes aquam: (m) omnes dati ſunt in mortem, in terræ profundum, in medio filiorum hominũ, (n) ad eos qui deſcendunt in fo-* 15 *veam. Hæc dicit Dominus Dominus; In die, quâ deſcendit ad infernum, luxit eum abyſſus. Et (o) cohibui flumina ejus, & (p) prohibui multitudinem aquæ. Et contenebratus eſt ſuper eum Libanus: omnia ligna campi in eo* 16 *defecerunt. A ſonitu ruinæ ejus commotæ ſunt gentes; quando deducebant eum ad infernum cum deſcendentibus in lacum. Et conſolabantur eum (q) in terra omnia ligna deliciarum, & electa Libani omnia, quæ bibebant aquã. Nam* 17 *& ipſi deſcenderunt cum eo ad infernum in vulneratis à gladio: & ſemen ejus, qui habitabant ſub tegmine ejus, in medio vitæ ſuæ* 18 *perierunt. Cui (r) aſſimilatus es? (ſ) deſcende, & deducere cum lignis deliciarũ in terræ profundum. In medio incircumciſorum dormies cum his qui interfecti ſunt gladio. Sic Pharao, & multitudo fortitudinis ejus, dicit Dominus Dominus.*

MS. A. (ο) οὐκ ἔδωκαν (π) αὐτόν. (ρ) ὅτι πάντες (σ) γῆν βάθους, (τ) ἀδωναῒ κύριος, (υ) ἐπέστησα ἐπ' αὐτὸν τὴν ἄβυσσον, καὶ ἐκώλυσα τοὺς ποταμοὺς αὐτῆς, καὶ ἐκώλυσεν πλῆθος ὕδατος, καὶ ἐπένθησεν αὐτὸν ὁ Λίβανος, καὶ ἐξελύθησαν ἐπ' αὐτῷ πάντα τὰ ξύλα τοῦ πεδίου· (φ) Καὶ ἐσείσθησαν ἔθνη ἀπὸ τῆς φωνῆς τῆς πτώσεως αὐτοῦ, (χ) κάτω πάντα (ψ) μετὰ τραυματιῶν μαχαίρας, (ω) πάντες οἱ (α) γῆν βάθους. (β) πᾶν τὸ

ΚΕΦ. λβ'.

1 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ (α) δωδεκάτῳ ἔτει, ἐν τῷ δεκάτῳ μηνί, μιᾷ τοῦ μηνός, ἐγένετο λό- 2 γος κυρίου πρός με, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, λάβε θρῆνον ἐπὶ Φαραὼ βασιλέα Αἰγύπτου, καὶ ἐρεῖς αὐτῷ, Λέοντι ἐθνῶν ὡμοιώθης σύ, καὶ ὡς (ˮ) δράκων ὁ ἐν τῇ θαλάσσῃ, καὶ ἐκεράτιζες (β) τοῖς ποταμοῖς σου, καὶ ἐτάρασσες (γ) ὕδωρ τοῖς ποσί σου, καὶ κατεπάτεις τοὺς πο- 3 ταμούς σου. Τάδε λέγει (δ) κύριος, Καὶ περιβαλῶ ἐπὶ σὲ (ε) δίκτυα λαῶν πολλῶν, καὶ 4 ἀνάξω σε ἐν τῷ ἀγκίστρῳ μου, Καὶ ἐκτενῶ σε ἐπὶ τὴν γῆν. πεδία (ζ) πλησθήσεταί σου, καὶ ἐπικαθιῶ ἐπὶ σὲ πάντα τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἐμπλήσω (η) πάντα τὰ θηρία πάσης τῆς 5 γῆς. Καὶ δώσω τὰς σάρκας σου ἐπὶ τὰ ὄρη, 6 καὶ ἐμπλήσω ἀπὸ τοῦ αἵματός (θ) σου. Καὶ ποτισθήσεται ἡ γῆ ἀπὸ τῶν (ι) προχωρημάτων σου, ἀπὸ τοῦ πλήθους σου ἐπὶ τῶν ὀρέων. φάραγγας 7 ἐμπλήσω ἀπὸ σοῦ, Καὶ κατακαλύψω ἐν τῷ σβεσθῆναί σε οὐρανόν, καὶ συσκοτάσω (κ) τὰ ἄστρα αὐτοῦ, ἥλιον ἐν νεφέλῃ καλύψω, καὶ (λ) σελήνη οὐ μὴ φάνῃ τὸ φῶς αὐτῆς.

CAP. XXXII.

1 *Et factũ eſt in (a) duodecimo anno, in decimo menſe, unâ menſis, factum eſt verbũ Domini ad* 2 *me, dicens; Fili hominis, aſſume lamentũ ſuper Pharaonem regem Ægypti, & dices ei; Leoni gentiũ aſſimilatus es tu, & quaſi (b) draco, qui in mari: & cornupetebas (c) fluminibus tuis, & conturbabas aquã pedibus tuis: & concul-* 3 *cabas flumina tua. Hæc dicit Dominus; Et circumjiciam ſuper te (d) retia populorũ multorum: &* 4 *extraham te in hamo meo: Et extendam te ſuper terram. Camp (e) replebuntur: & ſedere faciam ſuper te omnia volatilia cœli: & (f) ſaturabo omnes beſtias uni-* 5 *verſæ terræ. Et dabo carnes tuas ſuper montes, & implebo de ſan-* 6 *guine (g) tuo: Et irrigabitur terra de ſtercoribus tuis à (h) multitudine tua ſuper montes. Valles implebo ex te: Et operiã cũ extinctus fueris, cœlũ, & tenebreſcere* 7 *faciã ſtellas ej⁹: Solẽ in nube operiã: et Luna nõ oſtẽdet lumẽ ſuũ.*

MS. A. (α) ἐνδεκάτῳ (ˮ) ὁ δράκων (β) τοὺς ποταμούς (γ) τὸ ὕδωρ (δ) ἀδωναῒ κύριος, (ε) δίκτυόν μου, καὶ ἐν ἐκκλησίᾳ λαῶν πολλῶν, (ζ) πλησθήσεταί σου, καὶ (η) ἐκ σοῦ πάντα (θ) σου πᾶσαν γῆν. (ι) χωρημάτων σου, καὶ ἀπὸ (κ) τοὺς ἀστέρας τοῦ οὐρανοῦ, (λ) ἡ σελήνη οὐ δώσει τὸ φῶς αὐτῆς. Καὶ πάντα

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 בְּדִיל דְּלָא יִרְאמוּן בְּתוּקְפְּהוֹן כָּל מַלְכֵי קֳדָם וְלָא יִתְּנוּן יַת מַרְוָתְהוֹן עַל מַלְכְּוָתָא
וְלָא יִתְרַבְרְבוּן לְהוֹן בְּתוּקְפֵיהוֹן כָּל עַבְדֵי מַלְכוּ אֲרֵי כוּלְהוֹן אִתְמְסַרוּ לְמוֹתָא לְאַרְעָא
15 אַרְעִיתָא בְּגוֹ בְּנֵי אֱנָשָׁא עִם נָחֲתֵי גוֹב בֵּית אֲבָדְנָא׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים בְּיוֹם אַחְתוּתִי
יָתֵיהּ לִשְׁאוֹל אִתְאַבַּלוּ עֲלוֹהִי חֲפַת עָקָא יַת עַלְמָא וַחֲרוּבָא מְדִינָתָא וְזָעוּ עַמְמִין
16 סַגִּיאִין וַחֲשׁוֹכוּ עֲלוֹהִי אַפֵּי מַלְכַיָא וְכָל מַלְכֵי עַמְמַיָא עֲלוֹהִי טְפַחוּ כַתְפָא׃ מִקָּל
מַפַּלְתֵּיהּ אַזֵעִית עַמְמַיָא בְּאַחְתוּתִי יָתֵיהּ לִשְׁאוֹל עִם נָחֲתֵי גוֹב בֵּית אֲבָדְנָא וְאִתְנַחֲמוּ
17 בְּאַרְעָא אַרְעִיתָא כָּל מַלְכֵי קֳדָם שִׁלְטוֹנִין וְעַתִּירֵי נִכְסַיָא כָּל עַבְדֵי מַלְכוּ׃ אַף אִנּוּן
עִמֵּיהּ אִתְחֲתוּ לִשְׁאוֹל עִם קְטִילֵי חַרְבָּא וְשִׁלְטוֹנוֹהִי אִתְּבַרוּ מַתְקִיפְהוֹן בְּגוֹ מַלְכְוָתָא׃
18 לְמַן דְּמֵית כְּדֵין בִּיקָר וּבִרְבוּ בְּמַלְכֵי קֳדָם וְתִתְחַת עִם מַלְכֵי קֳדָם לְאַרְעָא אַרְעִיתָא בְּגוֹ
חַיָבַיָא תִשְׁכַּב עִם קְטִילֵי חַרְבָּא הוּא פַרְעֹה וְכָל אִתְרְגוּשְׁתֵּיהּ אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים׃

לב

1 וַהֲוָה בִּתְרֵתָא עַסְרֵי שְׁנִין בִּתְרֵי עֲסַר יַרְחִין בְּחַד לְיַרְחָא הֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ
2 עִמִּי לְמֵימַר׃ בַּר אָדָם טוֹל אִלְיָא עַל פַּרְעֹה מַלְכָּא דְּמִצְרַיִם וְתֵימַר לֵיהּ תַּקִּיף בְּעַמְמַיָא
הֲוֵיתָא וְאַתְּ כְּתַנִּינָא בְּיַמַּיָא וְאַנְחָתָא בְּמַשִׁרְיָתָךְ וַאֲזֵעְתָּא עַמְמַיָא בְּסוּמְכְוָתָךְ וְאַחֲרֵבְתָּא
3 מְדִינָתְהוֹן׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים וְאֶפְרוֹס עֲלָךְ יַת מְצָדְתִּי בִּקְהַל עַמְמִין סַגִּיאִין וְתִתְאַחַד
4 בְּסַרְיְנְתִּי׃ וְאַרְטְשִׁנָּךְ בְּאַרְעָא עַל אַפֵּי בָרָא אַרְמֵי נְבֵלְתָּךְ וְאַשְׁרֵי עֲלָךְ כָּל עוֹפָא דִּשְׁמַיָא
5 וְאַסְבַּע מִנָּךְ חַיַּת כָּל אַרְעָא׃ וְאֶתֵּן יַת בְּסַר קְטִילָךְ עַל טוּרַיָא וְיִתְמַלְוֹן חֵילַיָא פִּגְרֵי
6 7 מַשִׁרְיָתָךְ׃ וְאַרְוֵי אַרְעָא דַהֲנִיתָא מִדְּמָךְ עַל טוּרַיָא וּפְצִידַיָא יִתְמַלוֹן מִנָּךְ׃ וְתַחְפִּנָּךְ עָקָא
בְּאַכְהָיוּתִי יַת זִיו יְקַר מַלְכוּתָךְ מִן שְׁמַיָא וְיִזְעֲרוּן עַם מַשִׁרְיָתָךְ דַּהֲווֹ סַגִּיאִין כְּכוֹכְבַיָא
מֶלֶךְ בְּמַשִׁרְיָתֵיהּ יַחְפִּנָּךְ כַּעֲנָנָא דְּסָלֵיק וְחָפֵי יַת שִׁמְשָׁא וּכְסִהֲרָא בִּימָמָא לָא מְזַהַר
נְהוֹרֵיהּ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

14 Ut non eleventur fortitudine ſua omnes reges Orientis, nec dent tyrannidem ſuam ſuper regna, nec ſeſe efferant potentia ſua omnes tenentes regnum; quia univerſi traditi ſunt in mortem in terra inferiori in medio filiorum hominum cum deſcendentibus in lacum domus perditionis. 15 Hæc dicit Dominus Deus: In die quo deſcendere feci eum in infernum, luxerunt ſuper eum; operuit orbem tribulatio, & deſertæ ſunt provinciæ, & contremuerunt populi multi, & denigratæ ſunt propter eum facies regum, & omnes reges populorum propter eum percuſſerunt humerum. 16 A voce ruinæ ejus contremiſcere feci populos quando deſcendere feci eum in infernum cum deſcendentibus in lacum domus perditionis, & conſolati ſunt in terra inferiori omnes reges Orientis, principes & divites ſubſtantiis, omnes tenentes regnum. 17 Ipſi quoque deſcenderunt cum eo in infernum cum interfectis gladio, & principes ejus contriti ſunt, *quos roborabat* in medio regnorum. 18 Cuínam ſimilis es nunc in magnitudine & in gloria inter reges Orientis? itaque detrahêris cum regibus Orientis in terram inferiorem, in medio peccatorum dormies cum interfectis gladio; hic eſt Pharao & omnis multitudo ejus, ait Dominus Deus.

CAP. XXXII.

1 Et factum eſt in duodecimo anno, menſe duodecimo, prima die menſis, 2 factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini mecum, dicens: Fili hominis, aſſume lamentum ſuper Pharaonem regem Ægypti, & dices ei: Fortis in populis fuiſti, & tu ſicut *draco* qui *eſt* in mari, expugnâſti exercitu tuo, & commoviſti populos cum auxiliis tuis, & vaſtâſti provincias eorum. 3 Hæc dicit Dominus Deus: Expandam ſuper te rete meum in turba populorum multorum, & capieris in ſagena mea. 4 Et dimittam te humi: ſuper faciem agri projiciam cadaver tuum, & habitare faciam ſuper te omnes aves cœli, & ſaturabo ex te beſtias univerſæ terræ. 5 Et dabo carnes occiſorum tuorum ſuper montes, & implebuntur convalles cadaveribus exercitus tui. 6 Et inebriabo terram pinguem ſanguine tuo ſuper montes, & rivi implebuntur ex te. 7 Et operiet te tribulatio, cùm extinxero ſplendorem gloriæ regni tui de cœlis; & imminuentur populi exercitus tui, qui ſunt multi ſicut ſtellæ. Rex cum exercitu ſuo operiet te ſicut nubes quæ aſcendit & operit ſolem, & ſicut luna quæ in die non ſplendet lumine ſuo.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

14 * ܐܝܟ ܕܠܐ ܢܬܪܝܡܘܢ ܒܩܘܡܬܗܘܢ. ܟܠܗܘܢ ܐܝܠܢܝ ܕܡܝܐ. ܘܠܐ ܢܬܠܘܢ ܫܘܡܠܝܗܘܢ ܒܝܢܝ
ܥܒܝܐ. ܘܠܐ ܢܩܘܡܘܢ. ܘܠܐ ܢܫܘܘܢ ܠܗܘܢ ܟܠ ܫܬܝ ܡܝܐ. ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ ܐܫܬܠܡܘ ܠܡܘܬܐ
ܠܐܪܥܐ ܬܚܬܝܬܐ. ܒܝܢܝ ܒܢܝܢܫܐ ܕܢܚܬܝܢ ܠܓܘܒܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. 15
ܒܝܘܡܐ ܕܢܚܬ ܠܫܝܘܠ ·. ܐܒܠܬ ܘܟܣܝܬ ܥܠܘܗܝ ܬܗܘܡܐ. ܘܟܠܝܬ ܢܗܪܘܬܗ ..
ܘܐܬܟܠܝܘ ܡܝܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܐܩܕܪܬ ܥܠܘܗܝ ܠܠܒܢܢ. ܘܟܠܗܘܢ ܐܝܠܢܝ ܕܚܩܠܐ ܐܬܡܚܠܘ.
* ܡܢ ܩܠܐ ·. ܕܡܦܘܠܬܗ ܐܬܙܝܥܬ ܐܪܥܐ. ܟܕ ܐܚܬܬܗ ܠܫܝܘܠ ܥܡ ܢܚܬܝ ܓܘܒܐ. 16
ܐܬܒܝܐܘ ܒܐܪܥܐ ܬܚܬܝܬܐ. ܟܠܗܘܢ ܐܝܠܢܝ ܥܕܢ. ܓܒܝܐ ܘܫܦܝܪܐ ܕܠܒܢܢ ܕܫܬܝܢ ܡܝܐ.
* ܐܦ ܗܢܘܢ ܢܚܬܘ ܥܡܗ ܠܫܝܘܠ ܠܘܬ ܩܛܝܠܝ ܣܝܦܐ. ܘܙܪܥܗ ܝܬܒ ܒܛܠܠܗ 17
ܒܝܢܝ ܥܡܡܐ. * ܠܡܢܘ ܡܢ ܐܝܠܢܝ ܥܕܢ ܐܬܕܡܝܬ ܒܫܘܒܚܐ ܘܒܪܘܪܒܐ. ܘܢܚܬܬ ܥܡ ܐܝܠܢܝ 18
ܥܕܢ ܠܐܪܥܐ ܬܚܬܝܬܐ ܒܝܢܝ ܥܘܪܠܐ ܬܫܟܘܒ ܥܡ ܩܛܝܠܝ ܣܝܦܐ. ܗܢܘ ܦܪܥܘܢ
ܘܟܠܗ ܚܝܠܗ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܠܒ *

1 * ܒܫܢܬ ܚܕܥܣܪܐ. ܒܝܪܚܐ ܬܪܥܣܪ. ܒܚܕ ܒܝܪܚܐ ·. ܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ
ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ ·. ܫܩܘܠ ܐܘܠܝܬܐ ܥܠ ܦܪܥܘܢ ܡܠܟܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܠܐܪܝܐ 2
ܕܥܡܡܐ ܐܬܕܡܝܬ. ܘܐܝܟ ܬܢܝܢܐ ܐܝܬ ܕܒܝܡܐ. ܘܢܓܚܬ ܒܢܗܪܘܬܟ. ܘܕܠܚܬ ܡܝܐ
ܒܪܓܠܝܟ. ܘܕܫܬ ܢܗܪܘܬܗܘܢ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ ܦܪܣ ܐܢܐ ܥܠܝܟ 3
ܡܨܝܕܬܝ ܒܟܢܘܫܐ ܕܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܢܣܩܘܢܟ ܒܡܨܝܕܬܝ. * ܘܐܪܡܝܟ ܥܠ ܐܪܥܐ. ܘܥܠ 4
ܐܦܝ ܚܩܠܐ ܐܫܕܝܟ. ܘܐܫܪܐ ܥܠܝܟ ܟܠܗ ܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܐܣܒܥ ܡܢܟ ܚܝܘܬܐ
ܕܟܠܗ ܐܪܥܐ. * ܘܐܬܠ ܒܣܪܟ ܥܠ ܛܘܪܐ. ܘܐܡܠܐ ܢܚܠܐ ܡܢ ܪܡܬܟ. * ܘܐܫܩܐ ܐܪܥܐ 5 6
ܕܨܦܝܬܟ ܡܢ ܕܡܟ. ܘܛܘܪܐ ܘܢܚܠܐ ܢܬܡܠܘܢ ܡܢܟ. * ܘܐܟܣܐ ܟܕ ܬܕܥܟ ܫܡܝܐ. ܘܐܚܫܟ 7
ܟܘܟܒܝܗܘܢ. ܘܫܡܫܐ ܒܥܢܢܐ ܐܟܣܝܘܗܝ. ܘܣܗܪܐ ܠܐ ܢܢܗܪ ܢܘܗܪܗ.

Ut non exaltent ſe ſtaturis ſuis ullæ arbores 14
aquarum, neque germinent cacumina earum
inter condenſa, neque aſſurgant, neque ſimi-
les ſint eis aquis irriguæ; quandoquidem illæ
omnes traditæ ſunt morti in ima terra inter
homines qui deſcendunt in foveam. Sic ait 15
Dominus dominorum; Quo die deſcendit in
foveam, luctum feci; obtexi eum abyſſo, &
coërcui flumina, & cohibitæ fuerunt aquæ
multæ; atratum reddidi propter eum Liba-
num, & omnes arbores deſerti elanguernut.
Præ ſono caſûs ejus commota eſt terra: cúm- 16
que demiſiſſem eum in infernum cum deſcen-
dentibus in foveam, conſolationem percepe-
runt in ima terra omnes arbores Eden de ſele-
ctiſſimis & pulcherrimis Libani, quæ bibunt
aquas; *Quòd* etiam ipſæ deſcenderint cum 17
eo in infernum apud confoſſos gladio, ſemen
autem ejus manſerit ſub umbra ejus inter gen-
tes. Cuinam ex arboribus Eden ſimilis es glo- 18
riâ et magnitudine, quandoquidem deſcendiſti
cum arboribus Eden in imam terram, inter
præputiatos jacebis cum iis qui gladio occiſi
ſunt? Is eſt Pharaon et omnis potentia ipſius,
dicit Dominus dominorum.

CAP. XXXII.

ANno undecimo, menſe duodecimo, pri- 1
mâ menſis, fuit ad me ſermo Domini, dicendo,
Fili hominis, profer lamentum de Pharaone 2
rege Ægypti, & dic illi; Leoni gentium te
comparas, tu verò ſimilis es draconi marino:
illiſiſti in fluminibus tuis, conturbâſti aquas
pedibus tuis, & conculcâſti fluvios earum. Sic 3
ait Dominus dominorum; Ecce expandam
ſuper te rete meum in congregatione populo-
rum multorum; qui cùm extraxerint te reti
meo, Projiciam te in terram, & in agri ſu- 4
perficie dejiciam te: faciam ut habitent ſuper
te omnes cœli volucres, & ſaturabo ex te o- 5
mnes terræ beſtias: Projiciam carnes tuas
ſuper montes, & implebuntur valles vermi-
bus tuis: Irrigabo terram ſpecularum tuarum 6
ſanguine tuo, & montes valleſque implebun-
tur te: Operiam in extinctione tua cœlos, 7
& obtenebrabo ſtellas eorum: ſol nubibus
obtegetur, & luna non fulgebit lumine ſuo:

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

14 * كيلا يرتفع بعظمته جميع الشجر التي في الماء * ولا تعطي رياستهن الي وسط السحب *
ولا يقف في ارتفاعهن جميع شاربي الماء * اسلموا للموت جميعا في عمق الارض * في وسط بني
15 البشر * مع النازلين في الحفرة * هكذا يقول الرب الرب * في يوم نزل الي الجحيم غشيه
الحزن * واقمت عليه العمق * ومنعت انهارها * ومنعت كثرة الماء * وناح عليه لبنان * جميع
16 شجر الغاب انحلت به * ومن صوت سقطته تزلزلت الامم * لما احدرته الي الجحيم مع
الهابطين في الحفرة * وسليته في الارض اسفل جميع شجر النعيم والمختار من لبنان * جميع
17 شاربات الماء * ولان هاولاء نزلوا معه الي الجحيم * وذريته الساكنون تحت ستره في وسط
18 حياتهم هلكن * عماذا تشبهت * انزل مع اشجار النعيم الي عمق الارض * في وسط الغير
مختونين * تضطجع مع المجروحين بالسيف * هكذا فرعون وكل بيته يقول الرب الرب *

* الفصل الثاني والثلثون *

1 * وكان في السنة الثانية عشر * في الشهر الثاني عشر * في اول يوم من الشهر * كان قول الرب
2 الي قايلا * يا ابن الانسان * خذ نوحا على فرعون ملك مصر وتقول له * تشبهت باسد الامم *
3 وانت مثل تنين في البحر * ونطحت بانهارك * واقلقت الماء بقدميك * ودست انهارك * هكذا
4 يقول الرب الرب * اطرح عليك شباك شعوب كثيرة * واجتذبك بصناري * وامدك على
الارض * وتمتلي البقاع منك * واجلس عليك كل طيور السماء * واشبع منك كل وحوش جميع
5 6 الارض * واجعل لحماتك على الجبال * واملاها من دمك * وتروي الارض من فضلاتك
7 ومن اعصابك علي الجبال * واملا الاودية منك * واغشاك عند ما تطفي السماء * واظلم
كواكب السماء * واغطي الشمس بسحابة * والقمر لا يضي نوره *

Ut non extollantur ob magnitudinem 14
ejus omnes arbores quæ ſunt in aquis,
neque evehant principatum ſuum ad
medias nubes, neque erigant ſe ob alti-
tudinem ſuam omnes aquam bibentes:
traditi ſunt omnes ad mortem in ima
terra, in medio filiorum hominum, cum
deſcendentibus in foveam. Sic ait Do- 15
minus Dominus; In die quâ deſcen-
dit in infernum, obruit eum mœror, ex-
tuli ſuper eum abyſſum, ejuſque flumina
compeſcui, & cohibui multitudinem
aquarum: gemuit propter eum Libanus,
omnes arbores ſylvæ propter eum liquatæ
ſunt: Et ex ruinæ ejus fragore contre- 16
muerunt gentes, cùm deturbâſſem eum
in infernum cum deſcendentibus in la-
cum: & conſolabantur eum in terra
deorſum omnes arbores deliciarum, &
selectiſſimæ Libani, omnes bibentes
aquam. Et quandoquidem iſti deſcen- 17
derunt cum eo in infernum, & ſtirps
ejus habitantes ſub tegmine ipſius, in
medio vitæ ſuæ perierunt; Cui rei 18
te comparas? deſcende cum arboribus
deliciarum in profundum terræ, in me-
dium incircunciſorum, cum vulnera-
tis gladio concumbe. Ita Pharaon tota-
que domus ej, dicit Dominus Dominus.*

CAP. XXXII.

ITem contigit anno duodecimo, menſe 1
duodecimo, primâ die ejuſdem menſis;
ut eſſet ſermo Domini ad me, dicens;
O fili hominis, compone lamentationem 2
de Pharaone rege Ægypti, & dicas illi;
Leoni gentium te comparâſti, & fuiſti
inſtar draconis in mari, cornupetîſti flu-
minibus tuis, conturbâſti aquam pedi-
bus tuis, & flumina tua conculcâſti.
Sic dicit Dominus Dominus; Jaciam 3
ſuper te retia populorum multorum,
trahamque te hamo meo: Proſtrabo te 4
humi, & implebuntur te valles: faciam
ut ſedeant ſuper te omnes cœli volucres,
& ſatiabo de te omnes totius terræ be-
ſtias. Ponam carnes tuas ſuper montes, 5
& implebo eos ſanguine tuo: Irrigabi- 6
tur tellus reliquiis tuis & membris tuis
ſuper montes, valleſque de te replebo:
Obruam te cùm extinctum fuerit lumen 7
cœli, obtenebravero ſtellas cœli, ſolem
obtexero nubibus ejus, & lunæ lux mini-
mè ſplenduerit,

יחזקאל : לב

dabo & : te ſuper faciam *nigreſcere* *cœlis* in lucis luminaria Omnia
8 כָּל־מְאוֹרֵי אוֹר בַּשָּׁמַיִם אַקְדִּירֵם עָלֶיךָ וְנָתַתִּי
faciam iraſci Et .Deus Dominus dixit ,tuā terram ſuper *tenebroſitatem*
9 חֹשֶׁךְ עַל־אַרְצְךָ נְאֻם אֲדֹנָי יֱהֹוִה׃ וְהִכְעַסְתִּי
gentibus in tuam contritionem *me inducendo in* ,multorum populorum cor
לֵב עַמִּים רַבִּים בַּהֲבִיאִי שִׁבְרְךָ בַּגּוֹיִם
populos te ſuper faciam ſtupeſcere Et .*eas* nōſti non quas terras ſuper
10 עַל־אֲרָצוֹת אֲשֶׁר לֹא־יְדַעְתָּם׃ וַהֲשִׁמּוֹתִי עָלֶיךָ עַמִּים
me vibrando in ,formidine te ſuper formidabunt eorum reges & ,multos
רַבִּים וּמַלְכֵיהֶם יִשְׂעֲרוּ עָלֶיךָ שַׂעַר בְּעוֹפְפִי
vir momenta ad exterrebuntur & : eorum facies ſuper meum gladium
חַרְבִּי עַל־פְּנֵיהֶם וְחָרְדוּ לִרְגָעִים אִישׁ
Gladius : Deus Dominus dixit ſic Quia .tuæ ruinæ die in ,ſuo animo in
11 לְנַפְשׁוֹ בְּיוֹם מַפַּלְתֶּךָ׃ כִּי כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהֹוִה חֶרֶב
,tuam *turbam* faciam cadere fortium gladiis In .tibi veniet Babel regis
12 מֶלֶךְ־בָּבֶל תְּבוֹאֶךָּ׃ בְּחַרְבוֹת גִּבּוֹרִים אַפִּיל הֲמוֹנֶךָ
, Ægypti ſuperbiam vaſtabunt & : ipſi omnes gentium fortes
עָרִיצֵי גוֹיִם כֻּלָּם וְשָׁדְדוּ אֶת־גְּאוֹן מִצְרַיִם
,ejus *jumentum omne* faciam perdere Et .*ejus turba omnis* diſperdetur &
13 וְנִשְׁמַד כָּל־הֲמוֹנָהּ׃ וְהַאֲבַדְתִּי אֶת־כָּל־בְּהֶמְתָּהּ
ungulæ & ,ultrà hominis pes eas calcabit non & : multas aquas *deſuper*
מֵעַל מַיִם רַבִּים וְלֹא תִדְלָחֵם רֶגֶל־אָדָם עוֹד וּפַרְסוֹת
,eorum aquas faciam mergere Tunc .eas *calcabit* non *animalis*
14 בְּהֵמָה לֹא תִדְלָחֵם׃ אָז אַשְׁקִיעַ מֵימֵיהֶם
.Deus Dominus dixit ;faciam ire oleum velut eorum flumina &
וְנַהֲרוֹתָם כַּשֶּׁמֶן אוֹלִיךְ נְאֻם אֲדֹנָי יֱהֹוִה׃
terra deſolabitur & ,deſolationem Ægypti terram *me dando In*
15 בְּתִתִּי אֶת־אֶרֶץ מִצְרַיִם שְׁמָמָה וּנְשַׁמָּה אֶרֶץ
ſcient & : ea in habitantes omnes *me percutiendo in* ,ſua plenitudine à
מִמְּלֹאָהּ בְּהַכּוֹתִי אֶת־כָּל־יוֹשְׁבֵי בָהּ וְיָדְעוּ
gentium filiæ ,eam *deplorate* & , *ipſa* Lamentum .Dominus *ego* quòd
16 כִּי־אֲנִי יְהוָה׃ קִינָה הִיא וְקוֹנְנוּהָ בְּנוֹת הַגּוֹיִם
deflebunt ejus *turbam* omnē ſuper & ,Ægyptum ſuper : eam *deplorabunt*
תְּקוֹנֵנָּה אוֹתָהּ עַל־מִצְרַיִם וְעַל־כָּל־הֲמוֹנָהּ תְּקוֹנֵנָּה
,anno undecimo in fuit Et .Deus Dominus dixit , *eam*
17 אוֹתָהּ נְאֻם אֲדֹנָי יֱהֹוִה׃ וַיְהִי בִּשְׁתֵּי עֶשְׂרֵה שָׁנָה
: dicendo ,me ad Domini verbum fuit ,menſis decima quinta in
בַּחֲמִשָּׁה עָשָׂר לַחֹדֶשׁ הָיָה דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃
,*illam* deſcendere fac & , Ægypti *turbam ſuper conquerere* ,hominis Fili
18 בֶּן־אָדָם נְהֵה עַל־הֲמוֹן מִצְרַיִם וְהוֹרִדֵהוּ
deſcēdentib⁹ cum ,inferorum terram ad *illuſtrium* gentium *filias* & ipſam
אוֹתָהּ וּבְנוֹת גּוֹיִם אַדִּרִם אֶל־אֶרֶץ תַּחְתִּיּוֹת אֶת־יוֹרְדֵי
.*præputiatis* cum *jace* & ,Deſcende ? *fuiſti jucunda quo Ex* .*lacum*
19 בוֹר׃ מִמִּי נָעָמְתְּ רְדָה וְהָשְׁכְּבָה אֶת־עֲרֵלִים׃
trahite ,eſt data Gladio .cadent gladio interfectorum medio In
20 בְּתוֹךְ חַלְלֵי־חֶרֶב יִפֹּלוּ חֶרֶב נִתָּנָה מָשְׁכוּ
medio de potentium fortes ei Loquentur .ejus *turbas* omnes & , eam
21 אוֹתָהּ וְכָל־הֲמוֹנֶיהָ׃ יְדַבְּרוּ־לוֹ אֵלֵי גִבּוֹרִים מִתּוֹךְ
incircunciſis *jacuerunt* deſcenderunt : ſuis auxiliatoribus cum , inferni
שְׁאוֹל אֶת־עֹזְרָיו יָרְדוּ שָׁכְבוּ הָעֲרֵלִים
ejus circuitibus ,ejus cœtus omnis & , Aſſur Ibi .gladio interfectis
22 חַלְלֵי־חָרֶב׃ שָׁם אַשּׁוּר וְכָל־קְהָלָהּ סְבִיבוֹתָיו
Cujus .gladio in *cadentes* interfecti ipſi omnes : ejus ſepulchra
23 קִבְרֹתָיו כֻּלָּם חֲלָלִים הַנֹּפְלִים בֶּחָרֶב׃ אֲשֶׁר
circuitus ejus cœtus fuit & ,*lacus* lateribus in *ejus* ſepulchra ſunt poſita
נִתְּנוּ קִבְרֹתֶיהָ בְּיַרְכְּתֵי־בוֹר וַיְהִי קְהָלָהּ סְבִיבוֹת
dederunt qui ,gladio in *cadentes* interfecti ipſi omnes : ejus ſepulchri
קְבֻרָתָהּ כֻּלָּם חֲלָלִים נֹפְלִים בַּחֶרֶב אֲשֶׁר־נָתְנוּ
.viventium terra in formidinem
חִתִּית בְּאֶרֶץ חַיִּים׃

Verſio VULG. LAT.

8 Omnia luminaria cœli mœrere faciam ſuper te : & dabo tenebras ſuper terrā tuā, dicit Dn̄s Deus, cùm ceciderint vulnerati tui in medio terræ, ait Dn̄s De⁹.
9 Et irritabo cor populorum multorum, cùm induxero contritionē tuā in gentibus ſuper terras, quas
10 neſcis. Et ſtupeſcere faciā ſuper te populos multos : & reges eorum horrore nimio formidabunt ſuper te, cùm volare cœperit gladius meus ſuper facies eorum: & obſtupeſcent repentè ſinguli pro anima ſua in die ruinæ
11 tuæ. Quia hæc dicit Dn̄s Deus; Gladius regis Babylonis veniet
12 tibi, In gladiis fortium dejiciam multitudinē tuā : inexpugnabiles omnes Gentes hæ : & vaſtabunt ſuperbiam Ægypti, & diſ-
13 ſipabitur multitudo ej⁹. Et perdam omnia jumenta ej⁹, quæ erant ſuper aquas plurimas : & non conturbabit eas pes hominis ultrà, neq; ungula jumento-
14 rum turbabit eas. Tunc puriſſimas reddā aquas eorū, & flumina eorū quaſi oleū adducā, ait
15 Dn̄s De⁹ : Cùm dedero terram Ægypti deſolatā : deſeretur autem terra à plenitudine ſua, quando percuſſero omnes habitatores ej⁹ : & ſcient quia ego
16 Dn̄s. Planctus eſt, & plangent eum : filiæ Gentiū plangent eū : ſuper Ægyptum, & ſuper multitudinē ej⁹ plangent eum, ait Do-
17 minus Deus. Et factū eſt in duodecimo anno, in quintadecima menſis, factum eſt verbum Do-
18 mini ad me, dicens; Fili hominis, cane lugubre ſuper multitudinem Ægypti : & detrahe eam ipſam, & filias Gentium robuſtarum, ad terram ultimam, cum his qui deſcendunt in lacum.
19 Quo pulchrior es ? deſcende,
20 & dormi cum incircumciſis. In medio interfectorum gladio cadent : gladius dat⁹ eſt, attraxerunt eam, & omnes populos ej⁹.
21 Loquentur ej potentiſſimi robuſtorū de medio inferni, qui cum auxiliatoribus ej⁹ deſcenderunt, & dormierunt incircumciſi, in-
22 terfecti gladio. Ibi Aſſur, & omnis multitudo ej⁹: in circuitu illi⁹ ſepulchra ejus: omnes interfecti, & qui ceciderunt gladio.
23 Quorum data ſunt ſepulchra in noviſſimis laci: et facta eſt multitudo ejus per gyrum ſepulchri ejus : univerſi interfecti, cadentéſque gladio, qui dederant quondam formidinem in terra viventium.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

8 Πάντα τὰ φαίνοντα φῶς ἐν τῷ οὐρανῷ, Συσκοτάσουσιν ἐπὶ σέ· καὶ δώσω σκότος ἐπὶ τὴν γῆν (μ), λέγει κύριος κύριος (ν).
9 Καὶ παροργιῶ καρδίαν λαῶν πολλῶν, ἡνίκα ἂν (ξ) ἄγω αἰχμαλωσίαν σου εἰς τὰ
10 ἔθνη, εἰς (ο) γῆν ἣν οὐκ ἔγνως. Καὶ συστυγνάσουσιν ἐπὶ σὲ (π) ἔθνη πολλά, καὶ οἱ βασιλεῖς αὐτῶν ἐκστάσει ἐκστήσονται, ἐν τῷ (ρ) πετᾶσθαι τὴν ῥομφαίαν μου ἐπὶ πρόσωπα αὐτῶν, προσδεχόμενοι τὴν πτῶσιν αὐτῶν (σ)
11 ἀφ' ἡμέρας πτώσεώς σου. Ὅτι τάδε λέγει (τ) κύριος κύριος, Ῥομφαία βασιλέως Βα-
12 βυλῶνος ἥξει σοι Ἐν μαχαίραις γιγάντων, καὶ καταβαλῶ τὴν ἰσχύν σου, λοιμοὶ ἀπὸ ἐθνῶν πάντες, καὶ ἀπολοῦσι τὴν ὕβριν Αἰγύπτου, καὶ
13 συντριβήσεται πᾶσα ἡ ἰσχὺς αὐτῆς. Καὶ ἀπολῶ πάντα τὰ κτήνη αὐτῆς ἀφ' ὕδατος πολλοῦ, καὶ οὐ μὴ ταράξῃ αὐτὸ (υ) ποὺς ἀνθρώπου ἔτι, καὶ ἴχνος (φ) κτηνῶν οὐ μὴ κα-
14 ταπατήσῃ αὐτό. Οὕτως τότε ἡσυχάσει τὰ ὕδατα αὐτῶν, καὶ οἱ ποταμοὶ αὐτῶν ὡς ἔλαιον πορεύσονται, λέγει (χ) κύ-
15 ριος, Ὅταν δῶ Αἴγυπτον εἰς ἀπώλειαν, καὶ ἐρημωθῇ ἡ γῆ σὺν τῇ πληρώσει αὐτῆς, ὅταν (ψ) διασπερῶ πάντας τοὺς κατοικοῦντας ἐν αὐτῇ, καὶ γνώσονται ὅτι ἐγώ
16 εἰμι κύριος. Θρῆνός ἐστι, καὶ (⫯) θρηνήσεις αὐτόν, καὶ αἱ θυγατέρες τῶν ἐθνῶν θρηνήσουσιν αὐτόν, ἐπ' Αἴγυπτον, καὶ ἐπὶ πᾶσαν τὴν ἰσχὺν αὐτῆς θρηνήσουσιν αὐτήν, λέγει
17 κύριος κύριος. Καὶ (ω) ἐγενήθη ἐν τῷ δωδεκάτῳ ἔτει (α) τοῦ πρώτου μηνός, πεντεκαιδεκάτῃ τοῦ μηνός, ἐγένετο λόγος κυ-
18 ρίου πρὸς μέ, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, θρήνησον ἐπὶ τὴν (β) ἰσχὺν Αἰγύπτου, καὶ καταβιβάσουσιν αὐτῆς τὰς θυγατέρας τὰ ἔθνη νεκρὰς εἰς τὸ βάθος τῆς γῆς, πρὸς τοὺς
19 καταβαίνοντας εἰς βόθρον· (γ) Ἐν μέσῳ μαχαίρας τραυματιῶν πεσοῦνται μετ' αὐτοῦ, καὶ κοιμηθήσεται πᾶσα ἡ ἰσχὺς αὐτοῦ. καὶ ἐροῦσίν σοι οἱ γίγαντες, Ἐν βάθει βόθρου γίνου, Τίνος κρείττων εἶ; (δ) καὶ κατάβηθι, καὶ κοι-
20 μήθητι μετὰ ἀπεριτμήτων, Ἐν μέσῳ τραυ-
21 ματιῶν μαχαίρας. Ἐκεῖ Ἀσσοὺρ καὶ πᾶσα ἡ
22 συναγωγὴ αὐτοῦ, πάντες τραυματίαι
23 ἐκεῖ ἐδόθησαν, (ε) Καὶ ἡ ταφὴ αὐτῶν ἐν βάθει βόθρου, καὶ ἐγενήθη ἡ συναγωγὴ (ζ) αὐτοῦ περικύκλῳ τοῦ μνήματος αὐτοῦ, πάντες (η) οἱ τραυματίαι οἱ πεπτωκότες μαχαίρᾳ, (θ) οἱ δόντες τὸν φόβον αὐτῶν ἐπὶ γῆς ζωῆς.

Omnia oſtendentia lumen in cœlo, contenebreſcent in te: & dabo tenebras ſuper terram, ait Dominus Dominus : Et irritabo cor populorum multorum ; cùm adduxero captivitatem tuam in gentes, ad terram, quam neſcis. Et contriſtabuntur ſuper te gentes multæ: & reges eorū ſtupore ſtupebunt, cùm (i) volare cœperit gladius meus ſuper facies eorum, (k) expectantes ruinam ſuam à die ruinæ tuæ. Quia hæc dicit Dominus Dominus; Gladius regis Babylonis veniet tibi In gladiis gigantum: & dejiciam fortitudinem tuam: peſtilentes de gentib⁹ cuncti, et perdent (l) injuriam Ægypti: & conteretur omnis fortitudo illius. Et perdam omnia jumenta ejus ab aqua multa : & non conturbabit eam pes hominis ultrá: & veſtigium jumentorū non calcabit eā. (m) Ita tunc quieſcent aquæ eorum: et flumina eorū, quaſi oleum (n) ibunt, dicit Dominus: Cùm dedero Ægyptū in perditionem, et deſolata fuerit terra cum plenitudine ſua: cùm diſſeminavero omnes habitatores ejus. Et ſcient, quia ego ſum Dominus. Planctus eſt, & (o) planges eum : & filiæ gentium plangent (p) eum: ſuper Ægyptum, & ſuper omnem fortitudinem ejus plangent eam, ait Domin⁹ Dominus. Et factū eſt in duodecimo anno (q) primi menſis, quintadecimâ menſis, factus eſt ſermo Domini ad me, dicens; Fili hominis, plange ſuper (r) fortitudinem Ægypti: & deducent ejus filias gentes mortuas in profundum terræ, ad eos, qui deſcendunt in (ſ) ſoveam; In medio vulneratorum gladio cadent cum eo: et dormiet omnis fortitudo ejus: & dicent tibi gigantes; In (t) profundo foveæ eſto: quo melior es? & deſcende, et dormi cum incircuncifis In medio vulneratorum gladio. Ibi Aſſur, & omnis congregatio ejus : omnes vulnerati ibi dati ſunt: Et ſepulchrum eorum in profundo foveæ : & facta eſt congregatio ejus in circuitu ſepulchri ejus: omnes vulnerati, qui ceciderant (u) gladio : qui dederunt timorem ſuum in terra vitæ. 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23

MS.A. (μ) σου, (ν) ὁ θεός. (ξ) ἀγάγω (ο) τὴν γῆν (π) ἔθνη, καὶ οἱ (ρ) πετασθῆναι ῥομφαίαν μου ἐπὶ πρόσωπον (σ) ἀπὸ (τ) ἀδωναῒ κύριος, Ῥομφαία (υ) ἔτι ποὺς ἀνθρώπου, καὶ (φ) κτήνους (χ) ἀδωναῒ κύριος, (ψ) διασπείρω (⫯) θρηνήσουσιν (ω) ἐγένετο (α) ἐν τῷ πρώτῳ μηνί, (β) γῆν (γ) ἐξ ὑδάτων εὐπρεποῦς κατάβηθι, καὶ κοιμήθητι μετὰ ἀπεριτμήτων, Ἐμ μέσῳ τραυματιῶν μαχαίρᾳ πεσοῦνται (δ) κατάβηθι, (ε) Ἡ ταφὴ (ζ) αὐτῶν (η) τραυματίαι (θ) οἱ ἔδωκαν τὰς ταφὰς αὐτῆς ἐν μηροῖς λάκκου, καὶ ἐγενήθη ἐκκλησία ὑπὲρ κύκλῳ τῆς ταφῆς αὐτοῦ, πάντες αὐτοὶ τραυματίαι, πίπτοντες μαχαίρᾳ, οἱ δόντες

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

8 כל שבילי ארחתיך דמתקנין ונטירן בגויך הא כמנהרי זהריא בשמיא אקלקלנון עלך
9 ותחפי עקא כקבלא ית ארעך אמר יי אלהים : ואזיע לב עממין סגיאין באיתיותי תבירי
10 קרבך לביני עממיא למדינן דלא ידעתנון : ואצדי עלך עממין סגיאין ומלכיהון
יתמהון עלך תימה באיתיותי עלך דקטלין בחרבא ואנון חזן ויזועון מן קדם תברהון
11 גבר לנפשיה ביום מפלת קטילך : ארי כדנן אמר יי אלהים קטולי חרבא מלכא דבבל
12 ייתון עלך : בחרבא דגבריא אמגר משריתך תקיפי עממיא כולהון ויבזון ית תקוף
13 מצרים ותשתיצי כל אתרגושתהא : ואוביד ית כל בעירה מעל מיין סגיאין ולא
14 תוועונון רגלי דאנשא עוד ופרסת בעירא לא תוועונון : בכן אשקיט לעממיא ומלכיהון
15 בניח אדבר אמר יי אלהים : כד אתן ית ארעא דמצרים צדו ותצדי ארעא ומלהא
16 באיתיותי מחא על כל דיתבין בה וידעון ארי אנא יי : אמר נביא אליא היא נבואתא
ותהי לאליא כפרני עממיא ילילון יתה על מצרים ועל כל אתרגושתה ילילון יתה
17 אמר יי אלהים : והוה בתרתא עסרי שנין בחמשא עסר לירחא הוה פתגם נבואה
18 מן קדם יי עמי למימר : בר אדם אתנבי על אתרגושת מצרים ותברה לה ולכפרני
19 עממיא תקיפיא אתנבי דיתמסרון לארעא ארעיתא עם נחתי גוב בית אבדנא : ממן
20 את גבר חורת ושכיב עם חיביא : בגו קטילי חרבא יתרמון לה לחרבא יתמסרון
21 לשיצאה יתהון וית כל אתרגושתהון : ימללון עמיה תקיפי גבריא מגו שאול
22 עם סעדוהי נחיתו שכיבו חיביא קטילי חרבא : תמן אתור וכל משריתיה סחרנותהון
23 קבריהון כולהון קטילין דאתקטלו בחרבא : דאתמסרו לקבורא בסיפי גוב בית
אבדנא והות משריתהון סחרנותהון קברתהון כולהון קטיליא דאתקטלו בחרבא
דאתמסירו לתבר על דשליטו בארעא דישראל :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Omnes calles itinerū tuorū qui directi erant, & aſſervati *in medio tui*, ſicut 8
luminaria lucentia in cœlis, diſſipabo eos ſuper te : & operiet tribulatio,
ſicut tenebræ, terram tuam, ait Dn̄s De⁹. Et commovebo cor populorū mul- 9
torum cùm adduxero *contritos belli tui* inter populos, & ad provincias
quas neſciſti. Et ſtupeſcere faciā ſuper te populos multos, & reges eorū ad- 10
mirabuntur ſuper te miratione, cùm adduxero ſuper te eos qui occidunt gla-
dio ; & ipſi videbunt & contremiſcent à facie interit⁹ ſui, ſinguli pro ani-
ma ſua in die ruinæ occiſorū tuorū. Quia hæc dicit Dn̄s De⁹ : Occidentes 11
gladio regis Babylonis venient contra te. *Gladio* fortiū corruere faciā ex- 12
ercitū tuum: robuſti populorū univerſi vaſtabunt fortitudinem Ægypti, &
conſumetur omnis multitudo ej⁹. Et perdam omnia jumenta ej⁹ quæ erant 13
ſuper aquas multas ; & non *conturbabunt* eas *pedes* hominis ampliùs, &
ungulæ jumenti non turbabunt eas. Tunc quieſcere faciā populos, & reges 14
eorū in requiē deducā, ait Dn̄s De⁹. Cùm dedero terrā Ægypti deſolatā, & 15
deſolabitur terra *& plenitudo* ej⁹ ; cùm adduxero percuſſionē ſuper omnes
habitantes in ea: & ſcient quia ego Dn̄s. Dixit propheta, Lamentabilis pro- 16
phetia eſt, & erit in lamentationē : villæ populorū lamentabuntur eam ſup
Ægyptū, & ſuper omnē multitudinē ej⁹ lamentabuntur eā, ait Dn̄s De⁹. Et 17
factū eſt duodecimo anno, quintadecima die menſis, factum eſt verbū pro-
phetiæ à facie Dn̄i mecum, dicens: Fili hominis, vaticinare ſuper multitudi- 18
nem Ægypti, & contere eā ipſā, & villas populorū robuſtorū; vaticinare ꝙ
tradentur terræ inferiori cum deſcendentib⁹ in lacū dom⁹ perditionis. Quo 19
potentior es tu ? deſcende & dormi cum peccatorib⁹. In medio occiſorum 20
gladio cadent; gladio tradentur ut conſumat eos & omnē multitudinē eorū.
Loquentur cum eo potentes, & fortes de medio inferni cum auxiliatorib⁹ 21
ſuis deſcenderunt, & dormierunt peccatores interfecti gladio. Ibi Aſſur & 22
omnis exercit⁹ ej⁹; in circuitu eorū ſepulchra ipſorū, omnes interfecti qui
occiſi ſunt gladio. Qui traditi ſunt ſepulturæ in intimo lacu dom⁹ perditi- 23
onis ; & fuit exercit⁹ eorum in circuitu ſepulchrorū ipſorū, univerſi inter-
fecti qui occiſi ſunt gladio, qui traditi ſunt in exitium, pro eo quòd do-
minati ſunt in terram Iſrael.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܘܟܠܗܘܢ ܢܗܝܪ̈ܐ ܕܡܢܗܪܝܢ ܒܫܡܝܐ. ܐܚܫܟ ܐܢܘܢ ܥܠܝܟܝ. ܘܐܬܠ ܚܫܘܟܐ ܒܐܪܥܟܝ 8
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ. * ܘܐܪܓܙ ܠܒܐ ܕܥܡܡܐ ܣܓܝܐ̈ܐ. ܡܐ ܕܐܝܬܐ ܬܒܪܟܝ ܒܝܬ 9
ܥܡܡܐ : ܘܠܡܕܝܢ̈ܬܐ ܕܠܐ ܝܕܥܬܝ ܐܝܟ ܕܗܘܝܬ. * ܘܐܬܡܗܘܢ ܥܠܝܟܝ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐ̈ܐ. 10
ܘܡܠܟܝܗܘܢ ܢܪܬܬܘܢ. ܡܐ ܕܐܦܪܘܚ ܣܝܦܝ ܥܠ ܐܦܝܗܘܢ. ܘܢܪܬܬܘܢ ܘܢܙܘܥܘܢ ܐܢܫ
ܒܢܦܫܗ. ܒܝܘܡܐ ܕܡܦܘܠܬܟܝ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ. ܣܝܦܗ ܕܡܠܟܐ 11
ܕܒܒܠ ܬܐܬܐ ܠܟܝ. * ܒܣܝܦܐ ܕܓܢܒܪ̈ܐ ܐܪܡܐ ܠܥܘܫܢܟܝ. ܘܟܠܗܘܢ ܥܫܝܢ̈ܐ 12
ܕܥܡܡܐ. ܘܢܒܙܘܢ ܠܥܘܫܢܗ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܢܬܒܙܙ ܟܠܗ ܥܘܬܪܗ. * ܘܐܘܒܕ ܒܥܝܪܗ ܡܢ 13
ܡܝܐ ܣܓܝܐ̈ܐ. ܘܠܐ ܬܘܒ ܪܓܠܐ ܕܒܪܢܫܐ ܠܐ ܬܕܠܚ ܐܢܘܢ. ܐܦܠܐ ܦܪܣܬܐ ܕܒܥܝܪܐ.
* ܗܝܕܝܢ ܐܫܩܥ ܡܝܗܘܢ. ܘܢܗܪ̈ܘܬܗܘܢ ܐܪܕܐ ܐܝܟ ܡܫܚܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ. * ܡܐ 14 15
ܕܐܬܠܝܗ ܠܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ ܠܚܘܪܒܐ. ܘܬܚܪܒ ܐܪܥܐ ܒܡܠܝܗ̇. ܡܐ ܕܐܡܚܐ ܠܟܠܗܘܢ
ܥܡܘܪ̈ܝܗ̇. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܐܘܠܝܬܐ ܗܝ. ܘܡܐܠܝܢ ܠܗ̇ ܒܢ̈ܬ ܥܡܡܐ ܥܠ 16
ܡܨܪܝܢ. ܥܠ ܡܨܪܝܢ ܘܥܠ ܟܠܗ ܚܝܠܗ̇ ܢܐܠܝܢܗ̇. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ. * ܒܫܢܬ 17
ܚܕܥܣܪܐ ܒܚܡܫܬܥܣܪ ܒܝܪܚܐ. ܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ. 18
ܐܠܝ ܐܘܠܝܬܐ ܥܠ ܚܝܠܗ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܐܚܬܝܗ̇ ܥܡܗ̇ ܠܒܢ̈ܬ ܥܡܡܐ ܥܫܝܢ̈ܐ.
ܠܐܪܥܐ ܬܚܬܝܬܐ ܥܡ ܢܚ̈ܬܝ ܓܘܒܐ. * ܡܢ ܡܝܐ ܒܣܝܡ̈ܐ ܢܚܘܬ. ܘܐܫܬܟܒܝ ܥܡ ܥܘܪ̈ܠܐ. 19
* ܥܡ ܩܛܝܠܝ ܣܝܦܐ ܢܦܠܘܢ. ܘܢܓܪܘܢܝܗ ܘܠܟܠܗ ܚܝܠܗ. * ܘܢܡܠܠܘܢ ܥܡ 20 21
ܥܠܝܡܝܗܘܢ ܪܘܪ̈ܒܢܐ ܕܥܡܡܐ ܡܢ ܓܘ ܫܝܘܠ. ܘܢܚܬܘܢ. ܘܢܫܟܒܘܢ ܥܘܪ̈ܠܐ ܥܡ
ܩܛܝܠܝ ܣܝܦܐ. * ܬܡܢ ܐܬܘܪ ܘܟܠܗ ܟܢܫܗ. ܚܕܪ ܩܒܪܗ. ܟܠܗܘܢ ܩܛܝ̈ܠܐ ܕܢܦܠܘ 22
ܒܣܝܦܐ. * ܕܥܒܕ ܩܒܪܗ ܒܣܘܦ̈ܝܗ ܕܓܘܒܐ. ܘܗܘܐ ܟܢܫܗ ܚܕܪ ܩܒܪܗ. ܟܠܗܘܢ 23
ܩܛܝ̈ܠܐ ܕܢܦܠܘ ܒܣܝܦܐ. ܥܠ ܕܥܒܕܘ ܬܒܪܐ ܒܐܪܥܐ ܕܚܝ̈ܐ.

Omnia luminaria quæ lucent in cœlo, ſuper 8
te obſcurabo, & faciam tenebras in terra tua,
dicit Dominus dominorum : Et ad iram concitabo 9
cor populorum multorum, quum induxero
fractionem tuam inter gentes, & in
urbes quas ignoras : Et faciam ut obſtupeſcant 10
de te populi multi, extimeantque reges
eorum, quum coruſcare fecero gladium meum
ſuper facies eorum : timebunt inquam,
& expaveſcent quiſque in ſemetipſo in die
caſûs tui. Sic ait Dominus dominorum ; 11
Gladius regis Babylonis invadet te. Gladio 12
gigantum omniumque robuſtiſſimorum inter
gentes dejiciam robur tuum ; prædabuntur
robur Ægypti, & diripientur omnes divitiæ
ipſius. Perdam jumenta ejus ab aquis multis, 13
& pes humanus non turbabit eas ampliùs,
neque ungulæ jumentorum. Tunc diſponam 14
aquas eorum, & fluvios eorum fluere faciam
tanquam oleum, ait Dominus dominorum :
Quum redegero terram Ægypti in deſolationem, 15
& vaſtata fuerit univerſa terra : quum
percuſſero omnes habitatores ejus: & experientur
me eſſe Dominum. Lamentatio eſt, & 16
filiæ populorum lamentabuntur eam ; de Ægypto
& de omnibus divitiis ejus lamentabuntur
eam, dicit Dominus dominorum.
Anno undecimo, decimâ quintâ menſis, fuit 17
ad me ſermo Domini, dicendo ; Fili hominis, 18
profer lamentationem de potentia Ægypti,
eamque demitte cum ipſa inter gentes robuſtas,
in imam terram, cum deſcendentibus
in foveam, *dicens* ; Ex aquis jucundis 19
deſcende, & jace cum præputiatis. Cum 20
gladio confoſſis cadent, & trahent eum totamque
potentiam ejus. Et alloquentur juvenes 21
eorum principes gentium ex inferis, &
deſcendent cubabuntque præputiati cum
gladio confoſſis. Illic Aſſur cum tota congregatione 22
ſua ſunt circa ſepulchrum ejus; omnes
interfecti qui gladio ceciderunt : Qui 23
fecit ſepulchrum ſuum in marginibus foveæ,
ejuſque ſepulchrum circunſtat congregatio ipſius;
omnes interfecti qui gladio ceciderunt,
eò quòd fractionem fecerint in terra vivorum.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* وجميع المنيرات نورا في السماء يظلمون بك * واعطي ظلمة علي ارضك يقول الرب 8
الرب * واغضب قلب شعوب كثير * حين اجلب سبيك في الامم * في ارض لا تعرفها * 9
* ويعبسون عليك امم كثير * وملوكهم يحيرون حين * عند ما امدد سيفي علي 10
وجوههم * يتوقعون سقطهم منذ يوم سقطتك * لان هكذا يقول الرب * سيف ملك 11
بابل ياتي اليك بسيوف الجبابرة * واطرح قوتك * وجميع المفسدين من الامم يهلكون 12
كبرياء مصر * وينكسر كل قوتها * واهلك جميع بهايمها * من الماء الكثير * فلا يجوز 13
ايضا قدم انسان * واثر بهيمة لا يطاه هكذا * حينيذ تسكن مياهم * وانهارهم تسير 14
مثل الزيت يقول ادوناي الرب * اذ ادفع مصر للهلاك * وتخرب الارض بكمالها * اذ ابدد 15
جميع السكان فيها * ويعلمون اني انا الرب * نوح هو * وينوحونه * وبنات الامم ينحنه علي 16
مصر * وعلي جميع قوتها ينحنه * يقول ادوناي الرب * وكان في السنة الثانية عشر * في 17
الشهر الاول * في خمسة عشر من الشهر * كان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان * نح علي 18
قوة مصر * وينزلون الامم بناتها امواتا الي عمق الارض مع الهابطين في الجب * في وسط 20
الجرحا بالسيف يسقطون معه * ويضطجع كل قوته * ويقولون لك الجبابرة * صر في عمق 21
الجب * انت افضل ممن * انزل واضطجع مع الغلف مخدوشين * في وسط الجرحا 19
بالسيف * هناك الموصل وكل جمعه وجميع الجرحا * هناك اعطوا اقبارهم في عمق الجب * 22
* وصار جمعه حول قبره * جميع الجرحا الساقطين بالسيف * الذين اعطوا خوفهم علي 23
ارض الحياة *

Denique omnia lumine micantia in cælo 8
obtenebrata fuerint in te: daboq; tenebras
ſuper terram tuam, dicit Dominus Dominus, *Et ad iram provocabo cor populorū* 9
multorum; quum adduxero captivitatem
tuam inter gentes, in terram quam
non nôſti. Et contriſtabuntur de te populi 10
multi, regeſque eorum ſtupore perfundentur,
quum extendero gladium meum contra
faciem eorum; expectantes ruinam
ſuam poſt diem ruinæ tuæ. Sic enim dicit 11
Dominus, Gladius regis Babelis veniet
ad te cum gladiis gigantum: Et dejiciam 12
fortitudinem tuam: & omnes gentium
pernicioſiſſimi perdent ſuperbiā Ægypti,
ita ut frangatur totum robur ipſius. Perdam 13
quoque omnia ipſius jumenta ob
aquam tam multam ut eam neque pes
humanus queat ampliùs tranſire, neque
jumenti veſtigium pariter calcare.
Tunc quieſcent aquæ eorum, & 14
flumina eorum quaſi oleum fluent, dicit
Adonai Dominus: Quum tradidero 15
Ægyptum excidio, & vaſtata fuerit
univerſa terra: quum diſperſero
omnes habitantes in ea: & cognoſcent
me eſſe Dominum. Lamentum eſt quod 16
lamentabuntur, & filiæ populorum lamentabuntur
illud de Ægypto, & de tota
potentia ejus lamentabuntur illud, dicit
Adonai Dominus. Contigit etiam anno 17
duodecimo, menſe primo, decimâ quintâ
ejuſdem menſis; ut eſſet ſermo Domini
ad me, dicens; O fili hominis, lamentare 18
fortitudinem Ægypti: deducent
enim populi filias ejus mortuas in profundū
terræ cum deſcendentib⁹ in foveā:
Inter gladio vulneratos cum eo deſcendent, 20
jacebitque tota potentia ipſius. Dicentque 21
tibi gigantes; Eſto in profundo
foveæ: Tu quonam præſtantior es? deſcende, 19
& jace cum incircuncisis, in medio
vulneratorum gladio. Illic Aſſur 22
cum tota turba ſua, omneſque vulnerati,
illic habuerunt ſepulturas ſuas in
profundo foveæ: Ejuſque turba circa ſepulchrum 23
ejus eſt, omnes vulnerati qui
gladio occubuerunt, qui terrorem ſuum
incutiebant ſuper terram vitæ.

יחזקאל : לב

dabo & : te ſuper faciam *nigreſcere* *cælis* in lucis luminaria Omnia
8 כל־מאורי אור בשמים אקדירם עליך ונתתי
faciam iraſci Et .Deus Dominus dixit ,tuã terram ſuper *tenebroſitatem*
9 חשך על־ארצך נאם אדני יהוה: והכעסתי
gentibus in tuam contritionem *me inducendo in* ,multorum populorum cor
לב עמים רבים בהביאי שברך בגוים
populos te ſuper faciam ſtupeſcere Et .*eas* nôſti non quas terras ſuper
10 על־ארצות אשר לא־ידעתם: והשמותי עליך עמים
me vibrando in ,formidine te ſuper formidabunt eorum reges & ,multos
רבים ומלכיהם ישערו עליך שער בעופפי
vir momenta ad exterrebuntur & : eorum facies ſuper meum gladium
חרבי על־פניהם וחרדו לרגעים איש
Gladius : Deus Dominus dixit ſic Quia .tuæ ruinæ die in ,ſuo animo in
11 לנפשו ביום מפלתך: כי כה אמר אדני יהוה חרב
,tuam *turbam* faciam cadere fortium gladiis In .tibi veniet Babel regis
12 מלך־בבל תבואך: בחרבות גבורים אפיל המונך
, Ægypti ſuperbiam vaſtabunt & : ipſi omnes gentium fortes
עריצי גוים כלם ושדדו את־גאון מצרים
,ejus *jumentum omne* faciam perdere Et .*ejus turba omnis* diſperdetur &
13 ונשמד כל־המונה: והאבדתי את־כל־בהמתה
ungulæ & ,ultrà hominis pes eas calcabit non & : multas aquas *deſuper*
מעל מים רבים ולא תדלחם רגל־אדם עוד ופרסות
,eorum aquas faciam mergere Tunc .eas *calcabit* non *animalis*
14 בהמה לא תדלחם: אז אשקיע מימיהם
.Deus Dominus dixit ; faciam ire oleum velut eorum flumina &
ונהרותם כשמן אוליך נאם אדני יהוה:
terra deſolabitur & ,deſolationem Ægypti terram *me dando In*
15 בתתי את־ארץ מצרים שממה ונשמה ארץ
ſcient & : ea in habitantes omnes *me percutiendo in* ,ſua plenitudine à
ממלאה בהכותי את־כל־יושבי בה וידעו
gentium filiæ ,eam *deplorate* & , *ipſa* Lamentum .Dominus *ego* quòd
16 כי־אני יהוה: קינה היא וקוננוה בנות הגוים
deflebunt ejus *turbam* omnẽ ſuper & ,Ægyptum ſuper : eam *deplorabunt*
תקוננה אותה על־מצרים ועל־כל־המונה תקוננה
,anno undecimo in fuit Et .Deus Dominus dixit , *eam*
17 אותה נאם אדני יהוה: ויהי בשתי עשרה שנה
: dicendo ,me ad Domini verbum fuit ,menſis decima quinta in
בחמשה עשר לחדש היה דבר־יהוה אלי לאמר:
,*illam* deſcendere fac & , Ægypti *turbam* *ſuper conquerere* ,hominis Fili
18 בן־אדם נהה על־המון מצרים והורדהו
deſcẽdentib⁹ cum ,inferorum terram ad *illuſtrium* gentium *filias* & ipſam
אתה ובנות גוים אדרם אל־ארץ תחתיות את־יורדי
.*præputiatis* cum *jace* & ,Deſcende ? *fuiſti jucunda* quo Ex .lacum
19 בור: ממי נעמת רדה והשכבה את־ערלים:
trahite ,eſt data Gladio .cadent gladio interfectorum medio In
20 בתוך חללי־חרב יפלו חרב נתנה משכו
medio de potentium fortes ei Loquentur .ejus *turbas* omnes & , eam
21 אותה וכל־המוניה: ידברו־לו אלי גבורים מתוך
incircuncifis *jacuerunt* deſcenderunt : ſuis auxiliatoribus cum , inferni
שאול את־עזריו ירדו שכבו הערלים
ejus circuitibus ,ejus cœtus omnis & , Aſſur Ibi .gladio interfectis
22 חללי־חרב: שם אשור וכל־קהלה סביבותיו
Cujus .gladio in *cadentes* interfecti ipſi omnes : ejus ſepulchra
23 קברתיו כלם חללים הנפלים בחרב: אשר
circuitus ejus cœtus fuit & ,*lacus* lateribus in *ejus* ſepulchra ſunt poſita
נתנו קברתיה בירכתי־בור ויהי קהלה סביבות
dederunt qui ,gladio in *cadentes* interfecti ipſi omnes : ejus ſepulchri
קברתה כלם חללים נפלים בחרב אשר־נתנו
.viventium terra in formidinem
חתית בארץ חיים:

Verſio VULG. LAT.

8 Omnia luminaria cœli mœrere
faciam ſuper te : & dabo tenebras
ſuper terrã tuã, dicit Dñs
Deus, cùm ceciderint vulnerati
tui in medio terræ, ait Dñs De⁹.
9 Et irritabo cor populorum multorum,
cùm induxero contritionẽ
tuã in gentibus ſuper terras, quas
10 neſcis. Et ſtupeſcere faciã ſuper
te populos multos : & reges eorum
horrore nimio formidabunt
ſuper te, cùm volare cœperit
gladius meus ſuper facies eorum:
& obſtupeſcent repentè ſinguli
pro anima ſua in die ruinæ
11 tuæ. Quia hæc dicit Dñs Deus;
Gladius regis Babylonis veniet
12 tibi, In gladiis fortium dejiciam
multitudinẽ tuã : inexpugnabiles
omnes Gentes hæ : & vaſtabunt
ſuperbiam Ægypti, & diſſipabitur
13 multitudo ej⁹. Et perdam
omnia jumenta ej⁹, quæ erant
ſuper aquas plurimas : &
non conturbabit eas pes hominis
ultrà, neq; ungula jumentorum
14 turbabit eas. Tunc puriſſimas
reddã aquas eorũ, & flumina
eorũ quaſi oleũ adducã, ait
15 Dñs De⁹ : Cùm dedero terram
Ægypti deſolatã : deſeretur autem
terra à plenitudine ſua,
quando percuſſero omnes habitatores
ej⁹ : & ſcient quia ego
16 Dñs. Planctus eſt, & plangent
eum : filiæ Gentiũ plangent eũ :
ſuper Ægyptum, & ſuper multitudinẽ
ej⁹ plangent eum, ait Dominus
17 Deus. Et factũ eſt in duodecimo
anno , in quintadecima
menſis, factum eſt verbum Domini
18 ad me, dicens; Fili hominis,
cane lugubre ſuper multitudinem
Ægypti : & detrahe eam
ipſam, & filias Gentium robuſtarum,
ad terram ultimam , cum
his qui deſcendunt in lacum.
19 Quo pulchrior es ? deſcende,
20 & dormi cum incircumciſis. In
medio interfectorum gladio cadent
: gladius dat⁹ eſt, attraxerunt
eam, & omnes populos ej⁹.
21 Loquentur ej potentiſſimi robuſtorũ
de medio inferni, qui cum
auxiliatoribus ej⁹ deſcenderunt,
& dormierunt incircumciſi, interfecti
22 gladio. Ibi Aſſur, &
omnis multitudo ej⁹: in circuitu
illi⁹ ſepulchra ejus: omnes interfecti,
& qui ceciderunt gladio.
23 Quorum data ſunt ſepulchra in
noviſſimis laci: et facta eſt multitudo
ejus per gyrum ſepulchri
ejus : univerſi interfecti, cadentéſque
gladio, qui dederant
quondam formidinem in terra
viventium.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

8 Πάντα τὰ φαίνοντα φῶς ἐν τῷ οὐρανῷ,
συσκοτάσουσιν ἐπὶ σέ· καὶ δώσω σκότος
ἐπὶ τὴν γῆν (μ), λέγει κύριος κύριος (ν).
9 Καὶ παροργιῶ καρδίαν λαῶν πολλῶν, ἡνίκα
ἂν (ξ) ἄγω αἰχμαλωσίαν σου εἰς τὰ
10 ἔθνη, εἰς (ο) γῆν ἣν οὐκ ἔγνως. Καὶ συστυγνάσουσιν
ἐπὶ σὲ (π) ἔθνη πολλά, καὶ οἱ βασιλεῖς
αὐτῶν ἐκστάσει ἐκστήσονται, ἐν τῷ (ρ)
πετᾶσθαι τὴν ῥομφαίαν μου ἐπὶ πρόσωπα αὐτῶν,
προσδεχόμενοι τὴν πτῶσιν αὐτῶν (σ)
11 ἀφ' ἡμέρας πτώσεώς σου. Ὅτι τάδε λέγει
(τ) κύριος κύριος, Ῥομφαία βασιλέως Βαβυλῶνος
12 ἥξει σοι Ἐν μαχαίραις γιγάντων,
καὶ καταβαλῶ τὴν ἰσχύν σου, λοιμοὶ ἀπὸ ἐθνῶν
πάντες, καὶ ἀπολοῦσι τὴν ὕβριν Αἰγύπτου, καὶ
13 συντριβήσεται πᾶσα ἡ ἰσχὺς αὐτῆς. Καὶ
ἀπολῶ πάντα τὰ κτήνη αὐτῆς ἀφ' ὕδατος
πολλοῦ, καὶ οὐ μὴ ταράξῃ αὐτὸ (υ) ποὺς ἀνθρώπου
ἔτι, καὶ ἴχνος (φ) κτηνῶν οὐ μὴ καταπατήσῃ
14 αὐτό. Οὕτως τότε ἡσυχάσει
τὰ ὕδατα αὐτῶν, καὶ οἱ ποταμοὶ αὐτῶν
ὡς ἔλαιον πορεύσονται, λέγει (χ) κύριος,
15 Ὅταν δῶ Αἴγυπτον εἰς ἀπώλειαν,
καὶ ἐρημωθῇ ἡ γῆ σὺν τῇ πληρώσει
αὐτῆς, ὅταν (ᵗ) διασπερῶ πάντας τοὺς
κατοικοῦντας ἐν αὐτῇ, καὶ γνώσονται ὅτι ἐγώ
16 εἰμι κύριος. Θρῆνός ἐστι, καὶ (ψ) θρηνήσεις
αὐτόν, καὶ αἱ θυγατέρες τῶν ἐθνῶν θρηνήσουσιν
αὐτόν, ἐπ' Αἴγυπτον, καὶ ἐπὶ πᾶσαν τὴν
ἰσχὺν αὐτῆς θρηνήσουσιν αὐτήν, λέγει
17 κύριος κύριος. Καὶ (ω) ἐγενήθη ἐν τῷ
δωδεκάτῳ ἔτει (α) τοῦ πρώτου μηνός, πεντεκαιδεκάτῃ
τοῦ μηνός, ἐγένετο λόγος κυρίου
18 πρός με, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, θρήνησον
ἐπὶ τὴν (β) ἰσχὺν Αἰγύπτου, καὶ καταβιβάσουσιν
αὐτῆς τὰς θυγατέρας τὰ ἔθνη
νεκρὰς εἰς τὸ βάθος τῆς γῆς, πρὸς τοὺς
19 καταβαίνοντας εἰς βόθρον· (γ) Ἐν μέσῳ
μαχαίρας τραυματιῶν πεσοῦνται μετ' αὐτοῦ,
καὶ κοιμηθήσεται πᾶσα ἡ ἰσχὺς αὐτοῦ. καὶ ἐροῦσίν
σοι οἱ γίγαντες, Ἐν βάθει βόθρου γίνου,
Τίνος κρείττων εἶ; (δ) καὶ κατάβηθι, καὶ κοιμήθητι
20 μετὰ ἀπεριτμήτων, Ἐν μέσῳ τραυματιῶν
21 μαχαίρας. Ἐκεῖ Ἀσοὺρ καὶ πᾶσα ἡ
22 συναγωγὴ αὐτοῦ, πάντες τραυματίαι
23 ἐκεῖ ἐδόθησαν, (ε) Καὶ ἡ ταφὴ αὐτῶν ἐν
βάθει βόθρου, καὶ ἐγενήθη ἡ συναγωγὴ (ζ)
αὐτοῦ περικύκλῳ τοῦ μνήματος αὐτοῦ, πάντες
(η) οἱ τραυματίαι οἱ πεπτωκότες μαχαίρᾳ,
(θ) οἱ δόντες τὸν φόβον αὐτῶν ἐπὶ
γῆς ζωῆς.

Omnia oſtendentia lumen in cælo, 8
contenebreſcent in te: & dabo tenebras
ſuper terram, ait Dominus
Dominus : Et irritabo cor populorum 9
multorum ; cùm adduxero
captivitatem tuam in gentes, ad
terram, quam neſcis. Et contriſtabuntur 10
ſuper te gentes multæ: &
reges earũ ſtupore ſtupebunt, cùm
(i) volare cœperit gladius meus
ſuper facies eorum, (k) expectantes
ruinam ſuam à die ruinæ tuæ.
Quia hæc dicit Dominus Dominus; 11
Gladius regis Babylonis veniet
tibi In gladiis gigantum: & 12
dejiciam fortitudinem tuam: peſtilentes
de gentib⁹ cuncti, et perdent
(l) injuriam Ægypti: & conteretur
omnis fortitudo illius. Et 13
perdam omnia jumenta ejus ab aqua
multa : & non conturbabit
eam pes hominis ultrá: & veſtigium
jumentorũ non calcabit eã.
(m) Ita tunc quieſcent aquæ eorum: 14
et flumina eorũ, quaſi oleum
(n) ibunt, dicit Dominus: Cùm dedero 15
Ægyptũ in perditionem, et
deſolata fuerit terra cum plenitudine
ſua: cùm diſſeminavero omnes
habitatores ejus. Et ſcient,
quia ego ſum Dominus. Planctus 16
eſt, & (o) planges eum : & filiæ
gentium plangent (p) eum: ſuper
Ægyptum, & ſuper omnem fortitudinem
ejus plangent eam, ait
Domin⁹ Dominus. Et factũ eſt in 17
duodecimo anno (q) primi menſis,
quintadecimâ menſis, factus eſt
ſermo Domini ad me, dicens; Fili 18
hominis, plange ſuper (r) fortitudinem
Ægypti: & deducent ejus
filias gentes mortuas in profundum
terræ, ad eos, qui deſcendunt
in (ſ) foveam; In medio vulneratorum 19
gladio cadent cum eo: et
dormiet omnis fortitudo ejus: &
dicent tibi gigantes; In (t) profundo
foveæ eſto: quo melior es? &
deſcende, et dormi cum incircunciſis
In medio vulneratorum gladio. 20
Ibi Aſſur, & omnis congregatio 21
ejus : omnes vulnerati ibi 22
dati ſunt: Et ſepulchrum eorum 23
in profundo foveæ : & facta eſt
congregatio ejus in circuitu ſepulchri
ejus : omnes vulnerati,
qui ceciderant (u) gladio : qui
dederunt timorem ſuum in terra
vitæ.

MS.A. (μ) σου, (ν) ὁ θεός. (ξ) ἀγάγω (ο) τὴν γῆν (π) ἔθνη, καὶ οἱ (ρ) πετασθῆναι ῥομφαίαν μου ἐπὶ πρόσωπον (σ) ἀπὸ (τ) ἀδωναῒ κύριος, Ῥομφαία (υ) ἔτι ποὺς ἀνθρώπου, καὶ (φ) κτήνους (χ) ἀδωναῒ κύριος, (ᵗ) διασπείρω (ψ) θρηνήσουσιν (ω) ἐγένετο (α) ἐν τῷ πρώτῳ μηνί, (β) γῆν (γ) ἐξ ὑδάτων εὐπρεποῦς κατάβηθι, καὶ κοιμήθητι μετὰ ἀπεριτμήτων, Ἐμ μέσῳ τραυματιῶν μαχαίρᾳ πεσοῦνται (δ) κατάβηθι, (ε) Ἡ ταφὴ (ζ) αὐτῶν (η) τραυματίαι (θ) οἱ ἔδωκαν τὰς ταφὰς αὐτῆς ἐν μηροῖς λάκκου, καὶ ἐγενήθη ἐκκλησία ὑπὲρ κύκλῳ τῆς ταφῆς αὐτοῦ, πάντες αὐτοὶ τραυματίαι, πίπτοντες μαχαίρᾳ, οἱ δόντες

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

8 כל שבילי ארחתיך דמתקנין ונטירן בגויך הא כמנהרי זהריא בשמיא אקלקלינון עלך
9 ותחפי עקא כקבלא ית ארעך אמר יי אלהים : ואזיע לב עממין סגיאין באיתיותי תבירי
10 קרבך לביני עממיא למדינן דלא ידעתנון : ואצדי עלך עממין סגיאין ומלכיהון
יתמהון עלך תימהא באיתיותי עלך דקטלין בחרבא ואנון חזן ויזועון מן קדם תברהון
11 גבר לנפשיה ביום מפלת קטילך : ארי כדנן אמר יי אלהים קטולי חרבא מלכא דבבל
12 ייתון עלך : בחרבא דגבריא אמגר משריתך תקיפי עממיא כולהון ויבזון ית תקוף
13 מצרים ותשתיצי כל אתרגושתהא : ואוביד ית כל בעירה מעל מיין סגיאין ולא
14 תזוענון רגלי דאנשא עוד ופרסת בעירא לא תזוענון : בכן אשקיט לעממיא ומלכיהון
15 בניח אדבר אמר יי אלהים : כד אתן ית ארעא דמצרים צדו ותצדי ארעא ומלהא
16 באיתיותי מחא על כל דיתבין בה וידעון ארי אנא יי : אמר נביא אליא היא נבואתא
ותהי לאליא כפרני עממיא ילילון יתה על מצרים ועל כל אתרגושתה ילילון יתה
17 אמר יי אלהים : והוה בתרתא עסרי שנין בחמשא עסר לירחא הוה פתגם נבואה
18 מן קדם יי עמי למימר : בר אדם אתנבי על אתרגושת מצרים ותברה לה ולכפרני
19 עממיא תקיפיא אתנבי דיתמסרון לארעא ארעיתא עם נחתי גוב בית אבדנא : ממן
20 את גבר חורת ושכיב עם חיביא : בגו קטילי חרבא יתרמון לה לחרבא יתמסרון
21 לשיצאה יתהון וית כל אתרגושתהון : ימללון עמיה תקיפי גבריא מגו שאול
22 עם סעדוהי נחיתו שכיבו חיביא קטילי חרבא : תמן אתור וכל משריתיה סחרנותהון
23 קבריהון כולהון קטילין דאיתקטלו בחרבא : דאתמסרו לקבורא בסיפי גוב בית
אבדנא והות משריתהון סחרנותהון קברתהון כולהון קטיליא דאתקטלו בחרבא
דאתמסירו לתבר על דשליטו בארעא דישראל :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Omnes calles itinerũ tuorũ qui directi erant, & aſſervati *in medio tui*, ſicut 8
luminaria lucentia in cœlis, diſſipabo eos ſuper te : & operiet tribulatio,
ſicut tenebræ, terram tuam, ait Dñs De⁹. Et commovebo cor populorũ multorum 9
cùm adduxero *contritos belli tui* inter populos, & ad provincias
quas neſciſti. Et ſtupeſcere faciã ſuper te populos multos, & reges eorũ admirabuntur 10
ſuper te miratione, cùm adduxero ſuper te eos qui occidunt gladio
; & ipſi videbunt & contremiſcent à facie interit⁹ ſui, ſinguli pro anima
ſua in die ruinæ occiſorũ tuorũ. Quia hæc dicit Dñs De⁹ : Occidentes 11
gladio regis Babylonis venient contra te. *Gladio* fortiũ corruere faciã exercitũ 12
tuum: robuſti populorũ univerſi vaſtabunt fortitudinem Ægypti, &
conſumetur omnis multitudo ej⁹. Et perdam omnia jumenta ej⁹ quæ erant 13
ſuper aquas multas ; & non *conturbabunt* eas *pedes* hominis ampliùs, &
ungulæ jumenti non turbabunt eas. Tunc quieſcere faciã populos, & reges 14
eorũ in requiẽ deducã, ait Dñs De⁹. Cùm dedero terrã Ægypti deſolatã, & 15
deſolabitur terra *& plenitudo* ej⁹ ; cùm adduxero percuſſionẽ ſuper omnes
habitantes in ea: & ſcient quia ego Dñs. Dixit propheta, Lamentabilis prophetia 16
eſt, & erit in lamentationẽ : villæ populorũ lamentabuntur eam ſup
Ægyptũ, & ſuper omnẽ multitudinẽ ej⁹ lamentabuntur eã, ait Dñs De⁹. Et 17
factũ eſt duodecimo anno, quintadecima die menſis, factum eſt verbũ prophetiæ
à facie Dñi mecum, dicens: Fili hominis, vaticinare ſuper multitudinem 18
Ægypti, & contere eã ipſã, & villas populorũ robuſtorũ; vaticinare ꝙ
tradentur terræ inferiori cum deſcendentib⁹ in lacũ dom⁹ perditionis. Quo 19
potentior es tu ? deſcende & dormi cum peccatorib⁹. In medio occiſorum 20
gladio cadent; gladio tradentur ut conſumat eos & omnẽ multitudinẽ eorũ.
Loquentur cum eo potentes, & fortes de medio inferni cum auxiliatorib⁹ 21
ſuis deſcenderunt, & dormierunt peccatores interfecti gladio. Ibi Aſſur & 22
omnis exercit⁹ ej⁹; in circuitu eorũ ſepulchra ipſorũ, omnes interfecti qui
occiſi ſunt gladio. Qui traditi ſunt ſepulturæ in intimo lacu dom⁹ perditionis 23
; & fuit exercit⁹ eorum in circuitu ſepulchrorũ ipſorũ, univerſi interfecti
qui occiſi ſunt gladio, qui traditi ſunt in exitium, pro eo quòd dominati
ſunt in terram Iſrael.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܘܟܠܗܘܢ ܢܗܝܪܐ ܕܡܢܗܪܝܢ ܒܫܡܝܐ܂ ܐܚܫܟ ܐܢܘܢ ܥܠܝܟ܂ ܘܐܬܠ ܚܫܘܟܐ ܥܠ ܐܪܥܟ 8
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ܂ * ܘܐܪܓܙ ܠܒܐ ܕܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ܂ ܡܐ ܕܐܝܬܐ ܬܒܪܟ ܒܝܬ 9
ܥܡܡܐ : ܘܒܡܕܝܢܬܐ ܕܠܐ ܝܕܥ ܐܢܬ ܠܗܝܢ ܀ * ܘܐܬܡܗܘܢ ܥܠܝܟ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ܂ 10
ܘܡܠܟܝܗܘܢ ܢܙܘܥܘܢ܂ ܡܐ ܕܐܪܡܫ ܣܝܦܝ ܥܠ ܐܦܝܗܘܢ܂ ܘܢܙܘܥܘܢ ܘܢܬܪܗܒܘܢ ܐܢܫ
ܒܢܦܫܗ܂ ܒܝܘܡܐ ܕܡܦܘܠܬܟ܂ * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ܂ ܣܝܦܗ ܕܡܠܟܐ 11
ܕܒܒܠ ܢܐܬܐ ܥܠܝܟ܂ * ܒܣܝܦܐ ܕܓܢܒܪܐ ܐܪܡܐ ܚܝܠܟ܂ ܘܥܫܝܢܝܗܘܢ܂ ܕܥܡܡܐ 12
ܕܥܡܡܐ܂ ܘܢܒܙܘܢ ܠܥܘܫܢܗ ܕܡܨܪܝܢ܂ ܘܢܒܙܘܢ ܟܠܗ ܥܘܬܪܗ܂ * ܘܐܘܒܕ ܒܥܝܪܗ ܡܢ 13
ܡܝܐ ܣܓܝܐܐ܂ ܘܠܐ ܬܕܠܚ ܪܓܠܐ ܕܒܪܢܫܐ ܠܐ ܬܕܠܚ ܐܢܘܢ܂ ܐܦܠܐ ܦܪܣܬܐ ܕܒܥܝܪܐ܂
* ܗܝܕܝܢ ܐܫܩܘܦ ܡܝܗܘܢ܂ ܘܢܗܪܘܬܗܘܢ ܐܝܟ ܡܫܚܐ܂ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ܂ * ܡܐ 14 15
ܕܐܬܠܝܗ ܠܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ ܠܚܘܒܠܐ܂ ܘܬܚܪܒ ܐܪܥܐ ܒܡܠܝܗ܂ ܡܐ ܕܐܡܚܐ ܠܟܠܗܘܢ
ܥܡܘܪܝܗ܂ ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ܂ * ܐܘܠܝܬܐ ܗܝ܂ ܘܢܐܠܝܢܗ ܒܢܬܗܘܢ ܕܥܡܡܐ ܥܠ 16
ܡܨܪܝܢ܂ ܘܥܠ ܟܠܗ ܥܘܫܢܗ ܢܐܠܝܢܗ܂ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ܂ * ܒܫܢܬ 17
ܚܕܥܣܪܐ ܒܚܡܫܥܣܪ ܒܝܪܚܐ ܀ ܗܘܐ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠܝ ܘܐܡܪ܂ * ܒܪܢܫܐ ܀ 18
ܐܠܝ ܥܠ ܥܘܫܢܗ ܕܡܨܪܝܢ ܀ ܘܐܚܬܝܗܝ ܠܗ ܥܡܗ ܒܝܬ ܥܡܡܐ ܥܫܝܢܐ܂
ܠܐܪܥܐ ܬܚܬܝܬܐ ܥܡ ܢܚܬܝ ܓܘܒܐ܂ * ܡܢ ܡܝܐ ܒܣܝܡܐ ܢܚܘܬ܂ ܘܫܟܘܒ ܥܡ ܥܘܪܠܐ܂ 19
* ܥܡ ܩܛܝܠܝ ܣܝܦܐ ܢܦܠܘܢ܂ ܘܢܓܪܘܢܝܗ ܘܠܟܠܗ ܚܝܠܗ܂ * ܘܢܡܠܠܘܢ ܥܡ 20 21
ܥܠܝܡܝܗܘܢ ܪܫܝܗܘܢ ܕܥܡܡܐ ܡܢ ܓܘ ܫܝܘܠ܂ ܘܢܚܬܘܢ܂ ܘܢܫܟܒܘܢ ܥܡ ܥܘܪܠܐ ܥܡ
ܩܛܝܠܝ ܣܝܦܐ܂ * ܬܡܢ ܐܬܘܪ܂ ܘܟܠܗ ܟܢܫܗ ܚܕܪ ܩܒܪܘܗܝ܂ ܟܠܗܘܢ ܩܛܝܠܐ ܕܢܦܠܘ 22
ܒܣܝܦܐ܂ * ܕܝܗܒ ܩܒܪܘܗܝ ܒܣܘܦܝ ܓܘܒܐ܂ ܘܗܘܐ ܟܢܫܗ ܚܕܪ ܩܒܪܗ܂ ܟܠܗܘܢ 23
ܩܛܝܠܐ ܕܢܦܠܘ ܒܣܝܦܐ܂ ܥܠ ܕܝܗܒܘ ܬܒܪܐ ܒܐܪܥܐ ܕܚܝܐ܂

Omnia luminaria quæ lucent in cœlo, ſuper 8
te obſcurabo, & faciam tenebras in terra tua,
dicit Dominus dominorum: Et ad iram con- 9
citabo cor populorum multorum, quum in-
duxero fractionem tuam inter gentes, & in
urbes quas ignoras: Et faciam ut obſtupe- 10
ſcant de te populi multi, extimeantque reges
eorum, quum coruſcare fecero gladium me-
um ſuper facies eorum: timebunt inquam,
& expaveſcent quiſque in ſemetipſo in die
caſûs tui. Sic ait Dominus dominorum; 11
Gladius regis Babylonis invadet te. Gladio 12
gigantum omniumque robuſtiſſimorum inter
gentes dejiciam robur tuum; prædabuntur
robur Ægypti, & diripientur omnes divitiæ
ipſius. Perdam jumenta ejus ab aquis mul- 13
tis, & pes humanus non turbabit eas ampliùs,
neque ungulæ jumentorum. Tunc diſponam 14
aquas eorum, & fluvios eorum fluere faciam
tanquam oleum, ait Dominus dominorum:
Quum redegero terram Ægypti in deſolatio- 15
nem, & vaſtata fuerit univerſa terra: quum
percuſſero omnes habitatores ejus: & experi-
entur me eſſe Dominum. Lamentatio eſt, & 16
filiæ populorum lamentabuntur eam; de Æ-
gypto & de omnibus divitiis ejus lamenta-
buntur eam, dicit Dominus dominorum.
Anno undecimo, decimâ quintâ menſis, fuit 17
ad me ſermo Domini, dicendo; Fili homi- 18
nis, profer lamentationem de potentia Ægypti,
eamque demitte cum ipſa inter gentes ro-
buſtas, in imam terram, cum deſcendenti-
bus in foveam, *dicens*; Ex aquis jucundis 19
deſcende, & jace cum præputiatis. Cum 20
gladio confoſſis cadent, & trahent eum to-
tamque potentiam ejus. Et alloquentur ju- 21
venes eorum principes gentium ex inferis, &
deſcendent cubabuntque præputiati cum
gladio confoſſis. Illic Aſſur cum tota con- 22
gregatione ſua ſunt circa ſepulchrum ejus; o-
mnes interfecti qui gladio ceciderunt: Qui 23
fecit ſepulchrum ſuum in marginibus foveæ,
ejuſque ſepulchrum circunſtat congregatio i-
pſius; omnes interfecti qui gladio ceciderunt,
eò quòd fractionem fecerint in terra vivo-
rum.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* وجميع المنيرات نورا في السماء يظلمون بك * واعطي ظلمة علي ارضك يقول الرب 8
الرب * واغضب قلب شعوب كثيرين * حين اجلب سبيك في الامم * في ارض لا تعرفها * 9
* ويعبسون عليك امم كثيرين * وملوكهم يحيرون حين * عند ما امدد سيفي علي 10
وجوههم * يتوقعون سقطهم منذ يوم سقطتك * لان هكذا يقول الرب * سيف ملك 11
بابل ياتي اليك بسيوف الجبابرة * واطرح قوتك * وجميع المفسدين من الامم يهلكون 12
كبرياء مصر * وينكسر كل قوتها * واهلك جميع بهايمها * من الماء الكثير * فلا يجوز 13
ايضا قدم انسان * واثر بهيمة لا يطاه هكذا * حينيذ تسكن مياههم * وانهارهم تسير 14
مثل الزيت يقول ادوناي الرب * اذ ادفع مصر للهلاك * وتخرب الارض بكمالها * اذ ابدد 15
جميع السكان فيها * ويعلمون اني انا الرب * نوح هو * وينوحونه * وبنات الامم ينحنه علي 16
مصر * وعلي جميع قوتها ينحنه * يقول ادوناي الرب * وكان في السنة الثانية عشر * في 17
الشهر الاول * في خمسة عشر من الشهر * كان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان * نح علي 18
قوة مصر * وينزلون الامم بناتها امواتا الي عمق الارض مع الهابطين في الجب * في وسط 20
الجرحا بالسيف يسقطون معه * ويضطجع كل قوته * ويقولون لك الجبابرة * صر في عمق 21
الجب * انت افضل ممن * انزل واضطجع مع الغير مختونين * في وسط الجرحا 19
بالسيف * هناك الموصل وكل جمعه وجميع الجرحا * هناك اعطوا اقبارهم في عمق الجب * 22
* وصار جمعه حول قبره * جميع الجرحا الساقطين بالسيف * الذين اعطوا خوفهم علي 23
ارض الحياة *

Denique omnia lumine micantia in cœlo 8
obtenebrata fuerint in te: daboq; tenebras
ſuper terram tuam, dicit Dominus Domi-
nus, Et ad iram provocabo cor populorū 9
multorum; quum adduxero captivita-
tem tuam inter gentes, in terram quam
non nôſti. Et contriſtabuntur de te populi 10
multi, regeſque eorum ſtupore perfunden-
tur, quum extendero gladium meum con-
tra faciem eorum; expectantes ruinam
ſuam poſt diem ruinæ tuæ. Sic enim di- 11
cit Dominus, Gladius regis Babelis veniet
ad te cum gladiis gigantum: Et dejiciam 12
fortitudinem tuam: & omnes gentium
pernicioſiſſimi perdent ſuperbiā Ægypti,
ita ut frangatur totum robur ipſius. Per- 13
dam quoque omnia ipſius jumenta ob
aquam tam multam ut eam neque pes
humanus queat ampliùs tranſire, ne-
que jumenti veſtigium pariter calca-
re. Tunc quieſcent aquæ eorum, & 14
flumina eorum quaſi oleum fluent, di-
cit Adonai Dominus: Quum tradi- 15
dero Ægyptum excidio, & vaſtata fu-
erit univerſa terra: quum diſperſero
omnes habitantes in ea: & cognoſcent
me eſſe Dominum. Lamentum eſt quod 16
lamentabuntur, & filiæ populorum lamen-
tabuntur illud de Ægypto, & de tota
potentia ejus lamentabuntur illud, dicit
Adonai Dominus. Contigit etiam anno 17
duodecimo, menſe primo, decimâ quintâ
ejuſdem menſis; ut eſſet ſermo Domini
ad me, dicens; O fili hominis, lamen- 18
tare fortitudinem Ægypti: deducent
enim populi filias ejus mortuas in pro-
fundū terræ cum deſcendentibꝰ in foveā:
Inter gladio vulneratos cum eo deſcen- 20
dent, jacebitque tota potentia ipſius. Di- 21
centque tibi gigantes; Eſto in profundo
foveæ: Tu quonam præſtantior es? de- 19
ſcende, & jace cum incircunciſis, in me-
dio vulneratorum gladio. Illic Aſſur 22
cum tota turba ſua, omneſque vulne-
rati, illic habuerunt ſepulturas ſuas in
profundo foveæ: Ejuſque turba circa ſe- 23
pulchrum ejus eſt, omnes vulnerati qui
gladio occubuerunt, qui terrorem ſuum
incutiebant ſuper terram vitæ.

יחזקאל : לג

interfecti hi omnes: ej⁹ sepulchri circuitus ej⁹ *turba* omnis & ,Helam Ibi
24 שם עילם וכל־המונה סביבות קברתה כלם חללים
,inferiorum terram ad *præputiati* descenderunt qui ,gladio in *cadentes*
הנפלים בחרב אשר־ירדו ערלים אל־ארץ תחתיות
,suā ignominiā portaverūt &,viventiū terra in suū terrorem dederunt qui
אשר נתנו חתיתם בארץ חיים וישאו כלמתם
,ei cubile posuerunt *occisorum* medio In .*lacum* descendentibus cum
25 את־יורדי בור : בתוך חללים נתנו משכב לה
,incircuncisi hi omnes :ejus sepulchra ejus circuitus ejus *turba universa in*
בכל־המונה סביבותיו קברתה כלם ערלים
portaverūt &,*vitarum* terra in eorū terror est datus quia ,gladio interfecti
חללי־חרב כי־נתן חתיתם בארץ חיים וישאו
.est *datum* interfectorū medio in ,*lacum* descendentibus cum ,suā ignominiā
כלמתם את־יורדי בור בתוך חללים נתן :
:ejus sepulchra ,ejus circuitibus ,ejus *turba* omnis & ,Tubal ,Mesech Ibi
26 שם משך תבל וכל־המונה סביבותיו קברותיה
suam formidinem dederunt quia ,gladio interfecti incircuncisi hi omnes
כלם ערלים מחללי חרב כי־נתנו חתיתם
cadentibus ,fortibus cum *accumbent* non Et .*vitarum* terra in
27 בארץ חיים : ולא ישכבו את־גבורים נפלים
dederunt & ,*sui belli vasis* cum infernū descenderūt qui : incircuncisis de
מערלים אשר ירדו־שאול בכלי־מלחמתם ויתנו
,eorū ossibus in *eorū iniquitates fuit* & ,suis capitibus sub suos gladios
את־חרבותם תחת ראשיהם ותהי עונתם על־עצמותם
incircuncisorū medio in tu Et .viventium terra in fortium terror quia
28 כי־חתית גבורים בארץ חיים : ואתה בתוך ערלים
,ejus reges ,Edom Ibi .gladio interfectis cum *jacebis* & ,contererîs
29 תשבר ותשכב את־חללי־חרב : שמה אדום מלכיה
interfectis cum sua fortitudine cum sunt *dati* qui ,ejus *prælati* omnes &
וכל־נשיאיה אשר־נתנו בגבורתם את־חללי־
.*lacum* descendentibus cum & ,*accubabunt* incircuncisis cum Ipsi .gladio
חרב המה את־ערלים ישכבו ואת־ירדי בור :
descenderūt qui ,*Sidonius omnis* & ,ipsi omnes aquilonis principes Ibi
30 שמה נסיכי צפון כלם וכל־צדני אשר־ירדו
jacebunt & ,*erubescentes* sua fortitudine à ,suo terrore in interfectis cum
את־חללים בחתיתם מגבורתם בושים וישכבו
cum ,suum pudorem portaverunt & ,gladio interfectis cum incircuncisi
ערלים את־חללי־חרב וישאו כלמתם את־
super consolabitur & ,Parhoh videbit Eos .*lacum* descendentibus
31 יורדי בור : אותם יראה פרעה ונחם על־
dixit ,ejus *virtus* omnis & ,Parhoh ,gladio *interfectis* ,sua *turba* omni
כל־המונה חללי־חרב פרעה וכל־חילו נאם
: viventium terra in *meam contritionem* dedi Quia .Deus Dominus
32 אדני יהוה : כי־נתתי את־חתיתו בארץ חיים
,gladio interfectis cum incircuncisorum medio in est *jacere* factus &
והשכב בתוך ערלים את־חללי־חרב
.Deus Dominus dixit ,ejus *turba* omnis & ,Parhoh
פרעה וכל־המונה נאם אדני יהוה :

CAP. XXXIII. לג

ad loquere ,hominis Fili : dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et
1 2 ויהי דבר־יהוה אלי לאמר : בן־אדם דבר אל־
eam super induxero Quum *Terram* ,eos ad *dices* & ,tui populi filios
בני־עמך ואמרת אליהם ארץ כי־אביא עליה
,suis novissimis de unum virum terræ populus tulerint & : gladium
חרב ולקחו עם־הארץ איש אחד מקציהם
venientem gladium viderit Et .speculatorem in sibi eum *dederint* &
3 ונתנו אתו להם לצפה : וראה את־החרב באה
.populum præmonuerit & ,buccina in clanxerit & : terram super
על־הארץ ותקע בשופר והזהיר את־העם :

Versio VULG.LAT.

24 Ibi Ælam, & omnis multitudo ej⁹ per gyrū sepulchri sui: omnes hi interfecti, ruentésque gladio: qui descenderunt incircumcisi ad terrā ultimā: qui posuerunt terrorem suū in terra viventiū, & portaverunt ignominiā suā cum his qui descendunt in lacum. 25 In medio interfectorum posuerunt cubile ejus in universis populis ej⁹: in circuitu ejus sepulchrum illius: omnes hi incircumcisi, interfectíque gladio: dederunt enim terrorē suū in terra viventium, & portaverunt ignominiā suā cū his qui descendunt in lacum: in medio interfectorū positi sunt. 26 Ibi Mosoch & Thubal, & omnis multitudo ej⁹: in circuitu ej⁹ sepulchra illi⁹: omnes hi incircumcisi, interfectíque & cadentes gladio: quia dederunt formidinē suā in terra viventiū. 27 Et non dormient cū fortib⁹, cadentibúsq; & incircumcisis, qui descenderunt ad infernū cū armis suis, & posuerunt gladios suos sub capitib⁹ suis, & fuerunt iniquitates eorū in ossib⁹ eorum: quia terror fortium facti sunt in terra viventiū. 28 Et tu ergò in medio incircumcisorum contererîs, et dormies cū interfectis gladio. 29 Ibi Idumæa, et reges ej⁹, et omnes duces ej⁹, qui dati sunt cū exercitu suo cum interfectis gladio: & qui cū incircumcisis dormierunt, & cū his qui descendunt in lacū. 30 Ibi principes Aquilonis omnes, & universi venatores: qui deducti sunt cū interfectis, paventes, & in sua fortitudine confusi: qui dormierunt incircumcisi cū interfectis gladio, & portaverunt confusionē suam cum his qui descendunt in lacum. 31 Vidit eos Pharao, & consolat⁹ est super universa multitudine sua, quæ interfecta est gladio; Pharao, & omnis exercit⁹ ej⁹, ait Dñs De⁹: 32 Quia dedi terrorem meū in terra viventium, et dormivit in medio incircumcisorum cum interfectis gladio; Pharao, & omnis multudo ejus; ait Dominus Deus.

CAP. XXXIII.

1 ET factum est verbum Dñi ad me, dicens; 2 Fili hominis, loquere ad filios populi tui, & dices ad eos; Terra cùm induxero sup eā gladiū, & tulerit popul⁹ terræ virum unū de novissimis suis, & constituerit eum super se speculatorē: 3 Et ille viderit gladiū venientē sup terrā, & cecinerit buccinâ, & annuntiaverit populo:

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

24 Ἐκεῖ Αἰλὰμ καὶ πᾶσα ἡ δύναμις αὐτοῦ περικύκλῳ τοῦ μνήματος αὐτοῦ, πάντες οἱ τραυματίαι οἱ πεπτωκότες (θ) μαχαίρᾳ, καὶ οἱ καταβαίνοντες ἀπερίτμητοι εἰς (ι) γῆς βάθος, οἱ δεδωκότες (κ) αὐτῶν φόβον ἐπὶ γῆς ζωῆς. καὶ ἔλαβον τὴν βάσανον αὐτῶν μετὰ τῶν καταβαινόντων εἰς βόθρον, 25 Ἐν μέσῳ τραυματιῶν. 26 Ἐκεῖ ἐδόθησαν Μοσὸχ, καὶ Θοβὲλ, καὶ πᾶσα ἡ ἰσχὺς (λ) αὐτοῦ περικύκλῳ τοῦ μνήματος αὐτοῦ, πάντες τραυματίαι αὐτοῦ, πάντες (μ) ἀπερίτμητοι τραυματίαι ἀπὸ μαχαίρας, οἱ δεδωκότες τὸν φόβον αὐτῶν ἐπὶ (ν) γῆς ζωῆς. 27 Καὶ ἐκοιμήθησαν μετὰ τῶν γιγάντων (ξ) τῶν πεπτωκότων ἀπ' αἰῶνος, οἱ κατέβησαν εἰς ᾅδου ἐν ὅπλοις πολεμικοῖς (ο), καὶ ἔθηκαν τὰς μαχαίρας αὐτῶν ὑπὸ τὰς κεφαλὰς αὐτῶν, καὶ ἐγενήθησαν αἱ ἀνομίαι αὐτῶν ἐπὶ τῶν (π) ὀστέων αὐτῶν, ὅτι ἐξεφόβησαν (ρ) πάντας ἐν τῇ ζωῇ αὐτῶν. 28 Καὶ σὺ ἐν μέσῳ ἀπεριτμήτων (σ) κοιμηθήσῃ μετὰ τετραυματισμένων μαχαίρᾳ. 29 Ἐκεῖ (τ) ἐδόθησαν οἱ ἄρχοντες Ἀσσοὺρ, οἱ δόντες τὴν ἰσχὺν (υ) αὐτοῦ εἰς τραῦμα μαχαίρας· (φ) οὗτοι μετὰ τραυματιῶν ἐκοιμήθησαν, μετὰ καταβαινόντων εἰς βόθρον. 30 Ἐκεῖ (χ) οἱ ἄρχοντες τοῦ Βοῤῥᾶ πάντες (ψ) στρατηγοὶ Ἀσσοὺρ, οἱ καταβαίνοντες τραυματίαι, σὺν τῷ φόβῳ αὐτῶν καὶ τῇ ἰσχύϊ αὐτῶν (ω) ἐκοιμήθησαν ἀπερίτμητοι μετὰ (α) τραυματιῶν μαχαίρας, καὶ (β) ἀπήνεγκαν τὴν βάσανον αὐτῶν μετὰ τῶν καταβαινόντων εἰς βόθρον. 31 Ἐκείνους ὄψεται βασιλεὺς Φαραὼ, καὶ παρακληθήσεται ἐπὶ (γ) πᾶσαν τὴν ἰσχὺν αὐτῶν, λέγει κύριος κύριος. 32 Ὅτι δέδωκα τὸν φόβον (δ) αὐτοῦ ἐπὶ γῆς ζωῆς, καὶ κοιμηθήσεται ἐν μέσῳ ἀπεριτμήτων μετὰ (ε) τραυματιῶν μαχαίρας Φαραὼ, καὶ πᾶν τὸ πλῆθος αὐτοῦ μετ' αὐτοῦ, (ζ) λέγει κύριος κύριος.

24 Ibi Ælam, & omnis fortitudo ejus in circuitu sepulchri ejus: omnes vulnerati, qui ceciderunt gladio, & qui descendunt incircuncisi in terræ profundum: qui dederunt terrorem suum in terra vitæ: & acceperunt tormentum suum cum his, qui descendunt in foveam 25 In medio vulneratorum. 26 Ibi dati sunt Mosoch, & Thobel, & omnis fortitudo (x) ejus in circuitu sepulchri ejus, omnes vulnerati ejus, universi incircuncisi, vulnerati à gladio: qui dederunt terrorem suum super terram vitæ: 27 Et (y) dormierunt cum gigantibus, qui ceciderunt ab æterno, qui descenderunt in infernum cum armis bellicis, & posuerunt gladios suos sub capitibus suis: & factæ sunt iniquitates eorum super ossa eorum: quia terruerunt (z) omnes in vita sua. 28 Et tu in medio incircuncisorum (ω) dormies cum vulneratis gladio. 29 Ibi (aa) dati sunt principes Assur, qui dederunt fortitudinem ejus in vulnere gladii: isti cum vulneratis dormierunt, cum descendentibus in foveam. 30 Ibi principes Aquilonis (bb) omnes magistratus Assur, (cc) descendentes vulnerati, cum terrore suo, & in fortitudine sua dormierunt incircuncisi cum vulneratis gladio: & abstulerunt tormentum suum cum descendentibus in foveam. 31 Videbit eos Pharao, & consolationem accipiet super omni fortitudine eorum, (dd) dicit Dominus Dominus: 32 Quia dedi formidinem ejus super terram vitæ: & dormiet in medio incircuncisorum cum vulneratis gladio Pharao, et omnis multitudo ejus cum eo, dicit Dominus Dominus.

MS.A (θ) μαχαίραις, (ι) γῆν βάθους, οἱ (κ) τὸν φόβον αὐτῶν ἐπὶ τῆς ζωῆς. (λ) αὐτῶν (μ) ἀπερίτμητοι μαχαίρας, (ν) τῆς ζωῆς. (ξ) πεπτωκότες ἀπ' (ο) αὐτῶν, οἳ ἔθηκαν (π) ὀστῶν (ρ) γίγαντας ἐν (σ) συντριβήσῃ καὶ κοιμηθήσῃ (τ) Ἐδὼμ καὶ οἱ βασιλεῖς αὐτῆς, καὶ πάντες οἱ ἄρχοντες Ἀσσύριοι, οἱ (υ) αὐτῆς (φ) αὐτοὶ ἐκοιμήθησαν μετὰ τραυματιῶν μαχαίρας, ἐκοιμήθησαν μετὰ (χ) πάντες οἱ (ψ) αὐτοὶ πάντες στρατηγοὶ (ω) καὶ ἐκοιμήθησαν (α) τετραυματισμένων (β) ἔλαβον τὴν (γ) πάσῃ τῇ ἰσχύϊ αὐτῶν, τραυματίαι μαχαίρᾳ Φαραὼ, καὶ πᾶσα ἡ δύναμις αὐτοῦ, λέγει κύριος ὁ θεός. (δ) αὐτῶν ἐπὶ τῆς ζωῆς, (ε) τραυματίας (ζ) λέγει κύριος κύριος ὁ θεός.

ΚΕΦ. λγ'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, 2 Υἱὲ ἀνθρώπου, λάλησον τοῖς υἱοῖς τοῦ λαοῦ σου, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, Γῆ ἐφ' ἣν ἂν (α) ἐπάγω ῥομφαίαν, καὶ λάβῃ ὁ λαὸς τῆς γῆς ἄνθρωπον ἕνα ἐξ αὐτῶν, καὶ δῶσιν αὐτὸν ἑαυτοῖς (β) εἰς σκοπὸν, 3 Καὶ ἴδῃ τὴν ῥομφαίαν ἐρχομένην ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ (γ) σαλπίσῃ τῇ σάλπιγγι, καὶ σημάνῃ τῷ λαῷ,

CAP. XXXIII.

1 ET factum est verbum Domini ad me, dicens; 2 Fili hominis, loquere filiis populi tui, & dices ad eos; Terra, super quam induxero gladium, & assumpserit populus terræ hominem unum de suis, & dederint eum sibi in speculatorem, 3 Et viderit gladium venientem super terram, & cecinerit tubâ, & significaverit populo:

MS.A. (α) ἐπαγάγω κρίμα αἵματος, καὶ λάβῃ (β) σκοπὸν, (γ) σαλπίσῃ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

24 תמן עילם וכל אתרגושתה סחרנותהון קבריהון כולהון קטיליא דאתקטלו בחרבא
דאתחתו חיביא לארעא ארעיתא דאתמסירו לתבר על דשליטו בארעא דישראל
25 וקבילו אתכנעותהון עם נחתי גוב בית אבדנא : בגו קטיליא אתמנא בית משכבהון
להון בכל אתרגושתהון סחרנותהון קבריהון כולהון חיביא קטלי חרבא דאתמסרו
לתבר על דשליטו בארעא דישראל וקבילו אתכנעותהון עם נחתי גוב בית אבדנא
26 בגו קטיליא אתמסירו : תמן משך תובל וכל משריתהון סחרניהון קברתהון כולהון
27 חיביא קטילי חרבא דאתמסרו לתבר על דשליטו בארעא דישראל : ולא
ישכבון עם גבריא דאתקטלו מחיביא דאתחתו לשאול במני קרביהון ויהבו ית
סיפיהון תחות רישיהון והוו חוביהון על גרמיהון ארי אתמסירו לתבר גבריא על
28 דשליטו לארעא דישראל : ואת בגו חיביא תתבר ותשכוב עם קטילי חרבא :
29 תמן אדום מלכהא וכל רברבהא דאתמסירו בגבורתהון עם קטילי חרבא אנון
30 עם חיביא ישכבון ועם נחתי גוב בית אבדנא : תמן רברבי צפונא כולהון וכל
צידונאי דאתחתו עם קטיליא באתברותהון מגבורתהון בהתין ושכיבו חיביא עם
31 קטילי חרבא וקבילו אתכנעותהון עם נחתי גוב בית אבדנא : יתהון יחזי פרעה
32 ויתנחם על כל אתרגושתיה קטילי חרבא פרעה וכל משריתיה אמר יי אלהים : ארי
אתמסירו לתבר גבריא על דשליטו בארעא דישראל ושכיבו בגו חיביא עם קטילי
חרבא דפרעה וכל אתרגושתיה אמר יי אלהים :

לג

1 2 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר : בר אדם אתנבי לבני עמך ותימר
להון ארעא ארי איתי עלה דקטלין בחרבא וידברון עמא דארעא גברא חד מביניהון
3 וימנון יתיה להון לאוהרא : ויחזי ית דקטלין בחרבא אתין על ארעא ויתקע
בשופרא ויזהר ית עמא :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

24 Ibi Elam & omnis multitudo ej⁹, & per gyrū eorū sepulchra ipsorū; universi interfecti qui occisi sunt gladio, qui detracti sunt peccatores in terrā inferiorē, qui traditi sunt in excidiū, pro eo quòd dominati sunt in terram Israel, & acceperunt ignominiā suā cum descendentib⁹ in lacum dom⁹ perditionis. 25 In medio occisorū constituta est dom⁹ cubationis eorum, cum tota eorū turba, in circuitu eorum sepulchra ipsorū; omnes hi peccatores *interficientes* gladio, qui traditi sunt ad interitū, pro eo quòd dominati sunt in terrā Israel, & susceperunt confusionē suā cum descendentib⁹ lacū dom⁹ perditionis, in medio occisorū traditi sunt. 26 Ibi Mosoch & Tubal, & *omnes exercitus eorum*, in circuitu eorū sepulchra ipsorū, omnes hi peccatores interfecti gladio, qui traditi sūt ad interitū pro eo quòd dominati sunt in terram Israel. 27 Et non dormient cū fortib⁹ qui occisi sunt à peccatorib⁹ qui detracti sunt in infernū cum armis bellicis suis, & posuerunt gladios suos sub capitib⁹ suis, & fuerunt peccata eorū super ossa ipsorū; quia traditi sunt in interitū fortes, pro eo ꝙ dominationē exercuerint in terrā Israel. 28 Tu autē in medio peccatorū contererîs, et dormies cum interfectis gladio. 29 Ibi Idumæa & reges ej⁹ & omnes principes ej⁹, qui traditi sunt cum fortitudine sua cum interfectis gladio; ipsi cum peccatorib⁹ dormient, & cum descendentib⁹ in lacū dom⁹ perditionis. 30 Ibi principes Aquilonis universi, & omnes Sidonii, qui descenderunt cum interfectis, quando contriti fuerunt à fortitudine sua confusi; & dormierunt peccatores cum interfectis gladio, & susceperunt confusionē suam cum descendentib⁹ in lacū dom⁹ perditionis. 31 Eos videbit Pharao & sese solabitur sup omni multitudine sua; interfecti gladio Pharao & omnis exercit⁹ ej⁹, ait Dñs De⁹. 32 Quia traditi sunt in excidiū fortes, eò quòd dominati sunt in terrā Israel; & dormierunt in medio peccatorum, & cum interfectis gladio Pharao, & omnis multitudo ejus, ait Dñs Deus.

CAP. XXXIII.

1 ET factum est verbum prophetiæ à facie Domini mecum, dicens: 2 Fili hominis, vaticinare ad filios populi tui, & dices ad eos: Terra cùm adduxero super eam eos qui occidunt gladio, & tulerit populus terræ virum unum de medio sui, & constituerit eum sibi in speculatorem. 3 Et viderit illos qui occidunt gladio, venientes super terram, et cecinerit buccina, et admonuerit populum.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܬܡܢ ܥܝܠܡ ܘܟܠܗ ܚܝܠܗ ܚܕܪ ܩܒܪܗ. ܟܠܗܘܢ ܩܛܝܠܐ ܕܢܦܠܘ ܒܚܪܒܐ. ܘܢܚܬܘ 24
ܥܘܪܠܐ ܠܐܪܥܐ ܬܚܬܝܬܐ. ܡܛܠ ܕܥܒܕܘ ܬܒܪܐ ܒܐܪܥܐ ܕܚܝܐ. ܘܩܒܠܘ ܨܥܪܗܘܢ. ܥܡ ܢܚܬܝ
ܓܘܒܐ. * ܘܒܝܢܝ ܩܛܝܠܐ ܥܒܕ ܠܗ ܡܫܟܒܐ. ܒܓܘ ܚܝܠܗ. ܘܚܕܪܝܢ ܠܩܒܪܗ 25
ܟܠܗܘܢ ܥܘܪܠܐ ܕܡܬܩܛܠܝܢ ܒܚܪܒܐ. ܡܛܠ ܕܥܒܕܘ ܬܒܪܐ ܒܐܪܥܐ ܕܚܝܐ. ܘܩܒܠܘ ܨܥܪܗܘܢ ܥܡ
ܢܚܬܝ ܓܘܒܐ. ܘܒܝܢܝ ܩܛܝܠܐ ܐܬܡܢܝܘ. * ܬܡܢ ܡܫܟ ܘܬܘܒܠ ܘܟܠܗ ܚܝܠܗ ܚܕܪ 26
ܩܒܪܗ. ܟܠܗܘܢ ܥܘܪܠܐ ܕܡܬܩܛܠܝܢ ܒܚܪܒܐ ܡܛܠ ܕܥܒܕܘ ܬܒܪܐ ܒܐܪܥܐ ܕܚܝܐ. * ܢܫܟܒܘܢ 27
ܥܡ ܓܢܒܪܐ ܕܢܦܠܘ ܡܢ ܥܘܪܠܐ. ܕܢܚܬܘ ܠܫܝܘܠ ܒܡܐܢܝ ܩܪܒܗܘܢ .· ܘܣܡܘ
ܣܝܦܝܗܘܢ ܬܚܝܬ ܪܝܫܝܗܘܢ .· ܘܗܘܬ ܥܘܠܗܘܢ ܥܠ ܓܪܡܝܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܥܒܕܘ
ܒܓܢܒܪܘܬܗܘܢ ܬܒܪܐ ܒܐܪܥܐ ܕܚܝܐ. * ܘܐܢܬ ܒܝܢܝ ܥܘܪܠܐ ܬܫܬܒܪ ܘܬܫܟܒ ܥܡ 28
ܩܛܝܠܝ ܚܪܒܐ. * ܬܡܢ ܐܕܘܡ ܘܡܠܟܝܗ ܘܟܠܗܘܢ ܫܠܝܛܢܘܗܝ ܕܐܬܝܗܒܘ ܒܓܢܒܪܘܬܗܘܢ 29
ܥܡ ܩܛܝܠܝ ܚܪܒܐ. ܥܡ ܥܘܪܠܐ ܢܫܟܒܘܢ ܘܥܡ ܢܚܬܝ ܓܘܒܐ. * ܬܡܢ ܫܠܝܛܢܐ ܕܓܪܒܝܐ 30
ܘܟܠܗܘܢ ܨܝܕܢܝܐ. ܕܢܚܬܘ ܥܡ ܩܛܝܠܝ ܚܪܒܐ. ܟܕ ܒܗܬܝܢ ܘܡܬܬܒܪܝܢ ܡܢ ܓܢܒܪܘܬܗܘܢ.
ܘܫܟܒܘ ܥܘܪܠܐ ܥܡ ܩܛܝܠܝ ܚܪܒܐ. ܘܩܒܠܘ ܨܥܪܗܘܢ ܥܡ ܢܚܬܝ ܓܘܒܐ. * ܠܗܠܝܢ 31
ܢܚܙܐ ܦܪܥܘܢ. ܘܢܬܒܝܐ ܥܠ ܟܠܗ ܚܝܠܗ ܩܛܝܠܝ ܚܪܒܐ .· ܦܪܥܘܢ ܘܟܠܗ ܚܝܠܗ.
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. * ܡܛܠ ܕܝܗܒܬ ܬܒܪܗ ܒܐܪܥܐ ܕܚܝܐ. ܘܐܫܟܒܬܗ ܒܝܢܝ ܥܘܪܠܐ ܥܡ 32
ܩܛܝܠܝ ܚܪܒܐ. ܦܪܥܘܢ ܗܘ ܘܟܠܗ ܚܝܠܗ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܓ *

* ܙܘܗܪܐ ܘܒܘܝܐܐ * * ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ. 1
* ܒܪ ܐܢܫܐ .· ܡܠܠ ܥܡ ܒܢܝ ܥܡܟ. ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܐܪܥܐ ܟܕ ܕܐܝܬܐ ܐܢܐ ܥܠܝܗ̇ 2
ܚܪܒܐ .· ܢܣܒܘܢ ܥܡܐ ܕܐܪܥܐ ܓܒܪܐ ܚܕ ܡܢ ܒܝܢܬܗܘܢ .· ܘܢܩܝܡܘܢܝܗܝ ܠܗܘܢ ܕܘܩܐ. * ܘܡܐ 3
ܕܢܚܙܐ ܚܪܒܐ ܕܐܬܝܐ ܥܠ ܐܪܥܐ .· ܢܩܥ ܒܩܪܢܐ. ܘܢܙܗܪ ܠܥܡܐ.

Illic Ilam totuſque exercitus ejus circa ſepulchrum ipſius ſunt; omnes confoſſi qui gladio ceciderunt, & deſcenderunt incircuncisi in imam terram, eò quòd fractionem fecerint in terra vivorum; & reportaverunt ignominiã ſuam cum deſcendentibus in foveam: 24 Et inter occiſos fecit ſibi cubile in medio copiarũ ſuarum, & circunſtant ſepulchrũ ejus omnes incircuncisi qui gladio interfecti fuerunt, eò quòd confractionem fecerint in terra vivorũ; & reportaverunt ignominiam ſuam cum deſcendentibus in foveam, & inter occiſos annumerati ſunt. 25 Illic Moſoch, & Thubel cum toto exercitu ſuo circa ſepulchrum ejus ſunt; omnes incircuncisi qui gladio interfecti ſunt, eò quòd confractionem fecerint in terra viventium: 26 Jacebunt cum gigantibus qui ceciderunt ex incircuncisis, qui deſcenderunt in inferos cum inſtrumentis ſuis bellicis, & poſuerunt gladios ſuos ſub capitibus ſuis; & recidit iniquitas eorum in oſſa ipſorũ, eò quòd fortitudine ſuâ contritionem feciſſent in terra viventium. 27 Tu ergò inter præputiatos jacebis, & cubabis cum occiſis gladio. 28 Illic Edom cum regibus ſuis cunctiſque principibus ſuis, qui annumerati ſunt in fortitudine ſua inter confoſſos gladio; cum incircuncisis cubabunt, & cum deſcendentibus in foveam. 29 Illic dynaſtæ Aquilonis, omneſque Sidonii, qui deſcenderunt cum occiſis gladio, erubeſcentes & fracti à fortitudine ſua, & cubaverunt incircuncisi cum occiſis gladio, & reportaverunt ignominiam ſuam cum deſcendentibus in foveam. 30 Hos videns Pharaon conſolationem capiet de cunctis copiis ſuis gladio interfectis, Pharaon *inquam* & omnes copiæ ipſius, ait Dñs dominorum. 31 Feci enim contritionem ejus in terra viventium, et cubare feci eum inter incircunciſos cum interfectis gladio, Pharaonem ipſum & omnes copias ejus, dicit Domin⁹ dominorum. 32

CAP. XXXIII.

Hortatio & conſolatio.

DEinde fuit ad me ſermo Domini dicendo: 1 Fili hominis, alloquere populares tuos, & 2 dic eis; Quum adduxero gladium ſuper terram, accipiant populus terræ illius virum aliquem ex eis, & conſtituant eum ſibi ſpeculatorem. Is cùm viderit gladium advenientem ſuper eos, clangat buccinâ, moneatque populũ: 3

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

24 * * هناك الاهواز * وكل جيشه حول قبره * جميع الجرحا الساقطين بالسيف والهابطين
25 الغلف الي عمق الارض * الذين اعطوا خوفهم على ارض الحياة * واخذوا عذابهم مع الهابطين
في الكفن * في وسط الجرحا * الاصحاح الثامن عشر * هناك اعطيوا موصوخ 26
وتوبال * وكل قوتهم حول قبره * جميع جرحاه * جميع الغلف مخوفين جرحا من السيف *
والذين اعطوا خوفهم علي ارض الحيوة * اضطجعوا مع الجبابرة الساقطين منذ الدهر * 27
الذين نزلوا الي الجحيم باسلحة حربية * ووضعوا سيوفهم تحت رووسهم * وصارت اثامهم علي
عظامهم * لانهم اخافوا الجبابرة في حياتهم * وانت في وسط الغلف ترقد * مع المجروحين 28
بالسيف * هناك ادوم وملوكها وجميع رؤساها * الذين اعطوا قوتهم لجراح السيف * هولاء 29
مع الجرحا اضطجعوا * مع الهابطين في الكفن * هناك رؤساء الكبرياء * هاولاء جميعهم 30
اجناد الموصل * النازلون جرحا * مع خوفهم وقوتهم اضطجعوا غير مختونين مع
المجروحين بالسيف * وحملوا عقابهم مع الهابطين في الكفن * اوليك يعاينهم فرعون * 31
ويتعزي بكل قوتهم * يقول الرب الرب * لاني اعطيت خوفه على ارض الحياة * ويضطجع 32
في وسط الغلف مع المجروحين بالسيف * فرعون وكل كثرته * يقول الرب الرب *

* الفصل الثالث والثلثون *

1 * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان * كلم بني شعبك وقل لهم * الارض التي اجلب 2
عليها اذن سيفا * وياخذ شعب الارض انسانا واحدا منها * ويعطوه لهم ربيبه * وينظر السيف 3
الاتي على الارض * ويبوق بالبوق * ويبين للشعب *

* * *Illic Elamita, totuſque exercitus ejus circa ſepulchrum ipſius, omnes vulnerati, gladio dejecti, & incircuncisi, qui deſcenderunt in ima terræ, qui formidinem ſuam incuſſerant ſuper terram vitæ; pœnam reportantes cum deſcendentibus in foveam, inter vulneratos.* 24 25

Textus decimus octavus.

Illic collocati fuerunt Moſoch & Thubal omneſque ipſorum copiæ circa ſepulchrum uniuſcujuſque: omnes utriuſque vulnerati, omnes incircuncisi, gladio vulnerati, quique metũ ſuum incuſſerant ſuper terram vitæ; 26 *Jacuerunt cum gigantibus qui ceciderunt ab æterno, qui deſcenderunt in infernum armis bellicis, & poſuerunt gladios ſuos ſub capitibus ſuis, & reciderunt iniquitates eorum in oſſa eorum, eò quòd terrorem incuſſerint gigantibus, dum viverent.* 27 *Tu itaque in medio præputiatorum jacebis unà cum gladio vulneratis.* 28 *Illic Edom, & reges ejus, omneſque principes ejus, qui robur ſuum expoſuerunt vulneri gladii: hi cum vulneratis jacuerunt, cum deſcendentibus in lacum.* 29 *Illic principes Aquilonis; omnes iſti milites Aſſur, qui vulnerati deſcenderunt, cum terrore & fortitudine ſuâ incircuncisi jacuerunt cum vulneratis gladio, & reportaverunt pœnam ſuam cum deſcendentibus in foveam.* 30 *Iſtos videbit Pharaon, & conſolationem percipiet ex omni fortitudine eorum, ait Dominus Dominus;* 31 *Quia dedi terrorem ~~ejus~~ ſuper terram vitæ: jacebitque in medio præputiatorum cum vulneratis gladio Pharaon & tota multitudo ipſius, ait Dominus Dominus.* 32

CAP. XXXIII.

PReterea fuit ſermo Domini ad me, dicens; 1 *O fili hominis, alloquere populares tuos, & dicas eis; Siquando ſuper terram aliquam induxero gladium, ſumpſerit autem populus terræ illius aliquem ex ea hominem, & conſtituerint eum ſibi ſpeculatorem,* 2 *Atque is viderit gladium venientem ſuper terram illam, & buccinâ clanxerit populumque monuerit;* 3

,gladius veneritque ,*caverit* non & ,buccinæ *vocem* audiens audierit Et
4 וְשָׁמַע הַשֹּׁמֵעַ אֶת־קוֹל הַשּׁוֹפָר וְלֹא נִזְהָר וַתָּבוֹא חֶרֶב
,audivit buccinæ *Vocem* .erit ejus caput in ejus ſanguis ;eũ tulerit &
5 וַתִּקָּחֵהוּ דָּמוֹ בְּרֹאשׁוֹ יִהְיֶה׃ אֶת־קוֹל הַשּׁוֹפָר שָׁמַע
.eruit ſuã animã ,*cavit* ipſe & : erit ipſum in ejus Sanguis .*cavit* non &
וְלֹא נִזְהָר דָּמוֹ בּוֹ יִהְיֶה וְהוּא נִזְהָר נַפְשׁוֹ מִלֵּט׃
,buccina in clanxerit non &,venientẽ gladium viderit *cùm* ſpeculator Et
6 וְהַצֹּפֶה כִּי־יִרְאֶה אֶת־הַחֶרֶב בָּאָה וְלֹא־תָקַע בַּשּׁוֹפָר
ipſe ; animã eis de tulerit & ,gladius venerit & ,*caverit* non populus &
וְהָעָם לֹא־נִזְהָר וַתָּבוֹא חֶרֶב וַתִּקַּח מֵהֶם נָפֶשׁ הוּא
.requiram ſpeculatoris manu de ejus ſanguinẽ & ,eſt captus *ſua iniquitate in*
בַּעֲוֹנוֹ נִלְקָח וְדָמוֹ מִיַּד־הַצֹּפֶה אֶדְרֹשׁ׃
audies & : Iſrael domui te dedi ſpeculatorẽ ,hominis fili tu Et
7 וְאַתָּה בֶן־אָדָם צֹפֶה נְתַתִּיךָ לְבֵית יִשְׂרָאֵל וְשָׁמַעְתָּ
Impie ,impio *me dicendo In* .me ex eos præmonebis &,verbũ meo ore de
8 מִפִּי דָּבָר וְהִזְהַרְתָּ אֹתָם מִמֶּנִּי׃ בְּאָמְרִי לָרָשָׁע רָשָׁע
ipſe :ſua via à *impium ſibi cavendũ ad*,fueris locut⁹ non &:morieris moriẽdo
מוֹת תָּמוּת וְלֹא דִבַּרְתָּ לְהַזְהִיר רָשָׁע מִדַּרְכּוֹ הוּא
.requiram tua manu de ejus ſanguinẽ & ,morietur *ſua iniquitate in* impius
רָשָׁע בַּעֲוֹנוֹ יָמוּת וְדָמוֹ מִיָּדְךָ אֲבַקֵּשׁ׃
non & ea ab *ſe avertendũ ad* ,ſua via de impium præmonueris *cùm* tu Et
9 וְאַתָּה כִּי־הִזְהַרְתָּ רָשָׁע מִדַּרְכּוֹ לָשׁוּב מִמֶּנָּה וְלֹא־
tuã animã tu & ,morietur *ſua iniquitate in* ipſe : ſua via à fuerit averſus
שָׁב מִדַּרְכּוֹ הוּא בַּעֲוֹנוֹ יָמוּת וְאַתָּה נַפְשְׁךָ
Recte : Iſrael domum ad dic ,hominis fili tu Et .liberâſti
10 הִצַּלְתָּ׃ וְאַתָּה בֶן־אָדָם אֱמֹר אֶל־בֵּית יִשְׂרָאֵל כֵּן
,nos ſuper noſtra peccata & ,*noſtræ prævaricationes* quia :dicendo dixiſtis
אֲמַרְתֶּם לֵאמֹר כִּי־פְשָׁעֵינוּ וְחַטֹּאתֵינוּ עָלֵינוּ
Vivens : eos ad Dic ? vivemus quomodo & ,*tabefacti* nos ipſa ppter &
11 וּבָם אֲנַחְנוּ נְמַקִּים וְאֵיךְ נִחְיֶה׃ אֱמֹר אֲלֵיהֶם חַי־
quinimo , impii *morte in volam* ſi ,Deus Dominus dixit , ego
אָנִי נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה אִם־אֶחְפֹּץ בְּמוֹת הָרָשָׁע כִּי אִם־
convertimini ,Convertimini .vivet & ,ſua via à *impium ſe avertendo in*
בְּשׁוּב רָשָׁע מִדַּרְכּוֹ וְחָיָה שׁוּבוּ שׁוּבוּ
fili tu Et ? Iſrael domus moriemini quid *ad* & ,malis veſtris viis à
12 מִדַּרְכֵיכֶם הָרָעִים וְלָמָּה תָמוּתוּ בֵּית יִשְׂרָאֵל׃ וְאַתָּה בֶן־
cum eruet non juſti Juſtitia :tui populi filios ad Dic ,hominis
אָדָם אֱמֹר אֶל־בְּנֵי־עַמְּךָ צִדְקַת הַצַּדִּיק לֹא תַצִּילֶנּוּ
die in ,*ea in corruet non impii impietate &* ,*ejus prævaricationis* die in
בְּיוֹם פִּשְׁעוֹ וְרִשְׁעַת הָרָשָׁע לֹא־יִכָּשֶׁל בָּהּ בְּיוֹם
die in ,eã propter vivere poterit non juſtus & :ſua impietate ab *ſe convertere*
שׁוּבוֹ מֵרִשְׁעוֹ וְצַדִּיק לֹא יוּכַל לִחְיוֹת בָּהּ בְּיוֹם
ſua juſtitia ſuper confidit ipſe & ,vivet vivendo ,juſto *me dicendo In* .*eũ peccare*
13 חֲטֹאתוֹ׃ בְּאָמְרִי לַצַּדִּיק חָיֹה יִחְיֶה וְהוּא־בָטַח עַל־צִדְקָתוֹ
ſua iniquitate in &,memorabũtur non ej⁹ juſtitiæ omnes:iniquitatẽ fecerit &
וְעָשָׂה עָוֶל כָּל־צִדְקָתוֹ לֹא תִזָּכַרְן וּבְעַוְלוֹ
:morieris moriendo ,impio *me dicendo in* Et .morietur *ea in* , fecit quam
14 אֲשֶׁר־עָשָׂה בּוֹ יָמוּת׃ וּבְאָמְרִי לָרָשָׁע מוֹת תָּמוּת
Pignus .juſtitiam & ,judicium fecerit & ,ſuo peccato à fuerit averſus &
15 וְשָׁב מֵחַטָּאתוֹ וְעָשָׂה מִשְׁפָּט וּצְדָקָה׃ חֲבֹל
,ambulaverit *vitarum ſtatutis* in ,reddiderit *rapinam* , impius reſtituerit
יָשִׁיב רָשָׁע גְּזֵלָה יְשַׁלֵּם בְּחֻקּוֹת הַחַיִּים הָלַךְ
Omnia .morietur non ,vivet vivendo : iniquitatem *faciendum* non *ad*
16 לְבִלְתִּי עֲשׂוֹת עָוֶל חָיוֹ יִחְיֶה לֹא יָמוּת׃ כָּל־
juſtitiam & judicium : ei memorabũtur non ,peccavit quæ ejus peccata
חַטֹּאתוֹ אֲשֶׁר חָטָא לֹא תִזָּכַרְנָה לוֹ מִשְׁפָּט וּצְדָקָה
via *dirigetur* non : tui populi filii dixerunt Et .vivet vivendo ,fecit
17 עָשָׂה חָיוֹ יִחְיֶה׃ וְאָמְרוּ בְּנֵי עַמְּךָ לֹא יִתָּכֵן דֶּרֶךְ
juſtum ſe avertendo In .*dirigetur* non ipſorum via *ipſorum &* : Domini
18 אֲדֹנָי וְהֵמָּה דַּרְכָּם לֹא־יִתָּכֵן׃ בְּשׁוּב־צַדִּיק
.*eis in* morietur & ,iniquitatem fecerit & ,ſua juſtitia à
מִצִּדְקָתוֹ וְעָשָׂה עָוֶל וּמֵת בָּהֶם׃

Verſio VULG. LAT.

4 Audiens autem, quiſquis ille eſt,
ſonitũ buccinæ, & non ſe obſervaverit,
veneritq; gladi⁹, et tulerit
eũ: ſanguis ipſi⁹ ſup caput ej⁹
5 erit. Sonum buccinæ audivit, &
non ſe obſervavit, ſanguis ej⁹ in
ipſo erit : ſi autem ſe cuſtodierit,
6 animã ſuã ſalvabit. Quòd ſi
ſpeculator viderit gladiũ venientem,
et non inſonuerit buccinã:
& popul⁹ ſe non cuſtodierit,
veneritq; gladi⁹, & tulerit de eis
animã : ille quidem in iniquitate
ſua capt⁹ eſt, ſanguinẽ autẽ ej⁹ de
7 manu ſpeculatoris requirã. Et, tu
fili hominis, ſpeculatorẽ dedi te
domui Iſrael: audiens ergò ex ore
meo ſermonẽ, annuntiabis eis ex
8 me. Si me dicente ad impiũ; Impie,
morte morieris: non fueris
locut⁹ ut ſe cuſtodiat impi⁹ à via
ſua : ipſe impi⁹ in iniquitate ſua
morietur, ſanguinẽ autem ej⁹ de
9 manu tua requiram. Si autẽ annuntiante
te ad impium ut à viis
ſuis convertatur, non fuerit converſ⁹
à via ſua: ipſe in iniquitate
ſua morietur : porrò tu animã
10 tuã liberâſti. Tu ergò, fili hominis,
dic ad domum Iſrael;
Sic locuti eſtis, dicentes; Iniquitates
noſtræ, & peccata noſtra ſuper
nos ſunt, & in ipſis nos tabeſcim⁹
: quomodò ergò vivere
11 poterim⁹? Dic ad eos; Vivo ego,
dicit Dñs De⁹: nolo mortẽ impii,
ſed ut convertatur impius à via
ſua, & vivat. Convertimini, convertimini
à vĩis veſtris peſſimis:
& quarè moriemini, dom⁹ Iſrael?
12 Tu itaq;, fili hominis, dic ad filios
populi tui; Juſtitia juſti non
liberabit eum in quacunque die
peccaverit : & impietas impii
non nocebit ei, in quacunq; die
converſ⁹ fuerit ab impietate ſua:
& juſt⁹ non poterit vivere in juſtitia
ſua, in quacunq; die peccaverit.
13 Etiã ſi dixero juſto ꝙ vitã
vivat, & cõfiſ⁹ in juſtitia ſua fecerit
iniquitatẽ : omnes juſtitiæ
ejus oblivioni tradentur, & in
iniquitate ſua, quã operat⁹ eſt, in
14 ipſa morietur. Si autẽ dixero impio;
Morte morieris : & egerit
pœnitentiã à peccato ſuo, fecerítq;
15 judiciũ & juſtitiã, Et pign⁹
reſtituerit ille impi⁹, rapinámq;
reddiderit, in mãdatis vitæ ambulaverit,
nec fecerit quidquã injuſtũ:
vitã vivet, & nõ morietur.
16 Omnia peccata ej⁹, quæ peccavit,
nõ imputabũtur ei: judiciũ et juſtitiã
17 fecit, vitã vivet. Et dixerunt
filii populi tui; Non eſt æqui ponderis
via Dñi: & ipſorũ via injuſta
18 eſt. Cùm enim receſſerit juſt⁹
à juſtitia ſua, fecerítque iniquitates,
morietur in eis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

4 Καὶ ἀκούσῃ ὁ ἀκούσας (γ) τῆς φωνῆς τῆς σάλπιγγος,
καὶ μὴ φυλάξηται, καὶ (δ) ἐπέλθῃ ἡ ῥομφαία,
καὶ καταλάβῃ αὐτὸν, τὸ αἷμα αὐτοῦ ἐπὶ
5 (ε) τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ ἔσται. Ὅτι τῆς φωνῆς τῆς σάλπιγγος
ἀκούσας οὐκ ἐφυλάξατο (ζ), τὸ αἷμα
αὐτοῦ ἐπ' (η) αὐτῷ ἔσται· καὶ οὗτος ὅτι ἐφυλάξατο,
6 τὴν ψυχὴν αὐτοῦ ἐξείλατο. Καὶ ὁ σκοπὸς
ἐὰν ἴδῃ τὴν ῥομφαίαν ἐρχομένην, καὶ μὴ σημάνῃ
(θ) τῇ σάλπιγγι, καὶ ὁ λαὸς μὴ φυλάξηται,
καὶ ἐλθοῦσα ἡ ῥομφαία λάβῃ ἐξ αὐτῶν ψυχὴν,
αὕτη διὰ τὴν αὐτῆς ἀνομίαν ἐλήφθη, καὶ τὸ
7 αἷμα (ι) ἐκ χειρὸς τοῦ σκοποῦ ἐκζητήσω. Καὶ
σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, σκοπὸν δέδωκά σε τῷ οἴκῳ
8 Ἰσραὴλ, καὶ ἀκούσῃ ἐκ στόματός μου λόγον. Ἐν
τῷ εἰπεῖν με τῷ (κ) ἁμαρτωλῷ, Θανάτῳ θανατωθήσῃ,
καὶ (λ) μὴ λαλήσῃς τοῦ φυλάξασθαι τὸν
ἀσεβῆ ἀπὸ τῆς ὁδοῦ αὐτοῦ, αὐτὸς ὁ ἄνομος τῇ
ἀνομίᾳ αὐτοῦ ἀποθανεῖται, (μ) τὸ δὲ αἷμα
9 αὐτοῦ ἐκ τῆς χειρός σου ἐκζητήσω. Σὺ δὲ ἐὰν
προαπαγγείλῃς τῷ ἀσεβεῖ τὴν ὁδὸν αὐτοῦ (ν)
ἀποστρέψαι ἀπ' αὐτῆς, καὶ μὴ ἀποστρέψῃ ἀπὸ τῆς
ὁδοῦ αὐτοῦ, οὗτος τῇ (ξ) ἀσεβείᾳ αὐτοῦ ἀποθανεῖται,
10 καὶ σὺ τὴν (ο) ψυχὴν σαυτοῦ ἐξῄρησαι. Καὶ
σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, εἰπὸν τῷ οἴκῳ Ἰσραὴλ,
Οὕτως ἐλαλήσατε λέγοντες, Αἱ πλάναι ἡμῶν,
καὶ αἱ ἀνομίαι ἡμῶν ἐφ' (π) ἡμῖν εἰσι, καὶ ἐν
11 αὐταῖς ἡμεῖς τηκόμεθα, καὶ πῶς ζησόμεθα; Εἰπὸν
αὐτοῖς, Ζῶ ἐγὼ, (ρ) τάδε λέγει κύριος, Οὐ
βούλομαι τὸν θάνατον τοῦ (σ) ἀσεβοῦς, ὡς (τ) ἀποστρέψαι
τὸν ἀσεβῆ ἀπὸ τῆς ὁδοῦ αὐτοῦ (υ), καὶ ζῆν
αὐτόν. Ἀποστροφῇ ἀποστρέψατε (φ) ἀπὸ τῆς ὁδοῦ
ὑμῶν· καὶ ἵνα τί ἀποθνήσκετε οἶκος Ἰσραήλ;
12 (χ) Εἰπὸν πρὸς τοὺς υἱοὺς τοῦ λαοῦ σου, Δικαιοσύνη
δικαίου οὐ μὴ ἐξέληται αὐτὸν, ἐν ᾗ ἂν ἡμέρᾳ
πλανηθῇ· καὶ ἀνομία (ψ) ἀσεβοῦς οὐ μὴ
κακώσῃ αὐτὸν, ἐν ᾗ ἂν ἡμέρᾳ ἀποστρέψῃ ἀπὸ
τῆς ἀνομίας αὐτοῦ· καὶ δίκαιος οὐ μὴ (ω) δύνηται
13 σωθῆναι (α). Ἐν τῷ εἰπεῖν με τῷ δικαίῳ, (β)
οὗτος πέποιθεν ἐπὶ τῇ δικαιοσύνῃ αὐτοῦ, καὶ (ϛ)
ποιήσει ἀνομίαν, πᾶσαι αἱ δικαιοσύναι αὐτοῦ
(δ) οὐ μὴ ἀναμνησθῶσιν, ἐν τῇ ἀδικίᾳ αὐτοῦ
14 ᾗ ἐποίησεν, ἐν αὐτῇ ἀποθανεῖται. Καὶ ἐν τῷ
εἰπεῖν με τῷ ἀσεβεῖ, Θανάτῳ θανατωθήσῃ,
καὶ (ε) ἀποστρέψει ἀπὸ τῆς ἁμαρτίας αὐτοῦ, καὶ
15 (˜) ποιήσει κρίμα καὶ δικαιοσύνην, Καὶ (ζ) ἐνεχύρασμα
ἀποδοῖ, καὶ ἁρπάσματα ἀποτίσει, ἐν
προστάγμασι ζωῆς διαπορεύηται, τοῦ μὴ ποιῆσαι
ἄδικον, ζωῇ ζήσεται, καὶ οὐ μὴ (η) ἀποθάνῃ.
16 Πᾶσαι αἱ ἁμαρτίαι αὐτοῦ ἃς (θ) ἥμαρτεν, οὐ
μὴ ἀναμνησθῶσιν, ὅτι κρίμα καὶ δικαιοσύνην
17 ἐποίησεν, ἐν (ι) αὐταῖς ζήσεται. Καὶ ἐροῦσιν οἱ υἱοὶ
τοῦ λαοῦ σου, Οὐκ εὐθεῖα ἡ ὁδὸς τοῦ κυρίου·
18 καὶ αὕτη ἡ ὁδὸς αὐτῶν οὐκ εὐθεῖα. Ἐν τῷ ἀποστρέψαι
δίκαιον ἀπὸ τῆς δικαιοσύνης αὐτοῦ, καὶ
ποιήσει (λ) ἀνομίας, καὶ ἀποθανεῖται ἐν (λ) αὐταῖς.

Et audiverit audiens vocẽ tubæ, 4
& non ſe obſervaverit, et venerit
gladi⁹, & comprehenderit eum;
ſanguis ipſi⁹ ſuper caput ipſi⁹ erit:
Quia vocẽ tubæ audiens non ſe 5
obſervavit : ſanguis ipſius ſuper
ipſũ erit: & hic, quia cuſtodivit
ſe, animã ſuã liberavit. Quòd ſi 6
ſpeculator viderit gladiũ venientẽ,
& non ſignificaverit tubâ, &
popul⁹ nõ ſe cuſtodierit, & veniens
glad⁹ tulerit de his animam:
ipſa propter iniquitatẽ ſuã capta
eſt: & (a) ſanguinẽ de manu ſpeculatoris
requirã. Et tu, fili hominis, 7
ſpeculatorẽ dedi te domui Iſrael,
& audieris ex ore meo (b)
ſermonẽ, In dicendo me peccatori, 8
(c) Morte morieris, & non fueris
loquut⁹, ut cuſtodiat ſe impi⁹ à
via ſua; ipſe iniqu⁹ iniquitate ſuâ
morietur: ſanguinem autẽ ejus de
manu tua requirã. Tu autẽ ſi prænuntiaveris 9
impio viã ſuã, ut avertat
ſe ab ea, et nõ averterit ſe
à via ſua; hic impietate ſuâ morietur:
& tu animã tuã liberâſti.
Et tu, fili hominis, dic domui Iſrael; 10
Sic loquuti eſtis, dicentes; Errores
noſtri, & iniquitates noſtræ
ſuper nos ſunt: & in ipſis nos tabeſcimus:
& quomodò vivemus?
Dic eis; Vivo ego: hæc dicit Dominus; 11
Non volo mortem impii,
ſicut converti impiũ à via ſua,
et ipſum vivere. Converſione convertimini
à via (d) veſtra: & utquid
morimini, dom⁹ Iſrael? (e)
Dic ad filios populi tui; Juſtitia 12
juſti non liberabit eũ, in quacunque
die erraverit: & iniquitas
impii non nocebit ei, in quacunq;
die converſus fuerit ab iniquitate
ſua. Et juſtus (f) non poterit
ſalvari. In dicendo me (g) juſto, 13
hic confidit in ſua juſtitia, & faciet
iniquitatem; omnes juſtitiæ
ej⁹ non memorabuntur: in injuſtitia
ſua, quam fecit, in ea morietur.
Et in dicendo me impio; Morte 14
morieris, & avertet ſe à peccato
ſuo, & faciet judicium, &
juſtitiã, Et pignus reſtituerit, & 15
rapinas reddiderit, in mandatis
vitæ ambulaverit, non faciendo
injuſtum; vitâ vivet, &
non morietur : Omnia peccata ejus, 16
quæ peccavit, non memorabuntur:
quia judicium & juſtitiam
fecit; in ipſis vivet. Et dicent 17
filii populi tui; Non eſt recta
via Domini: Et ipſa via eorum
non eſt recta. In recedendo 18
juſtum à juſtitia ſua, & faciet
iniquitates, & morietur in eis.

MS.A. (γ) τὴν φωνὴν (δ) ἐλθοῦσα ἡ ῥομφαία καταλάβῃ (ε) τὴν κεφαλὴν (ζ) τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, τὸ (η) αὐτοῦ (θ) τῷ λαῷ τῇ (ι) αὐτοῦ ἐκ τῆς χειρὸς (κ) ἀνόμῳ, (λ) ἐὰν μὴ λαλήσῃς τοὺς λόγους τοῦ ἀποστῆσαι τὸν ἄνομον ἀπὸ (μ) καὶ τὸ αἷμα (ν) τοῦ ἀποστρέψαι αὐτὸν ἀπ' αὐτῆς, (ξ) ἀνομίᾳ (ο) ψυχήν σου ἐῤῥύσω. (π) ἡμᾶς (ρ) λέγει ἀδωναῒ κύριος, (σ) ἁμαρτωλοῦ, (τ) τὸ ἀποστρέψαι (υ) τῆς πονηρᾶς, καὶ ζῆν (φ) ἀπὸ τῶν ὁδῶν ὑμῶν τῶν πονηρῶν· (χ) Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, εἰπὸν (ψ) ἀνόμου (ω) δυνήσεται (α) ἐν ἡμέρᾳ ἁμαρτίας αὐτοῦ. Ἐν (β) Ζωῇ ζήσῃ, καὶ οὗτος (ϛ) ἐὰν ποιήσῃ ἀδικίαν, πᾶσαι (δ) ἃς ἐποίησεν οὐ μὴ μνησθῶσιν, (ε) ἀποστρέψῃ ἀπὸ τῆς ἀσεβείας (˜) ποιήσῃ (ζ) ἐνέχυρον καὶ ἅρπαγμα (η) ἀποθανεῖται. (θ) ἐποίησεν, οὐ μὴ μνησθῶσιν ἔτι, (ι) αὐτοῖς (κ) ἀνομίαν, (λ) αὐτῇ.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 וְיִשְׁמַע דִּי שְׁמַע יָת קָל שׁוֹפָרָא וְלָא אִזְדְּהַר וַאֲתוֹ קָטוֹלֵי חַרְבָּא וְדַבְּרוּהִי חוֹבַת קְטוֹלֵיהּ
5 בְּרֵישֵׁיהּ יְהֵי׃ יָת קָל שׁוֹפָרָא שְׁמַע וְלָא אִזְדְּהַר חוֹבַת קְטוֹלֵיהּ בֵּיהּ תְּהֵי וְהוּא אִזְדְּהַר
6 נַפְשֵׁיהּ שֵׁיזֵיב׃ וּמְזַהֲרָנָא אֲרֵי יֶחֱזֵי יָת דְּקָטְלִין בְּחַרְבָּא אָתָן וְלָא תְקַע בְּשׁוֹפָרָא וְעַמָּא
לָא אִזְדְּהַר וַאֲתוֹ קָטוֹלֵי חַרְבָּא וְדַבַּרוּ מִנְּהוֹן נַפְשָׁא הוּא בְּחוֹבֵיהּ אִדְּבַר וּדְמֵהּ מִיַּד
7 מַזְהֲרָנָא אֶתְבַּע׃ וְאַתְּ בַּר אָדָם מַלֵּיף מַנִּיתָךְ לְבֵית יִשְׂרָאֵל וּתְקַבֵּל מִמֵּימְרִי פִּתְגָם
8 וְתַזְהַר יַתְהוֹן מִלְּמֶחְטֵי קֳדָמַי׃ בִּדְאֲמַרִית לְרַשִׁיעָא רַשִׁיעָא מְמָת תְּמוּת וְלָא מַלֵּלְתָּא
9 לְאַזְהָרָא רַשִׁיעָא מֵאָרְחֵיהּ הוּא רַשִׁיעָא בְּחוֹבֵיהּ יְמוּת וּדְמֵיהּ מִן יְדָךְ אֶתְבַּע׃ וְאַתְּ אֲרֵי
אַזְהַרְתָּא רַשִׁיעָא מֵאָרְחֵיהּ לְמֵתַב מִנַּהּ וְלָא תָב מֵאָרְחֵיהּ הוּא בְּחוֹבֵיהּ יְמוּת וְאַתְּ נַפְשָׁךְ
10 שֵׁיזֵבְתָּא׃ וְאַתְּ בַּר אָדָם אֱמַר לְבֵית יִשְׂרָאֵל כֵּן אֲמַרְתּוּן לְמֵימַר אֲרֵי חוֹבָנָא וְחֶטְאָנָא
11 עֲלָנָא מִתְיַהֲבִין וּבְהוֹן אֲנַחְנָא מִתְמַסְין וְאֵיכְדֵין נֵחֵי׃ אֱמַר לְהוֹן קַיָּם אֲנָא אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים
אִם רְעֵינָא בְּמִית רַשִׁיעָא אֱלָהֵן כַּד יְתוּב רַשִׁיעָא מֵאָרְחֵיהּ וְיֵחֵי תּוּבוּ תּוּבוּ מֵאָרְחָתְכוֹן
12 בִּישָׁתָא וְלָמָה תְמוּתוּן בֵּית יִשְׂרָאֵל׃ וְאַתְּ בַּר אָדָם אֱמַר לִבְנֵי עַמָּךְ זְכוּת זַכָּאָה לָא
תְשֵׁזְבִנֵּיהּ בְּיוֹמָא דְחוֹבְתֵיהּ וְחוֹבַת חַיָּבָא לָא יִתְקַל בָּהּ בְּיוֹמָא דִיתוּב מֵחוֹבֵיהּ וְצַדִּיקָא
13 לָא יְכוֹל לְאִתְקַיָּמָא בֵיהּ בְּיוֹמָא דְחוֹבְתֵיהּ׃ בִּדְאֲמַרִית לְזַכָּאָה מֵחָא יֵחֵי וְהוּא
יִתְרְחֵיץ עַל זְכוּתֵיהּ וַעֲבַד שְׁקַר כָּל זַכְוָתֵיהּ לָא יִדְּכְרָן וּבְשִׁקְרֵיהּ דַּעֲבַד בֵּיהּ יְמוּת׃
14 וּבִדְאֲמַרִית לְרַשִׁיעָא מְמָת תְּמוּת וִיתוּב מֵחוֹבוֹהִי וְיַעְבֵּיד דִּין דִּקְשׁוֹט וּזְכוּ׃ מַשְׁכּוֹנָא
15 יָתִיב רַשִׁיעָא גְּזֵילָא יְשַׁלֵּם בִּגְזֵירַת חַיַּיָּא הֲלֵיךְ בְּדִיל דְּלָא לְמֶעְבַּד שְׁקַר מֵחָא יֵחֵי וְלָא
16 17 יְמוּת׃ כָּל חוֹבוֹהִי דְּחָב לָא יִדְּכְרָן לֵיהּ דִּין דִּקְשׁוֹט עֲבַד וּזְכוּ מֵחָא יֵחֵי׃ וְיֵימְרוּן
18 בְּנֵי עַמָּךְ לָא מְפָרְשָׁן לָנָא אוֹרְחַת טוּבָא דַיְיָ וְאִנּוּן אוֹרְחָתְהוֹן דִּילְהוֹן לָא תַקְנָן׃ כַּד
יְתוּב זַכָּאָה מִזַּכְוָתֵיהּ וְיַעְבֵּיד שְׁקַר וִימוּת בְּהוֹן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et audierit quicunque audierit vocẽ buccinæ, & non ſibi caverit, & venerint 4
occidentes gladio, & tulerint eum ; reat⁹ occiſionis ej⁹ in caput ipſius
erit. Vocẽ buccinæ audivit, & non ſibi cavit :reat⁹ occiſionis ej⁹ in ipſum 5
recidet. Si autẽ ſibi caverit, animã ſuã liberavit. Si autẽ ſpeculator viderit 6
occidentes gladio qui veniunt, & non cecinerit tuba, & popul⁹ non fuerit
admonit⁹, & venerint occidentes gladio, & tulerint ex eis animã : ipſe quidẽ
in iniquitate ſua capt⁹ eſt, ſed ſanguinẽ ej⁹ de manu ſpeculatoris requiram.
Et tu fili hominis doctorẽ conſtitui te domui Iſrael, & ſuſcipies à verbo meo 7
ſermonẽ, & monebis eos ne peccent coram me. Cùm dixero impio, Impie 8
morte morieris ; & non locut⁹ fueris ut admonitũ impium à peccato ſuo
retrahas : ipſe impi⁹ in peccato ſuo morietur, & ſanguinẽ ej⁹ de manu tua
requirã. Si autẽ tu admonueris impiũ ut convertatur à via ſua, & non fuerit 9
converſus à via ſua; ipſe in peccato ſuo morietur, & tu animã tuam liberâſti.
Tu autem fili hominis dic domui Iſrael, Sic locuti eſtis, dicentes : Quia 10
delicta noſtra & peccata noſtra ſuper nos ſunt poſita, & in ipſis nos tabeſcimus,
& quomodo vivem⁹? Dic eis, Vivo ego, dicit Domin⁹ De⁹ : ſi volo 11
mortẽ impii, ſed ut convertatur impius à via ſua, & vivat. Convertimini,
convertimini à via veſtra mala : & quare moriemini dom⁹ Iſrael ? Tu autem 12
fili hominis dic ad filios populi tui. Juſtitia juſti non liberabit eum
in die qua peccaverit, & impietas impii non [*faciet ut*] corruat in eam,
in quacunque die converſus fuerit à peccato ſuo. Et juſtus non poterit
permanere in ea, in die qua peccaverit. Cùm dixero juſto, Vivens vivet, 13
& ipſe confiſus fuerit in juſtitia ſua , & fecerit iniquitatem ; omnes juſtitiæ
ejus non erunt in memoria, & in iniquitate ſua quã fecit, in ipſa morietur.
Et cùm dixero impio, Morte morieris, & converſus fuerit à peccatis 14
ſuis, & fecerit judicium verum & juſtitiam : Pignus reſtituerit ille impius, 15
rapinam reddiderit, in decretis vitæ ambulaverit, ut non faciat iniquitatẽ:
vivens vivet, & non morietur. Omnia peccata ej⁹ quæ admiſit, non memorabuntur 16
ei: judiciũ verũ & juſtitiã fecit, vivens vivet. Et dicent filii populi 17
tui, Non ſũt nobis expoſitæ viæ bonitatis Dñi, et ipſorũ viæ non ſunt rectæ.
Cùm converſ⁹ fuerit juſt⁹ à juſtitia ſua, et fecerit iniquitatẽ; morietur in eis. 18

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

*ܘܡܢ ܕܫܡܥ ܩܠܐ ܕܫܝܦܘܪܐ ܘܠܐ ܡܙܕܗܪ: ܘܐܬܐ ܣܝܦܐ ܘܢܣܒܗ ܠܗ. ܕܡܗ ܒܪܝܫܗ. *ܘܐܢ 4
5 ܐܙܕܗܪ ܢܦܫܗ ܡܦܠܛ. * ܘܕܘܩܐ ܕܝܢ ܡܐ ܕܚܙܐ ܣܝܦܐ ܕܐܬܐ. ܘܠܐ ܩܪܐ ܒܩܪܢܐ܆ ܘܠܥܡܐ ܠܐ ܐܙܗܪ: 6
ܘܐܬܐ ܣܝܦܐ ܘܢܣܒ ܡܢܗܘܢ ܢܦܫܐ. ܗܝ ܢܦܫܐ ܒܚܛܗܝܗ ܐܬܢܣܒܬ. ܘܕܡܗ ܡܢ
ܐܝܕܘܗܝ ܕܕܘܩܐ ܐܬܒܥܐ. * ܘܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ. ܕܘܩܐ ܝܗܒܬܟ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܬܫܡܥ ܡܠܬܐ 7
ܡܢ ܦܘܡܝ. ܘܬܙܗܪ ܐܢܘܢ ܡܢܝ. * ܡܐ ܕܐܡܪܬ ܠܚܛܝܐ ܕܡܡܬ ܬܡܘܬ. ܘܠܐ ܐܡܪܬ 8
ܠܗ ܠܚܛܝܐ ܕܢܙܕܗܪ ܡܢ ܐܘܪܚܗ. ܗܘ ܚܛܝܐ ܒܚܛܝܬܗ ܢܡܘܬ. ܘܕܡܗ ܡܢ ܐܝܕܝܟ ܐܬܒܥܐ.
* ܘܐܢ ܐܢܬ ܙܗܪܬܝܗܝ ܠܚܛܝܐ ܕܢܬܦܢܐ ܡܢ ܐܘܪܚܗ. ܘܠܐ ܐܬܦܢܝ. ܗܘ ܒܚܛܝܬܗ ܢܡܘܬ. 9
ܘܐܢܬ ܢܦܫܟ ܦܨܝܬ. * ܘܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ. ܐܡܪ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܗܟܢܐ ܐܡܪܬܘܢ. ܕܥܘܠܢ 10
ܘܚܛܗܝܢ ܥܠܝܢ ܐܢܘܢ. ܘܒܗܘܢ ܡܬܡܣܝܢܢ. ܐܝܟܢܐ ܢܚܐ. * ܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ 11
ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܕܠܐ ܨܒܐ ܐܢܐ ܒܡܘܬܗ ܕܚܛܝܐ. ܐܠܐ ܕܢܬܦܢܐ ܚܛܝܐ ܡܢ ܐܘܪܚܗ ܘܢܚܐ. ܬܘܒܘ
ܘܐܬܦܢܘ ܡܢ ܐܘܪܚܬܟܘܢ ܒܝܫܬܐ. ܘܠܐ ܬܡܘܬܘܢ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. * ܘܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ. 12
ܐܡܪ ܠܒܢܝ ܥܡܟ. ܙܕܝܩܘܬܗ ܕܙܕܝܩܐ ܠܐ ܡܦܨܝܐ ܠܗ ܒܝܘܡܐ ܕܚܛܐ. ܘܥܘܠܗ ܕܥܘܠܐ ܠܐ ܡܬܬܩܠ
ܒܥܘܠܗ ܒܝܘܡܐ ܕܡܬܦܢܐ ܡܢ ܥܘܠܗ. ܘܙܕܝܩܐ ܠܐ ܢܚܐ ܒܝܘܡܐ ܕܚܛܐ. * ܡܐ ܕܐܡܪܬ ܠܙܕܝܩܐ 13
ܕܡܚܐ ܚܐ: ܘܗܘ ܬܟܝܠ ܥܠ ܙܕܝܩܘܬܗ ܘܥܒܕ ܥܘܠܐ. ܟܠܗ ܙܕܝܩܘܬܗ ܕܥܒܕ ܠܐ
ܬܬܕܟܪ ܠܗ. ܐܠܐ ܒܥܘܠܐ ܕܥܒܕ ܢܡܘܬ. * ܘܡܐ ܕܐܡܪܬ ܠܚܛܝܐ ܕܡܡܬ ܬܡܘܬ. ܘܗܦܟ ܡܢ 14
ܚܛܗܘܗܝ. ܘܥܒܕ ܕܝܢܐ ܘܙܕܝܩܘܬܐ: * ܘܡܫܟܢܐ ܕܢܣܒ ܢܗܦܘܟ: ܘܚܛܘܦܝܐ ܕܚܛܦ ܢܦܪܘܥ: 15
ܘܒܦܘܩܕܢܐ ܕܚܝܐ ܢܗܠܟ. ܘܠܐ ܢܥܒܕ ܥܘܠܐ. ܡܚܐ ܢܚܐ ܘܠܐ ܢܡܘܬ. * ܘܟܠܗܘܢ ܚܛܗܘܗܝ 16
ܕܚܛܐ ܠܐ ܢܬܕܟܪܘܢ ܠܗ. ܐܠܐ ܒܕܝܢܐ ܘܒܙܕܝܩܘܬܐ ܕܥܒܕ ܢܚܐ. * ܘܐܡܪܝܢ ܒܢܝ ܥܡܟ. 17
ܠܐ ܬܪܝܨܐ ܐܘܪܚܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܐܘܪܚܬܗܘܢ ܕܝܠܗܘܢ ܠܐ ܬܪܝܨܢ. * ܘܡܐ ܕܢܬܦܢܐ ܙܕܝܩܐ 18
ܡܢ ܙܕܝܩܘܬܗ. ܘܢܥܒܕ ܥܘܠܐ. ܒܗ ܢܡܘܬ.

4 Quicunque audito ſono buccinæ non caverit ſibi, veniensque gladius auferat eum; hujus ſanguis in caput ſuum erit. 5 Verùm ſi caveat ſibi, animam ſuam eripiet. 6 Speculator autem cùm viderit gladium advenientem, ſi non clanxerit buccinâ, populumque non monuerit, & adveniens gladius aliquam ex eis animam abſtulerit; illa quidem anima ſuis in peccatis auferetur, ſed ſanguinem ej' è manibus ſpeculatoris repoſcam. 7 Te itaque fili hominis, ſpeculatorem dedi te Iſraelitis, ut ſis audiens ab ore meo verbum, tum moneas eos nomine meo. 8 Cùm dixero ſcelerato *alicui*, Omnino morieris; tu verò non dixeris eidẽ ſcelerato ut caveat ſibi à via ſua; ſceleratus ille in ſcelere quidem ſuo morietur, at ſanguinem ejus è manib' tuis repoſcam. 9 Quòd ſi tu monueris ſceleratum ut retrahat ſe à via ſua, neque retraxerit ſe; ipſe quidem in ſcelere ſuo morietur, tu autem animã tuam eripueris. 10 Tu igitur fili hominis, dic Iſraelitis; Ita dicitis, Scel' noſtrum & peccata noſtra nobis incumbunt, & in ipſis putreſcim'; quomodo vivemus? 11 Dic eis, Per vitam meã, inquit Dñs dominorum, nolo mortem ſcelerati; ſed ut revertatur ſceleratus à ſcelere ſuo, & vivat. Convertimini & retrahite vos à viis veſtris pravis, ac ne moriamini Iſraelitæ. 12 Tu ergò fili hominis, dic popularib' tuis; Juſtitia juſti nequaquã ſalvabit eum in die quo peccaverit, neque ſcelerat' impinget in ſcelus ſuum quo die regreſſus fuerit à ſcelere ſuo, *ut* neque juſtus vivet quo die peccaverit. 13 Cùm dixero juſto *cuipiam*, Omnino vives, is autem juſtitiâ ſuâ fret', poſtea ſcel' commiſerit; tota juſtitia quam fecerat, non memorabitur ei; ſed in ſcelere quod commiſit, morietur. 14 Et cùm dixero ſcelerato *cuipam*, Omnino morieris, is autem retrahat ſe à peccatis ſuis, & exerceat judiciũ atque juſtitiam; 15 Pignus quod acceperat, reſtituat; quod rapuerat, reddat; in vitæ præceptis ambulet, neque ſcel' committat; omnino vivet, & non morietur: 16 Et peccata quælibet quæ commiſerat non memorabuntur ei; ſed per judicium & juſtitiam quã fecerit, vivet. 17 Dicunt etiam populares tui, Non eſt recta via Dñi: viæ quidem ipſorũ non ſunt rectæ. 18 Cùm retraxerit ſe juſtus à juſtitia ſua, ſceluſque commiſerit, in eo morietur:

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* والسامع الذي يسمع صوت البوق ولا يتحفظ * ويأتي السيف ويدركه * دمه على راسه 4
5 يكون * لانه سمع صوت البوق * ولم يتحفظ * دمه عليه يكون * وهذا انه 5
6 تحفظ * خلص نفسه * والربيبة اذا نظر السيف آتيا * ولم يبين للشعب بالبوق * 6
والشعب لم يتحفظ * ويأتي السيف يدرك نفسا منهم * هذه باثمها اخذت * ودمها من يد
7 الربيبة اطلبه * وانت يا ابن الانسان * اعطيتك ربيبة لبيت اسرايل فتسمع من فمي كلمة * 7
8 عندما اقول للاثيم بالموت تموت * وان لم تتكلم باقوالي ليبتعد الاثيم من طريقه * الاثيم 8
9 نفسه يموت باثمه * ودمه من يدك اطلبه * وانت ان سبقت فاخبرت المنافق بطريقه ليرجع 9
10 عنها * ولا يرجع من طريقه * هذا يموت باثمه * وانت تجيب نفسك * وانت يا ابن الانسان قل 10
لبيت اسرايل * هكذا تكلمتم قايلين * ضلالاتنا وآثامنا هن علينا * وفيهن نحن نذوب *
11 وكيف نعيش * قل لهم حي انا يقول ادوناي الرب * لا اشاء موت الخاطي * مثل ان يرجع 11
المنافق من طريقه الشرير ويحيي * ارجعوا رجعة من طرقكم الشريرة * فلماذا تموتون يا
12 بيت اسرايل * وانت يا ابن الانسان قل لبني شعبك * عدل الصديق لا يخلصه في يوم 12
يضل * واثم الاثيم لا يضره في اليوم الذي يرجع فيه من اثمه * والصديق لا يستطيع
13 ان يخلص في خطيته * عندما اقول للصديق تحيا حياة * وهذا يثق بعدله * فان صنع 13
14 ظلما * كل معدلاته التي صنعها لا تذكر بظلمه الذي صنعه به يموت * وعندما 14
15 اقول للمنافق بالموت تموت * ويرجع من نفاقه * ويصنع حكما وعدلا * ويرد الرهن والاختطاف * 15
16 ويسير بوصية الحيوة الا يصنع ظلما * يحيا حياة ولا يموت * وجميع خطاياه التي صنعها لا 16
17 تذكر بعد * لانه صنع حكما وعدلا * وبها يعيش * ويقول بنو شعبك * ليس طريق الرب 17
18 مستقيما * وتلك طريقهم ليست مستقيمة * عندما يرجع الصديق من عدله ويصنع اثما * فيموت به * 18

4 *Si quis auſcultans audito buccinæ ſono, non caveat ſibi, veniatque gladius, & apprehendat eum; hujus ſanguis ſuper caput ipſius erit: quia audito buccinæ ſono non cavit ſibi, ſanguis ejus ſuper ipſum erit.* 5 *Quòd ſi is caverit ſibi, animam ſuam ſervabit.* 6 *Verùm ſpeculator cùm viderit gladium venientem, populumque buccinâ minimè monuerit, neque caverit ſibi populus; & veniens gladius aliquam ex iis animam prehenderit: hæc in ſua iniquitate tolletur, at ſanguinem ejus de manu ſpeculatoris requiram.* 7 *Jam te O fili hominis, ſpeculatorem conſtitui domui Iſraelis, ut audias ab ore meo verbum,* 8 *Quum dixero peccatori, Morte morieris; nam ſi non retuleris ſermones meos, ut iniquus ille recedat à via ſua; illemet iniquus morietur in ſua iniquitate, at ſanguinem ejus de manu tua requiram.* 9 *Verùm ſi tu præmonueris impium illum de via ſua, ut recedat ab ea, nec tamen receſſerit à via ſua; is in ſua iniquitate morietur, at tu animam tuam ſervabis.* 10 *Jam tu O fili hominis, dic domui Iſraelis; Ita loquimini dicentes; Errores noſtri & iniquitates noſtræ ſuper nos ſunt, & in ipſis nos liqueſcimus; quomodo ergò viveremus?* 11 *Dic eis, Vivo ego, dicit Adonai Dominus, non volo mortem peccatoris, ut volo converti impium à via ſua mala, & vivere. Sedulò convertimini à viis veſtris malis: quorſum enim moreremini O domus Iſraelis?* 12 *Tu igitur O fili hominis, dic popularibus tuis; Æquitas juſti non eripiet eum in die qua erraverit, neque ſcelerati flagitium nocebit illi in die quâ convertetur à flagitio ſuo, neque juſtus ſalvari poterit in die peccati ſui.* 13 *Cùm dixero juſto, Vitam vives; & is juſtitiâ ſuâ confiſus, impietatem ſi committat; omnes juſtitiæ ipſius quas fecerat, haud memorabuntur: in impietate ſua quam commiſerit, in eadem morietur.* 14 *Ita cùm dixero impio, Morte morieris; is autem ab impietate ſuâ convertatur, faciatque judicium & juſtitiam,* 15 *Pignus & rapinam reſtituat, & ambulet in præcepto vitæ, ut impie non agat; vitam vivet, neque morietur:* 16 *Et omnia peccata ſua quæ fecerat, non memorabuntur ampliùs: quia fecit judiciũ et juſtitiã, per hæc etiã vivet.* 17 *Præterea dicunt populares tui; Non eſt recta via Domini: imò hujuſmodi eorũ via non eſt recta.* 18 *Cùm averterit ſe juſtus à juſtitia ſua, & iniquitatẽ fecerit; in ipſa morietur.*

יחזקאל : לג

: juſtitiam & ,judicium ;fecerit & ,ſua impietate ab *impium ſe avertendo* Et
19 וּבְשׁוּב רָשָׁע מֵרִשְׁעָתוֹ וְעָשָׂה מִשְׁפָּט וּצְדָקָה
.Domini via *dirigetur* Non , dixiſtis Et .vivet ipſe ipſa propter
20 עֲלֵיהֶם הוּא יִחְיֶה׃ וַאֲמַרְתֶּם לֹא יִתָּכֵן דֶּרֶךְ אֲדֹנָי
fuit Et .Iſrael domus vos judicabo *ſuas vias* juxta *Virum*
21 אִישׁ כִּדְרָכָיו אֶשְׁפּוֹט אֶתְכֶם בֵּית יִשְׂרָאֵל׃ וַיְהִי
,noſtræ tranſmigrationis menſis quinta in,decimo in,anno duodecimo in
בִּשְׁתֵּי עֶשְׂרֵה שָׁנָה בָּעֲשִׂרִי בַּחֲמִשָּׁה לַחֹדֶשׁ לְגָלוּתֵנוּ
.civitas eſt Percuſſa : dicendo , Jeruſalaim de evaſor me ad venit
בָּא־אֵלַי הַפָּלִיט מִירוּשָׁלַםִ לֵאמֹר הֻכְּתָה הָעִיר׃
, *evaſorem venire ante* , *veſpera in* me ad fuit Domini manus Et
22 וְיַד־יְהוָה הָיְתָה אֵלַי בָּעֶרֶב לִפְנֵי בּוֹא הַפָּלִיט
aperuit *ſe* & : mane *in* me ad *venire uſque* ,meum os aperuitque
וַיִּפְתַּח אֶת־פִּי עַד־בּוֹא אֵלַי בַּבֹּקֶר וַיִּפָּתַח
,me ad Domini verbum fuit Et .amplius *obmutui* non & ,meum os
23 פִּי וְלֹא נֶאֱלַמְתִּי עוֹד׃ וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי
humum ſuper iſti ſolitudinum habitatores ,hominis Fili : dicendo
24 לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם יֹשְׁבֵי הֶחֳרָבוֹת הָאֵלֶּה עַל־אַדְמַת
poſſedit & ,Abraham erat Unus : dicendo *dicentes* Iſrael
יִשְׂרָאֵל אֹמְרִים לֵאמֹר אֶחָד הָיָה אַבְרָהָם וַיִּירַשׁ אֶת־
.poſſeſſionem in terra eſt data nobis : multi nos & : terram
הָאָרֶץ וַאֲנַחְנוּ רַבִּים לָנוּ נִתְּנָה הָאָרֶץ לְמוֹרָשָׁה׃
ſanguine *Super* : Deus Dominus dixit Sic : eos ad dic Idcirco
25 לָכֵן אֱמֹר אֲלֵיהֶם כֹּה־אָמַר ׀ אֲדֹנָי יְהוִה עַל־הַדָּם
ſanguinem & ,veſtra idola ad *levabitis* veſtros oculos & , *comedetis*
תֹּאכֵלוּ וְעֵינֵכֶם תִּשְׂאוּ אֶל־גִּלּוּלֵיכֶם וְדָם
,veſtro gladio *ſuper* Stetiſtis ? poſſidebitis terram & : *fundetis*
26 תִּשְׁפֹּכוּ וְהָאָרֶץ תִּירָשׁוּ׃ עֲמַדְתֶּם עַל־חַרְבְּכֶם
: polluiſtis ſui *ſocii* uxorem unuſquiſque & ,abominationem feciſtis
עֲשִׂיתֶן תּוֹעֵבָה וְאִישׁ אֶת־אֵשֶׁת רֵעֵהוּ טִמֵּאתֶם
Dominus dixit Sic : eos ad dices Sic ? poſſidebitis terram &
27 וְהָאָרֶץ תִּירָשׁוּ׃ כֹּה־תֹאמַר אֲלֵהֶם כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי
,ceciderint gladio in ,ſolitudinibus in qui *non ſi* ,ego *Vivens* : Deus
יְהוִה חַי־אָנִי אִם־לֹא אֲשֶׁר בֶּחֳרָבוֹת בַּחֶרֶב יִפֹּלוּ
: *illum comedendum* ad ,*illum* tradidi beſtiæ agri *faciebus ſuper* qui &
וַאֲשֶׁר עַל־פְּנֵי הַשָּׂדֶה לַחַיָּה נְתַתִּיו לְאָכְלוֹ
dabo Et .morientur peſte *in* ,ſpeluncis in & *munitionibus* in qui &
28 וַאֲשֶׁר בַּמְּצָדוֹת וּבַמְּעָרוֹת בַּדֶּבֶר יָמוּתוּ׃ וְנָתַתִּי אֶת־
: ejus fortitudinis ſuperbia ceſſabit & ,*ſolitudinem & deſolationem* terram
הָאָרֶץ שְׁמָמָה וּמְשַׁמָּה וְנִשְׁבַּת גְּאוֹן עֻזָּהּ
quòd ſcient Et .*tranſeunte* non *à* , Iſrael montes deſolabuntur &
29 וְשָׁמְמוּ הָרֵי יִשְׂרָאֵל מֵאֵין עוֹבֵר׃ וְיָדְעוּ כִּי־
, deſertum & ,ſolitudinem terram *me dando in* : Dominus *ego*
אֲנִי יְהוָה בְּתִתִּי אֶת־הָאָרֶץ שְׁמָמָה וּמְשַׁמָּה
fili tu Et .fecerunt quas ,ſuas abominationes univerſas propter
30 עַל כָּל־תּוֹעֲבֹתָם אֲשֶׁר עָשׂוּ׃ וְאַתָּה בֶן־
oſtiis in & , parietes juxta te *in obloquentes* ,tui populi filii ,hominis
אָדָם בְּנֵי עַמְּךָ הַנִּדְבָּרִים בְּךָ אֵצֶל הַקִּירוֹת וּבְפִתְחֵי
ſuo fratre cum unuſquiſque , *uno* cum *unus locutus eſt* & : domorum
הַבָּתִּים וְדִבֶּר־חַד אֶת־אַחַד אִישׁ אֶת־אָחִיו
cum à egrediens verbum quod audite & ,nunc Venite : dicendo
לֵאמֹר בֹּאוּ־נָא וְשִׁמְעוּ מַה הַדָּבָר הַיּוֹצֵא מֵאֵת
ſedebunt & ,populi ingreſſum ſecundùm te ad venient Et .Domino
31 יְהוָה׃ וְיָבוֹאוּ אֵלֶיךָ כִּמְבוֹא־עָם וְיֵשְׁבוּ
:facient non ea & ,tua verba audient & ,meus populus *tuas facies ad*
לְפָנֶיךָ עַמִּי וְשָׁמְעוּ אֶת־דְּבָרֶיךָ וְאוֹתָם לֹא יַעֲשׂוּ
ſuam *appetitionem* poſt , *facientes ipſi* ſuo ore in ſubſannationes quia
כִּי־עֲגָבִים בְּפִיהֶם הֵמָּה עֹשִׂים אַחֲרֵי בִּצְעָם
.*ambulans* eorum cor
לִבָּם הֹלֵךְ׃

Verſio VULG. LAT.

19 Et cùm receſſerit impi' ab impietate ſua,feceritq; judicium et 20 juſtitiam, vivet in eis. Et dicitis; Non eſt recta via Dñi. Unumquemq; juxta vias ſuas judicabo 21 de vobis,dom' Iſrael. Et factum eſt in duodecimo anno, in decimo menſe, in quinta menſis tranſmigrationis noſtræ,venit ad me qui fugerat de Jeruſalem, di- 22 cens; Vaſtata eſt civitas. Man' autem Domini facta fuerat ad me veſperè, antequàm veniret qui fugerat : aperuitque os meum donec veniret ad me manè, & aperto ore meo non 23 ſilui ampliùs. Et factum eſt 24 verbũ Dñi ad me, dicens; Fili hominis,qui habitant in ruinoſis his ſuper humũ Iſrael,loquentes aiunt; Un' erat Abrahã,& hæreditate poſſedit terrã: nos autem multi ſum', nobis data eſt terra 25 in poſſeſſionẽ. Idcircò dices ad eos ; Hæc dicit Dñs De' ; Qui in ſanguine comeditis,& oculos veſtros levatis ad immunditias veſtras, & ſanguinem funditis : numquid terram hæreditate poſ- 26 ſidebitis? Stetiſtis in gladiis veſtris, feciſtis abominationes , & unuſquiſque uxorem proximi ſui polluit : & terrã hæreditate poſ- 27 ſidebitis? Hæc dices ad eos; Sic dicit Domin' De';Vivo ego,quia qui in ruinoſis habitant, gladio cadent: & qui in agro eſt,beſtiis tradetur ad devorandum : qui autem in præſidiis & ſpelun- 28 cis ſunt , peſte morientur. Et dabo terram in ſolitudinem, & in deſertum, & deficiet ſuperba fortitudo ej' : & deſolabuntur montes Iſrael, eò quòd null' ſit 29 qui per eos tranſeat. Et ſcient quia ego Domin', cùm dedero terram eorum deſolatam, & deſertam , propter univerſas abominationes ſuas , quas operati 30 ſunt. Et tu,fili hominis: filii populi tui , qui loquuntur de te juxta muros , & in oſtiis domorum, & dicunt unus ad alterum, vir ad proximum ſuum loquentes ; Venite, & audiamus quis ſit ſermo egrediens à 31 Domino. Et veniunt ad te, quaſi ſi ingrediatur populus , & ſedent coram te populus meus: & audiunt ſermones tuos , & non faciunt eos : quia in canticum oris ſui vertunt illos, & avaritiam ſuam ſequitur cor eorum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

19 Καὶ ἐν τῷ ἀποστρέψαι τὸν ἁμαρτωλὸν ἀπὸ τῆς ἀνομίας αὐτοῦ, ϗ (˜) ποιήσῃ κρίμα ϗ δικαιοσύνην, ἐν αὐτοῖς αὐτὸς ζήσεται. 20 Καὶ τοῦτό ἐστιν ὃ εἴπατε, Οὐκ εὐθεῖα ἡ ὁδὸς κυρίου. ἕκαστον (μ) ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτοῦ κρινῶ ὑμᾶς, οἶκος (ν) Ἰσραήλ. 21 Καὶ ἐγενήθη ἐν τῷ δωδεκάτῳ ἔτει, ἐν τῷ δωδεκάτῳ μηνὶ, πέμπτῃ τοῦ μηνὸς τῆς αἰχμαλωσίας ἡμῶν, ἦλθε (ξ) πρός με ὁ ἀνασωθεὶς ἀπὸ Ἱερουσαλὴμ, λέγων, Ἑάλω ἡ πόλις. 22 Καὶ (ο) χεὶρ κυρίου ἐγενήθη ἐπ᾽ ἐμὲ ἑσπέρας πρὶν ἐλθεῖν αὐτὸν (π), ϗ ἤνοιξέ μου τὸ στόμα, ὡς ἦλθε πρός με τὸ πρωΐ· ϗ (ρ) ἀνοιχθὲν τὸ στόμα μου, οὐ συνεσχέθη ἔτι. 23 Καὶ (σ) ἐγενήθη λόγος κυρίου πρός με, 24 λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, οἱ κατοικοῦντες τὰς ἠρημωμένας ἐπὶ τῆς γῆς τοῦ Ἰσραὴλ, λέγουσιν, Εἷς ἦν Ἀβραὰμ, καὶ κατέσχε τὴν γῆν, ϗ ἡμεῖς πλείους ἐσμὲν, ἡμῖν δέδοται ἡ γῆ εἰς κατάσχεσιν. 27 (τ) Διατοῦτο εἰπὸν αὐτοῖς, Τάδε λέγει κύριος κύριος, Ζῶ ἐγὼ, εἰ μὴν οἱ ἐν ταῖς ἠρημωμέναις (υ) μαχαίραις πεσοῦνται, ϗ οἱ ἐπὶ προσώπου τοῦ πεδίου τοῖς θηρίοις τοῦ ἀγροῦ δοθήσονται εἰς κατάβρωμα, ϗ τοὺς ἐν ταῖς τετειχισμέναις, ϗ τοὺς ἐν τοῖς σπηλαίοις θανάτῳ ἀποκτενῶ. 28 Καὶ δώσω τὴν γῆν ἔρημον, ϗ ἀπολεῖται ἡ ὕβρις τῆς ἰσχύος αὐτῆς, καὶ (φ) ἐρημωθήσεται τὰ ὄρη τοῦ Ἰσραὴλ διὰ τὸ μὴ εἶναι διαπορευόμενον. 29 Καὶ γνώσονται ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος. ϗ ποιήσω τὴν γῆν αὐτῶν ἔρημον, ϗ ἐρημωθήσεται διὰ πάντα τὰ βδελύγματα αὐτῶν ἃ ἐποίησαν. 30 Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, οἱ υἱοὶ τοῦ λαοῦ σου οἱ λαλοῦντες περὶ σοῦ παρὰ τὰ τείχη ϗ ἐν τοῖς πυλῶσι τῶν οἰκιῶν, ϗ (χ) λαλοῦσιν ἄνθρωπος τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ, λέγοντες, Συνέλθωμεν, ϗ (˜) ἀκούσωμεν τὰ ἐκπορευόμενα παρὰ κυρίου. 31 (ψ) Ἔρχονται πρὸς σὲ, ὡς συμπορεύεται λαὸς, ϗ κάθηνται ἐναντίον σου (ω), ϗ ἀκούουσι τὰ ῥήματά σου, ϗ αὐτὰ οὐ μὴ (α) ποιήσουσιν, ὅτι ψεῦδος ἐν τῷ στόματι αὐτῶν, καὶ ὀπίσω τῶν μιασμάτων (β) ἡ καρδία αὐτῶν.

19 *Et in recedendo peccatorem ab iniquitate ſua, & faciet judicium , & juſtitiam ; in ipſis ipſe vivet.* 20 *Et hoc eſt, quod dixiſtis; Non recta via Domini. Unumquemque in viis ſuis judicabo vos,domus Iſrael.* 21 *Et factum eſt in duodecimo (b) anno, in (i) duodecimo menſe, quintâ menſis captivitatis noſtræ, venit ad me, qui ſalvatus fuerat de Hieruſalem, dicens; Capta eſt civitas :* 22 *Et manus Domini facta fuerat ſuper me veſperè,antequã ille veniret:& aperuit os meum; (k) donec venit ad me mané. Et apertum os meum non ſe cobibuit ultrà.* 23 *Et factum eſt verbum Domini ad me, dicens;* 24 *Fili hominis , qui habitant deſertas ſuper terram Iſrael, dicunt; Unus erat Abraam, & poſſedit terram: & nos plures ſumus : nobis data eſt terra in (l) poſſeſſionem.* 27 *Idcircò dic eis ; Hæc dicit Dominus Dominus ; Vivo ego, ſi non, qui in deſertis, cadent gladiis, & qui ſuper faciem campi, beſtiis agri dabuntur in devorationem ; & eos, qui in muratis, & eos qui in ſpeluncis, morte interficiam.* 28 *Et dabo terram deſertum : & peribit ſuperbia fortitudinis ejus : & deſolabuntur montes Iſrael, eo quòd non ſit qui tranſeat.* 29 *Et ſcient, quia ego ſum Dominus. Et faciam terram eorum deſertum : & deſolabitur propter univerſas abominationes ipſorum,quas fecerunt.* 30 *Et tu,fili hominis, filii populi tui loquentes de te juxta muros , & in oſtiis domorum, & loquuntur homo fratri ſuo,dicentes; Conveniamus,& audiamus, quæ egrediuntur à Domino:* 31 *Veniunt ad te, quomodò congregari ſolet populus, & ſedent (m) coram te, & audiunt verba tua, & ea non facient : quoniam mendacium in ore (n) eorum, & poſt (o) contaminationes cor eorum.*

MS. A. (˜) ποιήσῃ (μ) κατὰ τὰς ὁδοὺς ὑμῶν κρινῶ ὑμᾶς, (ν) Ἰσραὴλ, λέγει κύριος. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ (ξ) ὁ ἀνασωθεὶς πρός με ἀπὸ (ο) ἐγένετο ἐπ᾽ ἐμὲ χεὶρ κυρίου ἑσπέρας (π) πρὸς μὲ, ϗ ἤνοιξεν τὸ στόμα μου, ἕως ἦλθεν (ρ) ἀνοιχθέν μου τὸ στόμα, οὐ συνεκλείσθη ἔτι. (σ) ἐγένετο 25 (τ) Διατοῦτο εἰπὲ πρὸς αὐτοὺς, Οὕτως εἶπεν ἀδωναῒ κύριος ; Ἐπὶ τῷ αἵματι φάγεσθαι, ϗ ὀφθαλμοὺς ὑμῶν λήμψεσθαι πρὸς ἴδωλα ὑμῶν, 26 ϗ αἷμα ἐκχεῖτε· ϗ τὴν γῆν κληρονομήσεται; Ἔστητε ἐπὶ τῇ ῥομφαίᾳ ὑμῶν, ἐποιήσατε βδέλυγμα, ϗ ἀνὴρ τὸν πλησίον αὐτοῦ ἐμιάνατε· ϗ τὴν γῆν κληρονομήσεται οὕτως ; Διατοῦτο εἰπὸν αὐτοῖς, Τάδε λέγει κύριος κύριος, (υ) μαχαίρᾳ (φ) ἐρημωθήσονται τὰ ὄρη Ἰσραὴλ (χ) ἐλάλουν (˜) ἀκούσωμεν (ψ) Καὶ ἔρχονται (ω) ὁ λαός μου, ϗ ἀκούσωσιν (α) ποιήσουσιν, (β) αὐτῶν ἡ καρδία ἐστίν.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

19 20 וְכַד יְתוּב רַשִׁיעָא מֵחוֹבוֹהִי וְיַעְבֵּיד דִּין דִּקְשׁוֹט וּזְכוּ עֲלֵיהוֹן הוּא יִתְקַיָּם׃ וַאֲמַרְתּוּן לָא
21 מְפָרְשָׁן לָנָא אוֹרְחַת טוּבָא דַּיְיָ אֱנָשׁ כְּאוֹרְחָתֵיהּ אֶתְפָּרַע מִנְּכוֹן בֵּית יִשְׂרָאֵל׃ וַהֲוָה
בְּתַרְתָּא עַסְרֵי שְׁנִין בַּעֲשִׂירָאָה בְּחַמְשָׁא לְיַרְחָא לְגָלוּתָנָא אֲתָא לְוָתִי מְשֵׁיזְבָא
22 מִירוּשְׁלֶם לְמֵימַר אִתְרַעַת קַרְתָּא׃ וּנְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ הֲוָת עִמִּי בְּרַמְשָׁא קֳדָם מֵיתֵי
23 מְשֵׁיזְבָא וּפְתַח יַת פּוּמִּי עַד מֵיתֵי לְוָתִי בְּצַפְרָא וְאִתְפְּתַח פּוּמִּי וְלָא שְׁתֵקִית עוֹד׃ וַהֲוָה
24 פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי לְמֵימַר׃ בַּר אָדָם יָתְבֵי חוּרְבָתָא הָאִלֵּין עַל אַרְעָא
דְיִשְׂרָאֵל אָמְרִין לְמֵימַר חַד הֲוָה אַבְרָהָם בְּעָלְמָא וִירֵית יַת אַרְעָא וַאֲנַחְנָא סַגִּיאִין
25 לָנָא יְהִיבָא אַרְעָא לְמֵירְתַהּ׃ בְּכֵן אֱמַר לְהוֹן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים עַל דַּם זַכַּי אַתּוּן
אָכְלִין וְעֵינֵיכוֹן אַתּוּן זָקְפִין לְפוּלְחַן טַעֲוָתְכוֹן וְדַם זַכַּי אַתּוּן אָשְׁדִין וְאַרְעָא אַתּוּן
26 מְדַמַּן לְמֵירְתַהּ׃ וְאִתְעֲתַדְתּוּן עַל תּוּקְפֵיכוֹן עֲבַדְתּוּן תּוֹעֵיבָא וּגְבַר יַת אִתַּת
27 חַבְרֵיהּ סָאֵיבְתּוּן וְאַרְעָא אַתּוּן מְדַמַּן לְמֵירְתַהּ׃ כִּדְנַן תֵּימַר לְהוֹן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים
קַיָּם אֲנָא אִם לָא דִּי בְחָרְבָתָא בְּחַרְבָּא יִתְקַטְלוּן וְדִי עַל אַפֵּי בָרָא לְחַיְתָא מְסַרְתֵּיהּ
28 לְשֵׁיצָיוּתְהוֹן וְדִי בִּמְצָדָתָא וּבִמְעָרָתָא בְּמוֹתָא יְמוּתוּן׃ וְאֶתֵּן יַת אַרְעָא לְצָדוּ
29 וְאִשְׁתְּמָמוּ וְיִבְטַל יְקַר תּוּקְפַהּ וְיִצְדוּן טוּרֵי יִשְׂרָאֵל מִבְּלִי עָדֵי׃ וְיִדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ
30 בְּדְאֶתֵּן יַת אַרְעָא לְצָדוּ וְאִשְׁתְּמָמוּ עַל כָּל תּוֹעֲבָתְהוֹן דַּעֲבַדוּ׃ וְאַתְּ בַּר אָדָם בְּנֵי עַמָּךְ
דְּרָנַן בָּךְ בְּסֵטַר כָּתְלַיָּא וּבְתַרְעֵי בָתַּיָּא וִימַלֵּל חַד עִם חַד גְּבַר יַת אֲחוּהִי לְמֵימַר אֱתוֹ
31 כְעַן וּשְׁמָעוּ מַה פִּתְגָמָא דְנָפֵק מִן קֳדָם יְיָ׃ וְיֵיתוֹן עֲלָךְ כְּמֵיתֵי גַּבְרִין תַּלְמִידִין וְיִתִּבוּן
קֳדָמָךְ עַמִּי וְשָׁמְעִין יַת פִּתְגָמָךְ וְיָתְהוֹן לָא יַעְבְּדוּן אֲרֵי תוֹלְעָבָא בְּפוּמְהוֹן אִנּוּן עָבְדִין
בָּתַר מָמוֹן אוֹנְסֵיהוֹן לִבְּהוֹן טָעֵי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

19 Et cùm converſus fuerit impius à peccatis ſuis , & fecerit judicium verum & juſtitiam, ipſe vivet in eis. 20 Et dixiſtis, Non ſunt expoſitæ nobis viæ bonitatis Domini. Juxta viam uniuſcujuſque retribuam vobis domus Iſrael. 21 Et factum eſt duodecimo anno, decimo menſe, quinta die menſis tranſmigrationis noſtræ,venit ad me qui evaſit de Jeruſalem,dicens:Dirupta eſt civitas. 22 Et prophetia à facie Domini facta eſt mecum veſperi antequam veniret qui evaſerat ; & aperuit os meum donec veniret ad me manè, & *aperui* os meũ,& non ſilui ampli'. 23 Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Dñi mecũ,dicens: 24 Fili hominis qui habitant in ſolitudinibus iſtis ſuper terram Iſrael loquuntur,dicentes : Unus fuit Abraham in orbe,& hæreditate poſſedit terrã, & nos ſum' multi;nobis data eſt terra ut eã poſſideam'. 25 Idcircò dic ad eos, Hæc dicit Dñs De',ſuper ſanguinẽ innocentẽ vos comeditis, et oculos veſtros attollitis vos ad cultũ idolorũ veſtrorũ,& ſanguinẽ innocentem effunditis,& putatis vos poſſeſſuros terram? 26 Stetiſtis in fortitudine veſtra, feciſtis abominationem, & unuſquiſque uxorem proximi ſui polluiſtis, & putatis vos poſſeſſuros terram ? 27 Hæc dices ad eos, Hæc dicit Dominus De', Vivo ego, quia qui in ſolitudinib' ſunt, gladio occidentur; & qui ſuper faciem agri eſt, beſtiis tradidi eum ut conſumant *eos* ; & qui in munitionibus, & in ſpeluncis ſunt, peſte morientur. 28 Et dabo terram in vaſtitatem & ſtuporem ; & ceſſabit *gloria* fortitudinis ejus, & deſolabuntur montes Iſrael abſque tranſeunte. 29 Et ſcient,quia ego Dominus, cùm dedero terram in vaſtitatem & ſtuporem propter omnes abominationes eorum quas fecerunt. 30 Tu autem fili hominis, filii populi tui murmurant de te juxta parietes, & in oſtiis domorum , & loquitur alter cum altero, & quiſque cum fratre ſuo, dicendo : Venite nunc & audite quodnam ſit verbum quod egreditur à facie Domini. 31 Et venient ad te ſicut veniunt viri diſcipuli, & ſedebunt coram te populus meus, & audient verba tua,ſed ea non facient ; quia irriſionem ipſi edunt ore ſuo ; & poſt pecuniam quam vi abſtulerunt, cor eorum errat.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

19 ܘܡܐ ܕܗܦܟ ܚܛܝܐ ܡܢ ܚܛܝܬܗ ܘܥܒܕ ܕܝܢܐ ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܒܗܘܢ ܢܚܐ. * ܘܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ
20 ܠܐ ܬܪܝܨܐ ܐܘܪܚܗ ܕܡܪܝܐ. ܐܢܫ ܐܢܫ ܐܝܟ ܐܘܪܚܬܗ ܐܕܘܢܟܘܢ. ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. * ܒܫܢܬ
21 ܚܕܥܣܪܐ. ܒܚܡܫܐ ܒܝܪܚܐ ܕܥܣܪܐ ܕܫܒܝܢ. ܐܬܐ ܠܘܬܝ ܦܠܝܛܐ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ. ܘܐܡܪ
ܠܝ. ܕܐܬܚܪܒܬ ܡܕܝܢܬܐ. * ܘܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ ܗܘܬ ܥܠܝ. ܥܕܠܐ ܢܐܬܐ ܠܘܬܝ ܗܘ ܦܠܝܛܐ.
22 ܒܪܡܫܐ. ܘܦܬܚ ܦܘܡܝ. ܥܕܡܐ ܕܐܬܐ ܠܘܬܝ ܒܨܦܪܐ. ܘܟܕ ܐܬܦܬܚ ܦܘܡܝ.
ܬܘܒ ܠܐ ܐܫܬܬܩ. * ܘܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ. ܐܝܠܝܢ ܕܥܡܪܝܢ
23 ܒܚܘܪܒܐ ܗܠܝܢ ܕܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܡܪܝܢ. ܐܒܪܗܡ ܚܕ ܗܘܐ. ܘܝܪܬ ܐܪܥܐ: ܚܢܢ ܕܣܓܝܐܐ
24 ܚܢܢ ܠܐ ܢܐܪܬܝܗ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܥܡ ܕܡܐ
25 ܐܟܠܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܥܝܢܝܟܘܢ ܠܦܬܟܪܝܟܘܢ ܡܪܝܡܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܕܡܐ ܫܐܕܝܢ ܐܢܬܘܢ.
ܘܝܪܬܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܐܪܥܐ. * ܩܡܬܘܢ ܐܢܬܘܢ ܥܠ ܚܪܒܝܟܘܢ. ܘܥܒܕܬܘܢ ܐܢܬܘܢ ܛܢܦܘܬܐ. 26
ܘܐܢܫ ܐܢܬܬ ܚܒܪܗ ܡܛܢܦܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܝܪܬܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܐܪܥܐ. * ܐܡܪ ܠܗܘܢ. 27
ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܚܝ ܐܢܐ ܕܟܠ ܕܒܚܘܪܒܐ ܐܢܘܢ. ܒܚܪܒܐ ܢܦܠܘܢ. ܘܟܠ ܕܒܚܩܠܐ
ܠܡܐܟܘܠܬܐ ܠܚܝܘܬܐ ܐܬܠܝܘܗܝ. ܘܟܠ ܕܒܚܣܢܐ ܘܒܡܥܪܬܐ ܒܡܘܬܢܐ ܢܡܘܬܘܢ. * ܘܐܬܠܝܗ 28
ܠܐܪܥܐ ܠܚܘܪܒܐ ܘܠܫܝܡܡܘܬܐ. ܘܢܒܛܠ ܡܢܗ ܫܘܒܗܪܐ ܕܥܘܫܢܗ. ܘܢܚܪܒܘܢ ܛܘܪܐ
ܕܐܝܣܪܝܠ ܡܢ ܕܠܐ ܥܒܘܪܐ. * ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܡܐ ܕܐܬܠܝܗ ܠܐܪܥܐ ܠܚܘܪܒܐ 29
ܘܠܫܝܡܡܘܬܐ. ܡܛܠ ܟܠܗܝܢ ܛܢܦܘܬܗܘܢ ܕܥܒܕܘ. * ܐܢܬ ܕܝܢ ܒܪܢܫܐ. ܒܢܝ ܥܡܟ 30
ܕܪܢܝܢ ܒܟ ܥܠ ܓܢܒ ܫܘܪܐ ܘܥܠ ܬܪܥܐ ܕܒܬܐ. ܘܡܡܠܠܝܢ ܚܕ ܥܡ ܚܕ. ܓܒܪܐ ܥܡ
ܐܚܘܗܝ. ܘܐܡܪܝܢ. ܬܘ ܫܡܥܘ ܡܢܐ ܡܠܬܐ ܢܦܩܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. * ܘܐܬܝܢ 31
ܠܘܬܟ ܥܡܐ. ܘܝܬܒܝܢ ܩܕܡܝܟ. ܘܫܡܥܝܢ ܡܠܝܟ. ܘܠܐ ܥܒܕܝܢ ܠܗܝܢ. ܡܛܠ
ܕܕܓܠܘܬܐ ܒܦܘܡܗܘܢ. ܘܒܬܪ ܡܠܟܐ ܕܠܒܗܘܢ ܐܙܠܝܢ.

* Et cùm retraxerit ſe ſceleratus à ſcelere ſuo, 19
feceritque judicium & juſtitiam; per ea vi-
vet: Et diceretis iniquam eſſe viam Domini? 20
Quemque cum viis ſuis judicabo, vos Iſraeli-
tæ. Anno undecimo, quintâ menſis decimi à 21
captivitate noſtra, venit ad me quidam qui
evaſerat è Jeruſalem, dixitque mihi, Vaſtata
eſt urbs. Antequam autem veniret ad me is 22
qui evaſerat, adfuerat mihi manus Domini
veſperè, aperuerátque os meum, donec is qui
evaſerat ad me manè veniret: & cum aper-
tum fuiſſet os meum, non eſt ampliùs occlu-
ſum. Rurſus fuit ad me ſermo Domini, di- 23
cendo; Fili hominis Iſti qui habitant in va- 24
ſtitatibus hiſce terræ Iſraelis, dicunt; Abra-
ham qui unus erat, poſſedit terram: nos qui
multi ſumus, annon poſſideremus eam? Iccir- 25
co dic eis; Sic ait Dominus dominorum, Cum
ſanguine comeditis, oculos veſtros ad idola
veſtra attollitis, ſanguinem bibitis, & terram
poſſidere velletis? Inſiſtitis gladiis veſtris, 26
abominationem facitis, quiſque uxorem ſocii
ſui impuratis, & terram poſſidere velletis?
Dic eis, Sic ait Dominus dominorum, Per 27
vitam meam, omnes qui ſunt in vaſtitatibus,
gladio cadent, & omnes qui ſunt in agro,
cibum beſtiis tradam eos: qui verò in hiati-
bus & ſpeluncis, peſte morientur. Et redi- 28
gam terram iſtam in excidium & ſtuporem,
ceſſabitque ex ea faſtus roboris ejus, & deſo-
labuntur montes Iſraelis ex penuria viato-
rum. Ita experientur me eſſe Dominum, quum 29
redegero terram iſtam in excidium & ſtupo-
rem propter tot abominationes quas fecerunt.
Tu ergò fili hominis, populares tui qui de te 30
cogitant ſecus parietes & ad oſtia domorum,
loquuntur alter cum altero, vir cum fratre
ſuo, & dicunt, Venite, audite quid ſermo-
nis egrediatur à conſpectu Domini: Et ve- 31
nientes ad te populus, coram te ſedent, ſer-
mones tuos audiunt, nec faciunt eos; quia
mendacium eſt in ore ipſorum, & conſilia qui-
dem cordis ſui ſectantur:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

19 * وعند ما يرجع الخاطي من إثمه ويصنع حكما وعدلا بها هو يحيي * وهذا الذي تقولوه
20 ليست طريق الرب مستقيمة * أدين كل واحد منكم كطريقكم يا بيت إسرائيل * يقول
21 الرب * وكان في السنة الثانية عشر * في الشهر الثاني عشر * في الخامس من الشهر لسبينا
22 أتى المتخلص من أورشليم * قائلا * هلكت المدينة * وكانت يد الرب علي مساء من
23 قبل أن يأتي إلي * وفتحت فمي حتى أتى إلي بالغداة * وفتح فمي * ولم يغلق بعد * وكان قول
24 الرب إلي قائلا * يا ابن الإنسان * الساكنون الخرابات على أرض إسرائيل يقولون * إبرهيم
25 كان واحدا * وضبط الأرض * ونحن كثيرون نحن * أعطيت الأرض لنا للاضباط * لأجل
هذا قل لهم * هكذا يقول أدوناي الرب * تأكلون على الدم * وترفعون أعينكم إلى
26 أصنامكم * وتهرقون الدم * وترثون الأرض * وقفتم بسيفكم * صنعتم رذائل * ونجستم
27 الرجل قريبه * وترثون الأرض هكذا * لأجل هذا قل لهم * هكذا يقول الرب الرب *
حي أنا * بالحقيقة الذين في الخرابات بالسيف يسقطون * والذين على وجه البقعة يسلمون
28 لوحوش الحقل طعاما * والذين في الحصينات * والذين في المغاير أقتلهم بالموت * وأعطي
الأرض للخراب * وتهلك كبرياء قوتها * وتخرب جبال إسرائيل * من أجل أنه لا يكون من
29 يسلك فيها * ويعلمون أني أنا الرب أنا * وأجعل أرضهم خرابا * وتخرب لأجل جميع رذائلهم
30 التي صنعوها * وأنت يا ابن الإنسان * بنو شعبك المتكلمون فيك على الأسوار وفي أبواب
البيوت * وتكلموا إنسان فإنسان مع أخيه قائلين * نجتمع ونسمع البارزات من قبل الرب *
31 * ويأتون إليك حتى يجمع الشعب * ويجلس أمامك شعبي * ويسمعون كلماتك ولا يعملون بها *
لأن الكذب في فيهم * وقلبهم خلف نجاساتهم *

* *Et cùm averterit ſe peccator ab iniquitate* 19
ſua, feceritque judicium & juſtitiam,
per hæc ipſe vivet. Hoc eſt propter 20
quod dicitis, Non eſt recta via Domini:
ideò judicabo unumquenque veſtrûm ſe-
cundùm viam veſtram O domus Iſraelis,
ait Dominus. Et factum eſt anno duo- 21
decimo, menſe duodecimo, quintâ ejuſ-
dem menſis à captivitate noſtra, ut ve-
niret qui eripuerat ſe ex Jeruſalem, di-
cens; Periit urbs. Adfuerat autem ma- 22
nus Domini mihi veſperè antequam ad me
veniſſet, aperuerátque os meum, donec
ad me manè veniſſet: apertum eſt autem
os meum, & non eſt ampliùs clauſum.
Fuit etiam ſermo Domini ad me, dicens; 23
O fili hominis, Qui ruinas habitant ſu- 24
per terram Iſraelis, dicunt; Abraham u-
nus erat, tamen poſſedit terram: nos au-
tem plures ſumus: nobis data eſt terra
poſſidenda. Propterea dic eis, Ita dicit 25
Adonai Dominus; Comeditis ſuper ſan-
guinem, & attollitis oculos veſtros ad
idola veſtra, & ſanguinem effunditis, &
terram poſſideretis? Gladio veſtro ſubſi- 26
ſtitis, abominanda committitis, quiſque
proximum ſuum contaminatis, & terram
hoc pacto poſſideretis? Iccirco dic eis, Ita 27
dicit Dominus Dominus; Vivo ego, verè
qui in ruinis ſunt, gladio occumbent; &
qui ſunt ſuper faciem ſolitudinis, beſtiis
agri in eſcam tradentur; eos autem qui in
munitionibus, & eos qui in cavernis, mor-
te occîdam. Tradámque terram vaſtita- 28
ti, & peribit arrogantia fortitudinis e-
jus; & vaſtabuntur montes Iſraelis, quia
non erit qui ambulet in eis: Et cogno- 29
ſcent quòd ego ſum Dominus. Et redi-
gam terram eorum in ruinam, & vaſta-
bitur ob omnes abominationes eorum quas
perpetrârunt. Tu etiam O fili hominis, 30
populares tui, qui de te loquuntur ſuper
muros & in oſtiis domorum, & locuti
ſunt unuſquiſque cum fratre ſuo, dicen-
tes; Conveniamus, & audiamus quæ
prodeunt è conſpectu Domini: Veniunt 31
ad te, ut congregetur populus, & ſe-
det coram te populus meus, audiúntque
verba tua, ſed non faciunt ea; quia men-
dacium eſt in ore eorum, & cor eorum
ſectatur turpitudines eorum:

יחזקאל: לד

bene & , vocis pulchra *amantium* canticum sicut eis tu ecce Et
32 וְהִנְּךָ לָהֶם כְּשִׁיר עֲגָבִים יְפֵה קוֹל וּמֵטִב
.ea *ipsi non facientes &* , tua verba audient & *: pulsare* scientis
נַגֵּן וְשָׁמְעוּ אֶת־דְּבָרֶיךָ וְעֹשִׂים אֵינָם אוֹתָם׃
fuit propheta quod scient & ,*veniens* ecce : illud *veniendo in* Et
33 וּבְבֹאָהּ הִנֵּה בָאָה וְיָדְעוּ כִּי נָבִיא הָיָה
.eorum medio in
בְתוֹכָם׃

CAP. XXXIV. לד

super propheta ,hominis Fili : dicendo,me ad Domini verbum fuit Et
1 2 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם הִנָּבֵא עַל־
Sic *: pastores ad* eos ad *dices* & , propheta : Israel pastores
רוֹעֵי יִשְׂרָאֵל הִנָּבֵא וְאָמַרְתָּ אֲלֵיהֶם לָרֹעִים כֹּה־
pascentes fuerunt qui , Israel pastoribus Væ : Deus Dominus dixit
אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה הוֹי רֹעֵי־יִשְׂרָאֵל אֲשֶׁר הָיוּ רֹעִים
, *comedetis Adipem* ? pastores *pascent pecus* nonne : semetipsos
3 אוֹתָם הֲלוֹא הַצֹּאן יִרְעוּ הָרֹעִים׃ אֶת־הַחֵלֶב תֹּאכֵלוּ
.*pascetis* non *pecus : sacrificabitis* crassum , *induetis* lanam &
וְאֶת־הַצֶּמֶר תִּלְבָּשׁוּ הַבְּרִיאָה תִּזְבָּחוּ הַצֹּאן לֹא תִרְעוּ׃
, sanâstis non infirmam & , roborâstis non Languentes
4 אֶת־הַנַּחְלוֹת לֹא חִזַּקְתֶּם וְאֶת־הַחוֹלָה לֹא־רִפֵּאתֶם
& , reduxistis non *expulsam* & , alligâstis non confractam &
וְלַנִּשְׁבֶּרֶת לֹא חֲבַשְׁתֶּם וְאֶת־הַנִּדַּחַת לֹא הֲשֵׁבֹתֶם וְאֶת־
.*ferocia in* & , eis estis dominati *robore in* & : quæsistis non perditam
הָאֹבֶדֶת לֹא בִקַּשְׁתֶּם וּבְחָזְקָה רְדִיתֶם אֹתָם וּבְפָרֶךְ׃
feræ omni *cibum* in fuerunt & : pastore absque sunt dispersæ Et
5 וַתְּפוּצֶינָה מִבְּלִי רֹעֶה וַתִּהְיֶינָה לְאָכְלָה לְכָל־חַיַּת
, montibus cunctis in *meum pecus* Erraverunt .sunt dispersæ & , agri
6 הַשָּׂדֶה וַתְּפוּצֶינָה׃ יִשְׁגּוּ צֹאנִי בְּכָל־הֶהָרִים
sunt dispersæ terræ *facies omnes* super & : excelsum collem omnem super &
וְעַל כָּל־גִּבְעָה רָמָה וְעַל כָּל־פְּנֵי הָאָרֶץ נָפֹצוּ
audite pastores Propterea .*requirens non & quærens* non &,*mea pec*°
7 צֹאנִי וְאֵין דּוֹרֵשׁ וְאֵין מְבַקֵּשׁ׃ לָכֵן רֹעִים שִׁמְעוּ אֶת־
esse pro non si , Deus Dominus dixit ,ego *Vivens* .Domini verbũ
8 דְּבַר יְהוָה׃ חַי־אָנִי נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה אִם־לֹא יַעַן הֱיוֹת־
omni devorationem in *meum pecus* fuerunt &,direptionem in *meum pec*°
צֹאנִי לָבַז וַתִּהְיֶינָה צֹאנִי לְאָכְלָה לְכָל־
mei pastores quæsierunt non & , pastore absque agri bestiæ
חַיַּת הַשָּׂדֶה מֵאֵין רֹעֶה וְלֹא־דָרְשׁוּ רֹעַי אֶת־
non *meum pecus* & , semetipsos pastores paverunt sed *: meum pecus*
צֹאנִי וַיִּרְעוּ הָרֹעִים אוֹתָם וְאֶת־צֹאנִי לֹא
Sic .Domini verbum audite pastores Propterea .paverunt
9 10 רָעוּ׃ לָכֵן הָרֹעִים שִׁמְעוּ דְּבַר־יְהוָה׃ כֹּה־
requiram & , pastores ad *ego* Ecce : Deus Dominus dixit
אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה הִנְנִי אֶל־הָרֹעִים וְדָרַשְׁתִּי אֶת־
non & , *pecus pascendo à*,eos faciam cessare &,eorum manu de *meum pecus*
צֹאנִי מִיָּדָם וְהִשְׁבַּתִּים מֵרְעוֹת צֹאן וְלֹא־
,eorum ore de *meum pec*° eruam & : semetipsos pastores amplius pascent
יִרְעוּ עוֹד הָרֹעִים אוֹתָם וְהִצַּלְתִּי צֹאנִי מִפִּיהֶם
: Deus Dominus dixit sic Quia .escam in eis erunt non &
11 וְלֹא־תִהְיֶיןָ לָהֶם לְאָכְלָה׃ כִּי כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה
disquisitio Sicut .eas quæram & , *meum pecus* requiram & ego ,*ego* Ecce
11 הִנְנִי־אָנִי וְדָרַשְׁתִּי אֶת־צֹאנִי וּבִקַּרְתִּים׃ כְּבַקָּרַת
sic , dispersarum *suæ pecudis* medio in *eum esse* die in *sui gregis* pastoris
רֹעֶה עֶדְרוֹ בְּיוֹם הֱיוֹתוֹ בְתוֹךְ־צֹאנוֹ נִפְרָשׁוֹת כֵּן
locis omnibus de eas eruam & *: meum pecus* requiram
אֲבַקֵּר אֶת־צֹאנִי וְהִצַּלְתִּי אֶתְהֶם מִכָּל־הַמְּקוֹמֹת
.caliginis & , nubis die in *illuc* fuerant dispersæ *quò*
אֲשֶׁר־נָפֹצוּ שָׁם בְּיוֹם עָנָן וַעֲרָפֶל׃

Versio VULG. LAT.

32 Et es eis quasi carmen musicum, quod suavi dulcique sono canitur: & audiunt verba tua, & non
33 faciunt ea. Et cùm venerit quod prædictũ est, (ecce enim venit,) tunc scient quòd prophetes fuerit inter eos.

CAP. XXXIV.

1 Et factum est verbum Domini
2 ad me,dicens; Fili hominis,propheta de pastoribus Israel : propheta, & dices pastoribus ; Hæc dicit Dominus Deus ; Væ pastoribus Israel,qui pascebant semetipsos : nónne greges à pastorib°
3 pascuntur ? Lac comedebatis,et lanis operiebamini,et quod crassum erat occidebatis:gregem au-
4 tem meũ non pascebatis. Quod infirmum fuit non consolidâstis, & quod ægrotum non sanâstis, quod confractum est non alligâstis,& quod abjectum est non reduxistis, & quod perierat non quæsistis:sed cum austeritate imperabatis eis, & cum potentia.
5 Et dispersæ sunt oves meæ, eò quòd non esset pastor : & factæ sunt in devorationem omnium bestiarum agri, & dispersæ sunt.
6 Erraverunt greges mei in cunctis montibus,& in universo colle excelso : & super omnem faciem terræ dispersi sunt greges mei, & non erat qui requireret, non erat, inquam, qui re-
7 quireret. Propterea,pastores,au-
8 dite verbum Domini: Vivo ego, dicit Dominus Deus;quia pro eo quòd facti sunt greges mei in rapinam, & oves meæ in devorationem omnium bestiarum agri, eò quòd non esset pastor : neque enim quæsierũt pastores mei gregem meum:sed pascebant pastores semetipsos, & greges meos
9 non pascebant : Propterea,pastores, audite verbum Domini :
10 Hæc dicit Dominus Deus ; Ecce ego ipse super pastores requiram gregem meum de manu eorum, et cessare faciam eos ut ultrà non pascant gregem, nec pascant ampliùs pastores semetipsos : & liberabo gregem meum de ore eorum,& non erit ultrà eis in escã.
11 Quia hæc dicit Dominus Deus ; Ecce ego ipse requiram oves
12 meas, & visitabo eas. Sicut visitat pastor gregem suum, in die quando fuerit in medio oviũ suarum dissipatarum : sic visitabo oves meas,& liberabo eas de omnibus locis, in quibus dispersæ fuerant in die nubis & caliginis.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

32 Καὶ γίνῃ αὐτοῖς ὡς φωνὴ ψαλτηρίου ἡδυφώνου, εὐαρμόστου, καὶ (γ) ἀκούσονταί σου τὰ ῥή-
33 ματα, καὶ οὐ μὴ ποιήσουσιν αὐτά. Καὶ (δ) ἡνίκα ἐὰν ἔλθῃ, ἐροῦσιν, Ἰδοὺ ἥκει· καὶ γνώσονται ὅτι προφήτης ἦν ἐν μέσῳ αὐτῶν.

MS.A. (γ) ἀκούοντες τὰ ῥήματά σου, οὐ μὴ (δ) ἔσται ἡνίκα

ΚΕΦ. λδʹ.

1 Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρός με, λέ-
2 γων, Υἱὲ ἀνθρώπου, προφήτευσον ἐπὶ τοὺς ποιμένας τοῦ Ἰσραήλ, προφήτευσον, καὶ εἰπὸν (α) τοῖς ποιμέσι, Τάδε λέγει κύριος
3 κύριος, Ὦ ποιμένες Ἰσραήλ, μὴ (β) βόσκουσι ποιμένες ἑαυτούς; (γ) οὐ τὰ πρόβατα βόσκουσιν οἱ ποιμένες; Ἰδοὺ τὸ γάλα (δ) κατέσθετε, καὶ τὰ ἔρια περιβάλλεσθε, καὶ τὸ παχὺ (ε) σφάζετε, καὶ τὰ πρόβατά μου
4 (ζ) οὐ βόσκετε. Τὸ (η) ἠσθενηκὸς οὐκ ἐνισχύσατε, καὶ τὸ κακῶς (θ) ἔχον οὐκ ἐσωματοποιήσατε, καὶ τὸ συντετριμμένον οὐ κατεδήσατε, καὶ τὸ πλανώμενον οὐκ (ʹ) ἀπεστρέψατε, καὶ τὸ ἀπολωλὸς οὐκ ἐζητήσατε, καὶ τὸ ἰσχυρὸν
5 κατειργάσασθε μόχθῳ. Καὶ (ι) διεσπάρη τὰ πρόβατά μου, διὰ τὸ μὴ εἶναι ποιμένας, καὶ (κ) ἐγενήθη εἰς κατάβρωμα πᾶσι τοῖς θηρίοις
6 τοῦ (λ) ἀγροῦ. Καὶ διεσπάρη τὰ πρόβατά μου ἐν παντὶ ὄρει, καὶ ἐπὶ πάντα βουνὸν ὑψηλόν, καὶ ἐπὶ (μ) προσώπου τῆς γῆς διεσπάρη (ν), καὶ
7 οὐκ ἦν ὁ (ξ) ἐκζητῶν οὐδὲ ὁ ἀποστρέφων. Διὰ-
8 τοῦτο ποιμένες ἀκούσατε λόγον κυρίου. Ζῶ ἐγώ, λέγει κύριος κύριος, εἰ μὴν ἀντὶ τοῦ γενέσθαι τὰ πρόβατά μου εἰς προνομήν, καὶ γενέσθαι τὰ πρόβατά μου εἰς κατάβρωμα πᾶσι τοῖς θηρίοις τοῦ (ο) πεδίου, παρὰ τὸ μὴ εἶναι ποιμένας, καὶ οὐκ ἐξεζήτησαν (π) οἱ ποιμένες τὰ πρόβατά μου, καὶ ἐβόσκησαν οἱ ποιμένες ἑαυτούς, τὰ δὲ πρόβατά μου οὐκ ἐβόσκησαν.
9 Ἀντὶ τούτου ποιμένες (ρ), Τάδε λέγει κύ-
10 ριος κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπὶ τοὺς ποιμένας, καὶ ἐκζητήσω τὰ πρόβατά μου ἐκ τῶν χειρῶν αὐτῶν, καὶ ἀποστρέψω αὐτοὺς τοῦ μὴ ποιμαίνειν τὰ πρόβατά μου, καὶ οὐ (σ) βοσκήσουσιν ἔτι οἱ ποιμένες αὐτά· καὶ ἐξελοῦμαι τὰ πρόβατά μου ἐκ τοῦ στόματος αὐτῶν, καὶ οὐκ (τ)
11 ἔσονται αὐτοῖς ἔτι εἰς κατάβρωμα. Διότι τάδε λέγει κύριος κύριος (υ), Ἰδοὺ ἐγὼ ἐκζητήσω τὰ πρόβατά μου, καὶ ἐπισκέψομαι
12 αὐτά. (φ) Ὥσπερ ζητεῖ ὁ ποιμὴν τὸ ποίμνιον αὐτοῦ ἐν ἡμέρᾳ (χ) ὅτ' ἂν ᾖ γνόφος καὶ νεφέλη ἐν μέσῳ προβάτων διακεχωρισμένων, οὕτως ἐκζητήσω τὰ πρόβατά μου, καὶ (ψ) ἀπελάσω αὐτὰ ἀπὸ παντὸς τόπου οὗ διεσπάρησαν ἐκεῖ ἐν ἡμέρᾳ νεφέλης καὶ γνόφου.

31 *Et es eis, quasi vox psalterii dulcisoni,concinni: & audient verba tua,& non facient (p)ea: Et*
33 *cùm venerit,dicent; Ecce venit:et scient, quia propheta erat in medio eorum.*

CAP. XXXIV.

1 *Et factum est verbum Domini*
2 *ad me,dicens; Fili hominis, propheta ad pastores Israel:propheta, & dic pastoribus; Hæc dicit Dominus Dominus ; O pastores Is-*
3 *rael , nunquid pascunt pastores semetipsos? Nónne oves pascunt ipsi pastores? Ecce lac comeditis, & lanis operimini,et quod crassum est, occiditis, & oves meas non pascitis. Quod infirmũ fuit,*
4 *non confortâstis; & (a)quod ægrotum, non sanâstis ; & quod contritum,non alligâstis; et quod errabat, non reduxistis; & quod perierat,non quæsîstis ; & quod forte erat, afflixistis (b) labore.*
5 *Et dispersæ sunt oves meæ, eò quòd non essent pastores:et factæ sunt in devorationem omnibus*
6 *bestiis agri.Et dispersæ sunt oves meæ in omni monte, & super omnem collem excelsum: & super faciem (c)terræ dispersæ sunt: et non erat, qui requireret, neque*
7 *qui reduceret.Propterea,pastores,*
8 *audite verbum Domini.Vivo ego, dicit Dominus Dominus, si non pro eo quòd factæ sunt oves meæ in rapinam, & factæ sunt oves meæ in devorationem omnibus bestiis campi, eò quòd non essent pastores; (& non quæsierunt pastores oves meas , & paverunt pastores semetipsos, oves autem*
9 *meas non paverũt;)Pro hoc,(d)*
10 *pastores,Hæc dicit Dominus Dominus; Ecce ego super pastores,et requiram oves meas de manibus eorum, & amovebo eos, ne pascant oves meas, & non pascent ampliùs pastores eas: & liberabo oves meas de ore eorum ; & non erunt eis ultrà in devorationem.*
11 *Quia hæc dicit Dominus Dominus ; Ecce ego requiram o-*
12 *ves meas, & visitabo eas. Sicut (e) quærit pastor gregem suum, in die quando fuerit caligo, & nubes in medio (f) ovium separatarum;sic requiram oves meas, & eruam eas de omni loco, in quo dispersæ fuerant illîc in die nubis, & caliginis.*

MS.A. (α) αὐτοῖς, Τάδε (β) οἱ ποιμαίνες βόσκουσιν (γ) οὐχὶ (δ) κατεσθίετε, (ε) ἐσφάζετε (ζ) οὐκ ἐβόσκετε. (η)* ἠσθενηκὸς (θ)* ἔχων (ʹ) ἐπεστρέψατε, (ι) διεσπάρησαν (κ) ἐγενήθησαν (λ) ἀγροῦ, καὶ τοῖς πετεινοῖς τοῦ οὐρανοῦ. Καὶ διεσπάρησαν (μ) παντὶ προσώπῳ πάσης τῆς (ν) τὰ πρόβατά μου, καὶ (ξ) ζητῶν (ο) ἀγροῦ, (π) τὰ πρόβατά μου οἱ ποιμαίνες, (ρ) ἀκούσατε λόγον κυρίου, Τάδε λέγει ἀδωναῒ κύριος, (σ) μὴ (τ) ἔτι ἔσονται αὐτοῖς εἰς (υ) ὁ θεός, (φ) Ὡς ἐπισκέπτεται ὁ (χ) γνόφου καὶ νεφέλης ἐμμέσῳ προβάτων αὐτοῦ (ψ) συνάξω

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

32 וְהָא אַתְּ לְהוֹן כִּזְמַר אַבּוּבִין דִּבְסִים קָלֵיהּ וּמוּטַב לְנַגָּנָא וְשָׁמְעִין יַת פִּתְגָּמָךְ
33 וּלְמֶעְבַּדְהוֹן לֵית אִנּוּן צָבַן׃ וּבְמֵיתֵיהּ הָא אָתְיָא וְיִדְעוּן אֲרֵי נְבִיָּא הֲוָה בֵּינֵיהוֹן׃

לד

1 2 וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי לְמֵימַר׃ בַּר אָדָם אִתְנַבֵּי עַל פַּרְנְסֵי יִשְׂרָאֵל אִתְנַבֵּי
וְתֵימַר לְהוֹן לְפַרְנָסַיָּא כִּדְנָן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים וַי עַל פַּרְנָסַיָּא דְיִשְׂרָאֵל דַּהֲווֹ מְפַרְנְסִין
3 נַפְשֵׁיהוֹן הֲלָא לְפַרְנָסָא עַמָּא אִתְמַנִּיאוּ פַּרְנָסַיָּא׃ יַת טוּבָא אַתּוּן אָכְלִין וַעֲמַר נְקֵי אַתּוּן
4 לָבְשִׁין פַּטִּימַיָּא אַתּוּן נָכְסִין לְעַמָּא לֵיתֵיכוֹן מְפַרְנְסִין׃ יַת כָּאֵיבַיָּא לָא תַקֵּפְתּוּן
וּלְמַרְעַיָּא לָא אַסֵּיתוּן וְלִתְבִירַיָּא לָא צְמַדְתּוּן וְיַת דְּאִטַּלְטַלוּ לָא אֲתֵבְתּוּן וְיַת דַּאֲבַדוּ
5 לָא בְעֵיתוּן וּבְתוּקְפָּא פְלַחְתּוּן בְּהוֹן וּבְקַשְׁיוּ׃ וְאִתְבַּדַּרוּ מִבְּלִי פַרְנָס וְאִתְמְסַרוּ
6 לְאִשְׁתֵּיצָאָה לְכָל מַלְכְוָת עַמְמַיָּא וְאִטַּלְטָלוּ׃ טְעוֹ עַמִּי בְּכָל טוּרַיָּא וְעַל כָּל רָמָא מְנַטְּלָא
7 וְעַל כָּל אַפֵּי אַרְעָא אִתְבַּדָּרוּ עַמִּי וְלֵית דְּתָבַע וְלֵית דְּבָעֵי׃ בְּכֵן פַּרְנְסִין קַבִּילוּ יַת
8 פִּתְגָּמָא דַיְיָ׃ קַיָּם אֲנָא אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים אִם לָא חֲלַף דַּהֲווֹ עַמִּי לְבִזָּא וְאִתְמְסַרוּ עַמִּי
לְאִשְׁתֵּיצָאָה לְכָל מַלְכְוָת עַמְמַיָּא מִבְּלִי פַרְנָס וְלָא תְבַעוּ פַרְנָסַיָּא יַת עַמִּי וּפַרְנִיסוּ
9 פַרְנָסַיָּא יַת נַפְשֵׁיהוֹן וְיַת עַמִּי לָא פַרְנִיסוּ׃ בְּכֵן פַּרְנָסַיָּא רַשִּׁיעַיָּא תִּיבוּ לְאוֹרַיְתָא וַאֲנָא
10 עָתִיד לְרַחֲמָא עֲלֵיכוֹן אֲצִיתוּ לְאוּלְפַן אוֹרַיְתָא וְקַבִּלוּ פִּתְגָמָא דַיְיָ׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ
אֱלֹהִים הָא אֲנָא שָׁלַח רוּגְזִי עַל פַּרְנָסַיָּא וְאֶתְבַּע יַת עַמִּי מִידֵיהוֹן וַאֲבַטְּלִנּוּן מִלְּפַרְנָסָא
עַמָּא וְלָא יְפַרְנְסוּן עוֹד פַּרְנָסַיָּא נַפְשְׁהוֹן וַאֲשֵׁיזֵיב עַמִּי מִידֵיהוֹן וְלָא יִתְמַסְרוּן בִּידֵיהוֹן
11 12 לְאִשְׁתֵּיצָאָה׃ אֲרֵי כִדְנָן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים הָא אֲנָא מִתְגְּלֵי וְאֶתְבַּע יַת עַמִּי וַאֲבַקְרִנּוּן׃ כְּמָא
דִּמְבַקַּר רָעְיָא עֶדְרֵיהּ בְּיוֹמָא דַּהֲוֵי בְגוֹ עָנֵיהּ וּמִפָּרֵשׁ לְהוֹן כֵּן אֲבַקַּר יַת עַמִּי וְאֵשֵׁיזֵיב
יָתְהוֹן מִכָּל אַתְרַיָּא דְּאִתְבַּדַּרוּ לְתַמָּן בְּיוֹם עֲנָנָא וַאֲמִטְתָּא׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et ecce tu es eis quasi cantio organorum , cujus sonus suavis est & bene 32
psallit : & audiunt sermones tuos & nolunt facere eos. Cùm autem id ve- 33
nerit, ecce venit; & scient quia propheta fuit in medio eorum.

CAP. XXXIV.

Et factum est verbum prophetiæ à facie Dñi ad me, dicens : Fili hominis, 1 2 vaticinare super gubernatores Israel ; vaticinare , & dices ipsis gubernatoribus:Hæc dicit Dñs Deus, Væ gubernatoribus Israel qui nutrierunt semetipsos. Nónne ad gubernandum populum meum constituti sunt gubernatores ? Bonum vos comeditis & lana munda vos induimini, pinguia vos occi- 3 ditis ; populum autem non gubernatis. Dolentes non confortatis & infir- 4 mos non sanatis , & confractos non obligatis ; & eos qui aberraverunt non reducitis, & eos qui perierunt non quæritis, & illis potenter & durè imperatis. Itáque dispersi sunt absque gubernatore. & traditi sunt ut consuman- 5 tur omnibus regnis populorum : & migraverunt. Errant populus meus per 6 omnes montes , & super omnes colles editos, & super omnem faciem terræ dispersi sunt popul° meus,& non est qui quærat nec qui requirat. Propterea 7 gubernatores suscipite verbum Dñi. Vivo ego,dicit Dñs Deus, quia pro eo 8 quòd factus est populus meus in direptionem, & traditus est populus meus consumendus omnibus regnis populorum absque gubernatore : & non quæsierunt gubernatores populum meum , sed gubernarunt gubernatores semetipsos , & populum meum non gubernarunt. Propterea gubernatores *impii,* 9 *revertimini ad legem & ego misserturus sum vestri : attendite ad disciplinam legis* , & suscipite verbum Dñi. Hæc dicit Dñs Deus. Ecce ego mitto 10 furorem meum super gubernatores : & requiram populum meum de manibus eorum, & cessare eos faciam à gubernatione populi mei. Et non nutrient ampliùs gubernatores semetipsos : & liberabo populum meum de manibus eorum, & non tradentur in manum eorum consumendi. Quia hæc dicit 11 Dominus Deus : Ecce ego revelabor & vestigabo populum meum , & requiram eos. Sicut requirit pastor gregem suum in die quo est in medio 12 ovium suarum & dividit eas : sic requiram populum meum, & liberabo eos de omnibus locis quò dispersi sunt in die nubilo, & caliginoso.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

32 * ܘܚܫܝܒ ܐܢܬ ܠܗܘܢ. ܐܝܟ ܙܡܪܬܐ. ܘܐܝܟ ܩܠܐ ܢܩܫܐ. ܘܐܝܟ ܟܢܪܐ ܒܣܝܡܐ ܘܫܡܥܝܢ
33 ܦܬܓܡܝܟ. ܘܠܐ ܥܒܕܝܢ ܠܗܘܢ. * ܘܡܐ ܕܗܘܘ ܐܝܟ ܦܬܓܡܝܟ. ܗܝܕܝܢ ܢܕܥܘܢ
ܕܢܒܝܐ ܐܝܬ ܒܝܢܬܗܘܢ. * ܦܘܠܓܐ * ܠܕ *

1 * ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ. ܐܬܢܒܐ ܥܠ ܪ̈ܥܘܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ.
2 ܐܬܢܒܐ. ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܪ̈ܥܘܬܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܐܘ ܪ̈ܥܘܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܕܪܥܝܢ
3 ܠܗܘܢ. ܠܐ ܗܘܐ ܠܥܢܐ ܐܢܬܘܢ ܪܥܝܢ. * ܬܪ̈ܒܐ ܐܟܠܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܥܡܪܗܝܢ ܠܒܫܝܢ
4 ܐܢܬܘܢ. ܘܡܦܛܡܬܐ ܢܟܣܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܥܢܐ ܠܐ ܪܥܝܢ ܐܢܬܘܢ. * ܠܡܚܝܠܬܐ ܠܐ ܐܚܠܡܬܘܢ.
ܘܠܡܪܥܬܐ ܠܐ ܐܣܝܬܘܢ. ܘܠܬܒܝܪܬܐ ܠܐ ܚܒܫܬܘܢ. ܘܠܛܥܝܬܐ ܠܐ ܐܗܦܟܬܘܢ. ܘܠܐܒܝܕܬܐ ܠܐ
5 ܒܥܝܬܘܢ. ܐܠܐ ܒܩܫܝܘܬܐ ܫܥܒܕܬܘܢ ܐܢܝܢ. * ܘܐܬܒܕܪ ܥܢܝ ܡܢ ܕܠܐ ܪܥܝܐ. ܘܗܘܝ
6 ܠܡܐܟܘܠܬܐ ܠܟܠܗ ܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ. * ܘܐܬܒܕܪ ܥܢܝ. ܒܟܠܗܘܢ ܛܘܪ̈ܐ. ܘܥܠ ܟܠ ܪܡܬܐ
7 ܪܡܐ. ܘܒܟܠܗ ܐܪܥܐ ܐܬܒܕܪ ܥܢܝ. ܘܠܝܬ ܕܒܥܐ. ܘܠܐ ܕܡܟܢܫ. * ܡܛܠܗܢܐ
8 ܫܡܥܘ ܪ̈ܥܘܬܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ. * ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܗܘܝ ܥܢܝ
ܠܒܙܬܐ. ܘܗܘܝ ܥܢܝ ܡܐܟܘܠܬܐ ܠܟܠܗ ܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ. ܡܢ ܕܠܐ ܪܥܝܐ. ܘܠܐ ܪܥܘ
9 ܪ̈ܥܘܬܐ ܠܥܢܝ. ܐܠܐ ܪܥܘ ܪ̈ܥܘܬܐ ܠܢܦܫܗܘܢ. ܘܠܥܢܝ ܠܐ ܪܥܘ. * ܡܛܠܗܢܐ ܪ̈ܥܘܬܐ.
10 ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܥܠ ܪ̈ܥܘܬܐ. ܘܐܬܒܥ ܥܢܝ
ܡܢ ܐܝܕܝܗܘܢ. ܘܐܫܒܘܩ ܐܢܘܢ ܕܠܐ ܢܪܥܘܢ ܬܘܒ ܥܢܝ. ܘܐܦܨܐ ܥܢܝ ܡܢ ܦܘܡܗܘܢ ܘܠܐ
11 ܢܗܘܝܢ ܠܗܘܢ ܠܡܐܟܘܠܬܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܬܒܥ ܐܢܐ ܥܢܝ. ܘܡܣܥܪ ܐܢܐ
12 ܠܗܝܢ. * ܐܝܟ ܕܡܣܥܪ ܪܥܝܐ ܠܓܙܪܗ ܒܝܘܡܐ ܕܪܘܚܐ. ܗܟܢܐ ܐܣܥܘܪ ܠܥܢܝ. ܘܐܟܢܫ
ܐܢܝܢ ܡܢ ܟܠ ܐܬܪ̈ܘܬܐ ܕܐܬܒܕܪܝ ܠܗܘܢ. ܒܝܘܡܐ ܕܥܢܢܐ ܘܕܥܪܦܠܐ.

Cenſeris apud eos quaſi cantio *quadam*, & 32
quaſi vox ſonora, aut quaſi cithara dulciſona:
audiunt ſermones tuos, & non perficiunt eos:
Sed cùm evenerint ſermones tui, tunc agno- 33
ſcent te eſſe prophetam inter eos.

CAP. XXXIV.

Fuit etiam ad me ſermo Domini, dicendo; 1
Fili hominis, vaticinare contra paſtores Iſra- 2
elis, vaticinare, & dic eis; Paſtores, ſic ait
Dñs dominorum; O paſtores Iſraelis qui pa-
ſcunt ſeipſos, nónne oves paſci *debent* à paſto-
ribus? Pingues comeditis, & lanam earum 3
induitis: ſaginatas mactatis, & oves minimè
paſcitis: Debilem haud confirmâſtis, ægro- 4
tam non curâſtis, confractam non alligâſtis, er-
rantem non reduxiſtis, & perditā non quæſi-
viſtis; ſed violenter ſubjeciſtis eas: Adeóque 5
diſperſæ ſunt oves meæ defectu paſtoris, &
factæ ſunt cibo omnibus beſtiis deſerti; Aber- 6
raverunt oves meæ in cunctis montibus, &
ſuper omnem collem excelſum; & per totam
terram diſperſæ ſunt oves meæ, nemine re-
poſcente, neque congregante. Iccirco audite 7
paſtores, ſermonem Domini: Per vitam me- 8
am, inquit Dominus dominorum, quia factæ
ſunt oves meæ in direptionem, & factæ ſunt
oves meæ cibus omnibus deſerti beſtiis de-
fectu paſtoris; & non paſcunt paſtores oves
meas, ſed paſcunt paſtores ſeipſos, oves au-
tem meas non paſcunt: Iccirco paſtores, au- 9
dite ſermonem Domini: Sic ait Dominus 10
dominorum; Ecce me contra paſtores, & re-
poſcam oves meas in manibus eorum, tum
faciam eos ceſſare ne paſcant ampliùs oves
meas, & liberabo oves meas ex ore eorum,
ne poſthac ſint ipſis cibo. Sic ait Dominus 11
dominorum, Ecce repoſcam oves meas, &
viſitabo eas. Quemadmodum viſitat paſtor 12
gregem ſuum in die venti vehementis, ita
viſitabo oves meas, & colligam eas ex omni-
bus locis in quæ diſperſæ fuerint in die nubilo
& caliginoſo.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

32 * ويكون لهم مثل صوت مزمار لذيذ الصوت حسن الوصل * ويسمعون كلماتك ولا يعملون
33 بها * ويكون حين إذ يأتي * يقولون ها قد أتي * ويعلمون أنك نبي في وسطهم *
* الفصل الرابع والثلثون * * الاصحاح التاسع عشر *

1 * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان * تنبأ على رعاة بني إسرائيل * تنبأ وقل لهم *
2 هكذا يقول الرب * يا رعاة إسرائيل * هل الرعاة يرعون ذواتهم * أليست الرعاة ترعي الخراف *
3 * ها تأكلون اللبن * وتلبسون الصوف * وتذبحون السمين * وخرافي لم ترعوها * الضعيف
4 لم تقووه * والذي به سو لم تداووه * والمكسور لم تضمدوه * والضال لم تردوه * والهالك
5 لم تطلبوه * والقوي عملتموه في التعب * فتفرقت غنمي من اجل انه لم يكن لها رعاة *
6 وصارت ماكلا لكل وحوش الحقل وطيور السماء * وتفرقت غنمي في كل جبل * وعلي كل
تل عال * وعلي وجه كل الارض تفرقت غنمي * ولم يكن من يطلبها * ولا من يردها *
7 8 * لاجل هذا يا ايها الرعاة اسمعوا قول الرب * حي انا يقول الرب الرب * بالحقيقة عوض
ان تصير غنمي للنهب * وان تصير غنمي ماكلا لجميع وحوش الحقل * من اجل انه
لم يكن لها رعاة * ولم تطلب الرعاة غنمي * ورعت الرعاة ذواتهم * ولم يرعوا غنمي *
9 10 * بذل هذا ايها الرعاة اسمعوا قول الرب * هكذا يقول ادوناي الرب * ها انا على الرعاة *
واطلب غنمي من يدهم * واصرفهم ان لا يرعوا غنمي * ولا ترعاها الرعاة ايضا * واخلص
11 غنمي من فمهم * ولا تصير لهم بعد ماكلا * من اجل انه هكذا يقول الرب الرب
12 الاله * ها انا اطلب غنمي واتعهدها * كما يتعهد الراعي قطيعه في يوم الضبابة والسحابة *
في وسط خرافه المعتزلة * هكذا اطلب خرافي * واجمعها من كل موضع حيث تفرقت هناك
في يوم سحابة وضبابة *

Es apud eos veluti ſonus pſalterii dul- 32
ciſoni concinnè aptati: audiunt verba
tua, & non perficiunt ea: Fiet autem 33
quum evenerit, ut dicant; Ecce jam e-
venit; & cognoſcant te prophetam eſſe
in medio eorum.

CAP. XXXIV.

Textus decimuſnonus.

Deinde fuit ſermo Domini ad me, di- 1
cens; O fili hominis, propheta con- 2
tra paſtores filiorum Iſraelis: propheta, et
dic eis; Ita dicit Dominus; O paſtores
Iſraelis, num paſtores paſcunt ſemetipſos?
annon paſtores paſcunt agnos? En come- 3
ditis lac, et veſtimini lanâ, pingues jugu-
latis, & agnos meos non paſcitis. Debi- 4
lem non corroborâſtis, morbo laboranti
medelam non attuliſtis, fractum non alli-
gâſtis, errantem non reduxiſtis, perdi-
tum non quæſiviſtis, & fortem labore
exercuiſtis: Et diſperſæ ſunt oves meæ, 5
quòd paſtores non haberent; factæque
ſunt eſca omnibus feris agri & volucri-
bus cœli: Et diſperſæ ſunt oves meæ in 6
omni monte, & ſuper omnem collem
ſublimem; & ſuper faciem totius terræ
diſperſæ ſunt oves meæ, nec fuit qui
quæreret eas, neque qui reduceret eas.
Propterea O paſtores, audite ſermonem 7
Domini. Vivo ego, dicit Dominus Do- 8
minus; Verè, pro eo quòd factæ ſunt o-
ves meæ in direptionem, factæque ſunt
oves meæ cibus omnibus feris agri, eò
quòd non habuerint paſtores, & non
quæſierint paſtores oves meas; paſtores
ſemetipſos paverint, non autem paverint
oves meas: Hac de cauſa O paſtores, 9
audite ſermonem Domini. Sic dicit A- 10
donai Dominus; Ecce me contra paſto-
res, & requiram oves meas de manu
eorum, & amovebo eos ne paſcant oves
meas; neque paſcent eas ampliùs paſto-
res: eripiam oves meas ex ore eorum,
& non erunt eis deinceps in cibum.
Sic enim dicit Dominus, Dominus De- 11
us; En ego quæram oves meas, & re-
viſam eas. Quemadmodum reviſit pa- 12
ſtor gregem ſuam in die caliginoſo et nu-
bilo, in medio agnorum ſuorum ſegre-
gatorum; ita requiram agnos meos, &
colligam eos ex omni loco, ubi diſperſi
fuerint illuc in die nubilo & caligi-
noſo.

יחזקאל : לד

eas inducam & , terris è eas congregabo &,populis è eas educam Et
13 והוצאתים מן־העמים וקבצתים מן־הארצות והביאותים
cunctis in & , rivis in , Iſrael montibus in eas paſcam &:ſuam *humum* in
אל־אדמתם ורעיתים אל־הרי ישראל באפיקים ובכל
montibus in &,eas paſcam *bona paſcua* In .terræ habitationibus
14 מושבי הארץ: במרעה־טוב ארעה אתם ובהרי
,*bona paſcua* in accubabunt ibi : earum paſcua erit Iſrael *celſitudinis*
מרום־ישראל יהיה נוהם שם תרבצנה בנוה טוב
paſcam Ego .Iſrael montes *ad* paſcent *pingue paſcuum &*
ומרעה שמן תרעינה אל־הרי ישראל: אני ארעה 15
Perditam .Deus Domin⁹ dixit,eas faciã accubare ego &,*meũ pecus*
16 צאני ואני ארביצם נאם אדני יהוה: את־האבדת
& , alligabo confractam & , reducam *expulſam* & , requiram
אבקש ואת־הנדחת אשיב ולנשברת אחבש ואת־
, diſperdam fortem & , pinguem & : roborabo languidam
החולה אחזק ואת־השמנה ואת־החזקה אשמיד
: Deus Dominus dixit ſic *meum pecus* vos Et .judicio in *illam* paſcam
17 ארענה במשפט: ואתנה צאני כה אמר אדני יהוה
parum Nunquid .hircos & ,arietes,pecus *ad*,pecus inter *judicans* ego Ecce
18 הנני שפט בין־שה לשה לאילים ולעתודים: המעט
veſtrarum paſcuarum reſiduum & , paveritis *bonum paſcuum* vobis à
מכם המרעה הטוב תרעו ויתר מרעיכם
& ;biberitis *aquarum fundum* & ; veſtris pedibus *in* conculcaveritis
תרמסו ברגליכם ומשקע־מים תשתו ואת
conculcationẽ *meum pecus* Et?conculcaveritis veſtris pedib⁹ in reſiduas
19 הנותרים ברגליכם תרפשון: וצאני מרמס
.biberunt veſtrorum pedum *calcationem* & , paverunt veſtrorum pedum
רגליכם תרעינה ומרפש רגליכם תשתינה:
judicabo & , ego,*ego* Ecce : eos ad Deus Dominus dixit ſic Propterea
20 לכן כה אמר אדני יהוה אליהם הנני־אני ושפטתי
humero in & latere in ℘ eo Pro.macilentũ pec⁹ inter &,pingue pecus inter
21 בין־שה בריה ובין שה רזה: יען בצד ובכתף
donec : *languidas* omnes cornupetiſtis veſtris cornib⁹ in &,vos *impelletis*
תהדפו ובקרניכם תנגחו כל־הנחלות עד אשר
non & ,*meo pecori faciam ſalutem* Et ? *extra ad* eas diſpergeretis
22 הפיצותם אותנה אל־החוצה: והושעתי לצאני ולא־
ſuſcitabo Et .*agnum ad* ,*agnum* inter judicabo & :rapinã in ultrà erunt
23 תהיינה עוד לבז ושפטתי בין שה לשה: והקמתי
Ipſe .David meus ſervus eas paſcet &,unum paſtorem eas ſuper
עליהם רעה אחד ורעה אתהן את עבדי דויד הוא
ero Dominus ego Et .paſtorem in eis erit ipſe & , eas paſcet
24 ירעה אתם והוא יהיה להן לרעה: ואני יהוה אהיה
Ego : eorum medio in *prælatus* ,David meus ſervus & ,Deum in eis
להם לאלהים ועבדי דוד נשיא בתוכם אני
, pacis pactum eis *exſcindam* Et .ſum locutus Dominus
25 יהוה דברתי: וכרתי להם ברית שלום
deſerto in habitabunt & : terra de *malam beſtiam* faciam ceſſare &
והשבתי חיה־רעה מן־הארץ וישבו במדבר
circuitus & , eas *dabo* Et .ſylvis in dormient & , *fiducia in*
26 לבטח וישנו ביערים: ונתתי אותם וסביבות
: ſuo tempore in pluviam faciam deſcendere & :benedictionem mei collis
גבעתי ברכה והורדתי הגשם בעתו
, ſuum fructum agri *lignum* dabit Et .erunt benedictionis pluviæ
27 גשמי ברכה יהיו: ונתן עץ השדה את־פריו
: *fiducia in* ſuam *humum* ſuper erunt & , ſuum fructum dabit terra &
והארץ תתן יבולה והיו על־אדמתם לבטח
, eorum *jugi vectes* *me frangendo in* , Dominus *ego* quòd ſcient &
וידעו כי־אני יהוה בשברי את־מטות עלם
.eis in facientium manu de eos eruero &
והצלתים מיד העבדים בהם:

Verſio VULG. LAT.

13 Et educam eas de populis, & congregabo eas de terris, & inducam eas in terram ſuam: &
paſcam eas in montib⁹ Iſrael, in
rivis,& in cunctis ſedibus terræ.
14 In paſcuis uberrimis paſcam eas,
& in montibus excelſis Iſrael erunt
paſcua earum : ibi requieſcent
in herbis virentibus, & in
paſcuis pinguib⁹ paſcentur ſuper
15 montes Iſrael. Ego paſcam oves
meas, & ego eas accubare faciã,
16 dicit Dominus Deus. Quod perierat
requiram, & quod abjectũ
erat reducam, & quod confractum
fuerat alligabo,& quod infirmum
fuerat conſolidabo, &
quod pingue & forte cuſtodiam:
17 & paſcam illas in judicio. Vos
autem,greges mei, hæc dicit Dominus
Deus; Ecce ego judico inter
pecus & pecus, arietum &
18 hircorum. Nónne ſatis vobis erat
paſcua bona depaſci? inſupèr
& reliquias paſcuarum veſtrarum
conculcâſtis pedibus veſtris : &
cùm puriſſimam aquam biberetis,
reliquam pedibus veſtris turbabatis.
19 Et oves meæ his, quæ
conculcata pedib⁹ veſtris fuerãt,
paſcebantur:& quæ pedes veſtri
20 turbaverant, hæc bibebant. Propterea
hæc dicit Domin⁹ Deus ad
vos ; Ecce ego ipſe judico inter
21 pecus pingue,et macilentum:Pro
eo quòd laterib⁹ & humeris impingebatis,
& cornibus veſtris
ventilabatis omnia infirma pecora,donec
diſpergerentur forás:
22 Salvabo gregem meum, & non
erit ultrà in rapinam, & judica-
23 bo inter pecus & pecus. ET
SUSCITABO SUPER
EAS PASTOREM UNUM,
qui paſcat eas, ſervum
meum David : ipſe paſcet eas, &
24 ipſe erit eis in paſtorem. Ego autem
Dominus ero eis in Deum:&
ſerv⁹ me⁹ David princeps in medio
eorum : ego Dominus locut⁹
25 ſum. Et faciam cum eis pactum
pacis, & ceſſare faciam beſtias
peſſimas de terra:& qui habitant
in deſerto,ſecuri dormient in ſal-
26 tibus. Et ponam eos in circuitu
collis mei benedictionem:& deducam
imbrem in tempore ſuo:
27 pluviæ benedictionis erunt. Et
dabit lignum agri fructum ſuum,
& terra dabit germen ſuum, &
erunt in terra ſua abſque timore:
& ſcient quia ego Dominus,cùm
contrivero catenas jugi eorum,
& eruero eos de manu imperantium
ſibi.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

13 Καὶ ἐξάξω αὐτοὺς ἐκ τῶν ἐθνῶν, ϗ συνάξω αὐτοὺς (ω) ἀπὸ τῶν χωρῶν, ϗ εἰσάξω αὐτοὺς εἰς τὴν γῆν αὐτῶν, ϗ βοσκήσω αὐτοὺς ἐπὶ τὰ ὄρη Ἰσραὴλ, ϗ ἐν ταῖς φάραγξι, ϗ ἐν πάσῃ κατοικίᾳ τῆς γῆς.
14 (α) Ἐν νομῇ ἀγαθῇ βοσκήσω αὐτοὺς, ἐν τῷ ὄρει τῷ ὑψηλῷ (β) Ἰσραήλ. ϗ ἔσονται αἱ μάνδραι αὐτῶν ἐκεῖ, ϗ κοιμηθήσονται, ϗ ἐκεῖ ἀναπαύσονται ἐν τρυφῇ ἀγαθῇ, ϗ ἐν νομῇ πίονι βοσκηθήσονται ἐπὶ τῶν ὀρέων (γ) Ἰσραήλ.
15 Ἐγὼ βοσκήσω τὰ πρόβατά μου, ϗ ἐγὼ ἀναπαύσω αὐτὰ, ϗ (δ) γνώσονται ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος· τάδε λέγει κύριος κύριος.
16 Τὸ ἀπολωλὸς (ε) ζητήσω, ϗ τὸ (ζ) πλανώμενον ἀποστρέψω, ϗ τὸ συντετριμμένον καταδήσω, ϗ τὸ ἐκλεῖπον ἐνισχύσω, ϗ τὸ ἰσχυρὸν φυλάξω, ϗ βοσκήσω αὐτὰ
17 μετὰ κρίματος. Καὶ ὑμεῖς (η) πρόβατα, τάδε λέγει κύριος κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ διακρινῶ ἀναμέσον προβάτου ϗ προβάτου, (θ)
18 κριῶν ϗ τράγων. Καὶ οὐχ ἱκανὸν ὑμῖν, ὅτι τὴν καλὴν νομὴν ἐνέμεσθε, ϗ τὰ κατάλοιπα τῆς νομῆς (ι) ὑμῶν κατεπατεῖτε τοῖς ποσὶν ὑμῶν; ϗ τὸ καθεστηκὸς ὕδωρ ἐπίνετε, ϗ τὸ λοιπὸν τοῖς ποσὶν ὑμῶν ἐταράσ-
19 σετε; Καὶ τὰ πρόβατά μου τὰ πατήματα τῶν ποδῶν ὑμῶν ἐνέμοντο, ϗ τὸ τεταραγμένον ὕδωρ ὑπὸ τῶν ποδῶν ὑμῶν ἔπινον.
10 Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος κύριος (κ), Ἰδοὺ ἐγὼ διακρινῶ ἀναμέσον προβάτου ἰ-
21 σχυροῦ ϗ ἀναμέσον προβάτου ἀσθενοῦς. Ἐπὶ ταῖς πλευραῖς ϗ τοῖς ὤμοις ὑμῶν διωθεῖσθε, ϗ τοῖς κέρασιν ὑμῶν ἐκερατίζετε, ϗ πᾶν
22 τὸ ἐκλεῖπον ἐξεθλίβετε. Καὶ σώσω τὰ πρόβατά μου, ϗ (λ) οὐ μὴ ὦσιν ἔτι εἰς προνομήν, ϗ κρινῶ ἀναμέσον κριοῦ πρὸς κριόν.
23 Καὶ ἀναστήσω (μ) ἐπ' αὐτοὺς ποιμένα ἕνα, ϗ ποιμανεῖ αὐτοὺς, τὸν δοῦλόν μου Δαυὶδ, ϗ
24 ἔσται αὐτῶν ποιμήν, Καὶ ἐγὼ κύριος ἔσομαι αὐτοῖς εἰς θεὸν, ϗ Δαυὶδ ἄρχων ἐν
25 μέσῳ αὐτῶν· ἐγὼ κύριος ἐλάλησα. Καὶ διαθήσομαι τῷ Δαυὶδ διαθήκην εἰρήνης, ϗ (ν) ἀφανιῶ θηρία πονηρὰ ἀπὸ τῆς γῆς, ϗ κατοικήσουσιν ἐν τῇ ἐρήμῳ, ϗ ὑπνώσουσιν
26 ἐν τοῖς δρυμοῖς. Καὶ (ξ) δώσω αὐτοὺς περικύκλῳ τοῦ ὄρους μου· ϗ δώσω τὸν ὑετὸν ὑμῖν,
27 ὑετὸν εὐλογίας. Καὶ τὰ ξύλα (ο) τὰ ἐν τῷ πεδίῳ δώσει τὸν καρπὸν αὐτῶν, ϗ ἡ γῆ δώσει (π) τὴν ἰσχὺν αὐτῆς, ϗ κατοικήσουσιν ἐπὶ τῆς γῆς αὐτῶν ἐν ἐλπίδι εἰρήνης, ϗ γνώσονται ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος, ἐν τῷ συντρίψαι με τὸν ζυγὸν (ρ) αὐτῶν, ϗ ἐξελοῦμαι αὐτοὺς ἐκ χειρὸς τῶν καταδουλωσαμένων αὐτούς.

MS.A. (ω) ἐκ τῶν (α) Νομῇ ἀγαθῇ (β) ἐν τῷ ὄρει Ἰσραήλ. (γ) τοῦ Ἰσραήλ. (δ) ἐπιγνώσονται διότι (ε) ἐκζητήσω, (ζ) πεπλανημένον ἐπιστρέψω, (η) τὰ πρόβατα, (θ) κριοῦ ϗ τράγου. (ι) τοῖς ποσὶν ὑμῶν κατεπατεῖτε; (κ) ὁ θεὸς, (λ) οὐκέτι ἔσονται ἔτι εἰς (μ) αὐτοῖς ποιμένα ἕτερον, (ν) ἀπολῶ (ξ) ἔσονται κύκλῳ τοῦ ὄρους μου· ϗ ἀποστελῶ ὑετὸν εὐλογίας αὐτοῖς. (ο) τοῦ παιδίου ἀποδώσει τὸν καρπὸν αὐτοῖς, (π) τὸν καρπὸν αὐτῆς, (ρ) τοῦ κλοιοῦ αὐτῶν· ἐξελοῦμαι

Et educam eos de gentibus, & congregabo eos de regionibus,& inducam eos in terram ſuam, & paſcam eos in montibus Iſrael, et in vallibus, et in omni habitatione terræ. 13
In paſcua bona paſcam eos,in monte excelſo (g) Iſrael. Et erunt ovilia eorum ibi;et dormient, & ibi requieſcent in deliciis bonis, & in paſcua pingui paſcentur ſuper montes Iſrael. 14
Ego paſcam oves meas : & ego faciam requieſcere eas : & (h) ſcient, quia ego ſum Dominus: Hæc dicit Dominus Dominus. 15
Quod perierat,requiram;et quod errabat, reducam; & quod contritum,alligabo; & quod deficerat, confortabo; & quod forte, cuſtodiam, & paſcam eas cum judicio. 16
Et vos(i)oves,hæc dicit Dominus Dominus; Ecce ego dijudicabo inter ovem & ovem, arietes & hircos. 17
Et nónne ſatis vobis erat, quia bonam paſcuam depaſcebatis; et reliquias paſcuæ veſtræ conculcabatis pedibus veſtris? & collectam aquã bibebatis; & reliquum pedibus veſtris turbabatis? 18
Et oves meæ conculcationes pedum veſtrorum paſcebant, & aquam conturbatam à pedibus veſtris bibebant. 19
Propterea hæc dicit Domin⁹ Dominus; Ecce ego dijudicabo inter ovem fortem, & inter ovem infirmam. 20
In lateribus, & humeris veſtris propulſabatis, & cornibus veſtris (k)ventilabatis,& omnem, quæ deficiebat, affligebatis. 21
Et ſalvabo oves meas:& non erunt ultrà in rapinam: & judicabo inter arietem (l)ad arietem. 22
Et ſuſcitabo ſuper eos paſtorem unum, & paſcet eos,ſervum meum David. Et erit eorum paſtor: 23
Et ego Dominus ero eis in Deum: & David princeps in medio eorum.Ego Dominus loquutus ſum. 24
Et diſponam(m)David teſtamentum pacis:& delebo beſtias peſſimas de terra, et habitabunt in(n) deſerto,et ſomnum capient in ſaltibus. 25
Et(o)dabo eos in circuitu montis mei : et (p)dabo pluviam vobis,pluviã benedictionis. 26
Et ligna quæ in campo,dabunt fructũ ſuum:et terra dabit fortitudinem ſuam: et habitabunt in terra ſua in ſpe pacis : et ſcient, quia ego ſum Domin⁹, cùm contrivero(q) jugum eorum, et eruero eos de manu ſervire eos facientium. 27

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

13 ואפקנון מביני עממיא ואכנשנון מן מדינתא ואעלנון לארעהון ואפרנסנון על טורי
14 ישראל בפצידיא ובכל מותבי ארעא: בפרנוס טב אפרנס יתהון ובטור קודשא
דישראל יהבית מישרידהון תמן ישרון באתר דיאי ובפרנוס טב יתפרנסון על טורי
15 16 ישראל: אנא אפרנס ית עמי ואנא אשרנון לרוחצן אמר יי אלהים: ית דאבדו
אתבע וית דאטלטלו אתיב ולתבירא אצמוד ולמרעיא אסובר וית חטאיא וית חיביא
17 אשיצי ואפרנס עמי בדינא: ואתון עמי כדנן אמר יי אלהים הא אנא דאן בין
18 גבר לגבר לחטאיא ולחיביא: הזער לכון דפרנוס טב אתון מתפרנסין ומותר
פרנוסכון דישין ברגליכון ומשתי מתקן אתון שתן וית מותרא ברגליכון אתון
19 20 דישין: ועמי מותר מיכל שמשיכון אכלין ומותר משתי שמשיכון שתן: בכן כדנן
21 אמר יי אלהים להון הא אנא מתגלי ואדון בין גבר עתיר ובין גבר מסכן: חלף
דברשע ובדרע דחקתון ובתוקפא תברתון כל כאיביא עד דבדרתון יתהון לביני
22 23 מדינתא: ואפרוק לעמי ולא יתמסרון עוד לבזא ואדון בין גבר לגבר: ואקים
עליהון פרנס חד ויפרנס יתהון ית דוד עבדי הוא יפרנס יתהון והוא יהי להון
24 לפרנס: ואנא יי אהוי להון לאלהא ועבדי דוד מלכא ביניהון אנא יי גזרית במימרי:
25 ואגזר להון קים שלם ואבטל חיתא בישתא מן ארעא ויתבון במדברא לרוחצן
26 ויתעתקון בחורשא: ואשרי יתהון סחור סחור לבית מקדשי ויהון מבורכין
27 ואחית להון מטר בכיר בעדניה מטרין דברכן יהון: ויתן אילן חקלא ית אבידה
וארעא תתן עללתה ויהון על ארעהון לרוחצן וידעון ארי אנא יי כד אתבר ית
ניר תוקפהון ואשזבנון מיד דמפלחין בהון:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et educam eos de medio populorum, & congregabo eos de *provinciis*; & 13
inducam eos in terram ſuam, & nutriam eos in montibus Iſrael, in rivis &
in omnibus habitationibus terræ. Alimento bono nutriam eos, & in monte 14
ſancto Iſrael *dedi habitationem* eorum; ibi habitabunt in loco ſpecioſo, &
alimento bono paſcentur ſuper montes Iſrael. Ego gubernabo populum 15
meum, & ego habitare eos faciam confidenter, ait Dñs Deus. Illos qui perierant 16
requiram; & illos qui tranſmigraverant reducam, & confractos alligabo,
& infirmos portabo, & impios & peccatores conſumam; & gubernabo
populum meum in judicio. Et vos popule meus, hæc dicit Dñs Deus : 17
Ecce ego judico inter virum,& virum, peccatores & impios. Nunquid parùm 18
vobis eſt quòd nutrimento bono vos nutriti eſtis, niſi etiam reſiduum
nutrimenti veſtri pedibus conculcetis? & quòd potum præparatum vos bibitis,
niſi etiam reliquias pedibus veſtris calcetis? Et populus meus reli- 19
quias cibi miniſtrorum veſtrorum comedunt, & reliquias potus miniſtrorum
veſtrorum bibunt.Propterea hæc dicit Dñs Deus ad eos,Ecce ego revelabor 20
& judicabo inter virum divitem, & virum pauperem. Pro eo quòd in impietate 21
& in brachio impellebatis, & in fortitudine confringebatis omnes
dolentes, donec diſperſiſtis eos per provincias. Et redimam populum meum, 22
& non tradentur direptioni ultrà, & judicabo inter virum & virum. Et 23
ſuſcitabo ſuper eos gubernatorem unum, & gubernabit eos, David ſervum
meum; ipſe gubernabit eos, & ipſe erit eis in gubernatorem. Et ego Dñs 24
ero eis in Deum, & ſervus meus David rex inter eos. Ego Dñs decrevi in
verbo meo. Et feriam cum eis pactũ pacis,et ceſſare faciam beſtias malas de 25
terra, et habitabunt in deſerto confidenter; et inveterabuntur in *ſaltu*. Et 26
habitare eos faciam in circuitu ſanctuarii mei; & erũt benedicti:et deducam
eis imbrem temporaneum in tempore ſuo; pluviæ benedictionis erunt. Et 27
dabit arbor agri fructum ſuum, et terra dabit germen ſuum, et erunt in terra
ſua confidenter. Et ſcient quia ego Dñs cùm confregero jugum fortitudinis
eorum, et liberavero eos de manibus eorum qui ipſis ſervis utebantur.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

13 ܘܐܪܥܐ. ܘܐܦܩ ܐܢܘܢ ܡܢ ܥܡܡܐ. ܘܐܟܢܫ ܐܢܘܢ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܐܥܠ ܐܢܘܢ ܠܐܪܥܗܘܢ *
14 ܒܪܥܝܐ ܛܒܐ ܐܪܥܐ * ܐܢܘܢ ܒܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܒܢܚܠܐ. ܘܒܟܠܗ ܡܘܬܒܐ ܕܐܪܥܐ.
ܘܪܥܝܐ. ܐܢܘܢ. ܘܒܛܘܪܐ ܪܡܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܢܗܘܐ ܕܝܪܗܘܢ. ܬܡܢ ܢܫܪܘܢ. ܒܕܝܪܐ ܛܒܐ
15 ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܫܡܝܢܐ ܢܪܥܘܢ ܒܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܐܢܐ ܐܪܥܐ ܠܥܢܝ. ܘܐܢܐ ܐܪܒܥ ܐܢܘܢ
16 ܘܠܫܡܝܢܬܐ ܡܪܘܬܐ. * ܠܕܐܒܝܕܐ ܐܒܥܐ. ܘܠܛܥܝܐ ܐܗܦܟ. ܘܠܬܒܝܪܐ ܐܚܒܘܫ. ܘܠܟܪܝܗܐ ܐܚܝܠ.
17 ܗܐ ܘܠܥܒܝܬܐ ܐܛܪ. ܘܐܪܥܐ ܐܢܘܢ ܒܕܝܢܐ. * ܠܟܘܢ ܕܝܢ ܥܢܝ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ.
18 ܕܪܥܝܐ ܛܒܐ ܕܐܢ ܐܢܐ ܒܝܬ ܥܢܐ ܠܥܢܐ. ܘܒܝܬ ܕܟܪܐ ܠܕܟܪܐ. * ܠܐ ܣܦܩ ܠܟܘܢ ܪܥܘܬܐ.
ܪܥܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܫܪܟܐ ܕܪܥܝܟܘܢ ܕܝܫܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܪܓܠܝܟܘܢ. ܘܡܝܐ ܨܠܝܠܐ ܫܬܝܢ ܐܢܬܘܢ.
19 ܘܫܪܟܐ ܕܡܘܬܪܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܕܠܚܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܪܓܠܝܟܘܢ. * ܘܥܢܝ ܪܥܝܢ ܕܝܫܐ ܕܪܓܠܝܟܘܢ.
20 ܒܝܬ ܘܫܬܝܢ ܡܝܐ ܕܕܠܚܘ ܪܓܠܝܟܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܐ ܕܐܢ ܐܢܐ
21 ܥܢܐ ܫܡܝܢܬܐ ܠܥܢܐ ܡܚܝܠܬܐ. * ܠܐ ܕܒܣܛܪܝܗܝܢ ܗܘܝ ܒܟܬܦܬܗܝܢ ܘܒܩܪܢܬܗܝܢ.
22 ܘܐܦܪܘܩ ܡܢܓܚܢ ܗܘܝ ܠܟܠܗܝܢ ܟܪܝܗܬܐ. ܥܕܡܐ ܕܒܕܪܘ ܐܢܝܢ ܠܒܪ. *
ܠܥܢܝ. ܘܠܐ ܬܗܘܐ ܬܘܒ ܠܗܝܢ ܠܒܙܬܐ. ܘܐܕܘܢ ܒܝܬ ܥܢܐ ܠܥܢܐ. ܘܒܝܬ ܕܟܪܐ ܠܕܟܪܐ.
23 ܠܗܝܢ * ܘܐܩܝܡ ܥܠܝܗܝܢ ܪܥܝܐ. ܘܢܪܥܐ ܐܢܝܢ. ܕܘܝܕ ܥܒܕܝ ܗܘ ܢܪܥܐ ܐܢܝܢ. ܘܗܘ ܢܗܘܐ
24 ܪܥܝܐ. * ܘܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܗܘܐ ܠܗܘܢ ܐܠܗܐ. ܘܕܘܝܕ ܥܒܕܝ ܢܗܘܐ ܪܝܫܐ ܒܝܢܬܗܘܢ.
25 ܘܢܥܡܪܘܢ * ܘܐܩܝܡ ܠܗܘܢ ܩܝܡܐ ܕܫܠܡܐ. ܘܐܒܛܠ ܚܝܘܬܐ ܒܝܫܬܐ ܡܢ ܐܪܥܐ.
26 ܘܐܚܬ ܒܡܕܒܪܐ ܠܬܘܟܠܢ. ܘܢܕܡܟܘܢ ܒܥܒܐ. * ܘܐܬܠ ܠܗܘܢ ܒܘܪܟܬܐ ܚܕܪ ܛܘܪܝ.
27 ܘܐܪܥܐ ܡܛܪܐ ܒܙܒܢܗ. ܘܢܗܘܐ ܡܛܪܐ ܕܒܘܪܟܬܐ. * ܘܐܝܠܢܐ ܕܐܪܥܐ ܢܬܠܘܢ ܦܐܪܝܗܘܢ.
ܬܬܠ ܥܠܠܬܗ. ܘܢܬܒܘܢ ܥܠ ܐܪܥܗܘܢ ܠܬܘܟܠܢ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܡܐ ܕܬܒܪܬ
ܢܝܪܗܘܢ. ܘܦܪܩܬ ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܡܫܥܒܕܢܝܗܘܢ.

* Educam eas è gentibus, & colligam eas ex 13
urbibus, adducam eas in terram earum, &
paſcam eas in montibus Iſraelis, in vallibus,
& in omnibus *locis* habitabilibus terræ. In 14
paſcuo optimo paſcam eas, & in excelſis
montibus Iſraelis erit caula earum : ibi cubabunt
in caula optima, & paſcuum pingue depaſcent
in montibus Iſraelis. Ego paſcam 15
oves meas, & ego faciam eas recubare, ait
Dñs dominorum. Perditam quæram, errantem 16
reducam, confractam obligabo, debilem firmabo,
pinguem & craſſam conſervabo, &
paſcam eas debito modo. Vobis autem oves 17
meæ, ſic dicit Dñs dominorum; Ecce judicabo
inter ovem & ovem, & inter arietē & arietem.
Annon ſufficit vobis paſtores paſcuum 18
bonum quod depaſcitis, ut reliquum paſcui
veſtri pedibus veſtris conculcetis? & aquam
bibentes, reſiduam quam relinquitis, pedibus
veſtris conturbetis? Et oves meæ depaſcant 19
conculcatum pedibus veſtris, & bibant aquas
quas pedes veſtri conturbârunt? Propterea ſic 20
ait Dominus dominorum; Ecce judicabo inter
ovem pinguem & ovem macilentam: Eò quòd 21
illæ *pingues* lateribus humeriſque ſuis impellebant,
& cornibus ſuis impetebant omnes
infirmas, donec eas foràs diſperſerint: Et 22
eripiam oves meas, ne ſint ampliùs illis direptioni;
judicans inter ovem et ovem, et inter
arietem et arietem. Et conſtituam ſuper eas 23
paſtorem, qui paſcat eas: David ſervus meᵒ
ipſe paſcet eas, ipſéque erit eis paſtor: Ego 24
verò Dominus ero eis Deus, et David ſervus
meus erit princeps inter ipſos: Statuam eis 25
fœdus pacis et abolebo feras pernicioſas de
terra: habitabunt in deſerto ſecurè, et dormient
in ſylva? Dabo eis benedictionem me- 26
am circa collem meum, et demittam pluviam
tempeſtivam: erítque pluvia benedictionis,
Et arbores terræ edent fructus, et terra dabit 27
proventus ſuos, demum habitabunt in terra
ſua ſecuré: et agnoſcent me eſſe Dominum,
quum fregero jugum eorum, et eripuero eos
de manu ſubigentium eos.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

13 * واخرجهم من الامم * واجمعهم من الكور * وادخلهم الي ارضهم * وارعاهم على جبال
14 اسرايل * وفي الاوديه * وفي كل مسكن الارض * في مرعي صالح * ارعاهم في الجبل
المرتفع * في جبل اسرايل * ويصير صيرهم هناك * ويضطجعون هناك * وهناك يستريحون في نعيم
15 طيب * وفي مرعي دسم يرعون على جبال اسرايل * انا ارعي غنمي * وانا اريحها * ويعلمون
16 اني انا الرب * هكذا يقول الرب الرب * اطلب الهالك * وارد الضال * واجبر المكسور *
17 واقوي الفاني * واحفظ القوي * وارعاها بحكم * وانتم ايها الخراف * هكذا يقول الرب
18 الرب * ها انا احكم بين خروف وخروف * وكبش وتيس * فليس يجب لكم انكم رعيتم
مرعي حسنا * وبقايا المرعي دستم بارجلكم * وشربتم الماء الصافي * والبقيه اقلقتموها
19 20 بارجلكم * فخرافي ترعي مداسات اقدامكم * وشربت الماء المضطرب من ارجلكم * لاجل هذا
هكذا يقول الرب الرب الاله * ها انا احكم بين خروف قوي وبين خروف ضعيف *
21 * بجوانبكم واكتافكم تدفعونها * وبقرونكم تنطحونها * وكل فان اخرجتموه *
22 * واخلص غنمي * ولا تصير بعد ايضا للنهب * واحكم بين كبش مع كبش *
23 24 * واقيم لها راعيا اخر * داود عبدي * فيرعاهم ويكون لهم راع * وانا الرب اكون لهم
25 الها * وداود رييسا في وسطهم * انا الرب تكلمت * واعهد لداود عهد السلامة * واهلك
26 الوحوش الشريره من الارض * ويسكنون في البريه * وينامون في الغابات * ويكونون حول
27 جبلي * وارسل لهم مطر البركة * وشجر الصحراء تعطي ثمرها لهم * والارض تعطي
ثمرها * ويسكنون على ارضهم في رجاء السلامة * ويعلمون اني انا الرب * عند ما اكسر
نير طوقهم * واخلصهم من يد الذين استعبدوهم *

* *Educam eos è gentibus, & colligam* 13
*eos è regionibus, introducam eos in terram
eorum, & paſcam eos ſuper montibus
Iſraelis, & in vallibus, & in omni
habitaculo terræ, In optimo pa-* 14
*ſcuo: paſcam eos in monte ſublimi, in
monte Iſraelis: & erunt ibi caula eorum,
& cubabunt, ibique requieſcent
in delitiis jucundiſſimis, & in paſcuo
ſuaviſſimo paſcentur ſuper montibus Iſraelis.
Ego paſcam oves meas, & ego* 15
*refocillabo eas; & ſcient me eſſe Dominum.
Ita dicit Dominus Dominus;
Quæram perditum, reducam errantem,* 16
*conſolidabo fractum, confirmabo deficientem,
& fortem conſervabo, denique
paſcam eas cum judicio. Et vos O* 17
*agni, ſic dicit Dominus Dominus; En
ego judicabo inter agnum & agnum,
arietem & hircum. Sanè vos dede-* 18
*cet veſci optimo paſcuo, reliquum verò
paſcuum conculcare pedibus veſtris: &
aquam bibere limpidam, reliquam verò
pedibus veſtris perturbare: Agnos* 19
*meos pedibus veſtris conculcata depaſcere,
& aquam bibere pedibus veſtris
perturbatam. Iccircò ſic ait Dominus,* 20
*Dominus Deus; Ecce ego judicabo inter
agnum fortem & inter agnum debilem.
Lateribus & humeris veſtris* 21
*propulſabatis eas, & cornibus veſtris
ventilabatis, omnémque deficientem ejeciſtis.
Et eripiam oves meas, nec erunt* 22
*poſthac ampliùs in direptionem, & judicabo
inter arietem cum ariete. Et* 23
*conſtituam eis paſtorem alium, Davidem
ſervum meum, qui paſcet eos,
& erit eis paſtor. Et ego Dominus* 24
*ero ipſis Deus, & David princeps in
medio ipſorum: ego Dominus locutus
ſum. Et pangam cum Davide fœdus* 25
*pacis, & perdam beſtias malas de terra;
ita ut habitent in deſerto, & dormiant
in ſylvis. Et erunt circum mon-* 26
*tem meum, mittámque eis pluviam benedictionis,
Et arbores campi reddent* 27
*eis fructum ſuum, & tellus dabit fruges
ſuas: & habitabunt ſuper terram
ſuam in ſpe pacis: ſciéntque me eſſe
Dominum, quum fregero jugum numellæ
eorum, & eripuero eos de manu
eorum qui ſervitute preſſerunt eos:*

: eas *comedet* non terræ *bestia* & , gentibus *præda* ultrà erunt non Et
28 ולא־יהיו עוד בז לגוים וחית הארץ לא תאכלם
plantationem eis suscitabo Et .*exterrens* non & ,*fiducia in* habitabunt &
29 וישבו לבטח ואין מחריד : והקמתי להם מטע
ultrà portabunt nec ,terra in fame consumpti ultrà erunt non &:nomē in
לשם ולא־יהיו עוד אספי רעב בארץ ולא־ישאו עוד
; eis cum eorum Deus Dominus *ego* quòd scient Et .gentium ignominiam
30 כלמת הגוים : וידעו כי־אני יהוה אלהיהם אתם
,*meū pecus* vos Et .Deus Dominus dixit , Israel domus me' popul' ipsi &
31 והמה עמי בית ישראל נאם אדני יהוה : ואתן צאני
.Deus Dominus dixit ,vester Deus ego ; *vos* *homo* meæ pascuæ *pecus*
צאן מרעיתי אדם אתם אני אלהיכם נאם אדני יהוה :

CAP. XXXV. לה

super tuas facies pone ,hominis Fili : dicendo,me ad Domini verbum fuit Et
1 2 ויהי דבר־יהוה אלי לאמר : בן־אדם שים פניך על־
Dominus dixit Sic , ei *dices* Et .eum super propheta & ,Sehir montem
3 הר שעיר והנבא עליו : ואמרת לו כה אמר אדני
,te super meam manum extendam &:Sehir mons te ad *ego* Ecce , Deus
יהוה הנני אליך הר־שעיר ונטיתי ידי עליך
,ponam desolationem tuas Urbes .solitudinem &,desolationem *te dabo* &
4 ונתתיך שממה ומשמה : עריך חרבה אשים
tibi esse Pro .Dominus *ego* quòd scies & ; eris *desolatio* tu &
5 ואתה שממה תהיה וידעת כי־אני יהוה : יען היות לך
tempore in;gladii *manus super* ,Israel *filios* *effudisti* & ,*seculi inimicitiam*
איבת עולם ותגר את־בני־ישראל על־ידי חרב בעת
dixit , ego *vivens* Propterea.finis *iniquitatis* tempore in,eorum contritionis
6 אידם בעת עון קץ : לכן חי־אני נאם
non si : te persequetur sanguis &,te *faciam* sanguini quia,Deus Domin'
אדני יהוה כי־לדם אעשך ודם ירדפך אם־לא
montem dabo Et .te persequetur sanguis *&* ,habueris odio sanguinem
7 דם שנאת ודם ירדפך : ונתתי את־הר
, transeuntem eo de succidam & ; solitudinem &,desolationem in Sehir
שעיר לשממה ושממה והכרתי ממנו עבר
;tuis vallib' &,tuis collib':ej' occisis ejus montes implebo Et.redeuntē &
8 ושב : ומלאתי את־הריו חלליו גבעותיך וגאותיך
Solitudines .*eis in* cadent gladio interfecti tuis torrentibus omnib' &
9 וכל־אפיקיך חללי־חרב יפלו בהם : שממות
ego quòd scietis & : habitabuntur non tuæ civitates &,te tradam *seculi*
עולם אתנך ועריך לא תישבנה וידעתם כי־אני
mihi terræ duæ & , gentes Duæ , *te dicere* Pro .Dominus
10 יהוה : יען אמרך את־שני הגוים ואת־שתי הארצות לי
, ego *vivens* Propterea .erat ibi Dominus &:*eam* possidebimus & , erunt
11 תהיינה וירשנוה ויהוה שם היה : לכן חי־אני
quem tuū zelū secundū &,tuā irā secundùm faciam &,Deus Dominus dixit
נאם אדני יהוה ועשיתי כאפך וכקנאתך אשר
.te judicavero cùm ,eis in ero cognit' &;eos in tua odia propter ,fecisti
עשיתה משנאתיך בם ונודעתי בם כאשר אשפטך :
quæ , tua *convicia* omnia Audivi .Dominus *ego* quòd scies Et
12 וידעת כי אני יהוה שמעתי את־כל־נאצותיך אשר
sunt dati nobis ;sunt Desolati,dicendo , Israel montes contra dixisti
אמרת על־הרי ישראל לאמר שממה לנו נתנו
me *super* *auxistis* & , *vestro ore in* me *super* magnificâstis Et.devorandum ad
13 לאכלה : ותגדילו עלי בפיכם והעתרתם עלי
omnem lætari Sicut :Deus Dominus dixit Sic .audivi ego ; vestra verba
14 דבריכם אני שמעתי : כה אמר אדני יהוה כשמח כל־
domus *hæreditatē ob tuam lætitiam Juxta* .tibi faciam , desolatione *terram*
15 הארץ שממה אעשה־לך : כשמחתך לנחלת בית־
erit *desolatio* : tibi faciam sic , est desolata quòd *super* , Israel
ישראל על אשר־שממה כן אעשה־לך שממה תהיה
.Dominus *ego* quòd scient & ; *ipsa* tota Edom omnis & , Sehir mons
הר־שעיר וכל־אדום כלה וידעו כי־אני יהוה :

Versio VULG. LAT.

28 Et non erunt ultrà in rapinam in
Gentibus,neque bestiæ terræ devorabunt
eos:sed habitabūt confidenter
29 absque ullo terrore. Et
suscitabo eis germen nominatū :
& non erūt ultrà imminuti fame
in terra, neque portabunt ultrà
30 opprobriū gentiū. Et scient quia
ego Dñs Deus eorū cum eis,& ipsi
popul' meus,domus Israel: ait
31 Dñs Deus. Vos autē greges mei,
greges pascuæ meæ, homines estis:
& ego Dominus Deus vester,
dicit Dominus Deus.

CAP. XXXV.

1 ET factus est sermo Domini ad
2 me,dicens; Fili hominis,pone faciem
tuā adversùm montē Seir,
& prophetabis de eo,& dices illi;
3 Hæc dicit Domin' Deus;Ecce
ego ad te,mons Seir,& extendam
manū meam super te, & dabo te
4 desolatum atque desertum.Urbes
tuas demoliar,& tu desert' eris :
5 & scies quia ego Dñs. Eò quòd
fueris inimic' sempitern',& concluseris
filios Israel in man' gladii
in tempore afflictionis eorū,
in tempore iniquitatis extremæ.
6 Propterea,Vivo ego, dicit Dñs
Deus;quoniā sanguini tradam te,
& sanguis te ꝑsequetur : & cùm
sanguinem oderis, sanguis persequetur
7 te. Et dabo montem Seir
desolatum atque desertum:& auferam
de eo euntem, & redeuntem.
8 Et implebo montes ejus occisorum
suorum:in collibus tuis,
& in vallibus tuis, atque in torrentib'
interfecti gladio cadent.
9 In solitudines sempiternas tradā
te , & civitates tuæ non habitabuntur:
& scietis quia ego Dominus
10 Deus. Eò quòd dixeris;Duæ
gentes, & duæ terræ meæ erunt,
& hæreditate possidebo eas:cùm
11 Dominus esset ibi : Propterea,
Vivo ego,dicit Dominus Deus ;
quia faciam juxta iram tuam, &
secundùm zelum tuum, quem fecisti
odio habens eos:& not' efficiar
per eos cùm te judicavero.
12 Et scies quia ego Dominus audivi
universa opprobria tua, quæ
locut' es de montibus Israel, dicens;
Deserti, nobis ad devorandum
13 dati sunt.Et insurrexistis super
me ore vestro, & derogâstis
adversùm me verba vestra : ego
14 audivi. Hæc dicit Domin' Deus;
Lætante universâ terrâ, in solitudinem
15 te redigam. Sicuti gavisus
es super hæreditatem domûs
Israel,eò quòd fuerit dissipata,sic
faciam tibi: dissipatus eris,mons
Seir, & Idumæa omnis ; & scient
quia ego Dominus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

28 Καὶ οὐκ (σ) ἔσονται ἔτι ἐν προνομῇ τοῖς ἔθνεσι, καὶ τὰ θηρία τῆς γῆς οὐκέτι μὴ (τ) φάγωσιν αὐτούς· καὶ κατοικήσουσιν ἐν ἐλπίδι, καὶ
29 οὐκ ἔσται ὁ ἐκφοβῶν αὐτούς. Καὶ ἀναστήσω αὐτοῖς φυτὸν εἰρήνης, καὶ οὐκέτι ἔσονται ἀπολλύμενοι λιμῷ ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ὀνειδισμὸν
30 ἐθνῶν οὐ μὴ ἐνέγκωσιν ἔτι. Καὶ γνώσονται ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος ὁ θεὸς αὐτῶν, καὶ αὐτοὶ λαός μου. Οἶκος (υ) Ἰσραήλ, λέγει
31 κύριος κύριος, (φ) Πρόβατά μου καὶ πρόβατα (χ) ποιμνίου μου ἐστέ, καὶ ἐγὼ κύριος ὁ θεὸς ὑμῶν, λέγει κύριος κύριος.

MS.A. (σ) ἔτι ἔσονται ἐν (τ) πτοήσει αὐτούς· (υ) τοῦ Ἰσραήλ, (φ) Καὶ ὑμεῖς πρόβατά (χ) τοῦ ποιμνίου

ΚΕΦ. λε'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρός με, λέ-
2 γων, Υἱὲ ἀνθρώπου, ἐπίστρεψον τὸ πρόσωπόν σου ἐπ' ὄρος Σηείρ, καὶ προφήτευσον (α)
3 εἰς αὐτό, καὶ εἰπὸν αὐτῷ, Τάδε (β) λέγει κύριος κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπὶ σὲ ὄρος Σηείρ, καὶ ἐκτενῶ τὴν χεῖρά μου ἐπὶ σέ, καὶ δώσω σε
4 (γ) εἰς ἔρημον, καὶ ἐρημωθήσῃ, Καὶ (δ) ταῖς πόλεσί σου ἐρημίαν ποιήσω, καὶ σὺ ἔρημος
5 ἔσῃ, καὶ γνώσῃ ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος. Ἀντὶ τοῦ γενέσθαι σε ἐχθρὰν (ε) αἰωνίαν, καὶ ἐνεκάθισας τῷ οἴκῳ Ἰσραὴλ δόλῳ, ἐν (ζ) χερσὶ ἐχθρῶν μαχαίρᾳ ἐν καιρῷ ἀδικίας, ἐπ'
6 ἐσχάτων, Διὰ τοῦτο, Ζῶ ἐγώ, λέγει κύριος κύριος, εἰ μὴν εἰς αἷμα ἥμαρτες, καὶ (η) αἷμα
7 διώξεταί σε. Καὶ δώσω (θ) ὄρος Σηεὶρ εἰς ἔρημον, καὶ ἠρημωμένον, καὶ ἀπολῶ ἀπ' αὐτοῦ
8 ἀνθρώπους καὶ κτήνη, Καὶ ἐμπλήσω τῶν τραυματιῶν (ι) βουνούς σου καὶ τὰς φάραγγάς σου, καὶ ἐν πᾶσι τοῖς πεδίοις σου τετραυματισμέ-
9 νοι μαχαίρᾳ πεσοῦνται ἐν σοί. (ʺ) Ἐρημίαν αἰώνιον θήσομαί σε, καὶ αἱ πόλεις σου οὐ μὴ κατοικηθῶσιν ἔτι, καὶ γνώσῃ ὅτι ἐγώ εἰμι
10 κύριος. (κ) Διὰ τὸ εἰπεῖν σε, Τὰ δύο ἔθνη, καὶ αἱ δύο χῶραι (λ) ἐμαὶ ἔσονται, καὶ κληρονο-
11 μήσω αὐτάς, καὶ (μ) κύριος ἐκεῖ ἐστι· Διὰ τοῦτο, Ζῶ ἐγώ, λέγει, (ν) κύριος, καὶ ποιήσω σοι κατὰ τὴν ἔχθραν σου, (ξ) καὶ γνωσθήσομαί σοι
12 ἡνίκα (ο) ἂν κρινῶ σε, Καὶ γνώσῃ ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος. ἤκουσα τῆς φωνῆς τῶν βλασφημιῶν σου, ὅτι εἶπας, Τὰ ὄρη Ἰσραὴλ ἔρημα ἡμῖν
13 δέδονται εἰς (π) κατάβρωμα, Καὶ ἐμεγαλοῤῥημόνησας ἐπ' ἐμὲ τῷ στόματί σου, (ρ) ἐγὼ
14 ἤκουσα. Τάδε λέγει κύριος, Ἐν τῇ εὐφροσύνῃ πάσης τῆς γῆς ἔρημον (σ) ποιήσω σε.
15 Ἔρημον ἔσῃ ὄρος Σηείρ, καὶ πᾶσα ἡ Ἰδουμαία, (τ) καὶ ἐξαναλωθήσεται, καὶ γνώσῃ ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος ὁ θεὸς αὐτῶν.

MS.A. (α) ἐπ' αὐτό, (β) λέγει κύριος, Ἰδοὺ (γ) ἔρημον, (δ) ἐν τῇ (ε) αἰώνιον (ζ) καιρῷ ἐχθρῶν ἐν χειρὶ μαχαίρας ἐν καιρῷ (η) αἷμά σε διώξεται. (θ) τὸ ὄρος (ι) σου τοὺς βουνούς σου καὶ πάσας τὰς (ʺ) Καὶ ἐρημίαν (κ) Διότι εἶπας, Τὰ δύο (λ) ἐμαί εἰσιν, (μ) ὁ κύριος (ν) κύριος κύριος, καὶ ποιήσω ἐν σοὶ (ξ) καὶ κατὰ τὸν ζῆλόν σου ὃν ἐποίησας ἐκ τοῦ μεμισηκέναι σε ἐν αὐτοῖς, καὶ γνωσθήσομαί (ο) ἐὰν (π) κατάχεσιν, (ρ) καὶ ἐγὼ ἤκουσα, φησὶν κύριος. Τάδε λέγει (σ) ἔσῃ ὄρος (τ) ἐξολεθρευθήσεται

Et non erunt ultrà in rapinam 28
gentibus, & bestiæ terræ non ultrà
devorabunt eos. Et habitabunt
in spe : & non erit qui exterreat
eos. Et suscitabo eis plantationem 29
(r) pacis: & non erunt
ultrà pereuntes fame in terra:
neq; portabūt ampliùs opprobriū
gentiū. Et scient,quia ego sū Domin' 30
Deus (s)eorū,& ipsi populus
me'. Dom' Israel, dicit Dñs
Dñs, (t)Oves meæ,et oves gregis 31
mei estis : & ego Dominus Deus
vester, dicit Dominus Dominus.

CAP. XXXV.

ET factus est sermo Domini ad 1
me,dicens;Fili hominis, converte 2
faciem tuam super montem Seir,
& propheta ad eum , & dic ei;
Hæc dicit Domin' Domin'; Ecce 3
ego ad te,mons Seir: & extendā
manum meam super te, & dabo
te in solitudinem,& desolaberis:
Et(a)urbibus tuis solitudinem faciā: 4
& tu desertum eris,et scies,
quia ego sum Domin' : Eo quòd 5
fueris (b) tu inimica sempiterna,
& insederis domui Israel fraudulenter
in (c)manu inimicorum
gladio in tempore (d) iniquitatis
in extremis,Propterea,Vivo ego, 6
dicit Domin' Dominus, quoniam
in sanguinem peccâsti;& sanguis
persequetur (e)te. Et dabo montem 7
Seir in desertū, et desolatū:
et disperdā de eo homines, et (f)
jumenta : Et implebo vulneratis 8
colles tuos, et valles tuas : et in
omnib' campis tuis vulnerati gladio
cadent in te.Solitudinē sempiternam 9
ponam te : et civitates
tuæ non habitabuntur ultrà : et
scies, quia ego sum Dominus:Eò 10
quòd dixeris;Duæ gentes,et duæ
regiones meæ erūt, et hæreditate
possidebo eas : et Domin' ibi est.
Propterea,Vivo ego,dicit Domin', 11
et faciam tibi juxta inimicitiā
(g)tuam:et notus efficiar tibi,cū
judicavero te : Et scies quia ego 12
sum Dominus. Audivi vocē blasphemiarū
tuarū,(h)quia dixisti;
Montes Israel deserti nobis dati
sunt in devorationē,Et magnificè 13
loquutus es super me ore (i) tuo:
ego audivi. Hæc dicit Dominus ; 14
In lætitia universæ terræ desertū
(k)faciam te: Desertus eris,mons 15
Seir: et omnis Idumæa,et(l)consumentur:
et scies, quia ego sum
Dominus Deus eorum.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ולא יהון עוד בזא לעממיא ומלכות ארעא לא ישיצנון ויתבון לרוחצן ולית דמניד : 28
ואקים להון נצבא לקימא ולא יהון עוד מטלטלי כפנא בארעא ולא יקבלון עוד 29
אתכנעות עממיא : וידעון ארי אנא יי אלההון מימרי בסעדהון ואנון עמי בית ישראל 30
אמר יי אלהים : ואתון עמי עם דאתקרי שמי עליהון בית ישראל אתון אנא אלהכון 31
אמר יי אלהים :

לה

והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר : בר אדם קביל נבואה על טורא דשעיר 1 2
ותתנבי עלוהי : ותימר ליה כדנן אמר יי אלהים הא אנא שלח רוגזי עלך טורא 3
דשעיר וארים מחת גבורתי עלך ואתננך לצדו ואשתממו : קרוך חורבא אשוי ואת 4
לצדו תהי ותדע ארי אנא יי : חלף דהוות לך דבבות עלם יתבבתא ית בני ישראל על 5
ידי קטולי חרבא בעדן תברהון בעדן תושלימת חוביהון : בכן קים אנא אמר יי 6
אלהים ארי לקטול אעבדנך ודקטלין בחרבא ירדפונך אם לא דמא סניתון ואשדי
דמא ירדפונך : ואתן ית טורא דשעיר לצדו ולאשתממו ואשיצי מניה דעדי ודתאב : 7
ואמלי ית טורוהי קטילוהי רמתוהי וחילוהי וכל פצידוהי קטילי חרבא יתרמון בהון : 8
צדו עלם אתננך וקרוך לא יתיתבן ותדעון ארי אנא יי : חלף דאמרת ית תרין עממין 9 10
וית תרתין מדינן דילי אנון ואירתנון וקדם יי גלין מחשבת לבא : בכן קים אנא 11
אמר יי אלהים ואעביד כרוגזך וכחימתך דעבדתא מדסנית להון ואתגלי לאיטבא
להון כד אתפרע מנך : ותדע ארי אנא יי שמע ית כל ארגוותך דאמרת על טורי ארעא 12
דישראל למימר צדיאת לנא אתמסירו לאשתיצאה : ואתרברבתון עלי במלי פומכון 13
ואסגיתון עלי פתגמיכון קדמי שמיע : כדנן אמר יי אלהים כמחדי כל ארעא צדו 14
אעביד לך : כמא דחדיתא על אחסנת בית ישראל על דצדיאת ארעהון כן אעביד לך 15
צדו תהי טורא דשעיר וכל אדום כולה וידעון ארי אנא יי :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et non erunt ultrà in direptionem populis,& regna terræ non consument eos, 28
& habitabunt confidenter : & non erit qui commoveat eos. Et suscitabo eis 29
plantationē ut permaneant,& non erunt ultrà transmigrantes propter famem
in terra, & non suscipient ultrà ignominiam populorum. Et scient quia ego 30
Dñs Deus eorum,in quorum auxiliū erit Verbum meum ; & ipsi erunt popul'
meus dom' Israel,ait Dñs De'. Vos autem estis popul' me',popul' ſup quem 31
invocatū est nomen meū :dom' Israel estis vos,& ego Dñs vester,ait Dñs De'.

CAP. XXXV.

ET factum est verbum prophetiæ à facie Dñi mecum,dicens: Fili hominis, 1 2
suscipe prophetiam super montem Seir , & vaticinare super eum. Et dices 3
ei, Hæc dicit Dñs Deus, Ecce ego mitto furorem meum super te mons Seir,
& levabo plagam potentiæ meæ super te, & dabo te in desolationem & stuporem.
Civitates tuas desertas ponam,& tu in desolationem eris;& scies quia 4
ego Dñs. Pro eo quòd fuit tibi inimicitia æterna, & tradidisti filios Israel 5
in man' occidentium gladio in tempore interit' eorum, in tempore retributionis
peccatorum eorum. Propterea vivo ego,dicit Dñs Deus, quia in occisionem 6
faciam te; & qui occidunt gladio persequentur te : & ni [*ut*] sanguinem
odisti, sic effundentes sanguinem persequentur te. Et dabo montem 7
Seir in desolationem & in stuporem ; & consummabo ex eo transeuntem,
& redeuntem. Et implebo montes ejus occisis ipsi' : & in collib' ejus, & 8
in vallib',& in cunctis rivis ej' interfecti gladio projicientur. Te in æternam 9
vastitatem redigam, & civitates tuæ non habitabuntur ; & scietis quia ego
Dñs. Pro eo quòd dixisti, Duo populi, & duæ provinciæ meæ erunt, & 10
possidebo eos ; & coram Dño manifestæ sunt cogitationes cordis. Propterea 11
vivo ego,dicit Dñs Deus,quia faciam juxta irā tuam, & juxta indignationem
tuam quam fecisti,pro eo quòd odisti eos,& revelabor,ut benefaciam eis,cùm
ultionem sumam ex te.Et scies quia ego Dñs *audiens omnem irritationem tuā*: 12
qui dixisti de montib' terræ Israel, dicendo : Deserta est ; nobis traditi sunt
consumendi. Et magnificati estis super me verbis oris vestri, & multiplicâstis 13
super me sermones vestros qui auditi sunt coram me. Hæc dicit Dñs Deus, 14
Cùm lætata fuerit universa terra, desolationem faciam in te. Sicut lætus es 15
propter hæreditatem dom' Israel,quia deserta est terra eorum,sic faciam tibi:
vast' eris mons Seir, & omnis Idumæa universa ; & scient quia ego Dñs.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

28 *ܘܬܘܒ ܠܐ ܢܗܘܘܢ ܒܙܬܐ ܠܥܡܡܐ. ܘܠܐ ܢܐܟܠܢ ܐܢܘܢ ܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ. ܘܢܬܒܘܢ ܠܬܘܟܠܢ. ܘܠܐ
29 ܢܗܘܐ ܠܗܘܢ ܡܢ ܕܡܙܝܥ. *ܘܐܩܝܡ ܠܗܘܢ ܢܨܒܬܐ ܕܫܠܡܐ. ܘܬܘܒ ܠܐ ܢܬܫܢܩܘܢ ܒܟܦܢܐ
30 ܒܐܪܥܐ. ܘܬܘܒ ܠܐ ܢܣܝܒܘܢ ܚܣܕܐ ܕܥܡܡܐ. *ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ. ܘܗܢܘܢ ܥܡܝ
31 ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. *ܐܢܬܘܢ ܕܝܢ ܥܢܝ ܥܢܐ ܕܡܪܥܝܬܝ. ܒܢܝܢܫܐ
ܐܢܬܘܢ. ܘܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. *ܩܦܠܐܘܢ *ܠܗ*
1 2 *ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. *ܒܪܢܫܐ. ܣܝܡ ܐܦܝܟ ܠܛܘܪܐ ܕܣܥܝܪ. ܘܐܬܢܒܐ
3 ܥܠܘܗܝ. ܘܐܡܪ ܠܗ. *ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟ ܛܘܪܐ ܕܣܥܝܪ. ܘܐܪܝܡ ܐܝܕܝ
4 ܥܠܝܟ. ܘܐܬܠܝܟ ܠܚܘܪܒܐ ܘܠܬܡܗܐ. *ܘܩܘܪܝܟ ܐܥܒܕ ܠܚܘܪܒܐ. ܘܐܢܬ ܬܗܘܐ ܠܫܘܡܡܐ.
5 ܘܬܕܥ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. *ܚܠܦ ܕܗܘܬ ܠܟ ܒܥܠܕܒܒܘܬܐ ܕܥܠܡ. ܘܐܫܠܡܬ ܠܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ
6 ܠܐܝܕܐ ܕܣܝܦܐ ܒܙܒܢܐ ܕܬܒܪܗܘܢ. ܘܒܙܒܢܐ ܕܥܘܠܐ ܕܚܪܬܗܘܢ. *ܡܛܠ ܗܢܐ ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
7 ܡܪܘܬܐ.. ܕܠܕܡܐ ܐܫܠܡܟ. ܘܕܡܐ ܢܪܕܦܟ. ܕܡܐ ܕܣܢܝܬ. ܗܘ ܕܡܐ ܢܪܕܦܟ. *ܘܐܬܠܝܘܗܝ
8 ܠܛܘܪܐ ܕܣܥܝܪ. ܠܚܘܪܒܐ ܘܠܬܡܗܐ. ܘܐܘܒܕ ܡܢܗ ܕܥܒܪ ܘܕܗܦܟ. *ܘܐܡܠܐ ܛܘܪܘܗܝ ܡܢ
9 ܚܠܝܠܘܗܝ. ܒܫܩܝܦܝܟ ܘܒܪܡܬܟ ܘܒܢܚܠܝܟ.. ܚܠܝܠܐ ܕܣܝܦܐ ܢܦܠܘܢ ܒܗܘܢ. *ܘܐܬܠܝܟ
10 ܚܘܪܒܐ ܕܥܠܡ. ܘܩܘܪܝܟ ܠܐ ܢܬܝܬܒܢ. ܘܬܕܥ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. *ܚܠܦ ܕܐܡܪܬ ܕܬܪܝܢ ܥܡܡܝܢ
11 ܘܬܪܬܝܢ ܡܠܟܘܬܐ ܕܝܠܝ ܐܢܝܢ: ܘܐܢܐ ܐܪܬ ܐܢܝܢ. ܘܡܪܝܐ ܬܡܢ ܗܘܐ.. *ܡܛܠ ܗܢܐ ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ
ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ.. ܕܐܥܒܕ ܠܟ ܐܝܟ ܪܘܓܙܟ.. ܘܐܝܟ ܒܥܠܕܒܒܘܬܟ ܕܥܒܕܬ. ܘܣܢܝܬ ܐܢܘܢ.
12 ܘܐܬܝܕܥ ܒܗܘܢ. ܡܐ ܕܕܐܢ ܐܢܐ ܠܟ. *ܘܬܕܥ ܕܐܢܐ ܡܪܝܐ ܫܡܥܬ ܟܠܗܘܢ ܓܘܕܦܝܟ. ܕܐܡܪܬ ܥܠ
13 ܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ.. ܕܚܪܒܘ ܐܢܘܢ: ܘܠܡܐܟܘܠܬܐ ܐܬܝܗܒܘ ܠܢ. *ܘܐܪܒܝܬܘܢ ܥܠܝ ܦܘܡܟܘܢ.
14 ܘܐܣܓܝܬܘܢ ܥܠܝ ܡܠܝܟܘܢ. ܘܐܢܐ ܫܡܥܬ. *ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ ܠܛܘܪܐ ܕܣܥܝܪ ܕܫܪܐ
15 ܒܒܣܝܡܘܬܐ ܕܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܠܚܘܪܒܐ ܐܬܠܝܟ. *ܡܛܠ ܕܚܕܝܬ ܥܠ ܝܪܬܘܬܐ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܕܚܪܒܬ..
ܗܟܢܐ ܐܥܒܕ ܠܟ. ܠܚܘܪܒܐ ܬܗܘܐ ܛܘܪܐ ܕܣܥܝܪ. ܘܐܕܘܡ ܟܠܗ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ.

Non erunt ampliùs in prædã populis, neq; de- 28
vorabunt eos feræ ſylveſtres; ſed habitabunt
ſecurè, nec erit eis quod moleſtet. Suſcitabo eis 29
plantam pacis, & non cruciabuntur ampliùs
fame in terra, neq; ferent ampliùs opprobriũ
gentium: Sciéntque me eſſe Dñm Deum ipſo- 30
rum, & ipſos eſſe populum meũ Iſraeliticum,
ait Dñs dominorum. Vos autem oves meæ, 31
oves gregis mei, homines eſtis, ego verò Do-
minus Deus veſter, ait Dominus dominorum.

CAP. XXXV.

RUrſus fuit ad me ſermo Dñi, dicendo; Fili 1
hominis, diſpone faciem tuã verſùs montem 2
Seir, & vaticinare contra eum, & dic illi; Sic 3
ait Dñs dominorum, Ecce me contra te mons
Seir, & extollã ſuper te manũ meã, redigámq;
te in vaſtitatem & ſtuporem: Urbes tuas redi- 4
gam in ſolitudinem, & tu eris vaſtitati: & ex-
perieris me eſſe Dñm. Eò quòd inimicitiam 5
habueris perpetuam, & tradideris filios Iſra-
elis in manũ gladii tempore infortunii eorum,
& tempore iniquitatis eorum extremæ: Ideo 6
per vitã meam, dicit Dñs dominorũ, ſanguini
exponã te, & ſanguis perſequetur te: ſanguis
quem odio proſecutus es, idem ſanguis te per-
ſequetur. Nam redigã montem Seir in excidi- 7
um & ſtuporem, perdam ex eo euntem ac red-
euntem, Et implebo montes ejus confoſſis 8
ipſius: in rupibꝰ, collibꝰ, & vallibꝰ tuis cadent
interfecti gladio. Reddam te deſolatũ in æter- 9
num, & urbes tuæ non habitabuntur; et expe-
rieris me eſſe Dñm. Quia dixiſti, Duo *hi* po- 10
puli et duo regna, mea ſunt, et ego poſſidebo
ea; quanvis Dñs illic adeſſet: Iccirco per vi- 11
tam meã, ait Dñs dominorũ, faciã tibi ſecun-
dùm irã tuã et ſecundùm inimicitiã tuã quam
exercuiſti, et *quâ* illos odiſti; ut conſpicuus fiã
per eos, quum judicavero te, Et cognoſcas me 12
Dñm audiviſſe omnes blaſphemias tuas quas
protuliſti de montibꝰ Iſraelis, eos *videlicet* de-
ſolatos eſſe, cibũ noſtrũ futuros. Protendiſtis 13
contra me os veſtrũ, et multiplicâſtis contra
me verba veſtra, et ego audivi. Sic dicit Dñs 14
dominorũ ad montẽ Seir ſitũ in delitiis totius
terræ, In vaſtitatem redigam te. Quia gaviſus 15
es quòd poſſeſſio Iſraelitarum deſolata ſit, eo-
dem modo faciam tibi: in excidium ibis O
mons Seir et Idumæa tota; ut cognoſcatur
me eſſe Dominum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

28 * ولا يصيرون ايضا نهبا في الامم * ووحوش الارض لا تخيفهم ايضا * ويسكنون في طمانينة * ولا
29 يكون من يروعهم * واقيم لهم غرس السلامة * ولا يصيرون ايضا هالكين بالجوع على
30 الارض * ولا يتحملون ايضا تعيير الامم * ويعلمون اني انا الرب الههم * وهم شعبي بيت اسرايل *
31 يقول الرب الرب * وانتم خرافي وخراف قطيعي انتم * وانا الرب الهكم * يقول الرب الرب *

* الفصل الخامس والثلثون *

1 2 * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان رد وجهك على جبل ساعير * وتنبا عليه وقل له *
3 * هكذا يقول الرب * ها انا عليك يا جبل ساعير * وامد يدي عليك * واعطيك للخراب والخرب *
4 5 * وفي مدنك اصنع الخراب * وانت تصير قفرا * وتعلم اني انا الرب * عوض ان تصير عداوة
ابدية * وجلست في بيت اسرايل بالغش في زمن الاعداء بيد السيف * وفي وقت الظلم في
6 الاواخر * لاجل هذا حي انا يقول الرب الرب * بالحقيقة اخطيت بالدم * والدم يطردك *
7 8 * واعطي جبل ساعير للقفر والخرب * واهلك منه الناس والبهايم * واملا تلالك من جرحاك
9 وجميع اوديتك * وفي كل بقاعك يسقط المجروحون بالسيف * واصنعك خربة ابدية * ومدنك
10 لا تسكن بعد * وتعلم اني انا الرب * من اجل انك قلت * ان الامتين والبلدين هما
11 لي * وارثهما * والرب هو هناك * لاجل هذا حي انا يقول الرب الرب * واصنع فيك كعداوتك
12 وكغيرتك التي صنعتها من بغضتك فيهم * واعرفك حينيذ اني ادينك * وتعلم اني انا الرب *
13 سمعت صوت تجديفاتك * لانك قلت * جبال اسرايل خراب * اعطيت لنا للضبط * وعظمت على
14 القول بفمك * وانا سمعت قال الرب * هكذا يقول الرب * في سرور كل الارض تصير خرابا يا
15 جبل ساعير * وكل ادوم تستاصل * وتعلم اني انا الرب الههم *

Non erunt ampliùs direptioni inter gentes, 28
& beſtiæ terræ poſthac non vexabunt eos;
ſed habitabunt ſecurè, nec erit qui terreat
eos. Et ſuſcitabo eis plantationem pacis, 29
& non erunt poſthac percuntes fame ſu-
per terram, neque ferent poſthac oppro-
brium gentium: Et ſcient me eſſe Do- 30
minum Deum ſuum, ſe autem eſſe popu-
lum meum domum Iſraelis, dicit Dominus
Dominus: Vos agnos meos & agnos 31
gregis mei eſſe, me autem Dominũ Deum
veſtrum, dicit Dominus Dominus.

CAP. XXXV.

FUit adhuc ſermo Domini ad me, di- 1
cens; O fili hominis, verte faciem tuam 2
verſùs montem Seir, propheta de illo, &
dic ei; Sic ait Dominus, Ecce me ad- 3
verſùm te O mons Seir, & extendam ma-
num meam ſuper te, dabóque te vaſtatio-
ni, & vaſtaberis. In urbibus quoque tuis 4
faciam vaſtitatem, & tu fies ſolitudo:
ſciéſque me eſſe Dominum, Eò quòd fue- 5
ris inimicitia ſempiterna, & ſederis in
domo Iſraelis cum dolo in tempore inimi-
corum in manu gladii, & in tempore ini-
quitatis in extremis: Idcircò, Vivo egò, 6
dicit Dominus Dominus, ſanguine quidem
peccâſti, & ſanguis te perſequetur. Et 7
redigam montem Seir in ſolitudinem, &
vaſtabitur: & perdam ex eo homines at-
que jumenta: Implebo colles tuos vul- 8
neratis, omnéſque valles tuas: & in o-
mnibus campis tuis cadent vulnerati gla-
dio: Redigam te in ruinam ſempiternã, 9
& urbes tuæ non habitabuntur ampliùs:
ſciéſque me eſſe Dominum. Quia dixi- 10
ſti; Duo ſanè populi, duæque regiones iſtæ
meæ ſunt, & poſſidebo eas; quum Domi-
nus illic adſit: Ideò, Vivo ego, dicit Do- 11
minus Dominus; & agam tecum ſe-
cundùm inimicitiam tuam & ſecun-
dùm æmulationem tuam quam feciſti ex
odio tuo erga eos, & notum faciam tunc
tibi quòd ego judicabo te: Et cogno- 12
ſces me eſſe Dominum. Audivi vocẽ blaſ-
phemiarum tuarum: dixiſti enim, Montes
Iſraelis vaſtati ſunt, ceſſerunt nobis in ac-
quiſitionem: Et magnificâſti contra me 13
ſermonem ore tuo, & ego audivi, dicit
Dominus. Ita dicit Dominus, Cum ex- 14
ultatione totius terræ fies ruina O mons
Seir, Et tota Idumæa eradicabitur: & 15
ſcies me eſſe Dominum Deum illorum.

יחזקאל : לו

CAP. XXXVI. לו

Montes ,*dices* & , Israel montes *ad* propheta , hominis fili tu Et
1 וְאַתָּה בֶן־אָדָם הִנָּבֵא אֶל־הָרֵי יִשְׂרָאֵל וְאָמַרְתָּ הָרֵי
Quia ,Deus Dominus dixit Sic .Domini verbum audite Israel
2 יִשְׂרָאֵל שִׁמְעוּ דְּבַר־יְהוָה׃ כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה יַעַן
hæreditatem in *seculi* excelsa & ; Euge vos super inimicus dixit
אָמַר הָאוֹיֵב עֲלֵיכֶם הֶאָח וּבָמוֹת עוֹלָם לְמוֹרָשָׁה
Dominus dixit Sic , *dices* & , vaticinare Propterea .nobis *fuit*
3 הָיְתָה לָּנוּ׃ לָכֵן הִנָּבֵא וְאָמַרְתָּ כֹּה אָמַר אֲדֹנָי
vos existendum ad ,undique vos *absorbere & ,desolare propter* Pro : Deus
יְהוִה יַעַן בְּיַעַן שַׁמּוֹת וְשָׁאֹף אֶתְכֶם מִסָּבִיב לִהְיוֹתְכֶם
, linguæ labrum super ascendistis & ,*gentium residuo hæreditatem*
מוֹרָשָׁה לִשְׁאֵרִית הַגּוֹיִם וַתֵּעֲלוּ עַל־שְׂפַת לָשׁוֹן
verbum audite , Israel montes Propterea .populi oblocutionẽ &
4 וְדִבַּת־עָם׃ לָכֵן הָרֵי יִשְׂרָאֵל שִׁמְעוּ דְּבַר־
, collibus & , montibus Deus Dominus dixit Sic : Dei Domini
אֲדֹנָי יְהוִה כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה לֶהָרִים וְלַגְּבָעוֹת
, derelictis urbibus & , desolatis desertis ,vallibus & , torrentibus
לָאֲפִיקִים וְלַגֵּאָיוֹת לֶחֳרָבוֹת הַשֹּׁמְמוֹת וְלֶעָרִים הַנֶּעֱזָבוֹת
gentium residuo subsannationem in & , direptionem in fuerunt quæ
אֲשֶׁר הָיוּ לְבַז וּלְלַעַג לִשְׁאֵרִית הַגּוֹיִם
igne in *non Si* : Deus Dominus dixit sic Propterea .undique quæ
5 אֲשֶׁר מִסָּבִיב׃ לָכֵן כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה אִם־לֹא בְּאֵשׁ
; totam Edom super & , *gentium residuum* super sum locutus mei zeli
קִנְאָתִי דִבַּרְתִּי עַל־שְׁאֵרִית הַגּוֹיִם וְעַל־אֱדוֹם כֻּלָּא
omnis lætitia *in* hæreditatem in sibi meam terram *dederunt* quæ
אֲשֶׁר נָתְנוּ־אֶת־אַרְצִי לָהֶם לְמוֹרָשָׁה בְּשִׂמְחַת כָּל־
Idcircò .direptionem in *ejus expulsionem propter* ,animi contemptu *in* ,cordis
6 לֵבָב בִּשְׁאָט נֶפֶשׁ לְמַעַן מִגְרָשָׁהּ לָבַז׃ לָכֵן
, collibus & , montibus *dices* & , Israel humum super vaticinare
הִנָּבֵא עַל־אַדְמַת יִשְׂרָאֵל וְאָמַרְתָּ לֶהָרִים וְלַגְּבָעוֹת
,meo zelo in *ego* Ecce,Deus Dominus dixit Sic ,vallibus & ,torrentibus
לָאֲפִיקִים וְלַגֵּאָיוֹת כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה הִנְנִי בְקִנְאָתִי
.portaveritis gentium ignominiam quòd eò ,sum locutus meo furore in &
וּבַחֲמָתִי דִּבַּרְתִּי יַעַן כְּלִמַּת גּוֹיִם נְשָׂאתֶם׃
non si : meam manum levavi Ego , Deus Dominus dixit sic Idcircò
7 לָכֵן כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה אֲנִי נָשָׂאתִי אֶת־יָדִי אִם־לֹא
vos Et .portaverint suã ignominiam ,*ipsæ* undique vobis quæ gentes
8 הַגּוֹיִם אֲשֶׁר לָכֶם מִסָּבִיב הֵמָּה כְּלִמָּתָם יִשָּׂאוּ׃ וְאַתֶּם
afferetis vestrum fructum & , dabitis *vestram frondem* Israel montes
הָרֵי יִשְׂרָאֵל עַנְפְּכֶם תִּתֵּנוּ וּפֶרְיְכֶם תִּשְׂאוּ
Quia .*veniendum ad* appropinquaverunt quoniam : Israel meo populo
9 לְעַמִּי יִשְׂרָאֵל כִּי קֵרְבוּ לָבוֹא׃ כִּי
.seremini & , colemini & , vos ad convertar & , vos ad *ego* ecce
הִנְנִי אֲלֵיכֶם וּפָנִיתִי אֲלֵיכֶם וְנֶעֱבַדְתֶּם וְנִזְרַעְתֶּם׃
:totam Israel domum omnem,*hominem* vos super faciam multiplicare Et
10 וְהִרְבֵּיתִי עֲלֵיכֶם אָדָם כָּל־בֵּית יִשְׂרָאֵל כֻּלֹּה
faciam multiplicare Et.ædificabuntur deserta & ,civitates habitabuntur &
11 וְנֹשְׁבוּ הֶעָרִים וְהֶחֳרָבוֹת תִּבָּנֶינָה׃ וְהִרְבֵּיתִי
: crescent & ,multiplicabuntur & , *animal &* , *hominem* vos super
עֲלֵיכֶם אָדָם וּבְהֵמָה וְרָבוּ וּפָרוּ
faciam meliora & ,vestras antiquitates secundùm vos faciam habitare &
וְהוֹשַׁבְתִּי אֶתְכֶם כְּקַדְמוֹתֵיכֶם וְהֵטִבֹתִי
faciam venire Et .Dominus *ego* quòd scietis & , vestra priora quàm
12 מֵרִאשֹׁתֵיכֶם וִידַעְתֶּם כִּי־אֲנִי יְהוָה׃ וְהוֹלַכְתִּי
eris & ,te possidebunt & , Israel meum populum , *hominem* vos super
עֲלֵיכֶם אָדָם אֶת־עַמִּי יִשְׂרָאֵל וִירֵשׁוּךָ וְהָיִיתָ
.eos orbare ultrà addes non & ; hæreditatem in eis
לָהֶם לְנַחֲלָה וְלֹא־תוֹסִף עוֹד לְשַׁכְּלָם׃

Versio VULG. LAT.

CAP. XXXVI.

1 Tu autem,fili hominis,propheta
super montes Israel, & dices;
Montes Israel,audite verbũ Domini
2 : Hæc dicit Dominus Deus ;
Eò quòd dixerit inimicus de vobis
; Euge, altitudines sempiternæ
in hæreditatem datæ sunt nobis
3 : Propterea vaticinare, &
dic ; Hæc dicit Dominus Deus ;
Pro eo quòd desolati estis, &
conculcati per circuitum, & facti
in hæreditatem reliquis Gentibus,
& ascendistis super labium
linguæ, & opprobrium populi
4 : Propterea, montes Israel,
audite verbum Domini Dei:Hæc
dicit Dominus Deus montibus,
& collibus, torrentibus, vallibúsque,
& desertis, parietinis,
& urbibus derelictis, quæ depopulatæ
sunt, & subsannatæ à reliquis
Gentibus per circuitum.
5 Propterea hæc dicit Dominus
Deus ; Quoniam in igne zeli mei
locut⁹ sum de reliquis Gentibus,
& de Idumæa universa, quæ dederunt
terram meam sibi in hæreditatem
cum gaudio, & toto
corde & ex animo : & ejecerunt
6 eam ut vastarent : Idcircò vaticinare
super humum Israel, &
dices montibus & collibus,jugis
& vallibus ; Hæc dicit Dominus
Deus ; Ecce ego in zelo meo, &
in furore meo locutus sum, eò
quòd confusionem Gentium sustinueritis.
7 Idcircò hæc dicit Dominus
Deus ; Ego levavi manum
meam, ut Gentes, quæ in circuitu
vestro sunt, ipsæ confusionem
8 suam portent. Vos autem,montes
Israel,ramos vestros germinetis,
& fructum vestrum afferatis
populo meo Israel : propè enim
9 est ut veniat : Quia ecce ego ad
vos, & convertar ad vos, & arabimini,
& accipietis sementem.
10 Et multiplicabo in vobis homines,
omnémque domum Israel :
& habitabuntur civitates, & ruinosa
11 instaurabuntur. Et replebo
vos hominibus, & jumentis : &
multiplicabuntur, & crescent :
& habitare vos faciam sicut à
principio, bonísque donabo majoribus,
quàm habuistis ab initio
:& scietis quia ego Dominus.
12 Et adducam super vos homines,
populum meum Israel, & hæreditate
possidebunt te : & eris eis
in hæreditatem, & non addes ultrà
ut absque eis sis.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

ΚΕΦ. λϛ'.

1 Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου προφήτευσον ἐπὶ
τὰ ὄρη Ἰσραὴλ, καὶ εἰπὸν τοῖς ὄρεσι τοῦ Ἰσραὴλ,
2 Ἀκούσατε λόγον κυρίου. Τάδε λέγει
κύριος κύριος, Ἀνθ' (α) ὧν εἶπεν ἐφ' ὑμᾶς ὁ
ἐχθρὸς, Εὖγε, ἔρημα αἰώνια εἰς κατάσχεσιν
3 ἡμῖν ἐγενήθη· Διατοῦτο προφήτευσον, καὶ
εἰπὸν, Τάδε λέγει κύριος κύριος (β), Ἀντὶ
τοῦ ἀτιμασθῆναι ὑμᾶς, καὶ μισηθῆναι ὑμᾶς
(γ) ὑπὸ τῶν κύκλῳ ὑμῶν, τοῦ εἶναι (δ) ὑμᾶς
εἰς κατάσχεσιν τοῖς καταλοίποις ἔθνεσι,
καὶ (ε) ἀνέβητε λάλημα γλώσσῃ, καὶ εἰς
4 ὀνείδισμα ἔθνεσι, Διατοῦτο ὄρη Ἰσραὴλ
ἀκούσατε λόγον κυρίου· τάδε λέγει κύριος
τοῖς ὄρεσι, καὶ τοῖς βουνοῖς, καὶ τοῖς χειμάῤῥοις,
καὶ ταῖς φάραγξι, (ζ) καὶ τοῖς ἐξηρημωμένοις
καὶ ἠφανισμένοις, καὶ ταῖς πόλεσι
ταῖς (η) ἐγκαταλελειμμέναις, καὶ ἐγένοντο εἰς
προνομὴν, καὶ εἰς καταπάτημα τοῖς καταλειφθεῖσιν
5 ἔθνεσιν (ʺ) περικύκλῳ, Διατοῦτο
τάδε (θ) λέγει κύριος κύριος, Εἰ μὴν ἐν
πυρὶ θυμοῦ μου ἐλάλησα ἐπὶ τὰ λοιπὰ ἔθνη,
καὶ ἐπὶ τὴν Ἰδουμαίαν πᾶσαν, ὅτι ἔδωκαν
(ι) τὴν γῆν μου ἑαυτοῖς εἰς κατάσχεσιν μετ'
εὐφροσύνης, ἀτιμάσαντες ψυχὰς, τοῦ ἀφανίσαι
6 ἐν προνομῇ· Διατοῦτο προφήτευσον
ἐπὶ τὴν γῆν τοῦ Ἰσραὴλ, καὶ εἰπὸν τοῖς
ὄρεσι, καὶ τοῖς βουνοῖς, καὶ ταῖς φάραγξι, καὶ
ταῖς νάπαις, Τάδε λέγει (κ) κύριος, Ἰδοὺ
ἐγὼ ἐν τῷ ζήλῳ μου, καὶ ἐν τῷ θυμῷ μου ἐλάλησα,
ἀντὶ τοῦ ὀνειδισμοὺς ἐθνῶν ἐνέγκαι
7 ὑμᾶς· Διατοῦτο (λ) ἐγὼ ἀρῶ τὴν χεῖρά μου
ἐπὶ τὰ ἔθνη τὰ περικύκλῳ ὑμῶν· οὗτοι τὴν
8 ἀτιμίαν αὐτῶν λήψονται. Ὑμῶν δὲ ὄρη Ἰσραὴλ
τὴν σταφυλὴν καὶ τὸν καρπὸν (μ) ὑμῶν
καταφάγεται ὁ λαός μου, ὅτι ἐλπίζουσι τοῦ
9 ἐλθεῖν. (ν) Ὅτι ἰδοὺ ἐγὼ ἐφ' ὑμᾶς, καὶ ἐπιβλέψω
ἐφ' ὑμᾶς, καὶ κατεργασθήσεσθε, (ξ)
10 καὶ σπαρήσεσθε, Καὶ πληθυνῶ ἐφ' ὑμᾶς ἀνθρώπους,
πᾶν οἶκον Ἰσραὴλ εἰς τέλος, καὶ
κατοικηθήσονται αἱ (ο) πόλεις, καὶ (π) ἡ ἠρημωμένη
11 οἰκοδομηθήσεται. Καὶ πληθυνῶ
ἐφ' ὑμᾶς ἀνθρώπους, καὶ κτήνη, καὶ κατοικιῶ
ὑμᾶς ὡς τὸ ἐν ἀρχῇ ὑμῶν, καὶ εὖ ποιήσω
ὑμᾶς, ὥσπερ (ρ) τὰ ἔμπροσθεν ὑμῶν,
12 καὶ γνώσεσθε ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος. Καὶ (σ)
γεννήσω ἐφ' ὑμᾶς ἀνθρώπους τὸν λαόν μου
Ἰσραὴλ, καὶ κληρονομήσουσιν ὑμᾶς, καὶ ἔσεσθε
αὐτοῖς εἰς κατάσχεσιν· καὶ οὐ μὴ (τ) προστεθῆτε
ἔτι ἀτεκνωθῆναι ἀπ' αὐτῶν.

CAP. XXXVI.

Et tu, fili hominis, propheta 1
*super montes Israel, & dic montibus
Israel; Audite verbum Domini:
Hæc dicit Dominus Dominus;* 2
*Eò quòd dixit super vos inimicus;
Euge,(a)solitudines sempiternæ
in possessionem nobis factæ
sunt ; Propterea vaticinare,* 3
*& dic;Hæc dicit Domin⁹ Dominus;
(b)Pro eo,quòd despecti estis
vos, & odio habiti ab his qui in
circuitu vestro sunt, ut essetis in
possessionem reliquis gentibus , et
(c)ascendistis loquela linguæ, &
in opprobrium gentibus; Propterea,* 4
*montes Israel, audite verbum
Domini : Hæc dicit Dominus
montibus, & collibus,& torrentibus,
& vallibus, & desolatis,
& dissipatis, & urbibus derelictis,
(d) & factæ sunt in direptionem
, & in conculcationem
reliquis gentibus per circuitum.
Propterea hæc dicit Domin⁹ Dominus;* 5
*Quia in igne furoris mei
loquutus sum super reliquas gentes,
et super Idumæam universam:
quia dederunt terram meam sibi
in possessionem cum gaudio, (e)
despicientes animas, ut delerent
eas in vastatione: Idcircò vaticinare* 6
*super terram Israel: & dic
montibus, & collibus, & vallibus,
& locis nemorosis ; Hæc dicit
Dominus ; Ecce ego in zelo
meo, & in furore meo loquutus
sum, eò quòd opprobria gentium
portaveritis. (f) Idcircò ego* 7
*levabo manum meam super gentes
quæ in circuitu vestro: ipsi
ignominiam suam portabunt. Vestram* 8
*autem, montes Israel,uvã,
et fructum vestrum comedet populus
meus : quia sperant venire.
Quoniam ecce ego ad vos,& re-* 9
*spiciam ad vos, & colemini , .et
accipietis sementem, Et multipli-* 10
*cabo in vobis homines,omnem domum
Israel in finem : et habitabuntur
civitates:et deserta ædificabitur.
Et multiplicabo in vobis* 11
*homines,et(g)jumenta:et habitare
vos faciam, sicut in principio
vestro, et benè faciam vobis,sicut
anteriora vestra:et scietis,quia ego
sum Dominus.Et generabo su-* 12
*per vos homines, populum meum
Israel: et hæreditate possidebunt
vos:et eritis eis in possessionem :
et non addetis ultrà , ut absque
liberis vos faciant.*

MS.A. (α) ὧν εἶπεν ὁ *ἐχθρὸς ἐφ' ὑμᾶς, Εὖγε, εὖγε, (β) ὁ θεὸς, (γ) ἀπὸ τῶν ἐθνῶν τῶν (δ) ἡμᾶς (ε) ἐγένεσθε λάλημα γλώσσης, (ζ) καὶ ταῖς νάπαις, ταῖς ἐρημωμέναις καὶ ἠφανισμέναις, (η) καταλελειμμέναις, αἳ ἐγένοντο εἰς προνομὴν, καὶ καταπάτημα (ʺ) τοῖς περικύκλῳ, (θ) λέγει κύριος, Εἰ μὴν (ι) ἑαυτοῖς τὴν γῆν μου εἰς (κ) ἀδωναῒ κύριος, (λ) ἰδοὺ ἐγὼ αἴρω (μ) φάγεται ὁ (ν) Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπιβλέψω (ξ) Καὶ πληθυνῶ (ο) πόλεις ὑμῶν, καὶ (π) αἱ ἠρημωμέναι, οἰκοδομηθήσονται. Καὶ (ρ) τὸ (σ) δώσω ἐφ' (τ) προστεθήσεσθε

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

לו

1 וְאַתְּ בַּר אָדָם אִתְנַבֵּי עַל טוּרֵי יִשְׂרָאֵל וְתֵימַר טוּרֵי יִשְׂרָאֵל קַבִּילוּ פִּתְגָם יְיָ : כִּדְנָן אֲמַר 2
3 יְיָ אֱלֹהִים חֲלָף דִּי אֲמַר סַנְאָה עֲלֵיכוֹן חֶדְוָא וּבָמַת עָלַם לִירוּתָא הֲוָת לָנָא : בְּכֵן אִתְנַבֵּי
וְתֵימַר כִּדְנָן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים חֲלָף דִּי אִתְרַבְרַבוּ וַחֲלָף דַּחֲשִׁיבוּ לְאַחְרָבָא וּלְאַצְדָאָה
יָתְכוֹן מִסְחוֹר סְחוֹר לְמֶהֱוֵיכוֹן יְרוּתָא לִשְׁאָרָא דְעַמְמַיָא וְאִתְאַמַרְתּוּן עַל שְׂפַת לִישָׁן
4 וְרִנְנַת עַם : בְּכֵן טוּרֵי יִשְׂרָאֵל קַבִּילוּ פִּתְגָמָא דַיְיָ אֱלֹהִים כִּדְנָן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים לְטוּרַיָא
וּלְרָמָתָא לְפַצִּידַיָא וּלְחֵילַיָא וּלְחָרְבָתָא צַדְיָתָא וּלְקִרְוַיָא שְׁבִיקָתָא דַהֲוָאָה לְחוּךְ וּלְלָעַב
5 לִשְׁאָרָא דְעַמְמַיָא דְמִסְחוֹר סְחוֹר : בְּכֵן כִּדְנָן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים אִם לָא בְּאֶשַּׁת פּוּרְעָנוּתִי
גְזֵרִית בְּמֵימְרִי עַל שְׁאָרָא דְעַמְמַיָא וְעַל אֱדוֹמָאֵי כּוּלְּהוֹן דִּיהַבוּ יַת אַרְעָא בֵּית שְׁכִנְתִּי
6 לְהוֹן לִירוּתָא בְּחֶדְוַת כָּל לֵב בְּצִפּוּחַ נְפַשׁ בְּדִיל לְתָרָכוּתַהּ לְמִבְזְּהַ : בְּכֵן אִתְנַבֵּי עַל
אַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל וְתֵימַר לְטוּרַיָא וּלְרָמָתָא לְפַצִּידַיָא וּלְחֵילַיָא כִּדְנָן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים הָא
7 אֲנָא בְרוּגְזִי וּבְחֵימְתִי גְזֵרִית בְּמֵימְרִי חֲלַף דְּאִתְכְּנָעוּת עַמְמַיָא קַבֶּלְתּוּן : בְּכֵן כִּדְנָן אֲמַר
יְיָ אֱלֹהִים אֲנָא קַיֵּמִית בְּמֵימְרִי אִם לָא עַמְמַיָא דִּי בְּזוּ יַתְכוֹן מִסְחוֹר סְחוֹר אִנּוּן
8 אִתְכְּנָעוּתְהוֹן יְקַבְּלוּן : וְאַתּוּן טוּרֵי יִשְׂרָאֵל אִבְּכוֹן תַּצְלְחוּן וּפֵירְיכוֹן תִּטְעֲנוּן לְעַמִּי
9 יִשְׂרָאֵל אֲרֵי קְרִיב יוֹם פּוּרְקָנִי לְמֵיתֵי : אֲרֵי הָא אֲנָא מִתְגְלֵי עֲלֵיכוֹן וְאִתְפְּנֵי בְּמֵימְרִי
10 לְאֵיטָבָא לְכוֹן וְתִתְפַּלְחוּן וְתִזְדַּרְעוּן : וְאַסְגֵי עֲלֵיכוֹן אֱנָשָׁא כָּל בֵּית יִשְׂרָאֵל כּוּלְּהוֹן
11 וְיִתְיַתְּבָן קִרְוַיָא וְחָרְבָתָא יִתְבַּנְיָן : וְאַסְגֵי עֲלֵיכוֹן אֱנָשָׁא וּבְעִירָא וְיִסְגוּן וְיִפְשׁוּן וְאוֹתֵיב
12 יַתְכוֹן כִּדְמִלְּקַדְמִין וְאוֹטֵיב לְכוֹן כִּדְמִן אַוְּלָא וְתִדְּעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ : וְאַסְגֵי עֲלֵיכוֹן אֱנָשָׁא
יַת עַמִּי יִשְׂרָאֵל וְיַחְסְנוּנָךְ וּתְהֵי לְהוֹן לְאַחְסָנָא וְלָא תוֹסֵיף עוֹד לְתַכָּלוּתְהוֹן :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAP. XXXVI.

Et tu fili hominis vaticinare super montes Israel, & dices : Montes Israel 1
suscipite verbum Dñi. Hæc dicit Dñs Deus,Pro eo quòd dixit inimic⁹ super 2
vos, Euge, & excelsa seculi in hæreditatem erunt nobis. Propterea vaticinare, 3
& dices : Hæc dicit Dñs Deus, Pro eo quòd magnificati sunt, & pro
eo quòd cogitaverunt evertere & vastare vos per circuitum, ut essetis hæreditas
reliquiis populorum, & carpti estis labio linguæ & detractione populi.
Propterea montes Israel suscipite verbum Dñi : Hæc dicit Dñs Deus montibus 4
& collibus, torrentibus & convallib⁹ & desertis desolatis, & urbibus
relictis quæ fuerunt in derisum, & in subsannationem reliquis populis qui
erant per circuitum. Propterea hæc dicit Dñs Deus : Nisi in igne ultionis 5
meæ decreverim in verbo meo super reliquos populos ; & super Idumæos
omnes, qui posuerunt terram dom⁹ majestatis meæ in hæreditatem sibi, cum
gaudio ex toto corde, & insultatione animi, ut ejicerent eam, & ut vastarent
eam. Propterea vaticinare super terram Israel, & dices montibus & 6
collibus, & rivis & convallibus : Hæc dicit Dñs Deus, Ecce ego in furore
meo, & in indignatione mea decrevi in verbo meo, eò quòd confusionem
populorum sustinuistis. Propterea hæc dicit Dñs Deus : Ecce ego juravi in 7
verbo meo, nisi populi qui vastaverunt vos per circuitum, ipsi confusionem
suam suscipient. Vos autem montes Israel germine vestro proficietis, & 8
fructum vestrum portabitis populo meo Israel : quia propè est ut veniat dies
redemptionis meæ. Quia ecce ego apparebo super vos, & respiciam in 9
verbo meo, ut benefaciam vobis ; & colemini, & seminabimini. Et multiplicabo 10
in vobis homines omnem domum Israel universam, & habitabuntur
civitates & deserta, & reædificabuntur. Et multiplicabo super vos 11
homines & jumenta, & multiplicabuntur & crescent : & habitare faciam
vos sicut à principio, & benefaciam vobis sicut ab initio : & scietis quia ego
Dñs. Et multiplicabo super vos homines populum meum Israel, & possidebunt 12
te, & eris eis in hæreditatem, & non addes ultrà ut eos orbes.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܘ *

* ܘܐܢܬ ܒܪܢܫܐ܂ ܐܬܢܒܐ ܥܠ ܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ܂ ܘܐܡܪ ܠܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ܂ ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ 1
ܕܡܪܝܐ܂ * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ܂ ܥܠ ܕܐܡܪ ܥܠܝܟܘܢ ܒܥܠܕܒܒܐ ܐܘܚ܂ ܘܐܡܪ ܕܪ̈ܡܬܐ 2
ܕܥܠܡ ܠܢ ܐܢܝܢ ܢܗܘܝܢ ܠܝܪܬܘܬܐ܂ * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܬܢܒܐ ܘܐܡܪ܂ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ܂ 3
ܥܠ ܕܐܬܚܣܕܬܘܢ܂ ܘܐܬܚܪܒܬܘܢ܂ ܘܐܬܓܕܦܬܘܢ ܡܢ ܐܝܠܝܢ ܕܚܕܪܝܟܘܢ܂ ܘܗܘܝܬܘܢ
ܝܪܬܘܬܐ ܠܫܪܟܐ ܕܥܡ̈ܡܐ܂ ܘܣܠܩܬܘܢ ܒܡܡܠܠ ܕܠܫܢ̈ܐ܂ ܘܒܬܪܥܝܬܐ ܕܥܡ̈ܡܐ܂ * ܡܛܠܗܢܐ 4
ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ܂ ܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ܂ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ܂ ܠܛܘܪܐ
ܘܠܪ̈ܡܬܐ ܘܠܢ̈ܚܠܐ ܘܠܦܩ̈ܥܬܐ ܘܠܚܘܪ̈ܒܐ ܕܨܕܝܢ ܘܠܡܕܝܢ̈ܬܐ ܫܒܝܩܬܐ ܕܗܘܝ ܠܒܙܬܐ
ܘܠܡܘܚܟܢܐ ܠܫܪܟܐ ܕܥܡ̈ܡܐ ܕܚܕܪܝܟܘܢ܂ * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ܂ ܒܢܘܪܐ 5
ܕܛܢܢܝ ܡܠܠܬ ܥܠ ܫܪܟܐ ܕܥܡ̈ܡܐ ܘܥܠ ܐܕܘܡ ܟܠܗ܂ ܕܝܗܒܘ ܠܗܘܢ ܐܪܥܝ ܠܝܪܬܘܬܐ܂
ܒܚܕܘܬܐ ܕܠܒܗܘܢ ܒܨܥܪܐ ܕܢܦܫܐ܂ ܕܢܒܙܘܢ ܘܢܚܪܒܘܢ܂ * ܡܛܠܗܢܐ ܐܬܢܒܐ ܥܠ 6
ܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ܂ ܘܐܡܪ ܠܛܘܪܐ ܘܠܪ̈ܡܬܐ ܘܠܢ̈ܚܠܐ ܘܠܦܩ̈ܥܬܐ܂ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ܂
ܗܐ ܐܢܐ ܒܛܢܢܝ ܘܒܚܡܬܝ ܡܠܠܬ܂ ܥܠ ܕܩܒܠܬܘܢ ܚܣܕܐ ܕܥܡ̈ܡܐ܂ * ܡܛܠܗܢܐ ܗܟܢܐ 7
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ܂ ܗܐ ܐܢܐ ܐܪܝܡܬ ܐܝܕܝ ܥܠ ܥܡ̈ܡܐ ܕܚܕܪܝܟܘܢ܂ ܕܢܩܒܠܘܢ ܚܣܕܗܘܢ܂
* ܐܢܬܘܢ ܕܝܢ ܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ܂ ܛܪ̈ܦܝܟܘܢ ܬܐܟܠܘܢ܂ ܘܦܐܪ̈ܝܟܘܢ ܬܪܒܘܢ ܠܥܡܝ ܐܝܣܪܝܠ܂ 8
ܡܛܠ ܕܩܪܝܒܘ ܠܡܐܬܐ܂ * ܡܛܠ ܕܗܐ ܐܢܐ ܠܘܬܟܘܢ܂ ܘܬܬܦܠܚܘܢ ܘܬܙܕܪܥܘܢ܂ 9
* ܘܐܣܓܐ ܥܠܝܟܘܢ ܒܢܝ̈ܢܫܐ ܕܟܠܗ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ܂ ܘܢܬܝܬܒܢ ܩܘܪ̈ܝܐ܂ ܘܚܘܪ̈ܒܬܐ 10
ܢܬܒ̈ܢܝܢ܂ * ܘܐܣܓܐ ܥܠܝܟܘܢ ܒܢܝ̈ܢܫܐ ܘܒܥܝܪܐ܂ ܘܢܣܓܘܢ ܘܢܦܫܘܢ܂ ܘܐܘܬܒܟܘܢ 11
ܐܝܟ ܕܡܢ ܩܕܝܡ܂ ܘܐܛܐܒ ܠܟܘܢ ܐܝܟ ܕܒܫܘܪܝܐ܂ ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ܂
* ܘܐܗܠܟ ܒܟܘܢ ܒܢܝ̈ܢܫܐ ܥܡܝ ܐܝܣܪܝܠ܂ ܘܢܐܪܬܘܢܟܘܢ܂ ܘܬܗܘܘܢ ܠܗܘܢ ܠܝܪܬܘܬܐ܂ 12
ܘܠܐ ܬܘܣܦܘܢ ܠܡܬܟܠܘ ܡܢܗܘܢ܂

CAP. XXXVI.

Tu quoque fili hominis, vaticinare de 1
montibus Iſraelis, et dic montibus Iſraelis;
Audite ſermonem Domini, Sic ait Dominus 2
dominorum; Quia de vobis dixit inimicus,
Euge; et dixit, Colles iſti æterni nobis futuri
ſunt in hæreditatem: Iccirco vaticinare, 3
et dic; Sic ait Dominus dominorum, Quia
probris affecti eſtis, exuſti, et blaſphemiis appetiti
ab iis qui circum vos ſunt; fuiſtis hæreditaria
poſſeſſio reliquis gentibus, & ſubjecti
ſermoni linguarum & cogitationi gentium:
Iccirco audite ſermonem Domini domi- 4
norum, montes Iſraelis: Sic ait Dominus dominorum
montibus, collibus, vallibus, planitiebus,
vaſtitatibus deſolatis, & urbibus
derelictis quæ fuerunt direptioni & ſubſannationi
reliquis gentibus circunjacentibus
eis. Iccirco ſic ait Dominus dominorum; In 5
igne zeli mei locutus ſum contra cæteras gentes
& contra totam Idumæam. Quia fecerunt
ſibi terram meam hæreditatem: cum gaudio
cordis ſui ignominiâ affecerunt animas, capiendo
& deprædando eas: Iccirco vaticinare 6
de terra Iſraelis, & dic montibus, collibus,
vallibus, & planitiebus; Sic ait Dominus dominorum,
Ecce ego loquor in zelo & irâ
mea: Quia tuliſtis opprobrium gentium;
Iccirco, Sic ait Dominus dominorum; Ecce 7
ego levavi manum meam ſuper gentes quæ
vos circunſtant, quòd ipſæ reportabunt opprobrium
ſuum: Vos autem montes Iſraelis, 8
frondes veſtras edetis, & fructus veſtros nutrietis
populo meo Iſraeli, quia brevi ſunt venturi.
Nam ecce convertar ad vos, & arabi- 9
mini atque ſeremini: Et multiplicabo ſuper 10
vos homines omnium Iſraelitarum, urbes habitabuntur,
& ruinæ reædificabuntur. Mul- 11
tiplicabo inquam, ſuper vos homines & jumenta,
& creſcent atque multiplicabuntur:
& collocabo vos ut antea, & benefaciam
vobis ut initio; & agnoſcetis me eſſe Dominum:
Faciámque ut ambulent in vobis 12
homines, *nempè* populus meus Iſrael, poſſideant
vos, & ſitis eis in hæreditatem, nec adjiciatis
amplius orbari.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل السادس والثلثون * الاصحاح العشرون *

* وانت يا ابن الانسان تنبا على جبال اسرايل * وقل لجبال اسرايل * اسمعوا قول الرب * هكذا 1
يقول الرب الرب * من اجل ان العدو قال عليكم نعما نعما * خرابات ابدية اذ صيرت لنا 2
للضبط * لاجل هذا تنبا وقل * هكذا يقول الرب الرب الاله * عوض ان اهنتم وبغضتم من 3
الامم الذين حولكم * لتكونوا للضبط في بقايا الامم * وصرتم قولا للسان * وعارا في الامم *
* لاجل هذا يا جبال اسرايل اسمعوا قول الرب * هكذا يقول الرب للجبال والتلال * والاودية 4
والغدران * والغابات الخربة الداثرة * وللمدن المتروكة * التي صارت للنهب * وموطيا لبقية
الامم الذين حولها * لاجل هذا هكذا يقول الرب * بالحقيقة بنار غضبي تكلمت على بقية 5
الامم * وعلى ادوم كلها * لانهم اعطوا لهم ارضي للضبط بسرور * واهانوا نفوسا ليفقدوها بالنهب *
* لاجل هذا تنبا على ارض اسرايل * وقل للجبال والتلال * والغدران والغابات * هكذا يقول 6
ادوناي الرب * ها انا بغيرتي وبغضبي تكلمت * عوض ان تحملوا تعيير الامم * لاجل هذا 7
ها انا ارفع يدي على الامم الذين حولكم * هولاء ياخذون اهانتهم منكم يا جبال اسرايل *
* وياكل شعبي العنب والثمر * لانهم يرجون ان ياتوا * ها انا اطلع عليكم * وتستعملون * 8 9
* واكثر عليكم الناس * كل بيت اسرايل الى النهاية * وتسكن مدنكم * والخروبات تبنى * 10
* واكثر عليكم الناس والبهايم * واسكنكم كما في اوليتكم * واصنعكم جيدا كالزمان 11
الاول * وتعلمون اني انا الرب * واعطي عليكم الناس * شعبي اسرايل * ويرثونكم * وتكونون 12
لهم للضبط * ولا تعودون ان تثكلوا منهم ايضا *

CAP. XXXVI.

Textus vigeſimus.

Et tu O fili hominis, propheta de mon- 1
tibus Iſraelis, & dic montibus Iſraelis;
Audite ſermonem Domini. Sic ait Do- 2
minus Dominus; Quia inimicus dixit de
vobis, Euge, euge; ruinæ ſempiternæ ceſ-
ſerunt jam nobis in poſſeſſionem: Id- 3
circò propheta, & dic; Ita dicit Domi-
nus, Dominus Deus; Quia deſpectui &
odio fuiſtis apud gentes quæ circum vos
ſunt, ut eſſetis poſſeſſioni inter reliquas
gentes; & facti eſtis dicterium linguæ
& opprobrium inter gentes: Propterea 4
O montes Iſraelis, audite ſermonem Do-
mini. Sic dicit Dominus montibus &
collibus, vallibus & torrentibus, ſylvis
deſtructis & deſolatis, urbibuſque de-
relictis quæ factæ ſunt in direptionem &
conculcationem reliquis gentibus quæ cir-
cunſtant eas: Propterea ſic dicit Do- 5
minus; Reverà in igne furoris mei locu-
tus ſum de reliquis gentibus, deque totâ
Idumæa: quia terram meam in poſſeſſio-
nem arrogârunt ſibi cum exultatione, &
deſpexerunt animas ut extinguerent eas
in direptione. Propterea vaticinare de 6
terra Iſraelis, & dic montibus & colli-
bus, torrentibus ac ſylvis; Ita dicit Ado-
nai Dominus; Ecce ego in zelo & ſuo ore
meo locutus ſum: Quia opprobrium gen-
tium patimini; Propterea ego levabo ma- 7
num meam ſuper gentes, quæ circum vos
ſunt: hæ reportabunt ignominiam ſuam à
vobis O montes Iſraelis: Comedétque po- 8
pulus meus uvas & fructum. Quia ſpe-
rant ſe venturos, Ecce ego reſpiciam 9
vos, & colemini: Et multiplicabo ſu- 10
per vos homines, univerſam domum Iſ-
raelis, ſupra modum: & urbes veſtræ ha-
bitabuntur, & destructa reſtaurabuntur.
Multiplicabo inquam, ſuper vos homines 11
& jumenta, cultos reddam vos ut antea,
& rectè diſponam vos ut priſtino tem-
pore: & ſcietis me eſſe Dominum. Da- 12
bóque ſuper vos homines, populum meum
Iſraelem, qui vos poſſidebunt, & eritis
illis in poſſeſſionem, et poſthac non orbabi-
mini amplius illis.

devoratrix , vobis *dicentes* quòd eo Pro , Deus Dominus dixit Sic
13 כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה יַעַן אֹמְרִים לָכֶם אֹכֶלֶת
hominem Propterea .fuiſti tuarum gentium orbatrix & ; *tu hominis*
14 אָדָם אָתְּי וּמְשַׁכֶּלֶת גּוֹיֵךְ הָיִית: לָכֵן אָדָם
dixit ; amplius *impingere facies* non tuas gentes &,amplius devorabis non
לֹא־תֹאכְלִי עוֹד וְגוֹיֵךְ לֹא תְכַשְּׁלִי־־עוֹד נְאֻם
, gentium ignominiam amplius te in faciam audire non Et.Deus Dominꝰ
15 אֲדֹנָי יֱהוִה: וְלֹא־אַשְׁמִיעַ אֵלַיִךְ עוֹד כְּלִמַּת הַגּוֹיִם
facies *impingere* non tuas gentes &:ultrà portabis non populorũ probrũ &
וְחֶרְפַּת עַמִּים לֹא תִשְׂאִי־עוֹד וְגוֹיֵךְ לֹא־תַכְשִׁלִי
: dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et .Deus Dominus dixit,ampliùs
16 עוֹד נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִה: וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר:
polluerunt & ,ſuam humum ſuper *habitantes* Iſrael domus ,hominis Fili
17 בֶּן־אָדָם בֵּית יִשְׂרָאֵל יֹשְׁבִים עַל־אַדְמָתָם וַיְטַמְּאוּ
fuit elongatæ immunditia ſicut ; ſuis *ſtudiis in* & , *ſua via in* eam
אוֹתָהּ בְּדַרְכָּם וּבַעֲלִילוֹתָם כְּטֻמְאַת הַנִּדָּה הָיְתָה
ſanguinem *ſuper* eos ſuper meam iram effudi Et .*meas facies ad* eorum *via*
18 דַרְכָּם לְפָנָי: וָאֶשְׁפֹּךְ חֲמָתִי עֲלֵיהֶם עַל־הַדָּם
.eam polluerunt ſuis idolis *in &* ; terram ſuper effuderunt quem
אֲשֶׁר־שָׁפְכוּ עַל־הָאָרֶץ וּבְגִלּוּלֵיהֶם טִמְּאוּהָ:
, eorum *viam* juxta : terras in ſunt ventilati &,gentes in eos diſperſi Et
19 וָאָפִיץ אֹתָם בַּגּוֹיִם וַיִּזָּרוּ בָּאֲרָצוֹת כְּדַרְכָּם
venerunt *quò* gentes ad *venit* Et .eos judicavi eorum *ſtudia* juxta &
20 וְכַעֲלִילוֹתָם שְׁפַטְתִּים: וַיָּבוֹא אֶל־הַגּוֹיִם אֲשֶׁר־בָּאוּ
Domini Populus,eis *dicendo in*;*meæ ſanctitatis* nomen polluerunt & ,*illuc*
שָׁם וַיְחַלְּלוּ אֶת־שֵׁם קָדְשִׁי בֶּאֱמֹר לָהֶם עַם־יְהוָה
; *meæ ſanctitatis nomine ſuper* peperci Et .ſunt egreſſi ejus terra de & ,hi
21 אֵלֶּה וּמֵאַרְצוֹ יָצָאוּ: וָאֶחְמֹל עַל־שֵׁם קָדְשִׁי
.*illuc* ſunt ingreſſi *quò* ,gentibus in , Iſrael domus *illud* polluerunt quod
אֲשֶׁר חִלְּלֻהוּ בֵּית יִשְׂרָאֵל בַּגּוֹיִם אֲשֶׁר־בָּאוּ שָׁמָּה:
Non , Deus Dominus dixit Sic , Iſrael domui dic Idcirco
22 לָכֵן אֱמֹר לְבֵית־יִשְׂרָאֵל כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה לֹא
,*meæ ſanctitatis* nomen *ad quinimò* ; Iſrael domus *faciens ego* vos propter
לְמַעַנְכֶם אֲנִי עֹשֶׂה בֵּית יִשְׂרָאֵל כִּי אִם־לְשֵׁם־קָדְשִׁי
ſanctificabo Et .*illuc* veniſtis *quò* gentibus in polluiſtis quod
23 אֲשֶׁר חִלַּלְתֶּם בַּגּוֹיִם אֲשֶׁר־בָּאתֶם שָׁם: וְקִדַּשְׁתִּי
polluiſtis quod , gentibus in pollutum , magnum meum nomen
אֶת־שְׁמִי הַגָּדוֹל הַמְחֻלָּל בַּגּוֹיִם אֲשֶׁר חִלַּלְתֶּם
Dominus ait ,Dominus *ego* quòd gentes ſcient & : earum medio in
בְּתוֹכָם וְיָדְעוּ הַגּוֹיִם כִּי־אֲנִי יְהוָה נְאֻם אֲדֹנָי
vos Tollámque .eorum oculis in vobis in *me ſanctificari in* , Deus
24 יֱהוִה בְּהִקָּדְשִׁי בָכֶם לְעֵינֵיהֶם: וְלָקַחְתִּי אֶתְכֶם
faciam venire & : terris univerſis de vos congregabo & , gentibus de
מִן־הַגּוֹיִם וְקִבַּצְתִּי אֶתְכֶם מִכָּל־הָאֲרָצוֹת וְהֵבֵאתִי
, *mundas aquas* vos ſuper ſpargam Et .veſtram terram in vos
25 אֶתְכֶם אֶל־אַדְמַתְכֶם: וְזָרַקְתִּי עֲלֵיכֶם מַיִם טְהוֹרִים
univerſis ab & , veſtris inquinamentis omnibus ab : mundabimini &
וּטְהַרְתֶּם מִכֹּל טֻמְאוֹתֵיכֶם וּמִכָּל־־
ſpiritum &,novum cor vobis dabo Et .vos mundabo veſtris idolis
26 גִּלּוּלֵיכֶם אֲטַהֵר אֶתְכֶם: וְנָתַתִּי לָכֶם לֵב חָדָשׁ וְרוּחַ
,veſtra carne è *lapidis* cor amovebo & : *veſtro interiore* in dabo novum
חֲדָשָׁה אֶתֵּן בְּקִרְבְּכֶם וַהֲסִרֹתִי אֶת־לֵב הָאֶבֶן מִבְּשַׂרְכֶם
; *veſtro interiori* in dabo meum ſpiritum Et .carneum cor vobis dabo &
27 וְנָתַתִּי לָכֶם לֵב בָּשָׂר: וְאֶת־רוּחִי אֶתֵּן בְּקִרְבְּכֶם
,cuſtodiatis mea judicia &,ambuletis meis *ſtatutis* in quod faciam &
וְעָשִׂיתִי אֵת אֲשֶׁר־בְּחֻקַּי תֵּלֵכוּ וּמִשְׁפָּטַי תִּשְׁמְרוּ
: veſtris patribus dedi quam terra in habitabitis Et .faciatis &
28 וַעֲשִׂיתֶם: וִישַׁבְתֶּם בָּאָרֶץ אֲשֶׁר נָתַתִּי לַאֲבֹתֵיכֶם
.Deum in vobis ero ego &,populum in mihi eritis &
וִהְיִיתֶם לִי לְעָם וְאָנֹכִי אֶהְיֶה לָכֶם לֵאלֹהִים:

Verſio VULG. LAT.

13 Hæc dicit Dominus Deus ; Pro eo quòd dicunt de vobis ;Devoratrix hominum es, & ſuffocans gentem tuam : 14 Proptereà homines non comedes ampliùs, & gentem tuam non necabis ultrà, 15 ait Dominus Deus : Nec auditã faciam in te ampliùs confuſionẽ Gentium, & opprobrium populorum nequaquam portabis, & gentẽ tuam non amittes ampliùs, 16 ait Dominus Deus. Et factum eſt verbum Domini ad me, dicens ; 17 Fili hominis, domus Iſrael habitaverunt in humo ſua,& polluerũt eam in viis ſuis,& in ſtudiis ſuis;juxta immunditiã menſtruatæ facta eſt via eorum coram me. 18 Et effudi indignationem meam ſuper eos pro ſanguine,quem fuderunt ſuper terram, & in idolis 19 ſuis polluerunt eam. Et diſperſi eos in Gentes, & ventilati ſunt in terras:juxta vias eorum, & adinventiones eorum judicavi eos. 10 Et ingreſſi ſũt ad Gentes ad quas introierunt, & polluerũt nomen ſanctum meum, cùm diceretur de eis ; Populus Domini iſte eſt, & 21 de terra ejus ingreſſi ſunt. Et peperci nomini ſancto meo, quod polluerat domus Iſrael in Genti- 22 bus, ad quas ingreſſi ſunt. Idcircò dices domui Iſrael ; Hæc dicit Dñs Deꝰ ; Non propter vos ego faciam, domus Iſrael,ſed propter nomen ſanctum meum,quod polluiſtis in Gentibꝰ, ad quas intrâ- 23 ſtis. Et ſanctificabo nomen meũ magnum, quod pollutum eſt inter Gentes, quod polluiſtis in medio earum : ut ſciant Gentes quia ego Dominꝰ, ait Dominus exercituum, cùm ſanctificatꝰ fue- 24 ro in vobis coram eis. Tollam quippe vos de Gentibus, & congregabo vos de univerſis terris, & adducam vos in terram ve- 25 ſtram. Et effundam ſuper vos aquam mundam, & mundabimini ab omnibꝰ inquinamentis veſtris, & ab univerſis idolis veſtris 26 mundabo vos. Et dabo vobis cor novum, & ſpiritum novum ponam in medio veſtrî : & auferam cor lapideũ de carne veſtra, 27 & dabo vobis cor carneum. Et ſpiritum meum ponam in medio veſtrî: & faciam ut in præceptis meis ambuletis, & judicia mea 28 cuſtodiatis & operemini. Et habitabitis in terra, quam dedi patribꝰ veſtris : & eritis mihi in populum, & ego ero vobis in Deum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

13 Τάδε λέγει (υ) κύριος κύριος, Ἀνθ' ὧν εἶπάν σοι, Κατέσθουσα ἀνθρώπους εἶ, καὶ ἠτεκνωμένη ὑπὸ τοῦ ἔθνους σου ἐγένου· 14 Διατοῦτο ἀνθρώπους οὐκέτι φάγεσαι, καὶ τὸ ἔθνος σου οὐκ (φ) ἀτεκνώσεις ἔτι, λέγει κύριος 15 κύριος. Καὶ οὐκ ἀκουσθήσεται οὐκέτι ἐφ' ὑμᾶς ἀτιμία ἐθνῶν, καὶ (χ) ὀνειδισμοὺς λαῶν οὐ μὴ ἀνενέγκητε ἔτι, λέγει (ψ) κύριος κύ- 16 ριος. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρός με, 17 λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, οἶκος Ἰσραὴλ (ω) κατῴκησεν ἐπὶ τῆς γῆς αὐτῶν, καὶ (α) ἐμίαναν αὐτὴν ἐν τῇ ὁδῷ αὐτῶν, καὶ ἐν τοῖς εἰδώλοις αὐτῶν, καὶ ἐν ταῖς ἀκαθαρσίαις αὐτῶν, (β) καὶ κατὰ τὴν ἀκαθαρσίαν τῆς ἀποκαθημένης ἐγενήθη ἡ ὁδὸς αὐτῶν πρὸ προσώπου 18 μου· Καὶ ἐξέχεα τὸν θυμόν μου ἐπ' αὐ- 19 τοὺς (γ), Καὶ διέσπειρα αὐτοὺς εἰς τὰ ἔθνη, καὶ ἐλίκμησα αὐτοὺς εἰς τὰς χώρας, κατὰ (δ) τὴν ὁδὸν αὐτῶν, καὶ κατὰ τὴν ἁμαρτίαν αὐτῶν 20 ἔκρινα αὐτούς. Καὶ (ε) εἰσῆλθον εἰς τὰ ἔθνη, οὗ (ζ) εἰσῆλθον ἐκεῖ, καὶ ἐβεβήλωσαν τὸ ὄνομά μου τὸ ἅγιον ἐν τῷ λέγεσθαι αὐτούς, Λαὸς κυρίου οὗτοι, καὶ ἐκ τῆς γῆς (η) αὐτοῦ ἐξε- 21 ληλύθασιν. Καὶ ἐφεισάμην αὐτῶν διὰ τὸ ὄνομά μου τὸ ἅγιον, ὃ ἐβεβήλωσαν οἶκος Ἰσραὴλ ἐν τοῖς ἔθνεσιν, οὗ εἰσήλθοσαν ἐκεῖ. 22 Διατοῦτο εἰπὸν τῷ οἴκῳ Ἰσραήλ, Τάδε λέγει (θ) κύριος, Οὐχ ὑμῖν ἐγὼ ποιῶ οἶκος Ἰσραήλ, ἀλλ' ἢ διὰ τὸ ὄνομά μου τὸ ἅγιον, ὃ ἐβεβηλώσατε ἐν τοῖς ἔθνεσιν, οὗ 23 (ʹ) εἰσήλθετε ἐκεῖ. Καὶ ἁγιάσω τὸ ὄνομά μου τὸ (ι) μέγα, τὸ βεβηλωθὲν ἐν τοῖς ἔθνεσιν, ὃ ἐβεβηλώσατε ἐν μέσῳ αὐτῶν, καὶ γνώσονται τὰ ἔθνη ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος, (κ) ἐν τῷ ἁγιασθῆναί με ἐν ὑμῖν κατ' ὀφθαλ- 24 μοὺς αὐτῶν. Καὶ λήψομαι ὑμᾶς ἐκ τῶν ἐθνῶν, καὶ ἀθροίσω ὑμᾶς ἐκ πασῶν τῶν γαι- 25 ῶν, καὶ εἰσάξω ὑμᾶς εἰς τὴν γῆν ὑμῶν, Καὶ ῥανῶ ἐφ' ὑμᾶς (ʺ) καθαρὸν ὕδωρ, καὶ καθαρισθήσεσθε ἀπὸ πασῶν τῶν ἀκαθαρσιῶν ὑμῶν, καὶ ἀπὸ πάντων τῶν εἰδώλων ὑμῶν, καὶ καθα- 26 ριῶ ὑμᾶς· Καὶ δώσω ὑμῖν καρδίαν καινήν, καὶ πνεῦμα καινὸν δώσω ἐν ὑμῖν, καὶ ἀφελῶ τὴν καρδίαν τὴν λιθίνην ἐκ τῆς σαρκὸς ὑμῶν, 27 καὶ δώσω ὑμῖν καρδίαν σαρκίνην· Καὶ τὸ πνεῦμά μου δώσω ἐν ὑμῖν, καὶ ποιήσω ἵνα ἐν τοῖς δικαιώμασί μου πορεύησθε, καὶ τὰ κρίματά μου (ʹ) φυλάξησθε, καὶ ποιή- 28 σητε. Καὶ κατοικήσετε ἐπὶ τῆς γῆς ἧς ἔδωκα τοῖς πατράσιν ὑμῶν, καὶ ἔσεσθέ μοι εἰς λαόν, καὶ ἐγὼ ἔσομαι ὑμῖν εἰς θεόν.

Hæc dicit Dominus Dominus ; 13 *Pro eo quòd dixerunt tibi, (b) Devoratrix hominum es,& abſque liberis de gente tua facta es: Proptereà homines non comedes* 14 *ampliùs, & gentem tuam liberis non orbabis ultrà , ait Dominus Dominus: Et non audietur ultrà* 15 *ſuper vos ignominia gentium: et opprobria populorum nequaquàm portabitis (i)ampliùs, ait Dominus Dominus. Et factum eſt ver-* 16 *bum Domini ad me, dicens ; Fili* 17 *hominis, domus Iſrael habitavit in terra ſua: & polluerunt eam in via ſua,& in idolis ſuis,et in ſuis immunditiis: Et juxta immunditiam menſtruatæ facta eſt via eorum coram me : Et effudi* 18 *furorem meum ſuper (k)eos : Et* 19 *diſſeminavi eos in gentes,et ventilavi eos in regiones : juxta viam eorum & juxta (l)peccatum eorum judicavi eos. Et ingreſſi* 10 *ſunt ad gentes , quò ingreſſi ſunt illuc,& polluerunt nomen ſanctum meum, cùm(m)dicerentur ipſi, Populus Domini iſti : & de terra ejus egreſſi ſunt. Et peperci* 21 *eis propter nomen meum ſanctũ, quod polluerant domus Iſrael in gentibus, quò ingreſſi ſunt illuc. Idcircò dic domui Iſrael ; Hæc* 22 *dicit Dominus ; Non vobis ego facio,domus Iſrael, ſed propter nomen meum ſanctum, quod polluiſtis in gentibus, quò intrâſtis illuc. Et ſanctificabo nomen me-* 23 *um magnum, quod pollutum eſt in gentibus,quod polluiſtis in medio earum:& ſcient gentes, quia ego ſum Dominus ; cum ſanctificatus fuero in vobis ante oculos earum. Et tollam vos de gentibꝰ,* 24 *& congregabo vos de univerſis terris, & introducam vos in terram veſtram. Et aſpergam ſuper* 25 *vos aquam mundam: & mundabimini ab omnibus immunditiis veſtris,& ab omnibus idolis veſtris,(n)& mundabo vos. Et da-* 26 *bo vobis cor novum: & ſpiritum novum dabo in vobis: et auferam cor lapideum de carne veſtra : et dabo vobis cor carneum: Et ſpi-* 27 *ritum meum dabo in vobis: et faciam, ut in juſtificationibus meis ambuletis, et judicia mea cuſtodiatis, et (o) faciatis. Et habita-* 28 *bitis in terra, quam dedi patribus veſtris:et eritis mihi in populum: et ego ero vobis in Deum.*

MS.A. (υ) ἀδωναῒ κύριος, (φ) ἀτεκνώσεις σε οὐκέτι, λέγει ἀδωναῒ κύριος. (χ) ὀνειδισμὸν ἐθνῶν οὐ μὴ ἐνέγκητε (ψ) κύριος ὁ θεός. (ω) κατῴκησαν (α) ἐν ταῖς ἀκαθαρσίαις αὐτῶν ἐμίαναν αὐτὴν ἐν τῇ (β) κατὰ τὴν ἀκαθαρσίαν τῆς ἀφέδρου ἐγενήθη (γ) περὶ τοῦ αἵματος οὗ ἐξέχεαν ἐν τῇ γῇ, καὶ ἐν τοῖς εἰδώλοις αὐτῶν ἐμίαναν αὐτήν. Καὶ διέσπειρα (δ) τὰς ὁδοὺς αὐτῶν, καὶ κατὰ τὰς ἀνομίας αὐτῶν ἔκρινα (ε) εἰσήλθοσαν (ζ) εἰσήλθοσαν (η) αὐτῶν ἐξήλθοσαν. (θ) ἀδωναῒ κύριος, (ʹ) εἰσήλθετε (ι) ἅγιον, τὸ (κ) λέγει ἀδωναῒ κύριος, ἐν τῷ (ʺ) ὕδωρ καθαρόν, (ʹ) φυλάξεσθε, καὶ ποιήσετε.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

13 כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים חֲלַף דְּאָמְרִין לְכוֹן מְקַטֶּלֶת אֱנָשָׁא אַתְּ וּמְתַכֶּלֶת עַמִּיךְ הֲוֵית:
14 בְּכֵן אֱנָשָׁא לָא תְקַטְלִין עוֹד וְעַמִּיךְ לָא תְתַכְּלִין עוֹד אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים: 15 וְלָא אַשְׁמַע לִיךְ
עוֹד אִתְכְּנָעוּת עַמְמַיָּא וְחִסּוּדֵי עַמְמַיָּא לָא תְקַבְּלִין עוֹד וְעַמִּיךְ לָא תְתַכְּלִין עוֹד אֲמַר יְיָ
16 אֱלֹהִים: וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי לְמֵימַר: 17 בַּר אָדָם בֵּית יִשְׂרָאֵל יָתְבִין
עַל אַרְעֲהוֹן וְסָאִיבוּ יָתַהּ בְּאוֹרְחָתְהוֹן וּבְעוֹבָדֵיהוֹן כְּסוֹאֲבַת אִתְּתָא טוּמְאָה הֲוָת
18 אוֹרְחַתְהוֹן קֳדָמָי: וּשְׁפֵיכִית חֵימְתִי עֲלֵיהוֹן עַל דַּם זַכַּי דְּאַשַׁדוּ עַל אַרְעָא וּבְפוּלְחַן
19 טַעֲוָתְהוֹן סַאֲבוּהָ: וְאַגְלֵיתִי יָתְהוֹן לְבֵינֵי עַמְמַיָּא וְאִתְבַּדַּרוּ בִּמְדִינָתָא כְּאוֹרְחָתְהוֹן
20 בִּישָׁתָא וּכְעוֹבָדֵיהוֹן מְקַלְקְלַיָּא אִתְפְּרַעִית מִנְּהוֹן: וְעָלוּ לְבֵינֵי עַמְמַיָּא דְּאִתְגְּלִיאוּ
לְתַמָּן עַל דְּאַחִילוּ יַת שְׁמָא דְקוּדְשִׁי בִּדְאָמְרִין לְהוֹן אִם עַמֵּיהּ דַּיְיָ אִלֵּין וְאֵיכְדֵין מֵאַרְעָא
21 בֵּית שְׁכִנְתֵּיהּ גְּלוֹ: וְחָסֵית עַל שְׁמָא דְקוּדְשִׁי דְּאַחִילוּהִי בֵּית יִשְׂרָאֵל בֵּינֵי עַמְמַיָּא
22 דְּאִתְגְּלִיאוּ לְתַמָּן: בְּכֵן אֱמַר לְבֵית יִשְׂרָאֵל כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים לָא בְדִילְכוֹן אֲנָא
עָבֵיד בֵּית יִשְׂרָאֵל אֱלָהֵין עַל שְׁמָא דְקוּדְשִׁי דְּאַחֵילְתּוּן בֵּינֵי עַמְמַיָּא דְּאִתְגְּלִיתוּן לְתַמָּן:
23 וְאַקַדֵּשׁ יַת שְׁמִי רַבָּא דְּאִתַּחַל בֵּינֵי עַמְמַיָּא דְּאַחֵילְתּוּן בֵּינֵיהוֹן וְיִדְעוּן עַמְמַיָּא אֲרֵי אֲנָא
24 יְיָ אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים כַּד אֶתְקַדַּשׁ בְּכוֹן לְעֵינֵיהוֹן: וַאֲקָרֵיב יָתְכוֹן מִבֵּינֵי עַמְמַיָּא וְאַכְנֵישׁ
25 יָתְכוֹן מִכָּל מְדִינָתָא וְאָעֵיל יָתְכוֹן לְאַרְעֲכוֹן: וְאֶשְׁבּוֹק לְחוֹבֵיכוֹן כְּמָא דְמִדַּכַּן בְּמֵי
אַדְיוּתָא וּבִקְטַם תּוֹרְתָא דְחַטָּאתָא וְתִדְכּוּן מִכָּל סַאֲבָתְכוֹן וּמִכָּל טַעֲוָתְכוֹן אֲדַכֵּי
26 יָתְכוֹן: וְאֶתֵּן לְכוֹן לֵב דָּחֵיל וְרוּחַ דְּחִילָא אֶתֵּן בִּמְעֵיכוֹן וְאֶתְבַּר לִבָּא דְרִשְׁעָא דְהוּא
27 תַקִּיף כְּאַבְנָא מִבִּסְרְכוֹן וְאֶתֵּן לְכוֹן לֵב דָּחֵיל קֳדָמַי לְמֶעְבַּד רְעוּתִי: וְיַת רוּחַ קוּדְשִׁי
28 אֶתֵּן בִּמְעֵיכוֹן וְאַעְבֵיד יַת דִּי בִקְיָמַי תְּהָכוּן וְדִינַי תִּטְּרוּן וְתַעְבְּדוּן: וְתֵיתְבוּן בְּאַרְעָא
דִּיהָבֵית לַאֲבָהָתְכוֹן וּתְהוֹן קֳדָמַי לְעַם וַאֲנָא אֱהֵוֵי לְכוֹן לֶאֱלָהָא:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Hæc dicit Dñs Deus : Pro eo quòd dicunt tibi, Interficiens homines es tu 13
& abſq; liberis faciens populum tuum. Proptereà homines non interficies 14
amplius, & populum tuum non facies ultrà abſq; liberis, ait Dñs Deus. Nec 15
audire faciam te ultrà ignominiam populorum, nec opprobrium gentium
ſuſtinebis, nec tuam ampliùs gentem orbabis, inquit Dñs Deus. Et factum 16
eſt verbum prophetiæ à facie Dñi ad me, dicens : Fili hominis,domus Iſrael 17
habitaverunt in terra ſua, & polluerunt eam in viis ſuis, & operibus ſuis :
juxta pollutionem mulieris immundæ fuit via eorum coram me. Et effudi indignationem 18
meam ſuper eos propter ſanguinem innocentem, quem effuderunt
ſuper terram : & cultu idolorum ſuorum polluerunt eam. Et migrare 19
feci eos inter populos, & diſperſi eos per provincias: juxta *vias* illorum *peſſimas*,
& juxta opera eorum corrupta ultionem ſumpſi ex eis. Et ingreſſi 20
ſunt inter populos, ad quos migraverunt, pro eo quòd violaverunt nomen
ſanctum meum, cùm dicebant eis, Si populus Dñi ſunt iſti, quomodo ergo
migraverunt à terra domus majeſtatis ejus ? Et peperci nomini ſancto meo, 21
quod violaverunt domꝰ Iſrael inter populos ad quos migraverunt. Proptereà 22
dic domui Iſrael:Hæc dicit Dñs Deꝰ:Non propter vos ego facio domꝰ Iſrael,
ſed propter nomen ſanctum meum, quod prophanâſtis inter populos ad quos
migrâſtis. Et ſanctificabo nomen meum magnum, quod violatum eſt inter 23
populos, quod violâſtis inter eos ; & ſcient populi quia ego Dñs, ait Dñs
Deus : cùm ſanctificatus fuero in vobis ante oculos eorum. Et applicabo 24
vos de medio populorum, & congregabo vos de omnibus provinciis, & introducam
vos in terram veſtram. Et dimittam peccata veſtra, ſicut mundantur 25
aqua aſperſionis, & cinere vaccæ quæ [*immolatur*] pro peccato : &
mundabimini ab omnibus immunditiis veſtris, & ab omnibus idolis veſtris
mundabo vos.Et dabo vobis cor timens,& ſpiritum *timentem* dabo in viſceribus 26
veſtris, & conteram cor impium, quod eſt durum ſicut lapis, de carne
veſtra, & dabo vobis cor timens coram me, ut faciat voluntatem meam. Et 27
ſpiritum ſanctũ meum dabo in viſceribꝰ veſtris,& faciam ut in præceptis meis
ambuletis, & judicia mea cuſtodiatis & faciatis. Et habitabitis in terra quam 28
dedi patribꝰ veſtris:& eritis coram me in populum,& ego ero vobis in Deum.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܐܡܪܝܢ ܠܟܝ ܐܟܠܬ ܒܢܝܢܫܐ ܐܢ̱ܬܝ ܘܡܬܟܠܢܝܬ ܥܡܟܝ.. 13
* ܡܟܝܠ ܒܢܝܢܫܐ ܠܐ ܬܐܟܠܝܢ. ܘܥܡܟܝ ܬܘܒ ܠܐ ܬܬܟܠܝܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. * ܘܠܐ 14 15
ܐܫܡܥ ܒܟܝ ܚܣܕܐ ܕܥܡܡܐ. ܘܚܘܣܪܢܗܘܢ ܬܘܒ ܠܐ ܬܣܝܒܪܝܢ. ܘܥܡܟܝ ܬܘܒ ܠܐ ܬܬܟܠܝܢ.
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. * ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ. ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ 16
ܝܬܒܝܢ ܒܐܪܥܗܘܢ. ܘܛܢܦܘܗ ܒܐܘܪܚܬܗܘܢ ܘܒܥܒܕܝܗܘܢ. ܘܐܝܟ ܛܢܦܘܬܐ ܕܕܫܬܢܝܬܐ. 17
ܗܘܬ ܐܘܪܚܗܘܢ ܩܕܡܝ. * ܘܐܫܕܬ ܚܡܬܝ ܥܠܝܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܡܐ ܕܐܫܕܘ ܒܐܪܥܐ 18
ܘܛܢܦܘܗ ܒܦܬܟܪܝܗܘܢ. * ܘܒܕܪܬ ܐܢܘܢ ܒܥܡܡܐ. ܘܙܪܝܬ ܐܢܘܢ ܒܡܕܝܢܬܐ. ܘܐܝܟ 19
ܐܘܪܚܬܗܘܢ ܘܐܝܟ ܥܒܕܝܗܘܢ ܕܢܬ ܐܢܘܢ. * ܘܐܙܠܘ ܠܘܬ ܥܡܡܐ. ܘܛܢܦܘ ܫܡܐ 20
ܕܩܘܕܫܝ. ܘܐܡܪܝܢ ܗܘܘ ܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. ܥܡܗ ܗܢܘܢ ܕܡܪܝܐ. ܘܡܢ ܐܪܥܗ ܢܦܩܘ.
* ܘܚܣܬ ܥܠ ܫܡܐ ܕܩܘܕܫܝ. ܕܛܢܦܘܗܝ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܒܝܬ ܥܡܡܐ ܕܐܙܠܘ ܠܬܡܢ. 21
* ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܡܪ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ: ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܠܐ ܗܘܐ ܡܛܠܬܟܘܢ 22
ܥܒܕ ܐܢܐ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܐܠܐ ܡܛܠ ܫܡܐ ܕܩܘܕܫܝ: ܕܛܢܦܬܘܢ ܒܝܬ ܥܡܡܐ ܕܐܙܠܬܘܢ
ܠܬܡܢ. * ܘܐܩܕܫ ܫܡܝ ܪܒܐ. ܕܐܬܛܢܦ ܒܝܬ ܥܡܡܐ. ܕܛܢܦܬܘܢܝܗܝ ܒܝܢܬܗܘܢ. 23
ܘܢܕܥܘܢ ܥܡܡܐ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܟܕ ܐܬܩܕܫ ܒܟܘܢ ܠܥܝܢܝܗܘܢ.
* ܘܐܕܒܪܟܘܢ ܡܢ ܥܡܡܐ. ܘܐܟܢܫܟܘܢ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܐܥܠܟܘܢ ܠܐܪܥܟܘܢ. * ܘܐܪܣܣ 24 25
ܥܠܝܟܘܢ ܡܝܐ ܕܟܝܐ. ܘܐܕܟܝܟܘܢ ܡܢ ܟܠܗܝܢ ܛܢܦܘܬܟܘܢ. ܘܡܢ ܟܠܗܘܢ ܦܬܟܪܝܟܘܢ.
* ܘܐܬܠ ܠܟܘܢ ܠܒܐ ܚܕܬܐ. ܘܪܘܚܐ ܚܕܬܐ ܐܬܠ ܒܓܘܟܘܢ. ܘܐܥܒܪ ܠܒܐ ܕܟܐܦܐ ܡܢ 26
ܒܣܪܟܘܢ. ܘܐܬܠ ܠܟܘܢ ܠܒܐ ܕܒܣܪܐ. * ܘܐܬܠ ܪܘܚܝ ܒܓܘܟܘܢ. ܘܐܥܒܕ ܕܒܦܘܩܕܢܝ 27
ܬܗܠܟܘܢ. ܘܕܝܢܝ ܬܛܪܘܢ. ܘܬܥܒܕܘܢ ܐܢܘܢ. * ܘܬܬܒܘܢ ܒܐܪܥܐ ܕܝܗܒܬ ܠܐܒܗܬܟܘܢ. 28
ܘܬܗܘܘܢ ܠܝ ܥܡܐ. ܘܐܢܐ ܐܗܘܐ ܠܟܘܢ ܐܠܗܐ.

Sic ait Dominus dominorum; Quia dicunt 13
tibi, Devoratrix hominum es, & populi tui
orbatrix; Poſthac homines nequaquam devorabis, 14
neque populum tuum orbabis ampliùs,
ait Dominus dominorum: Neque patiar poſthac 15
ut audiatur de te opprobrium gentium, &
convitia earum non feres ampliùs, ait Dominus
dominorum. Deinde fuit ad me ſermo 16
Domini, dicendo, Fili hominis, Iſraelitæ habitantes 17
in terra ſua, polluerunt eam viis &
actionibus ſuis, & qualis eſt impuritas menſtrua
patientis, talis erat via ipſorum coram
me: Quapropter effudi iram meam ſuper eos 18
propter ſanguinem quem effuderunt ſuper
terrâ, et contaminaverunt eam idolis ſuis: Diſſipavi 19
eos inter gentes, & diſperſi eos per urbes:
& ſecundùm vias eorum, & ſecundùm
actiones eorum judicavi eos. Cúmque abiiſſent 20
inter gentes, prophanaverunt nomen
ſanctiſſimum meum; ita ut dicerent eis gentes,
Iſtíne populus Dei ſunt, & ex ejus terra
prodierunt? Itaque clementiâ commotus ſum 21
erga nomen meum ſanctiſſimum quod prophanaverunt
Iſraelitæ inter gentes ad quas
abierunt: Ideò dic Iſraelitis; Sic ait Dominus 22
dominorum; Haudquaquam propter vos
facturus ſum Iſraelitæ, ſed propter nomen
ſanctiſſimum meum quod prophanâſtis inter
gentes ad quas abiiſtis: Ut ſanctificem nomen 23
meum maximum quod prophanatum eſt inter
gentes, quod prophanâſtis inter eas; & ſcient
gentes me eſſe Dominum, ait Dominus dominorum,
quum ſanctificatus fuero in vobis
coram ipſis. Aſſumam vos è gentibus, colligam 24
vos ex urbibus, & adducam vos in terram
veſtram. Aſpergam vos aquis mundis, & 25
mundabo vos omnibus impuritatibus veſtris,
omnibúſque idolis veſtris: Dabo vobis cor 26
novum, & ſpiritum novum indam præcordiis
veſtris; & amoto corde lapideo de carne veſtra,
dabo vobis cor carneum: Ponam ſpiritum 27
meum in præcordiis veſtris, & efficiam
ut in præceptis meis ambuletis, judicia mea
ſervetis & perficiatis; Atque *ita* habitetis in 28
terra quam dedi majoribus veſtris, ſitis mihi
populus, & ego ſim vobis Deus.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* هكذا يقول ادوناي الرب * من اجل انهم قالوا لك انت اكلة الناس * وصرت مثكولة من 13
امتك * لاجل هذا لا تاكلين الناس ايضا * وامتك لا تثكلك ايضا * قال ادوناي الرب * ولا 14 15
تسمع عليكم ايضا اهانة الامم * ولا تحملوها ايضا * يقول الرب الاله * وكان قول الرب الي قايلا * 16
* يا ابن الانسان * بيت اسرايل سكنوا علي ارضهم * وبنجاساتهم نجسوها بطرقهم * وباصنامهم 17
وبنجاساتهم كنجاسة الحايض صارت ارضهم امام وجهي * وافضت غضبي عليهم من 18
اجل الدم الذي اراقوه في الارض * وباوثانهم نجسوها * فبددتهم في الامم * واذريتهم في البلدان * 19
كطرقهم وكاثامهم دنتهم * ودخلوا الي الامم حيث دخلوا هناك * ودنسوا اسمي القدوس * 20
عندما قالوا شعب الرب هم * ومن ارضهم خرجوا * وشفقت عليهم لاجل اسمي القدوس 21
الذي دنسه بيت اسرايل في الامم حيث دخلوا هناك * لاجل هذا قل لبيت اسرايل * هكذا 22
يقول ادوناي الرب * ليس لكم صنعت انا يا بيت اسرايل * لكن لاجل اسمي القدوس
الذي دنستموه في الامم حيث دخلتم هناك * واقدس اسمي القدوس المدنس في الامم * 23
الذي دنستموه في وسطهم * ويعلم الامم اني انا الرب * يقول ادوناي الرب * عندما اتقدس
فيكم بعيونهم * واخذكم من الامم * واجمعكم من جميع الارضين * وادخلكم الي 24
ارضكم * وانضح عليكم ماء نقيا * وتطهرون من جميع نجاساتكم ومن جميع 25
اوثانكم * واطهركم * واعطيكم قلبا جديدا * وروحا جديدة اعطي فيكم * وانزع 26
القلب الحجري من جسدكم * واعطيكم قلبا لحميا * وروحي اعطي فيكم * واجعلكم كي 27
تسيروا بمعادلي * وتحفظون احكامي وتصنعونها * وتسكنون علي الارض التي اعطيتها 28
لابايكم * وتكونون لي شعبا * وانا اكون لكم الها *

Ita dicit Adonai Dominus; Quia dixerunt 13
tibi, Tu devoratrix hominum es, &
facta es orbata gente tuâ: Proptereà 14
non devorabis ampliùs homines, & gens
tua non orbabitur te ampliùs, dixit Adonai
Dominus: Non audietur ampliùs 15
de vobis ignominia gentium, nec ampliùs
patiemini eam, dicit Dominus Deus. Fuit 16
etiam ſermo Domini ad me, dicens; O 17
fili hominis, domus Iſraelis ſuper terram
ſuam habitantes, ſordibus ſuis polluebant
eam in viis ſuis; adeóque propter
idola & turpitudines eorum, velut ſordes
menſtrua patientis facta fuerat terra
eorum coram facie mea: Ideò fudi ſuper 18
eos furorem meum. Propter ſanguinem
quem in terra fuderunt, eámque ſuis
idolis contaminaverunt; Diſperſi eos 19
inter gentes, & diſſeminavi eos per regiones:
ſecundùm vias eorum, & ſecundùm
iniquitates eorum judicavi eos.
Ad gentes autem ingreſſi quocunque ingreſſi 20
ſunt, polluerunt nomen meum ſacroſanctum,
cùm dicerent populum Domini
ſe eſſe, & de terra ſua exiiſſe. Attamen 21
peperci eis propter nomen meum ſacroſanctum
quod polluerat domus Iſraelis
inter gentes ad quas ingreſſi ſunt. Proptereà 22
dic domui Iſraelis; Ita dicit Adonai
Dominus, Non veſtrî causâ feci ego
O domus Iſraelis, ſed propter nomen
meum ſacroſanctum quod polluiſtis inter
gentes ad quas ingreſſi eſtis. Et ſanctificabo 23
nomen meum ſacroſanctum prophanatum
inter gentes, quod prophanâſtis in
medio earum: & ſcient gentes me eſſe
Dominum, dicit Adonai Dominus, quum
ſanctificatus fuero in vobis coram oculis
earum. Recipiam vos è gentibus, & 24
colligam vos ex omnibus terris, introducámque
vos in terram veſtram; Et aſpergam 25
vos aquâ mundâ, & emundabimini
cunctis ſordibus veſtris, cunctíſque
idolis veſtris. Mundabo vos inquam, 26
& dabo vobis cor novum, & ſpiritum novum
indam vobis; & auferam cor lapideum
è corpore veſtro, dabóque vobis cor
carneum. Spiritum meum dabo in vobis, 27
& efficiam ut ambuletis in juſtitiis
meis, judicia mea cuſtodiatis & perficiatis:
Adeóque habitabitis ſuper terram 28
quam dedi patribus veſtris; & eritis
mihi populus, & ego ero vobis Deus;

devoratrix , vobis *dicentes* quòd eo Pro , Deus Dominus dixit Sic
13 כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה יַעַן אֹמְרִים לָכֶם אֹכֶלֶת
hominem Propterea .fuisti tuarum gentium orbatrix & ; *tu hominis*
14 אָדָם אָתְּי וּמְשַׁכֶּלֶת גּוֹיִךְ הָיִית : לָכֵן אָדָם
dixit ; amplius *impingere facies* non tuas gentes &,amplius devorabis non
לֹא־תֹאכְלִי עוֹד וְגוֹיִךְ לֹא תְכַשְּׁלִי־עוֹד נְאֻם
, gentium ignominiam amplius te in faciam audire non Et.Deus Domin⁹
15 אֲדֹנָי יֱהוִה : וְלֹא־אַשְׁמִיעַ אֵלַיִךְ עוֹד כְּלִמַּת הַגּוֹיִם
facies *impingere* non tuas gentes &:ultrà portabis non populorũ probrũ &
וְחֶרְפַּת עַמִּים לֹא תִשְׂאִי־עוֹד וְגוֹיִךְ לֹא־תַכְשִׁלִי
: dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et .Deus Dominus dixit,ampliùs
16 עוֹד נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִה : וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר :
polluerunt & ,suam humum super *habitantes* Israel domus ,hominis Fili
17 בֶּן־אָדָם בֵּית יִשְׂרָאֵל יֹשְׁבִים עַל־אַדְמָתָם וַיְטַמְּאוּ
fuit elongatæ immunditia sicut ; suis *studiis in* & , *sua via in* eam
אוֹתָהּ בְּדַרְכָּם וּבַעֲלִילוֹתָם כְּטֻמְאַת הַנִּדָּה הָיְתָה
sanguinem *super* eos super meam iram effudi Et .*meas facies ad* eorum *via*
18 דַרְכָּם לְפָנָי : וָאֶשְׁפֹּךְ חֲמָתִי עֲלֵיהֶם עַל־הַדָּם
.eam polluerunt suis Idolis *in &* ; terram super effuderunt quem
אֲשֶׁר־שָׁפְכוּ עַל־הָאָרֶץ וּבְגִלּוּלֵיהֶם טִמְּאוּהָ :
, eorum *viam* juxta : terras in sunt ventilati &,gentes in eos dispersi Et
19 וָאָפִיץ אֹתָם בַּגּוֹיִם וַיִּזָּרוּ בָּאֲרָצוֹת כְּדַרְכָּם
venerunt *quò* gentes ad *venit* Et .eos judicavi eorum *studia* juxta &
20 וְכַעֲלִילוֹתָם שְׁפַטְתִּים : וַיָּבוֹא אֶל־הַגּוֹיִם אֲשֶׁר־בָּאוּ
Domini Populus,eis *dicendo in*;*meæ sanctitatis* nomen polluerunt & ,*illuc*
שָׁם וַיְחַלְּלוּ אֶת־שֵׁם קָדְשִׁי בֶּאֱמֹר לָהֶם עַם־יְהוָה
; *meæ sanctitatis nomine super* peperci Et .sunt egressi ejus terra de & ,hi
21 אֵלֶּה וּמֵאַרְצוֹ יָצָאוּ : וָאֶחְמֹל עַל־שֵׁם קָדְשִׁי
.*illuc* sunt ingressi *quò* ,gentibus in , Israel domus *illud* polluerunt quod
אֲשֶׁר חִלְּלֻהוּ בֵּית יִשְׂרָאֵל בַּגּוֹיִם אֲשֶׁר־בָּאוּ שָׁמָּה :
Non , Deus Dominus dixit Sic , Israel domui dic Idcircò
22 לָכֵן אֱמֹר לְבֵית־יִשְׂרָאֵל כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה לֹא
,*meæ sanctitatis* nomen *ad quinimò* ; Israel domus *faciens* ego vos propter
לְמַעַנְכֶם אֲנִי עֹשֶׂה בֵּית יִשְׂרָאֵל כִּי אִם־לְשֵׁם־קָדְשִׁי
sanctificabo Et .*illuc* venistis *quò* gentibus in polluistis quod
23 אֲשֶׁר חִלַּלְתֶּם בַּגּוֹיִם אֲשֶׁר־בָּאתֶם שָׁם : וְקִדַּשְׁתִּי
polluistis quod , gentibus in pollutum , magnum meum nomen
אֶת־שְׁמִי הַגָּדוֹל הַמְחֻלָּל בַּגּוֹיִם אֲשֶׁר חִלַּלְתֶּם
Dominus ait ,Dominus *ego* quòd gentes scient & : earum medio in
בְּתוֹכָם וְיָדְעוּ הַגּוֹיִם כִּי־אֲנִי יְהוָה נְאֻם אֲדֹנָי
vos Tollámque .eorum oculis in vobis in *me sanctificari in* , Deus
24 יֱהוִה בְּהִקָּדְשִׁי בָכֶם לְעֵינֵיהֶם : וְלָקַחְתִּי אֶתְכֶם
faciam venire & : terris universis de vos congregabo & , gentibus de
מִן־הַגּוֹיִם וְקִבַּצְתִּי אֶתְכֶם מִכָּל־הָאֲרָצוֹת וְהֵבֵאתִי
,*mundas aquas* vos super spargam Et .vestram terram in vos
25 אֶתְכֶם אֶל־אַדְמַתְכֶם : וְזָרַקְתִּי עֲלֵיכֶם מַיִם טְהוֹרִים
universis ab & , vestris inquinamentis omnibus ab : mundabimini &
וּטְהַרְתֶּם מִכֹּל טֻמְאוֹתֵיכֶם וּמִכָּל־
spiritum &,novum cor vobis dabo Et .vos mundabo vestris idolis
26 גִּלּוּלֵיכֶם אֲטַהֵר אֶתְכֶם : וְנָתַתִּי לָכֶם לֵב חָדָשׁ וְרוּחַ
,vestra carne è *lapidis* cor amovebo & : *vestro interiore* in dabo novum
חֲדָשָׁה אֶתֵּן בְּקִרְבְּכֶם וַהֲסִרֹתִי אֶת־לֵב הָאֶבֶן מִבְּשַׂרְכֶם
; *vestro interiori* in dabo meum spiritum Et .carneum cor vobis dabo &
27 וְנָתַתִּי לָכֶם לֵב בָּשָׂר : וְאֶת־רוּחִי אֶתֵּן בְּקִרְבְּכֶם
,custodiatis mea judicia &,ambuletis meis *statutis* in quod faciam &
וְעָשִׂיתִי אֵת אֲשֶׁר־בְּחֻקַּי תֵּלֵכוּ וּמִשְׁפָּטַי תִּשְׁמְרוּ
: vestris patribus dedi quam terra in habitabitis Et .faciatis &
28 וַעֲשִׂיתֶם : וִישַׁבְתֶּם בָּאָרֶץ אֲשֶׁר נָתַתִּי לַאֲבֹתֵיכֶם
.Deum in vobis ero ego &,populum in mihi eritis &
וִהְיִיתֶם לִי לְעָם וְאָנֹכִי אֶהְיֶה לָכֶם לֵאלֹהִים :

Verſio VULG. LAT.

13 Hæc dicit Dominus Deus; Pro eo quòd dicunt de vobis; Devoratrix hominum es, & ſuffocans
14 gentem tuam: Propterea homines non comedes ampliùs, & gentem tuam non necabis ultrà,
15 ait Dominus Deus: Nec auditã faciam in te ampliùs confuſionẽ Gentium, & opprobrium populorum nequaquam portabis, & gentẽ tuam non amittes ampliùs,
16 ait Dominus Deus. Et factum eſt verbum Domini ad me, dicens;
17 Fili hominis, domus Iſrael habitaverunt in humo ſua,& polluerũt eam in viis ſuis,& in ſtudiis ſuis;juxta immunditiã menſtruatæ facta eſt via eorum coram me.
18 Et effudi indignationem meam ſuper eos pro ſanguine,quem fuderunt ſuper terram, & in idolis
19 ſuis polluerunt eam. Et diſperſi eos in Gentes, & ventilati ſunt in terras:juxta vias eorum, & adinventiones eorum judicavi eos.
20 Et ingreſſi ſũt ad Gentes ad quas introierunt, & polluerũt nomen ſanctum meum, cùm diceretur de eis; Populus Domini iſte eſt, &
21 de terra ejus ingreſſi ſunt. Et peperci nomini ſancto meo, quod polluerat domus Iſrael in Genti-
22 bus, ad quas ingreſſi ſunt. Idcircò dices domui Iſrael; Hæc dicit Dñs De⁹; Non propter vos ego faciam, domus Iſrael,ſed propter nomen ſanctum meum,quod polluiſtis in Gentib⁹, ad quas intrâ-
23 ſtis. Et ſanctificabo nomen meũ magnum, quod pollutum eſt inter Gentes, quod polluiſtis in medio earum: ut ſciant Gentes quia ego Domin⁹, ait Dominus exercituum, cùm ſanctificat⁹ fue-
24 ro in vobis coram eis. Tollam quippe vos de Gentibus, & congregabo vos de univerſis terris, & adducam vos in terram ve-
25 ſtram. Et effundam ſuper vos aquam mundam, & mundabimini ab omnib⁹ inquinamentis veſtris, & ab univerſis idolis veſtris
26 mundabo vos. Et dabo vobis cor novum, & ſpiritum novum ponam in medio veſtrî: & auferam cor lapideũ de carne veſtra,
27 & dabo vobis cor carneum. Et ſpiritum meum ponam in medio veſtrî: & faciam ut in præceptis meis ambuletis, & judicia mea
28 cuſtodiatis & operemini. Et habitabitis in terra, quam dedi patrib⁹ veſtris: & eritis mihi in populum, & ego ero vobis in Deum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

13 Τάδε λέγει (υ) κύριος κύριος, Ἀνθ' ὧν
εἶπάν σοι, Κατέσθουσα ἀνθρώπους εἶ, ϗ ἠ-
14 τεκνωμένη ὑπὸ τοῦ ἔθνους σου ἐγένου· Διὰ τοῦ-
το ἀνθρώπους οὐκέτι φάγεσαι, ϗ τὸ ἔθνος
σου οὐκ (φ) ἀτεκνώσεις ἔτι, λέγει κύριος
15 κύριος. Καὶ οὐκ ἀκουσθήσεται οὐκέτι ἐφ' ὑμᾶς
ἀτιμία ἐθνῶν, ϗ (χ) ὀνειδισμοὺς λαῶν οὐ
μὴ ἀνενέγκητε ἔτι, λέγει (ψ) κύριος κύ-
16 ριος. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ,
17 λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, οἶκος Ἰσραὴλ (ω)
κατῴκησεν ἐπὶ τῆς γῆς αὐτῶν, ϗ (α) ἐμία-
ναν αὐτὴν ἐν τῇ ὁδῷ αὐτῶν, ϗ ἐν τοῖς εἰ-
δώλοις αὐτῶν, ϗ ἐν ταῖς ἀκαθαρσίαις αὐ-
τῶν, (β) ϗ κατὰ τὴν ἀκαθαρσίαν τῆς ἀποκαθη-
μένης ἐγενήθη ἡ ὁδὸς αὐτῶν πρὸ προσώπου
18 μου· Καὶ ἐξέχεα τὸν θυμόν μου ἐπ' αὐ-
19 τοὺς (γ), Καὶ διέσπειρα αὐτοὺς εἰς τὰ ἔθνη, ϗ
ἐλίκμησα αὐτοὺς εἰς τὰς χώρας, κατὰ (δ)
τὴν ὁδὸν αὐτῶν, ϗ κατὰ τὴν ἁμαρτίαν αὐτῶν
20 ἔκρινα αὐτούς. Καὶ (ε) εἰσῆλθον εἰς τὰ
ἔθνη, οὗ (ζ) εἰσῆλθον ἐκεῖ, ϗ ἐβεβήλωσαν
τὸ ὄνομά μου τὸ ἅγιον ἐν τῷ λέγεσθαι αὐτούς,
Λαὸς κυρίου οὗτοι, ϗ ἐκ τῆς γῆς (η) αὐτοῦ ἐξε-
21 ληλύθασιν. Καὶ ἐφεισάμην αὐτῶν διὰ τὸ ὄ-
νομά μου τὸ ἅγιον, ὃ ἐβεβήλωσαν οἶκος Ἰσ-
ραὴλ ἐν τοῖς ἔθνεσιν, οὗ εἰσήλθοσαν ἐκεῖ.
22 Διατοῦτο εἰπὸν τῷ οἴκῳ Ἰσραὴλ, Τάδε
λέγει (θ) κύριος, Οὐχ ὑμῖν ἐγὼ ποιῶ
οἶκος Ἰσραὴλ, ἀλλ' ἢ διὰ τὸ ὄνομά μου τὸ
ἅγιον, ὃ ἐβεβηλώσατε ἐν τοῖς ἔθνεσιν, οὗ
23 (ʹ)εἰσήλθετε ἐκεῖ. Καὶ ἁγιάσω τὸ ὄνομά μου
τὸ (ι) μέγα, τὸ βεβηλωθὲν ἐν τοῖς ἔθνε-
σιν, ὃ ἐβεβηλώσατε ἐν μέσῳ αὐτῶν, ϗ
γνώσονται τὰ ἔθνη ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος, (κ)
ἐν τῷ ἁγιασθῆναί με ἐν ὑμῖν κατ' ὀφθαλ-
24 μοὺς αὐτῶν. Καὶ λήψομαι ὑμᾶς ἐκ τῶν ἐ-
θνῶν, ϗ ἀθροίσω ὑμᾶς ἐκ πασῶν τῶν γαι-
25 ῶν, ϗ εἰσάξω ὑμᾶς εἰς τὴν γῆν ὑμῶν, Καὶ
ῥανῶ ἐφ' ὑμᾶς (ʺ)καθαρὸν ὕδωρ, ϗ καθαρι-
σθήσεσθε ἀπὸ πασῶν τῶν ἀκαθαρσιῶν ὑμῶν,
ϗ ἀπὸ πάντων τῶν εἰδώλων ὑμῶν, ϗ καθα-
26 ριῶ ὑμᾶς· Καὶ δώσω ὑμῖν καρδίαν καινὴν,
ϗ πνεῦμα καινὸν δώσω ἐν ὑμῖν, ϗ ἀφελῶ
τὴν καρδίαν τὴν λιθίνην ἐκ τῆς σαρκὸς ὑμῶν,
27 ϗ δώσω ὑμῖν καρδίαν σαρκίνην· Καὶ
τὸ πνεῦμά μου δώσω ἐν ὑμῖν, ϗ ποιήσω
ἵνα ἐν τοῖς δικαιώμασί μου πορεύησθε, ϗ
τὰ κρίματά μου (˙)φυλάξησθε, ϗ ποιή-
28 σητε. Καὶ κατοικήσετε ἐπὶ τῆς γῆς ἧς
ἔδωκα τοῖς πατράσιν ὑμῶν, ϗ ἔσεσθέ μοι
εἰς λαὸν, ϗ ἐγὼ ἔσομαι ὑμῖν εἰς θεόν.

Hæc dicit Dominus Dominus; 13
Pro eo quòd dixerunt tibi, (b)
Devoratrix hominum es,& absque liberis de gente tua facta es:
Propterea homines non comedes 14
ampliùs, & gentem tuam liberis non orbabis ultrà, ait Dominus
Dominus: Et non audietur ultrà 15
ſuper vos ignominia gentium: et opprobria populorum nequaquàm portabitis (i)ampliùs, ait Dominus Dominus. Et factum eſt ver- 16
bum Domini ad me, dicens; Fili 17
hominis, domus Iſrael habitavit in terra ſua: & polluerunt eam in via ſua,& in idolis ſuis,et in ſuis immunditiis: Et juxta immunditiam menſtruatæ facta eſt via eorum coram me: Et effudi 18
furorem meum ſuper (k)eos: Et 19
diſſeminavi eos in gentes,et ventilavi eos in regiones: juxta viam eorum & juxta (l)peccatum eorum judicavi eos. Et ingreſſi 20
ſunt ad gentes, quò ingreſſi ſunt illuc, & polluerunt nomen ſanctum meum, cùm(m)dicerentur ipſi, Populus Domini iſti: & de terra ejus egreſſi ſunt. Et peperci 21
eis propter nomen meum ſanctũ, quod polluerant domus Iſrael in gentibus, quò ingreſſi ſunt illuc. Idcircò dic domui Iſrael; Hæc 22
dicit Dominus; Non vobis ego facio,domus Iſrael, ſed propter nomen meum ſanctum, quod polluiſtis in gentibus, quò intrâſtis illuc. Et ſanctificabo nomen me- 23
um magnum, quod pollutum eſt in gentibus,quod polluiſtis in medio earum:& ſcient gentes, quia ego ſum Dominus; cum ſanctificatus fuero in vobis ante oculos earum.Et tollam vos de gentib⁹, 24
& congregabo vos de univerſis terris, & introducam vos in terram veſtram. Et aſpergam ſuper 25
vos aquam mundam: & mundabimini ab omnibus immunditiis veſtris,& ab omnibus idolis veſtris,(n)& mundabo vos.Et da- 26
bo vobis cor novum: & ſpiritum novum dabo in vobis: et auferam cor lapideum de carne veſtra: et dabo vobis cor carneum: Et ſpi- 27
ritum meum dabo in vobis: et faciam, ut in juſtificationibus meis ambuletis, et judicia mea cuſtodiatis, et (o) faciatis. Et habita- 28
bitis in terra, quam dedi patribus veſtris:et eritis mihi in populum: et ego ero vobis in Deum.

MS.A. (υ)ἀδωναῒ κύριος,(φ)ἀτεκνώσει σε οὐκέτι, λέγει ἀδωναῒ κύριος. (χ)ὀνειδισμὸν ἐθνῶν οὐ μὴ ἐνέγκητε(ψ)κύριος ὁ θεός.(ω)κατῴκησαν(α)ἐν ταῖς ἀκαθαρσίαις αὐτῶν ἐμίαναν αὐτὴν ἐν τῇ(β)κατὰ τὴν ἀκαθαρσίαν τῆς ἀφέδρου ἐγενήθη (γ) περὶ τοῦ αἵματος οὗ ἐξέχεαν ἐν τῇ γῇ, ϗ ἐν τοῖς εἰδώλοις αὐτῶν ἐμίαναν αὐτήν. Καὶ διέσπειρα(δ)τὰς ὁδοὺς αὐτῶν, ϗ κατὰ τὰς ἀνομίας αὐτῶν ἔκρινα (ε) εἰσήλθοσαν (ζ) εἰσήλθοσαν (η) αὐτῶν ἐξήλθοσαν. (θ) ἀδωναῒ κύριος, (ʹ)εἰσήλθετε (ι)ἅγιον, τὸ (κ)λέγει ἀδωναῒ κύριος, ἐν τῷ (ʺ)ὕδωρ καθαρὸν,(˙)φυλάξησθε, ϗ ποιήσητε.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

13 כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים חֲלַף דְּאָמְרִין לְכוֹן מְקַטֶּלֶת אֱנָשָׁא אַתְּ וּמְתַכֶּלֶת עַמִּיךְ הֲוֵית :
14 בְּכֵן אֱנָשָׁא לָא תְקַטְּלִין עוֹד וְעַמִּיךְ לָא תְתַכְּלִין עוֹד אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים : וְלָא אַשְׁמַע לִיךְ 15
עוֹד אִתְכְּנָעוּת עַמְמַיָּא וְחִסּוּדֵי עַמְמַיָּא לָא תְקַבְּלִין עוֹד וְעַמִּיךְ לָא תְתַכְּלִין עוֹד אֲמַר יְיָ
16 אֱלֹהִים : וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי לְמֵימָר : בַּר אָדָם בֵּית יִשְׂרָאֵל יָתְבִין 17
עַל אַרְעֲהוֹן וְסָאִיבוּ יָתַהּ בְּאוֹרְחָתְהוֹן וּבְעוֹבָדֵיהוֹן כְּסוֹאֲבַת אִתְּתָא טוֹמְאָה הֲוַת
18 אוֹרְחַתְהוֹן קֳדָמַי : וּשְׁפֵיכִית חֵימְתִי עֲלֵיהוֹן עַל דַּם זַכַּי דַּאֲשַׁדוּ עַל אַרְעָא וּבְפוּלְחַן
19 טַעֲוָתְהוֹן סַאֲבוּהָ : וְאַגְלֵיתִי יָתְהוֹן לְבֵינֵי עַמְמַיָּא וְאִתְבַּדַּרוּ בִּמְדִינָתָא כְּאוֹרְחַתְהוֹן
20 בִּישָׁתָא וּכְעוֹבָדֵיהוֹן מְקַלְקְלַיָּא אִתְפְּרַעִית מִנְּהוֹן : וְעָלוּ לְבֵינֵי עַמְמַיָּא דְּאִתְגְּלִיאוּ
לְתַמָּן עַל דְּאַחִילוּ יָת שְׁמָא דְקוּדְשִׁי בְּדְאָמְרִין לְהוֹן אִם עַמֵּיהּ דַּיְיָ אִלֵּין וְאֵיכְדֵין מֵאַרְעָא
21 בֵּית שְׁכִנְתֵּיהּ גְּלוֹ : וְחָסֵית עַל שְׁמָא דְקוּדְשִׁי דְּאַחִילוּהִי בֵּית יִשְׂרָאֵל בֵּינֵי עַמְמַיָּא
22 דְּאִתְגְּלִיאוּ לְתַמָּן : בְּכֵן אֱמַר לְבֵית יִשְׂרָאֵל כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים לָא בְּדִילְכוֹן אֲנָא
עָבֵיד בֵּית יִשְׂרָאֵל אֱלָהֵין עַל שְׁמָא דְקוּדְשִׁי דְּאַחֵילְתּוּן בֵּינֵי עַמְמַיָּא דְּאִתְגְּלֵיתוּן לְתַמָּן :
23 וַאֲקַדֵּשׁ יָת שְׁמִי רַבָּא דְּאִתְחַל בֵּינֵי עַמְמַיָּא דְּאַחֵלְתּוּן בֵּינֵיהוֹן וְיִדְעוּן עַמְמַיָּא אֲרֵי אֲנָא
24 יְיָ אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים כַּד אֶתְקַדַּשׁ בְּכוֹן לְעֵינֵיהוֹן : וַאֲקָרֵיב יָתְכוֹן מִבֵּינֵי עַמְמַיָּא וַאֲכְנֵישׁ
25 יָתְכוֹן מִכָּל מְדִינָתָא וְאָעֵיל יָתְכוֹן לְאַרְעֲכוֹן : וְאֶשְׁבּוֹק לְחוֹבֵיכוֹן כְּמָא דְמִדַּכַּן בְּמֵי
אַדִּיוּתָא וּבִקְטַם תּוֹרְתָא דְחַטָּאתָא וְתִדַּכּוּן מִכֹּל סַאֲבַתְכוֹן וּמִכָּל טַעֲוָתְכוֹן אֲדַכֵּי
26 יָתְכוֹן : וְאֶתֵּן לְכוֹן לֵב דָּחִיל וְרוּחַ דְּחִילָא אֶתֵּן בִּמְעֵיכוֹן וְאֶתְבַּר לִבָּא דְרִשְׁעָא דְּהוּא
27 תַּקִּיף כְּאַבְנָא מִבִּסְרְכוֹן וְאֶתֵּן לְכוֹן לֵב דָּחִיל קֳדָמַי לְמֶעְבַּד רְעוּתִי : וְיָת רוּחַ קוּדְשִׁי
28 אֶתֵּן בִּמְעֵיכוֹן וְאַעְבֵּיד יָת דִּי בִקְיָמַי תְּהָכוּן וְדִינַי תִּטְּרוּן וְתַעְבְּדוּן : וְתֵיתְבוּן בְּאַרְעָא
דִּיהַבִית לַאֲבָהָתְכוֹן וּתְהוֹן קֳדָמַי לְעַם וַאֲנָא אֱהֵוֵי לְכוֹן לֶאֱלָהּ :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Hæc dicit Dñs Deus: Pro eo quòd dicunt tibi, Interficiens homines es tu 13
& abſq; liberis faciens populum tuum. Propterea homines non interficies 14
amplius, & populum tuum non facies ultrà abſq; liberis, ait Dñs Deus. Nec 15
audire faciam te ultrà ignominiam populorum, nec opprobrium gentium
ſuſtinebis, nec tuam ampliùs gentem orbabis, inquit Dñs Deus. Et factum 16
eſt verbum prophetiæ à facie Dñi ad me, dicens: Fili hominis,domus Iſrael 17
habitaverunt in terra ſua, & polluerunt eam in viis ſuis, & operibus ſuis:
juxta pollutionem mulieris immundæ fuit via eorum coram me. Et effudi in- 18
dignationem meam ſuper eos propter ſanguinem innocentem, quem effuderunt ſuper terram: & cultu idolorum ſuorum polluerunt eam. Et migrare 19
feci eos inter populos, & diſperſi eos per provincias: juxta *vias* illorum *peſſimas*, & juxta opera eorum corrupta ultionem ſumpſi ex eis. Et ingreſſi 20
ſunt inter populos, ad quos migraverunt, pro eo quòd violaverunt nomen
ſanctum meum, cùm dicebant eis, Si populus Dñi ſunt iſti, quomodo ergo
migraverunt à terra domus majeſtatis ejus? Et peperci nomini ſancto meo, 21
quod violaverunt dom⁹ Iſrael inter populos ad quos migraverunt. Propterea 22
dic domui Iſrael: Hæc dicit Dñs De⁹: Non propter vos ego facio dom⁹ Iſrael,
ſed propter nomen ſanctum meum, quod prophanâſtis inter populos ad quos
migrâſtis. Et ſanctificabo nomen meum magnum, quod violatum eſt inter 23
populos, quod violâſtis inter eos; & ſcient populi quia ego Dñs, ait Dñs
Deus: cùm ſanctificatus fuero in vobis ante oculos eorum. Et applicabo 24
vos de medio populorum, & congregabo vos de omnibus provinciis, & introducam vos in terram veſtram. Et dimittam peccata veſtra, ſicut mundan- 25
tur aqua aſperſionis, & cinere vaccæ quæ [*immolatur*] pro peccato: &
mundabimini ab omnibus immunditiis veſtris, & ab omnibus idolis veſtris
mundabo vos. Et dabo vobis cor timens, & ſpiritum *timentem* dabo in viſce- 26
ribus veſtris, & conteram cor impium, quod eſt durum ſicut lapis, de carne
veſtra, & dabo vobis cor timens coram me, ut faciat voluntatem meam. Et 27
ſpiritum ſanctũ meum dabo in viſcerib⁹ veſtris, & faciam ut in præceptis meis
ambuletis, & judicia mea cuſtodiatis & faciatis. Et habitabitis in terra quam 28
dedi patrib⁹ veſtris: & eritis coram me in populum, & ego ero vobis in Deum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

13 * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܐܡܪܝܢ ܠܟܝ ܐܟܠܬ ܒܢܝ̈ܢܫܐ ܐܢܬܝ ܘܡܬܟܠܢܝܬܐ ܠܥܡܟܝ.·.
14 * ܡܛܠ ܗܢܐ ܒܢܝ̈ܢܫܐ ܠܐ ܬܐܟܠܝܢ. ܘܥܡܟܝ ܬܘܒ ܠܐ ܬܬܟܠܝܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. 15 * ܘܬܘܒ ܠܐ
ܐܫܡܥ ܒܟܝ ܚܣܕܐ ܕܥܡ̈ܡܐ. ܘܚܣܕܝܗܘܢ ܬܘܒ ܠܐ ܬܣܝܒܝܢ. ܘܥܡܟܝ ܬܘܒ ܠܐ ܬܬܟܠܝܢ.
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. 16 * ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܘܬܝ ܟܕ ܐܡܪ. 17 * ܒܪܢܫܐ.· ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ
ܝܬܒܝܢ ܒܐܪܥܗܘܢ.· ܘܛܡܐܘܗ ܒܐܘܪܚܬܗܘܢ ܘܒܥܒܕ̈ܝܗܘܢ.· ܘܐܝܟ ܛܢܦܘܬܐ ܕܕܫܬܢܝܬܐ.
ܗܟܢܐ ܗܘܬ ܐܘܪܚܗܘܢ ܩܕܡܝ. 18 * ܘܐܫܕܬ ܚܡܬܝ ܥܠܝܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܡܐ ܕܐܫܕܘ ܥܠ ܐܪܥܐ
ܘܛܡܐܘܗ ܒܦܬܟܪ̈ܝܗܘܢ. 19 * ܘܒܕܪܬ ܐܢܘܢ ܒܥܡ̈ܡܐ.· ܘܙܪܩܬ ܐܢܘܢ ܒܡܕܝܢ̈ܬܐ. ܘܐܝܟ
ܐܘܪܚܬܗܘܢ. ܘܐܝܟ ܥܒܕ̈ܝܗܘܢ ܕܢܬ ܐܢܘܢ. 20 * ܘܐܙܠܘ ܠܒܝܬ ܥܡ̈ܡܐ.· ܘܛܡܐܘ ܫܡܐ
ܕܩܘܕܫܝ. ܘܐܡܪܝܢ ܗܘܘ ܠܗܘܢ ܥܡ̈ܡܐ. ܗܠܐ ܥܡܗ ܗܢܘܢ ܕܐܠܗܐ.· ܘܡܢ ܐܪܥܗ ܢܦܩܘ.
21 * ܘܚܣܬ ܥܠ ܫܡܐ ܕܩܘܕܫܝ. ܕܛܡܐܘܗܝ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܒܝܬ ܥܡ̈ܡܐ ܕܐܙܠܘ ܠܬܡܢ.
22 * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܡܪ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ.: ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܠܐ ܗܘܐ ܡܛܠܬܟܘܢ
ܥܒܕ ܐܢܐ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ.· ܐܠܐ ܡܛܠ ܫܡܐ ܕܩܘܕܫܝ: ܕܛܡܐܬܘܢ ܒܝܬ ܥܡ̈ܡܐ ܕܐܙܠܬܘܢ
ܠܬܡܢ. 23 * ܘܐܩܕܫ ܫܡܝ ܪܒܐ.· ܕܐܬܛܡܝ ܒܝܬ ܥܡ̈ܡܐ. ܕܛܡܐܬܘܢܝܗܝ ܒܝܢܬܗܘܢ.
ܘܢܕܥܘܢ ܥܡ̈ܡܐ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܡܐ ܕܐܬܩܕܫܬ ܒܟܘܢ ܠܥܝܢܝܗܘܢ.
24 * ܘܐܕܒܪܟܘܢ ܡܢ ܥܡ̈ܡܐ. ܘܐܟܢܫܟܘܢ ܡܢ ܡܕܝܢ̈ܬܐ. ܘܐܥܠܟܘܢ ܠܐܪܥܟܘܢ. 25 * ܘܐܙܪܘܩ
ܥܠܝܟܘܢ ܡܝ̈ܐ ܕܟܝ̈ܐ.· ܘܐܕܟܝܟܘܢ ܡܢ ܟܠܗ ܛܢܦܘܬܟܘܢ. ܘܡܢ ܟܠܗܘܢ ܦܬܟܪ̈ܝܟܘܢ.
26 * ܘܐܬܠ ܠܟܘܢ ܠܒܐ ܚܕܬܐ. ܘܪܘܚܐ ܚܕܬܐ ܐܬܠ ܒܓܘܟܘܢ. ܘܐܥܒܪ ܠܒܐ ܕܟܐܦܐ ܡܢ
ܒܣܪܟܘܢ. ܘܐܬܠ ܠܟܘܢ ܠܒܐ ܕܒܣܪܐ. 27 * ܘܐܬܠ ܪܘܚܝ ܒܓܘܟܘܢ. ܘܐܥܒܕ ܕܒܦܘܩܕ̈ܢܝ
ܬܗܠܟܘܢ. ܘܕܝ̈ܢܝ ܬܛܪܘܢ. ܘܬܥܒܕܘܢ ܐܢܘܢ. 28 * ܘܬܬܒܘܢ ܒܐܪܥܐ ܕܝܗܒܬ ܠܐܒܗ̈ܬܟܘܢ.
ܘܬܗܘܘܢ ܠܝ ܥܡܐ. ܘܐܢܐ ܐܗܘܐ ܠܟܘܢ ܐܠܗܐ.

13 Sic ait Dominus dominorum; Quia dicunt tibi, Devoratrix hominum es, & populi tui orbatrix; 14 Poſthac homines nequaquam devorabis, neque populum tuum orbabis ampliùs, ait Dominus dominorum: 15 Neque patiar poſthac ut audiatur de te opprobrium gentium, & convitia earum non feres ampliùs, ait Dominus dominorum. 16 Deinde fuit ad me ſermo Domini, dicendo, 17 Fili hominis, Iſraelitæ habitantes in terra ſua, polluerunt eam viis & actionibus ſuis, & qualis eſt impuritas menſtrua patientis, talis erat via ipſorum coram me: 18 Quapropter effudi iram meam ſuper eos propter ſanguinem quem effuderunt ſuper terrâ, et contaminaverunt eam idolis ſuis: 19 Diſſipavi eos inter gentes, & diſperſi eos per urbes: & ſecundùm vias eorum, & ſecundùm actiones eorum judicavi eos. 20 Cùmque abiiſſent inter gentes, prophanaverunt nomen ſanctiſſimum meum; ita ut dicerent eis gentes, Iſtíne populus Dei ſunt, & ex ejus terra prodierunt? 21 Itaque clementiâ commotus ſum erga nomen meum ſanctiſſimum quod prophanaverunt Iſraelitæ inter gentes ad quas abierunt: 22 Ideò dic Iſraelitis; Sic ait Dominus dominorum; Haudquaquam propter vos facturus ſum Iſraelitæ, ſed propter nomen ſanctiſſimum meum quod prophanâſtis inter gentes ad quas abiiſtis: 23 Ut ſanctificem nomen meum maximum quod prophanatum eſt inter gentes, quod prophanâſtis inter eas; & ſcient gentes me eſſe Dominum, ait Dominus dominorum, quum ſanctificatus fuero in vobis coram ipſis. 24 Aſſumam vos è gentibus, colligam vos ex urbibus, & adducam vos in terram veſtram. 25 Aſpergam vos aquis mundis, & mundabo vos omnibus impuritatibus veſtris, omnibúſque idolis veſtris: 26 Dabo vobis cor novum, & ſpiritum novum indam præcordiis veſtris; & amoto corde lapideo de carne veſtra, dabo vobis cor carneum: 27 Ponam ſpiritum meum in præcordiis veſtris, & efficiam ut in præceptis meis ambuletis, judicia mea ſervetis & perficiatis; 28 Atque *ita* habitetis in terra quam dedi majoribus veſtris, ſitis mihi populus, & ego ſim vobis Deus,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

13 * هكذا يقول ادوناي الرب من اجل انهم قالوا لك انت اكلة الناس * وصرت مثكولة من
14 امتك * لاجل هذا لا تاكلين الناس ايضا وامتك لا تثكلك ايضا قال ادوناي الرب * ولا
15 تسمع عليكم ايضا اهانة الامم * ولا تحملوها ايضا يقول الرب الاله * 16 وكان قول الرب الي قايلا *
17 يا ابن الانسان بيت اسرايل سكنوا على ارضهم * وبنجاساتهم نجسوها بطرقهم * وباصنامهم
وبنجاساتهم كنجاسة الحايض صارت ارضهم امام وجهي * 18 وافضت غضبي عليهم من
اجل الدم الذي اراقوه في الارض * وباوثانهم نجسوها * 19 فبددتهم في الامم * واذريتهم في البلدان *
كطرقهم وكاثامهم دنتهم * 20 ودخلوا الي الامم حيث دخلوا هناك * ودنسوا اسمي القدوس *
عند ما قالوا شعب الرب هم * ومن ارضهم خرجوا * 21 وشفقت عليهم لاجل اسمي القدوس
الذي دنسه بيت اسرايل في الامم حيث دخلوا هناك * 22 لاجل هذا قل لبيت اسرايل * هكذا
يقول ادوناي الرب * ليس لكم صنعت انا يا بيت اسرايل * لكن لاجل اسمي القدوس
الذي دنستموه في الامم حيث دخلتم هناك * 23 واقدس اسمي القدوس المدنس في الامم *
الذي دنستموه في وسطهم * ويعلم الامم اني انا الرب * يقول ادوناي الرب * عند ما اتقدس
فيكم بعيونهم * 24 واخذكم من الامم * واجمعكم من جميع الارضين * وادخلكم الي
ارضكم * 25 وانضح عليكم ماء نقيا * وتتطهرون من جميع نجاساتكم ومن جميع
اوثانكم * 26 واطهركم * واعطيكم قلبا جديدا * وروحا جديدة اعطي فيكم * وانزع
القلب الحجري من جسدكم * واعطيكم قلبا لحميا * 27 وروحي اعطي فيكم * واجعلكم كي
تسيروا بعدلي * وتحفظون احكامي وتصنعوها * 28 وتسكنون علي الارض التي اعطيتها
لابايكم * وتكونون لي شعبا * وانا اكون لكم الها *

13 *Ita dicit Adonai Dominus; Quia dixerunt tibi, Tu devoratrix hominum es, & facta es orbata gente tuâ:* 14 *Propterea non devorabis ampliùs homines, & gens tua non orbabitur te ampliùs, dixit Adonai Dominus:* 15 *Non audietur ampliùs de vobis ignominia gentium, nec ampliùs patiemini eam, dicit Dominus Deus.* 16 *Fuit etiam ſermo Domini ad me, dicens;* 17 *O fili hominis, domus Iſraelis ſuper terram ſuam habitantes, ſordibus ſuis polluebant eam in viis ſuis; adeóque propter idola & turpitudines eorum, velut ſordes menſtrua patientis facta fuerat terra eorum coram facie mea:* 18 *Ideò fudi ſuper eos furorem meum. Propter ſanguinem quem in terra fuderunt, eámque ſuis idolis contaminaverunt;* 19 *Diſperſi eos inter gentes, & diſſeminavi eos per regiones: ſecundùm vias eorum, & ſecundùm iniquitates eorum judicavi eos.* 20 *Ad gentes autem ingreſſi quocunque ingreſſi ſunt, polluerunt nomen meum ſacroſanctum, cùm dicerent populum Domini ſe eſſe, & de terra ſua exiiſſe.* 21 *Attamen peperci eis propter nomen meum ſacroſanctum quod polluerat domus Iſraelis inter gentes ad quas ingreſſi ſunt.* 22 *Propterea dic domui Iſraelis; Ita dicit Adonai Dominus, Non veſtri causâ feci ego O domus Iſraelis, ſed propter nomen meum ſacroſanctum quod polluiſtis inter gentes ad quas ingreſſi eſtis.* 23 *Et ſanctificabo nomen meum ſacroſanctum prophanatum inter gentes, quod prophanâſtis in medio earum: & ſcient gentes me eſſe Dominum, dicit Adonai Dominus, quum ſanctificatus fuero in vobis coram oculis earum.* 24 *Recipiam vos è gentibus, & colligam vos ex omnibus terris, introducámque vos in terram veſtram;* 25 *Et aſpergam vos aquâ mundâ, & emundabimini cunctis ſordibus veſtris, cunctiſque idolis veſtris.* 26 *Mundabo vos inquam, & dabo vobis cor novum, & ſpiritum novum indam vobis; & auferam cor lapideum è corpore veſtro, dabóque vobis cor carneum.* 27 *Spiritum meum dabo in vobis, & efficiam ut ambuletis in juſtitiis meis, judicia mea cuſtodiatis & perficiatis:* 28 *Adeóque habitabitis ſuper terram quam dedi patribus veſtris; & eritis mihi populus, & ego ero vobis Deus;*

יְחֶזְקֵאל : לז

vocabo & ; veſtris inquinamentis univerſis de vos ſervabo Et
29 וְהוֹשַׁעְתִּי אֶתְכֶם מִכֹּל טֻמְאוֹתֵיכֶם וְקָרָאתִי
vobis *ſuper* dabo non & , illud faciam multiplicare &, frumentum *ad*
אֶל־הַדָּגָן וְהִרְבֵּיתִי אֹתוֹ וְלֹא־אֶתֵּן עֲלֵיכֶם
: *agri* germen & , *ligni* fructum faciam multiplicare Et .famem
30 רָעָב׃ וְהִרְבֵּיתִי אֶת־פְּרִי הָעֵץ וּתְנוּבַת הַשָּׂדֶה
.gentibus in famis probrum ultrà capiatis non *quod propter*
לְמַעַן אֲשֶׁר לֹא תִקְחוּ עוֹד חֶרְפַּת רָעָב בַּגּוֹיִם׃
, veſtrorum *ſtudiorum* & , malarum veſtrarum viarum recordabimini Et
31 וּזְכַרְתֶּם אֶת־דַּרְכֵיכֶם הָרָעִים וּמַעַלְלֵיכֶם
; veſtras iniquitates *ſuper, veſtris facieb° in vos reprobabitis* & :bona non quæ
אֲשֶׁר לֹא־טוֹבִים וּנְקֹטֹתֶם בִּפְנֵיכֶם עַל עֲוֺנֹתֵיכֶם
dixit , *faciens ego* vos propter Non .veſtras abominationes *ſuper* &
32 וְעַל תּוֹעֲבֹתֵיכֶם׃ לֹא לְמַעַנְכֶם אֲנִי־עֹשֶׂה נְאֻם
veſtris *viis* de erubeſcite & , *pudete* : vobis ſit notum ,Deus Dominus
אֲדֹנָי יֱהֹוִה יִוָּדַע לָכֶם בּוֹשׁוּ וְהִכָּלְמוּ מִדַּרְכֵיכֶם
die In , Deus Dominus dixit Sic .Iſrael domus
33 בֵּית יִשְׂרָאֵל׃ כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהֹוִה בְּיוֹם
faciam habitare & : veſtris iniquitatibus omnibus ab vos *me mundare*
טַהֲרִי אֶתְכֶם מִכֹּל עֲוֺנוֹתֵיכֶם וְהוֹשַׁבְתִּי
deſolata terra Et .deſolatæ erunt ædificatæ & , urbes
34 אֶת־הֶעָרִים וְנִבְנוּ הֶחֳרָבוֹת׃ וְהָאָרֶץ הַנְּשַׁמָּה
.tranſeuntis omnis oculis in *deſolatio* fuit quòd eo pro , *coletur*
תֵּעָבֵד תַּחַת אֲשֶׁר הָיְתָה שְׁמָמָה לְעֵינֵי כָּל־עוֹבֵר׃
: Heden hortus ſicut eſt facta deſolata iſta Terra , dicent Et
35 וְאָמְרוּ הָאָרֶץ הַלֵּזוּ הַנְּשַׁמָּה הָיְתָה כְּגַן־עֵדֶן
munitæ , dirutæ & , deſolatæ & , deſertæ civitates &
וְהֶעָרִים הֶחֳרֵבוֹת וְהַנְשַׁמּוֹת וְהַנֶּהֱרָסוֹת בְּצוּרוֹת
, veſtris circuitibus *relinquentur* quæ gentes ſcient Et .habitantur
36 יָשָׁבוּ׃ וְיָדְעוּ הַגּוֹיִם אֲשֶׁר יִשָּׁאֲרוּ סְבִיבוֹתֵיכֶם
: *deſolatam* plantavi , *dirutas* ædificavi Dominus ego quòd
כִּי אֲנִי יְהֹוָה בָּנִיתִי הַנֶּהֱרָסוֹת נָטַעְתִּי הַנְּשַׁמָּה
, Deus Dominus dixit Sic .feci & , ſum locutus Dominus ego
37 אֲנִי יְהֹוָה דִּבַּרְתִּי וְעָשִׂיתִי׃ כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהֹוִה
; eis *faciendum ad* , Iſrael domui *requirar* hoc Adhuc
עוֹד זֹאת אִדָּרֵשׁ לְבֵית־יִשְׂרָאֵל לַעֲשׂוֹת לָהֶם
pecus ut , *ſanctitatum pecus* Ut .*hominis pecus* ſicut eos *multiplicabo*
38 אַרְבֶּה אֹתָם כַּצֹּאן אָדָם׃ כְּצֹאן קָדָשִׁים כְּצֹאן
deſertæ civitates erunt ſic , ejus *ſtatis temporibus* in Jeruſalaim
יְרוּשָׁלַם בְּמוֹעֲדֶיהָ כֵּן תִּהְיֶינָה הֶעָרִים הֶחֳרֵבוֹת
.Dominus *ego* quòd ſcient & : *hominis pecore* plenæ
מְלֵאוֹת צֹאן אָדָם וְיָדְעוּ כִּי־אֲנִי יְהֹוָה׃

CAP. XXXVII. לז

, DOMINUS ſpiritu in me eduxit & ,DOMINI *manus* me ſuper Fuit
1 הָיְתָה עָלַי יַד־יְהֹוָה וַיּוֹצִאֵנִי בְרוּחַ יְהֹוָה
.oſſibus plenus *ipſe* & ; campi medio in me fecit requieſcere &
וַיְנִיחֵנִי בְּתוֹךְ הַבִּקְעָה וְהִיא מְלֵאָה עֲצָמוֹת׃
multa ecce & : *undique* , *undique* ea juxta me fecit tranſire Et
2 וְהֶעֱבִירַנִי עֲלֵיהֶם סָבִיב סָבִיב וְהִנֵּה רַבּוֹת
dixit Et .valde ſicca ecce & , *campi facies ſuper* valdè
3 מְאֹד עַל־פְּנֵי הַבִּקְעָה וְהִנֵּה יְבֵשׁוֹת מְאֹד׃ וַיֹּאמֶר
, dixi & ? hæc oſſa vivent nunquid , hominis Fili ,me ad
אֵלַי בֶּן־אָדָם הֲתִחְיֶינָה הָעֲצָמוֹת הָאֵלֶּה וָאֹמַר
Vaticinare , me ad dixit Et .nôſti tu Deus Domine
4 אֲדֹנָי יֱהֹוִה אַתָּה יָדָעְתָּ׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי הִנָּבֵא
ſicca Oſſa , ea ad *dices* & ; iſtis oſſibus ſuper
עַל־הָעֲצָמוֹת הָאֵלֶּה וְאָמַרְתָּ אֲלֵיהֶם הָעֲצָמוֹת הַיְבֵשׁוֹת
.DOMINI verbum audite
שִׁמְעוּ דְּבַר־יְהֹוָה׃

Verſio VULG. LAT.

29 Et ſalvabo vos ex univerſis inquinamentis veſtris: & vocabo frumentum, & multiplicabo illud, & non imponam vobis famem. 30 Et multiplicabo fructum ligni, & genimina agri, ut non portetis ultrà opprobrium famis 31 in Gentibus. Et recordabimini viarum veſtrarum peſſimarum, ſtudiorúmque non bonorum: & diſplicebunt vobis iniquitates 32 veſtræ, & ſcelera veſtra. Non propter vos ego faciam, ait Dominus Deus, notum ſit vobis: confundimini, & erubeſcite ſuper 33 viis veſtris, domus Iſrael. Hæc dicit Dominus Deus; In die, quâ mundavero vos ex omnibus iniquitatibus veſtris, & inhabitari fecero urbes, & inſtauravero rui- 34 noſa, Et terra deſerta fuerit exculta, quæ quondam erat deſola- 35 ta in oculis omnis viatoris, Dicent; Terra illa inculta, facta eſt ut hortus voluptatis: & civitates deſertæ, & deſtitutæ atque 36 ſuffoſſæ, munitæ ſederunt. Et ſcient Gentes quæcunque derelictæ fuerint in circuitu veſtro, quia ego Dominus ædificavi diſſipata, plantavíque inculta, ego Dominus locutus ſim, & fecerim. 37 Hæc dicit Dominus Deus; Adhuc in hoc invenient me domus Iſrael, ut faciam eis: Multiplicabo eos ſicut gregem homi- 38 num. Ut gregem ſanctum, ut gregem Jeruſalem in ſolennitatibus ejus: Sic erunt civitates deſertæ, plenæ gregibus hominum: & ſcient quia ego Dominus.

CAP. XXXVII.

1 FActa eſt ſuper me manus Domini, & eduxit me in ſpiritu Domini: & dimiſit me in medio campi, qui erat plenus oſſibus: 2 Et circumduxit me per ea in gyro: erant autem multa valdè ſuper faciem campi, ſiccáque vehemêter. 3 Et dixit ad me; Fili hominis, putáſne vivent oſſa iſta? Et 4 dixi; Domine Deus, tu nôſti. Et dixit ad me; Vaticinare de oſſibus iſtis: & dices eis; Oſſa arida, audite verbum Domini.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

29 Καὶ σώσω ὑμᾶς ἐκ πασῶν τῶν ἀκαθαρσιῶν ὑμῶν, καὶ καλέσω τὸν σῖτον, καὶ πληθυνῶ αὐ- 30 τὸν, καὶ οὐ δώσω ἐφ' ὑμᾶς λιμόν. Καὶ πληθυνῶ τὸν καρπὸν τοῦ ξύλου, καὶ τὰ (λ) γεννήματα τοῦ ἀγροῦ, (μ) ὅπως ἂν μὴ λάβη- 31 τε ὀνειδισμὸν λιμοῦ ἐν τοῖς ἔθνεσι. Καὶ μνησθήσεσθε τὰς ὁδοὺς ὑμῶν τὰς πονηρὰς, καὶ τὰ ἐπιτηδεύματα ὑμῶν τὰ μὴ ἀγαθὰ, καὶ προσοχθιεῖτε κατὰ πρόσωπον αὐτῶν ἐν ταῖς ἀνομίαις ὑμῶν, καὶ (ν) ἐπὶ τοῖς βδε- 32 λύγμασιν αὐτῶν. Οὐ δι' ὑμᾶς ἐγὼ ποιῶ, λέγει (ξ) κύριος κύριος, γνωστὸν ἐστιν ὑμῖν· αἰσχύνθητε καὶ ἐντράπητε ἐκ τῶν ὁδῶν ὑ- 33 μῶν οἶκος (ο) Ἰσραήλ. Τάδε λέγει ἀδωναῒ κύριος, Ἐν ἡμέρᾳ ᾗ καθαριῶ ὑμᾶς ἐκ πασῶν (π) ἀνομιῶν ὑμῶν, καὶ κατοικιῶ τὰς πόλεις, καὶ οἰκοδομηθήσονται (ρ) ἔρημοι, 34 Καὶ ἡ γῆ ἠφανισμένη ἐργασθήσεται, ἀνθ' ὧν ὅτι ἠφανισμένη ἐγενήθη κατ' ὀφθαλμοὺς 35 παντὸς (σ) παροδεύοντος. Καὶ ἐροῦσιν, Ἡ γῆ ἐκείνη (τ) ἠφανισμένη ἐγενήθη ὡς κῆπος τρυφῆς, καὶ αἱ πόλεις αἱ ἔρημοι καὶ ἠφανισμέναι καὶ κατεσκαμμέναι 36 ὀχυραὶ ἐκάθισαν. Καὶ γνώσονται τὰ ἔθνη, ὅσα ἂν καταλειφθῶσι κύκλῳ ὑμῶν, ὅτι (υ) ἐγὼ κύριος ᾠκοδόμησα τὰς καθῃρημένας, καὶ κατεφύτευσα τὰς ἠφανισμένας· (φ) 37 ἐγὼ κύριος ἐλάλησα, καὶ ποιήσω. Τάδε λέγει (χ) ἀδωναῒ κύριος, Ἔτι τοῦτο (ψ) ζητηθήσομαι τῷ οἴκῳ Ἰσραὴλ τοῦ ποιῆσαι αὐτοῖς· πληθυνῶ αὐτοὺς ὡς πρόβατα ἀν- 38 θρώπους, Ὡς πρόβατα ἅγια, ὡς πρόβατα Ἰερουσαλὴμ ἐν ταῖς ἑορταῖς αὐτῆς· οὕτως ἔσονται αἱ πόλεις αἱ ἔρημοι πλήρεις προβάτων ἀνθρώπων. καὶ γνώσονται ὅτι (ω) ἐγὼ κύριος.

Et ſalvos vos faciam ex univerſis immunditiis veſtris: & vocabo frumentum, & multiplicabo illud: & non dabo ſuper vos famem. 30 *Et multiplicabo fructum ligni, & genimina agri; ut non* (p) *portetis opprobrium famis in gentibus.* 31 *Et recordabimini viarum veſtrarum peſſimarum, ſtudiorúmque veſtrorum non bonorum: & diſplicebitis ante faciem* (q) *ipſorum in iniquitatibus veſtris, & ſuper abominationibus veſtris.* 32 *Non propter vos ego facio, dicit Dominus Dominus: notum eſt vobis. Confundimini, & erubeſcite de viis veſtris, domus Iſrael.* 33 *Hæc dicit Adonai Dominus; In die, quâ mundabo vos ex omnibus iniquitatibus veſtris, & habitari faciam urbes, & ædificabuntur ſolitudines,* 34 *Et terra deſerta excoletur, pro eo quòd deſolata erat ante oculos omnis viatoris:* 35 *Et dicent; Terra illa deſerta facta eſt, ut hortus deliciarum: & civitates deſertæ, et diſſipatæ, atque ſuffoſſæ, munitæ ſederunt.* 36 *Et ſcient gentes, quæ derelictæ fuerint in circuitu veſtro; quia ego Dominus ædificavi deſtructas, & plantavi deletas. Ego Dominus loquutus ſum, & faciam.* 37 *Hæc dicit Adonai Dominus; Adhuc in hoc quærar domui Iſrael, ut faciam eos: Multiplicabo eos, ſicut oves, homines,* 38 *ut oves ſanctas, ut oves Hieruſalem in ſolennitatibus ejus. Sic erunt civitates deſertæ plenæ ovium* (r) *hominum. Et ſcient, quia ego Dominus.*

MS.A. (λ) γενήματα (μ) ὅπως μὴ λάβητε ἔτι ὀνειδισμὸν *λαοῦ ἐν (ν) ἐν τοῖς (ξ) κύριος ὁ θεὸς, γνωστὸν ἔσται (ο) Ἰσραὴλ, λέγει κύριος. Τάδε λέγει κύριος ὁ θεὸς, Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ᾗ (π) τῶν ἀνομιῶν (ρ) αἱ ἔρημοι, Καὶ ἡ γῆ ἡ ἠφανισμένη (σ) διοδεύοντος. (τ) ἡ ἠφανισμένη (υ) ἐγώ εἰμι κύριος· (φ) ὅτι ἐγὼ κύριος κύριος (χ) κύριος κύριος ὁ θεὸς, (ψ) ζήτημα θήσομαι (ω) ἐγώ εἰμι κύριος.

ΚΕΦ. λζʹ.

1 ΚΑὶ ἐγένετο ἐπ' ἐμὲ χεὶρ κυρίου, καὶ ἐξήγαγέ με ἐν πνεύματι κύριος, καὶ ἔθηκέ με ἐν μέσῳ τοῦ πεδίου, καὶ τοῦτο ἦν με- 2 στὸν ὀστέων ἀνθρωπίνων, Καὶ περιήγαγέ με ἐπ' αὐτὰ κυκλόθεν κύκλῳ, καὶ ἰδοὺ πολλὰ σφόδρα ἐπὶ προσώπου τοῦ πεδίου, (α) 3 ξηρὰ σφόδρα. Καὶ εἶπε πρός με, Υἱὲ ἀνθρώπου, εἰ ζήσεται τὰ (β) ὀστέα ταῦτα; καὶ εἶπα, Κύριε κύριε, σὺ ἐπίστῃ (γ) ταῦτα. 4 Καὶ εἶπε πρός με, Προφήτευσον ἐπὶ τὰ ὀστᾶ ταῦτα, καὶ ἐρεῖς αὐτοῖς, Τὰ ὀστᾶ τὰ ξηρὰ, ἀκούσατε λόγον κυρίου.

CAP. XXXVII.

ET facta eſt ſuper me manus 1 *Domini: & eduxit me in ſpiritu* (a) *Dominus: & poſuit me in medio campi: & hic erat plenus oſſium hominum: Et* 2 *circumduxit me ſuper ea per gyrum in circuitu: & ecce multa nimis ſuper faciem campi, arida vehementer. Et dixit ad me;* 3 *Fili hominis, ſi vivent oſſa hæc? Et dixi; Domine Domine, tu nôſti hæc. Et dixit ad me;* (b) 4 *Propheta ſuper oſſa iſta, et dices eis; Oſſa arida, audite verbum Domini:*

MS.A. (α) καὶ ἰδοὺ ξηρὰ (β) ὀστᾶ (γ) αὐτά.

תַּרְגּוּם יוֹנָתָן Targum JONATHAN.

29 וְאֶפְרוֹק יַתְכוֹן מִכָּל סוֹאֲבָתְכוֹן וַאֲבָרֵךְ יַת עִבּוּרָא וְאַסְגֵי יָתֵיהּ וְלָא אֶתֵּן עֲלֵיכוֹן
30 כַּפְנָא׃ וְאַסְגֵי יַת פֵּרֵי אִילָנָא וַעֲלָלַת חַקְלָא בְּדִיל דְּלָא תְקַבְּלוּן עוֹד חִסּוּדֵי כַּפְנָא
31 בֵּינֵי עַמְמַיָּא׃ וְתִדְכְּרוּן יַת אוֹרְחָתְכוֹן בִּישָׁתָא וְעוֹבָדֵיכוֹן דְּלָא תַקְנִין וְתִדַּנְקוּן
32 וְתֶהֱווֹן חָזָן עַל חוֹבֵיכוֹן וְעַל תּוֹעֲבָתְכוֹן׃ לָא בְדִילְכוֹן אֲנָא עָבֵיד אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים
33 יִתְיְדַע לְכוֹן בְּהִיתוּ וְאִתְכְּנִיעוּ מֵאוֹרְחָתְכוֹן בֵּית יִשְׂרָאֵל׃ כִּדְנָן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים
34 בְּיוֹמָא דְּאַדְכֵּי יַתְכוֹן מִכָּל חוֹבֵיכוֹן וְאוֹתֵיב יַת קִרְוַיָּא וְיִתְבַּנְיָן חוּרְבָּתָא׃ וְאַרְעָא
35 דַּהֲוָת צַדְיָא תִתְפְּלַח חֲלָף דַּהֲוָת צָדוּ לְעֵינֵי כָּל דְּעָדֵי׃ וְיֵימְרוּן אַרְעָא דְנָן דְּיִשְׂרָאֵל
דַּהֲוָת צַדְיָא תְּבַרַת לְמֶהֱוֵי כְּגִנְּתָא דְעֵדֶן וְקִרְוַיָּא חָרְבָתָא וְצַדְיָתָא וּמְפַגְּרָתָא כְּרִיכִין
36 תַּקִּיפִין יָתִיבוּ׃ וְיִדְעוּן עַמְמַיָּא דִּי יִשְׁתַּאֲרוּן סְחָרָנֵיכוֹן אֲרֵי אֲנָא יְיָ בְּנֵיתִי מְפַגְּרָתָא קַיֵּמִית
37 צַדְיָתָא אֲנָא יְיָ גְּזָרִית בְּמֵימְרִי וַאֲקַיֵּים׃ כִּדְנָן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים עוֹד דָּא אֶשְׁתְּאֵל לְכוֹן
38 בְּמֵימְרִי לְבֵית יִשְׂרָאֵל לְמֶעְבַּד לְהוֹן אַסְגֵּנוּן בֶּאֱנָשָׁא וְאַצְלְחִנּוּן בִּבְעִירָא׃ כְּעַמָּא
קַדִּישָׁא כְּעַמָּא דִּמְדַכַּן וְאָתַן לִירוּשְׁלֶם בִּזְמַן מוֹעֲדֵי פִּסְחָא כֵּן יֶהֶוְיָן קִרְוַיָּא אַרְעָא
דְּיִשְׂרָאֵל דַּהֲוָאָה חָרְבָן יְהוֹן מַלְיָן אֱנָשָׁא דְעַמָּא בֵּית יִשְׂרָאֵל וְיִדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ׃

לז

1 שְׁרַת עֲלַי רוּחַ נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ וְאַפְּקַנִי בְּרוּחַ נְבוּאָה דִּי שְׁרַת עֲלַי מִן קֳדָם יְיָ
2 וְאַשְׁרַנִי בְּגוֹ בִקְעֲתָא וְהִיא מַלְיָא גַּרְמֵי אֱנָשָׁא׃ וְאַעְבְּרַנִי עֲלֵיהוֹן סְחוֹר סְחוֹר וְהָא
3 סַגִּיאָן לַחֲדָא עַל אַפֵּי בִקְעֲתָא וְהָא יַבְשִׁין לַחֲדָא׃ וַאֲמַר לִי בַּר אָדָם הַיְחוֹן גַּרְמַיָּא
4 הָאִלֵּין וַאֲמָרִית יְיָ אֱלֹהִים אַתְּ גְּלֵי קֳדָמָךְ׃ וַאֲמַר לִי אִתְנַבֵּי עַל גַּרְמַיָּא הָאִלֵּין וְתֵימַר
לְהוֹן גַּרְמַיָּא יַבִּישַׁיָּא קַבִּילוּ פִּתְגָּמָא דַיְיָ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et ſalvabo vos ab univerſis inquinamentis veſtris, & benedicam frumento, 29 & multiplicabo illud, & non dabo in vobis famem. 30 Et multiplicabo fructum arboris, & germen agri, ut non ſuſcipiatis amplius opprobrium famis inter populos. 31 Et recordabimini viarum veſtrarum peſſimarum, & operum veſtrorum quæ non fuerunt recta, & ingemiſcetis ipſi videntes, ob peccata veſtra, & abominationes veſtras. 32 Non propter vos ego facio, dicit Dominus Deus: notum ſit vobis, confundimini & erubeſcite à viis veſtris domus Iſrael. 33 Hæc dicit Dominus Deus, In die qua mundavero vos ab omnibus iniquitatibus veſtris; & habitabiles reddam urbes, & conſtruentur ruinæ. 34 Et terra quæ deſolata fuerat excoletur, pro eo quòd fuit vaſta in oculis omnis tranſeuntis. 35 Et dicent, Terra hæc *Iſrael* quæ fuerat deſerta, converſa eſt ut ſit ſicut hortus voluptatis, & civitates deſertæ, & deſolatæ, & deſtructæ arces, jam munitæ inhabitantur. 36 Et ſcient populi qui remanſerint in circuitu veſtro, quia ego Dominus ædificavi deſtructa, ſuſcitavi deſolata: ego Dominus decrevi in verbo meo, & confirmabo. 37 Hæc dicit Dominus Deus, Adhuc requiſitus ero in verbo meo à domo Iſrael ut faciam hoc eis: multiplicabo eos hominibus, & proficere faciam eos in pecoribus. 38 Sicut populus ſanctus, ſicut populus qui mundatur, & venit in Jeruſalem tempore ſolemnitatis Phaſe; ſic urbes terræ Iſrael quæ erant deſertæ, erunt plenæ hominibus populi domus Iſrael; & ſcient quia ego Dominus.

CAP. XXXVII.

1 REſedit ſuper me ſpiritus prophetiæ à facie Domini; & eduxit me in ſpiritu prophetiæ quæ reſederat ſuper me à facie Domni, & poſuit me in medio campi qui erat plenus oſſibus hominum. 2 Et traduxit me ſuper ea in circuitu, & ecce erant multa valdè ſuper faciem campi, & ecce erant ſicca admodum. 3 Et dixit ad me: Fili hominis nunquid reviviſcent oſſa iſta? Et dixi: Domine Deus, coram te manifeſtum eſt. 4 Et dixit ad me, Vaticinare ſuper oſſa iſta, & dices eis, Oſſa arida ſuſcipite verbum Domini.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

29 * ܘܐܦܪܘܩܟܘܢ ܡܢ ܟܠܗܝܢ ܛܢܦܘܬܟܘܢ. ܘܐܩܪܐ ܠܥܒܘܪܐ ܘܐܣܓܝܘܗܝ. ܘܠܐ ܐܝܬܐ
30 ܥܠܝܟܘܢ ܟܦܢܐ. * ܘܐܣܓܐ ܦܐܪܐ ܕܐܝܠܢܐ ܘܥܠܠܬܐ ܕܐܪܥܐ. ܘܠܗܠ ܠܐ ܬܩܒܠܘܢ ܚܣܕܐ
31 ܕܟܦܢܐ ܒܝܬ ܥܡܡܐ. * ܘܬܬܕܟܪܘܢ ܬܡܢ ܐܘܪܚܬܟܘܢ ܒܝܫܬܐ ܘܥܒܕܝܟܘܢ ܣܟܠܐ.
32 ܘܬܬܩܦܣܘܢ ܐܦܝܟܘܢ ܒܥܘܠܟܘܢ ܘܒܛܢܦܘܬܟܘܢ. * ܘܠܐ ܗܘܐ ܡܛܠܬܟܘܢ ܥܒܕ
ܐܢܐ ܗܟܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܒܗܬܘ ܘܐܬܟܢܥܘ ܡܢ ܐܘܪܚܬܟܘܢ ܒܝܫܬܐ. ܘܠܐ ܬܡܘܬܘܢ
33 ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ :· * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܒܝܘܡܐ ܕܐܕܟܐ ܐܢܐ ܠܟܘܢ ܡܢ ܟܠܗܘܢ
34 ܥܘܠܝܟܘܢ.· ܐܘܬܒ ܐܢܐ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܒܢܐ ܐܢܐ ܚܘܪܒܬܐ. * ܘܐܪܥܐ ܕܚܪܒܐ ܗܘܬ ܬܬܦܠܚ
35 ܕܚܪܒܐ ܗܘܬ ܠܥܝܢܝ ܟܠ ܕܥܒܪ. * ܘܢܐܡܪܘܢ.· ܐܪܥܐ ܗܝ ܚܪܒܬܐ.· ܗܘܬ ܐܝܟ ܦܪܕܝܣܐ ܕܥܕܢ.
36 ܘܡܕܝܢܬܐ ܕܚܪܒܢ ܗܘܝ ܘܐܬܗܦܟܝ.· ܗܘܝ ܟܪܟܐ ܥܫܝܢܐ. * ܘܢܕܥܘܢ ܥܡܡܐ ܕܡܫܬܚܪܝܢ
ܣܚܪܢܝܟܘܢ.· ܕܐܢܐ ܡܪܝܐ ܒܢܝܬ ܐܢܐ ܡܚܪܒܬܐ. ܘܢܨܒܬ ܐܢܐ ܚܪܒܬܐ. ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܐܡܪܬ ܘܥܒܕ
37 ܐܢܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܬܘܒ ܠܗܕܐ ܐܬܒܥܐ ܐܢܐ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ.· ܕܐܥܒܕ ܠܗܘܢ
38 ܘܐܣܓܐ ܐܢܘܢ. ܐܝܟ ܥܢܐ ܕܒܢܝܢܫܐ. * ܐܝܟ ܥܢܐ ܩܕܝܫܬܐ. ܘܐܝܟ ܥܢܐ ܕܐܘܪܫܠܡ
ܒܥܐܕܝܗ.· ܗܟܢܐ ܢܗܘܝܢ ܡܕܝܢܬܐ ܕܚܪܒܢ ܗܘܝ. ܘܢܬܡܠܝܢ ܥܢܐ
ܕܒܢܝܢܫܐ. ܘܢܕܥܘܢ. ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܙ *

* ܥܠ ܚܝܐ ܕܡܝܬܐ * * ܘܗܘܬ ܥܠܝ ܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ.· ܘܐܦܩܢܝ ܒܪܘܚܗ 1
ܕܡܪܝܐ. ܘܐܣܝܡܢܝ ܒܦܩܥܬܐ. ܘܗܝ ܡܠܝܐ ܗܘܬ ܓܪܡܐ. * ܘܐܥܒܪܢܝ ܥܠܝܗܘܢ ܚܕܪܝܗܘܢ.· 2
ܘܚܙܝܬ ܕܣܓܝܐܝܢ ܗܘܝ ܛܒ ܥܠ ܦܩܥܬܐ. ܘܗܢܝܢ ܝܒܝܫܢ ܛܒ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܒܪܢܫܐ.· ܬܚܝܝܢ 3
ܓܪܡܐ ܗܠܝܢ.· ܘܐܡܪܬ. ܐܢܬ ܝܕܥ ܐܢܬ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܐܬܢܒܐ ܥܠ ܓܪܡܐ 4
ܗܠܝܢ. ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܓܪܡܐ ܝܒܝܫܐ.· ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ.

* Eripiam vos ab omnibus impuritatib⁹ veſtris, 29
advocabo frumentum & multiplicabo illud,
& non adducã ſuper vos famem: Multiplica- 30
bo fructus arborũ & proventus terræ, & poſt-
hac non patiemini opprobrium famis inter
gentes. Ibíque recordabimini viarum veſtra- 31
rum reprobarum, & actionum veſtrarum ſto-
lidarum, & rugabuntur facies veſtræ propter
iniquitatem veſtrã & abominationes veſtras.
Verùm ſcitote nequaquam propter vos hæc 32
ſum facturus, ait Dominus dominorum. Eru-
beſcite, & cohibete vos à viis veſtris peſſimis,
& ne moriamini Iſraelitæ. Sic ait Dominus 33
dominorum; Quâ die mundabo vos ab omni-
bus iniquitatibus veſtris, habitatas reddam
urbes, & reædificabo ruinas; Terra quæ de- 34
ſerta erat & inculta in oculis omnium viato-
rum, coletur: Dicéntque, Terra illa deſerta, 35
facta eſt ſimilis paradiſo Edenis, & urbes
quæ dirutæ erant & everſæ, factæ ſunt muni-
tiones fortiſſimæ. Ita cognoſcent populi qui 36
reliqui manebunt circa vos, me Dominum re-
ædificare quæ deſtructa ſunt, & conſerere quæ
deſerta: ego Dominus dixi, & faciam. Sic 37
ait Dominus dominorum; Ob id etiam Iſra-
elitas requiro, ut faciam ipſis, & multipli-
cem eos tanquam oves hominum. Ut oves 38
ſanctæ, & ut oves Jeroſolymæ in tempore ſo-
lennitatum ejus, ita erunt urbes quæ deſertæ
fuerant; implebuntur enim ovibus hominum:
& cognoſcent me eſſe Dominum.

CAP. XXXVII.

De reviviſcentia mortuorum.

DEinde fuit ſuper me manus Domini, edu- 1
cénſque me per ſpiritum ſuum Dominus, col-
locavit me in planitie quæ plena erat oſſibus:
Traduxítque me ſuper ea circunquaque; & 2
vidi plurima eſſe admodum in ea planitie, &
admodum ſicca. Tum dixit mihi; Fili homi- 3
nis, victuráne ſunt oſſa iſta? Dixi, Tu qui-
dem nôſti Domine dominorum. Dixit verò 4
mihi, Vaticinare de oſſibus iſtis, & dic eis;
Oſſa arida, audite ſermonem Domini.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

29 * واخلصكم من جميع نجاساتكم * وادعوا القمح واكثره * ولا اعطي عليكم قحطا *
30 * واكثر ثمر الشجر وغلات الحقل * كي لا تاخذون ايضا تعيير الجوع في الامم * ولا
31 تذكرون ايضا طرقكم الشريرة ولا اعمالكم الغير صالحة * ولا تسامون لوجوههم بآثامكم
32 وردائاتكم * فلست لاجلكم انا اصنع هذا * يقول الرب الاله * يكون معروفا لكم *
33 اخجلوا واستحيوا من طرقكم يا بيت اسرائيل يقول الرب * هكذا يقول الرب الاله * في ذلك
34 اليوم الذي فيه اطهركم من جميع آثامكم * واسكنكم المدن * وتبنى الخراب * وتستعمل
35 الارض الدائرة * من اجل ان الارض صارت دائرة لعيون كل مجتاز * ويقولون * صارت تلك
36 الارض الدائرة مثل بستان نعيم * والمدن الخراب الدائرة المحفورة * جلست حصينة * وتعلم
الامم الذين تبقوا حولكم اني انا الرب بنيت الخراب وغرست الدائرات * لاني انا الرب الرب
37 تكلمت وساصنع * هكذا يقول الرب الرب الاله * هذه ايضا الطلبة ساصنع لبيت اسرائيل *
38 لاصنع لهم واكثرهم مثل خراف اناسا * مثل خراف مقدسة * مثل خراف ايروسليم في
اعيادها * هكذا تصير المدن الخراب مملوة من خراف الناس * ويعلمون اني انا الرب *

* الفصل السابع والثلثون * * الاصحاح الحادي والعشرون *

1 * وكانت على يد الرب * واخرجني بروح الرب * ووضعني في وسط الصحراء * وهذه كانت
2 مملوة من عظام الناس * وطوفني عليها من حولها دائرا * واذا هي كثيرة جدا على وجه
3 الصحراء * وهي يابسة جدا * وقال لي * يا ابن الانسان احيا هذه العظام * فقلت يا رب يا رب
4 انت تعلم هذه * فقال لي * يا ابن الانسان * تنبا على هذه العظام فتقول لهم * ايتها العظام
اليابسة اسمعي قول الرب *

* *Et liberabo vos ab omnibus immunditiis* 29
veſtris. Advocabo frumentum, & mul-
tiplicabo illud, nec inferam vobis annonæ
caritatem: * *Et multiplicabo fructus ar-* 30
borum & proventus agrorum, ut non re-
portetis ampliùs improperium famis inter
gentes. Non revocabitis ampliùs in me- 31
moriam vias veſtras malas, neque actio-
nes veſtras improbas; nec æmulabimini
vultus eorum iniquitatibus & abomina-
tionibus veſtris. Non quidem propter 32
vos hæc faciam, dicit Dominus Deus,
notum ſit vobis. Confundimini & erube-
ſcite de viis veſtris O domus Iſraelis, ait
Dominus. Ita dicit Dominus Deus, Eo 33
die quo mundabo vos ab omnibus iniqui-
tatibus veſtris, faciam quoque ut habite-
tis in urbibus: reſtaurabuntur ruinæ, Et 34
tellus inculta coletur (nam tellus deſerta
facta eſt ob oculos omnium viatorum,)
Dicéntque; Facta eſt illa tellus inculta, 35
ſimilis horto deliciarum; & urbes diru-
tæ, incultæ, ſuffoſſæ, reſederunt munitæ.
Et agnoſcent gentes quæ circa vos re- 36
manſerunt, me Dominum reſtauráſſe rui-
nas, & plantâſſe terras incultas: quia
ego Dominus Dominus locutus ſum, etiam
faciam. Ita dicit Dominus, Dominus 37
Deus; Hanc adhuc faciam requiſitionem
domûs Iſraelis, ut faciam eis, & multos
reddam eos, ut agnos, homines; Ut 38
agnos ſanctos, ut agnos Jeroſolymæ in
feſtivitatibus ejus. Sic urbes dirutæ ple-
næ fient agnis humanis, & cognoſcent
me eſſe Dominum.

CAP. XXXVII.

Textus vigeſimus primus.

* *ET fuit ſuper me manus Domini, &* 1
eduxit me in ſpiritu Domini, poſuitque
me in medio ſolitudinis (hæc autem ple-
na erat oſſibus humanis.) Et cum cir- 2
cunduxiſſet me undequaque circum ea,
(& hæc quidem perquam plurima erant
ſuper faciem ſolitudinis illius, eaque ad-
modum ſicca) Dixit mihi; O fili ho- 3
minis, num victura ſunt hæc oſſa? Dixi,
O Domine, O Domine, tu id nôſti. Tum 4
dixit mihi; O fili hominis, vaticinare de
oſſibus iſtis, & dicas eis; O oſſa ſicca, au-
dite ſermonem Domini.

יחזקאל : לז

ego Ecce ,his oſſibus Deus Dominus dixit Sic
5 כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִֹה לָעֲצָמוֹת הָאֵלֶּה הִנֵּה אֲנִי
, nervos vos ſuper dabo Et .vivetis & ,ſpiritum vos in *introducens*
6 מֵבִיא בָכֶם רוּחַ וִחְיִיתֶם׃ וְנָתַתִּי עֲלֵיכֶם גִּידִים
, pelle vos *ſuper incruſtabo* & ,carnem vos ſuper faciam aſcendere &
וְהַעֲלֵתִי עֲלֵיכֶם בָּשָׂר וְקָרַמְתִּי עֲלֵיכֶם עוֹר
.Dominus *ego* quòd ſcietis & ; vivetis & ,ſpiritum vobis in *dabo* &
וְנָתַתִּי בָכֶם רוּחַ וִחְיִיתֶם וִידַעְתֶּם כִּי־אֲנִי יְהוָֹה׃
,*me prophetare ſecundùm* vox fuit & :*ſum juſſus* ſicut prophetavi Et
7 וְנִבֵּאתִי כַּאֲשֶׁר צֻוֵּיתִי וַיְהִי־קוֹל כְּהִנָּבְאִי
.ſuum os ad os oſſa acceſſerunt & ,commotio ecce &
וְהִנֵּה־רַעַשׁ וַתִּקְרְבוּ עֲצָמוֹת עֶצֶם אֶל־עַצְמוֹ׃
incruſtarat & ,aſcenderat caro & ,nervi ea ſuper ecce & ,vidi Et
8 וְרָאִיתִי וְהִנֵּה עֲלֵיהֶם גִּדִים וּבָשָׂר עָלָה וַיִּקְרַם
,me ad dixit Et .eis in non ſpiritus & ;deſuper pelle ea ſuper
9 עֲלֵיהֶם עוֹר מִלְמָעְלָה וְרוּחַ אֵין בָּהֶם׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי
ad *dices* & ,hominis fili vaticinare ;ſpiritum ad Vaticinare
הִנָּבֵא אֶל־הָרוּחַ הִנָּבֵא בֶן־אָדָם וְאָמַרְתָּ אֶל־
veni ventis quatuor A ,Deus Dominus dixit Sic ,ſpiritum
הָרוּחַ כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִֹה מֵאַרְבַּע רוּחוֹת בֹּאִי
ſicut prophetavi Et .vivent & ,iſtos interfectos in ſuffla & ,ſpiritus
10 הָרוּחַ וּפְחִי בַּהֲרוּגִים הָאֵלֶּה וְיִחְיוּ׃ וְהִנַּבֵּאתִי כַּאֲשֶׁר
ſteterúntque ,vixerunt & ,ſpiritus ea in eſt ingreſſus & :mihi præceperat
צִוָּנִי וַתָּבוֹא בָהֶם הָרוּחַ וַיִּחְיוּ וַיַּעַמְדוּ
Fili ,me ad dixit Et .valde ,valde *magna virtus* ſuos pedes ſuper
11 עַל־רַגְלֵיהֶם חַיִל גָּדוֹל מְאֹד מְאֹד׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי בֶּן־
ecce :*ipſa* Iſrael domus univerſa ,hæc oſſa ,hominis
אָדָם הָעֲצָמוֹת הָאֵלֶּה כָּל־בֵּית יִשְׂרָאֵל הֵמָּה הִנֵּה
ſumus ſuccisi ,noſtra ſpes periit & ,noſtra oſſa Aruerunt ,*dicentes*
אֹמְרִים יָבְשׁוּ עַצְמוֹתֵינוּ וְאָבְדָה תִקְוָתֵנוּ נִגְזַרְנוּ
Dominus dixit Sic ,eos ad *dices* & ,vaticinare Propterea .nobis
12 לָנוּ׃ לָכֵן הִנָּבֵא וְאָמַרְתָּ אֲלֵיהֶם כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי
faciam aſcendere & ,*veſtra ſepulchra aperiens* ego Ecce ,Deus
יֱהוִֹה הִנֵּה אֲנִי פֹתֵחַ אֶת־קִבְרוֹתֵיכֶם וְהַעֲלֵיתִי
ad vos faciam venire & :mi populus ,veſtris *ſepulchris* è vos
אֶתְכֶם מִקִּבְרוֹתֵיכֶם עַמִּי וְהֵבֵאתִי אֶתְכֶם אֶל־
me aperiendo in ,Dominus *ego* quòd ſcietis Et .Iſrael *humum*
13 אַדְמַת יִשְׂרָאֵל׃ וִידַעְתֶּם כִּי־אֲנִי יְהוָֹה בְּפִתְחִי
,veſtris *ſepulchris* è vos *me aſcendere faciendo in* & ,veſtra ſepulchra
אֶת־קִבְרוֹתֵיכֶם וּבְהַעֲלוֹתִי אֶתְכֶם מִקִּבְרוֹתֵיכֶם
, vivetis & ,vobis in meum ſpiritum dabo Et .mi populus
14 עַמִּי׃ וְנָתַתִּי רוּחִי בָכֶם וִחְיִיתֶם
quod ſcietis & :veſtram humum ſuper vos faciam requieſcere &
וְהִנַּחְתִּי אֶתְכֶם עַל־אַדְמַתְכֶם וִידַעְתֶּם כִּי
fuit Et .Dominus dixit ,feci & ,ſum locutus Dominus ego
15 אֲנִי יְהוָֹה דִּבַּרְתִּי וְעָשִׂיתִי נְאֻם־יְהוָֹה׃ וַיְהִי
ſume ,hominis fili tu Et :dicendo ,me ad Domini verbum
16 דְבַר־יְהוָֹה אֵלַי לֵאמֹר׃ וְאַתָּה בֶן־אָדָם קַח־
,Iſrael filiis & ,Jehudæ *eo ſuper* ſcribe & ;unum lignum tibi
לְךָ עֵץ אֶחָד וּכְתֹב עָלָיו לִיהוּדָה וְלִבְנֵי יִשְׂרָאֵל
ligno ,Joſeph ,*eo ſuper* ſcribe & ,*unum* lignum tolle & :ejus ſociis
חֲבֵרָו וּלְקַח עֵץ אֶחָד וּכְתוֹב עָלָיו לְיוֹסֵף עֵץ
ea *fac accedere* Et .ejus ſociorum ,Iſrael domui cunctæ & ,Ephraim
17 אֶפְרַיִם וְכָל־בֵּית יִשְׂרָאֵל חֲבֵרָו׃ וְקָרַב אֹתָם
.*tua manu in ſingula in* erunt & :unum lignum *in* ,tibi *unum ad unum*
אֶחָד אֶל־אֶחָד לְךָ לְעֵץ אֶחָד וְהָיוּ לַאֲחָדִים בְּיָדֶךָ׃
indicabis Nónne :dicendo ,tui populi filii te ad dixerint cùm Et
18 וְכַאֲשֶׁר יֹאמְרוּ אֵלֶיךָ בְּנֵי עַמְּךָ לֵאמֹר הֲלוֹא־תַגִּיד
?tibi iſta quid ,nobis
לָנוּ מָה־אֵלֶּה לָּךְ׃

Verſio VULG. LAT.

5 Hæc dicit Dominus Deus oſſibus his; Ecce ego intromittã in vos
6 ſpiritum, & vivetis. Et dabo ſuper vos nervos, & ſuccreſcere faciam ſuper vos carnes, & ſuperextendam in vobis cutem: & dabo vobis ſpiritum, & vivetis,
7 & ſcietis quia ego Dñs. Et prophetavi ſicut præceperat mihi: factus eſt autem ſonitꝰ, prophetante me, & ecce commotio: & acceſſerunt oſſa ad oſſa, unum-
8 quodque ad juncturam ſuam. Et vidi, & ecce ſuper ea nervi & carnes aſcenderunt: & extenta eſt in eis cutis deſupèr, & ſpiri-
9 tum non habebant. Et dixit ad me; Vaticinare ad ſpiritum, vaticinare, fili hominis, & dices ad ſpiritum; Hæc dicit Dominus Deꝰ; A quatuor ventis veni ſpiritus, & inſuffla ſuper interfectos
10 iſtos, & reviviſcant. Et prophetavi ſicut præceperat mihi: & ingreſſus eſt in ea ſpiritus, & vixerunt: ſteterúntque ſuper pedes ſuos exercitus grandis nimis
11 valdé. Et dixit ad me; Fili hominis, oſſa hæc univerſa, domus Iſrael eſt: ipſi dicunt; Aruerunt oſſa noſtra, & periit ſpes noſtra,
12 & abſciſſi ſumus. Propterea vaticinare, & dices ad eos; Hæc dicit Dominus Deus; Ecce ego aperiam tumulos veſtros, & educam vos de ſepulchris veſtris, populus meus: & inducam vos in
13 terram Iſrael. Et ſcietis quia ego Dominus, cùm aperuero ſepulchra veſtra, & eduxero vos de tumulis veſtris, popule meus:
14 Et dedero ſpiritum meum in vobis, & vixeritis, & requieſcere vos faciã ſuper humũ veſtrã: & ſcietis quia ego Dominꝰ locutus ſum, & feci, ait Dominꝰ Deus.
15 Et factꝰ eſt ſermo Domini ad
16 me, dicens; Et tu, fili hominis, ſume tibi lignum unum: & ſcribe ſuper illud; Judæ, & filiorum Iſrael ſociorum ejꝰ: et tolle lignum alterum, et ſcribe ſuper illud; Joſeph ligno Ephraim, et cunctæ domui Iſrael, ſociorúm-
17 que ejꝰ. Et adjunge illa, unum ad alterum tibi in lignum unum: et erunt in unionem in manu
18 tua. Cùm autem dixerint ad te filii populi tui, loquentes; Nónne indicas nobis quid in his tibi velis?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

5 Τάδε λέγει (δ) κύριος τοῖς ὀστέοις τούτοις, Ἰδοὺ ἐγὼ φέρω (ε) ἐφ' ὑμᾶς πνεῦμα
6 ζωῆς, Καὶ δώσω ἐφ' ὑμᾶς νεῦρα, καὶ ἀνάξω ἐφ' ὑμᾶς (ζ) σάρκα, καὶ ἐκτενῶ ἐφ' ὑμᾶς δέρμα, καὶ δώσω πνεῦμά μου (η) εἰς ὑμᾶς, καὶ ζήσεσθε, καὶ γνώσεσθε ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος. Καὶ
7 (ᵃ) προεφήτευσα, καθὼς ἐνετείλατό μοι (θ). καὶ ἐγένετο (ι) ἐν τῷ ἐμὲ προφητεῦσαι, καὶ ἰδοὺ σεισμὸς, καὶ προσήγαγε τὰ ὀστᾶ ἑκά-
8 τερον πρὸς τὴν ἁρμονίαν αὐτοῦ. Καὶ εἶδον, καὶ ἰδοὺ, ἐπ' αὐτὰ νεῦρα καὶ σάρκες (κ) ἐφύοντο, καὶ ἀνέβαινεν ἐπ' αὐτὰ (λ) δέρματα ἐπάνω, καὶ πνεῦμα οὐκ ἦν (μ) ἐν
9 αὐτοῖς. Καὶ εἶπε πρός με, Προφήτευσον (ν) ἐπὶ τὸ πνεῦμα, προφήτευσον υἱὲ ἀνθρώπου, καὶ εἰπὸν τῷ πνεύματι, Τάδε λέγει (ξ) κύριος, Ἐκ τῶν τεσσάρων πνευμάτων ἐλθὲ, καὶ ἐμφύσησον εἰς τοὺς νεκροὺς τούτους,
10 καὶ ζησάτωσαν. Καὶ (ο) προεφήτευσα καθότι ἐνετείλατό μοι, καὶ εἰσῆλθεν εἰς αὐτοὺς (π) τὸ πνεῦμα, καὶ ἔζησαν, καὶ ἔστησαν ἐπὶ τῶν ποδῶν αὐτῶν, συναγωγὴ (ρ) πολλὴ σφό-
11 δρα. Καὶ ἐλάλησε κύριος πρός με, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, τὰ ὀστᾶ ταῦτα πᾶς οἶκος Ἰσραήλ ἐστιν, καὶ αὐτοὶ λέγουσι, Ξηρὰ γέγονε τὰ ὀστᾶ ἡμῶν, ἀπόλωλεν ἡ
12 ἐλπὶς ἡμῶν, διαπεφωνήκαμεν. Διατοῦτο προφήτευσον, καὶ εἰπὸν (σ), Τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἀνοίγω (τ) τὰ μνήματα ὑμῶν, καὶ ἀνάξω ὑμᾶς ἐκ τῶν μνημάτων ὑμῶν, καὶ εἰσάξω ὑμᾶς εἰς τὴν γῆν τοῦ
13 Ἰσραήλ· Καὶ γνώσεσθε ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος, ἐν τῷ ἀνοῖξαί με τοὺς τάφους ὑμῶν, τοῦ ἀναγαγεῖν με (υ) ἐκ τῶν τάφων τὸν
14 λαόν μου. Καὶ δώσω πνεῦμά μου εἰς ὑμᾶς, καὶ ζήσεσθε, καὶ θήσομαι ὑμᾶς ἐπὶ τὴν γῆν ὑμῶν, καὶ γνώσεσθε ὅτι ἐγὼ κύριος· λελάληκα καὶ ποιήσω, λέγει (φ) κύριος.
15 Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρός με, λέ-
16 γων, Υἱὲ ἀνθρώπου, λάβε σεαυτῷ ῥάβδον, καὶ γράψον ἐπ' αὐτὴν τὸν Ἰούδαν, καὶ τοὺς υἱοὺς (χ) Ἰσραὴλ τοὺς προσκειμένους (ψ) ἐπ' αὐτόν· καὶ ῥάβδον δευτέραν λήψῃ σεαυτῷ, καὶ γράψεις αὐτὴν τῷ Ἰωσὴφ, ῥάβδον Ἐφραὶμ, καὶ πάντας τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ τοὺς (ω) προστεθέντας πρὸς αὐτόν.
17 Καὶ συνάψεις αὐτὰς πρὸς ἀλλήλας (") σεαυτῷ, εἰς ῥάβδον μίαν τοῦ δῆσαι (α) ἑαυτὰς,
18 καὶ ἔσονται ἐν τῇ χειρί σου. Καὶ ἔσται ὅταν λέγωσι πρὸς σὲ οἱ υἱοὶ τοῦ λαοῦ σου, (β) Οὐκ ἀναγγέλλεις ἡμῖν, τί ἐστι ταῦτά σοι;

Hæc dicit Dominus oſſibus iſtis; 5 *Ecce ego affero ſuper vos ſpiritū vitæ, Et dabo ſuper vos nervos,* 6 *& inducam ſuper vos carnem, et extendam ſuper vos pellem, & dabo ſpiritum meum in vos: & vivetis; & cognoſcetis, quoniam ego ſum Dominus. Et prophetavi,* 7 *ſicut præcepit mihi. Et factum (c) eſt, cùm ego prophetarem: & ecce commotio: & accedebant oſſa (d) invicèm ad juncturam ſuam. Et vidi: & ecce ſuper ea* 8 *nervi & carnes oriebantur: & aſcendebant ſuper ea pelles deſupér: & ſpiritus non erat in eis. Et dixit ad me; Propheta ſuper* 9 *ſpiritum, propheta, fili hominis, et dic ſpiritui; Hæc dicit Dominus; A quatuor ſpiritibus (e) veni, & inſuffla in mortuos iſtos, & vivant. Et prophetavi, ſicut præ-* 10 *ceperat mihi. Et ingreſſus eſt in eos ſpiritus: & vixerunt: & ſteterunt in pedibus ſuis, (f) congregatio multa (g) nimis. Et loquu-* 11 *tus eſt Dominus ad me, dicens; Fili hominis, oſſa hæc omnis domus Iſrael eſt: & ipſi dicunt; Arida facta ſunt oſſa noſtra: periit ſpes noſtra: (h) diſſonuimus. Pro-* 12 *pterea vaticinare, & dic; Hæc dicit Dominus; Ecce ego aperio memorias veſtras: & reducam vos de ſepulchris veſtris: & introducam vos in terram Iſrael: Et cognoſcetis quoniam ego* 13 *ſum Dominus; cùm aperuero ſepulchra veſtra: ut educam (i) de ſepulchris populum meum. Et* 14 *dabo ſpiritum meum in vobis, & vivetis: & ponam vos ſuper terram veſtrã: & cognoſcetis quia ego Dominus. Loquutus ſum, & faciam, dicit Dominus. Et factus* 15 *eſt ſermo Domini ad me, dicens; Fili hominis, aſſume tibi (k) vir-* 16 *gam: & ſcribe ſuper eam Judam, & filios Iſrael, qui appoſiti ſunt ei. Et virgam ſecundam aſſumes tibi: Et ſcribes eam (l) ipſi Joſeph, virgam Ephraem, & omnes filios Iſrael, qui appoſiti ſunt ei. Et conjunges eas invi-* 17 *cèm tibi in virgam unam, ut copules eas: & erunt in manu tua. Et erit, quando dixerint tibi filii* 18 *populi mei, Non indicas nobis, quid ſint iſta tibi?*

MS.A. (δ) κύριος κύριος (ε) εἰς ὑμᾶς (ζ) σάρκας, (η) ἐφ' ὑμᾶς, (ᵃ) ἐπροφήτευσα, (θ) κύριος. (ι) φωνὴ ἐν τῷ ἐμὲ προφητεύειν, (κ) ἀνεφύοντο, (λ) δέρμα (μ) ἐν αὐτοῖς. (ν) υἱὲ ἀνθρώπου, προφήτευσον ἐπὶ τὸ πνεῦμα, καὶ εἰπὸν (ξ) κύριος κύριος, Ἐλθὲ ἐκ τῶν τεσσάρων ἀνέμων τοῦ οὐρανοῦ, ἐλθὲ τὸ πνεῦμα, καὶ ἐμφύσησον (ο) ἐπροφήτευσα καθὼς (π) πνεῦμα ζωῆς, καὶ (ρ) μεγάλη (σ) πρὸς αὐτοὺς, Τάδε λέγει ἀδωναῒ κύριος, (τ) ὑμῶν τὰ μνήματα, (υ) ὑμᾶς ἐκ τῶν τάφων ὑμῶν τὸν (φ) κύριος κύριος. (χ) αὐτῆς τοὺς (ψ) πρὸς (ω) προσκειμένους πρὸς (") σεαυτῷ, (α) αὐτὰς, (β) λέγοντες, Οὐκ ἀπαγγελεῖς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים לְגַרְמַיָא הָאִלֵין הָא אֲנָא מָעֵיל בְּכוֹן רוּחָא וְתֵחוֹן׃ וְאֶתֵּן עֲלֵיכוֹן
6 גִּידִין וְאַסֵּיק עֲלֵיכוֹן בִּסְרָא וְאֶקְרוֹם עֲלֵיכוֹן מַשְׁכָא וְאֶתֵּן בְּכוֹן רוּחָא וְתֵחוֹן וְתֵדְעוּן
7 אֲרֵי אֲנָא יְיָ׃ וְאִתְנַבֵּיתִי כְּמָא דְאִתְפַּקְּדִית וַהֲוָה קָל כְּאִתְנַבָּיוּתִי וְהָא זִיעוּ וּקְרִיבוּ
8 גַּרְמַיָא גַּרְמָא לְוַת חַבְרֵיהּ׃ וַחֲזֵית וְהָא עֲלֵיהוֹן גִּידִין וּבִסְרָא סְלִיק וּקְרַם עֲלֵיהוֹן
9 מַשְׁכָא מִלְעֵלָא וְרוּחָא לֵית בְּהוֹן׃ וַאֲמַר לִי אִתְנַבֵּי עַל רוּחָא אִתְנַבֵּי בַּר אָדָם
וְתֵימַר לְרוּחָא כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים מֵאַרְבַּע רוּחַיָא אַתְיָא רוּחָא וְעוּלִי בִּקְטִילַיָא
10 הָאִלֵין וְיֵחוֹן׃ וְאִתְנַבֵּיתִי כְּמָא דִי פַּקְדַנִי וְעָלַת בְּהוֹן רוּחָא וַיְחִיוּ וְקָמוּ עַל רִגְלֵיהוֹן
11 מַשְׁרְיָן סַגִּיאָן לַחֲדָא לַחֲדָא׃ וַאֲמַר לִי בַּר אָדָם גַּרְמַיָא הָאִלֵין כָּל בֵּית יִשְׂרָאֵל
12 אִנוּן הָא אִנוּן אָמְרִין יְבֵשׁוּ גַרְמָנָא פְּסַק סִבְרָנָא אֲבַדְנָא לָנָא׃ בְּכֵן אִתְנַבֵּי וְתֵימַר
לְהוֹן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים הָא אֲנָא פְתַחִית יַת קִבְרֵיכוֹן וְאַסֵּק יַתְכוֹן מִקִּבְרֵיכוֹן עַמִּי
13 וְאָעֵיל יַתְכוֹן לְאַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל׃ וְתֵדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ כַּד אֶפְתַּח יַת קִבְרֵיכוֹן וְכַד
14 אַסֵּיק יַתְכוֹן מִגּוֹ קִבְרֵיכוֹן עַמִּי׃ וְאֶתֵּן רוּחִי בְּכוֹן וְתֵחוֹן וְאַשְׁרֵי יַתְכוֹן עַל אַרְעֲכוֹן
15 וְתִדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ גְּזָרִית בְּמֵימְרִי וַאֲקַיֵּם אֲמַר יְיָ׃ וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם
16 יְיָ עִמִּי לְמֵימַר׃ וְאַתְּ בַּר אָדָם סַב לָךְ לוּחָא חֲדָא וּכְתוֹב עֲלוֹהִי לְשִׁבְטָא דִיהוּדָה
וְלִבְנֵי יִשְׂרָאֵל אֲחֵיהוֹן וְסַב לוּחָא חֲדָא וּכְתוֹב עֲלוֹהִי שִׁבְטָא דְיוֹסֵף דִּי הוּא
17 שִׁבְטָא דְאֶפְרַיִם וְכָל בֵּית יִשְׂרָאֵל אֲחֵיהוֹן׃ וְתִקְרֵיב יַתְהוֹן חַד לְוַת חַד לָךְ לְלוּחָא
18 חַד וִיהוֹן לְחוֹד בִּידָךְ׃ וְכַד יֵימְרוּן לָךְ בְּנֵי עַמָּךְ לְמֵימַר הֲלָא תְחַוֵּי לָנָא מָה
אִלֵין לָךְ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Hæc dicit Dominus Deus oſſibus his: ecce ego intromittam in vos ſpiri- 5 tum, & vivetis. Et dabo ſuper vos nervos, & creſcere faciam ſuper vos car- 6 nem, & ſuperinducam ſuper vos cutem, & dabo vobis ſpiritum, & vivetis; & ſcietis, quia ego Dominus. Et prophetavi ſicut præceptum fuit mihi: & 7 facta eſt vox cùm prophetarem; & ecce commotio: & acceſſerunt oſſa ad ſuum quodque os. Et vidi, & ecce ſuper ea nervi, & caro ſuccrevit, & ſu- 8 perextenſa eſt illis cutis deſuper. & ſpiritus non erat in eis. Et dixit ad 9 me, Vaticinare ad ſpiritum, vaticinare fili hominis, & dices ſpiritui, Hæc dicit Dominus Deus, A quatuor ventis veni ſpiritus, & ingredere in interfectos iſtos, & vivant. Et prophetavi ſicut præcepit mihi, & ingreſſus eſt 10 ſpiritus in eos, & vixerunt, & ſteterunt ſuper pedes ſuos, exercitus magnus nimis valdè. Et dixit ad me, Fili hominis, oſſa hæc omnis domus Iſrael 11 ſunt: ecce ipſi dicunt, Aruerunt oſſa noſtra, ſucciſa eſt ſpes noſtra, & periimus. Propterea vaticinare, & dices ad eos: Hæc dicit Dominus Deus, Ecce 12 ego aperiam ſepulchra veſtra, & aſcendere vos faciam de ſepulchris veſtris popule mi, & inducam vos in terram Iſrael. Et ſcietis quia ego Dominus, 13 cùm aperuero ſepulchra veſtra, & aſcendere vos fecero de medio ſepulchrorum veſtrorum, popule mi. Et dabo ſpiritum meum in vobis & vive- 14 tis, & habitare vos faciam ſuper terram veſtram: & ſcietis, quia ego Dominus decrevi in verbo meo, & firmabo illud, ait Dominus. Et factum eſt 15 verbum prophetiæ à facie Domini mecum, dicens: Et tu fili hominis, tolle 16 tibi tabulam unam & ſcribe ſuper eam tribui Juda, & filiis Iſrael fratribus eorum; & tolle tabulam alteram, & ſcribe ſuper illam *tribui* Joſeph, *qua* eſt tribus Ephraim, & cunctæ domui Iſrael fratribus ejus. Et applicabis 17 eas unam ad alteram tibi in tabulam unam; & erunt in unam in manu tua. Et cùm dixerint tibi filii populi tui, dicendo: Nónne indicabis nobis quid 18 ſunt iſta tibi?

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

5 * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ ܠܓܪ̈ܡܐ ܗܠܝܢ܂ ܗܐ ܐܢܐ ܡܥܠ ܐܢܐ ܒܟܘܢ ܪܘܚܐ ܘܬܐܚܘܢ܂
6 * ܘܐܬܠ ܥܠܝܟܘܢ ܓܝܕܐ܂ ܘܐܣܩ ܥܠܝܟܘܢ ܒܣܪܐ܂ ܘܐܪܡܐ ܥܠܝܟܘܢ ܡܫܟܐ܂ ܘܐܬܠ ܒܟܘܢ
7 ܪܘܚܐ ܘܬܐܚܘܢ܂ ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ܂ * ܘܐܬܢܒܝܬ ܐܝܟ ܕܦܩܕܢܝ܂ ܘܟܕ ܐܬܢܒܝܬ܂ ܗܘܐ
8 ܩܠܐ ܘܙܘܥܐ܂ ܘܩܪܒܘ ܓܪ̈ܡܐ ܓܪܡܐ ܠܘܬ ܫܪܝܬܗ܂ * ܘܚܙܝܬ ܕܣܠܩܘ ܥܠܝܗܘܢ ܓܝܕܐ
9 ܘܒܣܪܐ܂ ܘܐܬܪܡܝ ܥܠܝܗܘܢ ܡܫܟܐ ܡܢ ܠܥܠ܂ ܘܪܘܚܐ ܠܝܬ ܗܘܬ ܒܗܘܢ܂ * ܘܐܡܪ ܠܝ܂
ܐܬܢܒܐ ܥܠ ܪܘܚܐ܂ ܐܬܢܒܐ ܒܪ ܐܢܫܐ܂ ܘܐܡܪ ܠܪܘܚܐ܂ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ܂ ܬܐ ܪܘܚܐ ܡܢ
10 ܐܪܒܥ ܪ̈ܘܚܝܢ܂ ܘܢܫܘܒ ܒܩܛܝ̈ܠܐ ܗܠܝܢ ܘܢܐܚܘܢ܂ * ܘܐܬܢܒܝܬ ܐܝܟ ܕܦܩܕܢܝ܂ ܘܥܠܬ
11 ܒܗܘܢ ܪܘܚܐ ܘܚܝܘ܂ ܘܩܡܘ ܥܠ ܪ̈ܓܠܝܗܘܢ܂ ܚܝܠܐ ܪܒܐ ܛܒ܂ * ܘܐܡܪ ܠܝ܂ ܒܪ ܐܢܫܐ܂
ܗܠܝܢ ܓܪ̈ܡܐ ܟܠܗܘܢ܂ ܕܒܢ̈ܝ ܐܝܣܪܝܠ ܐܢܘܢ܂ ܕܐܡܪܝܢ ܗܘܘ ܕܝܒܫ ܓܪ̈ܡܝܢ܂ ܘܐܒܕ
12 ܣܒܪܢ܂ ܘܐܬܓܙܪܢ ܠܢ܂ * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܬܢܒܐ܂ ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ܂ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ܂ ܗܐ
ܦܬܚ ܐܢܐ ܩܒܪ̈ܝܟܘܢ܂ ܘܡܣܩ ܐܢܐ ܠܟܘܢ ܡܢ ܩܒܪ̈ܝܟܘܢ܂ ܘܡܥܠ ܐܢܐ ܠܟܘܢ ܠܐܪܥܐ
13 ܕܐܝܣܪܝܠ܂ * ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ܂ ܡܐ ܕܦܬܚܬ ܩܒܪ̈ܝܟܘܢ܂ ܘܡܐ ܕܐܣܩܬܟܘܢ ܡܢ
14 ܩܒܪ̈ܝܟܘܢ܂ * ܘܐܬܠ ܪܘܚܝ ܒܟܘܢ ܘܬܐܚܘܢ܂ ܘܐܫܪܝܟܘܢ ܒܐܪܥܟܘܢ܂ ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ
ܐܢܐ ܡܪܝܐ܂ ܕܡܠܠܬ ܘܥܒܕܬ܂ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ܂

* ܥܠ ܕܡܣܩܝܢ ܘܗܘܝܢ ܚܕ ܥܡܐ ܘܚܕܐ ܡܠܟܘܬܐ *

15 * ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ܂ * ܘܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ܂ ܣܒ ܠܟ ܩܝܣܐ
16 ܚܕ܂ ܘܟܬܘܒ ܥܠܘܗܝ ܠܝܗܘܕܐ ܘܠܒܢ̈ܝ ܐܝܣܪܝܠ ܚܒܪ̈ܘܗܝ܂ ܘܣܒ ܩܝܣܐ ܐܚܪܢܐ܂
ܘܟܬܘܒ ܥܠܘܗܝ ܠܝܘܣܦ ܩܝܣܐ ܕܐܦܪܝܡ܂ ܘܠܟܠܗܘܢ ܒܢ̈ܝ ܐܝܣܪܝܠ ܚܒܪ̈ܘܗܝ܂
17 * ܘܩܪܒ ܐܢܘܢ ܚܕ ܠܘܬ ܚܕ܂ ܘܢܗܘܘܢ ܚܕ ܩܝܣܐ ܒܐܝܕܟ܂ * ܘܐܢ ܢܐܡܪܘܢ ܠܟ ܒܢ̈ܝ
18 ܥܡܟ܂ ܚܘܝܢ ܡܢܐ ܐܢܝܢ ܗܠܝܢ܂

Sic ait Dominus dominorum oſſibus iſtis; 5
Ecce ego inducturus ſum in vos ſpiritum, &
vivetis. Nervos dabo ſuper vos, faciam ut 6
aſcendat ſuper vos caro, obducam vos pelle,
indámque vobis ſpiritum, & vivetis: ſcietiſq;
me eſſe Dñm. Itaq; vaticinatus ſum quemad- 7
modum præceperat mihi: cúmq, vaticinatus
eſſem, fact⁹ eſt ſon⁹ & ſtrepitus, & acceſſerunt
oſſa, *quodlibet* os ad juncturam ſuam: Et vidi 8
aſcendiſſe ſuper ea nervos & carnem, obdu-
ctâmq ſuper ea pellem ſupernè, ſpiritū autem
eis nullum ineſſe. Dixit ergò mihi; Vaticinare 9
de ſpiritu, vaticinare fili hominis, & dic ſpi-
ritui; Sic ait Dominus dominorum, Veni ſpi-
ritus è quatuor ventis, & perfla hos inter-
fectos, ut vivant. Et cum vaticinatus eſſem 10
quemadmodum præceperat mihi, ingreſſus eſt
in ea ſpiritus, & revixerunt, ſteterúntque ſu-
per pedes ſuos, exercitus admodum copioſus.
Deinde dixit mihi; Fili hominis, omnia hæc 11
oſſa filiorum ſunt Iſraelis, qui dicebant; Aru-
erunt oſſa noſtra, periit ſpes noſtra, defecimus.
Iccirco vaticinare, & dic eis; Sic ait Dñs do- 12
minorum, Ecce aperiam ſepulchra veſtra, &
extraham vos è ſepulchris veſtris, adducámq;
vos in terram Iſraelis; Et ſcietis me eſſe Do- 13
minum. Cùm aperuero ſepulchra veſtra,
cúmque extraxero vos è ſepulchris veſtris; in- 14
dam vobis ſpiritum meum, & vivetis, & col-
locabo vos in terra veſtra; & cognoſcetis me
eſſe Dominum; dixi, & faciam ait Dominus
dominorum:

De eo quòd aſcenſuri eſſent, & unus popu-
lus unumq, regnum futuri.

Rurſus fuit ad me ſermo Domini, dicendo; 15
Tu autem fili hominis, accipe tibi lignum 16
unum, & ſcribe ſuper illud Judam et filios Iſ-
raelis, ſocios ejus; deinde accipe lignum al-
terum, et ſcribe ſuper illud Joſephum (in *eo-*
dem ligno Aphremi) omnéſque filios Iſraelis,
ſocios ipſius. Tum admove ea unum ad al- 17
terum, ſintque lignum unum in manu tua.
Quòd ſi tibi dixerint populares tui, Oſtende 18
nobis quid hæc ſint;

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

5 * هكذا يقول الرب الرب لهذه العظام * ها انا اجلب اليكم روح حياة * واعطي عليكم
6 عصبا * واصعد عليكم لحما * وامدد عليكم جلدا * واعطي عليكم روحي وتحيون *
7 وتعلمون اني انا الرب انا * فتنبيت كما امرني الرب * وكان صوت عند ما تنبات * واذا زلزلة
8 وقربت العظام * العظم الى مفصله * ونظرت واذا عليها عصب * ونبتت لحومها * وصعد عليها
9 جلد من فوقها * ولم تك فيها روح * وقال لي * تنبا يا ابن الانسان * تنبا على الروح * وقل
للروح * هكذا يقول الرب الرب * من اربعة رياح السماء ات ايها الروح * وانفخي في هذه
10 الاموات * وليعيشوا * وتنبيت كما امرني * ودخلت فيهم روح الحياة وعاشوا * ووقفوا على اقدامهم
11 جمع كبير جدا جدا * وتكلم الرب معي قايلا * يا ابن الانسان * هذه العظام هي كل
12 بيت اسرايل * وهم يقولون * عظامنا صارت يابسة * وهلك رجاونا ودبرنا * لاجل هذا تنبا وقل
لهم * هكذا يقول الرب الرب * ها انا افتح اجداثكم * واصعدكم من قبوركم يا شعبي * وادخلكم
13 الى ارض اسرايل * وتعلمون اني انا الرب * وانا عند ما افتح قبوركم لاصعدكم من قبوركم يا
14 شعبي * واعطي روحي فيكم وتحيون * واضعكم في ارضكم * وتعلمون اني انا الرب انا *
تكلمت وساصنع يقول الرب الرب *

* النبوة في صعود بني اسرايل من ارض بابل * وانهم يصيرون شعبا واحدا ومملكة واحدة *

15 * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان خذ لك عصا * واكتب عليها يهودا وبنيه
16 الدخيلين اليه * وتاخذ لك عصا ثانية * وتكتبها ليوسف * عصا افرام وجميع بني اسرايل
17 المنتمين اليه * وتجمعهما الى بعضهما بعض لك عصا واحدة * لتربطهما ويكونا لك في يدك *
18 * ويكون اذ يقولون لك بنو شعبك قايلين * لم تخبرنا ما هي هذه لك *

Ita dicit Dominus Dominus oſſibus iſtis; 5
Ecce ego allaturus ſum vobis ſpiritum
vitæ, Et daturus ſuper vos nervos, fa- 6
cturus ut aſcendat ſuper vos caro, exten-
ſurus ſuper vos cutem, tum daturus ſu-
per vos ſpiritum meum, & vivetis; ſci-
etiſque me Dominum eſſe. Itaque vati- 7
cinatus ſum, quemadmodum præceperat
mihi Dominus, fuitque ſonus ubi vati-
cinatus eſſem, & ecce terræmotus qui ad-
movit oſſa, quodlibet *os ad juncturam*
ſuam. Tum vidi, & ecce ſuper ea ner- 8
vi, exortæ ſunt carnes eorum, & aſcen-
dit ſuper ea cutis ſupernè: at nondum
erat in eis ſpiritus, Quarè dixit mihi; 9
Propheta O fili hominis, propheta de ſpi-
ritu, & dic ſpiritui; Ita dicit Dominus
Dominus; E quatuor cœli ventis veni O
ſpiritus, & infla in hos mortuos, vivánt-
que. Prophetavi igitur, ut præceperat 10
mihi, ingreſſúſque eſt in ea ſpiritus vita-
lis, & revixerunt, ſteterúntque in pedes
ſuos, turba quàm maximè copioſa. Tum 11
allocutus eſt me Dominus, dicens; O fili
hominis, hæc oſſa ſunt domus Iſraelis
univerſa. Jam ipſi dicunt; Oſſa noſtra
facta ſunt arida, periit ſpes noſtra, in-
terivimus: Ideò propheta, & dic eis; 12
Ita dicit Dominus Dominus; Ecce ego
aperiam monumenta veſtra, & extraham
vos è ſepulchris veſtris O mi popule, &
introducam vos in terram Iſraelis: Et 13
ſcietis me eſſe Dominum. Et ego cùm
aperuero ſepulchra veſtra, extraham vos
è ſepulchris veſtris O mi popule; Da- 14
bóque ſpiritum meum in vos, & vive-
tis: ponámque vos in terra veſtra, &
ſcietis me Dominum eſſe. Locutus ſum,
& præſtabo, dicit Dominus Dominus.

Prophetia de aſcenſu filiorum Iſ-
raelis è terra Babelis: eóſque
futuros populum unum & re-
gnum unum.

Deinde fuit ſermo Domini ad me, di- 15
cens; O fili hominis, ſume tibi virgam, 16
& inſcribe illi Judam & filios ejus ſibi
colonos: ſumes etiam tibi virgam alte-
ram, & ſcribes eam Joſepho, virgam
Aphrami & omnium filiorum Iſraelis ab
eo oriundorum: Tum compinges eas 17
tibi alteram cum altera in baculum unum,
colligando eas; ſintque tibi in manu tua.
Et erit, cùm tibi dixerint populares tui, 18
dicentes; Annon indicares nobis quid hoc
tibi ſit?

יחזקאל : לח

lignum *capiens ego* Ecce , Deus Dominus dixit Sic ,eos ad Loquere
19 דַּבֵּר אֲלֵהֶם כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה הִנֵּה אֲנִי לֹקֵחַ אֶת־עֵץ
dabo & ; ejus ſocias Iſrael tribus & , Ephraim manu in quod ,Joſeph
יוֹסֵף אֲשֶׁר בְּיַד־אֶפְרַיִם וְשִׁבְטֵי יִשְׂרָאֵל חֲבֵרָו וְנָתַתִּי
, unum lignum *in* eas faciam & , Jehudah ligno cum *ipſum ſuper* eas
אוֹתָם עָלָיו אֶת־עֵץ יְהוּדָה וַעֲשִׂיתִם לְעֵץ אֶחָד
eis ſuper ſcribes quibus ligna erunt Et.mea manu in unum erunt Et
20 וְהָיוּ אֶחָד בְּיָדִי : וְהָיוּ הָעֵצִים אֲשֶׁר־תִּכְתֹּב עֲלֵיהֶם
Dominus dixit Sic : eos ad loquere Et .eorum oculis in tua manu in
21 בְּיָדְךָ לְעֵינֵיהֶם : וְדַבֵּר אֲלֵיהֶם כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי
quò gentes inter ab Iſrael filios *capiens* ego Ecce , Deus
יֱהוִה הִנֵּה אֲנִי לֹקֵחַ אֶת־בְּנֵי יִשְׂרָאֵל מִבֵּין הַגּוֹיִם אֲשֶׁר
in eos faciam venire & ,undique eos congregabo &:*illuc* ierunt
הָלְכוּ־שָׁם וְקִבַּצְתִּי אֹתָם מִסָּבִיב וְהֵבֵאתִי אוֹתָם אֶל־
montibus in ,terra in unam gentem *in* eos faciam Et .ſuam terram
22 אַדְמָתָם : וְעָשִׂיתִי אֹתָם לְגוֹי אֶחָד בָּאָרֶץ בְּהָרֵי
erunt non & : regem in ipſis univerſis erit unus rex & : Iſrael
יִשְׂרָאֵל וּמֶלֶךְ אֶחָד יִהְיֶה לְכֻלָּם לְמֶלֶךְ וְלֹא יִהְיֶה־
regna duo in amplius *dimidiabuntur* non & , gentes *duas in* ultrà
עוֹד לִשְׁנֵי גוֹיִם וְלֹא יֵחָצוּ עוֹד לִשְׁתֵּי מַמְלָכוֹת
, ſuis *fœditatibus* in & , ſuis idolis in ultrà ſe polluent Nec .amplius
23 עוֹד : וְלֹא יִטַּמְּאוּ עוֹד בְּגִלּוּלֵיהֶם וּבְשִׁקּוּצֵיהֶם
univerſis de eos faciam ſalvos & : ſuis prævaricationibus cunctis in &
וּבְכֹל פִּשְׁעֵיהֶם וְהוֹשַׁעְתִּי אֹתָם מִכֹּל
, eos emundabo & ; *eis in* peccaverunt quibus , ſuis habitationibus
מוֹשְׁבֹתֵיהֶם אֲשֶׁר חָטְאוּ בָהֶם וְטִהַרְתִּי אוֹתָם
meus ſervus Et .Deum in eis ero ego &,populum in mihi erunt &
24 וְהָיוּ־לִי לְעָם וַאֲנִי אֶהְיֶה לָהֶם לֵאלֹהִים : וְעַבְדִּי
: ipſis univerſis erit unus paſtor & , eos ſuper rex David
דָוִד מֶלֶךְ עֲלֵיהֶם וְרוֹעֶה אֶחָד יִהְיֶה לְכֻלָּם
.ea facient &,cuſtodient mea *ſtatuta* &,ambulabunt meis judiciis in &
וּבְמִשְׁפָּטַי יֵלֵכוּ וְחֻקֹּתַי יִשְׁמְרוּ וְעָשׂוּ אוֹתָם :
qua , Jahacob meo ſervo dedi quam terram ſuper habitabunt &
25 וְיָשְׁבוּ עַל־הָאָרֶץ אֲשֶׁר נָתַתִּי לְעַבְדִּי לְיַעֲקֹב אֲשֶׁר
,eorum filii & ipſi eam ſuper habitabunt &:veſtri patres *ea in* habitaverunt
יָשְׁבוּ־בָהּ אֲבוֹתֵיכֶם וְיָשְׁבוּ עָלֶיהָ הֵמָּה וּבְנֵיהֶם
eis *prælatus* meus ſervus David &;ſeculum in uſq; eorũ filiorum filii &
וּבְנֵי בְנֵיהֶם עַד־עוֹלָם וְדָוִד עַבְדִּי נָשִׂיא לָהֶם
erit *ſeculi* pactum , pacis fœdus eis *exſcindam* Et .ſeculum in
26 לְעוֹלָם : וְכָרַתִּי לָהֶם בְּרִית שָׁלוֹם בְּרִית עוֹלָם יִהְיֶה
dabo & , eos faciam multiplicare & ,eos *dabo* & : eis
אוֹתָם וּנְתַתִּים וְהִרְבֵּיתִי אוֹתָם וְנָתַתִּי אֶת־
meum tabernaculũ erit Et .ſeculum in eorũ medio in meã ſanctificationẽ
27 מִקְדָּשִׁי בְּתוֹכָם לְעוֹלָם : וְהָיָה מִשְׁכָּנִי
.populum in mihi erunt ipſi & ; Deum in eis ero & , eis *ſuper*
עֲלֵיהֶם וְהָיִיתִי לָהֶם לֵאלֹהִים וְהֵמָּה יִהְיוּ־לִי לְעָם :
, Iſrael *ſanctificans* Dominus ego quòd gentes ſcient Et
28 וְיָדְעוּ הַגּוֹיִם כִּי אֲנִי יְהוָה מְקַדֵּשׁ אֶת־יִשְׂרָאֵל
.ſeculum in eorum medio in *meam ſanctificationem exiſtendo in*
בִּהְיוֹת מִקְדָּשִׁי בְּתוֹכָם לְעוֹלָם :

CAP. XXXVIII. לח

pone , hominis Fili : dicendo , me ad Domini verbum fuit Et
1 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר : 2 בֶּן־אָדָם שִׂים
; Tubal & Meſech capitis *prælatum* , Maghog terram ,Ghog *ad tuas facies*
פָּנֶיךָ אֶל־גּוֹג אֶרֶץ הַמָּגוֹג נְשִׂיא רֹאשׁ מֶשֶׁךְ וְתֻבָל
ego Ecce : Deus Dominus dixit Sic , *dices* Et .eum ſuper vaticinare &
וְהִנָּבֵא עָלָיו : 3 וְאָמַרְתָּ כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה הִנְנִי
.Tubal & ,Meſech capitis *prælatum* Ghog te ad
אֵלֶיךָ גּוֹג נְשִׂיא רֹאשׁ מֶשֶׁךְ וְתֻבָל :

Verſio VULG. LAT.

19 Loquêris ad eos ; Hæc dicit Dominꝰ Deus ; Ecce ego aſſumam lignum Joſeph, quod eſt in manu Ephraim, & tribus Iſrael, quæ ſunt ei adjunctæ ; & dabo eas pariter cum ligno Juda, & faciam eas in lignũ unum : & erunt 20 unum in manu ejus. Erunt autem ligna, ſuper quæ ſcripſeris 21 in manu tua, in oculis eorum. Et dices ad eos ; Hæc dicit Dominꝰ Deus ; Ecce ego aſſumam filios Iſrael de medio nationum, ad quas abierunt : & congregabo eos undique, & adducam eos in 22 humum ſuam. Et faciam eos in gentem unam in terra in montibus Iſrael, & rex unus erit omnibus imperans : & non erunt ultrà duæ gentes, nec dividentur 23 ampliùs in duo regna. Neque polluentur ultrà in idolis ſuis, & abominationibꝰ ſuis, & cunctis iniquitatibꝰ ſuis : & ſalvos eos faciam de univerſis ſedibus, in quibus peccaverunt, & emundabo eos : & erunt mihi popu-24 lus, & ego ero eis Deus. Et ſervus meus David rex ſuper eos, & paſtor unus erit omnium eorum : in judiciis meis ambulabunt, & mandata mea cuſtodi-25 ent, & facient ea. Et habitabunt ſuper terram, quam dedi ſervo meo Jacob, in qua habitaverunt patres veſtri : & habitabunt ſuper eam ipſi, & filii eorum, & filii filiorum eorum, uſque in ſempiternum : & David ſervꝰ meꝰ princeps eorum in perpetuum. 26 Et percutiam illis fœdus pacis, pactum ſempiternum erit eis : & fundabo eos, & multiplicabo, & dabo ſanctificationem meam in medio eorum in perpetuum. 27 Et erit tabernaculum meum in eis : & ero eis Deus, & ipſi erunt 28 mihi populꝰ. Et ſcient gentes quia ego Dominꝰ ſanctificator Iſrael, cùm fuerit ſanctificatio mea in medio eorum in perpetuum.

CAP. XXXVIII.

1 ET factus eſt ſermo Domini ad 2 me, dicens ; Fili hominis, pone faciem tuam contra Gog, terram Magog, principem capitis Moſoch & Thubal : & vaticinare 3 de eo, Et dices ad eum ; Hæc dicit Dominꝰ Deus ; Ecce ego ad te, Gog, principẽ capitis Moſoch & Thubal,

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

19 Καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, Τάδε λέγει (γ) κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ λήψομαι τὴν φυλὴν Ἰωσὴφ, (δ) τὴν διὰ χειρὸς Ἐφραὶμ, ϗ τὰς φυλὰς (ε) Ἰσραὴλ τὰς προσκειμένας πρὸς αὐτὸν, ϗ δώσω αὐτοὺς ἐπὶ τὴν φυλὴν (ζ) Ἰούδα, ϗ ἔσονται εἰς ῥάβδον μίαν (η) τῇ χει-20 ρὶ Ἰούδα. Καὶ ἔσονται αἱ ῥάβδοι ἐφ' αἷς σὺ ἔγραψας ἐπ' αὐταῖς, ἐν τῇ χειρί σου ἐνώ-21 πιον αὐτῶν. Καὶ ἐρεῖς αὐτοῖς, Τάδε λέγει (θ) κύριος κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ λαμβάνω πάντα οἶκον Ἰσραὴλ ἐκ μέσου τῶν ἐθνῶν, οὗ εἰσήλθοσαν ἐκεῖ, ϗ συνάξω αὐτοὺς ἀπὸ πάντων τῶν περικύκλῳ αὐτῶν, ϗ εἰσάξω αὐτοὺς 22 εἰς τὴν γῆν τοῦ Ἰσραήλ, Καὶ δώσω αὐτοὺς εἰς ἔθνος ἐν τῇ γῇ μου, ϗ ἐν τοῖς ὄρεσιν (ι) Ἰσραήλ. ϗ ἄρχων εἷς ἔσται (κ) αὐτῶν, ϗ οὐκ ἔσονται (λ) ἔτι εἰς δύο ἔθνη, οὐδὲ μὴ 23 διαιρεθῶσιν οὐκέτι εἰς δύο βασιλείας, Ἵνα μὴ μιαίνωνται ἔτι ἐν τοῖς εἰδώλοις (μ) αὐτῶν. ϗ ῥύσομαι αὐτοὺς ἀπὸ πασῶν τῶν ἀνομιῶν αὐτῶν, ὧν ἡμάρτοσαν ἐν αὐταῖς, ϗ καθαριῶ αὐτοὺς, ϗ ἔσονταί μοι εἰς λαὸν, ϗ ἐγὼ κύριος ἔσομαι αὐτοῖς εἰς θεόν. 24 Καὶ ὁ δοῦλός μου Δαυὶδ ἄρχων ἐν μέσῳ αὐτῶν, (ν) ἔσται ποιμὴν εἷς πάντων, ὅτι ἐν τοῖς προστάγμασί μου (ξ) πορεύσονται, ϗ τὰ κρίματά μου (ο) φυλάξονται, ϗ ποιήσουσιν 25 αὐτά. Καὶ κατοικήσουσιν ἐπὶ τῆς γῆς αὐτῶν, ἣν ἐγὼ δέδωκα τῷ δούλῳ μου Ἰακὼβ, οὗ κατῴκησαν ἐκεῖ οἱ πατέρες αὐτῶν, ϗ κατοικήσουσιν ἐπ' αὐτῆς (π) αὐτοί· ϗ Δαυὶδ ὁ δοῦλός μου ἄρχων (ρ) εἰς τὸν αἰῶνα. 26 Καὶ διαθήσομαι αὐτοῖς διαθήκην εἰρήνης, (σ) διαθήκη αἰωνία ἔσται μετ' αὐτῶν· ϗ θήσω τὰ ἅγιά μου ἐν μέσῳ αὐτῶν εἰς τὸν 27 αἰῶνα, Καὶ ἔσται ἡ κατασκήνωσίς μου ἐν αὐτοῖς, ϗ ἔσομαι αὐτοῖς (τ) θεὸς, ϗ (υ) 28 αὐτοί μου ἔσονται λαός. Καὶ γνώσονται (φ) τὰ ἔθνη ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος ὁ ἁγιάζων αὐτοὺς, ἐν τῷ εἶναι τὰ ἅγιά μου ἐν μέσῳ αὐτῶν εἰς τὸν (χ) αἰῶνα.

MS.A. (γ) ἀδωναῒ κύριος, (δ) διὰ χειρὸς (ε) τοῦ Ἰσραὴλ (ζ) τοῦ Ἰούδα, (η) ἐν τῇ (θ) ἀδωναῒ κύριος ὁ θεὸς, (ι) τοῦ Ἰσραήλ. (κ) πάντων αὐτῶν, (λ) οὐκέτι (μ) αὐτῶν, ἐν οἷς ἡμάρτοσαν ἐν αὐτοῖς, ϗ ἐν τοῖς προσοχθίσμασιν αὐτῶν, ϗ ἐν πάσαις ταῖς βασιλείαις αὐτῶν. ϗ ῥύσομαι (ν) ϗ ποιμὴν εἷς ἔσται πάντων, (ξ) πορεύσωνται, (ο) φυλάξωνται, (π) αὐτοὶ, ϗ οἱ υἱοὶ αὐτῶν, ϗ οἱ υἱοὶ τῶν υἱῶν αὐτῶν ἕως αἰῶνος· ϗ ἰδοὺ Δαυὶδ (ρ) αὐτῶν ἔσται εἰς (σ) ϗ διαθήκην (τ) εἰς θεὸν, (υ) αὐτοὶ ἔσονταί μοι λαός. (φ) ὅτι ἐγὼ (χ) αἰῶνα, λέγει κύριος.

ΚΕΦ. λη'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέ-2 γων, Υἱὲ ἀνθρώπου, στήρισον τὸ πρόσωπόν σου ἐπὶ Γὼγ, ϗ τὴν γῆν τοῦ Μαγὼγ, ἄρχοντα ῥὼς (α) Μεσὸχ, ϗ Θοβὲλ, ϗ προ-3 φήτευσον ἐπ' αὐτόν. Καὶ εἰπὸν αὐτῷ, Τάδε λέγει (β) κύριος κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπὶ σὲ (γ) ἄρχοντα ῥὼς, (δ) Μεσὸχ, καὶ Θοβὲλ,

MS.A. (α) Μοσὸχ, (β) ἀδωναῒ κύριος, (γ) Γὼγ ϗ ἄρχοντα (δ) Μοσὸχ,

Et dices ad eos ; Hæc dicit Dominus ; Ecce ego aſſumam tribum Joſeph, quæ in manu Ephraim, et tribus Iſrael, quæ adjunctæ ſunt ei : & dabo eos ſuper tribum Judam : & erunt in virgam unam (m) manui Juda. Et erunt virgæ, in quibus tu ſcripſiſti in eis, in manu tua coram eis. Et dices eis ; Hæc dicit Dominꝰ Dominus ; Ecce ego aſſumo omnem domum Iſrael de medio gentium, quò ingreſſi ſunt illuc : & congregabo eos ex omnibus, qui in circuitu eorum ſunt : & inducam eos in terram Iſrael : Et dabo eos in (n) gentem in terra mea, & in montibus Iſrael. Et princeps unus erit (o) eorum : & non erunt ultrà in duas gentes : nec dividentur ultrà in duo regna : ut non polluantur ultrà in idolis (p) ſuis. Et eruã eos ex omnibꝰ iniquitatibus eorũ, in quibꝰ peccaverũt in eis : & mundabo eos : & erunt mihi in populum : & ego Dominus ero eis in Deum. Et ſervus meus David princeps in medio eorum ; erit paſtor unus omnium : quia in preceptis meis ambulabunt, & judicia mea cuſtodient, et facient ea. Et habitabunt in terra ſua, quam ego dedi ſervo meo Jacob, ubi habitaverunt illic patres eorum : & habitabunt in ea (q) ipſi. Et David ſervus meus (r) princeps in perpetuum : Et diſponam eis teſtamentum pacis : teſtamentum ſempiternum erit cum eis. Et (ſ) ponam Sancta mea in medio eorum in perpetuum : Et erit tabernaculum meum in eis : & ero eis Deus : et ipſi meus erunt populus. Et ſcient gentes, quia ego ſum Dominus, qui ſanctifico eos ; cùm fuerint Sancta mea in medio eorum in perpetuum. 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28

CAP. XXXVIII.

ET factus eſt ſermo Domini ad me, dicens ; Fili hominis, obfirma faciem tuam ſuper (a) Gog, & terram Magog, principem Rhos Meſoch, & Thobel : & vaticinare ſuper eum. Et dic ei ; Hæc dicit Dominꝰ Dominus : Ecce ego ſuper te principem Rhos, Meſoch, & Thobel : 1 2 3

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

19 אִתְנַבֵּי לְהוֹן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים הָא אֲנָא מְקָרֵיב יָת שִׁבְטָא דְיוֹסֵף דִּי הוּא שִׁבְטָא
דְאֶפְרַיִם וְשִׁבְטֵי יִשְׂרָאֵל אֲחֵיהוֹן וַאֲחַבַּר יָתְהוֹן עֲלוֹהִי יָת שִׁבְטָא דִיהוּדָה וְאַעְבְּדִנּוּן
20 לְעַמָּא חַד וִיהוֹן חַד קֳדָמַי : וִיהוֹן לוּחַיָּא דִּי תִכְתּוֹב עֲלֵיהוֹן בִּידָךְ לְעֵינֵיהוֹן : וְאִתְנַבֵּי
21 לְהוֹן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים הָא אֲנָא מְקָרֵיב יָת בְּנֵי יִשְׂרָאֵל מִבֵּינֵי עַמְמַיָּא דְּאִתְגְּלִיאוּ
לְתַמָּן וְאֶכְנוֹשׁ יָתְהוֹן מִסְּחוֹר סְחוֹר וְאָעֵיל יָתְהוֹן לְאַרְעֲהוֹן : וְאַעְבֵּיד יָתְהוֹן לְעַמָּא 22
חַד בְּאַרְעָא בְּטוּר קוּדְשָׁא דְיִשְׂרָאֵל וּמַלְכָּא חַד יְהֵי לְכוּלְּהוֹן לְמֶהֱוֵי מַלְכָּא וְלָא יְהוֹן
23 עוֹד לְתָרֵין עַמְמִין וְלָא יִתְפַּלְּגוּן עוֹד לְתַרְתֵּין מַלְכְוָן עוֹד : וְלָא יִסְתָּאֲבוּן עוֹד בְּטַעֲוָתְהוֹן
וּבְשִׁקּוּצֵיהוֹן וּבְכָל מְרָדֵיהוֹן וְאֶפְרוֹק יָתְהוֹן מִכָּל מוֹתְבָנֵיהוֹן דְּחָבוּ קֳדָמַי בְּהוֹן וְאֲדַכֵּי
24 יָתְהוֹן וִיהוֹן קֳדָמַי לְעַם וַאֲנָא אֶהֱוֵי לְהוֹן לֶאֱלָהָא : וְעַבְדִּי דָוִד מַלְכָּא עֲלֵיהוֹן וּפַרְנָס
25 חַד יְהֵי לְכוּלְּהוֹן וּבְדִינַי יְהָכוּן וּקְיָמַי יִטְּרוּן וְיַעְבְּדוּן יָתְהוֹן : וְיִתִּיבוּן עַל אַרְעָא
דִּיהַבִית לְעַבְדִּי לְיַעֲקֹב דִּיתִיבוּ בַהּ אֲבָהָתְכוֹן וְיֵתְבוּן עֲלַהּ אִנּוּן וּבְנֵיהוֹן וּבְנֵי בְנֵיהוֹן
26 עַד עָלְמָא וְדָוִד עַבְדִּי מַלְכָּא לְהוֹן לַעֲלָם : וְאֶגְזַר לְהוֹן קְיָם שְׁלָם קְיָם עֲלַם
27 יְהֵי עִמְּהוֹן וַאֲבָרְכִנּוּן וְאַסְגֵּי יָתְהוֹן וְאֶתֵּן יָת מַקְדְּשִׁי בֵּינֵיהוֹן לַעֲלָם : וְאַשְׁרֵי שְׁכִנְתִּי
28 בֵּינֵיהוֹן וְאֶהֱוֵי לְהוֹן לֶאֱלָהָא וְאִנּוּן יְהוֹן קֳדָמַי לְעַם : וְיֵדְעוּן עַמְמַיָּא אֲרֵי אֲנָא יְיָ מְקַדֵּשׁ
יָת יִשְׂרָאֵל בְּמֶהֱוֵי מַקְדְּשִׁי בֵּינֵיהוֹן לַעֲלָם :

לח

1 2 וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי לְמֵימַר : בַּר אָדָם קַבֵּל נְבוּאָה עַל גּוֹג אַרְעָא מָגוֹג
3 רַב רֵישׁ מֶשֶׁךְ וְתוּבָל וְאִתְנַבֵּי עֲלוֹהִי : וְתֵימַר כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים הָא אֲנָא שָׁלַח רוּגְזִי
עֲלָךְ גּוֹג רַב רֵישׁ מֶשֶׁךְ וְתוּבָל :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et prophetabis eis : Hæc dicit Dñs Deus, Ecce ego applicabo tribum 19 Joſeph, quæ eſt tribus Ephraim & tribus Iſrael fratres eorum ; & conjungam cum eis tribum Juda : & faciam eos in *populum unum*, & erunt unum coram me. Erunt autem tabulæ ſuper quas ſcripſeris in manu tua in oculis eorum. 20 Et prophetabis eis : Hæc dicit Dñs Deus, Ecce ego applicabo filios Iſrael de 21 medio populorum ad quos tranſmigraverunt ; & congregabo eos undique, & introducam eos in terram eorum. Et faciam eos in populum unum in terra 22 in monte ſancto Iſrael, & rex unus erit omnibus, ut ſit rex : & non erunt ultrà duo populi, nec dividentur amplius in duo regna. Nec polluentur 23 ampliùs idolis ſuis, & abominationibus ſuis, & omnibus prævaricationibus ſuis. Et redimam eos de omnibus habitationibus ſuis in quibus me offenderunt ; & emundabo eos, & erunt coram me in populum, & ego ero eis in Deum. Et ſervus meus David erit rex ſuper eos ; & gubernator unus 24 erit omnium eorum : & in judiciis meis ambulabunt, & mandata mea cuſtodient & facient ea. Et habitabunt in terra quam dedi ſervo meo Jacob, in 25 qua habitaverunt patres veſtri, & habitabunt in ea ipſi & filii eorum & filii filiorum eorum uſque in æternum ; & David ſervus meus rex eorum in ſempiternum. Et feriam cum eis fœdus pacis : pactum perpetuum erit cum 26 eis : & benedicam eis, & multiplicabo eos : & dabo ſanctuarium meum in medio eorum in æternum. Et habitare faciam majeſtatem meam inter eos, 27 & ero eis in Deum, & ipſi erunt coram me in populum. Et ſcient po- 28 puli quia ego Dñs ſanctificator Iſrael, cùm fuerit ſanctuarium meum inter eos in æternum.

CAP. XXXVIII.

ET factum eſt verbum prophetiæ à facie Dñi mecum, dicens : Fili hominis 1 2 accipe prophetiam ſuper Gog terram Magog, ſummum principem Meſech & Thubal ; & prophetabis de eo. Et dices : Hæc dicit Dñs Deus, Ecce ego 3 mitto iram meam ſuper te Gog ſumme princeps Meſech & Thubal.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ ܢܣܒ ܐܢܐ ܩܝܣܐ ܕܝܘܣܦ ܕܒܐܝܕܗ ܕܐܦܪܝܡ. 19
ܘܫܒܛܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܚܒܪܘܗܝ. ܘܐܬܠ ܐܢܘܢ ܥܡ ܩܝܣܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܐܥܒܕ ܐܢܘܢ. ܚܕ
20 ܩܝܣ ܘܢܗܘܘܢ. ܚܕ ܒܐܝܕܝ. * ܘܩܝܣܐ ܕܟܬܒ ܐܢܬ ܥܠܝܗܘܢ. ܐܚܘܕ ܐܢܘܢ ܒܐܝܕܟ.
21 ܩܕܡܝܗܘܢ. * ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ ܢܣܒ ܐܢܐ ܠܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ.
22 ܡܢ ܒܝܬ ܥܡܡܐ ܕܐܙܠܘ ܠܬܡܢ. ܘܐܟܢܫ ܐܢܘܢ. ܘܐܥܠ ܐܢܘܢ ܠܐܪܥܗܘܢ. * ܘܐܥܒܕ
ܐܢܘܢ ܥܡܐ ܚܕ ܒܐܪܥܐ. ܒܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܡܠܟܐ ܚܕ ܢܗܘܐ ܠܟܠܗܘܢ. ܘܠܐ ܢܗܘܘܢ
23 ܬܪܝܢ ܥܡܡܝܢ. ܘܠܐ ܢܬܦܠܓܘܢ ܠܬܪܬܝܢ ܡܠܟܘܢ. * ܘܠܐ ܢܬܛܢܦܘܢ
ܬܘܒ ܒܦܬܟܪܝܗܘܢ. ܘܒܛܢܦܘܬܗܘܢ ܘܒܟܠܗ ܥܘܠܗܘܢ. ܘܐܦܪܘܩ ܐܢܘܢ ܡܢ ܟܠܗ ܥܡܪ
ܡܥܡܪܗܘܢ ܕܚܛܘ ܒܗ. ܘܐܕܟܐ ܐܢܘܢ ܘܢܗܘܘܢ ܠܝ ܠܥܡܐ. ܘܐܢܐ ܐܗܘܐ ܠܗܘܢ ܠܐܠܗܐ.
24 * ܘܥܒܕܝ ܕܘܝܕ ܢܡܠܘܟ ܥܠܝܗܘܢ. ܘܪܥܝܐ ܢܗܘܐ ܠܟܠܗܘܢ. ܘܒܕܝܢܝ ܢܗܠܟܘܢ. ܘܦܘܩܕܢܝ
25 ܢܛܪܘܢ. ܘܢܥܒܕܘܢ ܐܢܘܢ. * ܘܢܬܒܘܢ ܒܐܪܥܐ ܕܝܗܒܬ ܠܥܒܕܝ ܝܥܩܘܒ. ܕܝܬܒܘ ܒܗ
ܐܒܗܝܗܘܢ. ܘܢܬܒܘܢ ܒܗ ܗܢܘܢ ܘܒܢܝܗܘܢ ܘܒܢܝ ܒܢܝܗܘܢ ܠܥܠܡ. ܘܕܘܝܕ ܥܒܕܝ
26 ܢܗܘܐ ܠܗܘܢ ܡܕܒܪܢܐ ܠܥܠܡ. * ܘܐܩܝܡ ܠܗܘܢ ܩܝܡܐ ܕܫܠܡܐ. ܘܩܝܡܐ ܕܠܥܠܡ
27 ܢܗܘܐ ܥܡܗܘܢ. ܘܐܣܓܐ ܐܢܘܢ. ܘܐܬܠ ܡܩܕܫܝ ܒܝܢܬܗܘܢ ܠܥܠܡ. * ܘܢܗܘܐ ܡܫܟܢ
28 ܡܫܪܝ ܥܡܗܘܢ. ܘܐܗܘܐ ܠܗܘܢ ܠܐܠܗܐ. ܘܗܢܘܢ ܢܗܘܘܢ ܠܝ ܠܥܡܐ. * ܘܢܕܥܘܢ ܥܡܡܐ
ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܕܡܩܕܫ ܐܢܐ ܠܐܝܣܪܝܠ. ܡܐ ܕܗܘܐ ܒܗܘܢ ܡܩܕܫܝ ܠܥܠܡ.
* ܦܘܠܓܐ * ܚܣ * ܥܠ ܕܓܘܓܝܐ ܘܡܓܘܓܝܐ ܕܣܠܩܝܢ ܠܘܬܗܘܢ ܡܐ
1 ܕܣܠܩܘ ܡܢ ܒܒܠ. * ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ. ܣܝܡ ܐܦܝܟ 2
ܥܠ ܓܘܓ ܘܥܠ ܐܪܥܐ ܕܡܓܘܓ. ܡܕܒܪܢܐ ܘܪܝܫܐ ܕܡܫܟ ܘܕܬܘܒܠ. ܘܐܬܢܒܐ ܥܠܘܗܝ ܘܐܡܪ.
3 * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟ ܓܘܓ. ܡܕܒܪܢܐ ܘܪܝܫܐ ܕܡܫܟ ܘܕܬܘܒܠ.

Dic eis, Sic ait Dominus dominorum; Ecce 19
ſumpturus ſum lignū Joſephi quod eſt in manu
Aphremi, & tribus Iſraelis ſocias ejus, &
componam eas cum ligno Judæ, efficiámque
eas lignum unū, & erunt unum in manu mea.
Ligna verò ſuper quæ tu ſcribis, cape manu 20
tuâ coram eis : Et dic illis, Sic ait Dominus 21
dominorum, Ecce ſumpturus ſum filios Iſraelis
è gentibus ad quas abierunt, congregabo
eos, & reducam eos in terram ſuam : Et efficiam 22
eos populum unum in terra, in montibus
Iſraelis : & rex unus erit omnibus, nec
erunt ampliùs duo populi, neque dividentur
ampliùs in duo regna : Non polluent ſe ampliùs 23
idolis ſuis & abominationibꝰ ſuis, aut
ullâ iniquitate ſuâ; ſed liberabo eos ex omni
loco incolatûs eorum, in quo peccaverunt, &
mundabo eos: eruntque mihi populus, & ego
ero ipſis Deus. Servꝰ meus David regnabit 24
ſuper eos, & erit paſtor ipſis omnibꝰ : in judiciis
meis ambulabunt, præcepta mea ſervabunt,
& facient ea : Et habitabunt in terra 25
quam dedi ſervo meo Jacobo, in qua habitaverunt
patres eorum; habitabunt inquam, in
ea ipſi & filii ac nepotes eorum in perpetuū;
& David ſervꝰ meus erit illis gubernator in
ſeculum. Pangam eis fœdꝰ pacis, & fœdꝰ 26
perpetuum erit cum eis, multiplicabo eos,
ponámque ſanctuarium meum inter ipſos in
perpetuum; Erit inquam, locꝰ habitationis 27
meæ inter ipſos, eróque eis Deꝰ, & ipſi erunt
mihi populus : Et cognoſcent populi me eſſe 28
Dominum ſanctificanté Iſraelem, quum fuerit
inter ipſos ſanctuariū meum in perpetuū.

CAP. XXXVIII.

De Gogæis & Magogæis: quòd aſcenſuri ſunt adverſùs eos, quum aſcenderint è Babylone.

DEinde fuit ad me ſermo Domini dicendo; 1
Fili hominis, pone faciē tuam verſùs 2
Gogum, & verſùs terram Magogi rectoris
ac principis Moſoch & Thubel, vaticinare
adverſùs eum, & dic; Sic ait Dominus 3
dominorum, Ecce me adverſùm te Gog rector
& princeps Moſòchi & Thubelis :

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

19 * فتقول لهم * هكذا يقول ادوناي الرب * ها انا اخذ قبيلة يوسف بيد افرام * وقبايل اسرايل
20 المنتمين اليه * وادفعهم الى قبيلة يهودا * ويكونون عصا واحدة في يد يهودا * ويكونان العصاتان
21 التي كتبت عليهما في يدك امامهم * وتقول لهم * هكذا يقول ادوناي الرب الاله * ها انا اخذ
جميع بيت اسرايل من وسط الامم حيث دخلوا هناك * واجمعهم من جميع الذين حولهم *
22 وادخلهم الى ارض اسرايل * واجعلهم امة واحدة في ارضي وفي جبال اسرايل * ورييس واحد
23 يكون لجميعهم * ولا يصيرون ايضا امتان * ولا ينقسمون الى مملكتين * لكي لا يتنجسوا ايضا
باوثانهم التي اخطاوا بها وبرذايلهم * وفي جميع مملكاتهم * وانجيهم من جميع اثامهم التي
24 اخطاوا بها * واطهرهم * ويكونون لي شعبا * وانا اكون لهم الها * وعبدي داود رييس في وسطهم *
25 وراع واحد يكون لجميعهم * لانهم يسيرون باوامري * ويحفظون احكامي ويصنعوها * ويسكنون
على ارضهم التي انا اعطيتها لعبدي يعقوب * حيث سكن هناك اباوهم * ويسكنون عليها هم
26 وبنوهم وبنو بنيهم الى الدهر * وها داود عبدي يكون رييسهم الى الابد * واعهد لهم عهد
27 السلامة * ويكون عهدا ابديا معهم * واضع مقادسي في وسطهم الى الابد * ويكون مسكني فيهم *
28 واكون لهم الها * وهم يكونون لي شعبا * ويعلمون اني انا الرب انا الذي اقدسهم * عندما
تكون مقادسي في وسطهم الى الابد يقول الرب * * الفصل الثامن والثلثون *
* النبوة في اجوج وماجوج * الذين حاربوهم اذ صعدوا من ارض بابل *
1 2 * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان * ثبت وجهك على جوج وارض ماجوج رييس
3 روس موسوخ وتوبال * وتنبا عليه وقل له * هكذا يقول ادوناي الرب * ها انا عليك يا جوج *
ورييس روس موسوخ وتوبل *

*ut reſpondeas eis; Ita dicit Adonai Dominus; 19
Ecce ego ſumam familiam Joſephi
per manum Aphremi, & familias
Iſraelis oriundas ab eo, daboque eas familiæ
Judæ, & erunt baculus unus in manu 20
Judæ. Erunt ergò duæ virgæ ſuper
quas ſcripſeris in manu tua coram eis: Et 21
dices eis; Ita dicit Adonai Dominus Deus;
Ecce ego recipiam totam domum
Iſraelis è medio gentium, inde quò ſunt
ingreſſi, & colligam eos ex omnibus circumjacentibus,
& introducam eos in terram
Iſraelis: Et efficiam eos gentem unam 22
in terra mea & in montibus Iſraelis,
princeps idem erit omnibus; & non erunt
ampliùs duæ gentes, neque dividentur in
duo regna: ut ne polluantur deinceps 23
idolis ſuis in quibus peccabant, & abominationibus
ſuis; atque id in omnibus
regnis eorum: ſed liberabo eos ab omnibus
iniquitatibus eorum quibus delinquebant,
& mundabo eos; eruntque mihi populus,
& ego ero ipſis Deus: Et ſervus meus 24
David princeps in medio eorum, et paſtor
unus erit omnibus, ambulabunt enim in
mandatis meis, judicia mea ſervabunt
ac perficient: Et habitabunt ſuper terram 25
ſuam quam ego dedi ſervo meo Jacobo,
ubi habitaverunt patres eorum: habitabunt
inquam, ſuper eam ipſi & filii atq;
nepotes eorum, in perpetuum: & ecce David
ſervus meus erit princeps eorum in
æternum. Et inibo cum eis fœdus pacis, 26
eritq; fœdus æternum cum eis: Et ponam 27
Sancta mea in medio eorum in perpetuum,
eritque habitatio mea in ipſis : & ero
ipſis Deus, & ipſi erunt mihi populus :
Et ſcient me Dominum eſſe qui ſanctifico 28
eos, quum fuerint Sancta mea in medio
eorum in perpetuum, dicit Dominus.*

CAP. XXXVIII.

Prophetia contra Agog & Magog, qui bellum intulerunt eis ubi aſcendiſſent è terra Babelis.

F*uit etiā ſermo Domini ad me, dicens;* 1
O fili hominis, confirma faciem tuam contra 2
*Gog & terram Magog principis principum
Moſoch & Thobel: propheta
contra eum, & dic illi; Ita dicit Adonai
Dominus, Ecce me adverſùm te O* 3
*Gog, et princeps principum Moſoch et
Thobel :*

יחזקאל: לח

,te faciam exire &: tuis maxillis in hamos dabo & ,te reducam Et
וְשֹׁובַבְתִּיךָ וְנָתַתִּי חַחִים בִּלְחָיֶיךָ וְהוֹצֵאתִי אוֹתְךָ 4
:ipſos omnes *univerſitate* veſtitos equites & ,equos,tuū exercitū omnē &
וְאֶת־כָּל־חֵילֶךָ סוּסִים וּפָרָשִׁים לְבֻשֵׁי מִכְלוֹל כֻּלָּם
,Paras .ipſi omnes gladios tenentes ;*clypeum & ,ſcutum multus cœtus*
קָהָל רָב צִנָּה וּמָגֵן תֹּפְשֵׂי חֲרָבוֹת כֻּלָּם: פָּרַס 5
omnes & ,Ghomer *.galeam & clypeum* ipſi omnes : eis cum Put & ,Chus
כּוּשׁ וּפוּט אִתָּם כֻּלָּם מָגֵן וְכוֹבַע: גֹּמֶר וְכָל־ 6
:ejus *alæ omnes* & ,Aquilonis latera Togarmah domus ,ejus *alæ*
אֲגַפֶּיהָ בֵּית תּוֹגַרְמָה יַרְכְּתֵי צָפוֹן וְאֶת־כָּל־אֲגַפָּיו
omnis & tu ,tibi præpara & ,te Præpara .tecum multi populi
עַמִּים רַבִּים אִתָּךְ: הִכֹּן וְהָכֵן לְךָ אַתָּה וְכָל־ 7
diebus A .cuſtodiam in eis eris & ;te ad ſe *congregantes ,tua concio*
קְהָלֶךָ הַנִּקְהָלִים עָלֶיךָ וְהָיִיתָ לָהֶם לְמִשְׁמָר: מִיָּמִים 8
terram ad venies annorum noviſſimo in : viſitaberis *multis*
רַבִּים תִּפָּקֵד בְּאַחֲרִית הַשָּׁנִים תָּבוֹא ׀ אֶל־אֶרֶץ ׀
montes *ſuper* , multis populis è congregatam ,gladio à *reductam*
מְשׁוֹבֶבֶת מֵחֶרֶב מְקֻבֶּצֶת מֵעַמִּים רַבִּים עַל הָרֵי
,eſt educta populis è hæc & :ſemper deſolationē in fuerunt qui , Iſrael
יִשְׂרָאֵל אֲשֶׁר־הָיוּ לְחָרְבָּה תָּמִיד וְהִיא מֵעַמִּים הוּצָאָה
,venies ,*tempeſtas* ſicut aſcendes Et .ipſi omnes *fiducia in* habitabunt &
וְיָשְׁבוּ לָבֶטַח כֻּלָּם: וְעָלִיתָ כַּשֹּׁאָה תָבוֹא 9
populi & ,*tuæ alæ omnes* & ,tu ,eris terram *operiendum ad* nubes tanquā
כֶּעָנָן לְכַסּוֹת הָאָרֶץ תִּהְיֶה אַתָּה וְכָל־אֲגַפֶּיךָ וְעַמִּים
illa die in ,erit & : Deus Dominus dixit Sic .tecum multi
רַבִּים אוֹתָךְ: כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה וְהָיָה ׀ בַּיּוֹם הַהוּא 10
.malam cogitationem cogitabis & ,tuum cor ſuper verba aſcendent
יַעֲלוּ דְבָרִים עַל־לְבָבֶךָ וְחָשַׁבְתָּ מַחֲשֶׁבֶת רָעָה:
habitantes ,quieſcentes veniam ,villarum terram ſuper Aſcendam ,dices Et
וְאָמַרְתָּ אֶעֱלֶה עַל־אֶרֶץ פְּרָזוֹת אָבוֹא הַשֹּׁקְטִים יֹשְׁבֵי 11
non *fores* & , vectes & : muro abſque *habitantes* hi omnes : *fiducia in*
לָבֶטַח כֻּלָּם יֹשְׁבִים בְּאֵין חוֹמָה וּבְרִיחַ וּדְלָתַיִם אֵין
reducendum ad : prædam *prædandum ad & , ſpolium ſpoliandum Ad* .eis
לָהֶם: לִשְׁלֹל שָׁלָל וְלָבֹז בַּז לְהָשִׁיב 12
:gentibus è *collectum* populum *ad* & , *habitata* deſolata ſuper tuā manum
יָדְךָ עַל־חֳרָבוֹת נוֹשָׁבֹת וְאֶל־עַם מְאֻסָּף מִגּוֹיִם
.terræ umbilico *ſuper* habitantes ,*emptionem & ,acquiſitionem* facientem
עֹשֶׂה מִקְנֶה וְקִנְיָן יֹשְׁבֵי עַל־טַבּוּר הָאָרֶץ:
dicent ejus leunculi omnes & ,Tarſis negotiatores & ,Dedan & ,Scheba
שְׁבָא וּדְדָן וְסֹחֲרֵי תַרְשִׁישׁ וְכָל־כְּפִרֶיהָ יֹאמְרוּ 13
prædam prædandū ad nūquid ?*veniens tu ſpolium* ſpoliandū ad Nūquid ,tibi
לְךָ הֲלִשְׁלֹל שָׁלָל אַתָּה בָא הֲלָבֹז בַּז
capiendum ad ,aurum & argentum *tollendum ad ,tuam concionem* feciſti cōgregare
הִקְהַלְתָּ קְהָלֶךָ לָשֵׂאת ׀ כֶּסֶף וְזָהָב לָקַחַת
vaticinare Propterea ?*magnum ſpolium ſpoliandum ad ,emptionem & acquiſitionem*
מִקְנֶה וְקִנְיָן לִשְׁלֹל שָׁלָל גָּדוֹל: לָכֵן הִנָּבֵא 14
die in Nónne : Deus Dominus dixit Sic ,Ghog ad *dices* & ,hominis fili
בֶן־אָדָם וְאָמַרְתָּ לְגוֹג כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה הֲלוֹא ׀ בַּיּוֹם
venies Et ? ſcies ,*fiducia in* Iſrael *meum populum habitando in* , illa
הַהוּא בְּשֶׁבֶת עַמִּי יִשְׂרָאֵל לָבֶטַח תֵּדָע: וּבָאתָ 15
equitantes : tecum multi populi & , tu Aquilonis lateribus è tuo loco è
מִמְּקוֹמְךָ מִיַּרְכְּתֵי צָפוֹן אַתָּה וְעַמִּים רַבִּים אִתָּךְ רֹכְבֵי
aſcendes Et .multus exercitus & ,magnus cœtus ,ipſi univerſi equos
סוּסִים כֻּלָּם קָהָל גָּדוֹל וְחַיִל רָב: וְעָלִיתָ 16
noviſſimo in : terram *operiendum ad* nubes ſicut , Iſrael meū populū ſuper
עַל־עַמִּי יִשְׂרָאֵל כֶּעָנָן לְכַסּוֹת הָאָרֶץ בְּאַחֲרִית
ſciendum ad , meam terram ſuper te faciam venire & , eris dierum
הַיָּמִים תִּהְיֶה וַהֲבִאוֹתִיךָ עַל־אַרְצִי לְמַעַן דַּעַת
.Ghog eorū oculis in te in me *ſanctificando in* , me gentes
הַגּוֹיִם אֹתִי בְּהִקָּדְשִׁי בְךָ לְעֵינֵיהֶם גּוֹג:

Verſio VULG. LAT.

4 Et circumagam te, et ponam frænum in maxillis tuis: et educam te, et omnem exercitum tuum, equos et equites veſtitos loricis univerſos, multitudinem magnam, haſtam et clypeum arripientium et gladiū. 5 Perſæ, Æthiopes, et Libyes cū eis, omnes 6 ſcutati et galeati. Gomer, et univerſa agmina ej⁹, dom⁹ Thogorma, latera Aquilonis, et totum robur ej⁹; populíque multi te- 7 cum. Præpara, et inſtrue te, et omnem multitudinem tuā, quæ coacervata eſt ad te: et eſto eis 8 in præceptum. Poſt dies multos viſitaberis: in noviſſimo annorum venies ad terram, quæ reverſa eſt à gladio, et congregata eſt de populis multis ad montes Iſrael, qui fuerunt deſerti jugiter: hæc de populis educta eſt, et habitabunt in ea confidenter 9 univerſi. Aſcendens autem quaſi tempeſtas venies, et quaſi nubes, ut operias terram tu, et omnia agmina tua, et populi 10 multi tecū. Hæc dicit Dn̄s De⁹; In die illa aſcendent ſermones ſup cor tuū, et cogitabis cogitationē 11 peſſimam: Et dices; Aſcendam ad terram abſque muro: veniam ad quieſcentes, habitantéſque ſecuré: hi omnes habitant ſine muro, vectes et portæ non ſunt 12 eis: Ut diripias ſpolia, et invadas prædam, ut inferas manū tuam ſuper eos, qui deſerti fuerant, et poſteà reſtituti, et ſuper populum, qui eſt congregatus ex Gentib⁹, qui poſſidere cœpit, et 13 eſſe habitator umbilici terræ. Saba, et Dedan, et negotiatores Tharſis, et omnes leones ej⁹ dicent tibi; Numquid ad ſumenda ſpolia tu venis? ecce ad diripiendam prædam congregâſti multitudinē tuā, ut tollas argentum, & aurū, & auferas ſupellectilē, atq; ſubſtantiā, & diri- 14 pias manubias infinitas. Propterea vaticinare, fili hominis, & dices ad Gog; Hæc dicit Dn̄s De⁹; Numquid non in die illo, cùm habitaverit populus meus Iſrael 15 confidenter, ſcies? Et venies de loco tuo à laterib⁹ Aquilonis tu, & populi multi tecū, aſcenſores equorū univerſi, cœt⁹ magnus, & 16 exercit⁹ vehemens. Et aſcendes ſup populū meū Iſrael quaſi nubes, ut operias terrā. In noviſſimis dieb⁹ eris, & adducā te ſup terrā meam: ut ſciant Gentes me, cùm ſanctificatus fuero in te in oculis eorum, O Gog.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

4 Καὶ συνάξω σε, καὶ πᾶσαν τὴν δύναμίν σου, ἵππους καὶ ἱππεῖς ἐνδεδυμένους θώρακας πάντας, συναγωγὴ πολλὴ, πέλται καὶ περικεφαλαῖαι καὶ μάχαιραι· 5 Πέρσαι, καὶ Αἰθίοπες, καὶ Λίβυες, (δ) πάντες περικεφαλαίαις 6 καὶ πέλταις, Γομὲρ, καὶ πάντες οἱ περὶ αὐτὸν, οἶκος τοῦ (ε) Θοργαμὰ, ἀπ' ἐσχάτου Βοῤῥᾶ, καὶ πάντες οἱ περὶ αὐτὸν, καὶ ἔθνη 7 πολλὰ μετὰ σοῦ. Ἑτοιμάσθητι, (ζ) ἑτοίμασον σεαυτὸν σὺ, καὶ πᾶσα ἡ συναγωγή σου (η) ἡ συνηγμένη μετὰ σοῦ, καὶ ἔσῃ μοι εἰς προ- 8 φυλακήν. Ἀφ' ἡμερῶν πλειόνων (θ) ἑτοιμασθήσεται, καὶ ἐπ' ἐσχάτου ἐτῶν ἐλεύσεται, καὶ ἥξει εἰς τὴν γῆν τὴν ἀπεστραμμένην ἀπὸ μαχαίρας, συνηγμένων ἀπὸ ἐθνῶν πολλῶν (ι) ἐπὶ γῆν Ἰσραὴλ, ἣ ἐγενήθη ἔρημος δι' ὅλου· καὶ (κ) οὗτος ἐξ ἐθνῶν ἐξελήλυθε, καὶ 9 κατοικήσουσιν ἐπ' εἰρήνης ἅπαντες. Καὶ ἀναβήσῃ ὡς ὑετὸς, καὶ ἥξεις ὡς νεφέλη κατακαλύψαι γῆν, καὶ (λ) ἔσῃ σὺ καὶ πάντες 10 οἱ περὶ σὲ, καὶ ἔθνη πολλὰ μετὰ σοῦ. Τάδε λέγει (μ) κύριος κύριος, Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ἀναβήσεται ῥήματα ἐπὶ τὴν καρδίαν 11 σου, καὶ λογιῇ λογισμοὺς πονηροὺς, Καὶ ἐρεῖς, Ἀναβήσομαι ἐπὶ γῆν (ν) ἀπεῤῥιμμένην, ἥξω ἐπὶ ἡσυχάζοντας ἐν (ξ) τῇ ἡσυχίᾳ, καὶ οἰκοῦντας ἐπ' εἰρήνης, πάντας κατοικοῦντας (ο) γῆν, ἐν ᾗ οὐχ ὑπάρχει τεῖχος, οὐδὲ μο- 12 χλοὶ, καὶ θύραι οὐκ εἰσὶν (π) αὐτοῖς, Προνομεῦσαι προνομὴν, καὶ (ρ) σκῦλα σκυλεῦσαι αὐτῶν, τοῦ ἐπιστρέψαι χεῖράς μου εἰς τὴν ἠρημωμένην ἣ κατῳκίσθη, καὶ (σ) ἐπ' ἔθνος συνηγμένον ἀπὸ ἐθνῶν πολλῶν, πεποιηκότας κτήσεις, κατοικοῦντας ἐπὶ τὸν ὀμ- 13 φαλὸν τῆς γῆς. (˝) Σαββὰ, καὶ Δαιδὰν, καὶ (τ) ἔμποροι Καρχηδόνιοι, καὶ πᾶσαι αἱ κῶμαι αὐτῶν ἐροῦσί σοι, (υ) Εἰς προνομὴν τοῦ προνομεῦσαι σὺ ἔρχῃ, καὶ σκυλεῦσαι σκῦλα, συνήγαγες συναγωγήν σου λαβεῖν ἀργύριον καὶ χρυσίον, ἀπενέγκασθαι (φ) κτῆ- 14 σιν, τοῦ σκυλεῦσαι σκῦλα. Διατοῦτο προφήτευσον υἱὲ ἀνθρώπου, καὶ εἰπὸν τῷ Γὼγ, Τάδε λέγει (χ) κύριος, Οὐκ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ἐν τῷ κατοικισθῆναι τὸν λαόν μου 15 Ἰσραὴλ ἐπ' εἰρήνης, (ψ) ἐγερθήσῃ, Καὶ ἥξεις ἐκ τοῦ τόπου σου ἀπ' ἐσχάτου Βοῤῥᾶ, καὶ ἔθνη πολλὰ μετὰ σοῦ; ἀναβάται ἵππων πάντες, συναγωγὴ μεγάλη καὶ δύναμις πολλή. 16 Καὶ ἀναβήσῃ ἐπὶ τὸν λαόν μου Ἰσραὴλ ὡς νεφέλη καλύψαι γῆν· ἐπ' ἐσχάτων τῶν ἡμερῶν ἔσται, καὶ ἀνάξω σε ἐπὶ τὴν γῆν μου, ἵνα γνῶσι πάντα τὰ ἔθνη ἐμὲ, ἐν τῷ ἁγιασθῆναί με ἐν σοὶ ἐνώπιον αὐτῶν.

Et (b) congregabo te, & omnem exercitum tuum, equos, & equites veſtitos loricis univerſos (c) congregatione multâ, peltæ, & galeæ, & gladii. Perſæ, & 5 *Æthiopes, & Libyes, omnes galeis, & peltis,* 6 *Gomer, & omnes, qui circa eum, domus Thorgama ab extremo Aquilonis, & (d) omnes qui circa eum: & gentes multæ tecum.* 7 *Præparare, præpara te, tu, & omnis congregatio tua, quæ collecta eſt tecum: & eris mihi in cuſtodiam.* 8 *A diebus primis * præparabitur, & in noviſſimo annorum veniet; & veniet in terram, quæ perverſa eſt à gladio, collectis de gentibus multis ſuper terram Iſrael, quæ facta eſt deſerta omninó. (e) Et hic ex gentibus egreſſus eſt: & habitabunt in pace (f) omnes.* 9 *Et aſcendes, ſicut pluvia, & (g) venies, ſicut nubes ad operiendam terram: & (h) eris tu, & omnes, qui circa te, & gentes multæ tecum.* 10 *Hæc dicit Dominus Dominus, Et erit in die illa, aſcendent verba ſuper cor tuum: & cogitabis cogitationes peſſimas,* 11 *Et dices; Aſcendam ſuper terram abjectam: veniam ſuper quieſcentes in quiete, & habitantes in pace, omnes habitantes terram, in qua non eſt murus neq; vectes, & portæ non ſunt eis,* 12 *Ad prædandum prædā, & ſpoliandum ſpolia eorum, ad convertendum manum meam in deſolatam, quæ habitata eſt, & ſuper gentem collectam de gentibus multis, qui fecerunt poſſeſſiones, habitantes ſuper umbilicum terræ.* 13 *Sabba, & Dædan, & negotiatores (i) Carthaginenſes, & omnes villæ eorum dicent tibi; Ad prædandum prædam tu venis, & ſpoliandum ſpolia: congregâſti congregationem tuam ad tollendum argentum, & aurum, ad auferandum (k) poſſeſſionem, ad ſpoliandum (l) ſpolia.* 14 *Propterea vaticinare, fili hominis, & dic ad Gog; Hæc dicit Dominus; Nónne in die illa, cùm habitaverit populus me⁹ Iſrael in pace, (m) conſurges?* 15 *Et venies de loco tuo ab extremo Aquilonis, & gentes multæ tecum: aſcenſores equorum omnes, congregatio magna, & exercitus multus.* 16 *Et aſcendes ſuper populū meum Iſrael, quaſi nubes, ut operias terram. In noviſſimis diebus erit: & adducam te ſuper terram meā: ut ſciant omnes gentes me; cū ſanctificatus fuero in te coram eis.*

MS. A. (δ) καὶ Λυδοὶ, πάντες ἐν περικεφαλαίαις (ε) Θεργαμὰ, (ζ) καὶ ἑτοίμασον (η) οἱ συνηγμένοι (θ) ἐτῶν ἑτοιμασθήσονται, καὶ ἐπ' ἐσχάτου (ι) εἰς τὴν γῆν τοῦ Ἰσραὴλ, (κ) αὐτὸς ἐξελήλυθεν ἐκ τῶν ἐθνῶν, (λ) πέσῃ (μ) κύριος κύριος ὁ θεὸς, (ν) ἀπεριμμένην, (ξ) ἡσυχίᾳ, καὶ κατοικοῦντας (ο) πόλεις, ἐν αἷς οὐχ (π) αὐταῖς, (ρ) σκυλεῦσαι σκῦλα, τοῦ ἐπιστρέψαι τὴν χεῖρά μου (σ) ἐπὶ (˝) Σαβὰ, (τ) οἱ ἔμποροι Χαλκηδόνος, καὶ πᾶσαι αἱ χῶραι αὐτῶν (υ) Τοῦ προνομεῦσαι εἰς προνομὴν σὺ (φ) κτήσεις, (χ) κύριος κύριος ὁ θεὸς, Οὐχὶ (ψ) ἐξεγερθήσῃ,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ואשדלנך ואתן שירין על ליסתך ואפיק יתך וית כל משריתך סוסון ופרשין לבושי 4
גמיר כולהון משרין סגיאן די מזינין בעגילין ותריסין אחדי סיפין כולהון : פרסאי 5
כושאי ופוטאי עמהון כולהון מזינין בעגילין וקולסין : גמר וכל משריתהא מדינת 6
גרממיא סיפי צפונא וית כל משריתהון עממין סגיאין די עמך : אודרז ואתקין לך 7
את וכל משריתך דאתכנישו עלך ותהי להון למטרא : מיומין סגיאין תמני משריתך 8
בסוף שניא תהך על ארעא דתבו עלה מקטלי חרבא דאתכנשו מעממין סגיאין על
טורי ארעא דישראל דהוו לחרבא תדירא ואנון מביני עממיא אתגליאו ויתיבו
לרוחצן כולהון : ותסק כאתר נושתא תיתי כעננא דסליק וחפי ית ארעא תהי את 9
וכל משריתך ועממין סגיאין די עמך : כדנן אמר יי אלהים ויהי בעדנא ההיא יסקון 10
הרהורין על לבך ותחשב מחשבן בישן : ותימר אסק על ארעא דיתבא שליוא בקרוי 11
פצחיא איהך על עמא דשקטין ושרן לרוחצן כולהון יתבין בלא שורא ועברין ודשין
לית להון : למבז בזא ולמעדי עדאה לכנשא משריתך על חרבתא דאתיתבא ועל 12
עמא דאתכנשו מביני עממיא דאצלחו בנכסין וקנינין יתבין על תוקפא דארעא :
שבא ודדן ותגרי ימא וכל מלכהא יימרון לך הלמבז בזא את אתי הלמעדי עדאה 13
כנישת משריתך למסב כסף ודהב למשבי נכסין וקנינין למעדי עדי סגי : בכן אתנבי 14
בר אדם ותימר לגוג כדנן אמר יי אלהים הלא בעדנא ההיא כד יתבון עמי ישראל
לרוחצן תדע פורענות גבורתי : ותיתי מאתרך מסיפי צפונא את ועממין סגיאין די 15
עמך רכבי סוסון כולהון משרין סגיאין ועם סגי : ותסק על עמי ישראל כעננא 16
דסליק וחפי ית ארעא בסוף יומיא תהי ואיתנך על ארעא בית שכנתי בדיל דידעון
עממיא פורענות גבורתי כד אתקדש בך דיהון חזן בפורענותך גוג :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

4 Et perſuadebo tibi, et ponam circulos in maxillas tuas, & educam te & omnem exercitum tuum, equos & equites indutos omnimoda veſte univerſos, exercitus multos clypeis armatos & ſcutis: tenentes gladios univerſi erunt. 5 Perſæ, Æthiopes & Libyes cum eis, univerſi armati clypeis & galeis. 6 Gomer & omnis exercitus ejus; provincia Germaniæ, fines Aquilonis, & omnis exercitus eorum; multi populi qui tecum ſunt. 7 Accingere & præpara te, & omnes copias tuas, quæ congregatæ ſunt *ad te*; & eris eis in cuſtodiam. 8 A diebus multis conſtitues exercitum tuum: in fine annorum ibis ad terram, *contra quam converſi ſunt occidentes* gladio, qui congregati ſunt de populis multis ad montes Iſrael, qui fuerant [*expoſiti*] vaſtationi jugiter: & ipſi de medio populorum migraverunt, & habitaverunt confidenter univerſi. 9 Et aſcendes quaſi tempeſtas: venies quaſi nubes quæ aſcendit & operit terram; ſic eris tu & omnis exercitus tuus, & populi multi qui tecum ſunt. 10 Hæc dicit Dominus Deus: Et erit in tempore illo, aſcendent cogitationes ſuper cor tuum, & cogitabis cogitationes malas; 11 Et dices: Aſcendam ad terram quæ habitatur *ſecurè* urbibus abſque muris; ibo ad populum quieſcentem & habitantem confidenter: univerſi hi habitant abſque muro, & vectes & portæ non ſunt eis: 12 Ut deprædaris prædam & auferas ſpolium, & congreges exercitum tuum ſuper deſerta, quæ habitata ſunt; & ſuper populum qui congregati ſunt de medio populorum; proſperati ſunt enim in divitiis & poſſeſſionibus habitantes in fortitudine terræ. 13 Saba & Dedan, & negotiatores maris, & omnes reges ejus dicent tibi: Nunquid ad prædandum prædam tu venis? & ad auferendum ſpolium congregâſti exercitum tuum? ut tollas argentum & aurum, ut capias ſupellectilia atque ſubſtantias, ut auferas ſpolia multa? 14 Propterea vaticinare fili hominis, & dices ad Gog: Hæc dicit Dominus Deus: Nónne in tempore illo cùm habitaverit populus meus Iſrael confidenter ſcies ultionem potentiæ meæ? 15 Et *venies* de loco tuo de finibus Aquilonis, tu & populi multi qui tecum ſunt, aſcenſores equorum univerſi, exercitus multi, & populus multus. 16 Et aſcendes ſuper populum meum Iſrael, ſicut nubes quæ elevatur & operit terram: in fine dierum eris, & adducam te ſup terram dom⁹ majeſtatis meæ, ut ſciant populi ultionem potentiæ meæ cum ſanctificatus fuero in te, ipſis videntibus ultionem tuam ô Gog.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

4 * ܘܐܟܢܫܟ ܘܐܪܡܐ ܚܟܡܐ ܒܦܟܝܟ ܘܐܦܩܟ ܡܢ ܐܬܪܟ ܠܟ. ܘܠܟܠܗ ܚܝܠܟ. ܣܘܣܝܐ
ܘܦܪܫܐ ܕܠܒܝܫܝܢ ܙܝܢܐ. ܟܠܗܘܢ. ܟܢܫܐ ܪܒܐ. ܒܪܘܡܚܐ ܘܒܬܪܣܐ. ܘܐܚܝܕܝܢ ܣܝܦܐ.
5 * ܟܠܗܘܢ ܦܪܣܝܐ ܘܟܘܫܝܐ ܘܦܘܛܝܐ ܥܡܗܘܢ. ܒܬܪܣܐ ܘܒܩܘܢܣܐ. * ܓܘܡܪ ܘܟܠܗ
6 ܚܝܠܗ. ܘܒܝܬ ܬܘܓܪܡܐ. ܘܣܘܦܝܗ ܕܓܪܒܝܐ. ܘܟܠܗ ܚܝܠܗܘܢ. ܘܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ
7 ܕܥܡܟ. * ܐܬܛܝܒ ܐܢܬ ܘܟܠܗ ܟܢܫܐ ܕܟܢܝܫ ܥܡܟ. ܘܗܘܝ ܠܗܘܢ ܠܡܛܪܐ. * ܡܢ
8 ܝܘܡܬܐ ܩܕܡܝܐ ܐܬܦܩܕܬ. ܘܒܚܪܬܐ ܕܫܢܝܐ ܬܐܬܐ ܥܠ ܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܥܠ ܐܪܥܐ
ܕܐܬܬܢܝܚܬ ܡܢ ܚܪܒܐ. ܘܐܬܟܢܫܬ ܡܢ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܝܬܒܘ ܒܗ ܟܠܗܘܢ ܠܫܠܝܐ.
9 * ܘܬܣܩ ܐܝܟ ܕܘܠܚܡܐ. ܘܐܝܟ ܥܢܢܐ ܕܡܟܣܝܐ ܠܐܪܥܐ. ܐܢܬ ܘܟܠܗ ܚܝܠܟ. ܘܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ
10 ܕܥܡܟ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܒܗܘ ܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܣܩܢ ܡܠܐ ܥܠ ܠܒܟ. ܘܬܬܪܥܐ
11 ܡܚܫܒܬܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܬܐܡܪ. * ܐܣܩ ܥܠ ܐܪܥܐ ܦܘܪܝܬܐ. ܘܐܬܐ ܥܠ ܐܝܠܝܢ ܕܫܠܝܢ
12 ܥܡܪܝܢ. ܕܠܐ ܫܘܪܐ ܘܠܐ ܡܘܟܠܐ. ܘܠܐ ܬܪܥܐ ܐܝܬ ܠܗܘܢ. * ܠܡܒܙ ܒܙܬܐ. ܘܠܡܒܙ ܒܙܐ.
ܘܠܡܗܦܟܘ ܐܝܕܟ ܥܠ ܚܘܪܒܐ ܕܐܬܝܬܒܘ. ܘܥܠ ܥܡܐ ܕܐܬܟܢܫ ܡܢ ܥܡܡܐ. ܕܩܢܐ ܒܥܝܪܐ
13 ܘܩܢܝܢܐ. ܘܝܬܒ ܥܠ ܫܘܦܪܗ ܕܐܪܥܐ. * ܫܒܐ ܘܕܪܢ. ܘܬܐܓܪܐ ܕܬܪܫܝܫ. ܘܟܠܗܝܢ
ܩܘܪܝܐ ܢܐܡܪܢ ܠܟ. ܐܬܝܬ ܠܡܒܙ ܒܙܬܐ. ܘܠܡܒܙ ܒܙܐ. ܘܟܢܫܬ ܟܢܘܫܬܟ
14 ܠܡܫܩܠ ܣܐܡܐ ܘܕܗܒܐ. ܘܬܕܒܪ ܒܥܝܪܐ ܘܩܢܝܢܐ. ܘܬܒܙ ܒܙܬܐ ܪܒܬܐ. * ܡܛܠܗܢܐ ܐܬܢܒܐ
ܒܪ ܐܢܫܐ. ܘܐܡܪ ܠܓܘܓ ܘܠܡܓܘܓ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܒܗܘ ܝܘܡܐ
15 ܕܢܬܒ ܥܡܝ ܐܝܣܪܝܠ ܠܫܠܝܐ. ܬܕܥ. * ܘܬܐܬܐ ܡܢ ܐܬܪܟ ܡܢ ܣܘܦܝ ܓܪܒܝܐ. ܘܥܡܡܐ
16 ܣܓܝܐܐ ܕܥܡܟ. ܟܠܗܘܢ ܪܟܒܝ ܣܘܣܘܬܐ. ܟܢܫܐ ܪܒܐ. ܘܚܝܠܐ ܣܓܝܐܐ. * ܘܬܣܩ ܥܠ ܥܡܝ
ܐܝܣܪܝܠ. ܐܝܟ ܥܢܢܐ ܕܡܟܣܝܐ ܠܐܪܥܐ. ܒܚܪܬܐ ܕܝܘܡܬܐ ܬܐܬܐ. ܘܐܝܬܝܟ ܠܐܪܥܝ. ܘܢܕܥܘܢܢܝ
ܥܡܡܐ ܡܢ ܕܐܬܩܕܫ ܒܟ ܩܕܡܝܗܘܢ.

Colligam te,et injectâ paſtomide maxillis tuis 4
educam te è patria tua, te *inquam*, totúmque
exercitum tuum, equos & equites armis
indutos, omnes turmam ingentem, lanceis
clypeiſque *inſtructos*, gladiósque tenentes :
Omnes Perſas, Æthiopas, & Putæos cum ipſis, 5
ſcutatos & galeatos : Gomer, totúmque 6
exercitum ejus, & Thogormæos, latera
Aquilonis, omnéſque copias eorum, denique
populos numeroſos qui tecum ſunt. Paratus 7
eſto tu & omnis turba quæ tecum eſt
congregata, & ſis eis cuſtodiæ. A priſcis 8
diebus viſitatus fuiſti, & in fine annorum invaderes
montes Iſraelis & terram quæ requievit
à gladio, congregatam ex populis
multis, in qua omnes tranquillè degunt? Et 9
aſcenderes quaſi perturbatio,& ut nubes terram
tegens, tu & omnis exercitus tuus, gentéſque
numeroſæ quæ tecum ſunt? Sic ait 10
Dominus dominorum; Eo die verſabis animo
tuo verba, & cogitationem pravam cogitabis,
ac dices; Aſcendam contra terram 11
uberem, & invadam eos qui ſecurè habitant,
qui neque muros, neque ſeras, neque
portas habent; Ad prædam capiendam, & 12
diripiendum ſpolium, ad reducendam manum
tuam contra vaſtitates rehabitatas, &
contra populum è gentib⁹ collectum, jumenta
poſſidentem & armenta, in pulchritudine
terræ habitantem. Şeba, & Daran, mercatores 13
Tharſis, omnéſque civitates dicent tibi;
Veniſti ad prædandum prædam, & diripiendum
ſpolia; & congregâſti cœtum tuum ut
raperes argentum & aurum, tolleres jumenta
& armenta, magnámque ſupellectilem abduceres:
Iccirco vaticinare fili hominis,& dic 14
Gogo atque Magogo;Sic ait Dominus dominorum,
Quâ die habitaverit populus meus
Iſrael tutò, experieris. Venies enim ex patria 15
tua, ex oris Aquilonaribus cum populis
multis qui tecum ſunt, inſidentibus equis omnibus,
cœtu maximo & exercitu copioſiſſimo:
Et aſcendes contra populum meum Iſraelem 16
velut nubes terram tegens: in fine
quidem dierum venies,adducámque te in terram
meam; ſed cognoſcent me gentes ex eo
quòd me ſanctificabo in te coram eis.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

4 * واجمعك وكل جيشك * الخيل والخيالة لابسي الدروع جميعا في جمع كثير * مزاريق ودرق
5 6 وسيوف * الفرس والحبوش * واهل النوبة * واللوديون جميعهم بالخود والمزاريق * غومر وجميع
7 اصحابه * بيت ترغاما من اخر الجربياء * وجميع اله * وامم كثيرة معك * استعد وهيي نفسك
8 انت وكل جمعك المجتمعين معك * ويكون لي حارسا * منذ ايام السنين الكثيرة يتهيا * والي اخر
السنين ياتي * ويقبل الي الارض المنصرفة من سيف المجموعين من امم كثيرة * الي ارض اسرايل
9 التي صارت برية بكمالها * وهو خرج من الامم * ويسكنون على السلامة جميعهم * وتصعد مثل
المطر * وتاتي مثل سحابة لتغشا الارض * وتسقط انت وجميع الذين حولك * وامم كثيرة معك *
10 * هكذا يقول الرب الرب الاله * ويكون في ذلك اليوم تصعد الكلمات على قلبك * وتفكر فكرات
11 شرير وتقول * اصعد على الارض المطروحة * اتي على الهاديين في سكون * والساكنين على
السلامة * جميع ساكني المدن في رسوخ * حيث لا يكون سور ولا متاريس * ولا يكون ثم ابواب *
12 * لينهب نهبا ويغنم غنايما * لارد يدي على الخربة التي سكنت * وعلي امم مجموعة من امم
13 كثيرة صنعت مقتنيات * السكان على سرة الارض * صابا وددان * وتجار خلقدونية * وكل كورها
يقولون لك * لينهب نهبا * انت تاتي وتغنم غنايم * جمعت مجمعك لتاخذ فضة وذهبا * وتاخذ قنايا *
14 لتغنم غنايم * لاجل هذا تنبا يا ابن الانسان وقل لجوج * هكذا يقول الرب الرب الاله * اليس في
15 ذلك اليوم * عند ما يسكن شعبي اسرايل على السلامة * تقوم وتاتي من موضعك من اخر
16 الجربياء * وامم كثيرة معك * جميعهم ركاب خيل * مجمع عظيم وجيش كثير * وتصعد على
شعبي اسرايل مثل سحابة لتغطي الارض * في الايام الاخيرة يكون واصعدك على ارضي * لكي
تعرفني كل الامم عند ما اتقدس بك امامهم *

Et congregabo te, totumque exercitum 4
tuum, equos & equites loricis indutos pariter,
cum turma ingenti, ſpiculis, galeis,
& gladiis: Perſas, & Æthiopes, Nubas, 5
& Lydios omnes cum galeis & ſpiculis:
Gomer, omneſque ſocios ejus: domum 6
Thorgama ab extremo Aquilone, totamq;
ſectam ipſius, & gentes plurimas tecum.
Præſto ſis, teq; para, tu & univerſa turma 7
tua tecum ſtipati, & eſto mihi cuſtos.
Inde à diebus annorum multorum ſeſe parat, 8
& ad finem annorum veniet, recipietque
ſe in terram quæ effugerat gladium
congregatorum è multis gentibus, in terram
ſcilicet *Iſraelis quæ tota deſerta evaſit;*
Is inquam, è gentibus egredietur,
et habitabunt omnes pacificé. Aſcendes 9
autem ſicut imber, et nubis inſtar veniens
ad obruendam terram: verùm corrues tu
et omnes te ſtipantes, plurimæque tecum
gentes. Ita dicit Dominus, Dominus Deus. 10
Et erit eo die ut aſcendant verba in
cor tuum, et cogitationes pravas mediteris,
ac dicas; Aſcendam contra terram 11
dejectam, veniam adversùs tranquillos in
quiete et pacatè habitantes, omnes incolas
urbium perennes, ubi non ſunt mœnia neque
propugnacula, neque ſunt ibi portæ;
ut capiamus prædã, & ſpolia diripiamus; 12
ut manum meam convertam in deſolatam
quæ habitata eſt, et in gentes coactas è
multis gentibus, quæ opes acquiſiverunt,
habitantes ſuper umbilicum terræ. Saba, et 13
Dædan, et negotiatores Chalcedoniæ, omneſque
earũ provinciæ dicent tibi; Prædemur
prædam: tu venias, et ſpolia diripies. Collegiſti
cœtum tuum ad tollendum argentum
et aurum, ad capiendas opes, ad rapiendum
ſpolia. Propterea vaticinare O 14
fili hominis, et dic ad Gog; Ita dicit Dominus,
Dominus Deus; Nonne in die illo
quum habitaverit populus meus Iſrael pacificè,
Surges et venies è loco tuo ab ex- 15
tremo Aquilone multis cum gentibus,
omnibus equorum conſcenſoribus, cœtu
maximo, exercitu copioſiſſimo? Et aſcendes 16
contra populum meum Iſraelem ceu
nubes ad tegendam terram? Poſtremis
diebus faciam ut aſcendas contra terram
meam, ut me cognoſcant omnes gentes,
cùm ſanctificatus in te fuero coram eis.

יחזקאל : לט

diebus in ſum locutus quo , ille tu Num ,Deus Dominus dixit Sic
17 כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה הַאַתָּה־הוּא אֲשֶׁר־דִּבַּרְתִּי בְּיָמִים
propbetantium Iſrael prophetarum meorũ ſervorum *manu in* antiquis
קַדְמוֹנִים בְּיַד עֲבָדַי נְבִיאֵי יִשְׂרָאֵל הַנִּבְּאִים
erit Et ?eos ſuper te *adducendum ad* ,annorum illorum diebus in
בַּיָּמִים הָהֵם שָׁנִים לְהָבִיא אֹתְךָ עֲלֵיהֶם׃ וְהָיָה 18
Dominus dixit ,Iſrael *humum* ſuper Ghog *venire die in* ,illa die in
בַּיּוֹם הַהוּא בְּיוֹם בּוֹא גוֹג עַל־אַדְמַת יִשְׂרָאֵל נְאֻם אֲדֹנָי
meæ iræ igne in ,meo zelo in Et .meo furore in,mea ira aſcendet , Deus
19 יֱהוִה תַּעֲלֶה חֲמָתִי בְּאַפִּי׃ וּבְקִנְאָתִי בְאֵשׁ־עֶבְרָתִי
ſuper magna commotio fuerit illa die in *non ſi* , ſum locutus
דִּבַּרְתִּי אִם־לֹא בַּיּוֹם הַהוּא יִהְיֶה רַעַשׁ גָּדוֹל עַל
volatile & ,maris piſces *meis faciebus* à contremiſcent Et .Iſrael *humum*
20 אַדְמַת יִשְׂרָאֵל׃ וְרָעֲשׁוּ מִפָּנַי דְּגֵי הַיָּם וְעוֹף
, *humum* ſuper *repens* reptile omne & , agri *beſtia* & , cœli
הַשָּׁמַיִם וְחַיַּת הַשָּׂדֶה וְכָל־הָרֶמֶשׂ הָרֹמֵשׂ עַל־הָאֲדָמָה
cadent & , montes diruentur & : *humi faciebus ſuper* qui *homo omnis* &
וְכֹל הָאָדָם אֲשֶׁר עַל־פְּנֵי הָאֲדָמָה וְנֶהֶרְסוּ הֶהָרִים וְנָפְלוּ
eum *ſuper* vocabo Et .*cadet* terram in murus omnis & , gradus
21 הַמַּדְרֵגוֹת וְכָל־חוֹמָה לָאָרֶץ תִּפּוֹל׃ וְקָרָאתִי עָלָיו
viri gladius : Deus Dominus dixit ,gladium meis mõtibus cunctis in
לְכָל־הָרַי חֶרֶב נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִה חֶרֶב אִישׁ
:ſanguine *in* &,peſte *in* eo cum judicabor Et .erit ſuum fratrem in
22 בְּאָחִיו תִּהְיֶה׃ וְנִשְׁפַּטְתִּי אִתּוֹ בְּדֶבֶר וּבְדָם
faciã pluere ſulphur & ignem , *Elgbabis* lapides & ,inundantẽ imbrem &
וְגֶשֶׁם שׁוֹטֵף וְאַבְנֵי אֶלְגָּבִישׁ אֵשׁ וְגָפְרִית אַמְטִיר
.eo cum qui , multos populos ſuper & ,ejus *alis* ſuper & ,eum ſuper
עָלָיו וְעַל־אֲגַפָּיו וְעַל־עַמִּים רַבִּים אֲשֶׁר אִתּוֹ׃
gentiũ oculis in me faciam ſcire & ,me ſanctificabo &,me magnificabo Et
23 וְהִתְגַּדִּלְתִּי וְהִתְקַדִּשְׁתִּי וְנוֹדַעְתִּי לְעֵינֵי גּוֹיִם
.Dominus *ego* quòd ſcient & ;multarum
רַבִּים וְיָדְעוּ כִּי־אֲנִי יְהוָה׃

CAP. XXXIX. לט

dixit Sic , *dices* & , Ghog ſuper vaticinare , hominis fili tu Et
1 וְאַתָּה בֶן־אָדָם הִנָּבֵא עַל־גּוֹג וְאָמַרְתָּ כֹּה אָמַר
.Tubal &,Meſech capitis *prælatum* Ghog te ad *ego* Ecce ,Deus Dominus
אֲדֹנָי יֱהוִה הִנְנִי אֵלֶיךָ גּוֹג נְשִׂיא רֹאשׁ מֶשֶׁךְ וְתֻבָל׃
;Aquilonis lateribus è te faciã aſcendere & , te *ſextabo* & ,te *reducam* Et
2 וְשֹׁבַבְתִּיךָ וְשִׁשֵּׁאתִיךָ וְהַעֲלִיתִיךָ מִיַּרְכְּתֵי צָפוֹן
tuum arcum faciam percutere Et .Iſrael montes ſuper te faciã venire &
3 וַהֲבִאוֹתְךָ עַל־הָרֵי יִשְׂרָאֵל׃ וְהִכֵּיתִי קַשְׁתְּךָ
.dejiciam tua dextera manu de tuas ſagittas & ; tua ſiniſtra manu de
מִיַּד שְׂמֹאולֶךָ וְחִצֶּיךָ מִיַּד יְמִינְךָ אַפִּיל׃
qui populi & , *tuæ alæ omnes* & tu cades Iſrael montes Super
4 עַל־הָרֵי יִשְׂרָאֵל תִּפּוֹל אַתָּה וְכָל־אֲגַפֶּיךָ וְעַמִּים אֲשֶׁר
.devorandũ ad te dedi agri *beſtiæ* & , *alæ omni* , *avi* ,*volucri* :tecum
אִתָּךְ לְעֵיט צִפּוֹר כָּל־כָּנָף וְחַיַּת הַשָּׂדֶה נְתַתִּיךָ לְאָכְלָה׃
.Deus Dominus dixit,ſum locutus ego quia ; cades agri *facies* Super
5 עַל־פְּנֵי הַשָּׂדֶה תִּפּוֹל כִּי אֲנִי דִבַּרְתִּי נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִה׃
: *fiducia in* inſulas habitantibus in & , Maghog in ignem mittam Et
6 וְשִׁלַּחְתִּי־אֵשׁ בְּמָגוֹג וּבְיֹשְׁבֵי הָאִיִּים לָבֶטַח
meæ ſanctitatis nomen Et .DOMINUS *ego* quòd ſcient &
7 וְיָדְעוּ כִּי־אֲנִי יְהוָה׃ וְאֶת־שֵׁם קָדְשִׁי
nomen *polluam* non & , Iſrael mei populi medio in faciam ſcire
אוֹדִיעַ בְּתוֹךְ עַמִּי יִשְׂרָאֵל וְלֹא־אַחֵל אֶת־שֵׁם־
ſanctus , Dominus *ego* quòd gentes ſcient & : ultrà *meæ ſanctitatis*
קָדְשִׁי עוֹד וְיָדְעוּ הַגּוֹיִם כִּי־אֲנִי יְהוָה קָדוֹשׁ
.Iſrael *in*
בְּיִשְׂרָאֵל׃

Verſio VULG. LAT.

17 Hæc dicit Dominꝰ Deꝰ; Tu ergò ille es, de quo locutꝰ ſum in diebus antiquis, in manu ſervorum meorum prophetarum Iſrael, qui prophetaverunt in diebꝰ illorũ temporum, ut adducerem te ſuper eos. 18 Et erit in die illa, in die adventûs Gog ſuper terram Iſrael, ait Dominꝰ Deꝰ, aſcendet indignatio mea in furore meo. 19 Et in zelo meo, in igne iræ meæ locutꝰ ſum; Quia in die illa erit commotio magna ſuper terram 20 Iſrael: Et commovebuntur à facie mea piſces maris, & volucres cœli, & beſtiæ agri, & omne reptile quod movetur ſuper humum, cunctíque homines qui ſunt ſuper faciem terræ: & ſubvertentur montes, & cadent ſepes, & omnis murꝰ corruet in 21 terram. Et convocabo adverſùs eum in cunctis montibus meis gladium, ait Dominꝰ Deꝰ: gladius uniuſcujuſque in fratrem 22 ſuum dirigetur. Et judicabo eum peſte & ſanguine, & imbre vehementi, & lapidibꝰ immenſis: ignem & ſulphur pluam ſuper eum, & ſuper exercitum ejꝰ, & ſuper populos multos, qui ſunt 23 cum eo. Et magnificabor, & ſanctificabor: & notus ero in oculis multarum gentium, & ſcient quia ego Dominus.

CAP. XXXIX.

1 Tu autem, fili hominis, vaticinare adverſùm Gog, & dices; Hæc dicit Dominꝰ Deꝰ; Ecce ego ſuper te, Gog, principem ca-2 pitis Moſoch & Thubal: Et circumagam te, & educam te, & aſcendere te faciam de lateribꝰ Aquilonis: & adducam te ſuper 3 montes Iſrael. Et percutiam arcũ tuum in manu ſiniſtra tua, & ſagittas tuas de manu dextera tua 4 dejiciam. Super montes Iſrael cades tu, & omnia agmina tua, & populi tui, qui ſunt tecũ: feris, avibꝰ, omníq; volatili, & beſtiis terræ, dedi te ad devorandũ. 5 Super faciem agri cades: quia ego locutꝰ ſum, ait Dominꝰ Deꝰ. 6 Et immittã ignem in Magog, & in his qui habitant in inſulis confidenter: & ſcient quia ego 7 Dñs. Et nomen ſanctum meum notum faciam in medio populi mei Iſrael, & non polluam nomen ſanctum meum ampliús: & ſcient Gentes, quia ego Dominus, Sanctus Iſrael.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

17 Τάδε λέγει (ω) κύριος κύριος τῷ Γὼγ, Σὺ εἶ περὶ οὗ ἐλάλησα (α) πρὸ ἡμερῶν τῶν ἔμπροσθεν, διὰ χειρὸς τῶν δούλων μου τῶν προφητῶν τοῦ Ἰσραὴλ, ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις καὶ ἔτεσι, τοῦ ἀναγαγεῖν σε ἐπ' αὐτούς. 18 Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ἐν ἡμέρᾳ ᾗ ἂν ἔλθῃ Γὼγ ἐπὶ τὴν γῆν (β) Ἰσραὴλ, λέγει (γ) κύριος κύριος, ἀναβήσεται ὁ θυμός μου, 19 Καὶ ὁ ζῆλός μου· ἐν πυρὶ τῆς ὀργῆς μου ἐλάλησα, Εἰ μὴν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσται σεισμὸς μέγας ἐπὶ (δ) γῆς Ἰσραήλ· 20 Καὶ σεισθήσονται ἀπὸ προσώπου (") κυρίου οἱ ἰχθύες τῆς θαλάσσης, καὶ τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ τὰ θηρία τοῦ πεδίου, καὶ πάντα τὰ ἑρπετὰ τὰ ἕρποντα ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ πάντες οἱ ἄνθρωποι οἱ ἐπὶ προσώπου τῆς γῆς· καὶ (ε) ῥαγήσεται τὰ ὄρη, καὶ πεσοῦνται αἱ φάραγγες, καὶ πᾶν τεῖχος ἐπὶ τὴν γῆν πεσεῖται. 21 Καὶ καλέσω ἐπ' αὐτὸ καὶ πᾶν (ζ) φόβον, λέγει κύριος· μάχαιρα ἀνθρώπου ἐπὶ τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ ἔσται. 22 Καὶ κρινῶ αὐτὸν θανάτῳ, καὶ αἵματι, καὶ ὑετῷ κατακλύζοντι, καὶ λίθοις χαλάζης, καὶ πῦρ καὶ θεῖον βρέξω ἐπ' αὐτὸν, καὶ ἐπὶ πάντας τοὺς μετ' αὐτοῦ, καὶ (η) ἐπ' ἔθνη πολλὰ μετ' αὐτοῦ. 23 Καὶ μεγαλυνθήσομαι, καὶ ἁγιασθήσομαι, καὶ ἐνδοξασθήσομαι, καὶ γνωσθήσομαι ἐναντίον ἐθνῶν πολλῶν, καὶ γνώσονται ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος.

Hæc dicit Dominus Dominus ad Gog; Tu es, de quo loquutus ſum ante dies priores per manum ſervorum meorum prophetarum (u) Iſrael, in diebus illis, & annis, ut adducerem te ſuper eos. 17 *Et erit in die illa, in die, quâ venerit Gog ſuper terram Iſrael, ait Dominus Dominus, aſcendet furor meus,* 18 *Et zelus meus: in igne iræ meæ loquutus ſum; Si non in die illa erit commotio magna ſuper terram Iſrael:* 19 *Et commovebuntur à facie Domini piſces maris, & volatilia cœli, & beſtiæ campi, & omnia reptilia, quæ repunt ſuper humum, cunctíque homines qui ſunt ſuper faciem terræ: & ſcindentur montes, & cadent valles: & omnis murus in terram corruet.* 20 *Et (o) vocabo ſuper ipſum etiam omnem formidinem, dicit Dominus. Gladius hominis ſuper fratrem ſuum erit.* 21 *Et judicabo eum peſte, & ſanguine, & pluviâ inundante, & lapidibus grandinis; & ignem & ſulphur pluam ſuper eum, & ſuper omnes qui cum eo, & ſuper gentes multas cum eo.* 22 *Et magnificabor, & ſanctificabor, & glorificabor, et* notꝰ ero *in conſpectu gentiũ multarũ: & ſcient, quia ego ſũ Dñs.* 23

MS. A. (ω) ἀδωναῒ κύριος ὁ θεὸς τῷ (α) ἀφ' (β) τοῦ Ἰσραὴλ, (γ) κύριος κύριος ὁ θεὸς, (δ) τῆς γῆς τοῦ Ἰσραήλ· (") τοῦ κυρίου (ε) ῥαγήσονται (ζ) φόβον μαχαίρας, λέγει κύριος κύριος· (η) ἐπὶ

ΚΕΦ. λθ'.

1 Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου προφήτευσον ἐπὶ Γὼγ, καὶ εἰπὸν, Τάδε λέγει (α) κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπὶ σὲ Γὼγ ἄρχοντα Ῥῶς, (β) Μεσὸχ, καὶ Θοβέλ. 2 Καὶ συνάξω σε, καὶ καθοδηγήσω σε, καὶ (γ) ἀναβιβῶ σε (") ἐπ' ἐσχάτου τοῦ Βοῤῥᾶ, καὶ (δ) ἀνάξω σε ἐπὶ τὰ ὄρη (ε) τῷ Ἰσραήλ. 3 Καὶ ἀπολῶ τὸ τόξον σου (ζ) ἀπὸ τῆς χειρός σου τῆς ἀριστερᾶς, καὶ τὰ τοξεύματά σου ἀπὸ τῆς χειρός σου τῆς δεξιᾶς, καὶ καταβαλῶ σε 4 Ἐπὶ τὰ ὄρη (η) τὰ Ἰσραὴλ, καὶ πεσῇ σὺ καὶ πάντες οἱ περὶ σὲ, καὶ τὰ ἔθνη τὰ μετὰ σοῦ δοθήσονται εἰς πλήθη ὀρνέων, παντὶ πετεινῷ, καὶ πᾶσι τοῖς θηρίοις τοῦ πεδίου δέδωκά σε καταβρωθῆναι. 5 Ἐπὶ προσώπου τοῦ πεδίου πεσῇ, ὅτι ἐγὼ ἐλάλησα, λέγει (θ) κύριος. 6 Καὶ ἀποστελῶ πῦρ (ι) ἐπὶ Γὼγ, καὶ κατοικηθήσονται αἱ νῆσοι ἐπ' εἰρήνης, καὶ γνώσονται ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος. 7 Καὶ τὸ ὄνομά μου τὸ ἅγιον γνωσθήσεται ἐν μέσῳ λαοῦ μου Ἰσραὴλ, καὶ οὐ βεβηλωθήσεται τὸ ὄνομά μου τὸ ἅγιον οὐκέτι, καὶ γνώσονται (κ) τὰ ἔθνη ὅτι ἐγώ εἰμι (λ) κύριος, ἅγιος ἐν Ἰσραήλ.

CAP. XXXIX.

Et tu, fili hominis, vaticinare ſuper Gog, & dic; Hæc dicit Dominus; Ecce ego ſuper te, Gog, principem Rhos, Meſoch, & Thobel: 1 *Et congregabo te: & deducam te, & faciam aſcendere te (a) deſuper extremo Aquilonis: & adducam te ſuper montes Iſrael.* 2 *Et (b) perdam arcum tuũ de manu tua ſiniſtra, & ſagittas tuas de manu tua dextera: & dejiciam te* 3 *Super montes Iſrael: & cades tu, & omnes, qui circa te: & gentes, quæ tecum, dabuntur ad multitudines avium: omni volatili, & omnibus beſtiis campi dedi te ad devorandum.* 4 *Super faciem campi cades, quia ego loquutus ſum, dicit Dominus.* 5 *Et emittam ignem in (c) Gog: & habitabuntur inſulæ in pace: & ſcient, quia ego ſum Dominus.* 6 *Et nomen meum ſanctum notum fiet in medio populi mei Iſrael: & non polluetur nomen meum ſanctum ampliùs: & ſcient gentes, quoniam ego ſum Dominus, Sanctus in Iſrael.* 7

MS. A. (α) κύριος κύριος, (β) Μοσὸχ, καὶ Θοβέρ. (γ) ἀναβιβάσω (") ἀπ' (δ) συνάξω (ε) τοῦ (ζ) ἐκ (η) τοῦ (θ) κύριος κύριος. (ι) ἐπὶ σὲ, καὶ κατοικισθήσονται (κ) πάντα τὰ (λ) κύριος κύριος, ὁ ἅγιος Ἰσραήλ.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

17 כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים הַאַתְּ הוּא דְמַלֵּלִית בְּיוֹמֵי קֳדָם בְּיַד עַבְדַי נְבִיֵּי יִשְׂרָאֵל דְאִתְנַבִּיאוּ
18 בְּיוֹמֵי הָאִנּוּן מִלְּקַדְמַת דְּנָא שְׁנִין סַגִּיאָן לְאַיְתָאָה יָתָךְ עֲלֵיהוֹן׃ וִיהֵי בְעִדָּנָא הַהִיא בְּיוֹם
19 מֵיתֵי גוֹג עַל אַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים יִדְלֵיק רֻגְזִי וְחֵמְתִי׃ וּבְאִתְגְּלָאָה פוּרְעָנוּתִי
בְּמִדְלַק אֶשַּׁת רוּגְזִי גְזֵרִית בְּמֵימְרִי אִם לָא בְּיוֹמָא הַהוּא יְהֵי זִיעַ סַגִּי עַל אַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל׃
20 וִיזוּעוּן מִן קֳדָמַי נוּנֵי יַמָּא וְעוֹפָא דִשְׁמַיָּא וְחֵיוַת בָּרָא וְכָל רִחְשָׁא דְרָחֵישׁ עַל אַרְעָא וְכָל
אֱנָשָׁא דִי עַל אַפֵּי אַרְעָא וְיִתְפַּגְרוּן טוּרַיָּא וְיִתְתַּלְשׁוּן מִגְדְּלַיָּא וְכָל שׁוּר רָם לְאַרְעָא
21 יִתְחַטַּר׃ וְאַזְמְנִינֵּיהּ לְמִפַּל בְּחַרְבָּא עַל טוּרֵי יִשְׂרָאֵל עַמִּי אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים חֶרֶב גְּבַר
22 בַּאֲחוּהִי תְּהֵי׃ וְאֶתְפְּרַע מִנֵּיהּ בְּמוֹתָא וּבְקִטְלָא וּמְטַר מְגַבַּר וְאַבְנֵי אֶלְגָּבִישׁ אֶשָּׁתָא
23 וְנוּפְרִיתָא אַמְטַר עֲלוֹהִי וְעַל מַשִׁרְיָתֵיהּ וְעַל עַמְמִין סַגִּיאִין דִי עִמֵּיהּ׃ וְאִתְרַבֵּי וְאֶתְקַדַּשׁ
וְאַגְלֵי גְבוּרְתִּי לְעֵינֵי עַמְמִין סַגִּיאִין וְיִדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ׃

לט

1 וְאַתְּ בַּר אָדָם אִתְנַבֵּי עַל גּוֹג וְתֵימַר כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים הָא אֲנָא שָׁלַח רוּגְזִי עֲלָךְ גּוֹג
2 רַב רֵישׁ מֶשֶׁךְ וְתוּבָל׃ וְאַשְׁדְּלִנָּךְ וְאַטְעֲנָךְ וְאַסְּקִנָּךְ מִסְּיָפֵי צִפּוּנָא וְאַיְתֵינָךְ עַל טוּרֵי
3 יִשְׂרָאֵל׃ וְאֶרְמֵי קַשְׁתָּךְ מִיַּד סְמָאלָךְ וְגִרְרָךְ מִיַּד יְמִינָךְ אַמְגַּר׃ עַל טוּרֵי אַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל
4 תִּתְרְמֵי נִבְלְתָךְ אַתְּ וְכָל מַשִׁרְיָתָךְ וְעַמְמִין דִּי עִמָּךְ לְעוֹפָא צִפַּר כָּל דִּי פָרַח וּלְחֵיוַת בָּרָא
5 מְסַרְתָּךְ לְאִשְׁתֵּיצָאָה׃ עַל אַפֵּי בָרָא תִּתְרְמֵי נִבְלְתָךְ אֲרֵי אֲנָא גְזֵרִית בְּמֵימְרִי אֲמַר יְיָ
6 אֱלֹהִים׃ וְאַדְלֵיק אֶשָּׁתָא בְּמָגוֹג וּבְיָתְבֵי נַגְוָתָא דְשָׁרַן לְרוֹחְצָן וְיִדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ׃ וְיָת
7 שְׁמָא דְקוּדְשִׁי אֲגַלֵּי בְּגוֹ עַמִּי יִשְׂרָאֵל וְלָא אַחֵיל יָת שְׁמָא דְקוּדְשִׁי עוֹד וְיִדְעוּן עַמְמַיָּא
אֲרֵי אֲנָא יְיָ קַדִּישָׁא אַשְׁרֵיתִי שְׁכִנְתִּי בְּיִשְׂרָאֵל׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Hæc dicit Dominus Deus, Nunquid tu es de quo locutus ſum in diebus anti- 17
quis per manum ſervorum meorum prophetarum Iſrael ? qui prophetave-
runt à diebus illis, ab antiquo jam multis annis tranſactis, fore, ut adducerem
te ſuper eos. Et erit tempore illo, die quo venerit Gog ſuper terram Iſrael, 18
ait Dominus Deus, ſuccendetur furor meus, & indignatio mea. Et cùm re- 19
velata fuerit vindicta mea, ut ſuccendatur ignis furoris mei : decrevi in ver-
bo meo quòd in die illa erit commotio magna ſuper terram Iſrael. Et com- 20
movebuntur à facie mea piſces maris, & volucres cœli, & beſtiæ agri, &
omne reptile quod reptat ſuper terram, & omnes homines qui erunt ſuper
faciem terræ, & ſubvertentur montes, & evellentur turres, & omnis murus
excelſus in terram corruet. Et præparabo eum ut cadat in gladio ſuper mon- 21
tes Iſraelis populi mei, ait Dominus Deus : gladius uniuſcujuſque erit in fra-
trem ſuum. Et ultionem ſumam ex eo in peſte & occiſione : & pluviam ve- 22
hementem, & lapides grandinis, & ignem, & ſulphur pluam ſuper eum, &
ſuper exercitum ejus, & ſuper populos multos qui cum eo erunt. Et magni- 23
ficabor, & ſanctificabor, & revelabo potentiam meam in oculis populorum
multorum ; & ſcient, quia ego Dominus.

CAP. XXXIX.

Et tu fili hominis vaticinare adverſus Gog, & dices : Hæc dicit Dominus 1
Deus, Ecce ego mitto furorem meum ſuper te Gog, ſumme princeps Meſech
& Thubal. Et perſuadebo tibi, & ſeducam te, & aſcendere te faciam à fi- 2
nibus Aquilonis, et adducam te ſuper montes Iſrael. Et projiciam arcum tu- 3
um de manu ſiniſtra tua, et ſagittas tuas de manu dextera tua dejiciam. Et 4
ſuper montes terræ Iſrael projicietur cadaver tuum : te et omnes exer-
citus tuos, et populos qui ſunt tecum, avibus volucribus, omníque volatili
et beſtiis agri tradidi conſumendos. Super faciem agri projicietur cadaver 5
tuum, quia ego decrevi in verbo meo, ait Dominus Deus. Et ſuccendam 6
ignem in Magog, et in incolis inſularum qui habitant confidenter: et ſcient,
quia ego Dominus. Et nomen ſanctum meum revelabo in medio populi mei 7
Iſrael, et non violabo nomen ſanctum meum ampliùs: et ſcient populi, quia
ego Dominus ſanctus qui habitare feci majeſtatem meam in Iſrael.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܐܢܬܗܘ ܕܐܡܪܬ ܥܠܝܟ ܒܝܘܡܬܐ ܩܕܡܝܐ. ܒܐܝܕܐ ܕܥܒܕܝ 17
ܢܒܝܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܕܐܬܢܒܝܘ ܗܘܘ ܒܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ ܘܒܫܢܝܐ ܗܢܝܢ. ܕܐܝܬܝܟ ܥܠܝܗܘܢ.
* ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܕܢܐܬܐ ܓܘܓ. ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܬܣܩ ܚܡܬܝ 18
ܒܚܡܬܝ. ܘܒܛܢܢܝ. * ܒܢܘܪܐ ܕܪܘܓܙܝ ܡܠܠܬ. ܕܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܗܘܐ ܙܘܥܐ ܪܒܐ 19
ܒܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܘܢܙܘܥܘܢ ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ ܢܘܢܐ ܕܝܡܐ. ܘܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܚܝܘܬܐ ܕܕܒܪܐ. 20
ܘܟܠ ܪܚܫܐ ܕܪܚܫ ܥܠ ܐܪܥܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܒܢܝܢܫܐ ܕܥܠ ܐܦܝ ܐܪܥܐ. ܘܢܬܗܦܟܘܢ ܛܘܪܐ
ܘܢܦܠܘܢ ܡܓܕܠܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܫܘܪܐ ܠܐܪܥܐ ܢܦܠܘܢ. * ܘܐܩܪܐ ܥܠܘܗܝ ܚܪܒܐ ܒܟܠܗܘܢ 21
ܛܘܪܝ: ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܚܪܒܗ ܕܓܒܪܐ ܒܐܚܘܗܝ ܬܗܘܐ. * ܘܐܬܕܝܢ ܥܡܗ ܒܡܘܬܐ 22
ܘܒܕܡܐ. ܘܡܛܪܐ ܕܫܛܦ ܘܟܐܦܐ ܕܛܪܢܐ. ܘܢܘܪܐ ܘܟܒܪܝܬܐ ܐܡܛܪ ܥܠܘܗܝ. ܘܥܠ ܪܘܪܒܢܘܗܝ.
ܘܥܠ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ ܕܥܡܗ. * ܘܐܬܪܘܪܒ ܘܐܬܩܕܫ ܩܕܡ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ 23
ܐܢܐ ܡܪܝܐ.
* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܛ *
* ܘܐܢܬ ܒܪܢܫܐ. ܐܬܢܒܐ ܥܠ ܓܘܓ. ܘܐܡܪ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟ ܓܘܓ. 1
ܡܕܒܪܢܐ ܘܪܫܐ ܕܡܫܟ ܘܕܬܘܒܠ. * ܘܐܫܝܢܟ ܘܐܟܢܫܟ ܘܐܣܩܟ ܡܢ ܣܘܦܝܗ ܕܓܪܒܝܐ. 2
ܘܐܝܬܝܟ ܠܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܘܐܦܝܠ ܩܫܬܟ ܡܢ ܣܡܠܟ. ܘܓܐܪܝܟ ܡܢ ܝܡܝܢܟ. * ܘܒܛܘܪܐ 3 4
ܕܐܝܣܪܝܠ ܬܦܠ ܐܢܬ. ܘܟܠܗ ܚܝܠܟ ܘܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ ܕܥܡܟ. ܠܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ:
ܘܠܚܝܘܬܐ ܕܐܪܥܐ. ܐܫܠܡܟ ܠܡܐܟܘܠܬܐ. * ܘܥܠ ܐܦܝ ܕܒܪܐ ܬܦܠ. ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܡܠܠܬ 5
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. * ܘܐܫܕܪ ܢܘܪܐ ܥܠ ܡܓܘܓ. ܘܥܠ ܥܡܘܪܝ ܓܙܪܬܐ ܕܫܠܝܢ. ܘܢܕܥܘܢ 6
ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܘܫܡܐ ܕܩܘܕܫܝ ܐܘܕܥ ܒܓܘ ܥܡܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܠܐ ܐܛܢܦ ܬܘܒ ܫܡܐ 7
ܕܩܘܕܫܝ. ܘܢܕܥܘܢ ܥܡܡܐ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ.

Sic ait Dominus dominorum, Tu ne es ille de quo prædixerã priſcis dieb⁹ per ſervos meos prophetas Iſraelis, qui diebus illis & annis illis prophetabant, quòd adducturus eſſem te contra eos? 17 Eodem illo die quo invaſerit Gog terram Iſraelis, ait Dñs dominorum; exardeſcet ira mea in excandeſcentia mea & in zelo meo: 18 In igne furoris mei locutus ſum, quòd eodem illo die erit concuſſio magna in terra Iſraelis: 19 Et concutientur à conſpectu ejus piſces maris, volucres cœli, beſtiæ deſerti, omne reptile quod reptat ſuper terram, & omnes homines qui ſunt ſuper faciem terræ: deſtruentur montes, concident turres, omnéſque muri in terram corruent. 20 Sed gladiũ advocabo contra eum in cunctis montib⁹ meis, ait Dominus dominorum; gladius cujuſque in fratrem ſuum vertetur: 21 Et condemnabo eum morte & ſanguine; & pluviam converrentẽ, lapides ſiliceos, ignem, ac ſulphur demittã ſuper eum, ſuper principes ejus, & ſuper populos multos qui cum eo erunt. 22 Et magnificabor atque ſanctificabor coram gentibus multis, & experientur me eſſe Dominum. 23

CAP. XXXIX.

PRætereà tu fili hominis, vaticinare contra Gogum, & dic; Sic ait Dominus dominorum, Ecce me adverſùm te Gog rector & princeps Moſochi & Thubelis. 1 Pacatũ reddam te, congregabo te, & aſcendere te faciã ex oris Aquilonarib⁹; cúmque adduxero te ad montes Iſraelis, 2 Efficiam ut fallatur arcus tu⁹ è ſiniſtra tua, & ſagittæ tuæ è dextera tua: 3 In montib⁹ Iſraelis concides tu, totúſque exercitus tuus, & populi multi qui tecum erunt: volucrib⁹ cœli, & beſtiis terræ dabo te devorandum: 4 Et in ſuperficie deſerti corrues; quoniam ego locutus ſum, ait Dñs dominorum: 5 Et immittam ignem ſuper Magog & ſup habitatores inſularum qui in tuto ſunt; & experientur me eſſe Dominum: 6 Et nomen ſanctiſſimum meum notum faciam in medio populi mei Iſraelis, & non prophanabo ampliùs ſanctiſſimum nomen meum: ſciéntque gentes me eſſe Dominum, Sanctum Iſraelis. 7

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* الاصحاح الثاني والعشرون * *هكذا يقول ادوناي الرب الاله لجوج * انت الذي من 17
اجلك تكلمت منذ الايام التي من قبل بيد عبيدي انبياء اسرايل في تلك الايام والسنين *
ان اصعدك عليهم * ويكون في ذلك اليوم * في اليوم الذي ياتي فيه جوج على ارض اسرايل * 18
يقول الرب الرب الاله * يصعد غضبي وغيرتي *بنار رجزي تكلمت *يقينا ذلك اليوم تكون زلزلة 19
عظيمة على ارض اسرايل * ويتزلزل من وجه الرب سمك البحر * وطيور السماء * ووحوش 20
الصحراء * وكل الحشرات التي تدب على الارض * وجميع البشر الذين على وجه الارض * وينسف
الجبال * ويسقط الاودية * وكل سور على الارض يسقط * وادعوا عليهم كل خوف السيف * 21
يقول الرب الرب * وسيف الانسان على اخيه يكون * وادينه بموت وبدم * وبمطر مغرق * 22
وحجارة برد * وامطر عليه نارا وكبريتا * وعلي جميع من معه * وعلي امم كثيرة معه * 23
*واتعظم واتقدس واتمجد * واعرف امام الامم الكثيرة * ويعلمون اني انا الرب انا *

* الفصل التاسع والثلثون *

*وانت يا ابن الانسان * تنبا على جوج وقل * هكذا يقول الرب الرب * ها انا عليك يا 1
جوج رييس روس موسوخ وتوبال *واجمعك * واهديك * واصعدك من اخر الجربياء * واجمعك 2
على جبال اسرايل * واهلك قوسك من يدك اليسري * وسهامك من يدك اليمني * واطرحك 3 4
على جبال اسرايل * وتسقط انت وجميع اصحابك * والامم التي معك تسلم لكثرة الطيور لكل
طاير * ولجميع وحوش الصحراء دفعتك ليوكل * على وجه الصحراء تسقط * لاني انا تكلمت 5
يقول الرب الرب * وارسل عليك نارا * وتسكن الجزاير بالسلامة * ويعلمون اني انا الرب انا * 6
*ويعرف اسمي القدوس في وسط شعبي اسرايل * ولا يتدنس اسمي القدوس بعد * ويعلم جميع 7
الامم اني انا الرب انا * قدوس اسرايل *

Textus vigeſimus ſecundus.

Sic dicit Adonai Dominus Deus ad Gog; Tu es ille de quo locutus ſum inde à priſtinis diebus per ſervos meos prophetas Iſraelis, in diebus & annis illis, quòd adducturus eſſem te contra ipſos. 17 *Et futurum eſt eo die, quo die veniet Gog adverſùs terram Iſraelis (dicit Dominus, Dominus Deus) ut aſcendat ira mea & zelus meus:* 18 *In igne furoris mei locutus ſum; certiſſimè eo die erit concuſſio magna ſuper terram Iſraelis;* 19 *Et concutientur à facie Domini piſces maris, volucres cœli, beſtiæ campi, & omnia reptilia quæ repunt ſuper terram, omneſque homines qui ſunt ſuper faciem terræ: diſrumpentur montes, cadent valles, & omnis murus in terram corruet.* 20 *Advocabo in eos omnem gladii terrorem, ait Dominus Dominus: & cujuſque gladius in fratrem ſuum erit.* 21 *Condemnabo eum cæde & ſanguine, pluviâ obruente, & lapidibus grandinis: ignem & ſulphur pluam ſuper eum & ſuper omnes qui cum eo erunt, & ſuper gentes multas quæ cum eo erunt.* 22 *Sic magnificabor, ſanctificabor, glorificabor, & innoteſcam coram gentibus multis: & cognoſcent me Dominum eſſe.* 23

CAP. XXXIX.

ET tu O fili hominis, propheta contra Gog, & dic; Sic ait Dominus; Ecce me adverſùm te O Gog princeps principum Moſoch & Thobel: 1 *Congregabo te, ducamque te, & aſcendere te faciam ab extremo Aquilone, & congregabo te ſuper montes Iſraelis:* 2 *Et perdam arcum tuum è manu tua ſiniſtra, ſagittaſque tuas è manu tua dextera:* 3 *Proſternam te ſuper montes Iſraelis, cadeſque tu et omnes tui ſtipatores: multitudini volucrum, omnigenis volucribus, et omnibus beſtiis campeſtribus tradam te comedendum:* 4 *Super faciem campi cades, quia ego locutus ſum, dicit Dominus Dominus.* 5 *Mittam ſuper te ignem, et inſulæ pacatè habitabunt, ſcientque me Dominum eſſe.* 6 *Et notum fiet nomen meum ſacroſanctum in medio populi mei Iſraelis, neque polluetur deinceps nomen meum ſacroſanctum; et ſcient gentes univerſæ me Dominum eſſe, Sanctum Iſraelis.* 7

יחזקאל : לט

qua dies Hæc ; Deus Dominus dixit ,eſt factum & , venit Ecce
8 הנה באה ונהיתה נאם אדני יהוה הוא היום אשר
,ſuccendent & , Iſrael civitatũ habitatores egredientur Et .ſum locutus
9 דברתי: ויצאו ישבי ערי ישראל ובערו
,*ſagittis in &* , *arcu in* ,*ſcutum &* ,*clypeum &* ,*armatura in* comburent &
והשיקו בנשק ומגן וצנה בקשת ובחצים
.annis ſeptem *ignem eis in* ſuccendent & ; *lancea in &* ,manus *baculo in &*
ובמקל יד וברמח ובערו בהם אש שבע שנים:
, ſylvis de ſuccident nec , agro de ligna portabunt non Et
10 ולא־ישאו עצים מן־השדה ולא יחטבו מן־היערים
,*ſuos ſpoliatores* ſpoliabunt & ; *ignem accendent armatura in* quoniam
כי בנשק יבערו־אש ושללו את־שלליהם
erit Et .Deus Dominus dixit ,ſuos prædatores prædabuntur &
11 ובזזו את־בזזיהם נאם אדני יהוה: והיה
vallem , Iſrael in ſepulchri ibi locum Ghog ipſi dabo , illa die in
ביום ההוא אתן לגוג מקום־שם קבר בישראל גי
: tranſeuntes ipſa *obturans* & ,maris Orientem ad tranſeuntium
העברים קדמת הים וחסמת היא את־העברים
Vallem vocabunt & ,ejus *turbam* omnem & , Ghog ibi ſepelient &
וקברו שם את גוג ואת־כל־המונה וקראו גיא
mundandum ad , Iſrael domus eos ſepelient Et .Ghog Hamon
12 המון גוג: וקברום בית ישראל למען טהר את־
, terræ populus omnis ſepelient Et .menſibus ſeptem , terram
13 הארץ שבעה חדשים: וקברו כל־עם הארץ
viros Et .Deus Dominus dixit,me *glorificari* die ,nomen in eis erit &
14 והיה להם לשם יום הכבדי נאם אדני יהוה: ואנשי
,tranſeuntibus cum ſepelientes , *terra in* tranſeuntes ſeligent *jugiter*
תמיד יבדילו עברים בארץ מקברים את־העברים את־
menſium ſeptem fine à : eã *mũdandũ ad* ,terræ *faciebus ſuper* remanentes
הנותרים על־פני הארץ לטהרה מקצה שבעה־חדשים
,hominis os videbit & , *terra in* tranſeuntes tranſibunt Et .inquirent
15 יחקרו: ועברו העברים בארץ וראה עצם אדם
in ſepelientes illud ſepeliant donec ; *titulum* illud juxta ædificabit &
ובנה אצלו ציון עד קברו אתו המקברים אל־
mundabunt & ,Hamonah civitatis nomen etiam Et .Ghog Hamon valle
16 גיא המון גוג: וגם שם־עיר המונה וטהרו
avi Dic ,Deus Dominus dixit ſic,hominis fili tu Et .terram
17 הארץ: ואתה בן־אדם כה־אמר אדני יהוה אמר לצפור
vos cõgregate,venite &,vos cõgregate , agri beſtiæ omni & , *alæ omnis*
כל־כנף ולכל חית השדה הקבצו ובאו האספו
ſacrificium , vobis *immolans ego* quod meum ſacrificium *ſuper* undique
מסביב על־זבחי אשר אני זבח לכם זבח
.ſanguinem bibetis & ,carnem comedetis & ; Iſrael montes ſuper grande
גדול על הרי ישראל ואכלתם בשר ושתיתם דם:
; bibetis terræ *prælatorum* ſanguinem & , comedetis fortium Carnem
18 בשר גבורים תאכלו ודם־נשיאי הארץ תשתו
Baſan bubalorum , *vitulorum* , hircorum & , agnorum , arietum
אילים כרים ועתודים פרים מריאי בשן
bibetis & , ſaturitatem ad adipem comedetis Et .eorum cunctorum
19 כלם: ואכלתם־חלב לשבעה ושתיתם
.vobis ſacrificavi quod meo ſacrificio de , ebrietatem ad ſanguinem
דם לשכרון מזבחי אשר־זבחתי לכם:
omni & , *forti* , *curru &* , *equo* meam menſam ſuper ſaturabimini Et
20 ושבעתם על־שלחני סוס ורכב גבור וכל־
meam gloriam dabo Et .Deus Dominus dixit ; *belli* *viro*
21 איש מלחמה נאם אדני יהוה: ונתתי את־כבודי
, feci quod ,meum judicium gentes omnes videbunt & : gentibus in
בגוים וראו כל־הגוים את־משפטי אשר עשיתי
.eis in poſui quam meam manum &
ואת־ידי אשר־שמתי בהם:

Verſio VULG. LAT.

8 Ecce venit,& factum eſt, ait Dominus
Deus : hæc eſt dies,de qua
9 locutꝰ ſum. Et egredientur habitatores
de civitatibꝰ Iſrael, &
ſuccendent, & comburent arma,
clypeum, & haſtas,arcum, & ſagittas,
& baculos manuum, &
contos : & ſuccendent ea igni
10 ſeptem annis. Et non portabunt
ligna de regionibꝰ, neque ſuccident
de ſaltibꝰ : quoniam arma
ſuccendent igni, & deprædabuntur
eos, quibꝰ prædæ fuerant,&
diripient vaſtatores ſuos, ait Dominꝰ
11 Deus. Et erit in die illa :
dabo Gog locum nominatum ſepulchrum
in Iſrael : vallem viatorum
ad Orientem maris, quæ
obſtupeſcere faciet prætereuntes:
& ſepelient ibi Gog, & omnem
multitudinem ejus, & vocabitur
12 Vallis multitudinis Gog. Et ſepelient
eos domus Iſrael,ut mundent
13 terram ſeptem menſibus.Sepeliet
autem eum omnis populꝰ
terræ, & erit eis nominata dies,
in qua glorificatꝰ ſũ, ait Dominꝰ
14 Deus. Et viros jugiter conſtituent
luſtrantes terram, qui ſepeliant
& requirant eos qui remanſerant
ſuper faciem terræ, ut
emundent eam : poſt menſes autem
ſeptem quærere incipient.
15 Et circuibunt peragrantes terram
: cúmque viderint os hominis,
ſtatuent juxta illud titulum,
donec ſepeliant illud pollinctores
in valle multitudinis Gog.
16 Nomen autem civitatis,Amona:
17 & mundabunt terram. Tu ergò
fili hominis, hæc dicit Dominꝰ
Deus ; Dic omni volucri, & univerſis
avibꝰ, cunctíſque beſtiis
agri ; Convenite,properate,concurrite
undique ad victimam
meã,quam ego immolo vobis,victimam
grandem ſuper montes
Iſrael : ut comedatis carnem, &
18 bibatis ſanguinem. Carnes fortium
comedetis, & ſanguinem
principum terræ bibetis ; arietũ
& agnorum, & hircorum, taurorúmque
& altilium,& pinguium
19 omnium. Et comedetis adipem
in ſaturitatem, & bibetis
ſanguinem in ebrietatem, de victima
quam ego immolabo vobis:
20 Et ſaturabimini ſuper menſam
meam de equo, & equite
forti, & de univerſis viris bellatoribꝰ,
21 ait Dominꝰ Deus. Et ponam
gloriam meam in Gentibꝰ :
& videbunt omnes gentes judicium
meum, quod fecerim ; &
manum meam, quam poſuerim
ſuper eos.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

8 Ἰδοὺ ἥκει, καὶ γνώσῃ ὅτι ἔσται, λέγει κύριος
κύριος (μ)· αὕτη ἐστὶν ἡ ἡμέρα ἐν ᾗ ἐλάλησα.
9 Καὶ ἐξελεύσονται οἱ κατοικοῦντες τὰς
πόλεις Ἰσραὴλ, καὶ καύσουσιν ἐν τοῖς ὅπλοις,
πέλταις καὶ κοντοῖς, καὶ τόξοις καὶ
τοξεύμασι, καὶ ῥάβδοις χειρῶν, καὶ λόγχαις,
10 καὶ καύσουσιν ἐν αὐτοῖς πῦρ ἑπτὰ ἔτη· Καὶ
οὐ μὴ λάβωσι ξύλα ἐκ τοῦ πεδίου, οὐδὲ μὴ
κόψωσιν ἐκ τῶν δρυμῶν, ἀλλ' ἢ τὰ ὅπλα
κατακαύσουσι πυρί· καὶ προνομεύσουσιν τοὺς
προνομεύσαντας αὐτοὺς, καὶ σκυλεύσουσι
τοὺς σκυλεύσαντας αὐτοὺς, λέγει κύριος.
11 Καὶ ἔσται, ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ δώσω
τῷ Γὼγ τόπον ὀνομαστὸν, μνημεῖον ἐν Ἰσραὴλ,
τὸ πολυάνδριον τῶν ἐπελθόντων
πρὸς (ν) τῇ θαλάσσῃ, καὶ περιοικοδομήσουσι
τὸ περιστόμιον τῆς φάραγγος, καὶ (ξ) κατορύξουσιν
ἐκεῖ τὸν Γὼγ καὶ πᾶν τὸ πλῆθος
αὐτοῦ, καὶ κληθήσεται (ο) τότε Τὸ πολυάνδριον
12 τοῦ Γώγ. Καὶ (π) κατορύξουσιν
αὐτοὺς οἶκος (ρ) Ἰσραὴλ, ἵνα καθαρισθῇ
13 ἡ γῆ ἐν ἑπταμήνῳ. Καὶ κατορύξουσιν
αὐτοὺς πᾶς ὁ λαὸς τῆς γῆς, καὶ ἔσται αὐτοῖς
(σ) ὀνομαστὸν, ᾗ ἡμέρᾳ (τ) ἐδοξάσθη,
14 λέγει κύριος. Καὶ ἄνδρας διαπαντὸς διαστελοῦσιν
ἐπιπορευομένους (υ) τὴν γῆν, θάψαι
τοὺς καταλελειμμένους ἐπὶ προσώπου
τῆς γῆς, καθαρίσαι αὐτὴν μετὰ τὴν ἑπτάμηνον,
15 καὶ (φ) ἐκζητήσουσι. Καὶ πᾶς ὁ
διαπορευόμενος τὴν γῆν, καὶ ἰδὼν ὀστοῦν
ἀνθρώπου, οἰκοδομήσει παρ' (χ) αὐτῷ σημεῖον,
ἕως ὅτου θάψωσιν αὐτὸ οἱ θάπτοντες
εἰς (ψ) γαὶ τὸ πολυάνδριον τοῦ Γώγ.
16 Καὶ γὰρ τὸ ὄνομα τῆς πόλεως, Πολυάνδριον.
17 καὶ καθαρισθήσεται ἡ γῆ. Καὶ σὺ
υἱὲ ἀνθρώπου εἰπὸν, Τάδε λέγει κύριος,
Εἰπὸν παντὶ ὀρνέῳ πετεινῷ, καὶ πρὸς πάντα
τὰ θηρία τοῦ (ω) πεδίου, Συνάχθητε καὶ
ἔρχεσθε, συνάχθητε ἀπὸ πάντων τῶν περικύκλῳ
ἐπὶ τὴν θυσίαν μου, ἣν τέθυκα ὑμῖν
θυσίαν μεγάλην ἐπὶ τὰ ὄρη Ἰσραὴλ,
18 καὶ φάγεσθε κρέα, καὶ πίεσθε αἷμα. Κρέα γιγάντων
φάγεσθε, καὶ αἷμα ἀρχόντων τῆς
γῆς πίεσθε. κριοὺς καὶ μόσχους καὶ τράγους· καὶ
19 οἱ μόσχοι ἐστεατωμένοι πάντες. Καὶ φάγεσθε
στέαρ εἰς πλησμονὴν, καὶ πίεσθε αἷμα εἰς
μέθην ἀπὸ τῆς θυσίας μου, ἧς ἔθυσα ὑμῖν.
20 Καὶ ἐμπλησθήσεσθε ἐπὶ τῆς τραπέζης
μου, ἵππον καὶ ἀναβάτην (α) καὶ γίγαντα
καὶ πάντα ἄνδρα πολεμιστὴν, λέγει
21 (β) κύριος. Καὶ δώσω τὴν δόξαν μου ἐν
ὑμῖν, καὶ ὄψονται πάντα τὰ ἔθνη τὴν κρίσιν
μου ἣν ἐποίησα, καὶ τὴν χεῖρά μου ἣν
ἐπήγαγον ἐπ' αὐτούς.

Ecce venit, & ſcies, quoniam erit 8
, dicit Dominus Dominus.
Hæc eſt dies, in (d) qua loquutus
ſum. Et egredientur habitatores 9
urbium Iſrael, & (e) ſuccendent
in armis, peltis, & contis,
& arcubus, & ſagittis, &
baculis manuum, & lanceis: &
ſuccendent in eis ignem ſeptem
annis : Et non aſſument ligna 10
de campo, neque ſuccident de
ſaltibus : ſed arma comburent
igni: & deprædabuntur eos,
quibus prædæ fuerant, & ſpoliabunt
ſpoliatores ſuos, ait Dominus.
Et erit in die illa, dabo 11
Gog locum nominatum, monumentum
in Iſrael, polyandrion
(f) eorum qui venerint ad
mare : & ædificabunt per circuitum
os vallis : & (g) defodient
ibi Gog, & omnem multitudinem
ejus : & vocabitur
(h) tunc Polyandrion Gog. Et 12
defodient eos domus Iſrael ; ut
mundetur terra in ſeptem menſibus
: Et defodient eos omnis populus 13
terræ : & erit eis (i) inclytum,
quâ die glorificatus fuerit,
ait Dominus. Et viros jugiter 14
ſecernent , circumeuntes
terram ad ſepeliendum (k) eos,
qui remanſerint ſuper faciem
terræ, ut emundent eam, poſt
ſeptem menſes, (l) & quærent.
Et omnis peragrans terram, & 15
videns os hominis, ædificabit apud
illud, ſignum ; donec ſepeliant
illud pollinctores in Gai
polyandrio Gog. Nam & nomen 16
(m) civitatis, Polyandrion.
Et mundabitur terra.
Et tu, fili hominis, dic; Hæc dicit 17
Dominus ; Dic omni avi
volatili, & ad omnes beſtias
campi ; Congregamini, & venite
: congregamini ab omnibus
per circuitum ad victimam meam,
quam immolavi vobis, victimam
grandem ſuper montes
Iſrael : & comedetis carnes, &
bibetis ſanguinem : Carnes gigantum 18
comedetis , & ſanguinem
principum terræ bibetis, (n)
arietes, & vitulos, & hircos :
& vituli omnes adipati. Et 19
comedetis adipẽ ad ſaturitatem:
& bibetis ſanguinem ad ebrietatem
de victima mea, quam immolavi
vobis. Et ſaturabimini 20
ſuper menſam meam de equo, &
aſcenſore, & gigante, & omni
viro bellatore, ait Dominus. Et 21
dabo gloriam meam in vobis: &
videbunt omnes gentes judicium
meum, quod feci, & manum meam,
quam induxi ſuper eos.

MS. A. (μ) ὁ θεός· (ν) τὴν θάλασσαν, (ξ) κατορύξωσιν (ο) Τὸ γαὶ τὸ (π) κατορύξωσιν (ρ) τοῦ Ἰσραὴλ, (σ) εἰς ὀνομαστὸν, (τ) ᾗ ἐδοξάσθην, (υ) πᾶσαν τὴν γῆν, (φ) ἐκζητήσουσιν ἀκριβῶς. Καὶ ἔσται πᾶς ὁ διαπορευόμενος πᾶσαν τὴν γῆν, (χ) αὐτὸ (ψ) τὸ γαὶ τὸ (ω) ἀγροῦ, (α) γίγαντα (β) κύριος κύριος.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

8 הא אתיא ותתקים אמר יי אלהים הוא יומא די גזרית במימרי: ויפקון יתבי קרוי
9 ארעא דישראל ויהון שגרין ומסתוברין במני זיני בעגלין ותרסין בקשתן ובגררין
10 ובאעי מורנין ורומחין וידלקון בהון נורא שבע שנין: ולא יסבון אעין מן חקלא ולא
יקצון מן חורשא ארי במני זינא ידלקון נורא ויבזון ית בזזיהון ויעדי ית עדיהון אמר יי
11 אלהים: ויהי בעדנא ההיא אתן לגוג אתר כשר לבית קבורא בישראל בחילתא
מגיזתא מדנח ימא גנוסר וסמכא היא לתרין טוריא ויקברון תמן ית גוג וית כל
12 אתרגושתיה ויקרון חילת אתרגושת גוג: ויקברונון בית ישראל בדיל לדכאה ית
13 ארעא שבעא ירחין: ויקברון כל עמא דארעא ויהי להון לשום יום אתיקרותי אמר
14 יי אלהים: וגברין ימנון תדירא למהוי עדן בארעא מקברין עם דעדן ית די אשתארו
15 על אפי ארעא לדכיותה מסוף שבעא ירחין ישרון למבדק: ויעדי אורחא דעדן
בארעא די אם יחזי גרמא דאנשא ויבני לותיה ציונא עד דיקברון יתיה די מקברין
16 בחילת אתרגושת גוג: ואף לתמן יתרמון קטילי רומי קרתא דסגיאין אתרגושתהא
17 וידכון ארעא: ואת בר אדם כדנן אמר יי אלהים אמר לעופא צפר כל די פרח ולכל
חית ברא אתכנישו ואתו אתקרבו מסחור סחור על קטילי די אנא קטיל לכון קטול
18 סגי על טורי ישראל ותיכלון בסרא ותשתון דמא: בסר גברין תיכלון ודם רברבי
19 ארעא תשתון מלכין שלטונין וטורנין גברין עתירי נכסיא כולהון: ותיכלון תרבא
20 למסבע ותשתון דמא מבסר קטילין די אנא קטיל לכון: ותסבעון על טורי ישראל
21 סוסון ורתיכין גברין וכל גברי עבדי קרבא אמר יי אלהים: ואתן ית יקרי בעממיא
ויחזון כל עממיא ית פורענותי דעבדית וית גבורתי דשויתי בהון:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ecce venit & confirmabitur, ait Dominꝰ Deꝰ : hæc eſt dies quam decrevi in 8
verbo meo. Et egredientur habitatores civitatũ terræ Iſrael,& calefient, & 9
illuſtrabuntur armis bellicis,clypeis & ſcutis, & arcubus, & ſagittis,& jaculorum
& lancearum lignis:& ſuccendent his ignem ſeptem annis. Et non tollent 10
ligna de agro , nec ſuccident de ſaltu, quia armis bellicis ſuccendent
ignem,& deprædabuntur deprædatores ſuos,& expoliabunt expoliatores ſuos,
ait Dominꝰ Deꝰ.Et erit in tempore illo,& dabo ipſi Gog locum aptũ in domũ 11
ſepulchri in Iſrael in Valle vadorum ad orientem maris Geneſar;ea conjuncta
eſt duobꝰ montibꝰ ; & ſepelient ibi Gog, & omnem multitudinem ejꝰ,& vocabunt
Vallem multitudinis Gog. Et ſepelient eos domus Iſrael, ut mundent 12
terram ſeptem menſibꝰ. Et ſepelient eos omnis populꝰ terræ, & erit eis in 13
nomen dies in quo me glorificavero, ait Dominꝰ Deꝰ. Et viros jugiter conſtituent, 14
ut tranſeant per terram, ſepelientes cum his qui tranſeunt, eos qui
remanſerant ſuper faciem terræ,ut emundent eam : poſt ſeptem menſes incipient
quærere. Et ſi quis tranſiens per viam eorum,qui tranſeunt per terram, 15
viderit oſſa hominum,conſtruet juxta illa titulum, donec ſepeliant illa humatores
in Valle multitudinis Gog. Ibi quoque projicientur occiſi excelſæ civitatis 16
cujꝰ turmæ multæ ſunt, & emundabunt terram. Tu autem fili hominis : 17
Hæc dicit Dominꝰ Deꝰ,Dic avibus,paſſeribus,omníque volatili, & omni beſtiæ
agri, Congregamini & venite , appropinquate undique ad interfectos
quos ego occido vobis occiſione magna ſuper montes Iſrael,et comedetis carnem
& bibetis ſanguinem. Carnem fortium comedetis, & ſanguinem principum 18
terræ bibetis, regum, principum, & ducum fortium, opibus divitum
omnium. Et comedetis adipem ad ſatietatem , & bibetis ſanguinem; 19
de carne occiſorum , quos ego occido vobis. Et ſaturabimini ſuper 20
montes *Iſrael equis* , & *quadrigis* , *fortibus* & *omnibus viris bellatoribus*,
ait Dominus Deus. Et dabo gloriam meam in populis, & videbunt 21
omnes populi ultionem meam quam feci, & potentiam meam quam poſui
in eis.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

8 * ܗܐ ܡܛܝ ܥܕܢܐ ܘܗܘܐ ܝܘܡܐ ܕܐܡܪܬ܆ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. * ܘܢܦܩܘܢ ܥܡܘܪܐ ܕܩܘܪܝܐ
9 ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܢܘܩܕܘܢ ܢܘܪܐ ܒܙܝܢܐ ܘܒܣܟܪܐ ܘܒܬܪܣܐ. ܘܒܩܫܬܐ ܘܒܓܐܪܐ. ܘܒܚܘܛܪܐ
10 ܕܐܝܕܝܐ ܘܒܪܘܡܚܐ. ܘܢܘܩܕܘܢ ܒܗܘܢ ܢܘܪܐ ܫܒܥ ܫܢܝܢ. * ܘܠܐ ܣܢܝܩܝܢ
ܠܩܝܣܐ ܕܚܩܠܐ ܘܕܚܘܪܫܐ. ܐܠܐ ܡܢ ܙܝܢܗܘܢ ܢܘܩܕܘܢ ܢܘܪܐ. ܘܢܒܙܘܢ ܠܐܝܠܝܢ ܕܒܙܘ
11 ܐܢܘܢ. ܘܢܚܪܒܘܢ ܠܐܝܠܝܢ ܕܚܪܒܘ ܐܢܘܢ܆ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. * ܒܗܘ ܝܘܡܐ ܗܘ. ܐܬܠ ܠܓܘܓ
ܕܘܟܬܐ ܠܩܒܘܪܐ ܒܐܝܣܪܝܠ. ܢܚܠܐ ܪܒܐ ܕܡܕܢܚܗ ܕܝܡܐ. ܘܢܣܟܪܘܢܗ
ܠܢܚܠܐ. ܟܕ ܢܩܒܪܘܢ ܬܡܢ ܠܓܘܓ ܘܠܟܠܗ ܚܝܠܗ. ܘܢܬܩܪܐ ܢܚܠܐ ܕܡܦܘܠܬܗ
12 13 ܕܓܘܓ. * ܘܫܒܥܐ ܝܪܚܝܢ ܢܩܒܪܘܢ ܐܢܘܢ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܬܬܕܟܐ ܐܪܥܐ. * ܘܢܩܒܪܘܢ
14 ܐܢܘܢ܆ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܐܪܥܐ. ܘܢܗܘܐ ܠܗܘܢ ܫܡܐ ܒܝܘܡܐ ܕܐܫܬܒܚ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܡܢ
ܒܬܪ ܫܒܥܐ ܝܪܚܝܢ܆ ܢܗܘܘܢ ܓܒܪܐ ܡܗܠܟܝܢ ܐܡܝܢܐܝܬ ܒܐܪܥܐ. ܘܩܒܪܝܢ ܠܐܝܠܝܢ
15 ܕܡܫܬܚܪܝܢ ܒܐܪܥܐ ܕܬܬܕܟܐ. * ܘܟܠ ܕܥܒܪ ܒܐܪܥܐ ܘܚܙܐ ܓܪܡܐ ܕܒܪܢܫܐ. ܢܒܢܐ ܠܘܬܗ
16 ܨܝܘܢܐ. ܥܕܡܐ ܕܐܬܝܢ ܫܩܠܝܢ ܠܗ ܗܢܘܢ ܕܩܒܪܝܢ ܒܢܚܠܐ ܕܓܘܓ. * ܘܢܬܩܪܐ
17 ܫܡܗ ܕܡܕܝܢܬܐ ܪܒܬܐ. ܘܢܕܟܘܢܝܗ ܠܐܪܥܐ. * ܐܢܬ ܕܝܢ ܒܪ ܐܢܫܐ܆ ܐܡܪ ܠܟܠܗ
ܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܠܟܠܗ ܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܐܬܟܢܫܘ ܘܬܘ ܡܢ ܟܠ
ܕܘܟ. ܠܕܒܚܬܐ ܪܒܬܐ ܕܕܒܚ ܐܢܐ ܠܟܘܢ ܒܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܬܐܟܠܘܢ ܒܣܪܐ ܘܬܫܬܘܢ
18 ܕܡܐ. * ܒܣܪܐ ܕܓܢܒܪܐ ܬܐܟܠܘܢ. ܘܕܡܐ ܕܪܘܪܒܢܐ ܕܐܪܥܐ ܬܫܬܘܢ. ܕܟܪܐ ܘܕܦܛܝܡܐ
19 ܘܕܒܢܝ ܐܢܫܐ ܘܕܬܘܪܐ ܕܡܬܢ ܟܠܗܘܢ. * ܘܬܐܟܠܘܢ ܒܣܪܐ ܘܬܣܒܥܘܢ. ܘܬܫܬܘܢ ܕܡܐ
20 ܘܬܪܘܘܢ. ܡܢ ܕܒܚܬܐ ܪܒܬܐ ܕܕܒܚ ܐܢܐ ܠܟܘܢ. * ܘܬܣܒܥܘܢ ܡܢ ܦܬܘܪܝ܆
ܒܣܪܐ ܕܪܟܫܐ ܘܕܦܪܫܐ ܕܝܠܗܘܢ. ܘܕܓܢܒܪܐ. ܘܕܟܠܗܘܢ ܓܒܪܐ ܡܩܪܒܢܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ
21 ܡܪܘܬܐ. * ܘܐܬܠ ܫܘܒܚܝ ܒܥܡܡܐ. ܘܢܚܙܘܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܝܢܐ ܕܥܒܕܬ: ܘܐܝܕܝ ܕܣܡܬ ܒܗܘܢ.

Ecce brevi adveniet dies quem prædixi, in- 8
quit Dominus dominorum; Quum exibunt 9
habitatores civitatum Iſraelis, ignémque in-
jicient in arma, clypeos, jacula, arcus, ſagittas,
fuſtes manuarios, & lanceas; & ex iis igne
comburent ſeptem annis, Haud egentes li- 10
gnorum campi aut ſylvæ; ſed ex armis eorum
igne comburent: et prædabuntur eos qui præ-
dati fuerant ipſos, & ſpoliabunt eos qui ſpo-
liaverant ipſos, ait Dominus dominorum.
Eodem illo die dabo ibi Gogo locum ſepul- 11
chri in Iſraele, vallem magnã quæ eſt ad Ori-
entalem *plagam* maris: & obturabunt eam
vallem, cùm ibi ſepelierint Gogum totúmque
exercitum ejus; & vocabitur, Vallis excidii
Gogi. Septem menſium *ſpatio* ſepelient eos 12
Iſraelitæ, & purgabitur terra: Sepelient 13
inquam, eos totus terræ popul⁹, fiétque ipſis
nomen quâ die glorificabor, ait Dominus. Et 14
poſt ſeptẽ menſes erunt homines jugiter am-
bulantes per terram illam, & ſepelientes eos
qui reſidui fuerint ſuper terram, ut purgetur.
Et quicunque per terram tranſiens viderit os 15
humanum, titulum componet juxta illud, do-
nec veniant ad aſportandum illud hi qui ſe-
pelient in valle Gogi. Vocabitur autem no- 16
men urbis illius, Maxima: ſic terrã purgabunt.
Tu verò fili hominis, dic omnib⁹ volucribus 17
cœli & omnib⁹ beſtiis deſerti; Sic ait Domi-
nus dominorum, Congregamini & venite ex
omni loco ad magnam victimam quam ma-
ctaturus ſum vobis in montibus Iſraelis; ut
comedatis carnẽ, & bibatis ſanguinem; Car- 18
nem gigantum comedatis, & ſanguinem prin-
cipum terræ bibatis, arietum, & ſaginatorũ,
hominum, atque juvencorum Baiſanis omni-
um. Comedetis autem carnem, ſaturabimi- 19
ni; ſanguinem bibetis, & inebriabimini, ex
magna victima quam mactaturus ſum vobis:
Saturabimini inquam, de menſa mea carne 20
equorum & equitum eorum, gigantum, & o-
mnium virorum bellatorum, ait Dominus do-
minorum. Et comparabo mihi gloriam a- 21
pud gentes, quum viderint gentes judicium
quod fecero, & manum meam quam ipſis im-
poſuero.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

8 9 * ها أني * وتعلم انه يكون * يقول الرب الرب الاله * هذا هو اليوم الذي فيه تكلمت * ويخرج
سكان مدن اسرائيل * ويوقدون بالاسلحة * والمزاريق * والاترسة * والقسي * والنشاب * وعصي
10 الايدي * والحراب * ويوقدون بهم النار سبعة سنين * ولا ياخذون حطبا من الصحراء * ولا
يقطعون من الغياض شيا * لكن يحرقون الاسلحة بالنار * وينهبون الذين نهبوهم * ويغنمون
11 الذين غنموهم يقول الرب * ويكون في ذلك اليوم اعطي لجوج موضعا مسمي * ذكرا في اسرائيل *
وادي الذين ياتون الي البحر * ويبنون سد الوادي * ويدفنون هناك جوج وكل جمعه * ويدعي
12 13 وادي جوج * ويدفنونهم بيت اسرائيل * كي تطهر الارض * في سبعة اشهر * ويدفنهم كل شعب
14 الارض * ويكون لهم للتسمية اليوم الذي فيه تمجدت يقول الرب * ويامرون كل حين الرجال
السايرين على كل الارض * ان يدفنوا المتبقيين على وجه الارض ليطهروها * بعد سبعة اشهر *
15 ويطلبون باستقصاء * ويكون كل ساير على كل الارض ينظر عظم انسان * يبني عليها ذكرا *
16 17 الي ان يدفنوها الدافنون في وادي جوج * ولان اسم المدينة الوادي * وتطهر الارض * وانت
يا ابن الانسان قل * هكذا يقول الرب * قل لكل طير طاير * ولجميع وحوش الحقل * اجتمعوا
وايتوا * اجتمعوا من جميع المحيطين * على ذبيحتي التي ذبحتها لكم * ذبيحة عظيمة * على جبال
18 اسرائيل * وتاكلون لحما * وتشربون دما * تاكلون لحم الجبابرة * وتشربون دم روساء الارض *
19 كباشا وعجولا وتيوسا * وتصيرون عجولا قوية باجمعكم * وتاكلون شحما للشبع * وتشربون
20 دما للسكر * من ذبيحتي التي ذبحتها لكم * وتمتلون على مايدتي فرسا وراكبا * جبارا وكل
21 رجل محارب * يقول الرب الرب * واعطي مجدي فيكم * ويعاين كل الامم حكمي الذي صنعته *
ويدي التي جلبتها عليهم *

Ecce venit, & ſcies futurum eſſe, dicit 8
Dominus, Dominus Deus: hæc eſt dies de
qua locutus ſum: Et egredientur cives 9
urbium Iſraelis, & comburent arma, ſpi-
cula, clypeos, arcus, ſagittas, baculos
manuarios, & lanceas, iiſque ignem ac-
cendent ſeptem annis. Non accipient li- 10
gna è campo, nec cædent quicquam è ſyl-
vis, ſed arma igne comburent: & diri-
pient eos à quibus diripiebantur, & ſpo-
liabunt eos qui ſpolia ab ipſis capiebant,
dicit Dominus. Et erit eo die ut dem ipſi 11
Gog locum nominatum, memoriam in
Iſraele, vallem venientium ad mare:
ædificabunt enim oſtium vallis, &
ſepelient ibi Gog, totamque turbam ipſius:
& vocabitur, Vallis Gog. Sepelient au- 12
tem eos Iſraelitæ, ut purgetur terra,
ſeptem menſibus. Sepeliet inquam, eos 13
totus terræ populus: eritque eis nomini
dies quâ glorificatus fuero, inquit Domi-
nus. Et inceſſanter præcipient viris to- 14
tam eam terram peragrantibus, ut ſepeli-
ant remanentes in ſuperficie terræ, qua-
tenus emundent eam, poſt ſeptem men-
ſes: & quærent eos diligenter. Et erit 15
ut quicunque terram illam peragrans
viderit os humanum, extruat ſuper illud
monimentum, quoad ſepeliant illud
pollinctores in valle Gog; (Et verò no- 16
men urbis, Vallis) ut emundetur terra.
Tu ergò O fili hominis, dic (ita dicit 17
Dominus) dic omni volucri volanti, &
cunctis beſtiis campeſtribus; Congregami-
ni, & venite; congregamini ex omnibus
locis adjacentibus ad victimam meam
quam vobis mactavi, victimam magnam,
ſuper montes Iſraelis; & comedetis
carnem, bibetiſque ſanguinem. Comede- 18
tis carnem gigantum, & bibetis ſan-
guinem principum terræ, arietes, vitulos,
& hircos; & evadetis omnes, vituli
robuſti. Comedetis autem carnem ad ſa- 19
tietatem, & ſanguinem bibetis ad ebri-
etatem, ex mea victima quam vobis
mactavi: Et implebimini ſuper menſa 20
mea equo & equite, gigante & omni
viro bellicoſo, inquit Dominus Dominus.
Et prodam gloriam meam per vos, & 21
videbunt omnes gentes judicium meum
quod exercuero, & manum meam quam
in eos intulero:

יחזקאל : מ

à ; eorum Deus Dominus *ego* quòd , Iſrael domus ſcient Et
22 וְיָדְעוּ בֵּית יִשְׂרָאֵל כִּי אֲנִי יְהוָה אֱלֹהֵיהֶם מִן־
ſua iniquitate in quòd gentes ſcient Et *ultrà* & , illa die
23 הַיּוֹם הַהוּא וָהָלְאָה׃ וְיָדְעוּ הַגּוֹיִם כִּי בַעֲוֺנָם
,me in ſunt prævaricati quòd propterea , Iſrael domus ſunt ducti captivi
גָּלוּ בֵית־יִשְׂרָאֵל עַל אֲשֶׁר מָעֲלוּ־בִי
,eorum hoſtium manum in eos tradidi & : eis ab *meas facies* abſcondi &
וָאַסְתִּר פָּנַי מֵהֶם וָאֶתְּנֵם בְּיַד צָרֵיהֶם
,eorum immunditiam Secundùm .hi univerſi gladio in ceciderunt &
24 וַיִּפְּלוּ בַחֶרֶב כֻּלָּם׃ כְּטֻמְאָתָם
meas facies abſcondi & : eis cum feci eorum prævaricationes ſcdm̄ &
וּכְפִשְׁעֵיהֶם עָשִׂיתִי אֹתָם וָאַסְתִּר פָּנַי
faciam redire Nunc ,Deus Dominus dixit ſic Propterea .eis ab
25 מֵהֶם׃ לָכֵן כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה עַתָּה אָשִׁיב
zelabo & ; Iſrael domus omnis miſerebor & ,Jahacob captivitatem
אֶת־שְׁבִית יַעֲקֹב וְרִחַמְתִּי כָּל־בֵּית יִשְׂרָאֵל וְקִנֵּאתִי
omnem & ,ſuam ignominiam portabunt Et *meæ ſanctitatis nomini*
26 לְשֵׁם קָדְשִׁי׃ וְנָשׂוּ אֶת־כְּלִמָּתָם וְאֶת־כָּל־
ſuper *eos habitando in* ,me in ſunt prævaricati qua ,ſuam prævaricationem
מַעֲלָם אֲשֶׁר מָעֲלוּ־בִי בְּשִׁבְתָּם עַל־
è eos *me reducendo In* *.exterrens* non & ,*fiducia in* ſuam *humum*
27 אַדְמָתָם לָבֶטַח וְאֵין מַחֲרִיד׃ בְּשׁוֹבְבִי אוֹתָם מִן־
; ſuorum inimicorum terris è eos congregavero & , populis
הָעַמִּים וְקִבַּצְתִּי אֹתָם מֵאַרְצוֹת אֹיְבֵיהֶם
ſcient Et .plurimarum gentium oculis in eis in fuero ſanctificatus &
28 וְנִקְדַּשְׁתִּי בָם לְעֵינֵי הַגּוֹיִם רַבִּים׃ וְיָדְעוּ
,gentes ad eos *me transferendo in* ,eorum Deus Dominus *ego* quòd
כִּי אֲנִי יְהוָה אֱלֹהֵיהֶם בְּהַגְלוֹתִי אֹתָם אֶל־הַגּוֹיִם
.ibi eis ex ultrà relinquam non & :ſuam *humum* *ad* eos congregavero &
וְכִנַּסְתִּים אֶל־אַדְמָתָם וְלֹא־אוֹתִיר עוֹד מֵהֶם שָׁם׃
effudi quia ; eis ab *meas facies* ultrà abſcondam non Et
29 וְלֹא־אַסְתִּיר עוֹד פָּנַי מֵהֶם אֲשֶׁר שָׁפַכְתִּי
.Deus Dominus dixit , Iſrael domum ſuper meum ſpiritum
אֶת־רוּחִי עַל־בֵּית יִשְׂרָאֵל נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה׃

CAP. XL. מ

, anni *capite* in ,noſtræ tranſmigrationis anno quinto & vigeſimo In
1 בְּעֶשְׂרִים וְחָמֵשׁ שָׁנָה לְגָלוּתֵנוּ בְּרֹאשׁ הַשָּׁנָה
eſt percuſſa poſtquam , anno decimoquarto in ,menſis decima *in*
בֶּעָשׂוֹר לַחֹדֶשׁ בְּאַרְבַּע עֶשְׂרֵה שָׁנָה אַחַר אֲשֶׁר הֻכְּתָה
, Domini *manus* me ſuper fuit , *illius diei corpore* in , civitas
הָעִיר בְּעֶצֶם הַיּוֹם הַזֶּה הָיְתָה עָלַי יַד־יְהוָה
in me adduxit Dei viſionibus In .illuc me adduxit &
2 וַיָּבֵא אֹתִי שָׁמָּה׃ בְּמַרְאוֹת אֱלֹהִים הֱבִיאַנִי אֶל־
eum ſuper & ,*valde* excelſum montem *ad* me dimiſit & , Iſrael terram
אֶרֶץ יִשְׂרָאֵל וַיְנִיחֵנִי אֶל־הַר גָּבֹהַּ מְאֹד וְעָלָיו
ecce & : illuc me adduxit Et .Meridie à civitatis ædificium tanquã
3 כְּמִבְנֵה־עִיר מִנֶּגֶב׃ וַיָּבִיא אוֹתִי שָׁמָּה וְהִנֵּה־
,ejus manu in *linorum* filum & , æris aſpectus ſicut *ejus* aſpectus , vir
אִישׁ מַרְאֵהוּ כְּמַרְאֵה נְחֹשֶׁת וּפְתִיל־פִּשְׁתִּים בְּיָדוֹ
me ad eſt locutus Et .porta in *ſtans ipſe* & : menſuræ calamus &
4 וּקְנֵה הַמִּדָּה וְהוּא עֹמֵד בַּשָּׁעַר׃ וַיְדַבֵּר אֵלַי
pone & , audi tuis auribus in & ,tuis oculis in vide ,hominis Fili , vir
הָאִישׁ בֶּן־אָדָם רְאֵה בְעֵינֶיךָ וּבְאָזְנֶיךָ שְּׁמָע וְשִׂים
pro quia , tibi *oſtendens ego* quæ , omnibus tuum cor
לִבְּךָ לְכֹל אֲשֶׁר־אֲנִי מַרְאֶה אוֹתָךְ כִּי לְמַעַן
tu quæ omnia annuntia : huc es adductus tibi *oſtendi*
הַרְאוֹתְכָה הֻבָאתָה הֵנָּה הַגֵּד אֶת־כָּל־אֲשֶׁר־אַתָּה
.Iſrael domui *videns*
רֹאֶה לְבֵית יִשְׂרָאֵל׃

Verſio VULG. LAT.

22 Et ſcient domus Iſrael, quia ego
Dominꝰ Deꝰ eorum, à die illa, &
23 deinceps. Et ſcient Gentes quo-
niam in iniquitate ſua capta ſit
domus Iſrael, eò quòd dereliquerint me, & abſconderim faciem
meam ab eis: & tradiderim eos
in manꝰ hoſtium, & ceciderint
24 in gladio univerſi. Juxta immun-
ditiam eorum & ſcelꝰ feci eis, &
abſcondi faciem meam ab illis.
25 Propterea hæc dicit Dominꝰ Deꝰ;
Nunc reducam captivitatem Ja-
cob, & miſerebor omnis domûs
Iſrael: & aſſumam zelum pro
26 nomine ſancto meo. Et porta-
bunt confuſionem ſuam, & omnẽ
prævaricationem, quâ prævari-
cati ſunt in me, cùm habitave-
rint in terra ſua confidenter ne-
27 minem formidantes: Et redu-
xero eos de populis, & congre-
gavero de terris inimicorum ſuo-
rum, & ſanctificatꝰ fuero in eis,
in oculis gentium plurimarum.
28 Et ſcient quia ego Dominꝰ Deꝰ
eorum; eò quòd tranſtulerim eos
in nationes, & congregaverim
eos ſuper terram ſuam, & non
dereliquerim quemquam ex eis
29 ibi. Et non abſcondam ultrà
faciem meam ab eis, eò quòd ef-
fuderim ſpiritum meum ſuper o-
mnem domum Iſrael, ait Dominꝰ
Deus.

CAP. XL.

1 IN vigeſimo quinto anno tranſ-
migrationis noſtræ, in exordio
anni, decimâ menſis, quartode-
cimo anno poſtquàm percuſſa eſt
civitas: in ipſa hac die facta eſt
ſuper me manꝰ Domini, & ad-
2 duxit me illuc. In viſionibꝰ Dei
adduxit me in terram Iſrael, &
dimiſit me ſuper montem excel-
ſum nimis: ſuper quem erat
quaſi ædificium civitatis vergen-
3 tis ad Auſtrum. Et introduxit
me illuc: & ecce vir, cujꝰ erat
ſpecies quaſi ſpecies æris, & fu-
niculꝰ lineus in manu ejꝰ, & ca-
lamꝰ menſuræ in manu ejꝰ: ſta-
4 bat autem in porta. Et locutꝰ eſt
ad me idem vir; Fili hominis,
vide oculis tuis, & auribꝰ tuis
audi, & pone cor tuum in omnia,
quæ ego oſtendam tibi, quia ut
oſtendantur tibi adductꝰ es huc:
annuntia omnia, quæ tu vides,
domui Iſrael.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

22 Καὶ γνώσονται οἶκος Ἰσραὴλ, ὅτι ἐγώ εἰμι
κύριος ὁ θεὸς αὐτῶν, ἀπὸ τῆς ἡμέρας ταύ-
23 της καὶ ἐπέκεινα. Καὶ γνώσονται πάντα τὰ
ἔθνη, ὅτι διὰ τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν ᾐχμα-
λωτεύθησαν οἶκος Ἰσραὴλ, ἀνθ' ὧν ἠθέ-
τησαν εἰς ἐμὲ, καὶ ἀπέστρεψα τὸ πρόσωπόν
μου ἀπ' αὐτῶν, καὶ παρέδωκα αὐτοὺς εἰς χεῖ-
ρας τῶν ἐχθρῶν αὐτῶν, καὶ (γ) ἔπεσαν πάντες
24 μαχαίρᾳ. Κατὰ τὰς ἀκαθαρσίας αὐτῶν, καὶ
κατὰ τὰ ἀνομήματα αὐτῶν ἐποίησα αὐτοῖς,
καὶ ἀπέστρεψα τὸ πρόσωπόν μου ἀπ' αὐτῶν.
25 Διατοῦτο τάδε λέγει (δ) κύριος κύριος,
Νῦν ἀποστρέψω αἰχμαλωσίαν (ε) ἐν Ἰακὼβ,
καὶ ἐλεήσω τὸν οἶκον Ἰσραὴλ, καὶ ζηλώσω διὰ
26 τὸ ὄνομα τὸ ἅγιόν μου. Καὶ (ζ) λήψον-
ται τὴν ἀτιμίαν αὐτῶν, καὶ τὴν ἀδι-
κίαν ἣν ἠδίκησαν ἐν τῷ κατοικισθῆναι
αὐτοὺς ἐπὶ τὴν γῆν αὐτῶν ἐπ' εἰρήνης·
27 καὶ οὐκ ἔσται ὁ ἐκφοβῶν, Ἐν τῷ ἀποστρέψαι
με αὐτοὺς ἐκ τῶν ἐθνῶν, καὶ συναγαγεῖν με
αὐτοὺς ἐκ τῶν χωρῶν τῶν ἐθνῶν· καὶ ἁγιασθή-
28 σομαι ἐν αὐτοῖς ἐνώπιον (η) τῶν ἐθνῶν. Καὶ
γνώσονται ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος ὁ θεὸς αὐ-
τῶν, ἐν τῷ ἐπιφανῆναί με αὐτοῖς ἐν τοῖς
29 ἔθνεσι. Καὶ οὐκ ἀποστρέψω οὐκέτι τὸ πρόσω-
πόν μου ἀπ' αὐτῶν, ἀνθ' ὧν ἐξέχεα τὸν θυ-
μόν μου ἐπὶ τὸν οἶκον Ἰσραὴλ, λέγει κύριος
κύριος.

Et ſcient domus Iſrael, quia ego 22
ſum Dominus Deus eorum à die
hac, & deinceps. Et ſcient o- 23
mnes gentes, quoniam propter
peccata ſua capti fuerunt domus
Iſrael, eò quòd prævaricati ſint
in me; & averti faciem meam
ab eis, & tradidi eos in manus
inimicorũ eorũ: & ceciderunt
omnes gladio. Juxta immundi- 24
tias eorum, & juxta iniquitates
eorum, feci eis: & averti faci-
em meam ab eis. Propterea 25
hæc dicit Dominus Dominus;
Nunc reducam captivitatem in
(o) Jacob: & miſerebor do-
mui Iſrael: & aſſumam zelum
propter nomen ſanctum meum.
Et portabunt ignominiam ſu- 26
am, & injuſtitiam, quâ injuſtè
egerunt, cùm habitaverint in ter-
ra ſua in pace, & non erit qui
exterreat, Cùm reduxero eos 27
de gentibus, & congregavero
eos de (p) regionibus gentium:
& ſanctificabor in eis coram gen-
tibus. Et ſcient, quia ego ſum 28
Dominus Deus eorum, cùm ap-
paruero eis in (q) gentibus.
Et non avertam ultrà faciem
meam ab eis; eò quòd effude-
rim furorem meum ſuper domum 29
Iſrael, ait Dominus Dominus.

MS. A. (γ) ἔπεσον (δ) κύριος κύριος ὁ θεὸς, Νῦν ἀναστρέψω τὴν (ε) Ἰακὼβ, (ζ) λήμψομαι (η) ἐθνῶν πολλῶν.

ΚΕΦ. μ'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο ἐν τῷ πέμπτῳ καὶ εἰκοστῷ ἔτει
τῆς αἰχμαλωσίας ἡμῶν, ἐν τῷ πρώτῳ μη-
νὶ, δεκάτῃ τοῦ μηνὸς, ἐν τῷ τεσσαρεσκαι-
δεκάτῳ ἔτει μετὰ τὸ (α) ἁλῶναι τὴν πόλιν, ἐν
τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐγένετο (β) ἐπ' ἐμὲ χεὶρ
2 κυρίου, Καὶ ἤγαγέ με ἐν ὁράσει θεοῦ εἰς τὴν
γῆν (γ) Ἰσραὴλ, καὶ ἔθηκέ με ἐπ' (δ) ὄ-
ρος ὑψηλὸν σφόδρα, καὶ ἐπ' αὐτῷ ὡσεὶ οἰ-
3 κοδομὴ πόλεως ἀπέναντι, Καὶ εἰσήγαγέ
με ἐκεῖ· καὶ ἰδοὺ ἀνὴρ, καὶ ἡ ὅρασις αὐτοῦ ἦν
ὡσεὶ ὅρασις χαλκοῦ στίλβοντος, καὶ ἐν τῇ χειρὶ
αὐτοῦ ἦν σπαρτίον οἰκοδόμων, καὶ κάλαμος
(ε) μέτρον, καὶ αὐτὸς εἱστήκει ἐπὶ τῆς πύλης.
4 Καὶ εἶπε πρός με ὁ ἀνὴρ, (ζ) Ὃν ἑώρακας
υἱὲ ἀνθρώπου ἐν τοῖς ὀφθαλμοῖς σου ἴδε, καὶ
ἐν τοῖς ὠσί σου ἄκουε, καὶ τάξον εἰς τὴν
καρδίαν σου πάντα ὅσα ἐγὼ δεικνύω σοι,
διότι ἕνεκα τοῦ δεῖξαί σοι εἰσελήλυθας ὧδε,
καὶ δείξεις πάντα ὅσα σὺ ὁρᾷς τῷ οἴκῳ (η) τοῦ
Ἰσραήλ.

CAP. XL.

ET factum eſt in quinto & 1
vigeſimo anno captivitatis noſtræ,
in primo menſe, decimâ menſis,
in quarto decimo anno, poſtquàm
capta eſt civitas, in die illa fa-
cta eſt ſuper me manus Domini:
Et adduxit me in viſione Dei in 2
terram Iſrael: & poſuit me ſu-
per montem excelſum nimis: &
in eo quaſi ædificium civitatis è
regione. Et introduxit me illuc: 3
& ecce vir; & aſpectus ejus e-
rat, quaſi aſpectus æris ſplenden-
tis: & in manu ejus erat funi-
culus cementariorum, & cala-
lamus menſura: & ipſe ſtabat
in porta. Et dixit ad me vir; 4
(a) Quem vidiſti, fili hominis?
in oculis tuis vide, & in auribus
tuis audi: & pone in cor tuum
omnia, quæ oſtendero tibi: quia, ut
oſtendantur tibi, ingreſſus es huc.
Et monſtrabis omnia quæ tu vi-
des, domui Iſrael.

MS. A. (α) ἁλωθῆναι (β) χεὶρ κυρίου ἐπ' ἐμὲ, (γ) τοῦ Ἰσραὴλ, (δ) ὄρους ὑψηλοῦ σφόδρα, καὶ ἐπ' αὐτοῦ (ε) μέτρον ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, καὶ (ζ) Ἑώρακας σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, ἴδε ἐν τοῖς ὀφθαλμοῖς σου, καὶ (η) Ἰσραήλ.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

22 וִידְעוּן בֵּית יִשְׂרָאֵל אֲרֵי אֲנָא יְיָ אֱלָהָהוֹן מִן יוֹמָא הַהוּא וּלְהָלָא׃ וְיִדְעוּן עַמְמַיָּא אֲרֵי
23 בְּחוֹבֵיהוֹן גְלוֹ בֵית יִשְׂרָאֵל עַל דְשַׁקַּרוּ בְּמֵימְרִי וְסַלֵּיקִית שְׁכִנְתִּי מִנְהוֹן וּמְסַרְתִּנוּן בְּיַד
24 סַנְאֵיהוֹן וְאִתְקְטָלוּ בְחַרְבָּא כּוּלְּהוֹן׃ כְּסוֹאֲבַתְהוֹן וּכְמֵירְדֵיהוֹן אִתְפְּרַעִית מִנְהוֹן
25 וְסַלֵּקִית שְׁכִנְתִּי מִנְהוֹן׃ בְּכֵן כִּדְנָן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים כְּעַן אָתֵיב יַת גָּלוּת יַעֲקֹב וְאֶרְחַם
כָּל בֵּית יִשְׂרָאֵל וְאֶתְפְּרַע פּוּרְעָנוּת גְּבוּרְתִּי מִן עַמְמַיָּא עַל דְּאַחִילוּ יַת שְׁמָא דְקוּדְשִׁי׃
26 וִיקַבְּלוּן יַת אִתְכְּנָעוּתְהוֹן וְיַת כָּל שִׁקְרֵיהוֹן דְּשַׁקַּרוּ בְּמֵימְרִי בְּמֵתַבְהוֹן עַל אַרְעֲהוֹן
27 לְרוּחֲצָן וְלֵית דְּמָנִיד׃ כַּד אֲתִיב יַתְהוֹן מִבֵּינֵי עַמְמַיָּא וְאַכְנֵישׁ יַתְהוֹן מִן מְדִינָתָא בַּעֲלֵי
28 דְבָבֵיהוֹן וְאִתְקַדַּשׁ בְּהוֹן לְעֵינֵי עַמְמִין סַגִּיאִין׃ וְיֵדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ אֱלָהָהוֹן וְעַל דְּחָבוּ
קֳדָמַי אַגְלֵיתִי יַתְהוֹן לְבֵינֵי עַמְמַיָּא וּכְדוּ דְתָבוּ כְּנַשְׁתִּנוּן לְאַרְעֲהוֹן וְלָא אַשְׁאַר עוֹד
29 מִנְהוֹן תַּמָּן׃ וְלָא אֲסַלֵּק עוֹד שְׁכִנְתִּי מִנְּהוֹן דְּשְׁפֵיכִית יַת רוּחַ קֻדְשִׁי עַל בֵּית יִשְׂרָאֵל
אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים׃

מ

1 בְּעַשְׂרִין וְחַמֵשׁ שְׁנִין לְגָלוּתָנָא בְּרֵישָׁא דְשַׁתָּא בְּעַשְׂרָא לְיַרְחָא בְּאַרְבַּע עַסְרֵי שְׁנִין בָּתַר
דְּאִתְרַעַת קַרְתָּא בְּכְרַן יוֹמָא הָדֵין שְׁרַת עֲלַי רוּחַ נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ וְאָעֵיל יָתִי לְתַמָּן׃
2 בְּרוּחַ נְבוּאָה דִשְׁרַת עֲלַי מִן קֳדָם יְיָ אָעֲלַנִי לְאַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל וְאַשְׁרִינִי עַל טוּר רָם
3 לַחֲדָא וַעֲלוֹהִי כְּבִנְיַן קַרְתָּא מִדָּרוֹמָא׃ וְאָעֵיל יָתִי לְתַמָּן וְהָא גַבְרָא חֶזְוֵיהּ כְּחֵזוּ נְחָשָׁא
4 וְחוּט דְּכִתָּנָא בִּידֵיהּ וּקְנֵי מְשַׁחְתָּא וְהוּא קָאֵם בְּתַרְעָא׃ וּמַלֵּל עִמִּי גַּבְרָא בַּר אָדָם חֲזֵי
בְעֵינָךְ וּבְאוּדְנָךְ שְׁמַע וְשַׁוֵּי לִבָּךְ לְכֹל דִּי אֲנָא מַחְזֵי יָתָךְ אֲרֵי בְּדִיל לְאַחְזָיוּתָךְ אִתּוֹתַבְתָּ
הִלְכָא חֲזֵי יָת כָּל דְּאַתְּ חָזֵי לְבֵית יִשְׂרָאֵל׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et ſcient domꝰ Iſrael, quia ego Dominꝰ Deus eorum à die illa & deinceps. 22
Et ſcient populi, quia propter peccata ſua migravit domꝰ Iſrael, pro eo quòd 23
prævaricata eſt in verbum meum, & abſtuli majeſtatem meam ab eis; et tradidi
eos in manum inimicorum ſuorum, & interfecti ſunt gladio univerſi. Juxta 24
immunditias ſuas & rebelliones ſuas ultionem ſumpſi ex eis, & abſtuli maje-
ſtatem meam ab eis. Idcircò hæc dicit Dominꝰ Deꝰ, Nunc reducam capti- 25
vitatem Jacob & miſerebor univerſæ domꝰ Iſrael, & ulciſcar ultionem
potentiæ meæ de populis, pro eo quòd violaverunt nomen ſanctum meum.
Et ſuſcipient confuſionem ſuam, & omnes prævaricationes ſuas, quibꝰ præ- 26
varicati ſunt in verbum meum cùm habitarent ſuper terram ſuam confiden-
ter; & non erit qui exterreat eos. Cùm reduxero eos de medio populorum, 27
& congregavero eos de provinciis inimicorum ſuorum; & ſanctificatꝰ fuero
in eis in oculis populorum multorum. Et ſcient, quia ego Dominꝰ Deus eo- 28
rum, &, pro eo quòd peccaverunt coram me, tranſtulerim eos inter popu-
los; & nunc quia converſi ſunt, congregaverim eos ad terram ſuam: nec re-
liquum faciam ultrà quenquam ex eis ibi. Neque auferam amplius majeſta- 29
tem meam ab eis; quia effudi ſpiritum ſanctum meum ſuper domum Iſrael,
ait Dominus Deus.

CAP. XL.

VIceſimoquinto anno tranſmigrationis noſtræ in exordio anni, decima 1
menſis, quartodecimo anno poſtquàm dirupta eſt civitas, in hac eadem die re-
ſedit ſuper me ſpiritus propheticus à facie Dñi; & adduxit me illuc. In ſpiritu 2
prophetico qui reſedit ſuper me à facie Domini, induxit me in terram Iſrael,
& poſuit me ſuper montem excelſum valdè; & ſuper eum erat quaſi ædifici-
um civitatis ab Auſtro. Et introduxit me illuc. Et ecce vir cujus aſpectus 3
erat quaſi aſpectus æris, & funiculus lineus in manu ejus, & calamus menſu-
ræ: & *ecce* ſtabat in porta. Et locutus eſt ad me vir, [*dicens*:] Fili hominis 4
vide oculis tuis, & auribus tuis audi, & pone cor tuum ad omnia quæ ego
oſtendam tibi: quia ut oſtendantur tibi, adductus es huc. Annuntia omnia
quæ tu vides, domui Iſrael.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

22 * ܘܢܕܥܘܢ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ. ܡܢ ܝܘܡܐ ܗܘ ܘܠܗܠ. * ܘܢܕܥܘܢ
23 ܥܡܡܐ. ܕܡܛܠ ܚܘܒܝܗܘܢ ܐܫܬܒܝܘ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܕܐܥܠܘ ܒܝ. ܘܐܗܦܟܬ ܐܦܝ
ܡܢܗܘܢ. ܘܐܫܠܡܬ ܐܢܘܢ ܒܐܝܕܐ ܕܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ. ܘܢܦܠܘ ܟܠܗܘܢ ܒܚܪܒܐ. * ܘܐܝܟ 24
ܛܢܦܘܬܗܘܢ ܘܐܝܟ ܥܘܠܗܘܢ. ܦܪܥܬ ܐܢܘܢ. ܘܐܗܦܟܬ ܐܦܝ ܡܢܗܘܢ. * ܡܛܠܗܢܐ 25
ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܫܐ ܡܗܦܟ ܐܢܐ ܫܒܝܬܗ ܕܝܥܩܘܒ. ܘܡܪܚܡ ܐܢܐ ܥܠ ܟܠܗ
ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܛܐܢ ܐܢܐ ܥܠ ܫܡܐ ܕܩܘܕܫܝ. * ܘܢܣܒܠܘܢ ܟܠܗ ܒܗܬܬܗܘܢ 26
ܘܥܘܠܗܘܢ ܕܐܥܠܘ ܒܝ. ܟܕ ܝܬܒܝܢ ܒܐܪܥܗܘܢ ܠܫܠܝܐ ܘܠܝܬ ܠܗܘܢ ܡܙܝܥܢܐ. * ܟܕ 27
ܕܟܢܫܬ ܐܢܘܢ ܡܢ ܥܡܡܐ. ܘܩܪܒܬ ܐܢܘܢ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ ܕܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ. ܘܐܬܩܕܫܬ
ܒܗܘܢ ܩܕܡ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ. * ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ. ܕܐܫܒܝܬ ܐܢܘܢ ܒܝܬ 28
ܥܡܡܐ. ܘܐܢܐ ܟܢܫ ܐܢܐ ܐܢܘܢ ܠܐܪܥܗܘܢ. ܘܠܐ ܐܫܒܘܩ ܡܢܗܘܢ ܬܡܢ. * ܘܠܐ ܐܗܦܘܟ ܐܦܝ ܡܢܗܘܢ. 29
ܐܠܐ ܐܫܘܕ ܪܘܚܝ ܥܠ ܟܠܗ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡ * ܒܢܝܢܐ ܕܗܝܟܠܐ *

1 * ܒܫܢܬ ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫ ܕܫܒܝܬܢ. ܒܪܝܫ ܫܢܬܐ ܒܥܣܪܐ ܒܝܪܚܐ. ܒܫܢܬ
ܐܪܒܥܣܪܐ. ܒܬܪ ܕܐܬܚܪܒܬ ܡܕܝܢܬܐ. ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܗܘܬ ܥܠܝ ܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ.
2 * ܘܐܝܬܝܢܝ ܠܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܒܚܙܘܐ ܕܐܠܗܐ. ܘܐܩܝܡܢܝ ܥܠ ܛܘܪܐ ܪܡܐ ܛܒ. ܘܥܠܘܗܝ ܗܘܐ
3 ܠܬܝܡܢܗ ܐܝܟ ܒܢܝܢܐ ܕܡܕܝܢܬܐ. * ܘܐܝܬܝܢܝ ܠܬܡܢ. ܘܚܙܝܬ ܓܒܪܐ.
ܘܚܙܘܗ. ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܢܚܫܐ. ܘܚܒܠܐ ܕܟܬܢܐ ܒܐܝܕܗ. ܘܩܢܝܐ ܕܡܫܘܚܬܐ. ܘܩܐܡ ܗܘܐ
4 ܒܬܪܥܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܓܒܪܐ ܗܘ. ܒܪ ܐܢܫܐ. ܚܙܝ ܒܥܝܢܝܟ. ܘܫܡܥ ܒܐܕܢܝܟ. ܘܣܝܡ
ܒܠܒܟ ܟܠܡܕܡ ܕܡܚܘܐ ܐܢܐ ܠܟ. ܡܛܠ ܕܠܡܚܘܝܘܬܟ ܐܬܝܬ ܠܟܐ. ܘܟܠܡܕܡ
ܕܚܙܐ ܐܢܬ ܚܘܝ ܠܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ.

22 Cognoſcent etiam Iſraelitæ me eſſe Dominum Deum ipſorum, ab illa die & deinceps: 23 Et cognoſcent gentes quòd propter iniquitatem ſuam captivi ducti ſint Iſraelitæ: quia prævaricati ſunt contra me, ideò averterim faciem meam ab eis, tradiderim eos in manû inimicorum eorum, & gladio ceciderint omnes: 24 Denique ſecundùm impuritatem eorum, & juxta iniquitatem ipſorum rependerim eis, & averterim faciem meam ab eis. 25 Iccircò ſic ait Dominus dominorum; Jam reſtituam captivos Jacobi, & miſerebor totius domûs Iſraelis, & zelo commovebor propter nomen ſanctitatis meæ: 26 (Quandoquidem tulerint omnem ignominiam & iniquitatem ſuam quâ prævaricati ſunt contra me, quando ſedebant in terra ſua ſecurè, nemine moleſtiam illis inferente.) 27 Colligendo eos ex gentibus, & admovendo eos ex urbibus inimicorum ſuorum, & ſanctificando me per eos coram gentibus multis. 28 Et agnoſcent quòd ego Dominus Deus eorum effeci ut captivi ducerentur inter gentes, ego colligam eos ad terram eorum, & neminem ex eis ibi relinquam, 29 Neque avertam faciem meam ab eis; ſed effundam ſpiritum meum ſuper totam domum Iſraelis, dicit Dominus dominorum.

CAP. XL.

Reædificatio templi.

1 ANno vigeſimo quinto captivitatis noſtræ, initio anni, decimâ menſis, anno decimo quarto poſtquam vaſtata fuerat urbs; eodem ipſo die fuit ſuper me manus Domini: 2 Perduxítque me in terram Iſraelis in viſione Dei, & collocavit me ſuper montem valdè excelſum, ſuper quem in plaga ipſius Meridionali extabat velut ædificium urbis. 3 Cúmque me perduxiſſet illuc, vidi virum cujus aſpectus ſimilis erat aſpectui æris: funiculum lineum & arundinem menſoriam *is* manu ſuâ *tenebat*, ſtabátque in porta. 4 Vir iſte mihi dixit; Fili hominis, perſpice oculis tuis, auribus tuis audi, & repone in animo tuo quicquid oſtenſurus ſum tibi (nam ad oſtendendum tibi huc veni) & quicquid videris, indica filiis Iſraelis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

22 * ويعلم بيت اسرايل اني انا الرب الاههم انا * منذ هذا اليوم وبعد * ويعلم جميع الامم ان 23
لاجل خطاياهم سبي بيت اسرايل * من اجل انهم عصوني * فصرفت وجهي عنهم * واسلمتهم الي
ايدي الاعداء * وسقطوا جميعهم بالسيف * كنجاساتهم وكاثامهم صنعت بهم * وصرفت وجهي 24
عنهم * لاجل هذا هكذا يقول الرب الرب الاله * الان ارد سبي يعقوب * وارحم بيت اسرايل * واغار 25
لاجل اسمي القدوس * واخذ اهاناتهم والظلم الذي ظلموه * عند ما يسكنوا في ارضهم 26
بالسلامة ولا يكون من يخوفهم * عند ما اردهم من الامم * واجمعهم من بلدان الامم * واتقدس 27
فيهم امام الامم الكثيرين * ويعلمون اني انا الرب الاههم انا * عند ما اتظاهر لهم في الامم * ولا 28 29
اصرف وجهي عنهم بعد * من اجل اني افضت غضبي على بيت اسرايل * يقول الرب الرب *

* الفصل الاربعون *

* النبوة التي راها حزقيال النبي في بني الهيكل * من بعد رد سبي
اسرايل ورجوعهم من ارض بابل *

1 * وكان في سنة خمس وعشرين لسبينا * في الشهر الاول * في عشر من الشهر * في السنة الرابعة
2 عشر من بعد ان خربت المدينة * في ذلك اليوم كانت يد الرب علي * وجاء بي بوحي الله الي
3 ارض اسرايل * ووضعني على جبل عال جدا * وعليه مثل بناء مدينة مقابلي * وادخلني هناك *
واذا رجل ومنظره كان مثل منظر نحاس يلصف * وكان في يده خيط البنائين * وقصبة قياس في
4 يده * وهو واقف على الباب * وقال لي الرجل * ارايت انت يا ابن الانسان * انظر بعينيك * واسمع
باذنيك * ورتب في قلبك كما انا اظهر لك * من اجل انك دخلت الي ههنا من اجل ان اظهر
لك * وتظهر انت جميع ما تراه لبيت اسرايل *

22 Et cognoſcet domus Iſraelis me Dominum Deum ſuum eſſe, ab hoc die & inpoſterùm: 23 Cognoſcent etiam gentes univerſæ quod propter peccata ſua captivi ſint abducti Iſraelitæ: eò quòd in me rebellâvint, averterim faciem meam ab eis, tradiderim eos in manus inimicorum, & occubuerint omnes gladio. 24 Juxta immunditias & iniquitates eorum egerim cum eis, & faciem meam ab eis averterim. 25 Propterea ſic ait Dominus, Dominus Deus; Jam reducam captivitatem Jacobi, & miſerebor domûs Iſraelis, zeloque movebor pro ſacroſancto nomine meo: 26 Et auferam contemptum & tyrannidem quâ oppreſſi ſunt: quum habitaverint in terra ſua pacificè, nec fuerit qui terreat eos: 27 Quum reduxero eos è gentibus, collegero eos è regionibus gentium, & ſanctificatus fuero in eis coram gentibus multis. 28 Scientque me Dominum Deum ſuum eſſe, cùm ipſis apparuero inter gentes, 29 Et ampliùs non avertero faciem meam ab eis: eò quòd effuderim furorem meum ſuper domum Iſraelis, ait Dominus Dominus.

CAP. XL.

Prophetia quam vidit Hezechiel propheta, de reædificatione templi poſt reductam Iſraelis captivitatem, & reditum eorum de terra Babelis.

1 ET factum eſt anno captivitatis noſtræ vigeſimo quinto, menſe primo, decimâ menſis, anno quartodecimo ab urbe destructa; ut eodem die eſſet manus Domini ſuper me, 2 Duceretque me revelatione divinâ in terram Iſraelis, poneretque ſuper montem valde ſublimem, ſuper quem erat velut ædificium urbis ex adverſo mibi. 3 Cúmque me illuc introduxiſſet, ecce virum cujus aſpectus erat velut aſpectus æris coruſcantis; cujus in manu erat funiculus cementariorum, calamum menſorium manu ſuâ tenebat, ſtabatque ad portam. 4 Vir iſte mibi dixit; Vidiſtine tu O fili hominis? vide oculis tuis, auribus tuis audi, & diſpone in corde tuo prout ego tibi ſum indicaturus: (huc enim ideò ingreſſus es, ut indicarem tibi) tum tu indicabis omnia quæ videris, domui Iſraelis.

יחזקאל : מ

viri manu in & ; *undique undique* domum extra *ab* murus ecce Et
5 וְהִנֵּה חוֹמָה מִחוּץ לַבַּיִת סָבִיב ׀ סָבִיב וּבְיַד הָאִישׁ
est mensus & : *palmi & , cubito in* cubitorum sex mensuræ calamus
קְנֵה הַמִּדָּה שֵׁשׁ־אַמּוֹת בָּאַמָּה וָטֹפַח וַיָּמָד אֶת־
venit Et . uno calamo *proceritatem* & , uno calamo ædificii latitudinẽ
6 רֹחַב הַבִּנְיָן קָנֶה אֶחָד וְקוֹמָה קָנֶה אֶחָד׃ וַיָּבוֹא
: ejus gradus *in* ascendit & , *Orientem ad via ejus* facies cujus portam ad
אֶל־שַׁעַר אֲשֶׁר פָּנָיו דֶּרֶךְ הַקָּדִימָה וַיַּעַל בְּמַעֲלָתוֹ
limen & , latitudine uno calamo . portæ limen est mensus &
וַיָּמָד ׀ אֶת־סַף הַשַּׁעַר קָנֶה אֶחָד רֹחַב וְאֵת סַף
, longitudine uno calamo thalamum Et . latitudine uno calamo *unum*
7 אֶחָד קָנֶה אֶחָד רֹחַב׃ וְהַתָּא קָנֶה אֶחָד אֹרֶךְ
limen & : cubitis quinque thalamos inter & , latitudine uno calamo &
וְקָנֶה אֶחָד רֹחַב וּבֵין הַתָּאִים חָמֵשׁ אַמּוֹת וְסַף
. uno calamo *domo à* portæ vestibulum *juxta à* portæ
הַשַּׁעַר מֵאֵצֶל אוּלָם הַשַּׁעַר מֵהַבַּיִת קָנֶה אֶחָד׃
est mensus Et . uno calamo *domo à* portæ vestibulum est mensus Et
8 9 וַיָּמָד אֶת־אֻלָם הַשַּׁעַר מֵהַבַּיִת קָנֶה אֶחָד׃ וַיָּמָד אֶת־
: cubitis duobus ejus postes & , cubitis octo portæ vestibulum
אֻלָם הַשַּׁעַר שְׁמֹנֶה אַמּוֹת וְאֵילָו שְׁתַּיִם אַמּוֹת
Orientis viam portæ thalami Et . *domo à* portæ vestibulum &
10 וְאֻלָם הַשַּׁעַר מֵהַבָּיִת׃ וְתָאֵי הַשַּׁעַר דֶּרֶךְ הַקָּדִים
; ipsorum trium una mensura , inde tres & , hinc tres
שְׁלֹשָׁה מִפֹּה וּשְׁלֹשָׁה מִפֹּה מִדָּה אַחַת לִשְׁלָשְׁתָּם
ostii latitudinem est mensus Et . inde & , hinc postibus una mẽsura &
11 וּמִדָּה אַחַת לָאֵילִם מִפֹּה וּמִפּוֹ׃ וַיָּמָד אֶת־רֹחַב פֶּתַח־
. cubitis tredecim portæ longitudinẽ , cubitis decem portæ
הַשַּׁעַר עֶשֶׂר אַמּוֹת אֹרֶךְ הַשַּׁעַר שְׁלוֹשׁ עֶשְׂרֵה אַמּוֹת׃
terminum uno cubito & , uno cubito *thalamorum facies ad* terminum Et
12 וּגְבוּל לִפְנֵי הַתָּאוֹת אַמָּה אֶחָת וְאַמָּה־אַחַת גְּבוּל
. inde cubitorum sex & , hinc cubitorum sex thalamus & : hinc
מִפֹּה וְהַתָּא שֵׁשׁ־אַמּוֹת מִפֹּה וְשֵׁשׁ אַמּוֹת מִפּוֹ׃
latitudinem ipsius tectum ad thalami tecto à portam est mensus Et
13 וַיָּמָד אֶת־הַשַּׁעַר מִגַּג הַתָּא לְגַגּוֹ רֹחַב
fecit Et . ostium contra ostium ; cubitis quinque & viginti
14 עֶשְׂרִים וְחָמֵשׁ אַמּוֹת פֶּתַח נֶגֶד פָּתַח׃ וַיַּעַשׂ אֶת־
circum portæ atrii *postem ad* & : cubitorum sexaginta postes
אֵילִים שִׁשִּׁים אַמָּה וְאֶל־אֵיל הֶחָצֵר הַשַּׁעַר סָבִיב ׀
portæ vestibuli *facies ad super introitus portæ faciebus super* Et . *circum*
15 סָבִיב׃ וְעַל פְּנֵי הַשַּׁעַר הַיְאתוֹן עַל־לִפְנֵי אֻלָם הַשַּׁעַר
in *clausæ* fenestræ Et . cubiti quinquaginta , interioris
16 הַפְּנִימִי חֲמִשִּׁים אַמָּה׃ וְחַלּוֹנוֹת אֲטֻמוֹת אֶל־
sic & , *circum circum* portam intra eorum postibus in & , thalamis
הַתָּאִים וְאֶל אֵלֵיהֵמָה לִפְנִימָה לַשַּׁעַר סָבִיב ׀ סָבִיב וְכֵן
. palmæ *postem ad* & , intrinsecus *circum circum* fenestræ & : *vestibulis* in
לָאֵלַמּוֹת וְחַלּוֹנוֹת סָבִיב ׀ סָבִיב לִפְנִימָה וְאֶל־אַיִל תִּמֹרִים׃
pavimentũ & , cubicula ecce & , exterius atrium ad me adduxit Et
17 וַיְבִיאֵנִי אֶל־הֶחָצֵר הַחִיצוֹנָה וְהִנֵּה לְשָׁכוֹת וְרִצְפָה
. pavimento in cubicula triginta ; circa circum atrio factum
עָשׂוּי לֶחָצֵר סָבִיב ׀ סָבִיב שְׁלֹשִׁים לְשָׁכוֹת אֶל־הָרִצְפָה׃
longitudinis regione è portarum *humerum ad* pavimentum Et
18 וְהָרִצְפָה אֶל־כֶּתֶף הַשְּׁעָרִים לְעֻמַּת אֹרֶךְ
latitudinem est mensus Et . inferius pavimentum , portarum
19 הַשְּׁעָרִים הָרִצְפָה הַתַּחְתּוֹנָה׃ וַיָּמָד רֹחַב
, extrinsecus interioris atrii *facies ad* inferioris portæ *faciebus à*
מִלִּפְנֵי הַשַּׁעַר הַתַּחְתּוֹנָה לִפְנֵי הֶחָצֵר הַפְּנִימִי מִחוּץ
cujus , portæ Et . Aquilonem & , Orientem ad , cubitos centum
20 מֵאָה אַמָּה הַקָּדִים וְהַצָּפוֹן׃ וְהַשַּׁעַר אֲשֶׁר
ej⁹ longitudinẽ est mensus , exteriori atrio in Aquilonis viam *ejus* facies
פָּנָיו דֶּרֶךְ הַצָּפוֹן לֶחָצֵר הַחִיצוֹנָה מָדַד אָרְכּוֹ
. ejus latitudinem &
וְרָחְבּוֹ׃

Versio VULG. LAT.

5 Et ecce mur⁹ forinsec⁹ in circuitu domûs undique, & in manu viri calam⁹ mensuræ sex cubitorum, & palmo: & mensus est latitudinem ædificii calamo uno, altitudinem quoque calamo uno.
6 Et venit ad portam, quæ respiciebat viam Orientalem, & ascendit per gradus ejus: & mensus est limen portæ calamo uno latitudinem, id est, limen unum calamo
7 uno in latitudine: Et thalamum uno calamo in longum, & uno calamo in latum: & inter tha-
8 lamos, quinque cubitos: Et limen portæ juxta vestibulum por-
9 tæ intrinsecùs, calamo uno. Et mensus est vestibulum portæ octo cubitorum, & frontem ej⁹ duob⁹ cubitis: vestibulum autem portæ
10 erat intrinsecùs. Porrò thalami portæ ad viam Orientalem, tres hinc & tres indé: mensura una trium, & mensura una frontiũ ex
11 utraque parte. Et mensus est latitudinem liminis portæ, decem cubitorum: & longitudinẽ por-
12 tæ, tredecim cubitorum: Et marginem ante thalamos cubiti unius: & cubit⁹ un⁹ finis utrinque: thalami autem, sex cubitorum e-
13 rant hinc & indé. Et mensus est portam à tecto thalami, usque ad tectum ej⁹, latitudinem viginti-quinque cubitorum: ostium con-
14 tra ostium. Et fecit frontes per sexaginta cubitos: & ad frontem atrium portæ undique per circu-
15 itum. Et ante faciem portæ, quæ pertingebat usque ad faciem vestibuli portæ interioris, quinqua-
16 ginta cubitos. Et fenestras obliquas in thalamis, & in frontibus eorum, quæ erant intra portam undique per circuitum: similiter autem erant & in vestibulis fenestræ per gyrum intrinsecùs, & ante frontes pictura palmarum.
17 Et eduxit me ad atrium exteri⁹, & ecce gazophylacia, & pavimentum stratum lapide in atrio per circuitum: triginta gazophy-
18 lacia in circuitu pavimenti. Et pavimentum in fronte portarũ, secundùm longitudinem porta-
19 rum erat inferius. Et mensus est latitudinem à facie portæ inferioris usque ad frontem atrii interioris extrinsecùs, centum cubitos ad Orientem, & ad Aquilo-
20 nem. Portam quoque, quæ respiciebat viam Aquilonis atrii exterioris, mensus est tam in longitudine, quàm in latitudine.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

5 Καὶ ἰδοὺ περίβολος ἔξωθεν τοῦ οἴκου κύ-
κλῳ, καὶ ἐν τῇ χειρὶ τοῦ ἀνδρὸς κάλαμος, τὸ
μέτρον (ϑ) πηχῶν ἓξ ἐν πήχει καὶ παλαιστῆς·
καὶ διεμέτρησε τὸ προτείχισμα, (ι) πλάτος
ἴσον τῷ καλάμῳ, καὶ τὸ ὕψος αὐτοῦ ἴσον τῷ
6 καλάμῳ. Καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὴν πύλην τὴν
βλέπουσαν κατὰ ἀνατολὰς ἐν ἑπτὰ ἀναβαθ-
μοῖς, καὶ διεμέτρησε τὸ (κ) αιλαμ τῆς πύλης
7 ἴσον τῷ καλάμῳ. Καὶ τὸ θεε ἴσον τῷ κα-
λάμῳ τὸ μῆκος, καὶ ἴσον τῷ καλάμῳ τὸ
πλάτος, καὶ τὸ αιλαμ ἀναμέσον τοῦ (λ) θε-
ηλαθ πηχῶν ἕξ· καὶ τὸ θεε τὸ δεύτερον,
ἴσον τῷ καλάμῳ (μ) πλάτος, καὶ ἴσον τῷ κα-
λάμῳ μῆκος, καὶ τὸ αιλαμ πήχεων πέν-
8 τε· Καὶ τὸ θεε τὸ τρίτον, ἴσον τῷ καλάμῳ
(ν) μῆκος, καὶ ἴσον τῷ καλάμῳ (ξ) πλάτος.
9 Καὶ τὸ αιλαμ τοῦ πυλῶνος, πλησίον τοῦ
αιλαμ τῆς πύλης (ο) πηχῶν ὀκτώ, καὶ τὰ
αιλευ πηχῶν (π) δύο· καὶ (ρ) τὰ αιλαμ τῆς πύ-
10 λης ἔσωθεν, Καὶ (σ) τὰ θεε τῆς πύλης τοῦ θεε
κατέναντι, τρεῖς ἔνθεν καὶ τρεῖς ἔνθεν, καὶ μέ-
τρον ἓν τοῖς τρισίν· (τ) μέτρον ἓν τοῖς αι-
11 λαμ ἔνθεν καὶ ἔνθεν. Καὶ διεμέτρησε τὸ
πλάτος τῆς θύρας τοῦ πυλῶνος (υ) πηχῶν
δέκα, καὶ τὸ εὖρος τοῦ πυλῶνος (φ) πηχῶν
12 δεκατριῶν· Καὶ πῆχυς ἐπισυναγόμενος (χ)
ἐπὶ πρόσωπον τῶν θεειμ ἔνθεν καὶ ἔνθεν, καὶ τὸ
θεε (ψ) πηχῶν ἓξ ἔνθεν καὶ πηχῶν ἓξ ἔν-
13 θεν. Καὶ διεμέτρησε τὴν πύλην ἀπὸ τοῦ (ω) τοί-
χου τοῦ θεε ἐπὶ τὸν τοῖχον τοῦ θεε, (α) πλάτος
πήχεις εἴκοσι καὶ πέντε· αὕτη πύλη ἐπὶ πύ-
14 λην. Καὶ τὸ αἴθριον τοῦ αιλαμ τῆς πύλης
ἔξωθεν, πήχεις (β) εἴκοσι θεειμ τῆς πύλης
15 κύκλῳ. Καὶ τὸ αἴθριον τῆς πύλης ἔξωθεν,
εἰς τὸ αἴθριον (γ) αιλαμ τῆς πύλης ἔσωθεν
16 (δ) πηχῶν πεντήκοντα. Καὶ θυρίδες κρυ-
πταὶ ἐπὶ (ε) τὸ θεειμ, καὶ ἐπὶ τὰ αιλαμ ἔ-
σωθεν τῆς πύλης τῆς αὐλῆς κυκλόθεν· καὶ ὡσ-
αύτως τοῖς αιλαμ (ζ) θυρίδες κύκλῳ ἔσω-
θεν, καὶ ἐπὶ τὸ αιλαμ φοίνικες ἔνθεν καὶ ἔν-
17 θεν. Καὶ εἰσήγαγέ με εἰς τὴν αὐλὴν τὴν
ἐσωτέραν, καὶ ἰδοὺ (η) παστοφόρια, καὶ περίστυ-
λα κύκλῳ τῆς αὐλῆς, τριάκοντα παστοφόρια
18 ἐν τοῖς περιστύλοις, Καὶ (ϑ) αἱ στοαὶ κατὰ
νώτου τῶν πυλῶν, κατὰ τὸ μῆκος τῶν πυ-
19 λῶν τὸ περίστυλον (ι) τὸ ὑποκάτω. Καὶ
διεμέτρησε τὸ πλάτος τῆς αὐλῆς, ἀπὸ τοῦ
αἰθρίου τῆς πύλης τῆς ἐξωτέρας ἔσωθεν ἐπὶ
τὸ αἴθριον τῆς πύλης τῆς βλεπούσης ἔξω,
πήχεις ἑκατὸν τῆς βλεπούσης (a) κατὰ ἀνατο-
20 λάς. καὶ (b) ἤγαγέ με ἐπὶ Βορρᾶν, Καὶ ἰδοὺ
πύλη βλέπουσα πρὸς Βορρᾶν τῇ αὐλῇ τῇ
ἐξωτέρᾳ, καὶ διεμέτρησεν αὐτὴν, τό, τε μῆ-
κος αὐτῆς καὶ τὸ πλάτος,

Et ecce murus extra domum per gyrum: & in manu viri calamus, mensura cubitorum sex in cubito, & palæstes. 5 *Et mensus est (b) antemurale, latitudinem æqualem calamo, & (c) altitudinem ejus æqualem calamo.* 6 *Et ingressus est portam, quæ respiciebat Orientem in (d) septem gradibus: & mensus est (e) Ælam portæ æqualem calamo:* 7 *Et Thee æqualem calamo longitudine et æqualem calamo latitudine: (f) & Ælam in (g) medio Theelath cubitorum sex: Et Thee secundum æqualem calamo latitudine, & æqualem calamo longitudine: & Ælam cubitorum quinque:* 8 *Et Thee tertium, æqualem calamo longitudine, & æqualem calamo latitudine:* 9 *Et Ælam portæ, qui juxta Ælam portæ, cubitorum octo: Et (h) Æleu cubitorum duorum: & (i) Ælã portæ intrinsec⁹;* 10 *Et Thee portæ Thee è regione, tres hinc et tres (k) indé: & mensura in trib⁹: mensura una Ælam hinc & indé.* 11 *Et mensus est latitudinem (l) introitûs portæ decem cubitorum: & (m) latitudinẽ portæ cubitorum tredecim:* 12 *Et cubitus redigebatur in (n) conspectu Theim hinc & indé: & (o) Thee cubitorũ sex hinc, & cubitorum sex indé.* 13 *Et mensus est portam à muro Thee ad parietem Thee, latitudinem vigintiquinq; cubitorum: Hæc porta contra portam.* 14 *Et (p) sub divo Ælam portæ extrinsecùs cubiti viginti Theim portæ per circuitum.* 15 *Et sub divo portæ extrinsecùs in sub divo Ælam portæ intrinsecùs quinquaginta cubitorum:* 16 *Et fenestræ (q) absconditæ super Theim, & super Ælam intra portam atrii per circuitum: Et similiter ipsis Ælam fenestras in circuitu intrinsecùs: & super Ælam (r) palmæ hinc et indé.* 17 *Et introduxit me in atriũ interius: & ecce (ſ) pastophoria, &* (t) *intercolumnia* in circuitu *atrii, triginta pastophoria in intercolumniis,* 18 *Et porticus ad dorsum januarum: secundùm longitudinem januarum intercolumnium inferius.* 19 Et mensus est latitudinem aulæ *ab eo loco, qui erat sub divo portæ exterioris ab intùs sub divo portæ respicientis extrà, cubitos centum respicientis ad Orientem. Et adduxit me ad Aquilonem:* 20 *Et ecce porta respiciens ad Aquilonem atrio exteriori: & mensus est eã, longitudinem ej⁹, & latitudinem,*

MS. A. (ϑ) πήχεων (ι) τὸ πλάτος (κ) θεε ἓξ ἔνθεν καὶ ἓξ ἔνθεν, καὶ τὸ αιλαμ (λ) θεε (μ) τὸ πλάτος, καὶ τὸ αιλαμ (ν) τὸ μῆκος, (ξ) τὸ πλάτος. (ο) ἔσωθεν ἴσον τῷ καλάμῳ, καὶ διεμέτρησεν τὸ ελαμ τῆς πύλης πηχῶν ὀκτώ, καὶ τὸ αιλευ (π) δέκα· (ρ) τὸ αιλαμ (σ) τὸ θεε τῆς πύλης θεε (τ) καὶ μέτρον ἓν τῷ ελαμ (υ) πήχεων (φ) πήχεων (χ) κατὰ πρόσωπον τῶν θεε πήχεος ἑνὸς, καὶ πῆχυς ἑνὸς, ὅριον ἔνθεν καὶ ἔνθεν, (ψ) πήχεων ἓξ ἔνθεν καὶ πήχεων (ω) τοίχοις (α) πλάτος εἰκοσιπέντε· αὕτη (β) εἴκοσι πέντε, καὶ τὸ θεεμ (γ) τῆς πύλης τοῦ αιλαμ τῆς πύλης (δ) πήχεων ὀκτώ. Καὶ θυρίδες (ε) τὰ θεε, ἔσωθεν τῆς πύλης (ζ) θυρίδες (η) γαζοφυλάκια, καὶ (ϑ) στοαὶ (ι) τῷ (a) καὶ (b) εἰσήγαγεν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 והא שורא מברא לביתא סחור סחור ובידגברא קני משחתא דחד מנהון שית
אמין באמתא דהיא אמא ופשך ומשח ית פותיא דבנינא קניא חד ורומא קניא חד׃
6 ועל לתרעא דפתיח לאורח מדנחא וסליק בדרגוהי ומשח ית ספא דתרעא קניא
7 חד פותיא וית ספא חד קניא חד פותיא׃ ותוא קניא חד אורכא וקניא חד פותיא
ובין תויא כתלא חמש אמין וספא דתרעא מקביל אולמא דתרעא מלגיו קניא חד׃
8 9 ומשח ית אולמא דתרעא מלגיו קניא חד׃ ומשח ית אולמא דתרעא תמני אמין
10 ואלוהי תרתין אמין ואולמא דתרעא מלגיו׃ ותוי תרעא באורח מדנחא תלתא מכא
11 ותלתא מכא משחתא חדא לתלתיהון ומשחתא חדא לאיליא מכא ומכא׃ ומשח
12 ית פותיא דמעלנא דתרעא עסר אמין אורכא דתרעא תלת עסרי אמין׃ ותחומא די
קדם תויא אמתא חדא ואמתא חדא תחומא מכא ותוא שית אמין מכא ושית אמין
13 מכא׃ ומשח ית תרעא מאגר תוא לאגריה פותיא עסרין וחמש אמין תרע לקביל
14 תרע׃ ועבד ית אליא שתין אמין רומהון ועל אלא דדרתא דתרעא סחור סחור׃
15 16 וקדם תרעא מציעאה די קדם אולמא דתרעא גואה חמשין אמין׃ וכוין סתימן לתויא
ולאליהן מגיו לתרעא סחור סחור וכן לאולמיא וכוין סחור סחור לגיו ועל אלא
17 כותרתא׃ ואעלני לדרתא בריתא והא לשכן ורצפתא עביד לדרתא סחור סחור
18 תלתין לשכן על רצפתא׃ ורצפתא לעברא דתרעיא לקביל אורכא דתרעיא רצפתא
19 ארעיתא׃ ומשח פותיא מן קדם תרעא מציעאה דקדם דרתא גויתא מברא מאה
20 אמין למדנחא ולצפונא׃ ותרעא דפתיח לאורח צפונא לדרתא בריתא משח
אורכיה ופותיה׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et ecce murus extra domum per circuitum, & in manu viri calami mensuræ 5
ex quibus unus erat sex cubitorum in cubito qui est cubitus & palmus : &
mensus est latitudinem ædificii calamo uno, & altitudinem calamo uno. Et 6
ingressus est per portam quæ aperta erat ad viam Orientalem, & ascendit
per gradus ejus; & mensus est limen portæ calamo uno in latitudinem, & li-
men unum calamo uno in latitudinem. Et thalamum calamo uno in longitu- 7
dinem, & calamo uno in latitudinem, & inter thalamos paries quinque cu-
bitorum, & limen portæ juxta vestibulum portæ intrinsecus calamo uno. Et 8
mensus est vestibulum portæ interioris calamo uno. Et mensus est vestibu- 9
lum portæ octo cubitis; & frontes ejus duobus cubitis : vestibulum autem
portæ erat intrinsecus. Et thalami portæ in via Orientali tres hinc & tres in- 10
dè; mensura una erat illorum trium, & mensura una erat frontium hinc &
inde. Et mensus est latitudinem introitus portæ decem cubitis, & longi- 11
tudinem portæ tredecim cubitis. Et marginem quæ erat ante thalamos cubi- 12
to uno, & cubito uno marginem hinc. Thalamus autem erat sex cubitorum
hinc, & sex cubitorum inde. Et mensus est portam à tecto thalami usque ad 13
tectum ejus, latitudinem viginti quinque cubitorum, ostium contra ostium.
Et fecit frontes, sexaginta *cubitorum* altitudo earum erat, & super frontem 14
atrii portæ per circuitum. Et ante portam mediam quæ erat ante vestibulum 15
portæ interioris erant quinquaginta cubiti. Et fenestræ obturatæ erant in 16
thalamis & in frontibus eorum intra portam per circuitum, & similiter in
vestibulis : & fenestræ per circuitum intrinsecus, & super frontes capitella.
Et introduxit me in atrium exterius, & ecce gazophylacia, & pavimentum 17
factum in atrio per circuitum, triginta gazophylacia super pavimentum. Et 18
pavimentum in latere portarum, secundùm longitudinem portarum pavi-
mentum inferius. Et mensus est latitudinem à facie portæ mediæ quæ erat in 19
conspectu atrii interioris extrinsecus, centum cubitis ad Orientem & ad
Aquilonem. Et portam quæ aperta erat ad viam Aquilonis ad atrium exteri- 20
us; mensus est longitudinem ejus & latitudinem.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܚܙܝܬ ܫܘܪܐ ܕܚܕܪ ܠܗ ܠܒܝܬܐ ܗܘ. ܘܩܢܝܐ ܕܡܫܘܚܬܐ ܒܐܝܕܗ ܕܓܒܪܐ ܗܘ. ܩܡܬܗ 5
ܐܡܝܢ ܗܘܬ ܗܘܬ ܘܦܫܟ. ܘܡܫܚ ܦܬܝܗ ܕܒܢܝܢܐ ܩܢܝܐ ܚܕ. ܘܪܘܡܗ ܩܢܝܐ ܚܕ.
* ܘܐܬܐ ܠܬܪܥܐ ܕܚܙܐ ܠܡܕܢܚܐ. ܘܣܠܩ ܒܕܪܓܘܗܝ. ܘܡܫܚ ܣܦܐ ܕܬܪܥܐ ܩܢܝܐ ܚܕ 6
ܠܦܬܝܗ. ܘܣܦܐ ܐܚܪܢܐ ܩܢܝܐ ܚܕ ܠܦܬܝܗ. * ܘܦܪܘܣܬܐ ܩܢܝܐ ܚܕ ܠܐܘܪܟܗ 7
ܘܩܢܝܐ ܚܕ ܠܦܬܝܗ. ܘܒܝܬ ܦܪܘܣܬܐ ܚܡܫ ܐܡܝܢ. ܘܣܦܗ ܕܬܪܥܐ ܡܢ ܠܓܘ
ܡܢ ܦܪܘܣܬܐ ܕܬܪܥܐ ܩܢܝܐ ܚܕ. * ܘܡܫܚ ܠܦܪܘܣܬܐ ܕܬܪܥܐ ܬܡܢܐ ܐܡܝܢ. 9
ܘܐܣܩܘܦܬܗ ܕܬܪܥܐ ܡܢ ܠܓܘ ܬܪܬܝܢ ܐܡܝܢ. * ܘܓܘܗ ܕܬܪܥܐ ܡܕܢܚܝܐ. ܬܠܬܐ 10
ܡܟܐ ܘܬܠܬܐ ܡܟܐ. ܘܡܫܘܚܬܐ ܚܕܐ ܠܬܠܬܝܗܘܢ. ܘܡܫܘܚܬܐ ܚܕܐ ܠܦܪܘܣܬܐ
ܕܡܟܐ ܘܡܟܐ. * ܘܡܫܚ ܦܬܝܗ ܕܡܥܠܢܐ ܕܬܪܥܐ ܥܣܪ ܐܡܝܢ. ܘܐܘܪܟܗ ܕܬܪܥܐ 11
ܬܠܬܥܣܪܐ ܐܡܝܢ. * ܘܬܚܘܡܐ ܕܩܕܡ ܐܣܩܘܦܬܐ. ܐܡܬܐ ܚܕܐ ܡܟܐ ܘܡܟܐ. ܘܓܘܗ 12
ܫܬ ܐܡܝܢ ܡܟܐ ܘܫܬ ܐܡܝܢ ܡܟܐ. * ܘܡܫܚܗ ܠܬܪܥܐ ܡܢ ܐܓܪܗ ܠܐܓܪܗ. ܦܬܝܐ 13
ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫ ܐܡܝܢ. ܘܬܪܥܐ ܠܘܩܒܠ ܬܪܥܐ. * ܘܒܢܝܢ ܦܘܡ ܐܦܝ ܬܪܥܐ ܫܬܝܢ 14
ܐܡܝܢ. ܘܦܘܡ ܐܦܝ ܬܪܥܐ ܐܚܪܢܐ ܒܪܝܐ ܫܬܝܢ ܐܡܝܢ. * ܘܦܘܡ ܬܪܥܐ ܓܘܝܐ ܚܡܫܝܢ 15
ܐܡܝܢ. * ܘܟܘܐ ܕܡܚܪܦܢ ܡܢ ܠܓܘ ܘܡܚܝܢܢ ܠܒܪ. ܥܠ ܣܦܐ ܘܥܠ ܦܪܘܣܬܐ 16
ܕܬܪܥܐ. ܘܟܘܐ ܚܕܪ ܗܘܝ ܠܗܘܢ ܡܢ ܠܓܘ. * ܘܐܥܠܢܝ ܠܕܪܬܐ ܒܪܝܬܐ. ܘܚܙܝܬ ܕܪܓܐ 17
ܚܕܪ ܚܕܪ. ܬܠܬܝܢ ܕܪܓܝܢ ܚܕ ܥܠ ܚܕ. * ܘܕܪܓܐ ܕܥܠ ܓܢܒ ܬܪܥܐ 18
ܕܚܙܝܢ ܐܘܪܟܗܘܢ ܕܕܪܓܐ. * ܘܡܫܚ ܦܬܝܗ ܡܢ ܩܕܡ ܬܪܥܐ ܕܕܪܬܐ. ܡܐܐ ܐܡܝܢ 19
ܠܡܕܢܚܐ ܘܠܓܪܒܝܐ. * ܘܬܪܥܐ ܕܠܘܩܒܠܗ ܡܢ ܓܪܒܝܐ ܕܕܪܬܐ. ܘܡܫܚ ܐܘܪܟܗ 20
ܘܦܬܝܗ.

Itaque vidi murum ambientem domum illam, 5
& in manu viri illius arundinem menſoriam quæ conſtabat ſex ulnis & palmo:
menſúſque eſt latitudinem ædificii arundine
unâ, & altitudinem ejus arundine unâ. Deinde 6
veniens ad portam quæ reſpiciebat Orientem verſùs, aſcendit per gradus ejus, &
menſus eſt veſtibulum portæ arundine unâ in
latitudinem ejus, & veſtibulum alterum arundine unâ in latitudinem ejus: Et paraſtadem 7
arundine unâ in longitudnem ejus, & arundine unâ in latitudinem ejus; inter paraſtades
autem quinque cubitos: veſtibulum verò portæ intra paraſtades portæ arundinem unam.
Et menſus eſt paraſtades portæ octo cubitis, 9
& limen portæ intrinſecùs duobus cubitis.
Intra portam Orientalem tres erant *paraſtades* hinc, & tres inde, eademque menſura 10
ternis illis, & dimenſio eadem paraſtadibus
quæ erant hinc inde. Menſus eſt etiam latitudinem 11
oſtii portæ decem cubitorum, &
longitudinem portæ tredecim cubitorum.
Terminus autem qui erat ante limen, unius 12
cubiti hinc inde; intrinſecùs verò ſex cubitorum hinc, & ſex cubitorum inde. Ita 13
menſus eſt portam ab *uno* ipſius tecto ad *alterum* ipſius tectum, latitudine vigintiquinque
cubitorum: & porta erat è regione portæ. Structura frontis portæ erat ſexaginta 14
cubitorum, & frons alterius portæ exterioris ſexaginta cubitorum; Frons autem portæ 15
interioris quinquaginta cubitorum. Feneſtræ 16
intrinſecùs obliquæ, extrinſecùs arctæ
ſuper epiſtylium & ſuper paraſtades portæ,
& feneſtræ circundabant ea intrinſecùs.
Deinde introduxit me in atrium exterius, ubi 17
vidi gradus circunquaque, triginta gradus,
unum ſuper alterum, Et gradus qui erant 18
ſecus januam quæ reſpiciebat longitudinem
graduum. Menſus etiam eſt latitudinem ejus 19
à fronte januæ atrii centum cubitos, ad
Orientem & Aquilonem. Et januæ huic 20
oppoſitæ ab Aquilonari parte atrii, menſus
eſt longitudinem atque latitudinem:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الاصحاح الثالث والعشرون * واذا سور من خارج البيت محيط به * وبيد الرجل 5
قصبة قياس ستة اذرع بالذراع وشبر * فقاس البناء عرضا مساو للقصبة * وارتفاعه مساو للقصبة *
* ودخل الى الباب الناظر نحو المشرق في سبعة درج * وقاس الثاء * ستة من هاهنا ومن هاهنا * 6
والام الباب مساو للقصبة * والثاء مساو للقصبة طولا * ومساو للقصبة عرضا * والام بين الثاء 7
ستة اذرع * والثاء الثاني مساو للقصبة عرضا * والام خمسة اذرع * والثاء الثالث مساو للقصبة 8
طولا * ومساو للقصبة عرضا * والام الدهليز قريب الام الباب من داخل مساو للقصبة * وقاس 9
الام الباب ثمانية اذرع * والاو عشر اذرع * والام الباب من داخل * وثاء الباب ثاء مقابل * 10
ثلاثة من ههنا وثلاثة من هاهنا * وقياس واحد للثلاثة * وقياس واحد للالام من هاهنا ومن
هاهنا * وقاس عرض باب الدهليز عشر اذرع * وسعة الدهليز ثلاثة عشر ذراعا * وذراع مجموع 11 12
لوجه الثاء * ذراع واحد * وذراع واحد حد من هاهنا ومن هاهنا * والثاء ستة اذرع من هاهنا *
وستة اذرع من هاهنا * وقاس الباب من سور الثاء الى حائط الثاء عرضا * خمسة وعشرين ذراعا * 13
هذا الباب الى الباب * ومعقمة الام الباب من خارج * خمسة وعشرين ذراعا * وثام الباب محيط * 14
* ومعقمة الباب من خارج * الى معقمة باب الام الباب من داخل * ثمانية اذرع * وطاقات خفية 15 16
على الثاء * من داخل باب الدار من حولها * وهكذا للالام كوى محيطة من داخل * وعلى الالام
نخيل من هاهنا ومن ههنا * وادخلني الى الدار الداخلة * واذا خزاين * وبلطون درجة حول 17
الدار * وعماريات في الدرج * واروقة في ظهر الابواب * بطول الابواب * الدرجة للسفل * وقاس 18 19
عرض الدار من معقمة الباب الخارج من داخل * الى معقمة الباب الناظر الى خارج * مائة ذراع *
الناظر نحو المشارق * وادخلني الى الجربياء * واذا باب ناظر نحو الجربياء في الدار الخارجة * 20
وقاسه طولا وعرضا *

Textus vigeſimus tertius.

En igitur murum ab extima domûs parte, 5
ambientem illam; & in manu viri illius calamum, menſuram videlicet *ſex cubitorum in cubito, & ſpi hamæ. Et menſus*
eſt ædificii latitudinem æqualem calamo,
& altitudinem ejus æqualem calamo:
Tum ad portam quæ reſpicit verſùs Orientem, per ſeptem gradus ingreſſus, menſus 6
eſt Thaim (i.thalamos) *ſex hinc*
inde. Ulam (i.veſtibulum) *portæ æquale*
erat calamo; Et Thaa æqualis calamo 7
longitudine, & æqualis calamo latitudine: Ulam autem inter Thaim, ſex cubitorum.
Thaa ſecundus æqualis calamo
altitudine: & Ulam quinque cubitorum.
Thaa verò tertius æqualis erat calamo 8
longitudine, & æqualis calamo latitudine. Ulam autem porticûs vicinæ Ulamo
portæ intrinſecùs æqualis calamo. Menſus 9
eſt etiam Ulam portæ, octo cubitorum:
& Ælau (i.poſtes ejus) *decem cubitorum: & Ulam portæ intrinſecùs. Thaim* 10
portæ, thaim erant ſeſe reſpicientes, tres
hinc, & tres inde; eademque menſura
ternis: eadem quoque menſura Ulam hinc
inde. Deinde menſus eſt latitudinem oſtii 11
porticûs, decem cubitorum; amplitudinem
verò porticûs, tredecim cubitorum: Et 12
cubitus jungebatur è regione Thaim, cubitus videlicet *unus. Cubiti unius erant*
paraſtades ejus hinc inde: Thaim autem
ſex cubitorum hinc, & ſex cubitorum
inde. Et menſus eſt oſtium à muro Thaa 13
unius *uſque ad parietem Thaa* alterius
in latitudinem, vigintiquinque cubitorum.
Hujuſmodi erat menſura *ab oſtio ad oſtium.* 14
Podion Ulam portæ extrinſecùs, vigintiquinque cubitorum: & Thaim portæ
erant in circuitu: Podion verò portæ extrinſecùs 15
uſque ad podion oſtii Ulam portæ
intrinſecùs, octo cubitorum. Feneſtellæ 16
ſecretæ erant ſuper Thaim intra portam
atrii circunquaque: & pari modo Ulam feneſtellas habebat intrinſecùs circunquaque:
& ſuper Ulam, palmæ cernebantur *hinc*
inde. Poſtea introduxit me in atrium interius, 17
& ecce cellas, & triginta gradus
circa atrium, & cancellos in gradibus, Et 18
porticus in tergo portarum: pro longitudine portarum erat gradus quilibet *ad*
imum uſque. Et menſus eſt latitudinem 19
atrii à podio portæ exterioris intrinſecùs,
uſque ad podion portæ reſpicientis extrà,
centum cubitos, reſpicientis verſùs Orientē. Deinde introduxit me in partem *Aquilonarem,* 20
& ecce portam reſpicientem verſùs Aquilonem in atrio exteriori; & menſus eſt eam in longitudine et latitudinem;

יחזקאל : מ

ejus *vestibula* &, ejus postes & , inde tres & , hinc tres ejus thalami Et
21 ותאו שלושה מפו ושלשה מפו ואלו ואלמו
cubitorum quinquaginta : primæ portæ mensuram ſecundùm *fuit*
היה כמדת השער הראשון חמשים אמה
.*cubito in* viginti & quinque latitudo & , ejus longitudo
ארכו ורחב חמש ועשרים באמה :
menſuram ſecundùm ejus palmæ & , ejus *veſtibula* & , ejus feneſtræ Et
22 וחלונו ואילמו ותמרו כמדת
aſcendent ſeptem *gradibus in* & : Orientis viam *ej9* facies cujus , portæ
השער אשר פניו דרך הקדים ובמעלות שבע יעלו־
interioris atrii porta Et .*eorum facies ad* ejus *veſtibula* & , *ea in*
23 בו ואילמו לפניהם : ושער לחצר הפנימי
porta à eſt menſus & : *Orientem &* , *Aquilonem ad* portam contra
נגד השער לצפון ולקדים וימד משער
, *Auſtri* viam fecit pergere me Et .cubitos centum portam ad
24 אל־שער מאה אמה : ויולכני דרך הדרום
ejus *veſtibula* & , ejus poſtes eſt menſus & : *Auſtri* viam porta ecce &
והנה־שער דרך הדרום ומדד אילו ואילמו
circum ejus *veſtibula* & , *ei* feneſtræ Et .has menſuras juxta
25 כמדות האלה : וחלונים לו ולאילמו סביב ׀
, longitudo cubitorum quinquaginta : iſtæ feneſtræ ſicut , circa
סביב כהחלנות האלה חמשים אמה ארך
, ej9 gradus ſeptem gradus Et .cubitorum viginti & quinque latitudo &
26 ורחב חמש ועשרים אמה : ומעלות שבעה עלותו
inde *una* & , hinc una , ei palmæ & : *eorū facies ad* ejus *veſtibula* &
ואילמו לפניהם ותמרים לו אחד מפו ואחד מפו
eſt menſus & ; *Auſtri* viam interioris atrii portam Et .ej9 poſte in
27 אל־אילו : ושער לחצר הפנימי דרך הדרום וימד
me introduxit Et .cubitos centum , *Auſtri* viam portam ad porta à
28 משער אל־השער דרך הדרום מאה אמות : ויביאני
Auſtri portam eſt menſus & : *Auſtri porta in* interius atrium in
אל־חצר הפנימי בשער הדרום וימד את־השער הדרום
ej9 *veſtibula* & , ej9 poſtes & , ej9 thalami Et .has menſuras ſecundùm
29 כמדות האלה : ותאו ואלו ואלמו
, circa circum ej9 *veſtibula* & , *ei* feneſtræ & : iſtas menſuras ſecdm
כמדות האלה וחלונות לו ולאלמו סביב ׀ סביב
quinque & viginti latitudinis & , longitudinis cubitorum quinquaginta
חמשים אמה ארך ורחב עשרים וחמש
viginti & quinque longitudinis , circa circum *veſtibula* Et .cubitorum
30 אמות : ואלמות סביב ׀ סביב ארך חמש ועשרים
atrium ad ejus *veſtibula* Et .cubitorū quinque latitudinis & , cubitorū
31 אמה ורחב חמש אמות : ואילמו אל־חצר
.ejus gradus octo gradus & ; ejus *poſtes ad* palmæ & , *exterius*
החיצונה ותמרים אל־אילו ומעלות שמונה מעלו :
eſt menſus & : *Orientis via* interius atrium in me introduxit Et
32 ויביאני אל־החצר הפנימי דרך הקדים וימד
, ejus thalamos Et .has menſuras ſecundùm portam
33 את־השער כמדות האלה : ותאו
feneſtræ & , iſtas menſuras ſecundùm ejus *veſtibula* & , ejus poſtes &
ואלו ואלמו כמדות האלה וחלונות
, cubitorum quinquaginta longitudinis ; circa circum ejus *veſtibulis* & , *ei*
לו ולאלמו סביב ׀ סביב ארך חמשים אמה
ejus *veſtibula* Et .cubitorum viginti & quinque latitudinis &
34 ורחב חמש ועשרים אמה : ואלמו
octo & : inde & hinc ejus poſte in palmæ & , exteriori atrio
לחצר החיצונה ותמרים אל־אילו מפו ומפו ושמנה
: *Aquilonis* portam in me introduxit Et .ejus gradus , gradus
35 מעלות מעלו : ויביאני אל־שער הצפון
.iſtas menſuras ſecundùm eſt menſus &
ומדד כמדות האלה :

Verſio VULG. LAT.

21 Et thalamos ejus tres hinc, & tres indé : & frontem ejus, & veſtibulum ej9 ſecundùm menſuram portæ prioris, quinquaginta cubitorum longitudinem ej9, & latitudinem viginti quin- 22 que cubitorum. Feneſtræ autem ej9, & veſtibulum, & ſculpturæ ſecundùm menſuram portæ, quæ reſpiciebat ad Orientem : & ſeptem graduum erat aſcenſus ej9, & veſtibulum an- 23 te eam. Et porta atrii interioris contra portam Aquilonis, & Orientalem : & menſus eſt à porta uſque ad portam centum 24 cubitos. Et eduxit me ad viam Auſtralem : & ecce porta quæ reſpiciebat ad Auſtrum: & menſus eſt frontem ej9, & veſtibulum ejus, juxta menſuras ſupe- 25 riores. Et feneſtras ej9, & veſtibula in circuitu, ſicut feneſtras cæteras : quinquaginta cubitorum longitudine, & latitudine viginti quinque cubitorum. 26 Et in gradib9 ſeptem aſcendebatur ad eam : & veſtibulum ante fores ej9: & cælatæ palmæ erant, una hinc, & altera indè in 27 fronte ej9. Et porta atrii interioris in via Auſtrali: & menſus eſt à porta uſque ad portam in 28 via Auſtrali, centum cubitos. Et introduxit me in atrium interius ad portam Auſtralem : & menſus eſt portam juxta menſu- 29 ras ſuperiores. Thalamum ej9, & frontem ej9, & veſtibulum ej9 eiſdem menſuris : & feneſtras ejus, & veſtibulum ejus in circuitu, quinquaginta cubitos longitudinis, & latitudinis vi- 30 gintiquinque cubitos. Et veſtibulum per gyrum longitudine vigintiquinque cubitorum, & la- 31 titudine quinque cubitorum. Et veſtibulum ejus ad atrium exterius, & palmas ejus in fronte : & octo gradus erant, quibus aſcen- 32 debatur per eam. Et introduxit me in atrium interius per viam Orientalem : & menſus eſt portam ſecundùm menſuras ſu- 33 periores. Thalamum ejus, & frontem ejus, & veſtibulum ej9, ſicut ſuprá : & feneſtras ej9, & veſtibula ej9 in circuitu, longitudine quinquaginta cubitorum, et latitudine vigintiquinq; cubi- 34 torum. Et veſtibulum ejus, id eſt, atrii exterioris : et palmæ cælatæ in fronte ej9 hinc et indé : et in octo gradibus aſcenſus ej9. 35 Et introduxit me ad portam, quæ reſpiciebat ad Aquilonem : et menſus eſt ſecundùm menſuras ſuperiores.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

21 Καὶ τὸ θεὲ τρεῖς ἔνθεν ϗ τρεῖς ἔνθεν, καὶ (κ) τὸ αἰλεὺ, ϗ τὰ αἰλαμμὼν, ϗ τοὺς φοίνικας αὐτῆς. ϗ ἐγένετο κατὰ τὰ μέτρα τῆς πύλης τῆς βλεπούσης κατὰ ἀνατολὰς, (λ) πηχῶν πεντήκοντα τὸ μῆκος αὐτῆς, ϗ (μ) πηχῶν εἰκοσιπέντε τὸ εὖρος αὐτῆς· 22 Καὶ αἱ θυρίδες αὐτῆς, ϗ τὰ αἰλαμμὼν, ϗ οἱ φοίνικες αὐτῆς καθὼς ἡ πύλη ἡ βλέπουσα (˝) κατὰ ἀνατολάς· ϗ ἐν ἑπτὰ (ν) κλιμακτῆρσιν ἀνέβαινον ἐπ' αὐτὴν, ϗ τὰ αἰλαμμὼν ἔσωθεν· 23 Καὶ (ξ) πύλη τῇ αὐλῇ τῇ ἐσωτέρᾳ βλέπουσα ἐπὶ πύλην τοῦ Βορρᾶ, ὃν τρόπον τῆς πύλης τῆς βλεπούσης (˝) κατὰ ἀνατολάς. ϗ διεμέτρησε τὴν αὐλὴν ἀπὸ πύλης ἐπὶ πύ- 24 λην, πήχεις ἑκατόν. Καὶ (ο) ἤγαγέ με κατὰ Νότον, ϗ ἰδοὺ πύλη βλέπουσα πρὸς Νότον, ϗ διεμέτρησεν αὐτὴν, ϗ τὰ θεὲ, ϗ τὰ αἰλεὺ, ϗ τὰ (π) αἰλαμμὼν, κατὰ τὰ μέτρα 25 (ρ) ταῦτα. Καὶ αἱ θυρίδες αὐτῆς, ϗ τὰ (σ) αἰλαμμὼν κυκλόθεν, καθὼς αἱ θυρίδες τοῦ αἰλάμ, (·) πηχῶν πεντήκοντα τὸ μῆκος αὐτῆς, ϗ (τ) πηχῶν εἰκοσιπέντε τὸ εὖρος 26 αὐτῆς, Καὶ ἑπτὰ (υ) κλιμακτῆρες αὐτῇ, ϗ αἰλαμμὼν ἔσωθεν, ϗ φοίνικες (φ) αὐτῇ, 27 εἷς ἔνθεν ϗ εἷς ἔνθεν ἐπὶ τὰ αἰλεῦ. Καὶ πύλη κατέναντι τῆς πύλης τῆς αὐλῆς τῆς ἐσωτέρας πρὸς Νότον. ϗ διεμέτρησε τὴν αὐλὴν ἀπὸ πύλης ἐπὶ πύλην, πήχεις ἑκα- 28 τὸν (χ) τὸ εὖρος πρὸς (ψ) Νότον. Καὶ εἰσήγαγέ με εἰς τὴν αὐλὴν τὴν ἐσωτέραν τῆς πύλης τῆς πρὸς Νότον, ϗ διεμέτρησε τὴν 29 πύλην κατὰ τὰ μέτρα (ω) ταῦτα, Καὶ τὰ 30 θεὲ, ϗ τὰ αἰλεῦ, ϗ τὰ (α) αἰλαμμὼν κατὰ τὰ μέτρα (β) ταῦτα, ϗ θυρίδες αὐτῇ, ϗ (γ) τῷ αἰλαμμὼν κύκλῳ, πήχεις πεντήκοντα τὸ μῆκος αὐτῆς, ϗ τὸ (δ) εὖρος πή- 31 χεις εἰκοσιπέντε (ε) Τοῦ αἰλὰμ εἰς τὴν αὐλὴν τὴν ἐξωτέραν, ϗ φοίνικες τῷ αἰλεῦ, ϗ ὀκτὼ 32 (ζ) κλιμακτῆρες. Καὶ εἰσήγαγέ με εἰς τὴν πύλην τὴν βλέπουσαν (˝) κατὰ ἀνατολὰς, καὶ διεμέτρησεν αὐτὴν κατὰ τὰ μέτρα ταῦτα, 33 Καὶ τὰ θεὲ, ϗ τὰ αἰλεῦ, ϗ τὰ (η) αἰλαμμὼν κατὰ τὰ μέτρα ταῦτα, ϗ θυρίδες αὐτῇ ϗ αἰλαμμὼν κύκλῳ, πήχεις πεντήκοντα μῆκος αὐτῆς, ϗ (˝) εὖρος αὐτῆς πήχεις εἰκοσι- 34 πέντε· Καὶ (θ) αἰλαμμὼν εἰς τὴν αὐλὴν τὴν ἐσωτέραν, ϗ φοίνικες ἐπὶ τοῦ αἰλεῦ ἔνθεν ϗ 35 ἔνθεν, ϗ ὀκτὼ (ι) κλιμακτῆρες αὐτῇ. Καὶ εἰσήγαγέ με εἰς τὴν πύλην τὴν πρὸς Βορρᾶν, ϗ διεμέτρησε κατὰ τὰ μέτρα ταῦτα,

Et (u) Thee tres hinc, & tres indè : & Æleu, & Ælammon, & palmas ejus. Et factum eſt ſecundùm menſuras portæ, quæ reſpicit Orientem, quinquaginta cubitorum longitudo ejus, & latitudo ejus vigintiquinque cubitorum : Et feneſtræ ejus, & 22 *Ælammon, & palmæ ejus, ſicut porta, quæ reſpiciebat Orientem. Et in gradibus ſeptem aſcendebant ad eum: & Ælammon intrinſecùs: Et porta atrii interio-* 23 *ris reſpiciens ad portam Aquilonis, ſicut porta, quæ reſpicit ad Orientem. Et menſus eſt atrium à porta ad portam, cubitos centum. Et duxit me (x) ad Au-* 24 *ſtrum: & ecce porta reſpiciens ad Auſtrum. Et menſus eſt eam, & Thee, & Æleu, & Ælammon, juxta menſuras has. Et feneſtræ ejus, & Ælammon* 25 *in circuitu, ſicut feneſtræ Ælam: cubitorum quinquaginta longitudo ejus, & cubitorum vigintiquinque latitudo ejus : Et ſe-* 26 *ptem gradus ei, & Ælammon intrinſecùs, & palmæ ei, una hinc, & una indè ſuper Æleu. Et porta è (y) regione portæ a-* 27 *trii interioris ad Auſtrum. Et menſus eſt atrium à porta ad portam, cubitos centum latitudine ad Auſtrum. Et introdu-* 28 *xit me in atrium interius portæ, quæ ad Auſtrum : & menſus eſt portam juxta menſuras has, Et Thee, & Æleu, & Ælam-* 29 *mon, juxta menſuras has : &* 30 *feneſtræ ei, & Ælammon in circuitu, cubitorum quinquaginta longitudo ejus, & latitudo cubitorum vigintiquinque Ipſius* 31 *Ælam in atrium exterius, & palmæ Æleu, & octo gradus. Et (z) introduxit me ad portam* 32 *reſpicientem ad Orientem : & menſus eſt eam juxta menſuras has, Et Thee, & Æleu, & Æ-* 33 *lammon, juxta menſuras has: & feneſtræ ei, & Ælammon in circuitu, cubitorum quinquaginta longitudo ejus; & latitudo ejus cubitorum vigintiquinque : Et Ælammon in atrium interius,* 34 *& palmæ ſuper Æleu hinc, & indè : & octo gradus ei. Et* 35 *introduxit me ad portam, quæ ad Aquilonem : & menſus eſt juxta menſuras has.*

MS. A. (κ) τὰ ἐλεοῦ ϗ τὸ ἐλαμμὼν, (λ) πήχεων (μ) πήχεων (˝) καὶ (ν) κλιμακτῆρσιν ἀνέβαινον ἐπ' αὐτὴν, (ξ) τῇ πύλῃ (˝) καὶ (ο) εἰσήγαγέν (π) αἰλαμμὼθ, (ρ) τὰ αὐτά. (σ) αἰλαμμὼθ (·) πήχεων (τ) πήχεων (υ) κλιμακτῆρες αὐτῇ, ϗ ἐλαμμὼθ (φ) αὐτῆς, (χ) ϗ τὸ (ψ) Νότον πήχεις εἰκοσιπέντε. Καὶ (ω) τὰ αὐτὰ, (α) αἰλαμμὼθ (β) τὰ αὐτὰ, (γ) τὰ αἰλαμμὼθ (δ) εὖρος αὐτῆς (ε) ϗ αἰλαμμὼθ κύκλῳ μῆκος πεντεκαιείκοσι πήχεων, ϗ πλάτος πέντε πήχεων, ϗ αἰλαμμὼν εἰς τὴν αὐλὴν (ζ) κλιμακτῆρες. (˝) καὶ (η) αἰλαμμὼθ κατὰ τὰ μέτρα τὰ αὐτὰ, ϗ αἱ θυρίδες αὐτῆς, ϗ τὰ αἰλαμμὼθ (˝) τὸ εὖρος (θ) αἰλαμμὼθ (ι) κλιμακτῆρες

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

21 ותווהי תלתא מכא ותלתא מכא ואלוהי ואולמוהי הות כמשחת תרעא קדמאה
22 חמשין אמין אורכיה ופותיא עסרין וחמש אמין : וכווהי ואולמוהי וכותרתיה
כמשחת תרעא דפתיח לאורח מדנחא ובדרגין שבעא סלקין ביה ואולמוהי
23 קדמיהון : ותרעא לדרתא גויתא לקביל תרעא דפתיח לצפונא ולמדנחא ומשח
24 מתרע לתרע מאה אמין : ואובלני באורח דרומא והא תרעא חד פתיח לאורח
25 דרומא ומשח אלוהי ואולמוהי כמשחתא האלין : וכוין ליה ולאולמוהי סחור
26 סחור כבויא האלין חמשין אמין אורכא ופותיא עסרין וחמש אמין : ודרגין שבעא
27 דרגוהי ואולמוהי קדמיהון וכותרן ליה חדא מכא וחדא מכא על אלוהי : ותרעא
דדרתא גויתא באורח דרומא ומשח מתרע לתרע באורח דרומא מאה אמין :
28 ואעלני לדרתא גויתא בתרע דרומא ומשח ית תרע דרומא כמשחתא האלין :
29 ותווהי ואלוהי ואולמוהי כמשחתא האלין וכוין לה ולאולמוהי סחור סחור חמשין
30 אמין אורכא ופותיא עסרין וחמש אמין : ואולמיא סחור סחור אורכא עסרין
31 וחמש אמין ופותיא חמש אמין : ואולמוהי לדרתא בריתא וכותרן על אלוהי
32 ודרגן תמניא דרגוהי : ואעלני לדרתא גויתא באורח מדינחא ומשח ית תרעא
33 כמשחתא האלין : ותווהי ואלוהי ואולמוהי כמשחתא האלין וכוין ליה ולאולמוהי
34 סחור סחור אורכא חמשין אמין ופותיא עסרין וחמש אמין : ואולמוהי לדרתא
35 בריתא וכותרן על אלוהי מכא ומכא ותמניא דרגין דרגוהי : ואעלני לתרע צפונא
ומשח כמשחתא האלין :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

21 Et thalami ejus tres hinc & tres inde ; & frontes ejus, & veſtibula ejus ſecundùm menſuram portæ prioris erant: quinquaginta cubitorum erat longitudo ejus, & latitudo vigintiquinque cubitorum. 22 Et feneſtræ ejus & veſtibula ejus, & capitella ejus juxta menſuram portæ, quæ aperta erat ad viam Orientalem. Et ſeptem gradibus aſcendebant per eam, & veſtibula ejus ante eos. 23 Et porta atrii interioris contra portam quæ aperta erat ad Aquilonem & Orientem ; & menſus eſt à porta uſque ad portam centum cubitos. 24 Et duxit me per viam Auſtralem, & ecce porta una aperta ad viam Auſtralem. Et menſus eſt frontes ejus, & veſtibula ejus juxta menſuras iſtas. 25 Et feneſtræ erant ei & veſtibulis ejus per circuitum, ſicut feneſtræ iſtæ : quinquaginta cubitorum longitudinis, & latitudinis viginti quinque cubitorum. 26 Et ſeptem gradus erant gradus ejus, & veſtibula ejus ante eos, & capitella ei erant unum hinc & unum inde ſuper poſtes ejus. 27 Et porta atrii interioris in via Auſtrali. Et menſus eſt à porta uſque ad portam in via Auſtrali, centum cubitos. 28 Et introduxit me ad atrium interius per portam Auſtralem ; & menſus eſt portam Auſtralem juxta menſuras iſtas: 29 Et thalamos ejus, & frontes ejus, & veſtibula ejus juxta menſuras iſtas. Et feneſtræ ei erant & veſtibulis ejus in circuitu quinquaginta cubitorum longitudinis, & latitudinis viginti quinque cubitorum. 30 Et veſtibula per circuitum longitudinis vigintiquinque cubitorum, & latitudinis quinque cubitorum. 31 Et veſtibula ejus [*ſpectabant*] ad atrium exterius, & capitella ſuper poſtes ejus, ſed octo gradus erant gradus ejus. 32 Et introduxit me in atrium interius per viam Orientalem : & menſus eſt portam ſecundùm menſuras iſtas: 33 Et thalamos ejus, & poſtes ejus, & veſtibula ejus ſecundùm menſuras iſtas : & feneſtræ erant ei, et veſtibulis ejus per circuitum longitudinis quinquaginta cubitorum, et latitudininis viginti quinque cubitorum, 34 Et veſtibula ejus [*ſpectabant*] ad atrium exterius, et capitella ſuper poſtes ejus hinc & inde, et octo gradus erant gradus ejus. 35 Et introduxit me ad portam Aquilonarem, et menſus eſt juxta menſuras iſtas.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

21 * ܘܡܫܘܚܬܗ܆ ܠܬܠܬܐ ܡܟܐ܂ ܘܠܬܠܬܐ ܡܟܐ܂ ܐܝܟ ܡܫܘܚܬܗ ܕܬܪܥܐ ܩܕܡܝܐ܂ ܚܡܫܝܢ
22 ܐܡ̈ܝܢ ܐܘܪܟܗ܂ ܘܦܬܝܗ܂ ܥܣܪ̈ܝܢ ܐܡ̈ܝܢ ܘܚܡܫ܂ * ܘܟܘ̈ܘܗܝ ܘܦܪܘܣܛܕ̈ܘܗܝ܀ ܐܝܟ
ܡܫܘܚܬܐ ܕܬܪܥܐ ܕܚܙܐ ܠܡܕܢܚܐ܂ ܘܒܫܒܥ ܕܪ̈ܓܝܢ ܣܠܩܝܢ ܠܗ܂ ܘܐܣܩܘܦܬܐ ܐܝܬ ܠܗ
23 ܩܕܡܝܗܘܢ܂ * ܘܬܪܥܐ ܕܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ ܕܠܘܩܒܠ ܬܪܥܐ ܕܓܪܒܝܐ ܘܡܕܢܚܐ܀ ܘܡܫܚ܆ ܡܢ
24 ܬܪܥܐ ܠܬܪܥܐ܂ ܡܐܐ ܐܡ̈ܝܢ܂ * ܘܐܘܒܠܢܝ ܠܐܘܪܚܐ ܕܬܝܡܢܐ܂ ܘܚܙܝܬܗ ܠܬܪܥܐ ܕܬܝܡܢܐ܂
25 ܘܡܫܚ ܦܪܘܣܛܕ̈ܘܗܝ܆ ܘܥܡܘ̈ܕܘܗܝ܀ ܐܝܟ ܗܠܝܢ ܡܫܘ̈ܚܬܐ܂ * ܘܟܘ̈ܐ ܐܝܬ ܠܗ܆
ܘܠܦܪܘܣܛܕ̈ܘܗܝ܆ ܚܕܪ ܚܕܪ܂ ܐܝܟ ܗܠܝܢ ܟܘ̈ܐ܂ ܘܚܡܫܝܢ ܐܡ̈ܝܢ ܐܘܪܟܗ܂
26 ܘܥܣܪ̈ܝܢ ܘܚܡܫ ܦܬܝܗ܂ * ܘܒܫܒܥ ܕܪ̈ܓܝܢ ܣܠܩܝܢ ܠܗ܂ ܘܐܣܩܘܦܬܐ ܐܝܬ ܠܗ ܩܕܡܝܗܘܢ܂ ܘܕܩ̈ܠܐ
27 ܐܝܬ ܠܗ܆ ܚܕ ܡܟܐ ܘܚܕ ܡܟܐ܂ ܥܠ ܦܪܘܣܛܕ̈ܘܗܝ܂ * ܘܬܪܥܐ ܕܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ ܕܠܘܬ ܐܘܪܚܐ
28 ܕܬܝܡܢܐ܀ ܘܡܫܚ ܡܢ ܬܪܥܐ ܠܬܪܥܐ܂ ܡܐܐ ܐܡ̈ܝܢ܂ * ܘܐܥܠܢܝ ܠܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ ܒܬܪܥܐ
29 ܕܬܝܡܢܐ܂ ܘܡܫܚܗ܆ ܠܬܪܥܐ ܕܬܝܡܢܐ܂ ܐܝܟ ܗܠܝܢ ܡܫܘ̈ܚܬܐ܂ * ܘܓܘܗ܆
ܘܦܪܘܣܛܕ̈ܘܗܝ ܘܐܣܩܘ̈ܦܬܗ܀ ܐܝܟ ܗܠܝܢ ܐܝܟܢܐ ܡܫܘ̈ܚܬܐ܂ ܘܟܘ̈ܐ ܐܝܬ ܠܗ
ܘܠܦܪܘܣܛܕ̈ܘܗܝ ܚܕܪ ܚܕܪ܂ ܚܡܫܝܢ ܐܡ̈ܝܢ܂ ܐܘܪܟܗ܂ ܘܥܣܪ̈ܝܢ ܘܚܡܫ ܦܬܝܗ܂
30 * ܘܐܒܘܒ̈ܘܗܝ܆ ܚܕܪܝܢ ܠܗ܂ ܐܘܪܟܗܘܢ܂ ܥܣܪ̈ܝܢ ܘܚܡܫ ܐܡ̈ܝܢ܂ ܘܦܬܝܗܘܢ܂ ܚܡܫ
31 ܐܡ̈ܝܢ܂ * ܘܦܪܘܣܛܕ̈ܘܗܝ ܕܕܪܬܐ ܒܪܝܬܐ܀ ܕܩ̈ܠܐ ܐܝܬ ܒܗܘܢ܂ ܘܕܪ̈ܓܝܗܘܢ܂ ܬܡܢܝܐ܂ * ܘܐܥܠܢܝ
32 ܠܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ ܕܡܕܢܚܐ܆ ܘܡܫܚܗ܆ ܠܬܪܥܐ܂ ܐܝܟ ܗܠܝܢ ܡܫܘ̈ܚܬܐ܂
33 * ܘܓܘܗ܆ ܘܦܪܘܣܛܕ̈ܘܗܝ܂ ܘܐܣܩܘ̈ܦܬܗ܂ ܘܟܘ̈ܐ ܐܝܬ ܠܗ܆ ܘܠܦܪܘܣܛܕ̈ܘܗܝ܂ ܚܕܪ ܚܕܪ܂
34 ܐܘܪܟܐ܂ ܚܡܫܝܢ ܐܡ̈ܝܢ܂ ܘܦܬܝܐ܆ ܥܣܪ̈ܝܢ ܘܚܡܫ ܐܡ̈ܝܢ܂ * ܘܐܣܩܘܦܬܐ ܕܕܪܬܐ ܒܪܝܬܐ܂
35 ܘܕܩ̈ܠܐ ܐܝܬ ܒܦܪܘܣܛܕ̈ܘܗܝ܆ ܡܟܐ ܘܡܟܐ܂ ܘܬܡܢܐ ܕܪ̈ܓܝܢ ܐܝܬ ܠܗ܂ * ܘܐܥܠܢܝ ܠܬܪܥܐ
ܕܓܪܒܝܐ܂ ܘܡܫܚܗ ܐܝܟ ܗܠܝܢ ܡܫܘ̈ܚܬܐ܂

* Fuítque menſura ejus, triũ hinc & trium inde, 21
juxta menſuram januæ primæ : quinquaginta
cubitorum longitudo ejus, latitudo verò
vigintiquinque cubitorũ. Feneſtræ & paraſtades 22
ejus, ejuſdem erant menſuræ cum iis januæ
quæ reſpiciebat Orientem: ſeptem gradib⁹ aſcendebatur
ad eam, ante quos erat limen. Januas 23
etiã atrii interioris oppoſitas januæ quæ
erat Aquilonẽ inter & Orientem, menſus eſt;
à janua ad januam centum cubitos. Deinde 24
ꝑduxit me verſùs Meridiem, ubi vidi januam
Meridionalẽ: & menſ⁹ eſt paraſtades & pilas
ejus, iiſdem ac præcedentibus menſuris. Feneſtras 25
hæc *janua* & paraſtades ejus habebãt
circunquaque, ſimiles feneſtris præcedentib⁹:
& quinquaginta cubitorum erat longitudo ipſius,
latitudo verò vigintiquinque. Septem 26
quoque gradib⁹ ad hanc aſcendebatur, & limen
erat ante ipſam: & palmas habebat, unã
hinc, alterã inde ſuper paraſtades ſuas. Januas 27
etiam atrii interioris, quæ Meridiẽ verſùs erant,
menſus eſt; à janua ad januam centũ cubitos.
Tùm introduxit me in atrium interius 28
ꝑ januam Meridionalẽ, menſúſque eſt januã
Meridionalẽ iiſdem cum præcedentib⁹ menſuris :
Et pars hujus intima, paraſtades, & limina 29
iſtius erant earundẽ cum præcedentibus
dimenſionum: Feneſtras tam hæc quàm paraſtades
ejus habebant circunquaque: quinquaginta
cubitorum erat longitudo ejus, latitudo
verò vigintiquinque : Et balauſtia ejus cingebant 30
eam, quorum longitudo erat vigintiquinque
cubitorũ, latitudo verò quinque cubitorum.
In paraſtadibus autem atrii exterioris 31
palmæ inerant, & gradus earum octo.
Deinde introduxit me in atrium interi⁹ Orientem 32
verſùs, menſúſque eſt januam ſecundùm
menſuras illas; Et partem ipſius intimam, 33
& paraſtades, atque limina ipſius. Feneſtras
tam ipſa quàm paraſtades ejus habebant
circunquaque : longitudo erat quinquaginta
cubitorũ, latitudo verò vigintiquinque
cubitorum : Limen erat *quale* atrii exterioris: 34
palmæ quoque erant in paraſtadibus hinc
inde: habebátque octo gradus. Similiter introduxit 35
me ad portam Aquilonarẽ, & menſus
eſt ſecundùm prædictas menſuras,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

21 * والثاآء ثلاثه من ههنا وثلاثه من ههنا * والالاو واللالموث ونخيله * فكان كقياس
22 الناظر نحو المشارق * خمسون ذراعا طوله * وخمسه وعشرون ذراعا عرضه * وكواه
واللالموث ونخيله * كمثل الباب الناظر نحو المشارق * وصعد في سبعة درج عليه *
23 واللالموث من داخل * ولباب الدار الداخلة الناظر الي باب الجربياء * كمثل ما
24 للباب الناظر نحو المشارق * وقاس الدار من الباب الي الباب * مائة ذراع * وادخلني
نحو التيمن * واذا باب ناظر الي التيمن وقاسه * والثاآء والالاو واللالموث * كهذه القياسات
25 بعينها * وكواه واللالموث من حوله * كمثل كوا الالام * خمسون ذراعا طوله * وخمسه
26 وعشرون ذراعا عرضه * وله سبعه درج * واللالموث من داخل * ونخيله واحده من هاهنا
27 وواحده من هاهنا على الالاو * وباب قباله باب الدار الداخلة نحو التيمن * وقاس
الدار من الباب الي الباب مائة ذراع * والعرض نحو التيمن خمسه وعشرون ذراعا *
28 * وادخلني الي الدار الداخلة التي للباب الذي نحو التيمن * وقاس الباب كهذه
29 القياسات نفسها * ولها كوى واللالموث داير * خمسون ذراعا طولها * وخمسه وعشرون
30 ذراعا عرضها * واللالموث تحيط * خمسه وعشرون ذراعا طولها * وخمسه اذرع عرضها *
31 32 * واللالموث للدار الخارجة ونخيل للالاو وثمانيه درج * وادخلني الي الباب الناظر
33 نحو المشارق * وقاسه كهذه القياسات نفسها * والثاآء واللالاو واللالموث كهذه
34 القياسات نفسها * وكواه * واللالموث للدار الداخلة * ونخيل على اللالاو من
35 ههنا ومن ههنا * وثمانيه درج لها * وادخلني الي الباب الذي في الجربياء وقاس
كهذه القياسات *

* *Et Thaim tres hinc, & tres inde; & Ælau, & Ælammoth, (i. teſtudines) &* 21
palmas ejus : fuitque (juxta menſuram
reſpicientis verſùs Orientem) quinquaginta
cubitorum longitudo ejus, & vigintiquinque
cubitorum latitudo ejus : Feneſtræ 22
ejus, & Ælammoth, ejuſque palmæ,
ſimiles erant portæ reſpicientis verſùs
Orientem : aſcenditque per ſeptem
gradus ad eam : & Ælammoth erant intrinſecùs.
Porta atrii inferioris Aquilonarem 23
portam reſpiciens, eadem habebat
quæ porta reſpiciens Orientem verſùs.
Et menſus eſt atrium à porta ad portam,
centum cubitos. Deinde introduxit 24
me verſùs Meridiem, & ecce porta reſpiciens
Meridiem; menſuſque eſt eam, &
Thaa, Ælau, & Ælammoth, juxta eaſdem
has menſuras. Feneſtræ ejus, & 25
Ælammoth quæ circa eam, ſimiles erant
feneſtris illam : quinquaginta cubitorum
longitudo ejus, & vigintiquinque cubitorum
latitudo ejus. Hæc etiam erant ſeptem 26
gradus, & Ælammoth intrinſecùs,
palmæque ejus hinc una, inde altera
ſuper Ælau : Et porta ex adverſo portæ
atrii interioris Meridiem verſùs. Et 27
menſus eſt atrium à porta ad portam,
centum cubitos: latitudo verò Meridiem
verſùs, vigintiquinque cubitorum. Inde 28
introduxit me in atrium interius portæ
quæ erat Meridiem verſùs; & menſus
eſt portam ſimilibus omninò menſuris.
Feneſtras etiam hoc habebat & Ælammoth 29
circunquaque : quinquaginta cubitorum
erat longitudo ejus, & vigintiquinque
cubitorum latitudo ejus : Et 30
Ælammoth cingebant illud, vigintiquinque
cubitorum longitudine, quinque cubitorum
latitudine. Ælammoth etiam 31
habebat atrium exterius, palmas Ælau,
et octo gradus. Inde me introduxit ad 32
portam reſpicientem Orientem verſùs,
et menſus eſt eam iiſdem prorſùs dimenſionibus.
Et Thaa, Ælau, et Ælammoth 33
earundem prorſùs erant dimenſionum,
necnon feneſtræ ipſius : Ælammoth 34
quoque habebat atrium interius :
et palmæ erant ſuper Ælau hinc inde :
et octo gradus habebat. Deinde introduxit 35
me ad portam quæ erat ad Aquilonem,
menſuſque eſt ſimiles hiſce
dimenſiones,

יחזקאל : מ

circum ei fenestræ & ;ejus *vestibula* & ,ejus postes ,ejus Thalamos
36 תאו אלו ואלמו וחלונות לו סביבי
quinque latitudinis & ,cubitorum quinquaginta longitudinis ; circa
סביב ארך חמשים אמה ורחב חמש
palmæ & , exteriori atrio ejus postes Et .cubitorum viginti &
37 ועשרים אמה : ואילו לחצר החיצונה ותמרים
.ejus gradus , gradus octo & : inde & , hinc ejus postibus in
אל־אילו מפו ומפו ושמנה מעלות מעלו :
abluent ibi ; portarum postibus in ejus ostium & ,cubiculum Et
38 ולשכה ופתחה באילים השערים שם ידיחו את־
duæ & , hinc mensæ duæ portæ vestibulo in Et .*ascensionem*
39 העלה : ובאלם השער שנים שלחנות מפו ושנים
, *ascensionem* eas *ad* *mactandum* ad ; inde mensæ
שלחנות מפה לשחוט אליהם העלה
extra *humerum* ad Et .delicto pro sacrificiũ &,peccato pro sacrificiũ &
40 והחטאת והאשם : ואל־הכתף מחוצה
ad & ; mensæ duæ , *Aquilonis* portæ ostium ad , gradum
לעולה לפתח השער הצפונה שנים שלחנות ואל־
.mensæ duæ , portæ vestibulo in *qui* , alterum *humerum*
הכתף האחרת אשר לאלם השער שנים שלחנות :
latus ad inde mensæ quatuor & , hinc mensæ Quatuor
41 ארבעה שלחנות מפה וארבעה שלחנות מפה לכתף
quatuor Et .*mactabunt* eas *ad* mensæ octo ; portæ
42 השער שמונה שלחנות אליהם ישחטו : וארבעה
unius cubiti longitudinis *dolationis* lapidibus *ascensionem* ad mensæ
שלחנות לעולה אבני גזית ארך אמה אחת
cubiti altitudinis & ; dimidii & ,unius cubiti latitudinis &,dimidii &
וחצי ורחב אמה אחת וחצי וגבה אמה
mactabunt quibus vasa ponent & eas *ad* ; unius
אחת אליהם ויניחו את־הכלים אשר ישחטו את־
præparatæ unius palmi cremathræ Et .sacrificium & ,*eis in* *ascensionem*
43 העולה בם והזבח : והשפתים טפח אחד מוכנים
.*appropinquationis* caro mensas *ad* & : circa circum *domo in*
בבית סביב סביב ואל־השלחנות בשר הקרבן :
,interiori atrio in cantorum cubicula interiorem portam *ad* extra Et
44 ומחוצה לשער הפנימי לשכות שרים בחצר הפנימי
; *Austri* viam eorum facies & ,*Aquilonis* portæ *humerum* ad quod
אשר אל־כתף שער הצפון ופניהם דרך הדרום
.*Aquilonis* viam facies , *Orientis* portæ *humerum* ad unum
אחד אל־כתף שער הקדים פני דרך הצפן :
,*Austri* viam *ejus* facies cujus , cubiculum Hoc ,me ad est locutus Et
45 וידבר אלי זה הלשכה אשר פניה דרך הדרום
cubiculum Et .domus custodiam custodientium sacerdotum
46 לכהנים שמרי משמרת הבית : והלשכה
custodiam custodientium sacerdotum ,*Aquilonis* viam *ejus* facies cujus
אשר פניה דרך הצפון לכהנים שמרי משמרת
,Dominum ad Levi filiis de *appropinquantes* ,Sadoc filii isti : altaris
המזבח המה בני־צדוק הקרבים מבני־לוי אל־יהוה
,cubitorum centum longitudo : atrium est mensus Et .ei *ministrandum ad*
47 לשרתו : וימד את־החצר ארך מאה אמה
.*domus facies ad* altare & : quadratum ,cubitorum centum latitudo &
ורחב מאה אמה מרבעת והמזבח לפני הבית :
quinque,vestibuli postẽ est mensus &,domus vestibulũ in me introduxit Et
48 ויבאני אל־אלם הבית וימד אל אלם חמש
trium portæ latitudo & : inde cubitorum quinque & ,hinc cubitorum
אמות מפה וחמש אמות מפה ורחב השער שלש
.inde cubitorum trium & ,hinc cubitorum
אמות מפו ושלש אמות מפו :

Versio VULG. LAT.

36 Thalamum ejus, & frontem ej⁹,
& vestibulum ejus, & fenestras
ejus per circuitum, longitudine
quinquaginta cubitorum, & la-
titudine vigintiquinque cubito-
37 rum. Et vestibulum ejus respi-
ciebat ad atrium exterius : &
cælatura palmarum in fronte e-
jus hinc & indé : in octo gradi-
38 bus ascensus ejus. Et per singu-
la gazophylacia ostium in fron-
tibus portarum: ibi lavabant ho-
39 locaustum. Et in vestibulo por-
tæ, duæ mensæ hinc, et duæ men-
sæ indé : ut immoletur super eas
holocaustum, & pro peccato, et
40 pro delicto. Et ad latus exte-
rius, quod ascendit ad ostium
portæ, quæ pergit ad Aquilonem,
duæ mensæ : & ad latus alterum
ante vestibulum portæ, duæ men-
41 sæ. Quatuor mensæ hinc, et qua-
tuor mensæ indé : per latera por-
tæ octo mensæ erant, super quas
42 immolabant. Quatuor autem
mensæ ad holocaustum, de lapi-
dibus quadris extructæ: longitu-
dine cubiti unius & dimidii : &
latitudine cubiti unius & dimi-
dii : & altitudine cubiti unius :
super quas ponant vasa, in quib⁹
immolatur holocaustum, & vi-
43 ctima. Et labia earum palmi u-
nius, reflexa intrinsecùs per cir-
cuitum : super mensas autem
44 carnes oblationis. Et extra por-
tam interioré, gazophylacia can-
torum in atrio interiori, quod
erat in latere portæ respicientis
ad Aquilonem : & facies eorum
contra viam Australem, una ex
latere portæ Orientalis, quæ re-
45 spiciebat ad viam Aquilonis. Et
dixit ad me ; Hoc est gazophyla-
cium, quod respicit viam Meri-
dianam : sacerdotum erit, qui
excubant in custodiis templi.
46 Porrò gazophylacium, quod re-
spicit ad viam Aquilonis, sacer-
dotum erit, qui excubant ad mi-
nisterium altaris: isti sunt filii Sa-
doc, qui accedunt de filiis Levi
47 ad Dominum ut ministrent ei. Et
mensus est atrium longitudine
centum cubitorum, & latitudi-
ne centum cubitorum per qua-
drum: & altare ante faciem tem-
48 pli. Et introduxit me in vesti-
bulum templi : & mensus est ve-
stibulum quinque cubitis hinc, &
quinque cubitis indé : & latitu-
dinem portæ trium cubitorum
hinc, & trium cubitorum indé.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

36 Καὶ τὰ θεὲ, καὶ τὰ αἰλεὺ, καὶ τὰ (λ) αἰλαμ-
μὼν, καὶ θυρίδες αὐτῇ κύκλῳ, καὶ τὸ αἰλαμ-
μὼν αὐτῆς, πήχεις πεντήκοντα (μ) μῆκος
37 αὐτῆς, καὶ εὖρος πήχεις εἰκοσιπέντε· Καὶ
(ν) τὰ αἰλαμμὼν εἰς τὴν αὐλὴν τὴν ἐξω-
τέραν, καὶ φοίνικες τῷ αἰλεὺ ἔνθεν καὶ ἔν-
38 θεν, καὶ ὀκτὼ (ξ) κλιμακτῆρες αὐτῇ. Τὰ
παστοφόρια αὐτῆς, καὶ τὰ θυρώματα αὐτῆς,
39 Καὶ τὰ (ο) αἰλαμμὼν αὐτῆς ἐπὶ τῆς πύλης τῆς
δευτέρας ἔκρυσις, (π) ὅπως σφάζωσιν ἐν
αὐτῇ τὰ ὑπὲρ ἁμαρτίας, καὶ τὰ ὑπὲρ ἀγνοί-
40 ας. Καὶ κατὰ νώτου τοῦ (ρ) ῥύακος τῶν
ὁλοκαυτωμάτων τῆς βλεπούσης πρὸς Βοῤ-
ῥᾶν, δύο τράπεζαι πρὸς ἀνατολὰς κατὰ νώ-
του τῆς δευτέρας, καὶ τοῦ αἰλὰμ τῆς πύλης δύο
41 (σ) τράπεζαι κατὰ ἀνατολάς. Τέσσαρες ἔνθεν,
καὶ τέσσαρες ἔνθεν κατὰ νώτου τῆς πύλης, ἐπ'
(τ) αὐτὰς σφάζουσι τὰ θύματα. κατέναντι
42 τῶν ὀκτὼ τραπεζῶν τῶν (υ) θυμάτων, Καὶ
τέσσαρες τράπεζαι τῶν ὁλοκαυτωμάτων λί-
θιναι λελαξευμέναι, (˜) πήχεως καὶ ἡμίσεος
τὸ πλάτος, καὶ πήχεων δύο (φ) ἡμίσεος τὸ
μῆκος, καὶ ἐπὶ πῆχυν τὸ ὕψος· ἐπ' (χ) αὐ-
τὰς ἐπιθήσουσι τὰ σκεύη, ἐν οἷς σφάζουσιν
43 ἐκεῖ τὰ ὁλοκαυτώματα καὶ τὰ θύματα. Καὶ
παλαιστὴν ἕξουσι γεῖσος λελαξευμένον (ψ)
ἔσωθεν κύκλῳ, καὶ ἐπὶ τὰς τραπέζας ἐπά-
νωθεν στέγας, τοῦ καλύπτεσθαι ἀπὸ τοῦ ὑετοῦ,
44 καὶ ἀπὸ τῆς ξηρασίας. Καὶ εἰσήγαγέ με εἰς
τὴν αὐλὴν τὴν ἐσωτέραν· καὶ ἰδοὺ δύο ἐξέ-
δραι ἐν τῇ αὐλῇ τῇ ἐσωτέρᾳ, μία κατὰ
νώτου τῆς πύλης τῆς βλεπούσης πρὸς Βοῤ-
ῥᾶν, φέρουσα πρὸς Νότον, καὶ μία κατὰ νώ-
του τῆς πύλης τῆς πρὸς Νότον, βλεπούσης δὲ
45 πρὸς Βοῤῥᾶν. Καὶ εἶπε πρός με, Ἡ ἐξέ-
δρα αὕτη ἡ βλέπουσα πρὸς Νότον, τοῖς ἱε-
ρεῦσι τοῖς φυλάσσουσι τὴν φυλακὴν τοῦ οἴ-
46 κου, Καὶ ἡ ἐξέδρα ἡ βλέπουσα πρὸς Βοῤ-
ῥᾶν, τοῖς ἱερεῦσι τοῖς φυλάσσουσι τὴν φυλα-
κὴν τοῦ θυσιαστηρίου· ἐκεῖνοί εἰσιν οἱ υἱοὶ
Σαδδοὺκ, οἱ ἐγγίζοντες ἐκ τοῦ Λευὶ πρὸς
47 Κύριον, λειτουργεῖν αὐτῷ. Καὶ διεμέτρησε
τὴν αὐλὴν, μῆκος (ω) πηχῶν ἑκατὸν, καὶ
εὖρος (α) πήχεις ἑκατὸν, ἐπὶ τὰ (¨) τέσσα-
ρα μέρη αὐτῆς, καὶ τὸ θυσιαστήριον ἀπέναν-
48 τι τοῦ οἴκου. Καὶ εἰσήγαγέ με εἰς τὸ αἰ-
λὰμ τοῦ οἴκου· καὶ διεμέτρησε τὸ (β) αἰλ
τοῦ αἰλὰμ πηχῶν πέντε τὸ πλάτος ἔνθεν,
καὶ (γ) πηχῶν πέντε ἔνθεν, καὶ τὸ εὖρος
τοῦ θυρώματος (˝) πηχῶν δεκατεσσάρων, καὶ
ἐπωμίδες τῆς θύρας τοῦ αἰλὰμ (δ) πηχῶν
τριῶν ἔνθεν, καὶ (ε) πηχῶν τριῶν ἔνθεν.

*Et Thee, & Æleu, & Ælam- 36
mon : & fenestræ ei in circuitu :
& Ælammon ejus, cubitorum
quinquaginta longitudo ejus : &
latitudo cubitorum viginti quin-
que : Et Ælammon in atrium 37
exterius, & palmæ Æleu hinc
& indè : & octo gradus ei : Pa- 38
stophoria ejus, & januæ ejus, Et 39
Ælammon ejus super portam se-
cundam (ω) aquæ ductus, ut
immolent in ea, quæ pro peccato,
& quæ pro ignorantia : Et (aa) 40
ad dorsum rivuli holocaustoma-
tum respicientis ad Aquilonem
duæ mensæ ad Orientem ad dor-
sum secundæ, & Ælam portæ
duæ mensæ ad Orientem: Qua- 41
tuor hinc, & quatuor indè ad
dorsum portæ : super ipsas jugu-
lant victimas. E regione octo
mensarum victimarum, Etiam 42
quatuor mensæ holocaustomatum
lapideæ dolatæ : cubiti cum di-
midio latitudo, & cubitorum du-
orum cum dimidio longitudo, &
super cubitum altitudo. Super
ea imponent vasa, in quibus ju-
gulant ibi holocaustomata, & vi-
ctimas. (bb) Et palæsten habe- 43
bunt Gisum dolatum intrinsecùs
per circuitum, & super mensas
desuper tecta, ut operientur à
pluvia & à siccitate. Et 44
introduxit me in atrium inte-
rius : & ecce duæ exedræ in
atrio interiori, una ad dorsum
portæ respicientis ad Aquilo-
nem, quæ fert ad Austrum : &
una ad dorsum portæ, quæ ad
Austrum, respicientis autem ad
Aquilonem. Et dixit ad me ; 45
Exedra hæc, quæ respicit ad Au-
strum, sacerdotibus custodienti-
bus custodiam domûs : Et ex- 46
edra respiciens ad Aquilonem,
sacerdotibus custodientibus cu-
stodiam altaris. Illi sunt filii
Sadduc, qui accedunt de Levi
ad Dominum, ministrare ei. Et 47
mensus est atrium, longitudinem
cubitorum centum, & latitudi-
nem cubitorum centũ ad quatuor
partes ejus, & altare è regione
domûs. Et introduxit me in 48
Ælam domûs. Et mensus est
Æl ipsius Ælam, cubitorum
quinque latitudinem hinc, & cu-
bitorum quinque indè, & latitu-
dinem portæ cubitorum quatuor-
decim : & (cc) humeri ostii
Ælam cubitorum trium hinc, &
cubitorum trium indè :*

MS. A. (λ) αἰλαμμὼθ, καὶ αἱ θυρίδες αὐτοῦ κύκλῳ, καὶ τὰ αἰλαμμὼθ αὐτῆς κύκλῳ, πήχεις (μ) τὸ μῆκος αὐτῆς, καὶ εὖρος αὐτῆς πήχεις (ν) αἰλαμμὼθ (ξ) κλιμακτῆρες (ο) αἰλαμμὼθ (π) ἐκεῖ πλυνοῦσιν τὴν ὁλοκαύτωσιν. Ἐν δὲ τῷ αἰλὰμ τῆς πύλης δύο τράπεζαι ἔνθεν, καὶ δύο τράπεζαι ἔνθεν ἐκ χρυσίου, ὅπως σφάζωσιν τὴν ὁλοκαύτωσιν, καὶ τὰ ὑπὲρ (ρ) ῥόακος (σ) τράπεζαι, καὶ * η τράπεζαι κατ' (τ) αὐτὰ σφάζουσιν, (υ) θυμιαμάτων, (˜) πήχεος (φ) καὶ ἡμίσους (χ) αὐτὰς ἐπιθήσουσιν, * ἐν οἷς (ψ) ἔξωθεν (ω) πήχεων (α) πήχεων (¨) τέσσερα (β) αἰλὰμ πήχεων (γ) πήχεων (˝) πήχεων (δ) πήχεων (ε) πήχεων

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

36 תווהי אלוהי ואולמוהי וכוין לידה סחור סחור אורכא חמשין אמין ופותיא עסרין
37 וחמש אמין : ואלוהי לדרתא בריתא וכותרין על אלוהי מכא ומכא ותמניא דרגין
38 דרגוהי : ולשכתא ופתחה באליא דתרעיא תמן מתקנין ית עלתא : ובאולמא
39 דתרעא תרין פתורין מכא ותרין פתורין מכא למכס עליהון עלתא וחטאתא
40 ואשמא : ולעברא דמברא למסקנא במעלנא דתרע צפונא תרין פתורין ולעברא
41 אוחרנא דלאולמא דתרעא תרין פתורין : ארבעא פתורין מכא וארבעא פתורין
42 מכא לעברא דתרעא תמניא פתורין ביניהון נכסין : וארבעא פתורין לעלתא
באבני גזית אורכא אמתא חדא ופלגא ופותיא אמתא חדא ופלגא ורומיה אמתא
43 חדא עליהון ויחתון ית מניא דיכסון ית עלתא בהון ונכסת קודשיא : ועונקלין נפקין
פשך חד קביעין בעמודי בית מטבחיא מגיו לאולמיא סחור סחור ועל פתוריא בשר
44 קורבניא : ומברא לתרעא גואה לשכת ליואי בדרתא גויתא די לעבר תרע צפונא
45 ואפיהון לאורח דרומא חד לעבר תרע מדנחא אפי אורח צפונא : ומלל עמי דא
46 לשכתא דפתיחא לאורח דרומא לכהניא נטרי מטרת ביתא : ולשכתא דפתיח
לאורח צפונא לכהניא נטרי מטרת מדבחא אנון בני צדוק דקרבין מבני לוי
47 לפולחנא דיי לשמשא קדמוהי : ומשח ית דרתא אורכא מאה אמין ופותיא מאה
48 אמין מרבע ומדבחא די קדם ביתא : ואעלני לאולמא דביתא ומשח אלא דאולמא
חמש אמין מכא וחמש אמין מכא ופותיא דתרעא תלת אמין מכא ותלת
אמין מכא :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Thalamos ejus, postes ejus, & vestibula ejus : & fenestræ erant ei per circui- 36
tum longitudinis quinquaginta cubitorum, & latitudinis vigintiquinque cu-
bitorum. Postésque ejus erant atrio exteriori, & capitella erant super postes 37
ejus hinc & inde, & octo gradus erant gradus ejus. Et gazophylacium erat & 38
ostium ejus in frontibus portarum: ibi præparabant holocaustum. Et in vesti- 39
bulo portæ erant duæ mensæ hinc & duæ mensæ indè, ut immolaretur super
eas holocaustum & sacrificium pro peccato & pro delicto. Et ad latus exte- 40
rius ascensus in introitu portæ Aquilonis erant duæ mensæ, & ad latus alterum
quod erat ad vestibulum portæ erant duæ mensæ. Quatuor mensæ hinc & 41
quatuor mensæ indè ad latus portæ : octo mensæ in quibus immolabant.
Quatuor autem mensæ erant ad holocaustum ex lapidibus dolatis longitudi- 42
ne cubiti unius & dimidii, & latitudine cubiti unius & dimidii, & altitudine
cubiti unius, super quas ponebant vasa in quibus immolabant holocaustum &
victimas sanctificatas. Et uncini egrediebantur [*longitudine*] unius palmi de- 43
fixi in columnis domus macelli intra vestibula per circuitum : & super men-
sas erat caro *oblationum*. Et extra portam interiorem erat gazophylacium 44
Levitarum in atrio interiori quod erat ad latus portæ Aquilonaris: & facies
earum ad viam Australem, una ad latus portæ Orientalis quæ respiciebat ad
viam Aquilonis. Et locutus est mecum, [*dicens:*] Hoc gazophylacium quod 45
apertum est ad viam Australem, erit Sacerdotibus qui custodiunt custodiam
domus. Et gazophylacium quod apertum est ad viam Aquilonarem, erit Sa- 46
cerdotibus qui custodiunt custodiam altaris : isti sunt filii Sadok qui accedunt
de filiis Levi ad cultum Domini, ut ministrent coram eo. Et mensus est atri- 47
um longitudine centum cubitorum, & latitudine centum cubitorum quadra-
tum, & altare quod erat ante domum. Et introduxit me in vestibulum do- 48
mus, & mensus est frontem vestibuli : quinque cubitos hinc & quinque cu-
bitos indè : & latitudo portæ trium cubitorum hinc, & trium cubito-
rum indè.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܬܘܢܗ ܘܦܪܣܛܕܘܢܘܗܝ ܘܐܣܩܘܦܬܗ. ܘܟܘܝܢ ܚܕܪ ܠܗ. ܐܘܪܟܗ ܚܡܫܝܢ ܐܡܝܢ. 36
ܘܦܬܝܗ ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫ. * ܘܦܪܣܛܕܘܢܘܗܝ ܕܕܪܬܐ ܒܪܝܬܐ. ܘܕܩܠܐ ܐܝܬ ܒܦܪܣܛܕܘܢܐ ܡܟܐ. 37
ܘܡܟܐ. ܘܬܡܢܐ ܕܪܓܝܢ ܠܗ. * ܘܐܟܣܕܪܐ ܬܪܥܗ. ܒܦܪܣܛܕܘܢܐ ܕܬܪܥܐ. ܘܬܡܢ 38
ܡܫܝܓܝܢ ܗܘܘ ܥܠܘܬܐ. * ܘܒܦܪܣܛܕܘܢܐ ܕܬܪܥܐ .܀ ܬܪܬܝܢ ܦܬܘܪܝܢ ܡܟܐ. ܘܬܪܬܝܢ ܦܬܘܪܝܢ 39
ܡܟܐ. ܠܡܟܣ ܥܠܝܗܘܢ ܥܠܘܬܐ ܢܟܣܬܐ. ܘܩܘܪܒܢܐ ܘܕܚܛܗܐ ܕܣܟܠܘܬܐ. * ܘܠܣܛܪܗ ܕܬܪܥܐ 40
ܓܪܒܝܝܐ. ܕܠܒܪ ܡܢ ܕܘܟܬ ܥܠܘܬܐ. ܬܪܝܢ ܦܬܘܪܝܢ. ܘܠܣܛܪܐ ܐܚܪܢܐ ܕܦܪܣܛܕܐ. ܬܪܝܢ
ܦܬܘܪܝܢ. * ܐܪܒܥܐ ܦܬܘܪܝܢ ܡܟܐ. ܘܐܪܒܥܐ ܦܬܘܪܝܢ ܡܟܐ ܠܦܪܣܛܕܘܢܘܗܝ. 41
ܕܬܪܥܐ. ܘܬܡܢܝܐ ܗܘܝ ܦܬܘܪܝܢ ܕܢܟܣܝܢ ܥܠܝܗܘܢ. * ܘܐܪܒܥܐ ܦܬܘܪܝܢ ܕܟܐܦܐ 42
ܦܣܝܠܬܐ ܠܥܠܘܬܐ ܡܫܘܚܬܐ. ܐܘܪܟܗܘܢ ܐܡܬܐ ܘܦܠܓܐ. ܘܦܬܝܗܘܢ ܐܡܬܐ ܘܦܠܓܐ.
ܘܥܠܝܗܘܢ ܣܝܡܝܢ ܡܐܢܐ ܕܢܟܣܝܢ ܗܘܘ ܒܗܘܢ ܥܠܘܬܐ ܘܕܒܚܬܐ. * ܘܣܦܘܬܗܘܢ 43
ܦܫܝܛ ܦܫܝܛ ܠܝܟ ܚܕܪܝܢ .܀ ܘܥܠ ܦܬܘܪܐ ܣܝܡܝܢ ܗܘܘ ܒܣܪܐ ܕܩܘܪܒܢܐ. * ܘܠܒܪ ܡܢ 44
ܬܪܥܐ ܓܘܝܐ. ܐܟܣܕܪܝܐ ܕܪܘܪܒܢܐ. ܒܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ. ܕܠܣܛܪ ܬܪܥܐ ܓܪܒܝܝܐ. ܘܦܐܬܗܘܢ
ܠܬܝܡܢܐ. ܡܢ ܣܛܪܗ ܕܬܪܥܐ ܡܕܢܚܝܐ ܕܠܘܩܒܠ ܪܘܚܐ ܓܪܒܝܝܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܗܕܐ 45
ܐܟܣܕܪܐ ܕܚܙܝܐ ܠܬܝܡܢܐ .܀ ܠܟܗܢܐ. ܕܢܛܪܝܢ ܡܛܪܬܐ ܕܒܝܬܐ. * ܘܐܟܣܕܪܐ ܕܚܙܝܐ 46
ܠܓܪܒܝܐ .܀ ܠܟܗܢܐ ܒܢܝ ܨܕܘܩ ܕܢܛܪܝܢ ܡܛܪܬܐ ܕܡܕܒܚܐ .܀ ܕܡܬܩܪܒܝܢ ܡܢ ܒܢܝ
ܠܘܝ. ܠܡܫܡܫܘ ܠܡܪܝܐ. * ܘܡܫܚ ܕܪܬܐ. ܐܘܪܟܐ ܡܐܐ ܐܡܝܢ. ܘܦܬܝܐ 47
ܡܐܐ ܐܡܝܢ. ܡܪܒܥܐܝܬ. ܘܡܕܒܚܐ ܩܐܡ ܗܘܐ ܩܕܡ ܒܝܬܐ. * ܘܐܥܠܢܝ ܠܐܣܩܘܦܬܗ 48
ܕܒܝܬܐ. ܘܡܫܚܗ ܠܐܣܩܘܦܬܐ .܀ ܚܡܫ ܐܡܝܢ ܡܟܐ .܀ ܘܚܡܫ ܐܡܝܢ ܡܟܐ. ܘܦܬܝܗ
ܕܬܪܥܐ ܬܠܬ ܐܡܝܢ ܡܟܐ. ܘܬܠܬ ܐܡܝܢ ܡܟܐ.

Tam intimam ipſius partem, quàm paraſtades, 36
ac limina ipſius : & feneſtræ circundabant
eam. Longitudo ejus erat quinquaginta
cubitorum, latitudo vigintiquinque. Paraſtades 37
erant *quales* atrii exterioris : & palmæ
erant in paraſtadibus hinc inde : & octo gradus
habebat. Exedræ janua erat in ipſis portæ 38
paraſtadibus, ibíque ponebant holocauſta:
Et ad januarum paraſtades duæ erant hinc 39
menſæ, & duæ inde menſæ ; ad jugulandum
ſuper eas holocauſta, oblationes, & expiationem
peccatorum. Ad latus etiam portæ Aquilonaris, 40
quod erat extra *locum* holocauſtorum,
duæ erant menſæ ; & ad alterum paraſtadum
latus duæ menſæ : Quatuor *ſcilicet* 41
menſæ hinc, & quatuor inde menſæ, ad paraſtades
portæ: ſic octo erant menſæ ſuper quas
jugulabant. Quatuor autem menſæ è lapide 42
cæſo erant pro holocauſtis, longitudine cubiti
cum dimidio, & latitudine cubiti cum
dimidio : & ſuper has ponebant inſtrumenta
quibus jugulabant holocauſta & victimam :
Iſtarúmque labra, ſingularum erant licharum 43
per circuitum : & ſuper menſas ponebant
carnem oblationum. Extra portam interiorem 44
erant diverſoria magnatum, in atrio interiore
quod erat ad latus portæ Aquilonaris;
& reſpiciebant Auſtrum à latere portæ Orientalis,
quod erat oppoſitum vento Aquilonari.
Tum dixit mihi, Exedra iſta quæ ſpectat 45
Meridiem, ſacerdotum eſt cuſtodientium
cuſtodiam domûs : Exedra verò quæ ſpectat 46
Aquilonem, ſacerdotum eſt filiorum Sadoc
cuſtodientium cuſtodiam altaris, qui admittuntur
à filiis Levi ad obeundum miniſterium
Domini. Menſúſque eſt atrium iſtud longitudine 47
centum cubitorum, & latitudine centum
cubitorum, formæ quadrangularis : &
altare extabat ante domum. Inde me adduxit 48
ad limen domûs, menſúſque eſt limen
quinque cubitorum hinc, & quinque cubitorum
inde : latitudinem verò portæ trium cubitorum
hinc, & trium cubitorum inde.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

36 * والتاء والالاو والالاموث * وكواه تحيطه * والموثه تحيطه * خمسون ذراعا طوله * وخمسة وعشرون
ذراعا عرضه * والالموث للدار الخارجة * ونخيل * للالاو من هاهنا ومن هاهنا * وثمانية درج لها * 37
38 * عماريها وكواها والموثها على الباب * الباب الثاني * وهناك ينبع يغسلون المحرقة * وفي الام الباب
39 مائدتان من هاهنا * ومائدتان من هاهنا من ذهب * كي يذبحوا المحرقة * وما هو من أجل
40 الخطية * وما هو من أجل الجهل * وفي ظهر رواق المحرقات الناظر إلى الجربياء * مائدتان نحو
41 المشارق * في ظهر الباب الثاني والام الباب * مائدتان ومائدتان نحو المشارق * أربعة من هاهنا *
وأربعة من هاهنا في ظهر الباب * عليها يذبحون الذبائح * قبالة الثمانية موائد التي للنحور *
42 * وأربعة موائد للمحرقات حجرية منقورة * العرض ذراع ونصف * والطول ذراعان ونصف *
43 والارتفاع ذراع * عليها يضعون وفيها يذبحون المحرقات والذبائح * ولها إفريز منقور * طوله فتر *
44 من خارجها محيط * وعلى الموائد من فوقها ستور * ليوقيها من المطر ومن اليبوسة * وأدخلني
إلى الدار الداخلة * وإذا مقصورتان في الدار الداخلة * واحدة في ظهر الباب الناظر إلى
الجربياء * حاملة إلى التيمن * وواحدة في ظهر الباب الذي نحو التيمن والناظر إلى الجربياء
45 46 * وقال لي * هذه المقصورة الناظرة إلى التيمن * للكهنة الذين يحرسون حرس البيت * والمقصورة
الناظرة إلى الجربياء * للكهنة الذين يحرسون المذبح * وأولئك هم بنو صادوق القريبون من
47 لاوي إلى الرب ليخدموه * وقاس الدار طولا مائة ذراع * وعرضا مائة ذراع * على أربعة جوانبها *
48 والمذبح قبالة البيت * وأدخلني إلى رواق البيت * وقاس الرواق خمسة أذرع عرضا من ههنا *
وخمسة أذرع من ههنا * وسعة المجاري أربعة عشر ذراعا * وأكتاف باب الرواق ثلاثة أذرع
من هاهنا * وثلاثة أذرع من ههنا *

Et Thaa, Ælau, & Ælammoth : & feneſtræ ejus cingebant eam: & Ælammoth 36
ejus cingebant eam : quinquaginta cubitorum erat longitudo ipſius, & vigintiquinque
cubitorum latitudo. Ælammoth 37
habebat atrium exterius : Ælau palmas
hinc inde : & octo gradus habebat.
Cancelli, feneſtræ, & Ælammoth ejus 38
ſuper portam erant, portam nempe ſecundam.
Ibi quoque fons erat ad lavandum 39
holocauſtum. Et in ulam portæ, duæ
erant hinc menſæ, & duæ inde menſæ
aureæ ad jugulandum holocauſtum, &
quod erat pro peccato, & quod erat pro
ignorantia. Et in dorſo porticûs holocauſtorum 40
reſpicientis Aquilonem verſùs,
menſæ duæ Orientem verſùs : in dorſo
portæ ſecundæ & ulam portæ, menſæ duæ
& menſæ duæ Orientem verſùs : Quatuor 41
hinc, & quatuor inde in dorſo portæ,
ſuper quas jugulabant ſacrificia. E
regione octo menſarum jugulationi deſtinatarum,
Quatuor etiam erant pro holocauſtis 42
menſæ lapideæ excavatæ, quarum
latitudo cubiti erat cum dimidio, longitudo
duorum cubitorum cum dimidio,
cubiti verò profunditas : ſuper has
ponebant, & in his jugulabant holocauſta
& ſacrificia : Habebantque crepidinem 43
concavam longitudine lichæ extrinſecùs
ambientem : & ſuper eaſdem menſas
opercula ſupernè, ad defendendas eas à
pluvia & à ſiccitate. Præterea introduxit 44
me in atrium interius, & ecce duo
pulpita cantorum in atrio interiori, unum
à tergo januæ reſpicientis ad Aquilonem,
ferentis ad Auſtrum : alterum à tergo
januæ quæ erat Auſtrum verſùs, &
ſpectabat Aquilonem. Tum dixit mihi; 45
Hoc pulpitum quod Auſtrum ſpectat,
ſacerdotum eſt cuſtodientium cuſtodiam
domûs : Pulpitum verò quod Aquilonem 46
ſpectat, ſacerdotum qui cuſtodiunt altare:
& illi ſunt filii Sadoc accedentes è Levi
ad Dominum, ut miniſtrent ei. Et menſus 47
eſt atrium hoc longitudine centum cubitorum,
et latitudine centum cubitorum,
in quatuor ejus latera : et altare erat è
regione domûs. Inde me introduxit in 48
porticum domûs, et menſus eſt porticum,
quinque cubitorum in latitudinem hinc,
et quinq; cubitorum inde : latitudo foris
quatuordecim erat cubitorum : et humeri
januæ porticûs, trium cubitorum hinc, et
trium cubitorum inde.

יחזקאל: מא

undecim latitudo & ,cubitorum viginti vestibuli Longitudo
49 אֹרֶךְ הָאֻלָם עֶשְׂרִים אַמָּה וְרֹחַב עַשְׁתֵּי עֶשְׂרֵה
ad columnæ & : illud ad ascendent quibus gradibus in & ,cubitorum
אַמָּה וּבַמַּעֲלוֹת אֲשֶׁר יַעֲלוּ אֵלָיו וְעַמֻּדִים אֶל־
.inde *una* & ,hinc una ,postes
הָאֵילִים אֶחָד מִפֹּה וְאֶחָד מִפֹּה׃

CAP. XLI. מא

cubitorũ sex : postes est mensus & ;templum *ad* me introduxit Et
1 וַיְבִיאֵנִי אֶל־הַהֵיכָל וַיָּמָד אֶת־הָאֵילִים שֵׁשׁ־אַמּוֹת
.*tentorii* latitudo ,inde latitudo cubitorum sex & ,hinc latitudo
רֹחַב מִפּוֹ וְשֵׁשׁ־אַמּוֹת רֹחַב־מִפֹּה רֹחַב הָאֹהֶל׃
quinque ostii *humeri* & ,cubitorum decem ostii latitudo Et
2 וְרֹחַב הַפֶּתַח עֶשֶׂר אַמּוֹת וְכִתְפוֹת הַפֶּתַח חָמֵשׁ
ej⁹ longitudinẽ est mensus & : inde cubitorum quinque & ,hinc cubitorũ
אַמּוֹת מִפּוֹ וְחָמֵשׁ אַמּוֹת מִפּוֹ וַיָּמָד אָרְכּוֹ
est ingressus Et .cubitis viginti latitudinem & ,cubitis quadraginta
3 אַרְבָּעִים אַמָּה וְרֹחַב עֶשְׂרִים אַמָּה׃ וּבָא
sex ostium & : cubitis duobus ostii postem est mensus & ,intrinsecus
לִפְנִימָה וַיָּמָד אֵיל־הַפֶּתַח שְׁתַּיִם אַמּוֹת וְהַפֶּתַח שֵׁשׁ
ej⁹ longitudinẽ est mensus Et .cubitis septem ostii latitudinẽ & ,cubitis
4 אַמּוֹת וְרֹחַב הַפֶּתַח שֶׁבַע אַמּוֹת׃ וַיָּמָד אֶת־אָרְכּוֹ
: *templi facies ad* cubitis viginti latitudinẽ & ,cubitis viginti
עֶשְׂרִים אַמָּה וְרֹחַב עֶשְׂרִים אַמָּה אֶל־פְּנֵי הַהֵיכָל
parietem est mensus Et .sanctitatum sanctitas Hoc ,me ad dixit &
5 וַיֹּאמֶר אֵלַי זֶה קֹדֶשׁ הַקֳּדָשִׁים׃ וַיָּמָד קִיר־
circum ,cubitis quatuor *costæ* latitudinẽ & ;cubitis sex domus
הַבַּיִת שֵׁשׁ אַמּוֹת וְרֹחַב הַצֵּלָע אַרְבַּע אַמּוֹת סָבִיב
,*costam ad costa* ,*costæ* Et .*undique* domui circa
6 סָבִיב לַבַּיִת סָבִיב׃ וְהַצְּלָעוֹת צֵלָע אֶל־צֵלָע
costis ad domui qui pariete in venientes & , pedum triginta & trium
שָׁלוֹשׁ וּשְׁלֹשִׁים פְּעָמִים וּבָאוֹת בַּקִּיר אֲשֶׁר־לַבַּיִת לַצְּלָעוֹת
pariete in apprehensæ essent non & : *apprehensæ existendum ad* ,circa circum
סָבִיב סָבִיב לִהְיוֹת אֲחוּזִים וְלֹא־יִהְיוּ אֲחוּזִים בְּקִיר
quia ,*appendices* desuper desuper circuibat &,dilatabatur Et .domus
7 הַבָּיִת׃ וְרָחֲבָה וְנָסְבָה לְמַעְלָה לְמַעְלָה לַצְּלָעוֹת כִּי
idcirco : *domui circa circum* desuper ,desuper domus *circundata*
מוּסַב הַבַּיִת לְמַעְלָה לְמַעְלָה סָבִיב סָבִיב לַבַּיִת עַל־כֵּן
superius *super* ascendebat inferius sic & : superius domus latitudo
רֹחַב־לַבַּיִת לְמָעְלָה וְכֵן הַתַּחְתּוֹנָה יַעֲלֶה עַל־הָעֶלְיוֹנָה
fundamenta *:undique*,undique altitudinẽ domus vidi Et .medium *ad*
8 לַתִּיכוֹנָה׃ וְרָאִיתִי לַבַּיִת גֹּבַהּ סָבִיב סָבִיב מיסדות
,parietis Latitudo .*axillæ* cubitorum sex calamo pleno *costarum*
9 הַצְּלָעוֹת מְלוֹ הַקָּנֶה שֵׁשׁ אַמּוֹת אַצִּילָה׃ רֹחַב הַקִּיר
domus derelictum *quod* & : cubitorum quinque , *extra ad costæ* qui
אֲשֶׁר־לַצֵּלָע אֶל־הַחוּץ חָמֵשׁ אַמּוֹת וַאֲשֶׁר מֻנָּח בֵּית
viginti latitudo cubicula inter Et .intrinsecus quod *appendicum*
10 צְלָעוֹת אֲשֶׁר לַבָּיִת׃ וּבֵין הַלְּשָׁכוֹת רֹחַב עֶשְׂרִים
appendicis ostium Et .circa circum domus circuitu cubitorum
11 אַמָּה סָבִיב לַבַּיִת סָבִיב סָבִיב׃ וּפֶתַח הַצֵּלָע
latitudo &:Meridiẽ ad *unum* ostiũ &,Aquilonis viam unum ostiũ derelicto
לַמֻּנָּח פֶּתַח אֶחָד דֶּרֶךְ הַצָּפוֹן וּפֶתַח אֶחָד לַדָּרוֹם וְרֹחַב
ad quod ædificium Et .circa circum cubitorũ quinque derelicti loci
12 מְקוֹם הַמֻּנָּח חָמֵשׁ אַמּוֹת סָבִיב סָבִיב׃ וְהַבִּנְיָן אֲשֶׁר אֶל־
:cubitorũ septuaginta latitudinis ,*maris* viæ angulũ *sepositi tabulati facies*
פְּנֵי הַגִּזְרָה פְּאַת דֶּרֶךְ־הַיָּם רֹחַב שִׁבְעִים אַמָּה
ej⁹ lõgitudo & : *circa circum* latitudinis cubitorũ quinque ædificii paries &
וְקִיר הַבִּנְיָן חָמֵשׁ־אַמּוֹת רֹחַב סָבִיב סָבִיב וְאָרְכּוֹ
:cubitorũ centum longitudo :domum est mensus Et .cubitorum nonaginta
13 תִּשְׁעִים אַמָּה׃ וּמָדַד אֶת־הַבַּיִת אֹרֶךְ מֵאָה אַמָּה
.cubitorũ centum longitudine ej⁹ parietes &,ædificiũ &,*sepositum tabulatũ* &
וְהַגִּזְרָה וְהַבִּנְיָה וְקִירוֹתֶיהָ אֹרֶךְ מֵאָה אַמָּה׃

Versio VULG. LAT.

49 Longitudinem autem vestibuli viginti cubitorum, & latitudinẽ undecim cubitorum, & octo gradibus ascendebatur ad eam. Et columnæ erant in frontibus; una hinc, & altera indé.

CAP. XLI.

1 ET introduxit me in templum, & mensus est frontes, sex cubitos latitudinis hinc, & sex cubitos indè, latitudinem tabernacu-
2 li. Et latitudo portæ, decem cubitorum erat: & latera portæ, quinque cubitis hinc, et quinque cubitis indé: & mensus est longitudinem ejus quadraginta cubitorum, & latitudinem vigin-
3 ti cubitorum. Et introgressus intrinsecùs mensus est in fronte portæ duos cubitos: & portam, sex cubitorum: & latitudinem
4 portæ, septem cubitorum. Et mensus est longitudinem ejus viginti cubitorum, & latitudinem ejus viginti cubitorum, ante faciem templi: & dixit ad me;
5 Hoc est Sanctum sanctorum. Et mensus est parietem domûs sex cubitorum: et latitudinem lateris quatuor cubitorum undique
6 per circuitum domûs. Latera autem, latus ad latus, bis triginta tria: & erant eminentia, quæ ingrederentur per parietem domûs, in lateribus per circuitũ, ut continerent, & non attinge-
7 rent parietem templi. Et platea erat in rotundum, ascendens sursum per cochleam, & in cœnaculum templi deferebat per gyrum: idcircò latius erat templũ in superioribus: & sic de inferioribus ascendebatur ad superi-
8 ora in medium. Et vidi in domo altitudinem per circuitum, fundata latera ad mensuram ca-
9 lami sex cubitorum spatio: Et latitudinem per parietem lateris forinsecùs quinque cubitorum: et erat interior domûs in lateri-
10 bus domûs. Et inter gazophylacia latitudinem viginti cubitorum in circuitu domûs undique,
11 Et ostium lateris ad orationem: ostium unum ad viam Aquilonis, & ostium unum ad viam Australem: et latitudinem loci ad orationem, quinque cubitorũ in cir-
12 cuitu. Et ædificium, quod erat separatũ, versúmque ad viam respicientem ad mare, latitudinis septuaginta cubitorum: paries autem ædificii, quinque cubitorum latitudinis per circuitum: & longitudo ejus nonaginta cu-
13 bitorum. Et mensus est domûs longitudinem, centum cubitorum: & quod separatum erat ædificium, & parietes ejus, longitudinis centum cubitorum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

49 Καὶ τὸ μῆκος τοῦ αἰλὰμ (ζ) πηχῶν εἴκοσι, καὶ τὸ εὖρος (η) πηχῶν δώδεκα· καὶ ἐπὶ δέκα ἀναβαθμῶν ἀνέβαινον ἐπ' αὐτὸ, καὶ στῦλοι ἦσαν ἐπὶ (θ) τὸ αἰλὰμ, εἷς ἔνθεν καὶ εἷς ἔνθεν.

MS.A. (ζ) πήχεις (η) πήχεις (θ) τὰ

ΚΕΦ. μα'.

1 ΚΑὶ εἰσήγαγέ με εἰς τὸν ναὸν, (α) ᾧ διεμέτρησε τὸ αἰλὰμ (β) πηχῶν ἓξ τὸ πλάτος ἔνθεν, καὶ (γ) πηχῶν ἓξ τὸ εὖρος τοῦ αἰλὰμ
2 ἔνθεν, Καὶ τὸ εὖρος τοῦ πυλῶνος (δ) πηχῶν δέκα, καὶ ἐπωμίδες τοῦ πυλῶνος (ε) πηχῶν πέντε ἔνθεν, καὶ (ζ) πηχῶν πέντε ἔνθεν· καὶ διεμέτρησε τὸ μῆκος (η) αὐτοῦ πηχῶν τεσσαράκοντα, καὶ τὸ εὖρος πηχῶν εἴ-
3 κοσι. Καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὴν αὐλὴν τὴν ἐσωτέραν, καὶ διεμέτρησε τὸ (θ) αἰλ τοῦ θυρώματος πηχῶν δύο, καὶ τὸ θύρωμα (ι) πηχῶν ἓξ, καὶ τὰς ἐπωμίδας τοῦ θυρώματος (κ) πηχῶν ἑπτὰ ἔνθεν, καὶ (λ) πηχῶν ἑπτὰ ἔνθεν.
4 Καὶ διεμέτρησε (μ) τὸ μῆκος τῶν θυρῶν πηχῶν τεσσαράκοντα, καὶ τὸ εὖρος πηχῶν εἴκοσι, κατὰ πρόσωπον τοῦ ναοῦ. καὶ (ν) εἶπε,
5 Τοῦτο τὸ ἅγιον τῶν ἁγίων. Καὶ διεμέτρησε τὸν τοῖχον τοῦ οἴκου (ξ) πηχῶν ἓξ, καὶ τὸ εὖρος τῆς πλευρᾶς (ο) πηχῶν τεσσάρων κυκλόθεν,
6 Καὶ (π) πλευρὰ πλευρὸν ἐπὶ πλευρὸν τριάκοντα (ρ) τρὶς δίς· καὶ διάστημα ἐν τῷ τοίχῳ τοῦ οἴκου ἐν τοῖς πλευροῖς (σ) κύκλῳ, τοῦ εἶναι τοῖς ἐπιλαμβανομένοις ὁρᾷν, ὅπως τὸ
7 παράπαν μὴ ἅπτωνται τῶν τοίχων τοῦ οἴκου. Καὶ τὸ εὖρος τῆς ἀνωτέρας τῶν πλευρῶν κατὰ τὸ πρόσθεμα ἐκ τοῦ (τ) τοίχου, πρὸς τὴν ἀνωτέραν κύκλῳ τοῦ οἴκου, ὅπως διαπλατύνηται ἄνωθεν, καὶ ἐκ τῶν κάτωθεν ἀναβαίνωσιν ἐπὶ
8 τὰ ὑπερῷα, Καὶ ἐκ τῶν (υ) μέσων ἐπὶ τὰ τριώροφα, καὶ τὸ θραὲλ τοῦ οἴκου ὕψος κύκλῳ διάστημα τῶν πλευρῶν ἴσον τῷ καλάμῳ (φ)
9 πηχῶν ἓξ, διαστήματα, Καὶ εὖρος τοῦ τοίχου τῆς πλευρᾶς ἔξωθεν (χ) πηχῶν πέντε, καὶ τὰ ἀπόλοιπα (ψ) τὰ ἀναμέσον τῶν πλευ-
10 ρῶν τοῦ οἴκου, Καὶ ἀναμέσον τῶν ἐξεδρῶν (ω) εὖρος πηχῶν εἴκοσι, τὸ περιφερὲς (α) τῷ
11 οἴκῳ κύκλῳ. Καὶ αἱ (β) θύραι τῶν ἐξεδρῶν ἐπὶ τὸ ἀπόλοιπον τῆς θύρας τῆς μιᾶς τῆς πρὸς Βοῤῥᾶν· καὶ ἡ θύρα ἡ μία πρὸς Νότον· καὶ τὸ εὖρος τοῦ φωτὸς τοῦ ἀπολοίπου πηχῶν
12 πέντε πλάτος κυκλόθεν. Καὶ τὸ διορίζον κατὰ πρόσωπον τοῦ ἀπολοίπου, ὡς πρὸς θάλασσαν, (ς) πηχῶν ἑβδομήκοντα πλάτος, τοῦ τοίχου τοῦ διορίζοντος (δ) πηχῶν πέντε εὖρος κυκλόθεν, καὶ μῆκος αὐτοῦ (ε) πη-
13 χῶν ἐνενήκοντα. Καὶ διεμέτρησε κατέναντι τοῦ οἴκου μῆκος (ζ) πηχῶν ἑκατὸν, καὶ τὰ ἀπόλοιπα καὶ τὰ διορίζοντα, καὶ οἱ τοῖχοι αὐτῶν μῆκος (η) πηχῶν ἑκατόν.

Et longitudo Ælam cubitorum viginti: & latitudo cubitorũ duodecim: & super decẽ grad⁹ ascẽdebãt ad illud: & columnæ erant ad Ælam una hinc, et una indé. 49

CAP. XLI.

ET introduxit me in templum: (a) cui mensus est (b) Ælã, cubitorum sex latitudinem hinc, & cubitorum sex latitudinem Ælam indè, Et latitudinem portæ cubitorum decem; & humeri portæ, cubitorum quinque hinc; & cubitorum quinque indé. Et mensus est longitudinem ejus quadraginta cubitorum, & latitudinem viginti cubitorum. Et ingressus est in atrium interius: & mensus est (c) Æl portæ, cubitorum duorũ, & portam sex cubitorum, & humeros portæ septem cubitorum hinc, & septem cubitorum indé. Et mensus est longitudinem ostiorum, cubitorum (d) quadraginta, & latitudinem cubitorum viginti, ad faciem templi. Et dixit; Hoc est Sanctum sanctorum. Et mensus est parietem domûs, cubitorum sex, & latitudinem lateris cubitorum quatuor per circuitum: Et latera, latus ad latus, triginta trium bis: & intervallum in pariete domûs in lateribus per circuitum, ut esset apprehendentibus ad videndum, ut omninò non attingerent parietes domûs: Et latitudinẽ superioris lateris juxta additamentum ex pariete ad superius in circuitu domûs, ut dilatetur desupèr, & ex inferioribus ascendant ad superiora, Et de (e) Gisis ad tristega, & Thrael domûs altitudinem per circuitũ, intervallum laterum æquale calamo cubitorum sex, intervalla, Et latitudinem parietis lateris forinsecùs cubitorum quinq;, & reliqua, quæ inter latera domûs, Et inter exedras, latitudinem cubitorũ viginti, circumferentiã domui in circuitu. Et portæ exedrarum ad reliquum portæ unius, quæ ad (f) Aquilonem: & ostium unum ad Austrum: & latitudo (g) luminis (h) reliqui, cubitorum quinque latitudo in circuitu. Et quod separat ad faciem reliqui quasi ad mare, cubitorum septuaginta latitudo, parietũ separantis cubitorum quinque latitudo in circuitu, & longitudo ejus cubitorum nonaginta. Et mensus est contra domum longitudinem cubitorum centum; & reliqua, & separantia, & parietes eorum, longitudinem cubitorũ centum:

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13

MS. A. (α) καὶ διεμέτρησεν (β) πήχεις (γ) πήχεις (δ) πήχεων (ε) πήχεων (ζ) πήχεις (η) αὐτῆς πήχεις τεσσεράκοντα, καὶ εὖρος πήχεις (θ) αἰλὰμ τοῦ θυρώματος πήχεις (ι) πήχεις (κ) πήχεις (λ) πήχεις (μ) τὸ * εὖρος τῶν θυρωμάτων πήχεις τεσσεράκοντα, καὶ εὖρος πήχεις (ν) εἶπεν πρὸς μέ, (ξ) πήχεις (ο) πήχεις τέσσαρες (π) τὰ πλευρὰ (ρ) καὶ τρὶς (σ) τοῦ οἴκου κύκλῳ, (τ) οἴκου, (υ) μέσων ἐπὶ τὰ τριώροφα, καὶ τοῦ θραὲλ (φ) πήχεων διάστημα, Καὶ (χ) πήχεων (ψ) ἀναμέσον (ω) καὶ εὖρος πήχεων (α) τοῦ οἴκου (β) θυρίδες (ς) πήχεων (δ) πήχεων (ε) πήχεων (ζ) πήχεων (η) πήχεων

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

49 אורכא דאולמא עסרין אמין ופותיא חד עסרי אמין ובדרגין דסלקין ליה ועמודיא
על אליא חד מכא וחד מכא׃
מא
1 ואעלני להיכלא ומשח ית אליא שית אמין פותיא מכא ושית אמין פותיא מכא פותיא
2 דמשכנא׃ ופותיא דתרעא עסר אמין וכתפי תרעא חמיש אמין מכא וחמיש אמין
3 מכא ומשח אורכיה ארבעין אמין ופותיא עסרין אמין׃ ועל לגיו ומשח אילא דתרעא
4 תרתין אמין ותרעא שית אמין ופותיא דתרעא שבע אמין׃ ומשח ית אורכיה עסרין
5 אמין ופותיא עסרין אמין די קדם היכלא ואמר לי דין בית קודש קודשיא׃ ומשח
כותלא דביתא שית אמין ופותיא דמחצתא ארבע אמין סחור סחור מקף לביתא
6 סחור סחור׃ ומחיציא מחיצא על מחיצא תלתין ותלת חדא עסרי בסדרא קביעין
בכתלא דמגיו למחיצא סחור סחור למהוי רישי שריתא ניחין על זיזא ולא יהוין
7 שריתא מעברן בכתלי ביתא׃ ופותיא מסיבתא וסלקא לעלא לעלא מן מחיציא
ארי מקפא ביתא לסלקא לעלא לעלא סחור סחור לגיו על כן פתי ביתא מלעלא וכן
8 במסבתא סלקין מן ארעיתא לעליתא באורח מציעתא׃ וחזית לביתא רומא סחור
9 סחור משכללן מחיציא משחת קניא שית אמין רוח׃ פותיא דכתלא דמחיצתא
10 דלברא חמש אמין ואתר שביק בית מחיציא דלגיו׃ ובין לשכתא פותיא עסרין אמין
11 סחור סחור מקף לביתא סחור סחור׃ ותרעא דמחיצתא לאתר שביק תרעא חד
פתיח לאורח צפונא ותרעא חד פתיח לדרומא ופותיא דאתר שביק חמש אמין סחור
12 סחור׃ ובנינא דקדם בצורתא רוח אורח מערבא פותיא שבעין אמין וכתלא דבנינא
13 חמש אמין פותיא סחור סחור ואורכיה תשעין אמין׃ ומשח ית ביתא אורכא מאה
אמין ובצורתא ובנינא וכתליא אורכא מאה אמין׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Longitudo vestibuli viginti cubitorum, & latitudo undecim cubitorum, & per gradus ascendebant ad illud: & columnæ erant juxta postes, una hinc & una indè. 49

CAP. XLI.

ET introduxit me in templum, & mensus est postes sex cubitorum latitudinis hinc, & sex cubitorum latitudinis indè, latitudine tabernaculi. Et latitudo portæ decem cubitorum erat, & latera portæ quinque cubitorum hinc, & quinque cubitorum indè: & mensus est longitudinem ejus quadraginta cubitis, & latitudinem viginti cubitis. Et ingressus est interiùs, & mensus est postem portæ duobus cubitis, & portam sex cubitis, & latitudinem portæ septem cubitis. Et mensus est longitudinem ejus viginti cubitis, & latitudinem viginti cubitis ante templum: & dixit ad me, Hoc est *(domus)* sanctum sanctorum. Et mensus est parietem domus sex cubitis, & latitudinem tabulati quatuor cubitis per circuitum circuiens domum per gyrum. Tabulata autem, tabulatum super tabulatum, triginta tria, undena per ordinem, defixa parieti intra tabulata per circuitum, ut capita trabium requiescerent super illud quod eminebat, neque trabes penetrarent per parietes domus. At platea circuibat & ascendebat sursum sursum à tabulatis, quia circuibat domum *ascendendo* sursum sursum per circuitum intrinsecus: ideò latior erat domus in superioribus, & sic per cochleam ascendebant de inferioribus ad superiora per viam mediam. Et vidi in domo altitudinem per circuitum, fundata tabulata mensura calami, sex cubitorum spatio. Et latitudo parietis tabulati forinsecus quinque cubitorum, & locus relictus in loco tabulatorum intrinsecus. Et inter gazophylacia latitudo viginti cubitorum in circuitu circum domum per gyrum. Et porta tabulati ad locum relictum, ostium unum apertum ad viam Aquilonarem, & ostium unum apertum ad Austrum: & latitudo loci relicti quinque cubitorum in circuitu. Et ædificium quod erat ante conseptum versus viam Occidentis, latitudinis septuaginta cubitorum: paries autem ædificii quinque cubitorum latitudinis in circuitu, & longitudinis nonaginta cubitorum. Et mensus est ipsam domum; longitudo erat centum cubitorum: & conseptum & ædificium & parietes ejus centum cubitorum.

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܘܪܟܗ ܕܐܣܩܘܦܬܐ ܥܣܪܝܢ ܐܡܝܢ. ܘܦܬܝܗ ܚܕܥܣܪܐ ܐܡܝܢ. ܘܒܕܪ̈ܓܐ ܣܠܩܝܢ ܠܗ 49
ܘܥܡܘܕ̈ܐ ܩܝܡܝܢ ܥܠ ܦܪܘܣܛܕܘܗܝ. ܚܕ ܡܟܐ ܘܚܕ ܡܟܐ

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܐ *

* ܘܐܥܠܢܝ ܠܗܝܟܠܐ. ܘܡܫܚܗ ܠܦܪܘܣܛܕܐ. ܫܬ ܐܡܝܢ ܦܬܝܗ ܡܟܐ. ܘܫܬ ܐܡܝܢ 1
ܦܬܝܗ ܡܟܐ. * ܘܦܬܝܗ ܕܡܫܟܢܐ ܘܦܬܝܗ ܕܬܪܥܐ ܥܣܪ ܐܡܝܢ. ܘܟܬܦ̈ܬܗ 2
ܕܬܪܥܐ ܚܡܫ ܐܡܝܢ ܡܟܐ. ܘܚܡܫ ܐܡܝܢ ܡܟܐ. ܘܡܫܚ ܐܘܪܟܗ ܐܪܒܥܝܢ ܐܡܝܢ. ܘܦܬܝܗ
ܥܣܪܝܢ ܐܡܝܢ. * ܘܥܠ ܠܓܘ ܘܡܫܚܗ ܠܦܪܘܣܛܕܐ ܕܬܪܥܐ ܬܪܬܝܢ ܐܡܝܢ. ܘܬܪܥܐ ܫܬ 3
ܐܡܝܢ. ܘܦܬܝܗ ܫܒܥ ܐܡܝܢ. * ܘܡܫܚ ܐܘܪܟܗ ܥܣܪܝܢ ܐܡܝܢ. ܘܦܬܝܗ ܥܣܪܝܢ 4
ܐܡܝܢ. ܠܘܩܒܠ ܗܝܟܠܐ. ܘܐܡܪ ܠܝ ܗܢܘ ܩܘܕܫ ܩܘܕܫܐ. * ܘܡܫܚ ܐܫܬܗ ܕܒܝܬܐ ܫܬ 5
ܐܡܝܢ. ܘܦܬܝܗ ܕܓܢܒܐ ܫܒܥ ܐܡܝܢ ܚܕܪ ܚܕܪ ܒܝܬܐ. * ܘܓܢ̈ܒܐ ܓܢܒܐ ܥܠ ܓܢܒܐ. 6
ܬܠܬܝܢ ܘܬܠܬ ܙܒܢܝܢ. ܘܥܐܠܝܢ ܗܘܘ ܓܢ̈ܒܐ ܒܐܫܬܐ ܕܒܝܬܐ ܚܕܪ ܚܕܪ. ܕܢܗܘܘܢ ܐܚܝܕܝܢ
ܘܦܪܝܫܝܢ ܡܢ ܐܫܬܐ. * ܘܡܬܩܦܝܢ ܠܥܠ. ܓܢ̈ܒܐ ܕܡܚܕܪܝܢ ܠܒܝܬܐ ܡܢ ܠܥܠ. ܠܒܝܬܐ. 7
ܕܢܪܘܚ ܒܝܬܐ ܡܢ ܠܥܠ. ܘܡܢ ܬܚܬ ܢܣܩܘܢ ܠܡܨܥܝܬܐ. ܘܡܢ ܡܨܥܝܬܐ
ܠܥܠܝܬܐ. * ܘܚܙܝܬ ܪܘܡܗ ܕܒܝܬܐ ܚܕܪ ܚܕܪ. ܘܦܪܝܫܝܢ ܓܢ̈ܒܐ ܚܕ ܡܢ ܚܕ. ܒܩܢܝܐ 8
ܡܠܝܐ ܫܬ ܐܡܝܢ. * ܘܦܬܝܗ ܕܐܫܬܐ ܕܓܢܒܐ ܕܠܒܪ ܚܡܫ ܐܡܝܢ. ܘܡܢ ܠܓܘ 9
ܚܡܫ ܐܡܝܢ. * ܘܒܝܬ ܐܟܣܕܪ̈ܐ ܦܬܝܐ ܥܣܪܝܢ ܐܡܝܢ ܚܕܪ ܚܕܪ ܠܒܝܬܐ. * ܘܬܪܥܐ 10 11
ܕܓܢܒܐ ܕܫܒܝܩ. ܚܕ ܠܬܝܡܢܐ. ܘܚܕ ܠܓܪܒܝܐ. ܘܦܬܝܗ ܕܬܪܥܐ ܕܫܒܝܩ. ܚܡܫ
ܐܡܝܢ. * ܘܒܢܝܢܐ ܕܩܐܡ ܠܘܩܒܠ ܕܪܬܐ ܕܒܬܪܥܐ ܡܥܪܒܝܐ. ܦܬܝܗ ܫܒܥܝܢ ܐܡܝܢ. ܘܐܫܬܗ 12
ܕܒܢܝܢܐ ܚܡܫ ܐܡܝܢ ܦܬܝܗ ܚܕܪ ܚܕܪ. ܘܐܘܪܟܗ ܬܫܥܝܢ ܐܡܝܢ. * ܘܡܫܚܗ ܠܒܝܬܐ 13
ܡܐܐ ܐܡܝܢ ܐܘܪܟܗ. ܘܕܪܬܐ ܕܒܢܝܢܐ ܕܐܫ̈ܝܬܐ ܐܘܪܟܐ ܡܐܐ ܐܡܝܢ.

Longitudo liminis erat viginti cubitorum, latitudo verò undecim cubitorum: gradibus aſcendebatur ad illud, & columnæ ſtabant ad paraſtades ejus, una hinc, inde altera. 49

CAP. XLI.

DEinde introduxit me in templum, menſuſque eſt paraſtadem, ſex cubitorum latitudinem ejus hinc, & ſex cubitorum latitudinem ejus inde. 1 Latitudo tabernaculi, & latitudo januæ erat decem cubitorum; latera verò januæ quinque cubitorum hinc, & quinque cubitorum inde: & menſus eſt longitudinem ejˀ quadraginta cubitorum, latitudinem verò viginti cubitorum. 2 Et ingreſſus intrinſecùs menſus eſt paraſtadem januæ duorum cubitorum, januam verò ſex cubitorum, & latitudinem ejus ſeptem cubitorum. 3 Tum menſus eſt longitudinē ejus viginti cubitorum, & latitudinem ejus viginti cubitorum è regione templi: dixitque mihi, Hoc eſt Sanctum Sanctorum. 4 Item menſus eſt parietem domûs ſex cubitorum, & latitudinem coſtæ ſeptem cubitorum quaquaverſùs circa domum. 5 Et quidem coſtæ, erant coſta ſuper coſtam triginta tribus vicibus, & ingrediebantur hæ coſtæ in parietem domûs circunquaque; ita ut firmæ quidem eſſent, ſed ſeparatæ à pariete. 6 Cohærebant autem ſupernè hæ coſtæ, ita ut domum ſupernè circuncingerent; quatenus amplior eſſet domus ſupernè, & ex imo aſcendi poſſet ad mediana, & ex medianis ad ſuprema. 7 Similiter vidi altitudinem domûs circunquaque: & ſejunctæ erant coſtæ ab invicem arundine integrâ, ſex cubitis. 8 Latitudo parietis *cujuſlibet* coſtæ extrinſecùs quinq; erat cubitorũ, & intrinſecùs quinque cubitorũ. 9 Inter exedras *intercedebat* latitudo viginti cubitorum circa domũ. 10 Oſtium coſtæ derelictum, *duplex erat*; unum verſùs Meridiem, alterum verſùs Aquilonem: & latitudo oſtii derelicti erat quinq; cubitorũ. 11 Ædificii autem quod reſpondebat areæ quæ erat in porta Occidentali, latitudo erat ſeptuaginta cubitorũ: & parietis ædificii quinque cubitorũ latitudo circunquaque, longitudo verò nonaginta cubitorum. 12 Deinde menſus eſt domum longitudine centum cubitorum, et areā ædificii parietũ longitudine centũ cubitorũ, 13

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وطول الرواق عشرون ذراعا * وعرضه اثني عشر ذراعا * وصعد اليه على عشر درج * 49
وعامودان كانا على الرواق واحد من هاهنا * وواحد من هاهنا *

* الفصل الحادي والاربعون * * الاصحاح الرابع والعشرون *

* وادخلني الى الهيكل * وقاس الرواق * ستة اذرع عرضه من ههنا * وستة اذرع سعة الرواق 1
من هاهنا * وسعة الباب عشر اذرع * واكتاف الباب خمسة اذرع من هاهنا * وخمسة اذرع 2
من هاهنا * وقاس طوله اربعين ذراعا * وعرضه عشرين ذراعا * ودخل الى الدار الداخلة * 3
وقاس رواق الجارية ذراعين * والجارية ستة اذرع * واكتاف الجارية سبعة اذرع من ههنا *
وسبعة اذرع من ههنا * وقاس طول الجاريات اربعين ذراعا * وسعتهن عشرين ذراعا على 4
واجهة الهيكل * وقال لي * هذا قدس القديسين * وقاس حايط البيت ستة اذرع * وعرض 5
الجانب اربعة اذرع من حوله * والجوانب جانب على جانب * ثلاثين وثلثة في اثنين * والناحية 6
في حايط البيت في جوانب البيت محيطة * لتكون للاخذين ان ينظروا كيلا يلمسوا
حيطان البيت بالكلية * وسعة علو الاجناب كالزيادة من البيت الى العلو محيط البيت * 7
كيلا يتسع من فوق * ومن الاسفل يصعدون الى العلالي * ومن الاوساط الى ثلاث طباق *
8 9 * وارتفاع البيت محيط مسافة الجوانب مساو للقصبة مسافة الاذرع * وعرض حايط الجانب من خارج
خمسة اذرع * والبواقي بين جوانب البيت وبين المقاصير * والاتساع عشرون ذراعا يدور بالبيت 10
من حوله * وكوا المقاصير على فضلة الباب الواحد الذي نحو الجربياء * والباب الواحد نحو 11
التيمن * وسعة نور الفضلة خمسة اذرع عرضا من حوله * والفاصل الى واجهة الفضلة نحو البحر 12
سبعون ذراعا * عرض الحايط الفاصل خمسة اذرع سعته من حوله * وطوله تسعون ذراعا *
* وقاس قبالة البيت ماية ذراع طولا * والبواقي والفواصل والحيطان طولهم ماية ذراع * 13

Longitudo verò porticûs, viginti cubitorum: et latitudo ejus duodecim cubitorum: aſcenditq; ad eam ſuper decem gradus: & duæ erant columnæ ſuper porticum, una hinc, indè altera. 49

CAP. XLI.

Textus vigeſimus quartus.

PReterea introduxit me in templum; et menſus eſt porticum, ſex cubitorum latitudinem ejus hinc, & ſex cubitorum amplitudinem porticûs indé. 1 *Amplitudo januæ decem erat cubitorum, humeri verò januæ quinq; cubitorum hinc, & quinque cubitorum indé: menſúſque eſt longitudinem ejus quadraginta cubitorum, latitudinem verò viginti cubitorum.* 2 *Deindè ingreſſus atrium interius, menſus eſt porticum forium duorum cubitorum: porrò fores ſex erant cubitorum: humeri autem forium ſeptem cubitorum hinc, et ſeptem cubitorum indé.* 3 *Et menſus eſt longitudinem forium, quadraginta cubitorum; et latitudinem earum viginti cubitorum à fronte templi: et dixit mihi; Hoc eſt Sanctum ſanctorum.* 4 *Tum menſus eſt parietem domûs, ſex cubitorum, et latitudinem laterum quatuor cubitorum circunquaque.* 5 *Latera verò erant latus ſuper latus, bis triginta tria: et interſtitium in pariete domûs in lateribus domûs circunquaque, ut eſſet videre cupientibus, ne omninò tangerent parietes domûs.* 6 *Et latitudo ſublimitatis laterum, ut additamentum, ex domo ad ſummum cingebat domum, ne latiòr eſſet ſuperiùs: et ex imo aſcendebant ad cœnacula, et è medianis ad tertiam contignationem.* 7 *Altitudo domûs per circuitum ſpatii laterum, æqualis erat calamo, ſpatio* ſex *cubitorum:* 8 *Latitudo verò parietis* cujuſque *lateris forinſecùs, quinq; cubitorum:* 9 *Reliqua inter latera domûs et inter cantorum pulpita: et amplitudo viginti cubitorum circa domum erat undequaq;.* 10 *Feneſtræ pulpitorum erant ſupra ſuperfluitatem portæ unius quæ erat verſùs Aquilonem, et portæ alterius quæ verſùs Auſtrum: amplitudo autem luminis illius ſuperfluitatis, quinque cubitorum erat in latitudinem circunquaque.* 11 *Separatio è regione ſuperfluitatis verſùs mare, ſeptuaginta cubitorum: latitudo parietis ſeparantis, quinque cubitorum amplitudinem con*tinebat *undequaque; longitudo verò nonaginta cubitorũ.* 12 *Deindè menſus eſt à fronte domûs cubitos centum in longitudinem: et reliquorum, et ſeparationum, atque parietum longitudo fuit centum cubitorum;* 13

T

יחזקאל : מב

centum orientem ad *sepositi tabulati* & , domus *facierum* latitudo Et
14 וְרֹחַב פְּנֵי הַבַּיִת וְהַגִּזְרָה לַקָּדִים מֵאָה
sepositi tabulati facies ad ædificii longitudinem est mensus Et .cubitorum
15 אַמָּה׃ וּמָדַד אֹרֶךְ־הַבִּנְיָן אֶל־פְּנֵי הַגִּזְרָה
;cubitis centum inde & ,hinc ejus *angulos &* ,*ejus posteriora super* quod
אֲשֶׁר עַל־אַחֲרֶיהָ וְאַתּוּקֶיהָא מִפּוֹ וּמִפּוֹ מֵאָה אַמָּה
fenestras & , Limina .atrii vestibula & , interius templum &
16 וְהַהֵיכָל הַפְּנִימִי וְאֻלַמֵּי הֶחָצֵר׃ הַסִּפִּים וְהַחַלּוֹנִים
opertum limen contra ,*ipsis tribus in* circa *angulos &* , *arctas*
הָאֲטֻמוֹת וְהָאַתִּיקִים סָבִיב לִשְׁלָשְׁתָּם נֶגֶד הַסַּף שְׂחִיף
fenestræ & : fenestras ad usque terra Et .circa circum *ligno*
עֵץ סָבִיב ׀ סָבִיב וְהָאָרֶץ עַד־הַחַלֹּנוֹת וְהַחַלֹּנוֹת
,interiorem domum ad usque & , ostium *desuper Super* .opertæ
17 מְכֻסּוֹת׃ עַל־מֵעַל הַפֶּתַח וְעַד־הַבַּיִת הַפְּנִימִי
,interiori in ,circa circum pariete omni in & , forinsecus &
וְלַחוּץ וְאֶל־כָּל־הַקִּיר סָבִיב ׀ סָבִיב בַּפְּנִימִי
palma & *: palmis* & ,Cherubim factus Et .mensuras exteriori in &
18 וּבַחִיצוֹן מִדּוֹת׃ וְעָשׂוּי כְּרוּבִים וְתִמֹרִים וְתִמֹרָה
hominis facies Et .Cherub facies duæque ,Cherub ,Cherub inter
19 בֵּין־כְּרוּב לִכְרוּב וּשְׁנַיִם פָּנִים לַכְּרוּב׃ וּפְנֵי אָדָם
factum : inde palmam *ad* catuli facies & , hinc palmam *ad*
אֶל־הַתִּמֹרָה מִפּוֹ וּפְנֵי־כְפִיר אֶל־הַתִּמֹרָה מִפּוֹ עָשׂוּי
desuper ad usque terra A .circa circum *domum omnem ad*
20 אֶל־כָּל־הַבַּיִת סָבִיב ׀ סָבִיב׃ מֵהָאָרֶץ עַד־מֵעַל
.templi parietem & : factæ palmæ & , Cherubim ostium
הַפֶּתַח הַכְּרוּבִים וְהַתִּמֹרִים עֲשׂוּיִם וְקִיר הַהֵיכָל׃
.aspectus sicut *aspectus* sanctitatis *facies* Et : *quadratus* postis Templi
21 הַהֵיכָל מְזוּזַת רְבֻעָה וּפְנֵי הַקֹּדֶשׁ הַמַּרְאֶה כַּמַּרְאֶה׃
duorum ejus longitudo & ,altitudo cubitorum trium lignei Altaris.
22 הַמִּזְבֵּחַ עֵץ שָׁלוֹשׁ אַמּוֹת גָּבֹהַּ וְאָרְכּוֹ ׀ שְׁתַּיִם
: ligni ejus parietes & ,ejus longitudo & ,ei ejus anguli & , cubitorum
אַמּוֹת וּמִקְצֹעוֹתָיו לוֹ וְאָרְכּוֹ וְקִירֹתָיו עֵץ
duæ Et .*Domini facies ad* quæ , mensa Hæc : me ad est locutus &
23 וַיְדַבֵּר אֵלַי זֶה הַשֻּׁלְחָן אֲשֶׁר לִפְנֵי יְהוָה׃ וּשְׁתַּיִם
: foribus fores duæ Et .sanctitati & , templo *fores*
24 דְּלָתוֹת לַהֵיכָל וְלַקֹּדֶשׁ׃ וּשְׁתַּיִם דְּלָתוֹת לַדְּלָתוֹת
valvæ duæ & , uni *valvæ duæ valvæ plicatiles duæ*
שְׁתַּיִם מוּסַבּוֹת דְּלָתוֹת שְׁתַּיִם לְדֶלֶת אֶחָת וּשְׁתֵּי דְלָתוֹת
, Cherubim templi *foribus in eas ad facta* Et .alteri
25 לְאַחֶרֶת׃ וַעֲשׂוּיָה אֲלֵיהֶן אֶל־דַּלְתוֹת הַהֵיכָל כְּרוּבִים
ad ligni trabs & : parietibus factæ quemadmodum , *palmæ &*
וְתִמֹרִים כַּאֲשֶׁר עֲשׂוּיִם לַקִּירוֹת וְעָב עֵץ אֶל־
,hinc palmæ & , *arctæ* fenestræ Et .forinsecus *vestibuli facies*
26 פְּנֵי הָאוּלָם מֵהַחוּץ׃ וְחַלּוֹנִים אֲטֻמוֹת וְתִמֹרִים מִפּוֹ
.*trabes* & , domus *costæ* & : vestibuli *humeros ad* inde &
וּמִפּוֹ אֶל־כִּתְפוֹת הָאוּלָם וְצַלְעוֹת הַבַּיִת וְהָעֻבִּים׃

CAP. XLII. מב

: aquilonis viam , viam exterius atrium ad me eduxit Et
1 וַיּוֹצִאֵנִי אֶל־הֶחָצֵר הַחִיצוֹנָה הַדֶּרֶךְ דֶּרֶךְ הַצָּפוֹן
,*sepositum tabulatum* contra quod ,cubiculum ad me fecit ingredi &
וַיְבִאֵנִי אֶל־הַלִּשְׁכָּה אֲשֶׁר נֶגֶד הַגִּזְרָה
longitudinis facies Ad .aquilonem ad ædificium contra quod &
2 וַאֲשֶׁר־נֶגֶד הַבִּנְיָן אֶל־הַצָּפוֹן׃ אֶל־פְּנֵי אֹרֶךְ
quinquaginta latitudinis & : aquilonis ostium centum cubitorum
אַמּוֹת הַמֵּאָה פֶּתַח הַצָּפוֹן וְהָרֹחַב חֲמִשִּׁים
contra & , interiori atrio qui viginti *Coram* .cubitorum
3 אַמּוֹת׃ נֶגֶד הָעֶשְׂרִים אֲשֶׁר לֶחָצֵר הַפְּנִימִי וְנֶגֶד
anguli facies ad angulus : exteriori atrio quod pavimentum
רִצְפָה אֲשֶׁר לֶחָצֵר הַחִיצוֹנָה אַתִּיק אֶל־פְּנֵי־אַתִּיק
.tertiis in
בַּשְּׁלִשִׁים׃

Versio VULG. LAT.

14 Latitudo autem ante faciem domûs, & ej⁹ ꝗ erat separatū contra Orientē, centum cubitorū.
15 Et mens⁹ est longitudinē ædificii contra faciem ej⁹, ꝗ erat separatum ad dorsum: ethecas ex utraque parte centum cubitorū: & templum interius, & vestibula
16 atrii. Limina, & fenestras obliquas, & ethecas in circuitu per tres partes, contra uniuscujusque limen, stratúmque ligno per gyrum in circuitu: terra autē usq; ad fenestras, & fenestræ clausæ
17 super ostia. Et usque ad domum interiorem, & forinsecùs per omnem parietem in circuitu intrinsecùs, & forinsecùs, ad men-
18 suram. Et fabrefacta Cherubim & palmæ: & palma inter Cherub & Cherub, duásque facies
19 habebāt Cherub. Faciem hominis juxta palmam ex hac parte, & faciem leonis juxta palmam ex alia parte, expressam per omnem
20 domū in circuitu. De terra usq; ad superiora portæ, Cherubim et palmæ cælatæ erant in pariete
21 templi. Limen quadrangulum, & facies Sanctuarii, aspect⁹ contra
22 aspectū. Altaris lignei triū cubitorū altitudo: & longitudo ej⁹ duorū cubitorū: & anguli ejus, & longitudo ej⁹, & parietes ejus lignei. Et locut⁹ est ad me; Hæc
23 est mensa corā Dño. Et duo ostia erant in templo, et in Sanctuario.
24 Et in duobus ostiis ex utraque parte bina erant ostiola, quæ in se invicē plicabantur: bina enim ostia erant ex utraque parte osti-
25 orum. Et cælata erant in ipsis ostiis templi Cherubim, et sculpturæ palmarum, sicut in parietibus quoque expressæ erant: quam ob rem et grossiora erant ligna in vestibuli fronte forinse-
26 cùs. Super quæ fenestræ obliquæ, et similitudo palmarū hinc atq; indè in humerulis vestibuli, secundùm latera domûs, latitudinémque parietum.

CAP. XLII.

1 ET eduxit me in atrium exterius per viā ducentem ad Aquilonem, et introduxit me in gazophylacium, ꝗ erat contra separatū ædificiū, et contra ædem
2 vergentem ad Aquilonē. In facie longitudinis, centū cubitos ostii Aquilonis: et latitudinis quin-
3 quaginta cubitos, Contra viginti cubitos atrii interioris, et contra pavimentum stratum lapide atrii exterioris, ubi erat porticus juncta porticui triplici.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

14 Καὶ τὸ εὖρος κατὰ πρόσωπον τοῦ οἴκου, καὶ τὰ
15 ἀπόλοιπα κατέναντι πηχῶν ἑκατόν. Καὶ διεμέτρησε (η) μῆκος τοῦ διορίζοντος κατὰ πρόσωπον τοῦ ἀπολοίπου τοῦ κατόπισθεν τοῦ οἴκου ἐκείνου, καὶ τὰ ἀπόλοιπα ἔνθεν καὶ ἔνθεν πηχῶν ἑκατὸν τὸ μῆκος· καὶ ὁ ναὸς, καὶ αἱ γωνίαι, καὶ τὸ αἰλὰμ τὸ ἐξώτερον, πε-
16 φατνωμένα. Καὶ αἱ θυρίδες δικτυωταὶ, ἀποφαύσεις κύκλῳ τοῖς τρισὶν, ὥστε διακύπτειν. καὶ ὁ οἶκος καὶ τὰ πλησίον ἐξυλωμένα κύκλῳ, καὶ τὸ ἔδαφος, καὶ ἐκ τοῦ ἐδάφους ἕως τῶν θυρίδων· καὶ αἱ θυρίδες ἀναπτυσσό-
17 μεναι τρισσῶς εἰς τὸ διακύπτειν. Καὶ ἕως πλησίον τῆς ἐσωτέρας καὶ ἕως τῆς ἐξωτέρας, καὶ ἐφ᾽ ὅλον τὸν (θ) τοῖχον κύκλῳ ἐν τῷ
18 ἔσωθεν καὶ ἐν τῷ ἔξωθεν (ι); Γεγλυμμένα χερουβὶμ, καὶ φοίνικες ἀναμέσον χερουβ καὶ ἀναμέσον χερούβ. δύο πρόσωπα τῷ χε-
19 ρούβ· Πρόσωπον ἀνθρώπου πρὸς τὸν φοίνικα ἔνθεν καὶ ἔνθεν, καὶ πρόσωπον λέοντος πρὸς τὸν φοίνικα ἔνθεν καὶ ἔνθεν· διαγε-
20 γλυμμένος (κ) ὁ οἶκος κυκλόθεν. Ἐκ τοῦ ἐδάφους ἕως τοῦ φατνώματος, τὰ (λ) χερουβὶμ καὶ οἱ φοίνικες διαγεγλυμμένοι. Καὶ
21 τὸ ἅγιον καὶ ὁ ναὸς (μ) ἀναπτυσσόμενος τετράγωνα, κατὰ πρόσωπον τῶν ἁγίων ὅρασις
22 ὡς ὄψις Θυσιαστηρίου ξυλίνου, (ν) πηχῶν τριῶν τὸ ὕψος αὐτοῦ, καὶ τὸ μῆκος (ξ) πηχῶν δύο, καὶ τὸ εὖρος (ο) πηχῶν δύο· καὶ κέρατα εἶχε, καὶ ἡ βάσις αὐτοῦ καὶ οἱ τοῖχοι αὐτοῦ ξύλινοι. καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Αὕτη ἡ τρά-
23 πεζα (π), ἡ πρὸ προσώπου κυρίου. Καὶ δύο θυρώματα τῷ ναῷ, (ρ) καὶ δύο θυρώματα τῷ
24 ἁγίῳ, Τοῖς δυσὶ θυρώμασι τοῖς στροφωτοῖς· δύο θυρώματα τῷ ἑνὶ, καὶ δύο θυρώ-
25 ματα τῇ (σ) θύρᾳ τῇ δευτέρᾳ. Καὶ γλυφὴ ἐπ᾽ αὐτῶν, καὶ ἐπὶ τὰ θυρώματα τοῦ ναοῦ (τ) χερουβὶμ· καὶ φοίνικες κατὰ τὴν γλυφὴν τῶν ἁγίων, καὶ σπουδαῖα ξύλα κατὰ πρόσωπον τοῦ
26 αἰλὰμ ἔξωθεν, Καὶ θυρίδες κρυπταί. καὶ διεμέτρησεν ἔνθεν καὶ ἔνθεν, εἰς τὰ ὀροφώματα τοῦ αἰλὰμ, καὶ τὰ πλευρὰ τοῦ οἴκου (υ) ἐζυγωμένα.

MS.A. (η) τὸν τοῖχον τοῦ (θ) οἶκον κυκλόθεν ἐν τῷ (ι) μέτρα, Καὶ γεγλυμμένα χερουβεὶν, καὶ φοίνικες καὶ φοῖνιξ ἀναμέσον * χερουβεὶμ χερούβ. (κ) ὅλος ὁ οἶκος (λ) χερουβεὶν (μ) ἀναπτυσσόμενα (ν) πήχεων (ξ) πήχεων (ο) πήχεων (π) κατὰ πρόσωπον (ρ) καὶ τῷ ἁγίῳ δύο θυρώματα, Τοῖς δυσὶν θυρώμασιν τοῖς (σ) δευτέρᾳ θύρᾳ. (τ) χερουβεὶν· (υ) ἐξυλωμένα.

Et latitudinem contra faciem 14
templi, & reliqua è contra cubitorum centum. Et mensus est 15
longitudinem separantis contra faciem (i) reliqui, quæ erant post tergum domûs illius, & reliqua hinc & indè, cubitorum centum longitudinem: Et (k) templum, & anguli, & Ælam exterius strata ligno: Et fenestræ in modum 16
retis factæ, (l) illuminationes in circuitu tribus, ad prospiciendum. Et domus, & ea quæ proxima erant, strata ligno per circuitum, & pavimentum, & de pavimento usque ad fenestras: & fenestræ aperiebantur tripliciter, ut prospiceretur per eas. Et (m) us- 17
que propè interiorem, & usq; ad exteriorē, & per omnē parietem in circuitu intrinsec⁹, & (n) extrinsecùs, Cælata Cherubim, & pal- 18
mæ inter Cherub, & Cherub. Duæ facies Cherub: Facies hominis ad 19
palmā hinc (o) & hinc, & facies leonis ad palmam indè, & indè: cælata dom⁹ in circuitu A pavi- 20
mento usq; ad (p) laqueare, Cherubim, & palmæ cælatæ. Et San- 21
ctuariū & templū aperiebantur per quatuor angulos contra faciem Sanctorum: visio, quasi speci-
es Altaris lignei: trium cubi- 22
torum altitudo ejus, & longitudo cubitorum duorum, & latitudo cubitorum duorum: & cornua habebat: & basis ejus, & parietes ejus lignei. Et dixit ad me; Hæc est mensa, quæ ante faciem Domini. Et duo ostia tem- 23
plo, & duo ostia Sanctuario, Du- 24
obus ostiis vertibilibus: duo ostia uni, & duo ostia portæ secundæ: Et cælatura super eas, & super 25
ostia templi Cherubim, & palmæ juxta sculpturam Sanctorum, & (q) necessaria ligna (r) ad faciem Ælam forinsecùs, Et fene- 26
stræ absconditæ. Et mensus est hinc & indè, in laquearia Ælam, & latera domûs (s) æqui ponderis.

ΚΕΦ. λα᾽.

1 ΚΑὶ εἰσήγαγέ με εἰς τὴν αὐλὴν τὴν (˜) ἐσωτέραν κατὰ ἀνατολὰς, κατέναντι τῆς πύλης τῆς πρὸς Βοῤῥᾶν, καὶ εἰσήγαγέ με· καὶ ἰδοὺ ἐξέδραι (α) πέντε, ἐχόμεναι τοῦ ἀπολοίπου, καὶ ἐχόμεναι τοῦ διορίζοντος πρὸς Βοῤῥᾶν. (β)
2 Ἐπὶ πήχεις ἑκατὸν μῆκος πρὸς Βοῤῥᾶν, καὶ
3 τὸ πλάτος πεντήκοντα (γ), Διαγεγραμμέναι ὃν τρόπον αἱ πύλαι τῆς αὐλῆς τῆς ἐσωτέρας, καὶ ὃν τρόπον τὰ περίστυλα τῆς αὐλῆς τῆς ἐξωτέρας (˝) ἐστοιχισμέναι, ἀντιπρόσωποι στοαὶ τρισσαί.

MS. A. (˜) ἐξωτέραν (α) δεκαπέντε, (β) Κατὰ πρόσωπον ἐπὶ (γ) πήχεων, (˝) διστιχισμέναι,

CAP. XLII.

ET (a) introduxit me in atriū 1
(b) interius ad Orientem contra portam, quæ ad Aquilonem: & introduxit me: & ecce exedræ quinq; juxta reliquū ædificium, & juxta separans ad (c) Aquilonem, Ad cubitos centum longi- 2
tudo ad Aquilonem, & latitudo quinquaginta: Descriptæ, sicut 3
portæ atrii interiorū, & sicut columnæ atrii exterioris (d) per ordinem contra faciem porticûs ternæ:

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 וּפוּתְיָא דִקְדָם בֵּיתָא וּבְצוּרְתָא לְמַדִנְחָא מְאָה אַמִּין׃ וּמְשַׁח אוּרְכָּא דְבִנְיָנָא דִקְדָם 15
בְּצוּרְתָא דִלַאֲחוֹרָהָא וְזִוְיָתָהָא מִכָּא וּמִכָּא מְאָה אַמִּין וְהֵיכְלָא גַוָּאָה וְאוּלַמֵּי דַרְתָּא׃
16 סִפַּיָּא וְכַוִּין סְתִימָן וְעַתִּיקַיָּא סְחוֹר סְחוֹר לִתְלָתֵיהוֹן לָקֳבֵל סִפָּא דְחָפֵי נְסָרִין דְאַרְזָא
17 סְחוֹר סְחוֹר וְאַרְעָא עַד כַּוַּיָּא וְכַוִּין סְתִימָן׃ עַד לְעֵלָּא מִן תַּרְעָא וּמִן בֵּיתָא גַוָּאָה וּלְבָרָא
18 וְעַל כָּל כּוֹתְלָא סְחוֹר סְחוֹר מִלְגָיו וּמִלְבָרָא מִשְׁחָן׃ וּגְלִיף כְּרוּבִין וְכוֹתְרָן וְכוֹתַרְתָּא
19 בֵּין כְּרוּבָא לִכְרוּבָא וּתְרֵין אַפִּין לִכְרוּבָא׃ וְאַפֵּי אֱנָשָׁא עֲבִיד לְכוֹתַרְתָּא מִכָּא וְאַפֵּי אַרְיָא
20 עֲבִיד לְכוֹתַרְתָּא מִכָּא גְלִיף עַל כָּל בֵּיתָא סְחוֹר סְחוֹר׃ מֵאַרְעָא עַד לְעֵלָּא מִתַּרְעָא
21 כְּרוּבִין וְכוֹתְרָן גְלִיפָן וְכֵן לְכָתְלָא דְהֵיכְלָא׃ הֵיכְלָא דְסִפּוֹהִי מְרַבְּעִין וְאַפֵּי בֵית כַּפּוֹרֵי
22 חֶזְוֵיהּ כְּחֵזוּ יְקָרֵיהּ׃ לָקֳבֵל מַדְבְּחָא פָּתוֹרָא דְאָעָא תְּלָת אַמִּין רוּמֵיהּ וְאוּרְכֵּיהּ תַּרְתֵּין
23 אַמִּין וְזִוְיָן לֵיהּ וְאוּרְכֵּיהּ וְכוּתְלוֹהִי דְאָעָא וּמַלֵּל עִמִּי דֵּין פָּתוֹרָא דִקְדָם יְיָ׃ וְתַרְתֵּין
24 דָשִׁין לְהֵיכְלָא וּלְבֵית כַּפּוֹרֵי׃ וְתַרְתֵּין דָשִׁין אִמְּהָן לְדָשַׁיָּא תַּרְתֵּין מַקְפָן דָשִׁין תַּרְתֵּין
25 לְדָשָׁא חַד וְתַרְתֵּין דָשִׁין לְאוּחֲרַנְתָּא׃ וּגְלִיף עֲלֵיהוֹן עַל דָשֵׁי הֵיכְלָא כְּרוּבִין וְכוֹתְרָן
26 כְּמָא דִגְלִיף עַל כּוֹתְלַיָּא וּסְקֻפְתָּא דְאָעָא עַל אַפֵּי אוּלַמָּא מִלְבָרָא׃ וְכַוִּין סְתִימָן וְכוֹתַרְתָּא
מִכָּא וּמִכָּא עַל כִּתְפֵי אוּלַמָּא וּמְחִיצַת בֵּיתָא וּסְקֻפְתָּא׃

מב

1 וְאַפְּקַנִי לְדַרְתָּא בָרַיְתָא בְּאוֹרַח תַּרְעָא דִפְתִיחַ לְאוֹרַח צִפּוּנָא וְאַעֲלַנִי לְלִשְׁכְּתָא דִקְדָם
2 בְּצוּרְתָא וְדִקְדָם בִּנְיָנָא לְצִפּוּנָא׃ לָקֳבֵל אוּרְכָּא דְאַמִּין מְאָה תַּרְעָא חַד דִפְתִיחַ לְצִפּוּנָא
3 וּפוּתְיָא חַמְשִׁין אַמִּין׃ לָקֳבֵיל עַסְרִין דִלְדַרְתָּא גַוַּיְתָא וְקָבֵיל דִלְצִפּוּנָא רִצְפְּתָא
דִפְתִיחָא לְדַרְתָּא בָרַיְתָא זָוֵי לָקֳבֵיל זָוֵי מְתַלְתִין׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et latitudo quæ erat ante domum & conseptū ad Orientem, centū cubitorū 14
erat. Et mensus est longitudinem ædificii quod erat ante conseptum ad po- 15
steriora ejus & angulos ej⁹ hinc, & indè, centum cubitis: & templum interi⁹
& vestibula atrii, Et limina, & fenestras obturatas & appendices in cir- 16
cuitu ternas exadverso liminis quod opertū erat tabulis cedrinis in circuitu,
idque à solo usque ad fenestras, fenestræ autē obturatæ erant. Usque supra 17
portam & à domo interiori & forinsec⁹, & super omnes parietes per circui-
tum intus & foris juxta mensuram. Et sculpsit Cherubim & capitella, & ca- 18
pitellum inter Cherub & Cherub: & duas facies habebat Cherub. Facies 19
hominis erat facta ex una parte capitelli, & facies leonis facta ex altera
parte capitelli, sculptæ super totam domum per circuitum. A terra autem ús- 20
que super portam, Cherubim & capitella cælata erant, & similiter in pariete
templi. Templi autem limina quadrata, & facies domus propitiatorii, & 21
aspectus ej⁹ sicut aspectus gloriæ *eius*. Mensa autem lignea erat ante altare, 22
cuj⁹ altitudo erat trium cubitorum, & longitudo ejus duorum cubitorum: &
anguli erant ei, & longitudo, & parietes ej⁹ lignei erant: & locutus est ad me:
Hæc est mensa quæ est coram Dño. Et duo ostia erant in templo & in domo 23
propitiatorii: Et geminæ fores erant velut matres his ostiis: bina erant osti- 24
ola versatilia, duo ostiola [*inquam*] in ostio uno, & duo ostiola in altero. Et 25
cælata erant in ipsis ostiis templi Cherubim & capitella sicut cælata erant in
parietibus: & trabs lignea super faciem vestibuli extrinsecus. Et fenestræ 26
obturatæ, & capitella hinc et indè in humeris vestibuli, et tabulata domus
et superliminaria.

CAP. XLII.

ET eduxit me in atrium exterius per viam portæ quæ apertā est ad viam 1
Aquilonis: et introduxit me in gazophylacium quod erat ante conseptum
et ante ædificium vergens ad Aquilonem. E regione longitudinis centum 2
cubitorum erat porta una quæ patebat ad Aquilonem, et latitudinis quin-
quaginta cubitorum. E regione viginti cubitorum atrii interioris, et è regi- 3
one *Aquilonis* pavimenti illius quod apertum erat ad atrium exterius, anguli
contra angulos triplices.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

14 15 * ܘܦܬܝܐ ܠܘܩܒܠ ܒܝܬܐ. ܘܕܪܬܐ ܡܕܢܚܝܬܐ. ܡܐܐ ܐܡܝܢ. * ܘܡܫܚ ܐܘܪܟܗ
ܕܒܢܝܢܐ ܕܩܕܡ ܕܪܬܐ ܘܦܣܛܪܘܗ ܘܐܬܩܘܗܝ ܡܟܐ. ܘܡܟܐ. ܡܐܐ ܐܡܝܢ. * ܘܗܝܟܠܐ 16
ܓܘܝܐ. ܘܦܪܘܣܛܕܐ ܕܬܪܥܐ ܕܕܪܬܐ .. ܘܦܬܘܪܐ ܘܟܘܐ. ܘܐܬܩܐ ܡܢ ܚܕܪܝܗ. ܘܬܠܬܝܗܘܢ
ܬܪܥܐ ܦܬܘܪ ܩܝܣܐ. ܡܢ ܚܕܪܝܗ. ܘܐܘܪܟܗ ܥܕܡܐ ܠܟܘܐ. * ܘܟܘܐ ܡܟܣܝܢ ܠܥܠ ܡܢ ܬܪܥܐ 17
ܕܒܝܬܐ ܓܘܝܐ. ܘܠܒܪ: ܠܟܠܗܘܢ ܟܘܬܠܐ ܡܢ ܚܕܪ .. ܘܡܫܚ ܡܢ ܠܒܪ. ܘܡܢ ܠܓܘ.
* ܘܥܒܝܕ ܟܪܘܒܐ ܘܕܩܠܐ. ܘܕܩܠܐ ܒܝܬ ܟܪܘܒܐ ܠܟܪܘܒܐ. ܘܬܪܬܝܢ ܐܦܝܢ ܠܟܪܘܒܐ. * ܘܐܦܐ 18 19
ܕܒܪܢܫܐ ܥܠ ܕܩܠܐ ܡܟܐ ܘܡܟܐ .. ܗܟܢܐ ܥܒܝܕ ܟܠܗ ܒܝܬܐ ܡܢ ܚܕܪ. * ܡܢ ܐܪܥܐ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠ 20
ܡܢ ܬܪܥܐ .. ܟܪܘܒܐ ܘܕܩܠܐ. ܡܥܒܕܐ ܗܘܐ. * ܘܟܘܬܠܐ ܕܗܝܟܠܐ ܡܪܒܥܐ. ܘܐܦܝ ܩܘܕܫܐ 21
ܓܠܝܐ .. ܐܝܟ ܚܙܘܗ ܕܡܕܒܚܐ ܕܩܝܣܐ. * ܘܪܘܡܗ ܬܠܬ ܐܡܝܢ ܘܐܘܪܟܗ. ܬܪܬܝܢ ܐܡܝܢ. 22
ܘܩܪܢܬܐ ܐܝܬ ܠܗ. ܘܐܘܪܟܗ ܘܐܬܩܘܗܝ. ܕܩܝܣܐ. ܘܐܡܪ ܠܝ. ܗܢܘ ܦܬܘܪܐ ܕܩܕܡ ܡܪܝܐ.
* * ܘܬܪܬܝܢ ܬܪܥܝܢ ܠܡܬܦܢܝܢܬܐ. ܬܪܬܝܢ ܠܡܬܦܢܝܢܬܐ ܚܕ .. ܘܬܪܬܝܢ ܠܡܬܦܢܝܢܬܐ ܐܚܪܢܐ. 23 24
* ܘܥܒܝܕ ܥܠܝܗܘܢ ܥܠ ܬܪܥܐ ܕܗܝܟܠܐ .. ܟܪܘܒܐ ܘܕܩܠܐ. ܐܝܟ ܕܥܒܝܕܝܢ ܒܟܘܬܠܐ. 25
* ܘܐܦܘܗܝ ܕܦܪܘܣܛܕܐ. ܡܟܣܝܢ ܩܝܣܐ ܡܢ ܠܒܪ. ܘܟܘܐ. ܥܛܝܦܢ. ܘܕܩܠܐ ܐܝܟ ܡܟܐ 26
ܘܡܟܐ ܥܠ ܣܛܪܘܗܝ ܕܦܪܘܣܛܕܐ. ܘܐܦ ܣܛܪܘܗܝ ܕܒܝܬܐ. ܡܟܣܝܢ ܕܦܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܒ *

* ܘܐܦܩܢܝ ܠܕܪܬܐ ܒܪܝܬܐ ܠܐܘܪܚܐ ܕܓܪܒܝܐ. ܘܐܥܠܢܝ ܠܐܟܣܕܪܐ ܕܠܘܩܒܠ ܕܪܬܐ 1
ܘܠܘܩܒܠ ܒܢܝܢܐ ܓܪܒܝܐ. * ܠܘܩܒܠ ܐܘܪܟܐ ܡܐܐ ܐܡܝܢ ܕܬܪܥܐ ܓܪܒܝܐ. ܘܦܬܝܐ 2
ܚܡܫܝܢ ܐܡܝܢ. * ܠܘܩܒܠ ܬܪܥܐ ܕܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ. ܘܠܘܩܒܠ ܕܪܓܐ ܕܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ .. 3
ܕܒܢܝܢ ܚܕ ܥܠ ܚܕ ܥܠ ܬܠܬܐ ܦܛܪܘܢ.

Latitudine verò pro portione domûs : area 14
autem Orientalis centū erat cubitorū. De- 15
nique menſus eſt longitudinem ædificii quod
erat ante aream, & poſticam ejus partem,
ejuſque balauſtia hinc inde, centum cubitorū:
Templum quoq; interius, paraſtades januarū 16
atrii, podia, feneſtras, & balauſtia circun-
quaque. Cæterùm tres iſtæ portæ tectorium
habebant ligneū circunquaque, cujꝰ longitu-
do ad feneſtras uſq; *pertingebat* : Ipſæq; fe- 17
neſtræ obtectæ erant ſuper oſtium domûs in-
terioris. Foris quoq; parietes omnes circun-
quaq; menſus eſt extrinſecùs & intrinſecús.
Elaboratū autem erat Cherubinis & palmis; 18
nam palma inter duos quoſq; Cherubinos *in-
tercedebat*, binæq; facies erant cuiq; Cherubi-
no, Et facies humana ſuper palmas hinc indé: 19
ita elaborata erat tota domus circunquaque.
A ſolo & ultra portas uſque, Cherubini & 20
palmæ erant fabrefactæ. Paries templi qua- 21
dratꝰ erat: & frons Sanctuarii conſpicua, ſimi-
lis erat formæ altaris lignei, Cujus altitudo 22
trium erat cubitorum, longitudo verò duorū
cubitorum: angulos habebat: & longitudo at-
que balauſtia ejus erant lignea : dixitque
mihi, Hæc eſt menſa quæ eſt coram Domino.
Geminæ erant valvæ ſingulis foribus, binæ 23
foribꝰ unis, & binæ foribus alteris : Atque 24
ſuper his templi foribꝰ fabrefacti erant Che- 25
rubini & palmæ, quemadmodū fabrefacti erát
in parietibꝰ. Frons paraſtadis obtecta erat li- 26
gno extrinſecús : feneſtræ obliquæ: & palmæ
utrinq; ſuper latera paraſtadis: ſimiliter coſtæ
domûs obtectæ erant aſſeribus.

CAP. XLII.

DEinde educens me ad atrium exterius a- 1
quilonem verſùs, introduxit me in exedram
quæ erat ante aream & ante ædificium aqui-
lonare : Ante longitudinem centum cubito- 2
rum portæ Aquilonaris, & latitudinem quin-
quaginta cubitorum : Ante januam atrii in- 3
terioris, & ante gradus atrii interioris, qui
extructi erant alter ſuper alterum tribus con-
tignationibus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

14 15 * وعرضهم على واجهة البيت والبواقي المقابلة ماية ذراع * وقاس حايط الفاصل على واجهة
16 الفصلة ٭ للذين من خلف ذلك البيت ٭ والبواقي من ههنا ومن ههنا ماية ذراع طولا * والهيكل
وزواياه والرواق الخارج ملوحات بالخشب ٭ وكوا مشبكة ٭ مناور تحيط بالثلاثة ليطل منها ٭ والبيت
17 وجوانبه ملوح بالخشب دايرا ٭ والارض ٭ ومن الارض الي الكوا * والكوا مفتحة بتثليث ليطل ٭
والي جانب الداخلة والي الخارجة ٭ وعلي البيت كله من حوله ٭ فيما من داخل وفيما من خارج ٭
18 * مقادير وساروبيمات منقوشة ونخيل ٭ ونخلة وسط الساروبيمات ٭ ساروبيمان وجوه الساروبيمات ٭
19 * وجه انسان نحو النخلة من ههنا ومن ههنا ٭ ووجه اسد نحو النخلة من ههنا ومن ههنا ٭
20 21 * والبيت كله منقوش من حوله ٭ من الارض الي السقف ٭ والساروبيمات والنخيل منقوشة * والقدس
22 والهيكل منبسطة مربعة ٭ ولوجه الاقداس منظر مثل هيئة مذبح خشبي * ارتفاعه ثلثة اذرع ٭
وطوله ذراعا ٭ وعرضه ذراعا ٭ وله قرون ٭ وقاعدته وحيطانه خشبية ٭ وقال لي ٭ هذه المايدة لوجه
23 24 الرب * وبجاريتان للهيكل ٭ وللقدس بجاريتان * للبجاريتين بجاريتان للواحدة ٭ وبجاريتان
25 للباب الثاني * وعليهم نقش ٭ وعلي بجاريات الهيكل ٭ ساروبيمات ونخيل ٭ كنقش الاقداس ٭
26 * واخشاب نقية علي واجهة الرواق من خارج * وكوا خفية * وقاس من ههنا ومن ههنا الي
علالي الرواق ٭ وجوانب البيت ملوحة بالخشب ٭

٭ الفصل الثاني والاربعون ٭

1 * وادخلني الي الدار الخارجة نحو المشارق قبالة ٭ الباب الذي الي الجربياء ٭ وادخلني واذا
2 خمس عشر مقصورة قريبة من الفصلة ٭ وقريبة من الفاصل نحو الجربياء للوجه * ماية ذراع
3 طولها نحو الجربياء ٭ وعرضها خمسون ذراعا ٭ مرسومات على نحو ابواب الدار الداخلة ٭ وكمثل
دعايم الدار الخارجة مستورات مستويات الوجوه اسطوانات مثلثة ٭

Latitudo verò à fronte domûs & reli- 14
quorum oppoſitorum, centum cubitorum.
Menſus eſt etiam parietem ſeparationis 15
contra faciem ſuperfluitatis, eorum quæ
erant à tergo domûs illius; & reliqua
hinc & inde, centum cubitos in longitu-
dinem. Porrò templum, anguli ipſius, & 16
porticus exterior obtecta erant aſſeribus
ligneis. Feneſtræ cancellatæ, nempe *lumi-*
na ternas illas portas *ambientia, ut ex iis*
proſpici poſſet. *Et domus ac latera ipſius*
aſſeribus operta ligneis circunquaque, nec-
non pavimentum, & à pavimento ad fe-
neſtras. Feneſtræ apertæ erant triplici fi- 17
gurâ, ut per eas proſpiceretur : & tam
ad intimarum atque ad extimarum latus,
quàm ſuper totam domum circunquaque,
tam intrinſecùs quàm forinſecùs ; Me- 18
tationes erant & Cherubini cælati cum
palmis : & palma inter Cherubinos. Ge-
minorum Cherubinorum erant facies illo-
rum Cherubinorum : Facies humana ver- 19
ſùs palmā hinc inde, et facies leonis ver-
ſus alteram *palmam hinc inde. Itaque tota* 20
domus erat undequaque cælata, à pavi-
mento ad laqueare; & Cherubini ac palmæ
cælatæ. Sanctuarium autem ac templum 21
patentia erant & *quadrata : & à fronte*
Sanctuarii forma quædam erat ſimilis fi-
guræ altaris lignei, Cujus altitudo trium 22
erat cubitorum, longitudo cubiti, latitudo
cubiti, cornua habebat, & baſis ac parie-
tes ejus lignei. Dixitque mihi, Hæc eſt
menſa ante faciem Domini. *Binas valvas* 23
habebat templum, & binas valvas San-
ctuarium ; Binis *foribus, binæ erant val-* 24
væ uni, & binæ valvæ portæ ſecundæ :
Et ſuper iis cælatura, necnon ſuper val- 25
vas templi (nempe *Cherubini et palmæ*) *ſi-*
milis cælaturæ Sanctuarii : Ligna expoli- 26
ta erant ſuper frontem porticûs extrinſe-
cùs, et feneſtræ occultæ. Et menſus eſt hinc
inde, uſque ad cœnacula porticûs: latera
domûs obducta erant aſſeribus ligneis.

C A P. XLII.

INdè me introduxit in atrium exterius 1
Orientem verſùs, contrà portam quæ erat
ad Aquilonem, Cúmque introduxiſſet
me, ecce quindecim exedras cantorum
vicinas ſuperfluitati, et vicinas ſeparati-
oni verſùs Aquilonarem plagam frontis :
Quarum longitudo centum erat cubito- 2
rum Aquilonem verſùs, latitudo verò
quinquaginta cubitorum : Deſignatæ ad 3
modum portarum atrii interioris : et ad
modum columnarum atrii exterioris,
porticus triplices occultæ æqualium fron-
tium.

יחזקאל : מב

cubitorum viginti deambulatorium cubiculorum facies ad Et
4 וְלִפְנֵי הַלְּשָׁכוֹת מַהֲלַךְ עֶשֶׂר אַמּוֹת
eorum aperturæ & , unius cubiti viæ interius ad latitudinis
רֹחַב אֶל־הַפְּנִימִית דֶּרֶךְ אַמָּה אֶחָת וּפִתְחֵיהֶם
capiebant quia : brevia superiora cubicula Et .aquilonem ad
5 לַצָּפוֹן׃ וְהַלְּשָׁכוֹת הָעֶלְיוֹנֹת קְצֻרוֹת כִּי־יוֹכְלוּ
.ædificii mediis & , inferioribus ex ipsis ex angulos
אַתִּיקִים מֵהֵנָּה מֵהַתַּחְתֹּנוֹת וּמֵהַתִּכֹנוֹת בִּנְיָן׃
columnæ sicut columnæ eis non & , ipsa tertiata Quia
6 כִּי מְשֻׁלָּשׁוֹת הֵנָּה וְאֵין לָהֶן עַמּוּדִים כְּעַמּוּדֵי
mediis à & , inferioribus ab est separatum propterea : atriorum
הַחֲצֵרוֹת עַל־כֵּן נֶאֱצַל מֵהַתַּחְתּוֹנוֹת וּמֵהַתִּיכֹנוֹת
via cubicula contra forinsecus quæ maceriæ Et .terra à
7 מֵהָאָרֶץ׃ וְגָדֵר אֲשֶׁר־לַחוּץ לְעֻמַּת הַלְּשָׁכוֹת דֶּרֶךְ
quinquaginta ejus longitudo : cubiculorum facies ad exterioris atrii
הֶחָצֵר הַחִצֹנָה אֶל־פְּנֵי הַלְּשָׁכוֹת אָרְכּוֹ חֲמִשִּׁים
exteriori atrio quæ ,cubiculorum longitudo Quia .cubitorum
8 אַמָּה׃ כִּי־אֹרֶךְ הַלְּשָׁכוֹת אֲשֶׁר לֶחָצֵר הַחִצֹנָה
centum templi facies super ecce & : cubitorum quinquaginta
חֲמִשִּׁים אַמָּה וְהִנֵּה עַל־פְּנֵי הַהֵיכָל מֵאָה
oriente ab introitus : ista cubicula subter de Et .cubitorum
9 אַמָּה׃ וּמִתַּחְתָּה לְשָׁכוֹת הָאֵלֶּה הַמֵּבוֹא מֵהַקָּדִים
latitudine In .exteriori atrio ab , ea in ipsum ingrediendo in
10 בְּבֹאוֹ לָהֵנָּה מֵהֶחָצֵר הַחִצֹנָה׃ בְּרֹחַב
ad & : sepositi tabulati facies ad orientalis viæ atrii maceriæ
גֶּדֶר הֶחָצֵר דֶּרֶךְ הַקָּדִים אֶל־פְּנֵי הַגִּזְרָה וְאֶל־
aspectum secundùm eorum facies ad via Et .cubicula ædificii facies
11 פְּנֵי הַבִּנְיָן לְשָׁכוֹת׃ וְדֶרֶךְ לִפְנֵיהֶם כְּמַרְאֵה
,eorum longitudinem secundùm , aquilonis via quæ , cubiculorum
הַלְּשָׁכוֹת אֲשֶׁר דֶּרֶךְ הַצָּפוֹן כְּאָרְכָּן
,eorum normas secundùm & ,eorum exitus omnes & : eorum latitudo sic
כֵּן רָחְבָּן וְכֹל מוֹצָאֵיהֶן וּכְמִשְׁפְּטֵיהֶן
via quæ cubiculorum ostia secundùm Et .eorum ostia secundùm &
12 וּכְפִתְחֵיהֶן׃ וּכְפִתְחֵי הַלְּשָׁכוֹת אֲשֶׁר דֶּרֶךְ
elegantis maceriæ faciebus in viæ , viæ capite in ostium austri
הַדָּרוֹם פֶּתַח בְּרֹאשׁ דָּרֶךְ דֶּרֶךְ בִּפְנֵי הַגְּדֶרֶת הֲגִינָה
aquilonis Cubicula : me ad dixit Et .ipsa ingrediendo in orientis via
13 דֶּרֶךְ הַקָּדִים בְּבוֹאָן׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי לִשְׁכוֹת הַצָּפוֹן
cubicula hæc , sepositi tabulati facies ad quæ , austri cubicula
לִשְׁכוֹת הַדָּרוֹם אֲשֶׁר אֶל־פְּנֵי הַגִּזְרָה הֵנָּה ׀ לִשְׁכוֹת
propinqui qui sacerdotes ibi comedent quibus sanctitatis
הַקֹּדֶשׁ אֲשֶׁר יֹאכְלוּ־שָׁם הַכֹּהֲנִים אֲשֶׁר־קְרוֹבִים
sanctificationes ponent Ibi .sanctificationum sanctificationes , Domino
לַיהוָה קָדְשֵׁי הַקֳּדָשִׁים שָׁם יַנִּיחוּ ׀ קָדְשֵׁי
, delicto pro & ,peccato pro sacrificium & , munus & ,sanctificationum
הַקֳּדָשִׁים וְהַמִּנְחָה וְהַחַטָּאת וְהָאָשָׁם
non & , sacerdotes ipsa ingrediendo In .sanctus locus quia
14 כִּי הַמָּקוֹם קָדֹשׁ׃ בְּבֹאָם הַכֹּהֲנִים וְלֹא־
reponent ibi & : exterius atrium ad sanctitate de egredientur
יֵצְאוּ מֵהַקֹּדֶשׁ אֶל־הֶחָצֵר הַחִיצוֹנָה וְשָׁם יַנִּיחוּ
: ipsa sanctitas quia , eis in ministrabunt quibus ,sua vestimenta
בִגְדֵיהֶם אֲשֶׁר־יְשָׁרְתוּ בָהֶן כִּי־קֹדֶשׁ הֵנָּה
.populo quæ ad accedent & , aliis vestimentis vestienturque
יִלְבְּשׁוּ בְּגָדִים אֲחֵרִים וְקָרְבוּ אֶל־אֲשֶׁר לָעָם׃
via me adduxit & , interioris domus mensuras complevit Et
15 וְכִלָּה אֶת־מִדּוֹת הַבַּיִת הַפְּנִימִי וְהוֹצִיאַנִי דֶּרֶךְ
circum eam est mensus & : Orientis viam ejus facies cujus , portæ
הַשַּׁעַר אֲשֶׁר פָּנָיו דֶּרֶךְ הַקָּדִים וּמְדָדוֹ סָבִיב ׀
.circa
סָבִיב׃

Versio VULG. LAT.

4 Et ante gazophylacia deambulatio decem cubitorum latitudinis,
ad interiora respiciens viæ
cubiti unius. Et ostia eorum ad
5 Aquilonem: Ubi erant gazophylacia
in superioribus humiliora:
quia supportabant porticus, quæ
ex illis eminebant de inferioribus,
6 & de mediis ædificii. Tristega
enim erant, & non habebant
columnas, sicut erant columnæ
atriorum: propterea emimebant
de inferioribus, & de
mediis à terra cubitis quinquaginta.
7 Et peribolus exterior secundùm
gazophylacia, quæ erant
in via atrii exterioris ante gazophylacia:
longitudo ejus quinquaginta
8 cubitorum. Quia longitudo
erat gazophylaciorum atrii
exterioris, quinquaginta cubitorum:
& longitudo ante faciem
templi, centum cubitorum.
9 Et erat subter gazophylacia hæc
introitus ab Oriente ingredientium
10 in ea de atrio exteriori. In
latitudine periboli atrii, quod
erat contra viam Orientalem, in
faciem ædificii separati, & erant
ante ædificium gazophylacia.
11 Et via ante faciem eorum, juxta
similitudinem gazophylaciorum,
quæ erant in via Aquilonis:
secundùm longitudinem
eorum, sic & latitudo eorum:
& omnis introitus eorum, & similitudines,
12 & ostia eorum. Secundùm
ostia gazophylaciorum,
quæ erant in via respiciente ad
Notum: ostium in capite viæ;
quæ via erat ante vestibulum separatum
per viam Orientalem
13 ingredientibus. Et dixit ad me;
Gazophylacia Aquilonis, & gazophylacia
Austri, quæ sunt ante
ædificium separatum: hæc sunt
gazophylacia sancta: in quibus
vescuntur sacerdotes, qui appropinquant
ad Dominum in Sancta
sanctorum: ibi ponent Sancta
sanctorũ, & oblationem pro peccato,
& pro delicto: locus enim
14 sanctus est. Cùm autem ingressi
fuerint sacerdotes, non egredientur
de Sanctis in atrium exterius:
& ibi reponent vestimenta
sua, in quibus ministrant, quia
sancta sunt: vestientúrque vestimentis
aliis, & sic procedent ad
15 populum. Cúmque complêsset
mensuras domûs interioris, eduxit
me per viam portæ, quæ
respiciebat ad viam Orientalem:
& mensus est eam undique per
circuitum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

4 Καὶ κατέναντι τῶν ἐξεδρῶν περίπατος πηχῶν
δέκα τὸ πλάτος, ἐπὶ πήχεις ἑκατὸν
τὸ μῆκος, καὶ τὰ θυρώματα αὐτῶν πρὸς
5 Βορρᾶν, Καὶ οἱ περίπατοι οἱ ὑπερῷοι ὡσαύτως·
ὅτι ἐξείχετο τὸ περίστυλον ἐξ αὐτοῦ,
ἐκ τοῦ ὑποκάτωθεν περιστύλου, καὶ τὸ (δ) διάστημα.
οὕτως περίστυλον καὶ (ε) διάστημα, καὶ
6 οὕτως (ζ) στοαὶ δύο. Διότι τριπλαῖ ἦσαν, καὶ
στύλους οὐκ εἶχον καθὼς οἱ στύλοι τῶν (η) ἐξωτέρων·
διὰ τοῦτο ἐξείχοντο τῶν ὑποκάτωθεν
7 καὶ τῶν μέσων ἀπὸ τῆς γῆς. Καὶ φῶς ἔξωθεν,
ὃν τρόπον (θ) αἱ ἐξέδραι τῆς αὐλῆς τῆς ἐξωτέρας,
αἱ βλέπουσαι ἀπέναντι τῶν ἐξεδρῶν
τῶν πρὸς Βορρᾶν, μῆκος (ι) πηχῶν πεντήκοντα.
8 Ὅτι τὸ μῆκος τῶν ἐξεδρῶν τῶν βλεπουσῶν
εἰς τὴν αὐλὴν τὴν ἐξωτέραν, ἦν (κ) πηχῶν
πεντήκοντα, καὶ αὗταί εἰσιν (λ) αἱ ἀντιπρόσωποι
ταύταις· τὸ πᾶν (μ) πηχῶν
9 ἑκατόν. Καὶ αἱ θύραι τῶν ἐξεδρῶν τούτων τῆς
εἰσόδου τῆς πρὸς ἀνατολάς, τοῦ εἰσπορεύεσθαι
10 δι' αὐτῶν ἐκ τῆς αὐλῆς τῆς ἐξωτέρας, Κατὰ
τὸ φῶς τοῦ ἐν ἀρχῇ (ν) περιπάτου, καὶ τὰ
πρὸς Νότον κατὰ πρόσωπον τοῦ Νότου, κατὰ
πρόσωπον τοῦ ἀπολοίπου, καὶ κατὰ πρόσωπον
11 τοῦ διορίζοντος, καὶ αἱ ἐξέδραι. Καὶ ὁ περίπατος
κατὰ πρόσωπον αὐτῶν, κατὰ τὰ μέτρα
(ʹ) ἐξεδρῶν, τῶν πρὸς Βορρᾶν (ʺ) καὶ κατὰ τὸ μῆκος
αὐτῶν, καὶ κατὰ τὸ εὖρος αὐτῶν, καὶ κατὰ
πάσας τὰς ἐξόδους αὐτῶν, καὶ κατὰ πάσας τὰς
ἐπιστροφὰς αὐτῶν, καὶ κατὰ τὰ φῶτα αὐτῶν, καὶ
12 κατὰ τὰ θυρώματα αὐτῶν, Τῶν ἐξεδρῶν τῶν
πρὸς Νότον, καὶ κατὰ τὰ θυρώματα ἀπ' ἀρχῆς
τοῦ περιπάτου, ὡς ἐπὶ φῶς διαστήματος
καλάμου, καὶ (˙) κατὰ ἀνατολὰς τοῦ εἰσπορεύεσθαι
13 δι' αὐτῶν. Καὶ εἶπε πρός με, Αἱ ἐξέδραι αἱ
πρὸς Βορρᾶν, καὶ αἱ ἐξέδραι αἱ πρὸς Νότον,
(ξ) οὖσαι κατὰ πρόσωπον τῶν (‴) διαστημάτων,
αὗταί εἰσιν αἱ ἐξέδραι τοῦ ἁγίου, ἐν αἷς
φάγονται ἐκεῖ οἱ ἱερεῖς (ο) υἱοὶ Σαδδούκ, οἱ
ἐγγίζοντες πρὸς κύριον, τὰ ἅγια τῶν (ͭ) ἁγίων,
καὶ ἐκεῖ θήσουσι τὰ ἅγια τῶν ἁγίων,
καὶ τὴν θυσίαν, καὶ τὰ περὶ ἁμαρτίας, καὶ τὰ
14 περὶ ἀγνοίας, διότι ὁ τόπος (π) ἅγιος. Οὐκ
εἰσελεύσονται ἐκεῖ παρὲξ τῶν ἱερέων, (ʽ) οὐκ ἐξελεύσονται
ἐκ τοῦ ἁγίου εἰς τὴν αὐλὴν τὴν ἐξωτέραν,
ὅπως διαπαντὸς ἅγιοι ὦσιν οἱ προσάγοντες,
καὶ μὴ ἅπτωνται τοῦ στολισμοῦ αὐτῶν,
ἐν οἷς λειτουργοῦσιν ἐν αὐτοῖς, διότι ἅγιά
ἐστι· καὶ ἐνδύσονται ἱμάτια ἕτερα, ὅταν ἅπτωνται
15 τοῦ λαοῦ. Καὶ συνετελέσθη ἡ διαμέτρησις τοῦ
οἴκου ἔσωθεν· καὶ ἐξήγαγέ με καθ' ὁδὸν τῆς
πύλης τῆς βλεπούσης (ʹ) πρὸς ἀνατολάς, καὶ
διεμέτρησε τὸ ὑπόδειγμα τοῦ οἴκου κυκλόθεν
ἐν διατάξει.

Et contra exedras deambulatio, 4
cubitorum decem latitudo, per cubitos
centum (e) longitudo: Et ostia
earum ad Aquilonem: Et deambulationes 5
cœnaculorum similiter: quia eminebat columnatum
ex eo, ex inferiore columnato, &
spatium. Sic columnatum, &
spatium, & sic porticus (f) duæ.
(g) Quia triplices erant, & columnas 6
non habebant, sicut columnæ
exteriorum. Propterea (h)
eminebant ab his quæ erant inferius,
& à mediis de terra. Et (i) 7
lumen exterius, sicut exedræ atrii
exterioris, quæ respiciebant
contra exedras Aquilonis, longitudine
cubitorum quinquaginta.
Longitudo enim exedrarum respicientium 8
in atrium exterius,
erat cubitorum quinquaginta: &
hæ sunt contra faciem his: omnes
cubitorum centum. Et ostia exedrarum 9
istarum ad introitum
Orientalem, ad ingrediendum per
ea ex atrio exteriori Secundùm 10
lumen, quod erat in principio deambulationis,
(k) & ad Austrum,
ad faciem Austri, ad faciem reliqui
ædificii, & ad faciem separati.
Et exedræ, Et deambulatio 11
contra faciem suam, juxta mensuras
exedrarum, quæ ad Aquilonem,
& secundùm longitudinem
earum, & secundùm latitudinem
earum, & secundùm omnes
exitus earum, & secundùm
omnes introit° earũ, & secundũ
lumina earum, & secundùm ostia
earum, Exedrarum, quæ contra 12
Meridiem: & secundùm ostia à
principio deambulacri, usque ad
luminare spatio calami, & ut ad
Orientem iretur per ea. Et dixit 13
ad me; Exedræ quæ ad Aquilonem,
& exedræ quæ ad Austrum,
quæ sunt ad faciem spatiorum,
hæ sunt exedræ Sanctuarii,
in quibus vescentur ibi sacerdotes,
(l) filii Sadduc, qui appropinquant
ad Dominum, Sancta
sanctorum: et ibi ponent Sancta
sanctorum, et sacrificium, et quæ
pro peccato, et quæ pro ignorantia:
locus enim sanctus est. Non 14
ingredientur illuc, nisi sacerdotes:
non egredientur de Sanctuario in
atrium exterius; ut perpetuò sancti
sint qui (m) offerunt. Et non
tangent vestimentum eorum, in
quibus ministrant in eis, quia
sancta sunt. Et vestientur vestimentis
aliis, quando tangent populum.
Et consummata est mensuratio 15
domûs interioris. Et eduxit
me per viam portæ respicientis
ad Orientem: et mensus est similitudinem domûs per circuitum in ordine.

MS.A. (δ) διάστεμα. (ε) διάστεμα, (ζ) στοάι. Διότι (η) ἐξεδρῶν· (θ) καὶ αἱ (ι) πήχεων (κ) πήχεων (λ) ἀντιπρώσοποι (μ) πήχεων (ν) τοῦ περιπάτου, (ʹ) τῶν ἐξεδρῶν, (ʺ) κατὰ τὸ (˙) κατ' (ξ) αἱ οὖσαι (‴) διαστεμάτων, (ο) οἱ υἱοὶ (ͭ) ἁγίων, καὶ τὴν θυσίαν, (π) ἅγιός ἐστιν. Οὐκ εἰσελεύσεται (ʽ) καὶ οὐκ (ʹ) κατ'

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 וקדם לשכתא מהלך עסר אמין פותיא לגיו אורח אמתא חדא ותרעיהן פתיחין
5 לצפונא : ולשכתא עליתא דחיקן ארי נסיבן זויא מנהן מארעיתא
6 וממציעתא בנינא : ארי מתלתן אנון ולית להון עמודין כעמודי דרתא על כן
7 דחיקן מארעיתא וממציעתא מארעא : וכתלא דלברא לקביל לשכתא אורח
8 דרתא בריתא דקדם לשכתא אורכיה חמשין אמין : ארי אורכא דלשכתא
9 דלדרתא בריתא חמשין אמין והוין על אפי היכלא מאה אמין : ומלרע
10 ללשכתא האלין מעלנא ממדנחא דעלין להן מדרתא בריתא : בפותיא
11 דכתלא דדרתא באורח מדנחא דקדם בצורתא ודקדם בנינא לשכן : ואורח
קדמיהון כחזו לשכתא דפתיחן לאורח צפונא כאורכיהן כן פותהן וכל
12 מפקניהן וכדחזוי להן וכתרעיהן : וכתרעי לשכתא דפתיח לאורח דרומא תרע
13 בריש אורח אורח קדם דוכן ליואי אורח מדנחא במעלנהן : ואמר לי לשכת
צפונא לשכת דרומא דקדם בצורתא אנון לשכת קודשא דיכלון תמן כהניא
דקריבין לשמשא קדם יי קודש קורשיא תמן ייחתון קודשיא קודשיא ומנחתא
14 וחטאתא ואשמא ארי אתרא קדיש : במעלהון כהניא ולא יפקון מקודשא
לדרתא בריתא ותמן ייחתון לבושיהון דישמשון בהון ארי קודשא אנון וילבשון
15 לבושין אוחרנין ויתערבון עם עמא : ושיצי ית משחת ביתא גואה ואפקני באורח
תרעא דפתיח לאורח מדנחא ומשחיה סחור סחור :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et ante gazophylacia erat deambulatorium decem cubitorum latitudinis 4
ad interiora : via cubiti unius, & ostia eorum aperta erant ad
Aquilonem. Et gazophylacia superiora erant strictiora, quia intercipiebant 5
ex eis prominentias ab inferioribus & à mediis ædificii. Triplicia 6
enim erant, & non habebant columnas sicut [*erant*] columnæ
atriorum; ideò strictiora erant inferioribus & mediis à terra. Et paries 7
exterior è regione gazophylaciorum ad viam atrii exterioris quod erat
ante gazophylacia; longitudinis fuit quinquaginta cubitorum. Quia 8
longitudo gazophylaciorum atrii exterioris quinquaginta cubitorum erat,
& erant secundùm faciem templi centum cubiti. Et subter gazophylacia 9
ista erat introitus ab Oriente ingredientium in ea ab atrio exteriori.
In latitudine autem parietis atrii in via Orientali quæ erat ante 10
septum & quæ ante ædificium, erant gazophylacia. Et via erat ante ea 11
juxta aspectum gazophylaciorum quæ aperta erant ad viam Aquilonis:
secundùm longitudinem eorum, sic latitudo eorum, & omnes exitus
eorum, & quod ad ea pertinet, & secundùm portas eorum. Et secundùm 12
portas gazophylaciorum quæ apertæ erant ad viam Australem,
erat ostium in capite viæ; quæ via erat ante suggestum Levitarum
per viam Orientalem ingredientibus. Et dixit ad me : Gazophylacia 13
Aquilonis & gazophylacia Austri quæ sunt ante septum, hæc sunt gazophylacia
sancta in quibus comedent Sacerdotes, qui accedunt ad
ministrandum coram Domino, sacrosancta : ibi reponent sacrosancta &
oblationem & sacrificium pro peccato & pro delicto; quia locus sanctus
est. Cùm autem ingressi fuerint Sacerdotes, non egredientur ex 14
sancto ad atrium exterius : quin ibi ponent vestimenta sua quibus ministrant,
quia sancta sunt; & vestient vestimenta aliis, & commiscebuntur
cum populo. Et consummavit mensuras domus interioris, & 15
eduxit me per viam portæ quæ aperta erat ad Orientem, & mensus est eam per circuitum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܩܕܡ ܐܟܣܕܪܐ. ܦܬܝܐ ܕܡܗܠܟܬܐ. ܥܣܪ ܐܡܝܢ ܦܬܝܗ. ܘܐܘܪܟܐ. ܡܐܐ ܐܡܝܢ. 4
ܘܬܪܥܐ ܕܦܬܝܐ ܕܡܗܠܟܬܐ. ܠܓܪܒܝܐ. * ܘܐܟܣܕܪܐ ܥܠܝܬܐ. ܙܥܘܪܢ ܗܘܝ. ܡܛܠ 5
ܕܥܐܠܝܢ ܗܘܘ ܒܗܘܢ ܕܪܓܐ. * ܡܛܠ ܕܬܠܬܝܢ ܗܘܝ ܗܘܝ ܀ ܘܠܝܬ ܗܘܐ ܠܗܘܢ ܥܡܘܕܐ 6
ܐܝܟ ܥܡܘܕܝ ܕܕܪܬܐ. ܡܛܠܗܢܐ ܙܥܘܪܢ ܗܘܝ ܡܢ ܬܚܬܝܬܐ ܘܡܢ ܡܨܥܝܬܐ.
* ܘܫܘܪܐ ܕܠܒܪ ܕܠܘܩܒܠ ܐܟܣܕܪܐ. ܐܘܪܟܐ. ܚܡܫܝܢ ܐܡܝܢ. * ܡܛܠ ܕܐܘܪܟܐ 7 8
ܕܐܟܣܕܪܐ ܕܕܪܬܐ ܒܪܝܬܐ. ܚܡܫܝܢ ܐܡܝܢ. ܘܠܘܩܒܠ ܗܝܟܠܐ. ܡܐܐ ܐܡܝܢ. * ܘܬܪܥܐ 9
ܕܐܟܣܕܪܐ ܕܡܕܢܚܝܐ ܕܥܐܠ ܠܕܪܬܐ ܒܪܝܬܐ. * ܒܦܬܝܗ ܕܫܘܪܐ ܕܕܪܬܐ. 10
ܡܕܢܚܝܐ ܩܕܡ ܚܝܪܬܐ. ܘܩܕܡ ܒܢܝܢܐ ܕܐܟܣܕܪܐ. * ܘܐܘܪܚܐ ܩܕܡܝܗܝܢ. 11
ܘܚܙܘܐ ܕܐܟܣܕܪܐ ܕܚܝܪܢ ܠܓܪܒܝܐ. ܐܘܪܟܗܘܢ. ܐܝܟ ܦܬܝܗܘܢ. ܘܟܠܗܘܢ
ܡܦܩܢܝܗܘܢ. ܘܡܥܠܢܝܗܘܢ ܘܚܙܘܗܘܢ ܘܬܪܥܝܗܘܢ. * ܐܝܟ ܬܪܥܐ ܕܐܟܣܕܪܐ 12
ܕܠܘܬ ܬܝܡܢܐ. ܬܪܥܐ ܒܪܝܫ ܐܘܪܚܐ. ܐܘܪܚܐ ܩܕܡ ܫܘܪܐ. ܕܠܘܬ ܢܚܠܐ
ܡܕܢܚܝܐ ܐܝܟ ܕܪܕܝܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܐܟܣܕܪܐ ܓܪܒܝܐ. ܘܐܟܣܕܪܐ ܬܝܡܢܝܐ ܕܩܕܡ ܚܝܪܬܐ. 13
ܗܠܝܢ ܐܢܝܢ ܐܟܣܕܪܐ ܀ ܐܝܟܐ ܕܐܟܠܝܢ ܟܗܢܐ ܕܡܩܪܒܝܢ ܠܡܪܝܐ. ܩܘܕܫ ܩܘܕܫܐ. ܬܡܢ
ܣܝܡܝܢ ܩܘܕܫ ܩܘܕܫܐ ܘܣܡܝܕܐ. ܘܚܘܣܝܐ ܕܚܛܗܐ. ܡܛܠ ܕܐܬܪܐ ܗܘ ܩܕܝܫܐ. * ܘܡܐ 14
ܕܥܐܠܝܢ ܟܗܢܐ. ܠܐ ܢܦܩܝܢ ܡܢ ܩܘܕܫܐ. ܠܕܪܬܐ ܒܪܝܬܐ. ܐܠܐ ܬܡܢ ܣܝܡܝܢ
ܡܐܢܝܗܘܢ. ܗܢܘܢ ܕܡܫܡܫܝܢ ܒܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܩܘܕܫܐ ܐܢܘܢ. ܘܡܠܒܫܝܢ ܡܐܢܐ ܐܚܪܢܐ.
ܘܡܩܪܒܝܢ ܩܘܪܒܢܐ ܚܠܦ ܥܡܐ. * ܘܫܠܡܘ ܡܫܘܚܬܗ ܕܒܝܬܐ ܓܘܝܐ. ܘܐܦܩܢܝ 15
ܠܐܘܪܚܐ ܕܬܪܥܐ ܕܚܙܐ ܠܡܕܢܚܐ. ܘܡܫܚܗ ܡܢ ܚܕܪ.

* Ante exedram erat ambulacrum decem cu- 4
bitorum latitudine, longitudine verò cen-
tum cubitorum : oſtium verò ambulacri A-
quilonem ſpectabat. Exedræ ſuperiores mi- 5
nores erant, quia ingredebantur in eas gra-
dus : Triſtegæ enim erant, nec habebant 6
columnas quales erant columnæ atrii ; ideo
minores erant imis & medianis. Parietis 7
autem extimi qui erat ex oppoſito exedræ, lon-
gitudo quinquaginta cubitorum erat : Nam 8
longitudo exedræ atrii exterioris erat quin-
quaginta cubitorum, ante templum verò
centum cubitorum. Janua exedræ oſtii O- 9
rientalis quod intrabat ad atrium exterius,
Erat in latitudine parietis atrii : oſtium O- 10
rientale erat ante aream & ante ædificium
exedrarum. Via erat ante has *exedras*, & 11
aſpectus exedrarum quæ verſùs Aquilonem
ſpectabant, longitudo par erat latitudini : &
omnes exitus & aditus earum, aſpectus & ja-
nuæ earum, Similes erant januis exedrarum 12
quæ Merdiem verſùs ſpectabant: janua erat
in principio viæ , via *verò* ante parietem
qui reſpicit vallem Orientalem quâ ratione
decurrit. Et dixit mihi, Exedræ Aquilona- 13
res, & exedræ Meridionales quæ ſunt an-
te aream ; hæ ſunt exedræ ubi comedunt
ſacerdotes qui offerunt Domino Sancta San-
ctorum : ibi ponunt Sanctum Sanctorum,
ſimilam , & expiationem peccatorum ,
quia locus eſt ſanctus. Nam cùm ingreſſi 14
fuerint ſacerdotes, non egrediuntur è San-
cto ad atrium exterius ; ſed ibi reponunt
veſtes ſuas quibus miniſtrant , quia ſacræ
ſunt ; tum aliis veſtibus induti offerunt ſa-
crificia pro populo. Abſolutis demenſioni- 15
bus domûs interioris , eduxit me ad viam
portæ quæ reſpiciebat Orientem, & menſus
eſt eam undequaque.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وقباله المقاصير ممشاة عشر اذرع عرضها * ومايه ذراع طولها * ومجاريها نحو الجربياء * 4
* والمماشي العليا هكذا * لانه كان لها ركين منها من تحت ركين * والناحيه هكذا ركين 5
وناحيه هكذا * الاسطوانات من اجل انها كانت مثلثه * وليس لها عمد كعمد المقاصير * لاجل 6
هذا كان لها درجات من الاسافل ومن الاواسط من الارض * ونور من خارج على المثال
* ومقاصير الدار الخارجه الناظره قباله المقاصير التي نحو الجربياء * طولها خمسون ذراعا * لان 7 8
طول المقاصير الناظره الي الدار الخارجه كان خمسون ذراعا * وهذه هي مستويه الوجوه * جميعها
مايه ذراع * وابواب هذه المقاصير للمدخل الذي نحو المشارق * ليدخل منها من الدار 9
الخارجه * كنور الممشاة التي في المبداء * والتي نحو التيمن * على واجهه التيمن * على واجهه 10
الفضله * وعلى واجهه الفاصل * والمقاصير والممشاة على وجههم * كمقادير المقاصير التي نحو 11
الجربياء * كطولهم وكعرضهم * وكجميع مخارجهم * وكجميع مرجعاتهم * وكتدويراتهم *
* وكمجارياتهم * اعني المقاصير التي نحو التيمن * وكالمجاريات التي من اول الممشاة * على نحو 12
نور مسافه القصبه * وليمشي فيها الي المشارق * وقال لي * المقاصير التي نحو الجربياء * 13
والمقاصير التي نحو التيمن * الكاينات على واجهه الكباش * هذه هي مقاصير القدس * التي
فيها تاكل الكهنه * هناك بنو صادوق القريبون الي الرب * اقدس القديسين * والذبيحه *
والذي من اجل الخطيه * والذي من اجل الجهل * من اجل انه الموضع المقدس هو * ولا 14
يدخل هناك غير الكهنه * ولا يخرجون من القدس الي الدار الخارجه * لكي كل حين الذين
يقربون يكونوا اطهارا * ولا يلمسون حللهم التي بها يخدمون * من اجل انها مقدسه * ويلبسون
ثيابا اخر اذ يلمسون الشعب * وكملت مساحه البيت من داخل * فاخرجني على طريق الباب 15
الناظر الي المشارق * وقاس مثال البيت من داير في رتبه *

* E regione exedrarum ambulacrum erat 4
latitudinis decem cubitorum, & centum
cubitorum longitudinis : oſtia verò ipſius
Aquilonem verſùs. Ambulacra ſuperiora 5
erant ſimilia : nam fulcrum ex ipſiſmet
ſubter fulcrum habebant & interſtitium,
ſimile fulcrum, & interſtitium ſimile.
Porticus, quia triplices erant, nec habe- 6
bant columnas ut columnas exedrarum ;
idcircò prominentias habebant ex imis &
ex medianis inde à ſolo ; & lumen forin-
ſecùs juxta architecturam. Exedrarum 7
autem atrii exterioris , quæ ſpectabant ex
adverſo exedrarum quæ ſitæ erant ver-
ſùs Aquilonem, longitudo erat quinqua-
ginta cubitorum : Quia longitudo exe- 8
drarum ſpectantium atrium exterius, erat
quinquaginta cubitorum : atque iſtæ æ-
quales frontes habebant , omnes centum
cubitorum. Januæ verò earundem exe- 9
drarum, reſpondebant oſtio quod erat
verſùs Orientem ; ut per eas pateret ad-
itus ex atrio exteriori , Secundùm lu- 10
men ambulacri quod erat in principio,
& quod erat verſùs Meridiem, ad fron-
tem Auſtralem, ad frontem ſuperfluitatis,
& ad frontem ſeparationis, Itaque tam 11
exedræ quàm ambulacra ex eorum oppo-
ſito jacebant, earundem dimenſionum at-
que exedræ quæ ſpectabant Aquilonem,
ejuſdem longitudinis, ejuſdemque latitu-
dinis, ſimilium penitùs prominentiarum,
& ſimilium depreſſionum, ſimilium lumi-
num , Similium denique forium (exe- 12
dras intelligo illas quæ erant verſùs Me-
ridiem) & ut exedræ illæ quæ à prin-
cipio ambulacri , juxta lumen ſpatii ca-
lami ; & ut per illud ambulare quis poſ-
ſet ad Orientem. Tum dixit mihi , Tam 13
exedræ quæ ſunt Aquilonem verſùs, quàm
exedræ quæ verſùs Meridiem , exiſten-
tes ex adverſo arietum ; hæ ſunt exedræ
Sanctuarii in quibus comedunt ſacerdotes.
Ibi filii Sadoc Domino vicini , Sanctiſſi-
mum Sanctorum, victima, quod pro pec-
cato , quódque pro ignorantia offertur.
Nam is locus eſt ille ſanctus , Quo 14
non niſi ſacerdotes ingrediuntur, neque
egrediuntur è Sanctuario ad atrium ex-
terius : ut jugiter qui ſacrificant , mundi
ſint ; & ne tangant alii ſtolas eorum qui-
bus miniſtrant , eò quòd ſacræ ſint : i-
mò aliis veſtibus induantur , ſiquando
populum tetigerint. Itaque abſolutâ di- 15
menſione domûs ab interiori parte, e-
duxit me per viam portæ reſpicientis
ad Orientem, & menſus eſt figuram
domûs per circuitum ex ordine.

יחזקאל : מג

quingentis : mensuræ calamo in *Orientis* *ventum* est Mensus
16 מָדַד רוּחַ הַקָּדִים בִּקְנֵה הַמִּדָּה חֲמֵשׁ־אֵמוֹת
:Aquilonis *ventum* est Mensus *.undique* mensuræ calamo *in* calamis
17 קָנִים בִּקְנֵה הַמִּדָּה סָבִיב׃ מָדַד רוּחַ הַצָּפוֹן
Ventum *.circum* mensuræ calamo *in* calamis quingentis
18 חֲמֵשׁ־מֵאוֹת קָנִים בִּקְנֵה הַמִּדָּה סָבִיב׃ אֵת רוּחַ
.mensuræ calamo *in* calamis quingentis : est mensus *Austri*
הַדָּרוֹם מָדָד חֲמֵשׁ־מֵאוֹת קָנִים בִּקְנֵה הַמִּדָּה׃
calamis quingentis est mensus *: maris ventum* ad Circuivit
19 סָבַב אֶל־רוּחַ הַיָּם מָדַד חֲמֵשׁ־מֵאוֹת קָנִים
, ei *murus* ,*ipsum* est mensus *ventos* quatuor *Ad* .mensuræ calamo *in*
20 בִּקְנֵה הַמִּדָּה׃ לְאַרְבַּע רוּחוֹת מְדָדוֹ חוֹמָה לוֹ
, quingentis latitudinem & , quingentis longitudinem , circa circum
סָבִיב ׀ סָבִיב אֹרֶךְ חֲמֵשׁ מֵאוֹת וְרֹחַב חֲמֵשׁ מֵאוֹת
.prophanum sanctum inter dividendum ad
לְהַבְדִּיל בֵּין הַקֹּדֶשׁ לְחֹל׃

CAP. XLIII. מג

viam *respiciens* quæ portam : portam ad me fecit ambulare Et
1 וַיּוֹלִכֵנִי אֶל־הַשָּׁעַר שַׁעַר אֲשֶׁר פֹּנֶה דֶּרֶךְ
via de *veniens* Israel Dei gloria ecce Et *.Orientis*
2 הַקָּדִים׃ וְהִנֵּה כְּבוֹד אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל בָּא מִדֶּרֶךְ
terra & : multarum aquarum vox tanquam ejus vox Et *: Orientis*
הַקָּדִים וְקוֹלוֹ כְּקוֹל מַיִם רַבִּים וְהָאָרֶץ
quam visio visionem secundùm Et .ejus *gloria à* splendebat
3 הֵאִירָה מִכְּבֹדוֹ׃ וּכְמַרְאֵה הַמַּרְאֶה אֲשֶׁר
corrumpendum ad me veniendo in , vidi quam visionem secundùm vidi
רָאִיתִי כַּמַּרְאֶה אֲשֶׁר־רָאִיתִי בְּבֹאִי לְשַׁחֵת
ad vidi quam visionem secundùm visiones Et .civitatem
אֶת־הָעִיר וּמַרְאוֹת כַּמַּרְאֶה אֲשֶׁר רָאִיתִי אֶל־
Domini gloria Et *.meas facies* *ad* cecidi & : Chebar fluvium
4 נְהַר כְּבָר וָאֶפֹּל אֶל־פָּנָי׃ וּכְבוֹד יְהוָה
viam *ejus* facies cujus , portæ *via* : domum ad est ingressa
בָּא אֶל־הַבָּיִת דֶּרֶךְ שַׁעַר אֲשֶׁר פָּנָיו דֶּרֶךְ
atrium in me introduxit & ,spiritus me elevavit Et *.Orientis*
5 הַקָּדִים׃ וַתִּשָּׂאֵנִי רוּחַ וַתְּבִאֵנִי אֶל־הֶחָצֵר
audivi Et .domum Domini gloria repleverat ecce & : interius
6 הַפְּנִימִי וְהִנֵּה מָלֵא כְבוֹד־יְהוָה הַבָּיִת׃ וָאֶשְׁמַע
.me juxta *stans* *fuit* vir & : domo de me ad dictum
מִדַּבֵּר אֵלַי מֵהַבָּיִת וְאִישׁ הָיָה עֹמֵד אֶצְלִי׃
& , mei solii locus hominis Fili , me ad dixit Et
7 וַיֹּאמֶר אֵלַי בֶּן־אָדָם אֶת־מְקוֹם כִּסְאִי וְאֶת־
medio in *ibi* habitabo quo meorum pedum plantarum locus
מְקוֹם כַּפּוֹת רַגְלַי אֲשֶׁר אֶשְׁכָּן־שָׁם בְּתוֹךְ
domus ultrà polluent non & : seculum in Israel filiorum
בְּנֵי־יִשְׂרָאֵל לְעוֹלָם וְלֹא יְטַמְּאוּ עוֹד בֵּית־
,sua fornicatione *in* eorum reges & ipsi ,*meæ sanctitatis* nomen Israel
יִשְׂרָאֵל שֵׁם קָדְשִׁי הֵמָּה וּמַלְכֵיהֶם בִּזְנוּתָם
suum limen *ipsos dando In* .suis excelsis suorum regum cadaveribus *in* &
8 וּבְפִגְרֵי מַלְכֵיהֶם בָּמוֹתָם׃ בְּתִתָּם סִפָּם
paries & , meum postem juxta suum postem & , meo limine cum
אֶת־סִפִּי וּמְזוּזָתָם אֵצֶל מְזוּזָתִי וְהַקִּיר
meæ sanctitatis nomen polluerunt & : eos inter & , me inter
בֵּינִי וּבֵינֵיהֶם וְטִמְּאוּ ׀ אֶת־שֵׁם קָדְשִׁי
eos consumpsi & ; fecerunt quas ,suis abominationibus *in*
בְּתוֹעֲבוֹתָם אֲשֶׁר עָשׂוּ וָאֲכַל אֹתָם
.meo *naso* in
בְּאַפִּי׃

Versio VULG. LAT.

16 Mensus est autem contra ventum Orientalem calamo mensuræ, quingentos calamos in
17 calamo mensuræ per circuitum. Et mensus est contra ventum Aquilonis quingentos calamos in
18 calamo mensuræ per gyrum. Et ad ventum Australem mensus est quingentos calamos in
19 calamo mensuræ per circuitum. Et ad ventum Occidentalem mensus est quingentos calamos in
20 calamo mensuræ. Per quatuor ventos mensus est murum ejus undique per circuitum, longitudinem quingentorum cubitorum, & latitudinem quingentorum cubitorum, dividentem inter Sanctuarium & vulgi locum.

CAP. XLIII.

1 Et duxit me ad portam, quæ respiciebat ad viam Orienta-
2 lem. Et ecce gloria Dei Israel ingrediebatur per viam Orientalem: & vox erat ei quasi vox aquarum multarum, & terra
3 splendebat à majestate ejus. Et vidi visionem, secundùm speciem, quam videram, quando venit ut disperderet civitatem: & species secundùm aspectum, qué videram juxta fluvium Chobar: & cecidi super faciem meam.
4 Et majestas Domini ingressa est templum per viam portæ, quæ
5 respiciebat ad Orientem. Et elevavit me spiritus, & introduxit me in atrium interius: & ecce repleta erat gloriâ Do-
6 mini domus. Et audivi loquentem ad me de domo, & vir qui
7 stabat juxta me, Dixit ad me; Fili hominis, locus solii mei, & locus vestigiorum pedum meorum, ubi habito in medio filiorum Israel in æternum: & non polluent ultrà domus Israel nomen sanctum meum, ipsi & reges eorum in fornicationibus suis, & in ruinis regum suo-
8 rum, & in excelsis. Qui fabricati sunt limen suum juxta limen meum, & postes suos juxta postes meos: & murus erat inter me & eos: & polluerunt nomen sanctum meum in abominationibus, quas fecerunt: propter quod consumpsi eos in ira mea.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

16 Καὶ ἔστη κατὰ νώτου τῆς πύλης τῆς βλεπούσης
(ʹ) κατ' ἀνατολάς, ϗ διεμέτρησε πεντακοσίους
17 ἐν τῷ καλάμῳ τοῦ μέτρου. Καὶ
ἐπέστρεψε πρὸς Βορρᾶν, ϗ διεμέτρησε τὸ
κατὰ πρόσωπον τοῦ Βορρᾶ, πήχεις πεντακοσίους
19 ἐν τῷ καλάμῳ τοῦ μέτρου. Καὶ
ἐπέστρεψε πρὸς θάλασσαν, ϗ διεμέτρησε
τὸ κατὰ πρόσωπον (ρ) θαλάσσης, πεντακοσίους
18 ἐν τῷ καλάμῳ τοῦ μέτρου. Καὶ
ἐπέστρεψε πρὸς Νότον, ϗ διεμέτρησε
(σ) κατέναντι τοῦ Νότου, πεντακοσίους ἐν
20 τῷ καλάμῳ τοῦ μέτρου, (τ) Τὰ τέσσαρα
μέρη τοῦ αὐτοῦ (υ) καλάμου. ϗ διέταξεν
αὐτὸν, ϗ περίβολον (φ) αὐτῶν κύκλῳ,
πεντακοσίων πρὸς ἀνατολὰς, ϗ πεντακοσίων
(χ) πηχῶν εὖρος, τοῦ διαστέλλειν ἀναμέσον
τῶν ἁγίων, ϗ ἀναμέσον τοῦ προτειχίσματος,
τοῦ ἐν διατάξει τοῦ οἴκου.

Et stetit ad tergum portæ respicientis ad Orientem: & 16
mensus est quingentos in calamo mensuræ. Et convertit se 17
ad Aquilonem, & mensus est
id quod ad faciem Aquilonis,
cubitos quingentos in calamo
mensuræ. Et convertit se ad 19
Mare: & mensus est, quod ad
faciem Maris, quingentos in calamo
mensuræ. Et convertit se 18
ad Austrum, & mensus est
contra Austrum quingentos in
calamo mensuræ, Quatuor partes 20
ejus (n) calamo. Et (o) disposuit ipsum, & murum eorum
per circuitum, (p) quingentorum ad Orientem, & quingentorum cubitorum latitudinem ad
dividendum inter medium Sanctorum, & antemuralis, quod
in ordine domûs.

MS.A. (ʹ) κατ' (ρ) τῆς θαλάσσης, (σ) κατὰ πρόσωπον τοῦ Νότου (τ) Εἰς τὰ (υ) μέτρου. (φ) αὐτὸν (χ) πήχεων

ΚΕΦ. μγʹ.

1 Καὶ ἤγαγέ με ἐπὶ τὴν πύλην τὴν
βλέπουσαν (ʺ) κατὰ ἀνατολὰς, ϗ ἐξήγαγέ
2 με. Καὶ ἰδοὺ δόξα θεοῦ Ἰσραὴλ ἤρχετο
κατὰ τὴν (α) ὁδὸν τὴν πρὸς ἀνατολὰς,
ϗ φωνὴ τῆς παρεμβολῆς, ὡς φωνὴ διπλασιαζόντων
πολλῶν· ϗ ἡ γῆ ἐξέλαμπεν
ὡς φέγγος ἀπὸ τῆς δόξης (β) κυκλόθεν.
3 Καὶ ἡ ὅρασις ἣν ἴδον, κατὰ τὴν
ὅρασιν ἣν ἴδον, ὅτε εἰσεπορευόμην τοῦ
χρῖσαι τὴν πόλιν. ϗ ἡ ὅρασις τοῦ ἅρματος
οὗ ἴδον, κατὰ τὴν ὅρασιν (γ) ἣν ἴδον
ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ τοῦ Χοβάρ. ϗ πίπτω ἐπὶ
4 πρόσωπόν μου. Καὶ δόξα κυρίου εἰσῆλθεν
εἰς τὸν οἶκον, κατὰ τὴν ὁδὸν τῆς
πύλης τῆς βλεπούσης (ʹ) κατ' ἀνατολάς.
5 Καὶ ἀνέλαβέ με πνεῦμα, ϗ εἰσήγαγέ με
εἰς τὴν αὐλὴν τὴν ἐσωτέραν· ϗ ἰδοὺ
6 πλήρης δόξης (δ) ὁ κυρίου οἶκος. Καὶ
ἔστην, ϗ ἰδοὺ φωνὴ ἐκ τοῦ οἴκου λαλοῦντος
πρὸς μὲ, (ʺ) ϗ ὁ ἀνὴρ εἱστήκει ἐχόμενός μου,
7 Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, (ε) Υἱὲ ἀνθρώπου, ἑώρακας
τὸν τόπον τοῦ θρόνου μου, ϗ τὸν τόπον
τοῦ ἴχνους τῶν ποδῶν μου, ἐν οἷς (̈) κατασκηνώσει
τὸ ὄνομά μου ἐν μέσῳ (ζ) οἴκου Ἰσραὴλ
τὸν αἰῶνα· ϗ οὐ βεβηλώσουσιν οὐκέτι (η) οἶκος
Ἰσραὴλ τὸ ὄνομα τὸ ἅγιόν μου, αὐτοὶ
ϗ οἱ ἡγούμενοι αὐτῶν ἐν τῇ πορνείᾳ
αὐτῶν, ϗ ἐν τοῖς φόνοις τῶν ἡγουμένων ἐν
8 μέσῳ αὐτῶν, Ἐν τῷ τιθέναι αὐτοὺς τὸ
πρόθυρόν μου ἐν τοῖς προθύροις αὐτῶν, ϗ
τὰς φλιάς μου ἐχομένας τῶν φλιῶν αὐτῶν·
ϗ ἔδωκαν τὸν τοῖχόν μου ὡς συνεχόμενον
ἐμοῦ ϗ αὐτῶν, ϗ ἐβεβήλωσαν τὸ ὄνομα τὸ
ἅγιόν μου ἐν ταῖς ἀνομίαις αὐτῶν αἷς ἐποίουν.
ϗ ἐξέτριψα αὐτοὺς ἐν θυμῷ μου, ϗ ἐν
φόνῳ.

CAP. XLIII.

Et adduxit me ad portam, 1
quæ respiciebat ad Orientem:
& eduxit me. Et ecce gloria 2
Dei Israel veniebat per viam
Orientis, & vox castrorum
quasi (a) vox geminantium multorum:
& terra resplendebat
quasi fulgor à gloria per circuitum:
Et visio, quam vidi, 3
secundùm visionem, quam videram,
quando ingrediebar ut
(b) ungerem civitatem. Et
visio currûs, quem vidi, secundùm
visionem, quam videram
super fluvium Chobar. Et cado
in faciem meam. Et gloria Do- 4
mini ingressa est domum per viam
portæ, quæ respiciebat Ori-
entem. Et assumpsit me spiri- 5
tus, & introduxit me in atrium
interius: & ecce plena glo-
riæ Domini domus. Et steti, 6
& ecce vox de domo loquentis
ad me; & vir stabat juxta
me: Et dixit ad me; Vidisti, 7
fili hominis, locum solii mei, &
locum vestigii pedum meorum;
in quibus habitabit nomen meum
in medio domûs Israel in
sempiternum. Et non contaminabunt
ultrà domus Israel nomen
sanctum meum, ipsi, &
duces eorum in fornicatione sua,
& in homicidiis ducum in me-
dio sui, Cùm ponerent limen 8
meum in liminibus suis, & postes
meos juxta postes suos. Et
dederunt parietem meum, quasi
(c) connexum inter se & me:
& contaminaverunt nomen sanctum
meum in iniquitatibus suis,
quas faciebant. Et contrivi
eos in furore meo, & in occisione.

MS. A. (ʺ) κατ' (α) ὁδὸν τῆς πύλης τῆς βλεπούσης πρὸς (β) κυρίου κυκλόθεν. (γ) οὗ (ʹ) κατ' (δ) κυρίου ὁ (ʺ) ϗ ἀνὴρ (ε) Ἑώρακας, υἱὲ ἀνθρώπου, (̈) κατασκηνώσει (ζ) τοῦ οἴκου Ἰσραὴλ εἰς τὸν αἰῶνα· ϗ οὐ μὴ (η) ὁ οἶκος Ἰσραὴλ τὸ ὄνομά μου τὸ ἅγιον, αὐτοὶ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 מְשַׁח רוּחַ קִדוּמָא בִּקְנֵי מְשַׁחְתָּא חֲמֵשׁ מְאָה קְנִין בִּקְנֵי מְשַׁחְתָּא סְחוֹר סְחוֹר׃ מְשַׁח 17
18 רוּחַ צִפּוּנָא חֲמֵשׁ מְאָה קְנִין בִּקְנֵי מְשַׁחְתָּא סְחוֹר סְחוֹר׃ יַת רוּחַ דָּרוֹמָא מְשַׁח
19 חֲמֵשׁ מְאָה קְנִין בִּקְנֵי מְשַׁחְתָּא׃ אִסְתְּחַר לְרוּחַ מַעַרְבָא מְשַׁח חֲמֵשׁ מְאָה קְנִין
20 בִּקְנֵי מְשַׁחְתָּא׃ לְאַרְבַּע רוּחַיָא מַשְׁחֵיהּ שׁוּרָא לֵיהּ סְחוֹר סְחוֹר אוּרְכָּא חֲמֵשׁ מְאָה
וּפוּתְיָא חֲמֵשׁ מְאָה לְאַפְרָשָׁא בֵּין קֻדְשָׁא לְחוּלָא׃

מג

1 וְאוֹבִילַנִי לְתַרְעָא תַּרְעָא דִּפְתִיחַ לְאוֹרַח מַדִּנְחָא׃ וְהָא יְקָר אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל אִתְגְּלֵי 2
3 מֵאוֹרַח מַדִּנְחָא וְקָל מְבָרְכֵי שְׁמֵיהּ כְּקָל מַיִן סַגִּיאִין וְאַרְעָא נַהֲרַת מִזִּיו יְקָרֵיהּ׃ וּכְחֵזוּ
חֶזְוָא דַּחֲזֵיתִי כְּחֶזְוָא דַּחֲזֵיתִי בְּאִתְנַבְּיוּתִי לְחַבָּלָא יַת קַרְתָּא וְחֶזְוָא כְּחֵזוּ דַּחֲזֵיתִי
4 עַל נְהַר כְּבָר וְאִשְׁתְּטָחִית עַל אַפָּי׃ וִיקָרָא דַּייָ אִתְגְּלֵי בְּבֵיתָא בְּאוֹרַח תַּרְעָא דִּפְתִיחַ
5 לְאוֹרַח מַדִּנְחָא׃ וּנְטַלְתַּנִי רוּחָא וְאַעֲלַתְנִי לְדַרְתָּא גַּוַּיְתָא וְהָא אִתְמְלֵי יְקָרָא
6 דַּייָ בֵּיתָא׃ וּשְׁמַעִית דִּי מְמַלֵּל עִמִּי מִלְּגָיו וְגַבְרָא הֲוָה קָאֵם לְקִבְלִי׃ וַאֲמַר לִי 7
בַּר אָדָם דֵּין אֲתַר בֵּית כּוּרְסֵי יְקָרִי וְדֵין אֲתַר בֵּית אַשְׁרָיוּת שְׁכִנְתִּי דְּאַשְׁרֵי שְׁכִנְתִּי
תַּמָּן בְּגוֹ בְּנֵי יִשְׂרָאֵל לְעָלַם וְלָא יְסָאֲבוּן עוֹד בֵּית יִשְׂרָאֵל שְׁמָא דְקוּדְשִׁי אִנּוּן
8 וּמַלְכֵיהוֹן בְּטַעֲוָתְהוֹן וּבְפִגְרֵי מַלְכֵיהוֹן בְּמוֹתֵיהוֹן׃ בְּמִתַּנְהוֹן סִפֵּיהוֹן לָקֳבֵל סִפֵּי
בֵּית מַקְדְּשִׁי וּבִנְיָנֵיהוֹן בִּסְטַר עֲזָרְתִּי וְכוֹתֶל בֵּית מַקְדְּשִׁי בֵּין מֵימְרִי וּבֵינֵיהוֹן וְסָאִיבוּ
יַת שְׁמָא דְקוּדְשִׁי בְּתוֹעֲבָתְהוֹן דַּעֲבַדוּ וְשֵׁצִיתִי יַתְהוֹן בְּרוּגְזִי׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Mensusque est plagam Orientalem calamo mensuræ quingentis calamis 16
per ambitum calamo mensuræ. Mensusque est plagam Aquilonarem quin- 17
gentis calamis calamo mensuræ per circuitum. Et plagam Australem men- 18
sus est quingentis calamis calamo mensuræ. Conversusq; ad Occidentalem 19
plagam, mensus est [*eam*] quingentis calamis, calamo mensuræ. Per 20
quatuor ventos mensus est eam: murus erat ei per circuitum longitudinis
quingentorum & latitudinis quingentorum, ut divideret inter sanctum &
laicum,

CAP. XLIII.

Et adduxit me ad portam, portam [*inquam*] quæ aperta erat ad viam 1
Orientalem. Et ecce gloria Dei Israel revelata est à via Orientali, & vox 2
benedicentium nomen ejus sicut vox aquarum multarum: & terra splen-
debat à splendore gloriæ ejus. Et secundùm aspectum visionis quam vidi, 3
secundùm visionẽ quam vidi cùm prophetarẽ ad disperdendã civitatem: &
visio erat sicut visio, quam videram super fluvium Chobar: & cecidi pronus
super faciem meam. Et gloria Domini revelata est in domo in via portæ 4
quæ aperta est ad viam Orientalem. Et elevavit me spiritus, & introduxit 5
me in atrium interius, & ecce impleta est domus gloria Domini. Et au- 6
divi loquentem mecum in interiori parte domus, & quidam stabat coram
me. Et dixit ad me: Fili hominis, iste est loc⁹ dom⁹ solii gloriæ meæ, & iste 7
est locus domus habitationis majestatis meæ in quo habitare faciam maje-
statem meam in medio filiorum Israel in æternum: & non contamina-
bunt ultrà domus Israel nomen sanctum meum ipsi & reges eorum in ido-
lis suis, & in cadaveribus regum suorum *cum obierint*. Dum ponerent li- 8
men suum juxta limina domus sanctuarii mei, & ædificia sua in latere atrii
mei: (& paries domus sanctuarii mei inter Verbum meum & inter eos)
& polluerent nomen sanctum meum abominationibus suis quas fecerunt: & consumpsi eos in ira mea.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

16 * ܘܡܫܚ ܠܪܘܚܐ ܕܡܕܢܚܐ ܒܩܢܝܐ ܕܡܫܘܚܬܐ ܚܡܫܡܐܐ ܩܢܝܢ܀ * ܘܡܫܚ
17 ܠܪܘܚܐ ܕܓܪܒܝܐ ܒܩܢܝܐ ܕܡܫܘܚܬܐ ܚܡܫܡܐܐ ܩܢܝܢ ܡܢ ܚܕܪ܀ * ܘܡܫܚ
18 ܠܪܘܚܐ ܕܬܝܡܢܐ ܚܡܫܡܐܐ ܩܢܝܢ ܒܩܢܝܐ ܕܡܫܘܚܬܐ܀ * ܘܡܫܚ ܠܪܘܚܐ
19 ܕܡܥܪܒܐ ܚܡܫܡܐܐ ܩܢܝܢ ܒܩܢܝܐ ܕܡܫܘܚܬܐ܀ * ܠܐܪܒܥ ܪܘܚܝܗ ܡܫܚܗ ܘܫܘܪܐ ܡܢ
20 ܚܕܪ܀ ܐܘܪܟܗ ܚܡܫܡܐܐ ܘܦܬܝܗ ܚܡܫܡܐܐ܀ ܠܡܦܪܫ ܒܝܬ ܩܘܕܫܐ ܠܚܘܠܐ܀

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܓ *

1 * ܘܐܘܒܠܢܝ ܠܬܪܥܐ ܕܚܙܐ ܠܡܕܢܚܐ܀ * ܘܗܐ ܫܘܒܚܗ ܕܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܐܬܐ
2 ܡܢ ܐܘܪܚܐ ܕܡܕܢܚܐ܀ ܘܩܠܗ ܐܝܟ ܩܠܐ ܕܡܝܐ ܣܓܝܐܐ܀ ܘܐܪܥܐ ܢܗܪܬ ܡܢ
3 ܫܘܒܚܗ܀ * ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܚܙܝܬ ܠܘܬ ܢܗܪ ܟܒܪ܀ ܘܢܦܠܬ ܥܠ ܐܦܝ܀ * ܘܫܘܒܚܗ
4 ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܠܒܝܬܐ܀ ܒܐܘܪܚܐ ܕܬܪܥܐ ܕܚܙܐ ܠܡܕܢܚܐ܀ * ܘܫܩܠܬܢܝ ܪܘܚܐ
5 ܘܐܥܠܬܢܝ ܠܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ ܘܚܙܝܬ ܕܐܬܡܠܝ ܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܫܘܒܚܗ܀ * ܘܫܡܥܬ
6 ܡܕܡ ܕܐܡܪ ܠܝ ܡܢ ܒܝܬܐ܀ ܘܓܒܪܐ ܩܐܡ ܗܘܐ ܠܘܬܝ܀ * ܘܐܡܪ ܠܝ܀ ܒܪܢܫܐ܀
7 ܐܬܪܐ ܕܟܘܪܣܝܐ ܘܐܬܪܐ ܕܦܣܬܐ ܕܪܓܠܝ܀ ܕܥܡܪ ܐܢܐ ܒܗ ܒܝܢܝ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ : ܠܥܠܡ܀
ܘܠܐ ܢܛܢܦܘܢ ܬܘܒ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ܀ ܘܠܐ ܢܛܢܦܘܢ ܫܡܐ ܕܩܘܕܫܝ܀ ܗܢܘܢ
ܘܡܠܟܝܗܘܢ ܒܙܢܝܘܬܗܘܢ܀ ܘܒܦܓܪܐ ܕܡܠܟܝܗܘܢ ܘܒܦܬܟܪܝܗܘܢ܀ * ܕܥܒܕܝܢ
8 ܗܘܘ ܬܪܥܝܗܘܢ ܠܘܬ ܬܪܥܝ܀ ܘܣܩܘܦܝܗܘܢ ܠܘܬ ܣܩܘܦܝ܀ ܘܗܘܐ
ܗܘܐ ܫܘܪܐ ܒܝܢܝ ܘܠܗܘܢ܀ ܘܛܢܦܘ ܫܡܐ ܕܩܘܕܫܝ ܒܥܘܠܐ ܕܥܒܕܘ܀ ܘܫܠܡܬ ܐܢܘܢ
ܒܪܘܓܙܝ܀

* Menſus eſt enim plagam Orientalem arundine menſoriâ, quingentas arundines. 16 Deinde menſus eſt plagam Aquilonarem arundine menſoriâ, quingentas arundines per circuitum. 17 Menſus eſt etiam plagam Meridionalem, quingentas arundines arundine menſoriâ. 18 Denique menſus eſt plagam Occidentalem, quingentas arundines arundine menſoriâ. 19 In quatuor plagas ejus menſus eſt illam, 20 & murum circunquaque, cujus longitudo fuit quingentorum *cubitorum*, & latitudo quingentorum, ut diſtingueret inter ſacrum & prophanum.

CAP. XLIII.

Poſtea perduxit me ad portam quæ ſpectat Orientem verſús: 1 Et ecce gloria Dei Iſraelis veniebat à plaga Orientali, & vox ejus tanquam ſonus aquarum multarum, & terra reſplenduit ab ejus gloria, 2 Juxta viſionem quam videram prope fluvium Chobar: quapropter procidi in faciem meam. 3 Cúmque gloria Domini domum ingreſſa eſſet per viam portæ quæ ſpectabat Orientem, 4 Suſtulit me ſpiritus, introduxitque in atrium interius, & vidi repletam fuiſſe domum Domini gloriâ ipſius. 5 Et audivi quæ dixit mihi è domo; interim vir ille ſtabat juxta me. 6 Dixit autem mihi, Fili hominis, locus ſedis meæ, & locus plantarum pedum meorum, quem inhabito inter filios Iſraelis; erit in perpetuum: 7 & non polluentur ampliùs Iſraelitæ, neque polluent ampliùs nomen ſanctitatis meæ ipſi neque reges ipſorum ſcortatione ſuâ, & cadaveribus regum ſuorum, & idolis ſuis. Quorum fores faciebant prope fores meas, 8 & podia prope mea podia; adeoque paries *tantùm* intererat inter me & illa. Cúmque contaminâſſent nomen ſanctitatis meæ ſcelere quod perpetrârunt, confeci eos in ira mea.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

16 * ووقف على ظهر الباب الناظر الي المشارق * وقاس خمسماية ذراع بقصبة القياس *
17 [MS. Oxon. * ومسح الطريق للغربي بقصبة المساحة خمسماية قصبة كما يدور *]
18 * ورجع الي اليمن * وقاس على واجهة اليمن خمسمية بقصبة القياس [MS.Oxon. * ومسح
19 الطريق البحري خمسماية قصبة بقصبة المساحة] * باربعة اجزاء هذا القياس ورتبه * 20
وسور دايرا خمسماية الي المشارق * وخمسماية ذراع سعته * ليفصل ما بين الاقداس وبين
البناء الذي في رتبة البيت *

* Et conſiſtens à tergo portæ reſpicientis ad Orientem, menſus eſt quingentos cubitos calamo menſorio. 16 [MS.Oxon. Et menſus eſt plagam Aquilonarem calamo menſorio quingentas arundines per circuitum.] 17 Tum vertit ſe ad Meridiem, 18 & menſus eſt verſùs plagam Meridionalem quingentos calamo menſorio. [MS.Oxon. Et menſus eſt plagam Occidentalem quingentas arundines arundine menſoriâ;] 19 In quaternas hujus menſuræ partes, & diſpoſuit eam. 20 Murus ejus per circuitum, quingentorum erat ad Orientem, & quingentorum cubitorum amplitudo ejus; ut divideret inter ædificium quod erat in ordine domûs.

* الفصل الثالث والاربعون *

* الاصحاح الخامس والعشرون *

1 * واتي بي الي الباب الناظر نحو المشارق * واخرجني واذا مجد اله اسرايل اتي في طريق الباب
2 الناظر نحو المشارق * وصوت عسكر مثل صوت اضعاف كثيرة * واشرقت الارض مثل نور
من مجد الرب من حولها * والرويا التي رايتها لما دخلت لامسح المدينة ومنظر المركبة 3
التي رايتها * كمنظر التي رايتها علي نهر خوبار * فسقطت على وجهي * ومجد الرب دخل 4
الي البيت في طريق الباب الناظر نحو المشارق * فحملني الروح وادخلني الي الدار الداخلة * 5
واذا البيت مملو من مجد الرب * فوقفت واذا صوت من البيت يتكلم معي * ووقف رجل 6
بجانبي * وقال لي * رايت يا ابن الانسان موضع كرسي وموضع اثر قدمي * الذين فيهما 7
يسكن اسمي في وسط بيت اسرايل الي الابد * ولا يدنسون ايضا بيت اسرايل اسمي القدوس 8
هم وبنوهم بزناهم وبقتالات المقدمين في وسطهم * عند ما وضعوا ابوابي عند ابوابهم
وعتباتي بجانب عتباتهم * واعطوا جداري مثل ضابط بيني وبينهم * ودنسوا اسمي القدوس
باثامهم التي صنعوها * فكسرتهم بغضبي وقتلتهم بالقتل *

CAP. XLIII.

Textus vigeſimus quintus,

I*Nde me duxit ad portam reſpicientem verſùs Orientem.* 1 *Cúmque eduxiſſet me, ecce gloria Dei Iſraelis venit per viam portæ reſpicientis Orientem verſùs, & vox exercitûs quaſi vox multiplicium: refulſitque terra ceu lumen, propter gloriam Domini, circunquaque.* 2 *(Porrò viſio quam vidi cùm ingreſſus ſum ad ungendam* vel metiendam *urbem, & ſpecies currûs quem vidi, ſimilis erat ſpeciei illius quem videram juxta fluvium Chobar) & cecidi in faciem meam.* 3 *Gloriâ Domini domum ingreſſâ per viam portæ reſpicientis Orientem verſus,* 4 *Aſportavit me ſpiritus, & introduxit in atrium interius: & ecce domus plena erat gloriâ Domini.* 5 *Cúmque ſtetiſſem, ecce vocem è domo colloquentem mecum: ſtetit enim vir quidam ad latus meum,* 6 *Dixitque mihi; Vidiſti O fili hominis locum ſedis meæ & locum veſtigii pedum meorum, in quibus habitabit nomen meum in medio filiorum Iſraelis in æternum? & poſthac non prophanabunt domus Iſraelis nomen ſanctum meum, ipſi neque filii eorum, fornicatione ſuâ & cædibus præpoſitorum inter ipſos.* 7 *Ubi collocâſſent portas meas prope portas ſuas, & limina mea ad latus liminum ſuorum; & poſuiſſent parietem meum quaſi me & ipſos complectentem, & prophanâſſent nomen ſanctum meum iniquitatibus quas commiſerant; contrivi eos in ira mea, eoſque cæde peremi.* 8

: me à ſuorum regum cadavera & ,ſuam fornicationem elongent Nunc
9 עַתָּה יְרַחֲקוּ אֶת־זְנוּתָם וּפִגְרֵי מַלְכֵיהֶם מִמֶּנִּי
annuntia hominis fili Tu .ſeculum in eorum medio in habitabo &
10 וְשָׁכַנְתִּי בְתוֹכָם לְעוֹלָם׃ אַתָּה בֶן־אָדָם הַגֵּד
: ſuas iniquitates propter erubeſcant & ,domum Iſrael domui
אֶת־בֵּית־יִשְׂרָאֵל אֶת־הַבַּיִת וְיִכָּלְמוּ מֵעֲוֺנוֹתֵיהֶם
,fecerunt quæ omnibus de erubuerint ſi Et .exemplar metiantur &
11 וּמָדְדוּ אֶת־תָּכְנִית׃ וְאִם־נִכְלְמוּ מִכֹּל אֲשֶׁר־עָשׂוּ
,ejus introitus & ,ejus exitus & ,ejus diſpoſitionem & , domus figuram
צוּרַת הַבַּיִת וּתְכוּנָתוֹ וּמוֹצָאָיו וּמוֹבָאָיו
omnes & ,ejus *figuras omnes* & ,ejus *ſtatuta omnia* & ,ejus figuras omnes &
וְכָל־צוּרֹתָו וְאֵת כָּל־חֻקֹּתָיו וְכָל־צוּרֹתָו וְכָל־
cuſtodiant & : eorum oculis in ſcribe & , eos fac ſcire ;ejus leges
תּוֹרֹתָו הוֹדַע אוֹתָם וּכְתֹב לְעֵינֵיהֶם וְיִשְׁמְרוּ אֶת־
Iſta .*ea* facient & ,ejus *ſtatuta omnia* & ,ejus formam omnem
12 כָּל־צוּרָתוֹ וְאֶת־כָּל־חֻקֹּתָיו וְעָשׂוּ אוֹתָם׃ זֹאת
circa circum ,ejus terminus omnis ,montis *caput* ſuper : domus lex
תּוֹרַת הַבַּיִת עַל־רֹאשׁ הָהָר כָּל־גְּבֻלוֹ סָבִיב סָבִיב
menſuræ iſtæ Et .domus lex iſta Ecce .ſanctitatum ſanctitas
13 קֹדֶשׁ קָדָשִׁים הִנֵּה־זֹאת תּוֹרַת הַבָּיִת׃ וְאֵלֶּה מִדּוֹת
cubiti & , cubiti ſinus & : palmus & ,cubitus cubitus ;cubitis in altaris
הַמִּזְבֵּחַ בָּאַמּוֹת אַמָּה אַמָּה וָטֹפַח וְחֵיק הָאַמָּה וְאַמָּה
hæc & : unius *pugilli circum* ejus labium ad *ejus terminus & ,latitudo*
רֹחַב וּגְבוּלָהּ אֶל־שְׂפָתָהּ סָבִיב זֶרֶת הָאֶחָד וְזֶה
inferius auxilii atrium ad uſque terræ *ſinu* à Et .altaris *præeminentia*
14 גַּב הַמִּזְבֵּחַ׃ וּמֵחֵיק הָאָרֶץ עַד־הָעֲזָרָה הַתַּחְתּוֹנָה
, minori *auxilii atrio* à Et .unius cubiti latitudo & , cubiti duo
שְׁתַּיִם אַמּוֹת וְרֹחַב אַמָּה אֶחָת וּמֵהָעֲזָרָה הַקְּטַנָּה
.cubiti latitudo & , cubiti quatuor *magnum auxilii atrium* ad uſque
עַד־הָעֲזָרָה הַגְּדוֹלָה אַרְבַּע אַמּוֹת וְרֹחַב הָאַמָּה׃
cornua , ſuprà & *Dei leone à &* : cubitorum quatuor *Dei mons* Et
15 וְהַהַרְאֵל אַרְבַּע אַמּוֹת וּמֵהָאֲרִאֵיל וּלְמַעְלָה הַקְּרָנוֹת
duodecim *in* longitudine viginti duo *Ariel* Et .quatuor
16 אַרְבַּע׃ וְהָאֲרִאֵיל שְׁתֵּים עֶשְׂרֵה אֹרֶךְ בִּשְׁתֵּים עֶשְׂרֵה
auxilii atrium Et *.ſuas quadraturas* quatuor *ad* quadratum ,latitudinis
17 רֹחַב רָבוּעַ אֶל־אַרְבַּעַת רְבָעָיו׃ וְהָעֲזָרָה
ad latitudinis quatuordecim *in* longitudinis quatuordecim
אַרְבַּע עֶשְׂרֵה אֹרֶךְ בְּאַרְבַּע עֶשְׂרֵה רֹחַב אֶל־
,cubiti dimidii *eam circum terminus* & : ejus *quadraturas* quatuor
אַרְבַּעַת רְבָעֶיהָ וְהַגְּבוּל סָבִיב אוֹתָהּ חֲצִי הָאַמָּה
.orientem *reſpicere* ejus gradus Et .*circum* :cubiti ei *ſinus &*
וְהַחֵיק־לָהּ אַמָּה סָבִיב וּמַעֲלֹתֵהוּ פְּנוֹת קָדִים׃
Hæc : *Dominus* Dominus dixit Sic ,hominis Fili ,me ad dixit Et
18 וַיֹּאמֶר אֵלַי בֶּן־אָדָם כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה אֵלֶּה
illud ſuper *faciendum aſcendere* ad : illud *fieri* die in altaris ſtatuta
חֻקּוֹת הַמִּזְבֵּחַ בְּיוֹם הֵעָשׂוֹתוֹ לְהַעֲלוֹת עָלָיו
ad dabis Et .ſanguinem illud ſuper ſpargendum ad & ,*aſcenſionem*
19 עוֹלָה וְלִזְרֹק עָלָיו דָּם׃ וְנָתַתָּה אֶל־
,me ad *propinqui* , Sadoc ſemine de *ipſi* qui , *Levitas ſacerdotes*
הַכֹּהֲנִים הַלְוִיִּם אֲשֶׁר הֵם מוֹרַע צָרוֹק הַקְּרֹבִים אֵלַי
bovis filium vitulum : mihi *miniſtrandum ad* ,*Dominus* Dominus ait
נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִה לְשָׁרְתֵנִי פַּר בֶּן־בָּקָר
quatuor *ſuper dabis* & ,ejꝰ ſanguine de aſſumes Et .peccato pro *ſacrificiū ad*
20 לְחַטָּאת׃ וְלָקַחְתָּ מִדָּמוֹ וְנָתַתָּה עַל־אַרְבַּע
: *circum terminum ad & ,auxilii atrii* angulis quatuor in & ,ejus cornibus
קַרְנֹתָיו וְאֶל־אַרְבַּע פִּנּוֹת הָעֲזָרָה וְאֶל־הַגְּבוּל סָבִיב
:peccato pro vitulum tolles Et .illud expiabis & ,illud mundabis &
21 וְחִטֵּאתָ אוֹתוֹ וְכִפַּרְתָּהוּ׃ וְלָקַחְתָּ אֵת הַפָּר הַחַטָּאת
.ſanctuarium extra domus *præcepto in* eum comburet &
וּשְׂרָפוֹ בְּמִפְקַד הַבַּיִת מִחוּץ לַמִּקְדָּשׁ׃

Verſio VULG. LAT.

9 Nunc ergò repellant procul fornicationem ſuam, & ruinas regū
ſuorum à me: & habitabo in medio
10 dio eorum ſemper. Tu autem, fili
hominis, oſtende domui Iſrael
templum, & confundantur ab iniquitatibus ſuis, & metiantur fabricā:
11 Et erubeſcant ex omnibus
quæ fecerunt: Figuram domûs,
& fabricæ ejus exitus, & introitus, & omnē diſcriptionem ejꝰ, &
univerſa præcepta ejus, cunctúmque ordinem ejus, & omnes leges ejus oſtende eis, & ſcribes in
oculis eorū: ut cuſtodiant omnes
deſcriptiones ejus, & præcepta illius,
12 & faciant ea. Iſta eſt lex dómꝰ in ſummitate montis: Omnis
finis ejꝰ in circuitu, Sanctum ſanctorum eſt: hæc eſt ergò lex domûs.
13 Iſtæ autem menſuræ altaris
in cubito veriſſimo, qui habebat cubitum & palmum: in ſinu ejus erat cubitus & cubitus in
latitudine, & definitio ejꝰ uſque
ad labium ejus, & in circuitu,
palmus unus: hæc quoq; erat foſſa altaris.
14 Et de ſinu terræ uſque
ad crepidinem noviſſimam duo
cubiti, & latitudo cubiti unius: et
à crepidine minore uſq; ad crepidinem majorem quatuor cubiti,
15 & latitudo cubiti unius. Ipſe
autem Ariel quatuor cubitorum:
& ab Ariel uſque ad ſurſū, cornua quatuor.
16 Et Ariel duodecim
cubitorum in longitudine per
duodecim cubitos latitudinis:
17 quadrangulatū æquis lateribꝰ. Et
crepido quatuordecim cubitorū
lōgitudinis, ꝑ quatuordecim cubitos latitudinis in quatuor angulis ejus: & corona in circuitu
ejꝰ dimidii cubiti, & ſinꝰ ejꝰ uniꝰ
cubiti per circuitum: gradꝰ autē
18 ejꝰ verſi ad Orientē. Et dixit ad
me; Fili hominis, hæc dicit Dominꝰ Deꝰ; Hi ſunt ritꝰ altaris, in
quacunque die fuerit fabricatū;
ut offeratur ſuper illud holocauſtū,
19 & effundatur ſanguis. Et dabis ſacerdotibꝰ, & Levitis, qui
ſunt de ſemine Sadoc, qui accedunt ad me, ait Dominꝰ Deꝰ, ut
offerant mihi vitulum de armento
20 to pro peccato. Et aſſumens de
ſanguine ejꝰ, pones ſuper quatuor cornua ejus, & ſuper quatuor
angulos crepidinis, & ſuper coronam in circuitu: & mundabis
21 illud, & expiabis. Et tolles vitulū, qui oblatus fuerit pro peccato: & combures eum in ſeparato
loco domûs extra Sanctuarium.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

9 Καὶ νῦν ἀπωσάσθωσαν τὴν πορνείαν αὐτῶν, καὶ
τοὺς φόνους τῶν ἡγουμένων αὐτῶν ἀπ' ἐμοῦ, καὶ
κατασκηνώσω ἐν μέσῳ αὐτῶν (θ) τὸν αἰῶνα.
10 Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, δεῖξον τῷ οἴκῳ
Ἰσραὴλ τὸν οἶκον· καὶ κοπάσουσιν ἀπὸ τῶν ἁμαρτιῶν αὐτῶν· καὶ τὴν ὅρασιν αὐτοῦ, καὶ τὴν διάταξιν αὐτοῦ.
11 Καὶ αὐτοὶ λήψονται τὴν κόλασιν αὐτῶν περὶ πάντων ὧν ἐποίησαν. καὶ διαγράψεις τὸν οἶκον, (ι) καὶ τὰς ἐξόδους αὐτοῦ,
καὶ τὴν ὑπόστασιν αὐτοῦ, καὶ πάντα τὰ προστάγματα αὐτοῦ, καὶ πάντα τὰ νόμιμα αὐτοῦ γνωριεῖς αὐτοῖς, καὶ (κ) διαγράψεις ἐναντίον
αὐτῶν· καὶ φυλάξονται πάντα τὰ δικαιώματά μου, καὶ πάντα τὰ προστάγματά μου, καὶ
12 ποιήσουσιν αὐτά. Καὶ τὴν διαγραφὴν τοῦ οἴκου
ἐπὶ τῆς κορυφῆς τοῦ ὄρους, πάντα τὰ ὅρια αὐτοῦ
13 κυκλόθεν ἅγια ἁγίων (λ). Καὶ ταῦτα
τὰ μέτρα τοῦ θυσιαστηρίου ἐν πήχει τοῦ πήχεως,
καὶ παλαιστῆς, (μ) κόλπωμα βάθος ἐπὶ πῆχυν, καὶ πῆχυς τὸ εὖρος, καὶ γεῖσος ἐπὶ
(ν) τὸ χεῖλος αὐτοῦ κυκλόθεν, σπιθαμῆς.
14 καὶ τοῦτο τὸ ὕψος τοῦ θυσιαστηρίου Ἐκ βάθους
τῆς ἀρχῆς τοῦ κοιλώματος αὐτοῦ, πρὸς τὸ ἱλαστήριον τὸ μέγα (ξ) τοῦτο, ὑποκάτωθεν
πηχῶν δύο, καὶ τὸ εὖρος πήχεως· καὶ ἀπὸ
τοῦ ἱλαστηρίου τοῦ μικροῦ ἐπὶ τὸ ἱλαστήριον τὸ
μέγα, πήχεις τέσσαρες, καὶ εὖρος (ο) πῆχυς.
15 Καὶ τὸ ἀριὴλ πηχῶν τεσσάρων, καὶ ἀπὸ τοῦ ἀριὴλ, καὶ ὑπεράνω τῶν κεράτων πῆχυς.
16 Καὶ τὸ ἀριὴλ πηχῶν δώδεκα μήκους,
ἐπὶ πήχεις δώδεκα (π), τετράγωνον ἐπὶ
17 τὰ τέσσαρα μέρη αὐτοῦ. Καὶ τὸ ἱλαστήριον
πηχῶν δεκατεσσάρων τὸ μῆκος, ἐπὶ πήχεις δεκατέσσαρας τὸ εὖρος (ρ) ἐπὶ τέσσαρα μέρη αὐτοῦ, καὶ τὸ γεῖσος (ʹ) αὐτῷ κυκλόθεν κυκλούμενον αὐτῷ ἥμισυ πήχεως·
καὶ τὸ κύκλωμα αὐτοῦ πῆχυς κυκλόθεν, καὶ
οἱ (σ) κλιμακτῆρες αὐτοῦ βλέποντες (ʺ) κατὰ
18 ἀνατολάς. Καὶ εἶπε πρός με, Υἱὲ ἀνθρώπου, τάδε λέγει κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ,
Ταῦτα τὰ προστάγματα τοῦ θυσιαστηρίου ἐν
ἡμέρᾳ ποιήσεως αὐτοῦ, τοῦ ἀναφέρειν ἐπ'
αὐτοῦ (τ) ὁλοκαυτώματα, καὶ προσχέειν πρὸς
19 αὐτὸ αἷμα. Καὶ δώσεις τοῖς ἱερεῦσι τοῖς
Λευίταις (υ) τοῖς ἐκ τοῦ σπέρματος Σαδδοὺκ (φ) τοῖς ἐγγίζουσι πρός με, λέγει κύριος ὁ θεὸς (χ), τοῦ λειτουργεῖν μοι μόσχον
20 ἐκ βοῶν περὶ ἁμαρτίας. Καὶ λήψονται
ἐκ τοῦ αἵματος αὐτοῦ, καὶ ἐπιθήσουσιν ἐπὶ τὰ (ʹ)
τέσσαρα κέρατα τοῦ θυσιαστηρίου, καὶ ἐπὶ τὰς
τέσσαρας γωνίας τοῦ ἱλαστηρίου, καὶ ἐπὶ τὴν βάσιν
21 κύκλῳ, (ψ) καὶ ἐξιλάσονται (ʺ) αὐτό. Καὶ
λήψονται τὸν μόσχον τὸν (ω) περὶ ἁμαρτίας, καὶ
κατακαυθήσεται ἐν τῷ ἀποκεχωρισμένῳ
τοῦ οἴκου, ἔξωθεν τῶν ἁγίων.

Et nunc abjicient fornicationem 9
ſuam, & (d) homicidia ducum
ſuorum à me: & habitabo in medio eorum in ſempiternum. Et tu, 10
fili hominis, oſtende domui Iſrael
domum, & ceſſabunt à peccatis
ſuis: & viſionem ejus, & diſpoſitionem (e) illius: Et ipſi ſuſtinebunt tormentum ſuum pro o- 11
mnibus quæ fecerunt. Et deſcribes domum, (f) & exitus ejus, &
ſubſtantiam ejus: & omnia præcepta illius, et omnia legitima (g)
eius oſtendes illis, & deſcribes
coram eis: & cuſtodient omnes
juſtificationes meas, & omnia
præcepta mea, & facient ea: Et 12
deſcriptionem domûs in vertice
montis: omnes termini ejus in
circuitu Sancta ſanctorum ſunt.
Et (h) hæ menſuræ altaris in cubito (i) cubiti, & palæſtes, ſinus 13
profundi per cubitum, & cubitus
latitudinis, & (k) giſus per labium ejus in circuitu, palmi unius. Et hæc eſt altitudo altaris
A (l) profundo exordii cavitatis 14
ejus ad propitiatorium magnum,
quod erat ſubter, cubitorum duorum, & latitudo cubiti. Et à
(m) propitiatorio minori ad propitiatoriū majus cubiti quatuor, et
latitudo cubitus. Et (n) Ariel cubitorum quatuor: & ab Ariel, 15
& uſque ad ſuperiora cornuum
cubitus. Ipſum autem Ariel duodecim cubitos habebat in longitudine, ad cubitos (o) duodecim, 16
quatuor angulorum per quatuor
partes ejus. Et propitiatorium, 17
quatuordecim cubitorum longitudo, ad cubitos quatuordecim latitudo per quatuor partes ejus: et
giſus ei per circuitum gyrans illud, dimidio cubito: & circuitus
ejus, cubitus per gyrum: & gradus ejus reſpicientes ad Orientem. Et dixit ad me; Fili hominis, hæc dicit Dominus Deus Iſrael; Hæc ſunt præcepta altaris 18
in die effectionis ejus, ut offerantur ſuper eo holocauſtomata, &
effundatur ſuper illud ſanguis. Et 19
dabis ſacerdotibus Levitis, qui
ſunt ex ſemine Sadduc, qui appropinquant ad me, dicit Dominꝰ
Deus, ut miniſtrent mihi vitulum de bobus pro peccato: Et tollent de ſanguine ejus, et ponent 20
ſuper quatuor cornua altaris, &
ſuper quatuor angulos propitiatorii, et ſuper baſim in circuitu, et
expiabunt illud. Et tollent vitulum qui pro peccato: & comburetur in loco ſeparato domûs extra 21
Sancta.

MS.A. (θ) εἰς τὸν (ι) καὶ τὴν ἑτοιμασίαν αὐτοῦ, καὶ τὰς ἐξόδους αὐτοῦ, καὶ τὰς εἰσόδους αὐτοῦ, καὶ τὴν (κ) διαγραφὴν (λ) εἰσίν· οὗτος ὁ νόμος τοῦ οἴκου. Καὶ (μ) τὸ κόλπωμα βάθος πῆχυς ἐπὶ πῆχυν, καὶ πῆχυς (ν) τοῦ χείλους (ξ) τὸ ὑποκάτωθεν (ο) πήχεως. (π) πλάτους, τετράγωνον (ρ) τετράγωνον ἐπὶ τὰ τέσσαρα (ʹ) αὐτῶν (σ) κλιμακτῆρες (ʺ) κατ' (τ) τὰ ὁλοκαυτώματα, καὶ προσχέειν πρὸς τὸ αἷμα. (υ) ἐκ τοῦ (φ) καὶ τοῖς (χ) τοῦ Λευὶ, λειτουργεῖν (ʹ) τέσσαρα (ψ) καὶ περιρραντιεῖς αὐτὸ, καὶ (ʺ) αὐτόν. (ω) ὑπὲρ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

9 כְּעַן יְרַחֲקוּן יָת טַעֲוָתְהוֹן וּפִגְרֵי מַלְכֵיהוֹן מִלְמֶחֱטֵי קֳדָמַי וְאַשְׁרֵי שְׁכִנְתִּי בֵּינֵיהוֹן לְעָלַם׃
10 אַתְּ בַּר אָדָם חַוִּי יָת בֵּית יִשְׂרָאֵל יָת בֵּיתָא וְיִתְכַּנְעוּן מֵחוֹבֵיהוֹן וְיִמְשְׁחוּן יָת טִקוּסֵיהּ׃
11 וְאִם יִתְכַּנְעוּן מִכֹּל דַּעֲבַדוּ בְּמֶחֱזֵיהוֹן צוּרַת בֵּיתָא וְטִקוּסֵיהּ וּמַפְקָנוֹהִי וּמַעֲלָנוֹהִי
וְכָל צוּרָתֵיהּ וְיָת כָּל גְּזֵירָתֵיהּ וְכָל צוּרָתֵיהּ וְכָל דַּחֲזֵי לֵיהּ הוֹדַע יָתְהוֹן וּכְתוֹב לְעֵינֵיהוֹן
12 וְיִטְּרוּן יָת כָּל צוּרָתֵיהּ וְיָת כָּל גְּזֵירָתֵיהּ וְיַעְבְּדוּן יָתְהוֹן׃ דָּא אוֹרָיְתָא דְּבֵיתָא עַל רֵישׁ
13 טוּרָא כָּל תְּחוּמֵיהּ סְחוֹר סְחוֹר קֹדֶשׁ קוּדְשַׁיָּא הָא דָא אוֹרָיְתָא דְּבֵיתָא׃ וְאִלֵּין מִשְׁחַת
מַדְבְּחָא בְּאַמַּיָּא בְּאַמְּתָא דְּהִיא אַמָּה וּפְשַׁךְ וְתַשְׁוִיתָא אַמְּתָא וְאַמְּתָא פּוּתְיָא וְגִדְנְפָא
14 מַקִּיף לַהּ עַל סִפְתֵיהּ סְחוֹר סְחוֹר זַרְתָּא חֲדָא וְדֵין טִקּוּס מַדְבְּחָא׃ וּמִתַּשְׁוִית אַרְעָא עַד
מְסַמְתָּא אַרְעִיתָא תַּרְתֵּין אַמִּין וּפוּתְיָא אַמְּתָא חֲדָא וּמִמְּסַמְתָּא זְעֵרְתָּא עַד מְסַמְתָּא
15 רַבְּתָא אַרְבַּע אַמִּין וּפוּתְיָא אַמְּתָא׃ וּמַדְבְּחָא אַרְבַּע אַמִּין וּמִמַּדְבְּחָא וּלְעֵלָּא קַרְנָתָא
16 אַרְבַּע׃ וּמַדְבְּחָא תַּרְתָּא עַסְרֵי אוּרְכָּא בְּתַרְתָּא עַסְרֵי פּוּתְיָא מְרַבַּע עַל אַרְבְּעָא
17 סִטְרוֹהִי׃ וּמְסַמְתָּא אַרְבַּע עַסְרֵי אוּרְכָּא בְּאַרְבַּע עַסְרֵי פּוּתְיָא עַל אַרְבַּע סִטְרָהָא
וְגִדְנְפָא מַקִּיף לַהּ סְחוֹר סְחוֹר פַּלְגוּת אַמְּתָא וְתַשְׁוִיתָא לַהּ אַמְּתָא סְחוֹר סְחוֹר וְדַרְגִּן
18 דְּסָלְקִין לַהּ מִתְפְּנַן לְמַדִנְחָא׃ וַאֲמַר לִי בַּר אָדָם כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים אִלֵּין גְּזֵירַת
מַדְבְּחָא בְּיוֹם אִתְעֲבָדוּתֵיהּ לְאַסָּקָא עֲלוֹהִי עֲלָתָא וּלְמִזְרַק עֲלוֹהִי דַּם נִכְסַת קוּדְשַׁיָּא׃
19 וְתִתֵּן לְכָהֲנַיָּא לֵוָאֵי דִּי אִנּוּן מִזַּרְעָא דְּצָדוֹק דִּקְרִיבִין לְפוּלְחָנִי אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים לְשַׁמָּשָׁא
20 קֳדָמַי תּוֹר בַּר תּוֹרֵי לְחַטָּתָא׃ וְתִסַּב מִדְּמֵיהּ וְתִתֵּן עַל אַרְבַּע קַרְנָתֵיהּ וְעַל אַרְבַּע זָוְיַת
21 מְסַמְתָּא וְעַל תְּחוּמָא סְחוֹר סְחוֹר וּתְדַכֵּי יָתֵיהּ וּתְכַפֵּר עֲלוֹהִי׃ וְתִסַּב יָת תּוֹרָא דְחַטָּתָא
וְיוֹקְדִנֵּיהּ בַּאֲתַר דַּחֲזֵי לְבֵיתָא מִבָּרָא לְמַקְדְּשָׁא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Nunc projicient idola ſua, & cadavera regum ſuorum, ut non peccent coram 9
me: & habitare faciam majeſtatem meam in medio eorū in æternum. Tu autem 10
fili hominis oſtende domui Iſrael domū, & confundantur à peccatis ſuis
& metiantur fabricā ejꝰ. Quòd ſi erubuerint ex omnibꝰ quæ fecerunt cùm 11
viderint figurā domꝰ & fabricam ejꝰ, & exitꝰ ejꝰ & introitus ejꝰ, & omnes
figuras ejꝰ, & omnia inſtituta ejꝰ, & omnes formas ejꝰ, & omnia quæ ad eam
pertinent oſtende eis, & ſcribe ante oculos eorū ut cuſtodiant omnes figuras
ejꝰ, & omnia inſtituta ejꝰ, & faciant ea. Hæc eſt lex domꝰ in vertice montis, 12
et omnis terminꝰ ejꝰ per circuitū Sanctū ſanctorū: iſta eſt lex domꝰ. Et hæ ſūt 13
menſuræ altaris in cubitis, in cubito qui habet cubitū & palmum: & fundamentū
ejꝰ cubiti uniꝰ & cubiti latitudinis: & clauſura ejꝰ in circuitu ſuper labiū
ejꝰ circumquaq; palmi uniꝰ: & iſta erat compoſitio altaris. Et à fundamento 14
terræ uſque ad atrium inferiꝰ duo cubiti, & latitudo cubiti unius: &
ab atrio minori uſque ad atrium majꝰ quatuor cubiti, & latitudo cubiti uniꝰ.
Et altare quatuor cubitorum; & ab altari & ſurſum, cornua quatuor. 15
Et altare duodecim habebat in longitudine cum duodecim latitudinis, quadratum 16
quatuor ſuis lateribus. Et atrium quatuordecim cubitorum longitudinis 17
& quatuordecim latitudinis ex quatuor lateribus ſuis, & clauſura circum
illud per gyrum dimidii cubiti; & fundamentum ei erat unius cubiti
per circuitum, & *gradus* per *quos* aſcendebant ad illud reſpiciebant ad Orientem.
Et dixit ad me: Fili hominis, hæc dicit Dn̄s Deꝰ: Hi ſunt ritus altaris 18
in die quo factū fuerit ut offeratur ſuper illud holocauſtum, & ut diſpergatur
ſuper illud ſanguis victimarum ſanctificatarum. Et dabis Sacerdotibꝰ Levitis 19
qui ſunt de ſemine Sadok qui accedunt ad cultum meum, ait Dominus Deus,
ut miniſtrent coram me, vitulum filium bovis pro peccato. Et tolles 20
de ſanguine ejus, & dabis ſuper quatuor cornua ejus, & ſuper quatuor
angulos atrii & ſuper terminum ejus in circuitu, & luſtrabis illud & expiabis
illud. Et tolles vitulum pro peccato, & comburetur in loco apto domus 21
extra ſanctuarium.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

9 * ܗܫܐ ܢܪܚܩܘܢ ܙܢܝܘܬܗܘܢ ܘܦܓܪܐ ܕܡܠܟܝܗܘܢ ܡܢ ܩܕܡܝ. ܘܐܫܪܐ ܒܝܢܬܗܘܢ
10 ܠܥܠܡ. * ܘܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ. ܚܘܝܗܝ ܠܒܝܬܐ ܗܢܐ ܠܒܝܬ ܝܫܪܝܠ. ܘܢܬܟܠܡܘܢ
11 ܡܢ ܚܛܗܝܗܘܢ ܕܐܚܛܘ ܒܝ. ܘܢܡܫܚܘܢܝܗ ܠܕܡܘܬܗ ܕܒܝܬܐ. * ܘܐܢ ܢܬܟܠܡܘܢ ܡܢ ܟܠ ܡܐ
ܕܥܒܕܘ. ܨܘܪܬܗ ܕܒܝܬܐ ܘܬܘܩܢܗ. ܘܡܦܩܢܘܗܝ ܘܡܥܠܢܘܗܝ. ܘܟܠܗ ܨܘܪܬܗ ܚܘܝ
ܐܢܘܢ. ܘܟܬܘܒ ܠܥܝܢܝܗܘܢ. ܕܢܛܪܘܢ ܟܠܗܝܢ ܨܘܪܬܗ. ܘܟܠܗ ܪܘܫܡܗ ܘܢܥܒܕܘܢ ܐܢܝܢ.
12 * ܗܢܘ ܚܙܘܐ ܕܒܝܬܐ ܥܠ ܪܝܫܗ ܕܛܘܪܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܬܚܘܡܘܗܝ ܚܕܪܝܗ. ܩܘܕܫ ܩܘܕܫܐ ܐܢܘܢ.
13 * ܗܠܝܢ ܡܫܘܚܬܗ ܕܡܕܒܚܐ ܒܐܡܘܬܐ. ܐܡܬܐ ܕܐܡܬܐ ܘܦܫܟ. ܥܘܒܗ ܕܐܡܬܐ. ܐܡܬܐ. ܘܬܚܘܡܐ
14 ܕܥܠ ܣܦܬܗ ܙܪܬܐ ܚܕ ܚܕܪܝܗ. ܘܗܢܘ ܓܒܐ ܕܡܕܒܚܐ. * ܘܡܢ ܐܪܥܐ ܘܥܕܡܐ ܠܬܚܘܡܐ ܬܚܬܝܐ
ܬܪܬܝܢ ܐܡܝܢ. ܘܦܬܝܗ ܐܡܬܐ ܚܕܐ. ܘܡܢ ܬܚܘܡܐ ܬܚܬܝܐ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܝܐ. ܐܪܒܥ ܐܡܝܢ.
15 ܘܦܬܝܗ ܐܡܬܐ. * ܘܗܕܐܝܠ ܐܪܒܥ ܐܡܝܢ. ܘܡܢ ܗܕܐܝܠ ܘܠܥܠ. ܩܪܢܬܐ ܐܪܒܥ.
16 * ܘܐܘܪܟܗ ܕܗܕܐܝܠ. ܬܪܬܥܣܪܐ ܐܡܝܢ. ܘܦܬܝܗ ܬܪܬܥܣܪܐ. ܡܪܒܥ ܠܐܪܒܥ ܦܢܝܬܗ.
17 * ܘܐܘܪܟܗ ܐܪܒܥܣܪܐ ܐܡܝܢ. ܘܦܬܝܗ ܐܪܒܥܣܪܐ. ܡܪܒܥ ܠܐܪܒܥ ܦܢܝܬܗ.
ܘܬܚܘܡܐ ܕܚܕܪ ܚܕܪܘܗܝ. ܦܠܓܘܬ ܐܡܬܐ. ܘܟܘܦܐ ܕܝܠܗ ܚܕܐ ܚܕܪܝܗ. ܘܕܪܓܘܗܝ
18 ܚܙܝܢ ܠܡܕܢܚܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܒܪ ܐܢܫܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܠܝܢ ܢܡܘܣܘܗܝ
ܕܡܕܒܚܐ ܒܝܘܡܐ ܕܡܬܒܢܐ. ܕܢܩܪܒܘܢ ܥܠܘܗܝ ܥܠܬܐ. ܘܢܙܠܚܘܢ ܕܡܐ ܥܠܘܗܝ.
19 * ܘܐܬܠ ܠܟܗܢܐ ܘܠܠܘܝܐ ܕܡܢ ܙܪܥܗ ܕܨܕܘܩ. ܕܡܬܩܪܒܝܢ ܠܘܬܝ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ
20 ܠܡܫܡܫܘܬܝ. ܬܘܪܐ ܒܪ ܒܩܪܐ ܠܚܛܝܬܐ ܕܚܛܗܐ. * ܘܬܣܒ ܡܢ ܕܡܗ. ܘܬܙܠܘܚ
ܥܠ ܩܪܢܬܗ ܕܡܕܒܚܐ. ܘܥܠ ܐܪܒܥ ܙܘܝܬܐ ܕܬܚܘܡܗ. ܘܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܚܕܪ ܚܕܪܘܗܝ.
21 ܘܬܙܠܘܚ ܥܠܘܗܝ. ܘܢܬܕܟܐ. * ܘܬܣܒ ܬܘܪܐ ܕܚܛܝܬܐ. ܘܢܩܪܒܘܢܝܗ ܠܣܛܪܗ
ܕܒܝܬܐ ܠܒܪ ܡܢ ܡܩܕܫܐ.

* Poſthac amovebunt ſcortationē ſuā & cada- 9
vera regum ſuorū à conſpectu meo, & habita-
bo inter eos in perpetuū. Tu igitur fili homi- 10
nis, oſtende domum iſtā Iſraelitis, & ſeſe cohi-
beant à ſcelere quo contra me deliquerunt,
& metiantur figurā domûs. Quòd ſi retrahant 11
ſeſe ab his quæ fecerunt, formas domûs & con-
ſtitutionem ejus, aditus exitúſq; ipſius, totam
deniq; formam ipſius oſtende eis, & deſcribe
corā eis; ut obſervent omnes figuras ejus, to-
támq; deſcriptionem ejus, & faciant eas. Hæc 12
eſt ſpecies domûs ſupra montis cacumine *ſitæ*,
& omnes termini ejus circunquaque Sancti
Sanctorū ſunt. Hæ ſunt dimenſiones altaris per 13
cubitos *ſumendo cubitum pro* cubito & pal-
mo: ſinus ejus cubitalis erat, cubiti *unius*: &
balauſtium habebat labrum ejus, ſpithamale
circunquaque: eodémq; modo in latere ipſius.
A ſolo balauſtium infimum uſque, duo cubiti; 14
& hujus latitudo cubitus unus: à balauſtio
autem infimo ad ſupremum uſq; quatuor cubi-
ti, latitudo verò cubitus. Hedael quatuor erat 15
cubitorum; & ab Hedaele ſurſum verſùs, cor-
nua quatuor. Longitudo Hedaelis duodecim 16
cubitorum, & latitudo duodecim: quadratus
erat per quaterna ipſius latera. Balauſtii ejus 17
longitudo quatuordecim cubitorum, & qua-
tuordecim latitudo per quaterna ipſius latera:
nam balauſtiū & crepido quæ cingebat eum,
dimidii erat cubiti: ſinúmque habebat circun-
quaque: & gradus ejus reſpiciebant Orientē
verſùs. Tum dixit mihi, Fili hominis, ſic dicit 18
Dn̄s dominorum; Hæ ſunto leges altaris quā
die fabricatum fuerit: Offerent ſuper illud
holocauſtū, ſpargéntq; ſanguinem ſuper illud.
Dabo ſacerdotibus & Levitis qui ſunt ex ſe- 19
mine Sadoci, qui ad me accedunt (ait Domi-
nus dominorum) ut mihi miniſtrent, taurum
bovinum in expiationem peccatorum. Hujus 20
è ſanguine ſumes, ſpargeſq; per quaterna alta-
ris cornua, per quatuor balauſtii ejus angulos,
pérque crepidinem quæ cingit illud: ſparges
inquam ſuper illud, & mundabitur. Deinde 21
ſumes taurum expiationis, & offerent eum ad
latus domûs extra Sanctuarium.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

9 * والآن يبعدوا زناهم وقتلات مقدميهم عني * واسكن في وسطهم الي الابد * وانت يا ابن 10
الانسان * اظهر لبيت اسرائيل البيت ومثله ورتبته * ويكفون من خطاياهم * فهم ياخذون 11
عقابهم من جميع ما صنعوا * وترسم البيت وتهيي هيئته * ومخارجه ومداخله * وقوامه * وجميع
اوامره وجميع نواميسه تعرفهم * وترسمها امامهم * ويحفظون جميع حقوقي وجميع اوامري *
12 ويصنعوها * ورسم البيت على راس الجبل * وجميع حدوده من حوله هي اقداس القديسين *
13 وهذا ناموس البيت * وهذه مقادير المذبح بذراع الذراع وشبر * عمق حضنه ذراع على
14 ذراع * وذراع سعته * وافريز شبر على حافته من حوله * وهذا ارتفاع المذبح * من عمق بدء
جوفه الي المغفر الاكبر الذي من اسفل * ذراعان * وسعته ذراع * ومن المغفر الاصغر
15 الي المغفر الاكبر اربعة اذرع * وعرضه ذراع * والاريال اربعة اذرع * ومن الاريال وفوق
16 القرون ذراع * وطول الاريال اثني عشر ذراعا * واثني عشر ذراعا عرضه * مربع علي اربعة
17 نواحيه * والمغفر اربعة عشر ذراعا طوله واربعة عشر ذراعا عرضه * مربع على اربعة نواحيه *
وافريزهم من داير يحوطهم نصف ذراع * ويحيطه ذراع من داير * ودرجاته تنظر نحو المشارق *
18 * وقال لي * يا ابن الانسان * هكذا يقول الرب اله اسرائيل هذه اوامر المذبح في يوم صنعته *
19 ليرفعوا عليه المحرقات * وينضحون الدم * وتعطي للكهنة اللاويين من ذرية صادوق *
والقريبين الي * يقول الرب اله لاوي * عجلا من البقر من اجل الخطية ليخدموني *
20 * وياخذون من دمه * ويضعون على اربعة قرون المذبح * وعلي اربعة زوايا المغفر * وعلي القاعدة
21 داير * وينضحونه ويستغفرون به * وياخذون العجل الذي من اجل الخطية * ويحرق في
جانب البيت من خارج الاقداس *

Jam verò amoveant fornicationem ſuam 9
& cædes præpoſitorum ſuorum à me, &
habitabo in medio eorum in æternum. Et 10
tu O fili hominis, oſtende domui Iſraelis
domum & figuram ejus, ordinémque i-
pſius, ut ceſſent à peccatis ſuis: Et 11
quidem ipſi reportabunt pœnam ſuam pro
omnibus quæ fecerunt. Deſcribes inquam,
domum, diſponéſque diſpoſitionem ejus,
egreſſus, ingreſſus, & ſubſiſtentiam i-
pſius, & omnia præcepta omnéſque leges
ejus ſignificabis illis, & deſcribes coram
eis: ut cuſtodiant omnia decreta mea, o-
mniaque præcepta mea, & perficiant illa.
Deſcriptio autem domûs ſuper montis 12
verticem eſto, & omnes ejus termini cir-
cunquaque ſunto, Sancta Sanctorum. At-
que hæc eſt lex domûs. Hæ verò ſunt 13
dimenſiones altaris per cubitum ex cubito
& ſpithamâ compoſitum*: Profunditas*
ſinûs ejus cubitus erat ſuper cubitum, &
amplitudo ejus cubitalis; & crepido pal-
maris oras ejus undique cingebat. Hæc 14
eſt altitudo altaris: ab imo principii ca-
vitatis ejus uſque ad propitiatorium ma-
jus quod erat infrà, cubiti duo; latitudo
verò ipſius, cubitus: à propitiatorio au-
tem minori ad propitiatorium majus, qua-
tuor cubiti; latitudo verò ipſius, cubitus.
Ariel quatuor cubitorum erat; & ab Arie- 15
le & ſupra cornua, cubitus. Longitudo 16
Arielis, duodecim cubitorum, & duode-
cim cubitorum latitudo ejus: quadratum
erat in quaternis lateribus ſuis. Propi- 17
tiatorii longitudo erat quatuordecim cu-
bitorum, & cubitorum quatuordecim lati-
tudo ipſius: quadratum erat per quaterna
latera: & crepido eorum undique cinge-
bat ea, ſemicubitalis: & ambitus ejus cir-
cunquaque, cubitalis: & gradus ejus ſpe-
ctabant Orientem verſùs. Dixitque mihi, 18
O fili hominis, Ita dicit Dominus Deus
Iſraelis, Hæc ſunto præcepta altaris in die
quâ conficietur, ut offerant ſuper illud ho-
locauſta, & ſanguinem aſpergant. Et da- 19
bis ſacerdotibus Levitis de ſtirpe Sadoc,
proximè ad me accedentibus (ait Dominus
Deus Levi) vitulum bovinum pro peccato,
ut mihi miniſtrent: Tolléntque de ſan- 20
guine ejus, ponéntque ſuper quaterna al-
taris cornua, ſuper quaternos propitiatorii
angulos, & ſuper baſim per circuitū: eúm-
que ſpargentes, veniam per eum poſtula-
bunt. Deinde tollent vitulum qui eſt pro 21
peccato, & comburetur ad latus domûs,
extra Sancta.

:peccato pro perfectum caprarum hircum offeres secunda die *in* Et
22 וּבַיּוֹם הַשֵּׁנִי תַּקְרִיב שְׂעִיר־עִזִּים תָּמִים לְחַטָּאת
te complendo In .vitulo *in* expiaverunt sicut altare expiabunt &
23 וְחִטְּאוּ אֶת־הַמִּזְבֵּחַ כַּאֲשֶׁר חִטְּאוּ בַּפָּר׃ בְּכַלּוֹתְךָ
de arietem & ,perfectum vaccæ filium vitulum offeres , *expiando ab*
מֵחַטֵּא תַּקְרִיב פַּר בֶּן־בָּקָר תָּמִים וְאַיִל מִן־
projicient & : *Domini facies ad* eos offeres Et .perfectum *pecore*
24 הַצֹּאן תָּמִים׃ וְהִקְרַבְתָּם לִפְנֵי יְהוָה וְהִשְׁלִיכוּ
.Domino *ascensionem eos facient ascendere* & :sal eos super sacerdotes
הַכֹּהֲנִים עֲלֵיהֶם מֶלַח וְהֶעֱלוּ אוֹתָם עֹלָה לַיהוָה׃
filium vitulum & : die pro *peccati* hircum facies diebus Septem
25 שִׁבְעַת יָמִים תַּעֲשֶׂה שְׂעִיר־חַטָּאת לַיּוֹם וּפַר בֶּן־
diebus Septem .facient perfectos *pecore* de arietem & ,bovis
26 בָּקָר וְאַיִל מִן־הַצֹּאן תְּמִימִים יַעֲשׂוּ׃ שִׁבְעַת יָמִים
.suas manus *implebunt* & : illud mundabunt & , altare expiabunt
יְכַפְּרוּ אֶת־הַמִּזְבֵּחַ וְטִהֲרוּ אֹתוֹ וּמִלְאוּ יָדָו׃
facient ultrà & , octava die in erit & : dies *consummabunt* Et
27 וִיכַלּוּ אֶת־הַיָּמִים וְהָיָה בַיּוֹם הַשְּׁמִינִי וָהָלְאָה יַעֲשׂוּ
, vestra pacifica & ,*vestras ascensiones* altare super sacerdotes
הַכֹּהֲנִים עַל־הַמִּזְבֵּחַ אֶת־עוֹלוֹתֵיכֶם וְאֶת־שַׁלְמֵיכֶם
.*Dominus* Dominus ait , *vos* *volam* &
וְרָצֵאתִי אֶתְכֶם נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה׃

CAP. XLIV. מד

respicientis exterioris sanctuarii portæ viam me fecit redire Et
1 וַיָּשֶׁב אֹתִי דֶּרֶךְ שַׁעַר הַמִּקְדָּשׁ הַחִיצוֹן הַפֹּנֶה
hæc Porta : Dominus me ad dixit Et .clausa *ipsa* & : orientem
2 קָדִים וְהוּא סָגוּר׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי יְהוָה הַשַּׁעַר הַזֶּה
quoniam : eam *in* ingredietur non vir & ,aperietur non : erit clausa
סָגוּר יִהְיֶה לֹא יִפָּתֵחַ וְאִישׁ לֹא־יָבֹא בוֹ כִּי
.clausa eritque : eam *in* est ingressus Israel Deus Dominus
3 יְהוָה אֱלֹהֵי־יִשְׂרָאֵל בָּא בוֹ וְהָיָה סָגוּר׃ אֶת־
facies ad panem *comedendum ad* ea in manebit ipse princeps ,Principis
הַנָּשִׂיא נָשִׂיא הוּא יֵשֶׁב־בּוֹ לֶאֱכוֹל־לֶחֶם לִפְנֵי
.egredietur ejus *via à* & , ingredietur portæ vestibuli *via à : Domini*
יְהוָה מִדֶּרֶךְ אוּלָם הַשַּׁעַר יָבוֹא וּמִדַּרְכּוֹ יֵצֵא׃
ecce & , vidi & : *domus facies ad Aquilonis* portæ *via* me adduxit Et
4 וַיְבִיאֵנִי דֶּרֶךְ־שַׁעַר הַצָּפוֹן אֶל־פְּנֵי הַבַּיִת וָאֵרֶא וְהִנֵּה
.*meam facies ad* cecidi & : Domini domum Domini gloria implevit
מָלֵא כְבוֹד־יְהוָה אֶת־בֵּית יְהוָה וָאֶפֹּל אֶל־פָּנָי׃
vide & , tuum cor pone hominis fili , Dominus me ad dixit Et
5 וַיֹּאמֶר אֵלַי יְהוָה בֶּן־אָדָם שִׂים לִבְּךָ וּרְאֵה
loquens ego quæ omnia audi tuis auribus *in* &,tuis oculis *in*
בְעֵינֶיךָ וּבְאָזְנֶיךָ שְּׁמָע אֵת כָּל־אֲשֶׁר אֲנִי מְדַבֵּר
: ejus legibus cunctis de & ,Domini domus statutis omnibus de tecum
אֹתָךְ לְכָל־חֻקּוֹת בֵּית־יְהוָה וּלְכָל־תּוֹרֹתָו
.sanctuarii exitus omnes *in* domus ingressu in tuum cor pones Et
וְשַׂמְתָּ לִבְּךָ לִמְבוֹא הַבַּיִת בְּכֹל מוֹצָאֵי הַמִּקְדָּשׁ׃
Dominus dixit Sic , Israel domum ad rebellem ad dices Et
6 וְאָמַרְתָּ אֶל־מֶרִי אֶל־בֵּית יִשְׂרָאֵל כֹּה אָמַר אֲדֹנָי
domus vestris abominationibus omnibus de vobis *Multum : Dominus*
יְהוִה רַב־לָכֶם מִכָּל־תּוֹעֲבוֹתֵיכֶם בֵּית
præputiatos & ,corde *præputiatos alienigenæ* filios *vos inducendo In* .Israel
7 יִשְׂרָאֵל׃ בַּהֲבִיאֲכֶם בְּנֵי־נֵכָר עַרְלֵי־לֵב וְעַרְלֵי
, meam domum ipsam polluendū ad meo sanctuario in *exijiendum ad* ,carne
בָשָׂר לִהְיוֹת בְּמִקְדָּשִׁי לְחַלְּלוֹ אֶת־בֵּיתִי
infregeritis &,sanguinem & ,adipem ,meum panem *vos offerendo in*
בְּהַקְרִיבְכֶם אֶת־לַחְמִי חֵלֶב וָדָם וַיָּפֵרוּ אֶת־
.vestris abominationibus omnibus in meum pactum
בְּרִיתִי אֶל כָּל־תּוֹעֲבוֹתֵיכֶם׃

Versio VULG. LAT.

22 Et in die secunda offeres hircum caprarũ immaculatum pro peccato : & expiabunt altare, sicut 23 expiaverunt in vitulo. Cúmque compleveris expians illud, offeres vitulum de armento immaculatum, & arietem de grege im-24 maculatum. Et offeres eos in conspectu Domini : & mittent sacerdotes super eos sal, & offerent eos holocaustum Domino. 25 Septem diebus facies hircum pro peccato quotidié : & vitulum de armento, & arietem de pecoribus, immaculatos offerent. 26 Septem diebus expiabunt altare, & mundabunt illud : & imple-27 bunt manum ejus. Expletis autem diebus, in die octava & ultrà, facient sacerdotes super altare holocausta vestra, & quæ pro pace offerunt : et placatus ero vobis, ait Dominus Deus.

CAP. XLIV.

1 ET convertit me in viam portæ Sanctuarii exterioris, quæ respiciebat ad Orientem : & erat 2 clausa. Et dixit Dominus ad me; Porta hæc clausa erit : non aperietur, & vir non transibit per eam : quoniam Dominus Deus Israel ingressus est per eam, erít-3 que clausa Principi. Princeps ipse sedebit in ea, ut comedat panem coram Domino : per viam portæ vestibuli ingredietur, & 4 per viam ejus egredietur. Et adduxit me per viam portæ Aquilonis in conspectu domûs : & vidi, & ecce implevit gloria Domini domum Domini : & cecidi 5 in faciem meam. Et dixit ad me Dominus ; Fili hominis, pone cor tuum, & vide oculis tuis, & auribus tuis audi omnia, quæ ego loquor ad te de universis ceremoniis domûs Domini, & de cunctis legibus ejus : & pones cor tuum in viis templi per o-6 mnes exitus Sanctuarii. Et dices ad exasperantem me domum Israel ; Hæc dicit Dominus Deus ; Sufficiant vobis omnia scelera 7 vestra, domus Israel : Eò quòd inducitis filios alienos incircumcisos corde, & incircumcisos carne, ut sint in Sanctuario meo, & polluant domum meam : & offertis panes meos, adipem, & sanguinem : & dissolvitis pactum meum in omnibus sceleribus vestris.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

22 Καὶ τῇ ἡμέρᾳ τῇ δευτέρᾳ λήψονται ἐρίφους δύο (α) αἰγῶν ἀμώμους ὑπὲρ ἁμαρτίας, καὶ ἐξιλάσονται τὸ θυσιαστήριον, (β) 23 καθότι ἐξιλάσαντο ἐν τῷ μόσχῳ. Καὶ μετὰ τὸ συντελέσαι (γ) τὸν ἐξιλασμὸν, προσοίσουσι μόσχον ἐκ βοῶν ἄμωμον, καὶ κριὸν ἐκ 24 (δ) προβάτων ἄμωμον, Καὶ προσοίσετε ἐναντίον κυρίου· καὶ (ʹ) ἐπιρρίψουσιν οἱ ἱερεῖς ἐπ' αὐτὰ (ε) ἅλα, καὶ ἀνοίσουσιν αὐτὰ 25 ὁλοκαυτώματα τῷ κυρίῳ. Ἑπτὰ ἡμέρας ποιήσεις ἔριφον ὑπὲρ ἁμαρτίας καθ' ἡμέραν, καὶ μόσχον ἐκ βοῶν, καὶ κριὸν ἐκ (ζ) 26 προβάτων, ἄμωμα ποιήσουσιν Ἑπτὰ ἡμέρας. καὶ ἐξιλάσονται τὸ θυσιαστήριον, καὶ (¨) καθαριοῦσιν αὐτὸ· καὶ πλήσουσι (η) χεῖρας αὐτῶν. 27 Καὶ ἔσται ἀπὸ τῆς ἡμέρας τῆς ὀγδόης καὶ ἐπέκεινα, ποιήσουσιν οἱ ἱερεῖς ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον τὰ ὁλοκαυτώματα ὑμῶν, καὶ τὰ τοῦ σωτηρίου ὑμῶν· καὶ προσδέξομαι ὑμᾶς, λέγει κύριος.

MS.A. (α) ἀπὸ αἰγῶν (β) καθὼς (γ) σε τὸν (δ) τῶν προβάτων (ʹ) ἐπιρρίψουσιν (ε) ἅλας, (ζ) τῶν προβάτων, (¨) καθαριοῦσιν (η) τὰς χεῖρας αὐτῆς.

ΚΕΦ. μδ'.

1 ΚΑὶ ἐπέστρεψέ με κατὰ τὴν ὁδὸν τῆς πύλης τῶν ἁγίων τῆς ἐξωτέρας τῆς βλεπούσης κατὰ ἀ-2 νατολάς· καὶ αὕτη ἦν κεκλεισμένη. Καὶ εἶπε κύριος πρὸς μὲ, Ἡ πύλη αὕτη κεκλεισμένη (α) ἔσται, οὐκ ἀνοιχθήσεται, καὶ οὐδεὶς μὴ διέλθῃ δι' αὐτῆς· ὅτι κύριος ὁ θεὸς (β) Ἰσραὴλ εἰσελεύσεται δι' αὐτῆς, καὶ ἔσται κεκλεισμέ-3 νη. Διότι ὁ ἡγούμενος (γ) οὗτος καθήσεται ἐν αὐτῇ, τοῦ φαγεῖν ἄρτον ἐναντίον κυρίου· κατὰ τὴν ὁδὸν αἰλὰμ τῆς πύλης εἰσελεύσεται, καὶ κατὰ τὴν ὁδὸν αὐτοῦ ἐξελεύσεται. 4 Καὶ εἰσήγαγέ με κατὰ τὴν ὁδὸν τῆς πύλης τῆς πρὸς Βορρᾶν, κατέναντι τοῦ οἴκου. καὶ ἴδον, καὶ ἰδοὺ πλήρης δόξης ὁ οἶκος (δ) τοῦ κυρίου· 5 καὶ πίπτω ἐπὶ πρόσωπόν μου. Καὶ εἶπε κύριος πρὸς μὲ, Υἱὲ ἀνθρώπου, τάξον εἰς τὴν καρδίαν σου, καὶ ἴδε τοῖς ὀφθαλμοῖς (ε), καὶ τοῖς ὠσί σου ἄκουε πάντα ὅσα ἐγὼ λαλῶ μετὰ σοῦ, κατὰ πάντα τὰ προστάγματα (ζ) τοῦ οἴκου κυρίου, καὶ (η) πάντα τὰ νόμιμα αὐτοῦ. καὶ τάξεις τὴν καρδίαν σου εἰς τὴν εἴσοδον τοῦ οἴκου, κατὰ πάσας τὰς ἐξό-6 δους αὐτοῦ, ἐν πᾶσι τοῖς ἁγίοις. Καὶ ἐρεῖς πρὸς τὸν οἶκον τὸν παραπικραίνοντα, πρὸς τὸν οἶκον τοῦ Ἰσραὴλ, Τάδε λέγει κύριος ὁ θεὸς, Ἱκανούσθω ὑμῖν ἀπὸ πασῶν τῶν ἀνομιῶν ὑμῶν, οἶκος (θ) Ἰσραὴλ, 7 Τοῦ εἰσαγαγεῖν ὑμᾶς υἱοὺς ἀλλογενεῖς, ἀπεριτμήτους καρδίᾳ, καὶ ἀπεριτμήτους σαρκὶ, τοῦ γίνεσθαι ἐν τοῖς ἁγίοις μου, καὶ ἐβεβήλουν αὐτὰ, ἐν τῷ προσφέρειν ὑμᾶς ἄρτους (ι), σάρκας, καὶ αἷμα· καὶ παρεβαίνετε τὴν διαθήκην μου ἐν πάσαις ταῖς ἀνομίαις ὑμῶν,

MS.A. (α) ἔσται, καὶ οὐδεὶς (β) τοῦ Ἰσραὴλ (γ) αὐτῆς καθήσεται (δ) κυρίου· (ε) σου, καὶ (ζ) οἴκου (η) κατὰ πάντα (θ) τοῦ Ἰσραὴλ, (ι) μου, καὶ σάρκας

Et die secundâ tollent hædos duos de capris immaculatos pro peccato : & expiabunt altare, sicut expiârunt in vitulo. 22 *Et cùm compleveris expiationem ; offerent vitulum de bobus immaculatum, & arietem de ovibus immaculatum :* 23 *Et offeretis coram Domino.* 24 *Et aspergent sacerdotes super ea sal : et offerent ea holocausta Domino. Septem diebus facies hædum pro peccato quotidié ; & vitulum de bobus, & arietem de ovibus immaculatos facient* 25 *Septem diebus. Et expiabunt altare, & mundabunt illud : & implebunt (p) manus suas.* 26 *Et erit à die octavo, et ultrà, facient sacerdotes super altare holocausta vestra, & quæ pro salute vestra : & suscipiam vos, dicit Dominus.* 27

CAP. XLIV.

1 *ET convertit me ad viam portæ Sanctorum exterioris, respicientis ad Orientem : & hæc erat clausa.* 2 *Et dixit Dominus ad me ; Porta hæc clausa erit : non aperietur, & nemo transibit per eam : quoniam Dominus Deus Israel ingredietur per eam : & erit clausa :* 3 *Quia dux ipse sedebit in ea, ut comedat panem coram Domino. Per viam (a) Ælam portæ ingredietur, & per viam ejus egredietur.* 4 *Et introduxit me per viam portæ, quæ ad Aquilonem è regione domûs. Et vidi : & ecce plena gloriæ domus Domini : & cado super faciem meam.* 5 *Et dixit Dominus ad me ; Fili hominis, pone in corde tuo, & vide oculis, et auribus tuis audi omnia, quæ ego loquor tecum secundùm omnia præcepta domûs Domini, et omnia legitima ejus. Et pones cor tuum ad introitum domûs juxta omnes exitus ejus in omnibus Sanctis.* 6 *Et dices ad domum (b) exasperantem, ad domum Israel ; Hæc dicit Dominus Deus ; Sufficiat vobis de omnibus iniquitatibus vestris, domus Israel,* 7 *Eò quòd inducitis filios alienigenas incircuncisos corde, & incircuncisos carne, ut sint in Sanctis meis, & polluant ea : in offerendo vos panes, (c) carnes, & sanguinem ; et præteristis testamentum meum in omnibus iniquitatibus vestris :*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

22 וּבְיוֹמָא תִּנְיָנָא תְּקָרֵיב צְפִיר בַּר עִזֵּי שְׁלִים לְחַטָּתָא וּתְדַכֵּי יָת מַדְבְּחָא כְּמָא דְּדַכִּיאוּ
23 בְּתוֹרָא׃ בְּשֵׁיצָיוּתָךְ מִלְּדַכָּאָה תְּקָרֵיב תּוֹר בַּר תּוֹרֵי שְׁלִים וּדְכַר מִן עָנָא שְׁלִים׃
24 וּתְקָרְבִנּוּן קֳדָם יְיָ וְיִתְּנוּן כַּהֲנַיָּא עֲלֵיהוֹן מִלְחָא וְיַסְּקוּן יָתְהוֹן עֲלָתָא קֳדָם יְיָ׃
25 שַׁבְעָא יוֹמִין תַּעְבֵּיד צְפִירָא דְחַטָּתָא לְיוֹמָא וְתוֹר בַּר תּוֹרֵי וּדְכַר מִן עָנָא שְׁלִימִין
26 יַעְבְּדוּן׃ שַׁבְעָא יוֹמִין יְכַפְּרוּן עַל מַדְבְּחָא וִידַכּוּן יָתֵיהּ וִיקָרִיבוּן קוּרְבָּנֵיהּ׃ וִישַׁלְמוּן
27 יָת יוֹמַיָּא וִיהֵי בְּיוֹמָא תְמִינָאָה וּלְהָלָא יַעְבְּדוּן כַּהֲנַיָּא עַל מַדְבְּחָא יָת עֲלָוָתְכוֹן וְיָת
נִכְסַת קוּדְשֵׁיכוֹן וְיִתְקַבְּלוּן קוּרְבָּנֵיכוֹן בְּרַעֲוָא אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים׃

מד

1 וַאֲתֵיב יָתִי אוֹרַח תְּרַע מַקְדְּשָׁא בָּרָאָה דִּפְתִיחַ לְמַדִנְחָא וְהוּא אֲחִיד׃ וַאֲמַר יְיָ לִי
2 תְּרַע הָדֵין אֲחִיד יְהֵא וְלָא יִתְפְּתַח וֶאֱנָשׁ לָא יֵעוֹל בֵּיהּ אֲרֵי יְיָ אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל אִתְגְּלֵי
3 עֲלוֹהִי וִיהֵי אֲחִיד׃ לְרַבָּא יְהֵא רַבָּא הוּא יְתִיב בֵּיהּ לְמֵיכַל לַחְמָא קֳדָם יְיָ מֵאוֹרַח
4 אוּלַמָּא דְתַרְעָא יֵעוֹל וּמֵאוֹרְחֵיהּ יִפּוֹק׃ וְאָעֲלַנִי אוֹרַח תְּרַע צִפּוּנָא דִּקְדָם בֵּיתָא
5 וַחֲזֵית וְהָא אִתְמְלֵי יְקָרָא דַיְיָ יָת בֵּית מַקְדְּשָׁא דַיְיָ וְאִשְׁתַּטְּחִית עַל אַפַּי׃ וַאֲמַר לִי
יְיָ בַּר אָדָם שַׁוִּי לִבָּךְ וַחֲזִי בְעֵינָךְ וּבְאוּדְנָךְ שְׁמַע יָת כָּל דַּאֲנָא מְמַלֵּל עִמָּךְ לְכָל גְּזֵירַת
בֵּית מַקְדְּשָׁא דַיְיָ וּלְכָל דַּחֲזֵי לֵיהּ וּתְשַׁוֵּי לִבָּךְ לְמַעֲלָנֵי בֵיתָא בְּכָל מַפְקָנֵי מַקְדְּשָׁא׃
6 וְתֵימַר לְעַמָּא סָרְבָנָא לִדְבֵית יִשְׂרָאֵל כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים סַגִּי לְכוֹן מִכָּל תּוֹעֲבָתְכוֹן
7 בֵּית יִשְׂרָאֵל׃ בְּאַיְתָיוּתְכוֹן בְּנֵי עַמְמַיָּא רַשִׁיעֵי לִבָּא וְעַרְלֵי בִסְרָא לְמֶהֱוֵי בְּמַקְדְּשִׁי
לְאַפָּסָא יָת עֲזָרְתִי בְּקָרָבְכוֹן יָת קוּרְבָּנִי תְּרַב וְדַם נִכְסַת קוּדְשִׁין וְאַשְׁנִיאוּ קְיָמִי
עַל כָּל תּוֹעֲבָתְכוֹן׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et in die secunda offeres hircum filium caprarum integrum pro peccato : & 22
mundabis altare sicut mundaverunt in vitulo. Cúmque compleveris emun- 23
dationem, offeres vitulum de bobus integrum, & arietem de ovibus inte-
grum. Et offeres eos coram Dño : & dabunt Sacerdotes super eos salem, 24
& offerent eos holocaustum coram Dño. Septem diebus offeres hircum pro 25
peccato quotidie, & vitulum de bobus, & arietem de ovibus integros facient.
Septem diebus expiabunt super altare, & mundabunt illud, & offerent ob- 26
lationem ejus. Et complebuntur dies, & erit à die octavo & deinceps faci- 27
ent Sacerdotes super altare holocausta vestra & victimas sanctificatas vestras,
& suscipientur oblationes vestræ voluntariè, ait Dñs Deus.

CAP. XLIV.

ET convertit me per viam portæ sanctuarii exterioris quæ aperiebatur ad 1
Orientem, & ipsa erat clausa. Et dixit ad me Dñs : Porta hæc clausa erit 2
& non aperietur, & vir non intrabit per eam, quia *Dominus Deus* Israel
revelabitur super eam, & erit clausa. Principi erit, princeps ipse sedebit 3
in ea ut comedat panem coram Dño : à via vestibuli portæ ingredietur &
per viam ejusdem egredietur. Et introduxit me per viam Aquilonis quæ 4
erat ante domum ; & vidi & ecce implevit gloria Dñi domum sanctuarii
Dñi : & cecidi pronus super faciem meam. Et dixit ad me Dñs : Fili ho- 5
minis pone cor tuum, & vide oculis tuis, & auribus tuis audi omnia quæ
ego loquor tecum de universis cæremoniis domus sanctuarii Dñi, & de
omnibus quæ ad eam pertinent, & pones cor tuum ad ingressus domus per
omnes exitus sanctuarii. Et dices ad populum rebellem ad domum Israel : 6
Hæc dicit Dñs Deus : Sufficiant vobis omnes abominationes vestræ domus
Israel. Cùm adduceretis filios populorum impios corde & incircuncisos 7
carne, ut essent in sanctuario meo ad prophanandum atrium meum, cùm
offerretis oblationem meam adipem, & sanguinem victimarum sanctificatarum : irritum fecerunt pactum meum omnibus abominationibus vestris.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܒܝܘܡܐ ܕܬܪܝܢ ܩܪܒ ܠܚܛܝܬܐ ܨܦܝܪܐ ܕܥܙܐ ܕܠܝܬ ܒܗ ܡܘܡܐ. ܘܢܕܟܘܢܗ 22
ܠܡܕܒܚܐ ܐܝܟ ܕܕܟܝܘܗܝ ܒܬܘܪܐ. * ܘܡܐ ܕܫܠܡܬ ܠܡܕܟܝܘܬܗ. ܩܪܒ ܬܘܪܐ ܒܪ ܒܩܪܐ 23
ܕܠܝܬ ܒܗ ܡܘܡܐ. ܘܕܟܪܐ ܡܢ ܥܢܐ ܕܠܝܬ ܒܗ ܡܘܡܐ. * ܘܩܪܒ ܐܢܘܢ ܡܩܪܐ ܥܠܘܬܐ 24
ܠܡܪܝܐ. * ܘܬܩܪܒܘܢ ܫܒܥܐ ܝܘܡܝܢ ܨܦܝܪܐ ܚܕ ܒܝܘܡ ܠܚܛܝܬܐ. ܘܬܘܪܐ ܚܕ ܒܪ ܒܩܪܐ. 25
ܘܕܟܪܐ ܡܢ ܥܢܐ ܕܠܝܬ ܒܗ ܡܘܡܐ. * ܢܗܘܘܢ ܡܩܪܒܝܢ ܫܒܥܐ ܝܘܡܝܢ. ܘܢܕܟܘܢܗ 26
ܠܡܕܒܚܐ ܘܢܡܠܘܢ ܐܝܕܝܗܘܢ. * ܘܡܐ ܕܫܠܡܘ ܝܘܡܬܐ ܗܠܝܢ ܡܢ ܝܘܡܐ ܕܫܒܥܐ ܘܠܗܠ.· 27
ܢܥܒܕܘܢ ܟܗܢܐ ܥܠ ܡܕܒܚܐ ܥܠܘܬܗܘܢ ܘܩܘܪܒܢܝܗܘܢ. ܘܐܬܪܥܐ ܒܗܘܢ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܡܕ * * ܘܐܗܦܟܢܝ ܠܐܘܪܚܐ 1
ܕܬܪܥܐ ܕܡܩܕܫܐ ܒܪܝܐ ܕܚܐܪ ܠܡܕܢܚܐ ܘܚܙܝܬܗ ܐܚܝܕ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܬܪܥܐ ܗܢܐ ܢܗܘܐ 2
ܐܚܝܕ. ܘܠܐ ܢܬܦܬܚ. ܘܐܢܫ ܠܐ ܢܥܘܠ ܒܗ. ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܥܐܠ ܒܗ.
ܢܗܘܐ ܐܚܝܕ. * ܡܕܒܪܢܐ ܢܬܒ ܒܗ. ܘܢܐܟܘܠ ܠܚܡܐ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܒܐܘܪܚܐ ܕܐܣܦܩܦܐ 3
ܕܬܪܥܐ ܢܥܘܠ ܘܒܗ ܢܦܘܩ. * ܘܐܥܠܢܝ ܠܐܘܪܚܐ ܕܬܪܥܐ ܕܓܪܒܝܐ ܩܕܡ ܒܝܬܐ. ܘܚܙܝܬ 4
ܕܡܠܐ ܒܝܬܐ ܫܘܒܚܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܢܦܠܬ ܥܠ ܐܦܝ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܒܪ ܐܢܫܐ. ܣܝܡ 5
ܒܠܒܟ. ܘܚܙܝ ܒܥܝܢܝܟ. ܘܫܡܥ ܒܐܕܢܝܟ ܟܠ ܡܐ ܕܐܢܐ ܡܡܠܠ ܥܡܟ. ܘܟܠܗܘܢ
ܢܡܘܣܘܗܝ ܕܒܝܬܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܨܘܪܬܗ. ܘܣܝܡ ܠܒܟ ܠܡܥܠܢܘܗܝ ܕܒܝܬܐ.
ܘܠܡܦܩܢܘܗܝ ܕܡܩܕܫܐ. * ܘܐܡܪ ܠܒܝܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܡܡܪܡܪܢܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ 6
ܡܪܘܬܐ. ܠܐ ܣܦܩ ܠܟܘܢ ܟܠܗܝܢ ܛܢܦܘܬܟܘܢ ܒܝܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܐܠܐ ܐܦ ܡܥܠܝܢ 7
ܐܢܬܘܢ ܡܢ ܒܢܝ ܢܘܟܪܝܐ ܕܥܪܠܝܢ ܒܠܒܗܘܢ. ܘܥܪܠܝܢ ܒܒܣܪܗܘܢ: ܘܗܘܝܢ
ܒܡܩܕܫܝ. ܘܡܛܢܦܝܢ ܠܒܝܬܝ. ܘܡܩܪܒܝܢ ܐܢܬܘܢ ܥܠ ܠܚܡܝ ܬܪܒܐ ܘܕܡܐ.
ܘܡܥܒܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܩܝܡܝ ܒܟܠܗܝܢ ܛܢܦܘܬܟܘܢ.

22 * Die ſecundo offer pro expiatione hircum caprinum in quo nullum ſit vitium, & mundent altare quemadmodum mundaverant illud tauro. 23 Et cùm abſolveris mundare, offer taurum bovinum in quo nullum ſit vitium, & arietem ex ovibus in quo nullum ſit vitium: 24 Offer inquam, illos in holocauſta perfecta Domino. 25 Et ſeptem diebus offeretis hircum unum quotidie in expiationem, & taurum unum bovinum, & arietem ex ovibus in quo nullum ſit vitium. 26 Sint offerentes *hæc* ſeptem diebus, & mundent altare, conſecréntque manus ſuas. 27 Et cùm exacti fuerint illi dies, à die ſeptimo et deinceps, tunc offerent ſacerdotes ſuper altare holocauſta ſua et oblationes ſuas, quibus oblectabor, ait Dominus dominorum.

CAP. XLIV.

1 DEinde reduxit me ad viam portæ exterioris Sanctuarii, quæ reſpiciebat Orienté, vidíq; eam clauſam: 2 Et dixit mihi Dominus, porta hæc erit clauſa et non aperietur, nec quiſquam ingredietur per eam, quia Dominus Deus Iſraelis ingreditur per eam: eſto clauſa. 3 Rector ſedebit in ea comedétque panem coram Domino: viâ liminis *hujus* portæ ingredietur, eâdemque egredietur. 4 Et introduxit me ad viam portæ Aquilonaris quæ erat ante domum; vidíque repletam eſſe domum gloriâ Domini: quapropter procidi in faciem meam. 5 Tum dixit mihi Dñs; Fili hominis, repone in corde tuo, perſpice oculis tuis, & audi auribus tuis quicquid loquor tecum, omnéſque leges domûs, & omnes figuras ejus; & adhibe animum tuum ad aditus domûs, & exitus Sanctuarii. 6 Et dic ad domum Iſraelis rebellem; Sic ait Dominus dominorum, Annon ſufficiebant vobis tot impuritates veſtræ O Iſraelitæ? 7 Sed etiam adducitis ex alienigenis qui ſunt incircuncisi corde ſuo, & incircuncisi carne ſuâ, & verſantur in Sanctuario meo, & polluunt domum meam? offertis ſuper panem meum adipem & ſanguinem, & violatis fœdus meum tot impuritatibus veſtris?

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

22 * وفي اليوم الثاني ياخذون جديين من المعز بغير عيب من اجل الخطية * ويستغفرون على
23 المذبح كما استغفروا بالعجل * وبعد ان تكمل الاستغفار يقدمون عجلا من البقر لا عيب
24 فيه * وكبشا من الغنم لا عيب فيه * ويقدموهما امام الرب * ويلقي الكهنة عليهما ملحا *
25 ويرفعوهما محرقات للرب * سبعة ايام تصنع جديا من اجل الخطية كل يوم * وعجلا من البقر
26 وكبشا من الغنم لا عيب فيهم * يصنعون ذلك سبعة ايام * ويستغفرون على المذبح ويطهروه *
27 ويغسلون ايديهم * ويكون من اليوم الثامن وبعد * يصنعون الكهنة على المذبح محرقاتكم *
وما هو لخلاصكم * واقبلكم يقول الرب الرب *

* الفصل الرابع والاربعون *

1 * وردني في طريق باب الاقداس الخارج الناظر نحو المشارق * وهذا كان مغلقا * وقال لي الرب *
2 هذا الباب يكون مغلقا * لا يفتح * ولا يعبر ولا واحد فيه * لان الرب اله اسرايل يدخل فيه
3 ويخرج * ويكون مغلقا * من اجل ان هذا المقدم يجلس عليه لياكل خبزا امام الرب * في
4 طريق رواق الباب يدخل وفي طريقه يخرج * وادخلني في طريق باب الاقداس الذي نحو
5 الجربياء امام البيت * فنظرت واذا البيت مملو من مجد الرب * فسقطت على وجهي * وقال
لي الرب * يا ابن الانسان * رتب في قلبك * وانظر بعينيك * واسمع باذنيك بجميع ما انا
اتكلم به معك * بكل اوامر بيت الرب * وبكل نواميسه * ورتب قلبك في مدخل البيت *
6 بجميع مخارجه * في جميع الاقداس * وتقول للبيت المرمر * لبيت اسرايل * هكذا يقول الرب
7 الاله * اما تكتفون بكل اثامكم يا بيت اسرايل * حتى تدخلوا الابناء الغرباء الجنس
الغير مختونين بالقلب والغير مختونين باللحم * ليكونوا في اقداسي ويدنسوها عندما
يقدمون خبزا ولحما ودما * وتجاوزتم عهدي بجميع اثامكم *

22 * *Die ſecundo tollent duos hœdos caprinos immaculatos pro peccato, & veniam expoſcent ſuper altare, quemadmodum veniam popoſcerant per vitulum.* 23 *Poſtquam expleveris veniæ petitionem, offerent vitulum bovinum immaculatum, & arietem ovinum vitio carentem:* 24 *Et utrumq; offerent coram Domino: facient ſacerdotes ſalem ſuper utrumque: et attollent utrumq; in holocauſta Domino.* 25 *Septem diebus facies hœdum pro peccato ſingulis diebus, et vitulum bovinum, & arietem ovinum vitii expertes.* 26 *Facient hoc ſeptem diebus, & veniam poſcent ſuper altare, & mundabunt illud; & lavabunt manus ſuas.* 27 *Et erit ab octavo die & deinceps, ut faciant ſacerdotes ſuper altare holocauſta veſtra & quæ pertinent ad ſalutem veſtram: & ſuſcipiam vos, dicit Dominus Dominus.*

CAP. XLIV.

1 * *INde me reduxit per viam portæ Sanctorum exterioris reſpicientis Orientem verſùs: & hæc erat clauſa.* 2 *Dixitque mihi Dominus; Hæc porta erit clauſa, non aperietur, & nemo per eam tranſibit: quia Dominus Deus Iſraelis per eam ingredietur & egredietur. Erit inquam, clauſa;* 3 *Quia dux iſte ſedebit in ea ad panem edendum coram Domino: per viam porticûs hujus portæ ingredietur, & per viam ejuſdem egredietur.* 4 *Deinde introduxit me per viam portæ ſanctorum, quæ reſpiciebat Aquilonem contra domum. Cúmque reſpexiſſem, ecce domus plena erat gloriâ Domini: quarè cecidi pronus.* 5 *Tum dixit mihi Dominus, Fili hominis, diſpone in corde tuo, vide oculis tuis, & auribus tuis audi quidquid loquor tecum de omnibus præceptis domûs Domini, & de omnibus legibus ejus: & cor tuum diſpones ad introitum domûs, ad omnes exitus ejus, ad omnia Sancta.* 6 *Et dices domui huic exaſperanti, domui Iſraelis; Sic ait Dominus Deus, Annon contenti eſtis tot ſceleribus veſtris O domus Iſraelis,* 7 *ut introducatis filios alieni generis, incircunciſos corde, & incircunciſos carne; ut ſint in Sanctis meis, & prophanent ea offerendo panem, carnem, & ſanguinem? Tranſgreſſi eſtis fœdus meum tot iniquitatibus veſtris,*

יחזקאל : מד

custodes posuistis &,mearum sanctitatum custodiam servâstis non Et
וְלֹא שְׁמַרְתֶּם מִשְׁמֶרֶת קָדָשָׁי וַתְּשִׂימוּן לְשֹׁמְרֵי 8
: Dominus Dominus dixit Sic .vobis meo sanctuario in meæ custodiæ
מִשְׁמַרְתִּי בְּמִקְדָּשִׁי לָכֶם : כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה 9
ingredietur non,carne præputiatus &,corde præputiat⁹ alienigenæ fili⁹ Omnis
כָּל־בֶּן־נֵכָר עֶרֶל לֵב וְעֶרֶל בָּשָׂר לֹא יָבוֹא
filiorum medio in qui ,alienigenæ filio omni ab : meum sanctuarium ad
אֶל־מִקְדָּשִׁי לְכָל־בֶּן־נֵכָר אֲשֶׁר בְּתוֹךְ בְּנֵי
errando in ,me desuper se elongaverunt qui Levitæ Quinimo .Israel
יִשְׂרָאֵל : כִּי אִם־הַלְוִיִּם אֲשֶׁר רָחֲקוּ מֵעָלַי בִּתְעוֹת 10
portabunt & : sua idola post ,me desuper erraverunt qui , Israel
יִשְׂרָאֵל אֲשֶׁר תָּעוּ מֵעָלַי אַחֲרֵי גִּלּוּלֵיהֶם וְנָשְׂאוּ
ad præfecturæ , ministri meo sanctuario in erunt Et.suam iniquitatem
עֲוֺנָם : וְהָיוּ בְמִקְדָּשִׁי מְשָׁרְתִים פְּקֻדּוֹת אֶל־ 11
mactabunt ipsi :domus ministri & ,domus portas
שַׁעֲרֵי הַבַּיִת וּמְשָׁרְתִים אֶת־הַבָּיִת הֵמָּה יִשְׁחֲטוּ אֶת־
, eorum facies ad stabunt ipsi & , populo victimam & , ascensionem
הָעֹלָה וְאֶת־הַזֶּבַח לָעָם וְהֵמָּה יַעַמְדוּ לִפְנֵיהֶם
facies ad illis ministraverunt quòd eo Pro .eis ministrandum ad
לְשָׁרְתָם : יַעַן אֲשֶׁר יְשָׁרְתוּ אוֹתָם לִפְנֵי 12
,iniquitatis offendiculũ in Israel domui fuerunt &,suorum idolorum
גִּלּוּלֵיהֶם וְהָיוּ לְבֵית־יִשְׂרָאֵל לְמִכְשׁוֹל עָוֺן
,Dominus Dominus dixit , eos super meam manum levavi idcircò
עַל־כֵּן נָשָׂאתִי יָדִי עֲלֵיהֶם נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה
me ad appropinquabunt non Et .suam iniquitatem portabunt &
וְנָשְׂאוּ עֲוֺנָם : וְלֹא־יִגְּשׁוּ אֵלַי 13
meas sanctificationes omnes super accedendũ ad &,mihi sacerdotio fungendũ ad
לְכַהֵן לִי וְלָגֶשֶׁת עַל־כָּל־קָדָשַׁי
, suam ignominiam portabunt & : sanctitatum sanctitates ad
אֶל־קָדְשֵׁי הַקְּדָשִׁים וְנָשְׂאוּ כְּלִמָּתָם
custodes eos dabo Et .fecerunt quas , suas abominationes &
וְתוֹעֲבוֹתָם אֲשֶׁר עָשׂוּ : וְנָתַתִּי אוֹתָם שֹׁמְרֵי 14
.eo in fiet quod omni in & ,ejus servitio omni in : domus custodiæ
מִשְׁמֶרֶת הַבָּיִת לְכֹל עֲבֹדָתוֹ וּלְכֹל אֲשֶׁר יֵעָשֶׂה בּוֹ :
custodierunt qui , Sadoc filii Levitæ Sacerdotes Et
וְהַכֹּהֲנִים o הַלְוִיִּם בְּנֵי צָדוֹק אֲשֶׁר שָׁמְרוּ אֶת־ 15
ipsi , me desuper Israel filios errando in , mei sanctuarii custodiam
מִשְׁמֶרֶת מִקְדָּשִׁי בִּתְעוֹת בְּנֵי־יִשְׂרָאֵל מֵעָלַי הֵמָּה
offerendum ad meas facies ad stabunt& :mihi ministrandum ad ,me ad accedent
יִקְרְבוּ אֵלַי לְשָׁרְתֵנִי וְעָמְדוּ לְפָנַי לְהַקְרִיב
ingredientur Ipsi .Dominus Dominus ait ,sanguinem & ,adipem mihi
לִי חֵלֶב וָדָם נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה : הֵמָּה יָבֹאוּ 16
meam mensam ad accedent ipsi & , meum sanctuarium ad
אֶל־מִקְדָּשִׁי וְהֵמָּה יִקְרְבוּ אֶל־שֻׁלְחָנִי
, erit Et .meam custodiam custodiant & : mihi ministrandum ad
לְשָׁרְתֵנִי וְשָׁמְרוּ אֶת מִשְׁמַרְתִּי : וְהָיָה 17
linorum vestibus interioris atrii portas ad ipsos ingrediendo in
בְּבוֹאָם אֶל־שַׁעֲרֵי הֶחָצֵר הַפְּנִימִית בִּגְדֵי פִשְׁתִּים
portis in eos ministrando in ,lana eos super ascendet non & : se induent
יִלְבָּשׁוּ וְלֹא־יַעֲלֶה עֲלֵיהֶם צֶמֶר בְּשָׁרְתָם בְּשַׁעֲרֵי
super erunt linorum Cidares .intrinsecus & , interioris atrii
הֶחָצֵר הַפְּנִימִית וָבָיְתָה : פַּאֲרֵי פִשְׁתִּים יִהְיוּ עַל־ 18
: eorum lumbis super erunt linorum feminalia & , eorum caput
רֹאשָׁם וּמִכְנְסֵי פִשְׁתִּים יִהְיוּ עַל־מָתְנֵיהֶם
ad , exterius atrium ad eos egrediendo in Et.sudore in se accingent non
לֹא יַחְגְּרוּ בַּיָּזַע : וּבְצֵאתָם אֶל־הֶחָצֵר הַחִיצוֹנָה אֶל־ 19
quibus , suis vestimentis se exuent ,populum ad exterius atrium
הֶחָצֵר הַחִיצוֹנָה אֶל־הָעָם יִפְשְׁטוּ אֶת־בִּגְדֵיהֶם אֲשֶׁר־
se vestiēt &,sanctitatis cubiculis in ea reponent &,eis in ministrantes ipsi
הֵמָּה מְשָׁרְתִם בָּם וְהִנִּיחוּ אוֹתָם בְּלִשְׁכֹת הַקֹּדֶשׁ וְלָבְשׁוּ
.suis vestibus in populum sanctificabunt non & , aliis vestimentis
בְּגָדִים אֲחֵרִים וְלֹא־יְקַדְּשׁוּ אֶת־הָעָם בְּבִגְדֵיהֶם :

Versio VULG. LAT.

8 Et non servâstis præcepta San-
ctuarii mei: & posuistis custodes
observationum mearum in San-
9 ctuario meo vobismetipsis. Hæc
dicit Dominus Deus; Omnis ali-
enigena incircumcisus corde, &
incircumcisus carne, non ingre-
dietur Sanctuariũ meum, omnis
filius alienus qui est in medio fi-
10 liorum Israel. Sed & Levitæ,qui
longè recesserunt à me in errore
filiorum Israel, & erraverunt à
me post idola sua, & portave-
11 runt iniquitatem suam: Erunt
in Sanctuario meo æditui,& ja-
nitores portarum domûs, & mi-
nistri domûs:ipsi mactabunt ho-
locausta,& victimas populi : &
ipsi stabunt in conspectu eorum,
12 ut ministrent eis. Pro eo quòd
ministraverunt illis in conspectu
idolorum suorum, & facti sunt
domui Israel in offendiculum
iniquitatis : idcircò levavi ma-
num meam super eos, ait Domi-
nus Deus, & portabunt iniqui-
13 tatem suam : Et non appropin-
quabunt ad me ut sacerdotio fun-
gantur mihi, neque accedent ad
omne Sanctuarium meum juxta
Sancta sanctorum : sed porta-
bunt confusionem suam, & sce-
14 lera sua quæ fecerunt. Et dabo
eos janitores domûs in omni mi-
nisterio ejus, & in universis quæ
15 fient in ea. Sacerdotes autem &
Levitæ filii Sadoc, qui custodie-
runt ceremonias Sanctuarii mei,
cùm errarent filii Israel à me,ipsi
accedent ad me ut ministrent
mihi : & stabunt in conspectu
meo ut offerant mihi adipem, &
sanguinem, ait Dominus Deus.
16 Ipsi ingredientur Sanctuarium
meum, & ipsi accedent ad men-
sam meam ut ministrent mihi, &
custodiant ceremonias meas.
17 Cúmque ingredientur portas a-
trii interioris, vestibus lineis in-
duentur : nec ascendet super eos
quidquam laneum, quando mi-
nistrant in portis atrii interioris
18 & intrinsecùs. Vittæ lineæ erunt
in capitibus eorum, & feminalia
linea erunt in lumbis eorum, &
19 non accingentur in sudore. Cúm-
que egredientur atrium exterius
ad populum, exuent se vestimen-
tis suis, in quib⁹ ministraverant,
& reponent ea in gazophylacio
Sanctuarii, & vestient se vesti-
mentis aliis : & non sanctifica-
bunt populum in vestibus suis.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

8 Καὶ (κ) διετάξατε τοῦ φυλάσσειν φυλακὰς ἐν
9 τοῖς ἁγίοις μου. Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος
ὁ Θεός, Πᾶς υἱὸς ἀλλογενὴς ἀπερίτμητος
καρδίᾳ καὶ ἀπερίτμητος σαρκί, οὐκ εἰσελεύσεται
εἰς τὰ ἅγιά μου ἐν πᾶσιν υἱοῖς ἀλλογενῶν, τῶν
10 ὄντων ἐν μέσῳ οἴκου Ἰσραήλ· Ἀλλ' ἢ οἱ
Λευῖται, οἵτινες (ʺ) ἀφήλαντο ἀπ' ἐμοῦ ἐν τῷ
πλανᾶσθαι τὸν Ἰσραὴλ (λ) ἀπ' ἐμοῦ κατόπι-
σθεν τῶν ἐνθυμημάτων αὐτῶν· καὶ λήψονται
11 (ʺ) ἀδικίαν αὐτῶν, Καὶ ἔσονται ἐν τοῖς ἁ-
γίοις μου λειτουργοῦντες, θυρωροὶ ἐπὶ τῶν
πυλῶν τοῦ οἴκου, καὶ λειτουργοῦντες τῷ οἴ-
κῳ (μ)· οὗτοι σφάξουσι (ν) τὰς θυσίας καὶ
τὰ ὁλοκαυτώματα τῷ λαῷ, καὶ οὗτοι στή-
σονται ἐναντίον τοῦ λαοῦ, (ξ) τοῦ λειτουρ-
12 γεῖν αὐτοῖς, Ἀνθ' ὧν ἐλειτούργουν αὐ-
τοῖς πρὸ προσώπου τῶν εἰδώλων αὐτῶν· καὶ
ἐγένετο (ο) τῷ οἴκῳ Ἰσραὴλ εἰς κόλασιν
ἀδικίας. (π) ἕνεκα τούτου ἦρα τὴν χεῖρά μου
13 ἐπ' αὐτούς, λέγει κύριος ὁ Θεός, (ρ) Καὶ
οὐκ ἐγγιοῦσι πρός με τοῦ ἱερατεύειν μοι,
οὐδὲ τοῦ (σ) προσάγειν πρὸς τὰ ἅγια υἱῶν
(τ) τοῦ Ἰσραήλ, οὐδὲ πρὸς τὰ ἅγια τῶν ἁ-
γίων μου· καὶ λήψονται (υ) ἀτιμίαν αὐτῶν
14 ἐν τῇ πλανήσει ᾗ ἐπλανήθησαν. (φ) Κατά-
ξουσιν αὐτοὺς φυλάσσειν φυλακὰς τοῦ οἴκου
εἰς πάντα τὰ ἔργα αὐτοῦ, καὶ εἰς πάντα
15 ὅσα ἂν ποιήσωσιν. Οἱ ἱερεῖς οἱ Λευῖται,
οἱ υἱοὶ τοῦ Σαδδούκ, οἵτινες ἐφυλάξαντο
τὰς φυλακὰς τῶν ἁγίων μου, ἐν τῷ πλανᾶ-
σθαι (·) οἶκον Ἰσραὴλ ἀπ' ἐμοῦ, οὗτοι προσά-
ξουσι πρός με, τοῦ λειτουργεῖν μοι, καὶ
στήσονται πρὸ προσώπου μου, τοῦ προσφέρειν
(χ) μοι θυσίαν, στέαρ καὶ αἷμα, λέγει κύ-
16 ριος ὁ Θεός. Οὗτοι εἰσελεύσονται εἰς τὰ
ἅγιά μου, καὶ οὗτοι προσελεύσονται πρὸς
τὴν τράπεζάν μου, τοῦ λειτουργεῖν μοι, καὶ
17 φυλάξουσι τὰς φυλακάς μου. Καὶ ἔσται ἐν
τῷ εἰσπορεύεσθαι αὐτοὺς τὰς πύλας τῆς αὐ-
λῆς τῆς ἐσωτέρας, στολὰς λινὰς ἐνδύσονται·
(ψ) καὶ οὐκ ἐνδύσονται ἔρια ἐν τῷ λειτουρ-
γεῖν αὐτοὺς ἀπὸ τῆς πύλης τῆς ἐσωτέρας
18 (ω) αὐλῆς. Καὶ κιδάρεις λινὰς ἕξουσιν
ἐπὶ ταῖς κεφαλαῖς αὐτῶν, καὶ περισκελῆ λινὰ
ἕξουσιν ἐπὶ (α) τὰς ὀσφύας αὐτῶν, καὶ οὐ
19 περιζώσονται βίᾳ. Καὶ ἐν τῷ ἐκπορεύεσθαι
αὐτοὺς εἰς τὴν αὐλὴν τὴν ἐξωτέραν πρὸς
τὸν λαόν, ἐκδύσονται τὰς στολὰς αὐτῶν,
ἐν αἷς αὐτοὶ λειτουργοῦσιν ἐν αὐταῖς· καὶ
θήσουσιν αὐτὰς ἐν ταῖς ἐξέδραις τῶν ἁγίων, καὶ
ἐνδύσονται στολὰς ἑτέρας, καὶ οὐ μὴ ἁγιάσω-
σι τὸν λαὸν ἐν ταῖς στολαῖς αὐτῶν.

Et (d) disposuistis custodire cu- 8
stodias in Sanctis meis. Propterea 9
hæc dicit Dominus Deus; Omnis
filius alienigena incircuncisus
corde, & incircuncisus car-
ne non ingredietur in Sancta
mea in omnibus filiis alienigena-
rum, qui sunt in medio domûs
Israel: Sed Levitæ, qui (c) resili- 10
erunt à me, cùm erraret Israel à
me post cogitationes suas; & ac-
cipient iniquitatem suam: Et e- 11
runt in Sanctis meis ministrantes,
ostiarii in portis domûs, & mi-
nistri domûs: isti immolabunt sa-
crificia, & holocausta populo: et
isti stabunt ante populum, ut
ministrent eis, Pro eo quòd mi- 12
nistraverunt eis ante faciem I-
dolorum suorum: & factum est
domui Israel in tormentum
iniquitatis. Propterea levavi
manum meam super eos,
dicit Dominus Deus; *Et non* 13
accedent ad me, ut sacerdotio
fungantur mihi: neque ut offe-
rant ad Sancta filiorum Israel,
nec ad Sancta sanctorum meo-
rum. Et suscipient ignominiam
suam in errore, quo erraverunt.
Demittent eos, ut servent custo- 14
dias domûs in omnia opera ejus,
& in universa quæ (f) fece-
rint. Sacerdotes Levitæ filii 15
Sadduc, qui custodierunt cu-
stodias Sanctorum meorum, cùm
erraret domus Israel à me, isti
accedent ad me, ut ministrent
mihi: & stabunt ante faciem
meam, ut offerant mihi hostiam,
adipem, & sanguinem, dicit
Dominus Deus. Isti ingredien- 16
tur in Sancta mea: & isti ac-
cedent ad mensam meam, ut
ministrent mihi: & observa-
bunt custodias meas. Et erit, 17
in ingrediendo eos portas atrii
interioris, stolis lineis induentur:
& non induentur lanificiis,
quando ministrant, à porta in-
terioris atrii. Et Cidaras line- 18
as habebunt super capita sua:
& feminalia linea habebunt su-
per lumbos suos: & non accin-
gentur (g) violenter. Et in e- 19
grediendo ipsos in atrium exteri⁹
ad populum, exuent se stolis suis,
in quibus ministrant in eis: &
ponent eas in exedris Sanctorum,
& vestient se stolis aliis: &
non sanctificabunt populum in
stolis suis:

MS.A. (κ) οὐκ ἐφυλάξατε τὴν φυλακὴν τῶν ἁγίων μου, καὶ διετάξατε (ʺ) ἀφείλαντο (λ) οἱ ἐπλανήθησαν ἀπ' (ʺ) τὴν ἀδικίαν (μ) κυρίου· (ν) τὰ ὁλοκαυτώματα καὶ τὰς θυσίας τῷ (ξ) λειτουργεῖν (ο) τῷ Ἰσραὴλ (π) ἕνεκεν (ρ) καὶ λήμψονται τὴν ἀτιμίαν αὐτῶν, Καὶ οὐκ (σ) προσαγαγεῖν (τ) Ἰσραήλ, (υ) τὴν ἀτιμίαν (φ) Καὶ τάξουσιν (·) τὸν οἶκον (χ) θυσίαν, (ψ) οὐκ (ω) αὐλῆς, καὶ ἔσω. Καὶ (α) ταῖς ὀσφύσιν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ולא נטרתון מטרת קודשי ומניתון לנטרי מטרת מימרי במקדשי לכון : כדנן אמר יי 8
אלהים כל בר עממין רשיעי לבא וערלי בסרא לא יעלון למקדשי לכל בני עממיא די 9
בגו בני ישראל : אלהן לואי דאתרחיקו מדחלתי במטעי ישראל דטעו מבתר פולחני 10
בתר טעותכון ויקבלון חוביהון : ויהון במקדשי משמשין ממנן על תרעי ביתא 11
ומשמשין ית ביתא אנון יכסון ית עלתא וית נכסת קודשיא די לעמא ואנון יקומון
קדמיהון לשמשותהון : חלף דהוו משמשין יתהון קדם טעותהון והוו לבית ישראל 12
לתקלת חובין על כן קימית במימרי עליהון אמר יי אלהים ויקבלון חוביהון : ולא 13
יתקרבון לפולחני לשמשא קדמי ולמקרב על כל קודשי לקודשי קודשיא ויתקבלון
אתכנעותהון ותועבתהון די עבדו : ומניתי יתהון נטרי מטרת ביתא לכל פולחניה 14
ולכל דיתעביד ביה : וכהניא לואי בני צדוק די נטרו ית מטרת מקדשי במטעי 15
בני ישראל מבתר פולחני אנון יתקרבון לפולחני לשמשא קדמי וישמשון על
מדבחי לקרבא קדמי תרב ודם נכסת קודשין אמר יי אלהים : אנון יעלון למקדשי 16
ואנון יתקרבון לפתורי לחם אפיא לשמשא קדמי ויטרון ית מטרת מימרי : ויהי 17
במעלהון לתרעי דרתא גויתא לבושי בוצא ילבשון ולא יהי עליהון כסות עמר
בשמשותהון בתרעי דרתא גויתא ולגיו : קובעין דבוץ יהון על רישיהון ומכנסין 18
דבוץ יהון על חרציהון ולא יזרזון על חרציהון אלהין על לבביהון יסרון : ובמפקהון 19
מדרתא דקודשא לדרתא בריתא לאתערבא עם עמא ישלחון ית לבושיהון די אנון
משמשין בהון ויחתון יתהון בלשכת קודשא וילבשון לבושין אוחרנין ולא יתערבון
עם עמא בלבושיהון :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et non custodistis custodiam sanctuarii mei : & constituistis custodientes 8
observationem verbi mei in sanctuario meo vobismetipsis. Hæc dicit Dñs 9
Deus : Omnes filii populorum impii corde & incircuncisi carne non in-
gredientur sanctuarium meum, ex omnibus filiis populorum qui sunt in
medio filiorum Israel : Sed Levitæ qui longè recesserunt à timore mei cùm 10
aberrarent filii Israel qui erraverunt à cultu meo post idola *vestra*, & susci-
pient iniquitatem suam. Erúntq; in sanctuario meo ministri constituti super 11
portas domus, & ministrabunt in domo : ipsi mactabunt holocausta & vi-
ctimas sanctificatas populi, & ipsi stabunt coram eis ut ministrent eis : Pro 12
eo quòd ministrabant eis coram idolis suis, & erant domui Israel in offendi-
culum peccatorum. Ideò juravi verbo meo eis, ait Dñs Deus, & suscipient
iniquitatem suam. Et non appropinquabunt ad cultum meum ut ministrent 13
coram me, & ut offerant omnia sancta mea juxta sancta sanctorum; & susci-
pient confusionem suam & abominationes suas quas fecerunt. Et constituam 14
eos custodientes custodiam domus ad omne ministerium ejus, & ad omnia
quæ fient in ea. Sacerdotes autem Levitæ filii Sadok qui custodierunt custo- 15
diam sanctuarii mei cùm errarent filii Israel à cultu meo; ipsi accedent ad
cultum meum ut ministrent coram me : & ministrabunt super altare meum
ut offerant coram me adipem & sanguinem victimarum sanctificatarum, ait
Dñs Deus. Ipsi ingredientur in sanctuarium meum, & ipsi admovebunt ad 16
mensam meam panem propositionis ut ministrent coram me, & servabunt
observationem verbi mei. Et erit cùm ingressi fuerint portas atrii interioris, 17
vestibus lineis induentur, & non erit super eos indumentum laneum cùm
ministrabunt in portis atrii interioris & intrinsecus. Tiaræ lineæ erunt super 18
capita eorum, & femoralia linea super lumbos eorum : & non accingen-
tur super lumbos suos, sed ad cor suum accingentur. Et cùm egredientur ab 19
atrio sancto ad atrium exterius ut commisceantur cum populo, exuent vesti-
menta sua quibus ministrabant, & ponent ea in gazophylaciis sanctis, & in-
duentur vestibus aliis, & non commiscebuntur cum populo in vestibus suis:

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

8 * ܘܠܐ ܢܛܪܬܘܢ ܐܝܟܘ ܕܢܛܘܪܬܐ ܕܡܩܕܫܝ. ܐܠܐ ܟܕ ܢܛܪܝܢ ܡܛܪܬܐ ܕܡܩܕܫܝ. ܢܛܘܪܘܬܟܘܢ
9 ܕܝܠܟܘܢ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܟܠ ܒܪ ܢܘܟܪܝܐ ܕܥܪܠܐ ܒܠܒܗ ܘܥܪܠܐ
10 ܒܒܣܪܗ.· ܠܐ ܢܥܘܠ ܠܡܩܕܫܝ. ܟܠ ܒܪ ܢܘܟܪܝܐ ܕܐܝܬ ܒܝܢܬ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. * ܐܦܠܐ
ܠܘܝܐ ܕܥܪܩܘ ܡܢܝ.· ܟܕ ܛܥܘ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܡܢܝ. ܒܬܪ ܦܬܟܪܝܗܘܢ.· ܘܢܩܒܠܘܢ
11 ܚܛܗܝܗܘܢ. * ܘܗܘܘ ܒܡܩܕܫܝ.· ܘܡܫܡܫܝܢ ܗܘܘ ܒܬܪܥܐ ܕܒܝܬܐ.· ܗܢܘܢ ܢܟܣܘܢ
12 ܥܠܬܐ ܘܕܒܚܐ ܕܥܡܐ.· ܘܗܢܘܢ ܢܩܘܡܘܢ ܩܕܡܝܗܘܢ. ܘܢܫܡܫܘܢ ܐܢܘܢ. * ܥܠ
ܕܫܡܫܘ ܐܢܘܢ ܩܕܡ ܦܬܟܪܝܗܘܢ.· ܘܗܘܘ ܠܬܘܩܠܬܐ ܕܥܘܠܐ ܠܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܡܛܠ
13 ܗܢܐ ܐܪܝܡܬ ܐܝܕܝ ܥܠܝܗܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ.· ܘܢܩܒܠܘܢ ܚܛܗܝܗܘܢ. * ܘܠܐ ܢܩܪܒܘܢ
ܩܕܡܝ ܠܡܫܡܫܘܬܝ. ܘܠܐ ܢܬܩܪܒܘܢ ܠܟܠܗܘܢ ܩܘܕܫܝ ܩܕܫ ܩܘܕܫܝܐ. ܘܢܩܒܠܘܢ
14 ܟܠܗ ܨܥܪܗܘܢ ܘܟܠܗ ܛܢܦܘܬܗܘܢ ܕܥܒܕܘ. * ܘܐܬܠ ܐܢܘܢ ܢܛܘܪܐ ܕܡܛܪܬܐ ܕܒܝܬܐ.·
15 ܘܥܒܕܝܢ ܥܒܕܐ ܕܟܠܡܕܡ ܕܗܘܐ ܒܗ. * ܘܟܗܢܐ ܘܠܘܝܐ ܒܢܝ ܨܕܘܩ.· ܕܢܛܪܘ ܡܛܪܬܐ
ܕܡܩܕܫܝ.· ܟܕ ܛܥܘ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܡܢܝ.· ܗܢܘܢ ܢܬܩܪܒܘܢ ܠܘܬܝ ܠܡܫܡܫܘܬܝ.
16 ܘܗܢܘܢ ܢܩܘܡܘܢ ܩܕܡܝ. ܘܢܩܪܒܘܢ ܠܝ ܬܪܒܐ ܘܕܡܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. * ܗܢܘܢ ܢܥܠܘܢ
17 ܠܡܩܕܫܝ.· ܘܗܢܘܢ ܢܬܩܪܒܘܢ ܠܦܬܘܪܝ. ܕܢܫܡܫܘܢܢܝ. ܘܢܛܪܘܢ ܡܛܪܬܝ. * ܘܡܐ
18 ܕܥܐܠܝܢ ܠܬܪܥܐ ܕܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ.· ܡܐܢܐ ܕܟܬܢܐ ܢܠܒܫܘܢ. ܘܕܥܡܪܐ ܠܐ ܢܠܒܫܘܢ. * ܘܡܐ
ܕܡܫܡܫܝܢ ܠܬܪܥܐ ܕܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ.· ܘܠܓܘ. ܡܨܢܦܬܐ ܕܟܬܢܐ ܢܣܝܡܘܢ
19 ܒܪܝܫܗܘܢ. ܘܦܪܙܘܡܐ ܕܟܬܢܐ ܢܐܣܪܘܢ ܚܨܝܗܘܢ. * ܘܡܐ ܕܢܦܩܝܢ ܠܕܪܬܐ ܒܪܝܬܐ
ܠܘܬ ܥܡܐ.· ܢܫܠܚܘܢ ܡܐܢܝܗܘܢ ܕܡܫܡܫܝܢ ܒܗܘܢ.· ܘܢܫܒܩܘܢ ܐܢܘܢ ܒܐܣܛܘܐ
ܕܩܘܕܫܐ. ܘܢܠܒܫܘܢ ܡܐܢܐ ܐܚܪܢܐ.· ܕܠܐ ܢܩܕܫܘܢ ܠܥܡܐ ܒܡܐܢܝܗܘܢ.

Cuſtodias Sanctuarii mei minimè cuſtoditis, 8
ſed cuſtodientes cuſtodiam Sanctuarii mei feciſtis
cuſtodes veſtros. Sic ait Dn̄s dominorū; 9
Nullus alienigena incircuncifus carne ſuâ, ingrediatur
Sanctuarium meum, nullus *inquam*
alienigenarum qui ſunt inter filios Iſraelis:
Neq; Levitæ qui receſſerunt à me quando ab- 10
errârunt à me filii Iſraelis poſt idola ſuâ. Hi
quidem reportabunt iniquitatem ſuam: Ma- 11
nebunt enim in Sanctuario meo, ſed erunt miniſtrantes
in porta domûs. Ipſi jugulabunt
holocauſta & ſacrificia populi, iidémque ſtabunt
coram eis, & miniſtrabunt eis; Eò quòd 12
miniſtraverint eis coram idolis eorum, & fuerint
offendiculo iniquitatis filiis Iſraelis. Iccirco
levavi manum meam contra ipſos, ait Dominus
dominorum, ut reportent iniquitatem
ſuam. Non enim accedent in conſpectū meum 13
ad miniſtrandum mihi, neque accedent ad ulla
ſacra mea in Sancta ſanctorum; ſed reportabunt
omnem ignominiam ſuam, & omnem
abominationem ſuam quam fecerunt: Et red- 14
dam eos cuſtodes cuſtodiæ domûs & exercentes
opus omnium rerum quæ fiunt in ea. Sa- 15
cerdotes verò atque Levitæ filii Sadoci, qui
cuſtodierunt cuſtodiam Sanctuarii mei dum
aberrarent à me Iſraelitæ, ipſi accedent ad me
ut miniſtrent mihi, ipſique ſtabunt coram me,
& offerent mihi adipem & ſanguinem, ait
Dominus dominorum: Ipſi ingredientur San- 16
ctuarium meum, ipſi accedent ad menſam meam,
ut mihi miniſtrent, & cuſtodiant cuſtodias
meas. Cùm autem ingredientur per por- 17
tam atrii interioris, veſtes lineas induant,
laneas autem ne induant: Cúmque miniſtra- 18
verint in porta atrii intimi & interiùs, tiaras
lineas imponant capitibus ſuis, & perizomatibus
lineis præcingant lumbos ſuos. Verùm 19
cùm exierint in atrium exterius ad populum,
deponant veſtes ſuas quibus miniſtrant,
& relinquant eas in exedris ſancturarii, aliáſque
veſtes induant, ne ſanctificent populum
veſtibus ſuis.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

8 * ولم تحفظوا حرس اقداسي * وامرتم ان يحرسوا حارس في اقداسي * لاجل هذا هكذا يقول
9 الرب الاله * كل ابن غريب الجنس غير مختون بالقلب وغير مختون باللحم * لا يدخل الى
10 اقداسي في بني غرباء الجنس الكائنين في وسط بيت اسرائيل * ولا اللاويون الذين تباعدوا
11 مني عند ما ضل اسرائيل * الذين ضلوا عني خلف فكراتهم * ويأخذون ظلمهم * فيصيرون
في اقداسي يخدمون بوابين على ابواب البيت * ويخدمون بيت الرب * هولاء يذبحون المحرقات
12 والذبائح للشعب * وهولاء يقفون امام الشعب ليخدموه * من اجل انهم خدموه امام وجه
اصنامهم * وصار لاسرائيل عقاب ظلم * من اجل هذا رفعت يدي عليهم * يقول الرب الاله *
13 ويأخذون اثامهم * ولا يقتربون الي ليخدموني * ولا ليقربوا على اقداس اسرائيل ولا على اقداس
14 اقداسي * ويأخذون اثامهم بالضلالة التي ضلوا بها * ويرتبونهم ليحرسوا حارس البيت
في كل اعماله *

Non cuſtodiſtis cuſtodiam Sanctorum meo- 8
rum, imò cuſtodiri juſſiſtis cuſtodias
alias in Sanctis meis. Propterea ſic di- 9
cit Dominus Deus; Nemo filiorum alieni
generis, incircunciſorum corde, & incir-
cunciſorum carne; ingrediatur Sancta
mea, & filiis alienigenis exiſtentibus in
medio domûs Iſraelis: Neque Levitæ illi 10
qui à me receſſerunt, cùm aberravit Iſra-
el, qui aberrârunt à me poſt cogitationes
ſuas: imò reportabunt impietatem ſuam,
Et erunt in ſanctis meis exercentes mini- 11
ſteriū janitorū ad januas domûs, inſervi-
éntq; domui Domini. Hi mactabunt holo-
cauſta et ſacrificia populo, atq; hi ſtabunt
coram populo ut miniſtrent ei; Quòd ipſi 12
miniſtraverint ei ante faciem idolorum
ſuorum, & ceſſerit Iſraeli in pœnam im-
pietatis. Propterea levavi manum meam
contra iſtos, dicit Dominus Deus, & re-
portabunt infamiam ſuam: Et non ac- 13
cedent ad me ut miniſtrent mihi, nec ut
offerant ad ſancta Iſraelis, neque ad San-
cta Sanctorum meorum: ſic reportabunt
infamiam ſuam ob errorem quo aberra-
verunt: Et deſtinabunt eos ad cuſto- 14
diendum cuſtodias domûs in cunctis ne-
gotiis ejus.

* الاصحاح السادس والعشرون *

Textus vigeſimus ſextus.

15 * وفي كل ما تصنعه الكهنة * اللاويون بنو صادوق الذين حفظوا حارس اقداسي عند ما
ضل بيت اسرائيل عني * هولاء يتقدمون الي ليخدموني * ويقفون امام وجهي ليقربوا ذبيحة شحما
16 ودما * يقول الرب الاله * هولاء يدخلون الى اقداسي * وهولاء يتقدمون الى مائدتي ليخدموني
17 ويحفظون حارسي * ويصير عند ما يدخلون ابواب الدار الداخلة يلبسون حلل كتان *
18 ولا يلبسون صوفا عند ما يخدمون من باب الدار الداخلة وداخل * ويكون لهم طيالس
كتان على روسهم * ويكون لهم سراويلات كتان على حقاهم * ولا يتمنطقون بعسف *
19 * وعند ما يخرجون الى الدار الخارجة الى الشعب * يخلعون حللهم التي فيها هم يخدمون *
ويضعوها في مقاصير الاقداس * ويلبسون حللا اخر * ولا يقدسون الشعب بحللهم *

In iis omnibus quæ præſtant ſacerdotes; 15
Levitæ filii Sadoc, qui cuſtodierunt cu-
ſtodias Sanctorum meorum quando aber-
ravit à me domus Iſraelis; ipſi ad me ac-
cedent ut mihi miniſtrent, & ſtabunt co-
ram facie mea ad offerendum victimam,
adipem, & ſanguinem, dicit Dominus
Deus. Ipſi ingredientur in Sancta mea, 16
& ipſi accedent ad menſam meam, ut
mihi miniſtrent, & obſervent cuſtodias
meas. Et erit cùm ingredientur oſtia 17
atrii interioris, ut induantur ſtolis lineis,
& non induantur lanâ quando miniſtra-
bunt, à porta atrii interioris & ulteriùs.
Habebunt cidaras lineas ſuper capita ſua, 18
& habebunt feminalia linea ſuper lum-
bos ſuos: & non accingent ſe cum vio-
lentia. Cùm autem egredientur in atri- 19
um exterius ad populum, deponent ſtolas
ſuas quibus ipſi miniſtrant, & reponent
eas in exedris Sanctorum veſtiéntque ſe
ſtolis aliis, ne ſanctificent populum ſto-
lis ſuis.

יחזקאל : מה

æquè tondendo : demittent non cæſariem &, radent non ſuum caput Et
20 וְרֹאשָׁם לֹא יְגַלֵּחוּ וּפֶרַע לֹא יְשַׁלֵּחוּ כָּסוֹם
omnis bibent non vinum Et .ſua capita attondebunt *æquè*
21 יִכְסְמוּ אֶת־רָאשֵׁיהֶם׃ וְיַיִן לֹא־יִשְׁתּוּ כָּל־
, viduam Et .interius atrium *ad eos intrando in* : ſacerdos
22 כֹּהֵן בְּבוֹאָם אֶל־הֶחָצֵר הַפְּנִימִית׃ וְאַלְמָנָה
virgines *quinimo* , uxores in ſibi accipient non *expulſam* &
וּגְרוּשָׁה לֹא־יִקְחוּ לָהֶם לְנָשִׁים כִּי אִם־בְּתוּלֹת
, vidua fuerit quæ , viduam & , Iſrael domus ſemine de
מִזֶּרַע בֵּית יִשְׂרָאֵל וְהָאַלְמָנָה אֲשֶׁר־תִּהְיֶה אַלְמָנָה
ſanctum inter docebunt meum populum Et .accipient ſacerdote à
23 מִכֹּהֵן יִקָּחוּ׃ וְאֶת־עַמִּי יוֹרוּ בֵּין קֹדֶשׁ
ſuper Et *.eos facient ſcire* mundum *ad* immundum inter & :profanum *ad*
24 לְחֹל וּבֵין־טָמֵא לְטָהוֹר יוֹדִעֻם׃ וְעַל־
: eam judicabunt *meis judiciis in* : *judicium* ad ſtabunt ipſi controverſia
רִיב הֵמָּה יַעַמְדוּ לִשְׁפֹּט בְּמִשְׁפָּטַי וּשְׁפָטֻהוּ
meis *ſtatutis temporibus* omnibus in mea *ſtatuta* & , meas leges &
וְאֶת־תּוֹרֹתַי וְאֶת־חֻקֹּתַי בְּכָל־מוֹעֲדַי
hominem mortuum ad Et .ſanctificabunt mea ſabbatha & , cuſtodient
25 יִשְׁמֹרוּ וְאֶת־שַׁבְּתוֹתַי יְקַדֵּשׁוּ׃ וְאֶל־מֵת אָדָם
,filiū *ad* &,matrem *ad* &,patrem *ad quinimo*:ſe *polluendum ad*,ingredietur non
לֹא יָבוֹא לְטָמְאָה כִּי אִם־לְאָב וּלְאֵם וּלְבֵן
viro fuerit non quæ , ſororem *ad* & ,fratrem *ad* , filiam *ad* &
וּלְבַת לְאָח וּלְאָחוֹת אֲשֶׁר־לֹא־הָיְתָה לְאִישׁ
numerabunt dies ſeptem : *ipſius mundationem poſt* Et .ſe *contaminabunt*
26 יִטַּמָּאוּ׃ וְאַחֲרֵי טָהֳרָתוֹ שִׁבְעַת יָמִים יִסְפְּרוּ־
, interius atrium ad ſanctitatem *ad illum ingrediendi* die in Et .ſibi
27 לוֹ׃ וּבְיוֹם בֹּאוֹ אֶל־הַקֹּדֶשׁ אֶל־הֶחָצֵר הַפְּנִימִית
ait : ſuo peccato pro oblationem offeret ,ſanctitate in *miniſtrandum ad*
לְשָׁרֵת בַּקֹּדֶשׁ יַקְרִיב חַטָּאתוֹ נְאֻם
Ego .hæreditatem in eis erit Et .*Dominus* Dominus
28 אֲדֹנָי יֱהוִה׃ וְהָיְתָה לָהֶם לְנַחֲלָה אֲנִי
ego ; Iſrael in eis dabitis non poſſeſſionem & :eorum hæreditas
נַחֲלָתָם וַאֲחֻזָּה לֹא־תִתְּנוּ לָהֶם בְּיִשְׂרָאֵל אֲנִי
ipſi delicto pro & ,peccato pro ſacrificium & , *Munus* .eorum poſſeſſio
29 אֲחֻזָּתָם׃ הַמִּנְחָה וְהַחַטָּאת וְהָאָשָׁם הֵמָּה
.erit *eis* Iſrael in *anathema* omne & : *ea* comedent
יֹאכְלוּם וְכָל־חֵרֶם בְּיִשְׂרָאֵל לָהֶם יִהְיֶה׃
oblatio omnis & , omnium primitivorum omnium *principium* Et
30 וְרֵאשִׁית כָּל־בִּכּוּרֵי כֹל וְכָל־תְּרוּמַת
: erit ſacerdotum , veſtris oblationibus omnibus ex omnium
כֹּל מִכֹּל תְּרוּמוֹתֵיכֶם לַכֹּהֲנִים יִהְיֶה
reponendum ad , ſacerdoti dabitis veſtrarum paſtarum *principium* &
וְרֵאשִׁית עֲרִיסֹתֵיכֶם תִּתְּנוּ לַכֹּהֵן לְהָנִיחַ
; *ave* de , raptum &,morticinium Omne .*tuam domum ad* benedictionē
31 בְּרָכָה אֶל־בֵּיתֶךָ׃ כָּל־נְבֵלָה וּטְרֵפָה מִן־הָעוֹף
.ſacerdotes comedent non : *jumento* de *&*
וּמִן־הַבְּהֵמָה לֹא יֹאכְלוּ הַכֹּהֲנִים׃

CAP. XLV. מה

oblationem offeretis ,hæreditatem in terram *vos faciendo cadere in* Et
1 וּבְהַפִּילְכֶם אֶת־הָאָרֶץ בְּנַחֲלָה תָּרִימוּ תְרוּמָה
viginti & quinque longitudo ; terra de ſanctitatem Domino
לַיהוָה קֹדֶשׁ מִן־הָאָרֶץ אֹרֶךְ חֲמִשָּׁה וְעֶשְׂרִים
omni in *ipſa* Sanctitas : millium decem latitudo &,*longitudine* millium
אֶלֶף אֹרֶךְ וְרֹחַב עֲשָׂרָה אָלֶף קֹדֶשׁ־הוּא בְכָל־
quingenti , *ſanctitatem in* hoc ex Erit .*circum* ejus termino
2 גְּבוּלָהּ סָבִיב׃ יִהְיֶה מִזֶּה אֶל־הַקֹּדֶשׁ חֲמֵשׁ מֵאוֹת
cubitorum quinquaginta & : *circum* quadratum quingentis *in*
בַּחֲמֵשׁ מֵאוֹת מְרֻבָּע סָבִיב וַחֲמִשִּׁים אַמָּה
.*circum* ei ſuburbanum
מִגְרָשׁ לוֹ סָבִיב׃

Verſio VULG. LAT.

20 Caput autem ſuum non radent,
neque comam nutrient : ſed tondentes
21 attondent capita ſua. Et
vinum non bibet omnis ſacerdos
quando ingreſſurus eſt atrium
22 interius. Et viduam & repudiatam
non accipient uxores, ſed
virgines de ſemine domûs Iſrael
: ſed & viduam, quæ fuerit
23 vidua à ſacerdote, accipient. Et
populum meum docebunt quid
ſit inter ſanctum & pollutum, &
inter mundum & immundum
24 oſtendent eis. Et cùm fuerit
controverſia, ſtabunt in judiciis
meis, & judicabunt : leges meas,
& præcepta mea in omnibus ſolennitatibus
meis cuſtodient, &
25 Sabbata mea ſanctificabunt. Et
ad mortuum hominem non ingredientur,
ne polluantur, niſi
ad patrem & matrem, & filium
& filiam, & fratrem & ſororem,
quæ alterum virum non habuerit
: in quibus contaminabuntur.
26 Et poſtquàm fuerit emundatus :
ſeptem dies numerabuntur ei.
27 Et in die introitûs ſui in Sanctuarium
ad atrium interius, ut miniſtret
mihi in Sanctuario, offeret
pro peccato ſuo, ait Dominus
28 Deus. Non erit autem eis hæreditas,
ego hæreditas eorum : &
poſſeſſionem non dabitis eis in
Iſrael ; ego enim poſſeſſio eorum.
29 Victimam & pro peccato
& pro delicto ipſi comedent :
& omne votum in Iſrael ipſorum
30 erit. Et primitiva omnium
primogenitorum, & omnia
libamenta ex omnibus quæ offeruntur,
ſacerdotum erunt : &
primitiva ciborum veſtrorum
dabitis ſacerdoti, ut reponat benedictionem
31 domui tuæ. Omne
morticînum, & captum à beſtia
de avibus & de pecoribus non
comedent Sacerdotes.

CAP. XLV.

1 Cúmque cœperitis terram dividere
ſortitò, ſeparate primitias
Domino, ſanctificatum de
terra, longitudine vigintiquinque
millia, & latitudine decem
millia : ſanctificatum erit in omni
termino ejus per circuitum.
2 Et erit ex omni parte ſanctificatum
quingentos per quingentos,
quadrifariàm per circuitum : &
quinquaginta cubitis in ſuburbana
ejus per gyrum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

20 Καὶ τὰς κεφαλὰς αὐτῶν (β) οὐ ξυρήσονται, καὶ
τὰς κόμας αὐτῶν (γ) οὐ ψιλώσουσι, καλύπτοντες
(δ) καλύψουσι τὰς κεφαλὰς αὐτῶν.
21 Καὶ οἶνον οὐ μὴ πίωσι πᾶς ἱερεὺς, ἐν τῷ
εἰσπορεύεσθαι αὐτοὺς εἰς τὴν αὐλὴν τὴν ἐσωτέραν.
22 Καὶ χήραν καὶ ἐκβεβλημένην (ε) οὐ λήψονται
ἑαυτοῖς εἰς γυναῖκα, ἀλλ᾽ ἢ παρθένον
ἐκ τοῦ σπέρματος Ἰσραήλ· καὶ χήρα ἐὰν
23 γένηται ἐξ ἱερέως, λήψονται. Καὶ τὸν λαόν μου
διδάξουσιν ἀναμέσον ἁγίου καὶ βεβήλου, καὶ
ἀναμέσον (ζ) ἀκαθάρτου καὶ καθαροῦ γνωριοῦσιν
24 αὐτοῖς. Καὶ ἐπὶ κρίσιν αἵματος οὗτοι
ἐπιστήσονται τοῦ διακρίνειν· τὰ δικαιώματά
μου δικαιώσουσι, καὶ τὰ κρίματά μου κρινοῦσι,
καὶ τὰ νόμιμά μου καὶ τὰ προστάγματά
μου ἐν πάσαις ταῖς ἑορταῖς μου φυλάξονται,
25 καὶ τὰ σάββατά μου ἁγιάσουσι. Καὶ
ἐπὶ ψυχὴν ἀνθρώπου οὐκ εἰσελεύσονται τοῦ
μιανθῆναι, ἀλλ᾽ ἢ ἐπὶ πατρὶ, καὶ ἐπὶ μητρὶ,
καὶ ἐπὶ υἱῷ, καὶ ἐπὶ θυγατρὶ, καὶ ἐπὶ ἀδελφῷ
(η), καὶ ἐπὶ ἀδελφῇ αὐτοῦ, ἣ οὐ γέγονεν ἀνδρὶ,
26 μιανθήσεται. Καὶ μετὰ τὸ καθαρισθῆναι
αὐτὸν, ἑπτὰ ἡμέρας (ʟ) ἐξαριθμήσῃ αὐτῷ.
27 Καὶ ᾗ ἂν ἡμέρᾳ εἰσπορεύωνται εἰς τὴν αὐλὴν
τὴν ἐσωτέραν τοῦ λειτουργεῖν ἐν τῷ ἁγίῳ,
προσοίσουσιν ἱλασμὸν, λέγει κύριος
28 ὁ θεὸς, Καὶ ἔσται αὐτοῖς εἰς κληρονομίαν.
ἐγὼ κληρονομία αὐτοῖς, καὶ
κατάσχεσις αὐτοῖς οὐ δοθήσεται ἐν τοῖς
υἱοῖς Ἰσραὴλ, ὅτι ἐγὼ κατάσχεσις (θ)
29 αὐτῶν. Καὶ τὰς θυσίας, καὶ τὰ ὑπὲρ ἁμαρτίας,
καὶ τὰ ὑπὲρ ἀγνοίας, οὗτοι φάγονται·
καὶ πᾶν ἀφόρισμα ἐν τῷ Ἰσραὴλ
30 αὐτοῖς ἔσται, (ι) Ἀπαρχαὶ πάντων, καὶ
τὰ πρωτότοκα πάντων, καὶ τὰ ἀφαιρέματα
πάντα (κ)· ἐκ πάντων τῶν ἀπαρχῶν ὑμῶν,
τοῖς ἱερεῦσιν ἔσται· καὶ τὰ (") πρωτογεννήματα
ὑμῶν δώσετε τῷ ἱερεῖ, τοῦ θεῖναι
31 εὐλογίας ὑμῶν ἐπὶ τοὺς οἴκους ὑμῶν. Καὶ
πᾶν θνησιμαῖον καὶ θηριάλωτον ἐκ τῶν
πετεινῶν, καὶ ἐκ τῶν κτηνῶν, οὐ φάγονται
οἱ ἱερεῖς.

Et capita ſua non radent : & comas 20
ſuas non ad (b) preſſum
tondebunt : operientes operient
capita ſua. Et vinum non bibent 21
omnis ſacerdos, in ingrediendo
ipſos in atrium interius. Et 22
viduam, & ejectam non accipient
ſibi in uxorem, ſed virginem
de ſemine Iſrael : & viduam,
ſi fuerit de ſacerdote, accipient.
Et populum meum docebunt inter 23
ſanctum & pollutum, & inter
immundum & mundum oſtendent
eis. Et in judicio ſanguinis 24
ipſi ſtabunt ad dijudicandum:
juſtificationes meas juſtificabunt,
& judicia mea judicabunt, &
legitima mea, & præcepta mea in
omnibus ſolennitatibus meis cuſtodient ;
& ſabbata mea ſanctificabunt.
Et (i)ſuper animam 25
hominis non ingredientur ad polluendum
ſe : ſed ſuper patre, &
ſuper matre, & ſuper filio, &
ſuper filia, & ſuper fratre, &
ſuper ſorore ſua, quæ non fuit viro,
contaminabitur. Et poſtquàm 26
fuerit ipſe mundatus ;
ſeptem dies enumerabit ſibi : Et 27
quâ die ingrediantur in atrium
interius ad miniſtrandum in
Sancto, offerent placationem, dicit
Domin⁹ D⁹. Et (k) erit eis 28
in hæreditatem. Ego hæreditas
eis. Et poſſeſſio eis non dabitur
in filiis Iſrael : quia ego poſſeſſio
eorū. Et (l) ſacrificia, & quæ pro 29
peccato, et quæ pro ignorātia, ipſi
comedent : omnis ſeparatio in
Iſrael ipſis erit, Primitiæ omnium, 30
& primitiva omnium, &
ſeparationes omnes : de omnibus
primitiis veſtris, ſacerdotibus
erit : & primitiva veſtra
dabitis ſacerdoti ; ut ponat benedictiones
(m) veſtras ſuper
domos veſtras. Et omne morticînum, 31
& captum à beſtiis de
avibus, & pecoribus, non comedant
ſacerdotes.

MS.A. (β) οὐ μὴ (γ) οὐ μὴ (δ) καλύψωσιν (ε) οὐ μὴ (ζ) καθαροῦ καὶ ἀναμέσον ἀκαθάρτου γνωριοῦσιν (η) αὐτοῦ, (ʟ) ἐξαριθμήσει (θ) αὐτοῖς. (ι) Καὶ ἀπαρχαὶ (κ) ὑμῶν· (") πρωτογεννήματα

ΚΕΦ. με΄.

1 ΚΑὶ ἐν τῷ καταμετρεῖσθαι ὑμᾶς τὴν
γῆν ἐν κληρονομίᾳ, ἀφοριεῖτε ἀπαρχὴν
τῷ κυρίῳ, ἅγιον ἀπὸ τῆς γῆς πέντε καὶ εἴκοσι
χιλιάδας μῆκος, καὶ εὖρος εἴκοσι
2 χιλιάδας, ἅγιον ἔσται ἐν πᾶσι τοῖς
ὁρίοις αὐτοῦ κυκλόθεν. Καὶ ἔσται ἐκ τούτου
(α) ἁγιάσματα, πεντακόσιοι ἐπὶ πεντακοσίους,
τετράγωνον κυκλόθεν, καὶ (β)
πεντήκοντα πήχεις διάστημα αὐτῶν κυκλόθεν.

MS.A. (α) εἰς ἁγίασμα, (β) πήχεις πεντήκοντα

CAP. XLV.

ET in metiendo vos terram in 1
hæreditatem, ſeparate primitias
Domino, ſanctum de terra quinque
& viginti millia longitudinis,
& (a) viginti millia latitudinis :
ſanctum erit in omnibus
terminis ejus per circuitum. Et 2
(b)erunt ex hoc ſanctificationes,
quingenti per quingentos, quadratum
per circuitum : & quinquaginta
cubiti ,(c) ſpatium
eorum per gyrum.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

20 וְרֵישֵׁיהוֹן לָא יְגַלְּחוּן וּפֵרוּעַ לָא יְרַבּוּן סַפָּרָא יְסַפְּרוּן יַת שְׂעַר רֵישֵׁיהוֹן׃ וַחֲמַר לָא
21 יִשְׁתּוּן כָּל כָּהֵן בְּמֵעַלְהוֹן לְדַרְתָּא גַוָּיְתָא׃ וְאַרְמְלָא וּמְתָרְכָא לָא יִסְּבוּן לְהוֹן לִנְשִׁין
22 אֱלָהֵין בְּתוּלְתָּא מִזַּרְעָא דְבֵית יִשְׂרָאֵל וְאַרְמַלְתָּא דִי תְהֵי אַרְמַלְתָּא שְׁאַר כָּהֲנַיָּא יִסְּבוּן׃
23 וְיַת עַמִּי יַלְּפוּן בֵּין קוּדְשָׁא לְחוּלָא וּבֵין מְסָאֲבָא לְדַכְיָא יְהוֹדְעוּנִין׃ וְעַל פַּלְגוּת דִּינָא
24 אִנּוּן יְקוּמוּן לְמֵדַן בְּדִינֵי רְעוּתִי יְדוּנוּן וְיַת אוֹרַיְתִי וְיַת קְיָמַי בְּכָל מוֹעֲדַי יִטְּרוּן וְיַת יוֹמֵי
25 שַׁבַּיָּא דִילִי יְקַדְּשׁוּן׃ וְעַל מֵיתָא דֶאֱנָשָׁא לָא יֵעוּל לְאִסְתַּאָבָא אֱלָהֵין לְאַב וּלְאֵם וּלְבַר
26 וְלִבְרַת לְאַח וְלַאֲחָת דְּלָא הֲוָת לִגְבַר יִסְתַּאֲבוּן׃ וּבָתַר דְּכוּתֵיהּ שַׁבְעָא יוֹמִין יִמְנוּן
27 לֵיהּ׃ וּבְיוֹם מֵעַלֵיהּ לְקוּדְשָׁא לְדַרְתָּא גַוָּיְתָא לְשַׁמָּשָׁא בְקוּדְשָׁא יַקְרֵיב חַטָּאתֵיהּ אֲמַר
28 יְיָ אֱלֹהִים׃ וּתְהֵי לְהוֹן לְאַחֲסָנָא חוּלָק מוֹתַר קוּרְבָּנַי חוּלַקְהוֹן וְאַחְסָנָא לָא תִתְּנוּן לְהוֹן
29 בְּיִשְׂרָאֵל מַתְּנָן דִּיהֲבֵית לְהוֹן אִנּוּן אַחֲסַנְתְּהוֹן׃ מִנְחָתָא חַטָּאתָא וַאֲשָׁמָא אִנּוּן יֵיכְלוּנֵּיהּ
30 וְכָל חֶרְמָא בְּיִשְׂרָאֵל לְהוֹן יְהֵי׃ וְרֵישׁ כָּל בִּכּוּרֵי כוּלָּא וְכָל אַפְרָשׁוּת כּוּלָּא מִכֹּל
אַפְרָשׁוּתֵיכוֹן לְכָהֲנַיָּא יְהֵי וְרֵישׁ אַצְוָתְכוֹן תִּתְּנוּן לְכַהֲנָא לְאַשְׁרָאָה בִרְכְתָא בְּבֵיתָךְ׃
31 כָּל נְבֵלָא וּתְבִירָא מִן עוֹפָא וּמִן בְּעִירָא לָא יֵיכְלוּן כָּהֲנַיָּא׃

מה

1 וּבְפַלְגוּתְכוֹן יַת אַרְעָא בְּאַחְסָנָא תַּפְרְשׁוּן אַפְרָשׁוּתָא קֳדָם יְיָ קוּדְשָׁא מִן אַרְעָא אָרְכָּא
עַשְׂרִין וְחַמְשָׁא אַלְפִין אָרְכָּא וּפוּתְיָא עַסְרָא אַלְפִין קוּדְשָׁא הוּא בְּכָל תְּחוּמַהּ סְחוֹר
2 סְחוֹר׃ יְהֵי מִדֵּין לְקוּדְשָׁא חֲמֵשׁ מְאָה בַּחֲמֵשׁ מְאָה מְרַבַּע סְחוֹר סְחוֹר וְחַמְשִׁין אַמִּין
רְוָחָא לֵיהּ סְחוֹר סְחוֹר׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et caput ſuum non radent, nec comam nutrient, ſed tondendo attondebunt 20
capillos capitis ſui. Et vinum non bibent ulli Sacerdotes ingreſſuri in atrium 21
interius. Et viduam & repudiatam non accipient ſibi in uxores ; ſed 22
virgines quæ fuerint de genere Iſraelitico ; & viduam quæ fuerit vidua ab
aliis Sacerdotibus accipient. Et populum meum docebunt quid ſit inter 23
ſanctum & prophanum, & quid ſit inter mundum & immundum oſtendent
eis. Et in controverſia judicii ſtabunt ipſi ut judicent : in judiciis voluntatis 24
meæ judicabunt, & legem meam & pacta mea in omnib⁹ ſolennitatib⁹ meis
cuſtodient, & dies Sabbathorum meorum ſanctificabunt. Et ad mortuū hominem 25
non ingredientur ne polluantur, niſi ad patrem & ad matrem, & ad filiū
& ad filiam, & fratrem, & ſororem quæ non fuit nupta viro, in quibus ſeſe
contaminabunt. Et poſtquàm emundat⁹ fuerit, ſeptem ei dies enumerabūtur. 26
Et in die quo introibit ſanctuarium in atrium interius ut miniſtret in ſanctuario, 27
offeret pro peccato ſuo, ait Dñs Deus. Et erit eis in *hæreditatis* portionem, 28
& reſiduum oblationum mearum erit pars eorum. & hæreditatem non
dabitis eis in Iſrael : dona quæ dedi eis, ipſa ſunt hæreditas eorum. Munus 29
& ſacrificium pro peccato & pro delicto ipſi comedent : & omne anathema
in Iſrael ipſorum erit. Et primitiæ omnium primitivorum cujuſvis 30
[*fructus*] & omnes exemptiones omnium rerum quas ſeparâſtis [*Domino,*]
Sacerdotibus erunt : & primitias maſſarum veſtrarum dabitis Sacerdoti, ut
reponatur benedictio in domo tua. Omne morticinium & dilaceratum de 31
avibus & pecoribus non comedent Sacerdotes.

CAP. XLV.

ET cùm diviſeritis terram in poſſeſſionem, ſeparabitis primitias coram 1
Dño ſanctitatem de terra, longitudine viginti quinque millium, & latitudine
decem millium : ſanctitas erit in omni termino ejus per circuitum. Et ex 2
hoc erunt pro ſanctitate quingenti per quingentos ; quadratum in circuitu ;
& quinquaginta cubitorum ſpatium ei erit per circuitum.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

10 * ܘܪ̈ܫܝܗܘܢ ܠܐ ܢܓܪܥܘܢ܂ ܘܦܘܪ̈ܥܬܗܘܢ ܠܐ ܢܪܒܘܢ܂ ܐܠܐ ܡܩܦܘ ܢܩܦܘܢ ܪ̈ܫܝܗܘܢ܂
21 * ܘܚܡܪܐ ܠܐ ܢܫܬܘܢ ܟܗ̈ܢܐ ܡܐ ܕܥܐܠܝܢ ܠܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ܂ * ܘܐܪܡܠܬܐ ܘܫܒܝܩܬܐ ܠܐ
22 ܢܣܒܘܢ ܠܗܘܢ ܢܫ̈ܐ܂ ܐܠܐ ܐܢ ܒܬܘܠܬܐ ܡܢ ܙܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ܂ ܐܘ ܐܪܡܠܬܐ ܕܡܫܬܒܩܐ ܡܢ
23 ܟܗܢܐ ܢܣܒܘܢ܂ * ܘܢܠܦܘܢ ܠܥܡܝ ܒܝܬ ܩܘܕܫܐ ܠܚܘܠܐ܂ ܘܢܘܕܥܘܢܗ ܒܝܬ ܛܡܐܐ
24 ܠܕܟܝܐ܂ * ܘܥܠ ܕܝܢܐ ܗܢܘܢ ܢܩܘܡܘܢ ܠܡܕܢ܂ ܒܕܝ̈ܢܝ ܢܕܘܢܘܢ܂ ܢܡܘ̈ܣܝ ܘܦܘܩ̈ܕܢܝ
25 ܢܛܪܘܢ܂ ܒܟܠܗܘܢ ܙܒ̈ܢܝ ܥܐ̈ܕܝ܂ ܘܫܒ̈ܬܝ ܢܩܕܫܘܢ܂ * ܘܥܠ ܡܝܬܐ ܕܒܪܢܫܐ ܠܐ
ܢܥܠܘܢ܂ ܕܠܐ ܢܬܛܡܐܘܢ܂ ܐܠܐ ܥܠ ܐܒܘܗܝ ܐܘ ܥܠ ܐܡܗ܂ ܐܘ ܥܠ ܒܪܗ܂ ܐܘ ܥܠ ܒܪܬܗ܂ ܐܘ ܥܠ ܐܚܘܗܝ܂
26 ܐܘ ܥܠ ܚܬܗ ܒܬܘܠܬܐ ܕܠܐ ܗܘܬ ܠܓܒܪܐ ܢܬܛܡܐܘܢ܂ * ܘܡܢ ܒܬܪ ܕܢܬܛܡܐ ܢܡܢܐ
27 ܠܗ ܫܒܥܐ ܝܘܡܝܢ܂ ܘܗܝܕܝܢ ܢܬܕܟܐ܂ * ܘܒܝܘܡܐ ܕܥܐܠ ܠܡܩܕܫܐ ܠܕܪܬܐ
28 ܓܘܝܬܐ ܠܡܫܡܫܘ ܒܡܩܕܫܐ܂ ܢܩܪܒ ܚܘܣܝܗ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪ̈ܘܬܐ܂ * ܘܬܗܘܐ ܠܗܘܢ
ܠܝܪܬܘܬܐ܂ ܐܢܐ ܐܢܐ ܝܪܬܘܬܗܘܢ܂ ܘܡܢܬܐ ܠܐ ܬܬܠܘܢ ܠܗܘܢ ܒܐܝܣܪܝܠ܂ ܐܢܐ ܐܢܐ
29 ܡܢܬܗܘܢ܂ * ܣܡܝܕܐ ܘܚܘܣܝܐ ܕܚܛ̈ܗܐ ܗܢܘܢ ܢܐܟܠܘܢ܂ ܘܟܠ ܚܪܡܐ ܕܒܐܝܣܪܝܠ
30 ܕܝܠܗܘܢ ܢܗܘܐ܂ * ܘܪܫ ܟܠ ܒܘܟܪܐ ܕܟܠܗ ܦܘܪܫܢܐ ܕܦܪܫܝܢ ܐܢܬܘܢ܂ ܕܟܗ̈ܢܐ ܢܗܘܐ܂
31 ܘܪܫ ܠܝܫܬܟܘܢ܂ ܗܒܘ ܠܟܗ̈ܢܐ܂ ܕܬܗܘܐ ܒܘܪܟܬܐ ܒܒ̈ܬܝܟܘܢ܂ * ܘܟܠ ܕܬܒܝܪ ܘܕܚܛܝܦ
ܡܢ ܦܪܚܬܐ ܘܡܢ ܚܝܘܬܐ܂ ܠܐ ܢܐܟܠܘܢ ܟܗ̈ܢܐ܂

Capita ſua ne tondeant, & cincinnos ſuos ne 20 nutriant, ſed omnino radant capita ſua. Vi- 21 num ne bibant ſacerdotes, cùm erunt ingreſſuri in atrium intimum. Viduam aut repudia- 22 tam ne ducant ſibi uxores; ſed tantùm virginem è ſemine Iſraelitico, aut viduam quæ vidua *relicta* fuerit à ſacerdote, ducent. Do- 23 ceant populum meum *diſcrimen* inter ſacrum & prophanum, & notam faciant illi *differentiam* inter immundum & mundum. Quod 24 autem ad judicia, ipſi præſideant ad judicandum: ſecundùm judicia mea judicent: leges meas & decreta mea ſervent ſingulis temporibus ſolennitatum mearum, et ſabbatha mea ſanctificent. Ad cadaver humanum ne ingre- 25 diantur, ut non contaminentur: ſed in patre aut matre ſuâ, filio aut filiâ ſuâ, fratre ſuo aut ſorore ſuâ virgine, quæ non fuerit viro *nupta*, contaminabunt ſeſe. Verùm poſtquam conta- 26 minaverit ſe, numeret ſibi ſeptem dies ac tunc mundet ſeſe: Eóque die quo ingredietur 27 Sanctuarium in atrium intimum ad miniſtrandum in Sanctuario, offerat expiationem ſuam, ait Dominus dominorum; Et ſit *hæc* illis in 28 hæreditatem, Ego ſum hæreditas eorum: portionem ne detis eis in Iſraele, ego ſum portio eorum. Similam & expiationem peccatorum 29 ipſi comedent; & omne anathema quod fuerit in Iſraele, ipſorum eſto. Primitiæ omnium 30 primogenitorum cujuſcunque voti quod dicaveritis, ſacerdotum eſto: primitias quoque maſſarum veſtrarum date ſacerdotibus, ut ſit benedictio in domibus veſtris. Cruciatum & 31 laniatum à volucribus aut feris, ne comedant ſacerdotes.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܗ *

1 * ܘܡܐ ܕܡܦܠܓܝܢ ܐܢܬܘܢ ܐܪܥܐ܂ ܦܪܘܫܘ ܦܘܪܫܢܐ ܠܡܪܝܐ܂ ܘܩܕܫܘ ܡܢ ܐܪܥܐ܂
ܕܢܗܘܐ ܐܘܪܟܗ܂ ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ ܐܠܦܝܢ܂ ܘܦܬܝܗ܂ ܥܣܪܐ ܐܠܦܝܢ܂ ܘܢܗܘܘܢ
2 ܩܕܝܫܝܢ ܒܟܠܗܘܢ ܬܚܘ̈ܡܘܗܝ ܚܕܪ ܚܕܪܘܗܝ ܟܠܗ܂ * ܘܢܗܘܐ ܠܡܩܕܫܐ ܚܡܫܡܐܐ
ܒܚܡܫܡܐܐ܂ ܘܢܗܘܐ ܡܪܒܥܐ ܚܕܪ ܚܕܪܐ܂ ܘܚܡܫܝܢ ܐܡܝܢ ܦܬܝܗ܂

A C P. XLV.

Cumque terram dividetis, ſeparate ſepara- 1 tionem Domino, & conſecrate partem terræ cujus longitudo ſit vigintiquinque millium *cubitorum*, latitudo verò decem millium: & 2 omnes hujus termini ſint ſancti circunquaque: Sítque in Sanctuarium, quingentorũ in quingentos; & ſit quadrata quoquoverſùm: & quinquaginta cubitorum area ipſius.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

20 * ولا يحلقون روسهم * ولا يرفعون جممهم * ويغطون روسهم بتغطية * ولا يشربون خمرا كل كاهن
21 عند ما يدخل الى الدار الداخلة * وارملة ومطلقة لا ياخذوها لهم امراة * لكن عذري
22 من ذرية اسرايل * وان تكن ارملة من كاهن ياخذوها * ويعلمون شعبي الفرق بين
23 الطاهر والنجس * وبين النقي وبين الغير نقي يعرفوهم * وعلى حكم الدم هم يقفون
24 ليميزوا * ويبررون حقوقي * ويحكمون احكامي * ويحفظون نواميسي واوامري في كل اعيادي *
25 ويقدسون سبوتي * ولا يدخلون على نفس انسان ليتنجسوا * لكن على الاب وعلى الام * وعلى
26 الابن وعلى الابنة * وعلى اخيه وعلى اخته التي لم تصر لرجل ليتنجس * وبعد ان يطهر
27 سبعة ايام يعد له ستة * وفي اليوم الذي يدخلون فيه الى الدار الداخلة ليخدموا في
28 القدس * يقدموا استغفارا * يقول الرب الاله * ويكون لهم ميراثا * انا ميراث لهم * وضبط
29 لهم لا يعطي في بني اسرايل * لاني انا ضبط لهم * والذبايح * وما هو عن الخطية * وما
30 هو عن الجهل هم ياكلوه * وكل مفرز في اسرايل يكون لهم * واوايل كل شي * وابكار
كل شي * وكل خصوصياتكم من جميع اوايلكم * يكون للكهنة * وابكار غلاتكم تعطوه
31 للكاهن * لتضعوا بركتكم على بيوتكم * وكل ميتة * وما افترسه الوحش من الطيور
ومن البهايم * لا تاكله الكهنة *

Non radent capita ſua, neque ſuccingent 20 *cincinnos ſuos, & operiendo operient capita ſua. Nullus ſacerdos vinum bibet* 21 *cùm ingredietur in atrium interius. Vi-* 22 *duam & repudiatam non ſument ſibi uxorem, ſed virginem de ſtirpe Iſraelis: at ſi fuerit vidua à ſacerdote, ſument eam. Docebunt populum meum diſcri-* 23 *men inter ſacrum & profanum, & inter mundum & immundum indicabunt eis. In judicio ſanguinis ipſi ſtabunt ad diſ-* 24 *cernendum: juſtificabunt ſtatuta mea, & judicabunt judicia mea: leges atque præcepta mea ſervabunt in omnibus ſolennitatibus meis, & ſabbatha mea ſanctificabunt. Non ingredientur ad animam* 25 *hominis, ut polluant ſeſe: præterquam ad patrem & ad matrem, ad filium & ad filiam, ad fratrem ſuum & ad ſororem ſuam quæ non fuerit locata marito ut pollueretur. Et poſteaquam mun-* 26 *datus fuerit ſeptem diebus, numeret ſibi ſex: Et eo die quo ingredientur in a-* 27 *trium interius ad miniſtrandum in Sanctuario, offerant expiationem, dicit Dominus Deus; Eritque eis in hæreditatem;* 28 *ego ſum hæreditas eorum; quare poſſeſſio non dabitur iis inter filios Iſraelis, quandoquidem ego ſum poſſeſſio eorum. Sa-* 29 *crificia, & quod eſt pro peccato, & quod eſt pro ignorantia, ipſi comedent: & omne ſeparatum in Iſraele, ipſorum erit. Primitiæ rerum omnium, & omnium* 30 *primogenita, cunctæque ſegregationes veſtræ ex omnibus primitiis veſtris, erunt ſacerdotum. Primitias quoque frugum veſtrarum dabitis ſacerdoti, ut ponatis benedictionem veſtram ſuper domos veſtras. Omne morticinum, & quicquid* 31 *prædâ captum fuerit à belluis, ſive volucribus ſive beſtiis, non comedent ſacerdotes.*

* الفصل الخامس والاربعون *

1 * وعند ما تقسمون الارض بالميراث * افرزوا اولا للرب قدسا من الارض خمسة وعشرين الفا
2 طولا * وعرضا عشرين الفا * يكون قدسا في جميع حدوده من حوله * ويكون من هذا الى
القدس خمسماية في خمسماية * مربعا عيا دار * وخمسين ذراعا رحبتهم عيا دار *

CAP. XLV.

Cum autem terram divideritis in hæreditatem, ſeparate primum Domino ſan- 1 *ctum de terra, vigintiquinque millia in longitudinem, in latitudinem verò viginti millia: ſanctum eſto in omnibus terminis ſuis undequaque. Et eſto ab hoc ad San-* 2 *ctuarium, quingenti per quingentos, quadratum per circuitum: & quinquaginta cubitorum platea eorum per gyrum.*

יחזקאל : מה

viginti & ,quinque longitudinem mensurabis ista mensura à Et
3 וּמִן־הַמִּדָּה הַזֹּאת תָּמוֹד אֹרֶךְ חֲמֵשׁ וְעֶשְׂרִים
,sanctuarium erit ipso in Et .millium decem latitudinem & : millium
אֶלֶף וְרֹחַב עֲשֶׂרֶת אֲלָפִים וּבוֹ־יִהְיֶה הַמִּקְדָּשׁ
ministris sacerdotibus ipsa terra de Sanctitas .sanctitatum sanctitas
4 קֹדֶשׁ קָדָשִׁים׃ קֹדֶשׁ מִן־הָאָרֶץ הוּא לַכֹּהֲנִים מְשָׁרְתֵי
erit & : Domino ministrandum ad *accedentibus* , erit sanctuarii
הַמִּקְדָּשׁ יִהְיֶה הַקְּרֵבִים לְשָׁרֵת אֶת־יְהוָה וְהָיָה
quinque Et .sanctuario sanctuarium & ,domibus locus eis
5 לָהֶם מָקוֹם לְבָתִּים וּמִקְדָּשׁ לַמִּקְדָּשׁ׃ וַחֲמִשָּׁה
Levitis erit & :latitudo millium decem & ,longitudo millium viginti &
וְעֶשְׂרִים אֶלֶף אֹרֶךְ וַעֲשֶׂרֶת אֲלָפִים רֹחַב יִהְיֶה לַלְוִיִּם
possessionem Et .cubicula viginti possessionem in *ipsis* domus ministris
6 מְשָׁרְתֵי הַבַּיִת לָהֶם לַאֲחֻזָּה עֶשְׂרִים לְשָׁכֹת׃ וַאֲחֻזַּת
,quinque longitudo & ,latitudo millium quinque , dabitis civitatis
הָעִיר תִּתְּנוּ חֲמֵשֶׁת אֲלָפִים רֹחַב וְאֹרֶךְ חֲמִשָּׁה
Israel domui omni : sanctitatis oblationem contra millium viginti &
וְעֶשְׂרִים אֶלֶף לְעֻמַּת תְּרוּמַת הַקֹּדֶשׁ לְכָל־בֵּית יִשְׂרָאֵל
possessionē *ad* &,sanctitatis oblationē *ad* inde & ,hinc principi Et .erit
7 יִהְיֶה׃ וְלַנָּשִׂיא מִזֶּה וּמִזֶּה לִתְרוּמַת הַקֹּדֶשׁ וְלַאֲחֻזַּת
urbis *possessionis facies ad* & ,sanctitatis *oblationis facies ad* civitatis
הָעִיר אֶל־פְּנֵי תְרוּמַת־הַקֹּדֶשׁ וְאֶל־פְּנֵי אֲחֻזַּת הָעִיר
longitudo & :Orientem ad orientali angulo ab & ,*mare ad maris* angulo ab
מִפְּאַת־יָם יָמָּה וּמִפְּאַת־קֵדְמָה קָדִימָה וְאֹרֶךְ
.orientalem terminum ad *maris* termino à *partium unius regione* è
לְעֻמּוֹת אַחַד הַחֲלָקִים מִגְּבוּל יָם אֶל־גְּבוּל קָדִימָה׃
populabuntur non & : Israel in possessionem in ei erit terra In
8 לָאָרֶץ יִהְיֶה־לּוֹ לַאֲחֻזָּה בְּיִשְׂרָאֵל וְלֹא־יוֹנוּ
Israel domui dabunt terram & ,meum populum mei *prælati* ultrà
עוֹד נְשִׂיאַי אֶת־עַמִּי וְהָאָרֶץ יִתְּנוּ לְבֵית־יִשְׂרָאֵל
prælati vobis *Multum* ,*Dominus* Dominus dixit Sic .eorum tribus per
9 לְשִׁבְטֵיהֶם׃ כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה רַב־לָכֶם נְשִׂיאֵי
justitiam & judicium & , *amovete* vastationem & ,*violentiam* , Israel
יִשְׂרָאֵל חָמָס וָשֹׁד הָסִירוּ וּמִשְׁפָּט וּצְדָקָה
Dominus dixit ,meo populo *desuper* vestras *exactiones tollite* : facite
עֲשׂוּ הָרִימוּ גְרֻשֹׁתֵיכֶם מֵעַל עַמִּי נְאֻם אֲדֹנָי
erit *justitiæ* batus & ,*justitiæ* Ephah & ,*justitiæ* Bilances .*Dominus*
10 יְהוִה׃ מֹאזְנֵי־צֶדֶק וְאֵיפַת־צֶדֶק וּבַת־צֶדֶק יְהִי
decimum *tollendum ad* ,erit unius *ponderis* batus & , Ephah .vobis
11 לָכֶם׃ הָאֵיפָה וְהַבַּת תֹּכֶן אֶחָד יִהְיֶה לָשֵׂאת מַעְשַׂר
erit chomer *ad* ;Ephah chomer decimum & : batus chomer
הַחֹמֶר הַבָּת וַעֲשִׂירִת הַחֹמֶר הָאֵיפָה אֶל־הַחֹמֶר יִהְיֶה
; sechalim viginti : obolorum viginti Sechel Et .ejus *æquilibrium*
12 מַתְכֻּנְתּוֹ׃ וְהַשֶּׁקֶל עֶשְׂרִים גֵּרָה עֶשְׂרִים שְׁקָלִים
mina sechel quinque & decem ,sechalim viginti & quinque
חֲמִשָּׁה וְעֶשְׂרִים שְׁקָלִים עֲשָׂרָה וַחֲמִשָּׁה שֶׁקֶל הַמָּנֶה
partem sextam ; offeretis quam oblatio Ista .vobis erit
13 יִהְיֶה לָכֶם׃ זֹאת הַתְּרוּמָה אֲשֶׁר תָּרִימוּ שִׁשִּׁית
chomer de Ephah *sextabitis* & ,*triticorum* chomer de Ephah
הָאֵיפָה מֵחֹמֶר הַחִטִּים וְשִׁשִּׁיתֶם הָאֵיפָה מֵחֹמֶר
bati decimum olei batum olei , *statutum* Et .*hordeorum*
14 הַשְּׂעֹרִים׃ וְחֹק הַשֶּׁמֶן הַבַּת הַשֶּׁמֶן מַעְשַׂר הַבַּת
.chomer batim decem quia : chomer bati decem ; coro de
מִן־הַכֹּר עֲשֶׂרֶת הַבַּתִּים חֹמֶר כִּי־עֲשֶׂרֶת הַבַּתִּים חֹמֶר׃
, Israel *irriguo de* ducentis è *pecore* de unam agnam Et
15 וְשֶׂה־אַחַת מִן־הַצֹּאן מִן־הַמָּאתַיִם מִמַּשְׁקֵה יִשְׂרָאֵל
ait ,eos *super* expiandum ad : pacifica in & ,*ascensionem &* , *munus* in
לְמִנְחָה וּלְעוֹלָה וְלִשְׁלָמִים לְכַפֵּר עֲלֵיהֶם נְאֻם
.*Dominus* Dominus
אֲדֹנָי יְהוִה׃

Versio VULG. LAT.

3 Et à mensura ista mensurabis longitudinē vigintiquinque millium, & latitudinem decem millium, & in ipso erit templum, 4 Sanctúmque sanctorum. Sanctificatum de terra erit sacerdotib⁹ ministris Sanctuarii, qui ascendunt ad ministerium Domini: & erit eis locus in domos, & in 5 Sanctuarium sanctitatis. Vigintiquinque autem millia longitudinis, & decem millia latitudinis erunt Levitis, qui ministrant domui: ipsi possidebunt viginti ga- 6 zophylacia. Et possessionem civitatis dabitis quinque millia latitudinis, & longitudinis vigintiquinque millia, secundùm separationem Sanctuarii, omni do- 7 mui Israel. Principi quoque hinc & indè in separationē Sanctuarii, & in possessionem civitatis, contra faciem separationis Sanctuarii, & contra faciem possessionis urbis: à latere Maris usque ad Mare, & à latere Orientis usque ad Orientem: Longitudinis autem juxta unamquamque partem à termino Occidentali usque 8 ad terminum Orientalem. De terra erit ei possessio in Israel: & non depopulabuntur ultrà principes populum meum: sed terram dabunt domui Israel se- 9 cundùm tribus eorum. Hæc dicit Dominus Deus; Sufficiat vobis, principes Israel: iniquitatem & rapinas intermittite, & judicium & justitiam facite, separate confinia vestra à populo meo, 10 ait Dominus Deus. Statera justa, & ephi justum, & batus justus 11 erit vobis. Ephi & batus æqualia, & unius mensuræ erunt: ut capiat decimam partem cori batus, & decimā partem cori ephi: juxta mensuram cori erit æqua 12 libratio eorum. Siclus autem viginti obolos habet. Porrò viginti sicli, & vigintiquinque sicli, & quindecim sicli, mnam faci- 13 unt. Et hæ sunt primitiæ, quas tolletis: sextam partem ephi de coro frumenti, & sextam partem 14 ephi de coro hordei. Mensura quoque olei, batus olei, decima pars cori est: & decem bati corum faciunt: quia decem bati 15 implent corum. Et arietem unum de grege ducentorum, de his quæ nutriunt Israel in sacrificium, & in holocaustū, & in pacifica, ad expiandum pro eis, ait Dominus Deus,

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

3 Καὶ ἐκ ταύτης τῆς διαμετρήσεως διαμετρήσεις μῆκος πέντε καὶ εἴκοσι χιλιάδας, καὶ εὖρος εἴκοσι χιλιάδας· καὶ ἐν αὐτῇ ἔσται (γ) ἅγια τῶν ἁγίων. 4 Ἀπὸ τῆς γῆς ἔσται τοῖς ἱερεῦσι τοῖς λειτουργοῦσιν ἐν τῷ ἁγίῳ, καὶ ἔσται τοῖς ἐγγίζουσι (δ) λειτουργεῖν τῷ κυρίῳ· καὶ ἔσται αὐτοῖς τόπος εἰς οἴκους ἀφωρισμένους τῷ ἁγιασμῷ αὐτῶν, 5 Εἴκοσι καὶ πέντε (ε) χιλιάδας μῆκος, καὶ εὖρος εἴκοσι χιλιάδες· καὶ τοῖς Λευίταις τοῖς λειτουργοῦσι τῷ οἴκῳ, αὐτοῖς εἰς 6 κατάσχεσιν πόλεις τοῦ κατοικεῖν. Καὶ τὴν κατάσχεσιν τῆς πόλεως δώσεις πέντε χιλιάδας εὖρος, καὶ μῆκος πέντε καὶ εἴκοσι χιλιάδας, ὃν τρόπον (ζ) ἡ ἀπαρχὴ τῶν ἁγίων 7 παντὶ οἴκῳ Ἰσραὴλ ἔσονται. Καὶ τῷ ἡγουμένῳ ἐκ τούτου, καὶ ἀπὸ τούτου εἰς τὰς ἀπαρχὰς τῶν ἁγίων, εἰς κατάσχεσιν τῆς πόλεως, κατὰ πρόσωπον (η) τῶν ἀπαρχῶν τῶν ἁγίων, καὶ κατὰ πρόσωπον τῆς κατασχέσεως τῆς πόλεως τὰ πρὸς θάλασσαν, καὶ ἀπὸ τῶν πρὸς θάλασσαν (θ) πρὸς ἀνατολάς· καὶ τὸ μῆκος ὡς μία τῶν μερίδων ἀπὸ τῶν ὁρίων τῶν πρὸς θάλασσαν, καὶ τὸ μῆκος ἐπὶ τὰ 8 ὅρια τὰ πρὸς ἀνατολὰς τῆς γῆς. Καὶ ἔσται αὐτῷ εἰς κατάσχεσιν ἐν τῷ Ἰσραὴλ, καὶ οὐ καταδυναστεύσωσιν οὐκέτι οἱ ἀφηγούμενοι τοῦ Ἰσραὴλ τὸν λαόν μου, καὶ τὴν γῆν κατακληρονομήσουσιν οἶκος Ἰσραὴλ κατὰ 9 φυλὰς αὐτῶν. Τάδε λέγει κύριος (ι) θεὸς, Ἱκανούσθω ὑμῖν οἱ ἀφηγούμενοι τοῦ Ἰσραὴλ, (κ) ἀδικίαν καὶ ταλαιπωρίαν ἀφέλεσθε, (λ) κρίμα καὶ δικαιοσύνην ποιήσατε· (μ) ἐξάρατε καταδυναστείαν ἀπὸ 10 τοῦ λαοῦ μου, λέγει κύριος (ν) θεός. Ζυγὸς δίκαιος, καὶ μέτρον δίκαιον, καὶ χοῖνιξ δι- 11 καία ἔσται ὑμῖν τοῦ μέτρου. Καὶ ἡ χοῖνιξ ὁμοίως μία ἔσται τοῦ λαμβάνειν. τὸ δέκατον τοῦ γομὸρ, (ξ) χοῖνιξ, καὶ τὸ δέκατον τοῦ γομὸρ, πρὸς τὸ γομὸρ ἔσται τὸ 12 ἴσον καὶ τὰ στάθμια, Εἴκοσι ὀβολοὶ, (ο) πέντε σίκλοι, πέντε καὶ (π) σίκλοι δέκα, καὶ πεντήκοντα σίκλοι ἡ μνᾶ ἔσται ὑμῖν. 13 Καὶ αὕτη ἡ ἀπαρχὴ ἣν ἀφοριεῖτε, (ρ) ἕκτον μέτρου ἀπὸ τοῦ γομὸρ τοῦ πυροῦ, καὶ τὸ ἕκτον (σ) αὐτοῦ τοῦ οἰφὶ ἀπὸ τοῦ κόρου τῶν 14 κριθῶν. Καὶ (τ) τὸ πρόσταγμα τοῦ ἐλαίου κοτύλην ἐλαίου ἀπὸ (υ) δέκα κοτυλῶν, 15 ὅτι αἱ δέκα κοτύλαι εἰσὶ γομόρ. Καὶ πρόβατον (φ) ἀπὸ τῶν προβάτων ἀπὸ δέκα ἀφαίρεμα ἐκ πασῶν τῶν πατριῶν τοῦ Ἰσραὴλ, εἰς θυσίας, καὶ εἰς ὁλοκαυτώματα, καὶ εἰς (χ) σωτηρίου τοῦ ἐξιλάσκεσθαι περὶ ὑμῶν, λέγει κύριος (ψ) θεός.

Et à mensura ista mensurabis longitudinem quinque & viginti millia, & latitudinem viginti millia. Et in ipsa erunt (d) Sancta sanctorum. 3 *De terra erit sacerdotibus ministrantibus in Sancto: & erit eis, qui accedunt ministrare Domino. Et erit eis locus in domibus (e) separatis sanctificationi ipsorum,* 4 *Viginti & quinque millia longitudo: & latitudo viginti millia. Et Levitis, qui ministrant domui, ipsis in possessionem (f) civitates ad habitandum.* 5 *Et possessionem civitatis dabis, quinque millia latitudinis, & longitudinis quinque & viginti millia: quemadmodùm primitiæ Sanctorum, omni domui Israel erunt.* 6 *Et duci hinc, & indè in primitias Sanctorum, in possessionem civitatis, contra faciem primitiarum Sanctorum, & contra faciem possessionis civitatis ea quæ ad mare, (g) & ab iis quæ ad mare ad Orientem: & longitudo sicut una partium, à terminis qui ad mare, & longitudo ad terminos qui ad Orientem terræ.* 7 *Et erit ei in possessionem in Israel: & non oppriment ultrà duces Israel populum meum: & terram hæreditabunt domus Israel secundùm tribus suas.* 8 *Hæc dicit Dominus Deus; Sufficiat vobis, Duces Israel: iniquitatem & vexationem (h) auferte: judicium & justitiam facite: tollite oppressionem de populo meo, ait Dominus Deus.* 9 *Statera justa; & mensura justa, & chœnix justus erit vobis ad mensurā:* 10 *Et chœnix similiter unus erit ad accipiendū.* 11 *Decima pars gomor, chœnix; & decima pars (i) gomor: ad (k) gomor erit æqualitas & pondera,* *Viginti oboli: (l) quinque sicli, quinque & sicli decem, & quinquaginta sicli mina erit vobis.* 12 *Et hæ sunt primitiæ, quas separabitis: sextam partem (m) mensuræ de gomor tritici, & sextam partem (n) ipsius ephi de coro hordei:* 13 *Et præceptum olei, cotylam olei de decem cotylis: quia decem cotylæ sunt (o) gomor.* 14 *Et ovem de ovibus ex decem, demptio ex omnibus patriis Israel in sacrificia, & in holocaustomata, & in oblationem salutaris ad expiandum pro vobis, ait Dominus Deus.* 15

MS.A. (γ) τὸ ἁγίασμα τῶν ἁγίων. Ἅγιον ἀπὸ τῆς (δ) ἐν αὐτοῖς λειτουργεῖν (ε) χιλιάδες μῆκος, καὶ εἴκοσι χιλιάδες εὖρος ἔσται τοῖς (ζ) καὶ ἡ (η)* τῆς* πόλεων κατὰ πρόσωπον τῶν ἀπαρχῶν (θ) τὰ πρὸς (ι) ὁ θεὸς, (κ)* τὸν λαόν μου καὶ τὴν γῆν κατακληρονομήσουσιν οἶκος τοῦ Ἰσραὴλ, ἀδικίαν (λ) καὶ κρίμα (μ) καὶ ἐξάρατε (ν) ὁ θεός. Ζυγὸν δίκαιον, (ξ) ἡ χοῖνιξ τὸ μέτρον πρὸς τὸ γομὸρ ἔσται ἴσον (ο) οἱ πέντε (π) οἱ δέκα σίκλοι, δέκα (ρ)* ἕκαστον τοῦ μέτρου (σ) τοῦ οἰφὶ ἀπὸ τοῦ γομὸρ κόρου τῶν (τ) τὰ προστάγματα (υ) τῶν δέκα (φ) ἓν ἀπὸ τῶν δέκα προβάτων ἀφαίρεμα (χ) σωτήριον τοῦ ἐξιλάσκεσθαι (ψ) ὁ θεός.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 וּמִן מְשַׁחְתָּא הָדָא תְּמַשַּׁח אוּרְכָּא עַסְרִין וְחַמְשָׁא אַלְפִין וּפוּתְיָא עַשְׂרָא אַלְפִין וּבֵיהּ
4 יְהֵי מַקְדְּשָׁא קוֹדֶשׁ קוּדְשִׁין׃ קוּדְשָׁא מִן אַרְעָא הוּא לְכַהֲנַיָּא דִי מְשַׁמְּשִׁין בְּבֵית מַקְדְּשָׁא
דַייָ יְהֵי דְּקָרִיבִין לְשַׁמָּשָׁא קֳדָם יְיָ וִיהֵי לְהוֹן אֲתַר שְׁבִיק לְבֵיתָא וְכִבְשָׁא לְמַקְדְּשָׁא׃
5 וְעַסְרִין וְחַמְשָׁא אַלְפִין אוּרְכָּא וְעַסְרָא אַלְפִין פּוּתְיָא וִיהֵי לְלֵיוָאֵי מְשַׁמְּשֵׁי בֵיתָא לְהוֹן
6 לְאַחְסָנָא עַסְרִין לִשְׁכָּן׃ וְאַחְסָנַת קַרְתָּא תִּתְּנוּן חַמְשָׁא אַלְפִין פּוּתְיָא וְאוּרְכָּא עַשְׂרִין
7 וְחַמְשָׁא אַלְפִין לָקֳבֵל אַפְרָשׁוּת קוּדְשָׁא לְכָל בֵּית יִשְׂרָאֵל יְהֵי׃ וּלְרַבָּא מִכָּא וּמִכָּא
לְאַפְרָשׁוּת קוּדְשָׁא וְלַאֲחְסָנַת קַרְתָּא לָקֳבֵל אַפְרָשׁוּת קוּדְשָׁא וְלָקֳבֵל אַחְסָנַת קַרְתָּא
מֵרוּחַ מַעַרְבָא מַעַרְבָא וּמֵרוּחַ מַדִּנְחָא מַדִּנְחָא וְאוּרְכָּא לָקֳבֵל חַד מִן חוּלָקַיָּא מִתְּחוּם
8 מַעַרְבָא עַד תְּחוּם מַדִּנְחָא׃ דָא אַרְעָא תְּהֵי לְרַבָּא לְאַחְסַנְתָּא בְּיִשְׂרָאֵל וְלָא יֵינְסוּן
9 עוֹד רַבְרְבַי יָת עַמִּי וְאַרְעָא יִתְּנוּן לְבֵית יִשְׂרָאֵל לְשִׁבְטֵיהוֹן׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים
סַגִּי לְכוֹן רַבְרְבֵי יִשְׂרָאֵל חַטְפָּא וּבִזָּא אַעְדּוֹ וְדִין דִּקְשׁוֹט וְזָכוּ עֲבִידוּ סְלִיקוּ תַּקְלַתְכוֹן
10 מִנּוֹ עַמִּי אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים׃ מוֹזְנָן דִּקְשׁוֹט וּמְכִילָן דִּקְשׁוֹט וּבַתִּין דִּקְשׁוֹט יְהֵי לְכוֹן׃
11 מְכִילְתָּא וּבֵיתָא טִקּוּס חַד יְהֵי לְכוֹן סְכוּם תְּלָת סָאִין לְמִסַּב מַעֲשַׂר כּוֹרָא בִּמְכִילְתָּא
12 רְטִיבָא בֵּיתָא וַעֲסַר כּוֹרָא יַבִּישָׁא מְכִילְתָּא מִן כּוֹרָא יְהֵי טִקּוּסֵיהּ׃ וְסִלְעָא עַסְרִין
מָעִין תְּלְתוּת מָנְיָא עַסְרִין סִלְעִין מְנֵי כַסְפָּא עַסְרִין וְחַמֵשׁ סִלְעִין רִבְעוּת מָנְיָא חֲמֵשׁ
13 עַסְרֵי סִלְעִין כּוּלְּהוֹן שִׁתִּין מָנִין וּמָנֵי רַבָּא קוּדְשָׁא יְהֵי לְכוֹן׃ דָא אַפְרָשׁוּתָא דְּתַפְרְשׁוּן
14 חַד מִן שִׁתָּא בִּמְכִילְתָּא מִכּוֹר חִטִּין וְחַד מִן שִׁתָּא בִּמְכִילְתָּא מִכּוֹר סַעֲרִין׃ וּדְחָזֵי לְמִסַּב
מִן מִשְׁחָא בִּמְכִילְתָּא רְטִיבָא מַעֲשׂוֹרָא בֵּיתָא מִן כּוֹרָא חַד מִן עַסְרָא הֲוָיָא בֵיתָא בְּכוֹרָא
15 אֲרֵי עֲסַר בַּתִּין כּוֹרָא׃ וְאִמַּר חַד מִן עָנָא מִן מָאתַן דַּחֲזֵי לְמִסַּב מִפַּטְמָא דְיִשְׂרָאֵל
לְמִנְחָתָא וְלַעֲלָתָא וּלְנִכְסַת קוּדְשַׁיָּא לְכַפָּרָא עֲלֵיהוֹן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et à mensura hac metieris longitudinem vigintiquinq; millia, & latitudinem 3 decem millia, in quo erit sanctuarium sanctum sanctorum. Sanctificatum de 4 terra erit Sacerdotib⁹ qui ministrant in domo sanctuarii *Domini*, qui accedunt ad ministrandum coram Dño: & erit eis locus relictus pro domibus, & strata via ad sanctuarium. Viginti autem quinq; millia longitudinis, & decem millia 5 latitudinis erunt Levitis ministris domus: ipsis erunt in possessionem viginti gazophylacia. Et possessionem civitatis dabitis quinq; millia latitudinis, & 6 longitudinis viginti quinq; millia, secundùm separationem sanctitatis, omni domui Israel erit. Principi autem hinc & indè in separationem sanctitatis 7 & in possessionem civitatis, & contra separationem sanctitatis, & contra possessionem civitatis à parte Occidentali ad Occidentem, & à plaga Orientali in Orientem: longitudo autem erit secundùm unamquamque partem à termino Occidentali in terminum Orientalem. Hæc terra erit principi in 8 possessionem in Israel, & non depopulabuntur ultrà principes mei populum meum, & terram dabunt domui Israel secundùm tribus eorum. Hæc dicit 9 Dñs Deus: Sufficiat vobis principes Israel, rapinam & prædam auferte, & judicium verum & justitiam operamini; auferte offendicula vestra de medio populi mei, ait Dñs Deus. Stateræ justæ, & mensuræ justæ, & bati justi 10 erunt vobis: Mensuræ & bati eadem ratio erit vobis, numeri trium sato- 11 rum, ut capiat batus decimam partem cori in mensura liquidorum, & decimam partem cori in mensura aridorum: ex coro erit æqualitas utriusque. Et siclus viginti obolos habet; tertia pars mnæ viginti siclos habet: mna 12 argentea viginti & quinque siclos: quarta pars mnæ quindecim siclos habet: omnes sexaginta sunt mna: & mna magna sancta erit vobis. Ista 13 est separatio quam separabitis, sextam partem mensuræ de coro tritici, & sextam partem mensuræ de coro hordei. Et quod pertinet ut tollatur de 14 oleo in mensura liquidorum, est decima pars bati de coro: quia decima pars cori est batus: corus enim decem batos habet. Et agnus unus de ovi- 15 bus ducentis quem oportet accipere de pinguibus Israel in munus, & in holocaustum, & in victimam sanctificatam ad expiandum pro eis, ait Dominus Deus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

3 * ܘܡܢ ܗܕܐ ܡܫܘܚܬܐ ܐܘܪܟܐ ܚܡܫܐ ܘܥܣܪܝܢ ܐܠܦܝܢ. ܘܦܬܝܐ ܥܣܪܐ ܐܠܦܝܢ. ܘܒܗ
4 ܢܗܘܐ ܩܘܕܫ ܩܘܕܫܐ. * ܘܩܘܕܫܐ ܕܐܪܥܐ. ܢܗܘܐ ܠܟܗܢܐ ܕܡܫܡܫܝܢ ܠܡܩܕܫܗ ܕܡܪܝܐ.
ܘܠܕܩܪܒܝܢ ܠܡܫܡܫܘܬܗ ܠܡܪܝܐ. ܘܢܗܘܐ ܠܗܘܢ ܐܬܪܐ ܠܒܬܐ. ܘܡܩܕܫܐ ܠܡܩܕܫܐ.
5 * ܘܢܗܘܐ ܚܡܫܐ ܘܥܣܪܝܢ ܐܠܦܝܢ ܐܘܪܟܐ. ܘܥܣܪܐ ܐܠܦܝܢ ܦܬܝܐ. ܘܢܗܘܐ ܝܘܪܬܢܐ
6 ܠܠܘܝܐ ܕܡܫܡܫܝܢ ܒܒܝܬܐ. ܥܣܪܝܢ ܒܬܝܢ. ܝܘܪܬܢܐ ܕܡܕܝܢܬܐ. * ܘܚܡܫܐ ܐܠܦܝܢ
ܦܬܝܐ. ܘܐܘܪܟܐ ܚܡܫܐ ܘܥܣܪܝܢ ܐܠܦܝܢ. ܠܘܩܒܠ ܦܘܪܫܢܐ ܕܩܘܕܫܐ. ܢܗܘܐ
7 ܠܟܠܗܘܢ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. * ܘܠܡܕܒܪܢܐ ܕܥܡܐ ܠܦܘܪܫܢܐ ܕܩܘܕܫܐ ܘܠܝܘܪܬܢܐ
ܕܡܕܝܢܬܐ. ܡܢ ܡܕܢܚܐ. ܘܡܢ ܡܥܪܒܐ. ܘܐܘܪܟܐ ܢܗܘܐ ܠܘܩܒܠ ܦܠܓܘܬܐ ܡܢ
8 ܡܕܢܚܐ ܠܡܥܪܒܐ. * ܢܗܘܐ ܝܘܪܬܢܐ ܠܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܠܐ ܢܐܢܣܘܢ ܬܘܒ ܡܕܒܪܢܐ
9 ܕܥܡܝ. ܘܐܪܥܐ ܢܬܠܘܢ ܠܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܠܫܒܛܝܗܘܢ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪ̈ܘܬܐ. ܣܦܩ
ܠܟܘܢ. ܪ̈ܫܢܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܥܒܪܘ ܥܘܠܐ ܘܚܛܘܦܝܐ. ܘܥܒܕܘ ܕܝܢܐ ܘܙܕܝܩܘܬܐ.
10 ܘܐܪܝܡܘ ܡܫܥܒܕܢܘܬܟܘܢ ܡܢ ܥܡܝ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪ̈ܘܬܐ. * ܡܣܐܬܐ ܕܟܐܢܬܐ. ܘܡܟܝܠܬܐ
11 ܕܟܐܢܬܐ. ܘܡܬܩܠܐ ܕܟܐܢܬܐ ܢܗܘܘܢ ܠܟܘܢ. * ܡܟܝܠܬܐ ܘܡܬܩܠܐ ܫܘܝܐ. ܢܗܘܘܢ
12 ܠܡܣܒ ܡܥܣܪܐ ܚܕ ܡܢ ܥܣܪܐ ܫܘܝܐܝܬ. * ܘܡܬܩܠܐ ܢܗܘܘܢ ܥܣܪܝܢ. ܡܬܩܠܐ
ܕܝܠܗܘܢ ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ ܡܥܝܢ. ܘܡܬܩܠܐ ܕܚܡܫܬܥܣܪ ܢܗܘܐ ܠܟܘܢ ܡܢܝܐ.
13 * ܗܢܐ ܦܘܪܫܢܐ ܬܦܪܫܘܢ. ܚܕܐ ܡܢ ܫܬ ܡܢܘܬܗ ܕܟܘܪܐ ܕܚܛܐ. ܘܚܕܐ ܡܢ ܫܬ
14 ܡܢܘܬܗ ܕܣܥܪܐ. * ܘܡܫܚܐ ܡܢ ܥܣܪܐ ܕܗܘܐ ܟܘܪܐ. ܢܣܒܘܢ ܡܥܣܪܐ
15 ܡܟܝܠܬܐ ܚܕܐ. * ܘܐܡܪܐ ܚܕܐ ܡܢ ܡܐܬܝܢ ܥܢܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܠܣܡܝܕܐ. ܘܠܕܒܚ̈ܐ
ܘܠܥܠܘܬܐ ܠܡܚܣܝܘ. ܕܢܚܣܐ ܥܠܝܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪ̈ܘܬܐ.

* Ex hac menſura, *nempè*, longitudine vigin- 3
tiquinque millium & latitudine decem mil-
lium, & in hac, eſto Sanctum Sanctorum.
Atque hoc terræ Sanctum, erit Sacerdotum
qui miniſtrant Sanctuario Domini, & acce- 4
dunt adminiſtrandum Domino; ut ſit eis lo-
cus *ille* pro domibus, & Sanctuarium pro
Sanctuario. Sit etiam vingintiquinque mil- 5
lium longitudo, & decem millium latitudo:
ſitque poſſeſsio Levitarum qui miniſtrant in
domo, viginti domus, poſſeſsione urbis. Quin- 6
que millium latitudo, longitudo verò viginti-
quinque millium, è regione *loci* ſeparati pro
Sanctuario, ſit pro omnibus Iſraelitis: Et 7
pro rectore populi, in ſeparationem Sanctu-
arii & poſſeſsionem urbis, ab Oriente & ab
Occidente: longitudo verò ſit juxta partiti-
onem ab Oriente in Occidentem. Sit poſ- 8
ſeſsio filiorum Iſraelis, ut moleſti non ſint
ampliùs eis rectores populi mei, ſed ter-
ram dent filiis Iſraelis per tribus eorum. Sic 9
ait Dominus dominorum; Sufficit vobis prin-
cipes Iſraelis, tollite à vobis violentiam &
rapinam, facite judicium & juſtitiam, & amo-
vete oppreſsionem veſtram à populo meo, di-
cit Dominus dominorum. Statera juſta, pon- 10
dera juſta, & menſura juſta ſint apud vos.
Menſuram & pondus æqua reddite, ut deci- 11
mas, unum è denis æquè capiatis. Pondera 12
ſint viginti, pondus autem *quodlibet* ex his,
vigintiquinque ſit obolorum; & pondus quin-
decim *obolorum* eſto vobis mina. Hanc ſe- 13
parationem ſeparate; Unam è ſex partibus
chori triticei, & unam è ſex partibus hor-
deacei. De oleo verò, ex decem menſuris 14
quibus conſtat chorus, decimam ſumant
menſuram unam: Et oviculam unam è du- 15
centenis ovibus Iſraelis, pro ſimila, ſacrifi-
ciis, & holocauſtis: ut expiet eos, ait Do-
minus dominorum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

3 * وَمِنْ هٰذِهِ ٱلْمَسَاحَةِ تَقِيسُ طُولًا خَمْسَةً وَعِشْرِينَ أَلْفًا • وَعَرْضًا عِشْرِينَ أَلْفًا • وَفِيهَا يَكُونُ
4 مَقْدِسُ ٱلْقِدِّيسِينَ * قُدْسًا مِنَ ٱلْأَرْضِ يَكُونُ لِلْكَهَنَةِ ٱلَّذِينَ يَخْدِمُونَ فِي ٱلْقُدْسِ • وَيَكُونُ
5 لِلْمُقَرَّبِينَ مِنْهُمْ لِيَخْدِمُوا ٱلرَّبَّ • وَيَكُونُ لَهُمْ مَوْضِعٌ لِلْبُيُوتِ ٱلْمَخْصُوصَةِ لِتَقْدِيسِهِمْ * خَمْسَةً
وَعِشْرِينَ أَلْفًا طُولًا • وَعِشْرِينَ أَلْفًا عَرْضًا • يَكُونُ لِلَّاوِيِّينَ ٱلَّذِينَ يَخْدِمُونَ ٱلْبَيْتَ ضَبْطًا لَهُمْ *
6 مُدُنًا لِيَسْكُنُوهَا * وَضَبْطُ ٱلْمَدِينَةِ تَجْعَلُهُ خَمْسَةَ آلَافٍ عَرْضًا • وَطُولًا خَمْسَةً وَعِشْرُونَ أَلْفًا • كَمِثْلِ
7 أَوَّلِ ٱلْأَقْدَاسِ يَكُونُ لِبَيْتِ إِسْرَايِلَ * وَلِلْمُقَدَّمِ مِنْ هٰذَا وَمِنْ هٰذَا فِي أَوَايِلِ ٱلْأَقْدَاسِ • وَلِوَجْهِ
ضَبْطِ ٱلْمَدِينَةِ • لِنَاحِيَةِ ٱلْبَحْرِ • وَمِنْ نَاحِيَةِ ٱلْبَحْرِ إِلَى ٱلْمَشَارِقِ • وَٱلطُّولُ مِثْلُ وَاحِدٍ مِنَ ٱلْأَقْسَامِ
8 مِنَ ٱلْحُدُودِ ٱلَّتِي نَحْوَ ٱلْبَحْرِ • وَٱلطُّولُ عَلَى ٱلْحُدُودِ ٱلَّتِي نَحْوَ مَشَارِقِ ٱلْأَرْضِ * وَيَكُونُ لَهُ لِلضَّبْطِ
فِي إِسْرَايِلَ • وَلَا يَتَسَلَّطُونَ أَيْضًا ٱلْمُقَدَّمُونَ عَلَى إِسْرَايِلَ شَعْبِي • وَيَرِثُ بَيْتُ إِسْرَايِلَ ٱلْأَرْضَ
9 لِقَبَايِلِهِمْ * هٰكَذَا يَقُولُ ٱلرَّبُّ ٱلْإِلٰهُ • يَكْفِيكُمْ يَا مُقَدَّمِي إِسْرَايِلَ تَرِثُونَ شَعْبِي وَٱلْأَرْضَ •
يَا بَيْتَ إِسْرَايِلَ ٱنْتَزِعُوا ٱلظُّلْمَ وَٱلسَّطْوَةَ • وَٱصْنَعُوا حُكْمًا وَعَدْلًا • ٱرْفَعُوا ٱلتَّسَلُّطَ يَقُولُ ٱلرَّبُّ
10 11 ٱلْإِلٰهُ * مِيزَانٌ عَادِلٌ • وَقِيَاسٌ عَادِلٌ • وَكَيْلٌ عَادِلٌ يَكُونُ لَكُمُ ٱلْكَيْلُ * وَهٰذَا كَيْلٌ وَاحِدٌ
12 يَكُونُ • لِتَأْخُذُوا عُشْرَ ٱلْغُومُورِ • وَٱلْكَيْلُ يَكُونُ مُسَاوِيًا لِكَيْلِ ٱلْغُومُورِ * وَٱلصَّنَجَاتُ عِشْرُونَ
13 دَانِقًا • ٱلْخَمْسَةُ مَثَاقِيلَ خَمْسَةٌ • وَٱلْعَشْرُ مَثَاقِيلَ عَشْرٌ • وَخَمْسُونَ مِثْقَالًا يَكُونُ ٱلْمَنُّ لَكُمْ * وَهٰذِهِ
ٱلْبِدَايَةُ ٱلَّتِي تَعْزِلُونَهَا • مِايَةُ كَيْلٍ مِنَ ٱلْغُومُورِ حِنْطَةً • وَسُدْسُ ٱلْوَيْبَةِ مِنَ ٱلْغُومُورِ كُرُّ
14 شَعِيرٍ * وَأَوَامِرُ ٱلزَّيْتِ • مِكْيَالُ زَيْتٍ مِنْ عَشْرِ مَكَايِيلَ • لِأَنَّ ٱلْعَشْرَ مَكَايِيلَ هِيَ ٱلْغُومُورُ •
15 * وَخَرُوفًا وَاحِدًا مِنْ عَشْرِ خِرَافٍ • خُصُوصِيَّةً مِنْ جَمِيعِ أَبْوَاتِ إِسْرَايِلَ • لِلذَّبَايِحِ وَٱلْمُحْرَقَاتِ
وَلِلْخَلَاصِ • لِيَسْتَغْفِرُوا عَنْكُمْ • يَقُولُ ٱلرَّبُّ ٱلْإِلٰهُ •

* *Ab hac menſura vigintiquinque millia di-* 3
metieris in longitudinem, & viginti millia
in latitudinem: & in hac erit Sanctua-
rium Sanctorum. Sanctum de terra ce- 4
det ſacerdotibus qui miniſtrant in San-
ctuario: cedet inquam, accedentibus ex
eis ad miniſtrandum Domino: eritque eis
locus pro domibus deſtinatis ad ſacra con-
ficiendum ab ipſis. Vigintiquinque mil- 5
lium longitudine, & viginti millium la-
titudine erit Levitis qui miniſtrant domui,
in poſſeſſionem eorum, urbes videlicet
ut in iis habitent. Poſſeſſionem autem 6
cujuſque urbis facies quinque millium la-
titudine, longitudine verò vigintiquin-
que millium: quemadmodum primitiæ
Sanctorum erit domui Iſraelis. Duci ve- 7
rò ab hac & ab illa parte in principio
Sanctorum, & è regione poſſeſſionis ur-
bis, ad plagam maritimam, & à plaga
maritima ad Orientem: longitudo autem
eſto par uni è portionibus terminorum
qui ſunt verſùs mare: & longitudo iſta
ſit ſecùs terminos qui porriguntur ver-
ſùs plagam terræ Orientalem. Erit hoc 8
illi in poſſeſſionem in Iſraele; ut non do-
minentur poſthac duces in Iſraelem po-
pulum meum, ſed poſſideat domus Iſ-
raelis terram per tribus ſuas. Ita dicit 9
Dominus Deus, Sufficiat vobis O duces
Iſraelis poſſidere populum meum & ter-
ram. O domus Iſraelis, amovete iniquita-
tem & vexationem, & exercete judi-
cium & juſtitiam: amovete dominium,
dicit Dominus Deus. Statera juſta, di- 10
menſio juſta, & menſura juſta ſit men-
ſura veſtra. Atque hæc una erit menſu- 11
ra: ut accipiatis decimam partem go-
mor: & menſura ſit æqualis menſuræ
Gomor: Bilances, viginti obolorum: quin- 12
que ſicli, quinque: & decem ſicli, decem:
& quinquaginta ſiclorum eſto mina apud
vos. Hæ autem ſunto primitiæ quas ſe- 13
parabitis: centum menſuras gomor triti-
ci, & ſextam partem vaibæ gomor, cho-
rum hordei. Præcepta verò circa oleum 14
ſunto: menſura olei ex decem menſuris:
nam decem menſuræ ſunt gomor. Et a- 15
gnum unum è denis agnis, rem peculia-
rem ab omnibus paternis domibus Iſrae-
lis; pro ſacrificiis & holocauſtis, & pro
ſalute: ut veniam rogetis pro vobis, ait
Dominus Deus.

יחזקאל : מו

, iſta oblatione in erunt terræ populus Omnis
כֹּל הָעָם הָאָרֶץ יִהְיוּ אֶל־הַתְּרוּמָה הַזֹּאת 16
, aſcenſiones erit prælato ſuper Et .Iſrael in prælato
לַנָּשִׂיא בְּיִשְׂרָאֵל׃ וְעַל־הַנָּשִׂיא יִהְיֶה הָעוֹלוֹת 17
, Calendis in & , ſolennitatibus in libamen & , munus &
וְהַמִּנְחָה וְהַנֵּסֶךְ בַּחַגִּים וּבֶחֳדָשִׁים
ipſe : Iſrael domus ſolennitatibus univerſis in ſabbathis in &
וּבַשַּׁבָּתוֹת בְּכָל־מוֹעֲדֵי בֵּית יִשְׂרָאֵל הוּא־
, aſcenſionem & , munus & , peccato pro oblationem faciet
יַעֲשֶׂה אֶת־הַחַטָּאת וְאֶת־הַמִּנְחָה וְאֶת־הָעוֹלָה
Sic .Iſrael domum propter expiandum ad pacifica &
וְאֶת־הַשְּׁלָמִים לְכַפֵּר בְּעַד בֵּית־יִשְׂרָאֵל׃ כֹּה־ 18
menſis uno in primo In : DOMINUS Dominus dixit
אָמַר אֲדֹנָי יְהֹוִה בָּרִאשׁוֹן בְּאֶחָד לַחֹדֶשׁ
mundabis & : perfectum bovis filium vitulum ſumes
תִּקַּח פַּר־בֶּן־בָּקָר תָּמִים וְחִטֵּאתָ אֶת־
, peccato pro oblationis ſanguine de ſacerdos tollet Et : ſanctuarium
הַמִּקְדָּשׁ׃ וְלָקַח הַכֹּהֵן מִדַּם הַחַטָּאת 19
auxilii atrii angulis quatuor in & , domus poſte in dabit &
וְנָתַן אֶל־מְזוּזַת הַבַּיִת וְאֶל־אַרְבַּע פִּנּוֹת הָעֲזָרָה
.interioris atrii portæ poſte ſuper & : altare ad
לַמִּזְבֵּחַ וְעַל־מְזוּזַת שַׁעַר הֶחָצֵר הַפְּנִימִית׃
: ſimplici à & , errante viro à menſe in ſeptima in facies ſic Et
וְכֵן תַּעֲשֶׂה בְּשִׁבְעָה בַחֹדֶשׁ מֵאִישׁ שֹׁגֶה וּמִפֶּתִי 20
decima quarta in primo In , .domum expiabitis &
וְכִפַּרְתֶּם אֶת־הַבָּיִת׃ בָּרִאשׁוֹן בְּאַרְבָּעָה עָשָׂר 21
ſeptem ſolennitas : Peſach vobis erit , menſis die
יוֹם לַחֹדֶשׁ יִהְיֶה לָכֶם הַפָּסַח חָג שְׁבֻעוֹת
die in prælatus faciet Et .comedetur infermentata , dierum
יָמִים מַצּוֹת יֵאָכֵל׃ וְעָשָׂה הַנָּשִׂיא בַּיּוֹם 22
vitulum , terræ populo univerſo pro & , ſe pro illa
הַהוּא בַּעֲדוֹ וּבְעַד כָּל־עַם הָאָרֶץ פַּר
aſcenſionem faciet ſolennitatis diebus ſeptem Et .peccato pro ſacrificii
חַטָּאת׃ וְשִׁבְעַת יְמֵי־הֶחָג יַעֲשֶׂה עוֹלָה 23
integros arietes ſeptem & , vitulos ſeptem DOMINO
לַיהֹוָה שִׁבְעַת פָּרִים וְשִׁבְעַת אֵילִים תְּמִימִם
hircum peccato pro ſacrificium & : diebus ſeptem , die in
לַיּוֹם שִׁבְעַת הַיָּמִים וְחַטָּאת שְׂעִיר
, Ephah & , vitulum ad , Ephah munus Et .diem per caprarum
עִזִּים לַיּוֹם׃ וּמִנְחָה אֵיפָה לַפָּר וְאֵיפָה 24
, ſeptimo In .Ephah ad Hin olei & : faciet arietem ad
לָאַיִל יַעֲשֶׂה וְשֶׁמֶן הִין לָאֵיפָה׃ בַּשְּׁבִיעִי 25
faciet ſolennitate in menſis die decimaquinta in
בַּחֲמִשָּׁה עָשָׂר יוֹם לַחֹדֶשׁ בֶּחָג יַעֲשֶׂה
, holocauſto ſicut, peccato pro ſacrificium ſicut : diebus ſeptem iſta ſicut
כָּאֵלֶּה שִׁבְעַת הַיָּמִים כַּחַטָּאת כָּעֹלָה
.oleo ſicut & , munere ſicut &
וְכַמִּנְחָה וְכַשָּׁמֶן׃

CAP. XLVI. מו

interioris atrii Porta : DOMINUS Dominus dixit Sic
כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יְהֹוִה שַׁעַר הֶחָצֵר הַפְּנִימִית 1
die in & : operis diebus ſex clauſa erit Orientem reſpiciens
הַפֹּנֶה קָדִים יִהְיֶה סָגוּר שֵׁשֶׁת יְמֵי הַמַּעֲשֶׂה וּבְיוֹם
.aperietur menſis die in & , aperietur ſabbathi
הַשַּׁבָּת יִפָּתֵחַ וּבְיוֹם הַחֹדֶשׁ יִפָּתֵחַ׃

Verſio VULG. LAT.

16 Omnis populus terræ tenebitur
primitiis his principi in Iſrael.
17 Et ſuper principem erunt holo-
cauſta, & ſacrificium, & liba-
mina in ſolennitatibus, & in
Calendis, & in Sabbatis, & in
univerſis ſolennitatibus domûs
Iſrael : ipſe faciet pro peccato
ſacrificium, & holocauſtum, &
pacifica ad expiandum pro do-
18 mo Iſrael. Hæc dicit Dominus
Deus; In primo menſe, unâ
menſis, ſumes vitulum de ar-
mento immaculatum, & expia-
19 bis Sanctuarium. Et tollet ſa-
cerdos de ſanguine quod erit
pro peccato : & ponet in poſti-
bus domûs, & in quatuor angu-
lis crepidinis altaris, & in poſti-
20 bus portæ atrii interioris. Et
ſic facies in ſeptima menſis, pro
unoquoque qui ignoravit, &
errore deceptus eſt, & expiabis
21 pro domo. In primo menſe,
quartadecimâ die menſis, erit
vobis Paſchæ ſolennitas : ſe-
ptem dieb⁹ azyma comedentur.
22 Et faciet princeps in die illa pro
ſe, & pro univerſo populo ter-
23 ræ, vitulum pro peccato. Et
in ſeptem dierum ſolennitate
faciet holocauſtum Domino ſe-
ptem vitulos, & ſeptem arietes
immaculatos quotidie ſeptem
diebus : & pro peccato hircum
24 caprarum quotidié. Et ſacrifi-
cium ephi per vitulum, & ephi
per arietem faciet : & olei hin
25 per ſingula ephi. Septimo men-
ſe, quintadecimâ die menſis, in
ſolennitate, faciet ſicut ſuprà di-
cta ſunt per ſeptem dies, tam
pro peccato, quàm pro holo-
cauſto, & in ſacrificio, & in
oleo.

CAP. XLVI.

1 HÆc dicit Dominus Deus;
Porta atrii interioris, quæ re-
ſpicit ad Orientem, erit clau-
ſa ſex diebus, in quibus opus
fit : die autem Sabbati aperie-
tur, ſed & in die Calenda-
rum aperietur.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

16 Καὶ πᾶς ὁ λαὸς δώσει τὴν ἀπαρχὴν ταύ-
17 την τῷ ἀφηγουμένῳ τοῦ Ἰσραήλ. Καὶ
διὰ τοῦ ἀφηγουμένου ἔσται τὰ ὁλοκαυτώ-
ματα, καὶ αἱ θυσίαι, καὶ αἱ σπονδαὶ (ω)
ἐν ταῖς ἑορταῖς, καὶ ἐν ταῖς νουμηνίαις, καὶ
ἐν τοῖς σαββάτοις, καὶ ἐν πάσαις ταῖς ἑορ-
ταῖς οἴκου Ἰσραήλ· αὐτὸς ποιήσει τὰ ὑ-
πὲρ ἁμαρτίας, καὶ τὴν θυσίαν, καὶ τὰ ὁλοκαυ-
τώματα, καὶ τὰ τοῦ σωτηρίου, τοῦ ἐξιλά-
18 σκεσθαι ὑπὲρ τοῦ οἴκου Ἰσραήλ. Τάδε
λέγει κύριος (α) θεός, Ἐν τῷ πρώτῳ
μηνί, μιᾷ τοῦ μηνός, λήψεσθε μόσχον ἐκ
βοῶν ἄμωμον, τοῦ ἐξιλάσασθαι τὸ ἅγιον.
19 Καὶ λήψεται ὁ ἱερεὺς ἀπὸ τοῦ αἵματος (β)
τοῦ ἐξιλασμοῦ, καὶ δώσει ἐπὶ τὰς φλιὰς
τοῦ οἴκου, καὶ ἐπὶ τὰς τέσσαρας γωνίας τοῦ
ἱεροῦ, καὶ ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον, καὶ ἐπὶ τὰς
φλιὰς τῆς πύλης τῆς αὐλῆς τῆς ἐσωτέρας.
20 Καὶ οὕτως ποιήσεις ἐν τῷ μηνὶ τῷ ἑ-
βδόμῳ μιᾷ τοῦ μηνὸς λήψῃ παρ' ἑκάστου
(γ) ἀπόμοιραν· καὶ ἐξιλάσεσθε τὸν οἶκον.
21 Καὶ ἐν τῷ πρώτῳ (δ), τεσσαρεσκαιδεκάτῃ
τοῦ μηνός, ἔσται ὑμῖν τὸ πάσχα ἑορτή· ἑ-
22 πτὰ ἡμέρας ἄζυμα ἔδεσθε. Καὶ ποιήσει ὁ
ἀφηγούμενος ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ ὑπὲρ
αὐτοῦ, καὶ (ε) τοῦ οἴκου, καὶ ὑπὲρ παντὸς τοῦ
23 λαοῦ τῆς γῆς, μόσχον ὑπὲρ ἁμαρτίας. Καὶ
τὰς ἑπτὰ ἡμέρας τῆς ἑορτῆς (ζ) ποιήσει
ὁλοκαυτώματα τῷ κυρίῳ ἑπτὰ μόσχους καὶ
ἑπτὰ κριοὺς ἀμώμους καθ' ἡμέραν, τὰς ἑ-
πτὰ ἡμέρας, καὶ ὑπὲρ ἁμαρτίας, ἔριφον
24 αἰγῶν καθ' ἡμέραν, καὶ θυσίαν. Καὶ πέμ-
μα τῷ μόσχῳ, καὶ (η) πέμματα τῷ κριῷ
ποιήσεις, καὶ ἐλαίου τὸ εἶν τῷ πέμματι.
25 Καὶ ἐν τῷ ἑβδόμῳ μηνί, πεντεκαιδεκά-
τῃ (θ) τοῦ μηνός, ἐν τῇ ἑορτῇ ποιήσεις
κατὰ ταῦτα, ἑπτὰ ἡμέρας, καθὼς τὰ ὑπὲρ
τῆς ἁμαρτίας, καὶ καθὼς τὰ ὁλοκαυτώματα,
καὶ καθὼς τὸ (ι) μαναά, καὶ καθὼς τὸ ἔ-
λαιον.

Et omnis populus dabit primiti- 16
as has duci Iſrael : Et per du- 17
cem erunt holocauſta, & ſacri-
ficia, & libamina in ſolennita-
tibus, & in neomeniis, & in
ſabbatis, & in univerſis ſolen-
nitatibus domûs Iſrael. Ipſe
faciet, quæ pro peccato, & ſa-
crificium, & holocauſta, & quæ
ipſius ſalutaris, ad expiandum
pro domo Iſrael. Hæc dicit Do- 18
minus Deus; In primo menſe,
unâ menſis, ſumetis vitulum de
bobus immaculatum ad expian-
dum Sanctuarium. Et tollet ſa- 19
cerdos de ſanguine expiationis,
& dabit ſuper limina domûs,
& ſuper quatuor angulos (p)
templi, & ſuper altare, & ſuper
limina portæ atrii interioris. Et 20
ſic facies in menſe ſeptimo, unâ
menſis, ſumes ab unoquoque (q)
portionem: & expiabitis do-
mum. Et in primo, quartadeci- 21
mâ menſis, erit vobis Paſcha ſo-
lennitas. Septem diebus azyma
comedetis. Et faciet dux in illa 22
die pro ſe, & domo, & pro uni-
verſo populo terræ vitulum pro
peccato : Et ſeptem diebus ſolen- 23
nitatis faciet holocauſtomata Do-
mino ſeptem vitulos, & ſeptem
arietes immaculatos quotidie ſe-
ptem diebus : et pro peccato
hædum caprarum quotidiè, et
ſacrificium : Et (r) coctionem 24
vitulo, et coctiones arieti facies,
et olei (ſ) In coctioni. Et in 25
ſeptimo menſe quintadecimâ
menſis, in ſolennitate facies juxta
ea ſeptem diebus, ſicut quæ pro
peccato, et ſicut holocauſtomata,
et ſicut manaa, et ſicut oleum.

MS.A. (ω) ἔσονται ἐν ταῖς (α) ὁ θεός, (β) τοῦ μόσχου τοῦ ἐξιλασμοῦ, (γ) *ἀγνοοῦντος καὶ ἀπὸ νηπίου· καὶ ἐξιλάσεσθαι (δ) μηνὶ (ε) ὑπὲρ τοῦ (ζ) ποιήσεις (η) πέμμα (θ) ἡμέρᾳ τοῦ (ι) μαννά,

ΚΕΦ. μϛʹ.

1 Τάδε λέγει κύριος (α) θεός, Ἡ πύλη
ἡ ἐν τῇ αὐλῇ τῇ ἐσωτέρᾳ, ἡ βλέπουσα
πρὸς ἀνατολάς, ἔσται κεκλεισμένη ἓξ ἡμέ-
ρας τὰς ἐνεργούς· (β) ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῶν σαβ-
βάτων ἀνοιχθῇ, καὶ ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῆς νουμηνί-
ας ἀνοιχθήσεται.

CAP. XLVI.

HÆc dicit Dominus Deus; 1
Porta, quæ in atrio interiori, re-
ſpiciens ad Orientem, erit clau-
ſa ſex in diebus, quibus opus
fit : in die autem ſabbatorum a-
perietur : et in die Neomeniæ
aperietur.

MS.A. (α) ὁ θεός, Πύλη ἡ (β) ἐν δὲ τῇ ἡμέρᾳ τῶν σαββάτων ἀνοιχθήσεται,

תרגום יונתן - Targum JONATHAN.

16 כָּל עַמָּא דְאַרְעָא יְהוֹן עָבְדִין יָת אַפְרָשׁוּתָא הָדָא לְרַבָּא בְּיִשְׂרָאֵל׃ וְעַל רַבָּא
17 יְהֵי עֲלָוָתָא וּמִנְחָתָא וְנִסְכַיָּא בְּחַגַּיָּא וּבְיַרְחַיָּא וּבְשַׁבַּיָּא וּבְכָל מוֹעֲדֵי בֵּית יִשְׂרָאֵל
הוּא יַעְבֵּיד יָת חַטָּאתָא וְיָת מִנְחָתָא וְיָת עֲלָוָתָא וְיָת נִכְסַת קוּדְשַׁיָּא לְכַפָּרָא עַל
18 בֵּית יִשְׂרָאֵל׃ כִּדְנָן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים בְּקַדְמָאָה בְּחַד לְיַרְחָא תִּסַּב תּוֹר בַּר תּוֹרֵי
19 שְׁלִים וּתְדַכֵּי יָת מַקְדְּשָׁא׃ וְיִסַּב כַּהֲנָא מִדְּמָא דְחַטָּתָא וְיִתֵּן עַל סְקוּפַת בֵּיתָא
20 וְעַל אַרְבַּע זָוְיַת מְסַמְּתָא לְמַדְבְּחָא וְעַל סְקוּפַת תַּרְעָא דְדַרְתָּא גַוָּיְתָא׃ וְכֵן תַּעְבֵּיד
21 בְּשַׁבְעָא בְיַרְחָא מִגְּבַר דְּמִשְׁתְּלֵי וּמִטַּפַּשׁ וּתְכַפְּרוּן עַל בֵּיתָא׃ בְּנִיסָן בְּאַרְבְּעָא
22 עַסְרָא יוֹמָא לְיַרְחָא יְהֵי לְכוֹן פִּסְחָא חַגָּא שַׁבְעָא יוֹמִין פַּטִּירַיָּא יִתְאֲכִיל׃ וְיַעְבֵּיד
23 רַבָּא בְּיוֹמָא הַהוּא חִלּוּפוֹהִי וַחֲלַף כָּל עַמָּא דְאַרְעָא תּוֹרָא דְחַטָּאתָא׃ וְשַׁבְעָא
יוֹמֵי דְחַגָּא יַעְבֵּיד עֲלָתָא קֳדָם יְיָ שַׁבְעָא תוֹרִין וְשַׁבְעָא דִכְרִין שַׁלְמִין לְיוֹמָא
24 שַׁבְעַת יוֹמִין וְחַטָּאתָא צְפִיר בַּר עִזֵּי לְיוֹמָא׃ וּמִנְחָתָא מְכִלְתָּא לְתוֹרָא וּמְכִלְתָּא
25 לְדִכְרָא יַעְבֵּיד וּמִשְׁחָא מְלֵי הִינָא לִמְכִלְתָּא׃ בִּשְׁבִיעָאָה בַּחֲמֵשַׁת עַסְרָא יוֹמָא
לְיַרְחָא בְּחַגָּא יַעְבֵּיד כְּאִלֵּין שַׁבְעָא יוֹמִין כְּחַטָּאתָא וּכְעֲלָתָא וּכְמִנְחָתָא וּכְמִשְׁחָא׃

מו

1 כִּדְנָן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים תַּרְעָא דְדַרְתָּא גַוָּיְתָא דְּפָתִיחַ לְמַדִּנְחָא יְהֵי אֲחִיד שִׁתָּא
יוֹמֵי חוֹלָא וּבְיוֹמָא דְשַׁבְּתָא יְהֵי פְּתִיחַ וּבְיוֹמָא דְיַרְחָא יְהֵי פְּתִיחַ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Omnis popul⁹ terræ facient ſeparationem iſtam principi Iſrael. Et ad prin- 16
cipem pertinebit [*dare*] holocauſta, & munera & libamina in feſtivitatibus, 17
& in Calendis & in Sabbathis, & in omnibus ſolennitatibus domus Iſrael :
ipſe faciet ſacrificium pro peccato, & munus, & holocauſtum, & victi-
mas ſanctificatas ad expiandum pro domo Iſrael. Hæc dicit Dominus Deus : 18
Primo menſe, prima die menſis, ſumes vitulum de bobus integrum, &
emundabis ſanctuarium. Et tollet Sacerdos de ſanguine ſacrificii quod erit 19
pro peccato, & dabit ſuper limen domus, & ſuper quatuor angulos cre-
pidinis altaris, & ſuper limen portæ atrii interioris. Et ſic facies in ſeptima 20
die menſis à viro qui per ignorantiam erraverit aut per inſipientiam : &
expiabitis pro domo. In primo menſe quartadecima die menſis erit vobis 21
Phaſe ſolennitas ſeptem diebus : azymum comedetur. Et faciet princeps 22
in die illa pro ſe & pro omni populo terræ vitulum pro peccato. Et ſeptem 23
diebus ſolennitatis faciet holocauſtum coram Domino ſeptem vitulos &
ſeptem arietes immaculatos in unoquoque die ſeptem dierum, & pro pec-
cato hircum de capris quotidie. Et pro munere menſuram ephi in bovem, 24
& menſuram ephi in arietem faciet, & menſuram hin plenam oleo per ſin-
gula ephi. In ſeptimo menſe quinta decima die menſis in ſolennitate, faciet 25
ſicut hæc ſeptem diebus, juxta ſacrificium pro peccato, & juxta holocau-
ſtum, & juxta munus, & juxta oleum,

CAP. XLVI.

HÆc dicit Dominus Deus : Porta atrii interioris quæ aperta eſt ad Ori- 1
entem, erit clauſa ſex diebus operis, & in die Sabbathi erit aperta, & in
die Calendarum erit aperta.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

16 * ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܐܪܥܐ ܢܦܪܫܘܢ ܦܘܪܫܢܐ ܗܢܐ ܠܡܕܒܪܢܐ ܕܐܝܣܪܝܠ.
17 * ܘܕܡܕܒܪܢܐ ܢܗܘܘܢ ܥܠܘܬܐ ܘܣܡܝܕܐ ܘܢܘܣܟܐ. ܒܪܝܫ ܝܪܚܐ ܘܒܫܒܬܐ
ܘܒܥܐܕܘܗܝ ܟܠܗܘܢ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܗܘ ܢܩܪܒ ܚܛܝܬܐ ܕܚܛܗܐ. ܘܣܡܝܕܐ ܘܢܘܣܟܐ
18 ܘܥܠܘܬܐ. ܘܕܒܚܐ ܕܡܚܣܝܢ ܠܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ.
ܒܚܕ ܒܝܪܚܐ ܩܕܡܝܐ. ܣܒ ܬܘܪܐ ܒܪ ܒܩܪܐ ܕܠܝܬ ܒܗ ܡܘܡܐ. ܘܕܟܝܘܗܝ
19 ܠܡܩܕܫܐ. * ܘܢܣܒ ܟܗܢܐ ܡܢ ܕܡܐ ܕܚܛܝܬܐ. ܘܢܪܣ ܥܠ ܣܩܘܦܝ ܕܒܝܬܐ.
20 ܘܥܠ ܐܪܒܥ ܙܘܝܬܗ ܕܡܕܒܚܐ. ܘܥܠ ܣܩܘܦܬܗ ܕܬܪܥܐ ܕܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ. * ܘܗܟܢܐ ܢܗܘܐ
21 ܥܒܕ ܒܫܒܥܐ ܒܝܪܚܐ ܥܠ ܟܠ ܕܣܟܠ ܘܕܛܥܐ. ܘܢܚܣܘܢܗ ܠܒܝܬܐ. * ܘܒܐܪܒܥܣܪ
ܒܝܪܚܐ ܩܕܡܝܐ. ܢܗܘܐ ܠܟܘܢ ܦܨܚܐ ܘܥܐܕܐ. ܘܫܒܥܐ ܝܘܡܝܢ ܦܛܝܪܐ ܬܐܟܠܘܢ.
22 * ܘܢܩܪܒ ܡܕܒܪܢܐ ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܥܠ ܢܦܫܗ ܘܥܠ ܟܠܗ ܥܡܐ
23 ܕܐܪܥܐ. ܬܘܪܐ ܠܚܛܗܐ. * ܘܫܒܥܐ ܝܘܡܝܢ ܕܥܐܕܐ ܢܩܪܒ ܥܠܘܬܐ
ܠܡܪܝܐ. ܫܒܥܐ ܬܘܪܝܢ. ܘܫܒܥܐ ܕܟܪܝܢ ܕܠܝܬ ܒܗܘܢ ܡܘܡܐ. ܘܠܚܛܗܐ
24 ܨܦܝܪܐ ܕܥܙܐ ܒܝܘܡܐ. * ܘܣܡܝܕܐ ܣܐܬܐ ܠܬܘܪܐ. ܘܣܐܬܐ ܠܕܟܪܐ. ܘܡܫܚܐ
25 ܗܝܢܐ ܠܣܐܬܐ. * ܘܒܫܒܝܥܝܐ ܒܚܡܫܬܥܣܪ ܒܝܪܚܐ. ܢܥܒܕ ܥܐܕܐ ܐܝܟ ܗܠܝܢ ܫܒܥܐ
ܝܘܡܝܢ. ܐܝܟ ܠܚܛܝܬܐ ܕܚܛܗܐ. ܘܐܝܟ ܥܠܘܬܐ. ܘܐܝܟ ܣܡܝܕܐ ܘܐܝܟ ܡܫܚܐ.

* Univerſus terræ populus ſeparet hujuſmodi ſeparationem pro rectore Iſraelis. 16 Rectoris 17 autem erit *ſuppeditare* holocauſta, ſimilam, & libamen initio menſium, ſabbathis omnibúſque feſtis domûs Iſraelis: ipſe offeret expiationem peccatorum, ſimilam, libamen, & holocauſta, ſacrificia quibus expiat filios Iſraelis. Sic ait Dominus dominorum; 18 Primâ *die* menſis primi accipe taurum unum bovinum in quo non ſit vitium, & expia Sanctuarium: 19 Sumátque ſacerdos de ſanguine piaculi, & ſpargat ſuper limina domûs, ſuper quatuor angulos altaris, & ſuper limen portæ atrii intimi. 20 Hoc modo faciat ſeptimâ *die* menſis quicunque ſtultitiam aut errorem commiſerit: & domum expient. 21 Quartadecimâ menſis primi eſto vobis Paſcha & feſtum, & ſeptem diebus azymum comedetis. 22 Offeretq; rector eâdê illâ die pro ſeipſo & pro toto terræ populo, taurum in expiationem peccatorum: 23 Et ſeptem illius feſti diebus offeret holocauſta Domino, ſeptem boves & ſeptem arietes in quibus nullum ſit vitium: & pro expiatione peccatorum, hircum caprarum quolibet die: 24 Similæ verò ſatum *unum* pro bove, & ſatum pro ariete: oleíque heminam pro *quolibet* ſato. 25 Præterea decimaquintâ menſis ſeptimi celebret feſtum, quemadmodum ſeptem hiſce diebus tam quoad expiationem peccatorum & quoad holocauſta, quàm quoad ſimilam & quoad oleum.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܘ *

CAP. XLVI.

1 * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܬܪܥܐ ܕܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ ܕܚܐܪ ܠܡܕܢܚܐ. ܢܗܘܐ ܐܚܝܕ
ܫܬܐ ܝܘܡܝܢ ܕܡܬܥܒܕ ܒܗܘܢ ܥܒܕܐ. ܘܒܝܘܡܐ ܕܫܒܬܐ ܢܬܦܬܚ ܘܒܝܘܡܐ
ܕܪܝܫ ܝܪܚܐ ܢܬܦܬܚ.

* SIc ait Dominus dominorum, Porta atrii intimi, quæ reſpicit Orientem, ſit clauſa ſex diebus quibus opus exercetur: die verò ſeptimo aperiatur, & die initii menſis aperiatur: 1

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

16 * وَكُلُّ ٱلشَّعْبِ يُعْطِي هٰذِهِ ٱلْبِدَايَةَ لِمُقَدَّمِ إِسْرَائِيلَ * وَمِنْ قِبَلِ ٱلْمُقَدَّمِ تَكُونُ ٱلْمُحْرَقَاتُ
17 وَٱلذَّبَائِحُ وَٱلْقَوَارِيرُ * تَكُونُ فِي ٱلْأَعْيَادِ وَفِي رُؤُوسِ ٱلشُّهُورِ * وَفِي ٱلسُّبُوتِ وَفِي جَمِيعِ أَعْيَادِ بَيْتِ
إِسْرَائِيلَ * هُوَ يَصْنَعُ مَا هُوَ عَنِ ٱلْخَطِيَّةِ وَٱلذَّبِيحَةِ وَٱلْمُحْرَقَاتِ * وَمَا هُوَ لِلْخَلَاصِ * لِيَسْتَغْفِرَ عَنْ
18 بَيْتِ إِسْرَائِيلَ * هٰذَا يَقُولُ ٱلرَّبُّ ٱلْإِلٰهُ * فِي ٱلشَّهْرِ ٱلْأَوَّلِ * فِي أَوَّلِ يَوْمٍ مِنَ ٱلشَّهْرِ * تَأْخُذُونَ عِجْلًا
19 مِنَ ٱلْبَقَرِ لَا عَيْبَ فِيهِ * لِتَسْتَغْفِرُوا فِي ٱلْقُدْسِ * وَيَأْخُذُ ٱلْكَاهِنُ مِنْ دَمِ ٱلْعِجْلِ ٱلَّذِي
لِلِٱسْتِغْفَارِ * وَيَجْعَلُ عَلَى عَتَبَاتِ ٱلْبَيْتِ * وَعَلَى أَرْبَعِ زَوَايَا ٱلْهَيْكَلِ * وَعَلَى ٱلْمَذْبَحِ * وَعَلَى عَتَبَاتِ
20 بَابِ ٱلدَّارِ ٱلدَّاخِلَةِ * هٰكَذَا تَصْنَعُ فِي ٱلشَّهْرِ ٱلسَّابِعِ فِي أَوَّلِ يَوْمٍ مِنَ ٱلشَّهْرِ * تَأْخُذُ مِنْ
21 كُلِّ وَاحِدٍ هُوَ طَاهِرٌ وَمِنْ طِفْلٍ * وَتَسْتَغْفِرُ فِي ٱلْبَيْتِ * وَفِي ٱلشَّهْرِ ٱلْأَوَّلِ * فِي ٱلرَّابِعَ عَشَرَ مِنَ
22 ٱلشَّهْرِ * يَكُونُ لَكُمْ عِيدُ ٱلْفِصْحِ * سَبْعَةَ أَيَّامٍ تَأْكُلُونَ فَطِيرًا * وَيَصْنَعُ ٱلْمُقَدَّمُ فِي ذٰلِكَ
23 ٱلْيَوْمِ عَنْهُ وَعَنِ ٱلْبَيْتِ وَعَنْ جَمِيعِ شَعْبِ ٱلْأَرْضِ * عِجْلًا مِنْ أَجْلِ ٱلْخَطِيَّةِ * وَسَبْعَةَ أَيَّامِ
ٱلْعِيدِ يَصْنَعُ ٱلْمُحْرَقَاتِ لِلرَّبِّ * سَبْعَةَ عُجُولٍ وَسَبْعَةَ كِبَاشٍ غَيْرَ مَعَابَةٍ * كُلَّ يَوْمٍ فِي ٱلسَّبْعَةِ
24 ٱلْأَيَّامِ * وَعَنِ ٱلْخَطِيَّةِ جَدْيًا مِنَ ٱلْمَعْزِ كُلَّ يَوْمٍ * وَذَبِيحَةً * وَجَرِيبًا لِلْعِجْلِ * وَجَرِيبًا لِلْكَبْشِ
25 تَصْنَعُهُ * وَقِسْطَ زَيْتٍ لِلْجَرِيبِ * وَفِي ٱلشَّهْرِ ٱلسَّابِعِ * فِي خَمْسَةِ عَشَرِ يَوْمٍ مِنَ ٱلشَّهْرِ فِي ٱلْعِيدِ * تَصْنَعُ
هٰكَذَا سَبْعَةَ أَيَّامٍ * كَمِثْلِ مَا هُوَ عَنِ ٱلْخَطِيَّةِ * وَكَمِثْلِ ٱلْمُحْرَقَاتِ * وَكَمِثْلِ ٱلْمَنِّ * وَكَمِثْلِ ٱلزَّيْتِ *

* *Totus populus dabit has primitias duci Iſraelis.* 16 *Et à duce erunt holocauſta, & ſacrificia, atque alabaſtra: erunt inquam in feſtis, in principiis menſium, in Sabbathis, in omnibus denique ſolennitatibus domûs Iſraelis: ipſe faciet quod eſt pro peccato, & ſacrificio, & holocauſtis, & quod eſt pro ſalute; ut venia poſtuletur pro domo Iſraelis.* 17 *Hæc dicit Dominus Deus, Menſe primo, primâ die menſis, ſumetis vitulum bovinum in quo nullum ſit vitium, ut veniam poſcatis in Sanctuario:* 18 *Sumátque ſacerdos de ſanguine vituli qui eſt pro poſcenda venia, ponátque ſuper liminibus domûs, ſuper quatuor angulis templi, ſuper altari, & ſuper liminibus januæ atrii interioris.* 19 *Idem facies menſe ſeptimo, primâ die menſis: ſumes à quocunque mundus fuerit, & à puero, veniámque poſtulabis in domo.* 20 *Et menſe primo, quartadecimâ menſis, eſto vobis ſolennitas Paſchalis: ſeptem diebus comedetis azymum:* 21 *Faciétque dux eâ die pro ſe, pro domo, & pro univerſo terræ populo, vitulum pro peccato.* 22 *Et ſeptem illis diebus ſolennitatis faciet holocauſta Domino, ſeptem vitulos, & ſeptem arietes immaculatos, ſeptem iis diebus quotidiè: & pro peccato, hœdum è capris ſingulis diebus.* 23 *Et ſacrificium: & gjaribum* (menſuræ genus) *pro vitulo, & gjaribum pro hœdo facies, & queſtum* (menſuræ genus) *olei in gjaribum.* 24 *Menſe demum ſeptimo, quintadecimâ die menſis in ſolennitate, idem facies ſeptem diebus, ut id quod eſt pro peccato, & ut holocauſta, ut man: & ut oleum.* 25

* ٱلْفَصْلُ ٱلسَّادِسُ وَٱلْأَرْبَعُونَ *

* ٱلْإِصْحَاحُ ٱلسَّابِعُ وَٱلْعِشْرُونَ *

1 * هٰكَذَا يَقُولُ ٱلرَّبُّ ٱلْإِلٰهُ * ٱلْبَابُ ٱلَّذِي فِي ٱلدَّارِ ٱلدَّاخِلَةِ * ٱلنَّاظِرُ إِلَى ٱلْمَشَارِقِ * يَكُونُ مُغْلَقًا
سِتَّةَ ٱلْأَيَّامِ ٱلْعَمَّالَةِ * وَفِي يَوْمِ ٱلسُّبُوتِ يُفْتَحُ * وَفِي يَوْمِ رَأْسِ ٱلشَّهْرِ يُفْتَحُ *

CAP. XLVI.

Textus vigeſimus ſeptimus.

* ITa *dicit Dominus Deus, Oſtium quod eſt in atrio interiori, reſpiciens Orientem verſùs, clauſum eſto ſex diebus operi* addictis: *die verò Sabbathorum aperiatur, & die kalendarum menſis aperiatur.* 1

יחזקאל: מו

ſtabit & , deforis portæ veſtibuli *via* *prælatus* intrabit Et
2 וּבָא הַנָּשִׂיא דֶּרֶךְ אוּלָם הַשַּׁעַר מִחוּץ וְעָמַד
, ejus *aſcenſionem* ſacerdotes facient & : portæ *poſte* *ſuper*
עַל־מְזוּזַת הַשַּׁעַר וְעָשׂוּ הַכֹּהֲנִים אֶת־עוֹלָתוֹ
, portæ limen ſuper ſe incurvabit & , ejus pacifica &
וְאֶת־שְׁלָמָיו וְהִשְׁתַּחֲוָה עַל־מִפְתַּן הַשַּׁעַר
.veſperam ad uſque claudetur non porta Et .egredietur &
וְיָצָא וְהַשַּׁעַר לֹא־יִסָּגֵר עַד־הָעָרֶב׃
ipſius portæ oſtium terræ populus ſe incurvabit Et
3 וְהִשְׁתַּחֲווּ עַם־הָאָרֶץ פֶּתַח הַשַּׁעַר הַהוּא
aſcenſionem Et .DOMINI *facies ad* ,Calendis in & , ſabbathis in
4 בַּשַּׁבָּתוֹת וּבֶחֳדָשִׁים לִפְנֵי יְהוָה׃ וְהָעֹלָה
ſex , ſabbathi die in : DOMINO *prælatus* offeret *quam*
אֲשֶׁר־יַקְרִב הַנָּשִׂיא לַיהוָה בְּיוֹם הַשַּׁבָּת שִׁשָּׁה
Ephah *munus* Et .*integrum* arietem & , *integros* agnos
5 כְבָשִׂים תְּמִימִם וְאַיִל תָּמִים׃ וּמִנְחָה אֵיפָה
, olei & : ſuæ manus donum *munus* agnis in & , *arietem ad*
לָאַיִל וְלַכְּבָשִׂים מִנְחָה מַתַּת יָדוֹ וְשֶׁמֶן
, bovis filius vitulus , *novilunii* die in Et .Ephah *ad* Hin
6 הִין לָאֵיפָה׃ וּבְיוֹם הַחֹדֶשׁ פַּר בֶּן־בָּקָר
.erunt *integri* , aries & , agni ſex & : *integri*
תְּמִימִם וְשֵׁשֶׁת כְּבָשִׂים וָאַיִל תְּמִימִם יִהְיוּ׃
, *munus* faciet arietem per Ephah & , vitulum per Ephah Et
7 וְאֵיפָה לַפָּר וְאֵיפָה לָאַיִל יַעֲשֶׂה מִנְחָה
Hin olei & : ejus manus apprehenderit ſicut agnis in &
וְלַכְּבָשִׂים כַּאֲשֶׁר תַּשִּׂיג יָדוֹ וְשֶׁמֶן הִין
veſtibuli *via* : *prælatum* *ingrediendo in* Et .Ephah per
8 לָאֵיפָה׃ וּבְבוֹא הַנָּשִׂיא דֶּרֶךְ אוּלָם
intrando in Et .exibit *ejus* viam *in* & , ingredietur portæ
9 הַשַּׁעַר יָבוֹא וּבְדַרְכּוֹ יֵצֵא׃ וּבְבוֹא
ingrediens ſolennitatibus in DOMINI *facies ad* terræ *populum*
עַם־הָאָרֶץ לִפְנֵי יְהוָה בַּמּוֹעֲדִים הַבָּא
portæ *via* egredietur , ſe *incurvandum ad Aquilonis* portæ viam
דֶּרֶךְ שַׁעַר צָפוֹן לְהִשְׁתַּחֲוֹת יֵצֵא דֶּרֶךְ־שַׁעַר
via egredietur , meridianæ portæ *viam ingrediens &* : *meridiei*
נֶגֶב וְהַבָּא דֶּרֶךְ־שַׁעַר נֶגֶב יֵצֵא דֶּרֶךְ־
quam , portæ *via* revertetur Non .aquilonaris portæ
שַׁעַר צָפוֹנָה לֹא יָשׁוּב דֶּרֶךְ הַשַּׁעַר אֲשֶׁר־
, *prælatus* Et .egredientur illius regione è ſed , *eam in* eſt ingreſſus
10 בָּא בוֹ כִּי נִכְחוֹ יֵצֵאו׃ וְהַנָּשִׂיא
, *ipſos exeundo in* & , ingredietur , *ipſos ingrediendo in* , eorum medio in
בְּתוֹכָם בְּבוֹאָם יָבוֹא וּבְצֵאתָם
munus erit *ſtatutis temporibus* in & ,feſtivitatibus in Et .egredientur
11 יֵצֵאוּ׃ וּבַחַגִּים וּבַמּוֹעֲדִים תִּהְיֶה הַמִּנְחָה
donum agnis in & , arietem per Ephah & ,vitulum per Ephah
אֵיפָה לַפָּר וְאֵיפָה לָאַיִל וְלַכְּבָשִׂים מַתַּת
fecerit cùm Et .Ephah per Hin olei & : ejus manus
12 יָדוֹ וְשֶׁמֶן הִין לָאֵיפָה׃ וְכִי־יַעֲשֶׂה
devotionem pacifica aut ,*aſcenſionem* *ſpontaneam* *prælatus*
הַנָּשִׂיא נְדָבָה עוֹלָה אוֹ־שְׁלָמִים נְדָבָה
, Orientem reſpicientem portam ei aperiet & , DOMINO
לַיהוָה וּפָתַח לוֹ אֶת־הַשַּׁעַר הַפֹּנֶה קָדִים
faciet ſic , ſua pacifica & , *ſuam aſcenſionem* faciet &
וְעָשָׂה אֶת־עֹלָתוֹ וְאֶת־שְׁלָמָיו כַּאֲשֶׁר יַעֲשֶׂה
poſt portam claudet & , egredietur & : ſabbathi die in
בְּיוֹם הַשַּׁבָּת וְיָצָא וְסָגַר אֶת־הַשַּׁעַר אַחֲרֵי
aſcenſionem facies *integrum* *ejus anni* filium agnum Et .*ipſum egredi*
13 צֵאתוֹ׃ וְכֶבֶשׂ בֶּן־שְׁנָתוֹ תָּמִים תַּעֲשֶׂה עוֹלָה
.illud facies mane *in mane in* : DOMINO diem per
לַיּוֹם לַיהוָה בַּבֹּקֶר בַּבֹּקֶר תַּעֲשֶׂה אֹתוֹ׃

Verſio VULG. LAT.

2 Et intrabit princeps per viam
veſtibuli portæ deforis, & ſtabit
in limine portæ : & facient
ſacerdotes holocauſtum ejus, &
pacifica ejus : & adorabit ſuper
limen portæ, & egredietur :
porta autem non claudetur uſque
3 ad veſperam. Et adorabit
populus terræ ad oſtium portæ
illius in Sabbatis, & in Calendis,
4 coram Domino. Holocauſtum
autem hoc offeret princeps
Domino ; in die Sabbati ſex agnos
immaculatos , & arietem
5 immaculatum. Et ſacrificium
ephi per arietem : in agnis autem
ſacrificium quod dederit
manus ejus : & olei hin per
6 ſingula ephi. In die autem Calendarum
vitulum de armento
immaculatum : & ſex agni &
7 arietes immaculati erunt. Et
ephi per vitulum, ephi quoque
per arietem faciet ſacrificium :
de agnis autem, ſicut invenerit
manus ejus : & olei hin per ſingula
8 ephi. Cúmque ingreſſurus
eſt princeps, per viam veſtibuli
portæ ingrediatur, & per
9 eandem viam exeat. Et cùm
intrabit populus terræ in conſpectu
Domini in ſolennitatibus :
qui ingreditur per portam
Aquilonis, ut adoret, egrediatur
per viam portæ Meridianæ : porrò
qui ingreditur per viam portæ
Meridianæ , egrediatur per
viam portæ Aquilonis : non revertetur
per viam portæ , per
quam ingreſſus eſt, ſed è regio-
10 ne illius egredietur. Princeps
autem in medio eorum cum ingredientibus
ingredietur , &
cum egredientibus egredietur.
11 Et in nundinis, & in ſolennitatibus
erit ſacrificium ephi per
vitulum, & ephi per arietem :
agnis autem erit ſacrificium ſicut
invenerit manus ejus : & olei
12 hin per ſingula ephi. Cùm autem
fecerit princeps ſpontaneum
holocauſtum , aut pacifica
voluntaria Domino ; aperietur
ei porta quæ reſpicit ad Orientem,
& faciet holocauſtum ſuum,
& pacifica ſua, ſicut fieri ſolet
in die Sabbati : & egredietur,
claudetúrque porta poſtquàm
13 exierit. Et agnum ejuſdem anni
immaculatum faciet holocauſtum
quotidiè Domino ; ſemper
manè faciet illud.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

2 Καὶ εἰσελεύσεται ὁ ἀφηγούμενος κατὰ τὴν ὁδὸν
τοῦ αἰλὰμ τῆς πύλης τῆς (γ) ἔσωθεν, καὶ στήσεται
ἐπὶ τὰ πρόθυρα τῆς πύλης, καὶ ποιήσουσιν οἱ
ἱερεῖς τὰ ὁλοκαυτώματα αὐτοῦ, καὶ τὰ τοῦ σωτηρίου
αὐτοῦ· καὶ προσκυνήσει ἐπὶ τοῦ προθύρου
τῆς πύλης, καὶ ἐξελεύσεται, καὶ ἡ πύλη οὐ μὴ
3 κλεισθῇ ἕως ἑσπέρας. Καὶ προσκυνήσει
ὁ λαὸς τῆς γῆς κατὰ τὰ πρόθυρα τῆς πύλης
ἐκείνης, καὶ ἐν τοῖς σαββάτοις, καὶ ἐν
4 ταῖς νουμηνίαις, ἐναντίον (δ) κυρίου. Καὶ
τὰ ὁλοκαυτώματα προσοίσει ὁ ἀφηγούμενος
τῷ κυρίῳ ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῶν σαββάτων,
ἓξ ἀμνοὺς ἀμώμους, καὶ κριὸν ἄμωμον,
5 Καὶ (ε) μαναά, πέμμα τῷ κριῷ,
καὶ τοῖς ἀμνοῖς θυσίαν, δόμα (ζ) χειρὸς
6 αὐτοῦ, καὶ ἐλαίου τὸ εἳν τῷ πέμματι. Καὶ
ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῆς νουμηνίας μόσχον (η) ἄμωμον,
καὶ ἓξ ἀμνούς, καὶ κριὸς ἄμωμος ἔσται,
7 Καὶ πέμμα τῷ κριῷ, καὶ πέμμα
τῷ μόσχῳ ἔσται (θ) μαναά, καὶ τοῖς ἀμνοῖς,
καθὼς ἂν (ι) ἐκποιῇ ἡ χεὶρ αὐτοῦ,
8 καὶ ἐλαίου τὸ εἳν τῷ πέμματι. Καὶ
ἐν τῷ εἰσπορεύεσθαι τὸν ἀφηγούμενον,
κατὰ τὴν ὁδὸν τοῦ αἰλὰμ τῆς πύλης
εἰσελεύσεται, καὶ κατὰ τὴν ὁδὸν τῆς
9 πύλης ἐξελεύσεται. Καὶ (κ) ὅταν εἰσπορεύηται
ὁ λαὸς τῆς γῆς ἐναντίον κυρίου
ἐν ταῖς ἑορταῖς, ὁ εἰσπορευόμενος
κατὰ τὴν ὁδὸν τῆς πύλης (λ) τῆς βλεπούσης
πρὸς Βορρᾶν προσκυνεῖν, ἐξελεύσεται
κατὰ τὴν ὁδὸν τῆς πύλης τῆς πρὸς
Νότον, καὶ ὁ εἰσπορευόμενος κατὰ τὴν ὁδὸν
τῆς πύλης τῆς πρὸς Νότον, ἐξελεύσεται
κατὰ τὴν ὁδὸν τῆς πύλης τῆς πρὸς
Βορρᾶν· οὐκ ἀναστρέψει κατὰ τὴν πύλην
(μ) εἰς ἣν εἰσελήλυθεν, ἀλλ' ἢ
10 κατ' εὐθὺ αὐτῆς ἐξελεύσεται. Καὶ ὁ ἀφηγούμενος
ἐν μέσῳ αὐτῶν, ἐν τῷ εἰσπορεύεσθαι
αὐτοὺς εἰσελεύσεται μετ' αὐτῶν,
καὶ ἐν τῷ ἐκπορεύεσθαι αὐτοὺς ἐξελεύ-
11 σεται (ν). Καὶ ἐν ταῖς ἑορταῖς καὶ ἐν ταῖς πανηγύρεσιν
ἔσται τὸ (ξ) μαναὰ πέμμα τῷ
μόσχῳ, καὶ πέμμα τῷ κριῷ, (ο) καὶ τοῖς
ἀμνοῖς, καθὼς ἂν ἐκποιῇ ἡ χεὶρ αὐτοῦ,
12 καὶ ἐλαίου τὸ εἳν τῷ πέμματι. Ἐὰν δὲ
ποιήσῃ ὁ ἀφηγούμενος ὁμολογίαν ὁλοκαύτωμα
σωτηρίου τῷ κυρίῳ, καὶ (ᵘ) ἀνοίξῃ
ἑαυτῷ τὴν πύλην τὴν βλέπουσαν (")
κατὰ ἀνατολάς, καὶ (·) ποιήσῃ τὸ ὁλοκαύτωμα
αὐτοῦ, καὶ τὰ τοῦ σωτηρίου αὐτοῦ,
ὃν τρόπον ποιεῖ ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῶν
σαββάτων· καὶ ἐξελεύσεται, καὶ κλείσει
13 τὰς θύρας μετὰ τὸ ἐξελθεῖν αὐτόν. Καὶ
ἀμνὸν ἐνιαύσιον ἄμωμον ποιήσει (π)
εἰς ὁλοκαύτωμα καθ' ἡμέραν τῷ κυρίῳ, πρωῒ ποιήσει αὐτόν.

*Et intrabit dux per viam Ælam 2
portæ (a) interioris, & ſtabit
ſuper veſtibula portæ. Et facient
ſacerdotes holocauſta ejus,
& quæ ſalutaris ejus. Et adorabit
ſuper veſtibulum portæ :
& egredietur : & porta
non claudetur uſque ad veſperam.
Et adorabit populus 3
terræ ad veſtibula portæ illius,
& in Sabbatis, & in Neomeniis
coram Domino. Et holo- 4
cauſta offeret dux Domino in
die Sabbatorum , ſex agnos
immaculatos , & arietem immaculatum ,
Et manaa , (b) 5
coctionem arieti , & agnis ſacrificium ,
donum manûs ſuæ ,
& olei In coctioni. Et in 6
die Neomeniæ vitulum immaculatum ,
& ſex agnos : &
aries immaculatus erit : Et 7
coctio arieti, & coctio vitulo
erit manaa , & agnis , ſicut
ſuffecerit manus ejus : & olei
In coctioni. Et in ingre- 8
diendo ducem per viam Ælam
portæ ingredietur , & per
viam portæ egredietur. Et cùm 9
intrabit populus terræ in conſpectu
Domini in ſolennitatibus ,
qui ingreditur per viam
portæ reſpicientis ad Aquilonem ,
ut adoret ; egredietur
per viam portæ , quæ ad Auſtrum :
& qui ingreditur per
viam portæ , quæ ad Auſtrum ,
egredietur per viam
portæ , quæ ad Aquilonem :
non revertetur per portam ,
in quam ingreſſus eſt :
ſed in directum ejus egre-
dietur. Et dux in medio 10
eorum ; in ingrediendo eos ,
ingredietur cum eis : &
in egrediendo ipſos , egredi-
etur. Et in ſolennitatibus , et 11
in nundinis erit manaa coctio
vitulo , & coctio arieti , &
agnis , ſicut valuerit manus
ejus , et olei In coctioni. Si 12
autem fecerit dux (c) confeſſionem ,
holocauſtum (d) ſalutaris
Domino ; et aperiet
ſibi portam reſpicientem ad
Orientem : et faciet holocauſtum
ſuum, et ea quæ ſalutaris
ſui ; ſicut facit in die
Sabbatorum. Et egredietur : et
claudet oſtia poſtquàm ipſe egreſſus
fuerit : Et agnum an- 13
niculum immaculatum faciet in
holocauſtum quotidiè Domino :
manè faciet eum.*

MS.A. (γ) ἔξωθεν, (δ) τοῦ κυρίου. Καὶ τὸ ὁλοκαύτωμα (ε) μαννά, (ζ) τῆς χειρὸς (η) υἱὸν βουκολίου ἄμωμον, (θ) μαννὰ (ι) εὐποιῇ (κ) (κ) ἔσται ὅταν εἰσπορεύηται ὁ λαὸς ἐναντίον (λ) τῆς πρὸς Βορρᾶν (μ) ἣν εἰσελήλυθεν (ν) μετ' αὐτῶν. Καὶ (ξ) μαννὰ (ο) τοῖς δὲ ἀμνοῖς, (ᵘ) ἀνοίξει (") κατ' (·) ποιήσει (π) ὁλοκαύτωμα,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

2 וְיֵעוֹל רַבָּא בְּאוֹרַח אוּלָמָּא דְתַרְעָא מִלְּבָרָא וִיקוּם עַל סְקוֹפַת תַּרְעָא וְיַעְבְּדוּן
כָּהֲנַיָּא יַת עֲלָוָתֵיהּ וְיַת נִכְסַת קוּדְשֵׁיהּ וְיִסְגּוֹד עַל סְקוֹפַת תַּרְעָא וְיִפּוֹק וְתַרְעָא לָא
3 יִתְאֲחִיד עַד רַמְשָׁא׃ וְיִסְגְּדוּן עַמָּא דְאַרְעָא בְּמַעֲלָנָא דְתַרְעָא הַהוּא בְּשַׁבַּיָּא
4 וּבְיַרְחַיָּא קֳדָם יְיָ׃ וַעֲלָתָא דִי יַקְרִיב רַבָּא קֳדָם יְיָ בְּיוֹמָא דְשַׁבְּתָא שִׁתָּא אִמְּרִין
5 שַׁלְמִין וּדְכַר שְׁלִים׃ וּמִנְחָתָא מְכִלְתָּא לִדְכְרָא וּלְאִמְּרַיָּא מִנְחָתָא מַרְבַּק יְדֵיהּ
6 וּמִשְׁחָא מְלוֹ הִינָא לִמְכִלְתָּא׃ וּבְיוֹמָא דְיַרְחָא תּוֹר בַּר תּוֹרֵי שְׁלִים וְשִׁתָּא אִמְּרִין
7 וּדְכַר שַׁלְמִין יְהוֹן׃ וּמְכִלְתָּא לְתוֹרָא וּמְכִלְתָּא לִדְכְרָא יַעְבֵּיד מִנְחָתָא וּלְאִמְּרַיָּא
8 כְּמָא דְתַדְבֵּיק יְדֵיהּ וּמִשְׁחָא מְלוֹ הִינָא לִמְכִלְתָּא׃ וּבְמֵיעַל רַבָּא בְּאוֹרַח אוּלָמָּא
9 דְתַרְעָא יֵיעוֹל וּבְאוֹרְחֵיהּ יִפּוֹק׃ וּבְמֵיעַל עַמָּא דְאַרְעָא לְמִסְגַּד קֳדָם יְיָ בְּמוֹעֲדַיָּא
דְעָלֵיל בְּאוֹרַח תְּרַע צִפּוּנָא לְמִסְגַּד יִפּוֹק בְּאוֹרַח תְּרַע דָּרוֹמָא וּדְיֵיעוֹל בְּאוֹרַח תְּרַע
דָּרוֹמָא יִפּוֹק בְּאוֹרַח תְּרַע צִפּוּנָא לָא יְתוּב בְּאוֹרַח תְּרַע דִּי עַל בֵּיהּ אֱרֵי לָקֳבְלֵיהּ
10 יִפּוֹק׃ וְרַבָּא בֵּינֵיהוֹן בְּמֵיעַלְהוֹן יֵיעוֹל וּבְמַפַּקְהוֹן יִפְּקוּן׃ 11 וּבְחַגַּיָּא וּבְמוֹעֲדַיָּא תְּהֵי
מִנְחָתָא מְכִלְתָּא לְתוֹרָא וּמְכִלְתָּא לִדְכְרָא וּלְאִמְּרַיָּא דְתַדְבֵּיק יְדֵיהּ וּמִשְׁחָא מְלֵי
12 הִינָא לִמְכִלְתָּא׃ וַאֲרֵי יַעְבֵּיד רַבָּא נִדְבְּתָא עֲלָתָא אוֹ נִכְסַת קוּדְשַׁיָּא נִדְבְּתָא קֳדָם
יְיָ וְיִפְתַּח לֵיהּ יַת תַּרְעָא דִּפְתִיחַ לְמַדִּנְחָא וְיַעְבֵּיד יַת עֲלָוָתֵיהּ וְיַת נִכְסַת קוּדְשׁוֹהִי
13 כְּמָא דִי עָבֵד בְּיוֹמָא דְשַׁבְּתָא וְיִפּוֹק וְיֵיחוֹד יַת תַּרְעָא בָּתַר מִפְּקֵיהּ׃ וְאִמַּר בַּר
שַׁתֵּיהּ שְׁלִים תַּעְבֵּיד עֲלָתָא לְיוֹמָא קֳדָם יְיָ בִּצְפַר בִּצְפַר תַּעְבֵּד יָתֵיהּ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et ingredietur princeps per viam veſtibuli portæ exterioris, & ſtabit in li- 2
mine portæ : & facient Sacerdotes holocauſtum ejus & ſacras ejus hoſtias,
& adorabit ſuper limen portæ, & egredietur : porta autem non claudetur
uſque ad veſperam. Et adorabit populus terræ in introitu portæ illius in 3
Sabbathis & in Calendis coram Dño. Holocauſtum autem auferet prin- 4
ceps coram Dño in die Sabbathi ſex agnos immaculatos, & arietem immaculatum.
Et in munus menſuram ephi in arietem, & in ſingulos agnos juxta 5
munus quod apprehenderit manus ejus, & olei plenum hin per ſingula ephi :
Et in die Calendarum vitulum de bobus immaculatum; & ſex agni & arietes 6
immaculati erunt. Et ephi in vitulum & ephi in arietem faciet pro munere 7
& in agnos ſicut apprehenderit manus ejus, & plenum hin olei ad menſuram.
Et cùm ingreſſus fuerit princeps per viam veſtibuli portæ ingredietur, 8
& per eandem viam exibit. Et cùm ingreſſus fuerit populus terræ ut adoret 9
coram Dño in ſolennitatibus; qui ingreſſus fuerit per viam portæ Aquilonis
ad orandum, egredietur per viam portæ Auſtralis : & qui ingreſſus fuerit
per viam portæ Auſtralis, exibit per viam portæ Aquilonis : non revertetur
per viam portæ per quam ingreſſus eſt, ſed è regione ejus egredietur. Prin- 10
ceps autem in medio eorum cùm ingreſſi fuerint ingredietur, & cùm exierint
exibit. Et in feſtivitatibus & in ſolennitatibus erit munus menſura ephi in 11
vitulum, & menſura ephi in arietem, & in agnos quot apprehenderit
manus ejus : & plenum hin olei ad menſuram. Et cùm fecerit princeps 12
ſpontaneum holocauſtum aut victimam ſanctificatam ſpontaneam coram
Dño, aperiet ſibi portam quæ aperitur ad Orientem, & faciet holocauſtum
ſuum & victimam ſanctificatam ſuam ſicut fieri ſolet in die Sabbathi, &
egredietur et claudet portam poſt exitum ſuum. Et agnum anniculum 13
immaculatum facies holocauſtum quotidie coram Domino ; manè manè
facies illud.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܘܢܥܘܠ ܡܕܒܪܢܐ ܒܡܥܠܢܐ ܕܐܣܩܘܦܬܐ ܕܬܪܥܐ. ܡܢ ܠܒܪ. ܘܢܩܘܡ ܥܠ ܐܣܩܘܦܬܗ 2
ܕܬܪܥܐ. ܘܢܥܒܕܘܢ ܟܗܢܐ ܢܟܣܘܗܝ ܥܠܬܗ ܘܩܘܪܒܢܘܗܝ. ܘܢܣܓܘܕ ܥܠ ܐܣܩܘܦܬܐ
ܕܬܪܥܐ ܘܢܦܘܩ. ܘܬܪܥܐ ܠܐ ܢܬܐܚܕ ܥܕܡܐ ܠܪܡܫܐ. * ܘܢܣܓܕܘܢ ܥܡܐ ܕܐܪܥܐ ܒܡܥܠܢܗ. 3
ܕܬܪܥܐ ܗܘ. ܒܫܒܬܐ ܘܒܪܝܫ ܝܪܚܐ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. * ܘܥܠܬܐ ܕܡܩܪܒ ܡܕܒܪܢܐ ܩܕܡ 4
ܡܪܝܐ ܒܝܘܡܐ ܕܫܒܬܐ. ܫܬܐ ܐܡܪܝܢ ܕܠܝܬ ܒܗܘܢ ܡܘܡܐ. ܘܕܟܪܐ ܕܠܝܬ ܒܗ ܡܘܡܐ.
* ܘܣܡܝܕܐ ܢܩܪܒ. ܣܐܬܐ ܠܬܘܪܐ. ܘܣܐܬܐ ܠܕܟܪܐ. ܘܠܐܡܪܐ ܐܝܟ ܕܡܛܝܐ ܐܝܕܗ. ܘܡܫܚܐ ܗܝܢ 5
ܗܝܢܐ ܠܣܐܬܐ. * ܘܒܝܘܡܐ ܕܪܝܫ ܝܪܚܐ. ܬܘܪܐ ܕܠܝܬ ܒܗ ܡܘܡܐ. ܘܫܬܐ ܐܡܪܝܢ ܕܠܝܬ 6
ܒܗܘܢ ܡܘܡܐ. ܘܕܟܪܐ ܕܠܝܬ ܒܗ ܡܘܡܐ. * ܘܣܡܝܕܐ ܢܩܪܒ. ܣܐܬܐ ܠܬܘܪܐ. ܘܣܐܬܐ 7
ܠܕܟܪܐ. ܘܠܐܡܪܐ ܐܝܟ ܕܡܛܝܐ ܐܝܕܗ. ܘܡܫܚܐ ܗܝܢ. ܗܝܢܐ ܠܣܐܬܐ. * ܘܡܐ ܕܥܐܠ 8
ܡܕܒܪܢܐ. ܒܐܣܩܘܦܬܗ ܕܬܪܥܐ ܢܥܘܠ. ܘܒܗ ܢܦܘܩ. * ܘܡܐ ܕܥܐܠܝܢ ܥܡܐ ܕܐܪܥܐ 9
ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܒܥܐܕܐ ܕܥܐܕܐ. ܡܢ ܕܥܐܠ ܒܬܪܥܐ ܓܪܒܝܝܐ ܠܡܣܓܕ. ܢܦܘܩ ܒܗ
ܒܬܪܥܐ ܬܝܡܢܝܐ. ܘܡܢ ܕܥܐܠ ܒܬܪܥܐ ܬܝܡܢܝܐ. ܢܦܘܩ ܒܗ ܒܬܪܥܐ ܓܪܒܝܝܐ. ܘܠܐ
ܢܗܦܘܟ ܒܬܪܥܐ ܕܒܗ ܥܠ. ܐܠܐ ܠܩܘܒܠܗ ܢܦܘܩ. * ܘܡܕܒܪܢܐ ܕܒܝܢܬܟܘܢ. ܒܬܪܥܐ 10
ܕܒܗ ܥܐܠ ܒܗ ܢܦܘܩ. * ܘܒܥܐܕܐ ܕܥܐܕܐ. ܢܗܘܐ ܣܡܝܕܐ ܣܐܬܐ ܠܬܘܪܐ. ܘܣܐܬܐ 11
ܠܕܟܪܐ. ܘܠܐܡܪܐ ܐܢܫ. ܐܝܟ ܕܡܛܝܐ ܐܝܕܗ. ܘܡܫܚܐ ܗܝܢ. ܗܝܢܐ ܠܣܐܬܐ. * ܘܡܐ 12
ܕܡܩܪܒ ܡܕܒܪܢܐ. ܥܠܬܐ ܐܘ ܩܘܪܒܢܐ. ܦܘܪܫܢܐ ܠܡܪܝܐ. ܢܬܦܬܚ ܠܗ
ܬܪܥܐ ܕܚܙܐ ܠܡܕܢܚܐ ܕܐܚܝܕ. ܘܢܥܒܕ ܢܟܣܘܗܝ ܥܠܬܗ ܘܩܘܪܒܢܘܗܝ. ܘܢܐܚܘܕܝܗܝ
ܠܬܪܥܐ ܘܢܦܘܩ. ܐܝܟ ܕܥܒܕ ܒܝܘܡܐ ܕܫܒܬܐ. * ܘܐܡܪܐ ܒܪ ܫܢܬܗ ܕܠܝܬ ܒܗ 13
ܡܘܡܐ. ܢܗܘܐ ܡܩܪܒ ܒܝܘܡܐ. ܥܠܬܐ ܠܡܪܝܐ. ܡܢ ܨܦܪ ܠܨܦܪ.

Et ingrediens rector per oſtium liminis portæ 2
deforis, ſtet ſuper limen portæ, offerántque
interim ſacerdotes holocauſta ipſius & ſacrificia
ipſius: & poſtquam adoravit in limine
portæ, exeat: porta verò ne claudatur ad
veſperam uſque. Adorabúntque populus terræ 3
in oſtio portæ illius, ſabbathis & initio
menſium, coram Domino. Porrò holocauſta 4
quæ offeret rector corã Domino die ſabbathi,
erunt ſex agni in quibus nullum ſit vitium, &
aries in quo nullum ſit vitium. De ſimila verò 5
offeret ſatum pro bove, & ſatum pro ariete,
& pro agno ſecundùm facultatem ſuam: de
oleo autem heminam pro ſato. Die verò initii 6
menſis, bovem in quo nullum ſit vitium,
et ſex agnos in quibus nullum ſit vitium, &
arietem in quo nullum ſit vitium. Paritérque 7
de ſimila offeret ſatum pro bove, ſatum pro
ariete, & pro agno ſecundùm facultatẽ ſuam:
de oleo verò heminã pro ſato *quolibet*. Quoties 8
ingreditur rector, per portæ limen ingrediatur,
& per idem egrediatur. Sed cùm ingredientur 9
populus terræ coram Dño tempore
feſtivo; qui ingreſſus fuerit per portam
Aquilonarem ad adorandum, egrediatur per
portam Auſtralem: et qui ingreſſus fuerit per
portam Auſtralem, egrediatur per portam Aquilonarem:
ne revertatur per portam per
quam ingredietur, ſed per ſibi oppoſitã egrediatur.
At rector qui fuerit inter vos, quã 10
portã ingreſſus fuerit, eâdem egrediatur. Et 11
feſtivo tempore fit de ſimila ſatum pro bove,
ſatum pro ariete, & pro agno juxta cujuſque
facultatem: de oleo verò hemina pro ſato.
Præterea quum offeret rector holocauſta aut 12
munera, ſeparationem Domino, aperiatur ipſi
porta reſpiciens Orientem, quæ clauſa eſſe
ſolet: & poſtquam obtulerit holocauſta &
munera ſua, claudat portam, ac tum egrediatur,
quemadmodum facere *conſuevit* die ſabbathi.
Agnum quoque anniculum in quo nullum 13
ſit vitium, offerat quotidie holocauſtum
Domino, ſingulis matutinis.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ويدخل المقدم في طريق الام الباب الذي من خارج * ويقف على دهاليز الباب * 2
ويصنعون الكهنة محرقاته * وما هو لخلاصه * ويسجد على دهليز ذلك الباب ويخرج * والباب
لا يغلق الى المساء * ويسجد شعب الارض لدهاليز ذلك الباب * وفي السبوت وفي روس 3
الشهور امام الرب * والمحرقة يقدمها المقدم للرب في يوم السبوت * ستة حملان لا عيب 4
فيها * وكبشا لا عيب فيه * وجريب من للكبش * وللحملان ذبيحة عطية يدك * ووسط 5
زيت للجريب * وفي يوم راس الشهر * عجلا من ذود البقر لا عيب فيه * وستة حملان * 6
وكبشا يكون لا عيب فيه * وجريبا للكبش * وجريبا للعجل يكون منا * وللحملان * 7
كما يمكن ان يصنع يدك حسنا * ووسط زيت للجريب * وعند ما يدخل المقدم * في طريق 8
الام الباب يدخل * وفي طريق الباب يخرج * ويكون اذا دخل الشعب امام الرب في 9
الاعياد * الداخل في طريق الباب الذي نحو الجربياء ليسجد * يخرج في طريق الباب
الذي نحو التيمن * والداخل في طريق الباب الذي نحو التيمن * يخرج في طريق
الباب الذي نحو الجربياء * ولا يرجع في الباب الذي دخل فيه * ولكن بازايه يخرج *
* والمقدم في وسطهم * عند ما يدخلون يدخل معهم * وعند ما يخرجون يخرج معهم * 10
* وفي الاعياد وفي المواسم يكون من جريب للعجل * وجريب للكبش وللحملان كما يمكن 11
ان يصنع يدك حسنا * ووسط زيتا للجريب * واذا صنع المقدم اعترافا محرقة خلاص للرب * 12
فيفتح له الباب الناظر الى المشارق * فيصنع محرقته وما هو لخلاصه * كما يصنع في يوم
السبوت * ويخرج ويغلق الابواب من بعد ان يخرج * وحملا حوليا لا عيب فيه * يصنعه محرقة 13
كل يوم للرب * بالغداة يصنعه *

* *Et ingrediens dux per viam illam porta extrinſeca, conſiſtet ad porticum* 1
januæ: cúmque perfecerint ſacerdotes
holocauſta ipſius & quæ ad ſalutem
ejus pertinent, adorabit ſuper ejus januæ
porticum, & egredietur: janua
verò non claudetur ad veſperam uſque.
Et adorabit terræ populus ad illius 3
januæ porticum tam in ſabbathis quàm
kalendis menſium, coram Domino. Holocauſtum 4
verò quod offeret dux Domino
in die ſabbathorum, ſex erunt
agni ſine macula, & aries ſine macula,
Gjarib man pro ariete, & pro 5
agnis ſacrificium, donum manûs ſuæ,
& queſtus olei pro gjaribo. Die verò 6
kalendarum menſis, vitulus de grege
boum ſine vitio, ſex agni, & aries
in quo nullum ſit vitium: Et gjarib 7
pro ariete, & gjarib pro vitulo, erit
man, atque pro agnis: ut meliùs facere
poterit manus ejus: & queſtus
olei pro gjaribo. Quando ingredietur 8
dux, per viam illam portæ ingredietur,
& per viam portæ egredietur.
Erit autem cùm ingredietur populus 9
coram Domino in diebus feſtis, ut quiſquis
ingreſſus fuerit per viam portæ
quæ eſt Aquilonem versùs ad adorandum,
egrediatur per viam portæ quæ
eſt Meridiem versùs; & quiſquis ingreſſus
fuerit per viam portæ quæ eſt
Meridiem versùs, egrediatur per viam
portæ quæ eſt Aquilonem versùs: non
revertetur per portam per quam ingreſſus
eſt, ſed per oppoſitam ſibi egredietur.
Dux autem erit in medio eorum: 10
cùm ingredientur, intrabit cum
ipſis; & cùm egredientur, cum ipſis
exibit. In ſolennitatibus & in nundinis 11
erit man gjarib pro vitulo, &
gjarib pro ariete & pro agnis, prout
poterit benefacere manus ejus, & queſtus
olei pro gjaribo. Quoties autem 12
fecerit dux gratiarum actionem, holocauſtum
ſalutis Domino, aperiet ſibi
portam quæ reſpicit ad Orientem, facietque
holocauſtum ſuum & quæ pertinent
ad ſalutem ſuam, quemadmodum
facere conſuevit in die ſabbathorum:
tum egredietur, claudétque portas poſtquam
egreſſus fuerit. Et agnum an- 13
niculum in quo nulla ſit macula, faciet
holocauſtum ſingulis diebus Domino:
in matutino faciet eum.

יחזקאל : מז

, Ephah partem ſextam mane *in* *mane in* eo ſuper facies *munus* Et
14 וּמִנְחָה תַעֲשֶׂה עָלָיו בַּבֹּקֶר בַּבֹּקֶר שִׁשִּׁית הָאֵיפָה
Domino *munus* , ſimilam *ſubigendam* ad , Hin partem tertiam olei &
וְשֶׁמֶן שְׁלִישִׁית הַהִין לָרֹס אֶת־הַסֹּלֶת מִנְחָה לַיהוָה
& , *munus* & , agnum facient Et .jugiter *ſeculi* ſtatutis
15 חֻקּוֹת עוֹלָם תָּמִיד׃ וְעָשׂוּ אֶת־הַכֶּבֶשׂ וְאֶת־הַמִּנְחָה וְאֶת־
Dominus dixit Sic .*jugitatis aſcenſionem* : mane *in* *mane in* oleum
16 הַשֶּׁמֶן בַּבֹּקֶר בַּבֹּקֶר עוֹלַת תָּמִיד׃ כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי
,ejus hæreditatẽ in ſuis filiis de *viro* donum *prælatus* dederit *Cùm:Domin°*
יֱהוִה כִּי־יִתֵּן הַנָּשִׂיא מַתָּנָה לְאִישׁ מִבָּנָיו נַחֲלָתוֹ
cùm Et .hæreditatem in , *ipſa* , eorum *poſſeſſio* : erit ejus *filiis* *ipſa*
17 הִיא לְבָנָיו תִּהְיֶה אֲחֻזָּתָם הִיא בְּנַחֲלָה׃ וְכִי־
illius erit & , *ſuis* ſervis de uni ſua hæreditate de donum dederit
יִתֵּן מַתָּנָה מִנַּחֲלָתוֹ לְאַחַד מֵעֲבָדָיו וְהָיְתָה לּוֹ
,*ej°* hæreditas *Veruntamẽ:prælatum* ad revertetur &,libertatis annum ad uſq;
עַד־שְׁנַת הַדְּרוֹר וְשָׁבַת לַנָּשִׂיא אַךְ נַחֲלָתוֹ
hæreditate de *prælatus* accipiet non Et .erit *eis* , ejus filiorum
18 בָּנָיו לָהֶם תִּהְיֶה׃ וְלֹא־יִקַּח הַנָּשִׂיא מִנַּחֲלַת
ſua poſſeſſione De .eorum poſſeſſione de , eos *populandum ad* populi
הָעָם לְהוֹנֹתָם מֵאֲחֻזָּתָם מֵאֲחֻזָּתוֹ
;me° popul° diſpergantur non *quod* *propter* : ſuis filiis dabit hæreditatem
יַנְחִל אֶת־בָּנָיו לְמַעַן אֲשֶׁר לֹא־יָפֻצוּ עַמִּי
humero ſuper qui , ingreſſum *in* me introduxit Et .ſua poſſeſſione à *vir*
19 אִישׁ מֵאֲחֻזָּתוֹ׃ וַיְבִיאֵנִי בַמָּבוֹא אֲשֶׁר עַל־כֶּתֶף
;Aquilonẽ ad *reſpicientia ſacerdotes ad* ſanctitatis cubicula in portæ
הַשַּׁעַר אֶל־הַלְּשָׁכוֹת הַקֹּדֶשׁ אֶל־הַכֹּהֲנִים הַפֹּנוֹת צָפוֹנָה
locus Iſte : me ad dixit Et .*mare* ad lateribus in locus ibi ecce &
20 וְהִנֵּה־שָׁם מָקוֹם בַּיַּרְכָתָם יָמָּה׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי זֶה הַמָּקוֹם
: peccato pro &,delicto pro oblationem ſacerdotes *ibi* coquent quo
אֲשֶׁר יְבַשְּׁלוּ־שָׁם הַכֹּהֲנִים אֶת־הָאָשָׁם וְאֶת־הַחַטָּאת
atrium *ad educendum* non *ad* , *munus* coquent quo
אֲשֶׁר יֹאפוּ אֶת־הַמִּנְחָה לְבִלְתִּי הוֹצִיא אֶל־הֶחָצֵר
atrium *ad* me eduxit Et .populum ſanctificandum ad , exterius
21 הַחִיצוֹנָה לְקַדֵּשׁ אֶת־הָעָם׃ וַיּוֹצִיאֵנִי אֶל־הֶחָצֵר
ecce & : atrii angulos quatuor *ad* me fecit tranſire & , exterius
הַחִיצֹנָה וַיַּעֲבִירֵנִי אֶל־אַרְבַּעַת מִקְצוֹעֵי הֶחָצֵר וְהִנֵּה
quatuor In .*atrii* *angulo in* *atrium* , *atrii* *angulo in* *atrium*
22 חָצֵר בְּמִקְצֹעַ הֶחָצֵר חָצֵר בְּמִקְצֹעַ הֶחָצֵר׃ בְּאַרְבַּעַת
triginta &,longitudine quadraginta ligata atria atrii angulis
מִקְצֹעוֹת הֶחָצֵר חֲצֵרוֹת קְטֻרוֹת אַרְבָּעִים אֹרֶךְ וּשְׁלֹשִׁים
circum ordo Et .*angulatis* ipſis quatuor una menſura:latitudine
23 רֹחַב מִדָּה אַחַת לְאַרְבַּעְתָּם מְהֻקְצָעוֹת׃ וְטוּר סָבִיב
parietes ſubter *facta* culinæ & : *ipſis* quatuor *circum eis in*
בָּהֶם סָבִיב לְאַרְבַּעְתָּם וּמְבַשְּׁלוֹת עָשׂוּי מִתַּחַת הַטִּירוֹת
qua , coquentium domus Iſtæ : me ad dixit Et .*circum*
24 סָבִיב׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי אֵלֶּה בֵּית הַמְבַשְּׁלִים אֲשֶׁר
.populi victimam domus miniſtri *ibi* coquent
יְבַשְּׁלוּ־שָׁם מְשָׁרְתֵי הַבַּיִת אֶת־זֶבַח הָעָם׃

CAP. XLVII. מז

deſub *egredientes* aquæ ecce & , domus oſtium ad me convertit Et
1 וַיְשִׁבֵנִי אֶל־פֶּתַח הַבַּיִת וְהִנֵּה־מַיִם יֹצְאִים מִתַּחַת
aquæ Et : Orientem domus facies nam:Orientem ad domus limine
מִפְתַּן הַבַּיִת קָדִימָה כִּי־פְנֵי הַבַּיִת קָדִים וְהַמַּיִם
.altaris meridie à dextero domus *humero ab* *ſubter* de *deſcendentes*
יֹרְדִים מִתַּחַת מִכֶּתֶף הַבַּיִת הַיְמָנִית מִנֶּגֶב לַמִּזְבֵּחַ׃
extra viam *me circuire fecit* & ,aquilonaris portæ *via* me eduxit Et
2 וַיּוֹצִאֵנִי דֶּרֶךְ־שַׁעַר צָפוֹנָה וַיְסִבֵּנִי דֶּרֶךְ חוּץ
aquæ ecce Et .Orientem reſpicientem viam extrinſecus portam *ad*
אֶל־שַׁעַר הַחוּץ דֶּרֶךְ הַפּוֹנֶה קָדִים וְהִנֵּה־מַיִם
.dextero *humero* *ab* *ſcaturientes*
מְפַכִּים מִן־הַכָּתֵף הַיְמָנִית׃

Verſio VULG. LAT.

14 Et faciet ſacrificium ſuper eo
cata manè manè ſextam partem
ephi, & de oleo tertiam partem
hin, ut miſceatur ſimilæ: ſacri-
ficium Domino legitimum, juge
15 atque perpetuum. Faciet a-
gnum, & ſacrificium, & oleum
cata manè manè; holocauſtum
16 ſempiternum. Hæc dicit Domi-
nus Deus; Si dederit princeps do-
num alicui de filiis ſuis: hæredi-
tas ejus, filiorum ſuorum erit,
17 poſſidebunt eam hæreditariè. Si
autem dederit legatum de hære-
ditate ſua uni ſervorum ſuorum,
erit illius uſque ad annum remiſ-
ſionis, & revertetur ad princi-
pem: hæreditas autem ejus, filiis
18 ejus erit. Et non accipiet prin-
ceps de hæreditate populi per
violentiam, & de poſſeſſione eo-
rum: ſed de poſſeſſione ſua hæ-
reditatem dabit filiis ſuis: ut non
diſpergatur populus meus unuſ-
19 quiſque à poſſeſſione ſua. Et in-
troduxit me per ingreſſum, qui
erat ex latere portæ, in gazophy-
lacia Sanctuarii ad ſacerdotes,
quæ reſpiciebant ab Aquilonem:
& erat ibi locus vergens ad Oc-
20 cidentem. Et dixit ad me; Iſte
eſt locus ubi coquent ſacerdotes
pro peccato, & pro delicto: ubi
coquent ſacrificium, ut non effe-
rant in atrium exterius, & ſancti-
21 ficetur populus. Et eduxit me in
atrium exterius, & circumduxit
me per quatuor angulos atrii: &
ecce atriolũ erat in angulo atrii,
atriola ſingula per angulos atrii.
22 In quatuor angulis atrii atriola
diſpoſita, quadraginta cubitorum
per longum, & triginta per la-
tum: menſuræ unius quatuor e-
23 rant. Et paries per circuitum
ambiens quatuor atriola: & cu-
linæ fabricatæ erant ſubter porti-
24 cus per gyrum. Et dixit ad me;
Hæc eſt domus culinarum, in qua
coquent miniſtri domûs Domini
victimas populi.

CAP. XLVII.

1 ET convertit me ad portam
domûs, & ecce aquæ egredie-
bantur ſubter limen domûs ad
Orientem: facies enim domûs
reſpiciebat ad Orientẽ: aquæ au-
tem deſcendebant in latus templi
2 dextrum ad Meridiem altaris. Et
eduxit me per viã portæ Aquilo-
nis, & convertit me ad viam fo-
ras portam exteriorem, viam
quæ reſpiciebat ad Orientem:
& ecce aquæ redundantes à late-
re dextro.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

14 Καὶ (ρ) μαναὰ ποιήσει ἐπ᾽ αὐτῷ τοπρωΐ,
ἕκτον τοῦ μέτρου, καὶ ἐλαίου (σ) τρίτον τοῦ
εἶν τοῦ ἀναμίξαι τὴν σεμίδαλιν (τ) μαναὰ
15 τῷ κυρίῳ, πρόσταγμα (υ) διαπαντὸς. Ποι-
ήσετε τὸν ἀμνὸν· καὶ τὸ (φ) μαναὰ, καὶ τὸ ἔ-
λαιον ποιήσετε (χ) τοπρωΐ, ὁλοκαύτω-
16 μα διαπαντός. Τάδε λέγει (ψ) κύριος
θεὸς, Ἐὰν δῷ ὁ ἀφηγούμενος δόμα ἑνὶ ἐκ
τῶν υἱῶν αὐτοῦ (ω) ἐκ τῆς κληρονομίας αὐτοῦ,
τοῦτο τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ (α) ἔσται κατάσχεσις
17 κληρονομία· Ἐὰν δὲ δῷ δόμα (β) ἑνὶ
τῶν παίδων αὐτοῦ, καὶ ἔσται αὐτῷ ἕως τοῦ
ἔτους τῆς ἀφέσεως, καὶ ἀποδώσει τῷ ἀφη-
γουμένῳ. πλὴν τῆς κληρονομίας τῶν υἱῶν αὐ-
18 τοῦ αὐτοῖς ἔσται. Καὶ οὐ μὴ λάβῃ ὁ ἀφη-
γούμενος ἐκ τῆς κληρονομίας τοῦ λαοῦ (γ),
τοῦ καταδυναστεῦσαι αὐτοὺς, ἐκ τῆς κατα-
σχέσεως (δ) αὐτοῦ κατακληρονομήσει τοῖς
υἱοῖς αὐτοῦ, ὅπως μὴ διασκορπίζηται ὁ
λαός μου, ἕκαστος (ε) ἐκ τῆς κατασχέσεως
19 αὐτοῦ. Καὶ εἰσήγαγέ με εἰς τὴν εἴσοδον τὴν
κατὰ νώτου τῆς πύλης, εἰς τὴν ἐξέδραν
τῶν ἁγίων τῶν ἱερέων, τὴν βλέπουσαν πρὸς
Βοῤῥᾶν· καὶ ἰδοὺ ἐκεῖ τόπος κεχωρισμέ-
20 νος. Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Οὗτος ὁ τό-
πος ἐστὶν, οὗ ἑψήσουσιν ἐκεῖ οἱ ἱερεῖς
τὰ ὑπὲρ (ζ) ἀγνοίας καὶ τὰ ὑπὲρ ἁμαρ-
τίας, καὶ ἐκεῖ πέψουσι τὸ (η) μαναὰ τὸ
παράπαν, τοῦ μὴ ἐκφέρειν εἰς τὴν αὐλὴν
21 τὴν ἐξωτέραν, τοῦ ἁγιάζειν τὸν λαόν. Καὶ
ἐξήγαγέ με εἰς τὴν αὐλὴν τὴν ἐξωτέραν,
καὶ περιήγαγέ με ἐπὶ τὰ (ʹ)τέσσαρα μέρη
τῆς αὐλῆς· καὶ ἰδοὺ αὐλὴ κατὰ (θ) τὰ
22 κλίτη τῆς αὐλῆς, (ι) Κατὰ τὸ κλίτος
αὐλὴ, αὐλὴ ἐπὶ τὰ (κ) τέσσαρα, καὶ τῆς
αὐλῆς αὐλὴ μικρὰ μῆκος (λ) πηχῶν τεσσα-
ράκοντα, καὶ εὖρος (μ) πηχῶν τριάκοντα,
23 μέτρον ἓν τοῖς τέσσαρσι· Καὶ ἐξέδραι κύκλῳ
ἐν αὐταῖς, κύκλῳ ταῖς τέσσαρσι· καὶ μα-
γειρεῖα γεγονότα ὑποκάτω τῶν ἐξεδρῶν
24 κύκλῳ. Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Οὗτοι οἱ οἶκοι τῶν (ν) μαγείρων, οὗ
ἑψήσουσιν ἐκεῖ οἱ λειτουργοῦντες τῷ οἴκῳ τὰ θύματα τοῦ λαοῦ.

MS.A.(ρ)μαννὰ(σ)τὸ τρίτον(τ)μαννὰ(υ)αἰώνιον διαπαντὸς(φ)μαν-
νὰ,(χ)πρωΐ,(ψ)ἀδωναῒ κύριος,Ἐὰν (ω)τοῦ ἐκ τῆς (α)ἔσται· κατάσχεσις
αὐτῶν αὕτη ἐν κληρονομίᾳ·(β)ἐκ τῆς κληρονομίας αὐτοῦ ἑνὶ (γ)αὐτοῦ,
καταδυναστεῦσαι(δ)αὐτοῦ, ἀπὸ τῆς κληρονομίας αὐτοῦ κατακληρονομήσει (ε)
ἀπὸ τῆς (ζ)τῆς ἀγνοίας καὶ τὰ ὑπὲρ τῆς ἁμαρτίας, (η)μαννὰ (ʹ)τέσσαρα(θ)κλί-
τη(ι)Αὐλὴ κατὰ (κ)τέσσαρα κλείτη τῆς αὐλῆς(λ)πήχεων τεσσεράκοντα,(μ)
πήχεων(ν)μαγειρείων,

ΚΕΦ. μζʹ.

1 ΚΑὶ εἰσήγαγέ με ἐπὶ τὰ πρόθυρα τοῦ
οἴκου· καὶ ἰδοὺ ὕδωρ ἐξεπορεύετο (α) ὑπο-
κάτωθεν τοῦ αἰθρίου κατὰ ἀνατολὰς, ὅτι
τὸ πρόσωπον τοῦ οἴκου ἔβλεπε(ʹ)κατὰ ἀνα-
τολὰς, καὶ τὸ ὕδωρ κατέβαινεν ἀπὸ τοῦ
κλίτους τοῦ δεξιοῦ, ἀπὸ Νότου ἐπὶ τὸ θυσι-
2 αστήριον. Καὶ ἐξήγαγέ με κατὰ τὴν ὁ-
δὸν τῆς πύλης τῆς πρὸς Βοῤῥᾶν, καὶ περιήγα-
γέ με τὴν ὁδὸν ἔξωθεν πρὸς τὴν πύλην
τῆς αὐλῆς τῆς βλεπούσης (ʺ) κατὰ ἀνατολάς·
καὶ ἰδοὺ τὸ ὕδωρ κατεφέρετο ἀπὸ τοῦ κλίτους τοῦ δεξιοῦ,

MS.A. (α) ὑποκάτω τοῦ αἰθρίου τοῦ οἴκου κατ᾽ (ʹ) κατ᾽ (ʺ) κατ᾽

Et (e) manaa faciet ſuper eo, 14
manè, ſextam partem menſuræ,
& de oleo tertiam partem In ad
miſcendam ſimilam manaa Do-
mino, præceptum perpetuum: Fa- 15
cietis agnum, et manaa: & oleum
facietis manè, holocauſtum ſem-
piternum. Hæc dicit Domin° De°; 16
Si dederit dux donum uni ex fi-
liis ſuis de hæreditate ſua; hoc
filiis ejus erit poſſeſſio hæreditas.
Si autem dederit donum uni ex 17
pueris ſuis; et erit ei uſque ad an-
num remiſſionis: et reddet duci:
veruntamen de hæreditate filio-
rum ejus ipſis erit. Et non tol- 18
let princeps de hæreditate populi
opprimendo eos: de poſſeſſione ſua
hæreditatem dabit filiis ſuis; ut
non diſpergatur populus meus, u-
nuſquiſque à poſſeſſione ſua. Et 19
introduxit me in ingreſſum (ſ)
ejus, quæ ad tergum, portæ, in ex-
edram Sanctorum, ſacerdotum, re-
ſpicientem ad Aquilonem: et ecce
ibi locus ſeparatus: Et dixit ad 20
me; Iſte eſt locus, ubi coquent ibi
ſacerdotes quæ pro ignorantia, et
quæ pro peccato: et ibi coquent
manaa omninò: ut non offerant in
atrium exteri° ad ſanctificandum
populum. Et eduxit me in atrium 21
exterius: et circunduxit me per
quatuor partes atrii: et ecce atri-
um ad latera atrii, (g) Ad latus 22
atrium, atrium ſuper quatuor;
et atrii atrium parvum longitu-
dinis cubitorum quadraginta, et
latitudo cubitorum triginta:
menſura una quatuor. Et exe- 23
dræ per circuitum in eis, per cir-
cuitum ipſis quatuor: et culinæ
factæ ſub exedris per gyrum. Et 24
dixit ad me; Hæ ſunt domus co-
quorum, ubi coquent ibi miniſtri
domûs victimas populi.

CAP. XLVII.

ET introduxit me ad veſtibu- 1
la domûs: et ecce aqua (a) egre-
diebatur de ſubdio domûs ad O-
rientem: facies enim domûs re-
ſpiciebat ad Orientem: et aqua
deſcendebat à latere dextro, ab
Auſtro ad altare. Et eduxit me 2
per viam portæ, quæ ad Aquilo-
nem: et circunduxit me per viam
exteriorem ad portam atrii reſpi-
cientis ad Orientem: et ecce aqua
deferebatur à latere dextro,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 ומנחתא תעבד עלוהי בצפר בצפר חד מן שתא במכלתא ומשחא תלתות הינא
15 לערבא ית סולתא מנחתא קדם יי קים עלם תדירא : יעבדון ית אמרא וית מנחתא וית
15 משחתא בצפר בצפר עלתא תדירא : כדנן אמר יי אלהים ארי יתן רבא מתנא לחד
17 מבנוהי אחסנתיה היא לבנוהי תהי אחידתהון היא באחסנא : וארי יתן מתנא
מאחסנתיה לחד מעבדוהי ותהי ליה עד שתא דיובלא ותתיב לרבא ברם אחסנתיה
18 די בנוהי דילהון תהי : ולא יסב רבא מאחסנת עמא למינסהון מאחסנתהון
19 מאחסנתיה יחסין לבנוהי בדיל דלא יתבדרון עמי גבר מאחסנתיה : ואעלני במעלנא
די לעבר תרעא ללשכת קודשיא דכהניא די פתיחן צפונא והא תמן אתרא בסופיהון
20 מערבא : ואמר לי דין אתרא די יבשלון תמן כהניא ית אשמא וית חטאתא די ייפון ית
21 מנחתא בדיל דלא לאפקא לדרתא בריתא לאתערבא עם עמא : ואפקני לדרתא
בריתא ואעברני על ארבע זוית דרתא והא דרתא בזוית דרתא ודרתא בזוית דרתא :
22 בארבעה זוית דרתא דרתא מקטרן ארבעין ארכא ותלתין פותיא משחתא חדא
23 לארבעתהון דדרתא : ונדבכין עבידין להון סחור לארבעתהון ואתר מתקן לבשלא
24 עביד מלרע לנדבכיא סחור סחור : ואמר לי דין אתר מתקן לבשליא די יבשלון תמן
משמשי ביתא ית נכסת קודשיא דעמא :

מו

1 ואתיבני לתרע ביתא והא מיא נפקין מתחות סקופת ביתא למדנחא ארי אפי ביתא
2 למדנחא ומיא נחתין מלרע מעבר סקופת ביתא לימינא מדרום למדבחא : ואפקני
באורח תרע צפונא ואסחרני באורח די לברא לתרעא בראה אורח תרעא דפתיח
למדנחא והא מיא נפקין מן עברא דימינא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et munus facies ſuper eum manè manè, ſextam partem ephi, & olei tertiam 14
partem hin, ut commiſceatur cum ſimila munus coram Dño fœdere ſempi-
terno jugiter. Facientque agnum & munus & oleum manè manè holocau- 15
ſtum jugiter. Hæc dicit Dñs Deus: Cùm dederit princeps donum uni de 16
filiis ſuis, poſſeſſio ejus poſſeſſio filiorum erit: poſſeſſio eorum eſt in hære-
ditate. Et ſi dederit donum de poſſeſſione ſua uni de ſervis ſuis, erit illius 17
uſque ad annum jubilei: & revertetur ad principem, veruntamen hæredi-
tas ejus filiis ejus erit. Et non accipiet princeps de hæreditate populi, ut per 18
violentiam accipiat de hæreditate eorum: ſed de hæreditate ſua hæredita-
tem dabit filiis ſuis, ut non diſpergatur populus meus unuſquiſque de hære-
ditate ſua. Et introduxit me per introitum qui erat in latere portæ in gazo- 19
phylacia ſacra Sacerdotum quæ aperta erant ad Aquilonem: & ecce ibi
erat locus in fine eorum ad Occidentem. Et dixit mihi: Iſte eſt locus ubi 20
coquent Sacerdotes *[carnes]* ſacrificii pro delicto & pro peccato, & ubi
coquent *[panem]* muneris, ut non efferant in atrium exterius, ne commiſce-
antur cum populo. Et eduxit me in atrium exterius, & traduxit me per 21
quatuor angulos atrii: & ecce atriolum erat in angulo atrii, atriolum in
angulo atrii. Per quatuor angulos atrii erant atriola conjuncta quadraginta 22
cubitorum longitudinis & triginta latitudinis: menſura una erat quatuor
atriolis. Et parietes facti erant ipſis per circuitum ipſorum quatuor, & lo- 23
cus *præparatus* ad coquendum fabricatus erat ſub parietibus per circuitum.
Et dixit ad me: Iſte eſt locus præparatus ad coquendum, in quo coquent 24
miniſtri domus victimas ſanctificatas populi.

CAP. XLVII.

ET convertit me ad portam domus, & ecce aquæ egrediebantur de ſub li- 1
mine domus ab Oriente: erat enim facies domus ad Orientem: aquæ au-
tem deſcendebant inferius à latere liminis domus ad dexteram ab Auſtrali
parte altaris. Et eduxit me per viam portæ Aquilonis, & circumduxit me 2
per viam exteriorem portæ exterioris, viam portæ quæ aperiebatur ad Ori-
entem; & ecce aquæ egrediebantur à latere dextro.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

14 * ܘܣܡܝܕܐ ܢܩܪܒ ܥܠܘܗܝ ܡܢ ܨܦܪ ܠܨܦܪ. ܚܕ ܡܢ ܫܬܐ ܒܣܐܬܐ. ܘܡܫܚܐ ܚܕܐ ܡܢ
ܬܠܬ ܡܢܘܬܗ ܕܗܝܢܐ ܠܡܦܠܟܘ ܠܣܡܝܕܐ ܠܡܪܝܐ. ܢܡܘܣܐ ܕܠܥܠܡ ܐܡܝܢܐܝܬ.
15 * ܘܢܩܪܒܘܢ ܐܡܪܐ ܘܣܡܝܕܐ ܘܡܫܚܐ. ܟܠ ܨܦܪ ܠܨܦܪ. ܢܟܣܐ ܡܩܒܠܐ ܐܡܝܢܐܝܬ.
16 * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܡܕܒܪܢܐ ܟܕ ܢܬܠ ܡܘܗܒܬܐ ܠܚܕ ܡܢ ܒܢܘܗܝ. ܝܪܬܘܬܗ
17 ܠܒܢܘܗܝ ܬܗܘܐ. * ܘܟܕ ܢܬܠ ܡܘܗܒܬܐ ܡܢ ܝܪܬܘܬܗ ܠܚܕ ܡܢ ܥܒܕܘܗܝ. ܬܗܘܐ ܠܗ
ܥܕܡܐ ܠܫܢܬܐ ܕܡܬܚܪܪ. ܘܬܗܘܐ ܠܗ ܠܡܕܒܪܢܐ. ܝܪܬܘܬܐ ܕܝܢ ܕܒܢܘܗܝ ܠܗܘܢ ܬܗܘܐ.
18 * ܘܠܐ ܢܣܒ ܡܕܒܪܢܐ ܡܢ ܝܪܬܘܬܗ ܕܥܡܐ. ܘܠܐ ܢܕܚܘܩ ܐܢܘܢ ܡܢ ܝܪܬܘܬܗܘܢ. ܐܠܐ ܡܢ ܝܪܬܘܬܗ
19 ܢܘܪܬ ܠܒܢܘܗܝ. ܕܠܐ ܢܬܒܕܪܘܢ ܥܡܝ. ܐܢܫ ܡܢ ܝܪܬܘܬܗ. * ܘܐܥܠܢܝ ܒܡܥܠܢܐ ܕܥܠ
ܓܢܒ ܬܪܥܐ ܕܐܟܣܕܪܐ ܓܘܝܬܐ ܕܩܘܕܫܐ ܕܟܗܢܐ. ܕܚܙܝܐ ܠܓܪܒܝܐ. ܘܚܙܝܬ ܕܐܝܬ ܬܡܢ ܐܬܪܐ
20 ܒܣܘܦܝܗܘܢ ܡܢ ܡܥܪܒܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܗܢܘ ܐܬܪܐ ܕܡܒܫܠܝܢ ܬܡܢ ܟܗܢܐ ܚܛܗܐ
ܕܚܘܣܝܐ. ܘܐܦܝܢ ܬܡܢ ܣܡܝܕܐ. ܕܠܐ ܢܦܩܘܢ ܠܕܪܬܐ ܒܪܝܬܐ. ܘܢܩܕܫܘܢܗ ܠܥܡܐ.
21 * ܘܐܦܩܢܝ ܠܕܪܬܐ ܒܪܝܬܐ. ܘܐܥܒܪܢܝ ܥܠ ܐܪܒܥ ܦܢܝܬܗ ܕܕܪܬܐ. ܘܚܙܝܬ ܕܪܬܐ ܒܩܪܢ ܕܪܬܐ.
22 ܘܕܪܬܐ ܐܚܪܬܐ ܒܩܪܢܐ ܐܚܪܢܐ ܕܕܪܬܐ. * ܒܐܪܒܥ ܦܢܝܬܗ ܕܕܪܬܐ ܕܪܬܐ ܙܥܘܪܬܐ. ܐܪܒܥܝܢ ܐܡܝܢ
23 ܐܘܪܟܗܘܢ. ܘܬܠܬܝܢ ܦܬܝܗܘܢ. * ܘܐܟܣܕܪܐ ܚܕܪ ܚܕܪ. ܠܐܪܒܥܬܝܗܝܢ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܗܢܘ
24 ܒܝܬ ܡܒܫܠܐ. ܕܡܒܫܠܝܢ ܬܡܢ ܕܒܚܐ ܕܥܡܐ ܡܫܡܫܢܘܗܝ ܕܒܝܬܐ.

* Et de ſimila offerat cum eo ſingulis matutinis, ſextam partem ſati; oleique tertiam partem heminæ ad commiſcendum ſimilam Domino, lege perpetuâ jugiter. 14
* Ita offerent agnos ſimilam & oleum quolibet manè, holocauſtum jugiter. 15
* Sic ait Dominus dominorum; Quum dederit rector donum alicui è filiis ſuis, poſſeſſio ejus erit filiorum ejus. 16
Quum autem donum dederit de poſſeſſione ſua alicui ſervorum ſuorum, ipſius erit uſque ad annum quo manumittetur, tum redibit ad ipſum rectorem: poſſeſſio verò filiorum ejus, ipſorum erit. 17
* Et ne accipiat rector de poſſeſſione populi, néve deturbet eos de poſſeſſione eorum; ſed de poſſeſſione ſua hæreditaditatem tradat filiis ſuis, ne diſpergantur populus meus quiſque de poſſeſſione ſua. 18
Poſtea introduxit me per aditum qui erat ſecus januam exedræ intimæ Sanctuarii ſacerdotum, quæ reſpiciebat Aquilonem: vidíque ibi eſſe locum *quendam* ad margines ejus ab Occidente. 19
Et dixit mihi, Hic eſt locus in quo coquunt ſacerdotes expiationem peccatorum, & in quo ſimilam depſunt, ne egrediantur ad atriū exterius, & ſanctificent populum. 20
Tum educens me ad atrium exterius traduxit per quatuor latera atrii, & vidi atrium in latere atrii, atriúmque alterum in latere alterius atrii, 21
In quatuor lateribus iſtius atrii, atria exigua, quadraginta cubitorum longitudine, triginta verò latitudine: 22
Et exedræ circundabant iſta quatuor. 23
Dixítq; mihi, Hæc eſt culina in qua victimam populi coquunt miniſtri domûs. 24

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܙ *

1 * ܘܗܦܟ ܐܥܠܢܝ ܠܬܪܥܗ ܕܒܝܬܐ. ܘܚܙܝܬ ܡܝܐ ܕܢܦܩܝܢ ܡܢ ܬܚܝܬ ܐܣܟܘܦܬܐ
ܡܕܢܚܝܬܐ ܕܒܝܬܐ. ܘܗܢܘܢ ܡܝܐ ܢܚܬܝܢ. ܡܢ ܦܢܝܬܗ ܕܒܝܬܐ. ܡܢ ܝܡܝܢܗ ܕܡܕܒܚܐ.
2 * ܘܐܦܩܢܝ ܒܐܘܪܚܐ ܓܪܒܝܝܐ. ܘܐܚܕܪܢܝ ܡܢ ܠܒܪ ܠܘܬ ܬܪܥܐ ܕܕܪܬܐ ܕܚܐܪ ܠܡܕܢܚܐ. ܘܚܙܝܬ
ܡܝܐ ܕܢܦܩܝܢ ܡܢ ܦܢܝܬܗ ܕܝܡܝܢܐ.

CAP. XLVII.

* Et cùm rurſus introduxiſſet me per portam domûs, vidi aquas exeuntes de ſub limine Orientali domûs: & aquæ illæ decurrebant à latere domûs ab Auſtrali plaga altaris. 1
* Inde me eduxit per portam Aquilonarem, & circunduxit me foris ſecus portam atrii, quæ reſpiciebat Orientem: vidíque aquas egredientes è latere ipſius dextro. 2

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

14 * ومنا يصنع عليه بالغداة سدس كيل * وثلث قسط زيتا * ليخلط السميذ منا للرب * امرا ابديا
15 كل حين * يصنع الحمل والمن والزيت يصنع بالغداة * محرقة كل حين * هكذا يقول
16 ادوناي الرب * اذا اعطي المقدم عطية لواحد من بنيه الذي من ميراثه * هي تكون
17 لبنيه هي ضبط الميراث * واذا اعطي عطية من ميراثه لواحد من عبيده * فتكون له الي
18 سنة الصفح * ويردها للمقدم * لكن ميراث بنيه يكون لهم * ولا ياخذ المقدم من ميراث شعبي
ليتسلط عليهم * من ضبطه من ميراثه يورث لبنيه * كيلا يتفرق شعبي كل واحد من ضبطه *
19 * وادخلني مدخل الباب الذي في الظهر الي مقصورة اقداس الكهنة * الناظر الي الجربياء *
20 واذا هناك موضع معتزل * وقال لي * هذا هو الموضع حيث تطبخ هناك الكهنة ما هو من
اجل الجهل * وما هو من اجل الخطية * وهناك يخبزون المن الذي عن الكل * ليلا يخرجوها
21 الي هذه الدار الخارجة ليقدسوا الشعب * واخرجني الي الدار الخارجة * وطوفني على اربع نواحي
22 الدار * واذا دار في جوانب الدار * ودار في الجانب الاخر * علي اربعة جوانب الدار دار صغير *
23 طولها اربعون ذراعا * وعرضها ثلثون ذراعا * قياس في الاربعة * ومقاصير داير بها * داير
24 بالاربعة * ومطابخ صاير اسفل المقاصير داير * وقال لي * هولاء بيوت المطابخ حيث يطبخ هناك
الذين يخدمون البيت ذبايح الشعب *

* Et man faciet ſuper eum in matutino ſextam partem menſuræ, & tertiam partem queſti olei ad miſcendum ſimilam, man Domino. Præcepto ſempiterno perenni tempore.* 14
Faciet agnum & man, oleumque faciet in matutino, holocauſtum perenni tempore. 15
Ita dicit Adonai Dominus; Cùm dederit dux donum alicui filiorum ſuorum hæredum ſuorum, illud manebit filiis ejus, illud erit poſſeſſio hæreditaria. 16
Verùm ſi donum dederit ex hæreditate ſua alicui ſervorum ſuorum, manebit huic uſque ad annum remiſſionis, tum reſtituet illud duci: ſed hæreditas filiorum ejus, ipſis manebit. 17
Et ne rapiat dux ex hæreditate populi mei, opprimendo eos: ex poſſeſſione ſua, ex hæreditate ſua relinquat hæreditatem filiis ſuis, ut non diſpergatur populus meus unuſquiſque à poſſeſſione ſua. 18
Deinde introduxit me in aditum portæ quæ erat à tergo exedræ Sanctuarii ſacerdotum, ſpectantis ad Aquilonem: & ecce ibi locum ſeparatum. 19
Dixitque mihi, Hic eſt locus ubi coquunt ſacerdotes id quod eſt pro ignorantia, & quod eſt pro peccato: ibidémque depſunt man quod pro his omnibus: ne efferentes illa in hoc atrium exterius, populum ſanctificent. 20
Inde me eduxit ad atrium exterius, circunduxitque me per quaterna atrii latera: & ecce atrium ad latera ejus atrii, & atrium ad alterum latus. 21
Ad quaterna ejus atrii latera, atrium erat parvum, longitudine quadraginta cubitorum, latitudine triginta cubitorum: menſura quatuor iſtis eadem: 22
Et exedræ circum ea, circum ipſa quatuor jacebant: & culinæ facta ſub exedris per gyrum. 23
Et dixit mihi, Hæ ſunt domus culinariæ, ubi coquunt ii qui miniſtrant domui, ſacrificia populi. 24

* الفصل السابع والاربعون *

1 * وادخلني الي دهاليز البيت * واذا ماء خرج من تحت معتبة البيت في المشارق * لان وجه
2 البيت نظر نحو المشارق * والماء نزل من الجانب الايمن من التيمن الي المذبح * واخرجني في
طريق الباب الذي نحو الجربياء * وطوفني الطريق من خارج الي باب الدار الناظر نحو
المشارق واذا ماء جري من الجانب الايمن *

CAP. XLVII.

Inde me introduxit in porticus domûs, & ecce aqua effluebat de ſub limine domûs ad Orientem: frons enim domûs ſpectabat Orientem verſùs: & aqua illa deſcendebat à latere dextro, ab Auſtro ad altare. 1
Poſteà eduxit me per viam portæ quæ erat Aquilonem verſùs, circunduxitque per viam forinſecùs ad portam atrii ſpectantem ad Orientem: & ecce aqua decurrebat à latere dextro. 2

est mensus Et .ejus manu in *lines* & ,Orientem *virum* *egrediendo* In
בְּצֵאת־הָאִישׁ קָדִים וְקָו בְּיָדוֹ וַיָּמָד 3
,*talorum* aquas , aquas in me fecit transire & , cubito in mille
אֶלֶף בָּאַמָּה וַיַּעֲבִרֵנִי בַמַּיִם מֵי אָפְסָיִם׃
.*poplitum* aquas , aquas *in* me fecit transire & , mille est mensus Et
וַיָּמָד אֶלֶף וַיַּעֲבִרֵנִי בַמַּיִם מַיִם בִּרְכָּיִם 4
.*lumborum* aquas me fecit transire & , mille est mensus Et
וַיָּמָד אֶלֶף וַיַּעֲבִרֵנִי מֵי מָתְנָיִם׃
: transire poteram non quem , torrentem , mille est mensus Et
וַיָּמָד אֶלֶף נַחַל אֲשֶׁר לֹא־אוּכַל לַעֲבֹר 5
qui , *torrentem* ; *natationis* aquæ , aquæ se elevaverant quoniam
כִּי־גָאוּ הַמַּיִם מֵי שָׂחוּ נַחַל אֲשֶׁר
fili vidisti Nonne : me ad dixit Et .*transibatur* non
לֹא־יֵעָבֵר׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי הֲרָאִיתָ בֶן־ 6
labium *super* me convertit & , me ire fecit Et ? hominis
אָדָם וַיּוֹלִכֵנִי וַיְשִׁבֵנִי עַל־שְׂפַת
torrentis *labium* *ad* ecce & , me *convertendo* In .torrentis
הַנָּחַל׃ בְּשׁוּבֵנִי וְהִנֵּה אֶל־שְׂפַת הַנַּחַל 7
: me ad dixit Et .inde & , hinc : valde *multum* *lignum*
עֵץ רַב מְאֹד מִזֶּה וּמִזֶּה׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי 8
, orientalem *revolutionem* ad *egredientes* istæ Aquæ
הַמַּיִם הָאֵלֶּה יוֹצְאִים אֶל־הַגְּלִילָה הַקַּדְמוֹנָה
mare *ad* mare intrabunt & : planitiem *super* descendent &
וְיָרְדוּ עַל־הָעֲרָבָה וּבָאוּ הַיָּמָּה אֶל־הַיָּמָּה
anima omnis , erit Et .aquæ sanabuntur & , *eductæ*
הַמּוּצָאִים וְנִרְפְּאוּ הַמָּיִם׃ וְהָיָה כָל־נֶפֶשׁ 9
illuc *intraverit* *quod* *omne* *ad* , *serpet* quæ , vivens
חַיָּה אֲשֶׁר־יִשְׁרֹץ אֶל כָּל־אֲשֶׁר יָבוֹא שָׁם
quia : valde *multum* *piscis* *erit* & : vivet , torrentes duo
נַחֲלַיִם יִחְיֶה וְהָיָה הַדָּגָה רַבָּה מְאֹד כִּי
omne vivet & , sanabuntur & , istæ aquæ illuc intraverunt
בָאוּ שָׁמָּה הַמַּיִם הָאֵלֶּה וְיֵרָפְאוּ וָחָי כֹּל
eo *super* stabunt , erit Et .torrens illuc intraverit *quod*
אֲשֶׁר־יָבוֹא שָׁמָּה הַנָּחַל׃ וְהָיָה יַעַמְדוּ עָלָיו 10
extensio ,Heghlaim Hen ad usque & , Ghedi---Hen ab piscatores
דַּוָּגִים מֵעֵין גֶּדִי וְעַד־עֵין עֶגְלַיִם מִשְׁטוֹחַ
maris piscis sicut ,eorum *piscis* *erit* sua specie In .erunt *reticulis*
לַחֲרָמִים יִהְיוּ לְמִינָה תִּהְיֶה דְגָתָם כִּדְגַת הַיָּם
, sanabuntur non & , ejus *fossæ* & ,ejus Cœnosa .valde *multum* , magni
הַגָּדוֹל רַבָּה מְאֹד׃ בִּצֹּאתָו וּגְבָאָיו וְלֹא יֵרָפְאוּ 11
ejus *labium* *super* ascendet torrentem *super* Et .dabuntur *salem* in
לְמֶלַח נִתָּנוּ׃ וְעַל־הַנַּחַל יַעֲלֶה עַל־שְׂפָתוֹ 12
nec , ejus folium defluet non : *cibi* *lignum* *omne* indè & hinc
מִזֶּה וּמִזֶּה כָּל־עֵץ־מַאֲכָל לֹא־יִבּוֹל עָלֵהוּ וְלֹא־
ejus aquæ quia , maturabit suis mensibus *In* .ejus fructus consumetur
יִתֹּם פִּרְיוֹ לָחֳדָשָׁיו יְבַכֵּר כִּי מֵימָיו
, cibum in ejus fructus erit Et .*egredientes* *ipsa* sanctuario de
מִן־הַמִּקְדָּשׁ הֵמָּה יוֹצְאִים וְהָיוּ פִרְיוֹ לְמַאֲכָל
Iste : *Dominus* Dominus dixit Sic .*medelam* ad ejus folium &
וְעָלֵהוּ לִתְרוּפָה׃ כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִֹה גֵּה 13
duodecim terram dividetis hæreditatem quo terminus
גְבוּל אֲשֶׁר תִּתְנַחֲלוּ אֶת־הָאָרֶץ לִשְׁנֵי עָשָׂר
eam accipietis hæreditate Et .*funiculi* Joseph : Israel tribubus
שִׁבְטֵי יִשְׂרָאֵל יוֹסֵף חֲבָלִים׃ וּנְחַלְתֶּם אוֹתָהּ 14
eam *dandum ad* , meam manum levavi quam suus frater sicut *vir*
אִישׁ כְּאָחִיו אֲשֶׁר נָשָׂאתִי אֶת־יָדִי לְתִתָּהּ
.hæreditatem in vobis hæc terra cadet & : vestris patribus
לַאֲבֹתֵיכֶם וְנָפְלָה הָאָרֶץ הַזֹּאת לָכֶם בְּנַחֲלָה׃
mari à , aquilonarem *angulum* ad terræ terminus hic Et
וְזֶה גְּבוּל הָאָרֶץ לִפְאַת צָפוֹנָה מִן־הַיָּם 15
.Sedad in veniendum ad , Chethlon via magno
הַגָּדוֹל הַדֶּרֶךְ חֶתְלֹן לְבוֹא צְדָדָה׃

Versio VULG. LAT.

3 Cùm egrederetur vir ad Orientem, qui habebat funiculum in manu sua, & mensus est mille cubitos: & traduxit me per aquam usque ad talos. 4 Rursúmque mensus est mille, & traduxit me per aquam usque ad genua: 5 Et mensus est mille, & traduxit me per aquam usque ad renes. Et mensus est mille, torrentem, quem non potui pertransire: quoniam intumuerant aquæ profundi torrentis, qui non potest 6 transvadari. Et dixit ad me; Certè vidisti, fili hominis. Et eduxit me, & convertit ad ripam torrentis. 7 Cúmque me convertissem, ecce in ripa torrentis ligna multa nimis ex utra- 8 que parte. Et ait ad me; Aquæ istæ, quæ egrediuntur ad tumulos sabuli Orientalis, & descendunt ad plana deserti, intrabunt mare, & exibunt, & sanabuntur 9 aquæ. Et omnis anima vivens, quæ serpit, quocunque venerit torrens, vivet: & erunt pisces multi satis postquàm venerint illuc aquæ istæ, & sanabuntur, & vivent omnia, ad quæ venerit 10 torrens. Et stabunt super illas piscatores, ab Engaddi usque ad Engallim siccatio sagenarum erit: plurimæ species erunt piscium ejus, sicut pisces Maris 11 magni, multitudinis nimiæ: In littoribus autem ejus, & in palustribus non sanabuntur, quia 12 in salinas dabuntur. Et super torrentem orietur in ripis ejus ex utraque parte omne lignum pomiferum: non defluet folium ex eo, & non deficiet fructus ejus: per singulos menses afferet primitiva, quia aquæ ejus de Sanctuario egredientur: & erunt fructus ejus in cibum, & folia e- 13 jus ad medicinam. Hæc dicit Dominus Deus; Hic est terminus, in quo possidebitis terram in duodecim tribubus Israel: quia Joseph duplicem funiculum 14 habet. Possidebitis autem eam singuli æquè ut frater suus; super quam levavi manum meam ut darem patribus vestris: & cadet terra hæc vobis in possessionem. 15 Hic est autem terminus terræ: ad plagam Septentrionalem, à Mari magno via Hethalon, venientibus Sedada,

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

3 Καθὼς ἔξοδος ἀνδρὸς ἐξεναντίας· καὶ μέτρον ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ· καὶ διεμέτρησε χιλίους ἐν τῷ μέτρῳ, καὶ διῆλθεν ἐν 4 τῷ ὕδατι ὕδωρ ἀφέσεως· Καὶ διεμέτρησε (β) χιλίους, καὶ διῆλθεν ἐν τῷ ὕδατι ὕδωρ 5 ἕως τῶν μηρῶν· Καὶ διεμέτρησε χιλίους (γ), καὶ διῆλθεν ὕδωρ ἕως ὀσφύος. καὶ διεμέτρησε χιλίους, καὶ οὐκ ἠδύνατο διελθεῖν, ὅτι ἐξύβριζεν (δ) ὡς χειμάῤῥου 6 ὃν οὐ διαβήσονται. Καὶ εἶπε πρός με, (ε) Ἑώρακας υἱὲ ἀνθρώπου; καὶ (ζ) ἤγαγέ με, καὶ ἐπέστρεψέ με ἐπὶ τὸ χεῖλος τοῦ 7 ποταμοῦ, Ἐν τῇ ἐπιστροφῇ μου· καὶ ἰδοὺ ἐπὶ τοῦ χείλους τοῦ ποταμοῦ δένδρα (η) πολλὰ σφόδρα 8 ἔνθεν καὶ ἔνθεν. Καὶ εἶπε πρός με, Τὸ ὕδωρ τοῦτο τὸ ἐκπορευόμενον εἰς τὴν Γαλιλαίαν τὴν πρὸς ἀνατολὰς, καὶ κατέβαινεν ἐπὶ τὴν Ἀραβίαν, καὶ ἤρχετο ἕως ἐπὶ τὴν θάλασσαν ἐπὶ τὸ ὕδωρ τῆς (θ) διεκβολῆς, 9 καὶ ὑγιάσει τὰ ὕδατα· Καὶ ἔσται πᾶσα ψυχὴ τῶν ζώων τῶν ἐκζεόντων, ἐπὶ πάντα ἐφ' ἃ ἂν ἐπέλθῃ ἐκεῖ ὁ ποταμὸς, ζήσεται· καὶ ἔσται ἐκεῖ ἰχθὺς πολὺς σφόδρα, ὅτι ἥκει ἐκεῖ τὸ ὕδωρ τοῦτο, καὶ ὑγιάσει, καὶ ζήσεται, πᾶν ἐφ' ὃ ἂν (ι) ἔλθῃ 10 ὁ ποταμὸς ἐκεῖ, ζήσεται. Καὶ στήσονται ἐκεῖ ἁλιεῖς ἀπὸ (κ) Ἰνγαδεὶν ἕως Ἐναγαλλείμ· ψυγμὸς σαγηνῶν ἔσται, καθ' (λ) ἑαυτὴν ἔσται· καὶ οἱ ἰχθύες αὐτῆς ὡς οἱ ἰχθύες τῆς θαλάσσης τῆς μεγάλης, πλῆθος πολὺ σφόδρα. 11 Καὶ (μ) ἐν τῇ διεκβολῇ αὐτοῦ, καὶ ἐν τῇ ἐπιστροφῇ αὐτοῦ, καὶ ἐν τῇ ὑπεράρσει αὐτοῦ, οὐ μὴ ὑγιάσωσιν, εἰς ἅλας δέ- 12 δονται. Καὶ ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ (ν) ἀναβήσεται, ἐπὶ τοῦ χείλους αὐτοῦ ἔνθεν καὶ ἔνθεν, πᾶν ξύλον βρώσιμον, οὐ μὴ παλαιωθῇ (ξ) ἐπ' αὐτοῦ, οὐδὲ μὴ ἐκλείπῃ ὁ καρπὸς αὐτοῦ, τῆς καινότητος (ο) αὐτοῦ πρωτοβολήσει, ὅτι τὰ ὕδατα αὐτῶν ἐκ τῶν ἁγίων ταῦτα ἐκπορεύεται, καὶ ἔσται ὁ καρπὸς αὐτῶν εἰς βρῶσιν, καὶ (π) ἀνάβασις αὐτῶν εἰς ὑγίειαν. 13 Τάδε λέγει κύριος (ρ) θεός, Ταῦτα τὰ ὅρια κατακληρονομήσετε τῆς γῆς, ταῖς δώδεκα φυλαῖς τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ πρόσθεσις σχοινίσματος. 14 Καὶ κατακληρονομήσετε αὐτὴν ἕκαστος καθὼς ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ, εἰς ἣν ἦρα τὴν χεῖρά μου, τοῦ δοῦναι (σ) τοῖς πατράσιν αὐτῶν, καὶ πεσεῖται ἡ γῆ αὕτη ὑμῖν ἐν κληρονομίᾳ. 15 Καὶ ταῦτα τὰ ὅρια τῆς (*) γῆς τῆς πρὸς Βοῤῥᾶν, ἀπὸ (τ) θαλάσσης τῆς μεγάλης τῆς καταβαινούσης καὶ περισχιζούσης τῆς εἰσόδου (υ) Ἡμασηδὰμ,

3 (b) *Sicut exitus viri ex adverso: & mensura in manu ejus. Et mensus est (c) mille in mensura: et transivit in aqua aquam remissionis:* 4 *Et mensus est mille: & transivit in aqua aquam usque ad femora:* 5 *Et mensus est mille: et transivit aquã usq; ad lumbos: Et mensus est mille: & non potuit transire: (d) quoniam intumuit, sicut torrentis, quem non pertransibunt.* 6 *Et dixit ad me; Vidisti, fili hominis? Et duxit me, & convertit me ad labium fluminis,* 7 *In (e) conversione mea, & ecce super labium fluminis arbores multæ nimis hinc & indè.* 8 *Et dixit ad me; Aqua ista, quæ egreditur (f) in Galilæam, quæ ad Orientem, & (g) descendebat in Arabiam, & veniebat usque ad mare ad Aquam (h) exitûs; & sanabit aquas:* 9 *Et erit omnis anima animalium (i) ebullientium, ad omnia, ad quæ supervenerit illuc fluvius, vivet: & erit ibi piscis multus valdè: quia venit illuc aqua hæc, & sanabit, & vivet: omne, ad quod venerit fluvius illuc, vivet.* 10 *Et stabunt ibi piscatores: ab (k) Ingadim usque ad Enagallim, siccatio sagenarum erit. Secundùm se erit, & pisces ejus, sicut pisces Maris magni, multitudo magna nimis.* 11 *Et in exitu ejus, & in conversione ejus, & in elatione ejus non (l) sanabunt: in sales data sunt.* 12 *Et super fluvium ascendet super labium ejus hinc, & indè omne lignum esui aptum: (m) non veterascet in eo, neque deficiet fructus ejus: de (n) novitate sua primitiva dabit: quia aquæ eorum è Sanctis (o) hæ egrediuntur: & erit fructus eorum in escam, & ascensio eorum ad sanitatem.* 13 *Hæc dicit Dominus Deus: Hos terminos hæreditabitis terræ duodecim tribubus Israel: (p) augmentum funiculi.* 14 *Et hæreditabitis eam unusquisque, sicut frater suus, in quam levavi manum meam, ut darem patribus ipsorum. Et cadet terra hæc vobis in hæreditatem.* 15 *Et hi sunt termini terræ, quæ ad Aquilonem, à Mari magno (q) descendente & abscindente, introitu Emaseldam,*

MS.A. (β) ἐν τῷ μέτρῳ χιλίους (γ) χειμάῤῥους, καὶ (δ) τὸ ὕδωρ *ὕδωρ ἕως ῥοῖζος χειμάῤῥου ὃ οὐ (ε) Εἰ ἑώρακας (ζ) ἀπήγαγέν με, καὶ ἐπέστρεψεν ἐπὶ (η) πολλὰ ἔνθεν καὶ ἔνθεν. (θ) ἐκβολῆς, (ι) ἐπέλθῃ (κ) Ἐνγαδδεὶν ἕως Ἐναγαλείμ· (λ) αὐτήν ἐστιν· καὶ οἱ ἰχθύες τῆς θαλάσσης τῆς μεγάλης οἱ ἰχθύες αὐτῆς, πλῆθος (μ) *ἔστη διεκβολῇ (ν) ἀναβήσει, (ξ) ἐξ αὐτοῦ, (ο) πρωτοβολήσει, διότι (π) ἡ ἀνάβασις αὐτῶν εἰς ὑγίαν. (ρ) ὁ θεός, (σ) αὐτὴν τοῖς (*) γῆς πρὸς (τ) τῆς θαλάσσης (υ) Ἡμαθεδδάμ, Μαωθηρὰς Ἐφραμηλιὰμ ἀναμέσον τῶν ὁρίων Ἡμάθ, καὶ ἀναμέσον τῶν ὁρίων Δαμασκοῦ, Εὐνὰν καὶ τῆς Εὐνὰν, αἵ εἰσιν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

במפק גברא ממדנחא וחוט דמשחתא בידיה ומשח אלף אמין באמתא ואעבירני 3
במיא מי קרסולין : ומשח אלפא ואעבירני במיא מי רכובין ומשח אלפא 4
ואעבירני מי חרצין : ומשח אלפא נחלא דלא יכלית למעבר ארו תקיפו מיא 5
מי סחוא נחלא דלא אפשר לאתעברא : ואמר לי החזיתא בר אדם ואובלני 6
ואתיבני על כיף נחלא : במתבי והא על כיף נחלא אילן סגי לחדא מכא 7
ומכא : ואמר לי מיא האלין נפקין בגלילא מדנחא ונחתין במישרא ועלין בימא 8
לימא רבא מתפקין ומתסן מיא : ויהי כל נפשא חיתא די רחשא לכל אתר די 9
עלון לתמן מי נחלא יחון ויהון נוניא סגי לחדא ארי עלין לתמן מיא האלין
ומתסן ומתקימין לכל אתר די יעלון לתמן מי נחלא : ויהי אתר למקם עלוהי 10
צידין מעין גדי ועד עין עגלים משטח לצידין יהון למינהון יהון נוניהון כנוני ימא
רבא סגי לחדא : בצוהי ופצירוהי לא יתסון למחפורין דמלח יהון : ועל נחלא 11 12
יסק אילן על כיפיה מכא ומכא כל אילן דמיכל לא יתרון טרפוהי ולא יפסק
אביה ירח בירח יהי עביד פרין ארי מוהי מן מקדשא אנון נפקין ויהון אביה
למיכל וטרפוהי לאסותא : כדנן אמר יי אלהים דין תחומא דתחסנון ית 13
ארעא לתרי עסר שבטי ישראל יוסף יתקבל תרין חולקין : ותחסנון יתה גבר 14
כאחוהי די קימית במימרי למתנה לאבהתכון ותתפליג ארעא הדא לכון
באחסנא : ודין תחום ארעא לרוח צפונא מן ימא רבא אורח חתלון למעלנא 15
דצדד :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Cùm egrederetur vir ab Oriente & funiculus mensuræ erat in manu ejus, & 3
mensus est mille cubitos in cubito, & traduxit me per aquas usque ad talos.
Et mensus est mille, & traduxit me per aquas usque ad genua: & mensus est 4
mille, & traduxit me per aquas usque ad lumbos. Et mensus est mille, [*&* 5
ecce] torrens quem non potui pertransire, quia prævaluerant aquæ aquæ
natationis, torrens qui non potest transvadari. Et dixit ad me: Nonne 6
vidisti fili hominis? & duxit me & convertit me ad ripam torrentis. Et 7
cùm reversus essem, ecce super ripam torrentis arbores multæ admodum hinc
& indè. Et dixit ad me: Aquæ istæ egrediuntur in tractum Orientalem, & 8
descendunt ad planitiem, & intrant per mare in mare magnum; & egrediuntur & sanantur aquæ. Et erit, omnis anima vivens quæ serpit, in 9
quemcunque locum intraverint aquæ torrentis, vivet, & erunt pisces multi valdè; quia venient illuc aquæ istæ, & sanabuntur & permanebunt in
omni loco quò intraverint aquæ torrentis. Et erit locus ubi stent pisca- 10
tores ab Engadi & usque ad Eneglaim: expansio piscatorum erit: secundùm species suas erunt pisces eorum sicut pisces maris magni multi nimis. Piscinæ autem ejus & paludes non sanabuntur, erunt enim in fodi- 11
nas salis. Et juxta torrentem ascendet omne lignum in ripis ejus hinc & in- 12
dè: omnis arboris cujus fructus comeditur, non defluent folia, nec cessabunt fructus ejus; per singulos menses faciet fructum, quia aquæ ejus de sanctuario egredientur, & erunt fructus ejus in cibum, & folia ejus in medicinam. Hæc dicit Dominus Deus: Hic est terminus in quo possidebitis 13
terram per duodecim tribus Israel: Joseph accipiet duas portiones. Et 14
possidebitis eam singuli sicut frater suus: quia juravi in verbo meo quòd
darem eam patribus vestris: & dividetur terra ista vobis in hæreditatem.
Et iste est terminus terræ ad plagam Septentrionalem, à mari magno via 15
Hethlon ad introitum Sedada.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

ܘܟܕ ܢܦܩ ܓܒܪܐ ܡܫܒܚ · ܘܡܫܘܚܬܐ ܒܐܝܕܗ · ܘܡܫܚ ܐܠܦ ܐܡܝܢ · ܘܐܥܒܪܢܝ 3
ܒܡܝܐ · ܥܕܡܐ ܠܩܘܪܣܠܐ · ܘܡܫܚ ܐܠܦ ܐܡܝܢ · * ܘܐܥܒܪܢܝ ܒܡܝܐ · ܥܕܡܐ 4
ܠܒܘܪܟܐ · ܘܡܫܚ ܐܠܦ ܐܡܝܢ · ܘܐܥܒܪܢܝ ܒܡܝܐ · ܥܕܡܐ ܠܚܨܐ · ܘܡܫܚ ܐܠܦ
ܐܡܝܢ · * ܢܚܠܐ · ܕܠܐ ܐܢܫ ܡܫܟܚ ܠܡܥܒܪܗ · ܡܛܠ ܕܣܓܝܘ ܡܝܐ ܘܬܩܦܘ 5
ܢܚܠܐ · ܘܠܐ ܐܢܫ ܡܫܟܚ ܠܡܥܒܪܗ · * ܘܐܡܪ ܠܝ · ܚܙܝܬ ܐܢܬ ܒܪܢܫܐ · ܘܕܒܪܢܝ 6
ܘܐܘܬܒܢܝ ܥܠ ܣܦܬܗ ܕܢܚܠܐ · * ܘܟܕ ܝܬܒܬ · ܚܙܝܬ ܥܠ ܣܦܬܗ ܕܢܚܠܐ · 7
ܐܝܠܢܐ ܕܗܘܝ ܣܓܝܐܝܢ · ܡܟܐ ܘܡܟܐ · * ܘܐܡܪ ܠܝ · ܡܝܐ ܗܠܝܢ ܕܢܦܩܝܢ ܠܓܠܝܠܐ 8
ܕܡܕܢܚܐ · ܘܢܚܬܝܢ ܠܓܪܒܝܐ · ܘܢܦܠܝܢ ܒܝܡܐ ܠܡܝܐ ܣܪܝܐ · ܘܡܬܚܠܝܢ ܡܝܐ ·
* ܘܟܠ ܢܦܫܐ ܚܝܬܐ ܕܡܬܪܚܫܐ ܐܝܟܐ ܕܐܝܬ ܡܝܐ ܕܢܚܠܐ · ܚܝܐ · ܘܗܘܝܢ ܢܘܢܐ ܣܓܝܐܐ · 9
ܡܛܠ ܡܝܐ ܗܢܘܢ ܕܢܦܩܝܢ ܠܬܡܢ ܘܡܬܚܠܝܢ ܡܝܐ · * ܘܡܩܝܡܝܢ ܬܡܢ ܨܝܕܐ · ܡܢ ܥܝܢ 10
ܓܕ ܘܥܕܡܐ ܠܥܝܢ ܥܓܠܝܢ · ܡܫܛܚܐ ܠܡܨܝܕܬܐ ܢܗܘܝܢ · ܘܢܗܘܘܢ ܒܗ ܢܘܢܐ ܣܓܝܐܐ ·
ܐܝܟ ܕܝܡܐ ܪܒܐ · * ܘܡܦܩܢܘܗܝ ܘܡܥܠܢܘܗܝ · ܠܐ ܢܬܒܣܡܘܢ · ܐܠܐ ܢܗܘܘܢ ܡܠܝܚܐ · * ܘܥܠ 11
ܢܚܠܐ ܢܣܩܘܢ ܥܠ ܣܦܘܬܗ ܡܟܐ ܘܡܟܐ · ܟܠ ܐܝܠܢ ܕܡܐܟܘܠܬܐ · ܠܐ ܢܬܪܘܢ 12
ܛܪܦܝܗܘܢ · ܘܠܐ ܢܚܣܪܘܢ ܦܐܪܝܗܘܢ · ܘܒܟܠ ܪܝܫ ܝܪܚܐ · ܢܗܘܘܢ ܡܒܟܪܝܢ · ܡܛܠ
ܕܡܝܐ ܕܫܬܝܢ · ܡܢ ܡܩܕܫܐ ܢܦܩܝܢ · ܢܗܘܘܢ ܦܐܪܝܗܘܢ ܠܡܐܟܘܠܬܐ · ܘܛܪܦܝܗܘܢ
ܠܐܣܝܘܬܐ · * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ · ܢܚܠܐ ܕܬܚܘܡܐ ܕܢܐܪܬܘܢ ܠܐܪܥܐ · ܠܬܪܬܥܣܪ ܫܒܛܝܢ 13
ܕܐܝܣܪܝܠ · ܘܕܝܘܣܦ ܒܚܒܠܐ · * ܘܬܐܪܬܘܢܗ ܐܢܫ ܐܝܟ ܐܚܘܗܝ · ܕܐܪܝܡܬ ܐܝܕܝ ܠܡܬܠܗ 14
ܠܐܒܗܝܟܘܢ · ܘܬܬܦܠܓ ܠܟܘܢ ܐܪܥܐ ܠܝܪܬܘܬܐ · * ܘܗܢܘ ܬܚܘܡܐ ܕܐܪܥܐ · ܠܓܪܒܝܐ ܡܢ 15
ܝܡܐ ܪܒܐ · ܐܘܪܚܐ ܕܚܬܠܘܢ · ܕܡܥܠܐ ܠܨܕܕ ·

Cúmque egreſſus eſſet vir ille, glorioſus erat, 3
menſurâ manu ſuâ tenens, & menſus eſt mille
cubitos : deinde progredi me fecit per aquas
ad talos uſque, & menſus eſt mille cubitos :
Tum progredi me fecit per aquas ad genua 4
uſque, & menſus eſt mille cubitos : rurſum
progredi me fecit per aquas ad lumbos uſque,
& menſus eſt mille cubitos; Torrentem 5
quem nemo vadare poterat, quia creverant
aquæ & intumuerat torrens adeo ut nemo
poſſet eum tranſvadare. Et dixit mihi ; 6
Vidéſne fili hominis ? Deinde perduxit me
collocavítque ſuper ripam torrentis : Et cùm 7
ſediſſem, vidi ſupra torrentis ripam arbores
plurimas admodum hinc inde. Dixítque 8
mihi ; Aquæ iſtæ quæ progrediuntur versùs
Galilæam quæ eſt ad Orientem, defluúntque
ad Aquiloné ; inde decidunt in mare in aquas
fœtentes, fiúntque ſuaves aquæ illæ : Atque 9
ita omnes animæ viventes quæ gignuntur ubi
ſunt aquæ torrentis hujus, vivunt, fiúntque
piſces plurimi propter aquas iſtas ; quòd ibi
ſe exonerent, & ſuaves reddantur aquæ illæ :
Quapropter commorabuntur illic piſcatores, 10
& ab In-god uſque ad In-eglin erunt loca ad
expandenda retia : erúntque in eo piſces plurimi
ſicut maris magni. At exitus & ingreſſus 11
ejus minimè dulceſcent, ſed ſaliti manebunt.
Et ad ipſummet torrentem pullulabunt 12
ſuper ripas ejus hinc inde omnigenæ arbores
eſculentæ, quarum folia minimè labentur,
neque fructus deficient ; & quovis initio
menſium præcoces fructus edent : quoniam
aquæ quas ebibent, è Sanctuario egrediuntur,
erunt fructus earum in cibum, & folia in medicinam.
Sic dicit Dominus dominorum ; 13
Torrentes limitis eorum qui poſſeſſuri ſunt
hanc terram, duodecim tribuũ Iſraelis erunt
atque Joſephi, funiculo *dividendi :* Ut poſſi- 14
deatis eam quiſque à fratribus ſuis, quam ſublatâ
manu *juravi* me daturum patrib⁹ veſtris:
dividetur inquam, inter vos terra in poſſeſſionem.
Hic eſt ergò terminus terræ: Aquilo- 15
nem versùs inde à mari magno, iter Hethronis
quod ingreditur in Sedad :

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* كمثل خروج الرجل مقابلي * وقياس في يك * فقاس الفا بالقياس * وعبر في الماء ماء ينبع * 3
وقاس الفا بالقياس * وعبر في الماء ماء الى الفخذين * وقاس الفا واد * وجاز الماء الى الحقو 4
وقاس الفا * فلم يستطع ان يعبر * لان الماء فاض جدا * ماء الى فرضة الوادي لا يجوزون فيه * 5
* وقال لي * ارايت يا ابن الانسان * وروحني وعادني الى شاطي النهر * وفي عودي واذا على 6 7
شاطي النهر اشجار كثيرة من هاهنا ومن هاهنا * وقال لي * هذا الماء الخارج الى الجليل 8
الذي نحو المشارق * ونزل الى ارابيا * واتى حتى الى البحر الى ماء البعد * فيشفي المياه * ويكون 9
كل نفس الحيوانات الذين يتناسلون * على كل ما ياتي عليه النهر هناك يحيي * ويكون هناك
سمك كثير جدا * لان هذا الماء اتي هناك ويعافيها * فيحيي * لان كل ما ياتي عليه النهر هناك
يحيي * ويقف هناك الصيادون * من انجدين الى اناعاليم يكون نصب الشباك عليها * وكسمك 10
البحر الاعظم اسماكه كثير كثير جدا * ووقف مخرجه * وفي عوده وفي ارتفاعه لا 11
يتقدسون * يتبحرون للملح * وعلى النهر يصعد على شاطيه من هاهنا ومن ههنا كل شجر 12
ماكولة * ولا تبلى منه ولا تفنى ثمرتها * اذ تبتدي تخرج للتجديد * من اجل ان هذه المياه
هي من الاقداس تخرج * ويكون ثمرتهم للاكل * وصعدهم للشفا *

* الاصحاح الثامن والعشرون *

* هكذا يقول الرب الاله * هذه حدود الارض التي تورث لاثني عشر قبايل بني اسرايل زيادة 13
الحبل * ويرثها كل واحد كمثل اخيه * هذه التي رفعت يدي عليها لاعطيها لابايهم * وتسقط 14
هذه الارض بكم في الميراث * وهذه حدود الارض نحو الجربياء من البحر الاعظم الذي ينزل 15
ويشق مدخل ايماث *

Velut exitus viri ex adverſo mei, & 3
menſura in manu ejus. Et menſus eſt mille
in menſura: & tranſivit per aquã, aquam
fontis, & menſus eſt mille in menſura.
Rurſus per aquam tranſivit aquam uſque 4
ad femora, & menſus eſt mille torrentes
: & penetravit aquam ad lumbum
uſque, & menſus eſt mille : Nec potuit 5
progredi, quia aqua vehementer inundabat,
aqua ad oram torrentis, quæ penetrari
non poterat. *Dixitque mihi,* 6
Vidiſtine O fili hominis ? Tum abduxit
me, reduxitque ad ripam fluminis.
Quò cùm reverſus eſſem, ecce ad ripam 7
fluminis arbores plurimas hinc inde. Et 8
dixit mihi, Aqua iſta quæ effluit ad
Galilæam quæ eſt Orientem verſùs, decurritque
in Arabiam, & pervenit uſque
ad mare, ad aquam remotam ; ſanabit
aquas. Et erit ut omnis anima ani- 9
mantium quæ progignuntur, omne id
ſuper quod flumen iſtud advenerit, vivat ;
& futuri ſint illic piſces admodum plurimi
: quoniam aqua iſta eò ventura
eſt, illaſque ſanatura ; ideò vivent. Nam
omne id ſuper quod flumen iſtud advenerit,
vivit. Et manebunt ibi piſca- 10
tores : ab Engaddin uſque ad Enagalim
erit ſuper eas tenſio retium : & ut
piſces maris magni, erunt piſces ejus,
copiâ abundantiſſimâ. Et conſiſtet exi- 11
tus ejus, & in regreſſu & elatione ejus
non ſanctificabuntur, ſuffientur ſali.
Et ſuper fluminis ripa creſcet hinc inde 12
omnis arbor eſculenta, & non deerunt
ab eo neque deficient fructus earum, cùm
ad novitatem prodire cæperint ; quoniam
aquæ è Sanctuario effluunt : &
erunt fructus earum in eſcam, & incrementum
earum in ſanitatem.

Textus vigeſimus octavus.

Ita dicit Dominus Deus ; Hi ſunt ter- 13
mini terræ quæ in hæreditatem tradetur
duodecim familiis filiorum Iſraelis
augmento funiculi, Quámque hæredi- 14
tariò poſſidebit unuſquiſque ſicut frater
ſuus. Hæc eſt de qua levavi manum
meam daturum me patribus eorum : atq;
hæc terra continget vobis in hæreditatem.
Hi ſunt igitur terræ limites Aquilonem 15
verſùs, à mari maximo quod deſcendit
ac dividit aditum Emath :

יחזקאל׃ מח

inter &,Dammeſec terminum inter quæ Sibraim ,Berothah ,Chamath
16 חֲמָת ׀ בֵּרוֹתָה סִבְרַיִם אֲשֶׁר בֵּין־גְּבוּל דַּמֶּשֶׂק וּבֵין
.Chauran *terminum ad quæ* ,Hathichon Chaſer ; Chamath terminum
גְּבוּל חֲמָת חָצֵר הַתִּיכוֹן אֲשֶׁר אֶל־גְּבוּל חַוְרָן׃
,Dammeſec terminus ,Henon ,Chaſar mari à terminus erit Et
17 וְהָיָה גְבוּל מִן־הַיָּם חֲצַר עֵינוֹן גְּבוּל דַּמֶּשֶׂק
.*Aquilonis angulum* & : Chamath terminus & ,*Aquilonem ad Aquilo* &
וְצָפוֹן ׀ צָפוֹנָה וּגְבוּל חֲמָת וְאֵת פְּאַת צָפוֹן׃
, Dammeſec inter *ab* & , Chauran inter *ab* orientalem *angulum* Et
18 וּפְאַת קָדִים מִבֵּין חַוְרָן וּמִבֵּין דַּמֶּשֶׂק
ſuper termino à Jarden Iſrael terram *inter ab* & ,Ghilhad inter *ab* &
וּמִבֵּין הַגִּלְעָד וּמִבֵּין אֶרֶץ יִשְׂרָאֵל הַיַּרְדֵּן מִגְּבוּל עַל־
angulum Et .orientalem *angulum* & : metiemini orientale mare
19 הַיָּם הַקַּדְמוֹנִי תָּמֹדּוּ וְאֵת פְּאַת קָדִימָה׃ וּפְאַת
contradictionum aquas ad uſque Thamar à , *auſtrum* ad *meridiei*
נֶגֶב תֵּימָנָה מִתָּמָר עַד־מֵי מְרִיבוֹת
.*Meridiem ad Auſtri angulum* & : magnum mare ad torrentem ,Cades
קָדֵשׁ נַחֲלָה אֶל־הַיָּם הַגָּדוֹל וְאֵת פְּאַת־תֵּימָנָה נֶגְבָּה׃
intrandum ad contra uſque termino à magnum mare *maris angulum* Et
20 וּפְאַת־יָם הַיָּם הַגָּדוֹל מִגְּבוּל עַד־נֹכַח לְבוֹא
hanc terram dividetis Et .*maris angulus hic* : Chamath
21 חֲמָת זֹאת פְּאַת־יָם׃ וְחִלַּקְתֶּם אֶת־הָאָרֶץ הַזֹּאת
hæreditatem in eam *cadere facietis* ,erit Et .Iſrael tribubus vobis
22 לָכֶם לְשִׁבְטֵי יִשְׂרָאֵל׃ וְהָיָה תַּפִּלוּ אוֹתָהּ בְּנַחֲלָה
genuerint qui ,veſtrum medio in *peregrinantibus* peregrinis & , vobis
לָכֶם וּלְהַגֵּרִים הַגָּרִים בְּתוֹכְכֶם אֲשֶׁר־הוֹלִדוּ
filios inter indigena ſicut vobis erunt & : veſtrum medio in filios
בָנִים בְּתוֹכְכֶם וְהָיוּ לָכֶם כְּאֶזְרָח בִּבְנֵי
.Iſrael tribuum medio in hæreditatē in cadent vobiſcum ,Iſrael
יִשְׂרָאֵל אִתְּכֶם יִפְּלוּ בְנַחֲלָה בְּתוֹךְ שִׁבְטֵי יִשְׂרָאֵל׃
dabitis *ibi* , *eo cum* peregrinus *peregrinans* qua tribu in , erit Et
23 וְהָיָה בַשֵּׁבֶט אֲשֶׁר־גָּר הַגֵּר אִתּוֹ שָׁם תִּתְּנוּ
.*Dominus* Dominus dixit ,ejus hæreditatem
נַחֲלָתוֹ נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִה׃

CAP. XLVIII. מח

manum ad aquilonem ad fine à : tribuum nomina hæc Et
1 וְאֵלֶּה שְׁמוֹת הַשְּׁבָטִים מִקְצֵה צָפוֹנָה אֶל־יַד
,Dammeſec terminus ,Henan ,Chaſar ,Chamath veniendo Chethlon viæ
דֶּרֶךְ־חֶתְלֹן לְבוֹא־חֲמָת חֲצַר עֵינָן גְּבוּל דַּמֶּשֶׂק
,mare orientalis *angulus* ei erunt Et .Chamath *manum* ad Aquilonem ad
צָפוֹנָה אֶל־יַד חֲמָת וְהָיוּ־לוֹ פְאַת־קָדִים הַיָּם
angulum ad uſque orientali *angulo ab* Dan terminum *ſuper* Et .una Dan
2 דָּן אֶחָד׃ וְעַל ׀ גְּבוּל דָּן מִפְּאַת קָדִים עַד־פְּאַת
,Orientali *angulo ab* Aſer terminum *ſuper* Et .una Aſer , *maris*
3 יָמָּה אָשֵׁר אֶחָד׃ וְעַל ׀ גְּבוּל אָשֵׁר מִפְּאַת קָדִמָה
terminum *ſuper* Et .una Naphthali , *maris angulum* ad uſque &
4 וְעַד־פְּאַת־יָמָּה נַפְתָּלִי אֶחָד׃ וְעַל ׀ גְּבוּל
.una Menaſſeh ,*maris angulum* ad uſque,Orientali *angulo ab* Naphthali
נַפְתָּלִי מִפְּאַת קָדְמָה עַד־פְּאַת־יָמָּה מְנַשֶּׁה אֶחָד׃
angulum ad uſque ,Orientali *angulo ab* ,Menaſſeh terminum *ſuper* Et
5 וְעַל ׀ גְּבוּל מְנַשֶּׁה מִפְּאַת קָדְמָה עַד־פְּאַת
,Orientali *angulo ab* Ephraim terminum *ſuper* Et .una Ephraim , *maris*
6 יָמָּה אֶפְרַיִם אֶחָד׃ וְעַל ׀ גְּבוּל אֶפְרַיִם מִפְּאַת קָדִים
.una Reuben , *maris angulum* ad uſque &
וְעַד־פְּאַת־יָמָּה רְאוּבֵן אֶחָד׃

Verſio VULG. LAT.

16 Emath, Berotha, Sabarim, quæ
eſt inter terminum Damaſci &
confinium Emath, domus Ti-
chon, quæ eſt juxta terminum
17 Auran. Et erit terminus à
Mari uſque ad atrium Enon ter-
minus Damaſci, & ab Aquilone
ad Aquilonem: terminus Emath
18 plaga Septentrionalis. Porrò
plaga Orientalis de medio Au-
ran, & de medio Damaſci, & de
medio Galaad, & de medio ter-
ræ Iſrael, Jordanis diſterminans
ad mare Orientale, metiemini
19 etiam plagam Orientalem. Pla-
ga autem Auſtralis meridiana, à
Thamar uſque ad aquas Contra-
dictionis Cades: & torrens uſ-
que ad Mare magnum: & hæc
eſt plaga ad Meridiem auſtra-
20 lis. Et plaga Maris, Mare ma-
gnum à confinio per directum,
donec venias Emath: hæc eſt
21 plaga Maris. Et dividetis ter-
ram iſtam vobis p tribus Iſrael:
22 Et mittetis eam in hæreditatem
vobis, & advenis, qui acceſſe-
rint ad vos, qui genuerint fili-
os in medio veſtrûm: & erunt
vobis ſicut indigenæ inter fili-
os Iſrael: vobiſcum divident
poſſeſſionem in medio tribuum
23 Iſrael. In tribu autem quacun-
que fuerit advena, ibi dabitis
poſſeſſionem illi, ait Dominus
Deus.

CAP. XLVIII.

1 ET hæc nomina tribuum à fini-
bus Aquilonis juxta viam Hetha-
lon pergentibus Emath, atrium
Enan terminus Damaſci ad A-
quilonem juxta viam Emath. Et
erit ei plaga Orientalis Mare,
2 Dan una. Et ſuper terminum
Dan, à plaga Orientali uſque
3 ad plagam Maris, Aſer una: Et
ſuper terminum Aſer, à plaga
Orientali uſque ad plagam Ma-
4 ris, Nephthali una. Et ſuper
terminum Nephthali, à plaga O-
rientali uſque ad plagam Maris,
5 Manaſſe una. Et ſuper termi-
num Manaſſe, à plaga Orientali
uſque ad plagam Maris, Ephraim
6 una. Et ſuper terminum E-
phraim, à plaga Orientali uſque
ad plagam Maris, Ruben una.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

16 Μααβθηρὰς Ἑβραμηλιὰμ ἀναμέσον ὁ-
ρίων Δαμασκοῦ ϗ ἀναμέσον ὁρίων Ἡ-
μαθεὶ, αὐλὴ τȣ͂ Σαυνὰν, αἵ εἰσιν ἐπ-
17 άνω τ͂ ὁρίων Αὐρανίτιδος. Ταῦτα τὰ
ὅρια ἀπὸ τῆς θαλάσσης, ἀπὸ τῆς αὐ-
λῆς τȣ͂ Αἰνὰν, ὅρια Δαμασκοῦ, ϗ τὰ
18 πρὸς (φ) Βοῤῥᾶν. Καὶ τὰ πρὸς ἀνατο-
λὰς ἀναμέσον τῆς (χ) Αὐρανίτιδος, ϗ
ἀναμέσον Δαμασκȣ͂, ϗ ἀναμέσον τῆς
Γαλααδίτιδος, ϗ ἀναμέσον τῆς γῆς
τȣ͂ Ἰσραὴλ, ὁ Ἰορδάνης διορίζει ἐπὶ τ͂
θάλασσαν, τὴν πρὸς ἀνατολὰς φοινι-
19 κῶνος· ταῦτα τὰ πρὸς ἀνατολάς. Καὶ
τὰ πρὸς Νότον ϗ Λίβα ἀπὸ Θαιμὰν
ϗ φοινικῶνος, ἕως ὕδατος Μαριμὼθ
(ψ) Καδὴμ, παρεκτεῖνον ἐπὶ τὴν θά-
λασσαν τὴν μεγάλην· τȣ͂το τὸ μέρος
20 Νότος ϗ Λίψ. Τȣ͂το τὸ μέρος τῆς
θαλάσσης τῆς μεγάλης (ω) ὁρίζει, ἕως
κατέναντι τῆς εἰσόδου Ἡμὰθ, ἕως εἰσ-
όδου αὐτȣ͂· ταῦτά ἐστι τὰ πρὸς θάλασ-
21 σαν Ἡμάθ. Καὶ (α) διαμερίσετε τὴν
γῆν ταύτην αὐτοῖς, (β) ταῖς φυλαῖς τ͂
22 Ἰσραήλ. Βαλεῖτε αὐτὴν ἐν κλήρῳ, ὑ-
μῖν ϗ τοῖς προσηλύτοις τοῖς (γ) παροι-
κȣ͂σιν ἐν μέσῳ ὑμῶν, οἵτινες ἐγέννησαν
υἱȣ͂ς ἐν μέσῳ ὑμῶν, ϗ ἔσονται (δ) ὑμῖν
ὡς αὐτόχθονες ἐν τοῖς υἱοῖς τȣ͂ Ἰσρα-
ὴλ· μεθ' ὑμῶν φάγονται ἐν κληρονομίᾳ
23 ἐν μέσῳ τ͂ (ε) φυλῶν τȣ͂ Ἰσραὴλ. Καὶ
ἔσονται ἐν φυλῇ προσηλύτων ἐν τοῖς προσηλύτοις τοῖς μετ' αὐτῶν·
ἐκεῖ δώσετε κληρονομίαν αὐτοῖς, λέγει κύριος (ζ) θεός.

MS. A. (φ) Βοῤῥᾶν κατὰ Βοῤῥᾶν, ϗ τὸ ὅριον Αἱμὰθ τὸ ὅριον Βοῤ-
ῥᾶ. Καὶ τὰ πρὸς (χ) Ὠρανίτιδος, (ψ) Καδὴς, (ω) διορίζει,
(α) * διεμέτρησεν (β) ϗ ταῖς (γ) προσοικȣ͂σιν (δ) ὑμῖν (ε) υἱῶν
Ἰσραὴλ, (ζ) ὁ θεός.

Maabtheras Hebrameliam inter 16
terminos Damaſci, & terminos
Emathi, atrium Saynam: quæ
ſunt ſupra terminos, Auraniti-
dis. Iſti ſunt termini à Mari: 17
ab atrio Ænan, termini Dama-
ſci, & qui ad Aquilonem.(r) Et 18
qui ad Orientem, inter Lora-
nitidem, & Damaſcum, & in-
ter Galaaditiden, & terram Iſ-
rael, Jordanis diſterminat ad
Mare, quod ad Orientem (ſ) pal-
meti. Iſti ad Orientem. Et, 19
qui ad Auſtrum, & Africum
à Thæman, & palmeto uſque
ad aquam Marimoth Cadem
extendens ad Mare magnum.
Hæc pars (t) Auſter, & Afri-
cus: Hæc pars Maris magni 20
diſterminat, uſque contra introi-
tum Emath, uſque ad introitum
ejus. Hi ſunt qui ad mare E-
math. Et metiemini hanc ter- 21
ram ipſis tribubus Iſrael: Mitte- 22
tis eã in ſortem vobis, & adve-
nis, qui incolunt in medio ve-
ſtri, qui genuerunt filios in medio
veſtri: & erunt (u) quaſi veſtri
indigenæ in filiis Iſrael. Vobiſ-
cum comedent in hæreditate in
medio tribuum Iſrael: Et erunt 23
in tribu advenarum inter adve-
nas, qui vobiſcum: ibi dabitis
hæreditatem eis, ait Dominus
Deus.

ΚΕΦ. μη'.

1 ΚΑὶ ταῦτα τὰ ὀνόματα τ͂ φυλῶν ἀ-
πὸ τῆς ἀρχῆς τῆς πρὸς Βοῤῥᾶν, κατὰ
τὸ (α) μέρος τῆς καταβάσεως τȣ͂ περι-
σχίζοντος ἐπὶ τὴν εἴσοδον τῆς Ἡμὰθ
αὐλῆς τȣ͂ (β) Αἰλὰμ, ὅριον Δαμασκȣ͂
πρὸς Βοῤῥᾶν κατὰ (γ) μέρος Ἡμὰθ αὐ-
λῆς. ϗ ἔσται αὐτοῖς τὰ πρὸς ἀνατολὰς
2 ἕως πρὸς θάλασσαν, Δὰν, μία. Καὶ
ἀπὸ τ͂ ὁρίων (δ) τȣ͂ Δὰν τὰ πρὸς ἀνα-
τολὰς, (ε) ἕως τ͂ πρὸς θάλασσαν, Ἀσὴρ,
3 μία. Καὶ ἀπὸ τ͂ ὁρίων (ζ) Ἀσὴρ, ἀπὸ
τ͂ πρὸς ἀνατολὰς, ἕως τ͂ πρὸς θάλασ-
4 σαν, Νεφθαλὶμ, μία. Καὶ ἀπὸ τ͂ ὁρί-
ων (η) Νεφθαλὶμ, ἀπὸ ἀνατολῶν, ἕως τ͂
5 πρὸς θάλασσαν, Μανασσῆ, μία. Καὶ ἀ-
πὸ τ͂ ὁρίων Μανασσῆ, ἀπὸ τ͂ πρὸς ἀνα-
τολὰς, (θ) τῶν πρὸς θάλασσαν, Ἐ-
6 φραὶμ, μία. Καὶ ἀπὸ τ͂ ὁρίων Ἐφραὶμ,
ἀπὸ τ͂ πρὸς ἀνατολὰς, ἕως τῶν πρὸς θάλασσαν, Ῥουβὴν μία.

MS. A. (α) μέτρον (β) Αἰνὰν, (γ) τὸ μέρος (δ) Δὰν πρὸς (ε) ἕως
πρὸς θάλασσαν, Ἀσὴρ, (ζ) Ἀσὴρ, (η) Νεφθαλὶ, ἀπὸ τ͂ πρὸς ἀνατο-
λὰς, ἕως (θ) ἕως τῶν

CAP. XLVIII.

ET hæc nomina tribuũ ab ini- 1
tio, quod ad Aquilonem, ſecun-
dùm partem deſcenſûs ipſius ab-
ſcindentis ad introitum Emath
atrii (a) Ælam, terminus Da-
maſci ad Aquilonem, ſecundùm
partem Emath atrii. Et erunt eis,
ea quæ ad Orientem uſque ad
Mare, Dan (b) una. Et à termi- 2
nis Dan, quæ ad Orientem uſque
ad Mare, Aſſer una. Et à termi- 3
nis Aſſer, ab iis quæ ad Orien-
tem uſque ad ea quæ ad Mare,
Nephthalim una. Et à terminis 4
Nephthalim, ab Oriente uſque
ad ea quæ ad Mare, Manaſſe una.
Et à terminis Manaſſe, ab iis quæ 5
ad Orientem ad ea quæ ad Mare,
Ephræm una. Et à terminis E- 6
phræm, ab iis quæ ad Orientem
uſque ad ea quæ ad Mare, Ruben
una.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 חֲמָת בֵּרוֹתָה סִבְרַיִם דִּי בֵּין תְּחוּם דַּמֶּשֶׂק וּבֵין תְּחוּם חֲמָת בְּרֵכַת עַנְבָאֵי דִּי עַל תְּחוּם
17 חַוְרָן ׃ וִיהֵי תְּחוּמָא מִן יַמָּא חֲצַר עֵינוֹן תְּחוּם דַּמֶּשֶׂק וְצִפּוּנָא צִפּוּנָא וּתְחוּם חֲמָת וְיָת
18 רוּחַ צִפּוּנָא ׃ וְרוּחַ מַדִּנְחָא מִבֵּין חַוְרָן וּמִבֵּין דַּמֶּשֶׂק וּמִבֵּין גִּלְעָד וּמִבֵּין אַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל
19 יַרְדְּנָא מִתְּחוּמָא דִּי עַל יַמָּא מַדִּנְחָא תְּמִשְׁחוּן וְיָת רוּחַ קִדּוּמָא ׃ וְרוּחַ עִבַר דָּרוֹמָא
20 מִירִיחוֹ עַד מֵי מַצּוּת רְקַם אַחְסָנָא לְיַמָּא רַבָּא וְיָת רוּחַ דָּרוֹמָא דְּדָרוֹמָא ׃ וְרוּחַ מַעַרְבָא
21 יַמָּא רַבָּא מִתְּחוּמָא עַד מְקַבִּיל מַעֲלָנָא דַחֲמָת דָּא רוּחַ מַעַרְבָא ׃ וְתִפְלְגוּן יָת אַרְעָא
22 הָדָא לְכוֹן לְשִׁבְטַיָּא דְיִשְׂרָאֵל ׃ וִיהֵי דְּתִפְלְגוּן יָתַהּ בְּאַחְסָנָא לְכוֹן וּלְגִיּוֹרַיָּא דִּי יִתְגַּיְּרוּן
בֵּינֵיכוֹן דְּאוֹלִידוּ בְנִין בֵּינֵיכוֹן וִיהוֹן לְכוֹן כְּיַצִּיבָא בִּבְנֵי יִשְׂרָאֵל עִמְּכוֹן יִפְלְגוּן בְּאַחְסָנָא
23 בְּגוֹ שִׁבְטֵי יִשְׂרָאֵל ׃ וִיהֵי שִׁבְטָא דִּי יִתְגַּיַּר גִּיּוֹרָא בְּגַוֵּיהּ תַּמָּן תִּתְּנוּן אַחְסַנְתֵּיהּ אֲמַר
יְיָ אֱלֹהִים ׃

מח

1 וְאִלֵּין שְׁמָהַת שִׁבְטַיָּא מִסְּיָפֵי צִפּוּנָא עַל תְּחוּם אוֹרַח חֶתְלוֹן מַעֲלָנָא דַחֲמָת חֲצַר
עֵינָן תְּחוּם דַּמֶּשֶׂק צִפּוּנָא עַל תְּחוּם חֲמָת וִיהוֹן לֵיהּ רוּחַ קִדּוּמָא מַעַרְבָא דָּן חָד ׃
2 וְעַל תְּחוּם דָּן מֵרוּחַ מַדִּנְחָא עַד רוּחַ מַעַרְבָא אָשֵׁר חָד ׃ וְעַל תְּחוּם אָשֵׁר 3
4 מֵרוּחַ מַדִּנְחָא וְעַד רוּחַ מַעַרְבָא נַפְתָּלִי חָד ׃ וְעַל תְּחוּם נַפְתָּלִי מֵרוּחַ מַדִּנְחָא
5 עַד רוּחַ מַעַרְבָא מְנַשֶּׁה חָד ׃ וְעַל תְּחוּם מְנַשֶּׁה מֵרוּחַ מַדִּנְחָא עַד רוּחַ מַעַרְבָא
6 אֶפְרַיִם חָד ׃ וְעַל תְּחוּם אֶפְרַיִם מֵרוּחַ מַדִּנְחָא וְעַד רוּחַ מַעַרְבָא רְאוּבֵן חָד ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Hamath, Beroth, Sebarim, quæ eſt inter terminum Damaſci, & inter termi- 16
num Hamath, piſcina Agbitica, quæ eſt juxta terminum Hauran. Et erit termin⁹ 17
à mari in Haſerenan & terminus Damaſci: & ab Aquilone in Aquilonem &
terminus Hamath & plaga Septentrionalis. Et plagam Orientalem de medio 18
Hauran, et de medio Damaſci, & de medio Gilgad, & de medio terræ Iſrael ad
Jordanem, à termino qui eſt ad mare Orientale metiemini, & plagam Ori-
entalem. Plagam autem lateris Auſtralis ab Jericho uſque ad aquas contradi- 19
ctionis Cades, poſſeſſionem uſque ad mare magnum, & plagam Meridiona-
lem Auſtri. Et à plaga Occidentali mare magnum, à termino uſque è regi- 20
one introitus Hamath: hæc eſt plaga Occidentalis. Et dividetis terram 21
iſtam vobis per tribus Iſrael. Et erit cùm dividetis eam vobis in hæredita- 22
tem & proſelytis qui peregrinantur inter vos, qui genuerunt filios inter vos,
& erunt vobis ſicut indigenæ in filiis Iſrael, vobiſcum divident poſſeſſionem
in medio tribuum Iſrael. Et in quacunque tribu fuerit proſelytus, ibi dabitis 23
ei poſſeſſionem, ait Dominus Deus.

CAP. XLVIII.

ET hæc ſunt nomina tribuum: à finibus Aquilonis juxta terminum viæ 1
Hethlon ad introitum Hamath, Haſarenan terminus Damaſci ab Aquilone:
juxta terminum Hamath erit ei à plaga Orientali in Occidentem, Dan una.
Et juxta terminum Dan à plaga Orientali uſque ad plagam Occidentalem, 2
Aſſer una. Et juxta terminum Aſſer à plaga Orientali uſque ad plagam Oc- 3
cidentalem, Neptali una. Et juxta terminum Neptali à plaga Orientali úſ- 4
que ad plagam Occidentalem, Manaſſe una. Et juxta terminum Manaſſe à 5
plaga Orientali uſque ad plagam Occidentalem, Ephraim una. Et juxta 6
terminum Ephraim à plaga Orientali uſque ad plagam Occidentalem, Ru-
ben una.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

16 * ܘܚܡܬ ܘܒܝܪܘܬ. ܘܣܦܪܘܝܡ ܕܒܝܢܬ ܬܚܘܡܐ ܕܕܪܡܣܘܩ. ܘܒܝܢܬ ܬܚܘܡܐ ܕܚܡܬ.
17 ܘܚܨܪ ܡܨܥܝܬܐ ܕܒܬܚܘܡܐ ܕܚܘܪܢ. * ܘܢܗܘܐ ܬܚܘܡܐ ܡܢ ܝܡܐ ܠܚܨܪ ܥܝܢܢ ܕܒܬܚܘܡܐ
ܕܕܪܡܣܘܩ. ܘܨܦܘܢ ܕܒܓܪܒܝܐ ܕܒܬܚܘܡܐ ܕܚܡܬ. ܗܕܐ ܗܝ ܦܢܝܬܐ ܕܓܪܒܝܐ. * ܘܡܢ ܦܢܝܬܐ 18
ܕܡܕܢܚܐ. ܡܢ ܒܝܬ ܚܘܪܢ. ܘܡܢ ܒܝܬ ܕܪܡܣܘܩ. ܘܡܢ ܒܝܬ ܓܠܥܕ ܘܡܢ ܒܝܬ ܐܪܥܐ
ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܝܘܪܕܢܢ ܡܬܚܡ ܥܠ ܝܡܐ ܡܕܢܚܝܐ ܕܬܡܪ. ܗܕܐ ܗܝ ܦܢܝܬܐ ܕܡܕܢܚܐ. * ܘܦܢܝܬܐ 19
ܕܬܝܡܢܐ. ܡܢ ܬܡܪ ܘܥܕܡܐ ܠܡܝܐ ܕܡܨܘܬܐ ܕܪܩܡ ܬܗܘܐ ܝܪܬܘܬܗ ܕܝܡܐ ܪܒܐ. * ܘܢܬܚܡ ܥܕܡܐ 20
ܠܢܟܚ ܕܒܡܥܠܢܐ ܕܚܡܬ. ܗܕܐ ܗܝ ܦܢܝܬܐ ܕܡܥܪܒܐ. * ܘܬܦܠܓܘܢܗ ܠܐܪܥܐ ܗܕܐ 21
ܠܫܪܒܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܘܡܐ ܕܦܠܓܬܘܢܗ ܒܝܪܬܘܬܐ ܠܟܘܢ. ܘܠܐܝܠܝܢ ܕܡܬܦܢܝܢ 22
ܠܘܬܝ. ܕܥܡܪܝܢ ܒܝܢܬܟܘܢ. ܘܐܘܠܕܘ ܒܢܝܐ ܒܝܢܬܟܘܢ. ܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ.
ܘܥܡܟܘܢ ܢܦܠܓܘܢ ܝܪܬܘܬܐ ܒܝܢܬ ܫܪܒܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܘܒܫܪܒܬܐ ܗܝ ܕܢܗܘܐ 23
ܐܝܢܐ ܕܡܬܦܢܐ ܠܘܬܝ. ܗܢܘܢ ܢܬܠܘܢ ܠܗ ܝܪܬܘܬܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܚ *

1 * ܘܗܠܝܢ ܫܡܗܐ ܕܫܒܛܐ. ܡܢ ܣܘܦܐ ܕܓܪܒܝܐ. ܠܓܢܒ ܐܘܪܚܐ ܕܚܝܬܠܘܢ ܕܡܥܠܢܐ ܕܚܡܬ
ܘܚܨܪ ܥܝܢܢ. ܠܬܚܘܡܐ ܕܕܪܡܣܘܩ ܓܪܒܝܐ ܕܥܠ ܝܕ ܚܡܬ. ܗܕܐ ܗܝ ܦܢܝܬܐ ܕܡܕܢܚܐ
ܝܡܐ. ܕܕܢ. * ܘܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܕܢ. ܡܢ ܦܢܝܬܐ ܕܡܕܢܚܐ ܘܥܕܡܐ ܠܦܢܝܬܐ ܕܡܥܪܒܐ. ܕܐܫܝܪ. 2
* ܘܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܐܫܝܪ. ܡܢ ܦܢܝܬܐ ܕܡܕܢܚܐ ܘܥܕܡܐ ܠܦܢܝܬܐ ܕܡܥܪܒܐ. ܕܢܦܬܠܝ. 3
* ܘܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܢܦܬܠܝ. ܡܢ ܦܢܝܬܐ ܕܡܕܢܚܐ ܘܥܕܡܐ ܠܦܢܝܬܐ ܕܡܥܪܒܐ. ܕܡܢܫܐ. 4
* ܘܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܡܢܫܐ. ܡܢ ܦܢܝܬܐ ܕܡܕܢܚܐ ܘܥܕܡܐ ܠܦܢܝܬܐ ܕܡܥܪܒܐ. ܕܪܘܒܝܠ. 5
* ܘܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܪܘܒܝܠ. ܡܢ ܦܢܝܬܐ ܕܡܕܢܚܐ ܘܥܕܡܐ ܠܦܢܝܬܐ ܕܡܥܪܒܐ. ܕܐܦܪܝܡ. 6

16 Et Hamath, Beruth, & Sepharvaim quæ eſt inter limites Damaſci, & inter limites Hamathæ : & Haſor media quæ eſt in limite Hauranis. 17 Eritque terminus à mari uſque ad Haſor-inan quæ eſt in limite Damaſci : & Sephion quæ eſt ad Aquilonem, ſita in termino Hamathæ : hæc eſt plaga Aquilonaris. 18 A plaga verò Orientali, ab Haurane, à Damaſco, à Gelaade, & à terra Iſraelis, atque Jordane circunſcribetur limes ſecus mare Orientale Thamaris : hæc eſt plaga Orientalis. 19 Plaga verò Meridionalis, à Thamare uſque ad aquas Meribath-Cadeſi *erit* poſſeſſio maris magni : 20 Et terminabitur uſque ad Nechah quæ eſt in aditu Hamathæ : hæc eſt plaga Occidentalis. 21 Dividetis ergò terram iſtam inter familias Iſraelis. 22 Cúmque diviſeritis eam in hæreditatem vobis & iis qui convertuntur ad me, qui indigenæ ſunt inter vos, & liberos procreaverunt inter vos; erunt ſicut filii Iſraelis, & vobiſcum ſortientur hæreditatem inter familias Iſraelis. 23 Et in familia illa in qua fuerit is qui ad me converſus eſt, dabunt ipſi hæreditatem, ait Dominus dominorum.

CAP. XLVIII.

1 HÆc ſunt nomina tribuum : Ab extremo Aquilone ſecus viam Hethronis quæ eſt in aditu ad Hamath & Haſor-inan, ad terminum Damaſci Aquilonarem qui eſt ſecus Hamath, (hæc eſt Orientalis plaga maris,) Danis erit. 2 Juxta terminum Danis, ab Orientali plaga uſque ad plagam Occidentalem, Aſeris. 3 Juxta terminum Aſeris, ab Orientali plaga uſque ad plagam Occidentalem, Nephtali. 4 Juxta terminum Nephtali, à plaga Orientali uſque ad plagam Occidentalem, Manaſſis. 5 Juxta terminum Manaſſis, à plaga Orientali uſque ad plagam Occidentalem, Rubelis. 6 Juxta terminum Rubelis, ab Orientali plaga uſque ad plagam Occidentalem, Aphremi.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

16 * وبين حدود دمسق اونان * الذام * ماوس * تيراس * افرام * ايليام * بين حدود ايماث * وبين
17 حدود دمسق اونان * ومن اونان التي هي فوق حدود حوران * هذه الحدود من البحر * ومن دار
18 ابان حدود دمسق * والذين نحو الجربياء في الجربياء * وحد ايماث حد الجربياء * والذين نحو
المشارق بين حوران * وبين دمسق * وبين جلعاد * وبين ارض اسرايل * الاردن يفصل الى بحر
19 الغور الذي نحو المشارق * هذه نحو المشارق * والتي نحو التيمن والغرب * من تامان والغور
20 الى ماء ماريموث قادس * ممتدا الى البحر الاعظم * هذه الناحية والتيمن والغرب * هذه ناحية البحر
21 الاعظم تفصل الى قبالة مدخل ايماث * الى مدخله * هذه هي التي نحو بحر ايماث * وقاس هذه
22 الارض لهم ولقبايل اسرايل * هذه تصنعوها لكم بالقرعة * وللدخلاء الذين يسكنون في
وسطكم * الذين ولدوا بنين في وسطكم * ويكونون لكم مثل اهل الارض في بني اسرايل * معكم
23 ياكلون بالميراث في وسط بني اسرايل * ويصيرون في قبيلة الدخلاء * في الدخلاء الذين معكم
هناك تعطون لهم ميراثا * يقول الرب الاله *

* الفصل الثامن والاربعون *

1 * وهذه اسماء القبايل من البدء الذي نحو الجربياء بقياس النزول الذي يسعى الى مدخل
ايماث دار ابان * حد دمسق نحو الجربياء في ناحية دار ايماث * ويكون لهم الذين نحو المشارق
2 حتى الى البحر * لدان واحدة * ومن حدود دان * من الذين نحو المشارق الى الذين نحو البحر *
4 اسير واحدة * ومن حدود اسير * من الذين نحو المشارق الى الذين نحو البحر * لنفتاليم واحدة *
4 5 * ومن حدود نفتاليم * من الذين نحو المشارق الى الذين نحو البحر * لمنسي واحدة * ومن
6 حدود منسي * من الذين نحو المشارق الى الذين نحو البحر * لافرام واحدة * ومن حدود افرام *
من الذين نحو المشارق الى الذين نحو البحر * لروبين واحدة *

16 *Et inter limites Damaſci-Unan, Eldam, Maos, Thiras, Ephram, Iliam, inter limites Emath, & inter limites Damaſci-Unan.* 17 *Ab Unan verò quæ eſt ſuper limites Horan, Hi ſunt limites à mari : & ab atrio Enan, limites Damaſci : & qui ſunt Aquilonem verſùs, in ipſo Aquilone : & terminus Emath, terminus Aquilonaris.* 18 *Eos autem qui ſunt Orientem verſùs inter Horan, & inter Damaſcum, inter Galaad, & inter terram Iſraelis; Jordanis ſeparabit uſque ad mare vallis quæ eſt Orientem verſùs : Hi Orientem verſùs.* 19 *Qui autem Meridiem verſùs & Occidentem, à Theman & ora maritima uſque ad aquam Marimoth Cades, tendendo verſùs mare maximum; ea plaga eſto Meridionalis & Occidentalis.* 20 *Hæc maximi plaga maris ſeparabit uſque ad oppoſitum ingreſſui Emath, ad ingreſſum ejus uſque : Hi ſunt qui ſpectant verſùs mare Emath.* 21 *Et menſus eſt terram hanc ipſis & familiis Iſraelis.* 22 *Hanc ſorte diſponetis vobis & indigenis qui habitant inter vos, qui filias genuerunt inter vos : & erunt apud vos ut terrigenæ inter filios Iſraelis. Vobiſcum comedent in hæreditate in medio filiorum Iſraelis.* 23 *Eruntque in familia indigenarum, inter indigenas qui vobiſcum ſunt : ibi dabitis eis hæreditatem, dicit Dominus Deus.*

CAP. XLVIII.

1 *ET Hæc ſunt nomina tribuum ab eo principio quod eſt Aquilonem verſùs juxta menſuram clivi qui ſeparat uſque ad introitum Emath atrii Enan, terminus Damaſci, verſùs Aquilonem, ad plagam atrii Emath. Et ipſorum erunt limites qui ſunt Orientem verſùs uſque ad mare, Dani una.* 2 *A terminis Danis, ab his qui ſunt Orientem verſùs uſque ad eos qui mare ſpectant, Aſer una.* 3 *A terminis Aſer, ab his qui ſunt Orientem verſùs ad eos uſque qui ſunt verſùs mare, Nephtalim una.* 4 *A terminis Nephtalim, ab his qui ſunt Orientem verſùs ad eos uſque qui verſùs mare, Manaſſi una.* 5 *A terminis Manaſſis, ab his qui ſunt Orientem verſùs ad eos uſque qui verſùs mare, Ephremo una.* 6 *A terminis Ephremi, ab his qui ſunt Orientem verſùs ad eos uſque qui ſunt verſùs mare, Rubeni una.*

יחזקאל: מח

,maris angulum ad uſque ,Orientali angulo ab Reuben terminum ſuper Et
וְעַל גְּבוּל רְאוּבֵן מִפְּאַת קָדִים עַד־פְּאַת יָמָּה 7
,Orientali angulo ab Jehudah terminum ſuper Et .una Jehudah
יְהוּדָה אֶחָד׃ וְעַל גְּבוּל יְהוּדָה מִפְּאַת קָדִים 8
quinque *elevabitis* quam ,oblatio erit ,*maris angulum* ad uſque
עַד־פְּאַת יָמָּה תִּהְיֶה הַתְּרוּמָה אֲשֶׁר־תָּרִימוּ חֲמִשָּׁה
partium una ſicut ,longitudinis &,latitudinis millium viginti &
וְעֶשְׂרִים אֶלֶף רֹחַב וְאֹרֶךְ כְּאַחַד הַחֲלָקִים
ſanctuarium erit Et .*maris angulum* ad uſque ,Orientali *angulo ab*
מִפְּאַת קָדִימָה עַד־פְּאַת־יָמָּה וְהָיָה הַמִּקְדָּשׁ
longitudo :Domino *elevabitis* quam Oblatio .ejus medio in
בְּתוֹכֹה׃ הַתְּרוּמָה אֲשֶׁר תָּרִימוּ לַיהוָה אֹרֶךְ 9
.millium decem latitudo & ,millium viginti & quinque
חֲמִשָּׁה וְעֶשְׂרִים אֶלֶף וְרֹחַב עֲשֶׂרֶת אֲלָפִים׃
Aquilonem ad ſacerdotibus ſanctitatis oblatio erit iſtis Et
וּלְאֵלֶּה תִּהְיֶה תְרוּמַת־הַקֹּדֶשׁ לַכֹּהֲנִים צָפוֹנָה 10
,millia decem latitudinis *mare ad* & ,millia viginti & quinque
חֲמִשָּׁה וְעֶשְׂרִים אֶלֶף וְיָמָּה רֹחַב עֲשֶׂרֶת אֲלָפִים
meridiem ad & ,millia decem latitudinis Orientem ad &
וְקָדִימָה רֹחַב עֲשֶׂרֶת אֲלָפִים וְנֶגְבָּה
ſanctuarium erit & :millia viginti & quinque longitudinis
אֹרֶךְ חֲמִשָּׁה וְעֶשְׂרִים אָלֶף וְהָיָה מִקְדַּשׁ־
,Sadoc filiis de *ſanctificato* Sacerdotibus .ejus medio in Domini
יְהוָה בְּתוֹכוֹ׃ לַכֹּהֲנִים הַמְקֻדָּשׁ מִבְּנֵי צָדוֹק 11
errando in ,erraverunt non qui ,meam cuſtodiam cuſtodierunt qui
אֲשֶׁר שָׁמְרוּ מִשְׁמַרְתִּי אֲשֶׁר לֹא־תָעוּ בִּתְעוֹת
eis erit Et .Levitæ erraverunt ſicut ,Iſrael *filios*
בְּנֵי יִשְׂרָאֵל כַּאֲשֶׁר תָּעוּ הַלְוִיִּם׃ וְהָיְתָה לָהֶם 12
terminum *ad* :ſanctitatum ſanctitas ,terræ oblatione de oblatum
תְּרוּמִיָּה מִתְּרוּמַת הָאָרֶץ קֹדֶשׁ קָדָשִׁים אֶל־גְּבוּל
quinque ,ſacerdotum terminum contra Levitæ Et .Levitarum
הַלְוִיִּם׃ וְהַלְוִיִּם לְעֻמַּת גְּבוּל הַכֹּהֲנִים חֲמִשָּׁה 13
.millium decem latitudinis & ,longitudinis millium viginti &
וְעֶשְׂרִים אֶלֶף אֹרֶךְ וְרֹחַב עֲשֶׂרֶת אֲלָפִים
decem latitudo & ,millium viginti & quinque longitudo Omnis
כָּל־אֹרֶךְ חֲמִשָּׁה וְעֶשְׂרִים אֶלֶף וְרֹחַב עֲשֶׂרֶת
neque ,*commutabit* non & ,eo ex venundabunt non Et .millium
אֲלָפִים׃ וְלֹא־יִמְכְּרוּ מִמֶּנּוּ וְלֹא־יָמֵר וְלֹא 14
.DOMINO ſanctitas quia :terræ *principium* *faciet tranſire*
יַעֲבוֹר רֵאשִׁית הָאָרֶץ כִּי־קֹדֶשׁ לַיהוָה׃
,quinque *facies ſuper* latitudine in *reſiduum* millia quinque Et
וַחֲמֵשֶׁת אֲלָפִים הַנּוֹתָר בָּרֹחַב עַל־פְּנֵי חֲמִשָּׁה 15
:ſuburbanū in &,habitaculū in civitatis *ipſum prophanum millium* viginti &
וְעֶשְׂרִים אֶלֶף חֹל־הוּא לָעִיר לְמוֹשָׁב וּלְמִגְרָשׁ
angulus ejus menſuræ hæ Et .ejus medio in civitas erit &
וְהָיְתָה הָעִיר בְּתוֹכֹה׃ וְאֵלֶּה מִדּוֹתֶיהָ פְּאַת 16
meridiei angulus & ,millium quatuor & quingentorum *Aquilonis*
צָפוֹן חֲמֵשׁ מֵאוֹת וְאַרְבַּעַת אֲלָפִים וּפְאַת־נֶגֶב
Orientali *angulo ab* & :millium quatuor & ,quingentorum
חֲמֵשׁ חֲמֵשׁ מֵאוֹת וְאַרְבַּעַת אֲלָפִים וּמִפְּאַת קָדִים
,quingentorum *maris angulus* & ;millium quatuor & ,quingentorum
חֲמֵשׁ מֵאוֹת וְאַרְבַּעַת אֲלָפִים וּפְאַת־יָמָּה חֲמֵשׁ מֵאוֹת
Aquilonem ad civitatis ſuburbanum erit Et .millium quatuor &
וְאַרְבַּעַת אֲלָפִים׃ וְהָיָה מִגְרָשׁ לָעִיר צָפוֹנָה 17
;ducentorum & quinquaginta meridiem ad & ,ducentorū & quinquaginta
חֲמִשִּׁים וּמָאתָיִם וְנֶגְבָּה חֲמִשִּׁים וּמָאתָיִם
quinquaginta *mare* ad & ;ducentorum & quinquaginta ,Orientem ad &
וְקָדִימָה חֲמִשִּׁים וּמָאתַיִם וְיָמָּה חֲמִשִּׁים
.ducentorum &
וּמָאתָיִם׃

Verſio VULG. LAT.

7 Et ſuper terminum Ruben, à
plaga Orientali uſque ad pla-
8 gam Maris, Juda una. Et ſu-
per terminum Juda, à plaga O-
rientali uſque ad plagam Ma-
ris, erunt primitiæ, quas ſepa-
rabitis, vigintiquinque millibus
latitudinis & longitudinis, ſic-
uti ſingulæ partes à plaga O-
rientali uſque ad plagam Maris:
& erit Sanctuarium in medio
9 ejus. Primitiæ, quas ſeparabi-
tis Domino: longitudo vigin-
tiquinque millibus, & latitudo
10 decem millibus. Hæ autem e-
runt primitiæ Sanctuarii ſacerdo-
tum: ad Aquilonem longitudi-
nis vigintiquinque millia, & ad
Mare latitudinis decem millia,
ſed & ad Orientem latitudinis
decem millia, & ad Meridiem
longitudinis viginti quinque
millia: & erit Sanctuarium
11 Domini in medio ejus. Sacer-
dotibus Sanctuarium erit de fi-
liis Sadoc, qui cuſtodierunt ce-
remonias meas, & non errave-
runt cùm errarent filii Iſrael,
12 ſicut erraverunt & Levitæ. Et
erunt eis primitiæ de primiti-
is terræ Sanctum ſanctorum, jux-
13 ta terminum Levitarum. Sed
& Levitis ſimiliter juxta fines
ſacerdotum vigintiquinque mil-
lia longitudinis, & latitudinis
decem millia. Omnis longitu-
do viginti & quinque millium,
14 & latitudo decem millium. Et
non venundabunt ex eo, neque
mutabunt, neque transferentur
primitiæ terræ, quia ſanctifica-
15 tæ ſunt Domino. Quinque mil-
lia autem quæ ſuperſunt in la-
titudine per vigintiquinque mil-
lia, profana erunt urbis in ha-
bitaculum, & in ſuburbana:
& erit civitas in medio ejus.
16 Et hæ menſuræ ejus: ad pla-
gam Septentrionalem, quingen-
ta & quatuor millia: & ad
plagam Meridianam, quingenta
& quatuor millia: & ad pla-
gam Orientalem, quingenta &
quatuor millia: & ad plagam
Occidentalem, quingenta &
17 quatuor millia. Erunt autem
ſuburbana civitatis ad Aquilo-
nem ducenta quinquaginta, &
ad Meridiem ducenta quinqua-
ginta, & ad Orientem ducenta
quinquaginta, & ad Mare ducen-
ta quinquaginta.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

7 Καὶ ἀπὸ τῶν ὁρίων Ῥουβὴν, ἀπὸ τῶν
πρὸς ἀνατολὰς, ἕως τῶν πρὸς θάλασ-
8 σαν, Ἰούδα, μία. Καὶ ἀπὸ τῶν ὁρίων
Ἰούδα, ἀπὸ τῶν πρὸς ἀνατολὰς (ι), ἔ-
σται ἡ ἀπαρχὴ τοῦ ἀφορισμοῦ πέντε καὶ
εἴκοσι χιλιάδες εὖρος, καὶ μῆκος, καθὼς
μία τῶν μερίδων ἀπὸ τῶν πρὸς ἀνατο-
λὰς, καὶ ἕως τῶν πρὸς θάλασσαν· καὶ
9 ἔσται τὸ ἅγιον ἐν μέσῳ αὐτῶν. (κ) Ἀπ-
αρχὴν, ἣν ἀφοριοῦσι τῷ (λ) κυρίῳ, μῆ-
κος πέντε καὶ εἴκοσι χιλιάδες, καὶ εὖρος
10 εἴκοσι (μ) πέντε χιλιάδες. Τούτων ἔσται
ἡ ἀπαρχὴ τῶν ἁγίων τοῖς ἱερεῦσι, πρὸς
Βοῤῥᾶν, πέντε καὶ εἴκοσι χιλιάδες· καὶ
πρὸς θάλασσαν, (ν) δέκα χιλιάδες· καὶ
πρὸς Νότον, (ξ) εἴκοσι καὶ πέντε χιλι-
άδες· καὶ τὸ ὄρος τῶν ἁγίων ἔσται ἐν
11 μέσῳ αὐτοῦ. Τοῖς ἱερεῦσι, τοῖς ἡγια-
σμένοις υἱοῖς Σαδδοὺκ, τοῖς φυλάσσουσι
τὰς φυλακὰς τοῦ οἴκου, οἵτινες οὐκ ἐπλα-
νήθησαν ἐν τῇ πλανήσει (ο) υἱῶν Ἰσρα-
ὴλ, ὃν τρόπον ἐπλανήθησαν οἱ Λευῖται.
12 Καὶ ἔσται αὐτοῖς ἡ ἀπαρχὴ δεδομένη ἐκ
τῶν ἀπαρχῶν (π) τῆς γῆς, ἅγιον ἁγίων
13 ἀπὸ τῶν (ρ) ὁρίων τῶν Λευιτῶν. Τοῖς
δὲ Λευίταις (σ) τὰ ἐχόμενα τῶν ὁρίων
τῶν ἱερέων, μῆκος πέντε καὶ εἴκοσι χι-
λιάδες, καὶ εὖρος δέκα χιλιάδες· πᾶν
τὸ μῆκος πέντε καὶ εἴκοσι χιλιάδες, καὶ
14 εὖρος εἴκοσι χιλιάδες. Οὐ πραθήσεται
ἐξ (τ) αὐτοῦ, οὐδὲ καταμετρηθήσεται, οὐ-
δὲ ἀφαιρεθήσεται τὰ (υ) πρωτογεννήμα-
τα τῆς γῆς, ὅτι ἅγιόν ἐστι τῷ κυρίῳ.
15 Τὰς δὲ πέντε χιλιάδας τὰς περισσὰς ἐ-
πὶ τῷ πλάτει ἐπὶ ταῖς πέντε καὶ εἴκοσι
χιλιάσι, προτείχισμα ἔσται τῇ πόλει εἰς
τὴν κατοικίαν, καὶ εἰς διάστημα αὐτοῦ·
16 καὶ ἔσται ἡ πόλις ἐν μέσῳ αὐτοῦ. Καὶ
ταῦτα τὰ μέτρα αὐτῆς· ἀπὸ τῶν πρὸς
Βοῤῥᾶν, πεντακόσιοι καὶ τετρακισχίλιοι, καὶ
ἀπὸ τῶν πρὸς Νότον, πεντακόσιοι καὶ
τέσσαρες χιλιάδες, καὶ ἀπὸ τῶν πρὸς ἀ-
νατολὰς, πεντακόσιοι καὶ τέσσαρες χιλι-
άδες, καὶ ἀπὸ τῶν πρὸς θάλασσαν, τε-
17 τρακισχιλίοις (φ) πεντακοσίοις. Καὶ ἔσται
διάστημα τῇ πόλει πρὸς (χ) Βοῤῥᾶν δι-
ακόσιοι πεντήκοντα, καὶ πρὸς Νότον δι-
ακόσιοι καὶ πεντήκοντα, καὶ πρὸς ἀνατο-
λὰς διακόσιοι πεντήκοντα, καὶ πρὸς θά-
λασσαν διακόσιοι πεντήκοντα.

Et à terminis Ruben, ab iis quæ 7
ad Orientem uſq; ad Mare, Ju-
da una. Et à terminis Juda, 8
ab iis quæ ad Orientem, *erunt*
primitiæ ſeparationis, quinq; &
viginti millia latitudo, & lon-
gitudo, ſicut una partium ab iis
quæ ad Orientem, & uſque ad
ea quæ ad Mare: & erit San-
ctuarium in medio eorum. (c)
Primitias, quas ſeparabunt Domi- 9
no, longitudo quinque & vigin-
ti millia, & latitudo (d) vigin-
ti quinque millia. (e) Ex his e- 10
runt primitiæ Sanctorum ſacerdo-
tibus: ad Aquilonem quinque
& viginti millia: & ad Mare
(f) decem millia: & ad Au-
ſtrum viginti & quinque millia:
& mons Sanctorum erit in me-
dio ejus. Sacerdotibus ſanctifi- 11
catis filiis Sadduc cuſtodientibus
cuſtodias domûs, qui non erra-
verunt in errore filiorum Iſrael,
ſicut erraverunt Levitæ. Et e- 12
runt eis primitiæ datæ de primi-
tiis terræ, Sanctum ſanctorum
de terminis Levitarum. Levitis 13
autem juxta fines ſacerdotum,
longitudo quinque & viginti
millia, & latitudo decem mil-
lia: omnis longitudo quinque
& viginti millia, (g) & latitu-
do viginti millia. Non vende- 14
tur ex eo, neque menſurabitur,
neq; auferentur primitiæ terræ,
quia ſanctum eſt Domino.
Quinque millia autem, quæ ſu- 15
perſunt in latitudine in quin-
que & viginti millibus, (h)
antemurale erit civitati in ha-
bitaculum, & in (i) ſpatium
ejus: Et erit civitas in medio
ejus. Et hæ menſuræ ejus: 16
ab iis quæ ad Aquilonem, quin-
genti & quater mille: & ab
bis, quæ ad Auſtrum, quin-
genti & quatuor millia: & ab
his quæ ad Orientem, quingen-
ti & quatuor millia; & ab his
quæ ad Mare, quater mille
quingenti. Et erit ſpatium ci- 17
vitati ad Aquilonem ducenti
quinquaginta, & ad Auſtrum
ducenti & quinquaginta, &
ad Orientem ducenti (k) quin-
quaginta, & ad Mare ducenti
quinquaginta.

MS. A. (ι) ἕως τῶν πρὸς θάλασσαν, ἡ ἀπαρχὴ (κ) Ἀπαρχὴ, (λ) κυρίῳ, πέντε καὶ (μ) καὶ πέντε (ν) πλάτος δέκα (ξ) μῆκος εἴκοσι (ο) τῶν υἱῶν (π) τῶν ἁγίων, ἅγιον (ρ) ἀπαρχῶν (σ) ἐχόμενα (τ) αὐτῶν, (υ) πρωτογεννήματα (φ) καὶ πεντακοσίοις. (χ) Βοῤῥᾶν, * πεντήκοντα, Καὶ τὸ περισσὸν τοῦ μήκους

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

וְעַל תְּחוּם רְאוּבֵן מֵרוּחַ מַדִּנְחָא עַד רוּחַ מַעַרְבָא יְהוּדָה חַד׃ וְעַל תְּחוּם יְהוּדָה מֵרוּחַ 7 8
מַדִּנְחָא עַד רוּחַ מַעַרְבָא תְּהֵי אַפְרָשׁוּתָא דְּתַפְרְשׁוּן עַסְרִין וַחֲמֵשׁ אַלְפִין פּוּתְיָא
וְאוּרְכָּא כְּחַד מִן חֻלָקַיָּא מֵרוּחַ מַדִּנְחָא עַד רוּחַ מַעַרְבָא וִיהֵי כֵּבַשׁ מַקְדְּשָׁא בְּגַוֵּיהּ׃
אַפְרָשׁוּתָא דִּי תַפְרְשׁוּן קֳדָם יְיָ אוּרְכָּא עַסְרִין וְחַמְשָׁא אַלְפִין וּפוּתְיָא עַסְרָא אַלְפִין׃ 9
וּלְאִלֵּין תְּהֵי אַפְרָשׁוּת קוּדְשָׁא לְכַהֲנַיָּא צִפּוּנָא עַסְרִין וְחַמְשָׁא אַלְפִין וּלְמַעַרְבָא פּוּתְיָא 10
עַסְרָא אַלְפִין וּלְמַדִּנְחָא פּוּתְיָא עַסְרָא אַלְפִין וּלְדָרוֹמָא אוּרְכָּא עַסְרִין וְחַמְשָׁא אַלְפִין
וִיהֵי כֵּבַשׁ מַקְדְּשָׁא דַיְיָ בְּגַוֵּיהּ׃ לְכַהֲנַיָּא דְקַדִּישִׁין מִבְּנֵי צָדוֹק דִּנְטַרוּ מַטְּרַת מֵימְרִי דְּלָא 11
טְעוֹ בְּטָעוּת בְּנֵי יִשְׂרָאֵל כְּמָא דִטְעוֹ לֵוָאֵי׃ וּתְהֵי לְהוֹן אַפְרָשׁוּתָא מֵאַפְרָשׁוּת אַרְעָא 12
קוֹדֶשׁ קוּדְשִׁין עַל תְּחוּם לֵוָאֵי׃ וְלֵוָאֵי לָקֳבֵל תְּחוּם כַּהֲנַיָּא עַסְרִין וְחַמְשָׁא אַלְפִין אוּרְכָּא 13
וּפוּתְיָא עַסְרָא אַלְפִין כָּל אוּרְכָּא עַסְרִין וְחַמְשָׁא אַלְפִין וּפוּתְיָא עַסְרָא אַלְפִין׃ וְלָא 14
יְזַבְּנוּן מִנֵּיהּ וְלָא יַחֲלִיף וְלָא יַעֲבִיר רֵישׁ אַרְעָא אֲרֵי קוּדְשָׁא קֳדָם יְיָ׃ וְחַמְשָׁא אַלְפִין 15
דְּאִשְׁתְּאָרוּ בְּפוּתְיָא עַל אַפֵּי עַסְרִין וְחַמְשָׁא אַלְפִין חוּלָא הוּא לְקַרְתָּא לְמוֹתַב וּלְרְוַח
וִיהֵי כֵּבַשׁ קַרְתָּא בְּגַוֵּיהּ׃ וְאִלֵּין מְשַׁחְתְּהָא לְרוּחַ צִפּוּנָא אַרְבַּע אַלְפִין וַחֲמֵשׁ מְאָה 16
וּלְרוּחַ דָּרוֹמָא אַרְבַּע אַלְפִין וַחֲמֵשׁ מְאָה וּלְרוּחַ מַדִּנְחָא אַרְבַּע אַלְפִין וַחֲמֵשׁ מְאָה
וּלְרוּחַ מַעַרְבָא אַרְבַּע אַלְפִין וַחֲמֵשׁ מְאָה׃ וִיהֵי רַוְחָא לְקַרְתָּא לְצִפּוּנָא 17
מָאתַן וְחַמְשִׁין וְדָרוֹמָא מָאתַן וְחַמְשִׁין וּמַדִּינְחָא מָאתַן וְחַמְשִׁין וּמַעַרְבָא מָאתָן
וְחַמְשִׁין׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et juxta terminum Ruben à plaga Orientali uſque ad plagam Occidenta- 7
lem, Juda una. Et juxta terminum Juda à plaga Orientali uſque ad plagam 8
Occidentalem erit ſeparatio quam ſeparabitis, viginti quinque millium lati-
tudinis, longitudinis verò ſicut unius ex aliis partibus à plaga Orientali uſque
ad plagam Occidentalem: & erit via ſtrata ſanctuarii in medio ejus. Sepa- 9
ratio quam ſeparabitis coram Domino, habebit longitudinem viginti quinque
millium, & latitudinem decem millium. Et his erit ſeparatio ſancta [*nempe*] 10
Sacerdotibus: ad Aquilonem, [*longitudinis*] viginti quinque millium, & ad
Occidentem latitudinis decem millium, & ad Orientem latitudinis de-
cem millium, & ad Auſtrum longitudinis viginti quinque millium: & erit
ſtrata via ſanctuarii in medio ejus. Sacerdotibus qui ſanctificati ſunt 11
de filiis Sadok qui cuſtodierunt cuſtodiam verbi mei, & non erraverunt
cùm errarent filii Iſrael, ſicut erraverunt Levitæ. Et erit eis ſepa- 12
ratio de ſeparatione terræ ſanctitas ſanctitatum juxta terminum Levi-
tarum. Et Levitis juxta terminum Sacerdotum viginti quinque mil- 13
lia longitudinis & latitudinis decem millia: omnis longitudo, viginti quin-
que millia, & latitudo decem millia. Et non venundabunt ex eo, nec commu- 14
tabunt; nec transferentur primitiæ terræ, quia ſanctificatæ ſunt coram Do-
mino. Et quinque millia quæ ſuperſunt in latitudine è regione viginti quin- 15
que millium, erunt prophana ad urbem, ad habitaculum & ad ſuburbana:
& erit ſtrata via civitatis in medio ejus. Et hæ ſunt menſuræ ejus: ad plagam 16
Septentrionalem quatuor millia & quingenta; & ad plagam Meridionalem
quatuor millia & quingenta; & à plaga Orientali quatuor millia & quin-
genta; & ad plagam Occidentalem itidem quatuor millia & quingenta. Et 17
ſuburbanum urbis ad Aquilonem erit ducentorum & quinquaginta; & ad
Auſtrum ducentorum & quinquaginta; & ad Orientem ducentorum &
quinquaginta; & ad Occidentem ducentorum & quinquaginta.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܐܦܪܝܡ ܀ ܡܢ ܙܘܝܐ ܕܡܕܢܚܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܙܘܝܐ ܕܡܥܪܒܐ. ܕܝܗܘܕܐ. 7
* ܘܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܝܗܘܕܐ ܀ ܡܢ ܙܘܝܐ ܕܡܕܢܚܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܙܘܝܐ ܕܡܥܪܒܐ ܀ ܢܗܘܐ 8
ܦܘܪܫܢܐ ܕܦܪܫܝܢ ܐܢܬܘܢ ܀ ܦܬܝܐ. ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ ܐܠܦܝܢ. ܘܐܘܪܟܐ. ܐܝܟ ܚܕ ܡܢ
ܡܢܘܬܐ. ܡܢ ܙܘܝܐ ܕܡܕܢܚܐ ܘܥܕܡܐ ܠܙܘܝܐ ܕܡܥܪܒܐ ܀ ܘܢܗܘܐ ܡܩܕܫܐ ܒܓܘܗ.
* ܦܘܪܫܢܐ ܕܦܪܫܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܡܪܝܐ ܀ ܐܘܪܟܐ. ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ ܐܠܦܝܢ. ܘܦܬܝܐ. 9
ܥܣܪܐ ܐܠܦܝܢ. * ܘܠܟܗܢܐ ܢܗܘܐ ܦܘܪܫܢܐ. ܕܩܘܕܫܐ. ܠܓܪܒܝܐ. ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ 10
ܐܠܦܝܢ. ܘܦܬܝܐ. ܥܣܪܐ ܐܠܦܝܢ. ܘܠܡܥܪܒܐ. ܥܣܪܐ ܐܠܦܝܢ. ܘܠܡܕܢܚܐ. ܥܣܪܐ
ܐܠܦܝܢ. ܘܠܬܝܡܢܐ. ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ ܐܠܦܝܢ. ܘܢܗܘܐ ܡܩܕܫܗ ܕܡܪܝܐ ܒܓܘܗ.
* ܘܢܗܘܐ ܠܟܗܢܐ ܕܡܩܕܫܝܢ ܡܢ ܒܢܝ ܨܕܘܩ ܕܢܛܪܘ ܡܛܪܬܝ. ܘܠܐ ܛܥܘ ܐܝܟ ܕܛܥܘ 11
ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܐܝܟ ܕܛܥܘ ܠܘܝܐ. * ܘܢܗܘܐ ܠܗܘܢ ܦܘܪܫܢܐ. ܡܢ ܦܘܪܫܢܗ ܕܐܪܥܐ ܀ 12
ܩܘܕܫ ܩܘܕܫܐ ܠܘܬ ܬܚܘܡܐ ܕܠܘܝܐ. * ܘܠܘܝܐ ܠܘܩܒܠ ܬܚܘܡܐ ܕܟܗܢܐ. ܐܘܪܟܐ 13
ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ ܐܠܦܝܢ. ܘܦܬܝܐ. ܥܣܪܐ ܐܠܦܝܢ. ܟܠܗ ܐܘܪܟܗܘܢ. ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ
ܐܠܦܝܢ. ܘܦܬܝܐ. ܥܣܪܐ ܐܠܦܝܢ. * ܠܐ ܢܙܒܢܘܢ ܡܢܗ. ܘܠܐ ܢܫܚܠܦܘܢ. ܘܠܐ ܢܥܒܪܘܢ 14
ܪܫܝܬܐ ܕܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܩܘܕܫܐ ܗܘ ܕܡܪܝܐ. * ܘܚܡܫܐ ܐܠܦܝܢ ܕܡܫܬܚܪܝܢ: ܥܠ ܦܘܡ ܥܣܪܝܢ 15
ܘܚܡܫܐ ܐܠܦܝܢ. ܢܗܘܘܢ ܠܡܕܝܢܬܐ ܠܥܡܘܪܐ. ܘܠܡܫܒܩܐ. ܘܬܗܘܐ. ܡܕܝܢܬܐ ܒܓܘܗ.
* ܘܗܠܝܢ ܡܫܘܚܬܗ. ܠܓܪܒܝܐ ܐܪܒܥܐ ܐܠܦܝܢ. ܘܚܡܫܡܐܐ. ܘܠܡܕܢܚܐ. ܐܪܒܥܐ 16
ܐܠܦܝܢ. ܘܚܡܫܡܐܐ. ܘܠܬܝܡܢܐ. ܐܪܒܥܐ ܐܠܦܝܢ. ܘܚܡܫܡܐܐ. ܘܠܡܥܪܒܐ. ܐܪܒܥܐ
ܐܠܦܝܢ. ܘܚܡܫܡܐܐ. * ܘܢܗܘܐ ܫܒܩܐ ܕܡܕܝܢܬܐ ܀ ܠܓܪܒܝܐ. ܡܐܬܝܢ. ܘܚܡܫܝܢ. 17
ܘܠܡܥܪܒܐ. ܡܐܬܝܢ. ܘܚܡܫܝܢ. ܘܠܬܝܡܢܐ. ܡܐܬܝܢ. ܘܚܡܫܝܢ. ܘܠܡܕܢܚܐ. ܡܐܬܝܢ.
ܘܚܡܫܝܢ.

Juxta terminum Aphremi, ab Orientali plaga 7
uſque ad plagam Occidentalem, Judæ.
Juxta terminum Judæ, ab Orientali plaga uſque 8
ad plagam Occidentalem, erit ſeparatio
quam ſeparaturi eſtis, latitudinis vigintiquinque
millium, longitudinis verò paris uni portionum:
& à plaga Orientali uſque ad plagã
Occidentalem erit Sanctuarium in medio hujus
longitudinis. Separationis quam ſeparaturi 9
eſtis Domino, longitudo ſit vigintiquinque
millium, latitudo verò decem millium.
Pro ſacerdotibus autẽ erit ſeparatio Sanctuarii; 10
Aquilonem verſùs vigintiquinque millia,
latitudine verò decem millia, & Occidentem
verſùs decem millia, & Orientem verſùs decem
millia, & Meridiem verſùs vigintiquinque
millia: in cujus medio erit Sanctuarium
Domini. Erit inquam, pro ſacerdotibus qui 11
cõſecrati fuerint ex filiis Sadoci, qui obſervaverunt
obſervationes meas, & non erraverunt
quemadmodum erraverunt filii Iſraelis,
& quemadmodum erraverunt Levitæ. Pro 12
iſtis erit ſeparatio de ſeparatione terræ in
Sanctum ſanctorum, juxta terminum Levitarum.
Et Levitæ erunt è regione termini ſacerdotum, 13
longitudine vigintiquinque millium,
latitudine verò decem millium: totum
ſpatium eorum vigintiquinque millia, latitudine
decem millium. Non vendent ex eo, 14
neque permutabunt, neque transferent primitias
terræ, quia ſacrum Domini eſt. Cæterùm 15
quinque millium *latitudo* quæ ſupereſt,
cum *longitudine* vigintiquinque millium, ſpatium
eſto pro urbe, civibus, & plateis, ut ſit
urbs in medio ipſius. Hæ autem erunt dimenſiones 16
ejus: Aquilonem verſùs quater
mille quingentorum, Orientem verſùs quater
mille quingentorum, Meridiem verſùs quater
mille quingentorum, & Occidentem verſùs
quater mille quingentorum. Urbis autem 17
platea erit Aquilonem verſùs ducentorum
quinquaginta, Occidentem verſùs ducentorũ
quinquaginta, Meridiem verſùs ducentorum
quinquaginta, & Orientem verſùs ducentorum
quinquaginta.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ومن حدود روبين * من الذين نحو المشارق الي الذين نحو البحر * ليهودا واحد * ومن 7 8
حدود يهودا * من الذين نحو المشارق الي الذين نحو البحر * بدو الاختصاص * خمسة
وعشرون الفا عرضا * والطول كمثل واحد من الاجزاء * من الذين نحو المشارق الي
الذين نحو البحر * ويكون القدس في وسطهم * البدو الذي يفرزوه للرب * خمسة 9
وعشرين الفا طولا * والعرض خمسة وعشرين الفا * يكون بدو هذه الاقداس 10
للكهنة * نحو الجربياء خمسة وعشرين الفا * والي البحر عرضا عشرة الف * والي الجنوب
طولا خمسة وعشرين الفا * وجبل الاقداس يكون في وسطه * للكهنة المقدسين بني 11
صادوق الذين يحرسون محارس البيت * الذين لم يضلوا بضلالة بني اسرائيل كما ضل
اللاويون * ويكون لهم البدو المعطي من اوايل الاقداس * قدس القديسين من اوايل 12
اللاويين * ويكون للاويين الي جانب حدود الكهنة * الطول خمسة وعشرين الفا * والعرض 13
عشرة الف * الطول كله خمسة وعشرون الفا * والعرض عشرون الفا * لا يباع منهم ولا يقاس 14
ولا ينزع اول غلات الارض * لانها قدس الرب هي * والخمسة الف الزايدة في العرض على 15
الخمسة وعشرين الفا * يكون بناء للمدينة للسكني ولمسافتها * ويكون المدينة في
وسطه * وهذه مقاديرها * من الذين نحو الجربياء اربعة الف وخمسماية * ومن الذين نحو 16
الجنوب اربعة الف وخمسماية * ومن الذين نحو المشارق اربعة الف وخمسماية * ومن الذين
نحو البحر اربعة الف وخمسماية * ويكون المسافة للمدينة نحو الجربياء مايتين 17
وخمسين * ونحو الجنوب مايتين وخمسين * ونحو المشارق مايتين وخمسين * ونحو
البحر مايتين وخمسين *

A terminis Rubenis, ab his qui ſunt 7
Orientem verſùs ad eos qui verſùs
mare, Judæ una. A terminis Judæ, ab 8
his qui ſunt Orientem verſùs ad eos qui
verſùs mare, erunt primitiæ dicationis,
vigintiquinq; millia latitudine, longitudo
verò par erit uni partium, ab iis terminis
qui ſunt Orientem verſùs ad eos
uſque qui mare verſùs: & erit ſanctuarium
in medio iſtorum. Primitiæ quas 9
Domino ſeparabunt, erunt vigintiquinque
millia longitudine, & latitudine
vigintiquinque millia. Primitiæ horum 10
ſacrorum, ſacerdotum erunt: Aquilonem
verſùs vigintiquinque millia;
mare verſùs quoad latitudinem, decem
millia; & Meridiem verſùs
quoad longitudinem, vigintiquinque
millia. Et mons ſanctorum erit in
medio ejus. Pro ſacerdotibus ſanctificatis, 11
filiis Sadoc cuſtodientibus
cuſtodias ædis, qui non aberrârunt
in errore filiorum Iſraelis, quemadmodum
aberrârunt Levitæ. Horum 12
erunt primitiæ conceſſæ ex primitiis
ſacrorum, ſanctum ſanctorum de primitiis
Levitarum. Erit autem pro Levitis 13
prope limites ſacerdotum, longitudo
vigintiquinque millia, & latitudo
decem millia: tota longitudo vigintiquinque
millia, & latitudo viginti
millia. Non vendentur ab eis, neque 14
menſurabuntur, neq; auferentur primitiæ
frugum terræ, quia ſacra Domino ſunt.
Quinque millia verò quæ in latitudine 15
excedunt vigintiquinque millia, erunt
pro urbis ædificio ad habitandum, &
pro ſpatio ipſius. Eritque urbs in medio
ejus: Atque hæ dimenſiones ejus: 16
Ab his quæ ſunt Aquilonem verſùs,
quater mille quingenti: ab his quæ
Meridiem verſùs, quater mille quingenti:
& ab his quæ mare verſùs, quater
mille quingenti. Et ſpatium urbis 17
erit, Aquilonem verſùs, ducenti quinquaginta:
Meridiem verſùs, ducenti
quinquaginta: Orientem verſùs, ducenti
quinquaginta: mare verſùs ducenti
quinquaginta.

יחזקאל : מח

, ſanctitatis oblationis regione è longitudine in reſiduum Et
18 וְהַנּוֹתָר בָּאֹרֶךְ לְעֻמַּת ׀ תְּרוּמַת הַקֹּדֶשׁ
erit & ,mare ad millia decem & ,Orientem ad millia decem
עֲשֶׂרֶת אֲלָפִים קָדִימָה וַעֲשֶׂרֶת אֲלָפִים יָמָּה וְהָיָה
panem in ejus proventus erit & : ſanctitatis oblationis regione è
לְעֻמַּת תְּרוּמַת הַקֹּדֶשׁ וְהָיְתָה תְבוּאָתֹה לְלֶחֶם
omnibus ex ei ſervient ,civitatis ſervitor Et .civitatis ſervitoribus
19 לְעֹבְדֵי הָעִיר׃ וְהָעֹבֵד הָעִיר יַעַבְדוּהוּ מִכֹּל
viginti & , quinque oblatio Omnis .Iſrael tribubus
20 שִׁבְטֵי יִשְׂרָאֵל׃ כָּל־הַתְּרוּמָה חֲמִשָּׁה וְעֶשְׂרִים
offeretis partem quartam : millibus viginti & quinque in millium
אֶלֶף בַּחֲמִשָּׁה וְעֶשְׂרִים אָלֶף רְבִיעִית תָּרִימוּ
reſiduum Et .civitatis poſſeſſionem ad ſanctitatis oblationem
21 אֶת־תְּרוּמַת הַקֹּדֶשׁ אֶל־אֲחֻזַּת הָעִיר׃ וְהַנּוֹתָר
poſſeſſionem ad & ,ſanctitatis oblationem ad inde & ,hinc prælato
לַנָּשִׂיא מִזֶּה ׀ וּמִזֶּה ׀ לִתְרוּמַת־הַקֹּדֶשׁ וְלַאֲחֻזַּת
oblationis millium viginti & ,quinque facies ad civitatis
הָעִיר אֶל־פְּנֵי חֲמִשָּׁה וְעֶשְׂרִים אֶלֶף ׀ תְּרוּמָה
quinque facies ſuper mare ad & ,Orientalem terminum ad uſque
עַד־גְּבוּל קָדִימָה וְיָמָּה עַל־פְּנֵי חֲמִשָּׁה
partes contra ; mare ad terminum ſuper millia viginti &
וְעֶשְׂרִים אֶלֶף עַל־גְּבוּל יָמָּה לְעֻמַּת חֲלָקִים
domus ſanctuarium & , ſanctitatis oblatio erit & : prælato
לַנָּשִׂיא וְהָיְתָה תְּרוּמַת הַקֹּדֶשׁ וּמִקְדַּשׁ הַבַּיִת
civitatis poſſeſſione de & ,Levitarum poſſeſſione de Et .ejus medio in
22 בְּתוֹכֹה׃ וּמֵאֲחֻזַּת הַלְוִיִּם וּמֵאֲחֻזַּת הָעִיר
inter & , Jehudah terminum inter :erit prælato quod medio in
בְּתוֹךְ אֲשֶׁר לַנָּשִׂיא יִהְיֶה בֵּין ׀ גְּבוּל יְהוּדָה וּבֵין
. ; tribuum reſiduum Et .erit prælato , Binjamin terminum
23 גְּבוּל בִּנְיָמִן לַנָּשִׂיא יִהְיֶה׃ וְיֶתֶר הַשְּׁבָטִים
.una Binjamin , maris angulum ad uſque Orientali angulo ab
מִפְּאַת קָדִימָה עַד־פְּאַת־יָמָּה בִּנְיָמִן אֶחָד׃
angulum ad uſque Orientali angulo ab Binjamin terminum ſuper Et
24 וְעַל ׀ גְּבוּל בִּנְיָמִן מִפְּאַת קָדִימָה עַד־פְּאַת־
angulo ab Simhon terminum ſuper Et .una Simhon , maris
25 יָמָּה שִׁמְעוֹן אֶחָד׃ וְעַל ׀ גְּבוּל שִׁמְעוֹן מִפְּאַת
ſuper Et .una Iſaſchar : maris angulum ad uſque Orientali
26 קָדִימָה עַד־פְּאַת־יָמָּה יִשָּׂשכָר אֶחָד׃ וְעַל ׀
: maris angulum ad uſque Orientali angulo ab Iſaſchar terminum
גְּבוּל יִשָּׂשכָר מִפְּאַת קָדִימָה עַד־פְּאַת־יָמָּה
Orientali angulo ab Zebulun terminum ſuper Et .una Zebulun
27 זְבוּלֻן אֶחָד׃ וְעַל ׀ גְּבוּל זְבוּלֻן מִפְּאַת קָדִימָה
Ghad terminum ſuper Et .una Ghad : maris angulum ad uſque
28 עַד־פְּאַת־יָמָּה גָּד אֶחָד׃ וְעַל גְּבוּל גָּד
aquæ Thamar à terminus erit & : meridiem ad Auſtri angulum ad
אֶל־פְּאַת נֶגֶב תֵּימָנָה וְהָיָה גְבוּל מִתָּמָר מֵי
Hæc .magnum mare ſuper hæreditas , Cades contradictionis
29 מְרִיבַת קָדֵשׁ נַחֲלָה עַל־הַיָּם הַגָּדוֹל׃ זֹאת
hæ & : Iſrael tribubus hæreditate de facietis cadere quam , terra
הָאָרֶץ אֲשֶׁר־תַּפִּילוּ מִנַּחֲלָה לְשִׁבְטֵי יִשְׂרָאֵל וְאֵלֶּה
: civitatis egreſſus hi Et .Dominus Dominus dixit ,earum portiones
30 מַחְלְקוֹתָם נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה׃ וְאֵלֶּה תּוֹצְאֹת הָעִיר
.menſura millium quatuor & ,quingentorum Aquilonis angulo ab
מִפְּאַת צָפוֹן חֲמֵשׁ מֵאוֹת וְאַרְבַּעַת אֲלָפִים מִדָּה׃
tres portæ , Iſrael tribuum nomina ſuper civitatis portæ Et
31 וְשַׁעֲרֵי הָעִיר אֶל־שְׁמוֹת שִׁבְטֵי יִשְׂרָאֵל שְׁעָרִים שְׁלוֹשָׁה
porta , una Jehudah porta , una Reuben porta : Aquilonem Ad
צָפוֹנָה שַׁעַר רְאוּבֵן אֶחָד שַׁעַר יְהוּדָה אֶחָד שַׁעַר
.una Levi
לֵוִי אֶחָד׃

Verſio VULG. LAT.

18 Quod autem reliquum fuerit in
longitudine ſecundùm primitias
Sanctuarii, decem millia in Ori-
entem, & decem millia in Oc-
cidentem, erunt ſicut primitiæ
Sanctuarii: & erunt fruges ejus
in panes his qui ſerviunt civita-
19 ti. Servientes autem civitati,
operabuntur ex omnibus tribu-
20 bus Iſrael. Omnes primitiæ vi-
gintiquinque millium, per vi-
gintiquinque millia in quadrum,
ſeparabuntur in primitias San-
ctuarii, & in poſſeſſionem civi-
21 tatis. Quod autem reliquum
fuerit, principis erit ex omni
parte primitiarum Sanctuarii, &
poſſeſſionis civitatis è regione
vigintiquinque millium primi-
tiarum uſque ad terminum Ori-
entalem: ſed & ad Mare, è re-
gione vigintiquinque millium
uſque ad terminum Maris, ſimi-
liter in partibus principis erit:
& erunt primitiæ Sanctuarii, &
Sanctuarium templi in medio e-
22 jus. De poſſeſſione autem Le-
vitarum, & de poſſeſſione civi-
tatis in medio partium princi-
pis: erit inter terminum Juda,
& inter terminum Benjamin, &
23 ad principem pertinebit. Et
reliquis tribubus: A plaga O-
rientali uſque ad plagam Occi-
24 dentalem, Benjamin una. Et
contra terminum Benjamin, à
plaga Orientali uſque ad pla-
gam Occidentalem, Simeon una.
25 Et ſuper terminum Simeonis, à
plaga Orientali uſque ad pla-
gam Occidentalem, Iſſachar una.
26 Et ſuper terminum Iſſachar, à
plaga Orientali uſque ad pla-
gam Occidentalem, Zabulon
27 una. Et ſuper terminum Zabu-
lon, à plaga Orientali uſque ad
28 plagam Maris, Gad una. Et ſu-
per terminum Gad, ad plagam
Auſtri in Meridie: & erit finis
de Thamar uſque ad aquas Con-
tradictionis Cades, hæreditas
29 contra mare Magnum. Hæc eſt
terra, quam mittetis in ſortem
tribubus Iſrael: & hæ partitio-
nes earum, ait Dominus Deus.
30 Et hi egreſſus civitatis: A pla-
ga Septentrionali quingentos &
31 quatuor millia menſurabis. Et
portæ civitatis ex nominibus tri-
buum Iſrael, portæ tres à Se-
ptentrione, porta Ruben una,
porta Juda una, porta Levi una.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

18 Καὶ τὸ περισσὸν τοῦ μήκους τὸ ἐχόμενον
τῶν ἀπαρχῶν τῶν ἁγίων, δέκα χιλιά-
δες πρὸς ἀνατολὰς, καὶ δέκα χιλιά-
δες πρὸς θάλασσαν· ϗ ἔσονται αἱ ἀπ-
αρχαὶ τοῦ ἁγίου, ϗ ἔσται τὰ (ψ) γενή-
ματα αὐτῆς εἰς ἄρτους τοῖς ἐργαζομέ-
19 νοις τὴν πόλιν. Οἱ δὲ ἐργαζόμενοι τὴν
πόλιν ἐργῶνται αὐτὴν ἐκ πασῶν τῶν
20 φυλῶν τοῦ Ἰσραήλ. Πᾶσα ἡ ἀπαρχὴ,
πέντε καὶ εἴκοσι χιλιάδες ἐπὶ πέντε ϗ
εἴκοσι χιλιάδας τετράγωνον· ἀφοριεῖτε
αὐτοῦ τὴν ἀπαρχὴν τοῦ ἁγίου, ἀπὸ τῆς
21 κατασχέσεως τῆς πόλεως. Τὸ δὲ περισ-
σὸν (ω) τῷ ἀφηγουμένῳ ἐκ τούτου ϗ ἐκ
τούτου ἀπὸ τῶν ἀπαρχῶν τοῦ ἁγίου, ϗ εἰς τὴν
κατάσχεσιν τῆς πόλεως, (α) ἐπὶ πέντε ϗ
εἴκοσι χιλιάδας μῆκος, ἕως τῶν ὁρίων
τῶν πρὸς ἀνατολὰς ϗ πρὸς θάλασσαν,
(β) ἐπὶ πέντε ϗ εἴκοσι χιλιάδας ἕως
τῶν ὁρίων τῶν πρὸς (γ) θάλασσαν, ἐχό-
μενα τῶν μερίδων τοῦ ἀφηγουμένου· ϗ
ἔσται ἡ ἀπαρχὴ τῶν ἁγίων ϗ τὸ ἁγί-
22 ασμα τοῦ οἴκου ἐν μέσῳ αὐτῆς. (δ) Καὶ
παρὰ τῶν Λευιτῶν, ἀπὸ τῆς κατασχέ-
σεως τῆς πόλεως ἐν μέσῳ τῶν ἀφηγου-
μένων ἔσται ἀναμέσον τῶν ὁρίων Ἰού-
δα, καὶ ἀναμέσον τῶν ὁρίων Βενια-
23 μὶν, (ε) ϗ τῶν ἀφηγουμένων ἔσται. Καὶ
τὸ περισσὸν τῶν φυλῶν, ἀπὸ τῶν πρὸς
ἀνατολὰς, ἕως τῶν πρὸς θάλασσαν,
14 Βενιαμὶν, μία. Καὶ ἀπὸ τῶν ὁρίων τοῦ Βενια-
μὶν, ἀπὸ τῶν πρὸς ἀνατολὰς, ἕως τῶν πρὸς
25 θάλασσαν, Συμεὼν, μία. Καὶ ἀπὸ τῶν
ὁρίων τῶν Συμεὼν, ἀπὸ τῶν πρὸς ἀ-
νατολὰς, ἕως τῶν πρὸς θάλασσαν,
26 Ἰσσάχαρ, μία. Καὶ ἀπὸ τῶν ὁρίων (ϛ) τοῦ
Ἰσσάχαρ, ἀπὸ τῶν πρὸς ἀνατολὰς, ἕως
τῶν πρὸς θάλασσαν, Ζαβουλὼν, μία.
27 Καὶ ἀπὸ τῶν ὁρίων (ζ) τῶν Ζαβουλὼν,
ἀπὸ τῶν πρὸς ἀνατολὰς, ἕως τῶν πρὸς
28 θάλασσαν, Γάδ, μία. Καὶ ἀπὸ τῶν
ὁρίων (η) τῶν Γάδ, ἀπὸ τῶν πρὸς ἀ-
νατολὰς, ἕως τῶν πρὸς Λίβα· ϗ ἔσται
τὰ ὅρια αὐτοῦ ἀπὸ Θαιμὰν, ϗ ὕδατος
Βαριμὼθ Κάδης, (θ) κληρονομίας, ἕως
29 τῆς θαλάσσης τῆς μεγάλης. Αὕτη ἡ γῆ,
ἣν βαλεῖτε, ἐν κλήρῳ ταῖς φυλαῖς
(ι) τοῦ Ἰσραήλ· ϗ οὗτοι οἱ διαμερισμοὶ
30 αὐτῶν, λέγει κύριος (κ) θεός. Καὶ αὗ-
ται αἱ διεκβολαὶ τῆς πόλεως αἱ πρὸς
Βοῤῥᾶν, τετρακισχίλιοι καὶ πεντακόσιοι
31 μέτρῳ. Καὶ αἱ πύλαι τῆς πόλεως,
ἐπ' ὀνόμασι (λ) φυλῶν τοῦ Ἰσραήλ. πύ-
λαι τρεῖς (μ) πρὸς Βοῤῥᾶν, πύλη Ῥου-
βὴν, μία, ϗ πύλη Ἰούδα, μία, ϗ πύλη Λευΐ, μία.

Quod autem ſupererit longitu- 18
dinis juxta primitias Sancto-
rum, decem millia ad Orien-
tem, & decem millia ad Ma-
re. Et (l) erunt primitiæ San-
ctuarii: & erunt genimina e-
jus in panes, in his qui operan-
tur civitati. Qui autem ope- 19
rantur civitati; operabuntur ei
ex omnibus tribubus Iſrael.
Omnes primitiæ quinque & 20
viginti millia per quinque &
viginti millia in quadrum: ſe-
parabitis ipſius primitias San-
ctuarii à poſſeſſione civitatis.
Quod autem ſupererit; duci 21
ex hoc, & ex hoc à primitiis
Sanctuarii, & in poſſeſſionē civi-
tatis, (m) ad quinq. & viginti
millia longitudo uſque ad ter-
minos eorum quæ ad Orientem &
ad Mare, ad quinque & vigin-
ti millia, uſque ad termi-
nos eorum quæ ad Mare,
juxta partes ducis: & erunt
primitiæ Sanctorum, & ſancti-
ficatio domûs in medio ejus.
Et de Levitis de poſſeſſione 22
civitatis in medio, Ducum erit
inter terminos Juda, & inter
terminos Benjamin, (n) &
Ducum erit. Et quod ſupereſt 23
tribuum, ab his quæ ad Orien-
tem, uſque ad ea quæ ad Mare,
Benjamin, una. Et à terminis 24
Benjamin, ab his quæ ad Ori-
entem, uſque ad ea quæ ad
Mare, Symeon una. Et à terminis 25
Symeon, ab his quæ ad Orientem,
uſque ad ea quæ ad Mare, Iſſa-
char una. Et à terminis Iſſa- 26
char, ab his quæ ad Orientem,
uſque ad ea quæ ad Mare, Za-
bulon una. Et à terminis Za- 27
bulon, ab his quæ ad Orientem,
uſque ad ea quæ ad Mare, Gad
una. Et à terminis Gad, ab 28
his quæ ad Orientem, uſque ad
ea quæ ad Africum; & e-
runt termini ejus à Theman,
& aquæ (o) Barimoth Cades,
(p) hæreditatis uſque ad mare
Magnum. Hæc eſt terra, quam 29
mittetis in ſortem tribubus Iſra-
el: & hæ ſunt partitiones
earum, ait Dominus Deus.
Et hi ſunt (q) egreſſus civita- 30
tis, qui ad Aquilonem, quater
mille & quingenti menſurâ.
Et portæ civitatis in nomini- 31
bus tribuum Iſrael. Portæ tres
ad Aquilonem, porta Ruben
una, & porta Juda una, &
porta Levi una.

MS. A. (ψ) γενήματα (ω) τοῦ ἀφηγουμένου ἐκ τούτου ἀπὸ τῶν ἀπαρχῶν τῶν ἁγίων, (α) κατὰ πρόσωπον ἐπὶ εἴκοσι ϗ πέντε χιλιάδας (β) ἐπὶ πρόσωπον ἐπὶ (γ) ἀνατολὰς, ϗ ἐχόμενα (δ) Ἀπὸ τῆς κατασχέσεως τῶν Λευιτῶν, ϗ ἀπὸ τῆς (ε) τῶν ἀφηγουμένων (ϛ) Ἰσσάχαρ, (ζ) Ζαβουλὼν, (η) Γάδ, ϗ ἕως πρὸς Λίβα· ϗ ἔσται ὅρια (θ) κληρονομία ἕως θαλάσσης (ι) Ἰσραήλ· (κ) ὁ θεός. (λ) τῶν φυλῶν (μ) αἱ πρὸς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

18 וּדְאִשְׁתְּאַר בְּאוֹרְכָּא לָקֳבֵל אַפְרָשׁוּת קוּדְשָׁא עַסְרָא אַלְפִין לְמַדִּנְחָא עַסְרָא
אַלְפִין לְמַעַרְבָא וִיהֵי לָקֳבֵל אַפְרָשׁוּת קוּדְשָׁא וּתְהֵי עֲלַלְתֵּיהּ לְמֵיכַל לְדִמְפַלְּחִין
19 בְּקַרְתָּא׃ וְדִמְפַלַּח בְּקַרְתָּא יִפְלְחוּנֵיהּ מִכָּל שִׁבְטֵי יִשְׂרָאֵל׃ וְכָל אַפְרָשׁוּתָא 20
עַסְרִין וַחֲמְשָׁא אַלְפָא וְעַסְרִין וַחֲמְשָׁא אַלְפָא מְרַבַּע תַּפְרְשׁוּן יַת אַפְרָשׁוּת
21 קוּדְשָׁא לְאַחְסָנַת קַרְתָּא׃ וּדְאִשְׁתְּאַר לְרַבָּא מִכָּא וּמִכָּא לְאַפְרָשׁוּת קוּדְשָׁא
וּלְאַחְסָנַת קַרְתָּא לָקֳבֵיל חֲמְשָׁא וְעַסְרִין אַלְפִין אַפְרָשׁוּתָא עַד תְּחוּם מַדִּנְחָא
וּמַעַרְבָא לָקֳבֵל עַסְרִין וַחֲמְשָׁא אַלְפִין עַד תְּחוּם מַעַרְבָא לָקֳבֵיל חַד מִן חֶלְקַיָּא
22 לְרַבָּא וּתְהֵי אַפְרָשׁוּת קוּדְשָׁא וְכֵבַשׁ מַקְדַּשׁ בֵּיתָא בְּגַוֵּיהּ׃ וּמֵאַחְסָנַת לֵוָאֵי
וּמֵאַחְסָנַת קַרְתָּא בִּמְצִיעִין דִּלְרַבָּא יְהֵי בֵּין תְּחוּם יְהוּדָה וּבֵין תְּחוּם בִּנְיָמִן
23 לְרַבָּא יְהֵי׃ וּשְׁאָר שִׁבְטַיָּא מֵרוּחַ מַדִּנְחָא וְעַד רוּחַ מַעַרְבָא בִּנְיָמִן חַד׃ וְעַל 24
25 תְּחוּם בִּנְיָמִן מֵרוּחַ מַדִּנְחָא עַד רוּחַ מַעַרְבָא שִׁמְעוֹן חַד׃ וְעַל תְּחוּם שִׁמְעוֹן
26 מֵרוּחַ מַדִּנְחָא וְעַד רוּחַ מַעַרְבָא יִשָּׂשכָר חַד׃ וְעַל־תְּחוּם יִשָּׂשכָר מֵרוּחַ מַדִּנְחָא
27 עַד רוּחַ מַעַרְבָא זְבוּלֻן חַד׃ וְעַל תְּחוּם זְבוּלֻן מֵרוּחַ מַדִּנְחָא עַד רוּחַ מַעַרְבָא
28 גָּד חַד׃ וְעַל תְּחוּם גָּד לְרוּחַ עֲבַר דָּרוֹמָא וִיהֵי תְּחוּם מִירִיחוֹ מֵי מַצּוּת רְקָם
29 אַחְסַנְתָּא לְיַמָּא רַבָּא׃ דָּא אַרְעָא דְּתִפְּלְגוּן לְאַחְסָנָא לְשִׁבְטַיָּא דְיִשְׂרָאֵל וְאִלֵּין
30 פַּלְגוּתְהוֹן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים׃ וְאִלֵּין מַפְּקָנֵי קַרְתָּא מֵרוּחַ צִפּוּנָא אַרְבַּע אַלְפִין וַחֲמֵשׁ
31 מְאָה מִשְׁחָא׃ וְתַרְעֵי קַרְתָּא עַל שְׁמָהַת שִׁבְטַיָּא דְיִשְׂרָאֵל תַּרְעִין תְּלָתָא פְּתִיחִין
לְצִפּוּנָא תְּרַע רְאוּבֵן חַד תְּרַע יְהוּדָה חַד תְּרַע לֵוִי חַד׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quod autem reliquum fuerit in longitudine ſecundùm ſeparationem ſancti- 18
tatis, viginti millia ad Orientem, & viginti millia ad Occidentem; & erit
juxta ſeparationem ſanctitatis, eritque fructus ejus in cibum his qui ſerviunt
in civitate. Et qui ſerviunt in civitate, operabuntur eam ex omnibus tri- 19
bubus Iſrael. *Et* omnis ſeparatio erit viginti quinque millium cum vigin- 20
ti quinque millibus: in quadrum ſeparabitis ſeparationem ſanctitatis in
poſſeſſionem civitatis. Et quod reliquum fuerit, principis erit hinc & in- 21
de in ſeparationem ſanctitatis & in poſſeſſionem civitatis è regione viginti
quinque millium ſeparationis uſque ad terminum Orientalem. Et ad Oc-
cidentem è regione viginti quinque millium uſque ad terminum Occiden-
tis è regione uniuſcujuſque partium, principis erit. Et erit ſeparatio ſan-
cta, & via ſtrata ſanctuarii domus in medio ejus. Et de poſſeſſione Le- 22
vitarum & de poſſeſſione civitatis in intermediis quæ principis erunt; quod
fuerit inter terminum Juda & terminum Benjamin, principis erit. Et reli- 23
quum tribuum, à plaga Orientali uſque ad plagam Occidentalem, Benja-
min una. Et juxta terminum Benjamin à plaga Orientali uſque ad plagam 24
Occidentalem, Simeon una. Et juxta terminū Simeon à plaga Orientali uſq; 25
ad plagam Occidentalem, Iſſachar una. Et juxta terminum Iſſachar à pla- 26
ga Orientali uſque ad plagam Occidentalem, Zabulon una. Et juxta ter- 27
minum Zabulon à plaga Orientali uſque ad plagam Occidentalem, Gad una.
Et juxta terminum Gad ad plagam partis Auſtralis; & erit terminus à Jeri- 28
co uſque ad aquas contradictionis Cades, hæreditas uſque ad mare ma-
gnum. Hæc eſt terra quam dividetis in poſſeſſionem tribubus Iſrael, & hæ 29
ſunt diviſiones eorum ait Dominus Deus. Hi autem ſunt egreſſus civitatis à 30
plaga Septentrionali, quatuor millia & quingenta in menſura. Et portæ ci- 31
vitatis erunt ſecundùm nomina tribuum Iſrael; tres portæ apertæ ad
Septentrionem; porta Ruben una, porta Juda una, porta Levi una.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܘܕܡܫܬܚܪ: ܠܘܩܒܠ ܦܘܪܫܢܐ ܕܩܘܕܫܐ .· ܥܣܪܐ ܐܠܦܝܢ ܠܡܕܢܚܐ. ܘܥܣܪܐ 18
ܐܠܦܝܢ ܠܡܥܪܒܐ. ܘܢܗܘܐ ܠܘܩܒܠ ܦܘܪܫܢܐ ܕܩܘܕܫܐ. ܘܬܗܘܐ ܥܠܠܬܗ ܠܡܐܟܘܠܬܐ
ܠܐܝܠܝܢ ܕܦܠܚܝܢ ܠܡܕܝܢܬܐ. * ܘܐܝܠܝܢ ܕܦܠܚܝܢ ܠܡܕܝܢܬܐ .· ܢܦܠܚܘܢ. ܡܢ ܟܠܗܘܢ 19
ܫܒܛܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܘܟܠܗ ܦܘܪܫܢܐ ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ ܐܠܦܝܢ. ܒܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ 20
ܐܠܦܝܢ. ܘܬܦܪܫܘܢ ܦܘܪܫܢܐ ܕܩܘܕܫܐ ܡܢ ܩܢܝܢܐ ܕܡܕܝܢܬܐ. * ܘܕܡܫܬܚܪ: ܢܗܘܐ 21
ܠܡܕܒܪܢܐ ܕܡܕܝܢܬܐ. ܘܡܢ ܦܘܪܫܢܐ ܕܩܘܕܫܐ. ܘܡܢ ܩܢܝܢܐ ܕܡܕܝܢܬܐ .· ܠܬܚܘܡܐ. ܕܡܕܢܚܐ
ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ ܐܠܦܝܢ. ܘܠܡܥܪܒܐ ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ ܐܠܦܝܢ. ܠܬܚܘܡܐ ܕܡܥܪܒܐ
ܠܘܩܒܠ ܦܠܓܘܬܗ ܕܡܕܒܪܢܐ. ܘܢܗܘܐ ܦܘܪܫܢܐ ܕܩܘܕܫܐ. ܘܡܩܕܫܐ ܕܒܝܬܐ ܒܓܘܗ.
* ܘܡܢ ܩܢܝܢܐ ܕܠܘܝܐ. ܘܡܢ ܩܢܝܢܐ ܕܡܕܝܢܬܐ .· ܡܨܥܬܗ ܕܡܕܒܪܢܐ. ܢܗܘܐ ܒܡܕܝܢܬܐ. 22
ܒܝܢܬ ܬܚܘܡܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܠܬܚܘܡܐ ܕܒܢܝܡܝܢ. * ܫܪܟܐ ܕܝܢ ܕܫܒܛܐ .· ܡܢ ܪܘܚܐ 23
ܕܡܕܢܚܐ. ܘܥܕܡܐ ܪܘܚܐ ܕܡܥܪܒܐ. ܕܒܢܝܡܝܢ. * ܘܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܒܢܝܡܝܢ .· ܘܡܢ 24
ܪܘܚܐ ܕܡܕܢܚܐ. ܘܥܕܡܐ ܪܘܚܐ ܕܡܥܪܒܐ ܕܫܡܥܘܢ. * ܘܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܫܡܥܘܢ .· ܡܢ 25
ܪܘܚܐ ܕܡܕܢܚܐ. ܘܥܕܡܐ ܪܘܚܐ ܕܡܥܪܒܐ. ܕܐܝܣܟܪ. * ܘܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܐܝܣܟܪ .· ܡܢ ܪܘܚܐ 26
ܕܡܕܢܚܐ. ܘܥܕܡܐ ܪܘܚܐ ܕܡܥܪܒܐ. ܕܙܒܘܠܘܢ. * ܘܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܙܒܘܠܘܢ .· ܡܢ ܪܘܚܐ ܕܡܕܢܚܐ. 27
ܘܥܕܡܐ ܪܘܚܐ ܕܡܥܪܒܐ ܕܓܕ. * ܘܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܓܕ. ܡܢ ܪܘܚܐ ܕܬܝܡܢܐ. ܢܗܘܐ ܬܚܘܡܗ. 28
ܡܢ ܬܡܪ. ܘܥܕܡܐ ܠܡܝܐ ܕܡܪܝܒܬ ܪܩܡ ܝܪܬܘܬܗ ܥܠ ܝܡܐ ܪܒܐ. * ܗܕܐ ܗܝ ܐܪܥܐ ܕܬܦܠܓܘܢܗ̇ 29
ܒܝܪܬܘܬܐ ܠܫܒܛܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܗܠܝܢ ܦܠܓܘܬܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. * ܘܗܠܝܢ 30
ܡܦܩܢܘܗ̇ ܕܡܕܝܢܬܐ. ܡܢ ܪܘܚܐ ܕܓܪܒܝܐ .· ܡܫܘܚܬܐ ܐܪܒܥܐ ܐܠܦܝܢ. ܘܚܡܫܡܐܐ.
* ܘܬܪܥܝܗ̇ ܕܡܕܝܢܬܐ .· ܥܠ ܫܡܗܬܐ ܕܫܒܛܐ ܕܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܠܓܪܒܝܐ. ܬܠܬܐ 31
ܬܪܥܝܢ. ܚܕ ܕܪܘܒܝܠ. ܘܚܕ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܚܕ ܕܠܘܝ.

Spatii verò quod ſupererit ex adverſo ſeparationis 18
Sanctuarii, *nempe* decem millium
verſùs Orientem, & decem millium verſùs
Occidentem, & erit ex adverſo ſeparationis
Sanctuarii; proventus ejus eſto in cibum iis
qui miniſtrant urbi. Ei enim qui urbi mini- 19
ſtrat, miniſtretur ab omnibus familiis Iſraelis.
Itaque tota ſeparatio erit vigintiquinque 20
millia per vigintiquinque millia: unde cùm
ſeparaveritis ſeparationem Sanctuarii à poſſeſſione
urbis, Quod ſupererit, erit recto- 21
ris urbis. A ſeparatione Sanctuarii & à poſſeſſione
urbis verſùs terminum Orientalem
erunt vigintiquinque millia, & Occidentem
verſùs vigintiquinque millia in termino Occidentali
è regione portionis rectoris: in cujus
medio erit ſeparatio Sanctuarii & Sanctuarium
domûs. Et inde à poſſeſſione Le- 22
vitarum & poſſeſſione urbis erit portio recto-
ris: erit in urbe inter terminum Judæ & terminum
Benjaminis. Quod autem ad reli- 23
quas tribus; à latere Orientali uſque ad latus
Occidentale, Benjaminis erit. Et juxta ter- 24
minum Benjaminis, à latere Orientali uſque
ad latus Occidentale, erit Simeonis. Juxta 25
terminum Simeonis, à latere Orientali uſque
ad latus Occidentale, Iſacharis. Juxta 26
terminum Iſacharis, à latere Orientali uſque
ad latus Occidentale, Zebolonis. Juxta ter- 27
minum Zebolonis, à latere Orientali uſque
ad latus Occidentale, Gadis. Denique juxta 28
terminum Gadis à latere Meridionali, erit
terminus ejus: à Thamare uſque ad aquas
Meribath-Cades erit hæreditas ejus ſecus
mare magnum. Hæc eſt terra quam divi- 29
detis in hæreditatem inter filios Iſraelis: atque
hæ ſunt portiones eorum, ait Dominus
dominorum. Hi autem ſunt exitus urbis: 30
A latere Aquilonis, menſura quatuor millium
quingentorum. Portæ urbis de nominibus 31
tribuum filiorum Iſraelis erunt: ad Aquilonem
tres portæ; una Rubelis, una Judæ, &
una Levi.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* وزيادة الطول الذي بجانب اوايل الاقداس * عشرة الف نحو المشارق * وعشرة الف نحو 18
البحر * وتكون اوايل القدس * وتكون غلاتها اخبازا لعمال المدينة * وعمال المدينة 19
يعملونها من جميع قبايل اسرايل * والبدء كله خمسة وعشرون على خمسة وعشرين الفا * 20
مربع * وافرزوا مبدا القدس نفسه من ضبط المدينة * وزيادة المقدم * من هذا ومن 21
اوايل الاقداس * والى ضبط المدينة * على الواجهة * على خمسة وعشرين الفا طولا * الى
الحدود التي نحو المشارق * والى البحر على الواجهة * على خمسة وعشرين الفا * الى الحدود التي
نحو المشارق * والى جانب اجراء المقدم * ويكون مبدا الاقداس وقدس البيت في وسطها *
* من ضبط اللاويين * ومن ضبط المدينة يكون في وسط المقدمين * بين حدود 22
يهودا وبين حدود بنيامين يكون للمقدمين * * وزيادة القبايل * من الذين نحو 23 24
المشارق الى الذين نحو البحر * لسمعان واحدة * ومن حدود سمعان * من الذين نحو المشارق 25
الى الذين نحو البحر * ايصاخر واحدة * ومن حدود ايصاخر * من الذين نحو 26
المشارق الى الذين نحو البحر * لزابلون واحدة * ومن حدود زابلون * من الذين 27
نحو المشارق الى الذين نحو البحر * لجاد واحدة * ومن حدود جاد والى الغرب * فتكون 28
حدوده من بامان * وماء باريموث قادس ميراث الى البحر الاعظم * هذه الارض التي 29
تصنعونها بالقرعة لقبايل اسرايل * وهذه حصصهم يقول الرب الاله * وهذه مخارج 30
المدينة التي نحو الجربياء * اربعة الف وخمسماية بالقياس * وابواب المدينة باسماء 31
قبايل اسرايل * الثلاثة ابواب التي نحو الجربياء * باب واحد لروبين * وباب واحد ليهودا *
وباب واحد للاوي *

Reſidua verò longitudo quæ eſt ſe- 18
cus primitias ſanctorum, decem mil-
lia verſùs Orientem, & decem mil-
lia verſùs mare; erunt primitiæ
Sanctuarii, & fruges ejus erunt in
panes pro operariis urbis. Operarii 19
autem urbis extruentes eam, erunt
ex omnibus tribubus Iſraelis. Igitur 20
primitiæ omnes erunt vigintiquinque
millia per vigintiquinque millia, qua-
dratæ. Et ſeparate primitias ejuſdem
Sanctuarii à poſſeſſione urbis. Quod au- 21
tem ſupereſt ex hoc & ex primitiis
ſanctorum uſque ad poſſeſſionem urbis,
principis erit è regione in vigintiquinque
millia longitudine, uſque ad terminos
qui ſunt Orientem verſùs, & uſque ad
mare è regione, in vigintiquinque mil-
lia, uſque ad terminos qui ſunt Orien-
tem verſùs, & uſque ad latus partium
principis: eruntque primitiæ ſacrorum,
& Sanctuarium ædis in medio eorum.
De poſſeſſione Levitarum: & de poſſeſ- 22
ſione urbis erit in medio principum; inter
limites Judæ, & inter limites Benja- 23
min erit pro principibus. Quod autem 24
ad reſiduas tribus: ab his quæ ſunt Ori-
entem verſùs uſque ad ea quæ mare
verſùs, Simeonis erit una. Et à ter- 25
minis Simeonis, ab his qui ſunt Orientem
verſùs, uſque ad eos qui mare verſùs,
Iſacharis una. A terminis Iſacharis, ab 26
his qui Orientem verſùs uſque ad eos qui
mare verſùs, Zabolonis una. A termi- 27
nis Zabolonis, ab his qui ſunt Orientem
verſùs uſque ad eos qui mare verſùs,
Gadis una. A terminis Gad uſque ad 28
Occidentem erunt termini ipſius à Thæ-
man & aquâ Barimoth-Cades, poſſeſ-
ſio, uſque ad mare maximum. Hæc eſt 29
terra quam ſorte diſponetis familiis Iſrae-
lis, & hæ ſunt portiones eorum, dicit
Dominus Deus. Et hi ſunt egreſſus ur- 30
bis qui reſpiciunt Aquilonem: quater
mille quingenti in menſura. Et portæ 31
urbis erunt de nominibus familiarum
Iſraelis: Trium portarum quæ ſunt
Aquilonem verſùs, porta una eſto Ru-
beni, porta una Judæ, & porta una
Levi.

דניאל : א

portæ & ,millium quatuor & quingentorum Orientalem *angulum* ad Et
32 וְאֶל־פְּאַת קָדִימָה חֲמֵשׁ מֵאוֹת וְאַרְבַּעַת אֲלָפִים וּשְׁעָרִים
.una Dan porta ,una Binjamin porta , una Joſeph porta Et .tres
שְׁלֹשָׁה וְשַׁעַר יוֹסֵף אֶחָד שַׁעַר בִּנְיָמִן אֶחָד שַׁעַר דָּן אֶחָד׃
,menſura millium quatuor & quingentorum *meridiei angulum* Et
33 וּפְאַת־נֶגְבָּה חֲמֵשׁ מֵאוֹת וְאַרְבַּעַת אֲלָפִים מִדָּה
,una Iſaſchar porta ,una Simhon porta :tres portæ &
וּשְׁעָרִים שְׁלֹשָׁה שַׁעַר שִׁמְעוֹן אֶחָד שַׁעַר יִשָּׂשכָר אֶחָד
quatuor & ,quingentorum , *maris Angulum* .una Zebulun porta
34 שַׁעַר זְבוּלֻן אֶחָד׃ פְּאַת־יָמָּה חֲמֵשׁ מֵאוֹת וְאַרְבַּעַת
, una Aſer porta ,una Ghad porta :tres eorū portæ ,millium
אֲלָפִים שַׁעֲרֵיהֶם שְׁלֹשָׁה שַׁעַר גָּד אֶחָד שַׁעַר אָשֵׁר אֶחָד
nomen &:millium decem octo *Circum* .una Naphthali porta
35 שַׁעַר נַפְתָּלִי אֶחָד׃ סָבִיב שְׁמֹנָה עָשָׂר אָלֶף וְשֵׁם־
.ibidem DOMINUS die ex civitatis
הָעִיר מִיּוֹם יְהוָה שָׁמָּה׃

Verſio VULG. LAT.

32 Et ad plagam Orientalem, quingentos & quatuor millia: & portæ tres, porta Joſeph una, porta Benjamin una, porta Dan una. 33 Et ad plagam Meridianam, quingentos & quatuor millia metieris: & portæ tres, porta Simeonis una, porta Iſſachar una, porta Zabulon una. 34 Et ad plagam Occidentalem, quingentos & quatuor millia: & portæ eorum tres, porta Gad una, porta Aſer una, porta Nephthali una. 35 Per circuitum, decem & octo millia: & nomen civitatis ex illa die, Dominus ibidem.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

32 Καὶ τὰ πρὸς ἀνατολὰς τετρακισχίλιοι καὶ πεντακόσιοι· καὶ πύλαι τρεῖς, πύλη Ἰωσὴφ, μία, καὶ πύλη Βενιαμὶν, μία, καὶ πύλη Δὰν, 33 μία. Καὶ τὰ πρὸς Νότον τετρακισχίλιοι καὶ πεντακόσιοι μέτρῳ· καὶ πύλαι τρεῖς, πύλη Συμεὼν, μία, καὶ πύλη Ἰσσάχαρ, μία, καὶ 34 πύλη Ζαβουλὼν, μία. Καὶ τὰ πρὸς θάλασσαν τετρακισχίλιοι καὶ πεντακόσιοι μέτρῳ· (ν) πύλαι τρεῖς, πύλη Γὰδ, μία, καὶ πύλη (ξ) Ἀσὴρ, μία, καὶ πύλη Νεφθα- 35 λὶμ, μία. Κύκλωμα, δέκα καὶ ὀκτὼ χιλιάδες. καὶ τὸ ὄνομα τῆς πόλεως, ἀφ' ἧς ἂν ἡμέρας (ο) γένηται, ἔσται τὸ ὄνομα αὐτῆς.

MS.A. (ν) καὶ πύλαι (ξ) Ἀσὴρ, (ο) γένηται, Κύριος ἐκεῖ, ἔσται τὸ Ἰεζεκιὴλ προφήτης.

32 *Et quà ad Orientem, quater mille, & quingenti: & portæ tres, porta Joſeph una, & porta Benjamin una, & porta Dan una.* 33 *Et quà ad Auſtrum, quater mille & quingenti menſurâ: & portæ tres, porta Symeon una, & porta Iſſachar una, & porta Zabulon una.* 34 *Et quà ad Mare, quater mille & quingenti menſurâ: portæ tres, porta Gad una, et porta Aſſer una, & porta Nephthalim una.* 35 *Circuitus, decem & octo millia. Et nomen civitatis, ex qua die facta fuerit, erit nomen ejus.*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

32 וּלְרוּחַ מַדִינְחָא אַרְבְּעָה אַלְפִין וַחֲמֵשׁ מְאָה וְתַרְעִין תְּלָתָא תְּרַע יוֹסֵף חַד תְּרַע בִּנְיָמִן
33 חַד תְּרַע דָּן חַד׃ וּלְרוּחַ דָּרוֹמָא אַרְבְּעָא אַלְפִין וַחֲמֵשׁ מְאָה מִשְׁחַן וְתַרְעִין תְּלָתָא תְּרַע
34 שִׁמְעוֹן חַד תְּרַע יִשָּׂשכָר חַד תְּרַע זְבוּלֻן חַד׃ וְרוּחַ מַעַרְבָא אַרְבַּע אַלְפִין וַחֲמֵשׁ מְאָה
35 תַּרְעֵיהוֹן תְּלָתָא תְּרַע גָּד חַד תְּרַע אָשֵׁר חַד תְּרַע נַפְתָּלִי חַד׃ סְחוֹר סְחוֹר תַּמְנַת עֲסַר
אַלְפִין וּשְׁמָא דְקַרְתָּא דְמִתְפְּרֵישׁ מִיּוֹמָא דִי יַשְׁרֵי יְיָ שְׁכִנְתֵּיהּ תַּמָּן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

32 Et ad plagam Orientalem quatuor millia & quingenta, & portæ tres; porta Joſeph una, porta Benjamin una, porta Dan una. 33 Et ad plagam Auſtralem quatuor millia & quingenta in menſura, & portæ tres; porta Simeon una, porta Iſſachar una, porta Zabulon una. 34 Et ad plagam Occidentalem quatuor millia & quingenta, & portæ tres; porta Gad una, porta Aſſer una, porta Neptali una. 35 Per circuitum decem & octo millia; & nomen civitatis declarabitur à die qua habitare fecerit Dominus majeſtatem ſuam ibi.

ספר דניאל

CAPUT I. א

.eam *ſuper* obſedit & , Jeruſalaim Babel rex Nebuchadneſar venit : Jehudah regis Jehojachim regni tertio anno In
1 בִּשְׁנַת שָׁלוֹשׁ לְמַלְכוּת יְהוֹיָקִים מֶלֶךְ־יְהוּדָה בָּא נְבוּכַדְנֶאצַּר מֶלֶךְ־בָּבֶל יְרוּשָׁלַםִ וַיָּצַר עָלֶיהָ׃
terra ea adduxit & , Dei domus vaſorum partem & , Jehudah regem Jehojachim ejus manum in Dominus dedit Et
2 וַיִּתֵּן אֲדֹנָי בְּיָדוֹ אֶת־יְהוֹיָקִים מֶלֶךְ־יְהוּדָה וּמִקְצָת כְּלֵי בֵית־הָאֱלֹהִים וַיְבִיאֵם אֶרֶץ־
,ſuorū eunuchorū *magiſtrum* Aſpenaz ad rex Dixitque .ſui dei theſauri domum intulit vaſa & : ſui dei domum, Sinhar
3 שִׁנְעָר בֵּית אֱלֹהָיו וְאֶת־הַכֵּלִים הֵבִיא בֵּית אוֹצַר אֱלֹהָיו׃ וַיֹּאמֶר הַמֶּלֶךְ לְאַשְׁפְּנַז רַב סָרִיסָיו
bonos & ,macula omnis *eis in* non quibus Pueros .principibus de & , regni ſemine de *&* ,Iſrael filiis de *introducendū ad*
4 לְהָבִיא מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל וּמִזֶּרַע הַמְּלוּכָה וּמִן־הַפַּרְתְּמִים׃ יְלָדִים אֲשֶׁר אֵין־בָּהֶם כָּל־מְאוּם וְטוֹבֵי
palatio in ſtandum ad ,*eis in vigor* quibus & ,*ſcientiam* intelligentes & ,ſcientiā ſcientes & ,ſapientia omni in *intelligentes* & , aſpectu
מַרְאֶה וּמַשְׂכִּילִים בְּכָל־חָכְמָה וְיֹדְעֵי דַעַת וּמְבִינֵי מַדָּע וַאֲשֶׁר כֹּחַ בָּהֶם לַעֲמֹד בְּהֵיכַל
, *regis* eſcæ *buccella de ſuo die in diei rem* rex eis conſtituit Et .Chaſdim linguam.&,*literaturam eos docendum ad* & : regis
5 הַמֶּלֶךְ וּלְלַמְּדָם סֵפֶר וּלְשׁוֹן כַּשְׂדִּים׃ וַיְמַן לָהֶם הַמֶּלֶךְ דְּבַר־יוֹם בְּיוֹמוֹ מִפַּת־בַּג הַמֶּלֶךְ
filiis de eos inter *fuit* Et .*regis facies ad* ſtarent eorum *extremitas* & : tribus annis eos *evehendum ad* &,ſui potus vino de &
6 וּמִיֵּין מִשְׁתָּיו וּלְגַדְּלָם שָׁנִים שָׁלוֹשׁ וּמִקְצָתָם יַעַמְדוּ לִפְנֵי הַמֶּלֶךְ׃ וַיְהִי בָהֶם מִבְּנֵי
Danieli impoſuit & : nomina eunuchorum princeps eis impoſuit Et .Hazarjah & , Miſael ,Chananjah ,Daniel ,Jehudah
7 יְהוּדָה דָּנִיֵּאל חֲנַנְיָה מִישָׁאֵל וַעֲזַרְיָה׃ וַיָּשֶׂם לָהֶם שַׂר הַסָּרִיסִים שֵׁמוֹת וַיָּשֶׂם לְדָנִיֵּאל
.nego-Habed ,Hazarjah & ; Meſach , Miſaeli & ; Sadrach ,Chananjah & ; Belthesaſar
בֵּלְטְשַׁאצַּר וְלַחֲנַנְיָה שַׁדְרַךְ וּלְמִישָׁאֵל מֵישַׁךְ וְלַעֲזַרְיָה עֲבֵד נְגוֹ׃

Verſio VULG. LAT.

Prophetia DANIELIS.

CAP. I.

1 ANno tertio regni Joakim regis Juda, venit Nabuchodonoſor rex Babylonis in Jeruſalem, & obſedit eam: 2 Et tradidit Dominus in manu ejus Joakim regem Juda, & partem vaſorum domûs Dei: & aſportavit ea in terram Sennaar in domum dei ſui, & vaſa intulit in domum Theſauri dei ſui. 3 Et ait rex Aſphenez præpoſito eunuchorū, ut introduceret de filiis Iſrael, & de ſemine regio & tyrannorum, 4 Pueros, in quibus nulla eſſet macula, decoros formâ, & eruditos omni ſapientiâ, cautos ſcientiâ, & doctos diſciplinâ, & qui poſſent ſtare in palatio regis, ut doceret eos literas, & linguam Chaldæorum. 5 Et conſtituit eis rex annonam per ſingulos dies de cibis ſuis, & de vino unde bibebat ipſe, ut enutriti tribus annis, poſteà ſtarent in conſpectu regis. 6 Fuerunt ergò inter eos de filiis Juda, Daniel, Ananias, Miſael, & Azarias. 7 Et impoſuit eis præpoſitus eunuchorum nomina; Danieli, Baltaſſar; Ananiæ, Sidrach; Miſaeli, Miſach; & Azariæ, Abdenago.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܬܘܒ ܟܬܒܐ ܕܕܢܝܐܝܠ ܢܒܝܐ *

* ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

1 * ܒܫܢܬ ܬܠܬ ܠܡܠܟܘܬܗ ܕܝܘܝܩܝܡ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ܂ ܐܬܐ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ
2 ܕܒܒܠ ܠܐܘܪܫܠܡ ܘܐܚܕܗ܂ * ܘܐܫܠܡܗ ܡܪܝܐ ܒܐܝܕܘܗܝ܂ ܘܠܝܘܝܩܝܡ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ܂
ܘܡܐܢܐ ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ܂ ܐܘܒܠ ܠܐܪܥܐ ܕܫܢܥܪ ܠܒܝܬ ܦܬܟܪܗ܂ ܘܡܐܢܐ ܐܥܠ
3 ܠܒܝܬ ܓܙܐ ܕܦܬܟܪܗ܂ * ܘܐܡܪ ܡܠܟܐ ܠܐܫܦܙ ܪܒ ܡܗܝܡܢܐ܂ ܕܢܝܬܐ ܡܢ ܒܢܝ
4 ܐܝܣܪܝܠ܂ ܘܡܢ ܙܪܥܐ ܕܡܠܟܘܬܐ܂ ܘܡܢ ܦܪܬܘܝܐ܂ * ܛܠܝܐ ܕܡܘܡܐ ܠܝܬ ܒܗܘܢ܂
ܘܫܦܝܪܝܢ ܒܚܙܘܗܘܢ܂ ܘܡܣܬܟܠܝܢ ܒܟܠܗ ܚܟܡܬܐ܂ ܘܝܕܥܝܢ ܝܕܥܬܐ܂ ܘܡܣܬܟܠܝܢ
ܡܕܥܐ܂ ܘܐܝܠܝܢ ܕܐܝܬ ܒܗܘܢ ܚܝܠܐ ܠܡܩܡ ܒܗܝܟܠܗ ܕܡܠܟܐ ܠܡܫܡܫܘܬܗ܂ ܘܠܡܠܦܘ
5 ܐܢܘܢ ܣܦܪܐ ܘܡܡܠܠܐ ܕܟܠܕܝܐ܂ * ܘܦܣܩ ܠܗܘܢ ܡܠܟܐ ܦܣܩܬܐ ܕܝܘܡܐ ܒܝܘܡܗ܂ ܡܢ
ܦܬܒܓܐ ܕܡܠܟܐ܂ ܘܡܢ ܚܡܪܐ ܕܫܬܐ܂ ܘܠܡܪܒܝܘ ܐܢܘܢ ܫܢܝܢ ܬܠܬ܂ ܘܗܝܕܝܢ
6 ܢܩܘܡܘܢ ܩܕܡ ܡܠܟܐ܂ * ܘܗܘܘ ܒܗܘܢ ܡܢ ܒܢܝ ܝܗܘܕܐ܂ ܕܢܝܐܝܠ܂ ܘܚܢܢܝܐ܂ ܘܡܝܫܐܝܠ܂
7 ܘܥܙܪܝܐ܂ * ܘܣܡ ܠܗܘܢ ܪܒ ܡܗܝܡܢܐ ܫܡܗܐ܂ ܩܪܐ ܠܕܢܝܐܝܠ ܒܠܛܫܨܪ܂ ܘܠܚܢܢܝܐ
ܫܕܪܟ܂ ܘܠܡܝܫܐܝܠ ܡܝܫܟ܂ ܘܠܥܙܪܝܐ ܥܒܕܢܓܘ܂

SEQUITUR

PROPHETIA DANIELIS PROPHETÆ.

CAP I.

1 ANno tertio regni Jojacimi regis Judæ, venit Nebuchadnoſar rex Babylonis Jeruſalem, & obſedit eam; 2 Et tradidit eam Dominus in manum ejus, atque Jojacimum regem Judæ: & vaſa domûs Domini aſportavit in terrã Senaar ad ædem idoli ſui, eadémque vaſa intulit in theſaurum idoli ſui. 3 Edixit etiam rex Aſphezo aulicorum præfecto, ut adduceret è filiis Iſrael, è ſemine regio, & ex Parthis, 4 Pueros in quibus nullum eſſet vitiū, qui decori eſſent aſpectu, ſapientiâ prudentes, ſcientiarū periti, & ingenio perſpicaces, quiq; idonei eſſent ad conſiſtendum in palatio regis ut miniſtrarent ei, & addiſcerent ſcripturã & linguam Chaldæorum. 5 Et conſtituit rex illis demenſū quotidianū de pulmentis regiis deq; vino ꝙ bibebat: ut cùm educati eſſent annis tribus, tum demum conſiſterent coram rege. 6 Inter hos fuerunt de filiis Judæ, Daniel, & Hanania, Miſael, & Azaria: 7 Quibus impoſuit præfectus aulicorū nomina; vocavit *enim* Danielem Blitſaſar, Hananiam Sedrach, Miſaelem Maiſach, & Azariam Ebednago.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

32 * ܘܠܡܕܢܚܐ ܡܫܘܚܬܐ ܐܪܒܥܐ ܐܠܦܝܢ ܘܚܡܫܡܐܐ. ܘܬܠܬܐ ܬܪܥܐ. ܚܕ ܕܝܘܣܦ.
33 ܘܚܕ ܕܒܢܝܡܝܢ. ܘܚܕ ܕܕܢ. * ܘܠܬܝܡܢܐ ܡܫܘܚܬܐ ܐܪܒܥܐ ܐܠܦܝܢ ܘܚܡܫܡܐܐ. ܘܬܠܬܐ
34 ܬܪܥܐ. ܚܕ ܕܫܡܥܘܢ. ܘܚܕ ܕܐܝܣܟܪ. ܘܚܕ ܕܙܒܘܠܘܢ. * ܘܠܡܥܪܒܐ ܡܫܘܚܬܐ ܐܪܒܥܐ
35 ܐܠܦܝܢ ܘܚܡܫܡܐܐ. ܘܬܠܬܐ ܬܪܥܐ. ܚܕ ܕܓܕ. ܘܚܕ ܕܐܫܝܪ. ܘܚܕ ܕܢܦܬܠܝ. * ܘܚܘܕܪܗ
ܬܡܢܬܥܣܪ ܐܠܦܝܢ. ܘܫܡܗ ܕܡܕܝܢܬܐ ܡܢ ܝܘܡܬܗ ܡܪܝܐ ܫܡܗ̇.

* ܫܠܡܬ ܢܒܝܘܬܗ ܕܚܙܩܝܐܝܠ *

Ad Orientem menſura quatuor milliũ quingentorum, & tres portæ; una Joſephi, una Benjaminis, & una Danis. 32
Ad Auſtrum menſura quater millium quingentorum, & tres portæ; una Simeonis, una Iſacharis, & una Zebolonis. 33
Ad Occidentem menſura quater millium quingentorum, & tres portæ; una Gadis, una Aſeris, & una Nephtali. 34
Ambitus ejus decem & octo millium: nomen autem urbis, inde à diebus ejus Dominum vocavit eam. 35

Prophetiæ Hezecielis finis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* والذين نحو المشارق اربعة الف وخمسمية * وثلثة ابواب * باب واحد ليوسف * وباب واحد 32
لبنيامين * وباب واحد لدان * والذين نحو التيمن اربعة الف وخمسمية بالقياس * وثلاثة ابواب * 33
باب واحد لسمعان * وباب واحد لايساخر * وباب واحد لزابلون * والذين نحو البحر اربعة الف 34
وخمسماية بالقياس * وثلثة ابواب * باب واحد لجاد * وباب واحد لاسير * وباب واحد لنفتاليم *
* والدائر ثمانية عشر الفا * واسم المدينة منذ ذلك اليوم يكون الرب * يكون هناك اسمها * 35
* تمت نبوة حزقيال بن بوزي * بمعونة الرب جل جلاله *

Qui autem ſunt Orientem verſùs, quater mille quingenti, & portæ tres: porta una Joſepho, porta una Benjamini, & porta una Dani. 32 *Qui Meridiem verſùs, quater mille quingenti in menſura, & portæ tres: porta una Simeoni, porta una Iſachari, & porta una Zaboloni.* 33 *Qui demum Occidentem verſùs, quater mille quingenti in menſura, & portæ tres: porta una Gadi, porta una Aſeri, & porta una Nephtalimo.* 34 *Ambitus eſt decem & octo millium. Nomen urbis ab ea die erit Dominus, erit ibi nomen ejus.* 35

Abſoluta eſt Prophetia Hezecielis filii Buzi, ſub auſpiciis Domini glorioſiſſimi.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

ΔΑΝΙΗ'Λ.

ΚΕΦ. α'.

1 (†)ἘΝ ἔτει τρίτῳ τῆς βασιλείας Ἰωακεὶμ βασιλέως Ἰούδα, ἦλθε Ναβουχοδονόσορ (*)ὁ βασιλεὺς Βαβυλῶνος εἰς
2 Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐπολιόρκει αὐτήν. Καὶ ἔδωκε κύριος ἐν χειρὶ αὐτοῦ τὸν Ἰωακεὶμ βασιλέα Ἰούδα, καὶ ἀπὸ μέρους τῶν σκευῶν οἴκου τοῦ θεοῦ· καὶ ἐνήνεγκεν αὐτὰ εἰς γῆν Σενναὰρ (α) οἴκου τοῦ θεοῦ αὐτοῦ, καὶ τὰ σκεύη εἰσήνεγ-
3 κεν εἰς τὸν (**)οἶκον θησαυροῦ τοῦ θεοῦ αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς τῷ Ἀσφανὲζ τῷ ἀρχιευνούχῳ αὐτοῦ, εἰσαγαγεῖν ἀπὸ τῶν υἱῶν τῆς αἰχμαλωσίας Ἰσραὴλ, καὶ ἀπὸ τοῦ σπέρματος τῆς βασιλείας, καὶ ἀπὸ τῶν (β) φορθομμὶν,
4 Νεανίσκους, οἷς οὐκ ἔστιν ἐν αὐτοῖς μῶμος, καὶ (***)καλοὺς τῇ ὄψει, καὶ συνιέντας ἐν πάσῃ σοφίᾳ, καὶ γινώσκοντας γνῶσιν, καὶ διανοουμένους φρόνησιν, καὶ οἷς ἐστιν ἰσχὺς ἐν αὐτοῖς (γ) ἑστάναι ἐν τῷ οἴκῳ ἐνώπιον τοῦ βασιλέως, καὶ διδά-
5 ξαι αὐτοὺς γράμματα καὶ γλῶσσαν Χαλδαίων. Καὶ διέταξεν αὐτοῖς ὁ βασιλεὺς τὸ τῆς ἡμέρας καθ' ἡμέραν, ἀπὸ τῆς τραπέζης τοῦ βασιλέως, καὶ ἀπὸ τοῦ οἴνου τοῦ ποτοῦ αὐτοῦ, καὶ θρέψαι αὐτοὺς ἔτη τρία, καὶ μετὰ ταῦτα στῆναι ἐνώ-
6 πιον τοῦ βασιλέως. Καὶ ἐγένετο (δ)ἐν αὐτοῖς ἐκ τῶν υἱῶν Ἰούδα, Δανιὴλ, καὶ Ἀνανίας, καὶ (ε) Ἀζαρίας, καὶ Μισαήλ.
7 Καὶ ἐπέθηκεν αὐτοῖς ὁ ἀρχιευνοῦχος ὀνόματα· τῷ Δανιὴλ (ς) Βαλτάσαρ, καὶ τῷ Ἀνανίᾳ Σεδρὰχ, καὶ τῷ Μισαὴλ (')Μισὰχ, καὶ τῷ Ἀζαρίᾳ Ἀβδεναγώ.

DANIEL.

CAP. I.

IN anno tertio regni (a) Joacim regis Juda, venit Nabuchodonoſor rex Babylonis in Hieruſalem, & obſidebat eam. 1 *Et dedit Dominus in manu ejus Joacim regem Juda, & de parte vaſorum domûs Dei. Et aſportavit ea in terram (b) Sennaar domûs dei ſui: & vaſa intulit in domum theſauri dei ſui.* 2 *Et ait rex Aſphanez præpoſito eunuchorum ſuorum, ut introduceret de filiis captivitatis Iſrael: et de (c) ſemine regni, & de (d) Phorthommin,* 3 *Pueros, (e) quibus non eſt in eis macula, & pulchros ſpecie, & intelligentes in omni ſapientia, & ſcientes ſcientiam, & cogitantes prudentiam, & quibus eſt robur in eis ſtandi in domo coram rege, & doceret eos literas, & linguam Chaldæorum,* 4 *(Et conſtituit eis rex quod in diem, quotidiè de menſa regis, & de vino potûs ipſius,) & nutriret eos annis tribus, & poſteà ſtarent in conſpectu regis.* 5 *Et fuerunt in eis de filiis Juda, Daniel, & Ananias, & Azarias, & Miſael.* 6 *Et impoſuit eis præpoſitus eunuchorum nomina; Danieli, Baltaſar; & Ananiæ, Sedrach; et Miſaeli, Miſach; et Aſariæ, Abdenago.* 7

MS.A. (†) ὍΡΑΣΙΣ β'. (*) βασιλεὺς (α) οἶκον (**)οἶκον τοῦ θεοῦ (β) πορθομμεὶν, (***)*καλοὶ (γ) ἑστάναι ἐνώπιον τοῦ (δ) αὐτοῖς (ε) Μισαὴλ καὶ Ἀζαρίας. (ς) Βαρτάσαρ, (')Μισάχ,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* تبتدئ بعون الله نبوة دانيال النبي *

* الفصل الاول *

* الاصحاح الاول *

* في السنة الثالثة من مملكة يواقيم ملك يهودا * اتى بختنصر ملك بابل الى ايروسليم 1
وحاصرها * ودفع الرب في يديه يواقيم ملك يهودا * ومن جزء اواني بيت الله * حملهم الى ارض 2
العراق بيت الهه * والاواني ادخلها الى بيت خزن الهه * وقال الملك لاصفانار رئيس 3
خصيانه * ان يدخل من بني سبي اسرائيل * ومن ذرية المملكة * ومن الاكرة * شبانا لا 4
يكون فيهم عيب * وحسني المنظر * وفهماء بكل حكمة * وعارفون بالعلم * وفطنون
بالذهن * ويكون فيهم قوة ليقوموا في البيت امام الملك * ويعلموهم الخطوط ولسان 5
الكلدانيين * ورتب لهم الملك وظيفة اليوم كل يوم من مائدة الملك ومن خمر مشربه * 6
ويربوهم ثلث سنين * وبعد ذلك يقفوا امام الملك * وكان فيهم من بني يهودا دانيال
وحنانيا وميصائيل وعزاريا * ووضع لهم رئيس الخصيان اسماء * لدانيال بلطشاصر * وسدراخ 7
ميصاخ * ولعزاريا عبدناغو *

INCIPIMUS, JUVANTE DEO, PROPHETIAM DANIELIS PROPHETÆ.

CAPUT PRIMUM.

Textus primus.

ANno tertio regni Joacimi regis Judæ, venit Bochtonaſſar rex Babelis Jeroſolymam, & obſedit eam: 1 *Tradiditque Dominus in manum ejus Joacimum regem Juda, & partem vaſorum domûs Dei, quæ aſportavit in terram Arac domum dei ſui, & vaſa intulit in domum theſauri dei ſui.* 2 *Et ait rex Aſphenazo principi eunuchorum ſuorum, ut introduceret de captivis Iſraelitis tam regiæ ſtirpis quàm agricolarum,* 3 *Adoleſcentulos in quibus nulla eſſet labes, pulchros aſpectu, omni ſapientiâ peritos, ſcientiâ præditos, & ingenio conſideratos, in quibus eſſet facultas ſtandi in palatio coram rege, & addiſcendi ſcripturam & linguam Chaldæorum.* 4 *Et aſſignavit eis rex demenſum diurnum quotidianum de menſa regia deque vino potûs ſui: ut annis tribus enutriti, poſtea ſiſterentur antè regem.* 5 *Inter eos fuerunt de filiis Judæ Daniel, Hanania, Miſael, & Azaria:* 6 *Quibus impoſuit princeps Eunuchorum nomina; Danieli Baltaſaſar, & Sedrach, Miſach, & Azariæ Abdenago.* 7

דניאל : ב

principe à requiſivit & : ej° *potuum* vino in & , *regis* eſcæ *buccella* in ſe pollueret non *quòd* ,ſuo corde *ſuper* Daniel propoſuit Et
וַיָּשֶׂם דָּנִיֵּאל עַל־לִבּוֹ אֲשֶׁר לֹא־יִתְגָּאַל בְּפַתְבַּג הַמֶּלֶךְ וּבְיֵין מִשְׁתָּיו וַיְבַקֵּשׁ מִשַּׂר 8
principis facies ad : miſericordias in &,miſericordiam in Danielem Deus dedit Et .ſe pollueret non *quòd* ,eunuchorum
הַסָּרִיסִים אֲשֶׁר לֹא יִתְגָּאָל׃ וַיִּתֵּן הָאֱלֹהִים אֶת־דָּנִיֵּאל לְחֶסֶד וּלְרַחֲמִים לִפְנֵי שַׂר 9
&,veſtram eſcam conſtituit qui , regem meũ dominum *ego Timens* :Danielẽ ad eunuchorũ princeps Dixitque .eunuchorũ
הַסָּרִיסִים׃ וַיֹּאמֶר שַׂר הַסָּרִיסִים לְדָנִיֵּאל יָרֵא אֲנִי אֶת־אֲדֹנִי הַמֶּלֶךְ אֲשֶׁר מִנָּה אֶת־מַאֲכַלְכֶם וְאֶת־ 10
condemnabitis &,veſtrã ſimilitudinẽ ſecũdũ qui , pueris *præ triſtes* veſtros vultus *videbit quid ad* qui : *veſtros potus*
מִשְׁתֵּיכֶם אֲשֶׁר לָמָּה יִרְאֶה אֶת־פְּנֵיכֶם זֹעֲפִים מִן־הַיְלָדִים אֲשֶׁר כְּגִילְכֶם וְחִיַּבְתֶּם
,Chananjah ,Daniel ſuper eunuchorum princeps conſtituerat quem , Melſar ad Daniel dixit Et .regi meum caput
אֶת־רֹאשִׁי לַמֶּלֶךְ׃ וַיֹּאמֶר דָּנִיֵּאל אֶל־הַמֶּלְצַר אֲשֶׁר מִנָּה שַׂר הַסָּרִיסִים עַל־דָּנִיֵּאל חֲנַנְיָה 11
.bibemus &,aquam &,comedemus & ,*ſeminibus* de nobis dent & : decem diebus tuos ſervos obſecro Tenta .Hazarjah & , Miſael
מִישָׁאֵל וַעֲזַרְיָה׃ נַס־נָא אֶת־עֲבָדֶיךָ יָמִים עֲשָׂרָה וְיִתְּנוּ־לָנוּ מִן־הַזֵּרֹעִים וְנֹאכְלָה וּמַיִם וְנִשְׁתֶּה׃ 12
cum fac , videris ſicut & : *regis* cibi *buccella* *veſcentium* puerorum aſpectus & ,noſtri aſpectus *tuas facies ad* videantur Et
וְיֵרָאוּ לְפָנֶיךָ מַרְאֵינוּ וּמַרְאֵה הַיְלָדִים הָאֹכְלִים אֵת פַּת־בַּג הַמֶּלֶךְ וְכַאֲשֶׁר תִּרְאֵה עֲשֵׂה עִם־ 13
,*bonus* eorũ aſpectus eſt viſus decem dierum fine in Et .decem diebus eos tentavit & : hoc *verbo* in eis *obaudivit* Et .tuis ſervis
עֲבָדֶיךָ׃ וַיִּשְׁמַע לָהֶם לַדָּבָר הַזֶּה וַיְנַסֵּם יָמִים עֲשָׂרָה׃ וּמִקְצָת יָמִים עֲשָׂרָה נִרְאָה מַרְאֵיהֶם טוֹב 14 15
,eorũ cibi portionẽ *ferens* Melſar fuit Et .*regis* cibi *buccella* *veſcentibus* pueris omnibus præ : carne pinguiores &
וּבְרִיאֵי בָּשָׂר מִן־כָּל־הַיְלָדִים הָאֹכְלִים אֵת פַּתְבַּג הַמֶּלֶךְ׃ וַיְהִי הַמֶּלְצַר נֹשֵׂא אֶת־פַּתְבָּגָם 16
omni in intellectũ &,ſcientiam Deus *eis* dedit ipſis quatuor iſtis pueris Et .*ſemina* eis *dans* & : eorũ *potuum*.vinũ &
וְיֵין מִשְׁתֵּיהֶם וְנֹתֵן לָהֶם זֵרְעֹנִים׃ וְהַיְלָדִים הָאֵלֶּה אַרְבַּעְתָּם נָתַן לָהֶם הָאֱלֹהִים מַדָּע וְהַשְׂכֵּל בְּכָל־ 17
:eos *introducendũ ad* , rex dixit quibus dierum fine in Et .ſomnia & *viſione omni in* fecit intelligere Danielẽ & :ſapientiã &,libro
סֵפֶר וְחָכְמָה וְדָנִיֵּאל הֵבִין בְּכָל־חָזוֹן וַחֲלֹמוֹת׃ וּלְמִקְצָת הַיָּמִים אֲשֶׁר־אָמַר הַמֶּלֶךְ לַהֲבִיאָם 18
illis univerſis de eſt inventus non & , rex eis cum eſt locutus Et .Nebuchadneſar *facies ad* eunuchorum princeps eos introduxit &
וַיְבִיאֵם שַׂר הַסָּרִיסִים לִפְנֵי נְבֻכַדְנֶצַּר׃ וַיְדַבֵּר אִתָּם הַמֶּלֶךְ וְלֹא נִמְצָא מִכֻּלָּם 19
quod ,intelligentiæ ,ſapientiæ verbum omne Et .*regis* *facies ad* ſteterunt & : Hazarjah & , Miſael ,Chananjah ,Daniel ſicut
כְּדָנִיֵּאל חֲנַנְיָה מִישָׁאֵל וַעֲזַרְיָה וַיַּעַמְדוּ לִפְנֵי הַמֶּלֶךְ׃ וְכֹל דְּבַר חָכְמַת בִּינָה אֲשֶׁר־ 20
fuit Et .ſuo regno omni in qui ,*ſophos* ,genethliacos omnes ſuper *manibus* decem eos invenit & : rex eis ab *quæſivit*
בִּקֵּשׁ מֵהֶם הַמֶּלֶךְ וַיִּמְצָאֵם עֶשֶׂר יָדוֹת עַל כָּל־הַחַרְטֻמִּים הָאַשָּׁפִים אֲשֶׁר בְּכָל־מַלְכוּתוֹ׃ וַיְהִי 21
.regis Chores *unum* annum ad uſque Daniel
דָּנִיֵּאל עַד־שְׁנַת אַחַת לְכוֹרֶשׁ הַמֶּלֶךְ׃

CAP. II. ב

eſt fractus ej° ſomnus &,ej° ſpiritus *ſe terruit vicibus* & : ſomnia Nebuchadneſar ſomniavit Nebuchadneſar regni ſecundo anno *in* Et
וּבִשְׁנַת שְׁתַּיִם לְמַלְכוּת נְבֻכַדְנֶצַּר חָלַם נְבֻכַדְנֶצַּר חֲלֹמוֹת וַתִּתְפָּעֶם רוּחוֹ וּשְׁנָתוֹ נִהְיְתָה 1
,venerũt & :ſua ſomnia regi *indicandũ ad* ,Chaſdim & , maleficos & ,*ſophos* & ,genethliacos *vocandũ ad* rex dixit Et .*eo ſuper*
עָלָיו׃ וַיֹּאמֶר הַמֶּלֶךְ לִקְרֹא לַחַרְטֻמִּים וְלָאַשָּׁפִים וְלַמְכַשְּׁפִים וְלַכַּשְׂדִּים לְהַגִּיד לַמֶּלֶךְ חֲלֹמֹתָיו וַיָּבֹאוּ 2
.ſomnium *ſciendum ad*,me° ſpiritus *ſe terruit vicibus* &:ſomniavi Somniando : rex eis Dixitque .*regis* *facies ad* ſteterũt &
וַיַּעַמְדוּ לִפְנֵי הַמֶּלֶךְ׃ וַיֹּאמֶר לָהֶם הַמֶּלֶךְ חֲלוֹם חָלָמְתִּי וַתִּפָּעֶם רוּחִי לָדַעַת אֶת־הַחֲלוֹם׃ 3

Verſio VULG. LAT.

Propoſuit autem Daniel in corde ſuo, ne pollueretur de 8
menſa regis,neque de vino potûs ejus:& rogavit eunuchorum
præpoſitum ne contaminaretur. Dedit autem Deus 9
Danieli gratiam & miſericordiam in conſpectu principis
eunuchorum. Et ait princeps eunuchorum ad Danielem; 10
Timeo ego dominum meum regem,qui conſtituit vobis cibum
& potum : qui ſi viderit vultus veſtros macilentiores
præ cæteris adoleſcentibus coævis veſtris, condemnabitis
caput meum regi. Et dixit Daniel ad Malaſar,quem con- 11
ſtituerat princeps eunuchorum ſuper Danielem , Ananiam,Miſaelem,& Azariam ; Tenta nos,obſecro, ſervos tuos 12
diebus decem, & dentur nobis legumina ad veſcendum,
& aqua ad bibendum : Et contemplare vultus noſtros, 13
& vultus puerorum qui veſcuntur cibo regio : & ſicut videris,
facies cum ſervis tuis. Qui, audito ſermone hujuſcemodi, 14
tentavit eos dieb° decem. Poſt dies autem decẽ, 15
apparuerunt vultus eorum meliores & corpulentiores præ
omnibus pueris, qui veſcebantur cibo regio. Porrò Ma- 16
laſar tollebat cibaria,& vinum potûs eorum: dabâtque eis
legumina. Pueris autem his dedit Deus ſcientiam & di- 17
ſciplinam,in omni libro & ſapientia : Danieli autem intelligentiam
omnium viſionum & ſomniorum. Completis 18
itaque diebus,poſt quos dixerat rex ut introducerentur:introduxit
eos præpoſitus eunuchorum in conſpectu Nabuchodonoſor.
Cúmque eis locutus fuiſſet rex, non ſunt in- 19
venti tales de univerſis,ut Daniel, Ananias,Miſael,& Azarias:
& ſteterunt in conſpectu regis. Et omne verbum ſa- 20
pientiæ & intellectûs, quod ſciſcitatus eſt ab eis rex, invenit
in eis decuplùm,ſuper cunctos ariolos & magos, qui erant
in univerſo regno ejus. Fuit autem Daniel uſque ad 21
annum primum Cyri regis.

CAP. II.

IN anno ſecundo regni Nabuchodonoſor, vidit Nabucho- 1
donoſor ſomnium,& conterritus eſt ſpiritus ejus,& ſomnium
ejus fugit ab eo. Præcepit autem rex, ut convocarentur 2
arioli, & magi, & malefici, & Chaldæi, ut indicarent
regi ſomnia ſua : qui cùm veniſſent, ſteterunt coram rege.
Et dixit ad eos rex; Vidi ſomnium : & mente confuſus 3
ignoro quid viderim.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܣܡ ܕܢܝܐܝܠ ܒܪܥܝܢܗ. ܕܠܐ ܢܐܟܘܠ ܡܢ ܦܬܒܓܐ ܕܡܠܟܐ. ܘܠܐ ܢܫܬܐ ܡܢ ܚܡܪܐ 8
ܕܫܬܐ. ܘܒܥܐ ܡܢ ܪܒ ܡܗܝܡܢܐ. ܕܠܐ ܢܘܟܠܘܢܝ. * ܘܝܗܒ ܠܗ ܡܪܝܐ ܠܛܝܒܘܬܐ ܘܪܚܡܐ 9
ܠܕܢܝܐܝܠ ܩܕܡ ܪܒ ܡܗܝܡܢܐ. * ܘܐܡܪ ܪܒ ܡܗܝܡܢܐ ܠܕܢܝܐܝܠ. ܕܚܠ ܐܢܐ ܡܢ ܡܪܝ 10
ܡܠܟܐ. ܕܦܩܕ ܠܟܘܢ ܡܐܟܘܠܬܟܘܢ ܘܠܡܫܬܝܟܘܢ. ܕܠܡܐ ܢܚܙܐ ܐܦܝܟܘܢ ܡܟܪܝܢ ܡܢ
ܕܛܠܝܐ ܒܢܝ ܫܢܝܟܘܢ. ܘܢܦܣܘܩ ܪܝܫܝ ܡܠܟܐ. * ܘܐܡܪ ܕܢܝܐܝܠ ܠܡܢܝܣܪ. ܕܐܫܠܛܗ ܪܒ 11
ܡܗܝܡܢܐ ܥܠ ܕܢܝܐܝܠ ܘܥܠ ܚܢܢܝܐ. ܘܥܠ ܡܝܫܐܝܠ. ܘܥܠ ܥܙܪܝܐ. * ܢܣܝ ܐܢܘܢ 12
ܠܥܒܕܝܟ ܝܘܡܝܢ ܥܣܪܐ. ܘܢܬܠܘܢ ܠܢ ܙܪܥܘܢܐ ܠܡܐܟܠ ܘܡܝܐ ܠܡܫܬܐ. * ܘܒܬܪܟܢ 13
ܬܚܙܐ ܚܙܘܢ ܘܚܙܘܐ ܕܛܠܝܐ ܕܐܟܠܝܢ ܡܢ ܦܬܒܓܐ ܕܡܠܟܐ. ܘܐܝܟ ܕܚܙܐ ܐܢܬ ܗܟܢܐ
ܥܒܕ ܥܡ ܥܒܕܝܟ. * ܘܐܫܬܡܥ ܠܡܠܬܗܘܢ ܗܕܐ. ܘܢܣܐ ܐܢܘܢ. ܝܘܡܬܐ ܥܣܪܐ. 14
* ܘܡܢ ܒܬܪ ܥܣܪܐ ܝܘܡܝܢ. ܚܙܐ ܐܦܝܗܘܢ ܫܦܝܪ. ܘܫܡܝܢ ܒܣܪܗܘܢ. ܝܬܝܪ ܡܢ 15
ܕܛܠܝܐ ܟܠܗܘܢ ܕܐܟܠܝܢ ܡܢ ܦܬܒܓܐ ܕܡܠܟܐ. * ܘܡܢܝܣܪ ܢܣܒ ܗܘܐ ܠܗ ܡܢܬܗܘܢ 16
ܘܚܡܪܐ ܕܡܫܬܝܗܘܢ. ܘܝܗܒ ܗܘܐ ܠܗܘܢ ܙܪܥܘܢܐ ܠܡܐܟܠ ܘܡܝܐ ܠܡܫܬܐ. * ܘܠܛܠܝܐ 17
ܗܠܝܢ ܐܪܒܥܬܗܘܢ. ܝܗܒ ܠܗܘܢ ܐܠܗܐ ܝܕܥܬܐ ܘܣܘܟܠܐ ܒܟܠ ܣܦܪ ܘܚܟܡܬܐ.
ܘܕܢܝܐܝܠ ܡܣܬܟܠ ܗܘܐ ܒܟܠ ܚܙܘܢ ܘܚܠܡܝܢ. * ܘܡܢ ܒܬܪ ܕܫܠܡܘ ܝܘܡܬܐ ܕܐܡܪ 18
ܡܠܟܐ. ܐܥܠ ܐܢܘܢ ܪܒ ܡܗܝܡܢܐ ܩܕܡ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ. * ܘܡܠܠ ܥܡܗܘܢ 19
ܡܠܟܐ. ܘܠܐ ܐܫܟܚ ܒܟܠܗܘܢ ܐܝܟ ܕܢܝܐܝܠ ܘܚܢܢܝܐ. ܘܡܝܫܐܝܠ ܘܥܙܪܝܐ.
ܘܩܡܘ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. * ܘܒܟܠ ܡܠܐ ܕܚܟܡܬܐ ܘܕܣܘܟܠܐ ܕܫܐܠ ܐܢܘܢ ܡܠܟܐ. 20
ܐܫܟܚ ܐܢܘܢ ܥܣܪܐ ܐܝܕܝܢ ܝܬܝܪ. ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܚܪܫܐ ܘܐܫܘܦܐ ܕܐܝܬ ܒܡܠܟܘܬܗ. 21
* ܘܗܘܐ ܕܢܝܐܝܠ. ܥܕܡܐ ܠܫܢܬܐ ܚܕܐ ܕܟܘܪܫ ܡܠܟܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܒ *

* ܒܫܢܬ ܬܪܬܝܢ ܕܡܠܟܘܬܗ ܕܢܒܘܟܕܢܨܪ. ܚܠܡ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܚܠܡܐ. ܘܐܫܬܓܢܬ ܪܘܚܗ. 1
ܘܩܘܝܬ. ܗܘܬ ܫܢܬܗ ܥܠܘܗܝ. * ܘܐܡܪ ܡܠܟܐ ܠܡܩܪܐ ܠܚܪܫܐ ܘܠܐܫܘܦܐ. ܘܠܡܓܘܫܐ 2
ܘܟܠܕܝܐ. ܠܡܚܘܝܘ ܠܡܠܟܐ ܚܠܡܗ. ܘܐܬܘ ܘܩܡܘ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. * ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ 3
ܡܠܟܐ. ܚܠܡܐ ܚܙܝܬ. ܘܐܫܬܓܢܬ ܪܘܚܝ ܠܡܕܥܗ ܠܚܠܡܐ.

Statuens autem Daniel animo ſuo ſe non 8
comeſturum de pulmentis regis, neque bibiturum
de vino quod *is* bibebat, rogavit præfectum
aulicorum ne comedenda ſibi præberet.
(Gratioſum autem reddiderat Danie- 9
lem Dominus apud aulicorum præfectum,)
Dixit aulicorum præfectus Danieli, Timeo 10
dominum meum regem qui cibum potúmque
veſtrum indixit,ne cernens vultus veſtros magìs
tetricos quàm puerorum coætaneorum
veſtrorum, præcîdat caput meum rex. Di- 11
xit autem Daniel Meniſari cui præfectus aulicorum
curam demandaverat Danielis, Hananiæ,
Miſaelis, & Azariæ ; Proba ſervos 12
tuos diebus decem, dentúrque nobis legumina
ad edendum & aqua ad bibendum ;
Deinde conſiderabis colorem noſtrum & co- 13
lorem puerorum qui comedunt è pulmentis
regiis ; & prout videris, ſic age cum ſervis
tuis. Acquievit ille huic eorum propoſitio- 14
ni, & probavit eos diebus decem : Et poſt 15
decem dies deprehendit vultus eorum pulchriores,
& carnem eorum pinguiorem multò
quàm cunctorum puerorum qui veſcebantur
pulmentis regiis. Itaque Meniſar capie- 16
bat ſibi demenſum eorum & vinum potionis
eorum, & dabat eis legumina ad edendum
& aquam ad bibendum. Interea qua- 17
tuor hiſce pueris contulit Deus ſcientiam atque
intelligentiam in omni literatura & ſapientia :
& Daniel ſagaciſſimus erat in omnibus
viſionibus & ſomniis. Exactis diebus 18
quos rex præfinierat, adduxit eos præfectus
aulicorum ad regem Nebuchadnoſarem. Et 19
cùm allocutus eos eſſet rex, neminem inter
omnes invenit parem Danieli , Hananiæ,
Miſaeli, & Azariæ : Steterunt enim coram
rege, Et in rebus quibuſque ad peritiam & 20
intelligentiam pertinentibus, quas requiſivit
ab eis rex, invenit eos decuplò præſtantiores
omnibus incantatoribus & hariolis qui erant
in regno ſuo. Manſítque Daniel uſque ad 21
ad annum primum Cyri regis.

CAP. II.

ANno ſecundo regni Nebuchadnoſaris, 1
ſomnavit Nebuchadnoſar ſomnia, quibus inſanivit
animus ejus & perduravit in eo ſomnus
ejus. Quapropter edixit rex ut convo- 2
carentur incantatores & harioli , magi &
Chaldæi,ad indicandum regi ſomnium ſuum.
Qui cùm veniſſent & ſtetiſſent coram rege,
Dixit eis rex; Somnium vidi, & dementatur 3
animus meus ut ſciam illud ſomnium.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

8 Καὶ ἔθετο Δανιὴλ (ζ) εἰς τὴν καρδίαν αὐτοῦ, ὡς οὐ μὴ ἀλισγηθῇ ἐν τῇ τραπέζῃ τοῦ βασιλέως, ϗ ἐν τῷ
9 οἴνῳ ἀπὸ τοῦ ποτοῦ αὐτοῦ· ϗ ἠξίωσε τὸν ἀρχιευνοῦχον, ὡς οὐ μὴ ἀλισγηθῇ. Καὶ ἔδωκεν ὁ Θεὸς τὸν Δανι-
10 ὴλ εἰς ἔλεον καὶ (η) οἰκτιρμὸν ἐνώπιον τοῦ ἀρχιευνούχου. Καὶ εἶπεν ὁ ἀρχιευνοῦχος τῷ Δανιήλ, Φοβοῦ-
μαι ἐγὼ τὸν κύριόν μου τὸν βασιλέα, τὸν ἐκτάξαντα τὴν βρῶσιν ὑμῶν ϗ τὴν πόσιν ὑμῶν, μή ποτε
ἴδῃ τὰ πρόσωπα ὑμῶν σκυθρωπὰ παρὰ τὰ παιδάρια τὰ (θ) συνήλικα ὑμῶν, ϗ καταδικάσητε τὴν κεφα-
11 λήν μου τῷ βασιλεῖ. Καὶ εἶπε Δανιὴλ πρὸς (ι) Ἀμελσάδ, ὃν κατέστησεν ὁ ἀρχιευνοῦχος ἐπὶ Δανιήλ,
12 (κ) Ἀνανίαν, Μισαήλ, Ἀζαρίαν, Πείρασον δὴ τοὺς παῖδάς σου ἡμέρας δέκα, ϗ δότωσαν ἡμῖν ἀπὸ
13 τῶν σπερμάτων (λ), ϗ φαγώμεθα, ϗ ὕδωρ πιώμεθα, Καὶ ὀφθήτωσαν ἐνώπιόν σου αἱ ἰδέαι ἡμῶν, καὶ
αἱ ἰδέαι τῶν παιδαρίων τῶν (μ) ἐσθιόντων τὴν τράπεζαν τοῦ βασιλέως, καὶ καθὼς ἐὰν ἴδῃς, ποίησον
14 μετὰ τῶν (ν) παίδων σου. Καὶ εἰσήκουσεν αὐτῶν, ϗ ἐπείρασεν αὐτοὺς ἡμέρας δέκα. Καὶ μετὰ τὸ τέ-
15 λος τῶν δέκα ἡμερῶν, ὠράθησαν αἱ ἰδέαι αὐτῶν ἀγαθαὶ ϗ (ξ) ἰσχυραὶ ταῖς σαρξὶν ὑπὲρ τὰ παιδά-
16 ρια τὰ (ο) ἔσθοντα τὴν τράπεζαν τοῦ βασιλέως. Καὶ ἐγένετο (π) Ἀμελσὰδ ἀναιρούμενος τὸ δεῖπνον
17 αὐτῶν, ϗ τὸν οἶνον τοῦ πόματος αὐτῶν, ϗ ἐδίδου αὐτοῖς σπέρματα (ρ). Καὶ τὰ παιδάρια ταῦτα οἱ
τέσσαρες αὐτοί, ἔδωκεν αὐτοῖς ὁ Θεὸς σύνεσιν ϗ φρόνησιν ἐν πάσῃ γραμματικῇ ϗ σοφίᾳ· καὶ Δανι-
18 ὴλ συνῆκεν ἐν πάσῃ ὁράσει ϗ ἐνυπνίοις. Καὶ μετὰ τὸ τέλος τῶν ἡμερῶν, ὧν εἶπεν ὁ βασιλεὺς εἰσ-
19 αγαγεῖν αὐτούς, ϗ εἰσήγαγεν αὐτοὺς ὁ ἀρχιευνοῦχος ἐναντίον Ναβουχοδονόσορ. Καὶ ἐλάλησε μετ' αὐ-
τῶν ὁ βασιλεύς. καὶ (¨) οὐχ εὑρέθησαν ἐκ πάντων αὐτῶν ὅμοιοι Δανιήλ, ϗ Ἀνανίᾳ, ϗ Μισαήλ, καὶ
20 Ἀζαρίᾳ· ϗ ἔστησαν ἐνώπιον τοῦ βασιλέως. Καὶ ἐν παντὶ ῥήματι σοφίας καὶ ἐπιστήμης, ὧν ἐζήτησε
παρ' αὐτῶν ὁ βασιλεύς, εὗρεν αὐτοὺς δεκαπλασίονας παρὰ πάντας τοὺς ἐπαοιδοὺς ϗ τοὺς μάγους τοὺς ὄν-
21 τας (σ) ἐν πάσῃ τῇ βασιλείᾳ αὐτοῦ. Καὶ ἐγένετο Δανιὴλ ἕως ἔτους ἑνὸς Κύρου τοῦ βασιλέως. (†)

Et poſuit Daniel in corde ſuo, ut non (f) pollueretur in menſa regis, & in 8
vino de potu ejus: & rogavit eunuchorum præpoſitum, ne contaminare-
tur. Et dedit Deus Danielem in miſericordiam, & miſerationem in con- 9
ſpectu principis eunuchorum: Et dixit princeps eunuchorum Danieli; 10
Timeo ego dominum meum regem, qui conſtituit cibum veſtrum, & po-
tum veſtrum, ne fortè videat facies veſtras triſtes præ adoleſcentibus co-
ævis veſtris, & (g) condemnetis caput meum regi. Et dixit Daniel ad 11
Amelſad, quem conſtituerat princeps eunuchorum ſuper Danielem, Ana-
niam, Miſael, Azariam; (h) Tenta, obſecro, pueros tuos diebus decem: 12
& dent nobis de (i) ſeminibus, & comedamus, & aquam bibamus, Et 13
appareant coram te vultus noſtri, & vultus puerorum qui edunt menſam
regis: & ſicut videris, facito cum pueris tuis. Et exaudivit eos: & 14
(k) tentavit eos diebus decem. Et poſt finem decem dierum apparuerunt 15
vultus eorum boni & robuſti carnibus, ſuper pueros qui edebant menſam
regis. Et fuit Amelſad tollens cibum eorum, & vinum potûs eorum, 16
& dabat eis (l) ſemina. Et (m) pueri hi, quatuor ipſi, dedit eis Deus 17
intellectum, & prudentiam in omni (n) literatura, & ſapientia. Et
Daniel intellexit in omni viſione, & ſomniis. Et poſt finem dierum, quos 18
dixerat rex introducendi eos, & introduxit eos præpoſitus eunuchorum
in conſpectu Nabuchodonoſor: Et loquutus eſt cum eis rex: & non 19
ſunt inventi de univerſis ipſis ſimiles Danieli, & Ananiæ, & Miſael,
& Azariæ, & ſteterunt in conſpectu regis: Et in omni verbo ſapien- 20
tiæ, & ſcientiæ, quæcunque ſciſcitatus eſt ab eis rex, invenit eos decu-
plò majores præ omnibus (o) incantatoribus, & magis, qui erant in uni-
verſo regno ejus. Et fuit Daniel uſque ad annum unum Cyri regis. 21

MS. A. (ζ) ἐπὶ (η) εἰς οἰκτιρμὸν (θ) συνηλικίᾳ (ι) Ἀμβσάρ, (κ) ϗ Ἀνανίαν, ϗ Μισαήλ, ϗ Ἀζαρίαν, (λ) τῆς γῆς, ϗ φαγόμεθα, ϗ ὕδωρ πιόμεθα, (μ) ἐσθιόντων (ν) παιδαρίων σου. (ξ)* ἰσχυροὶ (ο) ἐσθίοντα (π) Ἀμβσὰρ (ρ) τοῖς τέσσαρσιν παιδαρίοις. Καὶ ἔδωκεν αὐτοῖς ὁ Θεὸς (¨) οὐκ (σ) ἐν τῇ βασιλείᾳ (†) ὍΡΑΣΙΣ β'.

ΚΕΦ. β'.

1 (†) ἘΝ τῷ ἔτει τῷ δευτέρῳ (α) τῆς βασιλείας, ἐνυπνιάσθη Ναβουχοδονόσορ ἐνύπνιον, ϗ ἐξέστη τὸ πνεῦμα αὐτοῦ,
2 καὶ ὁ ὕπνος αὐτοῦ ἐγένετο ἀπ' αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς καλέσαι τοὺς ἐπαοιδούς, ϗ τοὺς μάγους, ϗ
τοὺς φαρμακούς, ϗ τοὺς Χαλδαίους, τοῦ ἀναγγεῖλαι τῷ βασιλεῖ τὰ ἐνύπνια αὐτοῦ. ϗ (β) ἦλθαν, ϗ ἔστησαν
3 ἐνώπιον τοῦ βασιλέως. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς ὁ βασιλεύς, (γ) Ἠνυπνιάσθην, ϗ ἐξέστη τὸ πνεῦμά μου, τοῦ
γνῶναι τὸ ἐνύπνιον.

CAP. II.

IN anno (a) ſecundo regni ſomniavit Nabuchodonoſor ſomnium: & ob- 1
ſtupuit ſpiritus ejus: & ſomnus ejus fuit ab eo. Et dixit rex, ut vo-* 2
carent (b) incantatores, & magos, & maleficos, & Chaldæos ad an-
nuntiandum regi ſomnia ejus. Et venerunt, & ſteterunt coram rege. Et 3
dixit eis rex; Somniavi, & (c) obſtupuit ſpiritus meus ad cognoſcendum
ſomnium.

MS. A. (†) ὍΡΑΣΙΣ γ'. (α) τῆς βασιλείας Ναβουχοδονόσορ, (β) ἦλθον, (γ) Ἐνυπνιάσθην,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

8 * فوضع دانيال في قلبه انه لا يتدنس بمايدة الملك وبخمر شربه * وسال رييس الخصيان انه
9 10 لا يتدنس * واعطي الله دانيال للرحمة والرافة امام رييس الخصيان * وقال رييس الخصيان
لدانيال * انا اخاف سيدي الملك * اوصي بطعمكم وشربكم * ليلا يري وجوهكم
11 متغيرين عن الغلمان اقرانكم * فتذنبون نفسي عند الملك * فقال دانيال لمناصر الذي
12 اقامه رييس الخصيان على دانيال وحنانيا وميصاييل وعزريا * جرب عبيدك عشر ايام *
13 وليعطونا من حبوب الارض فناكل * ويظهر امامك سحناتنا وسحنات الغلمان الذين
14 15 ياكلون من مايدة الملك * وكما تري اصنع مع عبيدك * فسمع لهم وجربهم عشر ايام * وبعد
انقضاء العشر ايام روييت سحناتهم صالحات * واقوياء في اجسادهم اكثر من الغلمان
16 الذين ياكلون من مايدة الملك * وكان مناصر يستملك غداهم وخمر شربهم * ويعطيهم
17 حبوبا للاربعة الغلمان * وهولاء الغلمان الاربعة اعطاهم الله فهما وذكاء في كل
18 نحو وحكمة * ودانيال فهم في كل رويا وفي المنامات * وبعد انقضاء الايام التي قال
19 الملك ان يدخلوهم اليه * فادخلهم رييس الخصيان امام بختنصر * وتكلم معهم
الملك ولم يوجد من جميعهم من يشبه دانيال وحنانيا وميصاييل وعزاريا * ووقفوا
20 امام الملك * وبكل كلمة حكمة وفقه طلب منهم الملك * فوجدهم عشر اضعاف
21 افضل من جميع الرقاييين والمجوس الذين كانوا في مملكته * وصار دانيال الي سنة
احدى لكورش الملك *

Decernens autem Daniel in corde ſuo 8
non contaminaturum ſe menſâ regis ne-
que vino potûs ejus, precatus eſt prin-
cipem Eunuchorum, ne contaminaretur.
(Tribuerat autem Deus Danieli grati- 9
am & benevolentiam apud principem
Eunuchorum.) Ait princeps Eunucho- 10
rum Danieli; Ego timeo quin dominus
meus rex qui cibum & potum veſtrum
aſſignavit, videat facies veſtras di-
verſas ab adoleſcentium coætaneorum
veſtrorum, & culpâ damnetis animam
meam apud regem. Dixit Daniel Ma- 11
naſari quem præfecerat princeps Eunu-
chorum Danieli, Hananiæ, Miſaeli, &
Azariæ; Experire ſervos tuos decem 12
diebus: dent nobis de leguminibus ter-
ræ ut comedamus; Tum appareant 13
coram te ſpecies noſtræ & ſpecies adole-
ſcentum qui veſcuntur de menſa regis;
& prout videris, age cum ſervis tuis.
Obtemperavit igitur eis, & expertus eſt 14
eos diebus decem: Et poſt exactos de- 15
cem dies, apparuerunt ſpecies eorum opti-
mæ, ipſique validiores corpore præ ado-
leſcentibus qui veſcebantur de menſa re-
gis. Quocirca Manaſar cibum eorum 16
& vinum potûs eorum ſibi vindicans,
dabat legumina iis quatuor adoleſcenti-
bus. Porrò adoleſcentibus hiſce qua- 17
tuor conceſſit Deus ingenium & acu-
men in omni eloquentia & ſapientia:
Daniel autem intelligebat omnem viſi-
onem & ſomnia quæque. Elapſis itaque 18
diebus quibus præceperat rex ut intro-
ducerent eos ad ſe, introduxit eos prin-
ceps eunuchorum coram Bochtonaſſare.
Allocutuſque eos rex, neminem inve- 19
nit inter omnes, qui ſimilis eſſet Dani-
eli, Hananiæ, Miſaëli, & Azariæ. Cùm
enim ſtetiſſent coram rege, In omni 20
verbo ſapientiæ & prudentiæ quod pe-
tiit ab eis rex, invenit eos decuplò præ-
ſtantiores cunctis incantatoribus & ma-
gis qui erant in regno ſuo. Fuitque Da- 21
niel uſque ad annum primum Cyri regis.

* الفصل الثاني *

* الوحي الثالث *

1 * في السنة الثانية من ملك بختنصر حلم بختنصر حلما * وذهلت روحه * ونومه سار عنه
2 * فقال الملك ان يدعوا الرقاييين والمجوس والسحرة والكلدانيين ليخبروا الملك بحلمه *
3 فاتوا ووقفوا امام الملك * فقال لهم الملك * حلمت وذهلت روحي لاعرف الحلم *

CAP. II.

Revelatio tertia.

ANno ſecundo regni Bochtonaſſaris, 1
ſomniavit Bochtonaſſar ſomnium: un-
de obſtupuit ſpiritus ejus, & ſomnus
ejus receſſit ab eo. Itaque juſſit rex 2
convocari incantatores, magos, vene-
ficos & Chaldæos; ut indicarent regi
ſomnium ejus. Quibus advenientibus
& coram rege aſtantibus, Dixit rex; 3
Somniavi, & obſtupeſcit ſpiritus meus
ad ſciendum ſomnium.

דניאל: ב

.indicabimus interpretationem &,tuis ſervis ſomnium Dic .vive *ſecula* in Rex : *Aramicè* regem ad Chaſdim ſunt locuti Et
וַיְדַבְּרוּ הַכַּשְׂדִּים לַמֶּלֶךְ אֲרָמִית מַלְכָּא לְעָלְמִין חֱיִי אֱמַר חֶלְמָא לְעַבְדָיךְ וּפִשְׁרָא נְחַוֵּא׃ 4
fruſta ,ejus interpretationem &,ſomnium me ſcire *facietis* non *En* .*effluxit* me à *Verbum* : Chaſdim ad dixit & ,rex Reſpondit
עָנֵה מַלְכָּא וְאָמַר לְכַשְׂדָּיֵא מִלְּתָה מִנִּי אַזְדָּא הֵן לָא תְהוֹדְעוּנַּנִי חֶלְמָא וּפִשְׁרֵהּ הַדָּמִין 5
,*erogationem* & ,dona,indicaveritis ejus interpretationem &,ſomnium *ecce* Et .ponentur *ſterquilinium* veſtræ domus & ,fiemini
תִּתְעַבְדוּן וּבָתֵּיכוֹן נְוָלִי יִתְּשָׂמוּן׃ וְהֵן חֶלְמָא וּפִשְׁרֵהּ תְּהַחֲוֺן מַתְּנָן וּנְבִזְבָּה 6
,ſecundò Reſponderunt .mihi indicate ejº interpretationẽ &,ſomnium propterea : mea facie à recipietis magnum honorem &
וִיקָר שַׂגִּיא תְּקַבְּלוּן מִן־קֳדָמָי לָהֵן חֶלְמָא וּפִשְׁרֵהּ הַחֲוֺנִי׃ עֲנוֹ תִנְיָנוּת 7
certo *Ex* : dixit & ,rex Reſpondit .indicabimus ejus interpretationem & ,ſuis ſervis dicat ſomnium Rex : *dicentes* &
וְאָמְרִין מַלְכָּא חֶלְמָא יֵאמַר לְעַבְדוֹהִי וּפִשְׁרָה נְהַחֲוֵה׃ עָנֵה מַלְכָּא וְאָמַר מִן־יַצִּיב 8
,me ſcire feceritis non ſomnium ſi *Quod* .verbum me à *effluxerit* quòd videatis *quod reſpectu omni* : *ementes* *vos* tempus quòd *ego* *ſciens*
יָדַע אֲנָה דִּי עִדָּנָא אַנְתּוּן זָבְנִין כָּל־קֳבֵל דִּי חֲזֵיתוֹן דִּי אַזְדָּא מִנִּי מִלְּתָא׃ דִּי הֵן־חֶלְמָא לָא תְהוֹדְעֻנַּנִי 9
propterea : mutetur tempus donec , me coram dicendum ad *præparaſtis* corruptũ &,mendacem ſermonem &,veſtra lex *ipſa* una
חֲדָה־הִיא דָתְכוֹן וּמִלָּה כִדְבָה וּשְׁחִיתָה הִזְדְּמִנְתּוּן לְמֵאמַר קָדָמַי עַד דִּי עִדָּנָא יִשְׁתַּנֵּא לָהֵן
eſt Non : *dicentes* & ,rege coram Chaſdim Reſponderunt.mihi indicabitis ejº interpretationẽ quòd ſciam&,mihi dicite ſomnium
חֶלְמָא אֱמַרוּ לִי וְאִנְדַּע דִּי פִשְׁרֵהּ תְּהַחֲוֻנַּנִי׃ עֲנוֹ כַשְׂדָּיֵא קֳדָם־מַלְכָּא וְאָמְרִין לָא־אִיתַי 10
poſtulavit non *iſtum ut ſermonem,potens &,magnus* rex omnis *quod reſpectu omni* : indicare poſſit regis ſermonẽ qui ,aridam ſuper homo
אֱנָשׁ עַל־יַבֶּשְׁתָּא דִּי מִלַּת מַלְכָּא יוּכַל לְהַחֲוָיָה כָּל־קֳבֵל דִּי כָּל־מֶלֶךְ רַב וְשַׁלִּיט מִלָּה כִדְנָה לָא שְׁאֵל
: rege coram *illum* indicet qui eſt non alius & , gravis ,*poſtulans* rex quem ſermo Et .Chaſdi & ,*ſophum* &,genethliacũ omnẽ
לְכָל־חַרְטֹּם וְאָשַׁף וְכַשְׂדָּי׃ וּמִלְּתָא דִי־מַלְכָּה שָׁאֵל יַקִּירָה וְאָחֳרָן לָא אִיתַי דִּי יְחַוִּנַּהּ קֳדָם מַלְכָּא 11
perdendũ ad dixit *&* :*multũ eſt iratus &* ,*ſævit* rex *hoc reſpectu Omni* .*ipſa* eſt non carne cum *eorũ* habitatio quorũ ,Deos præter
לָהֵן אֱלָהִין דִּי מְדָרְהוֹן עִם־בִּשְׂרָא לָא אִיתוֹהִי׃ כָּל־קֳבֵל דְּנָה מַלְכָּא בְּנַס וּקְצַף שַׂגִּיא וַאֲמַר לְהוֹבָדָה 12
tunc *In* .*interfici ad* ejº ſocios & ,Danielem quæſierunt & :interficiebantur ſapientes &,eſt egreſſa lex Et .Babel ſapientes omnes
לְכֹל חַכִּימֵי בָבֶל׃ וְדָתָא נֶפְקַת וְחַכִּימַיָּא מִתְקַטְּלִין וּבְעוֹ דָּנִיֵּאל וְחַבְרוֹהִי לְהִתְקְטָלָה׃ בֵּאדַיִן 13 14
.Babel ſapientes interficiendũ ad *exierat qui* , *regis* tũ ,*carnificum* principẽ Arioch ad ſtatutum &,cõſilium fecit redire Daniel
דָּנִיֵּאל הֲתִיב עֵטָא וּטְעֵם לְאַרְיוֹךְ רַב־טַבָּחַיָּא דִּי־מַלְכָּא דִּי נְפַק לְקַטָּלָה לְחַכִּימֵי בָּבֶל׃
fecit notum ſermonẽ Tunc ? regis facie à *feſtinans* lex quid Propter , regis præfectum Arioch ad dixit &,Reſpondit
עָנֵה וְאָמַר לְאַרְיוֹךְ שַׁלִּיטָא דִי־מַלְכָּא עַל־מָה דָתָא מְהַחְצְפָה מִן־קֳדָם מַלְכָּא אֱדַיִן מִלְּתָא הוֹדַע 15
.regi *indicandum ad* interpretationẽ & ,ſibi daret tempus ut : rege à quæſivit &,eſt ingreſſus Daniel Et .Danieli Arioch
אַרְיוֹךְ לְדָנִיֵּאל׃ וְדָנִיֵּאל עַל וּבְעָה מִן־מַלְכָּא דִּי זְמָן יִנְתֵּן־לֵהּ וּפִשְׁרָא לְהַחֲוָיָה לְמַלְכָּא׃ 16
quærendũ ad miſericordias Et .notificavit ſermonẽ ſuis ſociis Hazarjah &,Miſael,Chananjah & :perrexit ſuã domum in Daniel Tunc
אֱדַיִן דָּנִיֵּאל לְבַיְתֵהּ אֲזַל וְלַחֲנַנְיָה מִישָׁאֵל וַעֲזַרְיָה חַבְרוֹהִי מִלְּתָא הוֹדַע׃ וְרַחֲמִין לְמִבְעֵא 17 18
Tunc .Babel *ſapientum reſiduo* cum ejus *ſocios* & , Daniel *perderent* non ut : iſto ſecreto ſuper cœlorum Dei facie à
מִן־קֳדָם אֱלָהּ שְׁמַיָּא עַל־רָזָה דְּנָה דִּי לָא יְהֹבְדוּן דָּנִיֵּאל וְחַבְרוֹהִי עִם־שְׁאָר חַכִּימֵי בָבֶל׃ אֱדַיִן 19
exiſtendũ ad ,dixit & ,Daniel *Reſpondit* .cœlorum Deo benedixit Daniel tunc : eſt revelatũ ſecretũ noctis viſione in Danieli
לְדָנִיֵּאל בְּחֶזְוָא דִי־לֵילְיָא רָזָה גֲלִי אֱדַיִן דָּנִיֵּאל בָּרִךְ לֶאֱלָהּ שְׁמַיָּא׃ עָנֵה דָנִיֵּאל וְאָמַר לֶהֱוֵא 20
.*ipſa* *ei* *quæ* fortitudo & ,ſapientia quia : ſeculum in uſque & , ſeculo à benedictum Dei *quod ipſius* nomen
שְׁמֵהּ דִּי־אֱלָהָא מְבָרַךְ מִן־עָלְמָא וְעַד־עָלְמָא דִּי חָכְמְתָא וּגְבוּרְתָא דִּי לֵהּ־הִיא׃

Verſio VULG. LAT.

Reſponderúntq; Chaldæi regi Syriacè ; Rex,in ſempiternũ 4
vive:dic ſomnium ſervis tuis,& interpretationem ejus indicabimus. Et reſpondens rex ait Chaldæis ; Sermo receſ- 5
ſit à me : niſi indicaveritis mihi ſomnium, & conjecturam
ejus,peribitis vos, & domus veſtræ publicabuntur. Si autẽ 6
ſomniũ, & conjecturam ejus narraveritis,præmia,& dona,
& honorem multum accipietis à me : ſomnium igitur, &
interpretationem ejus indicate mihi. Reſponderunt ſecun- 7
dò,atque dixerunt ; Rex ſomnium dicat ſervis ſuis,& interpretationem illius indicabimus.Reſpondit rex,& ait; Certè 8
novi quòd tempus redimitis, ſcientes quòd receſſerit à me
ſermo. Si ergò ſomnium non indicaveritis mihi,una eſt de 9
vobis ſententia, quòd interpretationẽ quoq; fallacẽ & deceptione plenam compoſueritis, ut loquamini mihi donec
tempº pertranſeat.Somniũ itaque dicite mihi; ut ſciã quòd
interpretationem quoq; ejº verã loquamini. Reſpondentes 10
ergò Chaldæi corã rege, dixerunt ; Non eſt homo ſuper terrã,qui ſermonem tuum,rex,poſſit implere: ſed neque regum
quiſquam magnº & potens verbũ hujuſcemodi ſciſcitatur
ab omni ariolo,& mago, & Chaldæo. Sermo enim, quem 11
tu quæris,rex,gravis eſt: nec reperietur quiſquã,qui indicet
illum in conſpectu regis:exceptis diis,quorum non eſt cum
hominibº converſatio. Quo audito, rex in furore & in ira 12
magna præcepit, ut perirent omnes ſapientes Babylonis.
Et egreſſâ ſententiâ,ſapientes interficiebantur : quærebantúrq; Daniel & ſocii ejº, ut perirent. Tunc Daniel requiſi- 13 14
vit de lege atq; ſententia, ab Arioch principe militiæ regis,
qui egreſſº fuerat ad interficiendos ſapientes Babylonis. Et 15
interrogavit eũ,qui à rege poteſtatẽ acceperat,quã ob cauſã tam crudelis ſententia à facie regis eſſet egreſſa.Cũ ergò
rẽ indicâſſet Arioch Danieli, Daniel ingreſſº rogavit re- 16
gẽ,ut tempus daret ſibi ad ſolutionẽ indicandã regi. Et in- 17
greſſº eſt domũ ſuã, Ananiæq; & Miſaeli & Azariæ ſoci-
is ſuis indicavit negotiũ : Ut quærerent miſericordiã à fa- 18
cie Dei cœli ſuper ſacramento iſto, & non perirent Daniel
& ſocii ejº cũ cæteris ſapientibº Babylonis. Tunc Danieli 19
myſterium per viſionem nocte revelatum eſt: & benedixit
Daniel Deum cœli, Et locutus ait ; Sit nomen Domini 20
benedictum à ſeculo & uſque in ſeculum : quia ſapientia &
fortitudo ejus ſunt.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

ܘܡܠܠܘ ܟܠܕܝܐ ܩܕܡ ܡܠܟܐ ܐܪܡܐܝܬ. ܘܐܡܪܝܢ. ܡܠܟܐ. ܠܥܠܡܝܢ ܚܝܝ. ܐܡܪ ܚܠܡܐ* 4
ܠܥܒܕܝܟ. ܘܦܘܫܩܗ ܚܢܢ ܢܚܘܐ. * ܥܢܐ ܡܠܟܐ ܘܐܡܪ ܠܟܠܕܝܐ. ܫܪܝܪܐܝܬ ܡܠܬܐ 5
ܕܐܡܪܬ. ܕܐܢ ܠܐ ܬܘܕܥܘܢܢܝ ܚܠܡܐ ܘܦܘܫܩܗ. ܗܕܡ ܗܕܡ ܬܬܦܣܩܘܢ. ܘܒܬܝܟܘܢ ܢܬܒܙܙܘܢ.
* ܘܐܢ ܚܠܡܐ ܘܦܘܫܩܗ ܬܘܕܥܘܢܢܝ. ܡܘܗܒܬܐ ܘܥܘܬܪܐ ܘܐܝܩܪܐ ܣܓܝܐܐ ܬܩܒܠܘܢ ܡܢܝ. 6
ܟܕ ܗܘ ܚܠܡܐ ܘܦܘܫܩܗ ܬܘܕܥܘܢܢܝ. * ܥܢܘ ܬܘܒ ܘܐܡܪܝܢ ܠܗ. ܡܠܟܐ ܚܠܡܐ ܢܐܡܪ 7
ܠܥܒܕܘܗܝ. ܘܦܘܫܩܗ ܚܢܢ ܢܚܘܐ. * ܥܢܐ ܡܠܟܐ ܘܐܡܪ. ܫܪܝܪܐܝܬ ܝܕܥ ܐܢܐ ܕܙܒܢܐ ܗܘ 8
ܫܐܠܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܡܛܠ ܕܚܙܝܬܘܢ. ܕܫܪܝܪܐ ܡܠܬܝ. * ܕܐܢ ܚܠܡܐ ܠܐ ܬܘܕܥܘܢܢܝ. 9
ܚܕ ܗܘ ܕܝܢܟܘܢ. ܘܡܠܬܐ ܟܕܒܬܐ ܘܡܫܚܬܐ. ܐܬܛܝܒܬܘܢ. ܠܡܐܡܪ ܩܕܡܝ. ܥܕ ܕܙܒܢܐ
ܢܥܒܪ. ܐܠܐ ܚܠܡܐ ܐܡܪܘ ܠܝ. ܘܐܕܥ ܕܐܦ ܦܘܫܩܗ ܡܚܘܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܝ. * ܥܢܘ ܟܠܕܝܐ 10
ܘܐܡܪܝܢ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. ܠܝܬ ܐܢܫ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܡܠܬܗ ܕܡܠܟܐ ܡܫܟܚ ܠܡܚܘܝܘ. ܐܦܠܐ ܟܠ
ܡܠܟ ܪܒ ܘܫܠܝܛ. ܡܠܬܐ ܐܝܟ ܗܕܐ ܫܐܠ ܠܐ. ܡܢ ܚܪܫܐ ܐܘ ܐܫܦܐ ܘܟܠܕܝܐ.
* ܘܡܠܬܐ ܕܡܠܟܐ ܫܐܠ ܝܩܝܪܐ. ܘܠܝܬ ܐܢܫ ܕܢܚܘܝܗ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. ܐܠܐ ܐܢ 11
ܐܠܗܐ ܕܡܥܡܪܗܘܢ ܠܐ ܥܡ ܒܢܝ ܒܣܪܐ. * ܗܝܕܝܢ ܡܠܟܐ ܐܬܚܡܬ ܛܒ. 12
ܘܪܓܙ ܛܒ ܘܐܡܪ. ܠܡܘܒܕܘ ܠܟܠܗܘܢ ܚܟܝܡܐ ܕܒܒܠ. * ܘܦܘܩܕܢܐ ܢܦܩ 13
ܘܚܟܝܡܐ ܡܬܩܛܠܝܢ. ܘܒܥܘ ܕܢܩܛܠܘܢ ܠܕܢܝܐܝܠ ܘܠܚܒܪܘܗܝ. * ܗܝܕܝܢ ܕܢܝܐܝܠ 14
ܐܬܪܥܝ ܘܐܬܡܠܟ. ܘܐܡܪ ܠܐܪܝܘܟ ܪܒ ܚܝܠܐ ܕܡܠܟܐ. ܗܘ ܕܢܦܩ ܠܡܩܛܠܘ ܠܚܟܝܡܐ
ܕܒܒܠ. * ܥܠ ܡܢܐ ܗܢܐ ܦܘܩܕܢܐ ܡܣܪܗܒ ܡܢ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. ܗܝܕܝܢ ܡܠܬܐ ܐܘܕܥܗ 15
ܠܕܢܝܐܝܠ. * ܘܕܢܝܐܝܠ ܥܠ ܒܥܐ ܡܢ ܡܠܟܐ ܕܢܬܠ ܙܒܢܐ ܠܗ. ܘܦܫܪܐ ܠܡܠܟܐ ܢܚܘܐ. 16
* ܗܝܕܝܢ ܕܢܝܐܝܠ ܠܒܝܬܗ ܐܙܠ. ܘܠܚܢܢܝܐ ܘܠܡܝܫܐܝܠ ܘܠܥܙܪܝܐ ܚܒܪܘܗܝ. 17
ܡܠܬܐ ܗܕܐ ܓܠܐ. * ܕܢܒܥܘܢ ܪܚܡܐ ܡܢ ܩܕܡ ܐܠܗܐ ܕܫܡܝܐ ܥܠ ܪܐܙܐ ܗܢܐ. ܕܠܐ 18
ܢܐܒܕܘܢ ܕܢܝܐܝܠ ܘܚܒܪܘܗܝ ܥܡ ܫܪܟܐ ܕܚܟܝܡܐ ܕܒܒܠ. * ܗܝܕܝܢ ܠܕܢܝܐܝܠ ܒܚܙܘܐ 19
ܕܠܠܝܐ. ܪܐܙܐ ܐܬܓܠܝ. ܘܕܢܝܐܝܠ ܒܪܟ ܠܐܠܗܐ ܕܫܡܝܐ. * ܥܢܐ ܕܢܝܐܝܠ ܘܐܡܪ. ܢܗܘܐ 20
ܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܡܒܪܟܐ. ܡܢ ܥܠܡ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ. ܕܚܟܡܬܐ ܘܓܢܒܪܘܬܐ
ܕܝܠܗܘܝ.

Tum Chaldæi Syriacè coram rege locuti,di- 4
xerunt ; Rex , in ſecula vivas : dic ſomnium
ſervis tuis, tum explicationem eius nos indi-
cabimus. Reſpondit rex, dixítque Chaldæis ; 5
Certiſſimum eſt verbum quod pronuntio ,
quòd niſi indicaveritis ſomnium & explicati-
onem ejus, membratim concidemini, & do-
mus veſtræ diripientur : Sin autem ſomni- 6
um & explicationem ejus indicaveritis mihi,
dona, & divitias, gloriámque multam acci-
pietis à me ; dummodo ſomnium & explica-
tionem ejus indicetis mihi. Reſpondentibus 7
iterum ac dicentibus ; Rex ſomnium dicat ſer-
vis ſuis, tum explicationem ejus nos indica-
bimus ; Reſpondit rex, & ait ; Reverà in- 8
telligo vos tempus poſtulare, quandoquidem
videtis certiſſimũ eſſe verbum meum, Quòd 9
niſi ſomnium indicetis mihi, una eademque
futura ſit ſors veſtra: & verbũ falſum ac ina-
ne coram me dicere vos decreviſſe, quoad
tempus elabatur. At ſomnium narrate mihi,
ut ſciam explicationem quoque ejus vos mihi
indicaturos. Reſponderunt Chaldæi dicen- 10
tes coram rege ; Nemo eſt ſuper terram qui
verbum regis indicare poſſit, nec ullus un-
quam rex magnus ac potens ejuſmodi rem
poſtulavit ab ullo præſtigiatore, hariolo, aut
Chaldæo : Et res quam rex petit, graviſſi- 11
ma eſt;neque reperitur quiſquam qui eam in-
dicet regi, præter deos quorum habitatio non
eſt cum mortalibus. Tunc rex vehementi 12
percitus irâ, ſummo cum furore edixit ut per-
derentur omnes ſapientes Babylonis. Edi- 13
cto promulgato interficiebantur ſapientes,
voluerúntque interficere Danielem & ſocios
ejus. Tunc Daniel cùm animo conſilióque 14
rem pervolviſſet, dixit ad Arioch ducem il-
lum ſatellitii regii, qui exierat ad interficien-
dum ſapientes Babylonis ; Qua de cauſa e- 15
dictum iſtud *tantopere* urget nomine regis ?
Cúmque rem indicâſſet Arioch Danieli,
Rogavit Daniel regem ut tempus ſibi con- 16
cederet, quatenus interpretationem regi in-
dicaret. Tunc Daniel domum ſuam redi- 17
ens, Hananiæ, Miſaeli, & Azariæ ſociis ſuis
rem iſtam expoſuit, Ut miſericordiam pe- 18
terent à Deo cœli pro myſterio iſto, ne per-
irent Daniel & ſocii ejus unà cum reliquis
ſapientibus Babylonis. Tunc Danieli in vi- 19
ſione nocturna myſterium fuit revelatum :
quapropter Daniel benedixit Deo cœli. Re- 21
ſpondens Daniel dixit ; Sit nomen Domini
benedictum à ſeculo in ſeculum uſque : nam
ſapientia & potentia ipſius eſt :

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

4 Καὶ (δ) ἐλάλησαν οἱ Χαλδαῖοι τῷ βασιλεῖ Συριστί, Βασιλεῦ, εἰς τοὺς αἰῶνας ζῆθι. Σὺ εἰπὸν τὸ ἐνύπνιον τοῖς
5 παισί σου, καὶ τὴν σύγκρισιν ἀναγγελοῦμεν. Ἀπεκρίθη ὁ βασιλεὺς (ε) τοῖς Χαλδαίοις, Ὁ λόγος ἀπ' ἐμοῦ
ἀπέστη. ἐὰν (ζ) μὴ γνωρίσητέ μοι τὸ ἐνύπνιον καὶ τὴν σύγκρισιν (η), εἰς ἀπώλειαν ἔσεσθε, καὶ οἱ οἶκοι ὑμῶν διαρπαγήσονται.
6 Ἐὰν δὲ τὸ ἐνύπνιον καὶ τὴν σύγκρισιν αὐτοῦ γνωρίσητέ μοι, δόματα καὶ (θ) δωρεὰς καὶ τιμὴν
7 πολλὴν λήψεσθε παρ' ἐμοῦ. πλὴν τὸ ἐνύπνιον καὶ τὴν σύγκρισιν αὐτοῦ ἀπαγγείλατέ μοι. Ἀπεκρίθησαν
(ι) δεύτερον, καὶ εἶπαν, Ὁ βασιλεὺς εἰπάτω τὸ ἐνύπνιον τοῖς παισὶν αὐτοῦ, καὶ τὴν σύγκρισιν (κ) ἀναγγελοῦμεν.
8 Καὶ ἀπεκρίθη ὁ βασιλεύς, καὶ εἶπεν, Ἐπ' ἀληθείας οἶδα ἐγὼ ὅτι καιρὸν ὑμεῖς ἐξαγοράζετε· καθότι
9 (λ) ἴδετε ὅτι ἀπέστη ἀπ' ἐμοῦ τὸ ῥῆμα. Ἐὰν οὖν τὸ ἐνύπνιον μὴ ἀναγγείλητέ μοι, οἶδα ὅτι ῥῆμα ψευδὲς καὶ
διεφθαρμένον συνέθεσθε εἰπεῖν (μ) ἐνώπιόν μου, ἕως οὗ ὁ καιρὸς παρέλθῃ. τὸ ἐνύπνιόν μου εἴπατέ μοι, καὶ γνώσομαι
10 (ν) ὅτι καὶ τὴν σύγκρισιν αὐτοῦ ἀναγγελεῖτέ μοι. Ἀπεκρίθησαν (ξ) οἱ Χαλδαῖοι ἐνώπιον τοῦ βασιλέως, καὶ
λέγουσιν, Οὐκ ἔστιν ἄνθρωπος ἐπὶ τῆς ξηρᾶς, ὅστις (ο) τὸ ῥῆμα τοῦ βασιλέως δυνήσεται γνωρίσαι, καθότι πᾶς
11 βασιλεὺς μέγας καὶ ἄρχων ῥῆμα (π) τοιοῦτον οὐκ ἐπερωτᾷ ἐπαοιδὸν μάγον (ρ) καὶ Χαλδαῖον. Ὅτι ὁ λόγος ὃν
ὁ βασιλεὺς ἐπερωτᾷ, βαρύς, καὶ ἕτερος οὐκ ἔστιν ὃς ἀναγγελεῖ αὐτὸν ἐνώπιον τοῦ βασιλέως, ἀλλ' (σ) οἱ θεοί, ὧν
12 οὐκ ἔστιν ἡ κατοικία μετὰ πάσης σαρκός. Τότε ὁ βασιλεὺς ἐν θυμῷ καὶ ὀργῇ εἶπεν ἀπολέσαι πάντας τοὺς σοφοὺς Βαβυλῶνος.
13 Καὶ τὸ δόγμα ἐξῆλθε, καὶ οἱ σοφοὶ ἀπεκτέννοντο· καὶ ἐζήτησαν Δανιὴλ καὶ τοὺς φίλους αὐτοῦ ἀνελεῖν.
14 Τότε Δανιὴλ ἀπεκρίθη βουλὴν καὶ γνώμην τῷ Ἀριὼχ τῷ ἀρχιμαγείρῳ τοῦ βασιλέως, ὃς ἐξῆλθεν (τ) ἀναιρεῖν
15 τοὺς σοφοὺς (υ) Βαβυλῶνος, Ἄρχων τοῦ βασιλέως, περὶ τίνος ἐξῆλθεν ἡ γνώμη ἡ ἀναιδὴς (φ) ἐκ προσώπου
16 τοῦ βασιλέως; ἐγνώρισε δὲ (χ) ὁ Ἀριὼχ τὸ ῥῆμα τῷ Δανιήλ. Καὶ Δανιὴλ ἠξίωσεν τὸν βασιλέα
17 ὅπως χρόνον δῷ αὐτῷ, καὶ τὴν σύγκρισιν αὐτοῦ ἀναγγελῇ τῷ βασιλεῖ. Καὶ εἰσῆλθε Δανιὴλ
εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ, καὶ τῷ Ἀνανίᾳ καὶ τῷ Μισαὴλ καὶ τῷ Ἀζαρίᾳ τοῖς φίλοις αὐτοῦ τὸ ῥῆμα ἐγνώρισε.
18 Καὶ οἰκτιρμοὺς ἐζήτουν παρὰ τοῦ θεοῦ τοῦ οὐρανοῦ ὑπὲρ τοῦ μυστηρίου τούτου, (ψ) ὅπως ἂν μὴ ἀπόλωνται
19 Δανιὴλ καὶ οἱ φίλοι αὐτοῦ μετὰ τῶν ἐπιλοίπων σοφῶν Βαβυλῶνος. (ω) Τότε τῷ Δανιὴλ ἐν ὁράματι
20 τῆς νυκτὸς τὸ μυστήριον ἀπεκαλύφθη· καὶ (α) εὐλόγησε τὸν θεὸν τοῦ οὐρανοῦ Δανιήλ, Καὶ εἶπεν,
Εἴη τὸ ὄνομα τοῦ θεοῦ εὐλογημένον ἀπὸ τοῦ αἰῶνος, καὶ ἕως τοῦ αἰῶνος, ὅτι ἡ σοφία καὶ ἡ (β) σύνεσις αὐτοῦ ἐστι.

Et loquuti ſunt Chaldæi regi Syriacè; Rex, in ſecula vive. Dic ſomnium 4
pueris tuis: & conjecturam indicabimus. Reſpondit rex Chaldæis; Sermo 5
receſſit à me. Niſi indicaveritis mihi ſomnium, & conjecturam; in perditionem
eritis: & domus veſtræ diripientur. Si autem ſomnium & conjecturam 6
ejus indicaveritis mihi; præmia, & dona, & honorem multum accipietis
à me: tantummodò ſomnium & conjecturam ejus indicate mihi.
Reſponderunt ſecundò, & dixerunt; Rex dicat ſomnium pueris ſuis, & 7
conjecturam indicabimus. Et reſpondit rex, & dixit; In veritate novi ego, 8
quòd vos redimitis (d) tempus, ſecundũ quod videtis, quia (e) diſceſſit à me
verbum. Si ergò ſomniũ non indicaveritis mihi; ſcio, quia verbũ falſum & 9
corruptum compoſuiſtis ad dicendum coram me, donec tempus pertranſeat.
Somnium meum dicite mihi; & ſciam, quia etiam conjecturam ejus indicabitis
mihi. Reſponderunt Chaldæi coram rege, & dicunt; Non eſt homo ſuper 10
aridam, qui verbum regis poſſit notum facere: ſicuti omnis rex magnus,
& princeps verbũ hujuſmodi non ſciſcitatur ab incantatore, mago, & Chaldæo.
Quia ſermo, quem rex interrogat, gravis eſt: & alius non eſt, qui indicet 11
illum in conſpectu regis, niſi dii, quorum non eſt habitatio cum omni
carne. Tunc rex in furore & ira dixit, ut perderent omnes ſapientes Babylonis. 12
Et ſententia egreſſa eſt, & ſapientes interficiebantur: & quæſierunt 13
Danielem, & amicos ejus ad interficiendũ. Tum Daniel reſpondit conſiliũ 14
& ſententiam Arioch principi coquorum regis, qui egreſſus fuerat ad interficiendos
ſapientes (f) Babylonis; Princeps regis, pro quo egreſſa eſt ſententia 15
impudens à facie regis? Indicavit autem Arioch verbum Danieli. Et 16
Daniel rogavit regem, ut tempus daret ſibi, & conjecturam ejus indicaret
regi. Et ingreſſus eſt Daniel in domum ſuam: & Ananiæ, & Miſaeli, 17
& Azariæ amicis ſuis verbum indicavit: Et miſerationes quærebant à 18
Deo cœli pro myſterio hoc; ut non perirent Daniel, & amici ejus cum cæteris
ſapientibus Babylonis. Tunc Danieli in viſione noctis myſterium revelatum 19
eſt. Et benedixit Deum cœli Daniel, Et dixit; Sit nomem Dei 20
benedictum à ſeculo, & uſque in ſeculum: quia ſapientia, & intelligentia
ejus ſunt.

MS. A. (δ) εἶπον (ε) καὶ εἶπεν τοῖς (ζ) οὖν μὴ (η) αὐτοῦ, (θ) δωρεὰν (ι) οἱ Χαλδαῖοι, καὶ εἶπαν ἐκ δευτέρου, Ὁ βασιλεὺς (κ) αὐτοῦ ἀναγγελοῦμεν. Ἀπεκρίθη (λ) οἴδατε, (μ) ἐνώπιον ἐμοῦ, (ν) ὅτι τὴν (ξ) πάλιν οἱ (ο) δυνήσεται τὸ ῥῆμα τοῦ βασιλέως γνωρίσαι, (π) τοιοῦτο (ρ) Χαλδαῖον, (σ) ἢ θεοί, (τ) ἀναιρεῖν (υ) Βαβυλῶνος, καὶ ἐπυνθάνετο αὐτοῦ, λέγων, Ἄρχων (φ) αὕτη ἐκ (χ) τὸ ῥῆμα Ἀριὼχ τῷ βασιλεῖ. Καὶ εἰσῆλθεν Δανιήλ, καὶ ἠξίωσεν ἀπὸ τοῦ βασιλέως, ὅπως χρόνον (ψ) ὅπως μὴ (ω) Τῷ δὲ Δανιὴλ (α) ηὐλόγησεν (β) σύνεσις καὶ ἡ ἰσχὺς αὐτοῦ

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* فتكلم الكلدانيون مع الملك بالسريانية * عش ايها الملك الي الدهر * انت قل الحلم 4
لعبيدك * ونحن نخبر بتعبيره * فاجاب الملك وقال للكلدانيين * القول بعد عني * وان 5
لم تعرفوني بالحلم وبتاويله * تصيرون للهلاك * وبيوتكم تنهب * فان عرفتموني بالحلم 6
وبتاويله * تنالون مني عطايا ومواهب وكرامة كثيرة * فاخبروني بالحلم وبتاويله *
* فاجابوا ثانية وقالوا * ليقل الملك الحلم لعبيده ونخبره بتاويله * فاجاب الملك وقال * 7 8
بالحق علمت انا انكم انتم انما تشترون وقتا * من اجل انكم تعلمون ان القول بعد عني *
* فان لم تخبروني بالحلم * علمت ان القول كذب وفاسد * فاتفقوا ان تقولوا امامي الي ان 9
يجوز الزمان * حلمي قولوه لي * فقد علمت انكم تخبروني بتاويله * فاجاب الكلدانيون 10
ايضا امام الملك وقالوا * ليس انسان على اليابسة يستطيع ان يعرف كلمة الملك * من اجل
انه كل ملك عظيم ورييس لم يسال عن هذه الكلمة راقيا ولا ساحرا ولا كلدانيا * لان 11
القول الذي سال الملك عنه * فليس يستطيع احد ان يخبر به امام الملك * الا الالهة الذين
ليس لهم سكن مع كل ذي لحم * حينيذ الملك قال بغضب وغيظ كثير ان يهلكوا كل 12
حكماء بابل * وخرج امر بقتل الحكماء * وطلبوا ان يقتلوا دانيال واصحابه * حينيذ 13 14
دانيال اجاب بمشورة وراي لاريوخ رييس طباخي الملك الذي خرج ليقتل حكماء بابل *
* واستفحص منه قايلا * يا رييس الملك من اجل ماذا خرج هذا الراي الوقح من وجه 15
الملك * فعرف اريوخ الملك بهذه الكلمة * ودانيال دخل وسال الملك لكي يعطيه 16
زمانا * ويخبر الملك بتاويله * ودخل دانيال الي بيته * وعرف حنانيا وميصاييل وعزاريا 17
اصحابه بهذه الكلمة * وطلبوا رافات من قبل اله السماء من اجل هذا السر * ليلا يهلك 18
دانيال واصحابه مع ساير حكماء بابل * حينيذ كشف هذا السر لدانيال في رويا الليل * 19
فبارك دانيال اله السماء * وقال * يكون اسم الله مباركا من الدهر والي الدهر * لان له الحكمة 20
والفهم والجبروت *

Allocuti ſunt Chaldæi regem Syriacè; 4
Vivas O rex in perpetuum; tu dicas ſomnium
ſervis tuis, & nos exponemus
interpretationem ejus. Reſpondens rex 5
ait Chaldæis, Sermo receſſit à me: &
niſi notum feceritis mihi ſomnium & interpretationem
ejus, in perditionem abibitis,
& domus veſtræ diripientur: Verùm 6
ſi notum feceritis mihi ſomnium
& interpretationem ejus, obtinebitis à
me dona, & munera, atque honorem
multum: notum ergò facite mihi ſomnium
& interpretationem ejus. Reſponderunt 7
ſecundò, & dixerunt; Dicat rex ſomnium ſervis ſuis, & nos interpretationem
ejus exponemus. Reſpondit 8
rex dicens; Planè novi ego vos
quidem tempus redimere, eò quòd noveritis
ſermonem à me receſſiſſe. Quòd 9
ſi ſomnium non indicaveritis mihi, intelligam
rem veſtram falſam eſſe &
corruptam: incipite ergò differere coram
me donec tempus labatur: ſomnium
meum dicite mihi: nam interpretationem
ejus vos indicaturos eſſe mihi,
jam novi. Reſponderunt Chaldæi 10
rurſus coram rege, & dixerunt; Nullus
eſt homo ſuper aridam, qui notum
facere poſſit verbum regis; quia nullus
rex magnus aut princeps poſtularet hujuſmodi
verbum ab ullo incantatore, venefico,
aut Chaldæo. Sermonem enim de 11
quo rex petit, nullus alius indicare poteſt
coram rege, niſi dii quibus non eſt
cohabitatio cum ullo mortali. Tunc rex 12
magna cum ira & excandeſcentia dixit,
ut perderent omnes ſapientes Babelis:
Et promulgato ejus edicto de cæde ſapientum; 13
volebant interficere Danielem
& ſocios ejus. Tunc Daniel maturo 14
conſilio & prudentiâ reſpondit Ariocho
principi coquorum regis, qui egreſſus fuerat
ad occidendum ſapientes Babelis:
Nam ſciſcitans ab eo, dixit; O princeps 15
regis, quæ de re prodiit conſilium hoc durum
à conſpectu regis? Quod verbum
cùm notum feciſſet Arioch regi, Ingreſſus 16
eſt Daniel, & rogavit regem
ut tempus ſibi daret ad indicandum regi
interpretationem ejus. Tum Daniele 17
domum ſuam regreſſo, & Hananiâ,
Miſaele, atque Azariâ ſociis ſuis hac
de re monitis; Poſtulaverunt miſerationes 18
à Deo cœli pro hujuſmodi arcano,
ne perirent Daniel & ſocii ejus cum reliquis
ſapientibus Babelis. Tunc retectum 19
fuit arcanum illud Danieli in viſione
nocturna: quare benedixit Daniel
Deo cœli, Et ait; Benedictum ſit nomen 20
Dei à ſeculo ad ſeculum uſque;
quoniam ipſius eſt ſapientia, intelligentia,
& fortitudo:

ſcientibus ſcientiam &,ſapientibus ſapientiam *dans* : reges *ſtabiliens* & , reges *removens* , *opportunitates* &,tempora *mutans* ipſe Et
21 והוא מהשנא עדניא וזמניא מהעדה מלכין ומהקים מלכין יהב חכמתא לחכימין ומנדעא לידעי
Deus Tibi .manet eo cum lux &,*tenebroſitate in quid* novit : *abſtruſa* & , *profunda revelans Ipſe* .intelligentiam
22 בינה: הוא גלא עמיקתא ומסתרתא ידע מה בחשוכא ונהורא עמה שרא: 23 לך אלה
quia ,te à quæſivimus quod,me feciſti ſcire nunc & : mihi dediſti fortitudinẽ & ſapientiam quia , *ego celebrans & ,confitens* mei patris
אבהתי מהודא ומשבח אנה די חכמתא וגבורתא יהבת לי וכען הודעתני די־בעינא מנך די
ſapientes perdendũ ad rex conſtituerat quem,Arioch *ſuper* eſt ingreſſus Daniel *hoc reſpectu Omni* .nos feciſti ſcire regis ſermonẽ
24 מלת מלכא הודעתנא: כל־קבל דנה דניאל על על־אריוך די מני מלכא להובדא לחכימי
.indicabo regi interpretationẽ & , rege coram me introduc ,perdas ne Babel Sapientes : ei dixit ſic & ,Abiit .Babel
בבל אזל וכן אמר־לה לחכימי בבל אל־תהובד העלני קדם מלכא ופשרא למלכא אחוא:
quæ captivitatis filiis de virum inveni *Quòd* : ei dixit ſic & : rege coram Danielem introduxit feſtinatione *in* Arioch Tunc
25 אדין אריוך בהתבהלה הנעל לדניאל קדם מלכא וכן אמר־לה די־השכחת גבר מן־בני גלותא די
potens tu es Nunquid : Belthesaſar *ejus* nomen cujus,Danieli dixit & , rex Reſpondit .notificabit regi ſolutionẽ qui ,Jehudah
26 יהוד די פשרא למלכא יהודע: ענה מלכא ואמר לדניאל די שמה בלטשאצר האיתיך כהל
rex quod Secretum : dixit & , rege coram Daniel Reſpondit ? ej⁹ interpretationẽ & ,vidi quod ,ſomnium mihi *notificandũ ad*
27 להודעתני חלמא די־חזית ופשרה: ענה דניאל קדם מלכא ואמר רזא די־מלכא
,ſecreta *revelans* cœlis in Deus eſt Veruntamen .regi indicare *potentes*,*decretores* ,genethliaci , *ſophi* ,ſapientes non ,*poſtulans*
28 שאל לא חכימין אשפין חרטמין גזרין יכלין להחויה למלכא: ברם איתי אלה בשמיא גלא רזין
,tuo cubili *ſuper* tui capitis *viſiones* & tuũ Somnium .dierum noviſſimo in *exiſtendũ ad* quod *quid* Nebuchadneſar regi notificavit &
והודע למלכא נבוכדנצר מה די להוא באחרית יומיא חלמך וחזוי ראשך על־משכבך
,ſecreta *revelans* & : hac poſt *exiſtendum ad quod* quid,aſcenderunt tuo cubili *ſuper* tuæ cogitationes rex Tu .*ipſum hoc*
29 דנה הוא: אנתה מלכא רעיונך על־משכבך סלקו מה די להוא אחרי דנה וגלא רזיא
,*mihi* eſt revelatũ hoc ſecretũ ,viventib⁹ omnibus præ me in eſt quæ *ſapientia in non ego* Et .*exiſtendum ad* quod *quid* te fecit ſcire
30 הודעך מה־די להוא: ואנה לא בחכמה די־איתי בי מן־כל־חייא רזא דנה גלי לי
, *fuiſti videns* rex Tu .ſcires tui cordis cogitationes & ,notificarent regi interpretationẽ ut *verbum ſuper* ſed
31 להן על־דברת די פשרא למלכא יהודעון ורעיוני לבבך תנדע: אנתה מלכא חזה הוית
ſtatuæ Hujus .terribilis ej⁹ forma & : te contra *ſtans præſtans ejus ſplendor* &,magna *hæc* imago ,grandis una imago ecce &
32 ואלו צלם חד שגיא צלמא דכן רב וזיוה יתיר קאם לקבלך ורוה דחיל: הוא צלמא
ejus pedes : *ferro de* ejus Tibiæ .*ære de* ej⁹ femora &,ejus *viſcera* ,*argento de* ej⁹ brachia &,ej⁹ pectus ,*bono* auro *de ejus* caput
33 ראשה די־דהב טב חדוהי ודרעוהי די כסף מעוהי וירכתה די נחש: שקוהי די פרזל רגלוהי
ſtatuam percuſſit &,manibus in non qui ,lapis eſt abſciſſus *quo uſque eras Videns* .*teſta de eis ex* & , *ferro de eis ex*
34 מנהין די פרזל ומנהון די חסף: חזה הוית עד די התגזרת אבן די־לא בידין ומחת לצלמא
,argentum , æs , teſta , ferrum pariter ſunt cõtrita tunc *In* .eos *comminuit* & , *teſta* & ,*ferro de* ſuis pedib⁹ *ſuper*
35 על־רגלוהי די פרזלא וחספא והדקת המון: באדין דקו כחדה פרזלא חספא נחשא כספא
qui lapis Et .eis *eſt inventus* non locus omnis & ,ventus *ea tulit* & ,æſtatis areis de *palea* ſicut fuerunt & ,aurum &
ודהבא והוו כעור מן־אדרי־קיט ונשא המון רוחא וכל־אתר לא־השתכח להון ואבנא די
.terram omnem implevit & ,*magnum montem in* eſt effectus ſtatuam percuſſit
מחת לצלמא הות לטור רב ומלאת כל־ארעא:

Verſio VULG. LAT.

Et ipſe mutat tempora, & ætates : transfert regna, atque 21
conſtituit : dat ſapientiam ſapientibus, & ſcientiam intelligentibus diſciplinam : Ipſe revelat profunda, & abſcondita, & novit in tenebris conſtituta : & lux cum eo 22
eſt. Tibi,Deus patrum noſtrorum,confiteor,tęque laudo: 23
quia ſapientiam & fortitudinem dediſti mihi : & nunc oſtendiſti mihi quæ rogavimus te, quia ſermonem regis aperuiſti nobis. Poſt hæc Daniel ingreſſus ad Arioch, quem 24
conſtituerat rex ut perderet ſapientes Babylonis, ſic ei locutus eſt ; Sapientes Babylonis ne perdas : introduc me in conſpectu regis, & ſolutionem regi narrabo. Tunc 25
Arioch feſtinus introduxit Danielem ad regem, & dixit ei; Inveni hominem de filiis tranſmigrationis Juda, qui ſolutionem regi annuntiet. Reſpondit rex, & dixit Danieli, 26
cujus nomen erat Baltaſſar ; Putáſne verè potes mihi indicare ſomnium, quod vidi, & interpretationem ejus ? Et reſpondens Daniel coram rege, ait ; Myſterium, quod 27
rex interrogat, ſapientes, magi, arioli, & aruſpices nequeunt indicare regi. Sed eſt Deus in cœlo revelans myſte- 28
ria, qui indicavit tibi, rex Nabuchodonoſor, quæ ventura ſunt in noviſſimis temporibus. Somnium tuum & viſiones capitis tui in cubili tuo hujuſcemodi ſunt : Tu,rex, 29
cogitare cœpiſti in ſtrato tuo,quid eſſet futurum poſt hæc : & qui revelat myſteria, oſtendit tibi quæ ventura ſunt. Mihi quoque non in ſapientia, quæ eſt in me plus quàm 30
in cunctis viventibus, ſacramentum hoc revelatum eſt : ſed ut increpatio regi manifeſta fieret, & cogitationes mentis tuæ ſcires. Tu,rex,videbas, & ecce quaſi ſtatua 31
una grandis : ſtatua illa magna, & ſtaturâ ſublimis ſtabat contra te, & intuitus ejus erat terribilis. Hujus ſtatuæ 32
caput ex auro optimo erat, pectus autem & brachia de argento, porrò venter & femora ex ære. Tibiæ autem 33
ferreæ, pedum quædam pars erat ferrea, quædam autem fictilis. Videbas ita, donec abſciſſus eſt lapis de monte 34
ſine manibus : & percuſſit ſtatuam in pedibus ejus ferreis & fictilibus, & comminuit eos. Tunc contrita ſunt pa- 35
riter ferrum, teſta, æs, argentum, & aurum, & redacta quaſi in favillam æſtivæ areæ, quæ rapta ſunt vento : nullúſque locus inventus eſt eis : lapis autem, qui percuſſerat ſtatuam, factus eſt mons magnus, & implevit univerſam terram.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

21 ܘܗܘ ܡܫܚܠܦ ܙܒܢܐ ܘܥܕܢܐ. ܡܥܒܪ ܡܠܟܐ: ܘܡܩܝܡ ܡܠܟܐ. ܝܗܒ ܚܟܡܬܐ *
22 ܠܚܟܝܡܐ. ܘܡܕܥܐ ܠܝܕܥܝ ܣܘܟܠܐ. * ܘܗܘ ܓܠܐ ܥܡܝܩܬܐ. ܘܡܟܣܝܬܐ. ܘܝܕܥ ܡܐ
23 ܕܒܚܫܘܟܐ. ܘܢܘܗܪܐ ܥܡܗ ܫܪܐ. * ܠܟ ܐܠܗܐ ܕܐܒܗܬܝ ܡܘܕܐ ܐܢܐ ܘܡܫܒܚ ܐܢܐ.
ܕܚܟܡܬܐ ܘܓܢܒܪܘܬܐ ܝܗܒܬ ܠܝ. ܘܗܫܐ ܐܘܕܥܬܢܝ ܕܒܥܝܢ ܡܢܟ. ܘܡܠܬܐ ܕܡܠܟܐ.
24 ܐܘܕܥܬܢܝ. * ܘܒܗ ܒܫܥܬܐ ܥܠ ܕܢܝܐܝܠ ܠܘܬ ܐܪܝܘܟ. ܗܘ ܕܦܩܕ ܠܗ ܡܠܟܐ ܠܡܩܛܠܘ
ܠܚܟܝܡܐ ܕܒܒܠ. ܘܐܙܠ ܘܐܡܪ ܠܗ. ܠܚܟܝܡܐ ܕܒܒܠ ܠܐ ܬܘܒܕ. ܐܠܐ
25 ܐܥܠܝܢܝ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. ܘܦܫܪܐ ܠܡܠܟܐ ܐܚܘܐ. * ܗܝܕܝܢ ܐܪܝܘܟ ܒܣܘܪܗܒܐ
ܐܥܠܗ ܠܕܢܝܐܝܠ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܕܐܫܟܚܬ ܓܒܪܐ ܡܢ ܒܢܝ ܫܒܝܬܐ
26 ܕܝܗܘܕ. ܕܦܫܪܐ ܠܡܠܟܐ ܢܚܘܐ. * ܥܢܐ ܡܠܟܐ ܘܐܡܪ ܠܕܢܝܐܝܠ ܕܫܡܗ ܒܠܛܫܨܪ.
27 ܡܫܟܚ ܐܢܬ ܠܡܚܘܝܘܬܢܝ. ܚܠܡܐ ܕܚܙܝܬ ܘܦܫܪܗ. * ܥܢܐ ܕܢܝܐܝܠ ܘܐܡܪ ܩܕܡ
ܡܠܟܐ. ܐܪܙܐ ܕܡܠܟܐ ܫܐܠ. ܠܐ ܚܟܝܡܐ ܘܠܐ ܡܟܫܦܐ ܘܠܐ ܚܪܫܐ ܘܠܐ ܐܫܘܦܐ
28 ܡܫܟܚܝܢ ܠܡܚܘܝܘ ܠܡܠܟܐ. * ܐܠܐ ܐܝܬ ܐܠܗܐ ܒܫܡܝܐ ܓܠܐ ܐܪܙܐ. ܘܐܘܕܥ
ܠܡܠܟܐ ܠܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܕܡ ܕܗܘܐ ܒܚܪܬܐ ܕܝܘܡܬܐ. ܚܠܡܟ ܘܚܙܘܐ ܕܪܫܟ
29 ܕܥܠ ܡܫܟܒܟ ܗܢܘ. * ܐܢܬ ܡܠܟܐ ܡܚܫܒܬܟ ܥܠ ܠܒܟ ܣܠܩܝ. ܥܠ ܡܕܡ
30 ܕܗܘܐ ܒܚܪܬܐ. ܘܓܠܐ ܐܪܙܐ ܐܘܕܥܟ ܡܕܡ ܕܗܘܐ. * ܘܐܢܐ ܠܐ ܗܘܐ ܡܛܠ ܕܐܝܬ ܒܝ
ܚܟܡܬܐ ܝܬܝܪ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܚܝܐ. ܐܬܓܠܝ ܠܝ ܐܪܙܐ ܗܢܐ. ܐܠܐ ܡܛܠ ܕܦܫܪܐ ܢܬܝܕܥ
31 ܠܡܠܟܐ. ܘܡܕܡ ܕܐܬܚܫܒܬ ܒܠܒܟ ܬܕܥ. * ܐܢܬ ܡܠܟܐ ܚܙܐ ܗܘܝܬ. ܘܗܐ
32 ܨܠܡܐ ܚܕ ܪܒܐ: ܕܙܝܘܗ ܝܬܝܪ ܛܒ. ܘܩܐܡ ܠܘܩܒܠܟ. ܘܚܙܘܗ ܕܚܝܠ. ܪܫܗ ܕܗܘ ܨܠܡܐ
33 ܕܕܗܒܐ ܛܒܐ. ܚܕܝܗ ܘܕܪܥܘܗܝ ܕܣܐܡܐ. ܟܪܣܗ ܘܡܬܟܣܬܗ ܕܢܚܫܐ. * ܫܩܘܗܝ
34 ܕܦܪܙܠܐ. ܪܓܠܘܗܝ ܡܢܗܘܢ ܕܦܪܙܠܐ ܘܡܢܗܘܢ ܕܚܨܦܐ. * ܘܚܙܝܬ ܕܐܬܓܙܪܬ ܟܐܦܐ
ܕܠܐ ܒܐܝܕܝܢ. ܘܡܚܬܗ ܠܨܠܡܐ. ܥܠ ܪܓܠܘܗܝ ܕܦܪܙܠܐ ܘܕܚܨܦܐ. ܘܕܩܬ ܐܢܘܢ. ܗܝܕܝܢ
35 * ܐܬܕܩܩܘ ܐܟܚܕܐ ܦܪܙܠܐ. ܘܚܨܦܐ. ܘܢܚܫܐ. ܘܣܐܡܐ. ܘܕܗܒܐ. ܘܗܘܘ ܐܝܟ ܥܘܪܐ ܕܒܐܕܪܐ
ܕܩܝܛܐ. ܘܫܩܠܬ ܐܢܘܢ ܪܘܚܐ ܥܙܝܙܬܐ. ܘܐܬܪܐ ܠܐ ܐܫܬܟܚ ܠܗܘܢ. ܘܟܐܦܐ
ܕܡܚܬܗ ܠܨܠܡܐ. ܗܘܬ ܠܛܘܪܐ ܪܒܐ. ܘܡܠܬܗ ܠܟܠܗ ܐܪܥܐ.

Ipſe tempora mutat ac tempeſtates : transfert reges,& alios erigit : ſapientiam præbet ſapientibus, & prudentiam intellectu præditis : Ipſe retegit profunda & arcana, novit quod latet in obſcuro, & lumen penes ipſum eſt. Tibi Deus patrum meorum gratias ago, laudémque dico ; quòd ſapientiam & potentiam dederis mihi, & nunc notum mihi feceris quod à te poſtulavimus, & verbum regis indicaveris mihi. Et illicò ingreſſus eſt Daniel ad Arioch cui mandaverat rex ut interficeret ſapientes Babylonis, adiénſque eum ſic eſt allocutus ; Sapientes Babylonis ne perdas, ſed introduc me ad regem & explicationem regi indicabo. Tunc Arioch celerrimè introduxit Danielem ad regem & dixit ei ; Reperi virum inter captivos Judæos, qui explicationem regi indicaturus eſt. Reſpondens rex ait Danieli, cujus nomen erat Blitſaſar ; Potéſne indicare mihi ſomnium quod vidi, & explicationem ejus ? Reſpondens Daniel dixit coram rege ; Arcanum quod rex petit, neque ſapientes, neque magi, neque præſtigiatores, neque harioli exponere poſſunt regi : Verùm adeſt Deus cœli myſteriorum revelator, qui notum facit regi Nebuchadnoſari quod futurum eſt poſtremis diebus. Somnium tuum, & viſio capitis tui quæ *contigit* ſuper cubili tuo, ea eſt. Tibi rex, cogitationes tuæ animum tuum occupavêre de his quæ poſthac eventura ſunt, & arcanorum revelator notum fecit tibi quæ futura ſunt. Mihi autem, non quòd major inſit in me ſapientia quàm cunctis viventibus, revelatum fuit mihi myſterium iſtud ; ſed ut explicatio pateat regi, & quæ animo tuo cogitâſti, cognoſcas. Tu rex videbas, & ecce ſtatua quædam ingens, eximii admodum nitoris ſtabat ante te. Hujus aſpectus horrendus erat : Caput ejus ex auro optimo, pectus & brachia argentea, venter & femora ænea : Crura ferrea, pedes partim ferrei, partim teſtacei. Deinde vidiſti lapidem haud manibus excisum percuſſiſſe ſtatuam illam ad pedes ejus ferreos atque teſtaceos, & minutiſſimè contudiſſe eos : Adeóque comminuta fuiſſe ferrum, æs, teſtam, argentum, & aurum ; & quaſi in areæ æſtivæ glumam redacta, abrepta fuiſſe à vento vehementi, & nullum eis locum inventum eſſe : lapidem autem illum qui ſtatuam percuſſerat, evaſiſſe montem ingentem, eoque repletam eſſe terram univerſam.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Interpretatione LATINA.

21 Καὶ αὐτὸς ἀλλοιοῖ καιροὺς ϗ χρόνους, καθιστᾷ βασιλεῖς, ϗ μεθιστᾷ, διδοὺς σοφίαν τοῖς σοφοῖς, ϗ φρόνησιν
22 τοῖς εἰδόσι σύνεσιν, Αὐτὸς ἀποκαλύπτει βαθέα ϗ ἀπόκρυφα, γινώσκων τὰ ἐν τῷ σκότει, ϗ τὸ
23 φῶς μετ' αὐτοῦ ἐστι. Σοὶ ὁ θεὸς τῶν πατέρων μου ἐξομολογοῦμαι ϗ αἰνῶ, ὅτι σοφίαν ϗ δύναμιν (γ)
24 δέδωκάς μοι, ϗ ἐγνώρισάς μοι ἃ ἠξιώσαμεν παρὰ σοῦ, ϗ τὸ ὅραμα τοῦ βασιλέως ἐγνώρισάς μοι. Καὶ
ἦλθε Δανιὴλ πρὸς Ἀριώχ, ὃν κατέστησεν ὁ βασιλεὺς ἀπολέσαι τοὺς σοφοὺς Βαβυλῶνος, ϗ εἶπεν αὐτῷ,
Τοὺς σοφοὺς Βαβυλῶνος μὴ ἀπολέσῃς, εἰσάγαγε δέ με ἐνώπιον τοῦ βασιλέως, ϗ τὴν σύγκρισιν τῷ βασιλεῖ
25 ἀναγγελῶ. Τότε Ἀριὼχ ἐν σπουδῇ εἰσήγαγε τὸν Δανιὴλ ἐνώπιον τοῦ βασιλέως, ϗ εἶπεν αὐτῷ,
Εὕρηκα ἄνδρα ἐκ τῶν υἱῶν τῆς αἰχμαλωσίας τῆς Ἰουδαίας, ὅστις τὸ σύγκριμα τῷ βασιλεῖ ἀναγγελεῖ.
26 Καὶ ἀπεκρίθη ὁ βασιλεὺς, ϗ εἶπε τῷ Δανιὴλ, οὗ τὸ ὄνομα (δ) Βαλτάσαρ, Εἰ δύνασαί μοι ἀναγγεῖλαι
27 τὸ (ε) ἐνύπνιον ὃ ἴδον, ϗ τὴν σύγκρισιν αὐτοῦ; Καὶ ἀπεκρίθη Δανιὴλ ἐνώπιον τοῦ βασιλέως, καὶ
εἶπε, Τὸ μυστήριον ὃ ὁ βασιλεὺς ἐπερωτᾷ, οὐκ ἔστι σοφῶν, μάγων, ἐπαοιδῶν, γαζαρηνῶν ἀναγγεῖλαι
28 τῷ βασιλεῖ· Ἀλλ' (ζ) ἢ ἔστι θεὸς ἐν οὐρανῷ ἀποκαλύπτων μυστήρια, ϗ ἐγνώρισε τῷ βασιλεῖ Ναβουχοδονόσορ,
ἃ δεῖ γενέσθαι ἐπ' ἐσχάτων τῶν ἡμερῶν. τὸ ἐνύπνιόν σου ϗ αἱ ὁράσεις τῆς κεφαλῆς σου
29 ἐπὶ τῆς κοίτης σου, τοῦτό (η) ἐστι Βασιλεῦ· οἱ διαλογισμοί σου ἐπὶ τῆς κοίτης σου ἀνέβησαν τί δεῖ
30 γενέσθαι μετὰ ταῦτα· ϗ ὁ ἀποκαλύπτων μυστήρια ἐγνώρισέ σοι ἃ δεῖ γενέσθαι. Καὶ ἐμοὶ (θ) δὲ οὐκ ἐν
σοφίᾳ τῇ οὔσῃ ἐν ἐμοὶ παρὰ πάντας τοὺς ζῶντας, τὸ μυστήριον (ι) τοῦτο ἀπεκαλύφθη, ἀλλ' ἕνεκεν τοῦ
31 τὴν σύγκρισιν τῷ βασιλεῖ γνωρίσαι, ἵνα τοὺς διαλογισμοὺς τῆς καρδίας σου γνῷς. Σὺ βασιλεῦ ἐθεώρεις,
ϗ ἰδοὺ εἰκὼν μία, μεγάλη ἡ εἰκὼν ἐκείνη, ϗ ἡ (κ) πρόσοψις αὐτῆς ὑπερφερὴς, ἑστῶσα πρὸ προσώπου
32 σου, ϗ ἡ ὅρασις αὐτῆς φοβερά. (λ) Εἰκὼν, ἧς ἡ κεφαλὴ χρυσίου (μ) χρηστοῦ, αἱ χεῖρες ϗ τὸ στῆθος
33 ϗ οἱ βραχίονες αὐτῆς ἀργυροῖ, ἡ κοιλία ϗ οἱ μηροὶ χαλκοῖ, Αἱ κνῆμαι σιδηραῖ, οἱ πόδες
34 μέρος μέν τι σιδηροῦν, (ν) ϗ μέρος δέ τι ὀστράκινον. Ἐθεώρεις (ξ) ἕως ἀπεσχίσθη λίθος ἐξ ὄρους
ἄνευ χειρῶν, ϗ ἐπάταξε τὴν εἰκόνα ἐπὶ τοὺς πόδας τοὺς σιδηροῦς ϗ ὀστρακίνους, ϗ ἐλέπτυνεν αὐτοὺς εἰς
35 τέλος. Τότε ἐλεπτύνθησαν εἰσάπαξ (ο) τὸ ὄστρακον, ὁ σίδηρος, ὁ χαλκὸς, ὁ ἄργυρος, ὁ χρυσός·
καὶ (") ἐγένετο ὡσεὶ κονιορτὸς ἀπὸ ἅλωνος θερινῆς· καὶ ἐξῇρεν αὐτὰ τὸ πλῆθος τοῦ πνεύματος,
καὶ τόπος οὐχ εὑρέθη αὐτοῖς. ϗ ὁ λίθος ὁ πατάξας τὴν εἰκόνα, ἐγενήθη ὄρος μέγα, ϗ ἐπλήρωσε
πᾶσαν τὴν γῆν.

Et ipſe mutat tempora, & ætates : conſtituit reges, & transfert : dans 21
ſapientiam ſapientibus, & prudentiam intelligentibus diſciplinam. Ipſe 22
revelat profunda, & abſcondita, cognoſcens quæ in tenebris : & lux cum
eo eſt. Tibi, Deus patrum meorum, confiteor, & laudo, quia ſapientiam & 23
fortitudinem dediſti mihi : & oſtendiſti mihi, quæ rogavimus te : & viſionem
regis notam feciſti mihi. Et venit Daniel ad Arioch, quem conſtituerat 24
rex, ut perderet ſapientes Babylonis, & dixit ei ; Sapientes Babylonis,
ne perdas : ſed introduc me in conſpectu regis : & conjecturam regi
narrabo. Tunc Arioch in feſtinatione introduxit Danielem ad regem, & 25
dixit ei ; Inveni virum de filiis captivitatis Judæa, qui conjecturam regi
indicabit. Et reſpondit rex, & dixit Danieli, cujus nomen erat Baltaſar ; 26
Si potes mihi indicare ſomnium, quod vidi, & conjecturam ejus?
Et reſpondit Daniel coram rege, & dixit ; Myſterium, quod rex interrogat, 27
non eſt ſapientum, magorum, incantatorum, Gazarenorum, indicare
regi : Sed eſt Deus in cælo revelans myſteria : & nota fecit regi 28
Nabuchodonoſor, quæ oportet fieri in noviſſimis diebus. Somnium tuum,
& viſiones capitis tui in cubili tuo, hoc eſt, O rex. Cogitationes tuæ in 29
cubili tuo aſcenderunt, quid futurum ſit (g) poſt hæc : & qui revelat myſteria,
oſtendit tibi, quæ oporteat fieri. Et mihi autem non in ſapientia, quæ 30
ſit in me præ omnibus viventibus, myſterium hoc revelatum eſt ; ſed ut
conjecturam regi manifeſtam faciam ; ut cogitationes cordis tui ſcias. Tu, 31
rex, videbas, & ecce (h) imago una, magna imago illa, & aſpectus ipſius
ſublimis, ſtans ante faciem tuam : & intuitus ejus erat terribilis ;
Imago, cujus caput ex auro optimo erat : manus, & pectus, & brachia 32
ejus argentea : venter, & femora ænea, Et tibiæ ferreæ : pedes, pars 33
quidem ferrea, & pars quædam teſtea. Videbas, donec abſciſſus eſt lapis 34
de monte ſine manibus : & percuſſit imaginem ſuper pedes ferreos,
& teſteos : & comminuit eos in finem. Tunc comminuta ſunt pariter 35
teſta, ferrum, æs, argentum, aurum : & facta ſunt quaſi pulvis de area
æſtiva : & ſuſtulit ea multitudo ſpiritûs ; & locus non eſt inventus eis.
Et lapis, qui percuſſerat imaginem, factus eſt mons magnus, & implevit
univerſam terram.

MS. A. (γ) ἔδωκάς μοι, ϗ νῦν ἐγνώρισάς (δ) Βαρτάσαρ, (ε) ἐνύπνιον, ϗ τὴν (ζ) ἔστιν ὁ θεὸς (η) ἐστιν· Σὺ βασιλεῦ ἐθεώρεις· οἱ (θ) οὐκ ἐν (ι) ἀπεκαλύφθη, (κ) ὄψις
(λ) Ἡ εἰκὼν, (μ) καθαροῦ, (ν) μέρος δὲ (ξ) ἕως οὗ ἐτμήθη λίθος (ο) ὁ σίδηρος, τὸ ὄστρακον, ὁ χαλκὸς, (") ἐγένοντο

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

21 * وهو يبدل الاوقات والازمنة * يقيم ملوكا ويزيلها * يعطي الحكمة للحكماء * والذهن لعلام
22 الفهم * وهو يكشف العميقات والخفيات * يعلم ما في الظلام * والنور معه هو * لك يا اله ابائي
23 اعترف واسبح * لانك اعطيتني حكمة وقوة * وانت اعطيتني ما سالناه منك * وعرفتني
رويا الملك *

Ipſe mutat tempora & tempeſtates : conſtituit 21
reges, & deponit eos : confert
ſapientiam ſapientibus, & ingenium
ſcientibus prudentiam : Ipſe detegit profunda 22
& arcana : novit quicquid eſt
in tenebris, & lux penes eum eſt. Tibi 23
O Deus patrum meorum, confiteor, teque
laudo ; quòd præſtiteris mihi ſapientiam
& fortitudinem, túque mihi dederis
quod à te poſtulavimus, & notam
feceris mihi viſionem regis.

* الاصحاح الثاني *

24 * ودخل دانيال الي اريوخ الذي اقامه الملك ليهلك حكماء بابل * وقال له * لا تهلك
25 حكماء بابل * ادخلني امام الملك فاخبر الملك بالتاويل * حينيذ اريوخ ادخل دانيال بسرعة
26 امام الملك * وقال له * وجدت رجلا من بني سبي يهودا * هذا يخبر الملك بالتاويل * فاجاب
الملك وقال لدانيال الذي اسمه بلطشاصر * هل تقدر ان تخبرني بالحلم الذي رايته
27 وبتاويله * فاجاب دانيال امام الملك وقال * السر الذي سال عنه الملك * ليس احد من الحكماء
28 والمجوس والرقايين والسحرة يخبر الملك * الا الاله الذي في السماء كاشف الاسرار * فعرف الملك
بختنصر ما ينبغي ان يكون في الايام الاخيرة * حلمك رويا راسك على مضجعك هو هذا *
29 * انت ايها الملك افكارك على مضجعك صعدت بما ينبغي ان يكون بعد هذا * وكاشف الاسرار
30 عرفك بما ينبغي ان يكون * وليس لي بالحكمة الكاينة في اكثر من جميع الاحياء كشف
31 لي هذا السر * لكن من اجل ان يعرف الملك بالتاويل * لكي تعلم افكار قلبك * انت ايها
الملك رايت * واذا صورة واحدة عظيمة * وتلك الصورة وطلعتها كثيرة البهاء جدا *
32 قايمة امام وجهك * ومنظرها * مخوف * الصورة راسها من ذهب نقي طيب * يداها وصدرها
33 وذراعاها فضة * بطنها وفخذاها نحاسا * ساقاها حديدا * قدماها جزء حديدا وجزء ما خزفا *
34 * ورايت الي ان قطع حجر من جبل بغير يدين * وضرب الصورة على القدمين النحاس والخزف *
35 ودقهما ناعما الي الغاية * حينيذ دق في من الخزف والحديد والنحاس والفضة والذهب *
وصارت مثل غبار من بيدر صيفي * وحملها كنس الريح * فلم يوجد لها موضع * والحجر
الذي ضرب الصورة * صار جبلا عظيما * وملا كل الارض *

Textus ſecundus.

Deinde ingreſſus eſt Daniel ad Arioch 24
quem conſtituerat rex ad perdendum
ſapientes Babelis, & ait illi ; Ne perdas
ſapientes Babelis : introduc me coram
rege, & indicabo regi interpretationem.
Tunc Arioch Daniele ad regem 25
feſtinanter introducto, dixit illi ;
Inveni virum de captivis Judæ, is indicabit
regi interpretationem. Reſpondit 26
rex, & ait Danieli cujus nomen
erat Baltaſaſar ; Num poteris indicare
mihi ſomnium quod vidi, & interpretationem
ejus ? Reſpondit Daniel coram 27
rege, & ait ; Arcanum de quo
rex inquirit, nemo ſapientum, magorum,
incantatorum, aut veneficorum
indicaturus eſt regi. Sed Deus qui eſt 28
in cœlo, revelator arcanorum, notum
fecit regi Bochtonaſſari quæ contingere
debent ultimis diebus. Somnium tuum,
viſio ſcilicet capitis tui ſuper cubili
tuo, hoc eſt. Tibi O rex, cogitationes 29
tuæ ſuper cubili tuo aſcenderunt de his
quæ poſtea futura ſunt, & arcanorum
revelator nota fecit tibi quæ contingere
debent. Neque verò mihi, per ſapientiam 30
quæ major extet in me quàm cunctis
viventibus, revelatum eſt arcanum
iſtud ; ſed ut nota fiat regi interpretatio,
quatenus ſcias cogitationes cordis
tui. Tu O rex vidiſti cùm ecce 31
imago quædam magna, eáque imago cujus
lumina erant ingentis admodum
majeſtatis, ſtabat ante faciem tuam ;
cujus aſpectus formidabilis. Imaginis 32
ejus caput erat ex auro puro & optimo ;
manus, pectus, & brachia argentea,
venter & femora ænea. Crura ferrea : 33
pedes partim ferrei, partim verò teſtacei.
Deinde vidiſti donec lapis è monte 34
ſine manibus abſciſſus eſt, percuſſitque
imaginem ſuper pedes æneos &
teſtaceos, & comminuit eos in particulas
ſummè tenues. Tunc comminuta ſunt 35
ſimul ac ſemel teſta, ferrum, æs, argentum,
& aurum ; et facta ſunt ceu
pulviſculus ex area æſtiva, et aſportavit
ea multitudo venti, nec inventus
eſt eis locus. Tum lapis ille qui percuſſerat
imaginem, factus eſt mons
magnus, et implevit univerſam terram.

Deus quia , regum rex rex Tu .rege coram dicemus *ejus* interpretationem & , ſomnium Hoc
36 דְּנָה חֶלְמָא וּפִשְׁרֵהּ נֵאמַר קֳדָם־מַלְכָּא׃ אַנְתְּה מַלְכָּא מֶלֶךְ מַלְכַיָּא דִּי אֱלָהּ 37
beſtiam , *hominis filii habitantes* quibus *omnibus in* Et .tibi dedit gloriam & fortitudinem &,potentiam , regnum cœlorum
38 שְׁמַיָּא מַלְכוּתָא חִסְנָא וְתָקְפָּא וִיקָרָא יְהַב־לָךְ׃ וּבְכָל־דִּי דָאְרִין בְּנֵי־אֲנָשָׁא חֵיוַת
auro de ipſum caput ipſe tu : ipſis omnibus in *te conſtituit dominum* & ,tua manu in dedit *cœlorum volatile* & , agri
בָּרָא וְעוֹף־שְׁמַיָּא יְהַב בִּידָךְ וְהַשְׁלְטָךְ בְּכָלְּהוֹן אַנְתְּה־הוּא רֵאשָׁה דִּי דַהֲבָא׃
univerſam in dominabitur quod , *ære* de aliud tertium regnum & , te *præ inferius* aliud regnum conſurget te poſt Et
39 וּבָתְרָךְ תְּקוּם מַלְכוּ אָחֳרִי אֲרַעא מִנָּךְ וּמַלְכוּ תְלִיתָאָה אָחֳרִי דִּי נְחָשָׁא דִּי תִשְׁלַט בְּכָל־
,omnia *atterens &* ,*comminuens* ferrum *quo reſpectu omni* : ferrum ſicut forte erit quartum regnum Et .*terram*
40 אַרְעָא׃ וּמַלְכוּ רְבִיעָאָה תֶּהֱוֵא תַקִּיפָה כְּפַרְזְלָא כָּל־קֳבֵל דִּי פַרְזְלָא מְהַדֵּק וְחָשֵׁל כֹּלָּא
eis ex digitos & , pedes vidiſti quod Et .conteret & ,comminuet , hæc omnia *conterens* quod ferrum ſicut &
41 וּכְפַרְזְלָא דִּי־מְרָעַע כָּל־אִלֵּין תַּדִּק וְתֵרֹעַ׃ וְדִי־חֲזַיְתָה רַגְלַיָּא וְאֶצְבְּעָתָא מִנְּהֵן
reſpectu omni : eo in *exiſtendum ad* ferri planta de & , erit diviſum regnum ,*ferri eis ex &* ,*figuli* ſu *teſtæ*
חֲסַף דִּי־פֶחָר וּמִנְּהֵין פַּרְזֶל מַלְכוּ פְלִיגָה תֶּהֱוֵה וּמִן־נִצְבְּתָא דִּי פַרְזְלָא לֶהֱוֵא־בַהּ כָּל־קֳבֵל
parte ex : *teſtæ eis ex &* , *ferri eis ex* pedum digitos Et .*luti* teſta *in* mixtum ferrum vidiſti quod
42 דִּי חֲזַיְתָה פַּרְזְלָא מְעָרַב בַּחֲסַף טִינָא׃ וְאֶצְבְּעָת רַגְלַיָּא מִנְּהֵין פַּרְזֶל וּמִנְּהֵין חֲסַף מִן־קְצָת
ſe miſcentes , *luti* teſta *in* mixtum ferrum vidiſti quod Et .contritum erit *ea* ex & , forte erit regnum
43 מַלְכוּתָא תֶּהֱוֵה תַקִּיפָה וּמִנַּהּ תֶּהֱוֵא תְבִירָה׃ וְדִי חֲזַיְתָ פַּרְזְלָא מְעָרַב בַּחֲסַף טִינָא מִתְעָרְבִין
ſe miſcens non ferrum ſicut *ecce* : *illo* cum *hunc adhærentes exiſtendum ad* non & , hominis ſemine *in exiſtendum ad*
לֶהֱוֺן בִּזְרַע אֲנָשָׁא וְלָא־לֶהֱוֺן דָּבְקִין דְּנָה עִם־דְּנָה הֵא־כְדִי פַרְזְלָא לָא מִתְעָרַב
non *ſecula* in quod , regnum cœlorum Deus ſuſcitabit , ipſorum regum *eorum* diebus in Et .teſta cum
44 עִם־חַסְפָּא׃ וּבְיוֹמֵיהוֹן דִּי מַלְכַיָּא אִנּוּן יְקִים אֱלָהּ שְׁמַיָּא מַלְכוּ דִּי לְעָלְמִין לָא
ſtabit ipſum & , regna iſta omnia conſumet &,comminuet : dimittetur non alteri populo *ejus* regnum &,corrumpetur
תִתְחַבַּל וּמַלְכוּתָה לְעַם אָחֳרָן לָא תִשְׁתְּבִק תַּדִּק וְתָסֵיף כָּל־אִלֵּין מַלְכְוָתָא וְהִיא תְּקוּם
, ferrum comminuit & , manibus in non qui lapis eſt abſciſſus monte de quòd , vidiſti *quo reſpectu Omni* .ſecula in
45 לְעָלְמַיָּא׃ כָּל־קֳבֵל דִּי־חֲזַיְתָ דִּי מִטּוּרָא אִתְגְּזֶרֶת אֶבֶן דִּי־לָא בִידַיִן וְהַדֶּקֶת פַּרְזְלָא
,ſomnium verum & : hæc poſt ,*exiſtendum ad quod quid* regi notificavit *magnus* Deus ,aurum & ,argentum , teſtam , æs
נְחָשָׁא חַסְפָּא כַּסְפָּא וְדַהֲבָא אֱלָהּ רַב הוֹדַע לְמַלְכָּא מָה דִּי לֶהֱוֵא אַחֲרֵי דְנָה וְיַצִּיב חֶלְמָא
fragantias & ,*munus* & : ſe incurvavit Danieli & ,*ſua facies* ſuper cecidit Nebuchadneſar rex tunc *In* .*ej'* interpretatio fidelis &
46 וּמְהֵימַן פִּשְׁרֵהּ׃ בֵּאדַיִן מַלְכָּא נְבוּכַדְנֶצַּר נְפַל עַל־אַנְפּוֹהִי וּלְדָנִיֵּאל סְגִד וּמִנְחָה וְנִיחֹחִין
dominus & ,deorum Deus *ipſe* veſter Deus quòd ,*veritate* A : dixit & , Daniel ad rex *Reſpondit* .ei *libandum ad* dixit
47 אֲמַר לְנַסָּכָה לֵהּ׃ עָנֵה מַלְכָּא לְדָנִיֵּאל וְאָמַר מִן־קְשֹׁט דִּי אֱלָהֲכוֹן הוּא אֱלָהּ אֱלָהִין וּמָרֵא
multa magna munera & ,magnificavit Danielem rex Tunc .hoc ſecretum revelare potuiſti quia : ſecreta revelans & ,regum
48 מַלְכִין וְגָלֵה רָזִין דִּי יְכֵלְתָּ לְמִגְלֵא רָזָה דְנָה׃ אֱדַיִן מַלְכָּא לְדָנִיֵּאל רַבִּי וּמַתְּנָן רַבְרְבָן שַׂגִּיאָן
poſtulavit Daniel Et .Babel ſapientes omnes ſuper ,*magiſtratuũ* principẽ & ,Babel *provincia omni ſuper* eum præfecit & , ei dedit
49 יְהַב־לֵהּ וְהַשְׁלְטֵהּ עַל כָּל־מְדִינַת בָּבֶל וְרַב־סִגְנִין עַל כָּל־חַכִּימֵי בָבֶל׃ וְדָנִיֵּאל בְּעָא
.regis *porta in* Daniel & : nego-Habed & ,Meſach ,Sedrach ,Babel *provinciæ quæ adminiſtratione ſuper* præfecit & , rege à
מִן־מַלְכָּא וּמַנִּי עַל עֲבִידְתָּא דִּי מְדִינַת בָּבֶל לְשַׁדְרַךְ מֵישַׁךְ וַעֲבֵד נְגוֹ וְדָנִיֵּאל בִּתְרַע מַלְכָּא׃

Verſio VULG. LAT.

Hoc eſt ſomnium : Interpretationem quoque ejus dicemus 36
coram te, rex. Tu rex regum es : & Deus cœli, regnum, 37
& fortitudinem, et imperium, et gloriam dedit tibi :
Et omnia in quibus habitant filii hominum, et beſtiæ agri: 38
volucres quoque cœli dedit in manu tua, & ſub ditione
tua univerſa conſtituit : tu es ergò caput aureum. Et 39
poſt te conſurget regnum aliud minus te argenteum : &
regnum tertium aliud æreum, quod imperabit univerſæ
terræ. Et regnum quartum erit velut ferrum : quomodò 40
ferrum comminuit & domat omnia, ſic comminuet & conteret
omnia hæc. Porrò quia vidiſti pedum, & digitorum 41
partem teſtæ figuli, et partem ferream : regnum diviſum
erit, quod tamen de plantario ferri orietur, ſecundùm
quod vidiſti ferrum miſtum teſtæ ex luto. Et digitos pedum 42
ex parte ferreos, et ex parte fictiles : ex parte regnum
erit ſolidum, & ex parte contritum. Quòd autem vidiſti 43
ferrum miſtum teſtæ ex luto, commiſcebuntur quidem humano
ſemine, ſed non adhærebunt ſibi, ſicuti ferrum miſceri
non poteſt teſtæ. In diebus autem regnorum illorum, 44
ſuſcitabit Deus cœli regnum, quod in æternum non
diſſipabitur, & regnum ejus alteri populo non tradetur :
comminuet autem, & conſumet univerſa regna hæc : et
ipſum ſtabit in æternum. Secundùm quod vidiſti, quòd 45
de monte abſciſſus eſt lapis ſine manibus, & comminuit
teſtam, & ferrum, et æs, et argentum, & aurum, Deus magnus
oſtendit regi quæ ventura ſunt poſteá : & verum eſt
ſomnium, & fidelis interpretatio ejus. Tunc rex Nabuchodonoſor 46
cecidit in faciem ſuam, & Danielem adoravit,
et hoſtias et incenſum præcepit ut ſacrificarent ei. Loquens 47
ergò rex, ait Danieli ; Verè Deus veſter Deus deorum
eſt, et Dominus regum, et revelans myſteria : quoniam
tu potuiſti aperire hoc ſacramentum. Tunc rex Danielem 48
in ſublime extulit, et munera multa et magna dedit
ei : & conſtituit eum principem ſuper omnes provincias
Babylonis, & præfectum magiſtratuum ſuper cunctos ſapientes
Babylonis. Daniel autem poſtulavit à rege, & 49
conſtituit ſuper opera provinciæ Babylonis, Sidrach, Miſach,
et Abdenago : ipſe autem Daniel erat in foribus
regis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

36 * ܗܢܘ ܚܠܡܐ. ܘܦܘܫܩܗ ܐܡܪ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. * ܐܢܬ ܡܠܟܐ ܡܠܟ ܡܠܟ̈ܐ .. ܠܟ ܐܠܗܐ 37
ܡܪܝܡܐ. ܡܠܟܘܬܐ ܚܣܝܢܬܐ ܘܐܝܩܪܐ ܝܗܒ ܠܟ. * ܘܒܟܠ ܐܬܪ ܕܥܡܪܝܢ ܒܗ ܒܢܝ̈ܢܫܐ. 38
ܘܦܪ̈ܚܬܐ ܕܫܡܝܐ ܘܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ. ܐܫܠܡ ܒܐܝ̈ܕܝܟ. ܘܐܫܠܛܟ ܥܠ ܟܠܗܘܢ. ܐܢܬ ܗܘ ܪܫܐ
39 ܕܕܗܒܐ. * ܘܒܬܪܟ ܬܩܘܡ ܡܠܟܘܬܐ ܐܚܪܬܐ ܡܟܝܟܐ ܡܢܟ. ܘܡܠܟܘܬܐ ܐܚܪܬܐ ܬܠܝܬܝܬܐ
40 ܕܢܚܫܐ ܕܬܫܠܛ ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ. * ܘܡܠܟܘܬܐ ܪܒܝܥܝܬܐ ܬܗܘܐ ܥܫܝܢܐ ܐܝܟ
ܦܪܙܠܐ. ܘܐܝܟ ܕܦܪܙܠܐ ܪܥܐ ܘܡܕܩ ܟܠ. ܗܟܢܐ ܐܦ ܗܝ ܬܕܩ ܘܬܫܥܒܕ ܟܠ.
41 * ܘܕܚܙܝܬ ܪ̈ܓܠܐ ܘܨ̈ܒܥܬܐ. ܕܡܢܗܘܢ ܕܚܣܦܐ ܕܦܚܪܐ. ܘܡܢܗܘܢ ܕܦܪܙܠܐ .. ܡܠܟܘܬܐ
ܦܠܝܓܬܐ ܬܗܘܐ. ܘܡܢ ܫܪܫܐ ܕܦܪܙܠܐ ܢܗܘܐ ܒܗ. ܐܝܟܢܐ ܕܚܙܝܬ ܦܪܙܠܐ ܕܡܥܪܒ ܥܡ ܚܣܦܐ
42 ܕܛܝܢܐ. * ܘܨ̈ܒܥܬܐ ܕܪ̈ܓܠܐ ܕܚܙܝܬ .. ܡܢܗܘܢ ܕܦܪܙܠܐ ܘܡܢܗܘܢ ܕܚܣܦܐ .. ܡܢܗ ܡܢ
43 ܡܠܟܘܬܐ ܬܗܘܐ ܥܫܝܢܐ .. ܘܡܢܗ ܬܗܘܐ ܬܒܝܪܐ. * ܘܕܚܙܝܬ ܦܪܙܠܐ ܕܡܥܪܒ ܥܡ ܚܣܦܐ
ܕܛܝܢܐ .. ܢܬܥܪܒܘܢ ܒܙܪܥܐ ܕܐܢܫܐ. ܘܠܐ ܢܗܘܘܢ ܕܒܩܝܢ ܚܕ ܥܡ ܚܕ .. ܐܝܟ ܦܪܙܠܐ ܕܠܐ
44 ܡܬܥܪܒ ܥܡ ܛܝܢܐ. * ܘܒܝܘܡܝܗܘܢ ܕܡܠܟ̈ܐ ܗܠܝܢ .. ܢܩܝܡ ܐܠܗܐ ܕܫܡܝܐ ..
ܡܠܟܘܬܐ ܕܠܥܠܡܝܢ ܠܐ ܬܬܚܒܠ. ܘܡܠܟܘܬܐ ܠܥܡܐ ܐܚܪܢܐ ܠܐ ܬܫܬܒܩ. ܐܠܐ ܬܕܩ
45 ܘܬܫܠܡ ܟܠܗܝܢ ܡܠܟܘܬܐ ܗܠܝܢ. ܘܗܝ ܬܩܘܡ ܠܥܠܡܝܢ. * ܐܝܟܢܐ ܕܚܙܝܬ ܕܡܢ
ܛܘܪܐ ܐܬܓܙܪܬ ܟܐܦܐ ܕܠܐ ܒܐܝ̈ܕܝܢ .. ܘܕܩܬ ܦܪܙܠܐ ܘܢܚܫܐ ܘܚܣܦܐ ܘܣܐܡܐ ܘܕܗܒܐ. ܐܠܗܐ
46 ܪܒܐ ܐܘܕܥ ܠܟ ܡܕܡ ܕܥܬܝܕ ܠܡܗܘܐ ܒܚܪܬ ܝܘܡܬܐ. ܫܪܝܪ ܚܠܡܐ. ܘܡܗܝܡܢ ܦܘܫܩܗ. * ܗܝܕܝܢ
ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ .. ܢܦܠ ܥܠ ܐܦܘܗܝ. ܘܠܕܢܝܐܝܠ ܣܓܕ. ܘܩܘܪ̈ܒܢܐ ܘܒܣ̈ܡܐ ܐܡܪ
47 ܠܡܩܪܒܘ ܠܗ. * ܥܢܐ ܡܠܟܐ. ܘܐܡܪ ܠܕܢܝܐܝܠ. ܒܩܘܫܬܐ ܐܠܗܟܘܢ. ܗܘܝܘ ܐܠܗ
48 ܐܠܗ̈ܝܢ. ܘܡܪܐ ܡܠܟ̈ܐ. ܘܓܠܐ ܪ̈ܐܙܐ ܗܘܝܘ. ܕܐܫܟܚܬ ܠܡܓܠܝܘ ܪܐܙܐ ܗܢܐ. * ܗܝܕܝܢ ܡܠܟܐ
ܪܒܝ ܠܕܢܝܐܝܠ. ܘܡܘܗ̈ܒܬܐ ܣܓܝܐܬܐ ܝܗܒ ܠܗ. ܘܐܫܠܛܗ ܥܠ ܟܠܗ ܐܪܥܐ
ܕܒܒܠ. ܘܐܩܝܡܗ ܪܝܫܐ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܪ̈ܒܝ ܚܝܠܐ. ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܚܟܝ̈ܡܐ ܕܒܒܠ.
49 * ܘܕܢܝܐܝܠ ܒܥܐ ܡܢ ܡܠܟܐ .. ܘܐܫܠܛ ܥܠ ܥܒܕܐ ܕܡܕܝܢܬܐ ܕܒܒܠ .. ܠܫܕܪܟ ܘܠܡܝܫܟ
ܘܠܥܒܕܢܓܘ. ܘܕܢܝܐܝܠ ܗܘܐ ܒܬܪܥܐ ܕܡܠܟܐ.

Hujuſmodi erat ſomnium : jam explicationem 36
ejus dicam regi. Tibi O rex, regum 37
regi, Deus altiſſimus regnum potens & gloriam
largitus eſt : Et omnem locum in quo 38
degunt homines, volucres cœli, & beſtiæ
terræ, tradidit in manus tuas, téque præfecit
iis omnibus : tu es caput illud aureum. Poſt 39
te verò ſurget regnum alterum te humilius :
tum regnum aliud tertium, quod æneum erit,
dominabitur in tota terra : Denique regnum 40
quartum durum erit ſicut ferrum ; &
quemadmodum ferrum tundit & comminuit
omnia, ſic illud omnia conteret ac domabit.
Quod autem vidiſti pedes ac digitos partim 41
eſſe ex argilla figuli, partim ex ferro ; regnum
erit diviſum, & ex origine ferri manebit
in eo, quemadmodum vidiſti ferrum mixtum
teſtæ luteæ. Digiti verò pedum, quos 42
vidiſti partim ferreos, partim teſtaceos ; *portendunt*
partem ejus regni fore duram, &
partem fore fragilem. Quod vidiſti ferrum 43
teſtæ luteæ mixtum, *indicat* ſic miſcendos
quidem eos humano ſemine, ſed alterum cum
altero non cohæſuros, perinde ac ferrum non
commiſcetur cum luto. Porrò diebus regum 44
iſtorum ſuſcitabit Deus cœli regnum
quod in ſecula non corrumpetur, quódque
regnum alteri populo non relinquet : ſed
comminutis & conſumptis omnibus iis regnis,
ipſum manebit in perpetuum ; Quemadmodum 45
vidiſti lapidem è monte haud manibus
exciſum comminuiſſe ferrum, æs, argillam,
argentum, & aurum. Deus maximus
nota fecit tibi quæ futura ſunt poſteris diebus.
Verum eſt ſomnium, & fidelis interpretatio
ejus. Tunc Nabuchadnoſar rex procidit 46
in faciem ſuam, Danielem adoravit, &
thura muneráque dixit ei offerenda. Reſpondens 47
rex ait Danieli ; Verè Deus veſter,
Deus deorum eſt, Dominus regum, & revelator
arcanorum ; quandoquidem potuiſti arcanum
hoc declarare: Tunc rex magnificavit 48
Danielem, munera multa dedit ei, præfecit
eum toti terræ Babylonis, & principem
ſtatuit eum ſuper omnes militiæ duces omnéſque
ſapientes Babylonis. Denique 49
Daniele regem poſtulante, præfecit adminiſtrationi
urbis Babylonicæ Sedrachum, Maiſachum,
& Ebednagum : Daniel autem manſit
in aula regia.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

36 Τοῦτό ἐστι τὸ ἐνύπνιον, καὶ τὴν σύγκρισιν αὐτοῦ ἐροῦμεν ἐνώπιον τοῦ βασιλέως. Σὺ βασιλεῦ βασιλεὺς
37 βασιλέων, ᾧ ὁ θεὸς τοῦ οὐρανοῦ βασιλείαν ἰσχυρὰν καὶ κραταιὰν καὶ ἔντιμον ἔδωκεν Ἐν παντὶ τόπῳ,
38 ὅπου κατοικοῦσιν οἱ υἱοὶ τῶν ἀνθρώπων· θηρία τε ἀγροῦ, καὶ πετεινὰ (¨)οὐρανοῦ, καὶ ἰχθύας τῆς θαλάσσης
39 ἔδωκεν ἐν τῇ χειρί σου, καὶ κατέστησέ σε κύριον πάντων. Σὺ εἶ ἡ κεφαλὴ ἡ χρυσῆ. Καὶ ὀπίσω σου
ἀναστήσεται βασιλεία ἑτέρα ἥττων σου, (π) καὶ βασιλεία τρίτη, (ρ) ἥτις ἐστὶν ὁ χαλκός, ἣ κυριεύσει πά-
40 σης τῆς γῆς. Καὶ βασιλεία τετάρτη (σ), ἥτις ἔσται ἰσχυρὰ ὡς σίδηρος· ὃν τρόπον ὁ σίδηρος λεπτύνει
41 καὶ δαμάζει πάντα, οὕτως πάντα λεπτυνεῖ καὶ (ι) δαμάσει. Καὶ ὅτι εἶδες τοὺς πόδας, καὶ τοὺς δακτύλους,
μέρος μέν τι ὀστράκινον (τ), μέρος δέ τι σιδηροῦν, βασιλεία διῃρημένη ἔσται, καὶ ἀπὸ τῆς ῥίζης τῆς
42 σιδηρᾶς ἔσται ἐν αὐτῇ, ὃν τρόπον εἶδες τὸν σίδηρον ἀναμεμιγμένον τῷ ὀστράκῳ. Καὶ οἱ δάκτυλοι τῶν ποδῶν
μέρος μέν τι σιδηροῦν, μέρος δέ τι ὀστράκινον, μέρος τι τῆς βασιλείας ἔσται ἰσχυρόν, καὶ (υ) ἀπ' αὐτῆς ἔσται
43 συντετριμμένον. Ὅτι εἶδες τὸν σίδηρον ἀναμεμιγμένον τῷ ὀστράκῳ, συμμιγεῖς ἔσονται ἐν σπέρματι ἀνθρώπων,
καὶ οὐκ ἔσονται (φ) προσκολλώμενοι οὗτοι μετὰ τούτου, καθὼς ὁ σίδηρος οὐκ ἀναμίγνυται (χ) μετὰ τοῦ ὀστράκου.
44 Καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις τῶν βασιλέων ἐκείνων, ἀναστήσει ὁ θεὸς τοῦ οὐρανοῦ βασιλείαν, ἥτις εἰς (ψ) τοὺς
αἰῶνας οὐ διαφθαρήσεται, καὶ ἡ βασιλεία αὐτοῦ λαῷ ἑτέρῳ οὐχ ὑπολειφθήσεται, λεπτυνεῖ (ω) καὶ λικμήσει
45 πάσας τὰς βασιλείας, καὶ αὕτη ἀναστήσεται εἰς τοὺς αἰῶνας, Ὃν τρόπον εἶδες, ὅτι ἀπὸ ὄρους ἐτμήθη λί-
θος ἄνευ χειρῶν, καὶ ἐλέπτυνε τὸ ὄστρακον, τὸν σίδηρον, τὸν χαλκόν, τὸν ἄργυρον, τὸν χρυσόν. ὁ θε-
ὸς ὁ μέγας ἐγνώρισε τῷ βασιλεῖ ἃ δεῖ γενέσθαι μετὰ ταῦτα· καὶ ἀληθινὸν τὸ ἐνύπνιον, καὶ πιστὴ ἡ σύγ-
46 κρισις αὐτοῦ. Τότε ὁ βασιλεὺς Ναβουχοδονόσορ ἔπεσεν ἐπὶ πρόσωπον, καὶ τῷ Δανιὴλ προσεκύνησε, καὶ
47 (α) μαναὰ καὶ εὐωδίας εἶπε σπεῖσαι αὐτῷ. Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ βασιλεὺς, εἶπε τῷ Δανιὴλ, Ἐπ' ἀληθεί-
ας ὁ θεὸς ὑμῶν, αὐτός ἐστι θεὸς θεῶν, καὶ κύριος (β) τῶν βασιλέων, ὁ ἀποκαλύπτων μυστήρια, ὅτι (γ)
48 ἠδυνάσθης ἀποκαλύψαι τὸ μυστήριον τοῦτο. Καὶ ἐμεγάλυνεν ὁ βασιλεὺς τὸν Δανιὴλ, καὶ δόματα (δ)με-
γάλα καὶ πολλὰ ἔδωκεν αὐτῷ, καὶ κατέστησεν αὐτὸν ἐπὶ πάσης χώρας Βαβυλῶνος, καὶ ἄρχοντα σατραπῶν
49 (ε) ἐπὶ πάντας τοὺς σοφοὺς Βαβυλῶνος. Καὶ Δανιὴλ ᾐτήσατο παρὰ τοῦ βασιλέως, καὶ κατέστησεν ἐ-
πὶ τὰ ἔργα τῆς χώρας Βαβυλῶνος τὸν Σεδράχ, (ζ) Μισάχ, καὶ Ἀβδεναγώ. καὶ Δανιὴλ ἦν ἐν τῇ αὐ-
λῇ τοῦ βασιλέως.

Hoc eſt ſomnium : & conjecturam ejus dicemus coram rege. Tu, O rex, 36
rex regum es, cui Deus cœli regnum forte, & validum, & honoratum 37
dedit In omni loco, ubi habitant filii hominum : & beſtias agri, & vo- 38
lucres cœli, & piſces maris dedit in manu tua : & conſtituit te domi-
num omnium. Tu es caput aureum : Et poſt te conſurget regnum aliud 39
(i)minus te : & regnum tertium, quod eſt æs, quod imperabit univerſæ
terræ : Et regnum quartum, quod erit forte, veluti ferrum. Quomodò 40
ferrum comminuit, & domat omnia ; ſic omnia comminuet, & domabit.
Et quia vidiſti pedes, & digitos, partem quidem aliquam teſteam, par- 41
tem verò quandam ferream ; regnum diviſum erit : & à radice ferrea
erit in eo, quemadmodùm vidiſti ferrum admiſtum teſtæ. Et digiti pe- 42
dum pars quidem ferrea, pars verò teſtea ; pars quædam regni erit fortis,
& de eo erit contritum. Quia vidiſti ferrum admiſtum teſtæ ; commiſta 43
erunt in ſemine hominum : & non adhærebunt hoc ad hoc, ſicut ferrum
non immiſcetur cum teſta. Et in diebus regum illorum, ſuſcitabit Deus 44
cœli regnum, quod in ſecula non diſſipabitur : & regnum ejus alteri
populo non relinquetur : comminuet & ventilabit univerſa regna : & ipſum
ſtabit in ſecula : Sicut vidiſti, quòd de monte abſciſſus eſt lapis ſine mani- 45
bus, & comminuebat teſtam, ferrum, æs, argentum, aurum. Deus
magnus oſtendit regi, quæ oportet fieri poſt hæc : & verum eſt ſomnium :
& fidelis conjectura ejus. Tunc rex Nabuchodonoſor cecidit in faciem, & 46
Danielem adoravit : & (k)manaa, & ſuavitates odoris dixit ut libaren-
tur ei. Et reſpondens rex dixit Danieli ; In veritate Deus veſter ipſe eſt 47
Deus Deorum, & dominus regum, revelans myſteria : quoniam potuiſti
revelare myſterium hoc. Et magnificavit rex Danielem, & munera ma- 48
gna & multa dedit ei : & conſtituit eum ſuper univerſam regionem Ba-
bylonis, & principem ſatraparum ſuper omnes ſapientes Babylonis. Et Da- 49
niel poſtulavit à rege : & conſtituit ſuper opera provinciæ Babylonis, Se-
drach, Miſach, et Abdenago. Et Daniel erat in aula regis.

MS.A. (¨) τοῦ οὐρανοῦ, (π) ἥτις ἐστὶν ὁ ἄργυρος, καὶ βασιλεία (ρ) ἥ ἐστιν (σ) ἔσται ἰσχυρὰ ὡς (ι) δαμάζει. (τ) κεραμίου, μέρος (υ) ἐπ' αὐτῆς (φ) προσκολλώμενος οὗτος (χ) τῷ ὀστράκῳ. (ψ) τὸν αἰῶνα οὐ (ω) δὲ καὶ (α) μαννὰ (β) τῶν κυρίων, καὶ βασιλεὺς τῶν βασιλέων, ἀποκαλύπτων μυστήρια, (γ) ἐδυνήθης (δ) πολλὰ καὶ μεγάλα (ε) καὶ ἐπὶ (ζ) Μισάχ, Ἀβδεναγώ.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

36 37 * هذا هو الحلم * وتاويله اقوله امام الملك * انت ايها الملك ملك الملوك * الذي اعطاه
اله السماء مملكة قوية وعزيزة ومكرمة * وفي كل موضع حيث يسكن بنوا البشر ووحوش 38
الحقل * وطيور السماء * وسمك البحر * دفعها في يديك * واقامك سيدا للكل * انت هو
راس الذهب * وخلفك تقوم مملكة اخرى دونك التي هي الفضة * ومملكة ثالثة 39
التي هي النحاس * هذه تسود كل الارض * ومملكة رابعة تكون قوية مثل الحديد * 40
كما ان الحديد يدق ويرض كلا * هكذا تدق وترض الكل * ولانك رايت القدمين 41
والاصابع جزء ما خزفا وجزء ما حديدا * هذه المملكة تكون منقسمة * ومن اصل
الحديد يكون * كما رايت الحديد مختلطا بالخزف * واصابع القدمين جزء ما 42
حديدا وجزء ما خزفا * يكون جزء ما من هذه المملكة قويا ومنها يكون منكسرا *
* لانك رايت الحديد مختلطا بالخزف * يكونون مختلطين في ذرية البشر * ولا يكونون 43
ملتصقين هذا مع هذا * كمثل ان الحديد لا يختلط مع الخزف * وفي ايام تلك الممالك 44
يقيم اله السماء مملكة * هذه لا تفسد الى الدهور * ومملكته لا تذر لشعب اخر *
وتدق وتذري جميع الممالك * وهذه تقوم الى الدهور * كما رايت انه من جبل قطع 45
حجر بغير يدين * ودق الخزف والحديد والنحاس والفضة والذهب * الاله العظيم عرف
الملك ما ينبغي ان يكون بعد هذه * والحلم حقيقي * وتاويله صدق * حينئذ 46
بختنصر الملك خر على وجهه وسجد لدانيال * وقال ان يقرب له هدايا وطيوبا * واجاب 47
الملك وقال لدانيال * بالحق الهكم هو اله الالهة * ورب الارباب * وملك الملوك *
وكاشف الاسرار * لانه اقتدر ان يكشف هذا السر * وعظم الملك لدانيال * ودفع له 48
عطايا كثيرة وعظيمة * واقامه على كل كورة بابل * ورييسا على عظماء الجيوش * وعلى جميع
حكماء بابل * ودانيال سال من الملك * فاقام على اعمال كورة بابل صدراخ وميساخ وعبدناغو * 49
وكان دانيال في دار الملك *

Hoc eſt ſomnium : interpretationem quo- 36
que ejus dicam coram rege. Tu O 37
rex, rex regum, cui dedit cœli Deus
regnum munitum, potens, & honoran-
dum : Et ubicunque degunt homines, 38
beſtiæ campi, volucres cœli, & piſces
maris ; tradidit in manum tuam, teque
conſtituit omnium dominum : tu inquam
es caput aureum. Tibi verò ſuccedet 39
regnum alterum poſt te, quod eſt argen-
tum : & regnum tertium, quod eſt
æs : hoc dominabitur univerſæ terræ :
Denique regnum quartum duriſſimum 40
erit veluti ferrum : quemadmodum fer-
rum comminuit & contundit omnia,
ſic illud omnia conteret & contundet.
Et quia vidiſti pedes ac digitos partim 41
teſtaceos, partim ferreos, regnum il-
lud erit diviſum, & ex origine ferri
erit, quemadmodum vidiſti ferrum
cum teſta commiſtum. Porrò digiti pe- 42
dum partim teſtacei, partim ferrei :
pars quædam ejus regni potens erit,
pars autem erit confracta. Quia vi- 43
diſti ferrum cum teſta commiſtum,
commiſti quidem erunt cum genere hu-
mano, ſed non erunt cohærentes alter
cum altero, quemadmodum ferrum mi-
nimè miſcetur cum teſta. In diebus 44
regnorum illorum ſuſcitabit Deus cœli
regnum : illud non corrumpetur in ſe-
cula, neque regnum ejus devolvetur
ad alium populum ; ſed contundet ſpar-
getque omnia regna, ipſo in ſecula
manente ; Quemadmodum vidiſti è 45
monte exciſum eſſe lapidem ſine mani-
bus, & comminuiſſe teſtam, ferrum,
æs, argentum, & aurum. Deus maxi-
mus nota fecit regi quæ poſthac contin-
gere debent. Somnium certum eſt, &
interpretatio ejus vera. Tunc Boch- 46
tonaſſar rex corruit ſuper faciem ſu-
am, adoravitque Danielem, & dixit
ut offerrentur ei munera & odores.
Tum reſpondit rex, & dixit Danieli ; 47
Verè Deus veſter eſt Deus deorum,
Dominus dominorum, rex regum, &
revelator arcanorum ; quia potuit ar-
canum hoc patefacere. Magnificavit 48
autem rex Danielem, & largitus eſt
ei munera multa & magna ; conſtituit
eum ſuper totam provinciam Babelis,
& præpoſuit ducibus agminum, cun-
ctiſque ſapientibus Babelis. Præterea 49
Daniele regem rogante, curam com-
miſit provinciæ Babelis Sedracho, Miſa-
cho, & Abdenago ; Daniel verò man-
ſit in aula regia.

דָּנִיֵּאל : ג

CAP. III. ג

eam ſtatuit : ſex cubitorum ejus latitudo ,ſexaginta cubitorum ejus altitudo ,*auro de* imaginem fecit rex Nebuchadneſar
1 נְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא עֲבַד צְלֵם דִּי־דְהַב רוּמֵהּ אַמִּין שִׁתִּין פְּתָיֵהּ אַמִּין שִׁת אֲקִימֵהּ
duces & ,*magiſtratus* ,*rege à ſecundos* congregandum ad miſit rex Nebuchadneſar Et .Babel provincia in ,Dura campo in
2 בְּבִקְעַת דּוּרָא בִּמְדִינַת בָּבֶל׃ וּנְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא שְׁלַח לְמִכְנַשׁ ׀ לַאֲחַשְׁדַּרְפְּנַיָּא סִגְנַיָּא וּפַחֲוָתָא
,imaginis dedicationem ad *veniendum ad* : provinciarum præfectos omnes & ,Tiphthazos ,Dethabrazos ,Ghedebrazos ,Adarghezerazos
אֲדַרְגָּזְרַיָּא גְדָבְרַיָּא דְתָבְרַיָּא תִּפְתָּיֵא וְכֹל שִׁלְטֹנֵי מְדִינָתָא לְמֵתֵא לַחֲנֻכַּת צַלְמָא
,Ghedebrazi ,Adarghezerazi ,duces & ,*magiſtratus* ,*rege à ſecundi* *ſe congregantes* tunc *In* .rex Nebuchadneſar erexerat quam
3 דִּי הֲקֵים נְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא׃ בֵּאדַיִן מִתְכַּנְּשִׁין אֲחַשְׁדַּרְפְּנַיָּא סִגְנַיָּא וּפַחֲוָתָא אֲדַרְגָּזְרַיָּא גְדָבְרַיָּא
ſtantes & : rex Nebuchadneſar erexerat quam imaginis dedicationem ad ,provinciarum præfecti omnes & ,Tiphthazi ,Dethabrazi
דְתָבְרַיָּא תִּפְתָּיֵא וְכֹל שִׁלְטֹנֵי מְדִינָתָא לַחֲנֻכַּת צַלְמָא דִּי הֲקֵים נְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא וְקָאְמִין
.linguis & ,*nationibus* ,populis *dicentes* Vobis : *virtute in* *clamans* præco Et .Nebuchadneſar erexerat quam imagine coram
4 לָקֳבֵל צַלְמָא דִּי הֲקֵים נְבוּכַדְנֶצַּר׃ וְכָרוֹזָא קָרֵא בְחָיִל לְכוֹן אָמְרִין עַמְמַיָּא אֻמַּיָּא וְלִשָּׁנַיָּא׃
: *cantus ſpecierum omnium* & ,ſymphoniæ ,*pſalteriorum* ,ſambucæ ,citharæ ,fiſtulæ ,cornu *vocem* audieritis quo tempore *In*
5 בְּעִדָּנָא דִּי־תִשְׁמְעוּן קָל קַרְנָא מַשְׁרוֹקִיתָא קִיתָרֹס סַבְּכָא פְּסַנְתֵּרִין סוּמְפֹּנְיָא וְכֹל זְנֵי זְמָרָא
ea in ,genuflexerit & ,*ceciderit* non quiſquis Et .rex Nebuchadneſar fecit erigere quam ,*auri* imagini genuflectetis & ,*cadetis*
6 תִּפְּלוּן וְתִסְגְּדוּן לְצֶלֶם דַּהֲבָא דִּי הֲקֵים נְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא׃ וּמַן־דִּי־לָא יִפֵּל וְיִסְגֻּד בַּהּ־
populi omnes *audientes quod ſecundum* tempore *eo in* *hoc* *reſpectu* *Omni* .ardentis ignis fornacis medium in projicietur hora
7 שַׁעֲתָא יִתְרְמֵא לְגוֹא־אַתּוּן נוּרָא יָקִדְתָּא׃ כָּל־קֳבֵל דְּנָה בֵּהּ זִמְנָא כְּדִי שָׁמְעִין כָּל־עַמְמַיָּא
linguæ & ,*nationes* ,populi omnes *cadentes* ;*cantu ſpecierũ omniũ &* ,*pſalteriorum* ,ſambucæ ,citharæ ,fiſtulæ ,cornu *vocem*
קָל קַרְנָא מַשְׁרוֹקִיתָא קִיתָרֹס שַׂבְּכָא פְּסַנְטֵרִין וְכֹל זְנֵי זְמָרָא נָפְלִין כָּל־עַמְמַיָּא אֻמַּיָּא וְלִשָּׁנַיָּא
viri acceſſerunt tempore ipſo in *hoc* *reſpectu* *Omni* .rex Nebuchadneſar fecerat erigere quam ,*auri* *imagini* *ſe incurvantes*
8 סָגְדִין לְצֶלֶם דַּהֲבָא דִּי הֲקֵים נְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא׃ כָּל־קֳבֵל דְּנָה בֵּהּ־זִמְנָא קְרִבוּ גֻּבְרִין
.vive *ſecula* in Rex : regem Nebuchadneſar ad : *dicentes &* ,*Reſponderunt* .*Jehudæorum eorum accuſationes* accuſaverũt & : Chaſdim
9 כַּשְׂדָּאִין וַאֲכַלוּ קַרְצֵיהוֹן דִּי יְהוּדָיֵא׃ עֲנוֹ וְאָמְרִין לִנְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא מַלְכָּא לְעָלְמִין חֱיִי׃
,*pſalteriorum* ,ſambucæ ,citharæ ,fiſtulæ ,cornu *vocem* audierit qui ,homo omnis quòd ,decretum poſuiſti rex Tu
10 אַנְתְּה מַלְכָּא שָׂמְתָּ טְעֵם דִּי־כָל־אֱנָשׁ דִּי יִשְׁמַע קָל קַרְנָא מַשְׁרֹקִיתָא קִיתָרֹס שַׂבְּכָא פְּסַנְתֵּרִין
projicietur : ſe incurvaverit & ,*cadet* non quiſquis Et .*auri* imagini ſe incurvet & ,*cadat* : *cantus ſpecierum omnium* & ,ſymphoniæ &
11 וְסוּמְפֹּנְיָא וְכֹל זְנֵי זְמָרָא יִפֵּל וְיִסְגֻּד לְצֶלֶם דַּהֲבָא׃ וּמַן־דִּי־לָא יִפֵּל וְיִסְגֻּד יִתְרְמֵא
,Sadrach ,Babel *provinciæ* *opus* ſuper *eos* conſtituiſti quos ,Jehudæi viri Sunt .ardentis ignis fornacis medium in
12 לְגוֹא־אַתּוּן נוּרָא יָקִדְתָּא׃ אִיתַי גֻּבְרִין יְהוּדָאִין דִּי־מַנִּיתָ יָתְהוֹן עַל־עֲבִידַת מְדִינַת בָּבֶל שַׁדְרַךְ
quam ,*auri* imagini *&* ,*colentes* non tuos Deos :decretum ,rex te ſuper poſuerunt non iſti viri : nego-Habed & ,Meſach
מֵישַׁךְ וַעֲבֵד נְגוֹ גֻּבְרַיָּא אִלֵּךְ לָא־שָׂמוּ עֲלָיִךְ מַלְכָּא טְעֵם לֵאלָהָיִךְ לָא פָלְחִין וּלְצֶלֶם דַּהֲבָא דִּי
.nego-Habed & ,Meſach ,Sadrach *adducendum ad* dixit ira & furore in Nebuchadneſar tunc *In* .*ſe incurvantes* non ,feciſti erigere
13 הֲקֵימְתָּ לָא סָגְדִין׃ בֵּאדַיִן נְבוּכַדְנֶצַּר בִּרְגַז וַחֲמָא אֲמַר לְהַיְתָיָה לְשַׁדְרַךְ מֵישַׁךְ וַעֲבֵד נְגוֹ
,Meſach ,Sadrach *deſolatio* *Nunquid* : eis dixit & ,Nebuchadneſar *Reſpondit* .rege coram ſunt adducti iſti viri tunc *In*
14 בֵּאדַיִן גֻּבְרַיָּא אִלֵּךְ הֵיתָיוּ קֳדָם מַלְכָּא׃ עָנֵה נְבוּכַדְנֶצַּר וְאָמַר לְהוֹן הַצְדָּא שַׁדְרַךְ מֵישַׁךְ
? *genuflectentes* non ,feci erigere quam ,*auri* imagini & ,*colentes* *vos eſtis* non meos deos ,nego-Habed &
וַעֲבֵד נְגוֹ לֵאלָהַי לָא־אִיתֵיכוֹן פָּלְחִין וּלְצֶלֶם דַּהֲבָא דִּי הֲקֵימֶת לָא סָגְדִין׃

Verſio VULG. LAT.

CAP. III.

NAbuchodonoſor rex fecit ſtatuam auream , altitudine 1
cubitorum ſexaginta, latitudine cubitorum ſex, &
ſtatuit eam in campo Dura provinciæ Babylonis. Itaque 2
Nabuchodonoſor rex miſit ad congregandos ſatrapas,
magiſtratus, & judices, duces, & tyrannos, &
præfectos, omnéſque principes regionum, ut convenirent
ad dedicationem ſtatuæ,quam erexerat Nabuchodonoſor
rex. Tunc congregati ſunt ſatrapæ,magiſtratus, 3
& judices, duces, & tyranni, & optimates qui erant in
poteſtatibus conſtituti , & univerſi principes regionum,
ut convenirent ad dedicationem ſtatuæ , quam
erexerat Nabuchodonoſor rex : ſtabant autem in conſpectu
ſtatuæ,quam poſuerat Nabuchodonoſor rex : Et 4
præco clamabat valenter ; Vobis dicitur populis,
tribubus, & linguis : In hora, quâ audieritis ſonitum 5
tubæ, & fiſtulæ, & citharæ, ſambucæ, & pſalterii, &
ſymphoniæ, & univerſi generis muſicorum , cadentes
adorate ſtatuam auream , quam conſtituit Nabuchodonoſor
rex. Si quis autem non proſtratus adoraverit, 6
eâdem horâ mittetur in fornacem ignis ardentis. Poſt 7
hæc igitur ſtatim ut audierunt omnes populi ſonitum
tubæ, fiſtulæ, & citharæ, ſambucæ, & pſalterii,& ſymphoniæ,
& omnis generis muſicorum : cadentes omnes
populi, tribus , & linguæ , adoraverunt ſtatuam auream
, quam conſtituerat Nabuchodonoſor rex. Statímque 8
in ipſo tempore accedentes viri Chaldæi accuſaverunt
Judæos : Dixerúntque Nabuchodonoſor 9
regi ; Rex,in æternum vive : Tu, rex,poſuiſti decretum, 10
ut omnis homo, qui audierit ſonitum tubæ, fiſtulæ,&
citharæ, ſambucæ,& pſalterii,& ſymphoniæ,& univerſi
generis muſicorum, proſternat ſe, & adoret ſtatuam
aureaam : Si quis autem non procidens adoraverit, 11
mittatur in fornacem ignis ardentis. Sunt ergò viri 12
Judæi, quos conſtituiſti ſuper opera regionis Babylonis,
Sidrach, Miſach,& Abdenago : viri iſti contempſerunt,
rex, decretum tuum : deos tuos non colunt , &
ſtatuam auream,quam erexiſti, non adorant. Tunc Nabuchodonoſor 13
in furore & in ira præcepit, ut adducerentur
Sidrach,Miſach, & Abdenago : qui confeſtim
adducti ſunt in conſpectu regis. Pronuntiánſque Nabuchodonoſor 14
rex, ait eis ; Veréne, Sidrach, Miſach,
& Abdenago, deos meos non colitis , & ſtatuam auream,
quam conſtitui, non adoratis ?

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܩܦܠܐܘܢ * ܓ *

1 * ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ . ܥܒܕ ܨܠܡܐ ܚܕ ܕܕܗܒܐ. ܪܘܡܗ ܐܡܝܢ ܫܬܝܢ. ܘܦܬܝܗ ܐܡܝܢ ܫܬ. ܘܐܩܝܡ
2 ܗܝ. ܘܐܩܝܡܗ ܒܦܩܥܬܐ ܕܕܘܪܐ ܒܐܪܥܐ ܕܒܒܠ. * ܘܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ . ܫܕܪ ܠܡܟܢܫܘ
ܠܪܒܝ ܚܝܠܐ ܘܡܪܘܬܐ ܘܗܓܡܘܢܐ. ܘܐܓܪܕܝܐ ܘܓܪܒܕܝܐ. ܘܬܪܒܕܝܐ ܘܛܒܬܝܐ.
ܘܟܠܗܘܢ ܫܠܝܛܢܐ ܕܡܕܝܢܬܐ. ܠܡܐܬܐ ܠܚܘܕܬܐ ܕܨܠܡܐ ܚܕܬܐ ܕܐܩܝܡ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ.
3 * ܗܝܕܝܢ ܐܬܟܢܫܘ ܟܠܗܘܢ ܪܒܝ ܚܝܠܐ ܘܡܪܘܬܐ ܘܗܓܡܘܢܐ ܘܐܓܪܕܝܐ ܘܓܪܒܕܝܐ ܘܬܪܒܕܝܐ
ܘܛܒܬܝܐ ܘܟܠܗܘܢ ܫܠܝܛܢܐ ܕܡܕܝܢܬܐ. ܘܐܬܘ ܠܚܘܕܬܐ ܕܨܠܡܐ ܚܕܬܐ ܕܐܩܝܡ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ.
4 ܘܩܝܡܝܢ ܗܘܘ ܠܘܩܒܠ ܨܠܡܐ ܕܐܩܝܡ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ. * ܘܟܪܘܙܐ ܩܪܐ ܒܚܝܠܐ
5 ܘܐܡܪ. ܠܟܘܢ ܐܡܪܝܢ ܥܡܡܐ ܐܘܡܘܬܐ ܘܠܫܢܐ. * ܒܫܥܬܐ ܕܫܡܥܝܢ ܐܢܬܘܢ ܩܠܐ
ܕܩܪܢܐ ܘܫܦܘܦܪܐ. ܘܟܢܪܐ ܘܩܝܬܪܐ. ܘܣܝܦܘܢܝܐ. ܘܟܠ ܙܢܝ ܙܡܪܐ. ܬܦܠܘܢ. ܘܬܣܓܕܘܢ
6 ܠܨܠܡܐ ܕܕܗܒܐ ܕܐܩܝܡ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ. * ܘܡܢ ܕܠܐ ܢܦܠ ܢܣܓܘܕ. ܒܗ ܒܫܥܬܐ
7 ܢܫܬܕܐ ܒܓܘ ܐܬܘܢܐ ܕܢܘܪܐ ܝܩܕܬܐ. * ܘܒܫܥܬܐ ܕܫܡܥܝܢ ܗܘܘ ܥܡܡܐ ܩܠܐ ܕܩܪܢܐ
ܘܫܦܘܦܪܐ : ܘܟܢܪܐ ܘܩܝܬܪܐ ܘܣܝܦܘܢܝܐ ܘܟܠ ܙܢܝ ܙܡܪܐ . ܢܦܠܝܢ ܗܘܘ ܟܠܗܘܢ
ܥܡܡܐ ܐܘܡܘܬܐ ܘܠܫܢܐ . ܘܣܓܕܝܢ ܠܨܠܡܐ ܕܕܗܒܐ ܕܐܩܝܡ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ.
8 * ܘܒܗ ܒܫܥܬܐ ܩܪܒܘ ܓܒܪܐ ܟܠܕܝܐ. ܘܐܟܠܘ ܩܪܨܝܗܘܢ ܕܝܗܘܕܝܐ. * ܘܐܡܪܝܢ ܠܢܒܘܟܕܢܨܪ
9 10 ܡܠܟܐ. ܡܠܟܐ ܠܥܠܡ ܚܝܝ. * ܐܢܬ ܦܩܕܬ. ܕܟܠܢܫ ܕܢܫܡܥ ܩܠܐ ܕܩܪܢܐ ܘܫܦܘܦܪܐ.
ܘܟܢܪܐ ܘܩܝܬܪܐ ܘܣܝܦܘܢܝܐ. ܘܟܠ ܙܢܝ ܙܡܪܐ. ܢܦܠ. ܘܢܣܓܘܕ ܠܨܠܡܐ ܕܕܗܒܐ
11 ܕܐܩܝܡܬ. * ܘܡܢ ܕܠܐ ܢܦܠ ܢܣܓܘܕ. ܒܗ ܒܫܥܬܐ ܢܫܬܕܐ ܒܓܘ ܐܬܘܢܐ ܕܢܘܪܐ ܝܩܕܬܐ.
12 * ܐܝܬ ܗܪܟܐ ܓܒܪܐ ܝܗܘܕܝܐ : ܕܐܩܝܡܬ ܐܢܘܢ ܥܠ ܥܒܕܐ ܕܡܕܝܢܬܐ ܕܒܒܠ . ܫܕܪܟ ܡܝܫܟ
ܘܥܒܕܢܓܘ . ܓܒܪܐ ܗܠܝܢ. ܠܐ ܢܛܪܘ ܡܠܟܐ. ܘܠܐܠܗܟ ܠܐ ܦܠܚܝܢ . ܘܠܨܠܡܐ
13 ܕܕܗܒܐ ܕܐܩܝܡܬ. ܠܐ ܣܓܕܝܢ. * ܗܝܕܝܢ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ . ܒܪܘܓܙܐ ܘܒܚܡܬܐ ܐܡܪ .
14 ܠܡܝܬܝܘ ܠܫܕܪܟ ܘܠܡܝܫܟ ܘܠܥܒܕܢܓܘ. ܘܐܝܬܝܘ ܐܢܘܢ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. * ܥܢܐ ܢܒܘܟܕܢܨܪ
ܡܠܟܐ. ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܒܫܪܪܐ ܫܕܪܟ ܡܝܫܟ ܘܥܒܕܢܓܘ : ܠܐܠܗܝ ܠܐ ܦܠܚܝܢ
ܐܢܬܘܢ. ܘܠܨܠܡܐ ܕܕܗܒܐ ܕܐܩܝܡܬ ܠܐ ܣܓܕܝܢ ܐܢܬܘܢ.

CAP. III.

NEbuchadnoſar rex factâ ſtatuâ quâdam 1
aureâ cujus altitudo erat ſexaginta cubitorum,
latitudo verò ſex cubitorum ; erexit
eam in campo Dura in terra Babylonica.
Deinde Nebuchadnoſar rex miſit convocatum 2
duces militiæ,dominos ac præſides,Agardæos,
Gerabdæos, Therabdæos, Tibthæos,
omneſque urbium præfectos ; ut venirent ad
ſolennitatem ſtatuæ novæ quam erexerat Nebuchadnoſar
rex. Tunc congregati omnes 3
militiæ duces, domini , ac præſides , Agardæi
, Gerabdæi , Therabdæi , Tibthæi , &
omnes urbium præfecti ; venerunt ad ſolennitatem
ſtatuæ novæ quam erexerat Nebuchadnoſar
rex. Cúmque ſtarent ante ſtatuam
quam erexerat Nebuchadnoſar rex, Præco 4
altâ voce proclamavit ac dixit ; Vobis edicitur
O populi, nationes, & linguæ : Statim 5
atque audieritis ſonum cornu , fiſtulæ,
citharæ, fidium, ſymphoniæ, & omnia genera
muſices , corruentes adorate ſtatuam auream
quam erexit Nebuchadnoſar rex. Quiſquis 6
autem non prociderit & adoraverit,
eâdem horâ proijcietur in fornacem ignis
ardentis. Itaque ſtatim ut audiebant populi 7
ſonum cornu, tibiæ, citharæ , fidium,
ſymphoniæ , omniaque concentûs genera ;
procidebant omnes populi , nationes , &
linguæ, & adorabant ſtatuam auream quam
erexerat Nebuchadnoſar rex, Eodem tempore 8
acceſſerunt viri Chaldæi , & accuſaverunt
Judæos , Dixeruntque Nebuchadnoſari 9
regi ; Rex æternùm vivas. Tu præcepiſti 10
ut quiſquis audito ſono tubæ, fiſtulæ,
citharæ, fidium , ſymphoniæ, & omnis
generis muſicorum , procideret adoraretque
ſtatuam auream quam erexiſti : Is autem 11
qui non procideret adoraretque, illicò
projiceretur in fornacem ignis ardentis.
Adſunt hîc viri Judæi quos præfeciſti negotiis 12
urbis Babylonicæ , Sedrach , Maiſach
, & Ebednago : viri iſti nullam tui
rationem habent O rex, deum tuum non
colunt , neque ſtatuam auream quam erexiſti
, adorant. Tunc Nebuchadnoſar rex 13
irâ & furore *ſuccenſus* præcepit adduci
Sedrachum , Maiſachum , & Ebednagum.
Quibus ad regem adductis , Reſpondit Nebuchadnoſar 14
rex , & ait illis ; Veréne Sedrach,
Maiſach, & Ebednago deum meum
non colitis, & ſtatuam auream quam erexi,
non adoratis ?

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. γʹ.

1 † Ἔτους ὀκτωκαιδεκάτου Ναβουχοδονόσορ (α) ὁ βασιλεὺς ἐποίησεν εἰκόνα χρυσῆν, ὕψος αὐτῆς πήχεων
2 ἑξήκοντα, εὖρος αὐτῆς πήχεων ἕξ· ϗ ἔστησεν αὐτὴν ἐν πεδίῳ Δεειρᾶ, ἐν χώρᾳ Βαβυλῶνος. Καὶ
ἀπέστειλε συναγαγεῖν τοὺς ὑπάτους, ϗ τοὺς στρατηγοὺς, ϗ τοὺς τοπάρχας, ἡγουμένους, ϗ τυράννους, καὶ
τοὺς ἐπ' ἐξουσιῶν, ϗ πάντας τοὺς ἄρχοντας τῶν χωρῶν, ἐλθεῖν εἰς (β) τὰ ἐγκαίνια τῆς εἰκόνος.
3 Καὶ συνήχθησαν οἱ τοπάρχαι, ὕπατοι, στρατηγοὶ, ἡγούμενοι, τύραννοι μεγάλοι, οἱ ἐπ' ἐξουσιῶν,
καὶ πάντες οἱ ἄρχοντες τῶν χωρῶν, εἰς τὸν ἐγκαινισμὸν τῆς εἰκόνος, ἧς ἔστησεν Ναβουχοδονόσορ
4 ὁ βασιλεύς· (γ) καὶ εἱστήκεισαν ἐνώπιον τῆς εἰκόνος (δ). Καὶ ὁ κήρυξ ἐβόα ἐν ἰσχύϊ,
5 Ὑμῖν λέγεται (ε) λαοῖς, φυλαὶ, γλῶσσαι, Ἣ ἂν ὥρᾳ ἀκούσητε (ζ) φωνῆς σάλπιγγος, σύριγγός τε, καὶ
κιθάρας, σαμβύκης τε, ϗ ψαλτηρίου, (η) ϗ παντὸς γένους μουσικῶν, πίπτοντες προσκυνῆτε τῇ εἰκόνι τῇ
6 χρυσῇ ἣ ἔστησε Ναβουχοδονόσορ ὁ βασιλεύς. Καὶ ὃς ἂν μὴ (θ) πεσὼν προσκυνήσῃ, αὐτῇ τῇ ὥρᾳ ἐμβληθήσεται
7 εἰς τὴν κάμινον τοῦ πυρὸς τὴν καιομένην. Καὶ ἐγένετο ὅταν (ι) ἤκουον οἱ λαοὶ τῆς φωνῆς
τῆς σάλπιγγος, σύριγγός τε, ϗ κιθάρας, σαμβύκης τε, ϗ ψαλτηρίου, (κ) ϗ παντὸς γένους μουσικῶν,
πίπτοντες πάντες οἱ (ʹ) λαοὶ, φυλαὶ, γλῶσσαι, προσεκύνουν τῇ εἰκόνι τῇ χρυσῇ (λ) ἣν ἔστησεν Ναβουχοδονόσορ
8 ὁ βασιλεύς. Τότε (μ) προσήλθοσαν ἄνδρες Χαλδαῖοι, ϗ (ν) διέβαλον τοὺς Ἰουδαίους
9 Τῷ βασιλεῖ· Βασιλεῦ, εἰς τοὺς αἰῶνας ζῆθι. Σὺ βασιλεῦ ἔθηκας δόγμα, πάντα ἄνθρωπον ὃς ἂν ἀκούσῃ
10 τῆς φωνῆς τῆς σάλπιγγος, σύριγγός τε, ϗ κιθάρας, (ξ) σαμβύκης, ϗ ψαλτηρίου, (ο) ϗ παντὸς γένους
11 μουσικῶν, Καὶ μὴ πεσὼν προσκυνήσῃ τῇ εἰκόνι τῇ χρυσῇ, (ʺ) ἐμβληθήσεται εἰς τὴν κάμινον τοῦ πυρὸς
12 τὴν καιομένην. Εἰσὶν ἄνδρες Ἰουδαῖοι, οὓς κατέστησας ἐπὶ τὰ ἔργα τῆς χώρας Βαβυλῶνος, (π) Σεδρὰχ,
Μισὰχ, Ἀβδεναγὼ, οἳ οὐχ ὑπήκουσαν βασιλεῦ τῷ δόγματί σου, (ρ) τοῖς θεοῖς σου οὐ λατρεύουσι,
13 ϗ τῇ εἰκόνι τῇ χρυσῇ ἣ ἔστησας, οὐ προσκυνοῦσι. Τότε Ναβουχοδονόσορ ἐν θυμῷ ϗ ὀργῇ εἶπεν ἀγαγεῖν
14 τὸν (σ) Σεδρὰχ, Μισὰχ, ϗ Ἀβδεναγώ. ϗ ἤχθησαν ἐνώπιον τοῦ βασιλέως. Καὶ ἀπεκρίθη Ναβουχοδονόσορ,
ϗ εἶπεν αὐτοῖς, Εἰ ἀληθῶς (τ) Σεδρὰχ, Μισὰχ, Ἀβδεναγὼ, τοῖς θεοῖς μου οὐ λατρεύετε, ϗ
τῇ εἰκόνι τῇ χρυσῇ ἣ ἔστησα οὐ προσκυνεῖτε;

CAP. III.

ANno (a) decimo octavo Nabuchodonoſor rex fecit imaginem auream, 1
altitudo ejus cubitorum ſexaginta, latitudo ejus cubitorum ſex. Et
ſtatuit eam in campo (b) Deira, in provincia Babylonis. Et miſit ad congregandos 2
Conſules, & Duces, & Toparchas, Præfectos, & Tyrannos, & eos
qui erant in poteſtate conſtituti, & omnes principes regionum, ut venirent ad
dedicationem imaginis, [quam ſtatuerat Nabuchodonoſor rex.] Et congregati 3
ſunt Toparchæ, Conſules, Duces, Præfecti, Tyranni magni, qui erant
in poteſtate conſtituti, & omnes principes regionum, ad dedicationem
imaginis, quam ſtatuerat Nabuchodonoſor rex. Et ſteterunt
in conſpectu (c) imaginis. Et præco clamabat in fortitudine; Vobis 4
dicitur (d) populis, tribus, linguæ, Quacunque horâ audieritis vocem tubæ, 5
& fiſtulæ, & citharæ, ſambucæq;, & (e) pſalterii, & univerſi generis
muſicorum; cadentes adorate imaginem auream, quam ſtatuit Nabuchodonoſor
rex. Quicunque autem non adoraverit, cadens; eâdem horâ mittetur 6
in fornacem ignis ardentem. Et factum eſt, quando audiebant populi 7
vocem tubæ, & fiſtulæ, & citharæ, ſambucæque, & pſalterii, & omnis generis
muſicorum, cadentes omnes populi, tribus, linguæ, adorabant imaginem
auream, quam ſtatuerat Nabuchodonoſor rex. Tunc acceſſerunt viri 8
Chaldæi, & accuſaverunt Judæos (f) Regi [Nabuchodonoſor;] Rex, in ſecula 9
vive. Tu, rex, poſuiſti decretum, quòd omnis homo, quicunque audierit vocem 10
tubæ, & fiſtulæ, & citharæ, ſambucæ, & pſalterii, & omnis generis
muſicorum, Et non adoraverit cadens imaginem auream; mittetur in fornacem 11
ignis ardentem. Sunt viri Judæi, quos conſtituiſti ſuper opera regionis 12
Babylonis, Sedrach, Miſach, Abdenago, qui non obedierunt, rex, decreto
tuo; deos tuos non colunt, & imaginem auream, quam ſtatuiſti, non adorant.
Tunc Nabuchodonoſor in furore, & ira dixit, ut adducerent Sedrach, 13
Miſach, & Abdenago. Et adducti ſunt in conſpectu regis. Et reſpondit Nabuchodonoſor, 14
& dixit eis; Si verè Sedrach, Miſach, Abdenago, deos
meos non colitis, & imaginem auream, quam ſtatui, non adoratis?

MS.A. † ὍΡΑΣΙΣ δʹ. (α) ἐποίησεν (β) τὸν * ἐγκαινισμὸν τῆς εἰκόνος, ἧς ἔστησεν Ναβουχοδονόσορ ὁ βασιλεύς. Καὶ (γ) ϗ συνήχθησαν οἱ τοπάρχαι, ϗ ἱστήκεισαν (δ) ἧς ἔστησεν Ναβουχοδονόσορ. Καὶ ὁ (ε) ἔθνη, λαοὶ, φυλαὶ, (ζ) τῆς φωνῆς τῆς σάλπιγγος, (η) ϗ συμφωνίας, ϗ (θ) προσκυνήσῃ, (ι) ἤκουσαν (κ) ϗ συμφωνίας, ϗ (ʹ) λαοὶ προσεκύνουν (λ) ᾗ (μ) προσῆλθαν (ν) διέβαλλον τοὺς Ἰουδαίους, ϗ ὑποβαλόντες εἶπον Ναβουχοδονόσορ Τῷ βασιλεῖ, (ξ) σαμβύκης τε, (ο) ϗ συμφωνίας, ϗ (ʺ) ἐμβληθήσεται (π) Σεδρὰκ, Μισὰκ, Ἀβδεναγὼ, οἱ ἄνδρες ἐκεῖνοι οὐχ (ρ) ϗ τοῖς (σ) Σεδρὰκ, Μισὰκ, ϗ τὸν (τ) Σεδρὰκ, Μισὰκ, ϗ Ἀβδεναγὼ,

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* الفصل الثالث * * الرويا الرابع *

1 * وفي السنة الثامنة عشر بختنصر الملك صنع صورة ذهب * ارتفاعها ستون ذراعا * وعرضها
2 ستة اذرع * واقامها في بقعة دايير في بلد بابل * وارسل بختنصر الملك ليجمع الوزراء والجند *
وروساء المواضع * والمقدمين والمملكين * والذين لهم السلطان * وجميع روساء البلدان ليأتوا
3 لتجديد الصورة الذهب التي اقامها بختنصر الملك * فاجتمع روساء المواضع * والوزراء * والجند *
والمقدمون * والمملكون * والعظماء الذين لهم السلطان * وجميع روساء البلدان * لتجديد
4 الصورة التي اقامها بختنصر الملك * ووقفوا امام الصورة التي اقامها بختنصر * والمنادي
5 صرخ بقوة * لكم يقال ايها الامم والشعوب * والقبايل والالسن * انكم في الساعة التي تسمعون
فيها صوت البوق والناي * والكنارة والونج والمزمار والصفارة وكل جنس الغناء * خروا
6 ساجدين للصورة الذهب التي اقامها بختنصر الملك * ومن لا يخر ساجدا * في تلك الساعة
يلقى في اتون النار الموقد * * الاصحاح الثالث *
7 * وكان لما سمع الشعوب صوت البوق والناي والكنارة والونج والمزمار والصفارة وكل
جنس الغناء * خر جميع الشعوب والقبايل والالسن * وسجدوا للصورة الذهب التي اقامها
8 بختنصر الملك * حينيذ اتى رجال كلدانيون محلوا بيهود * وقالوا للملك * عش ايها 9
10 الملك الى الدهور * انت ايها الملك وضعت امرا ان كل انسان اذا سمع صوت البوق
11 والناي والكنارة والونج والمزمار والصفارة وكل جنس الغناء * ولا يخر ساجدا للصورة
12 الذهب * يلقى في اتون النار الموقد * وهم رجال يهود الذين اقمتهم على جميع اعمال
كورة بابل * صدراخ وميصاخ وعبدناغو * اوليك الرجال لم يطيعوا امرك ايها الملك * ولم
13 يعبدوا الهتك * ولم يسجدوا للصورة الذهب التي اقمتها * حينيذ بختنصر قال بغضب
14 وحنق ان ياتوا بصدراخ وميصاخ وعبدناغو * واوليك الرجال قدموا امام الملك * فاجاب
بختنصر وقال لهم * احقا يا صدراخ وميصاخ وعبدناغو لم تعبدوا الهي * والصورة الذهب
التي اقمتها لم تسجدوا لها *

CAP. III.

Revelatio quarta.

ANno decimo octavo, Bochtonaſſar 1
rex fecit imaginem auream, cujus altitudo
erat ſexaginta cubitorum, latitudo
ſex cubitorum: & erexit eam in campo
Daiir in regione Babelis. Miſitque Bochtonaſſar 2
rex congregatum proreges, &
milites, toparchas, præpoſitos, dominos,
eos quibus erat poteſtas, & omnes climatum
principes; ut venirent ad dedicationem
imaginis aureæ quam erexerat
Bochtonaſſar rex. Itaque congregati toparchæ, 3
proreges, milites, duces, domini,
magnates quibus erat poteſtas, &
omnes climatum principes ad dedicationem
imaginis quàm erexerat Bochtonaſſar.
Tum præco elatâ voce exclamavit; 4
Vobis edicitur ô gentes, populi, nationes,
& linguæ; ut quâ horâ audieritis ſonum 5
buccinæ, tibiæ, citharæ, lyræ, pſalterii,
fiſtulæ, omniumque generum muſicorum;
corruatis adorantes imaginem
auream quam erexit Bochtonaſſar rex.
Quicunque verò non corruerit adorans, 6
hâc horâ projicietur in fornacem ignis
ardentem.

Textus tertius.

Quarè cùm audiſſent populi ſonum buccinæ, 7
tibiæ, citharæ, lyræ, pſalterii, fiſtulæ,
omniumq; generum muſicorum; corruentes
omnes populi, nationes, & linguæ
adoraverunt imaginem auream quàm erexerat
Bochtonaſſar rex. Tunc venerunt 8
viri quidam Chaldæi, & accuſaverunt
Judæos quoſdam, Et dixerunt 9
regi; Vive ô rex in ſecula. Tu ô rex 10
impoſuiſti edictum ut quilibet homo, ubi
audiſſet ſonum buccinæ, tibiæ, citharæ,
lyræ, pſalterii, fiſtulæ, & omnigenæ
muſicæ; Si non corrueret adorans imaginem 11
auream, projiceretur in fornacem
ignis ardentem. Jam ſunt hîc viri quidam 12
Judæi, quibus demandâſti cuncta
negotia provinciæ Babelis; Sedrach,
Miſach, & Abdenago: iſti viri non obtemperârunt
edicto tuo ô rex, deos tuos
non coluerunt, neque adoraverunt imaginem
auream quam erexiſti. Tunc Bochtonaſſar 13
cum ira & furore dixit ut adducerent
Sedrachum, Miſachum, & Abdenagum.
Iis ergò viris ante regem adductis,
Reſpondit Bochtonaſſar, & ait; 14
Verúmne eſt ô Sedrach, Miſach, & Abdenago,
vos non coluiſſe deos meos, neque
adorâſſe imaginem auream quam erexi?

דניאל : ג

,psalteriorum ,sambucæ ,citharæ ,fistulæ ,cornu vocem audieritis quo tempore in ut parati vos estis ecce Nunc
15 כען הן איתיכון עתידין די בעדנא די תשמעון קל קרנא משרוקיתא קיתרס שבכא פסנתרין
hora ipsa in ,genuflexeritis non ecce Et ? feci quam ,imagini genuflectatis & ,cadatis ,cantus specierum omnium & ,symphoniæ &
וסומפניה וכל זני זמרא תפלון ותסגדון לצלמא די־עבדת והן לא תסגדון בה־שעתא
Sadrach Responderunt ? meis manibus de vos eruat qui ,Deus ipse quis Et .ardentis ignis fornacis medium in projiciemini
16 תתרמון לגוא־אתון נורא יקדתא ומן־הוא אלה די ישיזבנכון מן־ידי׃ ענו שדרך
.tibi respondere verbo hoc super nos curantes non ,Nebuchadnesar :regi dicentes & ,nego-Habed & ,Mesach
מישך ועבד נגו ואמרין למלכא נבוכדנצר לא־חשחין אנחנא על־דנה פתגם להתבותך׃
rex tua manu de & ,ardentis ignis fornace de :nos liberandum ad potens ,colentes nos quem noster Deus est Ecce
17 הן איתי אלהנא די־אנחנא פלחין יכל לשיזבותנא מן־אתון נורא יקדתא ומן־ידך מלכא
quam ,auri imagini & ,colentes nos sumus non tuos deos quod ,rex tibi existendum ad notum ,non ecce Et .eruet
18 ישיזב׃ והן לא ידיע להוא־לך מלכא די לאלהיך לא־איתנא פלחין ולצלם דהבא די
super est immutata ejus vultus imago & ,furore est repletus Nebuchadnesar tunc In .genuflectemus non ,fecisti erigere
19 הקימת לא נסגד׃ באדין נבוכדנצר התמלי חמא וצלם אנפוהי אשתנו על־
erat visum quod super septies semel fornacem succendendum ad ,dixit & ,respondit :nego-Habed & ,Mesach ,Sadrach
שדרך מישך ועבד נגו ענה ואמר למזא לאתונא חד־שבעה על די חזה
nego-Habed & ,Mesach ,Sadrach ligandum ad dixit ,suo exercitu in qui ,robore fortibus viris Et .eam succendere
20 למזיה׃ ולגברין גברי־חיל די בחילה אמר לכפתה לשדרך מישך ועבד נגו
,suis cucullis & ,suis femoralibus ,suis saraballis in ,sunt ligati isti viri tunc In .ardentis ignis fornacem in projiciendum ad
21 למרמא לאתון נורא יקדתא׃ באדין גבריא אלך כפתו בסרבליהון פטשיהון וכרבלתהון
regis verbum quod propterea hoc respectu Omni .ardentis ignis fornacis medium in sunt projecti Et .suis vestibus &
22 ולבשיהון ורמיו לגוא־אתון נורא יקדתא׃ כל־קבל דנה מן־די מלת מלכא
eos occidit ,nego-Habed & ,Mesach ,Sadrach fecerant ascendere qui illos viros :præstanter succensa fornax & ,urgens
מחצפה ואתונא אזה יתירה גבריא אלך די הסקו לשדרך מישך ועבד נגו קטל המון
ignis fornacis medium in ceciderunt ,nego-Habed & ,Mesach ,Sadrach illi tres isti viri Et .ignis scintilla
23 שביבא די נורא׃ וגבריא אלך תלתהון שדרך מישך ועבד נגו נפלו לגוא־אתון־נורא
Nónne :suis ductoribus dixit & ,respondit :festinando in surrexit & ,obstupuit rex Nebuchadnesar Tunc .ligati ardentis
24 יקדתא מכפתין׃ אדין נבוכדנצר מלכא תוה וקם בהתבהלה ענה ואמר להדברוהי הלא
,Respondit .rex Verè ;regi dicentes & ,Respondentes ? ligatos ignis medium in projecimus tres viros
25 גברין תלתה רמינא לגוא־נורא מכפתין ענין ואמרין למלכא יציבא מלכא׃ ענה
:cis in est non corruptio & ,ignis medio in ambulantes solutos quatuor viros videns ego Ecce :dixit &
ואמר הא־אנה חזה גברין ארבעה שרין מהלכין בגו־נורא וחבל לא־איתי בהון
,ardentis ignis fornacis ostium ad Nebuchadnesar accessit tunc In .Dei filio est similis quarti quæ ejus species &
26 ורוה די רביעיא דמה לבר־אלהין׃ באדין קרב נבוכדנצר לתרע אתון נורא יקדתא
egredientes tunc in :venite & ,egredimini ,excelsi Dei qui ejus servi ,nego Habed & ,Mesach ,Sedrach :dicens & ,respondens
ענה ואמר שדרך מישך ועבד־נגו עבדוהי די־אלהא עליא פקו ואתו באדין נפקין
.ignis medio de ,nego-Habed & ,Mesach ,Sedrach
שדרך מישך ועבד נגו מן־גוא נורא׃

Versio VULG. LAT.

15 Nunc ergò si estis parati, quâcunq; horâ audieritis sonitũ tubæ, fistulæ, citharæ, sambucæ, et psalterii, & symphoniæ, omnisque generis musicorum, prosternite vos, & adorate statuam quam feci: quòd si non adoraveritis, eâdem horâ mittemini in fornacem ignis ardentis: & quis est Deus, qui eripiet vos de manu mea? 16 Respondentes Sidrach, Misach, & Abdenago, dixerunt regi Nabuchodonosor; Non oportet nos de hac re respondere tibi. 17 Ecce enim Deus noster, quem colimus, potest eripere nos de camino ignis ardentis, & de manibus tuis, ô rex, liberare. 18 Quòd si noluerit, notum sit tibi, rex, quia deos tuos non colimus, & statuam auream, quam erexisti, non adoramus. 19 Tunc Nabuchodonosor repletus est furore: & aspectus faciei illius immutatus est super Sidrach, Misach, & Abdenago, & præcepit ut succenderetur fornax septuplùm quàm succendi consueverat. 20 Et viris fortissimis de exercitu suo jussit, ut ligatis pedibus Sidrach, Misach, & Abdenago, mitterent eos in fornacem ignis ardentis. 21 Et confestim viri isti vincti cum braccis suis, & tiaris, & calceamentis, & vestibus, missi sunt in medium fornacis ignis ardentis: 22 Nam jussio regis urgebat: fornax autem succensa erat nimis. Porrò viros illos qui miserant Sidrach, Misach, & Abdenago, interfecit flamma ignis. 23 Viri autem hi tres, id est, Sidrach, Misach, & Abdenago, ceciderunt in medio camino ignis ardentis, colligati.

91 Tunc Nabuchodonosor rex obstupuit, & surrexit properè, & ait optimatibus suis; Nónne tres viros misimus in medium ignis compeditos? Qui respondentes regi, dixerunt; Verè, rex. 92 Respondit, & ait; Ecce ego video quatuor viros solutos, & ambulantes in medio ignis, & nihil corruptionis in eis est, & species quarti similis filio Dei. 93 Tunc accessit Nabuchodonosor ad ostium fornacis ignis ardentis, & ait; Sidrach, Misach & Abdenago, servi Dei excelsi, egredimini, & venite. Statímque egressi sunt Sidrach, Misach, & Abdenago de medio ignis.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

15 * ܗܫܐ ܐܢ ܡܛܝܒܝܢ ܐܢܬܘܢ ܕܒܫܥܬܐ ܕܫܡܥܝܬܘܢ ܩܠ ܩܪܢܐ ܘܡܫܪܘܩܝܬܐ : ܘܩܝܬܪܐ ܘܟܢܪܐ
ܘܣܝܦܘܢܝܐ ܘܟܠ ܙܢܝ ܙܡܪܐ . ܬܦܠܘܢ ܘܬܣܓܕܘܢ ܠܨܠܡܐ ܕܥܒܕܬ ܛܒ ܠܟܘܢ . ܘܐܢ ܠܐ ܣܓܕܝܬܘܢ .
ܒܗ ܒܫܥܬܐ ܬܬܪܡܘܢ ܒܓܘ ܐܬܘܢܐ ܕܢܘܪܐ ܝܩܝܕܬܐ . ܘܡܢܘ ܐܠܗܟܘܢ ܕܢܦܨܝܟܘܢ ܡܢ ܐܝܕܝ .
16 * ܥܢܘ ܫܕܪܟ ܡܝܫܟ ܘܥܒܕܢܓܘ . ܘܐܡܪܝܢ ܠܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ . ܠܐ ܣܢܝܩܝܢܢ ܥܠ ܗܕܐ
ܡܠܬܐ . ܦܬܓܡܐ ܠܡܬܠܘܬܟ . * ܐܝܬ ܓܝܪ ܐܠܗܢ ܕܦܠܚܝܢܢ ܠܗ . ܕܡܫܟܚ ܗܘ 17
18 ܡܨܐ ܒܚܝܠܐ ܠܡܦܨܝܘܬܢ ܡܢ ܐܬܘܢܐ ܕܢܘܪܐ ܝܩܝܕܬܐ . ܘܡܢ ܐܝܕܝܟ ܡܠܟܐ ܢܦܨܝܢ . * ܢܗܘܐ ܠܟ
ܝܕܝܥ ܡܠܟܐ . ܕܠܐܠܗܟ ܠܐ ܦܠܚܝܢܢ . ܘܠܨܠܡܐ ܕܕܗܒܐ ܕܐܩܝܡܬ ܠܐ ܣܓܕܝܢܢ .
19 * ܗܝܕܝܢ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܐܬܡܠܝ ܚܡܬܐ . ܘܚܙܘܐ ܕܐܦܘܗܝ ܐܫܬܚܠܦ . ܥܠ ܫܕܪܟ
ܡܝܫܟ ܘܥܒܕܢܓܘ . ܘܐܡܪ ܠܡܙܥܩ ܐܬܘܢܐ . ܚܕ ܫܒܥܐ ܝܬܝܪ ܡܢ ܕܡܙܕܥܩ ܗܘܐ .
20 * ܘܠܓܢܒܪܐ ܕܚܝܠܬܢܝܢ ܒܚܝܠܐ . ܐܡܪ ܕܢܟܦܬܘܢ ܐܢܘܢ ܠܫܕܪܟ ܡܝܫܟ ܘܥܒܕܢܓܘ .
21 ܘܢܪܡܘܢ ܐܢܘܢ ܠܐܬܘܢܐ ܕܢܘܪܐ ܝܩܝܕܬܐ . * ܗܝܕܝܢ ܓܒܪܐ ܗܢܘܢ . ܟܦܬܘ ܐܢܘܢ
ܒܡܪܟܒܝܗܘܢ . ܘܒܦܛܫܝܗܘܢ . ܘܒܠܒܘܫܝܗܘܢ ܘܒܟܘܒܥܝܗܘܢ . ܘܐܪܡܝܘ ܐܢܘܢ ܒܓܘ
22 ܐܬܘܢܐ ܕܢܘܪܐ ܝܩܝܕܬܐ . * ܡܛܠ ܕܡܠܬܗ ܕܡܠܟܐ ܡܚܦܛܐ ܗܘܬ . ܘܐܬܘܢܐ ܐܝܩܕܬ ܗܘܬ ܝܬܝܪܐܝܬ .
ܘܠܓܒܪܐ ܗܢܘܢ . ܕܐܟܠܘ ܩܪܨܝܗܘܢ ܕܫܕܪܟ ܡܝܫܟ ܘܥܒܕܢܓܘ . ܩܛܠܬ ܐܢܘܢ
23 ܫܠܗܒܝܬܐ ܕܢܘܪܐ ܝܩܝܕܬܐ . * ܘܓܒܪܐ ܗܢܘܢ ܬܠܬܝܗܘܢ ܫܕܪܟ ܡܝܫܟ ܘܥܒܕܢܓܘ .
ܢܦܠܘ ܡܨܥܬܐ ܐܬܘܢܐ ܕܢܘܪܐ ܟܕ ܟܦܝܬܝܢ .
91 * ܗܝܕܝܢ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ . ܬܘܗ ܘܩܡ ܒܣܘܚܦܐ ܪܒܐ . ܘܥܢܐ ܘܐܡܪ ܠܪܘܪܒܢܘܗܝ .
ܠܐ ܓܒܪܐ ܬܠܬܐ ܐܪܡܝܢ ܒܓܘ ܐܬܘܢܐ ܕܢܘܪܐ ܟܕ ܟܦܝܬܝܢ . ܥܢܘ ܘܐܡܪܝܢ
92 ܠܡܠܟܐ . ܫܪܝܪܐܝܬ ܡܠܟܐ . * ܥܢܐ ܡܠܟܐ ܘܐܡܪ . ܗܐ ܚܙܐ ܐܢܐ ܓܒܪܐ ܟܕ ܫܪܝܢ .
ܘܡܗܠܟܝܢ ܒܓܘ ܢܘܪܐ . ܘܚܒܠܐ ܠܝܬ ܒܗܘܢ . ܘܚܙܘܗ ܕܪܒܝܥܝܐ ܕܡܐ ܠܒܪ ܐܠܗܝܢ .
93 * ܗܝܕܝܢ ܩܪܒ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܠܬܪܥܐ ܕܐܬܘܢܐ ܕܢܘܪܐ ܝܩܝܕܬܐ . ܘܥܢܐ ܘܐܡܪ . ܫܕܪܟ
ܡܝܫܟ ܘܥܒܕܢܓܘ ܥܒܕܘܗܝ ܕܐܠܗܐ ܡܪܝܡܐ . ܦܘܩܘ ܬܘ . ܗܝܕܝܢ ܢܦܩܘ ܫܕܪܟ
ܡܝܫܟ ܘܥܒܕܢܓܘ ܡܢ ܓܘ ܐܬܘܢܐ ܕܢܘܪܐ .

15 Jam si parati estis ut quâ horâ audieritis sonum tubæ, fistulæ, citharæ, fidiũ, symphoniæ, & omnis generis musicorũ; procidatis & adoretis statuam auream quam feci, *bene cedet vobis*: sin autem non adoraveritis, illicò projiciemini in fornacem ignis ardentis: & quis est Deus vester ut eripiat vos è manibus meis? 16 Respondentes Sedrach, Maisach, & Ebednago dixerunt Nebuchadnosari regi; 17 Non opus est nobis hac de re responsum tibi reddere: Adest enim Deus noster quem colimus, qui cum potentia liberare nos valet à fornace ignis ardentis, & è manibus tuis O rex eripere nos. 18 Verùm scias O rex, deum tuum nos minimè culturos, neq; statuam aureã quam erexisti, adoraturos. 19 Tunc Nebuchadnosar rex furore est repletus, & serenitas vultûs ejus immutata est contra Sedrachum, Maisachum, & Ebednagum; jussitque accendi fornacem septuplò plus quàm accendi *consueverat*: 20 Et viris robore validissimis præcepit, ut vincirent Sedrachum, Maisachum, & Ebednagum, eosque projicerent in fornacem ignis ardentis. 21 Tunc viri illi vinxerunt eos cum femoralibus suis, thoracibus, vestibus, tiarisque suis, & projecerunt eos in fornacem ignis ardentis; 22 Nam jussio regis urgebat. Porrò fornax erat præter modum accensa: & viros illos qui Sedrachum, Maisachum, & Ebednagum accusaverant, interfecit flamma ignis ardentis: 23 Tres autem illi viri, Sedrach, Maisach, & Ebednago, cùm mediam in fornacem ignis ardentis vincti cecidissent,

91 Tunc Nebuchadnosar rex obstupuit, summoque pavore correptus respondit ac dixit proceribus suis; Nonne tres illos viros projecimus in fornacem ignis ardentis vinctos? Responderunt dicentes ad regem; Ita sanè rex. 92 Respondit rex, & ait; Ecce video viros illos solutos, ambulantes in medio ignis, nullamque in eis esse labem; & formam quarti similem filio deorum. 93 Tunc accesit Nebuchadnosar rex ad ostium fornacis ignis ardentis, & respondens ait; Sedrach, Maisach, & Ebednago servi Dei excelsi, egredimini, & venite. Tunc egresi sunt Sedrach, Maisach, & Ebednago è fornace ignis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp, Cum Tranſlatione LATINA.

15 Νῦν οὖν εἰ ἔχετε ἑτοίμως, ἵνα ὡς ἂν ἀκούσητε τῆς φωνῆς τῆς σάλπιγγος, σύριγγός τε, καὶ κιθάρας,
σαμβύκης τε, καὶ ψαλτηρίου, καὶ συμφωνίας, (υ) καὶ παντὸς γένους μουσικῶν, πεσόντες προσκυνήσητε τῇ εἰ-
κόνι τῇ χρυσῇ ἣ ἐποίησα· ἐὰν δὲ μὴ προσκυνήσητε, αὐτῇ τῇ ὥρᾳ ἐμβληθήσεσθε εἰς τὴν κάμινον τοῦ πυ-
16 ρὸς τὴν καιομένην· καὶ τίς ἐστι (φ) θεὸς ὃς ἐξελεῖται ὑμᾶς ἐκ (χ) χειρός μου; Καὶ ἀπεκρίθησαν (ψ) Σε-
δρὰχ, Μισὰχ, Ἀβδεναγὼ, λέγοντες τῷ βασιλεῖ Ναβουχοδονόσορ, Οὐ χρείαν ἔχομεν ἡμεῖς περὶ τοῦ ῥή-
17 ματος τούτου ἀποκριθῆναί σοι. Ἔστι γὰρ (ω) θεὸς ἡμῶν ἐν οὐρανοῖς, ᾧ ἡμεῖς λατρεύομεν, δυνατὸς ἐξελέ-
σθαι ἡμᾶς ἐκ τῆς καμίνου τοῦ πυρὸς τῆς καιομένης, καὶ ἐκ (α) τῶν χειρῶν σου βασιλεῦ ῥύσεται
18 ἡμᾶς. Καὶ ἐὰν μή, γνωστὸν ἔστω σοι βασιλεῦ, ὅτι τοῖς θεοῖς σου οὐ λατρεύομεν, καὶ τῇ εἰκόνι (β) ἣ
19 ἔστησας οὐ προσκυνοῦμεν. Τότε Ναβουχοδονόσορ (γ) ἐπλήσθη θυμοῦ, καὶ ἡ ὄψις τοῦ προσώπου αὐτοῦ ἠλλοιώ-
θη ἐπὶ (δ) Σεδρὰχ, Μισὰχ, καὶ Ἀβδεναγὼ, καὶ εἶπεν ἐκκαῦσαι τὴν κάμινον ἑπταπλασίως, ἕως (ε) οὗ
20 εἰς τέλος ἐκκαῇ. Καὶ ἄνδρας ἰσχυροὺς ἰσχύϊ εἶπε, πεδήσαντας τὸν (ζ) Σεδρὰχ, Μισὰχ, καὶ Ἀβδεναγὼ,
21 ἐμβαλεῖν εἰς τὴν κάμινον τοῦ πυρὸς τὴν καιομένην. Τότε οἱ ἄνδρες ἐκεῖνοι ἐπεδήθησαν σὺν τοῖς σαρα-
βάροις αὐτῶν, καὶ τιάραις, καὶ περικνημῖσιν, καὶ (η) ἐβλήθησαν εἰς τὸ μέσον τῆς καμίνου τοῦ πυρὸς τῆς και-
22 ομένης, Ἐπεὶ τὸ ῥῆμα τοῦ βασιλέως (θ) ὑπερίσχυεν· καὶ ἡ κάμινος ἐξεκαύθη ἐκ περισσοῦ· (ι) Καὶ οἱ
23 τρεῖς οὗτοι Σεδρὰχ, Μισὰχ, καὶ Ἀβδεναγὼ, ἔπεσον εἰς μέσον τῆς καμίνου (κ) τῆς καιομένης πεπε-
δημένοι;

Nunc ergò, (g) ſi eſtis parati, ut in quocunque tempore audieritis vocem 15
tubæ, & fiſtulæ, & citharæ, ſambucæque, & pſalterii, & ſympho-
niæ, & omnis generis muſicorum, cadentes adoretis imaginem auream,
quam feci? Quòd ſi non adoraveritis; eâdem horâ mittemini in fornacem
ignis ardentem. Et quis eſt Deus, qui eripiat vos de manu mea? Et 16
reſponderunt Sedrach, Miſach, Abdenago, dicentes regi (h) Nabucho-
donoſor; Non opus habemus nos de verbo hoc reſpondere tibi. Eſt enim 17
Deus noſter in cœlis, quem nos colimus, potens eripere nos de camino
ignis ardente: & de manibus tuis, ô rex, liberabit nos. Et ſi non; notum 18
ſit tibi, rex; quia deos tuos non colimus, & imaginem, quam ſtatuiſti,
non adoramus. Tunc Nabuchodonoſor repletus eſt furore: & aſpectus 19
faciei illius commutatus eſt ſuper Sedrach, Miſach, & Abdenago: &
dixit, ut ſuccenderent fornacem in ſeptuplum, donec in finem ardeat: Et 20
dixit, ut viri fortes fortitudine ligantes Sedrach, Miſach, & Abde-
nago, mitterent in fornacem ignis ardentem. Tunc viri illi vincti ſunt 21
cum (i) Sarabaris ſuis, & tiaris, & tibialibus: & miſſi ſunt in me-
dium fornacis ignis ardentis: Quia verbum regis urgebat: & fornax 22
ſuccenſa erat nimis. (k) Et tres iſti Sedrach, Miſach, & Abdenago, ce- 23
ciderunt in medio camino ignis ardente colligati.

91 Καὶ Ναβουχοδονόσορ ἤκουσεν ὑμνούντων αὐτῶν, καὶ ἐθαύμασε, καὶ ἐξανέστη ἐν σπουδῇ, καὶ εἶπε τοῖς μεγιστᾶσιν
αὐτοῦ, Οὐχὶ ἄνδρας τρεῖς (α) ἐβάλομεν εἰς τὸ μέσον τοῦ πυρὸς πεπεδημένους; καὶ (*) εἶπον τῷ βασιλεῖ,
92 Ἀληθῶς βασιλεῦ. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς, (β) Ὁ δὲ ἐγὼ ὁρῶ ἄνδρας τέσσαρας λελυμένους, καὶ περιπα-
τοῦντας ἐν μέσῳ τοῦ πυρὸς, καὶ διαφθορὰ οὐκ ἔστιν (·) ἐν αὐτοῖς, καὶ ἡ ὅρασις τοῦ τετάρτου ὁμοία υἱῷ
93 θεοῦ. Τότε προσῆλθε Ναβουχοδονόσορ πρὸς τὴν θύραν τῆς καμίνου τοῦ πυρὸς τῆς καιομένης, καὶ εἶπε,
(γ) Σεδρὰχ, Μισὰχ, Ἀβδεναγὼ, οἱ δοῦλοι τοῦ (¨) θεοῦ τοῦ ὑψίστου, ἐξέλθετε καὶ δεῦτε, καὶ ἐξῆλθον
(*) Σεδρὰχ, Μισὰχ, Ἀβδεναγὼ, ἐκ μέσου τοῦ πυρός.

Et Nabuchodonoſor audivit laudantes illos, & obſtupuit, & ſurrexit pro- 91
perè, & ait optimatibus ſuis; Nónne tres viros miſimus in medium ignis
compeditos? Et dixerunt regi; Verè, rex. Et dixit rex; Ego autem vi- 92
deo viros quatuor ſolutos, & ambulantes in medio ignis: & corruptio
non eſt in eis: et ſpecies quarti ſimilitudo (y) filii Dei. Tunc acceſſit Na- 93
buchodonoſor ad oſtium fornacis ignis ardentis, et ait; Sedrach, Mi-
ſach, Abdenago, ſervi Dei excelſi, egredimini, et venite. Et egreſſi ſunt
Sedrach, Miſach, Abdenago, de medio ignis.

MS.A. (υ) πεσόντες προσκυνεῖτε (φ) ὁ θεὸς (χ) τῶν χειρῶν (ψ) Σεδρὰκ, Μισὰκ, (ω) ὁ θεὸς (α) τῆς χειρός σου (β) τῇ χρυσῇ ἣ (γ) ὁ βασιλεὺς (δ) Σεδρὰκ, Μισὰκ, Ἀβδε-
ναγὼ, (ε) εἰς (ζ) Σεδρὰκ, Μισὰκ, (η) ἐνδύμασιν αὐτῶν, καὶ ἐμβλήθησαν εἰς μέσον (θ) ὑπερίσχυσεν· (ι) καὶ τοὺς ἄνδρας ἐκείνους τοὺς βάλλοντας Σεδρὰκ, Μισὰκ, Ἀβδεναγὼ ἀπέκτει-
νεν ἡ φλὸξ τοῦ πυρός. Καὶ οἱ τρεῖς οὗτοι Σεδρὰκ, Μισὰκ, Ἀβδεναγὼ, (κ) τοῦ πυρὸς τῆς (α) ἐνεβάλομεν εἰς μέσον (*) εἶπαν (β) Ἰδοὺ ἐγὼ (·) αὐτοῖς, (γ) Σεδρὰκ,
Μισὰκ, (¨) θεοῦ, ἐξέλθατε καὶ δεῦτε ἔξω, (*) Σεδρὰκ, Μισὰκ,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

15 * والآن إن كان لكم استعداد لكي إذا سمعتم صوت البوق والناي والكينار والونج
والمزمار والصفاق وكل جنس الغناء * تخرون سجدا للصورة التي صنعتها * وإن لم تسجدوا
في هذه الساعة تلقون في أتون النار المتوقد * ومن هو الإله الذي يخلصكم من يدي *
16 * فأجاب صدراخ وميصاخ وعبدناغو * قائلين للملك بختنصر * ليس لنا حاجة نحن من أجل
17 هذه الكلمة أن نجاوبك * لأن إلهنا هو في السماوات الذي له نحن نعبد * وهو قادر أن
18 يخلصنا من أتون النار المتوقد * ومن يديك أيها الملك ينجينا * وإن كان لا * ليكن
معروفا عندك أيها الملك * أن آلهتك لا نعبدها * والصورة الذهب التي أقمتها لا نسجد لها *
19 * حينئذ بختنصر امتلأ غضبا * وتغير منظر وجهه على صدراخ وميصاخ وعبدناغو *
20 وقال أوقدوا أتون النار سبعة أضعاف * إلى أن يحمى إلى الغاية * وقال لرجال أقوياء بالقوة *
21 اربطوا صدراخ وميصاخ وعبدناغو * وألقوهم في أتون النار المتوقد * حينئذ أولئك
الرجال ربطوا بسراويلهم وتيجانهم وأخفافهم وأثوابهم * وألقوا في أتون النار المتوقد *
22 * من أجل أن كلمة الملك تلج قويا جدا * والأتون أوقد كثيرا جدا سبعة أضعاف *
وأولئك الرجال الذين ألقوا صدراخ وميصاخ وعبدناغو * قتلهم لهيب النار من
23 حولهم * وأولئك الثلاثة صدراخ وميصاخ وعبدناغو * سقطوا في وسط أتون النار
المتوقد موثقين *

Nunc ergò ſi parati eſtis ut audito ſono 15
buccinæ, tibiæ, citharæ, lyræ, pſalterii, fiſtulæ, omniſque generis muſicæ, corruatis
adorantes imaginem quam feci: Quòd
ſi non adoretis, hâc horâ projiciemini in
fornacem ignis ardentem: & quis eſt
Deus qui eripiat vos è manibus meis?
Reſponderunt Sedrach, Miſach, & Ab- 16
denago, dicentes Bochtonaſſari regi; Non
opus eſt nobis de hoc verbo reſpondere
tibi. Nam Deus noſter in cœlis eſt, quem 17
nos adoramus, & is potens eſt ad liberandum nos à fornace ignis ardenti, &
è manibus tuis O rex, eripiendum.
Quòd ſi minùs; notum tibi ſit O rex, nos 18
deos tuos minimè culturos, neque imaginem auream quam erexiſti, adoraturos.
Tunc Bochtonaſſar furore plenus, 19
ita ut immutaretur ſpecies vultûs ejus,
contra Sedrach, Miſach, & Abdenago,
dixit; Accendite fornacem ignis in
ſeptuplum, ut ſummum in modum ardeat.
Tum dixit viris robore valentiſſimis; 20
Ligate Sedrachum, Miſachum, & Abdenagum; & projicite eos in fornacem
ignis ardentem. Tunc iſti viri cum fe- 21
moralibus, tiaris, tibialibus, & veſtimentis ſuis ligati, projecti fuerunt in
fornacem ignis ardentem; Nam verbum 22
regis magnoperè perurgebat. Fornax
autem vehementiſſimè accenſa erat in
ſeptuplum: adeoque viros illos qui projecerant Sedrachum, Miſachum, &
Abdenagum, interfecit flamma ignis
circumerumpens. Tres autem illi, Se- 23
drach, Miſach, & Abdenago, in mediam fornacem ignis ardentem vincti cadentes,

Quæ hic ſequuntur in Exemplaribus Syriacis, Arabicis, Græcis & Latinis, Oratio ſc. Azariæ cum Cantico ipſius & ſociorum, cùm non habeantur in codicibus Hebraicis, viſum eſt, unà cum Hiſtoria Suſannæ, atque Belis & Draconis, ſeorſim imprimere: quæ vel ad finem Danielis, vel cum reliquis libris, de quorum authoritate dubitatur, pro cujuſque arbitrio compingi poſſunt. Vide admonitionem ad finem Nehemiæ, Tom. 2.

91 * وبختنصر سمعهم يسبحون فتعجب * وقام بسرعة وقال لعظمائه * أليس ثلاثة رجال ألقينا في
92 وسط النار موثقين * فقالوا للملك * بالحقيقة أيها الملك * فقال الملك * فأنا أرى أربعة
رجال محلولين وماشيين وسط النار * وليس يوجد فيهم فساد * ومنظر الرابع شبيه بابن الله *
93 * حينئذ تقدم بختنصر إلى أتون النار المتوقد وقال * يا صدراخ وميصاخ وعبدناغو عبيد
الله العلي * اخرجوا وهلموا * فخرج صدراخ وميصاخ وعبدناغو من وسط النار *

Quarè Bochtonaſſar audiens eos laudan- 91
tes, obſtupuit, & celeriter ſurgens dixit
magnatibus ſuis; Annon tres viros pro-
jecimus in medium ignem vinctos? 92
Dixerunt regi; Verum eſt O rex. Dixit
rex; Ego tamen video quatuor viros ſolutos ambulantes in medio ignis, & nullam eſſe in eis corruptionem; & aſpectum
quarti ſimilem filio Dei. Tunc accedens 93
Bochtonaſſar ad fornacem ignis ardentem, ait; O Sedrach, Miſach, & Abdenago, ſervi Dei ſupremi, egredimini & venite: egreſſique ſunt Sedrach, Miſach, &
Abdenago è medio ignis.

דניאל : ד

fuerat dominatus non quia ,iſtos viros *intuentes* regis *ductores* & ,duces & *:magiſtratus rege à ſecundi ſe congregantes* Et
27 ומתכנשין אחשדרפניא סגניא ופחותא והדברי מלכא חזין לגבריא אלך די לא־־שלט
tranſierat non ignis odor & ; erant *mutata* non eorũ *ſaraballa* & ,erat aduſtus non eorum capitis *crinis* & ,eorũ corporibus *in* ignis
נורא בגשמהון ושער ראשהון לא התחרך וסרבליהון לא שנו וריח נור לא עדת
,ſuum angelum miſit qui ,nego-Habed & ,Meſach ,Sadrach *qui eorum Deus* Benedictus : dixit & ,Nebuchadneſar *Reſpondit* .eos *in*
28 בהון׃ ענה נבוכדנצר ואמר בריך אלההון די־שדרך מישך ועבד נגו די־שלח מלאכה
,ſervirent non ut ,ſua corpora tradiderunt & ,mutaverunt regis verbum & : eo *ſuper* ſperaverunt qui ,ſuos ſervos eruit &
ושיזב לעבדוהי די התרחצו עלוהי ומלת מלכא שניו ויהבו גשמהון די לא־יפלחון
quæ ,lingua & ,*natio* populus omnis ut decretum poſitum me à Et .ſuo Deo niſi Deo omni genufle̱cterent nec
29 ולא־־יסגדון לכל־אלה להן לאלההון׃ ומני שים טעם די כל־עם אמה ולשן די־
omni : ponatur *ſterquilinium* ejus domus & ,fiat fruſta ,nego-Habed & ,Meſach ,Sadrach *qui eorum* Deum *ſuper errorem* dixerit
יאמר שלה על אלההון די־שדרך מישך ועבד נגוא הדמין יתעבד וביתה נולי ישתוה כל־
,nego-Habed & ,Meſach ,Sadrach *fecit proſperare* rex tunc *In* .hic ſicut eruere poſſit qui ,*alius* Deus eſt non quòd *reſpectu*
30 קבל די לא איתי אלה אחרן די־יכל להצלה כדנה׃ באדין מלכא הצלח לשדרך מישך ועבד נגו
vobis Pax ,terra univerſa in *habitantes* qui ,linguis & ,*nationibus* ,populis omnibus rex Nebuchadneſar .Babel provincia in
31 במדינת בבל׃ נבוכדנצר מלכא לכל־עממיא אמיא ולשניא די־דארין בכל־ארעא שלמכון
quod ſecundùm ejus Signa .*indicare* me coram eſt decorum ,excelſus Deus mecum fecit quæ mirabilia & ,Signa .multiplicetur
32 ישגא׃ אתיא ותמהיא די עבד עמי אלהא עליא שפר קדמי להחויה׃ אתוהי כמה
33 .generatione & ,generatione cum ejus poteſtas & ,*ſeculi* regnum ejus Regnum .fortia quod ſecundùm ejus mirabilia & ,magna
רברבין ותמהוהי כמה תקיפין מלכותה מלכות עלם ושלטנה עם־־דר ודר׃

CAP. IV. ד

ſuper conceptus & : me terruit & ,vidi Somnium .meo palatio in *frondoſus* & ,mea domo in eram quietus Nebuchadneſar Ego
1 אנה נבוכדנצר שלה הוית בביתי ורענן בהיכלי׃ חלם חזית וידחלנני והרהרין על־
2 qui : Babel ſapientes omnes me *coram introducendũ ad* decretũ eſt poſitum me à Et .me terrebant mei capitis viſiones & ,meo cubili
3 משכבי וחזוי ראשי יבהלנני׃ ומני שים טעם להנעלה קדמי לכל חכימי בבל די־
ego *dicens* ſomnium & : divini & ,Chaſdim ,*ſophi* ,genethliaci *ingredientes* tunc *In* .me facerent ſcire ſomnii interpretationẽ
4 פשר חלמא יהודענני׃ באדין עללין חרטמיא אשפיא כשדיא וגזריא וחלמא אמר אנה
ejus nomen cujus ,Daniel me coram *intravit noviſſimum ad uſque* Et .mihi *notificantes* non ejus interpretationem & ,eis coram
5 קדמיהון ופשרה לא־מהודעין לי׃ ועד אחרין על קדמי דניאל די־שמה
Belthesaſar .dixi ipſo coram ſomnium & ,*eo in* ſanctorum Deorum ſpiritus quo & ,mei Dei nomen ſecundùm ,Belthesaſar
6 בלטשאצר כשם אלהי ודי רוח־אלהין קדישין בה וחלמא קדמוהי אמרת׃ בלטשאצר
: tibi *negotium facit* non ſecretum omne & ,te in ſanctorum Deorum ſpiritus quòd novi ego *quod* ,genethliacorum *magiſter*
רב חרטמיא די אנה ידעת די רוח אלהין קדישין בך וכל־־רז לא־־אנס לך
ecce & ,*fui videns* : meo cubili *ſuper* mei capitis *viſiones* Et dic ejus interpretationem & ,vidi quod ,mei ſomnii viſiones
7 חזוי חלמי די־חזית ופשרה אמר׃ וחזוי ראשי על־משכבי חזה הוית ואלו
,cœlum ad pertingebat ejus altitudo & : fortis & ,arbor erat Magna .*multa* ejus altitudo & ,terræ medio in arbor
8 אילן בגו ארעא ורומה שגיא׃ רבה אילנא ותקף ורומה ימטא לשמיא
.terræ univerſæ finem ad ejus aſpectus &
וחזותה לסוף כל־־ארעא׃

Verſio VULG. LAT.

Et congregati ſatrapæ, & magiſtratus, & judices, & potentes regis contemplabantur viros illos, quoniam nihil poteſtatis habuiſſet ignis in corporibus eorum, & capillus capitis eorum non eſſet aduſtus, & ſarabala eorum non fuiſſent immutata, & odor ignis non tranſiſſet per eos. 94 Et erumpens Nabuchodonoſor, ait; Benedictus Deus eorum, Sidrach videlicèt, Miſach, & Abdenago, qui miſit Angelum ſuũ, & eruit ſervos ſuos, qui crediderunt in eum: & verbũ regis immutaverũt, & tradiderũt corpora ſua ne ſervirent, & ne adorarent omnem deum, excepto Deo ſuo. 95 A me ergò poſitũ eſt hoc decretũ, ut omnis populus, tribus, & lingua, quæcunque locuta fuerit blaſphemiam contra Deum Sidrach, Miſach, & Abdenago, diſpereat, & dom⁹ ejus vaſtetur: neque enim eſt alius Deus, qui poſſit ita ſalvare. 96 Tunc rex promovit Sidrach, Miſach & Abdenago in provincia Babylonis. 97 NABUCHODONOSOR rex, omnib⁹ populis, gentib⁹, & linguis, qui habitant in univerſa terra, Pax vobis multiplicetur. 98 Signa & mirabilia fecit apud me Deus excelſus. 99 Placuit ergò mihi prædicare Signa ejus, quia magna ſunt; 100 & mirabilia ejus, quia fortia: & regnum ejus regnum ſempiternum, & poteſtas ejus in generationem & generationem.

CAP. IV.

1 EGo Nabuchodonoſor quietus eram in domo mea, & florens in palatio meo: 2 Somnium vidi, quod perterruit me: & cogitationes meæ in ſtrato meo, & viſiones capitis mei, conturbaverunt me. 3 Et per me propoſitum eſt decretum, ut introducerentur in conſpectu meo cuncti ſapientes Babylonis, & ut ſolutionem ſomnii indicarent mihi. 4 Tunc ingrediebantur arioli, magi, Chaldæi, & aruſpices, & ſomnium narravi in conſpectu eorum: & ſolutionem ej⁹ non indicaverunt mihi: 5 Donec collega ingreſſus eſt in conſpectu meo Daniel, cui nomen Baltaſſar ſecundùm nomen dei mei, qui habet ſpiritum deorum ſanctorum in ſemetipſo: & ſomnium coram ipſo locut⁹ ſum. 6 Baltaſſar princeps ariolorum, quoniam ego ſcio quòd ſpiritum ſanctorũ deorum habeas in te, & omne ſacramentum non eſt impoſſibile tibi: viſiones ſomniorum meorum, quas vidi, & ſolutionem earum narra. 7 Viſio capitis mei in cubili meo: Videbam, & ecce arbor in medio terræ, & altitudo ej⁹ nimia. 8 Magna arbor, & fortis: & proceritas ej⁹ contingens cœlum: aſpectus illius erat uſque ad terminos univerſæ terræ.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

94 * ܘܐܬܟܢܫܘ ܟܢ̈ܫܐ ܟܠܗܘܢ. ܘܪ̈ܫܐ ܕܚܝܠܐ ܘܫܠܝ̈ܛܢܐ ܘܡܪ̈ܘܬܐ ܘܪܘܪ̈ܒܢܐ ܕܡܠܟܐ.
ܘܚܙܝܢ ܗܘܘ ܠܓܒܪ̈ܐ ܗܢܘܢ. ܕܠܐ ܫܠܛܬ ܢܘܪܐ ܒܦܓܪ̈ܝܗܘܢ. ܘܣܥܪܐ ܕܪܫܗܘܢ ܠܐ
ܐܬܚܪܟ. ܘܡܪ̈ܟܒܬܗܘܢ ܠܐ ܐܬܚܒܠ. ܘܪܝܚܐ ܕܢܘܪܐ ܠܐ ܥܒܪ ܒܗܘܢ. * ܥܢܐ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ 95
ܘܐܡܪ. ܒܪܝܟ ܐܠܗܗܘܢ ܕܫܕܪܟ ܘܕܡܝܫܟ ܘܕܥܒܕܢܓܘ. ܕܫܕܪ ܡܠܐܟܗ. ܘܦܨܝ
ܠܥܒ̈ܕܘܗܝ ܕܐܬܬܟܠܘ ܥܠܘܗܝ. ܘܡܠܬܗ ܕܡܠܟܐ ܐܫܛܘ. ܘܐܫܠܡܘ ܓܘܫܡܗܘܢ
ܕܠܐ ܢܦܠܚܘܢ. ܘܠܐ ܢܣܓܕܘܢ ܠܟܠ ܐܠܗ. ܐܠܐ ܠܐܠܗܗܘܢ. * ܘܗܫܐ ܦܩܕ ܐܢܐ 96
ܕܟܠ ܥܡܡܐ ܘܐܘܡܐ ܘܠܫܢܐ: ܕܢܓܕܦ ܥܠ ܐܠܗܗܘܢ ܕܫܕܪܟ ܘܕܡܝܫܟ ܘܕܥܒܕܢܓܘ.
ܗܕܡ ܗܕܡ ܢܬܦܣܩ. ܘܒܝܬܗ ܢܬܒܙܙ. ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܐܠܗܐ ܐܚܪܢܐ ܕܡܫܟܚ
ܠܡܦܨܝܘ ܗܟܢܐ. * ܗܝܕܝܢ ܐܘܪܒ ܡܠܟܐ ܠܫܕܪܟ ܘܠܡܝܫܟ ܘܠܥܒܕܢܓܘ ܥܠ ܐܬܪܐ ܕܒܒܠ. 97

* ܩܦܠܐܘܢ * ܕ *

* ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ . ܟܬܒ ܠܟܠ ܥܡܡܐ ܘܠܫܢ̈ܐ ܕܥܡܪܝܢ ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܫܠܡܟܘܢ 1
ܢܣܓܐ ܠܟܘܢ. * ܐܬܘܬܐ ܘܬܕܡܪ̈ܬܐ ܕܥܒܕ ܠܘܬܝ ܐܠܗܐ ܡܪܝܡܐ. ܫܦܪ ܩܕܡܝ ܠܡܚܘܝܘ. 2
* ܐܬܘܬܗ ܟܡܐ ܪܘܪ̈ܒܢ. ܘܬܕܡܪ̈ܬܗ ܟܡܐ ܥܫܝܢ̈ܢ. ܡܠܟܘܬܗ ܡܠܟܘܬ ܥܠܡ 3
ܘܫܘܠܛܢܗ ܠܕܪܕܪܝܢ. * ܐܢܐ ܢܒܘܟܕܢܨܪ. ܫܠܐ ܗܘܝܬ ܒܒܝܬܝ. ܘܢܝܚ ܒܗܝܟܠܝ. 4
* ܘܚܠܡܐ ܚܙܝܬ. ܘܐܬܕܘܕܬ. ܘܚܙܘܐ ܕܪܫܝ ܒܥܬܘܢܝ. * ܘܡܢܝ ܦܩܝܕܐ ܠܡܥܠܘ 5 6
ܩܕܡܝ ܠܟܠܗܘܢ ܚܟܝܡܝ ܒܒܠ. ܕܦܫܪܐ ܕܚܠܡܐ ܢܘܕܥܘܢܢܝ. * ܘܟܕ ܥܠܘ 7
ܠܘܬܝ ܚܪ̈ܫܐ ܘܐܫ̈ܦܐ ܘܡܓܘ̈ܫܐ ܘܟܠܕ̈ܝܐ. ܚܠܡܐ ܐܡܪܬ ܩܕܡܝܗܘܢ.
ܘܦܫܪܗ ܠܐ ܐܘܕܥܘܢܝ. * ܥܕܡܐ ܕܥܠ ܩܕܡܝ ܕܢܝܐܝܠ ܗܘ ܕܫܡܗ ܒܠܛܫܐܨܪ ܐܝܟ ܫܡ 8
ܐܠܗܝ. ܕܪܘܚܐ ܕܐܠܗܐ ܩܕܝܫܐ ܐܝܬ ܒܗ. ܘܚܠܡܐ ܩܕܡܘܗܝ ܐܡܪܬ. * ܒܠܛܫܐܨܪ
ܪܒ ܚܟܝܡܐ. ܕܐܢܐ ܝܕܥ ܐܢܐ ܕܪܘܚܐ ܕܐܠܗܐ ܩܕܝܫܐ ܐܝܬ ܒܟ. ܘܟܠ ܐܪܙ ܠܐ ܥܠܝܡ 9
ܡܢܟ. ܚܙܘܐ ܕܚܠܡܝ ܚܙܝܬ. ܘܚܙܘܐ ܕܪܫܝ: ܦܫܪܗ ܐܢܬ ܐܡܪ ܠܝ. * ܚܙܐ ܗܘܝܬ 10
ܒܥܪܣܝ. ܘܗܐ ܐܝܠܢܐ ܒܡܨܥܬܗ ܕܐܪܥܐ. ܘܪܘܡܗ ܣܓܝ ܛܒ. * ܘܪܒܐ ܐܝܠܢܐ ܘܥܫܢ 11
ܘܡܛܐ ܪܘܡܗ ܠܫܡܝܐ. ܘܚܙܘܗ ܠܣܘܦܝܗ ܕܟܠܗ ܐܪܥܐ.

Et congregatæ turbæ omnes, duces militiæ, principes, domini, & magnates regis, videbant ignem nullam vim habuiſſe in carnem virorum illorum, neque capillum capitis eorum uſtulatum fuiſſe, neque femoralia eorum exuſta, neque ignis odorem pervaſiſſe eos. 94 Prolocutus Nebuchadnoſar rex ait; 95 Benedictus ſit Deus Sedrachi, Maiſachi, & Ebednaghi: qui mittens Angelum ſuum eripuit ſervos ſuos qui confiſi ſunt in ipſo; & verbum regis contemnentes expoſuerunt corpus ſuum, ut nullum deum colerent aut adorarent præter Deum ſuum. Quapropter jubeo 96 ut quicunque populus, natio, aut lingua blaſphemaverit in Deum Sedrachi, Maiſachi, & Ebednaghi, membratim lanietur, & domus ejus diripiatur: ſiquidem nullus eſt alius deus qui liberare poſſit in hunc modum. Tunc evexit rex Sedrachum, Maiſachum, & 97 Ebednagum ſuper provinciam Babylonis.

CAP. IV.

NEbuchadnoſar rex ſcripſit omnibus populis & linguis degentibus in tota terra *his* 1 *verbis*: Pax multiplicetur vobis. Signa & 2 miracula quæ fecit Deus excelſus libet mihi indicare: Signa ejus quàm magna ſint, & 3 miracula ejus quàm ingentia: regnum ejus regnum æternum, & dominium ejus in generationem generationum eſſe. Ego Nebuchad- 4 noſar dum tranquillus eſſem domi meæ, & pacificus in palatio meo; Somnium vidi, & 5 conturbatus ſum, & viſiones capitis mei exagitaverunt me. Quamobrem juſſi ut ad- 6 ducerentur coram me omnes ſapientes Babylonis, ad explicationem ſomniorum mihi indicandum. Cúmque ingreſſi eſſent ad me 7 præſtigiatores & harioli, magi & Chaldæi; propoſui eis ſomnium, at explicationem ejus non declaraverunt mihi. Tandem ingreſſus 8 eſt ad me Daniel iſte cui nomen eſt Blitſaſar de nomine dei mei, in quo eſt ſpiritus deorum ſanctorum, eique ſomnium propoſui, *dicens*, Blitſaſar ſapientum maxime, in quo 9 ſpiritum deorum ſanctorum ineſſe novi, nec ullum arcanum te latere: In viſione ſomnii mei videbam viſionem capitis mei: interpretationem ejus tu dicito mihi. Videbam 10 in cubili meo arborem in medio terræ, eximiæ proceritatis. Tum creviſſe arborem, & 11 ingentem evaſiſſe, adeo ut ſummitas ejus ad cœlum uſque pertingeret, & aſpectus ejus ad omnes terræ extremitates;

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

94 Καὶ συνάγονται οἱ σατράπαι, καὶ οἱ στρατηγοὶ, καὶ οἱ τοπάρχαι, ϗ οἱ δυνάσται τοῦ βασιλέως, ϗ ἐθεώρουν
τοὺς ἄνδρας, ὅτι οὐκ ἐκυρίευσε τὸ πῦρ τοῦ σώματος αὐτῶν, ϗ ἡ θρὶξ τῆς κεφαλῆς αὐτῶν οὐκ ἐφλογίσθη,
95 ϗ τὰ σαράβαρα αὐτῶν οὐκ ἠλλοιώθη, ϗ ὀσμὴ πυρὸς οὐκ ἦν ἐν (δ) αὐτοῖς. Καὶ ἀπεκρίθη (*) Ναβουχοδονόσορ ὁ
βασιλεὺς, ϗ εἶπεν, Εὐλογητὸς ὁ θεὸς τοῦ (ε) Σεδρὰχ, Μισὰχ, Ἀβδεναγὼ, ὃς ἀπέστειλε τὸν ἄγγελον
αὐτοῦ, ϗ ἐξείλατο τοὺς παῖδας αὐτοῦ, ὅτι ἐπεποίθεισαν ἐπ' αὐτῷ· ϗ τὸ ῥῆμα τοῦ βασιλέως ἠλλοίωσαν,
ϗ παρέδωκαν τὰ σώματα αὐτῶν εἰς πῦρ, ὅπως μὴ λατρεύσωσι (ζ) μηδὲ προσκυνήσωσι παντὶ θεῷ, ἀλλ'
96 ἢ τῷ θεῷ αὐτῶν. Καὶ ἐγὼ ἐκτίθεμαι (η) τὸ δόγμα· Πᾶς λαὸς, φυλὴ, γλῶσσα, ἣ (θ) ἐὰν εἴπῃ βλασφημίαν
κατὰ τοῦ θεοῦ (ι) Σεδρὰχ, Μισὰχ, Ἀβδεναγὼ, εἰς ἀπώλειαν ἔσονται, ϗ οἱ οἶκοι αὐτῶν (κ) εἰς
97 διαρπαγὴν, καθότι οὐκ ἔστι θεὸς ἕτερος ὅστις δυνήσεται ῥύσασθαι οὕτως. Τότε (λ) ὁ βασιλεὺς κατεύθυνε
τὸν Σεδρὰχ, Μισὰχ, Ἀβδεναγὼ, ἐν τῇ χώρᾳ Βαβυλῶνος, ϗ ηὔξησεν αὐτοὺς, ϗ ἠξίωσεν αὐτοὺς (μ)
98 ἡγεῖσθαι πάντων τῶν Ἰουδαίων, τῶν (ν) ἐν τῇ βασιλείᾳ αὐτοῦ. † Ναβουχοδονόσορ ὁ βασιλεὺς πᾶσι τοῖς
99 λαοῖς, φυλαῖς, (ξ) καὶ γλώσσαις, τοῖς οἰκοῦσιν ἐν πάσῃ τῇ γῇ, εἰρήνη ὑμῖν πληθυνθείη. Τὰ σημεῖα
100 ϗ τὰ τέρατα ἃ ἐποίησε μετ' ἐμοῦ ὁ θεὸς ὁ ὕψιστος, ἤρεσεν ἐναντίον ἐμοῦ ἀναγγεῖλαι ὑμῖν, Ὡς μεγάλα
καὶ ἰσχυρὰ, ἡ βασιλεία αὐτοῦ, βασιλεία αἰώνιος, καὶ ἡ ἐξουσία αὐτοῦ εἰς (ο) γενεὰν καὶ γενεάν.

Et congregantur Satrapæ, & Duces, & Toparchæ, & potentes 94
regis: & contemplabantur viros: quoniam nihil poteſtatis habuiſſet
ignis in corpore eorum; & capillus capitis eorum non eſſet aduſtus, &
ſarabara eorum non fuiſſent immutata, & odor ignis non eſſet in (z)
eis. Et reſpondit Nabuchodonoſor rex, & ait; Benedictus Deus 95
Sedrach, Miſach, Abdenago, qui miſit angelum ſuum, & eruit ſer-
vos ſuos; quia crediderunt in eum: & verbum regis immutaverunt,
& tradiderunt corpora ſua in ignem; ne ſervirent, neque adorarent omnem
deum præter Deum ſuum. Et ego propono decretum: Omnis populus, tri- 96
bus, lingua, quæcunque dixerit blaſphemiam contra Deum Sedrach,
Miſach, Abdenago; in perditionem eunt, & domus eorum in dire-
ptionem; ſicuti non eſt Deus alius qui poſſit ita ſalvare. Tunc rex promovit 97
Sedrach, Miſach, Abdenago, in regione Babylonis, & (æ) amplifi-
cavit eos, & dignos habuit ipſos, qui præeſſent omnibus Judæis, qui
in regno ſuo. (aa) Nabuchodonoſor rex omnibus populis, tribubus, & 98
linguis, habitantibus in univerſa terra: Pax vobis multiplicetur: Signa, 99
& prodigia, quæ fecit mecum Deus excelſus, placuit in conſpectu meo
annuntiare vobis, Quàm magna, & fortia: regnum ejus, regnum ſempiternum: & poteſtas ejus in generationem & generationem. 100

MS.A. (δ) αὐτοῖς· ϗ προσεκύνησεν ὁ βασιλεὺς ἐνώπιον αὐτῶν τῷ κυρίῳ. Καὶ (*) Ναβουχοδονόσορ, ϗ εἶπεν, (ε) Σεδράκ, Μισάκ, (ζ) παντὶ θεῷ, ἀλλ' (η) δόγμα· (θ) ἂν (ι) Σεδράκ,
Μισάκ, (κ) διαρπαγήσονται, (λ) κατηύθυνεν ὁ βασιλεὺς τὸν Σεδράκ, Μισάκ, Ἀβδεναγὼ ἐπὶ τὰ ἔργα τῆς χώρας Βαβυλῶνος, (μ) * ϗ ἠξίωσεν αὐτοὺς ἡγεῖσθαι (ν) ὄντων ἐν
† ὍΡΑΣΙΣ δ'. ὍΡΑΣΙΣ ε'. (ξ) γλώσσαις, (ο) γενεὰς γενεῶν.

ΚΕΦ. δ'.

1 2 Ἐγὼ Ναβουχοδονόσορ εὐθηνῶν ἤμην ἐν τῷ οἴκῳ μου, ϗ εὐθαλῶν (α). Ἐνύπνιον ἴδον, ϗ ἐφοβέρισέ με,
3 ϗ ἐταράχθην ἐπὶ τῆς κοίτης μου, ϗ αἱ ὁράσεις τῆς κεφαλῆς μου (β) ἐτάραξάν με. Καὶ δι' ἐμοῦ ἐτέθη δόγμα
τοῦ εἰσαγαγεῖν ἐνώπιόν μου πάντας τοὺς σοφοὺς Βαβυλῶνος, ὅπως τὴν σύγκρισιν τοῦ ἐνυπνίου γνωρίσωσί μοι.
4 Καὶ εἰσεπορεύοντο οἱ ἐπαοιδοὶ, μάγοι, γαζαρηνοὶ, (γ) Χαλδαῖοι· ϗ τὸ ἐνύπνιον (δ) ἐγὼ εἶπα ἐνώπιον
5 αὐτῶν· ϗ τὴν σύγκρισιν αὐτοῦ οὐκ ἐγνώρισάν μοι, (ε) Ἕως ἦλθε Δανιὴλ, οὗ τὸ ὄνομα Βαλτάσαρ κατὰ
6 τὸ ὄνομα τοῦ θεοῦ μου, ὃς πνεῦμα θεοῦ ἅγιον ἐν ἑαυτῷ ἔχει· (ζ) ᾧ εἶπα, Βαλτάσαρ ὁ ἄρχων τῶν ἐπαοιδῶν,
ὃν ἐγὼ ἔγνων ὅτι πνεῦμα θεοῦ ἅγιον (η) ἐν σοὶ, ϗ πᾶν μυστήριον οὐκ (θ) ἀδυνατεῖ σε, ἄκουσον τὴν
7 ὅρασιν τοῦ (ι) ἐνυπνίου μου, οὗ ἴδον, ϗ τὴν σύγκρισιν αὐτοῦ εἰπόν μοι. Ἐπὶ τῆς κοίτης μου ἐθεώρουν, ϗ ἰδοὺ
8 δένδρον ἐν μέσῳ τῆς γῆς, καὶ τὸ ὕψος αὐτοῦ πολύ. Ἐμεγαλύνθη τὸ δένδρον (κ) ϗ ἴσχυσε, ϗ τὸ ὕψος
αὐτοῦ ἔφθασεν ἕως τοῦ οὐρανοῦ, ϗ τὸ κύτος αὐτοῦ εἰς (λ) τὸ πέρας ἁπάσης τῆς γῆς,

CAP. IV.

Ego Nabuchodonoſor abundans eram in domo mea, & (a) florens. 1
Somnium vidi, & perterruit me: & turbatus ſum in cubili meo: 2
& viſiones capitis mei conturbaverunt me. Et per me propoſitum eſt 3
decretum introducendi in conſpectu meo omnes ſapientes Babylonis; ut
conjecturam ſomnii indicarent mihi. Et ingrediebantur, (b) incantatores, 4
magi, Gazareni, Chaldæi: & ſomnium ego dixi in conſpectu eorum:
& conjecturam ejus non indicârunt mihi: Donec (c) venit Daniel, cu- 5
jus nomen Baltaſar ſecundùm nomen dei mei: qui ſpiritum (d) Dei ſan-
ctum in ſemetipſo habet. Cui dixi; Baltaſar princeps incantatorum, quem 6
ego novi, quòd ſpiritus Dei ſanctus in te, & omne ſacramentum non (e) eſt
impoſſibile tibi: audi viſionem ſomnii mei, quod vidi: & conjecturam ejus
dic mihi. (f) In cubili meo videbam: & ecce arbor in medio terræ, & 7
altitudo ejus multa. Magnificata eſt arbor, & invaluit: & altitudo 8
ejus pervenit uſque ad cœlum: & (g) moles ejus ad (h) terminum univerſæ terræ:

MS.A. (α) ἐπὶ τοῦ θρόνου μου. Ἐνύπνιον (β) συνετάραξάν (γ) ϗ οἱ Χαλδαῖοι· (δ) εἶπα ἐγὼ (ε) Ἕως οὗ ἦλθε (ζ) ϗ τὸ ἐνύπνιον ἐνώπιον αὐτοῦ εἶπα· Βαλτάσαρ (η) ἐν ἑαυτῷ
ἔχει, ϗ (θ) ἀδυνατήσει (ι) ἐνυπνίου, ϗ τὴν (κ) ἐκεῖνο ϗ (λ) τὰ πέρατα πάσης

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

94 * واجمع عظماء الجيوش والجند * وروساء المواضع * واقوياء الملك * ونظروا الرجال ان
النار لم تملك اجسادهم * ولم تحرق شعر راسهم * ولم تتبدل لباساتهم * ولم تكن فيهم
95 رايحة النار * فسجد امامهم الملك للرب * واجاب بختنصر وقال * مبارك اله صدراخ وميصاخ
وعبدناغو * الذي ارسل ملاكه وانقذ عبيده لانهم توكلوا عليه * وغيروا كلمة
96 الملك * واسلموا اجسادهم للنار * كيلا يعبدوا ولا يسجدوا لكل اله الا لالههم * وانا
اضع امرا * كل شعب وقبيلة ولسان يقول تجديفا على اله صدراخ وميصاخ وعبدناغو
97 يصيرون للهلاك وبيوتهم للنهب * لانه ليس اله آخر يستطيع ان ينجي هكذا * حينيذ
الملك اقام صدراخ وميصاخ وعبدناغو في كورة بابل واعظمهم واهلهم ان يروسوا جميع
اليهود الكاينين في مملكته *

* الفصل الرابع * * الرويا الخامس *

1 * من بختنصر الملك لكل الشعوب والقبايل والالسن السكان في كل الارض *
2 السلم يكثر لكم * الايات والجرايح التي صنعها الله العلي معي * حسنت امامي
3 لاخبركم بها * لانها عظيمة وقوية * ومملكته مملكة ابدية * وسلطانه الى جيل
4 5 وجيل * انا بختنصر كنت مستقيما في بيتي * ومخصبا على كرسي * رايت حلما
6 فافزعني * واضطربت على مضجعي * ومناظر راسي اقلقتني * ومن قبلي وضع امر
7 ان يدخلوا قدامي جميع حكماء بابل * لكي يعرفوني تاويل الحلم * فدخلت
8 الرقاوون والمجوس والسحرة والكلدانيون * فقلت الحلم امامهم ولم يعرفوني تاويله * فدخل
دانيال الذي اسمه بلطشاصر على اسم الهي الذي له فيه روح القدوس * وقلت
9 انا الحلم امامه * يا بلطشاصر رييس الرقايين * الذي انا اعرفه ان روح الله القدوس
10 فيك وكل سر لا يعسر عليك * اسمع منظر الحلم الذي رايته * وقل لي
تاويله ومناظر راسي * على مضجعي نظرت واذا شجرة في وسط الارض * وارتفاعها
11 كبير * عظمت الشجرة وقويت * وارتفاعها بلغ الى السماء * وسعتها الى اقطار
كل الارض *

* *Et congregati duces exercituum & mi-* 94
lites, toparchæ, & potentes regis, vi-
derunt ignem in eorum virorum cor-
pora nullam habuiſſe poteſtatem, neq;
combuſſiſſe pilos capitis eorum, neque
mutata fuiſſe femoralia eorum, neque
eſſe in eis odorem ignis. Rex autem 95
adoravit coram eis Dominum, & re-
ſpondens Bochtonaſſar ait; Benedictus
Deus Sedrachi, Miſachi, & Abde-
naghi; qui miſit Angelum ſuum, &
eripuit ſervos ſuos, quòd confiſi ſint
in eo; & mutato regis verbo tradi-
derint corpora ſua igni, ut ne cole-
rent aut adorarent ullum deum præter
Deum ſuum. Ego etiam propono de- 96
cretum: Quicunque populus, natio,
aut lingua blaſphemiam protulerit in
Deum Sedrachi, Miſachi, & Abde-
naghi, addicantur exitio, & domus
eorum direptioni: quandoquidem non
eſt alius Deus qui ſic liberare poſſit.
Tunc rex evexit Sedrachum, Miſa- 97
chum, & Abdenaghum in provincia
Babelis; amplificavit eos, & dignos
effecit qui præeſſent omnibus Judæis
qui erant in regno ſuo.

CAP. IV.

Viſio quinta.

* *A Bochtonaſſare rege omnibus popu-* 1
lis, nationibus, & linguis habitantibus
in totâ terrâ: pax multiplicetur vo-
bis. Signa & prodigia quæ Deus ſu- 2
premus mecum egit, placet mihi vo-
bis enarrare. Siquidem magna ſunt 3
ac fortia: regnum ejus regnum ſem-
piternum, & imperium ejus in gene-
rationem & generationem. Ego Boch- 4
tonaſſar cùm proſper eſſem domi meæ,
& abundans ſuper ſolio meo; Vidi 5
ſomnium quod me terruit, conturba-
tus ſum ſuper cubile meum, & vi-
ſiones capitis mei anxerunt me. Qua- 6
rè fuit à me propoſitum decretum,
ut ingrederentur coram me omnes ſa-
pientes Babelis ad exponendum mihi
interpretationem ſomnii. Et ingreſſis 7
incantatoribus, magis, veneficis, &
Chaldæis, propoſitoque ſomnio coram
eis, non expoſuerunt mihi interpretati-
onem ejus. Ingreſſo autem Daniele, 8
cujus nomen eſt Baltaſaſar juxta no-
men dei mei qui ſpiritum Dei ſanctum
habet in illo; ſomnium propoſui co-
ram eo: O Baltaſaſar princeps in- 9
cantatorum, in quo ego ſpiritum Dei
ſanctum ineſſe novi, & cui nul-
lum arcanum eſt arduum; audi viſio-
nem ſomnii quod vidi, & dic mihi
interpretationem ejus & viſiones ca-
pitis mei. Super cubili meo vidi, cùm 10
ecce arbor in medio terræ, maximæ
altitudinis. Crevit arbor & inva- 11
luit, altitudo ejus ad cælum uſque
pervenit, et latitudo ejus ad extrema
totius terræ:

דניאל : ד

habitabant ejus ramis in & ,agri *bestia* faciebat umbrā se sub : ea in universis esca &,multus ejus fructus &,pulcher ejus Ramus

9 עפיה שפיר ואנבה שגיא ומזון לכלא־בה תחתוהי תטלל ׀ חיות ברא ובענפוהי ידרון

sanctus & ,vigil ecce & : meo strato super ,mei capitis *visionibus in fui Videns* .caro omnis vescebatur ea ex & ,cœli volucres

10 צפרי שמיא ומנה יתזין כל־בשרא׃ חזה הוית בחזוי ראשי על־משכבי ואלו עיר וקדיש

,ejus *frondem* excutite ,ejus ramos præcidite & , arborem Succidite *: dicens* sic & *,virtute in Clamans .descendens* cœlo de

11 מן־שמיא נחת׃ קרא בחיל וכן אמר גדו אילנא וקצצו ענפוהי אתרו עפיה

terra in ejus radicum radicem Veruntamen .ejus ramis à volucres & , ea sub *de bestia vagetur* : ejus *fructum* dispergite &

12 ובדרו אנבה תנד חיותא מן־תחתוהי וצפריא מן־ענפוהי׃ ברם עקר שרשוהי בארעא

herba in ejus pars *bestia* cum & ,tingatur cœli rore in & : agri *quod gramine in æris &* ,*ferri quod* vinculo in & , sinite

שבקו ובאסור די־פרזל ונחש בדתאא די ברא ובטל שמיא יצטבע ועם־חיותא חלקה בעשב

vigilum decreto In .eum super mutentur tempora septem & : ei detur bestiæ cor & , *mutent* homine ab ejus Cor .terræ

13 14 ארעא׃ לבבה מן־אנושא ישנון ולבב חיוא יתיהב לה ושבעה עדנין יחלפון עלוהי׃ בגזרת עירין

, *hominis* regno in altissimus dominetur quòd ,viventes cognoscant *quò verbum ad usque* : petitio sanctorum sermone & ,verbum

פתגמא ומאמר קדישין שאלתא עד־דברת די־ינדעון חייא די־שליט עליא במלכות אנושא

:Nebuchadnesar rex ego vidi somnium Hoc .illud super constituet *hominum* humilem & ,illud dabit voluerit *quod* cui &

15 ולמן־די יצבא יתננה ושפל אנשים יקים עליה׃ דנה חלמא חזית אנה מלכא נבוכדנצר

,mihi notificare interpretationē *valentes* non mei regni sapientes omnes quod *respectu omni* ,dic ej' interpretationē Belthesasar tu &

ואנתה בלטשאצר פשרא אמר כל־קבל די כל־חכימי מלכותי לא־יכלין פשרא להודעותני

hora in *est obstupefactus* , Belthesasar *ejus* nomen cujus ,Daniel Tunc .te in sanctorum Deorum spiritus quia ,*valens* tu Et

16 ואנתה כהל די רוח־אלהין קדישין בך׃ אדין דניאל די־שמה בלטשאצר אשתומם כשעה

.te terreat non ejus interpretatio & ,somnium , Belthesasar *: dicens &* , rex *Respondens* .eum terrebant ejus cogitationes & , una

חדה ורעינהי יבהלנה ענה מלכא ואמר בלטשאצר חלמא ופשרא אל־יבהלך

quæ ,vidisti quam ,Arbor .tuis hostibus ejus interpretatio & ,tuis inimicis somnium ,mi Domine : dixit & , Belthesasar Respondit

17 ענה בלטשאצר ואמר מראי חלמא לשנאיך ופשרה לעריך׃ אילנא די חזית די

,multus ej' fructus &,*pulchra* ej' *frons* Et .terram omnem in ej' aspectus &,cœlum ad pertingebat ej' altitudo & *:invaluerat &,creverat*

18 רבה ותקף ורומה ימטא לשמיא וחזותה לכל־ארעא׃ ועפיה שפיר ואנבה שגיא

qui ,rex ipse Tu .cœlorum volucres habitabant ejus ramis in & ,agri *bestia habitabat* eam subter : ea in omnibus esca &

19 ומזון לכלא־בה תחתוהי תדור חיות ברא ובענפוהי ישכנן צפרי שמיא׃ אנתה־הוא מלכא די

,vigilem rex vidit quod Et.terræ finem ad tua potestas & ,cœlū ad pervenit &,crevit tua magnitudo &:es roborat' &,es magnificat'

20 רבית ותקפת ורבותך רבת ומטת לשמיא ושלטנך לסוף ארעא׃ ודי חזא מלכא עיר

,dimittite terra in ejus radicum radicem attamen,*eam corrumpite* & ,arborem Succidite: *dicentem &* ,cœlis è descendentem sanctū &

וקדיש נחת ׀ מן־שמיא ואמר גדו אילנא וחבלוהי ברם עקר שרשוהי בארעא שבקו

tempora septem donec ,ejus pars agri *bestia* cum & ,*intingatur* cœli rore in & : agri *quæ* herba in ,*æris &* ,*ferri quod* vinculo in &

ובאסור די־פרזל ונחש בדתאא די ברא ובטל שמיא יצטבע ועם־חיות ברא חלקה עד די־שבעה עדנין

.regem meum dominum super pervenit quod ,*hoc* altissimi decretum & : rex interpretatio Hæc .eum super mutentur

21 יחלפון עלוהי׃ דנה פשרא מלכא וגזרת עליא היא די מטת על־מראי מלכא׃

Versio VULG. LAT.

9 Folia ejus pulcherrima, & fructus ejus nimius : & esca universorum in ea : subter eam habitabant animalia & bestiæ, & in ramis ejus conversabantur volucres cœli : & ex eâ vescebatur omnis caro. 10 Videbam in visione capitis mei super stratum meum, & ecce Vigil & Sanctus de cœlo descendit. 11 Clamavit fortiter, & sic ait; Succidite arborem, & præcidite ramos ejus : excutite folia ejus, & dispergite fructus ejus : fugiant bestiæ quæ subter eam sunt, & volucres de ramis ejus. 12 Veruntamen germen radicum ejus in terra sinite, & alligetur vinculo ferreo & æreo, in herbis quæ foris sunt, & rore cœli tingatur, & cum feris pars ejus in herba terræ. 13 Cor ejus ab humano commutetur, & cor feræ detur ei : & septem tempora mutentur super eum. 14 In sententia Vigilum decretum est, & sermo Sanctorum, & petitio : donec cognoscant viventes, quoniam dominatur Excelsus in regno hominum ; & cuicunque voluerit, dabit illud, & humillimum hominem constituet super eum. 15 Hoc somnium vidi ego Nabuchodonosor rex : tu ergò Baltassar interpretationem narra festinus : quia omnes sapientes regni mei non queunt solutionem edicere mihi : tu autem potes, quia spiritus deorum sanctorum in te est. 16 Tunc Daniel, cujus nomen Baltassar, cœpit intra semetipsum tacitus cogitare quasi unâ horâ : & cogitationes ejus conturbabant eum. Respondens autem rex ait ; Baltassar, somnium & interpretatio ejus non conturbent te. Respondit Baltassar, & dixit ; Domine mi, somnium his qui te oderunt, & interpretatio ejus hostibus tuis sit. 17 Arborem quam vidisti sublimem atque robustam, cujus altitudo pertingit ad cœlum, & aspectus illius in omnem terram : 18 Et rami ejus pulcherrimi, & fructus ejus nimius, & esca omnium in ea, subter eam habitantes bestiæ agri, & in ramis ejus commorantes aves cœli : 19 Tu es rex, qui magnificatus es, & invaluisti : & magnitudo tua crevit, & pervenit usque ad cœlum, & potestas tua in terminos universæ terræ. 20 Quòd autem vidit rex Vigilem & Sanctum descendere de cœlo, & dicere ; Succidite arborem, & dissipate illam, attamen germen radicum ejus in terra dimittite, & vinciatur ferro & ære in herbis foris, & rore cœli conspergatur, & cum feris sit pabulum ejus, donec septem tempora mutentur super eum : 21 Hæc est interpretatio sententiæ Altissimi, quæ pervenit super dominum meum regem :

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

12 * ܛܪ̈ܦܘܗܝ ܫܦܝܪܝܢ ܗܘܘ .· ܘܦܐܪ̈ܘܗܝ ܣܓܝ̈ܐܝܢ. ܘܡܐܟܘܠܬܐ ܠܟܠ ܒܣܪ ܐܝܬ ܒܗ. ܬܚܬܘܗܝ
ܫܪܝܢ ܗܘܘ ܟܠܗܝܢ ܚܝ̈ܘܬܐ ܕܒܪܐ. ܘܒܣܘ̈ܟܘܗܝ ܫܟܢܝܢ ܟܠܗܘܢ ܦܪ̈ܚܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܡܢܗ
13 ܡܬܬܪܣܐ ܗܘܐ ܟܠܗ ܒܣܪ .· * ܚܙܐ ܗܘܝܬ ܒܚܙܘܐ ܕܪܫܝ ܕܥܠ ܡܫܟܒܝ. ܘܗܐ ܥܝܪܐ ܘܩܕܝܫܐ
14 ܢܚܬ ܡܢ ܫܡܝܐ. * ܘܩܪܐ ܒܚܝܠܐ . ܘܐܡܪ ܗܟܢܐ. ܦܣܘܩܘ ܐܝܠܢܐ . ܘܦܫܚܘ ܣܘ̈ܟܘܗܝ.
ܘܬܪܘ ܛܪ̈ܦܘܗܝ ܘܒܕܪܘ ܦܐܪܗ. ܢܥܪܩܢ ܚܝ̈ܘܬܐ ܡܢ ܬܚܬܘܗܝ .· ܘܦܪ̈ܚܬܐ ܕܫܡܝܐ ܡܢ
15 ܣܘ̈ܟܘܗܝ. * ܒܪܡ ܥܩܪܐ ܕܫܪ̈ܫܘܗܝ ܒܐܪܥܐ ܫܒܘܩܘ. ܒܐܣܘܪܐ ܕܦܪܙܠܐ ܘܢܚܫܐ. ܒܬܕܐܐ ܕܒܪܐ. ܘܒܛܠܐ
16 ܕܫܡܝܐ ܢܨܛܒܥ. ܘܥܡ ܚܝ̈ܘܬܐ ܕܒܪܐ ܡܥܡܪܗ ܒܥܣܒܐ ܕܐܪܥܐ. * ܘܠܒܗ ܡܢ ܒܢ̈ܝܢܫܐ
17 ܢܫܬܢܐ. ܘܠܒܐ ܕܚܝܘܬܐ ܢܬܝܗܒ ܠܗ. ܘܫܒܥܐ ܥܕܢܝܢ ܢܬܚܠܦܘܢ ܥܠܘܗܝ. * ܒܦܘܩܕܢܐ
ܕܥܝܪܐ ܦܬܓܡܐ. ܘܡܐܡܪܐ ܕܩܕܝܫܐ ܫܐܠܬܐ. ܕܢܕܥܘܢ ܚܝ̈ܐ ܕܫܠܝܛ ܗܘ ܡܪܝܡܐ ܒܡܠܟܘܬܐ
18 ܕܒܢ̈ܝܢܫܐ. ܘܠܡܢ ܕܨܒܐ ܢܬܠܝܗ̇ .· ܘܡܟܝܟܐ ܕܒܢ̈ܝܢܫܐ ܢܩܝܡ ܥܠܝܗ̇. * ܗܢܐ ܚܠܡܐ ܚܙܝܬ ܐܢܐ
ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ. ܘܐܢܬ ܒܠܛܫܐܨܪ ܦܘܫܩܗ ܐܡܪ ܠܝ. ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ ܚܟܝ̈ܡܐ ܕܡܠܟܘܬܝ.
ܠܐ ܡܫܟܚܝܢ ܠܡܦܫܩܘ ܠܝ. ܘܐܢܬ ܕܢܝܐܝܠ ܡܫܟܚ ܐܢܬ. ܡܛܠ ܕܪܘܚ ܐܠܗ̈ܐ ܩܕܝܫ̈ܐ
19 ܐܝܬ ܒܟ. * ܗܝܕܝܢ ܕܢܝܐܝܠ ܕܫܡܗ ܒܠܛܫܐܨܪ. ܐܬܕܡܪ ܐܝܟ ܫܥܐ ܚܕܐ. ܘܡܚܫܒ̈ܬܗ ܕܒܠܗܘܗܝ.
ܥܢܐ ܡܠܟܐ ܘܐܡܪ. ܒܠܛܫܐܨܪ .· ܚܠܡܐ ܘܦܫܪܗ ܠܐ ܢܕܠܚܘܢܟ. ܥܢܐ ܕܢܝܐܝܠ ܘܐܡܪ.
20 ܡܪܝ .· ܚܠܡܐ ܠܣܢ̈ܐܝܟ ܘܦܫܪܗ ܠܒܥܠܕܒ̈ܒܝܟ. * ܐܝܠܢܐ ܕܚܙܝܬ ܕܪܒܐ. ܘܥܫܢ :
21 ܘܪܘܡܗ ܡܛܐ ܠܫܡܝܐ .· ܘܚܙܘܗ ܠܟܠܗܝܢ ܣܘܦ̈ܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ : * ܛܪ̈ܦܘܗܝ ܫܦܝܪܝܢ
ܘܦܐܪܗ ܣܓܝ .· ܘܡܐܟܘܠܬܐ ܠܟܠܒܣܪ ܐܝܬ ܒܗ .· ܘܬܚܬܘܗܝ ܫܪܝܢ. ܟܠܗܝܢ
ܚܝ̈ܘܬܐ ܕܒܪܐ .· ܘܒܣܘ̈ܟܘܗܝ ܫܟܢܝܢ ܟܠܗܘܢ ܦܪ̈ܚܬܐ ܕܫܡܝܐ : ܘܡܢܗ ܡܬܬܪܣܐ ܗܘܐ
22 ܟܠ ܒܣܪ .· * ܐܢܬ ܗܘ ܡܠܟܐ ܕܪܒܝܬ ܘܥܫܢܬ. ܪܒܝܬ ܘܡܛܝܬ ܠܫܡܝܐ. ܘܫܘܠܛܢܟ
23 ܠܟܠܗܘܢ ܣܘܦ̈ܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ. * ܘܕܚܙܐ ܡܠܟܐ ܠܥܝܪܐ ܘܩܕܝܫܐ. ܕܢܚܬ ܡܢ ܫܡܝܐ. ܘܩܪܐ ܒܚܝܠܐ
ܘܐܡܪ .· ܦܣܘܩܘ ܐܝܠܢܐ ܘܚܒܠܘܗܝ .· ܒܪܡ ܥܩܪܐ ܕܫܪ̈ܫܘܗܝ ܒܐܪܥܐ ܫܒܘܩܘ. ܒܐܣܘܪܐ
ܕܦܪܙܠܐ ܘܢܚܫܐ ܒܬܕܐܐ ܕܒܪܐ : ܘܒܛܠܐ ܕܫܡܝܐ ܢܨܛܒܥ .· ܘܥܡ ܚܝ̈ܘܬܐ ܕܒܪܐ ܡܥܡܪܗ
ܒܥܣܒܐ ܕܐܪܥܐ .· ܘܠܒܗ ܡܢ ܒܢ̈ܝܢܫܐ ܢܫܬܢܐ : ܘܠܒܐ ܕܚܝܘܬܐ ܢܬܝܗܒ ܠܗ .·
24 ܥܕܡܐ ܕܫܒܥܐ ܥܕܢܝܢ ܢܬܚܠܦܘܢ ܥܠܘܗܝ .· * ܗܢܘ ܦܘܫܩܗ ܡܠܟܐ. ܘܦܣܩܐ ܕܡܪܝܡܐ
ܡܛܬ ܥܠ ܡܪܝ ܡܠܟܐ.

12 Frondes ejus erant pulcherrimæ, & fructus ejus plurimi, cibusque pro omni carne erat in ea : sub ea degebant omnes bestiæ sylvestres, & in ramis ejus habitabant omnes cœli volucres : demum ex ea vescebatur omnis caro. 13 Videbam in visione capitis mei quod erat super cubili meo, Vigilem & Sanctum de cœlo descendentem, 14 Altâ voce clamantem, atque ita dicentem ; Exscindite arborem, & discerpite ramos ejus, excutite folia, fructus dispergite : abscedant bestiæ ne subsint ei, & volucres cœli è ramis ejus. 15 Verùm stirpem radicum ejus in terra relinquite in vinculo ferreo æneóque, in gramine campestri : rore cœli intingatur, & cum bestiis agri sit habitatio ejus in herba terræ : 16 Animus ejus ab humano mutetur, & animus belluinus detur ei ; septemque tempora evolvantur super eam. 17 Ex mandato Vigilis hæc sententia est, & ex decreto Sancti postulatum istud : quatenus cognoscant viventes *ita* dominari Excelsum in regno hominum, ut cui voluerit det illud, & abjectissimum hominum ad illud evehat. 18 Hoc somnium vidi ego Nebuchadnosar rex : jam tu Blitsasar interpretationem ejus dic mihi, quia omnes sapientes regni mei nequeunt exponere mihi ; tu verò Daniel potes, quòd spiritus deorum sanctorum insit tibi. 19 Tunc Daniel, cui nomen Blitsasar, cùm obstupuisset circiter horam unam, & cogitationes suæ perturbâssent eum ; respondit rex, & dixit ; Blitsasar, somnium & interpretatio ejus ne te perturbent. Respondit Daniel, & ait ; Domine mi, somnium istud osoribus tuis *eveniat*, & interpretatio ejus inimicis tuis. 20 Arbor quam vidisti crevisse & ingentem evasisse, adeò ut summitas ejus ad cœlum usque pertingeret, & aspectus ejus ad extremas quasq; terræ partes, 21 Cujus frondes pulcherrimæ, & fructus plurimi, cui cibus inerat pro omni carne, sub qua degebant omnes feræ campestres, cujus in ramis habitabant omnes cœli volucres, & ex qua vescebatur omnis caro : 22 Tu es ô rex, qui crevisti & maximus evasisti : Crevisti, & ad cœlum pervenisti, & dominium tuum in omnes fines terræ. 23 Quod autem vidit rex Vigilem & Sanctum è cœlo descendentem, altâ voce clamantem, atque dicentem ; Exscindite arborem & destruite eam ; verùm stirpem radicum ejus in terra relinquite in vinculo ferreo æneóque, in gramine campestri ; ut rore cœli intingatur, & cum bestiis agri sit habitatio ejus in herba terræ : animus ejus ex humano mutetur, & animus belluinus detur ei, donec tempora septem evolvantur super eam : 24 Hæc est interpretatio *ejus* O rex : Sententia Altissimi supervenit domino meo regi.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

9 Τὰ φύλλα αὐτοῦ ὡραῖα, καὶ ὁ καρπὸς αὐτοῦ πολύς, καὶ τροφὴ πάντων ἐν αὐτῷ, καὶ ὑποκάτω αὐτοῦ κατε-
σκήνουν τὰ θηρία τὰ ἄγρια, καὶ ἐν τοῖς κλάδοις αὐτοῦ κατῴκουν τὰ ὄρνεα τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἐξ αὐτοῦ ἐτρέ-
10 φετο πᾶσα σάρξ. Ἐθεώρουν ἐν ὁράματι τῆς νυκτὸς ἐπὶ τῆς κοίτης (μ) μου, καὶ ἰδοὺ εἴρ, καὶ ἅγιος ἀπ' οὐ-
11 ρανοῦ κατέβη, Καὶ ἐφώνησεν ἐν ἰσχύϊ, καὶ οὕτως εἶπεν, Ἐκκόψατε τὸ δένδρον, καὶ ἐκτίλατε τοὺς (ν) κλά-
δους αὐτοῦ, καὶ ἐκτινάξατε τὰ φύλλα αὐτοῦ, καὶ διασκορπίσατε (ξ) τὸν καρπὸν αὐτοῦ· σαλευθήτωσαν τὰ
12 θηρία ὑποκάτωθεν αὐτοῦ, καὶ τὰ ὄρνεα ἀπὸ τῶν κλάδων αὐτοῦ. Πλὴν τὴν φυὴν τῶν ῥιζῶν αὐτοῦ ἐν τῇ γῇ
ἐάσατε, καὶ ἐν δεσμῷ σιδηρῷ καὶ χαλκῷ, καὶ ἐν τῇ χλόῃ τῇ ἔξω, καὶ ἐν τῇ δρόσῳ τοῦ οὐρανοῦ κοιτασθή-
13 σεται, καὶ μετὰ τῶν θηρίων ἡ μερὶς αὐτοῦ ἐν τῷ χόρτῳ τῆς γῆς. Ἡ καρδία αὐτοῦ ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων
ἀλλοιωθήσεται, καὶ καρδία θηρίου δοθήσεται αὐτῷ, καὶ ἑπτὰ καιροὶ ἀλλαγήσονται ἐπ' αὐτόν. Διὰ συγ-
14 κρίματος εἴρ ὁ λόγος, (ο) καὶ ῥῆμα ἁγίων τὸ ἐπερώτημα, ἵνα γνῶσιν οἱ ζῶντες, ὅτι κύριός ἐστιν
ὁ ὕψιστος τῆς βασιλείας τῶν ἀνθρώπων, καὶ ᾧ ἐὰν δόξῃ, δώσει αὐτήν, καὶ ἐξουδένωμα ἀνθρώπων (π)
15 ἀναστήσει ἐπ' αὐτήν. Τοῦτο τὸ ἐνύπνιον ὃ ἴδον ἐγὼ Ναβουχοδονόσορ ὁ βασιλεύς, καὶ σὺ Βαλτάσαρ τὸ
σύγκριμα εἰπόν, ὅτι πάντες οἱ σοφοὶ τῆς βασιλείας μου οὐ δύνανται τὸ σύγκριμα αὐτοῦ δηλῶσαί μοι·
16 σὺ δὲ Δανιὴλ δύνασαι, ὅτι πνεῦμα θεοῦ (ρ) ἅγιον ἐν σοί. Τότε Δανιήλ, οὗ τὸ ὄνομα (σ) Βαλτάσαρ,
ἀπηνεώθη ὡσεὶ ὥραν μίαν, καὶ οἱ διαλογισμοὶ αὐτοῦ συνετάρασσον αὐτόν. (τ) καὶ ἀπεκρίθη Βαλτάσαρ,
17 καὶ εἶπε, (υ) Κύριε, τὸ ἐνύπνιον ἔστω τοῖς μισοῦσί σε, καὶ ἡ σύγκρισις αὐτοῦ τοῖς ἐχθροῖς σου. Τὸ δένδρον
ὃ εἶδες τὸ μεγαλυνθὲν καὶ τὸ ἰσχυκός, οὗ τὸ ὕψος (φ) ἔφθανεν εἰς τὸν οὐρανόν, καὶ τὸ κύτος αὐτοῦ εἰς
18 πᾶσαν τὴν γῆν, (χ) Καὶ τὰ φύλλα αὐτοῦ εὐθαλῆ, καὶ ὁ καρπὸς αὐτοῦ πολύς, καὶ τροφὴ πᾶσιν ἐν αὐτῷ·
ὑποκάτω αὐτοῦ κατῴκουν τὰ θηρία τὰ ἄγρια, καὶ ἐν τοῖς κλάδοις αὐτοῦ (ψ) κατεσκήνουν τὰ ὄρνεα τοῦ οὐρανοῦ,
19 Σὺ εἶ, βασιλεῦ, ὅτι ἐμεγαλύνθης καὶ ἴσχυσας, καὶ ἡ μεγαλωσύνη σου ἐμεγαλύνθη, καὶ ἔφθασεν εἰς τὸν οὐρανόν, καὶ ἡ (′)
20 κυρεία σου εἰς τὰ πέρατα τῆς γῆς. Καὶ ὅτι εἶδεν ὁ βασιλεὺς εἴρ, καὶ ἅγιον καταβαίνοντα (″) ἀπὸ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ εἶπεν,
Ἐκτίλατε τὸ δένδρον, καὶ διαφθείρατε αὐτό, πλὴν τὴν φυὴν τῶν ῥιζῶν αὐτοῦ (ω) ἐν τῇ γῇ ἐάσατε,
καὶ ἐν δεσμῷ σιδηρῷ (α) καὶ ἐν χαλκῷ, καὶ ἐν τῇ χλόῃ τῇ ἔξω, καὶ ἐν τῇ δρόσῳ τοῦ οὐρανοῦ αὐλισθήσε-
21 ται, καὶ μετὰ θηρίων ἀγρίων ἡ μερὶς αὐτοῦ, ἕως οὗ ἑπτὰ καιροὶ ἀλλοιωθῶσιν ἐπ' αὐτόν· Τοῦτο ἡ σύγ-
κρισις αὐτοῦ, βασιλεῦ, καὶ σύγκριμα ὑψίστου ἐστίν, ὃ ἔφθασεν ἐπὶ τὸν κύριόν μου τὸν βασιλέα,

Folia ejus pulchra: & fructus ejus multus: & eſca univerſorum in 9
ea: & ſubter eam habitabant beſtiæ agreſtes: et in ramis ejus habitabant
volucres cœli: & ex ea veſcebatur omnis caro. Videbam in viſione noctis 10
in cubili meo: Et ecce (i) Hir, et Sanctus de cœlo deſcendit, Clamavitque 11
fortiter, et ſic ait; Succidite arborem, et evellite ramos ejus, & excutite
folia ejus, et diſpergite fructum ejus: moveantur beſtiæ deſubter eam, et
volucres de ramis ejus. Veruntamen germen radicum ejus in terra ſinite: 12
et in vinculo ferreo, et æreo, et in herba, quæ foris eſt, et in rore cœli cu-
babit: et cum beſtiis pars ejus in herba terræ. Cor ejus ab hominibus com- 13
mutabitur: et cor feræ dabitur ei: et ſeptem tempora mutabuntur ſuper
eum. Per decretum Hir ſermo: et verbum, Sanctorum petitio: ut cog- 14
noſcant viventes, quòd Dominus eſt ipſe Altiſſimus regni hominum, et
cuicunque voluerit, dabit illud, & quod pro nihilo habetur ab ho-
minibus, eriget ſuper illud. Hoc eſt ſomnium, quod vidi ego Na- 15
buchodonoſor rex: Et tu, Baltaſar, conjecturam* dicito: quia omnes ſa-
pientes regni mei non poſſunt conjecturam ejus indicare mihi. Tu autem,
Daniel, potes: quia ſpiritus Dei ſanctus eſt in te. Tunc Daniel, cujus 16
nomen Baltaſar, (k) obſtupuit quaſi horâ unâ: & cogitationes ejus con-
turbabant (l) eum. Et reſpondit Baltaſar, et dixit; Domine, ſomnium ſit
his qui te oderunt: et conjectura ejus hoſtibus tuis. Arbor, quam vidiſti 17
magnificatam, et corroboratam, cujus altitudo perveniebat ad cœlum, et
latitudo ejus in omnem terram, Et folia ejus florentia, et fructus ejus 18
multus, et eſca omnibus in ea, ſubter eam habitabant beſtiæ agri, et in ra-
mis ejus commorabantur aves cœli; Tu es, ô rex, quia magnificatus es, 19
et invaluiſti, et magnitudo tua magnificata eſt, et pervenit ad cœlum, et
poteſtas tua ad terminos terræ. Quòd autem vidit rex Hir, et Sanctum 20
deſcendentem de cœlo, et dixit; Evellite arborem, et diſſipate illam, at-
tamen germen radicum ejus in terra dimittite, et in vinculo ferreo, et in
ære, et in herba, quæ foris, et in rore cœli commorabitur, et cum beſtiis
agreſtibus pars ejus, donec ſeptem tempora mutentur ſuper eum; Hæc eſt 21
conjectura ejus, ô rex: et ſententia Altiſſimi eſt, quæ pervenit ſuper do-
minum meum regem:

MS.A. (μ) μου ἐγρήγορος καὶ (ν)* καρποὺς (ξ) τοὺς καρποὺς (ο) καὶ λόγος (π) ἀναστήσεται (ρ) ἐν σοὶ ἅγιον. (σ) Βαλτάσαρ, (τ) καὶ ἀπεκρίθη ὁ βασιλεύς, καὶ εἶπεν, Βαλτάσαρ, τὸ ἐνύπνιον καὶ ἡ σύγκρισις μὴ κατασπευσάτω σε. καὶ ἀπεκρίθη Βαλτάσαρ καὶ (υ) Κύριε, ἔστω τὸ ἐνύπνιον τοῖς (φ) ἔφθασεν (χ) Τὰ φύλλα (ψ) κατῴκουν (′) κυριεία (″) ἐκ τοῦ (ω) ἐάσατε ἐν τῇ γῇ, (α) καὶ χαλκῷ,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

12 * أوراقها بهية * وثمرها كثير * وغذاء الكل فيها * وتحتها أوت الوحوش البرية * وفي أغصانها
13 سكنت طيور السماء * ومنها اغتذى كل جسد * نظرت في رؤيا الليل على مضجعي *
14 وإذا يقظان وقدوس نزل من السماء * وصوت بقوة وقال هكذا * اقطعوا الشجرة * وانزعوا
أغصانها * وانفضوا أوراقها * وبددوا ثمرها * لتنزعج الوحوش من تحتها * والطيور من
15 أغصانها * لكن غرس أصولها دعوه في الأرض * وبرباط حديد ونحاس * وفي الخضرة
16 التي من خارج وطل السماء يسكن * ومع الوحوش نصيبه في عشب الأرض * وقلبه
17 يتبدل من البشر * ويعطى له قلب وحش * ويتبدل عليه سبعة أزمنة * وبجزم يقظان
القول * وكلمة القديسين المسألة * لكي تعلم الأحياء أن الرب هو العالي على مملكة
18 البشر * ويعطيها لمن يرى * ويقيم عليها رذلة الناس * هذا المنام الذي رأيته أنا الملك
بختنصر * وأنت يا بلطشاصر قل التأويل * لأن جميع حكماء مملكتي لا يستطيعون أن
19 يبينوا تأويله * وأنت يا دانيال تستطيع * لأن روح الله القدوس فيك * حينئذ دانيال
الذي اسمه بلطشاصر * أطرق نحو ساعة واحدة * وأفكاره أقلقته * فأجاب الملك وقال *
يا بلطشاصر المنام والتأويل لا يقلقاك * فأجاب بلطشاصر وقال له * يا سيد يكون الحلم
20 لمبغضيك * وتأويله لأعدائك * الشجرة التي رأيتها عظمت وقويت * وبلغ ارتفاعها إلى
21 السماء * وسعتها إلى كل الأرض * وأوراقها مخصبة * وثمرها كثير * وفيها طعام للكل * تحتها
22 سكنت الوحوش البرية * وفي أغصانها استظلت طيور السماء * أنت أيها الملك * لأنك
23 عظمت وقويت * وعظمتك عظمت وبلغت إلى السماء * وسيادتك إلى أقطار الأرض * وأن
الملك رأى يقظان وقدوسا نزل من السماء وقال * املسوا الشجرة وأفسدوها * لكن إعادة
حبلة أصولها دعوه في الأرض * وبرباط حديد ونحاس * وفي الخضرة التي خارجا وفي طل
24 السماء يتدير * ومع الوحوش البرية نصيبه إلى أن تتبدل عليه سبعة أزمنة * هذا تأويله
أيها الملك * جزم العلي هو الذي بلغ إلى سيدي الملك *

* Folia ejus erant formoſa, fructus uberri- 12
mus, ut omnium eſca eſſet in ea: ſub
eam ſe recipiebant animalia campeſtria,
& in ramis ejus habitabant volucres cœ-
li: & ex ea veſcebatur omne corpus.
Vidi in viſione nocturna ſuper cubili 13
meo, cùm ecce Vigil & Sanctus deſcendit
è cœlo. Et clarâ voce clamavit, & 14
ita dixit; Succidite arborem, & evel-
lite ramos ejus, excutite folia ejus, &
fructus ejus diſpergite: moveantur ani-
malia de ſub ipſa, & volucres è ramis
ipſius. At verò plantam radicum ejus 15
in terra ſinite, & in vinculo ferreo
æncóque: in herba viridi quæ foris eſt,
& rore cœli habitet, & cum belluis ſit
pars ejus in herba terræ: Cor ejus im- 16
mutetur ab hominibus, & detur ei cor
beſtiæ; ſeptémque tempora mutentur ſu-
per eum. Ex decreto quidem Vigilis eſt 17
ſermo, & ex verbo Sanctorum petitio:
ut ſciant viventes quòd Dominus ſuper-
eminet regno hominum, & dat illud
cui arbitratur, & evehit ad illud abje-
ctiſſimos hominum. Hoc eſt ſomnium 18
quòd vidi ego rex Bochtonaſſar: tu O
Baltaſaſar dic interpretationem: nam
omnes ſapientes regni mei nequeunt indi-
care interpretationem ejus; tu verò O
Daniel potes, quia ſpiritus Dei ſanctus
eſt in te. Tunc Daniel cujus nomen erat 19
Baltaſaſar, vultum taciturnus demiſit
circiter horam unam, & cogitationes
ejus conturbabant eum: ſed affatus eum
rex ait; O Baltaſaſar, ſomnium & inter-
pretatio ejus ne te conturbent. Reſpondit
Baltaſaſar, & ait illi, O domine, ſomnium
oſoribus tuis ſit, & interpretatio ejus
hoſtibus tuis. Arbor quam vidiſti cre- 20
viſſe & invaluiſſe, altitudinem ejus ad
cœlum uſque perveniſſe, & latitudinem
ejus ad univerſam terram; Folia ejus 21
ubera eſſe, & fructum ejus permultum,
eſcam in ea omnibus eſſe, ſub ea habi-
tare animalia campeſtria, & in ramis
ejus umbram petere volucres cœli: Tu es 22
O rex: tu enim magnificatus es & in-
valuiſti; amplitudo tua crevit, & ad
cœlum uſque pervenit; & dominatus
tuus ad extremas terræ partes. Quòd 23
autem rex viderit Vigilem & Sanctum
deſcendiſſe de cœlo & dixiſſe; Denuda-
te arborem & corrumpite eam, ſed re-
ſtaurationem plaſmatis radicum ejus in
terra ſinite, & in vinculo ferreo æneó-
que; & in gramine quod foris eſt, inque
rore cœli commoretur; & cum belluis
ſylveſtribus ſit pars ejus, quouſque mu-
tentur ſuper eum ſeptem tempora: Hæc 24
eſt interpretatio ejus O rex: Decretum
Altiſſimi eſt quod pervenit ad dominum
meum regem.

דניאל : ד

rore ex & , ſapient tibi bobus ſicut *herba & ,tuam habitationem exiſtendum ad* agri *fera* cum & , *homine* ab *trudentes* te Et
22 ולך טרדין מן־אנשא ועם־חיות ברא להוה מדרך ועשבא כתורין לך יטעמון ומטל
, *hominis* regno in altiſſimus *dominator* quod ſcias donec , te ſuper mutabuntur tempora ſeptem & , *tingentes* te cœlorum
שמיא לך מצבעין ושבעה עדנין יחלפון עליך עד די תנדע די־שליט עליא במלכות אנשא
ex *: conſtans* tibi tuum regnum , arboris *quæ* ejus radicum radicem *dimittere* dixerunt quod Et.illud dabit,voluerit cui *ei* &
23 ולמן־די יצבא יתננה׃ ודי אמרו למשבק עקר שרשוהי די אילנא מלכותך לך קימה מן־
, redime juſtitia *in* tua peccata & ,*te ſuper ſit pulchrum* meum conſilium , rex Quamobrem *.cœli dominantes* quòd cognoveris quo
24 די תנדע די שלטן שמיא׃ להן מלכא מלכי ישפר עליך וחטיך בצדקה פרק
.regem Nebuchadneſar ſuper *venit Omne* .tuæ paci prolongatio *erit ecce:afflictorum miſerando in* tuas iniquitates &
25 ועויתך במחן ענין הן תהוה ארכא לשלותך׃ כלא מטא על־נבוכדנצר מלכא׃
Nónne : ait & , rex *Reſpondit .fuit deambulans* Babel regni *palatio ſuper* : duodecim *lunarum* fine In
26 לקצת ירחין תרי עשר על־היכל מלכותא די בבל מהלך הוה׃ ענה מלכא ואמר הלא
27 ? mei decoris gloriam in & ,meæ fortitudinis robore in , regni domum in *eam* ædificavi ego quam : magna Babel *ipſa* hæc
דא־היא בבל רבתא די־אנה בניתה לבית מלכו בתקף חסני וליקר הדרי׃
.te à tranſivit regnum , rex Nebuchadneſar , *dicentes* Tibi *.ei delapſa* cœlis è vox , regis ore in *ſermo* Adhuc
28 עוד מלתא בפם מלכא קל מן־שמיא נפל לך אמרין נבוכדנצר מלכא מלכותא עדת מנך׃
mutabuntur tempora ſeptem & , ſapient tibi bobus ſicut *herba* ,tua habitatio agri *beſtia* cum & ,*trudentes* te homine ab Et
29 ומן־אנשא לך טרדין ועם־חיות ברא מדרך עשבא כתורין לך יטעמון ושבעה עדנין יחלפון
ſermo hora *ea In* .illud dabit voluerit cui *ei* & , *hominis* regno in altiſſimus *dominator* quòd agnoſcas donec , te ſuper
30 עליך עד די תנדע די־שליט עליא במלכות אנשא ולמן די־יצבא יתננה׃ בה־שעתא מלתא
:tingebatur ejus corpus cœlorum rore *de* & ,comedebat boves ut herbam & ,*eſt detruſus homine* ex &,Nebuchadneſar ſuper eſt *finitus*
ספת על־נבוכדנצר ומן־אנשא טריד ועשבא כתורין יאכל ומטל שמיא גשמה יצטבע
cœlos ad meos oculos Nebuchadneſar ego dierum fine in Et .avium ſicut ejus ungues & ,crevit *aquilarum ſicut* ejus capillus donec
31 עד די שערה כנשרין רבה וטפרוהי כצפרין׃ ולקצת יומיא אנה נבוכדנצר עיני לשמיא
poteſtas ,ejus poteſtas quia ,glorificavi & , laudavi *ſeculi* viventem & ,benedixi altiſſimo & ,eſt *reverſa me ſuper* mea cognitio & ,levavi
נטלת ומנדעי עלי יתוב ולעליא ברכת ולחי עלמא שבחת והדרת די שלטנה שלטן
ſuam voluntatem juxta &,reputati nihil tanquam terræ habitatores omnes Et.generatione & generatione cum ejus regnum & ;*ſeculi*
32 עלם ומלכותה עם־דר ודר׃ וכל־דארי ארעא כלה חשיבין וכמצביה
ipſo In ? feciſti Quid : ei dicat &,ejus manum *in* percutiat qui eſt non & :terræ habitatoribus &,cœlorum exercitu in *faciens*
33 עבד בחיל שמיא ודארי ארעא ולא איתי די־ימחא בידה ויאמר לה מה עבדת׃ בה־
, mei *duces* me & , *me ſuper rediit meus ſplendor* & *meus decor* mei regni gloriam ad & , *me ſuper eſt reverſa* mea cognitio tempore
זמנא מנדעי יתוב עלי וליקר מלכותי הדרי וזוי יתוב עלי ולי הדברי
ego Nunc .mihi eſt addita amplior magnificentia & , *eſt confirmatum* meo regno *ſuper* & .: quæſierunt mei principes &
34 ורברבני יבעון ועל־מלכותי התקנת ורבו יתירה הוספת לי׃ כען אנה
qui &:judicium ejus ſemita & ,veritas ejus opera omnia quia,cœlorum regem *glorificans &* , *exaltans &* , *laudans* Nebuchadneſar
נבכדנצר משבח ומרומם ומהדר למלך שמיא די כל־מעבדוהי קשוט וארחתה דין ודי
.humiliare *valens* ſuperbia in *ambulantes*
מהלכין בגוה יכל להשפלה׃

Verſio VULG. LAT.

22 Ejicient te ab hominibus, & cum beſtiis feríſque erit habitatio tua, & fœnum ut bos comedes, & rore cœli infundêris : ſeptem quoque tempora mutabuntur ſuper te, donec ſcias quòd dominetur Excelſus ſuper regnum hominum, & cuicunque voluerit,det illud. 23 Quòd autem præcepit ut relinqueretur germen radicum ejus, id eſt,arboris: regnum tuum tibi manebit, poſtquàm cognoveris poteſtatem eſſe cœleſtem. 24 Quam ob rem, rex conſilium meum placeat tibi, & peccata tua eleemoſynis redime, & iniquitates tuas miſericordiis pauperum : forſitan ignoſcet delictis tuis. 25 Omnia hæc venerunt ſuper Nabuchodonoſor regem. 26 Poſt finem menſium duodecim, in aula Babylonis deambulabat. 27 Reſpondítque rex, & ait ; Nónne hæc eſt Babylon magna, quam ego ædificavi in domum regni, in robore fortitudinis meæ, & in gloria decôris mei ? 28 Cúmque ſermo adhuc eſſet in ore regis, vox de cœlo ruit ; Tibi dicitur,Nabuchodonoſor rex ; Regnum tuum tranſibit à te, 29 Et ab hominibus ejicient te, & cum beſtiis & feris erit habitatio tua : fœnum quaſi bos comedes, & ſeptem tempora mutabuntur ſuper te, donec ſcias quòd dominetur Excelſus in regno hominum, & cuicunque voluerit, det illud. 30 Eâdem horâ ſermo completus eſt ſuper Nabuchodonoſor,& ex hominibus abjectus eſt, & fœnum ut bos comêdit, & rore cœli corpus ejus infectum eſt : donec capilli ejus in ſimilitudinem aquilarum creſcerent, & ungues ejus quaſi avium. 31 Igitur poſt finem dierum, ego Nabuchodonoſor oculos meos ad cœlum levavi, & ſenſus meus redditus eſt mihi : & Altiſſimo benedixi, & viventem in ſempiternum laudavi, & glorificavi : quia poteſtas ejus poteſtas ſempiterna, & regnum ejus in generationem & generationem. 32 Et omnes habitatores terræ apud eum in nihilum reputati ſunt : juxta voluntatem enim ſuam facit tam in virtutibus cœli quàm in habitatoribus terræ : & non eſt qui reſiſtat manui ejus, & dicat ei ; Quarè feciſti ? 33 In ipſo tempore ſenſus meus reverſus eſt ad me, & ad honorem regni mei decorémque perveni : & figura mea reverſa eſt ad me : & optimates mei, & magiſtratus mei requiſierunt me, & in regno meo reſtitutus ſum : & magnificentia amplior addita eſt mihi. 34 Nunc igitur ego Nabuchodonoſor laudo, & magnifico, & glorifico regem cœli : quia omnia opera ejus vera, & viæ ejus judicia, & gradientes in ſuperbia poteſt humiliare.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

25 * ܘܡܢ ܒܢܝܢܫܐ ܛܪܕܝܢ ܠܟ. ܘܥܡ ܚܝܘܬ ܒܪܐ ܢܗܘܐ ܡܥܡܪܟ. ܘܥܣܒܐ ܐܝܟ ܬܘܪܐ ܢܘܟܠܘܢܟ.
ܘܡܢ ܛܠܐ ܕܫܡܝܐ ܬܨܛܒܥ. ܘܫܒܥܐ ܥܕܢܝܢ ܢܬܚܠܦܘܢ ܥܠܝܟ. ܥܕܡܐ ܕܬܕܥ ܕܫܠܝܛ
26 ܡܪܝܡܐ ܒܡܠܟܘܬܐ ܕܒܢܝܢܫܐ. ܘܠܡܢ ܕܨܒܐ ܢܬܠܝܗ. * ܘܕܐܡܪ ܠܡܫܒܩ ܥܩܪ ܫܪܫܘܗܝ
27 ܕܐܝܠܢܐ. ܡܠܟܘܬܟ ܠܟ ܩܝܡܐ. ܡܐ ܕܝܕܥܬ ܕܫܘܠܛܢܐ ܡܢ ܫܡܝܐ ܗܘ. * ܡܛܠܗܕܐ ܡܠܟܐ ܡܠܟܝ
28 ܢܫܦܪ ܠܟ. ܘܚܛܗܝܟ ܒܙܕܩܬܐ ܦܪܘܩ. ܘܥܘܠܟ ܒܡܪܚܡܢܘܬܐ ܕܡܣܟܢܐ. ܥܕܡܐ
29 ܕܢܥܒܪ ܡܢܟ ܣܟܠܘܬܟ. * ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ ܡܛܝ ܠܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ. * ܘܡܢ ܒܬܪ
ܬܪܥܣܪ ܝܪܚܝܢ. ܥܠ ܗܝܟܠܐ ܕܡܠܟܘܬܗ ܕܒܒܒܠ. ܡܗܠܟ ܗܘܐ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ.
30 * ܘܥܢܐ ܘܐܡܪ. ܠܐ ܗܕܐ ܗܝ ܒܒܠ ܪܒܬܐ. ܕܐܢܐ ܒܢܝܬܗ ܠܒܝܬ ܡܠܟܘܬܝ. ܘܠܐܘܚܕܢܝ
31 ܚܣܝܢܐ ܘܠܐܝܩܪܝ. * ܥܕ ܡܠܬܐ ܒܦܘܡܗ ܕܡܠܟܐ. ܩܠܐ ܐܬܐ ܡܢ ܫܡܝܐ. ܠܟ
32 ܐܡܪܝܢ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ. ܕܡܠܟܘܬܟ ܥܒܪܬ ܡܢܟ. * ܘܡܢ ܒܢܝܢܫܐ ܛܪܕܝܢ ܠܟ. ܘܥܡ
ܚܝܘܬ ܒܪܐ ܢܗܘܐ ܡܥܡܪܟ. ܘܥܣܒܐ ܐܝܟ ܬܘܪܐ ܢܘܟܠܘܢܟ. ܘܡܢ ܛܠܐ ܕܫܡܝܐ ܬܨܛܒܥ.
ܘܫܒܥܐ ܥܕܢܝܢ ܢܬܚܠܦܘܢ ܥܠܝܟ. ܥܕܡܐ ܕܬܕܥ ܕܫܠܝܛ ܐܠܗܐ ܡܪܝܡܐ
33 ܒܡܠܟܘܬܐ ܕܒܢܝܢܫܐ. ܘܠܡܢ ܕܨܒܐ ܢܬܠܝܗ. ܘܠܡܫܦܠ ܐܢܫܐ ܢܩܝܡ ܥܠܝܗ. * ܒܗ
ܒܫܥܬܐ ܡܠܬܐ ܫܠܡܬ ܥܠ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ. ܘܡܢ ܒܢܝܢܫܐ ܐܬܛܪܕ. ܘܥܣܒܐ ܐܝܟ
ܬܘܪܐ ܐܟܠ. ܘܡܢ ܛܠܐ ܕܫܡܝܐ ܐܨܛܒܥ. ܥܕܡܐ ܕܣܥܪܗ ܪܒܐ. ܐܝܟ ܕܢܫܪܐ. ܘܛܦܪܘܗܝ
34 ܐܝܟ ܕܦܪܚܬܐ. * ܘܡܢ ܕܫܠܡܘ ܝܘܡܬܐ. ܐܢܐ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ. ܥܝܢܝ ܠܫܡܝܐ
ܐܪܝܡܬ. ܘܡܕܥܝ ܗܦܟ ܠܘܬܝ. ܘܠܡܪܝܡܐ ܒܪܟܬ. ܘܠܚܝ ܠܥܠܡܐ ܫܒܚܬ
35 ܘܗܕܪܬ. ܕܫܘܠܛܢܗ ܫܘܠܛܢ ܥܠܡ. ܘܡܠܟܘܬܗ ܠܕܪܕܪܝܢ. * ܘܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܘܗܝ
ܕܐܪܥܐ. ܐܝܟ ܠܐ ܡܕܡ ܚܫܝܒܝܢ ܩܕܡܘܗܝ. ܘܡܕܡ ܕܨܒܐ ܥܒܕ. ܒܚܝܠܐ ܕܫܡܝܐ
36 ܘܒܥܡܘܪܘܗܝ ܕܐܪܥܐ. ܘܠܝܬ ܕܢܟܣ ܒܐܝܕܗ. ܘܢܐܡܪ ܠܗ. ܡܢܐ ܥܒܕܬ. * ܒܗ
ܒܙܒܢܐ ܗܦܟ ܠܘܬܝ ܡܕܥܝ. ܘܪܘܪܒܢܝ ܘܪܝܫܝ ܚܝܠܝ ܒܥܘܢܢܝ. ܘܒܡܠܟܘܬܝ
37 ܐܫܬܪܪܬ. ܘܪܒܘܬܐ ܝܬܝܪܬܐ ܐܬܬܘܣܦܬ ܠܝ. * ܡܟܝܠ ܐܢܐ ܢܒܘܟܕܢܨܪ. ܡܫܒܚ
ܘܡܪܝܡ ܘܡܗܕܪ ܠܡܠܟܐ ܕܫܡܝܐ. ܕܟܠܗܘܢ ܥܒܕܘܗܝ ܒܟܐܢܘܬܐ. ܘܐܘܪܚܬܗ ܕܝܢܐ.
ܘܠܐܝܠܝܢ ܕܡܗܠܟܝܢ ܒܫܘܒܗܪܐ. ܡܫܟܚ ܕܢܡܟܟ.

25 Nam ab hominibus te depellent & cum beſtiis agri erit habitatio tua, herbámque velut bovi comedendam tibi præbebunt, rore cœli intingêris, ſeptémque tempora ſuper te evolventur : uſque dum agnoſcas dominari Excelſum in regno hominum, ita ut cui voluerit, conferat illud. 26 Quòd autem dixit ut relinqueretur ſtirps radicum arboris,regnum tuum tibi manebit, ubi cognoveris dominium de cœlo eſſe. 27 Proindè conſilium meum probetur tibi, & peccata tua eleemoſynis redime, & iniquitatem tuam miſericordiâ erga imbecillos : uſquedùm amoveat à te inſipientias tuas. 28 Hæc omnia contigerunt Nebuchadnoſari regi. 29 Poſt menſes duodecim, ſuper palatium regni ſui quod erat Babylone, deambulabat Nebuchadnoſar rex, 30 Et proloquens dicebat ; Nónne hæc eſt Babylon magna quam ego ædificavi in regiam meam , ad imperium meum potentiſſimum, & gloriam meam ? 31 Sermone hoc adhuc verſante in ore regis, vox advenit è cœlo ; Tibi dicitur Nebuchadnoſar rex , regnum tuum à te elapſum eſſe : 32 Ex hominibus te depellendum, & cum beſtiis agri fore habitationem tuam, fœno ceu bovem te cibandum, & rore cœli intingendum, ſeptémque tempora ſuper te evolvenda : donec ſcias dominari Deum excelſum in regno hominum, ut cui voluerit, conferat illud, & abjectiſſimum hominum ad illud evehat. 33 Eâdem horâ verbum illud impletum eſt de Nebuchadnoſare rege : nam ex hominibus depulſus fœnum ceu bos comêdit, & rore cœli tinctus eſt ; adeóque pili ejus creverunt ut aquilarum , & ungues ejus ut volucrum. 34 Cùm autem exacti fuiſſent dies illi,ego Nebuchadnoſar rex oculos meos in cœlum ſuſtuli, mens mea rediit ad me, Excelſo benedixi, viventem in ſecula laudavi & exornavi ; quòd dominium ejus dominium ſit ſempiternum, & regnum ejus in generationem generationum : 35 Omnes habitatores terræ ut nihili ab eo reputentur, & quicquid vult agat tam in exercitibus cœli quàm in habitatoribus terræ : nemóque ſit qui manum ejus criminetur, ac dicat ei, Quid agis ? 36 Eo ipſo tempore mens mea rediit ad me, & magnates mei,ducéſque militiæ meæ requiſiverunt me, in regno meo fui confirmatus, & amplitudo major adjecta fuit mihi. 37 Proindè ego Nebuchadnoſar laudo , extollo , atque celebro cœli regem ; quòd omnia opera ejùs ſint ex juſtitia,& viæ ejus judicium : & eos qui inſolenter incedunt, poſſit humiliare.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

22 Καὶ σὲ ἐκδιώξουσιν ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων, καὶ μετὰ θηρίων ἀγρίων ἔσται ἡ κατοικία σου, καὶ χόρτον ὡς βοῦν
(α) ψωμιοῦσί σε, καὶ ἀπὸ τῆς δρόσου τοῦ οὐρανοῦ αὐλισθήσῃ, καὶ ἑπτὰ καιροὶ ἀλλαγήσονται ἐπὶ σέ, ἕως οὗ γνῷς
ὅτι κυριεύει ὁ ὕψιστος τῆς βασιλείας τῶν ἀνθρώπων, καὶ ᾧ ἂν δόξῃ, δώσει αὐτήν. Καὶ ὅτι (β) εἶπαν, Ἐάσατε
23 τὴν (γ) φυὴν τῶν ῥιζῶν τοῦ δένδρου· ἡ βασιλεία σου σοὶ μένει, ἀφ' ἧς ἂν γνῷς τὴν ἐξουσίαν τὴν (δ)
24 οὐράνιον. Διὰ τοῦτο βασιλεῦ ἡ βουλή μου ἀρεσάτω σοι, καὶ τὰς ἁμαρτίας σου ἐν ἐλεημοσύναις λύτρωσαι,
25 καὶ τὰς ἀδικίας (ε) ἐν οἰκτιρμοῖς πενήτων· ἴσως ἔσται μακρόθυμος τοῖς παραπτώμασί σου ὁ θεός. Ταῦτα
26 πάντα ἔφθασεν ἐπὶ Ναβουχοδονόσορ τὸν βασιλέα. Μετὰ δωδεκάμηνον, ἐπὶ τῷ ναῷ τῆς βασιλείας
αὐτοῦ ἐν Βαβυλῶνι περιπατῶν, Ἀπεκρίθη (ζ) ὁ βασιλεύς, καὶ εἶπεν, Οὐχ αὕτη ἐστὶ Βαβυλὼν ἡ μεγάλη,
27 ἣν ἐγὼ ᾠκοδόμησα εἰς οἶκον βασιλείας, ἐν τῷ κράτει τῆς ἰσχύος μου, εἰς τιμὴν τῆς δόξης μου; Ἔτι
28 τοῦ λόγου (η) ἐν τῷ στόματι τοῦ βασιλέως ὄντος, φωνὴ (θ) ἀπ' οὐρανοῦ ἐγένετο, Σοὶ λέγουσι Ναβουχοδονόσορ βασιλεῦ,
29 Ἡ βασιλεία (ι) παρῆλθεν ἀπὸ σοῦ, Καὶ ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων σε (κ) ἐκδιώκουσι, καὶ μετὰ θηρίων ἀγρίων
ἡ κατοικία σου, καὶ χόρτον ὡς βοῦν (") ψωμιοῦσί σε, καὶ ἑπτὰ καιροὶ ἀλλαγήσονται ἐπὶ σέ, (λ) ἕως γνῷς ὅτι κυριεύει
30 ὁ ὕψιστος τῆς βασιλείας τῶν ἀνθρώπων, καὶ ᾧ (μ) ἂν δόξῃ, δώσει αὐτήν. Αὐτῇ τῇ ὥρᾳ ὁ λόγος συνετελέσθη
ἐπὶ Ναβουχοδονόσορ (ν), καὶ ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων ἐξεδιώχθη, καὶ χόρτον ὡς βοῦς ἤσθιε, καὶ ἀπὸ τῆς δρόσου
τοῦ οὐρανοῦ τὸ σῶμα αὐτοῦ ἐβάφη, (ξ) ἕως αἱ τρίχες αὐτοῦ ὡς λεόντων ἐμεγαλύνθησαν, καὶ οἱ ὄνυχες αὐτοῦ
31 ὡς ὀρνέων. Καὶ μετὰ τὸ τέλος τῶν ἡμερῶν, ἐγὼ Ναβουχοδονόσορ τοὺς ὀφθαλμούς μου εἰς τὸν οὐρανὸν ἀνέλαβον,
καὶ αἱ φρένες μου ἐπ' ἐμὲ ἐπεστράφησαν, καὶ τῷ ὑψίστῳ ηὐλόγησα, καὶ τῷ ζῶντι εἰς (ο) τὸν αἰῶνα
ᾔνεσα, καὶ ἐδόξασα, ὅτι ἡ ἐξουσία αὐτοῦ ἐξουσία αἰώνιος, καὶ ἡ βασιλεία αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεάν,
32 Καὶ πάντες οἱ κατοικοῦντες τὴν γῆν ὡς οὐδὲν ἐλογίσθησαν· καὶ κατὰ τὸ θέλημα αὐτοῦ ποιεῖ ἐν τῇ δυνάμει
τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἐν τῇ κατοικίᾳ τῆς γῆς· καὶ οὐκ ἔστιν ὃς ἀντιποιήσεται τῇ χειρὶ αὐτοῦ, καὶ ἐρεῖ αὐτῷ, Τί ἐποίησας;
33 Αὐτῷ τῷ καιρῷ αἱ φρένες μου ἐπεστράφησαν ἐπ' ἐμέ, καὶ εἰς τὴν τιμὴν τῆς βασιλείας μου ἦλθον· καὶ ἡ μορφή
μου ἐπέστρεψεν ἐπ' ἐμέ, καὶ οἱ τύραννοί μου, καὶ οἱ μεγιστᾶνές μου ἐζήτουν με, καὶ ἐπὶ τὴν βασιλείαν μου
34 ἐκραταιώθην, καὶ μεγαλωσύνη περισσοτέρα προσετέθη μοι. Νῦν οὖν ἐγὼ Ναβουχοδονόσορ αἰνῶ καὶ ὑπερυψῶ
καὶ δοξάζω τὸν βασιλέα τοῦ οὐρανοῦ, ὅτι πάντα τὰ ἔργα αὐτοῦ ἀληθινά, καὶ αἱ τρίβοι αὐτοῦ κρίσεις,
καὶ πάντας τοὺς πορευομένους ἐν ὑπερηφανίᾳ δύναται ταπεινῶσαι. (†)

Et ejicient te ab hominibus, & cum beſtiis agreſtibus erit habitatio tua: 22
& fœno, ut bovem, paſcent te: & de (m) rore cœli commoraberis: &
ſeptem tempora mutabuntur ſuper te: donec ſcias, quòd dominatur Excelſus
ſuper regnum hominum, & cuicunque voluerit, dabit illud. Quòd 23
autem (n) dixerunt, Dimittite germen radicum arboris; regnum tuum tibi
manet, poſtquàm cognoveris poteſtatem cæleſtem. Quamobrem, rex, conſilium 24
meum placeat tibi: & peccata tua in eleemoſynis redime, & iniquitates
in miſerationibus pauperum: fortaſſe erit longanimis delictis tuis
Deus. Omnia hæc venerunt ſuper Nabuchodonoſor regem. Poſt duodecim 25
menſes, in aula regni ſui, in Babylone ambulans Reſpondit rex, & 26
dixit; Nonne hæc eſt Babylon magna, quam ego ædificavi in domum regni, 27
in robore fortitudinis meæ, in honorem gloriæ meæ? Cùm adhuc ſermo 28
eſſet in ore regis, vox de cælo facta eſt; Tibi (o) dicunt, Nabuchodonoſor
rex; Regnum tranſiit à te, Et ab hominibus te ejiciunt, & cum 29
beſtiis agreſtibus habitatio tua, & fœno, ut bovem, cibabunt te: & ſeptem
tempora mutabuntur ſuper te: donec ſcias, quòd dominatur Excelſus
ſuper regnum hominum, & cuicunque voluerit, dabit illud. Eâdem horâ 30
ſermo completus eſt ſuper Nabuchodonoſor: & ex hominibus ejectus eſt,
& fœnum, ut bos, comêdit, & de rore cœli corpus ejus infectum eſt; donec
capilli ejus, quaſi leonum, creverunt, & ungues ejus, quaſi avium.
Et poſt finem dierum ego Nabuchodonoſor oculos meos ad cœlum (p) levavi, 31
& renes mei ad me reverſi ſunt: & Altiſſimo benedixi, & Viventem
in ſempiternum laudavi, & glorificavi, quia poteſtas ejus, poteſtas
ſempiterna, & regnum ejus in generationem, & generationem: Et omnes 32
habitatores terræ, quaſi nihil, computati ſunt. Et juxta voluntatem ſuam
facit in virtute cœli, & in habitatione terræ: & non eſt qui reſiſtat manui
ejus, & dicat ei, Quid feciſti? Ipſo tempore renes mei reverſi ſunt ad 33
me: & ad honorem regni mei veni: & figura mea reverſa eſt ad me: &
tyranni mei, & magiſtratus mei quærebant me: & in regno meo confortatus
ſum: & magnificentia amplior addita eſt mihi. Nunc igitur ego 34
Nabuchodonoſor laudo, & ſuperexalto, & glorifico regem cœli, quia
omnia opera ejus vera, & ſemitæ ejus judicia: & omnes gradientes in ſuperbia poteſt humiliare.

MS.A. (α) ψωμίσουσιν (β) εἶπεν, (γ) φυὴν τοῦ δένδρου· (δ) ἐπουράνιον. (ε) σου ἐν (ζ) καὶ εἶπεν, Οὐκ (η) ἐν στόματι (θ) ἐκ τοῦ οὐρανοῦ (ι) σου παρῆλθεν (κ) ἐκδιώξουσιν, (") ψωμίσουσιν (λ) ἕως οὗ γνῷς (μ) ἐὰν (ν) τὸν βασιλέα, καὶ (ξ) ἕως οὗ (ο) τοὺς αἰῶνας (†) ὍΡΑΣΙΣ ι'.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ويطردوك من الناس * ومع الوحوش البرية يكون مسكنك * ويطعموك العشب مثل الثور 25
ومن طل السماء تتندى * وسبعة ازمنة تتبدل عليك * الى ان تعلم ان العلي يسود مملكة
البشر * ويعطيها لمن يرا * ولانه قال اتركوا اعادة جبلة اصول الشجر في الارض * 26
مملكتك لك باقية * اذ تعلم السلطان السماي * لاجل هذا ايها الملك لترضيك مشورتي * 27
انقذ خطاياك بالمراحم * ومظالمك برأفات المساكين * عسى يكون الله طويل الروح على
سقطاتك * هذه كلها ادركت بختنصر الملك * بعد اثني عشر شهرا في هيكل مملكته 28 29
ببابل وهو يمشي * اجاب الملك وقال * اليس هذه هي بابل العظمى التي انا بنيتها 30
لبيت المملكة بعز قوتي لكرامة مجدي * وبينما الكلمة في فم الملك كاينة * صار صوت 31
من السماء * لك يقال يا بختنصر الملك * مملكتك زالت عنك * ومن البشر يطردونك * 32
ومع الوحوش البرية مسكنك * يطعموك العشب مثل الثور * ويتغير عليك سبعة ازمنة *
الى ان تعلم ان العلي يملك مملكة البشر * ويعطيها لمن يرا * في هذه الساعة بعينها تمت 33
الكلمة على بختنصر * وطرد من الناس * واكل العشب مثل الثور * واصطبغ جسده من
طل السماء * وعظم شعره مثل شعر الاسد * واظفاره مثل مخالب الطيور * وبعد انقضاء 34
الايام انا بختنصر رفعت عيني الى السماء * ورجع الي عقلي * وباركت العلي * وللحي الى
الابد سبحت ومجدت * لان سلطانه سلطان ابدي * ومملكته الى جيل وجيل * وجميع سكان 35
الارض حسبوا كلا شي * وكارادته يصنع في قوة السماء وفي مسكن الارض * وليس من يقاوم
يده ويقول له ماذا صنعت * في هذا الوقت بعينه رجع الي عقلي * وعدت الى كرامة مملكتي * 36
وعاد لي شكلي * وولاتي وعظماي طلبوني * وتقويت على مملكتي * وعادت لي العظمة
مضاعفة * والان انا بختنصر اسبح وامجد ملك السماء * لان كل اعماله حقيقية * وسبله 37
احكام * ويقدر ان يواضع جميع السالكين بالعظمة *

Expellent te ex hominibus, & cum bel- 25
luis ſylveſtribus erit habitatio tua; her-
bâ ceu bovem te cibabunt, & ſub rore
cœli commoraberis, ſeptémque tempora
mutabuntur ſuper te: quouſque ſcias
Altiſſimum dominari regno hominum,
illúdque dare cui arbitratur. Quia ve- 26
rò dixit, Sinite reſtaurationem plaſma-
tis radicum arboris in terra; regnum tu-
um tibi manſurum eſt, cùm cognoveris
poteſtatem cœleſtem. Quapropter O rex, 27
gratum habeas conſilium meum: redime
peccata tua miſericordiis, & impietates
tuas pietatibus erga pauperes: forſitan erit
Deus longanimis erga lapſus tuos. Hæc 28
omnia evenerunt Bachtonaſſari regi Poſt 29
duodecim menſes in palatio regni ſui in
Babele, dum deambularet. Prolocutus 30
enim rex ait; Annon hæc eſt Babel magna,
quam ego ædificavi in domum regiam
cum fortitudine roboris mei ad honorem
gloriæ meæ? Dúmque verbum hoc in 31
regis ore verſaretur, facta eſt hæc vox
de cœlo; Tibi dicitur O Bachtonaſſar
rex, Regnum tuum à te devolutum eſt:
Ab hominibus ejicient te, & cum bel- 32
luis ſylveſtribus erit habitatio tua, herbâ
te ceu bovem cibabunt, ſeptémque tempo-
ra ſuper te mutabuntur: donec ſcias
Altiſſimum poſſidere regnum hominum,
illúdque conferre cui arbitratus fuerit.
Eâdem ipſâ horâ completum eſt verbum 33
ſuper Bachtonaſſarem: expulſus enim
fuit ex hominibus, herbam ceu bos com-
edit, perfuſum fuit corpus ejus rore cœli,
creverunt pili ejus ut pili leonum, &
ungues ejus ut ungues volucrum. Poſt 34
finem autem dierum illorum, ego Bach-
tonaſſar levavi oculos meos ad cœlum,
& redeunte ad me judicio meo, bene-
dixi Altiſſimo, & in æternum Viventem
laudavi atque celebravi; quòd impe-
rium ejus ſit imperium æternum, & re-
gnum ejus in generationem & generati-
onem; Terricolæ omnes ut nihili æſti- 35
mentur, et pro voluntate ſua agat vir-
tuti cœli et habitationi terræ, neque ſit
qui manui ejus reſiſtat, ac dicat, Quid
feciſti? Eodem illo tempore rediit ad 36
me judicium meum, reſtitutus fui ad
honorem regni mei, recuperavi ſpeciem
meam, et dynaſtæ ac principes mei poſtu-
laverunt me, confirmatus fui in regno
meo, et rediit ad me magnificentia du-
plicata. Nunc igitur ego Bachtonaſſar 37
laudo et glorifico regem cœli; quòd omnes
actiones ejus legitimæ ſint, et viæ ejus
juſtæ; et deprimere poſſit omnes ſuperbè
incedentes.

דניאל: ה

CAP. V. ה

ſpore in dixit Belſaſar .bibens vinum mille contra & : mille ſuis principibus multum panem fecit rex Belſaſar
1 בֵּלְשַׁאצַּר מַלְכָּא עֲבַד לְחֶם רַב לְרַבְרְבָנוֹהִי אֲלַף וְלָקֳבֵל אַלְפָּא חַמְרָא שָׁתֵה׃ בֵּלְשַׁאצַּר אֲמַר ׀ בִּטְעֵם 2
biberunt & ; Jeruſalaim in quod ,palatio de ejus pater Nebuchadneſar eduxerat quæ ,argenti & auri vaſa afferendum ad vini
חַמְרָא לְהַיְתָיָה לְמָאנֵי דַּהֲבָא וְכַסְפָּא דִּי הַנְפֵּק נְבוּכַדְנֶצַּר אֲבוּהִי מִן־הֵיכְלָא דִּי בִירוּשְׁלֶם וְיִשְׁתּוֹן
templo de eduxeram quæ , auri vaſa ſunt allata tunc In .ejus concubinæ & ,ejus conjuges , ejus principes & , rex eis in
3 בְּהוֹן מַלְכָּא וְרַבְרְבָנוֹהִי שֵׁגְלָתֵהּ וּלְחֵנָתֵהּ׃ בֵּאדַיִן הַיְתִיו מָאנֵי דַהֲבָא דִּי הַנְפִּקוּ מִן־הֵיכְלָא
Biberunt .ejus concubinæ & ,ejus conjuges ,ejus principes & , rex eis in biberunt & : Jeruſalem in quod Dei domus quod
4 דִּי־בֵית אֱלָהָא דִּי בִירוּשְׁלֶם וְאִשְׁתִּיו בְּהוֹן מַלְכָּא וְרַבְרְבָנוֹהִי שֵׁגְלָתֵהּ וּלְחֵנָתֵהּ׃ אִשְׁתִּיו
ejus digiti ſunt egreſſi hora ipſa In .lapidis & ,ligni , ferri , æris , argenti & , auri deos laudaverunt & : vinum
5 חַמְרָא וְשַׁבַּחוּ לֵאלָהֵי דַּהֲבָא וְכַסְפָּא נְחָשָׁא פַרְזְלָא אָעָא וְאַבְנָא׃ בַּהּ־שַׁעֲתָה נְפַקוּ אֶצְבְּעָן דִּי
quæ manus palmam videns rex & : regis quod palatii parietis quod gypſo ſuper candelabrum contra ſcribentes & ,hominis man'
יַד־אֱנָשׁ וְכָתְבָן לָקֳבֵל נֶבְרַשְׁתָּא עַל־גִּירָא דִּי־כְתַל הֵיכְלָא דִּי מַלְכָּא וּמַלְכָּא חָזֵה פַּס יְדָה דִּי
, ſoluta ejus lumbi ligamina & : eum conturbaverunt ejus cogitationes & ,ipſum mutaverunt ejus ſplendores regis Tunc .ſcribebat
6 כָתְבָה׃ אֱדַיִן מַלְכָּא זִיוֹהִי שְׁנוֹהִי וְרַעְיֹנֹהִי יְבַהֲלוּנֵּהּ וְקִטְרֵי חַרְצֵהּ מִשְׁתָּרַיִן
, rex reſpondit : divinos & ,Chaldæos , ſophos introducendum ad virtute in rex Clamans .ſunt colliſa illud ad hoc ejus genua &
7 וְאַרְכֻבָּתֵהּ דָּא לְדָא נָקְשָׁן׃ קָרֵא מַלְכָּא בְּחַיִל לְהֶעָלָה לְאָשְׁפַיָּא כַּשְׂדָּיֵא וְגָזְרַיָּא עָנֵה מַלְכָּא
,veſtietur purpura,mihi indicaverit ejus interpretationẽ &,hanc ſcripturam legerit qui , homo omnis Quòd : Babel ſapientibus dixit &
וְאָמַר ׀ לְחַכִּימֵי בָבֶל דִּי כָל־אֱנָשׁ דִּי־יִקְרֵה כְּתָבָה דְנָה וּפִשְׁרֵהּ יְחַוִּנַּנִי אַרְגְּוָנָא יִלְבַּשׁ
non & : regis ſapientes omnes ſunt ingreſſi Tunc .imperabit regno in tertius & ,ejus collo ſuper auri quæ torques &
8 וְהַמְוּנְכָא דִי־דַהֲבָא עַל־צַוְּארֵהּ וְתַלְתִּי בְמַלְכוּתָא יִשְׁלַט׃ אֱדַיִן עָלִּלִין כֹּל חַכִּימֵי מַלְכָּא וְלָא־
, territus multum Belſaſar rex Tunc .regi notificare ejus interpretationem & , legere ſcripturam valentes
9 כָהֲלִין כְּתָבָא לְמִקְרֵא וּפִשְׁרֵא לְהוֹדָעָה לְמַלְכָּא׃ אֱדַיִן מַלְכָּא בֵלְשַׁאצַּר שַׂגִּיא מִתְבָּהַל
domum in ejus principum & , regis verba adverſum Regina .perplexi ejus principes &:eo ſuper mutati ejus ſplendores &
10 וְזִיוֹהִי שָׁנַיִן עֲלוֹהִי וְרַבְרְבָנוֹהִי מִשְׁתַּבְּשִׁין׃ מַלְכְּתָא לָקֳבֵל מִלֵּי מַלְכָּא וְרַבְרְבָנוֹהִי לְבֵית
.mutentur non tui ſplendores &,tuæ cogitationes te terreant non: vive ſecula in Rex : dixit & , regina reſpondit:eſt ingreſſa convivii
מִשְׁתְּיָא עַלַּלַת עֲנָת מַלְכְּתָא וַאֲמֶרֶת מַלְכָּא לְעָלְמִין חֱיִי אַל־יְבַהֲלוּךְ רַעְיוֹנָךְ וְזִיוָךְ אַל־יִשְׁתַּנּוֹ׃
ſapientia & , intelligentia & ,illuminatio ,tui patris diebus in & ,eo in ſanctorum deorum ſpiritus quo , tuo regno in vir Eſt
11 אִיתַי גְּבַר בְּמַלְכוּתָךְ דִּי רוּחַ אֱלָהִין קַדִּישִׁין בֵּהּ וּבְיוֹמֵי אֲבוּךְ נַהִירוּ וְשָׂכְלְתָנוּ וְחָכְמָה
,Chaldæorum ſophorum,genethliacorum principem tuus pater Nebuchadneſar rex & ; eo in eſt inventa Deorum ſapientiam ſecundùm
כְּחָכְמַת־אֱלָהִין הִשְׁתְּכַחַת בֵּהּ וּמַלְכָּא נְבֻכַדְנֶצַּר אֲבוּךְ רַב חַרְטֻמִּין אָשְׁפִין כַּשְׂדָּאִין
, ſomnia interpretans intellectus & , ſcientia & ,abundans ſpiritus quòd reſpectu Omni .rex tuus pater eum conſtituit,divinorum
12 גָּזְרִין הֲקִימֵהּ אֲבוּךְ מַלְכָּא׃ כָּל־קֳבֵל דִּי רוּחַ ׀ יַתִּירָא וּמַנְדַּע וְשָׂכְלְתָנוּ מְפַשַּׁר חֶלְמִין
Daniel nunc : Beltesaſar ejus nomen impoſuit rex cui ,Daniele in ,eo in ſit inventa nodos ſolvens & , ænigmatum indicatio &
וְאַחֲוָיַת אֲחִידָן וּמְשָׁרֵא קִטְרִין הִשְׁתְּכַחַת בֵּהּ בְּדָנִיֵּאל דִּי־מַלְכָּא שָׂם־שְׁמֵהּ בֵּלְטְשַׁאצַּר כְּעַן דָּנִיֵּאל
Tu , Danieli dixit & , rex reſpondit : rege coram eſt adductus Daniel Tunc .indicabit interpretationem &,vocetur
13 יִתְקְרֵי וּפִשְׁרָה יְהַחֲוֵה׃ בֵּאדַיִן דָּנִיֵּאל הֻעַל קֳדָם מַלְכָּא עָנֵה מַלְכָּא וְאָמַר לְדָנִיֵּאל אַנְתְּה־
? Jehudah de meus pater rex adduxit quem , Jehudah captivitatis filiis de qui , Daniel ipſe
הוּא דָנִיֵּאל דִּי־מִן־בְּנֵי גָלוּתָא דִּי יְהוּד דִּי הַיְתִי מַלְכָּא אַבִי מִן־יְהוּד׃

Verſio VULG. LAT.

CAP. V.

BAltaſſar rex fecit grande convivium optimatibus ſuis 1
mille : & unuſquiſque ſecundùm ſuam bibebat ætatem.
Præcepit ergò jam temulentus, ut afferrentur vaſa aurea & 2
argentea, quæ aſportaverat Nabuchodonoſor pater ejus
de templo, quod fuit in Jeruſalem, ut biberent in eis rex
& optimates ejus, uxoréſque ejus, & concubinæ. Tunc 3
allata ſunt vaſa aurea, & argentea, quæ aſportaverat de
templo, quod fuerat in Jeruſalem : & biberunt in eis rex,
& optimates ejus, uxores & concubinæ illius. Bibebant 4
vinum, & laudabant deos ſuos aureos, & argenteos, æreos,
ferreos, lignéoſque & lapideos. In eadem hora ap- 5
paruerunt digiti, quaſi manûs hominis ſcribentis contra
candelabrum in ſuperficie parietis aulæ regiæ : & rex aſpi-
ciebat articulos manûs ſcribentis. Tunc facies regis com- 6
mutata eſt, & cogitationes ejus conturbabant eum : &
compages renum ejus ſolvebantur, & genua ejus ad ſe in-
vicèm collidebantur. Exclamavit itaque rex fortiter, ut 7
introducerent magos, Chaldæos, & aruſpices. Et prolo-
quens rex ait ſapientibus Babylonis, Quicunque legerit
ſcripturam hanc, & interpretationem ejus manifeſtam
mihi fecerit, purpurâ veſtietur, & torquem auream habe-
bit in collo, & tertius in regno meo erit. Tunc ingreſſi 8
omnes ſapientes regis, non potuerunt nec ſcripturam lege-
re, nec interpretationem indicare regi. Unde rex Baltaſ- 9
ſar ſatis conturbatus eſt, & vultus illius immutatus eſt :
ſed & optimates ejus turbabantur. Regina autem, pro 10
re quæ acciderat regi, & optimatibus ejus, domum convi-
vii ingreſſa eſt : & proloquens ait ; Rex,in æternum vive :
non te conturbent cogitationes tuæ, neque facies tua im-
mutetur. Eſt vir in regno tuo, qui ſpiritum deorum 11
ſanctorum habet in ſe : & in diebus patris tui ſcientia &
ſapientia inventæ ſunt in eo:nam & rex Nabuchodonoſor
pater tuus, principem magorum, incantatorum, Chaldæo-
rum, & aruſpicum conſtituit eum, pater, inquam, tuus, ô
rex : Quia ſpiritus amplior, & prudentia, intelligentiá- 12
que & interpretatio ſomniorum, & oſtenſio ſecretorum,
ac ſolutio ligatorum, inventæ ſunt in eo, hoc eſt,in Danie-
le : cui rex impoſuit nomen Baltaſſar : nunc itaque Dani-
el vocetur, & interpretationem narrabit. Igitur intro- 13
ductus eſt Daniel coram rege. Ad quem præfatus rex ait ;
Tu es Daniel de filiis captivitatis Judæ, quem adduxit pa-
ter meus rex de Judæa ?

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܗ *

1 * ܒܠܛܫܐܨܪ ܡܠܟܐ. ܥܒܕ ܚܫܡܝܬܐ ܪܒܬܐ ܠܐܠܦ ܪܘܪܒܢܘܗܝ. ܘܠܘܩܒܠ ܐܠܦܐ
2 ܚܡܪܐ ܫܬܐ ܗܘܐ. * ܘܐܡܪ ܒܠܛܫܐܨܪ ܟܕ ܛܥܡ ܚܡܪܐ ܠܡܝܬܝܘ ܡܐܢܐ ܕܕܗܒܐ ܘܕܣܐܡܐ.
ܕܐܦܩ ܡܢ ܗܝܟܠܐ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܐܒܘܗܝ. ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ. ܕܢܫܬܘܢ ܒܗܘܢ ܡܠܟܐ ܘܪܘܪܒܢܘܗܝ.
3 ܘܢܫܘܗܝ ܘܦܠܚܬܗ. * ܗܝܕܝܢ ܐܝܬܝܘ ܡܐܢܐ ܕܕܗܒܐ ܕܐܦܩ ܡܢ ܗܝܟܠܐ ܕܐܠܗܐ ܕܒܐܘܪܫܠܡ.
4 ܘܫܬܝܘ ܒܗܘܢ ܡܠܟܐ ܘܪܘܪܒܢܘܗܝ. ܘܢܫܘܗܝ ܘܦܠܚܬܗ. * ܐܫܬܝܘ ܚܡܪܐ. ܘܫܒܚܘ
5 ܠܐܠܗܐ ܕܕܗܒܐ ܘܕܣܐܡܐ. ܘܕܢܚܫܐ ܘܕܦܪܙܠܐ. ܘܕܩܝܣܐ ܘܕܟܐܦܐ. * ܘܒܗ ܒܫܥܬܐ. ܢܦܩ
ܨܒܥܬܐ ܕܐܝܕܐ ܕܐܢܫܐ. ܘܟܬܒܢ ܠܘܩܒܠ ܢܒܪܫܬܐ. ܥܠ ܓܝܪܐ ܕܐܣܬܐ ܕܗܘܐ ܒܗܝܟܠܐ ܕܡܠܟܐ.
6 ܘܡܠܟܐ ܚܙܐ ܦܣܬܐ ܕܐܝܕܐ ܕܟܬܒܐ. * ܗܝܕܝܢ ܡܠܟܐ ܙܝܘܗ ܫܢܝ. ܘܪܥܝܢܘܗܝ ܐܬܕܠܚܘ.
7 ܘܚܨܘܗܝ ܐܫܬܪܝܘ. ܘܒܘܪܟܘܗܝ ܢܩܫܢ ܚܕܐ ܒܚܕܐ. * ܘܩܪܐ ܡܠܟܐ ܒܚܝܠ: ܠܡܥܠܘ
ܠܐܫܦܐ ܘܠܟܠܕܝܐ. ܘܠܡܓܘܫܐ ܘܠܚܟܝܡܐ. ܥܢܐ ܡܠܟܐ ܘܐܡܪ ܠܚܟܝܡܐ ܕܒܒܠ.
ܟܠ ܕܩܪܐ ܟܬܒܐ ܗܢܐ ܘܦܫܪܗ ܢܚܘܝܢܝ. ܐܪܓܘܢܐ ܢܠܒܫ. ܘܗܡܝܢܟܐ ܕܕܗܒܐ
8 ܥܠ ܨܘܪܗ. ܘܬܠܬܐ ܒܡܠܟܘܬܐ ܢܫܠܛ. * ܗܝܕܝܢ ܥܐܠܝܢ ܗܘܘ ܚܟܝܡܐ ܕܡܠܟܐ. ܘܠܐ
9 ܫܟܚܝܢ ܗܘܘ ܠܡܩܪܐ ܟܬܒܐ. ܘܦܫܪܗ ܠܡܘܕܥܘ ܠܡܠܟܐ. * ܗܝܕܝܢ ܡܠܟܐ ܒܠܛܫܐܨܪ
10 ܛܒ ܐܬܕܠܚ. ܘܙܝܘܗ. ܐܫܬܢܝ. ܘܪܘܪܒܢܘܗܝ ܡܬܬܡܗܝܢ ܗܘܘ. * ܘܡܠܟܬܐ ܡܛܠ
ܡܠܝ ܡܠܟܐ. ܘܪܘܪܒܢܘܗܝ ܠܒܝܬ ܡܫܬܝܐ ܥܠܬ. ܘܥܢܬ ܘܐܡܪܐ ܠܡܠܟܐ. ܡܠܟܐ
11 ܠܥܠܡ ܚܝܝ. ܪܥܝܢܝܟ ܠܐ ܢܕܠܚܘܢܟ. ܘܙܝܘܝܟ ܠܐ ܢܫܬܢܘܢ. * ܐܝܬ ܓܒܪܐ ܒܡܠܟܘܬܟ.
ܕܪܘܚܐ ܕܐܠܗܐ ܩܕܝܫܐ ܐܝܬ ܒܗ. ܘܒܝܘܡܝ ܐܒܘܟ. ܢܘܗܪܐ ܘܣܘܟܠܐ.
ܘܚܟܡܬܐ ܣܓܝܐܬܐ. ܐܝܟ ܚܟܡܬܐ ܕܐܠܗܐ ܐܫܬܟܚܬ ܒܗ. ܘܡܠܟܐ ܢܒܘܟܕܢܨܪ
12 ܐܒܘܟ. ܪܫ ܚܪܛܘܡܐ ܘܐܫܦܐ ܘܡܓܘܫܐ ܘܟܠܕܝܐ. ܐܩܝܡܗ. * ܡܛܠ ܕܪܘܚܐ ܘܚܟܡܬܐ
ܘܣܘܟܠܐ ܝܬܝܪܐ ܐܫܬܟܚ ܒܗ. ܦܫܪ ܚܠܡܐ ܘܡܚܘܐ ܐܚܝܕܬܐ. ܘܫܪܐ ܩܛܪܐ. ܕܢܝܐܝܠ
13 ܕܡܠܟܐ ܣܡ ܫܡܗ ܒܠܛܫܐܨܪ. ܗܫܐ ܕܢܝܐܝܠ ܢܬܩܪܐ ܘܦܫܪܐ ܢܚܘܐ. * ܗܝܕܝܢ
ܕܢܝܐܝܠ ܥܠ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. ܥܢܐ ܡܠܟܐ ܘܐܡܪ ܠܕܢܝܐܝܠ. ܐܢܬܘ ܕܢܝܐܝܠ ܕܡܢ ܒܢܝ
ܫܒܝܬܐ ܕܝܗܘܕ. ܕܐܝܬܝ ܐܒܝ ܡܠܟܐ ܡܢ ܝܗܘܕ.

CAP. V.

BLitſaſar rex facto convivio magno mille 1
proceribus ſuis, coram his mille vinum bi-
bebat : Juſſitque Blitſaſar cùm vinum jam 2
deguſtâſſet, afferri vaſa aurea & argentea quæ
ex templo exportaverat Nebuchadnoſar pa-
ter ejus de Jeruſalem ; ut biberent in eis rex
& proceres ejus, uxores & concubinæ ejus.
Tunc allatis vaſis aureis quæ exportaverat ex 3
templo Dei quod erat Jeroſolymis, biberunt
in eis rex & proceres ejus, uxores & concu-
binæ ipſius. Bibentes vinum laudabant deos 4
aureos & argenteos, & æneos, ferreos, li-
gneos, atque lapideos. Eâdem horâ egreſſi 5
digiti manûs humanæ, ſcribebant ex adver-
ſo lucernæ in calce parietis qui erat in pala-
tio regis, rege vidente volam manûs quæ ſcri-
bebat. Tunc regis ſerenitate immutatâ, & 6
mente conturbatâ, vinculis dorſi ejus diſſo-
lutis, & genibus ejus mutuùm colliſis ; In- 7
clamavit rex altâ voce ut adducerentur hari-
oli & Chaldæi, magi & ſapientes : tum pro-
loquens rex ait ſapientibus Babylonis ; Quiſ-
quis legerit ſcripturam iſtam, & interpretati-
onem ejus indicaverit mihi, purpureis indue-
tur, & torques aureus collo ejus imponetur,
tertiúſque parti in regno dominabitur. Tunc 8
accedebant ſapientes regis,nec poterant ſcri-
pturam legere, neque interpretationem ejus
regi notam facere. Tunc rege Blitſaſare ad- 9
modum conturbato, ejuſque ſerenitate im-
mutatâ, & proceribus ejus attonitis ; Regi- 10
na propter verba regis & proceres ejus ad
convivii locum ingreſſa eſt, & proloquens
dixit regi ; Rex,æternùm vivas : cogitationes
tuæ ne perterreant, & ſplendores tui ne
immutentur. Adeſt in regno tuo vir cui ſpi- 11
ritus deorum ſanctorum ineſt, & patris tui
temporibus lux, intelligentia, & ſapientia
multa, par ſapientiæ deorum inventa eſt in
eo : adeò ut rex Nebuchadnoſar pater tuus,
præſtigiatorum, hariolorum, magorum, &
Chaldæorum principem conſtituerit eum ;
Quia ſpiritus, prudentia, & intelligentia ma- 12
jor inventa eſt in eo. Is interpretatur ſomnia,
ediſſerit ænigmata, & ſolvit nodos : Daniel
is eſt, cui rex impoſuerat nomen Blitſaſar :
Jam Daniel advocetur, & interpretationem
indicabit. Tunc Daniele ad regem ingreſſo, 13
prolocutus eſt rex dixitque Danieli ; Tune es
Daniel de captivis Judææ, quos adduxit pa-
ter meus rex de Judæa ?

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. ε'.

1 (α) Βαλτάσαρ ὁ βασιλεὺς ἐποίησε δεῖπνον (β) μέγα τοῖς μεγιστᾶσιν αὐτοῦ χιλίοις, καὶ κατέναντι τῶν χιλίων
2 ὁ οἶνος, Καὶ πίνων Βαλτάσαρ εἶπεν ἐν τῇ γεύσει τοῦ οἴνου, τοῦ ἐνεγκεῖν τὰ σκεύη τὰ χρυσᾶ καὶ τὰ ἀργυρᾶ,
ἃ ἐξήνεγκεν Ναβουχοδονόσορ ὁ πατὴρ αὐτοῦ ἐκ τοῦ ναοῦ τοῦ ἐν Ἱερουσαλὴμ, καὶ πιέτωσαν ἐν αὐτοῖς ὁ βασιλεὺς, καὶ
3 οἱ μεγιστᾶνες αὐτοῦ, καὶ αἱ παλλακαὶ αὐτοῦ, καὶ αἱ παράκοιτοι αὐτοῦ. Καὶ (γ) ἠνέχθησαν τὰ σκεύη τὰ χρυσᾶ
καὶ τὰ ἀργυρᾶ, ἃ ἐξήνεγκεν ἐκ τοῦ ναοῦ (δ) τοῦ θεοῦ τοῦ ἐν Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἔπινον ἐν αὐτοῖς ὁ βασιλεὺς, καὶ
4 οἱ μεγιστᾶνες αὐτοῦ, (ε) καὶ αἱ παλλακαὶ αὐτοῦ, καὶ αἱ παράκοιτοι αὐτοῦ. Ἔπινον οἶνον, καὶ ᾔνεσαν τοὺς θεοὺς
5 τοὺς χρυσοῦς, καὶ ἀργυροῦς, καὶ χαλκοῦς, καὶ σιδηροῦς, καὶ ξυλίνους, καὶ (ζ) λιθίνους. Ἐν αὐτῇ τῇ ὥρᾳ ἐξῆλθον
δάκτυλοι χειρὸς ἀνθρώπου, καὶ ἔγραφον κατέναντι τῆς λαμπάδος ἐπὶ τὸ κονίαμα τοῦ τοίχου τοῦ οἴκου τοῦ βασι-
6 λέως, καὶ ὁ βασιλεὺς ἐθεώρει τοὺς ἀστραγάλους τῆς χειρὸς τῆς γραφούσης. Τότε τοῦ βασιλέως ἡ μορφὴ ἠλλοιώθη, καὶ οἱ διαλο-
γισμοὶ αὐτοῦ συνετάρασσον αὐτὸν, καὶ οἱ σύνδεσμοι τῆς ὀσφύος αὐτοῦ διελύοντο, καὶ τὰ γόνατα αὐτοῦ συνεκροτοῦντο.
7 Καὶ ἐβόησεν ὁ βασιλεὺς ἐν ἰσχύϊ, τοῦ εἰσαγαγεῖν μάγους, Χαλδαίους, γαζαρηνούς· καὶ εἶπε τοῖς σοφοῖς Βα-
βυλῶνος, Ὃς (η) ἂν ἀναγνῷ τὴν γραφὴν ταύτην, καὶ τὴν σύγκρισιν (θ) γνωρίσῃ μοι, πορφύραν ἐνδύσε-
8 ται, καὶ ὁ μανιάκης ὁ χρυσοῦς (ι) ἐπὶ τὸν τράχηλον αὐτοῦ, καὶ τρίτος ἐν τῇ βασιλείᾳ μου ἄρξει. Καὶ
εἰσεπορεύοντο (κ) πάντες οἱ σοφοὶ τοῦ βασιλέως, καὶ οὐκ ἠδύναντο τὴν γραφὴν ἀναγνῶναι, οὐδὲ τὴν σύγ-
9 κρισιν γνωρίσαι τῷ βασιλεῖ. Καὶ ὁ βασιλεὺς Βαλτάσαρ (λ) ἐταράχθη, καὶ ἡ μορφὴ αὐτοῦ ἠλλοιώθη (μ)
10 ἐν αὐτῷ, καὶ οἱ μεγιστᾶνες αὐτοῦ (ν) συνεταράσσοντο. Καὶ εἰσῆλθεν ἡ βασίλισσα εἰς τὸν οἶκον τοῦ πότου, (ξ)
καὶ εἶπε, Βασιλεῦ, εἰς τὸν αἰῶνα ζῆθι· μὴ ταρασσέτωσάν σε οἱ διαλογισμοί σου, καὶ ἡ μορφή σου μὴ
11 ἀλλοιούσθω. Ἔστιν ἀνὴρ ἐν τῇ βασιλείᾳ σου, ἐν ᾧ πνεῦμα θεοῦ (ο)· καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις τοῦ πατρός σου, γρη-
γόρησις καὶ σύνεσις εὑρέθη ἐν αὐτῷ, καὶ ὁ βασιλεὺς Ναβουχοδονόσορ ὁ πατήρ σου ἄρχοντα ἐπαοιδῶν, μά-
12 γων, Χαλδαίων, γαζαρηνῶν, κατέστησεν (π) αὐτὸν, Ὅτι πνεῦμα περισσὸν ἐν αὐτῷ, καὶ φρόνησις καὶ σύνε-
σις ἐν αὐτῷ, συγκρίνων ἐνύπνια, καὶ ἀναγγέλλων κρατούμενα, καὶ λύων συνδέσμους, Δανιήλ· καὶ ὁ βα-
σιλεὺς ἐπέθηκεν (ρ) ὄνομα αὐτῷ, Βαλτάσαρ. νῦν οὖν κληθήτω, καὶ τὴν σύγκρισιν αὐτοῦ ἀναγγελεῖ σοι.
13 Τότε Δανιὴλ εἰσήχθη ἐνώπιον τοῦ βασιλέως. καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς τῷ Δανιὴλ, Σὺ εἶ Δανιὴλ, ὁ ἀπὸ τῶν
υἱῶν τῆς αἰχμαλωσίας τῆς Ἰουδαίας, ἧς ἤγαγεν ὁ βασιλεὺς ὁ πατήρ μου;

CAP. V.

BAltaſar rex fecit grande convivium optimatibus ſuis mille: & è (a) re- 1
gione ipſorum mille, vinum. Et bibens Baltaſar dixit in guſtu vini, ut af- 2
ferrentur vaſa aurea, et argentea, quæ aſportaverat Nabuchodonoſor pater ejus
de templo quod fuit in Hieruſalem: & biberent in eis rex, & optimates ejus,
& ſcorta ejus, & concubinæ ejus. Et allata ſunt vaſa aurea, & argen- 3
tea, quæ aſportaverat de templo Dei, quod in Hieruſalem: & bibebant in
eis rex, & optimates ejus, & ſcorta ejus, & concubinæ ejus. Bibebant 4
vinum, & laudabant deos aureos, & argenteos, & æneos, & ferreos, &
ligneos, & (b) lapideos. In eadem hora egreſſi ſunt digiti manûs hominis, & 5
ſcribebant è regione lampadis in tectorio parietis domûs regiæ: et rex aſpici-
ebat articulos manûs ſcribentis. Tunc regis forma commutata eſt: & co- 6
gitationes ejus conturbabant eum: & compages renum ejus ſolvebantur:
& genua ejus collidebantur. Et clamavit rex in fortitudine, ut introdu- 7
cerent Magos, Chaldæos, Gazarenos. Et dixit ſapientibus Babylonis; Qui-
cunque legerit ſcripturam hanc, & conjecturam ejus manifeſtam mihi fe-
*cerit, purpurâ veſtietur, & torques aurea ſuper collum ejus: & * tertius*
in regno meo principabitur. Et ingrediebantur omnes ſapientes regis, & 8
non poterant ſcripturam legere, neque conjecturam indicare regi. Et rex 9
Baltaſar conturbatus eſt: & forma ejus immutata eſt in illo: et optima-
tes ejus turbabantur. Et ingreſſa eſt Regina in domum convivii, et dixit; 10
Rex, in æternum vive. Non conturbent te cogitationes tuæ: et forma tua
non immutetur. Eſt vir in regno tuo, in quo eſt ſpiritus Dei: et in diebus 11
patris tui vigilantia, & intelligentia inventæ ſunt in eo: et rex Nabucho-
donoſor pater tuus principem incantatorum, Magorum, Chaldæorum, Ga-
zarenorum, conſtituit eum: Quia ſpiritus amplior in eo, et prudentia, et 12
intellectus in eo, conjiciens ſomnia, et indicans (c) abſcondita, et ſolvens
colligationes, Daniel: et rex impoſuit ei nomen Baltaſar. Nunc itaque vo-
cetur: et conjecturam ejus indicabit tibi. Tunc Daniel introductus eſt co- 13
ram rege: et dixit rex Danieli; Tu es Daniel, qui de filiis captivitatis
Judææ, quam adduxit rex pater meus?

MS. A. (α) ὍΡΑΣΙΣ ϛ'. Βαρτάταρ (β) τοῖς μεγιστᾶσιν αὐτοῦ ἀνδράσιν χιλίοις, (γ) ἤχθησαν (δ) τοῦ ἐν Ἱερουσαλὴμ, (ε) καὶ αἱ παράκοιτοι αὐτοῦ, καὶ αἱ παλλακαὶ αὐτοῦ. Ἔπινον οἶνον, (ζ) λιθίνους· καὶ τὸν θεὸν τοῦ αἰῶνος οὐκ ηὐλογήσαντο ἔχοντα ἐξουσίαν τοῦ πνεύματος αὐτῶν. Ἐν αὐτῇ (η) ἐὰν (θ) αὐτῆς (ι) ἔσται περὶ τῆς (κ) οἱ σοφοὶ (λ) πολὺ ἐταράχθη, (μ) ἐπ' αὐτῷ, (ν) συνετάρασσον αὐτόν. (ξ) καὶ ἀπεκρίθη ἡ βασίλισσα, καὶ εἶπεν, Βασιλεῦ, εἰς τοὺς αἰῶνας (ο) ἅγιον· (π) αὐτὸν ὁ πατήρ σου ὁ βασιλεύς, Ὅτι (ρ) αὐτῷ ὄνομα,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الخامس *

* الرويا السادس *

1 * بلطاساصر الملك صنع عشآء عظيما لعظمايه لالف رجل * والخمر بازاء الالوف * وشرب
2 بلطاساصر وقال في ذوق الخمر ان يحضروا الاواني الذهب والفضة التي احضرها بختنصر ابوه
من الهيكل الذي بايروسليم * وليشرب فيها الملك وعظماوه * وسراريه ونساوه * فاتي بالانية 3
الذهب والفضة التي احضرها من هيكل الله الذي بايروسليم * وشرب فيها الملك وعظماوه *
وسراريه ونساوه * شربوا خمرا وسبحوا لالهة الذهب والفضة * والنحاس والحديد * والخشب 4
والحجارة * ولم يباركوا اله السماء الذي له سلطان روحهم * وفي هذه الساعة خرجت انامل 5
يد انسان * وكتبت قبالة المصباح على كلس حايط بيت الملك * والملك ينظر انامل اليد
تكتب * حينيذ تغير شكل الملك * واقلقته افكاره * وانحلت عقد حقوه * واصطكت 6
ركبتاه * وصرخ الملك بصوت عظيم * ليدخلوا مجوس كلدانيين منجمين * واجاب الملك 7
وقال لحكماء بابل ان الذي يقراء هذه الكتابة ويعرفني تاويلها * يلبس برفيرا * وطوق ذهب
يكون على عنقه * ويسود ثالث في مملكتي * فدخل جميع حكماء الملك * ولم يستطيعوا ان 8
يقراوا الكتابة * ولا ان يعرفوا الملك التاويل * والملك بلطاساصر اضطرب * وتغير شكله * 9
وقلق عظماوه * ودخلت الملكة الى بيت الشراب * واجابت الملكة وقالت عش ايها الملك 10
الى الدهر * لا تقلقك افكارك * ولا يتغير شكلك * ثم رجل في مملكتك فيه روح الله 11
القدوس * وفي ايام ابيك وجدت فيه يقظة وفهم * والملك بختنصر ابوك اقامه ريسا للرقايين
الكلدانيين والمنجمين * لان روحا مضعفة هي فيه * وذهن وفهم وجدا فيه * ويعبر الاحلام * 12
ويخبر بالاوابد * ويحل العقد * هو دانيال * والملك وضع له اسما بلطاساصر * والان ليدعى
ويخبرك بتاويله * حينيذ دانيال دخل امام الملك * فقال الملك لدانيال * انت هو دانيال 13
الذي من بني سبي يهوذا * الذي جلبه ابي الملك *

CAP. V.

Viſio ſexta.

BAltaſaſar rex fecit cœnam magnam 1
principibus ſuis mille viris, & vinum e-
rat è regione millium. Cùmque bibiſſet 2
Baltaſaſar, dixit in guſtu vini ut affer-
rent vaſa aurea & argentea quæ attulerat
Bochtonaſſar pater ſuus è templo quod
erat in Jeruſalem, & ut biberent in eis
rex & principes ejus, concubinæ & uxo-
res ejus. Igitur allatis vaſis aureis & 3
argenteis quæ advexerat è templo Dei
quod erat in Jeruſalem, biberunt in eis
rex & principes ejus, concubinæ & uxo-
res ejus. Cùm vinum bibiſſent, lauda- 4
verunt deos aureos, argenteos, æneos,
ferreos, ligneos, & lapideos; Deum verò
cœli cui poteſtas eſt in ſpiritum eorum,
non benedixerunt. Eâdem horâ egreſſæ 5
ſunt ſummitates digitorum manûs huma-
næ, & ſcripſerunt ex adverſo facis ſu-
per calcem parietis domûs regiæ, rege
ſpectante ſummos manûs digitos ſcri-
bentes. Tunc inverſa eſt ſpecies regis, 6
& conturbaverunt eum cogitationes ſuæ,
ſoluti ſunt nodi lumbi ejus, & colliſe-
runt ſe genua ipſius. Quapropter ex- 7
clamavit rex altâ voce: Ingrediantur
magi Chaldæorum aſtrologorum: tum al-
locutus rex ſapientes Babelis, ait; Qui-
cunque legerit ſcripturam hanc, & no-
tam fecerit mihi interpretationem ejus;
induetur purpurâ, & collare aureum erit
ſuper collum ejus, & tertius dominabi-
tur in regno meo. Itaque cùm ingreſſi 8
fuiſſent omnes ſapientes regis, & non
potuiſſent legere ſcripturam, neque no-
tam facere regi interpretationem; Rex 9
Baltaſaſar conturbatus eſt, & ſpecies ejus
inverſa, & exagitati principes ejus.
Verùm ingreſſâ reginâ in locum convivii, 10
prolocuta eſt regina, & ait; Vive O rex
in æternum: ne te perturbent cogitati-
ones tuæ, néve immutetur ſpecies tua.
Eſt hîc in regno tuo vir quidam cui ineſt 11
ſpiritus Dei ſanctus, in quo ſub diebus
patris tui, inventa eſt vigilantia & intel-
lectus, quem rex Bochtonaſſar pater tuus
conſtituit principem incantatorum, Chal-
dæorum, & aſtrologorum; Quòd ſpi- 12
ritus duplicatus ſit in eo, & ingenium
atque intellectus inventa ſint in ipſo, in-
terpretetur ſomnia, aperiat occulta, no-
dóſque reſolvat: Daniel is eſt, cui rex
nomen impoſuerat Baltaſaſar: is nunc
advocetur, & indicabit tibi interpretatio-
nem ejus. Tunc Daniele ad regem in- 13
greſſo, dixit rex Danieli; Tune es Da-
niel de captivis Judæ, quem pater meus
rex adduxit?

דניאל : ה

.te in eſt inventa *abundans* ſapientia & , intellectus & illuſtratio & ; te in Deorum ſpiritus quod , te *ſuper* audivi Et
14 ושמעת עליך די רוח אלהין בך ונהירו ושכלתנו וחכמה יתירה השתכחת בך׃
; mihi *notificandum ad* ejus interpretationem & , legerent hanc ſcripturam qui , *ſophi* ſapientes me coram ſunt adducti nunc Et
15 וכען העלו קדמי חכימיא אשפיא די־כתבה דנה יקרון ופשרה להודעתני
nodos & , interpretari *interpretationes poteris* quod , te *ſuper* audivi ego Et .indicare ſermonis interpretationem *valentes* non &
16 ולא־כהלין פשר־מלתא להחויה׃ ואנה שמעת עליך די־תוכל פשרין למפשר וקטרין
quæ torques & , veſtieris purpura , mihi *notificare* ejus interpretationem & , legere ſcripturam *poteris en* nunc : ſolvere
למשרא כען הן תוכל כתבא למקרא ופשרה להודעותני ארגונא תלבש והמונכא די־
tua Munera , rege coram *dicens* & , Daniel *reſpondens* Tunc .dominaberis regno in tertius & , tuo collo *ſuper auri*
17 דהבא על־צוארך ותלתא במלכותא תשלט׃ באדין ענה דניאל ואמר קדם מלכא מתנתך
Tu .ei *notificabo* interpretationem & , regi legam ſcripturam veruntamen : da alteri tua *honoraria* & , *excellendum ad* tibi
18 לך להוין ונבזביתך לאחרן הב ברם כתבא אקרא למלכא ופשרא אהודענה׃ אנתה
magnificentiā propter Et .tuo patri Nebuchadneſar dedit decorem & , gloriam & , magnificentiā & , regnum altiſſimus Deus ; rex
19 מלכא אלהא עליא מלכותא ורבותא ויקרא והדרא יהב לנבכדנצר אבוך׃ ומן־רבותא
, *occidens erat* , *volens erat* quos : ejus facie à *timentes & trementes fuerunt* linguæ & *nationes* , populi omnes , ei dedit quam
די יהב־לה כל עממיא אמיא ולשניא הוו זאעין ודחלין מן־קדמוהי די־הוא צבא הוה קטל
quando Et .*humilians erat* , *volens erat* quos & , *extollens erat* , *volens erat quos &* , *vivificans erat* , *volens erat quos &*
20 ודי־הוה צבא הוה מחא ודי־הוה צבא הוה מרים ודי־הוא צבא הוא משפל׃ וכדי
gloriam & , ſui regni ſolio de eſt *factus deſcendere* : ſuperbiam ad eſt *roboratus* ejus ſpiritus & , ejus cor fuit elevatum
רם לבבה ורוחה תקפת להזדה הנחת מן־כרסא מלכותה ויקרה
herba : ejus habitatio *onagris* cum & , *adæquatum beſtia* cum ejus cor & , eſt *detruſus hominis* filiis à Et .eo ab abſtulerunt
21 העדיו מנה׃ ומן־בני אנשא טריד ולבבה עם־חיותא שוי ועם־ערדיא מדורה עשבא
regno in altiſſimus Deus *potens* quòd cognovit donec ; fuit tinctum ejus corpus cœlorum rore è & , ei *ſapuerunt* bobus ut
כתורין יטעמונה ומטל שמיא גשמה יצטבע עד די־ידע די־שליט אלהא עליא במלכות
reſpectu omni , tuum cor humiliâſti non Belſaſar ejus filius tu Et .illud ſuper conſtituet , voluerit quem *eum* & , *hominis*
22 אנשא ולמן־די יצבא יהקים עליה׃ ואנתה ברה בלשאצר לא השפלת לבבך כל־קבל
, tu & , te coram attulerunt ejus domus *quæ* vaſa & , es elevatus cœli Dominum *ſuper* Et .ſcires hoc totum *quod*
23 די כל־דנה ידעת׃ ועל מרא־שמיא התרוממת ולמאניא די־ביתה היתיו קדמך ואנתה
, *Igni* , *ferri* , *æris* , *auri &* , *argenti* deos & : eis in *bibentes* vinum tuæ concubinæ & , tuæ uxores , tui principes &
ורברבניך שגלתך ולחנתך חמרא שתין בהון ולאלהי כספא ודהבא נחשא פרזלא אעא
omnes & , *ejus manu in tua mens cujus* , Deum & : laudâſti , *ſcientes* neque , *audientes* neque , *videntes* non qui , *lapidis &*
ואבנא די לא־חזין ולא־שמעין ולא ידעין שבחת ולאלהא די־נשמתך בידה וכל־
hæc Et .eſt *deſignata* hæc ſcriptura & , manus *quæ* palma eſt miſſa ejus facie à Tunc .honorâſti non , eum apud tuæ viæ
24 25 ארחתך לה לא הדרת׃ באדין מן־קדמוהי שליח פסא די־ידא וכתבא דנה רשים׃ ודנה
Deus Numeravit , Mene ; ſermonis interpretatio Hæc .Upharſin , Techel , Mene , Mene ; eſt *deſignata* quæ ſcriptura
26 כתבא די רשים מנא מנא תקל ופרסין׃ דנה פשר מלתא מנא מנה אלהא
.*imminutus* es inventus & , *bilancibus* in es Appenſus , Techel .illud complevit & , tuum regnum
27 מלכותך והשלמה׃ תקל תקילתה במאזניא והשתכחת חסיר׃

Verſio VULG. LAT.

Audivi de te, quoniam ſpiritum deorum habeas : & ſcientia intelligentiáque ac ſapientia ampliores inventæ ſunt in te. 14 Et nunc introgreſſi ſunt in conſpectu meo ſapientes magi, ut ſcripturam hanc legerent, & interpretationem ejus indicarent mihi : & nequiverunt ſenſum hujus ſermonis edicere. 15 Porrò ego audivi de te, quòd poſſis obſcura interpretari, & ligata diſſolvere ; ſi ergò vales ſcripturam legere, & interpretationem ejus indicare mihi, purpurâ veſtieris, & torquem auream circa collum tuum habebis, & tertius in regno meo princeps eris. 16 Ad quæ reſpondens Daniel, ait coram rege ; Munera tua ſint tibi, & dona domûs tuæ alteri da : ſcripturam autem legam tibi, rex, & interpretationem ejus oſtendam tibi. 17 O rex, Deus Altiſſimus, regnum & magnificentiam, gloriam & honorem dedit Nabuchodonoſor patri tuo. 18 Et propter magnificentiam quam dederat ei, univerſi populi, tribus & linguæ tremebant & metuebant eum : quos volebat, interficiebat : & quos volebat, percutiebat : & quos volebat, exaltabat : & quos volebat, humiliabat. 19 Quando autem elevatum eſt cor ejus, & ſpiritus illius confirmatus eſt ad ſuperbiam, depoſitus eſt de ſolio regni ſui, & gloria ejus ablata eſt : 20 Et à filiis hominum ejectus eſt, ſed & cor ejus cum beſtiis poſitum eſt, & cum onagris erat habitatio ejus : fœnum quoque ut bos comedebat, & rore cœli corpus ejus infectum eſt, donec cognoſceret quòd poteſtatem haberet Altiſſimus in regno hominum : & quemcunque voluerit ſuſcitabit ſuper illud. 21 Tu quoque filius ejus Baltaſſar, non humiliâſti cor tuum, cùm ſcires hæc omnia : 22 Sed adverſùm Dominatorem cœli elevatus es : & vaſa domûs ejus allata ſunt coram te : & tu, & optimates tui, & uxores tuæ, & concubinæ tuæ, vinum bibiſtis in eis : deos quoque argenteos, & aureos, & æreos, ferreos, ligneóſque & lapideos, qui non vident, neque audiunt, neque ſentiunt, laudâſti : porrò Deum, qui habet flatum tuum in manu ſua, & omnes vias tuas, non glorificâſti. 23 Idcircò ab eo miſſus eſt articulus manûs, quæ ſcripſit hoc, quod exaratum eſt. 24 Hæc eſt autem ſcriptura, quæ digeſta eſt : 25 MANE, THECEL, PHARES. Et hæc eſt interpretatio ſermonis. 26 MANE : numeravit Deus regnum tuum, & complevit illud. THECEL : appenſus es in ſtatera, & inventus es minus habens. 27

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

14 * ܫܡܥܬ ܥܠܝܟ܂ ܕܪܘܚ ܐܠܗܝܢ ܩܕܝܫܝܢ ܐܝܬ ܒܟ܂ ܘܢܘܗܪܐ ܘܣܘܟܠܐ܂ ܘܚܟܡܬܐ
15 ܝܬܝܪܬܐ ܐܫܬܟܚܬ ܒܟ܂ * ܘܗܫܐ ܥܠܘ ܩܕܡܝ ܚܪ̈ܫܐ ܘܐܫ̈ܦܐ܂ ܕܟܬܒܐ ܗܢܐ ܢܩܪܘܢ ܘܦܘܫܩܗ
16 ܢܘܕܥܘܢܢܝ܂ ܘܠܐ ܐܫܟܚܘ ܦܘܫܩܐ ܕܡܠܬܐ ܠܡܘܕܥܘܬܝ܂ * ܘܐܢܐ ܫܡܥܬ ܥܠܝܟ܂
ܕܡܫܟܚ ܐܢܬ ܦܘܫ̈ܩܐ ܠܡܦܫܩ܂ ܘܩܛܪ̈ܐ ܠܡܫܪܐ܂ ܐܢ ܡܫܟܚ ܐܢܬ܂ ܗܫܐ ܟܬܒܐ ܗܢܐ ܠܡܩܪܐ܂
ܘܦܘܫܩܗ ܠܡܘܕܥܘܬܝ܂ ܐܪܓܘܢܐ ܬܠܒܫ܂ ܘܡܢܝܟܐ ܕܕܗܒܐ ܥܠ ܨܘܪܟ܂ ܘܠܬܘܠܬܐ ܕܡܠܟܘܬܐ
17 ܬܫܠܛ܂ * ܘܥܢܐ ܕܢܝܐܝܠ ܘܐܡܪ ܠܡܠܟܐ܂ ܡܘܗܒܬܟ ܠܟ ܢܗܘܝܢ܂ ܘܐܝܩܪܐ
18 ܕܒܝܬܟ܂ ܠܐܚܪ̈ܢܐ ܗܒ܂ ܒܪܡ ܟܬܒܐ ܐܢܐ ܐܩܪܐ ܠܡܠܟܐ܂ ܘܦܘܫܩܗ ܐܘܕܥܝܘܗܝ܂ * ܐܢܬ
ܡܠܟܐ܂ ܐܠܗܐ ܡܪܝܡܐ܂ ܡܠܟܘܬܐ ܘܪܒܘܬܐ܂ ܘܐܝܩܪܐ ܘܫܘܒܚܐ ܝܗܒ ܠܢܒܘܟܕܢܨܪ
19 ܐܒܘܟ܂ * ܘܡܢ ܪܒܘܬܐ ܕܝܗܒ ܠܗ܂ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܘܐܡܘܬܐ ܘܠܫܢܐ܂ ܙܐܥܝܢ ܗܘܘ
ܘܕܚܠܝܢ ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ܂ ܐܝܠܝܢ ܕܨܒܐ ܗܘܐ ܩܛܠ܂ ܘܐܝܠܝܢ ܕܨܒܐ ܗܘܐ ܡܚܐ܂ ܘܕܨܒܐ
20 ܡܪܝܡ܂ ܘܕܨܒܐ ܡܡܟܟ܂ * ܘܟܕ ܐܬܬܪܝܡ ܠܒܗ܂ ܘܪܘܚܗ ܥܫܢܬ ܠܡܣܟܠܘ܂ ܢܚܬ
21 ܡܢ ܟܘܪܣܝܐ ܕܡܠܟܘܬܗ܂ ܘܐܝܩܪܗ ܥܒܪ ܡܢܗ܂ * ܘܡܢ ܒܢܝ̈ ܐܢܫܐ ܐܬܛܪܕ܂ ܘܠܒܗ
ܥܡ ܚܝܘܬܐ ܐܫܬܘܝ܂ ܘܥܡ ܥܪ̈ܕܐ ܡܥܡܪܗ܂ ܘܥܣܒܐ ܐܝܟ ܬܘܪܐ ܐܘܟܠܘܗܝ܂ ܘܡܢ
ܛܠܐ ܕܫܡܝܐ ܓܘܫܡܗ ܐܨܛܒܥ܂ ܥܕܡܐ ܕܣܥܪܗ ܪܒܐ ܐܝܟ ܕܢܫܪܐ܂ ܘܛܦܪ̈ܘܗܝ ܐܝܟ
ܕܦܪ̈ܚܬܐ܂ ܥܕܡܐ ܕܝܕܥ ܕܫܠܝܛ ܐܠܗܐ ܡܪܝܡܐ ܒܡܠܟܘܬܐ ܕܐܢܫܐ܂ ܘܠܡܢ ܕܨܒܐ ܢܬܠܝܗ܂
22 ܘܡܟܝܟܐ ܕܐܢܫܐ ܢܩܝܡ ܥܠܝܗ܂ * ܘܐܢܬ ܒܪܗ ܒܠܛܫܐܨܪ܂ ܠܐ ܐܡܟܟܬ ܠܒܟ܂
23 ܟܕ ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ ܝܕܥܬ܂ * ܘܥܠ ܡܪܐ ܫܡܝܐ ܐܬܬܪܝܡܬ܂ ܘܡܐܢܐ ܕܒܝܬܗ
ܐܝܬܝܘ ܩܕܡܝܟ܂ ܘܐܢܬ ܘܪܘܪܒܢܝܟ ܘܢܫܝܟ ܘܦܠܓܫܝܟ܂ ܚܡܪܐ ܐܫܬܝܬܘܢ ܒܗܘܢ܂
ܘܠܐܠܗ̈ܐ ܕܕܗܒܐ ܘܕܣܐܡܐ܂ ܘܕܢܚܫܐ ܘܕܦܪܙܠܐ ܘܕܩܝܣܐ ܘܕܟܐܦܐ܂ ܕܠܐ ܚܙܝܢ ܘܠܐ ܫܡܥܝܢ
ܘܠܐ ܝܕܥܝܢ܂ ܫܒܚܬ܂ ܘܠܐܠܗܐ ܕܢܫܡܬܟ ܒܐܝܕܘܗܝ܂ ܘܕܟܠܗܘܢ ܐܘܪܚܬܟ܂ ܠܗ
24 ܠܐ ܫܒܚܬ܂ ܘܠܐ ܝܩܪܬ܂ * ܗܝܕܝܢ ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ ܐܫܬܕܪܬ ܦܣܬܐ ܕܐܝܕܐ܂ ܘܟܬܒܬ
25 26 ܗܢܐ ܟܬܒܐ܂ * ܘܟܬܒܐ ܗܢܐ ܕܪܫܝܡ܂ ܡܢܐ ܡܢܐ ܬܩܠ ܘܦܪܣܝܢ܂ * ܗܢܘ
27 ܦܘܫܩܗ ܕܡܠܬܐ܂ ܡܢܐ܂ ܡܢܝܗ ܐܠܗܐ ܠܡܠܟܘܬܟ܂ ܘܐܫܠܡܗ܂ * ܬܩܠ܂ ܐܬܬܩܠܬ
ܒܡܘܙܢܐ܂ ܘܐܫܬܟܚܬ ܚܣܝܪ܂

* Audivi de te ſpiritum deorum ſanctorum ineſſe tibi, & lucem, prudentiam, atque ſapientiam ampliſſimam in te reperiri. 14 Ingreſſi ſunt coram me præſtigiatores & harioli, ut ſcripturam hanc legerent, & interpretationem ejus indicarent mihi : ſed non potuerunt interpretationem rei exponere mihi. 15 Ego verò audivi de te, poſſe te interpretationes explanare, & nodos ſolvere : ſi potueris ſcripturam hanc legere, & interpretationem ejus notam mihi facere ; purpureis induêris, torques aureus imponetur collo tuo, & tertiæ regni parti dominaberis. 16 Tunc reſpondens Daniel dixit regi ; Munera tua tibi maneant, & gloriam domûs tuæ aliis confer : cæterùm ſcripturam iſtam ego regi legam, & interpretationem illius indicabo ei. 17 O rex, Deus excelſus regnum & amplitudinem, honorem atque gloriam dederat Nebuchadnoſari patri tuo : 18 Et ob amplitudinem quam contulerat ei, omnes populi, nationes, & linguæ metuebant atque timebant eum : quos volebat occidebat, & quos volebat ſervabat, quos volebat extollebat, & quos volebat deprimebat. 19 Sed cùm animus ejus intumuiſſet, & ſpiritus ejus obduratus eſſet ad iniquè ſe gerendum ; decidit è ſolio regni ſui, & decus ejus ademptum eſt ab eo : 20 Ex hominibus depulſus eſt, & animus ejus ferino ſimilis effectus, cum onagris verſatus eſt, ac fœno ceu bovem cibârunt eum, rore cœli corpus ejus intinctum, adeóque pili ejus creverant in modum aquilarum, & ungues ejus in modum volucrum : donec agnovit dominari Deum ſupremum in regno hominum, ita ut cui voluerit conferat illud, & abjectiſſimum hominum evehat ad illud. 21 Tu autem Blitſaſar filius ejus, non ſummiſiſti cor tuum, cùm hæc omnia ſcires : 22 Imò contra Dominum cœli adeò te extuliſti, ut vaſa domûs ejus coram te ſint allata, & tu proceréſque tui, uxores & concubinæ tuæ vinum biberitis in eis ; & deos aureos & argenteos, æneos ferreóſque, ligneos atque lapideos, qui nec vident, nec audiunt, neque cognoſcunt, laudaveris : Deum verò cujus in manibus eſt halitus tuus, & cujus ſunt omnes viæ tuæ, nequaquam laudaveris, neque glorificaveris. 23 Tunc à conſpectu ejus miſſa eſt vola manûs, & ſcripturam iſtam exaravit. 24 Quod autem ad ſcripturam hanc exaratam, Mene mena, tecquel, upharſin : 25 Hæc eſt rei interpretatio : Mene, Numeravit Deus regnum tuum, & tradidit illud : 26 Tecquel appenſus fuiſti in bilance, & inventus es minoris ponderis : 27

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

14 Ἤκουσα περὶ σοῦ ὅτι πνεῦμα Θεοῦ ἐν σοί, ϗ γρηγόρησις, ϗ σύνεσις, ϗ σοφία περισσὴ εὑρέθη ἐν σοί.
15 Καὶ νῦν εἰσῆλθον (σ) ἐνώπιόν μου οἱ σοφοί, μάγοι, γαζαρηνοί, ἵνα τὴν γραφὴν (τ) ταύτην ἀναγνῶσι,
16 καὶ τὴν σύγκρισιν (υ) γνωρίσωσί μοι, ϗ οὐκ ἠδυνήθησαν ἀναγγεῖλαί μοι. Καὶ ἐγὼ ἤκουσα περὶ σοῦ,
ὅτι (φ) δύνασαι κρίματα συγκρῖναι. νῦν οὖν ἐὰν δυνηθῇς τὴν (ʹ) γραφὴν ἀναγνῶναι, καὶ τὴν σύγκρισιν
αὐτῆς γνωρίσαι μοι, πορφύραν ἐνδύσῃ, καὶ ὁ μανιάκης ὁ χρυσοῦς ἔσαι (χ) ἐπὶ τῷ τραχήλῳ σου, ϗ
17 τρίτος ἐν τῇ βασιλείᾳ μου ἄρξεις. (ψ) Καὶ εἶπε Δανιὴλ ἐνώπιον τοῦ βασιλέως, Τὰ δόματά σου (ω)
σοὶ ἔστω, ϗ τὴν δωρεὰν τῆς οἰκίας σου ἑτέρῳ δός, ἐγὼ δὲ τὴν γραφὴν ἀναγνώσομαι (α), ϗ τὴν σύγ-
18 κρισιν αὐτῆς γνωρίσω σοι, Βασιλεῦ. ὁ Θεὸς ὁ ὕψιστος τὴν βασιλείαν, ϗ τὴν μεγαλωσύνην, ϗ τὴν
19 τιμήν, καὶ τὴν δόξαν ἔδωκε Ναβουχοδονόσορ τῷ πατρί σου. Καὶ ἀπὸ τῆς μεγαλωσύνης ἧς ἔδωκεν αὐ-
τῷ, πάντες οἱ λαοί, φυλαί, γλῶσσαι ἦσαν τρέμοντες καὶ φοβούμενοι ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ· οὓς (β) ἠβούλετο
αὐτὸς ἀνῄρει, ϗ οὓς (γ) ἠβούλετο αὐτὸς ἔτυπτεν, ϗ οὓς (δ) ἠβούλετο αὐτὸς (ε) ὕψου, ϗ οὓς ἠβούλετο αὐτὸς
20 ἐταπείνου. Καὶ ὅτε ὑψώθη ἡ καρδία αὐτοῦ, ϗ τὸ πνεῦμα αὐτοῦ ἐκραταιώθη τοῦ (ζ) ὑπερηφανεύσασθαι,
21 κατηνέχθη ἀπὸ τοῦ θρόνου τῆς βασιλείας (η), ϗ ἡ τιμὴ ἀφῃρέθη ἀπ' αὐτοῦ. Καὶ ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων
ἐξεδιώχθη, ϗ ἡ καρδία αὐτοῦ μετὰ τῶν θηρίων ἐδόθη, ϗ (θ) μετὰ τῶν ὀνάγρων ἡ κατοικία αὐτοῦ, ϗ χόρτον ὡς
βοῦν ἐψώμιζον αὐτόν, ϗ ἀπὸ τῆς δρόσου τοῦ οὐρανοῦ τὸ σῶμα αὐτοῦ ἐβάφη, ἕως οὗ ἔγνω ὅτι κυριεύει (ι)
22 ὁ Θεὸς ὕψιστος τῆς βασιλείας τῶν ἀνθρώπων, ϗ ᾧ (κ) ἂν δόξῃ, δώσει αὐτήν. Καὶ σὺ (λ) οὖν ὁ υἱ-
ὸς αὐτοῦ Βαλτάσαρ οὐκ ἐταπείνωσας τὴν καρδίαν σου (μ) κατενώπιον τοῦ Θεοῦ. οὐ πάντα ταῦτα ἔγνως;
23 Καὶ ἐπὶ τὸν κύριον Θεὸν τοῦ οὐρανοῦ ὑψώθης, ϗ τὰ σκεύη τοῦ οἴκου αὐτοῦ (ν) ἤνεγκαν ἐνώπιόν σου,
καὶ σὺ καὶ οἱ μεγιστᾶνές σου, ϗ αἱ παλλακαί σου, καὶ (ξ) αἱ παράκοιτοί σου οἶνον ἐπίνετε ἐν αὐ-
τοῖς· ϗ τοὺς θεοὺς τοὺς χρυσοῦς, ϗ ἀργυροῦς, ϗ χαλκοῦς, ϗ σιδηροῦς, ϗ ξυλίνους, ϗ λιθίνους, οἳ οὐ βλέ-
πουσι, ϗ (ο) οἳ οὐκ ἀκούουσι, ϗ οὐ γινώσκουσιν, ᾔνεσας, ϗ τὸν Θεὸν οὗ ἡ πνοή σου ἐν (ʹ) χειρὶ αὐτοῦ ϗ πᾶσαι
24 αἱ ὁδοί σου, αὐτὸν οὐκ ἐδόξασας. Διατοῦτο ἐκ προσώπου αὐτοῦ ἀπεστάλη ἀστράγαλος χειρός, ϗ τὴν γρα-
25 φὴν ταύτην ἐνέταξε. Καὶ αὕτη ἡ γραφὴ (π) ἐντεταγμένη, Μανή, Θεκέλ, Φάρες. Τοῦτο τὸ σύγκριμα
26 τοῦ ῥήματος· Μανή, ἐμέτρησεν ὁ Θεὸς τὴν βασιλείαν σου, ϗ ἐπλήρωσεν αὐτήν. Θεκέλ, ἐστάθη ἐν
27 ζυγῷ, ϗ εὑρέθη ὑστεροῦσα.

Audivi de te, quia ſpiritus Dei in te, & vigilantia, & intelligentia, & 14
ſapientia amplior inventæ ſunt in te. Et nunc ingreſſi ſunt in conſpectu 15
meo ſapientes, magi, Gazareni, ut ſcripturam hanc legerent, & con-
jecturam ejus indicarent mihi: & non potuerunt indicare mihi. Et 16
ego audivi de te, quia potes conjecturas conjicere. Nunc igitur ſi pote-
ris ſcripturam legere, & conjecturam ejus indicare mihi; purpurâ
veſtieris, & torques aureus erit ſuper collum tuum, & tertius in
regno meo principaberis. Et dixit Daniel coram rege; Munera tua ſint 17
tibi; & donum domûs tuæ alteri des, Ego autem ſcripturam legam,
& conjecturam ejus oſtendam tibi. O rex, Deus altiſſimus regnum, & 18
magnificentiam, & honorem, & gloriam dedit Nabuchodonoſor patri
tuo: Et à magnificentia, quam dederat ei, omnes populi, tribus, lin- 19
guæ erant trementes, & metuentes à facie ejus: quos volebat, ipſe in-
terficiebat; & quos volebat, ipſe percutiebat; & quos volebat, ipſe ex-
altabat; & quos volebat, ipſe humiliabat. Et quando elevatum eſt cor 20
ejus, & ſpiritus ejus obfirmatus eſt ad ſuperbiendum; depoſitus eſt de
ſolio regni; & honor ablatus eſt ab eo: Et ex hominibus ejectus eſt: & 21
cor ejus cum beſtiis datum eſt, & cum onagris habitatio ejus: & fœno,
ut bovem, cibaverunt eum, & de rore cœli corpus ejus infectum eſt, do-
nec cognovit, quia dominatur Deus altiſſimus ſuper regnum hominum;
& cuicunque voluerit, dabit illud. Et tu igitur, filius ejus Baltaſar, 22
non humiliâſti cor tuum coram Deo: nónne omnia hæc noras? Et ſu- 23
per Dominum Deum cœli elevatus es: & vaſa domûs (d) ejus attule-
runt coram te: & tu, & optimates tui, & ſcorta tua, & concubinæ
tuæ vinum bibebatis in eis: deóſque aureos, & argenteos, & æneos, et
ferreos, et ligneos, et lapideos, qui non vident, neque audiunt, neque
ſentiunt, laudâſti: et Deum, cujus ſpiratio tua in manu ejus, et omnes
viæ tuæ, ipſum non glorificâſti. Idcircò à facie ejus miſſus eſt articulus 24
manûs, et ſcripturam hanc ordinavit. Et hæc eſt ſcriptura ordinata, 25
Mane, Thecel, Phares. Hæc eſt interpretatio verbi: Mane, menſus eſt 26
Deus regnum tuum, et complevit illud. Thecel, appenſum eſt in ſtatera, 27
et inventum eſt minus habens.

MS.A. (σ) ἐνώπιον ἐμοῦ (τ) ἀναγνῶσιν, (υ) αὐτῆς (φ) σὺ δύνασαι κρίματα συγκρίνειν. (ʹ) γραφὴν ταύτην (χ) περὶ τὸν τράχηλόν σου, (ψ) Τότε ἀπεκρίθη Δανιὴλ (ω) σὺν σοί (α) τῷ βασιλεῖ, ϗ τὴν (β) ἐβούλετο (γ) ἐβούλετο (δ) ἐβούλετο (ε) ὑψοῖ, ϗ οὓς ἐβούλετο (ζ) ὑπερηφανεύσασθαι, (η) αὐτοῦ, (θ) μετὰ ὀνάγρων (ι) ὁ ὕψιστος (κ) ἐὰν (λ) ὁ υἱὸς (μ) ἐνώπιον (ν) ἤνεγκας (ξ) *αἱ (ο) οὐ γινώσκουσιν, (ʹ) τῇ χειρὶ (π) ἡ ἐντεταγμένη,

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

14 *سمعت عنك ان روح الله القدوس فيك * ويقظه وفهم وحكمه مضعفه وجدت فيك *
15 *والان دخل امامي الحكماء المجوس المنجمون * لكي يقراوا هذه الكتابه ويعرفوني تاويلها *
16 فلم يستطيعوا ان يخبروني * وانا سمعت عنك انك تقدر تعبير الكلمات * والان ان
قدرت تقرا الكتابه وتعرفني تاويلها * تلبس برفيرا * ويكون طوق ذهب على عنقك *
17 وتسود ثالث في مملكتي * حينيذ اجاب دانيال وقال امام الملك * عطاياك تكون معك *
18 وموهبه بيتك اعطيها لاخر * وانا اقرا الكتابه للملك * واعرفك بتاويلها * ايها الملك *
19 الاله العلي اعطى لبختنصر ابيك المملكه والعظمه والكرامه والمجد * ومن العظمه
التي اعطاها له * جميع الشعوب والقبايل والالسن كانوا مرتعدين وخايفين من وجهه *
وهو كان يقتل الذين يشا * ويضرب الذين يشا * ويرفع الذين يشا * ويذل الذين
20 يشا * ولما ارتفع قلبه * وقويت روحه ليتعظم * انزل عن كرسي مملكته * ونزعت
21 عنه كرامته * وطرد من البشر * واعطي قلبه مع الوحوش * ومع حمير الوحش كان
مسكنه * واطعموه العشب مثل الثور * وانصبغ جسمه من طل السماء * الى ان عرف
22 ان الله العلي يسود مملكه الناس * ويعطيها لمن يرا * وانت ابنه بلطشاصر لم
23 تواضع قلبك قدام الله * ولا عرفت كل هذه * وترفعت على الرب اله السماء * وقدموا
انيه بيته امامك * وانت وعظماوك وسراريك ونساوك شربت خمرا بهم * والهتك الذهب
والفضه والنحاس والحديد * والخشب والحجاره التي لا تنظر ولا تسمع ولا تعلم سبحتها *
24 والهك الذي نسمتك في يديه وجميع طرقك لم تمجده * لاجل هذا من وجهه ارسلت
25 انمله يد ورسمت هذه الكتابه * وهذه الكتابه المرسومه * مقيس موزون مقسوم *
26 27 *وهذا تاويل الكلمه * مقيس قاس الله مملكتك واكملها * موزون وزنت في الميزان
فوجدت ناقصه *

Audivi de te ſpiritum Dei ſanctum in- 14
eſſe tibi, & vigilantiam, intelligentiam,
& ſapientiam duplicatam in te repe-
riri. Jam ingreſſi ſunt ad me ſapien- 15
tes, magi, aſtrologi; ut ſcripturam hanc
legerent, & interpretationem indicarent
mihi: verùm non potuerunt indicare
mihi. Porrò audivi de te, poſſe te 16
verba interpretari. Jam ſi poſſis hanc
ſcripturam legere, & indicare mihi inter-
pretationem ejus; induêris purpurâ,
eritque collare aureum in collo tuo, &
tertius dominaberis in regno meo. Tunc 17
reſpondit Daniel, dixitque coram re-
ge; Munera tua penes te maneant,
& donum domûs tuæ alteri concede:
ego quidem legam ſcripturam hanc re-
gi, & notam faciam tibi interpreta-
tionem ejus. O rex, Deus ſupremus 18
contulerat Bachtonaſſari patri tuo re-
gnum, magnificentiam, honorem, atque
gloriam: Et propter magnificentiam 19
quam contulerat ei, omnes populi, na-
tiones, & linguæ verebantur & me-
tuebant vultum ejus: & ipſe interfi-
ciebat quos volebat, percutiebat quos
volebat, evehebat quos volebat, et hu-
miliabat quos volebat. Cùm autem 20
elatum fuiſſet cor ejus, et ſpiritus ejus
obfirmatus ad ſuperbiendum; depoſitus
fuit de ſolio regni ſui, et ablatus ab eo
honor ipſius: Ejectus fuit ex homi- 21
nibus, et datum illi cor cum beſtiis,
cum onagris fuit habitatio ejus, cibârunt
eum fœno quaſi boum, et perfuſum
eſt cor ejus rore cœli: quoad cogno-
viſſet Deum ſupremum dominari regno
hominum, et conferre illud cui arbi-
tratus fuerit. Jam tu Baltaſaſar fili- 22
us ejus, non humiliâſti cor tuum co-
ram Deo, neque cognoviſti hæc omnia:
Sed contra Dominum Deum cœli ſuper- 23
biviſti, et obtulerunt tibi vaſa domûs
ejus, et tu ac principes tui, concubinæ
et uxores tuæ bibiſti vinum in eis;
et deos tuos aureos, argenteos, æne-
os, et ferreos, ligneos, atque lapideos,
qui neque vident, neque audiunt, neque
cognoſcunt, laudâſti: Deum verò tu-
um in cujus manibus exiſtit ſpiratio
tua et omnes ſemitæ tuæ, non glorifi-
câſti. Idcircò à conſpectu ejus miſſi 24
ſunt digiti manûs qui ſcripturam hanc
diſpoſuerunt. Cæterùm hæc eſt ſcriptura 25
illa exarata; Menſuratum, Appenſum,
Diviſum. Et hæc eſt interpretatio ver- 26
bi; Menſuratum, menſus eſt Deus re-
gnum tuum, et complevit illud:
Appenſum, appenſum eſt in ſtatera, et 27
inventum eſt deficiens.

דניאל : ו

, purpura Danielem induerunt & , Belſaſar dixit Tunc .*Paras & Madai* eſt datum & ,tuum regnum eſt diviſum ,Peres
28 29 פְּרֵס פְּרִיסַת מַלְכוּתָךְ וִיהִיבַת לְמָדַי וּפָרָס׃ בֵּאדַיִן ׀ אֲמַר בֵּלְשַׁאצַּר וְהַלְבִּשׁוּ לְדָנִיֵּאל אַרְגְּוָנָא
nocte *in* ipſa In .regno in *tertium imperantem exiſtendum ad* quòd ,eo *ſuper* prædicaverunt &:ej° collo *ſuper auri quæ* torques &
30 וְהַמוּנְכָא דִי־דַהֲבָא עַל־צַוְּארֵהּ וְהַכְרִזוּ עֲלוֹהִי דִּי־לֶהֱוֵא שַׁלִּיט תַּלְתָּא בְּמַלְכוּתָא׃ בֵּהּ בְּלֵילְיָא
.duorum & ſexaginta annorum jam ; regnum ſuſcepit Medus Dariaves Et .Chaldæus rex Belſaſar eſt interfect°
31 קְטִיל בֵּלְשַׁאצַּר מַלְכָּא כַשְׂדָּיָא׃ חצי הספר וְדָרְיָוֶשׁ מָדָיָא קַבֵּל מַלְכוּתָא כְּבַר שְׁנִין שִׁתִּין וְתַרְתֵּין׃

CAP. VI. ו

.regno toto in *ex ſtendum ad* qui;viginti & centum *ſecundos rege à* regnum ſuper conſtituit &,Dariaves coram *fuit Pulchrum*
1 שְׁפַר קֳדָם דָּרְיָוֶשׁ וַהֲקִים עַל־מַלְכוּתָא לַאֲחַשְׁדַּרְפְּנַיָּא מְאָה וְעֶשְׂרִין דִּי לֶהֱוֹן בְּכָל־מַלְכוּתָא׃
rex & , *conſilium eis dantes* ipſi principes magni *eſſent* quibus : *eis ex* unus Daniel quibus ,tres *præſides illis ab ſupra* Et
2 וְעֵלָּא מִנְּהוֹן סָרְכִין תְּלָתָה דִּי דָנִיֵּאל חַד מִנְּהוֹן דִּי־לֶהֱוֹן אֲחַשְׁדַּרְפְּנַיָּא אִלֵּין יָהֲבִין לְהוֹן טַעְמָא וּמַלְכָּא
ſpiritus quòd *reſpectu omni* ,magnos principes & *præſides* ſuper *ſuperans* erat ipſe Daniel Tunc .*affectus damno eſſet non*
3 לָא־לֶהֱוֵא נָזִק׃ אֱדַיִן דָּנִיֵּאל דְּנָה הֲוָא מִתְנַצַּח עַל־סָרְכַיָּא וַאֲחַשְׁדַּרְפְּנַיָּא כָּל־קֳבֵל דִּי־רוּחַ
quærentes fuerunt ſatrapæ & , *præſides* Tunc .regnum totum ſuper eum conſtituere cogitabat rex & : eo in *præſtans*
4 יַתִּירָא בֵּהּ וּמַלְכָּא עֲשִׁית לַהֲקָמוּתֵהּ עַל־כָּל־מַלְכוּתָא׃ אֱדַיִן סָרְכַיָּא וַאֲחַשְׁדַּרְפְּנַיָּא הֲווֹ בָעַיִן
reſpectu omni , invenire *valentes* non corruptelam &,occaſionem omnem & : regni parte ex Danielem contra invenire occaſionem
עִלָּה לְהַשְׁכָּחָה לְדָנִיֵּאל מִצַּד מַלְכוּתָא וְכָל־עִלָּה וּשְׁחִיתָה לָא־יָכְלִין לְהַשְׁכָּחָה כָּל־קֳבֵל
non Quia ,*dicentes* iſti viri Tunc .eo *ſuper* inveniretur non corruptela & ,error omnis & , *ipſe* fidelis quòd
5 דִּי־מְהֵימַן הוּא וְכָל־שָׁלוּ וּשְׁחִיתָה לָא הִשְׁתְּכַחַת עֲלוֹהִי׃ אֱדַיִן גֻּבְרַיָּא אִלֵּךְ אָמְרִין דִּי לָא
, *præſides* Tunc .ſui Dei lege in eum contra inveniamus niſi ; occaſionem omnem hunc Danielem contra inveniemus
6 נְהַשְׁכַּח לְדָנִיֵּאל דְּנָה כָּל־עִלָּא לָהֵן הַשְׁכַּחְנָא עֲלוֹהִי בְּדָת אֱלָהֵהּ׃ אֱדַיִן סָרְכַיָּא
inierunt Conſilium .vive *ſecula* in rex Dariaves ,ei *dicentes* ſic & ; *regem ſuper convenerunt tumultuariè* iſti ſatrapæ &
7 וַאֲחַשְׁדַּרְפְּנַיָּא אִלֵּן הַרְגִּשׁוּ עַל־מַלְכָּא וְכֵן אָמְרִין לֵהּ דָּרְיָוֶשׁ מַלְכָּא לְעָלְמִין חֱיִי׃ אִתְיָעַטוּ
; *obvinctionem* roborare & , *regis* ſtatutum ſtatuere , duces & , *ductores* , ſatrapæ & , magiſtratus , regni *præſides* omnes
כֹּל ׀ סָרְכֵי מַלְכוּתָא סִגְנַיָּא וַאֲחַשְׁדַּרְפְּנַיָּא הַדָּבְרַיָּא וּפַחֲוָתָא לְקַיָּמָה קְיָם מַלְכָּא וּלְתַקָּפָה אֱסָר
lacum in projiciatur , rex te à niſi , triginta dies ad uſque homine & Deo omni ab petitionem petierit qui omnis quòd
דִּי כָל־דִּי־יִבְעֵה בָעוּ מִן־כָּל־אֱלָהּ וֶאֱנָשׁ עַד־יוֹמִין תְּלָתִין לָהֵן מִנָּךְ מַלְכָּא יִתְרְמֵא לְגֹב
non ut ,*Paras & Madai* legem juxta *mutandum ad* non ut ; ſcripturam *deſignabis* & ,*obvinctionem confirmabis* rex Nunc .leonum
8 אַרְיָוָתָא׃ כְּעַן מַלְכָּא תְּקִים אֱסָרָא וְתִרְשֻׁם כְּתָבָא דִּי לָא לְהַשְׁנָיָה כְּדָת־מָדַי וּפָרַס דִּי־לָא
deſignata quòd cognovit quando Daniel Et .*obvinctionem* &,ſcripturam *deſignavit* Dariaves rex , *hoc reſpectu Omni* .tranſgrediatur
9 10 תֶעְדֵּא׃ כָּל־קֳבֵל דְּנָה מַלְכָּא דָּרְיָוֶשׁ רְשַׁם כְּתָבָא וֶאֱסָרָא׃ וְדָנִיֵּאל כְּדִי יְדַע דִּי־רְשִׁים
die in tribus temporibus & : Jeruſalaim contra ſuo cænaculo in *ſibi* apertis feneſtris & ; ſuam domum in eſt ingreſſus , ſcriptura
כְּתָבָא עַל לְבַיְתֵהּ וְכַוִּין פְּתִיחָן לֵהּ בְּעִלִּיתֵהּ נֶגֶד יְרוּשְׁלֶם וְזִמְנִין תְּלָתָה בְּיוֹמָא
.*hoc ante ab faciens fuerat quo pacto omni* Domino coram *confitens* & , *orans* & , ſua genua ſuper *genuflectens ipſe*
הוּא ׀ בָּרֵךְ עַל־בִּרְכוֹהִי וּמְצַלֵּא וּמוֹדֵא קֳדָם אֱלָהֵהּ כָּל־קֳבֵל דִּי־הֲוָא עָבֵד מִן־קַדְמַת דְּנָה׃
.ſuo Deo coram deprecantem & *poſtulantem* Danielem invenerunt &,*venerunt tumultuariè* illi viri Tunc
11 אֱדַיִן גֻּבְרַיָּא אִלֵּךְ הַרְגִּשׁוּ וְהַשְׁכַּחוּ לְדָנִיֵּאל בָּעֵא וּמִתְחַנַּן קֳדָם אֱלָהֵהּ׃

Verſio VULG. LAT.

PHARES: diviſum eſt regnum tuum, & datum eſt 28
Medis & Perſis. Tunc, jubente rege, indutus eſt Daniel 29
purpurâ, & circumdata eſt torques aurea collo ejus: &
prædicatum eſt de eo quòd haberet poteſtatem tertius in
regno ſuo. Eâdem nocte interfectus eſt Baltaſſar rex Chal- 30
dæus. Et Darius Medus ſucceſſit in regnum annos natus 31
ſexaginta duos.

CAP. VI.

PLacuit Dario, & conſtituit ſuper regnum ſatrapas cen- 1
tum viginti, ut eſſent in toto regno ſuo: Et ſuper eos 2
principes tres, ex quibus Daniel unus erat: ut ſatrapæ illis
redderent rationem, & rex non ſuſtineret moleſtiam. Igi- 3
tur Daniel ſuperabat omnes principes & ſatrapas: quia
ſpiritus Dei amplior erat in illo. Porrò rex cogitabat 4
conſtituere eum ſuper omne regnum: undè principes &
ſatrapæ quærebant occaſionem ut invenirent Danieli ex la-
tere regis: nullámque cauſam & ſuſpicionem reperire po-
tuerunt, eò quòd fidelis eſſet, & omnis culpa & ſuſpicio
non inveniretur in eo. Dixerunt ergò viri illi; Non in- 5
veniemus Danieli huic aliquam occaſionem, niſi fortè in
lege Dei ſui. Tunc principes & ſatrapæ ſurripuerunt re- 6
gi, & ſic locuti ſunt ei; Dari rex, in æternum vive: Con- 7
ſilium inierunt omnes principes regni tui, magiſtratus, &
ſatrapæ, ſenatores, & judices, ut decretum imperatorium
exeat, & edictum: Ut omnis qui petierit aliquam petitio-
nem à quocunque Deo & homine, uſque ad triginta dies,
niſi à te, rex, mittatur in lacum leonum. Nunc itaque, rex, 8
confirma ſententiam, & ſcribe decretum: ut non immute-
tur quod ſtatutum eſt à Medis & Perſis, nec prævaricari
cuiquam liceat. Porrò rex Darius propoſuit edictum, & 9
ſtatuit. Quod cùm Daniel comperiſſet, id eſt, conſtitu- 10
tam legem, ingreſſus eſt domum ſuam: & feneſtris apertis
in cœnaculo ſuo contra Jeruſalem tribus temporibus in
die flectebat genua ſua, & adorabat, confitebatúrque co-
ram Deo ſuo, ſicut & antè facere conſueverat. Viri ergò 11
illi curioſiùs inquirentes, invenerunt Danielem orantem &
obſecrantem Deum ſuum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

28 * ܦܪܣ. ܦܪܝܣܐ ܗܝ ܡܠܟܘܬܟ ܘܝܗܝܒܐ ܠܡܕܝܐ ܘܠܦܪܣܝܐ. * ܗܝܕܝܢ ܐܡܪ ܡܠܟܐ 29
ܒܠܛܫܐܨܪ. ܘܐܠܒܫܘܗܝ ܠܕܢܝܐܝܠ ܐܪܓܘܢܐ. ܘܗܡܝܢܟܐ ܕܕܗܒܐ ܒܨܘܪܗ. ܘܐܟܪܙܘ ܥܠܘܗܝ
ܕܢܗܘܐ ܫܠܝܛ. ܬܠܬܐ ܒܡܠܟܘܬܐ. * ܒܗ ܒܠܠܝܐ. ܐܬܩܛܠ ܒܠܛܫܐܨܪ ܡܠܟܐ ܟܠܕܝܐ. 30
ܘܕܪܝܘܫ ܡܕܝܐ ܩܒܠ ܡܠܟܘܬܐ .• ܐܝܟ ܒܪ ܫܢܝܢ ܫܬܝܢ ܘܬܪܬܝܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܘ̄ *

* ܫܦܪ ܩܕܡ ܕܪܝܘܫ .• ܘܐܩܝܡ ܒܡܠܟܘܬܗ ܪܒܝ ܚܝܠܐ ܡܐܐ ܘܥܣܪܝܢ. ܕܢܗܘܘܢ ܒܟܠܗ 1
ܡܠܟܘܬܗ. * ܘܥܠ ܗܠܝܢ ܡܕܒܪܢܐ ܬܠܬܐ. ܘܕܢܝܐܝܠ ܚܕ ܡܢܗܘܢ. ܕܢܗܘܘܢ ܪܒܝ 2
ܚܝܠܐ ܗܠܝܢ ܝܗܒܝܢ ܠܗܘܢ ܚܘܫܒܢܐ .• ܘܡܠܟܐ ܠܐ ܢܗܘܐ ܡܬܢܙܩ. * ܗܝܕܝܢ 3
ܕܢܝܐܝܠ ܡܬܝܬܪ ܗܘܐ. ܥܠ ܟܠܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܪܘܚܐ ܡܝܬܪܬܐ ܐܝܬ ܗܘܐ ܒܗ .• ܘܡܠܟܐ
ܐܬܚܫܒ ܠܡܩܡܘܬܗ. ܥܠ ܟܠܗ ܡܠܟܘܬܗ. * ܗܝܕܝܢ ܡܕܒܪܢܐ ܘܪܒܝ ܚܝܠܐ .• ܒܥܝܢ 4
ܗܘܘ ܥܠܬܐ ܕܢܫܟܚܘܢ ܥܠ ܕܢܝܐܝܠ ܡܢ ܨܒܘܬ ܡܠܟܘܬܐ. ܘܟܠ ܣܥܪܐ ܘܥܠܬܐ. ܠܐ ܐܫܟܚܘ
ܒܗ. ܡܛܠ ܕܡܗܝܡܢ ܗܘܐ ܠܐܠܗܗ. ܘܟܕ ܣܘܪܚܢܐ ܕܥܘܠܬܐ. ܠܐ ܐܫܟܚܘ ܒܗ.
* ܐܡܪܝܢ ܓܒܪܐ ܗܢܘܢ .• ܠܐ ܡܫܟܚܝܢ ܥܠ ܕܢܝܐܝܠ ܗܢܐ ܥܠܬܐ .• ܐܠܐ ܐܢ ܢܫܟܚ ܒܢܡܘܣܗ 5
ܕܐܠܗܗ ܕܝܠܗ. * ܗܝܕܝܢ ܩܪܒܘ ܡܕܒܪܢܐ ܘܪܒܝ ܚܝܠܐ ܠܘܬ ܡܠܟܐ. ܘܐܡܪܝܢ ܠܗ. 6
ܕܪܝܘܫ ܡܠܟܐ. ܠܥܠܡ ܚܝܝ. * ܐܬܡܠܟܘ ܟܠܗܘܢ ܡܕܒܪܢܐ ܡܠܟܘܬܐ : ܘܗܘܦܪܟܐ 7
ܘܪܒܝ ܚܝܠܐ ܘܡܪܘܬܐ .• ܠܡܩܡܘ ܩܝܡܐ ܡܠܟܝܐ. ܘܠܡܬܩܦܘ ܐܣܪܐ. ܕܟܠ ܕܢܒܥܐ ܒܥܘ
ܡܢ ܟܠ ܐܠܗ ܘܐܢܫ .• ܥܕܡܐ ܠܝܘܡܝܢ ܬܠܬܝܢ : ܐܠܐ ܡܢܟ ܡܠܟܐ .• ܢܬܪܡܐ
ܒܓܘܒܐ ܕܐܪܝܘܬܐ. * ܡܟܝܠ ܡܠܟܐ .• ܬܦܩܘܕ ܦܘܩܕܢܐ ܗܢܐ. ܘܬܟܬܘܒ ܟܬܒܐ. ܕܠܐ 8
ܢܥܒܪ. ܒܢܡܘܣܐ ܕܡܕܝ ܘܦܪܣ. ܘܠܐ ܢܫܬܚܠܦ. * ܗܝܕܝܢ ܕܪܝܘܫ ܡܠܟܐ .• ܪܫܡ 9
ܟܬܒܐ. ܘܦܩܕ ܦܘܩܕܢܐ. * ܘܟܕ ܝܕܥ ܕܢܝܐܝܠ ܕܐܬܪܫܡ ܟܬܒܐ .• ܥܠ ܠܒܝܬܗ. 10
ܘܟܘܐ ܦܬܝܚܢ ܗܘܝ ܒܥܠܝܬܗ. ܠܘܩܒܠ ܐܘܪܫܠܡ. ܘܬܠܬ ܙܒܢܝܢ ܒܝܘܡܐ ܒܪܟ ܗܘܐ
ܥܠ ܒܘܪܟܘܗܝ .• ܘܡܨܠܐ ܘܡܘܕܐ ܩܕܡ ܐܠܗܗ. ܐܝܟܢܐ ܕܥܒܕ ܗܘܐ ܡܢ ܩܕܝܡ. * ܗܝܕܝܢ 11
ܓܒܪܐ ܗܢܘܢ .• ܢܩܦܘ ܘܐܫܟܚܘܗܝ ܠܕܢܝܐܝܠ .• ܟܕ ܒܥܐ. ܘܡܬܟܫܦ ܩܕܡ ܐܠܗܗ.

Pheres, diviſum eſt regnum tuum, traditúm- 28
que Medis ac Perſis. Tunc edixit rex Blit- 29
ſaſar, & induerunt Danielem purpureis, &
torques aureus fuit impoſitus collo ejus, &
proclamaverunt de eo ipſum dominaturum
tertiæ regni parti. Eâdem nocte interfectus 30
eſt Blitſaſar rex Chaldæus: & Darius Me-
dus regnum accepit natus annos circiter ſex-
aginta duos.

CAP. VI

PLacuit autem Dario creare in regno ſuo 1
duces militiæ centum viginti, qui præeſſent
toti regno ſuo: Et ſuper iſtos, præſides tres, 2
quorum unus fuit Daniel; ut duces illi mili-
tiæ his rationem redderent, ac proinde rex
nullâ moleſtiâ afficeretur. Tunc Danielem, 3
ut erat cæteris præſtantior, eò quòd excel-
lentiori ſpiritu præditus eſſet; cogitavit rex
univerſo regno ſuo præficere. Tunc præſi- 4
des & militiæ duces, quærebant occaſionem
aliquam contra Danielem invenire ab admi-
niſtratione regni: ſed nullum crimen aut
occaſionem invenerunt adverſus eum, quòd
fidelis eſſet in Deo ſuo. Cùm ergò nullius cri-
men facinoris inveniſſent adverſus eum, Di- 5
xerunt viri illi; Nullam reperiemus contra
Danielem iſtum occaſionem, niſi reperiamus
aliquid adverſus eum in lege Dei ſui. Tunc 6
accedentes præſides & militiæ duces ad re-
gem, dixerunt ei; Darie rex, æternum vive:
Decreverunt omnes regni præſides, proce- 7
res, militiæ duces, ac domini, fœdus inire
in *honorem* regis, & obſtringere ſe vinculo:
ut quicunque petierit petitionem ab ullo deo
aut homine uſque ad dies triginta, præter-
quàm à te rex, conjiciatur in foveam leonum.
Itaque rex, mandatum hoc imperes, & ſcri- 8
ptum exarares, quòd juxta legem Medorum
& Perſarum non excidat néve immutetur.
Tunc Darius rex ſcriptum exaravit, & man- 9
davit edictum. Daniel autem cùm noviſſet 10
exaratum eſſe ſcriptum, ingreſſus eſt domum
ſuam. Porrò feneſtræ erant apertæ cœnaculo
ejus Jeroſolymam verſus, tribúſque vici-
bus quotidie in genua procumbens orabat et
gratias agebat Deo ſuo, quemadmodum fa-
ciebat antea. Tunc viri illi obſervantes 11
deprehenderunt Danielem precantem atque
ſupplicantem coram Deo ſuo.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

28 φάρες, διῄρηται ἡ βασιλεία σου, καὶ ἐδόθη Μήδοις καὶ Πέρσαις. Καὶ εἶπε Βαλτάσαρ, καὶ ἐνέδυσαν τὸν
29 Δανιὴλ πορφύραν, καὶ τὸν μανιάκην τὸν χρυσοῦν περιέθηκαν περὶ τὸν τράχηλον αὐτοῦ, καὶ ἐκήρυξε περὶ
30 αὐτοῦ, (ρ) εἶναι αὐτὸν ἄρχοντα τρίτον ἐν τῇ (σ) βασιλείᾳ. † Ἐν αὐτῇ τῇ νυκτὶ ἀνῃρέθη (τ) Βαλτάσαρ ὁ βασι-
31 λεὺς ὁ Χαλδαῖος, Καὶ Δαρεῖος ὁ Μῆδος παρέλαβε τὴν βασιλείαν, ὢν ἐτῶν ἑξήκοντα δύο.

MS.A. (ρ) τοῦ εἶναι (σ) βασιλείᾳ αὐτοῦ. † "ΟΡΑΣΙΣ ϛʹ. "ΟΡΑΣΙΣ ζʹ. (τ) Βαλτάσαρ, καὶ Δαρεῖος

Phares, diviſum eſt regnum tuum, & datum eſt Medis & Perſis. Et 28
dixit Baltaſar: & induerunt Danielem purpurâ, & torquem aureum 29
circundederunt collo ejus: & prædicavit de eo, ipſum eſſe principem ter-
tium in regno. In eadem nocte interfectus eſt Baltaſar rex Chaldæus: 30
Et (e) Darius Medus aſſumpſit regnum, annos natus ſexaginta duos. 31

ΚΕΦ. ϛʹ.

1 ΚΑὶ ἤρεσεν ἐνώπιον Δαρείου, καὶ κατέστησεν ἐπὶ τῆς βασιλείας σατράπας ἑκατὸν εἴκοσι, τοῦ εἶναι αὐτοὺς ἐν
2 (α) ὅλῃ τῇ βασιλείᾳ αὐτοῦ, Καὶ ἐπάνω αὐτῶν τακτικοὺς τρεῖς, (β) ὃς ἦν Δανιὴλ εἷς ἐξ αὐτῶν, τοῦ
3 ἀποδιδόναι αὐτοῖς τοὺς σατράπας λόγον, ὅπως ὁ βασιλεὺς μὴ ἐνοχλῆται. Καὶ ἦν Δανιὴλ ὑπὲρ αὐτούς,
4 ὅτι πνεῦμα περισσὸν (γ) ἐν αὐτῷ, Καὶ ὁ βασιλεὺς κατέστησεν αὐτὸν ἐφ' ὅλης τῆς βασιλείας αὐτοῦ. καὶ
οἱ τακτικοὶ καὶ οἱ σατράπαι ἐζήτουν πρόφασιν εὑρεῖν κατὰ Δανιήλ· καὶ πᾶσαν πρόφασιν καὶ παράπτωμα καὶ
(δ) ἀμπλάκημα οὐχ εὗρον κατ' αὐτοῦ, ὅτι πιστὸς ἦν. Καὶ εἶπον οἱ τακτικοί, Οὐχ εὑρήσομεν κατὰ Δανιὴλ
6 πρόφασιν, εἰ μὴ ἐν (ε) νομίμοις Θεοῦ αὐτοῦ. Τότε οἱ τακτικοὶ καὶ οἱ σατράπαι παρέστησαν τῷ βασιλεῖ,
7 καὶ εἶπαν αὐτῷ, Δαρεῖε βασιλεῦ, εἰς τοὺς αἰῶνας ζῆθι. Συνεβουλεύσαντο πάντες οἱ ἐπὶ τῆς βασιλείας σου
στρατηγοὶ καὶ σατράπαι, ὕπατοι καὶ τοπάρχαι, τοῦ στῆσαι (ζ) στάσει βασιλικῇ, καὶ ἐνισχῦσαι ὁρισμόν, ὅπως
ὃς ἂν (η) αἰτήσῃ αἴτημα παρὰ παντὸς Θεοῦ καὶ (ι) ἀνθρώπου, ἕως ἡμερῶν τριάκοντα, ἀλλ' ἢ παρὰ σοῦ βα-
8 σιλεῦ, (") ἐμβληθήσεται εἰς τὸν λάκκον τῶν λεόντων. Νῦν οὖν βασιλεῦ στῆσον (θ) τὸν ὁρισμόν, καὶ ἔκθες
9 γραφήν, ὅπως μὴ ἀλλοιωθῇ τὸ δόγμα (ι) Περσῶν καὶ Μήδων. Τότε ὁ βασιλεὺς Δαρεῖος ἐπέταξε γρα-
10 φῆναι τὸ δόγμα. Καὶ Δανιὴλ ἡνίκα ἔγνω ὅτι ἐνετάγη τὸ δόγμα, εἰσῆλθεν εἰς τὸν οἶκον (κ) αὐτοῦ·
καὶ αἱ θυρίδες (λ) ἀνεῳγμέναι αὐτῷ ἐν τοῖς ὑπερῴοις αὐτοῦ κατέναντι Ἱερουσαλήμ, καὶ καιροὺς τρεῖς τῆς ἡμέ-
ρας ἦν κάμπτων ἐπὶ τὰ γόνατα αὐτοῦ, καὶ προσευχόμενος καὶ ἐξομολογούμενος ἐναντίον τοῦ Θεοῦ αὐτοῦ,
11 καθὼς ἦν ποιῶν ἔμπροσθεν. Τότε οἱ ἄνδρες ἐκεῖνοι παρετήρησαν, καὶ εὗρον τὸν Δανιὴλ ἀξιοῦντα καὶ
δεόμενον τοῦ Θεοῦ αὐτοῦ.

CAP. VI.

ET placuit coram Dario: & conſtituit ſupra regnum Satrapas centum 1
viginti, ut eſſent in toto regno ſuo: Et ſuper eos (a) Ordinatores tres, 2
quorum erat Daniel unus ex eis, ut Satrapæ illis redderent rationem; ut
rex non ſuſtineret moleſtias. Et erat Daniel ſuper eos: quia ſpiritus am- 3
plior erat in eo: Et rex (b) conſtituit eum ſuper omne regnum ſuum. 4
Et Ordinatores, & Satrapæ quærebant invenire occaſionem contra (c)
Danielem: & omnem occaſionem & delictum, & (d) peccatum non in-
venerunt in illo, eò quòd fidelis erat. Et dixerunt Ordinatores; Non 5
inveniemus contra Danielem occaſionem, niſi in legitimis Dei ſui. Tunc 6
Ordinatores, & Satrapæ aſtiterunt regi, & dixerunt ei; Dari rex, in æ-
ternum vive. Conſilium inierunt omnes, qui ſuper regnum tuum, Duces, 7
& Satrapæ, Conſules, & Toparchæ, ſtatuere ſtatuto regio, & confirma-
re conſtitutionem; ut quicunque petierit petitionem à quocunque Deo, &
homine, uſque ad triginta dies, niſi à te, rex; mittatur in lacum leonum.
Nunc igitur, rex, ſtatue conſtitutionem, & propone ſcripturam; ut non im- 8
mutetur decretum Perſarum, & Medorum. Tunc rex Darius juſſit ſcribi 9
decretum. Et Daniel, quando cognovit conſtitutum eſſe decretum, in- 10
travit in domum ſuam: & feneſtræ apertæ ei in cœnaculis ſuis contra
Hieruſalem: & tribus temporibus diei erat flectens ſe ſuper genua ſua,
& orans, & confitens coram Deo ſuo, ſicut antè facere conſueverat. Tunc 11
viri illi obſervârunt, & invenerunt Danielem obſecrantem, & orantem
Deum ſuum.

MS.A. (α) πάσῃ τῇ (β) ὧν (γ) ἦν ἐπ' αὐτῷ, (δ) ἀμβλάκημα (ε) νόμοις (ζ) στάσιν βασιλικήν, (η) αἰτήσηται αἴτημα (ι) ἀνθρώπων, (") ἐμβληθήσεται (θ) ὁρισμόν,
(ι) Μήδων καὶ Περσῶν. (κ) ἑαυτοῦ· (λ) ἠνεῳγμέναι

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

28 * مقسوم قسمت مملكتك ودفعت للماهيين والفرس * حينيذ قال بلطشاصر * فالبسوا دانيال 29
البرفير * ووضعوا طوق الذهب على عنقه * ونادي من اجله ان يكون رييسا ثالثا في مملكته *
30 * وفي هذه الليلة قتل بلطشاصر الملك الكلداني *

* الفصل السادس *

* الرويا السابع *

1 * وداريوس الماهي اخذ المملكة وهو نحو من اثنين وستين سنة * وحسن امام داريوس *
2 واقام على المملكة عظماء جيوش مايه وعشرين * ليكونوا في كل مملكته * وفوقهم ثلاث
ولاة * وكان دانيال واحدا منهم * ليعطي عظماء الجيوش القول لهم * كيلا يتاذا الملك *
3 4 * وكان دانيال فوقهم * لان روحا مضعفة كانت له * واقامه الملك على مملكته * والولاة
وعظماء الجيوش تطلبوا ليجدوا علة على دانيال * فلم يجدوا عليه كل علة ولا زلة ولا
5 6 جريمة * لانه كان امينا * فقالت الولاة * لم نجد على دانيال علة الا بنواميس الهه * حينيذ
7 وقفت الولاة وعظماء الجيوش للملك * وقالوا له * يا داريوس الملك عش الي الدهور * تشاور
جميع الذين على مملكتك * الجند وعظماء الجيوش * والوزراء ورؤساء المواضع * ان يقيموا
عهدا ملوكيا * ويرسموا رسما * لكي من يلتمس مسيلة من اله ومن البشر الي ثلثين يوما
8 الا منك ايها الملك * يلقي في جب الاسد * والان ايها الملك اقم رسما وضع كتابة *
9 كيلا يتغير راي الماديين والفرس * حينيذ الملك داريوس امر ان يكتب هذا الراي *
10 * وحين علم دانيال ان هذا الراي رسم * دخل الي بيته * وكانت له طاقات مفتوحة في علاليه
بازاء ايروسليم * وثلاث اوقات في اليوم كان يجثوا على ركبتيه ويصلي ويعترف امام
11 الهه * كما كان يصنع من قبل * حينيذ اوليك الرجال ترصدوا * فوجدوا دانيال يطلب
ويتضرع امام الهه *

Diviſum, diviſum eſt regnum tuum, 28
traditúmque Medis ac Perſis. Tunc 29
edicente Baltaſaſare, induerunt Danie-
lem purpurâ, & impoſuerunt collare
aureum ſuper collum ejus, & procla-
mavit de eo, quòd eſſet princeps ter-
tius in regno ſuo. Eâdem nocte in- 30
terfectus eſt Baltaſaſar rex Chaldæus.

CAP. VI.

Viſio ſeptima.

DArius autem Medus accepit re- 1
gnum dum annum ageret circiter ſexa-
geſimum ſecundum. Placuitque Dario
præficere regno principes militiæ centum
viginti, ut eſſent in toto regno ſuo:
Et ſuper hos, tres eparchos; (erat au- 2
tem Daniel unus ex iſtis) ut ad hos
rem deferrent principes militiæ, ne rex
moleſtiam pateretur. Cùm ergò Daniel 3
his ſuperior eſſet, eò quòd duplicatum
ſpiritum haberet; & rex præfeciſſet
eum regno ſuo: Eparchi & princi- 4
pes militiæ exoptaverunt invenire oc-
caſionem aliquam contra Danielem. Ve-
rùm non invenientes contra eum ullam
occaſionem, culpam, aut facinus, eò
quòd fidelis eſſet: Dixerunt eparchi, 5
Non inveniemus contra Danielem oc-
caſionem ullam, niſi prætextu legum
Dei ſui. Tunc eparchi & principes 6
militiæ aſtantes regi, dixerunt ei; O
Darie rex, in ſecula vive: Conſilium 7
inierunt omnes præfecti regni tui, mi-
lites, & duces militiæ, proreges, &
toparchæ, de ſtatuendo fœdere regio,
& ſtatutum decernendo; ut quicunque
petitionem rogaret ab ullo deo aut
homine uſque ad triginta dies; præ-
terquam à te O rex; projiciatur in
foveam leonum. Nunc igitur O rex, 8
decerne ſtatutum, & propone ſcripturam,
ne mutetur ſententia Medorum & Per-
ſarum. Tunc Darius rex juſſit ut 9
ſcriberetur decretum illud. Cùmque 10
reſciviſſet Daniel exaratam eſſe de-
cretum illud, ingreſſus eſt domum ſu-
am. Habebat autem feneſtras apertas
in cœnaculis ſuis ex adverſo Jeroſo-
lyme, & tribus vicibus quotidie flexis
genibus orabat & confitebatur Deo
ſuo, quemadmodum antehac faciebat.
Tunc illi viri obſervantes, & depre- 11
hendentes Danielem precantem & obſe-
crantem coram Deo ſuo;

דניאל : ו

petierit qui homo omnis quòd ,designâsti *obvinctionem* Nónne , *regis obvinctione* super rege coram *dicentes* & ,accesserunt Tunc
12 בֵּאדַיִן קְרִבוּ וְאָמְרִין קֳדָם־מַלְכָּא עַל־אֱסָר מַלְכָּא הֲלָא אֱסָר רְשַׁמְתָּ דִּי כָל־אֱנָשׁ דִּי־יִבְעֵא
,dixit & , rex respondit ? leonum lacum in projiceretur , rex te à nisi , triginta dies ad usque homine & ,Deo omni ab
מִן־כָּל־אֱלָהּ וֶאֱנָשׁ עַד־יוֹמִין תְּלָתִין לָהֵן מִנָּךְ מַלְכָּא יִתְרְמֵא לְגוֹב אַרְיָוָתָא עָנֵה מַלְכָּא וְאָמַר
Daniel quod , rege coram *dicentes* & ,responderunt Tunc .transgredietur non qui , *Paras & Madai* legem juxta sermo *Constans*
13 יַצִּיבָא מִלְּתָא כְּדָת־מָדַי וּפָרַס דִּי־לָא תֶעְדֵּא׃ בֵּאדַיִן עֲנוֹ וְאָמְרִין קֳדָם מַלְכָּא דִּי דָנִיֵּאל
temporibus & : *designâsti quam obvinctionem super* & , *rationem* rex te super posuit non , Jehudah *quæ* captivitatis filiis de qui
דִּי מִן־בְּנֵי גָלוּתָא דִּי יְהוּד לָא־שָׂם עֲלָךְ מַלְכָּא טְעֵם וְעַל־אֱסָרָא דִּי רְשַׁמְתָּ וְזִמְנִין
Daniel super & ,*eo super fuit malum* multùm ,audisset sermonem cùm , rex Tunc .suam petitionem *petens* die in tribus
14 תְּלָתָה בְּיוֹמָא בָּעֵא בָּעוּתֵהּ׃ אֱדַיִן מַלְכָּא כְּדִי מִלְּתָא שְׁמַע שַׂגִּיא בְּאֵשׁ עֲלוֹהִי וְעַל דָּנִיֵּאל
tumultuariè venerunt illi viri Tunc .eum eruere *satagens fuit* Solis *occasum* ad usq; &:eum *eruendum ad* ,*cor* posuit
15 שָׂם בָּל לְשֵׁיזָבוּתֵהּ וְעַד מֶעָלֵי שִׁמְשָׁא הֲוָה מִשְׁתַּדַּר לְהַצָּלוּתֵהּ׃ בֵּאדַיִן גֻּבְרַיָּא אִלֵּךְ הַרְגִּשׁוּ
rex quod statutum & , *obvinctionem omnem* quòd ,*Paras & Madai* lex quòd , rex Scito , regi *dicentes &* ,*regem super*
עַל־מַלְכָּא וְאָמְרִין לְמַלְכָּא דַּע מַלְכָּא דִּי־דָת לְמָדַי וּפָרַס דִּי־כָל־אֱסָר וּקְיָם דִּי־מַלְכָּא
respondit : leonum *τῶν* lacum in projecerunt & , Danielem adduxerunt &,dixit rex Tunc .mutandum *ad* non , statuerit
16 יְהָקֵים לָא לְהַשְׁנָיָה׃ בֵּאדַיִן מַלְכָּא אֲמַר וְהַיְתִיו לְדָנִיֵּאל וּרְמוֹ לְגֻבָּא דִּי אַרְיָוָתָא עָנֵה
, unus lapis est allatus Et .te eripiet ipse , *continuatione in ei serviens* tu cui , tuus Deus ,Danielem ad dixit & , rex
17 מַלְכָּא וְאָמַר לְדָנִיֵּאל אֱלָהָךְ דִּי אַנְתְּה פָּלַח־לֵהּ בִּתְדִירָא הוּא יְשֵׁיזְבִנָּךְ׃ וְהֵיתָיִת אֶבֶן חֲדָה
voluntas *immutaretur* non ut ,suorum principum annulo *in* &,suo annulo *in* rex *eum* obsignavit & :laci os super est positus &
וְשֻׂמַת עַל־פֻּם גֻּבָּא וְחַתְמַהּ מַלְכָּא בְּעִזְקְתֵהּ וּבְעִזְקָת רַבְרְבָנוֹהִי דִּי לָא־תִשְׁנֵא צְבוּ
est elongatus ejus somnus & : *se* coram *introduci fecit* non *mensam* &,*jejunus pernoctavit* &,suum palatium in rex abiit Tunc .Daniele in
18 בְּדָנִיֵּאל׃ אֱדַיִן אֲזַל מַלְכָּא לְהֵיכְלֵהּ וּבָת טְוָת וְדַחֲוָן לָא־הַנְעֵל קֳדָמוֹהִי וְשִׁנְתֵּהּ נַדַּת
.perrexit leonum *τῶν* lacum ad festinatione cum & , *splendore in* surrexit diluculo *in* rex Tunc .eo *super*
19 עֲלוֹהִי׃ בֵּאדַיִן מַלְכָּא בִּשְׁפַרְפָּרָא יְקוּם בְּנָגְהָא וּבְהִתְבְּהָלָה לְגֻבָּא דִּי־אַרְיָוָתָא אֲזַל׃
Dei serve Daniel , Danielem ad dixit & , rex *respondit*: vocavit *dolenti* voce *in* Danielem , lacui *eum appropinquare secundùm* Et
20 וּכְמִקְרְבֵהּ לְגֻבָּא לְדָנִיֵּאל בְּקָל עֲצִיב זְעִק עָנֵה מַלְכָּא וְאָמַר לְדָנִיֵּאל דָּנִיֵּאל עֲבֵד אֱלָהָא
rege cum Daniel Tunc ? leonibus à te liberare potuit nunquid ,*perseverantia in ei serviens* tu cui,tuꝰ Deus,viventis
21 חַיָּא אֱלָהָךְ דִּי אַנְתְּה פָּלַח־לֵהּ בִּתְדִירָא הֲיִכִל לְשֵׁיזָבוּתָךְ מִן־אַרְיָוָתָא׃ אֱדַיִן דָּנִיֵּאל עִם־מַלְכָּא
quod respectu omni ,me *corrupere* non & ,leonum os conclusit & ,suum angelum misit meus Deus .vive *secula in* Rex , est locutus
22 מַלִּל מַלְכָּא לְעָלְמִין חֱיִי׃ אֱלָהִי שְׁלַח מַלְאֲכֵהּ וּסֲגַר פֻּם אַרְיָוָתָא וְלָא חַבְּלוּנִי כָּל־קֳבֵל דִּי
,eo super fuit *bonum multùm* rex Tunc .feci non corruptelam rex te coram etiam &,mihi est inventa *puritas* eo coram
23 קֳדָמוֹהִי זָכוּ הִשְׁתְּכַחַת לִי וְאַף קֳדָמָךְ מַלְכָּא חֲבוּלָה לָא עַבְדֵת׃ בֵּאדַיִן מַלְכָּא שַׂגִּיא טְאֵב עֲלוֹהִי
quia ,eo in est inventa non *corruptio* omnis &,lacu de Daniel est *factus ascendere* &:lacu de *faciendum ascendere ad dixit* Danielem &
וּלְדָנִיֵּאל אֲמַר לְהַנְסָקָה מִן־גֻּבָּא וְהֻסַּק דָּנִיֵּאל מִן־גֻּבָּא וְכָל־חֲבָל לָא־הִשְׁתְּכַח בֵּהּ דִּי
sunt projecti leonũ lacũ in &,Daniel *quæ ejꝰ accusationes* accusaverũt qui illi viri sunt adducti & ,rex dixit Et .suo Deo *in* credidit
24 הֵימִן בֵּאלָהֵהּ׃ וַאֲמַר מַלְכָּא וְהַיְתִיו גֻּבְרַיָּא אִלֵּךְ דִּי־אֲכַלוּ קַרְצוֹהִי דִּי דָנִיֵּאל וּלְגֹב אַרְיָוָתָא רְמוֹ
.contriverunt eorum ossa omnia & ,leones eis in sunt dominati donec , laci *fundum* ad pervenerunt non &:eorũ uxores &,eorum filii , ipsi
אִנּוּן בְּנֵיהוֹן וּנְשֵׁיהוֹן וְלָא־מְטוֹ לְאַרְעִית גֻּבָּא עַד דִּי־שְׁלִטוּ בְהוֹן אַרְיָוָתָא וְכָל־גַּרְמֵיהוֹן הַדִּקוּ׃

Verſio VULG. LAT.

Et accedentes locuti ſunt regi ſuper edicto ; Rex, numquid non conſtituiſti, ut omnis homo, qui rogaret quemquam de diis & hominibus, uſque ad dies triginta, niſi te, rex, mitteretur in lacum leonum? Ad quos reſpondens rex, ait ; Verus eſt ſermo, juxta decretum Medorum atque Perſarum, quod prævaricari non licet. 12 Tunc reſpondentes dixerunt coram rege ; Daniel de filiis captivitatis Juda, non curavit de lege tua, & de edicto quod conſtituiſti: ſed tribus temporibus per diem orat obſecratione ſuâ. 13 Quod verbum cùm audîſſet rex, ſatìs contriſtatus eſt : & pro Daniele poſuit cor ut liberaret eum, & uſque ad occaſum Solis laborabat ut erueret illum. 14 Viri autem illi intelligentes regem, dixerunt ei ; Scito, rex, quia lex Medorum atque Perſarum eſt, ut omne decretum, quod conſtituerit rex, non liceat immutari. 15 Tunc rex præcepit ; & adduxerunt Danielem, & miſerunt eum in lacum leonum. Dixitque rex Danieli ; Deus tuus, quem colis ſemper, ipſe liberabit te. 16 Allatúſque eſt lapis unus, & poſitus eſt ſuper os laci : quem obſignavit rex annulo ſuo, & annulo optimatum ſuorum, nequid fieret contra Danielem. 17 Et abiit rex in domum ſuam, & dormivit incœnatus, cibíque non ſunt allati coram eo, inſupèr & ſomnus receſſit ab eo. 18 Tunc rex primo diluculo conſurgens, feſtinus ad lacum leonum perrexit : 19 Appropinquánſque lacui, Danielem voce lachrymabili inclamavit : & affatus eſt eum ; Daniel, ſerve Dei viventis, Deus tuus, cui tu ſervis ſemper, putáſne valuit te liberare à leonibus? 20 Et Daniel regi reſpondens ait ; Rex, in æternum vive: 21 Deus meus miſit angelum ſuum, & concluſit ora leonum, & non nocuerunt mihi: quia coram eo juſtitia inventa eſt in me : ſed & corã te, rex, delictũ non feci. 22 Tunc vehementer rex gaviſꝰ eſt ſuper eo, & Danielem præcepit educi de lacu: eductúſque eſt Daniel de lacu, & nulla læſio inventa eſt in eo, quia credidit Deo ſuo. 23 Jubente autem rege, adducti ſunt viri illi, qui accuſaverant Danielem : & in lacum leonum miſſi ſunt, ipſi, & filii, & uxores eorum : & non pervenerunt uſque ad pavimentum laci, donec arriperent eos leones, & omnia oſſa eorum comminuerunt. 24

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

12 * ܗܝܕܝܢ ܩܪܒܘ ܘܐܡܪܝܢ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. ܡܠܟܐ ܠܥܠܡ ܚܝ. ܠܐ ܦܘܩܕܢܐ ܦܩܕܬ ܡܠܟܐ
ܘܪܫܡܬ. ܕܟܠ ܕܢܒܥܐ ܒܥܘܬܐ ܡܢ ܟܠ ܐܠܗ ܘܐܢܫ: ܥܕܡܐ ܠܬܠܬܝܢ ܝܘܡܝܢ: ܐܠܐ
ܡܢܟ ܡܠܟܐ. ܢܬܪܡܐ ܠܓܘܒܐ ܕܐܪܝܘܬܐ. ܥܢܐ ܡܠܟܐ ܘܐܡܪ. ܒܩܘܫܬܐ ܗܝ ܡܠܬܐ. ܐܝܟ
13 ܢܡܘܣܐ ܕܡܕܝ ܘܦܪܣ ܕܠܐ ܥܒܪ. * ܗܝܕܝܢ ܥܢܘ ܘܐܡܪܝܢ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. ܕܢܝܐܝܠ ܡܢ ܒܢܝ
ܫܒܝܬܐ ܕܝܗܘܕ. ܠܐ ܚܫ ܠܟ ܘܠܐ ܦܘܩܕܢܐ ܕܦܩܕܬ. ܘܙܒܢܝܢ ܬܠܬ ܒܥܐ ܒܥܘܬܗ.
14 * ܗܝܕܝܢ ܡܠܟܐ ܟܕ ܡܠܬܐ ܗܕܐ ܫܡܥ. ܣܓܝ ܟܪܝܬ ܠܗ. ܘܣܡ ܒܪܥܝܢܗ ܕܢܦܨܝܘܗܝ
15 ܠܕܢܝܐܝܠ. ܘܥܕܡܐ ܠܡܥܪܒܝ ܫܡܫܐ ܡܬܟܬܫ ܗܘܐ ܕܢܦܨܝܘܗܝ. * ܗܝܕܝܢ ܓܒܪܐ ܗܢܘܢ.
ܐܪܓܫܘ ܥܠ ܡܠܟܐ. ܘܐܡܪܝܢ ܠܗ. ܕܥ ܡܠܟܐ. ܕܢܡܘܣܐ ܐܝܬ ܠܡܕܝ ܘܠܦܪܣ. ܕܟܠ
16 ܦܘܩܕܢܐ ܘܩܝܡܐ ܕܢܩܝܡ ܡܠܟܐ. ܠܐ ܢܫܬܢܐ. * ܗܝܕܝܢ ܐܡܪ ܡܠܟܐ. ܘܐܝܬܝܘܗܝ ܠܕܢܝܐܝܠ.
ܘܪܡܝܘܗܝ ܠܓܘܒܐ ܕܐܪܝܘܬܐ. ܥܢܐ ܡܠܟܐ ܘܐܡܪ ܠܕܢܝܐܝܠ. ܐܠܗܟ ܕܐܢܬ ܦܠܚ ܐܢܬ
17 ܠܗ ܐܡܝܢܐܝܬ ܗܘ ܢܦܨܝܟ. * ܘܐܝܬܝܘ ܟܐܦܐ ܚܕܐ ܪܒܬܐ. ܘܣܡܘܗ ܥܠ ܦܘܡܗ ܕܓܘܒܐ.
18 ܘܚܬܡܗ ܡܠܟܐ ܒܥܙܩܬܗ. ܘܒܥܙܩܬܐ ܕܪܘܪܒܢܘܗܝ. ܕܠܐ ܢܫܬܢܐ ܒܗ ܒܕܢܝܐܝܠ. * ܗܝܕܝܢ
ܐܙܠ ܡܠܟܐ ܠܗܝܟܠܗ. ܘܒܬ ܛܘܬ. ܘܡܐܟܘܠܬܐ ܠܐ ܐܥܠܘ ܩܕܡܘܗܝ. ܘܫܢܬܗ ܢܕܬ
19 ܡܢܗ. * ܗܝܕܝܢ ܡܠܟܐ ܒܨܦܪܐ ܩܡ ܒܫܪܘܪܐ. ܘܒܣܘܪܗܒܐ ܠܓܘܒܐ ܕܐܪܝܘܬܐ ܐܙܠ.
20 * ܘܟܕ ܩܪܒ ܠܓܘܒܐ. ܠܕܢܝܐܝܠ. ܒܩܠܐ ܪܡܐ ܩܪܐ. ܥܢܐ ܡܠܟܐ ܘܐܡܪ ܠܕܢܝܐܝܠ. ܕܢܝܐܝܠ
ܥܒܕܗ ܕܐܠܗܐ ܚܝܐ. ܐܠܗܟ ܕܐܢܬ ܦܠܚ ܠܗ ܐܡܝܢܐܝܬ. ܐܫܟܚ ܠܡܦܨܝܘ ܡܢ
21 22 ܐܪܝܘܬܐ. * ܗܝܕܝܢ ܕܢܝܐܝܠ ܥܡ ܡܠܟܐ ܡܠܠ ܘܐܡܪ. ܡܠܟܐ ܠܥܠܡ ܚܝ. * ܐܠܗܝ
ܫܕܪ ܡܠܐܟܗ. ܘܣܟܪ ܦܘܡܗܘܢ ܕܐܪܝܘܬܐ ܘܠܐ ܚܒܠܘܢܝ. ܡܛܠ ܕܙܕܩܘܬܐ ܩܕܡܘܗܝ
23 ܐܫܬܟܚܬ ܒܝ. ܘܐܦ ܩܕܡܝܟ ܡܠܟܐ ܣܟܠܘܬܐ ܠܐ ܥܒܕܬ. * ܗܝܕܝܢ ܠܗ ܡܠܟܐ ܣܓܝ
ܫܦܪ ܠܗ. ܘܐܡܪ ܠܡܣܩܘܬܗ ܠܕܢܝܐܝܠ ܡܢ ܓܘܒܐ. ܘܐܣܩܘܗܝ ܠܕܢܝܐܝܠ ܡܢ
ܓܘܒܐ. ܘܡܕܡ ܚܒܠܐ ܠܐ ܐܫܬܟܚ ܒܗ. ܡܛܠ ܕܗܝܡܢ ܗܘܐ ܒܐܠܗܗ.
24 * ܘܐܡܪ ܡܠܟܐ. ܐܝܬܘ ܐܢܘܢ ܠܓܒܪܐ ܗܢܘܢ ܕܐܟܠܘ ܩܪܨܘܗܝ ܕܕܢܝܐܝܠ. ܘܪܡܘ ܐܢܘܢ
ܠܓܘܒܐ ܕܐܪܝܘܬܐ. ܗܢܘܢ ܘܢܫܝܗܘܢ ܘܒܢܝܗܘܢ. ܘܪܡܘ ܐܢܘܢ ܠܓܘܒܐ. ܘܠܐ
ܡܛܘ ܠܐܪܥܗ ܕܓܘܒܐ. ܘܫܠܛܘ ܒܗܘܢ ܐܪܝܘܬܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܓܪܡܝܗܘܢ ܕܩܘ.

Quarè accedentes dixerunt coram rege ; Rex, in pepetuum vive, Nónne ſententiam decreviſti rex, & exarâſti, ut quicunque peteret petitionem ab ullo deo aut homine uſque ad triginta dies, præterquàm à te rex, conjiceretur in foveam leonum? Reſpondens rex ait ; Verum eſt verbum ſecundùm legem Medorum & Perſarum inviolabilem. 12 Tunc reſponderunt dicentes coram rege ; Daniel de captivis Judææ non curat te neque ſententiam quam decreviſti, ſed tribus vicibus fundit preces ſuas. 13 Tunc rex, audito hoc verbo, ægrè admodum tulit, mentémque adhibuit ut liberaret Danielem, & uſque ad ſolis occaſum contendit ut eum liberaret. 14 Verùm illi viri perſtrepentes contra regem dixerunt ei ; Scito rex, legem eſſe apud Medos & Perſas, ut ulla ſententia aut ſtatutum quod rex decreverit, non mutetur. 15 Tunc rege jubente adduxerunt Danielem, & conjecerunt in foveam leonum : & prolocutus rex ait Danieli ; Deus tuus quem tu colis jugiter, ipſe te liberet. 16 Et attulerunt lapidem quendam magnum, impoſuerúntque ſuper os foveæ, & obſignavit illum rex annulo ſuo & annulo procerum ſuorum, ne quicquam mutaretur in Danielem. 17 Tunc recepit ſe rex in palatium ſuum, & pernoctavit incœnatus, cibus non fuit allatus coram eo, & ſomnus ejus ab eo receſſit. 18 Tunc rex diluculò ſurrexit feſtinus, & properè ad foveam leonum accurrit : 19 Cúmque acceſſit ad foveam, Danielem altâ voce inclamavit : Danielem allocutus rex ait ; Daniel ſerve Dei viventis, Deus tuus quem tu ſemper colis, potuítne liberare te à leonibus? 20 Tunc Daniel regem allocutus dixit ; Rex æternùm vive : 21 Deus meus miſit angelum ſuum, & concluſit ora leonum, & non læſerunt me : quoniam juſtitia coram eo reperta eſt in me ; quin etiam coram te rex, crimen haud commiſi. 22 Tunc rex apud ſemetipſum vehementer contentus, juſſit Danielem extrahi è fovea : & cum extractus eſſet Daniel è fovea, nulla læſio reperta eſt in eo ; quia crediderat in Deum ſuum. 23 Deinde dixit rex, Adducite viros illos qui Danielem accuſaverunt, eóſque projicite in foveam leonum cum uxoribus & liberis ſuis : quos cùm projeciſſent in foveam, priuſquàm ad imum foveæ perveniſſent, invaſerunt eos leones, & omnia ipſorum oſſa comminuerunt. 24

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

12 Καὶ προσελθόντες λέγουσι τῷ βασιλεῖ, Βασιλεῦ, (λ) οὐχ ὁρισμὸν ἔταξας, ὅπως πᾶς ἄνθρωπος ὃς ἂν
(μ) αἰτήσῃ παρὰ παντὸς θεοῦ ϗ ἀνθρώπου αἴτημα, ἕως ἡμερῶν τριάκοντα, ἀλλ' ἢ παρὰ σοῦ βασιλεῦ,
ἐμβληθήσεται εἰς τὸν λάκκον τῶν λεόντων; καὶ εἶπεν ὁ βασιλεύς, Ἀληθινὸς ὁ λόγος, καὶ τὸ δόγμα
13 Μήδων καὶ Περσῶν οὐ παρελεύσεται. Τότε ἀπεκρίθησαν ϗ λέγουσιν ἐνώπιον τοῦ βασιλέως, Δανιὴλ ὁ ἀπὸ
τῶν υἱῶν τῆς αἰχμαλωσίας τῆς Ἰουδαίας, οὐχ ὑπετάγη τῷ δόγματί σου (ν), ϗ καιροὺς τρεῖς τῆς ἡμέρας (ξ)
14 αἰτεῖ παρὰ τοῦ θεοῦ αὐτοῦ τὰ αἰτήματα αὐτοῦ. Τότε ὁ βασιλεύς, ὡς τὸ ῥῆμα ἤκουσε, πολὺ ἐλυπήθη
ἐπ' αὐτῷ, ϗ περὶ τοῦ Δανιὴλ ἠγωνίσατο τοῦ ἐξελέσθαι αὐτόν, καὶ ἕως ἑσπέρας ἦν ἀγωνιζόμενος τοῦ ἐξελέσθαι
15 αὐτόν. Τότε οἱ ἄνδρες ἐκεῖνοι λέγουσι τῷ βασιλεῖ, Γνῶθι βασιλεῦ, ὅτι τὸ δόγμα Μήδοις ϗ
16 Πέρσαις, τοῦ πᾶν ὁρισμὸν ϗ στάσιν (ο) ἣν ἂν ὁ βασιλεὺς στήσῃ, οὐ δεῖ παραλλάξαι. Τότε ὁ βασιλεὺς
εἶπε· καὶ ἤγαγον τὸν Δανιήλ, ϗ ἐνέβαλον αὐτὸν εἰς τὸν λάκκον τῶν λεόντων. ϗ εἶπεν ὁ βασιλεὺς τῷ
17 Δανιήλ, Ὁ θεός σου (ʹ) ᾧ σὺ λατρεύεις ἐνδελεχῶς, αὐτὸς ἐξελεῖταί σε. Καὶ (π) ἤνεγκαν λίθον, ϗ ἐπέθηκαν
ἐπὶ τὸ στόμα τοῦ λάκκου, ϗ ἐσφραγίσατο (ρ) ὁ βασιλεὺς ἐν τῷ δακτυλίῳ αὐτοῦ, ϗ ἐν τῷ δακτυλίῳ τῶν μεγιστάνων
18 αὐτοῦ, ὅπως μὴ ἀλλοιωθῇ πρᾶγμα ἐν τῷ Δανιήλ. Καὶ ἀπῆλθεν ὁ βασιλεὺς εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ, ϗ ἐκοιμήθη
ἄδειπνος, ϗ ἐδέσματα οὐκ (σ) εἰσήνεγκαν αὐτῷ· καὶ ὁ ὕπνος ἀπέστη ἀπ' αὐτοῦ. ϗ ἔκλεισεν ὁ
19 θεὸς τὰ στόματα τῶν λεόντων, ϗ οὐ παρηνώχλησαν τῷ Δανιήλ. Τότε ὁ βασιλεὺς ἀνίστη τὸ πρωῒ ἐν
20 τῷ φωτί, ϗ ἐν σπουδῇ ἦλθεν ἐπὶ τὸν λάκκον τῶν λεόντων. Καὶ ἐν τῷ ἐγγίζειν αὐτὸν τῷ λάκκῳ, (τ) ἐβόησε
φωνῇ ἰσχυρᾷ, Δανιήλ, ὁ δοῦλος τοῦ θεοῦ τοῦ ζῶντος, ὁ θεός σου (ʹ) ᾧ σὺ λατρεύεις ἐνδελεχῶς, εἰ (υ)
21 ἠδυνήθη ἐξελέσθαι σε ἐκ στόματος τῶν λεόντων; Καὶ εἶπε Δανιὴλ τῷ βασιλεῖ, Βασιλεῦ, εἰς τοὺς αἰῶνας
22 ζῆθι. Ὁ θεός μου ἀπέστειλε τὸν ἄγγελον αὐτοῦ, ϗ ἐνέφραξε τὰ στόματα τῶν λεόντων, καὶ οὐκ ἐλυμήναντό
με, ὅτι (φ) κατέναντι αὐτοῦ εὐθύτης εὑρέθη (χ) ἐμοί, ϗ ἐνώπιον δέ σου βασιλεῦ παράπτωμα οὐκ
23 ἐποίησα. Τότε ὁ βασιλεὺς πολὺ ἠγαθύνθη ἐπ' αὐτῷ, καὶ τὸν Δανιὴλ εἶπεν ἀνενέγκαι ἐκ τοῦ λάκκου.
καὶ ἀνηνέχθη Δανιὴλ ἐκ τοῦ λάκκου, καὶ πᾶσα διαφθορὰ (ʹ) οὐχ εὑρέθη ἐν αὐτῷ, ὅτι ἐπίστευσεν (ψ) ἐν τῷ
24 θεῷ αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεύς, καὶ (ω) ἤγαγον τοὺς ἄνδρας τοὺς διαβαλόντας τὸν Δανιήλ, ϗ εἰς τὸν λάκκον
τῶν λεόντων (α) ἐνεβλήθησαν αὐτοί, ϗ οἱ υἱοὶ αὐτῶν, καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν· ϗ οὐκ ἔφθασαν εἰς τὸ ἔδαφος
τοῦ λάκκου, ἕως οὗ ἐκυρίευσαν αὐτῶν οἱ λέοντες, καὶ πάντα τὰ ὀστᾶ αὐτῶν ἐλέπτυναν.

Et accedentes dicunt regi; Rex, nonne conſtitutionem poſuiſti; ut omnis 12
homo, quicunque petierit à quocunque Deo, & homine, petitionem, uſque
ad triginta dies, niſi à te, rex, mittatur in lacum leonum? Et dixit rex;
Verus eſt ſermo: & decretum Medorum & Perſarum non prætermittetur.
Tunc reſponderunt, & dicunt coram rege; Daniel, qui de filiis 13
captivitatis Judææ, non ſubdidit ſe decreto tuo, & tribus temporibus diei
petit à Deo ſuo petitiones ſuas. Tunc rex, ut audivit verbum, valdè contriſtatus 14
eſt in eo: & pro Daniele in agonia erat ad liberandum eum: &
uſque ad veſperam laborabat eruere eum. Tunc viri illi dicunt regi; 15
Scito, rex, quia decretum Medis & Perſis, omnem conſtitutionem, & ſtatutum,
quodcunque rex ſtatuerit, non oportere immutari. Tunc rex dixit: 16
& adduxerunt Danielem, & miſerunt eum in lacum leonum. Et dixit
rex Danieli; Deus tuus, quem tu colis ſemper, ipſe liberabit te. Et attulerunt 17
lapidem, & impoſuerunt ſuper os laci: & obſignavit rex in annulo
ſuo, & in annulo optimatum ſuorum; ne quid ſecùs fieret in Danielem.
Et abiit rex in domum ſuam, & dormivit incœnatus: & cibos non attulerunt 18
ei: & ſomnus receſſit ab eo. Et (e) concluſerat Deus ora leonum,
& non affecerant moleſtiâ Danielem. Tunc rex ſurrexit manè in 19
diluculo: & in feſtinatione venit ad lacum leonum. Et cùm appropinquaret 20
ipſe lacui, clamavit voce forti; Daniel, ſerve Dei viventis, Deus tuus,
cui tu ſervis ſemper, ſi potuit liberare te de ore leonum? Et ait Daniel 21
regi; Rex, in ſecula vive. Deus meus miſit angelum ſuum, & obſtruxit 22
ora leonum, & non nocuerunt mihi: quia coram eo rectitudo inventa
eſt (f) mihi: ſed & coram te, rex, delictum non feci. Tunc, rex, 23
vehementer gaviſus eſt ſuper eo: & Danielem dixit educi de lacu. Et eductus
eſt Daniel de lacu: & nulla laſio inventa eſt in eo: quia credidit
in Deo ſuo. Et dixit rex; et adducti ſunt viri, qui accuſaverant 24
Danielem: et in lacum leonum miſſi ſunt, ipſi, et filii eorum, et uxores
eorum: et non pervenerunt ad pavimentum laci; donec dominati ſunt eorum
leones, et omnia oſſa eorum comminuerunt.

MS.A. (λ) οὐχὶ ὁρισμὸν (μ) αἰτήσηται (ν) περὶ τοῦ ὁρισμοῦ οὗ ἔταξας, ϗ (ξ) αἰτεῖτε (ο) ἣν ὁ βασιλεὺς στήσῃ, (ʹ) ᾧ λατρεύεις (π) ἤνεγκαν λίθον, ϗ ἐπέθηκαν (ρ) ἐν τῷ (σ) εἰσηνέχθη αὐτῷ ϗ ὁ ὕπνος αὐτοῦ ἐγένετο ἀπ' αὐτοῦ. (τ) τῷ Δανιὴλ ἐβόησεν φωνῇ μεγάλῃ, Δανιήλ, (ʹ) ᾧ λατρεύεις (υ) ἐδυνάσθη (φ) κατεναντίον (χ) ἐν ἐμοί, (ʹ) οὐκ (ψ) τῷ θεῷ (ω) ἤγαγον (α) ἐβλήθησαν

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

12 * فدخلوا للملك قايلين * ايها الملك اليس رتبت رسما لكي كل انسان يلتمس من
اله او انسان مسألة الي ثلاثين يوما الا من قبلك ايها الملك * يلقي في جب الاسد * فقال
13 الملك * القول حقيقي * وراي الماديين والفرس لا يزول * حينيذ اجابوا وقالوا امام الملك
دانيال الذي من بني سبي اليهودية لم يخضع لامرك * وثلاث اوقات في اليوم كان
14 يلتمس من الهه مسالاته * حينيذ الملك لما سمع الكلمة حزن عليه كثيرا * واجتهد
15 من اجل دانيال ان ينجيه * والي المساء كان مجتهدا ان ينجيه * حينيذ اوليك الرجال
قالوا للملك * اعلم ايها الملك ان للماديين والفرس رايا * كل رسم وعهد يقيمه الملك لا
16 يبدله احد * حينيذ قال الملك * فاتوا بدانيال والقوه في جب الاسد. وقال الملك لدانيال *
17 الاله الذي انت تعبده دايما هو ينجيك * واتوا بحجر واحد ووضعوه على فم الجب *
18 وختم الملك بخاتمه وبخاتم عظمايه * كيلا يحدث امر بدانيال * ومضي الملك الي بيته *
واضطجع بغير عشاء * ولم يدخلوا له اطعمة * ونفر النوم عنه * واغلق الله افواه الاسد
19 فلم توذ دانيال * حينيذ قام الملك بالغداة في النور * واتي بسرعة الي جب الاسد *
20 * وعندما قرب للجب صاح لدانيال بصوت قوي * يا دانيال عبد الله الحي. الهك الذي
21 انت تعبده دايما هل قدر ان ينجيك من فم الاسد * فقال دانيال * ايها الملك عش
22 الي الدهور * الهي ارسل ملاكه * وسد افواه الاسد فلم توذيني * لان الاستقامة وجدت
23 في امامه * ولم اصنع قدامك زلة ايها الملك * حينيذ الملك تعجب كثيرا به * وقال
ان يصعدوا دانيال من الجب * فاصعد دانيال من الجب * ولم يوجد فيه شي من
24 الفساد * لانه آمن بالهه * وقال الملك * فاتوا بالرجال الذين محلوا بدانيال * والقوا في
جب الاسد هم وبنوهم ونساوهم * ولم يبلغوا الي ارض الجب الي ان تسلطت عليهم الاسد
ودقوا جميع عظامهم *

Regem adierunt dicentes; O rex, nonne 12
decretum conſtituiſti, ut quicunque poſtularet
ab ullo deo & homine petitionem
ullam uſque ad triginta dies, præterquam
à te O rex; projiceretur in foveam
leonum? Dixit rex, Verus eſt ſermo; &
decretum Medorum atque Perſarum non
eſt prætereundum. Tunc reſponderunt 13
ac dixerunt coram rege; Daniel qui eſt è
captivis Judææ, non obtemperavit mandato
tuo; ſed tribus vicibus quotidie petitiones
ſuas poſtulat à Deo ſuo. Tunc 14
rex cùm audiſſet hujuſmodi verbum,
contriſtatus eſt propter eum vehementer;
& curam adhibuit propter Danielem ut
eriperet eum, & ad veſperam uſque ſolicitus
fuit de eripiendo illo. Tunc illi 15
viri dixerunt ad regem; Noveris O rex,
apud Medos & Perſas eſſe decretum, omne
ſtatutum & fœdus quod rex conſtituit,
à nemine mutandum. Tunc edicente 16
rege adduxerunt Danielem, & projecerunt
in foveam leonum: dixitque
rex Danieli; Deus quem tu ſemper adoras,
ipſe te liberet. Attuleruntque lapidem 17
quendam, poſueruntque ſuper os
foveæ, & obſignavit rex annulo ſuo &
annulo magnatum ſuorum, ne quid accideret
Danieli. Tum rex domum ſuam 18
reverſus, cubavit ſine cœna; non enim
introduxerunt ad eum cibos: quin etiam
receſſit ab eo ſomnus. Deus autem clauſit
ora leonum, & non læſerunt Danielem.
Tunc rex manè ſurgens cum luce, 19
feſtinanter ſe contulit ad foveam
leonum. Et cùm acceſſiſſet ad foveam, 20
Danielem inclamavit altâ voce; O Daniel
ſerve Dei viventis, Deus tuus quem
tu ſemper adoras, potuitne liberare te ab
ore leonum? Dixit Daniel; O rex, in 21
ſecula vive; Deus meus miſit Angelum 22
ſuum, clauſitque ora leonum, &
non nocuerunt mihi; quia rectitudo inventa
eſt in me coram ipſo, & culpam
coram te O rex non commiſi. Tunc rex 23
magnopere eum demiratus, dixit ut
extraherent Danielem è fovea: extractóque
Daniele de fovea, nihil
corruptionis inventum eſt in eo; quia
crediderat in Deum ſuum. Præcipiente 24
autem rege, adducti fuerunt viri
qui Danielem accuſaverant, et in
foveam leonum projecti, tam ipſi
quàm filii et uxores eorum: et priuſquam
perveniſſent ad foveæ ſolum,
invaſerunt eos leones, et comminuerunt
omnia oſſa eorum.

דניאל : ז

A.multiplicetur vobis pax ,terra universa in *habitantes* qui ,linguis &,*nationibus* ,populis omnibus scripsit rex Dariaves Tunc
25 באדין דריוש מלכא כתב לכל־עממיא אמיא ולשניא די־דארין בכל־ארעא שלמכון ישגא: מן־
26 quoniā;Danielis *qui ejus* Dei facie à *timentes & ,contremiscentes sint* mei regni imperio universo in ut ,decretum positum mea facie
קדמי שים טעם די בכל־שלטן מלכותי להון זאעין ודחלין מן־קדם אלההּ די־דניאל די־
,liberans &,Eruens .finem ad usque ejus potestas &;corrumpetur non quod ejus regnū & ,secula in permanens &,vivens Deus ipse
27 הוא אלהא חיא וקים לעלמין ומלכותה די־לא תתחבל ושלטנה עד־סופא: משיזב ומצל
est prosperatus ipse Daniel Et .leonum *manu* de Danielem eruit qui : terra in & ,cœlo in mirabilia & signa faciens &
28 ועבד אתין ותמהין בשמיא ובארעא די שיזב לדניאל מן־יד אריותא: ודניאל דנה הצלח
.Persæ Chores regno in & , Dariaves regno in
במלכות דריוש ובמלכות כורש פרסאה:

CAP. VII. ז

caput,scripsit somnium tunc : ejus cubili *super* ejus capitis *visiones* &,vidit somniū Daniel ,Babel regis Belsasar *uno* anno In
1 בשנת חדה לבלשאצר מלך בבל דניאל חלם חזה וחזוי ראשה על־משכבה באדין חלמא כתב ראש
.magno mari in *pugnantes* cœli venti quatuor ecce & , nocte *cum* mea visione in *fui Videns*,dixit &,Daniel *Respondit* .*dixit* verborū
2 מלין אמר: ענה דניאל ואמר חזה הוית בחזוי עם־ליליא וארו ארבע רוחי שמיא מגיחן לימא רבא:
eram videns ;ei aquilæ *quæ* alæ & , leo sicut Prima .*ista ab illa variantes*;mari è *ascendentes* grandes bestiæ quatuor Et
3 4 וארבע חיון רברבן סלקן מן־ימא שנין דא מן־דא: קדמיתא כאריה וגפין די־נשר לה חזה הוית
ecce Et .ei est datum hominis cor & , stetit homo tanquam pedes super & ,terra à est elevata & ,ejus alæ sunt evulsæ donec
5 עד די־מריטו גפיה ונטילת מן־ארעא ועל־רגלין כאנש הקימת ולבב אנש יהיב לה: וארו
,Surge , ei *dicentes* sic &:ejus dentes inter ejus ore in *costæ tres* & , stetit unum latus ad & ,urso similis secunda alia bestia
חיוה אחרי תנינה דמיה לדב ולשטר־חד הקמת ותלת עלעין בפמה בין שניה וכן אמרין לה קומי
quatuor &:ejus dorso super avis *quæ* quatuor alæ ei &,pardus veluti alia ecce & , *eram videns* hoc Post .*multam* carnem comede
6 אכלי בשר שגיא: באתר דנה חזה הוית וארו אחרי כנמר ולה גפין ארבע די־עוף על־גביה וארבעה
, formidolosa quarta bestia ecce & ,noctis *visionibus* in *fui videns* hoc Post .ei data potestas & ,bestiæ capita
7 ראשין לחיותא ושלטן יהיב לה: באתר דנה חזה הוית בחזוי ליליא וארו חיוה רביעיה דחילה
ipsa & : *conculcans* suis pedibus in residuum &,*comminuens & ,comedens* ,magni ei *ferri qui* dentes &,*abundanter* fortis & ,terribilis &
ואמתני ותקיפא יתירה ושנין די־פרזל לה רברבן אכלה ומדקה ושארא ברגליה רפסה והיא
parvum aliud cornu ecce & ,cornua *in fui Attentus* .ei decem cornua & ,eam ante quæ , bestiis omnibus ab *varia*
8 משניה מן־כל־חיותא די קדמיה וקרנין עשר לה: משתכל הוית בקרניא ואלו קרן אחרי זעירה
, isto cornu in hominis oculi tanquā oculi ecce & : ejus facie à sunt evulsa primis cornibus de tria & , ea inter ascendebat
סלקת ביניהן ותלת מן־קרניא קדמיתא אתעקרו מן־קדמיה ואלו עינין כעיני אנשא בקרנא־דא
pilus &,candidum nix sicut ejus vestimentum;sedit dierum antiquus &,sunt elati throni donec *fui Videns* .grandia loquens os &
9 ופם ממלל רברבן: חזה הוית עד די כרסון רמיו ועתיק יומין יתב לבושה כתלג חור ושער
: ejus facie à *egrediens & ,trahens ignis* Fluvius .ardens ignis ejus rotæ ,ignis flammæ ejus thronus,pura lana sicut ejus capitis
10 ראשה כעמר נקא כרסיה שביבין די־נור גלגלוהי נור דלק: נהר די־נור נגד ונפק מן־קדמוהי
.sunt aperti libri & , sedit judicium : stabant eo coram *myriadum myrias* & ,ei ministrabant millium *mille*
אלף אלפים ישמשונה ורבו רבון קדמוהי יקומון דינא יתב וספרין פתיחו:

Versio VULG. LAT.

Tunc Darius rex scripsit universis populis, tribubus,& lin- 25
guis habitantibus in universa terra : PAX vobis multiplicetur.
A me constitutum est decretum, ut in universo 26
imperio & regno meo, tremiscant & paveant Deum Danielis.
Ipse est enim Deus vivens, & æternus in secula : &
regnum ejus non dissipabitur, & potestas ejus usque in æternum.
Ipse liberator, atque salvator, faciens signa, & 27
mirabilia in cœlo & in terra : qui liberavit Danielem de
lacu leonum. Porrò Daniel perseveravit usque ad regnum 28
Darii, regnúmque Cyri Persæ.

CAP. VII.

ANno primo Baltassar regis Babylonis, Daniel somnium 1
vidit : visio autem capitis ejus in cubili suo : & somnium
scribens, brevi sermone comprehendit : summatímque
perstringens, ait ; Videbam in visione mea nocte,& ecce 2
quatuor venti cœli pugnabant in mari Magno. Et quatuor 3
bestiæ grandes ascendebant de mari diversæ inter se.
Prima quasi leæna, & alas habebat aquilæ : aspiciebam 4
donec evulsæ sunt alæ ejus, & sublata est de terra, & super
pedes quasi homo stetit, & cor hominis datum est ei. Et 5
ecce bestia alia similis urso in parte stetit : & tres ordines
erant in ore ejus, & in dentibus ejus, & sic dicebant ei ;
Surge, comede carnes plurimas. Post hæc aspiciebam, 6
& ecce alia quasi pardus, & alas habebat quasi avis, quatuor
super se, & quatuor capita erant in bestia, & potestas
data est ei. Post hæc aspiciebam in visione noctis,& ecce 7
bestia quarta terribilis, atque mirabilis, & fortis nimis,
dentes ferreos habebat magnos, comedens atque comminuens,
& reliqua pedibus suis conculcans : dissimilis autem
erat cæteris bestiis, quas videram ante eam, & habebat
cornua decem : Considerabam cornua, & ecce cornu 8
aliud parvulum ortum est de medio eorum : & tria de
cornibus primis evulsa sunt à facie ejus: & ecce oculi,quasi
oculi hominis erant in cornu isto, & os loquens ingentia.
Aspiciebam donec throni positi sunt, & Antiquus dierum 9
sedit : vestimentum ejus candidum quasi nix, & capilli
capitis ejus quasi lana munda : thronus ejus flammæ
ignis : rotæ ejus ignis accensus. Fluvius igneus, rapidúsque 10
egrediebatur à facie ejus : millia millium ministrabant
ei, & decies millies centena millia assistebant ei : judicium
sedit, & libri aperti sunt.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

25 * ܗܝܕܝܢ ܕܪܝܘܫ ܡܠܟܐ. ܟܬܒ. ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܘܐܡܘܬܐ ܘܠܫܢܐ ܕܥܡܪܝܢ ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ.
26 ܫܠܡܟܘܢ ܢܣܓܐ ܠܚܕܐ. * ܡܢ ܩܕܡܝ ܐܬܣܝܡ ܛܥܡܐ. ܕܒܟܠ ܫܘܠܛܢ ܡܠܟܘܬܝ.. ܢܗܘܘܢ
ܙܝܥܝܢ. ܘܕܚܠܝܢ ܡܢ ܩܕܡ ܐܠܗܗ ܕܕܢܝܐܝܠ. ܕܗܘܝܘ ܐܠܗܐ ܚܝܐ. ܘܩܝܡ. ܠܥܠܡܝܢ.
27 ܘܡܠܟܘܬܗ ܠܐ ܡܬܚܒܠܐ. ܘܫܘܠܛܢܗ ܥܕܡܐ ܠܣܘܦܐ. * ܦܪܩ ܘܡܫܘܙܒ. ܘܡܦܨܐ. ܘܥܒܕ
28 ܐܬܘܬܐ ܘܬܕܡܪܬܐ ܒܫܡܝܐ ܘܒܐܪܥܐ. ܕܦܨܝܗ ܠܕܢܝܐܝܠ ܡܢ ܐܪܝܘܬܐ. * ܘܕܢܝܐܝܠ ܪܒ ܒܡܠܟܘܬܗ
ܕܕܪܝܘܫ.. ܘܒܡܠܟܘܬܗ ܕܟܘܪܫ ܦܪܣܝܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܙ *

1 * ܒܫܢܬ ܚܕܐ ܠܡܠܟܘܬܗ ܕܒܠܛܫܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ.. ܕܢܝܐܝܠ. ܚܠܡܐ ܚܙܐ. ܘܚܙܘܝ ܪܫܗ
2 ܥܠ ܡܫܟܒܗ. ܗܝܕܝܢ ܚܠܡܐ ܟܬܒ. ܘܪܫ ܡܠܘܗܝ ܐܡܪ. * ܥܢܐ ܕܢܝܐܝܠ. ܘܐܡܪ. ܚܙܐ
3 ܗܘܝܬ ܒܚܙܘܐ ܕܠܠܝܐ.. ܘܗܐ ܐܪܒܥ ܪܘܚܐ ܕܫܡܝܐ ܡܓܝܚܢ ܠܝܡܐ ܪܒܐ. * ܘܐܪܒܥ ܚܝܘܢ ܪܘܪܒܢ
4 ܣܠܩܢ ܡܢ ܝܡܐ. ܘܡܫܚܠܦܢ ܚܕܐ ܡܢ ܚܕܐ. * ܡܠܟܘܬܐ ܕܒܒܠܝܐ* ܩܕܡܝܬܐ ܐܝܟ ܐܪܝܐ. ܘܓܦܐ
ܕܢܫܪܐ ܐܝܬ ܠܗ. ܚܙܐ ܗܘܝܬ ܕܐܬܡܪܛ ܓܦܝܗ. ܘܐܫܬܩܠܬ ܡܢ ܐܪܥܐ. ܘܥܠ ܪܓܠܝܗ ܐܝܟ
5 ܒܪܢܫܐ ܩܡܬ. ܘܠܒܐ ܕܒܪܢܫܐ ܐܬܝܗܒ ܠܗ. * ܡܠܟܘܬܐ ܕܡܕܝܐ* ܚܝܘܬܐ ܕܬܪܬܝܢ ܕܡܝܐ ܠܕܒܐ.
ܘܥܠ ܣܛܪ ܚܕ ܩܡܬ. ܘܬܠܬ ܥܠܥܝܢ ܒܦܘܡܗ ܒܝܬ ܫܢܝܗ. ܘܗܟܢܐ ܐܡܪܝܢ ܠܗ. ܩܘܡܝ
6 ܐܟܘܠܝ ܒܣܪܐ ܣܓܝܐܐ. * ܡܠܟܘܬܐ ܕܦܪܣܝܐ* ܒܬܪܟܢ ܚܙܐ ܗܘܝܬ ܚܝܘܬܐ ܐܚܪܬܐ ܐܝܟ
7 ܢܡܪܐ. ܘܐܪܒܥ ܓܦܐ ܕܦܪܚܬܐ ܐܝܬ ܠܗ ܥܠ ܓܒܘܗܝ. ܘܐܪܒܥܐ ܪܫܐ ܐܝܬ ܠܗ ܠܚܝܘܬܐ.
ܘܫܘܠܛܢܐ ܐܬܝܗܒ ܠܗ. * ܡܠܟܘܬܐ ܕܝܘܢܝܐ* ܒܬܪܟܢ. ܚܙܐ ܗܘܝܬ ܒܚܙܘܐ
ܕܠܠܝܐ. ܚܝܘܬܐ ܪܒܝܥܝܬܐ. ܕܚܝܠܬܐ ܘܥܫܝܢܬܐ. ܘܚܣܝܢܐ ܛܒ. ܘܫܢܐ ܪܘܪܒܬܐ ܕܦܪܙܠܐ ܐܝܬ
ܠܗ. ܐܟܠܐ ܘܡܕܩܐ. ܘܡܕܡ ܕܡܫܬܚܪ ܒܪܓܠܝܗ ܕܝܫܐ. ܘܗܝ ܡܫܚܠܦܐ ܡܢ ܟܠܗܝܢ ܚܝܘܬܐ
8 ܕܩܕܡܝܗ. ܘܩܪܢܬܐ ܥܣܪ ܐܝܬ ܠܗ. * ܘܡܣܬܟܠ ܗܘܝܬ ܒܩܪܢܬܗ *ܐܢܛܝܟܘܣ* ܘܩܪܢܐ
ܚܕܐ ܙܥܘܪܬܐ ܣܠܩܬ ܡܢ ܒܝܢܬܗܘܢ. ܘܬܠܬ ܡܢ ܩܪܢܬܐ ܩܕܡܝܬܐ ܐܬܥܩܪ ܡܢ ܩܕܡܝܗ.
9 ܘܥܝܢܐ ܐܝܟ ܥܝܢܝ ܒܪܢܫܐ ܒܩܪܢܐ ܗܝ. ܘܦܘܡܐ ܡܡܠܠ ܪܘܪܒܬܐ. * ܚܙܐ ܗܘܝܬ ܕܟܘܪܣܘܬܐ
ܐܬܬܣܝܡܘ. ܘܥܬܝܩ ܝܘܡܬܐ ܝܬܒ. ܠܒܘܫܗ ܐܝܟ ܬܠܓܐ ܚܘܪܐ. ܘܣܥܪܐ ܕܪܫܗ ܐܝܟ
10 ܥܡܪܐ ܕܟܝܐ. ܟܘܪܣܝܗ ܫܒܝܒܐ ܕܢܘܪܐ. ܘܓܝܓܠܘܗܝ ܕܢܘܪܐ ܝܩܕܬܐ. * ܢܗܪܐ ܕܢܘܪܐ
ܢܓܕ. ܘܢܦܩ ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ. ܐܠܦ ܐܠܦܝܢ ܡܫܡܫܝܢ ܠܗ. ܘܪܒܘ ܪܒܘܢ ܩܝܡܝܢ
ܩܕܡܘܗܝ. ܕܝܢܐ ܝܬܒ. ܘܣܦܪܐ ܐܬܦܬܚܘ.

Tunc Darius rex scripsit : Omnibus populis, 25
nationibus, & linguis in tota terra degentibus,
pax multiplicetur vobis. A me lata lex est, 26
ut in tota ditione regni mei metuant & revereantur
Deum Danielis, quòd ipse sit Deus
vivus & permanens in secula,regnum ejus incorruptum,
& dominatus ejus in finem usque.
Redimit, liberat, & eripit, editque signa & 27
portenta in cœlo & in terra ; qui liberavit
Danielem à leonibus. Porrò Daniel magnificatus 28
est in regno Darii & regno Cyri Persæ.

CAP. VII.

ANno primo regni Blitsasaris regis Babyloniæ, 1
Daniel somnium vidit & visiones capitis
sui quas *habuit* super cubili suo : tunc somnium
scripsit, & summam sermonum suorum
exposuit. Prolocutus Daniel dixit; Videbam 2
in visione nocturna,& ecce quatuor venti
cœli turgefaciebant mare Magnum , Et 3
quatuor ingentes belluæ emergebant è mari,
eæq; inter se diversæ. *Regnum Babyloniorum.* 4
Prima similis erat leoni, habebatq; alas aquilinas.
Videbam evulsas esse alas ejus, & ab
humo sublatam, in pedes suos velut hominem
stetisse, & cor humanum inditum ei fuisse.
Regnum Medorum. Bellua secunda similis 5
erat urso,vni lateri incumbebat,& tres costas
in ore suo habebat inter dentes suos : huic ita
dicebant ; Surge, comede carnem multam.
Regnum Persarum. Postea videbam aliam 6
belluam pardo similem, habentem quatuor
alas volucris in lateribus suis : quatuor etiam
capita habebat ea bellua,eique datum est imperium.
Regnum Græcorum. Denique videbam 7
in visione nocturna belluam quartam
horrendam, ingentem, summéque robustam :
dentes magnos ferreos habebat : comedebat
comminuebatque ; & quod relinquebat,pedibus
conculcabat : erat hæc diversa ab omnibus
belluis quæ præcesserant eam : & habebat
cornua decem. Dum ejus cornua considerarem, 8
Antiochus , cornu unum parvum
emersit è medio illorum, & tria ex cornibus
prioribus evulsa fuerunt ab hujus conspectu :
oculi similes oculis humanis erant in isto cornu,
& os ejus loquebatur grandia. Videbam 9
subsellia posita esse, & Antiquum dierum sedisse ;
cujus vestimentum erat ceu nix candidissima,
& capilli capitis ceu lana mundissima :
cujus solium flamma ignea, & rotæ ignis
ardens : Fluvius igneus fluens egrediebatur 10
à conspectu ejus : millies mille ministrabant
ei, & myrias myriadum astabant coram eo :
Judex sedit, & libri aperti sunt.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

25 Τότε (β) Δαρεῖος ὁ βασιλεὺς ἔγραψε πᾶσι τοῖς λαοῖς, φυλαῖς, γλώσσαις, τοῖς οἰκοῦσιν ἐν πάσῃ τῇ
26 γῇ· Εἰρήνη ὑμῖν πληθυνθείη. Ἐκ προσώπου μου ἐτέθη δόγμα (γ) τοῦτο ἐν πάσῃ ἀρχῇ τῆς βασιλείας
μου, εἶναι τρέμοντας καὶ φοβουμένους ἀπὸ προσώπου τοῦ Θεοῦ Δανιὴλ, ὅτι (δ) αὐτός ἐστι Θεὸς ζῶν, καὶ μένων
27 εἰς τοὺς αἰῶνας, καὶ ἡ βασιλεία αὐτοῦ οὐ διαφθαρήσεται, καὶ ἡ (ε) κυρεία αὐτοῦ ἕως τέλους. Ἀντιλαμβάνεται
καὶ ῥύεται, καὶ ποιεῖ σημεῖα καὶ τέρατα (ζ) ἐν τῷ οὐρανῷ καὶ ἐπὶ τῆς γῆς, ὅστις ἐξείλατο τὸν Δανιὴλ ἐκ
28 χειρὸς τῶν λεόντων. Καὶ Δανιὴλ κατηύθυνεν ἐν τῇ βασιλείᾳ Δαρείου, καὶ ἐν τῇ βασιλείᾳ Κύρου τοῦ
Πέρσου. †

Tunc Darius rex ſcripſit univerſis populis, tribubus, linguis, habitantibus 25
in univerſa terra: Pax vobis multiplicetur. A facie noſtra poſitum eſt decretum 26
(g) hoc in omni principatu regni mei, ſint trementes, & metuant à
facie Dei Danielis. Ipſe enim eſt Deus vivens, & manens in ſecula: &
regnum ejus non diſſipabitur, & dominatio ejus uſque in finem. Suſcipit, 27
& liberat, & facit ſigna, & prodigia in cœlo, & in terra: qui liberavit
Danielem de (b) manu leonum. Et Daniel proſperè egit in regno Darii, & 28
in regno Cyri Perſæ.

MS.A. (β) ὁ βασιλεὺς Δαρεῖος (γ) τὸ ἐν (δ) αὐτὸς Θεὸς ζῶν, (ε) κυριεία (ζ) ἐν οὐρανῷ †ὍΡΑΣΙΣ ζʹ.

ΚΕΦ. ζʹ.

1 † ἘΝ ἔτει πρώτῳ (α) τοῦ Βαλτάσαρ βασιλέως Χαλδαίων, Δανιὴλ ἐνύπνιον εἶδε, καὶ αἱ ὁράσεις τῆς κεφαλῆς
2 αὐτοῦ ἐπὶ τῆς κοίτης αὐτοῦ· καὶ τὸ (ʹ) ἐνύπνιον αὐτοῦ ἔγραψεν. Ἐγὼ Δανιὴλ ἐθεώρουν (β)· καὶ ἰδοὺ
3 οἱ τέσσαρες ἄνεμοι τοῦ οὐρανοῦ προσέβαλλον εἰς τὴν θάλασσαν τὴν μεγάλην· Καὶ (") τέσσαρα θηρία μεγάλα ἀνέβαινον
4 ἐκ τῆς θαλάσσης, διαφέροντα ἀλλήλων. Τὸ πρῶτον ὡσεὶ λέαινα (γ), καὶ πτερὰ αὐτῆς ὡς ἀετοῦ.
ἐθεώρουν ἕως οὗ ἐξετίλη τὰ πτερὰ αὐτῆς· καὶ (δ) ἐξήρθη ἀπὸ τῆς γῆς, καὶ ἐπὶ ποδῶν ἀνθρώπου ἐστάθη, καὶ
5 καρδία ἀνθρώπου ἐδόθη αὐτῇ. Καὶ ἰδοὺ θηρίον δεύτερον ὅμοιον ἄρκῳ, καὶ εἰς μέρος ἓν ἐστάθη, καὶ (ε)
τρεῖς πλευραὶ ἐν τῷ στόματι αὐτῆς, ἀναμέσον τῶν ὀδόντων αὐτῆς· καὶ οὕτως ἔλεγον αὐτῇ, Ἀνάστηθι,
6 φάγε σάρκας πολλάς. Ὀπίσω τούτου ἐθεώρουν, καὶ ἰδοὺ θηρίον ἕτερον ὡσεὶ πάρδαλις· καὶ αὐτῇ πτερὰ (·)
7 τέσσαρα πετεινοῦ ὑπεράνω αὐτῆς, καὶ τέσσαρες κεφαλαὶ τῷ θηρίῳ, καὶ ἐξουσία ἐδόθη (") αὐτῇ. Ὀπίσω τούτου
ἐθεώρουν, καὶ ἰδοὺ θηρίον τέταρτον φοβερὸν καὶ ἔκθαμβον, (ζ) ἰσχυρὸν περισσῶς, καὶ οἱ ὀδόντες αὐτοῦ σιδηροῖ (η),
ἐσθίον, καὶ λεπτῦνον, καὶ τὰ ἐπίλοιπα τοῖς ποσὶν αὐτοῦ συνεπάτει, καὶ αὐτὸ διάφορον περισσῶς
8 παρὰ πάντα τὰ θηρία τὰ ἔμπροσθεν αὐτοῦ· καὶ (θ) κέρατα δέκα αὐτῷ. Προσενόουν τοῖς κέρασιν αὐτοῦ,
καὶ ἰδοὺ κέρας ἕτερον μικρὸν ἀνέβη ἐν μέσῳ αὐτῶν, καὶ τρία κέρατα τῶν ἔμπροσθεν αὐτοῦ (ι) ἐξεῤῥιζώθη
ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ· καὶ ἰδοὺ ὀφθαλμοὶ, ὡσεὶ ὀφθαλμοὶ ἀνθρώπου ἐν τῷ κέρατι τούτῳ, καὶ στόμα λαλοῦν μεγάλα.
9 Ἐθεώρουν ἕως ὅτου (κ) οἱ θρόνοι ἐτέθησαν, καὶ παλαιὸς ἡμερῶν ἐκάθητο, καὶ τὸ ἔνδυμα αὐτοῦ (λ) λευκὸν ὡσεὶ
10 χιὼν, καὶ ἡ θρὶξ τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ ὡσεὶ ἔριον καθαρὸν, ὁ θρόνος αὐτοῦ φλὸξ πυρὸς, οἱ τροχοὶ αὐτοῦ πῦρ φλέγον. Ποταμὸς
πυρὸς (μ) εἷλκεν ἔμπροσθεν αὐτοῦ· χίλιαι χιλιάδες ἐλειτούργουν αὐτῷ, καὶ μύριαι μυριάδες παρειστήκεισαν
αὐτῷ. κριτήριον ἐκάθισε, καὶ βίβλοι ἠνεῴχθησαν.

CAP. VII.

IN anno primo Baltaſar regis Chaldæorum, Daniel ſomnium vidit: & 1
viſiones capitis ejus in cubili ejus. Et ſomnium ſuum (a) ſcripſit. Ego 2
Daniel (b) videbam: & ecce quatuor venti cœli irruebant in mare Magnum:
Et quatuor beſtiæ grandes aſcendebant de mari diverſæ inter ſe. 3
Prima, quaſi leæna, & alæ ejus, ſicut aquilæ. Aſpiciebam, donec avulſæ 4
ſunt alæ ejus: & ſublata eſt de terra: & ſuper pedes hominis ſtetit,
& cor hominis datum eſt ei. Et ecce beſtia ſecunda ſimilis urſo, & in parte 5
una ſtetit: & tres coſtæ in ore ejus inter dentes ejus. Et ſic dicebant ei;
Surge, comede carnes multas. Poſt hanc aſpiciebam: & ecce beſtia alia, 6
quaſi pardus: & huic alæ quatuor volucris ſuper ipſam: & quatuor capita
beſtiæ: & poteſtas data eſt ei. Poſt hanc aſpiciebam: & ecce beſtia 7
quarta terribilis, atque mirabilis, fortis nimis: & dentes ejus (c) ferrei:
comedens, atque comminuens: & reliqua pedibus ſuis conculcabat:
& ipſa diverſa nimis præ omnibus beſtiis, quæ ante eam: & cornua decem ei.
Conſiderabam cornua ejus: & ecce cornu aliud parvulum aſcendit 8
in medio eorum: Et tria ejus cornua de iis quæ anteà, evulſa ſunt à
facie ejus. Et ecce oculi, quaſi oculi hominis in cornu iſto, & os loquens
*(d) grandia. Aſpiciebam, donec throni poſiti ſunt, & * Antiquus dierum* 9
ſedit. Et veſtimentum ejus candidum, quaſi nix: & capillus capitis ejus,
quaſi lana munda: thronus ejus flamma ignis: rotæ ejus ignis flagrans.
Flumen ignis (e) trahebat in conſpectu ejus. Mille millia deſerviebant ei: 10
*& * dena millia denûm millium aſſiſtebant ei. Judicium ſedit, & libri*
aperti ſunt.

MS.A. † ὍΡΑΣΙΣ ηʹ. (α) Βαλτάσαρ (ʹ) ἐνύπνιον ἔγραψεν. (β) ἐν ὁράματι τῆς νυκτός· καὶ ἰδοὺ (") τέσσαρα (γ) ἔχουσα πτερὰ, καὶ πτερὰ (δ) ἐξηγέρθη (ε) τρία πλευρὰ (·) τέσσαρα (") αὐτῷ. (ζ) καὶ ἰσχυρὸν περισσῶς ⌊* παρὰ πάντα τὰ θηρία τὰ ἔμπροσθεν αὐτοῦ· καὶ κέρατα δέκα αὐτῷ.⌋ οἱ ὀδόντες (η) μεγάλοι, ἐσθίον, (θ) δέκα κέρατα (ι) ἐξεριζώθη (κ) θρόνοι (λ) ὡσεὶ χιὼν λευκὸν, (μ) ἐκπορευόμενος εἷλκεν

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* حينئذ داريوس الملك كتب لكل الشعوب والقبايل والالسن السكان بكل الارض. السلم 25
يكثر لكم * من وجهي وضع امر ليكون كل من في رياسة مملكتي مرتعدين وخايفين 26
من وجه اله دانيال. لانه هو الاله الحي والدايم الي الدهور * مملكته لا تفسد * وسلطانه الي
الغاية * يعضد وينجي * ويصنع ايات وجرايح في السماء وعلي الارض * الذي نجا دانيال من 27
يد الاسد * واستقام دانيال في مملكة داريوس الملك * وفي مملكة كيرس الفارسي * 28

Tunc Darius rex ſcripſit omnibus populis, 25
nationibus, & linguis habitantibus in
tota terra: Pax multiplicetur vobis. A 26
me proponitur decretum, ut quicunque
extant in dominio regni mei, paveant timeántque
faciem Dei Danielis, quoniam
ipſe eſt Deus vivus & in ſecula perpetuus:
regnum ejus nunquam corrumpetur,
& imperium ejus erit ad finem uſque.
Auxiliatur, & liberat, editque 27
ſigna & prodigia in cœlo & ſuper terram;
qui Danielem eripuit è manu leonum.
Ceterùm Daniel proſperè egit in 28
regno Darii regis, & in regno Cyri
Perſæ.

* الفصل السابع *

* الرويا الثامن *

* في السنة الاولي لبلطشاصر ملك الكلدانيين * راي دانيال مناما * ومناظر راسه علي 1
مضجعه * وكتب المنام * انا دانيال رايت في رويايي ليلا * واذا اربعة رياح السماء هجمن 2
الي البحر الاعظم * واربعة وحوش كبار صعدوا من البحر يتميز بعضهم من بعض * الاول 3 4
مثل لبوة لها جناحان * وجناحاها مثل نسر ونظرت * واذا جناحاها نزعا * وخرجت من الارض *
وقامت علي رجلي انسان * واعطي لها قلب انسان * واذا الوحش الثاني شبيه بالدب * وفي 5
ناحية واحدة قام * وثلاثة اضلاع في فمه بين اسنانه * وهكذا قالوا له * قم كل لحما كثيرا *
* ومن خلف هذا نظرت * واذا وحش اخر مثل النمر * وله اربعة اجنحة طاير من فوقه * 6
واربعة روس للوحش * واعطي له سلطان * ومن خلف هذا نظرت * واذا وحش رابع مخوف 7
ومهول وقوي بالاكثر * واسنانه حديد كبار ياكل ويدق * وما يبقي يدوسه برجليه * وهو
مميز بالاكثر من جميع الوحوش من قبله. وله عشر قرون * وتاملت في قرونه * واذا قرن اخر 8
صغير صعد في وسطهم * وثلاثة قرون قلعت من قدامه من وجهه * واذا عينان مثل عيني
انسان في هذا القرن * وفم يتكلم بالعظايم * نظرت واذا كراسي وضعت * والعتيق الايام 9
جلس * ولباسه ابيض مثل الثلج * وشعر راسه مثل الصوف النقي * وكرسيه لهيب نار * وبكراته
نار متقد * ونهر نار يجري ويخرج من قدامه * والوف الوف يخدمونه * وربوات ربوات ووقوف 10
امامه * وانتصب موضع الحكم * وفتحت الاسفار *

CAP. VII.

Viſio octava.

ANno primo Baltaſaſaris regis Chaldæorum 1
vidit Daniel ſomnium (viſiones
autem capitis ejus fuerunt ſuper cubile
ipſius) ſcripſitque ſomnium: Ego Daniel 2
vidi in viſione mea nocturna, & ecce quatuor
venti cœli furebant in mare maximum,
Et quatuor magnæ belluæ aſcendebant 3
è mari, diverſæ altera ab altera.
Prima ſimilis erat leænæ habenti duas alas, 4
& alæ ipſius quaſi aquilæ. Vidi etiam,
& ecce avulſæ ſunt alæ ipſius, & egreſſa
eſt è terra, ſtetitque in pedes humanos, &
datum eſt ei cor humanum. Deinde ecce 5
bellua ſecunda ſimilis urſo, qui in parte
una ſtetit, tres habens coſtas in ore ſuo inter
dentes ſuos: huic ita dixerunt; Surge,
comede carnem multam. Poſt hanc vidi; 6
& ecce belluam aliam pardo ſimilem,
quatuor volucris alas habentem ſupernè:
& quatuor capita habebat hæc bellua: &
data eſt ei poteſtas. Poſt hanc etiam vidi, 7
& ecce bellua quarta formidabilis &
horrenda, & ſummoperè fortis: dentes
ejus erant ferrei, ingentes: comedebat,
& comminuebat; & quod remanebat,
pedibus conculcabat: erat autem hæc magìs
diverſa à cæteris belluis præcedentibus,
& habebat cornua decem. Me autem 8
contemplante cornua ejus, ecce cornu
aliud parvum ſuccrevit inter illa, &
tria cornua evulſa ſunt à conſpectu & à
facie iſtius: duo prætereà oculi ſimiles
oculis humanis erant in iſto cornu, & os
ejus grandia loquebatur. Vidi, et ecce 9
ſedes poſitæ fuerunt, et Antiquus dierum
ſedit, cujus veſtitus albus erat ſicut nix,
et capilli capitis ſicut lana munda: ſedes
ejus, flamma ignis; et rotæ ejus, ignis
ardens: Pluvius igneus effluebat et egrediebatur 10
à conſpectu ejus: millia millium
miniſtrabant ei, et myriades myriadum
aſtantes erant ei: paratus fuit locus
judicii, et aperti ſunt libri.

דניאל: ז

,bestia est interfecta donec *eram* *videns* *: loquens* cornu quos grandium sermonum *voce* *à* *interim* *fui* *Videns*
11 חָזֵה הֲוֵית בֵּאדַיִן מִן־קָל מִלַּיָּא רַבְרְבָתָא דִּי קַרְנָא מְמַלְּלָה חָזֵה הֲוֵית עַד דִּי קְטִילַת חֵיוְתָא
longitudo & ;earum *potestatem* *abstulerant* *bestiarum* *residuo* Et .ignis combustionem ad est traditum & ,ejus corpus est perditum &
12 וְהוּבַד גִּשְׁמַהּ וִיהִיבַת לִיקֵדַת אֶשָּׁא׃ וּשְׁאָר חֵיוָתָא הֶעְדִּיו שָׁלְטָנְהוֹן וְאַרְכָה
cœli nubibus cum ecce & ,noctis visionibus in *fui* *Videns* .tempus & ,tempus ad usque eis esset data *vitis* in
13 בְחַיִּין יְהִיבַת לְהוֹן עַד־זְמַן וְעִדָּן׃ חָזֵה הֲוֵית בְּחֶזְוֵי לֵילְיָא וַאֲרוּ עִם־עֲנָנֵי שְׁמַיָּא
dedit ei Et .eum fecerunt appropinquare eo coram & ,pervenit dierum antiquum ad usque & *:erat veniens* hominis filius tanquam
14 כְּבַר אֱנָשׁ אָתֵה הֲוָא וְעַד־עַתִּיק יוֹמַיָּא מְטָה וּקְדָמוֹהִי הַקְרְבוּהִי׃ וְלֵהּ יְהִב
non quæ ,*seculi* potestas ejus potestas : servient ei linguæ & *nationes* ,populi omnes & ,regnum & ,gloriam & ,potestatem
שָׁלְטָן וִיקָר וּמַלְכוּ וְכֹל עַמְמַיָּא אֻמַיָּא וְלִשָּׁנַיָּא לֵהּ יִפְלְחוּן שָׁלְטָנֵהּ שָׁלְטָן עָלַם דִּי־לָא
visiones & ,*vaginæ* medio in Daniel ego ,meus spiritus *fuit* *Æger* .corrumpetur non quod ejus regnum & ,auferetur
15 יֶעְדֵּה וּמַלְכוּתֵהּ דִּי־לָא תִתְחַבַּל׃ אֶתְכְּרִיַּת רוּחִי אֲנָה דָנִיֵּאל בְּגוֹא נִדְנֶה וְחֶזְוֵי
,mihi dixit & ;hoc omne super eo ab quærebam *certitudinem* & ,assistentibus de unum *super* Accessi .me terrebant mei capitis
16 רֵאשִׁי יְבַהֲלֻנַּנִי׃ קִרְבֵת עַל־חַד מִן־קָאֲמַיָּא וְיַצִּיבָא אֶבְעֵא־מִנֵּהּ עַל־כָּל־דְּנָה וַאֲמַר־לִי
consurgent reges quatuor ; quatuor *ipsa* quæ ,magnæ bestiæ Istæ .me fecit scire sermonum interpretationem &
17 וּפְשַׁר מִלַּיָּא יְהוֹדְעִנַּנִי׃ אִלֵּין חֵיוָתָא רַבְרְבָתָא דִּי אִנִּין אַרְבַּע אַרְבְּעָה מַלְכִין יְקוּמוּן
seculum in usque & ,seculum in usque regnum possidebunt & ;altissimorum sanctorum regnum suscipient Et .terra de
18 מִן־אַרְעָא׃ וִיקַבְּלוּן מַלְכוּתָא קַדִּישֵׁי עֶלְיוֹנִין וְיַחְסְנוּן מַלְכוּתָא עַד־עָלְמָא וְעַד עָלַם
ejus dentes,*abundanter* formidolosa : ipsis cunctis à *varians* *ipsa* quæ ,*quartam* *bestiam* *super* *verum* volui Tunc .seculorum
19 עָלְמַיָּא׃ אֱדַיִן צְבִית לְיַצָּבָא עַל־חֵיוְתָא רְבִיעָיְתָא דִּי־הֲוָת שָׁנְיָה מִן־כָּלְּהֵין דְּחִילָה יַתִּירָה שִׁנַּהּ
quæ ,decem cornibus super Et .*conculcans* suis pedibus *in* residuum & ,*comminuens* ,*comedens* ,*æris* ejus ungues & ,*ferri*
דִּי־פַרְזֶל וְטִפְרַהּ דִּי־נְחָשׁ אָכְלָה מַדֳּקָה וּשְׁאָרָא בְּרַגְלַיהּ רָפְסָה׃ וְעַל־קַרְנַיָּא עֲשַׂר דִּי
20 ,grandia loquens os & ,*ei* oculi & *istud* cornu & :tria ejus facie à ceciderant & ,ascendebat quod altero & ,ejus capite in
בְרֵאשַׁהּ וְאָחֳרִי דִּי סִלְקַת וּנְפַלוּ מִן־קֳדָמַיהּ תְּלָת וְקַרְנָא דִכֵּן וְעַיְנִין לַהּ וּפֻם מְמַלִּל רַבְרְבָן
.eis *prævalens* & :sanctis cum *prælium* *faciens* *sic* quod cornu & ,*eram* *Videns* .suis sociis *præ* *magnus* ejus aspectus &
21 וְחֶזְוַהּ רַב מִן־חַבְרָתַהּ׃ חָזֵה הֲוֵית וְקַרְנָא דִכֵּן עָבְדָה קְרָב עִם־קַדִּישִׁין וְיָכְלָה לְהוֹן׃
.Sancti possidebant regnum & ,advenit tempus & ;altissimis sanctis est datum judicium & ,dierum antiquus venit Donec
22 עַד דִּי־אֲתָה עַתִּיק יוֹמַיָּא וְדִינָא יְהִב לְקַדִּישֵׁי עֶלְיוֹנִין וְזִמְנָא מְטָה וּמַלְכוּתָא הֶחֱסִנוּ קַדִּישִׁין׃
universam devorabit & : regnis omnibus *ab* *differet* quod ,terra in erit quartum regnum quarta Bestia ,ait Sic
23 כֵּן אֲמַר חֵיוְתָא רְבִיעָיְתָא מַלְכוּ רְבִיעָאָה תֶּהֱוֵא בְאַרְעָא דִּי תִשְׁנֵא מִן־כָּל־מַלְכְוָתָא וְתֵאכֻל כָּל־
alius & ;consurgent reges decem ,regno ipso ex ,decem cornua Et .eam comminuet & ,eam *calcabit* & ,terram
24 אַרְעָא וּתְדוּשִׁנַּהּ וְתַדֳּקִנַּהּ׃ וְקַרְנַיָּא עֲשַׂר מִנַּהּ מַלְכוּתָה עַשְׂרָה מַלְכִין יְקֻמוּן וְאָחֳרָן
,loquetur altissimi parte ex sermones Et .humiliabit reges tres & ,prioribus *à* *differet* ipse & ,eos post consurget
25 יְקוּם אַחֲרֵיהוֹן וְהוּא יִשְׁנֵא מִן־קַדְמָיֵא וּתְלָתָה מַלְכִין יְהַשְׁפִּל׃ וּמִלִּין לְצַד עִלָּיָא יְמַלִּל
,tempora & ,tempus ad usque ejus manu in tradentur & ,legem & ,tempora mutare putabit & *:abolebit* altissimorum sanctos &
וּלְקַדִּישֵׁי עֶלְיוֹנִין יְבַלֵּא וְיִסְבַּר לְהַשְׁנָיָה זִמְנִין וְדָת וְיִתְיַהֲבוּן בִּידֵהּ עַד־עִדָּן וְעִדָּנִין
.temporis *partem* &
וּפְלַג עִדָּן׃

Versio VULG. LAT.

Aſpiciebam propter vocem ſermonum grandium, quos 11 cornu illud loquebatur: & vidi quoniam interfecta eſſet beſtia, & periſſet corpus ejus, & traditum eſſet ad comburendum igni: Aliarum quoque beſtiarum ablata eſſet 12 poteſtas, & tempora vitæ conſtituta eſſent eis uſque ad tempus & tempus. Aſpiciebam ergò in viſione noctis, & 13 ecce cum nubibus cœli quaſi filius hominis veniebat, & uſque ad Antiquum dierum pervenit: & in conſpectu ejus obtulerunt eum. Et dedit ei poteſtatem, & honorem, & 14 regnum: & omnes populi, tribus, & linguæ ipſi ſervient: poteſtas ejus, poteſtas æterna, quæ non auferetur: & regnum ejus, quod non corrumpetur. Horruit ſpiritus meus, 15 ego Daniel territus ſum in his, & viſiones capitis mei conturbaverunt me. Acceſſi ad unum de aſſiſtentibus, & ve- 16 ritatem quærebam ab eo de omnibus his. Qui dixit mihi interpretationem ſermonum, & docuit me: Hæ quatuor 17 beſtiæ magnæ, quatuor ſunt regna, quæ conſurgent de terra. Suſcipient autem regnum Sancti Dei altiſſimi: & ob- 18 tinebunt regnum uſque in ſeculum, & ſeculum ſeculorum. Poſt hoc volui diligenter diſcere de beſtia quarta, quæ erat 19 diſſimilis valdè ab omnibus, & terribilis nimis: dentes & ungues ejus ferrei: comedebat, & comminuebat, reliqua pedibus ſuis conculcabat: Et de cornibus decem, quæ 20 habebat in capite: & de alio, quod ortum fuerat, ante quod ceciderant tria cornua: & de cornu illo, quod habebat oculos, & os loquens grandia, & majus erat cæteris. Aſpiciebam, & ecce cornu illud faciebat bellum adverſùs 21 Sanctos, & prævalebat eis, Donec venit Antiquus dierum, 22 & judicium dedit Sanctis Excelſi, & tempus advênit, & regnum obtinuerunt Sancti. Et ſic ait; Beſtia quarta, re- 23 gnum quartum erit in terra, quod majus erit omnibus regnis, & devorabit univerſam terram, & conculcabit, & comminuet eam. Porrò cornua decem ipſius regni, de- 24 cem reges erunt: & alius conſurget poſt eos, & ipſe potentior erit prioribus, & tres reges humiliabit. Et ſer- 25 mones contra Excelſum loquetur, & Sanctos Altiſſimi conteret: & putabit quòd poſſit mutare tempora, & leges, & tradentur in manu ejus uſque ad tempus, & tempora, & dimidium temporis.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

11 ܚܙܐ ܗܘܝܬ ܕܐܬܩܛܠܬ ܚܝܘܬܐ ܗܝ. ܘܐܒܕ ܦܓܪܗ. ܘܐܬܝܗܒ ܠܝܩܕܢܐ ܕܢܘܪܐ. *
12 * ܘܫܪܟܐ ܕܚܝܘܬܐ ܐܬܥܒܪܘ ܡܢ ܫܘܠܛܢܗܘܢ. ܘܙܒܢܐ ܘܚܝܐ. ܐܬܝܗܒ ܠܗܘܢ
13 ܥܕܡܐ ܠܙܒܢ ܘܥܕܢ. * ܚܙܐ ܗܘܝܬ ܥܠ ܥܢܢܝ ܫܡܝܐ ܐܝܟ ܒܪ ܐܢܫܐ ܐܬܐ.
14 ܘܡܛܐ. ܥܕܡܐ ܠܥܬܝܩ ܝܘܡܬܐ: ܘܩܕܡܘܗܝ ܩܪܒܘܗܝ. * ܘܠܗ ܝܗܒ
ܫܘܠܛܢܐ: ܘܐܝܩܪܐ ܘܡܠܟܘܬܐ. ܕܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܘܐܡܘܬܐ ܘܠܫܢܐ ܠܗ
ܢܦܠܚܘܢ. ܫܘܠܛܢܗ ܫܘܠܛܢܐ ܕܠܥܠܡ. ܘܠܐ ܥܒܪ. ܘܡܠܟܘܬܗ ܠܐ ܡܬܚܒܠܐ.
15 * ܐܬܟܪܝܬ ܪܘܚܝ ܐܢܐ ܕܢܝܐܝܠ ܒܓܘ ܡܫܟܒܝ. ܘܚܙܘܐ ܕܪܫܝ ܒܗܠܘܢܢܝ.
16 * ܘܩܪܒܬ ܠܘܬ ܚܕ ܡܢ ܡܫܡܫܢܐ. ܘܥܠ ܫܪܪܐ ܒܥܝܬ ܡܢܗ. ܥܠ ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ.
17 ܘܐܡܪ ܠܝ. ܫܪܪܐ. ܘܦܘܫܩ ܡܠܝ ܐܘܕܥܢܝ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܗܠܝܢ ܚܝܘܬܐ ܪܘܪܒܬܐ
18 ܕܚܙܝܬ. ܐܪܒܥܐ ܡܠܟܝܢ ܢܩܘܡܘܢ ܥܠ ܐܪܥܐ. * ܘܢܩܒܠܘܢ ܡܠܟܘܬܐ
19 ܩܕܝܫܐ ܕܡܪܝܡܐ. ܘܢܚܣܢܘܢܗ ܠܡܠܟܘܬܐ ܠܥܠܡ. ܘܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ. * ܘܨܒܝܬ.
ܐܢܐ ܕܢܝܐܝܠ ܠܡܬܒܥܘ ܥܠ ܚܝܘܬܐ ܪܒܝܥܝܬܐ. ܕܫܢܝܐ ܗܘܬ ܡܢ ܟܠܗܝܢ
ܚܝܘܬܐ. ܘܕܚܝܠܐ ܛܒ. ܫܢܝܗ ܕܦܪܙܠܐ. ܘܛܦܪܝܗ ܕܢܚܫܐ. ܐܟܠܐ. ܘܡܕܩܐ. ܘܫܪܟܐ
20 ܕܡܫܬܒܩ. ܒܪܓܠܝܗ ܕܝܫܐ. * ܘܥܠ ܩܪܢܬܐ ܥܣܪ ܕܒܪܫܗ. ܘܥܠ ܐܚܪܬܐ ܕܣܠܩܬ ܡܢ
ܒܝܢܬܗܘܢ. ܘܢܦܠ ܡܢ ܩܕܡܝܗ ܬܠܬ. ܘܩܪܢܐ ܗܝ. ܕܥܝܢܐ ܐܝܬ ܠܗ. ܘܦܘܡܐ
21 ܡܡܠܠ ܪܘܪܒܢ. ܘܚܙܘܗ ܪܒ ܡܢ ܕܚܒܪܬܗ. * ܐܢܛܝܘܟܘܣ* ܚܙܐ ܗܘܝܬ ܩܪܢܐ ܗܝ.
22 ܥܒܕܐ ܩܪܒܐ ܥܡ ܩܕܝܫܐ. ܘܡܨܝܐ ܠܗܘܢ. * ܥܕܡܐ ܕܐܬܐ ܥܬܝܩ ܝܘܡܬܐ. ܘܕܝܢܐ
23 ܝܗܒ ܠܩܕܝܫܐ ܕܡܪܝܡܐ. ܘܙܒܢܐ ܡܛܐ. ܘܡܠܟܘܬܐ ܚܣܢܘ ܩܕܝܫܐ. * ܘܗܟܢܐ ܐܡܪ
ܠܝ. ܚܝܘܬܐ ܪܒܝܥܝܬܐ. ܡܠܟܘܬܐ ܪܒܝܥܝܬܐ ܬܗܘܐ ܒܐܪܥܐ. ܕܬܬܪܝܡ ܥܠ ܟܠܗܝܢ
24 ܡܠܟܘܬܐ. ܘܬܐܟܘܠ ܐܪܥܐ ܟܠܗ. ܘܬܕܘܫܝܘܗ ܘܬܕܩܝܘܗ. * ܘܩܪܢܬܐ ܥܣܪ. ܡܢ ܡܠܟܘܬܐ.
ܗܝ ܥܣܪܐ ܡܠܟܝܢ ܢܩܘܡܘܢ. ܘܐܚܪܢܐ ܢܩܘܡ ܒܬܪܗܘܢ. ܘܗܘ ܢܬܝܬܪ ܡܢ ܩܕܡܝܐ. ܘܬܠܬܐ
25 ܡܠܟܝܢ ܢܡܟܟ. * ܘܡܠܐ ܠܘܬ ܡܪܝܡܐ ܢܡܠܠ. ܘܥܠ ܩܕܝܫܐ ܕܡܪܝܡܐ ܢܟܠ. ܘܢܣܒܪ
ܕܢܫܢܐ ܙܒܢܐ. ܘܢܡܘܣܐ. ܘܢܬܝܗܒܘܢ ܒܐܝܕܗ. ܥܕܡܐ ܠܥܕܢ ܥܕܢܝܢ
ܘܦܠܓܘܬ ܥܕܢ.

* Videbam interfectam eſſe belluam illam, & 11 periiſſe corpus ejus, & traditam eſſe incendio ignis: * Reliquas verò belluas depoſitas eſſe 12 à dominatu ſuo, ſpatium tamen ac vitam eis conceſſam uſque ad tempus & terminum præfinitum. * Videbam ſuper cœli nubes quen- 13 dam ceu filium hominis veniſſe, & uſque ad Antiquum dierum acceſſiſſe, eique oblatum fuiſſe. * Huic datus fuit dominatus, honos, & 14 regnum; ut omnes populi, nationes, ac linguæ ſervirent ei: dominium ejus dominium eſt perpetuum & minimè fluxum, & regnum ejus incorruptum. * Doluit ſpiritus meus mei 15 Danielis in cubili meo, & viſiones capitis mei conturbaverunt me. * Itaque accedens ad u- 16 num ex iis miniſtris, veritatem ab eo indagavi de his omnibus: qui dixit mihi veritatem, & interpretationem verborum meorum expoſuit mihi. * Is mihi dixit; Quatuor illæ bel- 17 luæ magnæ quas vidiſti, quatuor *figurant* reges in terra ſurrecturos. * Tum regnum accipi- 18 ent Sancti *Dei* excelſi, & regnum poſſidebunt in ſeculum & in ſeculum ſeculorum. * Tunc o- 19 ptavi ego Daniel inveſtigare de quarta bellua quæ diverſa erat ab omnibus belluis, & admodum horrenda: cujus dentes ferrei, ungues ænei: comedebat comminuebatque, & quod relinquebat, pedibus conculcabat: * Si- 20 militer de cornibus decem quæ habebat in capite ſuo, deque illo alio quo emergente de medio illorum, tria ceciderunt à conſpectu ipſius: cornu inquam, illo quod oculos habebat, cujus os grandia loquebatur, cujus denique ſpecies major erat quàm ſociorum ejus. * *Antiochus*. * Videbam illud cornu bellum ge- 21 rere cum Sanctis, eorumque fortitudinem ſuperare: * Donec veniret Antiquus dierum, & 22 judicium daret Sanctis Excelſi, & adveniente tempore regnum poſſiderent Sancti. * Sic au- 23 tem dixit mihi; Bellua illa quarta, regnum quartum erit in terra, quod præſtabit regnis omnibus, comedet univerſam terram, & conculcabit & conteret eam. * Cornua vero de- 24 cem *ſignificant* ex *eodem* regno decem reges ſurrecturum, qui præcedentes ſuperabit, & tres reges deprimet: * Verba adverſùs Excel- 25 ſum loquetur, & adverſùs Sanctos Excelſi fraudem: & credet ſe mutaturum tempora, terminos præfinitos, ac leges: & *quidem* tradentur in manum ejus uſque ad præfinitum quoddam tempus temporum, & dimidium tempus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

11 Ἐθεώρουν τότε ἀπὸ φωνῆς τῶν (ν) λόγων τῶν μεγάλων, ὧν τὸ κέρας ἐκεῖνο ἐλάλει, ἕως (ξ) ἀνῃρέθη τὸ θη-
12 ρίον, καὶ ἀπώλετο, καὶ τὸ σῶμα αὐτοῦ ἐδόθη εἰς καῦσιν πυρός. Καὶ τῶν λοιπῶν θηρίων (ο) μετεστάθη ἡ ἀρ-
13 χὴ, καὶ μακρότης ζωῆς ἐδόθη αὐτοῖς ἕως καιροῦ καὶ καιροῦ. Ἐθεώρουν ἐν ὁράματι τῆς νυκτὸς, καὶ ἰδοὺ μετὰ τῶν
νεφελῶν τοῦ οὐρανοῦ, ὡς υἱὸς ἀνθρώπου ἐρχόμενος (π), καὶ ἕως τοῦ παλαιοῦ τῶν ἡμερῶν ἔφθασε, (ρ) καὶ
14 προσηνέχθη αὐτῷ. Καὶ αὐτῷ ἐδόθη ἡ ἀρχὴ καὶ ἡ τιμὴ καὶ ἡ βασιλεία, καὶ πάντες οἱ λαοὶ, φυλαὶ, (σ)
καὶ γλῶσσαι αὐτῷ δουλεύσουσιν· ἡ ἐξουσία αὐτοῦ, ἐξουσία αἰώνιος, ἥτις οὐ παρελεύσεται, καὶ ἡ βασιλεία αὐτοῦ
15 οὐ διαφθαρήσεται. Ἔφριξε τὸ πνεῦμά μου ἐν τῇ ἕξει μου, ἐγὼ Δανιὴλ, καὶ αἱ ὁράσεις τῆς κεφαλῆς μου
16 ἐτάρασσόν με. Καὶ προσῆλθον ἑνὶ τῶν ἑστηκότων, καὶ τὴν ἀκρίβειαν ἐζήτουν παρ' αὐτοῦ μαθεῖν περὶ
17 πάντων τούτων. καὶ εἶπέ μοι τὴν ἀκρίβειαν, καὶ τὴν σύγκρισιν τῶν λόγων ἐγνώρισέ μοι. Ταῦτα τὰ θη-
18 ρία (τ) τὰ τέσσαρα, τέσσαρες βασιλεῖαι ἀναστήσονται ἐπὶ τῆς γῆς, αἳ ἀρθήσονται· Καὶ παραλήψονται
19 τὴν βασιλείαν ἅγιοι ὑψίστου, καὶ καθέξουσιν αὐτὴν ἕως αἰῶνος τῶν αἰώνων. Καὶ ἐζήτουν ἀκριβῶς περὶ
τοῦ θηρίου τοῦ τετάρτου· ὅτι ἦν διαφέρον παρὰ πᾶν θηρίον, φοβερὸν περισσῶς, οἱ ὀδόντες αὐτοῦ σιδη-
ροῖ, καὶ (υ) ὄνυχες αὐτοῦ *χαλκοῖ, ἐσθίον, καὶ λεπτῦνον, καὶ τὰ ἐπίλοιπα τοῖς ποσὶν αὐτοῦ συνεπάτει.
20 Καὶ περὶ τῶν κεράτων αὐτοῦ τῶν δέκα τῶν ἐν τῇ κεφαλῇ αὐτοῦ, καὶ τοῦ ἑτέρου τοῦ ἀναβάντος, καὶ ἐκ-
τινάξαντος τῶν (φ) πρώτων, ᾧ οἱ ὀφθαλμοὶ καὶ στόμα λαλοῦν μεγάλα, καὶ ἡ ὅρασις αὐτοῦ, (χ) μείζων
21 τῶν λοιπῶν. Ἐθεώρουν, καὶ τὸ κέρας ἐκεῖνο ἐποίει πόλεμον μετὰ τῶν ἁγίων, καὶ (ψ) ἴσχυσε πρὸς αὐτοὺς,
22 (ω) Ἕως οὗ ἦλθεν ὁ παλαιὸς (ª) ἡμερῶν, καὶ τὸ κρίμα ἔδωκεν ἁγίοις ὑψίστου· καὶ ὁ καιρὸς ἔφθασε, καὶ
23 τὴν βασιλείαν κατέσχον οἱ ἅγιοι. Καὶ εἶπε, Τὸ θηρίον τὸ τέταρτον, βασιλεία τετάρτη ἔσται ἐν τῇ γῇ,
ἥτις ὑπερέξει πάσας τὰς βασιλείας, καὶ καταφάγεται πᾶσαν τὴν γῆν, καὶ συμπατήσει αὐτὴν καὶ κατα-
24 κόψει. Καὶ τὰ δέκα κέρατα αὐτοῦ, δέκα βασιλεῖς ἀναστήσονται, καὶ ὀπίσω (α) αὐτῶν ἀναστήσεται
25 ἕτερος, ὃς ὑπεροίσει κακοῖς πάντας τοὺς ἔμπροσθεν, καὶ τρεῖς βασιλεῖς ταπεινώσει, Καὶ λόγους πρὸς τὸν
ὕψιστον λαλήσει, καὶ τοὺς ἁγίους ὑψίστου παλαιώσει, καὶ ὑπονοήσει τοῦ ἀλλοιῶσαι καιροὺς καὶ νόμον, καὶ δο-
θήσεται ἐν χερσὶ αὐτοῦ (β) ἕως καιροῦ καὶ καιρῶν καί γε ἥμισυ καιροῦ.

Aſpiciebam tunc à voce ſermonum grandium, quos cornu illud loqueba- 11
tur; quoadusque interfecta eſt beſtia, & periit, & corpus ejus datum eſt
in combuſtionem ignis. Et cæterarum beſtiarum tranſlatus eſt principatus : 12
& longitudo vitæ data eſt eis uſque ad tempus, & tempus. Aſpiciebam 13
in viſione noctis : & ecce cum nubibus cœli, quaſi filius hominis veniens : &
uſque ad Antiquum dierum pervenit : & (f) oblatus eſt ei : Et datus eſt 14
ipſi principatus, & honor, & regnum : & (g) omnes populi, tribus, &
linguæ ipſi ſervient. Poteſtas ejus, poteſtas ſempiterna, quæ non per-
tranſibit : & regnum ejus non corrumpetur. Horruit ſpiritus meus : 15
(h) in habitu meo ego Daniel : & viſiones capitis mei conturbabant me.
Et acceſſi ad unum aſſiſtentium : & veritatem quærebam ab eo diſcere 16
de omnibus his. Et dixit mihi veritatem ; & interpretationem ſermonum
notam mihi fecit. Hæ quatuor (i) beſtiæ ; quatuor regna conſurgent 17
ſuper terram : quæ auferentur. Et ſuſcipient regnum Sancti Altiſſimi : 18
& obtinebunt illud uſque in ſeculum ſeculorum. Et quærebam diligen- 19
ter de beſtia quarta : (quia erat diſſimilis ab omni beſtia, terribilis nimis :
dentes ejus ferrei, & ungues ejus ænei : comedens, & comminuens : &
reliqua pedibus ſuis conculcabat :) Et de cornibus ejus decem, quæ in capi- 20
te ejus, & alio, quod aſcenderat, & excuſſerat de (k) primis, cui oculi,
& os loquens grandia, & aſpectus ejus major cæteris. Aſpiciebam : & 21
cornu illud faciebat bellum cum Sanctis, & prævalebat erga eos, Donec 22
venit Antiquus dierum, & judicium dedit Sanctis Excelſi : & tempus
advenit : & regnum obtinuerunt Sancti. Et dixit ; Beſtia quarta, 23
regnum quartum erit in terra, quod ſuperabit omnia regna, & devorabit
univerſam terram, et conculcabit eam, et comminuet. Et decem cor- 24
nua ejus, decem reges conſurgent, et poſt eos conſurget alius : qui ſupe-
rabit (l) malis omnes priores, et tres reges humiliabit : Et ſermones 25
contra Excelſum loquetur : et Sanctos Altiſſimi (m) faciet veteraſcere :
& (n) cogitabit mutare tempora, et legem : et tradentur in manu ejus uſque
ad tempus, et tempora, et etiam dimidium temporis.

MS.A. (ν) λόγων, *ὧν ἐλάλει, ὧν (ξ) τὸ θηρίον ἐκεῖνο ἀνῃρέθη, (ο) ἡ ἀρχὴ μετεστάθη, (π) ἦν, καὶ (ρ) ἐνώπιον αὐτοῦ προσήγαγον αὐτόν. Καὶ αὐτῷ ἐδόθη (σ) γλῶσσαι αὐτῷ δουλεύουσιν· (τ) τὰ μεγάλα τὰ τέσσαρα, (υ) οἱ ὄνυχες (φ) προτέρων τρία, κέρας ἐκεῖνο ᾧ οἱ (χ) μείζω (ψ) ἴσχυεν (ω) Ἕως ἦλθεν (ª) τῶν ἡμερῶν, (α) αὐτῶν (β) ἕως καιροῦ * καὶ καιροῦ καὶ καιρῶν καὶ ἥμισυ

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ونظرت حينيذ من صوت الكلمات العظيمة التي تكلم بها ذلك القرن * حتى قتل 11
ذلك الوحش وهلك * واعطي جسده لتحريق النار * ونقلت رياسة بقية الوحوش * واعطي 12
لها طول حياة زمان ووقت * ونظرت في رويا الليل * واذا مع سحب السماء مثل ابن انسان 13
كان اتيا * وبلغ الى العتيق الايام * وقرب امامه * واعطيت له الرياسة والكرامة والمملكة * 14
وجميع الشعوب والقبايل والالسن يتعبدون له * وسلطانه سلطان ابدي الذي لا يزول *
ومملكته لا تفسد * فضعفت نفسي انا دانيال في حواسي * ومناظر راسي اقلقتني * 15
* وتقدمت لواحد من القيام * وطلبت منه التحقيق من اجل هولاء كلهم * فقال لي 16
التحقيق * واعلمني تاويل الكلمات * هولاء الوحوش الاربعة الكبار * اربع ممالك تقوم 17
على الارض * هذه تنزع * وياخذ قديسوا العلي المملكة * ويستحوذون عليها الى الابد 18
والى ابد الاباد * فطلبت بتحقيق من اجل الوحش الرابع لانه كان مميزا عن كل 19
وحش * ومخوفا بالاكثر * اسنانه حديد * ومخالبه نحاس * ياكل ويدق * وما تبقي
يدوسه برجليه * ومن اجل قرونه العشر التي في راسه * واذ صعد الاخر نقص ثلاثة 20
من الاولين * وذلك القرن له عينان * وفم يتكلم بالعظايم * ومنظره اعظم من الباقي *
* ونظرت ذلك القرن صنع حربا مع القديسين * وقوي عليهم * حتى جاء العتيق الايام * 21 22
واعطي الحكم لقديسي العلي * والزمان بلغ * واخذت القديسون المملكة * فقال * 23
الوحش الرابع مملكة رابعة تكون في الارض * هذه تعلو جميع الممالك * وتاكل كل
الارض وتدوسها وتدقها * وعشر قرونه عشر ملوك يقومون * ومن خلفهم يقوم اخر * 24
هذا يفوق بالشرور جميع من قبله * ويذل ثلاثة ملوك * ويتكلم على العلي كلاما * 25
ويضل قديسي العلي * ويظن ان يغير الاوقات والناموس * ويدفع في يده الى وقت
اوقات ونصف وقت *

Vidi etiam tunc à voce ſermonum ma- 11
gnorum quos protulerat illud cornu,
donec interfecta eſt bellua illa, perîitque,
& traditum fuit corpus incendio ignis.
Et tranſlatus eſt principatus reliquarum 12
belluarum, ſed conceſſa eis longitudo
ætatis, ſpatii, & temporis. Prætereà 13
vidi in viſione nocturna, & ecce cum
nubibus cœli quaſi filius hominis veni-
ebat, & pervênit uſque ad Antiquum
dierum : & cùm oblatus fuiſſet co-
ram eo, Datus fuit ei principatus, ho- 14
nor, atque regnum : & omnes populi,
nationes, ac linguæ ſervient ei : poteſtas
ejus poteſtas æterna quæ nunquam deficiet,
& regnum ejus nunquam corrumpetur.
Quapropter cùm extenuata fuiſſet anima 15
mea mei Danielis in ſenſibus meis, &
viſiones capitis mei conturbarent me ;
Acceſſi ad unum ex aſtantibus, & ex 16
ploratus ſum ab eo veritatem, & notam
fecit mihi interpretationem verborum.
Hæ belluæ quatuor ingentes, quatuor 17
ſunt regna ſuper terram ſurrectura.
His ablatis, Sancti Altiſſimi regnum 18
accipient, et potientur eo in æternum
et in æternitatem æternitatum. Deinde 19
exploratus ſum veritatem de quarta
bellua, utpote diverſa ab omnibus bel-
luis, et magnopere formidabili ; cujus
dentes erant ferrei, ungues ænei ; com-
edebat et comminuebat, quódque rema-
nebat, pedibus conculcabat : Déque 20
cornibus ejus decem quæ capite gere-
bat : et cur aliud ſuccreſcens tria prio-
rum excuſſerit, idémque cornu oculos
haberet, et os grandia loquens, et ſpe-
cies ejus reliquis major eſſet. Vide- 21
ram etiam cornu illud bellum geſſiſſe
contra Sanctos, eiſque prævaluiſſe, Do- 22
nec veniſſet Antiquus dierum, dediſſét-
que regnum Sanctis Altiſſimi ; et tem-
pore adveniente, Sancti regnum obtinu-
iſſent. Dixit ; Bellua quarta, regnum 23
quartum erit in terra : hoc omnia re-
gna ſuperabit, comedet univerſam ter-
ram, conculcabit et conteret eam. Cor- 24
nua ipſius decem, ſunt reges decem
ſurrecturi ; poſt quos ſurget alius, qui
malis omnes prædeceſſores ſuos ſupe-
rabit, et reges tres humiliabit. Adver- 25
ſus Altiſſimum verba obloquetur, ſe-
ducet Sanctos Excelſi, putabitque ſe
mutare poſſe tempora et legem : et
quidem dabitur hoc in manum ejus ad
tempus temporum et dimidium tem-
poris.

דניאל : ח

magnitudo & ,potestas & ,regnum Et .finem in usque *perdendum & ,delendum ad* ,auferent ejus potestatẽ & ; sedebit judicium Et

26 וְדִינָא יִתִּב וְשָׁלְטָנֵהּ יְהַעְדּוֹן לְהַשְׁמָדָה וּלְהוֹבָדָה עַד־סוֹפָא׃ וּמַלְכוּתָא וְשָׁלְטָנָא וּרְבוּתָא 27

potestates omnes & ,*seculi* regnum ejus regnum : altissimorum sanctorum populo est *datum* cœlum omne subter *regnorum*

דִּי מַלְכְוָת תְּחוֹת כָּל־שְׁמַיָּא יְהִיבַת לְעַם קַדִּישֵׁי עֶלְיוֹנִין מַלְכוּתֵהּ מַלְכוּת עָלַם וְכֹל שָׁלְטָנַיָּא

mei splendores & ,me terruerunt meæ cogitationes multùm ,Daniel ego : verbi finis usque Huc .obedient & ,servient ei

28 לֵהּ יִפְלְחוּן וְיִשְׁתַּמְּעוּן׃ עַד־כָּה סוֹפָא דִי־מִלְּתָא אֲנָה דָנִיֵּאל שַׂגִּיא ׀ רַעְיוֹנַי יְבַהֲלֻנַּנִי וְזִיוַי

.conservavi meo corde in sermonem & ,me *super sunt immutati*

יִשְׁתַּנּוֹן עֲלַי וּמִלְּתָא בְּלִבִּי נִטְרֵת׃

CAP. VIII. ח

.principio in *me ad* apparuit *postquam* Daniel ego : *me ad* apparuit visio ,regis Balsasar regni tertio anno In

בִּשְׁנַת שָׁלוֹשׁ לְמַלְכוּת בֵּלְאשַׁצַּר הַמֶּלֶךְ חָזוֹן נִרְאָה אֵלַי אֲנִי דָנִיֵּאל אַחֲרֵי הַנִּרְאָה אֵלַי בַּתְּחִלָּה׃ 1

ego & ,visione in vidi & : provincia Helam in quæ ,*metropoli* Susan in *ego & ,me videndo in* fuit & ,visione in vidi Et

וָאֶרְאֶה בֶּחָזוֹן וַיְהִי בִּרְאֹתִי וַאֲנִי בְּשׁוּשַׁן הַבִּירָה אֲשֶׁר בְּעֵילָם הַמְּדִינָה וָאֶרְאֶה בֶּחָזוֹן וַאֲנִי 2

; cornua ei & ,*rivi facies ad stans* unus aries ecce & ,vidi & ,meos oculos levavi Et .Ulai *rivum super* eram

הָיִיתִי עַל־אוּבַל אוּלָי׃ וָאֶשָּׂא עֵינַי וָאֶרְאֶה וְהִנֵּה ׀ אַיִל אֶחָד עֹמֵד לִפְנֵי הָאֻבָל וְלוֹ קְרָנָיִם 3

cornupetentem arietem Vidi .novissimo in *ascendens excelsum* & ,*secundo præ excelsum* unum & ,excelsa cornua &

וְהַקְּרָנַיִם גְּבֹהוֹת וְהָאַחַת גְּבֹהָה מִן־הַשֵּׁנִית וְהַגְּבֹהָה עֹלָה בָּאַחֲרֹנָה׃ רָאִיתִי אֶת־הָאַיִל מְנַגֵּחַ 4

fecit & : ejus manu de *eruens* nec ,*ejus facies ad* stabant non bestiæ omnes & ,Meridiem *ad* & ,Aquilonem & ,*mare* ad

יָמָּה וְצָפוֹנָה וָנֶגְבָּה וְכָל־חַיּוֹת לֹא־יַעַמְדוּ לְפָנָיו וְאֵין מַצִּיל מִיָּדוֹ וְעָשָׂה

facies super Occidente ab *veniens* caprarum hircus ecce & ; perpendens eram ego Et .est magnificatus & ,suã voluntatẽ secundùm

כִרְצֹנוֹ וְהִגְדִּיל׃ וַאֲנִי ׀ הָיִיתִי מֵבִין וְהִנֵּה צְפִיר־הָעִזִּים בָּא מִן־הַמַּעֲרָב עַל־פְּנֵי 5

, cornua habentem arietem ad usque venit Et .ejus oculos inter *visionis* cornu hirco & : terram *in tangens* non & , terræ totius

כָל־הָאָרֶץ וְאֵין נוֹגֵעַ בָּאָרֶץ וְהַצָּפִיר קֶרֶן חָזוּת בֵּין עֵינָיו׃ וַיָּבֹא עַד־הָאַיִל בַּעַל הַקְּרָנַיִם 6

,arietem *juxta pertingentem* eum vidi Et .suæ fortitudinis ira in eum ad cucurrit & ; fluvium ante stantem videram quem

אֲשֶׁר רָאִיתִי עֹמֵד לִפְנֵי הָאֻבָל וַיָּרָץ אֵלָיו בַּחֲמַת כֹּחוֹ׃ וּרְאִיתִיו מַגִּיעַ ׀ אֵצֶל הָאַיִל 7

standum ad ,ariete in fortitudo erat non & ,ejus cornua duo *confregit* & ,arietem percussit & ,eum *in est commotus bile* &

וַיִּתְמַרְמַר אֵלָיו וַיַּךְ אֶת־הָאַיִל וַיְשַׁבֵּר אֶת־שְׁתֵּי קְרָנָיו וְלֹא־הָיָה כֹחַ בָּאַיִל לַעֲמֹד

caprarum hircus Et .ejus manu de arietem *eruens* erat non & ,eum conculcavit & ,terram in eum projecit & ; eum ante

לְפָנָיו וַיַּשְׁלִיכֵהוּ אַרְצָה וַיִּרְמְסֵהוּ וְלֹא־הָיָה מַצִּיל לָאַיִל מִיָּדוֹ׃ וּצְפִיר הָעִזִּים 8

quatuor in ,eo pro quatuor *apparentia* ascenderunt & ,magnum cornu est fractum ,*illum roborari ut* & : *valde usque* est magnificatus

הִגְדִּיל עַד־מְאֹד וּכְעָצְמוֹ נִשְׁבְּרָה הַקֶּרֶן הַגְּדוֹלָה וַתַּעֲלֶנָה חָזוּת אַרְבַּע תַּחְתֶּיהָ לְאַרְבַּע

,Orientem ad & ,Meridiem ad *præstanter* crevit & ; parvum unum cornu est egressum illis ex uno ex Et .cœli ventos

רוּחוֹת הַשָּׁמָיִם׃ וּמִן־הָאַחַת מֵהֶם יָצָא קֶרֶן־אַחַת מִצְּעִירָה וַתִּגְדַּל־יֶתֶר אֶל־הַנֶּגֶב וְאֶל־הַמִּזְרָח 9

.eas conculcavit & , stellis de & ,exercitu de terram dejecit & ; cœlorum exercitum ad usque crevit Et .*ornatum* ad &

וְאֶל־הַצֶּבִי׃ וַתִּגְדַּל עַד־צְבָא הַשָּׁמָיִם וַתַּפֵּל אַרְצָה מִן־הַצָּבָא וּמִן־הַכּוֹכָבִים וַתִּרְמְסֵם׃ 10

exercitus Et .ejus *sanctuarii* locus est projectus & , juge est ablatum eo ab & ; est magnificatum exercitus principem ad usque Et

11 וְעַד שַׂר־הַצָּבָא הִגְדִּיל וּמִמֶּנּוּ הֻרַם הַתָּמִיד וְהֻשְׁלַךְ מְכוֹן מִקְדָּשׁוֹ׃ וְצָבָא 12

.prosperabitur & , faciet & , terram in veritatem projiciet & ,*prævaricatione in* juge contra dabitur

תִּנָּתֵן עַל־הַתָּמִיד בְּפָשַׁע וְתַשְׁלֵךְ אֱמֶת אַרְצָה וְעָשְׂתָה וְהִצְלִיחָה׃

Versio VULG. LAT.

Et judicium sedebit, ut auferatur potentia, & conteratur, 26 & dispereat usque in finem. Regnum autem, & potestas, 27 & magnitudo regni, quæ est subter omne cœlum, detur populo Sanctorum Altissimi : cujus regnum, regnum sempiternum est, & omnes reges servient ei, & obedient. Hucusque finis verbi. Ego Daniel multùm cogitationibus 28 meis conturbabar, & facies mea mutata est in me : verbum autem in corde meo conservavi.

CAP. VIII.

ANno tertio regni Baltassar regis, visio apparuit mihi. 1 Ego Daniel, post id quod videram in principio. Vidi in 2 visione mea, cùm essem in Susis castro, quod est in Ælam regione : vidi autem in visione esse me super portam Ulai. Et levavi oculos meos, & vidi : & ecce aries unus stabat 3 ante paludem, habens cornua excelsa, & unum excelsius altero atque succrescens. Posteà Vidi arietem cornibus 4 ventilantem contra Occidentem, & contra Aquilonem, & contra Meridiem, & omnes bestiæ non poterant resistere ei, neque liberari de manu ejus : fecitque secundùm voluntatem suam, & magnificatus est. Et ego in- 5 telligebam : ecce autem hircus caprarum veniebat ab Occidente super faciem totius terræ, & non tangebat terram : porrò hircus habebat cornu insigne inter oculos suos. Et venit usque ad arietem illum cornutum, quem 6 videram stantem ante portam, & cucurrit ad eum in impetu fortitudinis suæ. Cúmque appropinquâsset prope 7 arietem, efferatus est in eum, & percussit arietem, & comminuit duo cornua ejus, & non poterat aries resistere ei : cúmque eum misisset in terram, conculcavit, & nemo quibat liberare arietem de manu ejus. Hircus autem 8 caprarum magnus factus est nimis : cúmque crevisset, fractum est cornu magnum, & orta sunt quatuor cornua subter illud per quatuor ventos cœli. De uno autem ex eis 9 egressum est cornu unum modicum : & factum est grande contra Meridiem, & contra Orientem, & contra fortitudinem. Et magnificatum est usque ad fortitudinem cœli : 10 & dejecit de fortitudine, & de stellis, & conculcavit eas. Et usque ad principem fortitudinis magnificatum est : & ab 11 eo tulit juge sacrificium, & dejecit locum sanctificationis ejus. Robur autem datum est ei contra juge sacrificium propter peccata : & prosternetur veritas in terra, & 12 faciet, & prosperabitur.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

26 ܘܕܝܢܐ ܢܬܒ. ܘܫܘܠܛܢܗ ܢܥܒܪܘܢ. ܠܡܚܪܒܘܬܗ ܘܠܡܘܒܕܘܬܗ. ܥܕܡܐ ܠܣܘܦܐ *

27 ܕܡܠܟܘܬܐ. * ܫܘܠܛܢܐ ܘܪܒܘܬܐ ܘܡܠܟܘܬܐ ܕܬܚܝܬ ܫܡܝܐ. ܬܬܝܗܒ ܠܥܡܐ ܩܕܝܫܐ

ܕܡܪܝܡܐ. ܡܠܟܘܬܗ ܡܠܟܘܬܐ ܕܠܥܠܡ ܘܟܠ ܫܘܠܛܢܝܢ ܠܗ ܢܦܠܚܘܢ ܘܢܫܬܡܥܘܢ.

28 * ܥܕܡܐ ܠܗܪܟܐ ܣܘܦܗ ܕܡܠܬܐ. ܐܢܐ ܕܢܝܐܝܠ ܣܓܝ ܕܠܘܚܘܢܝ ܪܥܝܢܝ. ܘܙܝܘܝ ܐܫܬܚܠܦܘ

ܥܠܝ. ܘܡܠܬܐ ܒܠܒܝ ܢܛܪܬ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܚ * ܫܢܬ ܬܠܬ 1

ܠܡܠܟܘܬܗ ܕܒܠܛܫܨܪ ܡܠܟܐ. ܚܙܘܐ ܐܬܚܙܝ ܠܝ ܐܢܐ ܕܢܝܐܝܠ. ܡܢ ܒܬܪ ܚܙܘܐ ܩܕܡܝܐ ܕܐܬܚܙܝ

ܠܝ. * ܚܙܝܬ ܒܚܠܡܝ. ܕܡܫܬܟܚ ܗܘܝܬ ܒܫܘܫܢ ܒܝܪܬܐ ܕܒܥܝܠܡ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܚܙܝܬ ܒܚܠܡܝ. 2

3 ܕܩܐܡ ܐܢܐ ܥܠ ܐܒܘܠ ܐܘܠܝ. * ܕܪܝܘܫ ܡܕܝܐ* ܘܙܩܦܬ ܥܝܢܝ ܘܚܙܝܬ. ܘܗܐ ܕܟܪܐ ܚܕ ܩܐܡ

ܩܕܡ ܐܒܘܠ. ܘܐܝܬ ܠܗ ܩܪܢܬܐ. ܘܩܪܢܬܗ ܪܡܢ. ܘܚܕܐ ܪܡܐ ܡܢ ܚܒܪܬܗ. ܘܗܝ ܕܪܡܐ

4 ܣܠܩܬ ܒܚܪܬܐ. * ܚܙܝܬ ܠܕܟܪܐ ܡܢܓܚ ܠܡܥܪܒܐ ܘܠܓܪܒܝܐ ܘܠܬܝܡܢܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܚܝܘܬܐ. ܠܐ

ܩܝܡܝܢ ܩܕܡܘܗܝ. ܘܠܝܬ ܕܡܫܬܘܙܒ ܡܢ ܐܝܕܘܗܝ. ܘܥܒܕ ܐܝܟ ܕܨܒܐ. ܘܐܬܪܘܪܒ. ܘܐܢܐ

5 ܡܣܬܟܠ ܗܘܝܬ. * ܨܦܝܪܐ ܕܥܙܐ ܐܠܟܣܢܕܪܘܣ ܒܪ ܦܝܠܝܦܘܣ* ܘܨܦܝܪܐ ܕܥܙܐ ܐܬܐ ܡܢ

ܡܥܪܒܐ ܥܠ ܐܦܝ ܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܘܠܐ ܢܟܐ ܗܘܐ ܒܐܪܥܐ. ܘܨܦܝܪܐ ܩܪܢܐ ܡܬܚܙܝܐ ܒܝܬ ܥܝܢܘܗܝ.

6 7 * ܘܐܬܐ ܘܡܛܐ ܥܕܡܐ ܠܕܟܪܐ ܗܘ ܕܐܝܬ ܠܗ ܩܪܢܬܐ. ܕܚܙܝܬ ܕܩܐܡ ܩܕܡ ܐܒܘܠ. * ܘܪܗܛ ܠܗ

ܒܚܡܬܐ ܕܚܝܠܗ. ܘܡܛܝܗܝ ܠܕܟܪܐ. ܘܐܬܡܪܡܪ ܥܠܘܗܝ. ܘܡܚܝܗܝ ܠܕܟܪܐ. ܘܬܒܪ

ܠܬܪܬܝܗܝܢ ܩܪܢܬܗ. * ܕܟܪܐ ܕܪܝܘܫ ܡܠܟܐ ܡܕܝܐ * ܘܠܐ ܗܘܐ ܠܗ ܚܝܠܐ ܒܕܟܪܐ. ܠܡܩܡ

ܩܕܡܘܗܝ. ܘܫܕܝܗܝ ܥܠ ܐܪܥܐ ܘܕܫܗ. ܘܠܐ ܗܘܐ ܕܡܦܨܐ ܠܗ ܠܕܟܪܐ. ܡܢ ܐܝܕܘܗܝ ܕܨܦܝܪܐ

8 ܕܥܙܐ. * ܘܨܦܝܪܐ ܕܥܙܐ ܪܒ ܛܒ. ܘܟܕ ܥܫܢ ܐܬܬܒܪܬ ܩܪܢܗ ܪܒܬܐ *ܡܘܬܗ ܕܒܪ ܦܝܠܝܦܘܣ

ܐܠܟܣܢܕܪܘܣ* ܘܣܠܩܝ ܕܡܬܚܙܝܢ ܐܪܒܥ ܬܚܘܬܝܗ. ܠܐܪܒܥ ܪܘܚܝ ܫܡܝܐ.

9 * ܐܢܛܝܘܟܘܣ ܐܦܝܦܢܣ. ܐܪܒܥܐ ܥܒܕܘܗܝ ܕܐܠܟܣܢܕܪܘܣ ܒܪ ܦܝܠܝܦܘܣ ܕܐܡܠܟܘ *

ܒܬܪ ܡܘܬܗ* ܘܡܢ ܚܕܐ ܡܢܗܘܢ ܢܦܩܬ ܩܪܢܐ ܚܕܐ ܙܥܘܪܬܐ. ܘܪܒܬ ܝܬܝܪܐܝܬ ܠܬܝܡܢܐ.

10 ܘܠܡܕܢܚܐ. * ܘܪܒܬ ܥܕܡܐ ܠܚܝܠܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܐܦܠܬ ܥܠ ܐܪܥܐ ܡܢ ܚܝܠܐ ܘܡܢ ܟܘܟܒܐ.

11 ܘܕܫܬ ܐܢܘܢ. *ܘܥܕܡܐ ܠܪܫܝ ܚܝܠܐ ܡܛܬ. ܘܫܩܠܬ ܡܢܗ ܐܡܝܢܘܬܐ. ܘܗܦܟܬ ܫܘܬܐܣܐ ܕܡܩܕܫܗ.

12 * ܘܚܝܠܐ ܐܬܝܗܒ ܠܗ ܥܠ ܐܡܝܢܘܬܐ ܒܚܛܗܐ. ܘܐܫܬܘܝ ܡܩܕܫܐ ܠܐܪܥܐ ܘܥܒܕܬ ܘܐܨܠܚܬ.

Verùm judice sedente, auferent ab eo domi- 26 natum ejus, ut vastent ac perdant eum usque ad regni exterminium. Dominatus autem, 27 & majestas, ac regnum quod sub cœlo est, tradetur populo sancto Altissimi : regnum ejus regnum erit perpetuum, & omnes dominationes ei servient & obedient. Hucusque 28 finis esto sermonis. Me Danielem vehementer anxerunt cogitationes meæ, species mea immutata est, & rem istam in corde meo servavi.

CAP. VIII.

ANno tertio regni Blitsasaris regis, visio 1 apparuit mihi Danieli post visionem illam primam quæ apparuerat mihi. Vidi in somnio 2 meo esse me in Susan palatio quod est in urbe Ilam : vidíque in somnio meo consistere me prope Abul-Ulai : *Darius Medus.* Et sub- 3 latis oculis vidisse me, cùm ecce aries quidam consistebat ante Abul : is habebat cornua, ejusque cornua prælonga erant ; sed unum altero longius : & quod longius erat, posteriùs succrevit. Vidi arietem illum cornu 4 petentem Occidentem, Aquilonem, & Meridiem versùs ; nullámque bestiam resistere illi, & neminem manus ejus effugere : fecisse pro libito, & elevatum esse, me considerante. *Hircus caprarum Alexander Philippi filius.* 5 Tum hircus caprarum venit ab Occidente super faciem totius terræ, nihílque lædebat in terra. Huic hirco cornu conspiciebatur in fronte. Venit autem & accessit usque ad 6 arietem illum bicornem, quem videram consistentem ante Abul : Suóque impetu in eum 7 accurrens pervênit ad arietem ; & excandescens in eum, feriit arietem, fregítque ambo cornua ejus : *Aries Darius rex Medus* : neque fuit facultas in ariete resistendi illi : & dejiciens illum in terram, conculcavit illum, neque fuit qui eriperet arietem de manibus hirci caprarum. Hircus caprarum crevit ad- 8 modùm ; cúmque grandis effectus esset, fractum est cornu ipsius magnum : *Obitus Alexandri filii Philippi* : tum enata sunt loco illius quatuor conspicua in quatuor cœli ventos. *Antiochus Epiphanes : quatuor servi Alexan-* 9 *dri filii Philippi, qui regnaverunt post obitum ejus.* De quorum uno prodiit cornu quoddam parvum, quòd crevit præcipuè Meridiem & Orientem versùs : Crevit autem 10 usque ad exercitus cœli, dejecítque in terram tam ex illis exercitibus quàm de stellis, & conculcavit eas. Quin & ad principes exer- 11 citûs usque pervênit, & abstulit ab eo æternitatem, (i. *juge sacrificium*) evertítque firmamentum Sanctuarii ejus. Et robur datum 12 est ei contra æternitatem propter peccata, & Sanctuarium solio æquatum est : & prospero successu profecit.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

26 Καὶ τὸ κριτήριον (γ) ἐκάθισε, ϗ τὴν ἀρχὴν μεταστήσουσι τοῦ ἀφανίσαι, ϗ τοῦ ἀπολέσαι ἕως τέλους.
27 Καὶ ἡ βασιλεία ϗ ἡ ἐξουσία ϗ ἡ μεγαλωσύνη τῶν βασιλέων τῶν ὑποκάτω παντὸς τοῦ οὐρανοῦ, (δ) ἐδόθη ἁγίοις ὑψίστου· ϗ ἡ βασιλεία αὐτοῦ, βασιλεία αἰώνιος, ϗ πᾶσαι αἱ ἀρχαὶ αὐτῷ δουλεύσουσι ϗ ὑπακούσονται.
28 Ἕως ὧδε τὸ πέρας τοῦ λόγου. ἐγὼ Δανιὴλ, (ε) οἱ διαλογισμοί μου ἐπὶ πολὺ συνετάρασσόν με, ϗ ἡ μορφή μου (ζ) ἠλλοιώθη, ϗ τὸ ῥῆμα ἐν τῇ καρδίᾳ μου (η) διετήρησα. †

Et judicium ſedit: et principatum transferent, ut aboleatur, et diſperget 25
uſque in finem. Et regnum, et poteſtas, et magnitudo regum, qui ſubter 27
omne cœlum, data ſunt Sanctis Altiſſimi. Et regnum ejus regnum ſempiternum: et omnes principatus ſervient ei, et obedient. Hucuſque finis 28
verbi. Ego Daniel: cogitationes meæ multùm conturbabant me: et (o) forma mea mutata eſt: verbum autem in corde meo conſervavi.

MS. A. (λ) καθείσῃ, (δ) ϗ ἐδόθη (ε) ἐπὶ πολὺ οἱ διαλογισμοί μου (ζ) ἠλλοιώθη ἐπ' ἐμοί, (η) συνετήρησα. † ὍΡΑΣΙΣ η΄.

ΚΕΦ. η΄.

1 † ἘΝ ἔτει τρίτῳ τῆς βασιλείας (*) Βαλτάσαρ τοῦ βασιλέως ὅρασις ὤφθη πρὸς μέ· (α) ἐγὼ Δανιὴλ μετὰ
2 τὴν ὀφθεῖσάν μοι τὴν ἀρχὴν, Καὶ ἤμην ἐν Σούσοις τῇ βάρει, ἥ ἐστιν ἐν χώρᾳ Αἰλάμ· (β) ϗ ἤμην ἐπὶ
3 τοῦ Οὐβάλ. Καὶ ἦρα τοὺς ὀφθαλμούς μου, ϗ ἴδον· ϗ ἰδοὺ κριὸς εἷς ἑστηκὼς πρὸ τοῦ Οὐβάλ· ϗ αὐτῷ
4 (γ) κέρατα ὑψηλά· ϗ τὸ ἓν ὑψηλότερον τοῦ ἑτέρου, ϗ τὸ (δ) ὑψηλὸν ἀνέβαινεν ἐπ' ἐσχάτων. Καὶ
ἴδον τὸν κριὸν κερατίζοντα κατὰ θάλασσαν, ϗ Βοῤῥᾶν, ϗ (ε) Νότον· ϗ πάντα τὰ θηρία οὐ (ζ) στήσονται ἐνώπιον αὐτοῦ· ϗ οὐκ ἦν ὁ ἐξαιρούμενος ἐκ χειρὸς αὐτοῦ, ϗ ἐποίησε κατὰ τὸ θέλημα αὐτοῦ, ϗ ἐμεγαλύνθη.
5 Καὶ ἐγὼ ἤμην συνιῶν, ϗ ἰδοὺ τράγος αἰγῶν ἤρχετο ἀπὸ Λιβὸς ἐπὶ πρόσωπον πάσης τῆς γῆς, ϗ οὐκ
6 ἦν (η) ἁπτόμενος τῆς γῆς· ϗ τῷ τράγῳ (θ) κέρας μέσον τῶν ὀφθαλμῶν αὐτοῦ. Καὶ ἦλθεν ἕως τοῦ κριοῦ τοῦ τὰ κέρατα ἔχοντος, οὗ ἴδον (ι) ἑστῶτος ἐνώπιον τοῦ Οὐβάλ, ϗ ἔδραμε πρὸς αὐτὸν ἐν ὁρμῇ τῆς ἰσχύος αὐ-
7 τοῦ. Καὶ (*) ἴδον αὐτὸν φθάνοντα ἕως τοῦ κριοῦ, ϗ (κ) ἐξηγριάνθη πρὸς αὐτὸν, ϗ ἔπαισε τὸν κριὸν, ϗ συνέτριψεν ἀμφότερα τὰ κέρατα αὐτοῦ. ϗ οὐκ ἦν ἰσχὺς τῷ κριῷ, τοῦ στῆναι ἐνώπιον αὐτοῦ· ϗ (*) ἔῤῥιψεν αὐτὸν ἐπὶ τὴν
8 γῆν, ϗ συνεπάτησεν αὐτὸν, ϗ οὐκ ἦν ὁ ἐξαιρούμενος τὸν κριὸν ἐκ χειρὸς αὐτοῦ. Καὶ ὁ τράγος τῶν αἰγῶν ἐμεγαλύνθη ἕως σφόδρα. ϗ ἐν τῷ ἰσχῦσαι αὐτὸν, συνετρίβη τὸ κέρας αὐτοῦ τὸ μέγα· ϗ ἀνέβη ἕτερα
9 κέρατα (*) τέσσαρα ὑποκάτω αὐτοῦ εἰς τοὺς τέσσαρας ἀνέμους τοῦ οὐρανοῦ. Καὶ ἐκ τοῦ ἑνὸς αὐτῶν ἐξῆλθε κέρας
10 ἓν ἰσχυρὸν, ϗ ἐμεγαλύνθη περισσῶς πρὸς τὸν (λ) Νότον, ϗ πρὸς τὴν δύναμιν, Καὶ ἐμεγαλύνθη ἕως τῶν δυνάμεων τοῦ οὐρανοῦ· ϗ ἔπεσεν ἐπὶ τὴν γῆν ἀπὸ τῆς δυνάμεως τοῦ οὐρανοῦ (μ) ϗ ἀπὸ τῶν ἄστρων, καὶ
11 συνεπάτησαν αὐτά. Καὶ ἕως οὗ ὁ ἀρχιστράτηγος ῥύσηται τὴν αἰχμαλωσίαν, ϗ δι' αὐτὸν θυσία (*) ἐῤῥάχθη, (ν) ϗ κατεδιώχθη αὐτῷ· ϗ τὸ ἅγιον ἐρημωθήσεται. Καὶ ἐδόθη ἐπὶ τὴν θυσίαν ἁμαρτία, ϗ (ξ)
12 ἐῤῥίφη χαμαὶ ἡ δικαιοσύνη· ϗ ἐποίησε, ϗ (ο) εὐωδώθη.

CAP. VIII.

IN anno tertio regni Baltaſar regis viſio apparuit mihi: Ego Daniel poſt 1
eam quæ apparuerat mihi in principio; Et (a) eram in Suſis caſtro, quod 2
eſt in regione Ælam. Et eram ſuper (b) Ubal: Et levavi oculos meos: 3
et vidi: et ecce aries unus ſtans ante Ubal: et ei cornua excelſa, et unum
excelſius altero: et quod (c) excelſum, aſcendebat ſuper noviſſima. Et 4
vidi arietem cornibus ventilantem contra Mare, et Aquilonem, et Auſtrum:
et omnes beſtiæ non ſtabunt coram eo; et non erat, qui erueret de manu
ejus: fecitque ſecundùm voluntatem ſuam, et magnificatus eſt. Et ego 5
eram intelligens: et ecce hircus caprarum veniebat ab Africo ſuper faciem totius terræ; et non erat tangens terram: et hirco cornu (d) medium
oculorum ejus: Et venit uſque ad arietem illum, qui habebat cornua, 6
quem videram (e) ſtans ante Ubal: et cucurrit ad eum in impetu fortitudinis ſuæ. Et vidi eum advenientem uſque ad arietem: et efferatus eſt in 7
eum, & percuſſit arietem, & contrivit duo cornua ejus: & non erat fortitudo arieti ſtandi coram eo. Et projecit eum in terram, & conculcavit
eum: & non erat qui liberaret arietem de manu ejus. Et hircus capra- 8
rum magnificatus eſt uſque valdé. Et dum ipſe invaleſceret, contritum
eſt cornu illius magnum: & aſcenderunt alia cornua quatuor ſubter illud
per quatuor ventos cœli. Et de uno ex eis egreſſum eſt cornu unum (f) 9
forte, & magnificatum eſt nimis contra Auſtrum, & (g) contra fortitudinem: Et magnificatum eſt uſque ad virtutem cœli: & (h) dejecit in 10
terram de virtute cœli, & ſtellis, & (i) conculcaverunt eas, Et (k) quo- 11
aduſque dux militiæ liberaverit captivitatem. Et propter eum ſacrificium
(l) contritum eſt, & proſperè erit ei. Et Sanctuarium deſolabitur: Et 12
datum eſt ſuper ſacrificium peccatum, & projecta eſt humi juſtitia. Et faciet, & proſperabitur.

MS. A. † ὍΡΑΣΙΣ θ΄. (*) Βαρτάσαρ (α) ἐγὼ Δανιὴλ, * ἐγὼ Δανιὴλ (β) ϗ ἴδον ἐν ὁράματι, ϗ ἤμην (γ) κέρατα, ϗ τὰ κέρατα ὑψηλά· (δ) ὑψηλότερον (ε) Νότον, ϗ Λίβα· (ζ) στήσονται (η) ὁ ἁπτόμενος (θ) κέρας θεωρητὸν ἀναμέσον τῶν (ι) ἑστῶτος ἀναμέσον τῶν (*) ἴδον φθάνοντα (κ) ἐξηγριώθη (*) ἔρριψεν (*) τέσσερα (λ) Νότον, ϗ πρὸς ἀνατολὴν, ϗ πρὸς τὴν δύναμιν· Ἐμεγαλύνθη (μ) ϗ τῶν ἄστρων, ϗ συνεπατήθη. Καὶ ἕως (*) ἐταράχθη (ν) ϗ ἐρημώθη, ϗ κατευοδώθη (ξ) ἐῤῥίφη (ο) κατευοδώθη.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

26 27 * وينصب موضع الحكم * وينقلون الرياسة ليفسدوا ويهلكوا الى النهاية * والمملكة والسلطان
والعظمة التي للملوك الذين تحت السماء كلها * اعطيت لقديسي العلي * ومملكته مملكة
28 ابدية * وكل الرياسات له تتعبد * الى هاهنا نهاية القول * انا دانيال اقلقتني افكاري بالاكثر *
وشكلي تغير علي * وحفظت الكلمة في قلبي *

At erigetur locus judicii, transferentque 26
principatum, ita ut penitùs corrumpantur & pereant: Et regnum, poteſtas, et am- 27
plitudo quam poſſident reges qui extant ſub toto cœlo; dabitur ſanctis Excelſi: & regnum ejus regnum erit ſempiternum, et omnes principatus ſubdentur illi. Huc- 28
uſque finis ſermonis. Me Danielem cogitationes meæ nimiùm exagitaverunt, & ſpecies mea immutata eſt mihi, & verbum hoc in corde meo ſervavi.

* الفصل الثامن *

* الرؤيا التاسع *

1 * في السنة الثالثة من مملكة بلطشاصر الملك ظهرت لي رويا انا دانيال من بعد الاولى
2 التي ظهرت لي * اني كنت بالسوس في القصر الذي هو في كورة الاهواز * ونظرت في
3 الرويا اني كنت على الدهليز * فرفعت عيني ونظرت * واذا كبش واحد قايم قدام الدهليز
4 وله قرنان * والقرنان مرتفعان * والواحد اعلى من الاخر * والاعلى صعد في الاخير * ونظرت الكبش
ينطح نحو البحر والجربياء والتيمن * وجميع الوحوش لا يقفون امامه * ولم يكن من ينجي من
5 يده * وصنع كارادته وعظم * وانا كنت في السوس اتفطن * واذا تيس من المعز اقبل من
6 الغرب على وجه كل الارض * ولم يكن يلمس الارض * وللتيس قرن يرى بين عينيه * واتى الى
7 الكبش الذي له القرنان * الذي نظرته قايما امام الدهليز * فاسرع اليه بوثبة قوته * ونظرته
بلغ الى الكبش * وتوحش عليه * وضرب الكبش * وكسر قرنيه كليهما * ولم يكن للكبش قوة
8 ليقف امامه * وطرحه على الارض وداسه * ولم يكن من ينجي الكبش من يده * والتيس
من المعز عظم الى الغاية * وعندما تقوى انكسر قرنه الكبير * وصعدت اربعة قرون
9 اخر من تحته الى اربعة ارياح السماء * ومن احدهم خرج قرن واحد قوي وعظم بالاكثر الى
10 التيمن والى الشرق والى الغرب * وعظم الى جيش السماء * واهبط الى الارض من جيش السماء
11 ومن الكواكب وداسهم * الى ان ينجي رييس الاجناد السبي * ولاجله رتبت الذبيحة * وصارت
12 واستقامت له * والقدس يخرب * واعطيت الخطية على الذبيحة * وطرح العدل الى الارض *
وصنع وانجح *

CAP. VIII.

Viſio nona.

ANno tertio regni Baltaſaſaris regis, 1
apparuit viſio mihi Danieli poſt primam illam quæ apparuerat mihi: Quòd ſci- 2
licet eram in Sus in palatio quod eſt in provincia Ælamitarum, & in viſione videbar mihi eſſe ſupra porticum: Sub- 3
latiſque oculis vidi, & ecce aries unus ſtans ante porticum, habens duo cornua: cornua verò longa erant, & unum altero longius; & quod longius erat, emerſit poſteriùs. Vidi etiam arietem illum 4
cornibus ferientem verſus Mare, Aquilonem, & Meridiem; & nullum animal reſiſtere ei, nec eſſe quenquam qui eriperet è manu ejus; ſed feciſſe pro voluntate ſua, & magnificatum eſſe, dum ego eſſem in Sus iſta contemplans. Deinde ec- 5
ce hircus de capris venit ab Occidente ſuper faciem univerſæ terræ, & terram non tangebat: atque hircus iſte cornu habebat conſpicuum inter oculos ſuos. Hic venit 6
ad arietem habentem duo cornua, quem videram ſtantem ante porticum; Et ac- 7
currit ad eum impetu fortitudinis ſuæ. Hunc vidi perveniſſe ad arietem, & ferociiſſe in eum, percuſſoque ariete fregiſſe utrumque cornu ipſius; ita ut nulla eſſet arieti facultas reſiſtendi ei: ſed humi proſtratum conculcavit eum, nec fuit qui eriperet arietem de manu ejus. Hircus 8
hic è capris magnus evaſit præter modum: & cùm vires acquiſiviſſet, fractum eſt cornu ipſius majus: & ſub eo ſuccreverunt quatuor alia cornua in quaternos cœli ventos. Ex uno iſtorum 9
egreſſum eſt cornu unum forte, quod maximopere crevit ad Meridiem, ad Ortum, & ad Occaſum: Imò crevit uſque ad 10
exercitum cœleſtem, dejecitque in terram è cœleſti exercitu & è ſtellis, & conculcavit eos: (Donec redemerit prin- 11
ceps exercituum captivos, propter quem inſtitutum eſt ſacrificium. Fiet autem ut proſperè ſuccedat ei.) Item Sanctua- 12
rium deſtruetur, & collocabitur peccatum ſuper ſacrificium, & juſtitia humi projicietur: hæc faciet, & proſperabitur.

prævaricatio & , juge visio Uſquequo ,loquenti cuidam ſanctus unus dixit & ; loquentē ſanctum unum audivi Et
13 וָאֶשְׁמְעָה אֶחָד־קָדוֹשׁ מְדַבֵּר וַיֹּאמֶר אֶחָד קָדוֹשׁ לַפַּלְמוֹנִי הַמְדַבֵּר עַד־מָתַי הֶחָזוֹן הַתָּמִיד וְהַפֶּשַׁע
; trecentis & mille ,mane veſperā ad Uſque,me ad dixit Et ? conculcationem exercitum & ,ſanctitatem & , dare deſolans
14 שֹׁמֵם תֵּת וְקֹדֶשׁ וְצָבָא מִרְמָס׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי עַד עֶרֶב בֹּקֶר אַלְפַּיִם וּשְׁלֹשׁ מֵאוֹת
me coram ſtans ecce & ,intelligentiam quæſivi & , viſionem Daniel ego me videndo in , fuit Et .ſanctitas juſtificabitur &
15 וְנִצְדַּק קֹדֶשׁ׃ וַיְהִי בִּרְאֹתִי אֲנִי דָנִיֵּאל אֶת־הֶחָזוֹן וָאֲבַקְשָׁה בִינָה וְהִנֵּה עֹמֵד לְנֶגְדִּי
.viſionem iſtum fac intelligere,Gabriel , dixit & ,clamavit & ; Ulai inter hominis vocem audivi Et .viri aſpectus tanquā
16 כְּמַרְאֵה גָבֶר׃ וָאֶשְׁמַע קוֹל־אָדָם בֵּין אוּלָי וַיִּקְרָא וַיֹּאמַר גַּבְרִיאֵל הָבֵן לְהַלָּז אֶת־הַמַּרְאֶה׃
tempus ad quia,hominis fili Intellige,me ad dixit & :meas facies ſuper corrui &,ſum territus,ipſum veniendo in &;meū ſtare juxta venit Et
17 וַיָּבֹא אֵצֶל עָמְדִי וּבְבֹאוֹ נִבְעַתִּי וָאֶפְּלָה עַל־פָּנָי וַיֹּאמֶר אֵלַי הָבֵן בֶּן־אָדָם כִּי לְעֶת־
.meum ſtare ſuper me fecit ſtare &,me in tetigit &;terram in,meas facies ſuper ſum correptus ſopore,mecum ipſum loquendo in Et .viſionis finis
18 קֵץ הֶחָזוֹן׃ וּבְדַבְּרוֹ עִמִּי נִרְדַּמְתִּי עַל־פָּנַי אָרְצָה וַיִּגַּע־בִּי וַיַּעֲמִידֵנִי עַל־עָמְדִי׃
habentem vidiſti quem , Aries .finis ſtatutum ad quia ; iræ noviſſimo in erit quod te faciens cognoſcere ego Ecce,dixit Et
19 וַיֹּאמֶר הִנְנִי מוֹדִיעֲךָ אֵת אֲשֶׁר־יִהְיֶה בְּאַחֲרִית הַזָּעַם כִּי לְמוֹעֵד קֵץ׃ הָאַיִל אֲשֶׁר־רָאִיתָ בַּעַל 20
rex ipſe ,ejꝰ oculos inter quod , grande cornu & : Javan rex piloſus hircus Et .Paras & Madai reges ; cornua
21 הַקְּרָנָיִם מַלְכֵי מָדַי וּפָרָס׃ וְהַצָּפִיר הַשָּׂעִיר מֶלֶךְ יָוָן וְהַקֶּרֶן הַגְּדוֹלָה אֲשֶׁר בֵּין־עֵינָיו הוּא הַמֶּלֶךְ
.ejus fortitudine in non & , ſtabunt gente de regna quatuor ; eo pro quatuor ſteterunt & ,eſt contritum Et .primus
22 הָרִאשׁוֹן׃ וְהַנִּשְׁבֶּרֶת וַתַּעֲמֹדְנָה אַרְבַּע תַּחְתֶּיהָ אַרְבַּע מַלְכֻיוֹת מִגּוֹי יַעֲמֹדְנָה וְלֹא בְכֹחוֹ׃
roborabitur Et .ænigmata intelligens &,faciebus fortis rex ſtabit ; prævaricatores conſummari ſecundùm,eorū regni noviſſimo in Et
23 וּבְאַחֲרִית מַלְכוּתָם כְּהָתֵם הַפֹּשְׁעִים יַעֲמֹד מֶלֶךְ עַז־פָּנִים וּמֵבִין חִידוֹת׃ וְעָצַם
24 .ſanctorum populum & ,robuſtos corrumpet & ; faciet & ,proſperabitur &,corrumpet mirabilia &,ſua fortitudine in nō &,ejꝰ fortitudo
כֹּחוֹ וְלֹא בְכֹחוֹ וְנִפְלָאוֹת יַשְׁחִית וְהִצְלִיחַ וְעָשָׂה וְהִשְׁחִית עֲצוּמִים וְעַם־קְדֹשִׁים׃
: multos corrumpet tranquillitate in & ,ſe magnificabit ejus corde in & ,ejus manu in dolus proſperabitur & ejꝰ intellectum ſuper Et
25 וְעַל־שִׂכְלוֹ וְהִצְלִיחַ מִרְמָה בְּיָדוֹ וּבִלְבָבוֹ יַגְדִּיל וּבְשַׁלְוָה יַשְׁחִית רַבִּים
: ipſa veritas ,eſt dicta quæ ,matutini & veſperæ viſio Et .conteretur manus nihilo in & ,ſtabit principum principem ſuper &
26 וְעַל שַׂר־שָׂרִים יַעֲמֹד וּבְאֶפֶס יָד יִשָּׁבֵר׃ וּמַרְאֵה הָעֶרֶב וְהַבֹּקֶר אֲשֶׁר נֶאֱמַר אֱמֶת הוּא
feci & , ſurrexi & , dies ægrotavi & ,ſum affectus Daniel ego Et .multos dies ad quia ,viſionem obſtrue tu &
27 וְאַתָּה סְתֹם הֶחָזוֹן כִּי לְיָמִים רַבִּים׃ וַאֲנִי דָנִיֵּאל נִהְיֵיתִי וְנֶחֱלֵיתִי יָמִים וָאָקוּם וָאֶעֱשֶׂה אֶת־
.erudiens non & ; viſione ſuper ſtupebam & ; regis opus
מְלֶאכֶת הַמֶּלֶךְ וָאֶשְׁתּוֹמֵם עַל־הַמַּרְאֶה וְאֵין מֵבִין׃

CAP. IX. ט

anno In .Chaſdim regnum ſuper rex fuit conſtitutus qui ; Madai ſemine de Achaſueros filii Dariaves uno anno In
1 בִּשְׁנַת אַחַת לְדָרְיָוֶשׁ בֶּן־אֲחַשְׁוֵרוֹשׁ מִזֶּרַע מָדָי אֲשֶׁר הָמְלַךְ עַל מַלְכוּת כַּשְׂדִּים׃ בִּשְׁנַת
2 Irmejah ad DOMINI verbum fuit quo ,annorum numerum ; libris in intellexi Daniel ego , ipſum regnare uno
אַחַת לְמָלְכוֹ אֲנִי דָּנִיֵּאל בִּינֹתִי בַּסְּפָרִים מִסְפַּר הַשָּׁנִים אֲשֶׁר הָיָה דְבַר־יְהוָה אֶל־יִרְמִיָה
.annos ſeptuaginta Jeruſalaim deſolationes complendum ad ,prophetam
הַנָּבִיא לְמַלֹּאות לְחָרְבוֹת יְרוּשָׁלַםִ שִׁבְעִים שָׁנָה׃

Verſio VULG. LAT.

Et audivi unum de Sanctis loquentem: & dixit unus Sanctus alteri neſcio cui loquenti; Uſquequò viſio, & juge ſacrificium, & peccatum deſolationis, quæ facta eſt; & Sanctuarium, & fortitudo conculcabitur? 13
Et dixit ei; Uſque ad veſperam & manè, dies duo millia trecenti: & mundabitur Sanctuarium. 14
Factum eſt autem cùm viderem ego Daniel viſionem, & quærerem intelligentiam: ecce ſtetit in conſpectu meo quaſi ſpecies viri. 15
Et audivi vocem viri inter Ulai: & clamavit, & ait; Gabriel, fac intelligere iſtum viſionem. 16
Et venit, & ſtetit juxtà ubi ego ſtabam: cúmque veniſſet, pavens corrui in faciem meam, & ait ad me; Intellige, fili hominis, quoniam in tempore finis complebitur viſio. 17
Cúmque loqueretur ad me, collapſus ſum pronus in terrram: & tetigit me, & ſtatuit me in gradu meo, 18
Dixítque mihi; Ego oſtendam tibi quæ futura ſunt in noviſſimo maledictionis: quoniam habet tempus finem ſuum. 19
Aries, quem vidiſti habere cornua, rex Medorum eſt atque Perſarum. 20
Porrò hircus caprarum, rex Græcorum eſt, & cornu grande, quod erat inter oculos ejus, ipſe eſt rex primus. 21
Quòd autem fracto illo ſurrexerunt quatuor pro eo: quatuor reges de gente ejus conſurgent, ſed non in fortitudine ejus, 22
Et poſt regnum eorum, cùm creverint iniquitates, conſurget rex impudens facie, & intelligens propoſitiones. 23
Et roborabitur fortitudo ejus, ſed non in viribus ſuis: & ſuprà quàm credi poteſt, univerſa vaſtabit, & proſperabitur, & faciet. Et interficiet robuſtos, & populum Sanctorum 24
Secundùm voluntatem ſuam, & dirigetur dolus in manu ejus: & cor ſuum magnificabit, & in copia rerum omnium occîdet plurimos: et contra principem principum conſurget, et ſine manu conteretur. 25
Et viſio veſperè et manè, quæ dicta eſt, vera eſt: tu ergò viſionem ſigna, quia poſt multos dies erit. 26
Et ego Daniel langui, et ægrotavi per dies: cúmque ſurrexiſſem, faciebam opera regis, et ſtupebam ad viſionem, et non erat qui interpretaretur. 27

CAP. IX.

In anno primo Darii filii Aſſueri de ſemine Medorum, qui imperavit ſuper regnum Chaldæorum: 1
Anno uno regni ejus, ego Daniel intellexi in libris numerum annorum, de quo factus eſt ſermo Domini ad Jeremiam prophetam, ut complerentur deſolationis Jeruſalem ſeptuaginta anni. 2

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܫܡܥܬ ܚܕ ܩܕܝܫܐ ܕܡܡܠܠ. ܘܐܡܪ ܚܕ ܩܕܝܫܐ ܠܦܠܡܘܢܝ ܕܡܡܠܠ. ܥܕܡܬܝ 13
ܠܥܠܡ ܚܙܘܐ ܕܐܡܝܢܘܬܐ . ܘܥܘܠܐ ܘܚܒܠܐ ܢܫܬܠܡ. ܘܩܘܕܫܐ ܘܚܝܠܐ ܢܬܕܝܫ. * ܘܐܡܪ 14
ܠܗ. ܥܕ ܪܡܫܐ ܘܨܦܪܐ :. ܐܠܦܝܢ ܘܬܠܬܡܐܐ. ܘܗܝܕܝܢ ܬܙܟܐ ܙܕܝܩܘܬܐ. * ܘܟܕ ܚܙܝܬ ܐܢܐ 15
ܕܢܝܐܝܠ ܚܙܘܐ ܗܢܐ :. ܒܥܝܬ ܠܡܣܬܟܠܘ. ܘܗܐ ܩܡ ܠܘܩܒܠܝ ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܓܒܪܐ.
* ܘܫܡܥܬ ܩܠܐ ܕܒܪܢܫܐ ܡܢ ܡܨܥܬ ܐܘܠܝ. ܕܩܥܐ ܘܐܡܪ. ܓܒܪܐܝܠ :. ܦܫܘܩ ܠܗܢܐ 16
ܚܙܘܐ ܗܢܐ. * ܘܐܬܐ ܠܘܬ ܐܬܪ ܕܩܐܡ ܐܢܐ. ܘܟܕ ܐܬܐ :. ܐܙܕܗܠܬ ܘܢܦܠܬ ܥܠ ܐܦܝ. ܘܐܡܪ 17
ܠܝ. ܐܣܬܟܠ ܒܪ ܐܢܫܐ :. ܡܛܠ ܕܠܙܒܢܐ ܣܝܡܐ ܚܙܘܐ ܗܢܐ. * ܘܟܕ ܡܡܠܠ ܥܡܝ . 18
ܐܬܥܓܠܬ ܥܠ ܐܦܝ ܥܠ ܐܪܥܐ. ܘܩܪܒ ܒܝ. ܘܐܩܝܡܢܝ ܥܠ ܡܩܡܝ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܗܐ 19
ܐܢܐ ܡܘܕܥ ܐܢܐ ܠܟ :. ܡܢܐ ܕܗܘܐ ܒܣܘܦ ܪܘܓܙܐ ܒܙܒܢܐ ܣܝܡܐ. * ܕܪܝܘܫ ܡܕܝܐ * ܕܟܪܐ 20
ܕܚܙܝܬ ܠܗ ܩܪܢܬܐ :. ܡܠܟܐ ܡܕܝ ܘܦܪܣ. * ܐܠܟܣܢܕܪܘܣ * ܘܨܦܝܪܐ ܕܥܙܐ. ܡܠܟܐ 21
ܕܝܘܢܝܐ. ܘܩܪܢܐ ܪܒܬܐ ܕܐܝܬ ܒܝܬ ܥܝܢܘܗܝ :. ܗܘܝܘ ܡܠܟܐ ܩܕܡܝܐ. * ܘܕܐܬܬܒܪܬ ܘܩܡܝ 22
ܐܪܒܥ ܡܢ ܬܚܬܝܗ :. ܐܪܒܥܐ ܡܠܟܝܢ ܡܢ ܥܡܐ ܢܩܘܡܘܢ. ܘܠܐ ܒܚܝܠܗܘܢ. * ܘܒܣܘܦ 23
ܡܠܟܘܬܗܘܢ. ܟܕ ܢܫܠܡܘܢ ܚܛܗܐ :. ܢܩܘܡ ܡܠܟܐ. ܥܫܝܢ ܐܦܐ ܘܡܣܬܟܠ ܐܚܝܕܬܐ.
* ܘܥܫܢ ܚܝܠܗ. ܘܠܐ ܒܚܝܠܐ ܕܢܦܫܗ. ܘܬܕܡܘܪܬܐ ܢܚܒܠ. ܘܢܨܠܚ. ܘܢܥܒܕ ܘܢܚܒܠ 24
ܥܫܝܢܐ. ܘܥܡܐ ܕܩܕܝܫܐ. * ܘܒܡܠܟܘܬܗ ܢܨܠܚ ܢܟܠܐ ܒܐܝܕܗ. ܘܠܒܗ ܢܬܪܘܡ. 25
ܘܡܚܒܠ ܣܓܝܐܐ ܡܚܕܐ. ܘܥܠ ܪܝܫ ܪܝܫܢܐ ܢܩܘܡ. ܘܡܚܕܐ ܢܬܬܒܪ.
* ܘܚܙܘܐ ܕܨܦܪܐ ܘܕܪܡܫܐ ܕܐܬܐܡܪ. ܫܪܝܪ ܗܘ. ܘܐܢܬ ܕܢܝܐܝܠ :. ܚܬܘܡ ܠܚܙܘܐ 26
ܗܢܐ. ܡܛܠ ܕܠܝܘܡܬܐ ܣܓܝܐܐ. * ܘܐܢܐ ܕܢܝܐܝܠ :. ܐܬܬܙܝܥܬ ܘܐܬܟܪܗܬ ܝܘܡܬܐ. 27
ܘܩܡܬ ܘܥܒܕܬ ܥܒܝܕܬܐ ܕܡܠܟܐ. ܘܐܬܕܡܪܬ ܒܚܙܘܐ. ܘܠܝܬ ܕܡܣܬܟܠ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܛ *

* ܒܫܢܬ ܚܕܐ ܕܕܪܝܘܫ ܒܪ ܐܚܫܝܪܫ ܡܢ ܙܪܥܐ ܕܡܕܝܐ : ܕܐܡܠܟ ܒܡܠܟܘܬܐ ܕܟܠܕܝܐ. 1
* ܒܫܢܬ ܚܕܐ ܕܡܠܟܘܬܗ :. ܐܢܐ ܕܢܝܐܝܠ ܐܣܬܟܠܬ ܒܣܦܪܐ ܒܡܢܝܢ ܫܢܝܐ. 2
ܚܙܝܬ ܕܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܕܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ :. ܟܕ ܢܫܠܡܘܢ ܠܚܘܪܒܗ ܕܐܘܪܫܠܡ 3
ܫܒܥܝܢ ܫܢܝܢ.

Deinde audivi Sanctum quendam loquentem, dixitque Sanctus quidam ad quendam qui loquebatur; Quouſque tandem viſio hæc de æternitate, & ſcelus atque vaſtatio complebitur? & Sanctuarium & exercitus conculcabitur? 13
Qui reſpondit ei, Uſque ad veſperas & matutina bis mille trecenta: tum vincet juſtitia. 14
Cùm autem vidiſſem ego Daniel viſionem iſtam, optavi intelligere: et ecce ſtetit ante me quædam quaſi forma viri: 15
Et audivi vocem humanam de medio Ulai clamantem ac dicentem; Gabriel, declara huic viſionem iſtam. 16
Venit ergò ad me ubi ſtabam: cúmque veniſſet ad me, perterritus ſum, et procidi in faciem meam. Sed dixit mihi; Intellige fili hominis, nam tempore definito erit viſio hæc. 17
Dum autem loqueretur mecum, provolvi me in faciem meam ſuper terram: at tetigit me, erexítque in ſtationem meam, 18
Et dixit mihi, En ego oſtendam tibi quîd futurum ſit ad finem indignationis tempore definito. 19
Darius Medus. Aries quem vidiſti præditum cornibus, rex eſt Medorum et Perſarum: 20
Alexander. Hircus autem caprarum, rex Græcorum: Cornu verò magnum quod eſt in fronte ipſius, eſt primus rex. 21
Quòd autem hoc effracto emerſerint *alia* quatuor loco ipſius, quatuor reges ea de gente ſurrecturos *indicat*, ſed non propriâ virtute. 22
Sub finem regni iſtorum, cùm expleverint ſcelera; exurget rex prædurae faciei, & regnandi peritus, 23
Potens robore, licèt non ſuâpte virtute: miris modis vaſtabit, & proſper erit: progredietur, & perdet robuſtos & populum Sanctorum: 24
Sub ejus regno proſperabitur dolus in manu ipſius, cor ejus elevabitur, & confeſtim perdet multos: denique adversùs principem principum exurget, ſed illicò frangetur. 25
Cæterùm viſio illa quæ de mane & veſpere dicta eſt, veriſſima eſt: tu verò Daniel, cela viſionem hanc, quia ad multos dies eſt. 26
Et ego Daniel exterritus ſum, & ad dies aliquot perturbatus: poſteà convaleſcens procuravi negotia regis: ſtupens tamen eram ob viſionem iſtam, at nemo animadvertebat. 27

CAP. IX.

Anno primo Darii filii Ahſeri de ſemine Medorum, quo regnavit in regno Chaldæorum: 1
Anno *inquam* primo regni ejus, ego Daniel conſiderans in ſcriptura numerum annorum, vidi fuiſſe ſermonem illum Domini quem prædixit Jeremia propheta, Cùm expleti fuerint vaſtitati Jeroſolymorum anni ſeptuaginta. 2

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

13 Καὶ ἤκουσα (π) ἑνὸς ἁγίου λαλοῦντος. ϗ εἶπεν εἷς ἅγιος τῷ (ρ) φελμουνὶ τῷ λαλοῦντι, Ἕως πότε ἡ
ὅρασις στήσεται, ἡ θυσία ἡ ἀρθεῖσα, ϗ ἡ ἁμαρτία ἐρημώσεως ἡ δοθεῖσα, ϗ τὸ ἅγιον ϗ ἡ δύναμις συμπατηθήσεται;
14 Καὶ εἶπεν αὐτῷ, Ἕως ἑσπέρας ϗ πρωῒ ἡμέραι δισχίλιαι ϗ (σ) τετρακόσιαι, ϗ καθαρισθήσεται
15 τὸ ἅγιον. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἰδεῖν με, ἐγὼ Δανιὴλ, τὴν ὅρασιν, ϗ ἐζήτουν σύνεσιν, καὶ
16 ἰδοὺ ἔστη ἐνώπιον ἐμοῦ ὡς ὅρασις ἀνδρός. Καὶ ἤκουσα φωνὴν ἀνδρὸς ἀναμέσον τοῦ Οὐβάλ, ϗ ἐκάλεσε, ϗ
17 εἶπε, Γαβριὴλ συνέτισον ἐκεῖνον τὴν ὅρασιν. Καὶ ἦλθε, ϗ ἔστη (τ) ἐχόμενος τῆς στάσεώς μου. ϗ ἐν
τῷ ἐλθεῖν αὐτὸν ἐθαμβήθην, ϗ πίπτω ἐπὶ πρόσωπόν μου. ϗ εἶπε πρός με, Σύνες υἱὲ ἀνθρώπου·
18 ἔτι γὰρ εἰς καιροῦ πέρας ἡ ὅρασις. Καὶ ἐν τῷ λαλεῖν αὐτὸν μετ' ἐμοῦ, (υ) πίπτω ἐπὶ πρόσωπόν
19 μου ἐπὶ τὴν γῆν, ϗ ἥψατό μου, ϗ ἔστησέ με ἐπὶ (φ) πόδας, Καὶ εἶπεν, Ἰδοὺ ἐγὼ γνωρίζω σοι τὰ
20 ἐσόμενα ἐπ' (χ) ἐσχάτων τῆς ὀργῆς· ἔτι γὰρ εἰς καιροῦ πέρας ἡ ὅρασις. Ὁ κριὸς ὃν εἶδες, ὁ ἔχων
21 τὰ κέρατα, βασιλεὺς (ψ) Μήδων ϗ Περσῶν. Ὁ τράγος τῶν αἰγῶν, βασιλεὺς Ἑλλήνων· ϗ τὸ κέρας
22 τὸ μέγα ὃ ἦν ἀναμέσον τῶν ὀφθαλμῶν αὐτοῦ, αὐτός ἐστιν ὁ βασιλεὺς ὁ πρῶτος. Καὶ τοῦ συντριβέντος
οὗ ἔστησαν (ω) τέσσαρα κέρατα ὑποκάτω, τέσσαρες βασιλεῖς ἐκ τοῦ ἔθνους αὐτοῦ ἀναστήσονται, ϗ οὐκ
23 ἐν τῇ ἰσχύϊ (α) αὐτῶν. Καὶ ἐπ' ἐσχάτων τῆς βασιλείας αὐτῶν, πληρουμένων τῶν ἁμαρτιῶν αὐτῶν, ἀναστήσεται
24 βασιλεὺς ἀναιδὴς προσώπῳ, ϗ συνιῶν προβλήματα. Καὶ κραταιὰ ἡ ἰσχὺς αὐτοῦ, (β) ϗ θαυμαστὰ
25 διαφθερεῖ, ϗ κατευθυνεῖ, ϗ ποιήσει, ϗ διαφθερεῖ ἰσχυροὺς, ϗ λαὸν ἅγιον. Καὶ (γ) ζυγὸς τοῦ κλοιοῦ
αὐτοῦ κατευθυνεῖ, δόλος ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, ϗ ἐν καρδίᾳ αὐτοῦ μεγαλυνθήσεται, ϗ δόλῳ διαφθερεῖ
26 πολλοὺς, ϗ ἐπὶ (") ἀπωλείας πολλῶν στήσεται· ϗ ὡς ὠὰ χειρὶ συντρίψει. Καὶ ἡ ὅρασις τῆς ἑσπέρας καὶ
τῆς (ˢ) πρωΐας τῆς ῥηθείσης ἀληθῶς ἐστι· ϗ σὺ σφράγισον τὴν ὅρασιν, ὅτι εἰς ἡμέρας πολλάς. Καὶ ἐγὼ
Δανιὴλ ἐκοιμήθην, ϗ ἐμαλακίσθην, ϗ ἀνέστην, ϗ ἐποίουν τὰ ἔργα τοῦ βασιλέως, ϗ ἐθαύμαζον τὴν
ὅρασιν, ϗ οὐκ ἦν ὁ συνιῶν. †

Et audivi unum Sanctum loquentem. Et dixit unus Sanctus (m) Phelmoni 13
loquenti; Uſquequò viſio ſtabit, ſacrificium ablatum, & peccatum deſolationis,
quod datum eſt; & Sanctuarium, & fortitudo conculcabitur?
Et dixit ei; Uſque ad veſperam & manè dies duo millia, & (n) qua- 14
dringenti; & mundabitur Sanctuarium. Factum eſt autem, cùm vide- 15
rem ego Daniel viſionem, & quærebam intelligentiam; & ecce ſtetit in
conſpectu meo quaſi ſpecies viri: Et audivi vocem viri inter Ubal: & vo- 16
cavit, & dixit; Gabriel, fac iſtum intelligere viſionem. Et venit, & 17
ſtetit juxta ſtationem meam. Et cùm ille veniſſet, expavi, & corruo in
faciem meam. Et ait ad me; Intellige, fili hominis: adhuc enim in tem-
poris finem (o) viſio. Cúmque loqueretur ipſe mecum; cado in faciem 18
meam ſuper terram. Et tetigit me, & ſtatuit me ſuper pedes, Et dixit; 19
Ecce ego oſtendo tibi, quæ futura ſunt in (p) noviſſimis iræ. Adhuc enim in
temporis finem viſio. Aries, quem vidiſti, qui habebat cornua, rex Me- 20
dorum eſt, atque Perſarum. Hircus caprarum, rex Græcorum: & cor- 21
nu grande, quod erat inter oculos ejus, ipſe eſt rex primus. Quòd autem 22
confracto illo ſurrexerunt quatuor cornua ſubtèr; quatuor reges de gente
ejus conſurgent, & non in fortitudine (q) ſua. Et in noviſſimis regni 23
eorum, completis peccatis eorum, conſurget rex impudens facie, & intel-
ligens propoſitiones: Et robuſta fortitudo (r) ejus: & mirabiliter va- 24
ſtabit: & proſperabitur, & faciet: & diſperdet robuſtos, & populum
ſanctum. Et jugum catenæ ejus dirigetur: dolus in manu ejus, & in 25
corde ejus magnificabitur: & dolo corrumpet multos: & ſuper perditio-
nem multorum (ſ) ſtabit: & quaſi ova manu conteret. Et viſio veſpe- 26
ræ, & manè, quæ dicta eſt, verè eſt. Et tu ſigna viſionem, quia in dies
multos. Et ego Daniel decubui, & (t) langui: Et ſurrexi; & facie-
bam opera regis, & admirabar viſionem: & non erat qui intelligeret.

MS. A. (π) ἑνὸς λαλοῦντος. (ρ) φελμωνὶ (σ) τριακόσιαι, (τ) ἀναμέσον τῆς (υ) ἐθαμβήθην, ϗ πίπτω (φ) πόδας μου, Καὶ εἶπέν μοι, (χ) ἐσχάτου (ψ) Περσῶν ϗ Μήδων. Καὶ ὁ τράγος (ω) ὑποκάτω τέσσερα κέρατα, (α) αὐτοῦ. Καὶ ἐπ' ἐσχάτῳ τῆς (β) ϗ οὐκ ἐν τῇ ἰσχύϊ αὐτοῦ, ϗ θαυμαστὰ (γ) ὁ ζυγὸς (") ἀπωλεία (ˢ) πρωϊνῆς τῆς ῥηθείσης ἀληθής † ΟΡΑΣΙΣ θʹ.

ΚΕΦ. θʹ.

1 † ἘΝ τῷ πρώτῳ ἔτει (α) Δαρείου τοῦ υἱοῦ Ἀσουήρου, ἀπὸ τοῦ σπέρματος (β) τῶν Μήδων, ὃς ἐβασίλευσεν
2 ἐπὶ βασιλείαν (γ) Χαλδαίων, Ἐγὼ Δανιὴλ συνῆκα ἐν ταῖς βίβλοις τὸν ἀριθμὸν τῶν (δ) ἐτῶν, ὃς
ἐγενήθη λόγος κυρίου πρὸς Ἱερεμίαν τὸν προφήτην, εἰς συμπλήρωσιν ἐρημώσεως Ἱερουσαλὴμ ἑβδομήκοντα ἔτη.

MS. A. † ΟΡΑΣΙΣ ιʹ. (α) ἐπὶ Δαρείου (β) Μήδων, (γ) Χαλδαίων, Ἐν ἔτει ἑνὶ τῆς βασιλείας αὐτοῦ, ἐγὼ (δ) ἡμερῶν, ὃς

CAP. IX.

IN primo anno Darii filii Aſſueri, ex ſemine Medorum, qui regnavit ſu- 1
per regnum (a) Chaldæorum, Ego Daniel intellexi in libris numerum an- 2
norum, (b) qui factus eſt ſermo Domini ad Hieremiam prophetam, in com-
pletionem deſolationis Hieruſalem ſeptuaginta anni.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

13 * وسمعت واحدا من الملايكة الاطهار متكلما * وقال طاهر واحد لفلموني المتكلم * الي متي
14 الرويا تكون * ويرفع الذبيحة * وخطية الخراب تعطي * ويداس القدس والقوة * فقال له * الي
15 مسا وصباح الفين وثلثماية يوم * ويطهر القدس * وكان لما نظرت انا دانيال الرويا فطلبت
16 فهمها * واذ قد وقف امامي مثل منظر رجل * وسمعت صوت رجل بين الدهليز * فدعا وقال *
17 يا جبرييل فهم ذاك الرويا * فاتي ووقف قريب وقفي * وعند ما اتي فزعت وسقطت علي وجهي *
18 فقال لي * افهم يا ابن الانسان * من اجل ان الرويا الي نهاية الزمان * وفيما هو يتكلم معي
19 فزعت وسقطت علي وجهي * فلمسني واقامني علي قدمي * وقال لي * ها انا اعرفك الكاينات في
20 اخر السخطة * من اجل ان الرويا الي نهاية الزمان * الكبش الذي رايته الذي له قرنان *
21 ملك الماديين والفرس * والتيس من المعز ملك اليونانيين * والقرن الكبير الذي كان بين
22 عينيه هو الملك الاول * واذ انكسر قامت اربعة قرون من تحته * اربعة ملوك من امته يقومون *
23 وليس بقوته * وفي اخر مملكتهم اذ تكمل خطاياهم * يقوم ملك وقح بالوجه * ويفهم المجادلات *
24 وقوته منيعة * وليس بقوته * ويفسد العجيبات * ويستقيم ويصنع * ويفسد الاقويا والشعب
25 الطاهر * ونير اصره يستقيم * والغش في يده * ويعظم بقلبه * وبالغش يفسد كثيرين * وبهلاك
26 كثيرين يقوم * ومثل البيض يكسرهم بيده * ورويا المسا والصباح التي قيلت حقيقية
27 هي * واكتم الرويا لانها الي ايام كثيرة * وانا دانيال رقدت وتوجعت اياما * وقمت وصنعت
اعمال الملك * وتعجبت من الرويا * ولم يكن من يفهم *

* الفصل التاسع *

* الرويا العاشر *

1 * في السنة الاولي لداريوس بن احشيرش من نسل الماديين * الذي ملك علي مملكة
2 الكلدانيين * في سنة احدي لملكه انا دانيال تفهمت في الكتب عدد السنين * قول الرب
الذي كان الي ارميا النبي لكمال خراب ايروشليم سبعين سنة *

Et audivi unum ex Angelis ſanctis lo- 13
quentem, & dixit Sanctus quidam cui-
dam loquenti; Quouſque viſio hæc con-
tinget, & auferetur ſacrificium, peccatum
deſolationis exponetur, & conculcabitur
Sanctuarium & robur? Dixit ei, Uſque 14
ad veſperam & matutinum bis mille &
trecentorum dierum: tum mundabitur
Sanctuarium. Fuit autem cùm vidiſſem 15
ego Daniel viſionem iſtam, ut requirente
me intelligentiam; ecce ſtaret coram me
quaſi ſpecies viri: Et audirem vocem 16
viri inter porticum, clamantis ac di-
centis; O Gabriel, declara huic viſionem.
Qui veniens ſtetit prope ſtationem meam: 17
& cùm veniſſet, expavi, & procidi in
faciem meam. Dixit verò mihi; Intel-
lige O fili hominis, quoniam viſio hæc erit
ad finem temporis. Dum ipſe alloquere- 18
tur me, timui, & in faciem meam procidi:
ſed tetigit me, erexitque ſuper plantas
meas, Et dixit mihi; Ecce ego indicabo 19
tibi futura in fine indignationis, nam vi-
ſio hæc ad finem temporis erit. Aries 20
quem vidiſti duo habentem cornua, rex
Medorum eſt & Perſarum: Hircus au- 21
tem è capris, rex Græcorum: Cornu au-
tem magnum quod erat inter oculos ejus,
eſt rex primus. Eo effracto quod ſuccre- 22
verint cornua quatuor pro illo, reges
quatuor de gente ipſius ſurrecturi ſunt,
imparis tamen fortitudinis. In fine regni 23
iſtorum, cùm expleta fuerint peccata eo-
rum, exurget rex ſeveri vultûs, diſpu-
tationum peritus: Cujus robur ingens 24
erit, ſed non ſuo robore: is miracula de-
ſtruet, & proſper erit, facietque: cor-
rumpet fortes & populum ſanctum: Ju- 25
gum oneris ejus proſperum erit: fraus
erit in manu ipſius, & ſuperbiet in corde
ſuo: per fraudem corrumpet multos, &
per multorum interitum ſubſiſtet: &
quidem perinde ac ova franget eos manu
ſuâ. Præterea viſio illa veſperæ & matu- 26
tini, quæ dicta eſt; vera eſt: ſed viſionem
abſconde, quia eſt ad multos dies. Porrò 27
ego Daniel decubui, & dolui diebus
aliquot; deinde ſurgens egi negotia regis:
mirabar tamen viſionem, & non fuit qui
intelligeret.

CAP. IX.

Viſio decima.

ANno primo Darii filii Achſiri de ſtir- 1
pe Medorum, qui poſſedit regnum Chal-
dæorum: Anno primo regni ejus, ego Da- 2
niel conſideravi in libris numerum an-
norum, ſermonem videlicet Domini qui
fuerat ad Jeremiam prophetam, Ad fi-
nem vaſtationis Jeroſolymorum annos
fore ſeptuaginta.

דניאל : ט

.cinere & , sacco & ,jejunio in , *deprecationes* & , orationem *quærendum ad* , Deum Dominum ad *meas facies dedi* Et
וָאֶתְּנָה אֶת־פָּנַי אֶל־אֲדֹנָי הָאֱלֹהִים לְבַקֵּשׁ תְּפִלָּה וְתַחֲנוּנִים בְּצוֹם וְשַׂק וָאֵפֶר׃ 3
custodiens ,terribilis & ,magne Deus Domine Obsecro ,dixi & ;confessus sum & ,meum Deum Dominum oravi Et
וָאֶתְפַּלְלָה לַיהוָה אֱלֹהַי וָאֶתְוַדֶּה וָאֹמְרָה אָנָּא אֲדֹנָי הָאֵל הַגָּדוֹל וְהַנּוֹרָא שֹׁמֵר 4
;rebellavimꝰ & ,egimus impiè & ,*pervertimus* & ,Peccavimꝰ .*ejus* mandata custodientibꝰ & ,*eum* diligentibus misericordiā & pactum
הַבְּרִית וְהַחֶסֶד לְאֹהֲבָיו וּלְשֹׁמְרֵי מִצְוֹתָיו׃ חָטָאנוּ וְעָוִינוּ וְהִרְשַׁעְנוּ וּמָרָדְנוּ 5
,tuo nomine in sunt locuti qui , *prophetas tuos servos ad audivimus* non Et .tuis judiciis à & ,tuis mandatis à *recedere* &
וְסוֹר מִמִּצְוֹתֶךָ וּמִמִּשְׁפָּטֶיךָ׃ וְלֹא שָׁמַעְנוּ אֶל־עֲבָדֶיךָ הַנְּבִיאִים אֲשֶׁר דִּבְּרוּ בְּשִׁמְךָ 6
die sicut ,*facierum* pudor nobis & ,justitia Domine Tibi .terræ *populum omnem ad & ,nostros patres & ,nostros principes ,nostros reges ad*
אֶל־מְלָכֵינוּ שָׂרֵינוּ וַאֲבֹתֵינוּ וְאֶל כָּל־עַם הָאָרֶץ׃ לְךָ אֲדֹנָי הַצְּדָקָה וְלָנוּ בֹּשֶׁת הַפָּנִים כַּיּוֹם 7
quo ,terris universis in ,longinquis & ,propinquis ,Israel omni & , Jerusalaim habitatoribus & ,Jehudah viro ;hac
הַזֶּה לְאִישׁ יְהוּדָה וּלְיוֹשְׁבֵי יְרוּשָׁלִַם וּלְכָל־יִשְׂרָאֵל הַקְּרֹבִים וְהָרְחֹקִים בְּכָל־הָאֲרָצוֹת אֲשֶׁר
,nostris principibus,nostris regibus ,*facierum* pudor nobis Domine .te in sunt prævaricati qua ,eorum *prævaricatione in illuc* eos *expulisti*
הִדַּחְתָּם שָׁם בְּמַעֲלָם אֲשֶׁר מָעֲלוּ־בָךְ׃ אֲדֹנָי לָנוּ בֹּשֶׁת הַפָּנִים לִמְלָכֵינוּ לְשָׂרֵינוּ 8
non Et .*eum in fuimus rebelles* quia ;*indulgentiæ* & ,misericordiæ nostro Deo Domino .tibi peccavimus quia ,nostris patribus &
וְלַאֲבֹתֵינוּ אֲשֶׁר חָטָאנוּ לָךְ׃ לַאדֹנָי אֱלֹהֵינוּ הָרַחֲמִים וְהַסְּלִחוֹת כִּי מָרַדְנוּ בּוֹ׃ וְלֹא 9
10 .prophetarum suorum servorum *manu in nostras facies ad* dedit *quas* ,ejus *legibus* in *eundum ad* ,nostri Dei Domini *voce in* obedivimus
שָׁמַעְנוּ בְּקוֹל יְהוָה אֱלֹהֵינוּ לָלֶכֶת בְּתוֹרֹתָיו אֲשֶׁר נָתַן לְפָנֵינוּ בְּיַד עֲבָדָיו הַנְּבִיאִים׃
,jusjurandum & ,*execratio* nos super stillavit & :*tua voce in audiendum non ad* ,*recedere* &,tuam legem sunt transgressi Israel omnis Et
וְכָל־יִשְׂרָאֵל עָבְרוּ אֶת־תּוֹרָתֶךָ וְסוֹר לְבִלְתִּי שְׁמוֹעַ בְּקֹלֶךָ וַתִּתַּךְ עָלֵינוּ הָאָלָה וְהַשְּׁבֻעָה 11
super & ,nos super est locutus quæ sua verba statuit Et .ei peccavimus quia ,Dei servi Moseh lege in est scriptum quod
אֲשֶׁר כְּתוּבָה בְּתוֹרַת מֹשֶׁה עֶבֶד־הָאֱלֹהִים כִּי חָטָאנוּ לוֹ׃ וַיָּקֶם אֶת־דְּבָרָיו אֲשֶׁר־דִּבֶּר עָלֵינוּ וְעַל 12
quemadmodum ,cœlo omni sub fuit factum non quod ;grande malū nos sup *adducendū ad* ,nos judicaverunt qui ,nostros judices
שֹׁפְטֵינוּ אֲשֶׁר שְׁפָטוּנוּ לְהָבִיא עָלֵינוּ רָעָה גְדֹלָה אֲשֶׁר לֹא־נֶעֶשְׂתָה תַּחַת כָּל־הַשָּׁמַיִם כַּאֲשֶׁר
facies sumus deprecati non & ;nos sup venit hoc malum omne ,Moseh lege in est scriptum Sicut .Jerusalaim in est factum
נֶעֶשְׂתָה בִּירוּשָׁלִָם׃ כַּאֲשֶׁר כָּתוּב בְּתוֹרַת מֹשֶׁה אֵת כָּל־הָרָעָה הַזֹּאת בָּאָה עָלֵינוּ וְלֹא־חִלִּינוּ אֶת־פְּנֵי 13
,malum super Dominus *vigilavit* Et .tuam veritatem intelligendū ad & ,nostris iniquitatibꝰ ab *nos avertendum ad* ,nostri Dei Domini
יְהוָה אֱלֹהֵינוּ לָשׁוּב מֵעֲוֺנֵנוּ וּלְהַשְׂכִּיל בַּאֲמִתֶּךָ׃ וַיִּשְׁקֹד יְהוָה עַל־הָרָעָה 14
.ejus *voce in* audivimus non & ,fecit quæ ,suis operibꝰ omnibꝰ *super* noster Deus Dominus justus quia ;nos super illud adduxit &
וַיְבִיאֶהָ עָלֵינוּ כִּי־צַדִּיק יְהוָה אֱלֹהֵינוּ עַל־כָּל־מַעֲשָׂיו אֲשֶׁר עָשָׂה וְלֹא שָׁמַעְנוּ בְּקֹלוֹ׃
diē secundū nomē tibi fecisti & ,forti manu in Ægypti terra de tuum populum eduxisti qui ,noster Deus Domine nunc Et
וְעַתָּה אֲדֹנָי אֱלֹהֵינוּ אֲשֶׁר הוֹצֵאתָ אֶת־עַמְּךָ מֵאֶרֶץ מִצְרַיִם בְּיָד חֲזָקָה וַתַּעַשׂ־לְךָ שֵׁם כַּיּוֹם 15
monte,Jerusalaim tua civitate à tua ira & ,tuꝰ *nasus nunc* avertatur tuas justitias omnes scđum Domine .egimꝰ impiè ,peccavimꝰ ;hanc
הַזֶּה חָטָאנוּ רָשָׁעְנוּ׃ אֲדֹנָי כְּכָל־צִדְקֹתֶךָ יָשָׁב־נָא אַפְּךָ וַחֲמָתְךָ מֵעִירְךָ יְרוּשָׁלִַם הַר־ 16
.*nostris circuitibus* cunctis opprobrium in tuus populus & Jerusalaim ,nostrorū patrū *iniquitatibꝰ in & nostris peccatis in* quia ;*tuæ sanctitatis*
קָדְשֶׁךָ כִּי בַחֲטָאֵינוּ וּבַעֲוֺנוֹת אֲבֹתֵינוּ יְרוּשָׁלִַם וְעַמְּךָ לְחֶרְפָּה לְכָל־סְבִיבֹתֵינוּ׃

Versio VULG. LAT.

Et posui faciem meam ad Dominum Deum meum rogare 3
& deprecari in jejuniis, sacco, & cinere. Et oravi Dominum 4
Deum meum, & confessus sum, & dixi; Obsecro,
Domine Deus magne & terribilis, custodiens pactum & misericordiam
diligentibus te, & custodientibus mandata tua:
Peccavimus, iniquitatem fecimus, impiè egimus, & recessimus: 5
& declinavimus à mandatis tuis, ac judiciis. Non 6
obedivimus servis tuis prophetis, qui locuti sunt in nomine
tuo regibus nostris, principibus nostris, patribus nostris,
omníque populo terræ. Tibi, Domine, justitia: nobis 7
autem confusio faciei, sicut est hodiè viro Juda, & habitatoribus
Jerusalem, & omni Israel, his qui propè sunt, &
his qui procul, in universis terris, ad quas ejecisti eos propter
iniquitates eorum, in quibus peccaverunt in te. Domine, 8
nobis confusio faciei, regibus nostris, principibus nostris,
& patribus nostris, qui peccaverunt. Tibi autem Domino 9
Deo nostro misericordia, & propitiatio, quia recessimus
à te: Et non audivimus vocem Domini Dei nostri, ut 10
ambularemus in lege ejus, quam posuit nobis per servos
suos prophetas. Et omnis Israel prævaricati sunt legem 11
tuam, & declinaverunt ne audirent vocem tuam, & stillavit
super nos maledictio, & detestatio, quæ scripta est in
libro Moysi servi Dei; quia peccavimus ei. Et statuit sermones 12
suos, quos locutus est super nos, & super principes
nostros, qui judicaverunt nos, ut superinduceret in nos magnum
malum, quale nunquam fuit sub omni cœlo, secundū
quod factum est in Jerusalem. Sicut scriptum est in lege 13
Moysi, omne malum hoc venit super nos: & non rogavimus
faciem suam, Domine Deus noster, ut reverteremur ab iniquitatibus
nostris, & cogitaremus veritatem tuam. Et vigilavit 14
Dominus super malitiam, & adduxit eam super nos:
justus Dominus Deus noster in omnibus operibus suis, quæ
fecit: non enim audivimus vocem ejus. Et nunc, Domine 15
Deus noster, qui eduxisti populum tuum de terra Ægypti
in manu forti, & fecisti tibi nomen secundùm diem hanc:
peccavimus, iniquitatem fecimus, Domine, in omnem ju- 16
stitiam tuam: avertatur, obsecro, ira tua, & furor tuus, à civitate
tua Jerusalem, & monte sancto tuo. Propter peccata
enim nostra, & iniquitates patrum nostrorum, Jerusalem
& populus tuus in opprobrium sunt omnibus per circuitum
nostrum.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

*ܘܙܩܦܬ ܐܦܝ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ․ ܠܡܒܥܐ ܒܨܠܘܬܐ ܘܒܬܟܫܦܬܐ. ܘܒܨܘܡܐ. 3
ܘܒܣܩܐ ܘܒܩܛܡܐ. *ܘܨܠܝܬ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ ܘܐܘܕܝܬ ܘܐܡܪܬ. ܒܒܥܘ ܡܪܝܐ 4
ܐܠܗܐ ܪܒܐ ܘܕܚܝܠܐ ․ ܢܛܪ ܩܝܡܐ ܘܛܝܒܘܬܐ ܠܪܚܡܝܟ ․ ܘܠܐܝܠܝܢ ܕܢܛܪܝܢ
ܦܘܩܕܢܝܟ ․ *ܚܛܝܢ. ܘܐܣܟܠܢ. ܘܐܪܫܥܢ. ܘܡܪܕܢ. ܘܣܛܝܢ ܡܢ ܦܘܩܕܢܝܟ. 5
ܘܡܢ ܕܝܢܝܟ. *ܘܠܐ ܫܡܥܢ ܠܥܒܕܝܟ ܢܒܝܐ ܕܡܠܠܘ ܒܫܡܟ ․ ܥܠ ܡܠܟܝܢ 6
ܘܪܘܪܒܢܝܢ. ܘܥܠ ܐܒܗܝܢ ․ ܘܥܠ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܐܪܥܐ. *ܕܝܠܟ ܡܪܝܐ ܙܕܝܩܘܬܐ ․ ܘܕܝܠܢ 7
ܒܗܬܬ ܐܦܐ. ܐܝܟ ܕܝܘܡܢܐ. ܠܝܗܘܕܝܐ ܘܠܥܡܘܪܝ ܐܘܪܫܠܡ. ܘܠܟܠܗ ܐܝܣܪܝܠ 8
ܕܩܪܝܒܝܢ ܘܕܪܚܝܩܝܢ ․ ܒܟܠܗܝܢ ܐܪܥܬܐ ܕܒܕܪܬ ܐܢܘܢ ܠܬܡܢ ․ ܒܥܘܠܗܘܢ
ܕܥܘܠܘ ܒܟ. *ܡܪܝܐ ܕܝܠܢ ܗܝ ܒܗܬܬ ܐܦܐ. ܠܡܠܟܝܢ ܘܠܪܘܪܒܢܝܢ ܘܠܐܒܗܝܢ. ܡܛܠ 9
ܕܚܛܝܢ ܠܟ. *ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܪܚܡܐ. ܘܫܘܒܩܢܐ ܕܚܛܗܐ. ܕܡܪܕܢ ܒܗ. *ܘܠܐ ܫܡܥܢ 10
ܠܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ․ ܠܡܗܠܟܘ ܒܢܡܘܣܘܗܝ. ܕܣܡ ܩܕܡܝܢ ܒܝܕ ܥܒܕܘܗܝ
ܢܒܝܐ. *ܘܟܠܗ ܐܝܣܪܝܠ ܥܒܪܘ ܥܠ ܢܡܘܣܟ. ܘܣܛܘ. ܘܠܐ ܫܡܥܘ ܠܩܠܟ. 11
ܘܐܝܬܝܬ ܥܠܝܗܘܢ ܠܘܛܬܐ ܘܡܘܡܬܐ ․ ܕܟܬܝܒܢ ܒܢܡܘܣܗ ܕܡܘܫܐ ܥܒܕܗ
ܕܐܠܗܐ. ܡܛܠ ܕܚܛܝܢ ܩܕܡܘܗܝ. *ܘܐܩܝܡ ܡܠܘܗܝ ܕܡܠܠ ܥܠܝܢ. ܘܥܠ ܕܝܢܝܢ 12
ܕܕܢܘܢ. ܠܡܝܬܝܘ ܥܠܝܢ ܒܝܫܬܐ ܪܒܬܐ ․ ܕܠܐ ܐܬܥܒܕܬ ܐܟܘܬܗ ܬܚܝܬ ܫܡܝܐ ․
ܐܝܟ ܕܐܬܥܒܕܬ ܒܐܘܪܫܠܡ. *ܐܝܟ ܕܟܬܝܒ ܒܢܡܘܣܗ ܕܡܘܫܐ. ܟܠܗ ܒܝܫܬܐ 13
ܗܕܐ ܐܬܬ ܥܠܝܢ. ܘܠܐ ܒܥܝܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ․ ܕܢܬܘܒ ܡܢ ܥܘܠܢ. ܘܢܣܬܟܠ
ܒܗܝܡܢܘܬܟ. ܘܐܥܝܪ ܡܪܝܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܐܝܬܝܗ ܥܠܝܢ. ܡܛܠ ܕܙܕܝܩ ܗܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ 14
ܒܟܠܗܘܢ ܥܒܕܘܗܝ ܕܥܒܕ. ܘܠܐ ܫܡܥܢ ܠܩܠܗ. *ܗܫܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ․ 15
ܕܐܦܩܬ ܠܥܡܟ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ ܒܐܝܕܐ ܥܫܝܢܬܐ ․ ܘܥܒܕܬ ܠܟ ܫܡܐ.
ܐܝܟ ܕܝܘܡܢܐ ․ ܚܛܝܢ ܘܐܪܫܥܢ. *ܡܪܝܐ ․ ܐܝܟ ܟܠܗ ܙܕܝܩܘܬܟ ܕܥܒܕܬ 16
ܒܢ ․ ܢܗܦܘܟ ܪܘܓܙܟ ܘܚܡܬܟ ܡܢ ܡܕܝܢܬܟ ܐܘܪܫܠܡ. ܘܡܢ ܛܘܪܟ ܩܕܝܫܐ.
ܡܛܠ ܕܒܚܛܗܝܢ ܘܒܥܘܠܐ ܕܐܒܗܝܢ ․ ܥܡܟ ܐܬܒܕܪ. ܒܟܠ ܐܬܪ. ܘܗܘܬ ܐܘܪܫܠܡ
ܚܣܕܐ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ.

Quapropter extuli faciem meam ad Dominum 3
Deum, ut cum oratione, supplicatione,
jejunio, sacco, & cinere precarer: Et o- 4
rans coram Domino Deo meo, confessus sum
ac dixi; Obsecro Domine Deus maxime &
formidabilis, servans pactum & benignitatem
erga diligentes te, & eos qui custodiunt
præcepta tua: Peccavimus, stultè impié- 5
que egimus, rebellavimus, & deflexímus à
præceptis & juribus tuis: Neque auscul- 6
tavimus servis tuis prophetis qui nomine
tuo locuti sunt de regibus, principibus, &
patribus nostris, déque toto terræ populo.
Tua Domine est justitia, nostrûm verò pudor 7
faciei, ut hodiernâ die, Judæorum, civium
Jerusalem, omniúmque Israelitarum tam propinquorum
quàm remotorum, in omnibus
terris in quas dispersisti eos propter scelus
quod in te commiserunt. Domine, penes 8
nos est rubor vultꝰ, penes reges nostros, principes,
& patres nostros, quia peccavimus in
te: Penes Dominum Deum misericordia 9
& venia peccatorum. Quandoquidem rebellavimus
in eum, Nec obedivimus voci Do- 10
mini Dei nostri ut ambularemus in legibus ejus,
quas proposuit nobis per servos suos prophetas;
Sed omnes Israelitæ transgressi sunt 11
legem tuam, deflexerunt, & non obtemperaverunt
voci tuæ: ideò induxisti super eos
maledictiones & adjurationes quæ scriptæ
sunt in lege Mosis servi Dei. Quia peccavimus
in eum, Præstitit verba quæ pronun- 12
tiaverat contra nos & contra judices nostros
qui nos judicabant; inducendo super nos calamitatem
tantam, ut nulla talis evenerit sub
cœlo, qualis evênit in Jerusalem. Quem- 13
admodum scriptum est in lege Mosis, totum
hoc malum supervenit nobis; nec tamen deprecati
sumus Dominum Deum nostrum, revertendo
ab iniquitate nostra, & perpendendo
fidem tuam. Quocirca excitavit Domi- 14
nus malum, adduxítque illud super nos: nam
justus est Dominus Deus noster in cunctis operibus
suis quæ præstitit, quòd ipsius voci
non auscultaverimus. Jam Domine Deus 15
noster, qui eduxisti populum tuum de terra
Ægypti manu robustâ, & comparâsti tibi
nomen, quale est hodiè; peccavimus, & impiè
egimus. Domine, secundùm totam ju- 16
stitiam tuam quam in nos exercuisti, recedat
ira tua & furor tuus ab urbe tua Jerusalem,
& à monte sancto tuo: ob peccata enim nostra,
& ob scelus patrum nostrorum populus
tuus dispersus est in omnes regiones, & Jerusalem
ludibrio exposita est omnibus gentibus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

3 Καὶ ἔδωκα τὸ πρόσωπόν μου πρὸς κύριον τὸν θεὸν (δ), τοῦ ἐκζητῆσαι προσευχὴν ϗ (ε) δεήσεις, ἐν νηστείαις
4 ϗ (ζ) σάκκῳ. Καὶ προσευξάμην πρὸς κύριον τὸν θεόν μου, ϗ ἐξωμολογησάμην, ϗ εἶπα, Κύριε
ὁ θεὸς ὁ μέγας καὶ θαυμαστὸς, ὁ φυλάσσων τὴν διαθήκην σου, ϗ τὸ ἔλεός σου τοῖς ἀγαπῶσί σε,
5 ϗ τοῖς φυλάσσουσι τὰς ἐντολάς σου, Ἡμάρτομεν, (η) ἠδικήσαμεν, ἠνομήσαμεν, ϗ ἀπέστημεν ϗ ἐξεκλίναμεν
6 ἀπὸ τῶν ἐντολῶν σου, ϗ ἀπὸ τῶν κριμάτων σου, Καὶ οὐκ εἰσηκούσαμεν τῶν δούλων σου τῶν προφητῶν,
οἳ ἐλάλουν ἐν τῷ ὀνόματί σου πρὸς τοὺς βασιλεῖς ἡμῶν, ϗ ἄρχοντας ἡμῶν, ϗ πατέρας ἡμῶν, ϗ
7 πρὸς πάντα τὸν λαὸν τῆς γῆς. Σοὶ κύριε ἡ δικαιοσύνη, ϗ ἡμῖν ἡ αἰσχύνη τοῦ προσώπου, ὡς ἡ ἡμέρα
αὕτη, ἀνδρὶ Ἰούδα, ϗ τοῖς (θ) ἐνοικοῦσιν ἐν Ἱερουσαλὴμ, ϗ παντὶ Ἰσραὴλ, τοῖς ἐγγὺς καὶ τοῖς
8 μακρὰν ἐν πάσῃ τῇ γῇ, οὗ διέσπειρας αὐτοὺς ἐκεῖ, ἐν (ι) ἀθεσίᾳ αὐτῶν ᾗ (κ) ἠθέτησαν. Ἐν σοὶ κύριε
└ ἐστὶν ἡμῶν ἡ δικαιοσύνη, ϗ ἡμῖν ἡ αἰσχύνη τοῦ προσώπου, ϗ τοῖς βασιλεῦσιν ἡμῶν, ϗ τοῖς ἄρχουσιν ἡμῶν,
9 ϗ τοῖς πατράσιν ἡμῶν, οἵτινες (λ) ἡμάρτομεν. Σοὶ κυρίῳ τῷ θεῷ ἡμῶν οἱ οἰκτιρμοὶ, καὶ οἱ
10 ἱλασμοὶ, ὅτι (μ) ἀπέστημεν, Καὶ οὐκ εἰσηκούσαμεν τῆς φωνῆς κυρίου τοῦ θεοῦ ἡμῶν, πορεύεσθαι (ν) ἐν τοῖς
11 νόμοις αὐτοῦ, οἷς ἔδωκε κατὰ πρόσωπον ἡμῶν ἐν χερσὶ τῶν δούλων αὐτοῦ τῶν προφητῶν. Καὶ πᾶς Ἰσραὴλ
παρέβησαν τὸν νόμον σου, καὶ ἐξέκλιναν τοῦ μὴ (ξ) ἀκοῦσαι τῆς φωνῆς σου· ϗ ἐπῆλθεν ἐφ' ἡμᾶς
12 ἡ κατάρα, ϗ ὁ ὅρκος ὁ γεγραμμένος ἐν νόμῳ (ο) Μωυσέως δούλου τοῦ θεοῦ, ὅτι ἡμάρτομεν αὐτῷ. Καὶ
ἔστησε τοὺς λόγους αὐτοῦ οὓς ἐλάλησεν ἐφ' ἡμᾶς, ϗ ἐπὶ τοὺς κριτὰς ἡμῶν, οἳ ἔκρινον ἡμᾶς, ἐπαγαγεῖν ἐφ'
ἡμᾶς κακὰ μεγάλα, (π) οἷα οὐ γέγονεν ὑποκάτω παντὸς τοῦ οὐρανοῦ, κατὰ τὰ (ρ) γενόμενα ἐν Ἱερουσαλὴμ,
13 Καθὼς γέγραπται (σ) ἐν τῷ νόμῳ Μωυσῆ. πάντα τὰ κακὰ ταῦτα ἦλθεν ἐφ' ἡμᾶς· ϗ οὐκ
ἐδεήθημεν τοῦ προσώπου κυρίου τοῦ θεοῦ ἡμῶν, ἀποστρέψαι ἀπὸ τῶν ἀδικιῶν ἡμῶν, ϗ τοῦ συνιέναι ἐν
14 πάσῃ ἀληθείᾳ σου. Καὶ ἐγρηγόρησε (τ) κύριος, ϗ ἐπήγαγεν αὐτὰ ἐφ' ἡμᾶς, ὅτι (υ) δίκαιος κύριος
15 ὁ θεὸς ἡμῶν ἐπὶ πᾶσαν τὴν ποίησιν αὐτοῦ ἣν ἐποίησε, ϗ οὐκ εἰσηκούσαμεν τῆς φωνῆς αὐτοῦ. Καὶ νῦν
κύριε ὁ θεὸς ἡμῶν, ὃς ἐξήγαγες τὸν λαόν σου ἐκ γῆς Αἰγύπτου ἐν χειρὶ κραταιᾷ, ϗ ἐποίησας σεαυτῷ
16 ὄνομα ὡς ἡ ἡμέρα αὕτη, ἡμάρτομεν, ἠνομήσαμεν. Κύριε ἐν πάσῃ ἐλεημοσύνῃ σου, ἀποστραφήτω
δὴ ὁ θυμός σου, καὶ ἡ ὀργή σου ἀπὸ τῆς πόλεώς σου Ἱερουσαλὴμ ὄρους ἁγίου σου, ὅτι ἡμάρτομεν,
(φ) ϗ ἐν ταῖς ἀδικίαις ἡμῶν, ϗ τῶν πατέρων ἡμῶν, Ἱερουσαλὴμ, ϗ ὁ λαός σου εἰς ὀνειδισμὸν
ἐγένετο ἐν πᾶσι τοῖς περικύκλῳ ἡμῶν.

Et dedi faciem meam ad Dominum Deum, quærendo deprecationem, & 3
orationes in jejuniis, et ſacco. Et oravi ad Dominum Deum meum, & 4
confeſſus ſum, & dixi; Domine Deus magne, & mirabilis, qui cuſtodis
teſtamentum tuum, & miſericordiam tuam diligentibus te, & cuſtodientibus
mandata tua: Peccavimus, (c) injuſtè egimus, iniquè egimus, 5
& receſſimus, & declinavimus à mandatis tuis, atque à judiciis
tuis: Et non exaudivimus ſervos tuos prophetas, qui loquebantur in 6
nomine tuo regibus noſtris, & principibus noſtris, & patribus noſtris,
omnique populo terræ. Tibi, Domine, juſtitia: nobis autem confuſio 7
faciei, ſicut dies hæc, viro Juda, & habitatoribus Hieruſalem, & omni
Iſrael; his, qui propè ſunt, & his qui procul, in univerſa terra, quò diſſeminâſti
eos illuc, in prævaricatione eorum, quâ prævaricati ſunt. (d) In 8
te, Domine, eſt noſtra juſtitia, & nobis confuſio faciei, & regibus noſtris, └
& principibus noſtris, & patribus noſtris: qui peccavimus. Tibi Domino 9
Deo noſtro miſerationes, & propitiationes: quia (e) receſſimus, Et 10
non exaudivimus vocem Domini Dei noſtri, ut ambularemus in legibus ejus,
quas dedit ante faciem noſtram in manibus ſervorum ſuorum prophetarum.
Et omnis Iſrael prævaricati ſunt legem tuam: & declinaverunt, ne audirent 11
vocem tuam. Et ſupervenit ſuper nos maledictio, & juramentum
ſcriptum in lege Moyſi ſervi Dei; quia peccavimus ei. Et ſtatuit ſermones 12
ſuos, quos loquutus eſt ſuper nos, & ſuper judices noſtros, qui judicabant
nos, ut ſuperinducerent in nos mala magna, qualia non fuerunt ſub
omni cœlo, ſecundùm ea quæ facta ſunt in Hieruſalem, Sicut ſcriptum 13
eſt in lege Moyſi. Omnia mala hæc venerunt ſuper nos; & non rogavimus
faciem Domini Dei noſtri; ut reverteremur ab iniquitatibus noſtris, &
intelligeremus in omni veritate tua. Et vigilavit (f) Dominus, & adduxit 14
ea ſuper nos, quoniam juſtus Dominus Deus noſter in omni opere ſuo,
quod fecit: & non exaudivimus vocem ejus. Et nunc, Domine Deus 15
noſter, qui eduxiſti populum tuum de terra Ægypti in manu forti, & feciſti
tibi nomen, ſicut dies hæc, peccavimus, iniquitatem fecimus: Domine, 16
in (g) omni miſericordia tua, avertatur, obſecro, furor tuus, &
ira tua à civitate tua Hieruſalem, monte ſancto tuo, quia peccavimus:
& in noſtris iniquitatibus, & patrum noſtrorum, Hieruſalem, & populus tuus in opprobrium factus eſt in omnibus qui per circuitum noſtrum.

MS. A. (δ) τοῦ οὐρανοῦ, τοῦ (ε) δέησιν, (ζ) σάκκῳ ϗ σποδῷ. Καὶ προσηυξάμην πρὸς κύριον τοῦ οὐρανοῦ, ϗ ἐξομολογησάμην, (η) ἠνομήσαμεν, ἠσεβήσαμεν, ἠδικήσαμεν, ϗ ἀπέστημεν (θ) κατοικοῦσιν Ἱερουσαλὴμ, (ι) ἀθετήσει (κ) ἠθέτησάν σε κύριε. Σοὶ κύριε ἡ δικαιοσύνη, (λ) ἡμάρτομέν σοι. τῷ κυρίῳ θεῷ (μ) ἀπέστημεν ἀπὸ κυρίου, Καὶ (ν) τοῖς νόμοις (ξ) εἰσακοῦσαι (ο) Μωσῆ δούλῳ (π) ἃ οὐ (ρ) γεγραμμένα (σ) ἐν νόμῳ Μωσῆ. (τ) κύριος ὁ θεὸς ἡμῶν ἐπὶ τὴν κακίαν, ϗ ἐπήγαγεν (υ) δίκαιος ὁ θεὸς ἡμῶν (φ) ἐν ταῖς

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* فاعطيت وجهي للرب الهي لاطلب بالصلاة والتضرع بالاصوام والمسح والرماد * وصليت 3 4
الي الرب الهي * واعترفت وقلت * ايها الرب الاله العظيم العجيب * الذي تحفظ عهدك
ورحمتك للذين يحبونك ويحفظون وصاياك * اخطانا * اثمنا * ظلمنا * نافقنا * وتباعدنا وحدنا 5
عن وصاياك وعن احكامك * ولم نسمع من عبيدك الانبياء الذين تكلموا باسمك مع ملوكنا 6
ورؤسائنا وابائنا * ومع كل شعب الارض * لك يا رب العدل * ولنا خزي الوجه * مثل هذا 7
اليوم * لرجل يهودا * ولسكان ايروسليم * ولكل اسرائيل القرباء والبعداء * في كل الارض حيث
بددتنا هناك بعصيانهم الذي عصوك به يا رب * لك يا رب العدل * ولنا خزي الوجه * 8
ولملوكنا ولرؤسائنا ولابائنا * نحن الذين اخطانا اليك ايها الرب الهنا * ولك الرافات 9
والمغفرات * لانا تباعدنا من الرب * ولم نسمع صوت الرب الهنا * لنسير بنواميسه التي اعطانا 10
اياها لوجهنا بايدي عبيدك الانبياء * وكل اسرائيل تجاوزوا ناموسك * وحادوا الا يسمعوا 11
صوتك * وجات علينا اللعنة والحلف المكتوب في ناموس موسي عبد الله * لانا اخطانا له *
* فاقام كلماته التي تكلم بها علينا وعلي قضاتنا الذين دانونا * ليجلب علينا شرورا 12
عظيمة لم يكن مثلها تحت كل السماء * كما صارت في ايروسليم * كما كتب في 13
ناموس موسي * كل هذه الشرور اتت علينا * ولم نطلب وجه الرب الهنا * لنرجع عن
ظلمنا ونتفهم في كل حقك * وسهر الرب الهنا على الشر * وجلب هذه علينا * لان الرب 14
الهنا عدل في كل صنيعه الذي صنعه * ولم نسمع صوته * والان ايها الرب الهنا * الذي 15
اخرجت شعبك من ارض مصر بيد عزيزة * وصنعت لك اسما كمثل هذا اليوم * اخطانا
اثمنا ظلمنا يا رب في كل مراحمك * فليرجع غضبك وحنقك عن مدينتك ايروسليم جبلك 16
المقدس * لانا اخطانا بظلاماتنا وبظلامات ابائنا الذين بايروسليم * وصار شعبك للعار
عند الذين حولنا *

Quarè addixi faciem meam Domino 3
Deo meo, ut rogarem cum oratione &
obſecratione, cum jejuniis, ſacco, & cinere.
Et orans ad Dominum Deum meum 4
confeſſus dixi; O Domine Deus magne
& admirande, qui ſervas pactum tuum
& miſericordiam tuam erga illos qui
te amant & ſervant præcepta tua: Peccavimus, 5
deliquimus, perverſè & impiè
egimus, receſſimus & defleximus à præceptis
& judiciis tuis: Non obtemperavimus 6
ſervis tuis prophetis, qui nomine
tuo locuti ſunt cum regibus, principibus,
& patribus noſtris, cùmque univerſo populo
terræ. Tibi O Domine juſtitia, nobis 7
autem rubor vultûs, qualis eſt hodierno
die, viro Judæ, habitatoribus Jeruſalem,
totique Iſraeli, tam proximis quàm remotis
in tota terra, quocunque diſperſiſti
nos propter rebellionem ipſorum quâ defecerunt
à te O Domine. Tibi O Domine 8
juſtitia, nobis autem, & regibus, principibus,
ac patribus noſtris rubor vultûs.
Nos ſumus qui peccavimus in te O Domine
Deus noſter: At penes te ſunt 9
miſerationes & indulgentiæ. Quia receſſimus
à Domino, Et non auſcultavimus 10
voci Domini Dei noſtri ut ambularemus
in legibus ejus, quas propoſuerat
nobis ob oculos per ſervos ſuos prophetas;
Imò omnes Iſraelitæ prætergreſſi 11
ſunt legem tuam, & deflexerunt
quominùs audirent vocem tuam: Ideò
venit ſuper nos maledictio & adjuratio
ſcripta in lege Moſis ſervi Dei. Quia
peccavimus in eum, Præſtitit verba ſua 12
quæ locutus fuerat contra nos & contra
judices noſtros qui nos judicabant; inferendo
nobis miſerias ingentes quibus non
fuerunt pares ſub toto cœlo, quales acciderunt
in Jeruſalem. Prout ſcriptum 13
eſt in lege Moſis, omnia iſta mala venerunt
ſuper nos; & tamen non ſumus deprecati
vultum Dei noſtri, deſiſtendo ab
impietate noſtra, & animum advertendo
ad omnem veritatem tuam. Ideò 14
vigilavit Dominus Deus noſter ad miſeriam,
& hæc intulit nobis; quia Dominus
Deus noſter juſtiſſimus eſt in omni
opere quod geſſit, & non auſcultavimus
voci ipſius. Nunc ergò O Domine Deus 15
noſter, qui eduxiſti populum tuum de
terra Ægypti manu potenti, & comparâſti
tibi nomen quale eſt hodierno die; peccavimus,
perverſè & impiè egimus O
Domine in omnes miſerationes tuas.
Avertatur jam ira et indignatio tua ab 16
urbe tua Jeruſalem monte ſancto tuo:
peccavimus enim criminibus noſtris et
criminibus patrum noſtrorum qui erant
in Jeruſalem, et factus eſt populus tuus
opprobrio apud eos qui circa nos ſunt.

propter deſolatum tuũ ſanctuariũ ſuper *tuas facies* illuſtra &,ej⁹ deprecationes *ad* & ,tui ſervi orationem noſter Deus audi nunc Et
17 וְעַתָּה שְׁמַע אֱלֹהֵינוּ אֶל־תְּפִלַּת עַבְדְּךָ וְאֶל־תַּחֲנוּנָיו וְהָאֵר פָּנֶיךָ עַל־מִקְדָּשְׁךָ הַשָּׁמֵם לְמַעַן
eſt invocatum quam civitatẽ &,noſtras deſolationes vide &,tuos oculos aperi ;audi & ,tuã aurẽ meus Deus Inclina .Dominum
18 אֲדֹנָי׃ הַטֵּה אֱלֹהַי אָזְנְךָ וּשְׁמָע פְּקַח עֵינֶיךָ וּרְאֵה שֹׁמְמֹתֵינוּ וְהָעִיר אֲשֶׁר־נִקְרָא
.multis tuis miſerationibus *ſuper* ſed,*tuas facies ad* noſtras preces *facientes cadere* *nos* noſtris juſtitiis *ſuper* non quia ;*eã ſuper* tuũ nomẽ
שִׁמְךָ עָלֶיהָ כִּי לֹא עַל־צִדְקֹתֵינוּ אֲנַחְנוּ מַפִּילִים תַּחֲנוּנֵינוּ לְפָנֶיךָ כִּי עַל־רַחֲמֶיךָ הָרַבִּים׃
tuũ nomẽ quia ,meus Deus temetipſum propter ;moreris ne , fac & attende ,Domine ,parce Domine ,exaudi Domine
19 אֲדֹנָי שְׁמָעָה אֲדֹנָי סְלָחָה אֲדֹנָי הַקֲשִׁיבָה וַעֲשֵׂה אַל־תְּאַחַר לְמַעַנְךָ אֱלֹהַי כִּי־שִׁמְךָ
mei populi peccatum &,meũ peccatũ *confitens* & , *orans* & ,*loquens* ego adhuc Et .tuũ populũ ſuper &,tuã civitatẽ ſuper eſt invocatũ
20 נִקְרָא עַל־עִירְךָ וְעַל־עַמֶּךָ׃ וְעוֹד אֲנִי מְדַבֵּר וּמִתְפַּלֵּל וּמִתְוַדֶּה חַטָּאתִי וְחַטַּאת עַמִּי
;oratione in *loquens* ego adhuc Et .mei Dei *ſanctitatis* monte *ſuper* meo Deo Domino coram meã deprecationẽ *dejiciens* & ; Iſrael
21 יִשְׂרָאֵל וּמַפִּיל תְּחִנָּתִי לִפְנֵי יְהוָה אֱלֹהַי עַל הַר־קֹדֶשׁ אֱלֹהָי׃ וְעוֹד אֲנִי מְדַבֵּר בַּתְּפִלָּה
.*veſperæ muneris tempus ſecundũ* me *ad tangens* ,*laſſitudine in* volans ,principio in viſione in videram quem , Gabriel vir &
וְהָאִישׁ גַּבְרִיאֵל אֲשֶׁר רָאִיתִי בֶחָזוֹן בַּתְּחִלָּה מֻעָף בִּיעָף נֹגֵעַ אֵלַי כְּעֵת מִנְחַת־עָרֶב׃
principio In .intelligentiã te *faciendũ* intelligere *ad*,ſum egreſſus nunc Daniel ,dixit & ; mecum eſt locut⁹ & ,me fecit intelligere Et
22 23 וַיָּבֶן וַיְדַבֵּר עִמִּי וַיֹּאמַר דָּנִיֵּאל עַתָּה יָצָאתִי לְהַשְׂכִּילְךָ בִינָה׃ בִּתְחִלַּת
.*viſione in* intellige & ,*verbo in* intellige & : *tu* deſideriorũ quia,*indicandũ ad* veni ego & ,verbum eſt egreſſum tuarũ deprecationũ
תַּחֲנוּנֶיךָ יָצָא דָבָר וַאֲנִי בָּאתִי לְהַגִּיד כִּי חֲמוּדוֹת אָתָּה וּבִין בַּדָּבָר וְהָבֵן בַּמַּרְאֶה׃
ſigillandum ad &,prævaricationem conſumendũ ad,*tuæ ſanctitatis* civitatẽ ſuper & ,tuũ populũ ſuper *deciſa* ſeptuaginta Hebdomadæ
24 שָׁבֻעִים שִׁבְעִים נֶחְתַּךְ עַל־עַמְּךָ וְעַל־עִיר קָדְשֶׁךָ לְכַלֵּא הַפֶּשַׁע וּלְחָתֵם
ungendum ad &,prophetam &,viſionem *ſigillandum* ad & ; ſeculorũ juſtitiã adducendũ ad & ,iniquitatẽ expiandũ ad & , peccata
חַטָּאוֹת וּלְכַפֵּר עָוֹן וּלְהָבִיא צֶדֶק עֹלָמִים וְלַחְתֹּם חָזוֹן וְנָבִיא וְלִמְשֹׁחַ
unctum ad uſque Jeruſalaim ædificandum ad &,faciendum reverti ad,ſermonis exitu ab intelliges & ,ſcies Et .ſanctitatum ſanctitatẽ
25 קֹדֶשׁ קָדָשִׁים׃ וְתֵדַע וְתַשְׂכֵּל מִן־מֹצָא דָבָר לְהָשִׁיב וְלִבְנוֹת יְרוּשָׁלַםִ עַד־מָשִׁיחַ
.temporum *coarctatione* in & , *foſſa* & platea ædificabitur & ,redibit duæ & ſexaginta hebdomadæ & :ſeptem hebdomadæ,ducem
נָגִיד שָׁבֻעִים שִׁבְעָה וְשָׁבֻעִים שִׁשִּׁים וּשְׁנַיִם תָּשׁוּב וְנִבְנְתָה רְחוֹב וְחָרוּץ וּבְצוֹק הָעִתִּים׃
ej⁹ finis & ,venturi ducis populus *corrumpet ſanctitatem* &,civitatem & :ei non &,*unctus* excidetur duas & ſexaginta hebdomadas poſt Et
26 וְאַחֲרֵי הַשָּׁבֻעִים שִׁשִּׁים וּשְׁנַיִם יִכָּרֵת מָשִׁיחַ וְאֵין לוֹ וְהָעִיר וְהַקֹּדֶשׁ יַשְׁחִית עַם נָגִיד הַבָּא וְקִצּוֹ
dimidio & : una hebdomada multis pactum roboravit Et .deſolationes *deciſa* , belli finem ad uſque & ,inundatione in
27 בַשֶּׁטֶף וְעַד קֵץ מִלְחָמָה נֶחֱרֶצֶת שֹׁמֵמוֹת׃ וְהִגְבִּיר בְּרִית לָרַבִּים שָׁבוּעַ אֶחָד וַחֲצִי
deciſam & ,conſummationem ad uſque & ,*ſtupefaciens* abominationum *alam* ſuper & ,*munus* & ,ſacrificium faciet ceſſare *hebdomadæ*
הַשָּׁבוּעַ יַשְׁבִּית זֶבַח וּמִנְחָה וְעַל כְּנַף שִׁקּוּצִים מְשֹׁמֵם וְעַד־כָּלָה וְנֶחֱרָצָה
.*obſtupeſcentem* ſuper ſe effundet
תִּתַּךְ עַל־שֹׁמֵם׃

CAP. X. י

,verbum *veritas* & : Belthesaſar *ejus* nomen vocatur cujus ,Danieli eſt revelatum verbum ,*Paras* regis Chores tertio anno In
1 בִּשְׁנַת שָׁלוֹשׁ לְכוֹרֶשׁ מֶלֶךְ פָּרַס דָּבָר נִגְלָה לְדָנִיֵּאל אֲשֶׁר־נִקְרָא שְׁמוֹ בֵּלְטְשַׁאצַּר וֶאֱמֶת הַדָּבָר
.viſione in *ei* intelligentia & ,verbum intellexit & ,magna militia &
וְצָבָא גָדוֹל וּבִין אֶת־הַדָּבָר וּבִינָה לוֹ בַּמַּרְאֶה׃

Verſio VULG. LAT.

Nunc ergò exaudi,Deus noſter,orationem ſervi tui, & preces ejus: & oſtende faciem tuam ſuper Sanctuarium tuum, quod deſertũ eſt propter temetipſum. 17 Inclina,Deus meus, aurem tuam, & audi : aperi oculos tuos, et vide deſolationem noſtram, & civitatem, ſuper quam invocatum eſt nomen tuum:neque enim in juſtificationibus noſtris proſternimus preces ante faciem tuam, ſed in miſerationibus tuis multis. 18 Exaudi, Domine;placare,Domine : attende et fac: ne moreris propter temetipſum,Deus meus : quia nomen tuum invocatum eſt ſuper civitatem,& ſuper populũ tuum. 19 Cúmque adhuc loquerer,& orarem, & confiterer peccata mea, et peccata populi mei Iſrael, & proſternerem preces meas in conſpectu Dei mei, pro monte ſancto Dei mei: 20 Adhuc me loquente in oratione, ecce vir Gabriel, quem viderã in viſione à principio, citò volans tetigit me in tempore ſacrificii veſpertini. 21 Et docuit me, & locutus eſt mihi, dixítque ; Daniel, nunc egreſſus ſum ut docerem te, & intelligeres. 22 Ab exordio precum tuarum egreſſus eſt ſermo : ego autem veni ut indicarem tibi, quia vir deſideriorum es : tu ergò animadverte ſermonem, & intellige viſionem. 23 Septuaginta hebdomades abbreviatæ ſunt ſuper populum tuum, & ſuper urbem ſanctam tuam, ut conſummetur prævaricatio, & finem accipiat peccatum, et deleatur iniquitas, et adducatur juſtitia ſempiterna, & impleatur viſio, & prophetia, et ungatur Sanctus ſanctorum. 24 Scito ergò, & animadverte:Ab exitu ſermonis, ut iterùm ædificetur Jeruſalem, uſque ad Chriſtum ducem, hebdomades ſeptem, & hebdomades ſexaginta duæ erunt: & rurſum ædificabitur platea, et muri in anguſtia temporum. 25 Et poſt hebdomades ſexaginta duas occidetur Chriſtus : et non erit ejus populus, qui eum negaturus eſt. Et civitatem & Sanctuarium diſſipabit populus cum duce venturo : & finis ejus vaſtitas, et poſt finem belli ſtatuta deſolatio. 26 Confirmabit autem pactum multis hebdomadâ unâ : et in dimidio hebdomadis deficiet hoſtia et ſacrificium : et erit in templo abominatio deſolationis : & uſque ad conſummationem & finem perſeverabit deſolatio. 27

CAP. X.

ANno tertio Cyri regis Perſarum, verbum revelatum eſt Danieli cognomento Baltaſſar, & verbũ verum, et fortitudo magna : intellexítque ſermonem : intelligentia enim eſt opus in viſione. 1

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܗܫܐ ܫܡܥ ܐܠܗܐ ܨܠܘܬܗ ܕܥܒܕܟ ܘܒܥܘܬܢ܂ ܘܐܢܗܪ ܐܦܝܟ ܥܠ ܡܩܕܫܟ 17
ܕܚܪܒ܂ ܡܛܠ ܫܡܟ ܡܪܝܐ ܀ * ܐܪܟܢ ܐܠܗܝ ܐܕܢܟ ܘܫܡܥ܂ ܦܬܘܚ ܥܝܢܝܟ ܘܚܙܝ 18
ܚܘܪܒܢ ܘܫܘܝܢ܂ ܘܕܡܕܝܢܬܐ ܕܐܬܩܪܝ ܫܡܟ ܥܠܝܗ܂ ܠܐ ܗܘܐ ܓܝܪ ܥܠ ܙܕܝܩܘܬܢ ܬܟܝܠܝܢ
ܘܡܬܟܫܦܝܢܢ ܩܕܡܝܟ܂ ܐܠܐ ܥܠ ܪܚܡܝܟ ܣܓܝܐܐ܂ * ܡܪܝܐ ܫܡܥ ܘܥܒܕ܂ ܘܠܐ ܬܘܚܪ ܡܛܠ 19
ܫܡܟ ܐܠܗܝ܂ ܡܛܠ ܕܫܡܟ ܐܬܩܪܝ ܥܠ ܡܕܝܢܬܟ ܘܥܠ ܥܡܟ܂ * ܘܥܕ ܐܢܐ ܡܨܠܐ 20
ܘܡܘܕܐ ܚܛܗܝ܂ ܘܚܛܗܐ ܕܥܡܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ : ܘܪܡܐ ܐܢܐ ܬܟܫܦܬܝ ܩܕܡ ܡܪܝܐ
ܐܠܗܐ܂ ܥܠ ܛܘܪܐ ܩܕܝܫܐ ܕܐܠܗܝ܀ * ܘܟܕ ܐܢܐ ܡܡܠܠ ܒܨܠܘܬܐ܂ ܓܒܪܐ ܓܒܪܐܝܠ 21
ܕܚܙܝܬܗ ܒܚܙܘܐ ܡܢ ܩܕܡ܂ ܦܪܚ ܡܦܪܚ ܘܐܬܐ ܡܢ ܫܡܝܐ܂ ܘܩܪܒ ܠܘܬܝ ܒܥܕܢ ܩܘܪܒܢܐ
ܕܪܡܫܐ܂ * ܘܟܕ ܐܬܐ ܡܠܠ ܥܡܝ܂ ܘܐܡܪ ܠܝ܂ ܕܢܝܐܝܠ܂ ܗܫܐ ܢܦܩܬ 22
ܠܡܠܦܘܬܟ ܕܬܣܬܟܠ܂ * ܒܫܘܪܝ ܨܠܘܬܟ܂ ܢܦܩ ܦܬܓܡܐ܂ ܘܐܬܝܬ ܐܢܐ ܠܡܚܘܝܘܬܟ܂ 23
ܡܛܠ ܕܪܓܝܓ ܐܢܬ܂ ܐܣܬܟܠ ܒܦܬܓܡܐ܂ ܘܐܣܬܟܠ ܒܚܙܘܐ܂ * ܫܒܥܝܢ ܫܒܘܥܝܢ 24
ܢܬܥܟܒܘܢ ܥܠ ܥܡܟ ܘܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܕܩܘܕܫܟ܂ ܠܡܒܛܠܘ ܥܘܠܐ܂ ܘܠܡܫܠܡܘ ܚܛܗܐ܂
ܠܡܫܒܩܘ ܥܘܠܐ܂ ܘܠܡܝܬܝܘ ܙܕܩܐ ܕܡܢ ܥܠܡ܂ ܘܠܡܫܠܡܘ ܚܙܘܐ ܘܢܒܝܐ܂
ܘܠܡܫܝܚܐ ܩܕܫ ܩܘܕܫܝܢ܂ * ܘܬܕܥ ܘܬܣܬܟܠ܂ ܡܢ ܡܦܩܢܗ ܕܡܠܬܐ܂ ܠܡܒܢܝܘ܂ 25
ܘܠܡܬܝܬܗ ܠܐܘܪܫܠܡ܂ ܘܠܡܐܬܝܬܗ ܕܡܫܝܚܐ ܡܠܟܐ܂ ܫܒܘܥܐ ܫܒܥܐ܂
ܘܫܒܘܥܐ ܫܬܝܢ ܘܬܪܝܢ܂ ܬܘܒ ܬܬܒܢܐ ܐܘܪܫܠܡ ܫܘܩܝܗ ܘܦܠܛܝܗ܂
ܠܫܘܠܡ ܙܒܢܐ܂ * ܘܒܬܪ ܫܒܘܥܐ ܫܬܝܢ ܘܬܪܝܢ܂ ܢܬܩܛܠ ܡܫܝܚܐ܂ ܘܠܐ 26
ܐܝܬ ܠܗ܂ ܘܡܕܝܢܬܐ ܕܩܘܕܫܐ ܬܬܚܒܠ ܥܡ ܡܠܟܐ ܕܐܬܐ܂ ܘܚܪܬܗ ܒܫܘܛܦܐ܂
ܘܥܕܡܐ ܠܚܪܬܐ ܕܩܪܒܐ ܕܦܣܩܬܐ ܕܚܘܪܒܐ܂ * ܘܢܥܫܢ ܕܝܬܩܐ܂ ܠܣܓܝܐܐ܂ 27
ܫܒܘܥܐ ܚܕ ܘܦܠܓܗ ܕܫܒܘܥܐ܂ ܘܢܒܛܠ ܕܒܚܬܐ ܘܩܘܪܒܢܐ܂ ܘܥܠ ܟܢܦܝܗ
ܕܛܢܦܘܬܐ ܚܘܪܒܐ܂ ܥܕܡܐ ܠܫܘܠܡܐ ܕܦܣܩܬܐ ܢܩܘܐ ܥܠ ܚܘܪܒܐ܂

*ܩܦܠܐܘܢ *ܝ*

* ܒܫܢܬܐ ܬܠܬ ܕܟܘܪܫ ܡܠܟܐ ܕܦܪܣ܂ ܦܬܓܡܐ ܐܬܓܠܝ ܠܕܢܝܐܝܠ ܕܐܬܩܪܝ ܫܡܗ 1
ܒܠܛܫܨܪ܂ ܘܫܪܝܪ ܦܬܓܡܐ܂ ܘܚܝܠܐ ܪܒܐ ܡܬܕܪܟ ܦܬܓܡܐ܂ ܘܐܣܬܟܠ ܒܗ ܒܚܙܘܐ܂

Jam audi Deus orationem ſervi tui & obſecrationem noſtram, & ſerenum redde vultum tuum erga Sanctuarium tuum quod abiit in ruinam ; propter nomen tuum Domine. 17 Inclina mi Deus aurem tuam, & audi ; aperi oculos tuos, & vide ruinas & vaſtitates noſtras atque urbis ſuper quam invocatum eſt nomen tuum : neque enim juſtitiâ noſtrâ freti te obſecramus , ſed ampliſſimis miſerationibus tuis. 18 Domine, auſculta & fac, néve morêris ; propter nomen tuum Deus meus : ſiquidem nomen tuum invocatum eſt ſuper urbem tuam & ſuper populum tuum. 19 Dum ego orarem, & confiterer delicta mea & delicta populi mei Iſraelis, funderemque ſupplicationem meam ante Dominum Deum pro monte ſancto Dei mei : 20 Dum inquam, in oratione loquerer, vir ille Gabriel quem antea videram in viſione, celerrimo volatu advolavit & venit è cœlo, acceſſitque ad me tempore ſacrificii veſpertini ; 21 Et cùm veniſſet, allocutus eſt me, dixitque mihi ; Daniel, modò egreſſus ſum ad docendum te ut intelligas. 22 Initio orationis tuæ prodiit ſermo, ideo veni indicatum tibi, cùm ſis cupidus : conſidera ſermonem, & intellige viſionem. 23 Septuaginta hebdomadæ morabuntur ſuper populum tuum & ſuper civitatem ſanctitatis tuam ut aboleantur ſcelera, & conſumantur peccata ; ut remittatur iniquitas, & adducatur juſtitia quæ eſt ab æterno, ut compleantur viſio & prophetæ;& uſque ad Chriſtum,Sanctum ſanctorum. 24 Igitur ſcias & intelligas : Ab egreſſu verbi uſque ad reædificationem Jeroſolymæ & ad adventum Chriſti regis, hebdomadæ ſeptem erunt, & hebdomadæ ſexaginta duæ : *tum* iterum ædificabit Jeroſolymam,& vicos atque plateas ejus uſque ad finem temporis. 25 Poſt hebdomadas autem ſexaginta duas occidetur Chriſtus , & non erit penes ipſam : Civitas etiam ſanctitatis deſtruetur cum rege venturo, & exitium ejus erit cum eraſione uſque ad finem belli ſententiæ vaſtitatis. 26 Et grave reddet fœdus multis hebdomadâ unâ & dimidium hebdomadæ, abolebitque ſacrificium & oblationem : denique ſuper extremitates abominationis *incumbet* vaſtitas : uſque ad conſummationem ſententiæ manebit in vaſtitate. 27

CAP. X.

ANno tertio Cyri regis Perſarum, ſermo revelatus eſt Danieli, cujus nomen vocatum fuit Blitſaſar: verus eſt ſermo, ſed magno conatu deprehenditur ſermo ; attamen intellexit viſionem. 1

Versio GRÆCA LXX. Interp. Cum Interpretatione LATINA.

17 Καὶ (χ) νῦν εἰσάκουσον κύριε ὁ Θεὸς ἡμῶν τῆς προσευχῆς τοῦ δούλου σου καὶ τὴν δέησιν αὐτοῦ, καὶ ἐπίφανον τὸ πρόσωπόν σου ἐπὶ τὸ ἁγίασμά σου τὸ ἔρημον, (ψ) ἕνεκεν σου κύριε. 18 Κλῖνον ὁ Θεός μου τὸ οὖς σου, καὶ ἄκουσον· (ω) ἄνοιξον τοὺς ὀφθαλμούς σου, καὶ ἴδε τὸν ἀφανισμὸν ἡμῶν, καὶ τῆς πόλεώς σου (α) ἐφ' ἧς ἐπικέκληται τὸ ὄνομά σου ἐπ' αὐτῆς· ὅτι οὐκ ἐπὶ ταῖς δικαιοσύναις (β) ἡμῶν ῥιπτούμεθα τὸν οἰκτιρμὸν ἡμῶν ἐνώπιόν σου, ἀλλ' ἐπὶ τοὺς οἰκτιρμούς σου τοὺς πολλοὺς κύριε. 19 (γ) Εἰσάκουσον κύριε, ἱλάσθητι κύριε, πρόσχες κύριε· μὴ χρονίσῃς ἕνεκεν σου ὁ Θεός μου, ὅτι τὸ ὄνομά σου ἐπικέκληται ἐπὶ τὴν πόλιν σου, καὶ ἐπὶ τὸν λαόν σου. 20 Καὶ ἔτι (") ἐμοῦ λαλοῦντος, καὶ προσευχομένου, καὶ (δ) ἐξαγορεύοντος τὰς ἁμαρτίας μου, καὶ τὰς ἁμαρτίας τοῦ λαοῦ μου Ἰσραὴλ, καὶ ῥιπτοῦντος τὸν ἔλεόν μου ἐναντίον (ε) τοῦ κυρίου τοῦ Θεοῦ μου περὶ τοῦ ὄρους τοῦ (ζ) ἁγίου, 21 Καὶ ἔτι ἐμοῦ λαλοῦντος ἐν τῇ προσευχῇ, καὶ ἰδοὺ ἀνὴρ Γαβριὴλ, ὃν ἴδον ἐν τῇ ὁράσει ἐν τῇ ἀρχῇ, πετόμενος, καὶ ἥψατό μου, ὡσεὶ ὥραν θυσίας ἑσπερινῆς. 22 Καὶ συνέτισέ με, καὶ ἐλάλησε μετ' ἐμοῦ, καὶ εἶπε, Δανιὴλ, νῦν ἐξῆλθον συμβιβάσαι σε σύνεσιν. 23 Ἐν ἀρχῇ τῆς (η) δεήσεώς σου, ἐξῆλθε λόγος, καὶ ἐγὼ ἦλθον τοῦ ἀναγγεῖλαί σοι, ὅτι ἀνὴρ ἐπιθυμιῶν (θ) εἶ σὺ, καὶ ἐννοήθητι ἐν τῷ ῥήματι, καὶ σύνες ἐν τῇ ὀπτασίᾳ. 24 Ἑβδομήκοντα ἑβδομάδες συνετμήθησαν ἐπὶ τὸν λαόν σου (ι), καὶ ἐπὶ τὴν πόλιν τὴν (κ) ἁγίαν, τοῦ (λ) συντελεσθῆναι ἁμαρτίαν, καὶ τοῦ σφραγίσαι (μ) ἁμαρτίας, καὶ ἀπαλεῖψαι τὰς (ν) ἀδικίας, καὶ τοῦ ἐξιλάσασθαι ἀδικίας, καὶ τοῦ ἀγαγεῖν δικαιοσύνην αἰώνιον, καὶ τοῦ σφραγίσαι ὅρασιν καὶ προφήτην, καὶ τοῦ χρῖσαι ἅγιον ἁγίων. 25 Καὶ γνώσῃ καὶ συνήσεις· ἀπὸ ἐξόδου λόγου τοῦ ἀποκριθῆναι, καὶ τοῦ οἰκοδομῆσαι Ἱερουσαλὴμ, ἕως Χριστοῦ ἡγουμένου ἑβδομάδες ἑπτὰ, καὶ ἑβδομάδες ἑξήκοντα δύο. καὶ ἐπιστρέψει, καὶ οἰκοδομηθήσεται πλατεῖα, καὶ (ξ) τεῖχος, καὶ ἐκκενωθήσονται οἱ καιροί. 26 Καὶ μετὰ τὰς ἑβδομάδας τὰς ἑξηκονταδύο, (ο) ἐξολοθρευθήσεται χρῖσμα, καὶ κρίμα οὐκ ἔστιν ἐν αὐτῷ· καὶ τὴν πόλιν, καὶ τὸ ἅγιον διαφθερεῖ σὺν τῷ ἡγουμένῳ τῷ ἐρχομένῳ, (π) ἐκκοπήσονται ἐν κατακλυσμῷ, 27 καὶ ἕως τέλους πολέμου (ρ) συντετμημένου τάξει, ἀφανισμοῖς. Καὶ δυναμώσει διαθήκην πολλοῖς ἑβδομὰς μία. καὶ ἐν τῷ (σ) ἡμίσει τῆς ἑβδομάδος ἀρθήσεταί μου θυσία καὶ σπονδὴ, καὶ ἐπὶ τὸ ἱερὸν βδέλυγμα τῶν ἐρημώσεων (τ), καὶ ἕως τῆς συντελείας καιροῦ συντέλεια δοθήσεται ἐπὶ τὴν ἐρήμωσιν. †

Et nunc exaudi, Domine Deus noster, orationem servi tui, & preces ejus : 17 & ostende faciem tuam super Sanctuarium tuum, quod desertum est : Propter te, Domine, Inclina, Deus meus, aurem tuam, & audi : aperi oculos 18 tuos, & vide desolationem nostram, & civitatis tuæ, super quam invocatum est nomen tuum super eam. Quia non in nostris justitiis prosternimus miserationem nostram coram te, sed in miserationibus tuis multis, Domine. Exaudi, Domine : placare, Domine : attende, Domine : *ne moreris pro- 19 pter temetipsum, Deus meus : quia nomen tuum invocatum est super civitatem tuam, & super populum tuum. Et adhuc me loquente, & orante, 20 & confitente peccata mea, & peccata populi mei Israel, & prosternente misericordiam meam in conspectu Domini Dei mei pro monte sancto, Et 21 adhuc me loquente in oratione : & ecce vir Gabriel, quem videram in visione à principio, volans : & tetigit me quasi horâ sacrificii vespertini. Et docuit me, & loquutus est mecum, & dixit ; Daniel, nunc exivi im- 22 buere te intelligentiâ. In principio obsecrationis tuæ, exivit sermo : & 23 ego veni, ut adnuntiem tibi : quia (h) vir desideriorum tu es. Et cogita in verbo, & intellige in visione. Septuaginta hebdomades, *breviatæ 24 sunt super plebem tuam, & super civitatem (i) sanctam, (k) ut consummetur peccatum, & signentur peccata, & deleantur iniquitates, & exorentur iniquitates, & adducatur justitia sempiterna, & (l) signetur visio, & propheta, & ungatur Sanctus sanctorum. Et scies, & intelli- 25 ges : ab exitu sermonis ad (m) respondendum, & ædificandum Hierusalem usque ad Christum ducem hebdomades septem, & hebdomades sexaginta duæ. Et (n) revertetur, & ædificabitur platea, & murus : & (o) evacuabuntur tempora : Et post hebdomadas sexaginta *duas (p) exter- 26 minabitur unctio : & judicium non est in eo : et (q) civitatem & Sanctuarium dissipabit cum duce adveniente : excidentur in (r) diluvio, & usq; ad finem belli concisi, (ſ) ordine, desolationibus. Et confirmabit testa- 27 mentum multis hebdomada una. Et in dimidio hebdomadis (t) auferetur meum sacrificium, & libamen : et in templo abominatio desolationum : et usque ad consummationem temporis consummatio dabitur super desolationem.

MS. A. (χ) νῦν κύριε ὁ Θεὸς ἡμῶν εἰσάκουσον τῆς (ψ) εἵνεκεν (ω) καὶ ἄνοιξον (α) Ἱερουσαλὴμ ἐφ' (β) ἡμῶν ἡμεῖς ῥιπτοῦμεν (γ) Κύριε ἄκουσον, κύριε ἱλάσθητι, κύριε πρόσχες, κύριε ποίησον· καὶ μὴ χρονίσῃς ἕνεκεν σου κύριε ὁ Θεὸς (") μου (δ) ἐξαγορεύοντός μου τὰς ἁμαρτίας μου, καὶ τὰς (ε) τοῦ Θεοῦ μου (ζ) ἁγίου τοῦ Θεοῦ μου, Καὶ ἔτι μου λαλοῦντος καὶ προσευχομένου ἐν τῇ προσευχῇ, ἰδοὺ (η) δεήσεως, ἐξῆλθεν (θ) σὺ εἶ, (ι) Ἰσραὴλ, (κ) ἁγίαν σου, (λ) συντελέσαι (μ) ὅρασιν ἁμαρτίας, (ν) ἀνομίας, (ξ) περὶ τεῖχος, (ο) ἐξολοθρευθήσεται (π) καὶ ἐκκοπήσονται (ρ) συντετμημένου (σ)* ἥμισυ τῆς ἑβδομάδος καταπαύσει θυσιαστήριον καὶ θυσίαν, καὶ ἕως πτερυγίου ἀπὸ ἀφανισμοῦ, καὶ ἕως συντελείας καὶ σπουδῆς τάξει ἐπὶ ἀφανισμοῦ, καὶ δυναμώσει διαθήκην πολλοῖς ἑβδομὰς μία, καὶ ἐν τῷ * ἥμισυ τῆς ἑβδομάδος ἀρθήσεταί (τ) ἔσται, καὶ † ὍΡΑΣΙΣ ι'.

ΚΕΦ. ι'.

1 † ἘΝ ἔτει τρίτῳ Κύρου βασιλέως Περσῶν λόγος ἀπεκαλύφθη τῷ Δανιὴλ, οὗ τὸ ὄνομα ἐπεκλήθη Βαλτάσαρ· καὶ ἀληθινὸς ὁ λόγος, καὶ δύναμις μεγάλη καὶ σύνεσις ἐδόθη αὐτῷ ἐν τῇ ὀπτασίᾳ.

MS. A. † ὍΡΑΣΙΣ. ια'.

CAP. X.

IN anno tertio Cyri regis Persarum verbum revelatum est Danieli, cujus 1 nomen vocatum est Baltasar. Et verbum verum, et fortitudo magna, et intelligentia data est ei in visione.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

17 * والآن اسمع ايها الرب الهنا صلاة عبدك وتضرعاته * واظهر وجهك على مقدسك الخراب * من
18 اجلك يا رب * امل يا الهي سمعك واسمع * افتح عينيك وانظر هلاكنا وهلاك مدينتك التي
دعي اسمك عليها * لانا ليس على معدلاتنا نحن نطرح رافتنا امامك * لكن على رافاتك
19 الكثيرة يا رب * اسمع يا رب * اغفر يا رب * انصت يا رب * واصنع ولا تبطئ * من اجلك ايها الرب
20 الهي * لان اسمك دعي على مدينتك وعلى شعبك * فبينما انا اتكلم واصلي * واعترف
بخطاياي وخطايا شعبي اسرائيل * والقي رحمتي امام الرب الهي من اجل الجبل المقدس الذي
21 لالهي * وبينما انا متكلم في صلاتي * واذا الرجل جبريل الذي رايته في الرؤيا في المبتداء * طار
22 ولمسني نحو ساعة الذبيحة المسائية * وفهمني وتكلم معي وقال * يا دانيال الآن خرجت لاعلمك
23 الفهم * في مبتداء تضرعك خرج القول * وانا اتيت لاخبرك * لانك رجل الشهوات انت * فتفطن
24 بقولك * وتفهم في الرؤيا * سبعون اسبوعا قطعت على شعبك وعلى المدينة المقدسة * لتفني
الخطايا * وتختم الخطايا * وتمحي الآثام * ويستغفر عن الظلم * ويجلب العدل الابدي * وتختم
25 الرؤيا والنبوة * ويمسح قدس القديسين * وتعرف وتفهم * من مخرج القول لتجاوب وتبني اورشليم *
الى المسيح المقدم سبعة اسابيع * واثنان وستون اسبوعا * فتعود وتبني الرحبة والسور * وتفرغ
26 الازمان * وبعد السبعة اسابيع والاثنين وستين اسبوعا * تستاصل المسحة * ولا يكون فيه حكم *
ويفسد المدينة والموضع المقدس مع المقدم الآتي * ويقطعون بطوفان * الى آخر الحرب المجزوم
27 يرتب الفساد * ويقوي عهدا للكثيرين اسبوع واحد * وفي نصف الاسبوع تكف المذابح والذبائح *
والى الجناح يكون الفساد * والى الانقضاء * وبسرعة يرتب على الفساد * ويقوي عهدا للكثيرين
اسبوع واحد * وفي نصف الاسبوع تنزع ذبيحتي وسكيبي * وعلى القدس تكون زلة الخراب *
والى انقضاء الوقت يعطي انقضاء على الخراب *

* الفصل العاشر *   * الرؤيا الحادي عشر *

1 * في السنة الثالثة لكورش ملك الفرس * كشفت كلمة لدانيال الذي دعي اسمه
بلطشاصر * والكلمة حقيقية * وقوة عظيمة وفهم اعطي له في الرؤيا *

Nunc inquam, exaudi O Domine Deus 17 noster, preces & obsecrationes servi tui, & fac appareat facies tua super Sanctuarium tuum desolatum, propter teipsum O Domine. Admove O Deus meus au- 18 ditum tuum, & audi ; aperi oculos tuos, & aspice exitium nostrum & excidium urbis tuæ super quam invocatum est nomen tuum : non enim justitiis nostris innixi nos prosternimus miserationem nostram coram te, sed miserationibus tuis plurimis innixi O Domine. Exaudi O 19 Domine, parce O Domine, ausculta O Domine, fac & ne tardes ; propter temetipsum O Domine Deus meus : quandoquidem nomen tuum invocatum est super urbem tuam, & super populum tuum. Dum ego loquerer & orarem, & 20 confiterer peccata mea & peccata populi mei Israelis, & prosternerem miserationem meam coram Domino Deo meo pro monte sancto Dei mei : Dum inquam, lo- 21 querer in oratione mea, ecce vir ille Gabriel quem initio videram in visione, volavit, tetigitque me sub horam sacrificii vespertini. Is informans me, allocutus 22 est me, dixitque ; O Daniel, nunc egressus sum ut doceam te sensum. In prin- 23 cipio supplicationis tuæ prodiit sermo, & ego veni ut indicarem tibi, quandoquidem vir desideriorum es : itaque animadverte pro viribus tuis, & considera visionem. Septuaginta hebdomades præ- 24 finitæ sunt super populum tuum & super urbem sanctam, ut absumantur peccata, & obsignentur peccata, & deleantur iniquitates, & impetretur venia pro impietate, & adducatur justitia sempiterna, & obsignetur visio & prophetia, & un- gatur Sanctum sanctorum. Scias etiam 25 & intelligas : ab egressu sermonis, ut respondeat & ædificetur Jerusalem, usq; ad Christum ducem, septem hebdomades erunt, & sexaginta duæ hebdomades : tunc iterum ædificabitur platea & murus, & terminabuntur tempora. Et post septem hebdomades & sex- 26 aginta duas hebdomades eradicabitur unctio, & non erit in eo judicium, & destruet urbem & locum sanctum unà cum duce venturo : & exscindentur diluvio : usque ad finem belli præscripti disponetur vastatio. Confirmabit autem 27 pactum multis hebdomas una, & in medio hebdomadis cessabunt altaria & sacrificia ; & usque ad extremitatem erit vastitas, et usque ad finem. Statimque disponet ad vastitatem, et pactum confirmabit multis hebdomas una : et in dimidio hebdomadis auferetur sacrificium meum et libamen meum : et super Sanctuarium erit abominatio ruinæ : et usque ad consummationem temporis imponetur finis ruinæ.

CAP. X.

Visio undecima.

ANno tertio Cyri regis Persarum, re- 1 velatum fuit verbum Danieli, cui impositum fuerat nomen Baltasasar, (et quidem verbum est verum,) et magna vis atque intelligentia concessa fuit illi in visione.

דניאל : י

vinum & caro & ,comedi non desideriorũ Panem .diebus hebdomadarum trium lugens fui Daniel ego illis diebus In
בַּיָּמִים הָהֵם אֲנִי דָנִיֵּאל הָיִיתִי מִתְאַבֵּל שְׁלֹשָׁה שָׁבֻעִים יָמִים׃ לֶחֶם חֲמֻדוֹת לֹא אָכַלְתִּי וּבָשָׂר וָיַיִן 2
3 quarta & vigesima die in Et .dies hebdomadarum trium complere ad usque ;sum unctus non ungendo &,meũ os in venit non
לֹא־בָא אֶל־פִּי וְסוֹךְ לֹא־סָכְתִּי עַד־מְלֹאת שְׁלֹשֶׁת שָׁבֻעִים יָמִים׃ וּבְיוֹם עֶשְׂרִים וְאַרְבָּעָה 4
ecce & , vidi & ,meos oculos levavi Et .Chiddechel ipsum ,magni fluminis manum super eram ego & ; primi mensis
לַחֹדֶשׁ הָרִאשׁוֹן וַאֲנִי הָיִיתִי עַל־יַד הַנָּהָר הַגָּדוֹל הוּא חִדָּקֶל׃ וָאֶשָּׂא אֶת־עֵינַי וָאֵרֶא וְהִנֵּה 5
,fulguris aspectus velut ejꝰ facies &,Tarsis sicut ejꝰ corpus Et .obrizi auri missa in accincti ejꝰ lumbi & : lineis vestitus unus vir
אִישׁ־אֶחָד לָבוּשׁ בַּדִּים וּמָתְנָיו חֲגֻרִים בְּכֶתֶם אוּפָז׃ וּגְוִיָּתוֹ כְתַרְשִׁישׁ וּפָנָיו כְּמַרְאֵה בָרָק 6
.tumultus vox sicut ejꝰ verborum vox & : politi æris oculus sicut ejus pedes & ,ejus brachia & ,ignis lampades ut ejus oculi &
וְעֵינָיו כְּלַפִּידֵי אֵשׁ וּזְרֹעֹתָיו וּמַרְגְּלֹתָיו כְּעֵין נְחֹשֶׁת קָלָל וְקוֹל דְּבָרָיו כְּקוֹל הָמוֹן׃
terror sed ; visionem viderunt non,mecum erant qui viri & : visionem solus Daniel ego vidi Et
וְרָאִיתִי אֲנִי דָנִיֵּאל לְבַדִּי אֶת־הַמַּרְאָה וְהָאֲנָשִׁים אֲשֶׁר הָיוּ עִמִּי לֹא־רָאוּ אֶת־הַמַּרְאָה אֲבָל חֲרָדָה 7
,hanc magnam visionem vidi & , solus sum relictus ego Et .absconditum in fugerunt & ,eos super irruit magnus
גְדֹלָה נָפְלָה עֲלֵיהֶם וַיִּבְרְחוּ בְּהֵחָבֵא׃ וַאֲנִי נִשְׁאַרְתִּי לְבַדִּי וָאֶרְאֶה אֶת־הַמַּרְאָה הַגְּדֹלָה הַזֹּאת 8
vocem audivi Et .fortitudinem retinui non &,corruptionẽ in me in est versa mea vis & ; fortitudo me in remansit non &
וְלֹא־נִשְׁאַר בִּי כֹּחַ וְהוֹדִי נֶהְפַּךְ עָלַי לְמַשְׁחִית וְלֹא עָצַרְתִּי כֹּחַ׃ וָאֶשְׁמַע אֶת־קוֹל 9
.terram super meæ facies & ,meas facies super soporatus fui ego & ,ejꝰ verborũ vocem me audire secundùm & : ejus verborum
דְּבָרָיו וּכְשָׁמְעִי אֶת־קוֹל דְּבָרָיו וַאֲנִי הָיִיתִי נִרְדָּם עַל־פָּנַי וּפָנַי אָרְצָה׃
vir Daniel , me ad dixit Et .mearũ manuum palmas & ,mea genua super me fecit movere & ; me in tetigit manus ecce Et
וְהִנֵּה־יָד נָגְעָה בִּי וַתְּנִיעֵנִי עַל־בִּרְכַּי וְכַפּוֹת יָדָי׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי דָּנִיֵּאל אִישׁ־ 10
11 ipsum loquendo in & : te ad sum missus nunc quia,tuũ stare super sta & , te ad loquens ego quæ , verbis in intellige desideriorũ
חֲמֻדוֹת הָבֵן בַּדְּבָרִים אֲשֶׁר אָנֹכִי דֹּבֵר אֵלֶיךָ וַעֲמֹד עַל־עָמְדֶךָ כִּי עַתָּה שֻׁלַּחְתִּי אֵלֶיךָ וּבְדַבְּרוֹ
quo primo die ex quia ,Daniel timeas Ne ,me ad ait Et .tremens steti , hoc verbum mecum
עִמִּי אֶת־הַדָּבָר הַזֶּה עָמַדְתִּי מַרְעִיד׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי אַל־תִּירָא דָנִיֵּאל כִּי מִן־הַיּוֹם הָרִאשׁוֹן אֲשֶׁר 12
princeps Et .tuis verbis in veni ego & ; tua verba sunt exaudita ,tuo Deo coram te affligendũ ad &,intelligẽdũ ad tuũ cor dedisti
נָתַתָּ אֶת־לִבְּךָ לְהָבִין וּלְהִתְעַנּוֹת לִפְנֵי אֱלֹהֶיךָ נִשְׁמְעוּ דְבָרֶיךָ וַאֲנִי בָאתִי בִּדְבָרֶיךָ׃ וְשַׂר 13
:mihi auxiliandũ ad venit primorum principum unus Michael ecce & ,die uno & viginti me contra stans Persidis regni
מַלְכוּת פָּרַס עֹמֵד לְנֶגְדִּי עֶשְׂרִים וְאֶחָד יוֹם וְהִנֵּה מִיכָאֵל אַחַד הַשָּׂרִים הָרִאשֹׁנִים בָּא לְעָזְרֵנִי
novissimo in tuo populo est eventurum quod ,te faciendum intelligere ad veni Et .Paras reges apud ibi remansi ego &
וַאֲנִי נוֹתַרְתִּי שָׁם אֵצֶל מַלְכֵי פָרָס׃ וּבָאתִי לַהֲבִינְךָ אֵת אֲשֶׁר־יִקְרָה לְעַמְּךָ בְּאַחֲרִית 14
.obmutui & ,terram ad meas facies dedi , hæc verba secundùm mecum ipsum loquendo in Et .dies in visio adhuc quoniam ;dierum
הַיָּמִים כִּי־עוֹד חָזוֹן לַיָּמִים׃ וּבְדַבְּרוֹ עִמִּי כַּדְּבָרִים הָאֵלֶּה נָתַתִּי פָנַי אַרְצָה וְנֶאֱלָמְתִּי׃ 15
,me contra stantem ad dixi & ,sum locutꝰ & ,meũ os aperui & ;mea labia super tangens hominis filiorum similitudo tanquã ecce Et
וְהִנֵּה כִּדְמוּת בְּנֵי אָדָם נֹגֵעַ עַל־שְׂפָתָי וָאֶפְתַּח־פִּי וָאֲדַבְּרָה וָאֹמְרָה אֶל־הָעֹמֵד לְנֶגְדִּי 16
loqui illius mei domini servus poterit quomodo Et .fortitudinẽ retinui non &,me super mea tormina sunt versa visione in ,mi Domine
אֲדֹנִי בַּמַּרְאָה נֶהֶפְכוּ צִירַי עָלַי וְלֹא עָצַרְתִּי כֹּחַ׃ וְהֵיךְ יוּכַל עֶבֶד אֲדֹנִי זֶה לְדַבֵּר 17
.me in remansit non mens & ,fortitudo me in stetit non tunc ex ego & ? illo meo domino cum
עִם־אֲדֹנִי זֶה וַאֲנִי מֵעַתָּה לֹא־יַעֲמָד־בִּי כֹחַ וּנְשָׁמָה לֹא נִשְׁאֲרָה־בִי׃

Versio VULG. LAT.

In diebus illis ego Daniel lugebam trium hebdomadarum 2
diebus, Panem desiderabilem non comedi, & caro & vinum 3
non introierunt in os meum, sed neque unguento unctus
sum : donec complerentur trium hebdomadarum dies. 4
Die autem vigesimâ & quartâ mensis primi, eram juxta fluvium
magnum, qui est Tigris. Et levavi oculos meos, & 5
vidi : & ecce vir unus vestitus lineis, & renes ejus accincti
auro obrizo : Et corpus ejus quasi chrysolithus, & facies 6
ejus velut species fulguris, & oculi ejus ut lampas ardens
: & brachia ejus, & quæ deorsum sunt usque ad pedes,
quasi species æris candentis : & vox sermonum ejus
ut vox multitudinis. Vidi autem ego Daniel solus visionem 7
: porrò viri, qui erant mecum, non viderunt, sed terror
nimius irruit super eos, & fugerunt in absconditum.
Ego autem relictus solus vidi visionem grandem hanc : & 8
non remansit in me fortitudo, sed & species mea immutata
est in me, & emarcui, nec habui quidquam virium.
Et audivi vocem sermonum ejus : & audiens jacebam consternatus 9
super faciem meam, & vultus meus hærebat terræ.
Et ecce manus tetigit me, & erexit me super genua 10
mea, & super articulos manuum mearum. Et dixit ad me ; 11
Daniel vir desideriorum, intellige verba, quæ ego loquor
ad te, & sta in gradu tuo : nunc enim sum missus ad te.
Cùmque dixisset mihi sermonem istum, steti tremens. Et 12
ait ad me ; Noli metuere, Daniel : quia ex die primo, quo
posuisti cor tuum ad intelligendum ut te affligeres in conspectu
Dei tui, exaudita sunt verba tua : & ego veni propter
sermones tuos. Princeps autem regni Persarum restitit 13
mihi viginti et uno diebus : & ecce Michael unus de
principibus primis venit in adjutorium meum, & ego remansi
ibi juxta regem Persarum. Veni autem ut docerem 14
te quæ ventura sunt populo tuo in novissimis diebus, quoniam
adhuc visio in dies. Cùmque loqueretur mihi hujuscemodi 15
verbis, dejeci vultum meum ad terram, & tacui.
Et ecce quasi similitudo filii hominis tetigit labia mea : & 16
aperiens os meum locutus sum : & dixi ad eum qui stabat
contra me : Domine mi, in visione tua dissolutæ sunt compages
meæ, & nihil in me remansit virium. Et quomodò 17
poterit servus Domini mei loqui cum Domino meo ? nihil
enim in me remansit virium, sed & halitus meus intercluditur.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܒܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ. ܐܢܐ ܕܢܝܐܝܠ ܗܘܝܬ ܝܬܒ ܒܐܒܠܐ. ܬܠܬܐ ܫܒܘܥܝܢ ܕܝܘܡܝܢ. 2
* ܠܚܡܐ ܕܪܓܬܐ ܠܐ ܐܟܠܬ. ܚܡܪܐ ܘܒܣܪܐ ܠܐ ܥܠ ܠܦܘܡܝ. ܘܡܫܚܐ ܠܐ ܡܫܚܬ. 3
ܥܕܡܐ ܕܫܠܡܘ ܬܠܬܐ ܫܒܘܥܝܢ ܕܝܘܡܝܢ. * ܒܝܘܡ ܥܣܪܝܢ ܘܐܪܒܥܐ ܒܝܪܚܐ ܩܕܡܝܐ. 4
ܐܢܐ ܗܘܝܬ ܥܠ ܝܕ ܢܗܪܐ ܪܒܐ ܦܪܬ. * ܘܐܪܝܡܬ ܥܝܢܝ ܘܚܙܝܬ. ܘܗܐ ܓܒܪܐ ܚܕ ܠܒܝܫ 5
ܒܠܒܘܫܝܢ ܕܐܝܩܪܐ: ܘܚܨܘܗܝ ܚܝܨܝܢ ܒܐܝܩܪܐ ܕܫܘܒܚܐ. * ܘܚܙܘܗ ܡܫܚܠܦ ܗܘܐ. ܘܕܡܘܬܐ 6
ܠܗ ܗܘܬ. ܘܦܪܨܘܦܗ ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܒܪܩܐ. ܘܥܝܢܘܗܝ ܐܝܟ ܠܡܦܐܕܐ ܕܢܘܪܐ. ܘܕܪܥܘܗܝ
ܘܟܬܦܬܗ ܐܝܟ ܙܠܝܩܐ ܕܢܚܫܐ ܕܡܨܛܠܐ. ܘܩܠܐ ܕܡܠܘܗܝ ܐܝܟ ܩܠܐ ܕܡܫܪܝܬܐ ܣܓܝܐܬܐ.
* ܘܚܙܝܬ ܐܢܐ ܕܢܝܐܝܠ ܒܠܚܘܕܝ ܚܙܘܐ ܗܢܐ. ܓܒܪܐ ܕܝܢ ܕܗܘܘ ܥܡܝ ܠܐ ܚܙܘ. ܐܠܐ ܕܚܠܬܐ ܪܒܬܐ 7
ܢܦܠܬ ܥܠܝܗܘܢ. ܘܥܪܩܘ ܡܢ ܕܚܠܬܐ. * ܘܐܢܐ ܒܠܚܘܕܝ ܐܫܬܚܪܬ. ܘܚܙܝܬ ܚܙܘܐ 8
ܗܢܐ ܪܒܐ. ܘܠܐ ܐܫܬܚܪ ܒܝ ܚܝܠܐ. ܡܥܝ ܐܬܗܦܟܘ ܠܡܚܒܠܢܘܬܐ. ܘܠܐ ܗܘܐ ܒܝ ܚܝܠܐ.
* ܘܟܕ ܫܡܥܬ ܩܠܐ ܕܡܠܘܗܝ. ܢܦܠܬ ܥܠ ܐܦܝ ܥܠ ܐܪܥܐ. * ܘܗܐ ܐܝܕܐ ܩܪܒܬ ܒܝ. 9
10
ܘܐܩܝܡܬܢܝ ܥܠ ܒܘܪܟܝ. ܘܥܠ ܦܣܬ ܐܝܕܝ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܩܘܡ ܕܢܝܐܝܠ ܓܒܪܐ ܕܪܓܬܐ. 11
ܘܐܣܬܟܠ ܒܡܠܬܐ ܕܡܡܠܠ ܐܢܐ ܥܡܟ. ܘܩܘܡ ܠܟ ܬܪܝܨܐܝܬ. ܡܛܠ ܕܗܫܐ ܐܫܬܕܪܬ
ܠܘܬܟ. ܘܟܕ ܡܡܠܠ ܥܡܝ ܡܠܬܐ ܗܕܐ. ܩܡܬ ܗܘܝܬ ܪܬܝܬ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܠܐ ܬܕܚܠ 12
ܕܢܝܐܝܠ: ܡܛܠ ܕܡܢ ܝܘܡܐ ܩܕܡܝܐ ܕܝܗܒܬ ܠܒܟ ܠܡܣܬܟܠܘ. ܠܡܬܡܟܟܘ ܩܕܡ
ܐܠܗܟ. ܐܫܬܡܥܘ ܡܠܝܟ. ܘܐܢܐ ܐܬܝܬ ܒܡܠܝܟ. * ܘܡܠܟܐ ܕܡܠܟܘܬܐ ܕܦܪܣ. 13
ܩܡ ܠܘܩܒܠܝ ܥܣܪܝܢ ܘܚܕ ܝܘܡܝܢ. ܘܗܐ ܡܝܟܐܝܠ ܚܕ ܡܢ ܪܘܪܒܢܐ ܩܕܡܝܐ. ܐܬܐ
ܠܡܥܕܪܢܝ. ܘܐܫܬܘܚܪܬ ܬܡܢ ܠܘܩܒܠ ܡܠܟܐ ܕܦܪܣ. * ܘܐܢܐ ܐܬܝܬ ܠܡܘܕܥܘܬܟ. 14
ܡܕܡ ܕܥܬܝܕ ܠܥܡܟ ܒܚܪܬܐ ܕܝܘܡܬܐ. ܡܛܠ ܕܥܘܕ ܚܙܘܐ ܠܣܘܦ ܝܘܡܬܐ. * ܘܟܕ 15
ܡܡܠܠ ܥܡܝ ܡܠܐ ܗܠܝܢ. ܪܡܝܬ ܐܦܝ ܥܠ ܐܪܥܐ ܘܫܬܩܬ. * ܘܗܐ ܐܝܟ ܕܡܘܬܐ ܕܒܪܢܫܐ 16
ܩܪܒ ܠܣܦܘܬܝ. ܘܦܬܚܬ ܦܘܡܝ ܘܡܠܠܬ. ܘܐܡܪܬ ܠܗܘ ܕܩܐܡ ܠܘܩܒܠܝ. ܡܪܝ.
ܒܚܙܘܐ ܐܬܗܦܟܘ ܗܘܘ ܥܠܝ ܡܥܝ. ܘܠܐ ܐܫܟܚܬ ܠܡܩܡ. * ܘܐܝܟܢܐ ܡܫܟܚ ܥܒܕܐ 17
ܕܡܪܝ ܗܢܐ ܠܡܡܠܠܘ ܥܡ ܡܪܝ ܗܢܐ. ܕܗܐ ܠܝܬ ܒܝ ܚܝܠܐ. ܘܢܫܡܬܐ ܠܐ
ܐܫܬܚܪܬ ܒܝ.

In diebus illis ego Daniel luctui me dedi trium 2
hebdomadarum diebus : Cibum delectabilem 3
non comedi, vinum & caro non
sunt ingressa os meum, neque unguento me
unxi, donec explerentur trium hebdomadarum
dies. Die vigesimâ quartâ mensis primi 4
eram secus fluvium magnum Eufratem ;
Et sublatis oculis vidi, & ecce vir quidam indutus 5
magnificentissimis vestibus, cujus lumbi
præcincti erant majestate gloriæ, Cujus 6
aspectus varius erat, neque formam habebat
: vultus ejus similis speciei fulguris, oculi
ejus similes lampadibus igneis, brachia &
humeri ejus similia scintillis æris nitentis, &
vox sermonum ejus similis strepitui exercituum
multorum. Hanc visionem ego Daniel 7
solus vidi, viri autem illi qui mecum erant,
non viderunt ; sed magnâ formidine perculsis,
& præ timore fugientibus, Ego solus 8
remansi, & vidi visionem hanc magnam :
unde viribus destitutus fui, præcordia mea
volutata sunt ad interitum, neque manserunt
in me vires. Et cùm audissem vocem verborum 9
ejus, cecidi in faciem meam super terram
: Sed ecce manus tetigit me, erexitque 10
me super genua mea & super palmas manuum
mearum. Et dixit mihi ; Sta Daniel 11
vir cupide, & intellige sermonem quem tibi
locuturus sum ; sta rectus : nunc enim ad te
missus sum. Dum hisce me verbis alloqueretur,
steti contremiscens. Tum dixit mihi, 12
Ne timeto Daniel : nam inde à primo die
quo animum tuum ad scientiam applicuisti,
sistendo te coram Deo tuo ; exaudita fuerunt
verba tua, & ego verborum tuorum causâ
veni. Præses regni Persarum adversatus est 13
mihi uno & viginti diebus : at ecce Michael
unus è principibus primariis venit ad auxiliandum
mihi : retardatus itaque sum ibi
contra præsidem Persarum. Jam veni indicatum 14
tibi id quod eventurum est populo
tuo postremis diebus : quoniam adhuc visio
ad finem usque dierum. Dum hisce me verbis 15
alloqueretur, demisi vultum meum in
terram, & obmutui. Sed ecce quasi forma 16
quædam humana tetigit labia mea, aperuitque
os meum, & locutus dixi ad eum qui stabat
ante me ; Domine mi, propter visionem
volutata sunt in me præcordia mea, ita ut stare
non potuerim: Quomodo ergò posset servus 17
tanti Domini loqui cum tanto Domino
meo ; cùm ecce nullæ sint in me vires, & aura
vitalis non superfit in me ?

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

2 3 Ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις ἐγὼ Δανιὴλ ἤμην πενθῶν τρεῖς ἑβδομάδας ἡμερῶν, Ἄρτον ἐπιθυμιῶν οὐκ ἔφαγον,
ϗ κρέας ϗ οἶνος οὐκ εἰσῆλθεν εἰς τὸ στόμα μου, ϗ ἄλειμμα οὐκ ἠλειψάμην, ἕως πληρώσεως τριῶν ἑβδομάδων
4 ἡμερῶν. Ἐν ἡμέρᾳ εἰκοστῇ (') τετάρτῃ τοῦ μηνὸς τοῦ πρώτου, ϗ ἐγὼ ἤμην ἐχόμενα τοῦ ποταμοῦ τοῦ μεγάλου, αὐτός
5 ἐστι Τίγρις (α) Ἐδδεκέλ. Καὶ ἦρα τοὺς ὀφθαλμούς μου, ϗ ἴδον, ϗ ἰδοὺ ἀνὴρ εἷς ἐνδεδυμένος βαδδὶν, καὶ
6 ἡ ὀσφὺς αὐτοῦ περιεζωσμένη ἐν χρυσίῳ Ὠφὰζ, Καὶ τὸ σῶμα αὐτοῦ ὡσεὶ Θαρσὶς, ϗ τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ὡς
(β) ἡ ὅρασις ἀστραπῆς, ϗ οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ (γ) ὡσεὶ λαμπάδες πυρὸς, ϗ οἱ βραχίονες αὐτοῦ ϗ τὰ σκέλη
7 ὡς ὅρασις χαλκοῦ στίλβοντος, ϗ ἡ φωνὴ τῶν λόγων αὐτοῦ ὡς φωνὴ ὄχλου. Καὶ ἴδον ἐγὼ Δανιὴλ μόνος τὴν
ὀπτασίαν, ϗ οἱ ἄνδρες οἱ μετ' ἐμοῦ οὐκ ἴδον τὴν ὀπτασίαν· ἀλλ' ἡ ἔκστασις μεγάλη ἐπέπεσεν ἐπ' αὐτοὺς, ϗ ἔ-
8 φυγον ἐν φόβῳ. (δ) Καὶ ἐγὼ ὑπελείφθην μόνος, ϗ ἴδον τὴν ὀπτασίαν τὴν μεγάλην ταύτην, ϗ οὐχ ὑπε-
9 λείφθη ἐν ἐμοὶ ἰσχὺς, ϗ ἡ (ε) δόξα μου μετεστράφη εἰς διαφθοράν· ϗ οὐκ ἐκράτησα ἰσχύος. Καὶ ἤκουσα τὴν
φωνὴν τῶν λόγων αὐτοῦ· καὶ ἐν τῷ ἀκοῦσαί με (ζ) αὐτοῦ, ἤμην κατανενυγμένος, ϗ τὸ πρόσωπόν μου ἐπὶ τὴν
10 11 γῆν. Καὶ ἰδοὺ χεὶρ ἁπτομένη μου, ϗ ἤγειρέ με ἐπὶ τὰ γόνατά μου (η). Καὶ εἶπε πρός με, Δανιὴλ ἀνὴρ ἐπιθυ-
μιῶν, σύνες ἐν τοῖς λόγοις οἷς ἐγὼ λαλῶ πρὸς σὲ, ϗ στῆθι ἐπὶ τῇ στάσει σου, ὅτι νῦν ἀπεστάλην πρὸς σέ.
12 ϗ ἐν τῷ λαλῆσαι αὐτὸν πρός με τὸν λόγον τοῦτον, ἀνέστην ἔντρομος. Καὶ εἶπε πρός με, Μὴ φοβοῦ (θ) Δα-
νιὴλ, ὅτι ἀπὸ τῆς πρώτης ἡμέρας ἧς ἔδωκας τὴν καρδίαν σου τοῦ συνεῖναι, ϗ (ι) κακωθῆναι ἐναντίον κυρίου
13 τοῦ θεοῦ σου, ἠκούσθησαν οἱ λόγοι σου, ϗ ἐγὼ ἦλθον ἐν τοῖς λόγοις σου. Καὶ ὁ ἄρχων βασιλείας Περσῶν εἱ-
στήκει ἐξεναντίας μου (κ) εἴκοσι ϗ μίαν ἡμέραν· ϗ ἰδοὺ Μιχαὴλ εἷς τῶν ἀρχόντων (λ) ἦλθε βοηθῆσαί
14 μοι, ϗ αὐτὸν κατέλιπον ἐκεῖ μετὰ τοῦ ἄρχοντος βασιλείας Περσῶν, Καὶ ἦλθον συνετίσαι σε ὅσα ἀπαν-
15 τήσεται τῷ λαῷ σου ἐπ' ἐσχάτων τῶν ἡμερῶν, ὅτι (μ) ἔτι ἡ ὅρασις εἰς ἡμέρας. Καὶ ἐν τῷ λαλῆσαι αὐτὸν
16 μετ' ἐμοῦ κατὰ τοὺς λόγους τούτους, ἔδωκα τὸ πρόσωπόν μου ἐπὶ τὴν γῆν, ϗ κατενύγην. Καὶ ἰδοὺ ὡς ὁμοί-
ωσις υἱοῦ ἀνθρώπου ἥψατο τῶν χειλέων μου. (ν) ϗ ἤνοιξα τὸ στόμα μου, ϗ ἐλάλησα, ϗ εἶπα πρὸς τὸν ἑστῶτα ἐναν-
17 τίον μου, Κύριε, ἐν τῇ ὀπτασίᾳ σου ἐστράφη τὰ ἐντός μου ἐν ἐμοὶ, ϗ οὐκ ἔσχον ἰσχύν. Καὶ πῶς δυνήσεται ὁ
παῖς σου κύριε λαλῆσαι μετὰ τοῦ κυρίου μου τούτου; ϗ ἐγὼ, ἀπὸ τοῦ νῦν οὐ στήσεται ἐν ἐμοὶ ἰσχὺς, ϗ (ξ) πνεῦμα
οὐχ ὑπελείφθη ἐν ἐμοί.

In diebus illis ego Daniel eram lugens tres hebdomadas dierum: 2
*Panem * deſideriorum non comêdi: & caro, & vinum non introierunt* 3
in os meum: & unguento non ſum unctus uſque ad completionem trium
hebdomadum dierum. In die vigeſima quarta menſis (a) primi & ego 4
eram juxta fluvium magnum: (ipſe eſt (b) Tigris Eddecel:) Et levavi 5
oculos meos, & vidi: & ecce vir unus veſtitus (c) Baddin; & renes ejus
(d) accincti auro Ophaz: Et corpus ejus quaſi Tharſis: & facies ejus, vel- 6
uti ſpecies fulguris: & oculi ejus, ut lampades ignis: & brachia ejus, &
crura, quaſi ſpecies æris candentis: & vox ſermonum ejus, ut vox multi-
tudinis. Et vidi ego Daniel ſolus viſionem: & viri, qui erant mecum, 7
non viderunt viſionem: ſed terror magnus irruit ſuper eos: & fugerunt
in timore. Et ego relictus ſum ſolus, & vidi viſionem grandem hanc: & 8
non remanſit in me fortitudo: & gloria mea converſa eſt in corruptionem:
& non retinui fortitudinem. Et audivi vocem ſermonum ejus: & audiens 9
ego (e) eum, eram compunctus: & facies mea ſuper terram. Et ecce manus 10
tangens me: & erexit me ſuper genua (f) mea: Et dixit ad me; Daniel, 11
(g) vir deſideriorum, intellige in verbis, quæ ego loquor ad te; & ſta in gra-
du tuo: nunc enim ſum miſſus ad te. Cúmque dixiſſet ipſe ad me ſermonem
iſtum; ſurrexi tremens. Et dixit ad me; Noli metuere, Daniel, quia ex 12
die primo, quo poſuiſti cor tuum ad intelligendum, & affligendum te coram
Domino Deo tuo; audita ſunt verba tua: & ego veni in verbis tuis. Et 13
princeps regni Perſarum ſtetit ex adverſo mihi viginti & uno diebus. Et
ecce Michael unus de (h) principibus venit ad auxiliandum mihi: & ipſum
reliqui ibi cum principe regni Perſarum: Et veni, ut docerem te, quæ oc- 14
current populo tuo in noviſſimis diebus: quoniam adhuc viſio in dies. Cúm- 15
que loqueretur ipſe mecum ſecundùm hujuſcemodi verba; dedi faciem me-
am in terram, et compunctus ſum. Et ecce quaſi ſimilitudo filii hominis te- 16
tigit labia mea. Et aperui os meum, et loquutus ſum, et dixi ad eum, qui
ſtabat contra me: (i) Domine, in viſione tua converſa ſunt interiora mea in
me: et non retinui fortitudinem. Et quomodò poterit ſervus tuus, Domine, loqui cum Domino meo iſto? Et (k) ego, ex nunc non ſtabit in me fortitudo: et non remanſit ſpiritus in me. 17

MS.A. (') ϗ τετάρτῃ (α) Ἐνδεκέλ. (β) ὅρασις (γ) ὡς (δ) Κἀγὼ (ε) ἰσχύς μου (ζ) φωνὴν ῥημάτων αὐτοῦ, (η) ϗ ταρσοὺς χειρῶν μου. Καὶ (θ) Δανιὴλ, * ἧς ἔδωκας τὴν (ι) τοῦ κακωθῆναι (κ) ϗ εἴκοσι (λ) τῶν πρώτων ἦλθε (μ) ὅρασις εἰς (ν) ϗ ἐλάλησα, ϗ (ξ) πνοὴ

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

2 * وفي تلك الايام انا دانيال كنت حزينا ثلاثة اسابيع اياما * خبز الشهوات لم آكل * ولحم 3
وخمر لم يدخل في فمي * ولم ادّهن دهنا الي ان كملت ثلاثة اسابيع اياما * وكان في السنة 4
الثامنة عشر * في اليوم الرابع والعشرين من الشهر الاول * وانا كنت قريبا من النهر العظيم
الذي هو الدجلة اداكل * فرفعت عيني ونظرت واذا رجل واحد لابس ثياب كرامة * 5
وحقوه ممنطق بذهب اوفاز * وجسمه مثل ترسيس * ووجهه مثل منظر البرق * وعيناه 6
كمصباحي نار * وذراعاه وساقاه مثل منظر نحاس يلمع * وصوت كلماته كصوت جمع *
* ونظرت انا دانيال وحدي الرؤيا * والرجال الذين معي لم يروا الرؤيا * لكن وقعت عليهم 7
بهتة * وهربوا بخوف * وانا بقيت وحدي * وابصرت هذه الرؤيا العظيمة * ولم تبق لي قوة * 8
وانقلب مجدي الي فساد * ولم امسك قوة * وسمعت صوت كلماته * وعند ما سمعت صوت كلماته 9
صرت متخشعا ووجهي على الارض * واذا يد لمستني واقامتني على ركبتي وامساط رجلي * وقال 10 11
لي * يا دانيال رجل الشهوات تفهم في الكلمات التي اتكلم معك بهن * وقم على مقامك * لاني
الان ارسلت اليك * وبينما هو يتكلم معي هذه الكلمة قمت مرتعدا * فقال لا تخف يا دانيال * 12
لان منذ اليوم الاول الذي فيه اعطيت قلبك لتفهم ولتسعى امام الرب الهك سمعت
كلماتك * وانا اتيت في كلماتك * ورئيس مملكة الفرس قام بازائي احدا وعشرين يوما * وها 13
ميخائيل الواحد من الرؤساء الاولين اتى ليعينني * وخلفته هناك مع رئيس مملكة الفرس *
* واتيت لافهمك بما يلتقي شعبك في الايام الاخيرة * لان الرؤيا ايضا الي ايام * وبينما هو 14 15
يتكلم معي بهذا الكلام * اعطيت وجهي على الارض وتخشعت * واذا مثل شبه ابن انسان * 16
ولمس شفتي * ففتحت فمي وتكلمت * وقلت للواقف امامي * يا سيد في رؤياي انقلب داخلي
في * ولم املك قوة * وكيف يقدر عبدك يا سيد ان اتكلم مع سيدي هذا * وانا منذ الان 17
لم تبق في قوة * ولم يبق في نسمة *

Et iis diebus ego Daniel mœſtus fui tribus 2
dierum hebdomadibus: Panem volupta- 3
tum non comêdi, caro & vinum non ſunt
ingreſſa in os meum, neque unxi me un-
ctione ullâ, donec abſolverentur tres di-
erum hebdomades. Itaque contigit anno 4
decimo octavo, die vigeſimâ quartâ men-
ſis primi, ut exiſtens prope fluvium ma-
gnum qui eſt Tigris Eddekel, Levarem 5
oculos meos & viderem cùm ecce vir
quidam indutus veſtibus honoris, cujus
lumbus præcinctus erat auro Ophaz, Cor- 6
pus ejus ſimile lapidi *tharſis, vultus ejus*
quaſi aſpectus fulguris, oculi ejus veluti
geminæ faces igneæ, brachia & crura ve-
lut aſpectus æris coruſcantis, & vox
verborum ejus ut vox turbæ. Vidi autem 7
ego Daniel ſolus viſionem iſtam; nam
viri illi qui mecum erant, non viderunt
hanc viſionem; ſed obruti ſtupore fuge-
runt cum formidine: Et ego ſolus relictus 8
vidi viſionem hanc maximam, neque re-
manſit mihi virtus, ſed immutatus eſt ni-
tor meus in corruptionem, & non obtinui
vires. Deinde audivi vocem verborum 9
ejus; & cùm audiſſem vocem verborum
ejus, ſupplicare cœpi vultu humo hæren-
te: Sed ecce manus tetigit me, erexitque 10
ſuper genua mea et extremos pedes meos.
Et dixit mihi; O Daniel vir deſiderio- 11
rum, conſidera verba quæ ego habiturus
ſum tecum, & ſta in ſtatione tua; nunc
enim miſſus ſum ad te. Dum ipſe mecum
inſtitueret hujuſmodi ſermonem, ſteti tre-
mens. Quamobrem dixit, Ne timeas O 12
Daniel: quoniam à primo die quo animum
tuum adhibuiſti ad intelligendum & la-
borandum coram Domino Deo tuo, exau-
dita fuerunt verba tua: Et ego veniſſem
pro verbis tuis; Sed princeps regni Perſa- 13
rum ſtetit mihi ab adverſo uno & vigin-
ti diebus. Verùm ecce Michael unus è
præcipuis principibus, venit ad auxilian-
dum mihi; & eum ibi reliqui cum prin-
cipe regni Perſarum, Et veni ut decla- 14
rem tibi quæ ſunt eventura populo tuo po-
ſtremis diebus: quoniam viſio adhuc eſt
ad dies aliquot. Dum is alloqueretur me 15
hujuſmodi ſermone, demiſi vultum meum
in terram, & ſupplicavi. Tum ecce quaſi 15
ſpecies filii hominis, tetigit labia mea, &
aperui os meum, locutuſque ſum, ac dixi
ad eum qui ſtabat coram me; O domine,
in viſione mea volutata ſunt intra me vi-
ſcera mea, nec ullas poſſideo vires. Quo 17
igitur pacto poſſet ſervus tuus O domine
alloqui dominum meum iſtum; quando-
quidem ex nunc nullæ manſerunt in me
vires, neque ſupereſt in me halitus?

דניאל : יא

,te conforta ,tibi pax ,desideriorū vir timeas Ne ,dixit Et .me confortavit &,hominis visio tanquā ,me *in* tetigit & ,addidit Et

18 וַיֹּסֶף וַיִּגַּע־בִּי כְּמַרְאֵה אָדָם וַיְחַזְּקֵנִי׃ וַיֹּאמֶר אַל־תִּירָא אִישׁ־חֲמֻדוֹת שָׁלוֹם לָךְ חֲזַק 19

nosti Num ,ait Et .me confortásti quia ,meus dominus Loquatur ,dixi & ,sum confortat⁹ ,mecū *ipsum loqui secundū* & :te robora &

20 וַחֲזָק וּכְדַבְּרוֹ עִמִּי הִתְחַזַּקְתִּי וָאֹמְרָה יְדַבֵּר אֲדֹנִי כִּי חִזַּקְתָּנִי׃ וַיֹּאמֶר הֲיָדַעְתָּ

.venit *Javan* princeps ecce & ,*egrediens* ego & : Persidis principe cum *bellandum ad* ,revertar nunc & ? te ad venerim quid ut

לָמָּה בָּאתִי אֵלֶיךָ וְעַתָּה אָשׁוּב לְהִלָּחֵם עִם־שַׂר פָּרָס וַאֲנִי יוֹצֵא וְהִנֵּה שַׂר־יָוָן בָּא׃

.vester princeps Michael nisi ,his super mecum *se fortificans* unus non & : veritatis scriptura in *designatum* tibi annuntiabo Sed

21 אֲבָל אַגִּיד לְךָ אֶת־הָרָשׁוּם בִּכְתָב אֱמֶת וְאֵין אֶחָד מִתְחַזֵּק עִמִּי עַל־אֵלֶּה כִּי אִם־מִיכָאֵל שַׂרְכֶם׃

CAP. XI. יא

Ecce :tibi annuntiabo veritatem nunc Et. eum roborandum ad & confortandū ad *me stare* ,Medi Dariaves *uno* anno in ego Et

1 וַאֲנִי בִּשְׁנַת אַחַת לְדָרְיָוֶשׁ הַמָּדִי עָמְדִי לְמַחֲזִיק וּלְמָעוֹז לוֹ׃ וְעַתָּה אֱמֶת אַגִּיד לָךְ הִנֵּה־ 2

sua opulentia in ipsum roborari secundū & :omnib⁹ præ *magna opulentia* ditabitur quartus & ,Perside in *stantes* reges tres adhuc

עוֹד שְׁלֹשָׁה מְלָכִים עֹמְדִים לְפָרַס וְהָרְבִיעִי יַעֲשִׁיר עֹשֶׁר־גָּדוֹל מִכֹּל וּכְחֶזְקָתוֹ בְעָשְׁרוֹ

.suā voluntatē secundū faciet & ,multo dominio dominabitur & ,fortis rex stabit Et .*Javan regno cum* omnes suscitabit

3 יָעִיר הַכֹּל אֵת מַלְכוּת יָוָן׃ וְעָמַד מֶלֶךְ גִּבּוֹר וּמָשַׁל מִמְשָׁל רַב וְעָשָׂה כִּרְצוֹנוֹ׃

ej⁹ dominiū secundū non &,ej⁹ posteritatē in non & ;cœlorum ventos quatuor in dividetur &,ej⁹ regnū conteretur,*ipsū stare secundū* Et

4 וּכְעָמְדוֹ תִּשָּׁבֵר מַלְכוּתוֹ וְתֵחָץ לְאַרְבַּע רוּחוֹת הַשָּׁמָיִם וְלֹא לְאַחֲרִיתוֹ וְלֹא כְּמָשְׁלוֹ

;ejus principib⁹ de & ,Austri rex confortabitur Et .istos præter aliis & ,ej⁹ regnū extirpabitur quia ,est dominat⁹ quo

5 אֲשֶׁר מָשָׁל כִּי תִנָּתֵשׁ מַלְכוּתוֹ וְלַאֲחֵרִים מִלְּבַד־אֵלֶּה׃ וְיֶחֱזַק מֶלֶךְ־הַנֶּגֶב וּמִן־שָׂרָיו

veniet Austri regis filia & ,cōjungētur annorū fine in Et .ej⁹ dominatio multa dominatio ,dominabitur & ,eum sup roborabitur &

6 וְיֶחֱזַק עָלָיו וּמָשָׁל מִמְשָׁל רַב מֶמְשַׁלְתּוֹ׃ וּלְקֵץ שָׁנִים יִתְחַבָּרוּ וּבַת מֶלֶךְ־הַנֶּגֶב תָּבוֹא

,ipsa tradetur & ;ej⁹ semen & ,stabit non & ,brachii fortitudinē obtinebit non & ;rectitudines *faciendum ad* ,Aquilonis regem ad

אֶל־מֶלֶךְ הַצָּפוֹן לַעֲשׂוֹת מֵישָׁרִים וְלֹא־תַעְצֹר כּוֹחַ הַזְּרוֹעַ וְלֹא יַעֲמֹד וּזְרֹעוֹ וְתִנָּתֵן הִיא

,exercitū ad veniet et ;ej⁹ *basis* ej⁹ radicum *virgulto* de stabit Et .temporibus in eam confortans et ,ejus genitor et ,eam adducentes et

7 וּמְבִיאֶיהָ וְהַיֹּלְדָהּ וּמַחֲזִקָהּ בָּעִתִּים׃ וְעָמַד מִנֵּצֶר שָׁרָשֶׁיהָ כַּנּוֹ וְיָבֹא אֶל־הַחַיִל

,eorum principibus cum eorum Deus etiam Et .confortabitur et eis in faciet et ,Aquilonis regis munitionem *in* ingredietur et

8 וְיָבֹא בְּמָעוֹז מֶלֶךְ הַצָּפוֹן וְעָשָׂה בָהֶם וְהֶחֱזִיק׃ וְגַם אֱלֹהֵיהֶם עִם־נְסִכֵיהֶם

.Aquilonis *rege à* stabit annos ipse & : Ægyptum adducet captivitatem in *auri & ,argenti* ,eorum *desiderii* vasis cum

עִם־כְּלֵי חֶמְדָּתָם כֶּסֶף וְזָהָב בַּשְּׁבִי יָבִא מִצְרָיִם וְהוּא שָׁנִים יַעֲמֹד מִמֶּלֶךְ הַצָּפוֹן׃

Versio VULG. LAT.

Rursum ergò tetigit me quasi visio hominis, & confortavit me, 18 Et dixit; Noli timere, vir desideriorum : pax tibi : 19 confortare, & esto robustus. Cúmque loqueretur mecum, convalui, & dixi ; Loquere, Domine mi, quia confortásti me. 20 Et ait ; Numquid scis quarè venerim ad te ? & nunc revertar ut prælier adversùm principem Persarum : cùm ego egrederer, apparuit princeps Græcorum veniens. 21 Veruntamen annuntiabo tibi quod expressum est in scriptura veritatis : & nemo est adjutor meus in omnibus his, nisi Michael princeps vester.

CAP. XI.

1 Ego autem ab anno primo Darii Medi stabam ut confortaretur, & roboraretur. 2 Et nunc veritatem annuntiabo tibi. Ecce adhuc tres reges stabunt in Perside, & quartus ditabitur opibus nimiis super omnes : & cùm invaluerit divitiis suis, concitabit omnes adversùm regnum Græciæ. 3 Surget verò rex fortis, & dominabitur potestate multâ, & faciet quod placuerit ei. 4 Et cùm steterit, conteretur regnum ejus, & dividetur in quatuor ventos cœli ; sed non in posteros ejus, neque secundùm potentiam illius, quâ dominatus est : lacerabitur enim regnum ejus etiam in externos, exceptis his. 5 Et confortabitur rex Austri : & de Principibus ejus prævalebit super eum, & dominabitur ditione : multa enim dominatio ejus. 6 Et post finem annorum fœderabuntur : filiáque regis Austri veniet ad regem Aquilonis facere amicitiam, & non obtinebit fortitudinem brachii, nec stabit semen ejus : & tradetur ipsa, & qui adduxerunt eam, adolescentes ejus, & qui confortabant eam in temporib⁹. 7 Et stabit de germine radicū ej⁹ plantatio : & veniet cum exercitu, & ingredietur provinciam regis Aquilonis : & abutetur eis, & obtinebit. 8 Insupèr & deos eorū, & sculptilia, vasa quoq; pretiosa argenti & auri, captiva ducet in Ægyptum : ipse prævalebit adversùs regem Aquilonis.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

18 * ܘܐܘܣܦ ܩܪܒ ܒܝ ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܒܪܢܫܐ ܘܚܝܠܢܝ ܀ * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܠܐ ܬܕܚܠ ܓܒܪܐ ܕܪ̈ܓܬܐ.
19 ܫܠܡܐ ܠܟ. ܐܬܚܝܠ ܘܐܬܠܒܒ. ܘܟܕ ܡܡܠܠ ܥܡܝ ܐܬܚܝܠܬ. ܘܐܡܪܬ ܢܡܠܠ ܡܪܝ ܀
ܡܛܠ ܕܐܬܚܝܠܬ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܝܕܥ ܐܢܬ ܠܡܢܐ ܐܬܝܬ ܠܘܬܟ : ܘܗܫܐ ܗܦܟ ܐܢܐ 20
ܠܡܩܪܒ ܩܪܒܐ ܥܡ ܫܠܝܛܐ ܕܦܪܣ. ܘܐܢܐ ܢܦܩ ܗܘܝܬ ܘܫܠܝܛܐ ܕܝܘܢܝܐ ܐܬܐ. * ܒܪܡ 21
ܐܚܘܝܟ ܗܝܕܝܢ ܕܪܫܝܡ ܒܟܬܒܐ ܕܩܘܫܬܐ. ܘܟܕ ܠܝܬ ܕܡܥܕܪ ܗܘܐ ܠܝ ܒܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ : ܐܠܐ
ܡܝܟܐܝܠ ܫܠܝܛܟܘܢ ܘܐܢܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܐ *

1 * ܒܫܢܬܐ ܚܕܐ ܕܕܪܝܘܫ ܡܕܝܐ ܀ ܩܡܬ ܠܡܥܕܪܘܬܝ ܘܠܡܬܡܨܝܢܘܬܝ. * ܡܛܠ ܗܕܐ ܫܪܪܐ 2
ܐܚܘܝܟ. ܬܘܒ ܬܠܬܐ ܡܠܟܝܢ ܥܬܝܕܝܢ ܠܡܩܡ ܒܦܪܣ. * ܕܪܝܘܫ ܒܪ ܐܚܫܝܪܫ * ܘܪܒܝܥܝܐ ܢܥܬܪ
ܥܘܬܪܐ ܪܒܐ ܝܬܝܪ ܡܢ ܟܠܗܘܢ. ܘܡܐ ܕܥܫܢ ܒܐܪܥܗ ܀ ܢܥܝܪ ܟܠܗܝܢ ܡܠܟܘܬܗܘܢ ܕܝܘܢܝܐ.
* ܘܢܩܘܡ ܡܠܟܐ ܓܢܒܪܐ ܀ * ܐܠܟܣܢܕܪܘܣ ܩܕܡܝܐ ܒܪ ܦܝܠܝܦܘܣ * ܘܢܫܠܛ 3
ܫܘܠܛܢܐ ܪܒܐ. ܘܢܥܒܕ ܐܝܟ ܨܒܝܢܗ. * ܘܟܕ ܩܐܡ ܬܬܬܒܪ ܡܠܟܘܬܗ. ܘܬܬܬܒܪ ܠܐܪܒܥ ܪܘܚܝ 4
ܫܡܝܐ * ܗܢܘ ܕܝܢ ܠܐܪܒܥܐ ܥܒܕܘܗܝ ܕܐܠܟܣܢܕܪܘܣ ܒܪ ܦܝܠܝܦܘܣ ܕܐܡܠܟܘ ܒܬܪܗ
ܡܛܠ ܕܡܝܬ. ܡܛܠ ܕܒܢܝܐ ܠܐ ܗܘܘ ܠܗ. ܐܡܠܟܘ ܒܬܪܗ ܚܕ ܒܡܨܪܝܢ : ܘܚܕ ܒܣܘܪܝܐ : ܘܚܕ
ܒܐܣܝܐ : ܘܚܕ ܒܒܒܠ. ܘܐܝܠܝܢ ܕܐܬܩܪܒܘ ܥܡ ܒܢܝܗܘܢ ܚܕ ܥܡ ܚܕ ܗܘܘ. ܦܛܠܡܐܘܣ
ܒܬܝܡܢܐ ܒܡܨܪܝܢ. ܘܕܡܛܪܝܘܣ ܒܣܘܪܝܐ ܒܡܨܥܬܐ. ܘܐܢܛܝܘܟܘܣ ܐܦܝܦܢܘܣ
ܒܓܪܒܝܐ ܒܐܣܝܐ * ܘܠܐ ܐܝܟ ܚܪܒܗ. ܘܠܐ ܐܝܟ ܫܘܠܛܢܗ ܕܐܫܬܠܛ. ܐܠܐ ܬܬܬܥܩܪ ܡܠܟܘܬܗ.
ܘܠܐܚܪܢܐ ܣܛܪ ܡܢ ܗܠܝܢ. * ܦܛܠܡܐܘܣ ܡܠܟܐ ܡܨܪܝܐ. ܥܠ ܐܠܟܣܢܕܪܘܣ 5
ܙܥܘܪܐ ܒܪ ܦܝܠܝܦܘܣ * ܐܢܛܝܘܟܘܣ ܐܣܝܐ * ܘܢܬܥܫܢ ܡܠܟܐ ܕܬܝܡܢܐ ܘܥܡ ܪ̈ܘܪܒܢܘܗܝ.
ܘܢܬܩܦ ܥܠܘܗܝ. ܘܢܫܠܛ ܫܘܠܛܢܐ ܪܒܐ. * ܥܠ ܦܛܠܡܐܘܣ ܐܡܪ * ܘܠܣܘܦ ܫܢܝܐ 6
ܢܫܬܘܬܦܘܢ. ܒܪܬܗ ܕܦܛܠܡܐܘܣ ܢܬܠ ܠܐܠܟܣܢܕܪܘܣ ܐܚܘܗܝ ܕܐܢܛܝܘܟܘܣ. ܘܦܛܪܘܣ
ܘܒܪܬܗ ܕܡܠܟܐ ܕܬܝܡܢܐ. ܬܐܙܠ ܠܘܬ ܡܠܟܐ ܕܓܪܒܝܐ. * ܐܠܟܣܢܕܪܘܣ * ܐܙܠ ܢܣܒ
ܦܛܪܐ ܒܪܬܗ ܕܦܛܠܡܐܘܣ ܕܬܗܘܐ ܠܗ ܐܢܬܬܐ. ܠܡܥܒܕ ܫܝܢܐ ܒܝܢܬܗܘܢ. * ܦܛܠܡܐܘܣ
ܐܬܐ ܗܘܐ ܥܠ ܐܠܟܣܢܕܪܘܣ ܚܬܢܗ. ܠܡܩܛܠܗ * ܘܠܐ ܢܫܟܚ ܗܘܐ ܠܗ ܚܝܠܐ. ܡܢ ܕܚܠܬܐ
ܕܐܚܝܕܐ * ܘܒܪܬܗ ܕܦܛܠܡܐܘܣ ܕܡܬܝܗܒܐ ܠܕܡܛܪܝܘܣ ܒܬܪ ܕܡܝܬ ܐܠܟܣܢܕܪܘܣ
ܒܥܠܗ * ܘܬܫܬܠܡ ܗܝ ܘܥܠܝܡܝܗ. ܘܡܥܕܪܢܝܗ ܒܙܒܢܐ ܗܘ.
* ܘܢܩܘܡ ܡܢ ܫܪܫܐ ܕܙܪܥܗ. ܥܠ ܐܬܪܗ. ܘܢܐܬܐ ܒܚܝܠܐ. ܘܢܐܬܐ ܒܬܘܩܦܐ. ܥܠ ܡܠܟܐ 7
ܕܓܪܒܝܐ. ܘܢܥܒܪ ܒܗܘܢ. ܘܢܬܩܦ. * ܘܐܦ ܕܚܠܬܗܘܢ : ܘܡܐܢܝ ܪܓܬܗܘܢ. ܟܣܦܐ : 8
ܘܕܗܒܐ ܘܫܒܝܬܐ. ܢܝܬܐ ܠܡܨܪܝܢ. ܘܗܘ ܚܕ ܬܪܝܢ. ܢܬܪܝܡ ܥܠ ܡܠܟܐ ܕܓܪܒܝܐ * ܦܛܠܡܐܘܣ ܥܠ ܐܠܟܣܢܕܪܘܣ *

* Rursus tetigit me quasi forma humana, & confirmavit me, 18 Dixítque mihi ; Ne timeto vir cupide, pax tibi, confirmare, animúmque resume. 19 Dum loqueretur mecum, recepi me, & dixi ; Loquatur Dominus meus, quia recepi me. 20 Qui dixit mihi ; Nostíne quam ob rem venerim ad te ? Jam redeo ad bellum gerendum contra præsidem Persidis ; sed & me egrediente en advenit præses Græcorum. 21 Verùm indicabo tibi quod exaratum est in libro veritatis, licèt nemo me juverit in his omnib⁹, nisi Michael præses vester & ego.

CAP. XI.

1 Ab anno *enim* primo Darii Medi surrexit ad juvandum me & opem mihi ferendum : 2 Quapropter veritatem ostendam tibi. Tres adhuc reges surrecturi sunt in Perside : *Darius Ahsiri filius*, deinde quartus ingenti copiâ divitiarum superabit omnes; cúmque magnus evaserit in patria sua, concitabit omnia regna Græcorum. 3 Surget etiam rex potentissim⁹, *Alexander primus Philippi filius*, qui dominabitur dominatione amplâ, agétque pro voluntate sua. 4 Eo adhuc existente, frangetur regnum ejus ; frangetur inquam, in quatuor cœli ventos : *(hoc est, in quatuor Alexandri filii Philippi servos, qui regnaverunt post obitum ejus eò quòd prolem non habuerit. Regnaverunt* autem *post eum, unus in Ægypto, alter in Syria, alius in Asia, alius denique in Babylonia. Qui verò suis cum posteris invicèm bellum gessêre, fuerunt Ptolemæus ad Meridiem in Ægypto, Demetrius in Syria in medio, & Antiochus Epiphanes ad Aquilonem in Asia)* sed nequaquam simili gladio, neque simili dominatione quâ dominatus est. Attamen evelletur regnū illius : nec erit alius præter istos. 5 *Ptolemæus rex Ægyptius contra Alexandrum minorem filium Philippi. Antiochus Asiaticus*, Et magnificabitur rex Austri cum principibus suis, & prævalebit ei, & dominabitur dominatu magno : *(de Ptolemæo loquitur :)* 6 Sed exactis aliquot annis fœdere jungentur : filiā Ptolemæi dabit Alexandro fratri Antiochi & Petri : & filia regis Austri abibit ad regem Aquilonis. *Alexander* abiens assumet Pataram Ptolemæi filiam ut sit sibi uxor, ad hoc ut pacem inter eos conciliet : *(Ptolemæus venit contra Alexandrum generum suum ad occidendum eum)* at non poterit, propter metū quo ipsa afficietur. Imò *filia Ptolemæi quæ dabitur Demetrio post obitum Alexandri mariti sui*, tradetur ipsa, & qui adduxerint eam, adolescentulæ ejus, & qui subsidio fuerint ei, illis temporibus. 7 Surgetque de stirpe seminis ejus super patriam ipsius; qui veniens cum exercitu, & invadens cum potentia regem Aquilonis, permeabit eos, & præpollebit : 8 Et deos eorum, & supellectiles eorum exquisitas, argentū, aurum, atque captivos abducet in Ægyptum : atque hic duplo magìs elevabitur supra regē Aquilonis, *Ptolemæus scilicèt supra Alexandrum*.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Interpretatione LATINA.

18 19 Καὶ προσέθετο, ϗ ἥψατό μου ὡς ὅρασις ἀνθρώπου, ϗ ἐνίσχυσέ με, Καὶ εἶπέ μοι, Μὴ φοβοῦ ἀνὴρ ἐπιθυ-
μιῶν, εἰρήνη σοι· ἀνδρίζου ϗ ἴσχυε. ϗ ἐν τῷ λαλῆσαι αὐτὸν μετ᾽ ἐμοῦ, ἴσχυσα, ϗ εἶπα, Λαλείτω ὁ κύριός μου,
20 ὅτι ἐνίσχυσάς με. Καὶ (ο) εἶπεν, Εἰ οἶδας ἵνα τί ἦλθον πρὸς σέ; ϗ νῦν (π) ἐπιστρέψω τοῦ πολεμῆσαι μετὰ (ρ)
21 τοῦ ἄρχοντος Περσῶν· ϗ ἐγὼ (σ) εἰσεπορευόμην, ϗ ὁ ἄρχων τῶν Ἑλλήνων ἤρχετο. Ἀλλ᾽ ἢ ἀναγγελῶ σοι
τὸ ἐντεταγμένον ἐν γραφῇ ἀληθείας, καὶ οὐκ ἔστιν εἷς ἀντεχόμενος μετ᾽ ἐμοῦ (τ) περὶ τούτων, ἀλλ᾽ (υ) ἢ
Μιχαὴλ ὁ ἄρχων ὑμῶν.

MS. A. (ο) εἶπέν μοι, (π) ἐπιστρέφω (ρ) ἀρχόντων (σ) ἐξεπορευόμην, (τ) ὑπὲρ (υ) ἡμῖν Μιχαὴλ

Et addidit, & tetigit me quaſi viſio hominis, & confortavit me, 18
Et dixit mihi; Noli timere, vir deſideriorum: pax tibi. Viriliter age, & 19
confortare. Cúmque loqueretur ipſe mecum; convalui, & dixi; Loquatur
Dominus meus, quia confortâſti me. Et dixit; Nunquid ſcis, quarè ve- 20
nerim ad te? Et nunc revertar, ut prælier cum principe Perſarum: & ego
ingrediebar, & princeps Græcorum veniebat. Veruntamen annuntiabo 21
tibi, quod conſtitutum eſt in ſcriptura veritatis. Et non eſt unus adhærens
mihi de his, niſi Michael princeps veſter.

ΚΕΦ. ια΄.

1 2 ΚΑὶ ἐγὼ ἐν ἔτει πρώτῳ Κύρου ἔστην εἰς κράτος ϗ ἰσχύν. Καὶ νῦν ἀλήθειαν ἀναγγελῶ σοι· ἰδοὺ
ἔτι τρεῖς βασιλεῖς ἀναστήσονται ἐν τῇ Περσίδι, ϗ ὁ τέταρτος πλουτήσει πλοῦτον μέγαν παρὰ πάντας·
3 ϗ μετὰ τὸ κρατῆσαι αὐτὸν τοῦ πλούτου αὐτοῦ, ἐπαναστήσεται πάσαις βασιλείαις Ἑλλήνων. Καὶ ἀνα-
4 στήσεται βασιλεὺς δυνατὸς, ϗ κυριεύσει κυρείας πολλῆς, ϗ ποιήσει κατὰ τὸ θέλημα αὐτοῦ. Καὶ ὡς
ἂν στῇ ἡ βασιλεία αὐτοῦ, συντριβήσεται, ϗ διαιρεθήσεται εἰς τοὺς τέσσαρας ἀνέμους τοῦ οὐρανοῦ, καὶ
οὐκ εἰς τὰ ἔσχατα αὐτοῦ, οὐδὲ κατὰ τὴν κυρείαν αὐτοῦ, ἣν ἐκυρίευσεν, ὅτι ἐκτιλήσεται ἡ βασιλεία αὐτοῦ,
5 ϗ ἑτέροις ἐκτὸς (α) τούτων. Καὶ ἐνισχύσει ὁ βασιλεὺς τοῦ Νότου· (·) ϗ εἷς τῶν ἀρχόντων αὐτοῦ ἐνισχύ-
6 σει ἐπ᾽ αὐτὸν, ϗ κυριεύσει κυρείαν πολλήν. Καὶ μετὰ τὰ ἔτη αὐτοῦ (β) συμμιγήσονται, καὶ θυγάτηρ
βασιλέως τοῦ Νότου εἰσελεύσεται πρὸς βασιλέα τοῦ Βορρᾶ, τοῦ ποιῆσαι συνθήκας μετ᾽ αὐτοῦ, ϗ οὐ κρα-
τήσει ἰσχύος βραχίονος, ϗ οὐ στήσεται τὸ σπέρμα αὐτοῦ, ϗ παραδοθήσεται αὐτὴ, καὶ οἱ φέροντες
7 αὐτὴν, ϗ ἡ νεᾶνις, ϗ ὁ κατισχύων αὐτὴν ἐν τοῖς καιροῖς. (γ) Ἀναστήσεται ἐκ τοῦ ἄνθους τῆς ῥί-
ζης αὐτῆς (δ), τῆς ἑτοιμασίας αὐτοῦ, ϗ ἥξει πρὸς τὴν δύναμιν, ϗ εἰσελεύσεται εἰς τὰ ὑποστηρίγ-
8 ματα τοῦ βασιλέως τοῦ Βορρᾶ, ϗ ποιήσει (ε) ἐν αὐτοῖς, ϗ κατισχύσει. Καί γε τοὺς θεοὺς αὐτῶν (ζ) με-
τὰ τῶν χωνευτῶν αὐτῶν, πᾶν σκεῦος ἐπιθυμητὸν αὐτῶν, ἀργυρίου ϗ χρυσίου, μετὰ αἰχμαλωσίας οἴσει
εἰς Αἴγυπτον, ϗ αὐτὸς στήσεται ὑπὲρ βασιλέα τοῦ Βορρᾶ.

CAP. XI.

ET (a) ego in anno (b) primo Cyri ſtabam ad robur, & fortitudinem. 1.
Et nunc veritatem annuntiabo tibi. Ecce adhuc tres reges ſurgent in Per- 2
ſide: & quartus ditabitur divitiis magnis ſuper omnes: & cùm invalu-
luerit ipſe divitiis ſuis; inſurget ſuper omnia regna Græcorum. Et ſurget 3
rex potens: & dominabitur dominatione multâ: & faciet ſecundùm
voluntatem ſuam. Et cùm ſteterit regnum ejus; conteretur, & dividetur 4
in quatuor ventos cæli, & non in noviſſima ſua, neque ſecundùm domina-
tionem ſuam, quâ dominatus eſt: quia extirpabitur regnum ejus, &
(c) aliis præter iſtos. Et confortabitur rex Auſtri: & unus de principibus 5
(d) ipſis prævalebit ſuper eum: & dominabitur dominatione (e) multâ.
Et poſt annos illius commiſcebuntur: filiáque regis Auſtri ingredietur ad 6
regem Aquilonis, facere fœdera cum eo: & non obtinebit fortitudinem bra-
chii, nec ſtabit ſemen ejus: & tradetur ipſa, & qui adducebant eam, &
adoleſcentula, & confortans eam in temporibus. Surget de flore radicis 7
ejus, (f) præparationis illius: & veniet ad virtutem: & ingredietur in
ſuſtentacula regis Aquilonis: & faciet in eis & obtinebit. Etiam deos 8
eorum cum fuſilibus eorum, omne vas deſiderabile eorum argenti & au-
ri cum captivitate ducet in Ægyptum: & ipſe ſtabit ſuper regem A-
quilonis.

MS. A. (α) τούτων δοθήσεται. Καὶ (·) ϗ ἐνισχύσει ἐπ᾽ αὐτῶν εἷς τῶν ἀρχόντων αὐτοῦ, ϗ κυριεύσει κυρείας πολλῆς ἐπ᾽ ἐξουσίας αὐτοῦ. Καὶ μετὰ (β) ἀποσυμμιγήσονται, ϗ ἡ θυγάτηρ * βασιλεὺς (γ) Καὶ ἀναστήσεται (δ) ἐπὶ τῆς (ε) αὐτοῖς, (ζ) καταστρέψει μετὰ

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

18 19 * وعاد فلمسني مثل منظر انسان وقواني * وقال لي * لا تخف يا رجل الشهوات * السلم لك *
تشجع وتقو * واذ هو يتكلم معي تقويت وقلت * ليتكلم سيدي لانك قويتني *
20 * فقال لي * اعلمت لماذا اتيت اليك * والان ارجع لاحارب مع رييس الفرس * وانا خرجت *
21 واذا رييس اليونانيين اتي * ولكني اخبرك بالمرسوم في كتاب الحق * وليس احد يساعد معي
من اجل هذه الا ميخاييل رييسكم *

Quarè denuò tetigit me quaſi ſpecies 18
hominis, & confortavit me, Dixitque 19
mihi; Ne timeas O vir deſideriorum,
pax tibi, ſume animos & confortare.
Dum ipſe alloqueretur me, conforta-
tus ſum, & dixi; Loquatur dominus
meus, nam confortâſti me. Dixit mi- 20
hi; Noſtine quorſum venerim ad te?
Jam redeo pugnatum contra principem
Perſarum, jámque egredior, quia
ecce princeps regni Græcorum venit.
Sed tamen declarabo tibi exaratum in 21
libro veritatis, licèt nemo ſit qui me
juvet in his, præter Michaelem prin-
cipem veſtrum.

* الفصل الحادي عشر *

1 2 * وانا في السنة الاولي لكورس وقفت بقوة وعز * والان اخبرك بالحق * ها ثلاث مملكات
ايضا تقوم في الفرس * والرابع يستغني غنا عظيما * اكثر من جميعهم * ومن بعد ان
3 يضبط هو غناه * يقوم في جميع مملكات اليونانيين * ويقوم ملك قوي * ويسود سيادة
4 كثيرة * ويصنع كارادته * واذا قامت مملكته * تنكسر وتنقسم الي اربعة رياح السماء *
وليس كاواخره ولا كسيادته التي سادها * لان مملكته تقلع وتعطي لاخرين غير هولاء *
5 * ويتقوي ملك الجنوب * وواحد من روساهم يتقوي عليهم * ويسود سيادة كثيرة
6 علي سلطانه * وبعد سنينه يختلطون * وابنة ملك الجنوب تدخل الي ملك الجربياء
لتصنع مواثيق معه * فلا يضبط قوة ذراعه * ولا يقوم زرعه * ويدفع هي والذين
7 اتوا بها * والشابة ومقويها في الازمان * ويقوم من زهر اصلها علي هيئته * ويأتي بقوة *
8 ويدخل الي عسكنات ملك الجربياء * ويصنع بهم * ويتقوي * ويكسر الهتهم مع
مسبوكاتهم * كل اناء لهم مشتهى من فضة وذهب * ويدخل بالسبي الي مصر * وهو يقوم
اكثر من ملك الجربياء *

CAP. XI.

Quapropter ego anno primo Cyri, 1
cùm viribus & potentiâ ſuperaverim,
Jam indicabo tibi veritatem. Ecce tria 2
regna ſunt adhuc ſurrectura in Per-
ſide, & quartus ditabitur divitiis
maximis plusquam ii omnes; & poſt-
quam obtinuerit iſte divitias ſuas, ſta-
bit in omnibus regnis Græcorum. De- 3
inde exurget rex potens, qui dominabi-
tur dominatione ampliſſimâ, facietque
pro voluntate ſua. Sed cùm ſteterit
regnum ejus, frangetur, & dividetur 4
in quatuor cæli ventos; & non ſe-
cundùm noviſſima illius, neque ſecun-
dùm dominationem ejus quâ domina-
tus eſt: nam regnum ejus evelletur, &
tradetur aliis præter iſtos. Et confor-
tabitur rex Auſtri, & unus è princi- 5
pibus eorum prævalebit eis, & domi-
nabitur dominatione amplâ in regno ſuo.
Poſt annos autem iſtius, conſortium 6
habebunt; & filia regis Auſtri adi-
bit regem Aquilonis ad ineunda cum
eo fœdera: ſed non obtinebit vim
brachium iſtius, neque ſubſiſtet ſemen
ejus: & illa tradetur cum iis qui
adduxerint eam, tam adoleſcentula
quàm confortans eam in temporibus.
Ex ex flore ſtirpis illius ſtabit appa-
ratui ſuo, veniet cum fortitudine, & 7
ingredietur in munitiones regis A-
quilonis, afficiet eos, & confirmabitur:
Confringetque deos eorum cum fuſi-
libus eorum: omnia vaſa eorum ex- 8
petibilia argentea & aurea, necnon
captivos, inferet in Ægyptum. Is
elevabitur plusquàm rex Aquilo-
nis,

דניאל: יא

exercituum *turbam colligent* & ,*se miscebunt* ejus filii Et .suam *humum* ad revertetur & , Austri rex regnum in intrabit Et

9 10 וּבָא בְּמַלְכוּת מֶלֶךְ הַנֶּגֶב וְשָׁב אֶל־אַדְמָתוֹ׃ וּבָנָו יִתְגָּרוּ וְאָסְפוּ הֲמוֹן חֲיָלִים

movebitur bile Et .ejus *fortitudinem* ad usque irritabitur &,revertetur & ; transibit & ,inundabit & ,veniendo veniet & ,plurimorum

11 רַבִּים וּבָא בוֹא וְשָׁטַף וְעָבָר וְיָשֹׁב וְיִתְגָּרֶה עַד־מָעֻזֹּה׃ וְיִתְמַרְמַר

.ejus manu in *turba* dabitur &,magnam *turbam* faciet stare &;Aquilonis rege cum *eo cum* pugnabit & ,egredietur & ,Austri rex

מֶלֶךְ הַנֶּגֶב וְיָצָא וְנִלְחַם עִמּוֹ עִם־מֶלֶךְ הַצָּפוֹן וְהֶעֱמִיד הָמוֹן רָב וְנִתַּן הֶהָמוֹן בְּיָדוֹ׃

faciet stare &,Aquilonis rex revertetur Et .roborabitur non &,millia decem dejiciet & ; suū cor exaltabit,multitudo elevabitur Et

12 13 וְנִשָּׂא הֶהָמוֹן יָרוּם לְבָבוֹ וְהִפִּיל רִבֹּאוֹת וְלֹא יָעוֹז׃ וְשָׁב מֶלֶךְ הַצָּפוֹן וְהֶעֱמִיד

.multa substantia *in* & ,magno exercitu *in veniendo* veniet annorum temporum fine in & :*priore præ multam turbam*

הָמוֹן רַב מִן־הָרִאשׁוֹן וּלְקֵץ הָעִתִּים שָׁנִים יָבוֹא בוֹא בְּחַיִל גָּדוֹל וּבִרְכוּשׁ רָב׃

,visionem *faciendum stare ad*,elevabuntur tui populi dissipatorum filii & ; Austri regem *super* stabunt multi illis temporibus in Et

14 וּבָעִתִּים הָהֵם רַבִּים יַעַמְדוּ עַל־מֶלֶךְ הַנֶּגֶב וּבְנֵי פָּרִיצֵי עַמְּךָ יִנַּשְּׂאוּ לְהַעֲמִיד חָזוֹן

, stabunt non Austri brachia & ; *munitionum* civitatem capiet & , aggerem effundet &,Aquilonis rex veniet Et .corruant &

15 וְנִכְשָׁלוּ׃ וְיָבֹא מֶלֶךְ הַצָּפוֹן וְיִשְׁפֹּךְ סוֹלְלָה וְלָכַד עִיר מִבְצָרוֹת וּזְרֹעוֹת הַנֶּגֶב לֹא יַעֲמֹדוּ

stans non & ,suā voluntatem secundùm eum ad veniens faciet Et .resistendum ad fortitudo non &,ejus electorum populo &

16 וְעַם מִבְחָרָיו וְאֵין כֹּחַ לַעֲמֹד׃ וְיַעַשׂ הַבָּא אֵלָיו כִּרְצוֹנוֹ וְאֵין עוֹמֵד

,ejus regnum omne fortitudine *in ingrediendum ad* ,*suas facies* ponet Et .ejus manu in deficiet &,*ornamenti* terra in stabit & ;*ejus facies ad*

17 לְפָנָיו וְיַעֲמֹד בְּאֶרֶץ־הַצְּבִי וְכָלָה בְיָדוֹ׃ וְיָשֵׂם ׀ פָּנָיו לָבוֹא בְּתֹקֶף כָּל־מַלְכוּתוֹ

convertet Et .erit ei non & , stabit non &,illam *corrumpendum ad* ei dabit mulierum filiam & : faciet & ,eo cum *recti* &

18 וִישָׁרִים עִמּוֹ וְעָשָׂה וּבַת הַנָּשִׁים יִתֶּן־לוֹ לְהַשְׁחִיתָהּ וְלֹא תַעֲמֹד וְלֹא־לוֹ תִהְיֶה׃ וְיָשֵׁב

convertet Et .ei inferat suum probrum ne , *ei ejus opprobrium gubernator* faciet cessare & : multas capiet &,insulas ad *suas facies*

19 פָּנָיו לְאִיִּים וְלָכַד רַבִּים וְהִשְׁבִּית קָצִין חֶרְפָּתוֹ לוֹ בִּלְתִּי חֶרְפָּתוֹ יָשִׁיב לוֹ׃ וְיָשֵׁב

gloria , *exactorem transferens* ejus *basi super* stabit Et .invenietur non & ,corruet & ,impinget &,ejus terræ *fortalicia* ad *suas facies*

20 פָּנָיו לְמָעוּזֵּי אַרְצוֹ וְנִכְשַׁל וְנָפַל וְלֹא יִמָּצֵא׃ וְעָמַד עַל־כַּנּוֹ מַעֲבִיר נוֹגֵשׂ הֶדֶר

dabunt non &,despectus ejus *basi super* stabit Et .prælio in non & , *faciebus* in non &,conteretur *unis* diebus in & : regni

21 מַלְכוּת וּבְיָמִים אֲחָדִים יִשָּׁבֵר וְלֹא בְאַפַּיִם וְלֹא בְמִלְחָמָה׃ וְעָמַד עַל־כַּנּוֹ נִבְזֶה וְלֹא־נָתְנוּ

inundabuntur inundatione brachia Et .blanditiis in regnum *apprehendet* & ,*quiete* in veniet & ; regni gloriam *eo super*

22 עָלָיו הוֹד מַלְכוּת וּבָא בְשַׁלְוָה וְהֶחֱזִיק מַלְכוּת בַּחֲלַקְלַקּוֹת׃ וּזְרֹעוֹת הַשֶּׁטֶף יִשָּׁטְפוּ

se roborabit &,ascendet & : dolum faciet ,*eum ad se associando ab* Et .fœderis dux etiam & ;conterentur & ,ejus *faciebus* à

23 מִלְּפָנָיו וְיִשָּׁבֵרוּ וְגַם נְגִיד בְּרִית׃ וּמִן־הִתְחַבְּרוּת אֵלָיו יַעֲשֶׂה מִרְמָה וְעָלָה וְעָצַם

: ejus patrum patres & ,ejus patres fecerunt non quæ faciet & ,ingredietur *provinciæ pinguia in &* ,*quietem In* .gente modica *in*

24 בִּמְעַט־גּוֹי׃ בְּשַׁלְוָה וּבְמִשְׁמַנֵּי מְדִינָה יָבוֹא וְעָשָׂה אֲשֶׁר לֹא־עָשׂוּ אֲבֹתָיו וַאֲבוֹת אֲבֹתָיו

.tempus ad usque & ,suis cogitationibus cogitabit munitiones *super* & ; disperdet *eis* substantiam & ,*spolium* & ,prædam

בִּזָּה וְשָׁלָל וּרְכוּשׁ לָהֶם יִבְזוֹר וְעַל מִבְצָרִים יְחַשֵּׁב מַחְשְׁבֹתָיו וְעַד־עֵת׃

Versio VULG. LAT.

Et intrabit in regnum rex Austri, & revertetur ad terram 9
suam. Filii autem ejus provocabuntur, & congregabunt 10
multitudinem exercituum plurimorum: & veniet properans,
& inundans: & revertetur, & concitabitur,& congredietur
cum robore ejus. Et provocatus rex Austri egredietur, 11
& pugnabit adversus regem Aquilonis, & præparabit
multitudinem nimiam,& dabitur multitudo in manu
ejus. Et capiet multitudinem, & exaltabitur cor ejus, & 12
dejiciet multa millia, sed non prævalebit. Convertetur 13
enim rex Aquilonis,& præparabit multitudinem multò majorem
quàm priùs: & in fine temporum annorúmque,veniet
properans cum exercitu magno,& opibus nimiis. Et 14
in temporibus illis multi consurgent adversus regem Austri:
filii quoque prævaricatorum populi tui extollentur ut
impleant visionem,& corruent. Et veniet rex Aquilonis,et 15
comportabit aggerem,& capiet urbes munitissimas:& brachia
Austri non sustinebunt, & consurgent electi ejus ad
resistendum, & non erit fortitudo. Et faciet veniens super 16
eum juxta placitum suum,& non erit qui stet contra faciem
ejus: & stabit in terra inclyta,& consumetur in manu ejus.
Et ponet faciem suam ut veniat ad tenendum universum regnum 17
ejus, & recta faciet cum eo: & filiam fœminarum dabit
ei,ut evertat illud: & non stabit,nec illius erit. Et convertet 18
faciem suam ad insulas, & capiet multas : & cessare
faciet principem opprobrii sui,& opprobrium ejus convertetur
in eum. Et convertet faciem suam ad imperium terræ 19
suæ,& impinget,& corruet, & non invenietur. Et stabit 20
in loco ejus vilissimus, & indignus decore regio : & in
paucis diebus conteretur,non in furore nec in prælio. Et 21
stabit in loco ejus despectus, & non tribuetur ei honor regius:
& veniet clàm, et obtinebit regnum in fraudulentia.
Et brachia pugnantis expugnabuntur à facie ejus,et conterentur 22
: insupèr et dux fœderis. Et post amicitias, cum eo 23
faciet dolum : et ascendet, et superabit in modico populo.
Et abundantes,et uberes urbes ingredietur: faciet quæ non 24
fecerunt patres ejus,et patres patrum ejus: rapinas,et prædam,
et divitias eorum dissipabit, et contra firmissimas cogitationes
inibit : et hoc usque ad tempus.

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

9 10 ܘܢܥܘܠ ܒܡܠܟܘܬ ܡܠܟܐ ܕܬܝܡܢܐ ܘܢܗܦܘܟ ܠܐܪܥܗ. * ܘܦܛܠܡܘܣ ܘܒܢܘܗܝ
ܢܬܚܪܘܢ. ܘܢܟܢܫܘܢ ܚܝܠܘܬܐ ܣܓܝܐܬܐ. ܘܢܐܬܘܢ ܥܠܘܗܝ. ܘܢܒܙܘܢ ܘܢܥܒܪܘܢ.
11 ܘܢܗܦܟܘܢ ܘܢܬܚܪܘܢ ܥܕܡܐ ܠܚܣܢܐ. * ܘܢܬܚܡܬܘܢ ܐܢܛܝܘܟܘܣ ܘܛܪܝܦܘܢ ܥܠ
ܦܛܠܡܘܣ * ܘܢܬܚܡܬ ܡܠܟܐ ܕܬܝܡܢܐ. ܘܢܦܘܩ ܠܐܘܪܥܗ ܕܡܠܟܐ ܕܓܪܒܝܐ.
12 ܘܢܩܝܡ ܚܝܠܐ ܪܒܐ. ܘܢܫܬܠܡ ܚܝܠܐ ܗܘ ܒܐܝܕܗ. * ܘܒܬܪ ܬܒܪܗ ܕܚܝܠܐ. ܘܢܬܪܝܡ
13 ܠܒܗ * ܕܒܪܗ ܕܐܠܟܣܢܕܪܘܣ * ܘܢܪܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܠܐ ܢܬܚܝܠ. * ܘܢܗܦܘܟ ܡܠܟܐ
ܕܓܪܒܝܐ. ܘܢܩܝܡ ܚܝܠܐ ܕܣܓܝ ܡܢ ܩܕܡܝܐ. ܘܠܣܘܦ ܙܒܢܐ. ܫܢܝ ܢܐܬܐ ܒܡܐܬܝܬܗ
14 ܒܚܝܠܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܒܩܢܝܢܐ ܣܓܝܐܐ. * ܘܒܙܒܢܐ ܗܘ. ܣܓܝܐܐ ܢܩܘܡܘܢ ܥܠ ܡܠܟܐ
15 ܕܬܝܡܢܐ. ܘܒܢܝ ܥܘܠܐ ܕܥܡܟ. ܢܬܬܪܝܡܘܢ ܠܡܩܡܘ ܚܙܘܐ. ܘܢܬܬܩܠܘܢ. * ܘܢܐܬܐ
ܡܠܟܐ ܕܓܪܒܝܐ. ܘܢܩܝܡ ܟܡܐܢܐ ܘܢܚܘܕ ܩܘܪܝܐ ܚܣܝܢܬܐ. ܘܕܪܥܐ ܕܬܝܡܢܐ ܠܐ
ܢܩܘܡ. ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܠܗܘܢ ܚܝܠܐ ܠܡܩܡ. ܘܓܒܝܘܗܝ ܕܥܡܐ ܢܩܘܡܘܢ. ܘܠܐ ܢܫܟܚܘܢ.
16 ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܠܗܘܢ ܚܝܠܐ ܠܡܩܡ. * ܘܢܥܒܕ ܗܘ ܕܐܬܐ ܠܘܬܗ. ܐܝܟ ܨܒܝܢܗ. ܘܠܝܬ
ܕܢܩܘܡ ܠܘܩܒܠܗ. ܘܢܩܘܡ ܒܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ. ܘܢܫܬܠܡ ܒܐܝܕܘܗܝ.
17 * ܘܢܣܝܡ ܐܦܘܗܝ ܠܡܥܠ ܒܬܩܦܐ ܕܟܠ ܡܠܟܘܬܐ. ܘܟܠܗ ܥܡܗ.
ܢܥܒܕ. ܘܒܪܬ ܐܢܫܐ ܢܬܠ ܠܗ ܠܡܚܒܠܘܬܗ. ܘܠܐ ܬܩܘܡ. ܘܠܐ ܬܗܘܐ ܕܝܠܗ.
18 * ܘܢܗܦܘܟ ܐܦܘܗܝ ܠܘܬ ܓܙܪܬܐ ܕܝܡܐ. ܘܢܟܒܘܫ ܣܓܝܐܐ. ܘܢܒܛܠ ܫܠܝܛܐ ܕܡܚܣܕ
19 ܗܘܐ ܠܗ. ܘܚܣܕܗ ܢܗܦܘܟ ܒܗ. * ܘܢܣܝܡ ܐܦܘܗܝ ܠܘܬ ܬܘܩܦܗ ܕܐܪܥܐ. ܘܢܬܬܩܠ
20 ܘܢܦܠ. ܘܠܐ ܢܫܬܟܚ. * ܘܢܩܘܡ ܥܠ ܕܘܟܬܗ. ܡܚܒܠ ܬܘܩܦܐ ܘܗܕܪ ܡܠܟܘܬܐ.
21 ܘܒܝܘܡܬܐ ܒܨܝܪܐ ܢܬܬܒܪ. ܠܐ ܒܪܘܓܙܐ. ܘܠܐ ܒܩܪܒܐ. * ܘܢܩܘܡ ܥܠ ܐܬܪܗ. ܡܣܟܢܐ. ܘܠܐ
ܢܬܝܗܒ ܠܗ ܝܩܪܐ ܕܡܠܟܘܬܐ. ܘܢܐܬܐ ܒܫܠܝܐ. ܘܢܐܚܘܕ ܡܠܟܘܬܐ ܒܫܘܥܒܕܐ.
22 23 * ܘܬܘܩܦܗܘܢ ܕܩܘܪܝܐ ܢܬܒܙܐ. ܐܦ ܡܕܒܪܢܐ ܕܕܝܬܝܩܐ. * ܘܡܢ ܐܢܫܝܢ
24 ܕܡܬܬܓܪܝܢ ܥܡܗ. ܢܥܒܕܘܢ ܥܠܘܗܝ ܢܟܠܐ. * ܘܢܣܩ ܘܢܬܚܝܠ ܒܥܡܐ
ܙܥܘܪܐ. ܘܒܡܫܡܢܐ ܕܡܕܝܢܬܐ. ܘܢܥܒܕ ܡܕܡ ܕܠܐ ܥܒܕܘ ܐܒܗܘܗܝ ܘܐܒܗܬܐ ܕܐܒܗܘܗܝ.
ܘܒܙܬܐ ܘܫܒܝܬܐ ܘܩܢܝܢܗܘܢ. ܢܕܒܪ. ܘܥܠ ܩܘܪܝܗܘܢ. ܢܬܚܫܒ ܡܚܫܒܬܗ.

Itaque ingredietur cum potentia rex Austri, 9
tum redibit in terram suam. Ptolemæus & 10
filii ejus irritati cogent adversus eum copias
multas, & invadent eum, rapient, & transibunt,
& reversi irritabuntur usque ad munitionem.
Irritantur Antiochus & Triphon 11
contra Ptolemæum. Unde irritatus rex Austri
egredietur in occursum regis Aquilonis, &
excitabit exercitum copiosissimum, adeo ut
exercitus ille tradatur in manum ejus. Post 12
cladem exercitûs illius insolescet cor ejus,
nempe Alexandri filii ipsius, sternétque
multos : at non firmabitur. Nam reversus 13
rex Aquilonis coget exercitum priore copiosiorem
; & exacto aliquanto tempore, veniendo
veniet duplo majore cum exercitu, opibúsque
permultis. Eo tempore multi insurgent 14
contra regem Aquilonis, filii verò
scelerati, populus tuus, extollentur ad asserendam
visionem, & destruentur. Etenim 15
veniens rex Aquilonis ponet insidias, & capiet
arces munitas ; & brachium Austri non
resistet, quia non habebunt resistendi facultatem
: delectissimi quoque inter populum
resistent, sed non poterunt ; quia non erit eis
resistendi facultas. Quarè faciet is qui aggressurus 16
est eum, pro voluntate sua, nec erit
qui resistat ei ; stabítque in terra Israelis, quæ
tradetur in manus ejus. Deinde faciem suam 17
disponet ad ingrediendum in robur omnium
regnorum ; & quidem totus populus ejus progredietur
: & filia hominum dabitur ei ut
corrumpat eam ; ipsa verò non perstabit, nec
illius erit. Itaque vertet faciem suam ad insulas 18
maris, & multos domabit : exscindétque
principem qui probris afficiebat eum, &
probrum ipsius retorquebit in eum. Tum 19
demum faciem suam disponet contra terræ
robur : & destruetur & corruet, nec invenietur.
In hujus sede succedet destructor potentiæ 20
& decoris regnorum, sed paucos intra
dies conteretur, non irâ neque certamine.
Hujus etiam loco succedet humilis *quidam* 21
cui non tribuetur honos regnorum : veniet
autem tacitè, & regnum astibus usurpabit.
Et robur urbium diripietur, etiam rector 22
fœderis. Et ex his qui commercium habebunt 23
cum eo, dolum struent in ipsum. Et 24
ascendens fortem se reddet parvo populo &
ditissimis urbium, faciétque quod non fecerant
patres ejus neque patres patrum ejus, &
spolia, captivos, atque possessionem eorum
abducet, & contra urbes eorum cogitabit
cogitationes:

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

9 Καὶ εἰσελεύσεται εἰς τὴν βασιλείαν τοῦ βασιλέως τοῦ Νότου, ϗ ἀναστρέψει εἰς τὴν γῆν αὐτοῦ. Καὶ οἱ υἱοὶ
10 αὐτοῦ συνάξουσιν (η) ὄχλον ἀναμέσον πολλῶν· ϗ ἐλεύσεται ἐρχόμενος ϗ κατακλύζων, ϗ παρελεύσεται,
11 ϗ (θ) καθίεται, ϗ συμπροσπλακήσεται ἕως τῆς ἰσχύος αὐτοῦ. Καὶ ἀγριανθήσεται (ι) βασιλεὺς τοῦ Νότου,
ϗ ἐξελεύσεται, ϗ πολεμήσει μετὰ (κ) τοῦ βασιλέως τοῦ Βορρᾶ, ϗ στήσει ὄχλον πολύν, ϗ παραδοθήσεται
12 ὁ ὄχλος ἐν χειρὶ αὐτοῦ, Καὶ λήψεται τὸν ὄχλον, ϗ (λ) ὑψωθήσεται ἡ καρδία αὐτοῦ, ϗ καταβαλεῖ
13 μυριάδας, ϗ οὐ κατισχύσει. Καὶ ἐπιστρέψει ὁ βασιλεὺς τοῦ Βορρᾶ, ϗ (μ) ἄξει ὄχλον πολὺν ὑπὲρ
τὸν πρότερον· ϗ εἰς τὸ τέλος τῶν καιρῶν ἐνιαυτῶν ἐπελεύσεται εἰσόδια ἐν δυνάμει μεγάλῃ, καὶ ἐν
14 ὑπάρξει πολλῇ. Καὶ ἐν τοῖς καιροῖς ἐκείνοις πολλοὶ ἐπαναστήσονται ἐπὶ βασιλέα τοῦ Νότου, ϗ οἱ υἱοὶ
15 τῶν λοιμῶν τοῦ λαοῦ σου ἐπαρθήσονται, τοῦ στῆσαι ὅρασιν, ϗ ἀσθενήσουσι. Καὶ εἰσελεύσεται (ν) βασιλεὺς
τοῦ Βορρᾶ, ϗ ἐκχεεῖ πρόσχωμα, ϗ συλλήψεται πόλεις ὀχυρὰς, ϗ οἱ βραχίονες τοῦ βασιλέως τοῦ Νότου
16 (ξ) στήσονται, ϗ ἀναστήσονται οἱ ἐκλεκτοὶ αὐτοῦ, ϗ οὐκ ἔσται ἰσχὺς τοῦ στῆναι. Καὶ ποιήσει ὁ εἰσπορευόμενος
πρὸς αὐτὸν κατὰ τὸ θέλημα αὐτοῦ, ϗ οὐκ ἔστιν ἑστὼς κατὰ πρόσωπον αὐτοῦ· ϗ (ο) στήσεται ἐν τῇ γῇ
17 τοῦ σαβεὶ, ϗ τελεσθήσεται ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ. Καὶ τάξει τὸ πρόσωπον αὐτοῦ εἰσελθεῖν ἐν ἰσχύϊ πάσης τῆς
βασιλείας αὐτοῦ, ϗ εὐθεῖα πάντα μετ' αὐτοῦ ποιήσει. ϗ θυγατέρα τῶν γυναικῶν δώσει αὐτῷ (π) διαφθεῖραι
18 αὐτὴν, ϗ οὐ μὴ παραμείνῃ, ϗ οὐκ αὐτῷ ἔσται. Καὶ ἐπιστρέψει τὸ πρόσωπον αὐτοῦ εἰς τὰς νήσους,
ϗ συλλήψεται πολλὰς, ϗ (ρ) καταπαύσει ἄρχοντας ὀνειδισμοῦ αὐτῶν, πλὴν (σ) ὀνειδισμὸς αὐτοῦ ἐπιστρέψει
19 αὐτῷ. Καὶ ἐπιστρέψει τὸ πρόσωπον αὐτοῦ εἰς τὴν (τ) ἰσχὺν τῆς γῆς αὐτοῦ, καὶ ἀσθενήσει, ϗ πεσεῖται, ϗ
20 οὐχ εὑρεθήσεται. Καὶ ἀναστήσεται ἐκ τῆς ῥίζης αὐτοῦ φυτὸν (υ) τῆς βασιλείας ἐπὶ τὴν ἑτοιμασίαν
αὐτοῦ παραβιβάζων, πράσσων δόξαν βασιλείας. ϗ ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις (·) ἔτι συντριβήσεται, καὶ
21 οὐκ ἐν προσώποις, οὐδὲ ἐν πολέμῳ. Στήσεται ἐπὶ τὴν ἑτοιμασίαν αὐτοῦ, ἐξουδενώθη, ϗ οὐκ ἔδωκαν
21 ἐπ' αὐτὸν δόξαν βασιλείας. καὶ ἥξει ἐν εὐθηνίᾳ, καὶ κατισχύσει βασιλείας ἐν ὀλισθήμασι, Καὶ βραχίονες
τοῦ κατακλύζοντος (φ) κατακλυσθήσονται ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ, καὶ συντριβήσονται, καὶ ἡγούμενος
23 διαθήκης. Καὶ ἀπὸ τῶν συναναμίξεων πρὸς αὐτὸν ποιήσει δόλον, ϗ ἀναβήσεται, ϗ ὑπερισχύσει (χ) αὐτοὺς ἐν
24 ὀλίγῳ ἔθνει. Καὶ ἐν εὐθηνίᾳ, ϗ ἐν (¨) πίοσι χώραις ἥξει, ϗ ποιήσει ἃ οὐκ ἐποίησαν οἱ πατέρες αὐτοῦ ϗ (ψ)
πατέρες τῶν πατέρων αὐτοῦ· προνομὴν ϗ σκῦλα ϗ (ω) ὕπαρξιν αὐτοῖς διασκορπιεῖ, ϗ ἐπ' Αἴγυπτον λογιεῖται
(α) λογισμοὺς ϗ ἕως καιροῦ.

Et intrabit in regnum regis Auſtri: & revertetur ad terram ſuam: 9
Et filii ejus congregabunt turbam (g) inter medium multorum. Et veniet 10
adveniens, & inundans: & pertranſibit, & ſedebit, & congredietur
uſque ad fortitudinem ejus. Et efferabitur rex Auſtri, & egredietur, 11
& pugnabit cum rege Aquilonis: & faciet ſtare turbam multam: & tradetur
turba in manu ejus: Et capiet multitudinem: & exaltabitur cor 12
ejus: & dejiciet decem millia: & non prævalebit. Et convertetur rex 13
Aquilonis, & adducet turbam multam ſuper priorem: & in fine (b) temporum
annorum ingredietur ingreſſiones in virtute magna, & in ſubſtantia
multa. Et in temporibus illis multi conſurgent ſuper regem Auſtri: & filii 14
peſtilentium populi tui extollentur, ut ſtatuant viſionem, & infirmabuntur.
Et ingredietur rex Aquilonis: & effundet aggerem, & capiet urbes munitas: 15
& brachia regis Auſtri (i) ſtabunt: & conſurgent electi ejus:
& non erit fortitudo ad ſtandum. Et faciet ingrediens adverſùs eum ſecundùm 16
voluntatem ſuam: & non eſt, qui ſtet contra faciem
ejus. Et ſtabit (k) in terra Sabi, & conſumetur in manu ejus.
Et ponet faciem ſuam, ut ingrediatur in fortitudine totius regni ſui: 17
& recta omnia faciet cum eo. Et filiam fœminarum dabit ei,
ut evertat illum: & non permanebit, & non erit ei. Et convertet 18
faciem ſuam ad inſulas: & capiet multas: & ceſſare faciet principes
opprobrii ſui: veruntamen opprobrium ejus convertetur ei. Et convertet 19
faciem ſuam ad fortitudinem terræ ſuæ: & infirmabitur, & corruet,
& non invenietur. Et ſurget de radice ejus planta regni, ad præparationem 20
ipſius transferens, faciens gloriam regni. Et in diebus illis adhuc
conteretur, et non in faciebus, neque in bello: Stabit ſuper præparationem 21
ejus. Contemptus fuit: et non dederunt ſuper eum gloriam regni. Et veniet
in tranquillitate, & obtinebit regnum in lubricitatibus: Et brachia 22
inundantis inundabuntur à facie ejus, & conterentur, et dux teſtamenti; Et 23
ex commiſtionibus adverſùs eum faciet dolum: et aſcendet, et prævalebit
in eos in modica gente. In (l) proſperitatem, et in (m) pingues regiones 24
veniet: et faciet quæ non fecerunt patres ejus, et patres patrum ejus, direptionem,
et ſpolia, et ſubſtantiam eis diſſipabit. Et ſuper Ægyptum cogitabit
cogitationes, et uſque ad tempus.

MS. A. (η) ὄχλον δυνάμεων πολλῶν· ϗ εἰσελεύσεται ἐρχόμενος (θ) καθιεῖται, ϗ προσσυμπλακήσονται (ι) ϗ ὁ βασιλεὺς τοῦ Νότου ἐξελεύσεται, (κ) βασιλέως (λ) ὑψωθήσεται (μ) ἄξει (ν) ὁ βασιλεὺς (ξ) οὐ στήσονται, (ο) στήσεται ἐν γῇ τοῦ Σαββεὶρ, ϗ συντελεσθήσεται (π) τοῦ διαφθεῖραι (ρ) κατακαύσει (σ) ὁ ὀνειδισμὸς (τ) ἀρχὴν (υ) βασιλείας (·) συντριβήσεται, (φ) ϗ κατακλυσθήσονται (χ) αὐτοῦ (¨) πλίοσιν (ψ) οἱ πατέρες (ω) ὕπαρξιν διασκορπίσει, (α) διαλογισμοὺς αὐτοῦ ϗ

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ويدخل الى مملكة ملك الجنوب * ويعود الى ارضه * وبنوه يجمعون جمع جيوش 9 10
كثيرة * ويأتي ويدخل ويغرق * ويمضي ويجلس * ويرتبك حتى قوته * ويستشيط 11
ملك الجنوب * ويخرج ويحارب مع ملك الجربياء ويقيم جمعا كثيرا * ويدفع الجمع في
يده * ويأخذ الجمع * ويتعالى قلبه * ويطرح ربوات * ولا يقوى * ويرجع ملك 12 13
الجربياء ويأخذ جمعا كثيرا اكثر من الاول * والى تمام ازمنة السنين يأتي دخول
بقوة عظيمة وبموجود كثير * وفي تلك الازمنة يقوم كثيرون على ملك الجنوب * 14
وبنو بقايا شعبك يترفعون * ليقوم الرؤيا * ويضعفون * ويدخل ملك الجربياء * 15
ويهرق على التراب * ويأخذ مدنا حصينة * وذراعا ملك الجنوب لا يقومان * ويقوم
مختاريه * ولا تكون قوة ليبقى * ويصنع الداخل اليه كارادته * ولا يكون قائم 16
لوجهه * ويقوم في ارض صابيين ويستكمل بيده * ويرتب وجهه ليدخل بقوة كل 17
مملكته * ليصنع جميع من معه مستقيما * وابنة النسوان يعطيها له ليفسدها * فلا
تثبت ولا تكون له * ويرد وجهه الى الجزائر * ويأخذ كثيرات * ويحرق رؤساء تعييرهم * 18
لكن تعييره يعود له * ويرد وجهه الى قوة ارضه * فيضعف ويسقط ولا توجد 19
* ويقوم من اصله غرس مملكة على هيبته * ويزيل متعمدا شرف المملكة * 20
وفي تلك الايام ينكسر * وليس بالوجوه ولا بالحرب يقوم على هيبته * احتقر ولم 21
يعط عليه شرف المملكة * ويأتي بخصب * ويضبط الملك بالزلل * وذراعا المغرق 22
فيغرقان من وجهه وينكسران * ومقدم العهد * ومن المخالطات له يصنع غشا * 23
ويصعدون * ويقوى عليه بأمة قليلة * وبخصب وفي كور كثيرة يأتي * ويصنع 24
ما لم تصنعه اباؤه واباء ابائه * نهبا وغنائم * ويفرق لهم مالا * ويفكر على مصر
فكراته حتى الزمان *

Et ingredietur in regnum regis Aquilonis. 9
Tum revertetur in terram ſuam, Et filii 10
ejus colligent turbam exercituum multorum;
& veniens ingredietur & obruet,
& abiens ſedebit, eritque perplexa
vel ipſa fortitudo ejus. Quapropter 11
enitetur rex Auſtri, & prodibit
bellabitque contra regem Aquilonis
concitâ turbâ plurimâ: & tradetur
turba illa in manum ejus; Capietque 12
turbam, & elevabitur cor ejus,
proſtrabitque myriades; at non prævalebit.
Nam rex Aquilonis iterum 13
aſſumet turbam plurimam priori copioſiorem,
& ad finem temporum annorum
veniet ingrediens magno cum robore,
& multa cum ſubſtantia. Iis 14
temporibus inſurgent multi contra regem
Auſtri: & filii reliquiarum populi
tui auferentur, ut ſubſiſtat viſio,
& infirmabuntur. Et ingredietur 15
rex Aquilonis, & ſanguinem effundet
ſuper terram, capietque urbes
munitas: & brachia regis Auſtri non reſiſtent:
& conſurgent electi ejus, &
non erit facultas reſiſtendi. Proinde 16
faciet is qui ingredietur ad eum, pro
ſua voluntate; nec erit qui reſiſtat ei:
ſtabitque in terra Sabiin, & conſumetur
in manu ejus. Deinde faciem ſuam 17
diſponet ad ingrediendum cum omnibus
regni ſui viribus, ut quiſquis
cum eo fuerit, proſperè agat: & filiam
mulierum tradet ei, ut evertat
eam; atque hæc non permanebit, nec
erit ipſius. Tum vertet faciem ſuam ad 18
inſulas, capietque multas, & comburet
principes improperii ipſorum, ſed
improperium ipſius recidet in ipſum.
Denique faciem ſuam vertet ad fortitudinem 19
terræ ſuæ; ſed infirmabitur, cadet,
& non invenietur. Et exurget ex 20
ejus radice planta regni ſuper apparatum
ejus, removebitque ambientem dignitatem
regiam, & iis diebus conteretur, &
neque faciebus (blanditiis) *neque bello*
ſtabit ſuper apparatum ejus. Deſpicietur, 21
& non tribuetur ei dignitas regia.
Sed veniet in proſperitatem, et regnum
lubricitatibus obtinebit: Et brachia 22
obruentis obruentur à conſpectu ejus et
conterentur, necnon dux fœderis. Et 23
ex commerciis ſuis dolum componet;
quæ quidem progredientur, ita ut prævaleat
illi gente cum pauca. Et in 24
proſperitatem provinciaſque multas veniet,
et præſtabit quod non præſtiterant
patres ejus neq; patres patrum ejus, diripiendo
et prædando: et diſtribuet illis pecuniam,
et cogitabit adverſùs Ægyptum
cogitationes ſuas uſque ad tempus.

דניאל : יא

exercitu *in* bellum ad *se miscebit* Austri rex & : magno exercitu *in* Austri regem *super suum* cor & ,*suam fortitudinem excitabit* Et
25 וְיָעֵר כֹּחוֹ וּלְבָבוֹ עַל־מֶלֶךְ הַנֶּגֶב בְּחַיִל גָּדוֹל וּמֶלֶךְ הַנֶּגֶב יִתְגָּרֶה לַמִּלְחָמָה בְּחַיִל־
ejus escæ buccellam comedentes Et .cogitationes eum *super* cogitabunt quia , stabit non & *: valde usque forti* & ,magno
26 גָּדוֹל וְעָצוּם עַד־מְאֹד וְלֹא יַעֲמֹד כִּי־יַחְשְׁבוּ עָלָיו מַחֲשָׁבוֹת׃ וְאֹכְלֵי פַתְבָּגוֹ
,*malignandum ad eorum* cor regum .ipsorum duorũ Et .multi interfecti cadent & ; inundabitur ejus exercitus & ,eum conterent
27 יִשְׁבְּרוּהוּ וְחֵילוֹ יִשְׁטוֹף וְנָפְלוּ חֲלָלִים רַבִּים׃ וּשְׁנֵיהֶם הַמְּלָכִים לְבָבָם לְמֵרָע
suam terram in revertetur Et .tempus certum ad finis adhuc quia,*prosperabitur* non & :loquentur mendacium una mensa *super* &
28 וְעַל־שֻׁלְחָן אֶחָד כָּזָב יְדַבֵּרוּ וְלֹא תִצְלָח כִּי־עוֹד קֵץ לַמּוֹעֵד׃ וְיָשֹׁב אַרְצוֹ
-veniet & ,revertetur *statutum* tempus Ad .suam terram ad revertetur & ,faciet & *: sanctitatis* pactum *super* ejus cor & ,*magna substantia in*
29 בִּרְכוּשׁ גָּדוֹל וּלְבָבוֹ עַל־בְּרִית קֹדֶשׁ וְעָשָׂה וְשָׁב לְאַרְצוֹ׃ לַמּוֹעֵד יָשׁוּב וּבָא
. irascetur & ,revertetur & ,*attereiur* & ,Chittim *Sim* eo cum venient Et .posterius sic & , prius sicut erit non & ; Austrum in
30 בַנֶּגֶב וְלֹא־תִהְיֶה כָרִאשֹׁנָה וְכָאַחֲרֹנָה׃ וּבָאוּ בוֹ צִיִּים כִּתִּים וְנִכְאָה וְשָׁב וְזָעַם
: stabunt eo ex brachia Et .*sanctitatis* pactum derelinquentes super intelliget & ,revertetur & ; faciet & ,*sanctitatis* pactum *super*
31 עַל־בְּרִית־קוֹדֶשׁ וְעָשָׂה וְשָׁב וְיָבֵן עַל־עֹזְבֵי בְּרִית קֹדֶשׁ׃ וּזְרֹעִים מִמֶּנּוּ יַעֲמֹדוּ
pacti prævaricatores Et .*obstupefacientem* abominationem *dabunt* & , juge removebunt & ,fortitudinis sanctuarium polluent &
32 וְחִלְּלוּ הַמִּקְדָּשׁ הַמָּעוֹז וְהֵסִירוּ הַתָּמִיד וְנָתְנוּ הַשִּׁקּוּץ מְשֹׁמֵם׃ וּמַרְשִׁיעֵי בְרִית
; multos faciet intelligere populi intelligentes Et .facient &,tenebunt suum Deum *scientum* populus & :blanditiis *in* faciet simulare
33 יַחֲנִיף בַּחֲלַקּוֹת וְעַם יֹדְעֵי אֱלֹהָיו יַחֲזִקוּ וְעָשׂוּ׃ וּמַשְׂכִּילֵי עָם יָבִינוּ לָרַבִּים
copulabuntur & ; parvo auxilio juvabuntur ,*ipsos corruere in* Et .diebus præda *in* & ,captivitate *in* ,flamma *in* & ,gladio *in* corruent &
34 וְנִכְשְׁלוּ בְּחֶרֶב וּבְלֶהָבָה בִּשְׁבִי וּבְבִזָּה יָמִים׃ וּבְהִכָּשְׁלָם יֵעָזְרוּ עֵזֶר מְעָט וְנִלְווּ
ad usque dealbificandũ ad & ,mundandũ ad & ,eis *in* conflandũ ad ,corruent intelligentibus de Et .*blanditiis in* multi eis *super*
35 עֲלֵיהֶם רַבִּים בַּחֲלַקְלַקּוֹת׃ וּמִן־הַמַּשְׂכִּילִים יִכָּשְׁלוּ לִצְרוֹף בָּהֶם וּלְבָרֵר וְלַלְבֵּן עַד־
omnẽ super se magnificabit & ,se elevabit & , rex suam voluntatẽ juxta faciet Et .tempus *statutum* ad adhuc quia ; finis tempus
36 עֵת קֵץ כִּי־עוֹד לַמּוֹעֵד׃ וְעָשָׂה כִרְצוֹנוֹ הַמֶּלֶךְ וְיִתְרוֹמֵם וְיִתְגַּדֵּל עַל־כָּל־
.est facta ,*est decisa* quia , iræ consummationẽ ad usque prosperabitur & ; mirabilia loquetur deorum Deum *super* & , deum
אֵל וְעַל אֵל אֵלִים יְדַבֵּר נִפְלָאוֹת וְהִצְלִיחַ עַד־כָּלָה זַעַם כִּי נֶחֱרָצָה נֶעֱשָׂתָה׃
universa *super* quia ; intelliget non Deum omnem *super* & ,mulierum *desiderium super* & ,intelliget non suorum patrum Deum *super* Et
37 וְעַל־אֱלֹהֵי אֲבֹתָיו לֹא יָבִין וְעַל־חֶמְדַּת נָשִׁים וְעַל־כָּל־אֱלוֹהַּ לֹא יָבִין כִּי עַל־כֹּל
,auro *in : glorificabit* ,ejus patres *eum* noverunt non quem deum & ; *glorificabit sua basi super* Mahuzim Deum Et .se magnificabit
38 יִתְגַּדָּל׃ וְלֶאֱלֹהַּ מָעֻזִּים עַל־כַּנּוֹ יְכַבֵּד וְלֶאֱלוֹהַּ אֲשֶׁר לֹא־יְדָעֻהוּ אֲבֹתָיו יְכַבֵּד בְּזָהָב
multiplicabit ,*agnoscet quem* ,alieno Deo cum Mahuzim munitionib⁹ faciet Et .desiderabilib⁹ *in* &,pretioso lapide *in* &,argento *in* &
39 וּבְכֶסֶף וּבְאֶבֶן יְקָרָה וּבַחֲמֻדוֹת׃ וְעָשָׂה לְמִבְצְרֵי מָעֻזִּים עִם־אֱלוֹהַּ נֵכָר אֲשֶׁר הִכִּיר יַרְבֶּה
,Austri rex eo cum se cornupetet finis tempore in Et .pretio *in* dividet *humum* & , multis in eos faciet dominari & ; gloriam
40 כָבוֹד וְהִמְשִׁילָם בָּרַבִּים וַאֲדָמָה יְחַלֵּק בִּמְחִיר׃ וּבְעֵת קֵץ יִתְנַגַּח עִמּוֹ מֶלֶךְ הַנֶּגֶב
.transibit & ,inundabit & ,terras *in* ingredietur & ; multis navibus *in* & ,equitibus *in* & ,*curru in* Aquilonis rex eum *super turbinabit* &
וְיִשְׂתָּעֵר עָלָיו מֶלֶךְ הַצָּפוֹן בְּרֶכֶב וּבְפָרָשִׁים וּבָאֳנִיּוֹת רַבּוֹת וּבָא בַאֲרָצוֹת וְשָׁטַף וְעָבָר׃
.Hammon filiorum *principium* & ,Moab & , Edom ; ejus manu de evadent istæ & ; corruent multæ & ,*decoris* terram *in* intrabit Et
41 וּבָא בְּאֶרֶץ הַצְּבִי וְרַבּוֹת יִכָּשֵׁלוּ וְאֵלֶּה יִמָּלְטוּ מִיָּדוֹ אֱדוֹם וּמוֹאָב וְרֵאשִׁית בְּנֵי עַמּוֹן׃

Versio VULG. LAT.

Et concitabitur fortitudo ejus, & cor ejus adversùm regem 25
Austri in exercitu magno : & rex Austri provocabitur ad
bellum multis auxiliis, & fortibus nimis : & non stabunt,
quia inibunt adversùs eum consilia. Et comedentes panem 26
cum eo, conterent illum, exercitúsque ejus opprimetur:&
cadent interfecti plurimi. Duorum quoque regum cor erit 27
ut malefaciant, & ad mensam unam mendacium loquentur,
& non proficient : quia adhuc finis in aliud tempus.
Et revertetur in terram suam cum opibus multis : & cor 28
ejus adversùm testamentum sanctum, & faciet, & revertetur
in terram suam. Statuto tempore revertetur, & veniet 29
ad Austrum : & non erit priori simile novissimum. Et 30
venient super eum Trieres & Romani : & percutietur &
revertetur,& indignabitur contra testamentum Sanctuarii,
& faciet : revertetúrque & cogitabit adversùm eos,qui dereliquerunt
testamentum Sanctuarii. Et brachia ex eo stabunt, 31
& polluent Sanctuarium fortitudinis, & auferent juge
sacrificium : & dabunt abominationem in desolationem.
Et impii in testamentum simulabunt fraudulenter : 32
populus autem sciens Deum suum, obtinebit, & faciet. Et 33
docti in populo docebunt plurimos : & ruent in gladio,&
in flamma, & in captivitate, & in rapina dierum. Cùmque 34
corruerint, sublevabuntur auxilio parvulo : & applicabuntur
eis plurimi fraudulenter. Et de eruditis ruent, ut 35
conflentur, & eligantur, & dealbentur usque ad tempus
præfinitum : quia adhuc aliud tempus erit. Et faciet juxta 36
voluntatem suam rex, & elevabitur, & magnificabitur adversùs
omnem deum : & adversùs Deum deorum loquetur
magnifica, & dirigetur, donec compleatur iracundia : perpetrata
quippe est definitio. Et Deum patrum suorum non 37
reputabit:& erit in concupiscentiis fœminarum,nec quemquam
deorum curabit : quia adversùm universa consurget.
Deum autem Maozim in loco suo venerabitur : & deum, 38
quem ignoraverunt patres ejus, colet auro, & argento, &
lapide pretioso, rebúsque pretiosis. Et faciet ut muniat 39
Maozim cum deo alieno, quem cognovit, & multiplicabit
gloriam, & dabit eis potestatem in multis, & terram dividet
gratuitó. Et in tempore præfinito præliabitur adversùs 40
eum rex Austri, & quasi tempestas veniet contra illum
rex Aquilonis, in curribus,& in equitibus, & in classe
magna, & ingredietur terras, et conteret, et pertransiet.
Et introibit in terram gloriosam, & multæ corruent:hæ 41
autem solæ salvabuntur de manu ejus, Edom, & Moab, &
principium filiorum Ammon.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

25 ܀ ܘܥܕܡܐ ܠܙܒܢܐ܂ ܢܬܬܥܝܪ ܚܝܠܗ ܘܠܒܗ ܥܠ ܡܠܟܐ ܕܬܝܡܢܐ܂ ܘܡܠܟܐ ܕܬܝܡܢܐ܂ *
ܢܬܬܓܪܐ ܠܩܪܒܐ ܒܚܝܠܐ ܪܒܐ܂ ܘܢܚܣܢ ܛܒ܂ ܘܠܐ ܢܩܘܡ܂ ܡܛܠ ܕܢܬܚܫܒܘܢ
26 ܥܠܘܗܝ ܡܚܫܒܬܐ܂ * ܘܐܟܠܝ ܦܬܓܡܗ ܢܬܒܪܘܢܗ܂ ܘܚܝܠܗ ܢܬܒܕܪ܂ ܘܢܦܠܘܢ
27 ܩܛܝܠܐ ܣܓܝܐܐ܂ * ܘܬܪܝܗܘܢ ܡܠܟܐ ܗܠܝܢ܂ ܠܒܗܘܢ ܠܒܝܫܬܐ܂ ܘܥܠ ܚܕ ܦܬܘܪܐ܂
28 ܢܡܠܠܘܢ ܕܓܠܘܬܐ܂ ܘܠܐ ܢܨܠܚܘܢ܂ ܡܛܠ ܕܫܠܡ ܩܨܐ ܠܙܒܢܗ܂ * ܘܢܗܦܘܟ ܠܐܪܥܗ ܒܚܝܠܐ
29 ܣܓܝܐܐ܂ ܘܠܒܗ ܥܠ ܩܝܡܐ ܩܕܝܫܐ܂ * ܘܢܥܒܕ ܐܝܟ ܕܒܩܕܡܝܬܐ܂ ܐܦ ܒܐܚܪܝܬܐ܂
30 ܀ ܘܢܐܬܘܢ ܥܠܘܗܝ ܡܫܪܝܬܐ ܕܟܬܝܐ܂ ܘܢܬܒܪܘܢܗ܂ ܘܢܗܦܘܟ ܘܢܪܓܙ ܥܠ ܩܝܡܐ ܩܕܝܫܐ܂ *
31 ܘܢܬܒܝܢ ܥܠ ܐܝܠܝܢ ܕܫܒܩܘ ܩܝܡܐ ܩܕܝܫܐ܂ * ܘܐܚܝܕܝܗܘܢ ܡܢܗܘܢ ܢܩܘܡܘܢ܂ ܘܢܛܢܦܘܢ
32 ܡܩܕܫܐ ܚܣܝܢܐ܂ ܘܢܥܒܪܘܢ ܕܒܚܐ܂ ܘܢܬܠܘܢ ܛܢܦܘܬܐ ܠܚܒܠܐ܂ * ܘܠܐܝܠܝܢ ܕܡܥܠܝܢ ܥܠ
33 ܩܝܡܐ ܢܚܝܒ ܐܢܘܢ܂ ܘܥܡܐ ܕܝܕܥܝܢ ܕܚܠܬܐ ܢܬܚܝܠܘܢ܂ * ܘܙܕܝܩܐ ܕܒܥܡܐ ܢܠܦܘܢ
ܠܣܓܝܐܐ܂ ܘܢܬܬܩܠܘܢ ܒܚܪܒܐ܂ ܘܒܢܘܪܐ܂ ܘܒܫܒܝܬܐ ܘܒܒܙܬܐ ܝܘܡܬܐ ܐܠܦ܂
34 ܘܡܐ ܕܐܬܬܩܠܘ܂ ܢܬܥܕܪܘܢ ܒܥܘܕܪܢܐ ܩܠܝܠܐ܂ * ܘܢܬܢܩܦܘܢ ܠܗܘܢ *
35 ܣܓܝܐܐ ܒܢܟܝܠܘܬܐ܂ * ܘܡܢ ܚܟܝܡܐ ܢܬܬܩܠܘܢ܂ ܕܢܒܚܪܘܢ ܒܗܘܢ܂
36 ܘܢܣܬܟܠܘܢ ܥܕܡܐ ܠܙܒܢܐ ܕܩܨܐ܂ ܡܛܠ ܕܐܝܬ ܬܘܒ ܙܒܢܐ ܣܓܝܐܐ܂ * ܘܢܥܒܕ ܡܠܟܐ ܐܝܟ
ܨܒܝܢܗ܂ ܘܢܬܪܘܪܒ ܥܠ ܟܠ ܐܠܗܝܢ܂ ܘܥܠ ܐܠܗ ܐܠܗܝܢ܂ ܢܡܠܠ ܪܘܪܒܢ܂ ܘܢܨܠܚ܂
37 ܥܕܡܐ ܕܢܫܠܡ ܪܘܓܙܐ܂ ܡܛܠ ܕܦܣܝܩܬܐ ܐܬܥܒܕܬ܂ * ܘܥܠ ܐܠܗܐ ܕܐܒܗܘܗܝ ܠܐ ܢܬܒܝܢ܂
38 ܘܥܠ ܪܓܬ ܢܫܐ܂ ܘܥܠ ܟܠ ܐܠܗ ܠܐ ܢܬܒܝܢ܂ ܐܠܐ ܥܠ ܟܠ ܢܬܪܘܪܒ܂ * ܘܠܐܠܗܐ
ܥܫܝܢܐ ܥܠ ܡܘܬܒܗ ܢܫܒܚ܂ ܘܠܐܠܗܐ ܕܠܐ ܝܕܥܘ ܐܒܗܘܗܝ܂ ܢܫܒܚ ܒܕܗܒܐ ܘܒܣܐܡܐ܂
39 ܘܒܟܐܦܐ ܝܩܝܪܬܐ ܘܒܪܓܝܓܬܐ܂ * ܘܢܥܒܪ ܠܟܪܟܐ ܥܫܝܢܐ ܥܠ ܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ܂ ܕܢܚܙܐ
40 ܘܢܫܠܛ ܒܣܓܝܐܐ܂ ܘܐܪܥܐ ܢܦܠܓ ܒܡܕܡ܂ * ܘܒܚܪܬܐ ܕܙܒܢܐ ܢܬܟܬܫ ܥܡܗ ܡܠܟܐ
ܕܬܝܡܢܐ܂ ܘܢܬܥܝܪ ܥܠܘܗܝ ܡܠܟܐ ܕܓܪܒܝܐ ܒܡܪܟܒܬܐ ܘܒܦܪܫܐ ܘܒܐܠܦܐ ܣܓܝܐܐ܂
41 ܘܢܥܘܠ ܠܐܪܥܐ܂ * ܘܢܐܬܐ ܠܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ܂ ܘܣܓܝܐܐ ܢܬܩܛܠܘܢ܂ ܘܗܠܝܢ ܢܦܠܛܘܢ
ܡܢ ܐܝܕܗ܂ ܐܕܘܡ ܘܡܘܐܒ܂ ܘܫܪܟܐ ܕܒܢܝ ܥܡܘܢ܂

Et usque ad tempus aliquod excitabunt se vires 25
& animus ejus contra regem Austri. Rex
quoque Austri provocabitur ad bellum ingenti
cum exercitu ; & quidem fortis erit admodum,
sed non subsistet, quia technas machinabuntur
in eum ; Et comedentes pulmentum 26
ejus, frangent eum ; & exercitus ejus
dissipabitur , cadéntque confossi multi.
Amborum regum istorum animus ad malum 27
intentus erit, & super eadem mensa fraudem
loquentur:sed non prosperabuntur,quia
perducto ad terminum suum tempore, Revertetur 28
in terram suam copioso cum exercitu
: & animus ejus *vertetur* contra fœdus
sanctum : Faciétque ut initio, sic etiam postremó. 29
Venient autem contra eum acies 30
Cithæorum, & conterent eum : rursúsque
indignabitur contra fœdus sanctum, & rationem
habebit eorum qui deseruerint fœdus
sanctum. Et fortissimi eorum ex ipsis exurgentes, 31
polluent Sanctuarium munitum,amovebunt
sacrificia , ponéntque abominationem
ad corruptelam. Porrò eos qui perfidè 32
agent contra fœdus,condemnabit ; & populus
qui religionem agnoscet, confirmabitur
: Et justi inter populum,docebunt multos 33
; & impingentur gladio, igni, captivitati,
atque direptioni , diebus mille. Postquàm 34
autem corruerint, adjuvabuntur adjumento
parvo, adjungent enim se illis multi
cum simulatione. Quin etiam è sapientibus 35
corruent, ut per eos probent & intelligant
usque ad tempus præfinitum : quoniam adhuc
superest longum spatium tempori illi.
Rex enim faciet pro sua libidine, efferétque 36
se præ omnibus diis,& contra Deum deorum
grandia loquetur : & quidem prosperabitur,
donec consummetur indignatio ; quandoquidem
sententia lata est. Deum etiam patrum 37
suorum non curabit, concupiscentiam mulierum
aut ullum deum nihili æstimabit, sed super
omnes efferet sese. Deum autem fortem 38
super sedem suam glorificabit,Deum patribus
suis ignotum glorificabit auro, argento,
gemmis optimis, & *rebus quibusque* desideratissimis.
Transibitque ad urbes munitas 39
contra deos alienos, ut videat & dominetur
multis : & terram pretio distribuet.
Tempore autem postremo dimicabit in eum 40
rex Austri,& concitabitur in eum rex Aquilonis
cum bijugis,& equitib⁹,navibúsq; multis:
terrã permeabit, Perveniétque ad terrã Israelis, 41
& multi interficientur:hi autẽ evadent
man⁹ ej⁹,Edom,Moab,& reliqui Ammonitæ,

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

25 Καὶ ἐξεγερθήσεται ἡ ἰσχὺς αὐτοῦ, ϗ ἡ καρδία αὐτοῦ (β) ἐπὶ βασιλέα τοῦ Νότου ἐν δυνάμει μεγάλῃ. ϗ ὁ βασιλεὺς
τοῦ Νότου συνάψει πόλεμον (γ) ἐν δυνάμει μεγάλῃ ϗ ἰσχυρᾷ σφόδρα, ϗ οὐ στήσονται, ὅτι λογιοῦνται ἐπ' αὐτὸν
26 τὸν λογισμοὺς, Καὶ φάγονται τὰ δέοντα αὐτοῦ, ϗ συντρίψουσιν (δ) αὐτὸν, ϗ δυνάμεις κατακλύσει, ϗ πεσοῦνται
27 τραυματίαι πολλοί. Καὶ ἀμφότεροι οἱ βασιλεῖς, αἱ καρδίαι αὐτῶν εἰς πονηρίαν, ϗ ἐπὶ τραπέζῃ μιᾷ ψευδῆ λαλήσουσι,
28 ϗ οὐ κατευθυνεῖ, ὅτι ἔτι πέρας εἰς καιρόν. Καὶ ἐπιστρέψει εἰς τὴν γῆν αὐτοῦ ἐν ὑπάρξει πολλῇ, ϗ ἡ καρδία
29 αὐτοῦ ἐπὶ διαθήκην ἁγίαν, ϗ ποιήσει, ϗ ἐπιστρέψει εἰς τὴν γῆν αὐτοῦ. Εἰς τὸν καιρὸν ἐπιστρέψει, ϗ ἥξει ἐν
30 τῷ Νότῳ, ϗ οὐκ ἔσται ὡς ἡ πρώτη ϗ (ε) ἡ ἐσχάτη. Καὶ εἰσελεύσονται (ζ) ἐν αὐτῷ οἱ ἐκπορευόμενοι Κίτιοι, ϗ ταπεινωθήσεται,
ϗ ἐπιστρέψει, ϗ θυμωθήσεται ἐπὶ διαθήκην ἁγίαν· ϗ ποιήσει, ϗ ἐπιστρέψει, ϗ συνήσει ἐπὶ
31 τοὺς καταλιπόντας διαθήκην ἁγίαν. Καὶ (η) σπέρματα ἐξ αὐτοῦ ἀναστήσονται, ϗ βεβηλώσουσι τὸ ἁγίασμα τῆς
32 (θ) δυναστείας, ϗ μεταστήσουσι τὸν (ι) ἐνδελεχισμὸν, ϗ δώσουσι βδέλυγμα (κ) ἠφανισμένον, Καὶ οἱ ἀνομοῦντες
33 διαθήκην ἐπάξουσιν ἐν ὀλισθήμασι. ϗ λαὸς (λ) γινώσκοντες θεὸν αὐτοῦ κατισχύσουσι, ϗ ποιήσουσι, Καὶ
οἱ συνετοὶ (μ) τοῦ λαοῦ συνήσουσιν εἰς πολλὰ, ϗ ἀσθενήσουσιν ἐν ῥομφαίᾳ, ϗ ἐν φλογὶ, ϗ ἐν αἰχμαλωσίᾳ, καὶ
34 ἐν διαρπαγῇ ἡμερῶν. Καὶ ἐν τῷ ἀσθενῆσαι αὐτοὺς, βοηθήσονται βοήθειαν μικρὰν, ϗ προστεθήσονται (ν) πρὸς
35 αὐτοὺς πολλοὶ ἐν ὀλισθήμασι. Καὶ ἀπὸ τῶν συνιέντων ἀσθενήσουσι, τοῦ πυρῶσαι αὐτοὺς, (ξ) ϗ τοῦ ἐκλέξασθαι,
36 ϗ τοῦ ἀποκαλυφθῆναι ἕως καιροῦ πέρας, ὅτι ἔτι εἰς καιρόν. Καὶ ποιήσει κατὰ τὸ θέλημα αὐτοῦ. (ο) ϗ ὁ βασιλεὺς
ὑψωθήσεται ϗ μεγαλυνθήσεται (π) ἐπὶ πάντα θεὸν, ϗ λαλήσει ὑπέρογκα, ϗ κατευθυνεῖ μέχρις οὗ συντελεσθῇ
37 ἡ ὀργή, εἰς γὰρ συντέλειαν γίνεται. Καὶ ἐπὶ πάντας θεοὺς τῶν πατέρων (ρ) αὐτοῦ οὐ συνήσει, ϗ ἐπιθυμίᾳ
38 γυναικῶν, ϗ ἐπὶ πᾶν θεὸν οὐ συνήσει, ὅτι ἐπὶ πάντας μεγαλυνθήσεται. Καὶ θεὸν (σ) μαωζεὶμ ἐπὶ τόπου
αὐτοῦ (τ) δοξάσει, ϗ θεὸν ὃν οὐκ ἔγνωσαν οἱ πατέρες αὐτοῦ, δοξάσει ἐν (") χρυσῷ καὶ ἀργύρῳ καὶ λίθῳ τιμίῳ, ϗ
39 ἐν ἐπιθυμήμασι. Καὶ ποιήσει τοῖς ὀχυρώμασι τῶν καταφυγῶν μετὰ θεοῦ ἀλλοτρίου, ϗ πληθυνεῖ δόξαν, καὶ
40 ὑποτάξει αὐτοῖς πολλοὺς, ϗ γῆν διελεῖ ἐν δώροις. Καὶ ἐν (υ) καιροῦ πέρατι συγκερατισθήσεται μετὰ τοῦ βασιλέως
τοῦ Νότου· ϗ συναχθήσεται (φ) ἐπ' αὐτὸν βασιλεὺς τοῦ Βορρᾶ ἐν ἅρμασι ϗ ἐν ἱππεῦσι ϗ ἐν ναυσὶ πολλαῖς,
41 ϗ (χ) εἰσελεύσονται εἰς τὴν γῆν, ϗ συντρίψει, ϗ παρελεύσεται, Καὶ εἰσελεύσεται εἰς τὴν γῆν τοῦ
Σαβαεὶμ, ϗ πολλοὶ ἀσθενήσουσι. καὶ οὗτοι διασωθήσονται ἐκ χειρὸς αὐτοῦ, Ἐδὼμ, καὶ Μωὰβ, καὶ ἀρχὴ
υἱῶν Ἀμμών.

Et excitabitur fortitudo ejus, & cor ejus ſuper regem Auſtri in virtute magna. Et rex Auſtri conteret prælium in virtute magna, & forti nimis; & 25
non ſtabunt: quia cogitabunt ſuper eum cogitationes: Et comedent neceſſaria ejus, & conterent eum: & virtutes (n) inundabit; & cadent interfecti multi. Et utrique reges, corda eorum ad malitiam: & ad menſam unam mendacia loquentur: & non proficiet; quia adhuc finis in tempus. Et revertetur in terram ſuam in ſubſtantia multa: & cor ejus ſuper 26 27 28
teſtamentum ſanctum: & faciet, & revertetur in terram ſuam. Ad tempus revertetur, & veniet ad Auſtrum: & non erit (o) ſicut prima, etiam noviſſima. Et ingredientur ad illum egredientes Citii: & humiliabitur, & revertetur, & indignabitur ſuper teſtamentum ſanctum. Et faciet, ac revertetur, & intelliget ſuper eos, qui dereliquerunt teſtamentum 29 30
ſanctum. Et (p) ſemina ex eo conſurgent: & polluent ſanctificationem fortitudinis: & transferent juge ſacrificium: & dabunt abominationem (q) deſolatam: Et qui inique agunt, teſtamentum inducent in lubricitatibus. Et populus ſcientes Deum ſuum obtinebunt, & facient: Et intelligentes de populo intelligent in multa: & infirmabuntur in gladio, & in flamma, & in captivitate, & in rapina dierum. Cúmque infirmati fuerint; adjuvabuntur adjumento parvulo: & applicabuntur eis multi in lubricitatibus. Et de intelligentibus infirmabuntur ad conflandum eos, & seligendum, & (r) revelandum uſque ad temporis terminum: quia adhuc in 31 32 33 34 35
tempus. Et faciet juxta voluntatem ſuam: Et rex elevabitur, & magnificabitur adverſùs omnem (ſ) deum: & loquetur ingentia: & dirigetur; donec compleatur ira: in (t) conſummationem enim fit. Et ſuper omnes deos patrum ſuorum non intelliget: & (u) concupiſcentia fœminarum: & ſuper omnem deum non intelliget, quia ſuper omnem magnificabitur. Et Deum (x) Maozim in loco ſuo glorificabit: & Deum, quem ignoraverunt patres ejus, glorificabit in auro, & argento, & lapide pretioſo, & in concupiſcentiis. Et faciet munitionibus (y) confugiorum cum deo alieno: & multiplicabit gloriam: & ſubjiciet ipſis multos: & terram dividet in donis. Et in temporis termino cornucertabit cum rege Auſtri: 36 37 38 39 40
et congregabitur ſuper eum rex Aquilonis in curribus, et equitibus, et navibus multis: et (z) ingredientur in terram. Et (ω) conteret, et tranſibit,
Et introibit in terram (aa) Sabaim: et multi infirmabuntur. Et hi ſalvabantur de manu ejus, Edom, et Moab, et principium filiorum Ammon. 41

MS.A. (β) * ϗ βασιλέα (γ) ϗ ἐν (δ) αὐτοῦ, (ε) ὡς ἡ (ζ) οἱ ἐν αὐτῷ ϗ οἱ (η) βραχίονες ϗ σπέρματα (θ) δυνάμεως, (ι) ἐνδελεχισμὸν, (κ) ἠφανισμένον, Καὶ λαοὶ ἀνομοῦντες διαθήκην ἐξάξουσιν (λ) γινώσκων (μ) λαοῦ μου (ν) ἐπ' αὐτοὺς (ξ) τοῦ ἐκλέξασθαι, (ο) ϗ ὑψωθήσεται (π) ὁ βασιλεὺς ἐπὶ πάντα θεὸν, ϗ ἐπὶ τὸν θεὸν τῶν θεῶν, ϗ λαλήσει (ρ) αὐτοῦ συνήσει, ϗ ἐπιθυμίαν γυναικῶν, ϗ ἐπὶ πάντα θεὸν (σ) μαωζεὶ (τ) οὐ δοξάσει, (") χρυσίῳ (υ) τῷ καιρῷ (φ) μετ' αὐτοῦ, (χ) εἰσελεύσεται

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

25 وينهض قوته وقلبه على ملك الجنوب بقوة عظيمة * وملك الجنوب يجمع حربا * وبجيش
26 عظيم وقوة عزيزة * ولا يقفون * لأن يفكرون عليه أفكارا * ويأكلون واجباته * ويكسروه *
27 ويغرق جيشه * ويسقط جرحا كثيرون * والملوك معا * وقلبهم على الشر * وعلى مائدة واحدة
28 يتكلمون بالكذب * ولا يستقيم * لأن الانتهاء إلى زمان أيضا * ويرجع إلى أرضه بمال كثير *
29 وقلبه على عهد مقدس * ويصنع * ويعود إلى أرضه إلى الزمان * ويعود ويأتي في الجنوب * وليس
30 يكون مثل الأولى ولا مثل الأخير * ويدخلون الذين فيه والخارجون الكتاييون * ويذل *
ويرتد فيغتاص على العهد الطاهر * ويصنع ويعود ويفطن في الذين تركوا العهد الطاهر *
31 والأذرعة والذرية يقومون منه * وينجسون مقدس الاقتدار * ويزيلون الدوام * ويعطون رذالة
32 فاسدة * ويأثمون في العهد * ويجلبون بالزلل * والشعب العارف بإلهه يقوون ويصنعون *
33 34 وفهماء الشعب يفهمون كثيرا * ويضعفون بالسيف وبالحريق والسبي وبالنهب أياما * وعند
35 ما يضعفون يعانون معونة صغيرة * ويزيدون عليهم كثيرون بالزلل * ويضعفون * ليحرقوهم
36 ويختاروهم * ولينكشفوا إلى الزمان * لأن الانتهاء أيضا إلى زمان * ويصنع كإرادته * والملك
يرتفع * ويتعظم على كل إله وعلى إله الآلهة * ويتكلم بالكبائر * ويستقيم إلى أن تنقضي السخطة *
37 لأنها تصير إلى نهاية * وعلى جميع آلهة آبائه لا يفهم * على شهوة النساء وعلى كل إله لا يفهم *
38 لأنه يتعظم على الكل * ويمجد إلهه عزيزا على موضعه * ويمجد إلها لم تعرفه آباؤه * بذهب
39 وفضة * وحجر مكرم * وبشهوات * ويصنع لحصون الملتجئين بإله غريب * لكي يعرف ويكثر
40 مجدا * ويخضع لهم كثيرين * ويقسم الأرض بالهدايا * وفي الزمان يتناطح بقرنه مع ملك
الجنوب * ويجمع عليه ملك الجربياء بمركبات وفرسان وسفن كثيرة * ويدخل إلى الأرض
41 ويكسر * ويبلغ ويدخل إلى أرض صابيين * وكثيرون يضعفون * وهؤلاء يخلصون من يده
أدوم وموأب وبدو بني عمون *

Et elevabitur fortitudo ejus & animus ejus contra regē Auſtri ſummo cū robore. Rex quoq; Auſtri bellū coget magno cum exercitu & virtute potenti; ſed non reſiſtent: nam cogitabunt in eum cogitationes, 25
Et comedent neceſſaria ipſius, & frangent eum, & obruet exercitum ejus, cadentq; vulnerati multi, 26
Et reges pariter. Et cor eorum ad malum erit, & ſuper eadem menſa loquentur mendacium: at non proſperabitur, quia terminus adhuc eſt ad tempus. 27
Itaq; redibit in terram ſuam cum pecunia multa, animo ad ſanctum fœdus propenſo. 28
Cúmq; fecerit, & reverſus fuerit in terram ſuam tempore præfixo; iterum veniet ad Auſtrum: ſed non erit ut primâ vice, neq; ut poſtremâ. 29
Nam ingredientibus qui ſunt in eo, & externis Cethæis, deprimetur: & averſus indignabitur contra fœdus illud ſanctum: cúmq; fecerit, revertetur & conſiderabit eos qui dereliquerunt fœdus ſanctum. 30
Et brachia atque progenies exurgent ex eo, & prophanabunt Sanctuarium potentiæ, & amovebunt juge ſacrificium, collocabuntq; abominationem pernicioſam, 31
Iniquè agent in fœdus, & inducent lubricitates: ſed populus qui Deum ſuum novit, confortabuntur & facient; 32
Et prudentes populi multùm intelligent: & infirmabuntur gladio, incendio, captivitate, & direptione, diebus aliquot. 33
Cúmq; infirmati fuerint, juvabuntur auxilio parvo: & aggravabunt eos multi lubricitatibus, 34
Et infirmabuntur: ut comburant eos, & ſeligant eos, et ut declarentur tempore ſtatuto: nam terminus adhuc eſt ad tempus aliud. 35
Et faciet pro voluntate ſua, & elevabit ſe rex iſte, magnificabitque ſe ſuper omnem deum & ſuper Deum deorum, & grandia loquetur, atque proſperabitur donec ceſſet indignatio; nam perventura eſt ad terminum uſque. 36
Nec ad omnes quidem patrum ſuorum deos attendet; ad deſiderium fœminarum, aut ad ullum deum non attendet: quia extollet ſe ſuper omnes: 37
Honorabitque Deum ſuum, fortis in loco ſuo: honorabit inquam, Deum quem non cognoverunt patres ejus, auro, argento, lapide pretioſo, & rebus exquiſitis: 38
Et afficiet arces confugientium ad deum alienum; ut notior fiat, & majorem ſibi gloriam acquirat: & ſubjiciet eis multos, dividetque terram in munera: 39
Et proceſſu temporis impetet cornu ſuo regem Auſtri, & congregabitur adverſùs eum rex Aquilonis cum curribus, & equitibus, navibuſque multis: & invadet terram, contereṫque: 40
Et perveniet, et ingredietur in terram Sabin, et multi infirmabuntur: at hi manum ejus effugient, Edom, et Moab, et principium filiorum Ammon. 41

,argenti & auri thesauris *in* dominabitur Et .evasionem in erit non Ægypti terra & ; terras in suam manum mittet Et
42 וַיִּשְׁלַח יָדוֹ בָּאֲרָצוֹת וְאֶרֶץ מִצְרַיִם לֹא תִהְיֶה לִפְלֵיטָה׃ וּמָשַׁל בְּמִכְמַנֵּי הַזָּהָב וְהַכֶּסֶף
43 :Aquilone ab & ,Oriente ab eum terrebunt rumores Et .ejus gressibus in Chusim & ,Lubim & : Ægypti *desiderabilibus* omnibus *in* &
וּבְכֹל חֲמֻדוֹת מִצְרָיִם וְלֻבִים וְכֻשִׁים בְּמִצְעָדָיו׃ וּשְׁמֻעוֹת יְבַהֲלֻהוּ מִמִּזְרָח וּמִצָּפוֹן
44 monte in ,maria inter sui palatii *tentoria* plantabit Et .multos interficiendum *ad* &,perdendum ad magna ira *in* egredietur &
וְיָצָא בְּחֵמָא גְדֹלָה לְהַשְׁמִיד וּלְהַחֲרִים רַבִּים׃ וְיִטַּע אָהֳלֵי אַפַּדְנוֹ בֵּין יַמִּים לְהַר
45 .ei adjutor non & ,ejus summitatem ad usque veniet & ; sanctitatis *decoris*
צְבִי־קֹדֶשׁ וּבָא עַד־קִצּוֹ וְאֵין עוֹזֵר לוֹ׃

CAP. XII. יב

est factum non quod ,angustiæ tempus erit & ,tui populi filiis *super* stans ,magnus princeps Michael stabit illo tempore in Et
1 וּבָעֵת הַהִיא יַעֲמֹד מִיכָאֵל הַשַּׂר הַגָּדוֹל הָעֹמֵד עַל־בְּנֵי עַמֶּךָ וְהָיְתָה עֵת צָרָה אֲשֶׁר לֹא־נִהְיְתָה
multi Et .libro in scriptus inventus omnis tuus populus evadet ipso tempore in & : hoc tempus ad usque *gentem existendo ab*
2 מִהְיוֹת גּוֹי עַד הָעֵת הַהִיא וּבָעֵת הַהִיא יִמָּלֵט עַמְּךָ כָּל־הַנִּמְצָא כָּתוּב בַּסֵּפֶר׃ וְרַבִּים
fulgebunt intelligentes Et .*seculi* cõtemptũ ad opprobria ad ii & ,*seculi vitas* ad ii ; expergiscẽtur pulveris *humi dormientibus* è
3 מִיְּשֵׁנֵי אַדְמַת־עָפָר יָקִיצוּ אֵלֶּה לְחַיֵּי עוֹלָם וְאֵלֶּה לַחֲרָפוֹת לְדִרְאוֹן עוֹלָם׃ וְהַמַּשְׂכִּלִים יַזְהִרוּ
, verba *obstrue* Daniel tu Et .*perpetuum* & ,seculum in stellæ sicut multos justificantes & ; *expansionis* splendor sicut
4 כְּזֹהַר הָרָקִיעַ וּמַצְדִּיקֵי הָרַבִּים כַּכּוֹכָבִים לְעוֹלָם וָעֶד׃ וְאַתָּה דָנִיֵּאל סְתֹם הַדְּבָרִים
ecce & , Daniel ego vidi Et .scientia multiplicabitur & ,multi discurrent : finis tempus ad usque librum signa &
5 וַחֲתֹם הַסֵּפֶר עַד־עֵת קֵץ יְשֹׁטְטוּ רַבִּים וְתִרְבֶּה הַדָּעַת׃ וְרָאִיתִי אֲנִי דָנִיֵּאל וְהִנֵּה
, lineis induto viro dixit Et .fluminis *labium* ad inde *unus* & ,fluminis *labium* ad hinc unus ; stantes alii duo
6 שְׁנַיִם אֲחֵרִים עֹמְדִים אֶחָד הֵנָּה לִשְׂפַת הַיְאֹר וְאֶחָד הֵנָּה לִשְׂפַת הַיְאֹר׃ וַיֹּאמֶר לָאִישׁ לְבוּשׁ הַבַּדִּים
desuper qui , lineis indutum virum audivi Et ?mirabilium finis quo Usque ; fluminis aquas *desuper* qui
7 אֲשֶׁר מִמַּעַל לְמֵימֵי הַיְאֹר עַד־מָתַי קֵץ הַפְּלָאוֹת׃ וָאֶשְׁמַע אֶת־הָאִישׁ לְבוּשׁ הַבַּדִּים אֲשֶׁר מִמַּעַל
,*statutum* tempus ad quia ; *seculi vivente in* juravit & ,cœlos ad suã sinistrã & ,suã dexterã elevavit & ,fluminis aquas
לְמֵימֵי הַיְאֹר וַיָּרֶם יְמִינוֹ וּשְׂמֹאלוֹ אֶל־הַשָּׁמַיִם וַיִּשָּׁבַע בְּחֵי הָעוֹלָם כִּי לְמוֹעֵד
ego Et .hæc universa consummabuntur,sanctitatis populi manus *dispergere consummare secundũ* & : dimidium & ,*statuta* tempora
8 מוֹעֲדִים וָחֵצִי וּכְכַלּוֹת נַפֵּץ יַד־עַם־קֹדֶשׁ תִּכְלֶינָה כָל־אֵלֶּה׃ וַאֲנִי
signata & ,*obstrusa* quia ; Daniel Vade , dixit Et ?horum novissimo quid,Domine , dixi & : intellexi non & , audivi
9 שָׁמַעְתִּי וְלֹא אָבִין וָאֹמְרָה אֲדֹנִי מָה אַחֲרִית אֵלֶּה׃ וַיֹּאמֶר לֵךְ דָּנִיֵּאל כִּי־סְתֻמִים וַחֲתֻמִים
intelligent non & , impii agent impiè &,multi se *conflabunt* &,dealbabuntur &,se Purificabunt .finis tempus ad usque verba
10 הַדְּבָרִים עַד־עֵת קֵץ׃ יִתְבָּרְרוּ וְיִתְלַבְּנוּ וְיִצָּרְפוּ רַבִּים וְהִרְשִׁיעוּ רְשָׁעִים וְלֹא יָבִינוּ
,mille dies ; *obstupefacientem abominationẽ dandũ ad* & , juge fuerit remotũ tempore à Et .intelligent intelligentes & ; impii omnes
11 כָּל־רְשָׁעִים וְהַמַּשְׂכִּלִים יָבִינוּ׃ וּמֵעֵת הוּסַר הַתָּמִיד וְלָתֵת שִׁקּוּץ שֹׁמֵם יָמִים אֶלֶף
tu Et .quinque & triginta , trecentos , mille dies ad attinget & ,*expectantis Beatitudines* .nonaginta & , ducenti
12 מָאתַיִם וְתִשְׁעִים׃ אַשְׁרֵי הַמְחַכֶּה וְיַגִּיעַ לְיָמִים אֶלֶף שְׁלֹשׁ מֵאוֹת שְׁלֹשִׁים וַחֲמִשָּׁה׃ וְאַתָּה
13 .dierum fine in tua sorte in stabis & , requiesces & : finem ad vade
לֵךְ לַקֵּץ וְתָנוּחַ וְתַעֲמֹד לְגֹרָלְךָ לְקֵץ הַיָּמִין׃

Versio VULG. LAT.

Et mittet manum ſuam in terras : & terra Ægypti non effugiet. 42 Et dominabitur theſaurorum auri & argenti, & in 43 omnibus pretioſis Ægypti : per Libyam quoque & Æthiopiam tranſibit. Et fama turbabit eum ab Oriente & ab 44 Aquilone: & veniet in multitudine magna, ut conterat & interficiat plurimos. Et figet tabernaculum ſuum Apadno 45 inter maria, ſuper montem inclytum & ſanctum : & veniet uſque ad ſummitatem ejus, & nemo auxiliabitur ei.

CAP. XII.

IN tempore autem illo conſurget Michael princeps magnus, 1 qui ſtat pro filiis populi tui : & veniet tempus quale non fuit ab eo ex quo gentes eſſe cœperunt uſque ad tempus illud. Et in tempore illo ſalvabitur populus tuus, omnis qui inventus fuerit ſcriptus in libro. Et multi de his 2 qui dormiunt in terræ pulvere, evigilabunt ; alii in vitam æternam, & alii in opprobrium, ut videant ſemper. Qui 3 autem docti fuerint, fulgebunt quaſi ſplendor firmamenti : & qui ad juſtitiam erudiunt multos, quaſi ſtellæ in perpetuas æternitates. Tu autem, Daniel, claude ſermones, & ſi- 4 gna librum, uſque ad tempus ſtatutum : plurimi pertranſibunt & multiplex erit ſcientia. Et vidi ego Daniel, & ec- 5 ce quaſi duo alii ſtabant : unus hinc ſuper ripam fluminis, & alius indè ex altera ripa fluminis. Et dixi viro, qui erat 6 indutus lineis, qui ſtabat ſuper aquas fluminis ; Uſquequò finis horum mirabilium ? Et audivi virum, qui indutus 7 erat lineis, qui ſtabat ſuper aquas fluminis, cùm elevâſſet dexteram & ſiniſtram ſuam in cœlum, & jurâſſet per Viventem in æternum, quia in tempus, & tempora, & dimidium temporis. Et cùm completa fuerit diſperſio manûs populi ſancti, complebuntur univerſa hæc. Et ego audivi, 8 & non intellexi. Et dixi ; Domine mi, quid erit poſt hæc ? Et ait ; Vade, Daniel, quia clauſi ſunt, ſignatíque ſermo- 9 nes, uſque ad præfinitum tempus. Eligentur, & dealba- 10 buntur, & quaſi ignis probabuntur multi : & impiè agent impii, neque intelligent omnes impii, porrò docti intelligent. Et à tempore cùm ablatum fuerit juge ſacrificium, 11 & poſita fuerit abominatio in deſolationem, dies mille ducenti nonaginta. Beatus, qui expectat, & pervenit uſque 12 ad dies mille trecentos trigintaquinque. Tu autem vade ad 13 præfinitum : & requieſces, & ſtabis in ſorte tua in finem dierum.

Hucuſque Danielem in Hebræo volumine legimus. Quæ ſequuntur uſque ad finem libri, de Theodotionis editione tranſlata ſunt.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

42 * ܘܢܦܫܘܛ ܐܝܕܗ ܒܐܬܪܘܬܐ. ܘܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ ܠܐ ܬܫܬܘܙܒ ܡܢ ܐܝܕܘܗܝ. * ܘܢܫܠܛ ܒܣܝܡܐ
43 ܕܕܗܒܐ ܘܕܣܐܡܐ ܘܒܟܠ ܪܓܝܓ ܡܨܪܝܢ. ܘܠܘܒܝܐ ܘܟܘܫܝܐ ܢܗܘܘܢ ܒܡܥܕܪܢܘܬܗ.
44 * ܘܫܘܥܝܬܐ ܢܫܓܫܘܢܝܗ ܡܢ ܡܕܢܚܐ ܘܡܢ ܓܪܒܝܐ. ܘܢܦܘܩ ܒܚܡܬܐ ܪܒܬܐ ܠܡܚܪܒܘ،
45 ܘܠܡܘܒܕܘ ܠܣܓܝܐܐ. * ܘܢܩܒܥ ܡܫܟܢܗ ܒܐܬܪܐ ܦܩܥܐ. ܒܝܬ ܝܡܐ ܠܛܘܪܐ ܘܢܛܪ
ܡܩܕܫܗ. ܘܢܡܛܐ ܥܕܢܗ ܩܨܗ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗ ܡܥܕܪܢܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܒ *

1 * ܒܗ ܒܙܒܢܐ ܗܘ. ܢܩܘܡ ܡܝܟܐܝܠ ܡܠܐܟܐ ܪܒܐ ܕܩܐܡ ܥܠ ܒܢܝ ܥܡܟ. ܘܢܗܘܐ ܙܒܢܐ
ܕܐܘܠܨܢܐ. ܕܠܐ ܗܘܐ ܕܟܘܬܗ ܡܢ ܝܘܡܬ ܥܠܡܐ. ܘܒܗ ܒܙܒܢܐ ܗܘ. ܢܫܬܘܙܒ ܡܢ ܒܢܝ
2 ܥܡܟ. ܟܠ ܕܢܫܬܟܚ ܕܟܬܝܒ ܒܟܬܒܐ. * ܘܣܓܝܐܐ ܕܕܡܟܝܢ ܒܥܦܪܐ
ܢܬܬܥܝܪܘܢ. ܗܠܝܢ ܠܚܝܐ ܕܠܥܠܡ. ܘܗܠܝܢ ܠܐܒܕܢܐ ܘܠܚܣܕܐ ܕܚܒܪܝܗܘܢ. ܠܥܠܡ.
3 * ܘܥܒܕܝ ܛܒܬܐ ܘܡܣܬܟܠܢܐ. ܢܢܗܪܘܢ ܐܝܟ ܢܘܗܪܗ ܕܪܩܝܥܐ. ܘܐܝܠܝܢ ܕܡܙܕܩܝܢ
ܠܣܓܝܐܐ. ܢܗܘܘܢ ܢܗܪܝܢ ܘܩܝܡܝܢ ܐܝܟ ܟܘܟܒܐ ܕܫܡܝܐ. ܠܥܠܡ ܘܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ.
4 * ܘܐܢܬ ܕܝܢ ܕܢܝܐܝܠ. ܚܬܘܡ ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ ܘܫܬܘܩ. ܘܚܬܘܡ ܟܬܒܐ ܗܢܐ ܥܕܡܐ ܠܥܕܢ
5 ܩܨܐ. ܘܢܒܥܘܢ ܣܓܝܐܐ. ܘܬܣܓܐ ܝܕܥܬܐ. * ܘܚܙܝܬ ܐܢܐ ܕܢܝܐܝܠ. ܘܗܐ ܬܪܝܢ ܐܚܪܢܝܢ ܩܝܡܝܢ
6 ܚܕ ܠܗܢܐ ܣܦܪܗ ܕܢܗܪܐ. ܘܚܕ ܠܗܘ. * ܘܐܡܪܘ ܠܓܒܪܐ ܕܠܒܝܫ ܠܒܘܫܐ ܕܝܩܪܐ.
7 ܕܩܐܡ ܥܠ ܡܝܐ ܕܢܗܪܐ. ܠܐܡܬܝ ܩܨܐ ܗܢܐ. * ܘܫܡܥܬ ܠܓܒܪܐ ܕܠܒܝܫ
ܠܒܘܫܐ ܕܝܩܪܐ. ܕܩܐܡ ܥܠ ܡܝܐ ܕܢܗܪܐ. ܕܐܪܝܡ ܝܡܝܢܗ ܘܣܡܠܗ ܠܫܡܝܐ. ܘܝܡܐ
ܒܚܝ ܥܠܡܐ. ܕܠܙܒܢ ܙܒܢܝܢ ܘܦܠܓܘܬ ܙܒܢ. ܘܒܙܒܢ ܕܢܬܦܪܩܘܢ ܐܝܕܝܗ ܕܟܠܗ ܥܡܐ ܩܕܝܫܐ.
8 ܢܫܬܡܠܝܢ ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ. * ܘܐܢܐ ܕܢܝܐܝܠ ܫܡܥܬ. ܘܠܐ ܐܣܬܟܠܬ. ܘܐܡܪܬ. ܡܪܝ. ܡܢܐ ܒܬܪ
9 ܗܠܝܢ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܙܠ ܕܢܝܐܝܠ. ܡܛܠ ܕܟܣܝܢ ܐܢܘܢ ܘܚܬܝܡܝܢ ܦܬܓܡܐ ܥܕܡܐ ܠܥܕܢ ܩܨܐ.
10 * ܢܬܓܒܘܢ. ܘܢܬܚܘܪܘܢ ܘܢܬܒܚܪܘܢ ܣܓܝܐܐ. ܘܢܚܛܘܢ ܚܛܝܐ. ܘܠܐ ܢܣܬܟܠܘܢ ܟܠܗܘܢ
11 ܚܛܝܐ. ܥܒܕܝ ܛܒܬܐ ܕܝܢ ܢܣܬܟܠܘܢ. * ܘܡܢ ܙܒܢܐ. ܕܢܒܛܠ ܩܘܪܒܢܐ. ܢܬܬܣܝܡ ܛܢܦܘܬܐ
12 ܠܚܒܠܐ. ܝܘܡܬܐ ܐܠܦ ܘܡܐܬܝܢ ܘܬܫܥܝܢ. * ܘܛܘܒܘܗܝ ܠܡܢ ܕܢܣܟܐ ܘܢܡܛܐ
13 ܠܝܘܡܬܐ ܐܠܦ ܘܬܠܬܡܐܐ ܘܬܠܬܝܢ ܘܚܡܫܐ. * ܘܐܢܬ ܕܢܝܐܝܠ. ܙܠ ܠܩܨܐ ܢܘܚ.
ܘܬܩܘܡ ܠܥܕܢܟ. ܒܫܘܠܡ ܝܘܡܬܐ.

* ܫܠܡ ܕܢܝܐܝܠ *

Extendet quoq; manũ ſuam ad provincias, & 42 terra Ægypti non effugiet man⁹ ej⁹: Sed do- 43 minabitur theſauro auri & argenti, & pretioſis quibuſq; reb⁹ Ægypti : & Libyes Æthiopeſq; erunt in auxiliũ ipſius. Rumorib⁹ autẽ 44 urgentibus eum ab Oriente & ab Aquilone, prodibit magna cum ira ad occidendum & perdendum plurimos : Figétque tentorium 45 ſuum in loco plano, mare inter ac montem, & ſervabit Sanctuarium ejus: adveniente verò fine temporis ejus, nemo erit illi adjutor.

CAP. XII.

EOdem illo tempore exurget Michael an- 1 gelus maximus, præpoſitus popularibus tuis : erit autem tempus anguſtiæ, cui ſimile nunquam extitit à diebus ſeculorum : & eodem illo tempore ſervabitur è popularib⁹ tuis quiſquis inventus fuerit ſcriptus in libro. Et mul- 2 ti qui in pulvere dormiunt, expergiſcentur ; quidam ad vitam æternam, quidam verò ad interitum & opprobrium ſociorum ſuorum æternum. Agentes bona & prudentes ſplende- 3 bunt ſicut lumen firmamenti ; & qui juſtificant multos, fulgebunt ſtabuntque ceu ſtellæ quæ ſunt in cœlo, in ſeculum & in ſeculum ſeculorum. Tu quidem Daniel, impone finem 4 ſermonibus iſtis, & tace, & obſigna librum iſtum ad poſtremũ uſque tempus : perquirent multi, & augebitur ſcientia. Tum vidi ego 5 Daniel, & ecce duo alii ſtantes, unus ad hanc fluminis ripam, alter ad illam. Qui dixerunt 6 viro illi induto veſtibus glorioſiſſimis, qui ſtabat ſuper aquas fluminis ; Quando tandem erit hic finis ? Et audivi virum illum indutum 7 veſtibus magnificis, qui ſtabat ſuper aquas fluminis, ſublatâ cœlum verſùs dexterâ & ſiniſtrâ ſuâ, jurâſſe per Viventem æternùm ; quòd poſt tempus temporum & dimidium temporis, & quo tempore liberabuntur manus toti⁹ populi ſancti ; perficienda ſunt hæc omnia. Cúmq; ego Daniel audiens non intelligerem, 8 dixi ; Domine mi, quid poſt hæc *futurum eſt?* Qui dixit mihi ; Abi Daniel : nam occulti 9 ſunt & obſignati ſermones iſti uſque ad tempus præfinitum. Purgabuntur, dealbabuntur, 10 & probabuntur multi : peccatores peccabunt, & non intelligent omnes peccatores ; agentes autem bona intelligent. Et à quo tempore 11 ceſſabit ſacrificium, ponetur abominatio ad corruptelam diebus mille ducentis nonaginta. Beatus ille qui præſtolabitur ut perveni- 12 at ad dies mille trecentos trigintaquinque. Cæterùm tu Daniel, abi, ad finem uſque quieſce : tum reſurges tempore tuo, in fine dierum. 13

Abſolutus eſt Daniel.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

42 43 Καὶ ἐκτενεῖ τὴν (※)χεῖρα ἐπὶ τὴν γῆν, ϗ γῆ Αἰγύπτου οὐκ ἔσται εἰς σωτηρίαν. Καὶ κυριεύσει ἐν τοῖς ἀποκρύφοις τοῦ
(⸸) χρυσοῦ ϗ τοῦ ἀργύρου, ϗ ἐν πᾶσιν ἐπιθυμητοῖς Αἰγύπτου, ϗ Λιβύων, ϗ Αἰθιόπων, ἐν τοῖς ὀχυρώμασιν αὐ-
44 τῶν. Καὶ ἀκοαὶ ϗ σπουδαὶ ταράξουσιν αὐτὸν ἐξ ἀνατολῶν ϗ ἀπὸ Βοῤῥᾶ· ϗ ἥξει ἐν θυμῷ πολλῷ, τοῦ ἀφανίσαι
45 (ω)πολλούς. Καὶ πήξει τὴν σκηνὴν αὐτοῦ (α)ἐφαδανῷ, ἀναμέσον τῶν θαλασσῶν, εἰς ὄρος (β)σαβαεὶν ἅγιον, ἥξει
ἕως μέρους αὐτοῦ, ϗ οὐκ ἔστιν ὁ ῥυόμενος αὐτόν.

Et extendet manum ſuper terram: & terra Ægypti non erit in ſa- 42
lutem. Et dominabitur in reconditis auri, & argenti, & in omnibus 43
deſiderabilibus Ægypti, & Lybum, & Æthiopum, in munitionibus eorum.
Et rumores, & feſtinationes turbabunt eum ab Oriente, & ab Aquilone. Et 44
veniet in furore multo ad (bb) diſperdendum multos: Et figet tabernaculum 45
ſuum (cc) Ephadano in medio marium in monte (dd) Sabain ſancto: veniet
uſque ad partem ejus: & non eſt qui eruat eum.

MS. A. (※)χεῖρα αὐτοῦ (⸸) χρυσίου ϗ τοῦ ἀργυρείου, ϗ πᾶσιν (ω) ϗ τοῦ ἀναθεματίσαι πολλούς. (α) ἐν φαιδανῷ, (β) σαβεὶν ἅγιον, ϗ ἥξει ἕως μέρους ὄρους αὐτοῦ,

ΚΕΦ. ιβʹ.

1 Καὶ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ ἀναστήσεται Μιχαὴλ ὁ ἄρχων ὁ μέγας, ὁ ἑστηκὼς ἐπὶ τοὺς υἱοὺς τοῦ λαοῦ σου· ϗ ἔσται και-
ρὸς θλίψεως, θλίψις οἵα οὐ γέγονεν (α) ἀφ᾽ οὗ γεγένηται ἔθνος ἐν τῇ γῇ, ἕως τοῦ καιροῦ ἐκείνου. (β) ἐν τῷ
2 καιρῷ ἐκείνῳ σωθήσεται ὁ λαός σου πᾶς (γ) ὁ γεγραμμένος ἐν τῇ βίβλῳ. Καὶ πολλοὶ τῶν καθευδόντων ἐν
3 γῆς χώματι (δ) ἐξεγερθήσονται, οὗτοι εἰς ζωὴν αἰώνιον, ϗ οὗτοι εἰς ὀνειδισμὸν ϗ εἰς αἰσχύνην αἰώνιον. Καὶ
οἱ συνιέντες (ε) λάμψουσιν ὡς ἡ λαμπρότης τοῦ στερεώματος, ϗ ἀπὸ τῶν δικαίων τῶν πολλῶν ὡς οἱ ἀστέρες εἰς
4 τοὺς αἰῶνας, ϗ ἔτι. Καὶ σὺ Δανιὴλ ἔμφραξον (ζ) τοὺς λόγους, ϗ σφράγισον τὸ βιβλίον ἕως καιροῦ συντελείας,
5 ἕως διδαχθῶσι πολλοὶ ϗ πληθυνθῇ ἡ γνῶσις. Καὶ εἶδον ἐγὼ Δανιήλ, ϗ ἰδοὺ δύο ἕτεροι εἱστήκεισαν, εἷς ἐντεῦ-
6 θεν τοῦ χείλους τοῦ ποταμοῦ, ϗ εἷς ἐντεῦθεν τοῦ χείλους τοῦ ποταμοῦ. Καὶ (η) εἶπε τῷ ἀνδρὶ τῷ ἐνδεδυμένῳ τὰ
7 βαδδίν, ὃς ἦν ἐπάνω τοῦ ὕδατος τοῦ ποταμοῦ, Ἕως πότε τὸ πέρας ὧν εἴρηκας τῶν θαυμασίων· Καὶ ἤκουσα
τοῦ ἀνδρὸς τοῦ ἐνδεδυμένου τὰ βαδδίν, ὃς ἦν ἐπάνω τοῦ ὕδατος τοῦ ποταμοῦ· ϗ ὕψωσε τὴν δεξιὰν αὐτοῦ ϗ
τὴν ἀριστερὰν αὐτοῦ εἰς τὸν οὐρανόν, ϗ ὤμοσεν ἐν τῷ ζῶντι εἰς τὸν αἰῶνα, ὅτι εἰς καιρὸν (θ) καιρῶν ϗ ἥμισυ καιροῦ, ἐν
8 τῷ συντελεσθῆναι διασκορπισμὸν γνώσονται πάντα ταῦτα. (ι) Καὶ ἐγὼ ἤκουσα, ϗ οὐ συνῆκα· ϗ εἶπα, Κύριε,
9 τί (κ) τὰ ἔσχατα τούτων; Καὶ εἶπεν, Δεῦρο Δανιήλ, ὅτι (λ) ἐμπεφραγμένοι ϗ ἐσφραγισμένοι οἱ λόγοι ἕως και-
10 ροῦ πέρας. Ἐκλεγῶσι, ϗ (μ) ἐκλευκανθῶσι, ϗ πυρωθῶσι, ϗ ἁγιασθῶσι πολλοί· ϗ (ν) ἀνομήσωσιν ἄνομοι,
11 ϗ οὐ συνήσουσι πάντες ἄνομοι, ϗ οἱ νοήμονες συνήσουσι. Καὶ ἀπὸ καιροῦ παραλλάξεως τοῦ ἐνδελεχισμοῦ, (ξ) ϗ
12 δοθήσεται τὸ βδέλυγμα ἐρημώσεως, ἡμέραι χίλιαι διακόσιαι ἐνενήκοντα. Μακάριος ὁ (·) ὑπομένων ϗ
13 φθάσας εἰς ἡμέρας χιλίας τριακοσίας τριακονταπέντε. Καὶ σὺ δεῦρο, ϗ ἀναπαύου· ἔτι γὰρ ἡμέραι (ο) ϗ ὧραι
εἰς ἀναπλήρωσιν συντελείας, (※) ϗ ἀναστήσῃ εἰς τὸν κλῆρόν σου εἰς συντέλειαν ἡμερῶν. †

CAP. XII.

ET in tempore illo conſurget Michael princeps magnus, qui ſtat pro filiis 1
populi tui. Et erit tempus tribulationis, tribulatio, qualis non fuit, ex quo fa-
cta eſt gens in terra uſque ad tempus illud. In tempore illo ſalvabitur po-
pulus tuus omnis, qui ſcriptus fuerit in libro. Et multi de his qui dormiunt 2
in terræ pulvere, evigilabunt, alii in vitam æternam, & alii in opprobrium,
& confuſionem æternam. Et intelligentes fulgebunt quaſi ſplendor firma- 3
menti: & (a) de juſtis plurimis, quaſi ſtellæ in ſecula, & ultrà. Tu autem, 4
Daniel, claude ſermones, & ſigna librum uſque ad tempus conſummationis;
donec doceantur multi, & multiplicetur ſcientia. Et vidi ego Daniel; & 5
ecce alii duo ſtabant, unus hinc ſuper labium fluminis, & alius indè ex
alio labio fluminis. Et (b) dixit viro, qui indutus erat Baddin, qui ſtabat 6
ſuper aquam fluminis; Uſquequò finis iſtorum, quæ dixiſti, mirabilium?
Et audivi virum, qui indutus erat Baddin, qui ſtabat ſuper aquam fluminis: 7
& elevavit dexteram ſuam, & ſiniſtram ſuam in cælum: & juravit in Vi-
vente in æternum; Quia in tempus (c) temporum, & dimidium temporis, cùm
completa fuerit diſperſio, cognoſcent univerſa hæc. Et ego audivi, & non 8
intellexi. Et dixi; Domine, quid noviſſima horum? Et dixit; Vade, Da- 9
niel; quia clauſi ſignatique ſunt ſermones uſque ad temporis finem. Eli- 10
gentur, & dealbabuntur, & quaſi per ignem probabuntur, & ſanctificabuntur
multi: & iniquè agent iniqui: neq; intelligent omnes iniqui: & docti intel-
ligent. Et à tempore mutationis jugis ſacrificii, & dabitur abominatio de- 11
ſolationis, dies mille ducenti nonaginta. Beatus qui expectat, et pervenit ad 12
dies mille trecentos triginta quinq;. Tu autem [Daniel] vade, et quieſce. Adhuc enim dies, (d) et horæ in completionem conſummationis: et reſurges in ſorte tua in conſummatione dierum. 13

MS. A. (α) ἀφ᾽ ἧς γεγένηται ἔθνος ἐπὶ τῆς γῆς, (β) ϗ ἐν (γ) ὁ εὑρεθεὶς ὁ γεγραμμένος (δ) ἐγερθήσονται, (ε) ἐκλάμψουσιν (ζ) τὸ βιβλίον, ϗ σφράγισον τοὺς λόγους ἕως καιροῦ (η) εἶπον (θ) ϗ καιροὺς ϗ εἰς ἥμισυ καιροῦ, ἐν τῷ συντελέσαι διασκορπισμὸν λαοῦ ἡγιασμένου, ϗ γνώσονται (ι) Κἀγὼ (κ) ἔσχατα (λ) ἐμπεφραγμένοι (μ) πυρωθῶσιν, (ν) ἀνθήσουσιν (ξ) ἀφ᾽ οὗ ἀνέστη ἡ θυσία διαπαντός, ϗ ἑτοιμάσθη δοθῆναι τὸ βδέλυγμα τῆς ἐρημώσεως, ἡμέραις χιλίαις διακοσίαις ἐνενήκοντα. (·) ὑπομείνας (ο) εἰσὶν εἰς (※) ϗ ἀναπαύσῃ ϗ ἀναστήσῃ †ὍΡΑΣΙΣ ιαʹ.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

42 * ويمد يده على الارض * وارض مصر لا تكون للخلاص * ويسود في مخابي الذهب والفضة * 43
44 وفي كل مشتهيات مصر * والنوبة والحبش في حصونهم * والسماعات والمرساب تقلقه من
45 المشارق ومن الجربياء * ويأتي بحنق كثير ليبيد ويحرم كثيرين * وينصب مظلته في
مكان سهل بين البحور على جبل صابابين المقدس * ويأتي الى حده ولا يكون من
ينجيه *

Et cùm extendet manum ſuam ſuper ter- 42
ram, etiam terra Ægypti non erit inco-
lumis; Sed potietur latebrarum auri & 43
argenti, omniumque rerum exquiſitarum
Ægypti. Verùm Nubæ & Æthiopes in
arcibus ſuis: Et rumores falſæque famæ 44
conturbabunt eum ab Oriente & ab Aqui-
lone: quapropter veniet cum ira magna
ad perdendum & abolendos multos: Fi- 45
getque tabernaculum ſuum in loco plano
inter maria, ſuper monte Sabain ſancto:
veniet inquam, ad limites ejus uſque, nec
erit qui eripiat eum.

* الفصل الثاني عشر *

1 * وفي ذلك الزمان يقوم ميخاييل الرييس العظيم القايم على بني شعبك * ويكون زمان
ضيقة * ضيقة لم يكن مثلها منذ صارت الامم على الارض حتى ذلك الزمان * وفي
2 ذلك الزمان يخلص شعبك * كل من وجد مكتوبا في السفر * وكثيرون من الهاجعين في
3 تراب الارض يستيقظون * هاولاء لحياة ابدية * وهاولاء للتعيير وخزي ابدي * والفهمون
4 يسرقون مثل بهاء الجلد * ومن الصديقين كثيرين مثل النجوم * الى الاباد وايضا * وانت
يا دانيال اكتم الكلمات الى زمان الانتهاء * حتى يتعلم كثيرون * ويكثر المعرفة *
5 * ونظرت انا دانيال * واذا اثنان اخران وقفا واحد من ههنا على شاطي النهر * واخر من
6 ههنا على شاطي النهر * وقالا للرجل اللابس اثواب الوقار الذي كان فوق ماء النهر * الى
7 متى نهاية العجايب التي قلتها * وسمعت الرجل اللابس اثواب الوقار * الذي كان فوق
النهر * ورفع يمينه ويساره الى السماء * وحلف بالحي الى الابد * انه الى الوقت ووقتين ونصف
8 وقت * عند ما يكمل تفرق يد الشعب المقدس * يفهمون هذه كلها * وانا سمعت ولم افهم *
9 فقلت يا سيد ما اواخر هاولاء * وما هذه الامثال * فقال هلم يا دانيال * ان هذه الكلمات
10 مكتومة ومختومة الى نهاية الزمان * يصطفون ويبيضون ويختبرون ويقدسون كثيرون *
11 والاثمة يأثمون * وجميع الاثمة لا يفهمون * والفهماء يفهمون * ومن زمان تغيير الدوام * منذ
12 قامت ذبيحة كل حين * وهييت لتعطي رذلة الخراب * الفا ومايتين وتسعين يوما * مغبوط
13 الذي يصبر ويبلغ الى الف وثلثماية خمسة وثلثين يوما * وانت هلم واسترح * لان هذه
ايضا ايام وساعات لكمال الانتهاء * وتستريح وتقوم لميراثك الى انتهاء الايام *

CAP. XII.

EO tempore conſurget Michael princeps 1
magnus qui præeſt popularibus tuis: eritq;
tempus calamitatis, tantæ calamitatis ut
nulla ſimilis acciderit ex quo condita fuit
gens ſuper terram uſque ad illud tempus:
eoque tempore ſalvabitur populus tuus,
quicunque inventus fuerit ſcriptus in li-
bro. Et multi ex dormientibus in pul- 2
vere terræ, evigilabunt; hi ad vitam æ-
ternam, illi verò ad opprobrium & igno-
miniam æternam. Prudentes quidem 3
enitebunt ſicut ſplendor firmamenti; &
de juſtis multis, tanquam ſtellæ, ad æ-
ternitates uſque, & ultrà. Tu verò O 4
Daniel, reconde verba iſta uſque ad tem-
pus termini, donec addiſcant multi, &
multiplicetur ſcientia. Deindè vidi ego 5
Daniel, & ecce duo alii ſteterunt u-
nus hinc ad ripam fluminis, alter indè
ad ripam fluminis. Et dixerunt vi- 6
ro illi induto veſtibus honoris, qui erat
ſuper aquam fluminis; Quouſque ter-
minus erit mirabilium illorum quæ di-
xiſti? Et audivi virum illum indu- 7
tum veſtibus honoris, qui erat ſuper
flumen, ſublatâ dexterâ & ſiniſtrâ ſuâ
cælum verſùs, juráſſe per Viventem
in æternum; quòd poſt tempus, &
duo tempora, & dimidium temporis;
ubi expleta eſſet diſperſio manûs po-
puli ſancti, intellecturi ſunt hæc omnia:
Cùm ego hæc audiiſſem, nec intellexiſſem, 8
dixi, O Domine, quænam erunt iſto-
rum noviſſima? & quænam ſunt hæ
comparationes? Dixit, Abi O Da- 9
niel; nam hæc verba recondita ſunt et
obſignata uſque ad terminum temporis.
Eligentur, dealbabuntur, probabun- 10
tur, & ſanctificabuntur multi: iniqui
iniquè agent, & omnes iniqui non
intelligent; prudentes autem intelligent.
Et à termino mutationis jugis cultûs, 11
ex quo ſubſtiterit ſacrificium omnis
temporis, & præſtò fuerit ut collocetur
abominatio deſolationis, mille ducenti 12
nonaginta dies erunt. Beatus qui ex-
pectabit & perveniet ad mille trecentos
trigintaquinque dies. Tu autem vade, 13
& quieſce; hi enim adhuc ſunt dies
& horæ ad conſummationem termini:
quieſces autem, & reſurges ad hære-
ditatem tuam in finem uſque die-
rum.

HOSEE.

ספר הושע : א ב

CAP. I. א

diebus in , Beeri filium Hoſeah ad fuit quod Domini Verbum
1 דְּבַר־יְהוָה אֲשֶׁר הָיָה אֶל־הוֹשֵׁעַ בֶּן־בְּאֵרִי בִּימֵי
diebus in & ; Jehudah regum Jechizchijah , Achaz , Jotham ,Huzijah
עֻזִּיָּה יוֹתָם אָחָז יְחִזְקִיָּה מַלְכֵי יְהוּדָה וּבִימֵי
Dominus eſt locutus Principio .Iſrael regis Joas filii Jarobham
2 יָרָבְעָם בֶּן־יוֹאָשׁ מֶלֶךְ יִשְׂרָאֵל׃ תְּחִלַּת דִּבֶּר־יְהוָה
uxorem tibi accipe ,Vade ,Hoſeah ad Dominus dixit & : Hoſeah in
בְּהוֹשֵׁעַ וַיֹּאמֶר יְהוָה אֶל־הוֹשֵׁעַ לֵךְ קַח־לְךָ אֵשֶׁת
terra fornicabitur fornicando quia ,fornicationũ *natos* & ,fornicationum
זְנוּנִים וְיַלְדֵי זְנוּנִים כִּי־זָנֹה תִזְנֶה הָאָרֶץ
: Diblaim filiam Ghomer accepit & , ivit Et .Dominum poſt à
3 מֵאַחֲרֵי יְהוָה׃ וַיֵּלֶךְ וַיִּקַּח אֶת־גֹּמֶר בַּת־דִּבְלָיִם
Voca ,eum ad Dominus dixit Et .filium ei peperit & ,concepit &
4 וַתַּהַר וַתֵּלֶד־לוֹ בֵּן׃ וַיֹּאמֶר יְהוָה אֵלָיו קְרָא
ſanguines viſitabo & ,paululum adhuc quoniam : Izrehel ejus nomen
שְׁמוֹ יִזְרְעֶאל כִּי־עוֹד מְעַט וּפָקַדְתִּי אֶת־דְּמֵי
.Iſrael domus regnum faciam ceſſare & ,Jehu domum ſuper , Izrehel
יִזְרְעֶאל עַל־בֵּית יֵהוּא וְהִשְׁבַּתִּי מַמְלְכוּת בֵּית יִשְׂרָאֵל׃
valle in Iſrael arcum conteram & ; illa die in erit Et
5 וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא וְשָׁבַרְתִּי אֶת־קֶשֶׁת יִשְׂרָאֵל בְּעֵמֶק
Voca , ei dixit & ,filiam peperit & ,adhuc concepit Et .Izrehel
6 יִזְרְעֶאל׃ וַתַּהַר עוֹד וַתֵּלֶד בַּת וַיֹּאמֶר לוֹ קְרָא
domus miſerear ultrà addam non quia ; Ruchamah-Lo ejus nomen
שְׁמָהּ לֹא רֻחָמָה כִּי לֹא אוֹסִיף עוֹד אֲרַחֵם אֶת־בֵּית
,miſerebor Jehudah domui Et .*eos tollam tollendo quia* , Iſrael
7 יִשְׂרָאֵל כִּי־נָשֹׂא אֶשָּׂא לָהֶם׃ וְאֶת־בֵּית יְהוּדָה אֲרַחֵם
, arcu *in* eos ſervabo non & : ſuo Deo Domino in eos faciam ſalvos &
וְהוֹשַׁעְתִּים בַּיהוָה אֱלֹהֵיהֶם וְלֹא אוֹשִׁיעֵם בְּקֶשֶׁת
.Lo ablactavit Et .equitibus *in* & ,equis *in* , bello *in* & ,gladio *in* &
8 וּבְחֶרֶב וּבְמִלְחָמָה בְּסוּסִים וּבְפָרָשִׁים׃ וַתִּגְמֹל אֶת־לֹא
ejus nomen Voca , dixit Et .filium peperit & ,concepit & ,Ruchamah
9 רֻחָמָה וַתַּהַר וַתֵּלֶד בֵּן׃ וַיֹּאמֶר קְרָא שְׁמוֹ
ero non ego & ,meus populus non vos quia ; Hammi-Lo
לֹא עַמִּי כִּי אַתֶּם לֹא עַמִּי וְאָנֹכִי לֹא־אֶהְיֶה
quæ ,maris arena ſicut Iſrael filiorum numerus erit Et *vobis*
10 לָכֶם׃ וְהָיָה מִסְפַּר בְּנֵי־יִשְׂרָאֵל כְּחוֹל הַיָּם אֲשֶׁר
dicetur quo loco in erit & : *numerabitur* non & ,*menſurabitur* non
לֹא־יִמַּד וְלֹא יִסָּפֵר וְהָיָה בִּמְקוֹם אֲשֶׁר־יֵאָמֵר
.Viventis Dei Filii , eis dicetur ; vos meus populus Non , eis
לָהֶם לֹא־עַמִּי אַתֶּם יֵאָמֵר לָהֶם בְּנֵי אֵל־חָי׃
ſibi ponent & ,pariter Iſrael filii & ,Jehudah filii congregabuntur Et
11 וְנִקְבְּצוּ בְּנֵי־יְהוּדָה וּבְנֵי־יִשְׂרָאֵל יַחְדָּו וְשָׂמוּ לָהֶם
.Izrehel dies magnus quia ; terra de aſcendent & ,unum caput
רֹאשׁ אֶחָד וְעָלוּ מִן־הָאָרֶץ כִּי גָדוֹל יוֹם יִזְרְעֶאל׃

CAP. II. ב

.Ruchamah veſtris ſororibus & ; Hammi veſtris fratribus Dicite
1 אִמְרוּ לַאֲחֵיכֶם עַמִּי וְלַאֲחוֹתֵיכֶם רֻחָמָה׃
,mea uxor non ipſa quoniam ,contendite ,veſtra matre cum Contendite
2 רִיבוּ בְאִמְּכֶם רִיבוּ כִּי־הִיא לֹא אִשְׁתִּי
ſuis faciebus à ſuas fornicationes auferat & : ejus vir non ego &
וְאָנֹכִי לֹא אִישָׁהּ וְתָסֵר זְנוּנֶיהָ מִפָּנֶיהָ
ſua ubera inter ab ſua adulteria &
וְנַאֲפוּפֶיהָ מִבֵּין שָׁדֶיהָ׃

Verſio VULG. LAT.

PROPHETIA
OSEE.

CAP. I.

1 VErbum Domini , quod factum eſt ad Oſee filium Beeri, in
diebus Oziæ, Joathan, Achaz,
Ezechiæ, regum Juda, & in diebus Jeroboam filii Joas regis
2 Iſrael. Principium loquendi Domino in Oſee : & dixit Dominus ad Oſee ; Vade , ſume tibi
uxorem fornicationum, & fac tibi filios fornicationum : quia
fornicans fornicabitur terra à
3 Domino. Et abiit , & accepit
Gomer filiam Debelaim : & con-
4 cepit , & peperit ei filium. Et
dixit Dominus ad eum ; Voca
nomen ejus Jezrahel : quoniam
adhuc modicum, & viſitabo ſanguinem Jezrahel ſuper domum
Jehu, & quieſcere faciam re-
5 gnum domûs Iſrael. Et in illa
die conteram arcum Iſrael in valle Jezrahel. Et concepit adhuc,
6 & peperit filiam. Et dixit ei ;
Voca nomen ejus, Abſq; miſericordia: quia nõ addam ultrà miſereri domui Iſrael, ſed oblivione
7 obliviſcar eorum. Et domui Juda
miſerebor, & ſalvabo eos in Domino Deo ſuo : & non ſalvabo
eos in arcu, & gladio, & in bello,
8 & in equis, & in equitibus. Et
ablactavit eam, quæ erat Abſque
miſericordia. Et concepit, & pe-
9 perit filium. Et dixit; Voca nomen ejus, Non populus meus :
quia vos non populus meus , &
10 ego non ero veſter. Et erit numerus filiorum Iſrael quaſi arena
maris, quæ ſine menſura eſt , &
non numerabitur. Et erit in loco
ubi dicetur eis; Non populus meus vos: dicetur eis ; Filii Dei vi-
11 ventis. Et congregabuntur filii
Juda, & filii Iſrael pariter : &
ponent ſibimet caput unum, &
aſcendent de terra : quia magnus
dies Jezrahel.

CAP. II.

1 DIcite fratribus veſtris ; Populus meus : & ſorori veſtræ ;
2 Miſericordiam conſecuta. Judicate matrem veſtram, judicate:
quoniam ipſa non uxor mea,
& ego non vir ejus. Auferat
fornicationes ſuas à facie ſua,
& adulteria ſua de medio uberum
ſuorum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

ὨΣΗΕ Α΄.

ΚΕΦ. α΄.

1 Λόγος κυρίου, ὃς ἐγενήθη πρὸς Ὠσηὲ τὸν
τοῦ Βεηρεὶ, ἐν ἡμέραις Ὀζίου, ϗ Ἰωάθαμ,
ϗ Ἄχαζ, ϗ Ἐζεκίου βασιλέων Ἰούδα, ϗ
ἐν ἡμέραις Ἱεροβοὰμ (α) υἱοῦ Ἰωὰς βασιλέως
2 Ἰσραήλ. Ἀρχὴ λόγου κυρίου (β) ἐν Ὠσηέ.
ϗ εἶπε κύριος πρὸς Ὠσηὲ, (γ) Βάδιζε,
λάβε σεαυτῷ γυναῖκα πορνείας, ϗ τέκνα
πορνείας, διότι ἐκπορνεύουσα ἐκπορνεύσει
3 ἡ γῆ ἀπὸ ὄπισθεν τοῦ κυρίου. Καὶ ἐπορεύθη,
ϗ ἔλαβε τὴν Γόμερ θυγατέρα Δεβηλαίμ· ϗ
4 συνέλαβε ϗ ἔτεκεν αὐτῷ υἱόν. Καὶ εἶπε
κύριος πρὸς αὐτὸν, Κάλεσον τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ἰεζραὲλ, διότι ἔτι μικρὸν, ϗ ἐκδικήσω τὸ αἷμα τοῦ Ἰεζραὲλ ἐπὶ τὸν
οἶκον Ἰούδα, ϗ καταπαύσω βασιλείαν οἴκου
5 Ἰσραήλ. Καὶ ἔσται, ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ
συντρίψω τὸ τόξον τοῦ Ἰσραὴλ ἐν (δ) κοι-
6 λάδι τοῦ Ἰεζραέλ. Καὶ συνέλαβεν ἔτι,
ϗ ἔτεκε θυγατέρα. ϗ εἶπεν αὐτῷ, Κάλεσον τὸ ὄνομα αὐτῆς, Οὐκ ἠλεημένη, διότι οὐ
μὴ προσθήσω ἔτι ἐλεῆσαι τὸν οἶκον (ε) Ἰσραὴλ, ἀλλ' ἢ ἀντιτασσόμενος ἀντιτάξομαι αὐ-
7 τοῖς. Τοὺς δὲ υἱοὺς Ἰούδα ἐλεήσω, ϗ σώσω αὐτοὺς ἐν κυρίῳ θεῷ αὐτῶν, ϗ οὐ σώσω αὐτοὺς
ἐν τόξῳ, (ζ) οὐδὲ ἐν ῥομφαίᾳ, (η) οὐδὲ ἐν πολέμῳ, (θ) οὐδὲ ἐν ἵπποις, οὐδὲ ἐν ἱππεῦσι.
8 Καὶ ἀπεγαλάκτισε τὴν Οὐκ ἠλεημένην· ϗ
9 συνέλαβεν ἔτι, ϗ ἔτεκεν υἱόν. Καὶ εἶπε,
Κάλεσον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Οὐ λαός μου,
διότι ὑμεῖς οὐ λαός μου, ϗ ἐγὼ οὐκ εἰμὶ ὑ-
10 μῶν. Καὶ ἦν ὁ ἀριθμὸς τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, ὡς
ἡ ἄμμος τῆς θαλάσσης, ἣ οὐκ ἐκμετρηθήσεται,
οὐδὲ ἐξαριθμηθήσεται. ϗ ἔσται, ἐν τῷ τόπῳ, οὗ ἐρρέθη αὐτοῖς, Οὐ λαός μου ὑμεῖς,
(ι) κληθήσονται ϗ αὐτοὶ υἱοὶ θεοῦ ζῶντος.
11 Καὶ συναχθήσονται (κ) υἱοὶ Ἰούδα, ϗ οἱ υἱοὶ
Ἰσραὴλ ἐπιτοαυτὸ, ϗ θήσονται (λ) ἑαυτοῖς
ἀρχὴν μίαν, ϗ ἀναβήσονται ἐκ τῆς γῆς,
ὅτι μεγάλη ἡ ἡμέρα τοῦ Ἰεζραέλ.

MS. A. ὨΣΗΕ Α΄. (α) τοῦ υἱοῦ (β) πρὸς (γ) Λάβε σεαυτῷ, (δ) τῇ κοιλάδι
(ε) τοῦ Ἰσραὴλ, (ζ) οὔτε (η) οὔτε (θ) οὔτε ἐν ἅρμασιν, οὔτε ἐν ἵπποις, οὔτε (ι) [illegible]
κληθήσονται υἱοὶ (κ) οἱ υἱοὶ (λ) αὐτοῖς

ΚΕΦ. β΄.

1 Εἴπατε τοῖς ἀδελφοῖς ὑμῶν, Λαός μου, ϗ
2 τῇ ἀδελφῇ ὑμῶν, Ἠλεημένη. Κρίθητε
πρὸς τὴν μητέρα ὑμῶν, κρίθητε, ὅτι αὕτη οὐ
γυνή μου, ϗ ἐγὼ οὐκ ἀνὴρ αὐτῆς. ϗ ἐξαρῶ
τὴν πορνείαν αὐτῆς ἐκ προσώπου μου, ϗ τὴν
μοιχείαν αὐτῆς ἐκ μέσου μαστῶν αὐτῆς,

OSEE.

CAP. I.

VERBUM Domini, quod 1
factum eſt ad Oſee filium Beeri
in diebus Oziæ, & Joatham, &
Achaz, & Ezeciæ regum Juda,
& in diebus Hieroboã filii Joas
regis Iſrael. Principium verbi 2
Domini (a) in Oſee. Et dixit Dominus ad Oſee; Vade, tolle tibi uxorem
fornicationis, & filios fornicationis : quia fornicans fornicabitur terra à (b) poſt Dominũ.
Et abiit, & accepit Gomer filiam 3
Debelaim. Et concepit, & peperit
ei filium. Et dixit Dominus ad 4
eum; Voca nomen ejus Jezrael:
quia adhuc modicum: & ulciſcar ſanguinem Jezrael ſuper domũ (c) Juda: & quieſcere faciã
regnũ domûs Iſrael. Et erit, in 5
die illa conteram arcum Iſrael in
valle Jezrael. Et concepit ad- 6
huc, & peperit filiam. Et dixit
ei; Voca nomen ejus, (d) Abſq; miſericordia: quia nequaquã addã
ultrà miſereri domui Iſrael: ſed
adverſans adverſabor eis. Filio- 7
rum autem Juda miſerebor : &
ſalvabo eos in Domino Deo ſuo :
& non ſalvabo eos in arcu, neque
in gladio, neq; in (e) bello, neq; in
equis, neq; in equitibus. Et abla- 8
ctavit eã, quæ erat Abſq; miſericordia. Et concepit adhuc, &
peperit filium. Et dixit; Voca no- 9
men ejus, Non populus meus: quia
vos non populus meus : & ego
non ſum veſter. Et (f) erat nume- 10
rus filiorum Iſrael, ſicut arena
maris, quæ non menſurabitur, nec
numerabitur. Et erit, in loco, ubi
dictum eſt eis; Non populus meus
vos: vocabuntur & ipſi filii Dei
viventũ. Et congregabuntur filii 11
Juda, & filii Iſrael ſimul : &
ponent ſibi principatum unum, &
aſcendent de terra: quoniam magnus eſt dies Jezrael.

CAP. II.

DIcite fratri veſtro; Populus 1
meus: & ſorori veſtræ, Miſericordiã conſequuta. Judicamini 2
cum matre veſtra, judicamini :
quia hæc nõ uxor mea: & ego nõ
vir ejus. Et auferam fornicationẽ
ejus à facie mea, & adulterium
ejus de medio uberum illius.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

1 פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ דַּהֲוָה עִם הוֹשֵׁעַ בַּר בְּאֵרִי בְּיוֹמֵי עֻזִּיָּה יוֹתָם אָחָז יְחִזְקִיָּה מַלְכַיָּא
2 דְּבֵית יְהוּדָה וּבְיוֹמֵי יָרָבְעָם בַּר יוֹאָשׁ מַלְכָּא דְּיִשְׂרָאֵל׃ שֵׁירוּת פִּתְגָמָא דַּייָ בְּהוֹשֵׁעַ וַאֲמַר
יְיָ לְהוֹשֵׁעַ אֵזֵל אִתְנַבֵּי נְבוּאָה עַל יָתְבֵי קַרְתָּא טַעֲוָתָא דְּאִנּוּן מוֹסִיפִין לְמֶחְטֵי אֲרֵי מִטְעָא
3 יִטְעוֹן דָּיְרֵי אַרְעָא מִבָּתַר פּוּלְחָנָא דַּייָ׃ וַאֲזַל וְאִתְנַבֵּי עֲלֵיהוֹן דְּאִם יְתוּבוּן יִשְׁתְּבֵק לְהוֹן
4 וְאִם לָא כְּמִתַּר עֲלֵי תֵינִין יִתְּרוּן וְאוֹסִיפוּ וַעֲבַדוּ עוֹבָדִין בִּישִׁין׃ וַאֲמַר יְיָ לֵיהּ קְרָא
שׁוּמְהוֹן מְבַדְּרַיָּא אֲרֵי עוֹד צִבְחַר כִּזְעֵר וְאַסְעַר דַּם פָּלְחֵי טַעֲוָתָא דַּאֲשַׁד יֵהוּא בְּיִזְרְעֶאל
דְּקַטְלִנּוּן עַל דִּפְלַחוּ לְבַעֲלָא תָּבוּ אִנּוּן לְמִטְעֵי בָּתַר עֶגְלַיָּא דִּבְבֵית־אֵל בְּכֵן אַחְשְׁבִנֵּיהּ
5 דַּם זַכַּי עַל בֵּית יֵהוּא וַאֲבַטֵּל מַלְכוּתָא מִבֵּית יִשְׂרָאֵל׃ וִיהֵי בְּעִדָּנָא הַהִיא וְאֶתְבַּר יַת תְּקוֹף
6 עָבְדֵי קְרָב יִשְׂרָאֵל בְּמֵישַׁר יִזְרְעֶאל׃ וְאוֹסִיפוּ וַעֲבַדוּ עוֹבָדִין בִּישִׁין וַאֲמַר לֵיהּ קְרֵי שׁוּמְהוֹן
דְּלָא רְחִימִין בְּעוֹבָדֵיהוֹן אֲרֵי לָא אוֹסִיף עוֹד לְרַחֲמָא עַל בֵּית יִשְׂרָאֵל בְּרַם אִם יְתוּבוּן
7 מִשְׁבַּק אֶשְׁבּוֹק לְהוֹן׃ וְעַל דְּבֵית יְהוּדָה אֲרַחֵם וְאֶפְרְקִנּוּן בְּמֵימְרָא דַּייָ אֱלָהֲהוֹן וְלָא
8 יִתְפָּרְקוּן בְּקַשְׁתָּא וּבְחַרְבָּא וּבְעָבְדֵי קְרָבָא בְּסוּסָוָן וּבְפָרָשִׁין׃ וְדָרֵיהוֹן דְּאִתְגְּלִיאוּ לְבֵינֵי
9 עַמְמַיָּא אִשְׁתְּכַחוּ דְּלָא הֲווֹ רְחִימִין בְּעוֹבָדֵיהוֹן וְאוֹסִיפוּ וַעֲבַדוּ עוֹבָדִין בִּישִׁין׃ וַאֲמַר קְרֵי
שׁוּמְהוֹן לָא עַמִּי אֲרֵי אַתּוּן לָא עַמִּי בִּדְלֵית אַתּוּן מְקַיְּמִין פִּתְגָמֵי אוֹרָיְתִי מֵימְרִי לָא הֲוָה
10 בְּסַעֲדֵיכוֹן׃ וִיהֵי מִנְיַן בְּנֵי יִשְׂרָאֵל סַגִּי כְּחָלָא דְּיַמָּא דְּלָא מִתְּכַל וּדְלָא מִתְּמְנֵי וִיהֵי בְּאַתְרָא
דְּאִתְגְּלִיאוּ בֵּינֵי עַמְמַיָּא כַּד עֲבַרוּ עַל אוֹרַיְתָא וְאִתְּאֲמַר לְהוֹן לָא עַמִּי אַתּוּן יְתוּבוּן
11 וְיִתְרַבּוּן וְיִתְאֲמַר לְהוֹן עַמֵּיהּ דֶּאֱלָהָא קַיָּמָא׃ וְיִתְכַּנְשׁוּן בְּנֵי יְהוּדָה וּבְנֵי יִשְׂרָאֵל כַּחֲדָא
וִימַנּוּן לְהוֹן רֵישׁ חַד מִן בֵּית דָּוִד וְיִסְקוּן מִן אַרְעָא גָּלְוָתְהוֹן אֲרֵי רַב יוֹם כְּנִישַׁתְהוֹן׃

ב

1 נְבִיַּיָּא אֱמַרוּ לַאֲחֵיכוֹן עַמִּי תּוּבוּ לְאוֹרָיְתִי וְעַל כְּנִשַׁתְכוֹן אֲרַחֵם׃ אוֹכַחוּ לִכְנִשְׁתָּא דְּיִשְׂרָאֵל
2 וַאֲמַרוּ לַהּ אֲרֵי הִיא לָא מִתְעַנְיָא בְּפוּלְחָנִי וּמֵימְרִי לָא מְקַבֵּל צְלוֹתַהּ עַד דְּתַעְדֵּי עוֹבָדַהָא
בִּישַׁיָּא מִקֳּבֵל אַפָּהָא וּפוּלְחַן טַעֲוָתָהָא מִבֵּין קִרְוַהָא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAPUT I.

VErbum prophetiæ à facie Domini quod factum eſt cum Oſea filio Be- 1
eri, in diebus Oziæ, Jotham, Achaz, Ezechiæ regum domus Juda, & in diebus Jeroboam filii Joas regis Iſrael. Principium verbi Dñi in Oſea ; & 2
dixit Dñs ad Oſeam ; Vade, prophetiza *prophetiam* contra habitatores civitatis idololatræ, qui addunt peccare ; quia errando errabunt habitatores
terræ à cultu Dñi. Et abiit & prophetavit ſuper eos ; Quòd ſi converſi fu- 3
erint, remittetur eis : *ſin minus*, ſicut defluunt folia ficulneæ defluent ; at
addiderunt & fecerunt opera mala. Et dixit Dñs ad eum, Voca nomen *eo-* 4
rum Diſperſos : quia ferè adhuc modicum eſt, & viſitabo ſanguinem colentium idola, quem effudit Jehu in Jezreel, quos occîdit quòd ſervirent Baal,
& converſi ſunt etiam ipſi ut errarent poſt vitulos qui erant in Bethel.
Ideò reputabo illum ſanguinem innocentem ſuper domum Jehu, & ceſſare
faciam regnum domus Iſrael. Et erit in tempore illo, & conteram fortitu- 5
dinem bellatorum Iſrael in valle Jezreel. Et addiderunt, & fecerunt 6
opera mala, & dixit ei : Voca nomen eorum, Non miſericordiam conſecuti
in operib⁹ ſuis : quia non addam ultrà miſereri dom⁹ Iſrael : veruntamen ſi
converſi fuerint, dimittendo dimittam eis. Et domus Jehudah miſerebor, & 7
ſalvabo eos, in verbo Dñi Dei ipſorũ, & non ſalvabuntur in arcu, gladio,
& in bellatoribus, in equis & equitibus. Habitatores autem eorũ qui ex- 8
torres tranſportati ſunt inter populos, inventi ſunt miſericordia indigni in
operib⁹ ſuis : ſed addiderunt & fecerunt opera mala. Et ait, Voca nomen 9
eorum Non popul⁹ me⁹, quia vos non eſtis popul⁹ me⁹, eò quòd vos non
confirmetis verba legis meæ : Verbum meũ non erit in adjutoriũ veſtrum.
Et erit numer⁹ filiorũ Iſrael copioſ⁹ ſicut arena maris, quæ nec menſurari 10
nec numerari poteſt : & erit in loco quò exules acti fuerint inter populos,
quando tranſgreſſi fuerint *legem*, & dictũ fuerit eis, Non eſtis popul⁹ meus;
convertentur & magnificabuntur, dicetúrq; eis, Populi Dei vivi. Et con- 11
gregabuntur filii Jehuda & filii Iſrael ſimul, & conſtituent ſibi principẽ
unum de domo David, atque aſcendent de terra tranſmigrationis ſuæ ; quia
magnus erit dies congregationis eorum.

CAP. II.

PRophetæ dicite fratrib⁹ veſtris, Popule mi, convertimini ad legẽ meã, & 1
congregationis veſtræ miſerebor. Arguite cœtũ Iſrael, & dicite ei, quia 2
ipſa non addicit ſe cultui meo. Verbũ meũ non ſuſcipiet orationẽ ej⁹, donec
auferat opera ſua mala à conſpectu vultus ſui, & cultum idolorum ſuorum de medio civitatis ſuæ.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܬܘܒ ܒܥܘܕܪܢ ܕܐܠܗܐ ܢܟܬܘܒ *
* ܢܒܝܘܬܗ ܕܗܘܫܥ ܢܒܝܐ * ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

* ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܕܗܘܐ ܥܠ ܗܘܫܥ ܒܪ ܒܐܪܝ. ܒܝܘܡܬܗ ܕܥܘܙܝܐ ܘܕܝܘܬܡ. ܘܕܐܚܙ ܘܕܚܙܩܝܐ 1
ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܒܝܘܡܬܗ ܕܝܘܪܒܥܡ ܒܪ ܝܘܐܫ ܡܠܟܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܪܝܫ ܦܬܓܡܗ 2
ܕܡܪܝܐ ܕܗܘܐ ܥܠ ܗܘܫܥ. ܘܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܗܘܫܥ. ܙܠ ܣܒ ܠܟ ܐܢܬܬܐ ܕܙܢܝܘܬܐ. ܘܒܢܝܐ
ܕܙܢܝܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܡܙܢܝܘ ܙܢܬ ܐܪܥܐ ܡܢ ܒܬܪܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܐܙܠ ܘܢܣܒ ܠܗ ܠܓܘܡܪ 3
ܒܪܬ ܕܒܠܝܡ. ܘܒܛܢܬ ܘܝܠܕܬ ܠܗ ܒܪܐ. * ܘܐܡܪ ܠܗ ܡܪܝܐ. ܩܪܝ ܫܡܗ ܐܝܙܪܥܝܠ. ܡܛܠ 4
ܕܬܘܒ ܩܠܝܠ ܐܬܒܥ ܕܡܗ ܕܐܝܙܪܥܝܠ ܥܠ ܒܝܬܗ ܕܝܗܘ. ܘܐܒܛܠ ܡܠܟܘܬܐ ܕܒܝܬ
ܐܝܣܪܝܠ. * ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܐܬܒܪܝܗ ܠܩܫܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܒܥܘܡܩܐ ܕܐܝܙܪܥܝܠ. 5
* ܘܒܛܢܬ ܬܘܒ ܘܝܠܕܬ ܒܪܬܐ. ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܩܪܝ ܫܡܗ ܠܐ ܐܬܪܚܡܬ. ܡܛܠ ܕܠܐ 6
ܡܘܣܦ ܐܢܐ ܬܘܒ ܠܡܪܚܡܘ ܥܠ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܐܠܐ ܡܫܩܠ ܫܩܠ ܐܢܐ ܠܗܘܢ.
* ܘܠܒܝܬܐ ܕܝܗܘܕܐ ܐܪܚܡ. ܘܐܦܪܘܩ ܐܢܘܢ ܒܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ. ܠܐ ܒܩܫܬܐ ܐܦܪܘܩ ܐܢܘܢ. 7
ܘܠܐ ܒܣܝܦܐ. ܘܠܐ ܒܩܪܒܐ ܘܠܐ ܒܪܟܫܐ ܘܠܐ ܒܦܪܫܐ. * ܘܚܣܠܬܗ ܠܠܐ ܐܬܪܚܡܬ. ܘܒܛܢܬ 8
ܬܘܒ ܘܝܠܕܬ ܒܪܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ ܩܪܝ ܫܡܗ ܠܐ ܥܡܝ. ܡܛܠ ܕܐܢܬܘܢ ܠܐ ܥܡܝ ܐܢܬܘܢ. 9
ܘܐܢܐ ܠܐ ܐܗܘܐ ܠܟܘܢ. * ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܡܢܝܢܐ ܕܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܐܝܟ ܚܠܐ ܕܝܡܐ: ܕܠܐ ܡܬܟܝܠ ܘܠܐ 10
ܡܬܡܢܐ: ܘܢܗܘܐ ܒܐܬܪܐ ܕܐܬܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܠܐ ܥܡܝ ܐܢܬܘܢ. ܬܡܢ ܢܬܩܪܘܢ ܒܢܝܐ ܠܐܠܗܐ ܚܝܐ.
* ܘܢܬܟܢܫܘܢ ܒܢܝ ܝܗܘܕܐ ܘܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܐܟܚܕܐ. ܘܢܥܒܕܘܢ ܠܗܘܢ ܪܫܐ ܚܕ. 11
ܘܢܣܩܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܪܒ ܝܘܡܗ ܕܐܝܙܪܥܝܠ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܒ * ܐܡܪܘ * 1
ܠܐܚܝܟܘܢ ܥܡܝ. ܘܠܐܚܘܬܟܘܢ ܐܬܪܚܡܬ. * ܕܘܢܘ ܥܡ ܐܡܟܘܢ ܕܘܢܘ. ܡܛܠ ܕܗܝ ܠܐ ܗܘܬ 2
ܐܢܬܬܝ. ܘܐܢܐ ܠܐ ܗܘܝܬ ܒܥܠܗ. ܬܥܒܪ ܙܢܝܘܬܗ ܡܢ ܐܦܝܗ. ܘܓܘܪܗ ܡܢ ܒܝܬ ܬܕܝܗ.

Sequitur Liber
DUODECIM PROPHETARUM.
PROPHETIA
HOSEÆ Prophetæ.

CAP. I.

SErmo Domini, qui fuit ad Hoſeam filium 1
Beri, temporibus Uziæ, Jothami, Ahazi, &
Hezeciæ regum Judæ; & temporibus Jora-
baami filii Joaſi regis Iſraelis. Principio ſer- 2
monis Domini, qui fuit ad Hoſeam, dixit Do-
minus Hoſeæ; Vade, ſume tibi uxorem forni-
cariam & liberos fornicarios, quoniam valdè
fornicatura eſt terra averſata à Domino. Abi- 3
ens itaque ſumpſit ſibi Gomeram filiam Debe-
liami, quæ concepit ac peperit illi filium: Di- 4
xitque ei Dñs; Voca nomen ejus, Izareelem;
nam brevi ulturus ſum ſanguinem Izareelis à
domo Johu, & aboleturus regnum Iſraelitarũ.
Eodem illo die frangã arcum Iſraelis in valle 5
Izareelis. Rurſus concepit peperitque filiam: 6
& dixit mihi Dñs; Voca nomen ejus, Non con-
ſecuta miſericordiam; quoniam non ſum am-
pliùs miſerturus Iſraelitarum, ſed eos penitùs
ablaturus. Domûs autẽ Judæ miſerturus, eoſq; 7
ſervaturus per Dñm Deum ipſorum: non arcu
ſervabo eos, neque gladio, neque bello, non
equis, neque equitibus. Poſtquam ablactâſſet 8
eam quæ Non eſt miſericordiã conſecuta, rur-
ſus concepit peperitque filium: Et dixit mihi 9
Dñs; Voca nomen ejus, Non populus meus;
quoniam vos non eſtis populus meus, nec ego
futur' ſum veſter: Neq; erit numer' Iſraelitarũ 10
par arenæ maris, quæ neq; menſurari neq; nu-
merari *poteſt*. Sed erit eò loci quò dicebatur
iſtis, Non popul' meus eſtis, ut ibidẽ vocentur 11
filii Deo viventi. Et congregabuntur filii Judæ
& filii Iſraelis ſimul, & conſtituẽt ſibi principẽ
unũ, & aſcendent à terra; quia magnus erit di-
es Izareelis.

CAP. II.

VOcate fratres veſtros, Populus meus; & 1
ſorores veſtras, Miſericordiam conſecuta.
Contendite cum matre veſtra, contendite; quo- 2
niam ipſa non eſt uxor mea, neq; ego ſum ma-
ritus ejus. Amoveat ſcortationem ſuam à facie
ſua, & adulteriũ ſuum de medio uberũ ſuorũ;

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* بسم الله الروف الرحيم *   * الانبياء الصغار *
* اولهم نبوة هوشع * وهو عوزيا بن بابيري *
* الفصل الاول *   * الاصحاح الاول *

1 * كلمة الرب التي صارت الي عوزيا بن بابيري * في ايام عوزيا ويواقيم واحاز وحزقيا ملك يهودا *
2 وفي ايام يوربعام بن يواس ملك اسرائيل * بدو كلمة الرب لهوسع * قال الرب لهوسع * امض خذ
3 لك امراة زنا واولاد زنا من اجل ان الارض زانية تزني من خلف الرب * فمضي واخذ جامار من
4 بيت لحم * فحبلت وولدت ابنا * فقال الرب له * ادع اسمه ايزرعيل من اجل اني عن قليل انتقم
5 دم ايزرعيل علي بيت يهودا * واصرف المملكة من بيت اسرائيل * ويكون في ذلك اليوم اكسر
6 قوس اسرائيل في وادي ايزرعيل * وحبلت ايضا وولدت ابنة * فقال له * ادع اسمها غير مرحومة * من
7 اجل اني لست اريد ايضا ان ارحم بيت اسرائيل * لكني مبعد ابعدهم * واما بني يهودا فارحمهم
واخلصهم بالرب الههم * ولست اخلصهم بقوس ولا بسيف * ولا بمركبات * ولا بحرب * ولا بخيل
8 ولا بفرسان * وفطمت الغير مرحومة * وحبلت ايضا وولدت ابنا * فقال ادع اسمه ليس شعبي *
9 من اجل انكم انتم لستم شعبي * وانا لست انا لكم * وكان عدد بني اسرائيل مثل رمل البحر
10 الذي لا يكال ولا يحصي * ويكون في الموضع الذي قيل لهم فيه لستم شعبي انتم يدعون
11 هولاء بنو الله الحي * ويجمع بنو يهودا وبنو اسرائيل معا * ويجعلون لهم رياسة واحدة * ويصعدون
من الارض * لان يوم ايزرعيل عظيم *   * الفصل الثاني *
1 2 * قولوا لاخيكم شعبي * ولاختكم مرحومة * حاكموا مع امكم حاكموا * لان هذه
ليست امراتي * وانا لست رجلها * وانزع زناها عن وجهي * وفسقها من بين ثدييها *

IN NOMINE DEI PIISSIMI
Clementiſſimi.
PROPHETÆ MINORES.
Primùm
Prophetia HOSEÆ,
qui eſt Uzia filius Beeri.

CAP. I.
Textus primus.

VErbum Domini quod factum eſt ad 1
Uziam filium Beeri, in diebus Uziæ,
Joacimi, Achazi, & Hezeciæ regis Ju-
dæ, & in diebus Jerobaami filii Joaſi
regis Iſraelis. Initium verbi Domini ad 2
Hoſeam. Dixit Dominus Hoſeæ; Age,
ſume tibi uxorem fornicationis, & filios
fornicationis, quia terra fornicaria eſt,
fornicans à tergo Domini. Quarè abiit, 3
ſumpſitque Gjamarem Bethlehemitidem;
quæ cùm concepiſſet, peperiſſetque fili-
um; Dixit ei Dominus, Voca nomen 4
ejus, Izareelem; quia mox ulturus ſum
ſanguinem Izareelis ſuper domum Judæ,
& diverſurus regnum è domo Iſraelis.
Et erit eo die, ut frangam arcum Iſrae- 5
lis in valle Izareelis, Cùm iterum con- 6
cepiſſet, ac peperiſſet filiam; dixit ad
eum, Voca nomen ejus, Non miſerandam;
quia non ſum ampliùs miſeraturus domûs
Iſraelis, ſed amovens amoturus eos. At 7
verò filiorũ Judæ miſerebor, & ſalvabo
eos per Dominum Deum ipſorum, ac non
ſalvabo eos arcu, neq; gladio, neq; curri-
bus, neq; bello, nec equis, nec equitibus.
Cùm ablactâſſet Non miſerandam, conce- 8
pit adhuc, peperitq; filiũ: Et dixit, Voca 9
nomen ejus, Non populus meus; quia vos
non eſtis populus meus, & ego non ſum
veſter. Fuit quidem numerus filiorum 10
Iſraelis tanquam arena maris, quæ im-
menſa eſt & innumera: ſed futurum
eſt ut in loco in quo dicebatur eis, Vos
non eſtis populus meus; vocentur iſti filii
Dei vivi: Et filii Judæ ac filii Iſraelis 11
unà convenientes, conſtituant ſibi princi-
patum unum, & aſcendant è terra; quia
dies Izareelis magnus eſt futurus.

CAP. II.

DIcite fratri veſtro, Populus meus; & 1
ſorori veſtræ, Miſeranda. Litigate cum 2
matre veſtra, litigate: quoniam hæc non
eſt uxor mea, & ego non ſum vir ejus:
& auferam fornicationem ejus à facie
mea, & adulterium ejus de medio ube-
rum ejus:

הושע : ב

; *se nasci* diem secundùm eam statuam & ,nudam eam expoliem fortè Ne
3 פֶּן־אַפְשִׁיטֶנָּה עֲרֻמָּה וְהִצַּגְתִּיהָ כְּיוֹם הִוָּלְדָהּ
,*siccitatis* terram velut eam ponam & ,*desertum* tanquam eam ponam &
וְשַׂמְתִּיהָ כַמִּדְבָּר וְשַׁתִּהָ כְּאֶרֶץ צִיָּה
filii quia ; miserebor non ejus filiorum Et .siti *in* eam interficiam &
4 וַהֲמִתִּיהָ בַּצָּמָא׃ וְאֶת־בָּנֶיהָ לֹא אֲרַחֵם כִּי־בְנֵי
est affecta pudore ,eorum mater est fornicata Quia .*ipsi* fornicationum
5 זְנוּנִים הֵמָּה׃ כִּי זָנְתָה אִמָּם הֹבִישָׁה
dantes meos amatores post Vadam ,dixit quia : *eorum conceptrix*
הוֹרָתָם כִּי אָמְרָה אֵלְכָה אַחֲרֵי מְאַהֲבַי נֹתְנֵי
,meum oleum ,meum linum & ,meam lanam ,meas aquas & ,meum panem
לַחְמִי וּמֵימַי צַמְרִי וּפִשְׁתִּי שַׁמְנִי
: spinis *in* tuam viam *sepiens* ego ecce Propterea .*meas potationes* &
6 וְשִׁקּוּיָי׃ לָכֵן הִנְנִי־שָׂךְ אֶת־דַּרְכֵּךְ בַּסִּירִים
sequetur Et .inveniet non suas semitas & ,sepem sepiam &
7 וְגָדַרְתִּי אֶת־גְּדֵרָהּ וּנְתִיבוֹתֶיהָ לֹא תִמְצָא׃ וְרִדְּפָה אֶת־
: inveniet non & ,eos quæret & ,eos apprehendet non & ,suos amatores
מְאַהֲבֶיהָ וְלֹא־תַשִּׂיג אֹתָם וּבִקְשָׁתַם וְלֹא תִמְצָא
bonum quia , priorem meum virum ad revertar & , Vadam , dicet &
וְאָמְרָה אֵלְכָה וְאָשׁוּבָה אֶל־אִישִׁי הָרִאשׁוֹן כִּי טוֹב
ei dedi ego quia , nescivit hæc Et .nunc *præ* tunc mihi
8 לִי אָז מֵעָתָּה׃ וְהִיא לֹא יָדְעָה כִּי אָנֹכִי נָתַתִּי לָהּ
aurum & , ei multiplicavi argentum & : oleum & ,*mustum* & ,frumentum
הַדָּגָן וְהַתִּירוֹשׁ וְהַיִּצְהָר וְכֶסֶף הִרְבֵּיתִי לָהּ וְזָהָב
meum frumentum sumam & ,convertar Idcirco .Bahal fecerunt
9 עָשׂוּ לַבָּעַל׃ לָכֵן אָשׁוּב וְלָקַחְתִּי דְגָנִי
,meã lanã auferam & :suo *statuto* tempore in meũ *mustum* & ,suo tempore in
בְּעִתּוֹ וְתִירוֹשִׁי בְּמוֹעֲדוֹ וְהִצַּלְתִּי צַמְרִי
revelabo nunc Et .ejus *nuditatem* operiendum ad ,meũ linum &
10 וּפִשְׁתִּי לְכַסּוֹת אֶת־עֶרְוָתָהּ׃ וְעַתָּה אֲגַלֶּה אֶת־
.mea manu de eam eruet non *vir* & ; ejus amatorũ oculis in ejus *vilitatem*
נַבְלֻתָהּ לְעֵינֵי מְאַהֲבֶיהָ וְאִישׁ לֹא־יַצִּילֶנָּה מִיָּדִי׃
,ejus neomeniam ,ejus solemnitatem ,ejus gaudium omne faciam cessare Et
11 וְהִשְׁבַּתִּי כָּל־מְשׂוֹשָׂהּ חַגָּהּ חָדְשָׁהּ
,ejus *vitem* faciam desolare Et .ejus festivitatẽ omnem & ; ejus sabbathũ &
12 וְשַׁבַּתָּהּ וְכֹל מוֹעֲדָהּ׃ וַהֲשִׁמֹּתִי גַּפְנָהּ
mihi dederunt *quod* ,mihi *ipsa Donum* , dixit quòd eò ,ejus *ficum* &
וּתְאֵנָתָהּ אֲשֶׁר אָמְרָה אֶתְנָה הֵמָּה לִי אֲשֶׁר נָתְנוּ־לִי
.agri *fera* *ea comedet* & ,sylvam in *ea* ponam & : mei amatores
מְאַהֲבָי וְשַׂמְתִּים לְיַעַר וַאֲכָלָתַם חַיַּת הַשָּׂדֶה׃
,*eis* adolebat quibus ,Behalim dies eam super visitabo Et
13 וּפָקַדְתִּי עָלֶיהָ אֶת־יְמֵי הַבְּעָלִים אֲשֶׁר תַּקְטִיר לָהֶם
: suos amatores post ibat & ,suo monili & ,sua inaure ornabatur &
וַתַּעַד נִזְמָהּ וְחֶלְיָתָהּ וַתֵּלֶךְ אַחֲרֵי מְאַהֲבֶיהָ
ego ecce Propterea .Dominus dixit ,obliviscebatur mei &
14 וְאֹתִי שָׁכְחָה נְאֻם־יְהוָה׃ לָכֵן הִנֵּה אָנֹכִי
dabo Et .ejus cor *super* loquar & ; desertum eã faciam ire & ;eam *seducens*
15 מְפַתֶּיהָ וְהֹלַכְתִּיהָ הַמִּדְבָּר וְדִבַּרְתִּי עַל־לִבָּהּ׃ וְנָתַתִּי
: spei ostium in Hachor vallem & , inde *suas vineas* ei
לָהּ אֶת־כְּרָמֶיהָ מִשָּׁם וְאֶת־עֵמֶק עָכוֹר לְפֶתַח תִּקְוָה
eam ascendere diem juxta & ,*suarũ adolescentiarum* dies juxta ibi *respondebit* &
וְעָנְתָה שָׁמָּה כִּימֵי נְעוּרֶיהָ וּכְיוֹם עֲלוֹתָהּ
vocabis ,Dominus ait , illo die in erit Et .Ægypti terra è
16 מֵאֶרֶץ־מִצְרָיִם׃ וְהָיָה בַיּוֹם־הַהוּא נְאֻם־יְהוָה תִּקְרְאִי
.Bahali ultrà me *vocabis* non & ; meus maritus
אִישִׁי וְלֹא־תִקְרְאִי־לִי עוֹד בַּעְלִי׃

Versio VULG. LAT.

3 Ne fortè expoliem eam nudam, & statuam eam secundùm diem nativitatis suæ: & ponam eam quasi solitudinem, & statuam eam velut terram inviam, & interficiã
4 eam siti. Et filiorum illius non miserebor: quoniã filii fornica-
5 tionum sunt. Quia fornicata est mater eorum, confusa est quæ concepit eos: quia dixit; Vadam post amatores meos, qui dant panes mihi, & aquas meas, lanam meam, & linum meum, oleum
6 meũ, & potum meũ. Propter hoc ecce ego sepiam viam tuam spinis, & sepiam eam maceriâ, &
7 semitas suas non inveniet. Et sequetur amatores suos, & non apprehendet eos: & quæret eos, & non inveniet: & dicet; Vadã, & revertar ad virum meũ priorem: quia benè mihi erat tunc magìs
8 quàm nunc. Et hæc nescivit, quia ego dedi ei frumentũ, & vinum, & oleum, & argentum multiplicavi ei, et aurum, quæ fecerunt
9 Baal. Idcircò convertar, et sumam frumentum meum in tempore suo, et vinum meum in tempore suo, et liberabo lanam meam et linum meum, quæ operie-
10 bant ignominiam ejus. Et nunc revelabo stultitiam ejus in oculis amatorum ejus: et vir non eruet
11 eam de manu mea: Et cessare faciam omne gaudium ejus, solennitatem ejus, neomeniam ejus, sabbatum ejus, et omnia festa
12 tempora ejus. Et corrumpam vineam ejus, et ficum ejus: de quibus dixit; Mercedes hæ, meæ sunt, quas dederunt mihi amatores mei: et ponam eam in saltum, et comedet eam bestia agri.
13 Et visitabo super eam dies Baalim, quibus accendebat incensum, et ornabatur in aure sua, et monili suo, et ibat post amatores suos, et meî obliviscebatur, dicit Do-
14 minus. Propter hoc, ecce ego lactabo eam, et ducam eam in solitudinem: et loquar ad cor ejus.
15 Et dabo ei vinitores ejus ex eodem loco, et vallem Achor ad aperiendam spem: et canet ibi juxta dies juventutis suæ, et juxta dies ascensionis suæ de terra Æ-
16 gypti. Et erit in die illa, ait Dominus: vocabit me, Vir meus: et non vocabit me ultrà, Baali.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

3 Ὅπως ἂν ἐκδύσω αὐτὴν γυμνὴν, ϗ ἀπο-
καταστήσω αὐτὴν καθὼς ἡμέρα γενέσεως
αὐτῆς· ϗ (α) θήσω αὐτὴν ἔρημον, ϗ τά-
ξω αὐτὴν ὡς γῆν ἄνυδρον, ϗ ἀποκτενῶ
4 αὐτὴν ἐν δίψει. Καὶ τὰ τέκνα αὐτῆς οὐ μὴ
5 ἐλεήσω, ὅτι τέκνα πορνείας ἐστίν. Ὅτι ἐξε-
πόρνευσεν ἡ μήτηρ αὐτῶν, κατῄσχυνεν ἡ τε-
κοῦσα αὐτά· (β) ὅτι εἶπε, Πορεύσομαι ὀπί-
σω τῶν ἐραστῶν μου, τῶν διδόντων μοι τοὺς ἄρτους
μου, ϗ τὸ ὕδωρ μου, ϗ τὰ ἱμάτιά μου, ϗ τὰ
ὀθόνιά μου, (") τὸ ἔλαιόν μου, ϗ πάντα ὅσα
6 μοι καθήκει. Διὰ τοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ φράσσω τὴν
ὁδὸν αὐτῆς ἐν σκόλοψι, ϗ ἀνοικοδομήσω
τὰς ὁδοὺς (γ), ϗ τὴν τρίβον αὐτῆς οὐ μὴ εὕ-
7 ρῃ. Καὶ καταδιώξεται τοὺς ἐραστὰς αὐτῆς,
ϗ οὐ μὴ καταλάβῃ αὐτούς· ϗ ζητήσει αὐ-
τοὺς, ϗ οὐ μὴ εὕρῃ αὐτούς. ϗ ἐρεῖ, Πορεύ-
σομαι, ϗ ἐπιστρέψω πρὸς τὸν ἄνδρα μου τὸν
πρότερον, ὅτι καλῶς μοι ἦν τότε, ἢ νῦν.
8 Καὶ αὕτη οὐκ ἔγνω ὅτι ἐγὼ δέδωκα αὐτῇ τὸν
σῖτον, ϗ τὸν οἶνον, ϗ τὸ ἔλαιον, ϗ ἀργύριον
ἐπλήθυνα αὐτῇ· αὕτη δὲ ἀργυρᾶ ϗ χρυσᾶ
9 ἐποίησε τῇ Βάαλ. Διὰ τοῦτο ἐπιστρέψω, ϗ
κομιοῦμαι τὸν σῖτόν μου καθ' ὥραν αὐτοῦ, ϗ
τὸν οἶνόν μου ἐν καιρῷ αὐτοῦ· ϗ ἀφελοῦμαι τὰ
ἱμάτιά μου, ϗ τὰ ὀθόνιά μου, τοῦ μὴ καλύπτειν
10 τὴν ἀσχημοσύνην αὐτῆς. Καὶ νῦν ἀποκαλύψω
τὴν ἀκαθαρσίαν αὐτῆς (δ) ἐνώπιον τῶν ἐραστῶν
αὐτῆς, ϗ (ε) οὐθεὶς οὐ μὴ ἐξέληται αὐτὴν ἐκ
11 χειρός μου. Καὶ ἀποστρέψω πάσας τὰς εὐ-
φροσύνας αὐτῆς, (ζ) ἑορτὰς αὐτῆς, ϗ τὰς νε-
ομηνίας αὐτῆς, ϗ τὰ σάββατα αὐτῆς, ϗ
12 πάσας τὰς πανηγύρεις αὐτῆς. Καὶ ἀφα-
νιῶ ἄμπελον αὐτῆς, ϗ τὰς συκᾶς αὐτῆς,
ὅσα εἶπε, Μισθώματά μου ταῦτά ἐστιν ἃ
ἔδωκάν μοι οἱ ἐρασταί μου· ϗ θήσομαι αὐ-
τὰ εἰς μαρτύριον, ϗ καταφάγεται αὐτὰ τὰ
θηρία τοῦ ἀγροῦ, ϗ τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ, ϗ
13 τὰ ἑρπετὰ τῆς γῆς. Καὶ ἐκδικήσω ἐπ' αὐ-
τὴν τὰς ἡμέρας τῶν Βααλείμ, ἐν αἷς ἐπέθυ-
εν αὐτοῖς· ϗ περιετίθετο (") τὰ ἐνώπια αὐτῆς,
ϗ τὰ καθόρμια αὐτῆς, ϗ ἐπορεύετο ὀπί-
σω τῶν ἐραστῶν αὐτῆς, ἐμοῦ δὲ ἐπελάθετο, λέ-
14 γει κύριος. Διὰ τοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ πλανῶ αὐ-
τὴν, ϗ τάξω αὐτὴν ὡς ἔρημον, ϗ λαλήσω
15 ἐπὶ τὴν καρδίαν αὐτῆς, Καὶ δώσω αὐτῇ τὰ
κτήματα αὐτῆς ἐκεῖθεν, ϗ τὴν κοιλάδα Ἀ-
χὼρ διανοῖξαι σύνεσιν αὐτῆς· ϗ ταπεινωθή-
σεται ἐκεῖ κατὰ τὰς ἡμέρας νηπιότητος αὐ-
τῆς, ϗ κατὰ τὰς ἡμέρας ἀναβάσεως αὐτῆς ἐκ
16 γῆς Αἰγύπτου. Καὶ ἔσται ἐν (η) τῇ ἡμέρᾳ ἐ-
κείνῃ, λέγει κύριος, καλέσει με Ὁ ἀνήρ
μου, ϗ οὐ καλέσει με (θ) ἔτι Βααλείμ.

Ut expoliem eã nudam, et restituam eam juxta diem nativitatis suæ. Et ponam eã (a) desertum: et statuam eam, sicut terram sine aqua: et occidã illã in siti. 3
Et filiorum ejus non miserebor, quoniã filii fornicationis sunt: 4
Quia fornicata est mater eorũ: confusa est, quæ peperit eos. Dixit enim; Vadam post amatores meos, qui dant mihi panes meos, & aquam meam, & vestimenta mea, & linteamina mea, (b) oleum meum, & omnia, quæ mihi necessaria sunt. 5
Propterea ecce ego sepiam viam ejus in sudibus; & (c) reædificabo vias: & semitam suam non inveniet. 6
Et persequetur amatores suos, & non apprehendet illos: & quæret eos, & non inveniet eos. Et dicet; Vadam, & revertar ad virum meum priorem: quia meliùs mihi erat tunc, quàm nunc. 7
Et ipsa nescivit, quia ego dedi ei frumentum, & vinum & oleum, & argentum multiplicavi ei: hæc autem argentea, & aurea fecit (d) ipsi Baal. 8
Propterea revertar, & tollam triticum meum in tempore suo, & vinum meum in tempore suo: & auferam vestimenta mea, & linteamina mea, ne operiant ignominiam ejus. 9
Et nunc revelabo immunditiam ejus in conspectu amatorum illius: & nullus eruet eam de manu mea. 10
Et avertam omnes lætitias ejus, solennitates illius, & neomenias illius, & sabbata illius, et omnes festivitates illius. 11
Et disperdam vineam ejus, & ficus illius: quæ dixit; Mercedes meæ istæ sunt, quas dederunt mihi amatores mei. Et ponam (e) ea in testimonium: & comedent ea bestiæ agri, (f) & volatilia cœli, & reptilia terræ. 12
Et ulciscar super eam dies Baalim; in quibus immolabit eis, & circumdabat [sibi] inaures suas, et monilia sua, & ibat post amatores suos: meî autem oblita est, dicit Dominus. 13
Ideò ecce ego seducam eam, & ponam illam, quasi desertum, & loquar ad cor ejus; 14
Et dabo ei possessiones suas indè, & vallem Achor (g) ad aperiendam intelligentiam ejus. Et (h) humiliabitur illic juxta dies infantiæ suæ, et juxta dies ascensionis ejus de terra Ægypti. 15
Et erit in die illa, ait Dominus, vocabit me; Vir meus: & non vocabit me ultrà, Baalim. 16

MS.A. (α) θήσομαι αὐτὴν ὡς ἔρημον, (β) εἶπεν γάρ, Ἀκολουθήσω ὀπίσω (") ϗ τὸ (γ) αὐτῆς (δ) ἐναντίον (ε) οὐδεὶς (ζ) τὰς ἑορτὰς (") ἐνώτια (η) ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ καλέσει με Ὁ ἀνήρ μου, λέγει κύριος, ϗ οὐ (θ) οὐκέτι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 דִּמְלָא אֲסַלֵּק שְׁכִנְתִּי מִנַּהּ וְאַעְדֵּי יְקָרַהּ וְאֶשְׁוִנַּהּ רְטִישָׁא כְּיוֹמַיָּא קַדְמָאֵי עַד לָא אִתְקְרִיבַת
לְפוּלְחָנִי וְיִחוּל רוּגְזִי עֲלַהּ כְּמָא דְחַל עַל עַם דָּרָא דַעֲבַרוּ עַל אוֹרַיְתִי בְּמַדְבְּרָא וְאַשְׁוֵי
4 אַרְעָא צַדְיָא וְאֶקְטְלִנַּהּ בְּבַצּוֹרְתָא׃ וְיַת בְּנָהָא לָא אֲרַחֵם אֲרֵי בְּנִין דְּטָעַן אִנּוּן׃ 5 אֲרֵי טָעַת
כְּנִשְׁתְּהוֹן בָּתַר נְבִיֵּי שִׁקְרָא בְּהִיתוּ מַלְפֵיהוֹן אֲרֵי אָמְרָה אֵהָךְ בָּתַר עַמְמַיָּא רָחֲמַי מְסַפְּקֵי
6 מֵיכְלִי וּמִשְׁתִּי כְּסוּת מֵילָא וּבוּץ מְשַׁח כָּל פַּרְנוּסַי׃ בְּכֵן הָא אֲנָא מְקַלְקֵל יַת אָרְחָתִיךְ כְּמָא
7 דְסָיְגִין בְּכוּבַיָּא וְאֶפְסוֹק כְּמָא דִמְפַסְקִין בְּכוֹתְלַיָּא וּשְׁבִילְהָא לָא תִשְׁכַּח׃ וְתִרְדַּף שְׁלָם
עִם עַמְמַיָּא רַחֲמָהָא וְלָא תַדְבֵּק יַתְהוֹן וְתִבְעֵי סָעִיד וְלָא תִשְׁכַּח וְתֵימַר אֵהָךְ וְאֵתוּב
לְפוּלְחַן רִבּוֹנִי קַדְמָאָה אֲרֵי טָב לִי כַּד הֲוֵיתִי פָּלְחָא קֳדָמוֹהִי מִכְּעַן לָא אֶפְלַח לְטַעֲוָתָא׃
8 וְאִנּוּן לָא יָדְעִין אֲרֵי אֲנָא בָּרְכֵית לְהוֹן עֲבוּרָא וַחֲמַרָא וּמִשְׁחָא וְכַסְפָּא אַסְגֵּיתִי לְהוֹן
9 וְדַהֲבָא מִנֵּיהּ עֲבַדוּ לְטַעֲוָתָא׃ בְּכֵן יְתוּב מֵימְרִי לְמִטַּל עִיבוּרָא בְּעִדָּן אִדְּרֵיהּ וַחֲמַרָא
10 בְּעִדָּן מַעֲצַרְתֵּיהּ וְאַצִּיל כְּסוּת מֵילָא וּבוּץ דִּיהַבִית לַהּ לְכַסָּאָה יַת קְלָנַהּ׃ וּכְעַן אֲגַלֵּי יַת
11 קְלָנַהּ לְעֵינֵי עַמְמַיָּא רַחֲמָהָא וֶאֱנָשׁ לָא יְשֵׁיזְבִנַּהּ מִן יְדִי׃ וַאֲבַטֵּל כָּל חֶדְוָתְהָא חַגָּהָא
12 יַרְחָהָא וְשַׁבַּתְהָא וְכָל מוֹעֲדָהָא׃ וְאַצְדֵּי פֵּרֵי גוּפְנַהּ וְתֵינַהּ דַּהֲוַת אָמְרָה יְקַר אִנּוּן לִי
13 דִּיהַבוּ לִי עַמְמַיָּא רָחֲמַי וַאֲשַׁוֵּינוּן לְחוּרְשָׁא וְתֵיכְלִנּוּן חֵיוַת בָּרָא׃ וְאַסְעַר עֲלַהּ יַת יוֹמַיָּא
דַּהֲוָת פָּלְחָא לְטַעֲוָתָא דִּמְסַקָּא לְהוֹן בּוּסְמִין הֲוָת דָּמְיָא לְאִתְּתָא דִשְׁבַקַת יַת בַּעְלַהּ
וְאִתְקִינַת בִּקְדָשְׁהָא וּבַחֲלִיטַת מַרְגָּלְיָתְהָא וּטְעַת בָּתַר רָחֲמָהָא כֵּן כְּנִשְׁתְּ יִשְׂרָאֵל
14 רְחִימַת לְמִפְלַח לְטַעֲוָתָא וּפוּלְחָנִי שְׁבַקַת אָמַר יְיָ׃ בְּכֵן הָא אֲנָא מְשַׁעְבֵּד לַהּ לְאוֹרַיְתָא
וְאַעְבֵּד לַהּ נִסִּין וּגְבוּרָן כְּמָא דַעֲבַדִית לַהּ בְּמַדְבְּרָא וּבְיַד עַבְדַי נְבִיַּיָּא אֲמַלֵּל תַּנְחוּמִין עַל
15 לִבָּהָא׃ וַאֲמַנֵּי לַהּ יַת פַּרְנָסָהָא מִתַּמָּן וְיַת מֵישַׁר עָכוֹר לְתַחְמוּדֵי נְפַשׁ וְיִתְנַהוֹן תַּמָּן
לְמֵימְרִי כְּיוֹמֵי קֳדָם וְאַף אֲנָא אַעְבֵּיד לְהוֹן נִסִּין וּגְבוּרָן כְּיוֹם מַסְקְהוֹן מֵאַרְעָא דְמִצְרָיִם׃
16 וִיהֵי בְעִדָּנָא הַהִיא אָמַר יְיָ תִּתְנְהוֹן לְפוּלְחָנִי וְלָא תִפְלְחוּן עוֹד לְטַעֲוַת עַמְמַיָּא׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Ne fortè subducã majestatẽ meã ab ea, & auferã gloriã ejus, & ponã illam 3
derelictã sicut dieb⁹ priscorũ, antequã accessisset ad cultũ meũ: & reside-
bit furor me⁹ super eam, sicut resedit super populũ generationis, qui trans-
gressi sunt legẽ meã in deserto; & ponam terrã desertã, & interficiam eam
siti. Et filiorũ ej⁹ non miserebor, quia filii, qui idololatriã perpetrant, sunt. 4
Quia fornicata est congregatio eorum post pseudoprophetas; confusi sunt 5
doctores eorũ: *quia* dicebat, Sequar populos amatores meos suppeditan-
tes cibum meũ & potum meũ, vestimenta sericea & byssina, oleũ & omnia
alimenta mea. Propterea ecce ego dissipo vias tuas in modũ eorũ qui sepi- 6
unt spinis, & intercludam veluti qui parietib⁹ cingunt: & semitas suas non
inveniet. Et persequetur pacẽ cum populis amatorib⁹ suis, sed ab illis mi- 7
nimè obtinebit; & quæret adjutoriũ, & non inveniet: tunc dicet, Vadam
& revertar ad *cultum Domini mei prioris*, quia bene erat mihi quando ser-
viebã coram eo: deinceps non serviã idolis. Ipsi autem nesciebant, quia 8
ego benedixi eis frumento & vino & oleo: & argentũ multiplicavi eis, &
aurũ, ex quo confecerunt idola. Propterea revocabitur verbũ meũ ut aufe- 9
rat frumentũ in tempore quo recondetur in area; & vinum, tempore quo in
torculari premetur: & detraham indumentũ sericeũ & byssinũ, quod de-
derã ei ad operiendã ignominiã suam. Nunc verò revelabo ej⁹ ignomini- 10
am in oculis populorũ amatorũ ej⁹: & nemo liberabit eam de manu mea.
Et cessare faciã omnia ej⁹ gaudia, festivitates ej⁹, calendas ej⁹, & sabbatha 11
ej⁹, & omnes solennitates ej⁹. Et desolabo fructũ vineæ ejus, & ficulneæ 12
ejus: quandoquidẽ dixit, Præmium ista sunt mihi, quod dederunt mihi popu-
li amatores mei, sed ponam ea in saltum, & comedet ea bestia agri. Et vi- 13
sitabo super eam dies, quibus serviebat idolis, *quibus* adolebat aromata,
[*quando*] similis erat mulieri quæ maritum suũ deseruit, & adornata inauri-
bus suis, & monilib⁹ margaritarum suarum, aberravit post amatores suos:
sic cœt⁹ Israel maluit servire idolis, & cultũ meũ dereliquit, dicit Dñs. Pro- 14
pterea ecce ego subjiciã eam Legi, & operabor illi miracula & grandia faci-
nora, qualia edidi illi in deserto, & in manu servorũ meorũ prophetarum
loquar consolationes ad cor ej⁹. Et constituã ei inde gubernatores ejus, & 15
vallẽ Achor ad delicias animæ, & dedent sese ibi verbo meo, sicut in dieb⁹
antiquis: ego quoque faciã *eis* miracula & præclara facinora, sicuti die quo
ascenderunt de terra Ægypti. Et erit in tempore illo, ait Dominus, vacabitis cultui meo, & non servietis ultrà idolis *populorum*. 16

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܕܠܐ ܐܫܠܚܝܗ̇ ܥܪܛܠܝܐ. ܘܐܩܝܡܝܗ̇ ܐܝܟ ܝܘܡܐ ܕܐܬܝܠܕܬ ܒܗ. ܘܐܥܒܕܝܗ̇ ܐܝܟ 3
ܡܕܒܪܐ. ܘܐܝܟ ܐܪܥܐ ܕܨܗܝܐ. ܘܐܩܛܠܝܗ̇ ܒܨܗܝܐ. * ܘܥܠ ܒܢܝܗ̇ ܠܐ ܐܪܚܡ. 4
ܡܛܠ ܕܒܢܝ ܙܢܝܘܬܐ ܐܢܘܢ. * ܡܛܠ ܕܐܙܢܝܬ ܐܡܗܘܢ. ܘܐܒܗܬܬ ܝܠܕܬܗܘܢ. ܘܐܡܪܬ. 5
ܐܙܠ ܒܬܪ ܪ̈ܚܡܝ. ܕܝܗܒܝܢ ܠܚܡܝ ܘܡ̈ܝܝ ܘܢ̈ܚܬܝ ܘܟܬܢܝ ܘܡܫܚܝ. ܘܟܠ
ܕܡܬܒܥܐ ܠܝ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ ܐܢܐ ܣܐܓ ܐܘܪܚܬܗ̇ ܒܟܘ̈ܒܐ. ܘܐܣܝܓ 6
ܫܒܝ̈ܠܝܗ̇. ܘܐܘܪܚܐ ܠܐ ܬܫܟܚ. * ܘܬܐܙܠ ܒܬܪ ܪ̈ܚܡܝܗ̇. ܘܠܐ ܬܕܪܟ ܐܢܘܢ. ܘܬܒܥܐ 7
ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܬܫܟܚ ܐܢܘܢ. ܘܬܐܡܪ. ܐܗܦܘܟ ܐܙܠ ܠܘܬ ܒܥܠܝ ܩܕܡܝܐ. ܡܛܠ
ܕܛܒ ܗܘܐ ܠܝ ܗܝܕܝܢ ܡܢ ܗܫܐ. * ܘܗܝ ܠܐ ܝܕܥܬ ܕܐܢܐ ܝܗܒܬ ܠܗ̇ ܥܒܘܪܐ 8
ܘܚܡܪܐ ܘܡܫܚܐ. ܘܣܐܡܐ ܘܕܗܒܐ ܐܣܓܝܬ ܠܗ̇. ܘܥܒܕܘܗܝ ܠܒܥܠܐ.
* ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܗܦܘܟ ܐܣܒ ܥܒܘܪܝ ܒܙܒܢܗ. ܘܚܡܪܝ ܒܙܒܢܗ. ܘܐܦܪܘܩ ܥܡܪܝ 9
ܘܟܬܢܝ. ܕܝܗܒܬ ܠܗ̇ ܕܬܟܣܐ ܒܗܬܬܗ̇. * ܘܗܫܐ ܐܓܠܐ ܦܘܪܢܝܘܬܗ̇ ܩܕܡ ܪ̈ܚܡܝܗ̇. 10
ܘܐܢܫ ܠܐ ܢܦܨܝܗ̇ ܡܢ ܐܝܕܝ. * ܘܐܒܛܠ ܟܠܗ̇ ܚܕܘܬܗ̇. ܥܐ̈ܕܝܗ̇. ܘܪܝܫ ܝܪ̈ܚܝܗ̇. 11
ܘܫܒ̈ܬܝܗ̇. ܘܟܠܗܘܢ ܥܐ̈ܕܝܗ̇. * ܘܐܚܪܒ ܓܦܬܗ̇ ܘܬܐܢܬܗ̇. ܕܐܡܪܬ ܕܡܘܗܒܬܐ 12
ܐܢܝܢ ܕܝܗܒܘ ܠܝ ܪ̈ܚܡܝ. ܘܐܥܒܕ ܐܢܝܢ ܥܒܐ. ܘܢܐܟܠܢܝܢ ܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ. * ܘܐܦܩܘܕ 13
ܥܠܝܗ̇ ܝܘܡܬܐ ܕܒܥܠܐ. ܕܡܣܩܐ ܗܘܬ ܠܗܘܢ ܒܣ̈ܡܐ. ܘܡܬܨܒܬܐ ܒܩ̈ܕܫܝܗ̇ ܘܒܫ̈ܪܝܗ̇.
ܘܐܙܠܐ ܒܬܪ ܪ̈ܚܡܝܗ̇. ܘܠܝ ܛܥܬ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ ܐܢܐ ܡܦܝܣ ܐܢܐ ܠܗ̇ 14
ܘܡܘܒܠ ܐܢܐ ܠܗ̇ ܠܡܕܒܪܐ. ܘܐܡܠܠ ܥܡ ܠܒܗ̇. * ܘܐܬܠ ܠܗ̇ ܟܪ̈ܡܝܗ̇ ܡܢ ܬܡܢ. 15
ܠܥܘܡܩܐ ܕܥܟܘܪ. ܕܢܬܦܬܚ ܣܘܟܠܗ̇. ܘܬܬܡܟܟ ܬܡܢ ܐܝܟ ܝܘܡ̈ܬܐ ܕܛܠܝܘܬܗ̇. ܘܐܝܟ
ܝܘܡܐ ܕܣܠܩܬ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܘܢܗܘܐ ܒܗܘ ܝܘܡܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܬܩܪܝܢܢܝ 16
ܓܒܪܝ. ܘܠܐ ܬܘܒ ܬܩܪܝܢܢܝ ܒܥܠܝ.

Ne eam planè denudem, & reddam eam qualis 3
erat die quo nata eſt, reddamque eam ut
deſertum & ut terram ſiticuloſam, & extinguam
eam ſiti ; Et filiorum ejus non miſereſcam, 4
cùm ſint filii fornicariæ : Fornicata eſt 5
enim mater eorum, & pudefacta genitrix eorum :
dixitque, Sequar amaſios meos dantes
panem meum & aquam meam, veſtes meas,
& linum meum, oleum meum, & quicquid
mihi neceſſarium eſt. Idcirco ecce ego obducam 6
vias ejus tribulis, & obſepiam ſemitas
ejus, ut viam non inveniat : Sectotur amaſſos 7
ſuos, & non aſſequatur: quærat eos, & non
inveniat : tandem dicat; Revertar, adibo
maritum meum priorem, quoniam tunc meliùs
erat mihi quàm nunc. Cùm verò ipſa non 8
agnoverit quòd ego dediſſem ei frumentum,
vinum, & oleum ; & argentum atque aurum
multiplicâſſem ei, ex quo confecerunt Baalem
: Idcirco reverſus recipiam frumentum 9
meum tempore ſuo, & vinum meum tempore
ſuo ; recipiamque lanam meam & linum
meum quod dederam ut tegeret ignominiam
ſuam. Poſthac retegam turpitudinem ejus coram 10
amaſiis ejus, & nemo eripiet eam è manibus
meis. Et abolebo omne gaudium ejus, 11
ſolennitates & neomenias ejus, ſabbathum
ejus, & omnes dies feſtos ejus: Devaſtabo 12
quoque vites ejus & ficus ejus, de quibus dixit,
Munera ſunt quæ dederunt mihi amaſii
mei ; & redigam eas in ſylvam, & comedent
eas beſtiæ deſerti : Et viſitabo contra eam 13
dies Baalis, quibus thura adolebat ; & aptatis
inauribus unionibuſque ſuis, ſequebatur
amaſios ſuos ; mei autem oblita eſt, dicit
Dominus. His de rebus ecce allecturus ſum 14
eam, & ad deſertum perducturus, & conſolaturus
eam : Et illinc daturus ei vineas ſuas, 15
vallem Achar ; ut aperiatur intellectus ejus,
& humilietur ibi ut diebus pueritiæ ſuæ,
& ut eo die quo aſcendit è terra Ægypti.
Eritque die illo, dicit Dominus, ut vocet me 16
Vir mi, non autem vocet me deinceps Baali.
(i. *mi marite*)

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لكي اجردها عريانة * واعيدها كيوم ميلادها * واجعلها كالبرية * واصعها مثل 3
ارض عديمة الماء * واقتلها بالعطش * ولا ارحم اولادها * لانهم اولاد زنا * لان امهم زنت * 4 5
جريت التي ولدتهم * لانها قالت لانطلقن خلف اصدقاي الذين يعطوني خبزي ومايي *
وثيابي ولفايفي * ودهني * وكلما يبتغي لي * لاجل هذا ها انا اسيج طريقها بالشوك * وابني 6
مسالكها * فلا تجد لها سبيلا * واطرد اصدقاها فلا تدركهم * وتطلبهم فلا تجدهم * 7
وتقول امضي وارجع الى رجلي الاول * لان الخير لي كان حينيذ اكثر من الان * وهي 8
لم تعلم اني اعطيتها القمح والخمر والزيت * واكثرت لها الفضة وهي صنعت الفضة والذهب
لباعل * لاجل هذا ارجع فاخذ بري في ساعته * وخمري في زمانه * وانزع ثيابي ولفايفي 9
الا تغطي خزيها * والان اكشف عورتها امام اصدقايها ولا واحد لا يخلصها من يدي * 10
* واصرف جميع افراحها * ورؤوس شهورها * وسبوتها * وجميع مواسمها * وافسد كرمها وتينها * 11 12
التي قالت هذه اجرتي اللاتي اعطانيها اصدقاي * واجعلها شهادة * وياكلها وحوش
القفر * وطيور السماء * ودبابات الارض * وانتقم فيها ايام باعال التي فيها بخرت لهم * 13
ولبست اقرطتها وقلايدها * ومضت خلف اصدقايها * ونسيتني يقول الرب * لاجل 14
هذا ها انا ذا اضلها * واجعلها قفرا * واتكلم على قلبها * واعطيها قناياها من ثم * 15
وعور اخور * ليفتح فهمها * وتتضع هناك كايام طفوليتها * وكايام صعودها من ارض
مصر * ويكون في ذلك اليوم يقول الرب * تدعوني رجلي * ولا تدعوني ايضا 16
باعل *

ut ſpoliem eam nudam, & reſtituam 3
talem qualis fuerat die nativitatis ſuæ,
reddam eã ut deſertũ, & diſponam eam
ut terram aquâ carentem, & interficiam
eam ſiti : Et filiorum ejus non miſerear, 4
eò quòd ſint filii fornicationis.
Nam fornicata eſt mater eorum ; inverecunda 5
facta eſt quæ genuit eos;
quia dixit, Equidem ſequar amatores
meos qui ſuppeditant mihi panem meum
& aquam meam, veſtes & faſcias meas,
unguentum meum, & quidquid mihi
opus eſt. Propterea ecce ego ſpinis viam 6
ejus occludam, & ſemitas ejus ædificabo,
ut non inveniat ſibi ſemitam ullam.
Expellam amatores ejus, & non 7
aſſequetur eos ; quæret illos, & non inveniet
: tum dicet, Vadam & redibo ad
virum meum priorem ; quia meliùs erat
mihi tunc quàm nunc. Et ipſa non 8
agnoverat quòd ego dediſſem ei frumentum,
vinum, & oleum ; quódque multum
argenti contuliſſem ei, ipſa verò addixerit
argentum & aurum Baali. Propterea 9
converſus eripiam frumentum
meum horâ ſtatutâ, & vinũ meũ tempore
ſuo ; detrahamque veſtes meas & faſcias
meas, ne operiant pudenda ipſius. Et nunc 10
detegam turpitudinem ejus coram amatoribus
ejus, nemine liberante eam de
manu mea : Et amovebo omnes lætitias 11
ejus, & initia menſium ejus, ſabbatha
ejus, omneſque nundinas ejus : Et corrumpam 12
vitem ejus & ficum ejus de quibus
dicit, Hæ ſunt mercedes meæ quas
dederunt mihi amatores mei : & exponam
eam in teſtimonium, & devorabunt
eam beſtiæ deſerti, volatilia cœli, &
reptilia terræ : Et ulciſcar in ipſa dies 13
Baalium, quibus thus adolebat eis ; &
inauribus atque monilibus ſuis induta,
ibat poſt amatores ſuos, mei oblita, dicit
Dominus. Propterea en ego ſeducam 14
eam, & redigam eam in ſolitudinem, &
loquar ad cor ejus : Et dabo illi poſſeſſiones 15
ſuas inde, & vallem Achor, ut
aperiat intellectum ſuum : & humiliabitur
illic ut diebus pueritiæ ſuæ, & ut
diebus aſcenſionis ſuæ de terra Ægypti.
Et erit eo die, dicit Dominus ut vocet me 16
Vir mi, ac non vocet me ampliùs Baal.

memorabũtur non & ; ejus ore de Behalim nomina removebo Et
17 וַהֲסִרֹתִי אֶת־שְׁמוֹת הַבְּעָלִים מִפִּיהָ וְלֹא־יִזָּכְרוּ
cum , illa die in fœdus eis *exſcindam* Et .eorum nomine in ultrà
18 עוֹד בִּשְׁמָם : וְכָרַתִּי לָהֶם בְּרִית בַּיּוֹם הַהוּא עִם־
,arcum & : *humi reptili* & , cœlorum *volatili* cum & , agri *fera*
חַיַּת הַשָּׂדֶה וְעִם־עוֹף הַשָּׁמַיִם וְרֶמֶשׂ הָאֲדָמָה וְקֶשֶׁת
.*fiducia in* eos *recumbere* faciã & , terra de conteram bellum & ,gladiũ &
וְחֶרֶב וּמִלְחָמָה אֶשְׁבּוֹר מִן־הָאָרֶץ וְהִשְׁכַּבְתִּים לָבֶטַח :
,juſtitia in mihi te deſponſabo & ; ſeculum in mihi te deſponſabo Et
19 וְאֵרַשְׂתִּיךְ לִי לְעוֹלָם וְאֵרַשְׂתִּיךְ לִי בְּצֶדֶק
mihi te deſponſabo Et .miſerationibus *in* &,miſericordia *in* &,judicio *in* &
20 וּבְמִשְׁפָּט וּבְחֶסֶד וּבְרַחֲמִים : וְאֵרַשְׂתִּיךְ לִי
illa die in , erit Et .Dominum ſcies & , fide in
21 בֶּאֱמוּנָה וְיָדַעַתְּ אֶת־יְהוָה : וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא
exaudient ipſi & ; cœlos exaudiam ,Dominus dicit ,exaudiam
אֶעֱנֶה נְאֻם־יְהוָה אֶעֱנֶה אֶת־הַשָּׁמַיִם וְהֵם יַעֲנוּ
, *muſtum* & ,triticum exaudiet terra Et .terram
22 אֶת־הָאָרֶץ : וְהָאָרֶץ תַּעֲנֶה אֶת־הַדָּגָן וְאֶת־הַתִּירוֹשׁ
eam ſeminabo Et .Izrehel exaudient hæc & ; oleum *recens* &
23 וְאֶת־הַיִּצְהָר וְהֵם יַעֲנוּ אֶת־יִזְרְעֶאל : וּזְרַעְתִּיהָ
,Hammi-Lo ad dicam & ; Ruchamah-Lo miſerebor & ,terra in mihi
לִּי בָּאָרֶץ וְרִחַמְתִּי אֶת־לֹא רֻחָמָה וְאָמַרְתִּי לְלֹא־עַמִּי
.meus Deus , dicet ipſe & : tu meus Populus
עַמִּי־אַתָּה וְהוּא יֹאמַר אֱלֹהָי :

CAP. III ג

,*ſocii* dilectam mulierem dilige ,vade Adhuc ,me ad Dominus dixit Et
1 וַיֹּאמֶר יְהוָה אֵלַי עוֹד לֵךְ אֱהַב־אִשָּׁה אֲהֻבַת רֵעַ
ipſi & , Iſrael filios ad Domini dilectionem ſecundùm ; adulteram &
וּמְנָאָפֶת כְּאַהֲבַת יְהוָה אֶת־בְּנֵי יִשְׂרָאֵל וְהֵם
.uvarum dolia *diligentes* & , alienos deos ad *reſpicientes*
פֹּנִים אֶל־אֱלֹהִים אֲחֵרִים וְאֹהֲבֵי אֲשִׁישֵׁי עֲנָבִים :
,*hordeorum Chomer* & ; argenteis quindecim *in* mihi eam *ſum mercatus* Et
2 וָאֶכְּרֶהָ לִּי בַּחֲמִשָּׁה עָשָׂר כָּסֶף וְחֹמֶר שְׂעֹרִים
: *mihi ſedebis* multos Dies ,eam ad dixi Et .*hordeorum Lethech &*
3 וְלֶתֶךְ שְׂעֹרִים : וָאֹמַר אֵלֶיהָ יָמִים רַבִּים תֵּשְׁבִי לִי
dies Quia .te ad ego etiam & ; *viro* ſis ne & ,forniceris ne
4 לֹא תִזְנִי וְלֹא תִהְיִי לְאִישׁ וְגַם־אֲנִי אֵלָיִךְ : כִּי יָמִים
non & ,princeps non & , *rex non* , Iſrael filii manebunt multos
רַבִּים יֵשְׁבוּ בְּנֵי יִשְׂרָאֵל אֵין מֶלֶךְ וְאֵין שָׂר וְאֵין
Poſtea .Teraphim & , Ephod *non &* ; *ſtatua non &* , *ſacrificium*
5 זֶבַח וְאֵין מַצֵּבָה וְאֵין אֵפוֹד וּתְרָפִים : אַחַר
,ſuum Deum Dominum quærent & , Iſrael filii revertentur
יָשֻׁבוּ בְּנֵי יִשְׂרָאֵל וּבִקְשׁוּ אֶת־יְהוָה אֱלֹהֵיהֶם
ejus bonum ad & ,Dominum *ad* pavebunt & : ſuum regem David &
וְאֵת דָּוִד מַלְכָּם וּפָחֲדוּ אֶל־יְהוָה וְאֶל־טוּבוֹ
.dierum noviſſimo in
בְּאַחֲרִית הַיָּמִים :

CAP. IV. ד

cum Domino *lis* quia : Iſrael filii Domini verbum Audite
1 שִׁמְעוּ דְבַר־יְהוָה בְּנֵי יִשְׂרָאֵל כִּי רִיב לַיהוָה עִם־
ſcientia non & ,miſericordia non & ,veritas non quia ,terræ habitatorib⁹
יוֹשְׁבֵי הָאָרֶץ כִּי אֵין־אֱמֶת וְאֵין־חֶסֶד וְאֵין־דַּעַת
: adulterari & ,furari & ,occidere & ,negare & ,*Pejerare* .terra in Dei
2 אֱלֹהִים בָּאָרֶץ : אָלֹה וְכַחֵשׁ וְרָצֹחַ וְגָנֹב וְנָאֹף
.*tetigerunt ſanguinibus in ſanguines* & ,fregerunt
פָּרָצוּ וְדָמִים בְּדָמִים נָגָעוּ :

Verſio VULG. LAT.

17 Et auferam nomina Baalim de
ore ejus, & non recordabitur
18 ultrà nominis eorum. Et percutiam
cum eis fœdus in die
illa, cum beſtia agri, & cum
volucre cœli, & cum reptili
terræ: & arcum, & gladium,
& bellum conteram de terra:
& dormire eos faciam fiducialiter.
19 Et ſponſabo te mihi
in ſempiternum: & ſponſabo
te mihi in juſtitia, & judicio,
& in miſericordia, & in
20 miſerationibus. Et ſponſabo te
mihi in fide: & ſcies quia ego
21 Dominus. Et erit in die illa:
Exaudiam, dicit Dominus, exaudiam
cœlos, & illi exaudient
22 terram. Et terra exaudiet triticum,
et vinum, & oleum: et
23 hæc exaudient Jezrahel. Et ſeminabo
eam mihi in terra, et miſerebor
ejus, quæ fuit Abſque
24 miſericordia. Et dicam Non populo
meo; Populus meus es tu:
et ipſe dicet; Deus meus es tu.

CAP. III.

1 ET dixit Dominus ad me; Adhuc
vade, et dilige mulierem
dilectam amico et adulteram:
ſicut diligit Dominus filios Iſrael,
et ipſi reſpiciunt ad deos alienos,
et diligunt vinacia uvarum.
2 Et fodi eam mihi quindecim
argenteis, et coro hordei, et dimidio
3 coro hordei. Et dixi ad
eam; Dies multos expectabis me:
non fornicaberis, et non eris
viro: ſed et ego expectabo te.
4 Quia dies multos ſedebunt filii
Iſrael ſine rege, et ſine principe,
et ſine ſacrificio, et ſine altari,
et ſine ephod, et ſine theraphim.
5 Et poſt hæc revertentur filii
Iſrael, et quærent Dominum Deum
ſuum, et David regem ſuum:
et pavebunt ad Dominum, et ad
bonum ej⁹, in noviſſimo dierum.

CAP. IV.

1 AUdite verbum Domini, filii
Iſrael, quia judicium Domino
cum habitatoribus terræ: non eſt
enim veritas, et non eſt miſericordia,
et non eſt ſcientia
2 Dei in terra. Maledictum, et
mendacium, et homicidium, et
furtum, et adulterium inundaverunt,
et ſanguis ſanguinem
tetigit.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

17 Καὶ ἐξαρῶ τὰ ὀνόματα τῶν Βααλεὶμ ἐκ στόματος
αὐτῆς, καὶ οὐ μὴ μνησθῶσιν (θ) οὐκέτι
18 τὰ ὀνόματα αὐτῶν. Καὶ διαθήσομαι αὐτοῖς
(ι) διαθήκην ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ μετὰ τῶν
θηρίων τοῦ ἀγροῦ, καὶ μετὰ τῶν πετεινῶν τοῦ οὐρανοῦ,
καὶ (κ) τῶν ἑρπετῶν τῆς γῆς· καὶ τόξον, καὶ
ῥομφαίαν, καὶ πόλεμον συντρίψω ἀπὸ τῆς
19 γῆς, καὶ κατοικιῶ σε ἐπ' ἐλπίδι. Καὶ μνηστεύσομαί
σε ἐμαυτῷ εἰς τὸν αἰῶνα, καὶ μνηστεύσομαί
σε ἐμαυτῷ ἐν δικαιοσύνῃ, καὶ ἐν
20 κρίματι, καὶ ἐν ἐλέει, καὶ ἐν οἰκτιρμοῖς, Καὶ
μνηστεύσομαί σε ἐμαυτῷ ἐν πίστει, καὶ ἐπιγνώσῃ
21 τὸν κύριον. Καὶ ἔσται ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ,
λέγει κύριος, ἐπακούσομαι τῷ οὐρανῷ,
22 καὶ (λ) αὐτὸς ἐπακούσεται τῇ γῇ, Καὶ
ἡ γῆ ἐπακούσεται τὸν σῖτον, καὶ τὸν οἶνον, καὶ τὸ
ἔλαιον, καὶ αὐτὰ ἐπακούσεται τῷ Ἰεζραέλ.
23 Καὶ σπερῶ αὐτὴν ἐμαυτῷ ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ
24 (μ) ἀγαπήσω τὴν Οὐκ ἠγαπημένην, Καὶ ἐρῶ
τῷ Οὐ λαῷ μου, Λαός μου εἶ σύ· καὶ αὐτὸς
ἐρεῖ, Κύριος ὁ θεός μου εἶ σύ.

MS.A. (θ) ἔτι (ι) ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ διαθήκην μετὰ (κ) μετὰ τῶν (λ) ὁ
οὐρανὸς (μ) ἐλεήσω τὴν οὐκ ἠλεημένην, Καὶ

Et auferam nomina Baalim de ore 17
ejus: & non recordabuntur
ultrà nominum eorũ. Et diſponã 18
eis teſtamentum in die illa cum
beſtiis agri, & cum volatilibus
cœli, & reptilibus terræ. Et arcũ,
& gladium, & bellum conteram
de terra, & habitare (i) te faciam
in ſpe. Et ſponſabo te mihi in 19
ſempiternum: & ſponſabo te mihi
in juſtitia, & in judicio, & in
miſericordia, & in miſerationibus:
Et ſponſabo te mihi in fide: 20
& (k) cognoſces Dominum. Et 21
erit in die illa, dicit Dominus:
Exaudiam cœlum: & ipſum exaudiet
terram: Et terra exaudiet 22
frumentum, & vinum, & oleum:
& hæc exaudient Iezrael. Et ſeminabo 23
eam mihi ſuper terram,
& (l) diligam Non dilectam, Et 24
dicam Non populo meo; Populus
meus es tu. Et ipſe dicet; Dominus
Deus meus es tu.

ΚΕΦ. γ'.

1 ΚΑὶ εἶπε κύριος πρός με, Ἔτι πορεύθητι,
καὶ ἀγάπησον γυναῖκα ἀγαπῶσαν πονηρὰ,
καὶ μοιχαλίν, καθὼς ἀγαπᾷ ὁ θεὸς
τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ, καὶ αὐτοὶ (α) ἐπιβλέπουσιν
ἐπὶ θεοὺς ἀλλοτρίους, καὶ φιλοῦσι πέμματα
2 μετὰ (β) σταφίδος. Καὶ ἐμισθωσάμην ἐμαυτῷ
πεντεκαίδεκα ἀργυρίου, καὶ γομὸρ
3 κριθῶν, καὶ νέβελ οἴνου. Καὶ εἶπα πρὸς αὐτήν,
Ἡμέρας πολλὰς καθήσῃ ἐπ' ἐμοί, καὶ
οὐ μὴ πορνεύσῃς, οὐδὲ μὴ γένῃ ἀνδρὶ (γ),
4 καὶ ἐγὼ ἐπὶ σοί. Διότι ἡμέρας πολλὰς
καθήσονται οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, οὐκ ὄντος βασιλέως,
οὐδὲ ὄντος ἄρχοντος, (δ) οὐδὲ οὔσης
θυσίας, οὐδὲ ὄντος θυσιαστηρίου, (ε)
5 οὐδὲ ἱερατείας, οὐδὲ δήλων. Καὶ μετὰ ταῦτα
ἐπιστρέψουσιν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, καὶ ἐπιζητήσουσι
(ζ) κύριον τὸν θεὸν αὐτῶν, καὶ Δαυὶδ
τὸν βασιλέα αὐτῶν, καὶ ἐκστήσονται ἐπὶ τῷ
κυρίῳ, καὶ ἐπὶ τοῖς ἀγαθοῖς αὐτοῦ ἐπ' ἐσχάτων
τῶν ἡμερῶν.

MS.A. (α) ἀποβλέπουσιν (β) σταφίδων. (γ) ἑτέρῳ, κἀγὼ (δ) οὐκ (ε)
οὔτε ἱερατείας, οὔτε (ζ) τὸν κύριον θεὸν

CAP. III.

ET dixit Dominus ad me; Adhuc 1
vade, & dilige mulierem diligentem
mala, et adulteram: ſicut
diligit Deus filios Iſrael: & ipſi
reſpiciunt ad deos alienos, & amant
coctiones cum (a) vinaciis.
Et (b) conduxi mihi quindecim 2
argenteis, & Gomor hordei, &
(c) Nebel vini. Et dixi ad eam; 3
Dies multos ſedebis (d) ſuper me:
& non fornicaberis, nec eris (e)
viro: & ego ſuper te. Quia diebus 4
multis ſedebunt filii Iſrael
ſine rege, ſine principe, ſine ſacrificio,
ſine altari, ſine ſacerdotio,
(f) ſine manifeſtationibus. Et poſt 5
hæc revertentur filii Iſrael: &
quærent Dominum Deum ſuum,
& David regem ſuum: & ſtupebunt
ad Dominum, & ſuper
bonis ejus in (g) noviſſimis
diebus.

ΚΕΦ. δ'.

1 ἈΚούσατε λόγον κυρίου υἱοὶ Ἰσραὴλ,
(α) ὅτι κρίσις τῷ κυρίῳ πρὸς τοὺς κατοικοῦντας
τὴν γῆν, διότι οὐκ ἔστιν ἀλήθεια,
οὐδὲ ἔλεος, οὐδὲ ἐπίγνωσις θεοῦ ἐπὶ τῆς γῆς.
2 Ἀρὰ, καὶ ψεῦδος, καὶ φόνος, καὶ κλοπὴ, καὶ
μοιχεία κέχυται ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ αἵματα ἐφ'
αἵμασι μίσγουσι.

MS.A. (α) διότι

CAP. IV.

Audite verbum Domini, filii 1
Iſrael: quia judicium Domino
ad habitatores terræ: quia non eſt
veritas, neque miſericordia, neque
ſcientia Dei ſuper terram. Maledictio, 2
& mendacium, & homicidium,
& furtum, & adulterium
effuſum eſt ſuper terram; &
(a) ſanguines in ſanguinibus
miſcent.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

17 18 וְאַעְדֵּי יַת שׁוּם טַעֲוַת עַמְמַיָּא מִפּוּמְהוֹן וְלָא יְהֵי דָּכְרָן שׁוּמְהוֹן עוֹד : וְאֶגְזַר לְהוֹן קְיָם
בְּעִדָּנָא הַהִיא דִּיהוֹן שְׁלָם עִם חֵיוַת בָּרָא וְעִם עוֹפָא דִשְׁמַיָּא וְרַחֲשָׁא דְאַרְעָא וְקַשְׁתָּא
19 וְחַרְבָּא וְעָבְדֵי קְרָבָא אֲבַטֵּל מִן אַרְעָא וְאַשְׁרֵינוּן לְרוֹחְצָן : וַאֲקַיְמִנְכוֹן קֳדָמַי לְעָלַם
20 וַאֲקַיְמִנְכוֹן קֳדָמַי בְּקוּשְׁטָא וּבְדִינָא וּבְחִסְדָּא וּבְרַחֲמֵי : וַאֲקַיְמִנְכוֹן קֳדָמַי בְּהֵימָנוּתָא
21 וְתִדְעוּן לְמִדְחַל מִן קֳדָם יְיָ : וִיהֵי בְּעִדָּנָא הַהִיא אֲקַבֵּל צְלוֹתְכוֹן אֲמַר יְיָ אַפְקֵיד יַת שְׁמַיָּא
22 וְאִנּוּן יַחֲתוּן מִטְרָא עַל אַרְעָא : וְאַרְעָא תַּרְבֵּי עֲבוּרָא וְחַמְרָא וּמִשְׁחָא וְאִנּוּן יִסְפְּקוּן
23 לְגָלְוָת עַמִּי : וַאֲקַיְמִנְכוֹן קֳדָמַי בְּאַרְעָא בֵּית שְׁכִנְתִּי וְאַרְחֵם עֲלֵיהוֹן דְּלָא רְחִימִין בְּעוֹבָדֵיהוֹן
וְאֵימַר לִדְהֲוֵיתִי אָמַר לְהוֹן לָא עַמִּי בְּרַם עַמִּי אַתּוּן וְהוּא יֵימַר אֱלָהָי :

ג

1 וַאֲמַר יְיָ לִי עוֹד אֱזֵל אִתְנַבֵּי נְבוּאָה עַל בֵּית יִשְׂרָאֵל דְּאִנּוּן דָּמַן לְאִתְּתָא דִרְחִימָא עַל
בַּעְלָהּ וּמְזַנְיָא עִלּוֹהִי וְכָל כְּדֵין רָחֵים לַהּ וְלָא צָבֵי לְמִפְטְרַהּ כֵּן רְחִימַת יְיָ עַל בְּנֵי יִשְׂרָאֵל
וְאִנּוּן מִתְפְּנָן בָּתַר טַעֲוַת עַמְמַיָּא בְּרַם אִם יְתוּבוּן יִשְׁתְּבֵיק לְהוֹן וִיהוֹן דָּמַן לִגְבַר דְּאִשְׁתְּלֵי
2 וַאֲמַר מִלָּא בְּחַבְרֵיהּ : וּפְרַקְתִּנּוּן בְּמֵימְרִי בְּיוֹם חַמְשָׁא עֲסַר לְיֶרַח נִיסָן וִיהַבִית יַת כְּסַף
תִּקְלַיָּא כִּיפּוּר לְנַפְשְׁהוֹן וַאֲמָרֵית דִּיהוֹן מְקָרְבִין קֳדָמַי עוֹמֶר אֲרָמוּתָא מַעֲלַלְתְּ סְעָרִין :
3 נְבִיָּא אֲמַר לַהּ כְּנִשְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל חוֹבֵיכוֹן גְּרַמוּ לְכוֹן דְּתִתְגְּלוֹן יוֹמִין סַגִּיאִין תִּתְנְהוֹן
4 לְפוּלְחָנִי לָא תִטְעוֹן וְלָא תִפְלְחוּן לְטַעֲוָתָא וְאַף אֲנָא עָתִיד לְרַחֲמָא עֲלֵיכוֹן : אֲרֵי יוֹמִין
סַגִּיאִין יְתִבוּן בְּנֵי יִשְׂרָאֵל לֵית מַלְכָּא מִדְּבֵית דָּוִד וְלֵית דְּעָבֵיד שׁוּלְטָן עַל יִשְׂרָאֵל וְלֵית
5 דְּדָבַח לְרַעֲוָא בִּירוּשְׁלֶם וְלֵית קָמְתָא בְּשֹׁמְרוֹן וְלֵית אֵפוֹד וּמְחַוֵּי : בָּתַר כֵּן יְתוּבוּן בְּנֵי
יִשְׂרָאֵל וְיִתְבְּעוּן יַת פּוּלְחָנָא דַיְיָ אֱלָהֲהוֹן וְיִשְׁתַּמְעוּן לִמְשִׁיחָא בַּר דָּוִד מַלְכְּהוֹן וְיִתְנְהוֹן
לְפוּלְחָנָא דַיְיָ וְסַגֵּי טוּבֵיהּ דְּיֵיתֵי לְהוֹן בְּסוֹף יוֹמַיָּא :

ד

1 קַבִּילוּ פִּתְגָמָא דַיְיָ בְּנֵי יִשְׂרָאֵל אֲרֵי דִינָא קֳדָם יְיָ עִם יָתְבֵי אַרְעָא אֲרֵי לֵית עָבְדֵי קוּשְׁטָא
2 וְלֵית גָּמְלֵי חִסְדָּא וְלֵית דִּמְהַלְּכִין בִּדְחַלְתָּא דַיְיָ בְּאַרְעָא : יֵימָן לְשִׁקַר וְכָדְבִין וְקָטְלֵי
נַפְשָׁן וְגָנְבִין וְנָאֲפִין וּמוֹלְדִין בְּנִין מִנְּשֵׁי חַבְרֵיהוֹן וְחוֹבִין עַל חוֹבִין מוֹסְפִין :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et auferam nomen idolorum populorũ de ore eorum, & non fiet memoria 17
nominis eorũ in poſterũ. Et feriã eis pactũ in tempore illo, ut degant pacificè 18
cum fera agreſti, & cum volucre cœli atque reptili terræ: & arcũ &
gladiũ ac bellatores exterminabo de terra, & habitare eos faciã confidenter.
Et conſolidabo vos corã me in æternũ, ſtabiliámque vos in veritate & 19
judicio, & in miſericordia & miſerationib⁹. Deniq; confirmabo vos corã 20
me in fide; & ſcietis timere à facie Dñi. Erit verò tunc temporis, ſuſcipiã 21
orationé veſtrã, ait Dñs: mandabo cœlis, & ipſi dimittent pluviam ſuper
terrã. Et terra producet frumentũ & vinũ oleúmque, quæ ſint factura ſatis 22
transmigrationi populi mei. Et ſtabiliam *vos* corã me in terra dom⁹ 23
majeſtatis meæ; & miſerebor illorũ qui erant miſericordia indigni propter
opera ſua: & dicã iis quib⁹ dicebam, Non popul⁹ meus, utique popul⁹ me⁹
eſtis vos; & ipſi reſpondebunt, Deus meus.

CAP.III.

ET dixit Dñs ad me iterũ: Vade, vaticinare prophetiam adverſum domũ 1
Iſrael; qui ſimiles ſunt mulieri chariſſimæ ſuo marito; quæ licet fornicetur
ſub eo, adeò tamen diligit eã, ut non velit dimittere eam: talis eſt dilectio
Dñi erga filios Iſrael; at ipſi ſe vertunt ad idola populorum: veruntamen
ſi convertantur, dimittetur eis, & aſſimilabuntur viro qui ignoranter
peccavit, & dixit ſermonem in *ſocium ſuũ*. Et redemi eos per verbum 2
meũ die quintadecima menſis Niſan, & dedi argentum in pondere pro
pretio redemptionis animarũ eorum: & dixi, ut offerrent coram me manipulum
elevationis de frugibus hordeaceis. Propheta dic ei, Congregatio 3
Iſrael, peccata veſtra in cauſa fuerunt vobis, ut exularetis quam plurimis
diebus: applicabitis vos cultui meo, non fornicabimini neque famulabimini
idolis, ego quoque miſerturus ſum veſtri. Quia diebus multis manebunt 4
filii Iſrael abſque rege de domo David [*prognato,*] & abſque dominium
capeſſente in Iſrael; nec erit qui ſacrificet in beneplacitũ in Jeruſalé,
neq; erit in Samaria excelſũ, nec non Ephod, nec qui reſponſum reddat. Poſtea 5
pœnitentia ducentur filii Iſrael & quærent cultũ Dñi Dei ſui, & obedient
Chriſto filio David regi ſuo, atque ſtudebunt cultui Dñi, & multiplicabitur
bonitas ej⁹ quæ adventura eſt eis in fine dierum.

CAP.IV.

SUſcipite verbũ Dñi *filii* Iſrael, ſiquidé diſceptatio corã Dño eſt cum habitatorib⁹ 1
terræ, quia non ſunt operatores veritatis, nec retribuentes miſericordiã,
neq; qui ambulent in timore Dñi in terra. Jurant falſò, & mentiuntur, 2
occidúntq; animas & furantur, & adulteria committentes generant
filios ex uxoribus proximorum ſuorum, & aggregant peccata peccatis.

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

17 * ܘܐܥܒܪ ܫܡܗܐ ܕܒܥܠܐ ܡܢ ܦܘܡܗ̇. ܘܠܐ ܢܬܕܟܪܘܢ ܬܘܒ ܒܫܡܗܘܢ. * ܘܐܩܝܡ ܠܗܘܢ ܩܝܡܐ
18 ܒܝܘܡܐ ܗܘ .· ܥܡ ܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ ܘܥܡ ܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܪܚܫܐ ܕܐܪܥܐ * ܘܩܫܬܐ
19 ܘܣܝܦܐ ܘܩܪܒܐ ܐܒܛܠ ܡܢ ܐܪܥܐ. ܘܐܫܪܐ ܐܢܘܢ ܒܣܒܪܐ. * ܘܐܡܟܪܝܟܝ ܠܝ ܠܥܠܡ.
20 ܘܐܡܟܪܝܟܝ ܠܝ ܒܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܒܕܝܢܐ ܘܒܛܝܒܘܬܐ ܘܒܪܚܡܐ. * ܘܐܡܟܪܝܟܝ ܠܝ ܒܗܝܡܢܘܬܐ
21 ܘܬܕܥܝܢ ܠܡܪܝܐ. * ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ .· ܐܥܢܐ ܠܫܡܝܐ. ܘܗܢܘܢ ܢܥܢܘܢ
22 ܠܐܪܥܐ. * ܘܐܪܥܐ ܬܥܢܐ ܠܥܒܘܪܐ .· ܘܠܚܡܪܐ ܘܠܡܫܚܐ. ܘܗܢܘܢ ܢܥܢܘܢ ܠܐܝܙܪܥܝܠ.
23 * ܘܐܙܪܥܝܗ̇ ܠܝ ܒܐܪܥܐ. ܘܐܪܚܡ ܥܠ ܠܐ ܐܬܪܚܡܬ. ܘܐܡܪ ܠܠܐ ܥܡܝ .· ܥܡܝ ܐܢܬ. ܘܗܘ
ܢܩܪܝܢܝ ܐܠܗܝ. * ܫܠܡ * ܒ *

1 * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܬܘܒ ܙܠ ܪܚܡ ܐܢܬܬܐ ܓܝܪܬܐ ܕܪܚܡܐ ܒܝܫܬܐ .· ܐܝܟ ܕܪܚܡ ܡܪܝܐ
ܠܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ .· ܘܗܢܘܢ ܐܬܦܢܝܘ ܒܬܪ ܐܠܗܐ ܐܚܪܢܐ .· ܘܪܚܡܘ ܕܘܫܫܐ ܕܥܢܒܐ.
2 * ܘܙܒܢܬܗ̇ ܠܝ ܒܚܡܫܬܥܣܪܐ ܕܣܐܡܐ. ܘܟܘܪ ܘܦܠܓܐ ܕܣܥܪܐ. * ܘܐܡܪܬ ܠܗ̇ ܝܘܡܬܐ
3 ܣܓܝܐܐ ܬܬܒܝܢ ܠܝ. ܠܐ ܬܙܢܝܢ. ܘܠܐ ܬܗܘܝܢ ܠܓܒܪ. ܘܐܦ ܐܢܐ ܐܗܘܐ ܠܘܬܟܝ. * ܡܛܠ
4 ܕܝܘܡܬܐ ܣܓܝܐܐ ܢܬܒܘܢ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ : ܕܠܐ ܡܠܟܐ ܘܠܐ ܫܠܝܛܐ .· ܘܕܠܐ ܕܒܚܬܐ ܘܕܠܐ
ܡܕܒܚܐ .· ܘܕܠܐ ܠܒܫ ܐܦܘܕܐ ܘܣܐܡ ܒܣܡܐ. * ܘܡܢ ܒܬܪܟܢ ܢܬܦܢܘܢ ܒܢܝ
5 ܐܝܣܪܝܠ .· ܘܢܒܥܘܢ ܠܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ. ܘܠܕܘܝܕ ܡܠܟܗܘܢ. ܘܢܕܥܘܢ ܠܡܪܝܐ
ܘܠܛܝܒܘܬܗ. ܒܚܪܬܐ ܕܝܘܡܬܐ. * ܫܠܡ * ܓ *

1 * ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ : ܡܛܠ ܕܕܝܢܐ ܠܡܪܝܐ ܥܡ
ܥܡܘܪܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܩܘܫܬܐ ܘܐܦܠܐ ܛܝܒܘܬܐ .· ܐܦܠܐ ܝܕܥܬܗ ܕܐܠܗܐ
2 ܒܐܪܥܐ. * ܠܘܛܬܐ : ܘܕܓܠܘܬܐ : ܘܩܛܠܐ : ܘܓܢܒܘܬܐ ܘܓܘܪܐ ܣܓܝܘ. ܘܕܡܐ
ܒܕܡܐ ܚܠܛܘ.

Et amovebo nomen Baalis ab ore ipſius, nec 17
mentionem ultrà facient nominis ejus. Et 18
pangam fœdus pro ipſis eo die cum beſtiis deſerti, & cum volucribus cœli, & reptilibus
terræ: arcum, gladium, ac bellum abolebo
de terra, & efficiam ut habitent ſecuri: Et 19
deſponſabo te mihi in perpetuum, deſponſabo inquam, te mihi in juſtitia & judicio, in
gratia & miſerationibus: Deſponſabo te 20
mihi fide, & cognoſces Dominum. Et erit eo 21
die, dicit Dominus, ut reſpondeam cœlis,
ipſi verò terræ reſpondeant, Et terra re- 22
ſpondeat frumento, vino, & oleo; & iſta reſpondeant Izareeli. Et ſeminabo eam mihi 23
in terra, & miſericordiâ utar erga Non conſecutam miſericordiam: & Non populum
meum vocabo, Popule meus; & ipſe vocabit me, Deus meus.

CAP. III.

DEinde dixit mihi Dominus; Vade rurſus, 1
ama mulierem adulteram amantem ſcelera:
quemadmodum cùm dilexerit Dominus filios
Iſraelis, ipſi tamen converterunt ſe poſt deos
alienos, & amaverunt macerata uvarum paſſarum. Itaque emi illam mihi quindecim ar- 2
genteis, & ſeſqui-modio hordei: Et dixi il- 3
li; Diebus multis ſedeas apud me; ne ſcorteris, néve tui copiam facias cuiquam: viciſſim ego ero apud te. Nam diebus multis ſeſ- 4
ſuri ſunt Iſraelitæ ſine rege, & ſine principe,
ſine ſacrificio, & ſine altari, ſine induente
ephod, & adolente thura. Poſtea reverten- 5
tur Iſraelitæ, & requirent Dominum Deum
ſuum, & Davidem regem ſuum: & cognoſcent Dominum & bonitatem ejus, diebus
noviſſimis.

CAP. IV.

AUdite ſermonem Domini, Iſraelitæ; quia 1
lis eſt Domino cum habitatoribus terræ, quòd
nulla ſit fides, neque beneficentia, neque
agnitio Dei in terra. Maledictio, mendaci- 2
um, cædes, furtum, & adulterium multiplicata ſunt, & ſanguinem cum ſanguine commiſcuerunt.

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

17 * وانزع اسماء باعل من فمها * ولا تذكر ايضا اسماهم * واعهد لهم في ذلك اليوم عهدا 18
مع وحوش القفر * ومع طيور السماء * ومع دبابات الارض * واكسر القوس والسيف والحرب
19 من الارض * واسكنك على الرجاء * واخطبك لذاتي الى الابد * واخطبك لذاتي بالعدل
20 والحكم * وبالرحمة والرافات * واخطبك لذاتي بالايمان * وتعرفين الرب * ويكون في ذلك 21
22 اليوم يقول الرب * استجيب للسماء * والسماء تستجيب للارض * والارض تستجيب للقمح *
23 والقمح والخمر والزيت وهاولاء يستجيبون لاسرايل * وازرعها لذاتي على الارض * وارحم
24 الغير مرحومة * واقول للذين ليسوا شعبي شعبي انت * وهو يقول * الرب الهي انت *

* الفصل الثالث *

1 * وقال لي الرب * امض وحب امراة تحب الشر والفجور * كما احب الله بني اسرايل * وهم ينظرون
2 الى الالهة الغرباء * ويحبون الملتوت مع الزبيب * واجرتها لذاتي بخمسة عشر من الفضة * وحومر
3 من الشعير * ونبل من الخمر * وقلت لها * اياما كثيرة تجلسي عندي * ولا تزني * ولا
4 تكوني لرجل اخر * وانا لك * من اجل ان بني اسرايل يجلسون اياما كثيرة بغير ملك
5 ولا رييس * ولا ذبيحة ولا مذبح * ولا كهنوت ولا مرشد * وبعد هذا يرجع بنو اسرايل
يطلبون الرب وداود ملكهم * ويعترفون بالرب وبخيراته في الايام الاخيرة *

* الفصل الرابع * * الاصحاح الثاني *

1 * اسمعوا قول الرب يا بني اسرايل * من اجل ان للرب حكومة مع سكان الارض * من اجل
2 انه ليس حق موجودا * ولا رحمة ولا معرفة بالله على الارض * لعنة وكذب * وقتل وسرقة
وفسق اهرق على الارض * ويخلطون الدماء بالدماء *

Amovebo enim nomina Baal ab ore ejus, ut 17
non recordetur ampliùs nominum eorum.
Et pangam eis illo die fœdus cum beſtiis 18
deſerti, cum volatilibus cœli, & cum
reptilibus terræ: & frangam arcum,
gladium, ac bellum de terra: & faciam ut habites in ſpe. Et deſponſabo te 19
mihi in perpetuum, deſponſabo te mihi in
juſtitia & judicio, in miſericordia &
miſerationibus: Deſponſabo te mihi in 20
fide, & agnoſces Dominum. Erit etiam 21
eo die, dicit Dominus, ut exaudiam cœlum, cœlum exaudiat terram, Terra 22
frumentum exaudiat; & frumentum,
vinum, et oleum; atque iſta exaudiant
Iſraelem. Et ſeminabo eam mihi ſuper 23
terram, & miſerebor Non miſerandæ. Et 24
dicam iis qui Non ſunt populus meus,
Populus meus es; & ipſe dicet, Dominus Deus meus es.

CAP. III.

PRætereà dixit mihi Dominus; Abi, et 1
ama mulierem amantem flagitia & adulterium; quemadmodum amavit Deus filios Iſraelis, & ipſi reſpiciunt ad deos
alienos, & amant depſitam cum uvis
paſſis maſſam. Igitur conduxi eam mihi 2
quindecim argenteis, gomer hordei, &
nebel vini: Et dixi ei; Diebus multis 3
ſedebis apud me, non fornicaberis, neque
eris alteri viro: ego viciſſim tuus ero.
Nam filii Iſraelis ſedebunt dies multos 4
ſine rege & ſine principe, ſine ſacrificio
& ſine altari, ſine ſacerdotio & ſine
docente. Et poſt hæc reverſi filii Iſra- 5
elis quærent Dominum & Davidem regem ſuum, & fatebuntur Dominum &
beneficia ejus diebus poſtremis.

CAP. IV.

Textus ſecundus.

AUdite ſermonem Domini ô filii Iſ- 1
raelis; nam contentio eſt Domino cum
habitatoribus terræ, eò quòd non extet
veritas, neque miſericordia, neque agnitio Dei ſuper terram. Maledictio, & 2
mendacium, cædes, furtum, & adulterium effuſum eſt ſuper terram, miſcentque ſanguines cum ſanguinibus.

הושע : ד

bestia in , ea in habitans omnis infirmabitur & , terra lugebit Propterea
3 עַל־כֵּן תֶּאֱבַל הָאָרֶץ וְאֻמְלַל כָּל־יוֹשֵׁב בָּהּ בְּחַיַּת
Verè .colligentur maris piſces etiam & ; cœlorum volatili in & , agri
4 הַשָּׂדֶה וּבְעוֹף הַשָּׁמָיִם וְגַם־דְּגֵי הַיָּם יֵאָסֵפוּ׃ אַךְ
judicantes tanquam tuus populus & ; vir arguat non & litiget non vir
אִישׁ אַל־יָרֵב וְאַל־יוֹכַח אִישׁ וְעַמְּךָ כִּמְרִיבֵי
; nocte ,tecum propheta etiam corruet & , hodie corrues Et .ſacerdotem
5 כֹהֵן׃ וְכָשַׁלְתָּ הַיּוֹם וְכָשַׁל גַּם־נָבִיא עִמְּךָ לָיְלָה
quia ; ſcientia abſque meus populus ſunt Succiſi .tuam matrem ſuccidam &
6 וְדָמִיתִי אִמֶּךָ׃ נִדְמוּ עַמִּי מִבְּלִי הַדָּעַת כִּי
: mihi fungendo ſacerdotio à te reprobabo & repuliſti ſcientiam tu
אַתָּה הַדַּעַת מָאַסְתָּ וְאֶמְאָסְאךָ מִכַּהֵן לִי
.ego etiam tuorum filiorum oblivifcar , tui Dei legis es oblitus &
וַתִּשְׁכַּח תּוֹרַת אֱלֹהֶיךָ אֶשְׁכַּח בָּנֶיךָ גַּם־אָנִי׃
eorum gloriam : mihi peccaverunt ſic ,eorum multitudinem Secundùm
7 כְּרֻבָּם כֵּן חָטְאוּ־לִי כְּבוֹדָם
ad & ; comederunt mei populi Peccatum .commutabo ignominiam in
8 בְּקָלוֹן אָמִיר׃ חַטַּאת עַמִּי יֹאכֵלוּ וְאֶל־
,populus ſicut fuit Et .ſuam animam levaverunt eorum iniquitatem
9 עֲוֹנָם יִשְׂאוּ נַפְשׁוֹ׃ וְהָיָה כָעָם
.ei reddam ejus ſtudia & ,ejus vias eum ſuper viſitabo & ; ſacerdos ſic
כַּכֹּהֵן וּפָקַדְתִּי עָלָיו דְּרָכָיו וּמַעֲלָלָיו אָשִׁיב לוֹ׃
quoniã : erumpent non &,ſunt fornicati ; ſaturabuntur non &,comedent Et
10 וְאָכְלוּ וְלֹא יִשְׂבָּעוּ הִזְנוּ וְלֹא יִפְרֹצוּ כִּי־
,vinum & ,Fornicatio .cuſtodiendum ad dereliquerunt Dominum
11 אֶת־יְהוָה עָזְבוּ לִשְׁמֹר׃ זְנוּת וְיַיִן
ejus baculus & ,poſtulabit ſuo ligno in meus Populus .cor capiet muſtum &
12 וְתִירוֹשׁ יִקַּח־לֵב׃ עַמִּי בְּעֵצוֹ יִשְׁאָל וּמַקְלוֹ
ſunt Fornicati & ,fecit errare fornicationum ſpiritus nam : ei annuntiabit
יַגִּיד לוֹ כִּי רוּחַ זְנוּנִים הִתְעָה וַיִּזְנוּ
ſuper & ,immolaverunt montium capita Super .ſuis diis deſuper
13 מִתַּחַת אֱלֹהֵיהֶם׃ עַל־רָאשֵׁי הֶהָרִים יְזַבֵּחוּ וְעַל־
quia ,terebinthum & ,populum & ,quercum ſubtus ,adoleverunt colles
הַגְּבָעוֹת יְקַטֵּרוּ תַּחַת אַלּוֹן וְלִבְנֶה וְאֵלָה כִּי־
veſtræ nurus & , veſtræ filiæ fornicabuntur ideo : ejus umbra bona
טוֹב צִלָּהּ עַל־כֵּן תִּזְנֶינָה בְּנוֹתֵיכֶם וְכַלּוֹתֵיכֶם
,fuerint fornicatæ cùm ,veſtras filias ſuper viſitabo Non .erunt adulteræ
14 תְּנָאַפְנָה׃ לֹא־אֶפְקוֹד עַל־בְּנוֹתֵיכֶם כִּי תִזְנֶינָה
cum hi quoniam ,commiſerint adulteria cùm veſtras nurus ſuper &
וְעַל־כַּלּוֹתֵיכֶם כִּי תְנָאַפְנָה כִּי־הֵם עִם־
populus & : ſacrificaverunt ſcortis cum & ,ſe diviſerunt meretricibus
הַזֹּנוֹת יְפָרֵדוּ וְעִם־הַקְּדֵשׁוֹת יְזַבֵּחוּ וְעָם
delinquat ne , Iſrael tu fornicans Si .ceſpitabit ,intelliget non
15 לֹא־יָבִין יִלָּבֵט׃ אִם־זֹנֶה אַתָּה יִשְׂרָאֵל אַל־יֶאְשַׁם
, Beth-aven aſcendatis ne & ,Ghilghal ingrediamini ne & ; Jehudah
יְהוּדָה וְאַל־תָּבֹאוּ הַגִּלְגָּל וְאַל־תַּעֲלוּ בֵּית אָוֶן
declinans vacca ſicut Quoniam .Dominus Vivens , juretis ne &
16 וְאַל־תִּשָּׁבְעוּ חַי־יְהוָה׃ כִּי כְּפָרָה סֹרֵרָה
agnum tanquam Dominus eos paſcet nunc : Iſrael declinavit
סָרַר יִשְׂרָאֵל עַתָּה יִרְעֵם יְהוָה כְּכֶבֶשׂ
Receſſit .eum dimitte , Ephraim dolorum Socius .latitudine in
17 18 בַּמֶּרְחָב׃ חֲבוּר עֲצַבִּים אֶפְרָיִם הַנַּח־לוֹ׃ סָר
ignominiam afferte ,dilexerunt ,ſunt fornicati fornicando ; eorum potus
סָבְאָם הַזְנֵה הִזְנוּ אָהֲבוּ הֵבוּ קָלוֹן
afficientur pudore & : ſuis alis in eam ſpiritus Ligavit .ejus clypei
19 מָגִנֶּיהָ׃ צָרַר רוּחַ אוֹתָהּ בִּכְנָפֶיהָ וְיֵבֹשׁוּ
.ſuis ſacrificiis à
מִזִּבְחוֹתָם׃

Verſio VULG. LAT.

3 Propter hoc lugebit terra, & infirmabitur omnis qui habitat in ea, in beſtia agri, & in volucre cœli: ſed & piſces maris congregabuntur. 4 Veruntamen unuſquiſque non judicet: & non arguatur vir: populus enim tuus, ſicut hi 5 qui contradicunt ſacerdoti. Et corrues hodiè, & corruet etiam propheta tecum: nocte tacere fe-6 ci matrem tuam. Conticuit populus meus, eò quòd non habuerit ſcientiam: quia tu ſcientiam repuliſti, repellam te, ne ſacerdotio fungaris mihi: & oblita es legis Dei tui, obliviſcar filiorum tu-7 orum & ego. Secundùm multitudinem eorum, ſic peccaverunt mihi: gloriam eorum in ignomini-8 am commutabo. Peccata populi mei comedent, & ad iniquitatem eorum ſublevabunt animas eo-9 rum. Et erit ſicut populus, ſic ſacerdos: & viſitabo ſuper eum vias ejus, & cogitationes ejus red-10 dam ei. Et comedent, & non ſaturabuntur: fornicati ſunt, & non ceſſaverunt: quoniam Dominum dereliquerunt in non cuſtodien-11 do. Fornicatio, & vinum, & ebri-12 etas auferunt cor. Populus meus in ligno ſuo interrogavit, & baculus ejus annuntiavit ei: ſpiritus enim fornicationum decepit eos, & fornicati ſunt à Deo ſuo. 13 Super capita montium ſacrificabant, & ſuper colles accendebant thymiama; ſubtus quercum, & populum, & therebinthum, quia bona erat umbra ejus: ideò fornicabuntur filiæ veſtræ, & ſponſæ 14 veſtræ adulteræ erunt. Non viſitabo ſuper filias veſtras cùm fuerint fornicatæ, & ſuper ſponſas veſtras cùm adulteraverint: quoniam ipſi cum meretricibus converſabantur, & cum effœminatis ſacrificabant, & populus non in-15 telligens vapulabit. Si fornicaris tu, Iſrael, non delinquat ſaltem Juda: & nolite ingredi in Galgala, & ne aſcenderitis in Bethaven, neque juraveritis; Vivit Do-16 minus. Quoniam ſicut vacca laſciviens declinavit Iſrael: nunc paſcet eos Dominus, quaſi agnum 17 in latitudine. Particeps idolo-18 rum Ephraim, dimitte eum. Separatum eſt convivium eorum, fornicatione fornicati ſunt: dilexerunt afferre ignominiam prote-19 ctores ejus. Ligavit eum ſpiritus in alis ſuis, & confundentur à ſacrificiis ſuis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

3 Διὰ τοῦτο πενθήσει ἡ γῆ, καὶ σμικρυνθήσεται σὺν πᾶσι τοῖς κατοικοῦσιν αὐτήν, σὺν τοῖς θηρίοις τοῦ ἀγροῦ, καὶ σὺν τοῖς ἑρπετοῖς τῆς γῆς, καὶ σὺν τοῖς πετεινοῖς τοῦ οὐρανοῦ, καὶ οἱ ἰχθύες τῆς θαλάσσης ἐκλείψουσιν, 4 Ὅπως (β) μηδεὶς μήτε δικάζηται, μήτε ἐλέγχῃ μηδείς· ὁ δὲ 5 λαός μου ὡς ἀντιλεγόμενος ἱερεύς. Καὶ ἀσθενήσει ἡμέρας, καὶ ἀσθενήσει (γ) ὁ προφήτης μετὰ 6 σοῦ. νυκτὶ ὡμοίωσα τὴν μητέρα σου. (δ) Ὡμοιώθη ὁ λαός μου, ὡς οὐκ ἔχων γνῶσιν. ὅτι σὺ ἐπίγνωσιν ἀπώσω, (ε) κἀγὼ ἀπώσομαί σε, τοῦ μὴ ἱερατεύειν μοι· καὶ ἐπελάθου (ζ) νόμον θεοῦ σου, κἀγὼ ἐπιλήσομαι τέκνων σου. 7 Κατὰ τὸ πλῆθος αὐτῶν, οὕτως ἥμαρτόν μοι· 8 τὴν δόξαν αὐτῶν εἰς ἀτιμίαν (η) θήσομαι. Ἁμαρτίας λαοῦ μου φάγονται· καὶ ἐν ταῖς ἀδικίαις 9 αὐτῶν λήψονται τὰς ψυχὰς αὐτῶν. Καὶ ἔσται καθὼς ὁ λαὸς, οὕτως καὶ ὁ ἱερεύς· καὶ ἐκδικήσω ἐπ' αὐτὸν τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ, καὶ τὰ διαβούλια 10 αὐτοῦ ἀνταποδώσω αὐτῷ. Καὶ φάγονται, καὶ οὐ μὴ ἐμπλησθῶσιν· ἐπόρνευσαν, καὶ οὐ μὴ (θ) κατευθύνωσι· διότι τὸν κύριον ἐγκατέλιπον τοῦ 11 φυλάξαι. Πορνείαν καὶ οἶνον καὶ μέθυσμα ἐ-12 δέξατο καρδία Λαοῦ μου. ἐν συμβόλοις ἐπηρώτων, καὶ ἐν ῥάβδοις αὐτοῦ ἀπήγγελλον αὐτῷ. πνεύματι πορνείας ἐπλανήθησαν, καὶ ἐξε-13 πόρνευσαν ἀπὸ τοῦ θεοῦ αὐτῶν. Ἐπὶ τὰς κορυφὰς τῶν ὀρέων ἐθυσίαζον, καὶ ἐπὶ τοὺς βουνοὺς ἔθυον ὑποκάτω δρυὸς, καὶ λεύκης, καὶ δένδρου συσκιάζοντος, ὅτι καλὸν σκέπη· διὰ τοῦτο ἐκπορνεύσουσιν αἱ θυγατέρες ὑμῶν, καὶ αἱ νύμ-14 φαι ὑμῶν μοιχεύσουσι. Καὶ οὐ μὴ ἐπισκέψωμαι ἐπὶ τὰς θυγατέρας ὑμῶν ὅταν (ι) πορνεύσωσι, καὶ ἐπὶ τὰς νύμφας ὑμῶν ὅταν (κ) μοιχεύσωσι· ὅτι αὐτοὶ μετὰ τῶν πορνῶν συνεφύροντο, καὶ μετὰ τῶν τετελεσμένων ἔθυον, καὶ ὁ λαὸς ὁ συνιὼν συνεπλέκετο μετὰ πόρ-15 νης. Σὺ δὲ Ἰσραὴλ μὴ ἀγνόει, καὶ Ἰούδα μὴ εἰσπορεύεσθε εἰς Γάλγαλα, καὶ μὴ ἀναβαίνετε εἰς τὸν (λ) οἶκον Ὤν, καὶ μὴ ὀμνύετε ζῶντα κύ-16 ριον. (μ) Διότι ὡς δάμαλις παροιστρῶσα παροίστρησεν Ἰσραήλ· νῦν νεμήσει αὐτοὺς 17 κύριος ὡς ἀμνὸν ἐν εὐρυχώρῳ. Μέτοχος εἰδώλων Ἐφραὶμ ἔθηκεν ἑαυτῷ σκάνδαλα, 18 Ἡρέτισε Χαναναίους. πορνεύοντες ἐξεπόρνευσαν, ἠγάπησαν ἀτιμίαν ἐκ φρυάγματος 19 (ν) αὐτῶν. Συστροφὴ πνεύματος σὺ εἶ ἐν ταῖς πτέρυξιν (ξ) αὐτῆς, καὶ καταισχυνθήσονται ἐκ τῶν θυσιαστηρίων αὐτῶν.

Ideò lugebit terra, & minuetur cum omnibus, qui habitant eam, cum beſtiis agri, & cum ſerpentibus terræ, & cum volatilibus cœli: & piſces maris deficient, 4 ut nullus neque judicetur, neque arguatur quiſquam. Populus autem meus, quaſi ſacerdos, cui contradicitur: 5 Et infirmabitur per diem: & infirmabitur propheta (b) tecum. Nocti aſſimilavi matrem tuam. 6 Aſſimilatus eſt populus meus, quaſi non habens ſcientiam. Quia tu ſcientiam repuliſti; & ego repellam te, ne ſacerdotio fungaris mihi: & oblita es legis Dei tui: & ego obliviſcar filiorum tuorum. 7 Secundùm multitudinem eorum, ſic peccaverunt mihi. 8 Gloriam eorum in ignominiam ponam. Peccata populi mei comedent: & in iniquitatibus eorum (c) accipient animas eorum. 9 Et erit ſicut populus, ſic et ſacerdos. Et ulciſcar ſuper eum vias ejus, et cogitationes illius reddam ei. 10 Et comedent, et non implebuntur: fornicati ſunt, et non dirigentur: quia Dominum reliquerunt (d) ad cuſtodiendum. 11 Fornicationem, et vinum, et ebrietatem ſuſcepit cor 12 Populi mei. In (e) auguriis interrogabant: et in virgis (f) ejus annuntiabant ei. Spiritu fornicationis ſeducti ſunt: et fornicati ſunt à Deo ſuo. 13 Super vertices montium ſacrificabant, et ſuper colles immolabant, ſubter quercum, et populum, et nemoroſam arborem: quia bonum erat umbraculum. Propterea fornicabuntur filiæ veſtræ, et ſponſæ veſtræ mœchabuntur. 14 Et non viſitabo ſuper filias veſtras, cũ fuerint fornicatæ, et ſuper ſponſas veſtras, cũ adulteraverint. Quoniam ipſi cum meretricibus miſcebantur, et cum (g) initiatis immolabant: et populꝰ [non] intelligens adhærebat meretrici. 15 Tu autem, Iſrael, ne ignores, et Juda: nolite ingredi in Galgala, et ne aſcendatis in domum (h) On, et ne juretis (i) viventem Dominum: 16 Quoniam ſicut vacca aſilo percuſſa inſanivit Iſrael. Nunc paſcet eos Dominus, ſicut agnum in ſpatioſo. 17 Particeps idolorũ Ephræm poſuit ſibi ſcandala: 18 (k) Provocavit Chananæos. Fornicantes fornicati ſunt: dilexerunt ignominiam ex fremitu ejus. 19 Turbo ſpiritus (l) tu es in alis ejus, et confundentur ex altaribus ſuis.

MS. A. (β) μηθεὶς (γ) καὶ προφήτης (δ) Νυκτὶ ὡμοιώθη (ε) καὶ ἐγὼ (ζ) νόμου (η) θήσω. (θ) κατευθυνοῦσι· (ι) πορνεύωσιν, (κ) μοιχεύωσιν· διότι καὶ αὐτοὶ (λ) οἶκον τῆς ἀδικίας, καὶ (μ) Ὅτι ὡς δάμαλις (ν) αὐτῶν. (ξ) αὐτῶν.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 עַל כֵּן תֶּחֱרוּב אַרְעָא וְיִצְדֵּי כָּל דְּיָתֵב בַּהּ בְּחַיַּת בָּרָא וּבְעוֹפָא דִּשְׁמַיָּא וְאַף נוּנֵי יַמָּא יִזְעֲרוּן
4 מִן קֳדָם חוֹבֵיהוֹן : בְּרַם עַל דְּאָמְרִין סָפַר לָא יַלִּיף וְלָא יוֹכַח נְבִיָּא וְעַמָּךְ נָצָן עִם מַלְפֵיהוֹן :
5 וְתִתְקְלוּן בִּימָמָא וְיִתְקְלוּן אַף נְבִיַּיָּא דְּשִׁקְרָא דִּי עִמְּכוֹן כַּד בְּלֵילְיָא וְאַבְהֵית כְּנִשְׁתְּכוֹן :
6 אִטַּפְּשׁוּ עַמִּי מִבְּלִי דַּעְתָּא אֲרֵי אַתְּ מַדַּע דַּחַלְתִּי קַצְתָּא וְאַרְחֲקִנָּךְ מִלְּשַׁמָּשָׁא קֳדָמַי וְעַל
7 דְּאִתְנְשִׁיתָא אוֹרָיְתָא דֶּאֱלָהָךְ אַרְחֵיק בְּנָךְ אַף אֲנָא : כְּמָא דְּאַסְגֵּיתִי לְהוֹן עֲלַלְלָא כֵּן
8 אַסְגִּיאוּ לְמֶחֱטֵי קֳדָמַי יְקָרְהוֹן בְּקָלָנָא חַלִּיפוּ : כַּהֲנַיָּא פַּסוּ לְמֵיכַל חַטְוַת עַמִּי בְּדִיל
9 לְאוֹסָפָא חוֹבִין עַל חוֹבֵי נַפְשְׁהוֹן : וִיהֵי כְּמָא דְּאַשְׁוֵי חִילוֹנָאָה כְּכָהֲנָא לַאֲפָסָא קוּדְשֵׁיהוֹן
אֲפִּיס יַת יְקָרְהוֹן וַאֲשַׁוֵּי דִּיקִיר לְבַסִּיר בְּדִיל לְאִתְפְּרַע מִנְּהוֹן כְּאָרְחָתְהוֹן בִּישְׁתָא
10 וּכְעוֹבָדֵיהוֹן מְקַלְקְלַיָּא אֲתִיב לְהוֹן : וְיֵכְלוּן וְלָא יִסְבְּעוּן יִסְּבוּן נְשִׁין וְלָא יוֹלְדוּן בְּנִין אֲרֵי
11 12 יַת פּוּלְחָנָא דַּיְיָ שְׁבַקוּ וְלָא נְטָרוּ : זְנוּתָא וְחַמְרָא וְרַוְיָתָא שָׁלֵיף וּמַטְעֵי יַת לִבְּהוֹן : עַמִּי דִּי
בִּצְלַם אָעֵיהּ שָׁאֵיל וּמְדַמֵּי דְּחוּטְרֵיהּ מְחַוֵּי לֵיהּ אֲרֵי רוּחַ דְּטָעוּ אַטְעִיתִנּוּן וּטְעוֹ מִבָּתַר
13 פּוּלְחָנָא דֶּאֱלָהֲהוֹן : עַל רֵישֵׁי טוּרַיָּא מְדַבְּחִין וְעַל רָמָתָא מַסְּקִין בּוּסְמִין תְּחוֹת בְּלוּט
וּלְבַן וּבוּטְמָא אֲרֵי מַעְפֵּי טוּלֵיהּ עַל כֵּן מוּנַיָּן בְּנָתְכוֹן דַּהֲוָאָה לְכוֹן מִבְּנַת עַמְמַיָּא
14 וְכַלָּתְכוֹן דִּנְסַבְתּוּן לִבְנֵיכוֹן מִן עַמְמַיָּא נָיְפָן : לָא אַסְעַר עַל בְּנָתְכוֹן אֲרֵי מוּנַיָּן וְעַל כַּלָּתְכוֹן
אֲרֵי מְנַיְּפָן אֲרֵי אִנּוּן עִם זָנְיָתָא מִסְתַּיְעָן וְעִם נַפְּקַת בָּרָא אָכְלִין וְשָׁתַן וְעַם דָּרָא דְּלָא
15 אִסְתַּכַּל בְּאוֹרָיְתָא הֲלָא אִתְרְטַשׁ : אִם טָעַן אַתּוּן דְּבֵית יִשְׂרָאֵל לָא יִתְחַיְּבוּן דְּבֵית יְהוּדָה
16 לָא תֵיתוּן לְגִלְגָּלָא וְלָא תִסְּקוּן לְבֵיתְאֵל וְלָא תִשְׁתַּבְּעוּן לְשִׁקַּר קַיָּם הוּא יְיָ : אֲרֵי כְּתוֹרָא
דְּאִתְפַּטַּם וּבָעֵט כֵּן מָרֵד בִּסְנֵי טוּבָא יִשְׂרָאֵל כְּעַן יְדַבְּרִנּוּן יְיָ כְּאִמַּר בְּחִיר בְּבִקְעָה :
17 18 אִתְחַבָּרוּ לְטַעֲוָתָא בֵּית יִשְׂרָאֵל שְׁבַקוּ לְהוֹן יַת פּוּלְחָנָא : שִׁלְטוֹנֵיהוֹן אַסְגִּיאוּ שֵׁירוּן
19 מִן אוֹנֵס בְּכֵן טְעוֹ וְאִתְפְּנִיאוּ בָּתַר זְנוּתָא רְחִמוּ דְּתֵיתֵי לְהוֹן קְלָנָא רַבְרְבֵיהוֹן : עוֹבָדֵי
רַבְרְבֵיהוֹן לָא תַקְנִין כְּמָא דְּלֵית אֶפְשַׁר לְמֵצַר רוּחַ בִּכְנַף כְּעַן אַיְתֵי עֲלֵיהוֹן סַנְאָה
וְיִבְהֲתוּן מֵאֱגוֹרֵי טַעֲוָתְהוֹן :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Hanc ob cauſã vaſtabitur terra & exterminio delebitur omnis qui habitat 3 in ea à beſtia agri & volucre cœli: quin & piſces maris diminutionẽ patientur ob illorũ peccata. Verũ eò quòd dicant, Scriba non doceat, nec re-4 prehendat propheta; populꝰ verò tuꝰ litigat cum doctoribꝰ ſuis. Et corru-5 etis hodie, corruent quoque pariter pſeudoprophetæ qui vobiſcum verſantur, tanquã in nocte, & confuſione induã congregationẽ veſtrã. Inſipi-6 ens factꝰ eſt populꝰ meꝰ abſque ſcientia, quia tu ſcire timorẽ mei deteſtatus es, & abjiciã te ne miniſtres corã me: propterea etiã ꝙ oblitꝰ eſt legis Dei tui, expellã filios tuos etiã ego. Sicut multiplicavi eis fruges, ſic multũ pec-7 care addiderunt corã me, gloriam ſuã cum ignominia commutaverunt. Sa-8 cerdotes ſe polluerunt comedendo oblationẽ pro peccato populi mei, ut adderent peccata peccatis animarũ eorũ. Erit itaque cùm collocavero lai-9 cũ *ſicut* ſacerdotẽ ad contaminandas ſolennitates *eorum*, prophanabo gloriã eorũ, atque ponã glorioſũ in contemptibilẽ, ut ultionẽ ſumã ab eis juxta vias eorũ malas, & ſecundũ opera eorũ corrupta reddam eis. Et comedent, 10 & non ſaturabuntur; accipient uxores, ſed non generabunt filios: quia cultũ Dñi reliquerunt & non cuſtodierunt. Fornicatio, vinũ & ebrietas educit, & 11 in errorẽ compellit corda eorũ. Populꝰ meꝰ ſimulachrũ ligni ſui conſulit, & 12 putat baculũ ſuũ poſſe ſibi reſponſũ dare, quia ſpiritꝰ erroris ad errorẽ adegit eos, & aberrarunt *à cultu* Dei ſui. Sup culmina montiũ ſacrificant, & 13 ſuper colles adolent thymiamata ſub ulmo, platano & quercu, eò quòd denſa ſit umbra ejꝰ. Ideò fornicantur filiæ veſtræ quas ſuſcepiſtis de filiabus populorũ: & nurꝰ veſtræ quas accepiſtis filiis veſtris ex populis, adulteria committunt. Non animadvertam in filias veſtras cùm fornicatæ fuerint, & 14 in nurus veſtras cùm adulterium perpetraverint: ipſi enim cum meretricibus ſocietate ſe jungunt, atque cum ſcorto comeſſantur, & potant; populus autem generationis qui non intellexit legem, nónne collidetur. Si erra-15 tis vos ô [*viri*] domꝰ Iſrael, ſaltẽ nõ ſcelere convincantur viri domꝰ Jehuda, neq; veniatis in Galgalam, neque aſcendatis in Bethel, nec juretis in vanũ; vivit namq; Dñs. Quoniã ſicut bos qui ſaginatur & recalcitrat, ſic rebellat 16 propter multitudinẽ bonorũ Iſrael. Nunc deducet eos Dñs, quaſi agnũ electũ in planitie. Participes idolorũ facti ſunt viri domꝰ Iſrael, dereliquerũt 17 ſuã religionem. Principes eorũ multiplicaverunt convivia ex rapina. Ideò 18 erraverunt & ſe converterunt poſt fornicationẽ, quam dilexerunt, ut eveniret ſibi in ignominiam, proceres eorum. Opera magnatum illorum haud recta ſunt, quemadmodum conſtrictus non poteſt 19 teneri ventus in ala: nunc adducam contra eos inimicum; & confuſione obſtupeſcent ob aras idolorum ſuorum.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܡܛܠ ܗܢܐ ܬܬܐܒܠ ܐܪܥܐ. ܘܢܬܟܪܗܘܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ̇. ܘܚܝܘܬܐ ܕܕܒܪܐ ܘܦܪܚܬܐ 3
ܕܫܡܝܐ. ܘܐܦ ܢܘܢܐ ܕܝܡܐ ܢܣܬܝܦܘܢ. * ܡܛܠ ܕܐܢܫ ܠܐ ܕܐܢ. ܘܐܦܠܐ ܡܟܣ. ܘܥܡܟ ܐܝܟ 4
ܟܘܡܪܐ ܡܬܚܪܐ. * ܘܬܬܬܩܠ ܒܐܝܡܡܐ. ܘܬܬܩܠ ܐܦ ܢܒܝܐ ܕܥܡܟ. ܒܠܠܝܐ. 5
ܘܫܬܩܬ ܐܡܟ. * ܫܬܩ ܥܡܝ. ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܒܗ ܝܕܥܬܐ. ܐܝܟ ܕܐܢܬ ܐܣܠܝܬ 6
ܝܕܥܬܐ. ܘܐܣܠܝܟ ܡܢ ܟܘܡܪܘܬܐ. ܘܐܝܟ ܕܛܥܝܬ ܢܡܘܣܗ ܕܐܠܗܟ. ܐܦ ܐܢܐ ܐܛܥܐ
ܒܢܝܟ. * ܐܝܟ ܣܘܓܐܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܚܛܘ ܒܗ. ܘܐܝܩܪܗܘܢ. ܒܨܥܪܐ ܐܚܠܦܘ. * ܚܛܝܬܗ 7 8
ܕܥܡܝ ܐܟܠܘ. ܘܠܥܘܠܗܘܢ. ܐܪܡܝܘ ܢܦܫܬܗܘܢ. * ܘܗܘܐ ܟܘܡܪܐ. ܐܝܟ ܥܡܐ. 9
ܘܐܣܥܘܪ ܥܠܝܗܘܢ ܐܘܪܚܬܗܘܢ. ܘܥܒܕܝܗܘܢ ܐܦܪܘܥ ܐܢܘܢ. * ܘܢܐܟܠܘܢ. ܘܠܐ ܢܣܒܥܘܢ. 10
ܢܙܢܘܢ. ܘܠܐ ܢܣܓܘܢ. ܡܛܠ ܕܠܡܪܝܐ ܫܒܩܘ. * ܘܪܚܡܘ ܙܢܝܘܬܐ. ܘܚܡܪܐ ܘܪܘܝܘܬܐ 11
ܢܣܒܘ ܠܠܒܗܘܢ. * ܥܡܝ ܒܡܠܟܗ ܫܐܠ. ܘܚܘܛܪܗ ܚܘܝܗ. ܡܛܠ ܕܪܘܚܐ 12
ܕܙܢܝܘܬܐ ܐܛܥܝܬ ܐܢܘܢ. ܘܗܦܟܘ ܡܢ ܐܠܗܗܘܢ. * ܥܠ ܪܫܝ ܛܘܪܐ ܕܒܚܘ. ܘܥܠ ܪܡܬܐ 13
ܣܡܘ ܒܣܡܐ. ܬܚܝܬ ܒܠܘܛܐ ܘܚܘܪܐ. ܘܒܛܡܬܐ ܕܫܦܝܪ ܛܠܠܗ̇. ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܙܢܝܢ
ܒܢܬܟܘܢ. ܘܟܠܬܟܘܢ ܢܓܘܪܢ. * ܠܐ ܐܣܥܘܪ ܒܢܬܟܘܢ ܟܕ ܙܢܝܢ. ܘܐܦ ܠܐ ܟܠܬܟܘܢ 14
ܟܕ ܓܝܪܢ. ܡܛܠ ܕܗܢܝܢ ܥܡ ܙܢܝܐ ܡܬܚܠܛܢ. ܘܗܢܘܢ ܥܡ ܢܩܦܬ ܫܘܩܐ
ܡܕܒܚܝܢ. ܘܥܡܐ ܕܠܐ ܡܣܬܟܠ ܥܒܩ ܙܢܝܬܐ. * ܐܢܬ ܕܝܢ ܐܝܣܪܝܠ. ܠܐ ܬܚܝܒ 15
ܠܝܗܘܕܐ. ܘܠܐ ܬܐܙܠܘܢ ܠܓܠܓܠ. ܘܠܐ ܬܣܩܘܢ ܠܒܝܬ ܐܘܢ. ܘܠܐ ܬܐܡܪܘܢ ܚܝ ܗܘ ܡܪܝܐ.
* ܡܛܠ ܕܐܝܟ ܬܘܪܬܐ ܕܡܪܕܐ ܡܢ ܢܝܪܐ. ܗܟܢܐ ܡܪܕܘ. ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܡܛܠ 16
ܢܪܥܐ ܐܢܘܢ ܡܪܝܐ. ܐܝܟ ܐܡܪܐ ܒܦܘܬܝܐ. * ܫܘܬܦܐ ܕܦܬܟܪܐ ܐܦܪܝܡ. ܫܒܘܩ 17
ܠܗ. * ܟܠܗܘܢ ܙܢܘ. ܘܪܚܡܘ ܨܥܪܐ ܘܦܬܟܪܐ. * ܬܬܪܗܒ ܪܘܚܐ ܒܟܢܦܝܗܘܢ. ܘܢܒܗܬܘܢ 18 19
ܡܢ ܡܕܒܚܝܗܘܢ.

Propterea ſedebit in luctu terra, & gement omnes habitatores ejus, tum beſtiæ deſerti, tum volucres cœli; quin etiam piſces maris conſumentur. 3 Quia nemo judicat neque corripit, & populus tuus æquè ac ſacerdos contendit: 4 Ideo offendis interdiu, & offendit etiam propheta qui tecum eſt, noctu: & conticuit mater tua: 5 Conticuit populus meus, quòd non ſit in eo ſcientia. Cùm enim tu ſcientiam rejeceris, rejiciam te à ſacerdotio: & *cùm* oblitus ſis legis Dei tui, obliviſcar ego quoque filiorum tuorum. 6 Quotquot ſunt, totidem peccaverunt, & gloriam ſuam in dedecus mutaverunt. 7 Peccatum populi mei comederunt, & ſceleri eorum dejecerunt animas ſuas: 8 Et effectus eſt Sacerdos, qualis eſt populus. Ideo viſitabo ſuper eos vias eorum, & opera eorum rependam eis. 9 Comedent, & non ſaturabuntur: ſcortabuntur, & non multiplicabuntur; quia Dominum dereliquerunt, 10 Et amaverunt ſcortationem; & vinum atque ebrietas intercepit mentem eorum: 11 Populus meus proprium judicium conſuluit, & proprius baculus indicavit illi. Quia ſpiritus fornicationis ſeduxit eos, & averterunt ſe à Deo ſuo, 12 Supra vertices montium ſacrificaverunt, & ſuper colles adoleverunt thura, ſub quercu, populo, & terebintho cujus pulchra erat umbra: Idcirco ſcortabuntur filiæ veſtræ, & nurus veſtræ mœchabuntur. 13 Non animadvertam in filias veſtras cùm ſcortatæ fuerint, neque nurus veſtras cùm mœchatæ fuerint: nam iſtæ cum fornicatoribus commiſcent ſeſe, & illi cum *fœminis* curſantibus per plateas ſacrificant; & populus rationis expers amplexatus eſt ſcortum. 14 Tu verò Iſrael, ne reum facias Judam, ne abeatis ad Galgalem, néve aſcendatis ad Bethaven, néve dicatis, Per Deum vivum. 15 Nam inſtar juvencæ rebellantis contra jugum, ita rebellaverunt Iſraelitæ: ac proinde paſcet eos Dominus velut agnos in amplo campo. 16 Particeps idolorum eſt Aphrem; ſine illum. 17 Omnes fornicati ſunt, & amaverunt ignominiam & idola. 18 Stridebit ventus in alis eorum, & pudefient propter altaria ſua. 19

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* لاجل هذا تحزن الارض * ويقل مع جميع سكانها * مع وحوش الحقل * مع دبابات الارض * 3
ومع طيور السماء وحيتان البحر تفني * كيف ولا واحد ليس يقضي * ولا واحد لا يوبخ * 4
وشعبي مثل كاهن مماري * ويضعف نهارا * ويضعف النبي معك * امك شبهتها بليل * 5
* وشعبي يشبه كمن ليس له معرفة * لانك انت اقصيت العلم * وانا اقصيك من ان 6
تكهن الي * ونسيت ناموس الهك * وانا انسي اولادك * ككثرتهم هكذا اخطوا الي * 7
اضع مجدهم للهوان * ياكلون خطايا شعبي * وبظلاماتهم ياخذون نفوسهم * وكما يصير 8 9
شعبي * هكذا والكاهن * واقضي عليه بطرقه * واكافيه بافكاره * وياكلون ولا يشبعون * 10
زنوا ولم يستقيموا * من اجل انهم تركوا الرب * ليحفظوا الزنا والسكر * وقبل قلب شعبي 11
الخمر * في المشورات سالوه * وبعصيه اخبروه * ضلوا بروح الزنا * وارتدوا عن الههم * على 12 13
روس الجبال ضحوا * وعلى الاكام ذبحوا * تحت البلوطة والحور * والشجر الظليلة *
لانها تستر جيدا * لاجل هذا تزني بناتكم * وكناتكم يفسقن * ولا اتعهد على 14
بناتكم اذا زنين * وعلى كناتكم اذا فسقن * من اجل ان هاولاء مع الزناة اختلطوا *
ومع الزواني ذبحوا * والشعب الفهم تلبك مع الزانية * وانت يا اسرائيل لا تجهل * ويا يهوذا 15
لا تدخل الى الجلجال * ولا تصعدوا الى بيت الظلم * ولا تحلفوا بالرب الحي * لان 16
مثل عجلة شاردة شرد اسرائيل * الان الرب يرعاهم مثل حمل في الموضع الواسع * افرايم 17
شريك الاوثان * وضع له شكوكا * ارضوا الكنعانيين * زناء زنوا * احبوا الهوان * من زجرهم 18 19
انقلاب الريح انت في اجنحتها * ويخزون من مذابحهم *

Idcircò mœrebit terra, & minuetur cum omnibus habitatoribus ſuis, cum beſtiis agri, cum reptilibus terræ; et cum volatilibus cœli & piſcibus maris interibit. 3 *Quomodo nemo judicat, nec quiſquam arguit? & populus meus ut ſacerdos rixatur,* 4 *Et infirmatur interdiu, & infirmatur propheta tecum? Matrem tuam cum nocte comparavi:* 5 *Et populus meus ſimilis eſt ei qui nullam habet cognitionem. Quia tu procul amoviſti ſcientiam, ego quoque procul amovebo te à ſacerdotali munere fungendo erga me: oblitus es legis Dei tui, ego etiam obliviſcar filiorum tuorum.* 6 *Secundùm multitudinem ſuam, ita peccaverunt in me.* 7 *Exponam gloriam eorum ignominiæ.* 8 *Comedunt peccata populi mei, et iniquitatibus ſuis tollunt animas eorum.* *Et qualis efficitur populus meus, talis etiam ſacerdos. At judicabo eum juxta vias ſuas, et retribuam ei juxta cogitationes ſuas.* 9 *Comedent, et non explebuntur: fornicati ſunt, at non proſperati; quia deſeruerunt Dominum,* 10 *ut ſervarent fornicationem et ebrietatem: et cor populi mei vinum excepit.* 11 *In conſultationib⁹ interrogaverunt eum, et in baculis ejus indicaverunt ei: erraverunt ſpiritu fornicationis, et averterunt ſe à Deo ſuo.* 12 *Super cacumina montium ſacrificaverunt, et ſuper colles immolaverunt, ſubter quercum, et populum, et arborem umbriferam, quia commodè tegebant. Propterea fornicantur filiæ veſtræ, et nurus veſtræ adulterantur;* 13 *Neque viſito filias veſtras cùm fornicatæ fuerint, neque nurus veſtras cùm adulteratæ fuerint: quoniam iſti cum fornicatoribus miſcuerunt ſeſe, et cum fornicatoribus ſacrificaverunt, et populus prudens implicavit ſe ſum meretrice.* 14 *Jam tu O Iſrael ne deſipias; et O Juda, ne ingrediaris in Galgalem; et ne aſcendatis ad domum impietatis, néve juretis per Dominum viventem.* 15 *Nam ut vitula refractaria, refragatus eſt Iſrael. Nunc Dominus paſcet eos velut agnum in loco ſpatioſo.* 16 *Aphrem conſors idolorum poſuit ſibi ſcandala:* 17 *Satisfecerunt Chananæis: fornicando fornicati ſunt: amaverunt infamiam:* 18 *A fremitu eorũ immutatio venti invaſit alas e⁹: et erubeſcent ob altaria ſua.* 19

הוֹשֵׁעַ : ה ו

CAP. V.

regis domus & , Israel domus attendite & ,sacerdotes hoc Audite
1 שִׁמְעוּ־זֹאת הַכֹּהֲנִים וְהַקְשִׁיבוּ בֵּית יִשְׂרָאֵל וּבֵית הַמֶּלֶךְ
,Misspah *in* fuistis laqueus quoniã : judicium vobis quia ,auscultate
הַאֲזִינוּ כִּי לָכֶם הַמִּשְׁפָּט כִּי־פַח הֱיִיתֶם לְמִצְפָּה
declinantes jugulandum ad Et .Tabor super expansum rete &
2 וְרֶשֶׁת פְּרוּשָׂה עַל־תָּבוֹר׃ וְשַׁחֲטָה שֵׂטִים
, Ephraim novi Ego .ipsis omnibus *eruditio* ego & ; *profundaverunt*
3 הֶעְמִיקוּ וַאֲנִי מוּסָר לְכֻלָּם׃ אֲנִי יָדַעְתִּי אֶפְרַיִם
,Ephraim es fornicatus nunc quia : me à est absconditus non Israel &
וְיִשְׂרָאֵל לֹא־נִכְחַד מִמֶּנִּי כִּי עַתָּה הִזְנֵיתָ אֶפְרַיִם
ad *revertendum ad sua studia dabunt* Non .Israel se polluit
4 נִטְמָא יִשְׂרָאֵל׃ לֹא יִתְּנוּ מַעַלְלֵיהֶם לָשׁוּב אֶל־
Dominum & ,eorum *interiori in fornicationum* spiritus quia :suum Deum
אֱלֹהֵיהֶם כִּי רוּחַ זְנוּנִים בְּקִרְבָּם וְאֶת־יְהוָה
, Israel & : ejus *faciebus* in Israel superbia *respondebit* Et .cognoverũt non
5 לֹא יָדָעוּ׃ וְעָנָה גְאוֹן־יִשְׂרָאֵל בְּפָנָיו וְיִשְׂרָאֵל
.eis cum Jehudah etiam *corruit* ; *sua iniquitate in* ruent Ephraim &
וְאֶפְרַיִם יִכָּשְׁלוּ בַּעֲוֺנָם כָּשַׁל גַּם־יְהוּדָה עִמָּם׃
non & , Dominum quærendum ad ibunt *suo bove in &* , *suo pecore In*
6 בְּצֹאנָם וּבִבְקָרָם יֵלְכוּ לְבַקֵּשׁ אֶת־יְהוָה וְלֹא
filios quia ,sunt prævaricati Dominum In .eis ab se *subtraxit* ; invenient
7 יִמְצָאוּ חָלַץ מֵהֶם׃ בַּיהוָה בָּגָדוּ כִּי־בָנִים
.eorum partibus cum mensis eos *comedet* nunc : genuerunt alienos
זָרִים יָלָדוּ עַתָּה יֹאכְלֵם חֹדֶשׁ אֶת־חֶלְקֵיהֶם׃
taratantarizate : Ramah in tuba ,Ghibhah in buccina Clangite
8 תִּקְעוּ שׁוֹפָר בַּגִּבְעָה חֲצֹצְרָה בָּרָמָה הָרִיעוּ
die in erit desolationem in Ephraim .Benjamin te post , Beth-aven
9 בֵּית אָוֶן אַחֲרֶיךָ בִּנְיָמִין׃ אֶפְרַיִם לְשַׁמָּה תִהְיֶה בְּיוֹם
principes Fuerunt *.verum feci notum* Israel tribubus in : correctionis
10 תּוֹכֵחָה בְּשִׁבְטֵי יִשְׂרָאֵל הוֹדַעְתִּי נֶאֱמָנָה׃ הָיוּ שָׂרֵי
aquam tanquam effundam eos super : terminum *transferentes ut* Jehudah
יְהוּדָה כְּמַסִּיגֵי גְּבוּל עֲלֵיהֶם אֶשְׁפּוֹךְ כַּמַּיִם
quoniam ; judicio fractus ,Ephraim Oppressus .meam *indignationem*
11 עֶבְרָתִי׃ עָשׁוּק אֶפְרַיִם רְצוּץ מִשְׁפָּט כִּי
; Ephraim tinea sicut *ego* Et *.jube* post *ivit* , *voluit*
12 הוֹאִיל הָלַךְ אַחֲרֵי־צָו׃ וַאֲנִי כָעָשׁ לְאֶפְרָיִם
,suũ languorem Ephraim vidit Et .Jehudah domui putredo tanquã &
13 וְכָרָקָב לְבֵית יְהוּדָה׃ וַיַּרְא אֶפְרַיִם אֶת־חָלְיוֹ
ad misit & , Assur ad Ephraim abiit & ,suam plagam Jehudah &
וִיהוּדָה אֶת־מְזֹרוֹ וַיֵּלֶךְ אֶפְרַיִם אֶל־אַשּׁוּר וַיִּשְׁלַח אֶל־
vobis à *curabit* non & ,vos sanare poterit non ipse & : Jareb regem
מֶלֶךְ יָרֵב וְהוּא לֹא יוּכַל לִרְפֹּא לָכֶם וְלֹא־יִגְהֶה מִכֶּם
leunculus veluti & , Ephraim *panthera* ut *ego* Quia .plagam *purulentam*
14 מָזוֹר׃ כִּי אָנֹכִי כַשַּׁחַל לְאֶפְרַיִם וְכַכְּפִיר
.eruens non & ,tollam ,vadam & ,rapiam ego ego ; Jehudah domui
לְבֵית יְהוּדָה אֲנִי אֲנִי אֶטְרֹף וְאֵלֵךְ אֶשָּׂא וְאֵין מַצִּיל׃
quærant & ,*delinquant* donec ,meum locum ad revertar ,Vadam
15 אֵלֵךְ אָשׁוּבָה אֶל־מְקוֹמִי עַד אֲשֶׁר־יֶאְשְׁמוּ וּבִקְשׁוּ
.me quærent *manè ipsis* tribulatione in : *meas facies*
פָנָי בַּצַּר לָהֶם יְשַׁחֲרֻנְנִי׃

CAP. VI. ו

; nos sanabit & ,rapuit ipse quia ,Dominum ad revertamur & ,Venite
1 לְכוּ וְנָשׁוּבָה אֶל־יְהוָה כִּי הוּא טָרָף וְיִרְפָּאֵנוּ
die in ; *diebus duobus* à nos Vivificabit .nos *fascia* alligabit & ,percussit
2 יַךְ וְיַחְבְּשֵׁנוּ׃ יְחַיֵּנוּ מִיֹּמָיִם בַּיּוֹם
.ejus *facies ad* vivemus & ,nos suscitabit tertia
הַשְּׁלִישִׁי יְקִמֵנוּ וְנִחְיֶה לְפָנָיו׃

Versio VULG. LAT.

CAP. V.

1 Audite hoc, sacerdotes; & at-
tendite, domus Israel; & domus
regis, auscultate: quia vobis ju-
dicium est: quoniam laqueus facti
estis Speculationi, & rete expan-
2 sum super Thabor. Et victimas
declinâstis in profundum: & ego
3 eruditor omnium eorum. Ego
scio Ephraim, & Israel est abscon-
ditus à me: quia nunc fornicatus
est Ephraim, contaminatus est
4 Israel. Non dabunt cogitationes
suas ut revertantur ad Deum
suum: quia spiritus fornicationum
in medio eorũ, & Dñm non cog-
5 noverunt. Et respondebit arro-
gantia Israel in facie ejus: & Is-
rael & Ephraim ruent in iniqui-
tate sua, ruet etiã Judas cum eis.
6 In gregibus suis, & in armentis
suis vadent ad quærendum Dñm,
& non invenient: ablatus est ab
7 eis. In Dñm prævaricati sunt, quia
filios alienos genuerunt: nunc de-
vorabit eos mensis cum patribus
8 suis. Clangite buccinâ in Gabaa,
tubâ in Rama: ululate in Beth-
aven, post tergum tuum, Benja-
9 min. Ephraim in desolatione erit
in die correptionis: In tribubus
10 Israel ostendi fidem. Facti sunt
principes Juda quasi assumentes
terminum: super eos effundam,
11 quasi aquam, iram meam. Calu-
mniam patiens est Ephraim, fract⁹
judicio: quoniam cœpit abire
12 post sordes. Et ego quasi tinea
Ephraim: & quasi putredo domui
13 Juda. Et vidit Ephraim languorẽ
suum, & Juda vinculum suum: &
abiit Ephraim ad Assur, & misit
ad regem Ultorem: & ipse non
poterit sanare vos, nec solvere
14 poterit à vobis vinculum. Quoniã
ego quasi leæna Ephraim, & quasi
catulus leonis domui Juda: ego,
ego capiam & vadam: tol-
15 lam, & non est qui eruat. Vadens
revertar ad locum meum: donec
deficiatis, & quæratis faciem
meam.

CAP. VI.

1 IN tribulatione sua manè con-
surgent ad me: Venite, & rever-
2 tamur ad Dominum: Quia ipse
cœpit, & sanabit nos: percutiet,
3 & curabit nos. Vivificabit nos
post duos dies: in die tertia su-
scitabit nos, & vivemus in con-
spectu ejus.

Versio GRÆCA LXX. Interp. Cum Translatione LATINA.

ΚΕΦ. ε'.

1 ἈΚούσατε ταῦτα οἱ ἱερεῖς, καὶ προσέχετε
οἶκος Ἰσραήλ, καὶ (α) ὁ οἶκος τοῦ βασιλέως
ἐνωτίζεσθε, διότι πρὸς ὑμᾶς ἐστι τὸ κρίμα,
ὅτι παγὶς ἐγενήθητε τῇ Σκοπιᾷ, καὶ ὡς δί-
2 κτυον ἐκτεταμένον ἐπὶ τὸ Ἰταβύριον, Ὃ οἱ
ἀγρεύοντες τὴν θήραν κατέπηξαν. ἐγὼ δὲ παι-
3 δευτὴς ὑμῶν, Ἐγὼ ἔγνων τὸν Ἐφραίμ, καὶ
Ἰσραὴλ οὐκ (β) ἄπεστιν ἀπ' ἐμοῦ· διότι νῦν
ἐξεπόρνευσεν Ἐφραίμ, ἐμιάνθη Ἰσραήλ.
4 Οὐκ ἔδωκαν τὰ διαβούλια αὐτῶν τοῦ ἐπιστρέψαι
πρὸς τὸν θεὸν αὐτῶν, ὅτι πνεῦμα πορνείας ἐν
5 αὐτοῖς ἐστι· τὸν δὲ κύριον οὐκ ἐπέγνωσαν. Καὶ τα-
πεινωθήσεται ἡ ὕβρις τοῦ Ἰσραὴλ εἰς πρόσ-
ωπον αὐτοῦ· καὶ Ἰσραὴλ καὶ Ἐφραὶμ ἀσθενή-
σουσιν ἐν ταῖς ἀδικίαις αὐτῶν· καὶ ἀσθενήσει (γ) καὶ
6 Ἰούδας μετ' αὐτῶν. Μετὰ προβάτων καὶ μόσχων
πορεύσονται τοῦ ἐκζητῆσαι τὸν κύριον, καὶ οὐ μὴ
εὕρωσιν αὐτόν· ὅτι (δ) ἐκκέκλικεν ἀπ' αὐ-
7 τῶν, Ὅτι τὸν κύριον ἐγκατέλιπον, (ε) ὅτι τέκνα
ἀλλότρια ἐγεννήθησαν αὐτοῖς· νῦν καταφάγε-
ται αὐτοὺς ἡ (ζ) ἐρυσίβη, καὶ τοὺς κλήρους αὐ-
8 τῶν. Σαλπίσατε σάλπιγγι ἐπὶ τοὺς βουνούς, ἠ-
χήσατε ἐπὶ τῶν ὑψηλῶν, κηρύξατε ἐν τῷ οἴκῳ
9 Ὤν, ἐξέστη Βενιαμίν, Ἐφραὶμ εἰς ἀφανι-
σμὸν ἐγένετο ἐν ἡμέραις ἐλέγχου. ἐν ταῖς φυ-
10 λαῖς τοῦ Ἰσραὴλ ἔδειξα πιστά. Ἐγένοντο οἱ
ἄρχοντες Ἰούδα ὡς μετατιθέντες ὅρια, ἐπ'
11 αὐτοὺς ἐκχεῶ ὡς ὕδωρ τὸ ὅρμημά μου. Κατ-
εδυνάστευσεν Ἐφραὶμ τὸν ἀντίδικον αὐτοῦ, κατ-
επάτησε (η) τὸ κρίμα, ὅτι ἤρξατο πορεύεσθαι
12 ὀπίσω τῶν ματαίων. Καὶ ἐγὼ ὡς ταραχὴ τῷ
13 Ἐφραίμ, καὶ ὡς κέντρον τῷ οἴκῳ Ἰούδα. Καὶ
εἶδεν Ἐφραὶμ τὴν νόσον αὐτοῦ, καὶ Ἰούδας τὴν ὀ-
δύνην αὐτοῦ. καὶ ἐπορεύθη Ἐφραὶμ πρὸς Ἀσ-
συρίους, καὶ ἀπέστειλε πρέσβεις πρὸς βασιλέα
Ἰαρείμ· καὶ (θ) αὐτὸς οὐκ ἠδυνάσθη ἰάσασθαι ὑμᾶς,
14 καὶ οὐ μὴ διαπαύσῃ ἐξ ὑμῶν ὀδύνη. Διότι ἐγώ
εἰμι ὡς πανθὴρ τῷ Ἐφραίμ, καὶ ὡς λέων τῷ
οἴκῳ Ἰούδα. καὶ ἐγὼ ἁρπῶμαι, καὶ πορεύσομαι,
15 καὶ λήψομαι, καὶ οὐκ ἔσται ὁ ἐξαιρούμενος. Πο-
ρεύσομαι καὶ ἐπιστρέψω εἰς τὸν τόπον μου, ἕως
οὗ ἀφανισθῶσι, καὶ (ι) ζητήσουσι τὸ πρόσωπόν
μου.

CAP. V.

Audite hæc, sacerdotes; & attendite, domus Israel; & do- 1
mus regis, auribus percipite: ad
vos enim est judicium: quia la-
quei facti estis Speculationi, &
sicut rete expansum super (a) I-
tabyrium: Quod, qui capiunt 2
venationem, confixerunt. Ego e-
nim magister vester: Ego cogno- 3
vi Ephræm: & Israel non recessit
à me. Quia nunc fornicatus est
Ephræm: commaculatus est Is-
rael: Non dederunt cogitationes 4
suas, ut reverterentur ad Deum
suum: quia spiritus fornicatio-
nis est in eis: Dominum autem
non cognoverunt. Et humiliabi- 5
tur (b) injuria Israel in faciem
ejus. Et Israel, & Ephræm in-
firmabuntur in iniquitatibus suis.
Et infirmabitur etiam Judas
cum eis. Cum ovibus, & vitulis 6
ibunt ad quærendum Dominum,
& non invenient eum. Decli-
navit enim ab illis: Quia Do- 7
minum reliquerunt; quia filios
alienos genuerunt sibi: nunc de-
vorabit eos (c) rubigo, & (d) cle-
ros eorum. Clangite tubâ super 8
colles, sonate super excelsa, præ-
dicate in domo On: mente exci-
dit Benjamin: Ephræm in deso- 9
lationem factus est in diebus cor-
reptionis. In tribubus Israel osten-
di fidelia: Facti sunt principes 10
Juda, quasi transferentes termi-
nos: super eos effundam, sicut
aquam, impetum meum. Oppressit 11
Ephræm adversarium suum, con-
culcavit judicium: quia cœpit
abire post vana. Et ego, quasi 12
conturbatio Ephræm, & quasi
stimulus domui Juda. Et vidit 13
Ephræm infirmitatem suam, &
Judas dolorem suum. Et abiit
Ephræm ad Assyrios, & misit (e)
legatos ad regem (f) Jarim. Et
ipse non potuit (g) sanare vos: &
non cessabit à vobis (h) dolor.
Quia ego sum quasi panther E- 14
phræm, & quasi leo domui Juda.
Et ego rapiam, & vadam, &
tollam: & non erit, qui eruat.
Ibo, & revertar in locum meum; donec dispereant, & quærent faciem meam. 15

MS.A. (α) οἶκος (β) ἄπεστιν (γ) καί γε (δ) ἐξέκλινεν (ε) καὶ τέκνα
(ζ) ἐρισύβη, (η) κρίμα, (θ) αὐτὸς (ι) ἐπιζητήσουσιν

ΚΕΦ. ϛ'.

1 ἘΝ θλίψει αὐτῶν ὀρθριοῦσι πρός με, λέ-
γοντες, Πορευθῶμεν, καὶ ἐπιστρέψωμεν πρὸς
2 κύριον τὸν θεὸν ἡμῶν, Ὅτι αὐτὸς ἥρπακε,
καὶ ἰάσεται ἡμᾶς, πατάξει, καὶ μοτώσει ἡμᾶς,
3 Ὑγιάσει ἡμᾶς μετὰ δύο ἡμέρας· ἐν τῇ ἡμέρᾳ
τῇ τρίτῃ (α) ἐξαναστησόμεθα, καὶ ζησόμεθα
ἐνώπιον αὐτοῦ,

MS.A. (α) ἀναστησόμεθα,

CAP. VI.

IN tribulatione sua manè vigi- 1
labunt ad me, dicentes; Eamus, &
revertamur ad Dominum Deum
nostrum: Quia ipse (a) rapuit, et 2
sanabit nos; percutiet, & (b) cu-
rabit nos: Sanos nos faciet post 3
dies duos: in die tertio resurge-
mus, & vivemus coram eo,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ה
1 שְׁמַעוּ דָא כַהֲנַיָא וְקַבִּילוּ בֵית יִשְׂרָאֵל וּבֵית מַלְכָּא אַצִיתוּ הֲלָא לְכוֹן לְמִדַע דִינָא אֲרֵי
2 תַקְלָא הֲוֵיתוּן לְמַלְפֵיכוֹן וּכְמִצְדָא דִפְרִיסָא עַל טוּר רָם : וְדִבְחִין לְטַעֲוָן מַסְגַן וַאֲנָא מַיְתֵי
3 יִסוּרִין לְכוּלְהוֹן : קֳדָמַי גְלַן עוֹבָדֵי דְבֵית אֶפְרַיִם וּדְבֵית יִשְׂרָאֵל לָא מִטַמְרִין מִן קֳדָמַי אֲרֵי
4 כְעַן טְעוֹ בֵית אֶפְרַיִם אִסְתָּאֲבוּ בֵית יִשְׂרָאֵל : לָא שָׁבְקִין עוֹבָדֵיהוֹן לְמֵתַב לְפוּלְחָנָא
5 דֶאֱלָהֲהוֹן אֲרֵי רוּחַ דִטְעוּ בֵינֵיהוֹן וְאוּלְפָן מִן קֳדָם יְיָ לָא תְבָעוּ : וְיִמְאַךְ יְקַר יִשְׂרָאֵל וְאִנוּן
חָזָן וּדְבֵית יִשְׂרָאֵל וּדְבֵית אֶפְרַיִם יִתְקְלוּן בְּחוֹבֵיהוֹן יִתְקְלוּן אַף דְבֵית יְהוּדָה עִמְהוֹן :
6 בְּעָנְהוֹן וּבְתוֹרֵיהוֹן יְהָכוּן לְמִתְבַּע אוּלְפָן מִן קֳדָם יְיָ וְלָא יִשְׁכְּחוּן סְלִיק שְׁכִנְתִּי מִנְהוֹן :
7 בְּמֵימְרָא דַיְיָ שַׁקַרוּ אֲרֵי בְנִין מִבְּנַת עַמְמַיָא קַיִמוּ לְהוֹן כְּעַן אַיְתֵי עֲלֵיהוֹן עַמְמִין יְרַח בִּירַח
8 וְיִבְזוֹן יַת פֵּירֵי אַרְעֲהוֹן : נְבִיַיָא אֲרִימוּ קָלְכוֹן כִּדְשׁוֹפָרָא אִתְנַבּוּ דְיֵיתוּן עֲלֵיהוֹן עַמְמַיָא
קָטוֹלִין עַל דְאַמְלִכוּ יַת שָׁאוּל דְמִגִבְעֲתָא אַצְוַחוּ כַד בַּחֲצוֹצְרָתָא אֲמַרוּ דְיֵיתוּן עֲלֵיהוֹן
מַלְכִין בְּמַשְׁרְיָתְהוֹן עַל דְלָא קַבִּילוּ לְפִתְגָמֵי שְׁמוּאֵל דְמֵרָמְתָא בַּסַרוּ עֲלֵיהוֹן יַבָבוּת
עָבְדֵי קְרָבָא עַל דְשַׁקַרוּ בְמֵימְרִי וְאִסְתְּחַרוּ לַאֲחוֹרָא מִבָּתַר פוּלְחָנִי וְלָא פְלַחוּ קֳדָמַי
9 בְּמַקְדְשָׁא דִי בְאַרַע שִׁבְטָא בִנְיָמִין : בֵית אֶפְרַיִם לְצָדוּ תְהֵי בְיוֹם תוּשְׁלֶמַת חוֹבִין בְּרַם
10 בְּשִׁבְטַיָא דְיִשְׂרָאֵל הוֹדַעִית אוֹרַיְתָא : הֲווֹ רַבְרְבֵי יְהוּדָה כִּמְשַׁנֵי תְחוּם עֲלֵיהוֹן אֶשְׁפּוֹךְ
11 כְּמַיָא חֵמְתִי : אֲנִיסִין דְבֵית אֶפְרַיִם כְּבִישִׁין בְּדִינֵיהוֹן אֲרֵי אִתְפְּנִיאוּ דַיָנֵיהוֹן לְמִטְעֵי בָּתַר
12 מָמוֹן דִשְׁקַר : וּמֵימְרִי כְּעָשָׁא לִדְבֵית אֶפְרַיִם וּכְרִקְבָא לִדְבֵית יְהוּדָה : וַחֲזָא אֶפְרַיִם יַת
13 מַרְעֵיהּ וִיהוּדָה יַת מַכְאוֹבֵיהּ וַאֲזַלוּ דְבֵית אֶפְרַיִם לְאַתּוּר וּשְׁלַחוּ לְמַלְכָּא דְיֵיתֵי לְאִתְפְּרַע
לְהוֹן נְבִיָא אֲמַר לְהוֹן הוּא לָא יָכִיל לְאַסָאָה לְכוֹן וְלָא יְנִיחַ מִנְכוֹן מַכְאוֹב : אֲרֵי מֵימְרִי
14 כְּלֵיתָא לִדְבֵית אֶפְרַיִם וּכְבַר אַרְיָוָן לִדְבֵית יְהוּדָה אֲנָא בְמֵימְרִי אֶקְטוֹל וְאֶעְדֵי אֲרִים
15 גְבוּרְתִּי וְלֵית דִמְשֵׁיזֵב : אֲסַלֵק שְׁכִנְתִּי אֲתוּב לִמְדוֹר קוּדְשִׁי דִי בִשְׁמַיָא עַד דְיִדְעוּן דְחָבוּ
וְיִבְעוּן מִן קֳדָמַי כַּד תֵּיעוֹק לְהוֹן יִבְעוּן דַחַלְתִּי :

ח

1 יֵימְרוּן אֱתוֹ וּנְתוּב לְפֻלְחָנָא דַיְיָ אֲרֵי הוּא דִי מְחָנָא וְיַסְנְנָא וּדְאַיְתֵי עֲלָנָא תְּבַר יְנִיחַ לָנָא :
2 יְחַיְנָנָא לְיוֹמֵי נֶחָמָתָא דַעֲתִידִין לְמֵיתֵי בְיוֹם אַחָיוּת מֵיתַיָא יְקִימִנְנָא וְנֵחֵי קֳדָמוֹהִי :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAP. V.

Audite hoc sacerdotes & attendite dom⁹ Israel, & dom⁹ regis auscultate. 1
Nunquid vestra refert dignoscere judiciũ? offendiculũ etenim fuistis doctori-
b⁹ vestris, & veluti rete ꝙ expansũ est sup montẽ excelsũ. Et sacrificant idolis 2
largissimè, & ego adduco correptiones sup omnes illos. Palã nota mihi sunt 3
opera Ephraim, & dom⁹ Israel non abscondita sunt à conspectu meo; siquidẽ
nunc erraverũt viri dom⁹ Ephraim, contaminata est dom⁹ Israelitica. Nõ missa 4
faciunt opera sua quò convertantur ad cultũ Dei sui, quia spirit⁹ erroris ver-
satur inter eos, & doctrinã à facie Dñi non quæsiverunt. Et deprimetur glo- 5
ria Israel ipsis videntibus; & dom⁹ Israel atq; familia Ephraim corruent in
peccatis suis, corruent perinde viri dom⁹ Jehuda cum eis. Cùm ovib⁹ suis 6
ac bob⁹ ibunt quæsitũ responsũ à facie Dñi, sed non invenient; [*quippe*] sub-
duxit se majestas *mea* ab eis. In verbũ Dñi perperam egerunt, quia filios de 7
filiab⁹ gentiũ sibi statuerunt, nunc adducã adversũ eos populos per singulos
menses qui populabuntur fruct⁹ terræ eorũ. Prophetæ levate vocẽ vestram 8
velut buccinâ, prophetate venturos contra eos populos interfectores, eò quòd
crearunt regẽ Saulem, qui erat de Gabaa: proclamate veluti tubâ, prædicite
adventuros adversũ eos reges cum suis exercitib⁹, eò ꝙ minimè susceperint
verba Samuelis, qui erat de Ramatha: annuntiate eis vociferationẽ bellatorũ,
eò ꝙ prævaricati sunt in verbũ meũ, & conversi sunt retrorsũ à cultu meo,
nec servierunt corã me in *sanctuario quod* stat in terra trib⁹ Benjamin. Do- 9
mus Ephraim in desolationẽ *erit* in die retributionis peccatorũ: veruntamẽ
in tribub⁹ Israel notã feci legẽ. Fuerũt principes Jehuda quasi mutantes ter- 10
minũ: sup eos effundã sicut aquas irã meã. Vim patientes sunt viri domus 11
Ephraim oppressi in judiciis suis: quia se verterunt judices eorũ, ut errarent
post mammona iniquitatis. Verbũ autẽ meũ erit quasi tinea domui Ephraim, 12
& quasi putredo domui Jehuda. Et vidit Ephraim infirmitatẽ suã, & Jehuda 13
dolorẽ suũ: & abierunt viri dom⁹ Ephraim ad Assur, & miserũt ad regẽ ut
adventaret ultũ eos. Propheta dic eis, Non poterit sanitatẽ conferre vobis,
neq; sedabit vestrũ dolorẽ. Verbũ enim meũ quasi leæna erit domui Eph- 14
raim, & quasi catul⁹ leonũ domui Jehuda. Ego in verbo meo occidã, transi-
bo, & extollã *potentiã meã*, nec erit qui eruat. Auferã majestatẽ meã, rever- 15
tar in habitaculũ sanctitatis meæ ꝙ est in cœlis, donec norint se peccâsse et
deprecentur ante me; cum ingruerit eis angustia, requirent timorem mei.

CAP. VI.

DIcent, Venite & revertamur ad cultum Dñi: nam ipse qui percussit nos 1
& sanabit nos; & qui induxit super nos interitum, refocillabit nos. Vita 2
donabit nos in diebus consolationis qui venturi sunt, in die resurrectionis mortuorum suscitabit nos & vivemus coram eo.

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܗ *

1 * ܫܡܥܘ ܗܕܐ ܟܗܢܐ: ܘܨܘܬܘ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ .. ܘܒܝܬ
ܡܠܟܐ ܐܨܬܘ. ܡܛܠ ܕܠܟܘܢ ܗܘ ܕܝܢܐ. ܕܦܚܐ ܗܘܝܬܘܢ ܠܣܟܘܬܐ. ܘܡܨܝܕܬܐ ܕܦܪܝܣܐ
2 3 ܥܠ ܬܒܘܪ. * ܘܨܝܕܐ ܕܨܝܕܝܢ. ܛܫܝܘ ܦܚܐ. ܐܢܐ ܕܝܢ ܐܪܕܐ ܠܟܠܗܘܢ. * ܐܢܐ ܝܕܥܬ ܠܐܦܪܝܡ.
4 ܘܐܝܣܪܝܠ ܠܐ ܛܫܐ ܡܢܝ. ܡܛܠ ܕܗܫܐ ܙܢܝ ܐܦܪܝܡ ܘܐܬܛܢܦ ܐܝܣܪܝܠ .. * ܠܐ ܫܒܩܝܢ
ܠܗܘܢ ܥܒܕܝܗܘܢ ܕܢܬܦܢܘܢ ܠܘܬ ܐܠܗܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܪܘܚܐ ܕܙܢܝܘܬܐ ܒܓܘܗܘܢ ..
5 ܘܠܡܪܝܐ ܠܐ ܝܕܥܘ. * ܘܢܬܡܟܟ ܫܘܒܗܪܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܩܕܡܘܗܝ. ܘܐܝܣܪܝܠ ܘܐܦܪܝܡ
6 ܢܬܬܩܠܘܢ ܒܥܘܠܗܘܢ. ܘܢܬܬܩܠ ܐܦ ܝܗܘܕܐ ܥܡܗܘܢ. * ܒܥܢܗܘܢ ܘܒܬܘܪܝܗܘܢ
7 ܢܐܙܠܘܢ ܠܡܒܥܝܗ ܠܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܢܫܟܚܘܢܝܗ. ܡܛܠ ܕܐܬܦܢܝ ܠܗ ܡܢܗܘܢ. * ܠܡܪܝܐ
8 ܕܓܠܘ ܒܗ: ܡܛܠ ܕܒܢܝܐ ܢܘܟܪܝܐ ܐܘܠܕܘ. * ܩܥܘ ܒܫܝܦܘܪܐ ܒܓܒܥܬܐ. ܘܩܪܢܐ ܒܪܡܬܐ.
9 ܐܟܪܙܘ ܒܒܝܬ ܐܘܢ. ܒܬܪܟ ܒܢܝܡܝܢ. * ܐܦܪܝܡ ܠܚܒܠܐ ܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܕܡܟܣܢܘܬܐ.
10 ܒܫܒܛܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܘܕܥܬ ܗܝܡܢܘܬܐ. * ܗܘܘ ܪܫܐ ܕܝܗܘܕܐ ܐܝܟ ܗܢܘܢ ܕܡܫܢܝܢ
11 ܬܚܘܡܐ. ܥܠܝܗܘܢ ܐܫܘܕ ܚܡܬܝ ܐܝܟ ܡܝܐ. * ܐܬܥܠܒ ܐܦܪܝܡ ܘܐܬܕܝܫ ܒܕܝܢܐ. ܡܛܠ
12 ܕܨܒܐ. ܠܡܐܙܠ ܒܬܪ ܣܪܝܩܘܬܐ. * ܘܐܢܐ ܗܘܝܬ ܐܝܟ ܫܓܘܫܝܐ ܠܐܦܪܝܡ. ܘܐܝܟ ܐܪܝܐ ܠܒܝܬ
13 ܝܗܘܕܐ. * ܘܚܙܐ ܐܦܪܝܡ ܟܘܪܗܢܗ. ܘܝܗܘܕܐ ܟܐܒܗ. ܘܐܙܠ ܐܦܪܝܡ ܠܐܬܘܪ. ܘܫܕܪ ܠܘܬ
14 ܡܠܟܐ ܝܪܒ. ܘܗܘ. ܠܐ ܡܫܟܚ ܠܡܐܣܝܘܬܟܘܢ. ܘܠܐ ܢܣܒܐ ܡܢܟܘܢ ܟܐܒܐ. * ܡܛܠ
ܕܐܢܐ ܐܝܟ ܐܪܝܐ ܠܐܦܪܝܡ. ܘܐܝܟ ܓܘܪܝܐ ܕܐܪܝܐ ܠܒܝܬ ܝܗܘܕܐ. ܐܢܐ ܐܚܛܘܦ ܘܐܙܠ. ܘܐܫܩܘܠ
15 ܘܠܝܬ ܕܡܦܨܐ. * ܐܗܦܘܟ ܐܙܠ ܠܐܬܪܝ. ܥܕܡܐ ܕܢܬܚܝܒܘܢ ܘܢܒܥܘܢ ܐܦܝ. ܘܒܐܘܠܨܢܗܘܢ
ܢܩܕܡܘܢ ܠܘܬܝ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܘ *

1 * ܘܢܐܡܪܘܢ. ܢܗܦܘܟ ܢܐܙܠ ܠܘܬ ܡܪܝܐ. ܕܡܚܢ ܗܘ ܢܐܣܝܢ. ܘܡܚܢ. ܗܘ ܢܚܒܫܢ.
2 * ܘܢܚܝܢ ܒܝܘܡܬܐ. ܘܒܝܘܡܐ ܬܠܝܬܝܐ ܢܩܝܡܢ. ܘܢܚܐ ܩܕܡܘܗܝ.

CAP. V.

Audite hoc Sacerdotes, auſcultate Iſraelitæ; 1
& domus regis aurem præbete, nam ad vos
pertinet judicium, qui laquei facti eſtis ſpeculatoribus, & rete expanſum ſuper Thabore, Et 2
venatores venantes, abſcondentes laqueos,
equidem hos homines caſtigabo. Ego novi 3
Aphremum, & Iſrael me non latet. Quia nunc
ſcortatus eſt Aphrem, & polluit ſe Iſrael; Non 4
permittunt eis facinora eorum convertere ſe
ad Deum ſuum. Quia ſpiritus ſcortationis eſt
in præcordiis eorũ, & Dominum non cognoſcunt; Humiliabitur faſtus Iſraelis coram ipſo, 5
& Iſrael atque Aphrem impingentur ſcelere
ſuo, & impingetur etiam Juda cum eis. Cum 6
ovibus & bobus ſuis ibunt quæſitum Dominum, & non invenient eum; quia receſſit ab 7
eis. Siquidem in Dominum mentiti ſunt, quia
filios extraneos pepererunt. Clangite buccinâ 8
in colle, & cornu in Rama: clanxerunt Bethavanitæ poſt te Benjamin. Aphrem in vaſta- 9
tionem abibit die correptionis: in natione
Iſraelitica notam faciã fidem. Facti ſunt prin- 10
cipes Judæ ſimiles iis qui movent terminum:
ſuper eos effundam iram meam ſicut aquam.
Premitur Aphrem & urgetur in judicio, quia 11
voluit ſectari vanitates. Et ego ero ceu pertur- 12
batio Aphremo, & ſicut leo Judæis. Sed vi- 13
dens Aphrem ægritudines ſuas, & Juda dolores ſuos; contulit ſe Aphrem ad Aſſur, miſitque ad regem Jareb: ſed is neque mederi
poteſt vobis, neque curare vos à doloribus
veſtris. Nam ego ſum ut leo Aphremo, & ut 14
catulus leonis Judæis: ego prædabor, abibo,
& aſportabo, nemine vindicante. Reverſus 15
abibo in locum meum, donec victi requirant faciam meam, & calamitate ſua accedant
ad me diluculò,

CAP. VI.

Et dicant; Revertamur, eamus ad Domi- 1
num: qui nos percuſsit, ipſemet ſanabit nos:
qui nos fregit, idem obligabit nos, Vivóſque 2
ſervabit nos diebus *aliquot*: & die tertiâ
ſuſcitabit nos, & vivemus coram eo,

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 * الفصل الخامس * * اسمعوا هذه ايها الكهنة * واصغ يا بيت اسرايل * وانصت يا
بيت الملك * من اجل ان الحكم هو معكم * لانكم صرتم فخا في المسلك * ومثل شبكة
2 3 مبسوطة علي جبل تابور * التي نصبها الصيادون للصيد * وانا مودبكم * انا عرفت افرام *
4 واسرايل لم يبعد عني * من اجل ان افرام زنا * الآن تنجس اسرايل * لم يعطوا آراوهم ليرجعوا
5 الي الههم * لان روح الزنا هو فيهم * ولم يعرفوا الرب * ويذل تكبر اسرايل في وجهه * واسرايل
6 وافرام يضعفان بظلاماتهما * ويضعف يهودا معهما * مع الخراف والعجول يسيرون ليطلبوا
7 الرب * ولا يجدونه * لانه مال عنهم * لانهم تركوا الرب * لان الاولاد الغرباء ولدوا لهم * الآن
8 ياكلهم العثّ واراضيهم * بوقوا بالبوق على الآكام * بحّوا على المرتفعات * نادوا في البيت *
9 بنيامين دهش * افرام صار للهلاك في ايام التبكيت * في قبايل اسرايل اظهرت امانات *
10 11 * صاروا روساء يهودا مثل مغيري الحدود * عليهم اصب مثل الماء غضبي * تقوى افرام
12 على خصمه * وداس الحكم * لانه ابتداء ان يسير خلف الاباطيل * وانا مثل الاضطراب
13 لافرام * ومثل المخاض لبيت يهودا * وعلم افرام مرضه ويهودا وجعه * ومضي افرام الي الموصليين *
وارسل شفعاء الي ملك ياريم * وهو لم يقدر ان يشفيكم * ولم يكف الوجع منكم *
14 * من اجل اني انا مثل النمر لافرام * ومثل الاسد لبيت يهودا * وانا اخطف واذهب * واخذ
15 وليس يكون منقذ * امضي واعود الي موضعي الي ان يعدموا * ويطلبون وجهي في شدتهم *
يبكرون الي * * الفصل السادس *
1 * قايلين * تعالوا نذهب ونرجع الي الرب الهنا * لانه هو خطف وشفانا * يضرب ويداوينا *
2 * يعافينا بعد يومين * في اليوم الثالث * ونقوم ونحيا امامه *

CAP. V.

Audite hæc O ſacerdotes, aurem præ- 1
be O domus Iſraelis, & auſculta O do-
mus regis; quia judicium penes vos eſt:
nam facti eſtis laqueus in via, & ſicut
rete expanſum ſuper monte Thabor,
Quod venatores tetenderunt ad venan- 2
dum: Ego ſanè caſtigaturus ſum vos.
Ego novi Aphremum, et Iſrael non longè 3
abeſt à me. Quia Aphrem fornicatus eſt,
nunc conſpurcatus Iſrael; Non adhi- 4
bent mentes ſuas ut revertantur ad Deum
ſuum. Quandoquidem ſpiritus fornicati-
onis eſt in eis, nec Dominum agnoſcunt;
Deprimetur arrogantia Iſraelis in con- 5
ſpectu ipſius, & tam Iſrael quàm Aphrem
infirmabuntur ob iniquitates ſuas, & in-
firmabitur Juda cum ipſis. Cum agnis et 6
vitulis ibunt quæſitum Dominum, ſed non
invenient eum; quia deflexit ab eis, Eò 7
quòd dereliquerint Dominum: quia filii
extranei nati ſunt in eis, pediculi devo-
rabunt eos & terras eorum. Clangite buc- 8
cinâ ſuper collibus, concentum edite ſu-
per excelſis, clamate in domo; Benjamin
obſtupuit, Aphrem ad interitum reda- 9
ctus eſt in diebus correptionis, in tribubus
Iſraelis patefeci fidelitates. Facti ſunt 10
principes Judæ ſimiles immutantibus li-
mites, ſuper eos effundam velut aquam im-
petum meum. Prævaluit Aphrem ad- 11
verſariis ſuis; & conculcavit judicium,
quia cœpit abire poſt vanitates. At ego 12
fui tanquam perturbatio Aphremo, &
tanquam ſtimulus domui Judæ. Verùm 13
ſentiens Aphrem morbum ſuum, & Juda
dolorem ſuum, abiit Aphrem ad Aſſyrios,
miſitque ſuffragatores ad regem Jarim;
ſed is non potuit ſanare vos, neque deſiit
à vobis dolor. Quoniam ego ſum tan- 14
quam panthera Aphremo, & tanquam leo
domui Judæ: & ego rapiam & abibo;
tollam, & non erit qui eruat. Abiens re- 15
vertar ad locum meum, donec abſuman-
tur: & quærent faciem meam in tribu-
latione ſua, manè ſurgent ad me,

CAP. VI.

Dicentes; Agite, eamus & revertamur 1
ad Dominum Deum noſtrum: quoniam ipſe
rapuit, tum ſanavit nos; percutiet, tum me-
debitur nobis; Sanitatem reſtituet nobis 2
poſt biduum, die tertio; & reſurgemus,
vivemúſque coram eo;

הושע : ז

eſt præparatus aurora tanquam:Dominum *ſciendum ad ſequemur*,Sciemuſque
3 וְנֵדְעָה נִרְדְּפָה לָדַעַת אֶת־יְהוָה כְּשַׁחַר נָכוֹן
temporane⁹ ſerotin⁹ veluti,nobis imber tanquam veniet & ; ejus egreſſus
מֹצָאוֹ וְיָבוֹא כַגֶּשֶׁם לָנוּ כְּמַלְקוֹשׁ יוֹרֶה
?Jehudah tibi faciam quid ?Ephraim tibi faciam Quid .terræ
4 אָרֶץ׃ מַה־אֶעֱשֶׂה־לְּךָ אֶפְרַיִם מָה אֶעֱשֶׂה־לְּךָ יְהוּדָה
.vadens *manicans* ros tanquam &,matutina nubes ut veſtra miſericordia &
וְחַסְדְּכֶם כַּעֲנַן־בֹּקֶר וְכַטַּל מַשְׁכִּים הֹלֵךְ׃
: mei oris verbis *in* eos occidi , prophetas *in* ſuccidi Propterea
5 עַל־כֵּן חָצַבְתִּי בַּנְּבִיאִים הֲרַגְתִּים בְּאִמְרֵי־פִי
;ſacrificium non & ,*volui* miſericordiam Quia .*egredietur* lux tua judicia &
6 וּמִשְׁפָּטֶיךָ אוֹר יֵצֵא׃ כִּי חֶסֶד חָפַצְתִּי וְלֹא־זָבַח
ſunt tranſgreſſi Adam ſicut ipſi Et .*aſcenſionibus* præ Dei ſcientiam &
7 וְדַעַת אֱלֹהִים מֵעֹלוֹת׃ וְהֵמָּה כְּאָדָם עָבְרוּ
;iniquitatem operantiũ civitas Ghilhad.me in ſunt prævaricati ibi;pactum
8 בְרִית שָׁם בָּגְדוּ בִי׃ גִּלְעָד קִרְיַת פֹּעֲלֵי אָוֶן
ſacerdotum *ſocietatem* ,latrones virum *expectare juxta* Et.ſanguine à fœdata
9 עֲקֻבָּה מִדָּם׃ וּכְחַכֵּי אִישׁ גְּדוּדִים חֶבֶר כֹּהֲנִים
Iſrael domo In .fecerunt *ſcelus* quia : *humero* interficiebant via
10 דֶּרֶךְ יְרַצְּחוּ שֶׁכְמָה כִּי זִמָּה עָשׂוּ׃ בְּבֵית יִשְׂרָאֵל
.Iſrael ſe contaminavit ,Ephraim fornicatio ibi ; *turpitudinem* vidi
רָאִיתִי שַׁעֲרִירִיָּה שָׁם זְנוּת לְאֶפְרַיִם נִטְמָא יִשְׂרָאֵל׃
.mei populi captivitatẽ *me convertendo in*;tibi *meſſem* poſuit Jehudah Etiam
11 גַּם־יְהוּדָה שָׁת קָצִיר לָךְ בְּשׁוּבִי שְׁבוּת עַמִּי׃

CAP. VII. ז

malitiæ &,Ephraim iniquitas ſe diſcooperuit & ,Iſrael *me ſanare Secundùm*
1 כְּרָפְאִי לְיִשְׂרָאֵל וְנִגְלָה עֲוֹן אֶפְרַיִם וְרָעוֹת
latro ſpoliavit ,eſt ingreſſus fur & :mendaciũ ſunt operati quia ,Someron
שֹׁמְרוֹן כִּי פָעֲלוּ שָׁקֶר וְגַנָּב יָבוֹא פָּשַׁט גְּדוּד
eorum malitiæ omnis , ſuo corde in *dicent* non Et .foris
2 בַּחוּץ׃ וּבַל־יֹאמְרוּ לִלְבָבָם כָּל־רָעָתָם
meis faciebus coram,eorum *ſtudia* eos circundederunt nunc : ſum recordatus
זָכַרְתִּי עַתָּה סְבָבוּם מַעַלְלֵיהֶם נֶגֶד פָּנָי
ſuis mendaciis *in* & ; regem lætificaverunt ſua malitia *In* .*fuerunt*
3 הָיוּ׃ בְּרָעָתָם יְשַׂמְּחוּ־מֶלֶךְ וּבְכַחֲשֵׁיהֶם
: *paniſice* à ſuccenſus clibanus ſicut , *adulterantes* ii Omnes .principes
4 שָׂרִים׃ כֻּלָּם מְנָאֲפִים כְּמוֹ תַנּוּר בֹּעֵרָה מֵאֹפֶה
Die .*eam fermentari ad uſque paſtam ſubigendo* à *excitando ab* ceſſabit
5 יִשְׁבּוֹת מֵעִיר מִלּוּשׁ בָּצֵק עַד־חֻמְצָתוֹ׃ יוֹם
ſuã manũ protraxit ; vino *à* utre principes fecerunt ægrotare *noſtri regis*
מַלְכֵּנוּ הֶחֱלוּ שָׂרִים חֲמַת מִיָּיִן מָשַׁךְ יָדוֹ
, ſuum cor clibanum veluti applicuerunt Quia .illuſoribus cum
6 אֶת־לֹצְצִים׃ כִּי־קֵרְבוּ כַתַּנּוּר לִבָּם
ſuccenſus ipſe manè ,eos coquens dormivit nocte tota ; *eos inſidiando* in
בְּאָרְבָּם כָּל־הַלַּיְלָה יָשֵׁן אֹפֵהֶם בֹּקֶר הוּא בֹעֵר
, clibanus veluti ſe calefecerunt Omnes .flammæ ignis tanquam
7 כְּאֵשׁ לֶהָבָה׃ כֻּלָּם יֵחַמּוּ כַּתַּנּוּר
clamans non ,ceciderunt eorum reges omnes ;ſuos judices devoraverunt &
וְאָכְלוּ אֶת־שֹׁפְטֵיהֶם כָּל־מַלְכֵיהֶם נָפָלוּ אֵין־קֹרֵא
Ephraim ; ſe commiſcuit *ipſe* populis *in* Ephraim .me ad eos inter
8 בָּהֶם אֵלָי׃ אֶפְרַיִם בָּעַמִּים הוּא יִתְבּוֹלָל אֶפְרַיִם
: neſcivit ipſe &,ejus robur alieni Comederunt .*verſum* non *libum* fuit
9 הָיָה עֻגָה בְּלִי הֲפוּכָה׃ אָכְלוּ זָרִים כֹּחוֹ וְהוּא לֹא יָדָע
.neſcivit *ipſe* & ,eo in ſe ſparſit canicies etiam
גַּם־שֵׂיבָה זָרְקָה בּוֹ וְהוּא לֹא יָדָע׃

Verſio VULG. LAT.

Sciemus, ſequemúrque ut cogno-
ſcamus Dominum: quaſi diluculũ
præparatus eſt egreſſus ejus, & ve-
niet quaſi imber nobis tempora-
4 neus, & ſerotinus terræ. Quid fa-
ciam tibi, Ephraim? quid faciam
tibi, Juda? miſericordia veſtra
quaſi nubes matutina, & quaſi ros
5 manè pertranſiens. Propter hoc
dolavi in prophetis, occîdi eos in
verbis oris mei: & judicia tua
6 quaſi lux egredientur. Quia miſe-
ricordiam volui, & non ſacrificiũ;
& ſcientiam Dei, pluſquàm ho-
7 locauſta. Ipſi autem ſicut Adam
tranſgreſſi ſunt pactum, ibi præ-
8 varicati ſunt in me. Galaad civi-
tas operantium idolum, ſupplan-
9 tata ſanguine. Et quaſi fauces vi-
rorum latronum, particeps ſacer-
dotum, in via interficientium per-
gentes de Sichem: quia ſcel⁹ ope-
10 rati ſunt. In domo Iſrael vidi hor-
rendũ: ibi fornicationes Ephraim:
11 contaminatus eſt Iſrael. Sed &, Ju-
da, pone meſſem tibi, cùm conver-
tero captivitatem populi mei.

CAP. VII.

1 Cum ſanare vellem Iſrael, re-
velata eſt iniquitas Ephraim, &
malitia Samariæ, quia operati ſunt
mendaciũ: & fur ingreſſus eſt ſpo-
2 lians, latrunculus foris. Et ne fortè
dicant in cordibus ſuis, omnẽ ma-
litiam eorum me recordatũ: nunc
circumdederunt eos adinventio-
nes ſuæ, corã facie mea factæ ſunt.
3 In malitia ſua lætificaverunt re-
gem: & in mendaciis ſuis princi-
4 pes. Omnes adulterantes, quaſi
clibanus ſuccenſus à coquente:
quievit paululùm civitas à com-
miſtione fermenti, donec fermen-
5 taretur totum. Dies regis noſtri:
cœperunt principes furere à vi-
no: extendit manum ſuam cum
6 illuſoribus. Quia applicuerunt
quaſi clibanum cor ſuum, cùm
inſidiaretur eis: totâ nocte dormi-
vit coquens eos, manè ipſe ſuc-
7 cenſus quaſi ignis flammæ. Omnes
calefacti ſunt quaſi clibanus, &
devoraverunt judices ſuos: omnes
reges eorum ceciderunt: non eſt
8 qui clamet in eis ad me. Ephraim
in populis ipſe commiſcebatur:
Ephraim factus eſt ſubcinericius
9 panis, qui non reverſatur. Come-
derunt alieni robur ejus, & ipſe
neſcivit: ſed & cani effuſi ſunt
in eo, & ipſe ignoravit.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

Καὶ γνωσόμεθα. διώξομεν τοῦ γνῶναι τὸν κύ-
ριον· ὡς ὄρθρον ἕτοιμον εὑρήσομεν αὐτόν, καὶ
ἥξει ὡς ὑετὸς ἡμῖν πρώϊμος καὶ ὄψιμος (β)
4 γῇ. Τί σοι ποιήσω Ἐφραίμ; τί σοι ποιήσω
Ἰούδα; τὸ δὲ ἔλεος ὑμῶν ὡς νεφέλη πρωϊ-
5 νή, καὶ ὡς δρόσος ὀρθρινὴ πορευομένη. Διὰ
τοῦτο ἀπεθέρισα τοὺς προφήτας ὑμῶν· ἀπέ-
κτεινα αὐτοὺς ἐν (γ) ῥήματι στόματός μου· καὶ
6 τὸ κρίμα μου ὡς φῶς ἐξελεύσεται. Διότι ἔ-
λεος θέλω (δ) ἢ θυσίαν, καὶ ἐπίγνωσιν Θεοῦ
7 ἢ ὁλοκαυτώματα. Αὐτοὶ δέ εἰσιν ὡς ἄν-
θρωπος παραβαίνων διαθήκην. ἐκεῖ κατε-
8 φρόνησέ μου Γαλαὰδ πόλις, ἐργαζομένη
9 μάταια, ταράσσουσα ὕδωρ, Καὶ ἡ ἰσχύς σου
ἀνδρὸς πειρατοῦ. ἔκρυψαν ἱερεῖς ὁδὸν (ε),
10 ἐφόνευσαν Σίκιμα, ὅτι ἀνομίαν ἐποίησαν. Ἐν
τῷ οἴκῳ (ζ) τοῦ Ἰσραὴλ εἶδον φρικώδη, ἐκεῖ
11 πορνείαν τοῦ Ἐφραίμ. ἐμιάνθη Ἰσραὴλ Καὶ
(η) Ἰούδα. ἄρχου τρυγᾶν σεαυτῷ, ἐν τῷ
ἐπιστρέφειν με τὴν αἰχμαλωσίαν τοῦ λαοῦ μου.

MS.A. (β) τῇ γῇ. (γ) ῥήμασιν (δ) καὶ οὐ (ε) κυρίου, (ζ) Ἰσραήλ· (η) Ἰούδας.

ΚΕΦ. ζʹ.

1 ἘΝ τῷ ἰάσασθαί με τὸν Ἰσραήλ, καὶ ἀπο-
καλυφθήσεται ἡ ἀδικία Ἐφραίμ, καὶ ἡ κακία
Σαμαρείας, ὅτι εἰργάσαντο ψευδῆ. καὶ κλέ-
πτης πρὸς αὐτὸν εἰσελεύσεται, ἐκδιδύσκων
2 λῃστὴς ἐν τῇ ὁδῷ αὐτοῦ, Ὅπως (α) συνᾴ-
δωσιν ὡς ᾄδοντες τῇ καρδίᾳ αὐτῶν. πά-
σας τὰς κακίας αὐτῶν ἐμνήσθην. νῦν (β)
ἐκύκλωσαν αὐτοὺς τὰ διαβούλια αὐτῶν,
3 ἀπέναντι τοῦ προσώπου μου ἐγένοντο. Ἐν ταῖς
κακίαις αὐτῶν εὔφραναν βασιλεῖς, καὶ ἐν
4 τοῖς ψεύδεσιν αὐτῶν ἄρχοντας. Πάντες
μοιχεύοντες ὡς κλίβανος καιόμενος εἰς
πέψιν κατακαύματος ἀπὸ τῆς φλογὸς, ἀπὸ
φυράσεως στέατος, ἕως τοῦ ζυμωθῆναι αὐτό.
5 (γ) Ἡμέραι τῶν βασιλέων ὑμῶν, ἤρξαντο οἱ
ἄρχοντες θυμοῦσθαι ἐξ οἴνου, ἐξέτεινε τὴν χεῖ-
6 ρα αὐτοῦ μετὰ λοιμῶν. Διότι ἀνεκαύθησαν ὡς
κλίβανος αἱ καρδίαι αὐτῶν, ἐν τῷ κατα-
ράσσειν αὐτοὺς ὅλην τὴν νύκτα· ὕπνου Ἐφραὶμ
ἐνεπλήσθη, πρωῒ (ζ) ἐγενήθη, ἀνεκαύθη ὡς
7 (δ) πυρὸς φέγγος. Πάντες ἐθερμάνθησαν
ὡς κλίβανος (ε), καὶ κατέφαγον τοὺς κριτὰς
αὐτῶν· πάντες οἱ βασιλεῖς αὐτῶν (θ) ἔπεσαν,
οὐκ ἦν (ι) ἐν αὐτοῖς ὁ ἐπικαλούμενος πρὸς
8 μέ. Ἐφραὶμ ἐν τοῖς λαοῖς αὐτοῦ (κ) συνε-
μίγνυτο, Ἐφραὶμ ἐγένετο ἐγκρυφίας, οὐ με-
9 ταστρεφόμενος. Κατέφαγον ἀλλότριοι τὴν
ἰσχὺν αὐτοῦ, αὐτὸς δὲ οὐκ (λ) ἔγνω· καὶ πολιαὶ
ἐξήνθησαν αὐτῷ, καὶ αὐτὸς οὐκ ἔγνω.

MS.A. (α) Συνᾴδουσιν ὡς συνᾴδοντες (β) ἐκύκλωσεν (γ) Αἱ ἡμέραι (ζ) ἐγενήθη, (δ) πῦρ (ε) πυρὸς καιομένου αἱ καρδίαι αὐτῶν, καὶ κατέφαγεν πῦρ τοὺς κριτὰς (θ) ἔπεσον, (ι) ὁ ἐπικαλούμενος ἐν αὐτοῖς πρὸς ἐμέ. (κ) Συνανεμίγνυτο, (λ) ἐπέγνω·

Et ſciemus. Perſequamur, ut cog-
noſcamus Dominum: quaſi manè
paratum inveniemus eum: & ve-
niet nobis quaſi pluvia tempora-
nea, & ſerotina terræ. Quid fa- 4
ciam tibi, Ephræm? Quid faciam
tibi, Juda? Miſericordia autem
veſtra, quaſi nubes matutina, &
quaſi ros matutinus pertranſiens.
Propterea ſuccîdi prophetas ve- 5
ſtros: occîdi eos in verbo oris mei:
& judicium (c) meum, quaſi lux
egredietur. Quia miſericordiam 6
volo, (d) quàm ſacrificium, &
ſcientiam Dei magis, quàm holo-
cauſta. Ipſi verò ſunt, ſicut homo 7
(e) præteriens teſtamentum. (f)
Ibi contempſit me Galaad, civi- 8
tas, quæ operatur vana, et contur-
bat aquã: Et (g) fortitudo tua vi- 9
ri piratæ. Abſcõderũt ſacerdotes
(h) viã, interfecerũt Sicima, quia
iniquitatẽ operati ſunt. In domo 10
Iſrael vidi horribilia, ibi fornica-
tionem Ephræm: contaminat⁹ eſt
Iſrael, Et (i) Juda. Incipe vindemiare tibi ; cùm
convertero captivitatẽ populi mei. 11

CAP. VII.

Cum (a) ſanarẽ ego Iſrael, et 1
(b) revelabitur iniquitas Ephræm,
& malitia Samariæ: quia operati
ſunt mendacia. Et fur ad eum (c)
ingredietur, ſpolians latro in via
ejus: ut concinant quaſi canentes 2
corde ſuo. Omnes malitias eorum
recordatus ſum. Nunc circun-
dederũt eos (d) cogitatiõnes ſuæ:
contrà faciẽ meã factæ ſunt. In 3
malitiis ſuis lætificaverunt (e) re-
ges, et in mendaciis ſuis principes.
Omnes adulterantes, quaſi cliban⁹ 4
accenſus ad coquendum, (f) de-
uſtionis à flamma, à commiſtio-
ne fermenti, donec (g) ipſum fer-
mentaretur. Dies regum veſtrorũ. 5
Cœperunt principes furere à vino:
extendit manum ſuã cum peſti-
lentib⁹: Quia ſuccenſa ſunt, quaſi 6
cliban⁹, corda eorũ, cũ (h) præci-
pitarẽtur ipſi totâ nocte; Ephræm
ſomno repletus eſt: manè factum
eſt: accenſus eſt, quaſi ignis flam-
ma. Omnes calefacti ſunt, quaſi 7
(i) cliban⁹: & devoraverunt ju-
dices ſuos. Omnes reges eorum ce-
ciderunt: non (k) fuit in eis, qui
invocaret me. Ephræm in populis 8
ſuis commiſcebatur: Ephræm fa-
ctus eſt ſubcineritius, qui non re-
verſatur. Comederunt alieni forti- 9
tudinem ejus, ipſe verò neſcivit:
& cani effloruerunt ei, & ipſe
ignoravit.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 וְנֵילַף נִרְדּוֹף לְמִדַּע יַת דַּחְלְתָא דַיְיָ כִּנְהוֹר צַפְרָא דְּמִתְקַשַּׁט בְּמַפְקֵיהּ וְיֵיתְיָן בִּרְכָן לַנָא
4 כְּמִטַר מְנַגַּב כְּלַקִישָׁא דְּמַרְוֵי אַרְעָא׃ מִן קֳדָם דִּין דִּקְשׁוֹט מָא אַעְבֵּד לְכוֹן דְּבֵית אֶפְרַיִם
5 מָא אַעְבֵּיד לְכוֹן דְּבֵית יְהוּדָה וְטַבְוָתְכוֹן כַּעֲנַן צַפְרָא וּכְטַלָּא דְּמוֹחֵי פָּסֵיק׃ עַל כֵּן
דְּאַזְהַרְתִּנוּן בִּשְׁלִיחוּת נְבִיַּי וְלָא תָבוּ אַיְתֵיתִי עֲלֵיהוֹן קָטוֹלִין עַל דַּעֲבַרוּ עַל מֵימַר רְעוּתִי
6 וְדִינִי כִּנְהוֹר נָפֵק׃ אֲרֵי בְּעָבְדֵי חִסְדָּא רַעֲוָא קֳדָמַי מִדְּבַח וְעָבְדֵי אוֹרַיְתָא דַיְיָ מִמַּסְקֵי
7 עֲלָוָן׃ וְאִנּוּן כְּדָרַיָּא קַדְמָאֵי עֲבַרוּ עַל קְיָמִי וּבְאַרְעָא טָבָא דִּיהָבֵית לְהוֹן לְמֶעְבַּד רְעוּתִי
8 תַּמָּן שַׁקַּרוּ בְמֵימְרִי׃ גִּלְעָד קִרְיַת אֱנוֹסִין בִּנְכִלִין אָשְׁדִין דַּם זַכַּי׃ וּכְמָא דִי מְסַכֵּר אֱנָשׁ
9 לִמְשָׁרִין אִתְחַבַּרוּ אִנּוּן וְכַהֲנֵיהוֹן בְּאוֹרְחָא חֲדָא קָטְלִין נַפְשָׁן כְּתַף חַד אֲרֵי עֵצַת חֶטְאִין
10 עֲבַדוּ׃ בְּבֵית יִשְׂרָאֵל חֲזֵיתִי שְׁנוּ אַשְׁנִיאוּ קְיָמָא דִגְזִיר עִמְּהוֹן דְּלָא לְמִפְלַח לְטַעֲוָתָא
תָּבוּ אִנּוּן לְמִטְעֵי בָתַר עֶגְלַיָּא בְּבֵיתְאֵל תַּמָּן טְעוֹ בֵית אֶפְרַיִם אִסְתָּאַבוּ בֵּית יִשְׂרָאֵל׃
11 אַף דְּבֵית יְהוּדָה שְׁרִיאוּ לְאַסְגָּאָה חוֹבֵיהוֹן אַף לְהוֹן יִמְטֵי חוֹבִין בְּאַתָבוּתִי גָּלוּת עַמִּי׃

ז

1 כְּמִתְבְּעֵי חוֹבֵי יִשְׂרָאֵל וְיִתְגַּלְיָן עֲוָיַת אֶפְרַיִם וּבִישַׁת שָׁמְרוֹן אֲרֵי עֲבַדוּ שְׁקַר וּבְלֵילְיָא
2 בְּבָתַּיָא גָּנְבִין וּבְמַדְבְּרָא בִּימָמָא קָפְחִין׃ לָא מְחַשְּׁבִין בְּלִבְּהוֹן דְּכָל בִּישָׁתְהוֹן גְּלָיָן
3 קֳדָמַי כְּעַן יְקַפּוּנְנוּן עוֹבָדֵיהוֹן בִּישַׁיָּא דִי קֳדָמַי הֲווֹ גְּלָן׃ בְּסָרִיקוּתְהוֹן מַחְדָן מַלְכָּא
4 וּבְכַדִּיבֵיהוֹן רַבְרְבִין׃ כּוּלְּהוֹן מַחְמְדִין לְמִנְאַף נְשֵׁי חַבְרֵיהוֹן דָּלְקִין כְּתַנּוּרָא דְאַזְלְהוֹן
נַחְתּוֹמָא בְּכֵן יִגְלוֹן בִּפְרִיעַ מִקִּרְוֵיהוֹן כְּמָא דְמוֹחָן לְקַיָּמָא מַחְשֶׁבֶת רִשְׁעָא וְעַל דְּלָא
אִדְּכַרוּ נִסִּין וּגְבוּרָן דְּאִתְעֲבִידוּ לְהוֹן בְּיוֹם מִסַּקְהוֹן מִמִּצְרַיִם מֵעִדָּן מֵלָשׁ לֵישָׁא עַד לָא
5 חֲמַע׃ יוֹמָא דְמַנִּיאוּ עֲלֵיהוֹן מַלְכְּהוֹן שְׁרִיאוּ רַבְרְבַיָּא לְמִשְׁתֵּי עִמֵּיהּ חֲמַר נְגַד לִידֵיהּ
6 סִיעַת שַׁקָּרִין׃ אֲרֵי אִתְקָרַבוּ לַעֲצַת חֶטְאִין וְלָא עַכִּיבוּ כְּתַנּוּרָא בָעֵר לִבְּהוֹן
7 בְּאִתְכַּמּוֹנֵיהוֹן כָּל לֵילְיָא מוֹרִיךְ רוּגְזְהוֹן עַד צַפְרָא הוּא דָלֵיק כְּאֶשָּׁא שַׁלְהוֹבִי׃ כּוּלְּהוֹן
מְחַמְּמִין כְּתַנּוּרָא וּבְלִישָׁן שִׁקְרֵיהוֹן מְחַיְּבִין יַת דַּיָּנֵיהוֹן כָּל מַלְכֵיהוֹן אִתְקְטָלוּ לֵית
8 דִּמְצַלֵּי מִנְּהוֹן קֳדָמַי׃ בֵּית אֶפְרַיִם בְּעַמְמַיָּא אִנּוּן אִתְעָרַבוּ בֵּית אֶפְרַיִם דָּמָן לַחֲרָרָא
9 דְּעַד לָא אִתְהַפְכַת אִתְאַכְלַת׃ בַּזּוּ עַמְמַיָּא נִכְסֵיהוֹן וְאִנּוּן לָא יָדְעִין אַף חֲלִישׁוּתָא
מְטָתְנוּן וְאִנּוּן לָא מִסְתַּכְּלִין׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et diſcem⁹ & conſectabimur ut cognoſcam⁹ timorẽ Dñi, quaſi lux matutina 3
quæ in ortu ſuo [*omnia*] colluſtrat: & venient benedictiones nobis quaſi im-
ber inundans, & veluti ſerotin⁹ qui terram humectat. A facie judicii veri 4
quid faciam vobis domus Ephraim? quid faciam vobis domus Jehuda?
certè benignitas veſtra quaſi nubes matutina, & velut ros qui citò de-
ficit. Pro eo quòd monui eos per legationem prophetarum meorum, 5
nec ſunt pœnitentia ducti, adducam ſup eos trucidatores, propterea quòd
tranſgreſſi ſunt verba voluntatis meæ: profectò judiciũ meum quaſi lux ori-
etur. Namq; in his qui exercent miſericordiam voluntas coram me eſt, magis 6
quàm in ſacrificio: & in operantib⁹ legem Dñi magis quàm in offerentibus
holocauſta. At ipſi ſicuti generationes priſcæ tranſgreſſi ſunt pactũ meum, & 7
in terra bona quam dedi eis ut ibi exequerentur voluntatẽ meam, prævaricati
ſunt in verbũ meũ. Galaad civitas eſt vim inferentium, doloſè effundentium 8
ſanguinem innocentum. Et quemadmodũ obſervat vir exercitum, conſociati 9
ſunt ipſi ac ſacerdotes eorũ: in eadem via occidunt animas conſenſu uno, quia
conſiliũ impiorũ executi ſunt. In domo Iſrael vidi commutationem, irritum 10
fecerunt pactũ quod pepigi cum eis, nimirũ ut non ſervirent idolis: conver-
ſi ſunt ut errarẽt poſt vitulos in Bethel: ibi aberraverũt viri dom⁹ Ephraim,
contaminati ſunt viri dom⁹ Iſrael. Quinetiam viri dom⁹ Jehuda cœperunt 11
multiplicare peccata *ſua*: ad eos pariter pertinget *reat⁹* cùm convertero ca-
ptivitatem populi mei.

CAP. VII.

Cum exquirerem peccata Iſrael, detectæ ſunt iniquitates Ephraim, & ma- 1
litia Samariæ, quandoquidem operati ſunt falſitatẽ & noctu in domib⁹
furantur, & interdiu in deſerto graſſantur. Nec interim reputant in cordib⁹ 2
ſuis omnia ipſorum maleficia manifeſta eſſe coram me: mox circumvenient
eos opera eorum mala, quæ coram me aperta ſunt. Vanitatib⁹ ſuis exhilarant 3
regem & mendaciis ſuis principes. Univerſi cupiunt comprimere uxores pro- 4
ximorũ ſuorũ: æſtuant inſtar clibani quem accendit ſibi piſtor: quamobrem
migrabunt citò ex civitatib⁹ ſuis, non ſecus ac feſtinant ad opere complendã
cogitationem impiam: & quia minimè fuerunt memores miraculorum, &
rerum magnarum geſtarum, quæ operata ſunt eis die qua aſcenderunt ex Æ-
gypto, ab eo tempore quo ſubacta fuit maſſa, antequam fermentaretur. Die 5
quo conſtituerunt ſuper ſe regem ſuum, exorſi ſunt magnates compotare cum
eo vinũ, attraxit ad manũ ſuam turbã falſidicorũ. Acceſſerunt enim *ad* con- 6
ſilium peccatorũ, & non ſunt cunctati, perinde ac cliban⁹ ardet cor eorum
in inſidiis ſuis: tota nocte protrahitur furor eorũ uſque manè, æſtuat in
morẽ ignis flammiferi. Omnes calefacti ſunt quaſi cliban⁹, & in lingua men- 7
daciorũ condemnant judices ſuos; omnes reges eorũ necati ſunt: nec ull⁹ eſt
eorũ qui deprecetur corã me. Dom⁹ Ephraim inter populos commiſti ſunt: 8
ſimilis eſt dom⁹ Ephraim ſubcineritio pani qui antequam verſetur comeditur.
Diripuerunt populi ſubſtantias eorum, & ipſi non norunt: infirmitas etiamnum affecuta eſt eos, & non intelligunt. 9

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

3 * ܘܢܪܕܐ ܠܡܕܥܬܗ ܕܡܪܝܐ ܐܝܟ ܨܦܪܐ ܕܫܪܝܪ ܡܦܩܢܗ. ܘܢܐܬܐ ܠܢ ܐܝܟ ܡܛܪܐ.
4 ܘܐܝܟ ܠܩܝܫܐ ܕܡܪܘܐ ܠܐܪܥܐ. * ܡܢܐ ܐܥܒܕ ܠܟ ܐܦܪܝܡ. ܘܡܢܐ ܐܥܒܕ ܠܟ ܝܗܘܕܐ
5 ܛܝܒܘܬܟܘܢ ܐܝܟ ܥܢܢܐ ܕܨܦܪܐ. ܘܐܝܟ ܛܠܐ ܕܡܩܕܡ ܘܥܒܪ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܦܣܩܬ ܢܒܝܐ.
6 ܘܩܛܠܬ ܐܢܘܢ ܒܡܐܡܪ ܦܘܡܝ. ܘܕܝܢܝ ܐܝܟ ܢܘܗܪܐ ܢܦܘܩ. * ܡܛܠ ܕܛܝܒܘܬܐ ܨܒܝܬ
7 ܘܠܐ ܕܒܚܬܐ. ܘܝܕܥܬܗ ܕܐܠܗܐ ܝܬܝܪ ܡܢ ܥܠܘܬܐ. * ܘܗܢܘܢ ܐܝܟ ܒܪܢܫܐ ܥܒܪܘ ܥܠ ܩܝܡܝ.
8 ܘܬܡܢ ܕܓܠܘ ܒܝ. * ܓܠܥܕ ܡܕܝܢܬܐ ܗܝ ܕܥܒܕܝ ܥܘܠܐ. ܘܡܥܟܪܐ ܒܕܡܐ. ܚܝܠܟܝ
9 ܐܝܟ ܕܓܒܪܐ ܓܝܣܐ. * ܐܬܟܢܫܘ ܟܗܢܐ ܒܐܘܪܚܐ. ܘܩܛܠܘ ܠܫܟܝܡ. ܡܛܠ ܕܥܘܠܐ
10 ܥܒܕܘ. * ܒܒܝܬܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܚܙܝܬ ܬܗܪܐ. ܬܡܢ ܙܢܝ ܐܦܪܝܡ. ܘܐܬܛܢܦ ܐܝܣܪܝܠ.
11 * ܘܐܦ ܝܗܘܕܐ ܥܒܕ ܠܟ ܩܛܦܐ. ܟܕ ܕܐܗܦܟ ܫܒܝܬܗ ܕܥܡܝ.

* ܫܠܡܘ * ܙ *
1 * ܟܕ ܐܣܝܬ ܠܐܝܣܪܝܠ. ܐܬܓܠܝܬ ܚܛܝܬܗ ܕܐܦܪܝܡ
ܘܒܝܫܘܬܗ ܕܫܡܪܝܢ. ܡܛܠ ܕܥܒܕܘ ܫܘܩܪܐ ܩܕܡܝ. ܘܓܢܒܐ ܥܐܠ ܗܘܐ. ܘܡܫܠܚ ܓܝܣܐ
2 ܒܫܘܩܐ. * ܘܠܐ ܐܡܪܝܢ ܒܠܒܗܘܢ. ܕܟܠܗܝܢ ܒܝܫܬܗܘܢ ܕܟܝܪ ܐܢܐ. ܗܫܐ ܚܕܪܘ ܐܢܘܢ
3 ܥܒܕܝܗܘܢ ܕܗܘܘ ܩܕܡ ܐܦܝ. * ܒܒܝܫܘܬܗܘܢ ܚܕܝܘ ܡܠܟܐ. ܘܒܕܓܠܘܬܗܘܢ. * ܟܠܗܘܢ
4 ܪܘܪܒܢܝܗܘܢ ܓܝܪܝܢ. ܐܝܟ ܬܢܘܪܐ ܕܝܩܕ ܠܡܐܦܐ. ܢܒܛܠ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ ܠܐܫ ܠܝܫܐ
5 ܥܕܡܐ ܕܢܚܡܥ. * ܝܘܡܐ ܕܡܠܟܝܢ. ܫܪܝܘ ܪܘܪܒܢܐ ܕܢܪܘܘܢ ܡܢ ܚܡܪܐ. ܢܓܕܘ ܐܝܕܝܗܘܢ
6 ܥܡ ܒܝܫܐ. * ܡܛܠ ܕܚܡܝܡ ܠܒܗܘܢ ܐܝܟ ܬܢܘܪܐ ܒܟܡܝܢܝܗܘܢ. ܘܟܠܗ ܠܠܝܐ ܫܟܝܟ
7 ܪܘܓܙܗܘܢ. ܘܒܨܦܪܐ ܢܘܪܐ ܗܘܐ ܐܝܟ ܫܠܗܒܝܬܐ. * ܟܠܗܘܢ ܚܡܘ ܐܝܟ ܬܢܘܪܐ ܘܐܟܠܘ
8 ܠܕܝܢܝܗܘܢ. ܟܠܗܘܢ ܡܠܟܝܗܘܢ ܢܦܠܘ. ܘܠܝܬ ܒܗܘܢ ܕܩܪܐ ܠܝ. * ܐܦܪܝܡ ܒܥܡܡܐ
9 ܐܬܚܠܛ. ܐܦܪܝܡ ܗܘܐ ܓܪܝܨܬܐ ܕܠܐ ܐܬܗܦܟܬ. * ܘܐܟܠܘ ܢܘܟܪܝܐ
ܚܝܠܗ. ܘܠܐ ܝܕܥ. ܘܣܝܒܘܬܐ ܢܦܩܬ ܒܗ. ܘܠܐ ܝܕܥ.

* Et diſcemus ire ad agnitionem Dñi ut *ad* aurorá cujus cert⁹ eſt exortus: advenietq; nobis ut pluvia & ut vernus imber inebrians tellurem. 3
Quid facerem tibi Aphrem? quid facerem tibi Juda? bonitas veſtra ſimilis eſt nubi matutinæ, & ſimilis rori diluculò cadenti & prætereunti. 4
Propterea diſſecui prophetas, & interfeci eos dicto oris mei, & judiciũ meum ut lumen exorietur. 5
Nam bonitate delector, non ſacrificio, & cognitione Dei magis quàm holocauſtis: 6
Ipſi tamen ut filius hominis tranſgreſſi ſunt fœdus meum, & ibidem perfidè mecum egerunt. 7
Gelaad, urbs illa operantium iniquitatem, & ſanguine conſperſa, robur tuũ ut viri latronis. 8
Conſpirârunt ſacerdotes in via, & occiderunt Sichim; quia ſceleratè agunt. 9
In domo Iſraelis vidi rem ſtupendam: ibi ſcortatus eſt Aphrem, & polluit ſe Iſrael. 10
Et *tu* quoque Juda, para tibi vindemiam. Dum * reducerem captivos populi mei, 11

CAP. VII.

Dum ſanarem Iſraelem, tum prodidit ſe ſcelus Aphrem, & malitia Samariæ; nam perfidiam coram me committebant, & fur ingrediebatur, & turma ſpoliabat in plateis; 1
Nec tamen dicebant apud ſemetipſos, omnium flagitiorũ ſuorum me eſſe memorem, jam circundabunt eos facinora ſua quæ perpetrata ſunt coram facie mea. 2
Malitiâ ſuâ & mendacio ſuo reges exhilarant: 3
Omnes principes eorum mœchantur, ut clibanus ardens ad coctionem panis: deficiet ab urbe ſubigens maſſam donec fermentetur. 4
Die regum noſtrorum cœperunt magnates vino furere, traxerunt manus ſuas cum ſceleratis: 5
Incaluit enim ceu fornax cor eorum in inſidiis ſuis: & totâ nocte ſedabatur furor eorum, manè verò ignis flammæque inſtar exardeſcebat. 6
Omnes incaluerunt ut furnus, & conſumpſerunt judices ſuos: omnes reges eorum ceciderunt, nec eſt inter eos, qui me invocet. 7
Aphrem inter gentes miſcuit ſeſe, Aphrem factus eſt placenta quæ antequam cocta eſſet comeſta fuit. 8
Ita comederunt alieni robur ejus, ipſo minimè advertente: cani exorti ſunt ei, nec animadvertit. 9

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

3 * ونعلم نسير * لنعرف الرب مثل الصبح المعد نجده * وياتينا مثل المطر اولا واخيرا للارض *
4 * ماذا اصنع بك يا افرام * وماذا اصنع بك يا يهودا * ورحمتكم مثل السحابة الصبحية *
5 ومثل الندا السحري الذاهب * لاجل هذا حصدت انبياوكم * وقتلتهم بكلمات فاي *
6 وحكمي مثل النور يخرج * من اجل اني اريد رحمة لا ذبيحة * والمعرفة بالله اكثر من
7 8 المحرقات * وهولاء هم مثل انسان تعدا عهدا هناك * احتقرني جلعاد * المدينة الفاعلة
9 الاباطيل * المقلقة للماء * وقوتك قوة رجل متلصص * الكهنة اخفوا طريق الرب * قتلوا
10 سكيما * لانهم صنعوا اثما * في بيت اسرايل * نظرت هناك زنا مرهبا لافرام * ونجس اسرايل
11 ويهودا * ابتدي بقطاف لذاتك عند ما ارد سبي شعبي * الفصل السابع *
1 * حين اشفي اسرايل * وينكشف ظلم افرام * وشر سامرين * لانهم عملوا الافك * واللص اليه
2 يدخل * يسلب اللص في طريقه * كي يدرسوا مثل الدارسين في قلبهم * جميع مظالمهم
3 ذكرت * الان احتوطوهم * موامرتهم صارت امام وجهي * بسرورهم فرحوا ملوكا * وبكذبهم روساء *
4 * جميع الفسقة مثل تنور متقد للخبز بحرارة من اللهيب * من عجين الدرمك الي ان يختمر *
5 6 * ايام ملوككم * ابتدات الروساء ان تغضب من الخمر * مد يده بفساد * من اجل ان قلوبهم
توقدت مثل تنور عند ما يلعنون الليل كله * امتلي افرام نوما * صار الصباح * وتوقد
7 مثل ضوء نار * حيث قلوبهم مثل تنور جميعا * واكلوا قضاتهم * جميع ملوكهم سقطوا *
ولم يكن فيهم من يدعوا الي * الاصحاح الثالث *
8 9 * افرام اختلط في شعوبه * افرام صار قرصا لا يرجع * اكلت الغرباء قوته وهو لا يعلم * ازهرت
له شعرات بيض ولم يدر *

Et addiſcemus incedere, ut cognoſcamus Dominum: tanquam auroram paratam inveniemus eum, & veniet ad nos ut pluvia temporanea & ſerotina ad terram. 3
Quid faciam tibi O Aphrem? & quid faciam tibi O Juda? cùm miſericordia veſtra ſimilis ſit nubi matutinæ, & ſimilis rori matutino præterlabenti? 4
Propterea meſſui prophetas veſtros, peremi eos verbis oris mei, & judicium meum ut lux egredietur. 5
Ego enim volo miſericordiam, non ſacrificium; & agnitionem Dei potiùs quàm holocauſta. 6
At iſti ſunt ſimiles homini fœdus illic prævaricanti. 7
Sprevit me Galaad urbs vanitatum operatrix, conturbatrix aquarum: & fortitudo tua, fortitudo viri latrocinantis. 8
Sacerdotes abſconderunt viam Domini, occiderunt Sichimam, quia fecerunt iniquitatem 9
In domo Iſraelis. Ibi vidi ſcortationem horrendam apud Aphremum, & contaminâſſe ſe Iſraelem & Judam. 10
Incipe vindemiare tibimetipſi, cùm reduxero captivitatem populi mei, 11

CAP. VII.

Cum ſanavero Iſraelem, & detecta fuerit impietas Aphremi, & improbitas Samariæ; quia fecerunt mendacium: & fur ad eum ingreditur, ſpoliat latro in via ejus; 1
ut repeterent more repetentium in corde ſuo: omnium impietatum eorum recordatus ſum: nunc circundederunt eos, machinatio eorum facta eſt coram facie mea. 2
Sceleribus ſuis lætificaverunt reges, & mendacio ſuo principes. 3
Omnes adulteri ſunt ſimiles furno accenſo ad panem calore flammeo: ex maſſa ſimilaginis donec fermentetur, 4
Dies regum veſtrorum. Cœperunt principes iraſci à vino: extendit manum ſuam cum corruptione: 5
Quia corda eorum exarſerunt ſicut fornax, dum totâ nocte maledicunt: repletus eſt Aphrem ſomno: mane facto, exarſit ut ſplendor ignis. 6
Incaluerunt corda eorum omnium ceu fornax, & comederunt judices ſuos: omnes reges eorum ceciderunt, nec fuit inter eos qui clamaret ad me. 7

Textus tertius.

Aphrem miſcuit ſe inter populos ſuos, Aphrem factus eſt placenta minimè rediens: 8
Comederunt extranei robur ejus, ipſo non percipiente: effloruerunt ei pili cani, ipſo non ſentiente. 9

Dominū ad ſunt reverſi non &;ejˀ faciebˀ in Iſrael ſuperbia *eſt conteſtata* Et
10 וְעָנָה גְאוֹן־יִשְׂרָאֵל בְּפָנָיו וְלֹא־שָׁבוּ אֶל־יְהוָה
Ephraim fuit Et .hoc toto cum eum quæſierunt nec , ſuum Deum
11 אֱלֹהֵיהֶם וְלֹא בִקְשֻׁהוּ בְּכָל־זֹאת׃ וַיְהִי אֶפְרַיִם
.abierunt Aſſur ,invocabant Ægyptum *: cor non ſtolida* columba veluti
כְּיוֹנָה פוֹתָה אֵין לֵב מִצְרַיִם קָרָאוּ אַשּׁוּר הָלָכוּ׃
cœlorum *volatile* ut ,meum rete eos ſuper expandam abierint Cùm
12 כַּאֲשֶׁר יֵלֵכוּ אֶפְרוֹשׂ עֲלֵיהֶם רִשְׁתִּי כְּעוֹף הַשָּׁמַיִם
Væ .eorum cœtus *auditionem juxta* eos caſtigabo;eos faciam deſcendere
13 אוֹרִידֵם אַיְסִרֵם כְּשֵׁמַע לַעֲדָתָם׃ אוֹי
ſunt prævaricati quoniam , eis vaſtitas , me à *vagati ſunt* quoniam , eis
לָהֶם כִּי־נָדְדוּ מִמֶּנִּי שֹׁד לָהֶם כִּי־פָשְׁעוּ
non Et .mendacia me *ſuper* ſunt locuti ipſi & ,eos redemi ego & : me in
14 בִי וְאָנֹכִי אֶפְדֵּם וְהֵמָּה דִּבְּרוּ עָלַי כְּזָבִים׃ וְלֹא־
ſuper : ſuis cubilibus *ſuper* ulularunt *quia*,ſuo corde in me ad clamaverunt
זָעֲקוּ אֵלַי בְּלִבָּם כִּי יְיֵלִילוּ עַל־מִשְׁכְּבוֹתָם עַל־
roboravi , *ligavi* ego Et .me *à defecerunt*,ſe *congregaverunt* muſtū &,triticum
15 דָּגָן וְתִירוֹשׁ יִתְגּוֹרָרוּ יָסוּרוּ בִי׃ וַאֲנִי יִסַּרְתִּי חִזַּקְתִּי
,*ſuprà* non Revertentur .malum cogitaverunt me contra & ; eorum brachia
16 זְרוֹעֹתָם וְאֵלַי יְחַשְּׁבוּ־רָע׃ יָשׁוּבוּ לֹא עָל
eorum principes gladio *in* cadent *: doli* arcus tanquam fuerunt
הָיוּ כְּקֶשֶׁת רְמִיָּה יִפְּלוּ בַחֶרֶב שָׂרֵיהֶם
.Ægypti terra in eorum ſubſannatioIſta .ſuæ linguæ furorem propter
מִזַּעַם לְשׁוֹנָם זוֹ לַעְגָּם בְּאֶרֶץ מִצְרָיִם׃

CAP. VIII. ח

quòd eo pro:Domini domum ſuper aquila veluti,tubam tuum palatum Ad
1 אֶל־חִכְּךָ שֹׁפָר כַּנֶּשֶׁר עַל־בֵּית יְהוָה יַעַן
me Ad.ſunt prævaricati meam legem *ſuper* &,meum pactum ſunt trangreſſi
2 עָבְרוּ בְרִיתִי וְעַל־תּוֹרָתִי פָּשָׁעוּ׃ לִי
Iſrael *Elongavit .Iſrael* te cognovimus , meus Deus ,clamabunt
3 יִזְעָקוּ אֱלֹהַי יְדַעֲנוּךָ יִשְׂרָאֵל׃ זָנַח יִשְׂרָאֵל
; me ex non & ,fecerunt regnare Ipſi .eum perſequetur inimicus ;bonum
4 טוֹב אוֹיֵב יִרְדְּפוֹ׃ הֵם הִמְלִיכוּ וְלֹא מִמֶּנִּי
fecerunt ſuo auro & ,ſuo argento :cognovi non &,conſtituerunt principem
הֵשִׂירוּ וְלֹא יָדָעְתִּי כַּסְפָּם וּזְהָבָם עָשׂוּ
, Someron *tuus* vitulus *Rejecit* .exciſio erit ideo , *dolores* ſibi
5 לָהֶם עֲצַבִּים לְמַעַן יִכָּרֵת׃ זָנַח עֶגְלֵךְ שֹׁמְרוֹן
? innocentiam potuerunt non uſquequo ; eos in meus furor eſt iratus
חָרָה אַפִּי בָּם עַד־מָתַי לֹא יוּכְלוּ נִקָּיֹן׃
; *ipſe* Deus non & ,illum fecit artifex , ipſe & Iſrael ex Quia
6 כִּי מִיִּשְׂרָאֵל וְהוּא חָרָשׁ עָשָׂהוּ וְלֹא אֱלֹהִים הוּא
,ſeminaverunt ventum Quia .Someron vitulus *erit contritiones* quoniam
7 כִּי־שְׁבָבִים יִהְיֶה עֵגֶל שֹׁמְרוֹן׃ כִּי רוּחַ יִזְרָעוּ
: farinam faciet non ,germen *ei* non ſtanti culmo : metent turbinem &
וְסוּפָתָה יִקְצֹרוּ קָמָה אֵין־לוֹ צֶמַח בְּלִי יַעֲשֶׂה־קֶּמַח
fuerunt nunc : Iſrael eſt *Abſorptus* .eam deglutient alieni ,fecerit fortè ſi
8 אוּלַי יַעֲשֶׂה זָרִים יִבְלָעֻהוּ׃ נִבְלַע יִשְׂרָאֵל עַתָּה הָיוּ
aſcenderunt ipſi Quia *.eo in voluntas* non vas tanquam *gentibus* in
9 בַגּוֹיִם כִּכְלִי אֵין־חֵפֶץ בּוֹ׃ כִּי־הֵמָּה עָלוּ
.amores mercede expetierunt Ephraim : ſibi ſolitarius onager , Aſſur
אַשּׁוּר פֶּרֶא בּוֹדֵד לוֹ אֶפְרַיִם הִתְנוּ אֲהָבִים׃
dolebunt & ; eas congregabo nunc ,gentes *ad miſerūt munera quia* Etiam
10 גַּם כִּי־יִתְנוּ בַגּוֹיִם עַתָּה אֲקַבְּצֵם וַיָּחֵלּוּ
Ephraim multiplicavit Quoniam.principum,regis onus propter paululum
11 מְּעָט מִמַּשָּׂא מֶלֶךְ שָׂרִים׃ כִּי־הִרְבָּה אֶפְרַיִם
.peccandum ad altaria ei fuerunt ; peccandum ad altaria
מִזְבְּחוֹת לַחֲטֹא הָיוּ־לוֹ מִזְבְּחוֹת לַחֲטֹא׃

Verſio VULG. LAT.

10 Et humiliabitur ſuperbia Iſrael in facie ejus : nec reverſi ſunt ad Dominum Deum ſuum, & non quæſierunt eum in omnibus his. 11 Et factus eſt Ephraim quaſi columba ſeducta non habens cor : Ægyptū invocabant, ad Aſſyrios 12 abierunt. Et cùm profecti fuerint, expandam ſuper eos rete meum : quaſi volucrē cœli detraham eos, cædam eos ſecundùm auditionem 13 cœtûs eorū. Væ eis, quoniam receſſerunt à me : vaſtabuntur, quia prævaricati ſūt in me; & ego redemi eos : & ipſi locuti ſunt contra me mendacia, 14 Et non clamaverunt ad me in corde ſuo, ſed ululabant in cubilibˀ ſuis: ſuper triticum & vinum ruminabant, receſſerunt à me. 15 Et ego erudivi eos, & confortavi brachia eorum : & 16 in me cogitaverunt malitiam. Reverſi ſunt ut eſſent abſque jugo : facti ſunt quaſi arcus doloſus: cadent in gladio principes eorum, à furore linguæ ſuæ. Iſta ſubſannatio eorum in terra Ægypti.

CAP. VIII.

1 IN gutture tuo ſit tuba quaſi aquila ſuper domum Domini : pro eo quòd tranſgreſſi ſunt fœdus meum, & legem meam prævari- 2 cati ſunt. Me invocabunt ; Deus 3 meus, cognovimus te Iſrael. Projecit Iſrael bonum, inimicus per- 4 ſequetur eum. Ipſi regnaverunt, et non ex me : principes extiterunt, & non cognovi : argentum ſuum & aurum ſuum fecerunt ſibi ido- 5 la, ut interirent: Projectus eſt vitulus tuus, Samaria, iratus eſt furor meus in eos : uſquequò non 6 poterunt emundari ? Quia ex Iſrael & ipſe eſt: artifex fecit illum, & non eſt Deus : quoniam in aranearū telas erit vitulus Samariæ. 7 Quia ventum ſeminabunt, & turbinem metent : culmus ſtans non eſt in eo, germen non faciet farinam : quod & ſi fecerit, alieni 8 comedent eam. Devoratus eſt Iſrael : nunc factus eſt in nationibˀ 9 quaſi vas immundum. Quia ipſi aſcenderunt ad Aſſur, onager ſolitarius ſibi: Ephraim munera de- 10 derunt amatoribus. Sed & cùm mercede conduxerint nationes, nunc congregabo eos : & quieſcent pauliſper ab onere regis, & 11 principum. Quia multiplicavit Ephraim altaria ad peccandum : factæ ſunt ei aræ in delictum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

10 Καὶ ταπεινωθήσεται ἡ ὕβρις Ἰσραὴλ εἰς πρόσωπον αὐτοῦ. καὶ οὐκ ἐπέστρεψαν πρὸς κύριον τὸν θεὸν αὐτῶν, καὶ οὐκ ἐξεζήτησαν αὐτὸν 11 ἐν πᾶσι τούτοις. Καὶ ἦν Ἐφραὶμ ὡς περιστερὰ ἄνους, οὐκ ἔχουσα καρδίαν· Αἴγυπτον ἐπεκαλεῖτο, καὶ εἰς Ἀσσυρίους ἐπορεύθησαν. 12 Καθὼς ἂν πορεύωνται, ἐπιβαλῶ ἐπ᾽ αὐτοὺς τὸ δίκτυόν μου, καθὼς τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ κατάξω αὐτούς, παιδεύσω αὐτοὺς ἐν τῇ ἀ- 13 κοῇ τῆς θλίψεως αὐτῶν. Οὐαὶ αὐτοῖς, ὅτι ἀπεπήδησαν ἀπ᾽ ἐμοῦ· (λ) δείλαιοί εἰσιν, ὅτι ἠσέβησαν εἰς ἐμέ. ἐγὼ δὲ ἐλυτρωσάμην αὐτούς, 14 αὐτοὶ δὲ κατελάλησαν κατ᾽ ἐμοῦ ψευδῆ. Καὶ οὐκ ἐβόησαν πρὸς με αἱ καρδίαι αὐτῶν, ἀλλ᾽ ἢ ὠλόλυζον ἐν ταῖς κοίταις αὐτῶν· ἐπὶ σί- 15 τῳ καὶ οἴνῳ κατετέμνοντο. Ἐπαιδεύθησαν ἐν ἐμοί, (μ) κἀγὼ κατίσχυσα τοὺς βραχίονας αὐτῶν, (ν) καὶ εἰς ἐμὲ ἐλογίσαντο πονηρά. 16 Ἀπεστράφησαν εἰς (ξ) οὐδὲν, ἐγένοντο ὡς τόξον ἐντεταμένον· πεσοῦνται ἐν ῥομφαίᾳ οἱ ἄρχοντες αὐτῶν (ο) δι᾽ ἀπαιδευσίαν γλώσσης αὐτῶν· οὗτος ὁ φαυλισμὸς αὐτῶν ἐν γῇ Αἰγύπτῳ.

Et humiliabitur contumelia Iſrael in facie ejus. Et non ſunt reverſi ad Dominum Deum ſuum, & non quæſierunt eum in omnibus his. 10 11 *Et erat Ephræm, quaſi columba (l) inſipiens, non habens cor. Ægyptum invocabat, & in Aſſyrios abierunt.* 12 *Sicut ibūt; mittam ſuper eos rete meum: ut volatilia cœli, detraham illos: corripiam eos in auditu tribulationis eorum.* 13 *Væ eis, quoniam (m) reſilierunt à me. (n) Meticuloſi ſunt, quoniam impiè egerunt in me. Ego verò redemi eos: ipſi verò loquuti ſunt contra me mendacia.* 14 *Et non clamaverunt ad me corda eorum, ſed ululabant in cubilibus ſuis. Super tritico, & vino diſſecabantur :* 15 *Eruditi ſunt in me. Et ego confortavi brachia eorum : et contra me cogitaverunt mala.* 16 *Converſi ſunt in nihilum : facti ſunt quaſi arcus intentus. Cadent in gladio principes eorum propter imperitiam linguæ eorum. Hæc eſt ſubſannatio eorum in terra Ægypto.*

MS.A. (λ) Δείλαιοί (μ) καὶ ἐγὼ (ν) εἰς ἐμὲ (ξ) οὐθὲν, (ο) διὰ

ΚΕΦ. η΄.

1 Εἰς κόλπον αὐτῶν, ὡς γῆ, ὡς ἀετὸς ἐπ᾽ οἶκον κυρίου, ἀνθ᾽ ὧν παρέβησαν τὴν διαθήκην 2 μου, καὶ κατὰ τοῦ νόμου μου ἠσέβησαν. Ἐμὲ κε- 3 κράξονται, Ὁ θεὸς ἐγνώκαμέν σε. Ὅτι Ἰσραὴλ ἀπεστρέψατο ἀγαθά, ἐχθρὸν κατ- 4 εδίωξαν. Ἑαυτοῖς ἐβασίλευσαν, καὶ οὐ δι᾽ ἐμοῦ, ἦρξαν, καὶ οὐκ ἐγνώρισάν μοι. τὸ ἀργύριον αὐτῶν, καὶ τὸ χρυσίον αὐτῶν ἐποίησαν ἑαυτοῖς εἴδωλα, ὅπως (α) ἐξολοθρευθῶσιν. 5 Ἀπότριψαι τὸν μόσχον σου Σαμάρεια, παρωξύνθη ὁ θυμός μου ἐπ᾽ αὐτούς. ἕως τίνος 6 οὐ μὴ δύνωνται καθαρισθῆναι Ἐν τῷ Ἰσραήλ; καὶ αὐτὸ τέκτων ἐποίησε, καὶ οὐ θεός ἐστι· διότι πλανῶν ἦν ὁ μόσχος σου Σαμά- 7 ρεια· Ὅτι (β) ἀνεμόφθορα ἔσπειραν, καὶ ἡ καταστροφὴ αὐτῶν ἐκδέξεται αὐτά. δράγμα (γ) οὐκ ἔχον ἰσχὺν τοῦ ποιῆσαι ἄλευρον· ἐὰν δὲ καὶ ποιήσῃ, ἀλλότριοι καταφάγονται αὐτό. 8 Κατεπόθη Ἰσραήλ, νῦν ἐγένετο ἐν τοῖς 9 ἔθνεσιν ὡς σκεῦος ἄχρηστον, Ὅτι αὐτοὶ ἀνέβησαν εἰς Ἀσσυρίους. ἀνέθαλεν καθ᾽ ἑαυτὸν 10 Ἐφραίμ· δῶρα (δ) ἠγάπησαν, Διὰ τοῦτο παραδοθήσονται ἐν τοῖς ἔθνεσι· νῦν εἰσδέξομαι αὐτούς, καὶ κοπάσουσι (ε) μικρὸν τοῦ 11 χρίειν βασιλέα καὶ ἄρχοντας. Ὅτι ἐπλήθυνεν Ἐφραὶμ θυσιαστήρια, εἰς (ζ) ἁμαρτίας ἐγένοντο αὐτῷ θυσιαστήρια (η) ἠγαπημένα.

CAP. VIII.

1 *IN (a) ſinu eorum, quaſi terra: ſicut aquila ſuper domum Domini : pro eo, quòd tranſgreſſi ſunt teſtamentum meum, & contra legem meam impiè egerunt.* 2 *Me clamabunt, Deus, cognovimus te:* 3 *Quia Iſrael (b) averſatus eſt bona: inimicum perſequuti ſunt:* 4 *(c) Sibimetipſis regnaverunt, & non per me: principes extiterunt, et non indicaverunt mihi: argentum ſuum, & aurum ſuum fecerunt ſibi idola, ut diſpereant.* 5 *Projice vitulum tuum, Samaria: concitatus eſt furor meus ſuper eos. Uſquequò non poterunt emundari* 6 *In Iſrael? Et hoc artifex fecit, & non eſt Deus: quia (d) ſeducens erat vitulus tuus, Samaria :* 7 *Quia corrupta vento ſeminaverunt : et ſubverſio eorum ſuſcipiet ea. Manipulus non habens vires, ut faciat farinam : quod, etſi fecerit ; alieni comedent eam.* 8 *Devoratus eſt Iſrael: nunc factus eſt in nationibus, quaſi vas inutile.* 9 *Quia ipſi aſcenderunt ad Aſſyrios ; germinavit apud ſeipſum Ephræm. Munera dilexerunt :* 10 *Idcircò tradentur in gentibus. Nunc ſuſcipiam eos : et quieſcent parùm, ut ungant regem, et principes.* 11 *Quia multiplicavit Ephræm altaria ; (e) in peccata facta ſunt ei altaria dilecta.*

MS.A. (α) ἐξολεθρευθῶσιν (β) ἀνεμοφθόρια (γ) οὐκ (δ) ἠγάπησεν, Διὰ τοῦτο παρεδόθησαν (ε) τοῦ χρίειν (ζ) ἁμαρτίαν (η) τὰ ἠγαπημένα.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 וימאך יקר ישראל ואנון חזן על דלא תבו לפולחנא דיי אלההון ולא בעו מן קדמוהי
11 בכל דא׃ והוו בית ישראל דמן כיונה שריחתא דאתנסיבו בנהא ולית לה לב
12 למצרים אתקרבו לאתור גלו׃ באתר דיהכון אפרוס עליהון מצדתי כעופא דשמיא
13 אטלטלנון יסורין איתי עליהון על דשמעו לעצתהון׃ וי להון ארי אתרחקו מדחלתי
בוזזין איתי עליהון ארי מרדו במימרי ואנא הויתי פריק להון ואנון ממללין קדמי
14 כדיבין׃ ולא מצלן קדמי בלבהון בכן מיללין על ערסתהון בסני עבורא וחמרא דהוו
15 כנשין מרדו במימרי׃ וכמא די אנא מיתי עליהון יסורין ומתקיף על דרעיהון כן אף
16 אנון חשבין לאוספא קדמי בישן׃ תבו למרוד מן אוריתא לא על דאבאישית להון
דמן אנון כקשת נכילא יתקטלון בחרבא רברביהון מעמקות לישנהון אלין עובדיהון
עד דאנון בארעא דמצרים׃

ח

1 נביא בחכך אכלי כד בשופרא אמר הא כנשרא דמשתדי כן יסק מלך במשריתיה וישרי
2 על בית מקדשא דיי חלף דעברו על קימי ועל אוריתי מרדו׃ בכל עדן דאתיא עליהון
עקא מצלן קדמי ואמרין כען ידענא ארי לית לנא אלהא בר מנך פרוקנא ארי אנחנא
3 עמך ישראל׃ טעו בית ישראל מבתר פולחני די בדיליה אנא מיתי עליהון טובא
4 מכען סנאה ירדפנון׃ אנון אמליכו ולא ממימרי רביאו ולא מרעותי כספהון ודהבהון
5 דאסיקו להון ממצרים עבדו להון טעון בדיל דישתיצון׃ טעו בתר עגלא דשמרון
6 תקיף רוגזי בהון עד אימתי לא יכלון למזכי׃ ארי מישראל הוא נבי אומן הוא עבדיה
7 דחלא דלית בה צרוך הוא ארי לנסרי לוחין יהי עגלא דשמרון׃ בית ישראל דמן
לדרוח זרע ועלעול חציד קמה לית לידה נוב לא יעבד מאים יקנון נכסין עממיא
8 יבזונונון׃ אתבזיו ישראל כען הוו בעממיא כמנא דלית צרוך ביה׃ ארי אנון גלו 9
לאתור על דהליכו ברעות נפשהון כערד מרוד בית ישראל אתמסרו ביד עממיא
10 דרחימו׃ אף אם ישוון בית ישראל דחלתי על לבהון מביני עממיא אקריב גלותהון
11 ואפילו יחכמון כזעיר אעדי מנהון מרות מלכין ושלטונין׃ ארי אסגאו דבית אפרים
אגורין למחטי הוו להון אגורי טעותהון לתקלא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

10 Atque humiliabitur gloria Iſrael ipſis cernentibus, propterea quòd non redierunt ad cultum Domini Dei ſui, nec ſunt deprecati præſentiam ejus in his omnibus. 11 Et facti ſunt viri domus Iſrael ſimiles columbæ ſimplici, cujus filii capti ſunt & non habet cor: ad Ægyptum acceſſerunt, in Aſſur migraverunt. 12 Quocúnque ierint, expandam ſuper eos rete meum : quaſi volucrem cœli vagari faciam eos , correptiones adducam ſuper eos, propterea quòd ſint obſecuti ſuis conſiliis. 13 Væ eis quoniam longè receſſerunt à timore mei: prædones inducam ſuper eos, quòd rebelles fuerint in verbum meum: cùm ego eſſem eorum redemptor, ipſi proferebant corā me mendacia. 14 Non autem orant corā me in cordibˀ ſuis, quin potius ululāt in lectulis ſuis præ ubertate tritici & vini quæ collegerunt: rebellaverunt in verbum meū. 15 Quoties verò adduco adverſùs eos correptiones & roboro brachia eorū, toties ipſi *moliuntur addere* corā me mala. 16 Averſi ſunt ut deficerent à lege, non quòd malum intulerim eis, ſimiles ſūt arcui doloſo: perimētur gladio principes eorū propter *profunditatē* linguæ eorum. Iſta erant opera eorum dum eſſent in terra Ægypti.

CAP. VIII.

1 PRopheta gutture tuo clamita quaſi in tuba. Dic: Ecce ſicut aquila quæ ſeſe motitat, ſic aſcendet rex cū exercitu ſuo & caſtrametabitur contra domū ſanctuarii Domini, pro eo quòd tranſgreſſi ſunt pactum meum, & legem meam prævaricati ſunt. 2 Omni tempore quo *venit* ſuper eos *anguſtia*, orant coram me dicentes : Nunc pro comperto tenemus, quòd non ſit nobis Deˀ præter te: redime nos, quandoquidē ſumˀ poplˀ tuus Iſrael. 3 Erraverunt domus Iſrael à cultu meo, cujus de cauſa adducebā eis bona : in poſterum hoſtis perſequetur eos. 4 Regē ſibi creārunt, & non ex ſententia mea; conſtituerunt principes, ſed non ex voluntate mea : ex argento & auro ſuo quod ſuſtulerunt ſibi ex Ægypto, confecerunt in ſuū uſum idola propter quæ excidentur. 5 Erraverunt ad vitulū Samariæ : exarſit furor meus in eos quamdiu non potuerunt ſe purgare. 6 Quia ex Iſrael eſt, ipſum compaginibˀ junxit artifex, ipſe fecit eum, Deus eſt in quo non eſt utilitas : etenim in minuta tabularū redigetur vitulˀ Samariæ. 7 Domus Iſrael ſimilis eſt ei quod ventˀ diſſeminat & turbo demetit, in quo non eſt ſtans ſeges, proventum non faciet: quòd ſi fortè opes comparaverint, gentes deprædabuntur eas. 8 Prædæ patuit Iſrael, nunc fuerūt inter populos quaſi vas inutile. 9 Quippe qui exulārunt in Aſſur, pro eò quòd ambulaverint in voluntate animæ ſuæ, tanquā onager efferˀ: domˀ Iſrael traditi ſunt in manū populorū quos adamārunt. 10 Attamen ſi recondant domˀ Iſrael timorem mei in corde ſuo, cogam tranſmigrationem eorum de medio populorum: & ſi pauliſper ſapiant, auferā ab eis dominiū regū et principū. 11 Quia multiplicaverunt domus Ephraim altaria peccandi gratia: verſa ſunt eis altaria idolorum ſuorum in ruinam.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܘܐܬܡܟܟ ܫܘܒܗܪܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܩܕܡܘܗܝ. ܘܠܐ ܐܬܦܢܝܘ ܠܘܬ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ. ܘܠܐ ܒܥܘܗܝ. 10
* ܘܗܘܐ ܐܦܪܝܡ. ܐܝܟ ܝܘܢܐ ܫܒܝܪܬܐ ܕܠܝܬ ܠܗ ܠܒܐ. ܠܡܨܪܝܢ ܐܙܠ. ܘܠܐܬܘܪ ܐܙܠܘ. * ܠܐܝܟܐ 11 12
ܕܐܙܠܝܢ. ܐܦܪܘܣ ܥܠܝܗܘܢ ܡܨܝܕܬܝ. ܘܐܝܟ ܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ ܐܚܬ ܐܢܘܢ. ܘܐܪܕܐ ܐܢܘܢ. ܐܝܟ
ܫܡܥܐ ܕܣܗܕܘܬܗܘܢ. * ܘܝ ܠܗܘܢ ܕܢܕܘ ܡܢܝ. ܫܘܕܢܐ ܐܝܬܐ ܥܠܝܗܘܢ. ܕܐܥܠܘ 13
ܒܝ. ܐܢܐ ܓܝܪ ܦܪܩܬ ܐܢܘܢ. ܘܗܢܘܢ ܡܠܠܘ ܥܠܝ ܕܓܠܘܬܐ. * ܘܠܐ ܩܥܘ ܠܘܬܝ. ܒܟܠܗ 14
ܠܒܗܘܢ. ܐܠܐ ܐܬܬܢܚܘ ܥܠ ܡܫܟܒܝܗܘܢ. ܥܠ ܥܒܘܪܐ ܘܥܠ ܚܡܪܐ ܡܬܟܪܝܢ. ܘܡܪܕܘ
ܒܝ. * ܘܐܢܐ ܪܕܝܬ. ܘܐܚܝܠܬ ܕܪܥܝܗܘܢ. ܘܥܠܝ ܐܬܚܫܒܘ ܒܝܫܬܐ. * ܐܬܗܦܟܘ ܠܐ ܠ 15 16
ܡܕܡ. ܘܗܘܘ ܐܝܟ ܩܫܬܐ ܢܟܝܠܬܐ. ܢܦܠܘܢ ܒܣܝܦܐ ܪܘܪܒܢܝܗܘܢ. ܡܛܠ ܡܪܚܘܬܐ
ܕܠܫܢܗܘܢ. ܗܢܘ ܗܘ ܥܘܪܟܠܗܘܢ ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܚ *
* ܦܘܡܟ ܐܝܟ ܩܪܢܐ. ܘܐܝܟ ܢܫܪܐ ܥܠ ܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܥܠ ܕܥܒܪܘ ܥܠ ܩܝܡܝ. ܘܥܠ ܢܡܘܣܝ 1
ܐܥܘܠܘ. * ܠܝ ܢܩܥܘܢ ܘܢܐܡܪܘܢ. ܝܕܥܢܝܟ ܐܠܗܢ. * ܛܥܐ ܐܝܣܪܝܠ ܛܒܬܐ. ܘܒܥܠܕܒܒܐ ܪܕܦ 2 3
ܐܢܘܢ. * ܐܡܠܟܘ ܘܠܐ ܡܢܝ. ܘܐܫܬܠܛܘ. ܘܠܐ ܐܘܕܥܘܢܝ. ܣܐܡܗܘܢ ܘܕܗܒܗܘܢ. ܥܒܕܘ 4
ܠܗܘܢ ܦܬܟܪܐ ܕܢܐܒܕܘܢ. * ܛܥܘ ܒܥܓܠܟܝ ܫܡܪܝܢ :· ܘܐܬܚܡܬ ܪܘܓܙܝ ܒܗܘܢ. 5
ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ. ܠܐ ܡܫܟܚܝܢ ܠܡܙܟܝܘ: * ܡܛܠ ܕܡܢ ܐܝܣܪܝܠ ܗܘ. ܘܢܓܪܐ ܥܒܕܗ 6
ܘܠܐ ܗܘܐ ܐܠܗܐ. ܐܠܐ ܠܛܘܥܝܝܐ ܗܘܐ ܥܓܠܟܝ ܫܡܪܝܢ. * ܡܛܠ ܕܪܘܚܐ ܙܪܥܘ. ܘܥܠܥܠܐ 7
ܚܨܕܘ. ܘܩܝܡܬܐ ܠܝܬ ܠܗܘܢ. ܘܫܒܠܐ ܕܥܒܕ ܩܡܚܐ. ܘܐܠܘ ܥܒܕ ܗܘܐ ܠܗܘܢ.
ܢܘܟܪܝܐ ܐܟܠܝܢ ܗܘܘ ܠܗ. * ܐܬܒܠܥ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܗܫܐ ܗܘܘ ܒܥܡܡܐ. ܐܝܟ ܡܐܢܐ ܕܠܝܬ 8
ܒܗ ܨܒܝܢܐ. * ܡܛܠ ܕܗܢܘܢ ܣܠܩܘ ܠܐܬܘܪ ܐܝܟ ܥܪܕܐ ܝܚܝܕܝܐ. ܐܦܪܝܡ ܡܘܗܒܬܐ ܪܚܡ. 9
* ܐܦܢ ܢܫܬܠܡܘܢ ܠܥܡܡܐ. ܐܟܢܫ ܐܢܘܢ. ܘܢܬܢܝܚܘܢ ܩܠܝܠ ܡܢ ܡܫܩܠܐ ܕܡܠܟܐ 10
ܘܫܠܝܛܢܐ. * ܡܛܠ ܕܐܣܓܝ ܐܦܪܝܡ ܡܕܒܚܐ ܠܡܚܛܐ. ܘܗܘܘ ܠܗ ܡܕܒܚܐ 11
ܠܚܛܗܐ ܪܒܐ.

Humiliatus eſt faſtus Iſraelis in conſpectu ejus, attamen converterunt ſe ad Dominum Deum ſuum neq; requiſiverunt eum. 10 Sed factus eſt Aphrem ſimilis colūbæ ſtolidæ corde carenti: Ægyptum adierunt, & ad Aſſur profecti ſunt. 11 Quocunq; abierint, expandam ſuper eos rete meum, & ut volucres cœli deſcendere faciam eos, & caſtigabo eos ſecundùm auditū conteſtationis eorū. 12 Væ illis quòd à me migrârint: malum adducam ſuper eos quòd perfidè mecum egerint: ego enim redemi eos, ipſi verò locuti ſunt contra me mendacium: 13 Neque clamaverunt ad me ex toto animo ſuo; ſed gemuerunt ſuper cubili ſuo, de frumento deque vino anxii, & rebellârunt contra me: 14 Ideò caſtigavi: corroboravi brachium eorum, & contra me machinati ſunt malum. 15 Obliquârunt ſe nulla de cauſa, & facti ſunt velut arcus fallax: gladio occumbent magnates eorum ob audaciam linguæ ſuæ; talis erit implicatio eorum, qualis fuit in terra Ægypti. 16

CAP. VIII.

Os tuum ut buccina ſit, & ut aquila contra domum Dñi: quia tranſgreſſi ſunt fœdus meum, & in legem meam ſceleratè ſe geſſerunt, 1 Ad me clamant, & dicunt; Agnoſcimus te Deus noſter. 2 Oblitus eſt Iſrael probitatis, ideò perſecut' eſt eos inimicus. 3 Regnaverunt, ſed non ex me; dominati ſunt, at non monuerunt me: argentum & aurū ſuum verterunt ſibi in idola, ut perirent. 4 Erraverunt ob vitulum tuum O Samaria, ideò exarſit in eos ira mea; quouſq; non poterunt innocenter agere? 5 Nam ab Iſraele fuit is *vitulus*, & artifex compoſuit illum; proinde non eſt Deus, ſed ad errorem fuit vitulus tuus O Samaria. 6 Quia ventum ſeruerunt, etiam turbinem meſſuerunt, nec habent culmum, neque ſpicam producentem farinam: & ſi haberent, extranei comederent eam. 7 Abſorpti ſunt Iſraelitæ, & facti jam ſunt inter gentes quaſi vas nullius uſûs: 8 Quoniam iſti aſcenderunt ad Aſſur quaſi onager ſolitarius, Aphrem dona dilexit. 9 Quamvis tradantur inter gentes, congregabo *tamen* eos, ut quieſcant pauliſper ab onere regum & principum. 10 Quia multiplicavit Aphrem altaria ad peccandum, & fuerunt ei altaria ad crimen ingens: 11

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ويذل كبرياء اسرايل الي وجهه * ولم يرجعوا الي الرب الههم * ولم يطلبوه في جميع هذه * 10
* وكان افرام مثل حمامة جاهلة ليس لها قلب. طلب مصر * ومضوا الي الموصليين * وحيثما 11 12
يمضون ابسط عليهم شبكتي * كطاير السماء انزلهم * اودبهم بسماع شدتهم * ويل لهم 13
لانهم بعدوا عني * هم اشقياء لانهم نافقوا علي * وانا انقذتهم * وهم تكلموا علي كذبا * ولم 14
يصرخوا الي قلوبهم * لكن ولولوا في مضاجعهم انقطعوا بالقمح والخمر * ادبوا بي * وانا قويت 15
اذرعهم * وعلي فكروا شرا * عادوا الي لا شي * صاروا مثل قوس موتور * تسقط بالسيف روساوهم 16
لعدم ادب لسانهم * هكذا طلاحهم بمصر *

* الفصل الثامن *

* في حضنهم مثل الارض * مثل نسر علي بيت الرب * من اجل انهم تعدوا عهدي * 1
ونافقوا علي ناموسي * يصرخون الي اللهم عرفناك * ان اسرايل رد عنه الصلاح * طردوا 2 3
العدو * ملكوا من ذواتهم وليس من قبلي * راسوا ولم يعرفوني * فضتهم وذهبهم صنعوهم 4
اصناما كي يستاصلوا * دق عجلك يا سامرة * اشتد غضبي عليهم * الي متي لا 5
يستطيعون ان يتطهروا في اسرايل * صنعة نجار وليس هو اله * من اجل ان عجلك 6
هو مضل يا سامرة * انهم زرعوا ريحا فاسدة * وخسفهم يقبلها * اغمار ليس لها قوة لتصنع 7
دقيقا * وان هي صنعت تاكله الغرباء * ابتلع اسرايل * الان صار في الامم مثل اناء غير 8
صالح * لانهم صعدوا الي الموصليين * خصب افرام في ذاته * احبوا الرشا * لاجل هذا 9 10
يسلمون للامم * الان اقبلهم ويهدون قليلا ليمسحوا ملكا وروساء * لان افرام اكثر المذابح * 11
مذابحه المحبوبة صارت له للخطية *

Deprimitur arrogantia Iſraelis ante faciem ipſius, attamen non ſunt reverſi ad Dominum Deum ſuum, neque quæſierunt eum cum his omnibus. 10 *Et factus eſt Aphrem ut columba ſtulta, mente carens: quæſivit Ægyptum, & iverunt ad Aſſyrios.* 11 *At quocunque abierint, expandam ſuper eos rete meum, ut aves cœli deſcendere faciam eos, caſtigabo eos in auditu tribulationis ſuæ.* 12 *Væ illis, quia receſſerunt à me: miſeri ſunt, quia impiè geſſerunt in me, cùm ego redemerim eos: & ipſi locuti ſunt contra me mendaciter:* 13 *Et non clamaverunt ad me corda eorum, ſed ululaverunt in cubilibus ſuis: exciſi ſunt propter frumentum & vinum:* 14 *Caſtigati fuerunt per me: ego confirmaveram brachia eorum, contra me tamen cogitaverunt malum.* 15 *Converterunt ſe ad nihil, facti ſunt velut arcus intentus: occumbent gladio principes eorum ob ineruditionem linguæ eorum. Sic improbitas eorum in Ægypto,* 16

CAP. VIII.

Fuit in ſinu eorum ſicut terra, ſicut aquila ſuper domum Domini; quia tranſgreſſi fuerant fœdus meum, & impiè ſe geſſerant contra legem meam. 1 *Clamant ad me; O Deus, cognoſcimus te.* 2 *Etenim Iſrael avertit à ſe bonitatem: perſecuti ſunt inimicum.* 3 *Regnaverunt à ſemetipſis, non à me: principes facti ſunt, nec indicaverunt mihi: argentum & aurum ſuum conflaverunt in idola, ut eradicarentur.* 4 *Comminue vitulum tuum O Samaria: efferbuit in eos ira mea: quouſque non poterunt mundare ſe in Iſraele?* 5 *Fecit illum faber, nec Deus eſt: quia vitulus tuus ſeductor eſt O Samaria;* 6 *Ideò ventum fœtidum ſeminaverunt, & ſubverſio eorum ſuſcipiet eum; manipuli non valentes facere farinam, & ſi fecerint, comedent eam extranei.* 7 *Abſorptus eſt Iſrael, jam factus eſt inter gentes quaſi vas inutile.* 8 *Quia aſcenderunt ad Aſſyrios, uber factus eſt Aphrem in ſemetipſo: dilexerunt munera,* 9 *Ideò tradentur gentibus. Nunc recipiam eos, & quieſcent parumper; ut ungant regem & principes.* 10 *Quia Aphrem multiplicavit altaria, altaria ſua dilecta ceſſerunt ei in peccatum;* 11

הושע : ט

Hoſtiis .ſunt reputata *alienum* ſicut : meæ legis *præcipua* ei Scripſi
12 אֶכְתָּוב־לוֹ רִבּוֹ תּוֹרָתִי כְּמוֹ־זָר נֶחְשָׁבוּ : זִבְחֵי 13
non Dominus ,comederunt & , carnem ſacrificaverunt meorum donorum
הַבְהָבַי יִזְבְּחוּ בָשָׂר וַיֹּאכֵלוּ יְהוָה לֹא
,eorum peccata viſitabit & ,eorum iniquitatis recordabitur nunc : ea *voluit*
רָצָם עַתָּה יִזְכֹּר עֲוֹנָם וְיִפְקֹד חַטֹּאתָם
, ſui factoris Iſrael eſt oblitus Et .revertentur Ægyptum ipſi
14 הֵמָּה מִצְרַיִם יָשׁוּבוּ : וַיִּשְׁכַּח יִשְׂרָאֵל אֶת־עֹשֵׂהוּ
: munitas urbes multiplicavit Jehudah & , *templa* ædificavit &
וַיִּבֶן הֵיכָלוֹת וִיהוּדָה הִרְבָּה עָרִים בְּצֻרוֹת
.ejus ædes *comedet* & , ejus civitates in ignem mittam &
וְשִׁלַּחְתִּי־אֵשׁ בְּעָרָיו וְאָכְלָה אַרְמְנֹתֶיהָ :

CAP. IX. ט

es fornicatus quia ,populi ſicut exultationem ad Iſrael læteris Ne
1 אַל־תִּשְׂמַח יִשְׂרָאֵל אֶל־גִּיל כָּעַמִּים כִּי זָנִיתָ
Area .tritici areas omnes ſuper mercedem dilexiſti : tuo Deo *deſuper*
2 מֵעַל אֱלֹהֶיךָ אָהַבְתָּ אֶתְנָן עַל כָּל־גָּרְנוֹת דָּגָן : גֹּרֶן
habitabunt Non .ea in mentietur muſtum & ; eos paſcet non torcular &
3 וָיֶקֶב לֹא יִרְעֵם וְתִירוֹשׁ יְכַחֶשׁ בָּהּ : לֹא יֵשְׁבוּ
polluta Aſſur in & ,Ægyptum Ephraim revertetur & ; Domini terra in
בְּאֶרֶץ יְהוָה וְשָׁב אֶפְרַיִם מִצְרַיִם וּבְאַשּׁוּר טָמֵא
eorum ſacrificia ,ei *dulceſcent* nec,vinum Domino libabunt Non .comedent
4 יֹאכֵלוּ : לֹא־יִסְּכוּ לַיהוָה יַיִן וְלֹא יֶעֶרְבוּ־לוֹ זִבְחֵיהֶם
quia ; ſe contaminabunt,eum *comedentes* omnes ; eis lugentium panis ſicut
כְּלֶחֶם אוֹנִים לָהֶם כָּל־אֹכְלָיו יִטַּמָּאוּ כִּי־
facietis Quid .Domini domum intrabit non eorum *animæ* eorum panis
5 לַחְמָם לְנַפְשָׁם לֹא יָבוֹא בֵּית יְהוָה : מַה־תַּעֲשׂוּ
abierunt ecce Quia ? Domini feſtivitatis die in & ; ſolemnitatis die in
6 לְיוֹם מוֹעֵד וּלְיוֹם חַג־יְהוָה : כִּי־הִנֵּה הָלְכוּ
deſiderium:eos ſepeliet Moph,eos congregabit Ægyptus,vaſtitatem propter
מִשֹּׁד מִצְרַיִם תְּקַבְּצֵם מֹף תְּקַבְּרֵם מַחְמַד
Venerunt .eorum tabernaculis in *ſpina* ,*ea poſſidebit* urtica ,eorum argenti
7 לְכַסְפָּם קִמּוֹשׂ יִירָשֵׁם חוֹחַ בְּאָהֳלֵיהֶם : בָּאוּ
ſtultum ; Iſrael ſcient ,retributionis dies venerunt ,viſitationis dies
יְמֵי הַפְּקֻדָּה בָּאוּ יְמֵי הַשִּׁלֻּם יֵדְעוּ יִשְׂרָאֵל אֱוִיל
,tuæ iniquitatis multitudinē *ſuper* , *venti* virum ,furioſum ,prophetam
הַנָּבִיא מְשֻׁגָּע אִישׁ הָרוּחַ עַל רֹב עֲוֹנְךָ
; meo Deo cum Ephraim Speculatorem .odium multum &
8 וְרַבָּה מַשְׂטֵמָה : צֹפֶה אֶפְרַיִם עִם־אֱלֹהָי
domo in odium , ejus vias omnes ſuper aucupis laqueus ,prophetam
נָבִיא פַּח יָקוֹשׁ עַל־כָּל־דְּרָכָיו מַשְׂטֵמָה בְּבֵית
recordabitur;Ghibhah dies ſecundùm corruperunt,*Profundaverunt*.ejus Dei
9 אֱלֹהָיו : הֶעְמִיקוּ שִׁחֵתוּ כִּימֵי הַגִּבְעָה יִזְכּוֹר
deſerto in uvas Tanquam .eorum peccata viſitabit , eorum iniquitatis
10 עֲוֹנָם יִפְקוֹד חַטֹּאותָם : כַּעֲנָבִים בַּמִּדְבָּר
vidi ejus *principio* in ,ficu in *maturum fructum* veluti Iſrael inveni
מָצָאתִי יִשְׂרָאֵל כְּבִכּוּרָה בִתְאֵנָה בְּרֵאשִׁיתָהּ רָאִיתִי
, *pudori* ſe ſeparaverunt &,Pehor-Bahal ſunt ingreſſi ipſi : veſtros patres
אֲבוֹתֵיכֶם הֵמָּה בָּאוּ בַעַל־פְּעוֹר וַיִּנָּזְרוּ לַבֹּשֶׁת
avis tanquā Ephraim .eorum amorem ſecundùm abominationes fuerunt &
11 וַיִּהְיוּ שִׁקּוּצִים כְּאָהֳבָם : אֶפְרַיִם כָּעוֹף
Quia .conceptu à & , utero ab & ,partu à ; eorum gloria , avolabit
12 יִתְעוֹפֵף כְּבוֹדָם מִלֵּדָה וּמִבֶּטֶן וּמֵהֵרָיוֹן : כִּי
væ etiam quia ; *homine ab* eos orbabo & , ſuos filios enutrierint ſi
אִם־יְגַדְּלוּ אֶת־בְּנֵיהֶם וְשִׁכַּלְתִּים מֵאָדָם כִּי־גַם־אוֹי
.eis ab *me recedendo in* eis
לָהֶם בְּשׂוּרִי מֵהֶם :

Verſio VULG. LAT.

12 Scribā ei multiplices leges meas,
quæ velut alienæ computatæ ſunt.
13 Hoſtias offerent,immolabunt carnes,
& comedent, & Dominus
non ſuſcipiet eas : nunc recordabitur
iniquitatis eorum, & viſitabit
peccata eorum:ipſi in Ægyptum
14 convertentur. Et oblitus
eſt Iſrael factoris ſui, & ædificavit
delubra : & Judas multiplicavit
urbes munitas: & mittam
ignem in civitates ejus, & devorabit
ædes illius.

CAP. IX.

1 NOli lætari Iſrael, noli exultare
ſicut populi : quia fornicatus
es à Deo tuo, dilexiſti mercedem
ſuper omnes areas tritici.
2 Area & torcular non paſcet eos,
3 & vinum mentietur eis. Non
habitabunt in terra Domini : reverſus
eſt Ephraim in Ægyptum,
& in Aſſyriis pollutum comêdit.
4 Non libabunt Domino vinum,
& non placebunt ei : ſacrificia
eorum, quaſi panis lugentium:omnes,
qui comedent eum, contaminabuntur
: quia panis eorum
animæ ipſorũ,non intrabit in domum
5 Domini. Quid facietis in
die ſolenni, in die feſtivitatis Domini?
6 Ecce enim profecti ſunt
à vaſtitate : Ægyptus congregabit
eos, Memphis ſepeliet eos :
deſiderabile argentum eorum urtica
hæreditabit, lappa in tabernaculis
7 eorum. Venerunt dies
viſitationis, venerunt dies retributionis
: ſcitote,Iſrael,ſtultum
prophetam, inſanum virum ſpiritualem,
propter multitudinem
iniquitatis tuæ, & multitudinem
8 amentiæ. Speculator Ephraim
cum Deo meo : propheta laqueus
ruinæ factus eſt ſuper omnes vias
ejus, inſania in domo Dei ejus.
9 Profundè peccaverunt, ſicut in
diebus Gabaa : recordabitur iniquitatis
eorum, & viſitabit peccata
10 eorum. Quaſi uvas in deſerto,
& inveni Iſrael : quaſi
prima poma ficulneæ in cacumine
ejus, vidi patres eorum : ipſi
autem intraverunt ad Beelphegor,
& abalienati ſunt in confuſionem,
& facti ſunt abominabiles,
11 ſicut ea quæ dilexerunt. Ephraim
quaſi avis avolavit,gloria
eorum à partu, & ab utero, & à
12 conceptu. Quòd & ſi enutrierint
filios ſuos, abſque liberis eos
faciam in hominibus : ſed & væ
eis cùm receſſero ab eis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

12 Καταγράψω αὐτῷ πλῆθος, ϗ τὰ νόμιμα
αὐτοῦ εἰς ἀλλότρια ἐλογίσθησαν, θυσιαστήρια
13 τὰ ἠγαπημένα. Διότι ἐὰν θύσωσι θυσίαν,
ϗ φάγωσι κρέα, κύριος οὐ προσδέξεται αὐτά.
νῦν μνησθήσεται τὰς ἀδικίας αὐτῶν,
ϗ ἐκδικήσει τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν· αὐτοὶ
(θ) εἰς Αἴγυπτον ἀπέστρεψαν, ϗ ἐν
14 Ἀσσυρίοις ἀκάθαρτα φάγονται. Καὶ ἐπελάθετο
Ἰσραὴλ τοῦ ποιήσαντος αὐτὸν, ϗ ᾠκοδόμησε
τεμένη· ϗ Ἰούδας ἐπλήθυνε πόλεις
τετειχισμένας. ϗ ἐξαποστελῶ πῦρ εἰς τὰς
πόλεις αὐτοῦ, ϗ καταφάγεται τὰ θεμέλια
(ι) αὐτῶν. MS.A. (θ) ἦ εἰς (ι) αὐτοῦ.

ΚΕΦ. Θ'.

1 Μὴ χαῖρε Ἰσραὴλ, μηδὲ εὐφραίνου
καθὼς οἱ λαοὶ, διότι ἐπόρνευσας ἀπὸ τοῦ
θεοῦ σου· ἠγάπησας δόματα ἐπὶ πάντα ἅλωνα
2 σίτου. Ἅλων ϗ ληνὸς οὐκ ἔγνω αὐτοὺς, ϗ ὁ
3 οἶνος ἐψεύσατο αὐτούς. Οὐ κατῴκησαν ἐν
τῇ γῇ τοῦ κυρίου· κατῴκησεν Ἐφραὶμ (α)
Αἴγυπτον, ϗ ἐν Ἀσσυρίοις ἀκάθαρτα φάγονται.
4 Οὐκ ἔσπεισαν τῷ κυρίῳ οἶνον, ϗ οὐκ
(β) ἥδυναν αὐτῷ. αἱ θυσίαι αὐτῶν, ὡς ἄρτος
πένθους αὐτοῖς· πάντες οἱ (γ) ἐσθίοντες
αὐτὰ μιανθήσονται, διότι οἱ ἄρτοι αὐτῶν
ταῖς ψυχαῖς αὐτῶν οὐκ εἰσελεύσονται εἰς
5 (δ) τὸν οἶκον κυρίου. Τί ποιήσετε ἐν (ε) ἡμέραις
πανηγύρεως, ϗ ἐν (ζ) ἡμέρᾳ ἑορτῆς
6 τοῦ κυρίου; Διὰ τοῦτο ἰδοὺ (η) πορεύονται ἐκ
ταλαιπωρίας Αἰγύπτου, ϗ ἐκδέξεται αὐτοὺς
Μέμφις, ϗ θάψει αὐτοὺς Μαχμάς· τὸ
ἀργύριον αὐτῶν ὄλεθρος (θ) κληρονομήσει
αὐτό, ἄκανθαι ἐν τοῖς σκηνώμασιν αὐτῶν.
7 Ἥκασιν αἱ ἡμέραι τῆς (ι) ἐκδικήσεως,
ἥκασιν αἱ ἡμέραι τῆς ἀνταποδόσεώς σου, ϗ
κακωθήσεται Ἰσραὴλ ὥσπερ ὁ προφήτης ὁ
παρεξεστηκὼς, ἄνθρωπος ὁ πνευματοφόρος.
ὑπὸ τοῦ πλήθους τῶν ἀδικιῶν σου ἐπληθύνθη
8 (κ) μανία σου. Σκοπὸς Ἐφραὶμ μετὰ θεοῦ·
προφήτης παγὶς σκολιὰ ἐπὶ πάσας τὰς
ὁδοὺς αὐτοῦ, μανίαν ἐν οἴκῳ (*) θεοῦ κατέπηξαν.
9 Ἐφθάρησαν κατὰ τὰς ἡμέρας τοῦ βουνοῦ,
μνησθήσεται ἀδικίας (λ) αὐτοῦ, ἐκδικήσει ἁμαρτίας
10 αὐτοῦ. Ὡς σταφυλὴν ἐν ἐρήμῳ εὗρον
τὸν Ἰσραὴλ, ϗ ὡς σκοπὸν ἐν συκῇ πρώϊμον
(μ) πατέρας αὐτῶν εἶδον. αὐτοὶ εἰσῆλθον
πρὸς τὸν Βεελφεγὼρ, ϗ ἀπηλλοτριώθησαν εἰς
αἰσχύνην, ϗ ἐγένοντο (ν) οἱ ἐβδελυγμένοι,
11 ὡς οἱ ἠγαπημένοι. Ἐφραὶμ ὡς ὄρνεον ἐξεπετάσθη,
αἱ δόξαι αὐτῶν ἐκ τόκων ϗ ὠδίνων
12 ϗ συλλήψεων. Διότι ϗ ἐὰν ἐκθρέψωσι τὰ τέκνα αὐτῶν, ἀτεκνωθήσονται
ἐξ ἀνθρώπων· διότι ϗ οὐαὶ αὐτοῖς ἐστι·
σάρξ μου ἐξ αὐτῶν.

Scribam ei multitudinem: & legitima ejus in aliena reputata 12
ſunt, altaria (f) dilecta. Quia 13
ſi immolaverint hoſtiam, & comederint carnes; Dominus non ſuſcipiet ea. Nunc recordabitur iniquitates eorum, & ulciſcetur peccata eorum. Ipſi in Ægyptum converſi ſunt: (g) & in Aſſyriis immunda comedent. Et oblitus eſt 14
Iſrael eum, qui fecit illum: & ædificaverunt delubra. Et Judas multiplicavit urbes muratas. Et emittam ignem in civitates ejus: et devorabit fundamēta (h) earũ.

CAP. IX.

NOli gaudere Iſrael, & noli 1
lætari, ſicut populi : quia fornicatus es à Deo tuo. Dilexiſti munera ſuper omnem aream tritici : Area, & torcular non cog- 2
novit eos: & vinum mentitum eſt illis. Non habitaverunt in terra 3
Domini : habitavit Ephræm Ægyptũ: et in Aſſyriis immunda (a)
comedent. Non libaverunt Domi- 4
no vinum, & non placuerunt ei. Sacrificia eorum, quaſi panis luctûs : omnes, qui manducaverunt ea, contaminabuntur: quia panes (b) eorum animabus eorum, non intrabũt in domũ Domini. Quid 5
facietis in dieb⁹ conventûs, & in die ſolennitatis Domini? Ideò ec- 6
ce (c) vadunt de miſeria Ægypti: & ſuſcipiet eos Memphis: & ſepeliet eos (d) Machmas: argentũ eorũ, interitus poſſidebit illud: ſpinæ in tabernaculis eorum. Ve- 7
nerunt dies ultionis, venerũt dies retributionis tuæ: et affligetur Iſrael, ſicut propheta inſaniens, homo (e) qui à ſpiritu agitatur. Propter multitudinem iniquitatũ tuarũ, multiplicata eſt (f) amentia tua. Speculator Ephræm cũ Deo: 8
propheta laqueus tortuoſus ſuper omnes vias ejus: inſaniam in domo Dei confixerunt. Corrupti ſunt 9
ſecundùm dies collis : recordabitur iniquitates eorum , ulciſcetur peccata eorum. Sicut uvā 10
in deſerto, inveni Iſrael : & ſicut (g) ſcopum in ficu temporaneū vidi patres eorum. Ipſi ingreſſi ſunt ad Beelphegor, & abalienati ſunt in confuſionem: et facti ſunt (h) abominabiles; ſicut dilecti. E- 11
phræm quaſi avis avolavit: gloriæ eorum ex partu, et parturitionib⁹, & conceptibus: Quia, etiam ſi e- 12
nutrierint filios ſuos; ſine filiis erunt ex hominibus: quia & væ eis eſt; (i) caro mea ex eis.

MS.A. (α) εἰς Αἴγυπτον, (β) ἤδυναντο (γ) ἔσθοντες (δ) οἶκον (ε) ἡμέρᾳ (ζ) ἡμέραις (η) πορεύσονται (θ) κληρονομήσει, ἄκανθαι (ι) ἐκδικήσεώς σου, (κ) *μνεία σου. (*) κυρίου κατέπηξαν. (λ) αὐτοῦ, ϗ ἐκδικήσει ἁμαρτίας αὐτοῦ. (μ) εἶδον πατέρας αὐτῶν. (ν) οἱ ἠγαπημένοι ὡς ἐβδελυγμένοι,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

12 כְּתָבֵית לְהוֹן סְגִיאוּת אוֹרָיְתִי וְאִנּוּן כְּעַמְמַיָא אִתְחַשִּׁיבוּ : דִּבְחִין דְּמִנַּכְּבַן מִן אוֹנֵס 13
דִּבְחִין בִּסְרָא וְאָכְלִין וְקֳדָם יְיָ לָא רַעֲוָא בְהוֹן כְּעַן יִסְעַר חוֹבֵיהוֹן וְיִתְפְּרַע עֲוָיָתְהוֹן אִנּוּן
לְמִצְרַיִם יְתוּבוּן : וּשְׁבַק יִשְׂרָאֵל יַת פּוּלְחַן עָבְדֵיהּ וּבְנָא הֵיכְלִין לְטַעֲוָתָא וּדְבֵית 14
יְהוּדָה אַסְגִּיאוּ קִרְוִין כְּרִיכָן וְאֶשְׁלַח אֶשָּׁתָא בְקִרְווֹהִי וּתְשֵׁיצֵי בִּרְנְיָתְהָא :

ט

1 לָא תֶחֶדוּן דְּבֵית יִשְׂרָאֵל וְלָא תְבוּעוּן כְּנִימוּסֵי עַמְמַיָא אֲרֵי טְעֵיתוּן מִבָּתַר פּוּלְחָנָא
2 דֶּאֱלָהָכוֹן רְחֵמְתּוּן לְמִפְלַח לְטַעֲוָתָא עַל כָּל אִדְּרֵי עֲבוּרָא : מֵאִדְּרָא וּמִמַּעְצַרְתָּא לָא יִתְּזוּנוּן
3 וְחַמְרָא לָא יְסוֹפֵיק לְהוֹן : לָא יְתוּבוּן בְּאַרַע שְׁכִנְתָּא דַיְיָ וִיתוּבוּן דְּבֵית אֶפְרַיִם לְמִצְרַיִם
4 לְאַתּוּר יִגְלוּן מְסָאַב יֵיכְלוּן : לָא יְנַסְּכוּן קֳדָם יְיָ נִסְכִּין דַּחֲמַר וְלָא יִתְקַבְּלוּן לְרַעֲוָא
קוּרְבָּנֵיהוֹן דִּבְחֵיהוֹן כִּלְחֵם מְרַחַק לְהוֹן כָּל דְּיֵיכְלִנֵּיהּ יִסְתָּאַב אֲרֵי קוּרְבָּנֵיהוֹן עַל נַפְשְׁהוֹן
5 לָא מְכַפַּר לְהוֹן בְּבֵית מַקְדְּשָׁא דַיְיָ : מַה תַּעְבְּדוּן לְיוֹם מוֹעֲדָא וּלְיוֹם חַגָּא דַיְיָ : אֲרֵי 6
הָא יִגְלוּן מִן קֳדָם בָּזוֹזִין לְמִצְרַיִם יִתְכַּנְּשׁוּן לְמָפֵיס יִתְקַבְּרוּן בֵּית חֶמְדַּת כַּסְפְּהוֹן
7 קִרְסְלִין יֵשְׁרוּן בְּהוֹן חַתּוּלִין בְּבִרְנְיָתְהוֹן : אֲתוֹ יוֹמֵי סְעוֹרְנָא אֲתוֹ יוֹמֵי תַשְׁלָמַת חוֹבִין
יִדְעוּן דְּבֵית יִשְׂרָאֵל דַּהֲווֹ מִתְנַבַּן לְהוֹן נְבִיֵּי קוּשְׁטָא וּמְשַׁעְמְמִין לְהוֹן נְבִיֵּי שִׁקְרָא עַל
8 דְּאַסְגִּיאוּ חוֹבָךְ וְתַקִּיפוּ חֶטְאָךְ : מְסַכְּן בֵּית יִשְׂרָאֵל דִּי יִתְקַיֵּם לְהוֹן פּוּלְחַן טַעֲוָתְהָא
9 לִנְבִיֵּיהוֹן קוֹלִין צְלָן עַל כָּל אוֹרְחָתְהוֹן מַסְגַן תַּקְלָא בְּבֵית מַקְדְּשָׁא דֶּאֱלָהֲהוֹן : אַסְגִּיאוּ
10 לְחַבָּלָא כְּיוֹמֵי גִבְעֲתָא יִסְעַר חוֹבֵיהוֹן וְיִתְפְּרַע עֲוָיָתְהוֹן : כְּגוּפַן דִּשְׁתִיל עַל עֵינָא
דְמַיָּא כֵּן בְּמַדְבְּרָא אֲרַע מֵימְרִי לְיִשְׂרָאֵל כְּבִכְּרָה בְּתֵינְתָא דִּי בַאֲוַּל מְאַבְּבָא חֲבִיבִית
11 אֲבָהַתְכוֹן וְאִנּוּן אִתְחַבָּרוּ לְבַעַל פְּעוֹר וּטְעוֹ לְבַהֲתָא וַהֲווֹ שִׁקּוּצִין כִּדְרְחִימוּ : בֵּית
יִשְׂרָאֵל כְּעוֹפָא דְּאַפְרְחוּהִי מִקִּנֵּיהּ וְאִטַּלְטַל כֵּן גְּלָא יַת יְקָרְהוֹן וְלַד לָא יִסְגוּן וּמִפֵּרֵי
12 מְעֵיהוֹן לָא יֶחֱדוּן וְעַל דְּאִתְמְנַעוּ רִגְלֵיהוֹן מִלְּאִתְחֲזָאָה בְּבֵית מַקְדְּשִׁי : אֲרֵי אִם יְרַבּוּן
יַת בְּנֵיהוֹן וְאַתְכֵּלִנּוּן מִלְּמֶהֱוֵי גֻבְרִין אֲרֵי וַי לְהוֹן בְּסַלָּקוּתִי שְׁכִנְתִּי מִנְּהוֹן :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Conſcripſi eis multiplicitatem legis meæ : ipſi autem velut gentes repu- 12
tati ſunt. Sacrificant quæ ex rapina colligunt, mactant carnes & veſcuntur; 13
ſed non eſt beneplacitum coram Dño in eis. Nunc viſitabit peccata eorum
& ulciſcetur iniquitates eorum ; ipſi in Ægyptum revertentur. Et dimiſit 14
Iſrael cultum factoris ſui, & extruxit templa idolis ; viri verò domus Jehuda
multiplicaverunt civitates munitas : ſed immittam ignem in civitates
ejus & conſumet palatia ejus.

CAP. IX.

NE lætemini viri domus Iſrael, neq; exultetis juxta conſuetudines popu- 1
lorum, aberrâſtis namque à cultu Dei veſtri : dilexiſtis ſervire idolis pro
omnibus areis frumenti. Ab area, & à torculari non nutrientur, vinum non 2
ſufficiet eis. Non habitabunt in terra majeſtatis Dñi, ſed revertentur viri 3
domus Ephraim in Ægyptum & ad Aſſur migrabunt, immundum comedent.
Non libabunt coram Dño libamina vini, nec ſuſcipientur cum beneplacito 4
oblationes eorum; ſacrificia eorum erunt eis inſtar panis abominabilis :
omnis qui eo veſcetur contaminabitur, nequaquam enim eorum oblatio expiabit
pro ipſis animas eorum in æde ſanctuarii Dñi. Quid facturi eſtis in 5
die ſolennitatis atque in die feſtivitatis dominicæ? Ecce namque extorres 6
erunt à facie vaſtatorum ; in Ægyptum congregabuntur, in Memphi ſepelientur
: in domo deſiderabili argenti eorum urticæ degent, & cati erunt
in eorum prætoriis. Advenerunt dies animadverſionis, ingruerunt dies re- 7
tributionis peccatorum : ſcient qui ex domo Iſrael, prophetas illis prædixiſſe
veritatem : tenebras verò illis offudiſſe pſeudoprophetas, ita ut adaugerent
iniquitates tuas, & confortarent peccata tua. Proſpicientes qui ſunt ex domo 8
Iſrael, quò permaneat eis cultus idolorum ſuorum ; prophetis ſuis laqueos
tendunt ſuper omnes eorum vias, multiplicant laqueos in domo ſanctuarii
Dei ſui. Adauxere corruptionem ſicut in diebus Gabaa ; pœnas ſumet pec- 9
catorum eorum, puniet illorum iniquitates. Sicut vitis quæ plantata eſt 10
juxta fontem aquarum, ſic in deſerto occurrit verbum meum Iſraeli ; quaſi
primos fructus in ficu, quos in principio producit, dilexi patres veſtros :
Ipſi verò adjunxerunt ſe Beel-Peor, & erraverunt in confuſione, & facti
ſunt abominabiles ſecundùm quod dilexerunt. Domus Iſrael, ſicut avis, quam 11
abegerunt à nido ſuo, transfert ſe ; ſic receſſit gloria eorum : liberos non
multiplicabunt, & ob fructum ventris ſui non lætabuntur, quòd prohibuerint
pedes ſuos ne comparerēt in domo ſanctuarii mei. Nam etiamſi enutrierint filios ſuos, orbabo eos ne in viros evadant; quia etiam væ eis cùm ſuſtulero majeſtatē meam ab eis. 12

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

12 * ܘܟܬܒܬ ܠܗ ܣܘܓܐܐ ܕܢܡܘܣܝ .. ܐܝܟ ܢܘܟܪܝܬܐ ܚܫܒ ܐܢܝܢ ܡܠܝ. * ܕܒܚܐ
13 ܓܒܝܐ ܡܕܒܚܝܢ. ܘܒܣܪܐ ܐܟܠܝܢ. ܘܡܪܝܐ ܠܐ ܨܒܐ ܒܗܘܢ. ܗܫܐ ܢܬܕܟܪ ܥܘܠܗܘܢ.
ܘܢܦܩܘܕ ܚܛܗܝܗܘܢ. ܘܗܢܘܢ ܠܡܨܪܝܢ ܢܬܗܦܟܘܢ. * ܛܥܐ ܐܝܣܪܝܠ ܠܥܒܘܕܗ ܘܒܢܐ 14
ܗܝܟܠܐ. ܘܝܗܘܕܐ ܐܣܓܝ ܡܕܝܢܬܐ ܥܫܝܢܬܐ. ܐܫܕܪ ܢܘܪܐ ܒܩܘܪܝܗ̇ ܘܬܐܟܘܠ ܒܝܪܢܝܬܗ̇
ܘܐܦܕܢܝܗ̇. * ܩܦܠܐܘܢ * ܛ * ܠܐ ܬܚܕܐ ܐܝܣܪܝܠ :: ܘܠܐ 1
ܬܪܘܙ ܐܝܟ ܥܡܡܐ. ܡܛܠ ܕܛܥܝܬ ܡܢ ܐܠܗܟ. ܘܪܚܡܬ ܡܘܗܒܬܐ ܡܢ ܟܠ ܐܕܪܐ. * ܐܕܪܐ 2
ܘܡܥܨܪܬܐ ܠܐ ܢܣܒܥܘܢ. ܘܡܫܚܐ ܢܕܓܠ ܒܗܘܢ. * ܠܐ ܢܬܒܘܢ ܒܐܪܥܗ ܕܡܪܝܐ. 3
ܐܠܐ ܢܬܗܦܟ ܐܦܪܝܡ ܠܡܨܪܝܢ. ܘܒܐܬܘܪ ܛܡܐܬܐ ܢܐܟܠܘܢ. * ܠܐ ܢܢܩܘܢ ܠܡܪܝܐ ܚܡܪܐ. 4
ܘܠܐ ܢܒܣܡܘܢ ܠܗ ܕܒܚܝܗܘܢ. ܐܝܟ ܠܚܡܐ ܕܐܒܝܠܐ ܠܗܘܢ. ܟܠ ܐܟܘܠܘܗܝ
ܢܬܛܡܐܘܢ. ܡܛܠ ܕܠܚܡܐ ܕܢܦܫܗܘܢ ܠܐ ܢܥܘܠ ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܡܢܐ ܬܥܒܕܘܢ 5
ܒܝܘܡܐ ܕܥܐܕܐ. ܘܒܝܘܡܐ ܕܥܐܕܗ ܕܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܕܗܐ ܐܙܠܘ ܠܒܙܬܐ. ܘܡܨܪܝܢ ܬܟܢܫ 6
ܐܢܘܢ .. ܘܡܦܝܣ ܬܩܒܪ ܐܢܘܢ. ܓܒܝܐ ܕܣܐܡܗܘܢ. ܢܘܟܪܝܐ ܢܐܪܬܘܢ. ܘܟܘܒܐ
ܒܡܫܟܢܝܗܘܢ. * ܐܬܝܘ ܝܘܡܬܐ ܕܣܘܥܪܢܐ. ܡܛܘ ܝܘܡܬܐ ܕܦܘܪܥܢܐ. ܢܕܥ ܐܝܣܪܝܠ ܫܛܝܐ 7
ܢܒܝܐ ܫܛܝܐ. ܓܒܪܐ ܕܠܒܝܫ ܪܘܚܐ ܕܫܛܝܘܬܐ. ܡܢ ܣܘܓܐܐ ܕܥܘܠܟ. ܣܓܝܐܬ
ܙܢܝܘܬܟ. * ܕܘܩܐ ܐܦܪܝܡ ܥܡ ܐܠܗܝ. ܢܒܝܐ ܦܚܐ ܕܬܘܩܠܬܐ ܥܠ ܟܠܗܝܢ ܐܘܪܚܬܗ. 8
ܘܙܢܝܘܬܐ ܒܒܝܬܗ ܕܐܠܗܐ. * ܥܡܩܘ ܘܚܒܠܘ ܐܝܟ ܝܘܡܬܐ ܕܓܒܥܬܐ. ܗܫܐ ܢܬܕܟܪ 9
ܥܘܠܗܘܢ. ܘܢܦܩܘܕ ܚܛܗܝܗܘܢ. * ܐܝܟ ܥܢܒܐ ܒܡܕܒܪܐ ܐܫܟܚܬ ܠܐܝܣܪܝܠ. ܘܐܝܟ 10
ܒܟܘܪܬܐ ܒܬܬܐ ܚܙܝܬ ܠܐܒܗܝܗܘܢ. ܘܗܢܘܢ ܥܠܘ ܠܒܥܠܦܥܘܪ. ܘܐܬܢܙܪܘ ܠܒܗܬܬܐ.
ܘܗܘܘ ܫܝܩܘܨܐ ܐܝܟ ܕܪܚܡܘ. * ܐܦܪܝܡ ܐܝܟ ܦܪܚܬܐ ܦܪܚ ܐܝܩܪܗܘܢ. ܡܢ ܝܠܕܐ 11
ܘܡܢ ܟܪܣܐ. ܘܡܢ ܒܛܢܐ. * ܐܦ ܐܢ ܢܪܒܘܢ ܒܢܝܗܘܢ. ܐܘܒܕ ܐܢܘܢ ܡܢ ܒܢܝܢܫܐ. ܡܛܠ 12
ܕܘܝ ܠܗܘܢ. ܡܬܦܪܥ ܐܢܐ ܡܢܗܘܢ.

* Cúmque præſcripſiſſem ei multitudinem legum mearum, tamen ut peregrina reputavit verba mea: 12
Victimas ſelectas ſacrificant, & carnem edunt; quibus non oblectatur Dominus: Ideò recordabitur iniquitatis eorum, & viſitabit peccata eorum, & ipſi in Ægyptum revertentur. 13
Oblitus eſt Iſrael factoris ſui, & extruxit templa: Juda multiplicavit urbes munitas, *at* immitam ignem in urbes ejus, conſumétque arces ejus. 14

CAP. IX.

NEſlæteris Iſrael néve exultes, more gentium, eò quòd aberraveris à Deo tuo, & munera dilexeris ex omnibus areis. 1
At ab area & à torculari non ſaturabuntur, & oleum fallet eos. 2
Non permanebunt in terra Domini, ſed revertetur Aphrem in Ægyptum, & in Aſſyria contaminatione veſcentur. 3
Non libabunt Domino vinum, neque condient eo ſacrificia ſua: perinde ac panis anguſtiæ erit illis: omnes comedentes eum polluentur, quia panis animæ ipſorum non ingredietur in domum Dñi. 4
Quid facietis die feſto, & die ſolennitatis Domini? 5
Nam iſti in prædam abierunt, Ægyptus colliget eos, & Mephes ſepeliet eos, exquiſitũ argentum eorũ extranei poſſidebunt, & ſpinæ *orientur* in tentoriis eorum. 6
Advenerunt dies animadverſionis, inſtant dies retributionis: agnoſcet Iſrael demens prophetam ſtultum, virum indutum ſpiritu ſtultitiæ: propter multitudinem ſceleris tui, crevit laſcivia tua. 7
Speculator eſt Aphrem cum Deo meo, propheta laqueus offenſionis eſt ad omnes vias ejus, & laſcivia in domo Dei. 8
In ima penetrârunt, & corruptionem commiſerunt, ut diebus collis: proinde recordabitur iniquitatis eorum, & viſitabit peccata eorum. 9
Ut uvas in deſerto repereram Iſraelem, atque ut ficum præcocem videram patres eorum: verùm ipſi ingreſſi ſunt ad Beel-phegor, & nazaræos ſe fecerunt ignominiæ, & dediderunt ſe abominationi prout amaverunt. 10
Aphremitarum gloria tanquam volucris avolavit, inde à partu, à ventre, & à conceptu. 11
Etiamſi filios educaverint, extinguam eos ex hominibus: nam, væ illis, ultionem ſumpturus ſum ab eis. 12

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

12 * ابوع له كثرة وشرايعي حسبت غريبات * المذابح المحبوبة * من اجل انهم ان ذبحوا ذبيحة
13 فياكلون لحما. الرب لا يقبلها. الان يذكر مظالمهم * وينتقم خطاياهم * هم رجعوا الي مصر
14 وفي الموصليين ياكلون الانجاس * ونسي اسرايل صانعه * وبنوا هياكل * ويهودا اكثر
المدن الحصينة * فارسل نارا الي مدنه وتاكل اساساتها *

* الفصل التاسع *

1 * لا تفرح يا اسرايل * ولا تسر كمثل الشعوب * لانك ضللت عن الهك * احببت العطايا
2 علي كل بيادر الحنطة * البيدر والمعصرة لم يعرفاهم * والخمر كذبهم * لم يسكنوا 3
4 ارض الرب * سكن افرام في مصر * وفي الموصليين ياكلون الانجاس * لم يريقوا خمرا
للرب * ولم تطب له ذبايحهم * مثل خبز حزن لهم * جميع الاكلين يتنجسون * من اجل
5 ان اخبازهم لنفوسهم * لم تدخل الي بيت الرب * ماذا تصنعون في ايام الموسم وفي ايام
6 عيد الرب * لاجل هذا هوذا يسيرون من شقوة مصر * وتقبلهم ممفيس * وتدفنهم مخماس *
7 البلاء يرث فضتهم * الاشواك في مساكنهم * اتت ايام الانتقام * اتت ايام مكافاتك *
ويتاذا اسرايل مثل النبي الاحمق * الانسان اللابس الروح * من كثرة ظلاماتك كثر
8 وسواسك * افرام رقيبة مع الهه * النبي فخ معوج * علي جميع طرقه وسواس * انزلوا في
9 بيت الرب * فسدوا كايام الاكمة * يذكر ظلمهم * ينتقم خطاياهم * مثل عنبة في برية 10
وجدوا اسرايل * ومثل ناطور اولي في تينة وجدوا اباهم * هم دخلوا الي باعل فاعور * وتعربوا
11 للخزي * والمحبوبون صاروا كالمرذولين * افرام طار مثل طاير * امجادهم منذ الولاد والطلقات
12 والحبل * من اجل انهم ان ربوا اولادهم سيثكلون من البشر * من اجل ان الويل لهم
هو * جسدي منهم افرام *

* *Exagitabo multitudinem ipſius: jura verò mea reputata ſunt aliena.* 12
Altaria dilecta (quia cùm immolant victimam, comedunt carnem) Dominus nequaquam accipit ea. Jam recordabitur impietatum eorum, & ulciſcetur peccata eorum. Ipſi reverſi ſunt in Ægyptum, & inter Aſſyrios comedent immunda. 13
Oblitus eſt Iſrael factoris ſui, & ædificaverunt templa: Juda quoque multiplicavit urbes munitas, ſed immittam ignem in urbes ejus, devorabitque fundamenta earum. 14

CAP. IX.

N*E gaudeas O Iſrael, néve læteris ut* reliquæ *gentes; quoniam aberrâſti à Deo tuo, amâſti munera ſuper omnes areas frumenti.* 1
Area & torcular non agnoſcet eos, & vinum mentietur eis. 2
Non habitabunt in terra Domini, habitabit Aphrem in Ægypto, inter Aſſyrios comedent immunda. 3
Non libabunt vinum Domino, neque placebunt ei ſacrificia eorum, ut panis mœroris erunt eis; omnes comedentes contaminabuntur: panes enim eorum pro ipſis ſunt, non ingrediuntur domum Domini. 4
Quid facietis in diebus nundinarum, & in diebus feſtis Domini? 5
Propterea ecce abeuntes eos à miſeria Ægypti, excipiet Memphis, & ſepeliet eos Machmas, calamitas hæres erit argenti eorum, & ſentes in habitaculis eorum. 6
Advenerunt dies ultionis, advenerunt dies retributionis tuæ: & lædetur Iſrael ut propheta inſanus, homo ſpiritum ſimulans: propter multitudinem impietatum tuarum, multiplicata eſt amentia tua. 7
Aphrem ſpeculator eſt cum Deo ſuo; propheta laqueus eſt obliquus; ſuper omnes vias ejus adeſt amentia: deſcendere fecerunt in domo Domini: 8
Corrupti ſunt ut diebus collis, Recordabitur impietatis eorum, ulciſcetur peccata eorum. 9
Ut uvam in deſerto repererunt Iſraelem, & ut cuſtodem primum in ficu repererunt patrem eorum. Ipſi ingreſſi ſunt ad Baalphegor, & abalienaverunt ſe turpitudini; & qui erant dilecti, facti ſunt ut deſpecti. 10
Aphrem volavit ut avis; gloria eorum inde à nativitate, partu, & conceptu. 11
Nam etſi filios ſuos educaverint, orbabuntur ex hominibus: quia væ illis eſt: corpus meum ex ipſis eſt Aphrem. 12

הושע : י

Ephraim & :habitaculo in plantata Sor in vidi ut Ephraim
אפרים כאשר־ראיתי לצור שתולה בנוה ואפרים 13
quid ,Domine eis Da .suos filios interfectorem ad educendum ad
להוציא אל־הרג בניו: תן־להם יהוה מה־ 14
Omnis .arentia ubera & , *orbantem* vulvam eis da ?dabis
תתן תן־להם רחם משכיל ושדים צמקים: כל־ 15
malitiam *super* eos habui exosos ibi quia ,Ghilghal in eorum malitia
רעתם בגלגל כי־שם שנאתים על רע
omnes ,eos *diligere* addam non ; eos ejiciam mea domo è ,eorum *studiorum*
מעלליהם מביתי אגרשם לא אוסף אהבתם כל־
,exaruit eorum radix ,Ephraim est Percussus .declinantes eorũ principes
שריהם סוררים: הכה אפרים שרשם יבש 16
desiderabilia interficiam & ,genuerint *cùm* etiam : faciant non fructum
פרי בלי־יעשון גם כי ילדון והמתי מחמדי
erunt & ; eum audierunt non quia ,meus Deus eos Abjiciet .eorũ uteri
בטנם: ימאסם אלהי כי לא שמעו לו ויהיו 17
.gentibus in vagi
נדדים בגוים:

CAP. X. י

,ejus fructũ *multiplicare secũdùm* :sibi ponet fructum , Israel vacua Vitis
גפן בוקק ישראל פרי ישוה־לו כרב לפריו 1
.statuas benefecerunt,ejus terræ *benefacere secundùm* ,altaria multiplicavit
הרבה למזבחות כטוב לארצו היטיבו מצבות:
,eorum aras confringet ipse : desolabuntur nunc ,eorum cor se Divisit
חלק לבם עתה יאשמו הוא יערף מזבחותם 2
: nobis rex Non ,*dicent* nunc Quia .eorum statuas vastabit
ישדד מצבותם: כי עתה יאמרו אין מלך לנו 3
? nobis faciet quid rex & : Dominum *timuimus* non nam
כי לא יראנו את־יהוה והמלך מה־יעשה־לנו:
germinabit & ; fœdus *excidendo* ,mendaciter jurando verba sunt Locuti
דברו דברים אלות שוא כרת ברית ופרח 4
Aven-Beth vitulas Ad .agri sulcos super judicium *caput* sicut
כראש משפט על תלמי שדי: לעגלות בית און 5
,ejus populus eum super luxit quia ; Someron *habitator* pavebunt
יגורו שכן שמרון כי־אבל עליו עמו
migravit quia ,ejus gloria super,exultaverant eum super ejus sacerdotes &
וכמריו עליו יגילו על־כבודו כי־גלה
; Jareb regi munus ducetur Assur in ipsemet Etiam .eo ab
ממנו: גם־אותו לאשור יובל מנחה למלך ירב 6
.suo consilio à Israel afficietur pudore & ,capiet Ephraim pudor
בשנה אפרים יקח ויבוש ישראל מעצתו:
.aquæ *faciebus super* spuma ut ; ejus rex Someron est Succisus
נדמה שמרון מלכה כקצף על־פני־מים: 7
tribulus & spina ,Israel peccatum Aven excelsa disperdentur Et
ונשמדו במות און חטאת ישראל קוץ ודרדר 8
, collibus & ; nos Operite ,montibus dicent & : eorum aras super ascendet
יעלה על־מזבחותם ואמרו להרים כסונו ולגבעות
,steterunt ibi : Israel peccâsti ,Ghibhah diebus A .nos super Cadite
נפלו עלינו: מימי הגבעה חטאת ישראל שם עמדו 9
.iniquitatis filios super prælium Ghibhah in eos comprehendet non
לא־תשיגם בגבעה מלחמה על־בני עלוה:
, populi eos super congregabuntur & ; eos corripiam *& meo desiderio In*
באותי ואסרם ואספו עליהם עמים 10
.suas iniquitates duas propter *eos corripere in*
באסרם לשתי עינתם:

Versio VULG. LAT.

13 Ephraim, ut vidi, Tyrus erat fundata in pulchritudine : & Ephraim educet ad interfectorem 14 filios suos. Da eis, Dñe. Quid dabis eis ? Da eis vulvam sine liberis, & ubera arentia. 15 Omnes nequitiæ eorum in Galgal, quia ibi exosos habui eos : propter malitiam adinventionum eorum, de domo mea ejiciam eos : non addam ut diligam eos, omnes prin- 16 cipes eorum recedentes. Percussus est Ephraim, radix eorum exsiccata est : fructum nequaquam facient. Quòd & si genuerint, interficiam amantissima uteri eorũ. 17 Abjiciet eos Deus meus, quia non audierunt eum : & erunt vagi in nationibus.

CAP. X.

1 Vitis frondosa Israel, fructus adæquatus est ei : secundùm multitudinem fructûs sui multiplicavit altaria, juxta ubertatem terræ 2 suæ exuberavit simulachris. Divisum est cor eorum, nunc interibunt : ipse confringet simulachra eorum, depopulabitur aras eo- 3 rum. Quia nunc dicent ; Non est rex nobis : non enim timemus Dominum : & rex quid faciet no- 4 bis ? Loquimini verba visionis inutilis, & ferietis fœdus : & germinabit quasi amaritudo judi- 5 cium super sulcos agri. Vaccas Bethaven coluerunt habitatores Samariæ : quia luxit super eum populus ejus, & æditui ejus super eum exultaverunt in gloria ejus, 6 quia migravit ab eo. Siquidem & ipse in Assur delatus est, munus regi ultori : confusio Ephraim capiet, & confundetur Israel in 7 voluntate sua. Transire fecit Samaria regem suum quasi spumam 8 super faciem aquæ. Et disperdentur excelsa idoli, peccatum Israel : lappa & tribulus ascendet super aras eorum : & dicent montibus ; Operite nos : & collibus ; Ca- 9 dite super nos. Ex diebus Gabaa, peccavit Israel, ibi steterunt : non comprehendet eos in Gabaa præ- 10 lium super filios iniquitatis. Juxta desiderium meum corripiam eos : congregabuntur super eos populi, cùm corripientur propter duas iniquitates suas.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

13 Ἐφραὶμ, ὃν τρόπον εἶδον, εἰς θήραν παρέστησαν τὰ τέκνα αὐτῶν, καὶ Ἐφραὶμ, τοῦ ἐξαγαγεῖν εἰς ἀποκέντησιν τὰ τέκνα αὐτοῦ. 14 Δὸς αὐτοῖς κύριε, τί δώσεις αὐτοῖς; (ν) μήτραν ἀτεκνοῦσαν, καὶ μαστοὺς ξηρούς. 15 Πᾶσαι αἱ κακίαι αὐτῶν (ξ) ἐν Γαλγὰλ, ὅτι ἐκεῖ ἐμίσησα αὐτούς. διὰ τὰς κακίας τῶν ἐπιτηδευμάτων αὐτῶν, ἐκ τοῦ οἴκου μου ἐκβαλῶ αὐτοὺς, οὐ μὴ προσθήσω τοῦ ἀγαπῆσαι αὐτούς· πάντες οἱ ἄρχοντες 16 αὐτῶν ἀπειθοῦντες. Ἐπόνεσεν Ἐφραὶμ· τὰς ῥίζας αὐτοῦ ἐξηράνθη, καρπὸν οὐκ ἔτι μὴ ἐνέγκῃ· διότι καὶ ἐὰν γεννήσωσιν, ἀποκτενῶ 17 τὰ ἐπιθυμήματα κοιλίας αὐτῶν. Ἀπώσεται αὐτοὺς ὁ θεὸς, ὅτι οὐκ εἰσήκουσαν αὐτοῦ, καὶ ἔσονται (ο) πλανῆται ἐν τοῖς ἔθνεσιν.

MS.A. (ν) Δὸς αὐτοῖς μήτραν (ξ) εἰς Γαλγὰλ, ὅτι ἐκεῖ αὐτοὺς ἐμίσησα. (ο) ὡς πλανῆται

Ephræm, sicut vidi, in (k) captionem præbuerunt filios suos, & Ephræm, ut educeret ad interfectionem filios suos. Da eis, Domine. 14 Quid dabis eis? vulvam sine filiis, & ubera arentia. 15 Omnes nequitiæ eorum in Galgal, quia ibi exosos habui eos. Propter malitias adinventionum eorũ de domo mea ejiciã eos: non addam ut diligam eos. Omnes principes eorum inobedientes. 16 Doluit Ephræm, radices suas arefactus est: fructũ nequaquã ultrà afferet: quia etsi genuerint; interficiam desiderabilia uteri eorũ. 17 Repellet eos Deus: quia non exaudierunt eum, & erunt vagi in nationibus.

ΚΕΦ. ι΄.

1 Ἄμπελος εὐκληματοῦσα Ἰσραὴλ, ὁ καρπὸς (α) εὐθηνῶν αὐτῆς· κατὰ τὸ πλῆθος τῶν καρπῶν (ν) αὐτῆς, ἐπλήθυνε τὰ θυσιαστήρια· (β) κατὰ τὰ ἀγαθὰ τῆς γῆς αὐτοῦ, ᾠκοδόμησε 2 στήλας. Ἐμέρισε καρδίας αὐτῶν, νῦν ἀφανισθήσονται· αὐτὸς κατασκάψει τὰ θυσιαστήρια αὐτῶν, ταλαιπωρήσουσιν αἱ στῆλαι αὐτῶν. 3 Διότι νῦν ἐροῦσιν, Οὐκ ἔστι βασιλεὺς ἡμῖν, ὅτι οὐκ ἐφοβήθημεν τὸν κύριον. ὁ δὲ βασιλεὺς 4 τί ποιήσει ἡμῖν, Λαλῶν ῥήματα προφάσεις ψευδεῖς; διαθήσεται διαθήκην, ἀνατελεῖ ὡς 5 ἄγρωστις, κρίμα ἐπὶ χέρσον ἀγροῦ. Τῷ μόσχῳ τοῦ οἴκου Ὢν παροικήσουσιν οἱ κατοικοῦντες Σαμάρειαν, (γ) ὅτι ἐπένθησεν λαὸς αὐτοῦ ἐπ᾽ αὐτόν· καὶ καθὼς παρεπίκραναν αὐτὸν, ἐπιχαροῦνται ἐπὶ τὴν δόξαν αὐτοῦ, ὅτι μετῳκίσθη 6 ἀπ᾽ αὐτοῦ. Καὶ αὐτὸν εἰς Ἀσσυρίους δήσαντες, ἀπήνεγκαν ξένια τῷ βασιλεῖ Ἰαρείμ. ἐν δόματι Ἐφραὶμ δέξεται, καὶ αἰσχυνθήσεται 7 Ἰσραὴλ ἐν τῇ βουλῇ αὐτοῦ. Ἀπέρριψε Σαμάρεια (δ) βασιλέα αὐτῆς ὡς φρύγανον ἐπὶ 8 (ε) προσώπου ὕδατος. Καὶ ἐξαρθήσονται βωμοὶ Ὢν ἁμαρτήματα τοῦ Ἰσραὴλ, ἄκανθαι καὶ τρίβολοι ἀναβήσονται ἐπὶ τὰ θυσιαστήρια αὐτῶν. καὶ ἐροῦσι τοῖς ὄρεσι, (ζ) Καλύψατε ἡμᾶς, καὶ τοῖς βουνοῖς, Πέσατε ἐφ᾽ 9 ἡμᾶς. Ἀφ᾽ οὗ οἱ βουνοὶ, ἥμαρτεν Ἰσραὴλ, ἐκεῖ ἔστησαν· οὐ μὴ καταλάβῃ αὐτοὺς ἐν τῷ βουνῷ πόλεμος ἐπὶ (η) τὰ τέκνα ἀδικίας (θ) 10 Παιδεῦσαι αὐτούς. καὶ συναχθήσονται ἐπ᾽ αὐτοὺς λαοὶ, ἐν τῷ παιδεύεσθαι αὐτοὺς ἐν ταῖς δυσὶν ἀδικίαις αὐτῶν.

CAP. X.

Vitis (a) bonas habẽs propagines Israel: fructꝰ abundans eius: secundùm multitudinẽ fructuũ suorum multiplicavit altaria: secundùm bona terræ (b) ejus ædificavit titulos. 2 Diviserunt corda sua: nunc peribunt. Ipse suffodiet altaria eorum: affligentur tituli eorũ. 3 Propterea nunc dicent; Non est rex nobis, quia non timuimus Dominum. Rex autẽ quid faciet nobis, 4 Loquens verba, occasiones mendaces? Disponet testamentũ: orietur sicut gramen, judiciũ super desertum agri. 5 Apud vitulum (c) domûs On morabuntur, qui habitant in Samaria: quia luxit populus ejus super eũ. Et sicut irritaverunt illũ; gaudebunt super gloria ejus: quia translata est ab eo: 6 Et ipsum in Assyrios ligantes, tulerunt munera regi (d) Iarim: in (e) domo Ephræm suscipiet, & confundetur Israel in cõsilio suo. 7 Projecit Samaria regẽ suũ, sicut (f) cremium super faciem aquæ: 8 Et auferentur aræ On peccata Israel: Spinæ et tribuli ascendẽt super altaria eorũ. Et dicent montibꝰ; Operite nos: & collibꝰ; Cadite super nos. 9 Ex quo colles sũt; peccavit Israel: Ibi steterunt. Non comprehendet eos in colle (g) bellum super filios iniquitatis, 10 ut corriperem eos. Et congregabuntur super illos populi: quando correpti fuerint in duabus iniquitatibus suis.

MS.A. (α) αὐτῆς εὐθηνῶν· (ν) αὐτοῦ, (β) καὶ κατὰ (γ) διὰ τοῦτο ἐπένθησεν ὁ λαὸς (δ) τὸν βασιλέα (ε) πρόσωπον (ζ) Πέσετε ἐφ᾽ ἡμᾶς, καὶ τοῖς βουνοῖς, Καλύψατε ἡμᾶς. (η) τέκνα (θ) Ἦλθεν παιδεῦσαι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

כנשתא דישראל במעבדה אוריתא דמיא לצור באצלחותא בשליותה חבו דבית 13
אפרים לקטלא לפולחן טעותא בניהון: הב להון יי ית תושלמת עובדיהון הב להון 14
רחם מתכיל ותדין יבשין: כל בישתהון גלין קדמי בגלגלא ארי תמן רחיקתנון על 15
בישות עובדיהון מבית מקדשי אתרכנון לא אוסיף לרחמא עליהון דכל רברביהון
מרדין: בית ישראל דמן לאילנא דקלא שרשוהי מלרע ויבש נופיה מלעילא נוב לא 16
יעבד אף אם ירבון בנין ואקטול שפר מעיהון: ירחיקנון אלהי ארי לא קבילו 17
למימריה ויהון מטלטלין בני עממיא:

י

גפן בזיזא ישראל דהוה גפן נציב במעבדיה אוריתא פרי עובדיהון גרמו להון דיגלון 1
כד אסגיתי להון עללא אסגיאו פולחן לאגוריהון כד איתיתי טובא לארעהון אוטיבו
לקמתהון: אתפלג לבהון מן אוריתא כען יחובון כען איתי עליהון סנאה יהדר 2
קדלהון דאגוריהון יבוז קמתהון: ארי כען ימרון לית מלכא לנא ארי לא דחלנא מן 3
קדם יי ומלכא מה יעבד לנא: ממללין מלין דאונס יימן לשקר ללמא גזרין קים כען 4
איתי עליהון כרישי חוין בישין דין שקריהון על תחומי חקלן: על די פלחו לעגליא 5
בביתאל מלך במשריתיה יסק עליהון ויגלי יתהון יסבון מנהון עגלא דשמרון ארי
אתאבלו עלוהי עמיה ופלחוהי עלוהי יבועון על יקריה ארי גלא מניה: אף יתיה 6
לאתור יובלון קורבנא למלכא דייתי לאתפרעא להון נביא אמר להון בהתא דבית
אפרים יקבלון ויבהתון דבית ישראל מטלכי עצתהון: בהתת שמרון במלכה 7
כרותחא על אפי מיא: ויצדין במת ביתאל חובי ישראל גרמו להון דיגלון כובין 8
ואטדין יסקון על אגוריהון כען איתי עליהון עקא דמותא דיהון דמן כאלו טוריא חפן
להון ורמתא נפלו עליהון: מיומי גבעתא חטיתון בית ישראל תמן קמו מרדו במימרי 9
למנאה עליהון מלכא ואף לא זכיאו דתתקים להון מלכותא בגבעתא תמן אתו עליהון
עבדי קרבא לקטלא אבהן עם בנין סליקו: במימרי איתיתי עליהון יסורין וכנשית 10
עליהון עממיא ושליטו בהון כמיסד פדנא על תרתין עונתיה:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Donec coetꝰ Israel opere complevit legem, par erat Tyro in prosperitate sua 13 atq; abundantia : peccaverunt qui de domo Ephraim, mactando cultui idolorum filios suos. Da eis Dñe retributionem operũ suorum, tribue eis vulvam 14 orbantem & ubera arentia. Omnes illorũ nequitiæ manifestæ fuerunt coram 15 me in Galgal, nam ibi execratꝰ sum eos ; propter malitiã operũ suorũ de domo sanctuarii mei ejiciam eos, nec addam illos amore prosequi cùm omnes principes eorũ sint rebelles. Domꝰ Israel similis est arbori cujꝰ radix uredine 16 percussa est deorsũ, & siccatur *ramꝰ* ejꝰ sursũ ; fructũ non faciet : etiamsi educaverint filios, interficiã viscerũ ipsorũ pulchritudinẽ. Reprobabit eos Deus 17 meꝰ, quia non attentionẽ præbuerũt verbo ejꝰ, atq; errones erũt inter populos,

CAP. X.

Vitis vastata est Israel quæ erat plantata cùm exequeretur legem : fructus 1 operum ipsorum eis in causa fuere ut exulent : quando auxi eis proventum, multiplicârunt cultum altaribus suis : quando adduxi bonum terræ eorum, benefecerunt statuis suis. Divisum est cor eorum à lege, nunc delinquent, mox 2 adducam adversus eos inimicum qui subvertat cacumen altarium eorum, & devastet eorum statuas. Nunc enim dicent, Non est rex nobis, quippe non ti- 3 muimus à facie Dñi : & rex quid facturꝰ est nobis ? Loquuntur verba vio- 4 lenta, jurant in vanum, frustrà feriunt fœdꝰ : nunc adducam contra ipsos quasi capita serpentum maleficorum, judicium mendaciorum suorum, super terminos agrorũ. Propterea quòd venerati sunt vitulos in Bethel, ascendet con- 5 tra eos rex cum exercitu suo, & in transmigrationem ducet eos, tollent ab eis vitulum Samariæ, jam enim luxit propter eum populꝰ ejus, & cultores ipsius, qui propter ipsum exultabant, ob gloriam ejus, recessit enim ab eis. Ipsum 6 quoq; in Assur deferent munus regi qui veniet punitum eos. Propheta dic eis, Confusionem qui de domo Ephraim, accipient, & confundetur domus Israel à consultationibus consilii sui. Confusa est Samaria cum rege suo, quasi 7 spuma in superficie aquarum. Atque desolabuntur excelsa Bethel. Peccata 8 Israel fuerunt eis in causa ut exulent : spinæ & tribuli conscendent super aras eorum. Nunc adducam super eos tribulationem, ut perinde sint ac si montes operiant eos, & colles cadant super eos. A diebus Gabaa peccâstis, 9 ô qui de domo Israel : ibi steterunt, prævaricati sunt in verbum meum præficiendo sup se regem, nec etiam digni habiti sunt quibꝰ permaneret regnum in Gabaa : illuc invaserunt eos bellatores qui ut patres cum filiis occiderent, ascenderunt. In verbo meo adduxi super eos correptiones, & congregavi ad- 10 versùm eos populos : & dominium exercuerunt in eos in modum quo ligantur juga boum ad duos sulcos.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܦܪܝܡ ܐܝܟ ܕܚܙܝܬ ܠܨܘܪ ܕܢܨܝܒܐ ܒܡܫܟܢܝܗ̈. ܗܟܢܐ ܐܦܪܝܡ ܢܦܩ ܒܢܘܗܝ ܠܩܛܠܐ. 13
* ܗܒ ܠܗܘܢ ܡܪܝܐ: ܡܕܡ ܕܝܗܒ ܐܢܬ. ܗܒ ܠܗܘܢ ܡܪܒܥܐ ܡܚܣܪܢܐ. ܘܬܕܝܐ ܝܒܝܫܐ. 14
* ܟܠܗܝܢ ܒܝܫܬܗܘܢ ܒܓܠܓܠ. ܡܛܠ ܕܬܡܢ ܣܢܝܬ ܐܢܘܢ. ܒܒܝܫܘܬ ܥܒܕܝܗܘܢ. ܡܢ 15
ܒܝܬܝ ܐܦܩ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܐܘܣܦ ܠܡܪܚܡܘ ܥܠܝܗܘܢ. ܟܠܗܘܢ ܫܠܝܛܢܝܗܘܢ ܡܪܘܕܝܢ.
* ܡܚܝܐ ܐܦܪܝܡ ܒܥܩܪܐ. ܘܝܒܫ. ܘܠܐ ܢܥܒܕ ܦܐܪܐ. ܘܐܢ ܢܘܠܕܘܢ ܒܢܝܐ. ܐܡܝܬ ܪܓܬܐ 16
ܕܟܪܣܗܘܢ. * ܘܢܣܠܐ ܐܢܘܢ ܐܠܗܝ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܫܡܥܘܗܝ. ܘܢܗܘܘܢ ܢܥܝܢ ܒܝܢ ܥܡܡܐ. 17

* ܦܣܩܐ * ܝ *

* ܓܦܬܐ ܕܣܘܟܠܐ ܐܝܣܪܝܠ. ܕܝܗܒܐ ܦܐܪܐ. ܐܝܟ ܣܘܓܐܐ ܕܦܐܪܘܗܝ. ܐܣܓܝܘ ܡܕܒܚܐ. 1
ܘܐܝܟ ܛܒܬܐ ܕܐܪܥܗܘܢ. ܒܢܘ ܟܢܫܬܐ. * ܐܬܦܠܓ ܠܒܗܘܢ. ܡܢ ܗܫܐ ܢܬܚܝܒܘܢ. ܗܘ 2
ܢܣܚܘܦ ܡܕܒܚܝܗܘܢ. ܘܢܒܙ ܟܢܫܬܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܗܫܐ ܢܐܡܪܘܢ. ܠܝܬ ܠܢ 3
ܡܠܟܐ. ܡܢ ܡܪܝܐ ܠܐ ܕܚܠܝܢ: ܡܠܟܐ ܡܢܐ ܢܥܒܕ ܠܢ. * ܡܡܠܠܝܢ ܡܠܐ ܕܟܕܒܘܬܐ. 4
ܦܣܩܘ ܕܝܬܩܐ. ܘܦܪܥ ܕܝܢܐ. ܐܝܟ ܡܪܪܐ ܒܚܩܠܐ ܕܐܪܥܐ ܨܗܝܬܐ. * ܒܥܓܠܐ ܕܒܝܬ ܐܘܢ 5
ܢܗܘܘܢ ܬܘܬܒܐ ܥܡܘܪܐ ܕܫܡܪܝܢ. ܡܛܠ ܕܐܒܠܘ ܥܠܘܗܝ ܥܡܗ. ܘܟܘܡܪܘܗܝ.
ܥܠܘܗܝ ܢܚܕܘܢ. ܘܥܠ ܐܝܩܪܗ ܕܫܢܐ ܡܢܗ. * ܘܐܦ ܠܗ ܠܐܬܘܪ ܢܘܒܠܘܢܗ. ܩܘܪܒܢܐ 6
ܠܡܠܟܐ ܕܝܪܒ. ܒܗܬܬܐ ܢܩܒܠ ܐܦܪܝܡ. ܘܐܝܣܪܝܠ ܢܒܗܬ ܒܡܠܟܗ. * ܫܕܬ ܫܡܪܝܢ 7
ܡܠܟܗ. ܐܝܟ ܓܒܠܐ ܥܠ ܐܦܝ ܡܝܐ. * ܘܢܬܚܪܒܘܢ ܒܬܝ ܐܘܢ. ܚܛܗܘܗܝ ܕܐܝܣܪܝܠ. 8
ܟܘܒܐ ܘܕܪܕܪܐ ܢܣܩܘܢ ܥܠ ܡܕܒܚܝܗܘܢ. ܘܢܐܡܪܘܢ ܠܛܘܪܐ ܕܟܣܘܢ. ܘܠܪܡܬܐ ܕܢܦܠܘܢ
ܥܠܝܗܘܢ. * ܡܢ ܝܘܡܬܐ ܕܪܡܬܐ ܚܛܐ ܐܝܣܪܝܠ: ܬܡܢ ܩܡܘ. ܠܐ ܬܕܪܟ 9
ܐܢܘܢ ܩܪܒܐ ܒܪܡܬܐ ܥܠ ܒܢܝ ܥܘܠܐ. * ܒܡܪܕܘܬܝ ܐܪܕܐ ܐܢܘܢ. ܘܢܬܟܢܫܘܢ ܥܠܝܗܘܢ 10
ܥܡܡܐ. ܟܕ ܡܬܪܕܝܢ ܥܠ ܬܪܬܝܢ ܣܟܠܘܬܗܘܢ.

Aphrem, quemadmodum vidiſti Tyrum con- 13
ſitam ædificiis ſuis, ita Aphrem producet fi-
lios ſuos ad necem. Da eis, Domine, quod da- 14
turus es: da eis vulvam ſterilem, & ubera
arida. Omnia ſcelera eorum in Galgale *fue-* 15
runt, nam ibi odi eos propter nequitiam fa-
cinorum ſuorum; è domo mea ejiciam eos, &
non pergam miſereri eorum: omnes prin-
cipes eorum ſunt refractarii. Percuſſus eſt 16
Aphrem in radice, exaruit ne fructus afferat:
& ſi fortè filios genuerint, morte afficiã opta-
tum viſcerum eorum. Spernétque eos Deus 17
meus, quia non auſcultaverunt ei; & erunt
errabundi inter gentes.

CAP. X.

Vitis palmitum eſt Iſrael, quæ fructus edi- 1
dit: ſecundùm copiam fructuum ejus multi-
plicaverunt altaria, & ſecundùm ubertatem
terræ ſuæ extruxerunt aras. Diviſum eſt cor 2
eorum, exinde rei ſunt. Ipſe evertet altaria
eorum, & diripiet aras eorum: Ut in poſte- 3
rum dicant; Regem non habêmus, Dominum
non timemus, rex quid facturus eſſet nobis?
Locuti ſunt verba rationum falſarum, decre- 4
verunt pactum, & germinavit judicium ſicut
vepretum in agro terræ incultæ. Ad vitulum 5
Beth-aven peregrinabuntur habitatores Sa-
mariæ; quia ſederunt propter eùm in luctu
populus ejus & ſacrificuli ejus, de eodem
quoque geſtient, deque gloria ipſius quòd
migraverit ab eo. Quia & ad Aſſyriam uſq; 6
deferent munera regi Jareb: pudorem per-
cipiet Aphrem, & Iſrael erubeſcet in conſilio
ſuo. Abjiciet Samaria regem ſuum, ceu feſtu- 7
cam ſuper faciem aquarum: Et deſtruentur 8
fana Aven, peccatum Iſraelis: ſpinæ & tri-
buli ſuccreſcent in aris eorum: & dicent
montibus, Operite nos, & collibus ut cadant
ſuper eos. Inde à diebus collis peccâſti Iſra- 9
el: ibíne ſubſiſterent, nec aſſequeretur bel-
lum in colle filios ſceleratos? In correptio- 10
ne mea erudiam eos, & congregabuntur ad-
versùs eos gentes, quando caſtigabuntur
propter duas ſtultitias ſuas.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

13 14 * عَلَى مَا رَأَيْتَ اَقَامُوا اَوْلَادَهُمْ لِلصَّيْدِ * وَافْرَام اَنْ يُخْرِجَ اَوْلَادَهُ لِلطَّعْنِ * اَعْطِهِمْ يَا رَبُّ * مَاذَا
15 تُعْطِيهِمْ * اَعْطِهِمْ بَطْنًا غَيْرَ مُولِدٍ * وَثَدْيًا جَافَّةً * جَمِيعُ قَبَائِحِهِمْ فِي الْجِلْجَالِ * لِاَنِّي هُنَاكَ
اَبْغَضْتُهُمْ لِاَجْلِ قَبَائِحِ اَعْمَالِهِمْ * مِنْ بَيْتِي اُخْرِجُهُمْ * وَلَا اَعُودُ اُحِبُّهُمْ * جَمِيعُ رُؤَسَائِهِمْ عُصَاةٌ *
16 * اَتْعَبَ اِفْرَامُ اُصُولَهُ * جَفَّ وَلَيْسَ يُعْطِي ثَمَرَ بَعْدُ * مِنْ اَجْلِ اَنَّهُمْ وَاِنْ وَلَدُوا اَقْتُلُ شَهَوَاتِ
17 بُطُونِهِمْ * اَللّٰهُ يُقْصِيهِمْ لِاَنَّهُمْ لَمْ يَسْمَعُوا لَهُ * وَيَصِيرُونَ ضَالِّينَ فِي الْاُمَمِ *

* اَلْفَصْلُ الْعَاشِرُ *

1 * اِسْرَائِيلُ كَرْمَةٌ تُفَرِّعُ حَسَنًا * ثَمَرُهَا مُخْصِبَةٌ * كَكَثْرَةِ ثَمَرَتِهِ اَكْثَرَ الْمَذَابِحَ * وَكَخَيْرَاتِ اَرْضِهِ
2 3 بَنَى النُّصَابَ * فَرَّقُوا قُلُوبَهُمْ * اَلْآنَ يُبَادُونَ * وَهُوَ يَهْدِمُ مَذَابِحَهُمْ * تُسْحَقُ نُصَابُهُمْ * مِنْ
اَجْلِ اَنَّهُمْ يَقُولُونَ * اَلْآنَ لَيْسَ لَنَا مَلِكٌ * لِاَنَّا لَمْ نَخَفِ الرَّبَّ * وَالْمَلِكُ مَاذَا يَصْنَعُ لَنَا
4 * يَتَكَلَّمُ بِكَلِمَاتِ عِلَلًا كَاذِبَةً * يَعْهَدُ عَهْدًا * يُشْرِقُ مِثْلَ النَّجِيلِ حُكْمٌ عَلَى اَرْضِ حَقْلٍ
5 بُورٍ * لِعِجْلِ بَيْتِ اُونَ يَتَغَرَّبُونَ سُكَّانُ سَامِرَنَ * لِاَنَّ شَعْبَهُ حَزِنَ عَلَيْهِ * وَكَمَا مَرْمَرُوهُ يَشْمَتُونَ
6 بِمَجْدِهِ لِاَنَّهُ سُبِيَ مِنْهُمْ * وَيَرْبِطُوهُ اِلَى الْمَوْصِلِيِّينَ * يُقَدِّمُونَ هَدَايَا لِمَلِكِ يَارِيمَ * يَقْبَلُ اَفْرَامُ
7 بِالْعَطِيَّةِ * وَيَخْزَى اِسْرَائِيلُ فِي مَشُورَتِهِ * طَرَحَتْ سَامِرَنُ مَلِكَهَا مِثْلَ قَشَّةٍ عَلَى وَجْهِ الْمَاءِ *
8 * وَتُسْتَاصَلُ هَيَاكِلُ اُونَ خَطَايَا اِسْرَائِيلَ * اَشْوَاكٌ وَحَسَكٌ تَصْعَدُ عَلَى مَذَابِحِهِمْ * وَيَقُولُونَ
لِلْجِبَالِ غَطِّينَا * وَلِلْاَكَامِ قَعِي عَلَيْنَا *

* اَلْاِصْحَاحُ الرَّابِعُ *

9 * مُنْذُ كَانَتِ الْاَكَامُ اَخْطَى اِسْرَائِيلُ * هُنَاكَ قَامُوا * لَا يُدْرِكُهُمْ فِي الْاَكَمَةِ * حَرْبٌ عَلَى اَوْلَادِ
10 الظُّلْمِ اَتَى لِيُؤَدِّبَهُمْ * وَيَجْمَعُونَ عَلَيْهِمُ الشُّعُوبَ * لِيَتَاَدَّبُوا هُمْ بِظُلَامَاتِهِمْ *

Prout vidi, addixerunt filios eorum ve- 13
natui, & Aphremum ut produceret filios
ſuos ad confoſſionem. Da illis, O Domi- 14
ne, quid dabis eis? da illis uterum non
generantem, & ubera ſicca; Omnes tur- 15
pitudines eorum in Galgale perpetratas:
illic enim odi eos propter turpitudines
actionum ſuarum: è domo mea expellam
eos, & non diligam eos ampliùs: omnes
principes eorum ſunt rebelles. Fatigavit 16
Aphrem radices ſuas, exaruit, neque pro-
feret fructum deinceps: quia licèt genue-
rint, occîdam deſideria uterorum eorum.
Procul amovebit eos Deus, quia non ob- 17
temperaverunt ei; & erunt vagi inter
gentes.

CAP. X.

Iſrael vitis eſt bene germinans, fructus 1
ejus abundans: juxta multitudinem fru-
ctuum ſuorum multiplicavit altaria, &
juxta bona terræ ſuæ ædificavit titulos.
Diviſerunt corda ſua: nunc perdentur, & 2
ipſe deſtruet altaria eorum, effligentur ti-
tuli eorum: Quia dicunt, Nunc non eſt 3
nobis rex; Deum enim non metuimus, &
rex quid faceret nobis? Loquitur verbis 4
rationes mendaces, fœdus pangit; oritur
ſicut gramen judicium, ſuper terram agri
inculti. Ad vitulum domûs On peregri- 5
nabuntur habitatores Samariæ, quia po-
pulus ejus contriſtatus eſt propter eum:
& quemadmodum irritaverunt eum, in-
ſultabunt gloriæ ejus, quòd captus ſit ex
eis, Et vinxerint eum ad Aſſyrios. Offe- 6
rent munera regi Jarim, afferet Aphrem
donum, & erubeſcet Iſrael in conſilio ſuo.
Rejecit Samaria regem ſuum tanquam fe- 7
ſtucam ſuper faciem aquæ: Et evellentur 8
templa On, peccata Iſraelis: ſpinæ & ſen-
tes enaſcentur ſuper altaria eorum: & di-
cent montibus, Tegite nos; & collibus,
Cadite ſuper nos.

Textus quartus.

Ex quo fuerunt colles, peccavit Iſrael: ibi 9
manſerunt: non comprehendet eos in colle:
bellum ſuper filios iniquitatis venit, ut
erudiret eos: Et congregabuntur adver- 10
ſùs eos populi, ut erudiantur ipſi propter
iniquitates ſuas.

ſuper tranſivi ego &:triturare diligens *docta* vitula Ephraim Et
11 וְאֶפְרַיִם עֶגְלָה מְלֻמָּדָה אֹהַבְתִּי לָדוּשׁ וַאֲנִי עָבַרְתִּי עַל־
agricolabit ,Jehudah arabit , Ephraim faciam equitare:ejus *cervicis bonitatẽ*
טוּב צַוָּארָהּ אַרְכִּיב אֶפְרַיִם יַחֲרוֹשׁ יְהוּדָה יְשַׂדֶּד־
arate ,*miſericordiæ os ad* metite , juſtitiam ad vobis Seminate .Jahacob ſibi
12 לוֹ יַעֲקֹב׃ זִרְעוּ לָכֶם לִצְדָקָה קִצְרוּ לְפִי־חֶסֶד נִירוּ
doceat & ,veniat donec ,Dominum requirendi tempus &;arationem vobis
לָכֶם נִיר וְעֵת לִדְרוֹשׁ אֶת־יְהוָה עַד־יָבוֹא וְיֹרֶה
comediſtis , meſſuiſtis iniquitatem,impietatem Araſtis .vos juſtitiam
13 צֶדֶק לָכֶם׃ חֲרַשְׁתֶּם־רֶשַׁע עַוְלָתָה קְצַרְתֶּם אֲכַלְתֶּם
.tuorum fortium *multitudine in ,tua via in* es fiſus quia ; mendacii frugem
פְרִי־כָחַשׁ כִּי־בָטַחְתָּ בְדַרְכְּךָ בְּרֹב גִּבּוֹרֶיךָ׃
vaſtabitur tuæ munitiones omnes & ,tuis populis in *ſonitus* conſurget Et
14 וְקָאם שָׁאוֹן בְּעַמֶּךָ וְכָל־מִבְצָרֶיךָ יוּשַּׁד
ſuper mater : belli die in Arbeel domum Salman *vaſtare* ſecundùm
כְּשֹׁד שַׁלְמַן בֵּית אַרְבֵאל בְּיוֹם מִלְחָמָה אֵם עַל־
malitiæ faciebm à Bethel vobis fecit Sicut .eſt alliſa filios
15 בָּנִים רֻטָּשָׁה׃ כָּכָה עָשָׂה לָכֶם בֵּית־אֵל מִפְּנֵי רָעַת
.Iſrael rex eſt ſucciſus ſuccidendo aurora in ; veſtræ malitiæ
רָעַתְכֶם בַּשַּׁחַר נִדְמֹה נִדְמָה מֶלֶךְ יִשְׂרָאֵל׃

CAP. XI. יא

.meum filium vocavi Ægypto ex & ; eum dilexi & , Iſrael puer Quia
1 כִּי נַעַר יִשְׂרָאֵל וָאֹהֲבֵהוּ וּמִמִּצְרַיִם קָרָאתִי לִבְנִי׃
,ſacrificaverunt Behalim ,eorum *faciebus* à abierunt ſic ; eos Vocaverunt
2 קָרְאוּ לָהֶם כֵּן הָלְכוּ מִפְּנֵיהֶם לַבְּעָלִים יְזַבֵּחוּ
ſuper eos cepit ,Ephraim *ire aſſueſeci* ego Et .ſuffiverunt ſculptilibus &
3 וְלַפְּסִלִים יְקַטֵּרוּן׃ וְאָנֹכִי תִרְגַּלְתִּי לְאֶפְרַיִם קָחָם עַל־
hominis funibus In .eos curaverim quòd cognoverunt non &:ſuis brachiis
4 זְרוֹעֹתָיו וְלֹא יָדְעוּ כִּי רְפָאתִים׃ בְּחַבְלֵי אָדָם
jugum exaltantes tanquã eis ero & , charitatis funibus *in* ,eos traham
אֶמְשְׁכֵם בַּעֲבֹתוֹת אַהֲבָה וָאֶהְיֶה לָהֶם כִּמְרִימֵי עֹל
terram ad revertetur Non .cibum eum ad declinabo &;eorũ maxillis *ſuper*
5 עַל לְחֵיהֶם וְאַט אֵלָיו אוֹכִיל׃ לֹא יָשׁוּב אֶל־אֶרֶץ
impendebit Et .converti *renuerunt* quoniam;ej⁹ rex ipſe Aſſur *&* ,Ægypti
6 מִצְרַיִם וְאַשּׁוּר הוּא מַלְכּוֹ כִּי מֵאֲנוּ לָשׁוּב׃ וְחָלָה
.eorũ conſilia propter,cõedet &,ej⁹ *membra* cõſumet &,ej⁹ urbibus in gladius
חֶרֶב בְּעָרָיו וְכִלְּתָה בַדָּיו וְאָכָלָה מִמֹּעֲצוֹתֵיהֶם׃
,eũ vocabãt excelſum ad &;*me à averſionem* propter *ſuſpenſi* meus populus Et
7 וְעַמִּי תְלוּאִים לִמְשׁוּבָתִי וְאֶל־עַל יִקְרָאֻהוּ
! Iſrael te tradam ,Ephraim te *dabo* Quomodo .*exaltavit non* ſimul
8 יַחַד לֹא יְרוֹמֵם׃ אֵיךְ אֶתֶּנְךָ אֶפְרַיִם אֲמַגֶּנְךָ יִשְׂרָאֵל
me *ſuper* eſt cõverſum! Seboim ut te ponam ,Adamah ſicut te *dabo* quomodo
אֵיךְ אֶתֶּנְךָ כְאַדְמָה אֲשִׂימְךָ כִּצְבֹאיִם נֶהְפַּךְ עָלַי
;mei furoris iram faciam Non .meæ pœnitudines *ſunt cõmota* pariter,meũ cor
9 לִבִּי יַחַד נִכְמְרוּ נִחוּמָי׃ לֹא אֶעֱשֶׂה חֲרוֹן אַפִּי
: vir non & , *ego* Deus quoniam;Ephraim *corrumpendum* ad convertar non
לֹא אָשׁוּב לְשַׁחֵת אֶפְרָיִם כִּי אֵל אָנֹכִי וְלֹא־אִישׁ
Dominum Poſt .civitatem in ingrediar non & , ſanctus *tuo interiori* in
10 בְּקִרְבְּךָ קָדוֹשׁ וְלֹא אָבוֹא בְעִיר׃ אַחֲרֵי יְהוָה
filii pavebunt & ,rugiet ipſe quia:rugiet leo veluti,ambulabunt
יֵלְכוּ כְּאַרְיֵה יִשְׁאָג כִּי־הוּא יִשְׁאַג וְיֶחֶרְדוּ בָנִים
: Aſſur terra è columba veluti & ,Ægypto *ab avis* ut Pavebunt .*mari à*
11 מִיָּם׃ יֶחֶרְדוּ כְצִפּוֹר מִמִּצְרַיִם וּכְיוֹנָה מֵאֶרֶץ אַשּׁוּר
.Dominus dixit ,ſuis domibus *ſuper* eos *faciam ſedere* &
וְהוֹשַׁבְתִּים עַל־בָּתֵּיהֶם נְאֻם־יְהוָה׃

Verſio VULG. LAT.

11 Ephraim vitula docta diligere trituram, & ego tranſivi ſuper pulchritudinẽ colli ejus : aſcendã ſup Ephraim, arabit Judas, confringet
12 ſibi ſulcos Jacob. Seminate vobis in juſtitia, & metite in ore miſericordiæ, innovate vobis novale : tempus autem requirendi Dñm, cùm venerit qui docebit vos juſti-
13 tiam. Aráſtis impietatẽ, iniquitatem meſſuiſtis, comediſtis frugem mendacii : quia confiſus es in viis tuis, in multitudine fortiũ tuorum.
14 Conſurget tumult⁹ in populo tuo: & omnes munitiones tuæ vaſtabuntur, ſicut vaſtatus eſt Salmana à domo ejus qui judicavit Baal in die prælii, matre ſuper filias alliſâ.
15 Sic fecit vobis Bethel, à facie malitiæ nequitiarum veſtrarum.

CAP. XI.

1 SIcut manè tranſiit, ptranſiit rex Iſrael. Quia puer Iſrael, & dilexi eum: & ex Ægypto vocavi filium
2 meum. Vocaverunt eos, ſic abierunt à facie eorũ : Baalim immolabant, & ſimulachris ſacrificabãt.
3 Et ego quaſi nutritius Ephraim, portabã eos in brachiis meis : &
4 neſcierunt quòd curarẽ eos. In funiculis Adam trahã eos, in vinculis charitatis: & ero eis quaſi exaltans jugũ ſup maxillas eorum: & declinavi ad eum ut veſceretur.
5 Non revertetur in terrã Ægypti, & Aſſur ipſe rex ejus : quoniã no-
6 luerunt converti. Cœpit gladius in civitatib⁹ ejus, & conſumet electos ejus, & comedet capita eorũ.
7 Et popul⁹ me⁹ pendebit ad reditũ meum: jugũ autem imponetur eis
8 ſimul, ꝙ non auferetur. Quomodò dabo te, Ephraim; protegã te, Iſrael? quomodò dabo te ſicut Adama, ponam te ut Seboim? Converſũ eſt in me cor meum, pariter conturbata eſt pœnitudo mea.
9 Non faciam furorẽ iræ meæ: non convertar ut diſperdã Ephraim : quoniã De⁹ ego, & non homo: in medio tuî Sanct⁹, et non ingrediar
10 civitatẽ. Poſt Dñm ambulabunt, quaſi leo rugiet: quia ipſe rugiet,
11 et formidabunt filii maris. Et avolabunt quaſi avis ex Ægypto, et quaſi columba de terra Aſſyriorum: et collocabo eos in domibus ſuis, dicit Dominus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

11 Ἐφραὶμ δάμαλις δεδιδαγμένη ἀγαπᾷν νεῖκος, ἐγὼ δὲ ἐπελεύσομαι ἐπὶ τὸ κάλλιστον τοῦ τραχήλου αὐτῆς. ἐπιβιβῶ Ἐφραὶμ, (ι) παρασιωπήσομαι Ἰούδαν, ἐνισχύσει αὐτῷ
12 Ἰακώβ. Σπείρατε ἑαυτοῖς εἰς δικαιοσύνην, τρυγήσατε (κ) εἰς καρπὸν ζωῆς, φωτίσατε ἑαυτοῖς φῶς γνώσεως, ἐκζητήσατε τὸν κύριον ἕως τοῦ ἐλθεῖν (λ) γεννήματα δικαιοσύνης
13 ὑμῖν. Ἵνα τί παρεσιωπήσατε ἀσέβειαν, καὶ τὰς ἀδικίας αὐτῆς ἐτρυγήσατε; ἐφάγετε καρπὸν ψευδῆ, ὅτι ἤλπισας ἐν (μ) τοῖς ἁ-
14 μαρτήμασί σου, ἐν πλήθει δυνάμεώς σου. Καὶ ἐξαναστήσεται ἀπώλεια ἐν τῷ λαῷ σου, καὶ πάντα τὰ περιτετειχισμένα σου (ν) οἰχήσεται. ὡς ἄρχων Σαλαμὰν ἐκ τοῦ οἴκου (ξ) τοῦ Ἱεροβοὰμ, ἐν ἡμέραις πολέμου μητέρα ἐπὶ
15 τέκνοις ἠδάφισαν, Οὕτως ποιήσω ὑμῖν οἶκος τοῦ Ἰσραὴλ ἀπὸ προσώπου (ο) ἀδικίας κακιῶν ὑμῶν.

ΚΕΦ. ιά.

1 ὌΡθρου ἀπερρίφησαν, ἀπερρίφη βασιλεὺς (α) Ἰσραήλ. ὅτι νήπιος Ἰσραὴλ, καὶ ἐγὼ (β) ἠγάπησα αὐτὸν, καὶ ἐξ Αἰγύπτου
2 μετεκάλεσα τὰ τέκνα αὐτοῦ. Καθὼς (*) μετεκάλεσα αὐτοὺς, οὕτως ἀπῴχοντο ἐκ προσώπου μου· αὐτοὶ τοῖς Βααλεὶμ ἔθυον, καὶ τοῖς
3 γλυπτοῖς ἐθυμίων. Καὶ ἐγὼ συνεπόδισα τὸν Ἐφραὶμ, ἀνέλαβον αὐτὸν ἐπὶ τὸν βραχί-
4 ονά μου, καὶ οὐκ ἔγνωσαν ὅτι ἴαμαι αὐτούς. Ἐν διαφθορᾷ ἀνθρώπων ἐξέτεινα αὐτοὺς ἐν δεσμοῖς ἀγαπήσεώς μου, καὶ (γ) ἔσομαι αὐτοῖς ὡς ῥαπίζων ἄνθρωπος ἐπὶ τὰς σιαγόνας αὐτοῦ· καὶ ἐπιβλέψομαι πρὸς αὐτὸν,
5 δυνήσομαι αὐτῷ. Κατῴκησεν Ἐφραὶμ ἐν Αἰγύπτῳ, καὶ Ἀσσοὺρ αὐτὸς βασιλεὺς αὐτοῦ·
6 ὅτι οὐκ ἠθέλησεν ἐπιστρέψαι. Καὶ ἠσθένησεν (δ) ἐν ῥομφαίᾳ ἐν ταῖς πόλεσιν αὐτοῦ, καὶ κατέπαυσεν ἐν ταῖς χερσὶν αὐτοῦ. καὶ φάγονται ἐκ τῶν
7 διαβουλίων αὐτῶν, Καὶ ὁ λαὸς αὐτοῦ ἐπικρεμάμενος ἐκ τῆς κατοικίας αὐτοῦ. (ε) καὶ ὁ θεὸς ἐπὶ τὰ τίμια αὐτοῦ θυμωθήσεται, καὶ οὐ
8 μὴ ὑψώσῃ αὐτόν. Τί σε (ζ) διαθῶμαι Ἐφραίμ; ὑπερασπιῶ σου Ἰσραήλ; τί σε διαθῶ; ὡς Ἀδάμα θήσομαί σε, καὶ ὡς Σεβοείμ. μετεστράφη ἡ καρδία μου ἐν τῷ αὐτῷ,
9 συνεταράχθη ἡ μεταμέλειά μου. Οὐ μὴ ποιήσω κατὰ τὴν ὀργὴν τοῦ θυμοῦ μου· οὐ μὴ ἐγκαταλίπω τοῦ ἐξαλειφθῆναι τὸν Ἐφραίμ· διότι θεὸς ἐγώ εἰμι, καὶ οὐκ ἄνθρωπος, ἐν σοὶ ἅ-
10 γιος, καὶ οὐκ εἰσελεύσομαι εἰς πόλιν. Ὀπίσω κυρίου πορεύσομαι· ὡς λέων ἐρεύξεται, ὅτι αὐτὸς ὠρύσεται, καὶ ἐκστήσονται τέκνα ὑδάτων. (η) Ἐκστήσονται ὡς ὄρνεον ἐξ Αἰγύπτου, καὶ ὡς περιστερὰ ἐκ γῆς Ἀσσυρίων· καὶ ἀποκαταστήσω αὐτοὺς εἰς τοὺς οἴκους αὐτῶν, λέγει κύριος.

Ephræm vitula docta diligere 11
contentionem. Ego autẽ veniã ſuper pulchritudinẽ colli ej⁹. Supponã Ephræm, reticebo Judã, roborabitur ſibi Jacob. Seminate vo- 12
bis in juſtitia, vindemiate in fructũ vitæ, illuminate vobis lumen (b) ſcientiæ, quærite Dominũ, donec veniant fruges juſtitiæ vobis.
Quid reticuiſtis (i) impietatẽ, & 13
iniquitates ej⁹ vindemiâſtis? Cõediſtis fructũ mendacẽ, quia ſperâſti in (k) peccatis tuis, in multitudine fortitudinis tuæ. Et cõſur- 14
get perditio in populo tuo: & omnia murata tua abibunt : ſicut princeps Salmanan de domo (l) Heroboam, in diebus belli, matrẽ ſuper filios alliſerunt; Sic faciam 15
vobis, domus Iſrael, à (m) facie injuſtitiæ malitiarum veſtrarum.

CAP. XI.

MAnè (a) projecti ſunt: pro- 1
ject⁹ eſt rex Iſrael: quia parvulus Iſrael: & ego dilexi eum, & ex Ægypto (b) vocavi filios ej⁹. Sic- 2
ut vocavi eos; ita abierunt à facie mea ipſi Baalim immolabãt, et ſculptilibus adolebant. Et ego (c) 3
ligavi pedes Ephræm, ſuſcepi eum ſuper brachiũ meũ: et non cognoverunt, quia ſanavi illos: In cor- 4
ruptione hominum extendi eos in vinculis charitatis meæ. Et (d) ero illis, quaſi dans alapas homo ſuper maxillas ejus: & reſpiciã ad eũ, (e) prævalebo ei. Habitavit 5
Ephræm in Ægypto: et Aſſur ipſe rex ejus: quia noluit converti: Et 6
infirmat⁹ eſt (f) in gladio in civitatibus, et ceſſavit in manib⁹ ſuis. Et comedẽt de cogitationib⁹ ſuis:
Et popul⁹ ejus ſuſpenſus ex inco- 7
latu ſuo. Et Deus ſuper pretioſa ejus iraſcetur, & non exaltabit eum. Quomodò te (g) diſponam, E- 8
phræm? (h) protegam te, Iſrael? Quid te diſponã? Sicut Adama, ponam te, et ſicut Seboim. Converſum eſt cor meũ in ipſo : conturbata eſt pœnitudo mea. Non fa- 9
ciam juxta iram furoris mei, non derelinquã, ut deleatur Ephræm: quoniã Deus ego ſum, et non homo: in te Sanct⁹, et non ingrediar in civitatem. Poſt Dominũ (i) am- 10
bulabo. Sicut leo, rugiet: quia ipſe rugiet, et formidabunt filii aquarũ. (k) Pavebunt, quaſi avis ex 11
Ægypto, et quaſi columba de terra Aſſyriorum. Et reſtituam eos in domos ſuas, dicit Dominus.

MS.A. (ι) καὶ παρασιωπήσομαι (κ) ἑαυτοῖς εἰς (λ) γεννήματα (μ) ἅρμασιν (ν) οἰκήσεται. (ξ) Ἱεροβαὰλ, (ο) κακιῶν ὑμῶν.
Κεφ. ιά. MS.A. (α) τοῦ Ἰσραήλ. διότι (β) ἠγάπηκα (*) μετεκαλέσατο (γ) ἐγὼ ἔσομαι (δ) ῥομφαία (ε) ὁ δὲ θεὸς (ζ) διαθῶ (η) Καὶ ἐκστήσονται

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 כְּנִשְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל דָּמְיָא לְעֶגְלְתָא דְמַלְּפִין לַהּ לְמִרְדֵי וְלָא אַלְּפָא רַחֲמָא לְהַלָּכָא
בִרְעוּת נַפְשָׁהּ וַאֲנָא פְּרָקִית יָתְהוֹן מִשִּׁעְבּוּד מִצְרַיִם אַעְדֵּיתִי נִיר תְּקוֹף מִצַּוְרֵיהוֹן
אַשְׁרֵיתִי בֵּית יִשְׂרָאֵל עַל תְּקוֹף אַרְעָא דֶאֱמוֹרָאָה כְּבִישִׁין קֳדָמֵיהוֹן דְּבֵית יְהוּדָה
12 אַחְסֵנִית יָתְהוֹן אַחְסַנְתָּא דְקַיֵּמִית לַאֲבוּהוֹן יַעֲקֹב׃ בֵּית יִשְׂרָאֵל עֲבִידוּ לְכוֹן עוֹבְדִין
טָבִין הֲלִיכוּ בְּאָרְחָא דְקוּשְׁטָא קַיִּימוּ לְכוֹן אוּלְפַן אוֹרַיְתָא הָא בְּכָל עִדָּן נְבִיַּיָּא אָמְרִין
13 לְכוֹן תּוּבוּ לְדַחַלְתָּא דַיְיָ כְּעַן יִתְגְּלֵי וְיַיְתֵי זַכְוָן לְכוֹן׃ אִתְעַשַּׁתְּתוּן לְכוֹן אוֹנֵס רֶשַׁע עֲבַדְתּוּן
14 אִתְקַבַּלְתּוּן תּוּשְׁלְמַת עוֹבָדֵיכוֹן אֲרֵי אִתְרְחַצְתָּא בְּאָרְחָתָךְ בִּסְנֵי גִבָּרָךְ׃ וִיקוּם אִתְרְגוּשָׁא
בְּעַמָּךְ וְכָל כְּרַכָּךְ יִתְבַּזְּזוּן כְּבִזַּת שַׁלְמָא בְּכַמְנָא בְּיוֹמָא דִקְרָבָא אֵם עַל בְּנִין קְטִילַת׃
15 כֵּן גְּרַמוּ לְכוֹן חוֹבִין דַּחֲבֵתּוּן בְּבֵיתְאֵל מִן קֳדָם בִּישׁוּת עוֹבָדֵיכוֹן בְּסוֹפָא בְהִירַת וְאִתְכְּנַע
מַלְכָּא דְיִשְׂרָאֵל׃

יא

1 אֲרֵי רַבֵּי הֲוָה יִשְׂרָאֵל וּרְחִמְתֵּיהּ וּמִמִּצְרַיִם קְרֵיתִי לְהוֹן בְּנִין׃ 2 שְׁלַחִית נְבִיַּי לְאַלָּפָא
לְהוֹן וְאִנּוּן טְעוֹ מְקַבֵּל אַפֵּיהוֹן לְטַעֲוָתָא מְדַבְּחִין וּלְצַלְמַנַיָּא מַסְּקִין בּוּסְמִין׃ 3 וַאֲנָא
בְּמַלְאַךְ שְׁלִיחַ מִן קֳדָמַי דַּבָּרִית בְּאוֹרַח תַּקְנָא לְיִשְׂרָאֵל וְנַטְלְתִינוּן כְּדַעַל דְּרָעִין
4 וְלָא יָדְעִין דְּמִן קֳדָמַי מִתְרַחֵם עֲלֵיהוֹן׃ בְּמִגְרַת בְּנִין רְחִימִין נְגַדְתִּינוּן בִּתְקוֹף רַחֲמְתָא
וַהֲוָה מֵימְרִי לְהוֹן כְּאִכָּרָא טָבָא דְּמֵקִיל בִּכְתַף תּוֹרַיָּא וּמוֹרִיךְ בִּלְחִיאַתְהוֹן וְאַף כַּד הֲווֹ
5 בְמַדְבְּרָא אַסְגֵּיתִי לְהוֹן טוּבָא לְמֵיכַל׃ לָא יְתוּבוּן לְאַרְעָא דְמִצְרַיִם בְּרַם אַתּוּרָאָה יִשְׁלוֹט
6 בְּהוֹן אֲרֵי מְסָרְבִין לְמֵתַב׃ וְתֵיחוֹל חַרְבָּא בְּקִרְוֹהִי וּתְקַטֵּל גִּבָּרוֹהִי וּתְשֵׁיצֵי רַבְרְבוֹהִי
7 מִמַּלְכֵי עֲצַתְהוֹן׃ וְעַמִּי פְּלִיגִין לְמֵתַב לְאוֹרַיְתִי וּבִמְרוֹעָא קַשְׁיָא יִתְעָרְעוּן כַּחְדָא לָא
8 יְהָכוּן בְּקוֹמָא זְקוּפָה׃ אֵיכְדֵין אֶמְסְרִנָּךְ אֶפְרַיִם אֱשֵׁיצִנָּךְ יִשְׂרָאֵל אֵיכְדֵין אֲבַדְּרִנָּךְ כְּאַדְמָה
9 אֲשַׁוִּנָּךְ כִּצְבוֹיִים מִתְּעַרַע מֵימַר קְיָמִי לְקִבְלִי כַּחְדָא אִתְגּוֹלַלוּ רַחֲמַי׃ לָא אֶעְבֵּד תְּקוֹף
רוּגְזִי וְלָא יְתוּב מֵימְרִי לְחַבָּלָא בֵּית יִשְׂרָאֵל אֲרֵי אֱלָהָא אֲנָא מֵימְרִי לְעָלְמָא קַיָּם וְלֵית
עוֹבָדַי כְּעוֹבָדֵי בִּסְרָא דְדָיְרִין עַל אַרְעָא כֵּן גְּזָרִית בְּמֵימְרִי דְּבֵינֵיכוֹן שְׁכִנְתִּי קַדִּישָׁא וְלָא
10 אֲחַלֵּף בְּקִרְוָא אוֹחֲרֵי עוֹד יְרוּשְׁלֶם׃ בָּתַר פּוּלְחָנָא דַיְיָ יְהָכוּן מֵימְרֵיהּ כְּאַרְיָא דְמַכְלֵי אֲרֵי
11 הוּא יַכְלֵי וְיִתְכַּנְּשׁוּן גָּלְוָתָא מִמַּעְרְבָא׃ כְּעוֹפָא דְאָתֵי בְגַלֵּי כֵּן יֵיתוֹן דִּגְלוֹ לְאַרְעָא
דְמִצְרַיִם וּכְיוֹנָה דְּיָתְבָא לְנוֹ שׁוֹבְכָא כֵּן יְתוּבוּן דְּאִטַּלְטָלוּ לְאַרְעָא דְאַתּוּר וְאַתֵּבְנִּין
בִּשְׁלָם לְבָתֵּיהוֹן וּמֵימְרִי יְהֵי בְסַעְדְּהוֹן אֲמַר יְיָ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Cœtus Iſrael ſimilis eſt vitulæ quam arare docent, & non diſcit; dilexit in vo- 11
luntate animæ ſuæ ambulare: at ego liberavi *eos* à ſervitute Ægyptiorũ : ab-
ſtuli jugum durum à cervicib⁹ *eorum*, collocavi domum Iſraeliticã in forti-
tudine terræ Ammorrhæorum qui ſubjugati ſunt coram eis, hæreditare feci
domum Juda poſſeſſionẽ pro qua juraverã patri eorum Jacob. Dom⁹ Iſrael 12
agite vobis opera bona, ambulate per viã *veritatis*, ſtabilite vobis doctrinam
legis: ecce omni tempore prophetæ dicũt vobis, Recipite vos ad timorẽ Dñi:
nunc enim revelabitur & adferet vobis juſtitiã. Machinati eſtis vobis rapinã, 13
impietatẽ commiſiſtis, recepiſtis retributionẽ operum veſtrorum, etenim con-
fiſus es in viis tuis propter multitudinẽ fortium tuorum. Nihilomin⁹ conſur- 14
get tumult⁹ in populo tuo, & omnes arces tuæ vaſtabuntur, ſicut vaſtatur pa-
cificus per inſidias in die belli: mater ſuper filios occiſa eſt. Talium cauſa 15
fuerunt vobis peccata, quæ patraſtis in Bethel, propter improbitatem operum
veſtrorum: confuſus eſt porrò & probro affectus eſt rex Iſrael.

CAP. XI.

QUando puer erat Iſrael, diligebam eum, & ex Ægypto vocavi eos filios. 1
Miſi prophetas meos ut erudirent eos, ſed ipſi illorum conſpectum refugerũt 2
idolis ſacrificantes, & ſimulachris adolentes aromata. Atq; ego per angelum 3
miſſum à facie mea deduxi Iſrael per congruã viam, & portavi eos ferme in
brachiis, licet neſcirent à facie mea miſericordiam ſuper ipſos extare. Sicuti 4
moris eſt trahi filios dilectos, traxi eos fortitudine charitatis: fuitq; Verbum
meũ eis ſicut agricola bon⁹ qui allevat humerum boum & [*frena*] relaxat in
maxillis eorum: adhucq; etiamnum in deſerto degentib⁹ multa ſuppeditavi
eis bona, quib⁹ veſcerentur. Non revertentur in terram Ægypti, ſed Aſſur domi- 5
nabitur eis, quoniam renuerunt converti. Et verſabitur gladi⁹ in civitatib⁹ 6
ej⁹, & concidet fortes ejus, & conſumet proceres ejus à conſultationibus con-
ſilii eorum. Populus autem me⁹ fluctuat ſe convertere ad legem meam, ſed in 7
infirmitatem gravem incurrent ſimul, non ambulabunt erecta ſtatura. Quo- 8
modo tradam te Ephraim ? exterminabo te Iſrael : quomodo diſpergam te
ſicut Adama ? ponam te velut Seboim ? obviam fit mihi verbum pacti mei :
ſimul *convolutæ ſunt commiſerationes meæ*. Non exequar iram furoris mei, 9
nec convertetur verbum meum cauſa diſperdendæ domus Iſrael, ſiquidem
Deus ego ſum, verbum meum in æternum permanet, nec ſicut opera mea
qualia opera [*filiorum*] carnis, qui morantur in terra : ſic decrevi in verbo
meo, [*nempe*] ut inter vos ſit majeſtas mea ſancta : certè non permutabo am-
plius Jeruſalem pro alia civitate. Poſt cultum Domini ambulabunt, & Ver- 10
bum ejus ſicut leo erit qui rugit; ſtatim enim ac rugiet, congregabuntur ex-
ules ab Occidente. Sicut avis quæ apertè venit, ſic venient qui in exilium 11
acti fuerunt in terram Ægypti : & ſicut columba quæ revertetur ad colum-
bare ſuum, ſic redibunt qui deportati ſunt in terram Aſſur: ſanè reducam eos
in pace ad domos ſuas, & Verbum meũ aderit in patrocinium eorũ, ait Dñs.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

11 * ܐܦܪܝܡ ܥܓܠܬܐ ܡܠܦܬܐ ܕܪܚܡܐ ܠܡܕܪܫ܂ ܘܐܢܐ ܥܒܪܬ ܥܠ ܨܘܪܗ܂ ܐܪܟܒ ܠܐܦܪܝܡ܂
12 ܘܢܕܘܫ ܝܗܘܕܐ܂ ܘܢܒܘܙ ܝܥܩܘܒ܂ * ܙܪܥܘ ܠܟܘܢ ܙܕܝܩܘܬܐ܂ ܘܚܨܘܕܘ ܦܘܡܗ ܕܟܐܢܘܬܐ܂
ܐܢܗܪܘ ܠܟܘܢ ܢܗܝܪܐ܂ ܡܛܠ ܕܙܒܢܐ ܗܘ ܠܡܒܥܝܗ ܠܡܪܝܐ܂ ܥܕ ܕܐܬܐ ܘܢܚܘܐ ܠܟܘܢ
13 ܙܕܝܩܘܬܗ܂ * ܕܒܪܬܘܢ ܚܛܝܬܐ ܘܥܘܠܐ܂ ܘܚܨܕܬܘܢ ܘܐܟܠܬܘܢ ܦܐܪܐ ܕܕܓܠܘܬܐ܂ ܡܛܠ
14 ܕܐܬܬܟܠܬܘܢ ܥܠ ܚܝܠܟܘܢ܂ ܘܥܠ ܣܘܓܐܐ ܕܓܢܒܪܘܬܟܘܢ܂ * ܢܩܘܡ ܐܒܕܢܐ ܒܥܡܟ܂ ܘܟܠܗܘܢ
ܟܪܟܝܟ ܢܬܒܙܘܢ ܐܝܟ ܒܙܬܐ ܕܫܠܡܢ܃ ܡܢ ܒܝܬ ܐܝܠ ܒܝܘܡܐ ܕܩܪܒܐ܂ ܐܡܐ ܥܠ ܒܢܝܗ
15 ܢܪܛܫܘܢ܃ * ܗܟܢܐ ܢܥܒܕ ܠܟܘܢ ܒܝܬ ܐܝܠ܂ ܡܢ ܩܕܡ ܒܝܫܘܬܐ ܕܒܝܫܘܬܟܘܢ܂

1 * ܩܦܠܐܘܢ * ܝܐ * * ܒܨܦܪܐ ܬܘܗ܂ ܘܐܬܕܡܪ ܡܠܟܐ ܕܐܝܣܪܝܠ܂ ܡܛܠ ܕܟܕ ܛܠܝܐ ܗܘܐ
2 ܐܝܣܪܝܠ ܐܚܒܬܗ܂ ܘܡܢ ܡܨܪܝܢ ܩܪܝܬܗ ܒܪܝ܂ * ܐܝܟ ܕܩܪܘ ܐܢܘܢ܂ ܗܟܢܐ ܐܙܠܘ ܡܢ
3 ܩܕܡܝ܂ ܘܠܒܥܠܐ ܕܒܚܘ܂ ܘܠܦܬܟܪܐ ܣܡܘ ܒܣܡܐ܂ * ܘܐܢܐ ܕܒܪܬ ܠܐܦܪܝܡ܂ ܘܢܣܒܬ
4 ܐܢܘܢ ܥܠ ܕܪܥܝ܂ ܘܠܐ ܝܕܥܘ ܕܐܣܝܬ ܐܢܘܢ܂ * ܒܚܒܠܐ ܕܒܢܝܢܫܐ ܢܓܕܬ ܐܢܘܢ܂ ܘܒܐܣܘܪܐ
ܕܚܘܒܐ܂ ܘܗܘܝܬ ܠܗܘܢ ܐܝܟ ܗܘ ܕܡܪܝܡ ܢܝܪܐ ܡܢ ܨܘܪܗܘܢ܂ ܘܐܪܟܢܬ ܠܗܘܢ ܘܐܟܠܘ܂
5 6 * ܠܐ ܢܗܦܟܘܢ ܠܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ܂ ܘܐܬܘܪܝܐ ܗܘ ܡܠܟܗܘܢ܂ ܡܛܠ ܕܠܐ ܨܒܘ ܠܡܬܦܢܝܘ܂ * ܢܬܟܪܗ
7 ܣܝܦܐ ܒܡܕܝܢܬܗܘܢ܂ ܘܢܬܟܠܐ ܡܢ ܐܝܕܝܗܘܢ܂ ܘܢܐܟܠܘܢ ܡܢ ܬܪܥܝܬܗܘܢ܂ * ܘܥܡܝ
8 ܬܠܝܐ ܠܡܬܦܢܝܘ ܠܘܬܝ܂ ܘܠܐܠܗܐ ܢܩܪܘܢ܂ ܘܡܚܕܐ ܢܬܒܝܐ܂ ܘܠܐ ܢܬܬܪܝܡ܂ * ܐܝܟܢܐ ܐܣܥܪܟ
ܐܦܪܝܡ܂ ܐܘ ܐܝܟܢܐ ܐܥܕܪܟ ܐܝܣܪܝܠ܃ ܐܘ ܐܝܟܢܐ ܐܥܒܕܟ܂ ܐܝܟ ܐܕܡܐ܂ ܐܘ ܐܝܟ ܨܒܘܝܡ܂
9 ܐܬܗܦܟ ܠܒܝ ܒܝ܂ ܘܐܬܚܡܘ ܪܚܡܝ܂ * ܠܐ ܐܥܒܕ ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܝ܂ ܘܠܐ ܐܗܦܘܟ ܠܡܚܒܠܘܬܗ
ܠܐܦܪܝܡ܂ ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܐܢܐ܂ ܘܠܐ ܒܪܢܫܐ ܒܝܢܬܟܘܢ܂ ܩܕܝܫܐ ܐܢܐ܂ ܘܠܐ ܐܥܘܠ
10 ܠܡܕܝܢܬܐ܂ * ܒܬܪ ܡܪܝܐ ܢܐܙܠܘܢ܂ ܐܝܟ ܐܪܝܐ ܕܢܗܡ܂ ܡܛܠ ܕܗܘ ܢܢܗܡ܂ ܘܢܙܘܥܘܢ
11 ܒܢܝܐ ܡܢ ܥܡܐ܂ * ܘܢܦܪܚܘܢ ܐܝܟ ܨܦܪܐ ܡܢ ܡܨܪܝܢ܂ ܘܐܝܟ ܝܘܢܐ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܐܬܘܪ܂
ܘܐܗܦܟ ܐܢܘܢ ܠܒܬܝܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂

* Aphrem eſt vitula edocta amans triturare, & ego tranſivi ſuper collum ejus: inequitabo Aphremum, triturabit Juda, & Jacob diripiet. 11 Serite vobis juſtitiam, & metite os (i. *ſummum*) probitatis: accendite vobis lucernam, 12 quia tempus eſt quærendi Dñm, donec veniat & oſtendat vobis juſtitiã ſuã. Duxiſtis aratrũ 13 peccati & impietatis, & meſſuiſtis atq; comediſtis fructus mendacii. Quia confiſi eſtis viis veſtris, & multitudini roboris veſtri, Invadet 14 excidium populum tuum, & omnes urbes tuæ diripientur ut direptione Salmæ, inde à Beth-il, in die belli: matrem ſuper filios ejus allident. Ita facient vobis, O Beth-il, propter 15 peſſimam malitiam veſtram.

CAP. XI.

IN aurora admiratus eſt & obſtupuit rex Iſraelis, 1 quia dum puer eſſet Iſrael, dilexi eum, & inde ab Ægypto vocavi eum filium meum. Prout vocaverunt eos, ita abierunt à con- 2 ſpectu meo, & Baali ſacrificaverunt, & ſculptilibus thura adhibuerunt. Ego Aphremum 3 rexi, eóſque ſuper brachia mea excepi: nihilominus non agnoſcunt me ſanâſſe eos. Funi- 4 bus humanis traxi eos, & vinculis amoris: & fui eis tanquam is qui aufert jugum à cervice eorum: & inclinavi eis, ut comederent. Non 5 revertentur in terram Ægypti, ſed Aſſyrius erit rex eorum, quia noluerunt converti. In- 6 firmabitur gladius in urbibus eorum, & evaneſcet è manib' eorum, comedéntque de conſiliis ſuis. Populus meus hæſitat in redeundo 7 ad me: Deum verò vocent, ſtatímque curam habebit, nec extolletur. Quomodo protege- 8 rem te Aphrem? aut quomodo juvarem te Iſrael? aut qualem te redderem? ut Adamam, an ut Seboim? Inverſum eſt cor meum, & profuſa ſunt viſcera mea: Non perficiam 9 æſtum iræ meæ, neque conſumam ampliùs Aphremum: quia Deus ego ſum, ac non homo, inter vos: ſanctus ſum, nec urbem ingrediar. Dominum ſequentur ut leonem ru- 10 gientem: nam ipſo rugiente pavebunt filii populum, Tum exſilient ut volucres ex Ægypto, & ut columbæ de terra Aſſur: & redu- 11 cam eos ad ſedem eorum, dixit Dominus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

11 * افرام عجلة معلمة ان تحب الغلبة * وانا اتي على حسن عنقها. اركب افرام * واسكت يهودا *
12 يقويه يعقوب * ازرعوا لكم عدلا * اقطفوا ثمر الحياة * اضيئوا لكم نور المعرفة * اطلبوا الرب
13 الى ان ياتي لكم * يا اولاد العدل لماذا غفلتم عن النفاق، وقطفتم مظالمه * اكلتم ثمر كاذبة *
14 لانك وثقت بمركباتك بكثرة جيشك * ويثور الهلاك في شعبك * وينهب جميع حصونك مثل
15 رئيس سالامان * في بيت يوربعام في ايام الحرب ضربوا الام بالاولاد * هكذا اصنع بكم يا
بيت اسرائيل من وجه قبائحكم *

* الفصل الحادي عشر *

1 * سحرا طرحوا * طرح ملك اسرائيل * من اجل ان اسرائيل منذ كان طفلا فانا احببته * ومن
2 مصر دعوت اولاده * كما دعوتهم هكذا بعدوا عن وجهي * هم لاوثان ايم ذبحوا * وللمنحوتات
3 4 بخروا * وانا قيدت افرام * واخذته على ذراعي * ولم يعلموا اني اشفيهم * بفساد البشر مددتهم
5 برباطات محبتي * واصير لهم مثل انسان لاطم على خديه * وانظر اليه * واقتدر عليه * سكن
6 افرام في ارض مصر والموصل هو ملكه * لانه لم يشا ان يرجع * وضعف السيف في مدينته *
7 واتكف في يديه * وياكلون من رايهم * وشعبي متعلق من غربته * والله يغضب على كرامته
8 ولا يرفعه * لماذا اودك يا افرام * واستر عليك يا اسرائيل * لماذا اعزك * مثل اداما اصنعك ومثل
9 صبوييم * انتقل قلبي في ذاتي * انقلبت ندامتي * لا اصنع كهمة غضبي * ولا اترك ان
10 ابيد افرام * من اجل اني انا الله انا * ولست انسانا * فيك قدوس * ولا ادخل الى المدينة * خلف
11 الرب اسير * مثل اسد يزير * لانه هو يزار * ويتحير اولاد المياه * ويتحير مثل طاير من مصر *
وكمثل حمامة من ارض الموصليين * واردهم الى بيوتهم يقول الرب *

* *Aphrem vitula eſt aſſueta diligere victoriam: at ego invadam pulchritudinem colli ejus, inequitabo Aphrem, & ſilere faciam Judam, corroborabit eum Jacob.* 11 *Seminate vobis æquitatem, legite fructum* 12 *vitæ, accendite vobis lumen ſcientiæ, petite Dominum donec veniat ad vos. O fi-* 13 *lii æquitatis, quare neglexiſtis impietatem, iniquitates ejus tamen vindemiâſtis, fructum mendacem comediſtis? Quia ſpem collocâſti in curribus tuis, in multitudine exercitûs tui; Ideò graſſabitur pernicies* 14 *in populo tuo, & diripientur omnes munitiones tuæ, ut egit princeps Salaman; in domo Jerobaami, diebus belli, matrem percuſſerunt cum filiis. Ita faciam vobis, O* 15 *domus Iſraelis propter turpitudines veſtras.*

CAP. XI.

MAnè projecti ſunt, projectus eſt rex 1 *Iſraelis: quoniam Iſraelem ex quo parvulus erat, ego dilexi, & ex Ægypto vocavi filios ejus. Quemadmodum vocavi* 2 *eos, ita receſſerunt à facie mea: ipſi idolis Aim ſacrificaverunt, & ſculptilibus thus adoleverunt. Ego vinxi Aphremum,* 3 *& tuli eum ſuper brachium meum: attamen ignorant quòd ego ſanaturus ſum eos. In corruptione hominum, extendi eos* 4 *vinculis amoris mei, & fiam eis velut homo percutiens genas ſuas, reſpiciam eum & prævalebo ei. Habitavit Aphrem* 5 *in terra Ægypti, & Aſſyria rex ejus eſt; quia noluit reverti. Et infirmatus eſt* 6 *gladius in urbibus ejus, & continuit ſe in manibus ejus; comedéntque ex opinionibus ſuis. Populus meus pendet ab in-* 7 *colatu ſuo, & Deus iraſcetur honoribus ejus, & non exaltabit eum. Cur amo te O* 8 *Aphrem, protego te O Iſrael? cur honoro te? Ut Adamam reddam te, & ut Seboim. Immutatus eſt in me animus meus, inverſa eſt pœnitudo mea: Non agam ſecun-* 9 *dùm impetum iræ meæ, neque permittam ut perdam Aphremum; quia Deus ego ſum, ac non homo, in te ſanctus; neque ingrediar urbem. Poſt Dominum incedam, ut* 10 *leo rugiet: nam ipſo rugiente ſtupebunt filii aquarum. Stupebunt inquam velut* 11 *avis ex Ægypto, & velut columba de terra Aſſyriorum: eos autem reſtituam ad domos ſuas, dicit Dominus.*

CAP. XII. יב

: Iſrael domus dolo in & , Ephraim mendacio in me Circunderunt
1 סְבָבֻנִי בְכַחַשׁ אֶפְרַיִם וּבְמִרְמָה בֵּית יִשְׂרָאֵל
Ephraim .eſt fidelis ſanctis cum & , Deo cum *dominans* adhuc Jehudah &
2 וִיהוּדָה עֹד רָד עִם־אֵל וְעִם־קְדוֹשִׁים נֶאֱמָן׃ אֶפְרַיִם
vaſtitatem & mendacium die omni ; Eurum *ſequens* & , ventum *paſcens*
רֹעֶה רוּחַ וְרֹדֵף קָדִים כָּל־הַיּוֹם כָּזָב וָשֹׁד
.*ducetur* Ægyptum in oleum & , *excident* Aſſur cum fœdus & : *multiplicabit*
יַרְבֶּה וּבְרִית עִם־אַשּׁוּר יִכְרֹתוּ וְשֶׁמֶן לְמִצְרַיִם יוּבָל׃
, ej° vias juxta , Jahacob *ſuper* viſitandũ ad & ; Jehudah cum Domino *lis* &
3 וְרִיב לַיהוָה עִם־יְהוּדָה וְלִפְקֹד עַל־יַעֲקֹב כִּדְרָכָיו
; ſuum fratrem ſupplantavit utero In .ei reddet ejus *ſtudia* juxta
4 כְּמַעֲלָלָיו יָשִׁיב לוֹ׃ בַּבֶּטֶן עָקַב אֶת־אָחִיו
; *angelum in fuit princeps* Et .*Deo cum fuit princeps* ſua fortitudine *in* &
5 וּבְאוֹנוֹ שָׂרָה אֶת־אֱלֹהִים׃ וַיָּשַׂר אֶל־מַלְאָךְ
eſt locutus ibi & , eum invenit Bethel : eum rogavit & , flevit ; prævaluit &
וַיֻּכָל בָּכָה וַיִּתְחַנֶּן־לוֹ בֵּית־אֵל יִמְצָאֶנּוּ וְשָׁם יְדַבֵּר
.ejus memoriale Dominus ; exercituum Deus Dominus Et .nobiſcum
6 עִמָּנוּ׃ וַיהוָה אֱלֹהֵי הַצְּבָאוֹת יְהוָה זִכְרוֹ׃
expecta & , cuſtodi judicium & miſericordiam : *converteris* tuũ Deum ad tu &
7 וְאַתָּה בֵּאלֹהֶיךָ תָשׁוּב חֶסֶד וּמִשְׁפָּט שְׁמֹר וְקַוֵּה
opprimere *doli bilancibus ejus* manu in Mercatoris .ſemper *tuum Deum ad*
8 אֶל־אֱלֹהֶיךָ תָּמִיד׃ כְּנַעַן בְּיָדוֹ מֹאזְנֵי מִרְמָה לַעֲשֹׁק
: mihi *robur* inveni , ſum ditatus Veruntamen , Ephraim dixit Et .dilexit
9 אָהֵב׃ וַיֹּאמֶר אֶפְרַיִם אַךְ עָשַׁרְתִּי מָצָאתִי אוֹן לִי
.peccatum *que* , iniquitatem *mihi* invenient non meis laboribus omnibus
כָּל־יְגִיעַי לֹא יִמְצְאוּ־לִי עָוֹן אֲשֶׁר־חֵטְא׃
te faciam habitare adhuc , Ægypti terra è , tuus Deus Dominus ego Et
10 וְאָנֹכִי יְהוָה אֱלֹהֶיךָ מֵאֶרֶץ מִצְרָיִם עֹד אוֹשִׁיבְךָ
ego & , prophetis *ſuper* ſum locut° Et . feſtivitatis dies ſecundũ *tentoriis* in
11 בָּאֳהָלִים כִּימֵי מוֹעֵד׃ וְדִבַּרְתִּי עַל־הַנְּבִיאִים וְאָנֹכִי
? *iniquitas* Ghilhad Si .*aſſimilabo* prophetarum *manu in* & : multiplicavi viſionẽ
12 חָזוֹן הִרְבֵּיתִי וּבְיַד הַנְּבִיאִים אֲדַמֶּה׃ אִם־גִּלְעָד אָוֶן
etiam : immolaverunt boves Ghilgal in , fuerunt *mendacium* veruntamen
אַךְ־שָׁוְא הָיוּ בַּגִּלְגָּל שְׁוָרִים זִבֵּחוּ גַּם
agrum Jahacob fugit Et .agrorum ſulcos ſuper acervi ſicut eorum altaria
13 מִזְבְּחוֹתָם כְּגַלִּים עַל תַּלְמֵי שָׂדָי׃ וַיִּבְרַח יַעֲקֹב שְׂדֵה
propheta in Et .cuſtodivit *uxore in* & , *uxore in* Iſrael ſervivit & ; Aram
14 אֲרָם וַיַּעֲבֹד יִשְׂרָאֵל בְּאִשָּׁה וּבְאִשָּׁה שָׁמָר׃ וּבְנָבִיא
propheta in & ; Ægypto ex Iſrael Dominus fecit aſcendere
הֶעֱלָה יְהוָה אֶת־יִשְׂרָאֵל מִמִּצְרָיִם וּבְנָבִיא
ejus *ſanguines* & ; *acerbitatibus* Ephraim fecit Iraſci .ſe cuſtodivit
15 נִשְׁמָר׃ הִכְעִיס אֶפְרַיִם תַּמְרוּרִים וְדָמָיו
.ſuus Dominus ei reddet ejus opprobrium & , *deſeret* eum ſuper
עָלָיו יִטּוֹשׁ וְחֶרְפָּתוֹ יָשִׁיב לוֹ אֲדֹנָיו׃

CAP. XIII. יג

deliquit & : Iſrael in ipſe elevavit , tremor , Ephraim *loqui Secundùm*
1 כְּדַבֵּר אֶפְרַיִם רְתֵת נָשָׂא הוּא בְּיִשְׂרָאֵל וַיֶּאְשַׁם
ſibi fecerunt & , *peccare* addiderunt nunc Et .*eſt mortuus* & , Bahal in
2 בַּבַּעַל וַיָּמֹת׃ וְעַתָּה יוֹסִפוּ לַחֲטֹא וַיַּעֲשׂוּ לָהֶם
artificum opus *dolores* , *ſua intelligentia in* ſuo argento ex conflatile
מַסֵּכָה מִכַּסְפָּם כִּתְבוּנָם עֲצַבִּים מַעֲשֵׂה חָרָשִׁים
.*oſculentur* vitulos , *hominem Sacrificantes* , *dicentes* ipſi *illis* : totum
כֻּלֹּה לָהֶם הֵם אֹמְרִים זֹבְחֵי אָדָם עֲגָלִים יִשָּׁקוּן׃
: *vadens manicans* ros ſicut & , *matutini* nubes veluti erunt Idcircò
3 לָכֵן יִהְיוּ כַּעֲנַן־בֹּקֶר וְכַטַּל מַשְׁכִּים הֹלֵךְ
.*fumario* è fumus ſicut & , area ab *exturbabitur* gluma ſicut
כְּמֹץ יְסֹעֵר מִגֹּרֶן וּכְעָשָׁן מֵאֲרֻבָּה׃

Verſio VULG. LAT.

12 Circumdedit me in negatione E-
phraim, & in dolo domus Iſrael :
Judas autem teſtis deſcendit cum
Deo, & cum Sanctis fidelis.

CAP. XII.

1 EPhraim paſcit ventum, & ſe-
quitur æſtum : totâ die mendaciũ
& vaſtitatem multiplicat: & fœd°
cum Aſſyriis iniit, & oleum in Æ-
2 gyptum ferebat. Judicium ergò
Dñi cum Juda, & viſitatio ſup Ja-
cob: juxta vias ejus, & juxta adin-
3 ventiones ejus reddet ei. In ute-
ro ſupplantavit fratrem ſuum : &
in fortitudine ſua directus eſt cum
4 Angelo. Et invaluit ad angelum,
& confortatus eſt: flevit, & roga-
vit eum, in Bethel invenit eum, et
5 ibi locutus eſt nobiſcum. Et Do-
minus Deus exercituum, Dñs me-
6 moriale ejus. Et tu ad Deum tuũ
convertêris: miſericordiam & ju-
dicium cuſtodi, & ſpera in Deo
7 tuo ſemper. Chanaan, in manu
ejus ſtatera doloſa, calumniam di-
8 lexit. Et dixit Ephraim; Verunta-
men dives effectus ſum, inveni
idolum mihi : omnes labores mei
non invenient mihi iniquitatem,
9 quam peccavi. Et ego Dñs Deus
tuus ex terra Ægypti, adhuc ſede-
re te faciam in tabernaculis, ſicut
10 in dieb° feſtivitatis. Et locut° ſum
ſuper prophetas, & ego viſionem
multiplicavi, & in manu prophe-
11 tarum aſſimilatus ſum. Si Galaad
idolum, ergò fruſtrà erant in Gal-
gal bobus immolantes: nam & al-
taria eorum quaſi acervi ſuper ſul-
12 cos agri. Fugit Jacob in regionẽ
Syriæ, & ſervivit Iſrael in uxo-
13 rem, & in uxorem ſervavit. In
propheta autem eduxit Dominus
Iſrael de Ægypto : & in propheta
14 ſervatus eſt. Ad iracundiam me
provocavit Ephraim in amaritu-
dinibus ſuis, & ſanguis ejus ſuper
eum veniet, & opprobrium ejus
reſtituet ei Dominus ſuus.

CAP. XIII.

1 LOquente Ephraim, horror in-
vaſit Iſrael, & deliquit in Baal, et
2 mortuus eſt. Et nunc addiderunt
ad peccandum : fecerúntque ſibi
conflatile de argento ſuo quaſi ſi-
militudinem idolorum, factura
artificum totum eſt : his ipſi di-
cunt ; Immolate homines vitulos
3 adorantes. Idcircò erunt quaſi
nubes matutina, & ſicut ros ma-
tutinus præteriens, ſicut pulvis
turbine raptus ex area, & ſicut
fumus de fumario.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

12 Ἐκύκλωσέ με ἐν ψεύδει Ἐφραὶμ, ϗ ἐν ἀ-
σεβείαις (θ) οἶκος Ἰσραὴλ, ϗ Ἰούδα. νῦν
ἔγνω αὐτοὺς ὁ θεὸς, ϗ (ι) ὁ λαὸς ἅγιος
κεκλήσεται θεοῦ.

ΚΕΦ. ιβʹ.

1 ὉΔὲ Ἐφραὶμ πονηρὸν πνεῦμα, ἐδί-
ωξε καύσωνα ὅλην τὴν ἡμέραν· κενὰ ϗ μά-
ταια ἐπλήθυνε, ϗ διαθήκην μετὰ Ἀσσυρίων
διέθετο, ϗ ἔλαιον εἰς Αἴγυπτον ἐνεπορεύ-
2 ετο. Καὶ κρίσις τῷ κυρίῳ πρὸς (α) Ἰούδαν, τοῦ
ἐκδικῆσαι τὸν Ἰακώβ· κατὰ τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ ϗ
κατὰ τὰ ἐπιτηδεύματα αὐτοῦ (β) ἀποδώσει
3 αὐτῷ. Ἐν τῇ κοιλίᾳ ἐπτέρνισε τὸν ἀδελφὸν
αὐτοῦ, ϗ ἐν κόποις αὐτοῦ ἐνίσχυσε πρὸς (γ)
4 θεόν. Καὶ ἐνίσχυσε μετὰ ἀγγέλου, ϗ ἠδυνάσθη.
ἔκλαυσαν, ϗ ἐδεήθησάν μου· ἐν τῷ (δ) οἴκῳ
Ὢν εὕροσάν με, ϗ ἐκεῖ ἐλαλήθη πρὸς
5 (ε) αὐτούς. Ὁ δὲ κύριος ὁ θεὸς ὁ παντο-
6 κράτωρ ἔσαι μνημόσυνον αὐτοῦ. Καὶ σὺ ἐν
θεῷ σου ἐπιστρέψεις, ἔλεον ϗ κρίμα φυλάσ-
σου, ϗ ἔγγιζε πρὸς τὸν θεόν σου διαπαντός.
7 Χαναὰν, ἐν χειρὶ αὐτοῦ ζυγὸς ἀδικίας,
8 καταδυναστεύειν ἠγάπησε. Καὶ εἶπεν Ἐ-
φραὶμ, Πλὴν πεπλούτηκα, εὕρηκα ἀναψυ-
χὴν ἐμαυτῷ. πάντες οἱ πόνοι αὐτοῦ οὐχ εὑ-
ρεθήσονται αὐτῷ, (ζ) δι' ἀδικίας ἃς ἥμαρ-
9 τεν. Ἐγὼ δὲ κύριος ὁ θεός σου ἀνήγαγόν
σε ἐκ γῆς Αἰγύπτου, ἔτι κατοικιῶ σε ἐν
10 σκηναῖς, καθὼς (η) ἡμέραι ἑορτῆς. Καὶ λα-
λήσω πρὸς προφήτας, ϗ ἐγὼ ὁράσεις ἐπλή-
11 θυνα, ϗ ἐν χερσὶ προφητῶν ὡμοιώθην. Εἰ
μὴ Γαλαάδ ἐστιν, ἄρα ψευδεῖς ἦσαν ἐν Γα-
λαὰδ ἄρχοντες θυσιάζοντες, ϗ τὰ θυσια-
στήρια αὐτῶν, ὡς χελῶναι ἐπὶ χέρσον ἀγροῦ.
12 Καὶ ἀνεχώρησεν Ἰακὼβ εἰς πεδίον Συρί-
ας, ϗ ἐδούλευσεν Ἰσραὴλ ἐν γυναικὶ, ϗ
13 (θ) γυναικὶ ἐφυλάξατο. Καὶ ἐν προφήτῃ
ἀνήγαγε κύριος τὸν Ἰσραὴλ (ι) ἐκ γῆς Αἰ-
14 γύπτου, ϗ ἐν προφήτῃ διεφυλάχθη. Ἐθύ-
μωσεν Ἐφραὶμ, ϗ παρώργισε, ϗ τὸ αἷμα
αὐτοῦ ἐπ' αὐτὸν ἐκχυθήσεται, ϗ τὸν ὀνειδι-
σμὸν αὐτοῦ ἀνταποδώσει (κ) κύριος αὐτῷ.

ΚΕΦ. ιγʹ.

1 ΚΑτὰ τὸν λόγον Ἐφραὶμ δικαιώματα (α)
ἔλαβεν αὐτὸς ἐν τῷ Ἰσραὴλ, ϗ ἔθετο αὐ-
2 τὰ τῇ Βάαλ ϗ ἀπέθανε. (β) Καὶ νῦν προσ-
έθεντο τοῦ ἁμαρτάνειν (γ), ϗ ἐποίησαν ἑαυ-
τοῖς χώνευμα ἐκ τοῦ ἀργυρίου (δ) αὐτῶν,
κατ' εἰκόνα εἰδώλων, ἔργα τεκτόνων συν-
τετελεσμένα αὐτοῖς. αὐτοὶ λέγουσι, Θύσα-
3 τε ἀνθρώπους, μόσχοι γὰρ ἐκλελοίπασι. Διὰ
τοῦτο ἔσονται ὡς νεφέλη πρωϊνὴ, ϗ ὡς δρό-
σος ὀρθρινὴ πορευομένη, (ε) ὡς χνοῦς ἀπο-
φυσώμενος ἀφ' ἅλωνος, ϗ ὡς ἀτμὶς (ζ)
ἀπὸ δακρύων.

Circundedit me in mendacio E- 12
phræm, & in impietatibus domus
Iſrael, & Juda. Nunc (l) cogno-
vit eos Deus: & populus ſanctus
vocabitur Dei.

CAP. XII.

EPhræm autem peſſimus ſpiri- 1
tus, perſequut° eſt æſtũ totâ die:
inania, & vana multiplicavit, &
teſtamentũ cum Aſſyriis pepigit,
& oleum in Ægyptum mercaba-
tur. Et judiciũ Domino cũ Juda, 2
ut ulciſcatur Jacob : juxta vias
ejus, & juxta adinventiones ejus
reddet ei. In utero ſupplantavit 3
fratrẽ ſuũ : & in laboribus ſuis
prævaluit erga Deum: Et confor- 4
tatus eſt cum angelo, & potuit.
(a) Fleverunt, & deprecati ſunt
me: in domo On invenerunt me: et
ibi dictum eſt ad eos : Dominus 5
autẽ Deus omnipotens erit memo-
riale ejus. Et tu in Deo tuo con- 6
vertêris: miſericordiã, & judi-
ciũ cuſtodi, & appropinqua Deo
tuo ſemper. Chanaan, in manu e- 7
jus ſtatera iniquitatis , opprimere
per potentiam dilexit. Et dixit E 8
phræm; Veruntamen dives effect°
ſum, inveni requiem mihi. Omnes
labores ejus non invenientur ei
propter iniquitates, in quibus pec-
cavit. Ego autem Dominus Deus 9
tuus eduxi te de terra Ægypti:
adhuc habitare te faciã in taber-
naculis, ſicut (b) dies ſolennitatis.
Et loquar ad prophetas, & ego 10
viſiones multiplicavi, & in mani-
bus prophetarum aſſimilat° ſum.
Si non Galaad eſt; ergò falſi erant 11
in (c) Galaad principes immolan-
tes: & altaria eorũ, quaſi (d) te-
ſtudines ſuper deſertũ agri. Et re- 12
ceſſit Jacob in campũ Syriæ, &
ſervivit Iſrael in uxore, et (e)
uxori cuſtodivit. Et in propheta e- 13
duxit Domin° Iſrael de terra Æ-
gypti: & in propheta ſervatus eſt.
(f) Indignari fecit Ephræm, & ad 14
iracundiã provocavit: & ſanguis
ej° ſuper ipſũ effundetur: & op-
probriũ illi° reſtituet ei Domin°.

CAP. XIII.

JUxta verbum Ephræm (a) ju- 1
ſtificationes accepit ipſe in Iſrael:
& poſuit (b) eas Baal & mortu°
eſt. Et nunc appoſuerunt ut pec- 2
carẽt: et fecerũt ſibi conflatile ex
argento ſuo ſecundùm imaginem
idolorũ, opera artificũ completa.
His ipſi dicunt, Immolate (c) ho-
mines: vituli enim defecerunt. Id- 3
circò erũt quaſi nubes matutina,
& ſicut ros matutinus pertranſi-
ens, ſicut pulvis exufflat° ab area,
& ſicut vapor (d) de lacbrymis.

MS.A. (θ) οἴκου (ι) λαὸς ἅγιος κληθήσεται Κεφ. ιβʹ. MS.A. (α) τὸν Ἰούδαν,
(β) ἀνταποδώσεις (γ) τὸν θεόν. (δ) οἴκῳ μου εὕροσάν (ε) αὐτόν. (ζ) διὰ (η) ἡμέρα (θ) ἐν γυναικὶ (ι) ἐξ Αἰγύπτου, (κ) αὐτῷ κύριος.
Κεφ. ιγʹ. MS.A. (α) αὐτὸς ἔλαβεν (β) Καὶ προσέθετο (γ) ἔτι, ϗ (δ) ἑαυτῶν, (ε) ὥσπερ χνοῦς (ζ) ἐκ καπνοδόχης. Ἐγὼ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 אַסְגִיאוּ קֳדָמַי כַּדְבִין דְּבֵית אֶפְרַיִם וּבִנְכִלְהוֹן דְּבֵית יִשְׂרָאֵל וּדְבֵית יְהוּדָה הֲווֹ מִתְקְפִין
בְּפָלְחָנָא עַד דִּגְלָא עַמָּא דֶאֱלָהָא מֵאַרְעֲהוֹן וְאִנּוּן דַּהֲווֹ פָּלְחִין קֳדָמַי בְּבֵית מַקְדְּשָׁא
מִתְקְרָן עַמָּא קַדִּישָׁא בְּכֵן הֲווֹ קַיְמִין :

יב

1 בֵּית יִשְׂרָאֵל דְּמַן לִדְרוֹחַ זְרַע וְעַלְעוֹל חָצַד כָּל יוֹמָא כַּדְבִין וּבִזָּא מַסְגַן וּקְיָם עִם אַתּוּרָאָה
2 אֲקִימוּ וְקוּרְבָּנָא לְמִצְרַיִם מוֹבְלִין : וְדִינָא קֳדָם יְיָ עִם דְּבֵית יְהוּדָה וּלְאַסְעָרָא עַל יַעֲקֹב
3 כְּאָרְחָתֵיהּ וּכְעוֹבָדוֹהִי תַּקְנַיָּא יְתִיב לֵיהּ : נְבִיָּא אֲמַר לְהוֹן הֲלָא יַעֲקֹב עַד דְּלָא אִתְיְלִיד
4 אֲמִיר דְּיִסְגֵי מִן אֲחוּהִי וּבְתוּקְפֵיהּ אִתְרַבְרַב עִם מַלְאֲכָא : וְאִתְרַבְרַב עִם מַלְאֲכָא וִיכִיל
5 בְּכָה וּבְעָא מִנֵּיהּ בְּבֵיתְאֵל אִתְגְּלֵי עֲלוֹהִי וְתַמָּן יְמַלֵּל עִמָּנָא : נְבִיָּא אֲמַר לְהוֹן הוּא יְיָ
אֱלָהֵי צְבָאוֹת דְּאִתְגְּלֵי עַל אַבְרָהָם יִצְחָק וְיַעֲקֹב וּכְמָא דַּאֲמִיר עַל יְדֵי מֹשֶׁה דִּכְרָנֵיהּ
6 לְכָל דָּר וְדָר : וְאַתְּ בְּפוּלְחָנָא דֶאֱלָהָךְ תִּתְקֵף חִסְדָּא וְדִינָא טַר וּסְבַר לְפוּרְקָנָא דֶאֱלָהָךְ
7 8 תְּדִירָא : לָא תֶהֶוְיָן כְּתַגָּרִין דִּבְידֵיהוֹן מוֹזְנָן דִּנְכִיל לְמֵנַס רְחָמִין : וַאֲמַרוּ דְּבֵית
אֶפְרַיִם בְּרַם עַתַּרְנָא אַשְׁכַּחְנָא אוֹנֵס לָנָא נְבִיָּא אֲמַר לְהוֹן כָּל עוּתַרְכוֹן לָא יִתְקַיַּם לְכוֹן
9 בְּיוֹם תּוּשְׁלְמַת חוֹבֵיכוֹן : וַאֲנָא יְיָ אֱלָהָךְ דְּאַפֵּקְתָּךְ מֵאַרְעָא דְמִצְרַיִם עוֹד אוֹתֵיבִנָּךְ
10 בְּמַשְׁכְּנִין כְּיוֹמֵי קֶדֶם : וּמַלְּלֵית עִם נְבִיַּיָּא וַאֲנָא נְבוּאָן אַסְגֵּיתִי וּבְיַד נְבִיַּיָּא שַׁלְחֵית :
11 אִם בְּגִלְעָד הֲווֹ אֲנוּסִין בְּרַם בְּבֵית גִּלְגָּלָא תּוֹרִין לְטַעֲוָן דַּבַּחוּ אַף אֱגוֹרֵיהוֹן אַסְגִיאוּ
12 כְּיִגָּרִין עַל תְּחוּמֵי חַקְלָא : נְבִיָּא אֲמַר לְהוֹן הֲלָא יַעֲקֹב אֲבוּכוֹן אֲזַל לַחֲקְלֵי אֲרָם וּפְלַח
13 יִשְׂרָאֵל בְּאִתְּתָא וּבְאִתְּתָא נְטַר עָנָא : וְאַף כַּד נְחַתוּ אֲבָהָתְכוֹן לְמִצְרַיִם נְבִיָּא שְׁלַח
14 יְיָ וְאַסֵּיק יָת יִשְׂרָאֵל מִמִּצְרַיִם וְעַל יְדֵי נְבִיָּא אִתְנְטַר : מַרְגְּזִין דְּבֵית אֶפְרַיִם מוֹסְפִין
לְמֶחְטֵי וְחוֹבַת דָּם זַכַּי דַּאֲשִׁיד עֲלוֹהִי יְתוּב וְחִסּוּדֵיהּ יְתִיב לֵיהּ רִבּוֹנֵיהּ :

יג

1 כַּד מְמַלֵּל חַד מִבֵּית אֶפְרַיִם רְתֵיתָא אֲחִיד לְהוֹן לְעַמְמַיָּא מִתְרַבְרְבִין הֲווֹ בְּיִשְׂרָאֵל וּכְדוּ
2 דְּתָבוּ עַד דִּפְלַחוּ לְטַעֲוָתָא מִתְקַטְּלִין : וּכְעַן מוֹסְפִין לְמֶחְטֵי וַעֲבַדוּ לְהוֹן מַתְּכָא
מִכַּסְפְּהוֹן כִּדְמוּתְהוֹן צַלְמָנִין עוֹבַד אוּמָנִין כּוּלְּהוֹן לְהוֹן אִנּוּן מַטְעַן נְבִיֵּי שִׁקְרָא דָּבְחִין
3 לְעוֹבַד יְדֵי אֱנָשָׁא תּוֹרַיָּא לְעֶגְלַיָּא נָכְסִין : בְּכֵן יְהוֹן כַּעֲנַן צַפְרָא וּכְטַלָּא דְּמוֹחֵי פָּסֵיק
כְּמוֹצָא דְנַשְׁבָה רוּחַ מֵאִדְּרָא וּכְתְנָנָא מִכַּוַּת נוּרָא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Multiplicaverunt coram me mendacia, prognati domus Ephraim ; et dolos 11
ſuos, orti de familia Iſrael : proles verò domus Juda validi fuerunt in cultu,
donec exulavit populus Dei de terra ſua, et illi qui venerationẽ exhibuerũt
coram me in domo ſanctuarii, vocantur Populus ſanctus, in eo quòd fue-
runt ſtabiles.

CAP. XII.

DOmus Iſrael comparantur ei qui ſeminat ventum, & metit turbinem totâ 1
die: mendacia & prædam multiplicant, & fœdus cum Aſſur ſtatuerunt, &
munera in Ægyptum deferunt. Et judicium eſt coram Dño cum domo Juda, 2
ut animadvertat in Jahacob juxta vias ſuas, & ſecundũ opera ſua recta reddat
ei. Propheta dic eis : Nónne de Jahacob antequam natus eſſet, prædictum 3
eſt, quòd major evaderet fratre ſuo, & fortitudine ſua prævaluit Angelo ?
Prævaluit quidem Angelo & ſuperavit ; flevit & deprecatus eſt eum : in 4
Bethel revelatus eſt ei, ibíque nobiſcum loquetur. Propheta dic eis : Ipſe 5
eſt Dñs Deus exercituum, qui apparuit Abrahamo, Iſaac & Jacob ; & ſicut
traditum eſt per manus Moyſis, memoriale ejus erit in generatione & ge-
nerationem. Tu autem in cultu Dei tui confortaberis : miſericordiam & 6
judicium cuſtodi, & præſtolare redemptionem Dei tui jugiter. Ne ſitis ſicut 7
mercatores, in quorum manibus ſunt bilances doloſæ, rapinæ ſtudentes.
Et dixerunt qui de domo Ephraim, Utiq; locupletati ſumus, nacti ſum° nobis 8
rapinam. Propheta dic eis : Omnes divitiæ veſtræ non permanſuræ ſunt
vobis in die retributionis peccatorum *veſtrorum*. Et ego Dñs Deus tuus, qui 9
eduxi te de terra Ægypti adhuc habitare te faciam in tabernaculis ſicut in
dieb° antiquis. Atq; ego locut° ſum cum prophetis, & ipſe prophetias multi- 10
plicavi atq; per manũ prophetarũ miſi. Si in Galaad graſſatores fuere : certè 11
in fano Galgal vitulos idolis immolarunt, quin etiam aras ſuas multitu-
dine æquaverunt acervis ſuper terminos *agri*. Propheta dic eis : Nónne 12
Jahacob pater veſter abiit ad agros Syriæ, & ſervivit Iſrael pro uxore, &
pro uxore cuſtodivit oves ? Quin etiam quando deſcenderunt patres veſtri 13
in Ægyptum, prophetam legavit Dñs qui aſcendere fecit Iſrael de Ægypto,
ac per manus prophetæ ſervatus eſt. Ad iracundiam provocant progeniti do- 14
mus Ephraim, peccare adjicientes, & delictum ſanguinis juſti quem effudit,
in eum recidet, & opprobrium ipſius reddet ei Dominus ſuus.

CAP. XIII.

CUm loquitur nonnullus de domo Ephraim, tremor apprehendit populos, 1
principes *fuerunt* in Iſrael : nunc verò quia *averſi ſunt uſq;* quòd coluerunt
idola, neci traduntur. Ac nunc addunt peccare, & fabricati ſunt ſibi conflati- 2
le de argento ſuo ad ſimilitudinem ſuam ; ſimulachra opus artificum univerſa
ſunt, *quæ ipſos errare faciunt* : Pſeudoprophetæ ſacra celebrant operi manu-
um hominis, boves immolant vitulis. Ideò erunt ſicut nubes matutina, & ſicut ros qui citò
deficit, ſicut ſtipula quã exufflat vent° de area, deniq; ſicut fumus de fumario. 3

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 ܘܝܗܘܕܐ ܒܕܓܠܘܬܐ ܐܦܪܝܡ. ܘܒܢܟܠܐ ܒܝܬ ܐܝܣܪܐܝܠ. ܚܕܪܢܝ * ܩܦܠܐܘܢ * ܝܒ *
2 ܒܢܟܠܐ. ܥܕܡܐ ܕܢܚܬ ܥܡܗ ܕܐܠܗܐ. ܥܡܐ ܩܕܝܫܐ ܘܡܗܝܡܢܐ. * ܐܦܪܝܡ ܪܥܐ ܪܘܚܐ.
ܘܪܕܦ ܠܥܠܥܠܐ ܟܠܗ ܝܘܡܐ. ܕܓܠܘܬܐ ܘܚܛܘܦܝܐ ܐܣܓܝܘ. ܘܩܝܡܐ ܥܡ ܐܬܘܪܝܐ ܓܙܪܘ.
3 ܘܡܫܚܐ ܠܡܨܪܝܢ ܐܘܒܠܘ. * ܘܕܝܢܐ ܐܝܬ ܠܡܪܝܐ ܥܡ ܝܗܘܕܐ. ܘܢܬܦܪܥ ܠܝܥܩܘܒ ܐܝܟ
4 ܐܘܪܚܬܗ. ܘܐܝܟ ܥܒܕܘܗܝ ܢܦܪܥܝܘܗܝ. * ܒܟܪܣܐ ܥܩܒ ܠܐܚܘܗܝ. ܘܒܥܡܠܗ
5 ܐܬܪܘܪܒ ܩܕܡ ܐܠܗܐ. * ܘܐܬܟܬܫ ܥܡ ܡܠܐܟܐ. ܘܒܥܐ ܡܢܗ. ܒܒܝܬ ܐܝܠ ܐܫܟܚܗ. ܘܬܡܢ
6 ܡܠܠ ܥܡܗ. * ܘܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܬܕܟܪܗ. * ܐܢܬ ܗܟܝܠ ܠܐܠܗܟ ܬܬܦܢܐ.
7 8 ܘܛܝܒܘܬܐ ܘܕܝܢܐ ܛܪ. ܣܟܝ ܠܐܠܗܟ ܐܡܝܢܐܝܬ. * ܡܣܐܬܐ ܕܢܟܠܐ ܒܐܝܕܗ ܕܟܢܥܢ.
9 ܘܠܡܥܫܩܘ ܪܚܡ. * ܘܐܡܪ ܐܦܪܝܡ ܕܥܬܪܬ ܐܫܟܚܬ ܟܐܒܐ ܠܝ. ܘܟܠܗ ܥܡܠܝ ܠܐ ܣܦܩ
10 ܠܝ ܚܠܦ ܚܛܗܐ ܕܚܛܝܬ. * ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ ܕܐܦܩܬܟ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܬܘܒ ܐܘܬܒܟ
11 ܒܡܫܟܢܐ ܐܝܟ ܝܘܡܬܐ ܕܥܐܕܐ. * ܘܡܠܠܬ ܥܡ ܢܒܝܐ. ܘܐܢܐ ܚܙܘܢܝ ܐܣܓܝܬ. ܘܒܐܝܕ
12 ܢܒܝܐ ܐܬܕܡܝܬ. * ܒܓܠܥܕ ܟܐܒܐ. ܘܒܓܠܓܠ ܠܣܪܝܩܘܬܐ ܕܒܚܬܘܢ ܬܘܪܐ. ܘܐܦ
13 ܡܕܒܚܝܟܘܢ ܐܝܟ ܓܠܠܐ ܒܚܩܠܐ ܕܐܪܥܐ ܒܝܪܐ. * ܘܥܪܩ ܝܥܩܘܒ ܠܐܪܥܐ ܕܐܪܡ. ܘܦܠܚ
14 ܐܝܣܪܐܝܠ ܚܠܦ ܐܢܬܬܐ. ܘܡܛܠ ܐܢܬܬܐ ܢܛܪ. * ܘܒܝܕ ܢܒܝܐ ܐܣܩ ܡܪܝܐ ܠܐܝܣܪܐܝܠ ܡܢ
15 ܡܨܪܝܢ. ܘܒܝܕ ܢܒܝܐ ܐܬܢܛܪ. * ܐܪܓܙ ܐܦܪܝܡ ܘܡܪܡܪ. ܘܕܡܗ ܥܠܘܗܝ ܢܬܐܫܕ. ܘܚܣܕܗ
ܢܦܢܐ ܠܗ ܡܪܗ.
1 ܘܗܘܐ * ܩܦܠܐܘܢ * ܝܓ * ܟܕ ܡܡܠܠ ܐܦܪܝܡ ܪܬܝܬܐ ܗܘܬ.
2 ܪܒܐ ܒܐܝܣܪܐܝܠ. ܘܐܬܚܝܒ ܒܒܥܠܐ ܘܡܝܬ. * ܘܗܫܐ ܐܘܣܦܘ ܠܡܚܛܐ. ܘܥܒܕܘ ܠܗܘܢ
ܢܣܟܐ ܡܢ ܣܐܡܗܘܢ. ܒܕܡܘܬܗܘܢ. ܦܬܟܪܐ. ܥܒܕܐ ܕܢܓܪܐ. ܘܐܡܪܝܢ ܗܘܘ ܠܗܘܢ.
3 ܕܕܒܚܝܢ ܒܢܝܢܫܐ ܀ ܘܥܓܠܐ ܡܢܫܩܝܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܥܢܢܐ ܕܨܦܪܐ. ܘܐܝܟ
ܛܠܐ ܕܡܫܟܪ ܘܥܒܪ. ܘܐܝܟ ܥܘܪܐ ܕܦܪܚ ܡܢ ܐܕܪܐ. ܘܐܝܟ ܬܢܢܐ ܡܢ ܟܘܬܐ.

CAP. XII.

CIrcundedit me Aphrem mendacio, & domus Iſraelis ac Judæ, dolo; donec deſcenderet popul' Dei, populus ſanct' & fidelis. 1 Aphrem pavit ventum, & ſectat' eſt turbinem totâ die: mendaciũ & rapinã multiplicaverunt, & fœdus cum Aſſyrio pepigerunt, oleúmq; in Ægyptum deportaverunt. 2 Lis eſt Domino cum Juda, & animadvertet in Jacobum ſecundùm vias ejus, & ſecundùm facinora ejus rependet ei. 3 In vulva enim decepit fratrẽ ſuum, & robore ſuo magnificavit ſe corã Deo. 4 Et prævaluit Angelo ita ut deprecaretur eum: in Bethil invenit eum, & ibi allocutus eſt eum: 5 Et Dñs Deus potentiſſimus recordat' eſt ejus. 6 Tu itaq; convertere ad Deum tuũ, & probitatem atq; judiciũ obſerva, expecta Deum tuũ jugiter. 7 Statera doloſa eſt in manu Chanaanis, & opprimere gaudet. 8 Et dixit Aphrem; Cùm ditatus ſum, inveni mihi dolores; at omnis labor meus non ſufficit mihi pro peccato quod peccavi. 9 Ego ſum Dñs Deus tuus qui extraxi te à terra Ægypti: adhuc te collocabo in tentoriis, ut dieb' ſolennibus. 10 Et locut' ſum cum prophetis, & ego viſiones meas multiplicavi, & per prophetas me figuravi. 11 In Galaade dolores, & in Galgala vanitati ſacrificâſtis boves; quin & altaria veſtra ſunt quaſi teſtudines in campo terræ incultæ. 12 Et fugit Jacob ad terrã Aram, ſervivítq; Iſrael pro muliere, & propter mulierem *injuncta ſibi* ſervavit. 13 Et per prophetas extraxit Dñs Iſraelem ex Ægypto, & per prophetas cuſtoditus fuit. 14 Iram & amaritudinem excitavit Aphrem, ideò ſanguis ejus ſuper ipſum effundetur, & opprobriũm ejus reddet ei Dominus ejus. 15

CAP. XIII.

DUm loqueretur *Deus*, Aphrem tremebat, proinde factus fuerat magnus in Iſraele, ſed reatum obiens cauſâ Baalis, mortuus eſt. 1 Et nunc pergentes peccare, fecerunt ſibi fuſile ex argento ſuo in ſimilitudinem ſuam, idolum opus artificis. 2 Dicebant autem eis *prophetæ*, O qui ſacrificatis homines & vitulum oſculamini. Iccirco eritis ut nubes matutina, & ut ros manè ſtillans & evaneſcens, utque feſtuca evolans ex area, & ut fumus è feneſtra. 3

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 * الفصل الثاني عشر * احاط بي افرام بالكذب * وبيت اسرايل ويهودا بالنفاق *
2 الان عرفهم الله * والشعب المقدس يميل عن الله * وافرام الروح الشرير طرد السموم النهار كله *
3 كثر جديدات واباطيل * وصنع عهدا مع الموصليين * وسار بالدهن الي مصر * والحكم
4 للرب مع يهودا * لينتقم من يعقوب كطرقه * وكاعماله يكافيه * في البطن عرقب اخاه * وباتعابه
5 تقوي مع الله * وتقوي مع الملاك وتلذذ * بكوا وطلبوني * في بيتي وجدوني * وهناك قيل له *
6 7 * والرب الاله الضابط الكل يكون ذكره * وانت بالهك ترجع * احفظ الرحمة والحكم *
8 9 واقترب الي الهك كل حين * كنعان في يده ميزان ظلم * احب ان يتجبر * وقال افرام اني
استغنيت * وجدت راحة لذاتي * جميع اتعابه لا توجد له * لاجل الظلامات التي اخطا بها *
10 * وانا الرب الهك اصعدتك من ارض مصر * اسكنك ايضا في الخيم كيوم العيد *
11 12 * واتكلم مع الانبياء * وانا اكثرت المناظر * وبايدي الانبياء تشبهت * الا جلعاد هو لعنة *
13 كانوا كذبة في عاد روساء ذابحون * ومذابحهم مثل السلاحف على ارض الحقل البور * وانفرد
14 يعقوب الي بقعة الشام * وتعبد اسرايل بامراة * وانحفظ للمراة * وبالنبي اصعد الرب اسرايل من
15 مصر * وبالنبي حفظ * اغتاظ افرام وغضب * ودمه عليه يراق * ويكافيه الرب بتعييره *

* الفصل الثالث عشر *

1 2 * ككلمة افرام هو اخذ معادل في اسرايل * ووضعها للبعال ومات * وعاد للخطي * وصنعوا لهم
3 سبيكا من فضتهم كصورة اوثان * اعمال نجارين مكملة معهم * هم يقولون اذبحوا الناس لان
العجول متروكة * لاجل هذا يصيرون مثل سحابة بكرية * ومثل ندا سحري ذاهب *
وكمثل غبار منفوخ من البيدر * وكمثل بخار من دخان *

CAP. XII.

CIrcundedit me Aphrem mendacio, & domus Iſraelis ac Judæ perfidiâ. Nunc cognovit eos Deus, & populus ſanctus deflectet à Deo. 1 *Aphrem ſpiritus peſſimus inſectatus eſt ventum calidum totâ die, multiplicavit novitates & vanitates, fœdus inivit cum Aſſyriis, tulitque oleum in Ægyptum.* 2 *Etiam diſceptatio eſt Domino cum Juda, ut vindictam ſumat à Jacobo ſecundùm vias ejus, & ſecundùm actiones ejus rependat illi.* 3 *In utero ſupplantavit fratrem ſuum, & in laboribus ſuis corroboravit ſe cum Deo,* 4 *Confortavitque ſe cum Angelo, & voluptatem percepit. Flentes quæſiverunt me, in domo mea invenerunt me, ibique dictum fuit ei:* 5 *Et Dominus Deus omnitenens erit memoriale ipſius.* 6 *Tu ergò per Deum tuum convertere, obſerva miſericordiam & judicium, & accede ad Deum tuum omni tempore.* 7 *Chanaanis in manu ſtatera eſt iniqua, amat præpollere.* 8 *Dixitque Aphrem; Equidem factus ſum dives, inveni mihi requiem: omnes labores ejus nequaquam ſubſiſtent ei, propter iniquitates quibus peccavit.* 9 *Ego autem Dominus Deus tuus eduxi te de terra Ægypti, habitare te faciam adhuc in tabernaculis ut die feſto,* 10 *Et loquar cum prophetis: ego viſiones multiplicavi, & per prophetas aſſimilatus ſum.* 11 *Verùm Galaad eſt maledictio, mendaces erant in Aad principes ſacrificantes, & altaria eorum quaſi teſtudines ſuper tellurem agri inculti.* 12 *Et receſſit Jacob in campum Syriæ, & ſervituti ſubdidit ſe Jacob propter uxorem, & ſervatus eſt uxori.* 13 *Et per prophetam eduxit Dominus Iſraelem ex Ægypto, perque prophetam ſervatus eſt.* 14 *Iratus eſt Aphrem & indignatus, & ſanguis ejus ſuper ipſum effundetur, & retribuet illi Dominus propter opprobrium ipſius.* 15

CAP. XIII.

Juxta verbum Aphremi ſuſcepit ipſe juſtificationes in Iſraele; ſed addicens eas Baali, mortuus eſt: 1 *Et rediens ad peccatum fecerunt ſibi conflatile ex argento ſuo juxta imaginem idolorum, opera artificum perfecta apud ipſos. Ipſi dicunt, Sacrificate homines, quia vituli deſpiciuntur:* 2 *Propterea fient ſicut nubes matutina, & ſicut ros matutinus deficiens, ſicut pulvis exſufflatus ex area, & ſicut vapor à fumo.* 3

L

הושע : יד

me præter Deum & ; Ægypti terra è tuus Deus Dominus ego Et
4 וְאָנֹכִי יְהוָה אֱלֹהֶיךָ מֵאֶרֶץ מִצְרָיִם וֵאלֹהִים זוּלָתִי
; deserto in te novi Ego .me abſque non ſervator & , neſcies
5 לֹא תֵדָע וּמוֹשִׁיעַ אַיִן בִּלְתִּי׃ אֲנִי יְדַעְתִּיךָ בַּמִּדְבָּר
,ſunt ſaturati,ſunt ſaturati *& ſuum paſcuum* Juxta *locorum torridorũ* terra in
6 בְּאֶרֶץ תַּלְאֻבוֹת׃ כְּמַרְעִיתָם וַיִּשְׂבָּעוּ שָׂבְעוּ
tanquam eis fui Et .mei ſunt obliti idcircò ; eorum cor eſt elevatũ &
7 וַיָּרָם לִבָּם עַל־כֵּן שְׁכֵחוּנִי׃ וָאֱהִי לָהֶם כְּמוֹ־
urſus tanquam eis Occurram *.obſervabo* viam *ſuper* pardus ſicut ; leo
8 שָׁחַל כְּנָמֵר עַל־דֶּרֶךְ אַשּׁוּר׃ אֶפְגְּשֵׁם כְּדֹב
ibi eos conſumam & ; eorum cordis clauſuram dirumpam & , orbatus
שַׁכּוּל וְאֶקְרַע סְגוֹר לִבָּם וְאֹכְלֵם שָׁם
quia ,Iſrael *tua Corruptela* .eos ſcindet agri beſtia ,leo veluti
9 כְּלָבִיא חַיַּת הַשָּׂדֶה תְּבַקְּעֵם׃ שִׁחֶתְךָ יִשְׂרָאֵל כִּי־
omnibus in te ſervet *&* , *ubi* tuus rex , Ero *.tuo auxilio in* me in
10 בִי בְעֶזְרֶךָ׃ אֱהִי מַלְכְּךָ אֵפוֹא וְיוֹשִׁיעֲךָ בְּכָל־
.principes & ,regem mihi Da , dixiſti quibus,tui judices &:tuis urbib⁹
עָרֶיךָ וְשֹׁפְטֶיךָ אֲשֶׁר אָמַרְתָּ תְּנָה־לִּי מֶלֶךְ וְשָׂרִים׃
iniquitas Ligata .mea ira in abſtuli &,meo furore in regem tibi Dedi
11 12 אֶתֶּן־לְךָ מֶלֶךְ בְּאַפִּי וְאֶקַּח בְּעֶבְרָתִי׃ צָרוּר עֲוֹן
: ei venient parturientis Dolores .ejus *peccatum abſconditum* , Ephraim
13 אֶפְרָיִם צְפוּנָה חַטָּאתוֹ׃ חֶבְלֵי יוֹלֵדָה יָבֹאוּ לוֹ
.filiorum *alvi ruptura* in ſtetiſſet non *tempore* quia ,ſapiens non filius ipſe
הוּא־בֵן לֹא חָכָם כִּי־עֵת לֹא־יַעֲמֹד בְּמִשְׁבַּר בָּנִים׃
tua *peſtis* ero : eos redimam morte à , eos redimam inferni *manu* E
14 מִיַּד שְׁאוֹל אֶפְדֵּם מִמָּוֶת אֶגְאָלֵם אֱהִי דְבָרֶיךָ
.meis oculis ab ſe abſcondet conſolatio ,inferne *tua excißio* ero , mors
מָוֶת אֱהִי קָטָבְךָ שְׁאוֹל נֹחַם יִסָּתֵר מֵעֵינָי׃
Domini ventus Orientalis veniet ; *creſcet* fratres inter ipſe : *Nam*
15 כִּי הוּא בֵּין אַחִים יַפְרִיא יָבוֹא קָדִים רוּחַ יְהוָה
ipſe ,ejus fontem ſiccabit & ,ejus *vena areſcet* & , aſcendens deſerto è
מִמִּדְבָּר עֹלֶה וְיֵבוֹשׁ מְקוֹרוֹ וְיֶחֱרַב מַעְיָנוֹ הוּא
.deſiderii vaſorum omnium theſaurum diripiet
יִשְׁסֶה אוֹצַר כָּל־כְּלִי חֶמְדָּה׃

CAP. XIV. יד

gladio *in* ; ſuum Deum in rebellavit quia , Someron Deſolabitur
1 תֶּאְשַׁם שֹׁמְרוֹן כִּי מָרְתָה בֵּאלֹהֶיהָ בַּחֶרֶב
.diſrumpentur ejus prægnantes & ,allidentur eorum parvuli , cadent
יִפְּלוּ עֹלְלֵיהֶם יְרֻטָּשׁוּ וְהָרִיּוֹתָיו יְבֻקָּעוּ׃
quoniam : tuum Deum Dominum ad *uſque* Iſrael Revertere
2 שׁוּבָה יִשְׂרָאֵל עַד יְהוָה אֱלֹהֶיךָ כִּי
convertimini & , verba vobiſcum Tollite *.tua iniquitate in* corruiſti
3 כָשַׁלְתָּ בַּעֲוֹנֶךָ׃ קְחוּ עִמָּכֶם דְּבָרִים וְשׁוּבוּ
, iniquitatem *tolles* Omnem : eum ad Dicite .Dominum ad
אֶל־יְהוָה אִמְרוּ אֵלָיו כָּל־תִּשָּׂא עָוֹן
Aſſur .noſtrorum labiorum vitulos reddemus & ,bonum accipe &
4 וְקַח־טוֹב וּנְשַׁלְּמָה פָרִים שְׂפָתֵינוּ׃ אַשּׁוּר
dicemus non & *: equitabimus* non equum ſuper , nos ſervabit non
לֹא יוֹשִׁיעֵנוּ עַל־סוּס לֹא נִרְכָּב וְלֹא־נֹאמַר
eſt miſeratio te in quia : noſtrarum manuum operi , noſtri Dei,ultrà
עוֹד אֱלֹהֵינוּ לְמַעֲשֵׂה יָדֵינוּ אֲשֶׁר־בְּךָ יְרֻחַם
eſt averſus quia *: ultro* eos diligam ; eorum *averſionem* Sanabo .pupilli
5 יָתוֹם׃ אֶרְפָּא מְשׁוּבָתָם אֹהֲבֵם נְדָבָה כִּי שָׁב
.eo ab meus *naſus*
אַפִּי מִמֶּנּוּ׃

Verſio VULG. LAT.

4 Ego autem Dominus Deus tuus ex terra Ægypti : & Deum abſq; me neſcies, & ſalvator non eſt 5 præter me. Ego cognovi te in 6 deſerto,in terra ſolitudinis. Juxta paſcua ſua adimpleti ſunt, & ſaturati ſunt : & levaverunt cor 7 ſuum, & obliti ſunt mei. Et ego ero eis quaſi leæna, ſicut pardus 8 in via Aſſyriorum. Occurram eis quaſi urſa raptis catulis, & dirumpam interiora jecoris eorum: & conſumam eos ibi quaſi leo, 9 beſtia agri ſcindet eos. Perditio tua, Iſrael : tantummodò in me 10 auxilium tuum. Ubi eſt rex tuus? maximè nunc ſalvet te in omnibus urbibus tuis : & judices tui, de quibus dixiſti ; Da mihi re- 11 gem,& principes. Dabo tibi regem in furore meo, & auferam 12 in indignatione mea. Colligata eſt iniquitas Ephraim, abſcondi- 13 tum peccatum ejus. Dolores parturientis venient ei : ipſe filius non ſapiens : nunc enim non ſtabit in contritione filiorum. 14 De manu mortis liberabo eos, de morte redimam eos : ero mors tua, ô mors : morſus tuus ero, inferne : conſolatio abſcon- 15 dita eſt ab oculis meis. Quia ipſe inter fratres dividet : adducet urentem ventum Dominus de deſerto aſcendentem : & ſiccabit venas ejus, & deſolabit fontem ejus,& ipſe diripiet theſaurum omnis vaſis deſiderabilis.

CAP. XIV.

1 PEreat Samaria, quoniam ad amaritudinem concitavit Deum ſuum : in gladio pereant, parvuli eorum elidantur, & fœtæ ejus di- 2 ſcindantur. Convertere, Iſrael, ad Dominum Deum tuum : quoniam corruiſti in iniquitate tua. 3 Tollite vobiſcum verba, & convertimini ad Dominum : & dicite ei ; Omnem aufer iniquitatem, accipe bonum : & reddemus vitulos labiorum noſtrorum. 4 Aſſur non ſalvabit nos, ſuper equum non aſcendemus, nec dicemus ultrà ; Dii noſtri opera manuum noſtrarum : quia ejus, qui in te eſt, miſereberis pupilli. 5 Sanabo contritiones eorum, diligam eos ſpontaneé : quia averſus eſt furor meus ab eis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

4 Ἐγὼ δὲ κύριος ὁ θεός σου ὁ στερεῶν (η) τὸν οὐρανὸν, καὶ κτίζων γῆν, οὗ αἱ χεῖρες ἔκτισαν πᾶσαν τὴν στρατιὰν τοῦ οὐρανοῦ, καὶ οὐ παρέδειξά σοι αὐτὰ τοῦ πορεύεσθαι ὀπίσω αὐτῶν. καὶ ἐγὼ ἀνήγαγόν σε ἐκ γῆς Αἰγύπτου, καὶ θεὸν πλὴν ἐμοῦ οὐ γνώσῃ, καὶ σώζων οὐκ ἔστι πάρεξ 5 ἐμοῦ. Ἐγὼ ἐποίμαινόν σε ἐν τῇ ἐρήμῳ, ἐν 6 γῇ ἀοικήτῳ κατὰ τὰς νομὰς αὐτῶν, (θ) καὶ ἐνεπλήσθησαν εἰς πλησμονὴν, καὶ ὑψώθησαν αἱ καρδίαι αὐτῶν· ἕνεκα τούτου ἐπελάθοντό 7 μου. Καὶ ἔσομαι αὐτοῖς ὡς πανθὴρ, καὶ 8 ὡς πάρδαλις κατὰ τὴν ὁδὸν Ἀσσυρίων. Ἀπαντήσομαι αὐτοῖς ὡς ἄρκος (ι) ἡ ἀπορουμένη, καὶ διαρρήξω συγκλεισμὸν καρδίας αὐτῶν, καὶ (κ) καταφάγονται αὐτοὺς ἐκεῖ σκύμνοι δρυμοῦ, θηρία ἀγροῦ διασπάσει αὐτούς. 9 Τῇ διαφθορᾷ σου Ἰσραὴλ τίς βοηθήσει; 10 Ποῦ ὁ βασιλεύς σου οὗτος; καὶ διασωσάτω σε ἐν πάσαις ταῖς πόλεσί σου. κρινάτω σε ὃν εἶ- 11 πας, Δός μοι βασιλέα καὶ ἄρχοντα. Καὶ ἔδωκά σοι βασιλέα ἐν ὀργῇ μου, καὶ ἔσχον ἐν 12 τῷ θυμῷ μου. Συστροφὴν ἀδικίας Ἐφραὶμ, 13 ἐγκεκρυμμένη ἡ (λ) ἁμαρτία αὐτοῦ, Ὠδῖνες ὡς τικτούσης ἥξουσιν αὐτῷ. οὗτος ὁ υἱός σου ὁ φρόνιμος, διότι οὐ μὴ ὑποστῇ ἐν συντριβῇ 14 τέκνων. Ἐκ χειρὸς ᾅδου ῥύσομαι (μ), καὶ ἐκ θανάτου λυτρώσομαι αὐτούς. ποῦ ἡ δίκη σου θάνατε; ποῦ τὸ κέντρον σου ᾅδη; παράκλη- 15 σις κέκρυπται (ν) ἀπὸ ὀφθαλμῶν μου. Διότι οὗτος ἀναμέσον ἀδελφῶν (ξ) διαστελεῖ, ἐπάξει (ο) καύσωνα ἄνεμον κύριος ἐκ τῆς ἐρήμου ἐπ' αὐτὸν, καὶ ἀναξηρανεῖ τὰς φλέβας αὐτοῦ, ἐξερημώσει τὰς πηγὰς αὐτοῦ· (π) αὐτὸς καταξηρανεῖ τὴν γῆν αὐτοῦ, καὶ πάντα τὰ σκεύη τὰ ἐπιθυμητὰ αὐτοῦ.

Ego autem Dominus De⁹ tuus (e) firmans cœlum, et creans terram, cujus manus (f) creaverũt omnẽ militiã cœli: et non oſtẽdi ea tibi, ut ambulares poſt ea. Et ego eduxi te de terra Ægypti: & Deum præter me non cognoſces, & ſalvator non eſt abſque me. Ego paſcebã te in ſolitudine, in terra inhabitabili Secundùm paſcua ſua. Et repleti ſunt in ſaturitate, & elevata ſunt corda eorum: idcircò obliti ſunt mei. Et ero eis, quaſi panther, & ſicut pardus in via Aſſyriorum, Occurram eis, ſicut urſa indigens cibo, & diſrumpã concluſionem cordis eorũ: & devorabunt eos ibi catuli ſylvæ, beſtiæ agri diſcerpent eos. Corruptioni tuæ, Iſrael, quis auxiliabitur? Ubi eſt rex tuus iſte? et ſalvum te faciat in cunctis urbibus tuis. Judicet te, de quo dixiſti; Da mihi regẽ, & principẽ. Et dedi tibi regem in irâ meâ: & (g) habui in furore meo. (h) Conglobationem iniquitatis Ephræm: abſconditũ peccatũ ej⁹: Dolores quaſi parturientis venient ei. Iſte eſt filius tuus ſapiens: quia nunc non ſubſiſtet in contritione filiorũ. De manu inferni liberabo, & de morte redimã illos. Ubi eſt (i) cauſa tua, mors? Ubi eſt (k) acule⁹ tu⁹, inferne? Conſolatio abſcondita eſt ab oculis meis: Quia hic inter fratres dividet. Adducet urentẽ ventũ Dominus de deſerto ſuper ipſum, *& ſiccabit venas ejus, deſolabit fontes illius. Ipſe arefaciet terrã ej⁹, et omnia vaſa deſiderabilia (l) ejus.* 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15

MS.A. (η) οὐρανὸν, (θ) ἐνεπλήσθησαν (ι) ἀπορουμένη, (κ) φάγονται (λ) ἀδικία αὐτοῦ, Ὠδῖνες ἥξουσιν αὐτῷ ὡς τικτούσης. (μ) αὐτοὺς, ἐκ θανάτου (ν) ἐξ (ξ) διαστέλλει, (ο) ἄνεμον καύσωνα ἐκ τῆς ἐρήμου κύριος ἐπ' αὐτὸν, (π) οὗτος

ΚΕΦ. ιδ'.

1 ἈΦανισθήσεται Σαμάρεια, ὅτι ἀντέστη πρὸς τὸν θεὸν αὐτῆς. ἐν ῥομφαίᾳ πεσοῦνται αὐτοὶ, καὶ τὰ ὑποτίτθια αὐτῶν ἐδαφισθήσονται, καὶ αἱ ἐν γαστρὶ ἔχουσαι αὐτῶν δι- 2 αρραγήσονται. (ʹ) Ἐπιστράφηθι Ἰσραὴλ πρὸς κύριον τὸν θεόν σου, διότι (ʺ) ἠσθένησας ἐν ταῖς 3 ἀδικίαις σου. Λάβετε μεθ' ἑαυτῶν λόγους, καὶ ἐπιστράφητε πρὸς κύριον τὸν θεὸν ὑμῶν· εἴπατε αὐτῷ, ὅπως μὴ λάβητε ἀδικίαν, καὶ (α) λάβητε ἀγαθὰ, καὶ ἀνταποδώσομεν 4 καρπὸν χειλέων ἡμῶν. Ἀσσοὺρ οὐ μὴ σώσῃ ἡμᾶς, ἐφ' (β) ἵππον οὐκ ἀναβησόμεθα· οὐκ ἔτι 5 μὴ (˘) εἴπωμεν, Θεοὶ ἡμῶν, τοῖς ἔργοις τῶν χειρῶν ἡμῶν· ὁ ἐν σοὶ ἐλεήσει ὀρφανόν. Ἰάσομαι τὰς κατοικίας αὐτῶν, ἀγαπήσω αὐτοὺς ὁμολόγως, (γ) ὅτι ἀπέστρεψεν τὴν ὀργήν μου ἀπ' αὐτοῦ.

CAP. XIV.

DIſperdetur (a) Samaria, quoniam reſtitit Deo ſuo. In gladio corruent (b) ipſi, & lactentes eorũ allidentur, & eorum habentes in utero dirumpentur. Convertere, Iſrael, ad Dominũ Deũ tuũ: quia (c) infirmati ſunt in iniquitatibus tuis. Sumite vobiſcum ſermones, & revertimini ad Dominũ Deũ veſtrum. Dicite ei: ut non tollatis iniquitatẽ, ſed aſſumatis bona: & reddemus fructũ labiorũ noſtrorum. Aſſur non ſalvabit nos: ſuper equum non aſcendemus: nequaquàm ultrà dicemus; Dii noſtri, operibus manuũ noſtrarũ: qui in te eſt, miſerebitur pupilli. Sanabo habitationes eorũ: diligã eos manifeſté: quia (d) avertit iram meam à ſe. 1 2 3 4 5

MS.A. (ʹ) Ἐπιστράφητι (ʺ) ἠσθένησας (α) λάβετε (β) ἵππων (˘) εἴπωμεν, (γ) διότι ἀποστρέψω τὴν ὀργήν μου ἀπ' αὐτῶν. Καὶ ἔσομαι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 ואנא יי אלהך דאסקתך מארעא דמצרים ואלהא בר מני לא תדע ופריק לית אלא
5 6 אנא : אנא סופקית צורכיהון במדברא בארעא דהויתון תאבין בה לכל מדעם : כד
7 ונתנון סבעו מסבע וראם לבהון על כן שבקו להון ית פולחני : והוה מימרי להון
8 כליתא כנמרא כמן על שבילא : ערע מימרי בהון כדוב מתכל ותברית רשע לבהון
9 וקטלתנון תמן כבני אריון כחית שנא דמבזעא שציתנון : כד מחבלין אתון בית ישראל
10 עובדיכון שלטין בכון עממיא וכד תיבין אתון לאוריתא מימרי הוה בסעדכון : אן
11 מלכך כען ויפרקנך בכל קרוך ודינך דאת אמרת מני עלי מלך ושלטון : מניתי עלך
12 מלכא ברוגזי ואעדיתי בחמתי : גניזין חובי בית אפרים נטירין לאתפרעא כל חוביהון :
13 עקא וזיע כחבלין על ילדה ייתון עלוהי הוא בר דאתרבי ולא חכים למידע דחלתי
14 ארי כען איתי עלוהי עקא כאתתא דיתבה על מתברה וחיל לית לה למילד : בית
ישראל מיד קטול פרקתנון וממחבלא שזבתנון כען יהי מימרי בהון לקטול ופתגמי
15 לחבלא על דעברו על אוריתי אסלק שכנתי מנהון : ארי אנון מתקרן בנין ועובדין
מקלקלין אסגיאו כען איתי עליהון מלך תקיף כרוח קדומא במימרא דיי מאורח
מדברא יסק ויחרב בית גנזוהי ויצדי קרית מלכותיה הוא יבוז אוצרין כל מני
חמדתא :

יד

1 תחוב שמרון ארי סריבת על מימר אלהא בחרבא יתקטלון ועולמיהון יתרפון
2 ומעדיתהון יתבזעון : תוב ישראל לדחלתא דיי אלהך ארי אתקלתא בחובך : קריבו
3 עמכון פתגמין דאתודאה ותובו לפלחנא דיי אמרו קדמוהי קריב קדמך למשבק על
עוין ונתקבל הא כטבין ויהוין מלי ספותנא מתקבלין קדמך כתורין לרעוא על
4 מדבחא : מלכי אתור לא יפרקננא על רכבי סוסון לא נתרחיץ ולא נימר עוד אלהנא
5 לעובדי ידנא דמן קדמך אתרחם על אבהתנא כד הוו במצרים הא כיתמין : אקבלנון
בתיובתהון אשבוק לחוביהון ארחמנון כד יתובון בנדבא ארי תב רוגזי מנהון :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ego verò ſum Dñs Deus tuus qui aſcendere te feci de terra Ægypti: Deum 4 itaq; præter me non agnoſces, nec eſt ſalvator niſi ego. Ego tribui vobis ne- 5 ceſſaria in deſerto, in terra in qua deſiderabatis omnia. Quando enutrivi eos, 6 ſaturitate ſunt oppleti, & elevatũ eſt cor eorũ, ob idq; miſſũ cultũ meũ fecerũt. Quapropter fuit Verbũ meũ eis quaſi leæna, & velut pard⁹ qui inſidiatur 7 prope viã. Occurrit Verbũ meũ eis quaſi urſa orbata: & confregi impietatẽ 8 cordis eorũ, & occidi eos ibi in modũ catulorũ leonũ: ſicut beſtia dentata quæ dilacerat conſumpſi eos. Cùm vos depravatis opera veſtra ô dom⁹ Iſ- 9 rael, dominantur in vos populi: ſed quoties converſi eſtis ad legẽ meã, Verbum meũ fuit vobis præſidio. Ubi eſt nunc rex tu⁹ ut ſalvet te in omnib⁹ ur- 10 bib⁹ tuis? & judices tui, de quib⁹ dixiſti, Conſtitue ſuper me regẽ & principem? Conſtitui ſuper te regem in furore meo, jamque abſtuli in ira mea. 11 Repoſita ſunt peccata Ephraim, ſervata ſunt ut pœnis mulctẽ univerſa eorũ 12 ſcelera. Tribulatio atq; perturbatio invadent eos ſicut dolores parientis: 13 ipſe filius eſt qui grandior factus haud ſapuit quò timorem mei cognoſceret; nunc adducam contra eum coarctationẽ tanquam mulieris quæ aſſidet ſellæ parturientium, nec virt⁹ ſuppetit ei pariendi. Domum Iſrael *de manu* 14 *occidentis* redemi & ab exterminio delente erui eos: mox erit Verbũ meum contra eos in necem, & Verbũ meũ ad diſperdendum: eò quòd tranſgreſſi ſunt legem meã, tollam majeſtatẽ meam ab eis. Quia ipſi vocati ſunt filii & 15 multiplicaverunt opera corrupta, nunc adducam in eos regẽ fortẽ, ſicut ventũ urentẽ in verbo Dñi qui de via deſerti aſcendet, & deſtruet dom⁹ theſaurorũ illorũ, & deſolabit civitatem regni eorũ; ipſe diripiet cellaria, omnia vaſa deſiderabilia.

CAP. XIV.

PEccati rea eſt Samaria, quandoquidem rebellavit in verbum Dei: gladio 1 occidentur, juvenes eorũ allidentur, & prægnantes eorum ſcindentur. Re- 2 vertere Iſrael ad timorem Dñi Dei tui, quia corruiſti in flagitio tuo. Afferte 3 vobiſcum verba confeſſionis, & convertimini ad religionem Dñi: dicite corã eo, Propè eſt coram te ut dimittas delicta, & *ſuſcipiamur* utique quaſi *boni*, & ſint eloquia labiorum noſtrorum penes te accepta, tanquam boves in beneplacitum ſuper altari. Reges Aſſyrii haud ſalvabunt nos, nec in equorũ 4 aſcenſoribus confidentiam reponem⁹: nec ultrà dicem⁹ Deum noſtrum oper ib⁹ manuum noſtrarum, eò quòd à te miſertum ſit patrum noſtrorum, quando erant in Ægypto pupillorũ inſtar. Acceptabo eos in converſione ſua; ignoſcam 5 peccatis eorum, et eorum miſerebor cùm converſi fuerint liberali animo, averſus eſt enim furor meus ab eis.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

4 * ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ ܕܐܣܩܬܟ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܐܠܗܐ ܒܪ ܡܢܝ ܠܐ ܬܕܥ. ܘܦܪܘܩܐ
5 ܕܣܛܪ ܡܢܝ ܠܝܬ. * ܐܢܐ ܪܥܝܬܟ ܒܡܕܒܪܐ ܒܐܪܥܐ ܨܗܝܬܐ ܕܠܐ ܡܥܡܪܐ. * ܘܪܥܝܬ ܐܢܘܢ. ܘܣܒܥܘ
6 ܟܪܣܗܘܢ. ܘܐܬܪܝܡ ܠܒܗܘܢ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܛܥܐܘܢܝ. * ܘܗܘܝܬ ܠܗܘܢ ܐܝܟ ܐܪܝܐ. ܘܐܝܟ
7 ܢܡܪܐ ܒܐܘܪܚܐ ܕܐܬܘܪ. * ܐܦܓܥ ܒܗܘܢ. ܐܝܟ ܕܒܐ ܕܐܟܘܠܬܐ. ܘܐܨܪܘܛ ܡܫܟܐ ܕܠܒܗܘܢ.
8 ܘܬܐܟܘܠ ܐܢܘܢ ܬܡܢ ܐܪܝܐ. ܘܚܝܘܬ ܕܒܪܐ ܬܨܪܘܛ ܐܢܘܢ. * ܚܒܠܬܟ ܐܝܣܪܝܠ. ܡܢܘ ܢܥܕܪܟ.
9 * ܐܝܟܘ ܗܘ ܡܠܟܟ. ܢܦܪܩܟ ܒܟܠܗܝܢ ܩܘܪܝܟ. ܘܕܝܢܟ ܕܐܡܪܬ ܗܒ ܠܝ. ܡܠܟܐ. ܘܪܫܐ
10 ܡܠܟܐ ܒܪܘܓܙܝ. * ܘܢܣܒܬܗ ܡܢܟ ܒܚܡܬܝ. * ܨܪܝܪ ܥܘܠܗ
11 ܕܐܦܪܝܡ. ܘܟܣܝܐ ܚܛܝܬܗ. * ܚܒܠܐ ܐܝܟ ܕܝܠܕܬܐ ܢܐܬܘܢ ܠܗ. ܡܛܠ ܕܒܪܐ ܗܘ ܕܠܐ
12 ܚܟܝܡ. ܡܛܠ ܠܐ ܢܩܘܡ ܒܚܒܠܐ ܕܒܢܝܐ. * ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܫܝܘܠ ܐܦܪܘܩ ܐܢܘܢ. ܘܡܢ ܡܘܬܐ ܐܦܪܩ
13 ܐܢܘܢ. ܐܝܟܘ ܗܝ ܙܟܘܬܟ ܡܘܬܐ. ܐܘ ܐܝܟܘ ܥܘܩܣܟ ܫܝܘܠ. ܒܘܝܐܐ ܢܛܫܐ ܡܢ
14 ܥܝܢܝ. * ܡܛܠ ܕܗܘ ܒܝܬ ܐܚܐ ܢܦܪܫ. ܢܐܬܐ ܡܪܢܚܐ ܪܘܚܗ ܕܡܪܝܐ ܡܢ ܡܕܒܪܐ. ܘܢܚܪܒ
15 ܡܒܘܥܘܗܝ. ܘܢܘܒܫ ܡܥܝܢܘܗܝ. ܘܗܘ ܢܒܘܙ ܣܝܡܬܐ ܕܟܠ ܡܐܢܝܢ ܕܪܓܝܓܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܕ *

1 * ܬܬܚܪܒ ܫܡܪܝܢ. ܡܛܠ ܕܡܪܡܪܬ ܠܐܠܗܗ. ܒܚܪܒܐ ܢܦܠܘܢ. ܘܥܘܠܝܗܘܢ ܢܬܪܛܫܘܢ.
2 ܘܒܛܢܬܗܘܢ ܢܬܨܠܩܢ. * ܐܬܦܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܠܘܬ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ. ܡܛܠ
3 ܕܐܬܬܩܠܬ ܒܥܘܠܟ. * ܣܒܘ ܥܡܟܘܢ ܡܠܐ. ܘܐܬܦܢܘ ܠܘܬ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ.
ܘܐܡܪܘ ܠܗ ܕܢܫܒܘܩ ܠܟܘܢ ܚܛܗܝܟܘܢ. ܘܩܒܠܘ ܛܒܬܐ. ܘܢܦܪܘܥ ܠܟܘܢ ܦܐܪܐ
4 ܕܣܦܘܬܟܘܢ. * ܘܐܡܪܘ. ܐܬܘܪܝܐ ܠܐ ܢܦܪܩܢ. ܘܥܠ ܪܟܫܐ ܠܐ ܢܪܟܒ. ܘܠܐ ܢܐܡܪ ܬܘܒ
5 ܠܥܒܕܐ ܕܐܝܕܝܢ ܐܠܗܢ. ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܡܪܚܡ ܐܢܬ ܥܠ ܝܬܡܐ. * ܐܐܣܐ ܬܝܒܘܬܗܘܢ.
ܘܐܪܚܡ ܐܢܘܢ ܒܡܓܢ. ܘܬܬܦܢܐ ܪܘܓܙܝ ܡܢܗܘܢ.

* Ego ſum Dominus Deus tuus qui extraxi te de terra Ægypti: Deum ullum præter me ne cognoſcito; neque enim eſt qui liberet, niſi ego. 4
Ego te pavi in deſerto in terra inhabitata. 5
Pavi eos, & cùm explevissent ventrem ſuum, elevatum eſt cor eorum; ideò obliti ſunt mei. 6
Et factus ſum eis tanquam leo, & tanquam pardus in via Aſſyriæ. 7
Irruam in eos velut urſus rapax, & lacerabo membranam cordis eorum: & devorabit eos ibi leo, & fera ſylveſtris exenterabit eos. 8
Perdidi te O Iſrael, quis auxiliaretur tibi? 9
Ubi eſt jam rex tuus? liberet te omnéſque urbes tuas: & ubi judex tuus quem petieras à me dicens; Da mihi regem & principem? 10
Dedi tibi regem in ira mea; eúmq; abſtuli in furore meo. 11
Colligata eſt iniquitas Aphremi, & reconditū peccatū ejus. 12
Dolores ut parturientis evenient ei, quia filius eſt minimè ſapiens. Jam verò non permanebit in doloribus filiorū: 13
De manu inferi liberabo eos, & à morte eruā eos. Ubi jam eſt victoria tua, mors? aut ubi eſt ſtimulus tuus, inferne? Conſolatio deliteſcit ab oculis meis. 14
Quoniā ipſe fratres ab invicèm ſeparabit, veniet *ventus* Orientalis, ventus Dñi è deſerto erumpet, vaſtabitq; fontes ejus, & areſaciet ſcaturigines ejus; idémq; diripiet theſaurū ſupellectilium quarumcunq; exquiſitiſſimarum. 15

CAP. XIV.

REa erit Samaria, quòd exaſperaverit Deum ſuum: gladio occumbent, parvuli eorum collidentur, & prægnantes eorum exenterabuntur. 1
Revertere Iſrael, ad Dñm Deum tuum, quoniā impegiſti in iniquitatem tuam. 2
Sumite vobiſcum verba, & revertimini ad Dñm Deum veſtrum, & dicite illi ut dimittat vobis iniquitatem veſtram; & bona ſuſcipite: rependet enim vobis fructus labiorum veſtrorum. 3
Et dicite, Aſſyrius non liberabit nos, & equos non conſcendemus, neque vocabimus in poſterum deos opus manuum noſtrarum: tu enim miſereris pupillorum. 4
Sanam reddam pœnitentiam eorum, & amabo vota eorum, recedétque ira mea ab eis. 5

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

4 * وانا الرب الهك مثبت السماء وخالق الارض* يداي خلقت جميع اجناد السماء* ولم اشهرها
لك لئلا تمضي خلفها* وانا اصعدتك من ارض مصر* والها غيري لم تعرف* ولم يكن مخلص
5 6 سواي * انا رعيتك في البرية* في ارض غير مسكونة * كمراعيهم * وامتلوا شبعا * وارتفعت
7 قلوبهم * من اجل هذا نسوني * فاصير لهم مثل الشبل ومثل النمر في طريق الموصليين *
8 * واستقبلهم مثل الدبة الجايع* واشق حجاب قلبهم* وياكلهم هناك اشبال الغيضة* ويفترسهم
9 10 وحوش الحقل * في فسادك يا اسرائيل من يعينك * اين ملكك هذا * فليخلصك في جميع
11 مدنك * ليحكم لك الذي قلت اعطني ملكا ورئيسا * فاعطيتك ملكا برجزي * وقبضته
12 13 بغضبي * بتصرفه في الظلم* افرام خطيته مكتومة * تاتي له الطلقات مثل التي تلد* هذا
14 ابنك العاقل* من اجل انه لا يقوم في انكسار الاولاد * من يد الجحيم اخلصهم* ومن الموت
15 انقذهم * اين عقوبتك يا موت* اين شوكتك يا جحيم * التعزية حجبت عن عيني * من
اجل ان هذا يفصل بين الاخوة* الرب يجلب ريح سموم من البرية عليه* ويجفف عروقه *
ويخرب ينابيعه* وكل انيته المشتهاة*

* الفصل الرابع عشر *

1 * تهلك سامرة لانها عاندت الهها * بالسيف يسقطون هم * ورضعانهم يضربون بالارض *
وحواملهم يشقون *

* الاصحاح الخامس *

2 3 * ارجع يا اسرائيل الى الرب الهك * من اجل انك ضعفت بظلاماتك * خذوا معكم كلاما *
وارجعوا الى الرب الهكم * وقولوا له كيلا تاخذون ظلما * وتاخذون صلاحا * ونكافي عن
4 شفاهنا * الموصل لا يخلصنا * على الخيل لا نركب* لا نقول بعد الهنا بعمل ايدينا* الذي
5 فيك يرحم يتيما * اشفي بيوتهم * سأحبهم بايتلاف* من اجل اني ارد رجزي عنهم *

* *Ego autem ſum Dominus Deus tuus firmans cœlum, & creans terram: manus meæ creaverunt cunctam cœli militiam, ſed non patefeci eam tibi, ne ſequereris eam: ego etiam eduxi te de terra Ægypti: Deum præter me non cognoviſti, nec alius fuit præter me ſervator:* 4
Ego pavi te in deſerto, in terra inhabitata. 5
Cùm paſti fuiſſent, & ſaturitate repleti, elevata ſunt corda eorum; ideò obliti ſunt mei. 6
Proinde ero illis ſicut catulus leonis, & ſicut pardus in via Aſſyriorum: 7
Et occurram eis velut urſa fame æſtuans, & diſrumpam velum cordis eorum: & devorabunt eos ibi leunculi ſylvæ, & diſcerpent eos beſtiæ campi. 8
In corruptione tua O Iſrael, quis auxiliabitur tibi? 9
Ubi eſt rex iſte tuus? liberet te in cunctis urbibus tuis: judicet tibi is de quo dixiſti, Da mihi regem & principem: 10
Dedique tibi regem in ira mea, & prehendi eum in furore meo, 11
Propter ſceleratam vitæ rationem. Aphremi peccatum ſecretum eſt. 12
Advenient ipſi dolores ut ejus quæ parturit. Hic eſt filius tuus prudens, quia non ſtabit in contritione filiorum. 13
De manu inferi eripiam eos, & à morte liberabo eos. Ubi eſt pœna tua O mors? ubi ſpina tua O inferne? Conſolatio abdidit ſe ab oculis meis, 14
Quoniam iſte ſeparabit fratres. Dominus adducet ventum uredinis è deſerto ſuper eum, & areſaciet radices ejus, vaſtabit fontes ejus & optatiſſima quæque vaſa ipſius. 15

CAP. XIV.

P*Eribit Samaria, quia reſtitit Deo ſuo: gladio corruent ipſi, & lactentes eorum ad humum allidentur, & prægnantes eorum diffindentur.* 1

Textus quintus.

Revertere O Iſrael ad Dominum Deum tuum, quoniam infirmatus es in iniquitatibus tuis. 2
Sumite vobiſcum ſermones, & revertimini ad Dominum Deum veſtrum: dicite illi, ut non recipiatis iniquitatem veſtram, ſed recipiatis bonum: & referemus fructum labiorum noſtrorum. 3
Aſſyria non liberabit nos, equos non conſcendemus, non dicemus deinceps, Dii noſtri ſunt ex opere manuum noſtrarum: qui in te eſt, miſereatur pupilli: 4
Sanabo domos eorum, diligam eos concorditer. Ego enim avertam iram meam ab eis, 5

יואל : א

percutiet & : lilium tanquam germinabit , Israeli ros tanquam Ero
6 אֶהְיֶה כַטַּל לְיִשְׂרָאֵל יִפְרַח כַּשּׁוֹשַׁנָּה וְיַךְ
olea tanquam erit & , ejus *ramuli* *Ibunt* .Libanus tanquam ejus radices
7 שָׁרָשָׁיו כַּלְּבָנוֹן : יֵלְכוּ יוֹנְקוֹתָיו וִיהִי כַזַּיִת
sedentes Revertentur .Libani tanquam ei odor & : ejus gloria
8 הוֹדוֹ וְרֵיחַ לוֹ כַּלְּבָנוֹן : יָשֻׁבוּ יֹשְׁבֵי
ejus *memoria* : vitis sicut *germinabunt* &, triticum vivificabunt, ejus umbra in
בְצִלּוֹ יְחַיּוּ דָגָן וְיִפְרְחוּ כַגֶּפֶן זִכְרוֹ
ego ? *dolores* ad ultrà mihi Quid , Ephraim .Libani vinum sicut
9 כְּיֵין לְבָנוֹן : אֶפְרַיִם מַה־לִּי עוֹד לָעֲצַבִּים אֲנִי
tuus fructus me ex ; *frondosa* abies ut ego : eum respiciam & ,exaudiam
עָנִיתִי וַאֲשׁוּרֶנּוּ אֲנִי כִּבְרוֹשׁ רַעֲנָן מִמֶּנִּי פֶּרְיְךָ
? ista sciet & , intelligens ? ista intelliget & ,sapiens Quis .est inventus
10 נִמְצָא : מִי חָכָם וְיָבֵן אֵלֶּה נָבוֹן וְיֵדָעֵם
: eis in ambulabunt justi & , Domini viæ rectæ quia
כִּי־יְשָׁרִים דַּרְכֵי יְהוָה וְצַדִּקִים יֵלְכוּ בָם
.eis in corruent prævaricatores &
וּפֹשְׁעִים יִכָּשְׁלוּ בָם :

Verſio VULG. LAT.

6 Ero quaſi ros, Iſrael germinabit
ſicut lilium, & erumpet radix e-
7 jus ut Libani. Ibunt rami ejus,
& erit quaſi oliva gloria ejus, &
8 odor ejus ut Libani. Conver-
tentur ſedentes in umbra ejus: vi-
vent tritico, & germinabunt quaſi
vinea : memoriale ejus ſicut vi-
9 num Libani. Ephraim, quid mihi
ultrà idola ? ego exaudiam, &
dirigam eum ego ut abietem vi-
rentem : ex me fructus tuus in-
10 ventus eſt. Quis ſapiens, & in-
telliget iſta ? intelligens, & ſciet
hæc ? quia rectæ viæ Domini, &
juſti ambulabunt in eis : præva-
ricatores verò corruent in eis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

6 Ἔσομαι ὡς δρόσος τῷ Ἰσραὴλ, ἀνθήσει
ὡς κρίνον, ϗ βαλεῖ τὰς ῥίζας αὐτοῦ (δ) ὡς
7 ὁ Λίβανος. Πορεύσονται οἱ κλάδοι αὐτοῦ, ϗ
ἔσται ὡς ἐλαία κατάκαρπος, ϗ ἡ ὀσφρασία
8 αὐτοῦ ὡς Λιβάνου. Ἐπιστρέψουσι ϗ καθιοῦνται
ὑπὸ τὴν σκέπην αὐτοῦ, ζήσονται ϗ μεθυσθή-
σονται σίτῳ· ϗ ἐξανθήσει ὡς ἄμπελος· (ε)
9 μνημόσυνον αὐτοῦ, ὡς οἶνος Λιβάνου. Τῷ
Ἐφραίμ. τί (ζ) αὐτῷ ἔτι ϗ εἰδώλοις; ἐγὼ
ἐταπείνωσα αὐτὸν, ϗ (η) κατισχύσω αὐτόν.
ἐγὼ ὡς ἄρκευθος πυκάζουσα, ἐξ ἐμοῦ ὁ καρ-
10 πός σου εὕρηται. Τίς σοφὸς ϗ συνήσει ταῦ-
τα; ἢ συνετὸς ϗ ἐπιγνώσεται αὐτά; (θ) ὅτι
εὐθεῖαι αἱ ὁδοὶ τοῦ κυρίου, ϗ δίκαιοι πορεύ-
σονται ἐν αὐταῖς, οἱ δὲ ἀσεβεῖς ἀσθενήσουσιν
ἐν αὐταῖς.

MS.A. (δ) ὡς Λίβανος. (ε) τὸ μνημόσυνον (ζ) ἔτι αὐτῷ (η) ἐγὼ
κατισχύσω (θ) διότι ΩΣΗΕ Α'.

Ero quaſi ros Iſrael: florebit, ut li- 6
lium, & mittet radices ſuas, quaſi
Libanus: Ibunt rami ejus: & erit 7
quaſi oliva fructifera, & odor il-
lius, quaſi Libani. Convertentur, 8
& ſedebunt ſub umbra ejus: vi-
vent, et (e) inebriabuntur frumen-
to: & efflorebit, ut vinea; memo-
riale ejus, quaſi vinum Libani E-
phræm. Quid ei ultrà, & idolis? 9
Ego humiliavi eum, & conforta-
bo illum. Ego, ſicut juniperus con-
denſa: ex me fructus tuus inven-
tus eſt. Quis ſapiens, & intelliget 10
hæc? aut intelligens, & cognoſcet
ea? Quia rectæ viæ Domini: &
juſti ambulabunt in eis: qui autem
impii ſunt; infirmabuntur in illis.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

6 יְהֵי מֵימְרִי כְּטַלָּא לְיִשְׂרָאֵל יְזְהֲרוּן כְּשׁוֹשַׁנָּא וְיֶתְבוּן עַל תְּקוֹף אַרְעֲהוֹן כְּאִילָן לִבְנָן
7 דְּמַשְׁלַח עוֹבַרְתֵּיהּ : יִסְגוּן בְּנִין וּבְנָן וִיהֵי כְּזִיו מְנָרַת קוּדְשָׁא וְיֵהוֹן וְרֵיחֲהוֹן כְּרֵיחַ
8 קְטוֹרֶת בּוּסְמַיָּא : יִתְכַּנְּשׁוּן מִבֵּינֵי גָלְוָתְהוֹן יֶתְבוּן בִּטְלַל מְשִׁיחֲהוֹן וְיֵחוּן מֵתַיָּא וְיִסְגֵּי
טוּבָא בְּאַרְעָא יְהֵי דָּכְרָן טַבְוָתְהוֹן עָלֵל וְלָא פָּסֵק כְּדָכְרָן יַבָּבוּת חֲצוֹצְרָתָא עַל חֲמַר
9 עַתִּיק דְּמִתְנַסַּךְ בְּבֵית מַקְדְּשָׁא : יֵימְרוּן דְּבֵית יִשְׂרָאֵל מַה לָנָא עוֹד לְמִפְלַח לְטַעֲוָתָא
אֲנָא בְּמֵימְרִי אֲקַבֵּל צְלוֹתְהוֹן דְּיִשְׂרָאֵל וְאֶרְחַם עֲלוֹהִי אֲנָא בְּמֵימְרִי אַעְבְּדִנֵּיהּ
10 כִּבְרוֹן שַׁפִּירָן דְּמִן קֳדָמַי סְלִיחַ לִתְיוּבְתְּהוֹן מִשְׁתְּכַחָא : מַן חַכִּים דְּיִסְבַּר אִלֵּין סוּכְלְתָן
וְיִדְּעִנּוּן אֲרֵי תַקְּנָן אוֹרְחָתָא דַיָי וְצַדִּיקַיָּא דְּהַלִּיכוּ בְהֵי יֵחוּן בְּהוֹן בְּחַיֵּי עָלְמָא וְרַשִּׁיעַיָּא
יִתְמַסְּרוּן לְגֵיהִנָּם עַל דְּלָא הַלִּיכוּ בְהוֹן :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Erit Verbum meum ſicut ros Iſraeli, ſplendebunt ſicut lilium, & habitabunt 6
in robore terræ ſuæ ſicut arbor Libani quæ diffundit ſuam propaginem.
Accreſcent filiis ac filiabus, & erit ſplendor eorum ſicut ſplendor candela- 7
bri ſanctitatis, & odor eorum velut odor incenſi aromatum. Congrega- 8
buntur de medio captivitatis ſuæ, habitabunt in umbra Chriſti ſui, & vi-
vent mortui, accreſcétque bonum in terra : erit memoriale bonitatis eorum
fructificans & indeficiens juxta ac memoria clangoris tubarum ſuper vino
veteri, quod libari ſolet in domo ſanctuarii. Dicent [*prognati*] domus Iſ- 9
rael, Quid ad nos [*attinet*] ultrà ſervire idolis ? ego in verbo meo ſuſcipiam
orationem Iſrael atque miſerebor ipſius, in verbo meo efficiam illum ſicut
abietem pulchrã, quia à me remiſſio ob pœnitentiam illorũ invenietur. Quis 10
ſapiens, ut conſideret iſta ? prudens, & ipſa percipiat ? equidem rectæ ſunt viæ
Dñi, & juſti qui incedunt per eas, ob ipſaſmet vita vivent ſempiterna. Im-
pii verò tradentur gehennæ, eò quòd non ambulaverunt per illas.

ספר יואל : א

CAP. I. א

.Pethuel filium Joel ad fuit quod Domini Verbum
1 דְּבַר־יְהוָה אֲשֶׁר הָיָה אֶל־יוֹאֵל בֶּן־פְּתוּאֵל :
habitatores omnes percipite auribus & , ſenes hoc Audite
2 שִׁמְעוּ־זֹאת הַזְּקֵנִים וְהַאֲזִינוּ כֹּל יוֹשְׁבֵי
diebus in *ſi* & , veſtris diebus in hoc fuerit an : terræ
הָאָרֶץ הֶהָיְתָה זֹּאת בִּימֵיכֶם וְאִם בִּימֵי
veſtri filii & : narrate veſtris filiis hoc Super .veſtrorum patrum
3 אֲבֹתֵיכֶם : עָלֶיהָ לִבְנֵיכֶם סַפֵּרוּ וּבְנֵיכֶם
Ghazam Reſiduum .alteræ generationi eorum filii & , ſuis filiis
4 לִבְנֵיהֶם וּבְנֵיהֶם לְדוֹר אַחֵר : יֶתֶר הַגָּזָם
, *Jelec* comedit locuſtæ reſiduum & , locuſta comedit
אָכַל הָאַרְבֶּה וְיֶתֶר הָאַרְבֶּה אָכַל הַיָּלֶק
, ebrii Expergiſcimini .chaſil comedit bruchi reſiduum &
5 וְיֶתֶר הַיֶּלֶק אָכַל הֶחָסִיל : הָקִיצוּ שִׁכּוֹרִים
, novum vinum *ſuper* : vinum *bibentes* omnes ululate & , flete &
וּבְכוּ וְהֵילִלוּ כָּל־שֹׁתֵי יָיִן עַל־עָסִיס
ſuper aſcendit gens Nam .veſtro ore ab *eſt exciſum* quoniam
6 כִּי נִכְרַת מִפִּיכֶם : כִּי־גוֹי עָלָה עַל־
, leonis dentes ejus Dentes .*numerus* *non* & , fortis meam terram
אַרְצִי עָצוּם וְאֵין מִסְפָּר שִׁנָּיו שִׁנֵּי אַרְיֵה
, deſolationem in meam vitem Poſuit .ei leonis molares &
7 וּמְתַלְּעוֹת לָבִיא לוֹ : שָׂם גַּפְנִי לְשַׁמָּה
, eam nudavit Nudando .decorticationem in meam ficum &
וּתְאֵנָתִי לִקְצָפָה חָשֹׂף חֲשָׂפָהּ
virgo tanquam *Ulula* .ejus *plicatiles* rami ſunt facti albi : fecit projicere &
8 וְהִשְׁלִיךְ הִלְבִּינוּ שָׂרִיגֶיהָ : אֱלִי כִּבְתוּלָה
eſt Exciſum .*ſuarum pueritiarum patronum* ſuper ſacco accincta
9 חֲגֻרַת־שַׂק עַל־בַּעַל נְעוּרֶיהָ : הָכְרַת
ſacerdotes luxerunt : DOMINI domo de libatio & , *munus*
מִנְחָה וָנֶסֶךְ מִבֵּית יְהוָה אָבְלוּ הַכֹּהֲנִים
.DOMINI miniſtri
מְשָׁרְתֵי יְהוָה :

Verſio VULG. LAT.

PROPHETIA JOEL.

CAP. I.

1 VErbum Domini, quod factum
2 eſt ad Joel filium Phatuel. Audi-
te hoc, ſenes ; & auribus percipi-
te, omnes habitatores terræ : ſi fa-
ctum eſt iſtud in diebus veſtris,
aut in diebus patrum veſtrorum ?
3 Super hoc filiis veſtris narrate, &
filii veſtri filiis ſuis, & filii eorum
4 generationi alteræ. Reſiduum e-
rucæ comêdit locuſta, & reſiduũ
locuſtæ comêdit bruchus, & reſi-
5 duũ bruchi comêdit rubigo. Ex-
pergiſcimini ebrii, & flete, & ulu-
late omnes, qui bibitis vinum in
dulcedine: quoniam periit ab ore
6 veſtro. Gens enim aſcendit ſuper
terram meam, fortis & innume-
rabilis : dentes ejus ut dentes leo-
nis : & molares ejus ut catuli leo-
7 nis. Poſuit vineam meam in de-
ſertum, & ficum meam decorti-
cavit : nudans ſpoliavit eam, &
projecit : albi facti ſunt rami e-
8 jus. Plange quaſi virgo accin-
cta ſacco ſuper virum pubertatis
9 ſuæ. Periit ſacrificium & libatio
de domo Domini : luxerunt ſa-
cerdotes miniſtri Domini.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

ΙΩΗ'Λ Δ'.

ΚΕΦ. α'.

1 Λόγος κυρίου, ὃς ἐγενήθη πρὸς Ἰωὴλ τὸν
2 τοῦ Βαθουήλ. Ἀκούσατε (α) ταῦτα οἱ πρε-
σβύτεροι, ϗ ἐνωτίσασθε πάντες οἱ κατοι-
κοῦντες τὴν γῆν, εἰ γέγονε τοιαῦτα ἐν ταῖς ἡμέ-
ραις ὑμῶν, ἢ ἐν ταῖς ἡμέραις τῶν πατέρων ὑμῶν;
3 Ὑπὲρ αὐτῶν τοῖς τέκνοις ὑμῶν διηγήσα-
σθε, ϗ τὰ τέκνα ὑμῶν τοῖς τέκνοις αὐτῶν,
ϗ τὰ τέκνα αὐτῶν εἰς γενεὰν ἑτέραν.
4 Τὰ κατάλοιπα τῆς κάμπης κατέφαγεν ἡ ἀ-
κρίς, ϗ τὰ κατάλοιπα τῆς ἀκρίδος κατέφα-
γεν ὁ βροῦχος, ϗ τὰ κατάλοιπα τοῦ βρούχου
5 κατέφαγεν ἡ (β) ἐρυσίβη. Ἐκνήψατε οἱ με-
θύοντες ἐξ οἴνου αὐτῶν, ϗ κλαύσατε· θρηνήσα-
τε πάντες οἱ πίνοντες οἶνον εἰς μέθην, ὅτι
(γ) ἐξήρθη ἐκ στόματος ὑμῶν εὐφροσύνη ϗ
6 χαρά. Ὅτι ἔθνος ἀνέβη ἐπὶ τὴν γῆν μου ἰ-
σχυρὸν ϗ ἀναρίθμητον, οἱ ὀδόντες αὐτοῦ ὀ-
δόντες λέοντος, ϗ αἱ μύλαι αὐτοῦ σκύμνου.
7 Ἔθετο τὴν ἄμπελόν μου εἰς ἀφανισμὸν, ϗ τὰς
συκάς μου εἰς συγκλασμόν· ἐρευνῶν ἐξη-
ρεύνησεν (δ) αὐτὴν, ϗ ἔρριψεν· ἐλεύκανε
8 τὰ κλήματα αὐτῆς. Θρήνησον πρὸς με
ὑπὲρ νύμφην περιεζωσμένην σάκκον, ἐπὶ
9 τὸν ἄνδρα αὐτῆς τὸν παρθενικόν. Ἐξῆρται
θυσία ϗ σπονδὴ ἐξ οἴκου κυρίου. πενθεῖτε
οἱ ἱερεῖς οἱ λειτουργοῦντες (ε) θυσιαστηρίῳ
κυρίου,

MS.A. ἸΩΗ'Λ. Δ'. (α) δὴ ταῦτα (β) ἐρισύβη. (γ) ἐξῆρται ἐκ τοῦ
στόματος (δ) ϗ ἔρριψεν· ἐλεύκανεν κλήματα (ε) θυσιαστηρίῳ Ὅτι

JOEL.

CAP. I.

VErbum Domini, quod fa- 1
ctum eſt ad Joel filium Batbuel.
Audite hæc, ſenes; et auribus per- 2
cipite, omnes habitatores terræ : ſi
facta ſunt talia in diebus veſtris,
aut in diebus patrum veſtrorum.
Pro his, filiis veſtris narrate, & 3
filii veſtri filiis ſuis, & filii eo-
rum in generationem alteram.(a)
Reſidua erucæ comêdit locuſta, et 4
reſidua locuſtæ comêdit bruchus,
& reſidua bruchi comêdit rubi-
go. Evigilate, qui ebrii eſtis ex vi- 5
no veſtro, & plorate : plangite o-
mnes, qui bibitis vinum ad ebri-
etatem : quoniam ablatum eſt de
ore veſtro (b) gaudium, & læti-
tia. Quia gens aſcendit ſuper ter- 6
ram meam fortis, & innumerabi-
lis: dentes ejus, dentes leonis, &
molares ejus, catuli leonis. Poſuit 7
vineam meam in diſſipationem, et
ficus meas in confractionem.
Scrutans ſcrutatus eſt eam, &
projecit : dealbavit ramos ejus.
Plange ad me ſuper ſponſam ac- 8
cinctã cilicio ſuper virum ſuum
virgineum. Ablatum eſt ſacrifi- 9
cium, & libatio de domo Do-
mini. Lugete ſacerdotes, (c)
qui miniſtratis altari Domini :

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

1 פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ דַּהֲוָה עִם יוֹאֵל בַּר פְּתוּאֵל : שְׁמַעוּ דָא סָבַיָּא וַאֲצִיתוּ כָּל יָתְבֵי
2
3 אַרְעָא הֲהֲוָת דָּא בְּיוֹמֵיכוֹן וְאִם בְּיוֹמֵי אֲבָהָתְכוֹן : עֲלַהּ לִבְנֵיכוֹן אִשְׁתָּעוּ וּבְנֵיכוֹן לִבְנֵיהוֹן
4 וּבְנֵיהוֹן לְדָר אוֹחֲרָן : מוֹתַר זַחֲלָא אֲכַל גּוֹבָא וּמוֹתַר גּוֹבָא אֲכַל פִּרְחָא וּמוֹתַר פִּרְחָא
5 אֲכַל שְׁמוֹטָא : אִתְּעָרוּ רַוָּיָא וּבְכוּ וְאֵילִילוּ כָּל שָׁתֵי חֲמַר עַל חֲמַר מֵרַת אֲרֵי אִתְמְנַע
6 מִפּוּמְכוֹן : אֲרֵי עַמָּא סְלִיק עַל אַרְעִי תַּקִּיף וְלֵית מִנְיָן שִׁנּוֹהִי שִׁנֵּי אַרְיָא וְנִיבוֹהִי כְּבַר
7 אַרְיָוָן : שַׁוִּי פֵּירֵי גוּפְנֵי עַמִּי לְצָדוּ וְתֵינַתְהוֹן לְמַפְּחַת נְפַשׁ מִקְלַף קְלַף וּרְמָא חֲוַרוּ
8 שִׁבְשָׁהָא : כְּנִשְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל עֲבִידִי אֶלְיָא כִּבְתוּלָא דַּאֲסִירָא סַקָּא לְמִסְפַּד עַל בַּעַל
9 עוּלֵימְתְּהָא : פְּסַקוּ קֻרְבָּנִין וְנִסְכִּין מִבֵּית מַקְדְּשָׁא דַיָי אִתְאַבָּלוּ כַּהֲנַיָּא דִּמְשַׁמְּשִׁין
בְּבֵית מַקְדְּשָׁא דַיָי :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAPUT. I.

VErbum prophetiæ à facie Dñi quod factum eſt ad Joel filium Pathuel. 1
Audite hoc ſenes, & auribus percipite omnes incolæ terræ, num tale fuerit in 2
diebus veſtris , aut diebus majorum veſtrorum. De ipſo filiis veſtris narrate 3
& filii veſtri filiis ſuis, filii demum eorum generationi alii. Reſiduum erucæ 4
comedit locuſta ; & reſiduum locuſtæ corraſit bruchus ; atque reliquias bru-
chi conſumpſit rubigo. Expergiſcimini ebrii, flete & ululate omnes pota- 5
tores vini cauſa vini meri, quoniam vetitum eſt ori veſtro. Etenim populus 6
aſcendit ſup terram meam fortis & innumer9 : dentes ejus, dentes ſunt leonis,
& molares ejus quales catuli leonum. Poſuit fructus vinearum populi mei in 7
vaſtitatem, & ficus eorum in exhalationem animæ decorticando decorticavit,
atque projecit : albi facti ſunt rami ejus. Cœtus Iſrael agite lamentum, 8
veluti virgo quæ accingitur ſacco plangendi gratia ſuper viro adoleſcentiæ
ſuæ. Ceſſaverunt oblationes atque libamina de domo ſanctuarii Domini : 9
ejularunt ſacerdotes miniſtrantes in domo ſanctuarii Domini.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܗܘܐ ܐܝܟ ܛܠܐ ܠܐܝܣܪܝܠ. ܘܢܦܪܥ ܐܝܟ ܫܘܫܢܬܐ. ܘܢܪܡܐ ܥܩܪ̈ܘܗܝ. ܐܝܟ ܕܠܒܢܢ. 6
* ܘܢܬܦܫܛܘܢ ܣܘ̈ܟܘܗܝ. ܘܢܗܘܐ ܐܝܟ ܙܝܬܐ ܕܫܦܝܪܐ ܒܦܐܪ̈ܘܗܝ. ܘܪܝܚܗ ܐܝܟ ܕܠܒܢܢ. 7
* ܘܢܬܦܢܘܢ. ܘܢܬܒܘܢ ܒܛܠܠܗ. ܘܢܚܘܢ ܡܢ ܥܒܘܪܐ. ܘܢܦܪܥܘܢ. ܐܝܟ ܓܦܬܐ. 8
ܘܕܘܟܪܢܗܘܢ. ܐܝܟ ܚܡܪܐ ܕܠܒܢܢ. * ܘܢܐܡܪ ܐܦܪܝܡ. ܡܢܐ ܠܝ ܬܘܒ ܘܠܦܬܟܪ̈ܐ. ܐܢܐ 9
ܡܟܟܬܗ. ܘܐܢܐ ܐܫܒܚܝܘܗܝ. ܐܝܟ ܒܪܘܬܐ ܥܒܝܬܐ. ܡܛܠ ܕܡܢܝ ܐܫܬܟܚܘ ܦܐܪ̈ܝܟ. * ܡܢܘ 10
ܚܟܝܡ ܢܣܬܟܠ ܗܠܝܢ. ܘܡܣܬܟܠ ܘܢܕܥ ܐܢܝܢ: ܡܛܠ ܕܬܪ̈ܝܨܢ ܐܘܪ̈ܚܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܙܕ̈ܝܩܐ
ܢܗܠܟܘܢ ܒܗܝܢ. ܘܥܘ̈ܠܐ ܢܬܬܩܠܘܢ ܒܗܝܢ.
* ܫܠܡ ܗܘܫܥ ܢܒܝܐ *

Et ero ſicut ros Iſraeli, florebitque ſicut li- 6
lium, & radices ſuas jaciet ut Libanicas:
Pullulabunt rami ejus, & erit ſicut olea fru- 7
ctibus ſuis decorata, & odor ejus Libanico
ſimilis. Reædificabuntur, & ſedebunt in 8
umbra ejus, vivent ex frumento, & germina-
bunt ſicut vitis, & memoria eorum ſicut vinũ
Libani. Et dicet Aphrem; Quid mihi am- 9
pliùs cum idolis? Ego humiliavi eum, et ego
glorificabo eum quaſi pinum opacam: nam
ex me inveniuntur fructus tui. Qui ſapiens 10
eſt, intelliget hæc; et qui prudens eſt cogno-
ſcet ea: nam rectæ ſunt viæ Domini, & juſti
ambulant in eis, injuſti verò impingunt in
eis.

Hoſeæ Prophetæ finis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وأصير مثل الندى لاسرائيل * يزهر مثل السوسنة * ويضع اصوله مثل لبنان * تسير اغصانه * 6 7
ويصير مثل الزيتونة المثمر * ورائحته مثل لبنان * يرجعون ويجلسون تحت ظله * ويحيون 8
ويسكرون بالحنطة * يزهر مثل كرمة * ذكره مثل خمر لبنان * لافرام ما له ايضا وللاصنام * 9
انا وضعته وانا اقويه * انا مثل شجرة العرعر المخصبة * مني يوجد ثمرك * من الحكيم 10
فيفهم هذه * او فهم فيعرفها * من اجل ان طرق الرب مستقيمة * والصديقون يسيرون فيها *
والمنافقون يضعفون فيها *

* تمت نبوة هوشع النبي * بركاته تكون معنا * آمين *

Et ero ſicut ros Iſraeli: florebit ſicut lili- 6
um, figetq; radices ſuas ſicut Libanus:
Diffundent ſe rami ejus: & erit ſimilis 7
olivæ frugiferæ, & odor ejus Libano ſi-
milis. Revertentur, & ſedebunt ſub um- 8
bra illius: vivent, & inebriabuntur fru-
mento: florebit ſicut vitis, memoria ejus
ut vinum Libani. Aphremo quid eſt adhuc 9
cum idolis? Ego humiliavi eum, & ego
confortabo eum. Ego ſum ſimilis arbori
cypreſſinæ uberrimæ: ex me invenitur fru-
ctus tuus. Quicunq; ſapiens eſt, intelliget 10
hæc; aut prudens, & cognoſcet ea: nam
viæ Domini rectæ ſunt, & juſti incedunt
in eis, impii verò debilitantur in eis.

Abſoluta eſt Prophetia Hoſeæ
Prophetæ, cujus benedicti-
ones adſint nobis, Amen.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

---

* ܬܘܒ ܢܒܝܘܬܗ ܕܝܘܐܝܠ ܢܒܝܐ *
* ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

* ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܕܗܘܐ ܥܠ ܝܘܐܝܠ ܒܪ ܒܬܘܐܝܠ. * ܫܡܥܘ ܗܕܐ ܩܫܝ̈ܫܐ: ܘܨܘܬܘ ܟܠ 1 2
ܥܡܘܪ̈ܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܐܢ ܗܘܬ ܐܝܟ ܗܕܐ ܒܝܘܡܬ̈ܟܘܢ. ܐܘ ܒܝܘܡܬ̈ ܐܒܗ̈ܝܟܘܢ. * ܐܫܬܥܘ 3
ܠܒܢܝ̈ܟܘܢ. ܘܒܢܝ̈ܟܘܢ ܠܒܢܝ̈ܗܘܢ. ܘܒܢܝ̈ܗܘܢ. ܠܫܪܒܬܐ ܐܚܪܬܐ. * ܕܫܒܩ ܙܚܠܐ: 4
ܡܫܘܬܗ. ܐܟܠ ܩܡܨܐ ܦܪܚܐ. ܘܕܫܒܩ ܙܚܠܐ: ܩܡܨܐ ܦܪܚܐ. ܐܟܠ ܩܡܨܐ ܐܣܠܐ. ܘܕܫܒܩ ܙܚܠܐ:
ܐܣܠܐ. ܐܟܠ ܙܘܙܐ. * ܐܬܬܥܝܪܘ ܪܘ̈ܝܐ: ܘܒܟܘ. ܘܐܝܠܠܘ ܟܠ ܫܬ̈ܝ ܚܡܪܐ: ܥܠ ܚܡܪܐ 5
ܕܐܬܢܣܒ ܡܢ ܦܘܡܟܘܢ. * ܡܛܠ ܕܥܡܐ ܣܠܩ ܠܐܪܥܝ. ܥܫܝܢ. ܘܠܝܬ ܠܗ ܡܢܝܢ. 6
ܫܢ̈ܘܗܝ ܐܝܟ ܫܢ̈ܝ ܐܪܝܐ. ܘܢܝ̈ܒܘܗܝ. ܐܝܟ ܢܝ̈ܒܐ ܕܓܘܪܝܐ ܕܐܪܝܐ. * ܣܡܗ ܠܓܦܬܝ 7
ܠܚܘܪܒܐ. ܘܬܐܬܝ ܠܩܨܝܦܐ. ܦܫܚܗ ܘܫܕܝܗ. ܘܚܘܪ ܫܒܘ̈ܫܝܗ. * ܐܠܝ. ܐܝܟ ܒܬܘܠܬܐ 8
ܕܚܓܝܪܐ ܣܩܐ ܥܠ ܒܥܠܐ ܕܛܠܝܘܬܗ. * ܒܛܠ ܣܡܝܕܐ ܘܢܘܩܝܐ. ܡܢ ܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܝܬܒܘ 9
ܒܐܒܠܐ ܡܠܟ̈ܐ. ܘܟܗ̈ܢܐ ܕܡܫܡܫܝܢ ܠܡܪܝܐ.

SEQUITUR PROPHETIA

JOELIS PROPHETÆ.

CAP. I.

SErmo Domini qui fuit ad Joëlem filium 1
Bethuelis. Audite hoc Sacerdotes, & auſcul- 2
tate omnes incolæ terræ, num contigerit
quicquam ſimile in diebus veſtris aut diebus
patrum veſtrorum. De hoc narrate filiis ve- 3
ſtris, & filii veſtri filiis ſuis, & horum filii
generationi poſteræ. Quod reliquum fecit 4
eruca, comêdit locuſta volans; quod reli-
quum fecit locuſta volans, comêdit locuſta
reptans; & quod reliquum fecit locuſta re-
ptans, comêdit gryllus. Expergiſcimini ebrii, 5
& flete, ac ejulate omnes vini potores, pro-
pter vinum, quòd tranſierit ab ore veſtro.
Nam populus invaſit terram meam, potens 6
& innumerus, cujus dentes ſimiles ſunt den-
tibus leonis, & canini ejus ſimiles caninis ca-
tuli leonis. Redegit vitim meam ad vaſti- 7
tatem, & ficum meam ad divulſionem: di-
vulſit & abjecit eam, & alba reddidit flagel-
la ejus. Ejula ſicut virgo accincta ſacco 8
propter maritum adoleſcentiæ ſuæ. Deſiit ſi- 9
mila & libamen de domo Dñi: ſederunt in lu-
ctu reges, & ſacerdotes qui Dño miniſtrant.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بسم الله الرؤوف الرحيم * * بدو ترجمة يوييل النبي بركاته علينا *
* الفصل الاول * * الاصحاح السادس * وهو الاول من النبوة *

* قول الرب الذي صار الى يوييل بن باثوييل * اسمعوا هذه ايها الشيوخ * وانصتوا يا جميع 1 2
سكان الارض * هل صارت هذه في ايامكم * او في ايام ابائكم * اخبروا عنها لاولادكم * واولادكم 3
لاولادهم * واولادهم لجيل اخر * الذي فضل عن الدود اكله الجراد * والذي فضل عن 4
الجراد * اكله الجندب * والذي فضل عن الجندب اكله القمل * استيقظوا ايها السكارى 5
من خمرهم وابكوا نوحوا يا جميع شاربي الخمر للسكر * ان السرور والفرح نزعا عن فمكم * لان 6
امة قوية وغير محصاة صعدت على ارضي * اسنانها اسنان اسد * وانيابها انياب شبل * وضعت 7
كرمي للفناء * وتيني للتفسيح * فتش تفتيشا وطرحها * ابيضت قضبانها * نوحي على اكثر 8
من عروس اتزرت بالمسوح على رجلها العذروي * انتزعت الذبيحة والقارورة من بيت الرب * 9
احزنوا ايها الكهنة الذين يخدمون المذبح لانه شقي *

IN NOMINE DEI PIISSIMI,
CLEMENTISSIMI.
Principium interpretationis
JOELIS PROPHETÆ,
CUJUS BENEDICTIONES
ſint ſuper nos.

CAPUT PRIMUM.

Textus ſextus, qui eſt hujus
Prophetiæ primus.

SErmo Domini qui factus eſt ad Joë- 1
lem filiũ Bathuelis. Audite hæc O ſenes, 2
& auſcultate O omnes habitatores terræ,
num acciderint hæc in diebus veſtris,
aut in diebus patrum veſtrorum. De his 3
narrate filiis veſtris, & filii veſtri filiis
ſuis, & filii iſtorum poſteritati alteri. Re- 4
ſiduum vermium comêdit locuſta, reſi-
duum locuſtæ comêdit bruchus, & reſi-
duum bruchi comederunt pediculi. Evigi- 5
late O ebrii, ex vino veſtro, & flete; plan-
gite O omnes bibentes vinum ad ebrieta-
tem: quia gaudium & lætitia ablata ſunt
ab ore veſtro. Gens enim robuſta & in- 6
numera aſcendit ſuper terram meam;
dentes ejus dentes leonis, & canini ejus
canini leunculi. Redegit vitim meam ad 7
conſumptionem, & ficus meas ad diſcer-
ptionem: diligenter ſcrutata eſt & de-
jecit eas, albi facti ſunt rami earum.
Lamentare me pluſquam ſponſa accincta 8
cilicio propter virum ſuum virgineum.
Ablatum eſt ſacrificium & alabaſtrum, 9
è domo Domini. Dolete O ſacerdotes qui
miniſtratis altari, quoniã id afflictum eſt.

יואל: ב

,triticum eſt devaſtatum quia : humus *luxit* , ager eſt Vaſtatus
10 שֻׁדַּד שָׂדֶה אָבְלָה אֲדָמָה כִּי שֻׁדַּד דָּגָן

,agricolæ vos afficite Pudore .*recens* oleum eſt *infirmatum* ,*muſtum* aruit
11 הוֹבִישׁ תִּירוֹשׁ אֻמְלַל יִצְהָר׃ הֹבִישׁוּ אִכָּרִים

meſſis periit quia : hordeum *ſuper* &,frumentum ſuper vinitores ululate
הֵילִילוּ כֹּרְמִים עַל־חִטָּה וְעַל־שְׂעוֹרָה כִּי־אָבַד קְצִיר

etiam,malogranatum : eſt *infirmata* ficus & , aruit Vitis .agri
12 שָׂדֶה׃ הַגֶּפֶן הוֹבִישָׁה וְהַתְּאֵנָה אֻמְלָלָה רִמּוֹן גַּם־

à gaudium aruit quia , aruerunt agri *ligna omnia* ,malus &,palma
תָּמָר וְתַפּוּחַ כָּל־עֲצֵי הַשָּׂדֶה יָבֵשׁוּ כִּי־הֹבִישׁ שָׂשׂוֹן מִן־

ululate , ſacerdotes plangite & ,vos Accingite .hominum filiis
13 בְּנֵי אָדָם׃ חִגְרוּ וְסִפְדוּ הַכֹּהֲנִים הֵילִילוּ

: mei Dei miniſtri ſaccis in *pernoctate* ,ingredimini , altaris miniſtri
מְשָׁרְתֵי מִזְבֵּחַ בֹּאוּ לִינוּ בַשַּׂקִּים מְשָׁרְתֵי אֱלֹהָי

.libatio & , *munus* veſtri Dei domo de eſt prohibitum quoniam
כִּי נִמְנַע מִבֵּית אֱלֹהֵיכֶם מִנְחָה וָנָסֶךְ׃

habitatores omnes ,ſenes *colligite* ,*retentionem* vocate ,jejunium Sanctificate
14 קַדְּשׁוּ־צוֹם קִרְאוּ עֲצָרָה אִסְפוּ זְקֵנִים כֹּל יֹשְׁבֵי

.Dominum ad clamate & : veſtri Dei Domini domum terræ
הָאָרֶץ בֵּית יְהוָה אֱלֹהֵיכֶם וְזַעֲקוּ אֶל־יְהוָה׃

vaſtitas tanquam & , Domini dies propè quia : diei Ahah
15 אֲהָהּ לַיּוֹם כִּי קָרוֹב יוֹם יְהוָה וּכְשֹׁד

,eſt excisa eſca noſtris oculis coram Nónne .veniet Omnipotente ab
16 מִשַּׁדַּי יָבוֹא׃ הֲלֹא נֶגֶד עֵינֵינוּ אֹכֶל נִכְרָת

grana Computruerunt ? exultatio & , lætitia noſtri Dei domo de
17 מִבֵּית אֱלֹהֵינוּ שִׂמְחָה וָגִיל׃ עָבְשׁוּ פְרֻדוֹת

quoniã :horrea ſunt diſſipata ,theſauri ſunt deſolati , *ſuis glebis* ſub
תַּחַת מֶגְרְפֹתֵיהֶם נָשַׁמּוּ אֹצָרוֹת נֶהֶרְסוּ מַמְּגֻרוֹת כִּי

greges ſunt confuſi , *jumentum ingemuit* Cur .triticum aruit
18 הֹבִישׁ דָּגָן׃ מַה־נֶּאֶנְחָה בְהֵמָה נָבֹכוּ עֶדְרֵי

.ſunt deſolati *pecoris* greges Etiam .eis paſcua non quia , *bovis*
בָקָר כִּי אֵין מִרְעֶה לָהֶם גַּם־עֶדְרֵי הַצֹּאן נֶאְשָׁמוּ׃

,deſerti *herbiſera loca* conſumpſit ignis quia ,clamabo Domine te Ad
19 אֵלֶיךָ יְהוָה אֶקְרָא כִּי־אֵשׁ אָכְלָה נְאוֹת מִדְבָּר

animalia Etiam .agri *ligna omnia* ſuccendit flamma &
20 וְלֶהָבָה לִהֲטָה כָּל־עֲצֵי הַשָּׂדֶה׃ גַּם־בַּהֲמוֹת

,aquarum rivi ſunt exſiccati quoniam : te ad *vociferabitur* agri
שָׂדֶה תַּעֲרוֹג אֵלֶיךָ כִּי יָבְשׁוּ אֲפִיקֵי מָיִם

.deſerti paſcua conſumpſit ignis &
וְאֵשׁ אָכְלָה נְאוֹת הַמִּדְבָּר׃

CAP. II. ב

.*meæ ſanctitatis* monte in taratantarizate & ,Sijon in tuba Clangite
1 תִּקְעוּ שׁוֹפָר בְּצִיּוֹן וְהָרִיעוּ בְּהַר קָדְשִׁי

quia,Domini dies venit quia , terræ habitatores omnes Contremiſcant
יִרְגְּזוּ כֹּל יֹשְׁבֵי הָאָרֶץ כִּי־בָא יוֹם־יְהוָה כִּי

,*obſcuritatis* & ,nubis dies ,caliginis & *tenebroſitatis* Dies .*propinqua*
2 קָרוֹב׃ יוֹם חֹשֶׁךְ וַאֲפֵלָה יוֹם עָנָן וַעֲרָפֶל

ille ſicut ; fortis & ,multus populus : montes ſuper expanſa aurora veluti
כְּשַׁחַר פָּרֻשׂ עַל־הֶהָרִים עַם רַב וְעָצוּם כָּמֹהוּ

annos ad uſque addet non eum poſt & , ſeculo à fuit non
לֹא נִהְיָה מִן־הָעוֹלָם וְאַחֲרָיו לֹא יוֹסֵף עַד־שְׁנֵי

, ignis *comedit* ejus *facies Ad* .generationis & , generationis
3 דּוֹר וָדוֹר׃ לְפָנָיו אָכְלָה אֵשׁ

,*ejus facies ad* terra Heden hortus Tanquam .flamma exuret eũ poſt &
וְאַחֲרָיו תְּלַהֵט לֶהָבָה כְּגַן־עֵדֶן הָאָרֶץ לְפָנָיו

.ei erit non *evaſio* etiam & ,ſolitudinis deſertum eum poſt &
וְאַחֲרָיו מִדְבַּר שְׁמָמָה וְגַם־פְּלֵיטָה לֹא־הָיְתָה לּוֹ׃

,current ſic,equites tanquã & : ejus aſpectus equorum aſpectꝰ Tanquam
4 כְּמַרְאֵה סוּסִים מַרְאֵהוּ וּכְפָרָשִׁים כֵּן יְרוּצוּן׃

Verſio VULG. LAT.

10 Depopulata eſt regio, luxit humus:
quoniam devaſtatum eſt
triticum, confuſum eſt vinum, elanguit
11 oleum. Confuſi ſunt agricolæ,
ululaverunt vinitores ſuper
frumento & hordeo, quia periit
12 meſſis agri. Vinea confuſa eſt,&
ficus elanguit: malogranatum,&
palma, & malum, & omnia ligna
agri aruerunt: quia confuſum
eſt gaudium à filiis hominum.
13 Accingite vos, & plangite,
ſacerdotes; ululate,miniſtri altaris:
ingredimini,cubate in ſacco,
miniſtri Dei mei: quoniam
interiit de domo Dei veſtri ſacrificium
14 & libatio. Sanctificate
jejunium, vocate cœtum, congregate
ſenes,omnes habitatores terræ
in domum Dei veſtri: & clamate
15 ad Dominum; A,a,a, diei:
quia propè eſt dies Domini,
& quaſi vaſtitas à Potente veniet.
16 Numquid non coram oculis veſtris
alimenta perierunt de domo
Dei noſtri, lætitia & exultatio?
17 Computruerunt jumenta in ſtercore
ſuo, demolita ſunt horrea,
diſſipatæ ſunt apothecæ: quoniam
confuſum eſt triticum. Quìd
18 ingemuit animal, mugierunt greges
armenti? Quia non eſt paſcua
eis: ſed & greges pecorum
19 diſperierunt. Ad te, Domine,
clamabo: quia ignis comêdit ſpecioſa
deſerti, & flamma ſuccendit
20 omnia ligna regionis. Sed
& beſtiæ agri, quaſi area ſitiens
imbrem, ſuſpexerunt ad te: quoniam
exſiccati ſunt fontes aquarum,
& ignis devoravit ſpecioſa
deſerti,

CAP. II.

1 CAnite tubâ in Sion, ululate
in monte ſancto meo,conturbentur
omnes habitatores terræ:
Quia venit dies Domini, quia
2 propè eſt Dies tenebrarum &
caliginis, dies nubis & turbinis:
quaſi manè expanſum ſuper montes
populus multus & fortis: ſimilis
ei non fuit à principio, &
poſt eum non erit uſque in annos
3 generationis & generationis. Ante
faciem ejus ignis vorans, &
poſt eum exurens flamma: quaſi
hortus voluptatis terra coram eo,
& poſt eum ſolitudo deſerti, neq;
4 eſt qui effugiat eum. Quaſi aſpectus
equorum, aſpectus eorum:
& quaſi equites,ſic current.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

10 Ὅτι τεταλαιπώρηκε τὰ πεδία· πενθείτω
ἡ γῆ, ὅτι τεταλαιπώρηκε σῖτος· ἐξηράνθη
11 οἶνος, ὠλιγώθη ἔλαιον, Ἐξηράνθησαν
(ζ) γεωργοί. θρηνεῖτε κτήματα
ὑπὲρ πυροῦ καὶ κριθῆς, ὅτι ἀπόλωλε τρυγητὸς
12 ἐξ ἀγροῦ. Ἡ ἄμπελος ἐξηράνθη, καὶ
αἱ συκαῖ ὠλιγώθησαν· ῥοὰ, καὶ φοίνιξ, καὶ
μῆλον, καὶ πάντα τὰ ξύλα τοῦ ἀγροῦ ἐξηράνθησαν,
ὅτι ᾔσχυναν χαρὰν οἱ υἱοὶ τῶν ἀνθρώπων.
13 Περιζώσασθε καὶ κόπτεσθε οἱ ἱερεῖς,
θρηνεῖτε οἱ λειτουργοῦντες θυσιαστηρίῳ· (*) εἰσέλθετε,
ὑπνώσατε ἐν σάκκοις λειτουργοῦντες
θεῷ, ὅτι ἀπέσχηκεν ἐξ οἴκου θεοῦ ὑμῶν
14 θυσία καὶ σπονδή. Ἁγιάσατε νηστείαν, κηρύξατε
θεραπείαν, συναγάγετε πρεσβυτέρους,
πάντας κατοικοῦντας γῆν εἰς οἶκον (η) θεοῦ ὑμῶν,
καὶ κεκράξατε πρὸς κύριον ἐκτενῶς, (θ)
15 Οἴμοι, οἴμοι, οἴμοι εἰς ἡμέραν, ὅτι ἐγγὺς ἡ
ἡμέρα κυρίου, καὶ ὡς ταλαιπωρία ἐκ ταλαιπωρίας
16 ἥξει. Κατέναντι τῶν ὀφθαλμῶν
ὑμῶν βρώματα (ι) ἐξωλοθρεύθη, ἐξ οἴκου
17 θεοῦ ὑμῶν εὐφροσύνη καὶ χαρά. Ἐσκίρτησαν
δαμάλεις ἐπὶ ταῖς φάτναις αὐτῶν, ἠφανίσθησαν
θησαυροὶ, κατεσκάφησαν ληνοὶ,
ὅτι ἐξηράνθη σῖτος. τί ἀποθήσομεν ἑαυτοῖς;
18 Ἔκλαυσαν βουκόλια βοῶν, ὅτι οὐχ
ὑπῆρχε νομὴ αὐτοῖς, καὶ τὰ ποίμνια τῶν
19 προβάτων (κ) ἠφανίσθησαν. Πρὸς σὲ κύριε
βοήσομαι, ὅτι πῦρ ἀνήλωσε τὰ ὡραῖα
τῆς ἐρήμου, καὶ φλὸξ ἀνῆψε πάντα τὰ ξύλα
20 τοῦ ἀγροῦ, Καὶ τὰ κτήνη τοῦ πεδίου (λ)
ἀνέβλεψαν πρὸς σὲ, (μ) ὅτι ἐξηράνθησαν
ἀφέσεις ὑδάτων, καὶ πῦρ κατέφαγε τὰ ὡραῖα
τῆς ἐρήμου.

Quoniam deſolati ſunt campi: 10
lugeat terra, quoniam afflictum
eſt triticum ,aruit vinum, imminutum
eſt oleum, Aruerunt agricolæ. 11
Lugete poſſeſſiones pro
frumento, & hordeo; quia periit
vindemia de agro. Vinea aruit, 12
& ficus imminutæ ſunt. Malogranatum,
& palma, & malum,
& omnia ligna agri arefacta
ſunt: quoniam confuderunt gaudium
filii hominum. Accingite 13
vos, & plangite, ſacerdotes; lamentamini,
qui miniſtratis altari:
ingredimini,dormite in ſaccis,miniſtri
Dei: quoniam defecit de
domo Dei veſtri ſacrificium, &
libatio. Sanctificate jejunium, 14
prædicate (d) curationem, congregate
ſenes, omnes habitatores
terræ in domum Dei veſtri, &
clamate ad Dominum vehementer,
Heu mihi,heu mihi,heu mihi 15
in die: quoniam juxta eſt dies
Domini,& quaſi miſeria de miſeria
veniet. (e) Ante oculos veſtros 16
alimenta perierunt,de domo
Dei noſtri lætitia & gaudium.
Subſultaverunt vituli in præſepibus 17
ſuis, diſſipati ſunt theſauri,
ſuffoſſa ſunt torcularia: Quia
arefactum eſt triticum,quid reponemus
nobis? Fleverunt armenta 18
boum, quia non erant paſcua
eis: & greges ovium diſperierunt.
Ad te, Domine, clamabo: 19
quoniam ignis conſumpſit ſpecioſa
deſerti, & flamma ſuccendit
omnia ligna agri: Et jumenta 20
campi (f) ſuſpexerunt ad te: quoniam
arefactæ ſunt emiſſiones
aquarum, & ignis devoravit
ſpecioſa deſerti.

MS.A. (ζ) οἱ γεωργοί. (*) εἰσέλθατε, (η) κυρίου θεοῦ (θ) Οἴμμοι, οἴμμοι,
οἴμμοι (ι) ἐξολεθρεύθη, (κ) ἠφανίσθη. (λ) ἀνέβλεψεν (μ) ἐξηράνθησαν

ΚΕΦ. β'.

1 ΣΑλπίσατε σάλπιγγι ἐν Σιὼν, κηρύξατε
ἐν ὄρει ἁγίῳ μου, καὶ (α) συγχυθήτωσαν
πάντες οἱ κατοικοῦντες τὴν γῆν, διότι
2 πάρεστιν (β) ἡμέρα κυρίου, ὅτι ἐγγὺς (γ) Ἡμέρα
σκότους καὶ γνόφου, ἡμέρα νεφέλης καὶ
ὁμίχλης· ὡς ὄρθρος χυθήσεται ἐπὶ τὰ
ὄρη λαὸς πολὺς καὶ ἰσχυρὸς, ὅμοιος (*) αὐτῷ οὐ
γέγονεν ἀπὸ τοῦ αἰῶνος, καὶ μετ' αὐτὸν οὐ
προστεθήσεται ἕως ἐτῶν εἰς γενεὰς γενεῶν.
3 Τὰ ἔμπροσθεν αὐτοῦ πῦρ ἀναλίσκον, καὶ τὰ
(δ) ὀπίσω αὐτοῦ ἀναπτομένη φλόξ. ὡς παράδεισος
τρυφῆς ἡ γῆ πρὸ προσώπου αὐτοῦ,
καὶ τὰ ὄπισθεν αὐτοῦ πεδίον ἀφανισμοῦ, καὶ
4 ἀνασωζόμενος οὐκ (ε) ἔσται αὐτῷ. Ὡς ὅρασις
ἵππων (ζ) ἡ ὅρασις αὐτῶν, καὶ ὡς ἱππεῖς
οὕτως καταδιώξονται.

CAP. II.

CAnite tubâ in Sion, prædicate 1
in monte ſancto meo:
& conturbentur omnes habitatores
terræ: quoniam adeſt dies
Domini: quoniam juxta eſt
Dies tenebrarum & caliginis, 2
dies nubis,& nebulæ: ſicut manè
fundetur ſuper montes: populus
multus, & fortis: ſimilis ei non
fuit à ſeculo: & poſt eum non
(a) adjicietur uſque ad annos in
(b) generationes generationum.
(c) Quæ ante eum, conſumens 3
ignis; & quæ poſt eum, flamma
ſuccenſa. Sicut paradiſus voluptatis
terra ante faciem ejus:
& poſteriora illius,[ſicut]campꝰ
ſolitudinis: &, qui ſalvetur,non
erit ei. Sicut aſpectus equorum, 4
aſpectus eorum: & ſicut
equites,ſic perſequentur.

MS.A. (α) συναχθήτωσαν (β) ἡ ἡμέρα τοῦ κυρίου, (γ) ἡ ἡμέρα τοῦ κυρίου, Ἡ
ἡμέρα. (*) αὐτοῦ (δ) ὄπισθεν (ε) ἔστιν. Ὡς ὅρασις (ζ ἡ ὄψις αὐτῶν, καὶ οἱ ἱππεῖς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 אִתְבְּזִיזוּ חַקְלַיָּא חֲרוּבַת אַרְעָא אֲרֵי סָף עֲבוּרָא יְבִישׁוּ גוּפְנַיָּא נְתַרוּ זֵיתַיָּא׃ בְּהִיתוּ
11 אִכָּרַיָּא אֲלִילוּ מְפַלְחֵי כַרְמַיָּא עַל חִטִּין וְעַל סַעֲרִין אֲרֵי סָף חֲצַד חַקְלָא׃ גּוּפְנַיָּא יְבִישׁוּ 12
וְתֵינַיָּא נְתַרָא רִמּוֹנִין אַף דִּקְלִין וְחִזּוּר כָּל אִילָנֵי חַקְלָא יְבִישׁוּ אֲרֵי פְּסַקַת חֶדְוְתָא מִבְּנֵי
13 אֱנָשָׁא׃ אֱסַרוּ וּסְפִידוּ כַּהֲנַיָּא אַיְלִילוּ דִּמְשַׁמְּשִׁין עַל מַדְבְּחָא עוּלוּ בִּיתוּ בְּסַקַּיָּא
14 דִּמְשַׁמְּשִׁין קֳדָם אֱלָהִי אֲרֵי אִתְמְנַע מִבֵּית מַקְדְּשָׁא דֶאֱלָהֲכוֹן קוּרְבָּנִין וְנִסְכִּין׃ גְּזַרוּ
תַּעֲנִי עֲרָעוּ כְנִישָׁא כְּנִישׁוּ סָבַיָּא כֹּל יָתְבֵי אַרְעָא וְעוּלוּ לְבֵית מַקְדְּשָׁא דַיְיָ אֱלָהֲכוֹן וְצַלּוּ
15 קֳדָם יְיָ׃ וַי מִן קֳדָם יוֹמָא אֲרֵי קָרִיב יוֹמָא דַעֲתִיד לְמֵיתֵי מִן קֳדָם יְיָ וּכְבִזָּא דְמִן קֳדָם יְיָ
16 שַׁדַּי יֵיתֵי׃ הֲלָא עוֹד דַּאֲנַחְנָא חָזַן עֲבוּרָא סָף פְּסַק מִבֵּית מַקְדְּשָׁא דֶאֱלָהָנָא חֶדְוָא
17 וּבִיעַ׃ אִתְמְסִיאוּ גַרְבֵי חֲמַר תְּחוֹת מְגוּפָתְהוֹן צְדִיאוּ אוֹצְרַיָּא אִתְפַּגַּרוּ חַסְנַיָּא אֲרֵי סָף
18 עֲבוּרָא׃ לַחֲדָא מִתְאַנְחָא בְעִירָא מִתְעַרְבְּלָן בַּקְרָן דְּתוֹרִין אֲרֵי לֵית רַעְיָא לְהוֹן אַף
19 עֶדְרֵי עָנָא צְדִיאָה׃ קֳדָמָךְ יְיָ אֲנָא מְצַלֵּי אֲרֵי קְדוּם תַּקִּיף כְּאֶשָּׁא אֲסֵף דִּירַת מַדְבְּרָא
20 וְשַׁלְהוֹבִיתָא שֵׁיצָאַת כָּל אִילָנֵי חַקְלָא׃ אַף חֵיוַת בָּרָא מְסַבְּרָא קֳדָמָךְ אֲרֵי יְבִישׁוּ
פַּצִידֵי מַיָּא וּקְדוּם תַּקִּיף כְּאֶשָּׁא אֲסֵף דִּירַת מַדְבְּרָא׃

ב

1 תִּקְעוּ שׁוֹפָרָא בְּצִיּוֹן יַבִּיבוּ בְּטוּר קוּדְשִׁי יְזוּעוּן כָּל יָתְבֵי אַרְעָא אֲרֵי מְטָא יוֹמָא לְמֵיתֵי
2 מִן קֳדָם יְיָ אֲרֵי קָרִיב׃ יוֹם חֲשׁוֹךְ וְקַבְלָא יוֹם עֲנָנָא וַאֲמִטְתָּא כִּנְהוֹר צַפְרָא פְּרִיס עַל
טוּרַיָּא עַם סַגִּי וְתַקִּיף דִּכְוָתֵיהּ לָא הֲוָה מִן עָלְמָא וּבָתְרוֹהִי לָא יוֹסִיף עַד שְׁנֵי דָר וְדָר׃
3 קֳדָמוֹהִי אָכְלָא אֶשָּׁתָא וּבָתְרוֹהִי מְשֵׁיצְיָא שַׁלְהוֹבִיתָא כְּגִנְּתָא דְעֵדֶן אַרְעָא קֳדָמוֹהִי
4 וּבָתְרוֹהִי מַדְבַּר צְדוּ וְאַף שֵׁיזָבָא לֵית לֵיהּ לְרַשִׁיעַיָּא׃ כְּחֵיזוּ סוּסְוָתָא חֶזְוֵיהוֹן וּכְפָרָשַׁיָּא
כֵּן רָהֲטִין׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Vaſtati ſunt agri, deſolata eſt terra,quoniam conſumptum eſt frumentum,aruerunt 10
vites, defluxerunt olivæ. Pudore ſuffundimini agricolæ, ululate cultores 11
vinearum propter triticum & hordeum, periit enim meſſis agri. Vites 12
aruerunt, & ficus decidêre, maláque granata, ſimiliter palmæ, *malus*,atq;
univerſæ arbores agri exaruerunt: profectò deſiit gaudium à filiis hominum.
Accingite vos & plangite ſacerdotes, ululate qui miniſterio fungimini ſuper 13
altari: ingredimini,excubate in ſaccis qui miniſtratis coram Deo meo, ſiquidem
prohibitæ ſunt à domo ſanctuarii Dei veſtri oblationes ac libamina.Decernite 14
jejuniũ,convocate cœtum,congregate ſenes omnes habitatores terræ,
& introite in domum ſanctuarii Domini Dei veſtri, atque precemini coram
Domino. Væ à conſpectu diei; prope fit enim dies, qui venturus eſt à facie 15
Domini, qui ſicut vaſtitas à facie Omnipotentis veniet. *Nónne* adhuc ſpe- 16
ctantibus nobis frumentum deſiit, defecit à domo ſanctuarii Dei noſtri gaudium
& exultatio? Computruerunt dolia vini ſub operculis ſuis, deſtructa 17
ſunt cellaria, diruta ſunt horrea,defecit námque frumentum. Magnopere in- 18
gemiſcit animal;coarctantur boum armenta, quod non ſit paſcuum eis:greges
quoque ovium confecti ſunt. Coram te Domine ego oro, quia incendium ve- 19
hemens ſicut ignis, diſperdidit habitacula deſerti, & flamma conſumpſit
omnes arbores agri. Quin etiam beſtiæ agreſtes ſpectant coram te,quòd ex- 20
ſiccati ſint rivi aquarũ, & æſtus fortis ſicut ignis conſũpſit habitacula deſerti.

CAP. II.

CLangite tuba in Sion, vociferamini in monte ſanctitatis meæ: contremi- 1
ſcant omnes habitatores terræ, quia contigit dies qui venturus eſt à facie Do-
mini, jam [*inquam*] inſtat. Dies tenebrarum & caliginis,dies nubiloſa atque 2
tenebricoſa. Quemadmodum lux matutina quæ expanditur ſuper montes,po-
pulus multiplex & potens qualis haud fuit unquam, nec poſtea redintegrabi-
tur in annos generationis atque generationis. Ante eum voravit ignis,& poſt 3
eum conſumpſit flamma: quaſi paradiſus voluptatis erat terra coram eo,&
poſt eum, deſertum vaſtitas, ſed nec liberatio eſt impiis in eo. Qualis viſio 4
equorum, talis eorum aſpectus; et ſicut equites ita currunt.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

10 * ܐܬܒܙܬ ܚܩܠܐ܂ ܘܝܬܒܬ ܒܐܒܠܐ ܐܪܥܐ܂ ܡܛܠ ܕܐܬܒܙܬ ܥܒܘܪܐ܂ ܘܝܒܫ ܚܡܪܐ܂ ܘܐܬܚܪܒܘ
ܙܝܬܐ܂ * ܒܗܬܘ ܐܟܪܐ܂ ܘܐܝܠܠܘ ܟܪܡܐ܂ ܥܠ ܚܛܐ ܘܥܠ ܣܥܪܐ܂ ܕܐܒܕ ܚܨܕܐ ܕܚܩܠܐ܂ 11
12 * ܓܦܬܐ ܝܒܫܬ܂ ܘܬܐܬܐ ܚܪܒܬ܂ ܘܪܘܡܢܐ ܘܕܩܠܐ ܘܚܙܘܪܐ܂ ܘܟܠܗܘܢ ܐܝܠܢܝ ܕܚܩܠܐ
ܝܒܫܘ܂ ܡܛܠ ܕܐܘܒܫ ܚܕܘܬܐ ܡܢ ܒܢܝ ܐܢܫܐ܂ * ܟܗܢܐ ܐܬܥܛܦܘ ܣܩܐ܂ ܘܐܪܩܕܘ ܘܐܝܠܠܘ 13
ܡܫܡܫܢܐ ܕܡܕܒܚܐ: ܥܘܠܘ ܒܘܬܘ ܒܣܩܐ ܡܫܡܫܢܘܗܝ ܕܐܠܗܝ܂ ܡܛܠ ܕܐܬܟܠܝ ܡܢ
ܒܝܬܗ ܕܐܠܗܟܘܢ܂ ܩܘܪܒܢܐ ܘܢܘܣܟܐ܂ * ܩܕܫܘ ܨܘܡܐ܂ ܩܪܘ ܟܢܘܫܬܐ܂ ܐܬܟܢܫܘ ܩܫܝܫܐ 14
ܘܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ ܕܐܪܥܐ܂ ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ܂ ܘܩܥܘ ܠܘܬ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ܂
ܘܐܡܪܘ܂ * ܐܘܗ ܐܘܗ ܠܝܘܡܐ܂ ܡܛܠ ܕܩܪܝܒ ܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ܂ ܘܒܙܬܐ ܡܢ ܠܘܬ ܡܪܝܐ ܐܬܝܐ܂ * ܘܗܐ 15 16
ܩܕܡ ܥܝܢܝܢ ܐܬܦܣܩܬ ܡܐܟܘܠܬܐ ܡܢ ܒܝܬܗ ܕܐܠܗܢ܂ ܘܚܕܘܬܐ ܘܪܘܙܐ܂ * ܦܫܘ ܥܓܠܬܐ 17
ܥܠ ܐܘܪܝܗܘܢ܂ ܚܪܒܘ ܐܘܨܪܐ܂ ܘܐܬܗܦܟܘ ܡܥܨܪܬܐ܂ ܘܝܒܫ ܥܒܘܪܐ܂ * ܐܬܬܢܚ ܒܥܝܪܐ܂ 18
ܘܒܟܝܢ ܥܕܪܐ ܕܬܘܪܐ܂ ܕܠܝܬ ܠܗܘܢ ܪܥܝܐ܂ ܐܦ ܥܕܪܐ ܕܥܢܐ ܣܦܘ܂ * ܠܘܬܟ ܡܪܝܐ ܐܩܪܐ܂ 19
ܡܛܠ ܕܐܟܠܬ ܢܘܪܐ ܥܡܪܐ ܕܡܕܒܪܐ܂ ܘܫܠܗܒܝܬܐ ܐܘܩܕܬ ܠܟܠܗܘܢ ܐܝܠܢܝ ܕܕܒܪܐ܂ * ܐܦ 20
ܚܝܘܬܐ ܕܕܒܪܐ ܓܥܬ ܠܘܬܟ܂ ܡܛܠ ܕܝܒܫܘ ܦܨܝܕܐ ܕܡܝܐ܂ ܘܐܟܠܬ ܢܘܪܐ ܥܡܪܐ ܕܡܕܒܪܐ܂

* ܩܦܠܐܘܢ * ܒ *

* ܐܩܥܘ ܩܪܢܐ ܒܨܗܝܘܢ܂ ܘܐܟܪܙܘ ܒܛܘܪܐ ܕܩܘܕܫܝ܂ ܢܙܘܥܘܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ ܕܐܪܥܐ܂ 1
ܡܛܠ ܕܐܬܐ ܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ܂ * ܘܩܪܒ ܝܘܡܐ ܕܚܫܘܟܐ ܘܕܥܡܛܢܐ܂ ܝܘܡܐ ܕܥܢܢܐ 2
ܘܕܥܪܦܠܐ܂ ܐܝܟ ܨܦܪܐ ܕܦܪܝܣ ܥܠ ܛܘܪܐ܂ ܥܡܐ ܣܓܝܐܐ ܘܥܫܝܢܐ܂ ܕܐܟܘܬܗ ܠܐ ܗܘܐ ܡܢ
ܥܠܡ܂ ܘܒܬܪܗ ܠܐ ܢܗܘܐ܂ ܥܕܡܐ ܠܫܢܝ ܕܪ ܕܪܝܢ܂ * ܩܕܡܘܗܝ ܐܟܠܐ ܢܘܪܐ܂ ܘܒܬܪܗ 3
ܬܘܩܕ ܫܠܗܒܝܬܐ܂ ܐܝܟ ܦܪܕܝܣܐ ܕܒܘܣܡܐ܂ ܐܪܥܐ ܩܕܡܘܗܝ܂ ܘܒܬܪܗ ܡܕܒܪܐ ܚܪܒܐ܂
ܘܠܝܬ ܕܡܫܬܘܙܒ ܡܢܗ܂ * ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܪܟܫܐ ܚܙܘܗ܂ ܘܐܝܟ ܦܪܫܐ܂ ܗܟܢܐ ܢܪܗܛܘܢ܂ 4

Depopulatus eſt ager, & ſedit in luctu terra; quia direptum eſt frumentum, aruit vinum, & vaſtatæ ſunt oleæ. 10 Erubuerunt agricolæ, & ululaverũt vinitores propter frumenta & propter hordea, ꝙ deſierit meſſis agri. 11 Vitis aruit, ficus vaſtata eſt; malogranata, palmæ, poma, & omnes arbores agri aruerunt: quia deſiit gaudium à filiis hominum. 12 Sacerdotes, accingimini ſaccis: plorate & ululate, miniſtri altaris: ingredimini, pernoctate in ſaccis, miniſtri Dei mei; quia prohibitum eſt à domo Dei veſtri ſacrificium & libamen. 13 Sanctificate jejuniũ, convocate cœtum, congregamini ſacerdotes omnéſque habitatores terræ, ad domum Domini Dei veſtri, clamitate ad Dominum Deum veſtrum, & dicite; 14 Eheu, eheu diem iſtum; nam propinquus eſt dies Domini, & direptio à Domino ventura eſt: 15 Et ecce coram oculis noſtris ceſſaverunt eſcæ de domo Dei noſtri, & gaudiũ atque exultatio. 16 Incœnatæ manſerunt juvencæ ſuper præſepibus ſuis, vaſtata ſunt horrea, torcularia deſtructa, & aruit frumentum, 17 Ingemiſcit jumentum, & flent armenta boum, quia non habent paſcua: etiam greges ovium conſumpti ſunt. 18 Ad te Domine clamo, quia comêdit ignis habitacula deſerti, & flamma combuſſit omnes arbores ſolitudinis. 19 Quin & beſtiæ ſylveſtres ad te mugiunt, quòd exaruerint alvei aquarum, & conſumpſerit ignis habitacula deſerti. 20

CAP. II.

Clangite buccinâ in Sione, vociferamini in monte ſanctitatis meæ, contremiſcant omnes habitatores terræ; quoniam advenit dies Domini, 1 Et appropinquavit dies tenebrarum & caliginis, dies nubis & nebulæ, tanquam aurora ſuper montes expanſa; populus multus & robuſtus cui par non fuit à ſeculo, & poſt quem non eſt futurus uſque ad annos generationis generationum. 2 Ante illum devorabit ignis, & poſt ipſum flamma comburet: ut paradiſus voluptatis erit terra ante illum, poſt ipſũ verò ut ſolitudo deſerta; nec erit qui ſe eripiat ab eo. 3 Ut aſpectus equorum, aſpectus ejus; & ut equites, ita current. 4

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

10 * ليحزن الارض لان القمح شقي * جف الخمر * قل الزيت * جفت الفلاحون * نوحي ايها المواشي 11
اكثر من القمح والشعير * لان القطاف هلك من الحقل * الكرمة جفت * التين قل * الرمان 12
والتمر والتفاح وجميع اشجار الحقل جفت * لان بني البشر اخزوا الفرح * اتزروا وابكوا ايها 13
الكهنة * نوحوا يا خدام المذبح * ادخلوا ناموا بالمسوح يا خدام الله * لان الذبيحة والقارورة
امتنعتا من بيت الهكم * قدسوا الصوم * نادوا بالخدمة * اجمعوا الشيوخ * جميع سكان الارض 14
الي بيت الهكم * اصرخوا للرب بامتداد * الويل لي * الويل لي * الويل لي في اليوم * لان يوم الرب 15
قريب * كمثل شقوة من شقوة ياتي * تجاه عيونكم تفنت الاطعمة من بيت الهكم * السرور 16
والفرح * طربت العجاجيل على مذاودها * فنيت الذخاير * هدمت المعاصر * لان القمح جف * 17
* ماذا نذخر لها * بكت اذواد البقر لانه ليس لها مرعي * وقطعان الغنم انقرضت * اليك يا 18 19
رب اصرخ * لان النار ابادت مباهي البرية * واللهيب احرق جميع اشجار الحقل * وبهايم 20
الصحراء تنظر اليك * لان غدران المياه جفت * والنار اكلت مباهي البرية *

* الفصل الثاني *

* بوقوا بالبوق في صهيون * نادوا في جبلي المقدس * وليختلط جميع سكان الارض * من اجل 1
ان يوم الرب حضر * انه قرب يوم ظلمة وغيم * يوم سحابة وضبابة * مثل سحر ينبسط على 2
الجبال شعب كثير وقوي * لم يكن له شبه منذ الدهر * وبعده لا يعود الي سنين * الي
جيل الاجيال * من قدامه نار اكلة * ومن خلفه لهيب ملتهب * مثل فردوس النعيم 3
الارض قدام وجهه * ومن خلفه صحراء الفناء * وليس من ينجو * مثل مناظر الخيل منظره * 4
ومثل فرسان هكذا يركضون *

Doleat terra, quia frumentum afflictum eſt, aruit vinum, defecit oleum, 10 *Aruerunt agricolæ. Ejulate armenta pluſquam frumentum & hordeum, quia periit ex agro vindemia,* 11 *Vitis aruit, ficus defecerunt, malogranata, dactyli, poma, & omnes arbores agri exaruerunt: quoniam filii hominum pudefecerunt gaudium.* 12 *Accingite vos & plangite O Sacerdotes, ejulate O miniſtri altaris, ingredimini dormite cum ciliciis O miniſtri Dei; quia ſacrificium & alabaſtrum cohibita ſunt è domo Dei veſtri.* 13 *Sanctificate jejunium, proclamate miniſterium, congregate ſeniores & omnes habitatores terræ ad domum Dei veſtri, clamate ad Dominum protenſè,* 14 *Væ mihi, væ mihi, væ mihi in die iſta; quia dies Domini propinquus eſt, ut miſeria de miſeria veniet.* 15 *Coram oculis veſtris conſumpti ſunt cibi de domo Dei veſtri, gaudium & lætitia.* 16 *Subſilierunt vituli ſuper præſepia ſua, conſumpta eſt annona, torcularia deſtructa.* 17 *Quandoquidem aruit frumentum, Quid reponemus eis? Fleverunt armenta boum; quia non eſt eis paſcuum, & greges ovium exciſi ſunt.* 18 *Ad te O Domine clamo, quoniam ignis conſumpſit venuſtates deſerti, & flamma combuſſit omnes arbores agri.* 19 *Etiam deſerti jumenta ad te ſuſpiciunt, quia rivuli aquarum exaruerunt, & ignis devoravit venuſtates deſerti.* 20

CAP. II.

Clangite buccinâ in Sion, proclamate in monte ſancto meo, & commiſceantur omnes habitatores terræ; quia dies Domini adeſt: 1 *Adeſt quidem dies tenebroſus & caliginoſus, dies nubilus & nebuloſus. Velut aurora pandetur ſuper montes populus multus ac fortis, cui par non fuit à ſeculo, & poſt quem non ſuccedet ad annos* plurimos, *ad generationem generationum.* 2 *Ante ipſum ignis devorans erit, & poſt ipſũ flamma accenſa: ut paradiſus voluptatis erit terra ante faciem ejus, & à tergo ipſius deſertum interitus; nec erit qui evadat.* 3 *Similis equorum ſpeciebus erit ſpecies ejus; & ut equites, ita current.* 4

יוֹאֵל : ב

flammæ *vox* sicut, subsilient montium capita super quadrigarum *vox* Sicut
5 כְּקוֹל מַרְכָּבוֹת עַל־רָאשֵׁי הֶהָרִים יְרַקֵּדוּן כְּקוֹל לַהַב
.bellum præparatus fortis populus velut : stipulam *devorantis* ignis
אֵשׁ אֹכְלָה קָשׁ כְּעַם עָצוּם עֱרוּךְ מִלְחָמָה׃
.*fuliginem* contrahent vultus omnes : populi dolebunt ejus *faciebus* A
6 מִפָּנָיו יָחִילוּ עַמִּים כָּל־פָּנִים קִבְּצוּ פָארוּר׃
: murum ascendent *belli* viri tanquam , current potentes Sicut
7 כְּגִבּוֹרִים יְרֻצוּן כְּאַנְשֵׁי מִלְחָמָה יַעֲלוּ חוֹמָה
.*suis viis deflectent* non & , ambulabunt suis viis in *vir* &
וְאִישׁ בִּדְרָכָיו יֵלֵכוּן וְלֹא יְעַבְּטוּן אֹרְחוֹתָם׃
super & : *ibunt* suo calle in *vir* , *urgebunt* non suum fratrem *vir* Et
8 וְאִישׁ אָחִיו לֹא יִדְחָקוּן גֶּבֶר בִּמְסִלָּתוֹ יֵלֵכוּן וּבְעַד
muro in ,*armis crepabunt urbe In* .*erunt avari* non , *cadent missile*
9 הַשֶּׁלַח יִפֹּלוּ לֹא יִבְצָעוּ׃ בָּעִיר יָשֹׁקּוּ בַּחוֹמָה
.fur veluti intrabunt fenestras per : ascendent domos in ,current
יְרֻצוּן בַּבָּתִּים יַעֲלוּ בְּעַד הַחַלּוֹנִים יָבֹאוּ כַּגַּנָּב׃
luna & , sol : cœli tremuerunt , terr. se movit *ejus facies Ad*
10 לְפָנָיו רָגְזָה אֶרֶץ רָעֲשׁוּ שָׁמָיִם שֶׁמֶשׁ וְיָרֵחַ
DOMINUS Et .suum splendorem retraxerunt stellæ & ,*nigruerunt*
11 קָדָרוּ וְכוֹכָבִים אָסְפוּ נָגְהָם׃ וַיהוָה
valde multa quia ,*sui exercitus facies ad* suam vocem dedit
נָתַן קוֹלוֹ לִפְנֵי חֵילוֹ כִּי רַב מְאֹד
magnus quia : ejus verbum *faciens fortis* quia ,ejus *castrametatio*
מַחֲנֵהוּ כִּי עָצוּם עֹשֵׂה דְבָרוֹ כִּי־גָדוֹל
nunc etiam Et ? eum sustinebit quis & ,valde terribilis & ,Domini dies
12 יוֹם־יְהוָה וְנוֹרָא מְאֹד וּמִי יְכִילֶנּוּ׃ וְגַם־עַתָּה
,jejunio in & : vestro corde toto in me ad Convertimini :Dominus dixit
נְאֻם־יְהוָה שֻׁבוּ עָדַי בְּכָל־לְבַבְכֶם וּבְצוֹם
,vestra vestimenta non & ,vestrum cor scindite Et .planctu *in* & ,fletu *in* &
13 וּבִבְכִי וּבְמִסְפֵּד׃ וְקִרְעוּ לְבַבְכֶם וְאַל־בִּגְדֵיכֶם
,*gratiosus* quia : vestrum Deum DOMINUM ad convertimini &
וְשׁוּבוּ אֶל־יְהוָה אֱלֹהֵיכֶם כִּי־חַנּוּן
super pænitens &,*misericordia multus &* ,*naribus longus* , *ipse* miserator &
וְרַחוּם הוּא אֶרֶךְ אַפַּיִם וְרַב־חֶסֶד וְנִחָם עַל־
relinquat & , eum pœniteat & , convertatur *sciens* Quis .malum
14 הָרָעָה׃ מִי יוֹדֵעַ יָשׁוּב וְנִחָם וְהִשְׁאִיר
? vestro Deo Domino libamen & , *munus* ,benedictionem se post
אַחֲרָיו בְּרָכָה מִנְחָה וָנֶסֶךְ לַיהוָה אֱלֹהֵיכֶם׃
.*retentionem* vocate ,jejunium sanctificate : Sijon in buccina Clangite
15 תִּקְעוּ שׁוֹפָר בְּצִיּוֹן קַדְּשׁוּ־צוֹם קִרְאוּ עֲצָרָה׃
, senes congregate , ecclesiam sanctificate , populum Congregate
16 אִסְפוּ־עָם קַדְּשׁוּ קָהָל קִבְצוּ זְקֵנִים
,suo cubili de sponsus egrediatur : ubera sugentes & ,parvulos colligite
אִסְפוּ עוֹלָלִים וְיֹנְקֵי שָׁדָיִם יֵצֵא חָתָן מֵחֶדְרוֹ
,sacerdotes plorent altare & vestibulum Inter .suo thalamo de sponsa &
17 וְכַלָּה מֵחֻפָּתָהּ׃ בֵּין הָאוּלָם וְלַמִּזְבֵּחַ יִבְכּוּ הַכֹּהֲנִים
,tuo populo *super* Domine Parce : dicant & ; Domini ministri
מְשָׁרְתֵי יְהוָה וְיֹאמְרוּ חוּסָה יְהוָה עַל־עַמֶּךָ
.*gentes eos in dominandum ad* opprobrium in tuâ hæreditatem des ne &
וְאַל־תִּתֵּן נַחֲלָתְךָ לְחֶרְפָּה לִמְשָׁל־בָּם גּוֹיִם
est zelatus Et ? eorum Deus ubi : populis in sunt dicturi Quare
18 לָמָּה יֹאמְרוּ בָעַמִּים אַיֵּה אֱלֹהֵיהֶם׃ וַיְקַנֵּא
respondit Et .suo populo *super* pepercit & : sua terra pro Dominus
19 יְהוָה לְאַרְצוֹ וַיַּחְמֹל עַל־עַמּוֹ׃ וַיַּעַן
,frumentum vobis *mittens ego* Ecce : suo populo dixit & , Dominus
יְהוָה וַיֹּאמֶר לְעַמּוֹ הִנְנִי שֹׁלֵחַ לָכֶם אֶת־הַדָּגָן
dabo non & *: eo* vos saturabitis & , *novum* oleum & , *mustum* &
וְהַתִּירוֹשׁ וְהַיִּצְהָר וּשְׂבַעְתֶּם אֹתוֹ וְלֹא־אֶתֵּן
.gentibus in opprobrium ultrà vos
אֶתְכֶם עוֹד חֶרְפָּה בַּגּוֹיִם׃

Versio VULG. LAT.

5 Sicut sonitus quadrigarum super
capita montium exilient, sicut sonitus
flammæ ignis devorantis stipulam,
velut populus fortis præparatus
6 ad prælium. A facie ejus
cruciabuntur populi: omnes vultus
7 redigentur in ollam. Sicut
fortes current: quasi viri bellatores
ascendent murum: viri in
viis suis gradientur, & non declinabunt
8 à semitis suis. Unusquisq;
fratrem suum non coarctabit, singuli
in calle suo ambulabunt: sed
& ꝑ fenestras cadent, & non demolientur.
9 Urbe ingredientur, in
muro current: domos conscendent,
per fenestras intrabunt quasi
10 fur. A facie ejus contremuit
terra, moti sunt cœli: Sol & Luna
obtenebrati sunt, & stellæ retraxerunt
11 splendorem suum. Et
Dominus dedit vocem suam ante
faciem exercitûs sui: quia
multa sunt nimis castra ejus, quia
fortia & facientia verbum ejus:
magnus enim dies Domini, & terribilis
valdé: & quis sustinebit
12 eum? Nunc ergò dicit Dominus;
Convertimini ad me in toto corde
vestro, in jejunio, & in fletu,
13 & in planctu. Et scindite corda
vestra, & non vestimenta vestra,
& convertimini ad Dominum
Deum vestrum: quia benignus &
misericors est, patiens & multæ
misericordiæ, & præstabilis super
14 malitia. Quis scit si convertatur,
& ignoscat, & relinquat post se
benedictionem, sacrificium & libamen
15 Domino Deo vestro? Canite
tubâ in Sion, sanctificate jejunium,
16 vocate cœtum, Congregate
populum, sanctificate ecclesiam,
coadunate senes, congregate
parvulos, & sugentes ubera:
egrediatur sponsus de cubili suo,
17 & sponsa de thalamo suo. Inter
vestibulum & altare plorabunt
sacerdotes ministri Domini, & dicent;
Parce, Domine, parce populo
tuo: & ne des hæreditatem
tuam in opprobrium, ut dominentur
eis nationes: quarè dicunt
in populis; Ubi est Deus eorum?
18 Zelatus est Dominus terram suã,
19 & pepercit populo suo: Et respondit
Dominus, & dixit populo
suo; Ecce ego mittam vobis frumentum,
& vinum, & oleum, &
replebimini eis: & non dabo vos
ultrà opprobrium in Gentibus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

5 Ὡς φωνὴ ἁρμάτων ἐπὶ τὰς κορυφὰς τῶν ὀρέων
ἐξαλοῦνται, καὶ ὡς φωνὴ φλογὸς πυρὸς κατεσθιούσης
καλάμην, καὶ ὡς λαὸς πολὺς καὶ ἰσχυρὸς
6 παρατασσόμενος εἰς πόλεμον. Ἀπὸ προσώπου
αὐτοῦ συντριβήσονται λαοί, πᾶν πρόσωπον
7 ὡς πρόσκαυμα χύτρας. Ὡς μαχηταὶ
δραμοῦνται, καὶ ὡς ἄνδρες πολεμισταὶ ἀναβήσονται
ἐπὶ τὰ τείχη, καὶ ἕκαστος ἐν τῇ ὁδῷ αὐτοῦ
πορεύσεται, καὶ οὐ μὴ (ζ) ἐκκλίνωσι τὰς τρίβους
8 αὐτῶν. Καὶ ἕκαστος ἀπὸ τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ οὐκ
ἀφέξεται. καταβαρυνόμενοι ἐν τοῖς ὅπλοις
αὐτῶν πορεύσονται, καὶ ἐν τοῖς βέλεσιν αὐτῶν
9 πεσοῦνται, καὶ οὐ μὴ (η) συντελεσθῶσι. Τῆς πόλεως
ἐπιλήψονται, καὶ ἐπὶ τῶν τειχέων δραμοῦνται,
καὶ ἐπὶ (θ) τὰς οἰκίας ἀναβήσονται, καὶ
10 διὰ θυρίδων εἰσελεύσονται ὡς κλέπται. Πρὸ
προσώπου (ι) αὐτοῦ συγχυθήσεται ἡ γῆ, καὶ
σεισθήσεται ὁ οὐρανός· ὁ ἥλιος καὶ ἡ σελήνη
συσκοτάσουσι, καὶ (κ) ἄστρα δύσουσι τὸ φέγγος
11 αὐτῶν. Καὶ κύριος δώσει φωνὴν αὐτοῦ πρὸ
προσώπου δυνάμεως αὐτοῦ, ὅτι πολλή ἐστι
σφόδρα ἡ παρεμβολὴ αὐτοῦ, ὅτι ἰσχυρὰ ἔργα
λόγων αὐτοῦ· διότι μεγάλη (λ) ἡ ἡμέρα κυρίου,
ἐπιφανὴς σφόδρα, καὶ τίς ἔσται ἱκανὸς
12 αὐτῇ; Καὶ νῦν λέγει κύριος ὁ θεὸς ὑμῶν,
Ἐπιστράφητε πρός με ἐξ ὅλης τῆς καρδίας
ὑμῶν, (μ) καὶ ἐν νηστείᾳ, καὶ ἐν κλαυθμῷ, καὶ ἐν
13 κοπετῷ, Καὶ διαῤῥήξατε τὰς καρδίας ὑμῶν,
καὶ μὴ τὰ ἱμάτια ὑμῶν· καὶ ἐπιστράφητε πρὸς
κύριον τὸν θεὸν ὑμῶν, ὅτι ἐλεήμων καὶ οἰκτίρμων
ἐστί, μακρόθυμος καὶ πολυέλεος,
14 καὶ μετανοῶν ἐπὶ ταῖς κακίαις. Τίς οἶδεν εἰ
ἐπιστρέψει, καὶ μετανοήσει, καὶ ὑπολείψεται ὀπίσω
αὐτοῦ εὐλογίαν, (ν) καὶ θυσίαν, καὶ σπονδὴν
15 κυρίῳ τῷ θεῷ (ξ) ὑμῶν; Σαλπίσατε
σάλπιγγι ἐν Σιών, ἁγιάσατε νηστείαν, κηρύξατε
16 θεραπείαν, Συναγάγετε (ο) λαόν, ἁγιάσατε
ἐκκλησίαν, ἐκλέξασθε πρεσβυτέρους,
Συναγάγετε νήπια θηλάζοντα μαστούς, (π)
ἐξελθέτω νυμφίος ἐκ τοῦ κοιτῶνος αὐτοῦ, καὶ
17 νύμφη ἐκ τοῦ παστοῦ αὐτῆς. Ἀναμέσον τῆς
κρηπῖδος τοῦ θυσιαστηρίου, κλαύσονται οἱ ἱερεῖς
οἱ λειτουργοῦντες (ρ) τῷ κυρίῳ, καὶ ἐροῦσι,
Φεῖσαι κύριε τοῦ λαοῦ σου, καὶ μὴ δῷς τὴν κληρονομίαν
σου εἰς ὄνειδος, τοῦ κατάρξαι αὐτῶν
ἔθνη, ὅπως μὴ εἴπωσιν ἐν τοῖς ἔθνεσι,
18 Ποῦ ἐστιν (σ) ὁ θεὸς αὐτῶν; Καὶ ἐζήλωσε κύριος
τὴν γῆν αὐτοῦ, καὶ ἐφείσατο τοῦ λαοῦ αὐτοῦ.
19 Καὶ ἀπεκρίθη κύριος, καὶ εἶπε τῷ λαῷ αὐτοῦ,
Ἰδοὺ ἐγὼ ἐξαποστέλλω ὑμῖν τὸν σῖτον καὶ τὸν
οἶνον καὶ τὸ ἔλαιον, καὶ ἐμπλησθήσεσθε αὐτῶν,
καὶ οὐ δώσω ὑμᾶς οὐκέτι εἰς ὀνειδισμὸν ἐν
τοῖς ἔθνεσι.

Sicut vox quadrigarum super 5
vertices montium exilient, &
sicut vox flammæ ignis devorantis
stipulam, & sicut populus
multus & fortis præparatus ad
prælium. A facie ejus conterentur 6
populi: omnis vultus, sicut
adustio ollæ. Sicut pugnatores, 7
current; & sicut viri bellatores,
ascendent super muros: & unusquisque
in via sua ambulabit: &
non declinabunt à semitis suis:
Et unusquisque à fratre suo non 8
recedet. Aggravati in armis suis
ibunt, & in jaculis suis cadent,
& non consumentur. Urbem apprehendent, 9
& super muros (d)
current, & super domos ascendent,
& per fenestras intrabunt,
sicut fures. Ante faciem ejus 10
confundetur terra, & commovebitur
cælum: Sol, & Luna contenebrabuntur,
& stellæ deponent
lumen suum. Et Dominus dabit 11
vocem suam ante faciem fortitudinis
suæ: quoniam multa sunt
nimis castra ejus, quoniam fortia
opera sermonum illius: quia magna
dies Domini, (e) illustris nimis:
& quis erit sufficiens ad
eam? Et nunc dicit Dominus 12
Deus vester; Convertimini ad
me ex toto corde vestro, & in
(f) jejunio, & in fletu, & in
planctu, Et scindite corda vestra, 13
& non vestimenta vestra:
& convertimini ad Dominum
Deum vestrum: quia misericors,
& miserator est, patiens, & multæ
misericordiæ, & pœnitens super
malitiis. Quis novit, si revertatur, 14
& pœniteat, & relinquat
post se benedictionem, & sacrificium,
& libamen Domino Deo
vestro? Clangite tubâ in Sion, 15
sanctificate jejunium, prædicate
curationem, Congregate populum, 16
sanctificate Ecclesiam, eligite
senes, congregate parvulos sugentes
ubera. Egrediatur sponsus 17
de cubili suo, & sponsa de (g)
thalamo suo. Inter crepidinem
(h) altaris, plorabunt sacerdotes
ministri Domini, & dicent; Parce,
Domine, populo tuo, & ne dederis
hæreditatem tuam in opprobrium:
ut dominentur eorum
gentes: ne dicant in nationibus,
ubi est Deus eorum? Et zelatus 18
est Dominus terram suam, & pepercit
populo suo: Et respondit 19
Dominus, & dixit populo suo;
Ecce ego mitto vobis frumentum,
& vinum, & oleum: et implebimini
eis: et non dabo vos ultrà
in opprobrium in gentibus:

MS. A. (ζ)ἐκκλινοῦσιν * τὰς τρίβους (η)συντελέσουσιν. (θ)τὰς οἰκίας (ι)αὐτῶν (κ)τὰ ἄστρα (λ)ἡμέρα τοῦ κυρίου, μεγάλη καὶ ἐπιφανὴς σφόδρα, καὶ τίς ἱκανὸς ἐστιν αὐτῇ. Καὶ νῦν (μ) ἐν νηστείᾳ, (ν)θυσίαν, (ξ)ἡμῶν; (ο) τὸν λαὸν, (π)ἐξελθάτω (ρ)κυρίῳ, (σ) κύριος ὁ θεὸς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 כקל רתיכיא על רישי טוריא מקפצין כקל שלהובית אישתא דמשיציא כקשא יבישא
6 כעמא תקיפא דידע סדרי קרבא : מן קדמוהי יזועון עממיא כל אפיא אתחפיאו
7 אכרום אוכמין כקדירא : כגבריא רהטין כגברי עבדי קרבא סלקין לשורא וגבר
8 באורחיה אזלין ולא מעכבין אורחתהון : וגבר אחוהי לא דחקין גבר בכבישיה
9 אזלין לאתר דאנון שליחין קטלין ולא מקבלין ממון : בקרתא מזדינין על שורא
10 רהטין בבתיא סלקין מן חרכיא עלין כגנבין : קדמוהי חרובת ארעא זעו שמיא
11 שמשא וסיהרא קבלו וכוכביא כנשו זהורהון : ויי ארים מימריה קדם משריתיה ארי
סגי לחדא משריתיה ארי תקיפין עבדי מימריה ארי רב יומא דעתיד למיתי מן קדם
12 יי וחסין לחדא ומן יכיל לסוברותיה : ואף כען אמר יי תובו לפולחני בכל לבכון
13 ובצומא ובבכיתא ובמספדא : ואעדו רשע לבכון ולא בבזוע לבושיכון ותובו
לפולחנא דיי אלהכון ארי חננא ורחמנא הוא מרחיק רגז ומסגי למעבד טבון וקשוט
14 ומתיב מימריה מלאיתאה בישא : מן ידע דאית ביה חובין יתוב מנהון ויתרחם
עלוהי וכל מן דיתוב ישתבקון ליה חובוהי ויקבל ברכן ונחמן וצלותיה כגבר
15 דמקריב קורבנין ונסכין בבית מקדשא דיי אלהכון : תקעו שופרא בציון גזרו תעני
16 ערעו כנישא : כנשו עמא זמינו קהלא כנושו סביא איתו טליא ויונקי תדיא יפוק חתנא
17 מאדרון בית משכביה וכלתא מבית גנונהא : בין אולמא ולמדבחא יבכון כהניא
דמשמשין קדם יי ויימרון חוס יי על עמך ואל תתן אחסנתך לחיסודין למשלט בהון
18 עממיא למה יימרון בעממיא אן דאתפריקו במימר אלהכון : וחס יי על ארעיה
19 ורחים על עמיה : ואתיב יי ואמר לעמיה הא אנא מברך לכון עיבורא וחמרא ומשחא
ותסבעון יתיה ולא אתן יתכון עוד חיסודי כפנא בין עממיא :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Sicut strepitus quadrigarum super fastigia montium subsiliunt, sicut crepitus 5
flammæ ignis absumentis stipulam siccam: sic populus validus qui novit acies
bellicas. Ad aspectum ejus contremiscent populi, omnes vultus operientur 6
fuligine, nigri quasi ollæ. Sicut fortes excurrunt, velut viri bellatores 7
conscendunt murum, & unusquisque via sua graditur, nec morantur in viis
suis. Atque nullus fratrem suum coarctat, singuli per callem suum procedunt, 8
ad locum quò missi sunt *trucidant*; nec recipiunt pecuniam. In civitate armati 9
super murum excurrunt, domos scandunt, per fenestras intrant more latronum.
Coram eo direpta est terra, moti sunt cœli, Sol & Luna obtenebrati 10
sunt, stellæ restrinxerunt splendorem suum. Dominus autem levavit verbum 11
suum coram exercitu suo, quia copiosus est valdè exercitus ejus : certè
fortes exequutores verbi ejus; magnus námque dies qui venturus est à facie
Domini, & terribilis admodum : & quis poterit illum sustinere? Nunc quóque 12
dicit Dominus, Convertimini ad cultum meum in toto corde vestro, & in
jejunio ac fletu, planctúque. Et auferte impietatem cordis vestri, & non cum 13
dilaceratione vestimentorum vestrorum, atque revertimini ad cultum Domini
Dei vestri, quippe clemens & misericors est, ipse iram differt & *multiplicat
beneficia & veritatem*, revocátque verbum suum ab inducendo malo.
Qui scit penes se esse peccata, abscedat ab eis, & misericordia applicabitur 14
ei : & quicunque pœnitentiam egerit, dimittentur ei peccata sua, & recipiet
benedictiones atque consolationes, erítque ejus oratio sicut viri qui offert
oblationes, & libamina in æde sanctuarii Domini Dei vestri. Clangite tuba 15
in Sion, indicite jejunium, convocate cœtum. Congregate populum, assignate 16
concionem, congregate senes, adducite parvulos & sugentes ubera, egrediatur
sponsus de conclavi cubiculi sui, & sponsa de domo thalami sui. Inter 17
vestibulum & altare ejulabunt sacerdotes, qui ministrant coram Domino,
& dicent, Miserere Domine populi tui, & ne des hæreditatem tuam in opprobria
quò dominentur eis gentes : quare dicent inter populos, Ubi sunt qui
redempti sunt verbo Dei sui ? Pepercit itaque Dominus terræ suæ, & misertus 18
est populi sui. Et respondit Dominus, & dixit populo suo, Ecce benedico 19
vobis frumentum, vinum & oleum ; & eo saturabimini ; neque dabo vos
ampliùs opprobria famis inter populos.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܝܟ ܩܠܐ ܕܡܪܟܒܬܐ ܕܡܪܩܕܢ ܥܠ ܪܝܫܝ ܛܘܪܐ. ܘܐܝܟ ܩܠܐ ܕܫܠܗܒܝܬܐ ܕܢܘܪܐ ܕܐܟܠܐ 5
ܘܐܝܟ ܥܡܐ ܥܫܝܢܐ ܕܛܝܒ ܠܩܪܒܐ. * ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ ܢܪܬܬܘܢ ܥܡܡܐ. ܘܟܠ ܐܦܝܢ ܢܐܘܟܡܢ 6
ܐܝܟ ܫܘܚܬܐ ܕܩܕܪܐ. * ܐܝܟ ܓܢܒܪܐ ܢܪܗܛܘܢ. ܘܐܝܟ ܓܒܪܐ ܩܪܒܬܢܐ ܢܣܩܘܢ ܫܘܪܐ. ܘܓܒܪ 7
ܒܐܘܪܚܗ ܢܐܙܠ. ܘܠܐ ܢܣܛܘܢ ܡܢ ܐܘܪܚܬܗܘܢ. * ܘܓܒܪ ܠܐܚܘܗܝ ܠܐ ܢܕܚܘܩ. ܐܠܐ ܓܒܪ 8
ܒܫܒܝܠܗ ܢܐܙܠ. ܡܢ ܝܘܩܪܐ ܕܙܝܢܝܗܘܢ ܢܦܠܘܢ. ܘܠܐ ܢܫܩܠܘܢ ܦܪܝܣ. * ܒܡܕܝܢܬܐ 9
ܢܣܩܘܢ. ܘܥܠ ܫܘܪܐ ܢܪܗܛܘܢ. ܘܒܒܬܐ ܢܣܩܘܢ. ܘܡܢ ܟܘܐ ܢܥܠܘܢ. ܐܝܟ ܓܢܒܐ.
* ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ ܬܬܕܠܚ ܐܪܥܐ ܘܢܙܘܥܘܢ ܫܡܝܐ. ܫܡܫܐ ܘܣܗܪܐ ܢܚܫܟܘܢ. ܘܢܥܪܒ ܢܘܗܪܐ ܕܟܘܟܒܐ. 10
* ܘܡܪܝܐ ܢܬܠ ܩܠܗ ܩܕܡ ܚܝܠܗ. ܡܛܠ ܕܣܓܝܐܐ ܐܝܢܘܢ ܛܒ ܡܫܪܝܬܗ. ܘܚܣܝܢ ܥܒܕܐ 11
ܕܦܬܓܡܘܗܝ. ܡܛܠ ܕܪܒ ܗܘ ܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ ܘܕܚܝܠ ܛܒ. ܘܡܢܘ ܡܫܟܚ ܡܣܝܒܪ ܠܗ.
* ܘܡܛܠ ܗܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܬܦܢܘ ܠܘܬܝ ܡܢ ܟܠܗ ܠܒܟܘܢ. ܒܨܘܡܐ ܘܒܒܟܝܐ ܘܒܡܪܩܕܐ. 12
* ܘܒܙܥܘ ܠܒܘܬܟܘܢ ܘܠܐ ܢܚܬܝܟܘܢ. ܘܐܬܦܢܘ ܠܘܬ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ. ܡܛܠ ܕܡܪܚܡܢܐ ܗܘ 13
ܘܡܪܚܡܢܐ. ܘܢܓܝܪ ܪܘܚܗ ܘܣܓܝܐ ܛܝܒܘܬܗ. ܘܡܬܦܢܐ ܡܢ ܒܝܫܬܐ. * ܡܢ ܝܕܥ ܕܢܬܦܢܐ 14
ܘܢܪܚܡ ܥܠܝܢ. ܘܢܫܒܘܩ ܒܐܬܪܗ ܒܘܪܟܬܐ. ܣܡܝܕܐ ܘܢܘܩܐ ܠܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ. * ܩܪܘ 15
ܫܝܦܘܪܐ ܒܨܗܝܘܢ. ܩܕܫܘ ܨܘܡܐ. ܩܪܘ ܟܢܘܫܬܐ. ܟܢܘܫܘ ܥܡܐ. ܩܕܫܘ ܥܕܬܐ. ܟܢܘܫܘ ܣܒܐ. 16
ܘܟܢܘܫܘ ܥܠܝܡܐ ܘܝܢܩܝ ܬܕܝܐ. ܢܦܘܩ ܚܬܢܐ ܡܢ ܩܝܛܘܢܗ. ܘܟܠܬܐ ܡܢ
ܓܢܘܢܗ. * ܒܝܬ ܐܣܛܘܢ ܠܡܕܒܚܐ ܢܒܟܘܢ ܟܗܢܐ ܡܫܡܫܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܘܢܐܡܪܘܢ. 17
ܚܘܣ ܡܪܝܐ ܥܠ ܥܡܟ. ܘܠܐ ܬܬܠ ܝܪܬܘܬܟ ܠܚܣܕܐ ܘܠܫܘܠܛܢܐ ܕܥܡܡܐ. ܕܠܐ ܢܐܡܪܘܢ
ܥܡܡܐ ܐܝܟܘ ܐܠܗܗܘܢ. * ܘܛܢ ܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܥܗ. ܘܚܣ ܥܠ ܥܡܗ. * ܘܥܢܐ ܡܪܝܐ ܘܐܡܪ 18 19
ܠܥܡܗ. ܗܐ ܐܢܐ ܡܫܕܪ ܐܢܐ ܠܟܘܢ ܥܒܘܪܐ ܘܚܡܪܐ ܘܡܫܚܐ. ܕܬܣܒܥܘܢ. ܘܠܐ ܐܬܠܟܘܢ ܬܘܒ ܚܣܕܐ ܕܥܡܡܐ.

Ut ſonitus curruum ſtrepitantiū ſuper cacu- 5
mina montium, & ut crepitus flammæ igneæ
ſtipulā devorantis, utque populus præpotens
ad bellum inſtructus. A conſpectu ejus con- 6
tremiſcent populi, & omnes vult' nigreſcent
inſtar nigredinis ollæ. Ut gigantes current, 7
& ut viri bellatores mœnia conſcendent:
quiſque viâ ſuâ incedet, & non deflectent à
viis ſuis. Nullus alterū impellet, ſed quiſque 8
ſemitâ ſuâ incedet: præ armorū ſuorum pon-
dere cadent, & *rem* ad exitum non pducent.
Per urbes aſcendent, & ſuper muros diſcur- 9
rent: ſuper domos aſcendent, & p feneſtras in-
trabunt furum inſtar. Ante ipſum turbabitur 10
terra, & commovebuntur cœli: ſol & luna
obſcurabuntur, & occidet lumen ſtellarum.
Dominus quoque dabit vocem ſuam ante ex- 11
ercitū ſuum; quia multa ſunt admodū caſtra
ipſius, & potens opus ſermonis ejus: magnus
eſt enim futurus dies Dñi, multûmque formi-
dabilis; & quis poterit ſuſtinere eum? Qua- 12
propter dicit Dñs; Convertimini ad me toto
animo veſtro, jejunio, fletu, & lamentis; Et 13
ſcindite corda veſtra, non veſtimenta veſtra,
& convertimini ad Dñm Deum veſtrū; quia
miſericors eſt & clemens, longanimis, & mul-
tæ bonitatis, & avertens malū. Quis ſcit an 14
converſus miſereatur noſtrî, & reliquā faciat
in loco ſuo benedictionem, & ſimilā atque li-
bamen Dño Deo veſtro? Clangite buccinâ in 15
Sione, ſanctificate jejuniū, convocate cœtū;
Congregate populū, ſanctificate eccleſiā, con- 16
gregate ſenes, & congregate juvenes & ubera
ſugentes: exeat ſponſ' è cubiculo ſuo, & ſpon-
ſa de thalamo ſuo. Inter ſcamnū & altare fle- 17
ant ſacerdotes miniſtri Dñi, & dicant; Parce
Dñe populo tuo, & ne des hæreditatem tuam
probro & dominio gentiū: ut ne dicant gen-
tes, Ubi eſt Deus eorū? Zelavit Dñs pro terra 18
ſua, & pepercit populo ſuo: Et reſpondens 19
Dñs dixit populo ſuo, Ecce mittam vobis fru-
mentū, vinū, & oleum, ut ſaturemini: & non
exponam vos ampliùs probro gentium.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* مثل صوت مركبات على روس الجبال يطفرون. ومثل صوت لهيب نار تأكل القصب. ومثل 5
شعب كثير وقوي مصطف للقتال * من وجهه تنكسر الشعوب. كل وجه كسخام القدر * مثل 6 7
محاربين يعدون. وكرجال محاربين يصعدون على الاسوار. وكل واحد في طريقه يسير. ولا
يميلون عن سبلهم * وكل واحد من اخيه لا يهرب * يسيرون مثقلين بسلاحهم * وبسهامهم 8
يسقطون ولا يكملون * ياخذون المدينة. وعلى الاسوار يعدون. وعلى المنازل يصعدون. ومن 9
الكوى يدخلون مثل السراق * تختلط الارض. وتتزلزل السماء. الشمس والقمر يظلما. 10
والكواكب تغيب ضوءها * والرب يعطي صوته قدام وجه جيشه. لان معسكره كثير جدا هو. 11
لان اعمال كلماته قوية. من اجل ان يوم الرب عظيم وظاهر جدا. فمن يكون له كفوا * والآن 12
يقول الرب الهكم. ارجعوا الي من كل قلبكم. بالصوم والبكاء والنوح * وشقوا قلوبكم ولا 13
ثيابكم. وارجعوا الى الرب الهكم. لانه رحوم ورءوف هو. طويل الروح وكثير الرحمة.
وتواب على قبائح البشر * من علم هل يرجع الرب ويتوب. ويفضل خلفه بركة ذبيحة 14
وقارورة للرب الهنا.

. الاصحاح السابع. وهو الثاني من النبوة .

15 16 * بوقوا بالبوق في صهيون. قدسوا الصيام. نادوا بالخدمة * اجمعوا الشعب. قدسوا الجماعة.
اختاروا الشيوخ. اجمعوا الاطفال راضعي الثدي. ليخرج العريس من حجلته. والعروس من
17 خدرها * وسط ايس المذبح تبكي الكهنة خدام الرب. ويقولون اشفق يا رب على شعبك. ولا
18 تعط ميراثك للعار. ليترأس عليه الامم. كيلا يقولون في الامم اين هو الاههم * وغار الرب
19 لارضه. وشفق على شعبه * واجاب الرب وقال لشعبه. ها انا ارسل لكم قمحا وخمرا وزيتا.
وتشبعون منهم. ولا اعطيكم بعد للعار في الامم.

Ut ſtrepitus quadrigarum ſuper cacumi- 5
na montium exilient, & ut ſtrepitus flam-
mæ ignis devorantis arundines, & ut po-
pulus amplus & fortis inſtructus ad præ-
lium. A conſpectu ejus conterentur po- 6
puli: omnes vultus ſimiles erunt nigrori
ollæ: ut pugnatores current, & ſicut 7
viri belligerantes aſcendent ſuper muros,
& ſinguli in via ſua ambulabunt, neque
deflectent à ſemitis ſuis: Unuſquiſque 8
à fratre ſuo non fugiet: incedent armis
ſuis onuſti, jaculiſque ſuis corruent, &
rem ad exitum non perducent. Urbem 9
capient, ſuper muros diſcurrent, domos
conſcendent, & per feneſtras ingredien-
tur more furum. Commiſcebitur terra, 10
concutietur cœlum, ſol & luna obſcura-
buntur, ſtellæ lumen ſuum occultabunt,
Et Dominus edet vocem ſuam ante con- 11
ſpectum exercitûs ſui: quoniam caſtra
ipſius multa ſunt admodùm: quoniam
effectus verborum ejus potentes; quoni-
am dies Domini magnus eſt futurus &
valdè apertus; ecquis erit ad eum ſuffi-
ciens? Nunc itaque dicit Dominus De- 12
us veſter; Revertimini ad me toto corde
veſtro per jejunium, fletum, & plan-
ctum: Lacerate corda veſtra, ac non 13
veſtes veſtras, & revertimini ad Domi-
num Deum veſtrum; quia miſericors &
clemens eſt, longanimis & multæ miſeri-
cordiæ, & quem pœnitet ſcelerum huma-
norum. Quis novit num revertatur 14
Dominus, & pœniteat ſe, & relinquat
poſt ſe benedictionem, ſacrificium, et ala-
baſtrum Domino Deo noſtro?

Textus ſeptimus, qui eſt hujus
Prophetiæ ſecundus.

Clangite buccinâ in Sion, ſanctificate je- 15
junium, proclamate miniſterium, Con- 16
gregate populum, ſanctificate cœtum, eli-
gite ſenes, colligite parvulos ubera ſu-
gentes, egrediatur ſponſus è ſtrato cu-
biculo ſuo, et ſponſa è thalamo ſuo: In 17
media crepidine altaris fleant ſacerdotes
miniſtri Domini, dicantque; Parce O Do-
mine populo tuo, et ne exponas hæredita-
tem tuam opprobrio, ut dominentur ei
gentes; ut non dicant inter gentes, ubi
eſt Deus eorum? Jam Zelotypia motus 18
eſt Dominus erga terram ſuam, et peper-
cit populo ſuo: Reſponditque Dominus, 19
et ait populo ſuo, Ecce ego mittam vobis
frumentum, vinum, et oleum, ut iis ex-
pleamini; et non exponam vos ampliùs
opprobrio inter gentes,

eũ faciã expellere & ,vobis *deſuper* faciã elongare Aquilonarem Et
20 וְאֶת־הַצְּפוֹנִי אַרְחִיק מֵעֲלֵיכֶם וְהִדַּחְתִּיו
,Orientale mare ad ejꝰ *facies* , *deſolationis* & ,*ariditatis* terram ad
אֶל־אֶרֶץ צִיָּה וּשְׁמָמָה אֶת־פָּנָיו אֶל־הַיָּם הַקַּדְמֹנִי
aſcendet & ,ejus fœtor aſcendet & : noviſſimum mare ad ejus finem &
וְסֹפוֹ אֶל־הַיָּם הָאַחֲרוֹן וְעָלָה בָאְשׁוֹ וְתַעַל
: *humus* timeas Ne .*faciendum ad* magnificavit quia ,ejꝰ *graveolentia*
21 צַחֲנָתוֹ כִּי הִגְדִּיל לַעֲשׂוֹת׃ אַל־תִּירְאִי אֲדָמָה
.*faciendum ad* , Dominus magnificavit quia , lætare & , exulta
גִּילִי וּשְׂמָחִי כִּי־הִגְדִּיל יְהוָה לַעֲשׂוֹת׃
quia : deſerti paſcua germinaverunt quia ,agri animalia timeatis Ne
22 אַל־תִּירְאוּ בַּהֲמוֹת שָׂדַי כִּי דָשְׁאוּ נְאוֹת מִדְבָּר כִּי־
.*ſuam facultatem* dederunt vitis & ficus , ſuum fructum attulit *lignum*
עֵץ נָשָׂא פִרְיוֹ תְּאֵנָה וָגֶפֶן נָתְנוּ חֵילָם׃
dedit quia ,veſtro Deo Domino in lætamini &,exultate Sijon filii Et
23 וּבְנֵי צִיּוֹן גִּילוּ וְשִׂמְחוּ בַּיהוָה אֱלֹהֵיכֶם כִּי־נָתַן
,pluviam ,imbrem vobis faciet deſcẽdere & : juſtitiæ doctorem vobis
לָכֶם אֶת־הַמּוֹרֶה לִצְדָקָה וַיּוֹרֶד לָכֶם גֶּשֶׁם מוֹרֶה
ſtridebunt & ;frumẽto areæ implebuntur Et .primo in ,ſerotinam &
24 וּמַלְקוֹשׁ בָּרִאשׁוֹן׃ וּמָלְאוּ הַגֳּרָנוֹת בָּר וְהֵשִׁיקוּ
annos vobis reddam Et .*recenti* oleo & , *muſto* torcularia
25 הַיְקָבִים תִּירוֹשׁ וְיִצְהָר׃ וְשִׁלַּמְתִּי לָכֶם אֶת־הַשָּׁנִים
meꝰ exercitus :*Ghazam* & , chaſil & , bruchus ,locuſta comedit quos
אֲשֶׁר אָכַל הָאַרְבֶּה הַיֶּלֶק וְהֶחָסִיל וְהַגָּזָם חֵילִי
;ſaturando &,comedendo comedetis Et .vos in miſi quem , magnus
26 הַגָּדוֹל אֲשֶׁר שִׁלַּחְתִּי בָּכֶם׃ וַאֲכַלְתֶּם אָכוֹל וְשָׂבוֹעַ
vobiſcum fecit qui ,veſtri Dei Domini nomen laudabitis &
וְהִלַּלְתֶּם אֶת־שֵׁם יְהוָה אֱלֹהֵיכֶם אֲשֶׁר־עָשָׂה עִמָּכֶם
ſcietis Et .ſeculum in meꝰ populus afficientur pudore non & :*mirificando*
27 לְהַפְלִיא וְלֹא־יֵבֹשׁוּ עַמִּי לְעוֹלָם׃ וִידַעְתֶּם
non & ,veſter Deus Dominus ego & , *ego* Iſrael *interiori* in quòd
כִּי בְקֶרֶב יִשְׂרָאֵל אָנִי וַאֲנִי יְהוָה אֱלֹהֵיכֶם וְאֵין
.ſeculum in meus populus *pudefient* non & : amplius
עוֹד וְלֹא־יֵבֹשׁוּ עַמִּי לְעוֹלָם׃

CAP. III. ג

,carnem omnem ſuper meũ ſpiritum effundam ,hæc poſt erit Et
1 וְהָיָה אַחֲרֵי־כֵן אֶשְׁפּוֹךְ אֶת־רוּחִי עַל־כָּל־בָּשָׂר
; ſomniabũt ſomnia veſtri Senes .veſtræ filiæ &,veſtri filii prophetabunt &
וְנִבְּאוּ בְּנֵיכֶם וּבְנוֹתֵיכֶם זִקְנֵיכֶם חֲלֹמוֹת יַחֲלֹמוּן
ſuper & , ſervos ſuper etiam Et .videbunt viſiones veſtri *electi*
2 בַּחוּרֵיכֶם חֶזְיֹנוֹת יִרְאוּ׃ וְגַם עַל־הָעֲבָדִים וְעַל־
dabo Et .meum ſpiritum effundam illis diebus in ancillas
3 הַשְּׁפָחוֹת בַּיָּמִים הָהֵמָּה אֶשְׁפּוֹךְ אֶת־רוּחִי׃ וְנָתַתִּי
.fumi columnas &,ignem &,ſanguinem :terra in & , cœlis in prodigia
מוֹפְתִים בַּשָּׁמַיִם וּבָאָרֶץ דָּם וָאֵשׁ וְתִמְרוֹת עָשָׁן׃
venire facies ad :ſanguinẽ in Luna & ,*tenebroſitatem* in convertetur Sol
4 הַשֶּׁמֶשׁ יֵהָפֵךְ לְחֹשֶׁךְ וְהַיָּרֵחַ לְדָם לִפְנֵי בּוֹא
Invocaverit qui omnis ,erit Et .*terribilem* & ,*magnum* Domini *diem*
5 יוֹם יְהוָה הַגָּדוֹל וְהַנּוֹרָא׃ וְהָיָה כֹּל אֲשֶׁר־יִקְרָא
Jeruſalaim *in* & , Sijon monte in quia : evadet Domini *nomine in*
בְּשֵׁם יְהוָה יִמָּלֵט כִּי בְּהַר־צִיּוֹן וּבִירוּשָׁלַםִ
quos , ſuperſtitibus in & ,Dominus dixit ſicut , evaſio erit
תִּהְיֶה פְלֵיטָה כַּאֲשֶׁר אָמַר יְהוָה וּבַשְּׂרִידִים אֲשֶׁר
.*vocans* Dominus
יְהוָה קֹרֵא׃

Verſio VULG. LAT.

20 Et eum,qui ab Aquilone eſt,procul
faciam à vobis : & expellam
eum in terram inviam & deſertam
: faciem ejus contra mare Orientale,
& extremum ejus ad mare
noviſſimum : & aſcendet fœtor
ejus, & aſcendet putredo ejus,
21 quia ſuperbè egit. Noli timere,
terra;exulta & lætare : quoniam
magnificavit Dominus ut faceret.
22 Nolite timere,animalia regionis
: quia germinaverunt ſpecioſa
deſerti, quia lignum attulit
fructum ſuum, ficus & vinea dederunt
23 virtutem ſuam. Et filii
Sion,exultate, & lætamini in Domino
Deo veſtro : quia dedit vobis
doctorem juſtitiæ, & deſcendere
faciet ad vos imbrem matutinum
& ſerotinum,ſicut in principio.
24 Et implebuntur areæ frumento,
& redundabunt torcularia
25 vino & oleo. Et reddam vobis
annos, quos comêdit locuſta,
bruchus, & rubigo, & eruca :
fortitudo mea magna, quam miſi
26 in vos. Et comedetis veſcentes,
& ſaturabimini : & laudabitis
nomen Domini Dei veſtri, qui fecit
mirabilia vobiſcum : & non
confundetur populus meus in
27 ſempiternum. Et ſcietis quia in
medio Iſrael ego ſum : & ego
Dominus Deus veſter, & non eſt
ampliús : & non confundetur
28 populus meus in æternum. Et
erit poſt hæc : Effundam ſpiritum
meum ſuper omnem carnem : &
prophetabunt filii veſtri, & filiæ
veſtræ:ſenes veſtri ſomnia ſomniabunt,
& juvenes veſtri viſiones
29 videbunt. Sed & ſuper ſervos
meos & ancillas in diebus illis effundam
30 ſpiritum meum. Et dabo
prodigia in cœlo, & in terra,
ſanguinem, & ignem, & vaporem
31 fumi. Sol convertetur in
tenebras, & luna in ſanguinem :
antequàm veniat dies Domini
32 magnus, & horribilis. Et erit :
omnis qui invocaverit nomen
Domini, ſalvus erit:quia in monte
Sion, & in Jeruſalem erit ſalvatio,
ſicut dixit Dominus, & in
reſiduis, quos Dominus vocaverit.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

20 Καὶ τὸν ἀπὸ Βοῤῥᾶ ἐκδιώξω ἀφ᾽ ὑμῶν, ϗ ἐξώσω
αὐτὸν εἰς γῆν ἄνυδρον, ϗ ἀφανιῶ τὸ
πρόσωπον αὐτοῦ εἰς τὴν θάλασσαν τὴν πρώτην,
ϗ τὰ ὀπίσω αὐτοῦ εἰς τὴν θάλασσαν τὴν ἐσχάτην·
ϗ ἀναβήσεται ἡ σαπρία αὐτοῦ, ϗ ἀναβήσεται
ὁ βρόμος αὐτοῦ, ὅτι (τ) ἐμεγάλυνε τὰ
21 ἔργα αὐτοῦ. Θάρσει γῆ, χαῖρε ϗ εὐφραίνου,
22 ὅτι ἐμεγάλυνε κύριος τοῦ ποιῆσαι. Θαρσεῖτε
κτήνη τοῦ πεδίου, ὅτι βεβλάστηκε τὰ πεδία
τῆς ἐρήμου, ὅτι ξύλον ἤνεγκε τὸν καρπὸν
αὐτοῦ, (υ) συκῆ ϗ ἄμπελος ἔδωκαν τὴν ἰσχὺν
23 αὐτῶν. Καὶ τὰ τέκνα Σιὼν χαίρετε ϗ εὐφραίνεσθε
ἐπὶ τῷ κυρίῳ θεῷ ὑμῶν, διότι ἔδωκεν
ὑμῖν τὰ βρώματα εἰς δικαιοσύνην,
ϗ βρέξει ὑμῖν ὑετὸν πρώϊμον ϗ ὄψιμον,
24 καθὼς ἔμπροσθεν. Καὶ (˘) πλησθήσονται αἱ ἅλωνες
σίτου, ϗ (¨) ὑπερεκχυθήσονται αἱ ληνοὶ
25 οἴνου ϗ ἐλαίου. Καὶ ἀνταποδώσω ὑμῖν ἀντὶ τῶν
ἐτῶν ὧν κατέφαγεν ἡ ἀκρὶς, ϗ ὁ βροῦχος, ϗ
ἡ (φ) ἐρυσίβη, ϗ ἡ κάμπη, ἡ δύναμίς μου ἡ μεγάλη,
26 ἣν ἐξαπέστειλα (χ) εἰς ὑμᾶς. Καὶ φάγεσθε
ἐσθίοντες, ϗ ἐμπλησθήσεσθε, ϗ αἰνέσετε
τὸ ὄνομα κυρίου (ψ) τοῦ θεοῦ ὑμῶν, ἃ ἐποίησε
μεθ᾽ ὑμῶν εἰς θαυμάσια· ϗ οὐ μὴ καταισχυνθῇ
27 ὁ λαός μου εἰς τὸν αἰῶνα. Καὶ ἐπιγνώσεσθε
ὅτι ἐν μέσῳ τοῦ Ἰσραὴλ ἐγώ εἰμι, ϗ ἐγὼ κύριος
ὁ θεὸς ὑμῶν, ϗ οὐκ ἔστιν ἔτι πλὴν ἐμοῦ·
ϗ οὐ μὴ (ω) καταισχυνθῶσιν ἔτι ὁ λαός μου εἰς
28 τὸν αἰῶνα. Καὶ ἔσται μετὰ ταῦτα, (˙) ϗ ἐκχεῶ
ἀπὸ τοῦ πνεύματός μου ἐπὶ πᾶσαν σάρκα, ϗ
προφητεύσουσιν οἱ υἱοὶ ὑμῶν, ϗ αἱ θυγατέρες
ὑμῶν, ϗ οἱ πρεσβύτεροι ὑμῶν (α) ἐνύπνια
ἐνυπνιασθήσονται, ϗ οἱ νεανίσκοι ὑμῶν
29 ὁράσεις ὄψονται. (β) Καὶ ἐπὶ τοὺς δούλους μου
ϗ ἐπὶ τὰς δούλας (γ) ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις
30 ἐκχεῶ ἀπὸ τοῦ πνεύματός μου. Καὶ δώσω τέρατα
ἐν (δ) οὐρανῷ, ϗ ἐπὶ τῆς γῆς αἷμα ϗ
31 πῦρ ϗ ἀτμίδα καπνοῦ. Ὁ ἥλιος μεταστραφήσεται
εἰς σκότος, ϗ ἡ σελήνη εἰς αἷμα,
πρὶν ἐλθεῖν τὴν ἡμέραν κυρίου τὴν μεγάλην, ϗ
32 ἐπιφανῆ. Καὶ ἔσται πᾶς ὃς ἂν ἐπικαλέσηται τὸ
ὄνομα κυρίου, σωθήσεται. ὅτι ἐν τῷ ὄρει Σιὼν
(ε) ϗ ἐν Ἱερουσαλὴμ ἔσται ἀνασωζόμενος,
καθότι εἶπε κύριος, ϗ εὐαγγελιζόμενοι οὓς
κύριος προσκέκληται.

Et eum, qui ab Aquilone eſt, repellam 20
à vobis, & expellam eum
in terram, quæ eſt ſine aqua: &
diſperdam faciem ejus in mare
primum, & poſteriora ejus in mare
noviſſimum : & aſcendet putredo
ejus, & aſcendet fœtor ejꝰ :
quia magnificavit opera ſua. Confide, 21
terra; gaude, atque lætare:
quia magnificavit Dominus, ut
faceret. Confidite, jumenta campi: 22
quoniam germinaverunt campi
ſolitudinis, quia lignum attulit
fructum ſuum, ficus, & vitis dederunt
fortitudinem ſuam. Et, filii 23
Sion, gaudete, atque lætamini
in Domino Deo veſtro : quoniam
dedit vobis (i) eſcas in juſtitia,
& pluet vobis imbrem temporaneum,
& ſerotinum, ſicut principio : Et replebuntur areæ tritico, 24
& redundabunt torcularia vino,
& oleo. Et reddam vobis 25
pro annis, quos comêdit locuſta, et
bruchus, & rubigo, & eruca:
fortitudo mea magna, quam miſi
in vos. Et veſcemini comedentes, 26
& ſaturabimini, & laudabitis
nomen Domini Dei veſtri, quæ
fecit vobiſcũ (k) in mirabilia: &
non confundetur populus meus
in æternum. (l) Et ſcietis, quia 27
in medio Iſrael ego ſum: & ego
Dominus Deus veſter: & non eſt
ampliùs præter me : & non confundetur
ultrà populus meus in
æternum. Et erit poſt hæc, & effundam 28
de ſpiritu meo ſuper
omnem carnem, & prophetabunt
filii veſtri, & filiæ veſtræ, & ſenes
veſtri ſomnia ſomniabunt, &
juvenes veſtri viſiones videbunt.
Et ſuper ſervos meos, & ſuper 29
ancillas in diebus illis effundam
de ſpiritu meo. Et (m) dabo prodigia 30
in cœlo, & ſuper terram
ſanguinem, & ignem, & vaporem
fumi. Sol convertetur in tenebras, 31
et Luna in ſanguinem; antequàm
veniat dies Domini magnus,
et illuſtris. Et erit : Omnis, 32
qui invocaverit nomen Domini,
ſalvus erit. Quia in monte Sion,
et in Hieruſalem erit (n) ſalvatus,
ſicut dixit Dominus, et
(o) evangelizati, quos Dominus
vocavit.

MS. A. (τ) ἐμεγαλύνθη (υ) ἄμπελος ϗ συκῆ (˘) ἐμπλησθήσονται (¨) ὑπερεκχυθήσονται (φ) * ἐρυσίβη, (χ) ἐφ᾽ ὑμᾶς. (ψ) θεοῦ ἡμῶν, (ω) καταισχυνθῇ οὐκ ἔτι πᾶς ὁ λαός μου (˙) ἐκχεῶ (α) ἐνυπνίοις (β) Καί γε ἐπὶ (γ) μου ἐν (δ) τῷ οὐρανῷ, (ε) ϗ Ἱερουσαλὴμ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

20 וְיַת עַמָא דְאָתֵי מִצִפּוּנָא אַרְחֵיק מִנְכוֹן וְאַגְלְנֵיהּ לְאַרְעָא צַדְיָא וְחָרְבָא רֵישֵׁיהּ לְיַמָא
מַדִנְחָא וְסוֹפֵיהּ לְיַמָא מַעַרְבָאָה וְתִסַק סְרוּחֵיהּ וִיהָךְ רוּחֵיהּ אֲרֵי אַסְגֵי לְמֶעְבַּד בִּישִׁין׃
21 22 לָא תִדְחֲלִין אַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל בּוּעִי וַחֲדִי אֲרֵי אַסְגֵי יְיָ לְמֶעְבַּד בִּיךְ טָבִין לְעַמֵיהּ׃ לָא
תִדְחֲלוּן חֵיוַת בָּרָא אֲרֵי אִתְעַטַרוּ דִירָוָת מַדְבְּרָא אֲרֵי אִילָנָא אַצְלַח אִבֵּיהּ תְּיֵנַיָא
23 וְגוּפְנַיָא טְעַנוּ פֵּרֵהוֹן׃ וּבְנֵי צִיוֹן בִּיעוּ וַחֲדוּ בְּמֵימְרָא דַיְיָ אֱלָהֲכוֹן אֲרֵי אֲתִיב לְכוֹן יַת
24 מַלְפְכוֹן בִּזְכוּ וּמַחֵית לְכוֹן מְטַר בַּכִּיר בְּעִדָנֵיהּ וּלְקִישָׁא בְּיַרַח נִיסָן׃ וְיִתְמְלוֹן אִדְרַיָא
25 עִבוּרָא וִיטוּפוּן נַעֲוַיָא חַמְרָא וּבֵירַיָא מִשְׁחָא׃ וַאֲשַׁלֵם לְכוֹן שְׁנַיָא טָבָתָא חֲלָף שְׁנַיָא
דְבַזוּ יָתְכוֹן עַמְמַיָא אוּמַיָא וְלִישָׁנַיָא וְשִׁלְטוֹנַיָא וּמַלְכְוָתָא פוּרְעָנוּת חֵילִי רַבָּא דְשַׁלְחִית
26 בְּכוֹן׃ וְתֵיכְלוּן מֵיכַל וְתִסְבְּעוּן וּתְשַׁבְּחוּן יַת שְׁמָא דַיְיָ אֱלָהֲכוֹן דַעֲבַד עִמְכוֹן פְּרִישָׁן
27 וְלָא יִבְהֲתוּן עַמִי לְעָלָם׃ וְתִדְעוּן אֲרֵי בְּגוֹ בֵּית יִשְׂרָאֵל אַשְׁרֵיתִי שְׁכִנְתִּי וַאֲנָא יְיָ
28 אֱלָהֲכוֹן וְלֵית עוֹד וְלָא יִבְהֲתוּן עַמִי בֵּית יִשְׂרָאֵל לְעָלָם׃ וִיהֵי בָתַר כֵּן אֶשְׁפּוֹךְ יַת רוּחַ
קוּדְשִׁי עַל כָּל בִּסְרָא וְיִתְנַבּוּן בְּנֵיכוֹן וּבְנָתֵיכוֹן סָבֵיכוֹן חֶלְמִין יַחְלְמוּן עוּלֵימֵיכוֹן חֶזְוָנִין
29 30 יֶחֱזוּן׃ וְאַף עַל עַבְדִין וְעַל אַמְהָן בְּיוֹמַיָא הָאִנוּן אֶשְׁפּוֹךְ יַת רוּחַ קוּדְשִׁי׃ וְאֶתֵּן אָתִין
31 בִּשְׁמַיָא וּבְאַרְעָא דַם וְאֶשָׁא וִיתוּרִין דִתְנַן׃ שִׁמְשָׁא יִתְהַפֵּךְ לְקִבְלָא וְסִהֲרָא לִדְמָא קֳדָם
32 מֵיתֵי יוֹמָא דַעֲתִיד לְמֵיתֵי מִן קֳדָם יְיָ רַבָּא וּדְחִילָא׃ וִיהֵי כָּל דִצְלֵי בִּשְׁמָא דַיְיָ יִשְׁתֵּיזֵב
אֲרֵי בְּטוּרָא דְצִיוֹן וּבִירוּשְׁלֵם תְּהֵי שֵׁיזָבְתָא כְּמָא דַאֲמַר יְיָ וּמְשֵׁיזְבַיָא דַיְיָ
זַמִין׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Populum verò qui venit ab Aquilone procul abigam à vobis, & ablegabo 20
eum in terram deſolatam & deſertam : prima frons ejus ad mare Orientale
[*pertinget*,] & extremum ejus ad mare Occidentale, et aſcendet fœtor
ejus atque abibit odor ejus, quamplurima enim patravit maleficia. Ne 21
timeas terra Iſrael, exulta & lætare, quia magnificatus eſt Dominus ut agat
in te munificè populo ſuo. Ne timeatis beſtiæ agri, quia coronata ſunt 22
[*bonis*] habitacula deſerti, quoniam arbor feliciter protulit fructum ſuum,
ficus & vites attulerunt fructus ſuos. O filii Sion exultate & lætamini 23
in verbo Domini Dei veſtri, quoniam reddidit vobis doctorem veſtrum in
juſtitiam, demiſitque vobis primitivam pluviam tempeſtivè, & ſerotinam
in menſe Niſan. Et replebuntur areæ frumento, & redundabunt torcularia 24
muſto atque *lacus* oleo. Et rependam vobis annos bonos pro annis 25
quibus diripuerunt vos populi, *gentes* & linguæ, imperatores atque regna
vindictæ, exercitus meus magnus quem immiſi in vos. Tunc comedetis 26
veſcentes & ſaturabimini, & laudabitis nomen Domini Dei veſtri,
qui geſſit vobiſcum mirabilia : nec erubeſcet populus meus in æternum.
Sed ſcietis quòd intra filios Iſrael collocaverim majeſtatem meam : profectò 27
ego ſum Dominus Deus veſter, & non eſt ampliùs [*ullus*,] ideò
non confundetur populus meus *domus Iſrael* in æternum. Sed erit poſt 28
hæc, effundam ſpiritum ſanctum meum ſuper omnem carnem, & prophetabunt
filii veſtri & filiæ veſtræ, ſenes veſtri ſomnia ſomniabunt, &
juvenes veſtri viſiones videbunt. Quin etiam ſuper ſervos & ancillas 29
in diebus illis effundam ſpiritum ſanctum meum. Atque dabo ſigna in cœlis 30
& in terra, ſanguinem, & ignem atque columnas fumi. Sol convertetur 31
in tenebras, & Luna in ſanguinem, antequam adveniat dies qui
venturus eſt à conſpectu Domini, magnus & formidabilis. Erítque omnis 32
qui oraverit in nomine Domini, liberabitur; quia in monte Sion & in
Jeruſalem erit liberatio, quemadmodum dixit Dominus : & liberabuntur illi quos Dominus deſtinat.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܠܓܪܒܝܐ ܐܪܚܩ ܡܢܟܘܢ. ܘܐܕܚܝܘܗܝ ܠܐܪܥܐ ܨܗܝܐ ܘܚܪܒܬܐ. ܐܦܘܗܝ 20
ܠܝܡܐ ܩܕܡܝܐ. ܘܣܘܦܗ ܠܝܡܐ ܐܚܪܝܐ. ܘܢܣܩ ܣܪܝܘܬܗ. ܘܬܣܩ ܒܐܫܬܗ. ܡܛܠ
ܕܐܬܪܘܪܒ ܠܡܥܒܕ. * ܠܐ ܬܕܚܠܝܢ ܐܪܥܐ :· ܕܘܨܝ ܘܚܕܝ. ܡܛܠ ܕܐܬܪܘܪܒ ܡܪܝܐ ܠܡܥܒܕ. 21
* ܠܐ ܬܕܚܠܘܢ ܒܥܝܪܐ ܕܕܒܪܐ. ܡܛܠ ܕܢܦܪܥ ܕܬܐܐ ܒܕܝܪܬܐ ܕܡܕܒܪܐ. ܘܐܝܠܢܐ ܢܬܠ 22
ܦܐܪܗ. ܘܓܦܬܐ ܘܬܐܢܬܐ ܢܬܠܘܢ ܚܝܠܗܘܢ. * ܒܢܝ ܨܗܝܘܢ :· ܪܘܙܘ :· ܘܚܕܘ. ܒܡܪܝܐ 23
ܐܠܗܟܘܢ. ܕܝܗܒ ܠܟܘܢ ܡܐܟܘܠܬܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ :· ܘܢܚܬ ܠܟܘܢ ܡܛܪܐ ܒܟܝܪܐ
ܘܠܩܝܫܐ. ܐܝܟ ܕܡܢ ܩܕܝܡ. * ܘܢܬܡܠܘܢ ܐܕܪܐ ܚܛܬܐ :· ܘܢܦܩܢ ܡܥܨܪܬܐ 24
ܚܡܪܐ ܘܡܫܚܐ. * ܘܐܦܪܘܥܟܘܢ ܫܢܝܐ ܕܐܟܠ ܩܡܨܐ ܦܪܚܐ :· ܘܙܚܠܐ ܘܓܘܒܐ ܘܫܘܡܛܐ :· 25
ܚܝܠܝ ܪܒܐ ܕܫܕܪܬ ܒܟܘܢ. * ܘܬܐܟܠܘܢ. ܘܬܣܒܥܘܢ. ܘܬܫܒܚܘܢ ܠܫܡܗ ܕܡܪܝܐ 26
ܐܠܗܟܘܢ :· ܕܥܒܕ ܥܡܟܘܢ ܬܕܡܪܬܐ. ܘܠܐ ܢܒܗܬ ܥܡܝ ܠܥܠܡ. * ܘܬܕܥܘܢ 27
ܕܒܓܘ ܐܝܣܪܝܠ ܐܢܐ. ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ. ܘܠܝܬ ܬܘܒ ܠܒܪ ܡܢܝ. ܘܠܐ
ܢܒܗܬ ܥܡܝ ܠܥܠܡ. * ܘܡܢ ܒܬܪ ܗܠܝܢ ܐܫܘܕ ܪܘܚܝ ܥܠ ܟܠܗ ܒܣܪ. ܘܢܬܢܒܘܢ 28
ܒܢܝܟܘܢ. ܘܒܢܬܟܘܢ. ܘܣܒܝܟܘܢ ܚܠܡܐ ܢܚܠܡܘܢ. ܘܥܠܝܡܝܟܘܢ. ܚܙܘܢܐ
ܢܚܙܘܢ. * ܘܐܦ ܥܠ ܥܒܕܐ ܘܥܠ ܐܡܗܬܐ :· ܐܫܘܕ ܪܘܚܝ ܒܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ. 29
* ܘܐܬܠ ܬܕܡܪܬܐ ܒܫܡܝܐ ܘܒܐܪܥܐ. ܕܡܐ ܘܢܘܪܐ. ܘܥܛܪܐ ܕܬܢܢܐ. * ܫܡܫܐ 30
ܢܬܗܦܟ ܠܚܫܘܟܐ. ܘܣܗܪܐ ܠܕܡܐ. ܥܕܠܐ ܢܐܬܐ ܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ ܪܒܐ ܘܕܚܝܠܐ. 31
* ܘܟܠ ܕܢܩܪܐ ܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܢܬܦܨܐ. ܡܛܠ ܕܒܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ ܘܒܐܘܪܫܠܡ 32
ܢܗܘܐ ܡܫܘܙܒܢܘܬܐ. ܐܝܟ ܕܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܡܫܘܙܒܐ ܕܩܪܐ ܡܪܝܐ.

* Aquilonarem repellam à vobis; repellam in- 20
quam, eum in terram ſiticuloſam atque deſer-
tam; faciem ejus ad mare primum, & poſtre-
mum ejus ad mare ultimum; adeóque feriet
odor ejus, & aſcendet fœtor ejus, eò quòd
inſolenter egerit. Ne timeto terra, exulta 21
& lætare; quoniam Dominus magnificè aget.
* Ne timeto beſtia terræ; quoniam exorietur 22
gramen in habitaculis deſerti, arbor edet fru-
ctum ſuum, & vitis ac ficus præbebunt vir-
tutem ſuam. Filii Sionis, exultate & gau- 23
dete in Domino Deo veſtro; quia daturus
eſt vobis eſcam juſtitiæ, & demiſſurus vobis
imbrem temporaneum & ſerotinum, ut an-
tea. Et implebuntur areæ frumento, & 24
redundabunt torcularia vino & oleo. Et 25
compenſabo vobis annos quos comêdit lo-
custa volans, bruchus, gryllus, & eruca, ex-
ercitus ille meus magnus quem in vos miſe-
ram. Et comedetis, ac ſaturabimini, & lau- 26
dabitis nomen Domini Dei veſtri qui mira
facturus eſt erga vos; & non pudefiet popu-
lus meus in æternum. Et ſentietis quòd ego 27
ſim in medio Iſraelis, ego ſim Dominus Deus
veſter, nec ſit alius præter me: & non pude-
fiet populus meus in æternum. Tum poſtea 28
effundam ſpiritum meum ſuper omnem car-
nem, & prophetabunt filii veſtri & filiæ ve-
ſtræ, ſenes veſtri ſomnia ſomniabunt, & ju-
venes veſtri viſiones videbunt. Sed etiam 29
ſuper ſervos & ſuper ancillas effundam ſpi-
ritum meum iis diebus. Et mira faciam in 30
cœlo & in terra, ſanguinem, ignem, & ex-
halationes fumi. Sol vertetur in tenebras, 31
& luna in ſanguinem, antequam veniat dies
Domini magna & horrenda. Et quicunque 32
invocaverit nomen Domini, liberabitur; nam
in monte Sionis & in Jeruſalem erit ſalvatio,
prout dixit Dominus liberatis quos Domi-
nus vocavit.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* والذي من الجربياء اطرده عنكم * واقصيه الي ارض عديمة الماء وابيد وجهه 20
الي البحر الاول * وما خلفه الي البحر الاخر * ويصعد نتنه ويرتفع رايحته * لان اعماله عظمت *
* ثقي ايتها الارض * افرحي وسري * لان الرب عظم صنيعه * ثقي يا بهايم 21 22
الصحراء * لان بقاع البرية اينعت * لان الشجر اخرج ثمرها * الكرمة والتينة
اعطتا قوتها * يا اولاد صهيون افرحوا * وابتهجوا بالرب الهكم * من اجل انه 23
اعطي لكم الاطعمة للعدل * ويمطر لكم مطرا اولا واخيرا كما من قبل * وتمتلي 24
البيادر من الحنطة * وتندفق المعاصر من الخمر والزيت * واعوضكم عوض 25
السنين التي اكلها الجراد والجندب والقمل والدود * قوتي العظيمة التي ارسلها
اليكم * فتاكلون يا اكلين وتمتلون * وتسبحون اسم الرب الهكم الذي صنع معكم 26
هذه العجايب * ولا يخزي شعبي الي الابد * وتعلمون اني وسط اسرايل * اقول انا * 27
وانا الرب الهكم * وليس ايضا سواي * ولا يخزي شعبي الي الابد * ويكون بعد 28
هذه افيض من روحي على كل ذي لحم * ويتنبي بنوكم وبناتكم * ومشايخكم
يحلمون الاحلام * وشبانكم يرون المناظر * وعلي عبيدي وعلي امايي في تلك 29
الايام افيض من روحي * واعطي الجرايح في السماء والايات على الارض * دما ونارا 30
وبخار الدخان * الشمس تنقلب الي الظلمة * والقمر الي الدم * قبل ان ياتي يوم 31
الرب العظيم الظاهر * ويكون كل من يدعو باسم الرب يخلص * لان في جبل 32
صهيون وفي ايروشليم يكون المخلص * كما ان قال الرب * والمبشرون الذين
دعاهم الرب *

Eum qui eſt ex Aquilone, repellam à 20
vobis, & exterminabo ad terram aquâ
carentem: perdamque faciem ejus ad ma-
re primum; & quod poſt eum erit, ad
mare poſtremum; ita ut aſcendat fœtor
ejus, & odor ejus erumpat: nam opera
ejus grandia ſunt. Tuta ſis O terra, 21
gaude & lætare; quia Dominus ma-
gnificavit facinus ſuum. Confidite O 22
jumenta ſolitudinis: quia planities
deſerti germinaverunt, quia arbor
protulit fructum ſuum, vitis & fi-
cus ediderunt vim ſuam. O filii Si- 23
onis, gaudete & exhilaramini in
Domino Deo veſtro, quia dedit vo-
bis cibos ad æquitatem, demittet-
que vobis pluviam priorem ac poſteri-
orem, ut antea. Areæ frumento reple- 24
buntur, & torcularia vino oleoque red-
undabunt. Et rependam vobis pro an- 25
nis illis quos devoraverunt locuſtæ,
bruchi, pediculi, atque vermes; fortitu-
dinem meam maximam quam mittam
vobis. Et comedetis O comedentes, & 26
explebimini, ac laudabitis nomen Domini
Dei veſtri qui talia edidit erga vos mi-
racula: & non erubeſcet populus meus
in perpetuum. Sed cognoſcetis me eſſe in 27
medio Iſraelis, me inquam; meque eſſe
Dominum Deum veſtrum, nec ampliùs
eſſe præter me: & non erubeſcet po-
pulus meus in perpetuum. Eritque poſt 28
hæc, ut effundam ex meo ſpiritu
ſuper omnem carne præditum, & pro-
phetent filii veſtri & filiæ veſtræ, ſe-
nes veſtri ſomnient ſomnia, & juve-
nes veſtri videant viſiones. Etiam ſu- 29
per ſervos meos & ſuper ancillas meas
in iis diebus effundam ex meo ſpiritu.
Edamque portenta in cœlo, & ſigna 30
ſuper terram; ſanguinem, & ignem,
& vaporem fumi. Sol vertetur in te- 31
nebras, & luna in ſanguinem, ante-
quam veniat dies Domini magnus &
apertus. Et erit ut quicunque invo- 32
caverit nomen Domini, ſalvetur: nam
in monte Sion & in Jeruſalem erit is
qui ſalvabitur, (quemadmodum dixit
Dominus) & ii quibus evangeli-
zabitur, quos Dominus vocavit.

יואל : ג

convertam quo : illo tempore in & , illis diebus in ecce Quia
6 כִּי הִנֵּה בַּיָּמִים הָהֵמָּה וּבָעֵת הַהִיא אֲשֶׁר אָשׁוּב
congregabo Et ·Jeruſalaim & , Jehudah captivivitatem
7 אֶת־שְׁבוּת יְהוּדָה וִירוּשָׁלִָם׃ וְקִבַּצְתִּי אֶת־
: Jehoſaphat vallem in eas faciam deſcendere & , gentes omnes
כָּל־הַגּוֹיִם וְהוֹרַדְתִּים אֶל־עֵמֶק יְהוֹשָׁפָט
meam hæreditatem & ,meū populum ſuper ibi eis cum *ſubibo judicium* &
וְנִשְׁפַּטְתִּי עִמָּם שָׁם עַל־עַמִּי וְנַחֲלָתִי
.diviſerunt meam terram & ,*gentes* in diſperſerunt quos , Iſrael
יִשְׂרָאֵל אֲשֶׁר פִּזְּרוּ בַגּוֹיִם וְאֶת־אַרְצִי חִלֵּקוּ׃
,*meretrice in* puerum *dederunt* & : ſortem projecerunt meum populum *ad* Et
8 וְאֶל־עַמִּי יַדּוּ גוֹרָל וַיִּתְּנוּ הַיֶּלֶד בַּזּוֹנָה
mihi vos quid etiam Et .biberent *&* vino *in* vendiderunt puellam &
9 וְהַיַּלְדָּה מָכְרוּ · בַיַּיִן וַיִּשְׁתּוּ׃ וְגַם מָה־אַתֶּם לִי
,retributionem Nunquid ? Paleſtinæ termini omnes & , Sidon & ,Sor
צֹר וְצִידוֹן וְכֹל גְּלִילוֹת פְּלָשֶׁת הַגְּמוּל
,leviter *? me ſuper vos retribuentes* num & ,*me ſuper reddentes* vos
אַתֶּם מְשַׁלְּמִים עָלָי וְאִם־גֹּמְלִים אַתֶּם עָלַי קַל
Quia .veſtrum caput in veſtram retributionem reddam citò
10 מְהֵרָה אָשִׁיב גְּמֻלְכֶם בְּרֹאשְׁכֶם׃ אֲשֶׁר־
mea deſiderabilia & : tuliſtis meum aurum & , meum argentum
כַּסְפִּי וּזְהָבִי לְקַחְתֶּם וּמַחֲמַדַּי
filios & , Jehudah filios Et .*veſtra palatia* in intuliſtis *bona*
11 הַטֹּבִים הֲבֵאתֶם לְהֵיכְלֵיכֶם׃ וּבְנֵי יְהוּדָה וּבְנֵי
eos *faciendum* elongare *ad* : *Jevanim* filiis vendidiſtis Jeruſalaim
יְרוּשָׁלִַם מְכַרְתֶּם לִבְנֵי הַיְּוָנִים לְמַעַן הַרְחִיקָם
quo loco de eos *ſuſcitans ego* Ecce .ſuo termino *deſuper*
12 מֵעַל גְּבוּלָם׃ הִנְנִי מְעִירָם מִן־הַמָּקוֹם אֲשֶׁר־
veſtram retributionem convertam & *: ibi* eos vendidiſtis
מְכַרְתֶּם אֹתָם שָׁמָּה וַהֲשִׁבֹתִי גְמֻלְכֶם
veſtras filias & , veſtros filios vendam Et .veſtrum caput in
13 בְּרֹאשְׁכֶם׃ וּמָכַרְתִּי אֶת־בְּנֵיכֶם וְאֶת־בְּנוֹתֵיכֶם
gentem ad Sabæis eos venundabunt & : Jehudah filiorum manu in
בְּיַד בְּנֵי יְהוּדָה וּמְכָרוּם לִשְׁבָאיִם אֶל־גּוֹי
,gentibus in hoc Clamate .eſt locutus Dominus quia *: longinquam*
14 רָחוֹק כִּי יְהוָה דִּבֵּר׃ קִרְאוּ־זֹאת בַגּוֹיִם
omnes aſcendant ,accedant , robuſtos ſuſcitate : bellum *ſanctificate*
קַדְּשׁוּ מִלְחָמָה הָעִירוּ הַגִּבּוֹרִים יִגְּשׁוּ יַעֲלוּ כֹּל
veſtras falces & ,gladios in *veſtros ligones Contundite* .belli viri
15 אַנְשֵׁי הַמִּלְחָמָה׃ כֹּתּוּ אִתֵּיכֶם לַחֲרָבוֹת וּמַזְמְרֹתֵיכֶם
venite & ,vos *Conglobate .ego* fortis , dicat Debilis : lanceas in
16 לִרְמָחִים הַחַלָּשׁ יֹאמַר גִּבּוֹר אָנִי׃ עוּשׁוּ וָבֹאוּ
fac deſcendere illuc : vos congregate & , circuitu de gentes omnes
כָל־הַגּוֹיִם מִסָּבִיב וְנִקְבָּצוּ שָׁמָּה הַנְחַת
vallem ad gentes aſcendant & ,ſe Suſcitent .tuos robuſtos *Domine*
17 יְהוָה גִּבּוֹרֶיךָ׃ יֵעוֹרוּ וְיַעֲלוּ הַגּוֹיִם אֶל־עֵמֶק
gentes omnes judicandum ad ſedebo ibi quia : Jehoſaphat
יְהוֹשָׁפָט כִּי שָׁם אֵשֵׁב לִשְׁפֹּט אֶת־כָּל־הַגּוֹיִם
,Venite .meſſis maturavit quoniam , falcem Mittite .circuitu de
18 מִסָּבִיב׃ שִׁלְחוּ מַגָּל כִּי בָשַׁל קָצִיר בֹּאוּ
quia , torcularia exuberant , torcular eſt plenum quia ,deſcendite
רְדוּ כִּי־מָלְאָה גַּת הֵשִׁיקוּ הַיְקָבִים כִּי
quia : conciſionis valle in *turbæ Turbæ* .eorum malitia multa
19 רַבָּה רָעָתָם׃ הֲמוֹנִים הֲמוֹנִים בְּעֵמֶק הֶחָרוּץ כִּי
Luna & Sol .conciſionis valle in Domini dies *propinquus*
20 קָרוֹב יוֹם יְהוָה בְּעֵמֶק הֶחָרוּץ׃ שֶׁמֶשׁ וְיָרֵחַ
.ſuum ſplendorem retraxerunt ſtellæ & *: nigruerunt*
קָדָרוּ וְכוֹכָבִים אָסְפוּ נָגְהָם׃

Verſio VULG. LAT.

CAP. III.

1 Quia ecce in diebus illis, & in
tempore illo, cùm convertero
captivitatem Juda et Jeruſalem :
2 Congregabo omnes Gentes, &
deducam eas in vallem Joſaphat:
& diſceptabo cum eis ibi ſuper
populo meo, & hæreditate mea
Iſrael, quos diſperſerunt in nationibus,
& terram meam diviſerunt.
3 Et ſuper populum meum
miſerunt ſortem : & poſuerunt
puerum in proſtibulo, et puellam
vendiderunt pro vino ut biberent.
4 Verùm quid mihi & vobis,
Tyrus et Sidon, & omnis terminus
Palæſtinorum ? numquid
ultionem vos reddetis mihi ? et
ſi ulciſcimini vos contra me, citò
velociter reddam viciſſitudinem
vobis ſuper caput veſtrum.
5 Argentum enim meum et aurum
tuliſtis : deſiderabilia mea et pulcherrima
intuliſtis in delubra veſtra.
6 Et filios Juda, & filios Jeruſalem
vendidiſtis filiis Græcorum ;
ut longè faceretis eos de
7 finibus ſuis. Ecce ego ſuſcitabo
eos de loco, in quo vendidiſtis
eos : & convertam retributionem
veſtram in caput veſtrum.
8 Et vendam filios veſtros, & filias
veſtras in manibus filiorum Juda,
& venumdabunt eos Sabæis genti
longinquæ, quia Dominus locutus
9 eſt. Clamate hoc in Gentibus,
ſanctificate bellum, ſuſcitate
robuſtos : accedant, aſcendant
10 omnes viri bellatores. Concidite
aratra veſtra in gladios, et
ligones veſtros in lanceas. Infirmus
dicat ; Quia fortis ego ſum.
11 Erumpite, & venite omnes gentes
de circuitu, & congregamini :
ibi occumbere faciet Dominus
12 robuſtos tuos. Conſurgant,
& aſcendant Gentes in vallem
Joſaphat : quia ibi ſedebo ut judicem
omnes gentes in circuitu.
13 Mittite falces, quoniam maturavit
meſſis : venite, & deſcendite,
quia plenum eſt torcular, exuberant
torcularia : quia multiplicata
14 eſt malitia eorum. Populi
populi in valle conciſionis :
quia juxta eſt dies Domini in valle
15 conciſionis. Sol et luna obtenebrati
ſunt, et ſtellæ retraxerunt
ſplendorem ſuum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. γʹ.

1 (α) Ὅτι ἰδοὺ ἐγὼ ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις
καὶ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, ὅταν ἐπιστρέψω
τὴν αἰχμαλωσίαν Ἰούδα καὶ Ἱερουσαλήμ,
2 Καὶ συνάξω πάντα τὰ ἔθνη,
καὶ κατάξω αὐτὰ εἰς τὴν κοιλάδα
Ἰωσαφάτ, καὶ διακριθήσομαι πρὸς αὐτοὺς
ἐκεῖ ὑπὲρ τοῦ λαοῦ μου καὶ τῆς κληρονομίας
μου Ἰσραήλ, οἳ διεσπάρησαν ἐν
τοῖς ἔθνεσι, καὶ τὴν γῆν μου καταδιείλαντο,
3 Καὶ ἐπὶ τὸν λαόν μου ἔβαλον
κλήρους, καὶ ἔδωκαν τὰ παιδάρια πόρναις,
καὶ τὰ κοράσια ἐπώλουν (ʹ) ἀντὶ τοῦ οἴνου,
4 καὶ ἔπινον. Καὶ τί (β) ὑμεῖς ἐμοὶ
Τύρος, καὶ Σιδών, καὶ πᾶσα Γαλιλαία
ἀλλοφύλων; μὴ ἀνταπόδομα ὑμεῖς ἀνταποδίδοτέ
μοι; ἢ μνησικακεῖτε ὑμεῖς
ἐπ' ἐμοί; ὀξέως καὶ ταχέως ἀνταποδώσω
τὸ ἀνταπόδομα ὑμῶν εἰς κεφαλὰς
5 ὑμῶν, Ἀνθ' ὧν τὸ ἀργύριόν μου καὶ
τὸ χρυσίον μου ἐλάβετε, καὶ τὰ ἐπίλεκτά
μου (γ) τὰ καλὰ εἰσηνέγκατε
6 εἰς τοὺς (δ) ναοὺς ὑμῶν, Καὶ τοὺς υἱοὺς
Ἰούδα καὶ τοὺς υἱοὺς Ἱερουσαλὴμ ἀπέδοσθε
τοῖς υἱοῖς τῶν Ἑλλήνων, ὅπως ἐξώσητε
7 αὐτοὺς ἐκ τῶν ὁρίων αὐτῶν. (ε) Καὶ
ἰδοὺ ἐγὼ ἐξεγείρω αὐτοὺς ἐκ τοῦ τόπου,
οὗ ἀπέδοσθε αὐτοὺς ἐκεῖ, καὶ ἀνταποδώσω
τὸ ἀνταπόδομα ὑμῶν εἰς κεφαλὰς ὑμῶν.
8 Καὶ ἀποδώσομαι τοὺς υἱοὺς ὑμῶν καὶ τὰς
θυγατέρας ὑμῶν εἰς χεῖρας (ζ) τῶν υἱῶν
Ἰούδα, καὶ ἀποδώσονται αὐτοὺς εἰς αἰχμαλωσίαν
εἰς ἔθνος μακρὰν ἀπέχον,
9 ὅτι κύριος ἐλάλησε. Κηρύξατε ταῦτα
ἐν τοῖς ἔθνεσιν, ἁγιάσατε πόλεμον,
ἐξεγείρατε τοὺς μαχητάς, προσαγάγετε
καὶ ἀναβαίνετε πάντες ἄνδρες
10 πολεμισταί, Συγκόψατε τὰ ἄροτρα ὑμῶν
εἰς ῥομφαίας, καὶ τὰ δρέπανα ὑμῶν
εἰς σειρομάστας· ὁ ἀδύνατος λεγέτω,
11 Ὅτι ἰσχύω ἐγώ. Συναθροίζεσθε, καὶ
εἰσπορεύεσθε πάντα τὰ ἔθνη κυκλόθεν,
καὶ συνάχθητε ἐκεῖ· ὁ πραῢς ἔστω μαχητής.
12 (η) Ἐξεγειρέσθωσαν, ἀναβαινέτωσαν
πάντα τὰ ἔθνη εἰς τὴν κοιλάδα
Ἰωσαφάτ, διότι ἐκεῖ καθιῶ τοῦ διακρῖναι
13 πάντα τὰ ἔθνη κυκλόθεν. Ἐξαποστείλατε
δρέπανα, ὅτι παρέστηκεν ὁ τρυγητός·
εἰσπορεύεσθε, πατεῖτε, διότι πλήρης
ἡ ληνός· (θ) ὑπερεκχεῖται τὰ ὑπολήνια,
14 ὅτι πεπλήθυνται τὰ κακὰ αὐτῶν. Ἦχοι
ἐξήχησαν ἐν τῇ κοιλάδι τῆς δίκης, (ι)
ὅτι ἐγγὺς ἡμέρα κυρίου ἐν τῇ κοιλάδι
15 τῆς δίκης. Ὁ ἥλιος καὶ ἡ σελήνη συσκοτάσουσι,
καὶ οἱ ἀστέρες δύσουσι (κ) φέγγος αὐτῶν.

CAP. III.

Quis ecce ego in diebus 1
illis, & in tempore illo, quando
convertero captivitatem Juda,
& Hieruſalem ; Et congregabo 2
omnes gentes, & detraham
eas (a) in vallem Joſaphat,
& diſceptabo cum eis
ibi pro populo meo, & hæreditate
meâ Iſrael, qui diſperſi
ſunt in gentibus ; & terram
meam diviſerunt, Et ſuper 3
populum meum miſerunt ſortes,
& dederunt pueros (b) meretricibus,
& puellas vendebant
pro vino, & bibebant. (c) Et 4
quid vos mihi, Tyrus, & Sidon,
& omnis (d) Galilæa alienigenarum?
Nunquid retributionem
vos redditis mihi, aut
iram in corde retinetis vos adverſùm
me? Velociter, & citò
reddam retributionem veſtram
in capita veſtra; Pro eo quòd 5
argentum meum, & aurum
meum tuliſtis, & electa mea,
(e) optima intuliſtis in templa
veſtra, Et filios Juda, & filios 6
Hieruſalem vendidiſtis filiis
Græcorum ; ut ejiceretis
eos de finibus ſuis. Et ecce 7
ego (f) ſuſcito eos de loco, in
quo vendidiſtis eos ibi, &
reddam retributionem veſtram
in capita veſtra: Et vendam 8
filios veſtros, & filias veſtras
in manus filiorum Juda : &
venundabunt eos (g) in captivitatem
genti, quæ procul abeſt:
quoniam Dominus loqutus
eſt. Prædicate hæc in gentibus, 9
(b) ſanctificate bellum,
ſuſcitate pugnatores: adducite,
& aſcendite omnes viri bellatores.
Concidite aratra veſtra in 10
gladios, & falces veſtras in
lanceas. (i) Infirmus dicat; Quia
prævaleo ego. Congregamini, & 11
introite, omnes gentes per circuitum,
& congregamini illuc:
manſuetus ſit pugnator. Conſurgant, 12
aſcendant omnes gentes
in vallem Joſaphat : quia
ibi ſedebo, ut judicem omnes
gentes in circuitu. Emittite 13
falces, quoniam abeſt vindemia:
introite, calcate, quia plenum eſt
torcular; (k) ſupereffundite torcularia,
quia repleta ſunt mala
eorum. Sonitus exauditi ſunt 14
in valle (l) judicii: quia juxta
eſt dies Domini in valle
judicii. Sol, & Luna obtenebrabuntur, 15
& ſtellæ occidere
facient ſplendorem ſuum.

MS. A. (α) Διότι (ʹ) ἀντὶ οἴνου, (β) καὶ ὑμεῖς (γ) καὶ τὰ καλά μου (δ) θησαυροὺς (ε) Ἰδοὺ ἐγὼ (ζ) υἱῶν (η) Ἐγειρέσθωσαν, καὶ ἀναβαινέτωσαν (θ) ὑπερχεῖται (ι) διότι ἐγγὺς ἡ ἡμέρα (κ) τὸ φέγγος

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ג

אֲרֵי הָא בְּיוֹמַיָּא הָאִנּוּן וּבְעִדָּנָא הַהִיא דַּאֲתִיב יָת גָּלוּת אֱנָשׁ יְהוּדָה וְיָתְבֵי יְרוּשְׁלֶם׃ 1
וְאֶכְנוֹשׁ יַת כָּל עַמְמַיָּא וְאַחֲתִנּוּן לְמֵישַׁר פְּלוֹג דִּינָא וְאֶתְפְּרַע מִנְּהוֹן תַּמָּן עַל עַמִּי 2
וְאַחְסַנְתִּי יִשְׂרָאֵל דְּבַדַּרוּ בֵּינֵי עַמְמַיָּא וְיַת אַרְעִי פַּלִּיגוּ׃ וּבְעַמִּי רְמוֹ עַדְבִין וִיהָבוּ 3
עוּלֵימָא בַּאֲגַר זַנְיְתָא וְעוּלֵימְתָּא זַבִּינוּ בְּחַמְרָא וְאִשְׁתִּיאוּ׃ וְאַף מָא אַתּוּן חֲשִׁיבִין 4
קֳדָמַי צוֹר וְצִידוֹן וְכָל תְּחוּמֵי פְּלִשְׁתָּאֵי הֲגִמְלָא אַתּוּן מְשַׁלְמִין קֳדָמַי וְאִם גָּמְלִין אַתּוּן
קֳדָמַי קְלִיל בִּפְרִיעַ אָתִיב גַּמְלֵיכוֹן בְּרֵישֵׁיכוֹן׃ דִּי כַסְפִּי וְדַהֲבִי נְסַבְתּוּן וּמָנֵי חֶמְדָּתָא 5
טָבַיָּא אַעֶלְתּוּן לְהֵיכְלֵיכוֹן׃ וּבְנֵי יְהוּדָה וּבְנֵי יְרוּשְׁלֶם זַבִּנְתּוּן לִבְנֵי יְוָנָאֵי בְּדִיל 6
לְאַרְחָקוּתְהוֹן מֵעַל תְּחוּמֵיהוֹן׃ הָא אֲנָא מַיְתֵי לְהוֹן בִּגְלֵי מִן אַתְרָא דְּזַבִּנְתּוּן יַתְהוֹן 7
לְתַמָּן וַאֲתִיב גַּמְלֵיכוֹן בְּרֵישֵׁיכוֹן׃ וְאֶמְסַר יַת בְּנֵיכוֹן וְיַת בְּנָתֵיכוֹן בְּיַד בְּנֵי יְהוּדָה 8
וִיזַבְּנוּנוּן לִבְנֵי שְׁבָא לְעַמָּא רְחִיקָא אֲרֵי בְּמֵימְרָא דַּיְיָ גְּזִיר כֵּן׃ אַכְלוּ דָא בְּעַמְמַיָּא 9
זַמִּינוּ עָבְדֵי קְרָבָא יֵיתוּן בִּגְלֵי גִּבָּרַיָּא יִתְקָרְבוּן וְיִסְקוּן כָּל גַּבְרֵי עָבְדֵי קְרָבָא׃ אַתְקִינוּ 10
סִכֵּיכוֹן לְסַיְפִין וּמַגְלֵיכוֹן לְמוּרְנִין דְּחַלִּישׁ יֵימַר גִּבַּר אֲנָא׃ יִתְכַּנְשׁוּן וְיֵיתוּן כָּל עַמְמַיָּא 11
מִסְחוֹר סְחוֹר וְיִתְקָרְבוּן תַּמָּן יִתַּבַּר יְיָ תְּקוֹף גִּבָּרֵיהוֹן׃ יֵיתוּן בִּגְלֵי וְיִסְקוּן עַמְמַיָּא 12
לְמֵישַׁר פְּלוֹג דִּינָא אֲרֵי תַמָּן אִתְגְּלֵי לְמֵדַן יַת כָּל עַמְמַיָּא מִסְחוֹר סְחוֹר׃ אוֹשִׁיטוּ בְהוֹן 13.
חַרְבָּא אֲרֵי מְטָא זְמַן קִצְּהוֹן חוּתוּ דוּשׁוּ קְטִילֵי גִּבָּרֵיהוֹן כְּבָעוּט דְּמִתְבְּעַט בְּמַעְצַרְתָּא
אַשִׁידוּ דִּמְהוֹן אֲרֵי סְגִיאַת בִּישַׁתְהוֹן׃ מַשִׁרְיָן מַשִׁרְיָן בְּמֵישַׁר פְּלוֹג דִּינָא אֲרֵי קָרִיב 14
יוֹמָא דַּעֲתִיד לְמֵיתֵי מִן קֳדָם יְיָ בְּמֵישַׁר פְּלוֹג דִּינָא׃ שִׁמְשָׁא וְסִיהֲרָא קְבַלוּ וְכוֹכְבַיָּא 15
כְּנַשׁוּ זְהוֹרְהוֹן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. III.

Ecce enim in diebus illis eodémque tempore quo convertero captivitatem 1
virorum Jehuda & incolarum Jeruſalem : Congregabo univerſos populos, 2
& deſcendere faciam eos in vallem diviſionis judicii, et vindictam ſumam
ab eis ibi pro populo meo, & hæreditate mea Iſrael, quos diſperſerunt inter
populos, atque terram meam diviſerunt. Et in populum meum projecerunt 3
ſortes, & dederunt puerum pro mercede meretricis, & puellam vendiderunt
pro vino, & biberunt. Vos quoque Tyrus atque Sidon, omnéſque termini 4
Philiſtinorum quanti æſtimati eſtis aqud me ? nunquid retributionem redditis
coram me? quòd ſi in præſentia mea rependitis, protinus in momento
convertam retributionem in caput veſtrum. Qui argentum meum & aurum 5
accepiſtis, & vaſa deſiderii mei bona intuliſtis in palatia veſtra. Et filios Jehuda 6
filióſque Jeruſalem vendidiſtis filiis Græcorum, ut longe amandaretis
eos à terminis ſuis. Ecce ego adducam eos publicè de loco in quo vendidiſtis 7
eos, ut reddam mercedem veſtram in caput veſtrum. Tradam ergo filios 8
veſtros & filias veſtras in poteſtatem filiorum Jehuda, qui venundabunt eos
filiis Sabba populo longinquo ; quia verbo Domini decretum eſt ita. Proclamate 9
hoc in gentibus, præparate bellatores, veniant publicè robuſti, accedant
& conſcendant omnes viri bellatores. Dirigite vomeres veſtros in 10
gladios, & falces veſtras in lanceas: qui infirmus eſt, dicat, Fortis ego ſum.
Congregentur & veniant omnes populi de circuitu & accedant, ibi confringet 11
Dominus robur fortium eorum. Venient apertè, & aſcendent populi in 12
vallem diviſionis judicii : ibi námque revelabor ut judicem omnes gentes
circumvicinas. Protendite in eos gladium : etenim pervenit tempus finis eorum, 13
deſcendite conculcate interfectos fortes eorum ſicut quod calcari ſolet
in torculari : fundite ſanguinem eorum, quia multiplicata eſt illorum malignitas.
Exercitus creberrimi [*ſint*] in valle diviſionis judicii; inſtat enim dies 14
qui venturus eſt à facie Domini in valle diviſionis judicii. Sol & Luna obtenebrati 15
ſunt, nec non ſtellæ reſtrinxerunt ſplendorem ſuum.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܓ *

1 * ܡܛܠ ܕܒܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ܂ ܘܒܙܒܢܐ ܗܘ ܕܐܗܦܘܟ ܫܒܝܬܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܕܐܘܪܫܠܡ܀
2 * ܐܟܢܫ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ܂ ܘܐܚܬ ܐܢܘܢ ܠܢܚܠܐ ܕܝܗܘܫܦܛ܂ ܘܐܕܘܢ ܥܡܗܘܢ ܬܡܢ܀ ܡܛܠ
ܥܡܝ ܘܡܛܠ ܝܪܬܘܬܝ ܐܝܣܪܝܠ܂ ܕܐܬܒܕܪܘ ܒܝܬ ܥܡܡܐ܂ ܡܛܠ ܕܦܠܓܘܗ ܐܪܥܝ܀
* ܘܥܠ ܥܡܝ ܐܪܡܝܘ ܦܣܐ܂ ܘܝܗܒܘ ܛܠܝܐ ܚܠܦ ܙܢܝܬܐ܂ ܘܛܠܝܬܐ ܙܒܢܘ ܒܚܡܪܐ 3
ܘܐܫܬܝܘ܀ * ܡܢܐ ܣܥܪܬܘܢ ܐܢܬܘܢ ܠܝ ܨܘܪ ܘܨܝܕܢ܂ ܘܟܠܗ ܓܠܝܠܐ ܕܦܠܫܬ܂ ܕܠܡܐ 4
ܦܘܪܥܢܐ ܦܪܥܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܝ܂ ܘܐܢ ܛܝܒܘܬܐ ܥܒܕܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܝ܂ ܒܥܓܠ ܘܡܣܪܗܒܐܝܬ
ܐܗܦܘܟ ܦܘܪܥܢܟܘܢ ܒܪܝܫܟܘܢ܀ * ܡܛܠ ܕܣܩܠܬܘܢ ܣܐܡܝ ܘܕܗܒܝ܂ ܘܡܐܢܝ ܫܦܝܪܐ ܐܥܠܬܘܢ 5
ܠܗܝܟܠܝܟܘܢ܀ * ܒܢܝ ܝܗܘܕܐ ܘܒܢܝ ܐܘܪܫܠܡ ܙܒܢܬܘܢ ܠܒܢܝ ܝܘܢܝܐ܂ ܕܬܪܚܩܘܢ 6
ܐܢܘܢ ܡܢ ܬܚܘܡܗܘܢ܀ * ܗܐ ܐܢܐ ܡܥܝܪ ܐܢܐ ܠܗܘܢ ܡܢ ܐܬܪܐ ܕܙܒܢܬܘܢ ܐܢܘܢ ܠܬܡܢ܂ 7
ܘܐܗܦܘܟ ܦܘܪܥܢܟܘܢ ܒܪܝܫܟܘܢ܀ * ܘܐܫܠܡ ܠܒܢܝܟܘܢ ܘܠܒܢܬܟܘܢ ܒܐܝܕܝ ܒܢܝ ܝܗܘܕܐ܂ 8
ܘܢܙܒܢܘܢ ܐܢܘܢ ܠܫܒܝܐ ܠܥܡܐ ܪܚܝܩܐ܂ ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܡܠܠ܀ * ܐܟܪܙܘ ܗܕܐ ܒܝܬ ܥܡܡܐ܂ 9
ܩܕܫܘ ܩܪܒܐ܂ ܐܥܝܪܘ ܠܓܢܒܪܐ܂ ܢܬܩܪܒܘܢ ܘܢܣܩܘܢ ܟܠܗܘܢ ܓܒܪܐ ܩܪܒܬܢܐ܀ * ܕܘܩܘ 10
ܣܟܐ ܕܦܕܢܝܟܘܢ ܠܣܦܣܪܐ܂ ܘܡܓܠܐ ܕܝܠܟܘܢ ܠܪܘܡܚܐ܂ ܘܡܢ ܕܡܚܝܠ ܢܐܡܪ܂ ܕܓܢܒܪܐ ܐܢܐ܀
* ܐܬܟܢܫܘ ܘܬܘ ܟܠܟܘܢ ܥܡܡܐ ܕܚܕܪܝܢ܂ ܐܬܩܪܒܘ ܘܬܡܢ ܢܬܒܪ ܡܪܝܐ ܓܢܒܪܘܬܟܘܢ܀ 11
* ܢܬܬܥܝܪܘܢ ܘܢܣܩܘܢ ܥܡܡܐ ܠܢܚܠܐ ܕܝܗܘܫܦܛ܂ ܡܛܠ ܕܬܡܢ ܐܬܒ ܠܡܕܢ ܠܟܠܗܘܢ 12
ܥܡܡܐ ܕܚܕܪܝܢ܀ * ܫܕܪܘ ܡܓܠܐ܂ ܡܛܠ ܕܡܛܐ ܩܛܦܐ܂ ܥܘܠܘ ܕܘܫܘ܂ ܡܛܠ ܕܡܠܝܢ 13
ܓܘܒܐ܂ ܘܦܫܘ ܡܥܨܪܬܐ܂ ܡܛܠ ܕܣܓܝܐܐ ܒܝܫܘܬܗܘܢ܀ * ܩܠܐ ܕܗܡܝܢܐ ܒܢܚܠܐ 14
ܕܦܣܩܬܐ܂ ܡܛܠ ܕܩܪܝܒ ܗܘ ܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ ܒܢܚܠܐ ܕܦܣܩܬܐ܀ * ܫܡܫܐ ܘܣܗܪܐ 15
ܢܚܫܟܘܢ܂ ܘܢܥܪܒ ܢܘܗܪܐ ܕܟܘܟܒܐ܀

CAP. III.

Quoniam iis diebus & eo tempore quo 1
reducam captivos Judæ & Jeruſalem, Con- 2
gregabo cunctos populos & deducam eos ad
vallem Joſaphati, ibique diſceptabo cum eis
causâ populi mei & causâ Iſraelis hæreditatis
mex, qui diſperſi ſunt inter gentes; eò
quòd partiti ſint terram meam. Et ſuper 3
populum meum jecerint ſortes, dederint pueros
pro mercede meretricum, & puellas vendiderint
pro vino, ac biberint. Cujus momenti 4
eſtis apud me Tyre & Sidon, totáque
Galilæa Paleſtinæ? num retributionem rependitis
mihi? Quòd ſi beneficiis me cumulatis,
brevi ac velociter reddam vobis retributionem
veſtram in caput veſtrum. Eò 5
quòd acceperitis argentum & aurum meum,
vaſa mea pulcherrima intuleritis in templa
veſtra, Filios Judæ & filios Jeruſalem vendideritis 6
filiis Græcorum, ut procul abigeretis
eos à limitibus ſuis; Ecce ego ſuſcitaturus 7
ſum eos de loco in quem vendidiſtis
eos, & redditurus retributionem veſtram in
caput veſtrum. Tradam enim filios filiáſque 8
veſtras in manum filiorum Judæ, qui vendent
eos Sabæis genti longinquæ: quoniam Dominus
locutus eſt. Prædicate hoc inter gentes, 9
ſanctificate bellum, excitate gigantes; accedant
& aſcendant omnes viri bellatores.
Tundite vomeres aratrorũ veſtrorum in gladios, 10
& falces veſtras in lanceas; & qui debilis
eſt, dicat; Gigas ego ſum. Congregamini 11
& venite omnes gentes circunjacentes;
accedite, atque ibi franget Dominus fortitudinem
veſtram. Excitentur & aſcendant populi 12
ad vallem Joſaphati, quoniam illic ſedebo
ad judicandum omnes gentes circunjacentes.
Redintegrate falces, quia maturuit vindemia: 13
ingredimini, calcate; quia impleti ſunt
lacus, & redundaverunt torcularia: ſiquidem
multiplicata eſt malitia eorum. Senſus tumultûs 14
eſt in valle deciſionum, quia proximus
eſt dies Domini in valle deciſionum. Sol 15
& luna obſcurabuntur, & occidet lumen
ſtellarum:

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* الفصل الثالث *

1 * من اجل اني ها انا في تلك الايام وفي ذلك الزمان اذ ارد سبي يهودا واورشليم * واجمع 2
جميع الامم * واحدرهم الي وادي يوساقاط * واحاكمهم هناك من اجل شعبي وميراثي اسراييل
الذين تبددوا في الامم * وقسموا ارضي * ووضعوا على شعبي قرعا * واعطوا الصبيان 3
للزواني * والجواري باعوهن عوض الخمر وشربوا * فماذا انتم لي يا صور وصيدا وكل جليل 4
القبايل الغريبة * هل كافيتموني انتم مكافاة * او ذكرتم الشر علي * بحدة وسرعة اكافي
مكافاتكم في رووسكم * لانكم اخذتم فضتي وذهبي * وبخياراتي وجيداتي ادخلتموها الي 5
هياكلكم * وبني يهودا وبني اورشليم بعتموهم لبني اليونانيين * كي تقصوهم من حدودهم * 6
* ها انا انهضهم من الموضع حيث بعتموهم هناك * واكافي مكافاتكم في رووسكم * وادفع 7 8
بنيكم وبناتكم في ايدي بني يهودا * ويسلموهم للسبي الي امة بعيدة قاصية * لان الرب
تكلم * نادوا بهذه الي الامم * قدسوا الحرب * انهضوا المحاربين * اجتمعوا واصعدوا يا جميع 9
الرجال المقاتلين * اقطعوا فدادينكم للسيوف * ومناجلكم للحسوب * الذي لا قوة له ليقل 10
اني اقوى انا * اجتمعوا وادخلوا يا جميع الامم المحيطين * واجتمعوا هناك * الوديع يكون 11
محاربا * لينهض ويصعد جميع الامم الي وادي يوساقاط * من اجل اني هناك اجلس لاميز 12
جميع الامم المحيطين * سرحوا المناجل * لان القطاف حضر * ادخلوا دوسوا * لان المعصر 13
مملوء * فاضت المعاصر * لان شرورهم كثرت * الاصوات تحدث في وادي القضاء * 14
من اجل ان يوم الرب قريب في وادي القضاء * الشمس والقمر يظلما * والنجوم 15
تغيب ضوءها *

CAP. III.

Nam ecce ego diebus illis & tempore 1
illo quo reducam captivos Judæ & Jeroſolymorum; Congregabo etiam cunctas 2
gentes, & deducam eas ad vallem Joſaphati, & diſceptabo cum eis ibi pro
populo meo & hæreditate meâ Iſraele
qui diſperſi ſunt inter gentes, quòd diviſerint
terram meam, Et miſerint ſuper 3
populum meum ſortes, dederint pueros
meretricibus, & puellas vendiderint pro
vino, biberintque. Quid eſtis apud me O 4
Tyre & Saida, totaque Galilæa gentium
exterarum? num retribuiſtis mihi vos
retributionem ullam? an verò memoriâ
tenetis malum contra me? cum ira &
celeriter rependam retributionem veſtram
in caput veſtrum: Quia rapuiſtis argentum 5
& aurum meum, & ſelectiſſima
atque optima quæque mea intuliſtis in
templa veſtra: Et filios Judæ filiosque 6
Jeroſolymorum vendidiſtis filiis Græcorum,
ut longè amandaretis eos à terminis
ſuis. En ego excitabo eos è loco 7
ubi vendidiſtis eos, & rependam retributionem
veſtram in caput veſtrum: Tradamque 8
filios veſtros & filias veſtras in
manus filiorum Judæ, ut captivos tradant
eos genti procul remotæ: quia Dominus
locutus eſt. Prædicate hæc gentibus, 9
ſanctificate bellum, excitate bellatores;
congregamini, & aſcendite O
omnes viri belligeri: Concidite aratra 10
veſtra in gladios, & falces veſtras in
ſagittas: qui vires non habet, dicat,
Equidem valens ego ſum. Congregamini 11
et introite O omnes gentes adjacentes, et
convenite illuc: qui manſuetus eſt, bellator
eſto. Surgant et aſcendant omnes 12
gentes ad vallem Joſaphati; quoniam
ibi ſeſſurus ſum ad diſcernendas omnes
gentes circunjacentes. Mittite falces, 13
quoniam adeſt vindemia: ingredimini,
calcate, quia lacus plenus eſt: redundaverunt
torcularia, quia horum ſcelera
multiplicata ſunt. Concentus perſonuerunt 14
in valle judicii, quia dies Domini
proximus eſt in valle judicii. Sol & 15
luna obtenebrabuntur, & ſtella occultabunt
lucem ſuam:

cōtremiſcēt &,ſuã vocē dabit Jeruſalaim de &,rugiet Sijon de Dominus Et
21 וַיהֹוָה מִצִּיּוֹן יִשְׁאָג וּמִירוּשָׁלַםִ יִתֵּן קוֹלוֹ וְרָעֲשׁוּ
filiorum fortitudo & ,ſui populi ſpes Dominus & : terra & cœli
שָׁמַיִם וָאָרֶץ וַיהֹוָה מַחֲסֶה לְעַמּוֹ וּמָעוֹז לִבְנֵי
Sijon in *habitans* veſter Deus Dominus *ego* quòd ſcietis Et .Iſrael
22 יִשְׂרָאֵל׃ וִידַעְתֶּם כִּי אֲנִי יְהֹוָה אֱלֹהֵיכֶם שֹׁכֵן בְּצִיּוֹן
tranſibunt non alieni & ,*ſanctitas* Jeruſalaim erit Et *meæ ſanctitatis* monte
הַר־קָדְשִׁי וְהָיְתָה יְרוּשָׁלַםִ קֹדֶשׁ וְזָרִים לֹא־יַעַבְרוּ־
,muſtum montes ſtillabunt illa die in ,erit Et .amplius eam *in*
23 בָהּ עוֹד׃ וְהָיָה בַיּוֹם הַהוּא יִטְּפוּ הֶהָרִים עָסִיס
.aquæ ibunt Jehudah rivi omnes & , *lacte diffluent* colles &
וְהַגְּבָעוֹת תֵּלַכְנָה חָלָב וְכָל־אֲפִיקֵי יְהוּדָה יֵלְכוּ מָיִם
.*Sitim* torrentem *irrigabit* & ,egredietur Domini domo è fons Et
וּמַעְיָן מִבֵּית יְהֹוָה יֵצֵא וְהִשְׁקָה אֶת־נַחַל הַשִּׁטִּים׃
: erit ſolitudinis deſertum in Edom & , erit deſolationẽ in Ægyptus
24 מִצְרַיִם לִשְׁמָמָה תִהְיֶה וֶאֱדוֹם לְמִדְבַּר שְׁמָמָה תִּהְיֶה
innocentẽ ſanguinẽ effuderunt quia , Jehudah filiorum injuriã propter
מֵחֲמַס בְּנֵי יְהוּדָה אֲשֶׁר־שָׁפְכוּ דָם־נָקִיא
generationẽ in Jeruſalaim &:habitabit ſeculum in Jehudah Et.eorũ terra in
25 בְּאַרְצָם׃ וִיהוּדָה לְעוֹלָם תֵּשֵׁב וִירוּשָׁלַםִ לְדוֹר
: mundavi non ,eorum ſanguinem mundabo Et .generationem &
26 וָדוֹר׃ וְנִקֵּיתִי דָּמָם לֹא־נִקֵּיתִי
.Sijon in *habitans* Dominus &
וַיהֹוָה שֹׁכֵן בְּצִיּוֹן׃

Verſio VULG. LAT.

16 Et Dominus de Sion rugiet, &
de Jeruſalem dabit vocem ſuam:
& movebuntur cœli, & terra: &
Dominus ſpes populi ſui, & fortitudo
17 filiorum Iſrael. Et ſcietis
quia ego Dominus Deus veſter,
habitans in Sion monte ſancto
meo: & erit Jeruſalem ſancta, &
alieni non tranſibunt p eam amplius.
18 Et erit in die illa: ſtillabunt
montes dulcedinem, & colles
fluent lacte: & per omnes
rivos Juda ibunt aquæ: & fons
de domo Domini egredietur, &
irrigabit torrentem ſpinarum.
19 Ægyptus in deſolationem erit, &
Idumæa in deſertũ perditionis:
pro eo quòd iniquè egerint in
filios Juda, & effuderint ſanguinẽ
20 innocentẽ in terra ſua. Et Judæa
in æternum habitabitur, & Jeruſalem
in generationem & generationem.
21 Et mundabo ſanguinem
eorum, quem non mundaveram:
& Dominus commorabitur
in Sion.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

16 Ὁ δὲ κύριος ἐκ Σιὼν (λ) ἀνακεκράξεται, καὶ
ἐξ Ἱερουσαλὴμ δώσει φωνὴν αὐτοῦ, καὶ σεισθήσεται
ὁ οὐρανὸς καὶ ἡ γῆ· ὁ δὲ κύριος φείσεται
τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, καὶ ἐνισχύσει τοὺς υἱοὺς Ἰσραήλ.
17 Καὶ ἐπιγνώσεσθε διότι ἐγὼ κύριος
ὁ θεὸς ὑμῶν, ὁ κατασκηνῶν ἐν Σιὼν ὄρει
ἁγίῳ μου. καὶ ἔσται Ἱερουσαλὴμ ἁγία, καὶ
ἀλλογενεῖς οὐ διελεύσονται δι' αὐτῆς οὐκέτι.
18 Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ἀποσταλάξει
τὰ ὄρη γλυκασμόν, καὶ οἱ βουνοὶ ῥυήσονται
γάλα, καὶ πᾶσαι αἱ ἀφέσεις Ἰούδα ῥυήσονται
ὕδατα, καὶ πηγὴ ἐξ οἴκου κυρίου ἐξελεύσεται, καὶ
19 ποτιεῖ τὸν χειμάῤῥουν τῶν σχοίνων. Αἴγυπτος εἰς
ἀφανισμὸν ἔσται, καὶ ἡ Ἰδουμαία εἰς πεδίον
ἀφανισμοῦ ἔσται, ἐξ ἀδικιῶν υἱῶν Ἰούδα, ἀνθ'
ὧν ἐξέχεαν αἷμα δίκαιον ἐν τῇ γῇ αὐτῶν.
20 Ἡ δὲ Ἰουδαία εἰς τὸν αἰῶνα κατοικηθήσεται,
21 καὶ Ἱερουσαλὴμ εἰς γενεὰς γενεῶν. Καὶ (μ)
ἐκζητήσω τὸ αἷμα αὐτῶν, καὶ οὐ μὴ (ν) ἀθῳώσω,
καὶ κύριος κατασκηνώσει ἐν Σιών.

ἸΩῊΛ Δ΄.

Dominus autem de Sion (m) clamavit, & de Hieruſalem dabit 16
vocem ſuam: & movebitur cælũ, & terra: Dominus autem parcet populo ſuo, & confortabit filios Iſrael. Et ſcietis, quia ego Dominus 17
Deus veſter, habitans in Sion monte (n) ſancto meo. Et erit Hieruſalem ſancta: & alienigenæ non tranſibunt per eam amplius. Et 18
erit, in die illa ſtillabunt montes dulcedinẽ, & colles fluent lacte, & omnes emiſſiones Judæ fluent aquis. Et fons de domo Domini egredietur, & irrigabit torrentem (o) funiculorum. Ægyptus in 19
perditione erit: & Idumæa in campum deſolationis erit, ex iniquitatibus filiorum Juda, pro eo, quòd effuderunt ſanguinem juſtum in terra ſua. Judæa autem 20
in æternũ habitabitur, & Hieruſalẽ in generationes generationũ. Et requiram ſanguinem eorum, 21
inultũmque eſſe non patiar: & Dominus habitabit in Sion.

MS.A. (λ) ἀνακράξεται, (μ) ἐκδικήσω (ν) ἀθῳώσω,
ἸΩῊΛ Δ΄.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 וַיָי מִצִּיוֹן יְכַלֵי וּמִירוּשְׁלֶם יָרִים מֵימְרֵיהּ וִיזוּעוּן שְׁמַיָא וְאַרְעָא וַיָי סְמַךְ לְעַמֵּיהּ וּסְעִיד
17 לִבְנֵי יִשְׂרָאֵל׃ וְתִדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ אֱלָהֲכוֹן אַשְׁרֵיתִי שְׁכִנְתִּי בְּצִיּוֹן טוּרָא דְקוּדְשִׁי וּתְהֵי
18 יְרוּשְׁלֶם קוּדְשָׁא וְנוּכְרָאִין לָא יֶעְדוּן בַּהּ עוֹד׃ וִיהֵי בְּעִדָּנָא הַהִיא יְרַבּוּן טוּרַיָא חֲמַר
מֵרַת וְרָמָתָא יִגְּרָן טוּבָא וְכָל פְּצִידֵי דְבֵית יְהוּדָה יְהַכוּן מַיָא וּמַבּוּעַ מִבֵּית מַקְדְּשָׁא דַיְיָ
19 יְהֵי נְפֵיק וּמַשְׁקֵי יַת מֵישַׁר שִׁטִּין׃ מִצְרַיִם לְצָדוּ תְהֵי וֶאֱדוֹם לְמַדְבַּר צָדוּ תְּהֵי מֵחֲטוֹף
20 בְּנֵי יְהוּדָה דְאַשְׁדוּ דַם זַכַּי בְּאַרְעֲהוֹן׃ וִיהוּדָה לַעֲלָם תֵּיתַב וִירוּשְׁלֶם לְדָר וְדָר׃
21 וּדְאִתְפְּרַעִית דְּמְהוֹן מִן עַמְמַיָא תוּב אֲנָא עָתִיד לְאִתְפְּרַע אֲמַר יְיָ דְּאַשְׁרִי שְׁכִנְתֵּיהּ
בְּצִיּוֹן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et Dominus de Sion rugiet, & de Jeruſalem ſublimabit verbum ſuum : tunc 16
commovebuntur cœli & terra: Dominus autem ſuſtentaculum eſt populo ſuo,
& auxilium filiis Iſrael. Scietiſque quòd ego Dominus Deus veſter cùm manentem 17
poſuero majeſtatem meam in Sion monte ſanctitatis meæ, erit Jeruſalem
ſancta, neque extranei tranſibunt per eam amplius. Et in tempore illo, 18
ſtillabunt montes vinum inebrians, & colles bonis decurrent, ac per omnes
latices domus Jehuda obambulabunt aquæ, quin & fons de domo ſanctuarii
Domini prodibit, qui irrigabit vallem Sittim. Ægyptus in deſolationem fiet, 19
& Idumæa in deſertum vaſtitatis erit, ob id quòd violenter oppreſſerunt
filios Jehuda, qui effuderunt ſanguinem innocentem in terra ſua. Juda autem 20
in æternum permanebit, & Jeruſalem in cunctas generationes. Quòd verò 21
ultus ſum ſanguinem eorum ex populis, iterum vindicaturus ſum, ait Dominus,
qui manentem locavit majeſtatem ſuam in Sion.

ספר עמוס

CAPUT I. א

vidit quæ : Tecoah *de pecuariis in* fuit qui , Hamos Verba
1 דִּבְרֵי עָמוֹס אֲשֶׁר־הָיָה בַנֹּקְדִים מִתְּקוֹעַ אֲשֶׁר חָזָה
Jarobham diebus in & ,Jehudah regis Huzijahu diebus in Iſrael ſuper
עַל־יִשְׂרָאֵל בִּימֵי עֻזִּיָּה מֶלֶךְ־יְהוּדָה וּבִימֵי יָרָבְעָם
.*commotionis facies ad* annis duobus , Iſrael regis Joas filii
בֶּן־יוֹאָשׁ מֶלֶךְ יִשְׂרָאֵל שְׁנָתַיִם לִפְנֵי הָרָעַשׁ׃
:ſuam vocem dabit Jeruſalaim de & ,rugiet Sijon de Dominus,Dixitque
2 וַיֹּאמַר יְהֹוָה מִצִּיּוֹן יִשְׁאָג וּמִירוּשָׁלַםִ יִתֵּן קוֹלוֹ
.Carmel *caput* areſcétque , paſtorum habitacula lugebunt &
וְאָבְלוּ נְאוֹת הָרֹעִים וְיָבֵשׁ רֹאשׁ הַכַּרְמֶל׃
,Dammeſec prævaricationibus tribus Super : Dominus dixit Sic
3 כֹּה אָמַר יְהֹוָה עַל־שְׁלֹשָׁה פִּשְׁעֵי דַמֶּשֶׂק
ferreis plauſtris in *eos trituraſſe ſuper:eum convertã* non quatuor ſuper &
וְעַל־אַרְבָּעָה לֹא אֲשִׁיבֶנּוּ עַל־דּוּשָׁם בַּחֲרֻצוֹת הַבַּרְזֶל
devorabit & : Chaſael domum in ignem mittam Et .Ghilhad ipſam
4 אֶת־הַגִּלְעָד׃ וְשִׁלַּחְתִּי אֵשׁ בְּבֵית חֲזָאֵל וְאָכְלָה
faciã excidere &,Dammeſec *vectem* conteram Et .hadad-Ben *ædes*
5 אַרְמְנוֹת בֶּן־הֲדָד׃ וְשָׁבַרְתִּי בְּרִיחַ דַּמֶּשֶׂק וְהִכְרַתִּי
: Heden domo de ſceptrum tenentem & , Aven valle de habitatorem
יוֹשֵׁב מִבִּקְעַת־אָוֶן וְתוֹמֵךְ שֵׁבֶט מִבֵּית עֶדֶן
:Dominus dixit Sic .Dominus dixit, Chir in ,Aram populus *migrabunt* &
6 וְגָלוּ עַם־אֲרָם קִירָה אָמַר יְהֹוָה׃ כֹּה אָמַר יְהֹוָה
: eũ convertã non quatuor ſuper &,Hazzah prævaricationibus tribus Super
עַל־שְׁלֹשָׁה פִּשְׁעֵי עַזָּה וְעַל־אַרְבָּעָה לֹא אֲשִׁיבֶנּוּ
.Edom *in concludendum ad* ,perfectam *tranſmigrationem eos tranſportaſſe ſuper*
עַל־הַגְלוֹתָם גָּלוּת שְׁלֵמָה לְהַסְגִּיר לֶאֱדוֹם׃

Verſio VULG. LAT.

PROPHETIA AMOS.

CAP. I.

1 VERBA Amos, qui fuit in
paſtoribus de Thecue: quæ vidit
ſuper Iſrael in diebus Oziæ regis
Juda, & in diebus Jeroboam filii
Joas regis Iſrael, ante duos annos
2 terræmotûs. Et dixit; Dñs de Sion
rugiet, & de Jeruſalem dabit vocem
ſuam: & luxerunt ſpecioſa
paſtorum, & exiccatus eſt vertex
3 Carmeli. Hæc dicit Dominus;
Super tribus ſceleribus Damaſci,
& ſuper quatuor non convertam
eum: eò quòd trituraverint in
4 plauſtris ferreis Galaad. Et mittam
ignem in domum Azael, &
5 devorabit domos Benadad. Et
conteram vectem Damaſci: &
diſperdam habitatorem de campo
idoli, & tenentem ſceptrum
de domo voluptatis: & transferetur
populus Syriæ Cyrenen,
6 dicit Dominus. Hæc dicit Dominus;
Super tribus ſceleribus Gazæ,
& ſuper quatuor non convertam
eum: eò quòd tranſtulerint
captivitatem perfectam, ut concluderent
eam in Idumæa.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ἈΜΩ῀Σ Β΄.

ΚΕΦ. α΄.

1 Λόγοι Ἀμὼς οἳ ἐγένοντο ἐν Ἀκκαρεὶμ
ἐκ Θεκουέ, οὓς εἶδεν ὑπὲρ Ἱερουσαλὴμ, ἐν ἡμέραις
Ὀζίου βασιλέως Ἰούδα, καὶ ἐν ἡμέραις
Ἱεροβοὰμ τοῦ Ἰωὰς βασιλέως Ἰσραήλ, πρὸ
2 δύο ἐτῶν τοῦ σεισμοῦ. Καὶ εἶπε, Κύριος ἐκ
Σιὼν ἐφθέγξατο, καὶ ἐξ Ἱερουσαλὴμ ἔδωκε
φωνὴν αὐτοῦ· καὶ ἐπένθησαν αἱ νομαὶ τῶν ποιμένων,
καὶ ἐξηράνθη ἡ κορυφὴ τοῦ Καρμήλου.
3 Καὶ εἶπε κύριος, Ἐπὶ ταῖς τρισὶν ἀσεβείαις
Δαμασκοῦ, καὶ ἐπὶ ταῖς τέσσαρσιν οὐκ
ἀποστραφήσομαι αὐτόν, ἀνθ' ὧν ἔπριζον πρίοσι
σιδηροῖς τὰς ἐν γαστρὶ ἐχούσας (α) τῶν ἐν
4 Γαλαάδ. Καὶ (β) ἀποστελῶ πῦρ εἰς τὸν οἶκον
Ἀζαήλ, καὶ καταφάγεται (γ) τὰ θεμέλια υἱοῦ
5 Ἀδέρ. Καὶ συντρίψω μοχλοὺς Δαμασκοῦ,
καὶ (δ) ἐξολοθρεύσω κατοικοῦντας ἐκ πεδίου
Ὤν, καὶ κατακόψω φυλὴν ἐξ ἀνδρῶν Χαῤῥάν,
καὶ (ε) αἰχμαλωτευθήσεται λαὸς Συρίας
6 ἐπίκλητος, λέγει κύριος. Τάδε λέγει κύριος,
Ἐπὶ ταῖς τρισὶν ἀσεβείαις Γάζης, καὶ ἐπὶ
ταῖς τέσσαρσιν οὐκ ἀποστραφήσομαι αὐτούς, ἕνεκεν
τοῦ αἰχμαλωτεῦσαι αὐτοὺς αἰχμαλωσίαν
τοῦ Σαλωμών, τοῦ συγκλεῖσαι εἰς τὴν Ἰδουμαίαν.

AMOS.

CAP. I.

SERMONES *Amos,* 1
qui facti ſunt in (a) Accarim, de Thecue: quos vidit (b) pro Hieruſalem in diebus Oziæ regis Juda, & in diebus Hieroboam filii Joas regis Iſrael, ante duos annos terræmotûs; Et ait; Do- 2
minus de Sion effatus eſt: & de Hieruſalem dedit vocem ſuam. Et luxerunt paſcua paſtorum, & arefactus eſt vertex Carmeli. Et 3
dixit Dominus; Super tribus impietatibus Damaſci, & ſuper quatuor non averſabor eum: pro eo, quòd ſecuerunt (c) ſerris ferreis prægnantes eorum, qui in Galaad. Et mittam ignem in domum 4
Azael: & devorabit fundamenta filii Ader. Et conteram vectes 5
Damaſci: et diſperdã habitatores de campo (d) On: & concidã (e) tribum ex viris Charran. Et captivus ducetur populus Syriæ nominatus, dicit Dominus. Hæc 6
dicit Dominus; Super tribus impietatibus Gazæ, & ſuper quatuor non averſabor eos: eò quòd captivã duxerunt ipſi captivitatẽ (f) Salomonis, ut concluderent in Idumæam;

MS.A. ἈΜΩ῀Σ Β΄. (α) τὴν Γαλαάδ. (β) ἐξαποστελῶ (γ) θεμέλια
(δ) ἐξολοθρεύσω (ε) αἰχμαλωτισθήσεται

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

1 פִּתְגָמֵי עָמוֹס דַּהֲוָה מָרֵי גִּתִּין מִתְּקוֹעַ דְּאִתְנַבֵּי עַל יִשְׂרָאֵל בִּימֵי עֻזִּיָּה מֶלֶךְ שִׁבְטָא דְּבֵית
2 יְהוּדָה וּבְיוֹמֵי יָרָבְעָם בַּר יוֹאָשׁ מַלְכָּא דְיִשְׂרָאֵל תַּרְתֵּין שְׁנִין קֳדָם מֵיתֵי זִיעָא׃ וַאֲמַר יְיָ
מִצִּיּוֹן יְכַלֵּי וּמִירוּשְׁלֶם יָרִים מֵימְרֵיהּ וְיִצְדוּן מְדוֹרֵי מַלְכַיָא וְיֶחֱרַב תְּקוֹף כְּרַכֵּיהוֹן׃
3 כִּדְנַן אֲמַר יְיָ עַל תְּלָתָא חוֹבֵי דַּמֶּשֶׂק וְעַל אַרְבְּעָא לָא אֶשְׁבּוֹק לְהוֹן עַל דְּדָשׁוּ בְּמוֹרִיגֵי
4 בַּרְזְלָא יַת יָתְבֵי אֲרַע גִּלְעָד׃ וְאֶשְׁלַח אֶשָּׁתָא בְּבֵית חֲזָאֵל וּתְשֵׁיצֵי בִּירָנִית בַּר הֲדָד׃
5 וְאֶתְבַּר תְּקוֹף דַּמֶּשֶׂק וְאֵשֵׁיצֵי יָתֵיב מִבִּקְעַת אָוֶן וְעָבֵיד שׁוּלְטָן מִבֵּית עֶדֶן וְיִגְלוֹן עַמָּא
6 דַאֲרָם לְקִרְנֵי אֲמַר יְיָ׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ עַל תְּלָתָא חוֹבֵי עַזָּה וְעַל אַרְבְּעָא לָא אֶשְׁבּוֹק לְהוֹן
עַל דְּאַגְלְיאוּנוּן גָּלוּ שְׁלֵמָא לְמִמְסַר לֶאֱדוֹם׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAPUT I.

VErba Amos qui erat paſtor pecorum de Thecua, quæ prophetavit ſuper 1
Iſrael diebus Oziæ regis *tribus* domus Juda, atque diebus Hieroboam filii
Joas regis Iſrael, duobus annis antequam eveniret terræmotus. Dixit igitur: 2
Dominus De Sion rugiet, & de Jeruſalem levabit verbum ſuum, & deſolabuntur
habitacula regum, atque deſertum fiet præſidium arcium illorum. In 3
hunc modum dicit Dominus: Super tribus ſceleribus Damaſci & ſuper quatuor
non parcam eis, eò quòd trituraverint tribulis ferreis habitatores terræ
Galaad. Et immittam ignem in domum Azael, qui conſumet palatia Benhadad. 4
Et conteram robur Damaſci, & diſperdam habitatorem de Bikath-Aven, 5
& rerum potientem de domo Eden: & migrabit populus Syriæ in Cirenen,
ait Dominus. Ita inquit Dominus: Super tribus ſceleribus Gazæ & 6
ſuper quatuor non ignoſcam eis, eò quòd relegaverint eos exilio perfecto
quò traderent ipſos Idumææ.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܘܡܪܝܐ ܡܢ ܨܗܝܘܢ ܢܢܗܡ. ܘܡܢ ܐܘܪܫܠܡ ܢܬܠ ܩܠܗ. ܘܢܙܘܥܘܢ ܫܡܝܐ ܘܐܪܥܐ. 16
ܘܡܪܝܐ ܢܚܘܣ ܥܠ ܥܡܗ. ܘܢܚܝܠ ܠܒܢܝ̈ ܐܝܣܪܝܠ. * ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ 17
ܐܠܗܟܘܢ. ܕܫܪܐ ܐܢܐ ܒܨܗܝܘܢ ܛܘܪܐ ܕܩܘܕܫܝ. ܘܬܗܘܐ ܐܘܪܫܠܡ ܩܕܝܫܐ. ܘܢܘܟܪܝܐ
ܠܐ ܢܥܒܪܘܢ ܒܗ ܬܘܒ. * ܘܢܗܘܐ ܒܗܘ ܝܘܡܐ. ܢܛܦܘܢ ܛܘܪ̈ܐ ܚܠܝܘܬܐ ܘܪ̈ܡܬܐ ܢܪܕܝܢ 18
ܚܠܒܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܢܚ̈ܠܐ ܕܝܗܘܕܐ ܢܪܕܘܢ ܡ̈ܝܐ. ܘܡܒܘܥܐ ܡܢ ܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܢܦܘܩ.
ܘܢܫܩܐ ܠܢܚܠܐ ܕܫܛܝܡ. * ܡܨܪܝܢ ܠܚܘܪܒܐ ܬܗܘܐ. ܘܐܕܘܡ ܠܡܕܒܪܐ ܚܪܒܐ. ܡܢ ܚܛܘܦܝܐ 19
ܕܒܢܝ̈ ܝܗܘܕܐ. ܕܐܫܕܘ ܕܡܐ ܙܟܝܐ ܒܐܪܥܗܘܢ. * ܝܗܘܕܐ ܠܥܠܡ ܬܥܡܪ. ܘܐܘܪܫܠܡ 20
ܠܕܪ ܕܪܝܢ. * ܘܐܬܒܥ ܕܡܗܘܢ. ܘܠܐ ܐܚܘܣ. ܘܡܪܝܐ ܫܪܐ ܒܨܗܝܘܢ. 21

* ܫܠܡ ܝܘܐܝܠ *

Et Dominus è Sione rugiet, déque Jeruſalem 16
edet vocem ſuam, & contremiſcent cœli ac
terra: parcétque Dominus populo ſuo, &
confortabit filios Iſraelis. Ita ſcietis me eſſe 17
Dominum Deum veſtrum qui habito in Sione
monte ſanctitatis meæ: & Jeruſalem erit ſacroſancta,
& alieni non habitabunt ampliùs
in ea. Eodem illo die ſtillabunt montes dulcedinem, 18
& colles fluent lacte, omnéſque alvei
Judæ manabunt aquis: & fons è domo
Domini prodibit, & irrigabit vallem Setim.
Ægyptus in vaſtitatem redigetur, & Adum in 19
ſolitudinem deſertam; propter violentiam
illatam filiis Judæ, quòd effuderint ſanguinem
innoxium in terra eorum. Judæa manebit 20
in ſeculum, & Jeruſalem in generationem
generationum. Et ulciſcar ſanguinem 21
eorum, neque parcam: & Dominus habitabit
in Sione.

Finis Joelis.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* والرب من صهيون يصرخ * ومن ايروسليم يعطي صوته * ويتزلزل السماء والارض * والرب 16
يشفق على شعبه * ويقوي الرب بني اسرائيل * ويعلمون اني انا الرب الهكم * الساكن في صهيون 17
في جبلي المقدس * وتكون ايروسليم مقدسة * والغرباء الجنس لا يجوزون فيها ايضا * ويكون في 18
ذلك اليوم تقطر الجبال حلاوة * والاكام تسيل لبنا * وجميع غدران يهودا تفيض المياه * ويخرج
ينبوع من بيت الرب * ويسقي وادي الجبال * مصر تصير للفساد * وادوم تصير بقعة فساد * 19
من مظالم بني يهودا * لانهم اهرقوا دما عادلا في ارضهم * واليهودية تسكن الى الابد * 20
وايروسليم الى جيل الاجيال * وانتقم دمهم ولا اعفو * والرب يسكن في صهيون * 21

* تمت نبوة يوئيل النبي * بركاته تكون معنا * * امين *

Dominus è Sione clamabit, & è Jeruſalem edet vocem ſuam; & concutientur 16
cœlum & terra: parcet autem Dominus populo ſuo, & corroborabit Dominus
filios Iſraelis. Tum ſcietis me eſſe Dominum Deum veſtrum habitantem in Sione 17
in monte ſancto meo: eritque Jeruſalem ſancta, & alienigenæ non tranſibunt
ampliùs per eam. Erit etiam die illo, ut ſtillent montes dulcedinem, & colles 18
lacte manent, omneſque rivuli Judæ redundent aquis; & egrediatur fons è domo
Domini, irrigetque vallem funium. Ægyptus erit in excidium, & Edom fiet 19
campus exitii, propter ſcelera filiorum Judæ, eò quòd effuderint ſanguinem
juſtum in terra ſua. Judæa verò habitabitur in æternum, & Jeruſalem in 20
generationem generationum. Et ulciſcar ſanguinem eorum, neque parcam: & 21
Dominus habitabit in Sione.

Abſoluta eſt Prophetia Joelis Prophetæ, cujus benedictiones nobiſcum ſint, Amen.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܢܒܝܘܬܗ ܕܥܡܘܣ * * ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

* ܦܬܓܡܘܗܝ ܕܥܡܘܣ ܕܗܘܐ ܡܢ ܢܩܕܐ ܕܒܢܝ̈ ܬܩܘܥ. ܕܚܙܐ ܥܠ ܒܢܝ̈ ܐܝܣܪܝܠ. 1
ܒܝܘܡܘܗܝ ܕܥܘܙܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܒܝܘܡܘܗܝ ܕܝܪܒܥܡ ܒܪ ܝܘܐܫ ܡܠܟܐ
ܕܐܝܣܪܝܠ. ܩܕܡ ܬܪܬܝܢ ܫܢܝ̈ܢ ܩܕܡ ܙܘܥܐ. * ܘܐܡܪ. ܡܪܝܐ ܡܢ ܨܗܝܘܢ ܢܢܗܡ. ܘܡܢ 2
ܐܘܪܫܠܡ ܢܬܠ ܩܠܗ. ܘܢܬܐܒܠܘܢ ܕܝܪ̈ܬܐ ܕܪ̈ܥܘܬܐ. ܘܢܝܒܫ ܪܫܗ ܕܟܪܡܠܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ 3
ܡܪܝܐ. ܥܠ ܬܠܬܐ ܚܘܒ̈ܝܗ ܕܕܪܡܣܘܩ. ܘܥܠ ܐܪܒܥܐ ܠܐ ܐܗܦܘܟ ܡܢܗܘܢ. ܕܕܫܘ ܒܢܘܪ̈ܓܐ ܕܦܪܙܠܐ
ܠܓܠܥܕ. * ܘܐܫܕܪ ܢܘܪܐ ܒܒܝܬܗ ܕܚܙܐܝܠ. ܘܬܐܟܘܠ ܐܒܪ̈ܝܢܘܬܗ ܕܒܪ ܗܕܕ. * ܘܐܬܒܪ ܡܘܟܠܐ 4 5
ܕܕܪܡܣܘܩ. ܘܐܘܒܕ ܥܡܘܪܐ ܡܢ ܦܩܥܬܐ ܕܐܘܢ. ܘܐܚܕ ܫܒܛܐ ܡܢ ܒܝܬ ܥܕܢ. ܘܢܫܬܒܘܢ
ܥܡܐ ܕܐܪܡ ܠܩܝܪ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܬܠܬܐ ܚܘܒ̈ܝܗ ܕܥܙܐ. ܘܥܠ ܐܪܒܥܐ 6
ܠܐ ܐܗܦܘܟ ܡܢܗܘܢ. ܕܫܒܘ ܫܒܝܬܐ ܫܠܡܬܐ ܕܢܫܠܡܘܢ ܠܐܕܘܡ.

PROPHETIA *AMOSI.*

CAP. I.

Sermones Amoſi qui fuit ex paſtoribus filiorum Tecue, quos vidit de filiis Iſraelis in 1
diebus Uziæ regis Judæ, & diebus Jorobaami filii Joaſi regis Iſraelis, biennio ante terræmotum.
Dixit ergò; Dominus è Sione rugiet, & è Jeroſolymis edet vocem ſuam; & ſedebunt 2
in luctu habitacula paſtorum, & areſcet vertex Charmeli. Sic dicit Dominus; 3
Propter tria ſcelera Damaſci, etiam quartum non avertam ab eis. Quia conculcaverunt
clavis ferreis Gelaadem, Mittam ignem in domum Hezaelis, conſumétque palatia filii 4
Hadadis: Et confringam vectes Damaſci, perdámque habitatorem de planitie Aven, & 5
ſuſtinentem ſceptrum de domo Aden, & captivus abducetur populus Aram in Kir, dicit
Dominus. Sic dicit Dominus; Propter tria ſcelera Azæ, quartum etiam non avertam ab eis. 6
Quia deportaverunt captivitatem integram, ut traderent Adumæis;

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* بسم الله الرؤوف الرحيم * * بدو ترجمة عاموص النبي * بركاته معنا * امين *

* الفصل الاول * * الاصحاح الثامن * وهو الاول من النبوة *

* اقوال عاموص التي صارت في اكاريم من تقوع * التي راها من اجل ايروسليم * في ايام عوزيا 1
ملك يهودا * وفي ايام يوربعام بن يواس ملك اسرائيل * من قبل سنتين من الزلزلة * وقال * 2
الرب من صهيون نطق * ومن ايروسليم اعطي صوته * فخربت مراعي الرعاة * ويبس راس
الكرمل * وقال الرب * على ثلاث ذنوب دمسق * والرابع لا ارده عنها * من اجل انهم نشروا 3
بمناشير حديد الحوامل اللاتي في جلعاد * فارسل نارا الى بيت حزائيل * وتاكل اساسات بن 4
هدر * واكسر طرق دمسق * واستاصل السكان من صحراء اون * واقطع قبيلة من رجال حرا * 5
ويسبي شعب سورية المسمي يقول الرب * هكذا يقول الرب على ثلاث خطايا غزة * وعلى الرابع 6
لا اصرفه عنهم * من اجل انهم سبوا سبي صالومون ليحبسوا في ايدوماء *

IN NOMINE DEI CLEMENTIS, MISERICORDIS.

Initium interpretationis

AMOSI PROPHETÆ,

CUJUS BENEDICTIONES

adſint nobis. Amen.

CAPUT PRIMUM.

Textus octavus, qui eſt hujus Prophetiæ primus.

Sermones Amoſi, qui facti ſunt in Acarim de Tecue, quos vidit pro Jeroſolymis in diebus 1
Uziæ regis Judæ, & in diebus Jeroboami filii Joaſi regis Iſraelis, biennio ante terræmotum.
Et dixit; Dominus è Sione locutus eſt, & è Jeruſalem edidit vocem ſuam: unde luxerunt 2
paſcua paſtorum, & exaruit vertex Charmeli. Dixitque Dominus; Propter tria crimina 3
Damaſci, quartum etiam non avertam ab ea. Quia ſerris ferreis ſecuerunt gravidas quæ
erant in Galaade, Mittam ignem in domum Hazaelis: devorabitque fundamenta filii 4
Haderis: Frangam vias Damaſci, & evellam habitatores è campo On, excindam familiam 5
de viris Harræ, & captivus abducetur populus Syriæ celeberrimus, dicit Dominus.
Sic dicit Dominus de tribus Gizæ criminibus, quod autem ad quartum, non avertam illud ab eis. 6
Quia ceperunt captivitatem Salomun, ut carceribus traderent in Idumæa;

ejus ædes devorabit & : Hazzah murum in ignem mittam Et
וְשִׁלַּחְתִּי אֵשׁ בְּחוֹמַת עַזָּה וְאָכְלָה אַרְמְנֹתֶיהָ׃ 7
: Aſchelon de ſceptrū tenentē & ,Aſdod de habitatorem faciā excidere Et
וְהִכְרַתִּי יוֹשֵׁב מֵאַשְׁדּוֹד וְתוֹמֵךְ שֵׁבֶט מֵאַשְׁקְלוֹן 8
, Peliſtim *reſiduum* peribunt & ,Hecron ſuper meā manum convertam &
וַהֲשִׁיבוֹתִי יָדִי עַל־עֶקְרוֹן וְאָבְדוּ שְׁאֵרִית פְּלִשְׁתִּים
tribus Super : Dominus dixit Sic .*Dominus* Dominus dixit
אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִֹה׃ כֹּה אָמַר יְהוָֹה עַל־שְׁלֹשָׁה 9
ipſos concluſiſſe ſuper :eū cōvertam non quatuor ſuper &,Sor prævaricationib⁹
פִּשְׁעֵי־צֹר וְעַל־אַרְבָּעָה לֹא אֲשִׁיבֶנּוּ עַל־הַסְגִּירָם
.fratrum fœderis ſunt recordati non &,Edom ipſi perfectam *tranſmigrationē*
גָּלוּת שְׁלֵמָה לֶאֱדוֹם וְלֹא זָכְרוּ בְּרִית אַחִים׃
.ejus ædes devorabit & : Sor murum in ignem mittam Et
וְשִׁלַּחְתִּי אֵשׁ בְּחוֹמַת צֹר וְאָכְלָה אַרְמְנוֹתֶיהָ׃ 10
, Edom prævaricationibus tribus Super :Dominus dixit Sic
כֹּה אָמַר יְהוָֹה עַל־שְׁלֹשָׁה פִּשְׁעֵי אֱדוֹם 11
gladio *in ipſum perſequi ſuper : eum convertam* non quatuor ſuper &
וְעַל־אַרְבָּעָה לֹא אֲשִׁיבֶנּוּ עַל־רָדְפוֹ בַחֶרֶב
perpetuum in rapuerit & ,ſuas miſericordias corruperit & ,ſuum fratrem
אָחִיו וְשִׁחֵת רַחֲמָיו וַיִּטְרֹף לָעַד
ignem mittam Et .*perpetuò* ſervavit *ſuam iram* & , ejus *naſus*
אַפּוֹ וְעֶבְרָתוֹ שְׁמָרָה נֶצַח׃ וְשִׁלַּחְתִּי אֵשׁ 12
: *Dominus* dixit Sic .Boſrah ædes devorabit & :Theman in
בְּתֵימָן וְאָכְלָה אַרְמְנוֹת בָּצְרָה׃ כֹּה אָמַר יְהוָֹה 13
quatuor ſuper & ,Hammon filiorum prævaricationibus tribus Super
עַל־שְׁלֹשָׁה פִּשְׁעֵי בְנֵי־עַמּוֹן וְעַל־אַרְבָּעָה
dilatandum ad , Ghilhad *prægnantes eos ſcidiſſe ſuper : eum convertam* non
לֹא אֲשִׁיבֶנּוּ עַל־בִּקְעָם הָרוֹת הַגִּלְעָד לְמַעַן הַרְחִיב
, Rabbah muro in ignem ſuccendam Et .ſuum terminum
אֶת־גְּבוּלָם׃ וְהִצַּתִּי אֵשׁ בְּחוֹמַת רַבָּה 14
,turbine in , belli die in vociferatione in : ejus ædes devorabit &
וְאָכְלָה אַרְמְנוֹתֶיהָ בִּתְרוּעָה בְּיוֹם מִלְחָמָה בְּסַעַר
, ipſe : captivitatem in eorum rex ibit Et .*tempeſtatis* die in
בְּיוֹם סוּפָה׃ וְהָלַךְ מַלְכָּם בַּגּוֹלָה הוּא 15
.Dominus dixit , ſimul ejus principes &
וְשָׂרָיו יַחְדָּו אָמַר יְהוָֹה׃

CAP. II. ב

ſuper & ,Moab prævaricationibus tribus Super : *Dominus* dixit Sic
כֹּה אָמַר יְהוָֹה עַל־שְׁלֹשָׁה פִּשְׁעֵי מוֹאָב וְעַל־ 1
Edom regis oſſa *eum combuſſiſſe ſuper :eum convertam* non quatuor
אַרְבָּעָה לֹא אֲשִׁיבֶנּוּ עַל־שָׂרְפוֹ עַצְמוֹת מֶלֶךְ־אֱדוֹם
ædes devorabit & , Moab in ignem mittam Et .*calcem* in
לַשִּׂיד׃ וְשִׁלַּחְתִּי־אֵשׁ בְּמוֹאָב וְאָכְלָה אַרְמְנוֹת 2
voce in , vociferatione in , Moab ſonitu in morietur & : Cherijoth
הַקְּרִיּוֹת וּמֵת בְּשָׁאוֹן מוֹאָב בִּתְרוּעָה בְּקוֹל
omnes & : ejus *interiori* de judicem faciam excidere Et .tubæ
שׁוֹפָר׃ וְהִכְרַתִּי שׁוֹפֵט מִקִּרְבָּהּ וְכָל־ 3
dixit Sic .Dominus dixit ,eo cum interficiam ejus principes
שָׂרֶיהָ אֶהֱרוֹג עִמּוֹ אָמַר יְהוָֹה׃ כֹּה אָמַר 4
ſuper & , Jehudah prævaricationibus tribus Super : Dominus
יְהוָֹה עַל־שְׁלֹשָׁה פִּשְׁעֵי יְהוּדָה וְעַל־
,Domini legem *eos reprobaſſe ſuper : eum convertam* non quatuor
אַרְבָּעָה לֹא אֲשִׁיבֶנּוּ עַל־מָאֳסָם אֶת־תּוֹרַת יְהוָֹה
quæ ,ſua mendacia eos fecerūt errare & :ſervaverint non ej⁹ ſtatuta &
וְחֻקָּיו לֹא שָׁמָרוּ וַיַּתְעוּם כִּזְבֵיהֶם אֲשֶׁר־
; Jehudah in ignem mittam Et .*ea poſt* eorum patres abierunt
הָלְכוּ אֲבוֹתָם אַחֲרֵיהֶם׃ וְשִׁלַּחְתִּי אֵשׁ בִּיהוּדָה 5
.Jeruſalaim ædes devorabit &
וְאָכְלָה אַרְמְנוֹת יְרוּשָׁלִָם׃

Verſio VULG. LAT.

7 Et mittam ignem in murum Ga-
8 zæ, & devorabit ædes ejus. Et
diſperdam habitatorem de Azo-
to, & tenentem ſceptrum de Aſ-
calone : & convertam manum
meam ſuper Accaron, & per-
ibunt reliqui Philiſthinorum, di-
9 cit Dominus Deus. Hæc dicit
Dominus; Super tribus ſceleri-
bus Tyri, & ſuper quatuor non
convertam eum : eò quòd con-
cluſerint captivitatem perfectam
in Idumæa, & non ſint recordati
10 fœderis fratrum. Et mittam
ignem in murum Tyri, & devo-
11 rabit ædes ejus. Hæc dicit Do-
minus; Super tribus ſceleribus
Edom, & ſuper quatuor non
convertam eum : eò quòd per-
ſecutus ſit in gladio fratrem ſu-
um, & violaverit miſericordiam
ejus, & tenuerit ultrà furorem
ſuum, & indignationem ſuam
12 ſervaverit uſque in finem. Mittam
ignem in Theman : & devorabit
13 ædes Boſræ. Hæc dicit Dominus;
Super tribus ſceleribus filiorum
Ammon, & ſuper quatuor non
convertam eum : eò quòd diſſe-
cuerit prægnantes Galaad ad di-
14 latandum terminum ſuum. Et
ſuccendam ignem in muro Rab-
ba : & devorabit ædes ejus in
ululatu in die belli, & in turbine
15 in die commotionis. Et ibit Mel-
chom in captivitatem, ipſe, &
principes ejus ſimul, dicit Do-
minus.

CAP. II.

1 HÆc dicit Dominus; Super
tribus ſceleribus Moab, & ſu-
per quatuor non convertam eum:
eò quòd incenderit oſſa regis
2 Idumææ uſque ad cinerem. Et
mittam ignem in Moab, & devo-
rabit ædes Carioth : & morietur
in ſonitu Moab, in clangore tu-
3 bæ : Et diſperdam judicem de
medio ejus, & omnes principes
ejus interficiam cum eo, dicit
4 Dominus. Hæc dicit Dominus;
Super tribus ſceleribus Juda, &
ſuper quatuor non convertam
eum : eò quòd abjecerit legem
Domini, & mandata ejus non
cuſtodierit : deceperunt enim
eos idola ſua, poſt quæ abierant
5 patres eorum. Et mittam ignem
in Juda, & devorabit ædes Je-
ruſalem.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

7 Καὶ ἐξαποστελῶ πῦρ ἐπὶ τὰ τείχη Γάζης,
καὶ καταφάγεται (ζ) τὰ θεμέλια αὐτῆς.
8 Καὶ ἐξολοθρεύσω κατοικοῦντας ἐξ Ἀζώτου,
καὶ ἐξαρθήσεται φυλὴ ἐξ Ἀσκάλωνος, καὶ
ἐπάξω τὴν χεῖρά μου ἐπὶ Ἀκκάρων, καὶ
ἀπολοῦνται οἱ κατάλοιποι τῶν ἀλλοφύλων,
9 λέγει κύριος. Τάδε λέγει κύριος, Ἐπὶ
ταῖς τρισὶν ἀσεβείαις Τύρου, καὶ ἐπὶ ταῖς
τέσσαρσιν οὐκ ἀποστραφήσομαι αὐτήν, ἀνθ'
ὧν συνέκλεισαν αἰχμαλωσίαν τοῦ Σαλω-
μὼν εἰς τὴν (η) Ἰδουμαίαν, καὶ οὐκ ἐμνή-
10 σθησαν διαθήκης ἀδελφῶν. Καὶ ἐξαποστε-
λῶ πῦρ ἐπὶ τὰ τείχη Τύρου, καὶ καταφάγε-
11 ται (θ) τὰ θεμέλια αὐτῆς. Τάδε λέγει
κύριος, Ἐπὶ ταῖς τρισὶν ἀσεβείαις τῆς Ἰδου-
μαίας, καὶ ἐπὶ ταῖς τέσσαρσιν οὐκ ἀποστραφήσο-
μαι αὐτούς, (") ἕνεκα τοῦ διῶξαι αὐτοὺς ἐν ῥομ-
φαίᾳ (") τὸν ἀδελφὸν αὐτῶν, καὶ ἐλυμήνατο (ι) μη-
τέρα ἐπὶ γῆς, καὶ ἥρπασεν εἰς μαρτύριον φρί-
κην αὐτοῦ, καὶ τὸ ὅρμημα αὐτοῦ ἐφύλαξεν εἰς
12 νῖκος. Καὶ ἐξαποστελῶ πῦρ εἰς (κ) Θα-
μάν, καὶ καταφάγεται θεμέλια τειχέων αὐτῆς.
13 Τάδε λέγει κύριος, Ἐπὶ ταῖς τρισὶν ἀσεβεί-
αις υἱῶν Ἀμμών, καὶ ἐπὶ ταῖς τέσσαρσιν οὐκ ἀπο-
στραφήσομαι (λ) αὐτόν, ἀνθ' ὧν ἀνέσχιζον
τὰς ἐν γαστρὶ ἐχούσας τῶν Γαλααδιτῶν, ὅ-
14 πως (μ) ἐμπλατύνωσι τὰ ὅρια ἑαυτῶν. Καὶ
ἀνάψω πῦρ ἐπὶ (ν) τείχη Ῥαββάθ, καὶ κα-
ταφάγεται θεμέλια αὐτῆς μετὰ κραυγῆς ἐν
ἡμέρᾳ πολέμου, καὶ σεισθήσεται ἐν (ξ) ἡμέ-
15 ραις συντελείας αὐτῆς. Καὶ πορεύσονται
οἱ βασιλεῖς αὐτῆς ἐν αἰχμαλωσίᾳ, οἱ
ἱερεῖς αὐτῶν καὶ οἱ ἄρχοντες αὐτῶν ἐπὶ τὸ αὐτό,
λέγει κύριος.

MS.A. (ζ) θεμέλια αὐτῆς. Καὶ ἐξολεθρεύσω (η) Ἰουδαίαν, (θ) θεμέλια (") ἕνεκεν (") ἕκαστος τὴν (ι) μήτραν (κ) Θαιμάν, (λ) αὐτούς, (μ) ἐμπλατύνοισιν τὰ ὅρια αὐτῶν. (ν) τὰ τείχη Ῥαββά, (ξ) ἡμέρᾳ.

ΚΕΦ. β'.

1 ΤΆδε λέγει κύριος, Ἐπὶ ταῖς τρισὶν ἀσε-
βείαις Μωάβ, καὶ ἐπὶ ταῖς τέσσαρσιν οὐκ ἀπο-
στραφήσομαι αὐτόν, ἀνθ' ὧν κατέκαυσαν τὰ
2 ὀστᾶ βασιλέως τῆς Ἰδουμαίας εἰς κονίαν. Καὶ
ἐξαποστελῶ πῦρ (α) εἰς Μωάβ, καὶ καταφά-
γεται (β) τὰ θεμέλια τῶν πόλεων αὐτῆς, καὶ
ἀποθανεῖται ἐν ἀδυναμίᾳ Μωὰβ μετὰ κραυ-
3 γῆς καὶ μετὰ φωνῆς σάλπιγγος. Καὶ (γ) ἐξ-
ολοθρεύσω κριτὴν ἐξ αὐτῆς, καὶ (δ) πάντας
αὐτῆς ἀποκτενῶ μετ' αὐτοῦ, λέγει κύ-
4 ριος. Τάδε λέγει κύριος, Ἐπὶ ταῖς τρισὶν
ἀσεβείαις υἱῶν Ἰούδα, καὶ ἐπὶ ταῖς τέσσαρσιν οὐκ
ἀποστραφήσομαι (ε) αὐτόν, ἕνεκα τοῦ ἀπώσα-
σθαι αὐτοὺς τὸν νόμον (ζ) τοῦ κυρίου, καὶ τὰ
προστάγματα αὐτοῦ οὐκ ἐφυλάξαντο, καὶ ἐπλά-
νησεν αὐτοὺς τὰ (η) μάταια αὐτῶν ἃ ἐποίησαν,
οἷς ἐξηκολούθησαν οἱ πατέρες αὐτῶν ὀπίσω αὐ-
5 τῶν. Καὶ ἐξαποστελῶ πῦρ ἐπὶ Ἰούδαν, καὶ κα-
ταφάγεται θεμέλια Ἱερουσαλήμ.

MS. A. (α) ἐπὶ (β) θεμέλια τῶν πόλεων αὐτῆς, (γ) ἐξολεθρεύσω (δ) πάντας τοὺς ἄρχοντας αὐτῆς (ε) αὐτούς, ἕνεκεν (ζ) κυρίου, (η) αἵματα

Et emittam ignem ſuper muros 7
Gazæ: & devorabit fundamen-
ta ejus. Et diſperdam habitato- 8
res de Azoto: & auferetur tri-
bus de Aſcalone: & inferam
manum meam in Accaronem: &
peribunt reliqui alienigenarum,
dicit Dominus. Hæc dicit Domi- 9
nus; Super tribus impietatibus
Tyri, & ſuper quatuor non aver-
ſabor eam, pro eo quòd concluſe-
runt captivitatem Salomonis in
Idumæa: & non ſunt recordati
teſtamenti fratrum. Et emittam 10
ignem ſuper muros Tyri: & de-
vorabit fundamenta ejus. Hæc 11
dicit Dominus; Super tribus
impietatibus Idumææ, & ſuper
quatuor non averſabor eos; eò
quòd (g) ipſi perſequuti ſint in
gladio fratrem ſuum. Et violavit
(h) matrē ſuper terrā, & rapuit
in teſtimonium horrorem ſuum,
& impetum ſuum cuſtodivit in
(i) victoriam. Et emittam ignē 12
in Thaman: & devorabit (k)
fundamenta murorum ejus. Hæc 13
dicit Dominus; Super tribus im-
pietatibus filiorum Ammon, &
ſuper quatuor non averſabor eū,
eò quòd deſecuerint prægnantes
Galaaditarum, ut dilatarent ter-
minos ſuos. Et ſuccendam ignē 14
ſuper muros Rabbath: & devo-
rabit fundamenta ejus cum cla-
more in die belli: & commove-
bitur in die conſummationis ſuæ:
Et ibunt reges ejus in captivita- 15
tem, (l) ſacerdotes eorum, &
principes eorum ſimul, dicit Do-
minus.

CAP. II.

HÆc dicit Dominus; Super 1
tribus impietatibus Moab, & ſu-
per quatuor non averſabor eum,
pro eo quòd incenderunt oſſa re-
gis Idumææ in cinerem. Et emit- 2
tam ignem in Moab: & devora-
bit fundamenta civitatum ejus:
& morietur in infirmitate Mo-
ab cum clamore, & cum voce
tubæ. Et diſperdam judicem ex 3
ea: & omnes [principes] ejus in-
terficiam cum eo, dicit Dominus.
Hæc dicit Dominus; Super tri- 4
bus impietatibus filiorum Juda,
& ſuper quatuor non averſabor
eum: quia repulerunt illi *legem*
Domini, & præcepta illius non
cuſtodierunt: & deceperunt eos
vanitates ſuæ, (a) quas fecerunt,
quas ſequuti ſunt patres eorum
poſt eas. Et emittam ignem in 5
Judam, & devorabit funda-
menta Hieruſalem.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

וְאֶשְׁלַח אֶשְׁתָּא בְּשׁוּרֵי עַזָּא וּתְשֵׁיצֵי בִּרְנְיָתְהָא׃ וְאֵשֵׁיצֵי יָתֵיב מֵאַשְׁדּוֹד וְעָבֵיד שׁוּלְטָן 7
מֵאַשְׁקְלוֹן וַאֲתִיב מְחַת גְּבוּרְתִי עַל עֶקְרוֹן וְיֵיבְדוּן שְׁאָרָא דִפְלִשְׁתָּאֵי אָמַר יְיָ אֱלֹהִים׃ 8
כִּדְנַן אֲמַר יְיָ עַל תְּלָתָא חוֹבֵי צוֹר וְעַל אַרְבְּעָא לָא אֶשְׁבּוֹק לְהוֹן עַל דְּמַסְרִנוּן גָּלוּ 9
שְׁלֵמָא לֶאֱדוֹם וְלָא אִדְכַּרוּ קְיָם אַחִין׃ וְאֶשְׁלַח אֶשְׁתָּא בְּשׁוּרֵי צוֹר וּתְשֵׁיצֵי בִּרְנְיָתְהָא׃ 10
כִּדְנַן אֲמַר יְיָ עַל תְּלָתָא חוֹבֵי אֱדוֹם וְעַל אַרְבְּעָא לָא אֶשְׁבּוֹק לְהוֹן עַל דִּרְדַפֵיהּ בְּחַרְבָּא 11
אֲחוּהִי וְחַבֵּל רַחֲמוֹהִי וְקָטֵיל קְטַל עָלְמִין רוּגְזֵיהּ וְחֶמְתֵּיהּ נָטְרָא לְאַפְרָשׁ׃ וְאֶשְׁלַח 12
אֶשְׁתָּא בְּדָרוֹמָא וּתְשֵׁיצֵי בִּרְנְיַת בָּצְרָה׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ עַל תְּלָתָא חוֹבֵי בְנֵי עַמּוֹן וְעַל 13
אַרְבְּעָא לָא אֶשְׁבּוֹק לְהוֹן עַל דִּבְזַעוּ מַעְדְּיַת אֲרַע גִּלְעָד בְּדִיל לְאַפְתָּאָה יַת תְּחוּמֵיהוֹן׃
וְאַדְלֵיק אֶשְׁתָּא בְּשׁוּרֵי רַבָּה וּתְשֵׁיצֵי בִּרְנְיָתְהָא בְּיַבָּבָא בְּיוֹמָא דִקְרָבָא בְּעַלְעוֹל בְּיוֹם 14
רוּחַ׃ וִיהָךְ מַלְכְּהוֹן בְּגָלוּתָא הוּא וְרַבְרְבוֹהִי כַּחֲדָא אָמַר יְיָ׃

ב

כִּדְנַן אֲמַר יְיָ עַל תְּלָתָא חוֹבֵי מוֹאָב וְעַל אַרְבְּעָא לָא אֶשְׁבּוֹק לְהוֹן עַל דְּאוֹקִיד גַּרְמֵי 1
מַלְכָּא דֶאֱדוֹם וְסָדְנוּן כְּגִירָא בְּבֵיתָא׃ וְאֶשְׁלַח אֶשְׁתָּא בְמוֹאָב וּתְשֵׁיצֵי בִּרְנְיַת כְּרַכָּא 2
וִימוּת בְּאַתְרְגוּשָׁא מוֹאָב בְּיַבָּבָא בְּקָל שׁוֹפָרָא׃ וְאֵשֵׁיצֵי דַיָּנָהָא מִגַּוַּהּ וְכָל רַבְרְבָהָא 3
אֶקְטוֹל עִמֵּיהּ אָמַר יְיָ׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ עַל תְּלָתָא חוֹבֵי יְהוּדָה וְעַל אַרְבְּעָא לָא אֶשְׁבּוֹק 4
לְהוֹן עַל דְּקָצוּ בְּאוֹרָיְתָא דַייָ וּקְיָמוֹהִי לָא נְטַרוּ וְאַטְעִיאוּנוּן כִּדְבֵיהוֹן דַּהֲלִיכוּ
אֲבָהָתְהוֹן בַּתְרֵיהוֹן׃ וְאֶשְׁלַח אֶשְׁתָּא בְּבֵית יְהוּדָה וּתְשֵׁיצֵי בִּרְנְיַת יְרוּשְׁלֵם׃ 5

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Mittam ergo ignem in muros Gazæ, qui palatia ejus devorabit. Et abſu- 7
mam habitatorem de Azoto & dominio potientem ab Aſcalone; conver- 8
támque plagam potentiæ meæ in Ackaron, ita ut pereant reliquiæ Philiſti-
norum, ait Dominus Deus. Hoc modo dicit Dominus : Super tribus ſce- 9
leribus Tyri, & ſuper quatuor non veniam dabo eis, eò quòd tradiderint
eos exilio perfecto Idumæis, nec ſint recordati fœderis fraterni. Propte- 10
reà immittam ignem in muros Tyri, & ejus palatia comburet. Hæc dicit 11
Dominus : Super tribus ſceleribus Edom, & ſuper quatuor non condona-
bo ei culpam, pro eo quòd perſecutus fuit gladio fratrem ſuum, & violaverit
miſericordiam ſuam, occiditque ſtrage perpetua furor ejus, & indignatio
ejus reſervata ſit in æternum. Itaque mittam ignem in Auſtrum qui abſu- 12
met palatia Boſra. Sic dicit Dominus : Super tribus ſceleribus filiorum 13
Ammon & ſuper quatuor non dimittam eis, eò quòd diſſecuerint prægnan-
tes *terræ* Galaad, ut dilatarent terminos ſuos. Ideò ſuccendam ignem in mu- 14
ros Rabba, & conſumet palatia ejus cum concrepatione in die belli, cum tur-
bine in die venti. Et abibit rex eorum in captivitatem, ipſe & principes
ejus ſimul, ait Dominus.

CAP. II.

ITa dicit Dominus : Super tribus ſceleribus Moab & ſuper quatuor non 1
parcam eis, eò quòd incenderint oſſa regis Idumææ, & obliniverit eis pro
calce domum. Propterea mittam ignem in Moab, & conſumet palatia ar- 2
cis, & morietur in tumultu Moab, in vociferatione & voce tubæ. Et diſper- 3
dam judicem ejus de medio ejus, & omnes principes ejus occidam cum eo,
ait Dominus. Hoc pacto dicit Dominus, Super tribus ſceleribus Jehuda 4
& ſuper quatuor non ignoſcam eis, eò quòd ſint deteſtati Legem Domini,
nec decreta ejus obſervarint, ſed ſeduxerint eos mendacia ſua, poſt quæ patres
eorum abierant. Quare immittam ignem in domum Jehuda qui vorabit 5
palatia Jeruſalem.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

7 * ܐܫܕܪ ܢܘܪܐ ܒܫܘܪܝܗ ܕܥܙܐ ܘܬܐܟܘܠ ܗܝܟܠܝܗ. * ܘܐܘܒܕ ܥܡܘܪܐ ܡܢ ܐܫܕܘܕ. ܘܐܚܝܕ
8 ܫܒܛܐ ܡܢ ܐܫܩܠܘܢ. ܘܐܗܦܘܟ ܐܝܕܝ ܥܠ ܥܩܪܘܢ. ܘܢܐܒܕܘܢ ܫܪܟܐ ܕܦܠܫܬܝܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ
9 ܡܪܘܬܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܬܠܬܐ ܚܛܗܝܢ ܕܨܘܪ. ܘܥܠ ܐܪܒܥܐ. ܠܐ ܐܗܦܘܟ ܡܢܗܘܢ.
10 ܥܠ ܕܐܫܠܡܘ ܫܒܝܬܐ ܫܠܡܬܐ ܠܐܕܘܡ. ܘܠܐ ܐܬܕܟܪܘ ܩܝܡܐ ܕܐܚܘܬܐ. * ܐܫܕܪ ܢܘܪܐ ܒܫܘܪܝܗ
11 ܕܨܘܪ. ܘܬܐܟܘܠ ܗܝܟܠܝܗ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܬܠܬܐ ܚܛܗܝܢ ܕܐܕܘܡ. ܘܥܠ ܐܪܒܥܐ. ܠܐ
ܐܗܦܘܟ ܡܢܗܘܢ. ܥܠ ܕܪܕܦ ܒܣܝܦܐ ܠܐܚܘܗܝ ܘܚܒܠ ܪܚܡܘܗܝ. ܘܢܛܪ ܠܥܠܡ
12 ܪܘܓܙܗ. ܘܚܡܬܗ ܢܛܪ ܠܥܠܡܝܢ. * ܐܫܕܪ ܢܘܪܐ ܒܬܝܡܢ. ܘܬܐܟܘܠ ܗܝܟܠܝܗ ܕܒܨܪܐ.
13 * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܬܠܬܐ ܚܛܗܝܢ ܕܒܢܝ ܥܡܘܢ. ܘܥܠ ܐܪܒܥܐ. ܠܐ ܐܗܦܘܟ ܡܢܗܘܢ.
14 ܥܠ ܕܨܪܝܘ ܒܛܢܬܐ ܕܓܠܥܕ ܕܢܘܣܦܘܢ ܠܬܚܘܡܗܘܢ. * ܐܫܕܪ ܢܘܪܐ ܒܫܘܩܝܗ ܕܪܒܬ.
15 ܘܬܐܟܘܠ ܗܝܟܠܝܗ. ܒܩܥܬܐ ܒܝܘܡܐ ܕܩܪܒܐ. ܒܥܠܥܠܐ ܒܝܘܡܐ ܕܥܪܦܠܐ. * ܘܢܐܙܠ
ܡܠܟܘܡ ܒܫܒܝܬܐ. ܘܟܘܡܪܘܗܝ ܘܪܘܪܒܢܘܗܝ ܐܟܚܕܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܒ *

1 * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܬܠܬܐ ܚܛܗܝܢ ܕܡܘܐܒ. ܘܥܠ ܐܪܒܥܐ. ܠܐ ܐܗܦܘܟ ܡܢܗܘܢ. ܥܠ
2 ܕܐܘܩܕܘ ܓܪܡܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܕܐܕܘܡ ܒܓܝܪܐ. * ܐܫܕܪ ܢܘܪܐ ܥܠ ܡܘܐܒ. ܘܬܐܟܘܠ
3 ܗܝܟܠܝܗ ܕܩܪܝܘܬ. ܘܢܡܘܬ ܡܘܐܒ ܒܫܓܘܫܝܐ. ܒܩܥܬܐ ܘܒܩܠܐ ܕܫܝܦܘܪܐ. * ܘܐܘܒܕ ܕܝܢܐ
4 ܡܢ ܓܘܗ. ܘܟܠܗܘܢ ܪܘܪܒܢܘܗܝ ܐܩܛܘܠ ܥܡܗ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
ܥܠ ܬܠܬܐ ܚܛܗܝܢ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܥܠ ܐܪܒܥܐ. ܠܐ ܐܗܦܘܟ ܡܢܗܘܢ. ܥܠ ܕܐܣܠܝܘ ܢܡܘܣܗ
ܕܡܪܝܐ ܘܦܘܩܕܢܘܗܝ ܠܐ ܢܛܪܘ. ܘܐܛܥܝܘ ܐܢܘܢ ܣܪܝܩܘܬܐ ܕܐܙܠܘ ܒܬܪܝܗܝܢ ܐܒܗܝܗܘܢ.
5. * ܐܫܕܪ ܢܘܪܐ ܒܝܗܘܕܐ. ܘܬܐܟܘܠ ܗܝܟܠܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ.

Mittam ignem in muros Azæ, conſumétque 7
palatia ejus: Et perdam habitatorem ex 8
Aſdod, & ſuſtinentem ſceptrum ex Aſcalon: convertámque manum meam contra Ecronem, & peribunt reliquiæ Paleſtinorum, di-
cit Dominus dominorum. Sic dicit Dominus; 9
Propter tria ſcelera Tyri, quartum non avertam ab eis. Quia tradiderunt captivitatem integram Adumæis, & non ſunt recordati fœ-
deris fraternitatis? Mittam ignem in mu- 10
ros Tyri, qui conſumet palatia ejus. Sic di- 11
cit Dominus; Propter tria ſcelera Adum, quartum non avertam ab eis. Quia perſecutus eſt gladio fratrem ſuum, & corrupit miſerationes ſuas, ſervavit in perpetuum iram ſuam,
& odium ſuum ſervavit in ſecula; Mittam 12
ignem in Theman, qui conſumet palatia Bo-
ſar. Sic dicit Dominus; Propter tria ſcele- 13
ra Ammonitarum, quartum non avertam ab eis. Quia exenterârunt gravidas Gelaadis, ut
ampliarent limites ſuos; Dimittam ignem 14
in vicos Rabath, qui conſumet palatia ejus, cum clamore in die belli, cum turbine in die
caliginis. Et abibit Malchom in captivita- 15
tem unà cum ſacrificulis ſuis & magnatibus ſuis, dicit Dominus.

CAP. II.

Sic dicit Dominus; Propter tria ſcelera 1
Moabitarum, quartum non avertam ab eis.
Quia combuſſerunt oſſa regis Adum in calcē, 2
Mittam ignem ſuper Moabum, & conſumet palatia Kerjoth, & morietur Moab in perturbatione, in clamore, & in ſonitu buccinæ:
Et perdam judicem de medio ejus, & omnes 3
magnates ejus occîdam cum eo, dicit Domi-
nus. Sic dicit Dominus; Propter tria ſce- 4
lera Judæ, quartum non avertam ab eis. Quia ſpreverunt legem Domini, & præcepta ejus non ſervaverunt, ſed ſeduxerunt eos vani-
tates quas ſectati ſunt patres eorum; Mit- 5
tam ignem in Judam, qui vorabit palatia Jeroſolymorum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

7 * فارسل نارا علي اسوار غزة وتاكل اساساتها * واستاصل السكان من اشدود * وينزع قبيله
8 من عسقلان * واقبل بيدي علي عقرون * وتهلك بقايا القبايل الغريبة يقول الرب * هكذا يقول
9 الرب على ثلاث ذنوب صور * وعلي الرابع لا اصرفه عنها * من اجل انهم حبسوا سبي صالومون في
10 ايدوماء * ولم يذكروا عهد الاخوة * فارسل نارا على اسوار صور وتاكل اساساتها * هكذا يقول
11 الرب على ثلاث ذنوب ادوم * وعلي الرابع لا اصرفه عنهم * من اجل انهم يطردون اخاهم بالسيف *
12 وافسد مستودعا على الارض * واختطف هيبته للشهادة * وحفظ غضبه للظفر * فارسل نارا على
13 المشرق * وتاكل اساسات اسوارها * هكذا يقول الرب على ثلاث ذنوب بني عمون * وعلي الرابع
14 لا اصرفه عنهم * من اجل انهم شقوا حوامل الجلعاديين كي يوسعوا حدودهم * واشعل
نارا على اسوار الربة * وتاكل اساساتها بصراخ في يوم الحرب * وتتزلزل في ايام انقضائها *
15 * ويسير ملوكها في السبي * كهنتهم وروساوهم جميعا يقول الرب *

* الفصل الثاني *

1 * هكذا يقول الرب على ثلاث ذنوب مواب * وعلي الرابع لا اصرفه عنهم * من اجل انهم احرقوا
2 عظام ملك ايدوماء للكلس * فارسل نارا على مواب * فتاكل اساسات مدنها * وتموت مواب
3 بعدم القوة * بصراخ وبصوت البوق * واستاصل الحاكم منها * وجميع روساها اقتلهم معه
4 يقول الرب * هكذا يقول الرب على ثلاث ذنوب بني يهودا * والرابع لا اصرفه
عنهم * من اجل انهم ابعدوا ناموس الرب * ولم يحفظوا اوامره * واضلتهم
5 اباطيلهم التي صنعوها * التي تبعها اباوهم خلفها * فارسل نارا على يهودا * وتاكل
اساسات ايروسليم *

Mittam ignem ſuper muros Gazæ, devo- 7
rabitq; fundamenta ejus: Evellam ha- 8
bitatores ex Aſdod, & auferetur familia ex Aſcalan: admovebo manũ meam ſuper Ecron, & peribunt reliquiæ familiarum
exterarum, dicit Dominus. Sic dicit Do- 9
minus de tribus criminibus Tyri; quod ad quartum, non avertam illud ab ea. Quia clauſerunt captivitatem Salomunis in Idumæa, & non ſunt recordati fœde-
ris fraterni: Ideo mittam ignem ſuper 10
muros Tyri, devorabitq; fundamenta ejus.
Sic ait Dominus de tribus criminibus 11
Edom; quod autem ad quartum, non avertam illud ab eis. Quia perſequuntur fratrem ſuum gladio, & extinxit tranquillum ſuper terram, & rapuit reverentiam ejus in teſtimonium, ſervavit-
que iram ſuam ad victoriam; Ideo mit- 12
tam ignem ſuper Orientem, devorabitq;
fundamenta murorum ejus. Sic ait Do- 13
minus de tribus criminibus filiorum Ammon; quod autem ad quartum, non avertam illud ab eis; quia diſſecuerunt prægnantes Galaaditarum, ut ampliarent ter-
minos ſuos. Et accendam ignem ſuper 14
mœnia Rabbath, devorabitque fundamenta ejus cum clamore in die belli, & con-
tremiſcet in diebus excidii ſui. Et abi- 15
bunt reges ejus in captivitatem, ſacerdotes eorum, & principes eorum ſimul, dicit Dominus.

CAP. II.

Sic ait Dominus de tribus criminibus 1
Moab; quod autem ad quartum, non avertam illud ab eis. Quia combuſſerunt oſſa regis Idumææ ad calcem conficien-
dam; Ideo mittam ignem ſuper Moabum, 2
devorabitque fundamenta urbium ejus, & morietur Moab in defectu virium cum
clamore & clangore buccinæ. Evellam 3
ex ea judicem, & omnes principes ejus
occîdam cum iſto, dicit Dominus. Sic 4
ait Dominus de tribus criminibus filiorum Judæ, & quartum non avertam ab eis. Quia repulerant legem Domini, & non ſervaverunt mandata ejus, ſed ſeduxerunt eos vanitates ſuæ quas fecerunt, poſt quas adhæſerant patres
eorum: Ideo mittam ignem ſuper Ju- 5
dam, vorabitque fundamenta Jeroſolymæ.

ſuper & , Iſrael prævaricationib⁹ tribus Super : Dominus dixit Sic
6 כֹּה אָמַר יְהוָה עַל־שְׁלֹשָׁה פִּשְׁעֵי יִשְׂרָאֵל וְעַל־
, juſtum argento *in* *eos vendidiſſe ſuper* *: eum convertam* non quatuor
אַרְבָּעָה לֹא אֲשִׁיבֶנּוּ עַל־מִכְרָם בַּכֶּסֶף צַדִּיק
pulverem ſuper *Anhelantes* .duo calceamenta propter *egenum* &
7 וְאֶבְיוֹן בַּעֲבוּר נַעֲלָיִם׃ הַשֹּׁאֲפִים עַל־עֲפַר־
, vir & : fecerunt declinare humilium viam & ,pauperum caput *in* terræ
אֶרֶץ בְּרֹאשׁ דַּלִּים וְדֶרֶךְ עֲנָוִים יַטּוּ וְאִישׁ
.meæ ſanctitatis nomen *violandum ad* ,puellam ad iverunt ej⁹ pater &
וְאָבִיו יֵלְכוּ אֶל־הַנַּעֲרָה לְמַעַן חַלֵּל אֶת־שֵׁם קָדְשִׁי׃
: altare omne apud *faciebant declinare* *oppignoratis* veſtimentis ſuper Et
8 וְעַל־בְּגָדִים חֲבֻלִים יַטּוּ אֵצֶל כָּל־מִזְבֵּחַ
ego Et .ſuorum deorum domo biberunt *multatorum* vinum &
9 וְיֵין עֲנוּשִׁים יִשְׁתּוּ בֵּית אֱלֹהֵיהֶם׃ וְאָנֹכִי
cedrorum altitudo ſicut cujus *,eorũ faciebus* à Emoræum feci diſperdere
הִשְׁמַדְתִּי אֶת־הָאֱמֹרִי מִפְּנֵיהֶם אֲשֶׁר כְּגֹבַהּ אֲרָזִים
ej⁹ fructum feci perdere & : quercus ſicut *ipſe* fortis & *,ejus* altitudo
גָּבְהוֹ וְחָסֹן הוּא כָּאַלּוֹנִים וָאַשְׁמִיד פִּרְיוֹ
vos feci aſcendere ego Et .deorſum ejus radices & , ſurſum
10 מִמַּעַל וְשָׁרָשָׁיו מִתָּחַת׃ וְאָנֹכִי הֶעֱלֵיתִי אֶתְכֶם
, annis quadraginta deſertum *in* vos feci ambulare &: Ægypti terra è
מֵאֶרֶץ מִצְרָיִם וָאוֹלֵךְ אֶתְכֶם בַּמִּדְבָּר אַרְבָּעִים שָׁנָה
veſtris filiis de ſuſcitavi Et .Emoræi terram *poſſidendum ad*
11 לָרֶשֶׁת אֶת־אֶרֶץ הָאֱמֹרִי׃ וָאָקִים מִבְּנֵיכֶם
filii hoc non *etiã* Nunquid *:ſeparatos in* veſtris juvenib⁹ de &,*prophetas in*
לִנְבִיאִים וּמִבַּחוּרֵיכֶם לִנְזִרִים הַאַף אֵין־זֹאת בְּנֵי
: vinum Neziræis dediſtis potum Et ? Dominus dixit , Iſrael
12 יִשְׂרָאֵל נְאֻם־יְהוָה׃ וַתַּשְׁקוּ אֶת־הַנְּזִרִים יָיִן
.prophetabitis Non : dicendo , præcipiebatis prophetis *ſuper* &
וְעַל־הַנְּבִיאִים צִוִּיתֶם לֵאמֹר לֹא תִּנָּבְאוּ׃
plauſtrum *coarctares* quemadmodum *: vos ſubter coarctans* ego Ecce
13 הִנֵּה אָנֹכִי מֵעִיק תַּחְתֵּיכֶם כַּאֲשֶׁר תָּעִיק הָעֲגָלָה
non fortis & ,levi à fuga peribit Et *.manipulo ſibi* plenum
14 הַמְלֵאָה לָהּ עָמִיר׃ וְאָבַד מָנוֹס מִקָּל וְחָזָק לֹא־
.ſuam animam eruet non robuſtus & : ſuam fortitudinem fortificabit
יְאַמֵּץ כֹּחוֹ וְגִבּוֹר לֹא־יְמַלֵּט נַפְשׁוֹ׃
: evadet non ſuis pedibus *in* levis & ; ſtabit non , arcum *tenens* Et
15 וְתֹפֵשׂ הַקֶּשֶׁת לֹא יַעֲמֹד וְקַל בְּרַגְלָיו לֹא יְמַלֵּט
ſui cordis roborator Et .ſuam animam ſalvabit non , equum *equitans* &
16 וְרֹכֵב הַסּוּס לֹא יְמַלֵּט נַפְשׁוֹ׃ וְאַמִּיץ לִבּוֹ
.Dominus dixit , illa die in fugiet nudus *: potentibus in*
בַּגִּבּוֹרִים עָרוֹם יָנוּס בַּיּוֹם־הַהוּא נְאֻם־יְהוָה׃

CAP. III. ג

filii ,vos ſuper Dominus eſt locutus quod , hoc verbum Audite
1 שִׁמְעוּ אֶת־הַדָּבָר הַזֶּה אֲשֶׁר דִּבֶּר יְהוָה עֲלֵיכֶם בְּנֵי
, Ægypti terra è feci aſcendere quam,cognationem omnem ſuper : Iſrael
יִשְׂרָאֵל עַל כָּל־הַמִּשְׁפָּחָה אֲשֶׁר הֶעֱלֵיתִי מֵאֶרֶץ מִצְרַיִם
cognationibus omnibus ex cognovi vos Tantum : dicendo
2 לֵאמֹר׃ רַק אֶתְכֶם יָדַעְתִּי מִכֹּל מִשְׁפְּחוֹת
.veſtras iniquitates omnes vos ſuper viſitabo idcirco *: humi*
הָאֲדָמָה עַל־כֵּן אֶפְקֹד עֲלֵיכֶם אֵת כָּל־עֲוֺנֹתֵיכֶם׃
? convenerint niſi : pariter duo ambulabunt Nunquid
3 הֲיֵלְכוּ שְׁנַיִם יַחְדָּו בִּלְתִּי אִם־נוֹעָדוּ׃
dabit nunquid ? ei non præda *&* , ſylva in leo rugiet Nunquid
4 הֲיִשְׁאַג אַרְיֵה בַּיַּעַר וְטֶרֶף אֵין לוֹ הֲיִתֵּן
? apprehenderit niſi , ſuo habitaculo de ſuam vocem leunculus
כְּפִיר קוֹלוֹ מִמְּעֹנָתוֹ בִּלְתִּי אִם־לָכָד׃
? ei non laqueus & ,terræ laqueum *ſuper* avis cadet Nunquid
5 הֲתִפֹּל צִפּוֹר עַל־פַּח הָאָרֶץ וּמוֹקֵשׁ אֵין לָהּ
? capiet non capiendo & , *humo* è laqueus aſcendet Nunquid
הֲיַעֲלֶה־פַּח מִן־הָאֲדָמָה וְלָכוֹד לֹא יִלְכּוֹד׃

Verſio VULG. LAT.

6 Hæc dicit Dominus; Super tribus ſceleribus Iſrael, & ſuper quatuor non convertam eum: pro eo quòd vendiderit pro argento juſtum, & 7 pauperem pro calceamentis. Qui conterunt ſuper pulverem terræ capita pauperum, & viam humilium declinant: & filius ac pater ejus ierunt ad puellam, ut viola- 8 rent nomen ſanctum meum. Et ſuper veſtimentis pignoratis accubuerunt juxta omne altare: & vinum damnatorum bibebant in 9 domo Dei ſui. Ego autem exterminavi Amorrhæum à facie eorum: cujus altitudo, cedrorum altitudo ejus: & fortis ipſe quaſi quercus: & contrivi fructum ejus deſupèr, & radices ejus ſub- 10 tér. Ego ſum, qui aſcendere vos feci de terra Ægypti, & duxi vos in deſerto quadraginta annis, ut 11 poſſideretis terram Amorrhæi. Et ſuſcitavi de filiis veſtris in prophetas, & de juvenibus veſtris Nazaræos: numquid non ita eſt, 12 filii Iſrael, dicit Dominus? Et propinabitis Nazaræis vinum, & prophetis mandabitis, dicen- 13 tes; Ne prophetetis. Ecce ego ſtridebo ſubter vos, ſicut ſtridet 14 plauſtrum onuſtum fœno. Et peribit fuga à veloce, & fortis non obtinebit virtutem ſuam, & robuſtus non ſalvabit animam 15 ſuam: Et tenens arcum non ſtabit, & velox pedibus ſuis non ſalvabitur, & aſcenſor equi non 16 ſalvabit animam ſuam: Et robuſtus corde inter fortes nudus fugiet in illa die, dicit Dominus.

CAP. III.

1 Audite verbum quod locutus eſt Dominus ſuper vos, filii Iſrael: ſuper omnem cognationem, quam eduxi de terra Ægypti, di- 2 cens; Tantummodò vos cognovi ex omnibus cognationibus terræ: idcircò viſitabo ſuper vos 3 omnes iniquitates veſtras. Numquid ambulabunt duo pariter, niſi 4 convenerit eis. Numquid rugiet leo in ſaltu, niſi habuerit prædam? numquid dabit catulus leonis vocem de cubili ſuo, niſi ali- 5 quid apprehenderit? Numquid cadet avis in laqueum terræ abſque aucupe? numquid auferetur laqueus de terra antequàm quid ceperit?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

6 Τάδε λέγει κύριος, Ἐπὶ ταῖς τρισὶν ἀσεβείαις Ἰσραὴλ, καὶ ἐπὶ ταῖς τέσσαρσιν οὐκ ἀποστραφήσομαι αὐτὸν, ἀνθ᾽ ὧν ἀπέδοντο ἀργυρίου δίκαιον, καὶ πένητα ἕνεκεν ὑποδημάτων, 7 Τὰ πατοῦντα ἐπὶ τὸν χοῦν τῆς γῆς, καὶ ἐκονδύλιζον εἰς κεφαλὰς πτωχῶν, καὶ ὁδὸν ταπεινῶν ἐξέκλιναν, καὶ υἱὸς καὶ πατὴρ αὐτοῦ εἰσεπορεύοντο πρὸς τὴν αὐτὴν παιδίσκην, ὅπως (θ) βεβηλῶσι τὸ ὄνομα τοῦ θεοῦ αὐτῶν. 8 Καὶ τὰ ἱμάτια αὐτῶν δεσμεύοντες σχοινίοις, παραπετάσματα ἐποίουν ἐχόμενα τοῦ θυσιαστηρίου, καὶ οἶνον ἐκ συκοφαντιῶν ἔπινον ἐν 9 τῷ οἴκῳ τοῦ θεοῦ αὐτῶν. Ἐγὼ δὲ (ι) ἐξῆρα τὸν Ἀμορραῖον ἐκ προσώπου αὐτῶν, οὗ ἦν, καθὼς ὕψος κέδρου, τὸ ὕψος αὐτοῦ, καὶ ἰσχυρὸς ἦν ὡς δρῦς, καὶ ἐξήρανα τὸν καρπὸν αὐτοῦ (κ) ἐπάνωθεν, καὶ τὰς ῥίζας αὐτοῦ ὑποκάτωθεν. 10 Καὶ ἐγὼ ἀνήγαγον ὑμᾶς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, καὶ περιήγαγον ὑμᾶς ἐν τῇ ἐρήμῳ (λ) τεσσαράκοντα ἔτη, τοῦ κατακληρονομῆσαι τὴν γῆν τῶν 11 Ἀμορραίων. Καὶ ἔλαβον ἐκ τῶν υἱῶν ὑμῶν εἰς προφήτας, καὶ ἐκ τῶν νεανίσκων ὑμῶν εἰς ἁγιασμόν. μὴ οὐκ ἔστι ταῦτα υἱοὶ Ἰσραήλ; 12 λέγει κύριος. Καὶ ἐποτίζετε τοὺς ἡγιασμένους οἶνον, καὶ τοῖς προφήταις ἐνετέλλεσθε 13 λέγοντες, Οὐ μὴ προφητεύσητε. Διατοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ (μ) κυλίω ὑποκάτω ὑμῶν, ὃν τρόπον 14 κυλίεται ἡ ἅμαξα ἡ γέμουσα καλάμης. Καὶ ἀπολεῖται φυγὴ ἐκ δρομέως, καὶ ὁ κραταιὸς οὐ μὴ κρατήσῃ τῆς ἰσχύος αὐτοῦ, καὶ ὁ (ν) μαχη- 15 τὴς οὐ μὴ σώσῃ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, Καὶ ὁ τοξότης οὐ μὴ ὑποστῇ, καὶ ὁ ὀξὺς τοῖς ποσὶν αὐτοῦ οὐ μὴ διασωθῇ, (ξ) καὶ ὁ ἱππεὺς οὐ μὴ σώσῃ 16 τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, (ο) Καὶ ὁ κραταιὸς οὐ μὴ εὑρήσει τὴν καρδίαν αὐτοῦ ἐν δυναστείαις, ὁ γυμνὸς διώξεται ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ, λέγει κύριος.

MS. A. (θ) βεβηλώσωσιν (ι) ἐξήγειρα (κ) ἀπάνωθεν, (λ) τεσσεράκοντα (μ) κωλύω (ν) μαχητὴς *, Καὶ ὁ τοξότης (ξ) οὐδὲ ὁ (ο) Καὶ * εὑρήσει τὴν

Hæc dicit Dominus; Super tribus impietatibus Iſrael, & ſuper quatuor non averſabor eum; pro eo quòd vendiderint argento juſtum, & pauperem propter calceamenta, 7 *Quæ calcant ſuper pulverem terræ: & pugno percutiebant in capita pauperum, & viam humilium declinabant: & filius, & pater ejus ingrediebantur ad eandem puellam; ut contaminarent nomen Dei ſui.* 8 *Et veſtimenta ſua alligantes funibus, faciebant velamina juxta altare, & vinum de calumniis bibebant in domo Dei ſui.* 9 *Ego autem abſtuli Amorrhæum à facie eorum, cujus erat, ſicut altitudo cedri, ſublimitas ejus, & fortis erat, quaſi quercus: & areſeci fructum ejus deſupèr, & radices ejus deorſúm.* 10 *Et ego eduxi vos de terra Ægypti, & circumduxi vos in deſerto quadraginta annis; ut poſſideretis terram Amorrhæorum:* 11 *Et aſſumpſi de filiis veſtris in prophetas, & de juvenibus veſtris in ſanctificationem. Nunquid non ſunt hæc, filii Iſrael? dicit Dominus.* 12 *Et propinabatis ſanctificatis vinum, & prophetis mandabatis, dicentes; Ne prophetetis.* 13 *Quapropter ecce ego volvo ſubter vos, ſicut volvitur plauſtrum plenum ſtipulâ:* 14 *Et peribit fuga à curſore: & fortis non obtinebit fortitudinem ſuam: & pugnator non ſalvabit animã ſuam:* 15 *Et ſagittarius non ſubſtinebit: & velox pedibus ſuis ſalvari non poterit: & eques non ſalvabit animã ſuã:* 16 *(b) Et fortis non inveniet cor ſuũ in potentatibus: nudus (c) perſequetur in die illa, dicit Dominus.*

ΚΕΦ. γ'.

1 Ἀκούσατε τὸν λόγον τοῦτον, ὃν ἐλάλησε κύριος ἐφ᾽ ὑμᾶς, οἶκος Ἰσραὴλ, καὶ κατὰ πάσης φυλῆς, ἧς ἀνήγαγον ἐκ γῆς Αἰγύπτου, 2 λέγων, Πλὴν ὑμᾶς ἔγνων ἐκ πασῶν τῶν φυλῶν τῆς γῆς, διατοῦτο ἐκδικήσω ἐφ᾽ ὑμᾶς πάσας τὰς ἁμαρτίας ὑμῶν. 3 Εἰ πορεύσονται δύο ἐπιτοαυτὸ καθόλου, ἐὰν μὴ γνωρίσωσιν ἑαυτούς; 4 Εἰ ἐρεύξεται λέων ἐκ τοῦ δρυμοῦ αὐτοῦ θήραν οὐκ ἔχων; εἰ δώσει σκύμνος φωνὴν αὐτοῦ ἐκ τῆς μάνδρας αὐτοῦ 5 καθόλου, ἐὰν μὴ ἁρπάσῃ τί; Εἰ πεσεῖται ὄρνεον ἐπὶ τῆς γῆς ἄνευ ἰξευτοῦ; εἰ χαλασθήσεται παγὶς ἐπὶ τῆς γῆς ἄνευ τοῦ συλλαβεῖν τί;

CAP. III.

Audite verbum hoc, quod loquutus eſt Dominus ſuper vos, domus Iſrael, & contra omnem tribum, quam eduxi de terra Ægypti, dicens; 1 2 *Veruntamen vos cognovi de univerſis tribubus terræ: idcircò ulciſcar ſuper vos omnia (a) peccata veſtra.* 3 *Si ambulabunt duo ſimul omninó; niſi (b) cognoverint ſe?* 4 *Si ructabit leo de ſaltu ſuo, prædam non habens? Si dabit catulus leonis vocem ſuam de cubili ſuo omninó; niſi aliquid rapuerit?* 5 *Si cadet avis ſuper terram ſine aucupe? Si deponetur laqueus ſuper terram; niſi aliquid apprehenderit?*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

6 כדנן אמר יי על תלתא חובי ישראל ועל ארבעא לא אשבוק להון על דזבינו בכספא
7 זכאין וחשיכיא בדיל דיחסנון ׃ דשיטין בעפרא דארעא דריש מסכיניא ודין
8 חשיכיא מסטן וגבר ואבוהי אזלין על עולמתא בדיל לאחלא ית שמא דקודשי ׃ ועל
9 שוין דמשכון מסחרין בסטר כל אגוריהון וחמר אונסא שתן בית טעותהון ׃ ואנא
שציתי ית אמוראה מן קדמיהון דכרום ארזין רומיה וחסין הוא כבלוטין ושציתי
10 אביה מלעלא ושרשוהי מלרע ׃ ואנא אסקית יתכון מארעא דמצרים ודברית יתכון
11 במדברא ארבעין שנין למירת ית ארעא דאמוראה ׃ ואקמית מבניכון לנביאין
12 ומטולמיכון למלפין האף לית דא בני ישראל אמר יי ׃ ואטעיתון ית מלפיכון בחמרא
13 ועל נבייא פקדתון למימר לא תתנבון נבואה ׃ הא אנא מיתי עליכון עקא ומעיק
14 לכון באתרכון כמא דעיקא עגלתא דטעינא עמירא ׃ וייבד בית ערוקי מדקליל
15 ודתקיף לא יחסין חיליה וגבר לא ישיזיב נפשיה ׃ ואחיד קשתא לא יקום ודקליל
16 ברגליה לא ישתיזיב ורכיב סוסיא לא ישיזיב נפשיה ׃ ודתקיף לביה בגבריא ערטילא
דלא זין יערוק ביומא ההוא אמר יי ׃

ג

1 קבילו ית פתגמא הדין די גזר יי עליכון בית ישראל על כל זרעיתא דאסקית מארעא
2 דמצרים למימר ׃ לחוד בכון אתרעיתי מכל זרעית ארעא על כן אסער עליכון ית כל
3 4 חוביכון ׃ היהכון תרין כחדא אלהין אם אודמנו ׃ הינהום אריא בחורשא וצידא לית
5 ליה הירים בר אריון קליה ממרבועתיה אלהין אם אחד ׃ התפול צפרא בקולא על
ארעא וציד לית ליה הישתריק קולא מן ארעא ומחד לא אחד ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Sic dicit Dñs, Super tribus ſceleribus Iſrael & ſuper quatuor non condonabo 6 eis culpam, eò quòd vendiderint pro argento juſtos & pauperes, quò opes poſſideant. Qui contemnunt quaſi pulverem terræ, caput mendicorum, & 7 cauſam obſcurorum pervertunt, & vir ac pater ejus divertunt ad puellam, ut contaminent nomen ſacroſanctum meum. Atque in lectulis pignoratis ac- 8 cumbunt, juxta omnes aras ſuas, vinúmque rapinæ bibunt in æde idolorum ſuorum. Licet diſperdiderim Amorrhæum à facie eorum, cujus celſitudo erat 9 qualis altitudo cedrorum, ac ipſe robuſtus erat quaſi quercus; diſperdidi tamen fructum ejus ſurſum, & radices ejus deorſum. Ego verò aſcendere vos 10 feci de terra Ægypti, & deduxi vos per deſertum quadraginta annis, ut hæreditario jure terram Amorrhæi caperetis. Et ſuſcitavi de filiis veſtris Pro- 11 phetas, & de juvenibus veſtris Doctores: nunquid non ita eſt filii Iſrael, dicit Dominus? Et in errorem impuliſtis Doctores veſtros vino, & Prophetis 12 mandâſtis dicentes, Ne vaticinemini prophetiam. Ecce ego adducam ſuper 13 vos tribulationem quæ coarctabit vos in *loco veſtro*, ſicut coarctatur plauſtrum manipulis onuſtum. Itáque interibit domus refugii à veloce, & fortis non 14 roborabitur virtute ſua, nec robuſtus ſalvabit animam ſuam. Et arcitenens 15 non conſiſtet, & præpes pedibus ſuis non evadet, nec aſcenſor equorum ſalvabit animam ſuam. Nec non cordatus inter fortes, nudus & inermis fugiet *in* 16 *illa die*, ait Dominus.

CAP. III.

Suſcipite verbum iſtud quod decrevit contra vos Dominus, filii Iſrael, ad- 1 verſum omnem cognationem quam aſcendere feci de terra Ægypti, dicens: Tantùm vos elegi de omnibus terræ cognationibus: ideò viſitabo contra vos 2 omnia peccata veſtra. Nunquid unà duo iter facient niſi convenerint? Nun- 3 quid rugiet leo in ſylva, præda illi deficiente? an extollet leonum catulus vo- 4 cem ſuam de accubitu ſuo, niſi apprehenderit? Nunquid cadet avis in la- 5 queum ſuper terram, nullo imminente ei aucupe? nunquid ſolvetur laqueus de terra, & arripiendo nihil prehenderit?

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܬܠܬܐ ܚܛܗܘܗܝ ܕܐܝܣܪܝܠ ܘܕܐܪܒܥܐ. ܠܐ ܐܗܦܘܟ ܡܢܗܘܢ. ܥܠ 6
ܕܙܒܢܘ ܒܟܣܦܐ ܙܕܝܩܐ. ܘܡܣܟܢܐ ܒܡܣܐܢܐ ܕܕܝܫܝܢ ܒܗܘܢ ܥܠ ܥܦܪܐ ܕܐܪܥܐ.
* ܘܡܦܚܣܝܢ ܠܡܣܟܢܐ. ܘܐܘܪܚܐ ܕܡܟܝܟܐ ܡܥܩܡܝܢ. ܘܓܒܪܐ ܘܐܒܘܗܝ ܐܙܠܝܢ ܠܘܬ ܚܕܐ ܐܢܬܬܐ. 7
ܕܢܛܢܦܘܢ ܫܡܐ ܕܩܘܕܫܝ. * ܘܥܠ ܠܒܘܫܐ ܕܚܒܠܐ ܐܣܝܪܝܢ ܗܘܘ. ܠܘܬ ܓܢܒ ܟܠ 8
ܡܕܒܚ. ܘܚܡܪܐ ܥܬܝܩܐ ܫܬܝܢ ܗܘܘ ܒܒܝܬ ܐܠܗܝܗܘܢ. * ܘܐܢܐ ܐܘܒܕܬ ܠܐܡܘܪܝܐ ܡܢ 9
ܩܕܡܝܗܘܢ. ܕܪܘܡܗ ܐܝܟ ܪܘܡܐ ܕܐܪܙܐ. ܘܚܣܝܢ ܗܘܐ ܐܝܟ ܒܠܘܛܐ. ܘܐܘܒܕܬ ܦܐܪܘܗܝ ܡܢ
ܠܥܠ. ܘܥܩܪܘܗܝ ܡܢ ܠܬܚܬ. * ܘܐܢܐ ܐܣܩܬܟܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܕܒܪܬܟܘܢ 10
ܒܡܕܒܪܐ ܐܪܒܥܝܢ ܫܢܝܢ. ܘܐܝܬܝܬܟܘܢ ܠܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܠܡܐܪܬ ܐܪܥܐ ܕܐܡܘܪܝܐ. * ܘܐܩܝܡܬ 11
ܡܢ ܒܢܝܟܘܢ ܢܒܝܐ. ܘܡܢ ܓܠܝܡܝܟܘܢ ܢܙܝܪܐ. ܕܠܡܐ ܠܐ ܐܝܬܝܗܝܢ ܗܟܢ ܒܢܝ
ܐܝܣܪܝܠ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܐܢܬܘܢ ܐܫܩܝܬܘܢ ܠܢܙܝܪܐ ܚܡܪܐ. ܘܠܢܒܝܐ ܦܩܕܬܘܢ ܕܠܐ ܢܬܢܒܘܢ. 12
* ܗܐ ܐܢܐ ܡܥܝܩ ܐܢܐ ܠܟܘܢ ܬܚܬܝܟܘܢ. ܐܝܟ ܕܡܥܝܩܐ ܥܓܠܬܐ ܕܡܠܝܐ ܫܒܠܐ. * ܘܢܐܒܕ ܪܗܛܐ 13 14
ܡܢ ܩܠܝܠܐ. ܘܕܚܝܠ ܠܐ ܢܫܬܥܫܥ ܚܝܠܗ. ܘܓܢܒܪܐ ܠܐ ܢܦܨܐ ܢܦܫܗ. * ܘܩܫܬܐ ܠܐ ܢܩܘܡ. 15
ܘܩܠܝܠܐ ܒܪܓܠܘܗܝ ܠܐ ܢܬܦܨܐ. ܘܪܟܒܐ ܠܐ ܢܦܠܛ ܢܦܫܗ. * ܘܕܚܝܠ ܒܠܒܗ ܐܝܟ ܓܢܒܪܐ. 16
ܥܪܛܠܝܐ ܢܥܪܘܩ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܓ *

* ܫܡܥܘ ܡܠܬܐ ܗܕܐ ܕܐܡܪ ܡܪܝܐ ܥܠܝܟܘܢ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܥܠ ܟܠܗ ܫܪܒܬܐ ܕܐܣܩܬ 1
ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܘܐܡܪܬ ܕܠܚܘܕ ܠܟܘܢ ܝܕܥܬ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. ܘܡܢ 2
ܟܠܗܝܢ ܫܪܒܬܐ ܕܐܪܥܐ. ܡܛܠܗܢܐ ܐܦܩܘܕ ܥܠܝܟܘܢ ܟܠܗܘܢ ܚܛܗܝܟܘܢ. * ܕܠܡܐ 3
ܐܙܠܝܢ ܬܪܝܢ ܐܟܚܕܐ. ܐܠܐ ܐܢ ܐܙܕܡܢܘ. * ܕܠܡܐ ܢܗܘܡ ܐܪܝܐ ܒܥܒܐ. ܟܕ ܕܠܝܬ ܠܗ 4
ܛܪܦܐ. ܐܘ ܕܠܡܐ ܢܬܠ ܩܠܗ ܐܪܝܐ ܡܢ ܡܥܪܬܗ. ܐܠܐ ܐܢ ܐܚܕ. * ܕܠܡܐ ܢܦܠ ܨܦܪܐ 5
ܒܦܚܐ ܥܠ ܐܪܥܐ. ܟܕ ܠܝܬ ܡܢ ܨܝܕܐ. ܐܘ ܕܠܡܐ ܢܣܩ ܦܚܐ ܡܢ ܐܪܥܐ. ܘܐܚܕ.

Sic dicit Dominus; Propter tria ſcelera Iſraelis, quartum non avertam ab eis. Quia juſtum pecuniâ vendunt, & pauperem pro calceis quibus terunt pulverem terræ; 6 Exagitant pauperes, & viam humilium pervertunt; & vir cum patre ſuo *eandem* mulierem adeunt ad contaminandum nomen ſanctitatis meæ; 7 Super veſtes funibus accingebantur ad latus cujuſlibet altaris; & vinum vetus bibebant in domo deorum ſuorum: 8 Quanvis ego perdiderim Amoræum à conſpectu eorum, cujus altitudo par erat altitudini cedri, & durus erat ut quercus; perdiderim fructus ejus supernè, & radices ejus infernè: 9 Et ego eduxerim vos è terra Ægypti, rexerímque vos per deſertum quadraginta annos, & adduxerim vos ad locum iſtum, ut poſſideretis terram Amoræorum: 10 Et ſuſcitaverim è filiis veſtris prophetas, & Nazaræos è juvenibus veſtris. Annon hæc ita ſunt filii Iſraelis, dicit Dominus? 11 Vos autem Nazaræis bibendum dediſtis vinum, & prophetis præcepiſtis ne prophetarent: 12 Ecce ego ſub vobis comprimam, ut comprimit plauſtrum plenum ariſtis: 13 Et peribit curſus à veloci; & qui robuſtus eſt, vires ejus non ſuſtinebunt; & qui gigas eſt, non eripiet ſeipſum: 14 Sagittarius non ſubſiſtet, curſu celer non evadet, eques non liberabit ſeipſum: 15 Et qui generoſus eſt animo ceu gigas, nudus fugiet eo die, dicit Dominus. 16

CAP. III.

Audite verbum iſtud quod locutus eſt Dominus de vobis filii Iſraelis, de tota familia quam extraxi de terra Ægypti, 1 Dicendo; Duntaxat vos agnovi ex omnibus gentibus & ex omnibus terræ nationibus: idcircò viſitabo in vobis omnia ſcelera veſtra. 2 Num irent duo ſimul, niſi convenirent? 3 An rugiret leo in ſylva, dum nulla adeſſet præda? an attolleret vocem ſuam leo è luſtro ſuo, niſi prædâ captâ? 4 Num caderet avis in laqueum in terra ſine aucupe? an exiliret laqueus è terra, & caperet? 5

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* هكذا يقول الرب على ثلاث ذنوب اسرائيل * وعلى الرابع لا اصرفه عنه * من اجل انهم باعوا 6
الصديق بالفضة * والفقير الماشي على تراب الارض من اجل الاحذية * وقمعوا روس المساكين * 7
واملوا طريق المتواضعين * وابن وابوه دخلا الى جارية هي بعينها * كي يدنسا ناموس الههم *
* ربطوا ثيابهم بحبال * صنعوا حجابا بجانب المذبح * وشربوا خمرا من المباغي في بيت الههم * 8
* وانا نزعت الاموراني من وجههم * الذي كان كارتفاع الارز ارتفاعه * وقوي كان 9
كالبلوطة * ويبست ثمرته من فوق * واصوله من تحت * وانا اصعدتكم من ارض مصر * 10
واحطت بكم في البرية اربعين سنة * لترثوا ارض الامورانيين * واخذت من ابنائكم 11
انبياء * ومن شبانكم تقديسا * هل هذه لم تكن يا بني اسرائيل يقول الرب *
* وسقيتم المقدسين خمرا * وامرتم الانبياء قائلين لا تتنبوا * لاجل هذا ها انا امرغ 12 13
تحتكم كما تمرغ العجلة المملوة قصبا * وتهلكون بالهرب من السريع * والقوي لا يبلغ 14
قوته * والمحارب لا يخلص نفسه * ويجد قلبه في مقدرات * والعريان يهرب في ذلك اليوم 16
يقول الرب *

* الفصل الثالث *

* اسمعوا هذا القول الذي تكلم الرب عليكم به يا بيت اسرائيل * وعلى كل القبيلة التي 1
اصعدتها من مصر * قائلا * اياكم عرفت من جميع قبايل الارض * لاجل هذا انتقم منكم 2 3
جميع خطاياكم * اينطلق اثنان معا بالكلية ان لم يعرفا بعضهما بعضا * ايزار الاسد من 4
الغابة اذا لم يكن له فريسة * ايعطي الشبل صوته من عرينه بالكلية ان لم يختطف شيا *
* ايسقط طير على الارض من غير قانص * ايطفر الفخ على الارض من غير ان يضبط شيا * 5

Sic ait Dominus de tribus criminibus Iſraelis, quod autem ad quartum, non avertam illud ab eo. Quia juſtum pecuniâ vendiderunt, & pauperem ambulantem ſuper terræ pulverem, pro calceis. 6 *Baculis tutuderunt capita pauperum; & perverterunt viam humilium: & filius ac pater ejus ingreſſi ſunt ad puellam eandemmetipſam, ut profanarent legem Dei ſui:* 7 *Veſtes ſuas funibus ligaverunt, fecerunt velum ad latus altaris, & biberunt vinum ex fallaciis in domo Dei ſui:* 8 *Quum ego abſtuliſſem Amoræum à conſpectu eorum, cujus proceritas par erat altitudini cedri, quique fortis erat ut quercus; & arefeciſſem fructum ejus supernè, & radices ejus infernè:* 9 *Ego etiam eduxiſſem vos è terra Ægypti, & circumduxiſſem vos per deſertum quadraginta annos, ut poſſideretis terram Amoræorum:* 10 *Et accepiſſem è filiis veſtris prophetas, & è juvenibus veſtris ſanctificationem. Annon hæc fuerunt O filii Iſraelis, ait Dominus?* 11 *Vos autem propinâſtis vinum ſanctificatis, & prophetis præcepiſtis dicentes; Ne vaticinemini:* 12 *Propterea ecce ego volutor ſubter vos quemadmodum volutatur plauſtrum plenum arundinibus.* 13 *Et peribitis fugientes à celeri, & robuſtus non obtinebit vires ſuas, & bellator non ſervabit ſeipſum,* 14 *Imò vix reperiet cor ſuum; & qui nudus fuerit, fugiet eo die, dicit Dominus.* 16

CAP. III.

Audite ſermonem iſtum quem locutus eſt Dominus de vobis O domus Iſraelis, deque tota familia quam eduxi de terra Ægypti, 1 *Dicens; Vos cognovi ex omnibus terræ gentibus; idcirco ulciſcar à vobis omnia peccata veſtra.* 2 *An duo omnino ſimul irent, niſi alter alterũ cognoſceret?* 3 *An rugiret leo è ſylva cùm nulla fuerit ei præda? an prorſus ederet leunculus vocem ſuam è luſtro ſuo, niſi aliquid rapuerit?* 4 *An caderet avis ſuper terram ſine aucupe? an reſiliret laqueus ſuper terram, niſi ceperit aliquid?* 5

עמוס: ד

Num ? *expavescent* non populus & ,civitate in tuba clangetur Nunquid
6 אם־יתקע שופר בעיר ועם לא יחרדו אם־
non Quia ? fecerit non Dominus & , civitate in malum erit
תהיה רעה בעיר ויהוה לא עשה : כי לא 7
suũ secretum revel[illegible]it nisi ; verbum *Dominus* Dominus faciet
יעשה אדני יהוה דבר כי אם־גלה סודו
? timebit non quis , rugiit Leo .*prophetas suos servos* ad
8 אל־עבדיו הנביאים : אריה שאג מי לא יירא
Promulgate ? prophetabit non quis ,est locutus *Dominus* Dominus
9 אדני יהוה דבר מי לא ינבא : השמיעו
: Ægypti terra in ædes super & , Asdod in ædes super
על־ארמנות באשדוד ועל־ארמנות בארץ מצרים
contritiones videte & ,Someron montes super vos Congregate : dicite &
ואמרו האספו על־הרי שמרון וראו מהומת
nescierunt Et .ejus medio in oppressos & , ejus medio in multas
10 רבות בתוכה ועשוקים בקרבה : ולא־ידעו
prædam & , *rapinam recondentes* : Dominus dixit , rectum facere
עשות־נכחה נאם־יהוה האוצרים חמס ושד
,*tribulatio* ,Deus Dominus dixit sic Propterea .suis ædibus in
11 בארמנותיהם : לכן כה אמר אדני יהוה צר
diripientur &,tuã fortitudinẽ te à faciet descẽdere & : *terram circum* &
וסביב הארץ והוריד ממך עזך ונבזו
ore de pastor eruat Quomodo :Dominus dixit Sic .tuæ ædes
12 ארמנותיך : כה אמר יהוה כאשר יציל הרעה מפי
Israel filii eruentur sic : auris *tenerum* vel , crura duo leonis
הארי שתי כרעים או בדל־אזן כן ינצלו בני ישראל
.*strati* angulo *in* & , lecti angulo in Someron in habitantes
הישבים בשמרון בפאת מטה ובדמשק ערש :
Dominus Dominus dixit : Jahacob domo in facite contestari & , Audite
13 שמעו והעידו בבית יעקב נאם־אדני יהוה
Israel prævaricationes *me visitare* die in Quia .exercituum Deus
14 אלהי הצבאות : כי ביום פקדי פשעי־ישראל
amputabuntur & , el--Beth altaria super visitabo *&* : eum super
עליו ופקדתי על־מזבחות בית־אל ונגדעו
domum faciam percutere Et .terram in cadent & , altaris cornua
15 קרנות המזבח ונפלו לארץ : והכיתי בית־
domus deficient & ,*dentis* domus peribunt & : *æstatis* domo *super* , *hyemis*
החרף על־בית הקיץ ואבדו בתי השן וספו בתים
.Dominus dixit :multæ
רבים נאם־יהוה :

CAP. IV. ד

, Someron monte in quæ , Basan vaccæ hoc verbum Audite
1 שמעו הדבר הזה פרות הבשן אשר בהר שמרון
:*suis* dominis *dicentes* : *egenos allidentes* , pauperes *opprimentes*
העשקות דלים הרצצות אביונים האמרות לאדניהם
DOMINUS Dominus Juravit .bibemus & , *Affer*
2 הביאה ונשתה : נשבע אדני יהוה
vos tollet & : vos super *venientes* dies ecce quia : *sua sanctitate in*
בקדשו כי הנה ימים באים עליכם ונשא אתכם
interruptiones Et .*piscis ollis in* vestrã posteritatem & , spinis *in*
3 בצנות ואחריתכן בסירות דוגה : ופרצים
dixit , palatium facietis projicere & : *eam* contra unaquæque exibitis
תצאנה אשה נגדה והשלכתנה ההרמונה נאם־
, Ghilghal prævaricamini & , el---Beth Venite .DOMINUS
4 יהוה : באו בית־אל ופשעו הגלגל
tribus , vestra sacrificia manè afferte & : *prævaricandũ ad* multiplicate
הרבו לפשע והביאו לבקר זבחיכם לשלשת
.vestras decimas diebus
ימים מעשרתיכם :

Versio VULG. LAT.

6 Si clanget tuba in civitate, & populus
non expavescet ? si erit malum
in civitate, quod Dominus
7 non fecerit ? Quia non facit Dominus
Deus verbum, nisi revelaverit
secretũ suum ad servos suos
8 prophetas. Leo rugiet, quis non
timebit ? Dominus Deus locutus
9 est, quis non prophetabit ? Auditum
facite in ædibus Azoti, &
in ædibus terræ Ægypti : & dicite
; Congregamini super montes
Samariæ, & videte insanias multas
in medio ejus, & calumniam
10 patientes in penetralibus ejus. Et
nescierunt facere rectũ, dicit Dominus,
thesaurizantes iniquitatem
11 & rapinas in ædibus suis. Propterea
hæc dicit Dominus Deus ;
Tribulabitur, & circuietur terra:
& detrahetur ex te fortitudo tua,
12 & diripientur ædes tuæ. Hæc dicit
Dominus ; Quomodò si eruat
pastor de ore leonis duo crura,
aut extremum auriculæ : sic eruentur
filii Israel, qui habitant in
Samaria in plaga lectuli, & in
13 Damasci grabato. Audite , &
contestamini in domo Jacob, dicit
Dominus Deus exercituum :
14 Quia in die cùm visitare cœpero
prævaricationes Israel, super
eum visitabo, & super altaria Bethel
: & amputabuntur cornua
15 altaris, & cadent in terram. Et
percutiam domum hyemalem cũ
domo æstiva : & peribunt domus
eburneæ , & dissipabuntur ædes
multæ, dicit Dominus.

CAP. IV.

1 AUdite verbũ hoc, vaccæ pingues,
quæ estis in monte Samariæ:
quæ calumniam facitis egenis, &
confringitis pauperes : quæ dicitis
dominis vestris ; Afferte, &
2 bibemus. Juravit Dominus Deus
in Sancto suo: quia ecce dies venient
super vos, & levabunt vos
in contis, & reliquias vestras in
3 ollis ferventibus. Et per aperturas
exibitis altera contra alteram,
& projiciemini in Armon, dicit
4 Dominus. Venite ad Bethel, &
impiè agite : ad Galgalam , &
multiplicate prævaricationem:&
afferte manè victimas vestras, tribus
diebus decimas vestras.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

6 Εἰ φωνήσει σάλπιγξ ἐν πόλει, ϗ λαὸς οὐ
πτοηθήσεται; εἰ ἔσται κακία ἐν πόλει ἣν
7 κύριος οὐκ ἐποίησεν; Διότι οὐ μὴ ποιήσῃ
κύριος ὁ θεὸς πρᾶγμα, ἐὰν μὴ ἀποκαλύψῃ
παιδείαν(˜)πρὸς τοὺς δούλους αὐτοῦ τοὺς
8 προφήτας. Λέων ἐρεύξεται, ϗ τίς οὐ φοβηθήσεται;
κύριος ὁ θεὸς ἐλάλησε, ϗ
9 τίς οὐ προφητεύσει; Ἀναγγείλατε χώραις
ἐν Ἀσσυρίοις, ϗ ἐπὶ τὰς χώρας (α) τῆς
Αἰγύπτου, ϗ εἴπατε, Συνάχθητε ἐπὶ τὸ
ὄρος Σαμαρείας, ϗ ἴδετε θαυμαστὰ πολλὰ
ἐν μέσῳ αὐτῆς, (β) ϗ καταδυναστείαν
10 τὴν ἐν αὐτῇ. Καὶ οὐκ ἔγνω ἃ ἔσται (γ) ἐναντίον
αὐτῆς, λέγει κύριος, οἱ θησαυρίζοντες
ἀδικίαν ϗ ταλαιπωρίαν ἐν ταῖς
11 χώραις αὐτῶν. Διὰ τοῦτο τάδε λέγει κύριος
ὁ θεὸς, Τύρος κυκλόθεν ἡ γῆ σου
ἐρημωθήσεται, ϗ κατάξει ἐκ σοῦ ἰσχύν
σου, ϗ διαρπαγήσονται αἱ χῶραί σου.
12 Τάδε λέγει κύριος, Ὃν τρόπον ὅταν ἐκσπάσῃ
ὁ ποιμὴν ἐκ στόματος τοῦ λέοντος
δύο σκέλη ἢ λοβὸν ὠτίου, οὕτως ἐκσπασθήσονται
οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ οἱ κατοικοῦντες ἐν
Σαμαρείᾳ κατέναντι (δ) τῆς φυλῆς, ϗ ἐν
13 Δαμασκῷ. Ἱερεῖς ἀκούσατε, ϗ ἐπιμαρτύρασθε
τῷ οἴκῳ Ἰακὼβ, λέγει κύριος ὁ θεὸς ὁ
14 παντοκράτωρ. Διότι ἐν τῇ ἡμέρᾳ ὅταν
(ε) ἐκδικῶ ἀσεβείας τοῦ Ἰσραὴλ ἐπ' αὐτὸν,
ϗ ἐκδικήσω ἐπὶ τὰ θυσιαστήρια Βαιθήλ·
ϗ κατασκαφήσεται τὰ κέρατα τοῦ θυσιαστηρίου,
15 ϗ πεσοῦνται ἐπὶ τὴν γῆν. Συγχεῶ
ϗ πατάξω τὸν οἶκον τὸν περίπτερον ἐπὶ
τὸν οἶκον τὸν θερινὸν, ϗ ἀπολοῦνται οἶκοι ἐλεφάντινοι,
ϗ προστεθήσονται (ζ) ἕτεροι οἶκοι πολλοὶ,
λέγει κύριος.

Si clanget tuba in civitate, & 6
populus non timebit? Si erit
(c)malitia in urbe, quam Dominus
non fecit? Quia non faciet 7
Dominus Deus aliquid, nisi revelaverit
(d)eruditionem[suam]
ad servos suos prophetas. Leo 8
ructabit : & quis non timebit?
Dominus Deus loquutus est : &
quis non prophetabit? Annuntiate 9
regionibus in Assyriis, &
ad regiones Ægypti, & dicite;
Congregamini super montem Samariæ
: & videte mirabilia
multa in medio ejus, & oppressionem,
(e) quæ in ea. Et ignoravit, 10
quæ futura sint coram ea,
dicit Dominus : qui thesaurizant
iniquitatem, & (f) miseriam in
regionibus suis. Propterea hæc 11
dicit Dominus Deus; (g)Tyrus,
in circuitu terra tua deserta
erit : & detrahet de te fortitudinem
tuam : & diripientur regiones
tuæ. Hæc dicit Dominus; 12
Quomodò si avellat pastor de
ore leonis duo crura, aut extremum
auriculæ ; sic avellentur
filii Israel, qui habitant in Samaria
contra tribum, & in Damasco.
(h)Sacerdotes, audite, & 13
contestamini domum Jacob, dicit
Dominus Deus omnipotens.
Quia in die, quâ ulciscar impietates 14
Israel super eum ; ulciscar
& super altaria Bæthel. Et suffodientur
cornua altaris, & cadent
super terram. Confundam, 15
& percutiam domum (i) pinnatam
super domum æstivam : &
peribunt domus eburneæ & adjicientur
domus aliæ multæ, dicit
Dominus.

MS. A. (˜) αὐτοῦ πρὸς (α) Αἰγύπτου, (β) ϗ τὴν καταδυναστείαν (γ) ἐν αὐτῇ, λέγει (δ) φυλῆς, (ε) ἐκδικήσω ἀσέβειαν (ζ) οἶκοι ἕτεροι πολλοὶ,

ΚΕΦ. δ'.

1 ἈΚούσατε τὸν λόγον τοῦτον δαμάλεις τῆς
Βασανίτιδος, αἱ ἐν τῷ ὄρει τῆς Σαμαρείας,
αἱ καταδυναστεύουσαι (α) πτωχοὺς,
ϗ καταπατοῦσαι (β) πένητας, αἱ λέγουσαι
τοῖς κυρίοις αὐτῶν, Ἐπίδοτε ἡμῖν ὅπως
2 πίωμεν. Ὀμνύει κύριος κατὰ τῶν ἁγίων
αὐτοῦ, (γ) διότι ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται ἐφ'
ὑμᾶς, ϗ λήψονται ὑμᾶς ἐν ὅπλοις, ϗ τοὺς
μεθ' ὑμῶν εἰς (δ) λέβητας ὑποκαιομένους
3 ἐμβαλοῦσιν ἔμπυροι λοιμοὶ, Καὶ ἐξενεχθήσεσθε
γυμναὶ κατέναντι ἀλλήλων, ϗ
ἀπορριφήσεσθε εἰς τὸ ὄρος τὸ (ε) Ῥομμὰν,
4 λέγει κύριος. Εἰσήλθατε εἰς Βαιθὴλ, ϗ
(ζ) ἠσεβήσατε, ϗ εἰς Γάλγαλα ἐπληθύνατε
τοῦ ἀσεβῆσαι· ϗ ἠνέγκατε εἰς τοπρωῒ θυσίας
ὑμῶν, εἰς τὴν τριημερίαν τὰ ἐπιδέκατα
ὑμῶν.

CAP. IV.

AUdite verbum, hoc (a)vaccæ 1
Basanitidis, quæ estis in monte
Samariæ, quæ opprimitis pauperes,
& conculcatis egenos, quæ
dicitis dominis vestris, Date nobis,
ut bibamus. Jurat Dominus 2
per (b) Sanctos suos, quoniam
ecce dies veniunt super
vos: & tollent vos in (c) armis,
& eos, qui vobiscum sunt, (d) in
ollas succensas injicient, (e) ferventes,
pestilentes : Et ejiciemini 3
nudæ contra invicem : et projiciemini
in montem (f) Remman,
dicit Dominus. Introistis in 4
Bæthel, et impiè egistis : et in
Galgala multiplicâstis impiè
agere : & intulistis manè hostias
vestras, in (g) triduum
decimas vestras.

MS.A. (α) πένητας, (β) πτωχοὺς, (γ) ὅτι (δ) λέβητας ἔμπυροι (ε) Ῥεμμὰν, λέγει κύριος ὁ θεός. (ζ) ἠνομήσατε,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

6 אם יתקע שופרא בקרתא בלא זמניה ועמא די בה לא יזועון אם תהי בישתא בקרתא
7 ומן קדם יי לא אתעבדת : ארי לא כשרין פתגמין דמתעבדין מן קדם יי אלהים אלהן
8 גלא רזיה לעבדוהי נבייא : אריה נהים מן לא ידחל יי אלהים מליל מן לא יקבל
9 נבואתא : בסרו על ברנית באשדוד ועל ברנית בארעא דמצרים ואמרו אתכנשו
10 על טורי שמרון וחזו שגושיא סגיאן בגוה ואנוסין בגוה : ולא ידעין למעבד אוריתא
11 אמר יי די מלן אוצריהון חטוף ובזא בברניתהון : בכן כדנן אמר יי אלהים עקא
12 תקיפא לארעא ויבטל מניך תוקפיך ויתבזון ברניתיך : כדנן אמר יי כמא דמשיזיב רעיא
מפומא דאריא תרתין כרעין או חסחוס דאודן כן ישתזבון בני ישראל דיתבין
13 בשמרון בתקוף שולטן ועל דמשק רחיצין : קבילו ואסהידו בבית יעקב אמר יי
14 אלהים אלהי צבאות : ארי ביום אסערותי חובי ישראל עלוהי ואסער על דפלחין
15 לאגוריא בבית אל ויתקטפן קרנת אגורא ויפלון לארעא : ואמחי בית סתוא על בית
קיטא ויבדון בתין דמכבשין בשן דפיל ויסופון בתין סגיאין אמר יי :

ד

1 קבילו פתגמא הדין עתירי נכסיא דבטורא דשמרון דעשקין מסכניא ואנסין חשכיא
2 דאמרין לרבוניהון אשלטונא ונבז : קים יי אלהים במימריה בקודשיה ארי הא יומיא
3 אתן עליכון ויטלון יתכון עממיא על תריסיהון ובנתכון בדוגית צידין : ויתרעון
עליכון שורא ויפקון יתכון כנישין גבר לקבליה ויגלון יתהון להלאה מן טורי חרמיני
4 אמר יי : אתו לבית אל ומרדו בגלגלא אסגיאו למחטי ומיתן לצפרא דבחיכון לתלתא
יומין מעסרתכון :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

An clangetur tuba in civitate extra suum tempus;quin popul⁹ qui in ea est,non 6
contremiscat ? num erit afflictio in civitate,quæ à Domino non sit facta? Quo- 7
niam haud rectè res fieri Dño Deo viderentur, nisi revelaret secretum suum
servis suis prophetis. Leone rugiente quis non timebit ? Dño Deo loquente 8
quis non suscipiet prophetiam ? Annuntiate in palatiis Azoti & in prætoriis 9
terræ Ægypti,& dicite:Congregamini super montes Samariæ,& videte conturbationes
ingentes in medio ejus,& oppressores intra eam. Certè nesciunt 10
exequi legem,ait Domin⁹,cùm impleant cellaria sua rapina,atque prædam in
ædib⁹ suis[*recondant*.] Quamobrem sic dicit DñsDe⁹:Tribulatio gravis erit in 11
terra,quæ abolebit à te fortitudinem tuam,& ædes tuæ diripientur. Hæc dicit 12
Domin⁹ : Quemadmodum erueret pastor de ore leonis duo crura, aut extremum
auriculæ:sic liberabuntur filii Israel qui habitant in Samaria,in fortitudine
potestatis,& in Damasco innitentes. Audite & protestamini in domo Jahacob, 13
ait Domin⁹ De⁹ exercituum. Quia in die qua visitavero peccata Israel 14
contra eum,visitabo quoque super colentes in altaribus Bethel,& succidentur
cornua *altaris*,& cadent in terram.Et percutiam domum hyemalem cum domo 15
æstivali, & peribunt domus quæ stratæ sunt ebore, & dissipabuntur domus
multæ, ait Dominus.

CAP. IV.

AUdite sententiam istam divites substantiarum qui estis in monte 1
Samariæ , qui vim infertis egenis , opprimitisque pauperes : qui dicunt
principibus suis : *Facite nobis potestatem*,ut diripiamus. Juravit Dominus 2
Deus *in verbo suo* per sanctitatem suam, quòd ecce dies venient super vos
& tollent vos populi super scuta sua , & filias vestras in scapha piscatorum.
Et confringent super vos murum , & educent vos *collectos* singuli 3
ante se, & transferent vos ultra montes Armeniæ, dicit Dominus. Venerunt 4
ad Bethel, & prævaricati sunt ; in Galgal multiplicarunt peccare, sed offertis
manè victimas vestras, in tribus diebus decimas vestras.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܐܢ ܢܬܩܥ ܫܝܦܘܪܐ ܒܡܕܝܢܬܐ ܘܥܡܐ ܠܐ ܙܐܥ . ܐܘ ܕܬܗܘܐ ܒܝܫܬܐ 6
ܒܡܕܝܢܬܐ . ܘܡܪܝܐ ܠܐ ܥܒܕܗ . * ܡܛܠ ܕܠܐ ܥܒܕ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ ܡܕܡ . ܐܠܐ ܐܢ ܓܠܐ ܐܪܙܗ 7
ܠܥܒܕܘܗܝ ܢܒܝܐ . * ܐܪܝܐ ܢܗܡ ܡܢ ܠܐ ܢܕܚܠ . ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ ܡܠܠ . ܡܢ ܠܐ ܢܬܢܒܐ . * ܐܫܡܥܘ 8
ܥܠ ܐܦܕܢܐ ܕܐܫܕܘܕ ܘܥܠ ܐܦܕܢܐ ܕܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ . ܘܐܡܪܘ . ܐܬܟܢܫܘ ܟܠܟܘܢ ܠܛܘܪܐ 9
ܕܫܡܪܝܢ . ܘܚܙܘ ܫܓܘܫܝܐ ܣܓܝܐܐ ܕܒܓܘܗ . ܘܥܨܘܒܝܐ ܕܒܗ . * ܘܠܐ ܝܕܥܝܢ ܠܡܥܒܕ 10
ܬܪܝܨܘܬܐ . ܐܡܪ ܡܪܝܐ . ܘܣܝܡܝܢ ܚܛܘܦܝܐ ܘܥܘܠܐ ܒܐܦܕܢܝܗܘܢ . * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ 11
ܡܪܝܐ . ܐܘܠܨܢܐ ܢܚܕܪܝܗ ܠܐܪܥܐ . ܘܢܚܘܬ ܡܢܗ ܥܘܫܢܗ . ܘܢܬܒܙܙܘܢ ܐܦܕܢܝܗ . * ܗܟܢܐ 12
ܐܡܪ ܡܪܝܐ . ܐܝܟ ܕܡܦܨܐ ܪܥܝܐ ܡܢ ܦܘܡܗ ܕܐܪܝܐ . ܬܪܬܝܢ ܟܪܥܝܢ ܐܘ ܦܪܬܐ ܕܐܕܢܐ . ܗܟܢܐ
ܢܬܦܨܘܢ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܕܝܬܒܝܢ ܒܫܡܪܝܢ . ܒܫܘܒܛܐ ܕܥܠ ܫܠܝܐ ܘܒܥܡܐ ܕܡܢ ܕܪܡܣܘܩ .
* ܫܡܥܘ ܘܐܣܗܕܘ ܒܒܝܬܗ ܕܝܥܩܘܒ . ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ . 13
* ܡܛܠ ܕܒܝܘܡܐ ܕܐܦܩܘܕ ܚܘܒܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܥܠܘܗܝ . ܐܦܩܘܕ ܥܠ ܡܕܒܚܐ ܕܒܝܬ 14
ܐܝܠ . ܘܢܬܓܕܕܢ ܩܪܢܬܗ ܕܡܕܒܚܐ ܘܢܦܠܢ ܥܠ ܐܪܥܐ . * ܘܐܥܩܘܪ ܒܝܬ ܣܬܘܐ ܥܡ 15
ܒܝܬ ܩܝܛܐ . ܘܢܐܒܕܘܢ ܒܬܐ ܕܫܢܐ . ܘܢܣܘܦܘܢ ܒܬܐ ܣܓܝܐܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ . *

* ܩܦܠܐܘܢ * ܕ * * ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ ܬܘܪܬܐ ܕܡܬܢܢ .1
ܕܒܛܘܪܐ ܕܫܡܪܝܢ . ܕܥܨܝܢ ܠܡܣܟܢܐ . ܘܛܠܡܝܢ ܠܒܝܫܐ . ܘܐܡܪܢ ܠܡܪܘܬܗܝܢ ܐܝܬܘ
ܠܢ ܢܫܬܐ . * ܝܡܐ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ ܒܩܘܕܫܗ . ܕܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܥܠܝܟܝܢ .2
ܘܢܫܩܠܘܢܟܝܢ ܒܙܝܢܐ . ܘܚܪܬܟܝܢ ܒܩܕܣܐ ܕܨܝܕܐ . * ܘܠܬܪܥܬܐ ܬܪܗܛ ܐܢܬܬܐ 3
ܠܩܘܒܠܗ . ܘܢܫܬܕܝܢ ܠܛܘܪܐ ܕܐܪܡܢܝܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ . * ܥܘܠܘ ܠܒܝܬ ܐܝܠ . ܘܥܘܠܘ .4
ܘܒܓܠܓܠܐ ܐܣܓܝܘ ܥܘܠܐ . ܐܝܬܘ ܒܨܦܪܐ ܕܒܚܝܟܘܢ . ܘܠܬܠܬܐ ܝܘܡܝܢ ܡܥܣܪܝܟܘܢ .

Num clangeretur buccina in urbe, & populus non trepidaret? an contingeret calamitas in urbe, quam Dominus non cauſaret? 6 Neq; enim facit Dominus dominorum quicquam, niſi cùm revelaverit ſecretum ſuum ſervis ſuis prophetis. 7 Leo rugivit, quis non paveat? Dominus dominorum locutus eſt, quis non prophetet? 8 Promulgate ſuper palatia Aſdodis, & ſuper palatia terræ Ægypti, ac dicite; Congregamini omnes ad montem Samariæ, & videte tumultum plurimum qui in ea eſt, & oppreſſionem quæ eſt in ipſa: 9 Attamen ignorant arguere, dicit Dominus, & violentiam rapinamque condunt in palatiis ſuis. 10 Etenim ſic dicit Dominus; Anguſtia circundabit terram, & labetur ex ea robur ejus, & diripientur palatia ejus. 11 Sic dicit Dominus; Quemadmodum eruit paſtor ex ore leonis duo crura aut extremum auris, ita vindicabuntur filii Iſraelis qui commorantur in Samaria, baculo ſubitò & populo Damaſceno. 12 Audite, & teſtamini in domo Jacobi, dicit Dominus dominorum potentiſſimus, Deus Iſraelis; 13 Quòd quâ die viſitabo ſcelus Iſraelis contra ipſum, viſitabo altaria Beth-il, & reſecabuntur cornua altarium, & cadent in terram: 14 Et deſtruam ædem hyemalem cum æde æſtivali: & peribunt domus eburneæ, & deficient domus permultæ, dicit Dominus. 15

CAP. IV.

Audite verbũ iſtud O vaccæ Baiſanis, quæ eſtis in monte Samariæ, quæ opprimitis pauperes, vexatis egenos, & dicitis dominis veſtris, Afferte nobis ut bibamus. 1 Juravit Dominus dominorum per ſanctitatem ſuam, quòd ecce dies ſupervenient vobis, quibus tollent vos armis, & finẽ veſtrum cacabo piſcatorũ: 2 Et ad rupturam accurret mulier *quæque* ante ſe, projicientque ſe ad montem Armeniæ, dicit Dominus. 3 Ingredimini in Beth-el, & perfidè agite; & in Galgala multiplicate perfidiam: afferte manè ſacrificia veſtra, & tertio quoque die decimas veſtras. 4

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

6 * أيصوت بوق في مدينة فلا يهلع الشعب * أيكون بلاء في مدينة لم يصنعه الرب * من 7
أجل انه لا يصنع الرب الاله امرا ان لم يكشف التاديب لعبيده الانبياء * الاسد يزار فمن 8
ذا لا يخاف * الرب الاله تكلم فمن ذا لا يتنبي * أخبروا الكور في الموصليين وعلي كور 9
مصر * وقولوا اجتمعوا على جبل سامرن * وانظروا عجايب كثيرة في وسطها * والتسلط
الذي فيها * ولم تعلم ما يكون امامها يقول الرب * الذين يكنزون ظلما وشقوة في 10
كورهم * لاجل هذا هكذا يقول الرب الاله * يا صور والارض التي من حولك تخرب * ويزول 11
عنك قوتك * وتختطف كورك * هكذا يقول الرب * كما يخرج الراعي من فم الاسد ساقين 12
او شحمة اذن * هكذا يخرجون بنو اسرايل السكان في سامرن * امام القبيلة التي بدمشق *
13 * اسمعوا ايها الكهنة * واشهدوا البيت يعقوب يقول الرب الاله الضابط الكل * من اجل انه 14
في اليوم اذ اقضي بنفاق اسرايل عليه * واقضي على مذابح بيت ايل * ويهدم قرون
المذبح * ويسقط على الارض * احلط واضرب البيت الشتوي على البيت الصيفي * وتهلك 15
البيوت العاجية * ويستزاد بيوت اخر كثيرة يقول الرب *

* الفصل الرابع * * الاصحاح التاسع * وهو الثاني من النبوة *

* اسمعوا هذا القول يا جودرات البيسانية اللاتي في جبل سامرن * المتعويات على الفقير * 1
والدايسات المساكين القايلات لاربابهن * اعطوا كي نشرب * يقسم الرب بقديسيه * 2
من اجل انه ها ايام تاتي عليكم * وياخذونكم بالاسلحة والذين معكم * المحرقون
المفسدون في المراجل * ويساقون عراة تجاه بعضكم البعض * ويطرحون على جبل الرامة 3
يقول الرب الاله * دخلتم الي بيت ايل واثمتم * والي الجلجال اكثرتم لتنافقوا * وقدمتم 4
بالغداة ذبايحكم * لثلاثة ايام اعشاركم *

An ſonum ederet buccina in urbe, & non extimeret populus? an accideret infortunium in urbe, quod non fecerit Dominus? 6 *Non enim facit Dominus Deus quicquam, niſi revelaverit punitionem ſervis ſuis prophetis.* 7 *Leone rugiente quis non formidet? Domino Deo loquente quis non vaticinetur?* 8 *Annuntiate regionibus inter Aſſyrios, & regionibus Ægypti, ac dicite; Congregamini ſuper montem Samariæ, & videte miracula multa in medio ejus, & tyrannidem quæ in ipſa eſt:* 9 *Attamen ignorat quid futurum ſit ante ipſam, dicit Dominus: qui theſaurizant impietatem & miſeriam in regionibus ſuis.* 10 *Propterea ſic ait Dominus Deus; O Tyre, ut & terra quæ circa te eſt, vaſtaberis; abſcedet à te robur tuum, & regiones tuæ diripientur.* 11 *Sic ait Dominus, Quemadmodum extrahit paſtor ex ore leonis duo crura, aut auris auriculam, ita extrahentur filii Iſraelis habitantes in Samaria coram familia quæ eſt in Damaſco.* 12 *Audite O ſacerdotes, & conteſtamini domum Jacobi, dicit Dominus Deus omnitenens:* 13 *Quòd eo die quo judicavero impietatem Iſraelis adverſùs eum, judicabo etiam altaria Beth-il, & deſtruentur cornua altaris, & corruent ſuper terram:* 14 *Confundam & allidam domum hyemalem ad domum æſtivam; & peribunt domus eburneæ, & adjicientur domus aliæ permultæ, dicit Dominus.* 15

CAP. IV.

Textus nonus, hujus autem Prophetiæ ſecundus.

Audite ſermonem iſtum O juvencæ Baiſanitides quæ eſtis in monte Samariæ, quæ vim infertis inopi, quæ conculcatis pauperes, quæ dicitis dominis veſtris, Date nobis ut bibamus. 1 *Jurat Dominus per ſanctos ſuos, quòd ecce dies venturi ſunt ſuper vos, quibus capient vos armis & eos qui vobiſcum ſunt, qui comburunt, qui corrumpunt in lebetibus:* 2 *Et nudi abducemini alter coram altero, & projiciemini ſuper montem Ramæ, dicit Dominus Deus.* 3 *Ingreſſi eſtis in Beth-il, & crimen commiſiſtis, & in Galgale multiplicâſtis impiè agere: obtuliſtis manè victimas veſtras, tertio quoque die decimas veſtras;* 4

: promulgate voluntaria , vocate & confessionem fermento de adole Et
5 וְקַטֵּר מֵחָמֵץ תּוֹדָה וְקִרְאוּ נְדָבוֹת הַשְׁמִיעוּ
etiam Et .*Dominus* Dominus dixit , Israel filii dilexistis sic quia
6 כִּי כֵן אֲהַבְתֶּם בְּנֵי יִשְׂרָאֵל נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה׃ וְגַם
defectum & ,vestris urbibus cunctis in dentium munditiē vobis dedi ego
אֲנִי נָתַתִּי לָכֶם נִקְיוֹן שִׁנַּיִם בְּכָל־עָרֵיכֶם וְחֹסֶר
dixit ,me ad estis reversi non & : vestris locis cunctis in panis
לֶחֶם בְּכֹל מְקוֹמֹתֵיכֶם וְלֹא־שַׁבְתֶּם עָדַי נְאֻם־
adhuc *in* , imbrem vobis à prohibui ego etiam Et .Dominus
7 יְהוָה׃ וְגַם אָנֹכִי מָנַעְתִּי מִכֶּם אֶת־הַגֶּשֶׁם בְּעוֹד
,unam civitatem super faciam pluere & ,messem ad menses tres
שְׁלֹשָׁה חֳדָשִׁים לַקָּצִיר וְהִמְטַרְתִּי עַל־עִיר אֶחָת
,compluetur una pars : faciam pluere non *unam* civitatem super &
וְעַל־עִיר אַחַת לֹא אַמְטִיר חֶלְקָה אַחַת תִּמָּטֵר
se movebunt Et .arescet , *eam super* pluet non quam pars &
8 וְחֶלְקָה אֲשֶׁר־לֹא־תַמְטִיר עָלֶיהָ תִּיבָשׁ׃ וְנָעוּ
non & ,aquam *bibendum ad* ,unam civitatem ad civitates tres duæ
שְׁתַּיִם שָׁלֹשׁ עָרִים אֶל־עִיר אַחַת לִשְׁתּוֹת מַיִם וְלֹא
Percussi .Dominus dixit ,me ad estis reversi non & : satiabuntur
9 יִשְׂבָּעוּ וְלֹא־שַׁבְתֶּם עָדַי נְאֻם־יְהוָה׃ הִכֵּיתִי
,vestras vineas &,vestros hortos *multiplicando*,rubigine in &,*uredine in* vos
אֶתְכֶם בַּשִּׁדָּפוֹן וּבַיֵּרָקוֹן הַרְבּוֹת גַּנּוֹתֵיכֶם וְכַרְמֵיכֶם
,me ad redistis non & *: Ghazam comedet* vestra oliveta & ,vestra ficeta &
וּתְאֵנֵיכֶם וְזֵיתֵיכֶם יֹאכַל הַגָּזָם וְלֹא־שַׁבְתֶּם עָדַי
, Ægypti via in pestilentiam vos in Misi .Dominus dixit
10 נְאֻם־יְהוָה׃ שִׁלַּחְתִּי בָכֶם דֶּבֶר בְּדֶרֶךְ מִצְרַיִם
: vestrorum equorum captivitate cum ,vestros *electos* gladio *in* occidi
הָרַגְתִּי בַחֶרֶב בַּחוּרֵיכֶם עִם שְׁבִי סוּסֵיכֶם
non & ; *vestrum nasum* in & vestrorum castrorum fœtorem feci ascendere &
וָאַעֲלֶה בְּאֹשׁ מַחֲנֵיכֶם וּבְאַפְּכֶם וְלֹא־
subversionem secundum vos *in* Subverti .Dominus dixit ,me ad redistis
11 שַׁבְתֶּם עָדַי נְאֻם־יְהוָה׃ הָפַכְתִּי בָכֶם כְּמַהְפֵּכַת
erutus torris sicut fuistis & ,Hamorah & , Sedom *Dei*
אֱלֹהִים אֶת־סְדֹם וְאֶת־עֲמֹרָה וַתִּהְיוּ כְּאוּד מֻצָּל
sic Quapropter .Dominus dixit ,me ad redistis non & : incendio de
12 מִשְּׂרֵפָה וְלֹא־שַׁבְתֶּם עָדַי נְאֻם־יְהוָה׃ לָכֵן כֹּה
teipsum præpara ,tibi faciam hoc quòd eo pro : Israel tibi faciam
אֶעֱשֶׂה־לְּךָ יִשְׂרָאֵל עֵקֶב כִּי־זֹאת אֶעֱשֶׂה־לָּךְ הִכּוֹן
creans & ,montes *formans* ecce Quia .Israel tui Dei occursum in
13 לִקְרַאת־אֱלֹהֶיךָ יִשְׂרָאֵל׃ כִּי הִנֵּה יוֹצֵר הָרִים וּבֹרֵא
,auroram *faciens* ,ejus *meditatio* quid homini *annuntians* & ,ventum
רוּחַ וּמַגִּיד לְאָדָם מַה־שֵּׂחוֹ עֹשֵׂה שַׁחַר
Deus Dominus : terræ excelsa super *calcans* & ;*obscuritatem*
עֵיפָה וְדֹרֵךְ עַל־בָּמֳתֵי אָרֶץ יְהוָה אֱלֹהֵי־
.ejus nomen exercituum
צְבָאוֹת שְׁמוֹ׃

CAP. V. ה

lamentum vos super *tollens ego* quod ,hoc verbum Audite
1 שִׁמְעוּ אֶת־הַדָּבָר הַזֶּה אֲשֶׁר אָנֹכִי נֹשֵׂא עֲלֵיכֶם קִינָה
: Israel virgo *surgere* addet non , Cecidit .Israel domus
2 בֵּית יִשְׂרָאֵל׃ נָפְלָה לֹא־תוֹסִיף קוּם בְּתוּלַת יִשְׂרָאֵל
dixit sic Quia .eam *suscitans* non ,suam *humum* super *est derelicta*
3 נִטְּשָׁה עַל־אַדְמָתָהּ אֵין מְקִימָהּ׃ כִּי כֹה אָמַר
: centum faciet dimittere ,mille *prodiens Urbe : Dominus* Dominus
אֲדֹנָי יְהוִה הָעִיר הַיֹּצֵאת אֶלֶף תַּשְׁאִיר מֵאָה
Quia .Israel domui decem faciet relinquere ,centum *prodiens* &
4 וְהַיּוֹצֵאת מֵאָה תַּשְׁאִיר עֲשָׂרָה לְבֵית יִשְׂרָאֵל׃ כִּי
.vivetis & ,me Quærite : Israel domui Dominus dixit sic
כֹּה אָמַר יְהוָה לְבֵית יִשְׂרָאֵל דִּרְשׁוּנִי וִחְיוּ׃

Versio VULG. LAT.

5 Et sacrificate de fermentato laudem :
& vocate voluntarias oblationes,
& annuntiate : sic enim
voluistis,filii Israel,dicit Dñs Deꝰ.
6 Unde & ego dedi vobis stuporem
dentium in cunctis urbibus vestris,
& indigentiam panum in
omnibus locis vestris:& non estis
reversi ad me, dicit Dominus.
7 Ego quoque prohibui à vobis imbrem,
cùm adhuc tres menses superessent
usque ad messem : &
plui super unam civitatem,& super
alteram civitatem non plui :
pars una compluta est ; & pars,
8 super quam non plui, aruit. Et
venerunt duæ & tres civitates ad
unam civitatē ut biberent aquā,
& non sunt satiatæ : & non redîstis
9 ad me, dicit Dominus. Percussi
vos in vento urente , & in
aurugine, multitudinem hortorum
vestrorum, & vinearum vestrarum :
oliveta vestra, & ficeta
vestra comêdit eruca: & non redîstis
10 ad me, dicit Dñs.Misi in vos
mortem in via Ægypti , percussi
in gladio juvenes vestros, usque
ad captivitatem equorum vestrorum :
& ascendere feci putredinem
castrorū vestrorum in nares
vestras : & non redîstis ad me,
11 dicit Dominus. Subverti vos,sicut
subvertit Deus Sodomam &
Gomorrhā,& facti estis quasi torris
raptus ab incendio:et non redîstis
12 ad me,dicit Dñs.Quapropter
hæc faciam tibi,Israel : postquàm
autem hæc fecero tibi, præparare
13 in occursum Dei tui,Israel. Quia
ecce formans montes, & creans
ventum , & annuntians homini
eloquium suum , faciens matutinam
nebulam, & gradiens super
excelsa terræ : Dominus Deus exercituum
nomen ejus.

CAP. V.

1 Audite verbum istud,quod ego
levo super vos planctum : Domus
Israel cecidit, & non adjiciet ut
2 resurgat. Virgo Israel projecta est
in terram suam, non est qui suscitet
3 eam. Quia hæc dicit Dominus
Deus ; Urbs de qua egrediebantur
mille,relinquentur in ea
centum : & de qua egrediebantur
centum, relinquentur in ea
4 decem in domo Israel. Quia hæc
dicit Dominus domui Israel;
Quærite me, & vivetis.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

5 Καὶ ἀνέγνωσαν ἔξω νόμον, καὶ ἐπεκαλέσαντο
ὁμολογίας. (η) ἀναγγείλατε, ὅτι ταῦτα ἠγάπησαν
οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ, λέγει (θ) κύριος.
6 Καὶ ἐγὼ δώσω ὑμῖν γομφιασμὸν ὀδόντων
ἐν πάσαις ταῖς πόλεσιν ὑμῶν, καὶ ἔνδειαν
ἄρτων ἐν (ι) πᾶσι τοῖς τόποις ὑμῶν· καὶ οὐκ
7 ἐπεστρέψατε πρός με, λέγει κύριος. Καὶ
ἐγὼ ἀνέσχον ἐξ ὑμῶν τὸν ὑετὸν πρὸ τριῶν
μηνῶν τοῦ τρυγητοῦ, καὶ βρέξω ἐπὶ πόλιν
μίαν, ἐπὶ δὲ πόλιν μίαν οὐ βρέξω· μερὶς
μία βραχήσεται, καὶ μερὶς, ἐφ' ἣν οὐ βρέξω
8 (κ), ξηρανθήσεται. Καὶ συναθροισθήσονται
(λ) δύο καὶ τρεῖς πόλεις εἰς πόλιν μίαν τοῦ
πιεῖν ὕδωρ, καὶ οὐ μὴ ἐμπλησθῶσι· καὶ (μ) οὐκ
9 ἐπεστράφητε πρός με, λέγει κύριος. Ἐπάταξα
ὑμᾶς ἐν πυρώσει, καὶ ἐν ἰκτέρῳ. ἐπληθύνατε
κήπους ὑμῶν, ἀμπελῶνας ὑμῶν,
καὶ (ν) συκεῶνας ὑμῶν, καὶ ἐλαιῶνας ὑμῶν
κατέφαγεν ἡ κάμπη· καὶ οὐδ' ὡς ἐπεστρέψατε
10 πρός με, λέγει κύριος. Ἐξαπέστειλα
εἰς ὑμᾶς θάνατον ἐν ὁδῷ Αἰγύπτου, καὶ
ἀπέκτεινα ἐν ῥομφαίᾳ τοὺς νεανίσκους ὑμῶν,
μετὰ αἰχμαλωσίας ἵππων σου, καὶ ἀνήγαγον
ἐν πυρὶ τὰς παρεμβολὰς (ξ) ἐν τῇ ὀργῇ
ὑμῶν· καὶ οὐδ' ὡς ἐπεστρέψατε πρός με, λέγει
11 κύριος. Κατέστρεψα ὑμᾶς, καθὼς κατέστρεψεν
ὁ θεὸς Σόδομα καὶ Γόμορρα, καὶ ἐγένεσθε
ὡς δαλὸς ἐξεσπασμένος ἐκ πυρός·
καὶ οὐδ' ὡς ἐπεστρέψατε πρός με, λέγει κύριος.
12 Διατοῦτο οὕτως ποιήσω σοι Ἰσραήλ·
πλὴν ὅτι οὕτως ποιήσω σοι, ἑτοιμάζου τοῦ
13 ἐπικαλεῖσθαι τὸν θεόν σου Ἰσραήλ. Διότι ἰδοὺ
ἐγὼ στερεῶν βροντὴν, καὶ κτίζων πνεῦμα,
καὶ ἀπαγγέλλων εἰς ἀνθρώπους τὸν χριστὸν αὐτοῦ,
ποιῶν ὄρθρον καὶ ὁμίχλην, καὶ ἐπιβαίνων
ἐπὶ τὰ (ο) ὑψηλὰ τῆς γῆς· Κύριος ὁ
θεὸς ὁ παντοκράτωρ ὄνομα αὐτῷ.

Et legerunt foris legem,& invocaverunt 5
confessiones. Annuntiate,
quia hæc dilexerunt filii Israel,
dicit Dominus. Et ego dabo 6
vobis (h) stuporem dentium in
cunctis urbibus vestris, & indigentiam
panum in omnibus locis
vestris. Et non estis reversi ad me,
dicit Dominus. Et ego repressi à 7
vobis pluviam ante tres menses
(i) vindemiæ: & pluam super civitatem
unam, & super civitatem
unam non pluam. Pars una
irrigabitur : & pars, super quam
non pluero,arefiet. Et congregabuntur 8
duæ, & tres civitates in
civitatem unam, ut bibant aquā:
& non satiabuntur. Et non estis
reversi ad me, dicit Dominus.
Percussi vos in (k)ardore, & in 9
aurugine. Multiplicâstis hortos
vestros,vineas vestras: & ficeta
vestra, & oliveta vestra comêdit
eruca. Et ne sic quidem conversi
estis ad me, dicit Dominus. Emisi 10
in vos mortem in via Ægypti, &
occîdi in gladio juvenes vestros,
cum captivitate equorum vestrorum.
Et eduxi in igne (l) castra
in ira vestra: Et ne sic quidem reversi
estis ad me,dicit Dominus. 11
Subverti vos , sicut subvertit
Deus Sodomam, et Gomorrham:
& facti estis sicut torris erutus
de igne. Et ne sic quidem conversi
estis ad me, dicit Dominus.
Propterea sic faciam tibi, Israel. 12
(m)Veruntamen, quia sic faciam
tibi, (n) præparare, ut invoces
Deum tuum,Israel. Quia ecce ego 13
firmans (o)tonitruum, & creans
spiritum, & annuntians in
homines(p)Christum suum, faciens
manè, & nebulam,& ascendens
super excelsa terræ: Dominus
Deus omnipotens nomen ei.

MS.A. (η) ἀπαγγείλατε, (θ) κύριος ὁ θεός. (ι) πάσαις ταῖς πόλεσιν (κ) ἐπ' αὐτήν, (λ) δύο πόλεις, καὶ τρεῖς πόλεις (μ) οὐδ' ὡς ἐπεστρέψατε (ν) συκῶνας (ξ) ὑμῶν ἐν τῇ ὀργῇ μου· (ο) ὕψη τῆς

ΚΕΦ. ε'.

1 ΑΚούσατε τὸν λόγον κυρίου τοῦτον, ὃν ἐγὼ
λαμβάνω ἐφ' ὑμᾶς, θρῆνον. Οἶκος
Ἰσραὴλ ἔπεσεν, οὐκέτι μὴ (α) προσθήσει
2 τοῦ ἀναστῆναι· Παρθένος τοῦ Ἰσραὴλ ἔσφαλεν
ἐπὶ τῆς (β) γῆς αὐτοῦ, οὐκ ἔστιν ὁ ἀναστήσων
3 αὐτήν. (γ) Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος κύριος,
Ἡ πόλις ἐξ ἧς (δ) ἐξεπορεύοντο χίλιοι,
ὑπολειφθήσονται ἑκατόν. καὶ ἐξ ἧς (ε) ἐξεπορεύοντο
ἑκατὸν, ὑπολειφθήσονται δέκα τῷ
4 οἴκῳ Ἰσραήλ. Διότι τάδε λέγει κύριος
πρὸς τὸν οἶκον Ἰσραήλ, Ἐκζητήσατέ με,
καὶ ζήσεσθε.

CAP. V.

Audite verbum (a) Dominī 1
istud,quod ego assumo super vos,
planctum. Domus Israel cecidit:
nō adjiciet ampliùs, ut resurgat.
Virgo Israel projecta est super 2
terram ejus: non est, qui suscitet
eam. Propterea hæc dicit Dominꝰ 3
Dominus; Urbs,de qua egrediebantur
mille , relinquentur centum :
& de qua egrediebantur
centum; relinquentur decem domui
Israel. Quia hæc dicit Dominus 4
ad domum Israel; Quærite
me, & vivetis:

MS.A. (α) πρόσθῃ (β) γῆς, οὐκ ἔστιν (γ) Διότι (δ) ἐπορεύοντο (ε) ἐπορεύοντο

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 ומגבן מן אונס תודתא ומיתן ליה בזמר ואמרין דין לרעוא ארי כן רחמתון בית
6 ישראל אמר יי אלהים : ואף אנא יהבית לכון אקהיות שנין בכל קרויכון וחסרות
7 מזון בכל אתריכון ולא תבתון לפולחני אמר יי : ואף אנא מנעית מנכון ית מטרא
בסוף תלתא ירחין לזמן חצדא ואחית מטרא על קרתא חדא ועל קרתא חדא לא
אחית מטרא אחסנתא חדא יחות עלה מטרא ואחסנתא דלא יחות עלה מטרא
8 תיבש : וישתלהון תרתין תלת קרוין לקרתא חדא למשתי מיא ולא יסבעון ולא
9 תבתון לפולחני אמר יי : מחיתי יתכון בשדפנא ובירקנא סגיות גניכון וכרמיכון
10 ותיניכון וזיתיכון אכלא זחלא ולא תבתון לפולחני אמר יי : שלחית בכון מותא כד
באורח מצרים קטלית בחרבא עולימכון עם שבי סוסותכון ואסקית סרות משריתכון
11 ובאפיכון ולא תבתון לפולחני אמר יי : רחיק מימרי יתכון כמא דרחיק יי ית סדום
12 וית עמורה והויתון כאוד משיזב מיקדא ולא תבתון לפולחני אמר יי : בכן מה
אעביד לך ישראל חלף דלא תבת לאוריתא דא אעביד לך אתקשט לקבלא אולפן
13 אוריתא דאלהך ישראל : ארי הא מתגלי דיצר טוריא וברא רוחא לחואה לאנשא
מה עובדוהי לאתקנאה נהור לצדיקיא כנהור צפרא דאזיל ותקין לאיתאה חשוך
לרשעיא למתבר רשעי ארעא יי אלהי צבאות שמיה :

ה

1 2 קבילו ית פתגמא הדין די אנא נטיל עליכון אליא בית ישראל : נפלת לא תוסיף למקם
3 שתא הדא כנשתא דישראל אתרטישת על ארעא לית די קימנה : ארי כדנן אמר יי
אלהים קרתא דיפקון מנה אלפא ישתארון בה מאה ודיפקון מנה מאה ישתארון בה
4 עד עסרא לבית ישראל : ארי כדנן אמר יי לבית ישראל תבעו דחלתי ואתקימו :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Colligunt autem ex rapina sacrificium gratiarū actionis, & adducunt illud 5
cum cantico,dicentes: Hoc est in beneplacitū,sic enim dilexistis filii Israel,
ait Dñs Deus. Ego quoque dedi vobis stuporem dentiū in omnibus urbibꝰ 6
vestris,& indigentiam cibi in omnibꝰ locis vestris:attamen non convertimini
ad cultū meum,dicit Dñs. Deindè ego prohibui à vobis pluviam in fine 7
trium mensium tempore messis:ac imbrem demisi super civitatem unam,sed
super aliam non demisi:super hæreditatem unam descendet pluvia;at hæreditas
super quam minimè descenderit pluvia,arescet. Et cum lassitudine duæ 8
vel tres civitates aspirabunt ad urbem unam ut bibant aquam,sed non saturabuntur:
nec tamen convertimini ad cultum meum,dicit Dñs. Percussi vos 9
uredine & ærugine,multitudinem hortorum vestrorum,vinearum vestrarū,
ficuum vestrarum,olearúmq; vestrarum corrosit bruchus : nec estis conversi
ad cultum meum, dicit Dñs. Misi contra vos pestilentiam quando in via 10
Ægypti eratis : occidi gladio juvenes vestros cum captivitate equorum vestrorum,
atq; ascendere feci fœtorem castrorum vestrorum idq; in nares vestras:
nec minꝰ conversi estis ad cultū meū,dicit Dñs. Abominatum est Verbum 11
meum vos,non aliter ac aversatus est Dñs Sodomam & Gomorrham;
& facti estis quasi torris erutus ab incendio : nihilominꝰ non estis conversi
ad cultum meū,dicit Dñs.Propterea *quod* faciā tibi Israel,propterea quòd 12
nequaquam conversus es ad Legem, hoc tibi faciam : adorna te ut suscipias
doctrinam Legis Dei tui Israel. Ecce námque fit conspicuus qui plasmavit 13
montes,& creavit ventum,ut annuntiet hominibꝰ quanta sint ejꝰ opera,& ut
præparet lumen justis quasi lumē matutinū: qui incedit & præparat adducere
tenebras impiis,ut conterat impios terræ. Dñs Deus exercituū nomen ejus.

CAP. V.

Suscipite verbū istud quod ego assumo super vos in lamentū,domꝰ Israel. 1
Cecidit,nec addet ut resurgat anno *hoc* cœtꝰ Israel:prostrata est super terrā, 2
nec est qui suscitet eam. Nam sic inquit Dominus,In civitate de qua egre- 3
diebantur mille, remanebunt centum ; & de qua centum exibant , usque
ad decē superstites erunt in domo Israel. Quandoquidem ita dicit Dominus 4
domui Israel, Requirite timorem mei, & vivetis.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܘܩܪܒܘ ܡܢ ܚܡܝܪܐ ܬܘܕܝܬܐ .· ܘܢܕܪܘ ܢܕܪܐ ܘܫܠܡܘ. ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܪܚܡܬܘܢ 5
ܒܢܝ ܕܐܝܣܪܝܠ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܐܦ ܐܢܐ ܝܗܒܬ ܠܟܘܢ ܩܗܝܘܬܐ ܕܫܢܐ ܒܟܠܗܝܢ 6
ܡܕܝܢܬܟܘܢ. ܘܒܨܝܪܘܬܐ ܕܠܚܡܐ ܒܟܠܗܘܢ ܐܬܪܘܬܟܘܢ. ܘܠܐ ܐܬܦܢܝܬܘܢ ܠܘܬܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
* ܘܐܦ ܐܢܐ ܟܠܝܬ ܡܢܟܘܢ ܡܛܪܐ .· ܩܕܡ ܠܚܨܕܐ ܬܠܬܐ ܝܪܚܝܢ. ܘܐܡܛܪܬ ܡܛܪܐ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ 7
ܚܕܐ ܘܥܠ ܚܕܐ ܠܐ. ܘܥܠ ܦܠܓܘܬܐ ܗܕܐ ܢܚܬ ܥܠܝܗ ܡܛܪܐ. ܘܡܢܬܐ ܕܠܐ ܢܚܬ ܥܠܝܗ
ܡܛܪܐ ܝܒܫܬ. * ܘܡܬܟܢܫܢ ܬܪܬܝܢ ܬܠܬ ܡܕܝܢܢ ܠܡܕܝܢܬܐ ܚܕܐ .· ܕܢܫܬܘܢ ܡܝܐ. ܘܠܐ 8
ܣܒܥܝܢ. ܘܠܐ ܐܬܦܢܝܬܘܢ ܠܘܬܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܡܚܝܬܟܘܢ ܒܫܘܒܐ ܘܒܝܪܩܢܐ ܘܒܒܪܕܐ. 9
ܘܣܘܓܐܐ ܕܦܪܕܝܣܝܟܘܢ ܘܕܟܪܡܝܟܘܢ ܘܕܬܐܢܝܟܘܢ ܘܕܙܝܬܝܟܘܢ. ܐܟܠ ܩܡܨܐ. ܘܠܐ
ܐܬܦܢܝܬܘܢ ܠܘܬܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܫܕܪܬ ܒܟܘܢ ܡܘܬܢܐ ܒܐܘܪܚܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܩܛܠܬ ܒܚܪܒܐ 10
ܠܥܠܝܡܝܟܘܢ. ܥܡ ܫܒܝܬܐ ܕܪܟܫܟܘܢ. ܘܐܣܩܬ ܣܪܝܘܬܐ ܕܡܫܪܝܬܟܘܢ ܠܐܦܝܟܘܢ. ܘܠܐ ܐܬܦܢܝܬܘܢ
ܠܘܬܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܗܦܟܬ ܒܟܘܢ. ܐܝܟ ܕܗܦܟ ܐܠܗܐ ܠܣܕܘܡ ܘܠܥܡܘܪܐ. ܘܗܘܝܬܘܢ 11
ܐܝܟ ܐܘܕܐ ܕܐܬܦܨܝ ܡܢ ܝܩܕܢܐ. ܘܠܐ ܐܬܦܢܝܬܘܢ ܠܘܬܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ 12
ܐܥܒܕ ܠܟ ܐܝܣܪܝܠ .· ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܥܒܕ ܐܢܐ ܠܟ. ܐܬܛܝܒ ܐܝܣܪܝܠ ܕܬܦܓܥ ܠܐܠܗܟ.
* ܡܛܠ ܕܗܘ ܕܒܪܐ ܛܘܪܐ ܘܒܪܐ ܪܘܚܐ : ܘܡܚܘܐ ܠܒܢܝܢܫܐ ܡܢܘ ܗܝ ܬܫܒܘܚܬܗ .·. 13
ܥܒܕ ܨܦܪܐ ܚܫܘܟܐ .· ܘܕܐܫ ܥܠ ܪܘܡܗ ܕܐܪܥܐ. ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ.

*ܩܦܠܐܘܢ * ܗ *

* ܫܡܥܘ ܡܠܬܐ ܗܕܐ ܕܐܢܐ ܫܩܠ ܥܠܝܟܘܢ ܐܘܠܝܬܐ. ܒܝܬ 1
ܐܝܣܪܝܠ :· * ܢܦܠܬ ܘܠܐ ܬܘܣܦ ܠܡܩܡ ܒܬܘܠܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܬܪܡܝܬ ܥܠ ܐܪܥܐ. 2
ܘܠܝܬ ܕܡܩܝܡ ܠܗ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܡܕܝܢܬܐ ܕܢܦܩܝܢ ܗܘܘ ܡܢܗ 3
ܐܠܦ .· ܢܫܬܚܪܘܢ ܒܗ ܡܐܐ. ܘܕܢܦܩܝܢ ܗܘܘ ܡܢܗ ܡܐܐ .· ܢܫܬܚܪܘܢ ܒܗ ܥܣܪܐ
ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܒܥܘܢܝ ܘܬܚܘܢ. 4

* Offerte de ſermentato gratiarum actionem ; 5
vovete votum, & ſolvite. Quandoquidē ita
amâſtis Iſraelitæ, dicit Dominus ; Ego quoq; 6
dedi vobis ſtuporem dentium in cunctis urbibus
veſtris, & penuriam panis in omnibus
regionibus veſtris ; attamen non converſi
eſtis ad me, dicit Dominus. Præterea ego ne- 7
gavi vobis pluviam tribus menſibus ante meſſem ;
& demiſi pluviam ſuper urbem unam,
ſuper alteram verò non ; & ſuper mediā hanc
partē decidit pluvia, pars autē ſuper quam nō
decidit pluvia, exaruit : Concurrebant duæ 8
vel tres urbes ad urbē unā, ut biberent aquā,
& non ſaturabantur ; nec tamen converſi eſtis
ad me, dicit Dominus. Percuſſi vos vento ca- 9
lido, uredine, & grandine : & multitudinem
hortorum, vinearum, ficuum, & olearum ve-
ſtrarum comēdit eruca ; tamen non eſtis con-
verſi ad me, dicit Dominus. Miſi in vos peſtē 10
in itinere Ægypti, & peremi gladio juvenes
veſtros cum captivitate equorum veſtrorum,
percuſſiq; odore fœtoris veſtri facies veſtras ;
nec tamen converſi eſtis ad me, dicit Domi-
nus. Subverti *urbes* in vobis, quemadmodum 11
ſubvertit Deus Sodomam & Gomorram, &
fuiſtis quaſi titio erutus è flamma ; nec tamen
converſi eſtis ad me, dicit Dominus. His de 12
rebus ita facturus tandē ſum tibi Iſrael. *Et*
quoniā id factur⁹ ſum tibi, paratus eſto Iſrael,
ad invocandum Deum tuum. Nam qui crea- 13
vit montes, & oſtendit hominibus quanta ſit
gloria ſua, *quique* reddit aurorā caliginē, &
terit altitudinē terræ ; Dn̄s Deus potentiſſimus
eſt nomen ejus.

CAP. V.

Audite verbum hoc lamentabile quod ego 1
profero de vobis Iſraelitæ. Cecidit, nec ampli- 2
ùs reſurget virgo Iſraelis : relicta eſt humi, nec
eſt qui erigat eam. Sic enim ait Dominus do- 3
minorum ; In ea urbe, è qua egrediebantur
mille, centum remanebunt ; & in ea, è qua
centum egrediebantur, decem remanebunt
Iſraelitis. Nam ſic ait Dominus Iſraelitis ; 4
Quærite me, ut vivatis :

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* وقروا الناموس خارجا * ودعوا اعترافا * اخبروا من اجل ان هذه كلها احبها بنو اسرائيل 5
يقول الرب الاله * وانا اعطيتكم ضرس الاسنان في جميع مدنكم وقلة الخبز في جميع 6
مواضعكم * ولم ترجعوا الي يقول الرب * وانا امسكت عنكم المطر قبل ثلاثة شهور 7
من القطاف * وامطر على مدينة واحدة وعلى مدينة واحدة لا امطر * مارس واحد يمطر *
والمارس الذي لم امطر عليه يجف * وتجمع مدينتان وثلاثة مدن الى مدينة واحدة 8
لتشرب ماء فلا يمتلين * وهكذا لم ترجعوا الي يقول الرب * ضربتكم بالسموم واليرقان * 9
اكثرتم بساتينكم * وكرومكم وتينكم وزيتونكم اكلهم الدود * وهكذا لم ترجعوا الي
يقول الرب * ارسلت اليكم موتا في طريق مصر * وقتلت بالسيف شبابكم مع سبي خيولكم * 10
واذهبت عساكركم بنار بغضبي * وهكذا لم ترجعوا الي يقول الرب * خسفت بكم كما خسف 11
الله بسدوم وعامورا * وصرتم مثل العود المخرج من النار * وهكذا لم ترجعوا الي يقول الرب *
* من اجل هذا هكذا اصنع بك يا اسرائيل * لكني اني هكذا اصنع بك * استعد 12
لتدعوا الهك يا اسرائيل * من اجل اني ها انا مثبت الرعد * وخالق الريح * ومخبر 13
البشر بمسيحه * الصانع غلسا وضبابا * والراكب على اعالي الارض * الرب الضابط
الكل اسمه *

* الفصل الخامس *

* اسمعوا هذا القول الذي انا احك عليكم مرثيه * بيت اسرائيل سقط * ومنذ الان لا 1 2
يعود ان يقوم * عذراء اسرائيل سقطت على ارضها * وليس يكون من يقيمها * من اجل 3
انه هكذا يقول الرب الرب * المدينة التي منها خرج الف فيبقى مايه * والتي خرج منها مايه
فيبقى عشر لبيت اسرائيل * من اجل انه هكذا يقول الرب لبيت اسرائيل * اطلبوني فتحيون * 4

* *Et legem foris legerunt, & hoc confeſſi-* 5
*onem vocaverunt. Annuntiate quòd hæc
omnia dilexerunt filii Iſraelis, ait Domi-
nus Deus. Et ego dedi vobis ſtuporem* 6
*dentium in cunctis urbibus veſtris, & de-
fectum panis in cunctis locis veſtris : at-
tamen non eſtis ad me reverſi, dicit Do-
minus. Ego etiam detinui à vobis im-* 7
*brem tribus menſibus ante vindemiam :
pluviam demitto ſuper urbem unam, &
ſuper alteram urbem non demitto pluvi-
am : ager unus incultus pluviā irrigatur,
& ager ſuper quem non demitto pluviam,
areſcit : Confluunt duæ urbes & tres* 8
*urbes ad urbem unam ut bibant aquam,
& non explentur : ſed ne hoc pacto
reverſi eſtis ad me, dicit Dominus. Per-* 9
*cuſſi vos vento calido & aurigine : multi-
plicâſtis hortos veſtros , at vineas ,
veſtras, ficus, & oleas veſtras comede-
runt vermes ; ſed ne ſic reverſi eſtis ad
me, dicit Dominus. Miſi in vos mor-* 10
*tem in via Ægypti, occidi gladio ju-
venes veſtros cum captivitate equorum
veſtrorum, & igne abripui exercitus
veſtros in furore meo ; at ne ſic reverſi
eſtis ad me, dicit Dominus. Subverti* 11
*vos quemadmodum ſubvertit Deus So-
domam & Gomorram, & facti eſtis ut
lignum extractum ex igne ; at ne ſic re-
verſi eſtis ad me, dicit Dominus : Pro-* 12
pterea ſic faciam tibi O Iſrael. * *Quoni-
am autem ſic tibi facturus ſum, præpara
te ad invocandum Deum tuum O Iſrael.
Nam ecce ego ſum qui firmo tonitruum,* 13
*qui ventum creo, & annuntio homi-
nibus Chriſtum ejus, qui matutinum &
caliginem facio, quique inſideo excelſis
terræ : Dominus Deus omnia tenens eſt
nomen ejus.*

CAP. V.

* *Audite ſermonem iſtum quem ego* 1
ſumo de vobis in luctum. Domus Iſ- 2
*raelis cecidit, & poſthac iterum non
ſurget : virgo Iſraelis cecidit ſuper terram
ſuam, nec erit qui erigat eam. Nam* 3
*ita dicit Dominus Dominus ; urbs è
qua prodibant mille, redigetur ad cen-
tum, & è qua prodibant centum, redi-
getur ad decem, in domo Iſraelis. Nam* 4
*ita dicit Dominus domui Iſraelis ; Quæ-
rite me, & vivetis :*

עָמוֹס : ה

Sebah-Beer & ,ingrediemini non Ghilghal & , el--Beth quæratis ne Et
וְאַל־תִּדְרְשׁוּ בֵּית־אֵל וְהַגִּלְגָּל לֹא תָבֹאוּ וּבְאֵר שֶׁבַע 5
el--Beth & ,demigrabit demigrando Ghilghal quia : transibitis non
לֹא תַעֲבֹרוּ כִּי הַגִּלְגָּל גָּלֹה יִגְלֶה וּבֵית אֵל
fortè ne : vivetis & ,Dominum Quærite .nihilum in erit
6 יִהְיֶה לְאָוֶן׃ דִּרְשׁוּ אֶת־יְהוָה וִחְיוּ פֶּן־
extinguens non & , *comedat* & , Joseph domum ignis quasi findat
יִצְלַח כָּאֵשׁ בֵּית יוֹסֵף וְאָכְלָה וְאֵין־מְכַבֶּה
terra in justitiam & : judicium absinthium in *Vertentes* .el--Beth in
7 לְבֵית־אֵל׃ הַהֹפְכִים לְלַעֲנָה מִשְׁפָּט וּצְדָקָה לָאָרֶץ
mane in convertens & ,Orionem & ,Arcturum *Faciens* .reliquerunt
8 הִנִּיחוּ׃ עֹשֵׂה כִימָה וּכְסִיל וְהֹפֵךְ לַבֹּקֶר
aquas *vocans* : *fecit* tenebrescere noctem diem & ,mortis umbram
צַלְמָוֶת וְיוֹם לַיְלָה הֶחְשִׁיךְ הַקּוֹרֵא לְמֵי־
.ejus nomen Dominus , terræ *faciebus super* eas effundit & , maris
הַיָּם וַיִּשְׁפְּכֵם עַל־פְּנֵי הָאָרֶץ יְהוָה שְׁמוֹ׃
munitionem super vastator & : robustum super vastatorem *Confortans*
9 הַמַּבְלִיג שֹׁד עַל־עָז וְשֹׁד עַל־מִבְצָר
perfectè loquentem & ,corripientem porta in Oderunt .veniet
10 יָבוֹא׃ שָׂנְאוּ בַשַּׁעַר מוֹכִיחַ וְדֹבֵר תָּמִים
tritici onus & ,*tenuem super vos conculcare pro* Idcirco .sunt abominati
11 יְתָעֵבוּ׃ לָכֵן יַעַן בּוֹשַׁסְכֶם עַל־דָּל וּמַשְׂאַת־בַּר
: *eis in* habitabitis non & , ædificâstis *incisionis domos* , eo ab tulistis
תִּקְחוּ מִמֶּנּוּ בָּתֵּי גָזִית בְּנִיתֶם וְלֹא־תֵשְׁבוּ בָם
Quia .earum vinum bibetis non & , plantâstis *desiderii* vineas
12 כַּרְמֵי־חֶמֶד נְטַעְתֶּם וְלֹא תִשְׁתּוּ אֶת־יֵינָם׃ כִּי
hostes : vestra peccata fortia & ,vestras prævaricationes multas cognovi
יָדַעְתִּי רַבִּים פִּשְׁעֵיכֶם וַעֲצֻמִים חַטֹּאתֵיכֶם צֹרְרֵי
fecerunt declinare porta in *egenos &* , *propitiationem* accipientes *justi*
צַדִּיק לֹקְחֵי כֹפֶר וְאֶבְיוֹנִים בַּשַּׁעַר הִטּוּ׃
malum tempus quia : tacebit ipso tempore in intelligens Ideo
13 לָכֵן הַמַּשְׂכִּיל בָּעֵת הַהִיא יִדֹּם כִּי עֵת רָעָה
sic erit & : vivatis ut , malum non & ,bonum Quærite .*ipsum*
14 הִיא׃ דִּרְשׁוּ־טוֹב וְאַל־רָע לְמַעַן תִּחְיוּ וִיהִי־כֵן
.dixistis sicut , vobiscum exercituum Deus Dominus
יְהוָה אֱלֹהֵי־צְבָאוֹת אִתְּכֶם כַּאֲשֶׁר אֲמַרְתֶּם׃
: judicium porta in constituite & ,bonum diligite & ,malum habete Odio
15 שִׂנְאוּ־רָע וְאֶהֱבוּ טוֹב וְהַצִּיגוּ בַשַּׁעַר מִשְׁפָּט
.Joseph residuo exercituum Deus Dominus misereatur fortè si
אוּלַי יֶחֱנַן יְהוָה אֱלֹהֵי־צְבָאוֹת שְׁאֵרִית יוֹסֵף׃
: dominator exercituum Deus Dominus dixit sic Propterea
16 לָכֵן כֹּה־אָמַר יְהוָה אֱלֹהֵי צְבָאוֹת אֲדֹנָי
,heu : dicent plateis cunctis in & , planctus plateis omnibus In
בְּכָל־רְחֹבוֹת מִסְפֵּד וּבְכָל־חוּצוֹת יֹאמְרוּ הוֹ־
scientes ad planctum & ,luctum ad agricolam vocabunt Et .heu
הוֹ וְקָרְאוּ אִכָּר אֶל־אֵבֶל וּמִסְפֵּד אֶל־יוֹדְעֵי
,*tuo interiori in* transibo quia :planctus vineis omnibus in Et .*querimoniam*
17 נֶהִי׃ וּבְכָל־כְּרָמִים מִסְפֵּד כִּי־אֶעֱבֹר בְּקִרְבְּךָ
: Domini diem desiderantibus Væ .Dominus dixit
18 אָמַר יְהוָה׃ הוֹי הַמִּתְאַוִּים אֶת־יוֹם יְהוָה
.lux non & ,*tenebrositas* , hæc Domini dies ? vobis hoc quid ut
לָמָּה־זֶּה לָכֶם יוֹם יְהוָה הוּא־חֹשֶׁךְ וְלֹא־אוֹר׃
: ursus ei occurrat & , leonis *faciebus* à vir fugiat Quomodo
19 כַּאֲשֶׁר יָנוּס אִישׁ מִפְּנֵי הָאֲרִי וּפְגָעוֹ הַדֹּב
cũ mordeat & , *pariete super* sua manu innitatur & ,domum ingrediatur &
וּבָא הַבַּיִת וְסָמַךְ יָדוֹ עַל־הַקִּיר וּנְשָׁכוֹ
? coluber
הַנָּחָשׁ׃

Versio VULG. LAT.

5 Et nolite quærere Bethel, & in
Galgalam nolite intrare, & in
Bersabee non transibitis : quia
Galgala captiva ducetur, & Beth-
6 el erit inutilis. Quærite Do-
minum, & vivite : ne fortè com-
buratur ut ignis domus Joseph, &
devorabit, & non erit qui ex-
7 tinguat Bethel. Qui convertitis
in absinthium judicium, & justi-
8 tiam in terra relinquitis. Faci-
entem Arcturum & Orionem, &
convertentẽ in manè tenebras, &
diẽ in noctẽ mutantẽ : qui vocat
aquas maris, & effundit eas super
faciem terræ : Dominus nomen
9 est ejus. Qui subridet vastitatem
super robustum, & depopulatio-
10 nem super potentem affert. Odio
habuerunt corripientem in por-
ta: & loquentẽ perfectè abomina-
11 ti sunt. Idcircò, pro eo quòd di-
ripiebatis pauperem, & prædam
electam tollebatis ab eo : domos
quadro lapide ædificabitis, &
non habitabitis in eis : vineas
plantabitis amantissimas, & non
12 bibetis vinum earum. Quia cog-
novi multa scelera vestra, &
fortia peccata vestra : hostes justi
accipientes munus, & pauperes
13 deprimentes in porta : Ideò pru-
dens in tempore illo tacebit,
14 quia tempus malum est. Quærite
bonum, & non malum, ut vivatis:
& erit Dominus Deus exercituũ
15 vobiscum, sicut dixistis. Odite
malum, & diligite bonum, &
constituite in porta judicium : si
fortè misereatur Dominus Deus
16 exercituum reliquiis Joseph. Pro-
ptereà hæc dicit Dominus Deus
exercituum dominator; In omni-
bus plateis planctus: & in cunctis,
quæ foris sunt, dicetur; Væ, væ: &
vocabunt agricolam ad luctum,
& ad planctum eos qui sciunt
17 plangere. Et in omnibus vineis
erit planctus : quia pertransibo
18 in medio tuî, dicit Dominus. Væ
desiderantibus diem Domini :
ad quid eam vobis? dies Do-
mini ista, tenebræ, & non lux.
19 Quomodò si fugiat vir à facie
leonis, & occurrat ei ursus : &
ingrediatur domum, & innitatur
manu suâ super parietem, &
mordeat eum coluber.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

5 Καὶ μὴ ἐκζητεῖτε Βαιθὴλ, καὶ εἰς Γάλγαλα
μὴ εἰσπορεύεσθε, καὶ ἐπὶ τὸ φρέαρ τοῦ ὅρκου μὴ
(ε) διαβαίνετε, ὅτι Γάλγαλα αἰχμαλωτευ-
ομένη αἰχμαλωτευθήσεται, καὶ Βαιθὴλ ἔσται
6 ὡς οὐχ ὑπάρχουσα. Ἐκζητήσατε τὸν κύριον,
καὶ (·) ζήσατε, ὅπως μὴ ἀναλάμψῃ ὡς πῦρ ὁ
οἶκος Ἰωσὴφ, καὶ (ʺ) καταφάγῃ αὐτὸν, καὶ οὐκ
7 ἔσται ὁ σβέσων τῷ οἴκῳ Ἰσραήλ. (ζ) Ὁ ποι-
ῶν εἰς ὕψος κρίμα, καὶ δικαιοσύνην εἰς γῆν
8 ἔθηκεν· (η) Ὁ ποιῶν πάντα καὶ μετασκευά-
ζων, καὶ ἐκτρέπων εἰς τὸ πρωῒ σκιὰν, καὶ ἡ-
μέραν εἰς νύκτα συσκοτάζων, ὁ προσκαλού-
μενος τὸ ὕδωρ τῆς θαλάσσης, καὶ ἐκχέων αὐ-
τὸ ἐπὶ (θ) πρόσωπον τῆς γῆς· Κύριος ὄνο-
9 μα αὐτῷ. Ὁ διαιρῶν συντριμμὸν ἐπὶ
ἰσχὺν, καὶ ταλαιπωρίαν ἐπὶ ὀχύρωμα ἐπά-
10 γων. Ἐμίσησαν ἐν πύλαις ἐλέγχοντα,
11 καὶ λόγον ὅσιον ἐβδελύξαντο. Διατοῦτο
ἀνθ' ὧν κατεκονδύλιζον (ι) πτωχοὺς, καὶ δῶρα
ἐκλεκτὰ ἐδέξασθε παρ' αὐτῶν, οἴκους (κ) ξε-
στοὺς ᾠκοδομήσατε, καὶ οὐ μὴ κατοικήσητε ἐν
αὐτοῖς· (λ) ἀμπελῶνας ἐπιθυμητοὺς (μ) ἐ-
φυτεύσατε, καὶ οὐ μὴ πίητε τὸν οἶνον αὐτῶν.
12 Ὅτι ἔγνων πολλὰς ἀσεβείας ὑμῶν, καὶ ἰσχυ-
ραὶ αἱ ἁμαρτίαι ὑμῶν, καταπατοῦντες δίκαι-
ον, λαμβάνοντες ἀλλάγματα, καὶ πένητας
13 ἐν πύλαις ἐκκλίνοντες. Διατοῦτο ὁ συνιὼν
ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ σιωπήσεται, ὅτι καιρὸς
14 (ν) πονηρῶν ἐστιν. Ἐκζητήσατε τὸ καλὸν,
καὶ μὴ (ξ) πονηρὸν, ὅπως ζήσητε, καὶ ἔσται οὕτως
μεθ' ὑμῶν κύριος ὁ θεὸς ὁ παντοκράτωρ, ὃν
15 τρόπον εἴπατε, Μεμισήκαμεν (ο) τὰ πονηρὰ,
καὶ ἠγαπήσαμεν τὰ καλά· καὶ ἀποκαταστήσατε
ἐν πύλαις κρίμα, ὅπως (ʻ) ἐλεήσῃ κύριος ὁ
θεὸς ὁ παντοκράτωρ τοὺς περιλοίπους τοῦ Ἰ-
16 ωσήφ. Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος ὁ θεὸς
ὁ παντοκράτωρ, Ἐν πάσαις (π) ταῖς πλατείαις
κοπετὸς, καὶ ἐν (ʺ) πάσαις ταῖς ὁδοῖς ῥηθήσεται,
Οὐαὶ, οὐαί. κληθήσεται γεωργὸς εἰς πένθος
17 καὶ κοπετὸν, καὶ εἰς (ρ) εἰδότας θρῆνον. Καὶ
ἐν πάσαις ὁδοῖς κοπετὸς, διότι (σ) ἐλεύσο-
18 μαι διὰ μέσου σου, εἶπε κύριος. Οὐαὶ οἱ
ἐπιθυμοῦντες τὴν ἡμέραν κυρίου. ἵνατί αὕτη
ὑμῖν ἡ ἡμέρα τοῦ κυρίου; καὶ αὐτή ἐστι σκότος
19 καὶ οὐ φῶς. Ὃν τρόπον (τ) ἐὰν φύγῃ ἄνθρω-
πος ἐκ προσώπου τοῦ λέοντος, καὶ ἐμπέσῃ
αὐτῷ ἡ ἄρκος, καὶ (¨) εἰσπηδήσῃ εἰς τὸν οἶκον
αὐτοῦ, καὶ (υ) ἀπερείσηται τὰς χεῖρας αὐτοῦ
(φ) ἐπὶ τὸν τοῖχον, καὶ δάκῃ αὐτὸν ὄφις.

Et nolite quærere Bethel, & in 5
Galgala ne ingrediamini, & su-
per Puteũ juramenti non trans-
eatis : quia Galgala captivata
captivabitur : & Bethel erit,
quasi non sit. Quærite Domi- 6
num, & vivite, ne succendatur,
ut ignis, domus Joseph, & devo-
ret eam, & non erit, qui extin-
guat domui Israel. Qui facit in 7
excelso judicium, & justitiam in
terra posuit : Qui facit (b) o- 8
mnia, & transformat, & con-
vertit in manè (c) umbram, &
diem in noctem contenebrat: Qui
vocat aquam maris, & effundit
eam super faciem terræ: (d) Do-
minus nomen ei. Qui (e) divi- 9
dit contritionem super fortitudi-
nem, & miseriam super munitio-
nem adducit. Odio habuerunt in 10
portis arguentem, & (f) verbum
sanctum abominati sunt. Propter- 11
eà, quia pugno (g) percutiebant
pauperes, & munera electa ac-
cipiebatis ab eis; domos dolatis
lapidibus ædificâstis, & non
habitabitis in eis : vineas deside-
rabiles plantâstis, & non bibetis
vinum earum. Quia cognovi 12
multas impietates vestras : &
fortia sunt peccata vestra : con-
culcantes justum, accipientes (h)
commutationes, & pauperes in
portis (i) declinantes. Ideò qui 13
intelligit, in tempore illo silebit :
quia tempus (k) malorum est.
Quærite bonum, & non malum, 14
ut vivatis. Et erit sic vobiscum
Dominus Deus omnipotens; sicut
dixistis; Odio habuimus mala, & 15
dileximus bona. Et reddite in
portis judicium; ut misereatur
Dominus Deus omnipotens his,
qui reliqui sunt de Joseph. Ideò 16
hæc dicit Dominus Deus omnipo-
tens; In cunctis plateis planctus:
& in omnibus viis dicetur; Væ,
væ. Vocabitur agricola ad lu-
ctum, & planctum : (l) & in eis,
qui sciunt lamentationem, Et in 17
omnibus viis planctus : quia (m)
pertransibo per medium tuî, dicit
Dominus. Væ desiderantibus di- 18
em Domini. Ut quid hæc vobis
dies Domini? Et ea est tenebræ,
& non lux. Quomodò si fugiat 19
homo à facie leonis, & (n) in-
cidat in eum ursus; & introeat
in domum suam, & innitatur
manibus suis super parietem, & mordeat eum coluber.

MS.A. (ε) ἀναβαίνετε, (·) ζήσετε, (ʺ) καταφάγεται, (ζ) Κύριος ὁ θεὸς ὁ ποι-
ῶν (η) Ποιῶν (θ) προσώπου τῆς γῆς· Κύριος ὁ θεὸς ὁ παντοκράτωρ ὄνο-
μα αὐτῷ· Διαιρῶν (ι) εἰς κεφαλὰς πτωχῶν, (κ) ξυστοὺς οἰκοδομήσετε,
(λ) καὶ ἀμπελῶνας (μ) φυτεύσετε, (ν) πονηρός (ξ) τὸ πονηρὸν, (ο) τὸ
πονηρὸν, καὶ ἠγαπήκαμεν τὸ καλόν·) (ʻ) ἐλεήσει (π) πλατείαις (ʺ) πάσαις
ὁδοῖς (ρ) ἰδόντας (σ) ἐπελεύσομαι (τ) ὅταν ἐκφύγῃ (¨) εἰσπηδήσει (υ) ἀπ-
ερείσῃ (φ) πρὸς

תרגם יונתן Targum JONATHAN.

5 וְלָא תִתְבְּעוּן לְמֵהַךְ לְבֵיתְאֵל וּלְגִלְגָּלָא לָא תֵיתוּן וּלְבֵאר שְׁבַע לָא תֶעְבְּרוּן אֲרֵי דִי
בְּגִלְגָּלָא מִגְלָא יִגְלוּן וּדְפָלְחִין לְטַעֲוָתָא בְּבֵיתְאֵל יְהוֹן לְלָמָא׃ תְּבַעוּ יַת דַּחַלְתָּא 6
דַיְיָ וְאִתְקַיְּמוּ דִּלְמָא יִדְלַק כְּאֶשָּׁתָא רוּגְזֵיהּ בְּבֵית יוֹסֵף וִישֵׁיצֵי וְלָא יְהֵי חָיֵס בְּחוֹבִין
דַּהֲוֵיתוּן פָּלְחִין לְטַעֲוָתָא בְּבֵית אֵל׃ דְּהָפְכִין לְגִידָא דִּינָא וּזְכוּתָא לְאַרְעָא רַטְשׁוּ׃ 7
8 שְׁבַקוּ לְמִדְחַל מִן קֳדָם דַּעֲבַד כִּימָה וּכְסִילָא וְהָפֵךְ לִנְהוֹר קְבַל וִימָם לְלֵילֵי מַקְבִּיל
9 דְּאָמַר לְכַנָּשָׁא מַשְׁרְיָן סַגִּיאָן כְּמֵי יַמָּא וּמְבַדַּר לְהוֹן עַל אַפֵּי אַרְעָא יְיָ שְׁמֵיהּ׃ דִּמְגַבַּר
10 חַלָּשִׁין עַל תַּקִּיפִין וּבָזוֹזִין עַל כְּרַכֵּי תַקִּיפִין מַשְׁלִיט׃ סָנָן לִדְמוֹכַח לְהוֹן בְּשַׁעֲרֵי בָתֵּי
11 דִּינָא פִּתְגָמֵי אוֹרַיְתָא וְלִדְמְמַלֵּל כֵּיוַנְתָּא מְעַקְמִין׃ בְּכֵן חֲלַף בְּמִבְזְכוֹן מִסְכֵּנַיָּא
וּמֵנַסְבְכוֹן חֲשִׁיבַיָּא בָּתֵּי גְזִירָת בְּנֵיתוּן וְלָא תֵיתְבוּן בְּהוֹן כַּרְמֵי חֶמְדְּתָא נְצַבְתּוּן וְלָא תִשְׁתּוּן
12 יַת חַמְרְהוֹן׃ אֲרֵי גְלֵי קֳדָמַי דְּסַגִּיאִין מֶרְדֵיכוֹן וְתַקִּיפָן חוֹבָתֵכוֹן מְעִיקִין לֵיהּ לְזַכָּאָה בְּדִיל
13 לְקַבָּלָא מָמוֹן דִּשְׁקַר וְדִין חֲשִׁיבַיָּא בְּבֵית כְּנִשְׁתְּהוֹן מַסְטָן׃ בְּכֵן מַלְפַיָּא בְּעִדָּנָא
14 הַהִיא מִן קֳדָם רַשִׁיעַיָּא שְׁתִיקוּ אֲרֵי עִדָּן בִּישׁ הוּא׃ תְּבַעוּ לְאוֹטָבָא וְלָא לְאַבְאָשָׁא
15 בְּדִיל דְּתִתְקַיְּמוּן וִיהֵי כְעַן מֵימְרָא דַיְיָ אֱלֹהִים צְבָאוֹת בְּסַעְדְּכוֹן כְּמָא דַאֲמַרְתּוּן׃ סְנוֹ
לְאַבְאָשָׁא וְרַחֲמוּ לְאֵיטָבָא וְאַתְקִינוּ בְּבֵית כְּנִישַׁתְכוֹן דִּינָא מָאִים יִתְרַחֵם מִן קֳדָם יְיָ אֱלָהָא
16 צְבָאוֹת עַל שְׁאָרָא דְיוֹסֵף׃ בְּכֵן כִּדְנַן אָמַר יְיָ אֱלָהֵי צְבָאוֹת יְיָ בְּכָל רְחוֹבַיָּא מִסְפְּדָא
17 וּבְכָל שׁוּקַיָּא יֵימְרוּן וַי וַי וִיעָרְעוּן אִכָּר לְאֵבֶל וְעָבֵיד מִסְפְּדָא לְדִידְעֵי אֱלְיָא׃ וּבְכָל כַּרְמַיָּא
18 מִסְפְּדָא אֲרֵי אִתְגְּלֵי לְמֶעְבַּד פּוּרְעָנוּת דִּין בְּגַוִּיךְ אָמַר יְיָ׃ וַי לְמַחְמְדִין לְיוֹמָא דַעֲתִיד
לְמֵיתֵי מִן קֳדָם יְיָ לְמָא דְנַן לְכוֹן יוֹמָא דַעֲתִיד לְמֵיתֵי מִן קֳדָם יְיָ הוּא חֲשׁוֹךְ וְלָא נְהוֹר׃
19 כְּמָא דִי יַעֲרוֹק גַּבְרָא מִן קֳדָם אַרְיָא וִיעַרְעִנֵּיהּ דּוּבָּא וְיֵעוֹל לְבֵיתָא וְיִסְמוֹךְ יְדֵיהּ עַל כָּתְלָא
וְיִכְּתְנֵיהּ חִוְיָא׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Non quæratis verò pergere ad Bethel, & ad Galgalam ne veniatis, & per 5
Beersabee ne transeatis, quia qui in Galgala, certissimè multabuntur exilio;
& qui colunt idola Bethel, redigentur in nihilũ. Quærite timorẽ Dñi, ut vita 6
potiamini, ne fortè succendatur sicut ignis furor ejus in domo Joseph, qui vo-
ret, nec sit qui extinguat propter peccata vestra, qui serviebatis idolis in
Bethel. Qui convertunt in absinthiũ judiciũ, & justitiã in terrã projiciunt. 7
Desierunt timere à facie [*ejus*] qui fecit Arcturũ & Orionẽ, & convertit 8
in lucẽ tenebras, & diẽ in noctem obtenebrat : qui jubet congregari exer-
cit⁹ multos instar aquarũ maris, & dispergit eos super faciẽ terræ : Dñs no-
men ej⁹. Qui vires auget infirmis contra fortes, & direptoribus super pro- 9
pugnacula fortissimorum imperiũ donat. Odio prosequuntur eum qui cor- 10
ripit eos in *portis domorũ* judicii verbis Legis, & loquentem recta pravita-
tis insimulant. Idcircò pro eo quòd diripiebatis egenum, & vim paupe- 11
ribus inferebatis : domos dolato lapide construxistis, in quibus non habi-
tabitis: vineas desiderabiles plantâstis, quarũ vinum haudquaquam bibetis.
Siquidẽ notũ est mihi quod permultæ sint vestræ prævaricationes, & for- 12
tia peccata vestra: contribulant justũ ut suscipiant mammona iniquitatis, &
judiciũ obscurorũ pervertunt in domo congregationis ipsorũ. Propthereà 13
doctores tunc temporis propter impios conticuerunt, tempus enim malum
erat. Quærite benefacere & non malè, quò vivatis : tunc aderit Verbum 14
Dñi Dei exercituũ in auxiliũ vestrũ sicut dixistis. Odite malefacere, & be- 15
ne operari diligite: & dirigite judiciũ in domo congregationis vestræ: for-
tè misericordia tribuetur à conspectu Dñi Dei exercituum super reliquias
Josephi. Quamobrem sic dicit Dñs Deus exercituum, Dñs ipse: In omnibus 16
plateis erit planctus, & in omnib⁹ compitis dicent, Væ, væ: & convocabunt
agricolam ad luctum, & planctum emittentem ad *eos* qui ejulandi *sunt*
periti. Atque in omnibus vinetis erit planctus; quia apparebo ut faciam 17
ultionẽ judicii in medio tui, dicit Dñs. Væ desiderantibus diẽ qui venturus 18
est à conspectu Dñi: ad quid conducet vobis dies qui adventur⁹ est à facie
Dñi? ipse obscuritas est & non lux. Quomodo vir qui fugit à facie leonis, 19
& occurret ei ursus, & ingreditur domum, & innitetur manu sua super
parietem, & mordebit eum coluber.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

5 * ܘܠܐ ܬܒܥܘܢ ܠܒܝܬ ܐܝܠ. ܘܠܓܠܓܠܐ ܠܐ ܬܥܠܘܢ. ܘܠܒܐܪ ܫܒܥ ܠܐ ܬܥܒܪܘܢ.
ܡܛܠ ܕܓܠܓܠܐ ܡܫܒܝܐ ܬܫܬܒܐ. ܘܒܝܬ ܐܝܠ ܬܗܘܐ ܐܝܟ ܕܠܐ ܗܘܬ. * ܒܥܘ 6
ܠܡܪܝܐ ܘܚܝܘ. ܕܠܐ ܢܕܠܩ ܐܝܟ ܢܘܪܐ ܒܒܝܬ ܝܘܣܦ. ܘܢܐܟܘܠ ܠܒܝܬ ܐܝܠ ܘܠܝܬ
ܕܡܕܥܟ. * ܕܗܦܟܝܢ ܕܝܢܐ ܠܓܕܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܠܐܪܥܐ. * ܫܒܩܘ ܠܡܢ ܕܥܒܕ ܟܝܡܐ 7 8
ܘܥܝܘܬܐ. ܘܗܦܟ ܠܛܠܠܐ ܕܡܘܬܐ ܠܨܦܪܐ. ܘܐܝܡܡܐ ܠܠܠܝܐ ܚܫܟ. ܕܩܪܐ ܠܡܝܐ ܕܝܡܐ.
ܘܐܫܕ ܐܢܘܢ ܥܠ ܐܦܝ ܐܪܥܐ. ܡܪܝܐ ܫܡܗ. * ܕܡܫܠܛ ܒܙܝܙܐ ܥܠ ܥܫܝܢܐ. ܘܡܟܝܟܐ 9
ܥܠ ܪܡܐ ܡܥܠܐ. * ܕܣܢܝܢ ܠܡܟܣܢܐ ܒܬܪܥܐ. ܘܠܡܢ ܕܡܡܠܠ ܬܪܝܨܐܝܬ ܡܣܠܝܢ. 10
* ܡܛܠ ܗܢܐ ܚܠܦ ܕܐܥܨܝܬܘܢ ܠܡܣܟܢܐ: ܘܡܘܗܒܬܐ ܓܒܝܬܐ ܢܣܒܬܘܢ ܡܢܗ. 11
ܒܬܐ ܕܦܣܝܠܬܐ ܕܒܢܝܬܘܢ. ܠܐ ܬܥܡܪܘܢ ܒܗܘܢ. ܘܟܪܡܐ ܕܪܓܬܐ ܕܢܨܒܬܘܢ. ܠܐ ܬܫܬܘܢ
ܚܡܪܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܝܕܥ ܐܢܐ ܕܣܓܝܐܝܢ ܚܘܒܝܟܘܢ. ܘܥܫܝܢܝܢ ܚܛܗܝܟܘܢ. 12
ܠܥܠܘܒܘܗܝ ܕܙܕܝܩܐ. ܢܣܒܘ ܫܘܚܕܐ. ܘܠܡܣܟܢܐ ܒܬܪܥܐ ܨܠܝܘ. * ܡܛܠܗܢܐ ܡܢ 13
ܕܡܣܬܟܠ. ܒܙܒܢܐ ܗܘ ܢܫܬܘܩ. ܡܛܠ ܕܙܒܢܐ ܒܝܫܐ ܗܘ. * ܒܥܘ ܛܒܬܐ ܘܠܐ ܒܝܫܬܐ 14
ܕܬܚܘܢ. ܘܢܗܘܐ ܥܡܟܘܢ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܐܝܟ ܕܐܡܪܬܘܢ. * ܣܢܘ ܒܝܫܬܐ ܘܪܚܡܘ 15
ܛܒܬܐ. ܘܐܩܝܡܘ ܒܬܪܥܐ ܕܝܢܐ. ܟܒܪ ܢܪܚܡ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ ܥܠ ܫܪܟܢܗ
ܕܝܘܣܦ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܒܟܠܗܘܢ ܫܘܩܐ ܡܪܩܕܐ. 16
ܘܒܟܠܗܘܢ ܦܬܝܐ ܢܐܡܪܘܢ. ܘܝ ܘܝ. ܘܢܩܪܘܢ ܠܐܟܪܐ ܠܐܒܠܐ. ܘܠܡܪܩܕܐ ܠܝܕܥܝ
ܐܠܝܬܐ. * ܘܒܟܠܗܘܢ ܟܪܡܐ ܡܪܩܕܐ. ܡܛܠ ܕܥܒܪ ܐܢܐ ܒܓܘܟ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܝ 17 18
ܠܕܪܓܝܓܝܢ ܠܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܠܡܢܐ ܗܘܐ ܠܟܘܢ ܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܕܚܫܘܟܐ ܗܘ ܘܠܐ ܢܘܗܪܐ.
* ܐܝܟ ܕܥܪܩ ܓܒܪܐ ܡܢ ܩܕܡ ܐܪܝܐ. ܘܦܓܥ ܒܗ ܕܒܐ: ܘܥܐܠ ܠܒܝܬܐ ܘܣܡܟ ܐܝܕܗ 19
ܥܠ ܫܘܪܐ. ܘܢܟܬܗ ܚܘܝܐ.

Ac ne quæratis Beth-el, & Galgalam ne adeatis, néve tranſeatis ad Bir-ſebaa: quia Galgala procul dubio ibit in captivitatem, & Beth-el erit quaſi non fuiſſet. 5 Quærite Dominum, ut vivatis; ne ardeat velut ignis domus Joſephi, devoretque Bethelem, nemine extinguente: 6 Quòd judicium vertant in abſynthium, juſtitiam in terram: 7 Dereliquerint eum qui fecit Arcturum & Orionem, qui tenebras mortiferas vertit in lucem matutinam, & diem nocte obtenebrat; qui advocat aquas maris, & refundit eas ſuper faciem terræ; cujus nomen Dominus eſt; 8 Qui dominatum præbet imbecilli in fortem, & humilem ſuper excelſum attollit. 9 Quòd pauperem odio proſequantur in porta, & eum qui recta loquitur, deſpiciant: 10 Iccirco, quia pauperem exagitâſtis, & munera ſelecta accepiſtis ab eo; in domibus cæſi lapidis quas ædificâſtis, non habitabitis; & vinearum expetibilium quas conſeviſtis, vinum nequaquam bibetis. 11 Novi enim multa eſſe ſcelera veſtra, & ingentia peccata veſtra. 12 Oppreſſores juſti acceperunt munus, & pauperem in porta perverterunt. Propterea qui prudens eſt, eo tempore ſilebit; quia tempus calamitoſum erit. 13 Quærite bona, non mala, ut vivatis: atque ita aderit vobis Dominus potentiſſimus, quemadmodum dixiſtis. 14 Odio habete mala, & amate bona, & in porta jus conſervate: forſitan miſerebitur Dominus Deus potentiſſimus reliquiis Joſephi. 15 Sic enim ait Dominus Deus potentiſſimus; In omnibus vicis erit luctus, & in omnibus plateis, dicent, Eheu eheu; & vocabunt agricolas ad planctum, ad luctum eos qui nôrunt lamentationes; 16 In omnibus quoque vineis erit luctus; quia tranſibo per medum tui, dicit Dominus. 17 Væ exoptantibus diem Domini: ad quid proderit vobis dies Domini? obſcura namque eſt, non lucida. 18 Perinde ac cui leonem fugienti occurrat urſus; aut domum ingreſſus, manu ſuâ innitatur parieti, & mordeat eum ſerpens. 19

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

5 * ولا تطلبوا بيت ايل * والي الجلجال لا تدخلوا * وعلي بير الحلف لا تصعدوا * لان
6 الجلجال يسبي * وبيت ايل يكون كانه لم يكن * اطلبوا الرب فتحيون كيلا يلتهب
7 مثل النار بيت يوسف وتاكله * وليس يكون من يطفي في بيت اسرايل * الرب الصانع
8 الي العلا حكما * ووضع عدلا في الارض * الصانع كلا ومهييه ومبدله بالغداة ظلا * ومظلم
النهار ليلا * الداعي ما البحر * ومهرقه علي وجه كل الارض * الرب الاله الضابط الكل اسمه *
9 10 * المقسم كسرا علي قوة * والجالب سقوه علي حصن * ابغضوا المبكت في الابواب * والقول
11 البار رذلوه * لاجل هذا من اجل انهم اقمعوا روس المساكين * وقبلتم الهدايا الحسان منهم *
بنيتم بيوتا محجره ولن تسكنوا فيها * وغرستم كروما مشتهاه ولن تشربوا منها خمرا *
12 * لاني علمت بذنوبكم الكثيرة * وخطاياكم قويه * تدوسون الصديق * واخذون
13 المقايضات المبكتات الفقراء في الابواب * لاجل هذا الفهم في ذلك الزمان يسكت * لان الزمان
14 شرير هو * اطلبوا الجيد لا الشرير كي تحيوا * ويكون هكذا معكم الرب الاله الضابط
15 الكل * هكذا قولوا * ابغضنا الشريرات واحببنا الجيدات * وردوا الحكم في الابواب * كي
16 يرحم الرب الاله الضابط الكل بقايا يوسف * لاجل هذا هكذا يقول الرب الاله الضابط الكل *
في كل الشوارع مناحه * وفي جميع الطرقات يدعي ويل ويل * يدعا الفلاح للحزن والمناحة *
17 والذين يعلمون المراثي * وفي جميع الطرق مناحه * من اجل اني اجوز في وسطك يقول
18 الرب * ويل الذين يشتهون يوم الرب * لماذا هو لكم يوم الرب * هذا هو لكم ظلمة وليس
19 نور * كما اذا هرب انسان من وجه الاسد ويسقط له الذب ويدخل الي بيته ويتكي علي
الحايط فتنهشه الحيه *

Et ne quæratis Beth-il, & ad Galgalem ne ingrediamini, & ſuper puteum juramenti ne aſcendatis: nam Galgal captiva erit, & Beth-il erit ac ſi non fuiſſet. 5 *Quærite Dominum, & vivetis: ne ſuccendatur ſicut ignis domus Joſephi, & devoret eam; nec adſit qui extinguat in domo Iſraelis.* 6 *Dominus qui exercet in excelſis judicium, & poſuit æquitatem in terra,* 7 *Qui omnia fecit, diſponit, & matutino tempore mutat in umbram, quique diem obſcurat in noctem, qui maris aquam evocat, refunditque eam ſuper totius terræ ſolum; Dominus Deus omnipotens eſt nomen ejus:* 8 *Qui fractionem diſtribuit ſuper fortitudinem, & adducit miſeriam ſuper munitionem.* 9 *Odio habuerunt arguentem in portis, & ſermonem juſtum aſpernati ſunt:* 10 *Idcirco, quia fuſti tutuderunt capita pauperum, & dona ſelecta ab eis accepiſtis; ædificâſtis ædes lapideas, at nequaquam habitabitis in eis; plantâſtis vineas exquiſitas, at nequaquam bibetis ex eis vinum.* 11 *Nam plurimas culpas veſtras agnoſco, & peccata veſtra gravia ſunt: conculcatis juſtum, & accipitis permutationes quæ arguunt egenos in portis.* 12 *Ideo prudens eo tempore ſilebit, quia tempus malum erit.* 13 *Quærite bonum, non malum, ut vivatis: atque ita erit vobiſcum Dominus Deus omnipotens.* 14 *Sic dicite, Odio habemus mala, & bona diligimus: & reddite judicium in portis; miſereatur Dominus Deus omnipotens reliquiarum Joſephi.* 15 *Propterea, ſic ait Dominus Deus omnipotens; In omnibus vicis erit luctus, & in viis omnibus clamabitur; Væ, væ; vocabitur agricola ad mœrorem & luctum, ac ii qui nôrunt lamentationes:* 16 *In omnibus, inquam, viis erit luctus, quia tranſibo per medium tui, ait Dominus.* 17 *Væ iis qui expetunt diem Domini: quid prodeſt vobis dies Domini? ea vobis erit tenebræ non lux:* 18 *Quemadmodum cùm fugit aliquis à facie leonis, & incidit in eum urſus; vel ingreſſus domum ſuam imponit manum ſuam parieti, mordetque eum coluber.* 19

עמוס : ו

non & ⁰, caligo & ⁰ }: lux non & ,Domini dies *tenebrositas* Nónne
20 הלא־חשך יום יהוה ולא־אור ואפל ולא־
odorabo non & : vestras solennitates reprobavi ,Odivi ? ei splendor
21 נגה לו: שנאתי מאסתי חגיכם ולא אריח
, *ascensiones* mihi obtuleritis si Quia .*vestros retentiones in*
22 בעצרתיכם: כי אם־תעלו־־לי עולות
non vestrorum pinguium *pacificationem &* : *volam* non vestra munera &
ומנחתיכם לא ארצה ושלם מריאיכם לא
cantum & : tuorum *canticorum* *turbam* me *desuper* Remove .respiciam
23 אביט: הסר מעלי המון שריך וזמרת
: judicium , aquæ sicut *se volvat* Et .audiam non *tuorum nablorum*
24 נבליך לא אשמע: ויגל כמים משפט
munus & , sacrificia Nunquid .fortis torrens veluti justitia &
25 וצדקה כנחל איתן: הזבחים ומנחה
domus annis quadraginta , deserto in mihi fecistis appropinquare
הגשתם־־לי במדבר ארבעים שנה בית
Saturnum & , *vestrum regem* ZZichuth portâstis Et ? Israel
26 ישראל: ונשאתם את סכות מלככם ואת כיון
fecistis quos ,vestrorum deorum *stellam* ;vestrarum imaginum
צלמיכם כוכב אלהיכם אשר עשיתם
dixit : Dammesec trans vos faciam migrare Et .vobis
27 לכם: והגליתי אתכם מהלאה לדמשק אמר
.ejus nomen exercituum Deus Dominus
יהוה אלהי־צבאות שמו:

Versio VULG. LAT.

20 Numquid non tenebræ dies Domini, & non lux: & caligo, & non splendor in ea? 21 Odi, & projeci festivitates vestras: & non capiam odorem cœtuum vestrorum. 22 Quòd si obtuleritis mihi holocautomata, & munera vestra, nón suscipiam: & vota pinguium vestrorum non respiciam. 23 Aufer à me tumultum carminum tuorum: & cantica lyræ tuæ non audiam. 24 Et revelabitur quasi aqua judicium, & justitia quasi torrens fortis. 25 Numquid hostias & sacrificiũ obtulistis mihi in deserto quadraginta annis, domus Israel? 26 Et portâstis tabernaculum Moloch vestro, & imaginem idolorum vestrorum, sidus Dei vestri, quæ fecistis vobis. 27 Et migrare vos faciam trans Damascum, dicit Dominus: Deus exercituum nomen ejus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

20 Οὐχὶ σκότος ἡ ἡμέρα τοῦ κυρίου, καὶ οὐ φῶς, καὶ γνόφος οὐκ ἔχων φέγγος αὐτῇ; 21 Μεμίσηκα, ἀπῶσμαι ἑορτὰς ὑμῶν, καὶ οὐ μὴ ὀσφρανθῶ θυσίας ἐν ταῖς πανηγύρεσιν ὑμῶν. 22 Διότι(χ) ἐὰν ἐνέγκητέ μοι (*) ὁλοκαυτώματα καὶ θυσίας ὑμῶν οὐ προσδέξομαι(ψ), καὶ σωτηρίους ἐπιφανείας ὑμῶν οὐκ ἐπιβλέψομαι. 23 Μετάστησον ἀπ' ἐμοῦ ἦχον ᾠδῶν σου, καὶ ψαλμὸν ὀργάνων σου οὐκ ἀκούσομαι. 24 Καὶ κυλισθήσεται ὡς ὕδωρ κρίμα, 25 καὶ δικαιοσύνη ὡς χειμάῤῥους ἄβατος. Μὴ σφάγια καὶ θυσίας προσηνέγκατέ μοι (ω) οἶκος Ἰσραὴλ τεσσαράκοντα ἔτη ἐν τῇ ἐρήμῳ; 26 Καὶ ἀνελάβετε τὴν σκηνὴν τοῦ Μολὸχ, καὶ τὸ ἄστρον τοῦ θεοῦ ὑμῶν Ῥαιφὰν, τοὺς (α) τύπους αὐτῶν οὓς ἐποιήσατε ἑαυτοῖς. 27 Καὶ μετοικιῶ ὑμᾶς ἐπέκεινα Δαμασκοῦ, λέγει κύριος· ὁ θεὸς ὁ παντοκράτωρ ὄνομα αὐτῷ.

Nónne tenebræ dies Domini, & non lux? & caligo non habens splendorem hæc? 21 *Odio habui, repuli festivitates vestras, nec odorabor hostias in conventionibus vestris:* 22 *Quia, si obtuleritis mihi holocausta, & sacrificia vestra; non suscipiam, & (o) salutares præsentiæ vestræ non respiciam.* 23 *(p) Transfer à me sonitum carminum tuorum: & psalmum organorum tuorum non audiam.* 24 *Et volvetur, sicut aqua, judicium; & justitia, sicut torrens invius.* 25 *Nunquid victimas, & hostias obtulistis mihi, domus Israel, quadraginta annis in eremo?* 26 *Et assumpsistis (q) tabernaculum (r) Moloch, & sydus Dei vestri (s) Rhephan, figuras eorum, quas fecistis vobis.* 27 *Et transferam vos trans Damascũ, dicit Dominus: Deus omnipotens nomen ei.*

MS. A. (χ) καὶ ἐὰν(*) τὰ ὁλοκαυτώματα (ψ) αὐτὰ, καὶ σωτηρίου (ω) ἐν τῇ ἐρήμῳ οἶκος Ἰσραὴλ τεσσεράκοντα ἔτη, λέγει κύριος. Καὶ (α) τύπους οὓς

CAP. VI. ו

nuncupatis ,Someton *monte in* fidentibus & ,Sijon in quietis Væ
1 הוי השאננים בציון והבטחים בהר שמרון נקבי
Transite .Israel domus eos ad venerunt & ,gentium *principium*
2 ראשית הגוים ובאו להם בית ישראל: עברו
descendite & : magnam Chamath inde ite & ,videte & , Calneh
כלנה וראו ולכו משם חמת רבה ורדו
num ? istis regnis *præ bonæ* Nunquid .Pelistim Ghath
גת־פלשתים הטובים מן־הממלכות האלה אם־
: malum diem *ad* *Elongantes* ? vestro termino *præ* eorum terminus *multus*
3 רב גבולם מגבלכם: המנדים ליום רע
lectis *super* *Jacentes* .*rapinæ* *habitare* *appropinquare fecistis* &
4 ותגישון שבת חמס: השכבים על־מטות
, *pecore de* agnos *comedentes* & : suis stratis *super* *distenti &* , *dentis*
שן וסרחים על־ערשותם ואכלים כרים מצאן
: *nabli* *os* *super* *Particularizantes* .*saginarii* medio de vitulos &
5 ועגלים מתוך מרבק: הפרטים על־־פי הנבל
Bibentes .*cantici* instrumenta sibi excogitaverunt David sicut
6 כדויד חשבו להם כלי־־שיר: השתים
condolent non & : se ungunt *unguentorum* *præcipuo* & ,vinum phialis in
במזרקי יין וראשית שמנים ימשחו ולא נחלו
capite in migrabunt nunc Quapropter .Joseph contritione super
7 על־שבר יוסף: לכן עתה יגלו בראש
Dominus Juravit .*extensorum* *funeris* *convivium recedet* & : transmigrantiũ
8 גלים וסר מרזח סרוחים: נשבע אדני
Abominans : exercituum Deus Dominus dixit ,*sua anima in* *Dominus*
יהוה בנפשו נאם־יהוה אלהי צבאות מתאב
concludam & : odi ejus palatia & ,Jahacob superbiam *ego*
אנכי את־גאון יעקב וארמנתיו שנאתי והסגרתי
decem remanserint si , erit Et .ejus plenitudinem & ,civitatem
9 עיר ומלאה: והיה אם־יותרו עשרה
.morientur & , una domo in viri
אנשים בבית אחד ומתו:

CAP. VI.

1 VÆ qui opulenti estis in Sion, & confiditis in monte Samariæ: optimates capita populorum, ingredientes pompaticè domum Israel. 2 Transite in Chalane, & videte, & ite indè in Emath magnam: & descendite in Geth Palæstinorum, & ad optima quæque regna horum: si latior terminus 3 eorum termino vestro est. Qui separati estis in diem malum: & appropinquatis solio iniquitatis. 4 Qui dormitis in lectis eburneis, & lascivitis in stratis vestris: qui comeditis agnum de grege, & 5 vitulos de medio armenti. Qui canitis ad vocem psalterii: sicut David putaverunt se habere vasa 6 cantici. Bibentes vinum in phialis, & optimo unguento delibuti: & nihil patiebantur super con- 7 tritione Joseph. Quapropter nunc migrabũt in capite transmigrantium: & auferetur factio lascivi- 8 entium. Juravit Dominus Deus in anima sua, dicit Dominus Deus exercituum: Detestor ego superbiam Jacob, & domos ejus odi, & tradam civitatem cum habita- 9 toribus suis. Quòd si reliqui fuerint decem viri in domo una, & ipsi morientur.

ΚΕΦ. ϛʹ.

1 Οὐαὶ τοῖς ἐξουθενοῦσι Σιὼν, καὶ τοῖς πεποιθόσιν ἐπὶ τὸ ὄρος Σαμαρείας, ἀπετρύγησαν ἀρχὰς ἐθνῶν, καὶ εἰσῆλθον αὐτοί. 2 οἶκος τοῦ Ἰσραὴλ διάβητε πάντες καὶ ἴδετε, καὶ διέλθατε ἐκεῖθεν εἰς (α) Ἐμαθραββὰ, καὶ κατάβητε ἐκεῖθεν εἰς Γὲθ ἀλλοφύλων, τὰς κρατίστας ἐκ πασῶν τῶν (β) βασιλειῶν τούτων, εἰ(*) πλείονα τὰ ὅρια αὐτῶν 3 ἐστὶ τῶν ὑμετέρων ὁρίων. Οἱ (γ) ἐρχόμενοι εἰς ἡμέραν κακὴν, οἱ ἐγγίζοντες καὶ ἐφα- 4 πτόμενοι σαββάτων ψευδῶν, Οἱ καθεύδοντες ἐπὶ κλινῶν ἐλεφαντίνων, καὶ κατασπαταλῶντες ἐπὶ ταῖς στρωμναῖς αὐτῶν, καὶ ἔσθοντες ἐρίφους ἐκ ποιμνίων, καὶ μοσχάρια (δ) ἐκ μέσου βουκολίων γαλαθηνὰ, 5 Οἱ (ε) ἐπικρατοῦντες πρὸς τὴν φωνὴν τῶν ὀργάνων, ὡς (ζ) ἑστηκότα ἐλογίσαντο, καὶ 6 οὐχ ὡς φεύγοντα, Οἱ πίνοντες τὸν διυλισμένον οἶνον, καὶ τὰ πρῶτα μύρα χριόμενοι, καὶ οὐκ ἔπασχον οὐδὲν ἐπὶ τῇ συντριβῇ 7 Ἰωσήφ. Διὰ τοῦτο νῦν αἰχμάλωτοι ἔσονται ἀπ' ἀρχῆς δυναστῶν, καὶ ἐξαρθήσε- 8 ται χρεμετισμὸς ἵππων ἐξ Ἐφραΐμ· Ὅτι ὤμοσε κύριος καθ' ἑαυτοῦ, (η) Διότι βδελύσσομαι ἐγὼ πᾶσαν τὴν ὕβριν Ἰακὼβ, καὶ τὰς χώρας (θ) αὐτοῦ μεμίσηκα, καὶ ἐξαρῶ πόλιν σὺν πᾶσι τοῖς κατοικοῦσιν αὐτήν. 9 Καὶ ἔσται, ἐὰν ὑπολειφθῶσι δέκα ἄνδρες ἐν οἰκίᾳ μιᾷ, (ι) καὶ ἀποθανοῦνται.

CAP. VI.

1 *VÆ, (a) qui despiciunt Sion, & qui confidunt in monte Samariæ. (b) Vindemiarunt primitias gentium: & ingressi sunt ipsi. Domus Israel,* 2 *Transite omnes, & (c) videte: & pertransite indè in (d) Ematrabba: & descendite indè in Geth alienigenarum, optimas ex omnibus regnis his: si ampliores sunt termini eorum terminis vestris.* 3 *Venientes in diem malum, appropinquantes, & tangentes sabbata mendacia;* 4 *Dormientes in lectis eburneis, affluentes deliciis in stratis suis, & comedentes hædos de gregibus, & lactentes vitulos de medio armentorum,* 5 *(e) Prævalentes ad vocem organorum. (f) Quasi stantia putaverunt, & non quasi fugientia.* 6 *Qui bibunt vinum (g) defæcatum, & primis unguentis unguntur, & nihil patiebantur super contritione Joseph.* 7 *Propterea nunc captivi erunt ab initio (h) fortium: & auferetur hinnitus equorum ex Ephraim:* 8 *Quia juravit Dominus per (i) semetipsum; Quia abominor ego omnẽ contumeliam Jacob, et regiones ejus odi, et auferam civitatem cum omnibus habitatoribus suis.* 9 *Et erit, si remanserint decem viri in domo una; et morientur.*

MS. A. (α) Αἱμαθραββὰ, (β) βασιλειῶν (*) πλείονα (γ) εὐχόμενοι (δ) ἐκ βουκολίων (ε) ἐπικροτοῦντες (ζ) ἑστῶτα (η) Ὅτι (θ) αὐτῶν (ι) ἀποθανοῦνται.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

20 הלא חשוך יומא דעתיד למיתי מן קדם יי ולא נהור וקבל ולא זהור ליה: סניתי רחיקית
21 חגיכון ולא אקבל ברעוא קורבן כנשתכון: ארי אם תסקון קדמי עלון וקורבניכון לא 22
23 לרעוא ונכסת קודשיכון לא יתקבלון קדמי: אעדי מן קדמי אתרגושת זמרך ונגון
24 כנרך לא אשמע: ויתגלי כמיא דינא וזכותא כנחל מגבר: הנכסת קודשין וקורבנין
25 26 קרבתון קדמי במדברא ארבעין שנין בית ישראל: ונטלתון ית סכות פתכומרכון
27 וית כיון צלמיכון כוכב טעותכון די עבדתון לכון: ואגלי יתכון מהלאה לדמשק
אמר יי אלהים צבאות שמיה:

ו

1 ויי דשלן שליא בציון ומתרחצין על כרכא דשומרון מקימין שום בניהון כשום בני
2 עממיא וכל דמן דיסתמכון עליהון בית ישראל: עברו לכלנה וחזו ואזילו מתמן
לחמת רבה וחותו לגת דפלשתאי דטבין מן מלכותא האלין אם סגי תחומהון
3 מתחומכון: אנון מרחקין יום ביש ואתון מקרבין בבית כנשתכון חטוף: דשכבין
4 על ערסן דמכבשן בשן דפיל ועומקין על ערסיהון ואכלין פטימין מענא ועגלין
5 6 מגו רבקא: דמנגן על פום נבלא כדויד אתקינו להון מני זמרא: דשתן בפילון
7 דכסף חמר וריש משחין טבין מתמשחין ולא כאיב להון על תבריה דיוסף: בכן
8 כען יגלן בריש גלן ויעדון מנהון מרזחין ומסכין: קים יי אלהים במימריה אמר יי
אלהא דישראל מנבל אנא ית בית מקדשא דביתיה דיעקב ובירניתיה רחקית ואמסר
9 קרתא ומלאה: ויהי אם ישתארון עסרא גברין בביתא חד וימותון:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Nónne tenebrosus est dies qui venturus est à facie Domini & non lucidus? & caligo erit in eo, & non splendor? 10 Odio habui, reprobavique festivitates vestras, nec benevolè excipiam oblationem congregationis vestræ. 21 22 Quoniam si offeratis coram me holocaustomata & oblationes vestras, non erunt acceptabiles, & victimæ sanctificatæ vestræ non recipientur à me. 23 Aufer à conspectu meo sonitum carminum tuorum, & modulationem citharæ tuæ non audiam. 24 Et revelabitur tanquam aqua judicium, & justitia sicut torrens inundans. 25 Nunquid hostias sanctificatas & oblationes obtulistis coram me in deserto quadraginta annis domus Israel? 26 Et portâstis tabernaculum Sacerdotum vestrorum, & Chiun imaginem vestram, Sydus idolum vestrum quod fecistis vobis. 27 Et ablegabo vos ultra Damascum, ait Dominus, Deus exercituum nomen ejus.

CAP. VI.

1 VÆ quietè degentibus in Sion, & qui confidunt in arce Samariæ, imponentibus nomen filiorum suorum secundùm nomen filiorum gentium, & omnium quibus innititur domus Israel. 2 Transite in Calne & videte, & contendite indè in Emath magnam, atque descendite in Gath Philistinorum: num meliores sunt regnis his, an latior est terminus eorum termino vestro? 3 Ipsi prorogabant diem malum, vos autem propè facitis in domo congregationis vestræ rapinas. 4 Qui dormiunt in lectis stratis ebore, & submergunt se in lectis suis, & comedunt pinguia ex ovibus & vitulos de medio saginarii. 5 Qui modulos concinunt super os nabli, sicut David præparaverunt sibi instrumenta musica. 6 Qui bibunt in phialis argenteis vinum, & præstantissimis optimisque unguentis sese inungunt: nec tangit eos dolor ex contritione Josephi. 7 Quapropter nunc exulabunt ipsi inter primos captivos, & recedent ab eis gaudia ac stragula subtilia. 8 Juravit Dominus Deus per verbum suum, dixit Dominus Deus *Israel:* Abominor ego domum sanctuarii *domus* Jacob, & palatia ejus execror, quin & tradam civitatem & plenitudinem ejus. 9 Accidétque si remanserint superstites decem viri in domo una, ut mortem oppetant.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

ܗܟܢܐ ܗܘ ܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܚܫܘܟ ܗܘ ܘܠܐ ܢܗܝܪ. ܥܡܛܢ ܗܘ ܘܠܝܬ ܒܗ ܙܗܪܐ. * 20
ܣܢܝܬ ܘܐܣܠܝܬ ܥܐܕܝܟܘܢ. ܘܠܐ ܐܪܝܚ ܕܒܚܝܟܘܢ. * ܐܦܢ ܬܣܩܘܢ ܠܝ ܥܠܘܬܐ * 21 22
ܓܡܝܪܬܐ. ܒܩܘܪܒܢܝܟܘܢ ܠܐ ܐܨܛܒܐ. ܘܫܘܦܪܐ ܕܡܦܛܡܝܟܘܢ ܠܐ ܐܚܙܐ. * ܐܥܒܪ 23
ܡܢܝ ܩܠܐ ܕܙܡܪܟ. ܘܙܡܪܐ ܕܟܢܪܝܟ ܠܐ ܐܫܡܥ. * ܘܢܬܓܠܐ ܕܝܢܐ ܐܝܟ ܡܝܐ. 24
ܘܙܕܝܩܘܬܐ ·: ܐܝܟ ܢܚܠܐ ܥܫܝܢܐ. * ܕܒܚܐ ·: ܘܩܘܪܒܢܐ ܩܪܒܬܘܢ ܠܝ 25
ܐܪܒܥܝܢ ܫܢܝܢ ܒܡܕܒܪܐ. ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ·: * ܐܠܐ ܫܩܠܬܘܢ ܡܫܟܢܗ ܕܡܠܟܘܡ ·: 26
ܘܟܐܘܢ ܨܠܡܟܘܢ. ܟܘܟܒܐ ܕܥܒܕܬܘܢ ܠܟܘܢ ܐܠܗܐ. * ܘܐܫܒܝܟܘܢ ܠܗܠ ܡܢ ܕܪܡܣܘܩ. 27
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ.

Talis eſt dies Domini : obſcura eſt, non lucida ; caliginoſa eſt, nec ullus eſt in ea ſplendor. 20
Odi & execror ſolennitates veſtras, & non odorabor ſacrificia veſtra. 21 Etiamſi obtuleritis 22
mihi holocauſta perfecta, oblationibus veſtris non delectabor, neque pulchritudinem ſaginatorum veſtrorum aſpiciam. Amovebo à 23
me vocem cantûs tui, & concentum lyræ tuæ non ſum ampliùs auditurus. Sed prodet ſe ju- 24
dicium ſicut aquæ, & juſtitia ceu torrens validus. Num ſacrificia & munera obtuliſtis mihi 25
quadraginta annis in deſerto, Iſraelitæ ? Imò portâſtis tabernaculum Malchomi & Cheva- 26
nis idoli veſtri, ſydus quod feciſtis vobis deum. Efficiam ut captivi abducamini ultra Da- 27
maſcum, dicit Dominus, cujus nomen eſt Deus potentiſſimus.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܘ̄ *

CAP. VI.

ܘܝ ܠܒܣܝܪܝܢ ܠܨܗܝܘܢ : ܘܠܬܟܝܠܝܢ ܒܛܘܪܐ ܕܫܡܪܝܢ. ܦܫܛܝܢ ܠܪܝܫܐ ܕܥܡܡܐ ܘܫܒܝܢ * 1
ܠܗܘܢ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. * ܥܒܪܘ ܠܟܠܢܐ ܘܚܙܘ. ܘܙܠܘ ܡܢ ܬܡܢ ܠܚܡܬ ܪܒܐ ܘܚܘܬܘ. 2
ܠܓܬ ܕܦܠܣܛܝܐ ·: ܕܛܒܐ ܗܝ ܡܢ ܟܠܗܝܢ ܡܠܟܘܬܐ ܗܠܝܢ. ܐܢ ܣܓܝ ܬܚܘܡܗܘܢ
ܡܢ ܬܚܘܡܟܘܢ. * ܕܡܣܬܟܝܢ ܠܝܘܡܐ ܒܝܫܐ. ܘܡܩܪܒܝܢ ܠܫܒܬܐ ܕܚܛܘܦܝܐ. * ܘܫܟܒܝܢ 3 4
ܥܠ ܥܪܣܬܐ ܕܫܢܐ ·: ܘܡܬܡܬܚܝܢ ܥܠ ܫܘܝܗܘܢ. ܘܐܟܠܝܢ ܡܦܛܡܐ ܡܢ ܥܢܐ ·:
ܘܥܓܠܐ ܡܢ ܓܘ ܒܩܪܐ. * ܕܢܩܫܝܢ ܥܠ ܦܘܡܐ ܕܟܢܪܐ ·: ܘܐܝܟ ܕܘܝܕ ܚܫܝܒܝܢ ܠܗܘܢ 5
ܡܐܢܝ ܙܡܪܐ. * ܕܫܬܝܢ ܚܡܪܐ ܡܨܠܠܐ ·: ܘܡܫܚܐ ܕܪܝܫܐ ܡܫܝܚܝܢ. ܘܠܐ ܚܫܝܢ ܠܗܘܢ 6
ܥܠ ܬܒܪܗ ܕܝܘܣܦ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܫܬܒܘܢ ܒܪܫ ܫܒܝܬܐ. ܘܢܫܬܩܠ ܙܘܥܐ ܡܢ 7
ܫܠܝܛܢܝܗܘܢ. * ܝܡܐ ܡܪܝܐ ܒܢܦܫܗ ·: ܘܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ ·: 8
ܕܡܣܠܐ ܐܢܐ ܠܫܘܒܗܪܗ ܕܝܥܩܘܒ. ܘܠܦܠܛܝܢ ܕܝܠܗ ܣܢܝܬ. ܘܐܫܠܡ ܠܡܕܝܢܬܐ ܒܡܠܝܗ.
ܘܐܢ ܢܫܬܚܪܘܢ ܥܣܪܐ ܓܒܪܝܢ ܒܒܝܬܐ ܚܕ. ܢܡܘܬܘܢ. * 9

VÆ ſpernentibus Sionem, & fiduciam col- 1
locantibus in monte Samariæ, diſſipantibus principes populorum, & deportantibus ſibi filios Iſraelis. Tranſite ad Cheliam, & vide- 2
te : illinc abite ad Hemath-rabba, & deſcendite ad Gath Paleſthinorum, quæ eſt optima omnium regnorum iſtorum ; num amplior ſit terminus eorum termino veſtro. *Væ iis* qui 3
præſtolantur diem malum, & promovent ad ſabbathum violentiæ, Cubant ſuper lectis 4
eburneis, & luxuriantur ſuper ſtratis ſuis : qui comedunt ſaginatos è gregibus, & vitulos ex armentis : Qui pulſant ad os lyrarum, 5
& ut David æſtimant inſtrumenta muſica : Qui bibunt vinum limpidiſſimum, & unguen- 6
tis præſtantiſſimis unguntur ; neque ſolliciti fūt de fractione Joſephi. Idcircò captivi abdu- 7
centur in fronte captivorū, & auferetur exultatio à principibus eorum. Juravit Dominus 8
dominorum per ſemetipſum, & Dominus Deus potentiſſimus dixit ; Deteſtor faſtum Jacobi, & palatia ejus odi : ideo tradam urbem integram ; Et ſi fortè reliqui manſerint 9
decem homines in eadem domo, morientur :

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* أليس يوم الرب ظلمة وليس نور • وضبابه ليس له ضوء * أبغضت واقصيت أعيادكم * 20 21
ولست أشم ذبيحة في مواسمكم * من أجل أنه إن قدمتم لي محرقاتكم وذبائحكم لست 22
أقبلها • ولست منذ الآن أنظر خلاص ظهوركم * أبعد عني لحن تسابيحك • ومزمار أراغنك 23
لست أسمعه * ويندحرج الحكم مثل الماء • والعدل مثل الوادي الذي لا يسلك * هل 24 25
ذبائح وضحايا قدمتم لي في البرية أربعين سنة يا بيت إسرائيل يقول الرب * واحتملتم خيمة 26
مولوخ • وكوكب إلهكم رافان • مثالاتهم التي صنعتموها لكم * فأسبيكم لأبعد من 27
دمشق يقول الرب الإله الضابط الكل اسمه *

Nónne dies Domini tenebra eſt, non lux ; & caligo ejus non habet lucem ? 20 *Odi* 21
& repuli ſolennitates veſtras, & non odorabor hoſtiam in conventibus veſtris.
Nam licèt obtuleritis mihi holocauſta & 22
ſacrificia veſtra, nequaquam accipiam illa, neque reſpiciam poſthac ſalutem comparitionis veſtræ. Repellam à me 23
concentum hymnorum tuorum, & pſalterium organorum tuorum non audiam.
Et volvetur judicium ſicut aqua, & 24
æquitas quaſi torrens impervius. An ſa- 25
crificia & hoſtias obtuliſtis mihi in deſerto quadraginta annis, O domus Iſraelis, ait Dominus ? Imò tuliſtis taberna- 26
culum Molochi, & ſydus dei veſtri Raphanis, figuras eorum quas feceratis vobis. Ideo captivos amandabo vos lon- 27
giùs quàm Damaſcum, ait Dominus Deus, cujus nomen eſt Omnipotens.

* الفصل السادس * * الإصحاح العاشر *

CAP. VI.

Textus decimus.

* ويل للذين يزدرون بصهيون • 1
ويتوكلون على جبل سامرن اقتطفوا رؤساء الأمم وهم دخلوا * يا بيت إسرائيل اعبروا جميعا 2
وانظروا • وجوزوا من هناك الى حماة العظمى • وانزلوا من هناك الى جاث التي للقبائل الغريبة •
العزيزات من جميع هذه المملكات • أحدودهم هي أكثر من حدودكم * أيها المصلون 3
في يوم السوء • المقتربون واللامسون السبوت الكاذبة * الراقدون على الأسرة العاجية • والهيمون 4
على فرشهم • والآكلون الجداء من القطعان • والعجول الرضع من أدواد البقر * الذين 5
يضربون على أصوات العيدان • واحسبوه مثل قايم وليس مثل هارب * الذين يشربون 6
الخمر المروقة • ويدهنون بالأطياب البكرية • ولم يتألموا البتة بانكسار يوسف * لأجل 7
هذا الآن يصيرون مسبيين من رأس الأقوياء • وينزع صهيل الخيل من أفرام * لأن الرب 8
أقسم بذاته • من أجل أني أنا أرذل كل كبرياء يعقوب • وأبغضت كوره • وأنزع
مدينته مع جميع سكانها * ويكون إن تبقى عشر رجال في بيت واحد فيموتون • 9

V*Æ iis qui neglectâ Sione confidunt* 1
in monte Samariæ ; vindemiârunt principes gentium, & ipſi ingreſſi ſunt. O do- 2
mus Iſraelis, tranſite ſimul & videte, indeque pertranſite ad Hemath magnam, & illinc deſcendite in Gath quæ pertinet ad nationes exteras, omnium iſtorum regnorum fortiſſimas, utrum limites eorum plures ſint limitibus veſtris. O 3
qui preces funditis in die malo, qui accedentes tangitis ſabbatha falſa ; Qui 4
decumbitis in lectis eburneis, & libidine exardeſcitis ſuper cubilibus veſtris, comeditis hædos è gregibus, & lactentes vitulos è præſepibus boum ; Qui pulſa- 5
tis propter ſonos fidium, idque exiſtimatis ut rem ſtabilem, ac non ut fugientem ; Qui bibitis vinum limpidum, 6
& ungitis vos unguentis matutinis, & nullatenus doletis contritionem Joſephi. Propterea nunc captivi fient à prin- 7
cipe fortium, & auferetur hinnitus equorum ab Aphremo. Juravit enim Domi- 8
nus per ſemetipſum, quòd ego abominor totam ſuperbiam Jacobi, & odi regiones ejus, auferamque urbem ipſius cum omnibus civibus ejus. Fietque, ſi remanſe- 9
rint decem viri in domo una, ut moriantur :

de oſſa *educendum ad* ,*eum cremabit* & ,ſuus patruus *eum* tollet Et
10 ונשאו דודו ומסרפו להוציא עצמים מן־
? tecum adhuc Num : domus lateribus in qui ei dicet & ,domo
הבית ואמר לאשר בירכתי הבית העוד עמך
.Domini *nomine in memorandum ad* non quia ,Tace ,dicet Et .Finis : dicet &
ואמר אפס ואמר הס כי לא להזכיר בשם יהוה :
magnam domum faciet percutere & ,*præcipiens* Dominus ecce Quia
11 כי־הנה יהוה מצוה והכה הבית הגדול
petra in current Nunquid .ſciſſionibus *parvam* domum & : rimis
12 רסיסים והבית הקטן בקעים : הירצון בסלע
venenum in convertiſtis quoniam ? bobus *in* arabit Num ? equi
סוסים אם־יחרוש בבקרים כי־הפכתם לראש
: *verbo* non in *Lætantes* ? abſinthium in juſtitiæ fructum & ,judicium
13 משפט ופרי צדקה ללענה : השמחים ללא דבר
? cornua nobis aſſumpſimus noſtra fortitudine *in* Nonne : *dicentes*
האמרים הלוא בחזקנו לקחנו לנו קרנים :
Deus Dominus dixit ,Iſrael domus vos ſuper *ſuſcitans ego* ecce Quia
14 כי הנני מקים עליכם בית ישראל נאם־יהוה אלהי
ad uſque ,Chamath introitu ab vos oppriment & : gentem ,exercituum
הצבאות גוי ולחצו אתכם מלבוא חמת עד־
.deſerti torrentem
נחל הערבה :

CAP. VII. ז

locuſtarum fictor ecce Et *: Dominus* Dominus mihi oſtendit Sic
1 כה הראני אדני יהוה והנה יוצר גבי
poſt ſerotina herba ecce Et *: ſerotinam herbam aſcendendi* principio in
בתחלת עלות הלקש והנה־לקש אחר
, terræ herbam comedere *finierit ſi* ,fuit Et .*regis* tonſiones
2 גזי המלך : והיה אם־כלה לאכול את־עשב הארץ
: Jahacob ſuſcitabit quis : obſecro parce *Domine* Domine : dixi &
ואמר אדני יהוה סלח־נא מי יקום יעקב
, erit Non : hoc ſuper Dominum Pœnituit *? ipſe* parvulus quia
3 כי קטן הוא : נחם יהוה על־זאת לא תהיה
ecce Et *: Dominus* Dominus mihi oſtendit Sic .Dominus dixit
4 אמר יהוה : כה הראני אדני יהוה והנה
voraginem conſumpſit & *: Dominus* Dominus igne in *litem* ad *vocans*
קרא לרב באש אדני יהוה ותאכל את־תהום
ceſſa ,*Domine* Domine : dixi Et .partem conſumpſit & ,magnam
5 רבה ואכלה את־החלק : ואמר אדני יהוה חדל־
Dominum Pœnituit *? ipſe parvus* quia : Jahacob ſuſcitabit Quis .nunc
6 נא מי יקום יעקב כי קטן הוא : נחם יהוה
Sic .*Dominus* Dominus dixit ,erit non iſtud etiam : hoc ſuper
7 על־זאת גם־היא לא תהיה אמר אדני יהוה : כה
, *perpendiculi* murum ſuper *ſtans* Dominus ecce & : mihi oſtendit
הראני והנה אדני נצב על־חומת אנך
Quid : me ad Dominus dixit Et .perpendiculum ejus manu in &
8 ובידו אנך : ויאמר יהוה אלי מה־
; Dominus dixit & : Perpendiculum ,dixi & ? Hamos *videns* tu
אתה ראה עמוס ואמר אנך ויאמר אדני
adjiciam non : Iſrael mei populi *intimo* in perpendiculū *ponens* ego Ecce
הנני שם אנך בקרב עמי ישראל לא־אוסיף
ſanctuaria & ,Iſchac excelſa devaſtabuntur Et .eum *pertranſire* ultrà
9 עוד עבור לו : ונשמו במות ישחק ומקדשי
.gladio in Jarobham domum *ſuper* conſurgam & : deſolabuntur Iſrael
ישראל יחרבו וקמתי על־בית ירבעם בחרב :
regem Jarobham ad el---Beth ſacerdos Amaſiah miſit Et
10 וישלח אמציה כהן בית־אל אל־ירבעם מלך־
: Iſrael domus *interiore* in Hamos te *ſuper* Conjuravit : dicendo ,Iſrael
ישראל לאמר קשר עליך עמוס בקרב בית ישראל
.ejus verba omnia ſuſtinere terra poſſet non
לא־תוכל הארץ להכיל את־כל־דבריו :

Verſio VULG. LAT.

10 Et tollet eum propinquus ſuus, & comburet eum, ut efferat oſſa de domo: & dicet ei, qui in penetralibus domûs eſt; Numquid adhuc eſt penes te? 11 Et reſpondebit; Finis eſt. Et dicet ei; Tace, & non recor12deris nominis Domini. Quia ecce Dominus mandabit, & percutiet domum majorem ruinis, & domum minorem ſciſſionibus. 13 Numquid currere queunt in petris equi, aut arari poteſt in bubalis, quoniam convertiſtis in amaritudinem judicium, & fructum juſtitiæ in abſynthium? 14 Qui lætamini in nihilo: qui dicitis; Numquid non in fortitudine noſtra aſſumpſimus no15bis cornua? Ecce enim ſuſcitabo ſuper vos, domus Iſrael, dicit Dominus Deus exercituum, gentem: & conteret vos ab introitu Emath, uſque ad torrentem deſerti.

CAP. VII.

1 HÆc oſtendit mihi Dominus Deus: & ecce fictor locuſtæ in principio germinantium ſerotini imbris, & ecce ſerotinus poſt 2 tonſionem regis. Et factum eſt: cùm conſummâſſet comedere herbam terræ, dixi; Domine Deus, propitius eſto, obſecro: quis ſuſcitabit Jacob, quia parvulus 3 eſt? Miſertus eſt Dominus ſuper hoc: Non erit, dixit Dominus. 4 Hæc oſtendit mihi Dominus Deus: & ecce vocabat judicium ad ignem Dominus Deus: & devoravit abyſſum multam, & comê5dit ſimul partem, Et dixi; Domine Deus, quieſce, obſecro: quis ſuſcitabit Jacob, quia parvulus 6 eſt? Miſertus eſt Dominus ſuper hoc: Sed & iſtud non erit, dixit 7 Dominus Deus. Hæc oſtendit mihi Dominus: & ecce Dominus ſtans ſuper murum litum, & in manu ejus trulla cæmentarii. Et dixit Dominus ad me; Quid tu vides, Amos? Et dixi; Trullam 8 cæmentarii. Et dixit Dominus; Ecce ego ponam trullam in medio populi mei Iſrael: non adji9ciam ultrà ſuperinducere eum. Et demolientur excelſa idoli, & ſanctificationes Iſrael deſolabuntur: & conſurgam ſuper domum Je10roboam in gladio. Et miſit Amaſias ſacerdos Bethel ad Jeroboam regem Iſrael, dicens; Rebellavit contra te Amos in medio domûs Iſrael: non poterit terra ſuſtinere univerſos ſermones ejus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

10 Καὶ ὑπολειφθήσονται οἱ καταλοιποὶ, καὶ λήψονται οἱ οἰκεῖοι αὐτῶν, (κ) καὶ παραβιῶνται τοῦ ἐξενέγκαι τὰ ὀστᾶ αὐτῶν ἐκ τοῦ οἴκου. καὶ ἐρεῖ τοῖς προεστηκόσι τῆς οἰκίας, Εἰ ἔτι ὑπάρ11χει παρὰ σοί; Καὶ ἐρεῖ, Οὐκ ἔτι. καὶ ἐρεῖ, Σίγα ἕνεκα τοῦ μὴ ὀνομάσαι τὸ ὄνομα κυρί12ου. Διότι ἰδοὺ κύριος ἐντέλλεται, καὶ πατάξει τὸν οἶκον τὸν μέγαν θλάσμασι, καὶ τὸν οἶκον 13 τὸν μικρὸν (λ) ῥάγμασιν. Εἰ διώξονται ἐν πέτραις ἵπποι; εἰ παρασιωπήσονται ἐν θηλείαις; (μ) ὅτι ἐξεστρέψατε εἰς θυμὸν κρί14μα, καὶ καρπὸν δικαιοσύνης εἰς πικρίαν, Οἱ εὐφραινόμενοι ἐπ' οὐδενὶ λόγῳ, οἱ λέγοντες, 15 Οὐκ ἐν τῇ ἰσχύϊ ἡμῶν ἔσχομεν κέρατα; Διότι ἰδοὺ ἐγὼ (·)ἐπεγερῶ ἐφ' ὑμᾶς οἶκος (ν)Ἰσραὴλ ἔθνος, λέγει κύριος τῶν δυνάμεων, καὶ ἐκθλίψουσιν ὑμᾶς τοῦ (ξ) μὴ εἰσελθεῖν εἰς Αἱμὰθ, καὶ (ο) ὡς τοῦ χειμάρρου τῶν δυσμῶν.

Et (k) remanebunt reliqui, & tollent domeſtici eorum, & conabuntur, ut efferant oſſa eorum de domo. Et dicet his qui præſunt domui; Si adhuc eſt apud te? Et dicet; Nequaquam. Et 11 *dicet; Tace: ut non nomines nomen Domini. Propterea ecce* 12 *Dominus (l) mandat, & percutiet domum magnam ruinis, & domum parvam ſciſſionibus. Si* 13 *perſequentur in petris equi? ſi reticebunt ad fœminas? quoniam convertiſtis in furorem judicium, & fructum juſtitiæ in amaritudinem. Qui lætamini ſuper* 14 *nullo (m) verbo, qui dicitis; Nónne in fortitudine noſtra habuimus cornua? Quia ecce ego* 15 *ſuſcitabo ſuper vos, domꝰ Iſrael, gentem, ait Dominus virtutum, & conterent vos, ut non introeatis in Emath, & uſque ad torrentem Occidentiũ.*

MS.A. (κ) καὶ οἱ * παραβιῶνται (λ) ῥήγμασιν. (μ) ὅτι ὑμεῖς (·)ἐπεγείρω (ν) τοῦ Ἰσραὴλ ἔθνος, καὶ ἐκθλίψουσιν (ξ) μὴ εἰς Ἐμὰθ, (ο) ἕως

ΚΕΦ. ζ'.

1 ΟΥτως ἔδειξέ μοι (α)κύριος ὁ θεὸς· καὶ ἰδοὺ ἐπιγονὴ ἀκρίδων ἐρχομένη ἑωθινὴ, καὶ 2 ἰδοὺ βροῦχος εἷς Γὼγ ὁ βασιλεύς. Καὶ ἔσται ἐὰν συντελέσῃ τοῦ καταφαγεῖν τὸν χόρτον τῆς γῆς, καὶ εἶπα, Κύριε κύριε, ἵλεως γενοῦ· τίς ἀναστήσει τὸν Ἰακώβ; ὅτι ὀλιγοστός ἐστι. 3 Μετανόησον κύριε ἐπὶ τούτῳ. Καὶ τοῦτο οὐκ 4 ἔσται, λέγει κύριος. Οὕτως ἔδειξέ μοι (β) κύριος· καὶ ἰδοὺ ἐκάλεσε τὴν δίκην ἐν πυρὶ κύριος, καὶ κατέφαγε τὴν ἄβυσσον τὴν πολλὴν, καὶ κατέφαγε τὴν (γ) μερίδα κυρίου. 5 Καὶ εἶπα, Κύριε κόπασον δὴ, τίς ἀναστήσει 6 τὸν Ἰακώβ; ὅτι ὀλιγοστός ἐστι. Μετανόησον κύριε ἐπὶ τούτῳ. Καὶ τοῦτο οὐ μὴ γένηται, λέ7γει κύριος. Οὕτως ἔδειξέ μοι κύριος· καὶ ἰδοὺ (δ)ἑστηκὼς ἐπὶ τείχους ἀδαμαντίνου, καὶ 8 ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ ἀδάμας. Καὶ εἶπε κύριος πρός με, Τί σὺ ὁρᾷς Ἀμώς; καὶ εἶπα, Ἀδάμαντα. καὶ εἶπε κύριος πρός με, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐντάσσω ἀδάμαντα (ε) ἐν μέσῳ λαοῦ μου Ἰσραὴλ, οὐκ ἔτι μὴ (ζ) προσθῶ τοῦ παρ9ελθεῖν αὐτόν. Καὶ ἀφανισθήσονται βωμοὶ τοῦ γέλωτος, καὶ αἱ τελεταὶ τοῦ Ἰσραὴλ (η) ἐρημωθήσονται, καὶ ἀναστήσομαι ἐπὶ τὸν οἶ10κον Ἱεροβοὰμ ἐν ῥομφαίᾳ. Καὶ ἐξαπέστειλεν Ἀμασίας ὁ ἱερεὺς Βαιθὴλ πρὸς Ἱεροβοὰμ βασιλέα Ἰσραὴλ, λέγων, Συστροφὰς ποιεῖται κατὰ σοῦ Ἀμὼς ἐν μέσῳ οἴκου Ἰσραὴλ, οὐ μὴ (θ) δύνηται ἡ γῆ ὑπενεγκεῖν (ι) πάντας τοὺς λόγους αὐτοῦ.

CAP. VII.

SIc oſtendit mihi Dominus Deus: Et ecce fœtus locuſtarum veniebat matutinus: & ecce bruchus unus Gog rex. Et erit, 2 *ſi compleverit, ut devoret fœnum terræ: & dixi; Domine, (a) Domine, propitius eſto. Quis ſuſcitabit Jacob? quoniam modicus eſt. Pœniteat te, Domine, ſuper hoc. Et hoc non erit, dicit Do-* 3 *minus. Sic oſtendit mihi Do-* 4 *minus. Et ecce vocavit judicium in igne Dominus, & devoravit abyſſum multam, & comêdit partem (b) Domini. Et di-* 5 *xi; Domine, deſine nunc. Quis ſuſcitabit Jacob? quoniam parvulus eſt. Pœniteat te, Domine,* 6 *ſuper hoc. Et hoc non fiet, dicit Dominus. Sic oſtendit mihi Do-* 7 *minus. Et (c) ecce ſtabat ſuper murum (d) adamantinum: & in manu ejus adamas. Et dixit* 8 *Dominus ad me; Quid tu vides, Amos? Et dixi; Adamantem. Et dixit Dominus ad me; Ecce ego impono adamantem in medio populi mei Iſrael: nequaquam ultrà addam, ut pertranſeam eum. Et diſſipabuntur aræ riſûs:* 9 *& ſacrificia Iſrael deſolabuntur: & conſurgam ſuper domum Hieroboam in gladio. Et miſit* 10 *Amaſias ſacerdos Bæthel ad Hieroboam regem Iſrael, dicens; Congregationes facit contra te Amos in medio domûs Iſrael. Non poterit terra ſuſtinere omnes ſermones ejus.*

MS.A. (α) κύριος· καὶ ἰδοὺ (β) κύριος ὁ θεὸς· (γ) μερίδα. Καὶ εἶπα, Κύριε κύριε (δ) ἀνὴρ ἑστηκὼς (ε) εἰς μέσον (ζ) προσθήσω (η) ἐξερημωθήσονται, (θ) γένηται (ι) ἅπαντας

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 ויטלניה קריביה מיקידא לאפקא גרמיא מן ביתא ויימר לדי בשדא דביתא העוד כען
11 עמך ויימר ספו ויימר סלק ארי כד הוו קימין לא הוו מצלן בשמא דיי : ארי הא יי מפקד
12 וימחי מלכו רבא מחא תקיפא ומלכו זעירא מחא חלשא : הירהטון בכיפא סוסון אם
13 יתרדי בתוריא ארי הפכתון לריש חוין בישין דינא ופרי זכותא לגידין : דחדן ללא
14 מדעם דאמרין הלא בתוקפנא קנינא לנא נכסין : ארי הא אנא מקים עליכון בית
ישראל אמר יי אלהים צבאות עם וידחקון יתכון ממעלנא דחמת עד נחלא דמישרא :

ז

1 כדין אחזני יי אלהים והא בריית גובי באול צמוח לקיש והא צמוח דעדק בתר דאתגזיזת
2 שחתא דמלכא : ויהי כד שיצי למיכל ית עסבא דארעא ואמרית קביל בעותי יי אלהים
3 שבוק כען לחובי שארא דיעקב מן יקום ויבעי על חטאיהון ארי מטלטלין אנון : אתיב
4 יי רוגזיה על דא לא תתקים אמר יי : כדנן אחזיני יי אלהים והא עתיד למדן באשתא יי
5 אלהים ואכלת ית תהום רבא ושציאת ית אחסנתא : ואמרית קביל בעותי יי אלהים
שבוק כען לחובי שארא דבית יעקב מן יקום ויבעי על חטאיהון ארי מטלטלין אנון :
6 אתיב יי רוגזיה על דא לא תתקים אמר יי אלהים : כדנן אחזיני והא יי קאם על
7
8 שור דדין וקדמוהי דין : ואמר יי לי מה את חזי עמוס ואמרית דין ואמר יי הא אנא
9 עביד דין בגו עמי ישראל לא אוסיף עוד למשבק להון : ויצדון במת ישחק ומקדשי
10 ישראל יחרבון ואקים על בית ירבעם דקטלין בחרבא : ושלח אמציה רבא
דביתאל לות ירבעם מלכא דישראל למימר מריד עלך עמוס בגו בית ישראל לא
תכול ארעא לסוברא ית כל פתגמוהי :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et tollet eum propinquꝰ ejꝰ ab incendio ad educendũ oſſa de domo, & dicet ei qui in angulo domꝰ verſabitur, Nunquid adhuc eſt penes te aliquis? qui dicet, Perierunt: dicet verò, Remove, quandoquidẽ dum vita fruebantur, in nomine Dñi non preces fundebant. Ecce enim Dñs mandat, & percutiet regnũ magnũ percuſſione forti, regnũ verò minꝰ plaga remiſſiore. Nunquid per petrã currunt equi, an arat quiſpiã bobꝰ? quandoquidẽ convertiſtis in caput ſerpentũ maleficorũ judiciũ, & fructꝰ juſtitiæ in abſinthium. Qui lætantur in re nihili, & dicunt: Nónne fortitudine noſtra comparavimꝰ nobis divitias? Etenim ecce ego ſuſcito adverſũ vos, domꝰ Iſrael, inquit Dñs Deus exercituum, populum qui affliget vos ab introitu Emath uſque ad torrentem planitiei. 10 11 12 13 14

CAP. VII.

HÆc oſtendit mihi Dñs Deꝰ: Ecce creatio locuſtarũ in principio germinationis ſerotinæ, et ecce germinatio minima poſtquã tonſa eſt farrago regis. 1 Et factũ eſt *cùm* conſummaſſet comedere herbã terræ, ut dicerẽ: Suſcipe deprecationẽ meã Dñe Deꝰ, ignoſce obſecro peccatis reliquiarũ Jacob: quis conſurget & veniã exorabit pro peccatis eorũ? quia diſpalati ſunt. 2 Avertit Dñs irã ſuã ob id, non ſtabit, dicit Dñs. 3 Sic oſtendit mihi Dñs Deꝰ: Ecce judicaturꝰ erat igne Dñs Deus, & voraverat abyſſũ magnã, & conſumpſerat hæreditatẽ. 4 Et dixi, Exaudi deprecationẽ meã Dñe Deꝰ, parce quæſo peccatis reliquiarũ domꝰ Jacob: quis conſurget & veniã exorabit pro peccatis eorũ? vagi ſunt enim ipſi. 5 Avertit [*iterum*] Dñs furorẽ ſuũ hac de cauſa: nec etiã iſtud ſtabit, dicit Dñs Deus. 6 Sic oſtendit mihi: Et ecce Dñs ſtabat ſup murũ judicii, & corã illo erat judiciũ. 7 Dixit autẽ mihi *Dñs*: Quid vides Amos? & reſpondi: Judiciũ. 8 Dixit proinde Dñs ad me: Ecce ego judicium exercebo in medio populi mei Iſrael; non ultrà additurꝰ eis dimittere. Devaſtabuntur ergo excelſa Iſaac, & ſacra Iſrael deſolabuntur: ſuſcitabóque contra familiã Jeroboã eos qui trucidant gladio. 9 Et miſit Amaſias princeps Bethel ad Jeroboã regẽ Iſrael cum his verbis: Conjuravit contra te Amos in medio domus Iſrael; haud valebit terra ſuſtinere omnes ſermones ejus. 10

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܘܢܫܩܠܘܢܝܗܝ ܕܕܗ܆ ܐܘ ܡܢ ܕܩܪܝܒ ܠܗ ܕܢܦܩ ܓܪ̈ܡܘܗܝ ܡܢ ܒܝܬܐ. ܘܢܐܡܪ ܠܡܢ ܕܐܝܬ ܒܗ 10
ܒܒܝܬܐ. ܐܝܬ ܐܢܫ ܠܘܬܟ ܒܒܝܬܐ. ܘܢܐܡܪ ܠܗ ܠܝܬ. ܡܛܠ ܕܫܠܡܘ ܟܠܗܘܢ. ܠܐ
ܕܠܐ ܢܥܗܕܘܢ ܗܘܘ ܫܡܗ ܕܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܕܗܐ ܡܪܝܐ ܢܦܩ. ܘܢܡܚܐ ܠܒܝܬܐ ܪܒܐ 11
ܘܢܙܝܥܝܘܗܝ. ܘܠܒܝܬܐ ܙܥܘܪܐ ܘܢܚܪܒܝܘܗܝ. * ܕܠܡܐ ܪܗܛܝܢ ܥܠ ܫܘ̈ܥܐ ܪ̈ܟܫܐ. ܐܘ 12
ܕܢܪܕܘܢ ܒܗܘܢ ܬܘܪ̈ܐ. ܡܛܠ ܕܗܦܟܬܘܢ ܕܝܢܐ ܠܓܕܐ. ܘܦܐܪ̈ܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ ܠܡܪܪܬܐ.
* ܕܚܕܝܢ. ܠܐ ܠܡܕܡ. ܘܐܡܪܝܢ. ܕܠܡܐ: ܠܐ ܗܘܐ ܒܚܝܠܢ ܢܣܒܢ ܠܢ ܩܪܢܬܐ. * ܡܛܠ 13 14
ܕܗܐ ܐܢܐ ܡܩܝܡ ܐܢܐ ܥܠܝܟܘܢ ܥܡܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ.
ܘܢܬܠܒܘܢܟܘܢ. ܡܢ ܡܥܠܢܐ ܕܚܡܬ. ܘܥܕܡܐ ܠܢܚܠܐ ܕܥܪܒܐ. * ܦܣܘ̈ܩܘܗܝ * ܝܕ̄ *

* ܗܟܢܐ ܚܘܝܢܝ ܡܪܝܐ ܡܪ̈ܘܬܐ. ܒܪܝܬܐ ܕܩܡܨܐ ܒܪܝܫ ܡܥܕܢܐ ܕܠܩܫܐ. ܘܗܘܐ ܠܩܫܐ ܒܬܪ 1
ܓܙܐ ܗܘܐ ܕܡܠܟܐ. * ܘܟܕ ܫܠܡ ܠܡܐܟܠܗ ܠܥܣܒܐ ܕܐܪܥܐ. ܐܡܪܬ ܡܪܝܐ ܡܪ̈ܘܬܐ ܚܘܣ. 2
ܡܢܘ ܢܩܝܡܝܘܗܝ ܠܝܥܩܘܒ. ܡܛܠ ܕܙܥܘܪ ܗܘ. * ܐܬܬܘܝ ܡܪܝܐ ܥܠ ܗܕܐ. ܘܠܐ ܬܗܘܐ. 3
* ܗܟܢܐ ܚܘܝܢܝ ܡܪܝܐ ܡܪ̈ܘܬܐ. ܘܗܐ ܩܪܐ ܠܡܕܢ ܒܢܘܪܐ ܡܪܝܐ ܡܪ̈ܘܬܐ. ܘܐܟܠܬ ܠܬܗܘܡܐ 4
ܪܒܐ. ܘܐܟܠܬ ܠܦܠܓܗ ܕܐܪܥܐ. * ܘܐܡܪܬ ܡܪܝܐ ܡܪ̈ܘܬܐ ܚܘܣ. ܡܢܘ ܢܩܝܡܝܘܗܝ ܠܝܥܩܘܒ. 5
ܡܛܠ ܕܙܥܘܪ ܗܘ. * ܐܬܬܘܝ ܡܪܝܐ ܥܠ ܗܕܐ. ܐܦ ܗܝ ܠܐ ܬܗܘܐ. * ܗܟܢܐ ܚܘܝܢܝ. ܘܗܐ 6
ܡܪܝܐ ܩܐܡ ܥܠ ܫܘܪܐ ܕܐܕܡܘܣ. ܘܒܐܝܕܗ ܐܕܡܘܣ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܡܢܐ ܚܙܐ ܐܢܬ 7 8
ܥܡܘܣ. ܘܐܡܪܬ. ܐܕܡܘܣ. ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܣܐܡ ܐܢܐ ܐܕܡܘܣ ܒܓܘ ܥܡܝ
ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܠܐ ܐܘܣܦ ܬܘܒ ܕܐܥܒܪ ܥܠܘܗܝ. * ܘܢܬܚܪܒܘܢ ܦܬܟܪ̈ܐ ܕܓܚܘܟܐ. ܘܡܩܕ̈ܫܐ 9
ܕܐܝܣܪܝܠ ܢܚܪܒܘܢ. ܘܐܩܘܡ ܥܠ ܒܝܬܗ ܕܝܘܪܒܥܡ ܒܚܪܒܐ. * ܘܫܕܪ ܐܡܘܨܝܐ ܟܘܡܪܐ 10
ܕܒܝܬ ܐܝܠ. ܠܘܬ ܝܘܪܒܥܡ ܡܠܟܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܡܪܕ ܥܠܝܟ ܥܡܘܣ
ܒܓܘ ܒܝܬܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܠܐ ܡܫܟܚܐ ܐܪܥܐ ܠܡܣܝܒܪܘ ܡܠܘ̈ܗܝ.

* Et aſportabit eum amicus ejus, aut is qui fuerit 10
cognatus ejus, ut oſſa domo efferat: tum dicet
ei qui eſt in eadem domo, Superéſtne aliquis
tecum in domo? & reſpondebit ei, Nemo: nam
penitùs conſumpti ſunt, eò quòd nullam
haberent memoriam nominis Dñi. Ecce 11
enim Dñs egreſſurus eſt, & percuſſurus domũ
altam, ac tremefacturus eam; & domum parvam,
ac deſolaturus eam. Num currunt ſuper 12
petras equi? an iis aratrum ducunt? quia judicium
in abſynthium, & fruct⁹ juſtitiæ in fel
mutâſtis: Qui gaudetis de re nihili; & dicitis, 13
Annon virtute noſtrâ cepimus nobis civitatem?
Quoniam ecce ego ſuſcitâturus ſum 14
contra vos, Iſraelitæ, pópulum, dicit Dñs Deus
potentiſſimus, qui propulſabunt vos ab ingreſſu
Hamathæ uſque ad torrentem Arabæ.

CAP. VII.

SIc oſtendit mihi Dñs dominorum creaturâ 1
locuſtæ in principio germinis ſerotini: erat
autem ſerotinum *germen* poſt detonſioné regiam:)
Et cùm abſolviſſet comedere herbam 2
terræ, dixi; Dñe dominorum, parce nobis:
ecquis erigeret Jacobum? parvus enim eſt.
Averte hoc Dñe, & ne contingat. Sic oſtendit 3
mihi Dñs dominorum: ecce Dominus dominorum 4
proclamavit ad judicandum igne, qui
conſumpſit abyſſum magnam, conſumpſerat
enim mediam partem. Sed dixi; Domine dominorum, 5
parce nobis: quis erigeret Jacobum?
ſiquidem parvus eſt. Averte hoc Domine, 6
ac nedum id fiat. Sic oſtendit mihi: 7
ecce Dominus ſtabat ſuper murum adamantinum,
ſuâq; manu *tenebat* adamantem. Dixítq; 8
mihi Dominus, Quid vides Amos? Reſpondi,
Adamantem. Tum dixit mihi Dominus, Ecce
poſiturus ſum adamantem in medio populi
mei Iſraelis, & non pergam ultrà præterire
eos. Deſtruentur enim fana ridicula, & ſanctuaria 9
Iſraelis deſolabuntur, & domum Jorobaami
gladio invadam. Poſt hæc miſit Amoſia 10
ſacrificulus Bethelis ad Jorobaamum
regem Iſraelis, & dixit illi; Rebellavit in te
Amos in medio domûs Iſraelis, nec poteſt
terra tolerare verba ejus.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ويكلف البقية فياخذهم خواصهم * ويعمدون ليخرجوا عظامهم من البيت * ويقول للقيام 10
في البيت * أعندك أحد أيضا موجود * فيقول لا * فيقول من أجل أنهم لم يسموا باسم الرب *
* من أجل أنه ها الرب يأمر ويضرب البيت العظيم بسحقات * والبيت الصغير بتشقيقات * 11
* أتركض الخيل في الصخور * أيسكنون في الإناث * لأنكم أنتم رديتم الحكم للغضب * 12
وعن العدل للمرارة * أيها الفرحون بالكلمة الواحدة * القائلون أليس بقوتنا نمسك القرون * 13
* من أجل أني ها أنا أثير عليكم يا بيت إسرائيل أمة * فتضايقكم ألا تدخلوا إلى حماة 14
حتى وادي عاربا *

* الفصل السابع *

* هكذا أظهر لي الرب * وها بخلقة الجراد الآتي سحرا * وها الجندبة عوج الملك * ويكون 1 2
إذ أكمل ليأكل عشب الأرض * فقلت يا رب يا رب كن راحما * من يقيم يعقوب لأنه
صغير * تب يا رب على هذا * وهذا لا يكون يقول الرب * هكذا أراني الرب * وهوذا دعا الرب 3 4
قضاء بنار * فأكلت العمق الكثير * وأكلت المارس * فقلت يا رب يا رب أكفف * من يقيم 5
يعقوب لأنه قليل * تب يا رب على هذا * وهذا لا يكون يقول الرب * هكذا أراني الرب * وهوذا 6 7
رجل واقف على سور من ماس وبيده ماس * وقال لي الرب * ما ترى يا عاموص * فقلت ماسا * 8
فقال لي الرب * ها أنا أضع ماسا في وسط شعبي إسرائيل * ولا أعود أزيله أيضا * وتفنى هياكل 9
الضحك * وموائد إسرائيل * ويخربون * وأقوم على بيت يوربعام بالسيف * وأرسل أموصيا 10
كاهن بيت إيل إلى يوربعام ملك إسرائيل قائلا * صنع معك عاموص فتنا في وسط بيت
إسرائيل * وليس تستطيع الأرض تحمل جميع أقواله *

* *Qui reliqui manſerint, ad eos pertinentes,* 10
aſſument illos, & conabuntur
educere oſſa eorum è domo: & dicet
aſtantibus in domo, An extat aliquis apud
te ſuperſtes? dicétque, Nequaquam:
& ſubdet, Quia non vocaverunt nomen
Domini. Nam ecce Dominus præcipiet, 11
percutiétque contritionibus domum magnam,
& domum parvam ſciſſuris. An 12
currerent equi in petris? an quieſcerent
in fœminis? vos enim vertiſtis judicium
in furorem, & fructum juſtitiæ in amaritudinem,
O qui in unico verbo lætamini, 13
qui dicitis; Nónne viribus noſtris
tenemus cornua? Nam en ego excitabo 14
in vos O domus Iſraelis, gentem quæ
obſidebit vos quominus ingrediamini Hemath
uſque ad vallem Arabæ.

CAP. VII.

ITa oſtendit mihi Dominus: & ecce 1
creatura locuſtarum diluculò ventura, &
ecce bruchus Gog rex, Qui manſurus 2
eſt quoad abſolvat comedere herbam terræ.
Et dixi, O Domine, O Domine eſto miſericors:
quis erigeret Jacobum, quandoquidem
parvus eſt? Pœniteat te O 3
Domine hujus rei: & hoc non erit, dicit
Dominus. Ita oſtendit mihi Dominus: 4
& ecce proclamavit Dominus judicium
igne exercendum, qui cùm devorâſſet
abyſſum multam, devorâſſétque agrum,
Dixi, O Domine, O Domine deſiſte: quis 5
erigeret Jacobum, quandoquidem paucus
eſt? Pœniteat te O Domine hujus rei: 6
& hoc non erit, dicit Dominus. Ita oſtendit 7
mihi Dominus: & ecce vir ſtans
ſuper murum adamantinum, & in manu
ejus adamas. Et dixit mihi Dominus, 8
Quid vides O Amos? cui dixi, Adamantem.
Dixitque mihi Dominus, En ego
ponam adamantem in medio populi mei
Iſraelis, nec amoturus ſum eum ampliùs.
Et peribunt templa riſûs, & menſæ Iſraelis, 9
& deſtruentur: & inſurgam in domum
Jeroboami gladio. Tum miſit 10
Amoſia ſacerdos Bethel ad Jeroboamum
regem Iſraelis, dicens; Excitavit contra
te Amos ſeditionem in medio domûs
Iſraelis, neque poteſt terra ferre omnes
ſermones ejus.

Israel & : Jarobham morietur gladio *In* : Hamos dixit sic Quia
11 כי־כה אמר עמוס בחרב ימות ירבעם וישראל
: Hamos ad Amasiah dixit Et .sua *humo desuper* migrabit migrando
12 גלה יגלה מעל אדמתו : ויאמר אמציה אל־עמוס
, panem ibi comede & :Jehudah terram ad tibi fuge ,vade ,Videns
חזה לך ברח־לך אל־ארץ יהודה ואכל־שם לחם
quia :*prophetandū ad* ultrà adjicies non el-Beth Et .prophetabis ibi &
13 ושם תנבא : ובית־אל לא־תוסיף עוד להנבא כי
Responditque .*ipsum* regni domus & ,*ipsum* regis sanctuarium
14 מקדש־מלך הוא ובית ממלכה הוא : ויען
filius neque ,*ego* propheta Non : Amasiah ad dixit & , Hamos
עמוס ויאמר אל־אמציה לא־נביא אנכי ולא בן־
.sycomoros *disquirens* & ,*ego* armentarius sed : *ego* prophetæ
נביא אנכי כי־בוקר אנכי ובולס שקמים :
, Vade ,Dominus me ad dixit & : *pecus* post *de* Dominus me tulit Et
15 ויקחני יהוה מאחרי הצאן ויאמר אלי יהוה לך
:Domini verbum audi nunc Et .Israel meum populum ad propheta
16 הנבא אל־עמי ישראל : ועתה שמע דבר־יהוה
domum super stillabis non & , Israel super prophetabis non :*dicens* Tu
אתה אמר לא תנבא על־ישראל ולא תטיף על־בית
,fornicabitur civitate in tua Uxor:Dominus dixit sic Propterea .Ischac
17 ישחק : לכן כה־אמר יהוה אשתך בעיר תזנה
:dividetur funiculo in tua humus &,cadent gladio *in* tuæ filiæ & tui filii &
ובניך ובנתיך בחרב יפלו ואדמתך בחבל תחלק
migrabit migrando Israel & ,morieris pollutam *humum* super tu &
ואתה על־אדמה טמאה תמות וישראל גלה יגלה
.sua *humo desuper*
מעל אדמתו :

CAP. VIII. ח

: dixit Et .*æstatis* canistrum ecce Et .*Dominus* Dominus mihi ostendit Sic
1 כה הראני אדני יהוה והנה כלוב קיץ : ויאמר
2 dixit Et .*æstatis* Canistrum : dixi & ? Hamos *videns* tu Quid
מה־אתה ראה עמוס ואמר כלוב קיץ ויאמר
non : Israel meum populum *ad* finis Venit : me ad Dominus
יהוה אלי בא הקץ אל־עמי ישראל לא־
die in *palatii* cantica *ululabunt* Et .eum *transire* ultrà adjiciam
3 אוסיף עוד עבור לו : והילילו שירות היכל ביום
loco *omni* in cadaver multiplex Deus : Dominus dixit , illa
ההוא נאם אדני יהוה רב הפגר בכל־מקום
abolendum ad & ,egenum absorbentes hoc Audite .*tace* projecit
4 השליך הס : שמעו־זאת השאפים אביון ולשבית
venundabimus & , mensis transibit Quando : Dicendo .terræ *mansuetos*
5 ענוי־ארץ : לאמר מתי יעבר החדש ונשבירה
, *Ephah imminuendum ad* , frumentum aperiemus & ,*sabbatum &* ; *venale*
שבר והשבת ונפתחה־בר להקטין איפה
emendum Ad .doli bilances pervertendum ad & ,Sechel *magnificandum ad &*
6 ולהגדיל שקל ולעות מאזני מרמה : לקנות
frumenti *labile* & , calceamenta propter *egenum* & ,egenos argento *in*
בכסף דלים ואביון בעבור נעלים ומפל בר
fuero oblitus Si , Jahacob *celsitudine in* Dominus Juravit .vendemus
7 נשביר : נשבע יהוה בגאון יעקב אם־אשכח
, terra se movebit non hoc super Nunquid .eorum opera omnia *æternū in*
8 לנצח כל־מעשיהם : העל זאת לא־תרגז הארץ
, ejicietur & ,*ipsa tota amnis ut* ascendet Et ? ea in *habitans* omnis lugebit &
ואבל כל־יושב בה ועלתה כאר כלה ונגרשה
, illa die in erit Et .Ægypti fluvius veluti absorbebitur &
9 ונשקה כיאור מצרים : והיה ביום ההוא
, meridie in Solem faciam *ingredi* & , Deus Dominus dixit
נאם אדני יהוה והבאתי השמש בצהרים
.luminis die in terram faciam tenebrescere &
והחשכתי לארץ ביום אור :

Versio VULG. LAT.

11 Hæc enim dicit Amos ; In gladio
morietur Jeroboam, & Israel ca-
12 ptivus migrabit de terra sua. Et
dixit Amasias ad Amos ; Qui vi-
des, gradere, fuge in terram Juda:
& comede ibi panem, & prophe-
13 tabis ibi. Et in Bethel non ad-
jicies ultrà ut prophetes : quia
sanctificatio regis est, & domus
14 regni est. Respondítque Amos,
& dixit ad Amasiam ; Non sum
propheta, & non sum filius pro-
phetæ : sed armentarius ego sum
15 vellicans sycomoros. Et tulit me
Dominus cùm sequerer gregem :
& dixit Dominus ad me ; Vade,
propheta ad populum meum Is-
16 rael. Et nunc audi verbum Do-
mini : Tu dicis ; Non propheta-
bis super Israel, & non stillabis
17 super domum idoli. Propter hæc
dicit Dominus ; Uxor tua in civi-
tate fornicabitur : & filii tui & fi-
liæ tuæ in gladio cadent, & hu-
mus tua funiculo metietur : & tu
in terra polluta morieris, & Israel
captivus migrabit de terra sua.

CAP. VIII.

1 HÆc ostendit mihi Dominus
Deus: & ecce uncinus pomorum.
2 Et dixit ; Quid tu vides, Amos ?
Et dixi ; Uncinum pomorum. Et
dixit Dominus ad me ; Venit fi-
nis super populum meum Israel :
non adjiciam ultrà ut pertranseā
3 eum. Et stridebunt cardines tem-
pli in die illa, dicit Dominus
Deus : multi morientur : in o-
mni loco projicietur silentium.
4 Audite hoc qui conteritis paupe-
rem, & deficere facitis egenos
5 terræ, Dicentes ; Quando transi-
bit mensis, & venumdabimus mer-
ces ; & sabbatum, & aperiemus
frumentum: ut imminuamus men-
suram, & augeamus siclum, &
6 supponamus stateras dolosas, Ut
possideamus in argento egenos, et
pauperes pro calceamentis, &
quisquilias frumenti vendamus ?
7 Juravit Dominus in superbiam
Jacob ; Si oblitus fuero usque ad
8 finem omnia opera eorum. Num-
quid super isto non commovebi-
tur terra, & lugebit omnis habi-
tator ejus : & ascendet quasi flu-
vius universus, & ejicietur, &
9 defluet quasi rivus Ægypti ? Et
erit in die illa, dicit Dominus Deus :
occidet Sol in meridie, & tene-
brescere faciam terram in die lu-
minis :

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

11 Διότι τάδε λέγει Ἀμώς, Ἐν ῥομφαίᾳ τε-
λευτήσει Ἱεροβοάμ, ὁ δὲ Ἰσραὴλ αἰχμάλω-
12 τος ἀχθήσεται ἀπὸ τῆς γῆς αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν
Ἀμασίας πρὸς Ἀμώς, Ὁ ὁρῶν βάδιζε,
ἐκχώρησον (κ) σὺ εἰς γῆν Ἰούδα, καὶ ἐκεῖ
13 καταβίου, καὶ ἐκεῖ προφητεύσεις, (λ) Εἰς δὲ
Βαιθὴλ οὐκ ἔτι προσθήσεις τοῦ προφητεῦσαι,
ὅτι ἁγίασμα βασιλέως ἐστί, καὶ οἶκος βα-
14 σιλείας ἐστί. Καὶ ἀπεκρίθη Ἀμώς, καὶ εἶπε
πρὸς Ἀμασίαν, Οὐκ ἤμην προφήτης ἐ-
γώ, οὐδὲ υἱὸς προφήτου, ἀλλ' ἢ αἰπόλος ἤ-
15 μην, (μ) καὶ κνίζων συκάμινα. Καὶ ἀνέλα-
βέ με κύριος ἐκ τῶν προβάτων, καὶ εἶπε κύ-
ριος πρὸς μέ, Βάδιζε, (ν) καὶ προφήτευ-
16 σον ἐπὶ τὸν λαόν μου Ἰσραήλ. Καὶ νῦν ἄκουε
λόγον κυρίου· σὺ λέγεις, Μὴ προφήτευε ἐ-
πὶ τὸν Ἰσραήλ, καὶ οὐ μὴ ὀχλαγωγήσῃς ἐπὶ
17 τὸν οἶκον Ἰακώβ. Διὰ τοῦτο τάδε λέγει κύ-
ριος, Ἡ γυνή σου ἐν τῇ πόλει πορνεύσει,
καὶ οἱ υἱοί σου καὶ αἱ θυγατέρες σου ἐν ῥομ-
φαίᾳ πεσοῦνται, καὶ ἡ γῆ σου ἐν σχοινίῳ κατα-
μετρηθήσεται, καὶ σὺ ἐν γῇ ἀκαθάρτῳ τελευ-
τήσεις, ὁ δὲ Ἰσραὴλ αἰχμάλωτος ἀχθή-
σεται ἀπὸ τῆς γῆς αὐτοῦ. οὕτως ἔδειξέ (ξ) μοι
κύριος κύριος.

Hæc enim dicit Amos; In gladio 11
morietur Hieroboam: Israel autem
captivus ducetur de terra sua. Et 12
dixit Amasias ad Amos ; Qui
vides, egredere : recede tu in ter-
ram Juda. Et ibi vive : & ibi
prophetabis : In Bethel autem 13
non adjicies ultrà prophetare :
quia sanctificatio regis est,
& domus regni est. Et 14
respondit Amos, & dixit ad A-
masiam; Non eram propheta ego,
neque filius prophetæ: sed (e) pa-
stor eram, & (f) vellicans Syca-
mina. Et tulit me Dominus ex o- 15
vibus: et dixit Dominus ad me;
Vade, & prophetiza super popu-
lum meum Israel. Et nunc audi 16
sermonem Domini: Tu dicis; Noli
prophetare super Israel, et ne con-
greges turbas contra domum Ja-
cob. Propterea hæc dicit Dominus; 17
Uxor tua in civitate (g) fornica-
bitur: & filii tui, & filiæ tuæ in
gladio cadent: & terra tua in fu-
niculo dimensurabitur: & tu in
terra immunda morieris : Israel
autem captivus ducetur de ter-
ra sua. Sic ostendit mihi Domi-
nus.

MS. A. (κ) εἰς γῆν (λ) Εἰς Βαιθὴλ οὐκ ἔτι μὴ προσθῇς (μ) κνίζων (ν) προφήτευσον ἐπὶ τὸν λαόν μου τὸν Ἰσραήλ. (ξ) μοι κύριος.

ΚΕΦ. η'.

1 Καὶ ἰδοὺ ἄγγος ἰξευτοῦ. Καὶ εἶπε, Τί
2 σὺ (α) βλέπεις Ἀμώς; καὶ εἶπα, Ἄγγος
ἰξευτοῦ. καὶ εἶπε κύριος πρὸς μέ, Ἥκει τὸ
πέρας ἐπὶ τὸν λαόν μου Ἰσραήλ, (β) οὐ προσ-
3 θήσω ἔτι τοῦ παρελθεῖν αὐτόν. Καὶ ὀλολύ-
ξει τὰ φατνώματα τοῦ ναοῦ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐ-
κείνῃ, λέγει (γ) κύριος κύριος. πολὺς ὁ
πεπτωκὼς ἐν παντὶ τόπῳ, (δ) ἐπιρρίψω
4 σιωπήν. Ἀκούσατε δὴ ταῦτα οἱ ἐκτρίβον-
τες εἰς τὸ πρωῒ πένητα, (ε) καὶ καταδυνα-
5 στεύοντες πτωχοὺς ἀπὸ τῆς γῆς, (ζ) Λέγοντες,
Πότε διελεύσεται ὁ μήν, καὶ ἐμπολήσομεν, καὶ
τὰ σάββατα, καὶ ἀνοίξομεν (η) θησαυρὸν
τοῦ ποιῆσαι (θ) μέτρον μικρόν, καὶ (ι) τοῦ με-
γαλῦναι στάθμιον, καὶ ποιῆσαι ζυγὸν ἄδι-
6 κον, Τοῦ κτᾶσθαι ἐν ἀργυρίῳ (κ) καὶ πτωχούς,
καὶ πένητα ἀντὶ ὑποδημάτων, καὶ ἀπὸ παν-
7 τὸς γεννήματος ἐμπορευσόμεθα. Ὀμνύει
κύριος (λ) κατὰ τῆς ὑπερηφανίας Ἰακώβ, Εἰ ἐ-
πιλησθήσεται εἰς νῖκος πάντα τὰ ἔργα ὑ-
8 μῶν. Καὶ ἐπὶ τούτοις οὐ ταραχθήσεται ἡ γῆ,
καὶ πενθήσει πᾶς ὁ κατοικῶν ἐν αὐτῇ; καὶ
ἀναβήσεται ὡς ποταμὸς συντέλεια, καὶ
9 καταβήσεται ὡς ποταμὸς Αἰγύπτου. Καὶ
ἔσται ἐν (μ) τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγει κύριος
κύριος, δύσεται ὁ ἥλιος μεσημβρίας, καὶ
συσκοτάσει ἐπὶ τῆς γῆς ἐν ἡμέρᾳ τὸ φῶς,

CAP. VIII.

ET ecce vas aucupis. Et dixit; 1
Quid tu vides, Amos? Et dixi; 2
Vas aucupis. Et dixit Dominus
ad me; Venit finis super populum
meum Israel : non addam ultrà,
ut pertranseam eum: Et ululabunt 3
laquearia templi in die illa, dicit
Dominus Dominus Multi caden-
tes erunt, in omni loco, injiciam si-
lentium. Audite nunc hæc, qui 4
conteritis manè pauperem, & op-
primitis egenos de terra, Dicentes: 5
Quando pertransibit mensis, &
negotiabimur? & sabbata, & a-
periemus thesaurum, ut faciamus
mensuram parvam, & pondus
magnum, & faciamus stateram
iniquam, ut possideamus in pecu- 6
nia, & (a) pauperes, & egenum
pro calceamentis: & de omni (b)
genimine negotiabimur ? Jurat 7
Dominus contra superbiam Ja-
cob; Si obliviscetur in (c) finem o-
mnia opera vestra. Et super his 8
non conturbabitur terra? & lu-
gebit omnis habitator ejus: & a-
scendet quasi flumen (d) consum-
matio: et descendet quasi fluvius
Ægypti. Et erit in die illa, dicit 9
Dominus Dominus, occidet Sol
meridie, & contenebrescet super
terram (c) in die lux.

MS. A. (α) ὁρᾷς (β) οὐκ ἔτι μὴ προσθῶ τοῦ (γ) κύριος. πολὺς (δ) ἐπιρρίψω (ε) καταδυναστεύοντες (ζ) Οἱ λέγοντες, (η) θησαυροὺς (θ) μικρὸν μέτρον, (ι) μεγαλῦναι στάθμια, (κ) πτωχοὺς, καὶ ταπεινὸν ἀντὶ (λ) κατ' ὑπερηφανείας Ἰακώβ, Εἰ ἐπιλήσεται (μ) ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ, λέγει κύριος ὁ θεός, καὶ δύσεται

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ארי כדנן אמר עמוס בחרבא יתקטל ירבעם וישראל מגלא יגלון מעל ארעהון : 11
ואמר אמציה לעמוס נביא אתא אזל לך לארעא דבית יהודה ואכול תמן לחמא 12
ותמן תתנבי : וביתאל לא תוסיף עוד לאתנבאה ארי מקדש מלכא הוא ובית 13
מלכותא הוא : ואתיב עמוס ואמר לאמציה לא נביא אנא ולא בר נביא אנא ארי 14
מרי גיתי אנא ושקמין אית לי בשפלתא מן קדם חובי עמא ישראל אנא מסגיף נפשי
ודברני יי מן דירא מבתר ענא ואמר לי יי אזל אתנבי על עמי ישראל : וכען קביל 15 16
פתגמא דיי את אמרת לא תתנבי בשמא דיי על ישראל ולא תליף על בית ישחק :
בכן כדנן אמר יי אתתך בקרתא תטעי ובנך ובנתך בחרבא יתקטלון וארעך בעדבא 17
תתפלג ואת על ארעא מסאבא תמות וישראל מגלא יגלון מעל ארעהון :

ח

1 כדין אחזיני יי אלהים והא מן מלי סיופי קיטא : ואמר מה את חזי עמוס ואמרית מן
2 מלי סיופי קיטא ואמר יי לי מטת פורענות קצא למיתי על עמי ישראל לא אוסיף עוד
3 למשבק להון : ויילילון חלף זמרא בבתיהון בעדנא ההיא אמר יי אלהים סגי פגרי
4 קטילין בכל אתר יימר רמי וסלק : שמעו דא דשיטין כעפרא דארעא ריש מסכניא
5 ומדמן לבטלא מלי חשיכיא מן ארעא : דאמרין אימתי ימטי ירח עבורא ונזבן עבורא
ושמטתא ונפתח אוצרין לאזערא מכלתא ולאוספא על סלעא ולשקרא במוזנין
6 דנכיל : למקני בכספא מסכניא וחשיכיא בדיל דיחסנון ומהממת עבורא נזבן :
7 8 קים יי דיהב רבותא ליעקב אם יתנשון לעלמין כל עובדיהון : העל דא לא תחרוב
ארעא ויצדי כל דיתיב בה ויסק עלה מלך במשריתיה דסגי כמי נהרא ויחפנה
9 כולה ויתרכון יתבהא ותשתקע כנהר מצרים : ויהי בעדנא ההיא אמר יי אלהים
ואכניש שמשא כד בטהרא ואקביל לארעא ביום נהור :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Sic enim dixit Amos : Gladio perimetur Jeroboam, & Israel certissimè in 11
exilium agetur de terra sua. Dixit verò Amasias ad Amos prophetam : Veni 12
& perge in terram domus Juda, comedéque ibi panem ac vaticinare. At in 13
Bethel ne adjicias ultrà prophetare, quoniam sanctuarium regis est, ac domus
regia. Et respondit Amos, & dixit ad Amasiam : Nec propheta nec pro- 14
phetæ filius, sed pecuarius sum ego, suntq; mihi sycomori in campestri : atq;
propter peccata populi mei Israel ego animam meam affligo. Assumpsit me 15
autem Dñs de ovili sequentem oves, & ad me dixit Dñs : Vade prophetiza
de populo meo Israel. Idcircò nunc audi verbum Dñi, tu qui dicis : Non 16
prophetabis *in nomine Domini* contra Israel, neque in domo Isaac docebis.
Proinde sic dicit Dñs : Uxor tua in civitate fornicabitur, & filii tui filiæque 17
tuæ gladio occidentur , & terra tua sorte dividetur : tu verò in terra im-
munda morieris, etiámque Israel de terra sua captivus migrabit.

CAP. VIII.

TAle quid ostendit mihi Dominus Deus, & ecce vas plenum extremis æsta- 1
tis frugibus. Et ait : Quid tu vides Amos ? & dixi : Vas plenum novissi- 2
mis æstatis frugibus. Tunc dixit Dñs ad me : Ultio finalis advenit ut ado-
riatur populum meum Israel : non adjiciam ultrà illis dimittere. Et ulu- 3
labunt loco cantici in domibus suis tunc temporis, ait Dñs Deus : multa
erunt occisorum cadavera ubivis loci, adeò ut dicatur, Projice & tolle.
Audite istud qui perinde flocci penditis capita pauperum ac pulverem ter- 4
ræ, & putatis posse nulla reddere pauperum eloquia in terra. Qui dicitis, 5
Quando continget mensis frumenti, ut frumentum vendamus ? & annus
remissionis, ut aperiamus horrea diminuendæ mensuræ, atque augendi sicli,
staterisque dolosis decipiendi causa ? Ut coemant argento egenos & pau- 6
peres quò bona possideant, & quisquilias frumenti venundemus. Juravit 7
Dñs qui magnitudinem dedit Jacobo, Si oblivioni tradentur in secula
omnia opera eorum. Nunquid propter istud non desolabitur terra, & con- 8
sumetur omnis qui habitat in ea ? & ascendet adversus eam rex cum exercitu
suo ad instar aquarum fluminis copioso, qui operiet eam totam, & expellet
habitatores ejus, & demerget velut fluvius Ægypti. Erit autem in tempore 9
illo, dicit Dñs Deus, operiam Solem quasi in meridie, & tenebras offundam
terræ in die luminis.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܗܟܢܐ ܓܝܪ ܐܡܪ ܥܡܘܣ. ܕܒܚܪܒܐ ܢܡܘܬ ܝܘܪܒܥܡ. ܘܐܝܣܪܝܠ ܫܒܝܐ ܢܫܬܒܐ 11
ܡܢ ܐܪܥܗ. * ܘܐܡܪ ܐܡܘܨܝܐ ܠܥܡܘܣ ܚܙܝܐ. ܥܪܘܩ ܙܠ ܠܟ. ܠܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܬܡܢ ܐܟܘܠ 12
ܠܚܡܐ. ܘܬܡܢ ܐܬܢܒܐ. * ܘܒܒܝܬ ܐܝܠ ܠܐ ܬܘܣܦ ܬܘܒ ܠܡܬܢܒܝܘ. ܡܛܠ ܕܡܩܕܫܐ ܗܘ 13
ܕܡܠܟܐ. ܘܒܝܬ ܡܠܟܘܬܐ. * ܘܥܢܐ ܥܡܘܣ. ܘܐܡܪ ܠܐܡܘܨܝܐ. ܐܢܐ ܠܐ ܗܘܝܬ ܢܒܝܐ. ܐܦܠܐ ܒܪ 14
ܢܒܝ̈ܐ. ܐܠܐ ܪܥܝܐ ܐܢܐ ܘܡܠܩܛ ܦܓ̈ܐ. * ܘܕܒܪܢܝ ܡܪܝܐ ܡܢ ܒܬܪ ܥܢܐ. ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. 15
ܙܠ ܐܬܢܒܐ ܥܠ ܥܡܝ ܐܝܣܪܝܠ. * ܘܗܫܐ ܫܡܥ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܐܢܬ ܐܡܪ ܐܢܬ. ܠܐ ܬܬܢܒܐ 16
ܥܠ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܠܐ ܬܠܦ ܠܒܝܬܗ ܕܐܝܣܚܩ. * ܡܛܠ ܗܢܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܢܬܬܟ 17
ܒܡܕܝܢܬܐ ܬܙܢܐ. ܘܒܢܝܟ ܘܒܢܬܟ ܒܚܪܒܐ ܢܦܠܘܢ. ܘܐܪܥܟ ܒܚܒܠܐ ܬܬܦܠܓ. ܘܐܢܬ
ܒܐܪܥܐ ܛܡܐܬܐ ܬܡܘܬ. ܘܐܝܣܪܝܠ ܫܒܝܐ ܢܫܬܒܐ ܡܢ ܐܪܥܗ. * [illegible] * ܬܢ *

* ܘܗܟܢܐ ܚܘܝܢܝ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ. ܘܗܐ ܣܝܦܐ ܕܩܨܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܡܢܐ ܚܙܝܬ ܥܡܘܣ. 1 2
ܘܐܡܪܬ. ܣܝܦܐ ܕܩܨܐ. ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܡܛܝ ܩܨܐ ܥܠ ܥܡܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܠܐ ܐܘܣܦ ܬܘܒ
ܠܡܥܒܪܘܬܗ ܡܢܗܘܢ. * ܘܢܦܟܘܢ ܠܬܫܒ̈ܚܬܗ ܕܗܝܟܠܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ 3
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ. ܢܣܓܘܢ ܫܠ̈ܕܐ ܒܟܠ ܐܬܪ. ܘܢܫܬܕܘܢ ܠܐܒܕܢܐ. * ܫܡܥܘ ܗܕܐ 4
ܕܡܒܣܝܢ ܠܡܣܟܢ̈ܐ ܕܐܪܥܐ. * ܘܐܡܪܝܢ ܕܐܡܬܝ ܢܥܒܪ ܝܪܚܐ ܘܢܙܒܢ ܥܒܘܪܐ. ܘܢܥܒܪ 5
ܫܒܬܐ ܘܢܦܬܚ ܐܘܨܪ̈ܐ. ܘܢܒܨܪ ܡܟܝܠܬܐ ܘܢܘܣܦ ܡܬܩܠܐ. ܘܢܥܒܕ ܡܣܐܬܐ ܕܢܟܠܐ.
* ܘܢܙܒܢ ܒܟܣܦܐ ܠܡܣܟܢ̈ܐ ܘܠܚܫܝܟ̈ܐ ܚܠܦ ܡܣܢ̈ܐ. ܘܥܘܡܩ ܐܘܨܪ̈ܐ ܢܙܒܢ. * ܘܝܡܐ ܡܪܝܐ 6 7
[illegible] ܕܝܥܩܘܒ. ܕܠܐ ܐܛܥܐ ܠܥܠܡ ܟܠܗܘܢ ܥܒܕ̈ܝܗܘܢ. * ܡܛܠ ܗܠܝܢ ܠܐ ܬܙܘܥ 8
ܐܪܥܐ. ܘܢܬܒܠܘܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪ̈ܝܗ: ܘܬܣܩ ܩܨܗ ܐܝܟ ܢܗܪܐ. ܘܬܬܕܚܐ
ܘܬܬܒܥ ܐܝܟ ܢܗܪܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܥܪܒ ܫܡܫܐ 9
ܒܛܗܪܐ. ܘܐܚܫܘܟ ܠܐܪܥܐ ܒܝܘܡܐ ܢܗܝܪܐ.

* Sic enim dicit Amos; Gladio perimetur Jorobaam, 11
& Iſrael captivus abducetur è terra
ſua. Deinde dixit Amoſia ad Amos videntem; 12
Fuge, conferte in terram Judæ, & illic panem
comede, ibíq; prophetato: In Beth-ele verò 13
ne pergas ampliùs prophetare; quia ſanctuarium
eſt regis & ſedes regia. Reſpondens Amos 14
dixit Amoſiæ; Ego neq; propheta eram,
neque filius prophetarum, ſed paſtor eram, &
colligens groſſos. Tulit autem me Dñs cùm 15
ſequerer oves, dixítque mihi Dñs; Vade prophetatum
de populo meo Iſraele. Jam audi 16
verbum Dñi: Tu dicis, Ne prophetato de Iſraelitis,
néve doceto familiã Iſhaci. Propterea 17
ſic dicit Dominus; Uxor tua in urbe tua
ſcortabitur, & filii filiæque tuæ gladio occumbent,
terra tua fune menſorio diſtribuetur, tu
in terra immunda morieris, & Iſrael captivus
abducetur è terra ſua.

CAP. VIII.

Sic oſtendit mihi Dominus dominorum: ecce 1
metam finis. Dixítq; mihi Dñs; Quid vidiſti 2
Amos? Reſpondi, Metam finis. Tum dixit
mihi Dominus; Appropinquavit finis ſuper
populum meũ Iſraelem, & non pergam ultrà
transferre eum ab ipſis. Et concident cantica 3
templi eo die; eodémque die, dicit Dominus
dominorum, multiplicabuntur cadavera in
omni loco, & projicientur ad interitum. Audite 4
hæc qui deſpicitis pauperes terræ, Et dicitis, 5
Quandonam tranſibit menſis, ut vendamus
triticum? & defluet ſabbathum, ut aperiamus
horrea? diminuemus menſuras, augebimus
pondera, faciemus ſtateram doloſam; Et 6
pecuniã vendemus pauperibus, & egenis pro
quiſquiliis, & fundum horreorum vendemus.
Verùm juravit Dñs potens Jacobi, quòd non 7
obliviſcar in perpetuum omnia opera iſtorum.
Propter hujuſcemodi res annon contremiſceret 8
terra, & in luctu ſederent omnes habitatores
ejus, intumeſceret fluminis inſtar finis
ejus, & impelleret ruerétq; ceu flumen Ægypti?
Imò erit eo die, dicit Dominus, ut ſolem 9
occidere faciam ipſo meridie, & obſcuram
reddam terram in die lucida.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* مِن أجلِ أنه هكذا يقول عاموص * بسيفٍ يموت يوربعام * وإسرائيل يساق مسبيا من أرضه * 11
* وقال اموصيا لعاموص * يا ناظر امض واهرب الي ارض يهوذا * وهناك عش * وهناك تنبي * 12
* وعلي بيت ايل لا تتنبا بعد * لانه قدس الملك وبيت المملكة * فاجاب عاموص وقال 13 14
لاموصيا * لم اكن انا نبيا ولا ابن نبي * لكن راعي المعز كنت ولقاط توت * فاخذني الرب 15
من الغنم وقال لي الرب * امض تنبا علي شعبي اسرائيل * والان اسمع قول الرب * انت تقول لا 16
تتنبا علي شعبي اسرائيل * ولا تجمع جموعا علي بيت يعقوب * لاجل هذا هكذا يقول الرب * 17
امراتك في المدينة تزني * وبنوك وبناتك بالسيف يسقطون * وارضك تقاس بالحبل * وانت في
ارض نجسة تموت * واسرائيل يساق مسبيا من ارضه *

* الفصل الثامن *

* هكذا اراني الرب * واذا اناء قانص * وقال لي ما تري يا عاموص * فقلت اناء قانص * فقال لي 1 2
الرب * اتي الاجل علي شعبي اسرائيل * ولست اعود ازيله عنهم بعد * وتولول مذابح الهيكل في 3
ذلك اليوم يقول الرب * الساقطون كثير * وفي كل موضع اطرح سكوتا * اسمعوا هذه ايها 4
الذين يضايقون الفقير بالغداة * ويتقوون علي المساكين من الارض * القايلون متي يجوز 5
الشهر فنبيع * والسبوت فنفتح الكنوز * لنصنع كيلا صغيرا * ونكثر الصنجة * ونصنع
ميزانا ظالما * لنبتاع المساكين بالورق * والمتواضع عوض الاحذية * ومن كل غلة نتجر * الرب 6 7
يقسم علي كبرياء يعقوب ان ينسي جميع اعمالكم للغاية * وبهذا لا تتزلزل الارض * وينوح 8
كل ساكن فيها * ويصعد مثل النهر اجلها * وينزل مثل نهر مصر * ويكون في ذلك اليوم 9
يقول الرب الاله * تغيب الشمس نصف النهار * ويظلم النور علي الارض في النهار *

* *Nam ita dicit Amos; Gladio morietur* 11
Jerobaam, & Iſrael abducetur captivus
è terra ſua. Deinde dixit Amoſia ad 12
Amos; O Videns, age, fuge ad terram
Judæ, ibique vive, ibique vaticinare:
Et contra Beth-il ne vaticineris inpoſterùm, 13
quia ſanctuarium regis eſt, & domus
regni. Reſpondit Amos, ac dixit 14
Amoſiæ; Non eram ego propheta, neque
filius prophetæ, ſed paſtor caprarum eram
& colligens moros. Aſſumpſit me autem 15
Dominus ex ovibus, dixitque mihi Dominus;
Age, vaticinare contra populum
meum Iſraelem. Jam verò audi ſermonem 16
Domini: Tu dicis; Ne vaticineris
contra populum meum Iſraelem, néve
conciones cogas adversùs domum Jacobi.
Idcircò ſic ait Dominus; uxor tua 17
in urbe fornicabitur, & filii filiæque tuæ
gladio cadent, terra tua fune dimetietur,
tu quoque in terra immunda morieris,
& Iſrael abducetur captivus è terra ſua.

CAP. VIII.

Ita oſtendit mihi Dominus: & ecce 1
vas aucupii. Dicente verò mihi, Quid 2
vides O Amos? Dixi, Vas aucupii. Dixitque
mihi Dominus, Venit finis ſuper
populum meum Iſraelem, neque ſum iterum
amoturus eum ab ipſis, Et ululabunt 3
altaria templi eo die, dicit Dominus;
occumbentes erunt multi, & in omnem locum
injiciam ſilentium. Audite hæc O qui 4
pauperem manè vexatis, & vim infertis
egenis terræ; Qui dicitis; Quando labetur 5
menſis, ut vendamus? & ſabbatha,
ut aperiamus theſauros, ut faciamus menſuram
parvam, ampliemus lancem, & faciamus
ſtateram iniquam; Ut pauperes 6
emamus argento, & humilem pro calceamentis,
& omnigenarum frugum mercaturam
exerceamus. Dominus jurat contra 7
ſuperbiam Jacobi, ſe non obliturum omnia
opera veſtra, in finem uſque. Et ob 8
hæc non tremeret terra, & lugeret omnis
habitans in ea? aſcenderet ut fluvius finis
ejus, deſcenderetque ut fluvius Ægypti?
Imò erit eo die, dicit Dominus Deus, ut 9
ſol occidat ipſo meridie, & tenebreſcat
lux ſuper terram in ipſo die;

,*lamentũ* in vestra cantica omnia & ,luctũ in vestras festivitates convertã Et
10 וְהָפַכְתִּי חַגֵּיכֶם לְאֵבֶל וְכָל־שִׁירֵיכֶם לְקִינָה
caput omne super & ,saccum lumbos omnes super faciam ascendere &
וְהַעֲלֵיתִי עַל־כָּל־מָתְנַיִם שָׂק וְעַל־כָּל־רֹאשׁ
ejus novissimum & , unigeniti luctum tanquam eam ponam & : calvitium
קָרְחָה וְשַׂמְתִּיהָ כְּאֵבֶל יָחִיד וְאַחֲרִיתָהּ
, Deus Dominus dixit , *venientes* dies Ecce .amarum diem ut
11 כְּיוֹם מָר׃ הִנֵּה יָמִים בָּאִים נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִה
, aquæ sitim neque , panis famem non ; terram in famem mittam &
וְהִשְׁלַחְתִּי רָעָב בָּאָרֶץ לֹא־רָעָב לַלֶּחֶם וְלֹא־צָמָא לַמַּיִם
,mare ad usq; mari à se movebunt Et.Domini verba audiendi *quinimo*
12 כִּי אִם־לִשְׁמֹעַ אֵת דִּבְרֵי יְהוָה׃ וְנָעוּ מִיָּם עַד־יָם
,Domini verbum quærendo,*discurrent*;Orientẽ ad usq; &, Aquilone ab &
וּמִצָּפוֹן וְעַד־מִזְרָח יְשׁוֹטְטוּ לְבַקֵּשׁ אֶת־דְּבַר־יְהוָה
virgines *patientur animi deliquium* illa die In .invenient non &
13 וְלֹא יִמְצָאוּ׃ בַּיּוֹם הַהוּא תִּתְעַלַּפְנָה הַבְּתוּלֹת
, Someron delicto in *Jurantes* .siti *in* juvenes & , pulchræ
14 הַיָּפוֹת וְהַבַּחוּרִים בַּצָּמָא׃ הַנִּשְׁבָּעִים בְּאַשְׁמַת שֹׁמְרוֹן
,cadent & : sebah Beer via vivit & ,Dan tuus Deus Vivit *: dixerunt* &
וְאָמְרוּ חֵי אֱלֹהֶיךָ דָּן וְחֵי דֶּרֶךְ בְּאֵר־שָׁבַע וְנָפְלוּ
.ultrà resurgent non &
וְלֹא־יָקוּמוּ עוֹד׃

CAP. IX. ט

Percute : dixit & , altare super stantem Dominum Vidi
1 רָאִיתִי אֶת־אֲדֹנָי נִצָּב עַל־הַמִּזְבֵּחַ וַיֹּאמֶר הַךְ
, capite in eos concidam & , postes contremiscent & , *sphærulam*
הַכַּפְתּוֹר וְיִרְעֲשׁוּ הַסִּפִּים וּבְצַעַם בְּרֹאשׁ
eis fugiet Non .interficiam gladio *in* eorum novissimum & ,ipsos omnes
כֻּלָּם וְאַחֲרִיתָם בַּחֶרֶב אֶהֱרֹג לֹא־יָנוּס לָהֶם
, infernum in *perfoderint* Si .evasor eis evadet non &,fugiens
2 נָס וְלֹא־יִמָּלֵט לָהֶם פָּלִיט׃ אִם־יַחְתְּרוּ בִשְׁאוֹל
inde , cœlos ascenderint si & : eos tollet mea manus inde
מִשָּׁם יָדִי תִקָּחֵם וְאִם־יַעֲלוּ הַשָּׁמַיִם מִשָּׁם
inde , Carmel *capite* in se absconderint si Et .eos faciam descendere
3 אוֹרִידֵם׃ וְאִם־יֵחָבְאוּ בְּרֹאשׁ הַכַּרְמֶל מִשָּׁם
meorum oculorum regione à se celaverint si & : eos tollam & , scrutabor
אֲחַפֵּשׂ וּלְקַחְתִּים וְאִם־יִסָּתְרוּ מִנֶּגֶד עֵינַי
.eos mordebit & , serpenti mandabo inde , maris pavimento in
בְּקַרְקַע הַיָּם מִשָּׁם אֲצַוֶּה אֶת־הַנָּחָשׁ וּנְשָׁכָם׃
mandabo inde , *suorum inimicorum facies ad* captivitatem in abierint si Et
4 וְאִם־יֵלְכוּ בַשְּׁבִי לִפְנֵי אֹיְבֵיהֶם מִשָּׁם אֲצַוֶּה
,malum in eos super *meum oculum* ponam & : eos occidet & , gladio
אֶת־הַחֶרֶב וַהֲרָגָתַם וְשַׂמְתִּי עֵינִי עֲלֵיהֶם לְרָעָה
, terram *in tangens* exercituum DEUS Dominus Et .bonum in non &
5 וְלֹא לְטוֹבָה׃ וַאדֹנָי יֱהוִה הַצְּבָאוֹת הַנּוֹגֵעַ בָּאָרֶץ
ascendet Et .ea in habitatores omnes lugebunt & , *liquescet* &
וַתָּמוֹג וְאָבְלוּ כָּל־יוֹשְׁבֵי בָהּ וְעָלְתָה
Ædificans .Ægypti *fluvium* quasi submergetur & , ipsa tota fluvius sicut
6 כַיְאֹר כֻּלָּהּ וְשָׁקְעָה כִּיאֹר מִצְרָיִם׃ הַבּוֹנֶה
: eum fundavit terram super *suum fasciculum* & ,suas ascensiones cœlos in
בַשָּׁמַיִם מַעֲלוֹתָו וַאֲגֻדָּתוֹ עַל־אֶרֶץ יְסָדָהּ
Dominus , terræ *facies super* eas effundit & , maris aquas *vocans*
הַקֹּרֵא לְמֵי־הַיָּם וַיִּשְׁפְּכֵם עַל־פְּנֵי הָאָרֶץ יְהוָה
, Israel filii mihi *vos* Chusiim filii sicut Nónne .ejus nomen
7 שְׁמוֹ׃ הֲלוֹא כִבְנֵי כֻשִׁיִּים אַתֶּם לִי בְּנֵי יִשְׂרָאֵל
terra è feci ascendere Israel Nónne ? Dominus dixit
נְאֻם־יְהוָה הֲלוֹא אֶת־יִשְׂרָאֵל הֶעֱלֵיתִי מֵאֶרֶץ
? Chir de Aram & , Caphthor de Pelistim & , Ægypti
מִצְרַיִם וּפְלִשְׁתִּיִּים מִכַּפְתּוֹר וַאֲרָם מִקִּיר׃

Versio VULG. LAT.

10 Et convertam festivitates vestras
in luctum, & omnia cantica ve-
stra in planctum : & inducam su-
per omne dorsum vestrũ saccum,
& super omne caput calvitium :
& ponam eam quasi luctum uni-
geniti, & novissima ejus quasi diẽ
11 amarum. Ecce dies veniunt, di-
cit Dominus : & mittam famem
in terram : non famem panis :
neque sitim aquæ, sed audiendi
12 verbum Domini. Et commove-
buntur à Mari usque ad mare, &
ab Aquilone usque ad Orientem:
circuibunt quærentes verbũ Do-
13 mini, & non invenient. In die
illa deficient, virgines pulchræ, &
14 adolescentes in siti. Qui jurant
in delicto Samariæ, & dicunt; Vi-
vit Deus tuus, Dan; &, Vivit via
Bersabee : & cadent, & non re-
surgent ultrá.

CAP. IX.

1 Vidi Dominum stantem super
altare : & dixit ; Percute cardi-
nem, & commoveantur superli-
minaria : avaritia enim in capite
omnium, & novissimum eorum
in gladio interficiam : non erit
fuga eis. Fugient, & non salva-
2 bitur ex eis qui fugerit. Si de-
scenderint usque ad infernũ, indè
manus mea educet eos: & si ascen-
derint usque in cœlum, indè de-
3 traham eos. Et si absconditi fue-
rint in vertice Carmeli, indè scru-
tans auferam eos : & si celaverint
se ab oculis meis in profundo ma-
ris, ibi mandabo serpenti, & mor-
4 debit eos. Et si abierint in capti-
vitatem coram inimicis suis, ibi
mandabo gladio, & occîdet eos :
& ponam oculos meos super eos
in malum, & non in bonum. Et
5 Dominus Deus exercituum, qui
tangit terram, & tabescet : & lu-
gebunt omnes habitantes in ea :
& ascendet sicut rivus omnis, &
6 defluet sicut fluvius Ægypti. Qui
ædificat in cœlo ascensionem suã,
& fasciculum suum super terram
fundavit : qui vocat aquas maris,
& effundit eas super faciem ter-
7 ræ, Dominus nomen ejus. Num-
quid non ut filii Æthiopum vos
estis mihi, filii Israel, ait Domi-
nus ? numquid non Israel ascen-
dere feci de terra Ægypti, & Pa-
læstinos de Cappadocia, & Syrios
de Cyrene ?

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

10 Καὶ μεταστρέψω τὰς ἑορτὰς ὑμῶν εἰς πέν-
θος, ϗ πάσας τὰς ᾠδὰς ὑμῶν εἰς θρῆνον,
ϗ ἀναβιβῶ ἐπὶ πᾶσαν ὀσφὺν σάκκον, ϗ ἐπὶ
πᾶσαν κεφαλὴν φαλάκρωμα· ϗ θήσομαι αὐ-
τὸν ὡς πένθος ἀγαπητοῦ, ϗ τοὺς μετ' αὐτοῦ ὡς
11 ἡμέραν ὀδύνης. Ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, λέγει
κύριος, ϗ ἐξαποστελῶ λιμὸν ἐπὶ τὴν γῆν, οὐ
λιμὸν (ν) ἄρτων, οὐδὲ δίψαν ὕδατος, ἀλ-
12 λὰ λιμὸν τοῦ ἀκοῦσαι (ξ) τὸν λόγον κυρίου. Καὶ
(ο) σαλευθήσονται ὕδατα ἀπὸ τῆς θαλάσσης
ἕως θαλάσσης, ϗ ἀπὸ Βορρᾶ ἕως ἀνατο-
λῶν περιδραμοῦνται ζητοῦντες τὸν λόγον τοῦ κυ-
13 ρίου, ϗ οὐ μὴ εὕρωσιν. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ
ἐκλείψουσιν αἱ παρθένοι αἱ καλαὶ, ϗ οἱ νεα-
14 νίσκοι ἐν δίψει, Οἱ ὀμνύοντες κατὰ τοῦ ἱλα-
σμοῦ Σαμαρείας, ϗ οἱ λέγοντες, Ζῇ (π) ὁ θε-
ός σου Δὰν, ϗ ζῇ ὁ θεός σου Βηρσαβεέ· ϗ
πεσοῦνται, ϗ οὐ μὴ ἀναστῶσιν ἔτι.

MS.A. (ν) ἄρτου, (ξ) λόγον (ο) σαλευθήσεται ὕδατα ἕως θαλάσσης,
(π) κύριος ὁ θεός

Et convertã solennitates vestras 10
in luctum, & omnia cantica ve-
stra in lamentationem: et inducam
super omnem lumbum saccum, et
super omne caput calvitiũ: & po-
nam eum quasi luctum dilecti; &
eos, qui cum eo sunt, quasi diem
doloris. Ecce dies veniunt, dicit 11
Dominus: & emittã famẽ super
terrã, non famẽ panũ, neque sitim
aquæ, sed famẽ audiendi verbũ
Domini. Et commovebũtur aquæ 12
de Mari usque ad mare, & ab A-
quilone usque ad Orientem circu-
ibunt quærentes verbum Domini,
& non invenient. In die illa de- 13
ficient virgines pulchræ, & juve-
nes in siti: Qui jurant per propi- 14
tiationẽ Samariæ, & qui dicunt,
Vivit Deus tuus, Dan; &, Vivit
Deus tuus, Bersabee. Et cadent, et
non resurgent amplius.

ΚΕΦ. θ'.

1 Εἶδον τὸν κύριον ἐφεστῶτα ἐπὶ τοῦ θυσιαστη-
ρίου, ϗ εἶπε, Πάταξον ἐπὶ (α) τὸ ἱλαστήριον,
ϗ σεισθήσεται τὰ πρόπυλα, ϗ διάκοψον
εἰς κεφαλὰς πάντων· ϗ τοὺς καταλοίπους αὐ-
τῶν ἐν ῥομφαίᾳ ἀποκτενῶ, οὐ μὴ (β) διαφύ-
γῃ ἐξ αὐτῶν φεύγων, (γ) ϗ οὐ μὴ διασωθῇ
2 ἐξ αὐτῶν ἀνασωζόμενος. Ἐὰν (δ) κατα-
κρυβῶσιν εἰς ᾅδου, ἐκεῖθεν ἡ χείρ μου ἀνα-
σπάσει αὐτούς· ϗ ἐὰν ἀναβῶσιν εἰς τὸν οὐρα-
3 νὸν, ἐκεῖθεν κατάξω αὐτούς· Ἐὰν (ε) ἐγκα-
τακρυβῶσιν εἰς τὴν κορυφὴν τοῦ Καρμήλου, ἐ-
κεῖθεν ἐξερευνήσω, ϗ λήψομαι αὐτούς· ϗ
ἐὰν καταδύσωσιν ἐξ ὀφθαλμῶν μου εἰς τὰ
βάθη τῆς θαλάσσης, ἐκεῖ ἐντελοῦμαι τῷ δρά-
4 κοντι, ϗ δήξεται αὐτούς. Καὶ ἐὰν πορευθῶσιν
ἐν αἰχμαλωσίᾳ πρὸ προσώπου τῶν ἐχθρῶν
αὐτῶν, ἐκεῖ ἐντελοῦμαι τῇ ῥομφαίᾳ, ϗ ἀπο-
κτενεῖ αὐτούς. ϗ στηριῶ (ζ) τοὺς ὀφθαλμούς μου
5 ἐπ' αὐτοὺς εἰς κακὰ, ϗ οὐκ εἰς ἀγαθά. Καὶ
κύριος κύριος ὁ θεὸς ὁ παντοκράτωρ, ὁ ἐφα-
πτόμενος τῆς γῆς, ϗ σαλεύων αὐτὴν, ϗ πενθή-
σουσι πάντες οἱ κατοικοῦντες αὐτὴν, ϗ ἀνα-
βήσεται ὡς ποταμὸς συντέλεια αὐτῆς, ϗ
6 καταβήσεται ὡς ποταμὸς Αἰγύπτου. Ὁ οἰκο-
δομῶν εἰς τὸν οὐρανὸν ἀνάβασιν αὐτοῦ, ϗ τὴν
ἐπαγγελίαν αὐτοῦ (η) ἐπὶ τῆς γῆς θεμελιῶν,
ὁ προσκαλούμενος τὸ ὕδωρ τῆς θαλάσσης, ϗ
ἐκχέων αὐτὸ ἐπὶ πρόσωπον τῆς γῆς· Κύριος
7 (θ) παντοκράτωρ ὄνομα αὐτῷ. Οὐχ ὡς υἱοὶ
Αἰθιόπων ὑμεῖς ἐστε ἐμοὶ υἱοὶ Ἰσραήλ; λέ-
γει κύριος. οὐ τὸν Ἰσραὴλ ἀνήγαγον ἐκ γῆς
Αἰγύπτου, ϗ τοὺς ἀλλοφύλους ἐκ Καππαδο-
κίας, ϗ τοὺς Σύρους ἐκ βόθρου;

MS.A. (α) τὸ θυσιαστήριον, (β) διαφεύξῃ (γ) οὐδὲ μὴ (δ) κατορυ-
γῶσιν (ε) ἐγκρυβῶσιν (ζ) τὸ πρόσωπόν μου (η) ἐπὶ γῆς (θ) ὁ παντοκράτωρ

CAP. IX.

Vidi Dominum stantem super 1
altare: et dixit; Percute super pro-
pitiatorium, & commovebuntur
vestibula: & discîde in capita o-
mnium. Et reliquos eorum in gla-
dio interficiam. Non fugiet ex eis,
qui fugerit: & non salvabitur ex
illis, qui fuerit resalvatus. Si (a) 2
absconditi fuerint in inferno, indè
man⁹ mea evellet eos. Et, si ascen-
derint in cœlum, indè detrahã il-
los. Si absconditi fuerint in verti- 3
ce Carmeli; indè scrutans auferã
eos: &, si demerserint se ab oculis
meis in profunda maris, ibi man-
dabo draconi, et mordebit eos: Et, 4
si abierint in captivitatẽ ante fa-
ciem inimicorum suorũ; ibi præci-
piam gladio, & interficiet eos. Et
obfirmabo oculos meos super illos
in mala, & non in bona. Et Do- 5
minus Domin⁹ Deus omnipotens,
qui tangit terram, & commovet
eam: et lugebunt omnes habitato-
res ejus: et ascendet, sicut fluvius
consummatio ejus: & descendet,
sicut flumen Ægypti. Qui ædifi- 6
cat in cœlo ascensionẽ suã, et pro-
missionem suam super terrã fun-
dat: qui vocat aquam maris, &
effundit eam super faciem terræ:
Dominus omnipotens nomen ei.
Nónne ut filii Æthiopum vos e- 7
stis mihi, filii Israel? dicit Domi-
nus. Nónne Israel eduxi de terra
Ægypti, & alienigenas de Cap-
padocia, & Syros de fovea?

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 וְאַהֲפֵיךְ חַגֵּיכוֹן לְאֶבְלָא וְכָל תּוּשְׁבְּחָתְכוֹן לְאִלְיָא וְאַסֵּק עַל כָּל חַרְצִין סַק וְעַל כָּל רֵישׁ
11 מְרַט וַאֲשַׁוְּנַהּ כְּאֶבֶל יְחִיד וְסוֹפַהּ כְּיוֹם מְרִיר : הָא יוֹמַיָּא אָתַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים וְאֶשְׁלַח
כַּפְנָא בְּאַרְעָא לֵית דִּכְפֵן לְמֵיכַל וְלֵית דִּי צָחֵי לְמִשְׁתֵּי אֱלָהֵן לְקַבָּלָא יַת פִּתְגָמָא דַיְיָ :
12 וִישַׁלְהוֹן מִיַּמָּא עַד מַעַרְבָא וּמִצִּפּוּנָא עַד מַדִּנְחָא יְהָכוּן לְמִתְבַּע אוּלְפָּן מִן קֳדָם יְיָ וְלָא
13 יִשְׁכְּחוּן : בְּיוֹמָא הַהוּא יִשְׁתַּלְהֲיָן כְּנִישְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל דְּאִנּוּן דָּמְיָן לִבְתוּלָן שַׁפִּירָן דְּטָעֲאָה
14 בְּשַׁפְרְהֶן עִם עוּלֵימִין חַיָּבִין וִיהוֹן מִטַּרְפִין וּרְמַן בִּצְחוּתָא : דִּי מְקַיְּמִין בְּחוֹבַת שֹׁמְרוֹן
וְאָמְרִין קַיָּמָא דַחֲלָתָא דִּי בְדָן וְקַיְּמִין נִמוֹסֵי בְּאֵר שֶׁבַע וְיִפְּלוּן וְלָא יְקוּמוּן עוֹד :

ט

1 אֲמַר עָמוֹס נְבִיָּא חֲזֵיתִי יַת יְקָרָא דַיְיָ אִסְתַּלַּק מִכְּרוּבָא וּשְׁרָא עַל מַדְבְּחָא וַאֲמַר אִם לֵית
עַמָּא בֵּית יִשְׂרָאֵל תָּיְבִין לְאוֹרָיְתָא טְפֵי מְנַרְתָּא אִתְקְטִיל מַלְכָּא יֹאשִׁיָּה וְיֶחֱרַב
בֵּיתָא וְיִתְפַּגְּרָן עֲזָרָתָא וּמָנֵי בֵית מַקְדְּשָׁא בְּשִׁבְיָא יְהָכוּן וּשְׁאָרֵהוֹן בְּחַרְבָּא אֶקְטוֹל
2 לָא יְעָרוֹק לְהוֹן דְּעָרִיק וְלָא יִשְׁתֵּיזֵב לְהוֹן דְּמִשְׁתֵּיזֵב : אִם יְדַמּוּן לְאִטַּמָּרָא כְּבִשְׁאוֹל
מִתַּמָּן בְּמֵימְרִי יְדַבְּרִנּוּן שַׂנְאֵיהוֹן וְאִם יִסְקוּן בְּטוּרִין דְּרָמִין עַד צֵית שְׁמַיָּא מִן תַּמָּן
3 בְּמֵימְרִי יְחַתּוּנּוּן : וְאִם יְדַמּוּן לְאִטַּמָּרָא בְּרֵישֵׁי מַגְדְּלֵי כְרַכַּיָּא מִתַּמָּן אַפְקֵיד בַּלּוֹשִׁין
וִיבַלְשׁוּנּוּן וְאִם יִטַּמְּרוּן מִן קֳדָם מֵימְרִי בְּנִסֵּי יַמָּא מִתַּמָּן אַפְקֵיד יַת עַמְמַיָּא
4 דְּתַקִּיפִין כְּחִוְיָא וְיִקְטְלוּנּוּן : וְאִם יְהָכוּן בְּשִׁבְיָא קֳדָם בַּעֲלֵי דְבָבֵיהוֹן מִתַּמָּן
אַפְקֵיד יַת דְּקָטְלִין בְּחַרְבָּא וְיִקְטְלוּנּוּן וַאֲשַׁוֵּי מֵימְרִי עֲלֵיהוֹן לְבִישָׁא וְלָא לְטָבָא :
5 וַיְיָ אֱלֹהִים צְבָאוֹת דִּי נָזֵיף בְּאַרְעָא וְזָיְעָא וְיִצְדּוּן כָּל דְּיָתְבִין בַּהּ וְיַסִּיק עֲלָהּ מֶלֶךְ
6 בְּמַשִּׁרְיָתֵיהּ דְּסַגִּי כְּמֵי נַהֲרָא וְיַחֲפִנַּהּ כּוּלַּהּ וְתִשְׁתַּקַע כִּנְהַר מִצְרַיִם : דִּי אַשְׁרֵי בִּתְקוֹף
רוּמָא שְׁכִינַת יְקָרֵיהּ וּכְנִשְׁתֵּיהּ עַל אַרְעָא קַשְּׁטַהּ דִּי אֲמַר לְכַנָּשָׁא מַשִּׁרְיָן דְּסַגִּיאִין
7 כְּמֵי נַהֲרָא וּמְבַדַּר לְהוֹן עַל אַפֵּי אַרְעָא יְיָ שְׁמֵיהּ : הֲלָא כִּבְנִין רְחִימִין אַתּוּן חֲשִׁיבִין
קֳדָמַי בֵּית יִשְׂרָאֵל אֲמַר יְיָ הֲלָא יַת יִשְׂרָאֵל אַסֵּקִית מֵאַרְעָא דְמִצְרַיִם וּפְלִשְׁתָּאֵי
מִקַּפּוּטְקִיָּא וַאֲרָם מִקִּירֵנֵי :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et convertam solennitates vestras in luctum, & omnia vestra cantica in la- 10
mentum, & efficiam ut ascendat super omnium lumbos saccus, & super quod-
libet caput calvitium : & ponam eam tanquam luctum unici, & finem ejus
velut diem amaram. Ecce dies veniunt, dicit Dñs Deus, cùm mittam famem 11
in terram : non erit qui esuriat ad comedendum [*panem,*] nec qui sitiat ad
bibendas [*aquas,*] sed ad recipienda verba Dñi. Et lassabunt se à mari ad Oc- 12
cidentem usque, & ab Aquilone usque ad Orientem pergent quæsitum do-
ctrinam à facie Dñi, non invenient tamen. Tempore illo patientur deliqui- 13
um cœtus Israel, qui similes sunt virginibus pulcherrimis, quæ pulchritu-
dine sua cum juvenibus peccatoribus fornicatæ sunt, erunt proinde proster-
nati & siti dejecti. Qui jurant per delictum Samariæ, & dicunt, Vivit Deus 14
qui est in Dan, & stabiles sunt leges Bersabee : corruent tamen, nec ultrà
subsistent.

CAP. IX.

Dixit Amos propheta : Vidi gloriam Dñi conscendentis à Cherub qui 1
mansit super altare, & ait : Nisi populus domus Israel convertatur ad
legem, extinguetur candelabrum : occidetur rex Josias, & destruetur domus,
& dissipabuntur atria, & vasa domus sanctuarii in captivitatem ibunt, &
reliquias eorum occidam gladio : non aufugiet ex eis qui fugam arripuerit,
nec liberabitur ex eis qui evaserit. Si putaverint abscondi velut in inferno, 2
indè verbo meo tollent eos inimici sui ; & si ascenderint montes excelsos ad
cœli summitatem usque, indè detrahent eos verbo meo. Et si existimaverint 3
abscondi in cacumine turrium castellorum, indè mandabo scrutatoribus ut
scrutentur eos : prætereà si *delituerint* à facie *Verbi mei* in insulis maris,
indè injungam populis fortibus instar serpentum ; ut eos enecent. Deindè
si in captivitatem iverint ante hostes suos, indè mandatum dabo gladio 4
cædentibus ut occidant eos, atq; ponam Verbum meum contra eos in ma-
lum, & non in bonum. Et Dñs Deus exercituum est qui terram increpat ita 5
ut commoveatur : dissipabuntur sanè omnes qui habitant in ea : *& ascendere*
faciet contra eam *regem* cum exercitu suo numeroso instar aquarum flumi-
nis, qui illam totam contegat, & demergatur velut Ægypti fluvio. Qui collo- 6
cavit in præsidio excelso majestatẽ gloriæ suæ, & Ecclesiã suam in terra deco-
ravit: qui dixit se congregaturũ exercit⁹ quamplurimos quasi aquas *fluminis*,
atq; dispersurum eos super faciem terræ, Dñs nomen ejus. Nunquid non ut filii 7
dilecti reputati estis vos coram me dom⁹ Israel, dicit Dñs ? nónne Israel ascen-
dere feci de terra Ægypti, & Palæstinos de Cappadocia, & Syros de Cyrene?

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܘܐܗܦܘܟ ܥܐܕ̈ܝܟܘܢ ܠܐܒܠܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܙܡܪ̈ܝܟܘܢ ܠܐܘܠܝܬܐ. ܘܐܣܪ ܣܩ̈ܐ ܥܠ ܟܠܗܘܢ 10
ܚܨ̈ܝܟܘܢ. ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܪ̈ܫܝܟܘܢ ܩܪ̈ܚܘܬܐ. ܘܐܣܝܡܝܗ̇ ܐܝܟ ܐܒܠܐ ܕܝܚܝܕܐ. ܘܚܪܬܗ̇ ܐܝܟ
ܝܘܡܐ ܡܪܝܪܐ. * ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܫܕܪ ܟܦܢܐ ܒܐܪܥܐ. ܠܐ ܕܟܦܢ ܠܠܚܡܐ 11
ܘܠܐ ܕܨܗܐ ܠܡܝܐ. ܐܠܐ ܠܡܫܡܥ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܢܬܟܢܫܘܢ ܡܢ ܝܡܐ ܘܥܕܡܐ ܠܝܡܐ. 12
ܘܡܢ ܓܪܒܝܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܡܕܢܚܐ. ܘܢܗܪܛܘܢ ܠܡܒܥܐ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܢܫܟܚܘܢ.
* ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܬܡܓܕܦܢ ܒܬܘ̈ܠܬܐ ܫܦܝܪ̈ܬܐ. ܘܥܠܝܡ̈ܐ ܒܨܗܝܐ. * ܕܝܡܝܢ 13
ܗܘܘ ܒܦܬܟܪܐ ܕܫܡܪܝܢ ܘܐܡܪܝܢ. ܚܝ ܐܠܗܟ ܕܢ. ܘܚܝܐ ܐܘܪܚܐ ܕܒܐܪ ܫܒܥ. ܘܢܦܠܘܢ. 14
ܘܠܐ ܢܩܘܡܘܢ.

* ܫܠܡ * ܛ *

* ܚܙܝܬܗ ܠܡܪܝܐ ܕܩܐܡ ܥܠ ܡܕܒܚܐ. ܘܐܡܪ. ܡܚܝ ܠܒܝܫܬܐ. ܘܢܙܘܥܘܢ ܐܣܩܘܦܬܐ. 1
ܘܢܟܠܗܘܢ ܒܪܝܫ ܟܠܗܘܢ. ܘܚܪܬܗܘܢ ܒܚܪܒܐ ܐܩܛܘܠ. ܠܐ ܢܥܪܩ ܡܢܗܘܢ ܕܥܪܩ. ܘܠܐ
ܢܬܦܠܛ ܡܢܗܘܢ ܕܡܬܦܠܛ. * ܐܢ ܢܚܬܘܢ ܠܫܝܘܠ. ܡܢ ܬܡܢ ܬܣܩ ܐܢܘܢ ܐܝܕܝ. 2
ܘܐܢ ܢܣܩܘܢ ܠܫܡܝܐ. ܡܢ ܬܡܢ ܐܚܬ ܐܢܘܢ. * ܘܐܢ ܢܛܫܘܢ ܒܪܝܫܗ ܕܟܪܡܠ. ܡܢ 3
ܬܡܢ ܐܒܨܐ. ܘܐܕܒܪ ܐܢܘܢ. ܘܐܢ ܢܛܫܘܢ ܡܢ ܩܕܡ ܥܝܢܝ ܒܥܘܡܩܘܗܝ ܕܝܡܐ. ܬܡܢ
ܐܦܩܕ ܠܚܘܝܐ ܘܢܢܟܬ ܐܢܘܢ. * ܘܐܢ ܢܐܙܠܘܢ ܒܫܒܝܐ ܩܕܡ ܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ. ܬܡܢ ܐܦܩܕ 4
ܠܚܪܒܐ ܘܬܩܛܘܠ ܐܢܘܢ. ܘܐܣܝܡ ܥܝܢܝ ܥܠܝܗܘܢ ܠܒܝܫܬܐ. ܘܠܐ ܠܛܒܬܐ. * ܐܡܪ ܡܪܝܐ 5
ܡܪܐ ܚܝܠܬܢܐ ܕܩܪܒ ܠܐܪܥܐ. ܘܪܥܠܐ. ܘܡܬܐܒܠܝܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪ̈ܝܗ̇. ܘܣܠܩ ܚܘܒܠܗ̇
ܐܝܟ ܢܗܪܐ. ܘܢܚܬ ܐܝܟ ܢܗܪܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܕܒܢܐ ܒܫܡܝܐ ܡܣܩܬܗ. ܘܡܘܠܟܢܗ ܒܐܪܥܐ 6
ܫܪܝܗ̇. ܕܩܪܐ ܠܡܝܐ ܕܝܡܐ. ܘܐܫܕ ܐܢܘܢ ܥܠ ܐܦܝ ܐܪܥܐ. ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ. * ܗܐ 7
ܐܝܟ ܒܢܝ ܟܘܫܝܐ ܐܝܬܝܟܘܢ ܠܝ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܠܐܝܣܪܝܠ ܐܣܩܬ ܡܢ
ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܦܠܫܬܝܐ ܡܢ ܩܦܘܕܩܝܐ. ܘܠܐܪܡ ܡܢ ܩܝܪ.

* Vertam ſolennitates veſtras in luctum, & 10
omnia cantica veſtra in lamentationes: præcingam ciliciis omnes lumbos veſtros, & ſuper
omnia capita veſtra cicatrices: deniq; diſponã
illam quaſi luctũ unigeniti, & finem ejus tanquam diem amariſſimã. Ecce dies adveniunt, 11
dicit Dñs, quib' mittã famẽ in terrã; non ejus
qui ad panẽ famelicus eſt, neq; illius qui ſitibundus eſt ad aquas, ſed ad audiendũ ſermonẽ
Dñi. Et congregabuntur à mari uſq; ad mare, 12
& ab Aquilone ad Orientem uſque; & diſcurrent ad quærendũ ſermonẽ Dñi, & non invenient. Eodem illo die virgines formoſæ & 13
adoleſcentuli ſiti exagitabuntur. Qui jurabant 14
per idola Samariæ, & dicebant, Per vitam dei
tui O Dan, & per vitam viæ Bir-ſebaa; corruent, nec reſurgent.

CAP. IX.

VIdi Dñm ſtantem ſuper altari, ac dicen- 1
tem; Percute malum iſtam ut commoveantur
limina: & dolus eorum in caput ipſorum
omnium *recidat*, & poſteritatẽ eorum gladio
interficiã: non evadet ex eis, qui fugiat; neque
liberabitur ex eis, qui ſe eripiat. Si deſcende- 2
rent ad inferos, inde extraheret eos manus
mea; & ſi aſcenderent ad cœlum, illinc detraherem eos: Si abderent ſe in vertice Char- 3
meli, inde perſcrutans caperẽ eos: & ſi latitarent ab oculis meis in abyſſis maris, illic præ-
ciperẽ ſerpenti, & morderet eos: Si abirent 4
in captivitatẽ ante hoſtes ſuos, illic præciperẽ
gladio, & interficeret eos: adhibebo enim
oculum meum ſuper eos in malum, non in bonum, Dicit Dñs dominorum potentiſſimus; 5
qui tangit terram, & contremiſcit, ſedéntque
in luctu omnes habitatores ejus, & intumeſcit
quaſi flumen exitium ejus, irruítq; ceu flumen
Ægypti: Qui ædificavit in cœlo aſcenſus ſu- 6
os, & promiſſum ſuum in terra confirmat: qui
evocat aquas maris, & effundit eas ſuper terræ ſolum; cujus nomen eſt Dominus potentiſſimus. Ecce ſicut filii Æthiopum eſtis mihi O 7
filii Iſraelis, dicit Dominos: ecce Iſraelem
eduxi de terra Ægypti, Paleſtinos è Cappadocia, & Aramæum è Kir.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* واقلب اعيادكم الي حزن * وجميع تسابيحكم الي نوح * وارفع علي كل حقو مسحا * وعلي كل 10
راس قرعا * واصنعه مثل حزن الحبيب * والذين معه مثل يوم الوجع * ها ايام تاتي يقول الرب * 11
وارسل جوعا علي الارض * ليس جوع خبز ولا عطش ماء * لكن جوعا لسماع قول الرب *
* ويتزعزع المياه الي البحر * ومن الجربياء الي المشارق يسرعون طالبين قول الرب * ولا يجدونه 12
يقول الرب * في ذلك اليوم تعيي العذاري الحسان والشبان بالعطش * الذين يحلفون بغفران 13 14
سامرين * ويقولون حي الهك يا دان * وحي الهك يا بير سبع * ويسقطون ولا يقومون بعد *

* الفصل التاسع * * الاصحاح الحادي عشر *

* رايت الرب قايما علي المذبح * وقال اضرب المذبح فتتزلزل الدهاليز * واقطع في روس الجميع * 1
وبقاياهم اقتلهم بسيف * ولا يهرب منهم هارب * ولا ينجو منهم ناج * ان يهبطوا الي الجحيم * 2
من هناك تصعدهم يدي * وان يصعدوا الي السماء * من هناك احدرهم * ان يختفوا في 3
راس الكرمل * من هناك افتش واخذهم * وان يتغيبوا عن عيني في اعماق البحر * من هناك
امر التنين فينهشهم * وان يمضوا في السبي امام وجه اعدايهم * هناك امر السيف فيقتلهم * 4
واثبت عيني عليهم للشرور لا للخيرات * والرب الرب الاله الضابط الكل يلمس كل الارض 5
فيزلزلها * ويحزن جميع ساكنيها * ويصعد مثل النهر انتقاضها * وينحدر مثل نهر مصر *
* الباني في السماء صعوده * والموسس علي الارض وعده * الداعي ماء البحر ومهرقه علي 6
وجه الارض * الرب الاله الضابط الكل اسمه * اليس مثل بني الحبوش انتم لي يا بني اسرايل 7
يقول الرب * اليس اسرايل اصعدته من مصر * والقبايل الغريبه من قبادوقيه * والشاميين
من الحفره *

Vertam ſolennitates veſtras in mœrorem, 10
& omnia cantica veſtra in luctum: imponam omni lumbo cilicium, & omni capiti calvitiem: & diſponam eum ut luctum
dilecti; & eos qui cum ipſo ſunt, ut diem
doloris. Ecce dies venturi ſunt, ait Do- 11
minus, quibus mittam famem ſuper terram; non famem panis, neque ſitim aquæ,
ſed famem audiendi ſermonem Domini.
Et commovebuntur aquæ uſque ad mare, 12
& ab Aquilone ad Orientem uſque accurrent quærentes ſermonem Domini, & non
invenient eum, ait Dominus. Eo die vir- 13
gines pulchræ & adoleſcentuli conficientur ſiti; Qui jurant per indulgentiam 14
Samariæ, & dicunt; Vivit deus tuus O
Dan, & vivit deus tuus O Bir-ſebaa: &
cadent, nec amplius reſurgent.

CAP. IX.

Textus undecimus.

V*Idi Dominum ſtantem ſuper altari,* 1
& dixit; Percute altare, & contremiſcent porticus: incîdam capita omnium,
& reliquos eorum occîdam gladio: non
effugiet ex eis ullus profuga, neque evadet
ex eis ullus liber. Si deſcenderint in in- 2
fernum, inde extrahet eos manus mea:
& ſi aſcenderint in cœlum, inde deturbabo eos: Si abdiderint ſe in vertice Char- 3
meli, inde perveſtigans auferam eos: ſi
occultaverint ſe ab oculis meis in profundis maris, inde præcipiam draconi, & mordebit eos: Si abierint in captivitatem 4
ante faciem inimicorum ſuorum, ibi mandabo gladio, & interficiet eos: & oculos
meos firmos habebo ſuper eos in mala, non
in bona. Nam Dominus, Dominus Deus 5
omnipotens tanget univerſam terram, &
concutiet eam; & lugebunt omnes habitatores ejus: & aſcendet ſicut fluvius
excidium ejus, deſcendétque ſicut fluvius Ægypti. Ædificans in cœlo aſcen- 6
ſum ſuum, & fundans ſuper terram
promiſſum ſuum: advocans aquam maris, & effundens eam ſuper faciem terræ: Dominus Deus omnipotens eſt nomen
ejus. Annon ut filii Æthiopum eſtis 7
mihi O filii Iſraelis, dicit Dominus?
Annon Iſraelem extraxi ex Ægypto, nationes exteras è Cappadocia, & Damaſcenos è fovea?

עובדיה : א

faciam diſperdere & ,peccati regnum in DEI Domini oculi Ecce
8 הִנֵּה עֵינֵי ׀ אֲדֹנָי יֱהוִה בַּמַּמְלָכָה הַחַטָּאָה וְהִשְׁמַדְתִּי
delebo delendo non veruntamen : humi faciebus deſuper illud
אֹתָהּ מֵעַל פְּנֵי הָאֲדָמָה אֶפֶס כִּי לֹא הַשְׁמֵיד אַשְׁמִיד
, præcipiens ego ecce Quia .Dominus dixit , Jahacob domum
9 אֶת־בֵּית יַעֲקֹב נְאֻם־יְהוָה׃ כִּי־הִנֵּה אָנֹכִי מְצַוֶּה
quemadmodum; Iſrael domum gentibus omnibus in faciã commovere &
וַהֲנִעוֹתִי בְכָל־הַגּוֹיִם אֶת־בֵּית יִשְׂרָאֵל כַּאֲשֶׁר
morientur gladio In .terram lapillus cadet non & , cribro in agitatur
10 יִנּוֹעַ בַּכְּבָרָה וְלֹא־יִפּוֹל צְרוֹר אָרֶץ׃ בַּחֶרֶב יָמוּתוּ
anticipabit nec , accedet Non , dicentes , mei populi peccatores omnes
כֹּל חַטָּאֵי עַמִּי הָאֹמְרִים לֹא־תַגִּישׁ וְתַקְדִּים
David tabernaculum erigam illa die In .malum nos propter
11 בַּעֲדֵינוּ הָרָעָה׃ בַּיּוֹם הַהוּא אָקִים אֶת־סֻכַּת דָּוִיד
, erigam ejus diruta & , earum rupturas ſepiam & , collabens
הַנֹּפֶלֶת וְגָדַרְתִּי אֶת־פִּרְצֵיהֶן וַהֲרִסֹתָיו אָקִים
reſiduum poſſideant Ut .ſeculi diebus ſicut illud ædificabo &
12 וּבְנִיתִיהָ כִּימֵי עוֹלָם׃ לְמַעַן יִירְשׁוּ אֶת־שְׁאֵרִית
dixit ,eas ſuper meum nomen eſt invocatum quas gentes omnes & ,Edom
אֱדוֹם וְכָל־הַגּוֹיִם אֲשֶׁר־נִקְרָא שְׁמִי עֲלֵיהֶם נְאֻם־
, Dominus dixit , venientes dies Ecce .hoc faciens ,Dominus
13 יְהוָה עֹשֶׂה זֹּאת׃ הִנֵּה יָמִים בָּאִים נְאֻם־יְהוָה
, ſemen trahentem ad uvarum calcator & ,meſſorem ad arator attinget &
וְנִגַּשׁ חוֹרֵשׁ בַּקֹּצֵר וְדֹרֵךְ עֲנָבִים בְּמֹשֵׁךְ הַזָּרַע
.liquefient colles omnes & ,muſtum montes ſtillabunt &
וְהִטִּיפוּ הֶהָרִים עָסִיס וְכָל־הַגְּבָעוֹת תִּתְמוֹגַגְנָה׃
urbes ædificabunt & , Iſrael mei populi captivitatem convertam Et
14 וְשַׁבְתִּי אֶת־שְׁבוּת עַמִּי יִשְׂרָאֵל וּבָנוּ עָרִים
bibent & , vineas plantabunt & : inhabitabunt & , deſolatas
נְשַׁמּוֹת וְיָשָׁבוּ וְנָטְעוּ כְרָמִים וְשָׁתוּ אֶת־
eos plantabo Et.eorum fructum comedent &,hortos facient &:earum vinũ
15 יֵינָם וְעָשׂוּ גַנּוֹת וְאָכְלוּ אֶת־פְּרִיהֶם׃ וּנְטַעְתִּים
quam , ſua humo deſuper ultrà evellentur non & ,ſuam humum ſuper
עַל־אַדְמָתָם וְלֹא יִנָּתְשׁוּ עוֹד מֵעַל אַדְמָתָם אֲשֶׁר־
.tuus Deus Dominus dixit , eis dedi
נָתַתִּי לָהֶם אָמַר יְהוָה אֱלֹהֶיךָ׃

Verſio VULG. LAT.

8 Ecce oculi Domini Dei ſuper regnum peccans, & conteram illud à facie terræ: veruntamen conterens non conteram domum Jacob, dicit Dominus. 9 Ecce enim mandabo ego, & concutiam in omnibus gentibus domum Iſrael, ſicut concutitur triticũ in cribro: & non cadet lapillus ſuper terram. 10 In gladio morientur omnes peccatores populi mei: qui dicunt; Non appropinquabit, & 11 non veniet ſuper nos malum. In die illa ſuſcitabo tabernaculum David, quod cecidit: & reædificabo aperturas murorum ejus, & ea quæ corruerant inſtaurabo: & reædificabo illud ſicut in diebus 12 antiquis. Ut poſſideant reliquias Idumææ, & omnes nationes, eò quòd invocatum ſit nomen meum ſuper eos: dicit Dominus faciens 13 hæc. Ecce dies veniunt, dicit Dominus: & comprehendet arator meſſorem, & calcator uvæ mittentem ſemen: & ſtillabunt montes dulcedinem, & omnes colles 14 culti erunt. Et convertam captivitatem populi mei Iſrael: & ædificabunt civitates deſertas, & inhabitabunt: & plantabunt vineas, & bibent vinum earum: & facient hortos, & comedent fru- 15 ctus eorum. Et plantabo eos ſuper humum ſuam: & non evellam eos ultrà de terra ſua, quam dedi eis, dicit Dominus Deus tuus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

8 Ἰδοὺ οἱ ὀφθαλμοὶ κυρίου τοῦ θεοῦ ἐπὶ τὴν βασιλείαν τῶν ἁμαρτωλῶν, καὶ ἐξαρῶ αὐτὴν ἀπὸ προσώπου τῆς γῆς· πλὴν ὅτι οὐκ εἰς τέλος ἐξαρῶ τὸν οἶκον (ϑ) Ἰακὼβ, λέγει κύριος. 9 (ι) Διότι ἐγὼ ἐντέλλομαι, καὶ (κ) λικμήσω ἐν πᾶσι τοῖς ἔθνεσι τὸν οἶκον (λ) Ἰσραὴλ, ὃν τρόπον λικμᾶται ἐν τῷ λικμῷ, καὶ οὐ μὴ 10 πέσῃ σύντριμμα ἐπὶ τὴν γῆν. Ἐν ῥομφαίᾳ τελευτήσουσι πάντες ἁμαρτωλοὶ λαοῦ μου, οἱ λέγοντες, Οὐ μὴ ἐγγίσῃ, (μ) οὐδὲ μὴ γένηται 11 ἐφ' ἡμᾶς τὰ κακά. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἀναστήσω τὴν σκηνὴν Δαυὶδ τὴν πεπτωκυῖαν, καὶ ἀνοικοδομήσω τὰ πεπτωκότα αὐτῆς, καὶ τὰ (ν) κατεσκαμμένα αὐτῆς ἀναστήσω, καὶ ἀνοικοδομήσω αὐτὴν καθὼς αἱ ἡμέραι τοῦ αἰ- 12 ῶνος· (ξ) Ὅπως ἐκζητήσωσιν οἱ κατάλοιποι τῶν ἀνθρώπων (ο) καὶ πάντα τὰ ἔθνη, ἐφ' οὓς ἐπικέκληται τὸ ὄνομά μου ἐπ' αὐτοὺς, λέ- 13 γει κύριος (π) ὁ ποιῶν πάντα ταῦτα. Ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, λέγει κύριος, καὶ καταλήψεται ὁ (ρ) ἀμητὸς τὸν τρυγητὸν, καὶ περκάσει ἡ σταφυλὴ ἐν τῷ σπόρῳ, καὶ ἀποσταλάξει τὰ ὄρη γλυκασμὸν, καὶ πάντες οἱ βουνοὶ σύμ- 14 φυτοι ἔσονται. Καὶ ἐπιστρέψω τὴν αἰχμαλωσίαν τοῦ λαοῦ μου Ἰσραὴλ, καὶ οἰκοδομήσουσι πόλεις τὰς ἠφανισμένας, καὶ κατοικήσουσι, καὶ (σ) φυτεύσουσιν ἀμπελῶνας, καὶ πίονται τὸν οἶνον αὐτῶν, καὶ (τ) ποιήσουσι κήπους, καὶ φάγον- 15 ται τὸν καρπὸν αὐτῶν. Καὶ καταφυτεύσω αὐτοὺς ἐπὶ τῆς γῆς αὐτῶν, καὶ οὐ μὴ ἐκσπασθῶσιν οὐκέτι ἀπὸ τῆς γῆς (υ), ἧς ἔδωκα αὐτοῖς, λέγει κύριος ὁ θεὸς (φ) παντοκράτωρ.

Ecce oculi Domini Dei ſuper regnum peccatorũ: & auferã illud à facie terræ. Veruntamen non in finẽ auferam domũ Jacob, dicit Dominus. Quia (b) ego præcipio, 9 & ventilabo in cunctis gentibus domum Iſrael, ſicut ventilatur in ventilabro: & non cadet contritio ſuper terram. In gladio mori- 10 entur omnes peccatores populi mei, qui dicũt; Non appropinquabit, neque venient ſuper nos mala. In die illa ſuſcitabo tabernaculũ 11 David, quod ceciderat, & reædificabo ea quæ corruerant ex ipſo, & quæ ſuffoſſa ſunt ex eo, ſuſcitabo, & inſtaurabo illud, ſicut dies ſeculi; ut (c) quærant reli- 12 qui hominum et omnes gentes, ſuper quos invocatum eſt nomen meum ſuper eos, dicit Dominus, faciens hæc omnia. Ecce dies ve- 13 niunt, dicit Dominus, et apprehendet (d) meſſis vindemiam, et matureſcet uva in ſemente. Et ſtillabunt montes dulcedinẽ, et omnes colles conſiti erunt. Et convertam 14 captivitatem populi mei Iſrael, & ædificabunt civitates (e) diſſipatas, & habitabunt: et plantabunt vineas, et bibent vinum earum: et facient hortos, et comedẽt fructũ eorum. Et plantabo eos ſuper ter- 15 ram ſuam: et non avellentur ampliùs de terra, quam dedi eis, dicit Dominus Deus omnipotens.

ʼΑΜΩʼΣ Β΄.

MS. A. (ϑ) Ἰσραὴλ, (ι) Διότι ἰδοὺ ἐγὼ (κ) λικμιῶ (λ) τοῦ Ἰσραὴλ, (μ) οὐδ' οὐ μὴ (ν) κατεσραμμένα (ξ) Ὅπως ἂν (ο) τὸν κύριον, καὶ (π) ὁ θεὸς ὁ ποιῶν ταῦτα. (ρ) ἀλοητὸς (σ) καταφυτεύσουσιν (τ) καταφυτεύσουσιν κήπους, (υ) αὐτῶν, (φ) ὁ παντοκράτωρ.

† ʼΑΜΩʼΣ Β΄.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

8 הָא קֳדָם יְיָ אֱלֹהִים גְּלַן עוֹבָדֵי מַלְכוּתָא חַיַּבְתָּא וְאֵשֵׁיצֵי יָתַהּ מֵעַל אַפֵּי אַרְעָא בְּרַם
9 אֲרֵי לָא גְּמִירָא וְשֵׁיצָאָה אֲשֵׁיצֵי יָת בֵּית יִשְׂרָאֵל אֲמַר יְיָ׃ אֲרֵי הָא אֲנָא מְפַקֵּד וַאֲבַדַּר
בְּכָל עַמְמַיָּא יָת בֵּית יִשְׂרָאֵל כְּמָא דִמְחַוְּרִין בְּעַרְבְּלָא וְלָא נָפֵל מִנֵּיהּ אֶבֶן מִבֵּינָהּ
10 לְאַרְעָא׃ בְּחַרְבָּא יִתְקַטְלוּן כָּל חַיָּבֵי עַמִּי דְאָמְרִין לָא תֵיתֵי וְתוֹחֵי עֲלָנָא בִּישְׁתָא׃
11 בְּעִדָּנָא הַהִיא אֲקִים יָת מַלְכוּתָא דְבֵית דָּוִד דִּנְפַלַת וְאֶבְנֵי יָת כְּרַכֵּיהוֹן וּכְנִישָׁתְהוֹן
אַתְקֵין וְתִשְׁלוֹט בְּכָל מַלְכְוָתָא וְתִגְמַר וּתְשֵׁיצֵי סַגֵּי מַשִׁרְיָתָא וְהִיא תִתְבְּנֵי וְתִשְׁתַּכְלַל
12 כְּיוֹמֵי עָלְמָא׃ בְּדִיל דְּיֵירְתוּן יָת שְׁאָרָא דֶאֱדוֹם וְכָל עַמְמַיָּא בֵּית יִשְׂרָאֵל דְּאִתְקְרֵי
13 שְׁמִי עֲלֵיהוֹן בְּכֵן אֲנָא יְיָ עָבֵד דָּא׃ הָא יוֹמַיָּא אָתַן אֲמַר יְיָ וְיֶעֱרַע רָדְיָא בַּחֲצוֹדָא
14 וְעָצַר עִנְבִין בְּמַפַּק בַּר זַרְעָא וְיִרְבּוּן טוּרַיָּא חֲמַר מֵרַת וְכָל רָמָתָא יִתְפַּלְחָן׃ וְאָתֵיב יָת
גָּלוּת עַמִּי יִשְׂרָאֵל וְיִבְנוּן קִרְוִין דְּצַדְיָן וְיָתְבוּן וְיִצְבּוּן כַּרְמִין וְיִשְׁתּוּן יָת חַמְרְהוֹן
15 וְיַעְבְּדוּן גִּנִּין וְיֵיכְלוּן יָת אִבֵּיהוֹן׃ וְאַקִּימִנּוּן עַל אַרְעֲהוֹן וְלָא יִטַּלְטְלוּן עוֹד מֵעַל אַרְעֲהוֹן
דִּיהָבִית לְהוֹן אֲמַר יְיָ אֱלָהָךְ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ecce coram Dño Deo palam ſunt opera regni nefarii, proinde diſperdam 8 illud à facie terræ: veruntamen non totali conſumptione conſumam domum Iſrael, dicit Dñs. Ecce namque mandabo & diſpergam per univerſas gentes 9 domum Iſrael, quemadmodum ſolent convolvere [*triticum*] in cribro, de cujus medio ne lapillus quidem intercidit in terram. Gladio occidentur 10 omnes peccatores populi mei, qui dicunt: Non adveniet neq; feſtinabit adverſum nos malum. Tempore illo ſuſcitabo regnum domus David quod 11 collapſum fuerat, & condam propugnacula eorum, & *eccleſias* eorum reparabo: dominabitúrq; in omnia regna, confringet & diſperdet copioſas legiones: ipſum verò ædificabitur fundabitúrq; ſicut dieb⁹ ſeculi. Ut poſ- 12 ſideant reliquias Idumæorum, & omnes populos dom⁹ Iſrael ſuper quos invocatum eſt nomen meum, ideò *ego Dominus* hoc facio. Ecce dies venient, 13 dicit Dñs, & occurret arator meſſori, & calcator uvarum ſementem educenti: & plurimum vini meri producent montes, colléſq; omnes erunt culti. Quamobrem convertam captivitatem populi mei Iſrael, qui vaſtatas reædi- 14 ficabunt urbes quas inhabitabunt; & plantabunt vineas, & bibent vinum earum, faciéntq; hortos quorum veſcentur fructibus. Et firmabo eos 15 ſuper terram ſuam adeò ut non transferantur ultrà à terra ſua quam dedi eis, dixit Dominus Deus tuus.

ספר עובדיה : א

CAP. I. א

auditum : Edom ad DEUS Dominus dixit Sic .Hobadiah Viſio
1 חֲזוֹן עֹבַדְיָה כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה לֶאֱדוֹם שְׁמוּעָה
, Surgite : eſt miſſus gentes in legatus & ,Domino cum à audivimus
שָׁמַעְנוּ מֵאֵת יְהוָה וְצִיר בַּגּוֹיִם שֻׁלָּח קוּמוּ
te dedi parvulum Ecce .prælium in eam ſuper ſurgamus &
2 וְנָקוּמָה עָלֶיהָ לַמִּלְחָמָה׃ הִנֵּה קָטֹן נְתַתִּיךָ
te extulit tui cordis Superbia .valde tu contemptus ; gentibus in
3 בַּגּוֹיִם בָּזוּי אַתָּה מְאֹד׃ זְדוֹן לִבְּךָ הִשִּׁיאֶךָ
dicens , ejus habitationis celſitudine , petræ ſciſſuris in habitantem
שֹׁכְנִי בְחַגְוֵי־סֶלַע מְרוֹם שִׁבְתּוֹ אֹמֵר
exaltaveris Si ? terram me faciet deſcendere Quis : ſuo corde in
4 בְּלִבּוֹ מִי יוֹרִדֵנִי אָרֶץ׃ אִם־תַּגְבִּיהַּ
inde , tuum nidum pone ſtellas inter ſi & , aquila ut
כַּנֶּשֶׁר וְאִם־בֵּין כּוֹכָבִים שִׂים קִנֶּךָ מִשָּׁם
.Dominus dixit , te faciam deſcendere
אוֹרִידְךָ נְאֻם־יְהוָה׃

Verſio VULG. LAT.

PROPHETIA
ABDIÆ.

1 VIſio Abdiæ. Hæc dicit Domin⁹ Deus ad Edom; Auditum audivimus à Domino, & legatum ad gentes miſit: Surgite, & conſurgamus adverſùs eum in prælium.
2 Ecce parvulum dedi te in Gentibus: contemptibilis tu es valdè.
3 Superbia cordis tui extulit te, habitantem in ſciſſuris petrarum, exaltantem ſolium tuum: qui dicis in corde tuo; Quis detrahet me
4 in terram? Si exaltatus fueris ut aquila, & ſi inter ſidera poſueris nidum tuum: indè detraham te, dicit Dominus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

(α) ʼΟΒΔΙΟΥ Ε΄.
ΚΕΦ. α΄.

1 Ὅρασις (β) Ὀβδιού. Τάδε λέγει κύριος ὁ θεὸς τῇ Ἰδουμαίᾳ, Ἀκοὴν ἤκουσα παρὰ κυρίου, καὶ περιοχὴν εἰς τὰ ἔθνη ἐξαπέστειλεν· Ἀνάστητε, καὶ ἐξαναστῶμεν ἐπ' αὐτὴν εἰς πό- 2 λεμον. Ἰδοὺ ὀλιγοστὸν δέδωκά σε ἐν τοῖς ἔθνεσιν, ἠτιμωμένος (γ) εἶ σὺ σφόδρα. Ὑπερηφανία τῆς καρδίας σου ἐπῆρέ σε 3 κατασκηνοῦντα ἐν ταῖς ὀπαῖς τῶν πετρῶν, ὑψῶν κατοικίαν αὐτοῦ, λέγων ἐν (δ) καρδίᾳ αὐτοῦ, 4 Τίς (ε) κατάξει με ἐπὶ τὴν γῆν; Ἐὰν μετεωρισθῇς, ὡς ἀετὸς, καὶ (ζ) ἐὰν ἀναμέσον τῶν ἄστρων θῇς νοσσιάν σου, ἐκεῖθεν κατάξω σε, λέγει κύριος.

OBDIU.
CAP. I.

VIſio Obdiu. Hæc dicit Dominus Deus Idumææ; Auditum audi- 1 vi à Domino: & munitionem in gentes miſit: Surgite, & conſurgamus adverſùs eam in prælium. Ecce minimum dedi te in gentib⁹: 2 inhonoratus es tu valdè. Superbia 3 cordis tui elevavit te habitantem in foraminibus petrarum, exaltans habitaculum ſuum, dicens in corde ſuo; Quis me detrahet in terram? Si exaltatus fueris, ut aqui- 4 la, & ſi inter media ſydera ponas nidum tuum; indè te detraham, dicit Dominus.

MS. A. (α) ʼΑΒΔΕΙΟΥ Ε΄. (β) Ἀβδιού. (γ) σὺ εἶ (δ) τῇ καρδίᾳ (ε) με κατάξει ἐπὶ (ζ) ἀναμέσον

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

1 נְבוּאַת עוֹבַדְיָה כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים לֶאֱדוֹם בְּסוֹרָא שְׁמַעְנָא מִן קֳדָם יְיָ וְאִזְגַּד
2 בְּעַמְמַיָּא שְׁלִיחַ קוּמוּ וְנִתְעַתַּד עֲלַהּ לִקְרָבָא׃ הָא חַלָּשׁ יְהַבְתָּךְ בְּעַמְמַיָּא בְּסִיר אַתְּ
3 לַחֲדָא׃ רְשַׁע לִבָּךְ אַטְעֲיָךְ דְּאַתְּ דָּמֵי לְנִשְׁרָא דְּשָׁרֵי בְּשִׁנֵּי כֵיפָא בְּרוּמָא מוֹתְבֵיהּ
4 אֲמַר בְּלִבֵּיהּ מַן יַחְתִּנַנִי לְאַרְעָא׃ אִם תָּרִים כְּנִשְׁרָא וְאִם בֵּינֵי כוֹכְבַיָּא תְּשַׁוֵּי מְדוֹרָךְ
מִתַּמָּן אַחֲתִנָּךְ אֲמַר יְיָ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.
CAPUT. I.

PRophetia Abdiæ: Sic dixit Dominus Deus de Edom: Nuntium audivi- 1 mus à facie Domini, & legatus ad gentes miſſus eſt: ſurgite & conſiſtamus adverſum eam in prælio. Ecce infirmum dedi te inter populos: contempti- 2 bilis tu es valdè. Impietas cordis tui ſeduxit te, quippe qui ſis ſimilis aquilæ 3 in ſcopulis petrarum commoranti, cujus habitaculum cùm ſit in excelſo, dicit in corde ſuo: Quis detrahet me in terram? Etiamſi exaltaveris te ſicut aqui- 4 la, & licet inter ſtellas habitaculum tuum poſueris, indè [*tamen*] detraham te, ait Dominus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

8 ܒܪܡ ܠܐ .ܐܪܥܐ ܐܦܝ ܥܠ ܡܢ ܘܐܘܒܕܝܗ .· ܚܛܝܬܐ ܒܡܠܟܘܬܐ ܡܪ̈ܘܬܐ ܡܪܐ ܕܡܪܝܐ ܥܝܢܘܗܝ ܗܐ *
9 ܘܐܒܕܪ .ܐܢܐ ܦܩܕ ܐܢܐ ܕܗܐ ܡܛܠ * .ܡܪܝܐ ܐܡܪ ܕܝܥܩܘܒ ܠܒܝܬܗ ܐܘܒܕܝܘܗܝ ܡܘܒܕܘ
ܥܠ ܡܢܗܘܢ ܨܪܘܪܐ ܢܦܠ ܘܠܐ .ܒܥܪܒܠܐ ܕܡܬܕܪܐ ܐܝܟ .· ܕܐܝܣܪܝܠ ܠܒܝܬܗ .ܥܡ̈ܡܐ ܒܟܠܗܘܢ
10 .ܒܝܫܬܐ ܥܠܝܢ ܬܐܬܐ ܘܠܐ ܬܡܛܐ ܠܐ : ܕܐܡܪܝܢ ܕܥܡܝ ܚܛܝ̈ܐ ܟܠܗܘܢ ܢܡܘܬܘܢ ܒܚܪܒܐ * .ܐܪܥܐ
11 ܘܡܦܘܠܬܗܘܢ .ܬܘܪ̈ܥܝܗܘܢ ܘܐܣܝܓ .ܕܢܦܠ ܕܕܘܝܕ ܡܫܟܢܗ ܐܩܝܡ .· ܗܘ ܒܝܘܡܐ ܒܗܘ *
12 .ܕܐܕܘܡ ܫܪܟܐ ܕܢܐܪܬܘܢ ܡܛܠ * .ܕܪ̈ܝܢ ܕܕܪ ܫܢ̈ܝܐ ܘܐܝܟ .ܕܥܠܡ ܝܘܡܬܐ ܐܝܟ ܘܐܒܢܝܘܗܝ .ܐܩܝܡ
13 ܐܬܝܢ ܝܘܡܬܐ ܗܐ * .ܗܠܝܢ ܕܥܒܕ ܡܪܝܐ ܐܡܪ .· ܥܠܝܗܘܢ ܫܡܝ ܕܐܬܩܪܝ ܥܡ̈ܡܐ ܘܟܠܗܘܢ
ܘܟܠܗܘܢ .ܚܠܝܘܬܐ ܛܘܪ̈ܐ ܘܢܪܕܘܢ .ܒܙܪܥܐ ܕܥܢܒ̈ܐ ܘܥܨܪܐ .ܠܩܛܘܦܐ ܕܝܫܐ ܘܢܕܪܟ .· ܡܪܝܐ ܐܡܪ
14 ܚܪ̈ܝܒܬܐ ܩܘܪ̈ܝܐ ܘܢܒܢܘܢ .ܐܝܣܪܝܠ ܕܥܡܝ ܫܒܝܬܐ ܘܐܗܦܘܟ * .ܢܬܒܣܡܢ ܪ̈ܡܬܐ
.ܦܐܪ̈ܝܗܘܢ ܘܢܐܟܠܘܢ .ܦܪ̈ܕܝܣܐ ܘܢܦܠܚܘܢ .ܚܡܪܗܘܢ ܘܢܫܬܘܢ ܟܪ̈ܡܐ ܘܢܢܨܒܘܢ .ܘܢܬܒܘܢ
15 ܡܪܝܐ ܐܡܪ .· ܠܗܘܢ ܕܝܗܒܬ ܐܪܥܗܘܢ ܡܢ ܬܘܒ ܢܬܬܥܩܪܘܢ ܘܠܐ .ܒܐܪܥܗܘܢ ܐܢܘܢ ܘܐܢܨܒ *
.ܐܠܗܟ * ܫܠܡܬ ܢܒܝܘܬܗ ܕܥܡܘܣ *

Ecce oculi Dñi dominorũ in regnũ ſcelera- 8 tum, ut perdã illud è ſuperficie terræ: at non ita perdã domũ Jacobi, dicit Dñs. Nam ecce 9 ego mandaturus ſum, & Iſraelitas diſperſurus inter omnes gentes, quemadmodũ cribro cribratur; & ne minutiſſimus quidem eorum decidet ſuper terram. Gladio occumbent omnes 10 peccatores populi mei, qui dicunt, Non attinget, neq; eveniet nobis malum. Eodem illo 11 die erigam tabernaculũ Davidis quod deciderat, & ſepiam rupturas eorum, collapſa eorũ inſtaurabo, & reædificabo illud ut dies ſeculi, & ut annos generationis generationum: Ut 12 hæreditate poſſideant reliquias Adum, & omnes populos ſuper quos invocatum eſt nomen meum, dicit Dñs qui hæc præſtiturus eſt. Ecce dies adveniunt, dicit Dñs, quibus area 13 vindemiam aſſequetur, & uvarũ expreſſio ſementem; manabunt montes dulcedine, & omnes colles ſuaveſcent: Reducam captivos 14 populi mei Iſraelis, & reædificabunt urbes deſtructas, & conſidebunt: plantabunt vineas, & bibent vinũ earum: conſerent hortos, & comedent fructus eorum. Deniq; plantabo eos in 15 terra eorum, ac non evellentur ampliùs è terra ſua quam dedi eis, dicit Dñs Deus tuus.

Prophetiæ Amoſi finis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

8 الانقضاء الى ليس انه لكني *الارض وجه من وازيلها .الخطاة مملكة على الاله الرب عينا ها *
9 كما *الامم جميع في اسرايل بيت وادري امر انا ها انه اجل من* الرب يقول يعقوب بيت اسرع
10 القايلين *شعبي خطاة جميع يسقطون بالسيف* الارض على الانكسار يسقط ولا *بالغربال يغربل
11 سقط ما وابني *سقطت التي داود خيمة اقيم اليوم ذلك في* الشرور علينا تكون ولا تقرب لا
12 الذين الامم وجميع *الرب الناس بقايا تطلب كي* الدهر كايام وابنيها مهدوماتها واقيم *منها
13 القطاف الدارس فيدرك *الرب يقول تاتي ايام ها* هذه الصانع الرب يقول عليهم اسمي دعي
14 شعبي سبي وارد* غروسا تصير الاكام وجميع *حلاوة الجبال ويقطر *الزرع في العنب ويفصح
بساتين ويغرسون *خمرها ويشربون كروما ويغرسون *ويسكنوها الفانية المدن ويبنون *اسرايل
15 اعطيتهم التي ارضهم من الان منذ يقلعون ولا* ارضهم على واغرسهم *ثمارها وياكلون
*الكل الضابط الرب يقول *اياها   *النبي عاموص نبوة تمت*

Ecce oculi Domini Dei ſuper regnum ſceleſtorum; & quidem amovebo illud è ſuperficie terræ: veruntamen haudquaquam ad finem uſque auferam domum Jacobi, dicit Dominus. Quoniam ecce ego 8 *præcipiam, & diſpergam domum Iſraelis per omnes gentes, quemadmodum cribro cribratur; & non cadet confractum ſuper* 9 *terram. Gladio corruent omnes peccatores populi mei, dicentes; Non accedent, neque contingent nobis mala. In illo die* 10 *erigam tabernaculũ Davidis quod corruit, & reædificabo quod ex eo decidit, erigam ruinas ejus, & ædificabo eas ſicut dies æternitatis:* 11 *Ut reliqui homines Dominum quærant, omnéſque gentes ſuper quas invocatum fuerit nomen meum, dicit Dominus qui facturus eſt.* 12 *Ecce dies venturi ſunt, dicit Dominus, quibus triturator vindemiatorem aſſequetur, & matureſcent uvæ tempore ſementis, & ſtillabunt montes dulcedinem, omnéſque colles fient plantaria:* 13 *Et reducam captivitatem populi mei Iſraelis, & reædificabunt urbes collapſas, & inhabitabunt eas: plantabunt vineas, & bibent vinum earum: conſerent hortos, & comedent fructus eorum.* 14 *Et plantabo eos ſuper terram ipſorum, & non evellentur poſthac è terra ſua quam dedi ipſis, dicit Dominus omnipotens.* 15

Finis Prophetiæ Amoſi Prophetæ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܬܘܒ ܢܒܝܘܬܗ ܕܥܘܒܕܝܐ ܢܒܝܐ *

1 ܘܐܝܙܓܕܐ .ܡܪܝܐ ܩܕܡ ܡܢ ܫܡܥܢ ܫܡܥܐ .ܠܐܕܘܡ ܡܪ̈ܘܬܐ ܡܪܐ ܡܪܝܐ ܐܡܪ ܗܟܢܐ .ܕܥܘܒܕܝܐ ܚܙܘܐ *
2 ܝܗܒܬܟ ܙܥܘܪܐ ܗܐ * .ܠܩܪܒܐ ܥܠܝܗ .ܘܢܩܘܡ ܩܘܡܘ .ܐܫܬܠܚ ܠܥܡ̈ܡܐ
3 .ܕܫܘܥܐ ܒܫܘܢܝܐ ܕܥܡܪ .ܐܛܥܝܟ ܕܠܒܟ ܫܘܒܗܪܗ * .ܛܒ ܐܢܬ ܘܫܝܛ .ܒܥܡ̈ܡܐ
4 ܘܐܢ : ܢܫܪܐ ܐܝܟ ܬܬܪܝܡ ܐܢ * .ܠܐܪܥܐ ܢܚܬܢܝ ܡܢܘ .ܒܠܒܗ ܘܐܡܪ .ܡܘܬܒܗ ܘܪܘܡܐ
.ܡܪܝܐ ܐܡܪ .ܐܚܬܟ ܬܡܢ ܡܢ .· ܩܢܟ ܬܣܝܡ ܟܘܟܒ̈ܐ ܒܝܬ

Sequitur Prophetia

OBADIÆ PROPHETÆ.

Viſio Obadiæ. Sic dicit Dñs dominorũ ad 1 Adum; Rumorem audivimus à Dño, & legatus ad gentes miſſus eſt. Surgite, invadamus eam prælio. Ecce minimũ poſuerã te in- 2 ter gentes, & es valdè abjectus: Arrogantia 3 *tamen* cordis tui te decepit ô qui habitas in fortiſſima rupe, & cujus ſedes eſt in ſublimi, ac dicis apud temetipſum, Quis me dejiceret in terrã? Si te efferres ut aquila, & ſi inter aſtra 4 collocares nidum tuum; inde te dejicerem, dicit Dominus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

*بسم الله الروف الرحيم

* امين* معنا تكون بركاته *عوبديا نبوة بترجمة نبتدا*

النبوة من الاول وهو عشر الثاني الاصحاح*

1 احتواء وارسل* الرب قبل من سماعا سمعتم* لادوم الاله الرب يقول هكذا* عوبديا رويا*
2 *الغاية الى مهان انت* الامم في صغيرا اعطيتك ها *للحرب عليها ونقم قوموا* الامم الى
3 قلبه في قايلا *مسكنه المرتفعة الصخور شقوق في الساكن ايها رفعك قلبك كبرياء *
4 من* عشك الكواكب بين وضعت وان* النسر مثل ارتفعت ان* الارض على يحدرني من
*الرب يقول احدرك هناك

IN NOMINE DEI
Clementis, Miſericordis, aggredimur interpretationem
Prophetiæ OBADIÆ, cujus
benedictiones nobis adſint,
Amen.

Textus duodecimus, hujus autem
Prophetiæ primus.

Viſio Obadiæ. Sic dicit Dominus Deus ad Edom; Auditum audiſtis à Domino, miſitque compendium ad gentes. Surgite, & ſurgamus adverſùs eam in prælium. Ecce dedi te parvum in genti- 1 *bus, deſpectus es tu præter modum. Su-* 2 *perbia cordis tui extulit te O cujus domicilium habitat in hiatibus petrarum ſublimium, dicens in corde tuo, Quis me deturbet in terram? Si te elevaveris ut* 3 *aquila, & ſi poſueris inter ſidera nidum tuum; indè te deturbabo, dicit Dominus.* 4

עוֹבַדְיָה : א

? noctis prædatores num ,te ad introierunt fures Num
5 אִם־גַּנָּבִים בָּאוּ־לְךָ אִם־שׁוֹדְדֵי לַיְלָה
? ſuam ſufficientiam fuiſſent furati Nónne ? es ſucciſus Quomodo
אֵיךְ נִדְמֵיתָה הֲלוֹא יִגְנְבוּ דַּיָּם
? racemos dimiſiſſent nónne ,te ad introiiſſent vindemiatores Si
אִם־בֹּצְרִים בָּאוּ לָךְ הֲלוֹא יַשְׁאִירוּ עֹלֵלוֹת :
.ejus abſcondita ſunt inquiſita , Heſau fuerunt quæſita Quomodo
6 אֵיךְ נֶחְפְּשׂוּ עֵשָׂו נִבְעוּ מַצְפֻּנָיו :
,te deceperunt : *tui fœderis* viri omnes te miſerunt terminum ad Uſque
7 עַד־הַגְּבוּל שִׁלְּחוּךָ כֹּל אַנְשֵׁי בְרִיתֶךָ הִשִּׁיאוּךָ
languorem ponent , tuum Panem *tuæ pacis* viri tibi invaluerunt
יָכְלוּ לְךָ אַנְשֵׁי שְׁלֹמֶךָ לַחְמְךָ יָשִׂימוּ מָזוֹר
, illa die in Nónne .eo in intelligentia Non .te ſubter
8 תַּחְתֶּיךָ אֵין תְּבוּנָה בּוֹ : הֲלוֹא בַּיּוֹם הַהוּא
intelligentiam & ,Edom de ſapientes faciam perdere & ,Dominus dixit
נְאֻם־יְהוָה וְהַאֲבַדְתִּי חֲכָמִים מֵאֱדוֹם וּתְבוּנָה
ſuccidatur ut , Teman tui fortes *frangentur* Et ? Heſau monte de
9 מֵהַר עֵשָׂו : וְחַתּוּ גִבּוֹרֶיךָ תֵּימָן לְמַעַן יִכָּרֶת־
,Jahacob *tui fratris rapina A* .*occiſione ab* , Heſau monte de vir
10 אִישׁ מֵהַר עֵשָׂו מִקָּטֶל : מֵחֲמַס אָחִיךָ יַעֲקֹב
te ſtare die In .ſeculum in ſuccidêris & , pudor te operiet
11 תְּכַסְּךָ בוּשָׁה וְנִכְרַתָּ לְעוֹלָם : בְּיוֹם עֲמָדְךָ
extranei & , ejus exercitum *alienos captivare* die in ,adverſo ex
מִנֶּגֶד בְּיוֹם שְׁבוֹת זָרִים חֵילוֹ וְנָכְרִים
, ſortem projiciebant Jeruſalaim ſuper & , ejus portas ingrediebantur
בָּאוּ שְׁעָרָו וְעַל־יְרוּשָׁלַםִ יַדּוּ גוֹרָל
,tui fratris die in *intuearis ne* Et .eis ex unus tanquam tu etiam
12 גַּם־אַתָּה כְּאַחַד מֵהֶם : וְאַל־תֵּרֶא בְיוֹם־אָחִיךָ
,*ipſos perire* die in Jehudah filiis *in læteris* nec ,*ipſum alienare* die in
בְּיוֹם נָכְרוֹ וְאַל־תִּשְׂמַח לִבְנֵי־יְהוּדָה בְּיוֹם אָבְדָם
ingrediaris Neque .anguſtiæ die in tuum os *magnifices ne &*
13 וְאַל־תַּגְדֵּל פִּיךָ בְּיוֹם צָרָה : אַל־תָּבוֹא
etiam aſpicias nec ,eorum contritionis die in mei populi portam *in*
בְשַׁעַר־עַמִּי בְּיוֹם אֵידָם אַל־תֵּרֶא גַם־
mittant nec : ejus contritionis die in ejus malum *in* tu
אַתָּה בְּרָעָתוֹ בְּיוֹם אֵידוֹ וְאַל־תִּשְׁלַחְנָה
ſuper ſtes Neque .ejus contritionis die in ejus ſubſtantiam in
14 בְחֵילוֹ בְּיוֹם אֵידוֹ : וְאַל־תַּעֲמֹד עַל־
ejus ſuperſtites *concludas* nec : ejus evaſores *ſuccidendum ad* bivio
הַפֶּרֶק לְהַכְרִית אֶת־פְּלִיטָיו וְאַל־תַּסְגֵּר שְׂרִידָיו
omnes ſuper Domini dies *propinqua* Quoniam .anguſtiæ die in
15 בְּיוֹם צָרָה : כִּי־קָרוֹב יוֹם־יְהוָה עַל־כָּל־
convertetur tua retributio : tibi fiet feciſti ſicut : gentes
הַגּוֹיִם כַּאֲשֶׁר עָשִׂיתָ יֵעָשֶׂה לָּךְ גְּמֻלְךָ יָשׁוּב
montem ſuper bibiſtis quemadmodum Nam ,tuum caput in
16 בְּרֹאשֶׁךָ : כִּי כַּאֲשֶׁר שְׁתִיתֶם עַל־הַר
deglutient &,bibent & : jugiter gentes omnes bibent , meæ ſanctitatis
קָדְשִׁי יִשְׁתּוּ כָל־הַגּוֹיִם תָּמִיד וְשָׁתוּ וְלָעוּ
,evaſio erit Sijon monte in Et fuiſſent non ſi ſic erunt &
17 וְהָיוּ כְּלוֹא הָיוּ : וּבְהַר צִיּוֹן תִּהְיֶה פְלֵיטָה
ſuas poſſeſſiones Jahacob domus poſſidebunt & : *ſanctitas* erit &
וְהָיָה קֹדֶשׁ וְיָרְשׁוּ בֵּית יַעֲקֹב אֵת מוֹרָשֵׁיהֶם :
domus & ,flamma Joſeph domus & ,ignis Jahacob domus erit Et
18 וְהָיָה בֵית־יַעֲקֹב אֵשׁ וּבֵית יוֹסֵף לֶהָבָה וּבֵית
erit non & : eos conſument & ,eos *in* ſuccendent & ; *ſtipulam in* ,Heſau
עֵשָׂו לְקַשׁ וְדָלְקוּ בָהֶם וַאֲכָלוּם וְלֹא־יִהְיֶה
.eſt locutus Dominus quia : Heſau domui ſuperſtes
שָׂרִיד לְבֵית עֵשָׂו כִּי יְהוָה דִּבֵּר :

Verſio VULG. LAT.

5 Si fures introïſſent ad te, ſi latrones
per noctem, quomodò conticuiſſes? nónne furati eſſent ſufficientia
ſibi? ſi vindemiatores
introïſſent ad te, numquid ſaltem
6 racemum reliquiſſent tibi? Quomodò
ſcrutati ſunt Eſau, inveſtigaverunt
7 abſcondita ejus? Uſque
ad terminum emiſerunt te: omnes
viri fœderis tui illuſerunt tibi: invaluerunt
adverſùm te viri pacis
tuæ: qui comedunt tecum, ponent
inſidias ſubter te: non eſt prudentia
8 in eo. Numquid non in
die illa, dicit Dominus, perdam
ſapientes de Idumæa, & prudentiam
9 de monte Eſau? Et timebunt
fortes tui à Meridie, ut intereat
10 vir de monte Eſau. Propter
interfectionem, & propter
iniquitatem in fratrem tuum Jacob,
operiet te confuſio, & peribis
11 in æternum. In die cùm ſtares
adverſùs eum, quando capiebant
alieni exercitum ejus, & extranei
ingrediebantur portas ej',
& ſuper Jeruſalem mittebant ſortem:
tu quoque eras quaſi unus
12 ex eis. Et non deſpicies in die
fratris tui, in die peregrinationis
ejus: & non lætaberis ſuper filios
Juda in die perditionis eorum:
& non magnificabis os
13 tuum in die anguſtiæ. Neque ingredieris
portam populi mei in
die ruinæ eorum: neque deſpicies
& tu in malis ejus in die vaſtitatis
illius: & non emittêris adverſùs
exercitum ejus in die vaſtitatis
14 illius. Neque ſtabis in
exitibus ut interficias eos qui fugerint:
& non concludes reliquos
15 ejus in die tribulationis. Quoniam
juxtà eſt dies Domini ſuper
omnes gentes: ſicut feciſti, fiet
tibi: retributionem tuam convertet
16 in caput tuum. Quomodò
enim bibiſtis ſuper montem ſanctum
meum, bibent omnes Gentes
jugiter: & bibent, & abſorbebunt,
& erunt quaſi non ſint.
17 Et in monte Sion erit ſalvatio,
& erit ſanctus: & poſſidebit domus
Jacob eos qui ſe poſſederant.
18 Et erit domus Jacob ignis,
& domus Joſeph flamma, & domus
Eſau ſtipula: & ſuccendentur
in eis, & devorabunt eos: &
non erunt reliquiæ domûs Eſau,
quia Dominus locutus eſt.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

5 Εἰ κλέπται εἰσῆλθον πρὸς σὲ, (η) ἢ λῃσταὶ νυκτὸς, ποῦ ἂν ἀπεῤῥίφης, οὐκ ἂν ἔκλεψαν τὰ ἱκανὰ ἑαυτοῖς; καὶ εἰ τρυγηταὶ εἰσῆλθον πρὸς σὲ, οὐκ ἂν (θ) ἐπελείποντο ἐπιφυλλίδα; 6 Πῶς (ι) ἐξηρευνήθη Ἡσαῦ, καὶ κατελήφθη (κ) τὰ κεκρυμμένα αὐτοῦ; 7 Ἕως τῶν ὁρίων (λ) ἐξαπέστειλάν σε· πάντες οἱ ἄνδρες τῆς διαθήκης σου ἀντέστησάν σοι, ἠδυνάσθησαν πρὸς σὲ ἄνδρες εἰρηνικοί σου, ἔθηκαν ἔνεδρα ὑποκάτω σου, οὐκ ἔστι (μ) σύνεσις αὐτοῖς. 8 Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγει κύριος, ἀπολῶ σοφοὺς ἐκ τῆς Ἰδουμαίας, καὶ σύνεσιν ἐξ ὄρους Ἡσαῦ. 9 Καὶ πτοηθήσονται οἱ μαχηταί σου οἱ ἐκ Θαιμὰν, ὅπως ἐξαρθῇ ἄνθρωπος ἐξ ὄρους Ἡσαῦ. 10 Διὰ τὴν σφαγὴν, καὶ τὴν ἀσέβειαν (ν) ἀδελφοῦ σου Ἰακὼβ, καλύψει σε αἰσχύνη, καὶ ἐξαρθήσῃ εἰς τὸν αἰῶνα. 11 Ἀφ' ἧς ἡμέρας ἀντέστης ἐξεναντίας, ἐν (ξ) ἡμέραις αἰχμαλωτευόντων ἀλλογενῶν δύναμιν αὐτοῦ, καὶ ἀλλότριοι εἰσῆλθον εἰς (ο) πύλας αὐτοῦ, καὶ ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ ἔβαλον κλήρους, καὶ σὺ ἦς ὡς εἷς ἐξ αὐτῶν. 12 Καὶ μὴ (π) ἐπίδῃς ἡμέραν ἀδελφοῦ σου ἐν ἡμέρᾳ ἀλλοτρίων, καὶ μὴ ἐπιχαρῇς ἐπὶ τοὺς υἱοὺς Ἰούδα ἐν ἡμέρᾳ ἀπωλείας αὐτῶν, καὶ μὴ (ρ) μεγαλοῤῥημονῇ ἐν ἡμέρᾳ θλίψεως, 13 Μηδὲ εἰσέλθῃς εἰς πύλας (σ) λαῶν ἐν ἡμέρᾳ πόνων αὐτῶν, μηδὲ ἐπίδῃς καὶ σὺ τὴν συναγωγὴν αὐτῶν ἐν ἡμέρᾳ ὀλέθρου αὐτῶν, (τ) καὶ μὴ συνεπιθῇ ἐπὶ τὴν δύναμιν αὐτῶν ἐν ἡμέρᾳ ἀπωλείας αὐτῶν, 14 Μηδὲ (υ) ἐπιστῇς ἐπὶ τὰς διεκβολὰς αὐτῶν, (φ) ἐξολοθρεῦσαι τοὺς ἀνασωζομένους αὐτῶν, μηδὲ συγκλείσῃς τοὺς φεύγοντας (χ) αὐτοῦ ἐν ἡμέρᾳ θλίψεως· 15 Διότι ἐγγὺς (ψ) ἡμέρα κυρίου ἐπὶ πάντα τὰ ἔθνη· ὃν τρόπον ἐποίησας, οὕτως (ω) ἔσται σοι· τὸ (α) ἀνταπόδομά σου ἀνταποδοθήσεται εἰς κεφαλήν σου. (β) 16 Διότι ὃν τρόπον ἔπιες ἐπὶ τὸ ὄρος τὸ ἅγιόν μου, πίονται πάντα τὰ ἔθνη οἶνον, πίονται καὶ καταβήσονται, καὶ ἔσονται καθὼς οὐχ ὑπάρχοντες. 17 Ἐν δὲ τῷ ὄρει Σιὼν ἔσται (γ) σωτηρία, καὶ ἔσται ἅγιον· καὶ κατακληρονομήσουσιν ὁ οἶκος Ἰακὼβ τοὺς κατακληρονομήσαντας αὐτούς. 18 Καὶ ἔσται ὁ οἶκος Ἰακὼβ πῦρ, ὁ δὲ οἶκος Ἰωσὴφ φλὸξ, ὁ δὲ οἶκος Ἡσαῦ εἰς καλάμην, καὶ (δ) ἐκκαυθήσονται εἰς αὐτοὺς, καὶ καταφάγονται αὐτοὺς, καὶ οὐκ ἔσται πυροφόρος (ε) τῷ οἴκῳ Ἡσαῦ, διότι κύριος ἐλάλησε.

Si fures introïſſent ad te, vel latrones per noctem, ubicunque projectus eſſes; nónne furati eſſent ſufficientia ſibi? Et, ſi vindemiatores introïſſent ad te; nónne reliquiſſent racemum? 5 *Quomodò inveſtigatus eſt Eſau, & deprehenſa ſunt abſcondita ejus?* 6 *Uſque ad terminos dimiſerunt te: omnes viri teſtamenti tui reſtiterunt tibi: prævaluerunt adverſùm te viri pacifici tui, poſuerunt inſidias ſubter te: non eſt intellectus eis.* 7 *In die illa, dicit Dominus, perdam ſapientes ex Idumæa, & intelligentiam de monte Eſau.* 8 *Et pavebunt pugnatores tui, qui de Theman; ut auferatur homo de monte Eſau.* 9 *Propter interfectionem, & impietatem (a) fratris tui Jacob, operiet te confuſio, & auferêris in æternum.* 10 *Ex die, quâ reſtitiſti contrà, in diebus captivantium alienigenarum fortitudinem ejus; & alieni ingreſſi ſunt in portas ejus, & ſuper Hieruſalem miſerunt ſortes: & tu eras quaſi unus ex eis.* 11 *Et non deſpicies diem fratris tui in die alienorum: & non lætaberis ſuper filios Juda in die perditionis eorum: & non magna loquêris in die anguſtiæ:* 12 *Neque ingredieris* in *portas populorũ in die laborum eorum. Et non deſpicies etiam tu congregationem eorum in die perditionis eorum: neque ſimul apponêris fortitudini eorum in die perditionis eorum.* 13 *Neque ſtabis in egreſſibus eorum, ut interficias eos, qui ſalvi fuerint ex eis, neque concludes fugitivos ejus in die tribulationis:* 14 *Quia juxta eſt dies Domini ſuper omnes gentes: Sicut feciſti, ſic erit tibi. Retributio tua reddetur in caput tuum.* 15 *Quia, quomodò bibiſti ſuper montem ſanctum meum; bibent omnes gentes vinum: bibent, & (b) deſcendent & erunt, quaſi non ſint.* 16 *In monte autem Sion erit ſalvatio: & erit ſanctus: & poſſidebunt domus Jacob eos, qui ſe poſſederant.* 17 *Et erit domus Jacob ignis, & domus Joſeph flamma; domus autem Eſau in ſtipulam: & ſuccendentur in eos, & devorabunt illos: & non erit (c) frumentarius domui Eſau: quia Dominus loquutus eſt.* 18

MS.A. (η) εἰ (θ) ὑπελείποντο (ι) ἐξηραυνήθη (κ) αὐτοῦ τὰ κεκρυμμένα; Ἕως (λ) σου (μ) σοι σύνεσις ἐν αὐτοῖς. Ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ, (ν) τὸν εἰς τὸν ἀδελφόν σου Ἰακὼβ, καὶ καλύψει (ξ) ἡμέρᾳ (ο) τὰς πύλας (π) ἐπίδοις (ρ) μεγαλορημονήσῃς (σ) λαοῦ σου ἐν ἡμέρᾳ πόνου (τ) μηδὲ (υ) στῇς (φ) τοῦ ἐξολεθρεῦσαι (χ) ἐξ αὐτῶν ἐν (ψ) ἡ ἡμέρα τοῦ κυρίου (ω) ἔστω (α) ἀνταπόδωμά σου ἀνταποδωθήσεται (β) Διὰ τοῦτο οὖν (γ) ἡ σωτηρία, (δ) ἐκκαυθήσεται (ε) ἐν τῷ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 אִם גַּנָּבִין אֲתוֹ עֲלָךְ אִם בָּזוֹזֵי לֵילְיָא אֵיכְדֵין הֲוֵיתָא דָמֵיךְ עַד דִּגְנַבוּ מִסַּתְהוֹן וְאִם
6 חָטוֹפִין כְּקָטוֹפִין אֲתוֹ עֲלָךְ הֲלָא מַשְׁאֲרִין עוֹלְלָן : אֵכְדֵין אִתְבְּלַשׁ עֵשָׂו אִתְגְּלִין
7 מַטְמוֹרוֹהִי : מִן תְּחוּמָא אַגְלִיוּךְ כָּל אֱנָשֵׁי קְיָמָךְ אַטְעִיוּךְ יְכִילוּ לָךְ אֱנָשֵׁי שְׁלָמָךְ אָכְלֵי
8 פָּתוֹרָךְ שַׁוִּיאוּ תַקְלָא תְּחוֹתָךְ מִדְּלֵית בָּךְ סוּכְלְתָנוּ : הֲלָא בְּעִדָּנָא הַהִיא אֲמַר יְיָ וְאוֹבֵיד
9 חַכִּימִין מֵאֱדוֹם וְכָל גְּבַר דְּבֵיהּ סוּכְלְתָנוּתָא מִכְּרַכָּא דְעֵשָׂו : וְיִתַּבְּרוּן גִּבָּרָךְ יָתְבֵי
10 דָרוֹמָא בְּדִיל דְּיִשְׁתֵּיצֵי גְּבַר דְּבֵיהּ צוֹרְבָא מִכְּרַכָּא דְעֵשָׂו מִקְּטוֹל : מֵחֲטוֹף אֲחוּךְ
11 יַעֲקֹב תַּחְפִּנָּךְ בַּהֲתָא וְתִשְׁתֵּיצֵי לַעֲלָם : בְּיוֹם מְקִימָךְ מִקֳּבֵל בְּיוֹמָא דְבַזּוּ עַמְמַיָּא נִכְסוֹהִי
12 וְנֻכְרָאִין עַלּוּ בִקְרוֹהִי וְעַל יְרוּשְׁלֶם רְמוֹ עַדְבִין אַף אַתְּ כְּחַד מִנְּהוֹן : וְדַחֲזֵיתָא בְּיוֹמָא
דַאֲחוּךְ בְּיוֹם תְּבִירֵיהּ וְדַחֲדֵיתָ לִבְנֵי יְהוּדָה בְּיוֹם תְּבָרְהוֹן וּדְאַסְגֵּיתָא לְמַלָּלָא רַבְרְבָן
13 בְּעִדָּן עָקָא : וּדְעַלְתָּא בִתְרְעֵי עַמִּי בְּיוֹם תְּבָרְהוֹן וְדַחֲזֵיתָא אַף אַתְּ בְּבִישְׁתֵּיהּ בְּיוֹם
14 תְּבִירֵיהּ וּדְאוֹשֵׁיטְתָּא יְדָךְ בְּנִכְסוֹהִי בְּיוֹם תְּבִירֵיהּ : וּדְקַמְתָּא עַל פִּרְקָא לְשֵׁיצָאָה יַת
15 מְעָרְקוֹהִי וְדִמְסַרְתָּא מְשֵׁיזְבוֹהִי בְּעִדָּן עָקָא : אֲרֵי קָרִיב יוֹמָא דַעֲתִיד לְמֵיתֵי מִן קֳדָם יְיָ
16 עַל כָּל עַמְמַיָּא כְּמָא דַעֲבַדְתְּ יִתְעֲבֵיד לָךְ גְּמֻלָךְ יְתוֹתַב בְּרֵישָׁךְ : אֲרֵי כְּמָא דַחֲדֵיתוּן עַל
מְחַת טוּרָא דְקוּדְשִׁי יִשְׁתּוּן כָּל עַמְמַיָּא כַּס פּוּרְעָנוּתְהוֹן תְּדִירָא וְיִשְׁתּוּן וְיִסְתַּלְעֲמוּן
17 וִיהוֹן כִּדְלָא הֲווֹ : וּבְטוּרָא דְצִיּוֹן תְּהֵי מְשֵׁיזְבָתָא וִיהוֹן קַדִּישִׁין וְיַחְסְנוּן דְּבֵית יַעֲקֹב נִכְסֵי
18 עַמְמַיָּא דַהֲווֹ מַחְסְנִין לְהוֹן : וִיהוֹן דְּבֵית יַעֲקֹב תַּקִּיפִין כְּאֶשָּׁתָא וּדְבֵית יוֹסֵף חֲסִינִין
כְּשַׁלְהוֹבִיתָא וּדְבֵית עֵשָׂו חַלָּשִׁין כְּקַשָּׁא וְיִשְׁלְטוּן בְּהוֹן וְיִקְטְלוּנוּן וְלָא יְהֵי שֵׁיזְבָא
לְבֵית עֵשָׂו אֲרֵי יְיָ גְּזַר כֵּן :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Si fures venerunt ad te, ſi prædones de nocte, quomodo ita ſoporatus es ut 5
quod ſufficiebat eis ſint furati? ſi raptores velut vindemiatores ad te veniſſent,
an non racemos aliquos feciſſent? Quomodo perveſtigatus eſt Eſau, detecta 6
ſunt abſcondita ejus? A termino in exilium deportarunt te omnes confœderati 7
tui: ſeduxerunt te, invaluerunt adverſum te pacifici tui: veſcentes
[*pane*] menſæ tuæ, poſuerunt offendiculum ſub te, eò quòd non ſit in te prudentia.
Nonne per id tempus, dicit Dñs, perdam ſapientes de Idumæa, & 8
quemlibet virum prudentia præditum ex arce Eſau? Et conterentur fortes 9
tui habitantes ad Meridiem, ut excindatur vir robore pollens ex arce Eſau
præ cæde. Propter rapinam in fratrem tuum Jacob [*à te illatam,*] operiet te 10
confuſio, atque in perpetuum excidêris. Quo die è contra ſtabas, die quo 11
diripiebant populi ſubſtantiam ejus, & extranei ingrediebantur civitatem
ejus, ac ſuper Jeruſalem projiciebant ſortes, tu quoq; velut unus ex eis eras.
Et quia vidiſti diem fratris tui, diem confractionis ejus, & quia lætatus es 12
ſuper filios Juda die interitus eorum, & quia multa magnificè locutus es in
tempore tribulationis. Atque ingreſſus es in portas populi mei die interitus 13
ejus, & vidiſti etiamnum malum ejus die exitii ejus, & extendiſti manum tuam
in ejus facultates die excidii ejus. Quiq; ſtetiſti in bivio ad excidendos 14
eorum profugos, atq; tradidiſti eorum ſuperſtites tempore adverſo. Inſtat 15
enim dies qui venturus eſt à facie Dñi contra gentes omnes: ut feciſti, fiet
tibi: retributio tua in caput tuum retorquebitur. Quoniam quemadmodum 16
lætitiam cepiſtis de ſubverſione montis ſanctitatis meæ, bibent omnes populi
calicem ultionis ſuæ jugiter: bibent certè & abſorbebuntur, eruntq; ac
ſi non fuiſſent. At in monte Sion erit evaſio, eruntq; ſancti, & poſſidebunt 17
prognati domus Jacob ſubſtantiam populorum qui eos poſſidebant. Erunt 18
prætereà qui de domo Jacob, fortes ſicut ignis; qui verò de domo Joſeph,
robuſti inſtar flammæ, ſed [*orti*] domus Eſau debiles velut ſtipula: & dominabuntur
eis, atq; trucidabunt eos, ita ut non ſint reliquiæ domui Eſau: ſiquidem
Dominus ita *ſtatuit*.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܐܢ ܓܢܒܐ ܐܬܘ ܥܠܝܟ܂ ܐܘ ܒܙܘܙܐ ܒܠܠܝܐ܂ ܐܝܟܢܐ ܫܬܩܬ ܥܕܡܐ ܕܓܢܒܘ ܣܦܩܗܘܢ܂ 5
ܘܐܢ ܩܛܘܦܐ ܐܬܘ ܥܠܝܟ܂ ܠܐ ܫܒܩܝܢ ܗܘܘ ܒܨܘܪܐ܂ * ܐܝܟܢܐ ܐܬܒܨܝ ܥܣܘ܂ ܘܢܦܩܘ 6
ܡܛܫܝܬܗ܂ * ܥܕܡܐ ܠܬܚܘܡܟ ܫܕܪܘܟ܂ ܟܠܗܘܢ ܓܒܪܐ ܕܩܝܡܟ ܐܛܥܝܘܟ܂ ܘܐܬܡܨܝܘ 7
ܠܟ܂ ܓܒܪܐ ܕܫܠܡܟ ܘܕܠܚܡܟ܂ ܣܡܘ ܟܡܝܢܐ ܬܚܘܬܝܟ܂ ܕܠܝܬ ܒܗ ܣܘܟܠܐ܀
* ܒܗܘ ܝܘܡܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܐܘܒܕ ܚܟܝܡܐ ܡܢ ܐܕܘܡ܂ ܘܣܘܟܠܬܢܐ ܡܢ ܛܘܪܐ 8
ܕܥܣܘ܂ * ܘܢܬܬܒܪܘܢ ܓܢܒܪܝܟ ܬܝܡܢ܂ ܘܢܐܒܕ ܐܢܫܐ ܡܢ ܛܘܪܐ ܕܥܣܘ܂ * ܡܛܠ ܩܛܠܐ 9 10
ܘܡܢ ܚܛܘܦܝܐ ܕܐܚܘܟ ܝܥܩܘܒ܂ ܬܚܦܝܟ ܒܗܬܬܐ܂ ܘܬܐܒܕ ܠܥܠܡ܂ * ܒܝܘܡܐ ܕܩܡܬ
ܠܘܩܒܠܗ܂ ܒܝܘܡܐ ܕܒܙܘ ܢܘܟܪܝܐ ܚܝܠܗ܂ ܘܢܘܟܪܝܐ ܥܠܘ ܠܬܪܥܘܗܝ܂ ܘܥܠ 11
ܐܘܪܫܠܡ ܐܪܡܝܘ ܦܣܐ܂ ܘܐܦ ܐܢܬ ܐܝܟ ܚܕ ܡܢܗܘܢ ܗܘܝܬ܂ * ܘܠܐ ܬܚܙܐ ܒܝܘܡܐ ܕܐܚܘܟ 12
ܒܝܘܡܐ ܕܢܘܟܪܝܐ܂ ܘܠܐ ܬܚܙܐ ܒܒܢܝ ܝܗܘܕܐ ܒܝܘܡܐ ܕܐܒܕܢܗܘܢ܂ ܘܠܐ ܬܪܘܒ ܦܘܡܟ
ܒܝܘܡܐ ܕܐܘܠܨܢܐ܂ * ܘܠܐ ܬܥܘܠ ܠܬܪܥܗ ܕܥܡܝ ܒܝܘܡܐ ܕܬܘܠܨܢܗܘܢ܂ ܘܠܐ ܬܚܙܐ ܐܦ 13
ܐܢܬ ܒܒܝܫܬܗ܂ ܒܝܘܡܐ ܕܬܒܪܗ܂ ܘܠܐ ܬܫܕܪܘܗܝ ܒܚܝܠܗ ܒܝܘܡܐ ܕܬܒܪܗ܂ * ܘܠܐ 14
ܬܩܘܡ ܥܠ ܡܦܩܢܐ܂ ܠܡܩܛܠܘ ܠܥܪܘܩܘܗܝ܂ ܘܠܐ ܬܫܠܡ ܫܪܟܢܘܗܝ܂ ܒܝܘܡܐ
ܕܐܘܠܨܢܐ܂ * ܡܛܠ ܕܩܪܝܒ ܗܘ ܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ܂ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ܂ ܐܝܟ 15
ܕܥܒܕܬ܂ ܢܬܥܒܕ ܠܟ܂ ܘܦܘܪܥܢܟ ܢܗܦܘܟ ܥܠ ܪܝܫܟ܂ * ܡܛܠ ܕܐܝܟܢܐ 16
ܕܐܫܬܝܬܘܢ ܥܠ ܛܘܪܐ ܕܩܘܕܫܝ܂ ܢܫܬܘܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܐܡܝܢܐܝܬ܂ ܢܫܬܘܢ
ܘܢܬܕܘܡܘܢ܂ ܘܢܬܕܠܚܘܢ܂ ܘܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܕܠܐ ܗܘܘ܂ * ܘܒܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ܂ ܢܗܘܐ ܦܠܛܘܬܐ܂ 17
ܘܢܗܘܐ ܩܕܝܫܐ܂ ܘܢܐܪܬܘܢ ܒܝܬ ܝܥܩܘܒ ܠܐܝܠܝܢ ܕܝܪܬܘ ܐܢܘܢ܂ * ܘܢܗܘܐ ܒܝܬ ܝܥܩܘܒ 18
ܢܘܪܐ܂ ܘܒܝܬ ܝܘܣܦ ܫܠܗܒܝܬܐ܂ ܘܒܝܬ ܥܣܘ ܩܫܐ܂ ܘܢܕܠܩܘܢ ܒܗܘܢ܂ ܘܢܐܟܠܘܢ
ܐܢܘܢ܂ ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܫܪܟܐ ܠܒܝܬܐ ܕܥܣܘ܂ ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܡܠܠ܂

* Si te fures aut direptores nocte ſunt aggreſſi, 5 quomodo ſiluiſti donec furarentur quod ſibi ſatis erat? & ſi vindemiatores invaſiſſent te, annon reliquiſſent racemationem? Quomodo 6 perveſtigatus eſt Eſau, & emanârunt abdita ejus? Ad terminum uſque te perduxerunt, 7 omnes viri fœderati tui deceperunt te, & prævaluerunt tibi: viri pacis & panis (i. *amici & convivæ*) tui, ſub te poſuerunt inſidias, O expers rationis. Eo die, dicit Dominus, 8 perdam ſapientem ex Adum, & prudentem ex monte Eſau; Et diripientur gigantes 9 tui O Theman, & peribit homo de monte Eſau. Propter cædem & rapinam illatam 10 fratri tuo Jacobo, obruet te pudor, & peribis in æternum: *illatam inquam* eo die quo inſurrexiſti 11 adversùs eum, quo die prædati ſunt alieni robur ejus, & alieni per portas ejus ingreſſi ſortes jecerunt ſuper Jeruſalem: ſed tu quoque ut unus ex eis eris. Ne *geſtiens* intuearis 12 diem fratris tui, diem alienorum: & ne aſpicias filios Judæ in die interitûs eorum: néve amplifices os tuum in die calamitatis. Ne ingrediaris portam populi mei 13 die tribulationum eorum: néve geſtias tu quoque de infortunio ejus die doloris ejus: neque pavorem injicias in exercitum ejus die mœroris ejus: Ne ſteteris in *anguſto* aditu ad 14 perimendum profugas ejus: neque prodas ſuperſtites ejus die anguſtiæ. Nam propinquus 15 eſt dies Domini ſuper omnes gentes; quemadmodum feciſti, ita fiet tibi: retributio tua recidet in caput tuum. Quemadmodum 16 enim bibiſtis ſuper monte ſancto meo, bibent jugiter omnes gentes: bibentes obſtupeſcent & conturbabuntur, eruntque acſi non fuiſſent. At in monte Sionis erit ſalus, 17 erit enim ſanctus: & poſſidebunt domus Jacobi eos qui ſe poſſederant: Et erit 18 domus Jacobi ignis, & domus Joſephi flamma, domus autem Eſau ſtipula; & accendentur in eis, & conſument eos; ita ut non ſit ſuperſtes domui Eſau: quia Dominus locutus eſt.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* إن كان السراق دخلوا إليك * أو لصوص الليل حيث طرحت * أليس سرقوا الكفاف لهم * 5
وإن كان القطافون دخلوا * أما تركوا بعلالة * كيف فتش عيسوا * وأخذت مخبياته * 6
* إلى حدودك أرسلوك * جميع رجال عهدك قاوموك * قووا عليك رجالك المسالمون * وضعوا 7
مكامن تحتك * ليس لك فهم بهم * في ذلك اليوم يقول الرب * أهلك الحكماء من أدوم * 8
والفهم من جبل عيسوا * ويجزع محاربوك الذين من تيمان * كي ينزع الإنسان من جبل 9
عيسوا * لأجل الذبح والنفاق الذي لأخيك يعقوب * ويغشاك الخزي * وتنزع إلى الأبد * 10
* منذ اليوم الذي قمت تجاهه * في يوم سبوا الغرباء الجنس قوته * والغرباء دخلوا إلى 11
أبوابه * وعلى أورشليم وضعوا قرعا * وأنت كنت مثل واحد منهم * ولا تنظر يوم أخيك 12
في يوم الغرباء * ولا تشمت ببني يهودا في يوم هلاكهم * ولا تتعظم بالقول في يوم الشدة *
* ولا تدخل إلى أبواب الشعوب في يوم أتعابهم * ولا تنظر أنت جمعهم في يوم موتهم * ولا 13
تحيط على جيشهم في يوم هلاكهم * ولا تقوم على مغاراتهم لتستأصل المخلصين منهم * 14
ولا تحبس الهاربين منهم في يوم الضيق * من أجل أن يوم الرب قريب على كل الأمم * كما 15
صنعت هكذا يكون لك * تكافا مكافاتك على رأسك * من أجل أنه كما شربت على جبلي 16
المقدس * تشرب جميع الأمم خمرا * يشربون وينزلون * ويكونون كأنهم لم يكونوا * وفي جبل 17
صهيون يكون الخلاص * ويكون مقدسا * ويرث بيت يعقوب الذين ورثوهم * ويكون بيت 18
يعقوب نارا * وبيت يوسف لهيبا * وبيت عيسوا قصبا * ويحترقون بهم ويأكلونهم * ولا يكون
حامل نار في بيت عيسوا * من أجل أن الرب تكلم *

Si latrones ingrederentur ad te aut fures 5 *nocturni, ubi projectus es; annon furarentur ſufficientiam ſuam? & ſi vindemiatores ingrederentur, annon relinquerent racemationem? Quomodo perquiſitus eſt* 6 *Eſau, & ablata ſunt abſtruſa ejus? Ad* 7 *terminos tuos miſerunt te, omnes viri fœderis tui adverſati ſunt tibi, niſi ſunt contra te viri pace conjuncti, poſuerunt inſidias ſub te; non animadvertis eos. In* 8 *illo die, dicit Dominus, perdam ſapientes ex Edom, & intelligentiam de monte Eſau: Et expaveſcent bellatores tui qui* 9 *ſunt de Theman; ut excindatur homo de monte Eſau: Propter cædem & impietatem* 10 *quam* exercuiſti *in fratrem tuum Jacobum: operietque te pudor, & excindêris in perpetuum: Inde ab eo die* 11 *quo ſurrexiſti adverſùs eum, quâ die diripuerunt alienigenæ robur ejus, & ingreſſi ſunt exteri ad portas ejus, et ſuper Jeruſalem poſuerunt ſortes, & tu eras ut unus ex eis. Et non videbis diem* 12 *fratris tui in die exterorum, neque inſultabis filiis Judæ in die interitûs eorum, neque verbis inſoleſces in die calamitatis, Neque ingredieris ad portas populorum* 13 *in die laborum ſuorum, neque videbis tu cætum eorum in die mortis ſuæ, neque obſidebis exercitum eorum in die interitûs ſui, Neque ſtabis ad ſaltus* 14 *eorum ut excindas eos qui ſe eripuerunt ex ipſis, neque carceribus detinebis profugas eorum in die anguſtiæ: Quoniam* 15 *dies Domini propinquus eſt ſuper omnes populos: ſicuti feciſti, ſic erit tibi: retributio tua tibi rependetur ſuper caput tuum. Nam quemadmodum bibiſti ſuper* 16 *monte meo ſancto, bibent omnes gentes vinum; bibent, ac deſcendent, eruntque quaſi non fuiſſent. In monte autem Sionis* 17 *erit ſalus, eritque ſacer: & poſſidebit domus Jacobi eos qui poſſidebant ipſos. Eritque domus Jacobi ignis, &* 18 *domus Joſephi flamma, domus autem Eſau arundines; ardebunt in eos, & devorabunt eos, ita ut non remaneat ferens ignem in domo Eſau: quia Dominus locutus eſt.*

יונה : א

, Peliſtim *cum* planitiem &, Heſau monte cum, Meridiem hæreditabūt Et
וְיָרְשׁוּ הַנֶּגֶב אֶת־הַר עֵשָׂו וְהַשְּׁפֵלָה אֶת־פְּלִשְׁתִּים 19
Binjamin &, Someron agrum & , Ephraim agrum poſſidebunt &
וְיָרְשׁוּ אֶת־שְׂדֵה אֶפְרַיִם וְאֵת שְׂדֵה שֹׁמְרוֹן וּבִנְיָמִן אֶת־
Chenaanim qui , Iſrael filiorū huj⁹ exercit⁹ trāſmigratio Et . Ghilhad
הַגִּלְעָד : וְגָלֻת הַחֵל־הַזֶּה לִבְנֵי יִשְׂרָאֵל אֲשֶׁר־כְּנַעֲנִים 20
, Sepharad in quæ , Jeruſalaim tranſmigratio & , Sarphath ad uſque
עַד־צָרְפַת וְגָלֻת יְרוּשָׁלַםִ אֲשֶׁר בִּסְפָרַד
montem in ſervatores aſcendent Et . Auſtri civitates poſſidebunt
יִרְשׁוּ אֵת עָרֵי הַנֶּגֶב : וְעָלוּ מוֹשִׁיעִים בְּהַר 21
. regnum Domino erit & ; Heſau montem judicandum ad Sijon
צִיּוֹן לִשְׁפֹּט אֶת־הַר עֵשָׂו וְהָיְתָה לַיהוָֹה הַמְּלוּכָה :

Verſio VULG. LAT.

19 Et hæreditabunt hi qui ad Au-
ſtrum ſunt, montem Eſau, & qui
in campeſtribus Philiſthiim : &
poſſidebunt regionem Ephraim,
& regionem Samariæ : & Benja-
20 min poſſidebit Galaad. Et tranſ-
migratio exercitûs hujus filiorum
Iſrael, omnia loca Chananæorum
uſque ad Sareptam : & tranſmi-
gratio Jeruſalem, quæ in Boſpho-
ro eſt, poſſidebit civitates Auſtri.
21 Et aſcendent ſalvatores in mon-
tem Sion judicare montem Eſau:
& erit Domino regnum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

19 Καὶ κατακληρονομήσουσιν οἱ ἐν Ναγὲβ τὸ ὄ-
ρος τὸ Ἡσαῦ, καὶ οἱ ἐν τῇ Σεφηλὰ τοὺς ἀλ-
λοφύλους· καὶ κατακληρονομήσουσι τὸ ὄρος
Ἐφραὶμ, καὶ τὸ πεδίον Σαμαρείας, καὶ Βενια-
20 μὶν, καὶ τὴν Γαλααδῖτιν. Καὶ τῆς μετοικεσίας ἡ
ἀρχὴ αὕτη τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, γῆ τῶν Χανα-
ναίων ἕως Σαρεπτῶν· καὶ ἡ μετοικεσία Ἱερου-
σαλὴμ ἕως Ἐφραθά· (ζ) κληρονομήσουσι
21 τὰς πόλεις τοῦ Ναγέβ. Καὶ ἀναβήσονται (ι) ἀ-
νασωζόμενοι ἐξ ὄρους Σιὼν, τοῦ ἐκδικῆσαι τὸ
ὄρος Ἡσαῦ, καὶ ἔσται τῷ κυρίῳ ἡ βασιλεία.

† ΟΒΔΙΟΥ Ε΄.

Et poſſidebunt, qui in (d) Nageb, 19
montem Eſau, & qui in Sephela,
alienigenas. Et poſſidebunt montē
(e) Ephræm, et campū Samariæ, et
Benjamin, et Galaaditin. Et tranſ- 20
migrationis principiū iſtud filiis
Iſrael, terra Chananæorū uſq; Sa-
reptam, & tranſmigratio Hieru-
ſalē uſq; Ephratha. Poſſidebunt
civitates Nageb: Et aſcendent, (f) 21
qui ſalvi fuerint, de monte Sion,
ut puniant montem Eſau. Et erit
Domino regnum.

E΄.

MS.A. (ζ) καὶ κληρονομήσουσι (η) ἄνδρες σεσωσμένοι † ΑΒΔΙΟΥ Ε΄.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

וְיַחְסְנוּן יָתְבֵי דָרוֹמָא יָת כְּרַכָּא דְעֵשָׂו וְיָתְבֵי שְׁפֵלְתָּא יָת אַרְעָא דִפְלִשְׁתָּאֵי וְיַחְסְנוּן 19
יָת קִרְוֵי אֶפְרַיִם וְיָת קִרְוֵי שֹׁמְרוֹן וּדְבֵית בִּנְיָמִן יָת יָתְבֵי אַרְעָא דְגִלְעָד : וְגָלוּת עַמָּא 20
הָדֵין דִבְנֵי יִשְׂרָאֵל דִבְאַרְעָא כְנַעֲנָאֵי עַד צָרְפַת וְגָלוּת יְרוּשְׁלֵם דִבְאַסְפַּמְיָא יַחְסְנוּן יָת
קִרְוֵי אַרְעָא דְדָרוֹמָא : וְיִסְקוּן מְשֵׁזְבִין בְּטוּרָא דְצִיּוֹן לְמִדַן יָת כְּרַכָּא דְעֵשָׂו וְתִתְגְּלֵי 21
מַלְכוּתָא דַיְיָ עַל כָּל יָתְבֵי אַרְעָא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et poſſidebunt Auſtrum incolentes arcem Eſau, & campeſtria habitantes 19
terram Philiſtinorum, & occupabunt civitates Ephraim, & civitates Sama-
riæ, & progeniti familiæ Benjamin habitatores terræ Galaad. Tandem 20
tranſmigratio populi hujus, filiorum ſcilicet Iſrael qui ſunt in terra Chana-
næorum uſq; ad Sareptam, & tranſmigratio Jeruſalem quæ eſt in Hiſpania,
poſſidebunt civitates terræ Auſtralis. Tunc aſcendent ſalvatores in montem 21
Sion, ad judicandam arcem Eſau, ac revelabitur regnum Domini omnibus
terræ incolis.

ספר יונה : א

CAP. I. א

ad vade, Surge . dicendo, Amithai filiū Jonah ad Domini verbum fuit Et
וַיְהִי דְּבַר־יְהוָֹה אֶל־יוֹנָה בֶן־אֲמִתַּי לֵאמֹר : קוּם לֵךְ אֶל־ 1 2
eorum malitia aſcendit quòd , ea in prædica & , magnam civitatem Nineveh
נִינְוֵה הָעִיר הַגְּדוֹלָה וּקְרָא עָלֶיהָ כִּי־עָלְתָה רָעָתָם
, Domini *faciebus* à Tarſis in *fugiendum ad* Jonah ſurrexit Et . *meis facies ad*
לְפָנָי : וַיָּקָם יוֹנָה לִבְרֹחַ תַּרְשִׁישָׁה מִלִּפְנֵי יְהוָֹה 3
dedit & , Tarſis *venientem* navem invenit & , Japho deſcendit &
וַיֵּרֶד יָפוֹ וַיִּמְצָא אָנִיָּה בָּאָה תַרְשִׁישׁ וַיִּתֵּן
, Tharſis in eis cum *veniendum ad* , eam in deſcendit & , ejus mercedem
שְׂכָרָהּ וַיֵּרֶד בָּהּ לָבוֹא עִמָּהֶם תַּרְשִׁישָׁה
, *mare ad* magnum ventum *extulit* Dominus Et . Domini *faciebus* à
מִלִּפְנֵי יְהוָֹה : וַיהוָֹה הֵטִיל רוּחַ־גְּדוֹלָה אֶל־הַיָּם 4
. conteri *putabat* navis & ; mari in magnus turbo fuit &
וַיְהִי סַעַר־גָּדוֹל בַּיָּם וְהָאֳנִיָּה חִשְּׁבָה לְהִשָּׁבֵר :
, ſuum Deum ad *vir* clamaverunt & , nautici timuerunt Et
וַיִּירְאוּ הַמַּלָּחִים וַיִּזְעֲקוּ אִישׁ אֶל־אֱלֹהָיו 5
alleviandum ad , mare *ad* navi in quæ , inſtrumenta projecerunt &
וַיָּטִלוּ אֶת־הַכֵּלִים אֲשֶׁר בָּאֳנִיָּה אֶל־הַיָּם לְהָקֵל
, *jacebat* & , navis *latera* ad deſcenderat Jonah Et . eis *deſuper*
מֵעֲלֵיהֶם וְיוֹנָה יָרַד אֶל־יַרְכְּתֵי הַסְּפִינָה וַיִּשְׁכַּב
dixit & , gubernator magnus eum ad acceſſit Et . erat ſoporatus &
וַיֵּרָדַם : וַיִּקְרַב אֵלָיו רַב הַחֹבֵל וַיֹּאמֶר 6
fortè ſi , tuum Deum ad clama , Surge ? ſoporato tibi Quid : ei
לוֹ מַה־לְּךָ נִרְדָּם קוּם קְרָא אֶל־אֱלֹהֶיךָ אוּלַי
vir dixerunt Et . pereamus non & , nobis Deus *recogitet*
יִתְעַשֵּׁת הָאֱלֹהִים לָנוּ וְלֹא נֹאבֵד : וַיֹּאמְרוּ אִישׁ 7
quem propter ſciamus ut , ſortes projiciamus & , *Ite* , ſuum *ſocium* ad
אֶל־רֵעֵהוּ לְכוּ וְנַפִּילָה גוֹרָלוֹת וְנֵדְעָה בְּשֶׁלְּמִי
ſors cecidit & , ſortes projecerunt Et . nobis hoc malum
הָרָעָה הַזֹּאת לָנוּ וַיַּפִּלוּ גּוֹרָלוֹת וַיִּפֹּל הַגּוֹרָל
propter , nobis nunc Indica : eum ad dixerunt Et . Jonah ſuper
עַל־יוֹנָה : וַיֹּאמְרוּ אֵלָיו הַגִּידָה־נָּא לָנוּ בַּאֲשֶׁר 8
, *venies* unde & , tuum opus quod : nobis hoc malum quem
לְמִי־הָרָעָה הַזֹּאת לָנוּ מַה־מְּלַאכְתְּךָ וּמֵאַיִן תָּבוֹא
Hebræus : eos ad dixit Et *? tu* populo quo de & , tua terra quæ
מָה אַרְצֶךָ וְאֵי־מִזֶּה עַם אָתָּה : וַיֹּאמֶר אֲלֵיהֶם עִבְרִי 9
fecit qui , *timens ego* cœlorum Deum Dominum & , *ego*
אָנֹכִי וְאֶת־יְהוָֹה אֱלֹהֵי הַשָּׁמַיִם אֲנִי יָרֵא אֲשֶׁר־עָשָׂה
. aridam & , mare
אֶת־הַיָּם וְאֶת־הַיַּבָּשָׁה :

Verſio VULG. LAT.

PROPHETIA

JONÆ.

CAP. I.

1 ET factum eſt verbum Domini
ad Jonam filium Amathi, dicens ;
2 Surge, & vade in Niniven civi-
tatem grandem, & prædica in ea:
quia aſcendit malitia ejus coram
3 me. Et ſurrexit Jonas, ut fugeret
in Tharſis à facie Domini, & de-
ſcendit in Joppen, & invenit na-
vem euntem in Tharſis : & dedit
naulum ejus, & deſcendit in eam
ut iret cum eis in Tharſis à facie
4 Domini. Dominus autem miſit
ventum magnum in mare : & fa-
cta eſt tempeſtas magna in mari,
& navis periclitabatur conteri.
5 Et timuerunt nautæ, & clamave-
runt viri ad deum ſuum : & miſe-
runt vaſa, quæ erant in navi, in
mare, ut alleviaretur ab eis: & Jo-
nas deſcendit ad interiora navis,
6 & dormiebat ſopore gravi. Et ac-
ceſſit ad eum gubernator, & dixit
ei ; Quid tu ſopore deprimeris ?
ſurge, invoca Deum tuum, ſi for-
tè recogitet Deus de nobis, &
7 non pereamus. Et dixit vir ad col-
legam ſuum ; Venite, & mittamus
ſortes, & ſciamus quarè hoc ma-
lum ſit nobis. Et miſerunt ſortes:
8 & cecidit ſors ſuper Jonam. Et
dixerunt ad eum; Indica nobis cu-
jus cauſâ malum iſtud ſit nobis :
quod eſt opus tuum ? quæ terra
tua, & quò vadis ? vel ex quo po-
9 pulo es tu? Et dixit ad eos ; He-
bræus ego ſum, & Dominum Deū
cœli ego timeo, qui fecit mare &
aridam.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΙΩΝΑΣ. ϛ΄.

ΚΕΦ. α΄.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς Ἰωνᾶν
2 τὸν τοῦ Ἀμαθὶ, λέγων, Ἀνάστηθι, καὶ (α)
πορεύθητι εἰς Νινευὴ τὴν πόλιν τὴν μεγά-
λην, καὶ κήρυξον ἐν αὐτῇ, ὅτι ἀνέβη ἡ
3 κραυγὴ τῆς κακίας αὐτῆς πρὸς μέ. Καὶ ἀν-
έστη Ἰωνᾶς τοῦ φυγεῖν εἰς Θαρσὶς (β) ἐκ
προσώπου κυρίου· καὶ κατέβη εἰς Ἰόππην, καὶ
εὗρε πλοῖον βαδίζον εἰς Θαρσὶς, καὶ ἔδω-
κε τὸ ναῦλον αὐτοῦ, καὶ (γ) ἀνέβη εἰς αὐτὸ,
τοῦ πλεῦσαι (δ) μετ᾽ αὐτῶν εἰς Θαρσὶς
4 ἐκ προσώπου κυρίου. Καὶ κύριος ἐξήγειρε
πνεῦμα (*) ἐπὶ τὴν θάλασσαν, καὶ ἐγένετο
κλύδων μέγας ἐν τῇ θαλάσσῃ, καὶ τὸ πλοῖον
5 ἐκινδύνευε τοῦ (ε) συντριβῆναι. Καὶ ἐφο-
βήθησαν οἱ ναυτικοὶ, καὶ (ζ) ἀνεβόησαν ἕκα-
στος πρὸς τὸν θεὸν (η) αὐτοῦ, καὶ ἐκβολὴν ἐ-
ποιήσαντο τῶν σκευῶν τῶν ἐν τῷ πλοίῳ εἰς τὴν
θάλασσαν, τοῦ κουφισθῆναι ἀπ᾽ αὐτῶν· Ἰω-
νᾶς δὲ κατέβη εἰς τὴν κοίλην τοῦ πλοίου, καὶ ἐ-
6 κάθευδε, καὶ ἔρεγχε. Καὶ προσῆλθε πρὸς
αὐτὸν ὁ πρωρεὺς, καὶ εἶπεν (θ) αὐτῷ, Τί
σὺ ῥέγχεις; ἀνάστα, καὶ ἐπικαλοῦ τὸν θεόν σου,
(ι) ὅπως διασώσῃ ὁ θεὸς ἡμᾶς, καὶ οὐ μὴ
7 ἀπολώμεθα. Καὶ εἶπεν ἕκαστος πρὸς τὸν πλη-
σίον αὐτοῦ, Δεῦτε βάλωμεν κλήρους, καὶ
ἐπιγνῶμεν, τίνος ἕνεκεν ἡ κακία αὕτη ἐστὶν
ἐν ἡμῖν. καὶ ἔβαλον κλήρους, καὶ ἔπεσεν ὁ
8 κλῆρος ἐπὶ Ἰωνᾶν. Καὶ (κ) εἶπον πρὸς
αὐτὸν, Ἀπάγγειλον ἡμῖν, (λ) τίς σου ἡ ἐρ-
γασία ἐστὶ, καὶ πόθεν ἔρχῃ, καὶ ἐκ ποίας χώ-
9 ρας, καὶ ἐκ ποίου λαοῦ εἶ σύ; Καὶ εἶπε πρὸς
αὐτοὺς, Δοῦλος κυρίου (μ) εἰμὶ ἐγὼ, καὶ τὸν κύ-
ριον θεὸν τοῦ οὐρανοῦ ἐγὼ σέβομαι, ὃς ἐποί-
ησε τὴν θάλασσαν καὶ τὴν ξηράν.

JONAS.

CAP. I.

ET factum eſt verbum Domini 1
ad Jonam filiū Amathi, dicens;
Surge, & vade in Ninevem ci- 2
vitatem magnam, & prædica in
ea: quia aſcendit clamor malitiæ
ejus ad me. Et ſurrexit Jonas, ut 3
fugeret in Tharſis à facie Domi-
ni: & (a) deſcendit in Joppen, et
invenit navem euntē in Tharſis,
deditque naulum ſuum, et aſcen-
dit in eam, ut navigaret cum eis
in Tharſis à facie Domini. Et 4
Dominus ſuſcitavit (b) ſpiritum
in mare: & facta eſt tempeſtas
magna in mari: & navis pericli-
tabatur conteri. Et timuerūt nau- 5
tæ, & clamaverunt unuſquiſque
ad deum ſuum: & jactum fece-
runt vaſorum, quæ erant in navi,
in mare, ut alleviaretur ab eis.
Jonas autem deſcendit in ven-
trem navis, & dormiebat, &
ſtertebat. Et acceſſit ad eum pro- 6
reta, & dixit ei; Quid tu ſtertis?
Surge, et invoca Deum tuum; (c)
ut ſalvos faciat nos Deus, & non
pereamus. Et dixit unuſquiſque 7
ad proximum ſuum; Venite, mit-
tamus ſortes, & cognoſcamus,
cujus gratiâ malitia hæc eſt ſu-
per nos. Et miſerunt ſortes: &
cecidit ſors ſuper Jonam. Et di- 8
xerunt ad eum; Annuntia no-
bis, (d) quod eſt opus tuum, &
unde (e) venis, & ex qua re-
gione, & ex quo populo es tu.
Et dixit ad eos; (f) Servus Do- 9
mini ego ſum; & Dominum De-
um cœli ego colo, qui fecit mare,
& aridam.

MS.A. ΙΩΝΑΣ ϛ΄. (α) πορεύου εἰς τὴν Νινευὴ (β) ἀπὸ (γ) ἐνέβη (δ) εἰς Θαρσεὶς μετ᾽ αὐτῶν (*) εἰς (ε) διαλυθῆναι. (ζ) ἐβόων (η) αὐτῶν, (θ) πρὸς αὐτὸν, (ι) εἴπως (κ) εἶπαν (λ) τίνος ἕνεκεν ἡ κακία αὕτη ἐστὶν ἐν ἡμῖν; τίς (μ) ἐγώ εἰμι,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִם יוֹנָה בַר אֲמִתַּי לְמֵימַר : קוּם אֱזֵל לְנִינְוֵה קַרְתָּא 1 2
רַבְּתָא וְאִתְנַבֵּי עֲלַהּ אֲרֵי סְלִיקַת בִּישַׁתְהוֹן קֳדָמַי : וְקָם יוֹנָה לְמֶעֱרַק לְיַמָּא מִן קֳדָם 3
דְּאִתְנַבֵּי בִּשְׁמָא דַיְיָ וּנְחַת לְיָפוֹ וְאַשְׁכַּח אִלְפָא דַּאֲזָלָא לְיַמָּא וִיהַב אַגְרַהּ וּנְחַת בַּהּ לְמֵיזַל
עִמְּהוֹן בְּיַמָּא מִן קֳדָם דְּאִתְנַבֵּי בִּשְׁמָא דַיְיָ : וַיְיָ אֲרִים רוּחַ רַב עַל יַמָּא וַהֲוָה נַחְשׁוֹל 4
רַב בְּיַמָּא וְאִלְפָא בָּעְיָא לְאִתַּבָּרָא : וּדְחִילוּ סַפָּנַיָּא וּבְעוֹ גְּבַר מִן דַּחַלְתֵיהּ וַחֲזוֹ אֲרֵי 5
לֵית בְּהוֹן צְרוֹךְ וּרְמוֹ יָת מָנַיָּא דִבְאִלְפָא לְיַמָּא לְאַקָּלָא מִנְהוֹן וְיוֹנָה נְחֵית לְאַרְעִית
שִׁדָּא דְאִלְפָא וּשְׁכִיב וּדְמוֹךְ : וּקְרֵב לְוָתֵיהּ רַב סַפָּנַיָּא וַאֲמַר לֵיהּ מָא אַתְּ דָּמוֹךְ קוּם 6
צַלִּי קֳדָם אֱלָהָךְ מָאִם יְרַחֵים מִן קֳדָם יְיָ עֲלָנָא וְלָא נוּבַד : וַאֲמַרוּ גְּבַר לְחַבְרֵיהּ 7
אִיתוֹ וּנְרְמֵי עַדְבִין וְנִדַּע בְּדִיל מָה בִּישְׁתָא הָדָא לָנָא וּרְמוֹ עַדְבִין וּנְפַל עַדְבָא עַל יוֹנָה :
וַאֲמַרוּ לֵיהּ חַוִּי כְעַן לָנָא בְּדִיל מָה בִּישְׁתָא הָדָא לָנָא מָה עֲבִידְתָּךְ וּמְנָן אַתְּ אָתֵי אֵי דָא 8
הִיא מְדִינְתָּךְ וְאֵי מִדֵּין עַמָּא אַתְּ : וַאֲמַר לְהוֹן יְהוּדָאָה אֲנָא וּמִן קֳדָם יְיָ אֱלָהָא דִשְׁמַיָּא 9
אֲנָא דָחֵיל דַּעֲבַד יָת יַמָּא וְיָת יַבֶּשְׁתָּא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. I.

ET factum eſt verbum prophetiæ à facie Dñi cum Jona filio Amithai di- 1
cendo. Surge, vade in Niniven civitatem grandem, & prophetiza in eam : 2
aſcendit enim malitia eorum ante conſpectum meum. Et ſurrexit Jonas fu- 3
giendi cauſa ad mare, ne in nomine Dñi prophetaret : & deſcendit in Joppen,
ubi navem offendit quæ pergebat in mare : & cùm dediſſet mercedem ejus
deſcendit in eam, ut iret cum eis per mare, ne in nomine Dñi vaticinaretur.
Dñs autē excitavit ventū magnū ſup mare, & facta eſt tempeſtas magna in 4
mari, adeò ut navis quæreret conteri. Qua de cauſa timuerunt nautæ, & de- 5
precati ſunt unuſquiſque deum ſuum : ſed cùm vidiſſent quòd nulla eſſet in eis
utilitas, projecerunt quæ erant in navi vaſa in mare, quò hiſce levaretur. Jo-
nas autem deſcenderat ad infimum navis latus qui decumbens dormiebat. Et 6
acceſſit ad eum princeps nautarum, & dixit ei : Quid tu ſomno indulges ?
ſurge, ora coram Deo tuo, ſi fortè miſericordia concedatur à Dño nobis, quò
minimè pereamus. Et dixerunt unuſquiſque ad proximum ſuum : Venite & 7
projiciamus ſortes, ut ſciamus propter quem hoc malum ſit nobis : miſerunt
ergo ſortes, & cecidit ſors ſuper Jonam. Itaque dixerunt ei: Indica nunc no- 8
bis quamobrem malum hoc impendet nobis ; quod ſit opus tuum, & unde ve-
nias, & quæ ſit provincia tua, & ex qua gente ſis. Et reſpondit eis : Jehudæus 9
ſum : & à conſpectu Dñi Dei cœli ego timeo, qui mare fecit & aridam.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܢܐܪܬܘܢ ܕܒܓܪܒܝܐ ܠܛܘܪܐ ܕܥܣܘ. ܘܕܒܫܦܠܬܐ ܠܦܠܫܬܝܐ. ܘܢܐܪܬܘܢ ܚܩܠܐ ܕܐܦܪܝܡ 19
ܘܚܩܠܐ ܕܫܡܪܝܢ. ܘܒܢܝܡܝܢ ܠܓܠܥܕ. * ܘܫܒܝܬܐ ܩܕܡܝܬܐ ܗܕܐ ܕܒܢܝ̈ ܐܝܣܪܝܠ. ܕܒܟ 20
ܢܥܢ. ܥܕܡܐ ܠܨܪܦܬ. ܘܫܒܝܬܐ ܕܐܘܪܫܠܡ ܕܒܐܣܦܢܝܐ. ܢܐܪܬܘܢ ܠܡܕܝܢ̈ܬܐ ܕܬܝܡܢܐ.
* ܘܢܣܩܘܢ ܦܪ̈ܝܩܐ ܠܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ. ܠܡܕܢ ܠܛܘܪܐ ܕܥܣܘ. ܘܬܗܘܐ ܡܠܟܘܬܐ ܠܡܪܝܐ. 21
* ܫܠܡܬ ܢܒܝܘܬܗ ܕܥܘܒܕܝܐ ܢܒܝܐ *

Et poſſidebunt Aquilonares montem Eſau; & 19
qui ſunt in planitie, Paleſtinos; & poſſidebunt
agrum Aphremi & agrum Samariæ; & Benjamen Gelaadem. Et captivitas prior iſta filiorũ 20
Iſraelis, erit à Chanaane Sarphath uſque: &
captivitas Jeroſolymorum quæ erit in Hiſpania, poſſidebit urbes Auſtrales. Et aſcendent 21
qui ſervati fuerint, in montem Sionis, ad judicandum montem Eſau: & regnum Dño erit.

Prophetiæ Obadiæ Prophetæ finis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ويرث الذين في جات جبل عيسوا * والذين في الصحراء القبايل الغريبه * ويرثون جبل افرام 19
وبقعة سامرن * وبنيامين والجلعاديه * ورأس السبي هو لبني اسرايل ارض الكنعانيين والي 20
الصوارف * وسبي ايروسليم الي افراثا * يرثون مدن ناجاب * ويصعد الرجال المتخلصون من جبل 21
صهيون لينتقموا من جبل عيسوا ويكون الملك للرب * * تمت نبوه عوبديا *

Et poſſidebunt qui ſunt in Geth, montem 19
Eſau; et qui ſunt in deſerto, nationes ex-
teras: et poſſidebunt montem Aphremi, et
planitiem Samariæ, et Benjaminum, et Ga-
laaditin. Principium prædæ erit filiis Iſ- 20
raelis terra Chananæorum uſque ad Sava-
reph; & præda Jeroſolymorum, uſque ad
Ephratam: poſſidebunt urbes Nageb; Et 21
aſcendent viri qui evaſerint, è monte Sio-
nis, ad ſumendum ultionem ex monte E-
ſau: eritque regnum Domino.

Finis Prophetiæ Obadiæ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܬܘܒ ܢܒܝܘܬܗ ܕܝܘܢܢ ܢܒܝܐ *   * ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

* ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܝܘܢܢ ܒܪ ܡܬܝ ܟܕ ܐܡܪ. * ܩܘܡ ܙܠ ܠܢܝܢܘܐ ܡܕܝܢܬܐ. 1 2
ܪܒܬܐ. ܘܟܪܘܙ ܒܗ. ܡܛܠ ܕܣܠܩܬ ܒܝܫܘܬܗܘܢ ܩܕܡܝ. * ܘܩܡ ܝܘܢܢ ܠܡܥܪܩ ܠܬܪܫܝܫ 3
ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܢܚܬ ܠܝܘܦܐ. ܘܐܫܟܚ ܐܠܦܐ ܕܐܙܠܐ ܠܬܪܫܝܫ. ܘܝܗܒ ܐܓܪܗ. ܘܢܚܬ
ܠܗ. ܠܡܐܙܠ ܥܡܗܘܢ ܠܬܪܫܝܫ. ܠܡܥܪܩ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. * ܘܡܪܝܐ ܐܪܡܝ ܪܘܚܐ ܪܒܬܐ 4
ܒܝܡܐ. ܘܗܘܐ ܡܥܠܥܠܐ ܪܒܐ ܒܝܡܐ. ܘܐܠܦܐ ܡܬܛܪܦܐ ܗܘܬ ܠܡܬܒܪܘ. * ܘܕܚܠܘ 5
ܡܠܚܐ. ܘܩܥܘ ܐܢܫ ܠܘܬ ܐܠܗܗ. ܘܫܕܘ ܡܐܢܐ ܕܒܐܠܦܐ ܠܝܡܐ. ܕܢܩܠܘܢ ܡܢܗܘܢ.
ܝܘܢܢ ܕܝܢ ܢܚܬ ܗܘܐ ܠܫܝܦܘܬܗ ܕܐܠܦܐ. ܘܕܡܟ. * ܘܩܪܒ ܠܘܬܗ ܪܒ ܡܠܚܐ. ܘܐܡܪ ܠܗ. 6
ܡܢܐ ܕܡܟ ܐܢܬ. ܩܘܡ ܩܪܝ ܠܐܠܗܟ. ܕܠܡܐ ܢܦܪܘܩ ܐܠܗܐ. ܘܠܐ ܢܐܒܕ. * ܘܐܡܪ ܓܒܪ 7
ܠܚܒܪܗ. ܬܘ ܢܪܡܐ ܦܣܐ. ܘܢܕܥ ܡܛܠ ܡܢܘ ܗܕܐ ܒܝܫܬܐ ܠܢ. ܘܐܪܡܝܘ ܦܣܐ.
ܘܢܦܠ ܦܣܐ ܕܝܘܢܢ. * ܘܐܡܪܘ ܠܗ. ܚܘܝܢ ܡܛܠ ܡܢܘ ܗܕܐ ܒܝܫܬܐ ܠܢ. ܡܢܘ 8
ܥܒܕܟ. ܘܡܢ ܐܝܟܐ ܐܬܝܬ. ܘܐܝܢܐ ܗܝ ܐܪܥܟ. ܘܡܢ ܐܝܢܐ ܥܡܐ ܐܢܬ. * ܐܡܪ ܠܗܘܢ ܝܘܢܢ. 9
ܥܒܪܝܐ ܐܢܐ. ܘܠܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܫܡܝܐ ܕܚܠ ܐܢܐ. ܕܥܒܕ ܝܡܐ ܘܝܒܫܐ.

Sequitur Prophetia

JONÆ PROPHETÆ.

CAPUT. I.

Fuit ſermo Dñi ad Jonam filium Mathæi, di- 1
cendo; Surge, vade in Ninivem urbẽ magnam, 2
& prædica illi: aſcendit enim malignitas eo-
rum in conſpectũ meũ. Surrexit ergò Jonas ad 3
fugiendum in Tharſis à conſpectu Dñi: cúmq;
deſcendiſſet in Joppen, reperit navim euntem
in Tharſis; datóq; naulo deſcendit in eam, ut
abiret cum eis in Tharſum, ut fugeret à con-
ſpectu Dñi. Verùm Dñs excitavit ventum ve- 4
hementem in mari, factáque eſt ſumma tem-
peſtas in mari, adeóq; navis in illa volutaba-
tur ad fracturam patiendam. Quare perterriti 5
nautæ, clamabant quiſque ad deum ſuum: &
vaſa è navi projecerunt in mare, ut ſeſe leva-
rent: Jonas autem deſcenderat in profundum
carinæ, & dormierat. Sed accedens ad eum 6
princeps nautarũ, dixit illi; Quid ſomnolentꝰ
es? ſurge, invoca Deum tuum: forſitan ſerva-
bit nos Deus quin pereamus. Deinde dixit al- 7
ter alteri; Agite, projiciamus ſortes ut cogno-
ſcamꝰ cujus cauſâ tantũ infortuniũ contigerit
nobis. Cùm ergò ſortes jeciſſent, & ſors Jonæ
aſcendiſſet; Dixerunt ei, Indica nobis qua de 8
cauſa infortunium iſtud acciderit nobis: quæ
ars tua? & unde es? quænam eſt patria tua? &
ex qua gente es tu? Reſpondit eis Jona; He- 9
bræus ſum, & Dominum Deum cœli colo, fa-
ctorem maris & continentis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بدو ترجمة نبوه يونان ابن اماثي * بركاته تشملنا *
* امين *

* الفصل الاول *   * الاصحاح الثالث عشر * وهو الاول من النبوه *

* وكان قول الرب الي يونان ابن اماثي قايلا * قم وامض الي نينوي المدينة العظيمة وناد فيها * 1 2
لان صراخ شرها صعد الي * فقام يونان ليهرب الي ترسيس من وجه الرب * وانحدر الي يافا * فوجد 3
سفينه سايرة الي ترسيس * فاعطي كراها وصعد اليها ليقلع معهم الي ترسيس من وجه الرب *
* والرب اقام ريحا عظيما في البحر * وصار موجا عظيما في البحر * وتورطت السفينه لتنكسر * ففرق 4 5
الملاحون وصرخوا الي الرب الهيهم * وطرحوا حذفا من الاواني التي في السفينة الي البحر ليخففوا
منهم * فنزل يونان الي بطن السفينه ونام وشخر * فتقدم اليه الرايس وقال له * ما بالك تشخر * قم 6
وادع الهك لعل يخلصنا الله ولا نهلك * وقال كل واحد لرفيقه * تعالوا نضع قرعا ونعرف 7
من اجل من صار علينا هذا الشر * فوضعوا قرعا * فوقعت القرعه علي يونان * فقالوا له 8
اخبرنا من اجل ماذا صار فينا هذا الشر * ما هو عملك * ومن اين اتيت * والي اين تمضي *
ومن ايه كوره انت * ومن اي شعب انت * فقال لهم * انا عبد للرب * وانا اعبد الرب اله السماء 9
والذي اعبده هو الذي صنع البحر واليابسه *

Principium Interpretationis
PROPHETIÆ JONÆ
filii AMATHI, cujus benedictiones circundent nos,
Amen.

CAP. I.

Textus decimus tertius, hujus autem Prophetiæ primus.

Fuit ſermo Domini ad Jonam filium 1
Amathi, dicens; Surge, & abi in Ni- 2
nivem urbem magnam, & proclama in ea:
clamor enim malitiæ ejus aſcendit ad me.
Surrexit itaque Jona ut fugeret in Thar- 3
ſis à facie Domini: cùmque deſcendiſſet
ad Japha, invenit navim proficiſcentem
ad Tharſis, datoque naulo conſcendit eam
ut vela faceret cum eis in Tharſis à facie
Domini. At Dominus excitavit ventum 4
vehementem in mari, factáque eſt procel-
la atrox in mari, adeò ut navis labefacta-
tionis periculum ſubiret. Quare peri- 5
meſcentes nautæ clamaverunt ad Domi-
num Deum ſuum, jactúmque fecerunt va-
ſorum quæ erant in navi, in mari, ut alle-
varent ſeſe. Interim Jonas deſcenderat in
ventrem navis, & dormiens ſtertebat. Ac- 6
ceſſit autem ad eum nauclerus, & dixit
ei; Quid ſtertis? Surge, & invoca Deum
tuum, ut liberet nos Deus, nec pereamus.
Tum dixit quiſque ſocio ſuo; Venite po- 7
namus ſortes, ut ſciamus propter quem ac-
ciderit nobis malum iſtud: poſitis ergò ſor-
tibus, cecidit ſors ſuper Jonam? Tunc 8
dixerunt ei; Indica nobis qua de cauſa
acciderit nobis malum iſtud: quod eſt o-
pus tuum? unde venis, & quò vadis?
quanam ex regione, & quanam ex gente es
tu? Dixit eis, Ego ſum ſervus Domini, 9
& ego Dominum Deum cœli adoro; &
quem adoro, is eſt qui fecit mare & ari-
dam.

יונה : ב

Cur : eum ad dixerunt & , magno timore viri timuerunt Et
10 וַיִּירְאוּ הָאֲנָשִׁים יִרְאָה גְדוֹלָה וַיֹּאמְרוּ אֵלָיו מַה־
ipſe Domini *faciebus* à quòd viri cognoverunt nam ? feciſti hoc
זֹּאת עָשִׂיתָ כִּי־יָדְעוּ הָאֲנָשִׁים כִּי־מִלִּפְנֵי יְהוָֹה הוּא
, tibi faciemus Quid : eum ad dixerunt Et .eis indicaverat quia:*fugiens*
11 בֹרֵחַ כִּי הִגִּיד לָהֶם׃ וַיֹּאמְרוּ אֵלָיו מַה־נַּעֲשֶׂה לָּךְ
dixit Et .*tumultuans & vadens* mare quia ?nobis *deſuper* mare *ſilebit &*
12 וְיִשְׁתֹּק הַיָּם מֵעָלֵינוּ כִּי הַיָּם הוֹלֵךְ וְסֹעֵר׃ וַיֹּאמֶר
:vobis *deſuper* mare tacebit &,mare *ad* me projicite &,me Tollite : eos ad
אֲלֵיהֶם שָׂאוּנִי וַהֲטִילֻנִי אֶל־הַיָּם וְיִשְׁתֹּק הַיָּם מֵעֲלֵיכֶם
.vos ſuper hæc magna tempeſtas me propter quòd ego *ſciens nam*
כִּי יוֹדֵעַ אָנִי כִּי בְשֶׁלִּי הַסַּעַר הַגָּדוֹל הַזֶּה עֲלֵיכֶם׃
mare quia:valebãt non & ,aridam ad *reducendum ad* viri *fodiebant* Et
13 וַיַּחְתְּרוּ הָאֲנָשִׁים לְהָשִׁיב אֶל־הַיַּבָּשָׁה וְלֹא יָכֹלוּ כִּי הַיָּם
:dixerunt &,Dominum ad clamaverunt Et .eos ſuper *turbinans & vadens*
14 הוֹלֵךְ וְסֹעֵר עֲלֵיהֶם׃ וַיִּקְרְאוּ אֶל־יְהוָֹה וַיֹּאמְרוּ
des ne & ,iſtius viri *anima in* pereamus *nunc* ne ,Domine Quæſum⁹
אָנָּה יְהוָֹה אַל־נָא נֹאבְדָה בְּנֶפֶשׁ הָאִישׁ הַזֶּה וְאַל־תִּתֵּן
, voluiſti ſicut Domine tu quia ,innocentem ſanguinem nos ſuper
עָלֵינוּ דָּם נָקִיא כִּי־אַתָּה יְהוָֹה כַּאֲשֶׁר חָפַצְתָּ
mare ſtetit & , mare in eum projecerunt &,Jonah tulerunt Et .feciſti
15 עָשִׂיתָ׃ וַיִּשְׂאוּ אֶת־יוֹנָה וַיְטִלֻהוּ אֶל־הַיָּם וַיַּעֲמֹד הַיָּם
, Dominum magno timore viri timuerunt Et .ſua ira ab
16 מִזַּעְפּוֹ׃ וַיִּירְאוּ הָאֲנָשִׁים יִרְאָה גְדוֹלָה אֶת־יְהוָֹה
.vota voverunt & ,Domino hoſtiam immolaverunt &
וַיִּזְבְּחוּ־זֶבַח לַיהוָֹה וַיִּדְּרוּ נְדָרִים׃

CAP. II. ב

fuit & ;Jonah *deglutiendum ad*,grandem piſcem Dominus præparavit Et
1 וַיְמַן יְהוָֹה דָּג גָּדוֹל לִבְלֹעַ אֶת־יוֹנָה וַיְהִי
oravit Et .noctibus tribus & ,diebus tribus piſcis *viſceribus* in Jonah
2 יוֹנָה בִּמְעֵי הַדָּג שְׁלֹשָׁה יָמִים וּשְׁלֹשָׁה לֵילוֹת׃ וַיִּתְפַּלֵּל
Clamavi : dixit Et .piſcis *viſceribus* à ſuum Deum Dominum ad Jonah
3 יוֹנָה אֶל־יְהוָֹה אֱלֹהָיו מִמְּעֵי הַדָּגָה׃ וַיֹּאמֶר קָרָאתִי
, clamavi inferi ventre à : *mihi reſpondit* &,Dominum ad *mihi anguſtia præ*
מִצָּרָה לִי אֶל־יְהוָֹה וַיַּעֲנֵנִי מִבֶּטֶן שְׁאוֹל שִׁוַּעְתִּי
;marium *cor* in , profundum me feciſti projicere Et .meam vocẽ exaudiſti
4 שָׁמַעְתָּ קוֹלִי׃ וַתַּשְׁלִיכֵנִי מְצוּלָה בִּלְבַב יַמִּים
.tranſierũt me ſuꝑ tui fluct⁹ &,tuæ *illiſiones* omnes :me circundedit flumẽ &
וְנָהָר יְסֹבְבֵנִי כָּל־מִשְׁבָּרֶיךָ וְגַלֶּיךָ עָלַי עָבָרוּ׃
addam veruntamen,tuorum oculorũ *regione* è ſum *Expulſus* : dixi ego Et
5 וַאֲנִי אָמַרְתִּי נִגְרַשְׁתִּי מִנֶּגֶד עֵינֶיךָ אַךְ אוֹסִיף
animam ad uſq; aquæ me Circunderũt .*tuæ ſanctitatis* templum ad *reſpicere*
6 לְהַבִּיט אֶל־הֵיכַל קָדְשֶׁךָ׃ אֲפָפוּנִי מַיִם עַד־נֶפֶשׁ
montium *exciſiones* Ad.meo capiti *alligatum carectum*,me circundedit vorago
7 תְּהוֹם יְסֹבְבֵנִי סוּף חָבוּשׁ לְרֹאשִׁי׃ לְקִצְבֵי הָרִים
feciſti aſcendere & : ſeculum in me propter ſuis vectibus *terram* , deſcendi
יָרַדְתִּי הָאָרֶץ בְּרִחֶיהָ בַעֲדִי לְעוֹלָם וַתַּעַל
,*meam animam me ſuper deficiendo In* .mi Deus Domine ,*meas vitas* fovea è
8 מִשַּׁחַת חַיַּי יְהוָֹה אֱלֹהָי׃ בְּהִתְעַטֵּף עָלַי נַפְשִׁי
templum ad mea oratio *te ad* venit & ; ſum recordatus Domini
אֶת־יְהוָֹה זָכָרְתִּי וַתָּבוֹא אֵלֶיךָ תְּפִלָּתִי אֶל־הֵיכַל
ſuam miſericordiam , *mendacii* vanitates Cuſtodientes .*tuæ ſanctitatis*
9 קָדְשֶׁךָ׃ מְשַׁמְּרִים הַבְלֵי־שָׁוְא חַסְדָּם
quod , tibi immolabo confeſſionis voce in ego Et .derelinquent
10 יַעֲזֹבוּ׃ וַאֲנִי בְּקוֹל תּוֹדָה אֶזְבְּחָה־לָּךְ אֲשֶׁר
, piſci Dominus dixit Et .Domini ſalus , reddam vovi
11 נָדַרְתִּי אֲשַׁלֵּמָה יְשׁוּעָתָה לַיהוָֹה׃ וַיֹּאמֶר יְהוָֹה לַדָּג
.aridam *ad* Jonah evomuit &
וַיָּקֵא אֶת־יוֹנָה אֶל־הַיַּבָּשָׁה׃

Verſio VULG. LAT.

10 Et timuerunt viri timore magno,
& dixerunt ad eum; Quìd hoc
feciſti? (cognoverunt enim viri
quòd à facie Domini fugeret, quia
11 indicaverat eis.) Et dixerunt ad
eum; Quid faciemus tibi, & ceſſabit
mare à nobis? quia mare
12 ibat, & intumeſcebat. Et dixit
ad eos; Tollite me, & mittite in
mare, & ceſſabit mare à vobis:
ſcio enim ego quoniam propter
me tempeſtas hæc grandis venit
13 ſuper vos. Et remigabant viri
ut reverterentur ad aridã, & non
valebant: quia mare ibat, & intumeſcebat
14 ſuper eos. Et clamaverunt
ad Dominum, & dixerunt;
Quæſumus, Domine, ne pereamus
in anima viri iſtius, & ne des ſuper
nos ſanguinem innocentem:
quia tu, Domine, ſicut voluiſti, feciſti.
15 Et tulerunt Jonam, & miſerunt
in mare: & ſtetit mare à
16 fervore ſuo. Et timuerunt viri
timore magno Dominum, & immolaverunt
hoſtias Domino, &
voverunt vota.

CAP. II.

1 ET præparavit Dominus piſcẽ
grandem ut deglutiret Jonam: &
erat Jonas in ventre piſcis tribus
2 diebus, & tribus noctibus. Et
oravit Jonas ad Dominum Deum
3 ſuum de ventre piſcis. Et dixit;
Clamavi de tribulatione mea ad
Dominum, & exaudivit me: de
ventre inferi clamavi, & exaudîſti
4 vocem meam. Et projeciſti me
in profundum in corde maris, &
flumen circumdedit me: omnes
gurgites tui, & fluct⁹ tui ſuper me
5 tranſierunt. Et ego dixi; Abjectus
ſum à conſpectu oculorum tuorũ:
veruntamen rurſus videbo templum
6 ſanctum tuum. Circumdederunt
me aquæ uſque ad animã:
abyſſus vallavit me, pelagus operuit
7 caput meum. Ad extrema
montium deſcendi: terræ vectes
concluſerunt me in æternum: &
ſublevabis de corruptione vitam
8 meam, Domine Deus meus. Cùm
anguſtiaretur in me anima mea,
Domini recordatus ſum: ut veniat
ad te oratio mea ad templum ſanctum
9 tuum. Qui cuſtodiunt vanitates
fruſtrà, miſericordiam ſuã
10 derelinquunt. Ego autem in voce
laudis immolabo tibi: quæcunq;
vovi, reddam pro ſalute Domino.
11 Et dixit Dominus piſci: & evomuit
Jonam in aridam.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

10 Καὶ ἐφοβήθησαν οἱ ἄνδρες φόβον μέγαν, ϗ
εἶπαν πρὸς αὐτὸν, Τί τοῦτο ἐποίησας;
διότι ἔγνωσαν οἱ ἄνδρες, ὅτι ἐκ προσώπου
κυρίου ἦν φεύγων, ὅτι ἀπήγγελεν αὐτοῖς·
11 Καὶ εἶπαν πρὸς αὐτὸν, (ν) Τί ποιήσομέν
σοι, ϗ κοπάσει ἡ θάλασσα ἀφ' ἡμῶν; ὅτι
ἡ θάλασσα ἐπορεύετο ϗ ἐξήγειρε μᾶλλον
12 κλύδωνα. Καὶ εἶπεν Ἰωνᾶς πρὸς αὐτοὺς,
Ἄρατέ με, ϗ (ξ) ἐμβάλετέ με εἰς τὴν θάλασσαν,
ϗ κοπάσει ἡ θάλασσα ἀφ' ὑμῶν·
διότι ἔγνωκα ἐγὼ, ὅτι δι' ἐμὲ ὁ κλύδων ὁ
13 μέγας οὗτος ἐφ' ὑμᾶς ἐστι. Καὶ παρεβιάζοντο
οἱ ἄνδρες τοῦ ἐπιστρέψαι πρὸς τὴν γῆν, ϗ
οὐκ (ο) ἠδύναντο, ὅτι ἡ θάλασσα ἐπορεύετο,
14 ϗ ἐξηγείρετο μᾶλλον ἐπ' αὐτούς. Καὶ
ἀνεβόησαν πρὸς κύριον, ϗ εἶπαν, Μηδαμῶς
κύριε· μὴ ἀπολώμεθα ἕνεκεν τῆς ψυχῆς
τοῦ ἀνθρώπου τούτου, ϗ μὴ δῷς ἐφ' ἡμᾶς αἷμα
δίκαιον, (π) διότι σὺ κύριε, ὃν τρόπον
15 ἐβούλου, πεποίηκας. Καὶ ἔλαβον τὸν Ἰωνᾶν,
ϗ (ρ) ἐξέβαλον αὐτὸν εἰς τὴν θάλασσαν,
ϗ ἔστη ἡ θάλασσα ἐκ τοῦ σάλου (σ) αὐτῆς.
16 Καὶ ἐφοβήθησαν οἱ ἄνδρες φόβῳ μεγάλῳ
τὸν κύριον, ϗ ἔθυσαν θυσίαν τῷ κυρίῳ,
ϗ ηὔξαντο (τ) τὰς εὐχάς.

MS.A. (ν) Τί σοι ποιήσωμεν, ϗ κοπάσει (ξ) ἐμβάλετε εἰς (ο) ἐδύναντο, (π) ὅτι (ρ) ἐνέβαλον (σ) ἑαυτῆς (τ) εὐχάς.

Et timuerunt viri timore magno, 10
et dixerũt ad eum; Quìd hoc feciſti?
Cognoverũt enim viri, quòd
à facie Domini fugeret, eò quòd
indicâſſet eis. Et dixerunt ad eum; 11
Quid tibi faciemus, & quieſcet
mare à nobis? Quia mare ibat,
et ſuſcitabat magis fluctum.
Et dixit Jonas ad eos; Tollite 12
me, & mittite me in mare: &
quieſcet mare à vobis. Ego enim
novi, quòd propter me fluctus iſti
magni contra vos ſunt. Et conabantur 13
viri, ut reverterentur ad
terram, & non poterant: quia mare
ibat, & inſurgebat magis contra
eos. Et clamaverunt ad Dominum, 14
et dixerunt; Nequaquam,
Domine: ne pereamus propter animam
viri hujus: & non des ſuper
nos ſanguinem juſtum: tu enim,
Domine, ſicut voluiſti, feciſti. Et 15
tulerunt Jonam, & miſerunt eum
in mare: et ſtetit mare à commotione
ſua. Et timuerunt viri 16
timore magno Dominum, & immolaverunt
hoſtiam Domino, &
voverunt vota.

ΚΕΦ. β'.

1 ΚΑὶ προσέταξε κύριος κήτει μεγάλῳ
καταπιεῖν τὸν Ἰωνᾶν. ϗ ἦν Ἰωνᾶς ἐν τῇ
κοιλίᾳ τοῦ κήτους τρεῖς ἡμέρας ϗ τρεῖς νύκτας.
2 Καὶ προσηύξατο Ἰωνᾶς πρὸς κύριον
3 τὸν θεὸν αὐτοῦ ἐκ τῆς κοιλίας τοῦ κήτους, Καὶ
εἶπεν, (*) † Ἐβόησα ἐν θλίψει μου πρὸς
κύριον τὸν θεόν μου, ϗ εἰσήκουσέ μου, † ἐκ κοιλίας
ᾅδου κραυγῆς μου, ἤκουσας φωνῆς μου,
4 † Ἀπέρριψάς με εἰς βάθη καρδίας θαλάσσης,
ϗ (α) ποταμοὶ ἐκύκλωσάν με, † πάντες
οἱ μετεωρισμοί σου ϗ τὰ κύματά σου
5 ἐπ' ἐμὲ διῆλθον. † (β) Καὶ ἐγὼ εἶπα, Ἀπῶσμαι
ἐξ ὀφθαλμῶν σου· † ἆρα προσθήσω τοῦ
ἐπιβλέψαι (γ) με πρὸς ναὸν τὸν ἅγιόν σου;
6 † Περιεχύθη μοι ὕδωρ ἕως ψυχῆς, † ἄβυσσος
ἐκύκλωσέ με ἐσχάτη, † ἔδυ ἡ κεφαλή
7 μου Εἰς σχισμὰς ὀρέων, † κατέβην
εἰς γῆν, ἧς οἱ μοχλοὶ αὐτῆς κάτοχοι αἰώνιοι·
† ϗ ἀναβήτω (δ) φθορὰ ζωῆς μου
8 κύριε ὁ θεός μου. † Ἐν τῷ ἐκλείπειν (ε)
ἀπ' ἐμοῦ τὴν ψυχήν μου, τοῦ κυρίου ἐμνήσθην,
† ϗ ἔλθοι πρὸς σὲ ἡ προσευχή μου εἰς ναὸν
9 (ζ) τὸν ἅγιόν σου. † Φυλασσόμενοι μάταια
10 ϗ ψευδῆ ἔλεος αὐτῶν ἐγκατέλιπον. † Ἐγὼ
δὲ μετὰ φωνῆς αἰνέσεως ϗ ἐξομολογήσεως
θύσω σοι, † ὅσα ηὐξάμην ἀποδώσω
11 (η) σοι σωτηρίου τῷ κυρίῳ. Καὶ προσετάγη
(θ) ἀπὸ κυρίου τῷ κήτει, ϗ ἐξέβαλε τὸν
Ἰωνᾶν ἐπὶ τὴν ξηράν.

MS.A. (*) ᾨΔΗ'. (α) ποταμοί με ἐκύκλωσαν, (β) Κἀγὼ (γ) πρὸς ναὸν (δ) ἐκ φθορᾶς ἡ ζωή μου (ε) τὴν ψυχήν μου ἀπ' ἐμοῦ, (ζ) ἅγιόν (η) εἰς σωτήριόν μου τῷ (θ) τῷ κήτει, ϗ

CAP. II.

ET præcepit Dominus ceto magno 1
devorare Jonam. Et erat Jonas
in ventre ceti tribus diebus, et
tribus noctibus. Et oravit Jonas 2
ad Dominum Deum ſuum de utero
piſcis, Et dixit; Clamavi in 3
tribulatione mea ad Dominum
Deum meum: et exaudivit me; de
(a) ventre inferi clamoris mei audîſti
vocem meam: Projeciſti me 4
in profunda cordis maris, & flumina
me circundederunt. Omnes
elevationes tuæ, & fluctus tui
ſuper me tranſierunt. Et ego dixi; 5
Abjectus ſum ex oculis tuis: (b)
putas ne, addam, ut videam templum
ſanctum tuum? Circunfuſa 6
eſt mihi aqua uſque ad animam,
abyſſus vallavit me noviſſima: intravit
caput meum In ſciſſuras 7
montium: deſcendi in terram, cujus
vectes ejus ſunt retinacula
ſempiterna. Et aſcendat (c) corruptio
vitæ meæ, Domine Deus
meus. Cùm deficeret ex me anima 8
mea, Domini recordatus ſum:
& veniat ad te oratio mea in
templum ſanctum tuum. Qui cuſtodiunt 9
vana, & mendacia; miſericordiam
ſuam reliquerunt.
Ego autem cum voce laudis, & 10
confeſſionis immolabo tibi: quæcunque
vovi, reddam tibi (d)
ſalutaris Domino. Et à Domino 11
præceptum eſt ceto: & ejecit Jonam
ſuper ſiccam.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 ודחילו גבריא דחילא רבא ואמרו ליה מה דא עבדתא ארי ידעו גובריא ארי מן קדם
11 יי הוא עריק ארי חוי להון׃ ואמרו ליה מה נעביד לך וינוח ימא מננא ארי ימא
12 אזיל ונחשוליה תקיף׃ ואמר להון טלוני ורמוני לימא ויניח ימא מעליכון ארי ידע
13 אנא ארי בדילי נחשולא רבא הדין עליכון׃ ושיטין גבריא לאתבא ליבשתא ולא
14 יכילו ארי ימא אזיל ונחשוליה תקיף עליהון׃ וצליאו קדם יי ואמרו קביל בעותנא יי
לא כען ניבד בחובת נפש דגברא הדין ולא תתן עלנא חובת דם זכי ארי את יי כמא
15 16 דרעוא קדמך עבדתא׃ ונסיבו ית יונה ורמוהי לימא ונח ימא מנחשוליה׃ ודחילו
גבריא דחילא רבא מן קדם יי ואמרו לדבחא דבח קדם יי ונדרו נדרין׃

ב

1 וזמן יי נונא רבא למבלע ית יונה והוה יונה במעיא דנונא תלתא יומין ותלתא לילון׃
2 3 וצלי יונה קדם יי אלהיה ממעיא דנונא׃ ואמר צליתי מדעקת לי קדם יי וקביל
4 צלותי מארעית תהומא בעיתי עבדתא בעותי׃ ורמיתני בעומקיא בלבא דימא ונהר
5 סחור סחור לי כל נחשולוהי דימא וגלוהי עלי עדו׃ ואנא אמרית אתרכית מן קדם
6 מימרך ברם אוסיף לאסתכלא בהיכלא דקדשך׃ אקפוני מיא עד מותא תהומא
7 סחור סחור לי ימא דסוף תלי עיל מרישי׃ לעקרי טוריא נחתית ארעא נגדת
8 בתוקפהא עיל מני עלמין ואת קריב קדמך לאסקא מחבלא חיי יי אלהי׃ באשתלהיות
9 עלי נפשי פולחנא דיי אדכרית ועלת לקדמך צלותי להיכלא דקודשך׃ לא כעממיא
10 פלחי טעותא מאתר דאתוטב להון לית אנון ידעין׃ ואנא בתושבחת אודאה
11 קורבני אקריב קדמך דנדרית אשלם פורקן נפשי בצלו קדם יי׃ ואמר יי לנונא
ופלט ית יונה ליבשתא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Timuerunt ergo viri ingenti timore, & dixerunt ei: Cur hoc feciſti? cognoverunt 10
enim viri quòd à facie Dñi fugeret, quippe qui indicâſſet eis. Et dixerunt 11
ei: Quid faciem⁹ tibi ut quieſcat mare à nobis? ſiquidem ibat mare, &
tempeſtas ej⁹ increbreſcebat. Qui dixit eis: Tollite me atq; in mare projicite, 12
& tranquillum erit vobis mare: ſcio enim quòd tempeſtas hæc magna propter
me ſuper vos ſit exorta. Intereà remigabant viri ut reducerent [*navem*] 13
ad aridam, ſed nequivere: quandoquidem mare ibat & tempeſtas ejus invaleſcebat
ſuper eos. Quapropter oraverunt coram Dño, & dixerunt: Suſcipe 14
deprecationem noſtram Dñe, ne nunc peream⁹ propter peccatum animæ viri
iſti⁹, neq; imputes nobis peccatum ſanguinis innocentis; quia tu Dñe quemadmodum
placuit coram te, feciſti. Tulerunt ergo Jonam, & eum in mare 15
projecerunt, quievitque mare à tempeſtate ſua. Prætereà viri illi timuerunt 16
permagno timore à facie Dñi, & dixerunt ſe *ſacrificium* ſacrificaturos coram
Dño, & vota voverunt.

CAP. II.

PRæparaverat autem Dñs piſcem grandem qui Jonam deglutiret, & fuit Jonas 1
in ventre piſcis tribus diebus ac tribus noctibus. Oravit verò Jonas 2
coram Dño Deo ſuo de viſceribus piſcis. Et ait: Oravi præ anguſtia mea ad 3
Dñm qui ſuſcepit orationem meam: de infima abyſſo deprecat⁹ ſum, deprecationem
meam executus es. Tu quidem projeciſti me in profunditates, in 4
cor maris, & flumen cùm circumquaq; me circundet, omnes maris tempeſtates
& fluct⁹ ejus ſuper me tranſierunt. Ego verò dixeram: Ejectus ſum à 5
conſpectu Verbi tui: veruntamen addam aſpicere ſacroſanctum templum
tuum. Circundederunt me aquæ uſq; ad mortem, abyſſo circumquaq; me ambiente: 6
mare carectoſum ſuſpenſum erat capiti meo. Ad radices montium 7
deſcenderam, & terra ſerrârat robora ſua ſuper me in perpetuum: ſed
proclive fuit tibi educere à corruptione vitam meam, Dñe Deus meus. Cùm 8
deliquio laboraret in me anima mea, cultus Dñi ſum recordatus: & penetravit
corã te oratio mea in templũ ſanctitatis tuæ. Non more gentium idola 9
colentiũ quæ quo ex loco beneficiũ conferatur ipſis, neſciunt. At ego in laude 10
confeſſionis offeram oblationẽ meam corã te: ꝙ vovi reddã pro ſalute animæ
meæ in oratione corã Dño. Tum dixit Dñs piſci, & evomuit Jonam in arida. 11

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

10 * ܘܕܚܠܘ ܓܒܪܐ ܗܢܘܢ. ܕܚܠܬܐ ܪܒܬܐ. ܘܐܡܪܘ ܠܗ. ܡܢܐ ܥܒܕܬ. ܡܛܠ ܕܝܕܥܘ ܓܒܪܐ
11 ܗܢܘܢ. ܕܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܥܪܩ. * ܘܟܕ ܚܘܝ ܐܢܘܢ. ܐܡܪܝܢ ܠܗ. ܡܢܐ ܢܥܒܕ ܠܟ. ܘܢܫܠܐ ܝܡܐ
12 ܡܢܢ. ܡܛܠ ܕܝܡܐ ܗܘܐ ܐܙܠ ܘܡܬܥܠܥܠ ܥܠܝܢ. * ܐܡܪ ܠܗܘܢ ܝܘܢܢ. ܫܩܘܠܘܢܝ
ܘܐܪܡܘܢܝ ܒܝܡܐ. ܘܢܫܠܐ ܝܡܐ ܡܢܟܘܢ. ܡܛܠ ܕܝܕܥ ܐܢܐ ܕܡܛܠܬܝ ܡܫܥܠܐ ܪܒܐ. ܗܢܐ
13 ܗܘܐ ܠܟܘܢ. * ܘܐܫܬܕܠܘ ܓܒܪܐ ܗܢܘܢ ܕܢܗܦܟܘܢ ܠܝܒܫܐ. ܘܠܐ ܐܫܟܚܘ. ܡܛܠ ܕܝܡܐ
14 ܐܙܠ ܗܘܐ ܘܡܬܥܠܥܠ ܥܠܝܗܘܢ. * ܘܩܪܘ ܠܡܪܝܐ ܘܐܡܪܘ. ܐܘ ܡܪܝܐ. ܠܐ ܢܐܒܕ ܒܢܦܫܗ
ܕܓܒܪܐ ܗܢܐ. ܘܠܐ ܬܬܠ ܥܠܝܢ ܕܡܐ ܙܟܝܐ. ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܗܘ ܡܪܝܐ. ܘܐܝܟ ܕܨܒܝܬ
15 ܥܒܕܬ. * ܘܫܩܠܘܗܝ ܠܝܘܢܢ ܘܐܪܡܝܘܗܝ ܒܝܡܐ. ܘܐܬܢܝܚ ܝܡܐ ܡܢ ܡܫܥܠܘܬܗ.
16 * ܘܕܚܠܘ ܓܒܪܐ ܗܢܘܢ ܕܚܠܬܐ ܪܒܬܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܕܒܚܘ ܕܒܚܐ ܠܡܪܝܐ. ܘܢܕܪܘ ܢܕܪܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܒ *

1 * ܘܙܡܢ ܡܪܝܐ ܢܘܢܐ ܪܒܐ. ܘܒܠܥܗ ܠܝܘܢܢ. ܘܗܘܐ ܝܘܢܢ ܒܡܥܘܗܝ ܕܢܘܢܐ. ܬܠܬܐ ܝܘܡܝܢ
2 3 ܘܬܠܬܐ ܠܠܘܢ. * ܘܨܠܝ ܝܘܢܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗ ܡܢ ܡܥܘܗܝ ܕܢܘܢܐ. ܘܐܡܪ. * ܩܪܝܬ
4 ܠܡܪܝܐ ܒܐܘܠܨܢܝ. ܘܥܢܝܢܝ. ܘܡܢ ܟܪܣܗ ܕܫܝܘܠ ܩܥܝܬ. ܘܫܡܥܬ ܩܠܝ. * ܘܐܪܡܝܬܢܝ
ܒܥܘܡܩܐ ܒܠܒܗ ܕܝܡܐ. ܘܢܗܪܐ ܐܚܕܢܝ. ܟܠܗܘܢ ܡܫܒܪܝܟ ܘܓܠܠܝܟ ܥܠܝ ܥܒܪܘ.
5 * ܐܢܐ ܕܝܢ ܐܡܪܬ. ܕܐܫܬܕܝܬ ܡܢ ܩܕܡ ܥܝܢܝܟ. ܡܘܣܦ ܐܢܐ ܠܡܚܙܐ ܠܗܝܟܠܟ
6 ܩܕܝܫܐ. * ܚܕܪܘܢܝ ܡܝܐ ܥܕܡܐ ܠܢܦܫܐ. ܬܗܘܡܐ ܚܕܪܢܝ. ܘܐܬܚܒܫ ܪܫܝ ܒܥܘܡܩܐ
7 ܕܝܡܐ. * ܘܠܫܬܐܣܝܗܘܢ ܕܛܘܪܐ ܢܚܬܬ. ܘܐܪܥܐ ܐܚܝܕܐ ܡܘܟܠܝܗ ܠܘܩܒܠܝ ܠܥܠܡ. ܘܐܣܩܬ
8 ܚܝܝ ܡܢ ܚܒܠܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ. * ܟܕ ܐܬܡܥܝܩܬ ܢܦܫܝ ܠܡܪܝܐ ܐܬܕܟܪܬ. ܘܬܥܘܠ
9 ܨܠܘܬܝ ܩܕܡܝܟ ܠܗܝܟܠܟ ܩܕܝܫܐ. * ܟܠ ܕܢܛܪܝܢ ܕܚܠܬܐ ܣܪܝܩܬܐ. ܚܣܕܗܘܢ ܫܒܩܘ
10 ܛܝܒܘܬܗܘܢ. * ܐܢܐ ܕܝܢ. ܒܩܠܐ ܕܬܘܕܝܬܐ ܐܕܒܘܚ ܠܟ. ܘܡܕܡ ܕܢܕܪܬ. ܐܦܪܘܥ ܦܘܪܥܢܐ
11 ܠܡܪܝܐ. * ܘܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܢܘܢܐ. ܘܦܠܛܗ ܠܝܘܢܢ ܠܝܒܫܐ.

Tunc homines illi ingenti formidine perculſi, 10
dixerunt ei; Quid feciſti? noverant enim homines
illi quòd à conſpectu Dñi fugiſſet. Et 11
cùm indicâſſet illis, dixerunt ei; Quid faciemus
tibi ut tranquillũ reddatur nobis mare; quandoquidem
ecce mare magìs magíſque agitatur
contra nos? Dixit eis Jona; Tollite me, & 12
abjicite in mare, tum tranquillum reddetur
vobis mare: agnoſco enim hanc tempeſtatem
magnam propter me vobis accidiſſe. Tunc conati 13
ſunt homines illi appellere ad aridam:
ſed cùm non potuiſſent, eò quòd mare magìs
magíſq; concitaretur in eos; Clamaverunt ad 14
Dñm, & dixerunt; Eja Dñe, ne *quaſo* pereamus
pro anima viri iſtius, & ne culpæ vertas
nobis ſanguinem innoxium: nam tu Dominus
es, & quemadmodum vis, facis. Deinde tollentes 15
Jonam, abjecerunt eum in mare, deſtitítque
mare à procellis ſuis. Quare homines 16
illi timuerunt Dominum timore magno, & ſacrificaverunt
ſacrificia Dño, votáq; voverunt.

CAP. II.

PAraverat autem Dominꝰ piſcem magnum, 1
qui Jonam abſorbuit: manſitq; Jona in viſceribus
piſcis illius tribus diebus & tribus noctibus.
Et oravit Jona Dominum Deum ſuum 2
è viſceribus piſcis illius, ac dixit; Invocavi 3
Dominum in calamitate mea, & exaudivit me;
& de ventre inferi clamavi, & audîſti vocem
meam. Dejeciſti me in profundum in cor maris, 4
& fluvius circundedit me: omnes fluctus
tui & undæ tuæ ſuper me tranſierunt: Adeò 5
ut dixerim longè me remotũ à conſpectu oculorum
tuorum: num poſthac rurſus videbo
templum ſanctum tuum? Circundederunt me 6
aquæ uſq; ad animam, abyſſus vallavit me, &
in profundo maris concluſum eſt caput meum:
Ad imum montium deſcendi, clauſerátq; 7
terra ſeras ſuas in faciem meã in perpetuum:
attamen extraxiſti vitam meam è corruptione,
Domine Deus meus. Dum exagitaretur anima 8
mea, Domini ſum recordatus, & ingreſſa
eſt coram te oratio mea in templum ſanctum
tuum. Quicunq; obſequuntur numinibus falſis, 9
clementiam tuam derelinquunt. Ego autem 10
cum voce gratiarum actionis ſacrificabo tibi:
& quòd vovi, perſolvam in retributionem
Domino. Deinde mandavit Dominus piſci, 11
dimiſitque Jonam in aridam.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

10 * فخاف الرجال خوفا عظيما وقالوا له * لماذا صنعت هذا * من اجل ان الرجال علموا انه من وجه
11 الرب كان هاربا * لانه اخبرهم * فقالوا له ماذا نصنع بك فيسكن البحر عنا * لان البحر هاج
12 واقام بالاكثر موجا * فقال لهم يونان * ارفعوني والقوني في البحر فيسكن البحر عنكم * من اجل
13 اني انا علمت ان لاجلي هذا الموج العظيم صار عليكم * فجهد الرجال ان يردوها الى الارض
14 فلم يستطيعوا * لان البحر هاج وقام بالاكثر عليهم * فصرخوا الى الرب وقالوا * لا يا رب لا تهلك
من اجل نفس هذا الانسان * ولا تعط علينا دما عادلا * من اجل انك انت يا رب كما اردت
15 16 صنعت * واخذوا يونان والقوه في البحر * فوقف البحر من زعزعه * وخاف الرجال الرب خوفا
عظيما * وذبحوا ذبايح للرب * ونذروا نذورا *

* الفصل الثاني *

1 * وامر الرب حوتا عظيما ليبتلع يونان * وكان يونان في بطن الحوت ثلثة ايام وثلث ليال *
2 3 * وصلى يونان الى الرب الهه من بطن الحوت وقال * صرخت في حزني الى الرب الهي *
4 فاجابني من جوف الجحيم صراخي * سمعت صوتي * طرحتني الى اعماق قلب البحر * واحاطت
5 بي الانهار * جميع اهوالك وامواجك جازت علي * وانا قلت بعدت عن عينيك * ترى اعود
6 ان انظر الى هيكلك المقدس * اكتنفني الماء الى نفسي * احاط بي العمق الاخير * ارسخت
7 راسي في شقوق الجبال * نزلت الى الارض التي متاريسها ضابطة دهرية * فلتصعد من
8 الفساد حياتي اليك ايها الرب الهي * عندما فنيت نفسي ذكرت الرب * فتاتي اليك صلاتي
9 10 الى هيكلك المقدس * حافظوا الاباطيل والكذب تركوا رحمتهم * وانا بصوت تسبيح
11 واعتراف اذبح لك * والذي نذرته اوفيك اياه لخلاصي يا رب * وامر الرب الحوت فالقى
يونان الى اليبس *

Quare homines illi magno timore perterriti, 10
dixerunt ei; Quarè hoc feciſti? homines
enim illi noverant quòd à facie Domini
fugeret, quoniam ipſe indicaverat
eis. Et dixerunt ei; Quid faciemus tibi, 11
ut quieſcat à nobis mare? nam mare furebat,
majoréſque fluctus excitabat. Ait 12
eis Jonas; Tollite me, & projicite me in
mare, quieſcétque à vobis mare: nam ego
novi quòd mei causâ tam ingens procella
vobis acciderit. Tunc conati ſunt 13
homines illi ut eam reducerent ad terram,
ſed non potuerunt; quia mare furens erat,
& magìs magíſque intumeſcebat in eos.
Quare clamaverunt ad Dominum, & dixerunt; 14
Ne O Domine, ne pereamus propter
animam hujus hominis, & ne des ſuper
nos ſanguinem juſtum: quia tu O Domine,
prout voluiſti feciſti. Tum ſublatum 15
Jonam projecerunt in mare, deſtititque
mare ab agitatione ſua. Quapropter 16
timuerunt homines illi Dominum timore
magno, & immolaverunt ſacrificia Domino,
& vota voverunt.

CAP. II.

PRæcepit autem Dominus ceto magno 1
ut deglutiret Jonam: fuitque Jona in
ventre ceti tribus diebus & tribus noctibus:
Et oravit Jona Dominum Deum 2
ſuum de ventre ceti, et ait; Clamavi in 3
mærore meo ad Dominum Deum meum;
& exaudivit me, de ventre inferi clamorem
meum, audîſti vocem meam. Projeciſti 4
me in profunda cordis maris, &
circundederunt me flumina: omnes terrores
tui & fluctus tui tranſierunt ſuper
me. Quapropter dixi, Receſſi ab oculis 5
tuis: fierine poteſt ut iterum videam
templum tuum ſanctum? Cinxit me 6
aqua uſque ad animam meam, ſepivit me
abyſſus ultima, infixiſti caput meum in
hiatibus montium: Deſcendi in terram 7
cujus aggeres ſolidi ſunt ac ſempiterni:
jam verò aſcendat è corruptione vita mea
ad te O Domine mi Deus. Ubi deficeret 8
anima mea, recordatus ſum Domini: veniat
igitur ad te oratio mea in templum
ſanctum tuum. Obſervatores vanitatum 9
& mendacii dereliquerunt miſericordiam
ſuam. Ego autem cum voce 10
laudis & gratiarum actionis immolabo
tibi; & quod vovi, perſolvam tibi pro
ſalute O Domine. Præcepitque Dominus 11
ceto, & is Jonam ejecit in aridam.

יונה : ג ד

CAP. III. ג

1 Surge : dicendo ,secundò Jonah ad Domini verbum fuit Et
2 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֶל־יוֹנָה שֵׁנִית לֵאמֹר : קוּם
eam ad prædica & , magnam civitatem Nineveh ad vade
לֵךְ אֶל־נִינְוֵה הָעִיר הַגְּדוֹלָה וּקְרָא אֵלֶיהָ אֶת־
abiit & ,Jonah surrexit Et .te ad loquens ego quam,prædicationem
3 הַקְּרִיאָה אֲשֶׁר אָנֹכִי דֹּבֵר אֵלֶיךָ : וַיָּקָם יוֹנָה וַיֵּלֶךְ
civitas erat Nineveh & ; Domini verbum juxta Nineveh ad
אֶל־נִינְוֵה כִּדְבַר יְהוָה וְנִינְוֵה הָיְתָה עִיר־
Jonah cœpit Et .dierum trium itinere ,Deo magna
4 גְּדוֹלָה לֵאלֹהִים מַהֲלַךְ שְׁלֹשֶׁת יָמִים : וַיָּחֶל יוֹנָה
Adhuc : dixit & clamavit & , unius diei itinere civitatem in introire
לָבוֹא בָעִיר מַהֲלַךְ יוֹם אֶחָד וַיִּקְרָא וַיֹּאמַר עוֹד
viri crediderunt Et .subversa Nineveh & ; dies quadraginta
5 אַרְבָּעִים יוֹם וְנִינְוֵה נֶהְפָּכֶת : וַיַּאֲמִינוּ אַנְשֵׁי
, saccis sunt vestiti & , jejunium prædicaverunt & ,Deo in Nineveh
נִינְוֵה בֵּאלֹהִים וַיִּקְרְאוּ־צוֹם וַיִּלְבְּשׁוּ שַׂקִּים
ad verbum pertigit Et .eorum minorem ad usque & eorum majore à
6 מִגְּדוֹלָם וְעַד־קְטַנָּם : וַיִּגַּע הַדָּבָר אֶל־
suam magnificã vestẽ fecit transire &,suo solio de surrexit &,Nineveh regem
מֶלֶךְ נִינְוֵה וַיָּקָם מִכִּסְאוֹ וַיַּעֲבֵר אַדַּרְתּוֹ
fecit proclamare Et .cinerem super sedit &,sacco se operuit &,se desuper
7 מֵעָלָיו וַיְכַס שַׂק וַיֵּשֶׁב עַל־הָאֵפֶר : וַיַּזְעֵק
: dicendo , ejus magnatum & ,regis decreto ex Nineveh in dixit &
וַיֹּאמֶר בְּנִינְוֵה מִטַּעַם הַמֶּלֶךְ וּגְדֹלָיו לֵאמֹר
, quicquam gustent non , pecus & , bos , jumentum & , Homo
הָאָדָם וְהַבְּהֵמָה הַבָּקָר וְהַצֹּאן אַל־יִטְעֲמוּ מְאוּמָה
homo saccis operiantur Et .bibant non aquam & ,pascantur nec
8 אַל־יִרְעוּ וּמַיִם אַל־יִשְׁתּוּ : וְיִתְכַּסּוּ שַׂקִּים הָאָדָם
vir convertantur & fortitudine in Deum ad clament & , jumentum &
וְהַבְּהֵמָה וְיִקְרְאוּ אֶל־אֱלֹהִים בְּחוֹזְקָה וְיָשֻׁבוּ אִישׁ
sciens Quis .suis volis in quæ , rapina à & , mala sua via à
9 מִדַּרְכּוֹ הָרָעָה וּמִן־הֶחָמָס אֲשֶׁר בְּכַפֵּיהֶם : מִי־יוֹדֵעַ
non & , suæ naris furore à avertatur & , Deum pœniteat & convertatur
יָשׁוּב וְנִחַם הָאֱלֹהִים וְשָׁב מֵחֲרוֹן אַפּוֹ וְלֹא
sunt conversi quia : eorum opera Deus vidit Et ? peribimus
10 נֹאבֵד : וַיַּרְא הָאֱלֹהִים אֶת־מַעֲשֵׂיהֶם כִּי־שָׁבוּ
quod , malo super Deum pœnituit & : mala sua via à
מִדַּרְכָּם הָרָעָה וַיִּנָּחֶם הָאֱלֹהִים עַל־הָרָעָה אֲשֶׁר־
.fecit non & , eis faciendum ad fuerat locutus
דִּבֶּר לַעֲשׂוֹת־לָהֶם וְלֹא עָשָׂה :

CAP. IV. ד

1 oravit Et .ei fuit ira & , magnum malum , Jonah ad fuit malum Et
2 וַיֵּרַע אֶל־יוֹנָה רָעָה גְדוֹלָה וַיִּחַר לוֹ : וַיִּתְפַּלֵּל
hoc nónne , Domine Obsecro : dixit & , Dominum ad
אֶל־יְהוָה וַיֹּאמַר אָנָּה יְהוָה הֲלוֹא־זֶה
præoccupavi Ideò ? mea humo super me existente adhuc ,meum verbum
דְבָרִי עַד־הֱיוֹתִי עַל־אַדְמָתִי עַל־כֵּן קִדַּמְתִּי
, gratiosus Deus tu quòd novi quia : Tarsis in fugere
לִבְרֹחַ תַּרְשִׁישָׁה כִּי יָדַעְתִּי כִּי אַתָּה אֵל־חַנּוּן
super pœnitens &,misericordiæ multus & ,narium longus , misericors &
וְרַחוּם אֶרֶךְ אַפַּיִם וְרַב־חֶסֶד וְנִחָם עַל־
; me à meam animam quæso tolle , Domine nunc Et .malo
3 הָרָעָה : וְעַתָּה יְהוָה קַח־נָא אֶת־נַפְשִׁי מִמֶּנִּי
benefacere Num : Dominus dixit Et .meis vitis præ mea mors bona quia
4 כִּי טוֹב מוֹתִי מֵחַיָּי : וַיֹּאמֶר יְהוָה הַהֵיטֵב
? tibi est ira
חָרָה לָךְ :

Versio VULG. LAT.

CAP. III.

1 ET factum est verbum Domini
2 ad Jonam secundò, dicens; Surge, & vade in Ninivem civitatem
magnam: & prædica in ea prædicationem, quam ego loquor ad
3 te. Et surrexit Jonas, & abiit in
Ninivem juxta verbum Domini:
& Ninive erat civitas magna itinere
4 trium dierum. Et cœpit Jonas
introire in civitatem itinere
diei unius: & clamavit, & dixit;
Adhuc quadraginta dies, & Ninive
5 subvertetur. Et crediderunt
viri Ninivitæ in Deum: & prædicaverunt
jejunium, & vestiti
sunt saccis à majore usque ad minorem.
6 Et pervênit verbum ad
regem Ninive: & surrexit de solio
suo, & abjecit vestimentum
suum à se, & indutus est sacco, &
7 sedit in cinere. Et clamavit, &
dixit in Ninive ex ore regis &
principum ejus, dicens; Homines,
& jumenta, & boves, & pecora
non gustent quidquam: nec
pascantur, & aquam non bibant.
8 Et operiantur saccis homines, &
jumenta, & clament ad Dominum
in fortitudine, & convertatur vir
à via sua mala, & ab iniquitate,
9 quæ est in manibus eorum. Quis
scit si convertatur & ignoscat
Deus: & revertatur à furore iræ
10 suæ, & non peribimus? Et vidit
Deus opera eorum, quia conversi
sunt de via sua mala: & misertus
est Deus super malitiam, quam
locutus fuerat ut faceret eis, &
non fecit.

CAP. IV,

1 ET afflictus est Jonas afflictione
2 magnâ, & iratus est: Et oravit
ad Dominum, & dixit; Obsecro,
Domine, numquid non est
hoc verbum meum, cùm adhuc
essem in terra mea? propter hoc
præoccupavi ut fugerem in Tharsis:
scio enim quia tu Deᵒ clemens
& misericors es, patiens & multæ
miserationis, & ignoscens su-
3 per malitia. Et nunc Domine,
tolle quæso, animam meam à me:
quia melior est mihi mors quàm
4 vita. Et dixit Dominus; Putásne
benè irasceris tu?

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

ΚΕΦ. γʹ.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς Ἰωνᾶν
2 ἐκ δευτέρου, λέγων, Ἀνάστηθι, (˜)πορεύθητι
εἰς Νινευὴ τὴν πόλιν τὴν μεγάλην, καὶ κήρυξον
ἐν αὐτῇ κατὰ τὸ κήρυγμα τὸ ἔμπροσθεν,
3 ὃ ἐγὼ ἐλάλησα πρὸς σέ. Καὶ ἀνέστη
Ἰωνᾶς, καὶ ἐπορεύθη εἰς Νινευὴ, (α)
καθὰ ἐλάλησε κύριος. ἡ δὲ Νινευὴ ἦν πόλις
μεγάλη τῷ θεῷ, ὡσεὶ πορείας ὁδοῦ (β)
4 τριῶν ἡμερῶν· Καὶ ἤρξατο Ἰωνᾶς τοῦ (γ)
εἰσελθεῖν εἰς τὴν πόλιν, ὡσεὶ πορείαν ἡμέρας
μιᾶς· καὶ ἐκήρυξε, καὶ εἶπεν, Ἔτι τρεῖς ἡμέραι,
5 καὶ Νινευὴ καταστραφήσεται. Καὶ ἐνεπίστευσαν
οἱ ἄνδρες Νινευὴ τῷ θεῷ, καὶ ἐκήρυξαν
νηστείαν, καὶ ἐνεδύσαντο σάκκους
ἀπὸ (δ) μεγάλου αὐτῶν ἕως μικροῦ αὐτῶν.
6 Καὶ ἤγγισεν ὁ λόγος πρὸς τὸν βασιλέα τῆς
Νινευὴ, καὶ ἐξανέστη ἀπὸ τοῦ θρόνου αὐτοῦ, καὶ
περιείλατο τὴν στολὴν αὐτοῦ ἀφ᾽ ἑαυτοῦ, καὶ
περιεβάλετο σάκκον, καὶ ἐκάθισεν ἐπὶ σποδοῦ.
7 Καὶ ἐκηρύχθη, καὶ ἐῤῥέθη ἐν τῇ Νινευὴ
παρὰ τοῦ βασιλέως καὶ παρὰ τῶν μεγιστάνων
αὐτοῦ, λέγων, Οἱ ἄνθρωποι, καὶ
τὰ κτήνη, καὶ οἱ βόες, καὶ τὰ πρόβατα μὴ
(ε) γευσάσθωσαν, μηδὲ νεμέσθωσαν, μηδὲ
8 ὕδωρ πιέτωσαν. Καὶ(˜)περιεβάλλοντο σάκκους
οἱ ἄνθρωποι, καὶ τὰ κτήνη, καὶ ἀνεβόησαν
πρὸς τὸν θεὸν ἐκτενῶς. καὶ (ζ) ἀπέστρεψαν
ἕκαστος ἀπὸ τῆς ὁδοῦ (η) αὐτῶν τῆς πονηρᾶς,
καὶ ἀπὸ τῆς ἀδικίας τῆς ἐν χερσὶν αὐτῶν, λέγοντες,
9 Τίς οἶδεν εἰ μετανοήσει ὁ θεὸς,
καὶ ἀποστρέψει ἐξ ὀργῆς θυμοῦ αὐτοῦ, καὶ οὐ
10 μὴ ἀπολώμεθα; Καὶ εἶδεν ὁ θεὸς τὰ ἔργα
αὐτῶν, ὅτι ἀπέστρεψαν ἀπὸ τῶν ὁδῶν
αὐτῶν τῶν πονηρῶν, καὶ μετενόησεν ὁ θεὸς
ἐπὶ (θ) τῇ κακίᾳ, ᾗ ἐλάλησε τοῦ ποιῆσαι
αὐτοῖς, καὶ οὐκ ἐποίησε.

MS.A. (˜) καὶ πορεύθητι (α) καθὼς (β) ἡμερῶν τριῶν· (γ) εἰσπορευθῆναι εἰς τὴν πόλιν, ὡσεὶ πορίας ὁδοῦ ἡμέρας (δ) μικροῦ ἕως μεγάλου αὐτῶν. (ε) γευέσθωσαν μηθὲν, μηδὲ (˜) περιεβάλοντο (ζ) ἀπέστρεψεν (η) αὐτοῦ (θ) τὰ κακά, ἃ

ΚΕΦ. δʹ.

1 ΚΑὶ ἐλυπήθη Ἰωνᾶς λύπην μεγάλην·
2 καὶ συνεχύθη, Καὶ (α) προσεύξατο πρὸς
κύριον, καὶ εἶπεν, Ὦ κύριε, οὐχ οὗτοι οἱ
λόγοι μου, (β) ἔτι ὄντος μου ἐν τῇ γῇ μου;
διὰ τοῦτο προέφθασα τοῦ φυγεῖν εἰς Θαρσὶς,
διότι ἔγνων ὅτι σὺ ἐλεήμων καὶ οἰκτίρμων,
μακρόθυμος καὶ πολυέλεος, καὶ μετανοῶν
3 ἐπὶ ταῖς κακίαις. Καὶ νῦν δέσποτα κύριε,
λάβε τὴν ψυχήν μου ἀπ᾽ ἐμοῦ, ὅτι καλὸν
4 τὸ ἀποθανεῖν με ἢ (γ) ζῆν με. Καὶ
εἶπε κύριος πρὸς Ἰωνᾶν, Εἰ σφόδρα λελύπησαι
σύ;

MS.A. (α) προσηύξατο (β) οὓς ἐλάλησα ἔτι (γ) ζῆν. Καὶ εἶπε

CAP. III.

ET factᵒ est sermo Domini ad 1
Jonam secundò, dicens; Surge, 2
vade in Nineven civitatem magnam:
& prædica in ea juxta
prædicationem priorem, quam ego
loquutus sum ad te. Et surrexit 3
Jonas, & abiit in Nineven, sicut
[ei]loquutus fuerat Dominus. Erat
autem Nineve civitas magna
Deo, quasi itinere viæ dierum
trium. Et cœpit Jonas ingredi in 4
civitatem, quasi itinere diei unius:
& prædicavit, & dixit;
Adhuc (a) tres dies, & Nineve
subvertetur. Et crediderunt viri 5
Nineve Deo, & prædicaverunt
jejunium, & vestiti sunt saccis à
magno eorum usque ad parvum
eorum. Et appropinquavit sermo 6
ad regem Nineve: & surrexit
de throno suo, & abstulit stolam
suam à se, & coopertus est sacco,
& sedit in cinere. Et prædicatum 7
est, (b) & dictum est in Nineve
à rege, & à magnatibus ejus,
dicendo; Homines, & jumenta,
& boves, & oves non
gustent quicquam, nec pascantur,
& aquam non bibant. Et cooperti 8
sunt saccis homines, & jumenta,
& clamaverunt ad Deum
vehementer. Et reversi sunt unusquisque
de via sua mala, &
ab iniquitate, quæ erat in manibus
eorum, dicentes; Quis scit, 9
(c) si pœniteat Deum, & avertatur
ab ira furoris sui, & non
pereamus? Et vidit Deus opera 10
eorum, quoniam reversi sunt de
viis suis malis: & egit pœnitentiam
Deus super malitia, quam loquutus
fuerat, ut faceret eis:
et non fecit.

CAP. IV.

E· contristatus est Jonas tristitiâ 1
magnâ: & confusus est:
Oravitque ad Dominum, & (a) 2
ait; O Domine, nónne isti sunt
sermones mei, cùm adhuc essem
in terra mea? Propterea præoccupavi
fugere in Tharsis; quia
sciebam, quòd tu misericors, &
miserator, patiens, & multæ miserationis,
& agens pœnitentiam
super malitiis. Et nunc, Dominator 3
Domine, tolle animam meam
à me: quia melius est mihi mori,
quàm vivere. Et dixit Dominus 4
ad Jonam; (b) Si vehementer
contristatus es tu?

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ג

1 2 וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִם יוֹנָה תִּנְיָנוּת לְמֵימַר : קוּם אֱזֵיל לְנִינְוֵה קַרְתָּא
3 רַבְּתָא וְאִתְנַבֵּי עֲלַהּ יַת נְבוּאֲתָא דִּי אֲנָא מְמַלֵּל עִמָּךְ : וְקָם יוֹנָה וַאֲזַל לְנִינְוֵה כְּפִתְגָּמָא
4 דַּיְיָ וְנִינְוֵה הֲוָת קַרְתָּא רַבְּתָא קֳדָם יְיָ מַהֲלַךְ תְּלָתָא יוֹמִין : וּשְׁרֵי יוֹנָה לְמֵעַל בְּקַרְתָּא
5 מַהֲלַךְ יוֹמָא חַד וְאַכְרֵיז וַאֲמַר בְּסוֹף אַרְבְּעִין יוֹמִין וְנִינְוֵה מִתְהַפְּכָא : וְהֵימִינוּ אֱנָשֵׁי
6 נִינְוֵה בְּמֵימְרָא דַיְיָ וּגְזַרוּ צוֹמָא וַאֲסַרוּ סַקִּין מֵרַבְּהוֹן וְעַד זְעֵרְהוֹן : וּמְטָא פִּתְגָּמָא
לְוַת מַלְכָּא דְנִינְוֵה וְקָם מִכּוּרְסֵי מַלְכוּתֵיהּ וְאַעְדֵּי לְבוּשֵׁי יְקָרֵיהּ מִנֵּיהּ וְאִתְכַּסֵּי סַקָּא
7 וִיתִיב עַל קִטְמָא : וְאַכְרֵיז וַאֲמַר בְּנִינְוֵה מִגְּזֵירַת מַלְכָּא וְרַבְרְבָנוֹהִי לְמֵימַר אֱנָשָׁא
8 וּבְעִירָא תּוֹרָא וְעָנָא לָא יִטְעֲמוּן מִדַּעַם וְלָא יִרְעוּן וּמַיָּא לָא יִשְׁתּוּן : וְיִתְכַּסּוּן
סַקִּין אֱנָשָׁא וּבְעִירָא וִיצַלּוּן קֳדָם יְיָ בִּתְקוֹף וִיתוּבוּן גְּבַר מֵאוֹרְחֵיהּ בִּישְׁתָּא וּמִן
9 חֲטוֹפָא דִּבְידֵיהוֹן : מַן יָדַע דְּאִית בִּידֵיהּ חוֹבִין יְתוּב מִנְּהוֹן וְיִתְרַחַם עֲלוֹהִי מִן קֳדָם יְיָ
10 וִיתוּב מִתְּקוֹף רוּגְזֵיהּ וְלָא נוֹבֵד : וּגְלָן קֳדָם יְיָ עוֹבָדֵיהוֹן אֲרֵי תָבוּ מֵאוֹרְחָתְהוֹן בִּישְׁתָּא
וְתָב יְיָ מִן בִּישְׁתָּא דִּי מַלֵּיל לְמֶעְבַּד לְהוֹן וְלָא עֲבַד :

ד

1 2 וּבְאֵשׁ לְיוֹנָה בִּישָׁא רַבָּא וּתְקֵיף לֵיהּ : וְצַלִּי קֳדָם יְיָ וַאֲמַר קַבֵּל בָּעוּתִי יְיָ הֲלָא
דֵין פִּתְגָּמִי עַד דַּהֲוֵיתִי עַל אַרְעִי עַל כֵּן אוֹחֵיתִי לְמֶעֱרַק לְיַמָּא אֲרֵי יְדַעְנָא אֲרֵי אַתְּ
אֱלָהָא חַנָּנָא וְרַחֲמָנָא מַרְחִיק רְגַז וּמַסְגֵּי לְמֶעְבַּד טַבְוָן וּמְתִיב מֵימְרֵיהּ מִלְּאַיְתָאָה
3 4 בִּישְׁתָּא : וּכְעַן יְיָ סַב כְּעַן יַת נַפְשִׁי מִנִּי אֲרֵי טַב דְּאֵמוּת מִדְּאֵחֵי : וַאֲמַר יְיָ הֲלַחֲדָא
תַּקִּיף לָךְ :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAP. III.

FActum est autem verbum prophetiæ à facie Dñi cum Jona iterum dicendo: 1
Surge, vade in Niniven civitatem magnam, & vaticinare contra eam pro- 2
phetiam quam ego tecum loquor. Surrexit itaq; Jonas, & ad Niniven con- 3
tendit juxta sermonem Dñi. Ninive autem erat civitas permagna coram Dño,
itinere trium dierum. Cœpit autem Jonas intrare civitatem itinere unius 4
diei, & præconizavit, dixitque: Post finem quadraginta dierum Ninive sub-
vertenda est. Et crediderunt viri Ninivitæ verbo Dñi: indixeruntq; jeju- 5
nium, & induerunt se saccis à maximo eorum usq; ad eorundem minimum.
Pervenit quoq; verbum ad regem Ninive, qui surrexit de solio regni sui, & 6
depositis gloriæ suæ *indumentis*, sacco opertus est, ac in cinere sedit. Atque 7
per præconem proclamare jussit ac dicere per Niniven ex regis ac principum
ejus decreto, in hæc verba: Vir, jumentum, boves & oves, ne quicquam
degustent, neq; pascantur, sed neq; aquas bibant. Sed operiantur saccis ho- 8
mines & jumenta, & orent coram Dño cum instantia, atque convertatur
unusquisque à via sua mala, & à rapina quæ est in manibus suis. Quisquis 9
penes se existere peccata agnorit, avertatur ab eis, & misericordia fiet *illi*
à Dño, atque avertetur à vehementia iræ suæ, nec peribimus. Et manifesta 10
facta sunt coram Dño opera eorum, quòd conversi essent à via sua mala: qua-
propter conversus est Dñs à malo quod locutᵒ fuerat se facturum eis, nec fecit.

CAP. IV.

ET molestum fuit Jonæ dolore maximo, iratusq; est. Et oravit coram Dño, 1
dicens: Suscipe deprecationem meam Dñe: nunquid non erat hoc verbum 2
meum dum adhuc *eram* in terra mea? ideò festinaram confugere ad mare,
quod compertum haberem te Deum esse clementem; misericordem, qui iram
cohibeas, & multa beneficia conferas, & sententiam revoces, quò minus
infligas. Nunc ergo Dñe, tolle obsecro animam meam à me: melius enim est 3
ut moriar, quàm ut vivam. Dixit itaq; Dñs: Nunquid vehementer irasceris 4

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܩܦܠܐܘܢ * ܓ *

1 * ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܝܘܢܢ ܕܬܪܬܝܢ ܙܒܢܝܢ. ܟܕ ܐܡܪ. * ܩܘܡ ܙܠ ܠܢܝܢܘܐ
2 ܡܕܝܢܬܐ ܪܒܬܐ.. ܘܐܟܪܙ ܒܗ ܟܪܘܙܘܬܐ ܕܐܡܪ ܐܢܐ ܠܟ. * ܘܩܡ ܝܘܢܢ ܘܐܙܠ ܠܢܝܢܘܐ ܐܝܟ
3 ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܢܝܢܘܐ ܕܝܢ ܡܕܝܢܬܐ ܗܘܬ ܪܒܬܐ ܠܐܠܗܐ. ܡܗܠܟܬܐ ܕܬܠܬܐ ܝܘܡܝܢ. * ܘܫܪܝ ܝܘܢܢ
4 ܠܡܥܠ ܠܢܝܢܘܐ ܡܗܠܟܬܐ ܝܘܡܐ ܚܕ. ܘܐܟܪܙ ܘܐܡܪ. ܥܕ ܐܪܒܥܝܢ ܝܘܡܝܢ ܢܝܢܘܐ ܡܬܗܦܟܐ.
5 * ܘܗܝܡܢܘ ܐܢܫܝܗ ܕܢܝܢܘܐ ܒܐܠܗܐ. ܘܩܪܘ ܨܘܡܐ. ܘܠܒܫܘ ܣܩܐ. ܡܢ ܪܘܪܒܢܝܗܘܢ
6 ܘܥܕܡܐ ܠܙܥܘܪܝܗܘܢ. * ܘܡܛܬ ܡܠܬܐ ܠܡܠܟܐ ܕܢܝܢܘܐ. ܘܩܡ ܡܢ ܟܘܪܣܝܗ. ܘܫܩܠ
7 ܬܐܓܗ ܡܢܗ. ܘܠܒܫ ܣܩܐ. ܘܝܬܒ ܥܠ ܩܛܡܐ. * ܘܐܟܪܙܘ ܘܐܡܪܘ ܒܢܝܢܘܐ. ܡܢ ܦܘܩܕܢܐ
ܕܡܠܟܐ ܘܕܪܘܪܒܢܘܗܝ.. ܒܢܝܢܫܐ ܘܒܥܝܪܐ. ܬܘܪܐ ܘܥܢܐ. ܠܐ ܢܛܥܡܘܢ ܡܕܡ. ܘܠܐ ܢܪܥܘܢ.
8 ܐܦ ܠܐ ܡܝܐ ܢܫܬܘܢ. * ܐܠܐ ܢܬܟܣܘܢ ܣܩܐ ܒܢܝܢܫܐ ܘܒܥܝܪܐ. ܘܢܩܥܘܢ ܠܐܠܗܐ. ܒܚܝܠܐ.
9 ܘܢܬܘܒܘܢ ܐܢܫ ܡܢ ܐܘܪܚܗ ܒܝܫܬܐ. ܘܡܢ ܚܛܘܦܝܐ ܕܐܝܬ ܒܐܝܕܝܗܘܢ. * ܡܢ ܝܕܥ ܐܢ
10 ܡܬܦܢܐ ܐܠܗܐ ܘܡܬܪܚܡ ܥܠܝܢ.. ܘܡܗܦܟ ܡܢܢ ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ ܕܠܐ ܢܐܒܕ. * ܘܚܙܐ
ܐܠܗܐ ܥܒܕܝܗܘܢ. ܕܗܦܟܘ ܡܢ ܐܘܪܚܬܗܘܢ ܒܝܫܬܐ.. ܘܐܗܦܟ ܡܢܗܘܢ ܚܡܬܐ
ܕܪܘܓܙܗ. ܘܠܐ ܐܘܒܕ ܐܢܘܢ.

CAP. III.

Fuitque ſermo Domini ad Jonam ſecundâ vice, dicendo; Surge, vade in Niniven urbem magnam, & prædica ei prædicationem quam dico tibi. Surgens itaque Jona abiit in Niniven juxta verbum Domini. (porrò Ninive urbs erat maxima Deo, itinere trium dierum) Cúmq; cœpiſſet Jona ingredi Niniven itinere die unius, prædicavit, ac dixit; Hinc ad quadraginta dies Ninive ſubvertetur. Credentes itaque Ninivitæ Deo, indixerunt jejunium, & ſaccos induerunt tam maximi eorum quàm minimi. Et cùm perveniſſet verbum iſtud ad regem Ninives, ſurrexit è ſolio ſuo, depoſitóq; diademate ſuo induit ſe cilicio, ſeditq; ſuper cinere. Deinde proclamaverunt, & dixerunt in Ninive; Ex decreto regis & procerum ejus, homines & jumenta, boves & oves quicquam ne guſtent, non paſcantur, ac ne aquam bibant: Sed operiantur ciliciis tam homines quàm jumenta, Deum cum gemitu invocent, & deſiſtat quiſque à via ſua mala, & à rapina quæ eſt in manibus ejus. Quis ſcit an reverſus Deus miſereatur noſtrî, & avertat à nobis æſtum iræ ſuæ ne pereamus. Videns ergò Deus opera eorum, quòd *ſcilicet* reverſi eſſent à viis ſuis pravis; avertit ab eis æſtum iræ ſuæ, & non perdidit eos.

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

* ܩܦܠܐܘܢ * ܕ *

1 * ܘܒܐܫ ܠܝܘܢܢ ܒܝܫܬܐ ܪܒܬܐ. ܘܟܡܪ ܠܗ ܛܒ. * ܘܨܠܝ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܐܡܪ. ܐܘ
2 ܡܪܝܐ .. ܠܐ ܗܘܬ ܗܕܐ ܡܠܬܝ ܟܕ ܐܝܬܝ ܒܐܪܥܝ .. ܘܡܛܠ ܗܢܐ ܩܕܡܬ ܥܪܩܬ ܠܝ
ܠܬܪܫܝܫ ܡܛܠ ܕܝܕܥ ܗܘܝܬ ܕܐܠܗܐ ܐܝܬܝܟ ܚܢܢܐ ܘܡܪܚܡܢܐ .. ܘܢܓܝܪ ܪܘܚ
3 ܘܣܓܝ ܛܝܒܘܬܐ.. ܘܡܬܬܘܐ ܐܢܬ ܥܠ ܒܝܫܬܐ. * ܘܗܫܐ ܡܪܝ. ܣܒ ܢܦܫܝ ܡܢܝ. ܡܛܠ
4 ܕܦܩܚ ܠܝ ܠܡܡܬ. ܐܘ ܡܢ ܕܐܚܐ. * ܘܐܡܪ ܠܗ ܡܪܝܐ. ܛܒ ܒܐܫ ܠܟ.

CAP. IV.

Diſplicuit id autem Jonæ vehementer, & doluit ei admodum. Proinde oravit Dominum, & dixit; Eja Domine, annon erat hoc verbum meum dum eſſem in terra mea? ob id fugam in Tharſis maturaveram, quippe qui nôſſem te Deum eſſe clementem atque miſericordem, longanimem, & copioſæ bonitatis, teque malum avertere. Jam ergò mi Domine, tolle à me animam meam; quia ſatius mihi fuerit mori quàm vivere. Dixit ei Dominus, Adeóne tibi diſplicuit?

1 2 3 4

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* الفصل الثالث * * الاصحاح الرابع عشر * وهو الثاني من النبوة *

1 * وكان قول الرب الي يونان ثانية قايلا * قم وامض الي نينوي المدينة العظيمة * وناد فيها
2 كالنداء الذي من قبل * الذي تكلمت به معك * فقام يونان ومضي الي نينوي كما
3 كلمه الرب * وكانت نينوي مدينة عظيمة لله * نحو مسلك طريق ثلاثة ايام * وابتدي يونان
4 ان يدخل الي المدينة نحو مسلك طريق يوم واحد * ونادي وقال * الي ثلاثة ايام ونينوي
5 تخسف * فامنت رجال نينوي بالله * ونادوا صوما * ولبسوا مسوحا من كبيرهم الي صغيرهم *
6 * واقترب القول الي ملك نينوي * فقام عن كرسيه * ونزع حلته عنه ولبس مسحا * وجلس
7 علي الرماد * ونودي وقيل في نينوي من قبل الملك ومن قبل عظمايه قايلين * الناس
8 والبهايم * والبقر والغنم لا يذوقوا شيا * ولا يرتعوا * ولا يشربوا ماء * وليلبس المسوح الناس
9 والبهايم * وصرخوا الي الله بامتداد * ويرجع كل واحد عن طريقه الشريرة * وعن الظلم
الذي في يديهم قايلين * من علم هل يتوب الله ويتعطف * ويرجع عن غضبه ولا نهلك *
10 * ونظر الله اعمالهم انهم رجعوا عن طرقهم الشريرة * وتاب الله علي الشر الذي تكلم به
ليصنعه بهم * ولم يصنعه *

CAP. III.

Textus decimus quartus, hujus autem prophetiæ ſecundus.

Et fuit ſermo Domini ad Jonam ſecundò, dicens; Surge, & abi in Niniven urbem magnam, & proclama in ea ſecundùm proclamationem illam priorem quam tibi dixeram. Surrexit ergò Jona, & adivit Niniven, quemadmodum allocutus eſt eum Dominus. Erat autem Ninive urbs maxima Deo, circiter ſpatium itineris trium dierum. Et cùm cœpiſſet Jona urbem penetrare circa ſpatium itineris diei unius, proclamavit, ac dixit; Ad tres dies Ninive ſubvertetur. Crediderunt Ninivitæ Deo, & indixerunt jejunium, induerúntque ſe ciliciis à maximo ad minimum. Imò accedente ejuſmodi ſermone ad regem Ninives, ſurrexit è throno ſuo, depoſitâque à ſe chlamyde ſuâ induit ſediúque ſuper cinerem. Et proclamatum dictúmque fuit in Ninive nomine regis & nomine principum ejus, hiſce verbis; Homines & jumenta, boves & oves ne guſtent quicquam, ne veſcantur, néve aquam bibant. Itaque ciliciis induti ſunt homines & jumenta, & clamaverunt ad Deum prolixè, & retraxit ſe quiſque à via ſua mala & ab iniquitate quæ erat in manibus eorum, dicentes; Quis novit an Deum pœniteat, clementiâ utatur, deſiſtátque ab ira ſua, neque pereamus? Quare cùm vidiſſet Deus opera eorum, quòd retraxiſſent ſe à viis ſuis malis; pœnituit Deum calamitatis quam eis illaturum ſe dixerat, & non intulit eam.

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

الفصل الرابع

1 * فحزن يونان حزنا عظيما * وانقبض * وصلي الي الرب وقال * يا رب اليس هذه كلماتي التي
2 تكلمت بها اذ كنت في ارضي * لاجل هذا سبقت لاهرب الي ترسيس * من اجل اني علمت
3 انك انت رحوم متراف * وطويل الروح * وكثير الرحمة * وتايب علي شرور الناس * والان
4 ايها السيد الرب خذ نفسي مني * لانه جيد لي ان اموت بالاكثر من ان احيا * فقال الرب
ليونان * قد حزنت انت جدا *

CAP. IV.

Contriſtatus eſt autem Jona triſtitiâ magnâ, & frontem contraxit: Oravitque ad Dominum, & ait; O Domine, nónne hæc ſunt verba mea quæ locutus fueram dum eſſem in terra mea? hac de re anteverteram fugiendo in Tharſis, quia noveram te eſſe miſericordem, clementem, longanimum, & multæ miſericordiæ, téque pœnitere malorum hominum. Nunc itaque O Here Domine, tolle à me animam meam; quia conſultius eſt mihi mori potiùs quàm vivere. Dixit autem Dominus ad Jonam; Jam tu vehementer contriſtatus es?

1 2 3 4

מיכה : א

, civitatis Oriente ab sedit & , civitate de Jonah est egressus Et
וַיֵּצֵא יוֹנָה מִן־הָעִיר וַיֵּשֶׁב מִקֶּדֶם לָעִיר 5
, umbra in illud subter sedebat & , tabernaculum ibidem sibi fecit &
וַיַּעַשׂ לוֹ שָׁם סֻכָּה וַיֵּשֶׁב תַּחְתֶּיהָ בַּצֵּל
præparavit Et *.civitate in* futurum esset quid videret donec
עַד אֲשֶׁר יִרְאֶה מַה־יִּהְיֶה בָּעִיר׃ וַיְמַן 6
existendum ad , Jonah *desuper* ascendit & *: ricinum* Deus Dominus
יְהוָה־אֱלֹהִים קִיקָיוֹן וַיַּעַל ׀ מֵעַל לְיוֹנָה לִהְיוֹת
est lætatus & : ejus malo à eum *eruendum ad* , ejus caput super *umbram*
צֵל עַל־רֹאשׁוֹ לְהַצִּיל לוֹ מֵרָעָתוֹ וַיִּשְׂמַח
Deus præparavit Et .magna lætitia *ricino* super Jonah
יוֹנָה עַל־הַקִּיקָיוֹן שִׂמְחָה גְדוֹלָה׃ וַיְמַן הָאֱלֹהִים 7
, *ricinum* percussit & : crastino in *auroram ascendendo in* vermem
תּוֹלַעַת בַּעֲלוֹת הַשַּׁחַר לַמָּחֳרָת וַתַּךְ אֶת־הַקִּיקָיוֹן
ventum Deus præparavit & , *Solem oriri juxta* fuit Et .aruit &
וַיִּיבָשׁ׃ וַיְהִי כִּזְרֹחַ הַשֶּׁמֶשׁ וַיְמַן אֱלֹהִים רוּחַ 8
, Jonah caput super Sol percussit & , *exurdantem* Orientalem
קָדִים חֲרִישִׁית וַתַּךְ הַשֶּׁמֶשׁ עַל־רֹאשׁ יוֹנָה
: dixit & , *mori* suæ animæ petivit & *: patiebatur deliquium* &
וַיִּתְעַלָּף וַיִּשְׁאַל אֶת־נַפְשׁוֹ לָמוּת וַיֹּאמֶר
: Jonah ad Deus dixit Et *.meis vitis præ* mea mors *Bona*
טוֹב מוֹתִי מֵחַיָּי׃ וַיֹּאמֶר אֱלֹהִים אֶל־יוֹנָה 9
Bene : dixit & *? ricinum super* tibi est ira *benefacere* Nonne
הַהֵיטֵב חָרָה־לְךָ עַל־הַקִּיקָיוֹן וַיֹּאמֶר הֵיטֵב
pepercisti Tu : Dominus dixit Et .mortem ad usque mihi est ira
חָרָה־לִי עַד־מָוֶת׃ וַיֹּאמֶר יְהוָה אַתָּה חַסְתָּ 10
, *illud* fecisti crescere nec , *eo in* laborâsti non *quo ricino super*
עַל־הַקִּיקָיוֹן אֲשֶׁר לֹא־עָמַלְתָּ בּוֹ וְלֹא גִדַּלְתּוֹ
parcam non ego Et .periit *noctis filius* & , fuit *noctis filius quòd*
שֶׁבִּן־לַיְלָה הָיָה וּבִן־לַיְלָה אָבָד׃ וַאֲנִי לֹא אָחוּס 11
præ multum ea in est qua , *magna civitate* Nineveh *super*
עַל־נִינְוֵה הָעִיר הַגְּדוֹלָה אֲשֶׁר יֶשׁ־בָּהּ הַרְבֵּה מִשְׁתֵּים־
, suam dexteram inter *scivit non* qui , *hominis myriadibus duodecim*
עֶשְׂרֵה רִבּוֹ אָדָם אֲשֶׁר לֹא־יָדַע בֵּין־יְמִינוֹ
.multum jumentum & , suam sinistram *ad*
לִשְׂמֹאלוֹ וּבְהֵמָה רַבָּה׃

Versio VULG. LAT.

5 Et egressus est Jonas de civitate, & sedit contra Orientem civitatis: & fecit sibimet umbraculum ibi, & sedebat subter illud in umbra, donec videret quid accideret
6 civitati. Et præparavit Dominus Deus hederam, & ascendit super caput Jonæ, ut esset umbra super caput ejus, & protegeret eum: (laboraverat enim:) & lætatus est Jonas super hedera, lætitiâ ma-
7 gnâ. Et paravit Deus vermem ascensu diluculi in crastinum: &
8 percussit hederam, & exaruit. Et cùm ortus fuisset Sol, præcepit Dominus vento calido & urenti: & percussit Sol super caput Jonæ, & æstuabat: & petivit animæ suæ ut moreretur, & dixit; Melius est
9 mihi mori, quàm vivere. Et dixit Dominus ad Jonam; Putásne benè irasceris tu super hedera? Et dixit; Benè irascor ego usque ad
10 mortem. Et dixit Dominus; Tu doles super hederam, in qua non laborâsti, neque fecisti ut cresceret: quæ sub una nocte nata est,
11 & sub una nocte periit. Et ego non parcam Ninive civitati magnæ, in qua sunt plus quàm centum viginti millia hominum, qui nesciunt quid sit inter dexteram & sinistram suam, & jumenta multa?

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

5 Καὶ ἐξῆλθεν Ἰωνᾶς ἐκ τῆς πόλεως, ϗ ἐκάθισεν
ἀπέναντι τῆς πόλεως, ϗ ἐποίησεν (δ)
αὑτῷ ἐκεῖ σκηνὴν, ϗ ἐκάθητο ὑποκάτω
αὐτῆς (ε), ἕως οὗ ἀπίδῃ τί ἔσαι τῇ πόλει.
6 Καὶ προσέταξε κύριος ὁ θεὸς (ζ) κολοκύνθῃ,
ϗ ἀνέβη ὑπὲρ κεφαλῆς (″) τοῦ Ἰωνᾶ,
τοῦ εἶναι σκιὰν ὑπεράνω τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ, τοῦ
σκιάζειν αὐτῷ ἀπὸ τῶν κακῶν αὐτοῦ. ϗ ἐχάρη
Ἰωνᾶς ἐπὶ τῇ (η) κολοκύνθῃ χαρὰν
7 μεγάλην. Καὶ προσέταξεν (θ) ὁ θεὸς σκώληκι
ἑωθινῇ τῇ ἐπαύριον, ϗ ἐπάταξε τὴν
8 (ι) κολόκυνθαν, ϗ ἀπεξηράνθη. Καὶ ἐγένετο
ἅμα τῷ ἀνατεῖλαι τὸν ἥλιον, ϗ
προσέταξεν (κ) ὁ θεὸς πνεύματι καύσωνι
συγκαίοντι, ϗ ἐπάταξεν ὁ ἥλιος ἐπὶ
τὴν κεφαλὴν (λ) τοῦ Ἰωνᾶ· ϗ ὠλιγοψύχησε,
ϗ ἀπελέγετο τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, ϗ εἶπε,
9 Καλόν μοι (μ) ἀποθανεῖν με ἢ ζῆν. Καὶ
εἶπεν (ν) ὁ θεὸς πρὸς Ἰωνᾶν, Εἰ σφόδρα
λελύπησαι σὺ ἐπὶ τῇ (ξ) κολοκύνθῃ; ϗ
εἶπε, Σφόδρα λελύπημαι ἐγὼ ἕως θανάτου.
10 Καὶ εἶπε κύριος, Σὺ ἐφείσω ὑπὲρ τῆς
(ο) κολοκύνθης, ὑπὲρ ἧς οὐκ ἐκακοπάθησας
ἐπ' (π) αὐτὴν, ϗ οὐδὲ ἐξέθρεψας αὐτὴν,
ἣ (ρ) ἐγενήθη ὑπὸ νύκτα, ϗ ὑπὸ νύκτα
11 ἀπώλετο· Ἐγὼ δὲ οὐ φείσομαι ὑπὲρ Νινευὴ
τῆς (σ) πόλεως τῆς μεγάλης, ἐν ᾗ κατοικοῦσιν
πλείους ἢ δώδεκα μυριάδες ἀνθρώπων,
οἵτινες οὐκ ἔγνωσαν δεξιὰν αὐτῶν (τ) ἢ ἀριστερὰν
αὐτῶν, ϗ κτήνη πολλά;

Et egressus est Jonas de civitate, 5
& sedit contra civitatem: & fecit
sibi tabernaculum ibi, & sedebat (c) subter illud, donec videret,
quid esset civitati. Et præcepit 6
Dominus Deus (d) cucurbitæ: & ascendit super caput Jonæ,
ut esset umbraculum super
caput ejus, ut protegeret eum à
suis malis. Lætatúsque est Jonas
super cucurbita gaudio magno.
Et præcepit Deus vermi mane in 7
crastinum: & percussit cucurbitam,
& arefacta est. Et factum 8
est, simul atque exortus est Sol,
et præcepit Deus spiritui ardenti,
urenti: & percussit Sol super
caput Jonæ: & angustiatus est,
& tæduit eum animæ suæ, &
dixit; Melius est mihi mori,
quàm vivere. Et dixit Deus ad 9
Jonam; Si valdè contristatus es
tu super cucurbita? Et ait; Valdè
contristatus sum ego usque ad
mortem. Et dixit Dominus; 10
Tu pepercisti super cucurbita, pro
qua non laborâsti super eam,
neque nutrîsti eam, quæ nata est
sub noctem, & sub noctem periit:
Ego autem non parcam super Nineve 11
civitate magna, in qua habitant
plures, quàm (e) centum
viginti millia hominum, qui non
noverunt dextram suam, & sinistram
suam, & pecora multa?

ΙΩΝΑΣ ς'.

MS.A. (δ) ἐκεῖ σκηνὴν ἑαυτῷ, (ε) ἐν σκιᾷ, ἕως οὗ ἀφείδῃ (ζ) κολοκύντῃ, (″) Ἰωνᾶ, (η) κολοκύντῃ (θ) κύριος ὁ θεὸς (ι) κολόκυνταν, (κ) κύριος ὁ θεὸς πνεύματι καύσωνος (λ) Ἰωνᾶ· (μ) τὸ ἀποθανεῖν (ν) κύριος ὁ θεὸς (ξ) κολοκύντῃ; (ο) κολοκύντης, (π) αὐτῆς, ϗ οὐκ (ρ) ὑπὸ νύκτα ἐγενήθη, (σ) πόλεως, ἐν ᾗ (τ) οὐδὲ ΙΩΝΑΣ προφήτης ς'.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ונפק יונה מן קרתא ויתיב ממדנח לקרתא ועבד ליה תמן מטלתא ויתיב תחותה 5
בטולא עד דיחזי מה יהי בסוף קרתא : וזמין יי אלהים קיקיון וסליק עיל מן יונה 6
למהוי טולא על רישיה לאגנא ליה מבישתיה וחדי יונה על קיקיון חדוא רבא :
וזמין יי ית תולעתא במסק צפרא ביומא דבתרוהי ומחא ית קיקיון ויבש : והוה 7 8
כמדנח שמשא וזמין יי רוח קדומא שתיקא וטפחת שמשא על רישא דיונה ואשתלהי
ושאל ית נפשיה לממת ואמר טב דאמות מדאחי : ואמר יי ליונה הלחדא תקיף 9
לך על קיקיון ואמר לחדא תקוף לי עד מותא : ואמר יי את חסתא על קיקיון 10
דלא עמלת ביה ולא רביתיה די בליליא הדין הוה ובליליא אוחרנא אבד : ואנא 11
לא אחוס על נינוה קרתא רבתא דאית בה סגי מתרתא עסרי רבון אנשא דלא ידע בין
ימיניה לסמליה ובעירא סגי :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et egressus est Jonas de civitate, & habitavit ad Orientem civitatis, ac sibi 5
eo loci fecit umbraculum, subter quod consedit in umbra, donec videret
quid tandem futurum esset civitati. Præparavit autem Dn̄s Deus cucurbi- 6
tam, quæ & ascendit super Jonam, ut esset umbra capiti ejus, & eum à malo
suo protegeret. Proinde lætatus est Jonas super cucurbita lætitia magna.
Sed paravit Dn̄s vermem sub auroræ ascensum sequentis diei, qui percussit 7
cucurbitam, atque exaruit. Posteà factum est oriente Sole ut præpararet Dn̄s 8
ventum Orientalem quietum, atque percussit Sol caput Jonæ, qui animi
deliquium patiens, optabat animæ suæ mori: & dicebat; Melius est ut mo-
riar, quàm ut vivam. Dixitq; Dn̄s Jonæ: Nunquid vehementer irasceris 9.
pro cucurbita? & ait: Admodum irascor ad mortem usque. Et dixit Dn̄s, 10
Tu cucurbitæ misertus es, in qua non laborâsti, nec eam nutrivisti: quæ in
hac nocte fuit, sed nocte altera periit. Ego verò non parcam Ninivæ civitati 11
magnæ, in qua sunt plusquàm centum & viginti hominum millia, qui nesci-
unt inter dextram & sinistram suam discernere, nec non & jumenta multa.

ספר מיכה : א

CAP. I. א

diebus in Morastiten Michah ad fuit quod Domini Verbum
דְּבַר־יְהוָה ׀ אֲשֶׁר הָיָה אֶל־מִיכָה הַמֹּרַשְׁתִּי בִּימֵי 1
super vidit quod , Jehudah regum Jehizchijah , Achaz , Jotham
יוֹתָם אָחָז יְחִזְקִיָּה מַלְכֵי יְהוּדָה אֲשֶׁר־חָזָה עַל־
attende , *ipsi* omnes populi Audite .Jerusalaim & Someron
שֹׁמְרוֹן וִירוּשָׁלִָם׃ שִׁמְעוּ עַמִּים כֻּלָּם הַקְשִׁיבִי 2
, testem in vobis *in* DEUS Dominus sit & ; ejus plenitudo & ,terra
אֶרֶץ וּמְלֹאָהּ וִיהִי אֲדֹנָי יֱהוִה בָּכֶם לְעֵד
egrediens Dominus ecce Quia *.suæ sanctitatis palatio* de Dominus
אֲדֹנָי מֵהֵיכַל קָדְשׁוֹ׃ כִּי־הִנֵּה יְהוָה יֹצֵא 3
.terræ excelsa super calcabit & ,descendet & , suo loco è
מִמְּקוֹמוֹ וְיָרַד וְדָרַךְ עַל־בָּמֳתֵי־אָרֶץ׃

Versio VULG. LAT.

PROPHETIA
MICHÆÆ.
CAP. I.

1 VErbum Domini, quod factum est ad Michæam Morasthiten, in dieb⁹ Joathan, Achaz, & Ezechiæ, regum Juda: quod vidit super Sa-
2 mariam, & Jerusalem. Audite populi omnes, & attendat terra, & plenitudo ejus: & sit Dn̄s Deus vobis in testē, Dn̄s de templo san-
3 cto suo. Quia ecce Dn̄s egredietur de loco suo: & descendet, et calcabit super excelsa terræ.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

ΜΙΧΑΙΑΣ Γ'.
ΚΕΦ. α'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς Μιχαίαν
τὸν τοῦ (″) Μωρασθεὶ, ἐν ἡμέραις Ἰωάθαμ,
ϗ Ἄχαζ, ϗ Ἐζεκίου (α) βασιλέων Ἰούδα,
ὑπὲρ ὧν εἶδε περὶ Σαμαρείας ϗ περὶ Ἱερουσαλήμ.
2 Ἀκούσατε λαοὶ λόγους, ϗ προσεχέτω
ἡ γῆ, ϗ πάντες οἱ ἐν αὐτῇ· ϗ (β)
ἔσαι κύριος κύριος ἐν ὑμῖν εἰς μαρτύριον,
3 κύριος ἐξ οἴκου ἁγίου αὐτοῦ. Διότι ἰδοὺ κύριος
ἐκπορεύεται ἐκ τοῦ τόπου αὐτοῦ, (γ) ϗ καταβήσεται,
ϗ ἐπιβήσεται ἐπὶ τὰ ὕψη τῆς γῆς,

MICHÆAS.
CAP. I.

ET (a) factum est verbum Domini 1
ad Michæam Morasthiten
in diebus Joatham, & Achaz,
& Ezeciæ regum Juda, de quibus
vidit de Samaria, & de
Hierusalem. Audite, populi, (b) 2
verba, & auscultet terra, & omnes,
qui sunt in ea: & (c) erit
Dominus Dominus in vobis
in testimonium, Dominus ex domo
sancta sua. Ecce enim Dominus 3
egreditur de loco suo, & descendet,
& ascendet super excelsa terræ:

MS.A. ΜΙΧΑΙΑΣ Γ'. (″) Μωραθεὶ, (α) βασιλέως (β) ἔσαι κύριος ἐν ὑμῖν (γ) ϗ ἐπιβήσεται ἐπὶ τὰ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.
א

פתגם נבואה מן קדם יי די הוה עם מיכה ממרשה ביומי יותם אחז יחזקיה מלכיא 1
דבית יהודה דאתנבי על שומרון וירושלם : שמעו עממיא כלהון אציתי ארעא 2
ומלהא ויהי מימרא דיי אלהים בכון לסהיד יי מהיכלא דקודשיה : ארי הא יי מתגלי 3
מאתר בית שכנתיה ויתגלי וירמוס ית תוקפי ארעא :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.
CAPUT. I.

VErbum prophetiæ à facie Domini quod factum est cum Michæa de Mare- 1
sa, in diebus Jotham, Achaz, & Ezechiæ regum domus Juda, qui prophe-
tavit contra Samariam & Jerusalem. Audite populi universi, & estote attenti 2
terra & plenitudo ejus; sitque verbum Dn̄i Dei contra vos in testem, Dn̄s de
templo sancto suo. Ecce enim Dn̄s conspicuum se ostendit de loco domus ma- 3
jestatis suæ, & apparebit, conculcabitque terræ robora.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܘܢܦܩ ܝܘܢܢ ܠܒܪ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ . ܘܝܬܒ ܠܗ ܒܡܕܢܚܗ ܕܡܕܝܢܬܐ. ܘܥܒܕ 5
ܠܗ ܡܛܠܬܐ ܬܡܢ . ܘܝܬܒ ܬܚܬܝܗ ܒܛܠܠܐ. ܕܢܚܙܐ ܡܢܐ ܗܘܐ ܠܗ ܠܡܕܝܢܬܐ.
* ܘܦܩܕ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܠܥܩܪܐ ܕܩܪܥܐ . ܘܝܥܐ ܘܣܠܩ ܠܥܠ ܡܢ ܝܘܢܢ. ܘܗܘܐ ܛܠܠܐ ܥܠ 6
ܪܫܗ . ܘܐܪܘܚ ܠܗ ܡܢ ܒܝܫܬܗ. ܘܚܕܝ ܝܘܢܢ ܒܗ ܒܥܩܪܐ ܕܩܪܥܐ ܚܕܘܬܐ ܪܒܬܐ.
* ܘܠܡܚܪܬܐ ܕܝܘܡܐ . ܦܩܕ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܠܬܘܠܥܬܐ ܒܡܕܢܚ ܨܦܪܐ. ܘܡܚܬܗ ܠܥܩܪܐ 7
ܕܩܪܥܐ. ܘܝܒܫܬ. * ܘܟܕ ܕܢܚ ܫܡܫܐ. ܦܩܕ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܠܪܘܚܐ ܕܫܘܒܐ. ܘܐܘܒܫܬܗ ܠܥܩܪܐ 8
ܕܩܪܥܐ. ܘܡܚܬ ܫܡܫܐ ܒܪܫܗ ܕܝܘܢܢ. ܘܐܬܡܪܥܠ. ܘܫܐܠ ܡܘܬܐ ܠܢܦܫܗ. ܘܐܡܪ. ܫܠܝܛ
ܒܐܝܕܝܟ ܡܪܝܐ ܠܡܣܒ ܢܦܫܝ ܡܢܝ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܝܬ ܛܒ ܐܢܐ ܡܢ ܐܒܗܝ. * ܘܐܡܪ 9
ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܠܝܘܢܢ. ܛܒ ܟܪܝܐ ܠܟ ܥܠ ܩܪܥܬܐ. ܘܐܡܪ ܝܘܢܢ. ܛܒ ܟܪܝܐ ܠܝ
ܥܕܡܐ ܠܡܘܬܐ. * ܐܡܪ ܠܗ ܡܪܝܐ. ܐܢܬ ܚܣܬ ܥܠ ܩܪܥܬܐ : ܕܠܐ ܠܐܝܬ ܒܗ ܘܠܐ 10
ܪܒܝܬܗ :: ܕܒܪ ܠܠܝܗ ܗܘܬ. ܘܒܪ ܠܠܝܗ ܐܒܕܬ . * ܐܢܐ ܕܝܢ ܠܐ ܐܚܘܣ ܥܠ ܢܝܢܘܐ 11
ܡܕܝܢܬܐ ܪܒܬܐ . ܕܐܝܬ ܒܗ ܣܓܝ ܡܢ ܬܪܬܥܣܪܐ ܪܒܘܢ ܒܢܝܢܫܐ : ܕܠܐ ܝܕܥܝܢ ܒܝܢ
ܝܡܝܢܗܘܢ ܠܣܡܠܗܘܢ . ܘܒܥܝܪܐ ܣܓܝܐܐ.

* ܫܠܡܬ ܢܒܝܘܬܗ ܕܝܘܢܢ *

Tum Jona extra urbē egreſſus ſedit ad Orientalem 5
plagam urbis ; ibique tugurio ſibi
facto, ſedit ſubter illud in umbra, ut videret
quid eventurum eſſet urbi. Et præcepit Dominus 6
plantæ cucurbitæ, quæ crevit aſcendítque
ſuper Jonam, fuitque umbra ſuper caput
ejus, & recreavit eum ab afflictione ipſius ; &
lætatus eſt Jonas de planta illa cucurbitæ lætitiâ
magnâ. Verùm poſterâ die præcepit 7
Dominus Deus vermi ſub ortum auroræ, qui
feriens plantam cucurbitæ ſecuit illam. Et 8
cùm ortus eſſet ſol, præcepit Dominus Deus
vento torrido, qui areſecit cucurbitam ; adeóque
ſol exarſit in caput Jonæ, ut excruciatus
poſtularet ſibi mortem, ac diceret ; Facultas
eſt in manibus tuis Domine, tollendi à
me animam meam ; neque enim melior ſum
patrib⁹ meis. Dixit autē Dn̄s Deus ad Jonam ; 9
Vehementer doles propter cucurbitæ plantam.
Reſpondit Jona ; Vehementer doleo ad
mortem uſque. Ait illi Dominus ; Tu miſericordiâ 10
motus es propter cucurbitæ plantam
pro quâ non laborâſti, & quam non educâſti,
quæ unâ nocte nata eâdē nocte exaruit :
Ego verò non miſererer Ninives urbis magnæ, 11
in qua extant pluſquàm duodecim myriades
hominum qui *deſcernere* neſciunt dexteram
ſuam à ſiniſtra ſua, & multitudo jumentorum ?

Prophetiæ Jonæ finis.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

فقال حزنت جدا انا الي الموت * وخرج يونان من المدينة * وجلس قبالة المدينة * وصنع له 5
هناك مظلة * وجلس تحتها في الظل الي ان يري ما يكون في المدينة * فامر الرب الاله يقطينا * 6
فصعد على راس يونان ليكون ظلا فوق راسه ليظلله من كربه * ففرح يونان باليقطين
فرحا عظيما * وامر الله دودة سحرية بالغداة * وضربت اليقطين وجف * وكان لما اشرقت الشمس * 7 8
فامر الرب الاله ريح سموم محرقة * وضربت الشمس على راس يونان * فضعفت نفسه * ورثي نفسه
وقال * جيد لي ان اموت بالاكثر من ان احيا * فقال الرب الاله ليونان * احزنت انت جدا على 9
اليقطين * فقال حزنت جدا الي الموت * فقال الرب انت شفقت على اليقطين الذي من اجله لم 10
تتعب فيه * ولم تربه * الذي صار من ليلته وهلك في ليلته * فانا لا اشفق على نينوي 11
المدينة العظيمة * التي فيها سكان اكثر من اثني عشر ربوة من الناس * قوم لا يعلمون
يمينهم ولا شمالهم * وبهايمهم كثير *   * تمت نبوة يونان النبي *

Vehementer, inquit, contriſtatus ſum ad
mortem uſque. Egreſſuſque eſt Jona ex 5
urbe, ſeditque è regione urbis ; & fecit
illic ſibi tabernaculum, ſeditque ſub eo
in umbra uſque dum videret quid futurum
eſſet de urbe. Præceperat enim Dominus 6
Deus cucurbitæ, quæ aſcenderat
ſupra caput Jonæ, ut eſſet umbra ſuper
caput ejus, ut protegeret eum à dolore
ipſius : lætatuſque fuerat Jona ob cucurbitam
illam lætitiâ magnâ. Sed præcepit 7
Deus vermi ſub auroram craſtinæ
diei, qui percuſſit cucurbitam, & arefacta
eſt. Et cùm ortus eſſet ſol, præcepit 8
Dominus Deus vento auræ torridæ,
feriitque ſol caput Jonæ : unde puſillanimis
redditus deploravit animam ſuam,
& ait ; Melius eſt mihi mori potiùs
quàm vivere. Dixit autem Dominus Deus 9
ad Jonam ; An vehementer contriſtatus
es propter cucurbitam? Vehementer
inquit, contriſtatus ſum ad mortem uſque.
Dixit Domin⁹, Tu clementiâ moveris erga 10
cucurbitā cuj⁹ gratiâ non laborâſti, quā
non nutriviſti, quæ eâdem nocte nata, eâdem
quoque nocte periit : Et ego non moverer 11
clementiâ erga Niniven urbem
magnam, in qua ſunt habitantium myriades
pluſquam duodecim, hominum neſcientiū
dexteram ſuam neq; ſiniſtram ſuā ;
& erga jumenta ipſorum plurima ?

Finis Prophetiæ Jonæ Prophetæ.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܬܘܒ ܢܒܝܘܬܗ ܕܡܝܟܐ ܢܒܝܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

* ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܕܗܘܐ ܥܠ ܡܝܟܐ ܡܪܫܬܝܐ ܒܝܘܡܬܗܘܢ ܕܝܘܬܡ ܘܐܚܙ ܘܚܙܩܝܐ 1
ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܕܚܙܐ ܥܠ ܫܡܪܝܢ ܘܥܠ ܐܘܪܫܠܡ. * ܫܡܥܘ ܥܡܡܐ ܟܠܗܘܢ. ܘܨܘܬܝ 2
ܐܪܥܐ ܒܡܠܝܗ. ܘܢܗܘܐ ܒܟܘܢ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ ܣܗܕܐ. ܡܪܝܐ ܡܢ ܗܝܟܠܐ ܕܩܘܕܫܗ. * ܡܛܠ 3
ܕܗܐ ܡܪܝܐ ܢܦܩ ܡܢ ܐܬܪܗ . ܘܢܚܬ ܘܢܕܘܫ ܥܠ ܪܡܬܗ ܕܐܪܥܐ.

Sequitur Prophetia

MICHÆ PROPHETÆ

CAP. I.

SErmo Domini qui fuit ad Micham Mirſitem, 1
in diebus Jothami, Ahazi, & Hezeciæ
regum Judæ ; quem vidit contra Samariam
& contra Jeruſalem. Audite omnes populi, 2
& attende terra univerſa, ſitque Dominus
dominorum teſtis contra vos, Dominus de
templo ſanctitatis ſuæ. Nam ecce Dominus 3
proditurus eſt è loco ſuo, deſcenſurus, & greſſurus
ſuper excelſa terræ :

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* باسم الله الخالق الحي الناطق *   * بدو ترجمة ميخا النبي * بركاته علينا * امين *
* الفصل الاول *   * الاصحاح الخامس عشر * وهو الاول من النبوة *
* وكان قول الرب الي ميخا بن موراثي * في ايام يواثام * واحاز * وحزقيا ملك يهودا * من اجل 1
الذين راهم على شامرين واورشليم * اسمعوا ايها الشعوب الاقوال * ولتنصت الارض وجميع 2
الذين فيها * ويكون الرب فيكم للشهادة * الرب من بيته المقدس * من اجل انه ها الرب 3
يخرج من موضعه * ويطا * ويصعد على اعالي الارض *

IN NOMINE DEI CREATORIS,
VIVI, RATIONALIS.
Initium interpretationis
MICHÆ PROPHETÆ,
CUJUS BENEDICTIONES
nobis adſint, Amen.
CAPUT PRIMUM.
Textus decimus quintus, hujus
autem Prophetiæ primus.

ET fuit ſermo Domini ad Michā filiū 1
Morathi, in dieb⁹ Joathami, Ahazi, et
Hezeciæ regis Judæ, de iis quæ vidit contra
Samariam & Jeroſolymam. Audite O
populi ſermones iſtos, & auſcultet terra 2
cum omnib⁹ qui ſunt in ea, ſitq; Dominus
in vos teſtimonio, Dominus de domo ſua
ſancta. Nam ecce Dominus egredietur è
loco ſuo, & conculcabit, conſcendetque 3
editiſſima terræ loca :

מיכה׃ ב

cera ſicut : ſe ſcindent valles & ,eum ſubtus montes liqueſcent Et
4 וְנָמַסּוּ הֶהָרִים תַּחְתָּיו וְהָעֲמָקִים יִתְבַּקָּעוּ כַּדּוֹנַג
prævaricationẽ Propter .præceps in effuſæ aquæ ſicut ; ignis facieb⁹ à
5 מִפְּנֵי הָאֵשׁ כְּמַיִם מֻגָּרִים בְּמוֹרָד׃ בְּפֶשַׁע
prævaricatio Quæ .Iſrael domus peccata propter & ,hoc totum Jahacob
יַעֲקֹב כָּל־זֹאת וּבְחַטֹּאות בֵּית יִשְׂרָאֵל מִי־פֶשַׁע
? Jeruſalaim nónne ,Jehudah excelſa quis & ? Someron Nónne ? Jahacob
יַעֲקֹב הֲלוֹא שֹׁמְרוֹן וּמִי בָּמוֹת יְהוּדָה הֲלוֹא יְרוּשָׁלִָם׃
diffundam & ,vineæ plantationes in , agri acervum in Someron ponam Et
6 וְשַׂמְתִּי שֹׁמְרוֹן לְעִי הַשָּׂדֶה לְמַטָּעֵי כָרֶם וְהִגַּרְתִּי
omnia Et .revelabo ejus fundamenta & , ejus lapides vallem in
7 לַגַּי אֲבָנֶיהָ וִיסֹדֶיהָ אֲגַלֶּה׃ וְכָל־
comburentur ejus mercedes omnes & , contundentur ejus ſculptilia
פְּסִילֶיהָ יֻכַּתּוּ וְכָל־אֶתְנַנֶּיהָ יִשָּׂרְפוּ
mercede de quia : deſolationem ponam ejus dolores omnes & , igni in
בָאֵשׁ וְכָל־עֲצַבֶּיהָ אָשִׂים שְׁמָמָה כִּי מֵאֶתְנַן
.revertentur meretricis mercedem ad uſque & , congregavit meretricis
זוֹנָה קִבָּצָה וְעַד־אֶתְנַן זוֹנָה יָשׁוּבוּ׃
: nudus & ſpoliatus vadam : ululabo & , plangam hoc Super
8 עַל־זֹאת אֶסְפְּדָה וְאֵילִילָה אֵילְכָה שֵׁילָל וְעָרוֹם
.ululæ filiarum veluti luctum & ,draconum velut planctum faciam
אֶעֱשֶׂה מִסְפֵּד כַּתַּנִּים וְאֵבֶל כִּבְנוֹת יַעֲנָה׃
ad uſque pertigit,Jehudah ad uſque venit quia ; ejus plagæ deſperata Quia
9 כִּי אֲנוּשָׁה מַכּוֹתֶיהָ כִּי־בָאָה עַד־יְהוּדָה נָגַע עַד־
,annuntietis ne Gath In .Jeruſalaim ad uſque ,mei populi portam
10 שַׁעַר עַמִּי עַד־יְרוּשָׁלִָם׃ בְּגַת אַל־תַּגִּידוּ
.teipſam involve pulvere , pulveris domo in , fleveritis ne flendo
בָּכוֹ אַל־תִּבְכּוּ בְּבֵית לְעַפְרָה עָפָר הִתְפַּלָּשְׁתִּי׃
habitatrix eſt egreſſa Non .pudore nuda , pulchrè habitans vobis Tranſi
11 עִבְרִי לָכֶם יוֹשֶׁבֶת שָׁפִיר עֶרְיָה־בֹשֶׁת לֹא יָצְאָה יוֹשֶׁבֶת
.ſuam ſtationem vobis à accipiet : haeſel--Beth planctum Saanan
צַאֲנָן מִסְפַּד בֵּית הָאֵצֶל יִקַּח מִכֶּם עֶמְדָּתוֹ׃
deſcendit quia : Maroth habitatrix bonum propter doluit Siquidem
12 כִּי־חָלָה לְטוֹב יוֹשֶׁבֶת מָרוֹת כִּי־יָרַד
veloci equo currum Apta .Jeruſalaim portam ad Domino cum à malū
13 רָע מֵאֵת יְהוָה לְשַׁעַר יְרוּשָׁלִָם׃ רְתֹם הַמֶּרְכָּבָה לָרֶכֶשׁ
te in quia , Sijon filiæ ipſa peccati principium : Lachis habitatrix
יוֹשֶׁבֶת לָכִישׁ רֵאשִׁית חַטָּאת הִיא לְבַת־צִיּוֹן כִּי־בָךְ
ſuper miſſiones dabis Propterea .Iſrael prævaricationes ſunt inventæ
14 נִמְצְאוּ פִּשְׁעֵי יִשְׂרָאֵל׃ לָכֵן תִּתְּנִי שִׁלּוּחִים עַל
.Iſrael regibus mendacium in Achzib domus : Ghath Moreſeth
מוֹרֶשֶׁת גַּת בָּתֵּי אַכְזִיב לְאַכְזָב לְמַלְכֵי יִשְׂרָאֵל׃
veniet Hadulam ad uſque:Mareſah habitatrix tibi adducā hæredem Adhuc
15 עֹד הַיֹּרֵשׁ אָבִי לָךְ יוֹשֶׁבֶת מָרֵשָׁה עַד־עֲדֻלָּם יָבוֹא
filios ſuper temetipſam tonde & , teipſam Decalva .Iſrael gloria
16 כְּבוֹד יִשְׂרָאֵל׃ קָרְחִי וָגֹזִּי עַל־בְּנֵי
.te à trāſmigraverūt quia,aquila ſicut tuū calvitiū dilata:tuarū deliciarū
תַּעֲנוּגָיִךְ הַרְחִבִי קָרְחָתֵךְ כַּנֶּשֶׁר כִּי־גָלוּ מִמֵּךְ׃

CAP. II. ב

.ſuis cubilibus ſuper malum operantibus & ,iniquitatem cogitantibus Væ
1 הוֹי חֹשְׁבֵי־אָוֶן וּפֹעֲלֵי רָע עַל־מִשְׁכְּבוֹתָם
.illorum manus facultate in eſt quoniam ,illud facient mane illucendo In
בְּאוֹר הַבֹּקֶר יַעֲשׂוּהָ כִּי יֶשׁ־לְאֵל יָדָם׃
oppreſſerunt & ;tulerunt &,domos &:rapuerunt &,agros concupierunt Et
2 וְחָמְדוּ שָׂדוֹת וְגָזָלוּ וּבָתִּים וְנָשָׂאוּ וְעָשְׁקוּ
.ejus hæreditatem & virum & ,ejus domum & virum
גֶּבֶר וּבֵיתוֹ וְאִישׁ וְנַחֲלָתוֹ׃

Verſio VULG. LAT.

4 Et conſumentur montes ſubtus
eum : & valles ſcindentur ſicut
cera à facie ignis, & ſicut aquæ,
5 quæ decurrunt in præceps. In
ſcelere Jacob omne iſtud, & in
peccatis domûs Iſrael. Quod ſcel⁹
Jacob ? nónne Samaria ? & quæ
excelſa Judæ ? nónne Jeruſalem ?
6 Et ponam Samariam quaſi acervum
lapidū in agro cùm plantatur
vinea : & detraham in vallem
lapides ej⁹, & fundamenta ej⁹ revelabo.
7 Et omnia ſculptilia ejus
concidentur, & omnes mercedes
ejus comburentur igne , & omnia
idola ejus ponam in perditionē :
quia de mercedibus meretricis
congregata ſunt,& uſque ad mercedem
8 meretricis revertentur.Super
hoc plangā,& ululabo: vadā
ſpoliatus,& nudus : faciam planctum
velut draconum, & luctum
9 quaſi ſtruthionū. Quia deſperata
eſt plaga ejus, quia venit uſque
ad Judam, tetigit portam populi
10 mei uſque ad Jeruſalem. In Geth
nolite annuntiare, lachrymis ne
ploretis,in domo pulveris pulvere
11 vos conſpergite.Et tranſite vobis
habitatio pulchra, confuſa ignominiâ
: non eſt egreſſa quæ habitat
in exitu:planctum Domus vicina
accipiet ex vobis, quæ ſtetit
12 ſibimet.Quia infirmata eſt in bonum,
quæ habitat in amaritudinibus:
quia deſcendit malum à Domino
13 in portam Jeruſalem. Tumultus
quadrigæ ſtuporis habitanti
Lachis : principium peccati
eſt filiæ Sion, quia in te inventa
14 ſunt ſcelera Iſrael. Propterea
dabit emiſſarios ſuper hæreditatem
Geth : domus mendacii
in deceptionem regibus Iſrael.
15 Adhuc hæredem adducam tibi
quæ habitas in Mareſa : uſque ad
16 Odollam veniet gloria Iſrael.Decalvare
, & tondere ſuper filios
deliciarum tuarum : dilata calvitium
tuum ſicut aquila : quoniam
captivi ducti ſunt ex te.

CAP. II.

1 VÆ qui cogitatis inutile , &
operamini malum in cubilibus
veſtris : in luce matutina faciunt
illud, quoniam contra Deum eſt
2 manus eorum. Et concupierunt
agros , & violenter tulerunt, &
rapuerunt domos : & calumniabantur
virum , & domum ejus;
virum, & hæreditatem ejus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

4 Καὶ σαλευθήσεται τὰ ὄρη ὑποκάτωθεν αὐτοῦ,
ϗ αἱ κοιλάδες τακήσονται ὡς κηρὸς
ἀπὸ προσώπου πυρὸς, ϗ ὡς ὕδωρ καταφερόμενον
5 ἐν καταβάσει. (δ) Δι' ἀσέβειαν Ἰακὼβ
πάντα ταῦτα, ϗ (ε) δι' ἁμαρτίαν οἴκου
Ἰσραήλ. τίς ἡ ἀσέβεια (ζ) τοῦ Ἰακώβ; οὐχ
ἡ Σαμάρεια; ϗ τίς ἡ ἁμαρτία οἴκου Ἰούδα;
6 οὐχὶ Ἱερουσαλήμ; Καὶ θήσομαι Σαμάρειαν
(η) εἰς ὀπωροφυλάκιον ἀγροῦ, ϗ εἰς φυτείαν
ἀμπελῶνος, ϗ κατασπάσω εἰς χάος τοὺς λίθους
αὐτῆς, ϗ τὰ θεμέλια αὐτῆς ἀποκαλύψω.
7 Καὶ πάντα τὰ γλυπτὰ αὐτῆς κατακόψουσι,
ϗ πάντα τὰ μισθώματα αὐτῆς ἐμπρήσουσιν
ἐν πυρὶ, ϗ πάντα τὰ εἴδωλα αὐτῆς θήσομαι
εἰς ἀφανισμόν· διότι ἐκ μισθωμάτων πορνείας
συνήγαγε, ϗ ἐκ μισθωμάτων πορνείας
8 συνέστρεψεν. Ἕνεκεν τούτου κόψεται, ϗ θρηνήσει,
πορεύσεται ἀνυπόδετος, ϗ γυμνὴ (θ)
ποιήσεται κοπετὸν ὡς δρακόντων, ϗ πένθος
9 ὡς θυγατέρων σειρήνων. Ὅτι κατεκράτησεν
ἡ πληγὴ αὐτῆς, διότι ἦλθεν ἕως Ἰούδα, ϗ ἥψατο
ἕως πύλης λαοῦ μου, ἕως Ἱερουσαλήμ.
10 Οἱ ἐν Γὲθ μὴ μεγαλύνεσθε, (ι) ϗ οἱ Ἐνακεὶμ
μὴ ἀνοικοδομεῖτε ἐξ οἴκου κατὰ (κ) γέλωτα,
γῆν καταπάσασθε καταγέλωτα ὑμῶν,
11 Κατοικοῦσα καλῶς τὰς πόλεις αὐτῆς, οὐκ ἐξῆλθε
κατοικοῦσα Σενναὰρ, κόψασθε οἶκον ἐχόμενον
αὐτῆς, λήψεται ἐξ ὑμῶν πληγὴν ὀδύνης.
12 Τίς ἤρξατο εἰς ἀγαθὰ κατοικούσῃ ὀδύνας;
ὅτι κατέβη κακὰ παρὰ κυρίου ἐπὶ πύλας
13 Ἱερουσαλήμ, Ψόφος ἁρμάτων ϗ ἱππευόντων.
κατοικοῦσα Λαχεὶς, ἀρχηγὸς ἁμαρτίας
(λ) αὕτη ἐστὶ τῇ θυγατρὶ Σιὼν, ὅτι ἐν σοὶ
14 εὑρέθησαν (μ) ἀσέβειαι τοῦ Ἰσραήλ. Διατοῦτο
(ν) δώσει ἐξαποστελλομένους ἕως κληρονομίας
Γὲθ, οἴκους ματαίους, εἰς (ξ) κενὸν ἐγένοντο
15 τοῖς βασιλεῦσιν (ο) τοῦ Ἰσραὴλ, Ἕως τοὺς
κληρονόμους ἀγάγωσι, κατοικοῦσα Λαχείς·
κληρονομία ἕως Ὀδολλὰμ ἥξει, ἡ δόξα τῆς
16 θυγατρὸς Ἰσραήλ. Ξύρησαι, ϗ κεῖραι ἐπὶ
τὰ τέκνα τὰ τρυφερά σου, ἐμπλάτυνον τὴν χηρείαν
σου ὡς ἀετὸς, ὅτι ᾐχμαλωτεύθησαν ἀπὸ
σοῦ.

Et commovebuntur montes ſubter eum: & valles tabeſcent, ſicut cera à facie ignis, & ſicut aqua profluens in deſcenſu. 4
Propter impietatē Jacob omnia hac, & propter peccatum domûs Iſrael. Quæ eſt impietas (d) Jacob ? nónne Samaria ? Et quod eſt peccatum domûs Judæ? nónne Hieruſalem ? 5
Et ponam Samariam in pomorum cuſtodiam in agro, & in plantationem vineæ, & detraham in voraginem lapides ejus, & fundamenta ejus revelabo. 6
Et cuncta ſculptilia ejus concîdent, & omnes mercedes ejus combûrent in igni: & cuncta idola ejus ponam in perditionem. Quia ex mercedibus fornicationis congregavit, & ex mercedibus fornicationis (e) convertit. 7
Propter hoc planget, & lamentabitur, ibit diſcalceata, & nuda : faciet planctum quaſi draconum, & luctum, quaſi filiarum Sirenarum. 8
Quia obtinuit plaga ejus, quia venit uſque ad Judam, & tetigit uſq; ad portam populi mei uſque Hieruſalem. 9
Qui in Geth , nolite magnificari : & (f) Enacim, nolite reædificare ex domo (g) in deriſum: terrâ aſpergite deriſum veſtrum: 10
Quæ habitas benè civitates ejus: non eſt egreſſa (h) habitatrix Sennaar. Plangite domum juxta eam : accipiet ex vobis plagam doloris. 11
Quis cœpit in bona (i) ei, quæ habitat dolores ? Quia deſcenderunt mala à Domino ſuper portas Hieruſalem, 12
Sonitus curruum, & equitum: Quæ habitas Lachis, princeps peccati hæc eſt filiæ Sion: quia in te inventæ ſunt impietates Iſrael. 13
Ideò dabit emiſſarios uſq; ad hæreditatem Geth, domos vanas, in vanum factæ ſunt regibus Iſrael: 14
Donec hæredes (k) adducā, quæ habitas Lachis: hæreditas uſque Odollam veniet : Gloria filiæ (l) Iſrael, 15
Decalvare, & detondere ſuper filios delicatos tuos : Dilata (m) tonſuram tuam, ſicut aquila : quoniam captivi ducti ſunt ex te. 16

MS. A. (δ) Διὰ (ε) διὰ (ζ) οἴκου Ἰακώβ; οὐχὶ Σαμάρεια; (η) ὡς (θ) ϗ ποιήσαιτε (ι) οἱ Ἐνακεὶμ (κ) γέλωτα ὑμῶν, καταπάσασθαι (λ) αὐτῆς (μ) αἱ ἀσέβειαι (ν) δώσεις (ξ) κενὰ ἐγένετο (ο) Ἰσραὴλ,

ΚΕΦ'. β'.

1 ἘΓένοντο λογιζόμενοι κόπους, ϗ ἐργαζόμενοι
κακὰ ἐν ταῖς κοίταις αὐτῶν, ϗ ἅμα τῇ ἡμέρᾳ
συνετέλουν αὐτὰ, διότι οὐκ ἦραν πρὸς τὸν
2 θεὸν (α) χεῖρας αὐτῶν. Καὶ ἐπεθύμουν ἀγροὺς, ϗ
διήρπαζον ὀρφανοὺς, ϗ οἴκους κατεδυνάστευον,
ϗ διήρπαζον ἄνδρα ϗ τὸν οἶκον αὐτοῦ,
(῀) ϗ ἄνδρα ϗ τὴν κληρονομίαν αὐτοῦ.

MS. A. (α) τὰς χεῖρας (῀) ἄνδρα

CAP. II.

FActi ſunt cogitantes labores, & operantes mala in cubilibus ſuis : & ſimul cum die conſummabant ea. Quia non levaverunt ad Deum manus ſuas: 1
Et deſiderabant agros, & diripiebant pupillos, & domos opprimebant, & rapiebant virū, & domum ejus; & virum, & hæreditatem ejus. 2

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 וְיִתְמַסוּן טוּרַיָא תְחוֹתוֹהִי וּמֵישְׁרַיָא יִתְבַּזְעוּן כְּשָׁעִיתָא מִן קֳדָם נוּרָא כְּמַיָא דְאַשִּׁידִין
5 בְּמוֹרְדוֹן׃ בְּחוֹבֵי בֵית יַעֲקֹב כָּל דָא וּבְחֵטְא דְבֵית יִשְׂרָאֵל הֵיכָא חָבוּ דְבֵית יַעֲקֹב הֲלָא
6 בְּשֹׁמְרוֹן וְהֵיכָא חֲטוֹ דְבֵית יְהוּדָה הֲלָא בִּירוּשְׁלֵם׃ וַאֲשַׁוֵּי שֹׁמְרוֹן לְיַגְרֵי חַקְלָן בֵּית
7 צְדוּת מַצְבַּת כְּרַם וְאֶרְמֵי לְחֵילְתָא אַבְנָהָא וְאוּשָׁהָא אֲגַלֵּי׃ וְכָל צַלְמָנָהָא יִדַּקְרוּן וְכָל
טַעֲוָתָהָא יִתּוֹקְדוּן בְּנוּרָא וְכָל בָּתֵּי דַחְלָתָהָא אֲשַׁוֵּי לְצָדוּ אֲרֵי מֵאַגַר זַנְיָתָא אִתְכְּנַשׁוּ
8 וּלְבֵית פָּלְחֵי טַעֲוָתָא יִתְמַסְרוּן׃ עַל דָא יִסְפְּדוּן וִילִילוּן יְהָכוּן בְּשׁוֹלְלַיָא עַרְטִלָאִין
9 יַעְבְּדוּן מִסְפְּדָא כְּיָרוֹדִין וְאֶבְלָא כִּבְנַת נַעֲמִין׃ אֲרֵי מְמַרְעָא מַחֲתָהָא אֲרֵי מְטַת עַד
10 דְּבֵית יְהוּדָה קְרִיבַת לְמֵעַל בְּתַרְעֵי עַמִּי עַד יְרוּשְׁלֵם׃ בְּגַת לָא תְחַוּוֹן מִבְכָּא לָא תִבְכּוֹן
11 דְּיָתְבִין בְּבָתַּיָא בְּעַפְרָא יִתְפַּלְשׁוּן בִּקְטְמָא חֲפוֹ רֵישֵׁיהוֹן׃ עֲבַרוּ לְכוֹן דְּיָתְבִין בְּשְׁפִיר
גְּלַן עֶרְיָא עַרְטִלָאִין בְּהָתִין לָא יִפְּקוּן מְשֵׁיזְבִין יָתְבֵי צַאֲנָן עֲבִידוּ לְכוֹן מִסְפֵּד בְּמֶרֶד עַל
קְטִילֵי גִבָּרֵיכוֹן בֵּית צוֹלָאֵי בָּתֵּי חֶמְדַּתְכוֹן דַּהֲוֵיתוֹן אָנְסִין וּמְקָרְבִין דִּין לִסְטַר דִּין בְּכֵן
12 יִתְנְסֵיב מִנְּכוֹן שְׁפַר אַרְעֲכוֹן׃ אֲרֵי דַהֲוָת יָתְבָא עַל שְׁפַר אַרְעָא וּמְסַבְּרָא לְטָב וּמְסַבְּרָא
לְמֵתַב לְאוֹרָיְתָא מַה תַעְבְּדוּן אֲרֵי נַחֲתַת בִּישְׁתָא מִן קֳדָם יְיָ לְמֵעַל בְּתַרְעֵי יְרוּשְׁלֵם׃
13 טְקִיסוּ רְתִיכַיָא רְמוֹ עַל רִכְשָׁא דְּיָתְבִין בְּלָכִישׁ רֵישׁ חוֹבִין הִיא לִכְנִשְׁתָּא דְצִיּוֹן אֲרֵי בִיךְ
14 אִשְׁתְּכַחוּ מְרוֹדֵי יִשְׂרָאֵל׃ בְּכֵן תְּשַׁדְּרִין קוּרְבָּנִין לְמַחְסְנֵי גַת בָּתֵּי אַכְזִיב יִתְמַסְרוּן
15 לְעַמְמַיָא בְּחוֹבִין דִּי פְלַחוּ בְהוֹן לְטַעֲוָתָא מַלְכֵי יִשְׂרָאֵל׃ עוֹד מַחְסְנִין אַיְתֵי עֲלֵיכוֹן
16 דְּיָתְבִין בְּמָרֵשָׁה עַד עֲדֻלָּם יִסְקוּן וְיֵעֲלוּן בִּתְחוּם אַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל׃ תְּלוֹשִׁי וּרְמָא עַל בְּנֵי
תַּפְנוּקָיִךְ הָא כְנִשְׁרָא דִנְתַרוּ נַגְפוֹהִי כֵּן אַסְגִי מְרַט בְּרֵישִׁיךְ עַל בְּנַיִךְ אֲרֵי גְלוֹ מִנִּיךְ׃

ב

1 וַי דִּי מְחַשְּׁבִין לְמֵינַס לְמֶעְבַּד דְּבִישׁ עַל עַרְסָתֵיהוֹן מְקַדְּמִין בְּצַפְרָא וְעָבְדִין אֲרֵי אִית
2 חֵילָא בִּידֵיהוֹן׃ וְחָמְדִין חַקְלַיָא וְגָזְלִין וּבָתַּיָא וְאָנְסִין וְעָשְׁקִין גְּבַר וּבֵיתֵיהּ גְּבַר
וְאַחְסַנְתֵּיהּ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Propterea liquefient montes ſubtus eum, atque valles ſcindentur velut cera 4
ab aſpectu ignis, ut aquæ quæ per declive funduntur. Propter ſcelera familiæ 5
Jahacob [eveniet] iſtud, atq; ob dom⁹ Iſraeliticæ peccatū : ubinam ſcel⁹ commiſerunt
[exorti] domus Jacob, an non in Samaria? & quo loco peccaverunt
[prognati] dom⁹ Juda, nonne in Jeruſalem? Proindè ponam Samariam in 6
acervos agrorū, domū deſolatā in plantationes vineæ, & projiciam in vallem
lapides ej⁹, inſuꝑ & fundamenta ipſius detegam. Adeò ut omnia ej⁹ ſimulachra 7
concidantur, & omnia ej⁹ idola igni ſuccendantur: domúmq; quamlibet
deorū eorū ponā in vaſtitatem, quandoquidem mercede meretricis cùm ſint
congregata, in domū colentiū idola tradentur. Ob id plangent et ululabunt, 8
ibunt nudi inter ſpoliatores, planctū edent more draconū, & luctū velut filiæ
ſtruthionum. Gravis enim eſt plaga ej⁹, quoniā pervenit uſq; ad domū Juda, 9
acceſſit ingreſſura portas populi mei uſq; Jeruſalē. In Gath ne annuntietis, 10
planctu nolite plorare qui habitatis in domib⁹ pulverulentis, cinere conſpergant
ſe, operiant capita ſua. Tranſite vobis qui habitatis in pulchritudine diſ- 11
coopertis verendis nudi & pudefacti : non exierunt ſalvi habitatores Saanan:
planctum vobis edite cum pervicacia ob interfectos fortiū veſtrorū in
domo profunda, propter domos deſiderabiles veſtras quas violenter abſtuliſtis
hanc ad iſtā adjungentes : ideò elegantia terræ veſtræ tolletur à vobis.
Nam illa quæ habitabat in amœnitate terræ, & expectabat bona, et ad Legem 12
converti ſperavit: quid facietis? deſcendit enim à facie Dñi malū, ut ingrediatur
portas Jeruſalem. Aptate quadrigas, projicite vos ſuper veredos, qui ha- 13
bitatis in Lachis. Initium ſcelerum fuit ipſa cœtui Sion, in te námq; deprehenſi
ſunt prævaricatores Iſrael. Propterea mittes munera hæredibus Geth: 14
dom⁹ Achzib tradentur populis propter peccata quib⁹ venerati ſunt idola reges
Iſrael. Adhæc adducā hæredes in vos qui habitatis in Mareſſa, uſque ad 15
Odolam aſcendent, atq; terminum terræ Iſraeliticæ ingredientur. Evelle tibi 16
capillos, & projice ſuper filios delicioſos tuos, ſicut aquila cujus alæ delapſæ
ſunt : ſic adauge tuum calvitium in capite tuo cauſa filiorum tuorum,
ſiquidem à te tranſmigraverunt.

CAP. II.

VÆ cogitantibus ad rapinam ut perpetrent quod facinoroſum eſt in cubi- 1
libus ſuis: manè conſurgentes patrant illud ; in manu enim eorum adeſt poteſtas.
Qui concupiſcunt agros quos rapiunt, & domos quas per vim aufe- 2
runt, diripiuntq; virum & domum ejus, virum inſuper & hæreditatem ejus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

*ܘܢܬܦܫܪܘܢ ܛܘܪܐ ܬܚܘܬܘܗܝ. ܘܒܩܥܬܐ ܢܬܒܙܥܢ. ܐܝܟ ܫܥܘܬܐ ܩܕܡ ܢܘܪܐ. ܘܐܝܟ ܡܝܐ 4
ܕܢܚܬܝܢ ܒܡܫܦܠܐ. * ܘܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ. ܡܛܠ ܥܘܠܗ ܕܝܥܩܘܒ. ܘܡܛܠ ܚܛܗܐ ܕܒܝܬ 5
ܐܝܣܪܝܠ. ܡܢܘ ܥܘܠܗ ܕܝܥܩܘܒ. ܐܠܐ ܐܢ ܫܡܪܝܢ. ܘܡܢܘ ܚܛܗܗ ܕܝܗܘܕܐ: ܐܠܐ ܐܢ
ܐܘܪܫܠܡ. * ܘܐܣܝܡܝܗ ܠܫܡܪܝܢ ܐܝܟ ܕܪܐ ܕܚܩܠܐ. ܘܢܨܒܬܐ ܕܟܪܡܐ. ܘܐܪܡܐ ܠܟܐܦܝܗ 6
ܒܥܘܪܡܐ. ܘܐܓܠܐ ܫܬܐܣܝܗ. * ܘܟܠܗܘܢ ܓܠܝܦܝܗ ܢܬܕܩܩܘܢ. ܘܟܠܗܘܢ 7
ܐܓܪܝܗ ܢܐܩܕܘܢ ܒܢܘܪܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܦܬܟܪܝܗ ܐܣܝܡ ܠܚܒܠܐ. ܡܛܠ ܕܡܢ ܐܓܪܐ
ܕܙܢܝܬܐ ܐܬܟܢܫܘ. ܘܠܐܓܪܐ ܕܙܢܝܬܐ ܢܗܦܟܘܢ. * ܥܠ ܗܠܝܢ ܐܪܩܘܕ. ܘܐܝܠܠ. 8
ܘܐܗܠܟ ܚܦܝܐ. ܘܥܪܛܠܝܐ. ܘܐܥܒܕ ܡܪܩܕܬܐ ܐܝܟ ܕܝܪܘܪܐ. ܘܐܒܠܐ ܐܝܟ ܕܒܢܬ ܝܪܘܪܐ.
* ܡܛܠ ܕܟܪܝܐ ܗܝ ܡܚܘܬܗ. ܘܡܛܬ ܠܝܗܘܕܐ. ܘܡܛܝܐ ܥܕܡܐ ܠܬܪܥܗ ܕܥܡܝ 9
ܠܐܘܪܫܠܡ. * ܒܓܬ ܠܐ ܬܚܕܘܢ. ܘܡܒܟܐ ܠܐ ܬܒܟܘܢ. ܒܒܬܐ ܕܥܦܪܐ. ܐܬܦܠܦܠܘ ܒܥܦܪܐ. 10
* ܥܒܕܝ ܠܟܝ ܥܡܘܪܬܐ ܕܫܦܝܪ. ܥܪܛܠܝܐ ܢܦܩܬ. ܘܠܐ ܒܗܬܬ ܥܡܘܪܬܐ ܕܨܥܢ. ܡܪܩܕܬܐ 11
ܕܒܝܬ ܐܨܝܠ. ܬܣܒ ܡܢܟܘܢ ܡܚܘܬܗ. * ܡܛܠ ܕܐܬܡܪܥܬ ܠܛܒܬܐ ܥܡܘܪܬܐ. ܘܡܪܕܬ. 12
ܡܛܠ ܕܢܚܬܬ ܒܝܫܬܗ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. * ܠܬܪܥܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܩܛܪܘ ܡܪܟܒܬܐ ܕܪܟܫܐ. 13
ܥܡܘܪܬܐ ܕܠܟܝܫ. ܪܫ ܚܛܝܬܐ ܗܝ ܠܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. ܡܛܠ ܕܒܟܝ ܐܫܬܟܚܘ ܚܛܗܘܗܝ
ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܬܫܕܪܝܢ ܫܘܒܩܢܐ ܠܝܪܬܘܬܐ ܕܓܬ. ܒܬܐ ܕܣܪܝܩܘܬܐ. ܗܘܘ 14
ܠܣܪܝܩܘܬܐ. ܠܡܠܟܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܬܘܒ ܐܝܬܐ ܠܟܝ ܝܪܬܐ ܥܡܘܪܬܐ ܕܡܪܫܐ. ܥܕܡܐ 15
ܠܥܠܡ ܢܬܠ ܐܝܩܪܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܡܪܘܛܝ ܘܓܙܘܪܝ. ܥܠ ܒܢܝ ܦܘܢܩܝܟܝ. ܐܦܬܝ 16
ܡܪܘܛܝܟܝ ܐܝܟ ܕܢܫܪܐ. ܡܛܠ ܕܐܫܬܒܝܘ ܡܢܟܝ.

*ܩܦܠܐܘܢ * ܒ *

* ܘܝ ܠܐܝܠܝܢ ܕܡܬܚܫܒܝܢ ܥܘܠܐ. ܘܥܒܕܝܢ ܒܝܫܬܐ ܥܠ ܡܫܟܒܝܗܘܢ. ܘܡܩܕܡܝܢ 1
ܒܨܦܪܐ ܘܥܒܕܝܢ ܡܕܡ ܕܐܬܚܫܒܘ. ܘܡܪܝܡܝܢ ܐܝܕܝܗܘܢ ܠܘܬ ܐܠܗܐ. * ܘܪܓܝܢ ܚܩܠܬܐ 2
ܘܒܬܐ. ܘܢܣܒܝܢ ܠܗܘܢ ܒܩܛܝܪܐ. ܘܥܫܩܝܢ ܠܓܒܪܐ ܠܩܢܝܢܗ ܘܠܝܪܬܘܬܗ.

Colliqueſcent ſub illo montes, & valles ſeſe 4
diſcindent perinde ac cera à conſpectu ignis,
et ſicut aquæ ſeſe profundētes in locū declivē.
Hæc omnia propter ſcelus Jacobi, & propter 5
peccata domûs Iſraelis. Quodnam eſt ſcelus
Jacobi, niſi Samaritæ? & quod eſt peccatū Judæ,
niſi Jeruſalē? Ideò redigam Samariam in 6
arvum ruris & plantariū vineæ, congerā lapides
ejus in acervū, & retegam fundamenta ipſius:
Omnia ſculptilia ej⁹ minutiſſimè frangentur, 7
omnia numina ej⁹ igne comburentur,
omniáque ſimulacra ipſius redigam in corruptionē:
qnoniā ex mercede meretricis congeſta
ſunt, ideò in mercedē meretricis redibunt.
Propter hæc luge & ulula, nudipes ac nuda incede, 8
& planctum ede veluti canis ſylveſtris,
& luctum veluti filiæ canis ſylveſtris: Quòd 9
dolorifica ſit plaga ejus, & pervenerit ad Judam
uſque, & appropinquaverit uſq; ad portam
populi mei, Jeroſolymam uſque. De Gath 10
ne lætemini, neque flendo fleatis: in domibus
Ophræ volutate vos in pulvere. Fac tibi ipſi 11
O habitatrix quod bonū eſt: nuda egreſſa eſt
nec erubuit habitatrix Soanis: luct⁹ Beth-uſel
accipiet à vobis plagā ſuam. Quoniam infirmata 12
eſt ad bonū *agendum* habitatrix, & rebellavit:
ſiquidē malum ejus à conſpectu Dñi
deſcendit. Ad portas Jeroſolymæ habenas aptavit 13
currib⁹ equorū. Habitatrix Lachis origo
peccati eſt filiæ Sionis, quoniā in te reperta
ſunt peccata Iſraelis. Propterea miſſā facies 14
hæreditatē Gath: domus vanitatis fuerunt
vanitati regibus Iſraelis. Adhuc adducam ad 15
te hæredem habitatrix Mirſæ: in ſeculum uſque
extollet gloriam Iſraelis. Depila teipſā,
téque tonde propter filios tuos delicatos: 16
auge pilorum avulſionem ſicut aquilæ, quia
captivi abducti ſunt ex te.

CAP. II.

VÆ iis qui machinantur dolum & aſtruunt 1
malū ſup cubili ſuo, deinde manè anteverten-
tes exequuntur q machinati ſunt: attollūt manus
ſuas ad Deū, Et concupiſcunt agros & 2
domos, & p vim rapiunt eas; opprimentes virum
propter poſſeſſionē & hæreditatē ipſius.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ويتزعزع الجبال من تحته * ويذوب الاودية مثل الشمع من وجه النار * ومثل الماء النازل في 4
الانحدار * من اجل نفاق يعقوب هذه كلها. ولاجل خطية بيت اسرائيل * ما هو نفاق يعقوب * 5
اليس سامرين * وما هي خطية بيت يهودا. اليس ايروشليم * واضع سامرين عريشة حقل وغرسة 6
كرم * واطرح حجارتها للفضاء * واكشف اساساتها * ويقطعون كل منحوتاتها * ويحرقون جميع 7
اجورها بالنار. وجميع اوثانها اضعهم للهلاك * من اجل انها جمعت من اجر الزانية * ومن اجر
الزانية انكسفت * من اجل هذا تنهد وتنوح * تسير حافية وعريانة * تصنع مناحة مثل التنانين * 8
وحزنا مثل بنات اوي * لان ضربتها تشتد * من اجل انها اتت الي يهودا * ولمست حتي باب 9
شعبي الي ايروشليم * ايها الذين في جات لا تعظموا * والذين في اكيم لا تبنوا من بيت 10
للضحك احثوا الارض لضحككم * الساكنة مدنها حسنا * لم تخرج الساكنة العراق لتندب 11
بيتا بجانبها * تاخذ ضربة الوجع منكم * من ابتداء بالصالحات لساكنة الاوجاع * لان الشرور 12
نزلت من قبل الرب علي باب ايروشليم * فقعقعت المركبات والفرسان * ساكنة لخيس راس 13
خطيتها هي لابنة صهيون * لانه فيك وجدت ذنوب اسرائيل * لاجل هذا تعطي المرسولين الي 14
ميراث جات * البيوت القوية صارت فرغا لملوك اسرائيل * حتي يجلبوا ورثة * ساكنة لخيس 15
الميراث الي ادلام ياتي مجد ابنة اسرائيل * احلقي وجزي علي اولادك المترفهة * اوسعي نتفك 16
مثل النسر * لانهم سبيوا منك *

* الفصل الثاني *

* صار مفكري الاتعاب وفاعلي الشرور في مراقدهم * ويكملونها في النهار معا * من اجل 1
انهم لم يرفعوا الي الله ايديهم * واشتهوا الحقول * واختطفوا الايتام * وتسلطوا علي البيوت * 2
واختطفوا الرجل وبيته * الرجل وميراثه *

Et contremiſcent ſub eo montes, & liqueſcent valles quaſi cerà à fa- 4
cie ignis, & ſicut aqua in declivum de-
fluens. Propter impietatem Jacobi hæc 5
omnia, & propter peccatum domûs Iſraelis.
Quænam eſt impietas Jacobi? nonne
Samaria? Et quodnam peccatum domûs
Judæ? nonne Jeruſalem? Et ponam Sa- 6
mariam in pergulam agreſtem & planta-
tionem vineæ, projiciamq; lapides ejus in
apertum campum, *et retegam fundamenta*
ipſius: Et concîdent omnia ſculptilia e- 7
jus omneſq; mercedes ej⁹ igne comburent,
& cuncta ipſius idola excidio exponam.
Quia collegit hæc *ex mercedibus fornica-*
riæ, ob mercedes quoq; fornicariæ ſubver-
tetur. Hac de cauſa ſuſpirabit ac lugebit, 8
nudipes incedet ac nuda; luctum faciet
more draconum, et mœſtitiam more canum
ſylveſtrium. Atrox enim erit plaga ejus, 9
quia venit ad Judā uſq;, & pertigit uſq;
ad portas populi mei, ad Jeruſalem. O qui 10
eſtis in Gath, ne ſuperbiatis; & qui eſtis in
Achim, nullam domū ædificetis ad riden-
dū, terrā effodite riſui veſtro. Quæ com- 11
modè habitat urbes ſuas, non eſt egreſſa
quæ habitat in Arac ad plangendā domum
ſibi adjacentem: plagam doloris accipiet à
vobis. Quis inchoabit beneficia erga habi- 12
tatricem dolorū? nam mala deſcenderunt
à Domino ſuper portam Jeroſolymorum,
Stridorem ediderunt currus & equites. O- 13
rigo peccati habitatricis Lachis tribuenda
eſt filiæ Sionis. Quoniā in te inventæ ſunt
culpæ Iſraelis; Ideo dabis legatos ad hæ- 14
reditatem Geth (domus potentes factæ
ſunt vacuæ, regibus Iſraelis) ut adducant 15
hæredes. O habitatrix Lachis quæ es *hæ-*
reditas, ad Odollam veniet gloria filiæ
Iſraelis. Rade & tonde te propter filios 16
tuos delicatè enutritos: dilata plumarum
tuarum avulſionem ſicut aquilæ, quia ca-
ptivi ducti ſunt ex te.

CAP. II.

FActi ſunt excogitatores laborum & 1
authores malorum in cubilibus ſuis, eaq;
ſimul perficiunt in die. Quia non extule-
runt ad Deum manus ſuas, Sed concupi- 2
erunt agros, diripuerunt pupillos, domos
oppreſſerunt; virum ac domum ejus, vi-
rum ac hæreditatem ejus rapuerunt:

hanc familiam ſuper *cogitans* ego Ecce : Dominus dixit ſic Idcirco
3 לָכֵן כֹּה אָמַר יְהוָֹה הִנְנִי חֹשֵׁב עַל־הַמִּשְׁפָּחָה הַזֹּאת
ambulabitis non & ,veſtra colla *inde* removebitis non quo ,malum
רָעָה אֲשֶׁר לֹא־תָמִישׁוּ מִשָּׁם צַוְּארֹתֵיכֶם וְלֹא תֵלְכוּ
vos ſuper *tollet* ,illa die In .*ipſum* malum tempus quoniã ,ſuperbè
4 רוֹמָה כִּי עֵת רָעָה הִיא׃ בַּיּוֹם הַהוּא יִשָּׂא עֲלֵיכֶם
,ſumus vaſtati *Vaſtando* : dixit,*lamenti* lamentũ lamentabitur &,parabolam
מָשָׁל וְנָהָה נְהִי נִהְיָה אָמַר שָׁדוֹד נְשַׁדֻּנוּ
reſtituendum ad mihi removit quomodo : mutavit mei populi partem
חֵלֶק עַמִּי יָמִיר אֵיךְ יָמִישׁ לִי לְשׁוֹבֵב
funiculum projiciens tibi erit non Idcirco .dividit , noſtros agros
5 שָׂדֵינוּ יְחַלֵּק׃ לָכֵן לֹא־יִהְיֶה לְּךָ מַשְׁלִיךְ חֶבֶל
ſtillabunt non : ſtillabunt , ſtilletis Ne .Domini cœtu in , *ſorte in*
6 בְּגוֹרָל בִּקְהַל יְהוָֹה׃ אַל־תַּטִּפוּ יַטִּיפוּן לֹא־יַטִּפוּ
,Jahacob domus dicta O .ignominias comprehendet non , iſtis
7 לָאֵלֶּה לֹא יִסַּג כְּלִמּוֹת׃ הֶאָמוּר בֵּית־יַעֲקֹב
? ejus *ſtudia* hæc nonne ? Domini ſpiritus eſt abbreviatus nunquid
הֲקָצַר רוּחַ יְהוָֹה אִם־אֵלֶּה מַעֲלָלָיו
me⁹ populus heri Et *? eunte recto cum* benefacient mea verba Nónne
8 הֲלוֹא דְבָרַי יֵיטִיבוּ עִם הַיָּשָׁר הוֹלֵךְ׃ וְאֶתְמוּל עַמִּי
expoliabatis pallium , *veſtem* adverſo ex ; *inſurrexit inimicum in*
לְאוֹיֵב יְקוֹמֵם מִמּוּל שַׂלְמָה אֶדֶר תַּפְשִׁטוּן
mei populi Uxores .prælio *reverſis* , confidenter tranſeuntibus à
9 מֵעֹבְרִים בֶּטַח שׁוּבֵי מִלְחָמָה׃ נְשֵׁי עַמִּי
tollebatis *ejus* parvulis *deſuper* ,*ejus deliciarum* domo è faciebatis *expellere*
תְּגָרְשׁוּן מִבֵּית תַּעֲנֻגֶיהָ מֵעַל עֹלָלֶיהָ תִּקְחוּ
: requies hæc non quia ,ite & ,Surgite .ſeculum in *meum decorem*
10 הֲדָרִי לְעוֹלָם׃ קוּמוּ וּלְכוּ כִּי לֹא־זֹאת הַמְּנוּחָה
Si .*acri* corruptione *&* corrumpet immunda eſt *quod propter*
11 בַּעֲבוּר טָמְאָה תְּחַבֵּל וְחֶבֶל נִמְרָץ׃ לוּ־
tibi ſtillabo,fuerit mentitus mendacium & ,*ventum perambulans* quiſpiam
אִישׁ הֹלֵךְ רוּחַ וָשֶׁקֶר כִּזֵּב אַטִּף לְךָ
Congregando .iſti populo *ſtillans* erit *&* : ſechar *pro* & ,vino pro
12 לַיַּיִן וְלַשֵּׁכָר וְהָיָה מַטִּיף הָעָם הַזֶּה׃ אָסֹף
: Iſrael reſiduum congregabo congregando ,*te totum* Jahacob cõgregabo
אֶאֱסֹף יַעֲקֹב כֻּלָּךְ קַבֵּץ אֲקַבֵּץ שְׁאֵרִית יִשְׂרָאֵל
,*ſui ductum* medio in gregem tanquã ;Boſrah pecus veluti illũ ponam pariter
יַחַד אֲשִׂימֶנּוּ כְּצֹאן בָּצְרָה כְּעֵדֶר בְּתוֹךְ הַדָּבְרוֹ
,effregerunt ;*eorum facies ad effractor* Aſcendit .*homine* præ tumultuabunt
13 תְּהִימֶנָה מֵאָדָם׃ עָלָה הַפֹּרֵץ לִפְנֵיהֶם פָּרְצוּ
eorum rex tranſivit Et .eam per ſunt egreſſi & , portam tranſierunt &
וַיַּעֲבֹרוּ שַׁעַר וַיֵּצְאוּ בוֹ וַיַּעֲבֹר מַלְכָּם
.eorum capite in Dominus & ,*eorum facies ad*
לִפְנֵיהֶם וַיהוָֹה בְּרֹאשָׁם׃

CAP. III. ג

: Iſrael domus *gubernatores* & ,Jahacob capita quæſo Audite : dixi Et
1 וָאֹמַר שִׁמְעוּ־נָא רָאשֵׁי יַעֲקֹב וּקְצִינֵי בֵּית יִשְׂרָאֵל
: malum *diligentes* &,bonũ *Odientes* ? judicium ſcire *vobis* Nónne
2 הֲלוֹא לָכֶם לָדַעַת אֶת־הַמִּשְׁפָּט׃ שֹׂנְאֵי טוֹב וְאֹהֲבֵי רָעָה
.eorum oſſibus *deſuper* eorũ carnem & , eis *deſuper* eorũ pellem *rapientes*
גֹּזְלֵי עוֹרָם מֵעֲלֵיהֶם וּשְׁאֵרָם מֵעַל עַצְמוֹתָם׃
eis *deſuper* eorum pellem & ,mei populi carnem comederunt qui Et
3 וַאֲשֶׁר אָכְלוּ שְׁאֵר עַמִּי וְעוֹרָם מֵעֲלֵיהֶם
,lebete in ſicut cõciderunt & :confregerunt eorum oſſa & ,nudaverunt
הִפְשִׁיטוּ וְאֶת־עַצְמֹתֵיהֶם פִּצֵּחוּ וּפָרְשׂוּ כַּאֲשֶׁר בַּסִּיר
.*caldarii* medio in carnem ſicut &
וּכְבָשָׂר בְּתוֹךְ קַלָּחַת׃

Verſio VULG. LAT.

3 Idcircò hæc dicit Dominus; Ecce ego cogito ſuper familiam iſtam malum: unde non auferetis colla veſtra, & non ambulabitis ſuperbi, quoniam tempus peſſimũ eſt. 4 In die illa ſumetur ſuper vos parabola, & cantabitur canticũ cũ ſuavitate, dicentium; Depopulatione vaſtati ſumus: pars populi mei commutata eſt: quomodò recedet à me, cùm revertatur, qui 5 regiones noſtras dividat? Propter hoc non erit tibi mittens funiculum ſortis in cœtu Domini. 6 Ne loquamini loquentes; Non ſtillabit ſuper iſtos, non compre- 7 hendet confuſio. Dicit domus Jacob; Numquid abbreviatus eſt ſpiritus Dñi, aut tales ſunt cogitationes ejus? Nónne verba mea bona ſunt cum eo, qui rectè gra- 8 ditur? Et econtrariò populus me⁹ in adverſariũ conſurrexit: deſup tunica pallium ſuſtuliſtis: & eos, qui tranſibant ſimpliciter, con- 9 vertiſtis in bellum. Mulieres populi mei ejeciſtis de domo deliciarum ſuarum: à parvulis earum tuliſtis laudem meam in perpe- 10 tuum. Surgite, & ite, quia non habetis hîc requiem: propter immunditiam ejus corrumpetur 11 putredine peſſimâ. Utinam non eſſem vir habens ſpiritũ, & mendacium potiùs loquerer: ſtillabo tibi in vinum, & in ebrietatem: & erit ſuper quem ſtillatur 12 populus iſte. Congregatione congregabo, Jacob, totum te: in unũ conducam reliquias Iſrael, pariter ponam illum quaſi gregem in ovili, quaſi pecus in medio caularum, tumultuabuntur à multi- 13 tudine hominum. Aſcendet enim pandens iter ante eos: divident, & tranſibunt portam, & ingredientur per eam: & tranſibit rex eorum coram eis, & Dominus in capite eorum.

CAP. III.

1 ET dixi; Audite, principes Jacob, & duces domûs Iſrael: Numquid non veſtrum eſt ſcire judici- 2 um, Qui odio habetis bonum, & diligitis malum: qui violenter tollitis pelles eorum deſuper eis, & carnem eorum deſuper oſſibus 3 eorum? Qui comederunt carnem populi mei, & pellem eorum deſupèr excoriaverunt: & oſſa eorum confregerunt, & conciderunt ſicut in lebête, & quaſi carnem in medio ollæ.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

3 Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ λογίζομαι ἐπὶ τὴν φυλὴν ταύτην κακὰ, ἐξ ὧν οὐ μὴ ἄρητε τοὺς τραχήλους ὑμῶν, καὶ οὐ μὴ πορευθῆτε (β) ὀρθοὶ ἐξαίφνης, ὅτι καιρὸς πονηρός ἐστιν. 4 Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ληφθήσεται ἐφ' ὑμᾶς παραβολὴ, καὶ θρηνηθήσεται θρῆνος ἐν μέλει, λέγων, Ταλαιπωρίᾳ ἐταλαιπωρήσαμεν· μερὶς λαοῦ μου κατεμετρήθη ἐν σχοινίῳ, καὶ οὐκ ἦν ὁ (γ) κωλύων αὐτὸν τοῦ ἀποστρέψαι. οἱ ἀγροὶ ὑμῶν (δ) διεμερίσθησαν. 5 Διατοῦτο οὐκ ἔσται σοι βάλλων σχοινίον ἐν 6 κλήρῳ. ἐν ἐκκλησίᾳ κυρίου Μὴ κλαίετε δάκρυσι, μηδὲ δακρυέτωσαν ἐπὶ (ε) τούτοις· 7 οὐδὲ γὰρ ἀπώσεται ὀνείδη, Ὁ λέγων, Οἶκος Ἰακὼβ παρώργισε πνεῦμα κυρίου. (ζ) οὐ ταῦτα τὰ ἐπιτηδεύματα αὐτοῦ ἐστιν; οὐχ οἱ λόγοι αὐτοῦ εἰσι καλοὶ μετ' αὐτοῦ; καὶ ὀρθοὶ πεπόρευνται; 8 Καὶ ἔμπροσθεν ὁ λαός μου εἰς ἔχθραν (η) ἀντέστη, κατέναντι τῆς εἰρήνης αὐτοῦ· τὴν δορὰν αὐτοῦ ἐξέδειραν, τοῦ ἀφελέσθαι (θ) 9 ἐλπίδας, συντριμμὸν πολέμου. (ι) Ἡγούμενοι λαοῦ μου ἀπορριφήσονται ἐκ τῶν οἰκιῶν τρυφῆς αὐτῶν, διὰ τὰ πονηρὰ ἐπιτηδεύματα αὐτῶν ἐξώσθησαν. ἐγγίσατε ὄρεσιν αἰωνίοις. 10 Ἀνάστηθι καὶ πορεύου, ὅτι οὐκ ἔστι σοι αὕτη (ʺ) ἀνάπαυσις ἕνεκεν ἀκαθαρσίας. διεφθάρητε φθορᾷ, Κατεδιώχθητε (·) οὐδενὸς διώκοντος. 11 πνεῦμα ἔστησε ψεῦδος, ἐστάλαξέ σοι εἰς οἶνον καὶ μέθυσμα. καὶ ἔσται, ἐκ τῆς σταγόνος τοῦ 12 λαοῦ τούτου Συναγόμενος συναχθήσεται Ἰακὼβ σὺν πᾶσιν· ἐκδεχόμενος ἐκδέξομαι τοὺς καταλοίπους τοῦ (κ) Ἰσραὴλ, ἐπιτοαυτὸ θήσομαι τὴν ἀποστροφὴν (λ) αὐτοῦ· ὡς πρόβατα ἐν θλίψει, ὡς ποίμνιον ἐν μέσῳ κοίτης αὐτῶν· ἐξαλοῦνται ἐξ ἀνθρώπων 13 Διὰ τῆς διακοπῆς πρὸ προσώπου αὐτῶν. διέκοψαν, (μ) καὶ διῆλθον πύλην, καὶ ἐξῆλθον δι' αὐτῆς, καὶ ἐξῆλθεν ὁ βασιλεὺς αὐτῶν πρὸ προσώπου αὐτῶν, ὁ δὲ κύριος ἡγήσεται αὐτῶν.

3 *Propterea hæc dicit Dominus; Ecce ego cogito ſuper tribum iſtã mala, de quibus non auferetis colla veſtra: & non ambulabitis recti ſubitò: quia tempus peſſimum eſt.* 4 *In die illa ſumetur ſuper vos parabola, & plangetur planctus in cantico, dicendo; Miſeriâ miſeri facti ſumus: pars populi mei dimenſa eſt in funiculo: & non erat, qui prohiberet eum, ut averteretur. Agri (a) veſtri diviſi ſunt:* 5 *Propter hoc non erit tibi mittens funiculum in hæreditate.* 6 *In eccleſia Domini (b) Nolite flere lachrymis: neque plorent ſuper his. Non enim abjiciet opprobria,* 7 *Qui dicit; Domus Jacob ad iram provocavit ſpiritum Domini. Nonne hæ ſunt adinventiones ejus? nónne ſermones ejus boni ſunt cum eo? & recti ambulaverunt?* 8 *Et anteà populus meus (c) in inimicitia reſtitit contra pacem ſuam. Pellem ejus excoriaverunt, ut auferrent (d) ſpẽ, contritionem belli.* 9 *Duces populi mei projicientur de domibus deliciarum ſuarum: propter malas adinventiones ſuas ejecti ſunt. Propinquate montibus æternis:* 10 *Surge, & ambula, quia non eſt tibi hæc requies. Propter immunditiam conſumpti eſtis corruptione: Fugiſtis nemine perſequente.* 11 *Spiritus ſtatuit mendacium: ſtillavit tibi in vinum, & ebrietatẽ.* 12 *Et erit, de ſtilla populi hujus Congregandus congregabitur Jacob. Cum omnibus ſuſcipiens ſuſcipiam reliquos de Iſrael in idipſum. Ponam averſionẽ ejus, ſicut oves in tribulatione, quaſi (e) gregem in medio cubilis ſui: exilient ex hominibus (f)* 13 *Per diviſionem ante faciem eorum, diviſerunt, & tranſierunt portam, & egreſſi ſunt per eam: & exivit rex eorum ante faciem eorum: Dominus autem princeps erit eorum.*

MS.A. (β)* ὄρθροι (γ) κωλύσων (δ) διεμετρήθησαν. (ε) τούτῳ· οὐ γὰρ (ζ) εἰ ταῦτα (η) ἀντικατέστη, (θ) ἐλπίδα, (ι) Διὰ τοῦτο ἡγούμενοι (ʺ) ἡ ἀναπαύσεως (·) οὐθενὸς (κ) λαοῦ τούτου, ἐπιτοαυτὸ (λ) αὐτῶν· (μ) διῆλθον

ΚΕΦ. γ'.

1 ΚΑὶ ἐρεῖ, Ἀκούσατε δὴ ταῦτα αἱ ἀρχαὶ οἴκου Ἰακὼβ, καὶ οἱ κατάλοιποι οἴκου Ἰσραήλ· 2 οὐχ ὑμῖν ἐστι τοῦ γνῶναι τὸ κρίμα; (α) Μισοῦντες τὰ καλὰ, καὶ ζητοῦντες τὰ πονηρὰ, ἁρπάζοντες τὰ δέρματα αὐτῶν ἀπ' αὐτῶν, 3 καὶ τὰς σάρκας αὐτῶν ἀπὸ τῶν ὀστέων αὐτῶν. Ὃν τρόπον κατέφαγον τὰς σάρκας τοῦ λαοῦ μου, καὶ τὰ δέρματα αὐτῶν (β) ἀπ' αὐτῶν ἐξέδειραν, καὶ τὰ (γ) ὀστέα αὐτῶν (δ) συνέθλασαν, καὶ ἐμέλισαν ὡς σάρκας εἰς λέβητα, καὶ ὡς κρέα εἰς χύτραν,

CAP. III.

1 *ET dicet; Audite nunc hæc, (a) principia domûs Jacob, & reliqui dom⁹ Iſrael. Nonne veſtrũ eſt cognoſcere judicium?* 2 *Qui odio habetis bona, & quæritis mala, diripientes pelles eorum ab eis, & carnes eorũ ab oſſibus eorum.* 3 *Sicut devoraverunt carnes populi mei, & pelles eorum ab eis excoriaverunt, & oſſa eorum confregerunt, & conciderunt ſicut carnes in lebete, & ſicut carnem in olla;*

MS. A. (α) Οἱ μισοῦντες (β) ἀπὸ τῶν ὀστέων αὐτῶν (γ) ὀστᾶ (δ) συνέκλεισαν,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ הָא אֲנָא מַחְשִׁיב עַל דָּרָא הָדֵין בִּישָׁא דְּלָא תַעְדּוּן מִתַּמָּן צַוְּרֵיכוֹן וְלָא
4 תְהָכוּן בְּקוֹמָה זְקוּפָה אֲרֵי עִדָּן בִּישׁ הוּא : בְּעִדָּנָא הַהִיא יִטּוֹל עֲלֵיכוֹן מְתַל וְאִלְיָא
וּבְעָנִיתֵיהּ יֵימַר אִתְבְּזָזָא אִתְבְּזַזְנָא מַחוּלָקְהוֹן דְּעַמִּי מַעְדָּן לְהוֹן מֵאַחְסַנְתְּהוֹן טָרְדִין
5 לְהוֹן תָּאֲבִין חֻלָקַתְהוֹן מְפַלְּגִין : בְּכֵן לָא יְהֵי לָךְ מָתַח חוּט מְשַׁח בְּעַדְבָא בִּקְהָלָא דַיְיָ :
6 לָא תִתְנַבּוּן נְבוּאָה לָא תֵילְפוּן לְעַמָּא הָדֵין אֲרֵי לָא מְקַבְּלִין אִתְכְּנָעוּ : 7 הַכְדֵין כָּשַׁר
דְּאָמְרִין דְּבֵית יַעֲקֹב הֲיִתְקְפַד מֵימַר מִן קֳדָם יְיָ אִם אִלֵּין עוֹבָדוֹהִי הֲלָא כָל פִּתְגָמַי
8 תַּקְנַיָּא דַּאֲמָרִית לְאֵיתָאָה אַיְתֵיתִי עַל כָּל דִּמְהַלְּכִין בִּקְשׁוֹט : מִקְּבֵיל חוֹבֵיהוֹן עַמִּי
לְבַעֲלֵי דְּבָבָא מְסִירִין מִקְּבְלֵיהוֹן עַמְמַיָּא קָיְמִין מַחְסְנִין יַתְהוֹן מָמוֹן יְקָרְהוֹן
9 מִנְּהוֹן נָסְבִין עָדָן בְּאַרְעֲהוֹן לְרוֹחְצָן תָּיְבִין בְּהוֹן כִּתְבִירֵי קְרָבָא : כְּנִשְׁתְּ
עַמִּי תִתָּרְכוּן מִבֵּית חֶדְוַתְהוֹן מִנְּהוֹן בְּנֵיהוֹן דָּבְרִין גְּלָא יְקָרְהוֹן דַּהֲווֹ אָמְרִין
10 קַיָּם לְעָלְמִין : קוּמוּ וּגְלוֹ אֲרֵי לָא דָא אַרְעָא בֵּית נְיָחָא לְרַשִּׁיעַיָּא בְּדִיל טַמְּיוּתָהּ
11 אַנּוּן מְחַבְּלִין בְּדִיל לְסָאֲבוּתָהּ אַתּוּן מִסְתַּיְעִין עֲלַהּ : עַל דִּטְעוֹ בָּתַר נְבִיֵּי שִׁקְרָא
דְּמִתְנַבַּן לְהוֹן רוּחַ דִּי שְׁקַר וּמַלְּפִין לְהוֹן לַחֲמַר וּלְרַוְיוּ וִיהֵי כְּמָא דְּאַלִּיפוּ לְמִטְעֵי בָּתַר
12 נְבִיֵּי שִׁקְרָא כֵּן יִגְלוֹן לְאַרְעָא שִׁקְרָא עִם דָּרָא הָדֵין : בְּסוֹפָא כַּנָּשָׁא אֲכַנְּשִׁנְכוֹן דְּבֵית
יַעֲקֹב כֻּלְּכוֹן קָרָבָא אֲקָרֵיב גָּלוּתְכוֹן שְׁאָרָא דְּיִשְׂרָאֵל כַּחֲדָא אֲשַׁוֵּינוּן כְּעָנָא בְּגוֹ חוּטְרָא
13 כְּעֶדְרָא בְּגוֹ דִירָא חַתַּן מִסְּגֵי אֱנָשָׁא : יִסְּקוּן מְשֵׁזְבִין כַּד בְּקַדְמֵיתָא וְיִסַּק מֶלֶךְ מְדַבַּר
בְּרֵישֵׁיהוֹן וְיִתְבַּר בַּעֲלֵי דְּבָבָא דִּמְעִיק לְהוֹן וְיִכְבּוֹשׁ כְּרַכִּין תַּקִּיפִין קִרְוֵי עַמְמַיָּא יַחְסְנוּנוּן
וִיהֵי מַלְכְּהוֹן מְדַבַּר בְּרֵישֵׁיהוֹן וּמֵימְרָא דַּיְיָ בְּסַעֲדְהוֹן :

ג

1 וַאֲמָרִית שְׁמַעוּ כְעַן רֵישֵׁי יַעֲקֹב וְשִׁלְטוֹנֵי דְּבֵית יִשְׂרָאֵל הֲלָא לְכוֹן לְמִדַּע יַת דִּינָא : 2 סָנַן
לְאַטָּבָא וְרָחֲמִין לְאַבְאָשָׁא אָנְסִין נִכְסֵי עַמָּא מִנְּהוֹן וּמָמוֹן יְקָרְהוֹן מִנְּהוֹן נָסְבִין : 3 וְדִי
בְּזוֹ נִכְסֵי עַמִּי וּמָמוֹן יְקָרְהוֹן מִנְּהוֹן נָסְבִין וְיַת שְׁאָרְהוֹן מְגַמְּרִין תָּיְבִין וּמְפַלְּגִין יַתְהוֹן
כְּמָא דִּפָלְגִין אֶבְרַיָּא לְגוֹ דּוּדָא וְחֻלְקַיָּא לְגוֹ קִדְרָא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

3 Idcircò hæc dicit Dominus: Ecce ego molior contra *iſtam generationem* perniciem; unde minimè auferetis colla veſtra, nec erecti ambulabitis, quandoquidem tempus adverſum eſt. 4 Per id temp⁹ aſſumet de vobis parabolam atq; lamentationem [*quiſpiam*,] & dicet in afflictione ſua, Penit⁹ direpti ſumus, & partes populi mei auferuntur ab eis, ab hæreditatibus ſuis detruduntur; reverſi partes eorum dividunt. 5 Propterea non erit tibi tendens funiculum menſuræ in ſortem in Eccleſia Dñi. 6 Ne prophetetis prophetiã neq; doceatis populum iſtũ, nam non admittunt confuſionem. 7 Nunquid rectum iſtud eſt, dicit domus Jacob? nunquid abbreviatum eſt verbum à facie Dñi? an illa ſunt ejus opera? nonne omnia verba mea recta erant? quæ me adducturum dixeram, adduxi equidem omnibus in veritate ambulantibus. 8 Propter peccata populi mei inimico traditi ſunt, è regione eorum populi ſtantes poſſident eos, pecuniam eorum pretioſam ab eis tollunt: tranſeuntes per terrã eorum confidenter, convertuntur in eos velut bello confractos. 9 Cœtum populi mei ejeciſtis de domo eorum delicioſa, ab ipſis filios eorum tollentes: tranſlata eſt gloria eorum quam dixerant in æternum permanſuram. 10 Surgite & migrate; ſiquidem non hæc eſt terra domus requiei impiis: ut eam *polluant*, perditè *agunt*; ut eam efficiatis immundam, contra eam conſociamini. 11 Pro eo quòd aberrarunt poſt pſeudoprophetas, qui eis ſpiritu mendaci prophetabant, quique illos vino & ebrietati aſſuefaciebant, erit profectò ſicuti didicere poſt pſeudoprophetas ab errare, ſic exulabit in terram mendaciorum populus iſtius generationis. 12 In fine planè congregabo vos qui de domo Jahacob univerſos; captivitatem veſtram reliquias Iſraelis unà applicando copulabo: ponam eos ovium inſtar in medio ovilis, qui gregis more media in caula tumultum edent præ hominũ frequentia. 13 Aſcendent ſalvati ſicut in principio, & aſcendet rex ductor à fronte eorũ, qui conteret inimicum opprimentem eos, atq; expugnabit arces munitas, urbes gentiũ poſſidebunt: rexq; eorũ ducet à fronte eorum, verbo Domini auxilium eis tribuente.

CAP. III.

1 DIxi autem: Audite nunc principes Jahacob & præfecti domus Iſrael: Nonne veſtra referebat judicium cognoſcere? 2 Odientes benefacere, malefacere verò diligentes, violenter populi facultates ab eo rapientes, pecuniamq; eorũ pretioſam ab ipſis tollentes. 3 Et qui diripuerunt ſubſtantiam populi mei, & pecuniam eorum pretioſam tollunt, reliquiaſq; eorũ conſumunt, converſi dividunt eos quemadmodum qui concidunt membra in fruſta in medio lebetis & particulas in ollæ medio.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

3 *ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ ܡܬܚܫܒ ܐܢܐ ܒܝܫܬܐ ܥܠ ܫܪܒܬܐ ܗܕܐ. ܕܠܐ
ܬܪܝܡܘܢ ܨܘܪܝܟܘܢ ܡܢܗ. ܘܠܐ ܬܗܠܟܘܢ ܒܩܘܡܬܐ ܬܪܝܨܬܐ. ܡܛܠ ܕܙܒܢܐ ܗܘ ܕܒܝܫܬܐ.
4 *ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܬܢܣܒ ܥܠܝܟܘܢ ܡܬܠܐ. ܘܢܬܐܠܐ ܐܠܝܐ ܕܙܡܪܐ. ܘܢܐܡܪ ܒܙܘܙܐ
ܒܙܢ. ܘܦܠܓܘܬܗ ܕܥܡܝ ܒܡܫܘܚܬܐ ܢܦܠܓ. ܘܠܝܬ ܕܢܦܢܐ ܚܩܠܬܢ ܒܡܫܘܚܬܐ.
5 6 *ܡܛܠ ܗܢܐ ܠܐ ܢܗܘܐ ܠܟ ܕܢܦܣ ܡܫܘܚܬܐ ܘܦܠܓ ܦܣܐ. *ܒܟܢܘܫܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܠܐ
7 ܬܪܡܘܢ ܕܡܥܐ. ܘܠܐ ܬܪܡܘܢ ܥܠ ܗܠܝܢ. *ܕܠܐ ܢܕܪܟܟܘܢ ܚܣܕܐ ܕܐܡܝܪ ܒܒܝܬܗ ܕܝܥܩܘܒ.
ܕܐܪܓܙ ܪܘܚܗ ܕܡܪܝܐ ܒܗܠܝܢ ܥܒܕܘܗܝ. ܗܐ ܡ̈ܠܝ ܡܬܝܬܪܢ ܥܡ ܬܪ̈ܝܨܐ ܕܐܙܠܘ. ܘܐܫܬܠܡܘ.
8 *ܥܡܝ ܐܝܟ ܓܢܒܐ ܩܐܡ ܗܘܐ ܠܘܩܒܠ ܫܠܡܗ. ܡܫܟܗ ܫܠܚܬܘܢ. ܕܬܥܒܪܘܢ ܣܒܪܗ.
9 ܘܬܬܢܘܢ ܩܪܒܐ. *ܢܫ̈ܐ ܕܥܡܝ ܬܦܩܘܢ ܡܢ ܒܝܬ ܦܘܢܩܝܗܝܢ. ܘܡܢ ܒܢܝܗܝܢ ܬܣܒܘܢ
10 ܫܘܒܚܐ ܠܥܠܡ. *ܩܘܡܘ ܙܠܘ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܬ ܗܕܐ ܢܝܚܬܐ. ܡܛܠ ܕܛܢܦܘܬܐ ܡܚܒܠܐ
11 ܚܒܠܐ. ܘܚܒܠܗ ܣܓܝ. *ܓܒܪܐ ܕܡܗܠܟ ܒܪܘܚܐ ܕܓܠܐ ܘܒܫܘܩܪܐ.. ܢܛܦ ܠܟ
12 ܚܡܪܐ ܘܪܘܝܐ. ܘܗܘܐ ܗܘܐ. ܡܢ ܡܛܦܬܗ ܕܥܡܐ ܗܢܐ. *ܡܟܢܫܘ ܐܟܢܫܟ ܟܠܟ
ܝܥܩܘܒ. ܘܡܩܒܠܘ ܐܩܒܠ ܫܪܟܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ ܐܟܚܕܐ. ܘܐܣܝܡܝܘܗܝ ܐܝܟ ܥܢܐ ܒܐܘܠܨܢܐ.
13 ܘܐܝܟ ܥܢܐ ܒܓܘ ܕܝܪܗ ܕܡܛܫܝܐ ܡܢ ܐܢܫܐ. *ܣܠܩ ܬܪܘܥܐ ܩܕܡܝܗܘܢ. ܦܪܨ
ܬܪܘܥܬܐ. ܘܥܒܪܘ ܘܢܦܩܘ ܒܗ. ܘܥܒܪ ܡܠܟܗܘܢ ܩܕܡܝܗܘܢ. ܘܡܪܝܐ ܒܪܝܫܗܘܢ.

*ܩܦܠܐܘܢ * ܓ *

1 *ܘܐܡܪ. ܫܡܥܘ ܗܫܐ ܪ̈ܫܝ ܕܒܝܬ ܝܥܩܘܒ. ܘܡܕܒܪ̈ܢܐ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܐܝܠ. ܠܐ ܗܘܐ
2 ܠܟܘܢ ܘܠܐ ܠܡܕܥ ܕܝܢܐ. *ܣܢܝ̈ ܛܒ̈ܬܐ ܘܪ̈ܚܡܝ ܒܝ̈ܫܬܐ. ܕܚܛܦܝܢ ܡܫܟܝܗܘܢ
3 ܡܢܗܘܢ. ܘܒܣܪܗܘܢ. ܡܢ ܓܪ̈ܡܝܗܘܢ. *ܕܐܟܠܘ ܒܣܪܗ ܕܥܡܝ. ܘܡܫܟܗܘܢ ܡܢܗܘܢ
ܐܫܠܚܘ. ܓܪ̈ܡܝܗܘܢ ܬܒܪܘ. ܘܦܪܣܘ ܐܝܟ ܕܒܩܕܪܐ. ܘܐܝܟ ܒܣܪܐ ܒܩܕܪܐ.

Propter hæc ſic dicit Dominus Deus; Ecce malum cogitabo contra generationem iſtam, ita ut non elevetis ex eo collum veſtrum, neque rectâ ſtaturâ incedatis; quia tempus calamitoſum erit. 3

Eo die proferet de vobis proverbium, & cum cantu lamentum edet, ac dicet; Prædo nos diripiet, & portionem populi mei menſorio fune dividet, nec erit qui agros noſtros menſorio fune reſtituat. 4

Idcirco non erit tibi qui funiculo metiatur, & ſortibus dividat. In cœtu Domini 5

ne fundatis lachrymas, néve lachrymemini propter iſta; 6

Ne aſſequatur vos opprobrium quod dictum eſt de domo Jacobi, quæ ad iram concitavit ſpiritum Domini hujuſmodi facinoribus ſuis. Ecce verba mea profutura ſunt rectis qui profecerunt & perfectos ſe reddiderunt. 7

Populus meus tanquam fur reſiſtebat paci ſuæ: pellem ejus deglubitis, ut amoveatis ſpem ejus, & redintegretis bellum. 8

Mulieres populi mei ejicitis è loco delitiarum ſuarum, & à filiis earum aufertis honorem in perpetuum. 9

Surgite, abſcedite; quia non eſt hæc requies: impuritas enim corruptionem parit, & corruptio ejus maxima eſt. 10

Vir qui in ſpiritu mendaciter & falsò ambulabat, ſtillavit tibi vinum & ebrietatem: hoc autem eſt ex ſtilla populi hujus. 11

Omnino congregabo te totum, Jacobe; & omnino recipiam vos ſimul, reliquiæ Iſraelis: reddam eum ſicut oves aſtipatas, & ut gregem in caula ſua hominibus occulta. 12

Aſcendit perruptor ante eos, rupit rupturam, & tranſierunt egreſſique ſunt; tranſivítque rex eorum ante ipſos, & Dominus à fronte eorum. 13

CAP. III.

Et dixit, Audite ergò hæc principes domûs Jacobi, & præfecti domûs Iſraelis. Nonne ad vos pertinet nôſſe judicium, 1

Oſores bonorum, & amatores malorum, qui rapitis cutem iſtorum ab eis, & carnem eorum ab oſſibus ipſorum? 2

Qui comediſtis carnem populi mei, & cutem eorum ab eis nudâſtis, oſſa eorum fregiſtis, & quaſi in cacabum injeciſtis, & veluti carnem in ollam? 3

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

3 *لاجل هذا هكذا يقول الرب٭ ها انا افكر على هذه القبيلة سرورا لا ترفعون رقابكم منها٭ ولا
4 تمشون مستقيمين٭ لان الوقت الشرير يكون بغتة *في ذلك اليوم يوجد عليكم مثل٭ وينا‌ح
5 نوح بتلحين قايلا٭ شقينا بشقوة٭ مارس شعبي قسم بالحبل٭ ولم يكن من يمنعه ليرده *حقولكم
6 قيست٭ لاجل هذا لا يكون لك واضع حبل بالقرعة في جماعة الرب *لا تبكوا بدموع٭ ولا
7 تدمعوا على هذه *لان القايل لا يقضي العار٭ بيت يعقوب اغضب روح الرب٭ اهذه الاعمال لهم
8 هي٭ اليس اقواله جيدة هي معه٭ ويسلك مستقيما *ومن قدام٭ شعبي قام للعداوة قبالة
9 سلامته٭ سلخوا جلده ليزيلوا الرجاء مكسورا من الحرب *لاجل هذا مقدموا شعبي يطردون
10 من بيوت نعمهم٭ لاجل اعمالهم الشريرة افسدوا٭ اقتربوا للجبال الدهرية *قم وامض لانه
11 ليست لك هذه راحة٭ من اجل النجاسة فسدتم بفساد٭ طردتم وليس من واحد يطرد *روح
12 اقام كذبا٭ قطر لك خمرا وسكرا٭ ويكون من قطر هذا الشعب *اجمع يعقوب فيجتمع
مع الكل٭ مقتبل اقبلهم٭ بقايا اسرائيل جميعا٭ اضع انصرافهم مثل خراف في ضيقة*
13 مثل قطيع في وسط مرقدهم *يهربون من الناس لاجل الثلمة قدام وجههم٭ والرب
يتقدمهم*

Iccirco ſic dicit Dominus; En ego mala meditor contra gentem iſtam, quibus non exeretis colla veſtra, neque recti incedetis; quia tempus peſſimum erit ſubitò. 3

Eâ die ſumetur de vobis proverbium, & plangetur planctus cum cantu, his verbis: Miſeriam paſſi ſumus, ager populi mei funiculo diviſus eſt, nec fuit qui probiberet eum, ut reſtitueret. 4

Agri veſtri menſurati ſunt; ideo non erit tibi funiculum in ſorte ponens in cœtu Domini. 5

Ne fleatis cum lachrymis, néve lachrymemini propter hæc: 6

Nam qui dicit, non perficit opprobrium. Domus Jacobi irritavit ſpiritum Domini: an hujuſmodi actiones, ipſorum ſunt? annon ſermones ejus optimi ſunt cum eo, rectáque incedunt?, 7

Antea tamen populus meus ad inimicitiam ſurrexit contra pacem ſuam. Detraxerunt pellem ejus, ut ſpem auferrent bello contritam. 8

Propterea duces populi mei ejicientur è domibus delitiarum ſuarum, propter opera ſua mala exterminati ſunt, acceſſerunt ad montes æternos. 9

Surge, & abi; quia non eſt tibi hæc requies: propter immunditiam planè corrupti eſtis: expulſi eſtis nemine proſequente. 10

Spiritus quidam aſſeruit mendacium, ſtillavit tibi vinum & ebrietatem. Et erit ut ex hujus populi ſtilla 11

Congregem Jacobum, & quidem congregetur cum omnibus: libenter ſuſcipiam eos, nempe reliquias Iſraelis ſimul: ponam commigrationem eorum velut oves in anguſtia, velut gregem in medio cubilis ſui: 12

Fugient ab hominibus propter rupturam faciei ſuæ objectam. Dominus autem præveniet eos, 13

* الفصل الثالث *

1 *ويقول٭ اسمعوا هذه يا روساء بيت يعقوب٭ ويا بقايا بيت اسرائيل٭ اليس ينبغي لكم ان
2 تعرفوا الحكم *يا مبغضي الحسنات٭ وطالبي الشرور٭ خاطفي جلودهم منهم٭ ولحومهم من
3 عظامهم *كما اكلوا لحوم شعبي٭ وسلخوا جلودهم من عظامهم٭ ورضوا عظامهم٭ وبضعوها
مثل اللحم في المرجل٭ ومثل اللحم في القدر٭

CAP. III.

Dicetque; Audite hæc O principes domûs Jacobi, & O reliquiæ domûs Iſraelis. Nonne vos decet nôſſe judicium 1

O bonorum oſores, amatores verò malorum, rapientes pelles eorum ab ipſis, & carnes eorum ab oſſibus eorum? 2

Quemadmodum comederunt carnes populi mei, pelles eorum ex eorum oſſibus detraxerunt, oſſaque contuderunt, & diſſecuerunt eos ut carnem in lebete, & ut carnem in olla: 3

מיכה : ד

abſcondet & : eos exaudiet non &,Dominum ad clamabunt Tunc
4 אָז יִזְעֲקוּ אֶל־יְהוָֹה וְלֹא יַעֲנֶה אוֹתָם וְיַסְתֵּר
.ſua *ſtudia* mala fecerunt ſicut , illo tempore in eis ab *ſuas facies*
פָּנָיו מֵהֶם בָּעֵת הַהִיא כַּאֲשֶׁר הֵרֵעוּ מַעַלְלֵיהֶם׃
,meũ populum *facientes errare* , prophetas ſuper Dominus dixit Sic
5 כֹּה אָמַר יְהוָֹה עַל־הַנְּבִיאִים הַמַּתְעִים אֶת־עַמִּי
dederit non qui & , pacem *prædicaverunt* & ,ſuis dentibus *in mordentes*
הַנֹּשְׁכִים בְּשִׁנֵּיהֶם וְקָרְאוּ שָׁלוֹם וַאֲשֶׁר לֹא־יִתֵּן
vobis nox Propterea .bellum *eum ſuper ſacraverunt* & ,eorum ore in
6 עַל־פִּיהֶם וְקִדְּשׁוּ עָלָיו מִלְחָמָה׃ לָכֵן לַיְלָה לָכֶם
ſuper Sol *intrabit* & ; divinatione ex vobis *obtenebreſcet* & ,viſione ex
מֵחָזוֹן וְחָשְׁכָה לָכֶם מִקְּסֹם וּבָאָה הַשֶּׁמֶשׁ עַל־
, videntes afficientur pudore Et .dies eos ſuper *nigreſcet* & ,prophetas
7 הַנְּבִיאִים וְקָדַר עֲלֵיהֶם הַיּוֹם׃ וּבֹשׁוּ הַחֹזִים
quia : ipſi univerſi *myſtacem ſuper* operient & , divini erubeſcent &
וְחָפְרוּ הַקֹּסְמִים וְעָטוּ עַל־שָׂפָם כֻּלָּם כִּי
fortitudine ſum repletus ego verè Et .Dei *reſponſum* non
8 אֵין מַעֲנֵה אֱלֹהִים׃ וְאוּלָם אָנֹכִי מָלֵאתִי כֹחַ
indicandum ad , fortitudine & , judicio & ,Domini ſpiritus
אֶת־רוּחַ יְהוָֹה וּמִשְׁפָּט וּגְבוּרָה לְהַגִּיד
Audite .ſuum peccatum Iſrael & ,ſuam prævaricationem Jahacob
9 לְיַעֲקֹב פִּשְׁעוֹ וּלְיִשְׂרָאֵל חַטָּאתוֹ׃ שִׁמְעוּ־
, Iſrael domus *imperatores* & ,Jahacob domus capita hoc quæſo
נָא זֹאת רָאשֵׁי בֵּית יַעֲקֹב וּקְצִינֵי בֵּית יִשְׂרָאֵל
Ædificans .*diſtorquetis* rectum omne & ,judicium *abominabile facientes*
10 הַמְתַעֲבִים מִשְׁפָּט וְאֵת כָּל־הַיְשָׁרָה יְעַקֵּשׁוּ׃ בֹּנֶה
munere in ejus *Capita* .iniquitate *in* Jeruſalaim & ,*ſanguinibus in* Sijon
11 צִיּוֹן בְּדָמִים וִירוּשָׁלַםִ בְּעַוְלָה׃ רָאשֶׁיהָ בְּשֹׁחַד
ejus prophetæ & , docebant pretio *in* ejus ſacerdotes & ,judicabant
יִשְׁפֹּטוּ וְכֹהֲנֶיהָ בִּמְחִיר יוֹרוּ וּנְבִיאֶיהָ
Nonne : dicendo ,innitebantur Domino *ſuper* & : divinabant argento *in*
בְּכֶסֶף יִקְסֹמוּ וְעַל־יְהוָֹה יִשָּׁעֵנוּ לֵאמֹר הֲלוֹא
Idcirco .malum nos ſuper veniet non ? *noſtro interiori in* Dominus
11 יְהוָֹה בְּקִרְבֵּנוּ לֹא־תָבוֹא עָלֵינוּ רָעָה׃ לָכֵן
, erit acervi Jeruſalaim & ; arabitur ager Sijon vos propter
בִּגְלַלְכֶם צִיּוֹן שָׂדֶה תֵחָרֵשׁ וִירוּשָׁלַםִ עִיִּין תִּהְיֶה
.ſylvæ excelſa *in domus* mons &
וְהַר הַבַּיִת לְבָמוֹת יָעַר׃

CAP. IV. ד

præparatus Domini domus mons erit dierum noviſſimo in ,erit Et
1 וְהָיָה בְּאַחֲרִית הַיָּמִים יִהְיֶה הַר בֵּית־יְהוָֹה נָכוֹן
.populi eum ad fluent &:collibus *præ ipſe exaltabitur* &,montium *capite* in
בְּרֹאשׁ הֶהָרִים וְנִשָּׂא הוּא מִגְּבָעוֹת וְנָהֲרוּ עָלָיו עַמִּים׃
montem ad aſcendamus & ,Venite : dicent & ,multæ gentes ibunt Et
2 וְהָלְכוּ גּוֹיִם רַבִּים וְאָמְרוּ לְכוּ וְנַעֲלֶה אֶל־הַר־
,*ſuis viis de* nos docebit & , Jahacob Dei domum ad & , Domini
יְהוָֹה וְאֶל־בֵּית אֱלֹהֵי יַעֲקֹב וְיוֹרֵנוּ מִדְּרָכָיו
verbum & ,lex egredietur Sijon de quia : ejus ſemitis in ambulabimꝰ &
וְנֵלְכָה בְּאֹרְחֹתָיו כִּי מִצִּיּוֹן תֵּצֵא תוֹרָה וּדְבַר
, multos populos inter judicabit Et .Jeruſalaim de Domini
3 יְהוָֹה מִירוּשָׁלָםִ׃ וְשָׁפַט בֵּין עַמִּים רַבִּים
ſuos gladios *contundent* &:longinquum in uſque fortes gentes corripiet &
וְהוֹכִיחַ לְגוֹיִם עֲצֻמִים עַד־רָחוֹק וְכִתְּתוּ חַרְבֹתֵיהֶם
gentem contra gens *tollent* non : falces in ſuas haſtas & , ligones in
לְאִתִּים וַחֲנִיתֹתֵיהֶם לְמַזְמֵרוֹת לֹא־יִשְׂאוּ גּוֹי אֶל־גּוֹי
.bellum ultrà diſcent nec , gladium
חֶרֶב וְלֹא־יִלְמְדוּן עוֹד מִלְחָמָה׃

Verſio VULG. LAT.

4 Tunc clamabunt ad Dominum, & non exaudiet eos: & abſcondet faciẽ ſuam ab eis in tempore illo, ſicut nequiter egerunt in adinventionibus ſuis. 5 Hæc dicit Dominus ſuper prophetas, qui ſeducunt populum meum: qui mordent dentibus ſuis, & prædicant pacem: & ſi quis non dederit in ore eorum quidpiam, ſanctificant ſuper eum prælium. 6 Propterea nox vobis pro viſione erit, & tenebræ vobis pro divinatione: & occumbet Sol ſuper prophetas, & obtenebrabitur ſuper eos dies. 7 Et confundentur qui vident viſiones, & confundentur divini: & operient omnes vultus ſuos, quia non eſt reſponſum Dei. 8 Veruntamen ego repletus ſum fortitudine ſpiritûs Domini, judicio, & virtute: ut annuntiem Jacob ſcelus ſuum, & Iſrael peccatum ſuũ. 9 Audite hoc, principes domûs Jacob, & judices domûs Iſrael: qui abominamini judicium, & omnia recta pervertitis. 10 Qui ædificatis Sion in ſanguinibus, & Jeruſalem in iniquitate. 11 Principes ejus in muneribus judicabant, & ſacerdotes ejus in mercede docebant, & prophetæ ejus in pecunia divinabant: & ſuper Dominum requieſcebant, dicentes; Numquid non Dominus in medio noſtrûm? non venient ſuper nos mala. 12 Propter hoc, cauſâ veſtri, Sion quaſi ager arabitur, & Jeruſalem quaſi acervus lapidum erit, & mons templi in excelſa ſylvarum.

CAP. IV.

1 ET erit: In noviſſimo dierum erit mons domûs Domini præparatus in vertice montium, & ſublimis ſuper colles: & fluent ad eum populi. 2 Et properabunt gentes multæ, & dicent; Venite, aſcendamus ad montem Domini, & ad domum Dei Jacob: & docebit nos de viis ſuis, & ibimus in ſemitis ejus: quia de Sion egredietur lex, & verbum Domini de Jeruſalem. 3 Et judicabit inter populos multos, & corripiet gentes fortes uſque in longinquum: & concîdent gladios ſuos in vomeres, & haſtas ſuas in ligones: non ſumet gens adverſùs gentem gladium: & non diſcent ultrà belligerare.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

4 Οὕτως κεκράξονται πρὸς (ε) τὸν κύριον, ϗ οὐκ εἰσακούσεται αὐτῶν· ϗ ἀποστρέψει τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἀπ' αὐτῶν ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, ἀνθ' ὧν ἐπονηρεύσαντο ἐν τοῖς 5 ἐπιτηδεύμασιν αὐτῶν ἐπ' αὐτούς. Τάδε λέγει κύριος ἐπὶ τοὺς προφήτας τοὺς πλανῶντας τὸν λαόν μου, τοὺς δάκνοντας ἐν τοῖς ὀδοῦσιν αὐτῶν, ϗ κηρύσσοντας (ζ) εἰρήνην ἐπ' αὐτόν, ϗ οὐκ ἐδόθη εἰς τὸ στόμα 6 αὐτῶν, ἤγειραν ἐπ' αὐτὸν πόλεμον· Διὰ τοῦτο νὺξ ὑμῖν ἔσται ἐξ ὁράσεως, ϗ σκοτία (η) ἔσται ὑμῖν ἐκ μαντείας, ϗ δύσεται ὁ ἥλιος ἐπὶ τοὺς προφήτας, ϗ συσκοτάσει ἐπ' 7 αὐτοὺς ἡ ἡμέρα. Καὶ καταισχυνθήσονται οἱ ὁρῶντες τὰ ἐνύπνια, ϗ καταγελασθήσονται οἱ μάντεις, ϗ καταλαλήσουσι κατ' αὐτῶν πάντες αὐτοί, διότι οὐκ ἔσται ὁ (θ) ἐπ- 8 ακούων αὐτῶν· Ἐὰν μὴ (ι) ἐγὼ ἐμπλήσω ἰσχὺν ἐν πνεύματι κυρίου ϗ κρίματος ϗ δυναστείας, τοῦ ἀπαγγεῖλαι τῷ Ἰακὼβ ἀσεβείας αὐτοῦ, ϗ τῷ Ἰσραὴλ ἁμαρτίας αὐτοῦ. Ἀκού- 9 σατε δὴ ταῦτα οἱ ἡγούμενοι οἴκου (κ) Ἰακώβ, ϗ οἱ κατάλοιποι οἴκου (λ) Ἰσραήλ, οἱ βδελυσσόμενοι κρίμα, ϗ πάντα τὰ ὀρθὰ 10 διαστρέφοντες, Οἱ οἰκοδομοῦντες (μ) Σιὼν ἐν αἵμασι, ϗ Ἱερουσαλὴμ ἐν ἀδικίαις. 11 Οἱ ἡγούμενοι αὐτῆς μετὰ δώρων ἔκρινον, ϗ οἱ ἱερεῖς αὐτῆς μετὰ μισθοῦ ἀπεκρίνοντο, ϗ οἱ προφῆται αὐτῆς μετὰ ἀργυρίου ἐμαντεύοντο, ϗ ἐπὶ τὸν κύριον ἐπανεπαύοντο, 12 λέγοντες, Οὐχὶ (ν) ὁ κύριος ἐν ἡμῖν ἐστιν; οὐ μὴ ἐπέλθῃ ἐφ' ἡμᾶς (ξ) κακά. Διὰ τοῦτο δι' ὑμᾶς Σιὼν ὡς ἀγρὸς ἀροτριαθήσεται, ϗ Ἱερουσαλὴμ (ο) ὡς ὀπωροφυλάκιον ἔσται, ϗ τὸ ὄρος τοῦ οἴκου (π) εἰς ἄλσος δρυμοῦ.

ΜΑ. Α. (ε) κύριον, (ζ) ἐπ' αὐτὸν εἰρήνην, (η) ὑμῖν ἔσται (θ) ἐπακούσων (ι) ἐμπλήσω ἐγὼ (κ) Ἰσραήλ, (λ) Ἰακώβ, (μ) ἐν αἵμασιν, ϗ (ν) κύριος (ξ) τὰ κακά. (ο) εἰς (π) ὡς

4 Sic clamabunt ad Dominum, & non exaudiet eos: & avertet faciem ſuam ab eis in tempore illo, eò quòd peſſimè egerunt in adinventionibus ſuis (b) ſuper eos. 5 Hæc dicit Dominus ſuper prophetas, qui ſeducunt populum meum, qui mordent dentibus ſuis, & prædicant ſuper eum pacem: & non eſt data in ore eorum. (c) Excitaverunt ſuper eum prælium. 6 Propterea nox vobis erit ex viſione: & tenebræ erunt vobis ex divinatione: & occumbet Sol ſuper prophetas: & contenebreſcet ſuper eos dies: 7 Et confundentur, qui vident ſomnia: & irridebuntur arioli: & loquentur adverſùm eos omnes iſti: quia non erit, qui exaudiat eos: 8 Niſi ego implevero fortitudinem in ſpiritu Domini, (d) & judicii, & potentiæ; ut annuntiem Jacob impietates ejus, & Iſrael peccata ejus. 9 Audite nunc hæc, duces domûs Jacob, & reliqui domûs Iſrael: qui abominamini judicium, & omnia recta pervertitis: 10 Qui ædificatis Sion in ſanguinibus, & Hieruſalem in iniquitatibus. 11 Duces ejus cum muneribus judicabant, & ſacerdotes ejus cum mercede reſpondebant: & prophetæ ejus cum pecunia divinabant: & ſuper Dominum requieſcebant, dicentes; Nonne Dominus in nobis eſt? Non venient ſuper nos mala. 12 (e) Idcircò propter vos Sion quaſi ager arabitur, & Hieruſalem, ut cuſtodia pomarii erit, & mons (f) domûs in lucum ſaltûs.

ΚΕΦ. δʹ.

1 ΚΑὶ ἔσται ἐπ' ἐσχάτων τῶν ἡμερῶν ἐμφανὲς τὸ ὄρος (α) κυρίου, ἕτοιμον ἐπὶ τὰς κορυφὰς τῶν ὀρέων, ϗ μετεωρισθήσεται ὑπεράνω τῶν βουνῶν. ϗ σπεύσουσιν πρὸς 2 αὐτὸ λαοί, Καὶ πορεύσονται (β) ἔθνη πολλὰ ϗ ἐροῦσι, Δεῦτε, ἀναβῶμεν εἰς τὸ ὄρος (") κυρίου, ϗ εἰς τὸν οἶκον τοῦ θεοῦ Ἰακώβ· ϗ δείξουσιν ἡμῖν τὴν ὁδὸν αὐτοῦ, ϗ πορευσόμεθα ἐν ταῖς τρίβοις αὐτοῦ· ὅτι ἐκ Σιὼν ἐξελεύσεται νόμος, ϗ λόγος κυρίου ἐξ 3 Ἱερουσαλήμ. Καὶ κρινεῖ ἀναμέσον λαῶν πολλῶν, ϗ (") ἐξελέγξει ἔθνη ἰσχυρὰ ἕως εἰς (γ) μακράν· ϗ κατακόψουσι τὰς ῥομφαίας αὐτῶν εἰς ἄροτρα, ϗ (δ) τὰ δόρατα αὐτῶν εἰς δρέπανα, ϗ οὐκέτι (ε) μὴ ἀντάρῃ ἔθνος ἐπ' ἔθνος ῥομφαίαν, ϗ (ζ) οὐκέτι μὴ μάθωσι πολεμεῖν.

ΜS. Α. (α) τοῦ κυρίου, (β) πρὸς αὐτὸ ἔθνη (") τοῦ κυρίου, (") ἐλέγξει (γ) τοῦ μακράν· (δ) τὰς ζιβύνας (ε) οὐ μὴ ἄρῃ (ζ) οὐ μὴ μάθωσιν ἔτι πολεμεῖν.

CAP. IV.

1 ET erit in noviſſimis dierum manifeſtus mons Domini, præparatus ſuper (a) vertices montiũ: et elevabitur ſuper colles. Et feſtinabunt ad eum populi, 2 Et ibunt gentes multæ, & dicent; Venite, aſcendamus ad (b) montem Domini, & in domum Dei Jacob: & (c) oſtendent nobis viam ejus: & ambulabimus in ſemitis ejus: quia de Sion exiet lex, & verbum Domini de Hieruſalem. 3 Et judicabit inter populos multos, & arguet gentes fortes uſque in longinquum: & concîdent gladios ſuos in aratra, & (d) haſtas ſuas in falces: & ultrà non tollet gens contra gentem gladium, & nequaquàm ultrà diſcent bellare.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 בְּכֵן יְצַלּוֹן קֳדָם יְיָ וְלָא יְקַבֵּל צְלוֹתְהוֹן וִיסַלֵּק שְׁכִנְתֵּיהּ מִנְּהוֹן בְּעִדָּנָא הַהִיא כְּמָא
5 דְּאַבְאִישׁוּ עוֹבָדֵיהוֹן׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ עַל נְבִיַּיָא דְּשִׁקְרָא דְּמַטְעַן יָת עַמִּי דְּמַן מוֹכִיל לְהוֹן
6 שֵׁרוּן דִּבְסַר מִתְנַבַּן עֲלוֹהִי שְׁלָמָא וּדְלָא מוֹכִיל לְהוֹן מְזַמְּנִין עֲלוֹהִי קְרָבָא׃ בְּכֵן
תִּבְהֲתוּן מִלְּאִתְנַבָּאָה וְתִתְכַּנְעוּן מִלְּאַלָּפָא וְתַחְפֵּי עָקָא כְּקִבְלָא יָת נְבִיֵּי שִׁקְרָא וְיִקְבַּל
7 עֲלֵיהוֹן עִדָּנָא׃ וְיִבְהֲתוּן נְבִיֵּי שִׁקְרָא וְיִתְכַּנְעוּן מִלְּאַלָּפָא וְיִתְעַטְּפוּן עַל שָׂפָם כַּאֲבִילִין
8 כּוּלְּהוֹן אֲרֵי לֵית בְּהוֹן רוּחַ נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ׃ וּבְרַם אֲנָא אִתְמְלֵיתִי בִּתְקוֹף רוּחַ נְבוּאָה
9 מִן קֳדָם יְיָ וְדִין דִּקְשׁוֹט וּגְבוּרְתָּא לְחַוָּאָה לְיַעֲקֹב חֲבוֹהִי וּלְיִשְׂרָאֵל חֶטְאוֹהִי׃ שְׁמַעוּ
כְּעַן דָּא רֵישֵׁי בֵּית יַעֲקֹב וְשִׁלְטוֹנֵי בֵּית יִשְׂרָאֵל דִּי מְקַלְקְלִין אוֹרְחַת דִּינָא וְיָת כָּל כֵּוַנְתָּא
10 11 מְעַקְּמִין׃ דְּבָנַן בָּתֵּיהוֹן בְּצִיּוֹן בִּדַם אֲשִׁיד וִירוּשְׁלֶם בִּנְכָלִין׃ רֵישָׁהָא בְּשׁוֹחֲדָא דָּיְנִין
וְכַהֲנָהָא בְּמָמוֹן מוֹרַן וּנְבִיַּהָא בְּכַסְפָּא מַלְּפִין וְעַל מֵימְרָא דַּיְיָ מִסְתַּמְּכִין לְמֵימַר הֲלָא
12 שְׁכִנְתָּא דַּיְיָ בֵּינָנָא אָמְרִין לָא תֵיתֵי עֲלָנָא בִּישְׁתָּא׃ בְּכֵן בְּדִיל חוֹבֵיכוֹן צִיּוֹן חֲקַל תִּתְרְדֵי
וִירוּשְׁלֶם לְיַגְרִין תְּהֵי וְטוּר בֵּית מַקְדְּשָׁא לְחֵישַׁת חוּרְשָׁא׃

ד

1 וִיהֵי בְּסוֹף יוֹמַיָּא יְהֵי טוּר בֵּית מַקְדְּשָׁא דַּיְיָ מְתַקַּן בְּרֵישׁ טוּרַיָּא וּמִנַּטַּל הוּא מֵרָמָתָא
2 וְיִתְפַּנְיָן לְמִפְלַח עֲלוֹהִי מַלְכְּוָתָא׃ וִיהָכוּן עַמְמִין סַגִּיאִין וְיֵימְרוּן אֱתוֹ וְנִסַּק לְטוּר בֵּית
מַקְדְּשָׁא דַּיְיָ מְתַקַּן וּלְבֵית שְׁכִינַת אֱלָהֵיהּ דְּיַעֲקֹב וְיַלְּפִנָנָא מֵאוֹרְחָן דְּתַקְנַן קֳדָמוֹהִי וּנְהָךְ
3 בְּאוּלְפַן אוֹרַיְתֵיהּ אֲרֵי מִצִּיּוֹן תִּפּוֹק אוֹרַיְתָא וְאוּלְפַן פִּתְגָמָא דַּיְיָ מִירוּשְׁלֶם׃ וִידִין בֵּין
עַמְמִין סַגִּיאִין וְיוֹכַח לְמַלְכִין תַּקִּיפִין עַד עָלְמָא וְיִעְפְּכוּן סַיְפֵיהוֹן לְסִכִּין וּמוֹרְנְיָתֵיהוֹן
לְמַגְלִין לָא יִטְּלוּן עַם בְּאַפֵּי עַם סַיְפִין וְלָא יִתְאַלְּפוּן עוֹד מְגַחַן קְרָבָא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

4 Tunc orabunt ad Dominum, & non exaudiet orationem eorum: quin potius majeſtatem ſuam ſubducet ab eis tempore illo, prout ipſi mala fecerunt opera ſua. 5 Sic dicit Dominus contra pſeudoprophetas qui ſeducunt populum meum, quòd qui offert eis convivium carnis, pacem ei vaticinantur: adverſus autem eum qui non offert eis, bellum inſtruunt. 6 Ideò confundemini quo minus prophetetis, & erubeſcetis ne doceatis, operietque tribulatio velut caligo falſos prophetas, inſuper obtenebrabitur ſuper eos tempus. 7 Confundentur porrò pſeudoprophetæ & pudefient, ita ut non doceant; involventque ſuperum labrum ſuum velut lugentes, eorum ſinguli, quandoquidem non ſit in eis ſpiritus propheticus à facie Domini. 8 Verumenimverò repletus ſum ego virtute ſpiritus prophetiæ à facie Domini, atque judicio veritatis ac fortitudinis, ut annuntiem Jahacob ſcelera ejus, & Iſrael ſua peccata. 9 Audite nunc iſtud principes familiæ Jahacob & præfecti domus Iſraeliticæ, qui conſuetudinem judicii corrumpitis, omniaque recta pervertitis. 10 Condentes domos ſuas in Sion cum ſanguine effuſo, & Jeruſalem dolis. 11 Principes ejus pro munere jus dicunt, & Sacerdotes ejus pro pecunia erudiunt, atque *prophetæ ejus* pro argento docent, ac in verbum Domini innituntur, dicentes: An non majeſtas Domini inter nos eſt? non adorietur nos malum, inquiunt. 12 Propterea ob peccata veſtra Sion [*ut*] ager arabitur, & Jeruſalem in acervos redigetur, atque mons domus ſanctuarii in arundinetum ſaltus.

CAP. IV.

1 FUturum eſt autem poſtremis diebus, ut ſit mons ſanctuarii Domini præparatus in vertice montium atque collibus excelſior, & vultus vertent ut ſerviant ſuper eo regna. 2 Ibunt itaque populi complures, & dicent: Venite & aſcendamus in montem domus ſanctuarii Domini *præparatum*, & ad domum majeſtatis Dei Jacob: docebit nos ſanè vias quæ corã ſe rectæ ſint, & ambulabimus in doctrina Legis ejus: quia de Sion prodibit Lex, & doctrina ſermonis Domini de Jeruſalem. 3 Et judicabit inter populos multos, atq; arguet reges fortes in perpetuum uſque: conflabunt verò gladios ſuos in vomeres, & lanceas ſuas in falces: nec aſſumet gens contra gentem gladios nec arma, neque diſcent deinceps præliari.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܝܕܝܢ ܢܩܥܘܢ ܠܘܬ ܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܢܥܢܐ ܐܢܘܢ. ܘܢܗܦܘܟ ܐܦܘܗܝ ܡܢܗܘܢ ܒܙܒܢܐ ܗܘ. 4
ܐܝܟ ܕܐܒܐܫܘ ܥܒܕܝܗܘܢ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܢܒܝܐ ܕܡܛܥܝܢ ܠܥܡܝ. ܕܢܟܬܝܢ 5
ܒܫܢܝܗܘܢ ܘܡܟܪܙܝܢ ܫܠܡܐ. ܘܡܢ ܕܠܐ ܝܗܒ ܒܦܘܡܗܘܢ. ܡܟܪܙܝܢ ܥܠܘܗܝ ܩܪܒܐ.
* ܡܛܠܗܕܐ ܠܠܝܐ ܢܗܘܐ ܠܟܘܢ ܡܢ ܚܙܘܐ. ܘܚܫܘܟܐ ܠܟܘܢ ܡܢ ܩܘܣܡܐ. ܘܬܥܪܒ ܫܡܫܐ ܥܠ 6
ܢܒܝܐ. ܘܢܚܫܟ ܥܠܝܗܘܢ ܝܘܡܐ. * ܘܢܒܗܬܘܢ ܐܝܠܝܢ ܕܚܙܝܢ ܚܙܘܢܐ ܘܢܚܦܪܘܢ 7
ܩܨܘܡܐ. ܘܢܬܟܣܘܢ ܟܠܗܘܢ ܥܠ ܣܦܘܬܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܥܢܐ ܠܗܘܢ ܐܠܗܐ. * ܒܪܡ 8
ܐܢܐ ܡܠܝܬ ܚܝܠܐ ܕܪܘܚܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܕܝܢܐ ܘܓܢܒܪܘܬܐ. ܕܐܚܘܐ ܠܝܥܩܘܒ ܥܘܠܗ
ܘܠܐܝܣܪܝܠ ܚܛܝܬܗ. * ܫܡܥܘ ܗܕܐ ܪܫܐ ܕܒܝܬ ܝܥܩܘܒ. ܘܡܕܒܪܢܐ ܕܒܝܬ 9
ܐܝܣܪܝܠ. ܕܡܣܠܝܢ ܕܝܢܐ. ܘܡܥܩܡܝܢ ܟܠܗ ܬܪܝܨܘܬܐ. * ܕܒܢܝܢ ܠܨܗܝܘܢ ܒܕܡܐ. 10
ܘܠܐܘܪܫܠܡ ܒܥܘܠܐ. * ܪܫܝܗ ܒܫܘܚܕܐ ܕܐܢܝܢ. ܘܟܗܢܝܗ ܒܐܓܪܐ ܡܠܦܝܢ. ܘܢܒܝܗ 11
ܒܟܣܦܐ ܩܣܡܝܢ. ܘܥܠ ܡܪܝܐ ܡܬܬܟܠܝܢ. ܘܐܡܪܝܢ. ܗܐ ܡܪܝܐ ܒܝܢܬܢ. ܠܐ ܐܬܐ ܥܠܝܢ
ܒܝܫܬܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܡܛܠܬܟܘܢ ܨܗܝܘܢ ܐܝܟ ܚܩܠܐ ܬܬܕܒܪ. ܘܐܘܪܫܠܡ ܠܚܘܪܒܐ ܬܗܘܐ. 12
ܘܛܘܪ ܒܝܬܐ. ܠܥܒܐ ܥܒܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܕ *

* ܘܢܗܘܐ ܒܚܪܬܐ ܕܝܘܡܬܐ. ܢܗܘܐ ܛܘܪܐ ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܡܬܩܢ ܒܪܝܫ ܛܘܪܐ. ܘܪܡ ܡܢ ܪܡܬܐ. 1
ܘܢܬܟܢܫܘܢ ܠܗ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. * ܘܢܐܙܠܘܢ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ ܘܢܐܡܪܘܢ. ܬܘ ܢܣܩ 2
ܠܛܘܪܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܠܒܝܬܗ ܕܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ. ܘܢܠܦܢ ܡܢ ܐܘܪܚܬܗ. ܘܢܗܠܟ
ܒܫܒܝܠܘܗܝ. ܡܛܠ ܕܡܢ ܨܗܝܘܢ ܢܦܘܩ ܢܡܘܣܐ. ܘܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ. * ܘܢܕܘܢ 3
ܒܝܬ ܥܡܡܐ. ܘܢܟܘܣ ܠܥܡܡܐ ܥܫܝܢܐ ܕܪܘܚܩܐ. ܘܢܦܛܫܘܢ ܣܦܣܝܪܝܗܘܢ ܠܣܟܝ ܦܕܢܐ.
ܘܪܘܡܚܝܗܘܢ ܠܡܓܠܐ. ܘܠܐ ܢܫܩܘܠ ܥܡܐ ܥܠ ܥܡܐ ܣܦܣܪܐ. ܘܠܐ ܢܐܠܦܘܢ ܬܘܒ ܩܪܒܐ.

Tunc clamabunt ad Dominum, & non exau- 4
diet eos; ſed faciem ſuam avertet ab eis illo
tempore, quòd actiones ſuas depravârint. Sic 5
dicit Dominus de prophetis qui ſeducunt po-
pulum meum, qui dentibus ſuis mordent, &
prædicant pacem; ei autem qui in os eorum
nil jacit, bellum denuntiant. Idcircò nox 6
proveniet vobis ex viſione, & tenebræ ori-
entur vobis ex divinatione, ſol occidet ſuper
prophetas, & obtenebreſcet ſuper eos dies:
Ita obſtupeſcent ii qui vident viſiones, pude- 7
fient divini, & faſciâ obvolventur omnes ſu-
per labiis ſuis; quia non reſpondebit illis
Deus. At verò ego plenus ſum virtute ſpi- 8
ritûs Domini, & judicio ac fortitudine; ut
indicem Jacobo ſcelus ſuum, & Iſraeli pec-
catum ſuum. Audite igitur hoc primores 9
domûs Jacobi, & præfecti domûs Iſraelis, qui
contemnitis judicium, & recta quæque per-
vertitis: Qui Sionem ſanguine ædificatis, 10
& Jeroſolymam iniquitate. Primores ejus 11
munere judicant, ſacerdotes ejus mercede do-
cent, prophetæ ejus pecuniâ divinant: Do-
mino tamen fidunt, ac dicunt; Ecce Domi-
nus inter nos eſt, non accidet nobis malum.
Proinde cauſâ veſtri Sion *ut* ager arabitur, 12
& Jeruſalem in ruinam abibit, & mons do-
mûs in locum ſylvæ.

CAP. IV.

ET erit poſtremis diebus mons domûs Do- 1
mini firmus in vertice montium, & excelſior
collibus; & ad eum congregabuntur omnes
populi. Ibúntque gentes multæ, ac dicent; 2
Agite, aſcendamus ad montem Domini ad
domum Dei Jacobi, ut doceat nos de viis
ſuis, & ambulemus in ſemitis ejus: nam de
Sione prodibit lex & verbum Domini de
Jeruſalem: Ipſâque jus dicet inter populos, 3
& arguet gentes potentes procul diſſitas: tun-
déntque gladios ſuos in aratrorum vomeres,
& lanceas ſuas in falces, non elevabit gens
in *alteram* gentem gladium, nec addiſcent
ampliùs bellum:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* هكذا يصرخون للرب ولا يستجيب لهم * ويصرف وجهه عنهم في ذلك الزمان * من اجل انهم 4
حبثوا باعمالهم عليهم * هكذا يقول الرب على الانبياء الذين يضلون شعبي * الذين يعضون 5
باسنانهم * وينادون له سلامة * ولم اعطها في فمهم * اقاموا عليه حربا * لاجل هذا يكون لكم 6
ليل من الروبا * ويكون لكم الظلمة من التعريف * وتغرب الشمس على الانبياء * ويظلم عليهم
النهار * ويخزي الذين يرون المنامات * ويضحك على العرافين ويتم عليهم جميع هولاء * من 7
اجل انه لا يكون من يسمعهم * ان كنت انا لا اكمل قوة بروح الرب * ليخبروا يعقوب 8
بنفاقه واسرائيل بخطاياه *

* الاصحاح السادس عشر *

* اسمعوا هذه يا مقدمي بيت يعقوب * وبقايا بيت اسرائيل * الذين يرذلون الحكم * ويعوجون 9
جميع المستقيمات * الذين يبنون صهيون بالدماء * وايروشليم بالمظالم * مقدموها حكموا 10 11
بالرشا وكهنتها اجابوا بالاجر * وانبياوها نجموا بالفضة * وعلى الرب استراحوا * قايلين اليس
الرب هو فينا * لا ياتي علينا شرور * لاجل هذا من اجلكم صهيون تحرث مثل حقل * وايروشليم 12
تكون مثل عريشة * وجبل البيت مثل روضة الغاب *

* الفصل الرابع *

* ويكون في الايام الاخيرة جبل الرب ظاهرا معدا على روس الجبال * ويتعالى فوق الاكام * 1
ويسرع اليه الشعوب * وينطلق اليه امم كثيرة * ويقولون * تعالوا نصعد الى جبل الرب * والى 2
بيت اله يعقوب * ويظهرون لنا طريقه * ونسير في سبله * لان من صهيون يخرج الناموس *
وكلمة الرب من ايروشليم * ويحكم بين شعوب كثيرة * ويبكت امما قوية * حتى الى الارض 3
البعيدة * ويكسرون سيوفهم للحرث * ومزاريقهم للمناجل * ولا تحمل امة على امة سيفا ايضا *
ولا يتعلمون ان يحاربوا ايضا *

Ita clamabunt ad Dominum, & non ex- 4
audiet eos; imò faciem ſuam avertet ab
eis tunc temporis, eò quòd iniquè ſe
geſſerint actionibus ſuis adverſùs illos.
Sic dicit Dominus de prophetis qui ſedu- 5
cunt populum meum, qui dentibus ſuis
mordent, & prædicant illi pacem quam
non indidi in os eorum: bellum concita-
verunt in illum. Propterea nox vobis 6
erit ex viſione, & tenebræ vobis erunt ex
divinatione, ſol occumbet ſuper prophe-
tas, & obſcurabitur ſuper eos dies:
Erubeſcent qui ſomnia vident, ridebunt 7
divinos, & de ipſis obloquentur omnes
iſti; quia nemo erit qui audiat illos;
Niſi ego virtutem perfecero per ſpiritum
Domini, ut annuntient Jacobo impieta- 8
tem ejus, & Iſraeli peccata ipſius.

Textus decimus ſextus.

Audite hæc O duces domûs Jacobi, & 9
reliquiæ domûs Iſraelis, qui ſpernitis
judicium, & pervertitis quæcunque recta
ſunt: Qui Sionem ſanguinibus, & 10
Jeroſolymam iniquitatibus ædificatis:
Duces ejus munere judicabant, ſacerdo- 11
tes ejus mercede reſpondebant, prophetæ
ejus pecuniâ divinabant, & in Domino
requieſcebant, dicentes; Nonne Domi-
nus in nobis eſt? non venient ſuper nos
mala. Idcirco propter vos Sion deſtrue- 12
tur ut ager, Jeruſalem erit ut pergula, &
mons domûs ut pratum ſylveſtre.

CAP. IV.

SEd erit poſtremis diebus mons Domini 1
manifeſtus diſpoſitus ſuper cacumina
montium, & attolletur ſuper colles; &
accurrent ad eum populi, Pergentque ad 2
eum gentes multæ, & dicent; Venite
aſcendamus ad montem Domini, & ad
domum Dei Jacob, ut oſtendant nobis
viam ejus, & ambulemus in ſemitis
ejus: quoniam è Sione egredietur lex,
& verbum Domini de Jeruſalem: Et ju- 3
dicabit inter populos multos, & arguet
gentes fortes uſque ad terram remotiſ-
ſimam: & confringent gladios ſuos ad
arandum, & lanceas ſuas in falces: &
poſthac non geſtabit gens contra gentem
gladium, nec addiſcent ampliùs bellum
gerere;

מיכה: ד

, ſuam ficum ſubtus & , ſuam vitem ſubtus *vir* manebunt Et
4 וְיָשְׁבוּ אִישׁ תַּחַת גַּפְנוֹ וְתַחַת תְּאֵנָתוֹ
Quia .eſt locutum exercituum DOMINI os quia : *exterrens* non &
5 וְאֵין מַחֲרִיד כִּי־פִי יְהוָה צְבָאוֹת דִּבֵּר׃ כִּי
nos & : ſui Dei nomine in *vir* ambulabunt populi omnes
כָּל־הָעַמִּים יֵלְכוּ אִישׁ בְּשֵׁם אֱלֹהָיו וַאֲנַחְנוּ
.*perpetuum* & ſeculum in noſtri Dei Domini nomine in ambulabimus
נֵלֵךְ בְּשֵׁם־יְהוָה אֱלֹהֵינוּ לְעוֹלָם וָעֶד׃
, claudicantem congregabo , DOMINUS dixit , illa die In
6 בַּיּוֹם הַהוּא נְאֻם־יְהוָה אֹסְפָה הַצֹּלֵעָה
ponam Et .*affeci malo* quam & ,congregabo *expulſam* &
7 וְהַנִּדָּחָה אֲקַבֵּצָה וַאֲשֶׁר הֲרֵעֹתִי׃ וְשַׂמְתִּי אֶת־
regnabit & : robuſtam gentem in ejectã procul & ,reſiduũ in claudicantẽ
הַצֹּלֵעָה לִשְׁאֵרִית וְהַנַּהֲלָאָה לְגוֹי עָצוּם וּמָלַךְ
.ſeculum in uſque & *nunc* ex Sijon monte in eos ſuper Dominus
יְהוָה עֲלֵיהֶם בְּהַר צִיּוֹן מֵעַתָּה וְעַד־עוֹלָם׃
: veniet te ad uſque Sijon filia *locus editus* , gregis turris *tu Et*
8 וְאַתָּה מִגְדַּל־עֵדֶר עֹפֶל בַּת־צִיּוֹן עָדֶיךָ תֵּאתֶה
.Jeruſalaim filiæ regnum , primum dominium veniet &
וּבָאָה הַמֶּמְשָׁלָה הָרִאשֹׁנָה מַמְלֶכֶת לְבַת־יְרוּשָׁלִָם׃
non rex Nunquid ? vociferationem vociferabis quid ut Nunc
9 עַתָּה לָמָּה תָרִיעִי רֵעַ הֲמֶלֶךְ אֵין־
dolor te apprehendit quia ? periit tuus conſiliarius *An* ? te in
בָּךְ אִם־יוֹעֲצֵךְ אָבָד כִּי־הֶחֱזִיקֵךְ חִיל
,parturiens veluti Sijon filia ingemiſce & , Dole .parturientis tanquã
10 כַּיּוֹלֵדָה׃ חוּלִי וָגֹחִי בַּת־צִיּוֹן כַּיּוֹלֵדָה
ad uſque venies & ,agro in habitabis &,civitate de egredieris nunc quia
כִּי־עַתָּה תֵצְאִי מִקִּרְיָה וְשָׁכַנְתְּ בַּשָּׂדֶה וּבָאת עַד־
.tuorũ inimicorũ *vola* de Dominus te redimet ibi : eruêris ibi : Babel
בָּבֶל שָׁם תִּנָּצֵלִי שָׁם יִגְאָלֵךְ יְהוָה מִכַּף אֹיְבָיִךְ׃
: *dicentes* , multæ gentes te ſuper ſe congregaverunt nunc Et
11 וְעַתָּה נֶאֶסְפוּ עָלַיִךְ גּוֹיִם רַבִּים הָאֹמְרִים
cognoverunt non ipſæ Et .noſter oculus Sijon in aſpiciet & ,*ſe Profanabit*
12 תֶּחֱנָף וְתַחַז בְּצִיּוֹן עֵינֵינוּ׃ וְהֵמָּה לֹא יָדְעוּ
eas cõgregavit quia ;ejꝰ conſilium intellexerunt nec ,Domini cogitationes
מַחְשְׁבוֹת יְהוָה וְלֹא הֵבִינוּ עֲצָתוֹ כִּי קִבְּצָם
quia : Sijon filia tritura & Surge .aream ad manipulum veluti
13 כֶּעָמִיר גֹּרְנָה׃ קוּמִי וָדוֹשִׁי בַת־צִיּוֹן כִּי
, *æs* ponam tuas ungulas & , *ferrum* ponam tuum cornu
קַרְנֵךְ אָשִׂים בַּרְזֶל וּפַרְסֹתַיִךְ אָשִׂים נְחוּשָׁה
,earũ deſiderium Domino *anathematizabo* & ,multos populos conteres &
וַהֲדִקּוֹת עַמִּים רַבִּים וְהַחֲרַמְתִּי לַיהוָה בִּצְעָם
Nunc .terræ univerſæ Domino earum fortitudinem &
14 וְחֵילָם לַאֲדוֹן כָּל־הָאָרֶץ׃ עַתָּה
percutient virga *in* :nos *ſuper* poſuit obſidionẽ,turmæ filia *turmatim excurres*
תִּתְגֹּדְדִי בַת־גְּדוּד מָצוֹר שָׂם עָלֵינוּ בַּשֵּׁבֶט יַכּוּ
.Iſrael *judicem* maxillam *ſuper*
עַל־הַלְּחִי אֵת שֹׁפֵט יִשְׂרָאֵל׃

CAP. V. ה

millibus in *exiſtendum ad* , parvulus , Ephrathah lechem-Beth tu Et
1 וְאַתָּה בֵּית־לֶחֶם אֶפְרָתָה צָעִיר לִהְיוֹת בְּאַלְפֵי
; Iſrael in *dominatorem exiſtendum ad* ,egredietur mihi te Ex .Jehudah
יְהוּדָה מִמְּךָ לִי יֵצֵא לִהְיוֹת מוֹשֵׁל בְּיִשְׂרָאֵל
eos dabit Propterea .ſeculi diebus à *quondam à* ejus egreſſiones &
2 וּמוֹצָאֹתָיו מִקֶּדֶם מִימֵי עוֹלָם׃ לָכֵן יִתְּנֵם
revertentur,ejꝰ *fratrum reſiduum* & : pepererit parturiens ,tempus ad uſque
עַד־עֵת יוֹלֵדָה יָלָדָה וְיֶתֶר אֶחָיו יְשׁוּבוּן
.Iſrael filios *ſuper*
עַל־בְּנֵי יִשְׂרָאֵל׃

Verſio VULG. LAT.

4 Et ſedebit vir ſubtus vitem ſuam,
& ſubtus ficum ſuam, & non erit
qui deterreat: quia os Domini exercituum
5 locutum eſt. Quia omnes
populi ambulabunt unuſquiſque
in nomine dei ſui: nos
autem ambulabimus in nomine
Domini Dei noſtri in æternum &
6 ultrá. In die illa, dicit Dominus,
congregabo claudicantem: &
eam, quam ejeceram, colligam;
7 & quam affixeram: Et ponam
claudicantem in reliquias: &
eam, quæ laboraverat, in gentem
robuſtam: & regnabit Dominus
ſuper eos in monte Sion, ex hoc
8 nunc & uſque in æternum. Et tu,
turris gregis, nebuloſa filia Sion,
uſque ad te veniet: & veniet poteſtas
prima, regnum filiæ Jeruſalem.
9 Nunc quarè mœrore contraheris
? numquid rex non eſt
tibi, aut conſiliarius tuus periit,
quia comprehendit te dolor ſicut
10 parturientem? Dole, & ſatage,
filia Sion, quaſi parturiens: quia
nunc egredieris de civitate, &
habitabis in regione, & venies
uſque ad Babylonem: ibi liberaberis,
ibi redimet te Dominus de
11 manu inimicorum tuorum. Et
nunc congregatæ ſunt ſuper te
gentes multæ, quæ dicunt; Lapidetur:
& aſpiciat in Sion oculus
12 noſter. Ipſi autem non cognoverunt
cogitationes Domini, &
non intellexerunt conſilium ejus:
quia congregavit eos quaſi fœnum
13 areæ. Surge, & tritura, filia
Sion: quia cornu tuum ponam
ferreum, et ungulas tuas ponam
æreas: & comminues populos
multos, & interficies Domino
rapinas eorum, & fortitudinem
eorum Domino univerſæ terræ.

CAP. V.

1 Nunc vaſtaberis, filia latronis:
obſidionem poſuerunt ſuper nos,
in virga percutient maxillam judicis
2 Iſrael. ET TU BETHLEHEM
Ephrata parvulus es
in millibus Juda: ex te mihi egredietur
qui ſit dominator in Iſrael,
& egreſſus ejus ab initio, à
3 diebus æternitatis. Propter hoc
dabit eos uſque ad tempus, in
quo parturiens pariet: & reliquiæ
fratrum ejus convertentur
ad filios Iſrael.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

4 Καὶ ἀναπαύσεται ἕκαστος ὑποκάτω ἀμπέλου
αὐτοῦ, καὶ ἕκαστος ὑποκάτω συκῆς αὐτοῦ, καὶ
οὐκ ἔσται ὁ ἐκφοβῶν, διότι τὸ στόμα κυρίου
5 παντοκράτορος ἐλάλησε ταῦτα. Ὅτι
πάντες οἱ λαοὶ πορεύσονται ἕκαστος τὴν ὁδὸν
αὐτοῦ, ἡμεῖς δὲ πορευσόμεθα ἐν ὀνόματι
(η) κυρίου θεοῦ ἡμῶν εἰς τὸν αἰῶνα, καὶ ἐπέκεινα.
6 Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, (θ) λέγει
κύριος, συνάξω τὴν συντετριμμένην, καὶ
τὴν ἐξωσμένην εἰσδέξομαι, καὶ οὓς ἀπωσάμην.
7 Καὶ θήσομαι τὴν συντετριμμένην
εἰς ὑπόλειμμα, καὶ τὴν ἀπωσμένην εἰς ἔθνος
(ι) δυνατόν· καὶ βασιλεύσει κύριος
ἐπ' αὐτοὺς ἐν ὄρει Σιὼν ἀπὸ τοῦ νῦν (κ) ἕως
8 εἰς τὸν αἰῶνα. Καὶ σὺ πύργος ποιμνίου
αὐχμώδης, θυγάτηρ Σιών, ἐπὶ σὲ ἥξει, καὶ
εἰσελεύσεται ἡ ἀρχὴ, ἡ πρώτη βασιλεία ἐκ
9 Βαβυλῶνος τῇ θυγατρὶ Ἱερουσαλήμ. Καὶ
νῦν ἱνατί ἔγνως κακά; μὴ βασιλεὺς οὐκ ἦν
σοι; ἢ ἡ βουλή σου ἀπώλετο, ὅτι κατεκράτησάν
(λ) σου ὠδῖνες ὡς τικτούσης;
10 Ὤδινε καὶ ἀνδρίζου (μ), καὶ ἔγγιζε θυγάτηρ
Σιὼν ὡς τίκτουσα· διότι νῦν ἐξελεύσῃ ἐκ
πόλεως, καὶ κατασκηνώσεις ἐν πεδίῳ, καὶ ἥξεις
ἕως Βαβυλῶνος· ἐκεῖθεν ῥύσεταί σε,
καὶ ἐκεῖθεν λυτρώσεταί σε κύριος ὁ θεός
11 σου ἐκ χειρὸς ἐχθρῶν σου. Καὶ νῦν (ν) ἐπισυνήχθησαν
ἐπὶ σὲ (ξ) ἔθνη πολλά, λέγοντες,
Ἐπιχαρούμεθα, καὶ ἐπόψονται ἐπὶ
12 Σιὼν οἱ ὀφθαλμοὶ ἡμῶν. (ο) Αὐτοὶ δὲ οὐκ
ἔγνωσαν τὸν λογισμὸν κυρίου, καὶ οὐ συνῆκαν
τὴν βουλὴν αὐτοῦ, ὅτι συνήγαγεν αὐτοὺς ὡς
13 δράγματα ἅλωνος. (π) Ἀνάστηθι, καὶ
ἀλόα αὐτοὺς (ρ) θυγάτηρ Σιών, ὅτι τὰ κέρατά
σου θήσομαι σιδηρᾶ, καὶ τὰς ὁπλάς
σου θήσομαι χαλκᾶς· καὶ (σ) κατατήξεις
λαοὺς πολλούς, καὶ ἀναθήσεις τῷ κυρίῳ τὸ
πλῆθος αὐτῶν, καὶ τὴν ἰσχὺν αὐτῶν τῷ κυρίῳ
πάσης τῆς γῆς.

Et (e) requieſcet unuſquiſque 4
ſub vite ſua, & unuquiſque ſub
ficu ſua: & non erit, qui exterreat:
quia os (f) Domini
omnipotentis loquutum eſt hæc:
Quia omnes populi ibunt, (g) 5
unuſquiſque viam ſuam: nos
autem ibimus in nomine Domini
Dei noſtri in æternum, & ultrá.
In die illa, dicit Dominus, congregabo 6
(h) eam, quæ contrita
eſt; (i) & eam quæ ejecta fuerat,
ſuſcipiam, & quos repuleram.
Et ponam contritam in reliquias, 7
& repulſam in gentem
fortem: & regnabit Dominus
ſuper eos in monte Sion ex hoc
nunc uſque in ſeculum. Et tu, 8
turris gregis, (k) ſqualens (l) filia
Sion, ad te veniet, & ingredietur
principatus, primum regnum
de Babylone filia Hieruſalem.
Et nunc quarè cognoviſti 9
mala? Nunquid rex non erat
tibi, aut conſilium tuum periit;
quia obtinuerunt te dolores, ſicut
parturientis? Dole, & viriliter 10
age, & (m) appropinqua, filia
Sion, quaſi pariens: quia nunc
egredieris de civitate, & habitabis
in campo, & venies uſque ad
Babylonem. Indè liberabit te, &
indè redimet te Dominus Deus
tuus de manu inimicorum tuorum.
Et nunc congregatæ ſunt 11
ſuper te gentes multæ, dicentes;
(n) Inſultabimus, & videbunt
in Sion oculi noſtri. Ipſi autem 12
neſcierunt cogitationem Domini:
& non intellexerunt conſilium ejus:
Quia congregavit eos ut
manipulos areæ. Surge, & tritura 13
eos, filia Sion: quia cornua
tua ponam ferrea, & ungulas tuas
ponam æreas: & (o) conſumes
populos multos, & (p) conſecrabis
Domino (q) multitudinem
eorum, & robur eorum Domino
univerſæ terræ.

MS. A. (η) θεοῦ ἡμῶν (θ) Συνάξω τὴν συντετριμμένην, λέγει κύριος, καὶ τὴν ἀπωσμένην εἰσδέξομαι, (ι) ἰσχυρόν· (κ) καὶ ἕως (λ) σε (μ) θύγατερ Σιὼν ὡς (ν) ἐπισυνήχθη (ξ) ἔθνη, πολλοὶ (ο) Καὶ αὐτοὶ οὐκ (π) Ἀνάστα, γατερ (σ) λεπτυνεῖς

ΚΕΦ. ε'.

1 Νῦν ἐμφραχθήσεται θυγάτηρ (α) ἐμφραγμῷ,
συνοχὴν ἔταξεν ἐφ' (β) ἡμᾶς,
ἐν ῥάβδῳ πατάξουσιν ἐπὶ (γ) σιαγόνα τὰς
2 φυλὰς τοῦ Ἰσραήλ. Καὶ σὺ Βηθλεὲμ οἶκος
(δ) Ἐφραθά, ὀλιγοστὸς εἶ τοῦ εἶναι ἐν
χιλιάσιν Ἰούδα· ἐκ σοῦ μοι ἐξελεύσεται (ε),
τοῦ εἶναι εἰς ἄρχοντα (ζ) τοῦ Ἰσραήλ, καὶ αἱ ἔξοδοι
αὐτοῦ ἀπ' ἀρχῆς ἐξ ἡμερῶν αἰῶνος.
3 Διατοῦτο δώσει αὐτοὺς ἕως καιροῦ τικτούσης,
τέξεται, καὶ οἱ ἐπίλοιποι τῶν ἀδελφῶν
αὐτῶν ἐπιστρέψουσιν ἐπὶ τοὺς υἱοὺς
Ἰσραήλ.

CAP. V.

Nunc obſtruetur filia obſtructione: 1
anguſtiam poſuit ſuper
nos: in virga percutient ſuper
maxillam tribus Iſrael. Et tu 2
Bethleem domꝰ Ephratha, (a) minima
es, (b) ut ſis in millibus Juda.
Ex te mihi (c) egredietur, ut
ſit in principem Iſrael: & egreſſus
ejus ab initio ex diebus ſeculi.
Propterea dabit eos uſque 3
ad tempus parientis: pariet, &
reliquiæ fratrum eorum revertentur
ad filios Iſrael.

MS.A. (α) Ἐφραὶμ ἐνφραγμῷ, (β) ὑμᾶς, (γ) σιαγόνας, (δ) τοῦ Ἐφραθά, (ε) ἡγούμενος, τοῦ (ζ) ἐν τῷ Ἰσραήλ, καὶ αἱ ἔξοδοι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 וִיתוּבוּן גְּבַר תְּחוֹת פֵּרֵי גוּפְנוֹהִי וּתְחוֹת פֵּרֵי תֵּינוֹהִי וְלֵית דְּמָנִיד אֲרֵי בְּמֵימְרָא דַּייָ
5 צְבָאוֹת גְּזַר כֵּן׃ אֲרֵי כָּל עַמְמַיָא יְהָכוּן עַל דִּי פַלְחוּ לְטַעֲוָתָא וַאֲנַחְנָא נִתְרְחֵץ בְּמֵימְרָא
6 דַּייָ אֱלָהָנָא לְעָלְמָא וּלְעָלְמֵי עָלְמַיָא׃ בְּעִדָּנָא הַהִיא אָמַר יְיָ אֲכַנּוֹשׁ מְטַלְטְלַיָא וּמְבַדְּרַיָא
7 אֲקָרֵב וּדְאַבְאֵשִׁית לְהוֹן מִן קֳדָם חוֹבֵי עַמִּי׃ וַאֲשַׁוֵּי יָת מְטַלְטְלַיָא לִשְׁאָרָא וּמְבַדְּרַיָא
8 לְעַם תַּקִּיף וְתִתְגְּלֵי מַלְכוּתָא דַּייָ עֲלֵיהוֹן בְּטוּרָא דְּצִיּוֹן מִכְּעַן וְעַד עָלְמָא׃ וְאַתְּ מְשִׁיחָא
דְּיִשְׂרָאֵל דִּטְמִיר מִן קֳדָם חוֹבֵי כְּנִשְׁתָּא דְצִיּוֹן לָךְ עֲתִידָא מַלְכוּתָא לְמֵיתֵי וְיֵיתֵי שָׁלְטָנָא
9 קַדְמָאָה לְמַלְכוּת כְּנִשְׁתָּא דִירוּשְׁלֵם׃ וּכְעַן לְמָה אַתְּ מִתְחַבְּרָא לְעַמְמַיָא הֲמַלְכָּא
10 לֵית בִּיךְ אִם מָלְכֵי מַלְכִּיךְ אֲבַדוּ אֲרֵי תַקְּפוּךְ עָקָא וְזִיעַ הָא כְּחַבְלִין לְיָלְדְתָא׃ מְרַעִי וְזוּעִי
כְּנִשְׁתָּא דְצִיּוֹן כְּיוֹלַדְתָּא אֲרֵי כְעַן תִּפְּקִין מִקַּרְתָּא וְתִשְׁרִין בְּחַקְלָא וְתֵהָכִין עַד בָּבֶל תַּמָּן
11 תִּשְׁתֵּיזְבִין תַּמָּן יִפְרְקִנִּךְ יְיָ מִיַּד בַּעֲלֵי דְבָבִךְ׃ וּכְעַן יִתְכַּנְּשׁוּן עֲלַךְ עַמְמִין סַגִּיאִין דְּאָמְרִין
12 אֵימָתַי תְּחוּב וְתֶחֱזֵי בְּמַפֹּלֶת צִיּוֹן עֵינָנָא׃ וְאִנּוּן לָא יָדְעִין רָזַיָא דַּייָ וְלָא מִסְתַּכְּלִין
13 בְּמִלְכֵיהּ אֲרֵי קָרֵיבְנוּן כְּעָמִירָא לְאִדְּרָא׃ קוּמִי וְקַטְלִי כְּנִשְׁתָּא דְצִיּוֹן אֲרֵי עַמָּא דִי בִיךְ
אֲשַׁוֵּי תַּקִּיפִין כְּבַרְזְלָא וּשְׁאָרְהוֹן חֲסִינִין כִּנְחָשָׁא וּתְקַטְּלִין עַמְמִין סַגִּיאִין וּתְגַמְּרִין קֳדָם
יְיָ נִכְסֵיהוֹן וּמָמוֹן יְקָרְהוֹן קֳדָם רִבּוֹן כָּל עָלְמָא׃

ה

1 כְּעַן תִּסְתַּיְעִין בְּמַשְׁרְיָן קַרְתָּא דְצָיְרִין עֲלַהּ בִּצְיָר דַּהֲווֹ מָחָן בְּחֻטְרָא עַל לִסְתָּא יָת דַּיָּנֵי
2 יִשְׂרָאֵל׃ וְאַתְּ בֵּית לֶחֶם אֶפְרָתָה כִּזְעֵר הֲוֵיתָא לְאִתְמְנָאָה בְּאַלְפַיָא דְבֵית יְהוּדָה מִנָּךְ
קֳדָמַי יִפּוֹק מְשִׁיחָא לְמֶהֱוֵי עָבֵיד שׁוּלְטָן עַל יִשְׂרָאֵל דִּי שְׁמֵיהּ אֲמִיר מִלְּקַדְמִין מִיּוֹמֵי
3 עָלְמָא׃ בְּכֵן יִתְמַסְרוּן כְּעִדָּן יָלְדְתָא לְמֵילַד וּשְׁאָר אֲחֵיהוֹן יִסְתַּמְּכוּן עֲלֵיהוֹן בְּנֵי יִשְׂרָאֵל׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Sed ſedebunt unuſquiſq; ſub fructu vitis ſuæ ſubq; fructu ficulneæ ſuæ: nec 4
erit qui exterreat: quia verbo Dñi exercituum decretum eſt ita. Etenim uni- 5
verſi populi *abibunt* ad ea quæ venerati ſunt idola; nos vero fiduciam collocabimus
in *verbo* Dñi Dei noſtri in ſeculum & in ſecula ſeculorum. Eo tem- 6
pore, dicit Dñs, congregabo tranſlatos & diſperſos, colligam & illos quibus
malefeci, propter peccata populi mei. Ponámque deportatos in reliquias, & 7
diſperſos in populum potentem, atq; revelabitur regnum Dñi ſuper eos in
monte Sion à modò & uſq; in ſeculum. Tu autem Chriſte Iſraelis, qui abſ- 8
conditus es propter peccata cœtus Sion, tibi venturum eſt regnum: ſed &
dominatio priſca adveniet regno cœtus Jeruſalem. Nunc autem quare tu po- 9
pulis adjungeris? an non in te rex eſt? aut conſiliarii tui perierunt? quoniam
circundederunt te tribulatio ac tremor, ſicut agones parturientem. Dole & 10
contremiſce cœtus Sion more parturientis, nunc etenim de civitate egredieris
& habitabis in agro, ibiſq; uſque ad Babylonem, ubi liberaberis, ibi redimet
te Dominus de manu inimicorum tuorum. Mox verò congregabuntur 11
adverſum te gentes permultæ quæ dicant: *Quando* impiè aget, *&* videbit
ruinam Sion oculus noſter? Ipſi autem minimè ſecreta Domini cognoſcunt, 12
nec intelligunt *conſilium* ejus, quippe accumulat eos quaſi manipulos in aream.
Surge & occide congregatio Sion, populum enim qui in te eſt, ponam 13
fortem ſicut ferrum, & reliquias eorum robuſtas ſicut æs, & occides populos
permultos: *conſumes* autem coram Domino facultates eorum, & pretioſam
eorum pecuniam coram dominatore *univerſi mundi*.

CAP. V.

Nunc per turmas ſociaberis, civitas, quam obſidione obſidebant illi, qui 1
percutiebant virga maxillas judicum Iſrael. Et tu Bethlehem Ephrata *quaſi* 2
minima fuiſti, adeò ut computareris inter millia domus Jehuda, ex te coram
me prodibit Chriſtus, ut ſit dominium exercens in Iſrael, cujus nomen dictum
eſt ab æternitate à diebus ſeculi. Propterea tradentur tempore quo parturi- 3
ens pariet, & reſiduo fratrum ſuorum adjungentur filii Iſrael.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܢܬܒܘܢ ܐܢܫ ܬܚܝܬ ܓܦܬܗܘܢ ܘܬܚܝܬ ܬܐܬܗܘܢ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܕܡܙܝܥ ܠܗܘܢ. ܡܛܠ 4
ܕܦܘܡܗ ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܡܠܠ. * ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܢܗܠܟܘܢ ܐܢܫ ܒܫܡ 5
ܐܠܗܗ. ܘܚܢܢ ܢܗܠܟ ܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. ܠܥܠܡ ܘܠܥܠܡܝܢ. * ܒܗ ܕܝܢ ܙܒܢܐ 6
ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܟܢܫ ܠܪܚܝܩܐ ܘܠܡܒܕܪܐ ܐܩܒܠ. ܠܐܝܠܝܢ ܕܐܒܐܫܬ ܠܗܘܢ. * ܘܐܥܒܕ 7
ܫܪܟܐ ܠܡܒܕܪܐ. ܘܪܚܝܩܐ. ܠܥܡܐ ܥܫܝܢܐ. ܘܢܡܠܟ ܡܪܝܐ ܥܠܝܗܘܢ ܒܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ.
ܘܒܐܘܪܫܠܡ. ܡܢ ܗܫܐ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ. * ܐܢܬ ܕܝܢ ܡܓܕܠܐ ܪܥܝܐ ܘܥܡܛܢܐ ܕܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. 8
ܙܒܢܟܝ ܡܛܐ. ܘܐܬܐ ܫܠܝܛܐ ܩܕܡܝܐ ܕܡܠܟܘܬܐ ܕܒܪܬ ܐܘܪܫܠܡ. * ܗܫܐ ܠܡܢܐ 9
ܚܛܝܬܝ ܒܝܫܬܐ. ܕܡܠܟܐ ܠܝܬ ܠܟܝ. ܐܘ ܡܠܟܘܢܟܝ ܐܒܕܘ. ܕܐܚܕܘܟܝ ܚܒܠܐ
ܐܝܟ ܕܝܠܕܬܐ. * ܚܒܠܝ ܘܐܬܚܒܠܝ ܒܪܬ ܨܗܝܘܢ ܐܝܟ ܝܠܕܬܐ. ܡܛܠ ܕܗܫܐ ܬܦܩܝܢ ܡܢ 10
ܡܕܝܢܬܐ. ܘܬܥܡܪܝܢ ܒܚܘܪܒܐ. ܘܬܐܬܝܢ ܥܕܡܐ ܠܒܒܠ. ܘܬܡܢ ܬܬܦܪܩܝܢ. ܘܬܡܢ ܢܦܪܩܟܝ
ܡܪܝܐ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܒܥܠܕܒܒܝܟܝ. * ܗܫܐ ܢܬܟܢܫܘܢ ܥܠܝܟܝ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܕܐܡܪܝܢ 11
ܬܬܛܢܦ ܨܗܝܘܢ. ܘܬܚܙܐ ܒܗ̇ ܥܝܢܢ. * ܗܢܘܢ ܕܝܢ. ܠܐ ܝܕܥܘ ܡܚܫܒܬܗ 12
ܕܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܐܣܬܟܠܘ ܠܡܠܟܗ. ܕܟܢܫ ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܫܒܠܐ ܠܐܕܪܐ. * ܩܘܡܝ ܘܕܘܫܝ ܐܢܘܢ 13
ܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. ܡܛܠ ܕܩܪܢܬܟܝ ܐܥܒܕ ܕܦܪܙܠܐ. ܘܦܪܣܬܟܝ ܕܢܚܫܐ. ܘܬܕܘܩܝܢ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ.
ܘܬܚܪܡܝܢ ܩܢܝܢܗܘܢ ܠܡܪܝܐ. ܘܚܝܠܗܘܢ ܠܡܪܝܐ ܕܟܠܗ̇ ܐܪܥܐ. * ܗܫܐ ܬܦܩܝܢ 14
ܒܓܘܕܐ ܒܪܬ ܓܘܕܐ ܥܫܝܢܐ. ܕܩܡܘ ܥܠܝܢ. ܘܒܫܒܛܐ ܡܚܘ ܠܦܟܗ ܕܪܥܝܐ
ܕܐܝܣܪܝܠ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܗ *

* ܐܢܬ ܕܝܢ ܒܝܬ ܠܚܡ 1
ܐܦܪܬܐ. ܙܥܘܪܐ ܐܝܬܝܟܝ ܕܬܬܡܢܝܢ ܒܪܒܘܬܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܡܢܟܝ ܢܦܘܩ ܫܠܝܛܐ ܕܢܗܘܐ ܥܠ
ܐܝܣܪܝܠ. ܘܡܦܩܢܗ ܡܢ ܩܕܝܡ ܡܢ ܝܘܡܬ ܥܠܡܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܫܠܡ ܐܢܘܢ 2
ܥܕܡܐ ܠܙܒܢܐ ܕܝܠܕܬܐ ܬܐܠܕ. ܘܫܪܟܐ ܕܐܚܘܗܝ ܢܦܢܘܢ ܠܘܬ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ.

Sed confidebunt quiſque ſub vitibus ſuis, & 4
ſub ficubus ſuis; nec erit qui infeſtet eos:
quoniam os Domini potentiſſimi locutum eſt.
Omnium enim gentium quælibet ambulabit 5
in nomine dei ſui, nos autem ambulabimus
in nomine Domini Dei noſtri in æternum &
in ſecula. Eo quidem tempore, dicit Do- 6
minus, congregabo remotos, & diſperſos re-
cipiam, quibus malum intuleram: Finem 7
fauſtum faciam diſperſis, & remotos in po-
pulum potentem: regnabitque Dominus ſu-
per eos in monte Sionis & in Jeruſalem, hinc
ad ſeculum uſque. Tu verò turris depaſta & 8
obſcura filiæ Sionis, tempus tuum appropin-
quavit, & advênit princeps primus regni filiæ
Jeruſalem. Jam quarè commiſiſti ſcelus? num 9
rex non extat in te, an conſiliarii tui perie-
runt, quòd te dolores ut parturientis occupâ-
rint? Dole, & enitere filia Sionis ut partu- 10
riens; jam enim egredieris ab urbe, & habi-
tabis in deſerto, ac ibis Babylonem uſque: at
ibi liberaberis, ibique eruet te Dominus è
manu inimicorum tuorum. Jam congrega- 11
buntur adversùm te gentes multæ quæ dice-
bant, Contaminetur Sion, & aſpiciat in ea o-
culus noſter. Ipſæ verò ignorabant cogita- 12
tionem Domini, nec intelligebant conſilium
ejus, quòd ipſe congregâſſet eas ut ſpicas ad
aream. Surge, & tritura eas filia Sionis; nam 13
cornua tua reddam ferrea, & ungulas tuas æ-
neas: comminues gentes multas, & poſſeſſi-
onem earum Domino devovebis, & opes ea-
rum Domino univerſæ terræ. Nunc prodi- 14
bis cum turma O filia turmarum potentium:
quia inſurrexerunt in nos, & paſtoris Iſraelis
maxillam fuſte percuſſerunt.

CAP. V.

Tu verò Beth-lehem oppidum, num parvũ 1
es ut cenſearis inter myriadas Judæ? ex te
prodibit princeps qui præſit Iſraeli, cujus ex-
itus à principio eſt, à diebus æternis. Nunc 2
tradet eos uſque ad temp⁹ quo pepererit par-
turiens, ac reliquiæ fratrum ejus converten-
tur ad filios Iſraelis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ويستريح كل واحد تحت كرمته * وكل واحد تحت تينته * ولا يكون من يخوف * من اجل ان 4
فم الرب الضابط الكل تكلم بهذا * لان جميع الشعوب يسير كل واحد في طريقه * ونحن نسير 5
باسم الرب الهنا الي الابد وفيما بعد * في ذلك اليوم يقول الرب * اجمع المنكسرة والمبعودة اقبلها * 6
والذين ابعدتهم * واصنع المكسورة للبقية * والمبعودة الي امة قوية * ويملك الرب عليهم في 7
جبل صهيون * منذ الان والي الابد * وانت يا برج القطيع ابنة صهيون الكريبة * اليك ياتون *
ويدخل الرياسة الاولي المملكة من بابل لابنة اورشليم * والان لماذا علمت الشرور * هل ليس 8
لك ملك * مشورتك هلكت * لان الطلقات مسكتك مثل طلقات الوالدة * فتوجعي واقتربي 9
يا ابنة صهيون مثل التي تلد * من اجل انك الان تخرجين من المدينة * وتسكنين في 10
الصحراء * وتاتين الي بابل * من هناك ينجيك ومن هناك يفديك الرب الهك من يد اعدايك *
* والان تجمع اليك امم كثيرة * القايلون نشمت وتنظر الي صهيون عيوننا * فهم لم يعرفوا 11 12
فكر الرب * ولم يفهموا رايه * لان جمعهم مثل اعمار البيدر * قومي وادرسيهم يا ابنة صهيون * 13
لاني اصنع قرونك حديدا * واظلافك نحاسا * وتدوسين شعوبا كثيرة * وتحرمين للرب كثرتهم *
ووفرهم لرب الارض كلها * والان تسيج ابنة افرام بسياج * رتب علينا لزوما * بعصا يضربون 14
على خد قبايل اسرايل *

* الفصل الخامس *

* وانت يا بيت لحم بيت افراثا * لست بصغير انت ان تكون في الوف يهودا * لان منك يخرج لي من 1
يكون رييسا في اسرايل * ومخارجه في اسرايل منذ ايام الدهر * لاجل هذا تسلمهم الي زمان 2
الوالدة تلد * وبقايا اخوتهم يرجعون الي بني اسرايل *

Sed quieſcent unuſquiſque ſub viti ſua, 4
& unuſquiſque ſub ficu ſua; nec erit
qui terreat: quia os Domini omnia tenen-
tis locutum eſt hæc. Omnium enim popu- 5
lorum quiſque ambulabit in via ſua, ſed
nos ambulabimus in nomine Domini Dei
noſtri, in æternum & ultrà. Eo die, di- 6
cit Dominus, congregabo confractam; e-
jectam & quos amoveram, recipiam: Et 7
confractam ponã in reliquias, & ejectam
in potentẽ: regnabitque Dominus ſuper eos
in monte Sionis, ex nunc in æternum uſq;.
Porrò ad te O turris gregis, filia Sionis 8
miſera, ad te venient; & primus princi-
patus, regnum ſcilicet ex Babele, ingre-
dietur in filiam Jeruſalem. Nunc ergò 9
cur agnoviſti mala? annon habes regem?
conſilium tuum periit, quòd occupârint te
dolores ſimiles doloribus parturientis. Ve- 10
rùm forti ſis animo, & accede O filia Sio-
nis ut ea quæ parturit: nunc enim egre-
diêris ab urbe, & habitabis in deſerto,
venies in Babelem, & inde liberabit te,
indeque te redimet Dominus Deus tuus
de manu inimicorum tuorum. Et nunc 11
congregabuntur ad te gentes multæ quæ
dicebant; Inſultabimus, & videbunt in
Sione oculi noſtri. Nam ipſæ neſciebant 12
cogitationem Domini, nec intelligebant
conſilium ejus, quòd ipſe congregâſſet eos
ut manipulos areæ. Surge, & tritura eas 13
O filia Sionis: nam cornua tua reddam
ferrea, & ungulas tuas æneas, & tritu-
rabis populos multos, & anathemate de-
vovebis Domino multitudinem eorum,
& robur eorum Domino totius terræ. Et 14
nunc filia Aphremi ſepi circunſepietur:
præſcripſit nobis decreta: fuſti percutient
genam familiarum Iſraelis.

CAP. V.

Et tu O Beth-lehem domûs Ephratæ, 1
nequaquam ita parva es, ut non ſis in
millibus Judæ; quandoquidem ex te e-
greſſurus mihi eſt qui princeps erit in Iſ-
raele, cujus egreſſus in Iſraele ſunt ab
æternis diebus. Propterea trades eos uſ- 2
que ad tempus quo parturiens parturiet,
& reliquiæ fratrum eorum revertentur
ad filios Iſraelis.

מִיכָה: ו

Domini nominis ſublimitate in ,Domini fortitudine in paſcet & ſtabit Et
וְעָמַד וְרָעָה בְּעֹז יְהוָה בִּגְאוֹן שֵׁם יְהוָה 3
.terræ terminos ad uſque magnificabitur nunc quia :manebunt & ;ſui Dei
אֱלֹהָיו וְיָשָׁבוּ כִּי־עַתָּה יִגְדַּל עַד־אַפְסֵי־אָרֶץ :
cùm & , noſtram terram in venerit cùm Aſſur , pax iſte erit Et
וְהָיָה זֶה שָׁלוֹם אַשּׁוּר ׀ כִּי־יָבוֹא בְאַרְצֵנוּ וְכִי 4
,paſtores ſeptem eum *ſuper* ſtatuemus & , noſtris ædibus in calcaverit
יִדְרֹךְ בְּאַרְמְנוֹתֵינוּ וַהֲקֵמֹנוּ עָלָיו שִׁבְעָה רֹעִים
Aſſur terram *depaſcent* Et .hominum principes octo &
וּשְׁמֹנָה נְסִיכֵי אָדָם : וְרָעוּ אֶת־אֶרֶץ אַשּׁוּר 5
, Aſſur ab eruet & : ſuis gladiis in Nimrod terram & , gladio in
בַּחֶרֶב וְאֶת־אֶרֶץ נִמְרֹד בִּפְתָחֶיהָ וְהִצִּיל מֵאַשּׁוּר
.noſtris *terminis* in calcaverit cùm & ,noſtram terram in venerit cùm
כִּי־יָבוֹא בְאַרְצֵנוּ וְכִי יִדְרֹךְ בִּגְבוּלֵנוּ :
ros ſicut ,multorum populorum *interiore* in Jahacob reſiduum erit Et
וְהָיָה ׀ שְׁאֵרִית יַעֲקֹב בְּקֶרֶב עַמִּים רַבִּים כְּטַל 6
expectabit non quæ ,herbam ſuper imbres tanquam , Domino *cum* à
מֵאֵת יְהוָה כִּרְבִיבִים עֲלֵי־עֵשֶׂב אֲשֶׁר לֹא־יְקַוֶּה
reſiduum erit Et .*hominis* filios *præſtolabitur* nec , virum
לְאִישׁ וְלֹא יְיַחֵל לִבְנֵי אָדָם : וְהָיָה שְׁאֵרִית 7
leo ſicut , multorum populorum *interiori* in , gentibus in Jahacob
יַעֲקֹב בַּגּוֹיִם בְּקֶרֶב עַמִּים רַבִּים כְּאַרְיֵה
,tranſierit ſi qui : *pecoris greges* inter *leunculus ut* ,ſylvæ jumenta inter
בְּבַהֲמוֹת יַעַר כִּכְפִיר בְּעֶדְרֵי־צֹאן אֲשֶׁר אִם עָבַר
tua manus Exaltabitur .*eruens* non & ,rapuerit & ,conculcaverit &
וְרָמַס וְטָרַף וְאֵין מַצִּיל : תָּרֹם יָדְךָ 8
erit Et .ſuccidentur tui inimici omnes & ;tuos hoſtes ſuper
עַל־צָרֶיךָ וְכָל־אֹיְבֶיךָ יִכָּרֵתוּ : וְהָיָה 9
,*tuo interiori* de tuos equos faciã ſuccidere &,Dominus dixit ,illa die in
בַיּוֹם־הַהוּא נְאֻם־יְהוָה וְהִכְרַתִּי סוּסֶיךָ מִקִּרְבֶּךָ
urbes faciam ſuccidere Et .tuas quadrigas faciam perdere &
וְהַאֲבַדְתִּי מַרְכְּבֹתֶיךָ : וְהִכְרַתִּי עָרֵי 10
faciam ſuccidere Et .tuas munitiones omnes diruam & , tuæ terræ
אַרְצֶךָ וְהָרַסְתִּי כָּל־מִבְצָרֶיךָ : וְהִכְרַתִּי 11
.tibi erunt non *præſtigiatores* & , tua manu de maleficia
כְשָׁפִים מִיָּדֶךָ וּמְעוֹנְנִים לֹא יִהְיוּ־לָךְ :
non & : *tuo interiori* de tuas ſtatuas & ,tua ſculptilia faciam ſuccidere Et
וְהִכְרַתִּי פְסִילֶיךָ וּמַצֵּבוֹתֶיךָ מִקִּרְבֶּךָ וְלֹא־ 12
tuos lucos evellam Et .tuarum manuum operi ultrà te incurvabis
תִשְׁתַּחֲוֶה עוֹד לְמַעֲשֵׂה יָדֶיךָ : וְנָתַשְׁתִּי אֲשֵׁירֶיךָ 13
naſo in faciam Et .tuas civitates delebo & : *tuo interiori* de
מִקִּרְבֶּךָ וְהִשְׁמַדְתִּי עָרֶיךָ : וְעָשִׂיתִי בְּאַף 14
.audierunt non quæ , gentibus *cum* ultionem ira in &
וּבְחֵמָה נָקָם אֶת־הַגּוֹיִם אֲשֶׁר לֹא שָׁמֵעוּ :

CAP. VI. ו

,montibus *cum litiga* , Surge : *dicens* Dominus quod quæſo Audite
שִׁמְעוּ־נָא אֵת אֲשֶׁר־יְהוָה אֹמֵר קוּם רִיב אֶת־הֶהָרִים 1
litem montes Audite .tuam vocem colles audient &
וְתִשְׁמַעְנָה הַגְּבָעוֹת קוֹלֶךָ : שִׁמְעוּ הָרִים אֶת־רִיב 2
Domino *lis* quia , terræ fundamenta fortia & ,DOMINI
יְהוָה וְהָאֵתָנִים מֹסְדֵי אָרֶץ כִּי רִיב לַיהוָה
mi Popule *argumentabitur* Iſrael cum & ,ſuo populo cum
עִם־עַמּוֹ וְעִם־יִשְׂרָאֵל יִתְוַכָּח : עַמִּי 3
Quia .me *in reſponde* ? te feci laborare quo & , tibi feci quid
מֶה־עָשִׂיתִי לְךָ וּמָה הֶלְאֵתִיךָ עֲנֵה בִי : כִּי 4
: te redemi ſervorum domo è & , Ægypti terra è te feci aſcendere
הֶעֱלִתִיךָ מֵאֶרֶץ מִצְרַיִם וּמִבֵּית עֲבָדִים פְּדִיתִיךָ
.Mirjam & ,Aharon ,Moſeh *tuas facies ad* miſi &
וָאֶשְׁלַח לְפָנֶיךָ אֶת־מֹשֶׁה אַהֲרֹן וּמִרְיָם :

Verſio VULG. LAT.

4 Et ſtabit, & paſcet in fortitudine Domini, in ſublimitate nominis Domini Dei ſui : & convertentur, quia nunc magnificabitur uſque ad terminos terræ. 5 Et erit iſte pax : cùm venerit Aſſyrius in terram noſtram, & quando calcaverit in domibus noſtris : & ſuſcitabimus ſuper eum ſeptem paſtores, & octo primates hominum. 6 Et paſcent terram Aſſur in gladio,& terram Nemrod in lanceis ejus : & liberabit ab Aſſur cùm venerit in terram noſtram, & cũ calcaverit in finib⁹ noſtris. 7 Et erunt reliquiæ Jacob in medio populorum multorum quaſi ros à Domino, & quaſi ſtillæ ſuper herbam , quæ non expectat virum , & non præſtolatur filios 8 hominum. Et erunt reliquiæ Jacob in Gentibus in medio populorum multorum , quaſi leo in jumentis ſylvarum,& quaſi catulus leonis in gregibus pecorum : qui cùm tranſierit, & conculcaverit,& ceperit, non eſt qui eru- 9 at. Exaltabitur manus tua ſuper hoſtes tuos, & omnes inimici tui 10 interibunt. Et erit in die illa, dicit Dominus: auferam equos tuos de medio tuî , & diſperdam 11 quadrigas tuas. Et perdam civitates terræ tuæ, & deſtruam omnes munitiones tuas,& auferam maleficia de manu tua, & divi- 12 nationes non erunt in te. Et perire faciam ſculptilia tua, & ſtatuas tuas de medio tuî : & non adorabis ultrà opera manuum tua- 13 rum. Et evellam lucos tuos de medio tuî, & conteram civitates 14 tuas. Et faciam in furore & in indignatione ultionem in omnibus gentibus, quæ non audierunt.

CAP. VI.

1 Audite quæ Dominus loquitur ; Surge, contende judicio adverſùm montes ,& audiant colles 2 vocem tuam. Audiant montes judicium Domini, & fortia fundamenta terræ : quia judicium Domini cum populo ſuo, & cum 3 Iſrael dijudicabitur. Popule meus, quid feci tibi, aut quid moleſtus fui tibi ? Reſponde mihi. 4 Quia eduxi te de terra Ægypti,& de domo ſervientium liberavi te: & miſi ante faciem tuam Moyſen, & Aaron, & Mariam ?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

4 Καὶ στήσεται, καὶ ὄψεται, καὶ ποιμανεῖ τὸ ποίμνιον αὐτοῦ ἐν ἰσχύϊ κύριος, καὶ ἐν τῇ δόξῃ (η) ὀνόματος κυρίου θεοῦ αὐτῶν ὑπάρξουσι· διότι νῦν μεγαλυνθήσονται ἕως ἄκρων τῆς γῆς. 5 Καὶ ἔσται αὕτη (θ) εἰρήνη, Ἀσσοὺρ ὅταν ἐπέλθῃ ἐπὶ τὴν γῆν ὑμῶν, καὶ ὅταν ἐπιβῇ ἐπὶ τὴν χώραν ὑμῶν, καὶ ἐπεγερθήσονται ἐπ' αὐτὸν ἑπτὰ ποιμένες, 6 καὶ ὀκτὼ δήγματα ἀνθρώπων. Καὶ ποιμανοῦσι τὸν Ἀσσοὺρ ἐν ῥομφαίᾳ, καὶ τὴν γῆν τοῦ Νεβρὼδ ἐν τῇ τάφρῳ αὐτῆς· καὶ ῥύσεται ἐκ τοῦ Ἀσσοὺρ ὅταν ἐπέλθῃ ἐπὶ τὴν γῆν ὑμῶν, καὶ 7 ὅταν ἐπιβῇ ἐπὶ τὰ ὅρια ὑμῶν. Καὶ ἔσται τὸ ὑπόλειμμα τοῦ Ἰακὼβ ἐν τοῖς ἔθνεσιν ἐν μέσῳ λαῶν πολλῶν, ὡς δρόσος παρὰ κυρίου πίπτουσα, καὶ ὡς ἄρνες (ι) ἐπὶ ἄγρωστιν, ὅπως μὴ συναχθῇ μηδεὶς, μηδὲ ὑποστῇ ἐν υἱοῖς 8 ἀνθρώπων. Καὶ ἔσται τὸ ὑπόλειμμα (κ) Ἰακὼβ ἐν τοῖς ἔθνεσιν ἐν μέσῳ λαῶν πολλῶν, ὡς λέων ἐν κτήνεσιν ἐν τῷ δρυμῷ, καὶ ὡς σκύμνος ἐν ποιμνίοις προβάτων, ὃν τρόπον ὅταν διέλθῃ, καὶ διαστείλας ἁρπάσῃ, 9 καὶ μὴ ᾖ ὁ ἐξαιρούμενος. Ὑψωθήσεται ἡ χείρ σου ἐπὶ τοὺς θλίβοντάς σε, καὶ πάντες οἱ ἐ- 10 χθροί σου (λ) ἐξολοθρευθήσονται. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγει κύριος, (μ) ἐξολοθρεύσω τοὺς ἵππους ἐκ μέσου σου, καὶ ἀπολῶ 11 τὰ ἅρματά σου, Καὶ (") ἐξολοθρεύσω τὰς πόλεις τῆς γῆς σου, καὶ ἐξαρῶ πάντα τὰ ὀχυρώματά σου· καὶ (ν) ἐξολοθρεύσω τὰ φάρμακά σου ἐκ τῶν χειρῶν σου, καὶ ἀποφθεγγόμενοι οὐκ 12 ἔσονται ἐν σοί. Καὶ (") ἐξολοθρεύσω τὰ γλυπτά σου, καὶ τὰς στήλας σου ἐκ μέσου σου, καὶ οὐκ ἔτι μὴ προσκυνήσεις τοῖς ἔργοις τῶν χει- 13 ρῶν σου. Καὶ ἐκκόψω τὰ (ξ) ἄλση ἐκ μέσου 14 σου, καὶ ἀφανιῶ τὰς πόλεις σου. Καὶ ποιήσω (ο) ἐν ὀργῇ καὶ ἐν θυμῷ ἐκδίκησιν ἐν τοῖς ἔθνεσιν, ἀνθ' ὧν οὐκ (π) εἰσήκουσαν.

Et ſtabit, & videbit, & paſcet gregem ſuum in fortitudine Dominus: & in gloria nominis Domini Dei ſui erunt : quia nunc magnificabuntur uſque ad terminos terræ. Et erit hæc pax: Aſſur quando ſupervenerit in terram veſtram, & quando aſcenderit ſuper regionem veſtram; & conſurgent ſuper eum ſeptem paſtores, & octo (d) morſus hominum : Et paſcent Aſſur in gladio : & terram Nebrod in (e) fovea ejus. Et liberabit de Aſſur, cùm venerit ſuper terram veſtram, & cùm aſcenderit ſuper terminos veſtros. Et erunt reliquiæ Jacob in gentibus in medio populorum multorum, quaſi ros à Domino cadens, & quaſi (f) agni ſuper gramen : ut non congregetur quiſquam, neque ſit in filiis hominum. Et erunt reliquiæ Jacob in gentibus in medio populorum multorum, quaſi leo in jumentis in ſaltu, & quaſi catulus leonis in gregibus pecorum, quomodò ſi pertranſeat, & dividens rapiat, & non ſit, qui eruat. Elevabitur manus tua ſuper eos, qui tribulant te : & omnes inimici tui perdentur. Et erit in die illa, dicit Dominus , Interficiam equos tuos de medio tuî, & diſperdam currus tuos, Et ſubvertam civitates terræ tuæ, & auferam omnes munitiones tuas: & auferam veneficia tua de manibus tuis: & (g) qui loquuntur, non erunt in te: Et diſperdam ſculptilia tua, & ſtatuas tuas de medio tuî : & ultrà non adorabis opera manuum tuarum : Et ſuccîdam lucos de medio tuî: & demoliar civitates tuas: Et faciam in ira & in furore ultionem in gentibus pro eo, quòd non exaudierunt. 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14

MS. A. (η) τοῦ ὀνόματος κυρίου τοῦ θεοῦ (θ) ἡ εἰρήνη, ὅταν Ἀσσύριος ἐπέλθῃ (ι) ἐπ' (κ) τοῦ Ἰακὼβ (λ) ἐξολεθρευθήσονται. (μ) ἐξολεθρεύσω τοὺς ἵππους σου ἐκ (") ἐξολεθρεύσω (ν) ἐξαρῶ πάντα τὰ φάρμακά (") ἐξολεθρεύσω (ξ) ἄλση σου ἐκ (ο) ἐν θυμῷ καὶ ἐν ὀργῇ (π) εἰσήκουσάν μου.

ΚΕΦ. ϛʹ.

1 Ἀκούσατε δὴ (α) λόγον· Κύριος κύριος εἶπεν, Ἀνάστηθι, κρίθητι πρὸς τὰ ὄρη, καὶ ἀκου- 2 σάτωσαν (") βουνοὶ φωνήν σου. Ἀκούσατε (β) ὄρη τὴν κρίσιν τοῦ κυρίου, καὶ αἱ φάραγγες θεμέλια τῆς γῆς, ὅτι κρίσις τῷ κυρίῳ πρὸς τὸν λαὸν αὐτοῦ, καὶ μετὰ τοῦ Ἰσραὴλ διελεγχθήσεται. 3 Λαός μου, τί ἐποίησά σοι, ἢ τί ἐλύπησά σε, ἢ τί παρηνώχλησά σοι; ἀποκρίθητί μοι. 4 Διότι ἀνήγαγόν σε ἐκ γῆς Αἰγύπτου, καὶ ἐξ οἴκου δουλείας ἐλυτρωσάμην σε, καὶ ἐξαπέστειλα πρὸ προσώπου σου τὸν Μωσῆν, καὶ Ἀαρὼν, καὶ Μαριάμ.

CAP. VI.

Audite (a) nunc verbum : 1 Dominus Dominus dixit, Surge, judicare apud montes : & audiant colles vocem tuam. Audite 2 (b) montes judicium Domini, & valles fundamenta terræ : quia judicium Domino adverſùs populum ſuum : & cum Iſrael judicabitur. Populus meus, quid 3 feci tibi, aut quid contriſtavi te, aut in quo moleſtus fui tibi ? reſponde mihi. Quia eduxi te de 4 terra Ægypti, & de domo ſervitutis redemi te, & miſi ante faciem tuam Moyſem, & Aaron, & Mariam ?

MA. A. (α) λόγον κυρίου, ἃ ὁ κύριος εἶπεν, Ἀνάστηθι καὶ κρίθητι (") οἱ βουνοὶ (β) βουνοὶ τὴν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

וִיקוּם וְיִשְׁלוֹט בִּתְקוֹף מִן קֳדָם יְיָ בִּרְבוּת שְׁמָא דַייָ אֱלָהֵיהּ וִיתוּבוּן מִבֵּינֵי גָלְוָתְהוֹן אֲרֵי 4
כְּעַן יִסְגֵּי שְׁמֵיהּ עַד סִיפֵי אַרְעָא : וִיהֵי מִכְּבַן שְׁלָמָא לָנָא אֲתוּרָאָה אֲרֵי יֵעוֹל בְּאַרְעָנָא 5
וַאֲרֵי יִדְרוֹךְ בְּבִירָנְיָתָנָא וּנְמַנֵּי עֲלָנָא שִׁבְעָא מַלְכִּין וְתַמְנְיָא רַבְרְבֵי אֱנָשָׁא : וְיִרְעוּן יָת 6
אַרְעָא דַאֲתוּר בְּחַרְבָּא וְיָת אַרְעָא נִמְרוֹד בִּתְקוֹף כְּרַכָּהָא וִישֵׁזְבִנָנָא מֵאֲתוּר דְּלָא יֵעוֹל
בְּאַרְעָנָא וְלָא יִדְרוֹךְ בִּתְחוּמָנָא : וִיהֵי שְׁאָרָא דְבֵית יַעֲקֹב בְּגוֹ עַמְמִין סַגִּיאִין כְּטַלָּא מִן 7
קֳדָם יְיָ וּכְרְסִיסֵי מַלְקוֹשָׁא דִּי עַל עִסְבָּא דִּי לָא מוֹרִיךְ לֶאֱנָשָׁא וְלָא מְכַתַּר לְבַר אֱנָשָׁא :
וִיהֵי שְׁאָרָא דְיַעֲקֹב בְּעַמְמַיָּא בְּגוֹ עַמְמִין סַגִּיאִין כְּאַרְיָא בִּבְעִירָא בְחוּרְשָׁא וּכְלֵיתָא 8
בְּעֶדְרֵי עָנָא דְּאִם יֶעְדֵּי וְיִרְמוֹס וְיִקְטוֹל וְלֵית דִּי מְשֵׁיזֵיב : סַגִּי מִכְּבַן תִּתְקַף יְדָךְ יִשְׂרָאֵל 9
עַל סָנְאָךְ וְכָל בַּעֲלֵי דְבָבָךְ יִשְׁתֵּיצוּן : וִיהֵי בְּעִדָּנָא הַהִיא אֲמַר יְיָ וְאֵשֵׁיצֵי סוּסְוָת עַמְמַיָּא 10
מִבֵּינָךְ וְאוֹבֵיד רְתִיכֵיהוֹן : וְאֵשֵׁיצֵי קִרְוֵי עַמְמַיָּא מֵאַרְעָךְ וַאֲפַגַּר כָּל כְּרַכֵּיהוֹן תַּקִּיפַיָּא : 11
וְאֵשֵׁיצֵי חָרְשִׁין מִבֵּינָךְ וּמְעַנְנִין לָא יְהוֹן לָךְ : וְאֵשֵׁיצֵי צַלְמֵי עַמְמַיָּא וְקָמָתְהוֹן מִבֵּינָךְ וְלָא 12 13
תִשְׁתַּעְבֵּד עוֹד לְעוֹבָדֵי יְדָךְ : וַאֲעַקַּר שְׁתִילֵי עַמְמַיָּא מִבֵּינָךְ וְאֵשֵׁיצֵי בַּעֲלֵי דְבָבָךְ : וְאַעְבֵּד 14 15
בִּרְגַז וּבְחֵמָא יָת פּוּרְעָנוּת דִּין מִן עַמְמַיָּא דְּלָא קַבִּילוּ אוּלְפַן אוֹרָיְתָא :

ו

שְׁמַעוּ כְעַן יָת דַּייָ אֲמַר קוּם דּוּן עִם טוּרַיָּא וְיִשְׁמְעָן רָמָתָא קָלָךְ : שְׁמַעוּ טוּרַיָּא יָת 1 2
דִּינַיָּא דַייָ וְעִקְרַיָּא מִיסוֹדֵי אַרְעָא אֲרֵי דִינָא קֳדָם יְיָ עִם עַמֵּיהּ וְעִם יִשְׂרָאֵל עָבֵיד
תּוֹכָחָה : עַמִּי מָה טָבָא אֲמַרִית לְמֶעְבַּד לָךְ וְלָא עֲבַדִית אוֹ מְרוּעָא קַשְׁיָא אַסְגֵּיתִי 3
עֲלָךְ אַסְהֵד בִּי : אֲרֵי אַסֵּקְתָּךְ מֵאַרְעָא דְמִצְרַיִם וּמִבֵּית עַבְדוּתָא פְּרַקְתָּךְ וּשְׁלָחִית 4
קֳדָמָךְ תְּלָתָא נְבִיַּין מֹשֶׁה לְאַלָּפָא מְסִירַת דִּינִין אַהֲרֹן לְכַפָּרָה עַל עַמָּא וּמִרְיָם לְאוֹרָאָה
לִנְשַׁיָּא :

PARAPH CHALD. Verſio Latina.

Proinde ſtabit & dominabitur fortitudine à præſentia Dñi[*promanante,*] & 4
magnitudine nominis Dñi Dei ſui, atq; convertentur de medio captivitatis
ſuæ: nam magnificabitur nomen ej⁹ uſq; ad fines terræ. Et erit deinceps pax 5
nobis : ꝙ ſi Aſſyrius terram noſtrã ingreſſus fuerit,atq; ædes noſtras calcave-
rit, ſup nos conſtituemus ſeptẽ reges, & octo hominum principes. Qui de- 6
paſcent terram Aſſur gladio, & terrã Nemrod in fortitudine turriũ ejus : &
liberabit nos ab Aſſur, ut non ingrediatur in terrã noſtram, nec calcet termi-
nos noſtros. Erunt autẽ reliquiæ domus Jahacob in medio populorũ multo- 7
rum, ſicut ros à facie Dñi [*defluens,*] & ſicut guttæ imbris ſerotini ſup her-
bã, quæ non expectat virũ nec filium hominis præſtolatur. Erunt demum 8
reliquiæ Jahacob inter gentes in medio populorum multorum ſicut leo in
beſtiis ſylvæ, & velut leæna in gregib⁹ oviũ: quæ ſi tranſierit & conculcave-
rit occiderítque,non erit qui eruat. Multum deinceps prævalebit manus tua, 9
ô Iſrael, ſup hoſtes tuos, atq; omnes inimici tui abſcindentur.Et fiet illo tem- 10
pore, dicit Dñs, diſperdã equos populorum de medio tui, atque currus eo-
rum perdam. Subvertam etiam gentiũ civitates de terra tua; nec non omnes 11
eorum arces munitas deſtruam. Succidam & maleficos de medio tui,& præ- 12
ſtigiatores non erunt tibi. Concîdam inſuper ſimulachra populorum & ſta- 13
tuas eorum de medio tui, & non ſubjicieris ultrà operibus manuum tua-
rum. Denique eradicabo plantationes gentium de tui medio, ac extermina- 14
bo inimicos tuos. Atque exequar cum ira & furore ultionem judicii in popu- 15
los, eò quòd haud doctrinam Legis ſuſceperint.

CAP. VI.

Audite nunc quæ Dñs ait:Surge, judicio contende cum *montibus*,et audiant 1
colles vocem tuam. Audite montes *diſceptationes* Dñi, et radices fundamen- 2
torum terræ, ſiquidem judicium eſt coram Dño cum populo ſuo, et cum Iſra-
el diſputationẽ inſtituit.Populi mi, quid boni dixi me facturũ tibi ꝙ non fe- 3
cerim ? aut quam infirmitatẽ gravem multiplicavi ſup te, teſtimoniũ perhibe
in me. Quoniã aſcendere te feci de terra Ægypti,et de domo ſervitutis rede- 4
mi te : miſique ante te tres prophetas,Moyſen [*videlicet*] ut doceret judicio-
rũ traditionẽ, Aharon ut expiaret populum, et Mariã ut inſtruet mulieres.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܢܩܘܡ. ܘܢܪܥܐ ܒܥܘܫܢܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܒܫܘܒܚܐ ܕܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܗ. ܘܢܬܦܢܘܢ. 3
ܡܛܠ ܕܗܫܐ ܢܪܒܐ. ܥܕܡܐ ܠܣܘܦܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ. * ܘܢܗܘܐ ܫܠܡܐ. ܘܐܬܘܪܝܐ ܡܐ ܕܐܬܐ 4
ܠܐܪܥܢ. ܘܕܪܟ ܒܐܕܪܘܢܝܢ. ܢܩܝܡ ܥܠܘܗܝ ܫܒܥܐ ܪܥܘܬܐ. ܘܬܡܢܝܐ ܓܒܪܐ ܪܘܪܒܢܐ.
* ܘܢܪܥܘܢ. ܠܐܪܥܐ ܕܐܬܘܪ ܒܣܝܦܐ. ܘܠܐܪܥܐ ܕܢܡܪܘܕ ܒܚܡܬܗ. ܘܢܦܪܘܩ ܡܢ ܐܬܘܪܝܐ. ܕܠܐ ܢܐܬܐ 5
ܠܐܪܥܢ. ܘܠܐ ܢܕܪܘܟ ܒܬܚܘܡܝܢ. * ܘܢܗܘܘܢ ܫܪܟܢܗ ܕܝܥܩܘܒ. ܒܥܡܐ. ܒܝܢܝ ܥܡܡܐ 6
ܣܓܝܐܐ. ܐܝܟ ܛܠܠܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܐܝܟ ܪܣܝܣܐ ܕܥܠ ܥܣܒܐ. ܕܠܐ ܡܣܟܐ ܠܒܪܢܫܐ. ܘܠܐ
ܡܣܬܟܪ ܠܒܢܝܢܫܐ. * ܘܢܗܘܘܢ ܫܪܟܢܗ ܕܝܥܩܘܒ ܒܥܡܡܐ. ܒܝܢܝ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܐܝܟ 7
ܐܪܝܐ ܒܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ. ܘܐܝܟ ܓܘܪܝܐ ܕܐܪܝܐ ܒܓܙܪܐ ܕܥܢܐ. ܕܡܐ ܕܥܒܪ ܘܕܫ: ܛܪܦ.
ܘܠܝܬ ܕܡܦܨܐ. * ܬܬܪܝܡ ܐܝܕܟ ܥܠ ܣܢܐܝܟ. ܘܟܠܗܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝܟ ܢܬܘܒܕܘܢ. * ܒܗܘ 8 9
ܝܘܡܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܘܒܕ ܪܟܫܝܟ ܡܢ ܓܘܟ. ܘܐܘܒܕ ܡܪܟܒܬܟ. * ܘܐܘܒܕ 10
ܩܘܪܝܐ ܕܐܪܥܟ. ܘܐܗܦܘܟ ܟܠܗܘܢ ܚܣܢܝܟ. * ܘܐܘܒܕ ܚܪܫܐ ܡܢ ܐܝܕܝܟ. ܘܩܨܘܡܐ 11
ܠܐ ܢܗܘܘܢ ܠܟ. * ܘܐܘܒܕ ܦܬܟܪܝܟ ܘܩܝܡܬܟ. ܡܢ ܓܘܟ. ܘܠܐ ܬܣܓܘܕ 12
ܠܥܒܕ ܐܝܕܝܟ. * ܘܐܘܒܕ ܐܫܝܪܝܟ ܡܢ ܓܘܟ. ܘܐܚܪܒ ܩܘܪܝܟ. * ܘܐܥܒܕ ܒܪܘܓܙܐ 13 14
ܘܒܚܡܬܐ ܬܒܥܬܐ ܡܢ ܥܡܡܐ ܐܝܠܝܢ ܕܠܐ ܫܡܥܘ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܘ *

* ܫܡܥܘ ܡܕܡ ܕܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܩܘܡ ܕܘܢ ܥܡ ܛܘܪܐ. ܘܢܫܡܥܘܢ ܩܠܟ ܪܡܬܐ. 1
* ܫܡܥܘ ܛܘܪܐ ܕܝܢܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܥܘܡܩܐ ܕܫܬܐܣܘܗ̇ ܕܐܪܥܐ. ܕܕܐܢ ܡܪܝܐ ܥܡ ܥܡܗ. 2
ܘܠܐܝܣܪܝܠ ܡܟܣ. * ܥܡܝ. ܡܢܐ ܥܒܕܬ ܠܟ. ܐܘ ܡܢܐ ܐܠܐܨܬܟ. ܐܝܬܐ ܠܝ ܣܗܕܐ. * ܠܐ 3 4
ܐܣܩܬܟ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ: ܘܡܢ ܒܝܬ ܥܒܕܘܬܐ ܦܪܩܬܟ. ܘܫܕܪܬ ܩܕܡܝܟ ܠܡܘܫܐ
ܘܠܐܗܪܘܢ ܘܠܡܪܝܡ.

Et ſurget, paſcétque in fortitudine Domini, 3
& in gloria nominis Domini Dei ſui; &
convertentur: quia tum creſcet uſque ad fines terræ, Et erit pax. Cúmque venerit Aſ- 4
ſyrius in patriam noſtram, & deambulaverit
in palatiis noſtris; ſuſcitabimus in eum ſeptem paſtores, & octo homines magnates;
Qui terræ Aſſyriæ gladio occurrent, & terræ 5
Nemrodi, iræque ipſius: & liberabit nos ab
Aſſyrio, ne veniat in patriam noſtram, neque
gradiatur in terminis noſtris. Et erunt re- 6
liquiæ Jacobi in populo inter gentes multas,
tanquam ros à Domino, & tanquam ſtillæ ſuper gramen, qui nemini ſupereſt, nullíque reſiduus eſt. Erúntque reliquiæ Jacobi in po- 7
pulo inter gentes multas, ut leo inter animalia ovina, & ut catulus leonis in grege ovium; qui cùm decreverit ac deliberaverit,
prædatur nemine eripiente. Attolletur ma- 8
nus tua ſuper oſores tuos, & omnes inimici
tui peribunt. Die enim illo, dicit Dominus, 9
perdam equos tuos de medio tui, perdam
currus tuos, Perdámque civitates terræ tuæ, 10
& evertam omnes urbes tuas: Magos per- 11
dam è manibus tuis, & præſtigiatores non
erunt ampliùs tibi: Perdam ſculptilia tua 12
& excelſa tua de medio tui, & non adorabis
ampliùs opus manuum tuarum: Perdam 13
quoque plantas tuas de medio tui, & urbes
tuas vaſtabo: Denique perſequar in ira 14
& furore vindictam à gentibus quæ non auſcultaverint.

CAP. VI.

Audite jam quid dixerit Dominus; Surge, 1
contende cum montibus, & audiant vocem
tuam colles. Audite montes & profunda 2
fundamentorum terræ, litem Domini: contendit enim Dominus cum populo ſuo, & Iſraelem arguit. Populo mi, quid feci tibi? 3
aut quam moleſtiam intuli tibi? produc mihi
teſtes. Nónne extraxi te de terra Ægypti, & 4
de domo ſervitutis liberavi te, & miſi ante
te Moſen, Aharonem, & Mariam?

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ويقوم ويرا * ويرعي الرب قطيعه بقوة * وبمجد اسم الرب الههم يوجدون * من اجل انهم 3
الان سيعظمون الي اقطار الارض * ويكون هذه السلامة اذا اتي الموصلي الي ارضنا * واذا وطي 4
علي كورتنا * ويقوم عليه سبعة رعاة وثمانية عظماء من الناس * ويرعون الموصل بسيف * 5
وارض نمرود بحفرتها * وينقذهم اذا اتي علي ارضنا * واذا وطي علي حدودنا * ويصير بقيه
يعقوب في الامم في وسط شعوب كثيرة * مثل ندي هابط من قبل الرب * ومثل خراف علي 6
جبل * كيلا يجمع ولا واحد * ولا يقف في بني البشر * ويصير بقيه يعقوب في الامم في وسط شعوب 7
كثيرة * مثل اسد في بهايم في الفلاة * ومثل الشبل في قطعان الغنم * كما انه اذا جاز وقطع
يفترس * ولا يكون من يخلص * ترتفع يدك علي محزنيك * وجميع اعدايك يستاصلون * ويكون 8 9
في ذلك اليوم يقول الرب * استاصل خيولك من وسطك * وابيد مركباتك * واستاصل مدن 10
ارضك * واهلك جميع حصونك * وانزع السحر من يديك * والمتكلمون لا يكونون فيك * 11
* واستاصل منحوتاتك ونصباتك من وسطك * ولا تسجدين بعد لاعمال يديك * واكسر 12 13
النصبات من وسطك * وابيد مدنك * واصنع برجز وبغضب انتقاما في الامم * من اجل انهم 14
لم يسمعوا *

* الفصل السادس *

* اسمعوا الان ما قاله الرب * قم تحاكم مع الجبال * ولتسمع الاكام صوتك * اسمعوا ايها 1 2
الشعوب حكم الرب * والاودية اساسات الارض * لان للرب حكومة مع شعبه * ومع اسرايل
يتناظر * يا شعبي ماذا صنعت بك * او بماذا احزنتك * او بماذا ضررت بك * اجبني * من اجل 3 4
اني اصعدتك من ارض مصر * ومن بيت العبودية انقذتك * وارسلت قدام وجهك موسي
وهرون ومريم *

Et ſtabit, ac videbit, paſcetque Dominus 3
gregem ſuum in fortitudine, & in gloria
nominis Domini Dei ſui invenientur, quia
nunc magnificabuntur uſq; ad fines terræ.
Erit autem pax iſta cùm venerit Aſſy- 4
rius in terram noſtram, cúmque calcaverit regionem noſtram. Surgent enim
adverſùs eum ſeptem paſtores & octo
magnates ex hominibus; Et Aſſyriam 5
gladio paſcent, & terram Nemrodi cum
fovea ipſius: & redimet eos cùm venerit ſuper terram noſtram, cúmque calcaverit terminos noſtros. Et fient reli- 6
quiæ Jacobi inter gentes in medio populorum multorum, ſicut ros à Domino
deſcendens, & ſicut agni ſuper gramen:
ut ne vel unus congregetur, neque maneat inter filios mortalium. Et fient re- 7
liquiæ Jacobi inter gentes in medio populorum multorum, ceu leo inter jumenta in campo, & ut leunculus inter greges ovium. Quemadmodum tranſiens
& diſſecans prædatur nemine evadente;
Elevabitur manus tua ſuper affligen- 8
tes te, & omnes inimici tui eradicabuntur. Et erit eo die, dicit Dominus, 9
ut evellam equos tuos è medio tui, &
perdam currus tuos: Excindam urbes 10
terræ tuæ, & perdam omnes arces tuas:
Auferam magiam è manibus tuis, & 11
loquentes non ſint in te: Evellam ſcul- 12
ptilia tua & ſtatuas tuas è medio tui,
nec adores in poſterum opificia manuum
tuarum: Confringam ſtatuas è medio 13
tui, perdamque urbes tuas: Et faciam 14
cum ira & exardeſcentia vindictam in
gentibus, eò quòd non audierint.

CAP. VI.

Audite nunc quid dixerit Dominus: 1
Surge, litem inſtitue cum montibus, &
audiant colles vocem tuam. Audite O 2
populi judicium Domini, & valles fundamenta terræ: eſt enim Domino lis cum
populo ſuo, & cum Iſraele contendit.
O mi popule, quid feci tibi? aut qua in 3
re contriſtavi te? aut quâ in re læſi te?
reſponde mihi. Nam ego te eduxi de 4
terra Ægypti, & de domo ſervitutis
liberavi te, miſique ante faciem tuam
Moſen, Haronem, & Mariam.

מיכה: ז

quid & , Moab rex Balac *conſuluerit* quid nunc memento , mi Popule
5 עַמִּי זְכָר־נָא מַה־יָּעַץ בָּלָק מֶלֶךְ מוֹאָב וּמֶה־
,Ghilghal ad uſque Sithim de ,Behor filius Bilham ei reſponderit
עָנָה אֹתוֹ בִּלְעָם בֶּן־בְּעוֹר מִן־הַשִּׁטִּים עַד־הַגִּלְגָּל
? Dominum præoccupabo quo In .Domini juſtitias *ſciendum* *ad*
6 לְמַעַן דַּעַת צִדְקוֹת יְהוָה׃ בַּמָּה אֲקַדֵּם יְהוָה
,*aſcenſionibus* in eum præoccupabo Nunquid .*celſitudinis* Deo me curvabo
אִכַּף לֵאלֹהֵי מָרוֹם הַאֲקַדְּמֶנּוּ בְעוֹלוֹת
millibus in Dominus volet Nunquid ? *anni* *filiis* vitulis in
7 בַּעֲגָלִים בְּנֵי שָׁנָה׃ הֲיִרְצֶה יְהוָה בְּאַלְפֵי
meū primogenitum dabo nunquid ? olei torrentium *myriadibus in*,arietum
אֵילִים בְּרִבְבוֹת נַחֲלֵי־שָׁמֶן הַאֶתֵּן בְּכוֹרִי
Indicat ? meæ animæ *peccatum* ,mei ventris fructum ? *meum ſcelus*
8 פִּשְׁעִי פְּרִי בִטְנִי חַטַּאת נַפְשִׁי׃ הִגִּיד
, te à *quærens* Dominus quid & , bonum quid homo tibi
לְךָ אָדָם מַה־טּוֹב וּמָה־יְהוָה דּוֹרֵשׁ מִמְּךָ
ſe humiliare & ,miſericordiam diligere & ,judicium facere *niſi*
כִּי אִם־עֲשׂוֹת מִשְׁפָּט וְאַהֲבַת חֶסֶד וְהַצְנֵעַ
,*clamabit* civitatem ad Domini Vox .tuo Deo cum ambulando
9 לֶכֶת עִם־אֱלֹהֶיךָ׃ קוֹל יְהוָה לָעִיר יִקְרָא
? eā conſtituit quis & ,virgam Audite .tuum nomen timebit *ſapientia* &
וְתוּשִׁיָּה יִרְאֶה שְׁמֶךָ שִׁמְעוּ מַטֶּה וּמִי יְעָדָהּ׃
.*abominatus tenuitatis* modius &,*impietatis* theſauri impii domo *vir num* Adhuc
10 עוֹד הַאִשׁ בֵּית רָשָׁע אֹצְרוֹת רֶשַׁע וְאֵיפַת רָזוֹן זְעוּמָה׃
? *fraudis lapidum loculo in &* , *impietatis bilancibus in ero purus* Nunquid
11 הַאֶזְכֶּה בְּמֹאזְנֵי רֶשַׁע וּבְכִיס אַבְנֵי מִרְמָה׃
ſunt locuti ejus habitatores & , *rapina* ſunt repleti *ejus* divites Cujus
12 אֲשֶׁר עֲשִׁירֶיהָ מָלְאוּ חָמָס וְיֹשְׁבֶיהָ דִּבְּרוּ־
ego etiam Et .eorum ore in fraudulenta eorum lingua & ,mendacium
13 שָׁקֶר וּלְשׁוֹנָם רְמִיָּה בְּפִיהֶם׃ וְגַם־אֲנִי
Tu .tua peccata *ſuper* deſolando , te percutiendo feci ægrotare
14 הֶחֱלֵיתִי הַכּוֹתֶךָ הַשְׁמֵם עַל־חַטֹּאתֶךָ׃ אַתָּה
,*apprehendet & : tuo interiore in* tua *depreſſio* & ,ſaturaberis non & ,comedes
תֹאכַל וְלֹא תִשְׂבָּע וְיֶשְׁחֲךָ בְּקִרְבֶּךָ וְתַסֵּג
,ſeminabis Tu .dabo gladio , *produxerit* quem & : *producet non &*
15 וְלֹא תַפְלִיט וַאֲשֶׁר תְּפַלֵּט לַחֶרֶב אֶתֵּן׃ אַתָּה תִזְרַע
,*muſtum* & : oleo te unges non & ,*olivam* calcabis tu : metes non &
וְלֹא תִקְצוֹר אַתָּה תִדְרֹךְ־זַיִת וְלֹא־תָסוּךְ שֶׁמֶן וְתִירוֹשׁ
omne & , Homri *ſtatuta eſt cuſtoditum* Et .vinum bibes non &
16 וְלֹא תִשְׁתֶּה־יָּיִן׃ וְיִשְׁתַּמֵּר חֻקּוֹת עָמְרִי וְכֹל
pro , eorum conſiliis in ambulâſtis & , Achab domus opus
מַעֲשֵׂה בֵית־אַחְאָב וַתֵּלְכוּ בְּמֹעֲצוֹתָם לְמַעַן
opprobrium & ,ſibilum in *ejus* habitatores &,deſolationem in te *me dare*
תִּתִּי אֹתְךָ לְשַׁמָּה וְיֹשְׁבֶיהָ לִשְׁרֵקָה וְחֶרְפַּת
.*portabitis* mei populi
עַמִּי תִּשָּׂאוּ׃

CAP. VII. ז

.vindemiæ racemi ſicut , æſtatis *collectiones* ſicut fui quia , mihi Væ
1 אַלְלַי לִי כִּי הָיִיתִי כְּאָסְפֵּי־קַיִץ כְּעֹלְלֹת בָּצִיר
.mea anima deſideravit *primitivum* , comedendum ad botrus Non
אֵין־אֶשְׁכּוֹל לֶאֱכֹל בִּכּוּרָה אִוְּתָה נַפְשִׁי׃
.non *hominem* inter rectus & , terra de miſericors Periit
2 אָבַד חָסִיד מִן־הָאָרֶץ וְיָשָׁר בָּאָדָם אָיִן
.*ſagena venabuntur* ſuū fratrem *vir* ,*inſidiabuntur ſanguinibus ipſi* Univerſi
כֻּלָּם לְדָמִים יֶאֱרֹבוּ אִישׁ אֶת־אָחִיהוּ יָצוּדוּ חֵרֶם׃
judicans & ,*poſtulans* princeps benefaciendo pro ,*volis* malefaciendo Pro
3 עַל־הָרַע כַּפַּיִם לְהֵיטִיב הַשַּׂר שֹׁאֵל וְהַשֹּׁפֵט
, *ipſe ſuæ* animæ *contritionem loquens* magnus & : retributionem propter
בַּשִּׁלּוּם וְהַגָּדוֹל דֹּבֵר הַוַּת נַפְשׁוֹ הוּא
.*eam complicarunt &*
וַיְעַבְּתוּהָ׃

Verſio VULG. LAT.

5 Popule meus, memento, quæſo,
quid cogitaverit Balach rex Moab, & quid reſponderit ei Balaam filius Beor, de Setim uſque
ad Galgalam, ut cognoſceres juſtitias
6 Domini. Quid dignum offeram Domino? curvabo genu
Deo excelſo? numquid offeram
ei holocautomata, & vitulos anniculos.
7 Numquid placari poteſt
Dominus in millib⁹ arietum, aut
in multis millib⁹ hircorū pinguium? numquid dabo primogenitū
meū pro ſcelere meo, fructū ventris mei pro peccato animæ meæ?
8 Indicabo tibi, ô homo, quid ſit
bonum, & quid Domin⁹ requirat
à te: Utique facere judicium, &
diligere miſericordiam & ſolicitum ambulare cum Deo tuo.
9 Vox Domini ad civitatem clamat, & ſal⁹ erit timentib⁹ nomen
tuū: Audite tribus, & quis approbabit
10 illud? Adhuc ignis in domo impii theſauri iniquitatis, &
11 menſura minor iræ plena. Numquid juſtificabo ſtateram impiam,
12 & ſacelli pondera doloſa? In
quibus divites ejus repleti ſunt
iniquitate, & habitantes in ea
loquebantur mendacium, & lingua eorum fraudulenta in ore
13 eorum. Et ego ergò cœpi percutere te perditione ſuper peccatis
14 tuis. Tu comedes, & non
ſaturaberis: & humiliatio tua
in medio tuî: & apprehendes,
& non ſalvabis: & quos ſalvaveris,
15 in gladium dabo. Tu ſeminabis, & non metes: tu calcabis
olivam, & non ungêris oleo;
& muſtum, & non bibes vinum.
16 Et cuſtodîſti præcepta Amri, &
omne opus domûs Achab, &
ambulâſti in voluntatibus eorum,
ut darem te in perditionē, & habitantes in ea in ſibilum: & opprobrium populi mei portabitis.

CAP. VII.

1 VÆ mihi, quia factus ſum ſicut qui colligit in autumno racemos
vindemiæ: non eſt botrus ad
comedendum, præcoquas ficus de-
2 ſideravit anima mea. Periit Sanctus de terra, & rectus in hominibus
non eſt: omnes in ſanguine
inſidiantur, vir fratrem ſuum ad
3 mortem venatur. Malum manuū
ſuarum dicunt bonum: princeps
poſtulat, & judex in reddendo
eſt: & magnus locutus eſt deſiderium
animæ ſuæ, & conturbaverunt eam.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

5 Λαός μου μνήσθητι δή, τί ἐβουλεύσατο κατὰ
σοῦ Βαλὰκ βασιλεὺς Μωάβ, καὶ τί ἀπεκρίθη
αὐτῷ Βαλαὰμ υἱὸς τοῦ Βεώρ, ἀπὸ τῶν
σχοίνων ἕως τοῦ Γαλγάλ, ὅπως γνωσθῇ ἡ δι-
6 καιοσύνη τοῦ κυρίου. Ἐν τίνι καταλάβω τὸν
κύριον, ἀντιλήψομαι θεοῦ μου ὑψίστου; εἰ
καταλήψομαι αὐτὸν ἐν ὁλοκαυτώμασιν, ἐν
7 μόσχοις ἐνιαυσίοις; Εἰ προσδέξεται (α) κύριος
ἐν χιλιάσι κριῶν, ἢ ἐν μυριάσι (β) χιμάρων
πιόνων; εἰ δῶ πρωτοτόκα (γ) μου ὑπὲρ
ἀσεβείας, καρπὸν κοιλίας μου ὑπὲρ ἁμαρτίας
8 ψυχῆς μου; Εἰ ἀνηγγέλη σοι ἄνθρωπε
τί καλόν; ἢ τί κύριος ἐκζητεῖ
παρὰ σοῦ, ἀλλ' ἢ τοῦ ποιεῖν κρίμα, καὶ ἀγαπᾷν
(δ) ἔλεον, καὶ ἕτοιμον εἶναι τοῦ πορεύεσθαι
9 μετὰ κυρίου (ε) θεοῦ σου; Φωνὴ κυρίου τῇ
πόλει ἐπικληθήσεται, καὶ σώσει (ϛ) φοβουμένους
τὸ ὄνομα αὐτοῦ. ἄκουε φυλή, καὶ (ζ)
10 τίς κοσμήσει πόλιν; Μὴ πῦρ καὶ οἶκος
(η) ἀνόμου θησαυρίζων θησαυροὺς (θ) ἀνόμους,
11 καὶ μετὰ ὕβρεως ἀδικίας; Εἰ δικαιωθήσεται
ἐν ζυγῷ ἄνομος, καὶ ἐν μαρσίππῳ
12 στάθμια δόλου, Ἐξ ὧν τὸν πλοῦτον αὐτῶν
ἀσεβείας (ι) ἔπλησαν, καὶ οἱ κατοικοῦντες
αὐτὴν ἐλάλουν ψευδῆ, καὶ ἡ γλῶσσα αὐτῶν
13 ὑψώθη ἐν τῷ στόματι αὐτῶν; Καὶ ἐγὼ ἄρξομαι
τοῦ πατάξαι σε, (κ) ἀφανιῶ σε ἐν ταῖς
14 ἁμαρτίαις σου. Σὺ φάγεσαι, καὶ οὐ μὴ ἐμπλησθῇς,
καὶ (λ) συσκοτάσει ἐν σοί, καὶ ἐκνεύσει,
καὶ οὐ μὴ διασωθῇς, καὶ ὅσοι ἂν διασωθῶσιν,
15 εἰς ῥομφαίαν παραδοθήσονται. Σὺ
σπερεῖς, καὶ οὐ μὴ ἀμήσῃς, σὺ πιέσεις ἐλαίαν,
καὶ οὐ μὴ ἀλείψῃ ἔλαιον, καὶ οἶνον, καὶ οὐ μὴ
πίητε, καὶ ἀφανισθήσεται νόμιμα λαοῦ μου.
16 Καὶ ἐφύλαξας τὰ δικαιώματα Ζαμβρί, καὶ
πάντα τὰ ἔργα οἴκου Ἀχαάβ, καὶ ἐπορεύθητε
ἐν ταῖς (ϛ) ὁδοῖς αὐτῶν, ὅπως (μ) παραδῶ
σε εἰς ἀφανισμόν, καὶ τοὺς κατοικοῦντας αὐτὴν
εἰς συρισμόν, καὶ ὀνείδη λαῶν λήψεσθε.

Populus meus, recordare nunc, 5
quid cogitaverit adverſùm te
Balac rex Moab, & quid reſponderit ei Balaam filius Beor de (c)
Schœnis uſq; ad Galgal; ut cognoſceretur juſtitia Domini. In 6
quo apprehendam Dominum, ſuſcipiam Deum meum excelſum?
ſi apprehendam eum in holocauſtis, in vitulis anniculis? Si 7
ſuſcipiet Dominus in millibus arietum, vel in decem millibus
hircorum pinguium? Si dabo
primogenita mea pro impietate,
fructum ventris mei pro peccato
animæ meæ? (d) Si annuntiatum 8
eſt tibi, homo, quid bonum?
aut quid Dominus quærat à te?
niſi ut facias judicium; & diligas
miſericordiam, & (e) paratus ſis ambulare cum Domino
Deo tuo? Vox Domini civitati 9
(f) clamabit, & ſalvabit timentes
nomen ejus. Audi, tribus: &
quis ornabit civitatem? Nunquid 10
ignis, & domus iniqui theſaurizans
theſauros iniquos, &
cum contumelia injurias? Si juſtificabitur 11
in ſtatera iniquus, &
in ſacello pondera fraudulenta;
De quibus divitias ſuas impietatis 12
repleverunt, & qui habitant
in ea, loquuti ſunt (g) mendacia,
& lingua eorum exaltata eſt in
ore eorum? Et (h) ego incipiā 13
percutere te, delebo te in peccatis
tuis. Tu comedes, & non ſaturaberis, 14
& contenebreſcet in te,
& declinabit, & (i) non ſalvaberis:
& quicunque ſalvati
fuerint, gladio tradentur. Tu ſeminabis, 15
& non metes: tu premes
olivā, & non ungêris oleo, et
(k) vinū, & non bibetis: & diſſipabuntur
legitima populi mei. Et 16
(l) cuſtodîſti juſtificationes Zambri,
& omnia opera domûs Achaab:
& ambulâſtis in viis
eorum; ut traderem te in perditionem,
& habitatores ejus in ſibilum: & opprobria populorum accipietis.

MS.A. (α) ὁ κύριος (β) ἀρνῶν (γ) μου* ἀσεβείας, (δ) ἔλεος, (ε) τοῦ θεοῦ (ϛ) τοὺς φοβουμένους (ζ) τί (η) ἀνόμων (θ) ἀνομίας, μετὰ ὕβρεως ἀδικίᾳ; Καὶ εἰ (ι) ἐνέπλησαν, (κ) καὶ ἀφανιῶ σε ἐπὶ ταῖς (λ) σκοτάσει (ϛ) βουλαῖς (μ) παραδώσω

ΚΕΦ. ζʹ.

1 (α) ΟΙμοι, ὅτι ἐγενήθην ὡς συνάγων
καλάμην ἐν ἀμητῷ, καὶ ὡς ἐπιφυλλίδα ἐν
τρυγητῷ, οὐχ ὑπάρχοντος βότρυος τοῦ φα-
2 γεῖν τὰ πρωτόγονα. (β) οἴμοι ψυχή, Ὅτι
ἀπόλωλεν εὐσεβὴς ἀπὸ τῆς γῆς, καὶ κατορθῶν
ἐν ἀνθρώποις οὐχ ὑπάρχει. πάντες
εἰς αἵματα δικάζονται, ἕκαστος τὸν πλησίον
3 αὐτοῦ ἐκθλίβουσιν ἐκθλιβῇ, Ἐπὶ τὸ
κακὸν τὰς χεῖρας αὐτῶν ἑτοιμάζουσιν. ὁ
ἄρχων αἰτεῖ, καὶ ὁ κριτὴς εἰρηνικοὺς λόγους
ἐλάλησε, καταθύμιον ψυχῆς αὐτοῦ ἐστιν. καὶ
ἐξελοῦμαι τὰ ἀγαθὰ αὐτῶν

CAP. VII.

VÆ mihi, quia factus ſum, 1
ſicut qui congregat ſtipulam in
meſſe, & ſicut (a) racemum in
vindemia, cùm non ſit botrus ad
comedendum (b) primitiva. Væ
mihi, anima, Quia periit (c) pius 2
de terra: & qui corrigat, in
hominibus non eſt. Omnes in ſanguines
judicantur; unuſquiſque
proximum ſuum tribulat tribulatione:
In malum manus ſuas 3
præparant. Princeps poſtulat, &
judex verba pacifica loquutus
eſt: deſiderium animæ ſuæ eſt.
Et auferam bona eorum,

MS.A. (α) Οἴμμοι, ὅτι ἐγενόμην (β) οἴμμοι ψυχή, Ὅτι ἀπόλωλεν εὐλαβὴς ἀπὸ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 עַמִּי אִדְּכַר כְּעַן מַה מְלַךְ בָּלָק מַלְכָּא דְמוֹאָב וּמָא אֲתֵיב יָתֵיהּ בִּלְעָם בַּר בְּעוֹר הֲלָא
6 גְבוּרָן אִתְעֲבִידָא לְכוֹן מִמֵּישַׁר שִׁטִּין עַד בֵּית גִלְגָּלָא בְּדִיל לְמִדַּע זַכְוָתָא דַיָי׃ בְּמָה
אֶפְלַח קֳדָם יְיָ אֶשְׁתַּעְבֵּד לֵאלָהָא דִשְׁכִנְתֵּיהּ בִּשְׁמֵי מְרוֹמָא הַאֶפְלַח קֳדָמוֹהִי בַּעֲלָוָן
7 בְּעֶגְלִין בְּנֵי שְׁנָא׃ הֲיִתְרְעֵי יְיָ בְּאַלְפֵי דִכְרִין בְּרִבְבַת נַחֲלִין דִּמְשַׁח הַאֶתֵּן בּוּכְרִי חֲלַף
8 חוֹבִי חֲבִיב מְעַי חֲלַף חֲטָאֵי נַפְשִׁי׃ הִיחַוֵּה לָךְ אֱנָשָׁא מַה טָב וּמָה יְיָ תָּבַע מִנָּךְ אֱלָהֵן
9 לְמֶעְבַּד דִּין דִּקְשׁוֹט וּלְמִרְחַם גְּמִילוּת חִסְדָּא וַהֲוֵי צְנִיעַ לְהַלָּכָא בְּדַחְלְתָא דֶאֱלָהָךְ׃ קָל
נְבִיַּיָא דַיָי עַל קַרְתָּא מְכַלְּן וּמַלְפַיָּא דְחָלִין לִשְׁמָא שְׁמַע מַלְכָּא וְשִׁלְטוֹנָא וּשְׁאָר עַמָּא
10 11 דְאַרְעָא׃ עוֹד הַאִית בֵּית רַשִּׁיעָא אוֹצְרִין דִּרְשַׁע וּמְכִילָן דְּשִׁקַר מַיְתִין לוּט׃ הַיִזְכּוֹן
12 בְּמוֹזְנָן דִּרְשַׁע וּבְכִיס דְּבֵיהּ מַתְקְלִין רַבְרְבִין וְדַעְדְּקִין׃ דְּעַתִּירָהָא מְלַן אוֹצְרֵיהוֹן חֲטוּף
13 וְיָתְבָהָא מְמַלְּלִין שְׁקַר וְלִישָׁנְהוֹן נִכְלִין בְּפוּמְהוֹן׃ וְאַף אֲנָא אַיְתֵיתִי עֲלָךְ מְרַע וּמְחָא
14 אֲצַדְּנָךְ עַל דַּחֲטָתָא׃ אַתְּ תֵּיכוֹל וְלָא תִסְבַּע וִיהֵי לָךְ לִמְרַע בִּמְעָךְ וְתַדְבֵּיק וְלָא תְשֵׁיזֵב
15 וְדִי תְּשֵׁיזֵב לְחַרְבָּא אֶמְסַר׃ אַתְּ תִּזְרַע וְלָא תֶחְצוֹד אַתְּ תְּבַדֵּר זֵיתִין וְלָא תְּשׁוּף מְשַׁח
16 וְתַעְצַר עִנְבִין וְלָא תִשְׁתֵּי חֲמַר׃ וְעַל דִּי נְטַרְתּוּן גְּזֵירַת בֵּית עָמְרִי וַעֲבַדְתּוּן עוֹבָדֵי בֵּית
אַחְאָב וְהַלֵּכְתּוּן בְּנִימוֹסֵיהוֹן בְּדִיל לְמִמְסַר יָתָךְ לְצָדוּ וְיָתְבָהָא לְאִשְׁתְּמָמוּ וְחִסּוּדֵי עַמִּי
תְּקַבְּלוּן׃

ז

1 אֲמַר נְבִיָּא וַי לִי אֲרֵי הֲוֵיתִי כְּמֵסַף טָבַיָּא בְּעִדָּן דַּאֲבַדוּ חֲסִידַיָּא מִן אַרְעָא הָא כְסִיוֹפֵי
2 קַיְטָא כְּעוֹלְלָן בָּתַר קְטוּף לֵית גְּבַר דְּבֵיהּ עוֹבָדִין טָבִין לְטָבַיָּא חֲמַדַת נַפְשִׁי׃ אֲבַדוּ
חֲסִידַיָּא מִן אַרְעָא וּדְקָשִׁיט בַּאֲנָשָׁא לֵית כּוּלְּהוֹן לְמִשְׁפַּךְ דַּם זַכַּי כָּמְנִין גְּבַר יַת אֲחוּהִי
3 מָסְרִין לִגְמִירָא׃ מַבְאֲשִׁין בִּידֵיהוֹן וְלָא מוֹטִיבִין שִׁלְטוֹנָא שָׁאֵל וְדַיָּנָא אָמַר עֲבֵיד לִי
דְּאֶשְׁלַם לָךְ וְרַבָּא מְמַלֵּל תַּחְמוֹדֵי נַפְשֵׁיהּ וַי עֲלֵיהוֹן עַל דְּקַלְקְלוּהָא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Popule mi, memento quæſo quid conſultârat Balach rex Moab, quídque re- 5
ſponderat ei Balham filius Beor: nonne egregia facinora edita ſunt in veſtri
gratiā à convalle Sittim uſq; ad domum Galgalæ, quò agnoſcerentur juſtitiæ
Domini? In quo ſerviā corā Domino, me ſubmittā Deo cuj⁹ in cœlis altiſſi- 6
mis reſidet majeſtas? nunquid corā illo venerabor cum holocauſtis, [*aut*] vi-
tulis anniculis? Num ſibi Domin⁹ complacet in millibus arietū, in myriadib⁹ 7
torrentiū olei? Nunquid dabo primogenitū meū pro flagitio meo, dilectū
viſcerum meorum pro peccatorū expiatione animæ meæ? Num annuntiabit 8
tibi homo quid bonū ſit? quid verò Domin⁹ requirit à te, niſi ut judiciū ve-
ritatis exerceas, atq; diligas miſericordiæ retributionem? Eris ergo humilis
ambulando in timore Dei tui. Voce Prophetæ Domini ad civitatē cla- 9
mant, & doctores timent nomen [*Domini*:] audite rex & præfecti, reſiduúſq;
terræ popul⁹: Nunquid adhuc extat dom⁹ impii? theſauri impietatis & men- 10
ſuræ iniquitatis adducunt maledictionē. Nunquid juſti habebuntur in ſtateris 11
impietatis, & in ſacculo in quo ſunt pondera majora & minima? Cuj⁹ divi- 12
tes replent theſauros ſuos rapina, & habitatores ej⁹ loquuntur mendaciū, &
linguæ eorum fraudulentæ ſunt in ore eorū. Ego quoq; adduxi contra te in- 13
firmitatē & plagam, deſtruam te eò ꝙ peccâſti. Tu comedes, & non ſatura- 14
beris; ſed erit tibi in infirmitatem in utero tuo: & aſſequêris, & non eripi-
es, & quos tu ſalvaveris, gladio tradam. Tu ſeminabis & non metes, tu ex- 15
cuties olivas, nec oleo ungêris: calcabis & uvas, quarū vinum non bibes. Sed 16
eò ꝙ decreta dom⁹ Amri cuſtodiſtis, & feciſtis opera domus Achab, atq; am-
bulâſtis in legitimis eorū, ut traderē te in deſolationem, & habitatores ejus
in ſtuporem: opprobria populi mei recipietis.

CAP. VII.

DIxit Propheta: Væ mihi, quia fui quando deficiebant boni, tempore quo 1
perierunt miſericordes de terra: ecce ſicut fruct⁹ æſtivales, ſicut racemi poſt
vindemiā: non eſt vir qui habeat opera bona, bonos [*tamen*] appetit anima
mea. Perierunt miſericordes de terra, & verax inter homines non eſt: omnes 2
parant inſidias ſanguinis juſti effundendi cauſa, unuſquiſq; fratrē ſuū ad ex-
terminiū *produnt*. Mala operantur manib⁹ ſuis, & non benefaciunt: princeps 3
poſtulat, & judex dicit, Fac pro me, *ut* retribuam tibi: & magnus loquitur deſideria animæ ſuæ: væ eis *quia* depravarunt eam.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܥܡܝ ܐܬܕܟܪ ܗܫܐ ܡܢܐ ܐܬܡܠܟ ܥܠܝܟ ܒܠܩ ܡܠܟܐ ܕܡܘܐܒ. ܘܡܢܐ ܥܢܝܗܝ 5
ܒܠܥܡ ܒܪ ܒܥܘܪ. ܡܢ ܫܛܝܡ ܘܥܕܡܐ ܠܓܠܓܠܐ. ܡܛܠ ܕܬܕܥ ܙܕܝܩܘܬܗ ܕܡܪܝܐ.
* ܒܡܢܐ ܐܩܕܘܡ ܠܡܪܝܐ: ܘܐܣܓܘܕ ܠܐܠܗܐ ܡܪܝܡܐ. ܐܩܕܘܡܝܘܗܝ ܒܥܠܘܬܐ ܫܠܡܬܐ. ܐܘ 6
ܒܥܓܠܐ ܒܢܝ ܫܢܬܐ. * ܠܐ ܡܬܪܥܐ ܡܪܝܐ ܒܐܠܦܐ ܕܕܟܪܐ. ܐܦܠܐ ܒܪܒܘܬܐ ܕܥܓܠܐ ܕܡܫܡܢܐ. 7
ܐܢ ܐܬܠ ܒܘܟܪܝ. ܚܘܠܒܐ ܗܘ ܠܝ. ܘܦܐܪܐ ܕܟܪܣܝ ܚܛܝܬܐ ܗܘ ܕܢܦܫܝ. * ܚܘܝܬܟ ܒܪܢܫܐ: 8
ܡܢܐ ܕܡܥܕܪ. ܘܡܢܐ ܒܥܐ ܡܢܟ ܡܪܝܐ. ܕܬܥܒܕ ܕܝܢܐ. ܘܬܪܚܡ ܛܝܒܘܬܐ. ܘܬܗܘܐ ܡܛܝܒ ܠܡܐܙܠ
ܒܬܪ ܐܠܗܟ. * ܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܕܝܢܬܐ ܢܩܪܐ. ܘܡܠܦ ܠܕܚܠܝ ܫܡܗ. ܫܡܥܘ 9
ܫܒܛܐ. ܡܢ ܢܣܗܕ. * ܬܘܒ ܢܘܪܐ ܒܒܝܬܗ ܕܥܘܠܐ. ܘܐܘܨܪܐ ܕܥܘܠܐ. ܘܡܟܝܠܬܐ ܙܥܘܪܬܐ 10
ܕܢܟܠܐ. * ܐܝܟܢܐ ܢܙܕܕܩܘܢ ܒܡܣܐܬܐ ܕܥܘܠܐ. ܘܒܟܝܣܐ ܕܡܬܩܠܐ ܕܢܟܠܐ. * ܕܥܬܝܪܝܗ 11 12
ܡܠܘ ܢܟܠܐ. ܘܥܡܘܪܝܗ ܡܡܠܠܝܢ ܕܓܠܘܬܐ. ܘܠܫܢܗܘܢ ܢܟܝܠ ܒܦܘܡܗܘܢ. * ܐܦ ܐܢܐ 13
ܐܫܪܐ ܠܡܡܚܝܟ. ܘܐܚܪܒܟ. ܡܛܠ ܚܛܗܝܟ. * ܬܐܟܘܠ ܘܠܐ ܬܣܒܥ. ܘܬܗܘܐ ܠܟ 14
ܫܘܚܢܐ ܒܓܘܟ. ܘܬܕܪܟ. ܘܠܐ ܬܦܨܐ. ܘܡܕܡ ܕܬܦܨܐ. ܠܚܪܒܐ ܐܫܠܡ. * ܐܢܬ ܬܙܪܘܥ. ܘܠܐ ܬܚܨܘܕ. ܐܢܬ 15
ܬܥܨܘܪ ܙܝܬܐ. ܘܠܐ ܬܬܡܫܚ ܡܫܚܐ. ܘܬܥܨܘܪ ܚܡܪܐ. ܘܠܐ ܬܫܬܐ. * ܛܪܝܬ ܦܘܩܕܢܘܗܝ 16
ܕܥܡܪܝ. ܘܟܠܗܘܢ ܥܒܕܐ ܕܒܝܬ ܐܚܒ: ܘܗܠܟܬܘܢ ܒܡܠܟܝܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܐܬܠܝܟ
ܠܬܗܪܐ. ܘܠܥܡܘܪܝܗ ܠܡܫܪܩܘܬܐ. ܘܚܣܕܗ ܕܥܡܝ ܬܩܒܠܘܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܘ̄ *

* ܘܝ ܠܝ ܕܗܘܝܬ ܐܝܟ ܠܩܛܐ ܕܩܝܛܐ. ܘܐܝܟ ܥܘܠܠܬܐ ܕܩܛܦܐ. ܠܝܬ ܣܓܘܠܐ ܠܡܐܟܠ. 1
ܘܒܟܘܪܬܐ ܪܓܬ ܢܦܫܝ. * ܐܒܕ ܚܣܝܐ ܡܢ ܐܪܥܐ. ܘܬܪܝܨܐ ܠܝܬ ܒܒܢܝܢܫܐ. ܟܠܗܘܢ 2
ܠܕܡܐ ܟܡܢܝܢ. ܘܓܒܪ ܠܐܚܘܗܝ. ܨܝܕܝܢ ܠܚܒܠܐ. * ܐܝܕܝܗܘܢ ܡܛܝܒܢ ܠܒܝܫܬܐ. ܘܠܐ 3
ܡܛܝܒܝܢ. ܫܠܝܛܐ ܫܐܠ ܗܒ. ܘܕܝܢܐ ܐܡܪ ܫܠܘܡ. ܘܪܒܐ ܡܡܠܠ ܪܓܬܐ ܕܢܦܫܗ.

Populemi, recordare jam quid contra te cogitârit Balac Rex Moabi, & quid reſponderit ei Belaam filius Beoris, à Setim ad Galgalem uſque; eò quòd agnoverit juſtitiam Domini. 5 Quânam re antevertam ad Dominum, & placebo Deo excelſo? num antevertam ad eum cum holocauſtis perfectis, an vitulis anniculis? 6 Non delectatur Dominus millibus arietum, neque myriadibus armenti juvencarum. 7 Si offeram primogenitũ meum, crimini mihi eſt; ſi fructus ventris mei, peccato ſunt animæ meæ. Indicabo tibi homo quid proſit, 8 quid requirat à te Dominus: Ut facias judicium, beneficentiam diligas, & ſis paratus ad ſequendum Deum tuum. Vox Domini ſuper 9 urbem doctrinam prædicat reverentibus nomen ejus. Audi O Tribus eum qui conteſtatur, Adhuc ignem eſſe in domo ſcelerati, horrea 10 iniquitatis, & menſuram parvam doloſam. Quonam pacto juſtificarentur cum ſtatera 11 iniqua, & cum marſupio ponderum fraudulentorum? Quia divites ejus pleni ſunt dolo, 12 & habitatores ejus loquuntur mendacium, & lingua eorum doloſa eſt in ore ipſorum; Ego quoque incipiam te percutere; & cor- 13 rumpam te propter peccata tua. Comedes, & 14 non ſaturaberis; & dyſenteria erit in inteſtinis tuis: aſſequêris *bona*, ſed non ſervabis; & quicquid ſervaveris, gladio tradam. Tu ſeres, 15 at non metes: tu olivas exprimes, at non ungêris oleo: vinũ exprimes, at nõ bibes. Quia ob- 16 ſervâſti præcepta Amri, et omnia facinora domûs Ahabi, & ambulâſtis in conſiliis eorum: idcircò exponã illam ſtupori, & cives ejus ſibilo, & opprobrium populi mei reportabitis.

CAP. VII.

VÆ mihi, quia facta ſum tanquam ſpicilegium æſtatis, & quaſi racematio vindemiæ: 1 nullus extat botrus ad comedendum, & *fructum* præcocem expetit anima mea. Periit 2 integer de terra, nec eſt qui ſit rectus inter homines: omnes ſtruunt inſidias, & quiſque fratrem ſuum venatur ad interitum. Manus 3 eorum promptæ ſunt ad malum, nec benefaciunt: præfectus poſtulat *dicens*; Affer: judex dicit, Da munus: & princeps loquitur voluntatem animi ſui:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

5 * يا شعبي اذكر ما روي عليك به بالاق ملك مواب * وبماذا اجابه بلعام بن باعور * من الجبال
الي الجلجال * كي يعرف عدل الله * * الاصحاح السابع عشر * وهو الثالث من النبوة *
6 * بماذا ادرك الرب * واعتصد بالهي العلي * ادركه بمحرقات * بعجول حولية * ايقبل الرب 7
بالوف كباش * او بربوات تيوس سمان * عملت بكوري * نفاق * وعن بطني من اجل الخطية
لنفسي * قد اخبرتك ايها الانسان ما هو الحسن * او ما يطلبه الرب منك * الا ان تصنع حكما * 8
وتحب الرحمة * وتكون مستعدا ان تسير مع الرب الهك * صوت الرب في المدينة يدعو ويخلص 9
خائفي اسمه * اسمع ايها السبط * فانه يزين كثيرا * ليس نار * وبيت الاثمة كنز كنوز الاثم * 10
ومع الكبرياء مظالم * فهل يتبرر الاثيم بالميزان وصحاب الغش بالمقدار * التي منها اكملوا 11 12
غنا نفاقهم * وسكانها يخطبون الكذب * ولسانهم ارتفع في فمهم * وانا ابتدي ان اضربك * 13
وابيدك بخطاياك * تاكل ولا تشبع * ويظلم فيك وتطرد * وانت لا تخلص * والذين يخلصون 14
للسيف يسلمون * انت تزرع ولا تحصد * انت تعصر الزيتونة ولا تدهن بالزيت * ولا تشربون 15
خمرا * ويبيد نظر شعبي * وحفظت حقوق عمري * وجميع اعمال بيت احاب * وسلكتم في روياتهم * 16
كي اسلمك للفناء * وسكان هذا للصفير * وياخذون تعيير الشعوب *

* الفصل السابع *

* الويل لي لاني صرت مثل لقاط قصبة في الحصاد * وكلقاط بعار في القطاف * ليس عنقود موجودا 1
للاكل اول ما يخرج * الويل لنفسي لان الورع هلك من الارض * وليس مقوم في البشر موجودا * 2
جميعهم على الدماء يقصون * كل واحد يضطهد قريبه اضطهادا * يعدون ايديهم للشر * الرئيس 3
يطلب * والحاكم يتكلم بكلمات سلامة * بهوى نفسه هو *

O mi popule, recordare quod conſilium habuerit contra te Balac rex Moabi, & quid reſponderit ei Balaam filius Beoris, à montibus ad Galgalem uſque; ut innoteſceret juſtitia Dei. 5

Textus decimus ſeptimus, hujus autem Prophetiæ tertius.

Quânam re aſſequar Dominum, & opem impetrabo ab altiſſimo Deo meo? an aſſequar cum holocauſtis, vitulis anniculis? 6 *An ſuſcipiet Dominus millia arietum, aut myriades hircorum pinguium? Facere* (i. ſacrificare) *primogenitos meos & fructum ventris mei pro peccato animæ meæ, impium eſſet.* 7 *Jam indicavi tibi O homo, quid rectum ſit: ecquid poſtulat à te Dominus, niſi ut facias judicium, & diligas miſericordiam, & paratus ſis ambulare cum Domino Deo tuo?* 8 *Vox Domini in urbe clamat, & eruit timentes nomen ſuum. Audi O tribus: nam ipſe multùm ornat, non ignis.* 9 *At domus iniquorum condit theſauros iniquitatis, & cum ſuperbia impietates.* 10 *Num juſtificabitur iniquus per ſtateram & lances in pondere doloſas,* 11 *Ex quibus perfectas reddidêre divitias impietatis ſuæ? & habitatores ejus loquuntur mendacium, & lingua eorum extollitur in ore ipſorum.* 12 *Ego etiam incipiam percutere te, teque perdam in peccatis tuis.* 13 *Comedes, & non ſaturaberis; tenebræ tibi erunt, & expellêris, & tu non evades; & qui evaſerint, gladio tradentur:* 14 *Tu ſeres, & non metes: tu exprimes olivam, & non ungêris oleo; neq; bibetis vinum: & peribit judicium populi mei.* 15 *Obſervâſti decreta Amri, & omnes actiones domûs Achabi; & ambulâſtis in cogitationibus eorum: ut traderem te excidio, & hujus incolas ſibilo; & reportarent opprobrium populorum.* 16

CAP. VII.

VÆ mihi, quia factus ſum ut collector arundinis in meſſe, et ut collector racemationis in vindemia: non extat botrus ad comedendum primo exortu. 1 *Væ animæ meæ, quia pius periit de terra, nemoq; rectus inter mortales invenitur: omnes ad cædem condemnant, unuſquiſq; proximum ſuum acerrimè perſequitur.* 2 *Manus ſuas ad malum parant: princeps exigit: judex loquitur verba pacifica, ad libitum mentis ſuæ eſt.* 3

מיכה: ז

,tuorū ſpeculatorū Dies .implicatione præ rectus ,paliurus ut eorū Optimus
4 טוֹבָם כְּחֵדֶק יָשָׁר מִמְּסוּכָה יוֹם מְצַפֶּיךָ
,ſodali in credatis Ne .eorū perplexitas erit nunc ,venit tua viſitatio
5 פְּקֻדָּתְךָ בָאָה עַתָּה תִהְיֶה מְבוּכָתָם׃ אַל־תַּאֲמִינוּ בְרֵעַ
.tui oris oſtia cuſtodi ,tuo ſinui incumbente ab : duce in fidatis ne
אַל־תִּבְטְחוּ בְּאַלּוּף מִשֹּׁכֶבֶת חֵיקֶךָ שְׁמֹר פִּתְחֵי־פִיךָ׃
,ſuam matrem in ſurgens filia ,patrem vilipendens filius Quia
6 כִּי־בֵן מְנַבֵּל אָב בַּת קָמָה בְאִמָּהּ
ego Et .ejus domus viri ,viri inimici : ſuam ſocrum in nurus
7 כַּלָּה בַּחֲמֹתָהּ אֹיְבֵי אִישׁ אַנְשֵׁי בֵיתוֹ׃ וַאֲנִי
me audiet : meæ ſalutis Deum expectabo ,ſpeculabor Domino in
בַּיהוָה אֲצַפֶּה אוֹחִילָה לֵאלֹהֵי יִשְׁעִי יִשְׁמָעֵנִי
,ceciderim quòd me propter mea inimica læteris Ne .meus Deus
8 אֱלֹהָי׃ אַל־תִּשְׂמְחִי אֹיַבְתִּי לִי כִּי נָפַלְתִּי
.mihi lux DOMINUS ,tenebroſitate in ſedero cùm : ſurrexi
קָמְתִּי כִּי־אֵשֵׁב בַּחֹשֶׁךְ יְהוָה אוֹר לִי׃
litiget donec ,ei peccavi quoniam ,feram DOMINI Iram
9 זַעַף יְהוָה אֶשָּׂא כִּי חָטָאתִי לוֹ עַד אֲשֶׁר יָרִיב
videbo ,lucem in me educet : meum judicium faciat & ,meam litem
רִיבִי וְעָשָׂה מִשְׁפָּטִי יוֹצִיאֵנִי לָאוֹר אֶרְאֶה
,pudor eam operiet & ,mea inimica aſpiciet Et .ejus juſtitiam in
10 בְּצִדְקָתוֹ׃ וְתֵרֶא אֹיַבְתִּי וּתְכַסֶּהָ בוּשָׁה
mei Oculi ?tuus Deus DOMINUS ipſe Ubi : me ad dicens
הָאֹמְרָה אֵלַי אַיּוֹ יְהוָה אֱלֹהָיִךְ עֵינַי
.platearum lutum ut conculcationem in erit nunc ,eam in videbunt
תִּרְאֶינָּה בָּהּ עַתָּה תִּהְיֶה לְמִרְמָס כְּטִיט חוּצוֹת׃
.ſtatutum elongabitur illa die ,tuas macerias ædificandi Die
11 יוֹם לִבְנוֹת גְּדֵרָיִךְ יוֹם הַהוּא יִרְחַק־חֹק׃
civitates & ,Aſſur ipſo de veniet te ad uſque & illa Die
12 יוֹם הוּא וְעָדֶיךָ יָבוֹא לְמִנִּי אַשּׁוּר וְעָרֵי
,mari à mare & ,flumen ad uſque & munitione ipſa ab & ,munitionis
מָצוֹר וּלְמִנִּי מָצוֹר וְעַד־נָהָר וְיָם מִיָּם
ſuper deſolationem in terra erit Et .montem ad monte &
13 וְהַר הָהָר׃ וְהָיְתָה הָאָרֶץ לִשְׁמָמָה עַל־
Paſce .eorum ſtudiorum fructum propter ,ſuis habitatoribus
14 יֹשְׁבֶיהָ מִפְּרִי מַעַלְלֵיהֶם׃ רְעֵה
ſolitariè habitans ,tuæ hæreditatis pecus ,tua virga in tuum populum
עַמְּךָ בְשִׁבְטֶךָ צֹאן נַחֲלָתֶךָ שֹׁכְנִי לְבָדָד
dies juxta Ghilhad & Baſan paſcent : Carmel medio in ſylvam
יַעַר בְּתוֹךְ כַּרְמֶל יִרְעוּ בָשָׁן וְגִלְעָד כִּימֵי
ei oſtendam : Ægypti terra è te egrediendi dies Juxta .ſeculi
15 עוֹלָם׃ כִּימֵי צֵאתְךָ מֵאֶרֶץ מִצְרָיִם אַרְאֶנּוּ
.ſua fortitudine omni ab pudebunt & ,gentes Videbunt .mirabilia
16 נִפְלָאוֹת׃ יִרְאוּ גוֹיִם וְיֵבֹשׁוּ מִכֹּל גְּבוּרָתָם
Lingent .obſurdeſcent eorum aures ,os ſuper manum Ponent
17 יָשִׂימוּ יָד עַל־פֶּה אָזְנֵיהֶם תֶּחֱרַשְׁנָה׃ יְלַחֲכוּ
.ſuis clauſuris de ſe movebunt terræ reptilia ſicut,ſerpens ſicut pulverem
עָפָר כַּנָּחָשׁ כּוֹחֲלֵי אֶרֶץ יִרְגְּזוּ מִמִּסְגְּרֹתֵיהֶם
.te à timebunt & ,formidabunt noſtrum Deum DOMINUM Ad
אֶל־יְהוָה אֱלֹהֵינוּ יִפְחָדוּ וְיִרְאוּ מִמֶּךָּ׃
prævaricationem ſuper tranſiens &,iniquitatem tollens ,tu ſicut Deus Quis
18 מִי־אֵל כָּמוֹךָ נֹשֵׂא עָוֺן וְעֹבֵר עַל־פֶּשַׁע
,ſuum naſum perpetuum in tenuit non ?ſuæ hæreditatis reſidui
לִשְׁאֵרִית נַחֲלָתוֹ לֹא־הֶחֱזִיק לָעַד אַפּוֹ
.ipſe miſericordiam voluit quoniam
כִּי־חָפֵץ חֶסֶד הוּא׃

Verſio VULG. LAT.

4 Qui optimus in eis eſt, quaſi paliurus : & qui rectus, quaſi ſpina de ſepe. Dies ſpeculationis tuæ, & viſitatio tua venit : nunc erit
5 vaſtitas eorum. Nolite credere amico : & nolite confidere in duce: ab ea, quæ dormit in ſinu tuo,
6 cuſtodi clauſtra oris tui. Quia filius contumeliam facit patri, & filia conſurgit adverſùs matrem ſuam, nurus adverſùs ſocrum ſuā: & inimici hominis domeſtici ejus.
7 Ego autem ad Dominum aſpiciam, expectabo Deum Salvatorem meum : audiet me Deus meus.
8 Ne læteris, inimica mea, ſuper me, quia cecidi : conſurgam, cùm ſedero in tenebris, Dominus lux
9 mea eſt. Iram Domini portabo, quoniam peccavi ei, donec cauſam meam judicet, & faciat judicium meum : educet me in lu-
10 cem, videbo juſtitiam ejus. Et aſpiciet inimica mea, & operietur confuſione, quæ dicit ad me ; Ubi eſt Dominus Deus tuus ? Oculi mei videbunt in eam : nunc erit in conculcationem ut lutum
11 platearum. Dies, ut ædificentur maceriæ tuæ : in die illa longè fiet
12 lex. In die illa & uſque ad te veniet de Aſſur, & uſque ad civitates munitas ; & à civitatibus munitis uſque ad flumen, & ad mare de mari, & ad montem de
13 monte. Et terra erit in deſolationem propter habitatores ſuos, & propter fructum cogitationum
14 eorum. Paſce populum tuum in virga tua, gregem hæreditatis tuæ, habitantes ſolos in ſaltu, in medio Carmeli : paſcentur Baſan & Galaad juxta dies antiquos.
15 Secundùm dies egreſſionis tuæ de terra Ægypti oſtendam ei mi-
16 rabilia. Videbunt gentes, & confundentur ſuper omni fortitudine ſua : ponent manum ſuper os, au-
17 res eorum ſurdæ erunt. Lingent pulverem ſicut ſerpentes, velut reptilia terræ perturbabuntur in ædibus ſuis : Dominum Deum noſtrum formidabunt, & time-
18 bunt te. Quis Deus ſimilis tuì, qui aufers iniquitatem, & tranſis peccatum reliquiarum hæreditatis tuæ ? non immittet ultrà furorem ſuum, quoniam volens miſericordiam eſt.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

4 Ὡς σὴς ἐκτρώγων, καὶ βαδίζων ἐπὶ κανόνος ἐν ἡμέρᾳ σκοπιᾶς. οὐαὶ οὐαὶ, αἱ ἐκδικήσεις σου ἥκασιν, νῦν ἔσονται
5 κλαυθμοὶ αὐτῶν. Μὴ καταπιστεύετε ἐν φίλοις, καὶ μὴ ἐλπίζετε ἐπὶ ἡγουμένοις· ἀπὸ τῆς συγκοίτου σου φύλαξαι, τοῦ ἀναθέσθαι
6 (γ) τι αὐτῇ. Διότι υἱὸς ἀτιμάζει πατέρα, θυγάτηρ ἐπαναστήσεται ἐπὶ τὴν μητέρα αὐτῆς, (δ) νύμφη ἐπὶ τὴν πενθερὰν αὐτῆς, ἐχθροὶ πάντες (ε) ἀνδρὸς οἱ ἐν
7 τῷ οἴκῳ αὐτοῦ. Ἐγὼ δὲ ἐπὶ τὸν κύριον ἐπιβλέψομαι, ὑπομενῶ ἐπὶ τῷ θεῷ τῷ σωτῆρί μου, εἰσακούσεταί μου ὁ θεός μου.
8 Μὴ ἐπίχαιρέ μοι ἡ ἐχθρά μου, ὅτι πέπτωκα, καὶ ἀναστήσομαι· διότι ἐὰν καθίσω
9 ἐν τῷ σκότει, (ζ) κύριος φωτιεῖ μοι. Ὀργὴν κυρίου ὑποίσω, ὅτι ἥμαρτον αὐτῷ, (η) ἕως τοῦ δικαιῶσαι αὐτὸν τὴν δίκην μου· καὶ (θ) ποιήσει τὸ κρίμα μου, καὶ ἐξάξει με εἰς τὸ φῶς. ὄψομαι τὴν δικαιοσύνην
10 αὐτοῦ, Καὶ ὄψεται ἡ ἐχθρά μου, καὶ περιβαλεῖται αἰσχύνην, ἡ λέγουσα (ι), Ποῦ κύριος ὁ θεός σου; οἱ ὀφθαλμοί μου ἐπόψονται αὐτήν, νῦν ἔσται εἰς καταπάτημα
11 ὡς πηλὸς ἐν ταῖς ὁδοῖς. (κ) Ἡμέρα ἀλοιφῆς πλίνθου, ἐξάλειψίς σου ἡ ἡμέρα ἐκείνη, καὶ (λ) ἀποτρίψεται νόμιμά σου
12 ἡ ἡμέρα ἐκείνη. Καὶ αἱ πόλεις σου ἥξουσιν εἰς ὁμαλισμὸν, καὶ εἰς διαμερισμὸν Ἀσσυρίων, καὶ αἱ πόλεις σου αἱ ὀχυραὶ εἰς διαμερισμὸν ἀπὸ Τύρου ἕως τοῦ ποταμοῦ (μ), καὶ ἀπὸ θαλάσσης ἕως θαλάσσης, καὶ ἀπὸ
13 (ν) ὄρους ἕως τοῦ ὄρους. Καὶ ἔσται ἡ γῆ εἰς ἀφανισμὸν (ξ) σὺν τοῖς κατοικοῦσιν αὐτήν, ἀπὸ καρπῶν ἐπιτηδευμάτων αὐτῶν.
14 Ποίμαινε λαόν σου ἐν ῥάβδῳ (ο) σου, πρόβατα κληρονομίας σου, κατασκηνοῦντας καθ' ἑαυτοὺς δρυμὸν ἐν μέσῳ τοῦ Καρμήλου, νεμήσονται τὴν Βασανῖτιν καὶ τὴν Γαλααδῖτιν, καθὼς
15 αἱ ἡμέραι τοῦ αἰῶνος. Καὶ κατὰ τὰς ἡμέρας ἐξοδίας σου ἐξ Αἰγύπτου, ὄψεσθε θαυμαστά.
16 Ὄψονται ἔθνη καὶ καταισχυνθήσονται (π) καὶ ἐκ πάσης τῆς ἰσχύος αὐτῶν, ἐπιθήσουσι (ρ) χεῖρας ἐπὶ τὸ στόμα αὐτῶν, τὰ ὦτα
17 αὐτῶν ἀποκωφωθήσεται, Λείξουσι χοῦν ὡς ὄφεις σύροντες γῆν, συγχυθήσονται ἐν συγκλεισμῷ αὐτῶν· ἐπὶ τῷ κυρίῳ θεῷ ἡμῶν ἐκστήσονται, καὶ φοβηθήσονται ἀπὸ
18 σοῦ. Τίς θεὸς ὥσπερ σὺ, ἐξαίρων (σ) ἀνομίας, καὶ ὑπερβαίνων ἀσεβείας τοῖς καταλοίποις τῆς κληρονομίας αὐτοῦ; καὶ οὐ συνέσχεν εἰς μαρτύριον ὀργὴν αὐτοῦ, ὅτι θελητὴς ἐλέους ἐστίν.

Quaſi tinea comedens, & ambulans ſuper regulam, in die (d) ſpeculationis. Væ (e) væ ultiones tuæ venerunt : nunc erunt fletus eorum. 4
Nolite credere in amicis, neque ſperetis in ducibus. Ab ea, quæ cubat tecum, cave (f) concredere quicquam ei: 5
Quia filius contumeliam facit patri : filia inſurgit adverſùs matrem ſuam : nurus contra ſocrum ſuam : inimici omnes viri, domeſtici ejus. 6
Ego autem in (g) Dominum intuebor ; expectabo Deum Salvatorem meum : exaudiet me Deus meus. 7
Ne inſultes mihi, inimica mea : quia cecidi, & reſurgam : quia ſi ſedero in tenebris ; Dominus illuminabit me. 8
Iram Domini ſuſtinebo, quia peccavi ei : donec ipſe juſtificet cauſam meam. Et faciet judicium meum, & educet me in lucem : videbo juſtitiam ejus , 9
Et videbit inimica mea, & operietur confuſione, quæ dicit ; ubi eſt Dominus Deus tuus ? Oculi mei videbunt eam: nunc erit in conculcationem, ſicut lutum in viis. 10
Dies lituræ lateris, deletio tua, (h) dies illa, & (i) atteret legitima tua dies illa : 11
Et urbes tuæ venient in (k) complanationem , & in diviſionem Aſſyriorum : & civitates tuæ munitæ in diviſionem à (l) Tyro uſque ad flumen, & à mari uſque ad mare, et de monte uſque ad (m) montem: 12
Et erit terra in diſſipationem cum habitatoribus ſuis propter fructus adinventionum eorum. 13
Paſce populum tuum in virga tua, oves hæreditatis tuæ, habitantes ſeorſùm in ſaltu, in medio Carmeli: paſcentur Baſanitin, & Galaaditin, ſicut dies ſeculi , 14
Et juxta dies egreſſionis tuæ de Ægypto. (n) Videte mirabilia : 15
Videbunt gentes, & confundentur (o) & ex omni fortitudine ſua : imponent manus ſuper os ſuum: aures eorum ſurdæ erunt: 16
Lingent humum , ſicut ſerpentes, quæ trahunt terram : turbabuntur in concluſione ſua : ſuper Domino Deo noſtro formidabunt : & timebunt à te. 17
Quis Deus , ſicut tu , auferens iniquitates, & tranſcendens impietates his, qui reliqui ſunt de hæreditate tua? Et non tenuit (p) in teſtimonium iram ſuam: quia cupidus miſericordiæ eſt. 18

MS. A. (γ) αὐτῇ τι. (δ) καὶ νύμφη (ε) οἱ ἄνδρες οἱ (ζ) ὁ κύριος (η) ἕως οὗ (θ) ὑποίσει (ι) πρὸς μὲ, Ποῦ (κ) Ἡμέρας (λ) ἀπώσεται νόμιμα ἡ ἡμέρα (μ) Συρίας, (ν) τοῦ ὄρους ἕως τοῦ ὄρους, ἡμέρα ὕδατος καὶ θορύβου. Καὶ (ξ) μετὰ τῶν κατοικούντων αὐτῶν, ἐκ καρπῶν (ο) φυλήν σου, πρόβατα (π) ἐκ πάσης (ρ) χεῖρα ἐπὶ στόμα αὐτῶν, καὶ τὰ ὦτα αὐτῶν ἀποκωφωθήσονται, (σ) ἀδικίας,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 טבא דבהון קשי למפק מן ידיה כד מן חדקא ודקשיט בהון מסיגרת סיג ביש יום
5 סבורך לטב עדן סעורת בישתך מטת כען יהי ערבו להון : לא תהימנון ברחים ולא
6 תתרחצון בקריב מאתת קימך טר מלי פומך : ארי ברא מנבל אבא ברתא מנציא עם
7 אמה כלתא מקילא בחמתה סנאוהי דגברא אנשי ביתיה : ואנא במימרא דיי אבוע
8 ארוז לאלהא עביד פורקני יקבל צלותי אלהי : לא תחדון בעיל דבבותי לי דנפלית
9 אקום ארי יתיבת כדבקבלא יי ינהר עלי : אמרת ירושלם לוט מן קדם יי קבלית ארי
10 חבית קדמוהי עד דידין דיני ויתפרע עולבני יפקנני לנהור אחזי בזכותיה : ותחזי
בעיל דבבותי ותחפינה בהתא דהות אמרה לי אן דאתפרקתא במימרא דיי אלהך
11 עיני יחזין במפלתהון כען תהי לדיש כטין שוקין : בעדנא ההיא יתבנין כנשתא
12 דישראל בעדנא ההיא יתבטלן גזירת עממיא : בעדנא ההיא יתכנשון גלותא דמן
אתור וקרוי תוקפא ודמן חורמיני רבתא וקרוי צירא ועד פרת וימא מערבאה וטורי
13 14 טורא : ותהי ארעא לצדו על יתבהא מפרי עובדיהון : פרנס עמך במימרך עמא
דאחסנתך בעלמא דהוא עתיד לאתחדתא ישרון בלחודיהון דהוו צדין בחורשא
15 יתיתבון בכרמלא ויתפרנסון בארעא מתנן וגלעד כיומי עלמין : כיומי מפקהון מארעא
16 דמצרים אחזנון פרישן : יחזון עממיא ויבהתון מכל גבורתהון ישוון ידיהון על
17 פומהון ואודניהון יתחרשן : ישתטחון על אפיהון על ארעא כחויא כזחלי עפרא יזועון
18 מבירניתיהון מן קדם יי אלהנא יתברון וידחלון מן קדמך : לית בר מנך את הוא
אלהא שבק לעוין ומעבר על חובין לשארא דאחסנתיה לא מוריד לעלמין רוגזיה
ארי רעי לאיטבא הוא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Bonus qui inter eos eſt, durus eſt, ita ut exeat de manu ejus ſicut de ſpina, & qui verax eſt in eis de ſepe ſpinoſa : dies mala, in qua bonū expectabas, tempus viſitationis malitiæ tuæ pervenit, nunc erit perplexitas eorū. 4
Ne credatis vos amico, nec confidatis in propinquo, ab uxore fœderis tui obſerva verba oris tui. 5
Quia filius vilipendit patrem, filia litigat cum matre ſua, nurus opprobriis afficit ſocrū ſuā, & inimici cujuſvis domeſtici ej⁹ ſunt. 6
Ego autem in verbo Dñi exultabo, lætabor in Deo qui adimplet ſalutem meam: ſuſcipiet orationē meā Deus meus. 7
Ne læteris inimica mea ſup me, ꝙ ceciderim, conſurgam: cùm ſedero quaſi in tenebris, Dñs illuminabit me. 8
Dixit Jeruſalē : *Maledictionem* ſuſcepi à facie Dñi, ſiquidē peccavi coram eo, donec judicet judiciū meum, & injuriā meam ulciſcatur : tunc educet me in lucē & conſpiciam juſtitiam ejus. 9
Videbit autem inimica mea & operiet eam confuſio, quæ mihi dicebat: Ubi es quæ redempta es verbo Dñi Dei tui ? oculi mei ruinā *eorum* conſpicient, nunc erit in conculcationē ſicut lutū platearū. 10
Tunc temporis *ædificabuntur* cœt⁹ Iſrael, in tempore illo irrita fient decreta gentiū. 11
Illo tempore congregabuntur tranſmigrationes ex Aſſur & civitatibus fortitudinis, ab Armenia etiam grandi, & civitatibus munitis, & uſq; ad Euphratem & mare Occidentale & montana montis. 12
Eritq; terra in deſolationē propter habitatores ejus ob fructus operum ſuorum. 13
Paſce populum tuum verbo tuo, populum hæreditatis tuæ, in ſeculo quod innovandum eſt, habitabunt ſoli qui erant deſerti *in* ſylva, & habitabunt in Carmelo, & paſcentur in terra Baſan & Galaad, juxta dies priſtinos. 14
Juxta diem quo egreſſi ſunt de terra Ægypti, oſtendā eis res mirandas. 15
Videbunt populi & pudefient ab omni fortitudine ſua : ponent manus ſuas ſuper os ſuum, aures eorum obſurdeſcent. 16
Diſtendentur in faciē ſuam in terra ſicut ſerpens, velut qui repunt in terra, commovebuntur de ædib⁹ ſuis, à conſpectu Dñi Dei noſtri conterentur, ac timebunt à facie tua. 17
Nullus eſt præter te, tu es Deus ignoſcens iniquitatibus, et miſſa faciens ſcelera reliquiarum hæreditatis ejus : non retinet in æternum furorem ſuum, placet enim ei beneficia conferre. 18

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

4 * ܘܐܣܬܪܝܘ ܒܛܒܬܗܘܢ. ܐܝܟ ܙܘܥܬܐ ܕܐܟܠܗ ܣܣܐ. ܝܘܡܐ ܕܕܘܩܝܟ ܘܕܦܘܪܥܢܟ ܐܬܐ.
5 ܗܫܐ ܢܗܘܐ ܐܒܠܗܘܢ. * ܠܐ ܬܗܝܡܢܘܢ ܒܪ̈ܚܡܝܟܘܢ. ܘܠܐ ܬܬܬܟܠܘܢ ܥܠ ܩܪ̈ܝܒܝܟܘܢ.
6 ܘܡܢ ܕܫܟܒܐ ܒܥܘܒܟ ܛܪ ܬܪ̈ܥܝ ܦܘܡܟ. * ܡܛܠ ܕܒܪܐ ܡܨܥܪ ܠܐܒܘܗܝ. ܘܒܪܬܐ ܩܡܐ ܥܠ ܐܡܗ. ܘܟܠܬܐ ܥܠ
7 ܚܡܬܗ. ܘܒܥܠܕܒ̈ܒܘܗܝ ܕܓܒܪܐ ܒܢ̈ܝ ܒܝܬܗ. * ܐܢܐ ܕܝܢ
8 ܠܡܪܝܐ ܐܚܘܪ. ܘܐܣܟܐ ܠܐܠܗܐ ܦܪܘܩܝ. ܘܢܫܡܥܝܢܝ ܐܠܗܝ. * ܠܐ ܬܚܕܝܢ ܒܝ
ܒܥܠܕܒܒܬܝ. ܕܢܦܠܬ. ܬܘܒ ܩܡܬ ܐܢܐ. ܘܐܢ ܝܬܒܬ ܒܚܫܘܟܐ. ܡܪܝܐ ܢܘܗܪ ܠܝ.
9 * ܡܚܘܬܗ ܕܡܪܝܐ ܐܣܝܒܪ. ܡܛܠ ܕܐܚܛܝܬ ܠܗ. ܥܕܡܐ ܕܢܕܘܢ ܕܝܢܝ ܘܢܥܒܕ ܬܒܥܬܝ.
10 ܘܢܦܩܢܝ ܠܢܘܗܪܐ. ܘܐܚܙܐ ܙܕܝܩܘܬܗ. * ܘܬܚܙܐ ܒܥܠܕܒܒܬܝ. ܘܬܟܣܝܗ ܒܗܬܬܐ.
ܕܐܡܪܐ ܗܘܬ ܠܝ. ܐܝܟܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܝ. ܥܝܢ̈ܝ ܢܚܙܝܢ ܒܗ. ܗܫܐ ܬܗܘܐ ܠܕܘܫܐ
11 ܐܝܟ ܛܝܢܐ ܕܫܘܩܐ. * ܝܘܡܐ ܗܘ ܠܡܒܢܐ ܣܝܓܝܟܝ. ܝܘܡܐ ܗܘ ܕܬܬܪܚܩܝܢ.
12 * ܝܘܡܐ ܗܘ ܕܢܐܬܐ ܙܒܢܟܝ. ܡܢ ܐܬܘܪ. ܘܡܢ ܡܕܝܢ̈ܬܐ ܟܪ̈ܝܟܬܐ. ܘܡܢ ܨܘܪ ܘܥܕܡܐ
13 ܠܢܗܪܐ. ܘܡܢ ܝܡܐ ܘܥܕܡܐ ܠܝܡܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܛܘܪܐ ܕܚܘܪ. * ܘܬܗܘܐ ܐܪܥܐ ܠܚܒܠܐ
14 ܥܡ ܥܡܘܪ̈ܝܗ. ܡܛܠ ܦܐܪ̈ܐ ܕܥܒܕ̈ܝܗܘܢ. * ܪܥܝ ܥܡܟ ܒܫܒܛܟ. ܘܥܢ̈ܐ ܕܝܪܬܘܬܟ
ܢܫܪܘܢ ܠܒܠܚܘܕܝܗܘܢ. ܐܝܟ ܥܢ̈ܐ ܒܓܘ ܟܪܡܠܐ. ܢܪܥܘܢ ܒܡܬܢܝܢ ܘܒܓܠܥܕ. ܐܝܟ
15 ܝܘܡ̈ܬܐ ܕܡܢ ܥܠܡ. * ܘܐܝܟ ܝܘܡܐ ܕܢܦܩܘ ܒܗ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܐܚܘܐ ܐܢܘܢ
16 ܬܕܡܪ̈ܬܐ. * ܢܚܙܘܢ ܥܡ̈ܡܐ ܘܢܒܗܬܘܢ ܡܢ ܟܠܗ ܓܢܒܪܘܬܗܘܢ. ܢܣܝܡܘܢ
17 ܐܝܕܝܗܘܢ ܥܠ ܦܘܡܗܘܢ. ܘܐܕܢܝܗܘܢ ܢܬܚܪ̈ܫܢ. * ܘܢܠܚܟܘܢ ܥܦܪܐ ܐܝܟ ܚܘܝܐ.
ܘܐܝܟ ܪܚܫܐ ܕܐܪܥܐ. ܢܬܙܝܥܘܢ ܡܢ ܚܠܕ̈ܝܗܘܢ. ܘܡܢ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܢܙܘܥܘܢ.
18 ܘܢܕܚܠܘܢ. * ܡܢܘ ܐܠܗܐ ܐܟܘܬܟ. ܕܫܒܩ ܚܛܗ̈ܐ ܘܡܥܒܪ ܥܘܠܐ ܠܫܪܟܐ ܕܝܪܬܘܬܗ.
ܘܠܐ ܐܚܝܕ ܠܥܠܡ ܪܘܓܙܗ. ܡܛܠ ܕܨܒܝܢܐ ܕܚܢܢܐ ܗܘ.

Denique abominati ſunt probitatē ſuam tan- 4
quam pannum tineâ corroſum. Dies ſpecula-
torum tuorum *vaticinio prænuntiatus*, & ſalu-
tis tuæ, jam venit : mox erunt funera eorum.
Ne creditote amicis veſtris, & propinquis 5
veſtris ne fiditote; & ab uxore tua caveto ver-
ba oris tui. Nam filius convitiatur patri ſuo, 6
filia inſurgit contra matrem ſuam, & nurus
contra ſocrum ſuam : demum inimici homi-
nis, ſunt domeſtici ejus. Ego quidem Do- 7
minum ſpectabo, & præſtolabor Deum Ser-
vatorem meum, & exaudiet me Deus meus.
Ne læteris de me inimica mea : ſi cecidi, ad- 8
huc reſurgam : ſi in tenebris ſedeo, Dominus
mihi lucem præbebit. Plagam Domini to- 9
lerabo, quia peccavi in eum : donec cauſam
meam agat, & ſumat ultionem meam, pro-
ducátque me in lucem, & videam juſtitiam
ejus. Videbit inimica mea, & obruet eam 10
pudor: dicebat enim mihi, Ubi eſt Deus tuus?
oculi mihi *læti* videbunt eam, jam exponetur
conculcationi tanquam lutum platearum.
Dies eſt reficiendi macerias tuas: dies eſt quo 11
extollaris : Dies eſt quo tempus tuum veniat 12
redeundi ab Aſſyria & ab urbibus munitis, à
Tyro ad flumen uſque, & à mari uſque ad
mare, & uſque ad montem Hor : Cùm ver- 13
ſa fuerit terra illa in corruptionem habitato-
ribus ſuis, propter fructus actionum ſuarum.
Paſce populum tuum & oves hæreditatis tuæ 14
virgâ tuâ : habitent ſoli tanquam oves in me-
dio Charmeli : paſcantur in Mathnin & in
Gelaade, ut priſcis diebus, Et ut eâ die quã 15
egreſſi ſunt è terra Ægypti. Oſtendam illis
miracula ; Quæ cùm aſpexerint gentes, ob- 16
ſtupeſcent cum tota fortitudine ſua, imponent
manus ſuas ori ſuo, & aures earum obſurde-
ſcent : Pulverem ceu ſerpens lingent, & 17
more *inſectorum* ſub terra latentium ſuccen-
ſebunt è cuniculis ſuis, & à Domino Deo no-
ſtro contremiſcent ac formidabunt. Non eſt 18
O Deus tibi ſimilis, qui condonas iniquitatem
& transfers peccatum reliquiarum hæredita-
tis tuæ, neque retines iram in perpetuum ;
quia benignitate delectaris.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

4 * فارذل خيراتهم مثل سوس ياكل * ويمضي بقانون في يوم الظلمة * ويل ويل * انتقامك قد
5 حضر * الآن يكون بكاؤهم * لا تؤمنوا بالأصدقاء * ولا تتكلوا على المقدمين * تحفظ من
6 امرأتك ان لا تظهر لها شيئا * من أجل ان الابن يهين الأب * البنت تقوم على امها * العروس
7 على حماتها * الأعداء هم جميع الرجال الذين في بيته * وأنا انظر الى الرب * واتوقع الاله
8 مخلصي * يسمعني الهي * لا تشمتي بي يا عدوتي لأني سقطت * وأقوم من أجل أني ان
9 اجلس في الظلمة الرب ينير لي * احتمل غضب الرب لأني اخطأت اليه * الى ان يبرر
10 قضائي * ويصنع حكمي * ويخرجني الى النور * انظر عدله * وترى عدوتي *
وتلبس الخزي * القائلة لي اين الرب الهك * عيناي تنظر انها الآن تكون للدوس
11 كالطين في الطرق * يوم تكلسين اللبن * ذلك اليوم محوك * ويعود ذلك اليوم 12
ناموسا * ويأتون مدنك للتمهيد وحصة الموصليين * ومدنك الحصينة للحصة * من
13 صور الى النهر * ومن البحر الى البحر * ومن الجبل الى جبل سوريا * يوم ماء وهيج *
14 ويصير الأرض للفساد مع سكانها من ثمرات اعمالهم * ارع شعبك بعصي * قبيلتك
خراف ميراثك يسكنون وحدهم في الغاب * في وسط الكرمل يرعون البيسانية والجلعادية
15 كأيام الدهر * وكأيام خروجك من مصر تعاينون العجائب * يرون الأمم ويخزون من كل 16
17 قوتهم * يضعون الأيدي على فمهم * تطرش اذانهم * يلحسون التراب مثل الحية * يسحبون
18 على الأرض * يختلطون في انقفالهم * بالرب الهنا يبهتون * ويخافون منك * من اله مثلك *
الرافع المظالم * والمتجاوز عن المظالم ببقايا ميراثه * ولم يمسك غضبه للشهادة * لأنه
مريد الرحمة هو *

Ideò execror bona eorum ut tineam devo- 4
rantem, & regulariter euntem in die te-
nebrarum. Væ, væ; ultio tua jam inſtat,
jam erit fletus eorum. Ne credatis ami- 5
cis, & ne fidatis ducibus : cave ab uxore
tua, ne quid aperias illi. Nam filius con- 6
temnit patrem, filia inſurgit in matrem
ſuam, ſponſa in ſocrum ſuam : inimi-
ci ſunt omnes ii viri qui in domo
ſunt. Ego verò Dominum intuebor, 7
& expectabo Deum Salvatorem meum,
exaudiet me Deus meus. Ne inſultes 8
mihi O inimica mea quòd ceciderim :
reſurgam equidem, quia licèt ſedeam
in tenebris, Dominus mihi lucem ad-
movebit. Iram Domini ſuſtinebo, quia 9
peccavi in eum ; donec juſtificet cau-
ſam meam, faciatque judicium meum,
& educat me ad lucem : videbo
tandem juſtitiam ejus. Inimica verò 10
mea videbit, & inducetur pudore, quæ
mihi dicit, Ubi eſt Dominus Deus
tuus? oculi mei videbunt quòd ipſa
jamjam futura eſt conculcationi tan-
quam lutum in viis. Quo die late- 11
res calce linies, eodem die te delebunt :
Et vetetur dies ille in legem : venient- 12
que urbes tuæ in complanationem & in
ſortem Aſſyriorum, & urbes tuæ muni-
tæ in partitionem, à Tyro ad flumen uſq;,
à mari ad mare, & à monte ad montem
Syriæ. Dies aquæ erit ille et furentis im- 13
petûs : abibitq; terra in corruptionem cum
incolis ſuis, propter fructus operũ ſuorũ.
Paſce populum tuum virgâ, familia tua, 14
oves hæreditatis tuæ, ſeorſim habitabunt
in ſylvis, in medio Charmeli depaſcent Bai-
ſanitin & Galaaditin, ut diebus æternis.
Et ut diebus egreſſûs tui ex Ægypto, vide- 15
bitis miracula. Videbunt gentes, et pudebit 16
eas totius potentiæ ſuæ : manus imponent
ori ſuo ; ſurdeſcent aures earum : Pulve- 17
rem lingent ut ſerpens, trahentur ſuper
terram, cõmiſcebuntur in concluſione ſua :
per Dominum Deum noſtrum obſtupeſcent,
teq; formidabunt. Quis deus par tibi eſt, 18
auferens iniquitates, et præteriens impie-
tates in reliquiis hæreditatis ſuæ, ne-
que retinens iram ſuam in teſtimoni-
um ? Ipſe enim amans eſt miſeri-
cordiæ,

נחום : א

projicies & : nostras iniquitates subjiciet ,nostri miserebitur Revertetur
19 יָשׁוּב יְרַחֲמֵנוּ יִכְבֹּשׁ עֲוֺנֹתֵינוּ וְתַשְׁלִיךְ
,Jahacob veritatem Dabis .eorum peccata omnia maris profunda in
20 בִּמְצֻלוֹת יָם כָּל־חַטֹּאתָם׃ תִּתֵּן אֱמֶת לְיַעֲקֹב
diebus à nostris patribus jurâsti quam ,Abraham misericordiam
חֶסֶד לְאַבְרָהָם אֲשֶׁר־נִשְׁבַּעְתָּ לַאֲבֹתֵינוּ מִימֵי
.quondam
קֶדֶם׃

Versio VULG. LAT.

19 Revertetur, & miserebitur nostrî: deponet iniquitates nostras, & projiciet in profundum maris omnia peccata nostra. 20 Dabis veritatem Jacob, misericordiam Abraham: quæ jurâsti patrib⁹ nostris à diebus antiquis.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. cum Tranſl. LAT.

19 (τ)Ἐπιστρέψει, ϗ οἰκτειρήσει ἡμᾶς, (υ) καταδύσει τὰς ἀδικίας ἡμῶν, ϗ (φ) ἀποῤῥιφήσονται εἰς τὰ βάθη τῆς θαλάσσης, πάσας τὰς 20 ἁμαρτίας ἡμῶν. Δώσει εἰς ἀλήθειαν τῷ Ἰακὼβ, (χ)ἔλεον τῷ Ἀβραὰμ, καθότι ὤμοσας τοῖς πατράσιν ἡμῶν, κατὰ τὰς ἡμέρας τὰς ἔμπροσθεν. ΜΙΧΑΙ'ΑΣ Γ'.

19 Revertetur, & miserebitur nostrî: demerget peccata nostra: & projicientur in profunda maris, omnia peccata nostra. 20 Dabit in veritatem Jacob, misericordiam Abraham: sicut jurâsti patribus nostris juxta dies priores. ΜΙΧΑΙ'ΑΣ Γ'.

MS. A. (τ)Αὐτὸς ἐπιστρέψει, (υ)ϗ καταδύσει (φ) ἀποῤῥίψει (χ)ἔλεος

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

19 יְתוּב מֵימְרֵיהּ לְרַחֲמָא עֲלָנָא וְיִכְבּוֹשׁ עַל חוֹבְנָא בְּרַחְמָתֵיהּ וְיִרְמֵי לְעוּמְקֵי יַמָּא כָּל
20 חֲטָאֵי יִשְׂרָאֵל׃ תִּתֵּן קוּשְׁטֵיהּ דְּיַעֲקֹב לִבְנוֹהִי כְּמָא דְקַיֶּמְתָּא לֵיהּ בְּבֵיתְאֵל טַבְוָת
אַבְרָהָם לְזַרְעֵיהּ בַּתְרוֹהִי כְּמָא דְקַיֶּמְתָּא לֵיהּ בֵּין בִּתְרַיָּא תִּדְכַּר לָנָא עֲקֵידַת יִצְחָק
דְּאִתְעֲקַד עַל גַּבֵּי מַדְבְּחָא קֳדָמָךְ תַּעֲבֵיד עִמָּנָא טַבְוָן דְּקַיֶּמְתָּא לַאֲבָהָתָנָא מִיוֹמֵי קֶדֶם׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

19 Revertetur verbũ ej⁹ ut misereatur nostri : subjiciet iniquitates nostras suæ misericordiæ, projicietq; in profundũ maris universa Israelis peccata. 20 Dabis veritatem Jacobi filiis ej⁹ quemadmodum juramento pollicit⁹ es ei in Bethel, misericordiã Abrahæ, semini ej⁹ post eũ, sicut jurâsti ei inter divisiones: memor eris in nostri gratiã alligationis Isaac qui alligat⁹ est sup altare corã te: facies tandẽ nobiscũ bona *quæ* à diebus priscis patrib⁹ nostris jurejurãdo promisisti.

נחום : א

CAP. I. א

,zelotes Deus .Elchosei Nachum visionis Liber .Nineveh Onus
1 מַשָּׂא נִינְוֵה סֵפֶר חֲזוֹן נַחוּם הָאֶלְקֹשִׁי׃ 2 אֵל קַנּוֹא
Dominus ulciscens ,*iræ compos* & ,Dominus ulciscens ,Dñs ulciscens &
וְנֹקֵם יְהוָה נֹקֵם יְהוָה וּבַעַל חֵמָה נֹקֵם יְהוָה
,*narium longus* Dominus .suis inimicis ipse reservans & ,suis hostibus
לְצָרָיו וְנוֹטֵר הוּא לְאֹיְבָיו׃ 3 יְהוָה אֶרֶךְ אַפַּיִם
tempestate in Domini : *mundabit non mundando* & ,*virtute* magnus &
וּגְדָל־כֹּחַ וְנַקֵּה לֹא יְנַקֶּה יְהוָה בְּסוּפָה
,mare *in Increpans* .ejus pedum pulvis nubes & ;*ejus* via turbine in &
וּבִשְׂעָרָה דַּרְכּוֹ וְעָנָן אֲבַק רַגְלָיו׃ 4 גּוֹעֵר בַּיָּם
Basan est *infirmatus* : fecit exiccare flumina omnia & ,illud exiccavit &
וַיַּבְּשֵׁהוּ וְכָל־הַנְּהָרוֹת הֶחֱרִיב אֻמְלַל בָּשָׁן
,eo ab tremuerunt Montes .est *infirmatus* Lebanon flos & ,Carmel &
וְכַרְמֶל וּפֶרַח לְבָנוֹן אֻמְלָל׃ 5 הָרִים רָעֲשׁוּ מִמֶּנּוּ
omnes & orbis & ;ejus *faciebus* à terra *conflagravit* & ,*liquefacti sunt* colles &
וְהַגְּבָעוֹת הִתְמֹגָגוּ וַתִּשָּׂא הָאָרֶץ מִפָּנָיו וְתֵבֵל וְכָל־
stabit quis & ,stabit quis ejus *indignationis facies Ad* .eo in habitantes
יֹשְׁבֵי בָהּ׃ 6 לִפְנֵי זַעְמוֹ מִי יַעֲמוֹד וּמִי יָקוּם
sunt confractæ petræ & ,ignis sicut est effusa ejus Ira ? ejus *nasi* ira in
בַּחֲרוֹן אַפּוֹ חֲמָתוֹ נִתְּכָה כָאֵשׁ וְהַצֻּרִים נִתְּצוּ
sperantes sciens & : angustiæ die in *robur ad* ,Dominus Bonus .eo ab
מִמֶּנּוּ׃ 7 טוֹב יְהוָה לְמָעוֹז בְּיוֹם צָרָה וְיֹדֵעַ חֹסֵי
: ejus loci faciet consummationem transeunte inundatione in Et .eo in
בוֹ׃ 8 וּבְשֶׁטֶף עֹבֵר כָּלָה יַעֲשֶׂה מְקוֹמָהּ
? Dominum *ad cogitabitis* Quid .*tenebrositas persequetur* ejus inimicos &
וְאֹיְבָיו יְרַדֶּף־חֹשֶׁךְ׃ 9 מַה־תְּחַשְּׁבוּן אֶל־יְהוָה
Quia .angustia bis consurget non ,*faciens* ipse consummationem
10 כָּלָה הוּא עֹשֶׂה לֹא־תָקוּם פַּעֲמַיִם צָרָה׃ כִּי
,*sunt comesti* * ,*potores eos potare secundum* & ,complexas spinas ad usque
עַד־סִירִים סְבֻכִים וּכְסָבְאָם סְבוּאִים אֻכְּלוּ
Dominum *super cogitans* est egressus te Ex .plena ariditate stipula sicut
11 כְּקַשׁ יָבֵשׁ מָלֵא׃ מִמֵּךְ יָצָא חֹשֵׁב עַל־יְהוָה
? *pacifici* num ,Dominus dixit Sic .*Belijahal consulens* ,malum
12 רָעָה יֹעֵץ בְּלִיָּעַל׃ כֹּה אָמַר יְהוָה אִם־שְׁלֵמִים
non ,te afflixi Et .transibit & ,excindentur *certè &* ,multi *certè &*
וְכֵן רַבִּים וְכֵן נָגֹזּוּ וְעָבָר וְעִנִּתִךְ לֹא
tua vincula & ,te *desuper* ejus jugum conteram nunc Et .ultrà te affligam
13 אֲעַנֵּךְ עוֹד׃ וְעַתָּה אֶשְׁבֹּר מֹטֵהוּ מֵעָלָיִךְ וּמוֹסְרֹתַיִךְ
tuo nomine *de seminabitur* non ,Domine te super præcipiet Et .dirumpam
14 אֲנַתֵּק׃ וְצִוָּה עָלֶיךָ יְהוָה לֹא־יִזָּרַע מִשִּׁמְךָ
conflatile & ,sculptile faciam succidere tui Dei domo De .amplius
עוֹד מִבֵּית אֱלֹהֶיךָ אַכְרִית פֶּסֶל וּמַסֵּכָה
.fuisti despectus quia ,tuum sepulchrum ponam
אָשִׂים קִבְרֶךָ כִּי קַלּוֹתָ׃

Verſio VULG. LAT.

PROPHETIA

NAHUM.

CAP. I.

1 ON⁹ Ninive: Liber visionis Nahum Elcesæi. 2 Deus æmulator, & ulciscens Dñs : ulciscens Dñs, & habens furorem: ulciscens Dñs in hostes suos, & irascens ipse inimicis suis. 3 Dñs patiens, et magn⁹ fortitudine, & mundans non faciet innocentẽ. Dñs in tempestate & turbine viæ ej⁹, & nebulæ pulvis pedũ ejus. 4 Increpans mare, & exiccans illud: & omnia flumina ad desertum deducens. Infirmatus est Basan, & Carmelus: & flos Libani 5 elanguit. Montes commoti sunt ab eo, & colles desolati sunt: & contremuit terra à facie ej⁹, & orbis, 6 & omnes habitantes in eo. Ante faciẽ indignationis ej⁹ quis stabit? & quis resistet in ira furoris ej⁹ ? indignatio ej⁹ effusa est ut ignis : 7 & petræ dissolutæ sunt ab eo. Bonus Dñs, & confortans in die tribulationis: & sciens sperantes in 8 se. Et in diluvio prætereunte, consummationẽ faciet loci ej⁹: & inimicos ejus persequentur tenebræ. 9 Quid cogitatis contra Dñm? consummationẽ ipse faciet: non 10 consurget duplex tribulatio. Quia sicut spinæ se invicẽ complectuntur, sic conviviũ eorũ pariter potantiũ : consumentur quasi stipula 11 ariditate plena. Ex te exibit cogitans contra Dominũ malitiam : mente pertractans prævaricatio- 12 nem. Hæc dicit Dñs; Si pfecti fuerint, & ita plures ; sic quoque attondentur, & ptransibit: afflixi te, 13 & non affligã te ultrà. Et nunc conteram virgã ej⁹ de dorso tuo, 14 & vincula tua disrumpam. Et præcipiet super te Dñs, non seminabitur ex nomine tuo ampliús : de domo Dei tui interficiam sculptile, & conflatile, ponam sepulchrum tuum, quia inhonoratus es.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

ΝΑΟ'ΥΜ Ζ'.

ΚΕΦ'. α'.

1 ΛΗ͂μμα Νινευή, βιβλίον ὁράσεως Ναοὺμ 2 τοῦ Ἐλκεσαίου. Θεὸς ζηλωτὴς, ϗ ἐκδικῶν(*) κύριος, ἐκδικῶν κύριος μετὰ θυμοῦ, ἐκδικῶν κύριος τοὺς ὑπεναντίους αὐτοῦ, ϗ ἐξαίρων 3 αὐτὸς τοὺς ἐχθροὺς αὐτοῦ. Κύριος μακρόθυμος, ϗ μεγάλη ἡ ἰσχὺς αὐτοῦ, ϗ (α) ἀθῷον οὐκ ἀθωώσει κύριος· ἐν συντελείᾳ, ϗ ἐν (β) συσσεισμῷ ἡ ὁδὸς αὐτοῦ, ϗ νεφέλαι κονιορτὸς 4 ποδῶν αὐτοῦ· Ἀπειλῶν θαλάσσῃ, ϗ ξηραίνων αὐτὴν, ϗ πάντας τοὺς ποταμοὺς ἐξερημῶν. ὠλιγώθη ἡ Βασανῖτις, ϗ ὁ Κάρμηλος, 5 ϗ τὰ ἐξανθοῦντα τοῦ Λιβάνου ἐξέλιπε. Τὰ ὄρη ἐσείσθησαν ἀπ' αὐτοῦ, ϗ οἱ βουνοὶ ἐσαλεύθησαν· ϗ ἀνεστάλη ἡ γῆ ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ, ἡ σύμπασα ϗ πάντες οἱ κατοικοῦντες 6 ἐν αὐτῇ. Ἀπὸ προσώπου ὀργῆς αὐτοῦ τίς ὑποστήσεται; ϗ τίς ἀντιστήσεται ἐν ὀργῇ θυμοῦ αὐτοῦ; ὁ θυμὸς αὐτοῦ τήκει ἀρχὰς, ϗ αἱ 7 πέτραι διεθρύβησαν ἀπ' αὐτοῦ. Χρηστὸς κύριος τοῖς ὑπομένουσιν αὐτὸν ἐν ἡμέρᾳ θλίψεως, ϗ γινώσκων τοὺς εὐλαβουμένους αὐτόν. 8 Καὶ ἐν κατακλυσμῷ πορείας συντέλειαν ποιήσεται, τοὺς ἐπεγειρομένους ϗ τοὺς ἐχθροὺς 9 αὐτοῦ διώξεται σκότος. Τί λογίζεσθε ἐπὶ τὸν κύριον; συντέλειαν αὐτὸς ποιήσεται, οὐκ ἐκδικήσει 10 δὶς ἐπὶ τὸ αὐτὸ ἐν θλίψει. Ὅτι ἕως θεμελίου (γ)αὐτοῦ χερσωθήσεται, ϗ ὡς σμίλαξ περιπλεκομένη βρωθήσεται, ϗ ὡς καλάμη 11 ξηρασίας μεστή. Ἐκ σοῦ ἐξελεύσεται λογισμὸς κατὰ τοῦ κυρίου πονηρὰ, (δ)βουλευόμενος 12 ἐναντία. Τάδε λέγει κύριος κατάρχων ὑδάτων πολλῶν, Καὶ οὕτως διασταλήσονται, ϗ ἡ 13 ἀκοή σου οὐκ ἐνακουσθήσεται ἔτι. Καὶ νῦν συντρίψω τὴν ῥάβδον αὐτοῦ ἀπὸ σοῦ, ϗ τοὺς (ε) δεσμοὺς 14 διαῤῥήξω. Καὶ ἐντελεῖται (ζ) περὶ σοῦ κύριος, οὐ σπαρήσεται ἐκ τοῦ ὀνόματός σου ἔτι. (η) ἐξ οἴκου θεοῦ σου ἐξολοθρεύσω τὰ γλυπτὰ, ϗ χωνευτὰ, θήσομαι ταφήν σου, ὅτι ταχεῖς.

NAUM.

CAP. I.

1 ASSUMPTIO (a) Nineve, libri visionis Naum Elcesæi. 2 Deus æmulator, & ulciscens Dominus, ulciscens Dominus cũ furore, ulciscens Dominus adversarios suos, & tollens ipse inimicos suos. 3 Dominus longanimis, & magna fortitudo ejus: & (b)innocentem non faciet innocentem. Dominus in consummatione, & in commotione via ejus, & nubes, pulvis pedum ejus: 4 Increpans mare, & exiccans illud, & omnia flumina ad desertum perducens. Imminuta est Basanitis, & Carmelus, & quæ florebant Libani, defecerunt. 5 Montes commoti sunt ab eo, & colles concussi sunt: & (c) contracta est terra à facie ejus; universa, & omnes, qui habitant in ea. 6 A facie iræ ejus quis sustinebit? & quis resistet in ira furoris ejus? Furor ejus (d)consumit principatus : & petræ contritæ sunt ab eo. 7 Suavis Domin⁹ expectantibus eũ in die tribulationis, & cognoscens timentes se. 8 Et in diluvio (e)transeunte consummationem faciet: (f)consurgentes, & inimicos ejus persequentur tenebræ. 9 Quid cogitatis contra Dominũ? Consummationem ipse faciet: (g)non vindicabit bis in idipsum in tribulatione. 10 Quia usq; ad fundamentũ suum redigetur in vepres, & quasi volvola circundata comedetur, & quasi stipula ariditate plena. 11 Ex te exibit cogitatio contra Dominũ pessima, cogitans contraria. 12 Hæc dicit Dominus imperans aquis multis; Et sic dividentur : & auditus tuus non audietur ampli⁹. 13 Et nunc conteram virgam ejus à te, & vincula disrumpam: 14 Et præcipiet de te Dominus : non seminabitur ex nomine tuo ampliús: de domo Dei tui disperdam sculptilia, & conflatilia; ponam sepulchrum tuum ; (h) quia veloces.

MS. A. ΝΑΟ'ΥΜ Ζ'. (*)κύριος μετὰ (α) ἀθῷον οὐκ ἀθωώσει (β) συσσεισμῷ (γ) αὐτῆς χερσωθήσονται (δ) λογιζόμενος ποιήσει ἐναντία. (ε) δεσμούς σου (ζ) ὑπὲρ (η) ϗ ἐξ οἴκου θεοῦ σου ἐξολεθρεύσω τὰ γλυπτά σου, ϗ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

1 מַטַּל כַּס דְּלוּט לְאַשְׁקָאָה יָת נִינְוֵה מִלְּקַדְמִין אִתְנַבֵּי עֲלַהּ יוֹנָה בַּר אֲמִתַּי נְבִיָּא דְּמִגַּת
חֵפֶר וְתָבַת מֵחוֹבָהָא וּכְדוּ דְאוֹסִיפַת לְמֶחְטֵי תָּב וְאִתְנַבֵּי עֲלַהּ נַחוּם מִבֵּית קוֹשִׁי כְּמָא
2 דִּכְתִיב בְּסִפְרָא הָדֵין׃ אֱלָהָא דַּיָּן וּפוֹרְעָן יְיָ מִתְפָּרַע יְיָ וּסְגֵי חֵילָא קֳדָמוֹהִי עָתִיד יְיָ
3 לְאִתְפְּרָעָא מִסַּנְאֵי עַמֵּיהּ וּבִרְגַז חֲסִין מִבַּעֲלֵי דְבָבוֹהִי׃ יְיָ מַרְחִיק רְגַז וּסְגֵי חֵילָא קֳדָמוֹהִי
עָתִיד יְיָ לְאִתְפְּרָעָא וּסְלַח לְדְתָיְבִין לְאוֹרָיְתָא וּלְדְלָא תָיְבִין לָא מְזַכֵּי יְיָ בְּעַלְעוֹלָא וּבְרוּחַ
4 מְדַבַּר וַעֲנַן אֲמִטְתָא כְּבֵשׁ קֳדָמוֹהִי׃ דְּנָזִיף בְּיַמָּא וּמְיַבֵּשׁ לֵיהּ וְכָל נַהֲרָוָתָא מַחְרֵיב צָדֵי
5 מַתְנַן וְכַרְמְלָא וְאִילָנֵי לִבְנָן נְתַרוּ׃ טוּרַיָּא זָעוּ מִן קֳדָמוֹהִי וְרָמָתָא אִתְפַּרְקָא וְהָרוֹבַת
6 אַרְעָא מִן קֳדָמוֹהִי וְתֵבֵל וְכָל דְּיָתְבִין בַּהּ׃ כַּד אִתְגְּלֵי בְּרַחְמְתָא לְמִתַּן אוֹרָיְתָא לְעַמֵּיהּ
כֵּן זָע עַלְמָא מִן קֳדָמוֹהִי בְּכֵן כַּד אִתְגְּלֵי בִּרְגַז לְאִתְפְּרָעָא מִסַּנְאֵי עַמֵּיהּ קֳדָם פּוּרְעָנוּתֵיהּ
מַן יְקוּם וּמַן יְסוֹבַר בְּאַבְאָשׁוּת רוּגְזֵיהּ רוּגְזֵיהּ כְּאֶשָּׁתָא מַמְסֵי וְטִינָרַיָּא אִתְפַּרְקַן מִן
7 קֳדָמוֹהִי׃ טָב יְיָ לְיִשְׂרָאֵל לְאִסְתַּמָּכָא עֲלוֹהִי בְּעִדָּן עָקָא וּגְלֵי קֳדָמוֹהִי דְּרָחִיצִין עַל
8 מֵימְרֵיהּ׃ וּבִרְגַז חֲסִין וּבְחֵמָא תַקִּיפָא גְּמִירָא יַעֲבֵיד עִם עַמְמַיָּא דְקָמוּ וְאַחְרִיבוּ יָת בֵּית
9 מַקְדְּשָׁא דַּיְיָ וּבַעֲלֵי דְבָבוֹהִי יִמְסַר לְגֵיהִנָּם׃ עַמְמַיָּא דְבַזּוּ יָת יִשְׂרָאֵל מָא אַתּוּן חָשְׁבִין
קֳדָם יְיָ גְּמִירָא הִיא עָתִיד לְמֶעְבַּד עִמְּכוֹן לָא תִתְקַיַּם עֲלֵיכוֹן כְּבֵית יִשְׂרָאֵל תַּרְתֵּין זִמְנִין
10 רְוַח בָּתַר עָקָא׃ אֲרֵי שִׁלְטוֹנֵי עַמְמַיָּא דְבַזּוּ יָת בֵּית יִשְׂרָאֵל וּכְמָא דְטָעַן בְּחַמְרָא כֵּן
11 אַטְעִיאוּנוּן שֵׁיצִיאוּנוּן כְּמָא דִמְשֵׁיצְיָא אֶשָּׁתָא בְּקַשָּׁא יְבִישָׁא סַגִּי׃ מִנִּיךְ נִינְוֵה נְפַק מַלְכָּא
12 דְּחָשֵׁיב עַל עַמֵּיהּ דַּיְיָ בִּישָׁא דְּמָלַךְ מְלַךְ דִּרְשַׁע׃ כִּדְנַן אָמַר יְיָ אִם יְהוֹן שְׁלֵמִין בְּעֵיצָה
וְסַגִּיאִין בְּאִתְמַנְיוּתָא עַמְמַיָּא דְּמִתְכַּנְשִׁין לְאַעָקָא לִיךְ יְרוּשְׁלֶם וְיִגּוּזוּן יָת דִּגְלַת וְיֶעְבְּרוּן
13 יָת פְּרָת וְיֵיתוּן לְעַנָּיוּתִיךְ וּדְשַׁעְבַּדְתִּיךְ לָא אֲשַׁעְבְּדִנַּךְ עוֹד׃ וּכְעַן אֶתְבַּר נִיר עַמְמַיָּא
14 מִצַּוְּרֵיכוֹן וְחַנְקֵיכוֹן אַפְסִיק׃ וִיפַקֵּיד עֲלָךְ יְיָ יָת מַלְכָּא דְאַתּוּר וְלָא יְהֵי דִּכְרָן מִשְּׁמָךְ עוֹד
מִבֵּית טַעֲוָתָךְ אֲשֵׁיצֵי צַלְמִין וּמַתְכָא תַּמָּן אֲשַׁוֵּי קִבְרָךְ אֲרֵי קַלִּילָא דָא קֳדָמַי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAPUT I.

1 ONus calicis maledictionis ad propinandum ipsi Ninive, contra quam vaticinat⁹ est à principio Jonas fili⁹ Amithai, *Propheta* qui erat ex Gath-Chaphar, & ipsa pœnitentiã egit de suis peccatis: sed quando addidit flagitia committere, revers⁹ est ac prophetavit advers⁹ eam Nachũ de Beth-Kossi, prout scriptũ est in hoc libro. 2 Dñs Judex & ultor Dñs, vindictã sumptur⁹ est Dñs, cúmq; multa sit potentia corã eo, futurũ est ut vindictã sumat de iis qui oderunt populũ suũ, & in ira vehementi de hostib⁹ suis. 3 Dñs longè propellit iram, & est multa potentia corã eo: *quando ultur⁹ est Domin⁹*, parcit iis qui conversi fuerint ad Legẽ, qui verò conversi non fuerint, haudquaquã dimissurus est insontes. Dñs in turbine & spiritu ducẽ se præbet, ac nubẽ caliginis subjecit corã se. 4 Qui increpat mare, ipsúmq; exsiccat, & omnia flumina arefacit, vastat⁹ est Mathnan & Carmel⁹, & arbores Libani defluunt. 5 Montes commoti sunt à conspectu ejus, & disrupti sunt colles, ac vastata est terra ab ejus præsentia, nec non orbis, & omnes qui habitant in eo. 6 Quando se patefecit cum misericordia ut daret Legẽ populo suo, sic cõmotus est mund⁹ à conspectu ej⁹: ita quando sese demonstrabit in furore ad sumendã vindictã de osorib⁹ populi sui, corã ipsi⁹ ultione quis subsistat, & quis sustineat malũ iræ ejus? Ira ejus ignis instar dissipat, & rupes confringuntur à conspectu ej⁹. 7 Bon⁹ est Dñs Israeli ut innitatur ei tempore angustiæ, & manifesti sunt corã eo qui fiduciam suã collocant in verbo ipsi⁹. 8 Sed in ira forti & furore vehementi exterminatione faciet cum gentib⁹, quæ insurrexerunt & vastaverunt ædẽ sanctuarii Dñi, ac inimicos suos tradet gehennæ. 9 Gentes quæ expilaverũt Israel, quid vos cogitatis corã Dño? futurũ est ut fiat exterminatio vobiscũ: nõ consurget *vobis, sicut* domui Israel, bis *respiratio post angustiam*. 10 Quoniã principes gentiũ qui deprædati sunt domũ Israel, quemadmodũ erraverunt in vino, ita seduxerunt atq; consumpserunt eos, sicut consumit ignis stipulã aridã multã. 11 Ex te prodibit Ninive rex qui molitur⁹ est adversũ populũ Dñi malũ, qui initur⁹ est consiliũ impietatis. 12 Sic ait Dñs: Etsi fuerint perfectæ consilio, multæq; numero gentes, quæ congregantur ut te ad angustias adigant, Jerusalẽ, vadoq; trajecerint Tigrim, & transierint Euphratẽ, atq; venerint ad affligendũ te, cùm te subjecerim, non ampli⁹ te subjiciã. 13 Nunc autẽ frangã jugũ gentiũ à collo vestro, & vincula vestra præcidã. 14 Porro constituet sup te Dñs regẽ Assyriæ, nec erit ampli⁹ memoria nominis tui: de domo idolorũ tuorũ delebo simulachrũ et conflatile: ibi reponã sepulchrũ tuum, quoniã hoc perfacile est coram me,

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܢܬܦܢܐ ܘܢܪܚܡ ܥܠܝܢ. ܘܢܟܢܫ ܟܠܗ ܥܘܠܢ .. ܘܢܪܡܐ ܒܥܘܡܩܐ ܕܝܡܐ. 19
ܟܠܗܘܢ ܚܛܗܝܢ. * ܬܬܠ ܩܘܫܬܐ ܠܝܥܩܘܒ. ܘܛܝܒܘܬܐ ܠܐܒܪܗܡ. ܐܝܟ ܕܝܡܝܬ ܠܐܒܗܝܢ ܡܢ 20
ܝܘܡܬܐ ܩܕܡܝܐ. * ܫܠܡܬ ܢܒܝܘܬܗ ܕܡܝܟܐ *

Converſus miſerebitur noſtrî, & omne ſcelus 19
noſtrum colliget, projicietq; in profunda ma-
ris omnia peccata noſtra: Præſtabis verita- 20
tem illam Jacobo & gratiam Abrahamo, pro
qua juraſti patribus noſtris inde à priſcis die-
bus.

Prophetiæ Michæ finis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وهو يرجع ويتراف علينا * يغرق مظالمنا * ويطرح في اعماق البحر جميع خطايانا * يعطي 19 20
الحق ليعقوب * الرحمة لابرهيم * كما اقسم لابائنا * كالايام التي من قبل *
* تمت نبوة ميخا النبي *

Ipſeque reverſus miſerebitur noſtrî, de- 19
merget iniquitates noſtras, et injiciet in
profunda maris omnia peccata noſtra;
Dabit veritatem Jacobo, miſericordiam 20
Abrahamo, quemadmodum juravit pa-
tribus noſtris, ut præteritis diebus.

Prophetiæ Michæ Prophetæ finis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܬܘܒ ܢܒܝܘܬܗ ܕܢܚܘܡ ܢܒܝܐ * * ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

* ܡܫܩܠܐ ܕܢܝܢܘܐ ܕܟܬܒܐ ܕܚܙܘܐ ܕܢܚܘܡ ܐܠܩܘܫܝܐ. * ܐܠܗܐ ܛܢܢܐ ܘܬܒܘܥ ܡܪܝܐ. 1 2
ܬܒܥ ܡܪܝܐ ܒܪܘܓܙܐ. ܬܒܥ ܡܪܝܐ ܡܢ ܣܢܐܘܗܝ. ܘܢܛܪ ܠܒܥܠܕܒܒܘܗܝ. * ܢܓܝܪ ܪܘܚܗ 3
ܕܡܪܝܐ. ܘܣܓܝ ܚܝܠܗ. ܘܡܙܟܐ ܠܐ ܡܙܟܐ ܡܪܝܐ ܒܥܠܥܠܐ ܘܒܥܘܪܥܠܐ ܐܘܪܚܗ. ܘܥܢܢܐ
ܐܒܩܐ ܕܪܓܠܘܗܝ. * ܟܐܐ ܒܝܡܐ ܘܡܘܒܫ ܠܗ. ܘܟܠܗܘܢ ܢܗܪܘܬܐ ܡܚܪܒ. ܐܬܡܠܠ ܡܬܢܝܢ. 4
ܘܟܪܡܠܐ. ܘܦܪܥܐ ܕܠܒܢܢ ܝܒܫ. * ܛܘܪܐ ܙܥܘ ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ. ܘܪܡܬܐ ܐܬܦܪܩܘ. ܙܥܬ ܐܪܥܐ 5
ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ. ܬܐܒܝܠ ܘܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ. * ܩܕܡ ܪܘܓܙܗ ܡܢܘ ܢܩܘܡ. ܘܡܢܘ ܢܣܝܒܪ 6
ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ. ܚܡܬܗ ܢܦܩܐ ܐܝܟ ܢܘܪܐ. ܘܛܘܪܐ ܐܬܦܫܪܘ ܡܢܗ. * ܛܒ ܗܘ ܡܪܝܐ 7
ܠܡܥܕܪܘ ܒܝܘܡܐ ܕܐܘܠܨܢܐ. ܘܝܕܥ ܠܐܝܠܝܢ ܕܬܟܝܠܝܢ ܥܠܘܗܝ. * ܘܒܛܘܦܢܐ ܥܒܪܐ 8
ܓܡܝܪܘܬܐ ܢܥܒܕ ܠܐܬܪܗ.. ܘܠܒܥܠܕܒܒܘܗܝ ܢܪܕܘܦ ܚܫܘܟܐ. * ܡܢܐ ܡܬܚܫܒܝܢ ܐܢܬܘܢ 9
ܥܠ ܡܪܝܐ. ܕܓܡܝܪܘܬܐ ܥܒܕ. ܘܠܐ ܢܩܘܡ ܕܬܪܬܝܢ ܙܒܢܝܢ ܐܘܠܨܢܐ. * ܡܛܠ ܕܥܕܡܐ 10
ܠܫܘܠܛܢܝܗܘܢ. ܡܪܝܕܝܢ. ܘܒܪܘܝܘܬܗܘܢ ܪܘܝܢ. ܘܐܬܐܟܠܘ. ܘܐܬܡܠܝܘ ܩܫܐ ܝܒܝܫܐ.
* ܡܢܟܝ ܢܦܩ ܕܡܬܚܫܒ ܒܝܫܬܐ ܥܠ ܡܪܝܐ: ܘܡܬܪܥܐ ܥܘܠܐ .·. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ: 11 12
ܥܠ ܪܫܝ ܡܝܐ ܣܓܝܐܐ ܕܒܙܘ ܘܥܒܪܘ. ܘܐܫܡܥܬܟܝ ܬܘܒ ܠܐ ܐܫܡܥܟܝ. * ܘܗܫܐ ܐܬܒܪ 13
ܢܝܪܗ ܡܢܟܝ. ܘܐܦܣܩ ܐܣܘܪܝܟܝ. * ܘܢܦܩܘܕ ܥܠܝܟܝ ܡܪܝܐ.. ܘܠܐ ܢܙܪܥ ܬܘܒ ܡܢ ܫܡܟܝ. 14
ܡܢ ܒܝܬ ܐܠܗܟܝ. ܘܐܘܒܕ ܓܠܝܦܐ ܘܢܣܟܐ .· ܘܐܥܒܕܝܘܗܝ ܩܒܪܟܝ ܒܥܓܠ.

Sequitur Prophetia

NAHUM PROPHETÆ.

CAPUT. I.

PLaga Ninives extans in libello viſionum 1
Nahumi Elcoſæi. Deus zelotes eſt, & ul- 2
tor Dñs: ulciſcitur Dñs in ira, & vindictam
ſumit ab oſoribus ſuis, et *iram* ſervat in hoſtes
ſuos. Longa eſt patientia Dñi, et copioſa for-
titudo ejus; at nullo pacto impunè dimittens: 3
Dñi via in turbine eſt et in procella, et nubes
pulvis ſunt pedum ejus. Increpat mare, et are- 4
facit ipſum, omneſq; fluvios vaſtat: ingemiſcit
Mathnin et Charmelꝰ, et germen Libani exic-
catur. Montes contremiſcunt à conſpectu ejꝰ, 5
& colles diſrumpuntur: terra quatitur à con-
ſpectu ipſiꝰ, orbis & omnes habitatores ejus.
Ante iram ejus quis conſiſtat? & quis ferat æ- 6
ſtum furoris ejus? æſtus ejꝰ ardet ſicut ignis, et
montes liqueſcunt ab eo. Bonꝰ eſt Dñs ad pro- 7
tegendum in die calamitoſo, et agnoſcit eos
qui confidunt in ipſo. Diluvio imponet finē: 8
tranſibit ad regionē illius, et hoſtes ejꝰ perſe-
quentur tenebræ. Quid machinamini adver- 9
ſùs Dominum, quòd imponat finem ita ut ca-
lamitas non oboriatur ſecundâ vice? Nam vel 10
ipſi principes eorum refractarii ſunt, & in e-
brietate ſua ebrii: comederunt & impleve-
runt ſe ſtipulâ ſiccâ. Ex téne prodiret cogi- 11
tans malum contra Dominum, & machinator
impietatis? Sic dicit Dñs de capitibus aqua- 12
rum multarum quæ rapuerunt & elapſæ ſunt;
Si te *aliàs* exaudivi, annon exaudirem te ite- 13
rum? Jam fracturus ſum jugum ejus à te, &
lora tua rupturus. Præcipiet enim contra te 14
Dominus, & non feretur ampliùs de nomine
tuo in æde dei tui: perdamq; ſculptilia, &
vertam illam in ſepulcrum tuum citò.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ترجمة نبوة ناحوم النبي * بركاته علينا * * امين *

* الفصل الاول * * الاصحاح الثامن عشر * وهو الاول من النبوة *

* ضربة نينوى * سفر رويا ناحوم الالقوشي * الله غيور ورب منتقم بغضب * ينتقم من معانديه * 1 2
وهو يدع اعداءه * الرب طويل الروح * وعظيمة قوته * ولم يزكي تزكية * الرب في الانقضاء 3
وفي الزلزلة طريقه * والسحب غبار قدميه * يتهدد البحر ويجففه * ويخرب جميع الانهار * قلت 4
البيسانية والكرمل وازهار لبنان فنيت * الجبال تزلزلت منه * والاكام تزعزعت * انحلت 5
الارض كلها من وجهه * وجميع السكان فيها من وجه غضبه * من يثبت ومن يعاند في 6
زجر غضبه * غضبه يذيب الرؤساء * والصخور ذابت منه * الرب صالح للذين يرجونه في 7
يوم الشدة * وعارف بمتورعيه * وبطوفان المسلك يصنع الانقضاء * والظلمة تطرد المدويين * 8
* واعداوه ماذا يفكرون على الرب * هو يصنع الانقضاء * ليس ينتقم مرتين في الشدة معا * 9
* لان الى اساسهم ييبس * ومثل المنقار المشبك يوكل * ومثل القصبة المملوة جفافا * منك 10 11
يخرج الفكر على الرب * مروي المضادات السرين * هكذا يقول الرب على مبادي المياه 12
الكثير وهكذا يعبرون * وسماعك لا يسمع بعد * والآن اكسر عصاه عنك * وامزق 13
رباطاتك * ويوصي الرب من اجلك * لا يزرع من اسمك ايضا من بيت الهك استاصل 14
المنحوتات والمسبوكات * واصنع دفنك *

Interpretatio prophetiæ

NAHUMI PROPHETÆ;

CUJUS BENEDICTIONES
nobis adſint, Amen.

CAP. I.

Textus decimus octavus, hujus autem
prophetiæ primus.

PLaga Ninives, liber viſionis Na- 1
humi Elcoſæi. Deus zelotes eſt & Do- 2
minus cum furore ulciſcens; ulciſcitur ab
adverſariis ſuis, ipſeque aufert inimicos
ſuos. Dominus longanimis eſt, at maxi- 3
ma eſt fortitudo ejus, neque juſtificando
juſtificat: Domini via in excidio eſt
& terræmotu, & nubes pulvis ſunt pe-
dum ejus. Minitatur mari, & exiccat 4
illud, vaſtatque cuncta flumina: deficit
Baiſanitis & Charmelus, florida Libani
defecerunt. Montes ab eo contremuerunt, 5
& colles commoti ſunt: diſſoluta eſt
univerſa terra à facie ejus, & omnes
habitantes in ea à facie furoris ejus.
Quis conſiſtat, aut quis reſiſtat in ira 6
indignationis ejus? Indignatio ejus li-
queſacit principes, petræque ipſæ lique-
ſcunt ab eo. Dominus bonus eſt erga eos 7
qui præſtolantur eum in die tribulationis,
& cognoſcens religioſos ſuos. Diluvio 8
itineris faciet conſummationem, & tene-
bræ perſequentur aggreſſores. Hoſtes 9
igitur ejus quid contra Dominum cogi-
tant? ipſe conſummationem faciet: ne-
quaquam bis ſimul ulciſcitur in tribula-
tione. Nam uſque ad fundamentum eorū 10
areſcet, ut muſca circumvoluta comede-
tur, & ut arundo ſiccitate plena. Ex te 11
prodibit cogitatio contra Dominum, exco-
gitator contradictionū malarū. Sic dicit 12
Dominus de originibus aquarū multarū,
& ſic tranſibunt, & fama tua non audi-
etur ampliùs. Nunc frangam baculū ejus 13
à te, & diſrumpam vincula tua: Præci-
piet enim de te Dominus. Non ſeminabitur 14
ampliùs de nomine tuo: è domo dei tui
evellam ſculptilia & conflatilia, ponamq;
ſepulturam tuam.

נחום : ב

CAP. II. ב

.parem facientis audire evangelizantis pedes montes super Ecce
1 הִנֵּה עַל־הֶהָרִים רַגְלֵי מְבַשֵּׂר מַשְׁמִיעַ שָׁלוֹם
ultrà addet non quia : tua vota redde,tuas festivitates Jehudah Celebra
חָגִּי יְהוּדָה חַגַּיִךְ שַׁלְּמִי נְדָרָיִךְ כִּי לֹא יוֹסִיף עוֹד
super dissipator Ascendit *.est succisus ipse totus ,Belijahal* te per *transire*
2 לַעֲבוֹר־בָּךְ בְּלִיַּעַל כֻּלֹּה נִכְרָת: עָלָה מֵפִיץ עַל־
,lumbos conforta ,viam contemplare : munitionē custodiendo *,tuas facies*
פָּנַיִךְ נָצוֹר מְצוּרָה צַפֵּה־דֶרֶךְ חַזֵּק מָתְנַיִם
superbiam Dominus convertit Quia .valde potentiam robora
3 אַמֵּץ כֹּחַ מְאֹד: כִּי שָׁב יְהוָֹה אֶת־גְּאוֹן
,evacuantes eos evacuaverunt quia : Israel superbiam sicut , Jahacob
יַעֲקֹב כִּגְאוֹן יִשְׂרָאֵל כִּי בְקָקוּם בֹּקְקִים
,est rubefactus ejus fortium Clypeus .corruperunt eorum propagines &
4 וּזְמֹרֵיהֶם שִׁחֵתוּ: מָגֵן גִּבֹּרֵיהוּ מְאָדָּם
: se præparare die in ,currus lampadarū *igne in ,vermiculati* exercitus viri
אַנְשֵׁי־חַיִל מְתֻלָּעִים בְּאֵשׁ־פְּלָדוֹת הָרֶכֶב בְּיוֹם הֲכִינוֹ
, currus insanient plateis In *.fuerunt venenatæ* abietes &
5 וְהַבְּרֹשִׁים הָרְעָלוּ: בַּחוּצוֹת יִתְהוֹלְלוּ הָרֶכֶב
fulgura tanquā ,faces veluti eorum aspectus : plateas per *coxis collident*
יִשְׁתַּקְשְׁקוּן בָּרְחֹבוֹת מַרְאֵיהֶן כַּלַּפִּידִם כַּבְּרָקִים
: eorum ambulatione in impingent ,suorū fortium Recordabitur .discurrent
6 יְרוֹצֵצוּ: יִזְכֹּר אַדִּירָיו יִכָּשְׁלוּ בַּהֲלִיכוֹתָם
Portæ .operimentum præparabitur & , ejus murum ad festinabunt
7 יְמַהֲרוּ חוֹמָתָהּ וְהֻכַן הַסֹּכֵךְ: שַׁעֲרֵי
,est ducta captiva Hussab Et.est *liquef. ctū palatium* & ;sunt apertæ fluminum
8 הַנְּהָרוֹת נִפְתָּחוּ וְהַהֵיכָל נָמוֹג: וְהֻצַּב גֻּלְּתָה
tundentes ,columbarū *vocem juxta deducentes* ejus ancillæ &,est ascendere jussa
הֹעֲלָתָה וְאַמְהֹתֶיהָ מְנַהֲגוֹת כְּקוֹל יוֹנִים מְתֹפְפוֹת
ipsi & *: ipsa* diebus à aquis piscina sicut Nineveh Et .sua corda super
9 עַל־לִבְבֵהֶן: וְנִינְוֵה כִבְרֵכַת־מַיִם מִימֵי הִיא וְהֵמָּה
diripite ,argentum Diripite *.respiciens* non & , state , State *.fugientes*
10 נָסִים עִמְדוּ עֲמֹדוּ וְאֵין מַפְנֶה: בֹּזּוּ כֶסֶף בֹּזּוּ
.desiderii vase *omni præ gloria ,præparationem* ad finis non & ; aurum
זָהָב וְאֵין קֵצֶה לַתְּכוּנָה כָּבֹד מִכֹּל כְּלִי חֶמְדָּה:
collisio & ,est liquefactum cor & *: interrupta* & ,exaninata & ,est Evacuata
11 בּוּקָה וּמְבוּקָה וּמְבֻלָּקָה וְלֵב נָמֵס וּפִק
ipsorum universorum facies & , renibus cunctis in *invaletudo* & ,genuum
בִּרְכַּיִם וְחַלְחָלָה בְּכָל־מָתְנַיִם וּפְנֵי כֻלָּם
ipsum pascuum & , leonum habitaculum Ubi *.fuliginem contraxerunt*
12 קִבְּצוּ פָארוּר: אַיֵּה מְעוֹן אֲרָיוֹת וּמִרְעֶה הוּא
, leonis catulus , *ibi major leo* , leo ivit quod ,leonum catulorū
לַכְּפִרִים אֲשֶׁר הָלַךְ אַרְיֵה לָבִיא שָׁם גּוּר אַרְיֵה
suffocans & ,suis catulis *sufficientia in rapiens* Leo .exterrens non &
13 וְאֵין מַחֲרִיד: אַרְיֵה טֹרֵף בְּדֵי גֹרוֹתָיו וּמְחַנֵּק
.rapina sua habitacula & ,sua foramina præda implevit & : suis leænis
לְלִבְאֹתָיו וַיְמַלֵּא־טֶרֶף חֹרָיו וּמְעֹנֹתָיו טְרֵפָה:
fumo in faciam succendere & ,exercituum Dominus dixit ,te ad ego Ecce
14 הִנְנִי אֵלַיִךְ נְאֻם יְהוָֹה צְבָאוֹת וְהִבְעַרְתִּי בֶעָשָׁן
terra de faciam *succidere* & : gladius *comedet* tuos leunculos & *,ejus currum*
רִכְבָּהּ וּכְפִירַיִךְ תֹּאכַל חָרֶב וְהִכְרַתִּי מֵאֶרֶץ
.tuorum nunciorum vox ultrà audietur non & ,tuam prædam
טַרְפֵּךְ וְלֹא־יִשָּׁמַע עוֹד קוֹל מַלְאָכֵכֵה:

CAP. III. ג

non ,est plena *extorsione* mendacio ipsa universa ; sanguinum civitati Væ
1 הוֹי עִיר דָּמִים כֻּלָּהּ כַּחַשׁ פֶּרֶק מְלֵאָה לֹא
,sonipedis equi & , *rotæ* commotionis *vox* & ,flagelli *Vox* .præda recedit
2 יָמִישׁ טָרֶף: קוֹל שׁוֹט וְקוֹל רַעַשׁ אוֹפָן וְסוּס דֹּהֵר
.subsilientis *currus &*
וּמֶרְכָּבָה מְרַקֵּדָה:

Versio VULG. LAT.

15 Ecce super montes pedes evangelizantis,& annuntiantis pacē: celebra,Juda, festivitates tuas, & redde vota tua: quia non adjiciet ultrà ut pertranseat in te Belial : universus interiit.

CAP. II.

1 AScendit qui dispergat coram te, qui custodiat obsidionem: contemplare viam,conforta lumbos,robora virtutem valdé. 2 Quia reddidit Dñs superbiam Jacob, sicut superbiā Israel: quia vastatores dissipaverunt eos, & propagines eorum corruperunt. 3 Clypeus fortium ejus ignitus,viri exercitûs in coccineis: igneæ habenæ currûs in die præparationis ejus,& agitatores consopiti sunt. 4 In itinerib⁹ conturbati sunt:quadrigæ collisæ sunt in plateis:aspectus eorum quasi lampades, quasi fulgura discurrentia. 5 Recordabitur fortium suorum, ruent in itineribus suis: velociter ascendent muros ejus, & præparabitur umbraculum. 6 Portæ fluviorum apertæ sunt, & templum ad solum dirutum. 7 Et miles captivus abductus est: & ancillæ ejus minabantur gementes ut columbæ, murmurantes in cordibus suis. 8 Et Ninive quasi piscina aquarum aquæ ejus : ipsi verò fugerunt : state, state, & non est qui revertatur. 9 Diripite argentum,diripite aurum : & non est finis divitiarum ex omnib⁹ vasis desiderabilibus. 10 Dissipata est, & scissa, & dilacerata : & cor tabescens,& dissolutio geniculorum, & defectio in cunctis renibus : & facies omnium eorum sicut nigredo ollæ. 11 Ubi est habitaculum leonum, & pascua catulorum leonum, ad quam ivit leo ut ingrederetur illuc, catulus leonis, & non est qui exterreat? 12 Leo cepit sufficienter catulis suis,et necavit leænis suis : et implevit prædâ speluncas suas, et cubile suum rapinâ. 13 Ecce ego ad te, dicit Dominus exercituum, et succendam usque ad fumum quadrigas tuas, et leunculos tuos comedet gladi⁹: et exterminabo de terra prædam tuam, et non audietur ultrà vox nuntiorum tuorum.

CAP. III.

1 VÆ,civitas sanguinum,universa mendacii dilaceratione plena : 2 non recedet à te rapina. Vox flagelli, et vox impetûs rotæ, et equi frementis, et quadrigæ ferventis,

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

15 Ἰδοὺ ἐπὶ τὰ ὄρη οἱ πόδες εὐαγγελιζομένου, καὶ ἀπαγγέλλοντος εἰρήνην. ἑόρταζε Ἰούδα τὰς ἑορτάς σου, ἀπόδος τὰς εὐχάς σου, διότι οὐ μὴ (θ) προσθήσωσιν ἔτι τοῦ διελθεῖν διὰ σοῦ εἰς παλαίωσιν.

MS.A. (θ) προσθῶσιν ἔτι τοῦ διελθεῖν εἰς παλαίωσιν.

ΚΕΦ. βʹ.

15/1 ΣΥντετέλεσται, ἐξῆρται. Ἀνέβη ἐμφυσῶν εἰς πρόσωπόν σου, (α) ἐξαιρούμενος ἐκ θλίψεως. σκόπευσον ὁδὸν, κράτησον ὀσφύος, ἄνδρισαι τῇ ἰσχύϊ (β) σφόδρα. 2 Διότι ἀπέστρεψε κύριος τὴν ὕβριν Ἰακὼβ, καθὼς ὕβριν τοῦ Ἰσραὴλ, διότι ἐκτινάσσοντες ἐξετίναξαν αὐτοὺς, καὶ τὰ κλήματα αὐτῶν διέφθειραν. 3 Ὅπλα δυναστείας αὐτῶν ἐξ ἀνθρώπων, ἄνδρας δυνατοὺς ἐμπαίζοντας ἐν πυρί· αἱ ἡνίαι τῶν ἁρμάτων αὐτῶν ἐν ἡμέρᾳ ἑτοιμασίας αὐτοῦ, καὶ οἱ ἱππεῖς θορυβηθήσονται 4 Ἐν ταῖς ὁδοῖς, καὶ συγχυθήσονται τὰ ἅρματα, καὶ συμπλακήσονται ἐν ταῖς πλατείαις. ἡ ὅρασις αὐτῶν ὡς λαμπάδες πυρὸς, καὶ 5 ὡς ἀστραπαὶ διατρέχουσαι. Καὶ μνησθήσονται οἱ μεγιστᾶνες αὐτῶν, καὶ φεύξονται ἡμέρας, καὶ ἀσθενήσουσιν ἐν (γ) τῇ πορείᾳ αὐτῶν, καὶ σπεύσουσιν ἐπὶ τὰ (δ) τείχη αὐτῆς, καὶ ἑ- 6 τοιμάσουσι τὰς προφυλακὰς αὐτῶν. Πύλαι τῶν πόλεων διηνοίχθησαν, καὶ τὰ βασίλεια (ε) 7 διέπεσε, καὶ ἡ ὑπόστασις ἀπεκαλύφθη. Καὶ αὕτη ἀνέβαινε, καὶ αἱ δοῦλαι αὐτῆς ἤγοντο, καθὼς περιστεραὶ φθεγγόμεναι ἐν (ζ) καρδί- 8 αις αὐτῶν. Καὶ Νινευὴ ὡς κολυμβήθρα ὕδατος τὰ ὕδατα αὐτῆς, καὶ αὐτοὶ φεύγοντες 9 οὐκ ἔστησαν, καὶ οὐκ ἦν ὁ (η) ἐπιβλέπων. Διήρπαζον τὸ ἀργύριον, διήρπαζον τὸ χρυσίον, καὶ οὐκ ἦν πέρας τοῦ κόσμου αὐτῆς· βεβάρυνται (θ) ἐπὶ πάντα τὰ σκεύη τὰ ἐπιθυμητὰ 10 αὐτῆς. Ἐκτιναγμὸς, καὶ ἀνατιναγμὸς, καὶ (ʹ) ἐκβρασμὸς, καὶ καρδίας θραυσμὸς, καὶ ὑπόλυσις γονάτων, καὶ ὠδῖνες ἐπὶ πᾶσαν ὀσφύν· καὶ τὸ πρόσωπον πάντων ὡς πρόσκαυμα χύτρας. 11 Ποῦ ἐστι τὸ κατοικητήριον τῶν λεόντων, καὶ ἡ νομὴ ἡ οὖσα (ι) τοῖς σκύμνοις; (κ) οὗ ἐπορεύθη λέων, τοῦ εἰσελθεῖν ἐκεῖ (λ) 12 σκύμνον λέοντος, καὶ οὐκ ἦν ὁ ἐκφοβῶν; Λέων ἥρπασε τὰ ἱκανὰ τοῖς σκύμνοις αὐτοῦ, καὶ ἀπέπνιξε τοῖς λέουσιν αὐτοῦ, καὶ ἔπλησε θήρας νοσσιὰν αὐτοῦ, καὶ τὸ κατοικητήριον 13 αὐτοῦ ἁρπαγῆς. Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπὶ σὲ, λέγει κύριος (ˇ) παντοκράτωρ, καὶ ἐκκαύσω ἐν καπνῷ πλῆθός σου, καὶ τοὺς λέοντάς σου καταφάγεται ῥομφαία, καὶ (μ) ἐξολοθρεύσω ἐκ τῆς γῆς τὴν θήραν σου, καὶ (ν) οὐ μὴ ἀκουσθῇ οὐκέτι τὰ ἔργα σου.

ΚΕΦ. γʹ.

1 ὮΠόλις αἱμάτων, ὅλη ψευδής, (α) ἀδικίας πλήρης, οὐ ψηλαφηθήσεται θήρα. 2 Φωνὴ μαστίγων, καὶ φωνὴ σεισμοῦ τροχῶν, καὶ ἵππου διώκοντος, καὶ ἅρματος ἀναβράζοντος,

15 *Ecce super montes pedes evangelizantis, & annuntiantis pacem. Celebra, Juda, festivitates tuas, redde vota tua: quia nequaquàm apponent ultrà transire (i) per te in vetustatem.*

CAP. II.

15/1 *COnsummatus (a) est, sublatus est: Ascendit insufflans in faciem tuam, eruens de tribulatione. Contemplare viam, tene lumbum, confortare robore valdé:* 2 *Quoniā avertit Dominus contumeliā Jacob, sicut contumeliā Israel: quia excutientes excusserūt eos, et propagines eorū corruperunt.* 3 *Arma potentiæ (b) eorum ex hominibus, viros fortes illudētes in igne: habenæ curruum eorū in die præparationis ejus: et equites timebunt* 4 *In (c) viis, & confundentur currus, et collidentur in plateis. Aspect⁹ eorū, quasi lampades ignis,* 5 *& quasi fulgura discurrentia. Et commemorabuntur optimates eorū: & fugient die, et infirmabuntur in itinere suo, & festinabunt ad muros ej⁹, et præparabunt propugnacula sua.* 6 *Portæ civitatū apertæ sunt: et regalia conciderunt, et substantia revelata est.* 7 *Et ipsa ascendebat, & ancillæ ejus ducebantur, sicut columbæ, loquentes in cordibus suis.* 8 *Et Nineue, sicut piscina (d) aquæ, aquæ ejus: & ipsi fugientes non steterunt, et non erat, qui respiceret.* 9 *Diripiebant argentum, diripiebant aurū, & non erat finis ornamenti ejus: (e) aggravati sunt super omnia vasa desiderabilia ejus.* 10 *Excussio, rediscussio, & ebullitio, & cordis confractio, & dissolutio genuum, & dolores super omnem lumbum: & facies omnium, sicut adustio ollæ.* 11 *Ubi est habitaculum leonum, & pascua, quæ erat catulis leonum? quò ivit leo, ut (f) ingrederetur illuc catulus leonis, & non est, qui exterreat?* 12 *Leo rapuit sufficientia catulis suis, & suffocavit leonibus suis, & implevit prædâ nidum suum, & habitaculum suum rapinâ.* 13 *Ecce ego ad te, dicit Dominus omnipotens: & succendam in fumo multitudinem tuam: & leones tuos comedet gladius: & auferam de terra prædam tuam: & non audientur ultrà opera tua.*

CAP. III.

1 *O Civitas sanguinum; tota mendax, (a) iniquitate plena: non contrectabitur venatio:* 2 *Vox flagellorum, & vox commotionis rotarum, & equi persequentis, & currûs ferventis,*

MS.A. (α) ἐξαιρούμενός σε ἐκ (β) σου σφόδρα. (γ) ταῖς πορείαις (δ) τείχη, καὶ ἑτοιμάσουσιν (ε) διέπεσε, (ζ) ταῖς καρδίαις αὐτῶν. Καὶ Νινευὴ ἦν κολυμβήθρα ὕδατος, τείχη ὕδατα αὐτῆς, (η) βλέπων. (θ) ὑπὲρ (ʹ) ἐκβρασμὸς, (ι) ἐν τοῖς (κ) οὗ (λ) σκύμνος (ˇ) ὁ (μ) ἐξολεθρεύσω (ν) οὐκέτι οὐ μὴ ἀκουσθῇ τά Κεφ. γʹ. MS.A. (α) πλήρης ἀδικίας,

תרוגם יונתן Targum JONATHAN.

15 הָא עַל טוּרֵי אַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל רַגְלֵי מְבַסַּר מַשְׁמַע שְׁלָם חוֹגִי יְהוּדָה חַגַּךְ שַׁלִּימִי נִדְרָךְ
אֲרֵי לָא יוֹסְפוּן עוֹד דִּיעְדוּן בִּיךְ רַשִׁיעִין כּוּלְּהוֹן אִשְׁתֵּיצִיאוּ :

ב

1 דַּהֲווֹ סָלְקִין וּמִתְבַּדְּרִין עַל אַרְעִיךְ צָיְרִין עֲלָךְ בְּצַיָּר מְקִימִין סַכּוָאִין עַל אוֹרְחָתִיךְ תַּקִיפֵי
2 קְדָל חֲסִינֵי חֵיל לַחֲדָא : אֲרֵי אֲתִיב יְיָ תּוּקְפֵיהּ לְיַעֲקֹב רְבוּתֵיהּ לְיִשְׂרָאֵל אֲרֵי בַזּוּנוּן בָּזְזִין
3 וְקִרְוֵי תּוּשְׁבַּחְתְּהוֹן חַבִּילוּ : תְּרֵיסֵי גִבָּרֵיהוֹן מְסַמְּקִין גַּבְרֵי עָבְדֵי קְרָבָא לְבִישִׁין זְהוֹרִיתָא
בְּאֶשָּׁתָא פִּילֵי רְתִיכֵיהוֹן וּזְמִינִין לְיוֹם קְשׁוּטְהוֹן וְרַבְנֵי מַשְׁרְיָתְהוֹן מְסַרְבְּלִין בִּצְבְעוֹנִין :
4 בְּשׁוּקַיָּא מִשְׁתַּגְשְׁגִין רְתִיכַיָּא קָל נְקוֹשׁ זַיְנֵיהוֹן מִשְׁתְּמַע בִּרְחוֹבֵי קִרְוַיָּא חֶזְוֵיהוֹן
5 כִּבְעוּרִין כְּבַרְקִין טָרְדִין : יִמְנוּן רַבְנֵי מַשְׁרְיָתְהוֹן יִתְקְלוּן בְּמַהֲכֵיהוֹן יוֹחוּן יִכְבְּשׁוּן שׁוּרָא
6 יִבְנוּן מִגְדְּלַיָּא : גִּשְׁרֵי נַהֲרָוָתָא אִתְפַּסַּקָא וּמַלְכָּא בְּהֵיכְלֵיהּ זָע : 7 וּמַלְכְּתָא יָתְבַת צִבְאָ
בְּגָלְיָא נַפְקַת וְאַמְהָתְהָא מַדְבְּרָן אָזְלָן בַּתְרָהָא מְנַהֲמָן כְּקָל יוֹנִים מְטָרְפָן עַל לִבֵּיהוֹן :
8 וְנִינְוֵה כְּבֵית כְּנִישַׁת מַיָּא מִיּוֹמֵי קֳדָם הִיא וְאִנּוּן עָרְקוּ קוּמוּ קוּמוּ וְלֵית דְּמַפְנֵי לְמֵקַם :
9 בּוֹזּוּ כַסְפָּא בּוֹזּוּ דַהֲבָא וְלֵית סוֹף לְאוֹצָרַיָּא סָפוּ מִכָּל מָנֵי חֶמְדְּתָא : 10 בְּזִיזָא וּמִתְבַּזְזָא וּפְתִיחַ
תַּרְעָא לְסָנְאָה וְלֵב מְסֵי וְנִקּוּשׁ רְכוּבִין וְזִיוַע בְּכָל חַרְצִין וְאַפֵּי כֻלְּהוֹן אִתְחַפִּיאוּ אֻכְרוּם
11 אוּכָּמִין כְּקִדְרָא : אָן מְדוֹרֵי מַלְכַיָּא וּבֵית מֵישְׁרֵי שִׁלְטוֹנַיָּא אֲתַר דַּהֲווֹ אָזְלִין מַלְכַיָּא תַּמָּן
12 בְּנֵיהוֹן שָׁבְקִין הָא כְּאַרְיָא דְשָׁרֵי עַל צֵידֵיהּ לְרוּחְצָן וְלֵית דְּמָנִיד : מַלְכַיָּא מַיְתָן חֲטוֹף
13 לִנְשֵׁיהוֹן וּבִזָּא לִבְנֵיהוֹן וּמַמְלָן אוֹצְרֵיהוֹן חֲטוֹף וּבִרְנְיָתְהוֹן בִּזָּא : הָא אֲנָא שָׁלַח
רוּגְזִי עֲלָךְ אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת וְאַדְלֵיק בְּאֶשָּׁתָא רְתִיכָךְ וּכְפָרְנָךְ תִּקְטוֹל חַרְבָּא וְאֵשֵׁצֵי מֵאַרְעָא
סְחוֹרְתִיךְ וְלָא יִשְׁתְּמַע עוֹד קָל אִזְגַּדָּךְ :

ג

1 וַי קַרְתָּא אַשְׁדַת דָּם כּוּלָּהּ כַּדְבִין בִּזָּא מַלְיָא לָא פָּסִיק קְטוֹל : 2 קָל נְקוֹשׁ מְחָא וְקָל
זִיוַע גַּלְגַּלִּין וְסוּסָוָן מְפַנְּכִין וּרְתִיכִין מְקַפְּצָן :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

15 Ecce super montes *terræ* Israel pedes evangelizantis facientis audire pacē: celebra Juda festivitatem tuam, persolve votum tuum, quoniam non addent ultrà ut transcant per te impii,omnes deleti sunt.

CAP. II.

1 QUi ascendebant ac dispergebantur sup terrā tuam; obsidebant te obsidione, erigentes speculas juxta vias tuas: *obfirmati* cervicem, *corroborati* vires vehementer. 2 Etenim restituit Dñs robur ipsi Jacob,celsitudinē Israeli: quoniā expilaverunt eos expilatores, & civitates decoris eorū destruxerunt. 3 Scuta fortiū eorum rubea,viri bellū gerentes induti sunt coccineo: igni faces curruū eorū apparatæ sunt ad diē ornat⁹ ipsorū,& magnates exercit⁹ eorū coruscant vestibus coloratis. 4 In plateis perstrepunt curr⁹,sonit⁹ concussionis armorū ipsorū auditur in compitis urbiū: aspectus eorū sicut lampades,tanquā fulgura discurrunt. 5 Præficient duces sui exercit⁹,corruent in itinere suo,festinantes subjicient murū,turres ædificabunt. 6 Pontes fluviorum ipsorū excisi sunt, & rex in palatio suo commot⁹ est. 7 Et regina quæ sedebat assistens in transmigrationib⁹, exiit, & ecce ancillæ ej⁹ abductæ post eam incedunt gementes sicut vox columbarū perstrepentiū super corde suo. 8 Cæterùm Ninive instar loci collectionis aquarū à dieb⁹ antiquis est: & ipsi fugerunt:obsistite,obsistite,sed nemo est qui vultū vertat ad obsistendū. 9 Diripite argentū,diripite aurū, & non est finis thesauris : consumite omnia vasa desiderabilia. 10 Direpta,expilata,& aperta est porta inimico, & cor liquefactū,& genuū collisio, & commotio per totos lumbos,omniū deniq; facies opertæ fuerunt nigredine instar ollæ denigratæ. 11 Ubi sunt habitacula regū,& ædes habitabiles principum,quò loci proficiscebantur reges, ibi filios suos relinquunt,ecce sicut leo qui habitat sup venationē suā præfidenter, nec est qui terreat. 12 Reges adferunt rapinā uxoribus suis,& prædas filiis suis,complentq; thesauros suos rapina,& palatia sua expilatione? 13 Ecce ego immittā furorē meū in te,dixit Dñs exercituū,& accendā igne curr⁹ tuos,& oppida tua concîdet gladi⁹,& delebo de terra negotiationē tuam,nec audietur ultrà vox legatorum tuorum.

CAP. III.

1 VÆ civitati effundenti sanguinē,universa mendaciis prædâq; referta est, non desinit occisio. 2 Sonit⁹ concussionis plagæ, & sonit⁹ commotionis rotarū,& equorum frementium, curruūmque subsilientium.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

1 * ܩܦܠܐܘܢ * ܒ * ܗܐ ܥܠ ܛܘܪ̈ܐ ܪ̈ܓܠܘܗܝ ܕܡܣܒܪܢܐ ܘܡܫܡܥܢ ܫܠܡܐ. ܥܒܕܝ
ܝܗܘܕܐ ܥܐܕ̈ܝܟܝ. ܘܫܠܡܝ ܢܕ̈ܪܝܟܝ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܡܘܣܦܝܢ ܬܘܒ ܠܡܥܒܪ ܒܟܝ ܒܝܫܐ. ܡܛܠ
2 ܕܟܠܗ ܐܬܓܕܝ. * ܣܠܩ ܡܕܒܪܢܐ ܩܕܡܝܟܝ. ܘܢܛܪ ܡܛܪܬܐ ܕܡܛܪܬܐ. ܘܕܩ ܐܘܪܚܐ. ܘܐܚܕ ܚܨܐ. ܘܐܬܚܝܠ
3 ܒܚܝܠܐ ܣܓܝ. * ܡܛܠ ܕܡܦܢܐ ܡܪܝܐ ܝܩܪܗ ܕܝܥܩܘܒ ܐܝܟ ܝܩܪܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܡܛܠ ܕܒܙܘ
4 ܐܢܘܢ ܕܒܙܘ. ܘܚܒܠܘ ܫܒܛܝܗܘܢ. * ܬܪܣܐ ܕܓܢܒܪ̈ܝܗܘܢ ܡܣܡܩܝܢ. ܘܓܒܪ̈ܐ
ܚܝܠܬܢܐ ܡܫܬܥܝܢ ܒܫܠܗܒܝܬܐ ܕܢܘܪܐ. ܘܒܡܪ̈ܟܒܬܐ ܒܝܘܡܐ ܕܡܬܛܝܒܝܢ. ܘܦܪ̈ܫܐ
5 ܡܬܕܡܪܝܢ. * ܒܫܘ̈ܩܐ ܡܫܬܒܗܪܝܢ ܒܡܪ̈ܟܒܬܗܘܢ. ܘܡܫܬܥܠܝܢ. ܚܙܘܗܘܢ ܐܝܟ
6 ܠܡܦ̈ܝܕܐ. ܘܐܝܟ ܒܪ̈ܩܐ ܪܗܛܝܢ. * ܢܬܚܕܘܢ ܪ̈ܘܪܒܢܝܗܘܢ. ܘܢܬܬܩܠܘܢ ܒܗܠܟ̈ܬܗܘܢ.
7 ܘܢܣܬܪܗܒܘܢ ܠܫܘܪܐ. ܘܢܛܝܒܘܢ ܩܠܥ̈ܝܗܘܢ. * ܬܪ̈ܥܐ ܕܝܗܘܕܐ ܢܬܦܬܚܘܢ. ܘܗܝܟܠܐ ܢܙܘܥ.
8 * ܘܐܥܝܪܬ ܦܪ̈ܫܝܗ. ܘܣܠܩܬ. ܘܐܡܗ̈ܬܗ ܡܙܡܪ̈ܢ ܗܘܝ ܒܠܒܘ̈ܬܗܝܢ. ܐܝܟ ܝܘ̈ܢܐ.
9 * ܘܢܝܢܘܐ ܐܝܟ ܡܥܝܢܐ ܕܡܝܐ. ܘܒܝܬ ܡ̈ܝܐ ܗܝ. ܘܗܢܘܢ ܥܪܩܝܢ. ܩܘܡܘ ܩܘܡܘ. ܘܠܝܬ
10 ܕܡܬܦܢܐ. * ܒܙܘ ܣܐܡܐ. ܘܒܙܘ ܕܗܒܐ. ܘܠܝܬ ܣܘܦܐ ܠܨܒܬܗ. ܝܩܝܪܝܢ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܡܐ̈ܢܝܗ
11 ܕܪ̈ܓܝܓܬܐ. * ܕܝܫܬܐ ܘܚܒܝܫܬܐ ܘܡܬܦܪܬܐ. ܘܠܒܐ ܡܫܪܝܐ. ܘܪܘܥܬܐ ܕܒܘܪ̈ܟܐ. ܘܚܒܠܐ ܒܟܠ
12 ܚܨܝܢ. ܘܐܦ̈ܐ ܕܟܠܗܘܢ ܐܝܟ ܩܘܛܡܐ ܕܩܕܪܐ. * ܐܝܟܐ ܗܘ ܡܥܡܪܐ ܕܐܪ̈ܝܘܬܐ. ܘܪܥܝܐ
13 ܕܓܘܪ̈ܝܐ. ܕܐܪܝܐ ܐܙܠ ܠܬܡܢ ܠܡܥܠ. ܓܘܪܝܐ ܕܐܪܝܐ. ܘܠܝܬ ܕܡܙܝܥ. * ܐܪܝܐ ܒܙܚ
ܣܘܦܩܐ ܠܓܘܪ̈ܘܗܝ. ܘܚܢܩ ܠܠܒܐܬܗ. ܘܡܠܐ ܡܥܡܪ̈ܘܗܝ ܒܙܬܐ. ܘܡܥܡܪܗ
14 ܚܛܘܦܝܐ. * ܗܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܘܐܘܩܕ ܒܬܢܢܐ ܪ̈ܟܒܝܟܝ. ܘܓܘܪ̈ܝܟܝ
ܬܐܟܘܠ ܚܪܒܐ. ܘܐܘܒܕ ܡܢ ܐܪܥܐ ܚܛܘܦܝܟܝ. ܘܠܐ ܢܫܬܡܥ ܬܘܒ ܩܠ ܥܒ̈ܕܝܟܝ.
2 * ܩܦܠܐܘܢ * ܓ * ܘܝ ܠܟܝ ܡܕܝܢܬܐ ܕܕܡ̈ܐ. ܕܟܠܗ ܕܓܠܘܬܐ: ܘܡܠܝܐ ܥܘܠܐ. ܘܠܐ ܡܬܡܫܐ
1 ܒܗ ܬܒܪܐ. * ܩܠ ܡܢܓܕܐ. ܘܩܠ ܙܘܥܐ ܕܓܝܓܠܐ. ܘܣܘܣܝܐ ܕܪܗܛ. ܘܡܪܟܒܬܐ ܕܡܬܢܫܦܐ.

CAP. II.

1 ECce ſuper montes pedes præconis & prædicantis pacem : Celebra Juda ſolennitates tuas, & perſolve vota tua; quia non eſt poſthac tibi malũ illatur, totus enim periit. 2 Aſcendit rector ante te, excubiarum excubitor, viæ ſpeculator, ſuſtentator lumborum, cujus validiſſimum eſt robur. 3 Nam ego reſtituam gloriam Jacobi, ut gloriã Iſraelis : conculcaverunt enim eos conculcatores, & corruperunt propagines eorum. 4 Clypei heroum ipſorum rubent; & viri heroes inter faces ignitas ludunt & in curribus, quo die inſtruunt ſeſe *ad bellum*; necnon equites admirationi ſunt. 5 In plateis gloriantur de curribus ſuis, ſeſeque jactant : aſpectus eorum ſimilis eſt lampadibus, & quaſi fulgura diſcurrunt. 6 Capientur principes eorum, & *ipſi* in ſuis greſſibus impingent : feſtinabũt ad murum, & pinnas aptabunt, 7 Portæ Judæ aperientur, & templum concutietur. 8 Nam excitavit *illa* equites ſuos, & aſcendit: & ancillæ ejus canebant in cordibus ſuis tanquam columbæ. 9 Porrò Ninive ſimilis eſt lacui aquarũ, & inter aquas eſt; ſed ipſæ fugiunt. Siſtite, *inclamant*, ſiſtite; ſed nemo eſt qui ſe convertat. 10 Diripuerunt argentum, diripuerunt aurũ: & quidẽ infinitus erat ornatus ejus, immenſa omnia vaſa ejus exquiſita. 11 *Jam* conculcata, dejecta, & perrupta *evaſit* : animus confractus, luxatio genuum, & tremor omnes lumbos occupabit, & omnium vultus reddam nigros ut fuliginem ollæ. 12 Ubinam eſt luſtrum leænæ, & paſcuum catuli leænæ? venit enim leo illuc ingreſſurus cum catulo leonis, & nemo interturbat. 13 Leo prædatus eſt ſufficientem catulis ſuis eſcã, imò diſcerpſit etiã pro cibis ſuis ſecundis, luſtra ſua & cubile ſuum prædâ replevit. 14 Ecce me contra te, dicit Dñs potentiſſimus; & perdã in fumũ turmas tuas, catuloſq; tuos conſumet gladius; & perdam è terra prædã tuã, nec audietur ampliùs rumor facinorum tuorum.

CAP. III.

1 VÆ urbi ſanguinariæ, quæ tota mendacium eſt, & plena ſcelere, nec tamen ſentitur in ea contritio. 2 Sonus flagelli, & ſtrepitus motûs rotarum, equus anhelans, & currus ſeſe agitans *deprehendetur* :

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

1 * الفصل الثاني * لان ها اقدام المبشر على الجبال * المخبر بالسلامة * عيد يا يهودا
اعيادك * واوف للرب نذورك. من اجل انه لا يعودون ايضا ان ياتوا الى التعتيق * قد تكملت
2 نزعت * صعد النافخ في وجهك * يخلصك من الضيق * ارصد الطريق * امسك الحقو. تشجع
3 بقوة جدا * من اجل ان الرب صرف كبرياء يعقوب مثل كبرياء اسرائيل * من اجل
4 ان النافضين نفضوهم * وافسدوا قضبانهم * اسلحة اقتدارهم من البشر * رجالا اقوياء
5 لاعبين بنار * لجم مراكبهم في يوم تهيئته * الفرسان يقلقون في الطرق * ويختلطون
6 المركبات ويلتبكون في الشوارع * منظرهم مثل مصابيح نار * وكبروق يسرعون * ويذكر
عظماوهم ويهربون نهارا * ويضعفون في مسالكهم ويسرعون على الاسوار * ويهيئون نواطيرهم *
7 8 * ابواب المدن فتحت والمملكات سقطت * والقوام كشف * وهي صعدت واماوها قدمن
9 كمثل حمامات مترنمات في قلوبهن * ونينوى مثل بركة ماء مياهها * وهم هاربون * لم
10 يقفوا * ولم يكن من ينظر * اختطفوا الفضة واختطفوا الذهب * ولم يكن نهاية لزينتها *
11 ثقلوا اكثر من جميع اوانيها المشتهاة * انتفاض وتهويل * وتبديد وانكسار قلب * وانحلال
12 ركب * وطلقات على كل حقو * ووجوه الكل سخام قدر * اين هو عرين الاسد * والمرعى الكاين
13 للاشبال * اين مضى الاسد * اين دخل هناك شبل الاسد * ولم يكن من يخوف * الاسد اختطف
14 ما يكفي اشباله * وخنق لاسوده الذين له * وملأ وكره صيدا ومسكنه اختطافا * ها انا عليك
يقول الرب الضابط الكل * واحرق بالدخان كثرتك * واسودك ياكلهم السيف * واستاصل
من الارض صيدك * ولا نسمع اعمالك بعد *
1 * الفصل الثالث * واه يا مدينة الدماء * الكذوبة كلها * المملوة ظلما لا يحس صيد *
2 * صوت الضربات * وصوت زلزلة البكرات * والفرس الراكض * والمركبة التي تصر *

CAP. II.

1 NAm ecce pedes præconis ſuper montes ſunt, annuntiantis pacem, ac dicentis; Celebra O Juda ſolennitates tuas, perſolve Domino vota tua; quia non ſunt ampliùs in antiquationem venturæ. Jam abſolutum eſt, ablatum eſt. 2 Aſcendit inſufflans in faciem tuam, eripiens te de tribulatione. Explora viam, tene lumbum, ſume animos magna cum fortitudine : 3 Quia Dominus amovit ſuperbiam Jacobi ut ſuperbiam Iſraelis. Nam excuſſores excuſſerunt eos, & corruperunt virgulta eorum; 4 Arma potentiæ ipſorum ex hominibus, viros fortiſſimos igne ludentes; habenas curruum eorum, in die præparationis ſuæ : equites angentur in viis : 5 Commiſcebunt currus, & implicabuntur in plateis : aſpectus eorum ſimilis erit facibus ignis, & ſicut fulgura veloces erunt. 6 Recordabuntur principes eorum, & fugient interdiu, & langueſcent in viis ſuis : diſcurrent ſuper muros, & præparabunt cuſtodes ſuos. 7 Portæ urbium apertæ ſunt, regna collapſa ſunt, 8 Et ſubſtantia detecta eſt : Ipſáque aſcendit, & ancillæ ejus præibant veluti columbæ canentes in cordibus ſuis. 9 Nimives autem aquæ ſunt ut piſcina aquæ. Dum ipſi fugerent, non ſubſiſtebant, nec erat qui reſpiceret. 10 Diripuerunt argentum, & diripuerunt aurum; neque enim erat modus ornamento ipſius : graviores facti ſunt omnibus vaſis ejus expetibilibus. 11 Excuſſio, & formido, diſſipatio, & confractio cordis, diſſolutio genuum, & dolores partûs ſuper omnes lumbos, vultuſque omnium ceu nigredo ollæ. 12 Ubi eſt luſtrum leonum, & paſcuum quod erat leunculorum? quò abiit leo? quò ingreſſus eſt catulus leonis, nec fuit qui deterreret? 13 Leo rapuit, quantum ſatis erat leunculis ſuis, & ſuffocavit leonibus qui ſecum erant, implevitque luſtrum ſuum venatione, & habitaculum ſuum prædâ. 14 Ecce ego contra te, dicit Dominus omnia tenens, & comburam fumo multitudinem tuam, & leones tuos vorabit gladius; & evellam è terra venationem tuã, nec audientur inpoſterùm opera tua.

CAP. III.

1 HEu O urbs ſanguinum, tota mendax, plena iniquitatis, non contrectabitur venatio; 2 Sonus ictuum, et ſonus motûs rotarum, equus currens, auriga ſtridens,

multitudinis & ,hastæ fulguris & ,gladii laminæ & ,ascendere facientis Equitis

פָּרָשׁ מַעֲלֶה וְלַהַב חֶרֶב וּבְרַק חֲנִית וְרֹב 3

impingent ,corporum finis non & ;cadaveris ponderis & ,interfectæ

חָלָל וְכֹבֶד פָּגֶר וְאֵין קֵצֶה לַגְּוִיָּה יִכָּשְׁלוּ

,gratiæ bonæ meretricis fornicationũ multitudinẽ Propter.eorũ corpora in

בִּגְוִיָּתָם׃ מֵרֹב זְנוּנֵי זוֹנָה טוֹבַת חֵן 4

familias & ,suis fornicationibus in gentes vendentis ,maleficiorum patronæ

בַּעֲלַת כְּשָׁפִים הַמֹּכֶרֶת גּוֹיִם בִּזְנוּנֶיהָ וּמִשְׁפָּחוֹת

revelabo & ,exercituũ Dominus dixit , te ad ego Ecce .suis maleficiis in

בִּכְשָׁפֶיהָ׃ הִנְנִי אֵלַיִךְ נְאֻם יְהוָה צְבָאוֹת וְגִלֵּיתִי 5

,tuã turpitudinem gentibus ostendam & : tuis faciebus super tuas fimbrias

שׁוּלַיִךְ עַל־פָּנָיִךְ וְהַרְאֵיתִי גוֹיִם מַעְרֵךְ

,abominationes te super faciam projicere Et .tuã ignominiã regnis &

וּמַמְלָכוֹת קְלוֹנֵךְ׃ וְהִשְׁלַכְתִּי עָלַיִךְ שִׁקֻּצִים 6

,te videntes omnes ,erit Et stercus tanquã te ponam & :te faciã vilipendere &

וְנִבַּלְתִּיךְ וְשַׂמְתִּיךְ כְּרֹאִי׃ וְהָיָה כָל־רֹאַיִךְ 7

unde , ei condolebit quis ,Nineveh est Vastata : dicet & ,te à vagabitur

יִדּוֹד מִמֵּךְ וְאָמַר שָׁדְּדָה נִינְוֵה מִי יָנוּד לָהּ מֵאַיִן

sedente , Amon No à es melior Nunquid ? tibi consolatores quæram

אֲבַקֵּשׁ מְנַחֲמִים לָךְ׃ הֲתֵיטְבִי מִנֹּא אָמוֹן הַיֹּשְׁבָה 8

mari à ,mare antemurale cujus : ei undique Aquæ ? flumina inter

בַּיְאֹרִים מַיִם סָבִיב לָהּ אֲשֶׁר־חֵיל יָם מִיָּם

Put .finis non & ,Ægyptus & ,ejus fortitudo Chus .ejus murus

חוֹמָתָהּ׃ כּוּשׁ עָצְמָה וּמִצְרַיִם וְאֵין קֵצֶה פּוּט 9

, ivit transmigrationẽ in ipsa Etiam .tuo auxilio in fuerunt Lubim &

וְלוּבִים הָיוּ בְּעֶזְרָתֵךְ׃ גַּם־הִיא לַגֹּלָה הָלְכָה 10

: platearum omnium capite in sunt elisi ejus parvuli etiam ; captivitatẽ in

בַשֶּׁבִי גַּם עֹלָלֶיהָ יְרֻטְּשׁוּ בְּרֹאשׁ כָּל־חוּצוֹת

ejus magnates omnes & , sortem projecerunt ejus inclytos super &

וְעַל־נִכְבַּדֶּיהָ יַדּוּ גוֹרָל וְכָל־גְּדוֹלֶיהָ

: abscondita eris ,inebriaberis tu Etiam .compedibus in sunt constricti

רֻתְּקוּ בַזִּקִּים׃ גַּם־אַתְּ תִּשְׁכְּרִי תְּהִי נַעֲלָמָה 11

ficus tuæ munitiones Omnes .hoste ab robur quæres tu etiam

גַּם־אַתְּ תְּבַקְשִׁי מָעוֹז מֵאוֹיֵב׃ כָּל־מִבְצָרַיִךְ תְּאֵנִים 12

.comedentis os super cadent & ,fuerint commotæ si ,primitivis cum

עִם־בִּכּוּרִים אִם־יִנּוֹעוּ וְנָפְלוּ עַל־פִּי אוֹכֵל׃

aperiendo tuis Inimicis .tuo interiori in mulieres tuus populus Ecce

הִנֵּה עַמֵּךְ נָשִׁים בְּקִרְבֵּךְ לְאֹיְבַיִךְ פָּתוֹחַ 13

Aquas .tuos vectes ignis comedit ,tuæ terræ portæ sunt apertæ

נִפְתְּחוּ שַׁעֲרֵי אַרְצֵךְ אָכְלָה אֵשׁ בְּרִיחָיִךְ׃ מֵי 14

,lutum in intra : tuas munitiones fortifica ,tibi hauri munitionis

מָצוֹר שַׁאֲבִי לָךְ חַזְּקִי מִבְצָרָיִךְ בֹּאִי בַטִּיט

te succidẽt , ignis te comedet Ibi .laterariam tene ,lutum in calca &

וְרִמְסִי בַחֹמֶר הַחֲזִיקִי מַלְבֵּן׃ שָׁם תֹּאכְלֵךְ אֵשׁ תַּכְרִיתֵךְ 15

.locusta ut aggravare ,bruchus ut aggravare : bruchus ut te comedet,gladius

חֶרֶב תֹּאכְלֵךְ כַּיָּלֶק הִתְכַּבֵּד כַּיֶּלֶק הִתְכַּבְּדִי כָּאַרְבֶּה׃

,est grassatus bruchus :cœlorum stellis præ tuos negotiatores Multiplicâsti

הִרְבֵּית רֹכְלַיִךְ מִכּוֹכְבֵי הַשָּׁמָיִם יֶלֶק פָּשַׁט 16

,locustarũ locusta ut tui principes & ,locusta sicut tui Coronati .avolavit &

וַיָּעֹף׃ מִנְּזָרַיִךְ כָּאַרְבֶּה וְטַפְסְרַיִךְ כְּגוֹב גּוֹבָי 17

non &,evagatus & ,est ortus Sol ,frigoris die in sepibus in castrametantiũ

הַחוֹנִים בַּגְּדֵרוֹת בְּיוֹם קָרָה שֶׁמֶשׁ זָרְחָה וְנוֹדַד וְלֹא־

, Assur rex tui pastores Dormitaverũt .ipsæ ubi ejus locus cognitus est

נוֹדַע מְקוֹמוֹ אַיָּם׃ נָמוּ רֹעֶיךָ מֶלֶךְ אַשּׁוּר 18

non & , montes super tuus populus sunt dispersi ,tui illustres jacebunt

יִשְׁכְּנוּ אַדִּירֶיךָ נָפֹשׁוּ עַמְּךָ עַל־הֶהָרִים וְאֵין

Omnes .tua plaga est infirmata ,tuæ fracturæ restrictio Non .congregans

מְקַבֵּץ׃ אֵין־כֵּהָה לְשִׁבְרֶךָ נַחְלָה מַכָּתֶךָ כֹּל 19

quem super nam : te super vola plauserunt ,tuam auditionem audientes

שֹׁמְעֵי שִׁמְעֲךָ תָּקְעוּ כַף עָלֶיךָ כִּי עַל־מִי

? semper tua malitia transivit non

לֹא־עָבְרָה רָעָתְךָ תָּמִיד׃

Versio VULG. LAT.

3 & equitis ascendentis: Et micantis gladii, & fulgurantis hastæ, & multitudinis interfectæ, & gravis ruinæ: nec est finis cadaverum, & 4 corruent in corporibꝰ suis. Propter multitudinem fornicationum meretricis speciosæ, & gratæ, & habentis maleficia, quæ vendidit gentes in fornicationibus suis, & 5 familias in maleficiis suis: Ecce ego ad te, dicit Dominꝰ exercituũ, & revelabo pudenda tua in facie tua, & ostendam Gentibus nuditatem tuam, & regnis ignomi- 6 niam tuam. Et projiciam super te abominationes, & contumeliis te afficiam, & ponã te in exem- 7 plum. Et erit: omnis, qui viderit te, resiliet à te, & dicet; Vastata est Ninive: quis commovebit super te caput? unde quæram con- 8 solatorem tibi? Numquid melior es Alexandriâ populorũ, quæ habitat in fluminibus? aquæ in circuitu ejus: cujus divitiæ, mare: 9 aquæ, muri ejus. Æthiopia fortitudo ejus, & Ægyptus, & non est finis: Africa & Libyes fuerunt 10 in auxilio tuo. Sed & ipsa in transmigrationem ducta est in captivitatem: parvuli ejꝰ elisi sunt in capite omniũ viarũ, & super inclytos ejus miserunt sortẽ, & omnes optimates ejꝰ confixi sunt 11 in compedibꝰ. Et tu ergò inebriaberis, & eris despecta: & tu 12 quæres auxiliũ ab inimico. Omnes munitiones tuæ sicut ficꝰ cũ grossis suis: si concussæ fuerint, cadent 13 in os comedentis. Ecce populus tuus mulieres in medio tuî: inimicis tuis adapertione pandentur portæ terræ tuæ, devorabit ignis 14 vectes tuos. Aquã propter obsidionẽ hauri tibi: exstrue munitiones tuas: intra in lutũ, & calca, 15 subigens tene laterẽ. Ibi comedet te ignis: peribis gladio, devorabit te ut bruchꝰ: cõgregare ut bruchꝰ: 16 multiplicare ut locusta. Plures fecisti negotiationes tuas, quàm stellæ sint cœli: bruchus expansus 17 est, & avolavit. Custodes tui quasi locustæ: & parvuli tui quasi locustæ locustarũ, quæ considunt in sepibus in die frigoris: Sol ortus est, & avolaverunt, & non est cognitus locus earum ubi fuerint. 18 Dormitaverunt pastores tui, rex Assur: sepelientur principes tui: latitavit populꝰ tuꝰ in montibꝰ, & 19 nõ est qui congreget. Non est obscura cõtritio tua, pessima est plaga tua: omnes qui audierunt auditionem tuam, compresserunt manum super te: quia super quem non transiit malitia tua semper?

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

3 καὶ ἱππέως ἀναβαίνοντος, Καὶ στιλβούσης ῥομφαίας, ϗ ἐξαστραπτόντων ὅπλων, ϗ πλήθους τραυματιῶν, ϗ βαρείας πτώσεως, ϗ οὐκ ἦν πέρας τοῖς ἔθνεσιν αὐτῆς· ϗ ἀσθενήσουσιν ἐν τοῖς σώμασιν αὐτῶν 4 Ἀπὸ πλήθους πορνείας. πόρνη καλὴ, ϗ (β) ἐπίχαρις ἡγουμένη φαρμάκων, ἡ πωλοῦσα ἔθνη ἐν τῇ πορνείᾳ αὐτῆς, ϗ (γ) λαοὺς 5 ἐν τοῖς φαρμάκοις αὐτῆς. Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπὶ σὲ, λέγει κύριος ὁ θεὸς ὁ παντοκράτωρ, ϗ ἀποκαλύψω τὰ ὀπίσω σου ἐπὶ (δ) τὸ πρόσωπόν σου, ϗ δείξω ἔθνεσι τὴν (ε) αἰσχύνην σου, ϗ βασιλείαις τὴν ἀτιμίαν σου. 6 Καὶ (ζ) ἀπορρίψω ἐπὶ σὲ βδελυγμὸν κατὰ τὰς ἀκαθαρσίας σου, ϗ θήσομαί σε εἰς παρά- 7 δειγμα. Καὶ ἔσται, πᾶς ὁ ὁρῶν σε καταβήσεται ἀπὸ σοῦ, ϗ ἐρεῖ, Δειλαία Νινευή· τίς στενάξει (η) αὐτήν; πόθεν ζητήσω (θ) 8 παράκλησιν αὐτῇ; Ἑτοιμάσαι μερίδα, ἁρμόσαι χορδὴν, ἑτοιμάσαι μερίδα Ἀμμών· ἡ κατοικοῦσα ἐν ποταμοῖς, ὕδωρ κύκλῳ αὐτῆς, ἧς ἡ ἀρχὴ (ι) θάλασσα, ϗ 9 ὕδωρ τὰ τείχη αὐτῆς, Καὶ Αἰθιοπία (κ) ἰσχὺς αὐτῆς, ϗ Αἴγυπτος· ϗ οὐκ (λ) ἔστι πέρας τῆς φυγῆς (μ)· ϗ Λίβυες ἐγένοντο 10 βοηθοὶ αὐτῆς. Καὶ αὐτὴ εἰς μετοικεσίαν πορεύσεται αἰχμάλωτος, ϗ τὰ νήπια αὐτῆς ἐδαφιοῦσιν ἐπ' ἀρχὰς πασῶν τῶν ὁδῶν αὐτῆς, ϗ ἐπὶ πάντα τὰ ἔνδοξα αὐτῆς βαλοῦσι κλήρους· ϗ πάντες οἱ μεγιστᾶνες αὐτῆς 11 δεθήσονται χειροπέδαις. (ν) Καὶ σὺ μεθυσθήσῃ, ϗ ἔσῃ ὑπερεωραμένη, ϗ σὺ ζητήσεις 12 σεαυτῇ στάσιν ἐξ ἐχθρῶν. Πάντα τὰ ὀχυρώματά σου συκαῖ σκοποὺς ἔχουσαι, ἐὰν σαλευθῶσι, (ξ) πεσοῦνται εἰς στόμα ἔσθοντος. 13 Ἰδοὺ ὁ λαός σου ὡς γυναῖκες ἐν σοί, τοῖς ἐχθροῖς σου ἀνοιγόμεναι ἀνοιχθήσονται πύλαι τῆς γῆς σου, (ο) καταφάγεται πῦρ τοὺς 14 μοχλούς σου. Ὕδωρ περιοχῆς ἐπίσπασαι σεαυτῇ, (ʹ) ϗ κατακράτησον τῶν ὀχυρωμάτων σου· ἔμβηθι εἰς πηλὸν, ϗ (π) συμπατήθητι ἐν ἀχύροις, κατακράτησον ὑπὲρ πλίνθον. 15 Ἐκεῖ καταφάγεταί σε πῦρ, (ρ) ἐξολοθρεύσει σε ῥομφαία, (σ) καταφάγεταί σε ὡς ἀ- 16 κρὶς, ϗ βαρυνθήσῃ ὡς βροῦχος. Ἐπλήθυνας τὰς ἐμπορίας σου ὑπὲρ τὰ ἄστρα τοῦ οὐρανοῦ· βροῦχος ὥρμησε, ϗ ἐξεπετάσθη. 17 Ἐξήλατο ὡς (") ἀττέλεβος ὁ σύμμικτός σου, ὡς ἀκρὶς ἐπιβεβηκυῖα ἐπὶ φραγμὸν ἐν (τ) ἡμέρᾳ πάγους· ὁ ἥλιος ἀνέτειλε, ϗ ἀφήλατο, ϗ οὐκ ἔγνω τὸν τόπον αὐτῆς· (υ) οὐαὶ 18 αὐτοῖς. Ἐνύσταξαν οἱ ποιμένες σου, βασιλεὺς Ἀσσύριος (φ) ἐκοίμισε τοὺς δυνάστας σου, ἀπῆρεν ὁ λαός σου ἐπὶ τὰ ὄρη, ϗ οὐκ ἦν ὁ 19 ἐκδεχόμενος. Οὐκ ἔστιν ἴασις τῇ συντριβῇ σου, ἐφλέγμανεν ἡ πληγή σου, πάντες οἱ (χ) ἀκούοντες τὴν ἀγγελίαν σου, κροτήσουσι χεῖρας ἐπὶ σέ· διότι ἐπὶ τίνα οὐκ ἐπῆλθεν ἡ κακία σου διαπαντός; ΝΑΟΥΜ Ζ'.

& equitis ascendentis, Et splendentis gladii, & fulgentium armorum, & multitudinis vulneratorum, & gravis ruinæ: & non (b) fuit finis gentibus ejus: et infirmabuntur in corporibus (c) suis A multitudine fornicationis. 3 4 *Meretrix speciosa, & grata, (d) dux maleficiorũ, quæ vendit gentes in fornicatione sua, & (e) populos in maleficiis suis. Ecce ego ad te, dicit Dominus Deus omnipotens: & discooperiam posteriora tua super faciem tuam; & ostendam gentibus confusionem tuam, et regnis ignominiã tuã: Et projiciã super te abominationẽ secundũ immunditias tuas: et ponã te in exemplũ. Et erit, (f) omnis, qui viderit te, descendet à te, et dicet; Misera Nineve, quis gemet eam? unde quærã consolationem illi? (g) Parare partẽ, aptare chordã, parare partem Ammon: quæ habitas in fluminibꝰ: aqua in circuitu ejus: cujus principiũ mare est, & aqua muri ejus: Et Æthiopia fortitudo ejus, & Ægyptus, & (h) non stetit finis fugæ. (i) Et Lybes facti sunt auxiliatores illius: Et ipsa in transmigrationẽ ibit captiva: & parvulos ejus allident (k) in principiis omniũ viarũ ejus: et super omnia inclyta ejus mittent sortes. Et universi optimates ejus alligabuntur compedibus. Et tu inebriaberis, et eris despecta, et tu quæres tibi (l) stationem ab inimicis. Omnes munitiones tuæ, ficus, quæ (m) scopos habent: si commotæ fuerint, cadent in os comedentis. Ecce populus tuus, quasi mulieres in te. Inimicis tuis aperiendo, aperientur portæ terræ tuæ, comedet ignis vectes tuos. Aquã obsidionis hauri tibi, & obtine munitiones tuas: ingredere in lutũ, et conculcare in paleis, obtine super laterẽ. Ibi comedet te ignis, disperdet te gladius, comedet te, quasi locusta, et aggravaberis, quasi (n) bruchus. Multiplicâsti negotiationes tuas super stellas cœli: bruchus irruit, & evolavit. Exiliit, quasi attelabꝰ, commistus tuus, sicut locusta, quæ ascendit super sepem in die gelûs: Sol ortus est; & exilivit, et non cognovit locũ suum. Væ ipsis. Dormitaverunt pastores tui; rex Assyrius consopivit fortes tuos: abiit populꝰ tuus super montes, et non erat, (o) qui susciperet. Non est sanatio contritioni tuæ: intumuit plaga tua: omnes, qui audierint nuntium tuum, plaudent manibus super te. Quia super quem non supervenit malitia tua semper?* 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19

MS.A. (β) ἐπιχαρὴς (γ) φυλὰς ἐν (δ) πρόσωπόν (ε) ἀσχημοσύνην (ζ) ἐπιρρίψω (η) ἀπὸ σοῦ; (θ) παράκλησις (ι) αὐτῆς θάλασσα, (κ) ἡ ἰσχὺς (λ) ἔσται (μ) σου· (ν) Καίγε (ξ) ϗ πεσοῦνται (ο) ϗ καταφάγεται (ʹ) κατακράτησον (π) Συνπάτει (ρ) ἐξολοθρεύσει (σ) ϗ καταφάγεται (") ἀττέλαβος (τ) ἡμέραις πάγου. (υ) οὐαὶ οὐαὶ (φ) *ἐκοίμισεν (χ) ἀκούοντες χεῖρα

ΝΑΟΥΜ Ζ'.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 פרש מסיק ולהוב וצלהוב סיפין וצחצוח מורנין וסני קטילין והמון פגרין לית סוף
לקטיליא יתקלון בקטיליהון : 4 מסניאות אתרנושת קרתא דהיא כטעיתא נפקת ברא
שפירת רוו ידעא חרשין דמסרא עממיא בטעותהא ומלכותא בחרשהא : 5 הא אנא
שלח רוגזי עלך אמר יי צבאות ואגלי בהתת חובך על אפך ואחזי עממיא בהתתיך
ומלכותא קלניך : 6 וארמי עלך שקוצין ואנבלניך ואשויניך מכערא לעיני כל חזך : 7 ויהי
כל די יחזניך יתרחק מניך ויימר אתבזיזת נינוה מן ידוי עלך איכא אשכח מנחמין לך :
8 הא את טבא מאלכסנדריא רבתא דיתבא ביני נהרותא מיא סחור סחור לה דשורהא
ימא מימא שורהא : 9 כוש סומכתהא ומצרים ולית סוף פוטאי ולובאי הוו בסעדיך : 10 אף
היא בגלותא תהך בשביא אף עולימהא יטרפון בריש כל שוקיא ועל יקירהא רמו עדבין
וכל רברבהא ידקדקון בשלשלן : 11 אף את דמיא לרויא תהי מסלעמא אף את תבעין
סעיד מבעל דבבא : 12 כל כרכך דמן לתינין בכירן דאם ירעדונונין יתרון וישתארון בהון
צמוקין דכשרין למיכל : 13 הא עמך חלשין כנשיא בגויך לבעלי דבביך אתפתחו תרעי
ארעיך אכלת אשתא תוקפיך : 14 מיא בצירא כנושי לגויך תקפי כרכך אסגא מרוא
ושעבידי בטינא אתקיפי בניניך : 15 לתמן יתון עלך עממיא דתקיפין כאשתא ישיצוניך
קטולי חרבא יתכנשון עלך משרית עממין דסגיאין כזחלא יחפוניך כקמצא יחסלוניך
כגובא : 16 אסגית תגריך מכוכבי שמיא הא כזחלא דשלח ופרח : 17 האטסך מצלהבין כגובא
וטפסריך כזחיל גובאי די שרן בכתליא ביום קריר דכד שמשא דנחא עליהון מתבדרין
ולא אתידע אתרהון לאן ערקין : 18 אתברו גבריך מלכא דאתור גלו עם משריתך אתבדרו
עמך על טוריא ולית דמכניש : 19 לית דכאב ליה על תבריך ממרעא מחתיך כל די שמעו
שמעתך טפחו ידיהון עלך חדיאו ארי על מן לא עדת מחת בישתיך תדירא :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

3 Eques ascendit, & flamma aciesq; gladiorũ, & polities hastarũ, & abũdantia occisorũ, et multitudo cadaverũ, nec est finis trucidatis, impingent in trucidatos suos. 4 Præ multitudine strepitꝰ civitatis quæ est sicut meretrix & scortũ, eleganti venustate præditũ, sciẽs magicas artes, ut prodat gentes idolis suis, et regna veneficiis suis. 5 Ecce ego immittã furorẽ meũ sup te, inquit Dñs exercituũ, ac patefaciã confusionẽ sceleris tui in vultũ tuũ, & ostendã gentibꝰ pudendũ dedecꝰ tuũ, et regnis ignominias tuas. 6 Et projiciã in te abominationes, teq; reddã execrandã, & ponã te fœdissimã oculis omniũ videntiũ te. 7 Et futurũ est ut quisquis te conspexerit, procul recedat à te, dicatque; Expilata est Ninive, quis condolebit tibi, ubi inveniã tibi consolatores? 8 An es melior quã Alexandria magna, quæ sedet inter fluvios aquarũ undiquaq; circũdata, cujꝰ murꝰ est mare, *à mari* murꝰ ejꝰ? 9 Æthiopia præsidiũ ejꝰ ac Ægyptꝰ, nec est finis: Libyi Lidijq; tibi fuerunt auxilio. 10 Sed & ipsa in exilio ambulabit in captivitate, etiã adolescentes ejꝰ allidentur in capite omniũ plateãrũ, & sup inclytos ejꝰ conjicientur sortes, & omnes ejꝰ principes comminuentur catenis. 11 Tu quoq; temulento similis eris, pessundata; tu etiã auxiliũ flagitabis ab inimico. 12 Omnes arces tuæ erunt similes ficubus temporaneis, quæ si excutiantur defluent, & remanebunt in eis uvæ passæ, quæ aptæ sũt ad comedendũ. 13 Ecce populꝰ tuꝰ imbecillis est instar mulierũ in medio tui; hostibꝰ tuis apertæ fuerunt portæ terræ tuæ, devoravit ignis robur tuum. 14 Aquas munitionis congrega intra te, obfirma tuas arces, multiplica cæmenta & subige lutum, fortifica ædificia tua. 15 Ibi venient sup te gentes quæ sunt validæ sicut ignis, delebunt te interfectores gladio, congregabuntur adversũ te exercitꝰ gentiũ quæ multæ sunt ut reptilia, operient te sicut bruchus, vastabunt te tanquam locusta. 16 Multiplicâsti mercatores tuos præ stellis cœlorũ, en sicut locusta quæ sese diffundit & volat. 17 Ecce laminæ tuæ flammicant ut bruchus, & duces tui sicut vermes locustarum quæ habitant in parietibus in die frigoris, quæ simul atq; sol exortus est sup ipsas, disperguntur, neq; innotescit locꝰ earũ quò fugiunt. 18 Fracti sunt fortes tui rex Assyriæ, exulant populꝰ tuorũ exercituũ: dispersi sũt populi tui sup montes, nec est qui congreget. 19 Non est qui doleat sibi de fractione tua, infirmatum est vulnus tuum: quotquot audierunt rumorem tui comploserunt manibus suis super te lætantes: ad quem enim non penetravit plaga nequitiæ tuæ jugiter?

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

3 *ܘܦܪ̈ܫܐ ܪܟܒܝܢ. ܘܣܦܣܪܐ ܕܡܒܪܩ. ܘܢܝܙܟܐ ܕܡܨܠܚ. ܘܣܘܓܐܐ ܕܩܛܝ̈ܠܐ. ܘܬܘܩܠܐ ܕܦܓܪ̈ܐ.
4 ܘܠܝܬ ܣܟܐ ܠܦܓܪ̈ܐ. ܢܬܬܩܠܘܢ ܒܦܓܪ̈ܝܗܘܢ. * ܡܢ ܣܘܓܐܐ ܕܙܢܝܘܬܗ ܕܙܢܝܬܐ.
5 ܫܦܝܪܬ ܚܙܘܐ ܘܡܪܬ ܚܪ̈ܫܐ. ܕܡܪܒܝܐ ܠܥܡ̈ܡܐ ܒܙܢܝܘܬܗ. ܘܠܫܪ̈ܒܬܐ ܒܚܪ̈ܫܝܗ. * ܗܐ ܐܢܐ
ܥܠܝܟܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܘܐܓܠܐ ܫܘ̈ܠܝܟܝ ܥܠ ܐܦ̈ܝܟܝ. ܘܐܚܘܐ ܠܥܡ̈ܡܐ ܥܪܛܠܝܘܬܟܝ.
6 ܘܠܡܠܟܘ̈ܬܐ ܨܥܪܟܝ. *ܘܐܪܡܐ ܥܠܝܟܝ ܛܢܦܘܬܐ. ܘܐܨܥܪܟܝ. ܘܐܣܝܡܟܝ ܚܙܘܐ.
7 *ܘܟܠ ܡܢ ܕܚܙܐ ܠܟܝ ܢܬܪܚܩ ܡܢܟܝ. ܘܢܐܡܪ. ܐܬܒܙܙܬ ܢܝܢܘܐ. ܡܢܘ ܢܬܬܥܝܩ ܠܟܝ. ܘܡܢܐ ܐܒܥܐ
8 ܡܒܝܐܢܐ ܠܟܝ. * ܕܠܡܐ ܛܒܐ ܐܢܬܝ ܡܢ ܝܘܢ ܕܐܡܘܢ: ܕܝܬܒܐ ܒܢܗܪ̈ܘܬܐ ܘܡ̈ܝܐ
9 ܚܕܪܝܢ ܠܗ. ܕܚܝܠܗ ܝܡܐ. ܘܡ̈ܝܐ ܫܘܪܗ. * ܟܘܫ ܘܡܨܪܝܢ ܚܝܠܗ. ܘܠܝܬ ܠܗ ܣܟܐ.
10 ܦܘܛ ܘܠܘܒܝ̈ܐ ܗܘܘ ܒܥܘܕܪܢܗ. *ܐܦ ܗܝ ܠܫܒܝܬܐ ܐܙܠܬ. ܘܥܘ̈ܠܠܝܗ ܐܬܪܛܫܘ ܒܪܝܫ
ܟܠܗܘܢ ܫܘ̈ܩܝܗ. ܘܥܠ ܡ̈ܝܩܪܝܗ ܐܪܡܝܘ ܦܣ̈ܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܪ̈ܘܪܒܢܝܗ ܐܬܐܣܪܘ ܒܫܫ̈ܠܬܐ.
11 *ܐܦ ܐܢܬܝ ܬܒܝܫܝܢ. ܘܬܗܘܝܢ ܫܝܛܬܐ. ܐܦ ܐܢܬܝ ܬܒܥܝܢ ܥܘܕܪܢܐ ܡܢ ܒܥܠܕܒ̈ܒܝܟܝ.
12 * ܟܠܗܘܢ ܚܘ̈ܣܢܝܟܝ. ܐܝܟ ܬܐܢܐ ܕܒܟܘܪ̈ܐ. ܕܡܐ ܕܡܬܒܫܠܢ ܢܦܠܢ ܒܦܘܡܗ ܕܐܟܘܠܐ.
13 *ܘܥܡܟܝ ܐܝܟ ܢܫ̈ܐ ܐܢܘܢ. ܒܓܘܟܝ. ܢܬܦܬܚܘܢ ܬܪ̈ܥܝܟܝ. ܠܒܥܠܕܒ̈ܒܝܟܝ.
14 ܘܬܐܟܘܠ ܢܘܪܐ ܡܘܟ̈ܠܝܟܝ. * ܡ̈ܝܐ ܕܥܘܩܢܐ ܡܠܝ ܠܟܝ. ܘܐܚܣܢܝ ܡܕ̈ܝܢܬܟܝ. ܥܘܠܝ
15 ܒܛܝܢܐ. ܘܕܘܫܝ ܒܛܝܢܐ. ܘܐܣܓܝ ܡܘܠܟܢܐ. *ܬܡܢ ܬܐܟܠܟܝ ܢܘܪܐ. ܘܬܘܒܕܟܝ ܚܪܒܐ.
16 ܘܬܐܟܠܟܝ ܐܝܟ ܙܚܠܐ. ܐܠܐ ܕܐܣܓܝܬܝ ܐܝܟ ܙܚܠܐ. ܘܣܓܝܬܝ ܐܝܟ ܩܡܨܐ. * ܘܐܣܓܝܬܝ
17 ܬܐܓܪ̈ܝܟܝ. ܝܬܝܪ ܡܢ ܟܘܟ̈ܒܝ ܫܡܝܐ. ܙܚܠܐ ܦܫܛ. ܘܦܪܚ. * ܢܙܝܪ̈ܝܟܝ. ܐܝܟ ܩܡܨܐ.
ܘܡܩܪ̈ܒܢܝܟܝ ܐܝܟ ܩܡܨܐ ܕܫܪܐ ܒܣܝܓ̈ܐ ܒܝܘܡܐ ܩܪܝܪܐ. ܕܡܐ ܕܕܢܚ ܫܡܫܐ. ܢܥܪܩ. ܘܠܐ
18 ܡܬܝܕܥ ܐܬܪܗ. * ܢܡܘ ܪ̈ܚܡܝܟܝ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. ܫܪܘ ܩܪ̈ܝܒܝܟܝ. ܐܬܒܕܪ ܥܡܟܝ ܥܠ
19 ܛܘܪ̈ܐ. ܘܠܝܬ ܕܡܟܢܫ ܠܗܘܢ. *ܘܠܝܬ ܕܚܫ ܠܗ ܠܬܒܪܟܝ. ܟܪܝܗ̈ܝ ܡܚ̈ܘܬܟܝ. ܟܠ
ܕܫܡܥܘ ܫܡܥܟܝ. ܢܩܫܘܢ ܟܦ̈ܐ ܥܠܝܟܝ. ܡܛܠ ܕܥܠ ܟܠ ܒܢܝ̈ܢܫܐ ܐܡܝܢܐܝܬ ܥܒܪܬ ܒܝܫܘܬܟܝ. *ܫܠܡܬ ܢܒܝܘܬܗ ܕܢܚܘܡ*

3 Eques *equum* agens, gladius coruſcans, haſta fulgurans, multitudo interfectorum, vis ingens cadaverum, imò infinita cadavera, *adeo ut* impingant in cadaveribus eorum. 4 Propter multitudinẽ ſcortationis meretricis aſpectu formoſæ, & magorum dominæ, quæ nutrit gentes ſcortatione ſuâ, & nationes magiis ſuis. 5 Ecce me contra te, dicit Dñs potentiſſim⁹; & rejiciã limbos tuos ſuper faciẽ tuã, & oſtendã gentib⁹ pudenda tua, & turpitudinẽ tuã regnis. 6 Projiciã ſuper te ſordes, & infamẽ te reddã, proponamq; te ſpectaculum: 7 Ut quiſquis te viderit, abominetur te, dicatque, Direpta eſt Ninive. Quis condoleat tibi? aut unde quærerem tibi conſolatorẽ? 8 An melior es quàm Javan Ammonitarum, quæ ſita inter amnes, quam circundabant aquæ, cujus fortitudo erat mare, & murus erant aquæ? 9 Cujus robur Æthiopia & Ægypt⁹, quæ immenſa erat, cui præſidio erant Putæi & Lybies? 10 Etiam hæc in captivitatem abiit, parvuli ejus illiſi fuerunt in capite omnium vicorum ej⁹, et ſup honeſtiſſimos ej⁹ jecerunt ſortes, omneſq; magnates ej⁹ catenis vincti fuerunt. 11 Tu quoque infœlix eris & abjecta, tu quoq; præſidiũ quæres ab hoſtib⁹ tuis. 12 Omnes munitiones tuæ ſimiles erunt ficub⁹ præcocibus, quæ cùm matureſcunt, decidunt in os comedentis: 13 Et populus tuus ut fœminæ erunt in medio tui: aperientur portæ tuæ inimicis tuis, & conſumet ignis vectes tuos. 14 Aquas in obſidione hauri tibi, & muni urbes tuas: ingredere lutum, calca argillam, & auge promiſſum. 15 Ibi conſumet te ignis, & extinguet te gladi⁹, devorabitq; te ut bruchus: crevisti enim ut bruchus, numeroſa facta es ut locuſta, 16 Et multiplicâſti mercatores tuos pluſquam ſtellas cœli. Bruchus emiſit *alas* & volavit. 17 Nazaræi tui ſunt ſicut locuſtæ, & bellantes pro te ſicut locuſta ſepi hærens die frigido, quæ orto ſole abſcedit, & ignoratur locus ej⁹. 18 Dormiunt amici tui reges Aſſyriæ, deſident propinqui tui, diſſipat⁹ eſt popul⁹ tu⁹ ſuper montes, nec eſt qui congreget eos: 19 Neque tamen eſt qui doleat ob fractionẽ tuam. Acerbum eſt vulnus tuum, quicunq; audierint famã tuam, plaudent ſuper te manibus: quia ad omnes ſemper homines pervaſit malitia tua.

Prophetiæ Nahumi finis.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

3 *والفارس الصاعد* والسيف اللامع* والاسلحة المبرقة* وكثرة الجرحا* وثقل السقطة* وليس
4 كان انتهاء لامّها* ويضعفون في اجسادهم* من كثرة الزناء* زانية حسنة وفرحة* مقدّمة السحرة*
5 التي اباعت الامم بزناها* والقبائل بسحرها* ها انا عليك يقول الرب الاله الضابط الكلّ* واكشف
6 ما وراك علي وجهك* واظهر للامم فضيحتك* وللممالك اهانتك* واطرح عليك رذالا كسب
7 نجاساتك* واصيّرك شهرة* ويكون كل من يراك ينزل عنك* ويقول يا نينوي الشقية من يتنهّد
8 عليها* من اين اطلب سلوة لها* هيّئي جزوا* اوصلي وترا* هيّئي نصيبا* يا امون الساكنة في
9 الانهار* الماء حولها* مبداها البحر* الماء اسوارها* والحبشة قوتها ومصر* وليس نهاية لهروبك*
10 والنوبة كانوا معينوها* وهي في الجلوة تمضي مسبية* ويصرعون اطفالها بالارض على بدء
11 جميع طرقها* وعلي كل حدودها يضعون قرعا* وجميع عظمائها يربطون بالكتافات* وانت
12 تسكرين وتكونين محقورة* وليس تطلبين لك رفدا من الاعداء* جميع حصونك اشجار
13 تين لهن راصدون* ان تزعزعوا فيسقطون في فم الآكل* ها شعبك مثل النساء فيك*
14 لاعدائك مفتوحات تفتح ابواب ارضك* وتاكل النار متاريسك* ماء زمام استقي لذاتك*
15 وامسكي حصونك* انزلي الي الطين* ودوسي في التبن* وامسكي اللبن* هناك تاكلك النار*
16 يستاصلك السيف* وياكلك الجراد* وتثقلي مثل الجندب* كثرت تجاراتك اكثر من
17 نجوم السماء* الجندب وثب وطار* ووثب مثل جرادة سوداء* خلطك مثل جرادة راكبة على
18 سياج في ايام البرد الشمس اشرقت* رحلت ولم يعرف موضعها* ويل لهم* رعاتك نعسوا*
19 ملك الموصل رقد جبابرتك* طلع شعبك علي الجبال* ولم يكن من يقبل* وليس شفا
لانكسارك* ضربتك احدثت* جميع الذين يسمعون بخبرك يصفقون بالايدي عليك* من
اجل انه علي من لم يات شرك كل حين*

تمت نبوة ناحوم النبي

3 *Eques aſcendens, gladi⁹ coruſcans, arma fulgentia, multitudo vulneratorũ, & pondus ruinæ: infinitæ enim erant gentes ejus: & infirmabuntur in corporibus ſuis,* 4 *Propter multitudinem fornicationis. Meretrix formoſa & lætabunda, dux magorum, quæ venum expoſuit gentes fornicatione ſuâ, & nationes magiis ſuis:* 5 *Ecce me contra te, dicit Dominus Deus omnipotens, & retegam poſteriora tua ſuper faciem tuam, oſtendamque gentibus turpitudinem tuam, & regnis ignominiam tuam:* 6 *Projiciam ſuper te abominationem pro ratione obſcœnitatum tuarum, proponamque te ſpecimen.* 7 *Et erit ut quicunq; te viderit, dilabatur à te, dicatq; O Ninive miſerrima, quis propter te ſuſpiret? unde quæram tibi conſolationem?* 8 *Præpara partem, apta chordam, præpara portionem O Ammon quæ habitas in fluminibus, quã aquæ circunſtant, cujus principium eſt mare, aquæ muri;* 9 *Cujus fortitudo Æthiopia eſt & Ægyptus: nullus erit finis fugæ tuæ. Etiamſi Nubæ fuerint adjutores ejus,* 10 *Tamen ipſa quoque in tranſmigrationem ibit captiva, infantes ejus ad terram allident in principio omnium viarum ejus, ſuper omnes terminos ejus ponent ſortes, & omnes principes ejus loris vincientur.* 11 *Tu quoq; inebriaberis, & eris deſpecta, neque petes tibi auxilium ab hoſtibus.* 12 *Omnes arces tuæ arbores ficuum obſervatores habentium: ſi quatiantur, incidunt in os comedentis.* 13 *Ecce populus tuus ut mulieres in te ſunt: inimicis tuis omninò aperientur portæ terræ tuæ, & devorabit ignis vectes tuos.* 14 *Aquam obſidionis hauri tibi, & tene munitiones tuas: deſcende in lutum, paleas conculca, & tene lateres.* 15 *Ibi te devorabit ignis, excindet te gladius, comedetque locuſta, & gravis eris ut bruchus.* 16 *Multiplicatæ ſunt merces tuæ pluſquam ſtellæ cœli: bruchus exiliit & volavit, exiliit ut locuſta nigra.* 17 *Miſcellanea turba tua ſimilis eſt locuſtæ inſidenti ſepi in diebus frigoris, quæ orto ſole commigrat, nec agnoſcitur locus ejus: Væ ipſis.* 18 *Paſtores tui ſomno correpti ſunt, rex Aſſyriæ conſopivit heroes tuos, conſcendit populus tuus montes, nec fuit qui reciperet.* 19 *Non eſt medela fracturæ tuæ, plaga tua exacuta eſt: omnes qui audiunt famam tuam, plaudent ſuper te manibus; quia ſuper quem non venit malitia tua ſemper?*

Prophetiæ Prophetæ
Nahumi finis.

חבקוק : א

CAP. I. א

Domine ego Uſquequo .propheta Chabbacuc vidit *quod* Onus
1 הַמַּשָּׂא אֲשֶׁר חָזָה חֲבַקּוּק הַנָּבִיא׃ 2 עַד־אָנָה יְהוָה
non & ,*rapinam* te ad vociferabor ?exaudies non & ,*clamavi*
שִׁוַּעְתִּי וְלֹא תִשְׁמָע אֶזְעַק אֵלֶיךָ חָמָס וְלֹא
,*facies* aſpicere *miſeriam* & ,iniquitatem mihi *oſtendes* quid Ut ?ſalvabis
תוֹשִׁיעַ׃ 3 לָמָּה תַרְאֵנִי אָוֶן וְעָמָל תַּבִּיט
contentionem & litem fuit & ?me contra iniquitatem & ,vaſtitatem &
וְשֹׁד וְחָמָס לְנֶגְדִּי וַיְהִי רִיב וּמָדוֹן
ſeculum in egredietur non & , lex eſt debilitata Propterea .*tulit*
יִשָּׂא׃ 4 עַל־כֵּן תָּפוּג תּוֹרָה וְלֹא־יֵצֵא לָנֶצַח
egredietur ideo , juſtum coronæ inſtar *circundans* impius quia ,judicium
מִשְׁפָּט כִּי רָשָׁע מַכְתִּיר אֶת־הַצַּדִּיק עַל־כֵּן יֵצֵא
: *eſtote attoniti* & ,aſpicite & ,gentibus in Videte .perverſum judicium
מִשְׁפָּט מְעֻקָּל׃ 5 רְאוּ בַגּוֹיִם וְהַבִּיטוּ וְהִתַּמְּהוּ
cùm credetis non ,veſtris diebus in *operans* opus quia : obſtupeſcite
תְּמָהוּ כִּי־פֹעַל פֹּעֵל בִּימֵיכֶם לֹא תַאֲמִינוּ כִּי
,*amaram* gentem Chaſdim *ſuſcitans* ego ecce Quia .narrabitur
יְסֻפָּר׃ 6 כִּי־הִנְנִי מֵקִים אֶת־הַכַּשְׂדִּים הַגּוֹי הַמַּר
habitacula *poſſidendum ad* , terræ *latitudines* in ambulantem ,*properatam &*
וְהַנִּמְהָר הַהוֹלֵךְ לְמֶרְחֲבֵי־אֶרֶץ לָרֶשֶׁת מִשְׁכָּנוֹת
,ejus judicium ipſa ſe ex : *ipſa* terribilis & Horribilis .*ſibi* non
לֹּא־לוֹ׃ 7 אָיֹם וְנוֹרָא הוּא מִמֶּנּוּ מִשְׁפָּטוֹ
, ejus equi pardis *præ* erunt *leves* Et .egredietur ejus exaltatio &
וּשְׂאֵתוֹ יֵצֵא׃ 8 וְקַלּוּ מִנְּמֵרִים סוּסָיו
ejus equites & : ejus equites *patebunt latè &* ,*veſperæ* lupis *præ* erunt *acuti* &
וְחַדּוּ מִזְּאֵבֵי עֶרֶב וּפָשׁוּ פָּרָשָׁיו וּפָרָשָׁיו
.comedendum ad feſtinans aquila tanquam volabunt ,venient longè de
מֵרָחוֹק יָבֹאוּ יָעֻפוּ כְּנֶשֶׁר חָשׁ לֶאֱכוֹל׃
; Orientem ad *eorum* facierum *oppoſitio* : veniet rapinam *ad* ipſa Tota
9 כֻּלֹּה לְחָמָס יָבוֹא מְגַמַּת פְּנֵיהֶם קָדִימָה
regibus *in* ipſe Et .captivitatem arenam tanquam congregabit &
וַיֶּאֱסֹף כַּחוֹל שֶׁבִי׃ 10 וְהוּא בַּמְּלָכִים
,irridebit *munitionem* omnem ipſe : ei riſus *gubernatores &* ,*erit illuſor*
יִתְקַלָּס וְרֹזְנִים מִשְׂחָק לוֹ הוּא לְכָל־מִבְצָר יִשְׂחָק
,ſpiritus *pertranſit* Tunc .eam capiet & , pulverem *coacervabit* &
וַיִּצְבֹּר עָפָר וַיִּלְכְּדָהּ׃ 11 אָז חָלַף רוּחַ
tu Nonne .ejus Dei *ejus* potentia hæc : delinquet & ,*præteriit* &
וַיַּעֲבֹר וְאָשֵׁם זוּ כֹחוֹ לֵאלֹהוֹ׃ 12 הֲלוֹא אַתָּה
Domine .moriemur non ? meus ſanctus meus Deus Dominus ,*quondam à*
מִקֶּדֶם יְהוָה אֱלֹהַי קְדֹשִׁי לֹא נָמוּת יְהוָה
.eum fundâſti increpandum ad *petram* & , eum poſuiſti judicium ad
לְמִשְׁפָּט שַׂמְתּוֹ וְצוּר לְהוֹכִיחַ יְסַדְתּוֹ׃
non *laborem ad* reſpiciendo & , malum *videndo à* oculis Mundus
13 טְהוֹר עֵינַיִם מֵרְאוֹת רָע וְהַבִּיט אֶל־עָמָל לֹא
impio *deglutiendo in tacebis* ,*prævaricatores reſpicies* quid Ut .poteris
תוּכָל לָמָּה תַבִּיט בּוֹגְדִים תַּחֲרִישׁ בְּבַלַּע רָשָׁע
reptile tanquam ,maris piſces veluti *hominem facies* Et ? ſe *præ* juſtum
צַדִּיק מִמֶּנּוּ׃ 14 וַתַּעֲשֶׂה אָדָם כִּדְגֵי הַיָּם כְּרֶמֶשׂ
illud congregabit ,faciet aſcendere hamo *in* Totum .*eo in dominator non*
לֹא־מֹשֵׁל בּוֹ׃ 15 כֻּלֹּה בְּחַכָּה הֵעֲלָה יְגֹרֵהוּ
,lætabitur propterea : ſuo reti *in* illud congregabit & ,ſua ſagena *in*
בְחֶרְמוֹ וְיַאַסְפֵהוּ בְּמִכְמַרְתּוֹ עַל־כֵּן יִשְׂמַח
.exultabitque
וְיָגִיל׃

Verſio VULG. LAT.

PROPHETIA HABACUC.

CAP. I.

1 ONus , quod vidit Habacuc
2 propheta.Uſquequò,Domine,clamabo, & non exaudies ? vociferabor ad te vim patiens,& non
3 ſalvabis ? Quarè oſtendiſti mihi
iniquitatem & laborem , videre
prædam & injuſtitiam contra me?
& factum eſt judicium,& contradictio
4 potentior. Propter hoc lacerata eſt lex,& non pervenit uſq;
ad finem judicium : quia impius
prævalet adverſùs juſtum , propterea
egreditur judicium perverſum.
5 Aſpicite in gentibus, &
videte : admiramini,& obſtupeſcite
:quia opus factum eſt in dieb⁹
veſtris,quod nemo credet cùm
6 narrabitur. Quia ecce ego ſuſcitabo
Chaldæos, gentem amaram
& velocem , ambulantem ſuper
latitudinem terræ,ut poſſideat tabernacula
7 non ſua. Horribilis,&
terribilis eſt: ex ſemetipſa judicium,&
8 onus ejus egredietur. Leviores
pardis equi ejus, & velociores
lupis veſpertinis; & diffundentur
equites ejus: equites namque
ejus de longè venient, volabunt
quaſi aquila feſtinans ad
9 comedendum. Omnes ad prædam
venient , facies eorum ventus urens:
& congregabit quaſi arenã,
10 captivitatem. Et ipſe de regibus
triumphabit , & tyranni ridiculi
ejus erunt:ipſe ſuper omnem munitionem
ridebit,& comportabit
11 aggerem , & capiet eam. Tunc
mutabitur ſpiritus, & pertranſibit,
& corruet : hæc eſt fortitudo
12 ejus dei ſui. Numquid non tu à
principio, Domine Deus meus,
Sancte meus,& non moriemur ?
Domine,in judiciũ poſuiſti eum :
& fortem, ut corriperes, fundâſti
13 eum. Mundi ſunt oculi tui, ne videas
malum ; & reſpicere ad iniquitatem
non poteris : quarè reſpicis
ſuper iniqua agentes,& taces
devorante impio juſtiorem
14 ſe ? Et facies homines quaſi piſces
maris , & quaſi reptile non
15 habens principem. Totum in
hamo ſublevabit , traxit illud in
ſagena ſua,& congregavit in rete
ſuum. Super hoc lætabitur & exultabit.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ἈΜΒΑΚΟΥ͂Μ Η΄.

ΚΕΦ. α΄.

1 ΤΟ` λῆμμα ὃ εἶδεν Ἀμβακοὺμ ὁ προφήτης.
2 Ἕως τίνος κύριε κεκράξομαι, ϗ οὐ μὴ
(α)εἰσακούσεις; βοήσομαι πρὸς σὲ ἀδικούμενος,
3 ϗ οὐ σώσεις; Ἱνατί(β)ἔδειξάς μοι κόπους
ϗ πόνους ἐπιβλέπειν(γ), ταλαιπωρίαν
ϗ ἀσέβειαν; ἐξεναντίας μου γέγονε κρίσις,
4 ϗ ὁ κριτὴς λαμβάνει. Διὰ τοῦτο διεσκέδασται
νόμος, ϗ οὐ διεξάγεται εἰς τέλος κρίμα, ὅτι
(˝)ἀσεβὴς καταδυναστεύει τὸν δίκαιον, ἕνεκεν
5 τούτου ἐξελεύσεται τὸ κρίμα διεστραμμένον. Ἴδετε
οἱ καταφρονηταὶ, ϗ ἐπιβλέψατε, ϗ
θαυμάσατε θαυμάσια, ϗ ἀφανίσθητε· διότι
ἔργον ἐγὼ ἐργάζομαι ἐν ταῖς ἡμέραις ὑμῶν, ὃ οὐ
6 μὴ πιστεύσητε, ἐάν τις ἐκδιηγῆται(δ). Διότι
ἰδοὺ ἐγὼ ἐξεγείρω τοὺς Χαλδαίους, τὸ ἔθνος
τὸ πικρὸν, ϗ τὸ ταχινὸν, τὸ πορευόμενον ἐπὶ
(ε) τὰ πλάτη τῆς γῆς, τοῦ κατακληρονομῆσαι
7 σκηνώματα οὐκ αὐτοῦ. Φοβερὸς ϗ ἐπιφανής
ἐστιν, ἐξ αὐτοῦ τὸ κρίμα αὐτοῦ ἔσται, ϗ τὸ λῆμμα
8 αὐτοῦ ἐξ αὐτοῦ ἐξελεύσεται. Καὶ ἐξαλοῦνται
ὑπὲρ παρδάλεις οἱ ἵπποι αὐτοῦ, ϗ ὀξύτεροι
ὑπὲρ τοὺς λύκους τῆς Ἀραβίας. ϗ ἐξιππάσονται
οἱ ἱππεῖς αὐτοῦ, ϗ ὁρμήσουσι μακρόθεν,
ϗ πετασθήσονται ὡς ἀετὸς πρόθυμος
9 εἰς τὸ φαγεῖν. Συντέλεια (ζ)εἰς ἀσεβεῖς ἥξει,
ἀνθεστηκότας προσώποις αὐτῶν ἐξεναντίας,
ϗ συνάξει ὡς ἄμμον αἰχμαλωσίαν.
10 Καὶ αὐτὸς ἐν βασιλεῦσιν ἐντρυφήσει, ϗ τύραννοι
παίγνια αὐτοῦ, ϗ αὐτὸς εἰς πᾶν ὀχύρωμα
ἐμπαίξεται, ϗ βαλεῖ χῶμα, ϗ κρατήσει
11 αὐτοῦ. Τότε μεταβαλεῖ τὸ πνεῦμα, ϗ διελεύσεται,
ϗ ἐξιλάσεται· αὕτη ἡ ἰσχὺς τῷ θεῷ
12 μου. Οὐχὶ σὺ ἀπ᾽ ἀρχῆς κύριε ὁ (η) θεὸς ὁ
ἅγιός μου; ϗ οὐ μὴ ἀποθάνωμεν. κύριε εἰς κρίμα
τέταχας(θ) αὐτὸ, ϗ ἔπλασέ με τοῦ ἐλέγχειν
13 παιδείαν αὐτοῦ. Καθαρὸς (ι)ὁ ὀφθαλμὸς
τοῦ μὴ ὁρᾷν πονηρὰ, ϗ ἐπιβλέπειν ἐπὶ
πόνους(κ)ὀδύνης· ἱνατί ἐπιβλέπεις ἐπὶ καταφρονοῦντας;
παρασιωπήσῃ ἐν τῷ καταπίνειν
14 ἀσεβῆ τὸν δίκαιον; Καὶ ποιήσεις τοὺς ἀνθρώπους
ὡς τοὺς ἰχθύας τῆς θαλάσσης, ϗ ὡς
15 τὰ (˝)ἑρπετὰ τὰ οὐκ ἔχοντα ἡγούμενον; Συντέλειαν
ἐν ἀγκίστρῳ ἀνέσπασε, ϗ εἵλκυσεν
αὐτὸν ἐν ἀμφιβλήστρῳ, ϗ συνήγαγεν αὐτὸν ἐν
ταῖς σαγήναις αὐτοῦ· ἕνεκεν τούτου εὐφρανθήσεται
ϗ χαρήσεται ἡ καρδία αὐτοῦ.

AMBACUM.

CAP. I.

ASSUMPTIO , *quam vidit* 1
Ambacum propheta. Uſquequò, 2
Domine, clamabo, & non exaudies ? vociferabor ad te vim patiens,& non ſalvabis ? Quarè 3
mihi oſtendiſti labores & dolores, videre miſeriam, & impietatem ? Contra me factum eſt
judicium : & judex accipit.
Propterea lacerata eſt lex, & 4
non pervenit ad finem judicium:
quia impius prævalet adverſùs
juſtum. Propterea egredietur
judicium perverſum. (a)Videte 5
*contemptores,& reſpicite,& admiramini
mirabilia,& diſperdimini :
(b) quia opus ego operor*
*in diebus veſtris, quod non credetis,
ſiquis narraverit. Quia* 6
*ecce ego ſuſcito Chaldæos, gentem
amaram, & velocem, quæ*
ambulat ſuper latitudines terræ,
ut poſſideat tabernacula non ſua.
Terribilis, & illuſtris eſt : (c)ex 7
*ipſa judicium ejus erit : & aſſumptio
ejus ex ſe egredietur. Et* 8
exilient ſuper pardos equi ejus,
& velociores lupis Arabiæ.(d)Et
*equitabunt equites ejus,& impetu
venient de longinquo, & volabunt
quaſi aquila prompta ad*
comedendum. (c) Conſummatio 9
*in impios veniet,reſiſtentes faciebus
ipſorum ex adverſo. Et congregabit
quaſi arenam captivitatem
: Et ipſe in regibus delectabitur,* 10
& tyranni ludibria ejus ;
& ipſe in omnem munitionem
illudet, & mittet aggerem, &
obtinebit eam. Tunc mutabit ſpiritum, 11
*& pertranſiet, & (f)propitiabitur.
Hæc eſt fortitudo Deo*
meo. Nónne tu à principio, Domine 12
Deus ſancte meus ? &
*non moriemur. Domine, in judicium
poſuiſti (g) ipſam: & plaſmavit
me, ut arguam diſciplinam*
ejus: Mundus oculus ne videat 13
mala, & aſpiciat ſuper labores
(h) doloris. Quarè aſpicis ſuper
contemptores ? (i) tacebis, dum
impius devorat juſtum? Et faties 14
homines quaſi piſces maris,
& quaſi reptilia non habentia
ducem ? Conſummationem in 15
hamo ſublevavit,& attraxit eum
in reti, & congregavit eum in
ſagenis ſuis. Propter hoc lætabitur, et gaudebit cor ejus.

MS.A. ἈΜΒΑΚΟΥ͂Μ Η΄. (α) εἰσακούσῃς; (β) μοι ἔδειξας (γ) ϗ
ταλαιπωρίαν (˝)ὁ ἀσεβὴς(δ) ὑμῖν. Ὅτι ἰδοὺ ἐγὼ ἐξεγείρω ἐφ᾽ ὑμᾶς τοὺς
Χαλδαίους τοὺς μαχητὰς, τὸ ἔθνος τὸ ταχινὸν ϗ τὸ πικρὸν, τὸ (ε) τὸ
πλάτος(ζ)ἐπ᾽ (η) θεός μου ὁ ἅγιός μου; ϗ (θ)αὐτὸν, (ι)ὀφθαλμός μου τοῦ
(κ) οὐ δυνήσῃ· εἰς τί (˝)ἑρπετὰ οὐκ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

1 מטל נבואתא דאתנבי חבקוק נביא׃ 2 עד אימתי יי אנא מצלי הלא גלי קדמך קבלנא
קדמך על חטופין הלא יכלא קדמך למפרק׃ 3 למא אנא חזי אנוסין ומסתכל בעבדי
לאות שקר בזוזין וחטופין לקבלי דבתחרותא ובזדונא אנון מתגברין׃ 4 על כן פגת
אוריתא ולא נפיק לאפרש דינא ארי רשיעיא מסלעמין לצדיקיא על כן לא נפיק דינא
כון׃ 5 חזו בעממיא ואסתכלו אתרפו שהו ארי עובדא אתעביד ביומיכון לא תהימנון
ארי ישתעון לכון׃ 6 ארי הא אנא מקים ית כסדאי עמא מוחיא וקלילא דאזיל לפתאי
ארעא לאחסנא קרוין דלא דיליה׃ 7 אמתנין ודחילין אנון מניה דיניה וגזרתיה נפקין׃
8 וקלילין מנמריא סוסותיה וחריפין מדיבי רמשא ויירבון פרשוהי ופרשוהי מרחיק
דייתון משתדן כנשרא דטאס למיכל׃ 9 כולהון לחטוף אתן מקבל אפיהון דמן כרוח
קדים קדומא וכנש כחלא שביא׃ 10 והוא על מלכיא מתלעב ועל שלטוניא מחיך הוא
לכל כרך תקיף מעיק וצבר מליתא וכבשה׃ 11 בכן על דרמת רוחיה עלוהי עדא
מלכותיה וחב על דאסגי יקרא לטעותיה׃ 12 הלא את יי ברית עלמא מבראשית את
אלהא דין קשוט על כל בריתך קדיש בעובדי הימנותא מימרך קים לעלמין יי למעבד
דינא בריתיה ותקיף לאתפרעא אתקנתיה׃ 13 בריר מימרך מלמחזי בעובדי ביש
ומלאסתכלא בעבדי לאות שקר הלא גלי קדמך ולמא את מסתכל באנסין ואת יהיב
ארכא לרשיעיא ומסלעמין לדטבין מנהון׃ 14 ועבדתא אנשא כנוני ימא כריחשא דלית
שולטן עלוהי׃ 15 כלהון דמן לצידין דאחיד נונא בחכתא כניש ליה בחרמי ורמי ליה
במצדתיה על כן חדי ודאיץ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAPUT I.

ONus prophetiæ quã vaticinat⁹ eſt Chabacuc propheta. Quouſque Dñe 1
ego precatur⁹ ſum?annon manifeſtum eſt corã te me clamitare in conſpectu 2
tuo propter rapinas ?nunquid eſt apud te ſervandi poteſtas? Quare ego vi- 3
deo oppreſſores,& conſpicio operantes laborẽ falſitatis ? direptores & ra-
ptores corã me ſunt,atq; contentione & ſuperbia ipſi prævalent. Propterea 4
langueſcit Lex, nec prodit in æternũ judiciũ, quoniã impii devorant juſtos,
ideò non prodit judiciũ rectũ. Intuemini gentes & conſpicite;admiramini, 5
obſtupeſcite: op⁹ enim factũ eſt in dieb⁹ veſtris, ꝙ nequaquã credituri eſtis
cùm vobis narrabitur. Quoniã ecce ego ſuſcito Caldæos populũ celerẽ & 6
velocem,qui pervadat latitudines terræ,ut poſſideat civitates quæ ipſi⁹ non
ſũt. Horrendi & terribiles ſũt,ab ipſomet[*populo Caldæorũ*]ipſi⁹ judiciũ & 7
decretũ promanãt.Et velociores ſunt pardis equi ej⁹,& acutiores lupis ve- 8
ſpertinis:& multiplicabuntur equites ej⁹,equites ej⁹[*inquam*]de longinquo
venient,ſeſe diffundentes aquilæ in morẽ quæ volat ad comedendũ.Omnes 9
ad rapiendũ veniunt, aſpect⁹ eorũ perſimilis eſt vento *Orientali* vehementi
qui collegit quaſi arenã captivitatẽ. Et ipſe reges ſubſannat, ac principes 10
irridet : ipſe omnẽ arcẽ validã in anguſtias adigit, & coacervat aggeres ac
ſubjicit eam. Ideò propter elationẽ ſpirit⁹ ej⁹,ab eo tranſlatũ eſt ej⁹ regnũ, 11
& flagitiũ admiſit,eò quòd multiplicaverit gloriã idolo ſuo.Nónne tu Dñe 12
creâſti mundũ ab initio?tu De⁹ judex veritatis in omnes creaturas tuas,ſan-
ctus in operib⁹ fidei : verbũ tuũ in ſecula permanet Dñe, ut exequatur ju-
diciũ creâſti illud,potens ad vindictã ſumendã ipſũ præparâſti. Purius eſt 13
verbũ tuũ quã ut videat opera mala, & contempletur operantes laborem
falſitatis : nónne manifeſtũ eſt corã te?quare ergo reſpicis in oppreſſores,&
das longitudinẽ[*vitæ*]ſceleratis;et devorant ſeipſis meliores?Tu autẽ feciſti 14
homines quaſi piſces maris , ſicut reptilia quib⁹ null⁹ eſt princeps. Omnes 15
ſimiles ſunt piſcatori,qui cùm ceperit piſcem hamo, colligit eum in ſagena
ſua , & projicit eum in rete ſuum : idcircò gaudet & exultat.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܬܘܒ ܢܒܝܘܬܗ ܕܚܒܩܘܩ * * ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

1 * ܚܙܘܐ ܕܚܙܐ ܚܒܩܘܩ ܢܒܝܐ. * ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܡܪܝܐ ܐܩܥܐ ܐܢܐ ܘܠܐ ܫܡܥ ܐܢܬ. ܘܩܥܐ
2 ܐܢܐ ܠܘܬܟ ܡܢ ܚܛܘܦܐ. ܘܠܐ ܡܦܪܩ ܐܢܬ. * ܠܡܢܐ ܡܚܘܐ ܐܢܬ ܠܝ ܥܘܠܐ ܘܥܡܠܐ. ܘܚܙܐ ܐܢܐ 3
ܚܛܘܦܝܐ ܘܚܡܣܐ. ܩܕܡܝ ܗܘܐ ܕܝܢܐ. ܘܕܝܢܐ ܢܣܒ ܫܘܚܕܐ. * ܡܛܠ ܗܕܐ ܦܓܬ ܢܡܘܣܐ.
4 ܘܠܐ ܢܦܩ ܕܝܢܐ ܒܬܪܝܨܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܥܘܠܐ ܕܚܩ ܠܙܕܝܩܐ. ܘܢܦܩ ܕܝܢܐ ܟܕ ܡܥܩܡ.
* ܚܙܘ ܡܪܚܢܐ ܘܚܘܪܘ ܘܐܬܕܡܪܘ ܘܐܬܗܪܘ. ܡܛܠ ܕܥܒܕܐ. ܥܒܕ ܐܢܐ ܒܝܘܡܝܟܘܢ. ܘܠܐ 5
ܡܗܝܡܢܝܢ ܐܢܬܘܢ ܐܢ ܡܫܬܥܐ ܠܟܘܢ. * ܡܛܠ ܕܗܐ ܐܢܐ ܡܩܝܡ ܐܢܐ ܠܟܠܕܝܐ. ܥܡܐ 6
ܡܪܝܪܐ. ܘܡܣܪܗܒܐ. ܕܐܙܠ ܒܦܬܝܗ ܕܐܪܥܐ ܠܡܐܪܬ ܡܫܟܢܐ ܕܠܐ ܕܝܠܗ. * ܕܚܝܠ ܗܘ ܘܐܝܡܬܢ. 7
ܘܕܝܢܗ ܡܢܗ. ܘܪܘܡܗ ܡܢܗ. * ܘܩܠܝܠܝܢ ܣܘܣܘܗܝ ܡܢ ܢܫܪܐ. ܘܚܪܝܦܝܢ ܡܢ ܕܐܒܐ ܕܪܡܫܐ. 8
ܘܢܦܪܚܘܢ ܦܪܫܘܗܝ ܡܢ ܪܘܚܩܐ. ܘܢܦܪܚܘܢ ܐܝܟ ܢܫܪܐ ܕܪܗܛ ܠܡܐܟܘܠܬܐ. * ܟܠܗܘܢ 9
ܠܚܛܘܦܝܐ ܢܐܬܘܢ. ܚܙܘܐ ܕܐܦܝܗܘܢ ܩܫܝܐ. ܘܢܟܢܫܘܢ ܫܒܝܐ ܐܝܟ ܚܠܐ. * ܘܗܘ ܒܡܠܟܐ 10
ܡܒܙܚ. ܘܫܠܝܛܢܐ ܡܓܚܟ. ܘܒܟܠ ܚܨܢܝܢ ܢܓܚܟ. ܘܢܥܒܕ ܥܦܪܐ. ܘܢܐܚܕ ܠܗ.
* ܗܝܕܝܢ ܢܫܚܠܦ ܪܘܚܗ. ܘܢܥܒܪ. ܘܢܬܘܕܐ ܚܝܠܗ ܠܐܠܗܗ. * ܡܛܠ ܕܐܝܬܝܟ ܗܘ ܡܢ 11
ܪܫܝܬܐ ܡܪܝܐ. ܐܠܗܐ ܩܕܝܫܐ. ܕܠܐ ܢܡܘܬ ܐܢܬ ܡܪܝܐ: ܠܕܝܢܐ ܣܡܬܗ. ܘܠܡܟܣܘ 12
ܐܬܩܢܬܗ. * ܕܟܝܢ ܐܢܝܢ ܥܝܢܝܟ. ܘܠܐ ܚܙܝܢ ܒܝܫܬܐ. ܘܠܡܚܙܐ ܒܥܘܠܐ ܠܐ ܡܫܟܚ ܐܢܬ 13
ܒܥܡܠܐ. ܠܡܢܐ ܚܙܐ ܐܢܬ ܒܡܪܚܢܐ ܘܫܬܝܩ ܐܢܬ. ܟܕ ܒܠܥ ܥܘܠܐ ܠܙܕܝܩܐ. * ܘܥܒܕܬ ܐܢܫܐ 14
ܐܝܟ ܢܘܢܐ ܕܝܡܐ. ܘܐܝܟ ܪܚܫܐ ܕܠܝܬ ܠܗ ܡܕܒܪܢܐ. * ܘܟܠܗ ܒܚܟܬܐ. ܐܣܩܗ 15
ܘܢܓܕܗ ܒܡܨܝܕܬܗ. ܘܟܢܫܗ ܒܡܟܡܪܬܗ. ܘܡܛܠ ܗܕܐ ܚܕܐ. ܘܪܘܙ.

SEQUITUR PROPHETIA HABACUC

CAPUT. I.

Viſio quam vidit Habacuc propheta. Quo- 1
uſq; Domine vociferabor, & non audies? 2
clamabo ad te cauſâ violentorum, & non liberab's?
Cur oſtendis mihi impietatem ac 3
dolum? & violentiam ac ſcelus video? me
præſente cùm jus diceretur, judex accepit
mun⁹. Propter hoc tepeſcit lex, neq; prodit judicium 4
cum æquitate; impius peſſimè tractat
juſtum: hinc eſt quòd perverſum prodeat judicium.
Videte impudentes, & conſiderate, 5
admiramini, & obſtupeſcite: nam rem facturus
ſum in diebus veſtris, quam non crederetis
ſi quis enarraret vobis. Ecce enim ego excitaturus 6
ſum Chaldæos gentẽ audacẽ & acerbam,
quæ terræ latitudinẽ perluſtrat ad acquirenda
tabernacula non ſua. Fortis eſt ac formidabilis, 7
judicium ejus ab ipſamet eſt, frontemq;
ſuam exerit. Equi ejus ſunt aquilis velociores, 8
& acriores lupis veſpertinis: volant
equites ejus è longinquo, volant inquam,
ſicut aquila cibum inhians. Omnes 9
ad rapinam venient: aſpectus vultuum eorum
teterrimus, & colligent captivos ut arenam.
Eadem reges ludibrio habet, & principibus 10
illudit, omnes urbes munitas deridet, pulveremque
congerit & capit. Tunc immutabis 11
ſpiritum ejus, & tranſibit: & robur ejus victũ
ſe fatebitur à Deo ſuo. Nam tu inde à principio 12
Domine, Deus ſanctus meus es: nequaquam
ſubditus es legi Dñe: expoſuiſti illam
judicio, meque formâſti ad arguendũ eã. Puri 13
ſunt oculi tui, nec aſpicere *poſſunt* nequitiam,
neque impios intueri potes: cur *itaq;* impudentes
intueris, ac taces; dum iniquus juſtum
abſorbet? Homines feciſti ſimiles piſcibus 14
qui ſunt in mari, & pares equis non habentibus
moderatorem? Omnes enim hamo extra- 15
huntur, trahuntur reti, & congregantur in ſagena:
cúmq; congregati fuerint, lætatur *piſcator*
& exultat,

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بسم الله الرحمن الرحيم *

* نبدأ بترجمة حبقوق النبي بركاته علينا * * آمين *

* الفصل الأول * * الاصحاح التاسع عشر * وهو الأول من النبوة *

* الرويا التي راها حبقوق النبي * الي متي يا رب اصرخ فلا تسمع * اصيح اليك مظلوم فلا 1 2
تخلص * لماذا اريتني الاتعاب والاوجاع * لانظر سقوه وبغاقا . امامي صار الحكم * والحاكم 3
ياخذ * لاجل هذا تعطل الناموس * ولا يخرج الحكم الي الغاية * لان المنافق يتقوي علي 4
الصديق * من اجل هذا يخرج الحكم معوجا * انظروا يا متغافلون وارجعوا فتعجبون 5
عجايب وتفنون * من اجل اني انا اعمل عملا في ايامكم * هذا الذي لا تصدقوه ان اخبركم
به احد * من اجل اني انا ها اثير عليكم الكلدانيين المحاربين * امة مرة ومسرعة * تسير علي 6
سعة الارض لترث مساكن ليست لها * مخوفة وظاهرة هي * منها حكمها يكون * ومنظرها 7
منها يخرج * خيولها اسرع من النمور * واحد من ذياب اراپيا * وفرسانها يركضون ويثبون من 8
بعد * ويطيرون مثل نسر مستعد ليأكل * الانقضاء يأتي للمنافقين المصادين بوجوههم من 9
قدام * ويجمع مثل الرمل سبيا * هو بالملوك يتنعم * والولاة لعبة * وهو يلعب بالحصون ويصنع 10
ترابا ويمسكهم *

* الاصحاح العشرون * وهو الثاني من النبوة *

* حينئذ يبدل روحا ويجوز ويسال * هذه القوة لالهي * اليس انت منذ البدوء الرب الاله 11 12
قدوسي * ولا نموت يا رب بحكم رتبته * وجبلتني لاوبخ ادبه * العين نقية ان لا تري 13
الخبايث * ولا تستطيع ان تنظر الي الاوجاع * لماذا تنظر المتغافلين وتسكت عند ما يبتلع
المنافق البار * وتصنع البشر مثل حيتان البحر * ومثل الهوام التي ما لها مقدم * اصعد 14 15
الانقضاء بالصنارة * جذبه بالشص * وجمعه في شباكه * من اجل هذا يسر ويفرح قلبه *

IN NOMINE DEI MISERICORDIS,
CLEMENTISSIMI,
Aggredimur Interpretationem
HABACUC PROPHETÆ,
CUJUS BENEDICTIONES
adſint nobis, Amen.

CAPUT PRIMUM.

Textus decimus nonus, hujus
autem Prophetiæ primus.

Viſio quam vidit Habacuc Propheta. 1
Quouſque O Domine clamabo, & non 2
*audies? oppreſſus vociferabor ad te, nec
eripies? Cur oſtendiſti mihi labores &* 3
*dolores, ut viderem miſeriam & impietatem?
Coram me inſtitutâ cauſâ, judex accipit.
Propterea abrogata eſt lex, nec aſ-* 4
*ſequitur judicium finem ſuum. Quia ſceleratus
inſultat juſto, propterea judicium
prodit perverſum. Videte O negligentes,* 5
*& revertimini, ut mira admiremini, &
pereatis: opus enim præſtiturus ſum in
diebus veſtris tale, ut non credatis ſi quis
illud vobis enarret. Nam ecce ego ſuſcitabo* 6
*contra vos Chaldæos belligeros, gentem
acerbam & velocem, ambulantem ſuper
terræ latitudinem ut poſſideat habitationes
non ſuas. Terribilis eſt ac illuſtris;* 7
*ex ipſamet erit judicium ipſius, & ſpectabilitas
ejus ex ipſamet procedet. Equi ejus* 8
*velociores tigribus, & Arabiæ lupis acriores:
equites ejus current & inſilient à
longinquo, & volabunt inſtar aquilæ paratæ* 9
*ad comedendum. Conſummatio adveniet
impiis refractariis, in facies eorũ
à fronte. Et congregabit ſicut arenam
captivos; Ipſe regibus delectabitur, &* 10
*præfecti ludibrium ejus erunt: ipſeque muniones
irridebit; pulverem enim ponet,
& capiet eas.*

Textus vigeſimus, hujus autem
Prophetiæ ſecundus.

Tunc mutabit ſpiritum, & tranſibit, atque 11
*precabitur. Hæc fortitudo Dei mei eſt.
Nonne tu es à principio Dominus Deus
ſanctus meus: & ne moriamur O Domine* 12
*ex ſententia diſpoſitionis ejus? etenim
plaſmâſti me ad arguendam diſciplinam
ejus. Mundus eſt oculus quominus videat* 13
*ſcelera, nec poteſt aſpicere dolores: quare
vides neglectores, & ſiles dum abſorbet
impius innocentem? Faciſque homines ut* 14
*piſces maris, & ut inſecta quæ non habent
ducem? Excidium extraxit hamo,* 15
*unco traxit illud, & collegit illud retibus
ſuis: propterea exultabit & lætabitur cor
ejus:*

חבקוק : ב

ipsi ‎הן‎ quia : suo reti sufficit & , suæ sagenæ sacrificabit Propterea
16 על-כן יזבח לחרמו ויקטר למכמרתו כי בהמה
ea propter Nunquid *.pinguis* ejus cibus & , ejus pars est incrassata
17 שמן חלקו ומאכלו בראה: העל כן
? parcet non gentes interficere *semper &* ? suã sagenam evacuabit
יריק חרמו ותמיד להרג גוים לא יחמול:

CAP. II. ב

, munitionem super *subsistam* & , stabo meam custodiam Super
1 על-משמרתי אעמדה ואתיצבה על-מצור
respondeam quid & , me in loquatur quid *videndum ad* contemplabor &
ואצפה לראות מה-ידבר-בי ומה אשיב
Scribe : dixit & , Dominus mihi respondit Et *.mea increpatione super*
2 על-תוכחתי: ויענני יהוה ויאמר כתב
.ea in legens percurrat ut , tabulis *super* explana & , visionem
חזון ובאר על-הלחות למען ירוץ קורא בו:
.mentietur non & , *finem ad efflabit* &, tempus *statutum* in visio adhuc Quia
3 כי עוד חזון למועד ויפח לקץ ולא יכזב
.tardabit non , veniet veniendo quia : eum expecta , fecerit moram Si
אם-יתמהמה חכה-לו כי-בא יבא לא יאחר:
sua fide in justus & : eo in *ejus* anima recta non , *est elata* Ecce
4 הנה עפלה לא-ישרה נפשו בו וצדיק באמונתו
non & , superbus vir *prævaricans* vinum *quia etiam* Et .vivet
5 יחיה: ואף כי-היין בוגד גבר יהיר ולא
, mors veluti *ipse* & , suam animam infernus sicut dilatavit qui : *habitabit*
ינוה אשר הרחיב כשאול נפשו והוא כמות
coadunabit & , gentes omnes se ad congregabit & : saturabitur non &
ולא ישבע ויאסף אליו כל-הגוים ויקבץ
eum super ipsi omnes *illi* Nonne .populos omnes se ad
6 אליו כל-העמים: הלוא-אלה כלם עליו
Væ *: dicet* & : ei ænigmatum interpretationem & , sument parabolam
משל ישאו ומליצה חידות לו ויאמר הוי
? lutum densum se super *aggravans &* quo usque *: sibi* non multiplicanti
המרבה לא-לו עד-מתי ומכביד עליו עבטיט:
, te *commoventes* evigilabunt & , te *mordentes* consurgent repentè Nonne
7 הלוא פתע יקומו נשכיך ויקצו מזעזעיך
, multas gentes spoliâsti *tu* Quia ? eis rapinas in eris &
8 והיית למשסות למו: כי-אתה שלות גוים רבים
rapina & , hominis sanguinibus à : populorum residuum omne te spoliabunt
ישלוך כל-יתר עמים מדמי אדם וחמס-
concupiscenti Væ .ea in habitantium omnium & , civitatis terræ
9 ארץ קריה וכל-ישבי בה: הוי בצע
, suum nidum excelso in *ponendum ad* , *suæ domui* malam *concupiscentiam*
בצע רע לביתו לשום במרום קנו
decurtando , tuæ domui pudorem Consuluisti .mali *vola de se eruendum ad*
10 להנצל מכף-רע: יעצת בשת לביתך קצות-
pariete è lapis Quia *.tua anima peccans* & , multos populos
11 עמים רבים וחוטא נפשך: כי-אבן מקיר
ædificanti Væ *.ei respondebit ligno è rudimentum* & ; clamabit
12 תזעק וכפיס מעץ יעננה: הוי בנה
Nonne .iniquitate in civitatem *constituenti &* , *sanguinibus in* civitatem
13 עיר בדמים וכונן קריה בעולה: הלוא
sufficientia in populi laborabunt & , exercituum Domino *cum à* ecce
הנה מאת יהוה צבאות וייגעו עמים בדי-
replebitur *Nam .lassabuntur vacui sufficientia* in gentes & , *ignis*
14 אש ולאמים בדי-ריק יעפו: כי תמלא
operient aquæ tanquam , Domini gloriam *sciendum ad* , terra
הארץ לדעת את-כבוד יהוה כמים יכסו
.mare *super*
על-ים:

Versio VULG. LAT.

16 Propterea immolabit sagenæ suæ,
& sacrificabit reti suo: quia in
ipsis incrassata est pars ejus, &
17 cibus ejus electus. Propter hoc
ergò expandit sagenam suam, &
semper interficere Gentes non
parcet.

CAP. II.

1 Super custodiam meam stabo, &
figam gradũ super munitionem :
& contemplabor, ut videam quid
dicatur mihi, & quid respondeã
2 ad arguentem me. Et respondit
mihi Dñs, & dixit; Scribe visum,
& explana eum super tabulas,
ut percurrat qui legerit eum.
3 Quia adhuc visus procul, & apparebit
in finem, & non mentietur
: si moram fecerit, expecta
illum, quia veniens veniet, & non
4 tardabit. Ecce qui incredulus est,
non erit recta anima ejus in semetipso
: justus autem in fide sua
5 vivet. Et quomodò vinum potantem
decipit : sic erit vir superbus,
& non decorabitur : qui dilatavit
quasi infernus animã suã :
& ipse quasi mors, & non adimpletur
: & congregabit ad se
omnes gentes, & coacervabit ad
6 se omnes populos. Numquid non
omnes isti super eum parabolam
sument, & loquelam ænigmatum
ejus : & dicetur; Væ ei, qui multiplicat
non sua ? usquequò &
aggravat contra se densum lu-
7 tum? Numquid non repentè consurgent
qui mordeant te : & suscitabuntur
lacerantes te, & eris
8 in rapinam eis? Quia tu spoliâsti
gentes multas, spoliabunt te
omnes qui reliqui fuerint de populis,
propter sanguinẽ hominis,
& iniquitatem terræ civitatis, &
9 omnium habitantiũ in ea. Væ qui
congregat avaritiã malam domui
suæ, ut sit in excelso nidus ejus, &
liberari se putat de manu mali.
10 Cogitâsti confusionẽ domui tuæ,
concidisti populos multos, & pec-
11 cavit anima tua. Quia lapis de
pariete clamabit : & lignum,
quod inter juncturas ædificiorum
12 est, respondebit. Væ qui ædificat
civitatem in sanguinibus, & præ-
13 parat urbem in iniquitate. Numquid
non hæc sunt à Dño exercituum?
Laborabunt enim populi
in multo igne, & gentes in vacuũ,
14 et deficient. Quia replebitur
terra, ut cognoscant gloriam
Domini, quasi aquæ operientes
mare.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

16 Ἕνεκεν τούτου θύσει (λ) τῇ σαγήνῃ αὐτοῦ, καὶ
θυμιάσει (μ) τῷ ἀμφιβλήστρῳ αὐτοῦ, ὅτι ἐν
αὐτοῖς ἐλίπανε μερίδα αὐτοῦ, καὶ τὰ βρώματα
17 αὐτοῦ ἐκλεκτά. Διὰ τοῦτο ἀμφιβαλεῖ τὸ
ἀμφίβληστρον αὐτοῦ, καὶ διαπαντὸς ἀποκτέννειν
ἔθνη οὐ φείσεται.

Propterea immolabit sagenæ 16
suæ, & incendet reti suo : quia
in ipsis incrassavit partem suam :
& esca ejus electa. Propterea 17
expandet rete suum : & semper
interficere gentes non parcet.

MS. A. (λ) τῷ ἀμφιβλήστρῳ (μ) τῇ σαγήνῃ αὐτοῦ,

ΚΕΦ. β'.

1 Ἐπὶ τῆς φυλακῆς μου στήσομαι, καὶ ἐπιβήσομαι
ἐπὶ πέτραν, καὶ ἀποσκοπεύσω τοῦ ἰδεῖν
τί λαλήσει ἐν ἐμοί, καὶ τί ἀποκριθῶ ἐπὶ
2 τὸν ἔλεγχόν μου. Καὶ ἀπεκρίθη (α) πρός
με κύριος, καὶ εἶπε, Γράψον ὅρασιν, καὶ σαφῶς
(β) εἰς πυξίον, ὅπως διώκῃ ὁ ἀναγινώσκων
3 αὐτά. (γ) Διότι ἔτι ὅρασις εἰς
καιρόν, καὶ ἀνατελεῖ (¨) εἰς πέρας, καὶ οὐκ εἰς κενόν.
ἐὰν (¨) ὑστερήσῃ, ὑπόμεινον αὐτόν, ὅτι ἐρχόμενος
4 ἥξει, καὶ οὐ μὴ χρονίσῃ. Ἐὰν ὑποστείληται,
οὐκ εὐδοκεῖ ἡ ψυχή μου ἐν αὐτῷ. ὁ
5 δὲ (δ) δίκαιος ἐκ πίστεώς μου ζήσεται. Ὁ
δὲ κατοιόμενος, καὶ καταφρονητής, ἀνὴρ ἀλαζών,
οὐθὲν μὴ περάνῃ· ὃς ἐπλάτυνε καθὼς
(ε) ᾅδης τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, καὶ οὗτος ὡς θάνατος
οὐκ ἐμπιπλάμενος, καὶ ἐπισυνάξει (ζ)
ἐπ' αὐτὸν πάντα τὰ ἔθνη, καὶ εἰσδέξεται
6 πρὸς αὐτὸν πάντας τοὺς λαούς. Οὐχὶ ταῦτα
πάντα (η) κατ' αὐτοῦ παραβολὴν λήψονται,
καὶ πρόβλημα εἰς διήγησιν αὐτοῦ;
καὶ ἐροῦσιν, Οὐαὶ ὁ πληθύνων (θ) ἑαυτῷ
τὰ οὐκ ὄντα αὐτοῦ ἕως τίνος, καὶ βαρύνων
7 τὸν κλοιὸν αὐτοῦ στιβαρῶς. Ὅτι ἐξαίφνης
ἀναστήσονται δάκνοντες αὐτόν, καὶ ἐκνήψουσιν
οἱ ἐπίβουλοί σου, καὶ ἔσῃ εἰς διαρπαγὴν
8 αὐτοῖς. Διότι (ι) ἐσκύλευσας ἔθνη πολλά,
(κ) σκυλεύσουσί σε πάντες οἱ ὑπολελειμμένοι
λαοί, δι' αἵματα ἀνθρώπων, καὶ (λ) ἀσεβείας
γῆς καὶ πόλεως, καὶ πάντων τῶν κατ-
9 οικούντων αὐτήν. Ὦ ὁ πλεονεκτῶν πλεονεξίαν
κακὴν τῷ οἴκῳ αὐτοῦ, τοῦ τάξαι εἰς ὕψος
νοσσιὰν αὐτοῦ, τοῦ (μ) ἐκσπασθῆναι ἐκ
10 χειρὸς κακῶν. Ἐβουλεύσω αἰσχύνην τῷ
οἴκῳ σου, συνεπέρανας (ν) πολλοὺς λαούς,
11 καὶ ἐξήμαρτεν ἡ ψυχή σου. Διότι λίθος
ἐκ τοίχου βοήσεται, καὶ κάνθαρος ἐκ ξύ-
12 λου φθέγξεται αὐτά. Οὐαὶ ὁ οἰκοδομῶν
πόλιν ἐν αἵμασι, καὶ ἑτοιμάζων πόλιν ἐν
13 ἀδικίαις. Οὐ ταῦτά ἐστι παρὰ κυρίου παντοκράτορος;
καὶ ἐξέλιπον λαοὶ ἱκανοὶ ἐν
14 πυρί, καὶ ἔθνη πολλὰ ὠλιγοψύχησαν. (ξ) Ὅτι
ἐμπλησθήσεται ἡ γῆ τοῦ γνῶναι τὴν δόξαν κυρίου,
ὡς ὕδωρ (ο) κατακαλύψει αὐτούς.

CAP. II.

Super custodiam meam stabo, 1
& ascendam super (a) petram,
& contemplabor : ut videam
quid loquatur in me, & quid
respondeam ad correptionem meam.
Et respondit ad me Domi- 2
nus, & dixit ; Scribe (b) visionem,
& manifestè in (c) buxum,
ut persequatur qui legit ea: Quia 3
adhuc visio in tempus, & orietur
in finem, & non in vacuum. Si
defecerit ; sustine (d) eum :
quia veniens veniet, & non tardabit.
Si retraxerit te, non pla- 4
cet animæ meæ in eo. Justus autem
ex fide (e) mea vivet. Qui 5
autem (f) arrogans est, & contemptor,
vir superbus nihil perducet
ad finem : qui dilatavit,
sicut infernus, animam suam :
& iste, quasi mors, non adimpletur
: & congregabit ad se omnes
gentes, & accipiet ad se
omnes populos. Nonne universa 6
hæc adversùm eum parabolam
sument, & propositionem ad narrationem
ejus ? Et dicent ; Væ,
qui multiplicat sibi, quæ non sunt
sua : usquequò (g) & aggravat
torquem suam graviter.
Quia subitò consurgent mor- 7
dentes eum , & vigilabunt
insidiatores tui, & eris in rapinã
illis. Quia (h) expoliâsti gentes 8
multas ; expoliabunt omnes reliqui
populi, propter sanguines hominum,
& impietates terræ, &
civitatis, & omnium habitatorum
ejus. O qui multiplicat a- 9
varitiam malam domui suæ, ut
ponat in excelso nidum suum, ut
eruatur de manu malorum. Co- 10
gitâsti confusionem domui tuæ :
consumpsisti populos multos : &
peccavit anima tua. Propter 11
quod lapis de pariete clamabit,
& (i) scarabeus de ligno loque-
tur ea. Væ, qui ædificat civi- 12
tatem in sanguinibus, et præparat 13
urbem in iniquitatibus. (k) Non
hæc sunt à Domino omnipotente.
Et defecerunt populi multi in
igne, & gentes multæ (b) coan- 14
gustatæ sunt. Quia replebitur
terra, ut cognoscat gloriam Domini, (m) quasi aqua operiet eos.

MA. A. (α) κύριος πρός με, (β) ἐπὶ (γ) Ὅτι (¨) * ἑσπέρας, (¨) ὑστερήσει,
(δ) δίκαιός μου ἐκ πίστεως ζήσεται. (ε) ὁ ᾅδης (ζ) πρὸς (η) παραβολὴν
κατ' αὐτοῦ (θ) αὐτῷ (ι) σὺ ἐσκύλευσας (κ) σκυλεύσουσίν σε πάντες (λ) ἀσέβειαν
(μ) ἐκσπασθῆναι (ν) λαοὺς πολλούς, (ξ) Καὶ ἐνεπλήσθη ἡ σύμπασα
γῆ (ο) πολύ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 על כן מדבח לזיניה ומסיק בוסמין לסמותיה ארי בהון טב מיכליה ושירותיה מטעמא:
17 העל אלין ישלח משריתיה בתדירא לאוספא עממין ולא בחים:

ב

1 אמר נביא על מטרתי אנא קאם עתיד משמש על מצודתי ומסכינא למחזי מה יתמלל
2 עמי ומה אתותב על בעותי: ואתותבית מן קדם יי ואמר כתיבא נבואתא ומפרשא
3 על ספרא דאוריתא בדיל דיוחי למחכם מן דקרי ביה: ארי עתידא נבואתא לזמן
ומתקן קצא ולא יבטל אם יהי ארכא לפתגמא סברו לה ארי בזמניה ייתי ולא יתעכב:
4 5 הא רשיעיא אמרין לית כל אלין וצדיקיא על קושטהון יתקימון: ואף הא כטעי בחמר
גבר יהיר ברשע ולא יתקים דאפתי כשאול נפשיה והוא כמותא ולא שבע וכנש לותיה
6 כל עממיא וקריב לותיה כל מלכותא: הלא אלין כולהון עלוהי מתלן יטלון ושועי
חודין ימרון ליה ויימר ויי דמסגי נכסין דלא דיליה עד אימתי את מתקף עלך תקוף
7 8 חובין: הלא בתכף יקומון אנסך ויתגלון מזעזעך ותהי לעדי להון: ארי את
בזתא עממין סגיאין יבזונך כל שאר שבטיא מדמי אנשא וחטוף ארעא דישראל
9 קרתא ירושלם וכל דיתבין בה: וי דאנס ממון דרשע לביתיה לשואה במרומא
10 מדוריה לאשתזבא מיד ביש: מלכתא בהתא לביתך בזתא עממין סגיאין ועל נפשך
11 12 חטיתא: ארי אבנא מכתלא צוחא על דאנס לה ושפא מגו מרישא עני לה: וי דבני
13 קרתא בדם אשיד ומשכלל קריא בנכלין: הא מחן תקיפן וחסינן אתין מן קדם יי
14 צבאות ולאות עממיא תקיפין כאשתא ומלכותא לריקנו ישתלהין: ארי התמלי
ארעא למידע ית דחלתא דיי כמיא די לימא חפן:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Propterea sacrificat armis suis, & adolet aromata retiaculo suo, ipsis enim 16
bonus est cibus ejus, ejusque convivium suave. Nunquid propterea mittet 17
exercitus suos, ut perpetuò consumat gentes, idque sine ulla misericordia ?

CAP. II.

Dixit Propheta : Super custodiam meam sto paratus, ministro munitioni 1
meæ, & speculabor eam visurus quid dicetur mihi, & quid respondebitur
ad deprecationem meam. Et responsum tuli à conspectu Dñi, & dixit: Scri- 2
be prophetiã & explana eam in libro Legis, ut festinet ad sapientiã asse-
quendã quicunq; legerit in eo. Quoniam futura est prophetia illa [*suo*] tem- 3
pore, & parat⁹ est finis qui non obsolescet: si fuerit longitudo verbo, ipsũ
expectate, quandoquidem tempore suo eveniet, nec tardabit. En impii 4
dicunt: Illa omnia futura non sunt : justi verò in veritate sua permanebunt.
Quinetiam ecce quemadmodum homo errat in vino, superbus in impietate 5
& non permanebit, qui dilatat tanquã infern⁹ animam suam; & ipse est si-
cut mors, neque satiatur, sed colligit ad se omnes gentes, sibique propinqua
ducit omnia regna. Nónne illi omnes de ipso proverbia ferent, & narrati- 6
ones ænigmatum dicent de eo? dicetúrque: Væ qui multiplicat divitias non
suas: usquequo aggravatur⁹ es in te gravitatem peccatorum? Nónne statim 7
surgent qui te opprimant, & revelabuntur qui te perterrefaciant, et eris eis
in prædam ? Quia tu expilâsti gentes multas, expilabunt te omnes reliquiæ 8
tribuũ, ob sanguines hominũ; & rapinã terræ Israel, urbis Jerusalẽ & omni-
um habitantiũ in ea. Væ qui per vim accumulat divitias impietatis domi 9
suæ, ut ponat in celsitudine habitationem suam, ut liberetur à manu mali.
Consiliũ cepisti ignominiosũ domui tuæ, deprædatus es gentes multas, sed in 10
animam tuam peccâsti. Quoniam lapis de pariete clamat, quòd vim ei in- 11
feras : & putamen de medio trabis respondet ei. Væ qui ædificat civitatem 12
sanguine effuso, et jacit fundamenta urbis fraudibus. *Ecce* plagæ validæ et 13
vehementes veniunt à conspectu Domini exercituum : et labor gentium
robustarum tanquam ignis, et regna in vanum sese fatigabunt. Quoniam 14
replebitur terra ad cognoscendum timorem Domini, sicut aquæ quæ mare operiunt.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܘܕܒܚ ܠܡܟܡܪܬܗ. ܘܣܐܡ ܒܣܡܐ ܠܚܪܡܗ. ܡܛܠ ܕܒܗܘܢ ܫܡܝܢܐ ܡܢܬܗ 16
ܘܡܐܟܘܠܬܗ ܓܒܝܬܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܫܕܐ ܡܟܡܪܬܗ ܒܟܠܙܒܢ. ܘܩܛܠ ܥܡܡܐ ܘܠܐ ܚܐܣ. 17

* ܩܦܠܐܘܢ * ܒ *

* ܥܠ ܕܘܟܬܝ ܐܩܘܡ . ܟܕ ܪܓܠܝ ܐܝܬ ܠܝ ܥܠ ܟܐܦܐ. ܘܐܣܟܐ ܘܐܚܙܐ. ܡܢܐ ܡܡܠܠ ܥܡܝ. 1
ܘܡܢܐ ܡܦܢܐ ܠܝ ܥܠ ܡܟܣܢܘܬܝ. * ܘܥܢܐ ܡܪܝܐ ܘܐܡܪ. ܟܬܘܒ ܚܙܘܐ. ܘܦܫܩ ܥܠ 2
ܠܘܚܐ. ܕܢܪܗܛ ܒܗ ܡܢ ܕܩܪܐ ܠܗ. * ܡܛܠ ܕܚܙܘܐ ܠܙܒܢܗ ܗܘ. ܘܣܟܐ ܐܬܐ. ܘܠܐ 3
ܡܕܓܠ. ܘܐܢ ܢܬܘܚܪ. ܠܐ ܬܬܡܗܘܢ ܠܗ. ܡܛܠ ܕܡܐܬܐ ܐܬܐ. ܘܠܐ ܡܘܚܪ. * ܘܒܥܘܠܐ ܠܐ 4
ܨܒܝܐ ܢܦܫܗ. ܘܙܕܝܩܐ ܒܗܝܡܢܘܬܐ ܢܚܐ. * ܓܒܪܐ ܡܪܚܢܐ ܘܥܠܘܒܐ. ܠܐ ܣܒܥ. ܕܐܦܬܝ 5
ܢܦܫܗ ܐܝܟ ܫܝܘܠ . ܘܠܐ ܣܒܥ ܐܝܟ ܡܘܬܐ. ܟܢܫ ܠܘܬܗ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. ܘܩܪܒ
ܠܘܬܗ ܟܠܗܘܢ ܐܡܘܬܐ. * ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ ܡܬܠܐ ܢܫܩܠܘܢ ܥܠܘܗܝ. ܘܦܠܐܬܐ ܘܐܚܕܬܐ 6
ܘܢܐܡܪܘܢ. ܘܝ ܠܡܟܢܫܢܐ ܘܡܣܓܐ ܠܗ ܕܠܐ ܕܝܠܗ. ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܡܛܥܢ ܥܠܘܗܝ
ܥܢܢܐ ܕܛܝܢܐ. * ܗܐ ܡܢ ܫܠܝ ܢܩܘܡܘܢ ܡܢܟܬܢܝܟ . ܘܢܬܬܥܝܪܘܢ ܡܙܝܥܢܝܟ. 7
ܘܬܗܘܐ ܠܗܘܢ ܠܒܙܬܐ. * ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܒܙܬ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ . ܢܒܙܘܢܟ ܥܡܡܐ 8
ܕܐܫܬܚܪܘ. ܡܢ ܕܡܐ ܕܒܢܝܢܫܐ ܘܚܛܘܦܝܐ ܕܐܪܥܐ. ܘܕܡܕܝܢܬܐ ܘܕܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ. * ܘܝ 9
ܠܕܥܠܨ ܘܡܟܢܫ ܒܝܫܬܐ ܠܢܦܫܗ . ܘܣܐܡ ܩܢܗ ܒܪܘܡܐ. ܕܢܬܦܨܐ ܡܢ ܒܝܫܬܐ.
* ܐܬܪܥܝܬ ܒܗܬܬܐ ܠܒܝܬܟ . ܒܙܬ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܐܚܛܝܬ ܢܦܫܟ. * ܡܛܠ 10 11
ܕܟܐܦܐ ܡܢ ܐܣܬܐ ܩܥܝܐ. ܘܣܟܬܐ ܡܢ ܩܝܣܐ ܥܢܝܐ. * ܘܝ ܠܒܢܐ ܡܕܝܢܬܐ 12
ܒܕܡܐ . ܘܡܬܩܢ ܩܪܝܬܐ ܒܥܘܠܐ. * ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ. ܡܢ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܢܠܐܘܢ 13
ܥܡܡܐ ܒܢܘܪܐ. ܘܐܡܘܬܐ ܒܣܪܝܩܘܬܐ ܢܫܠܗܝܢ. * ܡܛܠ ܕܬܬܡܠܐ ܐܪܥܐ ܠܡܕܥ ܫܘܒܚܗ 14
ܕܡܪܝܐ . ܐܝܟ ܡܝܐ ܕܡܟܣܝܢ ܠܝܡܐ.

Sacrificat reti ſuo, & thus adolet ſagenæ ſuæ; quia per hæc piguior fit portio ejus, & cibus ejus, exquiſitus. 16 Propterea jacit rete ſuum quovis tempore, gentes occidit nullâ adhibitâ clementiâ. 17

CAP. II.

IN loco meo conſiſtam, veſtigia habens ſuper petra; ut præſtoler, ac videam quid loquatur mihi, quidve reſpondeat mihi de correptione mea. 1 Reſpondit autem mihi Dominus, & ait; Scribe viſionem, & diſtingue ſuper tabulas; ut percurrat eam qui eam legerit. 2 Nam viſio hæc ſuo tempore futura eſt, terminus adveniet, neque fallet: ſi cunctetur, ne pigeat vos; citò enim veniet, neque tardabit. 3 Iniquitate non oblectatur anima ejus: 4 Juſtus per fidem vivet: Homo temerarius & avidus non ſatiatur: 5 Qui ampliavit animam ſuam ut infernum, neque ſaturatur ut mors; congregavit ad ſe omnes populos, & admovit ad ſe omnes gentes. Hæc omnia proverbia, parabolas, & ænigmata de ipſo proferent, ac dicent; 6 Væ coacervanti & multiplicanti ſibi quæ ſua non ſunt: quouſque tandem aggerabit ſuper ſe nubem luti? En illicò ſurgent 7 qui te morſuri ſunt, evigilabunt qui te concuſſuri ſunt, & eris illis direptioni. Quia tu depopulatus es gentes multas, depopulabuntur te gentes quæ ſuperſunt; 8 propter cædes humanas, & violentiam *illatam* terræ, urbi, et omnibus habitatoribus ejus. Væ 9 opprimenti et congreganti malum animæ ſuæ, et nidum ſuum in excelſo collocanti ut malum effugiat. Ignominiam cogitâſti 10 domui tuæ, diripuiſti gentes multas, & teipſum ad peccatum adegiſti. Nam lapis è 11 pariete exclamat, & clavis è ligno reſpondet; Væ ædificanti urbem cædibus, & ſtabi- 12 lienti civitatem ſceleribus. Hæc omnia ſunt 13 à Deo potentiſſimo. Populi igne exagitabuntur, & nationes in vanitate fatigabuntur; Ad hoc ut impleatur terra agitatione majeſta- 14 tis Domini, ut aquæ tegentes mare.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* من اجل هذا يذبح لشصه ويبخر لشبكته * لان بهما دسم نصيبه واطعمته المختارة * من 16 17
اجل هذا يلقي شصه ليقتل الامم كل حين * ولا يشفق *

* الفصل الثاني *

* على محرسي اقف * واطلع على صخر واتفرس * لانظر ماذا يتكلم في * وماذا اجاوب على 1
تبكيتي * فاجاب الرب وقال لي * اكتب الرويا بايضاح على لوح * كي يسرع قاريها * من اجل 2 3
ان الرويا ايضا الى زمان * وليس تشرق نهاية ولا باطلا * وان ابطي انتظره * لان الاتي ياتي * ولن
يبطي * وان تأخر لم تسر نفسي به * وعدلي من الايمان يحيي * والمتعظم والمتهاون * والرجل 4 5
الاحمق لا يكمل شيا * الذي عرض نفسه كالجحيم * وهو مثل الموت لا يمتلي * ويجمع
اليه كل الامم * ويقبل اليه كل الشعوب * اليس هذه كلها ياخذونها عليه مثلا * ومعنى 6
للاخبار عنه * ويقولون ويل المكثر له ما لم يكن له * حتى متى ويثقل طوقه * لانه يثقل *
* لانهم يقومون بغتة لادغوه * وينتبهون المشيرون عليك * وتصير اختطافا لهم * من اجل 7 8
انك غنمت امما كثيرة ويغنموك جميع الشعوب المتبقيين * لاجل دماء البشر * ونفاق الارض
والمدينة وجميع السكان فيها * واه الذي يشتهي شرها رديا لبيته * ليرتب في العلا عشه * 9
ليفلت من يد الاشرار * رايت لبيتك خزيا * استاصلت شعوبا كثيرة * واخطيت نفسك * 10
* من اجل ان الحجر من الحائط يصرخ * والوتد من الشجر ينطق * ويل الباني 11 12
مدينة بالدماء * ومهيي مدنا بالمظالم * اليس هذه هي من قبل الرب الضابط الكل * وفنيت 13
الشعوب الكثيرة بالنار * وامم كثيرة صغرت نفوسها * لان الارض كلها امتلات لتعرف 14
مجد الرب * مثل ماء كثير يغشاهم *

Propterea immolabit unco ſuo, & thus adolebit reti ſuo; quia per ea pinguem reddidit portionem ſuam, cibóſque ſuos electos. 16 *Propterea jacit uncum ſuum ad occidendas gentes quocunque tempore, neque parcit.* 17

CAP. II.

Super cuſtodiam meam ſtabo, ſuper petram aſcendam, & contemplabor; ut videam quid loquatur in me, & quid reſpondeam ad correptionem meam. 1 *Et reſpondit Dominus, dixitque mihi; Scribe viſionem hanc dilucidè ſuper tabellam, ita ut non immoretur legens eam:* 2 *Quoniam viſio adhuc ad tempus erit, & non orietur finis, neque fruſtrà. Quòd ſi cunctetur, expecta eum; quia qui venturus eſt, veniet, & haudquaquam tardabit.* 3 *Si tædeat illum, non delectabitur eo anima mea: & juſtitia mea ex fide vivit.* 4 *Superbus autem, & neglector, & homo ſtolidus nihil ad finem perducet; qui animam ſuam ut infernum dilatat, quique mortis inſtar minimè ſaturatur, ſed colligit ad ſe omnes gentes, & recipit ad ſe omnes populos.* 5 *Nónne hæc omnia aſſument de ipſo in proverbium & modum narrandi de ipſo, ac dicent? Væ multiplicanti ſibi quæ ſua non ſunt: quouſque tandem aggravabit collare ſuum? jam enim graviſſimum eſt.* 6 *Nam ſubitò conſurgent mordentes eum, diripientque te qui conſilium contra te ineunt, & fies illis ad rapinam.* 7 *Quia deprædatus es gentes multas, deprædabuntur te omnes populi reſidui; propter ſangines humanos, & impietatem terræ & urbis, omniúmque habitantium in ea.* 8 *Væ illi qui aviditate peſſimâ cupidus eſt pro domo ſua, ut diſponat in ſublimi nidũ ſuum, ut effugiat manum malignorum.* 9 *Excogitâſti domui tuæ pudorem: eradicâſti populos multos, & peccare feciſti animam tuam.* 10 *Nam lapis è pariete clamat, & paxillus ex arbore loquitur;* 11 *Væ urbem ſanguinibus ædificanti, & urbes ex impietatibus aptanti.* 12 *Nónne hæc ab omnipotente Domino ſunt? populi multi ſunt igne conſumpti, & gentes multæ puſillanimes factæ ſunt.* 13 *Quia tota terra implebitur ad cognoſcendam gloriam Domini: velut aqua multa operiet eos.* 14

חבקוק : ג

,inebriando etiam &,tuum *venenum* adjungenti ,ſuo *ſocio* propinanti Væ
15 הוֹי מַשְׁקֵה רֵעֵהוּ מְסַפֵּחַ חֲמָתְךָ וְאַף שַׁכֵּר
:gloria *præ*,ignominia es Saturatus .eorum nuditates *ſuper aſpiciendum ad*
16 לְמַעַן הַבִּיט עַל־מְעוֹרֵיהֶם׃ שָׂבַעְתָּ קָלוֹן מִכָּבוֹד
dexteræ calix te ſuper ſe vertet :præputium *denudare* & , tu etiam bibe
שְׁתֵה גַם־אַתָּה וְהֵעָרֵל תִּסּוֹב עָלֶיךָ כּוֹס יְמִין
Lebanon rapina Quia .tuam gloriam ſuper ignominioſus vomitꝰ & ,Dñi
17 יְהוָה וְקִיקָלוֹן עַל־כְּבוֹדֶךָ׃ כִּי־חֲמַס לְבָנוֹן
rapinã & ,*hominis ſanguines* propter,ea conteret *jumentorũ* præda &,te operiet
יְכַסֶּךָּ וְשֹׁד בְּהֵמוֹת יְחִיתַן מִדְּמֵי אָדָם וַחֲמַס־
quia ?ſculptile *profuit* Quid .ea in habitantium omniũ &,civitatis ,terræ
18 אֶרֶץ קִרְיָה וְכָל־יֹשְׁבֵי בָהּ׃ מָה־הוֹעִיל פֶּסֶל כִּי
fictor ſperavit quia:mendaciũ docens &,conflatile,ejus fictor illud ſculpſit
פְסָלוֹ יֹצְרוֹ מַסֵּכָה וּמוֹרֶה שָּׁקֶר כִּי בָטַח יֹצֵר
: ligno dicenti Væ ?muta *vana faciendum ad,eo ſuper* ſuo figmẽto
19 יִצְרוֹ עָלָיו לַעֲשׂוֹת אֱלִילִים אִלְּמִים׃ הוֹי אֹמֵר לָעֵץ
coopertus *ipſe* Ecce ? *docebit* ipſe : tacenti lapidi,te ſuſcita,Expergiſcere
הָקִיצָה עוּרִי לְאֶבֶן דּוּמָם הוּא יוֹרֶה הִנֵּה־הוּא תָּפוּשׂ
Dominus Et .ejus *interiori in* non ſpiritus omnis & ,argento & ,auro
20 זָהָב וָכֶסֶף וְכָל־רוּחַ אֵין בְּקִרְבּוֹ׃ וַיהוָה
.terra omnis ejus *faciebus à ſile* : *ſuæ ſanctitatis* templo in
בְּהֵיכַל קָדְשׁוֹ הַס מִפָּנָיו כָּל־הָאָרֶץ׃

CAP. III. ג

audivi Domine .*Sigionoth* ſuper prophetæ Chabbacuc Oratio
1 תְּפִלָּה לַחֲבַקּוּק הַנָּבִיא עַל שִׁגְיֹנוֹת׃ יְהוָה שָׁמַעְתִּי 2
,illud vivifica annorũ *interiori* in tuum opus Domine ,timui ,tuum auditũ
שִׁמְעֲךָ יָרֵאתִי יְהוָה פָּעָלְךָ בְּקֶרֶב שָׁנִים חַיֵּיהוּ
Deus .*recordaberis* miſericordiæ ira in :*facies* notũ annorum *interiori* in
3 בְּקֶרֶב שָׁנִים תּוֹדִיעַ בְּרֹגֶז רַחֵם תִּזְכּוֹר׃ אֱלוֹהַּ
cœlos Operuit .Selah : Paran monte de Sanctus & ,veniet *Theman* à
מִתֵּימָן יָבוֹא וְקָדוֹשׁ מֵהַר־פָּארָן סֶלָה כִּסָּה שָׁמַיִם
, erat lux ut ſplendor Et .terra eſt plena ejus laudis &,ejus *decor*
4 הוֹדוֹ וּתְהִלָּתוֹ מָלְאָה הָאָרֶץ׃ וְנֹגַהּ כָּאוֹר תִּהְיֶה
ejus *facies Ad* .ejus fortitudinis abſconſio ibi Et .ei ejus manu de *cornua*
5 קַרְנַיִם מִיָּדוֹ לוֹ וְשָׁם חֶבְיוֹן עֻזֹּה׃ לְפָנָיו
eſt menſus & , Stetit .*ejus pedes ad carbo* egrediebatur & , peſtis ivit
6 יֵלֶךְ דָּבֶר וְיֵצֵא רֶשֶׁף לְרַגְלָיו׃ עָמַד וַיְמֹדֶד
,*perpetuitatis* montes ſunt contriti & ,gentes fecit *exſilire* & , vidit:terram
אֶרֶץ רָאָה וַיַּתֵּר גּוֹיִם וַיִּתְפֹּצְצוּ הַרְרֵי־עַד
iniquitate Sub ei ſeculi itinera ,*ſeculi* colles ſe incurvaverunt
7 שַׁחוּ גִּבְעוֹת עוֹלָם הֲלִיכוֹת עוֹלָם לוֹ׃ תַּחַת אָוֶן
.Midian terræ cortinæ ſe moverunt , Cuſan tentoria vidi
רָאִיתִי אָהֳלֵי כוּשָׁן יִרְגְּזוּן יְרִיעוֹת אֶרֶץ מִדְיָן׃
?tuus *naſus* flumina *in* Num ? Dominus eſt iratus flumina *in* Nunquid
8 הֲבִנְהָרִים חָרָה יְהוָה אִם בַּנְּהָרִים אַפֶּךָ
tuas quadrigas ,tuos equos ſuper *equitabis* quia ? tua ira mare *in* num
אִם־בַּיָּם עֶבְרָתֶךָ כִּי תִרְכַּב עַל־סוּסֶיךָ מַרְכְּבֹתֶיךָ
, *tribuum* juramenta , tuus arcus *denudabitur Denudatione* .ſalutem
9 יְשׁוּעָה׃ עֶרְיָה תֵעוֹר קַשְׁתֶּךָ שְׁבֻעוֹת מַטּוֹת
.*terram* ſcidiſti fluvios : Selah *dictum*
אֹמֶר סֶלָה נְהָרוֹת תְּבַקַּע־אָרֶץ׃

Verſio VULG. LAT.

15 Væ qui potum dat amico ſuo mit-
tens fel ſuum, & inebrians ut aſpi-
16 ciat nuditatẽ ejus. Repletus es i-
gnominiâ pro gloria:bibe tu quo-
que, & conſopire:circumdabit te
calix dexteræ Domini, & vomi-
tus ignominiæ ſuper gloriam tuã.
17 Quia iniquitas Libani operiet te,
& vaſtitas animalium deterrebit
eos de ſanguinibus hominum, &
iniquitate terræ,& civitatis,& o-
18 mnium habitantium in ea. Quid
prodeſt ſculptile, quia ſculpſit il-
lud fictor ſuus, conflatile, & ima-
ginem falſam ? quia ſperavit in
figmento fictor ejus, ut faceret ſi-
19 mulachra muta. Væ qui dicit li-
gno; Expergiſcere : Surge, lapidi
tacenti:numquid ipſe docere po-
terit ? Ecce iſte coopertus eſt auro
& argento: & omnis ſpiritus non
20 eſt in viſceribus ejus. Dominus
autem in templo ſancto ſuo:ſileat
à facie ejus omnis terra.

1 ORATIO HABACUC PROPHETÆ PRO IGNORANTIIS.

CAP. III.

2 Domine,audivi auditionẽ tuã,
& timui. Domine,opus tuum, in
medio annorum vivifica illud. In
medio annorum notum facies :
cùm iratus fueris,miſericordiæ re-
3 cordaberis. Deus ab Auſtro ve-
niet,& Sanctus de monte Pharan.
Operuit cœlos gloria ejus:& lau-
4 dis ejus plena eſt terra. Splen-
dor ejus ut lux erit:cornua in ma-
nibus ejus:Ibi abſcondita eſt for-
5 titudo ejus: Ante faciem ejus ibit
mors.Et egredietur diabolus ante
6 pedes ejus. Stetit, & menſus eſt
terram.Aſpexit, & diſſolvit Gen-
tes:& contriti ſunt montes ſeculi.
Incurvati ſunt colles mundi, ab
7 itineribus æternitatis ejus. Pro
iniquitate vidi tentoria Æthio-
piæ,turbabuntur pelles terræ Ma-
8 dian. Numquid in fluminibus ira-
tus es,Domine ? aut in fluminibus
furor tuus ? vel in mari indigna-
tio tua?Qui aſcendes ſuper equos
tuos : & quadrigæ tuæ ſalvatio.
9 Suſcitans ſuſcitabis arcum tuum,
juramenta tribubus quæ locutus
es. Fluvios ſcindes terræ :

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

15 Ὦ ὁ ποτίζων τὸν πλησίον αὐτοῦ ἀνατροπῇ θο-
λερᾷ, καὶ μεθύσκων ὅπως ἐπιβλέπῃ ἐπὶ τὰ
16 σπήλαια αὐτῶν. Πλησμονὴν ἀτιμίας ἐκ
δόξης πίε καὶ σύ· καρδία σαλεύθητι, καὶ σεί-
σθητι· ἐκύκλωσεν ἐπὶ σὲ ποτήριον δεξιᾶς
κυρίου, καὶ συνήχθη ἀτιμία ἐπὶ τὴν δόξαν σου.
17 Διότι ἀσέβεια τοῦ Λιβάνου καλύψει σε, καὶ τα-
λαιπωρία θηρίων πτοήσει σε, (ν)δι' αἵματα
ἀνθρώπων, καὶ (π)ἀσεβείας γῆς καὶ πόλεως,
18 καὶ πάντων τῶν κατοικούντων (ρ) αὐτήν. Τί ὠ-
φελεῖ γλυπτὸν, ὅτι ἔγλυψαν αὐτό; ἔπλα-
σεν αὐτὸ χώνευμα, φαντασίαν ψευδῆ, ὅτι
πέποιθεν ὁ πλάσας ἐπὶ τὸ πλάσμα αὐτοῦ,
19 τοῦ ποιῆσαι εἴδωλα κωφά. Οὐαὶ ὁ λέγων
τῷ ξύλῳ, Ἔκνηψον, ἐξεγέρθητι· καὶ τῷ λί-
θῳ, Ὑψώθητι· καὶ αὐτό ἐστι φαντασία· τοῦτο
δέ ἐστιν ἔλασμα χρυσίου καὶ ἀργυρίου, καὶ πᾶν
20 πνεῦμα οὐκ ἔστιν ἐν αὐτῷ. Ὁ δὲ κύριος ἐν
ναῷ ἁγίῳ αὐτοῦ· εὐλαβείσθω ἀπὸ προσώπου
αὐτοῦ πᾶσα ἡ γῆ.

MS.A. (ν)διὰ (π) ἀσέβειαν (ρ) αὐτῶν.

1 ΠΡΟΣΕΥΧῊ ἈΜΒΑΚΟῪΜ ΤΟΥ͂
ΠΡΟΦΉΤΟΥ, (α) ΜΕΤᾺ ᾨΔΗ͂Σ.
2 †Κύριε εἰσακήκοα τὴν ἀκοήν σου, καὶ ἐφοβή-
θην· †κατενόησα τὰ ἔργα σου, καὶ ἐξ-
έστην. †ἐν μέσῳ δύο ζώων γνωσθήσῃ, †ἐν
τῷ ἐγγίζειν τὰ ἔτη ἐπιγνωσθήσῃ· †ἐν
τῷ παρεῖναι τὸν καιρὸν ἀναδειχθήσῃ· †ἐν τῷ
ταραχθῆναι τὴν ψυχήν μου, ἐν ὀργῇ ἐλέους
3 μνησθήσῃ. †Ὁ θεὸς ἐκ Θαιμὰν ἥξει, †καὶ ὁ
ἅγιος ἐξ ὄρους Φαρὰν κατασκίου (ν)δασέος.
ΔΙΑ´ΨΑΛΜΑ. †ἐκάλυψεν οὐρανοὺς ἡ ἀ-
ρετὴ αὐτοῦ, †καὶ αἰνέσεως αὐτοῦ πλήρης ἡ γῆ.
4 †Καὶ φέγγος αὐτοῦ ὡς φῶς ἔσται· †κέρατα
ἐν χερσὶν αὐτοῦ, †καὶ ἔθετο ἀγάπησιν κρα-
5 ταιὰν ἰσχύος αὐτοῦ. †Πρὸ προσώπου αὐτοῦ
πορεύσεται λόγος, †καὶ (β)ἐξελεύσεται εἰς πε-
6 δία· κατὰ πόδας αὐτοῦ †Ἔστη, καὶ ἐσαλεύθη ἡ
γῆ. †ἐπέβλεψε, καὶ διετάκη ἔθνη· †(ν)διε-
θρύβη τὰ ὄρη βίᾳ, †ἐτάκησαν βουνοὶ αἰώνιοι
7 †πορείας (ϛ) αἰωνίας αὐτοῦ. Ἀντὶ κόπων
εἶδον †σκηνώματα Αἰθιόπων, πτοηθήσονται
8 †καὶ αἱ σκηναὶ γῆς Μαδιάμ. †Μὴ ἐν ποτα-
μοῖς (γ)ὠργίσθης κύριε; †ἢ ἐν ποταμοῖς ὁ
θυμός σου; †ἢ ἐν θαλάσσῃ τὸ ὅρμημά σου;
†ὅτι ἐπιβήσῃ ἐπὶ τοὺς ἵππους σου, †καὶ ἡ
9 ἱππασία σου σωτηρία. †Ἐντείνων (δ)ἐνέ-
τεινας τόξον σου †ἐπὶ σκῆπτρα, λέγει κύρι-
ος. ΔΙΑ´ΨΑΛΜΑ. †ποταμῶν ῥαγήσεται γῆ.

MS.A. (α)ΜΕΤ' (ν) δασέως. (β)ἐξελεύσεται· ἐν πεδίλοις οἱ πόδες αὐτοῦ. Ἔστη,
(ν)καὶ (ϛ)αἰωνίους αὐτοῦ. (γ)ὀργισθῇς (δ)ἐντενεῖς τὸ τόξον σου ἐπὶ τὰ σκῆπτρα,

O, qui propinat proximo ſuo (n) 15
ſubverſionem turbidã, et inebriat,
ut aſpiciat in (o) ſpeluncas eorũ:
Saturitatem ignominiæ de gloria 16
bibe (p)et tu:cor commovere, &
concutere : circundedit te calix
dexteræ Domini : & congregata
eſt ignominia ſuper gloriã tuam.
Quia impietas Libani operiet te, 17
& miſeria beſtiarum terrebit te:
propter ſanguines hominũ, et im-
pietates terræ, & civitatis, & o-
mnium habitantium in ea. Quid 18
*prodeſt ſculptile,*quia ſculpſerũt*
illud? Formavit illud conflatile,
imaginem falſam:quia confidit fi-
ctor in figmento ſuo, ut faciat i-
dola(q)muta.Væ,qui dicit ligno; 19
Evigila,exurge: et lapidi; Eleva-
re:& ipſum eſt imago:iſtud verò
eſt productio auri,et argẽti:et(r)
omnis ſpiritꝰ non eſt in eo. Domi- 20
nus autẽ in templo ſancto ſuo: re-
vereatur à facie ejus omnis terra.

ORATIO AMBACUM PRO- 1
PHETÆ,(a)CUM CANTICO.
Domine, audivi auditum tu- 2
um,& timui:(b)conſidera-
vi opera tua, & obſtupui. In me-
dio duorum (c) animalium cog-
noſcêris: cùm appropinquaverint
anni; cognoſcêris: (d)cùm adve-
nerit tempus;demonſtraberis:cùm
turbata fuerit anima mea in ira;
miſericordiæ recordaberis. Deus
à(e)Thæman veniet, & Sanctus 3
de monte (f) Pharan umbroſo
condenſo.(g)DIAPSALMA. O-
peruit cœlos virtus ejus, & lau-
dis ejus plena eſt terra. Et ſplen- 4
dor ejus,quaſi lux erit. Cornua in
manibus ejus:et poſuit dilectionẽ
robuſtã(h)fortitudinis ſuæ. Ante 5
faciem ejus ibit(i)verbũ, et(k)e-
gredietur in campos:ad pedes ejus
Stetit,et commota eſt terra.Aſpe- 6
xit, & diſtabuerunt gentes: con-
triti ſunt montes violentiâ:tabue-
runt colles(l) ſempiterni (m) i-
tineris ſempiterni ejus. Pro labo- 7
ribꝰ vidi tabernacula Æthiopũ:
pavebunt & tabernacula terræ
Madiã. Nunquid in fluminibꝰ i- 8
ratus es,Domine? aut in fluminibꝰ
furor tuus? vel in mari impetus
tuus? Quia aſcendes ſuper equos
tuos,et equitatio tua ſalus. Inten- 9
dens (n) intendiſti arcum tuum
ſuper ſceptra, dicit Dominus.DIAPSALMA. (o)Fluviorum ſcindetur terra.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

15 וַי דְמַשְׁקֵי לְחַבְרֵיהּ וְזָלֵף בְּיַחֲמָא בְּדִיל דְיִשְׁתֵּי וְיִתְרְוֵי וְיִתְגְּלֵי קְלָנֵיהּ׃ שְׂבַעְתְּ קְלָנָא מִן
16 יְקָרָא תִּשְׁתְּ אַף אַתְּ וְאִתְעַרְטַל יִסְתְּחַר עֲלָךְ כָּס דִּלְוָט מִן קֳדָם יְיָ וְיֵיתֵי קְלָנָא עַל יְקָרָךְ׃
17 אֲרֵי חֲטוֹף בֵּית מַקְדְּשָׁא יַחְפְּנָךְ וּבִזַּת עַמֵּיהּ תְּתַבְּרִנָּךְ מִדְּמֵי אֱנָשָׁא וַחֲטוֹף אַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל
18 קַרְתָּא יְרוּשְׁלֶם וְכָל דְיָתְבִין בַּהּ׃ מָא אַהֲנֵי צַלְמָא אֲרֵי אַתְכֵיהּ עָבְדֵיהּ מַתְּכָא וְדַחֲלַת
19 שְׁקַר אֲרֵי אִתְרְחִיץ לִבָּא דְעָבְדֵיהּ עֲלוֹהִי לְמֶעְבַּד טַעֲוָן דְלֵית בְּהוֹן צְרוֹךְ׃ וַי דְיֵאמַר
לְצַלְמָא אָעָא קוּם וּלְדַחֲלַת אַבְנָא אִתְעַרִי וְהִיא שָׁתְקָא וְדָמְיָא הוּא מַכְלֵי הָא הוּא מְחַפֵּי
20 דְהַב וּכְסַף וְכָל רוּחַ לֵית בִּמְעוֹהִי׃ וַיְיָ אִתְרְעֵי לְאַשְׁרָאָה שְׁכִנְתֵּיהּ בְּהֵיכְלָא דְקוּדְשֵׁיהּ
וִיסוּפוּן מִן קֳדָמוֹהִי כָּל דַּחֲלַת אַרְעָא׃

ג

1 צְלוֹתָא דְצַלִּי חֲבַקּוּק נְבִיָּא כַּד אִתְגְּלֵי לֵיהּ עַל אַרְכָּא דִיהַב לְרַשִׁיעַיָא דְאִם יְתוּבוּן
לְאוֹרָיְתָא בְּלִבַּב שְׁלִים יִשְׁתְּבֵק לְהוֹן וִיהוֹן כָּל חוֹבֵיהוֹן דְחָבוּ קֳדָמוֹהִי הָא כְּשָׁלוּתָא׃
2 יְיָ שְׁמַעִית שְׁמַע גְּבוּרְתָּךְ דְּחֵלִית יְיָ רַבְרְבִין עוֹבָדָךְ דִּי אַתְּ יָהֵב אַרְכָּא לְרַשִׁיעַיָּא דְאִם
יְתוּבוּן לְאוֹרָיְתָךְ וְלָא תָבוּ וְאִנּוּן מַרְגְּזִין קֳדָמָךְ בְּגוֹ שְׁנַיָּא דִיהַבְתָּא לְהוֹן חַיָּא בְּכֵן אַתְּ
עֲתִיד לְהוֹדַע גְּבוּרְתָּךְ בְּגוֹ שְׁנַיָּא דַּאֲמַרְתָּא לְחַדָּתָא עָלְמָא לְאִתְפְּרָעָא מֵרַשִׁיעַיָּא
3 דַּעֲבַרוּ עַל מֵימְרָךְ וְצַדִּיקַיָּא עָבְדֵי רְעוּתָךְ בְּרַחֲמִין תִּדְכַּר׃ בְּמִתַּן אוֹרָיְתָא לְעַמֵּיהּ
אֱלָהָא מִדָּרוֹמָא אִתְגְּלֵי וְקַדִּישָׁא מִטּוּרָא דְפָארָן בִּגְבוּרַת עָלְמִין אִתְחֲפִיאוּ שְׁמַיָּא
4 זִיו יְקָרֵיהּ וְאִמְרֵי תּוּשְׁבְּחָתֵיהּ מְלִיָא אַרְעָא׃ וְזֵהוֹר יְקָרֵיהּ כְּזֵהוֹר בְּרֵאשִׁית אִתְגְּלֵי
וְזִיקִין מִמֶּרְכְּבַת יְקָרֵיהּ נָפְקִין תַּמָּן גַּלִּי יַת שְׁכִנְתֵּיהּ דַּהֲוָת מִטַּמְּרָא מִבְּנֵי אֱנָשָׁא
5 בְּתָקוֹף רוּמָא׃ מִן קֳדָמוֹהִי מִשְׁתְּלַח מַלְאַךְ מוֹתָא וְנָפִיק בְּשַׁלְהוֹבִית אֶשָּׁתָא מֵימְרֵיהּ׃
6 אִתְגְּלֵי וְאַזִיעַ אַרְעָא וְאַיְתֵי מַבּוּלָא עַל עַם דָּרָא דַּעֲבַרוּ עַל מֵימְרֵיהּ וְאַף בְּתִנְיָתָא כַּד חָבוּ
קֳדָמוֹהִי בְּחוֹבֵיהוֹן כֵּן בַּלְבֵּלִנּוּן לְעַמְמַיָּא וְאִתְפָּרַקוּ טוּרַיָּא דְמִלְּקַדְמִין מַכָּא רָמָתָא דְמִן
7 עָלְמָא גְבוּרַת עָלְמָא דִילֵיהּ׃ כַּד פְּלַחוּ בֵית יִשְׂרָאֵל לְטַעֲוָתָא מְסַרְתִּנּוּן בְּיַד כּוּשָׁן
חַיָּבָא וְכַד תָּבוּ לְמֶעְבַּד אוֹרָיְתָא עֲבַדִית לְהוֹן נִסִּין וּגְבוּרָן וּפָרְקִתִּנּוּן מִיַּד מִדְיָנָאֵי עַל
8 יַד גִּדְעוֹן בַּר יוֹאָשׁ׃ הָא עַל מַלְכֵיהוֹן וּמַשִּׁרְיָתְהוֹן דִּסְגִּיאִין כְּמֵי נַהֲרָא הֲוָה רְגַז מִן קֳדָמָךְ
יְיָ עַל מַלְכַיָּא הֲוָה רוּגְזָךְ וּבְיַמָּא הוֹדַעְתָּא בְּהוֹן פּוּרְעֲנוּת גְּבוּרְתָּךְ אֲרֵי אִתְגְּלֵיתָא
9 עַל מַרְכְּבַת יְקָרָךְ שְׁכִנְתָּךְ לְעַמָּךְ תְּקוֹף וּפוּרְקָן׃ אִתְגְּלָאָה אִתְגְּלֵיתָא בִּגְבוּרְתָּךְ
בְּדִיל קְיָמָךְ דְּעִם שִׁבְטַיָּא מֵימְרָךְ קַיָּם לְעָלְמִין לְהוֹן בְּזִיעֲתָא טִנָּרִין תַּקִּיפִין נְפַקוּ
נַהֲרִין שָׁטְפִין אַרְעָא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Væ qui propinat ſocio ſuo , & fundit cum calore ut bibat & inebrietur, 15
patefiatq; ejus ignominia. Satiatus es ignominia pluſquam honore : tu quoq; 16
bibe & denudare:revertetur in te calix maledictionis à conſpectu Dñi,& ve-
niet ignominia ſuper decus tuum. Siquidem rapina domus ſanctuarii operiet 17
te, & præda populi ejus conteret te, ob ſanguines hominum, & rapinam ter-
ræ Iſrael,urbis Jeruſalem & omnium habitantium in ea. Quid profuit ſimu- 18
lachrũ ꝙ conflaverit illud factor ipſius?conflatile & numẽ falſum quod con-
fiſum ſit in eo cor factoris ipſiꝰ,ut faceret idola in quibꝰ nulla eſt utilitas? Væ 19
qui dicit ſimulachro,Lignũ ſurge;& idolo lapideo Expergiſcere:ipſũ autẽ ta-
cet,licet ſimilitudine illud referat clamantẽ:ecce ipſũ obductũ eſt auro & ar-
gento,nulluſq; ſpiritꝰ ineſt viſceribꝰ ejꝰ. Dñs autẽ voluit collocare majeſtatẽ 20
ſuã in tẽplo ſanctitatis ſuæ, à cujꝰ conſpectu conſumẽtur omnia idola terræ.

CAP. III.

ORatio quã oravit Chabacuc propheta,quando revelatũ eſt ei de lõgitudi- 1
ne [*temporis*] quam dedit [*Deus*] impiis:quòd ſi cõvertantur ad Legẽ corde
perfecto,remittetur eis, eruntq; omnia eorum ſcelera quæ admiſerunt in con-
ſpectu ejus tanquam ignorantia. Dñe audivi famam potentiæ tuæ:timui Dñe 2
grandia opera tua, quippe qui dederis longitudinem impiis ſi convertãtur ad
Legem tuam : quòd ſi non convertantur,ſed ipſi provocaverint te ad iram in
medio annorum quibus dediſti eis vitam,tandem ita futurum eſt ut notam fa-
cias potentiam tuam in medio annorum,quibus dixiſti te renovaturum mun-
dum,ut vindictã ſumas de impiis qui tranſgreſſi ſunt verbũ tuũ: juſtorũ autẽ
qui præſtant voluntatẽ tuã, cum miſerationibꝰ memineris. Quum daret Le- 3
gem populo ſuo Deus,ab Auſtro revelatꝰ eſt,& Sanctꝰ à monte Pharan: per
potentiã æternã operti ſunt cœli ſplendore gloriæ ipſiꝰ,& eloquiis laudis ejꝰ
repleta eſt terra. Porrò ſplendor gloriæ ejꝰ ſicut ſplendor primigeniꝰ appa- 4
ruit,& ſcintillæ à quadriga gloriæ ejꝰ prodierunt,ibi patefecit majeſtatẽ ſuã,
quæ abſcondita eſt à filiis hominũ cum potentia ſublimi. Ab ejꝰ conſpectu 5
emiſſus eſt angelꝰ mortis, & prodiit in flamma ignis verbũ ejꝰ. Revelatꝰ eſt 6
& commovit terrã, & adduxit diluviũ ſuper populũ generationis eorũ qui
tranſgreſſi fuerãt verbũ ſuum: & etiã ſecundò quando peccaverunt corã ipſo
peccatis ſuis,ſic confudit ipſas gentes & fracti ſunt montes qui erãt ab anti-
quo,depreſſi colles qui exſtiterant à ſeculo, ejꝰ eſt mundi potentia. Quando 7
coluit domꝰ Iſrael idola, tradidi eos in manu Cuſſan ſcelerati; ſed quando
converſi ſunt ut præſtarẽt Legẽ,edidi ipſis ſigna & virtutes,& liberavi eos à
manu Madianitarũ ꝑ manũ Gedeonis filii Joas. En ſup *reges eorũ* & exer- 8
citꝰ ipſorũ qui multi ſunt ut aquæ fluminis exſtitit ira à cõſpectu tuo Dñe,&
ſup reges fuit furor tuꝰ,ac per mare notã feciſti in eos ultionẽ potentiæ tuæ,
quoniã patefactꝰ es ſup quadrigã gloriæ tuæ : majeſtas tua populo tuo robur
fuit & redemptio. Revelãdo revelatus es cum potẽtia tua propter fœdus 9
tuum quod cum tribubus Verbum tuum pepigit in ſecula ipſis ; ſcidiſti eis
rupes fortes, & manarunt flumina inundantia terram.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܝ ܠܡܫܩܝܢܐ ܠܚܒܪܗ ܡܪܬܐ ܕܚܡܬܐ ܘܡܪܘܐ ܠܗ. ܕܢܚܙܐ ܥܪܛܠܝܘܬܗܘܢ. * ܣܒܥܬ 15
ܨܥܪܐ ܡܢ ܐܝܩܪܐ. ܐܫܬܝ ܐܦ ܐܢܬ ܘܐܬܬܙܝܥ. ܢܬܦܢܐ ܥܠܝܟ ܟܣܐ ܕܝܡܝܢܗ ܕܡܪܝܐ. 16
ܘܨܥܪܐ ܥܠ ܐܝܩܪܟ. * ܡܛܠ ܕܚܛܘܦܝܐ ܕܠܒܢܢ ܢܟܣܘܢܟ. ܘܒܙܬܐ ܕܚܝܘܬܐ ܬܙܝܥܟ. 17
ܡܢ ܕܡܐ ܕܒܢܝܢܫܐ ܘܚܛܘܦܝܐ ܕܐܪܥܐ. ܕܡܕܝܢܬܐ ܘܕܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ. * ܡܢܐ 18
ܐܘܬܪ ܦܣܝܠܐ ܕܦܣܠܗ ܐܘܡܢܗ. ܘܢܣܟܐ ܗܘ ܘܡܠܦܢܐ ܕܓܠܐ. ܕܬܟܠ ܠܒܗ
ܕܐܘܡܢܗ ܥܠܘܗܝ. ܕܢܥܒܕ ܦܬܟܪܐ ܚܪܫܐ. * ܘܝ ܠܕܐܡܪ ܠܩܝܣܐ ܐܬܬܥܝܪ. 19
ܘܠܟܐܦܐ ܚܪܫܬܐ ܕܩܘܡܝ. ܣܪܝܩܝܢ ܐܢܘܢ. ܘܚܦܝܢ ܕܗܒܐ. ܘܪܘܚܐ ܠܝܬ ܒܗܘܢ.
* ܘܡܪܝܐ ܒܗܝܟܠܐ ܕܩܘܕܫܗ. ܬܙܘܥ ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ ܟܠܗ ܐܪܥܐ. 20

* ܩܦܠܐܘܢ * ܓ *

* ܨܠܘܬܗ ܕܚܒܩܘܩ * 1

* ܡܪܝܐ ܫܡܥܬ ܫܡܥܟ ܘܕܚܠܬ. ܡܪܝܐ ܥܒܕܝܟ. ܒܓܘ ܫܢܝܐ ܕܚܝܐ. ܒܓܘ ܫܢܝܐ 2
ܬܬܝܕܥ. ܒܪܘܓܙܐ ܕܪܚܡܝܟ ܬܬܕܟܪ. * ܐܠܗܐ ܡܢ ܬܝܡܢܐ ܢܐܬܐ. ܘܩܕܝܫܐ ܡܢ ܛܘܪܐ ܕܦܐܪܢ. 3
ܐܬܟܣܝܘ ܫܡܝܐ ܡܢ ܙܝܘܗ ܕܡܫܒܚܐ. ܘܬܫܒܘܚܬܗ ܐܬܡܠܝܬ ܐܪܥܐ. * ܘܙܝܘܗ ܐܝܟ 4
ܢܘܗܪܐ ܢܗܘܐ. ܒܡܕܝܢܬܐ ܕܐܝܕܘܗܝ ܢܣܝܡ ܚܝܠܗ ܒܫܘܩܐ. * ܩܕܡܘܗܝ ܐܙܠ ܡܘܬܐ. 5
ܘܢܦܩܝܢ ܦܪܚܬܐ ܠܪܓܠܘܗܝ. * ܩܡ ܘܡܫܚܗ ܠܐܪܥܐ. ܚܪ ܘܐܬܦܫܪܘ ܥܡܡܐ. ܐܬܒܕܪܘ 6
ܛܘܪܐ ܕܡܢ ܥܠܡ. ܘܐܬܡܟܟܘ ܪܡܬܐ ܕܡܢ ܥܠܡܝܢ. ܕܝܠܗ ܐܢܘܢ ܗܠܟܬܐ ܕܡܢ
ܥܠܡ. * ܬܚܝܬ ܐܘܢ. ܚܙܝܬ ܡܫܟܢܐ ܕܟܘܫܢ. ܢܙܘܥܘܢ ܝܪܝܥܬܐ ܕܐܪܥܐ ܕܡܕܝܢ. 7
* ܥܠ ܢܗܪܘܬܐ ܪܓܙ ܡܪܝܐ. ܒܢܗܪܘܬܐ ܪܘܓܙܟ. ܘܒܝܡܐ ܚܡܬܟ. ܕܪܟܒܬ ܥܠ 8
ܪܟܫܟ. ܘܥܠ ܡܪܟܒܬܐ ܕܦܘܪܩܢܟ. * ܡܬܥܝܪܘ ܬܬܥܝܪ ܩܫܬܟ. ܘܢܣܒܥܘܢ ܓܐܪܐ 9
ܒܡܐܡܪܟ ܡܫܒܚܐ. ܘܐܪܥܐ ܒܢܗܪܘܬܐ ܬܬܒܙܥ.

Væ bibendam exhibenti ſocio ſuo fæcem iræ, 15
& inebrianti eum, ut conſideret nuditatem
eorum. Saturatus es ignominiâ pluſquam ho- 16
nore : bibe etiam tu, & vexare : redeat ſu-
per te calix dexteræ Domini, & ignominia
ſuper honorem tuum. Nam violentia Libani 17
operiet te, & rapina ferarum exagitabit te;
propter cædes humanas, & vim illatam ter-
ræ, urbi, & omnibus habitatoribus ejus.
Quid prodeſt ſculptile quod ſculpſit artifex 18
ejus, & fuſile illud, atque doctrina falſa; cui
animus artificis adeò confiſus eſt, ut faceret
ſimulacrum mutum? Væ illi qui ligno dicit, 19
Expergiſcere; & lapidi muto, Surge. Inania
ſunt, licèt auro obducta, neque ſpiritus ineſt
eis. Dominus autem in templo ſuæ ſancti- 20
tatis eſt : trepidet à conſpectu ejus univer-
ſa terra.

CAP. III.

Oratio Habacuc. 1

DOmine, audivi nomen tuum, ac timui. 2
Domine, opera tua *pateſcent* in medio anno-
rum vitæ, in medio annorum innoteſces,
tempore iræ memento miſerationum tuarum.
Deus ab Auſtro venit, & Sanctus de monte 3
Pharan; operti ſunt cœli ſplendore Glorio-
ſiſſimi, & majeſtate ejus impleta eſt terra.
Nitor ejus ut lux etiam erit, in civitate ma- 4
nuum ſuarum collocabit robur ſuum in ſub-
urbio. Ante ipſum præcedet mors, & egre- 5
dientur volucres ad pedem ejus. Surrexit, & 6
menſus eſt terram : aſpexit, & liquati ſunt
populi; diſſipati ſunt montes qui à ſeculo
erant, & humiliati colles qui erant à ſeculis :
ipſius *enim* ſunt greſſus æterni. Subter On 7
vidi tentorium Chuſan : tremefacta ſunt
aulæa terræ Madian. Contra flumina iratus 8
eſt Dominus : in fluminibus ira tua, & in ma-
ri eſt impetus tuus. Conſcendiſti equos tuos
& currum ſalutis tuæ. Evigilans evigilabit ar- 9
cus tuus, & ſaturabuntur ſagittæ, ad juſſum
tuum glorioſum; & terra fluminibus diſcin-
detur.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ويل الساقي قريبه درديا عكرا فيسكر * كي ينظر الى معايرهم * امتل اهنة من الراسة * 15 16
اسرب وتصور * ترعرع وتزلزل * احاط بك كاس يمين الرب * واجتمعت الاهنة على سرفك *
* من اجل ان نفاق لبنان يغشاك * وشقوة الوحوش تفزعك * من اجل دماء البشر * ونفاق 17
الارض والمدينة وجميع سكانها * ما ينفع المنحوت لانهم نحتوه * جبلوه سبيكا * خيالا كذبا * 18
لان جابلك توكل على جبلته * ليصنع اصناما بكما * ويل القايل للخشبة انتبه وقم * 19
وللحجر ارتفع * وهذا هو خيال * وهذا هو قرمة من ذهب وفضة * ولم يكن فيها روح بالكلية *
* والرب في هيكل قدسه * ليرتاع من وجهه كل الارض * 20

* الفصل الثالث *

* صلاة حبقوق النبي بتسبحة *

* يا رب سمعت سماعك فخفت * تاملت اعمالك فبهتت * في وسط حيوانين تعرف * عند ما تقترب 1
السنون تعلم * عند ما يحضر الزمان تظهر * عند ما تضطرب نفسي بالغضب تذكر الرحمة * 2
* الله من المشرق ياتي * والقدوس من جبل ظليل حسن * غشيت السموات فضيلته * ومن 3
تسبحته الارض مملوة * وضوءه مثل نور يكون * قرون في يديه * وضع محبة قوية من قوته * 4
* قدام وجهه يسير القول * ويخرج الادب مع قدميه * قام فتزعزعت الارض * نظر فذابت 5 6
الامم * تفتت الجبال عسفا * ذابت الاكام الدهرية * نظروا مسالكهم الابدية عوض الاتعاب * 7
مساكن الحبوش تجزع * ومظال ارض مدين * هل في الانهار تزجر يا رب * او في الانهار غضبك * 8
او في البحر غضبك * لانك تركب على خيلك * وفروسيتك خلاص * مادا مددت قوسك على 9
الوية * يقول الرب من المياه تنشق الارض *

Væ propinanti proximo ſuo fæcem turbi- 15
dam unde inebrietur, ut inſpiciat ſpelun-
cas eorum. Imple e ignominiâ ex men- 16
te, bibe & contorquere, commovere &
concutere : obſedit te calix dexteræ Do-
mini, & congregata eſt ignominia contra
faſtum tuum. Impietas enim Libani obru- 17
et te, & miſeria belluarum terrebit te;
propter ſanguines humanos; & impieta-
tem terræ & urbis, omniúmque habitato-
rum ejus. Quid prodeſt ſculptile quòd 18
ſculpſerint illud, formaverint conflatile,
imaginem falſam? nam fictor tuus fig-
mento ſuo confiſus eſt, ut conficeret ido-
la muta. Væ dicenti ligno, Evigila & 19
ſurge; & lapidi, Erige te : cùm hoc ſit
imago, idémque ſit fragmentum auri &
argenti, quibus nullus omninò ineſt ſpiri-
tus. Dominus autem in templo ſancti- 20
tatis ſuæ eſt : vereatur à facie ejus uni-
verſa terra.

CAP. III.

Oratio Habacuc Prophetæ in *modum* Cantici. 1

O Domine, audivi auditum tuum, & 2
timui : contemplatus ſum opera tua,
& obſtupui. In medio duorum animalium
cognoſceris; cùm appropinquaverint an-
ni, notus eris; cùm advenerit tempus,
apparebis; cùm turbata fuerit anima
mea, in ira miſericordiæ recordaberis.
Deus ab Oriente veniet, & Sanctiſſimus è 3
monte umbroſo aſpero. Operuit cœlos ex-
cellentia ejus, & laude ipſius plena eſt
terra : Et ſplendor ejus ut lux erit : cor- 4
nua in manibus ejus : poſuit amorem po-
tentem ex potentia ſua. Ante faciem ejus 5
gradietur ſermo, & diſciplina prodibit
cum veſtigiis ejus. Surrexit, & contre- 6
muit terra : aſpexit, & liquefactæ ſunt
gentes : comminuti ſunt montes præ vio-
lentia : liquati ſunt colles æterni. Vide- 7
runt vias ſuas æternas pro laboribus : ha-
bitacula Æthiopum formidabunt, & ten-
toria terræ Madian. Nam fluvios in- 8
crepares O Domine? an contra fluvios ira
tua? an contra mare indignatio tua? quòd
equos tuos conſcenderis, cùm equitatus
tuus ſit ſalus? Tendens tetenderis ar- 9
cum tuum ſuper vexilla? Dicit Dominus;
Præ aquis diffindetur terra.

vorago dedit:transiit aquarum inundatio,montes tremuerunt,te Viderũt
10 רָאוּךָ יָחִילוּ הָרִים זֶרֶם מַיִם עָבָר נָתַן תְּהוֹם
:suo habitaculo stetit Luna Sol .elevavit *suas manus* altitudo,suũ sonitũ
11 קוֹלוֹ רוֹם יָדֵיהוּ נָשָׂא: שֶׁמֶשׁ יָרֵחַ עָמַד זְבֻלָה
ira In .tuæ hastæ fulguris splendorem ad ,*ibunt* tuarũ sagittarũ lucem ad
12 לְאוֹר חִצֶּיךָ יְהַלֵּכוּ לְנֹגַהּ בְּרַק חֲנִיתֶךָ: בְּזַעַם
, tui populi salutẽ in es Egressus .gentes *triturabis naso* in ,terram *incedes*
13 תִּצְעַד־אָרֶץ בְּאַף תָּדוּשׁ גּוֹיִם: יָצָאתָ לְיֵשַׁע עַמֶּךָ
denudando ,impii domo de caput Transfixisti .tuo Christo cum salutẽ in
לְיֵשַׁע אֶת־מְשִׁיחֶךָ מָחַצְתָּ רֹּאשׁ מִבֵּית רָשָׁע עָרוֹת
caput ejus baculis *in* Perfodisti .Selah , collum ad usque fundamentum
14 יְסוֹד עַד־צַוָּאר סֶלָה: נָקַבְתָּ בְמַטָּיו רֹאשׁ
comedendũ ad quasi eorũ exultatio:me dispergendũ ad *turbinabunt*,ej' *paganorũ*
פְּרָזָו יִסְעֲרוּ לַהֲפִיצֵנִי עֲלִיצֻתָם כְּמוֹ־לֶאֱכֹל
aquarum acervo ,tuos equos mari in fecisti Calcare .abscondito in *afflictum*
15 עָנִי בַּמִּסְתָּר: דָּרַכְתָּ בַיָּם סוּסֶיךָ חֹמֶר מַיִם
,mea labia *palpitarunt* vocẽ ad,me' venter expavit & , Audivi .multarum
16 רַבִּים: שָׁמַעְתִּי וַתִּרְגַּז בִּטְנִי לְקוֹל צָלְלוּ שְׂפָתַי
die in *requiescam* qui ,expavi *me subtus* &,mea ossa in putredo est ingressa
יָבוֹא רָקָב בַּעֲצָמַי וְתַחְתַּי אֶרְגָּז אֲשֶׁר אָנוּחַ לְיוֹם
, *florebit* non ficus Quia .eum *excidet* ,populum *ad ascendendo* ,angustiæ
17 צָרָה לַעֲלוֹת לְעַם יְגוּדֶנּוּ: כִּי־תְאֵנָה לֹא־תִפְרָח
non arva & ,olivæ opus mentiebatur ; vitibus in *germen* non &
וְאֵין יְבוּל בַּגְּפָנִים כִּחֵשׁ מַעֲשֵׂה־זַיִת וּשְׁדֵמוֹת לֹא־
ego Et .*bovilibus* in bos non & ,pecus ovili de *abscidit* : cibum *fecit*
18 עָשָׂה אֹכֶל גָּזַר מִמִּכְלָה צֹאן וְאֵין בָּקָר בָּרְפָתִים: וַאֲנִי
Dominus DEUS .mea salute Deo in lætabor , exultabo Domino in
19 בַּיהוָה אֶעְלוֹזָה אָגִילָה בֵּאלֹהֵי יִשְׁעִי: יֱהוִה אֲדֹנָי
mea excelsa super & ,*cervarum* tanquam meos pedes ponet & ,mea *virtus*
חֵילִי וַיָּשֶׂם רַגְלַי כָּאַיָּלוֹת וְעַל־בָּמוֹתַי
.meis *modulationibus* in victorem : me faciet calcare
יַדְרִכֵנִי לַמְנַצֵּחַ בִּנְגִינוֹתָי:

Versio VULG. LAT.

10 Viderunt te, & doluerunt montes: gurges aquarum transiit. Dedit abyssus vocẽ suam: altitudo manus 11 suas levavit. Sol & Luna steterunt in habitaculo suo, in luce sagittarum tuarũ, ibunt in splendore ful- 12 gurantis hastæ tuæ. In fremitu conculcabis terrã: in furore obstu- 13 pefacies Gentes. Egressus es in salutem populi tui, in salutem cum Christo tuo. Percussisti caput de domo impii: denudâsti fundamen- 14 tum ejus usque ad collũ. Maledixisti sceptris ejus, capiti bellatorũ ej', venientib' ut turbo ad dispergendũ me. Exultatio eorum, sicut ejus qui devorat pauperẽ in abs- 15 condito. Viam fecisti in mari equis tuis, in luto aquarum multa- 16 rum. Audivi, & conturbatus est venter meus: à voce contremuerunt labia mea. Ingrediatur putredo in ossibus meis, & subter me scateat. Ut requiescam in die tribulationis: ut ascendam ad popu- 17 lum accinctũ nostrum. Ficus enim non florebit: & non erit germen in vineis. Mentietur opus olivæ: & arva non afferent cibum. Abscindetur de ovili pecus: & non erit armentum in præsepibus. 18 Ego autem in Domino gaudebo: & exultabo in Deo Jesu meo. 19 Deus Dominus fortitudo mea: & ponet pedes meos quasi cervorum. Et super excelsa mea deducet me victor in Psalmis canentem.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

10 †Ὄψονταί σε, καὶ ὠδινήσουσι λαοὶ, †σκορπίζων ὕδατα πορείας (ε)· †ἔδωκεν ἡ ἄβυσσος φωνὴν αὐτῆς, †ὕψος φαντασίας αὐτ. 11 †Ἐπήρθη ὁ ἥλιος, καὶ ἡ σελήνη ἔστη ἐν τῇ τάξει αὐτῆς· †εἰς φῶς βολίδες σου πορεύσονται, †εἰς φέγγος ἀστραπῆς ὅπλων σου. 12 †Ἐν ἀπειλῇ (ζ) ὀλιγώσεις γῆν, †καὶ ἐν θυμῷ (η) καταξεις ἔθνη. 13 †Ἐξῆλθες εἰς σωτηρίαν λαοῦ σου, †τοῦ σῶσαι (θ) τὸν χριστόν σου. †(ι) Βαλεῖς εἰς κεφαλὰς ἀνόμων θάνατον, †ἐξήγειρας δεσμοὺς ἕως τραχήλου. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. 14 †Διέκοψας ἐν ἐκστάσει κεφαλὰς δυναστῶν, †σεισθήσονται ἐν αὐτῇ· †διανοίξουσι χαλινοὺς 15 αὐτῶν, †ὡς ἔσθων πτωχὸς λάθρᾳ. †Καὶ (κ) ἐπιβιβᾷς εἰς θάλασσαν τοὺς ἵππους σου, 16 ταράσσοντας ὕδωρ πολύ. †Ἐφυλαξάμην, καὶ ἐπτοήθη ἡ κοιλία μου †ἀπὸ φωνῆς προσευχῆς χειλέων μου, †καὶ εἰσῆλθε τρόμος εἰς τὰ ὀστᾶ μου, †καὶ ὑποκάτωθέν μου ἐταράχθη ἡ ἕξις μου. †ἀναπαύσομαι ἐν ἡμέρᾳ θλίψεως, †τοῦ ἀναβῆναι εἰς λαὸν παροικίας 17 μου. †Διότι συκῆ οὐ καρποφορήσει, †καὶ οὐκ ἔσται γεννήματα ἐν ταῖς ἀμπέλοις· †ψεύσεται ἔργον ἐλαίας, †καὶ τὰ πεδία οὐ ποιήσει βρῶσιν· †(λ) ἐξέλιπεν ἀπὸ βρώσεως πρόβατα, †καὶ (μ) οὐχ ὑπάρχουσι βόες ἐπὶ φάτναις (ν). 18 †Ἐγὼ δὲ ἐν τῷ κυρίῳ ἀγαλλιάσομαι, †χαρήσομαι ἐπὶ τῷ θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 19 †Κύριος ὁ θεὸς δύναμίς μου, †καὶ τάξει τοὺς πόδας μου εἰς συντέλειαν· †ἐπὶ τὰ ὑψηλὰ ἐπιβιβᾷ με, †τοῦ (ξ) νικῆσαι ἐν τῇ ᾠδῇ αὐτοῦ.

ἈΜΒΑΚΟΥ'Μ Η'.

Videbunt te, et dolebunt (sive parturient) populi: (p) dispergens aquas itineris. Dedit abyssus vocem suam, altitudo phantasiæ (q) ejus. 11 *Elevatus est Sol, & Luna stetit in ordine suo. In luce jacula tua ibunt, in splendore coruscationis armorum tuorum.* 12 *In comminatione imminues terram, & in furore detrahes gentes.* 13 *Egressus es in salutem populi tui, ut salvares (r) Christum tuum. Mittes in capita iniquorum mortem: suscitâsti vincula usque ad (s) collum. DIAPSALMA.* 14 *Divisisti in stupore capita potentium: commovebuntur in (t) eo: aperient frænos suos, sicut comedens pauper in absconso.* 15 *Et (u) superducis in mare equos tuos, conturbantes (x) aquam multam.* 16 *Custodivi, & extimuit (y) venter meus à voce orationis labiorum meorum. Et ingressus est tremor in ossa mea: & subter me conturbata est (z) habitudo mea. Requiescam in die tribulationis, ut ascendam ad populum peregrinationis meæ.* 17 *Quia ficus non afferet fructum, & non erunt germina in vineis: mentietur opus olivæ, & campi non facient escam. Defecerunt (ω) ab esca oves, & non sunt boves in præsepibus.* 18 *Ego autem in Domino exultabo: gaudebo super Deo Salvatore meo.* 19 *Dominus Deus fortitudo mea: & ponet pedes meos in consummationem. Super excelsa ascendere facit me, ut vincam in cantico ejus.*

MS.A. (ε) αὐτοῦ· (ζ) σου ὠλιγώσεις (η) σου (θ) τοὺς χριστούς (ι) ἐβαλας (κ) ἐπιβίβασας (λ) ἐξέλιπον (μ) οὐχ (ν) ἐξιλάσεως αὐτῶν. (ξ) νικῆσαί με

ἈΜΒΑΚΟΥ'Μ Η'.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 בְּאִתְגְלָיוּתָךְ עַל טוּרָא דְסִינַי חֲזוֹ יְקָרָךְ וָעוּ טוּרַיָא עֲנָנֵי מִטְרָא עֲדוֹ אֲרִים תְּהוֹמָא
11 קָלֵיהּ חֵילֵי מְרוֹמָא תְּמֵהוּ קָמוּ: אַף בְּמֶעְבְּדָךְ נִסִין לִיהוֹשֻׁעַ בְּמֵישַׁר גִבְעוֹן שִׁמְשָׁא
12 וְסִהֲרָא קָמוּ בִּמְדוֹרֵיהוֹן עַמָךְ בְּמֵימְרָךְ אִתְגַבַּרוּ בִּתְקוֹף נִצְחָן גְבוּרְתָּךְ: בְּאַיְתָיוּתָךְ
לוּט עַל סָנְאֵי עַמָךְ בְּאִתְגְלָיוּתָךְ לְמִתְבַּר רַשִׁיעֵי אַרְעָא בְּרוּגְזָךְ תִּקְטוֹל בְּעַמְמַיָא:
13 אִתְגְלֵיתָא לְמִפְרַק יַת עַמָךְ לְמִפְרַק יַת מְשִׁיחָךְ שֵׁיצִיתָא מִן קֳדָמֵיהוֹן מַלְכַיָא וְשִׁלְטוֹנַיָא
מִבָּתֵּיהוֹן תָּרֵכְתְּ חַיָבָא וְתַבַּרְתָּא חֵילֵיהוֹן רִגְלֵי עַמָךְ עַל צַוְרֵי סָנְאֵיהוֹן מֵימְרָךְ קַיָם
14 לְעָלְמִין: בְּזַעְתָּא יַמָא בְּחֻטְרֵיהּ דְמשֶׁה וְגִבָּרֵי רֵישֵׁי מַשְׁרְיַת פַּרְעֹה דַחֲשִׁיבוּ מַחְשְׁבָן עַל
עַמָךְ דַבַּרְתִּנוּן בְּרוּחַ עַלְעוֹלִין וְטַבַּעְתִּנוּן בְּיַמָא דְסוּף עַל דְרַחִיקוּ וְשַׁעְבִּידוּ יַת עַמָךְ
15 וִיהַבוּ עֵצָה בְּסִתְרָא לְאוֹבָדוּתְהוֹן: אִתְגְלֵיתָא עַל יַמָא בִּמְרְכְּבַת יְקָרָךְ בִּדְנוּר מַיִן סַגִיאִין:
16 אֲמַרַת בָּבֶל שְׁמָעִית וְזָעוּ מַלְכַיָא מִן קֳדָם דִינָא דִי אִתְדָנוּ מִצְרָאֵי לְקָל מִלַיָא אִלֵין צַלָא
סִפְוָתִי אֲחַד זִיעָא לְחַכִּימַיָא וּבְאַתַר דִשְׁרֵינָא זָעִית דְשַׁבְקַנִי לְיוֹם עָקָא לְעִדָן אַסָקָא גָלוּת
17 עַמִי מִנִי יִתְבְּרִנַנִי: אֲרֵי מַלְכוּת בָּבֶל לָא תִתְקַיַם וְלָא תַעְבֵּד שׁוּלְטָן עַל יִשְׂרָאֵל יִתְקַטְלוּן
18 מַלְכֵי מָדַי וְגִבָּרֵי יָוָן לָא יִצְלְחוּן יִשְׁתֵּיצוּן רוֹמָאֵי וְלָא יִגְבּוּן קְסוּמָא מִירוּשְׁלֶם: בְּכֵן
עַל נִסָא וּפוּרְקָנָא דְתַעְבֵּד לִמְשִׁיחָךְ וְלִשְׁאָרָא דְעַמָךְ דִי יִשְׁתַּאֲרוּן יוֹדוּן לְמֵימַר אָמַר
19 נְבִיָא וַאֲנָא בְּמֵימְרָא דַיְיָ אֲבוּעַ אֲדוּץ לֶאֱלָהָא עֲבִיד פּוּרְקָנִי: אֱלֹהִים יְיָ דְסָעֵיד לִי בְּחֵילָא
וּמְשַׁוֵי רַגְלַי קַלִילִין כְּאַיָלָתָא וְעַל בֵּית תּוּקְפִּי יְקִימְנָנִי לְדִילֵיהּ נִצְחָנִין וּגְבוּרָן וְקֳדָמוֹהִי
אֲנָא מְנַגֵן בְּתוּשְׁבְּחָתִי:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

10 In patefactione tui super montem Sinai viderunt gloriam tuam, commoti sunt montes, nubes nimbosæ transierunt, elevavit abyssus vocem suam, vir- 11 tutes excelsæ mirabundæ substiterunt. Quando etiam edidisti signa ipsi Jehosua in planitie Gabaon, Sol & Luna substiterunt in habitationibus suis, 12 populus tuus verbo tuo prævaluit in robore victoriæ potentiæ tuæ. Cùm induces maledictionem super osores populi tui, cùm tete patefacies ad fran- 13 gendum impios terræ, in ira tua interficies gentes. Revelatus es ad liberandum populum tuum, ad liberandum Christum tuum, delevisti à conspectu eorum reges & principes à domibus suis, expulisti scelestos ac fregisti exercitus eorum: pedibus populi tui colla inimicorum ipsorum [*calcâsti*:] 14 verbum tuum stat in æternum. Scidisti mare virga ipsius Mosis, & strenuos duces exercitus Pharao qui machinabantur machinationes adversus populum tuum, *egisti* eos vento turbinum, eosque demersisti in mare Suph, eò quòd *abominati essent* ac servituti subjecissent populum tuum, dedissentque con- 15 silium in abscondito ut eum perderent. Manifestatus es super mare in qua- 16 driga gloriæ tuæ, in acervo aquarum multarum. Dixit Babel: Audivi & commoti sunt reges propter judicium quo judicati sunt Ægyptii: à voce sermonum illorum tremuerunt labia mea, invasit tremor sapientes, & in loco quo manebam commota sum quòd reliquisset me in diem angustiæ, quo 17 tempore ascendet transmigratio populi mei ex me, conteret me. Etenim regnũ Babel non permanebit, nec exercebit dominium in Israel, trucidabuntur reges Mediæ, & fortes Græciæ non prosperabuntur: delebuntur Romani, 18 nec colligent tributũ de Jerusalem. Itaq; propter *signum* & redemptionẽ quæ facies Christo tuo & reliquiis populi tui, qui remanebunt, confitebuntur dicendo. Ait Propheta: Ego verò in verbo Dñi gaudebo, exultabo in Deo 19 factore redemptionis meæ. Deus Dñs qui auxiliatur mihi virtute, redditque pedes meos æquè veloces ac cervarum, ac super domum potentiæ meæ constituet me, cujus sunt victoriæ & virtutes: proindè coram eo ego fides pulso cum hymno meo.

ספר צפניה : א

CAP. I. א

,Ghedaliah filii,Chusi filium Sephaniah ad fuit quod Domini Verbum
1 דְּבַר־יְהוָה אֲשֶׁר הָיָה אֶל־צְפַנְיָה בֶּן־כּוּשִׁי בֶן־גְּדַלְיָה
regis Amon filii Josijahu diebus in , Chizchijah filii , Amariah filii
בֶּן־אֲמַרְיָה בֶּן־חִזְקִיָּה בִּימֵי יֹאשִׁיָּהוּ בֶן־אָמוֹן מֶלֶךְ
dixit , *humi faciebus desuper* omnia faciam deficere Deficiendo .Jehudah
2 יְהוּדָה: אָסֹף אָסֵף כֹּל מֵעַל פְּנֵי הָאֲדָמָה נְאֻם־
volatile faciam deficere ,*jumentum* & ,hominem faciam Deficere .Dominus
3 יְהוָה: אָסֵף אָדָם וּבְהֵמָה אָסֵף עוֹף־
faciã succidere & ,impiis *cum* offendicula &,maris pisces &,cœlorum
הַשָּׁמַיִם וּדְגֵי הַיָּם וְהַמַּכְשֵׁלוֹת אֶת־הָרְשָׁעִים וְהִכְרַתִּי
extendam Et .Dominus dixit , *humi faciebus desuper* hominem
4 אֶת־הָאָדָם מֵעַל פְּנֵי הָאֲדָמָה נְאֻם־יְהוָה: וְנָטִיתִי
: Jerusalaim habitatores omnes super & , Jehudah super meam manum
יָדִי עַל־יְהוּדָה וְעַל כָּל־יוֹשְׁבֵי יְרוּשָׁלָםִ
,Bahal residuum isto loco de faciam succidere &
וְהִכְרַתִּי מִן־הַמָּקוֹם הַזֶּה אֶת־שְׁאָר הַבַּעַל אֶת־
.sacerdotibus cum *pullatorum* nomen
שֵׁם הַכְּמָרִים עִם־הַכֹּהֲנִים:

Versio VULG. LAT.

PROPHETIA

SOPHONIÆ.

CAP. I.

1 VErbum Domini, quod factum est ad Sophoniam filium Chusi, filii Godoliæ, filii Amariæ, filii Ezechiæ, in dieb' Josiæ filii Amon re- 2 gis Judæ. Congregans congregabo omnia à facie terræ, dicit Dñs: 3 Congregans hominem & pecus, congregans volatilia cœli & pisces maris: & ruinæ impiorum erunt: & disperdam homines à fa- 4 cie terræ, dicit Dominus. Et extendam manũ meam super Judam, & super omnes habitantes Jerusalẽ: & disperdã de loco hoc reliquias Baal, & nomina æditorum cum sacerdotibus;

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

ΣΟΦΟΝΙ'ΑΣ Θ'.

ΚΕΦ. α'.

1 Λόγος κυρίου, ὃς ἐγενήθη πρὸς Σοφονίαν τὸν τοῦ Χουσὶ, υἱὸν Γοδολίου, τοῦ Ἀμορίου, τοῦ Ἐζεκίου, ἐν ἡμέραις Ἰωσίου υἱοῦ (α) Ἀμὼν 2 βασιλέως Ἰούδα. Ἐκλείψει ἐκλιπέτω ἀπὸ 3 προσώπου τῆς γῆς, λέγει κύριος. Ἐκλιπέτω ἄνθρωπος καὶ κτήνη, (β) ἐκλιπέτω τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ καὶ οἱ ἰχθύες τῆς θαλάσσης· καὶ ἀσθενήσουσιν οἱ ἀσεβεῖς, καὶ ἐξαρῶ τοὺς ἀνόμους ἀπὸ προσώπου τῆς γῆς, λέγει κύριος. 4 Καὶ ἐκτενῶ τὴν χεῖρά μου ἐπὶ Ἰούδα, καὶ ἐπὶ πάντας τοὺς κατοικοῦντας Ἱερουσαλὴμ· καὶ ἐξαρῶ ἐκ τοῦ τόπου τούτου τὰ ὀνόματα τῆς Βάαλ, καὶ τὰ ὀνόματα τῶν ἱερέων,

SOPHONIAS.

CAP. I.

1 *VErbum Domini, quod factũ est ad Sophoniam filiũ Chusi, (a) filium Godoliæ, filii Amoriæ, filii Ezeciæ, in dieb' Josiæ filii Amon regis Juda.* 2 *Defectione (b) deficiat à facie terræ, dicit Dominus:* 3 *Deficiat homo & jumenta: deficiant volatilia cœli, & pisces maris. (c) Et infirmabuntur impii: et auferam iniquos à facie terræ, dicit Dominus.* 4 *Et extendam manum meã super Judã, et super omnes qui habitant Hierusalem. Et auferam de loco hoc nomina ipsius Baal, et (d) nomina sacerdotum,*

MS.A. ΣΟΦΟΝΙ'ΑΣ Θ'. (α) Ἀμὼς (β) ἐκλιπέτωσαν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

1 פִּתְגָם נְבוּאָה דַהֲוָה קֳדָם יְיָ עִם צְפַנְיָה בַּר כּוּשִׁי בַר גְדַלְיָה בַר אֲמַרְיָה בַר חִזְקִיָה
2 בְּיוֹמֵי יֹאשִׁיָהוּ בַר אָמוֹן מֶלֶךְ שִׁבְטָא דְבֵית יְהוּדָה: שֵׁיצָאָה אֱשֵׁיצֵי כּוֹלָא מֵעַל אַפֵּי אַרְעָא
3 אָמַר יְיָ: אָסֵף אֱנָשָׁא וּבְעִירָא אָסֵף עוֹפָא דִשְׁמַיָא וְנוּנֵי יַמָא עַל דְסַגִיאָה תַּקְלַת
4 רַשִׁיעַיָא וְאֱשֵׁיצֵי יַת אֱנָשָׁא מֵעַל אַפֵּי אַרְעָא אָמַר יְיָ: וְאָרִים מְחַת גְבוּרְתִּי עַל אֱנָשׁ
יְהוּדָה וְעַל כָּל יָתְבֵי יְרוּשְׁלֶם וְאֱשֵׁיצֵי מִן אַתְרָא הָדֵין יַת שְׁאַר בַּעֲלָא וְיַת שׁוּם פַּלְחֵיהוֹן
עִם כּוּמְרֵיהוֹן:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAPUT I.

1 VErbum Prophetiæ quod factum est coram Domino cum Sophonia filio Cussi, filii Ghedaliæ, filii Amariæ, filii Chizkiæ, in diebus Josiæ filii Amon 2 regis tribus domus Juda. Delendo delebo omnia à superficie terræ, dicit Dñs. 3 Conficiam homines & jumenta, conficiam avem cœlorum & pisces maris, eò quòd multiplicatum sit offendiculum impiorum, & delebo homines à su- 4 perficie terræ, dicit Dñs. Et elevabo vulnus potentiæ meæ in hominem Juda, & in omnes habitatores Jerusalem: delebo quoque ex hoc loco reliquias [*idolorum*] Baal, & nomen colentium ipsa cum sacrificulis suis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

10 * ܚܙܐܘܟ ܛܘܪ̈ܐ ܘܙܥܘ. ܘܙܪܡܐ ܕܡܝ̈ܐ ܥܒܪ. ܘܝܗܒ ܬܗܘܡܐ ܩܠܗ. ܘܪܘܡܐ ܕܐܝ̈ܕܘܗܝ ܐܪܝܡ.
11 * ܫܡܫܐ ܘܣܗܪܐ ܩܡܘ ܒܡܕܝܪܝܗܘܢ. ܘܠܢܘܗܪܐ ܕܓܐܪ̈ܝܟ ܢܗܠܟܘܢ. ܘܠܙܠܓܐ ܕܒܪ̈ܩܐ ܕܢܝ̈ܙܟܝܟ.
12 * ܒܪܘܓܙܐ ܬܕܪܟ ܐܪܥܐ. ܘܒܚܡܬܐ ܬܕܘܫ ܥܡܡ̈ܐ.
13 * ܢܦܩܬ ܠܡܦܪܩܗ ܠܥܡܟ. ܘܠܡܦܪܩܘ ܠܡܫܝܚܟ. ܡܚܝܬ ܪܫܐ ܡܢ ܒܝܬܗ ܕܥܘܠܐ. ܘܦܪܥܬܝܗܝ ܡܢ ܫܬܐܣܘ̈ܗܝ ܥܕܡܐ ܠܨܘܪܐ ܠܥܠܡ.
14 * ܦܚܬ ܒܫܒܛ̈ܘܗܝ ܪ̈ܫܐ ܕܓܢܒܪ̈ܘܗܝ. ܕܬܟܝܠܝܢ ܗܘܘ ܒܡܪܚܘܬܗܘܢ ܕܢܐܟܠܘܢ ܠܡܣܟܢܐ ܒܛܘܫܝܐ.
15 * ܕܪܟܬ ܒܝܡܐ ܒܣܘܣܘܬܟ. ܘܒܟܢܫܐ ܕܡܝ̈ܐ ܣܓܝ̈ܐܐ.
16 * ܫܡܥܬ ܘܙܥܬ ܟܪܣܝ ܡܚܕܐ ܠܩܠ ܡܡܠܠ ܕܣܦ̈ܘܬܝ. ܥܠ ܪܬܝܬܐ ܒܓܪ̈ܡܝ. ܘܐܒ̈ܪܟܝ ܙܥܘ. ܕܐܬܢܒܝ ܘܚܘܝܢܝ ܝܘܡܐ ܕܐܘܠܨܢܐ ܕܥܬܝܕ ܠܡܐܬܐ ܥܠ ܥܡܐ.
17 * ܡܛܠ ܕܬܐܢܬܐ ܠܐ ܬܦܪܥ. ܘܠܐ ܢܗܘܘܢ ܛܪ̈ܦܐ ܒܓܦܬܐ. ܢܕܓܠ ܥܒܕܐ ܕܙܝܬܐ. ܘܐܕܪ̈ܐ ܠܐ ܢܥܒܕܘܢ ܥܒܘܪܐ. ܢܣܘܦܘܢ ܥܢ̈ܐ ܡܢ ܓܙܪ̈ܐ. ܘܠܐ ܢܗܘܘܢ ܬܘܪ̈ܐ ܒܪ̈ܦܬܐ.
18 * ܐܢܐ ܕܝܢ ܒܡܪܝܐ ܐܪܘܙ. ܘܐܬܦܨܚ ܒܐܠܗܐ ܡܚܝܢܝ.
19 * ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ ܚܝܠܝ. ܕܥܒܕ ܪ̈ܓܠܝ ܐܝܟ ܕܐܝܠܐ. ܘܥܠ ܪܡ̈ܬܐ ܐܩܝܡܢܝ. ܕܐܙܡܪ ܬܫܒܘܚܬܗ.

* ܫܠܡܬ ܢܒܝܘܬܗ ܕܚܒܩܘܩ *

Viderunt te montes,& tremuerunt: & procella 10
aquarũ tranſiit,extulítq; abyſſus ſonitũ ſuum,
& altitudinẽ manuum ſuarũ exaltavit. Sol & 11
luna conſtiterunt in manſionibus ſuis: & ad
lucẽ ſagittarũ tuarũ ac ſplendorẽ fulgurũ te-
lorũ tuorum ambulabunt. Cum indignatione 12
inceſſiſti ſuper terrã, & cum furore concul-
câſti gentes. Egreſſus es ad ſalvandũ populum 13
tuum,& ſalvandum chriſtum tuum: amputâſti
caput è domo impii, & nudâſti eum à funda-
mentis ejus uſq; ad collum ipſius,in æternum.
Perfodiſti baculis ejus capita principũ ipſius, 14
qui audaciæ ſuæ confidebant ſe comeſturos in
abdito pauperes. Inceſſiſti in mari equis tuis 15
inſidens,& *in* congerie aquarũ multarũ. Au- 16
divi,& cõmotus eſt venter meus ſtatim ad ſer-
monẽ labiorũ meorum: pervaſit tremor oſſa
mea,& genua mea tremuerunt; quia prænun-
tiavit & oſtendit mihi diẽ calamitatis quæ ſu-
perventura eſt populo. Nam ficus non proger- 17
minabit, nec erunt folia in vite, fallet fructus
oleæ, & areæ non producent frumentũ, con-
ſumentur pecudes è gregibus,& non erunt bo-
ves in armentis. Ego verò in Dño exultabo, 18
& geſtiam in Deo Servatore meo. Dominus 19
dominorum eſt robur meum,qui reddidit pe-
des meos ut cervinos, & ſuper locum editum
meum conſtituit me,ut canerem laudes ejus.

Prophetiæ Habacuc finis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LAIINA.

10 * تراك الشعوب ويطلقون * مفرق المياه مسلكا * اعطي العمق صوته * ارتفاع خياله * رفعت
11 الشمس * والقمر وقف في رتبته * سهامك تسير في النور * في ضوء برق اسلحتك * بالتهديد تقلل
12 الارض * وبالغضب تحدر الامم * خرجت لخلاص شعبك * اتيت لتخلص مسحاءك * وضعت على
13 روس الاثمة موتا * اصعدت الاغلال الى الرقبة الى الانقضاء * قطعت روس الاقوياء بدهشة
14 يتزلزلون بها * يفتحون لجمهم مثل مسكين ياكل سرا * وركبت على البحر خيولك * اقلقت
15 المياه الكثيرة * حفظت وخشي قلبي من صوت صلاة شفتي * ودخلت الرعدة في عظامي * قلقت
16 قوتي في * استريح في يوم شدتي * لاصعد الى شعب غربتي * من اجل ان التينة لا تحمل ثمر * وليس
17 يكون غلات في الكرمات * يكذب عمل الزيتونة * والبقاع لا تصنع طعاما * فنيت الغنم من
18 الطعام * والبقر لا تدوم على المذاود * وانا اهلل بالرب * افرح بالاله مخلصي * الرب الهي قوتي *
19 ويرتب قدمي الى التمام * وعلى المشارف يرفعني لاغلب بتسبحته * * تمت نبوة حبقوق النبي *

Videbunt te populi,et partûs doloribus af- 10
ficientur, O d viſor aquarum in iter. Edi-
dit gurges fremitum ſuum, altitudinem
phantaſmatis ſui. Elevatus eſt ſol,& luna 11
manſit in gradu ſuo. Jacula tua ibunt in
luce, in ſplendore fulguris arma tua. Mi- 12
nis terram imminues,& indignatione deji-
cies gentes. Egreſſus es ad ſalutem popu- 13
li tui, veniſti ad ſalvandos unctos tuos:
impoſuiſti capitibus iniquorum mortem;e-
vexiſti lora ad collum uſque,in interitum.
Præcidiſti capita potentium in ſtupore quo 14
conterriti ſunt: aperient fræna ſua ſicut
pauper clanculùm comedens. Feciſti ut 15
mare conſcenderent equi tui, conturbave-
runt aquas multas. Cuſtodivi, & exti- 16
muit cor meum à voce orationis labiorum
meorum: ingreſſus eſt tremor in oſſa mea,
conturbata eſt in me fortitudo mea. Requi-
eſcam in die calamitatis meæ,ut aſcendam
ad populum peregrinationis meæ. Quia fi- 17
cus non afferet fructum, neque erunt pro-
ventus in vitibus: mentietur opus olivæ, et
campi non producent cibum: deſinent oves
ab eſca, & boves non permanebunt ſuper
præſepia. Ego autem in Domino jubilabo, 18
gaudebo in Deo Salvatore meo. Dominus 19
Deus meus eſt robur meũ, diſponétque pe-
des meos ad perfectionem,& ſuper excelſa
elevabit me, ut vincam in cantico ejus.

Prophetiæ Habacuc Prophetæ finis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܬܘܒ ܢܒܝܘܬܗ ܕܨܦܢܝܐ ܢܒܝܐ * * ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

1 * ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܕܗܘܐ ܥܠ ܨܦܢܝܐ ܒܪ ܟܘܫܝ. ܒܪ ܓܕܠܝܐ. ܒܪ ܐܡܪܝܐ. ܒܪ ܚܙܩܝܐ. ܒܝܘܡ̈ܝ ܝܘܫܝܐ ܒܪ ܐܡܘܢ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ.
2 * ܡܘܒܕܘ ܐܘܒܕ ܟܠ ܡܕܡ ܡܢ ܐܦܝ ܐܪܥܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
3 * ܐܘܒܕ ܒܪܢܫܐ ܘܒܥܝܪܐ. ܐܘܒܕ ܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ ܘܢܘܢܐ ܕܝܡܐ. ܘܬܘܩܠܬܐ ܥܠ ܚܛܝ̈ܐ. ܘܐܘܒܕ ܒܢܝ̈ܢܫܐ ܡܢ ܐܦܝ ܐܪܥܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
4 * ܘܐܪܝܡ ܐܝܕܝ ܥܠ ܝܗܘܕܐ. ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪ̈ܝ ܐܘܪܫܠܡ. ܘܐܘܒܕ ܡܢ ܐܬܪܐ ܗܢܐ ܫܪܟܢܐ ܕܒܥܠܐ. ܘܫܡܐ ܕܟܘܡܪ̈ܐ ܥܡ ܟܗܢ̈ܐ.

Sequitur Prophetia

SEPHONIÆ PROPHETÆ.

CAPUT. I.

SErmo Domini qui fuit ad Sephoniam filiũ 1
Chuſi filii Gedaliæ, filii Amariæ, filii Helciæ;
in dieb9 Joſiæ filii Amonis regis Judæ. Omnia 2
omninò ſum ablaturus è ſuperficie terræ,dicit
Dominus. Ablaturus ſum homines,& jumen- 3
ta: ablaturus ſum aves cœli, & piſces maris:
offendiculum adducam ſuper peccatores, &
homines perdam è ſuperficie terræ, dicit Do-
minus. Attollam enim manum meam ſuper 4
Judam, & ſuper omnes cives Jeruſalem; per-
dámq; ex hoc loco reliquias Baalis,& nomen
ſacrificulorum ac ſacerdotum ſimul:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بسم الله الخالق الحي الناطق *

* نبدا ترجمة نبوة صفونيا النبي * بركاته علينا *

* الفصل الاول * * الاصحاح الحادي والعشرون * وهو الاول من النبوة *

1 * قول الرب الذي صار الى صفونيا بن كوشي * بن غودليا * بن امريا * بن حزقيا * في
2 ايام يوشيا بن اموص ملك يهوذا * ليفني بفناء من وجه الارض يقول الرب * ليفني 3
الانسان والبهايم * ليفني طيور السماء وحيتان البحر * ويضعف المنافقون * وانزع الاثمة عن
4 وجه الارض يقول الرب * وامدد يدي على يهوذا * وعلى جميع سكان ايروسليم * وانزع من
هذا الموضع اسماء باعال واسماء الكهنة *

IN NOMINE DEI
Creatoris, vivi, rationalis,

Aggredimur Interpretationem
SOPHONIÆ Prophetæ,cujus
benedictiones nobis adſint.

CAP. I.

Textus vigeſimus primus,hujus autem Prophetiæ primus.

SErmo Domini qui factus eſt ad Sopho- 1
niam filium Chuſi, filii Godoliæ,filii A-
moriæ, filii Hezeciæ; in diebus Joſiæ filii
Amos regis Judæ. Pereant omninò de 2
ſuperficie terræ, dicit Dominus; Pere- 3
ant homo & jumenta, pereant volucres
cœli & piſces maris: & infirmabuntur
impii, auferámque ſceleratos de ſuperfi-
cie terræ, dicit Dominus. Et extendam 4
manum meam ſuper Judam, & ſuper
omnes habitatores Jeruſalem; auferám-
que ex hoc loco nomina Baalis & nomina
ſacerdotum;

צְפַנְיָה : א

& ,cœlorum militiæ tecta ſuper ſe incurvantes Et
5 וְאֶת־הַמִּשְׁתַּחֲוִים עַל־הַגַּגּוֹת לִצְבָא הַשָּׁמָיִם וְאֶת־
.Malcham in jurantes & ,Dominum per jurantes ſe incurvantes
הַמִּשְׁתַּחֲוִים הַנִּשְׁבָּעִים לַיהוָה וְהַנִּשְׁבָּעִים בְּמַלְכָּם׃
quæſierunt non qui & ,Dominum poſt à retrocedentes Et
6 וְאֶת־הַנְּסוֹגִים מֵאַחֲרֵי יְהוָה וַאֲשֶׁר לֹא־בִקְשׁוּ אֶת־
,DEI Domini faciebus à Tace .eum inveſtigaverunt neque ,Dominum
7 יְהוָה וְלֹא דְרָשֻׁהוּ׃ הַס מִפְּנֵי אֲדֹנָי יְהוִה
,ſacrificium Dominus fecit præparare quia : Domini dies prope quia
כִּי קָרוֹב יוֹם יְהוָה כִּי־הֵכִין יְהוָה זֶבַח
viſitabo & ,Domini ſacrificii die in erit Et .ſuos vocatos ſanctificavit
8 הִקְדִּישׁ קְרֻאָיו׃ וְהָיָה בְּיוֹם זֶבַח יְהוָה וּפָקַדְתִּי
indumento indutos omnes ſuper & , regis filios ſuper & ,principes ſuper
עַל־הַשָּׂרִים וְעַל־בְּנֵי הַמֶּלֶךְ וְעַל כָּל־הַלֹּבְשִׁים מַלְבּוּשׁ
die in limen ſuper tranſilientem omnem ſuper viſitabo Et .peregrino
9 נָכְרִי׃ וּפָקַדְתִּי עַל כָּל־הַדּוֹלֵג עַל־הַמִּפְתָּן בַּיּוֹם
.dolo & rapina ſuorum dominorum domum implentes , illa
הַהוּא הַמְמַלְאִים בֵּית אֲדֹנֵיהֶם חָמָס וּמִרְמָה׃
porta à clamoris vox ,Dominus ait , illa die in erit Et
10 וְהָיָה בַיּוֹם הַהוּא נְאֻם־יְהוָה קוֹל צְעָקָה מִשַּׁעַר
.collibus à magna contritio & ,ſecunda à vlulatus & , piſcium
הַדָּגִים וִילָלָה מִן־הַמִּשְׁנֶה וְשֶׁבֶר גָּדוֹל מֵהַגְּבָעוֹת׃
populus omnis eſt ſucciſus quia , Machtes habitatores Ululate
11 הֵילִילוּ יֹשְׁבֵי הַמַּכְתֵּשׁ כִּי נִדְמָה כָּל־עַם
tempore in , erit Et .argentum ferentes omnes ſunt ſucciſi ,Chenahan
12 כְּנַעַן נִכְרְתוּ כָּל־נְטִילֵי כָסֶף׃ וְהָיָה בָּעֵת
ſuper viſitabo & ,lucernis in Jeruſalaim ſcrutabor illo
הַהִיא אֲחַפֵּשׂ אֶת־יְרוּשָׁלִַם בַּנֵּרוֹת וּפָקַדְתִּי עַל־
: ſuo corde in dicentes , ſuis fæcibus ſuper coagulatos viros
הָאֲנָשִׁים הַקֹּפְאִים עַל־שִׁמְרֵיהֶם הָאֹמְרִים בִּלְבָבָם
eorum ſubſtantia erit Et .malefaciet nec ,Dominus benefaciet Non
13 לֹא־יֵיטִיב יְהוָה וְלֹא יָרֵעַ׃ וְהָיָה חֵילָם
, domos ædificabunt & : deſolationem in eorum domus & ,direptionem in
לִמְשִׁסָּה וּבָתֵּיהֶם לִשְׁמָמָה וּבָנוּ בָתִּים
.earum vinum bibent non & , vineas plantabunt & :habitabũt non &
וְלֹא יֵשֵׁבוּ וְנָטְעוּ כְרָמִים וְלֹא יִשְׁתּוּ אֶת־יֵינָם׃
vox : nimis feſtinus & ,propinquus , magnus Domini dies Propinquus
14 קָרוֹב יוֹם־יְהוָה הַגָּדוֹל קָרוֹב וּמַהֵר מְאֹד קוֹל
dies iræ Dies .fortis ibi clamans ,amara Domini diei
15 יוֹם יְהוָה מַר צֹרֵחַ שָׁם גִּבּוֹר׃ יוֹם עֶבְרָה הַיּוֹם
dies ,deſolationis & tumultus dies ,arctationis & anguſtiæ dies , illa
הַהוּא יוֹם צָרָה וּמְצוּקָה יוֹם שֹׁאָה וּמְשׁוֹאָה יוֹם
,ovationis & tubæ Dies .obſcuritatis & nubis dies ,caliginis & tenebroſitatis
16 חֹשֶׁךְ וַאֲפֵלָה יוֹם עָנָן וַעֲרָפֶל׃ יוֹם שׁוֹפָר וּתְרוּעָה
afficiã anguſtiis Et .excelſas pinnas ſuper & , munitas civitates ſuper
17 עַל הֶעָרִים הַבְּצֻרוֹת וְעַל הַפִּנּוֹת הַגְּבֹהוֹת׃ וַהֲצֵרֹתִי
: peccaverunt Domino quia , cæci ut ambulabunt & , hominem
לָאָדָם וְהָלְכוּ כַּעִוְרִים כִּי לַיהוָה חָטָאוּ
.ſordes ſicut , eorum panis & , humus ſicut eorum ſanguis effundetur &
וְשֻׁפַּךְ דָּמָם כֶּעָפָר וּלְחֻמָם כַּגְּלָלִים׃
eos eruere poterit non eorum aurum etiam ,eorum argentum Etiam
18 גַּם־כַּסְפָּם גַּם־זְהָבָם לֹא־יוּכַל לְהַצִּילָם
: terra omnis conſumetur ejus zeli igne in & ,Domini iræ die in
בְּיוֹם עֶבְרַת יְהוָה וּבְאֵשׁ קִנְאָתוֹ תֵּאָכֵל כָּל־הָאָרֶץ
omnibus cum faciet feſtinatam profectò conſummationem quia
כִּי־כָלָה אַךְ־נִבְהָלָה יַעֲשֶׂה אֵת כָּל־
.terræ habitatoribus
יֹשְׁבֵי הָאָרֶץ׃

Verſio VULG. LAT.

5 Et eos qui adorant ſuper tecta
militiam cœli, & adorant & ju-
rant in Domino, & jurant in Mel-
6 chom. Et qui avertuntur de poſt
tergum Domini, & qui non quæ-
ſierunt Dominum, nec inveſtiga-
7 verunt eum. Silete à facie Do-
mini Dei : quia juxtà eſt dies Do-
mini, quia præparavit Dominus
hoſtiam , ſanctificavit vocatos
8 ſuos. Et erit : in die hoſtiæ Do-
mini, viſitabo ſuper principes, &
ſuper filios regis, & ſuper omnes
qui induti ſunt veſte peregrinâ :
9 Et viſitabo ſuper omnem, qui ar-
roganter ingreditur ſuper limen
in die illa : qui complent domum
Domini Dei tui iniquitate & do-
10 lo. Et erit in die illa, dicit Do-
minus, vox clamoris à porta pi-
ſcium, & ululatus à Secunda, &
11 contritio magna à collibus. Ulu-
late habitatores Pilæ: conticuit
omnis populus Chanaan, diſper-
ierunt omnes involuti argento.
12 Et erit in tempore illo: ſcrutabor
Jeruſalem in lucernis : & viſitabo
ſuper viros defixos in fæcibꝰ ſuis:
qui dicunt in cordibus ſuis; Non
faciet benè Dominus, & non fa-
13 ciet malé. Et erit fortitudo eo-
rum in direptionem, & domus
eorum in deſertum : & ædifica-
bunt domos, & non habitabunt :
& plantabunt vineas, & non bi-
14 bent vinum earum. Juxtà eſt dies
Domini magnus, juxtà eſt & ve-
lox nimis : vox diei Domini ama-
15 ra, tribulabitur ibi fortis. Dies
iræ dies illa, dies tribulationis &
anguſtiæ, dies calamitatis & miſe-
riæ, dies tenebrarum & caliginis,
16 dies nebulæ & turbinis, Dies tu-
bæ & clangoris ſuper civitates
munitas, & ſuper angulos excel-
17 ſos. Et tribulabo homines, &
ambulabunt ut cæci, quia Domi-
no peccaverunt : & effundetur
ſanguis eorum ſicut humus, &
18 corpora eorum ſicut ſtercora. Sed
& argentum eorum, & aurum
eorum non poterit liberare eos in
die iræ Domini : in igne zeli ejus
devorabitur omnis terra , quia
conſummationem cum feſtinatio-
ne faciet cunctis habitantibus ter-
ram.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

5 Καὶ τοὺς προσκυνοῦντας ἐπὶ τὰ δώματα τῇ
στρατιᾷ τοῦ οὐρανοῦ, (γ) καὶ τοὺς προσκυνοῦν-
τας καὶ τοὺς ὀμνύοντας κατὰ τοῦ κυρίου, καὶ
τοὺς ὀμνύοντας κατὰ τοῦ βασιλέως αὐ-
6 τῶν, Καὶ τοὺς ἐκκλίνοντας ἀπὸ τοῦ κυρίου,
καὶ τοὺς μὴ (δ) ζητοῦντας τὸν κύριον, καὶ τοὺς
7 μὴ ἀντεχομένους τοῦ κυρίου. Εὐλαβεῖσθε ἀπὸ
προσώπου κυρίου τοῦ θεοῦ, διότι ἐγγὺς (ε)
ἡμέρα τοῦ κυρίου, ὅτι ἡτοίμακε κύριος τὴν
θυσίαν αὐτοῦ, (ζ) καὶ ἡγίακε τοὺς κλητοὺς
8 αὐτοῦ. Καὶ ἔσται, ἐν ἡμέρᾳ θυσίας κυρίου, καὶ
ἐκδικήσω ἐπὶ τοὺς ἄρχοντας, καὶ ἐπὶ τὸν οἶκον
τοῦ βασιλέως, καὶ ἐπὶ πάντας τοὺς ἐνδεδυ-
9 μένους ἐνδύματα ἀλλότρια. Καὶ ἐκδικήσω
(η) ἐμφανῶς ἐπὶ τὰ πρόπυλα ἐν ἐκείνῃ
τῇ ἡμέρᾳ, τοὺς πληροῦντας τὸν οἶκον κυρίου
10 (θ) θεοῦ αὐτῶν ἀσεβείας καὶ δόλου. Καὶ
ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγει κύρι-
ος, φωνὴ κραυγῆς ἀπὸ πύλης ἀποκεντούν-
των, καὶ ὀλολυγμὸς ἀπὸ τῆς δευτέρας, καὶ
11 συντριμμὸς μέγας ἀπὸ τῶν βουνῶν. Θρηνή-
σατε οἱ κατοικοῦντες τὴν κατακεκομμένην,
ὅτι ὡμοιώθη πᾶς ὁ λαὸς Χαναάν, (ι) καὶ ἐξ-
ωλοθρεύθησαν πάντες οἱ ἐπηρμένοι ἀργυ-
12 ρίῳ. Καὶ ἔσται ἐν (κ) τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ,
ἐξερευνήσω τὴν Ἱερουσαλὴμ μετὰ λύχνου, καὶ
ἐκδικήσω ἐπὶ τοὺς ἄνδρας τοὺς καταφρο-
νοῦντας ἐπὶ τὰ φυλάγματα αὐτῶν. οἱ δὲ
(λ) λέγοντες ἐν ταῖς καρδίαις αὐτῶν, Οὐ
μὴ ἀγαθοποιήσῃ κύριος, οὐδὲ μὴ κακώσῃ·
13 Καὶ ἔσται ἡ δύναμις αὐτῶν εἰς διαρπα-
γὴν, καὶ οἱ οἶκοι αὐτῶν εἰς ἀφανισμόν· καὶ
οἰκοδομήσουσιν οἰκίας, καὶ οὐ μὴ κατοική-
σουσιν ἐν αὐταῖς· καὶ (ʹ) καταφυτεύσουσιν
ἀμπελῶνας, καὶ οὐ μὴ πίωσι τὸν οἶ-
14 νον αὐτῶν. Ὅτι ἐγγὺς (μ) ἡμέρα κυ-
ρίου ἡ μεγάλη, ἐγγὺς καὶ ταχεῖα σφό-
δρα· φωνὴ ἡμέρας κυρίου πικρὰ καὶ σκλη-
15 ρὰ τέτακται. δυνατὴ Ἡμέρα ὀργῆς, ἡ
ἡμέρα ἐκείνη, ἡμέρα (ν) θλίψεως καὶ ἀ-
νάγκης, ἡμέρα ἀωρίας καὶ ἀφανισμοῦ, ἡμέ-
ρα (ξ) γνόφου καὶ σκότους, ἡμέρα νεφέλης καὶ
16 ὁμίχλης, Ἡμέρα σάλπιγγος καὶ κραυ-
γῆς ἐπὶ τὰς πόλεις τὰς (ο) ὀχυράς, καὶ
17 ἐπὶ τὰς γωνίας τὰς ὑψηλάς. Καὶ ἐκ-
θλίψω τοὺς ἀνθρώπους, καὶ πορεύσονται ὡς
τυφλοί, ὅτι τῷ κυρίῳ ἐξήμαρτον· καὶ ἐκ-
χεεῖ τὸ αἷμα αὐτῶν ὡς χοῦν, καὶ τὰς σάρ-
18 κας αὐτῶν ὡς βόλβιτα. Καὶ τὸ ἀργύριον
αὐτῶν καὶ τὸ χρυσίον αὐτῶν οὐ μὴ δύνηται
ἐξελέσθαι αὐτοὺς ἐν ἡμέρᾳ ὀργῆς κυρίου· καὶ ἐν πυρὶ ζήλου (π) αὐτοῦ
καταναλωθήσεται πᾶσα ἡ γῆ, διότι συντέλειαν καὶ σπουδὴν ποιήσει
ἐπὶ πάντας τοὺς κατοικοῦντας τὴν γῆν.

Et eos qui adorant ſuper tecta 5
militiam cœli, & eos (e) qui ad-
orant , & jurant per Dominum,
& jurant per (f) regem ſuum, Et 6
eos qui declinant à Domino, &
qui non requirunt Dominum, &
qui non retinent Dominum. Ti- 7
mete à facie Domini Dei : quia
juxtà eſt dies Domini: quia para-
vit Dominus ſacrificium ſuum,
& ſanctificavit (g) vocatos ſuos.
Et erit, in die hoſtiæ Domini, & 8
ulciſcar ſuper principes, & ſuper
domum regis, & ſuper omnes, qui
induti ſunt veſtimentis alienis. Et 9
ulciſcar (h) manifeſtè ſuper ve-
ſtibula in die illa , qui complent
domum Domini Dei ſui, impieta-
te & dolo. Et erit in illa die, 10
dicit Dominus, vox clamoris de
porta compungentium, & ulula-
tus à ſecunda, & contritio ma-
gna à collibus. Plangite, qui ha- 11
bitatis (i) conciſam : quia aſſi-
milatus eſt omnis populus Cha-
naan : & diſperierunt omnes qui
erecti ſunt argento. Et erit, in 12
die illa ſcrutabor Hieruſalem
cum lucerna ; & ulciſcar ſuper
viros, qui contemnunt cuſtodias
ſuas. (k) Qui autem dicunt in
cordibꝰ ſuis; Non faciet benè Do-
minus, & non faciet malè : Et 13
erit fortitudo eorum in rapinam,
& domus eorum in diſſipatio-
nem. Et ædificabunt domos, &
non habitabunt in eis : & plan-
tabunt vineas, & non bibent vi-
num earum : Quia juxtà eſt 14
dies Domini magnus, juxtà, &
velox nimis. Vox diei Domini
amara, & dura poſita eſt fortis:
Dies iræ, dies illa, dies tribula- 15
tionis & neceſſitatis, dies (l) im-
maturitatis & perditionis, dies
caliginis & tenebrarum , dies
nubis & nebulæ , Dies tubæ 16
& clamoris ſuper civitates mu-
nitas, & ſuper angulos excel-
ſos. Et tribulabo homines, & 17
ambulabunt ut cæci : quia Domi-
no peccaverunt. Et effundet ſan-
guinem eorum ſicut pulverem, et
carnes eorum ſicut ſtercora bo-
um : Et argentum eorum, & 18
aurum eorum non poterit eruere
eos in die iræ Domini : & in
igne zeli ejus conſumetur omnis
terra : conſummationem enim
& feſtinationem faciet ſuper
omnes habitantes terram.

MS.A. (γ) καὶ τοὺς ὀμνύοντας κατὰ τοῦ βασιλέως (δ) ζητήσαντας (ε) ἡ ἡμέρα τοῦ κυρίου, ὅτι ἡτοίμασεν (ζ) ἡγίασεν (η) ἐπὶ πάντας ἐμφανῶς (θ) τοῦ θεοῦ αὐτῶν ἀνομίας, καὶ δόλου. Καὶ ἔσται ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ, (ι) ἐξωλεθρεύθησαν (κ) ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ, (λ) λέγοντες, Οὐ μὴ ἀγαθοποιήσῃ κύριος, οὐδ᾽ οὐ μὴ (ʹ) καταφυτεύσωσιν (μ) ἡ ἡμέρα (ν) ἀωρίας καὶ ἀφανισμοῦ, (ξ) σκότους καὶ γνόφου, (ο) ἰσχυράς, ἐπὶ τὰς (π) ἑαυτοῦ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 וית דסגדין לאגוריא לחילי שמיא וית דסגדין די מקימין בשמא דיי תיבין וימין
6 בשום פתכריהון : וית דאסתחרו לאחורא מבתר פולחנא דיי ודלא תבעו ית דחלתא
7 דיי ולא בעו מן קדמוהי : ספו כל רשיעיא מן קדם יי אלהים ארי קריב יומא דעתיד
8 למיתי מן קדם יי ארי אתקין יי קטול ערע מזמנוהי : ויהי ביום קטלא דעתיד למיתי
מן קדם יי ואסער על רברביא ועל בני מלכא ועל כל דמתרגשין למפלח לטעותא :
9 ואסער על כל דמהלכין בנימוסי פלשתאי בעדנא ההיא דמלן בית רבוניהון חטוף
10 ונכלין : ויהי בעדנא ההיא אמר יי קל צוחתא מתרע נוניא ויללא מן עופא ותבירא
11 רבא מן גבעתא : אילילו כל דיתבין בנחלא דקדרון ארי אתבר כל עמא דדמן
12 עובדיהון לעובדי עמא דארעא דכנען אשתיציאו כל עתירי נכסיא : ויהי בעדנא
ההיא אפקיד בלושין ויבלשון ית ירושלם כמא דבלשין בנברשתא ואסער על גבריא
דשלן שליוא על נכסיהון דאמרין בלבהון לא רעוא קדם יי לאיטבא ואף לאבאשא :
13 ויהון נכסיהון לעדי ובתיהון לבזא ויבנון בתין ולא יתבון ויצבון כרמין ולא ישתון ית
14 חמרהון : קריב יומא דעתיד למיתי מן קדם יי רבא קריב ומוחי לחדא קל יומא דעתיד
15 למיתי מן קדם יי די בידה מריר וצוח תמן גבריא מתקטלין : יומא תעבור יומא
ההוא יום עקא ועיוק יום רגוש ואתרגושא יום חשוך וקבלא יום עננא ואמטתא :
16 17 יום שופרא ויבבא על קרויא כריכתא ועל רמתא מנטלתא : ואעיק לבני אנשא
18 ויהכון כסמן ארי קדם יי חבו וישתפך דמהון לעפרא ונבלתהון כסחיתא : אף כספהון
אף דהבהון לא יוכל לשזבותהון ביום רוגזא דיי ובאשא דפורענותיה יסופון כל
רשיעי ארעא ארי גמירא ברם שיצאה יעביד עם כל יתבי ארעא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et qui adorãt in tectis exercitus cœlorũ, & adoratores qui jurãt in nomine 5
Dñi revertẽtes ut jurẽt in nomine idolorũ ſuorũ. Quiq; avertũtur retrorſũ à 6
cultu Dñi, nec perquiſierũt timorẽ Dñi, neq; precibꝰ poſtularũt à conſpectu
ipſius. Pereatis funditus omnes impii à conſpectu Dñi Dei, quoniã propin- 7
quus eſt dies qui venturus eſt à conſpectu Dñi , quoniam præparavit Dñs
occiſionem , convocavit invitatos ſuos. Porrò futurum eſt in die occiſio- 8
nis qui venturus eſt à conſpectu Dñi , ut animadvertam in magnates & in
filios regis, in omnes denique qui preſtrepunt ad cultum idolorum. Et ani- 9
madvertam in omnes qui ambulant in legibus Palæſtinorum in illo tempore
qui complent ædes dominorum ſuorum rapina , & dolis. Et erit in illo 10
tempore, inquit Dñs , vox clamoris à porta piſcium , & ululatus à [*porta*]
avis, magnaque contritio à collibus. Ululate omnes qui habitatis in torrente 11
Cedron, quoniam fractus eſt totus populus, cujus opera ſimilia ſunt operibus
populi terræ Chanaan, exciſi ſunt omnes divites opibus. Et futurum eſt in 12
illo tempore ut conſtituam perveſtigatores, & perveſtigabunt Jeruſalem, ut
ii qui ſcrutantur cum lucerna : & animadvertam in homines qui ſumma
tranquillitate fruuntur in divitiis ſuis : qui dicunt in cordibus ſuis : Non eſt
voluntas coram Dño benefaciendi , ſive etiam malefaciendi. Erunt itaque 13
divitiæ eorum in ſpolium, & domꝰ eorum in prædam: & ædificabunt domos,
ſed non habitabunt: & plantabunt vineas, ſed non bibent vinum earum. Pro- 14
pinquus eſt dies qui venturus eſt à conſpectu Dñi magnus; propinquus eſt, &
feſtinat valdè vox diei qui venturus eſt à conſpectu Dñi, in quo eſt mœror &
clamor : ibi potentes interficientur. Dies tranſibit, dies ille dies afflictionis 15
& anguſtiæ, dies tumultus & commotionis, dies tenebrarum & caliginis, dies
nubiloſꝰ & obſcurꝰ. Dies buccinæ & jubilationis ſup civitatibus munitis, & 16
ſup collibꝰ exaltatis. Et in anguſtias adigam filios hominũ, & ambulabũt tan- 17
quã cæci : quoniã corã Dño peccaverũt, & effundetur ſanguis eorũ *in pulve-*
rem, & cadavera eorũ ſicut ſtercꝰ. Nec argentũ ſuũ nec aurũ ſuũ poterit libe- 18
rare eos in die iræ Dñi, ſed igne ultionis ipſiꝰ conſumẽtur omnes impii terræ,
quoniam exterminationẽ, & exciſionẽ faciet cum omnibꝰ habitatoribꝰ terræ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܟܠ ܕܣܓܕܝܢ ܗܘܘ ܥܠ ܐܓܪܐ ܠܚܝܠܘܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܟܠ ܕܣܓܕܝܢ ܗܘܘ .܀ ܘܝܡܝܢ 5
ܒܡܪܝܐ. ܘܝܡܝܢ ܒܡܠܟܘܡ. * ܘܟܠ ܕܗܦܟܝܢ ܡܢ ܡܪܝܐ. ܘܟܠ ܕܠܐ ܒܥܝܢ ܠܡܪܝܐ. 6
ܘܠܐ ܡܬܒܥܝܢ ܠܘܬܗ. * ܙܘܥܘ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܩܪܝܒ ܗܘ ܝܘܡܗ 7
ܕܡܪܝܐ. ܘܛܝܒ ܡܪܝܐ ܕܒܚܐ. ܘܙܡܢ ܩܪ̈ܝܘܗܝ. * ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܕܕܒܚܗ ܕܡܪܝܐ .܀
ܐܦܩܘܕ ܥܠ ܪ̈ܘܪܒܢܐ. ܘܥܠ ܒܢ̈ܝ ܡܠܟ̈ܐ. ܘܥܠ ܟܠ ܕܠܒܫܝܢ ܗܘܘ ܠܒܘ̈ܫܐ ܢܘܟܪ̈ܝܐ. 8
* ܘܐܦܩܘܕ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܠܘ̈ܒܐ ܘܒܙܘ̈ܙܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܕܡܠܝܢ ܗܘܘ ܒܝܬ ܡܪ̈ܝܗܘܢ 9
ܥܘܠܐ ܘܢܟܠܐ. * ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ .܀ ܩܠܐ ܕܩܥܬܐ ܡܢ ܬܪܥܐ ܕܢܘܢܐ. 10
ܘܝܠܠܬܐ ܡܢ ܐܚܪܢܐ. ܘܬܒܪܐ ܪܒܐ ܡܢ ܪ̈ܡܬܐ. * ܐܝܠܠܘ ܥܡܘܪ̈ܝܗ ܕܡܟܬܫ. ܡܛܠ 11
ܕܐܫܬܬܩ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܟܢܥܢ. ܘܐܒܕܘ ܟܠ ܫܩ̈ܠܝ ܟܣܦܐ. * ܘܢܗܘܐ ܒܗ ܒܙܒܢܐ ܗܘ ܐܡܪ 12
ܡܪܝܐ .܀ ܐܒܨܐ ܠܐܘܪܫܠܡ ܒܫܪܓܐ. ܘܐܦܩܘܕ ܥܠ ܓܒܪ̈ܐ ܕܡܫܝܛܝܢ ܒܢܛܘܪ̈ܝܗܘܢ .܀
ܘܐܡܪܝܢ ܒܠܒܗܘܢ .܀ ܠܐ ܡܛܐܒ ܡܪܝܐ ܐܦ ܠܐ ܡܒܐܫ. * ܢܗܘܐ ܩܢܝܢܗܘܢ ܠܒܙܬܐ. 13
ܘܒ̈ܬܝܗܘܢ ܠܚܘܪܒܐ. ܘܢܒܢܘܢ ܒ̈ܬܐ ܘܠܐ ܢܬܒܘܢ ܒܗܘܢ. ܘܢܨܒܘܢ ܟܪ̈ܡܐ ܘܠܐ ܢܫܬܘܢ
ܚܡܪܗܘܢ. * ܩܪܝܒ ܗܘ ܝܘܡܗ ܪܒܐ ܕܡܪܝܐ. ܩܪܝܒ ܗܘ ܛܒ. ܘܡܣܪܗܒ ܩܠܐ ܕܝܘܡܗ 14
ܕܡܪܝܐ. ܡܪܝܪ ܘܩܫܐ ܘܥܫܝܢ. * ܝܘܡܐ ܕܪܘܓܙܐ ܝܘܡܐ ܗܘ. ܝܘܡܐ ܗܘ ܕܐܘܠܨܢܐ ܘܕܥܩܬܐ. 15
ܝܘܡܐ ܗܘ ܕܫܓܘܫܝܐ ܘܕܚܒܠܐ. ܝܘܡܐ ܗܘ ܕܚܫܘܟܐ ܘܕܥܡܛܢܐ. ܝܘܡܐ ܗܘ ܕܥܢܢܐ
ܘܕܥܪܦܠܐ. * ܝܘܡܐ ܗܘ ܕܩܪܢܐ ܘܕܝܒܒܐ ܥܠ ܡܕ̈ܝܢܬܐ ܚܣ̈ܝܢܬܐ. ܘܥܠ ܩܪ̈ܢܬܐ ܪ̈ܡܬܐ. 16
* ܘܐܥܝܩ ܠܒܢܝ̈ܢܫܐ ܕܢܗܠܟܘܢ ܐܝܟ ܣܡ̈ܝܐ. ܥܠ ܕܚܛܘ ܠܡܪܝܐ. ܘܢܬܐܫܕ ܕܡܗܘܢ 17
ܐܝܟ ܥܦܪܐ. ܘܒܣܪܗܘܢ ܐܝܟ ܙܒܠܐ. * ܘܕܗܒܗܘܢ ܘܣܐܡܗܘܢ .܀ ܠܐ ܢܫܟܚ ܠܡܦܪܩܘܬܗܘܢ 18
ܒܝܘܡܐ ܕܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܒܢܘܪܐ ܕܛܢܢܗ ܬܬܐܟܠ ܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܫܘܠܡܐ
ܘܫܘܦܢܐ ܥܒܕ. ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪ̈ܝܗ ܕܐܪܥܐ.

Omnes qui ſuper tectis adorabant exercitus 5
cæleſtes, & omnes qui adorantes jurabant per
Dominum & jurabant per Malchom: Deniq; 6
omnes qui avertunt ſe à Domino, & omnes qui
non petunt Dominum, neque requirunt eum,
Horreſcite à conſpectu Domini dominorum; 7
quia propinquus eſt dies Domini, præparavit
Dominus victimas, & vocatos ſuos invitavit.
Erit autem in die victimæ Domini, ut animad- 8
vertam in magnates, & in filios regum, & in
omnes qui induuntur veſtibus peregrinis: Et 9
animadvertam in omnes violentos & rapto-
res in die illa, qui replent cellaria ſua rapinâ
& fraude. Eritque eâ die dicit Dominus, vox 10
clamoris, à porta piſcatorum, & ejulatus ab
altera, & contritio magna è collibus. Ejulate 11
habitatores Mechtas, quia obſtupuerunt uni-
verſus populus Chanaanis, & perierunt omnes
argentum portantes. Erit etiam eodem illo 12
tempore, dicit Dominus, ut Jeroſolymam lu-
cernâ perſcruter, & animadvertam in viros
illos qui parvipendunt cuſtodem ſuum, & di-
cunt in corde ſuo; Neque benefacit Domi-
nus, neque malefacit. Horum poſſeſſio di- 13
reptioni erit, & domus eorum deſolationi:
domos ædificabunt, at non habitabunt in eis;
plantabunt vineas, at non bibent vinum ea-
rum. Proxima eſt magna dies Domini, proxi- 14
ma eſt admodum ac feſtina vox diei Domini,
amara eſt, dura & gravis. Dies excandeſcen- 15
tiæ eſt illa dies, dies eſt anguſtiæ & calamitatis,
dies perturbationis & corruptionis, dies te-
nebrarum & obſcuritatis, dies nubis & ca-
liginis; Dies buccinæ & clangoris ſuper urbes 16
munitas & ſuper angulos altiſſimos: Et co- 17
get homines ambulare more cæcorum; eò
quòd peccaverint in Dominum: & effunde-
tur ſanguis eorum ut pulvis, & caro eorum
ut ſtercora. Nec aurum nec argentum eorum 18
poterit eos liberare in die iræ Domini; ſed
igne zeli ejus conſumetur univerſa terra: quia
perturbationem & exitium illaturus eſt omni-
bus habitatoribus terræ.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* والذين يسجدون على الاسطحة لاجناد السماء * الذين يحلفون بملكهم * والذين 5 6
يميلون عن الرب * والذين لم يطلبوا الرب * والذين لم يتخصصوا للرب * ارتاعوا من 7
وجه الرب الاله * من اجل ان يوم الرب قريب * لان الرب هيأ ذبيحته * قدس مدعويه *
* ويكون في يوم ذبيحة الرب * اقضي علي الروساء * وعلي بيت الملك * وعلي جميع 8
اللابسين الثياب الغريبة * واحكم على جميع الذين على الدهاليز ظاهرا في ذلك اليوم * 9
الذين يملون بيت الرب الههم نفاقا وغشا * ويكون في ذلك اليوم يقول الرب * صوت 10
صرخة من الباب من الذين يطعنون * وولولة من الثانية * وانكسار عظيم من الاكام *
* نوحوا يا سكان المنصدعة * لان كل الشعب اشبه كنعان * استوصلوا جميع المترفعين بالفضة * 11
* ويكون في ذلك اليوم * افتش اورشليم بسراج * واحكم علي الرجال المتغافلين علي 12
رذائلهم * القائلين في قلوبهم * لم يصنع الرب خيرا * ولم يصنع شرا * ويكون قوتهم 13
للاختطاف * وبيوتهم للهلاك * ويبنون بيوتا ولا يسكنون فيها * ويغرسون كروما ولا يشربون
خمرها * لان يوم الرب العظيم قريب * قريب ومسرع جدا صوت يوم الرب مر وصعب شديد * 14
* يوم الرجز قوي * ذلك اليوم يوم ضيقة وشدة * يوم عدم وفني وفساد * يوم ظلمة وضباب * 15
يوم سحابة وضبابة * يوم بوق وصرخة على المدن القوية * وعلي الزوايا المرتفعة * واضايق 16 17
البشر * ويسيرون مثل عميان * لانهم اخطوا للرب * ويهرق دمهم مثل التراب * ولحومهم مثل
الرجيع * وفضتهم وذهبهم لن يقدرا ان يخلصاهم في يوم رجز الرب * لان بنار غيرته توكل 18
كل الارض * من اجل انه يصنع انقضاء وسرعة على جميع سكان الارض *

Eos qui adorant ſuper tectis militiam cæ- 5
leſtem, & eos qui jurant per regem ſuum;
Eos qui deflectunt à Domino, & eos qui 6
non requirunt Dominum, eos demum qui
non dediderunt ſe Domino. Reveremi- 7
ni faciem Domini Dei, quia dies Domini
propinquus eſt: præparavit enim Dominus
victimam ſuam, ſanctificavit invitatos
ſuos. Et erit in die victimæ Domini, ut 8
ſententiam feram in principes, & in do-
mum regiam, & in omnes indutos veſti-
bus peregrinis: Et omnes eos qui ſunt 9
ſuper porticibus, publicè judicem eo die,
qui domum Domini Dei ſui impietate
fraudéque replent. Et erit eo die, dicit 10
Dominus, vox clamoris de porta ab iis
qui confodient, ululatus è ſecunda, &
contritio magna è collibus. Plangite O 11
habitatores decumbentis, quia totus popu-
lus ſimilis factus eſt Chanaani, eradicati
ſunt omnes argento elati. Erit prætereà 12
eo die, ut Jeroſolymam lucernâ perveſti-
gem, & condemnem viros qui negligunt
abominationes ſuas, qui dicunt in cor-
dibus ſuis; Neque bonum fecit Domi-
nus, neque malum fecit. Horum facul- 13
tas erit direptioni, & domus eorum ex-
cidio: domus ædificabunt, & non habi-
tabunt in eis; vineas conſerent, & non
bibent vinum earum: Nam dies Domi- 14
ni magnus proximus eſt, proxima eſt &
feſtina admodum vox diei Domini, ama-
ra atque difficilis diſpoſita eſt: Dies 15
iræ durus eſt; dies ille, dies calamitatis
et anguſtiæ; dies defectûs temporis, & cor-
ruptionis; dies tenebrarum & caliginis;
dies nubis & nebulæ; Dies buccinæ & 16
clamoris ſuper urbes munitas & ſuper
angulos ſublimes. Et vexabo morta- 17
les, & ambulabunt ut cæci, eò quòd pec-
caverint in Dominum: effundétque ſan-
guinem eorum ut pulverem, & carnes
eorum ut ſtercus: Et argentum aurúm- 18
que eorum haudquaquam poterunt eripere
eos in die furoris Domini; quandoqui-
dem igne zeli ejus conſumetur tota ter-
ra: quia conſummationem & feſtinatio-
nem facturus eſt ſuper omnes habitato-
res terræ.

צְפַנְיָה : ב

CAP. II. ב

,statutum parere Ante .desiderabilis non gens congregamini & , vos Colligite
1 הִתְקוֹשְׁשׁוּ וָקוֹשּׁוּ הַגּוֹי לֹא נִכְסָף׃ בְּטֶרֶם לֶדֶת חֹק
2 nasi ira vos super veniat quàm prius , die transit , gluma ut
כְּמֹץ עָבַר יוֹם בְּטֶרֶם ׀ לֹא־יָבוֹא עֲלֵיכֶם חֲרוֹן אַף
Quærite .Domini nasi dies vos super veniat quàm antè ,Domini
3 יְהוָה בְּטֶרֶם לֹא־יָבוֹא עֲלֵיכֶם יוֹם אַף־יְהוָה׃ בַּקְּשׁוּ
: sunt operati ejus judicium qui , terræ mansueti omnes Dominum
אֶת־יְהוָה כָּל־עַנְוֵי הָאָרֶץ אֲשֶׁר מִשְׁפָּטוֹ פָּעָלוּ
nasi die in vos absconditis fortè si,humilitatem quærite ,justitiam quærite
בַּקְּשׁוּ־צֶדֶק בַּקְּשׁוּ עֲנָוָה אוּלַי תִּסָּתְרוּ בְּיוֹם אַף
Asdod ,desolationẽ in Aschelon & , erit relicta Hazzah Quia.Domini
4 יְהוָה׃ כִּי עַזָּה עֲזוּבָה תִהְיֶה וְאַשְׁקְלוֹן לִשְׁמָמָה אַשְׁדּוֹד
portum habitantibus Væ.eradicabitur Hecron & ,eam ejicient Meridie in
5 בַּצָּהֳרַיִם יְגָרְשׁוּהָ וְעֶקְרוֹן תֵּעָקֵר׃ הוֹי יֹשְׁבֵי חֶבֶל
terra , Chenahan vos super Domini Verbum .Cerethim genti , maris
הַיָּם גּוֹי כְּרֵתִים דְּבַר־יְהוָה עֲלֵיכֶם כְּנַעַן אֶרֶץ
,maris portus erit Et .habitatore non à te faciam perdere &,Palæstinorum
6 פְּלִשְׁתִּים וְהַאֲבַדְתִּיךְ מֵאֵין יוֹשֵׁב׃ וְהָיְתָה חֶבֶל הַיָּם
residuo regio erit Et .pecoris septa &,pastorum caularum habitacula
7 נְוֹת כְּרֹת רֹעִים וְגִדְרוֹת צֹאן׃ וְהָיָה חֶבֶל לִשְׁאֵרִית
vespera in , Aschelon domibus in ,pascentur eis super ,Jehudah domus
בֵּית יְהוּדָה עֲלֵיהֶם יִרְעוּן בְּבָתֵּי אַשְׁקְלוֹן בָּעֶרֶב
.corũ captivitatẽ avertet & ,corũ De⁹ Domin⁹ eos visitavit quia :accubabũt
יִרְבָּצוּן כִּי יִפְקְדֵם יְהוָה אֱלֹהֵיהֶם וְשָׁב שְׁבוּתָם׃
exprobraverũt quib⁹,Hammon filiorũ convicia &,Moab opprobrium Audivi
8 שָׁמַעְתִּי חֶרְפַּת מוֹאָב וְגִדּוּפֵי בְּנֵי עַמּוֹן אֲשֶׁר חֵרְפוּ
vivens Propterea .eorum terminum super magnificabant & ,meum populum
9 אֶת־עַמִּי וַיַּגְדִּילוּ עַל־גְּבוּלָם׃ לָכֵן חַי־
Sedom sicut Moab quia , Israel Deus exercituum Dominus dixit,ego
אָנִי נְאֻם יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל כִּי מוֹאָב כִּסְדֹם
, Salis fodina & , urticæ stridor ,Hamorah sicut Hammon filii & , erit
תִּהְיֶה וּבְנֵי עַמּוֹן כַּעֲמֹרָה מִמְשַׁק חָרוּל וּמִכְרֵה־מֶלַח
residuũ &,eos diripiẽt mei populi residuũ , seculum in usque desolatio &
וּשְׁמָמָה עַד־עוֹלָם שְׁאֵרִית עַמִּי יְבָזּוּם וְיֶתֶר
quia , eorum superbiam propter eis Hoc .eos possidebunt meæ gentis
10 גּוֹי יִנְחָלוּם׃ זֹאת לָהֶם תַּחַת גְּאוֹנָם כִּי
.exercituum Domini populũ super magnificaverunt & , affecerunt probris
חֵרְפוּ וַיַּגְדִּלוּ עַל־עַם יְהוָה צְבָאוֹת׃
, terræ Deos omnes confecit macie quia ,eos super Dominus Terribilis
11 נוֹרָא יְהוָה עֲלֵיהֶם כִּי רָזָה אֵת כָּל־אֱלֹהֵי הָאָרֶץ
.gentium insulæ omnes suo loco de vir illi se incurvabunt &
וְיִשְׁתַּחֲווּ־לוֹ אִישׁ מִמְּקוֹמוֹ כֹּל אִיֵּי הַגּוֹיִם׃
extendet Et ipsi meo gladio interfecti Chusim vos Etiam
12 13 גַּם־אַתֶּם כּוּשִׁים חַלְלֵי חַרְבִּי הֵמָּה׃ וְיֵט
ponet & : Assur perdet &,Aquilonem super suam manum
יָדוֹ עַל־צָפוֹן וִיאַבֵּד אֶת־אַשּׁוּר וְיָשֵׂם אֶת־
accubabunt Et .desertum sicut siccitatem desolationem in Nineveh
14 נִינְוֵה לִשְׁמָמָה צִיָּה כַּמִּדְבָּר׃ וְרָבְצוּ
etiam ,pellicanus etiam ,gentis ejus bestia omnis , greges ejus medio in
בְתוֹכָהּ עֲדָרִים כָּל־חַיְתוֹ־גוֹי גַּם־קָאַת גַּם־
, fenestra in cantabit Vox .commorabuntur ejus sphærulis in ericius
קִפֹּד בְּכַפְתֹּרֶיהָ יָלִינוּ קוֹל יְשׁוֹרֵר בַּחַלּוֹן
civitas Hæc .nudavit ejus cedrum quoniam , limine in desolatio
15 חֹרֶב בַּסַּף כִּי אַרְזָה עֵרָה׃ זֹאת הָעִיר
me præter & Ego:suo corde in dicens , fiducia in habitans , exultans
הָעַלִּיזָה הַיּוֹשֶׁבֶת לָבֶטַח הָאֹמְרָה בִּלְבָבָהּ אֲנִי וְאַפְסִי
omnis ? bestiæ cubile desolationem in fuit Quomodo .ultrà
עוֹד אֵיךְ ׀ הָיְתָה לְשַׁמָּה מַרְבֵּץ לַחַיָּה כֹּל
.suam manum movebit ,sibilabit , eam super transiens
עוֹבֵר עָלֶיהָ יִשְׁרֹק יָנִיעַ יָדוֹ׃

Versio VULG. LAT.

CAP. II.

1 Convenite, congregamini, gens 2 non amabilis: Priusquàm pariat jussio quasi pulverem transeuntem diem, antequàm veniat super vos ira furoris Domini, antequàm veniat super vos dies indignationis Domini. 3 Quærite Dominum omnes mansueti terræ, qui judicium ejus estis operati: quærite justum, quærite mansuetum: si quomodò abscondamini in die furoris Domini. 4 Quia Gaza destructa erit, & Ascalon in desertum, Azotum in meridie ejicient, & Accaron eradicabitur. 5 Væ qui habitatis funiculum maris, gens perditorum: verbum Domini super vos Chanaan, terra Philisthinorum, & disperdam te, ita ut non sit inhabitator. 6 Et erit funiculus maris requies pastorum, & caulæ pecorum: 7 Et erit funiculus ejus, qui remanserit de domo Juda: ibi pascentur, in domibus Ascalonis ad vesperam requiescent: quia visitabit eos Dominus Deus eorum, & avertet captivitatem eorum. 8 Audivi opprobrium Moab, & blasphemias filiorum Ammon: quæ exprobraverunt populo meo, & magnificati sunt super terminos eorum. 9 Propterea, Vivo ego, dicit Dominus exercituum Deus Israel, quia Moab ut Sodoma erit, & filii Ammon quasi Gomorrha, siccitas spinarum, & acervi salis, & desertum usque in æternum: reliquiæ populi mei diripient eos, & residui gentis meæ possidebunt illos. 10 Hoc eis eveniet pro superbia sua: quia blasphemaverunt, & magnificati sunt super populũ Domini exercituũ. 11 Horribilis Domin⁹ super eos, & attenuabit omnes deos terræ: & adorabunt eum viri de loco suo, omnes insulæ Gentium. 12 Sed & vos, Æthiopes, interfecti gladio meo eritis. 13 Et extendet manũ suam super Aquilonem, & perdet Assur: & ponet speciosam in solitudinem, & in inviũ, & quasi desertum. 14 Et accubabunt in medio ejus greges, & omnes bestiæ Gentium: & onocrotal⁹ & ericius in liminib⁹ ejus morabuntur: vox cantantis in fenestra, corvus in superliminari, quoniã attenuabo robur ej⁹. 15 Hæc est civitas gloriosa habitans in confidentia: quæ dicebat in corde suo; Ego sum, & extra me non est alia ampliùs: quomodò facta est in desertum cubile bestiæ? omnis qui transit per eam, sibilabit, & movebit manum suam.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

ΚΕΦ. β'.

1 Συνάχθητε, καὶ συνδέθητε τὸ ἔθνος τὸ 2 ἀπαίδευτον, Πρὸ τοῦ γενέσθαι ὑμᾶς ὡς ἄνθος παραπορευόμενον, πρὸ τοῦ ἐπελθεῖν ἐφ' ὑμᾶς ὀργὴν κυρίου, πρὸ τοῦ ἐπελθεῖν ἐφ' ὑμᾶς ἡμέραν θυμοῦ κυρίου. 3 Ζητήσατε τὸν κύριον πάντες ταπεινοὶ γῆς, κρίμα ἐργάζεσθε, καὶ δικαιοσύνην ζητήσατε, καὶ (˘)ἀποκρίνεσθε αὐτά, ὅπως σκεπασθῆτε ἐν ἡμέρᾳ ὀργῆς κυρίου. 4 Διότι Γάζα διηρπασμένη ἔσται, καὶ Ἀσκάλων (α) εἰς ἀφανισμόν, καὶ Ἄζωτος μεσημβρίας (β) ἐκριφήσεται, καὶ Ἀκκαρὼν (γ) ἐκριζωθήσεται. 5 Οὐαὶ οἱ κατοικοῦντες τὸ σχοίνισμα τῆς θαλάσσης, πάροικοι Κρητῶν. λόγος κυρίου (δ) ἐφ' ὑμᾶς Χαναάν, γῆ ἀλλοφύλων, καὶ ἀπολῶ ὑμᾶς ἐκ κατοικίας. 6 Καὶ ἔσται Κρήτη νομὴ ποιμνίων, καὶ μάνδρα προβάτων. 7 Καὶ ἔσται τὸ σχοίνισμα τῆς θαλάσσης τοῖς καταλοίποις οἴκου Ἰούδα, ἐπ' (ε) αὐτοὺς νεμήσονται ἐν τοῖς οἴκοις Ἀσκάλωνος, δείλης καταλύσουσιν ἀπὸ προσώπου υἱῶν Ἰούδα, ὅτι ἐπέσκεπται αὐτοὺς κύριος ὁ θεὸς αὐτῶν, καὶ (ζ) ἀποστρέψει τὴν αἰχμαλωσίαν αὐτῶν. 8 Ἤκουσα ὀνειδισμοὺς Μωάβ, καὶ κονδυλισμοὺς υἱῶν Ἀμμών, ἐν οἷς ὠνείδιζον τὸν λαόν μου, καὶ ἐμεγαλύνοντο ἐπὶ τὰ ὅριά μου. 9 Διὰ τοῦτο, ζῶ ἐγώ, λέγει κύριος τῶν δυνάμεων ὁ θεὸς Ἰσραήλ, διότι Μωὰβ ὡς Σόδομα ἔσται, καὶ (˘)υἱοὶ Ἀμμὼν ὡς Γόμορρα, καὶ Δαμασκὸς ἐκλελειμμένη ὡς θημωνία ἅλωνος, καὶ ἠφανισμένη εἰς τὸν αἰῶνα· καὶ οἱ (η) κατάλοιποι λαοῦ μου διαρπῶνται αὐτούς, καὶ οἱ κατάλοιποι ἔθνους μου κληρονομήσουσιν αὐτούς. 10 Αὕτη αὐτοῖς ἀντὶ τῆς ὕβρεως αὐτῶν, διότι ὠνείδισαν, καὶ ἐμεγαλύνθησαν ἐπὶ τὸν κύριον τὸν 11 παντοκράτορα. Ἐπιφανήσεται κύριος ἐπ' αὐτούς, καὶ (θ) ἐξολοθρεύσει πάντας τοὺς θεοὺς τῶν ἐθνῶν τῆς γῆς, καὶ προσκυνήσουσιν αὐτῷ ἕκαστος ἐκ τοῦ τόπου (ι) αὐτοῦ, πᾶσαι αἱ νῆσοι τῶν ἐθνῶν. 12 Καὶ ὑμεῖς Αἰθίοπες 13 τραυματίαι ῥομφαίας μου ἐστέ. Καὶ (κ) ἐκτενεῖ τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἐπὶ Βορρᾶν, καὶ ἀπολεῖ τὸν Ἀσσύριον, καὶ θήσει τὴν Νινευὴ εἰς ἀφανισμὸν ἄνυδρον, ὡς ἔρημον. 14 Καὶ νεμήσονται ἐν μέσῳ αὐτῆς ποίμνια, καὶ πάντα τὰ θηρία τῆς γῆς, καὶ χαμαιλέοντες, καὶ ἐχῖνοι ἐν τοῖς φατνώμασιν αὐτῆς κοιτασθήσονται· καὶ θηρία φωνήσει ἐν τοῖς διορύγμασιν αὐτῆς, (λ) καὶ κόρακες ἐν τοῖς πυλῶσιν αὐτῆς, διότι κέδρος τὸ (μ) ἀνάστημα αὐτῆς.

ΚΕΦ. γ'.

15 Αὕτη ἡ πόλις ἡ φαυλίστρια, ἡ κατοικοῦσα ἐπ' ἐλπίδι, ἡ λέγουσα ἐν καρδίᾳ αὐτῆς, Ἐγώ εἰμι, καὶ οὐκ ἔστι μετ' ἐμὲ ἔτι. πῶς ἐγενήθη εἰς ἀφανισμόν, νομὴ θηρίων; πᾶς ὁ (α) διαπορευόμενος δι' αὐτῆς συριεῖ, καὶ κινήσει τὰς χεῖρας αὐτοῦ.

MS.A. (˘)ἀποκρίνεσθε (α) ἔσται εἰς (β) ἐκριζωθήσεται, (γ) ἐκριφήσεται. (δ) πρὸς (ε) αὐτοῦ (ζ) ἀπέστρεψεν (˘) οἱ υἱοὶ (η) καταλοίπου τοῦ λαοῦ (θ) ἐξολεθρεύσει (ι) αὐτῶν, (κ) ἐκτενῶ τὴν χεῖρά μου (λ) κόρακες (μ) ἀνάστεμα MS.A. Κεφ.γ'. (α) παραπορευόμενος

CAP. II.

1 *Congregamini, & (a) colligamini, gens inerudita,* 2 *Antequã fiatis vos, sicut flos (b) pertransiens, antequã veniat ira Domini super vos, antequàm super vos irruat dies (c) furoris Dñi.* 3 *Quærite Dominũ, omnes humiles terræ: judiciũ operamini, & justitiam quærite, & respondete ea: ut protegamini in die iræ Domini.* 4 *Quia Gaza direpta erit, & Ascalon in desolationem, & Azotus meridiè projicietur, & Accaron eradicabitur.* 5 *Væ, qui habitatis funiculum maris, (d) advenæ Cretensium. Verbum Domini super vos Chanaan, terra Allophylorum: & perdam vos de habitatione.* 6 *Et erit Creta pascua gregum, & ovile pecorum.* 7 *Et erit funiculus maris his, qui reliqui sunt de domo Juda: super ipsos pascentur in domibus Ascalonis: ad vesperam divertent (e) à facie filiorum Juda: quia visitat eos Dominus Deus eorum: & avertet captivitatem eorum.* 8 *Audivi opprobria Moab, & contumelias filiorum Ammon, in quibus exprobrabant populo meo, & magnificabantur super terminos meos.* 9 *Propterea, Vivo ego, dicit Dominus virtutũ Deus Israel: quia Moab, sicut Sodoma erit, & filii Ammon quasi Gomorrha, et Damascus derelicta, quasi acervus (f) areæ, & dissipata usque in sempiternum. Et, qui reliqui fuerint de populo meo, diripient eos, & residui gentis meæ possidebunt eos.* 10 *(g) Hæc erit eis pro contumelia sua: quia exprobraverunt, & magnificati sunt super Dominum omnipotentem.* 11 *(h) Apparebit Dominus super eos, & disperdet omnes deos gentium terræ: & adorabunt eum singuli de loco suo, omnes insulæ gentium.* 12 *Et vos Æthiopes vulnerati (i) estis gladii mei.* 13 *Et (k) extendet manum suam super Aquilonem, & perdet Assyrium, & ponet Ninevem in desolationem, inaquosam, quasi desertum.* 14 *Et pascentur in medio ejus greges, & omnes bestiæ terræ: & chamæleontes, & ericii in præsepibus ejus cubabunt: & bestiæ clamabunt in foveis ejus, & (l) corvi in portis ejus, quia cedrus (m) altitudo ejus.*

CAP. III.

15 *Hæc est civitas (a) vilipendens, quæ habitat in spe, quæ dicit in corde suo; Ego sum, & non est post me amplius. Quomodò facta est in solitudinem, pascua bestiarum? Omnis, qui transit per eam, sibilabit, & movebit manus suas.*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ב

1 אתכנשו ואתו ואתקרבו עמא הדא דלא חמיד למתב לאוריתא : עד לא תפוק עליכון
2 גזירת בית דינא ותהון דמן לכמוצא דנשבא ביה רוחא וכטולא דעדי מן קדם יומא
3 עד דלא ייתי עליכון תקוף רוגזא דיי עד לא ייתי עליכון יום רוגזא דיי : תבעו ית דחלתא
דיי כל ענותני ארעא דדיני רעותיה עבדו תבעו קושטא תבעו ענותנותא מאים יתגן
4 עליכון ביום רוגזא דיי : ארי עזה שביקא תהי ואשקלון לצדו אשדוד בטיהרא יתרכונה
5 ועקרון תתעקר : וי דיתבין בספר ימא עמא דחיבין לאשתיצאה גזירת פתגמא דיי
6 עליכון דיתבין בכנען ארעא דפלשתאי ואבדנך מבלי יתיב : ותהי ספר ימא דירות בית
7 מישרי רעין וחוטרין דען : ויהי עדבא לשארא דבית יהודה עליהון יתפרנסון בבתי
אשקלון כד ברמשא יביתון ארי יעול דכרנהון קדם יי אלההון ויתיב גלותהון :
8 שמיע קדמי חסודי מואב ואתרברבות בני עמון דחסידו ית עמי ואתרברבו על
9 תחומהון : בכן קים אנא אמר יי צבאות אלהא דישראל ארי מואב כסדום תהי
ובני עמון כעמורה משמט מלוחין ומחפורין דמלח וצדו עד עלמא שארא דעמי
10 יבוזונון ושאר שבטיא יחסנונון : דא להון חלף אתרברבותהון ארי חסידו
11 ואתרברבו על עמיה דיי צבאות : דחילא דיי למפרקהון ארי אמאיך ית כל דחלת
12 ארעא ויבעון מן קדמוהי גבר מאתריה כל נגות עממיא : אף אתון כושאי קטילי
13 חרבי תהון : וירים מחת גבורתיה על צפונא ויאבד ית אתוראה וישוי ית נינוה לצדו
14 אשתממו כמדברא : וישרון בגוה עדרין דכל חיות ברא אף קתין ואף קופדין בפתוח
15 תרעיא יביתון קל עופא דמנצף בכוא חרבו תרעא וטללה סתרו : דא קרתא תקיפתא
דיתבא לרוחצן דאמרה בלבה אנא ולית בר מני עוד איכדין הות לצדו בית משרי
חיתא כל די עבר עלה יכלי ויניד ידיה :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAP. II.

1 Congregamini & venite & accedite populus generationis nolentis converti ad Legem: 2 Antequàm prodeat in vos edictum domus judicii, & sitis similes glumæ quam perflat ventus; & umbræ quæ transit à conspectu diei, antequàm venerit sup vos vehemens ira Dñi, antequàm veniat sup vos dies furoris Dñi. 3 Quærite timorem Dñi omnes mansueti terræ, qui judicia voluntatis ejus præstiterunt: quærite veritatẽ, quærite mansuetudinẽ, si forsan fiat protectio sup vos in die iræ Dñi. 4 Gaza enim derelicta erit, & Ascalon in vastatione: Asdod in Meridie expelletur, & Acaron eradicabitur. 5 Væ qui habitant in portu maris, populu⁹ qui peccat ut deleatur: decretũ verbi Dñi sup vos qui habitatis in Canaan terra Palæstinorũ; perdam te ut sis absq; habitatore. 6 Eritq; portus maris habitaculum, locus mansionis pastorum, & caulæ ovium. 7 Et erit sors reliquiis domus Juda: sup ipsas pascentur in domibus Ascalon, quando vesperè pernoctabunt, siquidem introibit eorum memoria coram Dño Deo ipsorum, ac reducet eorum transmigrationẽ. 8 Audita sunt corã me opprobria Moab, & elatio filiorum Ammon, qui probro affecerunt populum meum, & magnificaverunt sese sup fines eorum. 9 Quapropter juro ego, inquit Dñs exercituũ Deus Israel, quòd Moab sicut Sodoma erit, & filii Ammon sicut Gomorra, locus derelictus carduis, & fodinæ salis, & desolatio in æternum usque: reliquiæ populi mei expilabunt eos, & reliquiæ tribuum possidebunt eas. 10 Hoc illis eveniet propter fastũ ipsorum, quoniã probris affecerunt & magnificaverunt sese adversus populum Dñi exercituum. 11 Terribilis Dñs ad redimendum eos, quoniam depressit omnes deos terræ: & requirent à conspectu ejus unusquisq; de loco suo, omnes insulæ gentium. 12 Vos quoq; Æthiopes interfecti gladio meo eritis. 13 Et altè inferet vulnus potentiæ suæ in Aquilonẽ, & perdet Assyrium, ac rediget Niniven in desolationem, vastationem [*inquam*] quasi desertum. 14 Et habitabunt in medio ejus greges omnium ferarũ, etiam onocrotali & ericii quoque in ostio *portarum* pernoctabunt: vox avis garrientis in fenestra [*audietur*:] desolarunt portã, & tabulatũ destruxerunt. 15 Hæc est civitas potens quæ sedet confidenter, quæ dicit in corde suo: Ego sum, & nulla est præter me: quomodo facta est in desolationẽ, loc⁹ habitationis ferarum? quisquis transibit juxta eam clamabit et movebit manum suam.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

1 2 * ܩܦܠܐܘܢ * ܒ * * ܐܬܟܢܫܘ ܘܐܬܐܣܪܘ ܥܡܐ ܕܠܐ ܪܕܝܐ. * ܥܕܠܐ ܬܗܘܘܢ ܐܝܟ ܥܘܪܐ ܕܥܒܪ.
ܘܥܕܠܐ ܢܐܬܐ ܥܠܝܟܘܢ ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܥܕܠܐ ܢܐܬܐ ܥܠܝܟܘܢ ܝܘܡܐ ܕܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ.
3 * ܒܥܘܗܝ ܠܡܪܝܐ ܟܠܟܘܢ ܡܟܝܟܐ ܕܐܪܥܐ. ܘܥܒܕܘ ܕܝܢܐ. ܘܒܥܘ ܙܕܝܩܘܬܐ ܘܡܟܝܟܘܬܐ.
4 ܕܠܡܐ ܬܬܛܫܘܢ ܒܝܘܡܐ ܕܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܕܥܙܐ ܫܒܝܩܐ ܬܗܘܐ. ܘܐܫܩܠܘܢ
5 ܠܚܘܪܒܐ. ܠܐܫܕܘܕ ܒܛܗܪܐ ܢܦܩܘܢܗ̇. ܘܥܩܪܘܢ ܬܬܥܩܪ. * ܘܝ ܠܥܡܘܪܝܗ ܕܚܒܠܐ ܕܝܡܐ
ܘܠܥܡܐ ܕܩܪܛܝܐ. ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠܝܟܘܢ ܟܢܥܢ ܘܐܪܥܐ ܕܦܠܫܬܝܐ. ܘܐܘܒܕܟܘܢ ܡܢ
6 ܡܬܒܢܐ. * ܘܢܗܘܐ ܚܒܠܐ ܕܝܡܐ ܡܫܟܢܐ. ܘܩܪܛܐ ܕܪܥܝܐ ܕܓܙܪܐ ܕܥܢܐ. * ܘܢܗܘܐ ܚܒܠܐ
7 ܕܝܡܐ ܠܫܪܟܐ ܕܒܝܬ ܝܗܘܕܐ ܕܢܪܥܘܢ ܒܗܘܢ. ܘܒܒܬܐ ܕܐܫܩܠܘܢ ܒܪܡܫܐ ܢܪܒܥܘܢ. ܡܛܠ
8 ܕܢܣܥܘܪ ܐܢܘܢ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ. ܘܢܗܦܘܟ ܫܒܝܬܗܘܢ. * ܫܡܥܬ ܚܣܕܐ ܕܡܘܐܒ ܘܓܘܕܦܐ
9 ܕܒܢܝ ܥܡܘܢ. ܕܚܣܕܘ ܠܥܡܝ ܘܐܬܪܘܪܒܘ ܥܠ ܬܚܘܡܗܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ
ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܕܡܘܐܒ ܐܝܟ ܣܕܘܡ ܬܗܘܐ. ܘܒܢܝ ܥܡܘܢ ܐܝܟ
ܥܡܘܪܐ. ܕܐܬܚܒܠܬ ܢܨܒܬܗܘܢ ܘܐܒܕ ܡܠܚܐ ܘܗܘܘ ܚܒܠܐ ܠܥܠܡ. ܫܪܟܗ ܕܥܡܝ
10 ܢܒܙܘܢ ܐܢܘܢ. ܘܫܪܟܐ ܕܥܡܡܐ ܢܐܪܬܘܢ ܐܢܘܢ. * ܗܕܐ ܬܗܘܐ ܠܗܘܢ. ܚܠܦ
ܨܥܪܗܘܢ. ܥܠ ܕܚܣܕܘ ܘܐܬܪܘܪܒܘ ܥܠ ܥܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܚܝܠܬܢܐ ܥܠ ܐܝܣܪܝܠ.
11 * ܢܬܓܠܐ ܡܪܝܐ ܥܠܝܗܘܢ. ܘܢܘܒܕ ܠܟܠܗܘܢ ܡܠܟܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܘܢܣܓܕܘܢ ܠܗ ܐܢܫ
12 13 ܡܢ ܐܬܪܗ. ܟܠܗܘܢ ܓܙܪܬܐ ܕܝܡܡܐ. * ܐܦ ܐܢܬܘܢ ܟܘܫܝܐ ܩܛܝܠܝ ܣܝܦܐ. * ܘܢܪܝܡ
ܐܝܕܗ ܥܠ ܬܝܡܢܐ. ܘܢܘܒܕ ܠܐܬܘܪ. ܘܢܥܒܕܝܗ̇ ܠܢܝܢܘܐ ܚܘܪܒܐ. ܘܨܕܝܐ. ܐܝܟ
14 ܡܕܒܪܐ. * ܘܢܪܒܥܘܢ ܒܓܘܗ̇ ܥܕܪܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܚܝܘܬܐ ܕܥܡܡܐ. ܐܦ ܩܩܐ ܘܩܘܦܕܐ
ܒܒܬܝܗ̇ ܢܒܘܬܘܢ. ܘܚܝܘܬܐ ܢܢܗܡܢ ܒܓܘܗ̇. ܘܣܝܦܐ ܒܬܪܥܝܗ̇. ܡܛܠ ܕܥܩܪܗ̇
15 ܐܬܦܪܥ. * ܗܕܐ ܗܝ ܡܕܝܢܬܐ ܥܫܝܢܬܐ ܕܝܬܒܐ ܗܘܬ ܠܬܘܟܠܢܐ. ܘܐܡܪܐ ܗܘܬ ܒܠܒܗ̇.
ܐܢܐ ܐܢܐ ܘܠܝܬ ܬܘܒ ܐܟܘܬܝ. ܐܝܟܢܐ ܗܘܬ ܠܚܘܪܒܐ. ܘܡܪܒܥܐ ܠܚܝܘܬܐ. ܟܠܡܢ
ܕܥܒܪ ܥܠܝܗ̇ ܢܬܕܡܪ. ܘܢܫܪܘܩ. ܘܢܢܝܕ ܐܝܕܗ ܘܢܐܡܪ.

CAP. II.

Colligite voſipſos & accingimini gens in- 1
diſciplinabilis, Antequàm ſitis ut gluma præ- 2
tervolans, antequàm ſuperveniat vobis ira fu-
roris Domini, & antequàm invadat vos dies
furoris Domini. Quærite Dominum omnes 3
humiles terræ, & facite judicium, quærite ju-
ſtitiam & humilitatem: fortaſſe protegemini
die furoris Dñi. Nam Aza derelicta erit, Aſca- 4
lon excidio, Aſdodem ipſo meridie abducent,
Ecron eradicabitur. Væ habitantibus in tractu 5
maritimo, & populo Cretenſi; ſermo Domini
contra vos eſt Chanaan & terra Paleſtinorũ:
vos enim perdam quominùs ſitis habitabiles.
Erítque tractus maritimus tuguria, & Creta 6
locus paſcuus gregibus pecudum. Et erit tra- 7
ctus maritimus reliquiis domûs Judæ, ut in iis
paſcant, & in domibus Aſcalonis veſpertino
tempore cubent: viſitaturus enim eſt eos
Dominus Deus ipſorum, & captivos eorum
reducturus. Audivi contumelias Moabi, & 8
blaſphemias filiorum Ammon quibus convi-
tiati ſunt populum meum; & inſultaverunt
termino eorum. His de rebus, Per vitam me- 9
am, dicit Domin' potentiſſimus Deus Iſraelis,
Moab ut Sodoma erit, & filii Ammon ut Go-
morra, quarum planta corrupta eſt, periit ſa-
lina, & factæ ſunt corruptio ſempiterna: re-
liquiæ populi mei diripient eas; & quod re-
liquum eſt de gente mea, poſſidebit eas. Hoc 10
fiet eis pro inſolentia eorum, quia contume-
liis affecerunt & inſultaverunt populo Domi-
ni potentiſſimi, *nempe* Iſraeli. Apparebit eis 11
Dominus, ut perdat omnes reges terræ: &
adorabunt eum quæque de loco ſuo omnes
inſulæ marium. Vos etiam Æthiopes interfi- 12
ciemini gladio. Et attollet manuum ſuam ſu- 13
per Auſtralem, & perdet Aſſyrium, & Nini-
ven reddet vaſtam & deſolatam ut deſertum:
Ita ut accubent in ea greges & omnia gen- 14
tium animantia; quin etiam picæ & hericii
in domibus ejus pernoctabunt, belluæ rugi-
ent in ea, & gladius in portis ejus; eò quòd
radix ejus denudata ſit. Hæc eſt urbs illa mu- 15
nita quæ tuta reſidebat, & dicebat in corde
ſuo; Ego ſum, & nulla præterea ſimilis eſt
mihi. Quomodo redacta eſt in ruinam & in
cubile ferarum? quicunque ſecus eam tranſi-
erit, obſtupeſcet, & ſibilabit, manu ſuâ mo-
tabit, ac dicet;

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

1 2 * الفصل الثاني * * اجتمعوا وارتبطوا الامة الغير متادبة * من قبل ان تصيروا انتم
مثل زهر ذاهبة * من قبل ان ياتي عليكم يوم غضب الرب * اطلبوا الرب يا جميع متواضعي
3 الارض * اعملوا حكما واطلبوا عدلا * وجاوبوهما * لكي تستروا في يوم زجر الرب * من اجل
4 ان غزة تصير خطفة * وعسقلان تصير للفساد * وازدود تقلع نصف النهار * ويل يا سكان حبل
5 البحر * غرباء الاقريطسيين * قول الرب عليكم يا كنعان ارض الغرباء القبايل * واهلككم من
6 7 المنزل * وتصير اقريطس مرعي للقطعان * ومربضا للخراف * ويصير حبل البحر لبقايا بيت
يهودا * يرعون عليهم في بيوت عسقلان * وعند مغيب الشمس يستريحون من وجه بني يهودا * لان
8 الرب الههم افتقدهم * ورد سبيهم * سمعت تعييرات مواب * وممارقات بني عمون الذين هم
9 عيروا شعبي * وعظموا على حدودي * لاجل هذا حي انا يقول رب القوات اله اسرائيل * ان مواب
تصير مثل سدوم * وعمون مثل عامورا * ودمشق مسترخية مثل عرمة البيدر * وهالكة الي الابد *
10 وبقايا شعبي يخطفونهم * والمتبقون من امتي يرثونهم * هذا لهم بدل شتيمتهم * من اجل انهم
11 عيروا وتعظموا على الرب الضابط الكل * يظهر الرب عليهم * ويستاصل جميع الهة امم الارض *
12 ويسجدون له كل واحد من موضعه جميع جزاير الامم * وانتم ايها الحبوش تصيرون جرحا
13 سيفي * وامد يدي على الجربياء * واهلك الموصلي * واضع نينوي للفساد * عديمة الماء مثل
14 قفر * وترعي في وسطها القطعان * وكل وحوش الارض * والحرباوات والقنافذ في سقوفها يرقدون *
15 والوحوش تصوت في سراعها * الغربان في ابوابها * من اجل ان الارز ارتفاعها * هذه المدينة
المنيعة * الساكنة على الرجاء * القايلة في قلبها انا انا * وليس بعدي احد ايضا * كيف
صارت للفساد * مرعي للوحوش * كل المار بها يصفر ويحرك يديه *

CAP. II.

Congregamini, & colligate gentem 1
ineruditam, Antequàm vos ſiatis ut flos
præteriens; antequàm veniat ſuper vos 2
dies iræ Domini, Quærite Dominum
O omnes humiles terræ: facite judicium, 3
& quærite juſtitiam, iiſque reſpondete;
ut protegamini in die iræ Domini. Nam 4
Gaza erit in prædam Aſcalan erit in cor-
ruptionem, & Azdod ipſo meridie era-
dicabitur. Væ O habitatores oræ mariti- 5
mæ, advenæ Cretenſium. Sermo Domini
contra vos eſt O Chanaan terra alienige-
narum: vos perdam ex habitatione: Fi- 6
étque Creta paſcuum gregibus, & caula
agnis: Et ora maritima reliquiarum 7
domûs Judæ: ſuper his paſcentur in
domibus Aſcalanis, & ſub ſolis occa-
ſum requieſcent à facie filiorum Judæ:
quia Dominus Deus eorum viſitabit eos,
& reſtituet captivitatem eorum. Au- 8
divi probra Moabi, & detractiones filio-
rum Ammon, quibus convitiati ſunt po-
pulum meum, & extulerunt ſe contra
terminos meos. Propterea, Vivo ego di- 9
cit Dominus virtutum Deus Iſraelis, Moab
fiet ſicut Sodoma, & Ammon ſicut Go-
morra, & Damaſcus mollis ut acervus
areæ, & in æternum peritura: & reli-
quiæ populi mei diripient eos, & reſidui
gentis meæ poſſidebunt eos. Hoc erit eis 10
pro contumelia ipſorum, quia convitiati
ſunt & ſuperbiverunt contra Dominum
omnipotentem. Apparebis Dominus ſu- 11
per eos, & eradicabit omnes deos gentium
terræ: & adorabunt eum, quiſque de
loco ſuo, omnes inſulæ gentium. Et vos 12
O Æthiopes eritis gladio meo vulnerati.
Et extendam manum meam ſuper Aqui- 13
lonem, perdámque Aſſyrium, & Nini-
ven ponam in corruptionem, aquâ caren-
tem ſeu deſertum. Et paſcentur in me- 14
dio ejus greges omnéſque terræ beſtiæ, &
lacertæ atque hericii in tectis ejus cuba-
bunt, belluæ vocem edent in oſtiis ejus,
corvi in portis ejus; quia cedrus eſt alti-
tudo ejus. Hæc eſt urbs inacceſſa, ſe- 15
curè habitans, dicens in corde ſuo; Ego,
ego, nec unus eſt adhuc poſt me. Quo-
modo redacta eſt in corruptionem, pa-
ſcuum belluarum? omnis per eam tranſi-
ens ſibilabit, manúſque movebit.

צפניה : ג

CAP. III. ג

audivit Non .columbæ civitati , inquinatæ & fœdatæ Væ
1 הוֹי מֹרְאָה וְנִגְאָלָה הָעִיר הַיּוֹנָה׃ לֹא שָׁמְעָה 2
ad ; fidit non Domino *in* : disciplinam suscepit nec , *voce in*
בְּקוֹל לֹא לָקְחָה מוּסָר בַּיהוָה לֹא בָטָחָה אֶל־
, ejus *interiori* in ejus Principes .appropinquavit non *suum Deum*
אֱלֹהֶיהָ לֹא קָרֵבָה׃ שָׂרֶיהָ בְּקִרְבָּהּ 3
exossarunt non , *vesperæ* lupi , ejus judices ; rugientes leones
אֲרָיוֹת שֹׁאֲגִים שֹׁפְטֶיהָ זְאֵבֵי עֶרֶב לֹא גָרְמוּ
ejus sacerdotes : *prævaricationum* viri , *leves* ejus Prophetæ .mane in
לַבֹּקֶר׃ נְבִיאֶיהָ פֹּחֲזִים אַנְשֵׁי בֹּגְדוֹת כֹּהֲנֶיהָ 4
justus DOMINUS .legem *oppresserunt* , sanctitatem polluerunt
חִלְּלוּ־קֹדֶשׁ חָמְסוּ תּוֹרָה׃ יְהוָה צַדִּיק 5
suum judicium *mane in mane in* ,iniquitatem faciet non , ejus *interiori* in
בְּקִרְבָּהּ לֹא יַעֲשֶׂה עַוְלָה בַּבֹּקֶר בַּבֹּקֶר מִשְׁפָּטוֹ
.pudorem iniquus scit nec , deficit non , lucem in dabit
יִתֵּן לָאוֹר לֹא נֶעְדָּר וְלֹא־יוֹדֵעַ עַוָּל בֹּשֶׁת׃
feci desolare , earum anguli sunt desolati , gentes feci Succidere
הִכְרַתִּי גוֹיִם נָשַׁמּוּ פִּנּוֹתָם הֶחֱרַבְתִּי 6
absque , eorum civitates sunt desolatæ:*transeunte absque* , earum plateas
חוּצוֹתָם מִבְּלִי עוֹבֵר נִצְדּוּ עָרֵיהֶם מִבְּלִי־
suscipies , me timebis profectò , Dixi .*habitatore non à* , *viro*
אִישׁ מֵאֵין יוֹשֵׁב׃ אָמַרְתִּי אַךְ־תִּירְאִי אוֹתִי תִּקְחִי 7
, visitavi quod omne , ejus habitaculũ succidetur non & ,disciplinam
מוּסָר וְלֹא־יִכָּרֵת מְעוֹנָהּ כֹּל אֲשֶׁר־פָּקַדְתִּי
.sua *studia* omnia corruperunt ,surrexerunt mane *certè* : eam super
עָלֶיהָ אָכֵן הִשְׁכִּימוּ הִשְׁחִיתוּ כֹּל עֲלִילוֹתָם׃
: *spolium* ad *me surgere* diem ad,Dominus dixit , me expectate Quapropter
לָכֵן חַכּוּ־לִי נְאֻם־יְהוָה לְיוֹם קוּמִי לְעַד 8
, regna *me congregandum ad* ,gentes *colligendum ad* meum judicium quia
כִּי מִשְׁפָּטִי לֶאֱסֹף גּוֹיִם לְקָבְצִי מַמְלָכוֹת
quia : mei *nasi* iram omnem , meam iram eas super *effundendum ad*
לִשְׁפֹּךְ עֲלֵיהֶם זַעְמִי כֹּל חֲרוֹן אַפִּי כִּי
convertam tunc Quia .terra omnis *comedetur* mei zeli igne in
בְּאֵשׁ קִנְאָתִי תֵּאָכֵל כָּל־הָאָרֶץ׃ כִּי־אָז אֶהְפֹּךְ 9
,Domini *nomine in ipsos omnes invocandum ad* ; *purum* labium *populos* ad
אֶל־עַמִּים שָׂפָה בְרוּרָה לִקְרֹא כֻלָּם בְּשֵׁם יְהוָה
, Hatharai , Chus flumina trans A .uno *humero ei serviendum ad*
לְעָבְדוֹ שְׁכֶם אֶחָד׃ מֵעֵבֶר לְנַהֲרֵי־כוּשׁ עֲתָרַי 10
die In .meum munus deferent , meorum dispersorum filia
בַּת־פּוּצַי יוֹבִלוּן מִנְחָתִי׃ בַּיּוֹם 11
quibus , tuis *studiis* omnibus ab afficieris pudore non , illa
הַהוּא לֹא תֵבוֹשִׁי מִכֹּל עֲלִילֹתַיִךְ אֲשֶׁר
, *tuo interiori* de faciam removere tunc quia : me in es prævaricata
פָּשַׁעַתְּ בִּי כִּי־אָז אָסִיר מִקִּרְבֵּךְ
monte in amplius *extolli* adjicies non & , tui superbia *gaudio gestientes*
עַלִּיזֵי גַּאֲוָתֵךְ וְלֹא־תוֹסִפִי לְגָבְהָה עוֹד בְּהַר
populum *tuo interiori* in faciam relinquere Et .meæ sanctitatis
קָדְשִׁי׃ וְהִשְׁאַרְתִּי בְקִרְבֵּךְ עַם 12
Residuum .Domini nomine in sperabunt & ,*tenuem* & , humilem
עָנִי וָדָל וְחָסוּ בְּשֵׁם יְהוָה׃ שְׁאֵרִית 13
neque ,mendacium *loquentur* nec ,iniquitatem *facient* non Israel
יִשְׂרָאֵל לֹא־יַעֲשׂוּ עַוְלָה וְלֹא־יְדַבְּרוּ כָזָב וְלֹא־
pascentur ipsi quoniam ,*fraudis* lingua eorum ore in invenietur
יִמָּצֵא בְּפִיהֶם לְשׁוֹן תַּרְמִית כִּי־הֵמָּה יִרְעוּ
clamate , Sijon filia *Præconiza* .*exterrens* non & ,accubabunt &
וְרָבְצוּ וְאֵין מַחֲרִיד׃ רָנִּי בַּת־צִיּוֹן הָרִיעוּ 14
.Jerusalaim filia corde toto *in* exulta & ,lætare , Israel
יִשְׂרָאֵל שִׂמְחִי וְעָלְזִי בְּכָל־לֵב בַּת יְרוּשָׁלִָם׃

Versio VULG. LAT.

CAP. III.

1 VÆ provocatrix, & redempta
2 civitas, columba. Non audivit
vocem, & non suscepit disciplinam
: in Domino non est confisa,
ad Deum suum non appropinquavit.
3 Principes ejus in medio
ejus quasi leones rugientes :
judices ejus lupi vesperè, non relinquebant
4 in mané. Prophetæ
ejus vesani, viri infideles : sacerdotes
ejus polluerũt Sanctum, injustè
5 egerunt contra legem. Dominus
justus in medio ejus non
faciet iniquitatem : manè manè
judicium suum dabit in lucem, &
non abscondetur : nescivit autem
6 iniquus confusionem. Disperdidi
Gentes, & dissipati sunt anguli
earum : desertas feci vias eorum,
dum non est qui transeat : desolatæ
sunt civitates eorum, non remanente
viro, neque ullo habitatore.
7 Dixi ; Attamen timebis me,
suscipies disciplinam: & non peribit
habitaculum ejus, propter omnia
in quibus visitavi eam : veruntamen
diluculò surgentes corruperũt
omnes cogitationes suas.
8 Quapropter expecta me, dicit
Dominus, in die resurrectionis
meæ in futurum, quia judicium
meum ut congregem Gentes, &
colligam regna : & effundam super
eos indignationem meam, omnem
iram furoris mei : in igne
enim zeli mei devorabitur omnis
9 terra. Quia tunc reddam populis
labium electum, ut invocent omnes
in nomine Domini, & serviant
10 ei humero uno. Ultra flumina
Æthiopiæ, indè supplices
mei, filii dispersorum meorum deferent
11 munus mihi. In die illa non
confunderis super cunctis adinventionibus
tuis, quibus prævaricata
es in me : quia tunc auferam
de medio tuî magniloquos
superbiæ tuæ, & non adjicies exaltari
ampliùs in monte sancto
12 meo. Et derelinquam in medio
tuî populum pauperem & egenum:
& sperabunt in nomine Domini.
13 Reliquiæ Israel non facient
iniquitatem, nec loquentur mendacium,
& non invenietur in ore
eorum lingua dolosa : quoniam
ipsi pascentur, & accubabunt, &
14 non erit qui exterreat. Lauda, filia
Sion : jubila, Israel : lætare, &
exulta in omni corde, filia Jerusalem.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

[1 *Ὦ ἡ ἐπιφανὴς καὶ ἀπολελυτρωμένη πόλις,
2 ἡ περιστερά. Οὐκ εἰσήκουσε φωνῆς· οὐκ ἐδέξατο
παιδείαν, ἐπὶ τῷ κυρίῳ οὐκ (β) ἐπιποίθει,
καὶ πρὸς τὸν θεὸν αὐτῆς οὐκ ἤγγισεν.
3 Οἱ ἄρχοντες αὐτῆς ἐν αὐτῇ ὡς λέοντες
ὠρυόμενοι, οἱ κριταὶ αὐτῆς ὡς λύκοι τῆς
Ἀραβίας, οὐχ ὑπελίποντο εἰς τὸ πρωΐ. Οἱ
4 προφῆται αὐτῆς πνευματοφόροι, ἄνδρες
καταφρονηταί· (γ) ἱερεῖς αὐτῆς βεβηλοῦσι
5 τὰ ἅγια, καὶ ἀσεβοῦσι νόμον. Ὁ δὲ κύριος
δίκαιος ἐν μέσῳ αὐτῆς, καὶ οὐ μὴ ποιήσῃ
ἄδικον· πρωῒ πρωῒ δώσει (δ) κρίμα αὐτοῦ
εἰς φῶς, καὶ οὐκ ἀπεκρύβη, καὶ οὐκ ἔγνω ἀδικίαν
ἐν ἀπαιτήσει, καὶ οὐκ εἰς νεῖκος ἀδικίαν.
6 Ἐν διαφθορᾷ κατέσπασα ὑπερηφάνους,
ἠφανίσθησαν γωνίαι αὐτῶν· ἐξερημώσω
τὰς ὁδοὺς αὐτῶν τοπαράπαν, τοῦ
μὴ διοδεύειν· ἐξέλιπον αἱ πόλεις αὐτῶν,
(ε) παρὰ τὸ μηδένα ὑπάρχειν,
7 μηδὲ κατοικεῖν. Εἶπα, Πλὴν φοβεῖσθέ
με, καὶ δέξασθε παιδείαν, καὶ οὐ μὴ (ζ)
ἐξολοθρευθῆτε ἐξ ὀφθαλμῶν αὐτῆς πάντα
ὅσα (η) ἐξεδίκησα ἐπ᾽ αὐτήν. ἑτοιμάζου,
ὄρθρισον, (θ) ἔφθαρται πᾶσα ἡ ἐπιφυλλὶς
8 αὐτῶν. Διατοῦτο ὑπόμεινόν με,
λέγει κύριος, εἰς ἡμέραν ἀναστάσεώς μου
εἰς μαρτύριον· (ι) διότι τὸ κρίμα μου εἰς συναγωγὰς
ἐθνῶν, τοῦ εἰσδέξασθαι βασιλεῖς,
τοῦ ἐκχέαι ἐπ᾽ αὐτοὺς πᾶσαν ὀργὴν θυμοῦ
μου· (κ) διότι ἐν πυρὶ ζήλου μου καταναλωθήσεται
9 πᾶσα ἡ γῆ. Ὅτι τότε μεταστρέψω
ἐπὶ λαοὺς γλῶσσαν εἰς (λ) γενεὰν
αὐτῆς, τοῦ ἐπικαλεῖσθαι πάντας τὸ ὄνομα
κυρίου, τοῦ δουλεύειν αὐτῷ ὑπὸ ζυγὸν ἕνα.
10 Ἐκ περάτων ποταμῶν Αἰθιοπίας (μ)
προσδέξομαι ἐν διεσπαρμένοις μου, οἴσουσι
11 θυσίας μοι. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, οὐ μὴ
καταισχυνθῇς ἐκ πάντων τῶν ἐπιτηδευμάτων
σου, ὧν ἠσέβησας εἰς ἐμέ· ὅτι τότε
περιελῶ ἀπὸ σοῦ τὰ φαυλίσματα τῆς ὕβρεώς
σου, καὶ οὐκ ἔτι μὴ προσθῇς, τοῦ μεγαλαυχῆσαι
12 ἐπὶ τὸ ὄρος τὸ ἅγιόν μου. Καὶ (-) ὑπολήψομαι
ἐν σοὶ λαὸν (ν) πραῢν καὶ ταπεινόν, καὶ
εὐλαβηθήσονται ἀπὸ τοῦ ὀνόματος (ξ) κυρίου
13 Οἱ κατάλοιποι τοῦ Ἰσραὴλ, καὶ οὐ ποιήσουσιν
ἀδικίαν, (ο) καὶ οὐ λαλήσουσι μάταια,
καὶ οὐ μὴ εὑρεθῇ (π) ἐν τῷ στόματι αὐτῶν
γλῶσσα δολία· διότι αὐτοὶ νεμήσονται, καὶ
κοιταθήσονται, καὶ οὐκ ἔσται ὁ ἐκφοβῶν αὐτούς.
14 Χαῖρε θύγατερ Σιὼν, κήρυσσε θύγατερ Ἱερουσαλήμ·
εὐφραίνου καὶ κατατέρπου ἐξ ὅλης τῆς
καρδίας σου θύγατερ Ἱερουσαλήμ.

O illustris, & redempta civitas, 1]
columba Non audivit vocem: non
suscepit disciplinam, in Domino 2
non est confisa, & ad Deum
suum non appropinquavit. Principes 3
ejus in ea, veluti rugientes
leones: judices ejus, sicut lupi (b)
Arabiæ, non dimittebant in mane:
Prophetæ ejus (c) portantes spiritum, 4
viri contemptores: sacerdotes
ejus polluunt Sancta, et impiè faciunt
(d) legem: Dominus autem 5
justus in medio ejus, & non
faciet iniquitatem. Manè manè
judicium suum dabit in luce: &
non est absconditus, & nescit
iniquitatem in (e) exactione, nec
in contentione injustitiam. In 6
corruptione detraxi superbos:
dissipati sunt anguli eorum: (f)
desertas faciam vias eorum penitùs,
ut non transeant: defecerunt
civitates eorum, eò quòd
nullus subsisteret, neque habitaret.
Dixi; Veruntamen (g) timete 7
me, & suscipite disciplinam: &
(h) non peribitis de oculis ejus in
omnibus, in quibus ultus sum
super eam. Præparare, consurge
diluculò: (i) dissipata est omnis
frondositas eorum. Propterea expecta 8
me, dicit Dominus, in diem
resurrectionis meæ in testimonium:
Quia judicium meum in congregationes
gentium: ut suscipiam
reges, ut effundam super (k) eos
omnem iram furoris mei. Quia 9
in igne zeli mei consumetur omnis
terra: (l) quia tunc convertam
super populos linguam in
generationem ejus; ut invocent
omnes nomen Domini, ut serviant
ei sub jugo uno. De finibus fluminum 10
Æthiopiæ suscipiam (m)
in dispersis meis: afferent victimas
mihi. In die illa non confunderis 11
ex omnibus adinventionibus
tuis, quibus impiè egisti in
me: quia tunc auferam à te vilipendia
contumeliæ tuæ: & ultrà
non adjicies, ut magnificè glorieris
super montem sanctum meum.
Et relinquam in te populum mansuetum, 12
& humilem: & verebuntur
à (*) nomine Domini, Qui 13
fuerint reliqui de Israel, & non
facient iniquitatem, & non loquentur
vana: & non invenietur
in ore eorum lingua dolosa. Quoniam
ipsi pascentur, & accubabunt:
& non erit, qui exterreat
eos. Gaude, filia Sion; prædica, filia 14
Hierusalẽ: exulta, & delectare de
toto corde tuo, filia Hierusalem.

MS.A.

(β) ἐπεποίθησεν, (γ) οἱ ἱερεῖς (δ) τὸ κρίμα αὐτοῦ, καὶ οὐκ εἰς νεῖκος ἀδικίαν.
(ε) διὰ τὸ (ζ) ἐξολεθρευθῆτε (η) ἐκδίκησα (θ) διέφθαρται (ι) διότι (κ) ὅτι
ἐν πυρὶ τοῦ ζήλου (λ) γενεὰς αὐτῶν, (μ) οἴσουσιν θυσίας (-) ὑπολείψομαι
(ν) πολὺν καὶ ταπεινόν, (ξ) τοῦ κυρίου (ο) οὐδὲ μὴ (π) ἐν στόματι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ג

1 וַי דְמוֹחֲיָא וּמִתְפָּרְקָא קַרְתָּא דְמַסְגְיָא לְאַרְגָזָא : לָא שְׁמָעִית בְּקָל עַבְדוֹהִי נְבִיַיָא וְלָא 2
קַבִּילַת אוּלְפָּן בְּמֵימְרָא דַייָ לָא אִתְרְחִיצַת וּלְפוּלְחַן דֶאֱלָהָא לָא אִתְקְרֵיבַת : רַבְרְבָהָא 3
בְּגַוָהּ כְּאַרְיָוָן נָהֲמִין דַיָינָהָא דֵיבֵי רַמְשָׁא לָא מוֹרִיכִין לְצַפְרָא : נְבִיֵי שִׁקְרָא דִי בְגַוָהּ 4
בְּאֵשִׁין גַבְרִין שַׁקְרִין כַּהֲנַהָא מַפְסִין קוּדְשָׁא חָטְפִין בְּאוֹרַיְתָא : יְיָ זַכָּאָה אֲמַר לְאַשְׁרָאָה 5
שְׁכִנְתֵּיהּ בְּגַוָהּ לֵית קֳדָמוֹהִי לְמֶעְבַּד שְׁקַר הָא כִנְהוֹר צַפְרָא דְאָזֵל וְתַקִּין כֵּן דִינֵיהּ נָפֵק
לְאַפְרָשָׁא לָא מִתְעַכֵּב וְלָא יָדְעִין עֲוָלַיָא בַהֲתָא : שֵׁיצֵיתִי עַמְמַיָא אַצְדִיאָה בִּירָנְיָתְהוֹן 6
אַחֲרֵבִית שׁוּקֵיהוֹן מִבְּלִי עָדֵי צְדִיאָה קִרְוֵיהוֹן מִבְּלִי אֱנָשׁ מִבְּלִי יָתֵיב : אֲמָרִית בְּרַם 7
תִּדְחֲלִין מִן קֳדָמַי תְּקַבְּלוּן אוּלְפָּן וְלָא יִפְסוֹק מְדוֹרֵיהוֹן מֵאַרְעָא בֵּית שְׁכִנְתִּי כָּל טָבְוָן
דַאֲמָרִית לְהוֹן אַיְתֵי לְהוֹן בְּכֵן אַקְדִימוּ חַבִּילוּ כָּל עוֹבָדֵיהוֹן : בְּכֵן סַבָּרוּ לְמֵימְרִי אֲמַר 8
יְיָ לְיוֹם אִתְגְלָיוּתִי לְמֵדַן אֲרֵי דִינִי לְכַנָשָׁא עַמְמַיָא לְקָרָבָא מַלְכְוָתָא לְמִשְׁפַּךְ עֲלֵיהוֹן
חֵימְתִי כָּל תְּקוֹף רוּגְזִי אֲרֵי בְּאֶשַׁת פּוּרְעָנוּתִי יְסוּפוּן כָּל רַשִׁיעֵי אַרְעָא : אֲרֵי בְכֵן אֲשַׁנֵי 9
עַל עַמְמַיָא מַמְלַל חַד בְּחִיר לְצַלָאָה כוּלְהוֹן בִּשְׁמָא דַייָ לְמִפְלַח קֳדָמוֹהִי כְּתַף חָד :
מֵעֵבֶר לְנַהֲרֵי הוֹדוּ בְּרַחֲמִין יְתוּבוּן גָלְוַת עַמִּי דְאִתְגְלִיאָה וִיהוֹן מַיְתָן לְהוֹן הָא 10
כְּקוּרְבָּנִי : בְּעִדָנָא הַהִיא לָא תִבְהֲתִין מִכָּל עוֹבָדַיִךְ בִּישַׁיָא דִי מְרַדְתְּ בְּמֵימְרִי אֲרֵי בְכֵן 11
אַגְלֵי מִגַוִיךְ תַּקִיפֵי תֻּשְׁבַּחְתֵּךְ וְלָא תוֹסְפִין לְאִתְרַבְרָבָא עוֹד בְּטוּרָא דְקוּדְשִׁי : וְאַשְׁאַר 12
בְּגַוִיךְ עַם עִנְוְתָן וּמְקַבֵּל עוּלְבָּן וְיִתְרַחֲצוּן בִּשְׁמָא דַייָ : שְׁאָרָא דְיִשְׂרָאֵל לָא יַעְבְּדוּן 13
שְׁקַר וְלָא יְמַלְלוּן כַּדְבִין וְלָא יִשְׁתְּכַח בְּפוּמְהוֹן לִישָׁן דִנְכְלִין אֲרֵי אִנוּן יִתְפַּרְנְסוּן וְיִשְׁרוֹן
וְלֵית דְמָנִיד : שַׁבַּחִי כְּנִשְׁתָּא דְצִיוֹן וּבוּעוּ יִשְׂרָאֵל חֲדִי וּבוּעוּ בְּכָל לִבָּא כְּנִשְׁתָּא 14
דִירוּשְׁלֶם :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAP. III.

VÆ festinanti & redemptæ civitati quæ multiplicat iræ provocationem. 1
Non audiit vocem servorum ejus prophetarum, neque recepit doctrinam, 2
in verbo Dñi non confisa est, & ad cultum Dei sui non accessit. Principes 3
ejus in medio ipsius sunt sicut leones rugientes, judices ejus lupi vespertini
non prorogantes in tempus matutinum. Pseudoprophetæ qui sunt in medio 4
ejus malè agunt, homines mendaces, Sacerdotes ejus contaminant sanctitatem,
iniquè agentes in Legem. Dñs purus dixit se collocaturum majestatem 5
suam in medio ipsius, coram eo non fit mendacium : ecce sicut lux auroræ
quæ progreditur ac dirigitur; sic judiciũ ejus prodit ut discernat : non tardat,
neq; norunt impii obi confusionem. Excidi gentes, vastata sunt palatia earum, 6
desolavi plateas earum ut non sit qui transeat : vastatæ sunt urbes earum ut
nemo sit, ut nullus sit incola. Dixi, Enimverò timeas à conspectu meo, recipias 7
doctrinam, neq; excidet habitationes eorum à terra domus majestatis
meæ : omnia bona quæ dixi eis adducam eis : idcircò manè prævenerunt,
destruxerunt omnia opera sua. Quapropter sperate in verbo meo, ait Dñs, 8
quo die revelabor ad judicandum; quoniam judicium meum [*erit*] ad congregandum
gentes, ad propè sistendum regna, ad effundendum in eas furorem
meum, omnem vehementiam iræ meæ, etenim igne ultionis meæ consumentur
omnes impii terræ. Siquidem ita convertam in omnes gentes locutionem 9
unam electam, ut precentur omnes in nomine Dñi, ut serviant coram
eo humero uno. Ab ulteriore ripa fluviorum Indiæ cum miserationibus 10
revertetur transmigratio populi mei quæ in exilium abducta est, & afferẽt sibi
ecce quasi *oblationẽ meam*. In illo tẽpore non pudefies ex omnib⁹ operib⁹ tuis 11
malis quib⁹ rebellâsti in Verbũ meũ, quoniã sic patefaciam è medio tui fortes
gloriæ tuæ, ut non addas ultrà ad tete magnificandũ in monte sanctitatis meæ.
Et relinquã in medio tui populũ mansuetũ & excipientem afflictionẽ, fiduciâmq; 12
suã collocabũt in nomine Dñi. Reliquiæ Israel non faciẽt falsitatẽ, neq; 13
loquẽtur mendacia, neq; invenietur in ore ipsorũ lingua dolosa: quoniam ipsi
pascentur & habitabunt, nec erit qui terreat [*eos*.] Hymnos cane congregatio 14
Sion, & exultate Israel: gaude & lætare in toto corde congregatio Jerusalẽ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܓ *

1 * ܘܝ ܡܕܝܢܬܐ ܡܫܒܚܬܐ ܘܦܪܝܩܬܐ: ܡܕܝܢܬܗ ܕܝܘܢܢ. * ܕܠܐ ܫܡܥܬ ܒܩܠܐ. ܘܠܐ ܩܒܠܬ
2 ܡܪܕܘܬܐ. ܘܒܡܪܝܐ ܠܐ ܬܟܠܬ. ܘܠܐܠܗܗ ܠܐ ܩܪܒܬ. * ܪܘܪܒܢܝܗ ܒܓܘܗ. ܐܝܟ ܐܪܝܘܬܐ
3 ܢܗܡܝܢ. ܘܕܝܢܝܗ. ܐܝܟ ܕܐܒܐ ܕܪܡܫܐ. ܘܠܐ ܡܟܬܪܝܢ ܠܨܦܪܐ. * ܢܒܝܝܗ. ܦܚܙܝܢ. ܘܓܒܪܐ
4 ܥܘܠܐ. ܟܗܢܝܗ ܛܡܐܘ ܡܩܕܫܐ. ܘܛܠܡܘ ܢܡܘܣܐ. * ܘܡܪܝܐ ܙܕܝܩܐ ܒܓܘܗ. ܘܠܐ ܥܒܕ
5 ܥܘܠܐ. ܒܨܦܪܐ ܕܝܢܘܗܝ. ܝܗܒ ܠܢܘܗܪܐ. ܘܠܐ ܡܬܥܟܒ. ܥܘܠܐ ܠܐ ܝܕܥ ܒܗܬܬܐ.
6 * ܐܘܒܕܬ ܥܡܡܐ. ܘܐܬܚܒܠܬ ܡܣܟܢܬܐ. ܐܚܪܒܬ ܫܘܩܝܗܘܢ. ܡܢ ܕܠܐ ܥܒܪܐ. ܨܕܝ
7 ܡܕܝܢܬܗܘܢ. ܡܢ ܕܠܐ ܐܢܫ. ܘܡܢ ܕܠܐ ܝܬܒ. * ܐܡܪܬ ܕܬܕܚܠܘܢ ܡܢܝ. ܘܬܩܒܠܘܢ
ܡܪܕܘܬܐ. ܘܠܐ ܢܐܒܕ ܡܢ ܥܝܢܝܟܝ ܟܠ ܡܕܡ ܕܦܩܕܬ ܠܟܝ. ܐܬܛܝܒܘ ܘܩܘܡܘ ܘܚܒܠܘ
8 ܥܒܕܝܗܘܢ ܕܒܝܫܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܣܟܘ ܠܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܠܝܘܡܐ ܕܩܐܡ ܐܢܐ ܠܣܗܕܘܬܐ. ܡܛܠ
ܕܩܪܒ ܕܝܢܝ ܠܡܟܢܫܘ ܥܡܡܐ. ܘܠܡܩܪܒܘ ܡܠܟܘܬܐ. ܠܡܫܦܟ ܥܠܝܗܘܢ ܪܘܓܙܝ.
9 ܘܟܠܗ ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܝ. ܡܛܠ ܕܒܢܘܪܐ ܕܛܢܢܝ ܬܬܐܟܠ ܟܠܗ ܐܪܥܐ. * ܘܗܝܕܝܢ ܐܗܦܘܟ
ܠܥܡܡܐ ܣܦܬܐ ܓܒܝܬܐ. ܕܢܩܪܘܢ ܟܠܗܘܢ ܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܢܦܠܚܘܢܝܗܝ ܒܢܝܪܐ
10 11 ܚܕ. * ܡܢ ܥܒܪ ܢܗܪܘܬܐ ܕܟܘܫ. ܢܝܬܘܢ ܠܝ ܕܒܚܐ. ܒܝܘܡܐ ܗܘ. * ܠܐ ܬܒܗܬܝܢ ܡܢ
ܥܒܕܝܟܝ ܕܐܣܟܠܬܝ ܒܝ. ܗܝܕܝܢ ܐܥܒܪ ܡܢܟܝ ܫܘܒܗܪܐ ܕܫܘܝܚܘܬܟܝ. ܘܠܐ
12 ܬܘܣܦܝܢ ܬܘܒ ܠܡܫܬܥܠܝܘ ܒܛܘܪܐ ܕܩܘܕܫܝ. * ܘܐܫܪܐ ܒܓܘܟܝ ܥܡܐ. ܡܣܟܢܐ
13 ܘܡܟܝܟܐ. ܘܢܣܒܪܘܢ ܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܐܝܠܝܢ ܕܐܫܬܚܪܘ ܡܢ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܠܐ
ܢܥܒܕܘܢ ܥܘܠܐ. ܘܠܐ ܢܡܠܠܘܢ ܕܓܠܘܬܐ. ܘܠܐ ܢܫܬܟܚ ܒܦܘܡܗܘܢ ܠܫܢܐ ܕܢܟܠܐ. ܡܛܠ
14 ܕܗܢܘܢ ܢܪܥܘܢ. ܘܢܪܒܥܘܢ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗܘܢ ܡܙܝܥܢܐ. * ܫܒܚܝ. ܒܪܬ ܨܗܝܘܢ.
ܘܝܒܒܝ. ܐܝܣܪܝܠ: ܚܕܝ ܘܐܬܒܣܡܝ ܒܟܠܗ ܠܒܟܝ. ܒܪܬ ܐܘܪܫܠܡ:

CAP. III.

EHeu urbs celebris & liberata, urbs Jonæ; 1
Quæ nec voci auſcultavit, neque diſciplinam 2
admiſit, in Domino minimè ſperavit, ad Deum
ſuum non acceſſit. Principes ejus in medio 3
ipſius ut leones rugiunt; judices ejus ſimiles
ſunt lupis veſpertinis, & non expectant ad
matutinum uſque: Prophetæ ejus libidinoſi 4
ſunt & homines impii; ſacerdotes ejus polluunt
Sanctuariū & vim inferunt legi. Domi- 5
nus autem juſtus eſt in medio ejus, & non facit
iniquitatem; ſingulis matutinis judicia ſua
exercet, palàm reddit, & non cunctatur: at
impius neſcit erubeſcere. Perdidi gentes, & 6
everſa eſt miſera; deſtruxi vicos eorum penuriâ
tranſeuntium, deſolatæ ſunt urbes eorum
ob penuriam hominum & penuriam incolarum.
Dixeram, ut me timeretis, & à me di- 7
ſciplinam acciperetis, & nihil deperiret ab
oculis tuis, eorum quæ præcepi tibi. Parate
vos, adeſte, & deſtruite omnia opera eorum.
Quapropter expectate me, dicit Dominus; 8
uſque ad diem quâ ſurgam ad teſtimonium:
appropinquavit enim judicium meum ad congregandum
populos & ſiſtendum regna, quatenus
effundam ſuper eos excandeſcentiam
meam totúmque æſtum indignationis meæ:
nam igne zeli mei conſumenda eſt tota terra.
Tunc reſtituam gentibus labium electum, ut 9
invocent omnes nomē Domini, & colant eum
pari jugo. Ex ultrafluvialibus Æthiopiæ *pa-* 10
rtibus afferent mihi ſacrificia in die illo.
Annon erubeſceres ob tot facinora tua quæ 11
contra me ſceleratè geſſiſti? Tunc amovebo
à te magnitudinem arrogantiæ tuæ, & non
perges ultrà inſultare monti ſanctitatis meæ:
Et relinquam in te populum pauperem & hu- 12
milem, qui ſperabunt in nomine Domini.
Et qui reſidui manſerint ex Iſraelitis, non fa- 13
cient iniquitatem, neque loquentur mendacium,
neque reperietur in ore ipſorum lingua
doloſa: quoniam ipſi paſcentur & cubabunt,
nemóque erit illis infenſus, Cane filia Sionis, 14
jubila Iſrael, gaude & geſti ex toto animo
tuo, filia Jeruſalem.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الثالث *

1 * واه الظاهرة والمنجاة المدينة الحمامة * لم تسمع صوتا * ولم تقبل ادبا * ولم تتوكل على الرب *
2 ولم تقرب الي الهها * رؤساؤها فيها مثل اسد يزارون * قضاتها مثل ذياب ارابيا * لا يبقون الي الغداة *
3 * انبياؤها لابسوا روحا رجال متغافلون * كهنتها ينجسون الاقداس * وينافقون على الناموس * والرب
4 عدل في وسطها * ولم يصنع ظلما * بالغداة بالغداة يعطي حكمه * وليس ظلما للظفر في الفساد *
5 * اخرب المتكبرين * فنيت زواياهم * ساخرب مخارجهم ان لا يسلكوا بالكلية * فنيت مدنهم *
6 من اجل انه لم يبق ولا واحد * ولا من يسكن * قلت ان تخافوني * وتقبلوا الادب * ولا
7 تستاصلون من عينيها بكلما انتقمت به فيها * استعد بكر * وفسدت كل بعارهم *
* الاصحاح الثاني والعشرون * وهو الثاني من النبوة * من اجل هذا انتظرني يقول 8
الرب ليوم قيامتي للشهادة * من اجل ان حكمي في مجامع الامم ليقبلوا ملوكا * لافيض
9 عليهم كل رجز غضبي * من اجل ان بنار غيرتي توكل الارض * لاني حينئذ ارد على الشعوب
10 لسانا الي جيلهم ليدعوا الكل باسم الرب ليتعبدوا له تحت نير واحد * من اقاصي انهار الحبشة
11 اقبلوا الذين يتضرعون الي مع المتبددين يقدمون لي ذبيحة * في ذلك اليوم لا تخزين من
جميع اعمالك التي نافقت بها علي * لاني حينئذ انزع منك عظمتك * ولا تعودين ايضا ان تتعظمي
12 13 على جبل قدسي * وابقي فيك شعبا وديعا متواضعا * ويرتاع من اسم الرب بقايا اسرائيل * ولا
يصنعون ظلما ولا يتكلمون بالاباطيل * ولا يوجد في فمهم لسان غاش * من اجل انهم يرعون
14 ويضطجعون * ولا يكون من يروعهم * افرحي يا ابنة صهيون جدا * نادي يا ابنة اورسليم *
سري واطربي من كل قلبك يا ابنة اورسليم *

CAP. III.

HEu, illuſtris & redempta, urbs, co- 1
lumba, Non audivit vocem, neque ſuſ- 2
cepit eruditionem, neque confiſa eſt in Do-
mino, neque acceſſit ad Deum ſuum.
Principes ejus in ipſa ceu leones rugiunt; 3
judices ejus ceu lupi Arabiæ, nihil relin-
quebant ad matutinum uſque: Prophe- 4
tæ ejus induti ſpiritu, viri negligentes: ſa-
cerdotes ejus prophanant Sancta, & impiè
agunt in legem. Dominus autem juſtiſſi- 5
mus eſt in medio ejus, nec ullam agit ini-
quitatem: manè manè prodit judicium
ſuum, non autem injuſtitiam, & ad vi-
ctoriam aſſequendam *per corruptionem.*
Detraxi ſuperbos, perierunt anguli eorum, 6
deſtruam effugia eorum, ut nullatenus in-
cedant: perierunt urbes eorum, quia ne u-
nus quidem remanſit, neque qui habitaret.
Dixi ut me timeretis, & eruditionem ac- 7
ciperetis; ut non eradicaremini ex oculis
ejus per tot ultiones quas exercui in ea.
Paratus eſto, ſurge diluculò: corrupta eſt
tota racematio eorum.

Textus vigeſimus ſecundus, hujus autem Prophetiæ ſecundus.

Propterea expecta me, dicit Dominus, uſ- 8
que ad diem quâ ſurgam ad teſtimonium:
nam judicium meum erit in cœtibus gen-
tium, ut ſuſcipiant reges, ut effundam
ſuper eos totam iram furoris mei: quoni-
am igne zeli mei conſumetur terra. Tunc 9
enim reſtituam populis linguam in genera-
tionem eorum, ut invocent omnes nomen
Domini, ut ſe ſubdant ei ſub eodem jugo.
Ab extremis Æthiopiæ fluminibus veni- 10
ent qui me deprecabuntur unà cum di-
ſperſis, offerent mihi ſacrificium. Eo die 11
non pudebit te omnium operum tuorum
quibus contra me impiè egiſti; quia tunc
auferam à te ſuperbiam tuam, & non
perges ampliùs ſuperbire in montem ſan-
ctitatis meæ: Et relinquam in te populum 12
mitem humilem, & verebuntur nomen
Domini reliquiæ Iſraelis, Et non faci- 13
ent iniquitatem, neque loquentur vanita-
tes, neque reperietur in ore ipſorum lingua
fraudulenta: paſcentur enim & cuba-
bunt: nec erit qui terreat eos. Gaude O 14
filia Sionis vehementer, clama O filia Je-
roſolymæ, exulta & geſti ex toto corde
tuo, O filia Jeroſolymæ.

חגי : א

: tuum inimicum cominavit , tua judicia Dominus fecit Removere
15 הֵסִיר יְהוָה מִשְׁפָּטַיִךְ פִּנָּה אֹיְבֵךְ
.ultrà malum videbis non ,tuo interiori in Dominus Iſrael rex
מֶלֶךְ יִשְׂרָאֵל ׀ יְהוָה בְּקִרְבֵּךְ לֹא־תִרְאִי רָע עוֹד׃
ne ,Sijon : timeas ne , Jeruſalaim dicetur , illa die In
16 בַּיּוֹם הַהוּא יֵאָמֵר לִירוּשָׁלַםִ אַל־תִּירָאִי צִיּוֹן אַל־
potens tuo interiori in tuus Deus Dominus .tuæ manus debilitentur
17 יִרְפּוּ יָדָיִךְ׃ יְהוָה אֱלֹהַיִךְ בְּקִרְבֵּךְ גִּבּוֹר
,ſuâ dilectionē propter ſilebit , lætitia in te ſuper gaudebit ſervabit
יוֹשִׁיעַ יָשִׂישׂ עָלַיִךְ בְּשִׂמְחָה יַחֲרִישׁ בְּאַהֲבָתוֹ
:congregavi tempore à affectos Mæſtitia.præconio cum te ſuper faciet exultare
18 יָגִיל עָלַיִךְ בְּרִנָּה׃ נוּגֵי מִמּוֹעֵד אָסַפְתִּי
conficiens ego Ecce .opprobrii eam ſuper onus , fuerunt te ex
19 מִמֵּךְ הָיוּ מַשְׂאֵת עָלֶיהָ חֶרְפָּה׃ הִנְנִי עֹשֶׂה
, claudicantem faciam ſervare & ,illo tempore in te affligentes omnes
אֶת־כָּל־מְעַנַּיִךְ בָּעֵת הַהִיא וְהוֹשַׁעְתִּי אֶת־הַצֹּלֵעָה
, nomen in & , laudem in eos ponam & , congregabo expulſam &
וְהַנִּדָּחָה אֲקַבֵּץ וְשַׂמְתִּים לִתְהִלָּה וּלְשֵׁם
, vos adducam illo tempore In .eorum pudoris terra omni in
20 בְּכָל־הָאָרֶץ בָּשְׁתָּם׃ בָּעֵת הַהִיא אָבִיא אֶתְכֶם
,nomen in vos dabo nam : vos me congregandi tempore in &
וּבָעֵת קַבְּצִי אֶתְכֶם כִּי־אֶתֵּן אֶתְכֶם לְשֵׁם
me convertendo in , terræ populis omnibus in laudem in &
וְלִתְהִלָּה בְּכֹל עַמֵּי הָאָרֶץ בְּשׁוּבִי אֶת־
.Dominus dixit , veſtris oculis in veſtras captivitates
שְׁבוּתֵיכֶם לְעֵינֵיכֶם אָמַר יְהוָה׃

Verſio VULG. LAT.

15 Abſtulit Domin' judicium tuum, avertit inimicos tuos: rex Iſrael Dominus in medio tuî, non timebis malum ultrá. 16 In die illa dicetur Jeruſalem; Noli timere: Sion, 17 non diſſolvantur manus tuæ. Dominus Deus tuus in medio tuî fortis, ipſe ſalvabit: gaudebit ſuper te in lætitia, ſilebit in dilectione ſua, exultabit ſuper te in laude. 18 Nugas, qui à lege receſſerant, congregabo, quia ex te erant: ut non ultrà habeas ſuper eis opprobrium. 19 Ecce ego interficiam omnes, qui afflixerunt te in tempore illo: & ſalvabo claudicantem: & eam, quæ ejecta fuerat, congregabo: & ponam eos in laudem, & in nomen, in omni terra confuſionis 20 eorum: In tempore illo, quo adducam vos, & in tempore, quo congregabo vos; dabo enim vos in nomen, & in laudem omnibus populis terræ, cùm convertero captivitatem veſtram coram oculis veſtris, dicit Dominus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

15 Περιεῖλε κύριος τὰ ἀδικήματά σου, λελύτρωταί σε ἐκ χειρὸς ἐχθρῶν σου. (ρ) βασιλεύσει κύριος ἐν μέσῳ σου, οὐκ ὄψῃ κακὰ οὐκέτι. 16 Ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ ἐρεῖ κύριος τῇ Ἱερουσαλήμ, Θάρσει Σιών, μὴ παρείσθωσαν αἱ χεῖρές σου. 17 Κύριος ὁ θεός σου ἐν σοί, (σ) ὁ δυνατὸς σώσει σε, ἐπάξει ἐπὶ σὲ εὐφροσύνην, καὶ καινιεῖ σε ἐν τῇ ἀγαπήσει αὐτοῦ· καὶ εὐφρανθήσεται ἐπὶ (τ) σὲ ἐν τέρψει ὡς ἐν ἡμέρᾳ ἑορτῆς. 18 Καὶ συνάξω τοὺς συντετριμμένους σου. οὐαί, τίς ἔλαβεν (υ) ἐπ' αὐτὴν ὀνειδισμόν; 19 Ἰδοὺ ἐγὼ ποιῶ ἐν σοὶ (φ) ἕνεκέν σου ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, λέγει κύριος, καὶ σώσω τὴν ἐκπεπιεσμένην, καὶ τὴν ἀπωσμένην εἰσδέξομαι, καὶ θήσομαι αὐτοὺς εἰς καύχημα, καὶ ὀνομαστοὺς ἐν πάσῃ τῇ γῇ. καὶ καταισχυνθήσονται 20 Ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, ὅταν καλῶς ὑμῖν ποιήσω, καὶ ἐν τῷ καιρῷ, ὅταν (χ) εἰσδέξομαι ὑμᾶς· διότι δώσω ὑμᾶς ὀνομαστούς, καὶ εἰς καύχημα ἐν πᾶσι τοῖς λαοῖς τῆς γῆς, ἐν τῷ ἐπιστρέφειν με τὴν αἰχμαλωσίαν ὑμῶν ἐνώπιον ὑμῶν, λέγει κύριος.

15 *Abſtulit Domin' iniquitates tuas, redemit te de manu inimicorum tuorum: rex Iſrael Dominus in medio tuî: non videbis mala ultrà.* 16 *In tempore illo dicet Dominus Hieruſalem, Confide, Sion: non diſſolvantur manus tuæ:* 17 *Domin' Deus tuus in te: Fortis ſalvabit te: adducet ſuper te lætitiam, & innovabit te in charitate ſua, et lætabitur in te in delectatione, quaſi in die ſolenni.* 18 *Et congregabo confractos tuos. Væ, qui accepit ſuper eam opprobrium.* 19 *Ecce ego facio in te propter te in tempore illo, (n) dicit Dominus: et ſalvabo expreſſam: et repulſam ſuſcipiam: et ponam eos in gloriam, et nominatos in omni terra. Et (o) confundentur* 20 *In tempore illo; quando benè vobis fecero, & in tempore, cũ ſuſcepero vos. Quia dabo vos nominatos, & in gloriam in cunctis populis terræ; quando convertero captivitatem veſtram coram vobis, dicit Dominus.*

ΣΟΦΟΝΙΑΣ Θ'.

MS.A. (ρ) βασιλεύσει ὁ κύριος ἐμ μέσῳ σου, καὶ οὐκ (σ) δυνατὸς (τ) σοι (υ) ὀνειδισμὸν ἐπ' αὐτήν; (φ) ἕνεκα (χ) εἰσδέχομαι ΣΟΦΟΝΙΑΣ Θ'.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

15 אַגְלִי יְיָ דַּיָּנֵי שִׁקְרָא מִגַּוִּיךְ פַּלִּי בַּעֲלֵי דְבָבִיךְ מַלְכֵּיהּ דְּיִשְׂרָאֵל יְיָ אֲמַר לְאַשְׁרָאָה שְׁכִנְתֵּיהּ
16 בְּגַוִּיךְ לָא תִדְחֲלִין מִן קֳדָם בִּישָׁא עוֹד׃ בְּעִדָּנָא הַהִיא יִתְאֲמַר לִירוּשְׁלֶם לָא תִדְחֲלִין
17 צִיּוֹן לָא יִתְרַשְׁלָן יְדָךְ׃ יְיָ אֱלָהָךְ אֲמַר לְאַשְׁרָאָה שְׁכִנְתֵּיהּ בְּגַוִּיךְ גִּבַּר פָּרִיק יֶחְדֵי עֲלָךְ
18 בְּחֶדְוָא יִכְבּוֹשׁ עַל חוֹבָךְ בְּרַחֲמָתֵיהּ יְדוּץ עֲלָךְ בְּדִיץ׃ דִּי הֲווֹ מְעַכְּבִין בִּיךְ זִמְנֵי מוֹעֲדָךְ
19 אַרְחֵיקִית מִנִּיךְ וַי עֲלֵיהוֹן עַל דַּהֲווֹ נָטְלִין זֵינֵיהוֹן לְקִבְלִיךְ וּמְחַסְּדִין לִיךְ׃ הָא אֲנָא
עָבֵיד גְּמִירָא עִם כָּל מְשַׁעְבְּדַיִךְ בְּעִדָּנָא הַהִיא וְאֶפְרוֹק יַת מְטַלְטְלַיָּא וּמְבַדְּרַיָּא אֲקָרֵב
20 וַאֲשַׁוֵּינוּן לְתוּשְׁבְּחָא וּלְשׁוּם בְּכָל אַרְעָא בְּהִתְּתְהוֹן׃ בְּעִדָּנָא הַהִיא אֲכַנֵּישׁ יַתְכוֹן
וּבְעִדָּנָא הַהִיא אֲקָרֵב גָּלוּתְכוֹן אֲרֵי אֶתֵּן יַתְכוֹן לְשׁוּם וּלְתוּשְׁבְּחָא בְּכָל עַמְמֵי אַרְעָא
כַּד אֲתִיב יַת גָּלוּתְכוֹן לְעֵינֵיכוֹן אֲמַר יְיָ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

15 Manifeſtavit Dñs judices falſos è medio tui, extirpavit inimicos tuos rex Iſrael: Dñs dixit ſe collocaturum majeſtatem ſuam in medio tui, non expaveſces à conſpectu mali amplius. 16 In illo tempore dicetur ipſi Jeruſalem: Ne timeas Sion, ne remittantur manus tuæ. 17 Dñs Deus tuus dixit ſe collocaturum majeſtatem ſuam intra te: fortis redemptor lætabitur ſuper te, cum gaudio ſubjiciet ſcelus tuum cum miſericordia ſua, ſuper te exultabit exultatione. 18 Qui remorati ſunt in te tempora ſolennitatis tuæ, procul expuli à te: væ illis quoniam portaverunt arma ſua contra te, & opprobriis te affecerunt. 19 Ecce ego faciam exterminationem cum omnibus qui te ſubjecerunt in illo tempore; & redimam extorres, & diſperſos accerſam; & collocabo eos in laudem & nomen in univerſa terra confuſionis ipſorum. 20 In illo tempore congregabo vos, & in illo tempore poſtliminio reſtituam exules veſtros, quoniam ponam vos in nomen & in gloriam inter omnes gentes terræ, quum reduxero exules veſtros in oculis veſtris, dixit Dominus.

ספר חגי : א

CAP. I. א

die in ,ſexto menſe in ,regis Dariaves ſecundo anno In
1 בִּשְׁנַת שְׁתַּיִם לְדָרְיָוֶשׁ הַמֶּלֶךְ בַּחֹדֶשׁ הַשִּׁשִּׁי בְּיוֹם
prophetæ Chagghai manu in Domini verbum fuit ,menſis una
אֶחָד לַחֹדֶשׁ הָיָה דְבַר־יְהוָה בְּיַד־חַגַּי הַנָּבִיא
ad & ,Jehudah ducem Sealthiel filium Zerubabel ad
אֶל־זְרֻבָּבֶל בֶּן־שְׁאַלְתִּיאֵל פַּחַת יְהוּדָה וְאֶל־
Sic :dicendum ad ,magnum ſacerdotem Jehoſadac filium Jehoſuah
2 יְהוֹשֻׁעַ בֶּן־יְהוֹצָדָק הַכֹּהֵן הַגָּדוֹל לֵאמֹר׃ כֹּה
:dixerunt iſte Populus :dicendo ,exercituum Dominus dixit
אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת לֵאמֹר הָעָם הַזֶּה אָמְרוּ
fuit Et .ædificandæ Domini domus tempus ,venire tempus Non
3 לֹא עֶת־בֹּא עֶת־בֵּית יְהוָה לְהִבָּנוֹת׃ וַיְהִי
tempus Nunquid :dicendum ad ,prophetæ Chagghai manu in Domini verbum
4 דְּבַר־יְהוָה בְּיַד־חַגַּי הַנָּבִיא לֵאמֹר׃ הַעֵת
iſta domus & ,laqueatis veſtris domibus in habitare vos ,vobis
לָכֶם אַתֶּם לָשֶׁבֶת בְּבָתֵּיכֶם סְפוּנִים וְהַבַּיִת הַזֶּה
Ponite :exercituum Dominus dixit ſic nunc Et ?deſerta
5 חָרֵב׃ וְעַתָּה כֹּה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת שִׂימוּ
:parum inferre & ,multum Seminâſtis .veſtras vias ſuper veſtrum cor
6 לְבַבְכֶם עַל־דַּרְכֵיכֶם׃ זְרַעְתֶּם הַרְבֵּה וְהָבֵא מְעָט
,induere :inebriandum ad non & ,bibere :ſaturandum ad non & ,comedere
אָכוֹל וְאֵין־לְשָׂבְעָה שָׁתוֹ וְאֵין־לְשָׁכְרָה לָבוֹשׁ
ſacculo in ſe locans mercede ,ſe elocans mercede & :ſibi calefiendum ad non &
וְאֵין־לְחֹם לוֹ וְהַמִּשְׂתַּכֵּר מִשְׂתַּכֵּר אֶל־צְרוֹר
.pertuſo
נָקוּב׃

Verſio VULG. LAT.

PROPHETIA
AGGÆI.
CAP. I.

1 IN anno ſecundo Darii regis, in menſe ſexto, in die una menſis, factum eſt verbum Domini in manu Aggæi prophetæ, ad Zorobabel filium Salathiel, ducem Juda, & ad Jeſum, filium Joſedec, ſacerdo- 2 tem magnum, dicens; Hæc ait Dominus exercituum, dicens; Populus iſte dicit; Nondum venit tempus domûs Domini ædifican- 3 dæ. Et factum eſt verbum Domini in manu Aggæi prophetæ, di- 4 cens; Numquid tempus vobis eſt ut habitetis in domibus laqueatis, 5 & domus iſta deſerta? Et nunc hæc dicit Dominus exercituum; Ponite corda veſtra ſuper vias ve- 6 ſtras. Seminâſtis multum, & intuliſtis parum: comediſtis, & non eſtis ſatiati: bibiſtis, & non eſtis inebriati: operuiſtis vos, & non eſtis calefacti: & qui mercedes congregavit, miſit eas in ſacculum pertuſum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

ἈΓΓΑΙΟΣ Ι'.

ΚΕΦ. α'.

1 ἘΝ τῷ δευτέρῳ ἔτει ἐπὶ Δαρείου τοῦ βασιλέως, ἐν τῷ μηνὶ τῷ ἕκτῳ, μιᾷ τοῦ μηνός, ἐγένετο λόγος κυρίου ἐν χειρὶ Ἀγγαίου τοῦ προφήτου, λέγων, Εἰπὸν (α) πρὸς Ζοροβάβελ τὸν τοῦ Σαλαθιὴλ (β) ἐκ φυλῆς Ἰούδα, καὶ πρὸς Ἰησοῦν τὸν τοῦ Ἰωσεδὲκ τὸν ἱερέα τὸν 2 μέγαν, λέγων, Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, λέγων, Ὁ λαὸς οὗτος λέγουσιν, (γ) Οὐχ ἥκει ὁ καιρὸς τοῦ οἰκοδομῆσαι τὸν 3 οἶκον κυρίου. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου ἐν χειρὶ Ἀγγαίου τοῦ προφήτου, λέγων, 4 Εἰ καιρὸς (δ) μὲν ὑμῖν ἐστι τοῦ οἰκεῖν ἐν οἴκοις (ε) ὑμῶν κοιλοστάθμοις, ὁ δὲ 5 οἶκος (ζ) ἡμῶν ἐξηρήμωται; Καὶ νῦν τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Τάξατε δὴ (¨) καρδίας ὑμῶν εἰς τὰς ὁδοὺς ὑμῶν. (η) 6 Ἐσπείρατε πολλὰ καὶ εἰσηνέγκατε ὀλίγα, ἐφάγετε καὶ οὐκ εἰς πλησμονήν, ἐπίετε καὶ οὐκ εἰς μέθην, περιεβάλεσθε καὶ οὐκ ἐθερμάνθητε ἐν αὐτοῖς, καὶ ὁ τοὺς μισθοὺς συνάγων, συνήγαγεν εἰς δεσμὸν τετρυπημένον.

AGGÆUS.

CAP. I.

1 *IN anno ſecundo Darii regis in menſe ſexto, unâ menſis, factum eſt verbum Domini in (a) manu Aggæi prophetæ, dicens; Dic ad Zorobabel filium Salathiel de (b) tribu Juda, & ad Jeſum filium Joſedec ſacerdotem magnum, dicens;* 2 *Hæc dicit Dominus omnipotens, dicens; Populus iſte dicunt; Non venit tempus ædificandi domum Domini.* 3 *Et factum eſt verbum Domini in manu Aggæi prophetæ, dicens;* 4 *Si tempus quidem vobis eſt habitandi in domibus veſtris (c) concavis, domus autem noſtra deſerta eſt?* 5 *Et nunc hæc dicit Dominus omnipotens; Ponite nunc corda veſtra ad vias veſtras.* 6 *Seminâſtis multa, & intuliſtis pauca: comediſtis, & non ad ſaturitatem: bibiſtis, & non ad ebrietatem: operuiſtis vos, et non eſtis calefacti in ipſis: & qui mercedes congregabat, congregavit in ſacculum pertuſum.*

MS.A. ἈΓΓΑΙΟΣ Ι'. (α) δὴ πρὸς (β) τὸν ἐκ (γ) Οὐκ ἥκει (δ) ὑμῖν μέν (ε) κοιλοστάθμοις, (ζ) οὗτος ἐξηρήμωται; (¨) τὰς καρδίας (η) διότι τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Ἐσπείρατε

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

1 בִּשְׁנַת תַּרְתֵּין לְדָרְיָוֶשׁ מַלְכָּא בְּיַרְחָא שְׁתִיתָאָה בְּיוֹמָא חַד לְיַרְחָא הֲוָה פִּתְגָם
נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ בְּיַד חַגַּי נְבִיָּא לְוַת זְרוּבָּבֶל בַּר שְׁאַלְתִּיאֵל רַבָּא דְבֵית יְהוּדָה וּלְוַת
2 יְהוֹשֻׁעַ בַּר יְהוֹצָדָק כַּהֲנָא רַבָּא לְמֵימָר׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת לְמֵימַר עַמָּא הָדֵין אָמְרִין
3 עַד כְּעַן לָא מְטָא עִדַּן בֵּית מַקְדְּשָׁא דַּיְיָ לְאִתְבְּנָאָה׃ וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ בְּיַד
4 חַגַּי נְבִיָּא לְמֵימָר׃ הַכְדֵין כָּשַׁר לְכוֹן דְּאַתּוּן יָתְבִין בְּבָתַּיָּא דִּי מְטַלְלִין בִּנְסָרֵי אַרְזַיָּא
5 וּבֵית מַקְדְּשָׁא הָדֵין חָרוּב׃ וּכְעַן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת שַׁווּ לִבְּכוֹן עַל אוֹרְחָתְכוֹן׃ זָרְעִין
6 אַתּוּן סַגִּיאִין וּמְעַלִּין זְעֵיר אָכְלִין וְלָא סָבְעִין שָׁתַן וְלָא רָוַן לָבְשִׁין וְלָא שָׁחַן לְהוֹן
וּדְמִתְאַגַּר מִתְאַגַּר לִמְאֵרְתָּא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. I.

1 ANno ſecundo Darii regis menſe ſexto, die prima menſis, factum eſt verbum prophetiæ à conſpectu Dñi per manum Chaggæi prophetæ ad Zerubbabelem filium Sealthielis principem domus Juda, & ad Jehoſuam filium Jehozadac ſummum Sacerdotem, dicendo: 2 Sic ait Dominus exercituum, dicendo: Populus iſte inquit, Uſquequò non veniet tempus domus ſanctuarii Domini, ut ædificetur? 3 Et exſtitit verbum à conſpectu Dñi per manum Chaggæi prophetæ, dicendo: 4 Siccine decet vos ut habitetis in domibus quæ tectæ ſunt, in tabulatis cedrinis, cùm hæc ædes ſanctuarii deſtructa ſit? 5 Nunc itaque ſic ait Dominus exercituum: Apponite cor veſtrum ad vias veſtras. 6 Seminatis multa, & introducitis modicum: comeditis, & non ſatiamini: bibitis, & non inebriamini: induti eſtis, nec vobis ineſt calor: & qui operas ſuas locat, mercedem reportat maledictionem.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

15 * ܐܥܒܪ ܡܪܝܐ ܕܝܢܝܟܝ. ܘܐܦܢܝ ܒܥܠܕܒܒܝܟܝ ܡܠܟܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܡܪܝܐ
ܒܓܘܟܝ. ܬܘܒ ܠܐ ܬܚܙܝܢ ܒܝܫܬܐ. * ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܬܐܡܪ ܠܐܘܪܫܠܡ. ܠܐ ܬܕܚܠܝܢ. 16
ܘܠܨܗܝܘܢ. ܠܐ ܢܪܦܝܢ ܐܝܕܝܟܝ. * ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܝ ܒܓܘܟܝ. ܚܣܝܢܐ ܘܦܪܘܩܐ. 17
ܢܚܕܝܟܝ ܒܚܕܘܬܐ. ܘܢܚܕܬܟܝ ܒܚܘܒܗ. ܘܢܪܘܙ ܒܟܝ ܒܬܫܒܘܚܬܐ: ܐܝܟ ܕܒܝܘܡܐ
18 ܕܥܐܕܐ. * ܘܐܥܒܪ ܡܢܟܝ ܐܝܠܝܢ ܕܡܡܠܠܝܢ ܗܘܘ ܥܠܝܟܝ ܨܥܪܐ. * ܗܐ ܐܢܐ. ܥܒܕ ܐܢܐ
19 ܠܟܠܗܘܢ. ܡܟܝܟܝܢ ܒܓܘܟܝ. ܒܙܒܢܐ ܗܘ. ܘܐܦܪܘܩ ܠܡܫܬܥܒܕܬܐ. ܘܠܡܪܚܩܬܐ
ܐܟܢܫ. ܘܐܥܒܕ ܐܢܘܢ ܠܫܡܐ. ܘܠܫܘܒܚܐ ܗܘ ܐܢܬܘܢ. * ܘܒܗ ܒܙܒܢܐ ܗܘ 20
ܐܟܢܫܟܘܢ. ܘܐܬܠܟܘܢ ܠܫܡܐ. ܘܠܫܘܒܚܐ ܒܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܐܪܥܐ. ܡܐ ܕܐܗܦܘܟ ܫܒܝܬܟܘܢ
ܠܥܝܢܝܟܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܫܠܡܬ ܢܒܝܘܬܗ ܕܨܦܢܝܐ ܢܒܝܐ *

* Abſtulit à te Dominus judicia tua, & repulit à te hoſtes tuos rex Iſraelis, Dominus in medio tui eſt, poſthac non experieris malum. 15 Eo die dicetur Jeroſolymæ, Ne timeas; & Sioni, Ne remittantur manus tuæ. 16 Dominus Deus tuus in medio tui, Fortiſſimus ac Servator oblectabit te lætitiâ, redintegrabit te in amorē ſuum, & efficiet ut glorioſè geſtias, perinde ac in die ſolennitatis: 17 Et auferam à te eos qui contumelioſa de te loquebantur. 18 Ecce reddam eos omnes humiles in medio tui, eo tempore; & liberabo ſubjectam, remotámque colligam: reddam vos celebres, & reſtituam vos in gloriam: 19 Vos inquam, eodem illo tempore colligam, & reddam celebres & glorioſos inter omnes terræ populos, quum reduxero captivitatem veſtram ipſis cernentibus, dicit Dominus. 20

Prophetiæ Sophoniæ prophetæ finis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

15 * الرب انتزع ظلاماتك * انقذك من يد اعدايك * يملك الرب في وسطك يا ايروسليم * ولا
16 تعاينين سرورا بعد * في ذلك الزمان يقول الرب لايروسليم ثقي * يا صهيون لا تسترخي يداك *
17 * الرب الهك فيك قوي يخلصك * يجلب عليك سرورا * ويجددك بحبه * ويسر بك بطرب * مثل
18 في يوم العيد * ويجمع منهشميك * ويل من اخذ عليها تعييرا * ها انا اصنع بك حسنا من 19
اجلي يقول الرب في ذلك الزمان * واخلص المسبية * واقبل المقصية * واصنعهم فخرا وسميين
20 في كل الارض * ويخزون في ذلك الزمان اذ اصنع بكم حسنا * وفي زمان اذ اقبلكم * من
اجل اني ادفعكم مسميين وللفخر في جميع شعوب الارض * عند ما ارد سبيكم تجاهكم *

* تمت نبوة صفونيا النبي *

Dominus abſtulit iniquitates tuas, eripuit te de manu inimicorum tuorum: regnabit Dominus in medio tui O Jeruſalem, & mala poſthac non videbis. 15 *Eo tempore dicet Dominus Jeroſolymæ, Tuta eſto; O Sion, ne remittantur manus tuæ.* 16 *Dominus Deus tuus in te fortiſſimus ſalvabit te, adducet ſuper te exultationem, renovabit te charitate ſuâ, téque geſtabundus oblectabitur, ut in die ſolennitatis;* 17 *Et congregabit dilaceratos tuos. Væ iis qui contumeliis aff.cerunt eam.* 18 *Ecce ego bene tibi faciam propter meipſum, dicit Dominus, eo tempore; & captivam, redimam; expulſámque recipiam: & reddam eos glorioſos ac celebres in tota terra.* 19 *Et erubeſcent eo tempore cùm benefecero vobis, & quo tempore vos recepero: quandoquidem reddam vos celebres & glorioſos inter omnes terræ populos, ubi captivitatem veſtram coram vobis reduxero.* 20

Prophetiæ Sophoniæ Prophetæ finis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܬܘܒ ܢܒܝܘܬܗ ܕܚܓܝ ܢܒܝܐ *   * ܦܘܠܓܗ * ܐ *

1 * ܒܫܢܬ ܬܪܬܝܢ ܕܕܪܝܘܫ ܡܠܟܐ. ܒܝܪܚܐ ܫܬܝܬܝܐ. ܒܚܕ ܒܝܪܚܐ. ܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ
ܒܝܕ ܚܓܝ ܢܒܝܐ. ܥܠ ܙܪܘܒܒܠ ܒܪ ܫܠܬܐܝܠ ܪܒܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܥܠ ܝܫܘܥ ܒܪ ܝܘܨܕܩ
2 ܟܗܢܐ ܪܒܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܥܡܐ ܗܢܐ ܐܡܪܝܢ. ܠܐ ܡܛܐ ܙܒܢܐ
3 ܕܢܬܒܢܐ ܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܒܝܕ ܚܓܝ ܢܒܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܐܬܝܗܘ
4 ܠܟܘܢ ܗܢܐ: ܕܬܬܒܘܢ ܐܢܬܘܢ ܒܒܬܝܟܘܢ ܡܛܠܠܝܢ. ܘܒܝܬܐ ܗܢܐ ܚܪܝܒ.
5 * ܘܗܫܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܣܝܡܘ ܠܒܟܘܢ ܥܠ ܐܘܪܚܬܟܘܢ. * ܕܙܪܥܝܢ
6 ܐܢܬܘܢ. ܣܓܝ ܘܟܢܫܝܢ ܐܢܬܘܢ ܩܠܝܠ. ܘܐܟܠܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܠܐ ܣܒܥܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܫܬܝܢ
ܐܢܬܘܢ. ܘܠܐ ܪܘܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܠܒܫܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܠܐ ܫܚܢܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܐܝܢܐ ܕܐܓܪ
ܒܟܘܢ ܕܡܬܬܓܪ. ܡܬܬܓܪ. ܒܨܪܪܐ ܢܩܝܒܐ.

Sequitur Prophetia

HAGÆI PROPHETÆ.

CAPUT. I.

ANno ſecundo Darii regis, menſe ſexto, primâ *die* menſis, fuit ſermo Domini per Hagæum prophetam, de Zorbabele filio Selathielis principe Judæ, et de Jeſu filio Jozedec ſacerdote maximo, dicendo; 1 Sic ait Dominus potentiſſimus; Populus hic dicunt, Nondum advênit tempus ædificandi domum Domini. 2 En itaque ſermo Domini per Hagæum prophetam, dicendo; 3 An tempus hoc eſt vobis ſedendi in domibus veſtris laqueatis, dum domus iſta deſtructa eſt? 4 Jam ſic dicit Dominus potentiſſimus; Adhibete animos veſtros ad vias veſtras: 5 Quòd multum feratis, parum colligatis: edatis, nec ſaturemini: bibatis, nec inebriemini: induamini, neque calefiatis: & quicunque inter vos negotiatur, in ſacculum pertuſum lucrum indat. 6

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بسم الله الخالق الحي الناطق *

* نبدا نترجم نبوة حجي النبي * بركاته علينا * امين *

* الفصل الاول *   * الاصحاح الثالث والعشرون * وهو الاول من النبوة *

1 * في السنة الثانية لداريوس الملك * في الشهر السادس * في اول يوم من الشهر كان قول الرب
بيد حجي النبي قايلا * قل لزربابل بن سلتاييل من قبيلة يهودا * وليسوع الكاهن العظيم
2 قايلا * هكذا يقول الرب الضابط الكل قايلا * هذا الشعب يقول لن ياتي الزمان لنبني بيت
3 الرب * فصار قول الرب بيد حجي النبي قايلا * ان كان هذا الزمان لكم ان تسكنوا في بيوت 4
5 حريز * وهذا البيت خراب * والان هكذا يقول الرب الضابط الكل * ردوا الان قلوبكم
6 لطرقكم * تزرعون كثيرا وتدخلون قليلا * تاكلون وليس للشبع * تشربون وليس للسكر *
تلبسون وليس تستدفون بهم * والذي يجمع الاجر * في صرة مثقوبة *

IN NOMINE DEI
Creatoris, Vivi, Rationalis,

Aggredimur Interpretationem prophetiæ HAGGÆI Prophetæ, cujus benedictiones adſint nobis, Amen.

CAP. I.

Textus vigeſimus tertius, hujus autem Prophetiæ primus.

ANno ſecundo Darii regis, menſe ſexto, primâ die menſis, fuit ſermo Domini per Haggæum Prophetam, dicens; Dic Zorobabeli filio Salathielis de familia Judæ, & Jeſu ſacerdoti maximo, dicens; 1 *Sic dicit Dominus omnipotens, dicens; Hic populus dicit, Nondum venit tempus ædificandi domum Domini:* 2 *Ideò factus eſt ſermo Domini per Haggæum prophetam, dicens;* 3 *Num tempus hoc eſſet vobis habitandi in ædibus firmis, dum domus hæc deſtructa eſt?* 4 *Nunc itaque ſic ait Dominus omnipotens; Adjicite jam corda veſtra ad vias veſtras:* 5 *Multum ſeritis, parum reconditis: comeditis, ſed non ad ſatietatem: bibitis, ſed non ad ebrietatem: veſtes adhibetis, ſed iis minimè caleſcitis: & qui mercedem congregat, in marſupium pertuſum infert.* 6

.vestras vias super vestrum cor Ponite : exercituum Dñs dixit Sic
כֹּה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת שִׂימוּ לְבַבְכֶם עַל־דַּרְכֵיכֶם׃ 7
complacebo & ,domum ædificate &,*lignum afferetis &* ,montem in Ascendite
עֲלוּ הָהָר וַהֲבֵאתֶם עֵץ וּבְנוּ הַבָּיִת וְאֶרְצֶה־ 8
,multum ad *Respicere* .Dominus dixit,meipsum glorificabo &,ea in
בּוֹ וְאֶכָּבְד אָמַר יְהוָה׃ פָּנֹה אֶל־הַרְבֵּה 9
,quid Propter.illud *in* sufflavi &,domum in intulistis & : parum *ad* ecce &
וְהִנֵּה לִמְעָט וַהֲבֵאתֶם הַבַּיִת וְנָפַחְתִּי בוֹ יַעַן מֶה
,deserta *ipsa* quæ,meam domum Propter ? exercituum Dominus dixit
נְאֻם יְהוָה צְבָאוֹת יַעַן בֵּיתִי אֲשֶׁר־הוּא חָרֵב
se clauserunt vos super Propterea .*suam* domum in *vir* *currentes* vos &
וְאַתֶּם רָצִים אִישׁ לְבֵיתוֹ׃ עַל־כֵּן עֲלֵיכֶם כָּלְאוּ 10
super siccitatem vocavi Et .*suum germen reclusit* terra & , rore à cœli
שָׁמַיִם מִטָּל וְהָאָרֶץ כָּלְאָה יְבוּלָהּ׃ וָאֶקְרָא חֹרֶב עַל־ 11
super & ,*mustum* super &,triticum super & , montes super & ,terram
הָאָרֶץ וְעַל־הֶהָרִים וְעַל־הַדָּגָן וְעַל־הַתִּירוֹשׁ וְעַל־
super & , *hominem* super & ;humus proferet quod super & ,oleum
הַיִּצְהָר וְעַל אֲשֶׁר תּוֹצִיא הָאֲדָמָה וְעַל־הָאָדָם וְעַל־
filius Zerubbabel audivit Et .*volarum* laborem omnem super & , *animal*
הַבְּהֵמָה וְעַל כָּל־יְגִיעַ כַּפָּיִם׃ וַיִּשְׁמַע זְרֻבָּבֶל בֶּן־ 12
omne & , magnus sacerdos Jehosadac filius Jehosuah & ,Sealthiel
שַׁלְתִּיאֵל וִיהוֹשֻׁעַ בֶּן־יְהוֹצָדָק הַכֹּהֵן הַגָּדוֹל וְכֹל
Chagghai verba *super* & , sui Dei Domini *voce in* populi residuum
שְׁאֵרִית הָעָם בְּקוֹל יְהוָה אֱלֹהֵיהֶם וְעַל־דִּבְרֵי חַגַּי
timuerunt & : eorum Deus Dominus *eum* misit *quemadmodum* , prophetæ
הַנָּבִיא כַּאֲשֶׁר שְׁלָחוֹ יְהוָה אֱלֹהֵיהֶם וַיִּירְאוּ
Domini nuncius Chagghai dixit Et .Domini *faciebus* à populus
הָעָם מִפְּנֵי יְהוָה׃ וַיֹּאמֶר חַגַּי מַלְאַךְ יְהוָה 13
.Dominus dixit vobiscum Ego : dicendo populo Domini *legatione* in
בְּמַלְאֲכוּת יְהוָה לָעָם לֵאמֹר אֲנִי אִתְּכֶם נְאֻם־יְהוָה׃
ducis Sealthiel filii Zerubabel spiritum Dominus suscitavit Et
וַיָּעַר יְהוָה אֶת־רוּחַ זְרֻבָּבֶל בֶּן־שַׁלְתִּיאֵל פַּחַת 14
, magni sacerdotis Jehosadac filii Jehosuah spiritum & , Jehudah
יְהוּדָה וְאֶת־רוּחַ יְהוֹשֻׁעַ בֶּן־יְהוֹצָדָק הַכֹּהֵן הַגָּדוֹל
fecerunt & , sunt ingressi & ; populi residui omnis spiritum &
וְאֶת־רוּחַ כֹּל שְׁאֵרִית הָעָם וַיָּבֹאוּ וַיַּעֲשׂוּ
.sui Dei exercituum Domini domo in opus
מְלָאכָה בְּבֵית־יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵיהֶם׃

CAP. II. ב

secundo anno in ,*sexto in* mensis quarta & vigesima die In
בְּיוֹם עֶשְׂרִים וְאַרְבָּעָה לַחֹדֶשׁ בַּשִּׁשִּׁי בִּשְׁנַת שְׁתַּיִם 1
fuit , mensis *una* & vigesima *in* septimo In .regis Dariaves
לְדָרְיָוֶשׁ הַמֶּלֶךְ׃ בַּשְּׁבִיעִי בְּעֶשְׂרִים וְאֶחָד לַחֹדֶשׁ הָיָה 2
ad nunc Dic : dicendo ,prophetæ Chagghai manu in Domini verbum
דְּבַר־יְהוָה בְּיַד־חַגַּי הַנָּבִיא לֵאמֹר׃ אֱמָר־נָא אֶל־ 3
filium Jehosuah ad & , Jehudah ducem Sealthiel filium Zerubabel
זְרֻבָּבֶל בֶּן־שַׁלְתִּיאֵל פַּחַת יְהוּדָה וְאֶל־יְהוֹשֻׁעַ בֶּן־
Quis : dicendo , populi residuum ad & ,magnum sacerdotem Jehosadac
יְהוֹצָדָק הַכֹּהֵן הַגָּדוֹל וְאֶל־שְׁאֵרִית הָעָם לֵאמֹר׃ מִי 4
? prima sua gloria in istam domum viderit qui ,derelictus vobis *in*
בָכֶם הַנִּשְׁאָר אֲשֶׁר רָאָה אֶת־הַבַּיִת הַזֶּה בִּכְבוֹדוֹ הָרִאשׁוֹן
nihil quasi *illa sicut* Nonne ? nunc eam *videntes* vos *quam* &
וּמָה אַתֶּם רֹאִים אֹתוֹ עַתָּה הֲלוֹא כָמֹהוּ כְּאַיִן
te robora & ,Dominus dixit,Zerubabel te robora nunc Et ?vestris oculis in
בְּעֵינֵיכֶם׃ וְעַתָּה חֲזַק זְרֻבָּבֶל נְאֻם־יְהוָה וַחֲזַק 5
,terræ populus omnis te robora &,magne sacerdos Jehosadac fili Jehosuah
יְהוֹשֻׁעַ בֶּן־יְהוֹצָדָק הַכֹּהֵן הַגָּדוֹל וַחֲזַק כָּל־עַם הָאָרֶץ
.exercituum Dominus dixit ,vobiscum ego quia:facite &,Dominus dixit
נְאֻם־יְהוָה וַעֲשׂוּ כִּי־אֲנִי אִתְּכֶם נְאֻם יְהוָה צְבָאוֹת׃

Versio VULG. LAT.

7 Hæc dicit Dominus exercituum; Ponite corda vestra super vias ve- 8 stras: Ascendite in montem, portate ligna, & ædificate domum: & acceptabilis mihi erit, & glorificabor, dicit Dominus. 9 Respexistis ad amplius, & ecce factum est minus: & intulistis in domum, & exufflavi illud: quam ob causam, dicit Dominus exercituum? quia domus mea deserta est, & vos festinatis unusquisque 10 in domum suam. Propter hoc super vos prohibiti sunt cœli ne darent rorem, & terra prohibita 11 est ne daret germen suum: Et vocavi siccitatem super terram, & super montes, & super triticum, & super vinum, & super oleum, & quæcunque profert humus, & super homines, & super jumenta, & super omnem labo- 12 rem manuum. Et audivit Zorobabel filius Salathiel, & Jesus filius Josedec sacerdos magnus, & omnes reliquiæ populi, vocē Domini Dei sui, & verba Aggæi prophetæ, sicut misit eum Dominus Deus eorum ad eos: & timuit po- 13 pulus à facie Domini. Et dixit Aggæus nuntius Domini de nuntiis Domini, populo, dicens; Ego 14 vobiscum sum, dicit Dominus. Et suscitavit Dominus spiritum Zorobabel filii Salathiel, ducis Juda, & spiritum Jesu filii Josedec, sacerdotis magni, & spiritum reliquorum de omni populo: & ingressi sunt, & faciebant opus in domo Domini exercituum Dei sui.

CAP. II.

1 IN die vigesima & quarta mensis, in sexto mense, in anno secun- 2 do Darii regis. In septimo mense, vigesimâ & primâ mensis, factum est verbum Domini in manu 3 Aggæi prophetæ, dicens; Loquere ad Zorobabel filium Salathiel ducem Juda, & ad Jesum filium Josedec sacerdotem magnum, & 4 ad reliquos populi, dicens; Quis in vobis est derelictus, qui vidit domū istam in gloria sua prima? & quid vos videtis hanc nunc? numquid non ita est, quasi non sit 5 in oculis vestris? Et nunc confortare, Zorobabel, dicit Dominus: & confortare, Jesu fili Josedech sacerdos magne, & confortare omnis populus terræ, dicit Dominus exercituum: & facite (quoniam ego vobiscum sum, dicit Dominus exercituum)

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

7 Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Θέσθε τὰς καρδίας ὑμῶν εἰς τὰς ὁδοὺς ὑμῶν. 8 Ἀνάβητε (θ) εἰς τὸ ὄρος, καὶ κόψατε ξύλα, (ι) οἰκοδομήσατε τὸν οἶκον, καὶ εὐδοκήσω ἐν αὐτῷ, καὶ ἐνδοξασθήσομαι, εἶπε κύριος. 9 Ἐπεβλέψατε εἰς πολλὰ, καὶ (κ) ἐγένετο ὀλίγα· καὶ εἰσηνέχθη εἰς τὸν οἶκον, καὶ ἐξεφύσησα αὐτά. διατοῦτο τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Ἀνθ᾽ ὧν ὁ οἶκός μου ἐστὶν ἔρημος, ὑμεῖς δὲ διώκετε ἕκαστος εἰς τὸν οἶκον 10 αὐτοῦ, Διατοῦτο ἀνέξει ὁ οὐρανὸς ἀπὸ δρόσου, καὶ ἡ γῆ ὑποστελεῖται τὰ ἐκφόρια αὐτῆς. 11 Καὶ ἐπάξω ῥομφαίαν ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ ἐπὶ τὰ ὄρη, καὶ ἐπὶ τὸν σῖτον, καὶ ἐπὶ τὸν οἶνον, καὶ ἐπὶ τὸ ἔλαιον, καὶ ὅσα ἐκφέρει ἡ γῆ, καὶ ἐπὶ τοὺς ἀνθρώπους, καὶ ἐπὶ τὰ κτήνη, καὶ ἐπὶ πάντας τοὺς πόνους τῶν χειρῶν αὐτῶν. 12 Καὶ ἤκουσε Ζοροβάβελ ὁ τοῦ Σαλαθιὴλ (λ) ἐκ φυλῆς Ἰούδα, καὶ Ἰησοῦς ὁ τοῦ Ἰωσεδὲκ ὁ ἱερεὺς ὁ μέγας, καὶ πάντες οἱ κατάλοιποι τοῦ λαοῦ τῆς φωνῆς κυρίου τοῦ θεοῦ αὐτῶν, καὶ τῶν λόγων (μ) τοῦ Ἀγγαίου τοῦ προφήτου, καθότι ἐξαπέστειλεν αὐτὸν κύριος ὁ θεὸς αὐτῶν πρὸς αὐτοὺς, καὶ ἐφοβήθη ὁ λαὸς ἀπὸ προσώπου 13 κυρίου. Καὶ εἶπεν Ἀγγαῖος ἄγγελος (ν) κυρίου ἐν ἀγγέλοις κυρίου τῷ λαῷ, Ἐγώ εἰμι 14 μεθ᾽ ὑμῶν, λέγει κύριος. Καὶ ἐξήγειρε κύριος τὸ πνεῦμα Ζοροβάβελ τοῦ Σαλαθιὴλ ἐκ φυλῆς Ἰούδα, καὶ τὸ πνεῦμα Ἰησοῦ τοῦ Ἰωσεδὲκ τοῦ ἱερέως τοῦ μεγάλου, καὶ τὸ πνεῦμα τῶν καταλοίπων παντὸς τοῦ λαοῦ, καὶ εἰσῆλθον, καὶ ἐποίουν (ξ) ἔργα ἐν τῷ οἴκῳ κυρίου παντοκράτορος θεοῦ αὐτῶν,

Hæc dicit Dominus omnipotens; Ponite corda vestra in vias vestras, Ascendite in montem, & præcidite ligna: ædificate domum: & placebit mihi in ea, & glorificabor, dicit Dominus. Respexistis in multa, & facta sunt pauca: & (d) illata sunt in domum: & exufflavi ea. Quamobrem hæc dicit Dominus omnipotens; Eò quòd domus mea deserta est, vos autem sectamini unusquisque in domum suam; Propterea abstinebit cœlum à rore, & terra (e) subtrahet procreationes suas. Et inducam gladium super terram, & super montes, & super triticum, & super vinum, & super oleum, & quæcunque profert humus, & super homines, & super jumenta, & super omnes labores manuum eorum. Et audivit Zorobabel filius Salathiel de tribu Juda, & Jesus filius Josedec sacerdos magnus, & omnes residui de populo, vocem Domini Dei sui, & verba Aggæi prophetæ, sicut misit eum Dominus Deus eorum ad eos. Et timuit populus à facie Domini. Et dixit Aggæus nuntius Domini in nuntiis Domini populo. Ego sum vobiscum, dicit Dominus. Et suscitavit Dominus spiritum Zorobabel filii Salathiel de tribu Juda, & spiritum Jesu filii Josedec sacerdotis magni, & spiritum reliquorum de omni populo: & ingressi sunt: & faciebant opera in domo Domini omnipotentis Dei sui, 7 8 9 10 11 12 13 14

MS. A. (θ) ἐπὶ (ι) καὶ οἰκοδομήσατε (κ) ἐγένοντο (λ) ὁ ἐκ (μ) Ἀγγαίου (ν) κυρίου τῷ λαῷ, (ξ) τὰ ἔργα

ΚΕΦ. β'.

1 Τῇ τετράδι καὶ εἰκάδι τοῦ μηνὸς τοῦ ἕκτου, τῷ δευτέρῳ ἔτει, ἐπὶ Δαρείου τοῦ βασι- 2 λέως. (α) Τῷ μηνὶ τῷ ἑβδόμῳ, μιᾷ καὶ εἰκάδι τοῦ μηνὸς, ἐλάλησε κύριος ἐν χειρὶ 3 Ἀγγαίου τοῦ προφήτου, λέγων, Εἰπὸν δὴ πρὸς Ζοροβάβελ τὸν τοῦ Σαλαθιὴλ ἐκ φυλῆς Ἰούδα, καὶ πρὸς Ἰησοῦν (β) τοῦ Ἰωσεδὲκ τὸν ἱερέα τὸν μέγαν, καὶ πρὸς πάντας τοὺς κα- 4 ταλοίπους τοῦ λαοῦ, λέγων, Τίς ἐξ ὑμῶν, ὃς (-) εἶδε τὸν οἶκον τοῦτον ἐν τῇ δόξῃ αὐτοῦ τῇ ἔμπροσθεν; καὶ πῶς ὑμεῖς βλέπετε αὐτὸν νῦν καθὼς οὐχ ὑπάρχοντα ἐνώ- 5 πιον ὑμῶν; Καὶ νῦν κατίσχυε Ζοροβάβελ, λέγει κύριος, καὶ κατίσχυε Ἰησοῦ ὁ τοῦ Ἰωσεδὲκ ὁ ἱερεὺς ὁ μέγας, καὶ κατισχυέτω πᾶς ὁ λαὸς τῆς γῆς, λέγει κύριος, καὶ ποιεῖτε, διότι (·) μεθ᾽ ὑμῶν ἐγώ εἰμι, λέγει κύριος (γ) ὁ παντοκράτωρ,

CAP. II.

IN (a) quarta, & vigesima mensis sexti, anno secundo Darii regis. In mense septimo, unâ & vigesimâ mensis, loquutus est Dominus in manu Aggæi prophetæ, dicens; Dicito nunc ad Zorobabel filium Salathiel de tribu Juda, & ad Jesum Josedec filium sacerdotem magnum, & ad omnes reliquos populi, dicens; Quis ex vobis, qui vidit domum istam in gloria sua prima? & quomodò vos videtis ipsam nunc, quasi non sit coram vobis? Et nunc confortare, Zorobabel, dicit Domin9: & confortare, Iesu fili Josedec sacerdos magne, & confortetur omnis populus terræ, dicit Dominus: & facite; quoniam ego vobiscum sum, dicit Dominus (b) omnipotens: 1 2 3 4 5

MS. A. (α) Τῷ ἑβδόμῳ μηνὶ, (β) τὸν τοῦ (-) οἶδεν (·) ἐγὼ μεθ᾽ ὑμῶν εἰμι, (γ) παντοκράτωρ,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

כדנן אמר יי צבאות שוו לבכון על אורחתכון׃ סקו לטוריא ואיתו אעין ובנו ביתא 7
ואתרעי לאשראה שכנתי ביה ביקר אמר יי׃ מתפנן אתון לסגי והוי לזעיר ומעלין 8 9
אתון ליה לביתא ואנא שלח ביה מארתא חלף מה אמר יי צבאות חלף בית מקדשי
דהוא חרוב ואתון רהטין גבר לביתיה׃ על כן בדיל חוביכון פסקו שמיא מלאחתא 10
מטרא וארעא פסקת מלמעבד פירין׃ וקרית חורבא על ארעא ועל טוריא ועל עבורא 11
ועל חמרא ועל משחא ועל כל די מפקא ארעא ועל אנשא ועל בעירא ועל כל
לאות ידין׃ ושמע זרבבל בר שאלתיאל ויהושע בר יהוצדק כהנא רבא וכל 12
שארא דעמא למימרא דיי אלההון ולפתגמי חגי נביא כמא דשלחיה יי אלההון
ודחילו עמא מן קדם יי׃ ואמר חגי נביא דיי בשליחות מן קדם יי לעמא למימר 13
מימרי בסעדכון אמר יי׃ ואער יי ית רוח זרבבל בר שאלתיאל רבא דבית יהודה וית 14
רוח יהושע בר יהוצדק כהנא רבא וית רוח כל שארא דעמא ואתו ועבדו עבדתא
בבית מקדשא דיי צבאות אלהא׃

ב

ביום עסרין וארבעא לירחא בשתיתאה בשנת תרתין לדריוש מלכא׃ בשביעאה 1 2
בעסרין וחד לירחא הוה פתגם נבואה מן קדם יי ביד חגי נביא למימר׃ אמר כען 3
לזרבבל בר שאלתיאל רבא דבית יהודה וליהושע בר יהוצדק כהנא רבא ולשארא
דעמא למימר׃ מן בכון דישתאר דחזא ית ביתא הדין ביקריה קדמאה ומה אתון חזן 4
יתיה כען הלא כדליתוהי כן הוא בעיניכון׃ וכען תקף זרבבל אמר יי ותקיף יהושע 5
בר יהוצדק כהנא רבא ותקיף כל עמא דארעא אמר יי ועבידו ארי מימרי
בסעדכון אמר יי צבאות׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Sic ait Dñs exercituum: Apponite corda vestra ad vias vestras. Conscendite 7 montes, & afferte ligna, & ædificate ædem, & placebit mihi collocare ma- 8 jestatem meam in ea in gloria, dicit Dñs. Respicitis ad multum & fit modi- 9 cum: & introducitis illud in domum: ego verò immittam in ipsum maledictionem: propter quid? ait Dñs exercituum, propter ædem sanctuarii mei, quæ destructa est, cùm unusquisq; vestrum excurrat in domum suam. Idcircò 10 propter scelera vestra cessaverunt cœli ab immittenda pluvia, & terra cessavit ab edendo fructus. Et vocavi siccitatem super terram, & super montes, 11 & super frumentum, & super vinum, & super oleum, & super quodcunque producit terra, & super homines, & super bestias, deniq; super omnem laborem manuum. Audivit autem Zerubabel filius Sealthielis, & Jehosua 12 filius Jehozadak summus Sacerdos, & omnes reliquiæ populi verbum Dñi Dei sui, & sermones Chaggæi prophetæ, prout miserat eum Deus ipsorum: timuitque populus à conspectu Dñi. Et dixit Chaggæus propheta Dñi, in 13 legatione [*quam suscepit*] à conspectu Dñi ad populum, dicendo: Verbum meum vobis est auxilio, dicit Dñs. Et excitavit Dñs spiritum Zerubabelis 14 filii Sealthielis principis domus Juda, & spiritum Jehosua filii Jehozadac summi Sacerdotis, & spiritum omnium reliquiarum populi: venerunt itaq; & fecerunt opus in æde sanctuarii Domini exercituum Dei.

CAP. II.

DIe vicesima & quarta mensis, in sexto [*mense,*] anno secundo Darii regis: 1 In septimo [*mense.*] vicesima & prima mensis factum est verbum prophe- 2 tiæ à conspectu Dñi per manum Chaggæi prophetæ, dicendo: Dic nunc 3 Zerubabeli filio Sealthielis principi domus Juda, & Jehosuæ filio Jehozadac summo Sacerdoti, & residuo populi, dicendo: Quis est inter vos qui re- 4 manserit, qui viderit domum istam in primo decore suo, ecquid vos videtis eam nunc, nonne quasi res nihili, sic & ipsa est in oculis vestris? Nunc ergò 5 roborare Zerubabel, dicit Dñs, & roborare Jehosua fili Jehozadac summe Sacerdos, ac roborare omnis popule terræ, ait Dñs: & agite, quoniam Verbum meum [*erit*] vobis auxilio, dicit Dominus exercituum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. ܫܝܡܘ ܠܒܟܘܢ ܥܠ ܐܘܪܚܬܟܘܢ. * ܣܩܘ ܠܛܘܪܐ. ܘܐܝܬܘ 7 8
ܩܝܣܐ. ܘܒܢܘ ܒܝܬܐ ܗܢܐ. ܘܐܨܛܒܐ ܒܗ. ܘܐܫܬܒܚ ܒܗ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܣܟܝܬܘܢ 9
ܠܣܓܝܐܬܐ. ܘܗܘܐ ܠܗ ܙܥܘܪܐ. ܘܡܥܠܝܬܘܢ ܠܒܝܬܐ. ܘܢܦܚܬ ܐܢܐ ܒܗ. ܘܥܠ
ܡܢܐ ܗܠܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܕܚܪܒ ܒܝܬܝ. ܘܐܢܬܘܢ ܪܗܛܝܢ ܐܢܫ ܠܒܝܬܗ.
* ܡܛܠܬܟܘܢ ܐܬܟܠܝܘ ܫܡܝܐ ܡܢ ܛܠܐ. ܘܐܪܥܐ ܟܠܬ ܦܐܪܝܗ̇. * ܘܩܪܝܬ ܚܪܒܐ ܥܠ ܐܪܥܐ 10
ܘܥܠ ܛܘܪܐ. ܘܥܠ ܥܒܘܪܐ ܘܥܠ ܚܡܪܐ ܘܥܠ ܡܫܚܐ. ܘܥܠ ܟܠܡܕܡ ܕܡܦܩܐ ܐܪܥܐ. ܘܥܠ 11
ܒܢܝܢܫܐ ܘܥܠ ܒܥܝܪܐ ܘܥܠ ܟܠܗ ܥܡܠܐ ܕܐܝܕܝܗܘܢ. * ܘܫܡܥܘ ܙܪܘܒܒܠ ܒܪ ܫܠܬܐܝܠ. 12
ܘܝܫܘܥ ܒܪ ܝܘܨܕܩ ܟܗܢܐ ܪܒܐ. ܘܟܠܗ ܫܪܟܐ ܕܥܡܐ. ܒܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ.
ܘܒܡܠܘܗܝ ܕܚܓܝ ܢܒܝܐ. ܕܫܕܪܗ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ ܠܘܬܗܘܢ. ܘܕܚܠܘ ܥܡܐ ܡܢ
ܩܕܡ ܡܪܝܐ. * ܘܐܡܪ ܚܓܝ ܡܠܐܟܗ ܕܡܪܝܐ ܒܡܠܐܟܘܬܗ ܕܡܪܝܐ ܠܥܡܐ. ܐܢܐ ܥܡܟܘܢ ܐܡܪ 13
ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܘܐܥܝܪ ܡܪܝܐ ܪܘܚܗ ܕܙܪܘܒܒܠ ܒܪ ܫܠܬܐܝܠ ܪܫܐ ܕܝܗܘܕܐ: ܘܪܘܚܗ 14
ܕܝܫܘܥ ܒܪ ܝܘܨܕܩ ܟܗܢܐ ܪܒܐ: ܘܪܘܚܐ ܕܟܠܗ ܫܪܟܐ ܕܥܡܐ. ܘܐܬܘ ܘܥܒܕܘ ܥܒܕܐ ܒܒܝܬܗ
ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗܘܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܒ * ܒܝܘܡ ܐܪܒܥܐ 1
ܘܥܣܪܝܢ ܒܝܪܚܐ ܫܬܝܬܝܐ. ܒܫܢܬ ܬܪܬܝܢ ܠܕܪܝܘܫ ܡܠܟܐ. * ܘܒܝܪܚܐ ܫܒܝܥܝܐ ܒܚܕ 2
ܘܥܣܪܝܢ ܒܗ. ܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܒܝܕ ܚܓܝ ܢܒܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܐܡܪ ܠܙܪܘܒܒܠ ܒܪ 3
ܫܠܬܐܝܠ ܪܫܐ ܕܝܗܘܕܐ: ܘܠܝܫܘܥ ܒܪ ܝܘܨܕܩ. ܟܗܢܐ ܪܒܐ. ܘܠܟܠܗ ܫܪܟܐ ܕܥܡܐ.
* ܡܢܘ ܒܟܘܢ ܐܫܬܚܪ ܕܚܙܝܗ ܠܒܝܬܐ ܗܢܐ ܒܫܘܒܚܗ ܩܕܡܝܐ. ܘܗܫܐ ܐܝܟܢܐ ܚܙܝܢ 4
ܐܢܬܘܢ ܠܗ. ܠܐ ܗܘܐ ܐܝܟ ܠܐ ܡܕܡ ܫܘܝܐ ܒܥܝܢܝܟܘܢ. * ܘܗܫܐ ܐܬܚܝܠ ܙܪܘܒܒܠ 5
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܬܚܝܠ ܝܫܘܥ ܒܪ ܝܘܨܕܩ ܟܗܢܐ ܪܒܐ. ܘܐܬܚܝܠܘ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܐܪܥܐ.
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܥܒܕܘ. ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܥܡܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ.

Sic dicit Dominus potentiſſimus; Perpendite 7
cordib' veſtris vias veſtras. Aſcendite in montem, 8
afferte ligna, & ædificate domum iſtam;
& grata mihi erit, & glorificabor in ea, dicit
Dñs. Expectatis multum, ſed redacitur ad parum:
infertis in domum, ſed illud efflo. Et 9
cur hæc, dicit Domin'? quia deſtructa eſt domus
mea, vos autem curritis quiſq; domum
ſuam. Cauſâ veſtri abſtinuerunt ſe cœli à rore, 10
& terra prohibuit fruct' ſuos: Et advocavi 11
gladium contra terrã, contra montes, contra
frumentum, contra vinũ, contra oleum, &
contra quicquid producit tellus; contra homines
etiam, contra jumenta, & contra omnem
laborem manuum eorum. Auſcultaverunt autem 12
Zorbabel filius Selathielis, Jeſus filius Jozedec
ſacerdos maximus, totúſq; reliquus populus,
voci Dñi Dei ſui, & ſermonibus Hagæi
prophetæ quem Dñs Deus eorũ miſit ad illos;
timuerúntq; populus Dñm. Tunc dixit Hagæus 13
legatus Dñi in legatione Dñi ad populum;
Ego vobiſcum ſum, dicit Dñs potentiſſimus.
Concitavítq; Dñs ſpiritum Zorbabelis filii Selathielis 14
principis Judæ, & ſpiritum Jeſu filii
Jozedec ſacerdotis maximi, necnon ſpiritum
totius reliqui populi: & abeuntes fecerunt
opus in domo Domini potentiſſimi Dei ſui.

CAP. II.

Die vigeſimâ quartâ, menſe ſexto, anno ſecundo 1
Darii regis; Et menſe ſeptimo, *die* vigeſimâ 2
primâ, fuit ſermo Domini per Hagæum
prophetam, dicendo; Dic Zorbabeli filio Selathielis 3
principi Judæ, & Jeſu filio Jozedec
ſummo ſacerdoti, totiq; reſiduo populo; Quis 4
inter vos ſupereſt qui domum hanc viderit in
priſtino ſplendore? & núnc qualem videtis
eam? nónne ut nihil æſtimatur apud vos?
Age jam, confortare Zorbabel, dicit Dominus; 5
confortare Jeſu fili Jozedec, ſumme ſacerdos;
confortamini & vos univerſe populе
terræ, dicit Dominus, & opus aggredimini:
ſum enim vobiſcum, dicit Dominus
potentiſſimus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* هكذا يقول الرب الضابط الكل. ضعوا قلوبكم لطرقكم * اصعدوا الى الجبل * واقطعوا 7 8
خشبا وابنوا البيت واسر به واتمجد يقول الرب * نظرتم الى الكثيرات وقد صارت قليلات * 9
وادخلت الى البيت ونفختها. لاجل هذا هكذا يقول الرب الضابط الكل * من اجل ان بيتي
هو خراب * وانتم تسارعون كل واحد الى بيته * لاجل هذا تمنع السماء من الندا * والارض 10
تمنع ثمارها * واجلب سيفا على الارض وعلى الجبال * وعلى القمح والخمر والزيت * وعلى كل ما 11
تخرج الارض * وعلى البشر والبهايم * وعلى جميع اتعاب ايديهم * فسمع زربابل بن سلثاييل 12
الذي من سبط يهودا * ويسوع بن يوساداك الكاهن العظيم * وجميع بقايا الشعب * صوت الرب
الههم واقوال حجي النبي كما ارسله الرب الههم اليهم * وخاف الشعب من وجه الرب * وقال حجي 13
ملاك الرب للشعب * انا انا معكم يقول الرب * وانهض الرب روح زربابل بن سلثاييل من 14
سبط يهودا * وروح يسوع بن يوساداك الكاهن العظيم * وروح بقايا الشعب * ودخلوا وعملوا اعمالا
في بيت الرب الضابط الكل الههم *

* الفصل الثاني *

* في اربعة وعشرين من الشهر السادس * في السنة الثانية * على عهد داريوس الملك * في 1 2
الشهر السابع * في احد وعشرين من الشهر * تكلم الرب بيد حجي النبي قايلا * قل 3
لزربابل بن سلثاييل من قبيلة يهودا * وليسوع بن يوساداك الكاهن العظيم * ولجميع
بقايا الشعب قايلا * من منكم راي هذا البيت في مجده من قبل * وكيف انتم تنظرونه 4
الان * كما لم يكن قدامكم * والان تقووا يا زربابل يقول الرب * وتقوا يا يسوع بن يوساداك 5
الكاهن العظيم * وليتقو كل شعب الارض يقول الرب واصنعوا * من اجل اني انا معكم
انا يقول الرب الضابط الكل *

Sic ait Dominus omnipotens; Adjicite animos 7
veſtros ad vias veſtras. Conſcendite 8
montem, cædite ligna, & ædificate
domum iſtam; & oblectabor ipſâ, & glorificabor,
dicit Dominus. Reſpexiſtis ad 9
multa, jam autem facta ſunt pauca: illata
ſunt domum, at exſufflavi ea. Propterea
ſic dicit Dominus omnipotens;
Quia domus mea deſtructa eſt, vos autem 10
curritis quiſque in domum ſuam: Ideò
abſtinet cœlum à rore, & terra ſubtrahit
fructus ſuos: Gladium adduco ſuper 11
terram & ſuper montes, ſuper frumentum,
vinum, & oleum, & ſuper
quicquid producit tellus; ſuper homines
& jumenta, & ſuper omnes labores manuum
eorum. Auſcultavit ergò Zorobabel 12
filius Salathielis, qui erat ex tribu
Judæ, & Jeſus filius Joſedechi ſacerdos
maximus, omnéſque populi reliquiæ,
voci Domini Dei ſui, & ſermonibus Haggei
prophetæ, quemadmodum miſerat eum
Dominus Deus eorum ad ipſos, timuítque
populus à facie Domini. Dixítque Haggæus 13
nuntius Domini ad populum; Ego
ſum vobiſcum, dicit Dominus. Et ſuſcitavit 14
Dominus ſpiritum Zorobabelis filii
Salathielis de tribu Judæ, & ſpiritum
Jeſu filii Joſedechi ſacerdotis maximi,
& ſpiritum reliquiarum populi; & ingreſſi
fecerunt opera in domo Domini omnipotentis
Dei ſui,

CAP. II.

Vigeſimâ quartâ menſis ſexti, anno 1
ſecundo, tempore Darii regis. Menſe 2
ſeptimo, vigeſimâ primâ menſis, locutus
eſt Dominus per Haggæum prophetam, dicens;
Dic Zorobabeli filio Salathielis 3
de tribu Judæ, & Jeſu Joſedechi filio,
ſacerdoti maximo, omnibúſque populi reliquiis,
dicens; Quis veſtrûm vidit 4
olim domum iſtam in gloria ſua? jam
autem qualem vos eum videtis, ac ſi non
eſſet coram vobis? Itaque confortare O 5
Zorobabel, dicit Dominus; confortare O
Jeſu fili Joſedechi, ſacerdos maxime;
& confortetur univerſus terræ populus,
& operamini; quia ego vobiſcum ſum,
dicit Dominus omnipotens,

חגי : ב

, Ægypto ex vos egrediendo in vobiscum excidi quod Verbum
6 אֶת־הַדָּבָר אֲשֶׁר כָּרַתִּי אִתְּכֶם בְּצֵאתְכֶם מִמִּצְרַיִם
sic Quia .timeatis ne : vestri medio in stans meus spiritus &
7 וְרוּחִי עֹמֶדֶת בְּתוֹכְכֶם אַל־תִּירָאוּ : כִּי כֹה
ego & , ipsum pusillum unum Adhuc : exercituum Dominus dixit
אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת עוֹד אַחַת מְעַט הִיא וַאֲנִי
& , mare & , terram & , cœlos faciens tremere
מַרְעִישׁ אֶת־הַשָּׁמַיִם וְאֶת־הָאָרֶץ וְאֶת־הַיָּם וְאֶת־
desiderium venient & , gentes omnes faciam tremere Et .aridam
8 הֶחָרָבָה : וְהִרְעַשְׁתִּי אֶת־כָּל־הַגּוֹיִם וּבָאוּ חֶמְדַּת
dixit , gloria hanc domum implebo & , gentium omnium
כָּל־הַגּוֹיִם וּמִלֵּאתִי אֶת־הַבַּיִת הַזֶּה כָּבוֹד אָמַר
dixit , aurum mihi & , argentum Mihi .exercituum Dominus
9 יְהוָה צְבָאוֹת : לִי הַכֶּסֶף וְלִי הַזָּהָב נְאֻם
novissimæ hujus domus gloria erit Magna .exercituum Dominus
10 יְהוָה צְבָאוֹת : גָּדוֹל יִהְיֶה כְּבוֹד הַבַּיִת הַזֶּה הָאַחֲרוֹן
dabo isto loco in & : exercituum Dominus dixit , primæ quàm
מִן־הָרִאשׁוֹן אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת וּבַמָּקוֹם הַזֶּה אֶתֵּן
quarta & vicesima In .exercituum Dominus dixit pacem
11 שָׁלוֹם נְאֻם יְהוָה צְבָאוֹת : בְּעֶשְׂרִים וְאַרְבָּעָה
Domini verbum fuit ,Dariaves secundo anno in , noni
לַתְּשִׁיעִי בִּשְׁנַת שְׁתַּיִם לְדָרְיָוֶשׁ הָיָה דְּבַר־יְהוָה
Dominus dixit Sic : dicendo , prophetæ Chagghai manu in
12 בְּיַד־חַגַּי הַנָּבִיא לֵאמֹר : כֹּה אָמַר יְהוָה
En : dicendo , legem sacerdotes modò Interroga : exercituum
צְבָאוֹת שְׁאַל־נָא אֶת־הַכֹּהֲנִים תּוֹרָה לֵאמֹר : הֵן
13 tigerit & ,sui vestimenti ora in sanctitatis carnem quispiam feret
יִשָּׂא־אִישׁ בְּשַׂר־קֹדֶשׁ בִּכְנַף בִּגְדוֹ וְנָגַע
,oleum ad & ,vinum ad & ,pulmentum ad & , panem ad sua ora in
בִּכְנָפוֹ אֶל־הַלֶּחֶם וְאֶל־הַנָּזִיד וְאֶל־הַיַּיִן וְאֶל־שֶׁמֶן
responderunt Et ? sanctificabitur nunquid , cibum omnem ad &
וְאֶל־כָּל־מַאֲכָל הֲיִקְדָּשׁ וַיַּעֲנוּ
immundus tetigerit Si :Chagghai dixit Et .Non : dixerunt &,sacerdotes
14 הַכֹּהֲנִים וַיֹּאמְרוּ לֹא : וַיֹּאמֶר חַגַּי אִם־יִגַּע טְמֵא־
,sacerdotes responderunt Et ? erit immundus nónne ,hæc omnia in anima
נֶפֶשׁ בְּכָל־אֵלֶּה הֲיִטְמָא וַיַּעֲנוּ הַכֹּהֲנִים
Sic : dixit & , Chagghai respondit Et .erit Immundus : dixerunt &
15 וַיֹּאמְרוּ יִטְמָא : וַיַּעַן חַגַּי וַיֹּאמֶר כֵּן
: Dominus dixit ,meæ facies ad ista gens sic & , iste populus
הָעָם־הַזֶּה וְכֵן־הַגּוֹי הַזֶּה לְפָנַי נְאֻם־יְהוָה
immundum , ibi offerent quod & ,eorum manuum opus omne sic &
וְכֵן כָּל־מַעֲשֵׂה יְדֵיהֶם וַאֲשֶׁר יַקְרִיבוּ שָׁם טָמֵא
hac die à vestrum cor quæso ponite nunc Et .ipsum
16 הוּא : וְעַתָּה שִׂימוּ־נָא לְבַבְכֶם מִן־הַיּוֹם הַזֶּה
.Domini templo in lapidem ad lapidem poni antequam : suprà &
וָמָעְלָה מִטֶּרֶם שׂוּם־אֶבֶן אֶל־אֶבֶן בְּהֵיכַל יְהוָה :
: decem erat & , viginti acervum ad veniebat eorum existere Ab
17 מִהְיוֹתָם בָּא אֶל־עֲרֵמַת עֶשְׂרִים וְהָיְתָה עֲשָׂרָה
erat & , torculari quinquaginta hauriendum ad torcular ad veniens
בָּא אֶל־הַיֶּקֶב לַחְשֹׂף חֲמִשִּׁים פּוּרָה וְהָיְתָה
,rubigine in & , segetum percussione in vos Percussi .viginti
18 עֶשְׂרִים : הִכֵּיתִי אֶתְכֶם בַּשִּׁדָּפוֹן וּבַיֵּרָקוֹן
vos non & : vestrarum manuum opus omne ,grandine in &
וּבַבָּרָד אֵת כָּל־מַעֲשֵׂה יְדֵיכֶם וְאֵין־אֶתְכֶם
die à vestrum cor nunc Ponite .Dominus dixit ,me ad
19 אֵלַי נְאֻם־יְהוָה : שִׂימוּ־נָא לְבַבְכֶם מִן־הַיּוֹם
die à : noni quarta & vigesima die à , suprà & , ista
הַזֶּה וָמָעְלָה מִיּוֹם עֶשְׂרִים וְאַרְבָּעָה לַתְּשִׁיעִי לְמִן־הַיּוֹם
.vestrum cor ponite , Domini templum est fundatum qua
אֲשֶׁר־יֻסַּד הֵיכַל־יְהוָה שִׂימוּ לְבַבְכֶם :

Versio VULG. LAT.

6 Verbum quod pepigi vobiscum,
cùm egrederemini de terra Ægy-
pti : & spiritus meus erit in me-
7 dio vestrûm, nolite timere. Quia
hæc dicit Dominus exercituum;
Adhuc unum modicum est, & ego
commovebo cœlum, & terram,
8 & mare, & aridam. Et movebo o-
mnes Gentes : ET VENIET
DESIDERATUS cunctis
Gentibus: et implebo domũ istam
gloriâ, dicit Dominus exercituum.
9 Meum est argentum, & meum est
aurum, dicit Dominus exercituũ.
10 Magna erit gloria domûs istius
novissimæ plus quàm primæ, di-
cit Dominus exercituum : & in
loco isto dabo pacem, dicit Do-
11 minus exercituum. In vigesima
& quarta noni mensis, in anno se-
cundo Darii regis, factum est ver-
bũ Domini ad Aggæum prophe-
12 tam, dicens; Hæc dicit Dominus
exercituum; Interroga sacerdotes
13 legem, dicens; Si tulerit homo
carnem sanctificatam in ora vesti-
menti sui, & tetigerit de summi-
tate ejus panem, aut pulmentum,
aut vinum, aut oleum, aut omnẽ
cibum : numquid sanctificabitur?
Respondentes autem sacerdotes,
14 dixerunt; Non. Et dixit Aggæus;
Si tetigerit pollutus in anima ex
omnibus his, numquid contami-
nabitur? Et responderunt sacer-
dotes, & dixerunt; Contamina-
15 bitur. Et respondit Aggæus, &
dixit; Sic populus iste, & sic gens
ista ante faciem meam, dicit Do-
minus, & sic omne opus manuũ
eorum: & omnia quæ obtulerunt
16 ibi, contaminata erunt. Et nunc
ponite corda vestra à die hac &
suprà, antequàm poneretur lapis
super lapidem in templo Domini.
17 Cùm accederetis ad acervum vi-
ginti modiorum, & fierent decẽ:
& intraretis ad torcular, ut expri-
meretis quinquaginta lagenas, &
18 fiebant viginti. Percussi vos ven-
to urente, & aurugine, & gran-
dine omnia opera manuum ve-
strarum : & non fuit in vobis, qui
reverteretur ad me, dicit Domi-
19 nus. Ponite corda vestra ex die
ista, & in futurum, à die vigesima
& quarta noni mensis : à die, quâ
fundamenta jacta sunt templi Do-
mini, ponite super cor vestrum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

[6 Καὶ τὸ πνεῦμά μου ἐφέστηκεν ἐν μέσῳ ὑμῶν.
θαρσεῖτε, Διότι τάδε λέγει κύριος παν-
7 τοκράτωρ, Ἔτι ἅπαξ ἐγὼ σείσω τὸν οὐρανὸν,
καὶ τὴν γῆν, καὶ τὴν θάλασσαν, καὶ τὴν ξηράν,
8 Καὶ συσσείσω πάντα τὰ ἔθνη, καὶ ἥξει
τὰ ἐκλεκτὰ πάντων τῶν ἐθνῶν· καὶ (δ)
πλήσω τὸν οἶκον τοῦτον δόξης, λέγει κύ-
9 ριος παντοκράτωρ. Ἐμὸν τὸ ἀργύριον,
καὶ ἐμὸν τὸ χρυσίον, λέγει κύριος παντο-
10 κράτωρ. Διότι μεγάλη ἔσται ἡ δόξα τοῦ
οἴκου τούτου, ἡ ἐσχάτη ὑπὲρ τὴν πρώτην,
λέγει κύριος παντοκράτωρ· καὶ ἐν τῷ
τόπῳ τούτῳ δώσω εἰρήνην, λέγει κύριος
παντοκράτωρ, καὶ εἰρήνην ψυχῆς εἰς περι-
ποίησιν παντὶ τῷ κτίζοντι, τοῦ ἀναστῆσαι
11 τὸν ναὸν τοῦτον. Τετράδι καὶ εἰκάδι (ε) τοῦ
ἐνάτου μηνὸς, ἔτους δευτέρου, ἐπὶ Δαρείου,
ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς Ἀγγαῖον τὸν προ-
12 φήτην, λέγων, Τάδε λέγει κύριος παν-
τοκράτωρ, (ϛ) Ἐπερώτησον δὴ τοὺς ἱερεῖς νό-
13 μον, λέγων, Ἐὰν λάβῃ ἄνθρωπος κρέας
ἅγιον ἐν τῷ ἄκρῳ τοῦ ἱματίου αὐτοῦ, καὶ
ἅψηται τὸ ἄκρον τοῦ ἱματίου αὐτοῦ ἄρτου, ἢ (ϛ)
ἑψήματος, ἢ οἴνου, ἢ ἐλαίου, ἢ παντὸς βρώ-
ματος, εἰ ἁγιασθήσεται; καὶ ἀπεκρίθησαν οἱ
14 ἱερεῖς, καὶ εἶπαν, Οὔ. Καὶ εἶπεν Ἀγγαῖος,
Ἐὰν ἅψηται (ζ) μεμιασμένος ἀκάθαρτος
ἐπὶ ψυχῇ ἐπὶ παντὸς τούτων, εἰ μιανθή-
σεται; καὶ ἀπεκρίθησαν οἱ ἱερεῖς, καὶ εἶπαν,
15 Μιανθήσεται. Καὶ ἀπεκρίθη Ἀγγαῖος,
καὶ εἶπεν, Οὕτως ὁ λαὸς οὗτος, καὶ οὕτως τὸ
ἔθνος τοῦτο ἐνώπιον ἐμοῦ, λέγει κύριος, καὶ οὕ-
τως πάντα τὰ ἔργα τῶν χειρῶν αὐτῶν· καὶ ὃς ἐὰν
ἐγγίσῃ ἐκεῖ, μιανθήσεται ἕνεκεν τῶν λημμά-
των αὐτῶν τῶν ὀρθρινῶν, ὀδυνηθήσονται ἀπὸ
προσώπου πόνων αὐτῶν, καὶ ἐμισεῖτε ἐν
16 πύλαις (η) ἐλέγχοντα. Καὶ νῦν θέσθε δὴ (θ)
εἰς τὰς καρδίας ὑμῶν ἀπὸ τῆς ἡμέρας ταύτης
καὶ (ι) ὑπεράνω, πρὸ τοῦ θεῖναι λίθον ἐπὶ λί-
17 θον ἐν τῷ ναῷ κυρίου τίνες ἦτε, Ὅτε ἐνε-
βάλλετε εἰς κυψέλην κριθῆς εἴκοσι σάτα,
καὶ ἐγένετο κριθῆς δέκα σάτα· καὶ εἰσεπο-
ρεύεσθε εἰς τὸ ὑπολήνιον ἐξαντλῆσαι πεν-
τήκοντα μετρητὰς, καὶ ἐγένοντο εἴκοσι.
18 Ἐπάταξα ὑμᾶς ἐν (κ) ἀφορίᾳ, καὶ ἐν ἀνε-
μοφθορίᾳ, καὶ ἐν χαλάζῃ πάντα τὰ ἔργα
τῶν χειρῶν ὑμῶν, καὶ οὐκ ἐπεστρέψατε πρὸς
19 με, λέγει κύριος. (λ) Ὑποτάξατε δὴ τὰς
καρδίας ὑμῶν ἀπὸ τῆς ἡμέρας ταύτης, καὶ
ἐπέκεινα, ἀπὸ τῆς τετράδος καὶ εἰκάδος τοῦ
ἐνάτου μηνὸς, καὶ ἀπὸ τῆς ἡμέρας ἧς (μ) τεθε-
μελίωται ὁ ναὸς κυρίου· θέσθε ἐν ταῖς καρδίαις
ὑμῶν,

Et spiritus meus stetit in medio 6]
vestrûm. Confidite; Quia hæc 7
dicit Dominus omnipotens; Ad-
huc semel ego cõmovebo cœlum,
et terram, & mare, & aridam,
Et commovebo omnes gentes: & 8
venient (c) electa omnium gen-
tium: & implebo domum istam
gloriâ, dicit Dominus omnipotens.
Meum est argentum, & meum 9
est aurum, dicit Dominus omni-
potens. Quarè magna erit gloria 10
domûs istius, novissima super pri-
mam, dicit Dominus omnipotens.
Et in loco isto dabo pacem, dicit
Dominus omnipotens, & (d)
pacem animæ in acquisitionem
omni condenti, ut suscitet tem-
plum istud. Quartâ & vigesimâ 11
noni mensis anno secundo sub Da-
rio, factus est sermo Domini ad
Aggæum prophetam, dicens; Hæc 12
dicit Dominus omnipotens; In-
terroga nunc sacerdotes legem,
dicens; Si sumpserit homo carnem 13
sanctam in summitate vestimenti
sui, et tetigerit sũmitas vestimẽti
ejus panẽ, aut coctionẽ, aut vinũ,
aut oleũ, aut omnem cibũ, si san-
ctificabitur? & responderunt sa-
cerdotes, & dixerunt; Non. Et 14
dixit Aggæus; Si tetigerit pollu-
tus (e) immundus in anima de
omnibus his, si contaminabitur?
Et responderunt sacerdotes &
dixerunt; Contaminabitur. Et 15
respondit Aggæus, & dixit; Sic
populus iste, & sic gens hæc co-
ram me, dicit Dominus, & sic
omnia opera manuum eorum: &
quicunque appropinquaverit ibi,
contaminabitur: propter munera
eorum matutina, dolebunt à fa-
cie (f) laborum suorum, & ode-
ratis in portis arguentem. Et nunc 16
ponite, quæso, in corda vestra à die
hac, et suprà, antequàm ponere-
tur lapis super lapidem in templo
Domini, qui eratis, Quando 17
mittebatis in cypselen hordei vi-
ginti sata, et fiebãt decẽ sata hor-
dei, et ingrediebamini torcular,
ut hauriretis quinquaginta am-
phoras, et fiebant viginti. Percussi 18
vos sterilitate, et corruptione ae-
ris, et grandine omnia opera ma-
nuum vestrarum, et non reversi
estis ad me, dicit Dominus. (g)
Supponite nunc corda vestra à 19
die ista, et in futurum, à quar-
ta et vigesima noni mensis, et à
die quâ fundamenta jacta sunt
templi Domini: ponite in cordi-
bus vestris;

MS. A. (δ) πληρώσω (ε) μηνὶ τῷ ἐνάτῳ ἔτους (ϛ) Ἐπερώτησον τοὺς (ϛ) ἑψέματος, (ζ) μεμιαμμένος ἢ ἀκάθαρτος ψυχῇ ἐπὶ ψυχῇ ἀπὸ παντὸς (η) ἐλέγχοντας. (θ) ἐπὶ (ι) ἐπάνω, τοῦ (κ) (*) ἀφθορίᾳ (λ) Τάξατε (μ) ἐθεμελιώθη

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

יָת פִּתְגָמָא דִּי גְזָרִית עִמְּכוֹן בְּמַפַּקְכוֹן מִמִּצְרַיִם וּנְבִיַּי מַלְפִין בֵּינֵיכוֹן לָא תִדְחֲלוּן : 6
אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת עוֹד חֲדָא זְעֵירָא הִיא וַאֲנָא מְזִיעַ יָת שְׁמַיָּא וְיָת אַרְעָא וְיָת 7
יַמָּא וְיָת יַבֶּשְׁתָּא : וַאֲזִיעַ יָת כָּל עַמְמַיָּא וְיֵיתוֹן חֶמְדַּת כָּל עַמְמַיָּא וַאֲמַלֵּי יָת בֵּיתָא 8
הָדֵין יְקָרָא אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת : דִּילִי כַסְפָּא וְדִילִי דַהֲבָא אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת : סַגִּי יְהֵא 9 10
יְקָרֵיהּ דְּבֵיתָא הָדֵין בַּתְרָאָה מִן קַדְמָאָה אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת וּבְאַתְרָא הָדֵין אֶתֵּן שְׁלָמָא
אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת : בְּעַסְרִין וְאַרְבְּעָא לְתְשִׁיעָאָה בִּשְׁנַת תַּרְתֵּין לְדָרְיָוֶשׁ הֲוָה פִּתְגָם 11
נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ בְּיַד חַגַּי נְבִיָּא לְמֵימָר : כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת שְׁאֵיל כְּעַן יָת 12
כָּהֲנַיָּא אוֹרָיְתָא לְמֵימָר : הָא יִטּוֹל גְּבַר בְּסַר קוּדְשָׁא בִּכְנַף לְבוּשֵׁיהּ וְיִקְרֵיב בִּכְסוּתֵיהּ 13
לְלַחְמָא וּלְתַבְשִׁילָא וּלְחַמְרָא וּלְמִשְׁחָא וְכָל דְּמִתְאֲכֵל הֲיִסְתְּאַב וַאֲתִיבוּ כָהֲנַיָּא וַאֲמַרוּ
לָא : וַאֲמַר חַגַּי אִם יִקְרֵיב טְמֵא נַפְשָׁא בְּכָל אִלֵּין הֲיִסְתְּאַב וַאֲתִיבוּ כָהֲנַיָּא וַאֲמַרוּ יִסְתְּאָב : 14
וַאֲתֵיב חַגַּי וַאֲמַר כֵּן עַמָּא הָדֵין וְכֵן כְּנִשְׁתָּא הָדָא קֳדָמַי אֲמַר יְיָ וְכֵן כָּל עוֹבָדֵי יְדֵיהוֹן 15
וְדִיקָרְבוּן תַּמָּן מְסָאַב הוּא : וּכְעַן שַׁווּ כְעַן לִבְּכוֹן מִן יוֹמָא הָדֵין וּלְעֵילָא עַד לָא יִתְּשַׂם 16
נִדְבָּךְ עַל נִדְבָּךְ בְּהֵיכְלָא דַיְיָ : מִדַּהֲוֵיתוּן עָלִין לַעֲרֵימַת עַסְרִין וַהֲוָיָא עַסְרָא עָלִין 17
אַתּוּן לְמַעְצַרְתָּא דְּבַהּ חַמְשִׁין גַּרְבִּין דַּחֲמַר וַהֲוָיָא עַסְרִין : מְחֵיתִי יָתְכוֹן בְּשִׁדְּפוֹנָא 18
וּבְיֵרָקוֹנָא וּבְבַרְדָּא יָת כָּל עוֹבָדֵי יְדֵיכוֹן וְלֵיתֵיכוֹן תָּיְבִין לְפוּלְחָנִי אֲמַר יְיָ : שַׁווּ כְעַן 19
לִבְּכוֹן מִן יוֹמָא הָדֵין וּלְעֵלָּא מִיּוֹם עַסְרִין וְאַרְבְּעָא לְתְשִׁיעָאָה לְמִן יוֹמָא דִּישְׁרֵי
לְאִשְׁתַּכְלָלָא הֵיכְלָא דַיְיָ שַׁווּ לִבְּכוֹן :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Verbum quod decrevi vobiscũ cùm eduxi vos ex Ægypto, & Prophetæ mei 6
docent vos, ne timeatis. Quoniam sic ait Dñs exercituum : Adhuc hoc modi- 7
cum est, & ego commotur⁹ sum cœlos & terram, & mare & aridam. Et com- 8
movebo universas gentes, & veniet desiderium omnium gentium, & implebo
hanc domum gloria, ait Dñs exercituum. Meum est argentum, & meum est 9
aurum, dicit Dominus exercituum. Major futura est gloria hujus domus po- 10
stremæ, quàm primæ, ait Dñs exercituum : & in hoc loco ponam pacem,
ait Dominus exercituum. Vicesima & quarta noni mensis anno secundo Da- 11
rii, factum est verbum prophetiæ à conspectu Dñi per manum Chaggæi pro-
phetæ, dicendo : Sic ait Dñs exercituum : Roga nunc Sacerdotes Legem, 12
dicendo : Ecce feret vir aliquis carnem sanctitatis ora vestimenti sui, & 13
tanget operimento suo panem, & pulmentum, & vinum, & oleum, quic-
quid denique comeditur, nonne *contaminabitur*? Et responderunt Sacer-
dotes ac dixerunt : Minimè. Et dixit Chaggæus : Si tetigerit pollutum ani- 14
mæ in illis omnibus, nónne contaminabitur? & responderunt Sacerdotes ac
dixerunt, Contaminabitur. Et respondit Chaggæus & ait : Sic populus iste, 15
& sic ista congregatio coram me, inquit Dñs : & sic omnia opera manuum
ipsorum, quodq; offerent ibi, pollutum est. Nunc itaque apponite nunc cor 16
vestrum ab hoc die & suprà, priusquam ordo ordini apponeretur in templo
Domini. Ex quo ingrediebamini ad acervum viginti modiorum, & fiebant 17
decem : ingrediebamini in torcular in quo erant quinquaginta dolia vini,
& fiebant viginti. Percussi vos uredine & rubigine & grandine omnia 18
opera manuum vestrarum, nec vos conversi estis ad cultum meum, dicit
Dominus. Apponite nunc cor vestrum ab hoc die & suprà, à die vicesimo 19
& quarto noni mensis, à die quo cœperunt jaci fundamenta templi Domini,
apponite cor vestrum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

6 * ܒܡܠܬܐ ܕܐܩܝܡܬ ܥܡܟܘܢ ܟܕ ܢܦܩܬܘܢ ܡܢ ܡܨܪܝܢ. ܘܪܘܚܝ ܩܝܡܐ ܒܝܢܬܟܘܢ. ܠܐ
7 ܬܕܚܠܘܢ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܬܘܒ ܚܕܐ ܙܒܢ ܡܙܝܥ ܐܢܐ ܫܡܝܐ
8 ܘܐܪܥܐ. ܘܝܡܐ ܘܝܒܫܐ. * ܘܐܙܝܥ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. ܘܢܐܬܘܢ ܓܒܝܐ ܕܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ.
9 ܘܐܡܠܝܘܗܝ ܠܒܝܬܐ ܗܢܐ ܫܘܒܚܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܕܝܠܝ ܗܘ ܣܐܡܐ ܘܕܝܠܝ ܗܘ
10 ܕܗܒܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܘܢܗܘܐ ܪܒ ܫܘܒܚܗ ܕܒܝܬܐ ܗܢܐ ܐܚܪܝܐ: ܝܬܝܪ ܡܢ ܩܕܡܝܐ
11 ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܘܒܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܐܬܠ ܫܠܡܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܘܒܥܣܪܝܢ
ܘܐܪܒܥܐ ܒܝܪܚܐ ܕܬܫܥܐ: ܒܫܢܬ ܬܪܬܝܢ ܠܕܪܝܘܫ. ܗܘܐ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܒܝܕ ܚܓܝ
12 13 ܢܒܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܫܐܠܘ ܠܟ ܢܡܘܣܐ ܡܢ ܟܗܢܐ. * ܐܢ
ܢܫܩܘܠ ܓܒܪܐ ܒܣܪܐ ܕܩܘܕܫܐ ܒܟܢܦܐ ܕܡܪܛܘܛܗ: ܘܢܩܪܒ ܒܟܢܦܗ ܠܠܚܡܐ ܘܠܒܫܘܠܐ.
ܘܠܚܡܪܐ ܘܠܡܫܚܐ. ܘܠܟܠ ܡܐܟܘܠ. ܕܠܡܐ ܡܬܩܕܫ. ܘܥܢܘ ܟܗܢܐ
14 ܘܐܡܪܝܢ ܠܐ. * ܐܡܪ ܚܓܝ. ܐܢ ܢܩܪܒ ܐܢܫ ܕܛܡܐ ܒܢܦܫܗ ܒܟܠܗܘܢ ܗܠܝܢ. ܠܐ ܡܬܛܢܦ.
15 ܘܥܢܘ ܟܗܢܐ ܘܐܡܪܝܢ ܠܗ. ܡܬܛܢܦ. * ܥܢܐ ܚܓܝ. ܘܐܡܪ. ܗܟܢܐ ܗܘ ܥܡܐ ܗܢܐ.
ܘܗܟܢܐ ܗܝ ܫܪܒܬܐ ܗܕܐ ܩܕܡܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܗܟܢܐ ܐܢܘܢ ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܐ ܕܐܝܕܝܗܘܢ.
16 ܘܡܕܡ ܕܡܩܪܒܝܢ ܬܡܢ. ܛܡܐ ܗܘ. * ܘܗܫܐ ܣܝܡܘ ܠܒܟܘܢ ܡܢ ܝܘܡܐ ܗܢܐ
17 ܘܠܥܠ. ܥܕܠܐ ܢܬܬܣܝܡ ܟܐܦܐ ܥܠ ܟܐܦܐ ܒܗܝܟܠܗ ܕܡܪܝܐ. * ܟܕ ܐܬܝܬܘܢ ܗܘܝܬܘܢ
ܠܟܪܝܐ ܕܥܣܪܝܢ. ܗܘܝܢ ܥܣܪܐ. ܘܐܬܝܬܘܢ ܠܘܬ ܡܥܨܪܬܐ ܕܚܡܫܝܢ. ܘܗܘܝ
18 ܥܣܪܝܢ. * ܡܚܝܬܟܘܢ ܒܫܘܕܦܢܐ ܘܒܝܪܩܢܐ ܘܒܒܪܕܐ. ܒܟܠܗ ܥܒܕܐ ܕܐܝܕܝܟܘܢ. ܘܠܐ
19 ܐܬܦܢܝܬܘܢ ܠܘܬܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܣܝܡܘ ܗܫܐ ܠܒܟܘܢ ܡܢ ܝܘܡܐ ܗܢܐ ܘܠܥܠ.
ܡܢ ܥܣܪܝܢ ܘܐܪܒܥܐ ܒܝܪܚܐ ܕܬܫܥܐ. ܡܢ ܝܘܡܐ ܕܐܬܬܣܝܡ ܫܬܐܣܬܐ ܕܗܝܟܠܗ
ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܠܡܒܢܝܘܗܝ.

6 Sermo quem vobiſcum firmavi cùm exiſſetis ex Ægypto, & ſpiritus meus perſeverat inter vos; ne timeatis. 7 Sic enim dicit Dominus potentiſſimus; Adhuc ſemel commoturus ſum cœlum ac terram, mare & continentem: 8 Et excitaturus ſum omnes gentes, ut afferant optatiſſimam quamque rem cunctarum gentium; & iſtam domum gloriâ repleturus, dicit Dominus potentiſſimus. 9 Meum eſt argentû, & meum eſt aurû, dicit Dñs potentiſſimus. 10 Et erit gloria domûs hujus poſterioris multò major quàm prioris, dicit Dominus potentiſſimus: & hoc in loco largiar pacem meam, dicit Dominus potentiſſimus. 11 Deinde vigeſimâ quartâ *die*, menſe nono, anno ſecundo Darii; fuit ſermo Domini per Hagæum prophetam, dicendo; 12 Sic dicit Dominus potentiſſimus; Interrogate ſacerdotes de lege: 13 Si portaverit quiſpiam carnem ſanctam in ala pallii ſui, aut alâ ſuâ tetigerit panem, aut pulmentum, aut vinum, aut oleum, aut quemcunque cibum; num ſanctificari poteſt? Reſponderunt ſacerdotes, ac dixerunt, Minimé. 14 Dixit Hagæus; Si tetigerit is cujus immunda eſt anima *quicquam* horum omnium, annon polluetur? Reſponderunt ſacerdotes, & dixerunt ei; Polluetur. 15 Reſpondit Hagæus, & dixit; Talis eſt populus iſte, & talis eſt generatio iſta coram me, dicit Dominus; ac talia ſunt omnia opera manuum eorum: & quicquid offerunt ibi, immundum eſt. 16 Jam adjicite animum veſtrum ab hac die & anteá. Priuſquàm poſitus fuiſſet lapis ſuper lapidem in templo Domini, 17 Quando ingrediebamini ad acervum viginti, decem erat; & ingrediebamini ad torcular quinquaginta, erant autem viginti: 18 Percuſſi vos vento calido, uredine, & grandine, quodlibet opus manuum veſtrarum; attamen non eſtis ad me converſi, dicit Dominus. 19 Itaque ſubjicite corda veſtra ab hac die & deinceps, à die vigeſima quarta menſis noni, à die quâ collocatum eſt fundamentum domûs Domini potentiſſimi, ut ædificetur.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

6 7 * وروحي وقف في وسطكم * ثقوا من اجل انه هكذا يقول الرب الضابط الكل * انا انا ازلزل من
8 ايضا السماء والارض * والبحر واليابسة * وازلزل كل الامم * وتاتي مختارات جميع الامم * واملا
9 هذا البيت مجدا يقول الرب الضابط الكل * الفضة لي والذهب لي يقول الرب الضابط الكل *
10 * من اجل ان المجد العظيم الاخير لهذا البيت يكون افضل من الاول يقول الرب الضابط
الكل * وفي هذا الموضع اعطي سلامة يقول الرب الضابط الكل * وسلامة نفس للاقتناء * لكل
11 صانع ليقيم هذا الهيكل * وفي اربعة وعشرين من الشهر التاسع من السنة الثانية * على عهد
12 داريوس * صار قول الرب الى حجي النبي قايلا * هكذا يقول الرب الضابط الكل * سل الكهنة فقط
13 قايلا * ان ياخذ انسان لحما مقدسا في طرف ثوبه * ويلمس طرف ثوبه خبزا او طبيخا او خمرا
14 او زيتا او كل طعام * ايتقدس * فاجابوا الكهنة وقالوا لا * فقال حجي * ان تلمس نفس نجسة
15 او غير طاهرة نفسا من جميع هاولاء * اتنجس * فاجابوا الكهنة وقالوا تنجس * فاجاب حجي
وقال * هكذا هذا الشعب * وهكذا هذه الامة امامي يقول الرب * وهكذا جميع اعمال ايديهم * وان
يدنوا احد هناك يتنجس * من اجل ضرباتهم السحرية يتوجعون من وجه اتعابهم * وابغضتم
المبكتين في الابواب *

* الاصحاح الرابع والعشرون * وهو الثاني من النبوة *

16 * والان ضعوا في قلوبكم منذ هذا اليوم وما فوقه * من قبل ان تضعوا حجرا في هيكل الرب *
17 * من كنتم * لما اوعيتم في الصبة من اوعية الحنطة عشرين قدحا شعيرا * فصارت عشرة اقداح
18 شعيرا * ودخلتم الى المعصرة لتستقوا خمسين مطرا * فصارت عشرين * ضربتكم بالجدب وبفساد
19 الهوا * وبالبرد جميع اعمال ايديكم * ولم ترجعوا الي يقول الرب * رتبوا الان قلوبكم منذ هذا
اليوم وما بعده * من الرابع والعشرين من الشهر التاسع * ومنذ اليوم الذي اسس فيه
هيكل الرب *

6 Et ſpiritus meus ſtat in medio veſtri. 7 Confidite, quia ſic ait Dominus omnipotens, Ego ego ſemel adhuc commovebo cœlum & terram, mare & aridam: 8 Et commovebo cunctas gentes, & venient ſelectiſſima quæque cunctarum gentium, & implebo domum iſtam gloriâ, dicit Dominus omnipotens. 9 Meum eſt argentum, & meum aurum, dicit Dominus omnipotens. 10 Nam gloria magna poſterior hujus domûs, præſtantior erit priore, dicit Dominus omnipotens: & in loco iſto pacem dabo, dicit Dominus omnipotens; pacem inquam, animæ poſſidendam omni laboranti ad erigendum hoc templum. 11 Præterea vigeſimâ quartâ menſis noni, anni ſecundi, tempore Darii, factus eſt ſermo Domini ad Haggæum prophetam, dicens; 12 Sic dicit Dominus omnipotens; Interroga ſacerdotes tantùm, dicens; 13 Si quis ſumpſerit carnem ſacram in fimbria ſuæ veſtis, tetigeritque fimbria veſtis ejus panem, aut pulmentum, aut vinum, aut oleum, aut quemcunque cibum; num ſanctificabitur? Reſponderunt ſacerdotes, ac dixerunt, Nequaquam. 14 Dixit Haggæus; Si tetigerit aliqua anima immunda aut impura ullam horum omnium animam, num contaminabitur? Reſponderunt ſacerdotes, ac dixerunt, Contaminabitur. 15 Reſpondit Haggæus, ac dixit; Ita populus iſte, & ita gens iſta coram me, dicit Dominus, atque ita omnia opera manuum eorum: & ſi quis illuc accedat, contaminabitur: propter plagas ſuas matutinas dolebunt à facie laborum ſuorum; & odiſtis arguentes in portis.

Textus vigeſimus quartus, qui eſt
hujus Prophetiæ ſecundus,

16 Jam ergò ponite in cordibus veſtris ab hac die & ſuprà. Antequàm ullum poneretis lapidem in templo Domini, 17 Quales eratis? Quando recondebatis in capſa viginti ſata hordei annonæ frumentariæ, fiebant decem hordei ſata: & ingrediebamini ad torcular ut hauriretis quinquaginta metretas, fiebantque viginti. 18 Percuſſi vos penuriâ & corruptione aëris, & omnia opera manuum veſtrarum grandine; neque tamen reverſi eſtis ad me, dicit Dominus. 19 Jam diſponite corda veſtra ab hac die & deinceps à vigeſima quarta menſis noni, & à die quâ fundatum eſt templum Domini:

זכריה׃ א

,malogranatũ & *,ficum & vitem ad uſque* & ,horreo in ſemen adhuc Nónne
20 העוד הזרע במגורה ועד־הגפן והתאנה והרמון
verbum fuit Et .benedicam hac die A ? tulit non oleæ *lignum* &
21 ועץ הזית לא נשא מן־היום הזה אברך׃ ויהי דבר־
*:dicendum ad,*menſis quarta & vigeſima in ,Chagghai ad ſecundò Domini
יהוה שנית אל־חגי בעשרים וארבעה לחדש לאמר׃
faciens tremere Ego : dicendo ,Jehudah ducem Zerubabel ad Dic
22 אמר אל־זרבבל פחת־יהודה לאמר אני מרעיש את־
diſperdã & ,regnorum ſolium ſubvertam Et .terram & , cœlos
23 השמים ואת־הארץ׃ והפכתי כסא ממלכות והשמדתי
; *eam equitantes & quadrigam* ſubvertam & : gentium regnorum fortitudinem
חזק ממלכות הגוים והפכתי מרכבה ורכביה
.ſui fratris gladio *in vir* , eorum aſcenſores & , equi deſcendent &
וירדו סוסים ורכביהם איש בחרב אחיו׃
fili Zerubbabel te *capiam* ,exercituum Dominus dixit , illa die In
24 ביום ההוא נאם־יהוה צבאות אקחך זרבבל בן־
:ſignaculũ ſicut te ponam &,DOMINUS dixit ,mi ſerve Sealthiel
שאלתיאל עבדי נאם־יהוה ושמתיך כחותם
.exercituum DOMINUS dixit ,elegi te *in* quia
כי־בך בחרתי נאם יהוה צבאות׃

Verſio VULG. LAT.

20 Numquid jam ſemen in germine eſt : & adhuc vinea, & ficus, & malogranatum, & lignum olivæ non floruit ? ex die iſta benedicam. 21 Et factum eſt verbum Domini ſecundò ad Aggæum in vigeſima & quarta menſis, dicens; 22 Loquere ad Zorobabel ducem Juda, dicens; Ego movebo cœlum pariter & terram. 23 Et ſubvertam ſolium regnorum, & conteram fortitudinem regni Gentium : & ſubvertam quadrigam, & aſcenſorem ejus : & deſcendent equi, & aſcenſores eorum : vir in gladio fratris ſui. 24 In die illa, dicit Dominus exercituum, aſſumam te, Zorobabel, fili Salathiel ſerve meus, dicit Dominus : & ponam te quaſi ſignaculum, quia te elegi, dicit Dominus exercituum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

20 (ν)Εἰ ἐπιγνωσθήσεται ἐπὶ τῆς ἅλω, (ξ)καὶ εἰ ἔτι ἡ ἄμπελος, καὶ ἡ συκῆ, καὶ ἡ ῥοά, καὶ τὰ ξύλα τῆς ἐλαίας τὰ οὐ φέροντα καρπὸν, ἀπὸ τῆς ἡμέρας ταύτης (ο) εὐλογήσω. 21 Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου ἐκ δευτέρου πρὸς Ἀγγαῖον τὸν προφήτην, τετράδι καὶ εἰκάδι τοῦ μηνὸς, λέγων, 22 Εἰπὸν πρὸς Ζοροβάβελ τὸν τοῦ Σαλαθιὴλ ἐκ φυλῆς Ἰούδα, λέγων, Ἐγὼ σείω τὸν οὐρανὸν 23 καὶ τὴν γῆν, καὶ τὴν θάλασσαν καὶ τὴν ξηράν, Καὶ καταστρέψω θρόνους βασιλέων, καὶ (π) ὀλοθρεύσω δύναμιν βασιλέων τῶν ἐθνῶν, καὶ καταστρέψω ἅρματα καὶ ἀναβάτας, (ρ) καὶ καταβήσονται ἵπποι καὶ ἀναβάται αὐτῶν, ἕκαστος 24 ἐν ῥομφαίᾳ πρὸς τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγει κύριος παντοκράτωρ, λήψομαί σε Ζοροβάβελ τὸν τοῦ Σαλαθιὴλ, τὸν δοῦλόν μου, λέγει κύριος, καὶ θήσομαί σε (σ) ὡς σφραγῖδα, διότι σὲ ᾑρέτισα, λέγει κύριος παντοκράτωρ. ἈΓΓΑΙ͂ΟΣ Ι'.

20 (h) Si cognoſcetur ſuper aream, & ,ſi adhuc vinea,& fic⁹,& malogranatum,& ligna olivæ, quæ non ferunt fructũ, à die hac benedicã. 21 Et factum eſt verbũ Domini ſecundò ad Aggæum prophetã quartâ & vigeſimâ menſis, dicens; 22 Dic ad Zorobabel filium Salathiel de tribu Juda, dicens; Ego commoveo cœlum, & terrã, (i)& mare,& aridã : 23 Et ſubvertã thronos regum,& diſperdã fortitudinem regũ gentiũ, & ſubvertã currus, & aſcenſores:& aſcendent equi,& aſcenſores eorum, unuſquiſq; in gladio adverſùs fratrem ſuũ. 24 In die illa,dicit Dominus omnipotems,aſſumã te,Zorobabel, filium Salathiel,ſervum meum,dicit Dominus,& ponam te, quaſi ſignaculum: quia te elegi,dicit Dominus omnipotens.

MS. A. (ν)Εἰ ἔτι (ξ)καὶ ἡ ἄμπελος, (ο)καὶ ἐπάνω εὐλογήσω αὐτά. (π)ἐξολοθρεύσω (ρ) καὶ καταστρέψω πᾶσαν τὴν δύναμιν αὐτῶν, καὶ καταβαλῶ τὰ ὅρια αὐτῶν, καὶ ἐνισχύσω τοὺς ἐκλεκτούς μου, καὶ ἀναβήσονται ἵπποι (σ)εἰς σφραγῖδα, ὅτι σὲ ἈΓΓΑΙ͂ΟΣ Ι'.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

20 העוד כען עבורא באדרא ועד כען גופניא ותיניא ורמוניא ואילני זיתא לא טענו יומא
21 הדין אבריך׃ והוה פתגם נבואה מן קדם יי תנינות עם חגי בעסרין וארבעא לירחא
22 למימר׃ אמר לזרבבל רבא דבית יהודה למימר אנא מזיע ית שמיא וית ארעא׃
23 ואהפוך כורסי מלכותא ואתבר תוקף מלכות עממיא ואהפוך רתיכין ורכביהון
24 ויתקטלון סוסון ורכביהון גבר בחרבא דאחוהי׃ בעדנא ההיא אמר יי צבאות
אקרבנך זרבבל בר שאלתיאל עבדי אמר יי ואשוינך כגלוף דעזקא על יד ארי בך
אתרעיתי אמר יי צבאות׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

20 An adhuc frumentum in area, & an adhuc vites, & ficus, & mala punica, & arbores olivæ non ferunt ? die iſta benedicam. 21 Et factum eſt verbum prophetiæ à conſpectu Domini ſecundò cum Chaggæo viceſima & quarta menſis, dicendo : 22 Dic Zerubabeli principi domus Juda dicendo : Ego commoveo cœlos & terram. 23 Et ſubvertam ſolia regnorum, & frangam robur regnorum gentium, ac ſubvertam currus & aſſeſſores eorum, & interficientur equi & equites ipſorum unuſquiſque gladio fratris ſui. 24 In illo tempore, ait Dominus exercituum, accerſam te Zerubabel fili Sealthielis ſerve mi, dicit Dominus : & ponam te ſicut ſculpturam annuli ſuper manum : quoniam in te mihi complacui, dicit Dominus exercituum.

ספר זכריה
CAPUT I. א

Domini verbum fuit , Dariaves ſecundo anno in , octavo menſe In
1 בחדש השמיני בשנת שתים לדריוש היה דבר־יהוה
: dicendo , *prophetæ* Hiddo filii Berechjah filium Zecharjah ad
אל־זכריה בן־ברכיה בן־עדו הנביא לאמר׃
, eos ad *dices Et* .iracundia veſtros patres *ſuper* Dominus eſt Iratus
2 קצף יהוה על־אבותיכם קצף׃ ואמרת אלהם
3 Dominus dixit ,me ad Convertimini : exercituum Dominus dixit Sic
כה אמר יהוה צבאות שובו אלי נאם יהוה
.exercituum Dominus dixit , vos ad convertar & , exercituum
צבאות ואשוב אליכם אמר יהוה צבאות׃
prophetæ *eos ad* clamaverunt quos , veſtri patres ſicut ſitis Ne
4 אל־תהיו כאבתיכם אשר קראו־אליהם הנביאים
Convertimini : exercituum Dominus dixit Sic : dicendo , priores
הראשנים לאמר כה אמר יהוה צבאות שובו
, audierunt non & : malis veſtris *ſtudiis* & ,malis veſtris viis à nunc
נא מדרכיכם הרעים ומעליליכם הרעים ולא שמעו
? ipſi ubi veſtri Patres .Dominus dixit , *me ad* attenderunt neque
5 ולא־הקשיבו אלי נאם־יהוה׃ אבתיכם איה־הם
,mea Verba Veruntamen ? vivent *ſeculum* in nunquid prophetæ &
6 והנבאים הלעולם יחיו׃ אך ׀ דברי
nónne , prophetis meis ſervis mandavi quæ , mea ſtatuta &
וחקי אשר צויתי את־עבדי הנביאים הלוא
: dixerunt & , ſunt converſi Et ? veſtros patres comprehenderunt
השיגו אבתיכם וישובו ויאמרו
nobis *faciendum ad* , exercituum Dominus cogitavit Quemadmodum
כאשר זמם יהוה צבאות לעשות לנו
.nobiſcum fecit ſic ,noſtra opera ſecundùm & ,noſtras vias ſecundùm
כדרכינו וכמעללינו כן עשה אתנו׃

Verſio VULG. LAT.
PROPHETIA ZACHARIÆ.
CAP. I.

1 IN menſe octavo, in anno ſecundo Darii regis, factũ eſt verbũ Dñi ad Zachariam, filium Barachiæ filii Addo, prophetam, dicens; 2 Iratus eſt Dñs ſuꝑ patres 3 veſtros iracundiâ. Et dices ad eos; Hæc dicit Dñs exercituum; Convertimini ad me, ait Dñs exercituum : & convertar ad vos, dicit 4 Dñs exercituum. Ne ſitis ſicut patres veſtri, ad quos clamabant prophetæ priores, dicentes; Hæc dicit Dñs exercituũ ; Convertimini de viis veſtris malis, & de cogitationibus veſtris peſſimis : & non audierunt, neque attende- 5 runt ad me, dicit Dominus. Patres veſtri ubi ſunt ? & Prophetæ numquid in ſempiternum vi- 6 vent ? Veruntamen verba mea, & legitima mea, quæ mandavi ſervis meis prophetis, numquid non comprehenderunt patres veſtros, & converſi ſunt, & dixerunt ; Sicut cogitavit Dominus exercituum facere nobis ſecundùm vias noſtras, & ſecundùm adinventiones noſtras, fecit nobis ?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

ΖΑΧΑΡΙ'ΑΣ ΙΑ'.
ΚΕΦ. α'.

1 ἘΝ τῷ ὀγδόῳ μηνὶ, ἔτους δευτέρου ἐπὶ Δαρείου, ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς Ζαχαρίαν τὸν τοῦ Βαραχίου υἱὸν Ἀδδὼ τὸν προφήτην, λέγων, 2 Ὠργίσθη κύριος ἐπὶ τοὺς πατέρας 3 (α) ὑμῶν ὀργὴν μεγάλην· Καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Ἐπιστρέψατε πρός με, λέγει κύριος τῶν δυνάμεων, καὶ ἐπιστραφήσομαι πρὸς ὑμᾶς, λέγει (β) κύριος τῶν δυνάμεων. 4 Καὶ μὴ γίνεσθε καθὼς οἱ πατέρες ὑμῶν, οἷς ἐνεκάλεσαν αὐτοῖς οἱ προφῆται (γ) ἔμπροσθεν λέγοντες, Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Ἀποστρέψατε ἀπὸ τῶν ὁδῶν ὑμῶν τῶν πονηρῶν, καὶ ἀπὸ τῶν ἐπιτηδευμάτων ὑμῶν τῶν πονηρῶν· καὶ (δ) οὐκ εἰσήκουσαν, καὶ οὐ προσέσχον τοῦ εἰσακοῦσαί μου, 5 λέγει κύριος. Οἱ πατέρες ὑμῶν ποῦ εἰσι καὶ 6 οἱ προφῆται; μὴ τὸν αἰῶνα ζήσονται; Πλὴν τοὺς λόγους μου καὶ τὰ νόμιμά μου δέχεσθε, ὅσα ἐγὼ ἐντέλλομαι ἐν πνεύματί μου τοῖς δούλοις μου τοῖς προφήταις, οἳ κατελάβοσαν τοὺς πατέρας ὑμῶν, καὶ ἀπεκρίθησαν, καὶ εἶπαν, Καθὼς παρατέτακται κύριος παντοκράτωρ τοῦ (ε) ποιῆσαι ἡμῖν κατὰ τὰς ὁδοὺς ἡμῶν καὶ κατὰ τὰ ἐπιτηδεύματα (ζ) ἡμῶν, οὕτως ἐποίησεν (η) ἡμῖν.

ZACHARIAS.
CAP. I.

1 IN octavo menſe anni ſecundi ſub Dario, factum eſt verbum Domini ad Zachariam Barachiæ (a) filium Addo prophetam, dicens; 2 Iratus eſt Dominus ſuper patres veſtros irâ magnâ: 3 Et dices ad eos; Hæc dicit Dominus omnipotens; Convertimini ad me, dicit Domin⁹ virtutũ: et convertar ad vos, dicit Dñs virtutũ. 4 Et nolite fieri, ſicut patres veſtri, quos arguerunt eos prophetæ, qui priùs fuerant, dicentes; Hæc dicit Don⁹ omnipotens; Avertimini à viis veſtris peſſimis, & ab adinventionibus veſtris malis. Et (b) non exaudierunt, & non attenderunt, ut exaudirent me, dicit Domin⁹. 5 Patres veſtri ubi ſunt, & prophetæ? Nunquid in ſempiternum vivent? 6 Veruntamen ſermones meos, & legitima mea ſuſcipite, quæ ego præcipio in ſpiritu meo ſervis meis prophetis, qui comprehenderunt patres veſtros, & reſponderunt, & dixerunt; Sicut præparatus eſt Dominus omnipotens, ut faceret nobis ſecundùm vias noſtras, & ſecundùm adinventiones noſtras; ſic fecit nobis.

MS. A. ΖΑΧΑΡΙ'ΑΣ ΙΑ'. (α) ἡμῶν (β) κύριος παντοκράτωρ. (γ) οἱ ἔμπροσθεν (δ) οὐ προσέσχον (ε) ποιῆσαι κατὰ τὰς ὁδοὺς ὑμῶν (ζ) ὑμῶν, (η) ὑμῖν.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.
א

1 בירחא תמינאה בשנת תרתין לדריוש הוה פתגם נבואה מן קדם יי עם זכריה בר
2 ברכיה בר עדו נביא למימר׃ הוה רגז מן קדם יי על אבהתכון על דארגיזו קדמוהי׃
3 ותימר להון כדנן אמר יי צבאות תובו לפולחני אמר יי צבאות ואתפני במימרי
4 לאיטבא לכון אמר יי צבאות׃ לא תהון כאבהתכון דיתנבון להון נבייא קדמאי
למימר כדנן אמר יי צבאות תובו כען מאורחתכון בישתא ומעובדיכון מקלקליא
5 ולא קבילו ולא אציתו למימרי אמר יי׃ אבהתכון אן אנון ואם תימרון נבייא לא
6 לעלמא קימין׃ ברם פתגמי וקימי די פקדית ית עבדי נבייא הלא אדביקו אבהתכון
ותבו ואמרו כמא דחשיב יי צבאות למעבד לנא כארחתנא וכעובדנא כן עבד
עמנא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.
CAPUT I.

1 IN menſe octavo, anno ſecundo Darii, factum eſt verbum prophetiæ à facie Dñi cum Zacharia filio Barachiæ filii Addo propheta, dicendo : 2 Ira fuit à facie Domini contra patres veſtros, pro eo quòd iracundiam concitâſſent coram eo. 3 Et dices ad eos : Hæc dicit Dominus exercituum : Convertimini ad cultum meum, dicit Dominus exercituum, & reſpiciam in verbo meo ut benefaciam vobis, dicit Dominus exercituum. 4 Ne ſitis ſicut patres veſtri, quibus prophetaverunt Prophetæ priores, dicendo : Sic dicit Dominus exercituum : Convertimini nunc à viis veſtris peſſimis, & ab operibus veſtris corruptis : ſed non obedierunt, nec auſcultaverunt verbum meum, dicit Dominus. 5 Patres veſtri ubi ſunt ? & ſi dixeritis , Prophetæ nonne in æternum ſubſiſtent ? 6 Veruntamen verba mea & pacta mea quæ mandavi ſervis meis Prophetis nónne comprehenderunt patres veſtros ? & converſi ſunt & dixerunt : Sicut cogitaverat Dominus exercituum facere nobis, juxta vias noſtras & ſecundùm opera noſtra, ſic fecit nobiſcum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

20 * ܣܝܡܘ ܒܠܒܟܘܢ. ܕܥܕܡܐ ܙܪܥܐ ܒܐܕܪܐ. ܘܓܦܬܐ ܘܬܐܬܐ ܘܪܘܡܢܐ
ܘܙܝܬܐ ܕܐܝܠܢܐ. ܠܐ ܝܗܒܘ. ܘܡܢ ܝܘܡܢܐ ܡܒܪܟ ܐܢܐ ܠܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܗܘܐ
21 ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܘܬ ܚܓܝ ܕܬܪܬܝܢ ܙܒܢܝܢ. ܒܥܣܪܝܢ ܘܐܪܒܥܐ ܒܝܪܚܐ ܟܕ ܐܡܪ.
22 * ܐܡܪ ܠܙܪܘܒܒܠ ܪܝܫܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܐܢܐ ܡܙܝܥ ܐܢܐ ܫܡܝܐ ܘܐܪܥܐ. * ܘܐܗܦܘܟ ܟܘܪܣܘܬܐ ܕܡܠܟܘܬܐ.
23 ܘܐܘܒܕ ܚܝܠܐ ܕܡܠܟܘܬܐ ܕܥܡܡܐ. ܘܐܗܦܘܟ ܡܪܟܒܬܐ. ܥܠ ܪܟܒܝܗܝܢ. ܘܢܦܠܘܢ
24 ܪܟܫܐ ܘܪܟܒܝܗܘܢ. ܐܢܫ ܒܣܝܦܐ ܕܐܚܘܗܝ. * ܒܗܘ ܝܘܡܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ.
ܐܕܒܪܟ ܙܪܘܒܒܠ ܒܪ ܫܠܬܐܝܠ ܥܒܕܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܣܝܡܟ ܐܝܟ ܥܙܩܬܐ: ܡܛܠ
ܕܒܟ ܓܒܝܬ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ.

* ܫܠܡܬ ܢܒܝܘܬܗ ܕܚܓܝ ܢܒܝܐ *

20 Animadvertite quomodo non extet ſemen in area; vitis, ficus, malogranata, & arbores olivæ non protulerint: ab hac autem die benedicturus ſim eis, dicit Dominus. 21 Fuit etiam ſermo Domini ad Hagæum ſecundâ vice, vigeſimo quarto *die* menſis, dicendo; 22 Dic Zorbabeli principi Judæ; Ego cœlum terrámque concutiam, Et ſubvertam ſolia regnorum, & perdam robur regnorũ gentium. 23 Subvertam currus ſuper conſcenſores eorum, cadéntque equi & iis inſidentes, quiſque gladio fratris ſui. 24 Eo die, dicit Dominus potentiſſimus, aſſumam te Zorbabel fili Selathielis ſerve mi, dicit Dominus, ponámque te ut ſigillum: quia te elegi, dicit Dominus potentiſſimus.

Prophetiæ Hagai prophetæ finis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

20 * ضعوا في قلوبكم انه يعرف ايضا من البيدر. لان الكرمة والتينة ايضا والرمانة وشجر الزيتون
21 التي لم تحمل ثمرا * منذ هذا اليوم سأباركهم * وكان قول الرب ثانية الى حجي النبي * في الرابع
22 والعشرين من الشهر قايلا * قل لزربابل بن سلثاييل من سبط يهوذا قايلا * انا ازلزل السماء
23 والارض والبحر واليبس * واقلب كراسي الملوك * واستاصل قوة ملوك الامم * واقلب المركبات
24 والركاب * وينزل الخيول وركابها كل واحد بالسيف على اخيه * في ذلك اليوم يقول الرب الضابط
الكل * آخذك يا زربابل بن سلثاييل عبدي يقول الرب * واصيّرك مثل خاتم * من اجل اني
ارتضيتك يقول الرب الضابط الكل * * تمت نبوة حجي *

20 Ponite in cordibus veſtris quòd adhuc ab area cognoſcetur: nam viti, & ficui etiam, & malogranato, & arbori olivæ, quæ fructum non afferebant, ab hac die benedicam. 21 Fuit etiam ſermo Domini ſecundò ad Haggæum prophetam, vigeſimâ quartâ menſis, dicens; 22 Dic Zorobabeli filio Salathielis de tribu Judæ, dicens, Ego commovebo cœlum ac terram, mare & aridam; 23 Subvertam ſolia regum, evellam robur regum gentium, ſubvertam currus & equites: deſcendentque equi & conſcenſores eorum, quiſque contra fratrem ſuum gladio. 24 Eo die, dicit Dominus omnipotens, accipiam te O Zorobabel fili Salathielis ſerve mi, dicit Dominus; & ponam te quaſi ſignaculum: quia te oblectatus ſum, dicit Dominus omnipotens.

Prophetiæ Haggæi Finis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܬܘܒ ܢܒܝܘܬܗ ܕܙܟܪܝܐ ܢܒܝܐ *

* ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

1 * ܒܝܪܚܐ ܕܬܡܝܢܝܐ ܒܚܕ ܒܝܪܚܐ. ܒܫܢܬ ܬܪܬܝܢ ܕܕܪܝܘܫ. ܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ
2 ܠܘܬ ܙܟܪܝܐ ܒܪ ܒܪܟܝܐ ܒܪ ܥܕܘ ܢܒܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܪܓܙ ܡܪܝܐ ܥܠ ܐܒܗܝܟܘܢ. ܪܘܓܙܐ
3 ܪܒܐ. * ܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܬܘܒܘ ܠܘܬܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
4 ܚܝܠܬܢܐ. ܘܐܬܦܢܐ ܠܘܬܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܘܠܐ ܬܗܘܘܢ ܐܝܟ ܐܒܗܝܟܘܢ.
ܕܐܟܪܙܘ ܠܘܬܗܘܢ ܢܒܝܐ ܩܕܡܝܐ ܘܐܡܪܘ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܬܘܒܘ ܡܢ
5 ܐܘܪܚܬܟܘܢ ܒܝܫܬܐ ܘܡܢ ܥܒܕܝܟܘܢ ܒܝܫܐ. ܘܠܐ ܫܡܥܘ ܘܠܐ ܨܘܬܘ ܠܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܐܝܟܐ
6 ܐܢܘܢ ܐܒܗܝܟܘܢ ܘܢܒܝܝ. ܕܠܥܠܡ ܚܝܝܢ. * ܒܪܡ ܦܬܓܡܝ ܘܦܘܩܕܢܝ
ܕܦܩܕܬ ܠܥܒܕܝ ܢܒܝܐ. ܐܬܕܟܪܘ ܐܢܘܢ ܐܒܗܝܟܘܢ. ܘܐܬܪܥܝܘ ܘܐܡܪܘ. ܐܝܟ ܕܐܬܪܥܝ
ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܠܡܥܒܕ ܠܢ. ܐܝܟ ܐܘܪܚܬܢ ܘܐܝܟ ܥܒܕܝܢ. ܗܟܢܐ ܥܒܕ ܠܢ.

Sequitur Prophetia

ZECHARIÆ PROPHETÆ.

CAPUT. I.

1 MEnſe octavo, primâ *die* menſis, anno ſecundo Darii, fuit ſermo Domini ad Zechariam filium Berachiæ, filii Addo prophetæ, dicendo; 2 Iratus eſt Dominus patribus veſtris iracundiâ magnâ. 3 Dic eis, Ita dicit Dominus potentiſſimus; Revertimini ad me, dicit Dominus potentiſſimus, & revertar ad vos, ait Dominus potentiſſimus: 4 Et ne ſitis ſimiles patribus veſtris, quibus prædicaverunt prophetæ priores, ac dixerunt; Sic dicit Dominus potentiſſimus; Convertimini à viis veſtris pravis & ab actionibus veſtris peſſimis: attamen non audierunt neque auſcultaverunt mihi, dicit Dominus. 5 Ubinam ſunt patres veſtri & prophetæ mei? num in ſeculum vivunt? 6 At ſermonum & præceptorum meorum quæ mandaveram ſervis meis prophetis, recordati ſunt patres veſtri, ſecúmque cogitantes dixerunt; Quemadmodum decreverat Dominus potentiſſimus facere nobis ſecundùm vias noſtras & ſecundùm facinora noſtra; ita fecit nobis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بسم الله الروف الرحيم *

* نبتدئ بترجمة نبوة زكريا النبي * بركاته تكون معنا * آمين *

* الفصل الاول * * الاصحاح الخامس والعشرون * وهو الاول من النبوة *

1 2 * كان قول الرب الى زكريا بن براشيا بن عدو النبي قايلا * غضب الرب على ابائكم غضبا عظيما *
3 * وتقول لهم * هكذا يقول الرب الضابط الكل * ارجعوا الي فارجع اليكم يقول الرب الضابط الكل *
4 * ولا تكونوا كمثل ابائكم الذين دعاهم الانبياء الذين من قبل قايلين * هكذا يقول الرب
الضابط الكل * ارجعوا من طرقكم الشريرة ومن اعمالكم الخبيثة * فلم يصغوا ان يسمعوا لي يقول
5 6 الرب * اباؤكم اين هم * والانبياء هل يعيشون الى الدهر * لكن لتقبلوا اقوالي وسنني التي انا
اوصيت بها بروحي لعبيدي الانبياء * الذين ادركوا اباءكم فاجابوا وقالوا * كما امر الرب
الضابط الكل ان يصنع كطرقكم وكاعمالكم * هكذا اصنع بكم *

IN NOMINE DEI MISERICORDIS, CLEMENTISSIMI,

Aggredimur interpretationem Prophetæ
ZACHARIÆ PROPHETÆ,
CUJUS BENEDICTIONES
adſint nobis, Amen.

CAPUT PRIMUM.

Textus vigeſimus quintus, hujus autem Prophetiæ primus.

1 FUit ſermo Domini ad Zachariã filiũ Barachiæ filii Addo, prophetã dicens; 2 Iratus eſt Dominus patribus veſtris irâ magnâ. 3 Et dices eis; Sic dicit Dominus omnipotens; Revertimini ad me, & revertar ad vos, dicit Dominus omnipotens: 4 Et ne ſitis ut patres veſtri quos priſci prophetæ vocaverunt, dicentes; Sic ait Dominus omnipotens; Retrahite vos à viis veſtris malis & ab operibus veſtris nefandis: attamen aurem non præbuerunt ad audiendum me, dicit Dominus. 5 Patres veſtri ubi ſunt? et prophetæ num vivent in perpetuũ? 6 Veruntamen ſuſcipite ſermones meos et leges meas quas per ſpiritum meum præcepi ſervis meis prophetis, qui patres veſtros aſſecuti reſponderunt, ac dixerunt; Quemadmodum præcepit Dominus omnipotens acturum ſe ſecundùm vias veſtras et ſecundùm opera veſtra, ita agam vobiſcum.

זכריה: א

mensis ipse , mensis undecimi quarta & vigesima die In
7 בְּיוֹם עֶשְׂרִים וְאַרְבָּעָה לְעַשְׁתֵּי־עָשָׂר חֹדֶשׁ הוּא־חֹדֶשׁ
ad DOMINI verbum fuit , Dariaves secundo anno in ,Sebat
שְׁבָט בִּשְׁנַת שְׁתַּיִם לְדָרְיָוֶשׁ הָיָה דְבַר־יְהוָה אֶל־
: dicendo , *prophetæ* Hiddo filii Berechjahu filium Zecharjah
זְכַרְיָה בֶּן־בֶּרֶכְיָהוּ בֶּן־עִדּוֹא הַנָּבִיא לֵאמֹר׃
ipse & ,rufum equum super *equitans* vir ecce & , nocte Vidi
8 רָאִיתִי הַלַּיְלָה וְהִנֵּה־אִישׁ רֹכֵב עַל־סוּס אָדֹם וְהוּא
equi eum post & ; profundo in quæ ,myrtos inter *stans*
עֹמֵד בֵּין הַהֲדַסִּים אֲשֶׁר בַּמְּצֻלָה וְאַחֲרָיו סוּסִים
? mi Domine ii Qui : dixi Et .albi & , *nigri* , rufi
9 אֲדֻמִּים שְׂרֻקִּים וּלְבָנִים׃ וָאֹמַר מָה־אֵלֶּה אֲדֹנִי
.isti *ipsi* qui tibi ostendā Ego:me in *loquens* angelus me ad dixit Et
וַיֹּאמֶר אֵלַי הַמַּלְאָךְ הַדֹּבֵר בִּי אֲנִי אַרְאֶךָּ מָה־הֵמָּה אֵלֶּה׃
quos Ii : dixit & , myrtos inter *stans* vir respondit Et
10 וַיַּעַן הָאִישׁ הָעֹמֵד בֵּין־הַהֲדַסִּים וַיֹּאמַר אֵלֶּה אֲשֶׁר
responderunt Et .terram *in deambulandum ad* DOMINUS misit
11 שָׁלַח יְהוָה לְהִתְהַלֵּךְ בָּאָרֶץ׃ וַיַּעֲנוּ
: dixerunt & , myrtos inter *stanti* DOMINI angelo
אֶת־מַלְאַךְ יְהוָה הָעֹמֵד בֵּין הַהֲדַסִּים וַיֹּאמְרוּ
.*quiescens & sedens* terra omnis ecce & , terram Perambulavimus
הִתְהַלַּכְנוּ בָאָרֶץ וְהִנֵּה כָל־הָאָרֶץ יֹשֶׁבֶת וְשֹׁקָטֶת׃
,exercituum DOMINE : dixit & , Domini angelus respondit Et
12 וַיַּעַן מַלְאַךְ־יְהוָה וַיֹּאמַר יְהוָה צְבָאוֹת
Jehudah urbium & ,Jerusalaim misereberis non tu quo-usque
עַד־מָתַי אַתָּה לֹא־תְרַחֵם אֶת־יְרוּשָׁלִַם וְאֵת עָרֵי יְהוּדָה
respondit Et ? annos septuaginta jam es iratus quibus
13 אֲשֶׁר זָעַמְתָּה זֶה שִׁבְעִים שָׁנָה׃ וַיַּעַן
.consolatoria verba , bona verba me in *loquenti* ,angelo Dominus
יְהוָה אֶת־הַמַּלְאָךְ הַדֹּבֵר בִּי דְּבָרִים טוֹבִים דְּבָרִים נִחֻמִים׃
dixit Sic : dicendo ,Clama : me in *loquens* ,angelus me ad dixit Et
14 וַיֹּאמֶר אֵלַי הַמַּלְאָךְ הַדֹּבֵר בִּי קְרָא לֵאמֹר כֹּה אָמַר
.magno zelo Sijon & ,Jerusalaim sum Zelatus :exercituum Dominus
יְהוָה צְבָאוֹת קִנֵּאתִי לִירוּשָׁלִַם וּלְצִיּוֹן קִנְאָה גְדוֹלָה׃
ego quia , *pacatas* gentes *super irascens* ego magna ira Et
15 וְקֶצֶף גָּדוֹל אֲנִי קֹצֵף עַל־הַגּוֹיִם הַשַּׁאֲנַנִּים אֲשֶׁר אֲנִי
Propterea .malum in sunt auxiliati ipsi & , parum sum iratus
16 קָצַפְתִּי מְּעָט וְהֵמָּה עָזְרוּ לְרָעָה׃ לָכֵן
.misericordiis in Jerusalaim ad sum Reversus : Dominus dixit sic
כֹּה־אָמַר יְהוָה שַׁבְתִּי לִירוּשָׁלִַם בְּרַחֲמִים
:exercituum DOMINUS ait ,ea in ædificabitur mea Domus
בֵּיתִי יִבָּנֶה בָּהּ נְאֻם יְהוָה צְבָאוֹת
,clama Adhuc .Jerusalaim super extendetur perpendiculum &
17 וְקָוֶה יִנָּטֶה עַל־יְרוּשָׁלִָם׃ עוֹד קְרָא
dispergentur Adhuc :exercituum Dominus dixit Sic : dicendo
לֵאמֹר כֹּה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת עוֹד תְּפוּצֶנָה
adhuc DOMINUS consolabitur & : bonitate præ meæ civitates
עָרַי מִטּוֹב וְנִחַם יְהוָה עוֹד
levavi Et .Jerusalaim in adhuc eliget & , Sijon
18 אֶת־צִיּוֹן וּבָחַר עוֹד בִּירוּשָׁלִָם׃ וָאֶשָּׂא אֶת־
dixi Et .cornua quatuor ecce & , vidi & , meos oculos
19 עֵינַי וָאֵרֶא וְהִנֵּה אַרְבַּע קְרָנוֹת׃ וָאֹמַר
: me ad dixit Et ? hæc Quid : me in *loquentem* angelum ad
אֶל־הַמַּלְאָךְ הַדֹּבֵר בִּי מָה־אֵלֶּה וַיֹּאמֶר אֵלַי
, Israel , Jehudah ventilaverunt quæ cornua Hæc
אֵלֶּה הַקְּרָנוֹת אֲשֶׁר זֵרוּ אֶת־יְהוּדָה אֶת־יִשְׂרָאֵל
quatuor DOMINUS mihi ostendit Et .Jerusalaim &
20 וִירוּשָׁלִָם׃ וַיַּרְאֵנִי יְהוָה אַרְבָּעָה
.fabros
חָרָשִׁים׃

Versio VULG. LAT.

7 In die vigesima & quarta undecimi
mensis Sabath, in anno secundo
Darii factum est verbum
Domini ad Zachariam filiũ Barachiæ,
filii Addo, prophetam, di-
8 cens ; Vidi per noctem, & ecce
vir ascendens super equum rufum,
& ipse stabat inter myrteta,
quæ erant in profundo : & post
9 eum equi rufi, varii, & albi. Et
dixi ; Quid sunt isti, domine mi?
& dixit ad me Angelus, qui loquebatur
in me ; Ego ostendam
10 tibi quid sint hæc. Et respondit
vir, qui stabat inter myrteta,
& dixit ; Isti sunt, quos misit Dominus
ut perambulent terram.
11 Et responderunt Angelo Domini,
qui stabat inter myrteta, &
dixerunt ; Perambulavimus terram,
& ecce omnis terra habita-
12 tur , & quiescit. Et respondit
Angelus Domini, & dixit ; Domine
exercituum, usquequò tu non
misereberis Jerusalem, & urbium
Juda, quibus iratus es ? Iste jam
13 septuagesimus annus est. Et respondit
Dominus Angelo, qui loquebatur
in me verba bona, ver-
14 ba consolatoria. Et dixit ad me
Angelus, qui loquebatur in me ;
Clama, dicens ; Hæc dicit Dominus
exercituum ; Zelatus sum
Jerusalem & Sion zelo magno.
15 Et irâ magnâ ego irascor super
gentes opulentas : quia ego iratus
sum parùm, ipsi verò adjuve-
16 runt in malum. Propterea hæc
dicit Dominus ; Revertar ad Jerusalem
in misericordiis : & domus
mea ædificabitur in ea, ait
Dominus exercituum : & perpendiculum
extendetur super Je-
17 rusalem. Adhuc clama, dicens ;
Hæc dicit Dominus exercituum ;
Adhuc affluent civitates meæ bonis :
& consolabitur adhuc Dominus
Sion, & eliget adhuc Jeru-
18 salem. Et levavi oculos meos,
& vidi : & ecce quatuor cornua.
19 Et dixi ad Angelum, qui loquebatur
in me ; Quid sunt hæc ? &
dixit ad me ; Hæc sunt cornua,
quæ ventilaverunt Judam, & Is-
20 rael , et Jerusalem. Et ostendit
mihi Dominus quatuor fabros.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

7 Τῇ τετράδι καὶ εἰκάδι, τῷ ἑνδεκάτῳ μηνὶ,
οὗτός ἐστιν ὁ μὴν Σαβὰτ, ἐν τῷ δευτέρῳ
ἔτει ἐπὶ Δαρείου, ἐγένετο λόγος κυρίου
πρὸς Ζαχαρίαν τὸν τοῦ Βαραχίου υἱὸν Ἀδ-
8 δὼ τὸν προφήτην, λέγων, (η) Ἑώρακα
τὴν νύκτα, καὶ ἰδοὺ ἀνὴρ ἐπιβεβηκὼς (θ) ἐπὶ
ἵππον πυῤῥὸν, καὶ οὗτος εἱστήκει ἀναμέσον
(ι) τῶν ὀρέων τῶν κατασκίων, καὶ ὀπίσω
αὐτοῦ ἵπποι πυῤῥοὶ, καὶ ψαροὶ, καὶ ποικί-
9 λοι, καὶ λευκοί. Καὶ εἶπα, Τί οὗτοι κύριε;
καὶ εἶπε πρὸς μὲ ὁ ἄγγελος ὁ λαλῶν
ἐν ἐμοὶ, Ἐγὼ δείξω σοι τί ἐστι ταῦτα.
10 Καὶ ἀπεκρίθη ὁ ἀνὴρ ὁ ἐφεστηκὼς ἀναμέσον
τῶν ὀρέων, καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Οὗτοί εἰσιν
οὓς (κ) ἐξαπέστειλε κύριος, περιοδεῦσαι
11 τὴν γῆν. Καὶ ἀπεκρίθησαν τῷ ἀγγέλῳ κυρίου
τῷ ἐφεστῶτι ἀναμέσον τῶν ὀρέων, καὶ
(λ) εἶπον, Περιωδεύσαμεν πᾶσαν τὴν γῆν,
καὶ ἰδοὺ πᾶσα ἡ γῆ κατοικεῖται, καὶ ἡσυχά-
12 ζει. Καὶ ἀπεκρίθη ὁ ἄγγελος κυρίου, καὶ
εἶπε, Κύριε παντοκράτωρ ἕως τίνος οὐ
μὴ (μ) ἐλεήσῃς τὴν Ἱερουσαλὴμ, καὶ τὰς
πόλεις Ἰούδα, ἃς ὑπερεῖδες, τοῦτο ἑβδομη-
13 κοστὸν ἔτος; Καὶ ἀπεκρίθη κύριος παν-
τοκράτωρ τῷ ἀγγέλῳ τῷ λαλοῦντι ἐν ἐμοὶ,
14 ῥήματα καλὰ καὶ λόγους παρακλητικούς. Καὶ
εἶπε πρὸς μὲ ὁ ἄγγελος ὁ λαλῶν ἐν ἐμοὶ,
Ἀνάκραγε λέγων, Τάδε λέγει κύριος παν-
τοκράτωρ, Ἐζήλωκα τὴν Ἱερουσαλὴμ καὶ
15 τὴν Σιὼν ζῆλον μέγαν, Καὶ ὀργὴν μεγά-
λην ἐγὼ ὀργίζομαι ἐπὶ τὰ ἔθνη τὰ συν-
επιτιθέμενα, ἀνθ᾽ ὧν (ν) μὲν ἐγὼ ὠργί-
σθην ὀλίγα, αὐτοὶ δὲ συνεπέθεντο εἰς κα-
16 κά. Διατοῦτο τάδε λέγει (ξ) κύριος, Ἐπι-
στρέψω ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ ἐν οἰκτιρμῷ, καὶ ὁ
οἶκός μου ἀνοικοδομηθήσεται ἐν αὐτῇ, λέ-
γει κύριος παντοκράτωρ, καὶ μέτρον (ο) ἐκ-
17 ταθήσεται ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ Ἔτι. καὶ εἶπε
πρὸς μὲ ὁ ἄγγελος ὁ λαλῶν ἐν ἐμοὶ, (π)
Ἔτι ἀνάκραγε λέγων, Τάδε λέγει κύριος
παντοκράτωρ, Ἔτι διαχυθήσονται πόλεις
ἐν ἀγαθοῖς, καὶ ἐλεήσει κύριος ἔτι τὴν Σι-
18 ὼν, καὶ αἱρετιεῖ (ρ) τὴν Ἱερουσαλήμ. Καὶ
ἦρα τοὺς ὀφθαλμούς μου, καὶ ἴδον, καὶ ἰδοὺ
19 (") τέσσαρα κέρατα. Καὶ εἶπα πρὸς τὸν
ἄγγελον τὸν λαλοῦντα ἐν ἐμοὶ, Τί ἐστι ταῦ-
τα κύριε; καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Ταῦτα τὰ κέ-
ρατα τὰ διασκορπίσαντα τὸν Ἰούδαν, καὶ
20 τὸν (σ) Ἰσραὴλ, καὶ Ἱερουσαλήμ. Καὶ
ἔδειξε μοι κύριος τέσσαρας τέκτονας.

Quartâ & vigesimâ, undecimo 7
mense (hic est mensis Sabat) in
secundo anno sub Dario, factus
est sermo Domini ad Zachariam
Barachiæ filium Addo prophetam,
dicens ; Vidi nocte : & 8
ecce vir ascendens super equum
rufum : & ipse stabat inter (c)
montes umbrosos : & post eum
equi rufi, & cineritii, *& varii, &*
albi. Et dixi ; Quid sunt isti, do- 9
mine? Et dixit ad me angelus, qui
loquebatur in me ; Ego ostendam
tibi, quid sunt hæc. Et respon- 10
dit vir, qui stabat inter montes,
& dixit ad me ; Isti sunt, quos
misit Dominus, ut circuirent terram.
Et responderunt angelo 11
Domini, qui stabat inter montes,
& dixerunt ; Circuivimus omnem
terram : & ecce omnis
terra habitatur , & quiescit.
Et respondit angelus Domi- 12
ni, & dixit ; Domine omnipotens,
usquequò non misereberis
Hierusalem , & urbium Juda ,
(d) quas despexisti, hic est se-
ptuagesimus annus ? Et respon- 13
dit Dominus omnipotens angelo,
qui loquebatur in me, verba bo-
na, & sermones consolatorios.
Et dixit ad me angelus, qui lo- 14
quebatur in me ; Clama, dicens ;
Hæc dicit Dominus omnipotens ;
Zelatus sum Hierusalem, & Sion
zelo magno : Et irâ magnâ ego 15
irascor super gentes, quæ super-
impositæ sunt : pro eo quòd e-
go quidem iratus sum modi-
cùm : ipsi verò superimpositi
sunt in mala. Propterea hæc 16
dicit Dominus ; Convertar
ad Hierusalem in misericordia :
& domus mea instaurabitur in
ea, dicit Dominus omnipotens :
& mensura extendetur super
Hierusalem Adhuc. Et di- 17
xit ad me angelus qui loqueba-
tur in me ; Adhuc clama, di-
cens ; Hæc dicit Dominus omni-
potens ; Adhuc diffundentur ci-
vitates in bonis : & miserebitur
Dominus adhuc Sion, & eliget
Hierusalem. Et levavi oculos 18
meos, & vidi : & ecce quatuor
cornua. Et dixi ad angelum, 19
qui loquebatur in me ; Quid
sunt hæc, domine? Et dixit ad
me ; Hæc sunt cornua, quæ di-
sperserunt Judam, & Israel, &
Hierusalem. Et ostendit mihi 20
Dominus quatuor fabros.

MS. A. (η) Ἑόρακα (θ) ἐφ᾽ (ι) τῶν δύο ὀρέων (κ) ἐξαπέσταλκεν κύριος, τοῦ περιοδεῦσαι (λ) εἶπαν, Περιωδεύκαμεν (μ) ἐλεήσεις (ν) ἐγὼ μὲν (ξ) κύριος παντοκράτωρ, (ο) ἐκτεθήσεται (π) Ἀνάκραγε (ρ) κύριος τὴν Ἱερουσαλὴμ ἔτι. (") τέσσερα (σ) Ἰσραήλ. Καὶ ἔδειξέν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

7 ביום עשרין וארבעא לחד עשר ירחא הוא ירחא שבט בשנת תרתין לדריוש הוה
8 פתגם נבואה מן קדם יי עם זכריה בר ברכיהו בר עדוא נביא למימר : חזיתי בליליא
והא גבר רכיב על סוסי סמוק והוא קאים בין אילניא דהדסיא די בבבל ובתרוהי
9 סוסון סומקין קוחין וחורין : ואמרית מן אלין רבוני ואמר לי מלאכא די מליל עמי אנא
10 אחוינך מה אנון אלין : ואתיב גברא דקאם בין אילני הדסיא ואמר אלין די שלח יי
11 להלכא בארעא : ואתיבו ית מלאכא דיי דקאם בין אילני הדסיא ואמרו הליכנא
12 בארעא והא כל ארעא יתבא שליא ושקיטא : ואתיב מלאכא דיי ואמר יי צבאות עד
אימתי את לא תרחם על ירושלם ועל קרויא דבית יהודה דאיתיתא עליהון לוט
13 דנן שבעין שנין : ואתיב יי ית מלאכא די מלל עמי פתגמין תקנין פתגמין דניחומין :
14 ואמר לי מלאכא די מלל עמי אתנבי למימר כדנן אמר יי צבאות מתפרע אנא
15 פורענות ירושלם ולציון קנאה רבא: ורגז רב אנא רגיז על עממיא דשרן שליוא די אנא
16 רגזית על עמי זעיר ואנון מסיעין לאבאשא : בכן כדנן אמר יי אתיב לירושלם
ברחמין בית מקדשי יתבני בה אמר יי צבאות וחוט דמשחתא יתנגיד על בנין כתלי
17 ירושלם : עוד אתנבי למימר כדנן אמר יי צבאות עוד יתמלין קרוי עמי טובא וינחם יי
18 עוד ית ציון ויתרעי עוד בירושלם : וזקפית ית עיני וחזית והא ארבע מלכון : ואמרית
19 למלאכא דממלל עמי מן אלין ואמר לי אלין מלכותא דבדרא ית אנש יהודה וית
20 ישראל ויתבי ירושלם : ואחזיני יי ארבעא אומנין :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

In die vicesima quarta undecimi mensis, ipse est mensis Sebat, anno secundo 7
Darii, factum est verbum prophetiæ à facie Dñi cum Zacharia filio Barachiæ
filii Addo propheta, dicendo : Vidi nocte, & ecce vir ascendens super equum 8
rufum, & ipse stabat inter arbores myrthinas quæ sunt in Babylone, & post
eum equi rufi, varii, & albi. Et dixi : Quid sunt isti, domine mi ? Et dixit 9
ad me angelus qui loquebatur mecum : Ego ostendam tibi quinam sint isti.
Et respondit vir qui stabat inter arbores myrthinas, & dixit : Isti sunt quos 10
misit Dominus ut perambulent terram. Et responderunt ad angelum Domini 11
qui stabat inter arbores myrthinas, atque dixerunt : Perambulavimus terram :
& ecce omnis terra habitatur pacifica & quieta. Et respondit angelus 12
Domini & dixit : Domine exercituum, usquequo non misereberis Jerusalem
& urbium domus Juda, super quas adduxisti maledictionem istis septuaginta
annis ? Et respondit Dominus angelo qui loquebatur mecum verba recta, 13
verba consolatoria. Et dixit ad me angelus qui loquebatur mecum : Vatici- 14
nare dicendo : Sic dicit Dominus exercituum : Ego ulciscar ultionem Jerusalem
& Sion zelo magno. Et ira magna ego irascar in gentes quæ degunt 15
securè : quia iratus sum parum contra populum meum, & ipsi auxiliati sunt
ad malefaciendum. Propterea sic dicit Dominus : Convertar ad Jerusalem 16
cum miserationibus: domus sanctuarii mei ædificabitur in ea, dicit Dominus
exercituum : & funiculus perpendiculi extendetur super ædificium parietum
Jerusalem. Adhuc vaticinare , dicendo : Sic dicit Dominus exercitu- 17
um : Adhuc implebuntur bono urbes populi mei , & consolabitur ad- 18
huc Dominus Sion, & complacebit adhuc sibi in Jerusalem. Et levavi 19
oculos meos & vidi, & ecce quatuor regna. Et dixi ad angelum qui mecum
verba faciebat , Quid sunt ista ? qui dixit mihi, Ista sunt regna quæ disper- 20
serunt viros Juda, & Israelem, & habitatores Jerusalem. Et ostendit mihi
Dominus quatuor artifices.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܒܝܘܡ ܥܣܪܝܢ ܘܐܪܒܥܐ ܒܚܕܥܣܪ ܝܪܚܐ ܕܗܘ ܫܒܛ . ܒܫܢܬ ܬܪܬܝܢ ܠܕܪܝܘܫ . 7
ܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܙܟܪܝܐ . ܒܪ ܒܪܟܝܐ ܒܪ ܥܕܘ ܢܒܝܐ ܟܕ ܐܡܪ . * ܚܙܝܬ 8
ܒܠܠܝܐ . ܓܒܪܐ ܕܪܟܝܒ ܥܠ ܣܘܣܝܐ ܣܘܡܩܐ . ܘܩܐܡ ܒܝܢܬ ܐܝܠܢܐ ܕܡܛܠܠܝܢ .
ܘܒܬܪܗ ܪܟܫܐ ܣܘܡܩܐ . ܘܦܨܝܚܐ . ܘܚܘܪܐ . * ܘܐܡܪܬ ܡܢܐ ܐܝܠܝܢ ܡܪܝ . ܘܐܡܪ ܠܝ 9
ܡܠܐܟܐ ܕܡܡܠܠ ܥܡܝ . ܐܢܐ ܐܚܘܝܟ ܡܢܐ ܐܝܠܝܢ . * ܘܥܢܐ 10
ܓܒܪܐ ܕܩܐܡ ܒܝܢܬ ܐܝܠܢܐ . ܘܐܡܪ ܠܝ . ܐܝܠܝܢ ܐܢܘܢ ܕܫܕܪ ܡܪܝܐ ܠܡܗܠܟܘ ܒܐܪܥܐ .
* ܘܥܢܘ ܘܐܡܪܘ ܠܡܠܐܟܗ ܕܡܪܝܐ ܕܩܐܡ ܒܝܢܬ ܐܝܠܢܐ . ܘܗܠܟܢ ܒܐܪܥܐ . ܘܟܠܗ 11
ܐܪܥܐ . ܝܬܒܐ ܘܫܠܝܐ . * ܘܥܢܐ ܡܠܐܟܗ ܕܡܪܝܐ ܘܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ . ܥܕܡܐ ܐܡܬܝ 12
ܠܐ ܡܪܚܡ ܐܢܬ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ ܘܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܕܝܗܘܕܐ . ܕܪܓܙܬ ܥܠܝܗܝܢ ܗܐ ܫܒܥܝܢ
ܫܢܝܢ . * ܘܥܢܐ ܡܪܝܐ ܠܡܠܐܟܐ ܕܡܡܠܠ ܥܡܝ . ܡܠܐ ܛܒܐ ܘܦܬܓܡܐ ܕܒܘܝܐܐ . 13
* ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܠܐܟܐ ܕܡܡܠܠ ܥܡܝ . ܐܟܪܙ ܘܐܡܪ . ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ . 14
ܛܢܢܬ ܠܐܘܪܫܠܡ ܘܠܨܗܝܘܢ ܛܢܢܐ ܪܒܐ . * ܘܪܘܓܙܐ ܪܒܐ ܪܓܝܙ ܐܢܐ ܥܠ ܥܡܡܐ 15
ܕܡܬܪܓܫܝܢ . ܕܐܢܐ ܪܓܙܬ ܙܥܘܪ . ܘܗܢܘܢ ܥܕܪܘ ܠܒܝܫܬܐ . * ܡܛܠ ܗܢܐ 16
ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ . ܐܬܦܢܝܬ ܠܐܘܪܫܠܡ ܒܪܚܡܐ . ܘܒܝܬܝ ܢܬܒܢܐ ܒܗ
ܒܓܘܗ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ . ܘܚܒܠܐ ܢܬܡܬܚ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ . * ܬܘܒ ܐܟܪܙ ܘܐܡܪ . 17
ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ . ܬܘܒ ܢܬܦܢܝܢ ܡܕܝܢܬܐ ܡܢ ܛܒܬܐ . ܘܢܒܢܐ
ܬܘܒ ܡܪܝܐ ܠܨܗܝܘܢ . ܘܢܓܒܐ ܬܘܒ ܠܐܘܪܫܠܡ . * ܘܐܪܝܡܬ ܥܝܢܝ ܘܚܙܝܬ 18
ܘܗܐ ܐܪܒܥ ܩܪܢܢ . * ܘܐܡܪܬ ܠܡܠܐܟܐ ܕܡܡܠܠ ܥܡܝ . ܡܢܐ ܐܢܝܢ ܡܪܝ . 19
ܘܐܡܪ ܠܝ . ܗܠܝܢ ܐܢܝܢ ܩܪܢܬܐ ܕܒܕܪ ܠܝܗܘܕܐ ܘܠܐܝܣܪܝܠ ܘܠܐܘܪܫܠܡ . * ܘܚܘܝܢܝ 20
ܡܪܝܐ ܐܪܒܥܐ ܢܓܪܐ .

7 Die vigeſimâ quartâ, menſe undecimo, nempe Sebat, anno ſecundo Darii; fuit ſermo Domini ad Zechariam filium Berachiæ, filii Addo prophetæ, dicendo; 8 Vidi noctе virum inſidentem equo rufo, & ſtantem inter arbores umbriferas: & poſt ipſum equos rufos, verſicolores, & albos. 9 Et dixi, Quid ſunt iſti domine mi? Reſpondit angelus qui loquebatur in me, dixítque mihi; Ego oſtendam tibi quid ſint iſti. 10 Reſpondens vir ille qui ſtabat inter arbores, dixit mihi; Hi ſunt quos miſit Dominus ad perambulandum terram. 11 Reſponderunt autem & dixerunt angelo Domini qui ſtabat inter arbores; Perambulavimus terram, totáque terra ſedet & tranquilla eſt. 12 Tunc prolocutus angelus Domini, dixit; Domine potentiſſime, quouſque non miſereberis Jeroſolymæ & urbium Judæ, quibus iratus es jam ſeptuaginta annis? 13 Reſpondit Dominus angelo qui loquebatur in me, verba jucunda & ſermones conſolatione *plenos.* 14 Quapropter dixit mihi angelus qui loquebatur in me; Prædica, & dic; Sic dicit Dominus potentiſſimus, Commotus ſum erga Jeruſalem & Sionem zelo magno, 15 Et irâ magnâ excandeſco in gentes tumultuantes: ego enim parum iratus fueram, ipſæ verò auxiliatæ ſunt ad malum. 16 Propterea ſic dicit Dominus potentiſſimus; Converſus ſum ad Jeruſalem cum miſericordia, & domum meam collocabo in medio ipſius, dicit Dominus potentiſſimus, & funiculus menſorius extendetur ſuper Jeruſalem. 17 Præterea prædica, & dic; Sic ait Dominus potentiſſimus, Jam urbes bonis evacuabuntur, & iterum ædificabit Dominus Sionem, iterumque eliget Jeruſalem. 18 Deinde ſublatis oculis vidi, & ecce quatuor cornua: 19 Et dicenti mihi ad angelum qui loquebatur in me, Quid iſta ſunt mi domine? reſpondit; Hæc ſunt cornua quæ diſperſerunt Judam, Iſraelem, & Jeroſolymam. 20 Deinde oſtendit mihi Dominus quatuor fabros:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وفي الرابع والعشرين في الشهر الحادي عشر . هذا هو شهر سباط . في السنة الثانية 7
على عهد داريوس . كان قول الرب الى زكريا بن براشيا بن عدو النبي قايلا . * رايت 8
ليلا . واذا رجل راكب على فرس احمر . وهو واقف بين جبلين ظليلين . وخلفه
خيل حمر وشقر وبلق وشهب . * فقلت من هاولاء يا سيد . فقال لي الملاك المتكلم في * 9
انا اظهر لك من هم هاولاء . * فاجاب الرجل القايم بين الجبال وقال لي . هاولاء هم الذين 10
ارسلهم الرب ليطوفوا الارض . * فاجابوا ملاك الرب القايم بين الجبال وقالوا . طفنا كل 11
الارض . واذا كل الارض ساكنة وهادية . * فاجاب ملاك الرب . ايها الرب الضابط 12
لكل الى متى لا ترحم ايروشليم ومدن يهودا التي تغافلت عنها هذه السنة السبعون .
* فاجاب الرب الضابط الكل للملاك المتكلم في بكلمات جيدة واقوال عزائية . * فقال 13 14
لي الملاك المتكلم في . اصرخ قايلا . هكذا يقول الرب الضابط الكل . غرت
لايروشليم وصهيون غيرة عظيمة . * وانا ازجر زجرا عظيما على الامم المجتمعين عليها . لاني 15
انا غضبت قليلا . وهم اجتمعوا للشرور . * لاجل هذا هكذا يقول الرب . ارجع الى 16
ايروشليم برافة . وبيتي يبنى فيها يقول الرب الضابط الكل . ويمد القياس على ايروشليم
ايضا . * وقال لي الملاك المتكلم في . اصرخ قايلا . هكذا يقول الرب الضابط الكل . 17
تفرح المدن بالخيرات ايضا . ويرحم الرب على صهيون ايضا . ويرتضي بايروشليم ايضا .
* ورفعت عيني فنظرت . واذا اربعة قرون . * فقلت للملاك المتكلم في . ما هي هذه يا 18 19
سيد . فقال لي . هذه القرون التي فرقت يهودا واسرايل وايروشليم . * واراني الرب 20
اربعة نجارين .

7 *Et vigeſimâ quartâ menſis undecimi, is eſt menſis Sebat, anno ſecundo, tempore Darii; fuit ſermo Domini ad Zachariam filium Barachiæ filii Addo, prophetam, dicens;* 8 *Videbam nocturno* tempore, *& ecce vir quidam inſidens equo rubeo ſtabat inter duos montes umbroſos: & à tergo ipſius equi rubei, rufi, verſicolores, & cinerei.* 9 *Et dixi; Quinam iſti ſunt O domine? Dixit mihi angelus in me loquens; Ego indicabo tibi quinam ſint iſti.* 10 *Et reſpondit vir ille qui ſtabat inter montes, dixitque mihi; Hi ſunt quos miſit Dominus ad perluſtrandam terram.* 11 *Tunc reſponderunt angelo Domini qui ſtabat inter montes, & dixerunt; Perluſtravimus totam terram, & ecce tota terra quieta eſt atque tranquilla.* 12 *Reſpondens angelus Domini, dixit; O Domine omnipotens, quouſque non miſereberis Jeroſolymæ & urbium Judæ, quas neglexiſti ſeptuaginta abhinc annis?* 13 *Reſpondit Dominus omnipotens angelo in me loquenti verba bona, & ſermones conſolatorios.* 14 *Quare dixit mihi angelus in me loquens; Clama dicens, Sic ait Dominus omnipotens; Commotus ſum erga Jeroſolymam & Sionem zelo magno:* 15 *Ideò indignatione magnâ iraſcor gentibus adverſùs eam congregatis: quoniam ego parum indignatus fueram, inde ipſæ congregatæ ſunt ad mala.* 16 *Idcircò ſic ait Dominus; Convertar clementèr ad Jeruſalem, & domus mea ædificabitur in ea, dicit Dominus omnipotens: & extendetur adhuc menſura ſuper Jeruſalem.* 17 *Et dixit mihi angelus in me loquens, Clama dicens; Sic ait Dominus omnipotens, Urbes bonis adhuc fruentur, & Dominus adhuc miſerebitur Sionis, & adhuc placabitur Jeroſolymæ.* 18 *Deinde ſublatis oculis vidi, & ecce quatuor cornua.* 19 *Quapropter dixi angelo in me loquenti; Quid ſunt hæc O domine? Dixit mihi; Hæc ſunt cornua quæ diſſipaverunt Judam, & Iſraelem, & Jeroſolymam.* 20 *Præterea oſtendit mihi Dominus quatuor fabros:*

זכריה: ב ג

Iſta : dicendo ,dixit Et ? faciendū ad *venientes* ipſi Quid : dixi Et
21 וָאֹמַר מָה אֵלֶּה בָאִים לַעֲשׂוֹת וַיֹּאמֶר לֵאמֹר אֵלֶּה
levavit non vir *ut adeò* ,Jehudah ventilaverunt quæ , cornua
הַקְּרָנוֹת אֲשֶׁר־זֵרוּ אֶת־יְהוּדָה כְּפִי־אִישׁ לֹא־נָשָׂא
cornua projiciendū ad ,eos terrendū ad iſti venerunt & :ſuū caput
רֹאשׁוֹ וַיָּבֹאוּ אֵלֶּה לְהַחֲרִיד אֹתָם לְיַדּוֹת אֶת־קַרְנוֹת
.eam ventilandū ad ,Jehudah terram *ad* cornu *levantium* gentium
הַגּוֹיִם הַנֹּשְׂאִים קֶרֶן אֶל־אֶרֶץ יְהוּדָה לְזָרוֹתָהּ׃

CAP. II. ב

funiculus ejꝰ manu in & , vir ecce & ,vidi & ,meos oculos levavi Et
1 וָאֶשָּׂא עֵינַי וָאֵרֶא וְהִנֵּה־אִישׁ וּבְיָדוֹ חֶבֶל
metiendum Ad :me ad dixit Et *? videns tu* Quò :dixi Et.menſuræ
2 מִדָּה׃ וָאֹמַר אָנָה אַתָּה הֹלֵךְ וַיֹּאמֶר אֵלַי לָמֹד אֶת־
.ejus longitudo quanta & ,ejus latitudo quanta *videndum ad* ,Jeruſalaim
יְרוּשָׁלַםִ לִרְאוֹת כַּמָּה־רָחְבָּהּ וְכַמָּה אָרְכָּהּ׃
egrediens alius angelus et *: exiens* ,me in *loquens* angelus ecce Et
3 וְהִנֵּה הַמַּלְאָךְ הַדֹּבֵר בִּי יֹצֵא וּמַלְאָךְ אַחֵר יֹצֵא
,iſtum puerum ad loquere,Curre : eum ad dixit Et .ejus occurſum in
4 לִקְרָאתוֹ׃ וַיֹּאמֶר אֵלָו רֻץ דַּבֵּר אֶל־הַנַּעַר הַלָּז
animalis & hominis multitudine præ Jeruſalaim habitabitur *Villæ* :dicendo
לֵאמֹר פְּרָזוֹת תֵּשֵׁב יְרוּשָׁלַםִ מֵרֹב אָדָם וּבְהֵמָה
murus ,Dominus dixit ,ei ero ego Et .ejus medio in
5 בְּתוֹכָהּ׃ וַאֲנִי אֶהְיֶה־לָּהּ נְאֻם־יְהוָה חוֹמַת
fugite & ,*Væ* ,*Væ* .ejus medio in ero gloriā in & *: circum ignis*
6 אֵשׁ סָבִיב וּלְכָבוֹד אֶהְיֶה בְתוֹכָהּ׃ הוֹי הוֹי וְנֻסוּ
ventos quatuor *juxta* quia : Dominus dixit , Aquilonis terra de
מֵאֶרֶץ צָפוֹן נְאֻם־יְהוָה כִּי כְּאַרְבַּע רוּחוֹת
,te erue , Sijon *Væ* .Dominus dixit ,vos diſperſi cœlorum
7 הַשָּׁמַיִם פֵּרַשְׂתִּי אֶתְכֶם נְאֻם־יְהוָה׃ הוֹי צִיּוֹן הִמָּלְטִי
: exercituum Dominus dixit ſic Quia .Babel filiæ habitatrix
8 יֹשֶׁבֶת בַּת־בָּבֶל׃ כִּי כֹה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת
tangens quia : vos *ſpoliantes* gentes ad me miſit gloriam Poſt
אַחַר כָּבוֹד שְׁלָחַנִי אֶל־הַגּוֹיִם הַשֹּׁלְלִים אֶתְכֶם כִּי הַנֹּגֵעַ
meā manum *agitans ego* ecce Quia .ejus oculi pupillam *tangens* ,vos *in*
9 בָּכֶם נֹגֵעַ בְּבָבַת עֵינוֹ׃ כִּי הִנְנִי מֵנִיף אֶת־יָדִי
Dominus quòd ſcietis & : ſuis ſervis *ſpolium* erunt & , eos ſuper
עֲלֵיהֶם וְהָיוּ שָׁלָל לְעַבְדֵיהֶם וִידַעְתֶּם כִּי־יְהוָה
ego ecce quia ,Sijon filia lætare & *Præconiza* .me miſerit exercituum
10 צְבָאוֹת שְׁלָחָנִי׃ רָנִּי וְשִׂמְחִי בַּת־צִיּוֹן כִּי הִנְנִי־
adhærebunt Et .Dominus ait , tui medio in habitabo & ,*veniens*
11 בָא וְשָׁכַנְתִּי בְתוֹכֵךְ נְאֻם־יְהוָה׃ וְנִלְווּ
:populum in mihi erunt & , illa die in *Dominum ad* multæ gentes
גּוֹיִם רַבִּים אֶל־יְהוָה בַּיּוֹם הַהוּא וְהָיוּ לִי לְעָם
exercituum Dominus quòd ſcies & : tui medio in habitabo &
וְשָׁכַנְתִּי בְתוֹכֵךְ וְיָדַעַתְּ כִּי־יְהוָה צְבָאוֹת
Jehudah Dominus poſſidebit Et .te ad me miſerit
12 שְׁלָחַנִי אֵלָיִךְ׃ וְנָחַל יְהוָה אֶת־יְהוּדָה
.Jeruſalaim *in* adhuc eliget & ,ſanctitatis *humum* ſuper ſuam partem
חֶלְקוֹ עַל אַדְמַת הַקֹּדֶשׁ וּבָחַר עוֹד בִּירוּשָׁלָםִ׃
habitaculo de *eſt excitatus* quia : Domini *faciebus* à caro omnis Sile
13 הַס כָּל־בָּשָׂר מִפְּנֵי יְהוָה כִּי נֵעוֹר מִמְּעוֹן
.ſuæ ſanctitatis
קָדְשׁוֹ׃

CAP. III. ג

angeli facies ad ſtantem,magnum ſacerdotē Jehoſuah mihi oſtendit Et
1 וַיַּרְאֵנִי אֶת־יְהוֹשֻׁעַ הַכֹּהֵן הַגָּדוֹל עֹמֵד לִפְנֵי מַלְאַךְ
.ei *adverſandum ad* ,ejus dexteram *ſuper ſtans* Satan & : Domini
יְהוָה וְהַשָּׂטָן עֹמֵד עַל־יְמִינוֹ לְשִׂטְנוֹ׃

Verſio VULG. LAT.

21 Et dixi; Quid iſti veniunt facere? Qui ait, dicens; Hæc ſunt cornua quæ ventilaverunt Judam per ſingulos viros, & nemo eorum levavit caput ſuum : & venerunt iſti deterrere ea, ut dejiciant cornua gentium, quæ levaverunt cornu ſuper terram Juda ut diſpergerent eam.

CAP. II.

1 ET levavi oculos meos, & vidi: & ecce vir, & in manu ejus funiculus menſorum. 2 Et dixi; Quò tu vadis? Et dixit ad me; Ut metiar Jeruſalem, & videam quanta ſit latitudo ejus, & quanta longitudo ejus. 3 Et ecce angelus, qui loquebatur in me, egrediebatur, & angelus alius egrediebatur in 4 occurſum ejus. Et dixit ad eum; Curre, loquere ad puerum iſtum, dicens; Abſque muro habitabitur Jeruſalem, præ multitudine hominum & jumentorum in medio e- 5 jus. Et ego ero ei, ait Dominus, murus ignis in circuitu: & in glo- 6 ria ero in medio ejꝰ. O, ô fugite de terra Aquilonis, dicit Dominus, quoniam in quatuor ventos cœli 7 diſperſi vos, dicit Dominus. O Sion, fuge quæ habitas apud filiā 8 Babylonis: Quia hæc dicit Dominus exercituum; Poſt gloriam miſit me ad gentes, quæ ſpoliaverunt vos: qui enim tetigerit vos, 9 tangit pupillam oculi mei: Quia ecce ego levo manum meam ſuper eos, & erunt prædæ his, qui ſerviebant ſibi: & cognoſcetis quia Dominus exercituum miſit 10 me. Lauda & lætare, filia Sion: quia ecce ego venio, & habitabo 11 in medio tuî, ait Dominus. Et applicabuntur Gentes multæ ad Dominū in die illa, & erunt mihi in populum, & habitabo in medio tuî: & ſcies quia Dominus ex- 12 ercituum miſit me ad te. Et poſſidebit Dominus Judam partem ſuam in terra ſanctificata: & eli- 13 get adhuc Jeruſalem. Sileat omnis caro à facie Domini: quia conſurrexit de habitaculo ſancto ſuo.

CAP. III.

1 ET oſtendit mihi Dominus Jeſum ſacerdotem magnum ſtantem coram angelo Domini: & Satan ſtabat à dexteris ejus ut adverſaretur ei.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

21 Καὶ εἶπα, Τί οὗτοι ἔρχονται ποιῆσαι; καὶ εἶπε (τ), Ταῦτα τὰ κέρατα τὰ διασκορπίσαντα τὸν (υ) Ἰούδα καὶ τὸν Ἰσραὴλ κατέαξαν, καὶ οὐδεὶς αὐτῶν ἦρε κεφαλήν· καὶ (φ) ἐξήλθοσαν οὗτοι τοῦ ὀξῦναι αὐτὰ εἰς χεῖρας αὐτῶν, τὰ (χ) τέσσαρα κέρατα, τὰ ἔθνη τὰ ἐπαιρόμενα κέρας ἐπὶ τὴν γῆν κυρίου, τοῦ διασκορπίσαι αὐτήν.

Et dixi; Quid iſti veniunt facere? Et dixit; Hæc ſunt cornua, quæ diſperſerunt Judam, & Iſrael confregerunt: & nullus eorum levavit caput. Et egreſſi ſunt iſti, ut exacuant ea in manibus ſuis, quatuor cornua, gentes, quæ levaverunt cornu ſuper terram Domini, ut diſpergerent eam. 21

MS.A. (τ) πρός με, (υ) Ἰούδαν (φ) εἰσῆλθον (χ) τέσσαρα

ΚΕΦ. β'.

1 ΚΑὶ ἦρα τοὺς ὀφθαλμούς μου, καὶ ἴδον, καὶ ἰδοὺ ἀνήρ, καὶ ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ σχοινίον γεω- 2 μετρικόν. Καὶ εἶπα πρὸς αὐτόν, Ποῦ σὺ πορεύῃ; καὶ εἶπε πρός με, Διαμετρῆσαι τὴν Ἱερουσαλήμ, τοῦ ἰδεῖν πηλίκον τὸ πλάτος 3 αὐτῆς ἐστι, καὶ πηλίκον τὸ μῆκος. Καὶ ἰδοὺ ὁ ἄγγελος ὁ λαλῶν ἐν ἐμοὶ εἱστήκει, καὶ ἄγγελος ἕτερος ἐξεπορεύετο εἰς (α) συνάντη- 4 σιν αὐτῷ, Καὶ εἶπε πρὸς αὐτόν, λέγων, Δράμε, καὶ λάλησον πρὸς τὸν νεανίαν ἐκεῖνον, λέγων, Κατακάρπως κατοικηθήσεται Ἱερουσαλὴμ ἀπὸ πλήθους ἀνθρώπων καὶ κτηνῶν (β) 5 ἐν μέσῳ αὐτῆς· Καὶ ἐγὼ ἔσομαι αὐτῇ, (γ) λέγει κύριος, τεῖχος πυρὸς κυκλόθεν, καὶ 6 εἰς δόξαν ἔσομαι ἐν μέσῳ (δ) αὐτῆς. Ὦ ὦ φεύγετε ἀπὸ γῆς Βορρᾶ, λέγει κύριος· διότι ἐκ τῶν τεσσάρων ἀνέμων τοῦ οὐρανοῦ συν- 7 άξω ὑμᾶς, λέγει κύριος, Εἰς Σιών, ἀνασώζεσθε οἱ κατοικοῦντες θυγατέρα Βαβυλῶ- 8 νος. Διότι τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Ὀπίσω δόξης ἀπέσταλκέ με ἐπὶ τὰ ἔθνη τὰ σκυλεύσαντα ὑμᾶς, διότι ὁ ἁπτόμενος ὑμῶν ὡς ὁ ἁπτόμενος τῆς κόρης τοῦ ὀφθαλμοῦ 9 αὐτοῦ. Διότι ἰδοὺ ἐγὼ ἐπιφέρω τὴν χεῖρά μου ἐπ' αὐτούς, καὶ ἔσονται σκῦλα τοῖς (ε) δουλεύουσιν αὐτοῖς, καὶ γνώσεσθε (ζ) ὅτι κύριος 10 παντοκράτωρ ἀπέσταλκέ με. Τέρπου καὶ εὐφραίνου θύγατερ Σιών, διότι (η) ἰδοὺ ἐγὼ ἔρχομαι, καὶ κατασκηνώσω ἐν μέσῳ σου, λέ- 11 γει κύριος. Καὶ καταφεύξονται ἔθνη πολλὰ ἐπὶ τὸν κύριον ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ ἔσονται αὐτῷ εἰς λαόν, καὶ κατασκηνώσουσιν ἐν μέσῳ σου, καὶ ἐπιγνώσῃ ὅτι κύριος παντο- 12 κράτωρ (˝) ἐξαπέσταλκέ με πρὸς σέ. Καὶ κατακληρονομήσει κύριος τὸν Ἰούδαν (θ) τῇ μερίδι αὐτοῦ ἐπὶ τὴν γῆν τὴν ἁγίαν· καὶ 13 αἱρετιεῖ ἔτι τὴν Ἱερουσαλήμ. Εὐλαβείσθω πᾶσα σὰρξ ἀπὸ προσώπου κυρίου, (ι) ὅτι ἐξεγήγερται ἐκ νεφελῶν ἁγίων αὐτοῦ.

CAP. II.

ET levavi oculos meos, & vidi: & ecce vir, & in manu ejus funiculus geometricus. Et dixi ad eum; Quò tu vadis? Et dixit ad me; Ut dimetiar Hieruſalē, ut videam, quanta ſit latitudo ejus, & quanta longitudo. Et ecce angelus, qui loquebatur in me, ſtabat: & angelus alius egrediebatur in occurſum ejus. Et dixit ad eum, dicens; Curre, & loquere adoleſcentulo illi dicens; (a) Frugiferè habitabitur Hieruſalem, à multitudine hominum, & jumentorum in medio ejus: Et ego ero illi, dicit Dominus, murus ignis in circuitu, & in gloriam ero in medio ejus. O, ô fugite de terra Aquilonis, dicit Dominus: quia de quatuor ventis cœli congregabo vos, dicit Dominus, In Sion, ſalvamini, qui habitatis filiam Babylonis. Hæc enim dicit Dominus omnipotens; Poſt gloriam miſit me ad gentes, quæ ſpoliaverunt vos: quia, qui tetigerit vos, quaſi qui tangat pupillam oculi ejus. Quia ecce ego infero manum meam ſuper eos: & erunt prædæ iis qui ſervierant eis. Et cognoſcetis, quia Dominus omnipotens miſit me. Lætare, & gaude, filia Sion: quia ecce ego venio, & habitabo in medio tuî, dicit Dominus. Et (b) confugient gentes multæ ad Dominum in die illa: & erunt ei in populum, & habitabunt in medio tuî: & (c) ſcies, quoniam Dominus omnipotens miſit me ad te. Et poſſidebit Dominus Judam (d) parte ſuâ in terra ſancta: & (e) eliget adhuc Hieruſalem. Timeat omnis caro à facie Domini: quoniam ſurrexit de nubibus ſanctis ſuis. 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13

MS. A. (α) ἀπάντησιν αὐτοῦ, (β) τῶν ἐμ μέσῳ (γ) φησὶν (δ) αὐτῶν. (ε) δουλεύσασιν (ζ) διότι (η) ἰδοὺ ἔρχομαι, (˝) ἀπέσταλκεν (θ) καὶ τὴν μερίδα (ι) διότι

ΚΕΦ. γ'.

1 ΚΑὶ ἔδειξέ μοι κύριος (α) τὸν Ἰησοῦν τὸν ἱερέα τὸν μέγαν, ἑστῶτα πρὸ προσώπου ἀγγέλου κυρίου, καὶ ὁ διάβολος εἱστήκει ἐκ δεξιῶν αὐτοῦ, (˝) τοῦ ἀντικεῖσθαι αὐτῷ.

CAP. III.

ET oſtendit mihi Dominus Jeſum ſacerdotem magnum, ſtantem ante faciem angeli Domini: & diabolus ſtabat à dextris ejus, ut adverſaretur ei. 1

MS A. (α) Ἰησοῦν (˝) ἀντικεῖσθαι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

21 וַאֲמָרִית מָה אִלֵּין אָתַן לְמֶעְבַּד וַאֲמַר לְמֵימַר אִלֵּין מַלְכְוָתָא דְבַדַּרָא יָת אֱנָשׁ יְהוּדָה
וְלָא שַׁבְקָא לְהַלָּכָא בְקוֹמָה זְקוּפָא וַאֲתוֹ אִלֵּין לַאֲזָעָא יָתְהוֹן לְמִתְבַּר יָת מַלְכְוַת עַמְמַיָא
דִנְטַלָא זַיִן עַל אַרְעָא דְבֵית יְהוּדָה לְאַגְלָיוּתַהּ׃

ב

1 וּזְקָפִית עֵינַי וַחֲזֵית וְהָא גַבְרָא וּבִידֵיהּ חוּט דְמִשְׁחְתָא׃ וַאֲמָרִית לְאָן אַתְּ אָזֵיל וַאֲמַר לִי
2
3 לְמִמְשַׁח יָת יְרוּשְׁלֶם לְמֶחֱזֵי כְּמָא פוּתְיַהּ וּכְמָא אוּרְכַּהּ׃ וְהָא מַלְאֲכָא דִמְמַלֵּל עִמִּי נָפֵק
4 וּמַלְאֲכָא אוּחֲרָנָא נָפֵק לְקַדָּמוּתֵיהּ׃ וַאֲמַר לֵיהּ רְהוֹט מַלֵּל עִם עוּלֵימָא דֵיכִי לְמֵימַר
5 פַּצְחִין תְּתֵיתֵב יְרוּשְׁלֶם מִסְּגֵי אֱנָשָׁא וּבְעִירָא בְּגַוַּהּ׃ וּמֵימְרִי יְהֵי לַהּ אָמַר יְיָ כְּשׁוּר דְאֶשָּׁא
6 מַקִּיף לַהּ סְחוֹר סְחוֹר וּבִיקָר אַשְׁרֵי שְׁכִנְתִּי בְּגַוַּהּ׃ אַכְלוּ לִמְבַדְּרַיָא וַאֲמַרוּ לְהוֹן
7 אִתְכַּנְשׁוּ מֵאַרְעָא צִפּוּנָא אָמַר יְיָ אֲרֵי כְּאַרְבַּע רוּחֵי שְׁמַיָא בַדָּרִית יַתְכוֹן אָמַר יְיָ׃ אַכְלוּ
8 לִכְנִשְׁתָּא דְצִיּוֹן וַאֲמַרוּ לַהּ אִשְׁתֵּזֵבִי וְאֶתָא דְיָתְבָא בִּמְדִינַת בָּבֶל׃ אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ
צְבָאוֹת בָּתַר יְקָרָא דַאֲמִיר לְאַיְתָאָה עֲלֵיכוֹן שְׁלָחַנִי עַל עַמְמַיָא דְבָזְזִין יַתְכוֹן אֲרֵי דִמְנַזֵּק
9 בְּכוֹן כַּד מוֹשִׁיט יְדֵיהּ לְמִקְרַב בְּגַלְגַּלֵּי עֵינוֹהִי׃ אֲרֵי הָא אֲנָא מְרִים יָת מְחַת גְבוּרְתִּי
10 עֲלֵיהוֹן וִיהוֹן עֲדֵי לְפָלְחֵיהוֹן וְתִדְעוּן אֲרֵי יְיָ צְבָאוֹת שַׁלְחַנִי׃ בּוּעִי וַחֲדִי כְּנִשְׁתָּא דְצִיּוֹן
11 אֲרֵי הָא אֲנָא מִתְגְּלֵי וְאַשְׁרֵי שְׁכִנְתִּי בְגַוִּיךְ אָמַר יְיָ׃ וְיִתּוֹסְפוּן עַמְמִין סַגִּיאִין עַל עַמֵּיהּ
דַייָ בְּעִדָּנָא הַהִיא וִיהוֹן קֳדָמַי לְעַם וְאַשְׁרֵי שְׁכִנְתִּי בְגַוִּיךְ וְתִדְעוּן אֲרֵי יְיָ צְבָאוֹת שַׁלְחַנִי
12 לְאִתְנַבָּאָה עֲלָךְ׃ וְיַחְסִין יְיָ לִדְבֵית יְהוּדָה חוּלַקְהוֹן עַל אַרְעָא דְקוּדְשָׁא וְיִתְרְעֵי עוֹד
13 בִּירוּשְׁלֶם׃ סָפוּ כָל רַשִׁיעַיָא מִן קֳדָם יְיָ אֲרֵי אִתְגְּלֵי מִמְּדוֹר קוּדְשֵׁיהּ׃

ג

1 וְאַחְזְיַנִי יָת יְהוֹשֻׁעַ כָּהֲנָא רַבָּא קָאֵים קֳדָם מַלְאֲכָא דַייָ וְחַטָּאָה קָאֵים עַל יְמִינֵיהּ
לְאַסְטָנָא לֵיהּ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et dixi, Quid iſti acturi veniunt? & ait, dicendo, Hæc ſunt regna quæ diſperſere viros Judæos, nec [*virum*] permiſerunt erectum incedere: veniunt autem ipſi ut commoveant ea, & ut conterant regna populorum quæ tulêre arma in terram domus Jehuda, ad deportandam eam in exilium. 21

CAP. II.

ERexi verò oculos meos & vidi, & ecce vir, cujus in manu funiculus menſorius. Cui dixi, Quò te confers? & dixit mihi Menſuratum Jeruſalem, ut videam quanta ſit latitudo ejus, quantáque longitudo. Ecce autem angelus qui me alloquebatur, egrediebatur, in cujus occurſum alius prodibat angelus. Et dixit ei, Curre, loquere cum juvene iſto, dicens: Vicatim habitabitur Jeruſalem præ multitudine hominum jumentorúmque in medio ejus. Verbúmque meum erit ei, dicit Dominus, veluti murus igneus illam per circuitum ambiens, atq; glorioſè majeſtatem meam in medio ejus reponā. Proclamate diſperſis, & dicite eis, Congregamini de terra Aquilonari, dicit Dominus: nam in quatuor cœli ventos diſperſi vos, ait Dominus. Clamate cœtui Sion, & dicite ei, Evade & veni qui habitas in provincia Babylonis. Etenim ſic dicit Dominus exercituum, Poſt gloriam quam vobis adducturum ſe dixit, miſit me ad populos qui vos diripiunt: quiſquis enim detrimentum infert vobis, peræquè ac ſi manum ſuam extendat ut tangat pupillam oculi ſui. Ecce enim tollo plagam potentiæ meæ ſuper eos, & patebunt prædæ famulis ſuis; ſcietíſque certò Dominum exercituum me miſiſſe. Exulta & lætare cœtus Sion, ecce enim revelabor & collocabo majeſtatem meam in medio tui, dicit Dominus. Et adjicentur populi multi plebi Domini tunc temporis, qui coram me in populum erunt, ponámque meam majeſtatem in tui medium, ſcietiſque quòd Dominus exercituum me miſerit ad *vaticinandum* ad te. Atque in hæreditatem donabit Dominus domui Juda partem ſuam in terra ſanctitatis; adhúcque gratam habebit Jeruſalem. Diſpereant omnes impii à conſpectu Domini, quoniam de habitaculo ſanctitatis ſuæ apparebit. 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13

CAP. III.

OStendit autem mihi Joſue ſacerdotem magnum ſtantem coram angelo Domini, ad cujus dexteram ſtabat adverſarius, ut ei adverſaretur. 1

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܡܪܬ ܡܢܐ ܐܬܝܢ ܗܠܝܢ ܠܡܥܒܕ܂ ܘܐܡܪ ܠܝ܂ ܗܠܝܢ ܩܪܢܬܐ ܕܒܕܪ ܠܝܗܘܕܐ܂ ܐܝܟ 21
ܦܘܡܗ ܕܓܒܪܐ ܕܠܐ ܐܪܝܡ ܪܫܗ܂ ܘܐܬܘ ܗܠܝܢ ܕܢܙܝܥܘܢ ܐܢܝܢ܂ ܘܢܫܕܘܢ ܩܪܢܬܐ
ܕܥܡܡܐ܂ ܕܡܪܝܡܝܢ ܗܘܘ ܩܪܢܐ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕܐ ܠܡܒܕܪܘܬܗ̇܂

*ܫܠܡ *ܒ̄ *

* ܘܐܪܝܡܬ ܥܝܢܝ ܘܚܙܝܬ ܓܒܪܐ܂ ܘܒܐܝܕܗ ܚܘܛܐ ܕܡܫܘܚܬܐ܂ * ܘܐܡܪܬ ܠܗ܂ ܠܐܝܟܐ 1 2
ܐܙܠ ܐܢܬ܂ ܘܐܡܪ ܠܝ܂ ܕܐܡܫܘܚ ܠܐܘܪܫܠܡ܂ ܘܐܚܙܐ ܟܡܐ ܦܬܝܗ̇ ܘܟܡܐ ܐܘܪܟܗ̇܂ * ܘܢܦܩ 3
ܡܠܐܟܐ ܕܡܡܠܠ ܒܝ܂ ܘܡܠܐܟܐ ܐܚܪܢܐ ܢܦܩ ܠܐܘܪܥܗ܂ * ܘܐܡܪ ܠܗ܂ ܪܗܛ ܡܠܠ ܥܡ ܥܠܝܡܐ 4
ܗܘ܂ ܕܦܨܝܚܐܝܬ ܬܬܒ ܐܘܪܫܠܡ܂ ܡܢ ܣܘܓܐܐ ܕܒܢܝܢܫܐ ܘܕܒܥܝܪܐ ܕܒܓܘܗ̇܂ * ܘܐܢܐ ܐܗܘܐ 5
ܒܓܘܗ̇ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܐܝܟ ܫܘܪܐ ܕܢܘܪܐ܂ ܘܠܫܘܒܚܐ ܐܗܘܐ ܒܓܘܗ̇܂ * ܐܘ ܐܘ܂ ܥܪܘܩܘ 6
ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܓܪܒܝܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܡܛܠ ܕܠܐܪܒܥ ܪܘܚܝ ܫܡܝܐ ܒܕܪܬܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ * ܐܘ 7
ܨܗܝܘܢ ܐܬܦܠܛܝ܂ ܥܡܘܪܬܐ ܕܒܪܬ ܒܒܠ܂ * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ܂ ܒܬܪ 8
ܐܝܩܪܐ ܫܕܪܢܝ ܥܠ ܥܡܡܐ ܕܒܙܘ ܠܟܘܢ܂ ܡܛܠ ܕܡܢ ܕܩܪܒ ܠܟܘܢ܂ ܒܒܒܬܐ ܕܥܝܢܗ ܩܪܒ܂
* ܡܛܠ ܕܗܐ ܐܢܐ ܡܪܝܡ ܐܢܐ ܐܝܕܝ ܥܠܝܗܘܢ܂ ܘܢܗܘܘܢ ܒܙܬܐ ܠܥܒܕܝܗܘܢ܂ ܘܬܕܥܘܢ 9
ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܕܪܢܝ܂ * ܫܒܚܝ ܘܚܕܝ ܒܪܬ ܨܗܝܘܢ܂ ܡܛܠ ܕܗܐ ܐܢܐ ܐܬܐ ܐܢܐ܂ ܘܐܫܪܐ 10
ܒܓܘܟܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ * ܘܢܬܢܩܦܘܢ ܠܡܪܝܐ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ܂ ܘܢܗܘܘܢ ܠܗ 11
ܠܥܡܐ܂ ܘܐܫܪܐ ܒܓܘܟܝ܂ ܘܬܕܥܝܢ ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܕܪܢܝ ܠܟܝ܂ * ܘܢܐܪܬ ܡܪܝܐ ܠܝܗܘܕܐ 12
ܡܢܬܗ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܩܘܕܫܗ܂ ܘܢܬܪܥܐ ܬܘܒ ܒܐܘܪܫܠܡ܂ * ܘܢܕܚܠ ܟܠ ܒܣܪ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ܂ 13
ܕܐܬܬܥܝܪ ܡܢ ܡܥܘܪܐ ܕܩܘܕܫܗ܂

*ܫܠܡ *ܓ̄ *

* ܘܚܘܝܢܝ ܠܝܫܘܥ ܟܗܢܐ ܪܒܐ܂ ܟܕ ܩܐܡ ܩܕܡ ܡܠܐܟܗ ܕܡܪܝܐ܂ ܘܣܛܢܐ ܩܐܡ ܗܘܐ 1
ܡܢ ܝܡܝܢܗ ܕܢܣܛܝܘܗܝ܂

Et cùm dixiſſem, Quid veniunt iſti facturi ? 21
Dixit mihi, Ad commovendũ iſta cornua quæ
diſperſerunt Judam velut os viri qui non extulit
caput ſuum, hi venerunt ; & ad evellendum
cornua gentiũ quæ elevabant cornu contra
terram Judæ ad diſſipandum illam.

CAP. II.

Rurſum ſublatis oculis vidi virũ manu tenentem 1
funiculum menſorium : Cui cùm dixiſſem, 2
Quò vadis ? Reſpondit mihi, ad metiendum
Jeruſalem, & videndum quanta ſit
longitudo ejus, & quanta latitudo ipſius. Tum 3
egreſſo angelo qui loquebatur in me, angelus
alter proceſſit obviàm ei : Et dixit illi; Curre, 4
& dic juveni illi ; In ruribus habitabit Jeruſalem
propter multitudinem hominum &
jumentorum quæ erunt in ea. Et ego ero in 5
medio ipſius, dicit Dominus, tanquam murus
ignis, & ad gloriam ero in medio ipſius. Io, 6
io, fugite de terra Aquilonis, dicit Dominus;
quoniam ad quaternos cœli ventos diſperſeram
vos, dicit Dominus. Heus Sion evade, 7
hoſpita apud filiam Babylonis. Sic enim dicit 8
Dominus potentiſſimus ; Ad proſequendum
honorem miſit me contra gentes quæ
vos prædabantur : & qui tetigerit vos, pupillam
ſanè oculi ejus tanget. Nam ecce ego 9
ſublaturus ſum manum meam contra illas, &
erunt prædæ opera earum : & agnoſcetis
quòd Dominus potentiſſimus me miſit. Cane 10
& lætare filia Sionis, quia ecce ego venturus
ſum & habitaturus in medio tui, dicit
Dominus. Et adhærebunt Domino gentes 11
multæ eo die eruntque ei populus : & habitabit
in medio tui, & agnoſces Dominum potentiſſimum
me ad te miſiſſe. Et poſſidebit 12
Dominus Judam portionem ſuam in terra
ſancta ſua, & gratam habebit rurſùs Jeroſolymam.
Et timebit omnis caro à conſpectu 13
Domini, quòd evigilârit ab excelſo ſanctitatis
ſuæ.

CAP. III.

Poſtea oſtendit mihi Jeſum ſummum ſacerdotem 1
ſtantē coram angelo Dñi, & Satanam
ſtantem ad dexteram ejus ut noceret ei.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* فقلت ماذا جاء هولاء ان يصنعوا * فقال لي * هذه القرون التي فرقت يهودا وايروسليم هبطوا * 21
وليس واحد منهم رفع راسا * فدخلوا هاولاء ليحركوها بايديهم * الاربعة قرون هم الامم التي رفعت
قرنا على ارض الرب ليفرقوها *

* الفصل الثاني *

* ورفعت عيني ونظرت * واذا رجل وفي يده حبل المساحة * فقلت له الى اين تمضي انت * فقال لي * 1 2
لاقيس ايروسليم * لانظر مقدار عرضها ما هو * ومقدار طولها * واذا الملاك المتكلم في واقف * 3
وملاك اخر خرج لاستقباله * وقال له قايلا * اعد وتكلم مع ذلك الشاب قايلا * بثمر تسكن 4
ايروسليم من كثرة الناس والبهايم الذين في وسطها * وانا اصير لها قال الرب سور نار 5
من حولها * واصير لهم مجدا * اه اه * اهربوا من ارض الجربياء يقول الرب * من اجل اني من 6
اربعة رياح السماء اجمعكم يقول الرب الى صهيون * لتتخلصوا يا سكان ابنة بابل * من اجل 7 8
انه هكذا يقول الرب الضابط الكل * خلف المجد ارسلني على الامم التي غنمتكم * من اجل ان
لامسكم مثل لامس حدقة عينيه * من اجل اني ها انا ارفع يدي عليهم * ويصيرون غنايم 9
للذين استعبدوهم * وتعلمون ان الرب الضابط الكل ارسلني * اطربي وسري يا ابنة صهيون * من 10
اجل اني ها انا اتي واسكن في وسطك يقول الرب * وتهرب الامم الكثيرين الى الرب في ذلك اليوم * 11
ويصيرون له شعبا * ويسكنون في وسطك * وتعلمين ان الرب الضابط الكل ارسلني اليك * ويورث 12
الرب يهودا نصيبه على الارض المقدسة * ويرتضي الرب بايروسليم * ليرتاع كل ذي لحم من 13
وجه الرب * من اجل انه قام من سحبه المقدسة *

* الفصل الثالث *

* الاصحاح السادس والعشرون * وهو الثاني من النبوة *

* واراني الرب يسوع الكاهن العظيم قايما امام وجه ملاك الرب * والشيطان قايم عن 1
يمينه ليضاده *

Et dixi, Quid veniunt hi factum? Dixit 21
mihi ; Cornua iſta quæ diſſipaverunt
Judam & Jeroſolymam, corruerunt, nullumque
eorum caput extulit : proinde
ingreſſi ſunt iſti ad illa ſuis manibus concutienda.
Quatuor illa cornua, ſunt eæ
gentes quæ cornu levaverunt contra terram
Domini ad diſſipandum eam.

CAP. II.

Sublatis iterum oculis vidi, & ecce 1
vir quidam manu ſuâ portans funiculum
menſoriũ. Huic dicenti mihi, Quò vadis? 2
Dixit ; Ad metiendum Jeruſalem,
ut videam quanta ſit latitudo ejus, &
quanta longitudo. Dumque angelus in 3
me loquens, ſtaret, alius angelus egreſſus
eſt in occurſum ejus : Et dixit ei, 4
dicens ; Curre, & alloquere juvenem
illum, dicens ; Frugiferè habitabit Jeruſalem
propter multitudinem hominum
& jumentorum quæ erunt in ipſa. Et 5
ego fiam ipſi, ait Dominus, murus ignis
circunquaque ; & ero ipſis gloriæ. Ab, 6
ab, fugite de terra Aquilonari, dicit
Dominus : quoniam è quatuor cœli ventis
congregabo vos, dicit Dominus ad
Sionem. Eripite vos O habitatores filiæ 7
Babelis. Nam ita dicit Dominus omnipotens, 8
Poſt gloriam miſit me contra
gentes quæ deprædatæ ſunt vos : tangens
enim vos, eſt quaſi tangens pupillam
oculi ejus. Ecce enim ego levabo ſuper 9
eos manum meam, eruntque in prædam
iis quos ſervitute premebant : & ſcietis
quòd Dominus omnipotens miſerit me.
Concine, et exulta O filia Sionis, quoniam 10
ecce ego veniam et habitabo in medio
tui, dicit Dominus : Et confugient gentes 11
multæ ad Dominum eo die, eruntque
ei populus, et habitabunt in medio tui:
et ſcies quòd Dominus omnipotens me
miſerit ad te. Efficietque Dominus ut 12
poſſideat Juda portionem ſuam ſuper
terra ſancta, et placabitur Dominus erga
Jeruſalem. Timeat omnis carne præditus 13
à facie Domini ; quoniam ſurrexit
è nubibus ſuis ſanctis.

CAP. III.

Textus vigeſimus ſextus, hujus
autem Prophetiæ ſecundus.

Deinde oſtendit mihi Dominus Jeſum 1
ſacerdotem maximum ſtantem ante
faciem angeli Domini, et Satanam
ſtantem à dextera ipſius ut noceret
ipſi.

זכריה: ד

, Satan te in Dominus Increpet : Satan ad Dominus dixit Et
2 וַיֹּאמֶר יְהוָה אֶל־הַשָּׂטָן יִגְעַר יְהוָה בְּךָ הַשָּׂטָן
torris hic nónne : Jeruſalaim *in eligens* , te in Dominus increpet &
וְיִגְעַר יְהוָה בְּךָ הַבֹּחֵר בִּירוּשָׁלָםִ הֲלוֹא זֶה אוּד
ſtans & ,ſordidis veſtibus indutus erat Jehoſuah Et ? igne de erutus
מֻצָּל מֵאֵשׁ׃ 3 וִיהוֹשֻׁעַ הָיָה לָבֻשׁ בְּגָדִים צוֹאִים וְעֹמֵד
,*ejus facies ad* ſtantes ad dixit & ,reſpondit Et .*angeli facies ad*
לִפְנֵי הַמַּלְאָךְ׃ 4 וַיַּעַן וַיֹּאמֶר אֶל־הָעֹמְדִים לְפָנָיו
: eum ad dixit Et .eo *deſuper* ſordida veſtimenta Removete : dicendo
לֵאמֹר הָסִירוּ הַבְּגָדִים הַצֹּאִים מֵעָלָיו וַיֹּאמֶר אֵלָיו
.mutatoriis te induere &,tuã iniquitatẽ te *deſuper* feci tranſire,Vide
רְאֵה הֶעֱבַרְתִּי מֵעָלֶיךָ עֲוֺנֶךָ וְהַלְבֵּשׁ אֹתְךָ מַחֲלָצוֹת׃
cidarim poſuerunt Et .ejus caput ſuper mundam cidarim Ponant :dixi Et
5 וָאֹמַר יָשִׂימוּ צָנִיף טָהוֹר עַל־רֹאשׁוֹ וַיָּשִׂימוּ הַצָּנִיף
Domini angelus Et .veſtibus eum induerunt & ,ejus caput ſuper mundam
הַטָּהוֹר עַל־רֹאשׁוֹ וַיַּלְבִּשֻׁהוּ בְּגָדִים וּמַלְאַךְ יְהוָה
: dicendo ,Jehoſuah *in* DOMINI angelus conteſtabatur Et .*ſtans*
6 עֹמֵד׃ וַיָּעַד מַלְאַךְ יְהוָה בִּיהוֹשֻׁעַ לֵאמֹר׃
ſi &,ambulaveris meis viis in Si : exercituum Dominus dixit Sic
7 כֹּה־אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת אִם־בִּדְרָכַי תֵּלֵךְ וְאִם
,meam domum judicabis tu etiam &,cuſtodieris meã cuſtodiã
אֶת־מִשְׁמַרְתִּי תִשְׁמֹר וְגַם־אַתָּה תָּדִין אֶת־בֵּיתִי
inter *itinera* tibi dabo & : mea atria cuſtodies etiam &
וְגַם תִּשְׁמֹר אֶת־חֲצֵרָי וְנָתַתִּי לְךָ מַהְלְכִים בֵּין
,tu , magne ſacerdos Jehoſuah nunc Audi .ipſos ſtantes
8 הָעֹמְדִים הָאֵלֶּה׃ שְׁמַע־נָא יְהוֹשֻׁעַ הַכֹּהֵן הַגָּדוֹל אַתָּה
quia : *ipſi portenti* viri quia *: tuas facies ad habitantes* ,tui *ſocii* &
וְרֵעֶיךָ הַיֹּשְׁבִים לְפָנֶיךָ כִּי־אַנְשֵׁי מוֹפֵת הֵמָּה כִּי־
lapis ecce Quia .germen meum ſervum *adducens ego* ecce
9 הִנְנִי מֵבִיא אֶת־עַבְדִּי צֶמַח׃ כִּי הִנֵּה הָאֶבֶן
: oculi ſeptem unum lapidem ſuper ,Jehoſuah *facies ad dedi* quem
אֲשֶׁר נָתַתִּי לִפְנֵי יְהוֹשֻׁעַ עַל־אֶבֶן אַחַת שִׁבְעָה עֵינָיִם
, exercituum Dominus dixit , ejus *apertionem aperiens ego* ecce
הִנְנִי מְפַתֵּחַ פִּתֻּחָהּ נְאֻם יְהוָה צְבָאוֹת
die In .una die in illius terræ iniquitatem removebo &
10 וּמַשְׁתִּי אֶת־עֲוֺן הָאָרֶץ־הַהִיא בְּיוֹם אֶחָד׃ בַּיּוֹם
ſuum *ſocium ad vir* vocabitis ,exercituum Dominus dixit ,illa
הַהוּא נְאֻם יְהוָה צְבָאוֹת תִּקְרְאוּ אִישׁ אֶל־רֵעֵהוּ
.ficum ſubter *ad* & ,vitem ſubter *ad*
אֶל־תַּחַת גֶּפֶן וְאֶל־תַּחַת תְּאֵנָה׃

CAP. IV. ד

qui virum ſicut me ſuſcitavit & ;me in *loquens* angelus eſt reverſus Et
1 וַיָּשָׁב הַמַּלְאָךְ הַדֹּבֵר בִּי וַיְעִירֵנִי כְּאִישׁ אֲשֶׁר־
: dixi Et ? *videns* tu Quid : me ad dixit Et .ſuo ſomno è ſuſcitatur
2 יֵעוֹר מִשְּׁנָתוֹ׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי מָה אַתָּה רֹאֶה וַיֹּאמֶר
ſuper lenticula & ,*ipſum* totum aureum candelabrum ecce & , Vidi
רָאִיתִי וְהִנֵּה מְנוֹרַת זָהָב כֻּלָּהּ וְגֻלָּהּ עַל־
ſeptem & , Septem .illud ſuper ejus lucernæ *ſeptem* & ,*ejus* caput
רֹאשָׁהּ וְשִׁבְעָה נֵרֹתֶיהָ עָלֶיהָ שִׁבְעָה וְשִׁבְעָה
olivæ duæ Et .ejus caput ſuper quæ , lucernis infuſoria
3 מוּצָקוֹת לַנֵּרוֹת אֲשֶׁר עַל־רֹאשָׁהּ׃ וּשְׁנַיִם זֵיתִים
.ejus ſiniſtram *ſuper una* & , lenticulæ dextera à una : illud ſuper
עָלֶיהָ אֶחָד מִימִין הַגֻּלָּה וְאֶחָד עַל־שְׂמֹאלָהּ׃
Quid : dicendo ,me in *loquentem* angelum ad dixi & ,reſpondi Et
4 וָאַעַן וָאֹמַר אֶל־הַמַּלְאָךְ הַדֹּבֵר בִּי לֵאמֹר מָה
dixit & , me in *loquens* angelus reſpondit Et ? Domine hæc
5 אֵלֶּה אֲדֹנִי׃ וַיַּעַן הַמַּלְאָךְ הַדֹּבֵר בִּי וַיֹּאמֶר
.mi Domine Non : dixi & ? hæc *iſta* quid nôſti Nónne : me ad
אֵלַי הֲלוֹא יָדַעְתָּ מָה־הֵמָּה אֵלֶּה וָאֹמַר לֹא אֲדֹנִי׃

Verſio VULG. LAT.

2 Et dixit Dominus ad Satan;Increpet Dominus in te,Satan: & increpet Dominus in te, qui elegit Jeruſalem: numquid non iſte 3 torris eſt erutus de igne? Et Jeſus erat indutus veſtibus ſordidis: & 4 ſtabat ante faciem angeli. Qui reſpondit, & ait ad eos qui ſtabant coram ſe, dicens; Auferte veſtimenta ſordida ab eo. Et dixit ad eum; Ecce abſtuli à te iniquitatem tuam, & indui te mutatoriis. 5 Et dixit; Ponite cidarim mundã ſuper caput ejus. Et poſuerunt cidarim mundam ſuper caput ejus, & induerunt eum veſtibus: & an6gelus Domini ſtabat. Et conteſtabatur angelus Domini Jeſum, di7cens; Hæc dicit Dominus exercituum; Si in viis meis ambulaveris, & cuſtodiam meam cuſtodieris: tu quoque judicabis domum meã, & cuſtodies atria mea, & dabo tibi ambulantes de his 8 qui nunc hìc aſſiſtunt. Audi, Jeſu ſacerdos magne, tu & amici tui, qui habitant coram te, quia viri portendentes ſunt: ecce enim ego ADDUCAM SERVUM 9 MEUM ORIENTEM. Quia ecce lapis, quem dedi coram Jeſu: ſuper lapidem unum ſeptem oculi ſunt: ecce ego cælabo ſculpturam ejus, ait Dominus exercituum: & auferam iniquitatẽ ter10ræ illius in die una. In die illa, dicit Dominus exercituum, vocabit vir amicum ſuum ſubter vitẽ, & ſubter ficum.

CAP. IV.

1 ET reverſus eſt angelus, qui loquebatur in me, & ſuſcitavit me, quaſi virũ qui ſuſcitatur de ſomno 2 ſuo. Et dixit ad me; Quid tu vides? Et dixi; Vidi, & ecce candelabrum aureum totum, & lampas ejus ſuper caput ipſius, & ſeptem lucernæ ejus ſuper illud: & ſeptem infuſoria lucernis, quæ erant 3 ſuper caput ejus. Et duæ olivæ ſuper illud, una à dextris lampa4dis, & una à ſiniſtris ejus. Et reſpondi, & aio ad angelum, qui loquebatur in me, dicens; Quid ſunt 5 hæc, domine mi? Et reſpondit angelus, qui loquebatur in me, & dixit ad me; Numquid neſcis quid ſunt hæc? Et dixi; Non, domine mi.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

2 Καὶ εἶπε κύριος πρὸς τὸν διάβολον, Ἐπιτιμήσαι κύριος ἐν σοὶ διάβολε, καὶ ἐπιτιμήσαι κύριος ἐν σοὶ ὁ ἐκλεξάμενος τὴν Ἱερουσαλήμ· οὐκ ἰδοὺ τοῦτο ὡς δαλὸς ἐξεσπα3σμένος ἐκ πυρός; Καὶ Ἰησοῦς ἦν ἐνδεδυμένος ἱμάτια ῥυπαρὰ, καὶ εἱστήκει πρὸ προσ4ώπου τοῦ ἀγγέλου. Καὶ ἀπεκρίθη καὶ εἶπε πρὸς τοὺς ἑστηκότας πρὸ προσώπου αὐτοῦ, λέγων, Ἀφέλετε τὰ ἱμάτια τὰ ῥυπαρὰ ἀπ᾽ αὐτοῦ· καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, Ἰδοὺ ἀφήρηκα τὰς ἀνομίας σου· καὶ ἐνδύσατε αὐτὸν ποδήρη, 5 Καὶ ἐπίθετε κίδαριν καθαρὰν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν (β) αὐτοῦ. καὶ ἐπέθηκαν κίδαριν καθαρὰν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ, καὶ περιέβαλον αὐτὸν ἱμάτια. καὶ ὁ ἄγγελος κυρίου εἱστήκει. 6 Καὶ διεμαρτύρατο ὁ ἄγγελος κυρίου (γ) πρὸς 7 Ἰησοῦν, λέγων, Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Ἐὰν ταῖς ὁδοῖς μου πορεύῃ, καὶ ἐν τοῖς προστάγμασί μου (δ) φυλάξῃ, καὶ σὺ διακρινεῖς τὸν οἶκόν μου· καὶ ἐὰν (ε) διαφυλάσσῃς τὴν αὐλήν μου, καὶ δώσω σοι ἀναστρεφο8μένους ἐν μέσῳ τῶν ἑστηκότων τούτων. Ἄκουε δὴ Ἰησοῦ ὁ ἱερεὺς ὁ μέγας, σὺ καὶ οἱ πλησίον σου (ζ) οἱ καθήμενοι πρὸ προσώπου (η), διότι ἄνδρες τερατοσκόποι εἰσὶ, διότι ἰδοὺ 9 ἐγὼ ἄγω τὸν δοῦλόν μου Ἀνατολήν. Διότι ὁ λίθος, ὃν ἔδωκα πρὸ προσώπου (θ) τοῦ Ἰησοῦ, ἐπὶ τὸν λίθον τὸν ἕνα ἑπτὰ ὀφθαλμοί εἰσιν. ἰδοὺ ἐγὼ ὀρύσσω βόθρον, λέγει κύριος παντοκράτωρ, καὶ ψηλαφήσω πᾶσαν τὴν ἀδικίαν τῆς γῆς ἐκείνης ἐν ἡμέρᾳ μιᾷ. 10 Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγει κύριος παντοκράτωρ, (ι) συγκαλέσετε ἕκαστος τὸν πλησίον αὐτοῦ ὑποκάτω ἀμπέλου, καὶ ὑποκάτω συκῆς.

Et dixit Dominus ad diabolum; Increpet Dominus in te, diabole: & increpet in te Dominus, qui elegit Hieruſalem. Nónne ecce (a) hoc, ut torris eſt erutus de igne? 3 *Et Jeſus indutus erat veſtibus ſordidis: & ſtabat ante faciem angeli.* 4 *Et reſpondit, & ait ad adſtantes coram facie ſua, dicens; Auferte veſtimenta ſordida ab eo. Et dixit ad eum; Ecce abſtuli (b) iniquitates tuas. Et induite cum poderem:* 5 *Et imponite cidarim mundã ſuper caput ejus.* Et impoſuerunt cidarim mundã ſuper caput ejus: *et circundederũt eũ veſtimentis: & angelus Domini adſtabat.* 6 *Et conteſtabatur angelus Domini ad Jeſum, dicens;* 7 *Hæc dicit Dominus omnipotens; Si (c) viis meis ambulaveris, & præcepta mea cuſtodieris: & tu judicabis domum meam: &, ſi cuſtodieris atrium meum; & dabo tibi, qui converſentur in medio ſtantium iſtorum.* 8 *Audi ergò, Jeſu ſacerdos magne, tu, & proximi tui, qui ſedent ante (d) faciem: quia viri portentorum ſpectatores ſunt: quia ecce ego adduco ſervum meum Orientem:* 9 *Quia lapis, quem dedi ante faciem Jeſu: ſuper lapidem unum ſeptem oculi ſunt. Ecce ego (e) fodio foveam, dicit Dominus omnipotens, & contrectabo omnem iniquitatem terræ illius in die una.* 10 *In die illo, dicit Dominus omnipotens, (f) convocabitis unuſquiſq; proximum ſuum ſubter vitem, & ſubter ficum.*

MS.A. (β) αὐτοῦ. καὶ περιέβαλον αὐτὸν ἱμάτια, καὶ ἐπέθηκαν κίδαριν καθαρὰν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ. καὶ ὁ (γ) λέγων πρὸς Ἰησοῦν, Τάδε (δ) φυλάσσῃ, (ε) φυλάξῃς καί γε τὴν (ζ) καὶ οἱ (η) σου, (θ) Ἰησοῦ, (ι) συγκαλέσατε

ΚΕΦ. δʹ.

1 ΚΑὶ ἐπέστρεψεν ὁ ἄγγελος ὁ λαλῶν ἐν ἐμοὶ, καὶ ἐξήγειρέ με ὃν τρόπον ὅταν (α) ἐξ2εγερθῇ ἄνθρωπος ἐξ ὕπνου αὐτοῦ, Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Τί σὺ βλέπεις; καὶ (β) εἶπα, Ἑώρακα, καὶ ἰδοὺ λυχνία χρυσῆ ὅλη, καὶ τὸ λαμπάδιον ἐπάνω αὐτῆς, καὶ ἑπτὰ λύχνοι ἐπάνω αὐτῆς, καὶ ἑπτὰ (γ) ἐπαρυστρίδες τοῖς λύχνοις τοῖς ἐπάνω αὐτῆς, 3 Καὶ δύο ἐλαῖαι ἐπάνω αὐτῆς, μία ἐκ δεξιῶν τοῦ λαμπαδίου αὐτῆς, καὶ μία ἐξ εὐω4νύμων. Καὶ ἐπηρώτησα, καὶ εἶπα πρὸς τὸν ἄγγελον τὸν λαλοῦντα ἐν (δ) ἐμοὶ, λέ5γων, Τί ἐστι ταῦτα κύριε; Καὶ ἀπεκρίθη ὁ ἄγγελος ὁ λαλῶν ἐν ἐμοὶ, καὶ (ε) εἶπε πρὸς μὲ, λέγων, Οὐ γινώσκεις τί ἐστι ταῦτα; καὶ εἶπα, Οὐχὶ κύριε.

CAP. IV.

1 *ET reverſus eſt angelus, qui loquebatur in me: & ſuſcitavit me, ſicut ſuſcitari ſolet homo de ſomno ſuo:* 2 *Et dixit ad me; Quid tu vides? Et dixi; Vidi, & ecce candelabrum aureum totum, & lampas ſuper ipſum: & ſeptem lucernæ ſuper illud, & ſeptem infuſoria lucernis, quæ erant ſuper illud:* 3 *Et duæ olivæ ſuper illud, una à dextris lampadis ejus, & una à ſiniſtris.* 4 *Et interrogavi, & dixi ad angelum, qui loquebatur in me, dicens; Quid ſunt hæc, domine?* 5 *Reſponditque angelus, qui loquebatur in me, & dixit ad me, dicens; Non cognoſcis, quid ſunt hæc? Et dixi, Non, domine.*

MS. A. (α) ἐξεγερθῇ (β) * εἶπεν, Ἑόρακα, (γ)* ἐπαρυστίδες (δ) ἐμοὶ, Τί ἐστιν (ε) εἶπεν, Οὐ γινώσκεις

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

2 ואמר יי ליחטא יזיף יי בך יחטא ויזיף יי בך דאתרעי לאשראה שכנתיה בירושלם
3 הלא דין אוד משיזב מיקידא׃ ויהושע הוו ליה בנין דנסבין להון נשין דלא כשרן
4 לכהונתא וקאם קדם מלאכא׃ ואתיב ואמר לדמשמשין קדמוהי למימר ואמרו ליה
ויפיק נשין דלא כשרין לכהונתא מביתיה ואמר ליה חזי דאעדיתי מנך חובך ואלבישת
5 יתך זכון׃ ואמרית שוו מצנפא דכיא על רישיה ושויאו מצנפא דכיא על רישיה
6 ואסבוהי אתתא דכשרא לכהונתא ומלאכא דיי קאם׃ ואסהיד מלאכא דיי ביהושע
7 למימר׃ כדנן אמר יי צבאות אם באורחן דתקנן קדמי תהך ואם ית מטרת מימרי
תטר ואף את תדין לדמשמשין בבית מקדשי ואף תטר ית עזרתי ובאחיות מיתיא
8 אחינך ואתן לך רגלין מהלכן בין סרפיא האלין׃ שמע כען יהושע כהנא רבא את
וחברך דיתבין קדמך ארי גברין כשרין למעבד להון נסין אנון ארי הא אנא מיתי ית
9 עבדי משיחא ויתגלי׃ ארי הא אבנא דיהבית קדם יהושע על אבנא חדא שבעא עינין
חזיאן לה הא אנא גלי חזיתהא אמר יי צבאות ואעדי ית חוב ארעא ההיא ביומא חד׃
10 בעדנא ההיא אמר יי צבאות תערעון גבר לחבריה לתחות פרי גופנוהי ולתחות פרי
תינוהי׃

ד

1 ותב מלאכא דממלל עמי ואעירני כגברא דמתער משנתיה׃ ואמר לי מה את חזי
2 ואמרית חזיתי והא מנרתא דדהבא כלה וגולתה על רישה ושבעא בוציניהא דעלה
3 שבעא ושבעא דמריקין מנהון משחא לבוציניא דעל רישה׃ ותרתין זיתין דעלה חד
4 מימין גולתא וחד על סמלתה׃ ואתיבית ואמרית למלאכא דממלל עמי למימר מא
5 אלין רבוני׃ ואתיב מלאכא דממלל עמי ואמר לי הלא ידעתא מן אנון אלין ואמרית
לא רבוני׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et dixit Dominus ad adverſarium, Increpet te Dominus adverſarie, increpet 2
[*inquam*] Dominus te, ille cui placuit collocare majeſtatẽ ſuam in Jeruſalem:
annon torris eſt iſte erutus ab incendio? Erant autem ipſi Joſue filii, qui du- 3
xerant uxores quæ non erant dignæ ſacerdotio, & ſtabat coram angelo. Et re- 4
ſpondit & dixit his qui coram ſe miniſtrabant, dicendo: Dicite *etiam* ei ut
ejiciat de domo ſua uxores quæ non ſunt decentes ſacerdotio: eique dixit,
Vide; quòd abſtulerim à te iniquitatem tuam, & te induerim juſtitiis. Tunc 5
dixit, Imponite cidarim mundam capiti ejus: impoſuerúntque cidarim mun-
dam capiti ejus, & acceperunt ei uxorem decentem ſacerdotio: & angelus
Domini ſtabat. Et conteſtatus eſt angelus Domini Joſue, dicendo: Sic inquit 6
Dominus exercituum, Si per vias quæ mihi rectæ videntur perrexeris, & ſi 7
obſervationem verbi mei cuſtodieris, tu quidem judicabis eos qui in domo
ſanctuarii mei miniſtrant; & præterea ſervabis atria mea, & in mortuorum
reſurrectione reſuſcitabo te, pedeſque inter Seraphim iſtos ambulantes
tibi donabo. Agedum audi Joſue ſumme ſacerdos tu cum tuis, qui tibi ad- 8
ſtant, ſociis; digni ſunt enim viri quibus fiant miracula: Equidem ecce ego
ſervum meum Chriſtum adduco, qui revelabitur. En enim lapis quem diſpo- 9
ſui ante Joſue, ſuper lapidem unum quem ſeptem cernunt oculi, ecce ego
viſionem ejus revelo, dicit Dominus exercituum, & die una *ſcelus* terræ illius
auferam. Eo tempore, ait Dominus exercituum, invitabitis unuſquiſque pro- 10
ximum ſuum ſubter fructus vineæ ſuæ & ſubter fructus ficus ſuæ.

CAP. IV.

ET reverſus angelus qui mecum colloquebatur, ſuſcitavit me quaſi virum, 1
qui de ſomno ſuo excitatur. Dixitque mihi, Quid tu vides? & dixi, Video, et 2
ecce candelabrum totum aureum quod habet in ſua ſummitate lenticulam,
& ſeptem lucernæ quæ ſuper illud erant, ſeptenæ erant ex quibus infundeba-
tur oleum lucernis quæ in faſtigio ejus [*eminebant.*] Duarum quoque oliva- 3
rum quæ juxta illud erant, una erat à dextera lenticulæ, & altera ab ipſius læ-
va. Tum reſpondi & dixi ad angelum qui me alloquebatur dicendo, Quæ 4
ſunt iſta Domine mi? Et reſpondit angelus qui mecum loquebatur, ac dixit 5
Noſtine quid hæc ſunt? cui dixi, Minimè Domine mi.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܡܪ ܡܠܐܟܗ ܕܡܪܝܐ ܠܣܛܢܐ. ܣܛܢܐ. ܢܓܥܘܪ ܒܟ ܡܪܝܐ: ܢܓܥܘܪ ܒܟ ܡܪܝܐ 2
ܕܓܒܐ ܠܐܘܪܫܠܡ. ܗܢܘ ܐܘܕܐ ܕܐܬܦܨܝ ܡܢ ܢܘܪܐ. * ܘܝܫܘܥ ܠܒܝܫ ܗܘܐ ܡܐܢܐ ܨܐܝܐ. 3
ܘܩܐܡ ܗܘܐ ܩܕܡ ܡܠܐܟܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܥܢܐ ܡܠܐܟܐ ܘܐܡܪ ܠܐܝܠܝܢ ܕܩܝܡܝܢ ܩܕܡܘܗܝ. 4
ܐܥܒܪܘ ܡܢܗ ܡܐܢܐ ܨܐܝܐ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܚܙܝ ܕܐܥܒܪܬ ܡܢܟ ܚܛܗܝܟ. ܘܐܠܒܫܬܟ ܡܐܢܐ
ܫܦܝܪܐ. * ܘܐܡܪ. ܣܝܡܘ ܟܠܝܠܐ ܕܟܝܐ ܒܪܫܗ. ܘܣܡܘ ܟܠܝܠܐ ܕܟܝܐ ܒܪܫܗ. 5
ܘܐܠܒܫܘܗܝ ܡܐܢܐ ܫܦܝܪܐ. ܘܡܠܐܟܗ ܕܡܪܝܐ ܩܐܡ. * ܘܐܣܗܕ ܡܠܐܟܗ ܕܡܪܝܐ ܒܝܫܘܥ 6
ܘܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. ܐܢ ܒܐܘܪܚܝ ܬܐܙܠ. ܘܦܘܩܕܢܝ ܬܛܪ. ܐܦ 7
ܐܢܬ ܬܕܘܢ ܠܒܝܬܝ. ܘܬܛܪ ܕܪܬܝ. ܘܐܬܠ ܠܟ ܕܡܗܠܟܝܢ ܒܝܢܬ ܗܠܝܢ ܕܩܝܡܝܢ.
* ܫܡܥ ܝܫܘܥ: ܟܗܢܐ ܪܒܐ. ܐܢܬ ܘܚܒܪܝܟ ܗܠܝܢ ܕܩܝܡܝܢ ܩܕܡܝܟ. ܡܛܠ ܕܓܒܪܐ 8
ܐܢܬܘܢ ܕܬܕܡܘܪܬܐ. ܗܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܠܥܒܕܝ ܕܢܚܐ. * ܡܛܠ ܕܗܐ ܟܐܦܐ ܕܝܗܒܬ ܩܕܡ 9
ܝܫܘܥ. ܥܠ ܟܐܦܐ ܚܕܐ ܫܒܥܐ ܥܝܢܝܢ. ܗܐ ܦܬܚ ܐܢܐ ܬܪܥܝܗ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ.
ܘܐܡܫܘܫ ܥܘܠܗ ܕܐܪܥܐ ܗܝ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. * ܒܗܘ ܝܘܡܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. 10
ܬܩܪܘܢ ܐܢܫ ܠܚܒܪܗ ܬܚܝܬ ܓܦܬܐ ܘܬܚܝܬ ܬܐܬܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܕ *

* ܘܗܦܟ ܡܠܐܟܐ ܕܡܡܠܠ ܒܝ. ܘܐܥܝܪܢܝ ܐܝܟ ܓܒܪܐ ܕܡܬܬܥܝܪ ܡܢ ܫܢܬܗ. * ܘܐܡܪ 1 2
ܠܝ. ܡܢܐ ܚܙܝܬ. ܘܐܡܪܬ. ܚܙܝܬ ܡܢܪܬܐ ܕܕܗܒܐ. ܘܣܦܠܐ ܥܠ ܪܫܗ. ܘܫܒܥܐ ܫܪܓܝܢ
ܥܠܝܗ. ܘܫܒܥܐ ܫܒܥܐ ܦܘܡܝܢ ܠܫܪܓܐ ܕܥܠ ܪܫܗ. * ܘܬܪܬܝܢ ܙܝܬܝܢ ܥܠܝܗ. 3
ܚܕ ܡܢ ܝܡܝܢܗ ܕܣܦܠܐ. ܘܚܕ ܡܢ ܣܡܠܗ. * ܘܥܢܝܬ ܘܐܡܪܬ ܠܡܠܐܟܐ: ܕܡܡܠܠ ܒܝ. 4
ܡܢܐ ܐܢܘܢ ܗܠܝܢ ܡܪܝ. * ܥܢܐ ܡܠܐܟܐ ܕܡܡܠܠ ܒܝ. ܘܐܡܪ ܠܝ. ܠܐ ܝܕܥ ܐܢܬ. ܡܢܐ 5
ܐܢܘܢ ܗܠܝܢ. ܘܐܡܪܬ. ܠܐ ܝܕܥ ܐܢܐ ܡܪܝ.

Dixit autem angelus Domini ad Satanam; 2
Satana, increpet te Dominus, increpet *in-
quam* te Dominus qui elegit Jeroſolymam;
hic eſt titio qui ſe eripuit ex igne. Porrò 3
Jeſus indutus erat veſtibus ſordidis, ſtabát-
que coram angelo Domini. Quarè locutus 4
angelus dixit ad eos qui aſtabant coram eo;
Amovete ab eo veſtes ſordidas: tum dixit il-
li; Vide quòd amoverim à te iniquitatem
tuam, & induerim te veſtibus optimis. Dixit 5
etiam, Imponite coronam mundam capiti e-
jus: & impoſuerunt coronam mundam ca-
piti ejus, & induerunt eum veſtibus optimis,
aſtante angelo Domini. Tum conteſtatus 6
eſt angelus Domini Jeſum, & dixit; Sic di- 7
cit Dominus potentiſſimus; Si in via mea am-
bulaveris, & mandata mea cuſtodieris; judi-
cabis domum meam, & cuſtodies atria mea;
& dabo tibi qui ambulent inter hos aſtantes.
Audi Jeſu ſumme ſacerdos, tu & ſocii tui iſti 8
qui ſtant coram te; quandoquidem viri eſtis
miraculi: ecce adducam ſervum meum Ori-
entem. Nam ecce lapis quem poſui ante 9
Jeſum, ſuper lapidem unum ſeptem ſunt ocu-
li. Ecce aperiam portas ejus, dicit Dominus
potentiſſimus, & attrectabo iniquitatem ter-
ræ illius, eo die. Eodem die, dicit Dominus 10
potentiſſimus, vocabitis quiſque ſocium ſuum
ſubter vitem & ſubter ficum.

CAP. IV.

DEinde reverſus eſt angelus qui loqueba- 1
tur in me, & excitavit me ut virum qui exci-
tatur à ſomno ſuo: Dixítque mihi, Quid 2
vidiſti? Cui dixi, Vidi candelabrum aureum,
& lancem ſuper ſummitatem ejus, & ſuper
hanc ſeptem lucernas, & ora ſeptena ſingu-
lis lucernis quæ erant ſupra ſummitatē illius.
Duæ quoque oleæ erant ſuper ipſam, una ad 3
dexteram lancis, altera ad ſiniſtram. Et re- 4
ſpondens dixi angelo qui loquebatur in me;
Quid iſta ſunt domine mi? Reſpondit ange- 5
lus qui loquebatur in me, dixitque mihi; Ne-
ſcis quid iſta ſint? Dixi, Neſcio domine mi.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* فقال الرب للشيطان. ينتهرك الرب يا شيطان * وينتهرك الرب الذي اختار اورشليم * أليس 2
هذا هو مثل عود افلت من النار * ويشوع كان لابسا ثيابا وسخة * ووافقا قدام وجه ملاك 3
الرب * فاجاب وقال للقيام امام وجهه قايلا. انزعوا الثياب الوسخة عنه * وقال له. ها نزعت 4
آثامك. والبسوه مدرعة * وضعوا طيلسانا نقيا على راسه * فالبسوه ثيابا * ووضعوا طيلسانا 5
نقيا على راسه * وملاك الرب قايم * وشهد ملاك الرب ليشوع قايلا * هكذا يقول الرب الضابط 6 7
الكل. ان سرت في طرقي * وتحفظ باوامري * فانت تحكم في بيتي * وان حفظت داري فاعطيك
المتصرفين في وسط هاولاء القيام * اسمع يا يشوع الكاهن العظيم انت واصحابك والجلوس 8
امام وجهك * من اجل انهم رجال يرون العجب هم * من اجل اني ها انا اجي بعبدي
المشرق * من اجل ان الحجر الذي اعطيته امام وجه يشوع * على الحجر الواحد سبع اعين 9
هم * ها انا احفر حفرا يقول الرب الضابط الكل * وافتش كل ظلم تلك الارض في يوم واحد *
* في ذلك اليوم يقول الرب الضابط الكل * ادعوا كل واحد صاحبه تحت كرمه وتحت 10
شجر تين *

* الفصل الرابع *

* ورجع الملاك المتكلم في * وايقظني كما اذا استيقظ انسان من نومه * وقال لي * ماذا ترى 1 2
انت * فقلت رايت واذا منارة كلها ذهب * والمصباح فوقها * وسبعة سرج فوقها * وسبعة افواه
للسرج التي فوقها * وزيتونتان فوقها. واحدة عن يمين مصباحها. وواحدة عن اليسار * فسالت 3 4
وقلت للملاك المتكلم في قايلا. ما هي هذه يا سيد * فاجاب الملاك المتكلم في وقال لي قايلا. 5
اما تعلم ما هي هذه * فقلت لا يا سيد *

Dixitque Dominus ad Satanam; Increpet 2
te Dominus O Satana, increpet inquam
te Dominus qui elegit Jeruſalem: nonne
iſte eſt ut lignum quod erupit ex igne?
Jeſus autem indutus erat veſtibus ſor- 3
didis, & ſtabat ante faciem angeli
Domini: Quapropter reſpondens dixit 4
aſtantibus coram facie ſua, dicens;
Auferte veſtes ſordidas ab eo, (Dixit-
que ei; En abſtuli iniquitates tuas)
& induite eum togâ, Cidarimque mun- 5
dam imponite capiti ejus. Itaque in-
duerunt eum veſtibus, & impoſuerunt
cidarim mundam capiti ejus, angelo
Domini aſtante. Et conteſtatus eſt an- 6
gelus Domini Jeſum; dicens; Sic di-
cit Dominus omnipotens, Si ambulave- 7
ris in viis meis, & obſervaveris præ-
cepta mea; tu judicabis in domo
mea: & ſi cuſtodieris atrium meum,
dabo tibi converſantes in medio horum
aſtantium. Audi O Jeſu ſacerdos maxi- 8
me, tu & ſocii tui, & qui ſedent
ante faciem tuam; ſiquidem iſti, viri
ſunt miraculum viſuri: quoniam ecce
ego adducturus ſum ſervum meum
Orientem. Nam lapis quem propoſui 9
ante faciem Jeſu, ſuper unico lapide
ſeptem ſunt oculi. En ego fodiam fo-
veam, ait Dominus omnipotens; &
perſcrutabor omnem perverſitatem illius
terræ, unâ die. Eâ die, dicit Dominus 10
omnipotens, vocate quiſque ſocium
ſuum ſub vitem & ſub arborem
fici.

CAP. IV.

ET reverſus eſt angelus in me loquens, 1
excitavitque me ut cùm quis excitatur
à ſomno ſuo: Dixitque mihi, Quid 2
tu vides? Dixi; Vidi, & ecce can-
delabrum totum aureum, & facem
ſuper illud, ſeptemque lucernas ſuper
illud, ſeptemque ora lucernis quæ erant
ſuper illud: Præterea geminæ erant 3
ſuper illud olivæ, una ad dexteram
facis ejus, altera ad ſiniſtram. Et in- 4
terrogavi, ac dixi angelo in me lo-
quenti, dicens; Quid ſunt hæc O
Domine? Reſpondit angelus qui lo- 5
quebatur in me, dixitque mihi, dicens;
Annon ſcis quid ſint hæc? Dixi, Ne-
quaquam O Domine.

זכריה: ה

ad Domini verbum Hoc : dicendo ,me ad dixit & reſpondit Et
6 וַיַּעַן וַיֹּאמֶר אֵלַי לֵאמֹר זֶה דְּבַר־יְהוָה אֶל־
,meo ſpiritu in ſed ,potentia in nec,exercitu in Non:dicendo,Zerubabel
זְרֻבָּבֶל לֵאמֹר לֹא בְחַיִל וְלֹא בְכֹחַ כִּי אִם־בְּרוּחִי
facies ad magne mons tu Quis .exercituum Dominus dixit
7 אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת׃ מִי־אַתָּה הַר־הַגָּדוֹל לִפְנֵי
; *ſtrepitibus* primarium lapidem educet Et ? planitiem in Zerubabel
זְרֻבָּבֶל לְמִישֹׁר וְהוֹצִיא אֶת־הָאֶבֶן הָרֹאשָׁה תְּשֻׁאוֹת
: dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et .ei gratia , gratia
8 חֵן חֵן לָהּ׃ וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃
:illā *elaborabunt* ejus manus &,iſtam domum fundaverunt Zerubabel Manus
9 יְדֵי זְרֻבָּבֶל יִסְּדוּ הַבַּיִת הַזֶּה וְיָדָיו תְּבַצַּעְנָה
quis Quia .vos ad me miſit exercituum Dominus quòd ſcies &
10 וְיָדַעְתָּ כִּי־יְהוָה צְבָאוֹת שְׁלָחַנִי אֲלֵיכֶם׃ כִּי מִי
lapidem videbunt & , lætabuntur & ? *exiguarum* diem deſpexit
בַז לְיוֹם קְטַנּוֹת וְשָׂמְחוּ וְרָאוּ אֶת־הָאֶבֶן
ipſi , Domini *oculi illi* ſeptem , Zerubabel manu in *ſtanni*
הַבְּדִיל בְּיַד זְרֻבָּבֶל שִׁבְעָה־אֵלֶּה עֵינֵי יְהוָה הֵמָּה
Quid : eum ad dixi &,reſpondi Et .terram univerſam *in diſcurſantes*
11 מְשׁוֹטְטִים בְּכָל־הָאָרֶץ׃ וָאַעַן וָאֹמַר אֵלָיו מַה־
?ejus ſiniſtram *ſuper* & ,candelabri dexteram *ſuper* iſtæ olivæ duæ
שְּׁנֵי הַזֵּיתִים הָאֵלֶּה עַל־יְמִין הַמְּנוֹרָה וְעַל־שְׂמֹאולָהּ׃
,olivarum ſpicæ duæ Quid : eum ad dixi & , ſecundò reſpondi Et
12 וָאַעַן שֵׁנִית וָאֹמַר אֵלָיו מַה־שְׁתֵּי שִׁבֲּלֵי הַזֵּיתִים
? aurum ſe *deſuper evacuantium* , *auri ampullarum* duarū *manu in* quæ
אֲשֶׁר בְּיַד שְׁנֵי צַנְתְּרוֹת הַזָּהָב הַמְרִיקִים מֵעֲלֵיהֶם הַזָּהָב׃
Non : dixi Et ? hæc quid nôſti Nonne : dicendo ,me ad ait Et
13 וַיֹּאמֶר אֵלַי לֵאמֹר הֲלוֹא יָדַעְתָּ מָה־אֵלֶּה וָאֹמַר לֹא
ſuper ſtantes , olei filii duo Iſti : dixit Et .mi Domine
14 אֲדֹנִי׃ וַיֹּאמֶר אֵלֶּה שְׁנֵי בְנֵי־הַיִּצְהָר הָעֹמְדִים עַל־
.terræ univerſæ Dominatorem
אֲדוֹן כָּל־הָאָרֶץ׃

CAP. V. ה

.volans volumen ecce Et .vidi & ,meos oculos levavi &,ſum cōverſus Et
1 וָאָשׁוּב וָאֶשָּׂא עֵינַי וָאֶרְאֶה וְהִנֵּה מְגִלָּה עָפָה׃
.volans volumen *videns Ego* :dixi Et ? *videns tu* Quid : me ad dixit Et
2 וַיֹּאמֶר אֵלַי מָה אַתָּה רֹאֶה וָאֹמַר אֲנִי רֹאֶה מְגִלָּה עָפָה
.cubito in decem ejus latitudo & , *cubito in* viginti ejus Longitudo
אָרְכָּהּ עֶשְׂרִים בָּאַמָּה וְרָחְבָּהּ עֶשֶׂר בָּאַמָּה׃
.terræ univerſæ *facies* ſuper *egrediens execratio* Hæc : me ad dixit Et
3 וַיֹּאמֶר אֵלַי זֹאת הָאָלָה הַיּוֹצֵאת עַל־פְּנֵי כָל־הָאָרֶץ
inde , jurans omnis & :eſt ſucciſus *ipſa ſicut hinc* fur omnis Quia
כִּי כָל־הַגֹּנֵב מִזֶּה כָּמוֹהָ נִקָּה וְכָל־הַנִּשְׁבָּע מִזֶּה
,exercituum Dominus dixit , *eam* feci Exire .eſt ſucciſus *illa ſicut*
4 כָּמוֹהָ נִקָּה׃ הוֹצֵאתִיהָ נְאֻם יְהוָה צְבָאוֹת
meo nomine in jurantis domum ad & , furis domum ad veniet &
וּבָאָה אֶל־בֵּית הַגַּנָּב וְאֶל־בֵּית הַנִּשְׁבָּע בִּשְׁמִי
& ,cā conſumet & ,ejus domus medio in commorabitur & : *falſitate in*
לַשָּׁקֶר וְלָנֶה בְּתוֹךְ בֵּיתוֹ וְכִלַּתּוּ וְאֶת־
dixit & ,me in *loquens* angelus eſt egreſſus Et .ejus lapides &,ejꝰ ligna
5 עֵצָיו וְאֶת־אֲבָנָיו׃ וַיֵּצֵא הַמַּלְאָךְ הַדֹּבֵר בִּי וַיֹּאמֶר
.hoc egrediens quid vide & , tuos oculos nunc Leva : me ad
אֵלַי שָׂא נָא עֵינֶיךָ וּרְאֵה מָה הַיּוֹצֵאת הַזֹּאת׃
Hæc : dixit & : egrediens *Ephah* Hæc : dixit Et ?*ipſum* Quid :dixi Et
6 וָאֹמַר מַה־הִיא וַיֹּאמֶר זֹאת הָאֵיפָה הַיּוֹצֵאת וַיֹּאמֶר זֹאת
:portabatur plumbi talentum ecce Et .terra univerſa in eorū oculus
7 עֵינָם בְּכָל־הָאָרֶץ׃ וְהִנֵּה כִּכַּר עֹפֶרֶת נִשֵּׂאת
.*Ephah* medio in *ſedens* una mulier *hæc* &
וְזֹאת אִשָּׁה אַחַת יוֹשֶׁבֶת בְּתוֹךְ הָאֵיפָה׃

Verſio VULG. LAT.

6 Et reſpondit, & ait ad me, dicens;
Hoc eſt verbum Domini ad
Zorobabel, dicens; Non in exercitu,
nec in robore, ſed in ſpiritu
meo, dicit Dominus exercituum.
7 Quis tu, mons magne, corā
Zorobabel? in planum: & educet
lapidem primarium, & exæquabit
8 gratiam gratiæ ejus. Et factum
eſt verbum Domini ad me,
9 dicens; Manus Zorobabel fundaverunt
domum iſtam, & manus
ejus perficient eam : & ſcietis
quia Dominus exercituum miſit
10 me ad vos : Quis enim deſpexit
dies parvos? & lætabuntur, &
videbunt lapidem ſtanneum in
manu Zorobabel. Septem iſti
oculi ſunt Domini, qui diſcurrunt
11 in univerſam terram. Et
reſpondi, & dixi ad eum; Quid
ſunt duæ olivæ iſtæ, ad dexteram
candelabri, & ad ſiniſtram ejus?
12 Et reſpondi ſecundò, & dixi ad
eum; Quid ſunt duæ ſpicæ olivarum,
quæ ſunt juxta duo roſtra
aurea, in quibus ſunt ſuffuſoria
13 ex auro? Et ait ad me, dicens;
Numquid neſcitis quid ſunt hæc?
14 Et dixi; Non, domine mi. Et
dixit; Iſti ſunt duo filii olei, qui
aſſiſtunt Dominatori univerſæ
terræ.

CAP. V.

1 ET converſus ſum, & levavi
oculos meos: & vidi, & ecce
2 volumen volans. Et dixit ad me;
Quid tu vides? Et dixi; Ego video
volumen volans: longitudo
ejus viginti cubitorū, & latitudo
3 ejus decem cubitorum. Et dixit
ad me; Hæc eſt maledictio, quæ
egreditur ſuper faciem omnis terræ:
quia omnis fur, ſicut ibi
ſcriptum eſt, judicabitur: et omnis
jurans, ex hoc ſimiliter judicabitur.
4 Educam illud, dicit Dn̄s exercituū:
& veniet ad domū furis,
& ad domū jurantis in nomine
meo mendaciter: & commorabitur
in medio domûs ejus, & conſumet
eam, & ligna ejꝰ et lapides
5 ejus. Et egreſſus eſt angelus, qui
loquebatur in me: & dixit ad me;
Leva oculos tuos, & vide quid eſt
6 hoc, quod egreditur. Et dixi;
Quidnam eſt? Et ait; Hæc eſt
amphora egrediens. Et dixit; Hæc
eſt oculus eorum in univerſa terra.
7 Et ecce talentum plumbi portabatur,
& ecce mulier una ſedens
in medio amphoræ.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

6 Καὶ ἀπεκρίθη, ϗ εἶπε πρός με, λέγων, Οὗτος
ὁ λόγος κυρίου πρὸς Ζοροβάβελ, λέγων,
Οὐκ ἐν δυνάμει μεγάλῃ, οὐδὲ ἐν ἰσχύϊ,
(ζ) ἀλλ' ἐν πνεύματί μου, λέγει κύριος παντοκράτωρ.
7 Τίς εἶ σὺ τὸ ὄρος τὸ μέγα τὸ
πρὸ προσώπου Ζοροβάβελ τοῦ κατορθῶσαι; ϗ
ἐξοίσω τὸν λίθον τῆς κληρονομίας, ἰσότητα
8 χάριτος χάριτα αὐτῆς. Καὶ ἐγένετο λόγος
9 κυρίου πρός με, λέγων, Αἱ χεῖρες Ζοροβάβελ
ἐθεμελίωσαν τὸν οἶκον τοῦτον, ϗ αἱ χεῖρες
αὐτοῦ (°) ἐπιθήσουσιν αὐτόν· ϗ ἐπιγνώσῃ διότι
κύριος παντοκράτωρ (η) ἐξαπέσταλκέ με
10 πρὸς σέ. Διότι τίς ἐξουδένωσεν εἰς ἡμέρας
μικράς; ϗ (θ) χαροῦνται, ϗ ὄψονται τὸν λίθον
τὸν κασσιτέρινον ἐν χειρὶ Ζοροβάβελ. ἑπτὰ οὗτοι
ὀφθαλμοί εἰσιν (ι) οἱ ἐπιβλέποντες ἐπὶ
11 πᾶσαν τὴν γῆν. Καὶ ἀπεκρίθην, ϗ εἶπα
πρὸς αὐτόν, Τί αἱ δύο ἐλαῖαι αὗται, αἱ ἐκ
12 δεξιῶν τῆς λυχνίας ϗ ἐξ εὐωνύμων; Καὶ
ἐπηρώτησα ἐκ δευτέρου, ϗ εἶπα πρὸς αὐτόν,
Τί οἱ δύο κλάδοι τῶν ἐλαιῶν οἱ ἐν ταῖς χερσὶ
τῶν δύο μυξωτήρων τῶν χρυσῶν τῶν ἐπιχεόντων,
ϗ ἐπαναγόντων τὰς ἐπαρυστρίδας
13 τὰς χρυσᾶς; Καὶ εἶπε πρός με, Οὐκ οἶδας
τί ἐστι ταῦτα; ϗ εἶπα, Οὐχὶ κύριε.
14 Καὶ εἶπεν, Οὗτοι οἱ δύο υἱοὶ τῆς πιότητος παρεστήκασι
(κ) κυρίῳ πάσης τῆς γῆς.

Et reſpondit, & ait ad me, dicens; 6
Iſte eſt ſermo Domini ad
Zorobabel, dicens; Non in fortitudine
magna, neq; in robore, ſed
in ſpiritu meo, dicit Dominus omnipotens.
Quis es tu, mons magne, 7
qui ante faciem Zorobabel, ut
corrigas? Et educam lapidem
hæreditatis, æqualitatem gratiæ,
gratiam ejus. Et factus eſt ſermo 8
Domini ad me, dicens; Manus 9
Zorobabel fundaverunt domum
iſtam: & manus ejus complebunt
eam. Et ſcies, quoniam
Dominus omnipotens miſit me ad
te. Quis enim deſpexit in dies 10
parvos? Et lætabuntur, & videbunt
lapidem ſtanneū in manu
Zorobabel. Septem iſti ſunt (a)
oculi, qui reſpiciunt ſuper omnem
terram. Et reſpondi, & dixi ad 11
eum; Quid ſunt duæ olivæ iſtæ,
quæ à dextris candelabri, & à
ſiniſtris? Et interrogavi ſecundò, 12
& dixi ad eum; Quid ſunt
duo rami olivarum, qui ſunt in
manibus duarum (b) narium aurearum,
quæ infundunt, & retrahunt
ſuffuſoria aurea? Et dixit 13
ad me; Non noſti, quid ſunt
hæc? Et dixi; Nequaquam, domine. 14
Et ait; Iſti duo filii (c) pinguedinis
aſſiſtunt Domino univerſæ terræ.

MS.A. (ζ) ἀλλ' ἢ ἐν (°) ἐπιτελέσουσιν (η) ἐξαπέσταλκεν (θ) χαρήσονται, (ι) κυρίου οἱ (κ) τῷ κυρίῳ

ΚΕΦ. ε΄.

1 ΚΑὶ ἐπέστρεψα, ϗ ἦρα τοὺς ὀφθαλμούς μου,
2 ϗ ἴδον, ϗ ἰδοὺ δρέπανον πετόμενον. Καὶ εἶπε
πρός με, Τί σὺ βλέπεις; ϗ εἶπα, (α) Ἐγὼ
ὁρῶ δρέπανον πετόμενον (β) μήκους πηχῶν
3 εἴκοσι, ϗ (γ) πλάτους πηχῶν δέκα. Καὶ
εἶπε πρός με, Αὕτη ἡ ἀρὰ ἡ ἐκπορευομένη
ἐπὶ (δ) πρόσωπον πάσης τῆς γῆς· διότι πᾶς
ὁ κλέπτης ἐκ τούτου ἕως θανάτου ἐκδικηθήσεται,
ϗ πᾶς ὁ ἐπίορκος ἐκ τούτου (ε) ἐκδικηθήσεται.
4 Καὶ ἐξοίσω (ζ) αὐτό, λέγει κύριος
παντοκράτωρ, ϗ (η) εἰσελεύσεται εἰς τὸν
οἶκον τοῦ κλέπτου, ϗ εἰς τὸν οἶκον τοῦ ὀμνύοντος
τῷ ὀνόματί μου ἐπὶ ψεύδει, ϗ καταλύσει ἐν
μέσῳ τοῦ οἴκου αὐτοῦ, ϗ συντελέσει αὐτόν,
5 ϗ τὰ ξύλα αὐτοῦ, ϗ τοὺς λίθους αὐτοῦ. Καὶ
ἐξῆλθεν ὁ ἄγγελος ὁ λαλῶν ἐν ἐμοί, καὶ
εἶπε πρός με, Ἀνάβλεψον τοῖς ὀφθαλμοῖς
6 σου, ϗ ἴδε τὸ ἐκπορευόμενον τοῦτο. Καὶ εἶπα,
Τί ἐστι; ϗ εἶπε, Τοῦτο τὸ μέτρον τὸ ἐκπορευόμενον.
ϗ εἶπεν, Αὕτη ἡ ἀδικία αὐτῶν
7 ἐν πάσῃ τῇ γῇ. Καὶ ἰδοὺ τάλαντον
(θ) μολίβδου ἐξαιρόμενον· ϗ ἰδοὺ γυνὴ
μία ἐκάθητο ἐν μέσῳ τοῦ (ι) μέτρου.

CAP. V.

ET converſus ſum, & levavi 1
oculos meos, & vidi: & ecce
(a) falx volans. Et dixit ad me; 2
Quid tu vides? Et dixi; Ego
video falcem volantem longitudinis
cubitorum viginti, & latitudinis
cubitorum decem. Et dixit 3
ad me; Hæc eſt maledictio,
quæ egreditur ſuper faciem omnis
terræ: quia omnis fur ex hoc
uſque ad mortem punietur, &
omnis perjurus ex hoc (b) cruciabitur.
Et educam illud, dicit 4
Dominus omnipotens, & ingredietur
in domum furis, & in domum
jurantis nomine meo ſuper
mendacio: & requieſcet in medio
domûs ejus, & conſummabit
eam, & ligna ejus, & lapides
ejus. Et egreſſus eſt angelus, 5
qui loquebatur in me, & dixit ad
me; Suſpice oculis tuis, & vide
hoc, quod egreditur. Et dixi; 6
Quid eſt? Et ait; Hæc eſt menſura,
quæ egreditur. Et ait;
Hæc eſt iniquitas eorum in omni
terra. Et ecce talentum plumbi 7
elevatum: & ecce mulier una
ſedebat in medio menſuræ.

MS. A. (α) Ὁρῶ ἐγὼ (β) μῆκος (γ) πλάτος (δ) προσώπου (ε) ἕως θανάτου ἐκδικηθήσεται. (ζ) αὐτά, (η) εἰσελεύσομαι (θ) μολίβου (ι) ταλάντου.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

6 ואתיב ואמר לי למימר דין פתגמא דיי עם זרבבל למימר לא בחילא ולא בגבורא
7 אלהין במימרי אמר יי צבאות׃ מא את חשיבא מלכותא טפשתא קדם זרבבל הלא
8 כמישרא ויגלי ית משיחיה דאמיר שמיה מלקדמין וישלוט בכל מלכותא׃ והוה פתגם
9 נבואה מן קדם יי עמי למימר׃ ידי זרבבל שריאה למבני ביתא הדין וידוהי ישכללוניה
10 ותדעון ארי יי צבאות שלחני לאתנבאה לכון׃ ארי מן הוא דיכי דבסר יומא דין על
בנינא דהוא זעיר הלא יתוב ויחדי כד יחזיית אבן משקולתא בידא דזרבבל שבעא
11 נדבכין כאלין קדם יי גלן עובדי בני אנשא בכל ארעא׃ ואתיבית ואמרית ליה מא
12 תרין זיתיא האלין על ימין מנרתא ועל סמלא׃ ואתיבית תנינות ואמרית ליה מא
תרין שובלי זיתיא דביד תרין אסקריטון דדהב דמריקין מנהון משחא לבוציני דדהבא׃
13 ואמר לי למימר הלא ידעת מן אלין ואמרית לא רבוני׃ ואמר אלין תרין בני רברביא
14 דקימין קדם רבון כל ארעא׃

ה

1 ותבית וזקפית עיני וחזית והא מגלא פרחא׃ ואמר לי מה את חזי ואמרית אנא חזי
2 מגלה פרחא אורכה עשרין אמין ופותיה עשר אמין׃ ואמר לי דא מומתא דעתידא
3 למפק על אפי כל ארעא ארי כל דגנב ומכדב מדא לקי וכל דקים בשמי לשקר מדא
4 לקי׃ אפקתה אמר יי צבאות ותיעול לבית גנבא ולבית דמקים בשמי לשקר ותבית
5 בגו ביתיה ותשיציניה וית אעוהי וית אבנוהי׃ ונפק מלאכא דממלל עמי ואמר לי זקוף
6 כען עינך וחזי מן דגלן אלין׃ ואמרית מן אנון ואמר אלין עמא דהוו נסבין ויהבין
7 במכילתא דשקרא ואמר הא אנון גלן קדם כל יתבי ארעא׃ והא עממיא קלילין מגלן
יתהון בקלילו ואתו עממין אוחרנין ויתיבו באתרהון על דהוו נסבין ויהבין במכילתא
דשקרא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et reſpondens ait mihi, dicendo: Hoc eſt verbum Domini ad Zorobabel, dicendo: 6
Non exercitu nec fortitudine, ſed *verbo meo*, dicit Dominus exercituum.
Quale tu cum Zorobabele reputaris regnum ſtolidum? nónne ſicut val- 7
lis? & emerget Chriſtus *ejus*, cujus ab æterno nomen dictum eſt, qui imperio
potietur omnium regnorum. Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Dn̄i mecum, 8
dicens. Manus Zorobabel inceperunt ædificare domum iſtam, & ma- 9
nus ejus perficient eam: & ſcietis, quia Dominus exercituum miſit me *ut vaticinarer*
vobis. Quoniam quis eſt iſte qui contempſit diem hanc? eò quòd 10
ædificium ſit exiguum. Nonne convertetur & lætabitur quando viderit lapidem
perpendiculi in manu Zorobabel? ſeptem lapidum ordines *quaſi hos*.
Coram Domino revelata ſunt opera filiorum hominis in univerſa terra. Et 11
reſpondi, & dixi ad eum, Quid ſunt duæ olivæ iſtæ ad dexteram candelabri,
& ad ſiniſtram? Et reſpondi ſecundò, & dixi, Quid ſunt duæ ſpicæ oliva- 12
rum quæ ſunt juxta duos lecythos aureos, ex quibus effunditur oleum in lucernas
aureas? Et ait ad me, dicens: Nónne ſcis quid ſunt hæc? & dixi, Non 13
Domine mi. Et dixit, Iſti ſunt duo filii principum qui ſtant coram guberna- 14
tore univerſæ terræ.

CAP. V.

ET converſus ſum, & ſuſtuli oculos meos, & vidi, & ecce volumen volans. 1
Et dixit ad me: Quid tu vides? & dixi, Ego video volumen volans: longitu- 2
do ejus viginti cubitorum, & latitudo ejus decem cubitorum. Et dixit ad me: 3
Hæc eſt maledictio quæ egreſſura eſt ſuper faciem univerſæ terræ: Omnis enim
qui furatur & mentitur, percutietur ab iſta; et omnis qui juraverit falsò in
nomine meo, percutietur ab iſta. Eduxi eam, dicit Dominus exercituum, et 4
ingredietur in domum ejus qui furatur, et in domum ejus qui jurat in nomine
meo falsò; et habitabit in medio domus ejus, et conſumet eum, et ligna ejus, et
lapides ejus. Et egreſſus eſt angelus qui loquebatur mecum, et dixit ad me: 5
Attolle nunc oculos tuos, et vide quinam ſunt hi qui apparent? Et dixi, Qui 6
ſunt? dixit autem, Iſti ſunt populi qui accipiebant et dabant menſura falſa:
et dixit, Ecce illi revelantur coram omnibus habitatoribus terræ. Et ecce po- 7
puli celeres transferunt illos velociter: et venerunt populi alii, qui habitaverunt
in loco eorum, pro eo quòd accipiebant et dabant menſura falſa.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܡܪ ܠܝ. ܗܢܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܙܪܘܒܒܠ. ܠܐ ܒܚܝܠܐ ܘܠܐ ܒܥܘܫܢܐ. ܐܠܐ ܐܢ 6
ܒܪܘܚܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܡܢܐ ܐܢܬ ܛܘܪܐ ܪܒܐ ܩܕܡ ܙܪܘܒܒܠ ܀ ܐܠܐ ܐܝܟ ܦܩܥܬܐ. 7
ܘܐܦܩ ܟܐܦܐ ܪܫܝܬܐ ܕܫܘܝܘܬܐ ܘܪ̈ܚܡܐ. * ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. 8
* ܐܝ̈ܕܘܗܝ ܕܙܪܘܒܒܠ ܣܡ ܫܬܐܣܘ̈ܗܝ ܕܒܝܬܐ ܗܢܐ ܀ ܘܐܝ̈ܕܘܗܝ ܡܫܡܠܝܢ ܠܗ. 9
ܘܬܕܥܘܢ. ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܕܪܢܝ ܠܘܬܟܘܢ. * ܡܢܘ ܓܝܪ ܕܫܛ ܠܝܘ̈ܡܬܐ ܙܥܘ̈ܪܐ. 10
ܘܢܚܕܘܢ. ܘܢܚܙܘܢ ܟܐܦܐ ܕܦܪܫܘܬܐ ܒܐܝ̈ܕܘܗܝ ܕܙܪܘܒܒܠ. ܘܗܠܝܢ ܐܢܝܢ ܫܒܥܐ
ܥܝ̈ܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܕܚܝܪ̈ܢ ܒܟܠܗ̇ ܐܪܥܐ. * ܥܢܝܬ ܘܐܡܪܬ ܠܗ. ܘܡܢܐ ܐܢܝܢ ܬܪ̈ܬܝܢ 11
ܙܝ̈ܬܐ. ܕܡܢ ܝܡܝܢܗ ܕܡܣܐܬܐ ܘܡܢ ܣܡܠܗ. * ܥܢܝܬ ܕܬܪܬܝܢ ܙܒ̈ܢܝܢ. ܘܐܡܪܬ ܠܗ. 12
ܘܡܢܐ ܐܢܝܢ ܗܠܝܢ ܬܪ̈ܬܝܢ ܣܘܟ̈ܐ ܕܙܝܬܐ. ܕܒܐܝ̈ܕܝ ܬܪܝܢ ܓܦ̈ܐ ܕܕܗܒܐ. ܕܢܬܟܝܢ 13
ܡܢܗܘܢ ܕܗܒܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܠܐ ܝܕܥ ܐܢܬ. ܡܢܐ ܐܢܝܢ ܗܠܝܢ. ܘܐܡܪܬ. ܠܐ ܡܪܝ. * ܘܐܡܪ 14
ܠܝ. ܗܠܝܢ ܐܢܝܢ ܬܪܝܢ ܒܢܝ̈ ܕܡܫܚܐ. ܕܩܝܡܝܢ ܩܕܡ ܡܪܐ ܕܟܠܗ̇ ܐܪܥܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܗ *

* ܘܗܦܟܬ ܐܪܝܡܬ ܥܝ̈ܢܝ. ܘܚܙܝܬ ܡܓܠܬܐ 1
ܕܦܪܚܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܡܢܐ ܚܙܝܬ. ܘܐܡܪܬ. ܚܙܝܬ ܡܓܠܬܐ ܕܦܪܚܐ. ܐܘܪܟܗ ܒܥܣܪܝܢ 2
ܐܡܝܢ. ܘܦܬܝܗ̇. ܒܥܣܪ ܐܡܝܢ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܗܕܐ ܗܝ ܠܘܛܬܐ ܕܢܦܩܐ ܥܠ ܐܦܝ̈ܗ̇ ܕܟܠܗ̇ 3
ܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܟܠ ܕܓܢܒ. ܡܢܗ̇. ܐܟܘܬܗ̇ ܢܙܕܩ. ܘܟܠ ܕܝܡܐ. ܡܢܗ̇. ܐܟܘܬܗ̇ ܢܙܕܩ.
* ܐܦܩܝܗ̇ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܀ ܘܬܥܘܠ ܠܒܝܬܗ ܕܓܢܒܐ ܀ ܘܠܒܝܬܗ ܕܟܠ 4
ܕܝܡܐ ܒܫܡܝ ܒܕܓܠܘܬܐ. ܘܬܫܪܐ ܒܓܘ ܒܝܬܗ ܀ ܘܬܓܡܪ ܠܩܝܣܘ̈ܗܝ. ܘܠܟܐܦܘ̈ܗܝ.
* ܘܢܦܩ ܡܠܐܟܐ ܕܡܡܠܠ ܒܝ ܘܐܡܪ ܠܝ ܀ ܐܪܝܡ ܥܝ̈ܢܝܟ. ܘܚܙܝ ܡܢܐ ܗܝ ܗܕܐ 5
ܕܢܦܩܐ. * ܘܐܡܪܬ. ܡܢܐ ܗܝ. ܘܐܡܪ ܠܝ ܀ ܗܕܐ ܗܝ ܡܟܝܠܬܐ ܕܢܦܩܐ. ܘܗܢܘ ܐܝܟ ܚܘ̈ܒܐ 6
ܕܟܠܗ̇ ܐܪܥܐ. * ܘܗܐ ܟܟܪܐ ܕܐܒܪܐ ܫܩܝܠܐ. ܘܐܢܬܬܐ ܚܕܐ ܝܬܒܐ ܗܘܬ ܒܓܘ ܡܟܝܠܬܐ. 7

Dixit mihi; Hic eſt ſermo Domini de Zorbabele, 6
Neque vi, neque robore, ſed tantùm
ſpiritu, dicit Dominus potentiſſimus. Quid 7
es magne mons corã Zorbabele, niſi ut planities?
tum protulit lapidem præſtantiſſimum
æqualitatis & miſericordiæ. Et fuit ad me 8
ſermo Domini, dicendo; Manus Zorbabelis 9
poſuerunt fundamenta hujus domûs, &
manus ejus perficient eam. Ita ſcietis quòd
Dominus potentiſſimus me miſerit ad vos.
(Quis enim ſpernat paucos dies?) & intuebuntur 10
ac videbunt lapidem ſeparationis in
manu Zorbabelis: hi ſunt ſeptem oculi Domini,
qui intuentur univerſam terram. Reſpondi, 11
& dixi ei; Ecquid ſibi volunt duæ
iſtæ oleæ quæ ſunt ad dexteram lancis & ad
ſiniſtram ejus? Reſpondi ſecundâ vice, & 12
dixi ei; Quid ſunt hi duo rami oleæ, qui ſunt
inter duo roſtra aurea effundentia ex ſe aurum?
Dixit mihi; Annon nôſti quid iſti ſint? 13
Dixi, Non domine mi. Dixit mihi; Hi ſunt 14
duo filii pinguedinis aſtantes coram Domino
totius terræ.

CAP. V.

Rurſum attollens oculos meos, vidi ſchedam 1
volantem. Cúmque diceret mihi, Quid 2
vidiſti? dixi, Vidi ſchedam volantem, longitudine
viginti cubitorum, & latitudine decem
cubitorum. Tum dixit mihi; Hæc eſt 3
maledictio proditura ſuper faciem totius terræ:
nam quicunque furatur, ex ea ſecundùm
ipſam juſtificabitur; & quicunque pejerat, ex
ea ſecundùm ipſam juſtificabitur. Hanc educam, 4
dicit Dominus potentiſſimus, & ingredietur
domum furis, & domum cujuſvis
per nomen meum falſò jurantis: & habitabit
in domo ejus, abſuméti que ligna ejus & 5
lapides ejus. Poſtea egreſſus eſt angelus qui
loquebatur in me, dixítque mihi; Attolle oculos
tuos, & vide quid ſit hoc quod egreditur.
Dicenti verò mihi, Quid eſt? Dixit, Hæc 6
eſt menſura quæ egreditur, in qua continentur
culpæ totius terræ. Et ecce talento plumbeo 7
ſublato, mulier quædam ſedebat in ea
menſura.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* فأجاب وقال لي قائلا * هذا قول الرب إلي زربابل قائلا * ليس بجيش عظيم ولا بقوة * ولكن 6
بروحي يقول الرب الضابط الكل * ما أنت أيها الجبل العظيم الذي أمام وجه زربابل لتقوم * وأخرج 7
حجر الميراث * مساواة النعمة نعماها * وكان قول الرب إلي قائلا * يدا زربابل أسست هذا البيت * 8 9
ويداه يكملانه * وتعلم أن الرب الضابط الكل أرسلني إليك * من أجل أنه من احتقر أياما 10
صغارا * فيفرحون وينظرون الحجر القصديري في يد زربابل * هاولاء سبع أعين الرب هن
الناظرات على كل الأرض * فأجبت وقلت له * ما هاتان الزيتونتان اللتان عن يمين المنارة 11
ويسارها * وسألت ثانية وقلت له * ما هذان الغصنان من الزيتون اللذان في يدي المنخرين 12
الذهب اللذين يسكبان ويعليان السبعة الأفواه الذهب * فقال لي * ما تعلم ما هي هذه * 13
فقلت لا يا سيد * فقال * هذان ابنا الدسم قاما لرب كل الأرض * 14

* الفصل الخامس *

* فرجعت رفعت عيني ونظرت * وإذا منجل طائر * فقال لي * ماذا تنظر أنت * فقلت أنا أنظر 1 2
منجلا طائرا * طوله عشرون ذراعا * وعرضه عشر أذرع * فقال لي * هذه اللعنة الخارجة على 3
وجه كل الأرض * من أجل أن كل سارق من هذا إلي الموت ينتقم منه * وكل حانث من هذا إلي
الموت ينتقم منه * وأخرجه يقول الرب الضابط الكل * ويدخل إلي بيت السارق وإلي بيت 4
الحالف باسمي بالكذب * ويحل في وسط بيته * ويفنيه وخشبه وحجارته * وخرج الملاك المتكلم 5
في وقال لي * تفرس بعينيك وانظر هذا الخارج * فقلت ما هو * فقال * هذا المكيال الخارج * 6
وقال * هذا ظلمهم في كل الأرض * وها قنطار من رصاص محمول * وإذا امرأة واحدة جالسة 7
في وسط المكيال *

Reſpondit, ac dixit mihi; dicens, Is eſt 6
ſermo Domini ad Zorobabelem, dicens;
Nequaquam per exercitum magnum, neq;
per potentiam, ſed per ſpiritum meum, ait
Dominus omnipotens. Quid es O mons 7
ingens qui es coram facie Zorobabelis, ut
reſiſtas? & proferam lapidem hæreditatis,
cujus gratia eſt æqualitas gratiæ,
Et fuit ſermo Domini ad me, dicens, 8
Manus Zorobabelis fundaverunt hanc 9
domum, et manus ejus abſolvent illam. Et
ſcies quòd Dominus omnipotens me miſerit ad te.
Quis enim ſpreverit dies parvos? 10
& lætabuntur, & videbunt lapidem
ſtanneum in manu Zorobabelis. Hi
ſunt ſeptem oculi Domini reſpicientes ad
totam terram. Reſpondi, ac dixi ei, Quid 11
ſunt geminæ iſtæ olivæ quæ ſunt ad dexteram
candelabri & ſiniſtram ejus? Et 12
interrogavi ſecundò, & dixi ei; Quid
ſunt hi gemini rami olivæ, qui ſunt in
manibus geminorum roſtrorum aureorum
quæ infundunt, & eminent ſeptem oribus
aureis? Dixit mihi, Annon ſcis quid iſta 13
ſint? Dixi, Nequaquam O Domine. Dixit, 14
Iſti duo filii pinguedinis aſſiſtunt Domino
totius terræ.

CAP. V.

Converſus autem levavi oculos meos, 1
ac vidi, & ecce falcem volantem.
Dixitq; mihi, Quid tu vides? Dixi, Video 2
falcem volantem longitudinis viginti
cubitorum, & latitudinis decem cubitorum.
Dixit mihi; Hæc eſt maledictio 3
proceſſura ſuper faciem totius terræ:
omnis enim fur per hanc ad mortem punietur,
& omnis perjurus per hanc ad
mortem punietur. Hanc educam, ait 4
Dominus omnipotens, & ingredietur
domum furis, & domum falsò jurantis
per nomen meum: & habitabit
in medio domûs ejus, conſumetque 5
illam cum lignis & lapidibus illius. Deinde
egreſſus angelus in me loquens, dixit
mihi; Rimare oculis tuis, & vide id
quod egredietur. Cúmq; dixiſſem, Quid 6
eſt? dixit, Hæc eſt menſura quæ egreditur:
dixitque, Hæc eſt iniquitas eorum
in tota terra. Et ecce quintale plumbi 7
ſublatum: & ecce mulier quædam ſedit
in medio menſuræ.

זכריה : ו

; *Ephah* medium *ad* eam projecit & , impietas Hæc : dixit Et
8 ויאמר זאת הרשעה וישלך אתה אל־תוך האיפה
,vidi & ,meos oculos levavi Et .ejus os *ad plumbi* lapidem projecit &
9 וישלך את־אבן העפרת אל־פיה : ואשא עיני וארא
eis & ,earum alis in ſpiritus & , *egredientes* mulieres duæ ecce &
והנה שתים נשים יוצאות ורוח בכנפיהם ולהנה
,terram inter *Ephah* levaverunt & : *ciconiæ* alæ ſicut alæ
כנפים ככנפי החסידה ותשנה את־האיפה בין הארץ
: me in *loquentem* angelum ad dixi Et .cœlos inter &
10 ובין השמים : ואמר אל־המלאך הדבר בי
: me ad dixit Et ? *Ephah* *deducentes* iſtæ Quò
11 אנה המה מולכות את־האיפה : ויאמר אלי
reponatur & præparetur & , Sinhar terra in *domum ei ædificandum Ad*
לבנות־לה בית בארץ שנער והוכן והניחה
.ſuam baſem ſuper ibi
שם על־מכנתה :

CAP. VI. ו

quatuor ecce & ,vidi & , meos oculos levavi & , ſum converſus Et
1 ואשב ואשא עיני ואראה והנה ארבע
montes montes & : montes duos inter *ab egredientes* , quadrigæ
מרכבות יצאות מבין שני ההרים וההרים הרי
; rufi equi prima quadriga In .*æris*
2 נחשת : במרכבה הראשנה סוסים אדמים
quadriga in Et .nigri equi ſecunda quadriga in &
3 ובמרכבה השנית סוסים שחרים : ובמרכבה
equi quarta quadriga in & : albi equi tertia
השלישית סוסים לבנים ובמרכבה הרביעית סוסים
loquentem angelum ad dixi & , reſpondi Et .fortes , *grandinati*
4 ברדים אמצים : ואען ואמר אל־המלאך הדבר
ait & , angelus reſpondit Et ? mi Domine hæc Quid : me in
5 בי מה־אלה אדני : ויען המלאך ויאמר
conſiſtendo à egredientes , cælorum venti quatuor Iſti : me ad
אלי אלה ארבע רחות השמים יוצאות מהתיצב
equi *ea in* Qua .terræ univerſæ Dominatore *ſuper*
6 על־אדון כל־הארץ : אשר־בה הסוסים
ſunt egreſſi albi & , Aquilonis terram ad *egredientes* , nigri
השחורים יצאים אל־ארץ צפון והלבנים יצאו
.Auſtri terram ad ſunt egreſſi *grandinati* & : eos poſt *ad*
אל־אחריהם והברדים יצאו אל־ארץ התימן :
ambulatum ire quærebant & , ſunt egreſſi fortes Et
7 והאמצים יצאו ויבקשו ללכת להתהלך
ambulaverunt & : terram *in* ambulate , Ite : dixit Et .terram *in*
בארץ ויאמר לכו התהלכו בארץ ותתהלכנה
: dicendo ,me ad eſt locutus & , me vocavit Et .terram *in*
8 בארץ : ויזעק אתי וידבר אלי לאמר
fecerunt requieſcere , Aquilonis terram ad *egredientes* Vide
ראה היוצאים אל־ארץ צפון הניחו את־
Domini verbum fuit Et .Aquilonis terra in meum ſpiritum
9 רוחי בארץ צפון : ויהי דבר־יהוה
à , Cheldai à , tranſmigratione à Accipe : dicendo , me ad
10 אלי לאמר : לקוח מאת הגולה מחלדי מאת
intrabis & , illa die in tu venies & ; Jedajah à & , Thobijahu
טוביהו ומאת ידעיה ובאת אתה ביום ההוא ובאת
ſumes Et .Babel de venerunt qui ,Sephanjah filii Joſijah domum
11 בית יאשיה בן־צפניה אשר־באו מבבל : ולקחת
Jehoſuah capite in pones & , coronas facies & , aurum & , argentum
כסף־וזהב ועשית עטרות ושמת בראש יהושע
.magni ſacerdotis Jehoſadac filii
בן־יהוצדק הכהן הגדול :

Verſio VULG. LAT.

8 Et dixit ; Hæc eſt impietas. Et
projecit eam in medio amphoræ,
& miſit maſſam plumbeam in os
9 ejus. Et levavi oculos meos, &
vidi : & ecce duæ mulieres egredientes , & ſpiritus in alis earum, & habebant alas quaſi alas
milvi : & levaverunt amphoram
10 inter terram & cœlum. Et dixi
ad angelum , qui loquebatur in
me ; Quò iſtæ deferunt ampho-
11 ram ? Et dixit ad me ; Ut ædificetur ei domus in terra Sennaar,
& ſtabiliatur, & ponatur ibi ſuper baſem ſuam.

CAP. VI.

1 ET converſus ſum, & levavi
oculos meos , & vidi ; & ecce
quatuor quadrigæ egredientes de
medio duorũ montiũ: & montes,
2 montes ærei. In quadriga prima
equi rufi , & in quadriga ſe-
3 cunda equi nigri, Et in quadriga tertia equi albi , & in quadriga quarta equi varii,& fortes.
4 Et reſpondi, & dixi ad angelum
qui loquebatur in me; Quid ſunt
5 hæc, domine mi ? Et reſpondit
angelus, & ait ad me ; Iſti ſunt
quatuor venti cœli, qui egrediuntur, ut ſtent coram Domina-
6 tore omnis terræ. In qua erant
equi nigri, egrediebantur in terram Aquilonis : & albi egreſſi
ſunt poſt eos : & varii egreſſi
7 ſunt ad terram Auſtri. Qui autem erant robuſtiſſimi , exierunt & quærebant ire & diſcurrere per omnem terram. Et
dixit ; Ite , perambulate ter-
8 ram : & perambulaverunt terram.
Et vocavit me, & locutus eſt ad
me, dicens ; Ecce qui egrediuntur in terram Aquilonis, requieſcere fecerunt ſpiritum meum in
9 terra Aquilonis. Et factum eſt
verbum Domini ad me, dicens ;
10 Sume à tranſmigratione , ab
Holdai, et à Tobia, et ab Idaia ;
et venies tu in die illa, et intrabis
domum Joſiæ, filii Sophoniæ, qui
11 venerunt de Babylone. Et ſumes
aurum et argentum : et facies
coronas , et pones in capite Jeſu
filii Joſedec ſacerdotis magni,

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

8 Καὶ εἶπεν, Αὕτη ἐστὶν ἡ ἀνομία. ϗ ἔρριψεν
αὐτὴν (λ) εἰς μέσον τοῦ μέτρου, ϗ ἔρριψε
τὸν λίθον τοῦ μολίβου εἰς τὸ στόμα αὐ-
9 τῆς. Καὶ ἦρα τοὺς ὀφθαλμούς μου, ϗ ἴδον,
ϗ ἰδοὺ δύο γυναῖκες ἐκπορευόμεναι, ϗ
πνεῦμα ἐν ταῖς πτέρυξιν αὐτῶν, ϗ αὗται εἶχον
(μ) πτέρυγας ἔποπος· ϗ ἀνέλαβον τὸ μέ-
τρον ἀναμέσον τῆς γῆς, ϗ ἀναμέσον τοῦ οὐ-
10 ρανοῦ. Καὶ εἶπα πρὸς τὸν ἄγγελον τὸν
λαλοῦντα ἐν ἐμοὶ, Ποῦ αὗται ἀποφέρουσι τὸ
11 μέτρον; Καὶ εἶπε πρός με, Οἰκοδομῆσαι
αὐτῷ οἰκίαν ἐν γῇ Βαβυλῶνος, ϗ ἑτοιμά-
σαι, ϗ θήσουσιν αὐτὸ ἐκεῖ ἐπὶ τῆς ἑτοιμα-
σίας αὐτοῦ.

Et dixit ; Hæc eſt iniquitas. Et 8
projecit eã in medium menſuræ:
& projecit lapidem plumbi in os
ejus. Et elevavi oculos meos, 9
& vidi : & ecce duæ mulieres
egredientes, & ſpiritus in alis
earum : & ipſæ habebant alas
(c) upupæ. Et elevaverunt
menſuram inter terram & cœlum. Et dixi ad angelum, qui 10
loquebatur in me ; Quò iſtæ deferunt menſuram ? Et dixit ad 11
me ; ut ædificent ei domum in
terra Babylonis, & præparent, &
ponant eam ibi ſuper præparationem ſuam.

MS. A. (λ) ἐμ μέσῳ (μ) πτέρυγας ὡς πτέρυγας ἔποπος·

ΚΕΦ. ϛʹ.

1 ΚΑὶ ἐπέστρεψα, ϗ ἦρα τοὺς ὀφθαλμούς
μου, ϗ ἴδον, ϗ ἰδοὺ (˜) τέσσαρα ἅρματα ἐκ-
πορευόμενα ἐκ μέσου δύο ὀρέων, ϗ τὰ ὄρη
2 ἦν ὄρη χαλκᾶ. Ἐν τῷ ἅρματι τῷ πρώτῳ ἵπ-
ποι (α) πυρροὶ, ϗ ἐν τῷ ἅρματι τῷ δευτέρῳ
3 ἵπποι μέλανες, Καὶ ἐν τῷ ἅρματι τῷ τρί-
τῳ ἵπποι λευκοὶ, ϗ ἐν τῷ ἅρματι τῷ τε-
4 τάρτῳ ἵπποι ποικίλοι ψαροί. Καὶ ἀπε-
κρίθην, ϗ εἶπα πρὸς τὸν ἄγγελον τὸν λα-
5 λοῦντα ἐν ἐμοὶ, Τί ἐστι ταῦτα κύριε; Καὶ ἀπε-
κρίθη ὁ ἄγγελος ὁ λαλῶν ἐν ἐμοὶ, ϗ εἶπε,
(β) Ταῦτά ἐστιν οἱ τέσσαρες ἄνεμοι τοῦ οὐρα-
νοῦ, ἐκπορεύονται παραστῆναι τῷ κυρίῳ πά-
6 σης τῆς γῆς. Ἐν ᾧ ἦσαν (γ) ἵπποι οἱ μέ-
λανες, ἐξεπορεύοντο ἐπὶ γῆν Βορρᾶ, ϗ οἱ
λευκοὶ ἐξεπορεύοντο κατόπισθεν αὐτῶν, ϗ οἱ
ποικίλοι ἐξεπορεύοντο ἐπὶ γῆν Νότου,
7 Καὶ οἱ ψαροὶ ἐξεπορεύοντο, ϗ ἐπέβλεπον
τοῦ πορεύεσθαι (δ) τοῦ περιοδεῦσαι τὴν γῆν.
ϗ εἶπε, Πορεύεσθε, ϗ περιοδεύσατε τὴν
8 γῆν. ϗ περιώδευσαν τὴν γῆν. Καὶ ἀνεβό-
ησε, ϗ ἐλάλησε πρός με, λέγων, Ἰδοὺ οἱ
ἐκπορευόμενοι ἐπὶ γῆν Βορρᾶ, (ε) ϗ ἀνέ-
9 παυσαν τὸν θυμόν μου ἐν γῇ Βορρᾶ. Καὶ ἐ-
γένετο λόγος κυρίου πρός με, λέγων,
10 Λάβε τὰ ἐκ τῆς αἰχμαλωσίας παρὰ τῶν ἀρ-
χόντων, ϗ παρὰ τῶν χρησίμων αὐτῆς, ϗ
παρὰ τῶν ἐπεγνωκότων (ζ) αὐτὴν, ϗ εἰσε-
λεύσῃ σὺ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ εἰς τὸν οἶκον
Ἰωσίου τοῦ Σοφονίου τοῦ ἥκοντος ἐκ Βαβυ-
11 λῶνος, Καὶ λήψῃ ἀργύριον ϗ χρυσίον, ϗ
ποιήσεις στεφάνους, ϗ ἐπιθήσεις ἐπὶ τὴν κε-
φαλὴν Ἰησοῦ τοῦ Ἰωσεδὲκ τοῦ ἱερέως τοῦ με-
γάλου·

CAP. VI.

ET converſus ſum, & levavi 1
oculos meos, & vidi : Et ecce
quatuor quadrigæ egredientes de
medio duorum montium : &
montes erant montes ænei. In 2
quadriga prima equi rufi : &
in quadriga ſecunda equi nigri : Et in quadriga tertia 3
equi albi : & in quadriga
quarta equi varii (a) ſturnini. Et reſpondi, & dixi 4
ad angelum, qui loquebatur in
me ; Quid ſunt hæc, domine ?
Et reſpondit angelus, qui loque- 5
batur in me, & dixit ; Hi ſunt
quatuor venti cœli : (b) egrediuntur, ut aſſiſtant Domino omnis terræ. In qua erant equi 6
nigri, egrediebantur ſuper terram
Aquilonis : & albi egrediebantur
poſt eos : & varii exibant in terrã
Auſtri : Et ſturnini egredie- 7
bantur, & conſiderabant, (c) ut
irent circuire terram. Et dixit ;
Ite, & circuite terram. Et circuierunt terram. Et clamavit, 8
& loquutus eſt ad me, dicens ;
Ecce, qui egrediuntur ſuper terram Aquilonis : & requieſcere
fecerant furorem meum in terra
Aquilonis. Et factus eſt ſermo 9
Domini ad me, dicens ; Accipe, 10
quæ de captivitate ſunt, à principibus, & ab utilibus ejus, &
ab iis qui cognoverunt eam : &
ingredieris tu in die illa in domum Joſiæ filii Sophoniæ, qui
venit de Babylone : Et accipies 11
argentum, & aurum, & facies
coronas, & impones ſuper caput
Jeſu Joſedec ſacerdotis magni :

MS.A. (˜) τέσσερα (α) πυρροὶ, (β) Οὗτοί εἰσιν (γ) οἱ ἵπποι (δ) ϗ περιοδεῦσαι (ε) ἀνέπαυσαν (ζ) αὐτῶν,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

8 ואמר על דא אתחיבו וגלו על דהוו נסבין ויהבין במכילתא דשקרא ואתו עממין
9 אוחרנין ויתיבו באתריהון : וזקפית עיני וחזית והא תרתין מדינן גלין לביני מלכות
עממי ארעא ועממין קלילין מגלן יתהון בקלילו כמא דמשתדי נשרא ואגליאו ית עמא
דהוו נסבין ויהבין במכילתא דשקרא לביני מלכות עממיא דארעא דתחות כל שמיא :
10 ואמרית למלאכא דממלל עמי לאן אנון מגלן ית עמא דהוו נסבין ויהבין במכילתא
11 דשקרא : ואמר לי לאתקנאה להון אתר במדינת בבל ויתעכבון ויתאחדון תמן עד
דימטי זמנהון :

ו

1 ותבירת וזקפית עיני וחזית והא ארבע רתיכיא נפקן מבין תרין טוריא וטוריא טורי
2 3 דנחשא : ברתיכיא קדמיתא סוסון סומקין וברתיכא תניתא סוסון אוכמין : וברתיכא
4 תליתאה סוסון חורין וברתיכא רביעתא סוסון פציחין קטמנין : ואתיבית ואמרית
5 למלאכא דממלל עמי מה אלין רבוני : ואתיב מלאכא ואמר לי אלין ארבע מלכון
6 דאנון כארבע רוחי שמיא גלין מלאתעתדא קדם רבון כל ארעא : דבה סוסון אוכמין
7 נפקין לארעא צפונא וחורין נפקו בתריהון ופציחין נפקו לארעא דרומא : וקטמנין
8 נפקו ובעו למיזל להלכא בארעא ואמר איזילו והליכו בארעא והליכו בארעא : ואכרז
עלי ומלל עמי למימר חזי דנפקין לארעא צפונא אמר להון עבידו ית רעותי בארעא
9 10 צפונא : והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר : סב מן בני גלותא מחלדי ומן
טוביה ומן ידעיה ותיתי את ביומא ההוא ותעול לבית יאשיה בר צפניה דאתי מבבל :
11 ותסב כסף ודהב ותעביד כליל רב ותשוי בריש יהושע בר יהוצדק כהנא רבא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et dixit, Propter hoc condemnati ſunt & in exilium tranſlati ſunt , pro eo 8
quòd accipiebant & dabant menſura falſa, & venerunt populi alieni, qui ha-
bitaverunt in loco eorum. Et levavi oculos meos, & vidi, & ecce duæ pro- 9
vinciæ revelabantur *inter regna populorum terræ*, & populi celeres tranſ-
ferebant illos velociter, ſicut volat aquila : & migrare fecerunt populum, qui
accipiebant & dabant menſura falſa inter regna populorum terræ, quæ ſunt
ſub omnibus cœlis. Et dixi ad angelum qui mecum loquebatur: Quò iſti mi- 10
grare faciunt populum, qui accipiebat & dabat menſura falſa ? Et dixit ad 11
me, Ut præparetur eis locus in provincia Babylonis, & retineantur & demo-
rentur ibi donec perveniat tempus eorum.

CAP. VI.

ET converſus ſum & ſuſtuli oculos meos & vidi, & ecce quatuor quadrigæ 1
egredientes de medio duorum montium ; & montes erant montes ærei. In 2
quadriga prima erant equi rufi, et in quadriga ſecunda equi nigri. Et in qua- 3
driga tertia equi albi, et in quadriga quarta equi varii, et coloris cinerei. Et 4
reſpondi, et dixi ad angelum qui loquebatur mecum, Quid ſunt hæc Dñe mi ?
Et reſpondit angelus et dixit ad me : Hæc ſunt quatuor regna quæ ſunt *quaſi* 5
quatuor *venti* cœli, apparentia, quò minus ſtent coram dominatore omnis
terræ. In qua equi nigri erant, egrediebantur in terram Aquilonis ; et albi 6
egrediebantur poſt eos, et varii egrediebantur in terram Auſtralem. Cinerei 7
egrediebantur et quærebant ire et deambulare per terram : et dixit, Ite et per-
ambulate terram : itaque terram perambulavere. Et clamavit ad me, et lo- 8
cutus eſt mecum, dicens : Vide illos qui egrediuntur in terram Aquilonis : dic
eis, Facite voluntatem meam in terra Aquilonis. Et factus eſt ſermo pro- 9
phetiæ à facie Domini ad me, dicendo : Aſſume à filiis tranſmigrationis ab 10
Holdai et à Tobia, et ab Idaia, et venies tu in die illa , et intrabis in do-
mum Joſiæ filii Sophoniæ, qui venerunt de Babylone. Et tolles argentum 11
et aurum, et facies coronam magnam, et pones in capite Joſue filii Joſedech
ſacerdotis magni.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܘܐܡܪ ܠܝ. ܗܕܐ ܗܝ ܚܛܝܬܐ. ܘܐܪܡܝܗ̇ ܒܓܘ ܡܟܝܠܬܐ. ܘܐܪܡܝ ܟܟܪܐ ܕܐܒܪܐ ܥܠ ܦܘܡܗ̇. 8
* ܘܐܪܝܡܬ ܥܝܢܝ ܘܚܙܝܬ. ܘܗܐ ܬܪܬܝܢ ܢܫܝܢ ܢܦܩܢ. ܘܪܘܚܐ ܒܟܢܦܝܗܝܢ. ܘܟܢܦܐ 9
ܐܝܬ ܠܗܝܢ. ܐܝܟ ܟܢܦܐ ܕܚܘܪܕܐ. ܘܫܩܠܘܗ̇ ܠܡܟܝܠܬܐ ܒܝܬ ܐܪܥܐ ܠܫܡܝܐ. * ܘܐܡܪܬ 10
ܠܡܠܐܟܐ ܕܡܡܠܠ ܒܝ. ܠܐܝܟܐ ܡܘܒܠܝܢ ܠܗ̇ ܠܡܟܝܠܬܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܕܢܒܢܘܢ 11
ܠܗ̇ ܒܝܬܐ ܒܐܪܥܐ ܕܒܒܠ. ܘܢܬܩܢܘܢܗ̇. ܘܢܣܝܡܘܢܗ̇ ܬܡܢ ܥܠ ܡܬܩܢܘܬܗ̇.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܘ *

* ܘܬܘܒ ܐܪܝܡܬ ܥܝܢܝ ܘܚܙܝܬ. ܘܗܐ ܐܪܒܥ ܡܪ̈ܟܒܢ ܢܦܩܢ ܡܢ ܒܝܢܬ ܛܘܪ̈ܝܢ 1
ܬܪ̈ܝܢ. ܘܛܘܪ̈ܐ ܗܘܘ ܛܘܪ̈ܐ ܕܢܚܫܐ. * ܒܡܪܟܒܬܐ ܩܕܡܝܬܐ ܪ̈ܟܫܐ ܣܘܡ̈ܩܐ. 2
ܘܒܡܪܟܒܬܐ ܕܬܪܬܝܢ. ܪ̈ܟܫܐ ܐܘܟ̈ܡܐ * ܘܒܡܪܟܒܬܐ ܕܬܠܬ. ܪ̈ܟܫܐ ܚܘ̈ܪܐ. 3
ܘܒܡܪܟܒܬܐ ܕܐܪܒܥ. ܪ̈ܟܫܐ ܦܘܪ̈ܚܐ. * ܘܥܢܝܬ ܘܐܡܪܬ ܠܡܠܐܟܐ ܕܡܡܠܠ ܒܝ. ܡܢܘ 4
ܐܢܘܢ ܗܠܝܢ ܡܪܝ. * ܥܢܐ ܡܠܐܟܐ ܘܐܡܪ ܠܝ. ܗܠܝܢ ܐܝܬܝܢ ܐܪܒܥ ܪ̈ܘܚܝ ܫܡܝܐ. 5
ܕܩܝܡܝܢ ܗܘܘ ܩܕܡ ܡܪܐ ܕܟܠܗ̇ ܐܪܥܐ. * ܕܐܝܬ ܒܗ̇ ܪ̈ܟܫܐ ܐܘܟ̈ܡܐ. ܢܦܩܝܢ ܠܐܪܥܐ 6
ܕܓܪܒܝܐ. ܘܚܘ̈ܪܐ ܢܦܩܝܢ ܒܬܪܗܘܢ. ܘܦܘ̈ܪܚܐ ܢܦܩܝܢ ܠܐܪܥܐ ܕܬܝܡܢܐ. * ܘܣܘܡ̈ܩܐ 7
ܢܦܩܘ. ܘܒܥܘ ܠܡܐܙܠ ܠܡܬܟܪܟܘ ܒܐܪܥܐ. ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܙܠܘ ܐܬܟܪܟܘ ܒܐܪܥܐ.
ܘܐܬܟܪܟܘ ܒܐܪܥܐ. * ܘܩܥܐ ܘܐܡܪ ܠܝ. ܚܙܝ ܗܠܝܢ ܕܢܦܩܝܢ ܠܐܪܥܐ ܕܓܪܒܝܐ. ܘܡܢܝܚܝܢ 8
ܪܘܚܝ ܒܐܪܥܐ ܕܓܪܒܝܐ. * ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܣܒ ܡܢ 9 10
ܫܒܝܬܐ. ܡܢ ܚܠܕܝ. ܘܡܢ ܛܘܒܝܐ. ܘܡܢ ܝܕܥܝܐ. ܘܬܐ ܐܢܬ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܘܥܘܠ
ܠܒܝܬܗ ܕܝܘܫܝܐ ܒܪ ܨܦܢܝܐ ܕܐܬܐ ܡܢ ܒܒܠ. * ܣܒ ܟܣܦܗ ܘܕܗܒܗ. ܘܥܒܕ 11
ܟܠܝܠܐ. ܘܣܝܡ ܒܪܫܗ ܕܝܫܘܥ ܒܪ ܝܘܨܕܩ ܟܘܡܪܐ ܪܒܐ.

Dixitque mihi ; Hæc eſt peccatum : tum conjecit eam in menſuram, & talentum plumbeum impoſuit ori ejus. 8 Deinde attollens 9 oculos meos vidi, quum ecce duæ mulieres egrediebantur, & ventus in alis earum ; alas enim habebant ſimiles alis ciconiæ ; ſuſtulerúntque menſuram illam terram inter ac cœlum. Quarè dicenti mihi ad angelum qui 10 loquebatur in me ; Quonam deferunt hanc menſuram ? Dixit, Ut extruant ei domum in 11 terra Babylonis, ſtabiliant eam, & ibi collocent eam ſuper fulcimento ſuo.

CAP. VI.

DEnuò attollens oculos meos vidi, quum 1 ecce quatuor currus prodibant è medio duorum montium, qui montes erant montes ænei. In primo curru equi rufi erant, in ſe- 2 cundo curru equi nigri, In tertio curru e- 3 qui albi, & in quarto curru equi verſicolores. Cúmque reſpondens dixiſſem angelo qui lo- 4 quebatur in me ; Quid hæc ſunt, domine mi ? Reſpondit angelus, dixítque mihi ; Hi ſunt 5 quatuor venti cœli, qui ſtabant coram Domino totius terræ. Is in quo equi nigri ſunt, 6 egrediuntur ad terram Aquilonarem, & albi egrediuntur poſt eos ; verſicolores autem egrediuntur ad terram Auſtralem : Porrò 7 rufis egreſſis & ire petentibus ad obambulandam terram, dixit ; Ite obambulate terram : & obambulavêre terram. Et incla- 8 mans dixit mihi ; Vide hos qui egrediuntur ad terram Aquilonarem tranquillaturi ſpiritum meum in terra Aquilonari. Deinde 9 fuit ad ad me ſermo Domini, dicendo ; Ac- 10 cipe à captivis, ab Holdai, à Tobia, & ab Idaia ; eodémque die veni & ingredere domum Joſiæ filii Sephaniæ qui rediit è Babylone. Accipe hujus argentum & aurum, 11 confice coronam, & impone capiti Jeſu filii Jozedec ſacerdotis maximi :

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

8 * فقال • هذا هو الاثم • وطرحها في وسط المكيال • وطرح الحجر الرصاص علي فمها * ورفعت 9
عيني ونظرت • واذا امراتان خارجتان • وروح في اجنحتهما • وكانت لهما اجنحة مثل اجنحة
العقعق • وحملتا المكيال فيما بين الارض والسماء * فقلت للملاك المتكلم في • اين يذهبان 10
هاتان بالمكيال * فقال لي • لتبنيا له بيتا في بابل • وتهيئانه وتضعانه هناك علي تهيئته • 11

• الفصل السادس •

1 * ورجعت ورفعت عيني ونظرت واذا اربع مراكب خرجن من وسط جبلين • والجبال كانت
2 3 جبال نحاس * في المركبة الاولي خيول حمر • وفي المركبة الثانية خيول دهم * وفي المركبة
4 الثالثة خيول شهب • وفي المركبة الرابعة بلق شقر * فاجبت وقلت للملاك المتكلم في • ما هي
5 هذه يا سيد * فاجاب الملاك المتكلم في وقال • هذه هي اربعة رياح السماء • خرجن ليقفن
6 لرب كل الارض * الذي به كانت الخيول الدهم • خرجت الي ارض الجربياء • والشهب خرجت
7 في اثرها • والبلق خرجت علي ارض التيمن * والشقر خرجت • ونطرت لتسير وتطوف الارض *
8 فقال • سيروا وطوفوا الارض • فطافوا الارض * فصرخ وتكلم معي قايلا • ها الذين خرجوا
الي ارض الجربياء كفوا غضبي في ارض الجربياء •

• الاصحاح السابع والعشرون • وهو الثالث من النبوة •

9 10 * وكان قول الرب الي قايلا * خذ الذين من السبي • من الروساء • ومن خبرايه •
ومن العارفين به • وتدخل انت في ذلك اليوم الي بيت يوسيا بن صفونيا الذي قدم
11 من بابل * وتاخذ فضة وذهبا • وتصنع اكاليل • وتضعها علي راس يسوع بن يوصاداك
الكاهن العظيم •

Et dixit, Hæc eſt iniquitas : tum injecit eam in medium menſuræ, projecitque lapidem illum plumbeum ſuper os ejus. 8 *Poſthæc ſublatis oculis vidi, & ecce* 9 *duæ mulieres egrediebantur, & ſpiritus in alis earum (habebant enim alas ſimiles alis picarum) & levaverunt menſuram illam terram inter ac cœlum. Dicenti vero mihi ad angelum in me* 10 *loquentem ; Quò deferunt iſtæ menſuram illam ? Dixit mihi, ut ædificent ei* 11 *domum in Babele, & præparent eam, ponantque eam ibi ſuper præparationem ejus.*

CAP. VI.

DEinde converſus ſum, & ſublatis 1 *oculis vidi ; & ecce quatuor currus egreſſi ſunt è medio duorum montium : erant autem illi montes, montes ænei. In primo curru erant equi rubei, in* 2 *ſecundo curru equi nigri, In tertio cur-* 3 *ru equi cinerei, & in quarto curru verſicolores rufi. Reſpondens itaque dixi* 4 *ad angelum in me loquentem ; Quid ſunt hæc O domine ? Reſpondit ange-* 5 *lus in me loquens, & ait ; Hi ſunt quatuor cœli venti : egrediuntur ut aſtent Domino totius terræ. In quo erant* 6 *equi nigri, egreſſi ſunt ad terram Aquilonarem, & cinerei egreſſi ſunt per eorum veſtigia, & verſicolores egreſſi ſunt in terram Auſtralem : Rufi autem* 7 *egreſſi, contendebant ire terramque perluſtrare : quibus dixit ; Ite, & terram perluſtrate : & perluſtravêre terram. Tum clamans allocutus eſt me, dicens ;* 8 *Ecce qui ingreſſi ſunt terram Aquilonarem, ſedaverunt iram meam in terra Aquilonari.*

Textus vigeſimus ſeptimus, hujus autem Prophetiæ tertius,

Deinde fuit ſermo Domini ad me, dicens ; 9 *Duc eos qui ſunt de captivitate, ex* 10 *principibus, ex expertis & peritis rerum illius : túque eâ die ingredieris domum Joſiæ filii Sophoniæ qui remeavit è Babele : Capieſque argentum & au-* 11 *rum, & conficies coronas, poneſque eas ſuper caput Jeſu filii Joſedechi ſacerdotis maximi :*

זכריה׃ ז

: dicendo ,exercituum Dominus dixit Sic : dicendo ,eum ad dices Et
12 וְאָמַרְתָּ אֵלָיו לֵאמֹר כֹּה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת לֵאמֹר
ædificabit & ,germinabit eum ſubter & ,ejus nomen germen vir Ecce
הִנֵּה־אִישׁ צֶמַח שְׁמוֹ וּמִתַּחְתָּיו יִצְמָח וּבָנָה
,Domini templum exſtruet ipſe Et .Domini templum
13 אֶת־הֵיכַל יְהוָה׃ וְהוּא יִבְנֶה אֶת־הֵיכַל יְהוָה
: ejus ſolio *ſuper* dominabitur & ſedebit & , gloriam portabit ipſe &
וְהוּא יִשָּׂא הוֹד וְיָשַׁב וּמָשַׁל עַל־כִּסְאוֹ
inter erit pacis conſilium & ,ejus ſolio *ſuper* ſacerdos erit &
וְהָיָה כֹהֵן עַל־כִּסְאוֹ וַעֲצַת שָׁלוֹם תִּהְיֶה בֵּין
,Thobiah *ipſi* & , Chelem *ipſi* *erit* ,*diademata* Et .*ipſos ambos*
14 שְׁנֵיהֶם׃ וְהָעֲטָרֹת תִּהְיֶה לְחֵלֶם וּלְטוֹבִיָּה
templo in memoriale in , Sephanjah filio Chen & : Jedahjah *ipſi* &
וְלִידַעְיָה וּלְחֵן בֶּן־צְפַנְיָה לְזִכָּרוֹן בְּהֵיכַל
: Domini templo in ædificabunt & , venient longinqui Et .Domini
15 יְהוָה׃ וּרְחוֹקִים יָבֹאוּ וּבָנוּ בְּהֵיכַל יְהוָה
, erit Et .vos ad me miſerit exercituum Dominus quòd ſcietis &
וִידַעְתֶּם כִּי־יְהוָה צְבָאוֹת שְׁלָחַנִי אֲלֵיכֶם וְהָיָה
.veſtri Dei Domini *voce in* audieritis audiendo ſi
אִם־שָׁמוֹעַ תִּשְׁמְעוּן בְּקוֹל יְהוָה אֱלֹהֵיכֶם׃

CAP. VII. ז

DOMINI verbum fuit , regis Dariaves quarto anno in fuit Et
1 וַיְהִי בִּשְׁנַת אַרְבַּע לְדָרְיָוֶשׁ הַמֶּלֶךְ הָיָה דְבַר־יְהוָה
miſit *Et* .Chiſleu *in* noni menſis quarta in , Zecharjah ad
2 אֶל־זְכַרְיָה בְּאַרְבָּעָה לַחֹדֶשׁ הַתְּשִׁעִי בְּכִסְלֵו׃ וַיִּשְׁלַח
: ejus viros & , melech-Reghem & , Sareſer ipſum Dei domum
בֵּית־אֵל שַׂרְאֶצֶר וְרֶגֶם מֶלֶךְ וַאֲנָשָׁיו
ſacerdotes ad *dicendum Ad* .DOMINI *facies* orandum ad
3 לְחַלּוֹת אֶת־פְּנֵי יְהוָה׃ לֵאמֹר אֶל־הַכֹּהֲנִים
: dicendo , prophetas ad & ,exercituum Domini domo in qui
אֲשֶׁר לְבֵית־יְהוָה צְבָאוֹת וְאֶל־הַנְּבִיאִים לֵאמֹר
quemadmodum , me ſeparando , quinto menſe in flebo Nunquid
הַאֶבְכֶּה בַּחֹדֶשׁ הַחֲמִשִׁי הִנָּזֵר כַּאֲשֶׁר
exercituum Domini verbum fuit Et ? annis tot jam feci
4 עָשִׂיתִי זֶה כַּמֶּה שָׁנִים׃ וַיְהִי דְּבַר־יְהוָה צְבָאוֹת
ad & , terræ populum omnem ad Dic : dicendo me ad
5 אֵלַי לֵאמֹר׃ אֱמֹר אֶל־כָּל־עַם הָאָרֶץ וְאֶל־
quinta in *plangere* & , jejunaretis Cùm : dicendo ſacerdotes
הַכֹּהֲנִים לֵאמֹר כִּי־צַמְתֶּם וְסָפוֹד בַּחֲמִישִׁי
jejunium nunquid , annis ſeptuaginta jam & ſeptima in &
וּבַשְּׁבִיעִי וְזֶה שִׁבְעִים שָׁנָה הֲצוֹם
nònne , *bibetis* cùm & , *comedetis* quando Et ? *ego mihi* jejunâſtis
6 צַמְתֻּנִי אָנִי׃ וְכִי תֹאכְלוּ וְכִי תִשְׁתּוּ הֲלוֹא
verba Nónne ? *bibentes* vos & , *comedentes* vos
7 אַתֶּם הָאֹכְלִים וְאַתֶּם הַשֹּׁתִים׃ הֲלוֹא אֶת־הַדְּבָרִים
prophetarum manum per DOMINUS *prædicavit quæ*
אֲשֶׁר קָרָא יְהוָה בְּיַד הַנְּבִיאִים
ejꝰ urbes & ,*quietam* & ,*habitantem Jeruſalaim exiſtendo in* , priorum
הָרִאשֹׁנִים בִּהְיוֹת יְרוּשָׁלַםִ יֹשֶׁבֶת וּשְׁלֵוָה וְעָרֶיהָ
verbum fuit Et ? *ſedentem planitiem & meridiem* & ; ejꝰ *circuitus*
8 סְבִיבֹתֶיהָ וְהַנֶּגֶב וְהַשְּׁפֵלָה יֹשֵׁב׃ וַיְהִי דְּבַר־
DOMINUS dixit Sic : dicendo ,Zecharjah ad DOMINI
9 יְהוָה אֶל־זְכַרְיָה לֵאמֹר׃ כֹּה אָמַר יְהוָה
,miſericordiã & ; judicate *veritatis* Judicium : dicendo ,exercituum
צְבָאוֹת לֵאמֹר מִשְׁפַּט אֱמֶת שְׁפֹטוּ וְחֶסֶד
.ſuo fratre cum unuſquiſque facite miſerationes &
וְרַחֲמִים עֲשׂוּ אִישׁ אֶת־אָחִיו׃

Verſio VULG. LAT.

12 Et loquêris ad eum, dicens; Hæc ait Dominus exercituum, dicens; ECCE VIR ORIENS NOMEN EJUS: & ſubter eum orietur, & ædificabit templum

13 Domino. Et ipſe extruet templum Domino: & ipſe portabit gloriam, & ſedebit, & dominabitur ſuper ſolio ſuo: & erit ſacerdos ſuper ſolio ſuo, & conſilium pacis erit inter illos duos.

14 Et coronæ erunt Helem, & Tobiæ, & Idaiæ, & Hem, filio Sophoniæ, memoriale in templo

15 Domini. Et qui procul ſunt, venient, & ædificabunt in templo Domini: & ſcietis quia Dominus exercituum miſit me ad vos. Erit autem hoc, ſi auditu audieritis vocē Domini Dei veſtri.

CAP. VII.

1 ET factum eſt in anno quarto Darii regis, factum eſt verbum Domini ad Zachariam, in quarta

2 menſis noni, qui eſt Caſleu. Et miſerunt ad domum Dei, Saraſar, & Rogommelech, & viri qui erant cum eo, ad deprecandam fa-

3 ciem Domini: Ut dicerent ſacerdotibus domûs Domini exercituum, & prophetis, loquentes; Numquid flendum eſt mihi in quinto menſe, vel ſanctificare me debeo, ſicut jam feci multis annis?

4 Et factum eſt verbum Domini ex-

5 ercituum ad me, dicens; Loquere ad omnem populum terræ, & ad ſacerdotes, dicens; Cùm jejunaretis, & plangeretis in quinto & ſeptimo per hos ſeptuaginta annos: numquid jejunium je-

6 junâſtis mihi? Et cùm comediſtis, & bibiſtis, numquid non vobis comediſtis, & vobiſmetipſis

7 bibiſtis? Numquid non ſunt verba, quæ locutus eſt Dominus in manu prophetarum priorum, cùm adhuc Jeruſalem habitaretur, & eſſet opulenta, ipſa & urbes in circuitu ejus, et ad Auſtrum, et in

8 campeſtribus habitaretur? Et factum eſt verbum Domini ad Za-

9 chariam, dicens; Hæc ait Dominus exercituum, dicens; Judicium verum judicate, & miſericordiam & miſerationes facite, unuſquiſque cum fratre ſuo.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

12 Καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτὸν, Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Ἰδοὺ ἀνὴρ, Ἀνατολὴ ὄνομα αὐτῷ· καὶ ὑποκάτωθεν αὐτοῦ

13 ἀνατελεῖ, Καὶ οἰκοδομήσει τὸν οἶκον κυρίου, καὶ αὐτὸς λήψεται ἀρετὴν, καὶ καθιεῖται, καὶ κατάρξει ἐπὶ τοῦ θρόνου αὐτοῦ, καὶ ἔσται (η) ἱερεὺς ἐκ δεξιῶν αὐτοῦ, καὶ βουλὴ εἰρηνικὴ ἔσται ἀναμέσον ἀμφοτέ-

14 ρων. Ὁ δὲ στέφανος ἔσται τοῖς ὑπομένουσι (θ), καὶ τοῖς χρησίμοις αὐτῆς, καὶ τοῖς ἐπεγνωκόσιν αὐτὴν, καὶ εἰς χάριτα (ι) υἱοῦ Σοφονίου, καὶ εἰς ψαλμὸν ἐν οἴκῳ

15 κυρίου. Καὶ οἱ μακρὰν ἀπ' αὐτῶν ἥξουσι, καὶ οἰκοδομήσουσιν ἐν τῷ οἴκῳ κυρίου, καὶ (κ) γνώσεσθε διότι κύριος παντοκράτωρ ἀπέσταλκέ με πρὸς ὑμᾶς. καὶ ἔσται, ἐὰν εἰσακούοντες εἰσακούσητε τῆς φωνῆς κυρίου τοῦ θεοῦ ὑμῶν.

Et dices ad eum; Hæc dicit Dominus omnipotens; Ecce vir, (d) Oriens nomen ejus: & ſubter eum orietur: 12

Et ædificabit domum Domini: & ipſe accipiet (e) virtutem, & ſedebit, & imperabit ſuper throno ſuo. Et erit ſacerdos à dextris ejus: & conſilium pacis erit inter utroſque. 13

Corona autem erit expectantibus, & utilibus ejus, & qui cognoverunt eam, & in gratiam filii Sophoniæ, & in pſalmum in domo Domini. 14

Et qui longè ſunt ab eis; venient, & ædificabunt in domo Domini. Et ſcietis, quia Dominus omnipotens miſit me ad vos. Et erit, ſi exaudientes exaudieritis vocem Domini Dei veſtri. 15

MS.A. (η) ὁ ἱερεὺς (θ) αὐτὸν, (ι) τοῖς υἱοῖς (κ) ἐπιγνώσεσθαι

ΚΕΦ. ζ'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο ἐν τῷ τετάρτῳ ἔτει ἐπὶ Δαρείου τοῦ βασιλέως, ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς Ζαχαρίαν (α) τετράδι τοῦ μηνὸς

2 τοῦ ἐνάτου, ὅς ἐστι Χασελεῦ. Καὶ ἐξαπέστειλεν εἰς Βαιθὴλ, Σαρασὰρ καὶ (") Ἀρβεσεὲρ ὁ βασιλεὺς, καὶ οἱ ἄνδρες αὐτοῦ,

3 (β) ἐξιλάσασθαι τὸν κύριον, Λέγων πρὸς τοὺς ἱερεῖς τοὺς ἐν τῷ οἴκῳ κυρίου παντοκράτορος, καὶ πρὸς τοὺς προφήτας, λέγων, (γ) Εἰσελήλυθεν ὧδε ἐν τῷ μηνὶ τῷ πέμπτῳ τὸ ἁγίασμα, καθότι (δ) ἐ-

4 ποίησεν ἤδη ἱκανὰ ἔτη. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου τῶν δυνάμεων πρὸς ἐμὲ,

5 λέγων, (ε) Εἶπον πρὸς ἅπαντα τὸν λαὸν τῆς γῆς, καὶ πρὸς τοὺς ἱερεῖς, λέγων, Ἐὰν νηστεύσητε ἢ κόψησθε ἐν ταῖς πέμπταις, ἢ ἐν ταῖς ἑβδόμαις, καὶ ἰδοὺ ἑβδομήκοντα ἔτη, μὴ νηστείαν νενηστεύκα-

6 τέ μοι; Καὶ ἐὰν φάγητε (ζ) ἢ πίητε,

7 οὐχ ὑμεῖς (η) ἔσθετε καὶ πίνετε; Οὐχ οὗτοι οἱ λόγοι (θ), οὓς ἐλάλησε κύριος ἐν χερσὶ τῶν προφητῶν τῶν ἔμπροσθεν, ὅτε ἦν Ἱερουσαλὴμ κατοικουμένη, καὶ εὐθηνοῦσα, καὶ αἱ πόλεις (ι) κυκλόθεν αὐτῆς, καὶ ἡ ὀρεινὴ καὶ ἡ πεδινὴ

8 κατῳκεῖτο; Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου

9 πρὸς Ζαχαρίαν, λέγων, Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Κρίμα δίκαιον (") κρίνετε, καὶ ἔλεος καὶ οἰκτιρμὸν ποιεῖτε ἕκαστος πρὸς τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ,

CAP. VII.

ET factum eſt in quarto anno ſub Dario rege: factus eſt ſermo Domini ad Zachariam quartâ die menſis (a) noni, qui eſt Chaſeleu. 1

Et miſit (b) in Bæthel, Saraſar, & Arbeſeer rex, & viri ejus ad deprecandum Dominum; 2

Dicens ad ſacerdotes, qui in domo Domini omnipotentis, & ad prophetas, Dicens; Ingreſſa eſt huc in menſe quinto ſanctificatio, juxta quod fecit jam annis pluribus. 3

Et factus eſt ſermo Domini virtutum ad me, dicens; 4

Dic ad omnem populum terræ, & ad ſacerdotes, dicens; Si jejunatis, & plangitis in quintis, aut ſeptimis, & ecce ſeptuaginta anni; nunquid jejunium jejunâſtis mihi? 5

Et ſi comeditis, aut bibitis; nònne vos comeditis, (c) & bibitis? 6

Nunquid non iſta ſunt verba, quæ loquutus eſt Dominus in manibus prophetarum, qui fuerunt priùs, quando Hieruſalem habitabatur, & erat (d) abundans, & civitates ejus per circuitum, & montana, & campeſtria habitabantur? 7

Et factus eſt ſermo Domini ad Zachariam, dicens; 8

Hæc dicit Dominus omnipotens; Judicium juſtum judicate: & miſericordiam, & miſerationem facite unuſquiſque ad fratrem ſuum: 9

MS. A. (α) τῇ τετράδι καὶ εἰκάδι τοῦ (") Ἀρβεσεσὲρ (β) τοῦ ἐξιλάσασθαι (γ) Εἰ εἰσελήλυθεν ὧδε τὸ ἁγίασμα ἐν τῷ μηνὶ τῷ πέμπτῳ, (δ) ἐποίησαν (ε) Εἰπὲ πρὸς πάντα (ζ) καὶ πίητε, (η) ἐσθίετε καὶ ὑμεῖς πίνετε; (θ) εἰσὶν, (ι) αὐτῶν κυκλόθεν, καὶ (") κρίνατε

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

12 וְתֵימַר לֵיהּ לְמֵימַר כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת לְמֵימַר הָא גַבְרָא מְשִׁיחָא שְׁמֵיהּ עָתִיד דְּיִתְגְּלֵי
13 וְיִתְרַבֵּי וְיִבְנֵי יָת הֵיכְלָא דַיְיָ׃ וְהוּא יִבְנֵי יָת הֵיכְלָא דַיְיָ וְהוּא יִטּוֹל זִיו וְיִתֵּיב וְיִשְׁלוֹט עַל
14 כּוּרְסוֹהִי וִיהֵי כָהֵין רַב עַל כּוּרְסוֹהִי וּמִלְכָא דִשְׁלָמָא תְּהֵי בֵּין תַּרְוֵיהוֹן׃ וְתֻשְׁבַּחְתָּא
15 תְּהֵי לְחֶלֶם וּלְטוֹבִיָּה וְלִידַעְיָה וּלְחֵן בַּר צְפַנְיָה לְדָכְרָנָא בְּהֵיכְלָא דַיְיָ׃ וּמֵאַרְעָא רְחִיקָא
יֵיתוּן וְיִבְנוּן בְּהֵיכְלָא דַיְיָ וְתִדְעוּן אֲרֵי יְיָ צְבָאוֹת שַׁלְחַנִי לְאִתְנַבָּאָה לְכוֹן וִיהֵי אִם קַבָּלָא
תְקַבְּלוּן לְמֵימְרָא דַיְיָ אֱלָהֲכוֹן׃

ז

1 וַהֲוָה בִּשְׁנַת אַרְבַּע לְדָרְיָוֶשׁ מַלְכָּא הֲוָה פִּתְגַם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִם זְכַרְיָה בְּאַרְבְּעָא
2 לְיַרְחָא תְשִׁיעָאָה בְּכִסְלֵו׃ וּשְׁלַח לְבֵיתְאֵל שַׂרְאֶצֶר וְרֶגֶם מֶלֶךְ וְגֻבְרוֹהִי לְצַלָּאָה קֳדָם
3 יְיָ׃ לְמֵימַר לְכַהֲנַיָּא דִּי מְשַׁמְּשִׁין בְּבֵית מַקְדְּשָׁא דַיְיָ צְבָאוֹת וּלְסָפְרַיָּא לְמֵימַר הַאֶבְכֵּי
4 בְּיַרְחָא חֲמִישָׁאָה הַאֶמְנַע נַפְשִׁי מִתַּפְנוּקִין כְּמָא דַעֲבֵדִית דְּנָן כַּמָּה שְׁנִין׃ וַהֲוָה פִּתְגָם
5 נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי לְמֵימָר׃ אֱמַר לְכָל עַמָּא דְאַרְעָא וּלְכַהֲנַיָּא לְמֵימַר אֲרֵי צַיְמִין
אַתּוּן וְסָפְדִין בַּחֲמִשָׁא וּבִשְׁבִיעָאָה דְּנָן שִׁבְעִין שְׁנִין הֲצוֹם תַּעֲנִי אַתּוּן מִתְעַנַּן קֳדָמַי׃
6 וּדְאַתּוּן אָכְלִין וּדְאַתּוּן שָׁתַן הֲלָא לְאֵיטָבָא לְכוֹן אַתּוּן שָׁתַן׃ הֲלָא יָת פִּתְגָמַיָּא דִּשְׁלַח
7 יְיָ בְּיַד נְבִיַּיָּא קַדְמָאֵי כַּד הֲוָת יְרוּשְׁלֶם יָתְבָא וּשְׁלֵוָא וְקִרְוָהָא סְחֲרָנָהָא וְדָרוֹמָא
8 וּשְׁפֵלְתָּא יָתֵב׃ וַהֲוָה פִּתְגַם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִם זְכַרְיָה לְמֵימָר׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ
9 צְבָאוֹת לְמֵימַר דִּין דִּקְשׁוֹט דִּינוּ וְחִסְדָּא וְרַחֲמֵי עֲבִידוּ גְבַר עִם אֲחוּהִי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et dices ei, dicendo: Sic ait Dominus exercituum, dicens: Ecce vir, Chriſtus nomen ejus, qui revelandus eſt & magnificandus, & ædificaturus tem- 12
plum Domini. Ipſe enim ædificabit templum Domini & ipſe portabit glo- 13
riam; & ſedebit, & dominabitur in ſolio ſuo: erit & ſummus ſacerdos in ſo-
lio ſuo, & conſilium pacis erit inter utrumque. Et laus erit Helem & Tobiæ, 14
& Idaiæ, & Hen filio Sophoniæ in memoriam in templo Domini. Et de ter- 15
ra longinqua venient & ædificabunt templum Domini. Et ſcietis quia Do-
minus exercituum miſit me ut prophetarem vobis: erit autem hoc, ſi ſuſcipi-
endo ſuſceperitis verbum Domini Dei veſtri.

CAPUT VII.

ET factum eſt in anno quarto Darii regis, factum eſt verbum prophetiæ à 1
facie Domini ad Zachariam in quarta die menſis noni in Caſleu. Et miſit ad 2
Bethel Saraſar & Rogomelech & viros ejus ut orarent coram Domino: Et 3
ut dicerent ſacerdotibus qui miniſtrabant in domo ſanctuarii Domini exerci-
tuum & ſcribis, dicendo: Nunquid plorabo in menſe quinto? Nunquid pro-
hibebo animam meam à deliciis, ſicut feci jam multis annis? Et factum eſt 4
verbum prophetiæ à facie Domini ad me, dicens: Dic omni populo terræ & 5
ſacerdotibus, dicens: Quando vos jejunabatis & lamentabamini in quinto &
in ſeptimo menſe iſtis ſeptuaginta annis: nunquid jejunio afflictionis vos af-
flixiſtis coram me? Et quod vos comeditis & bibitis, nonne ut benefaciatis 6
vobiſmetipſis vos bibitis? Nónne hæc ſunt verba quæ miſit Dominus per 7
manum prophetarum priorum, quando Jeruſalem habitabatur, et erat opu-
lenta, et urbes ejus in circuitu ejus; et Auſtralis plaga, et planities incole-
batur? Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini ad Zachariam, di- 8
cens: Sic dicit Dominus exercituum, dicendo: Judicium verum judica- 9
te, et miſericordiam et miſerationes facite unuſquiſque cum fratre ſuo.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܡܪ ܠܗ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕܟܠ. ܗܐ ܓܒܪܐ ܕܫܡܗ ܕܢܚܐ. ܘܡܢ ܬܚܬܘܗܝ ܢܕܢܚ. 12
* ܘܗܘ ܢܒܢܐ ܗܝܟܠܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܗܘ ܢܩܒܠ ܫܘܒܚܐ. ܘܢܬܒ ܘܢܫܬܠܛ ܥܠ 13
ܟܘܪܣܝܗ. ܘܢܗܘܐ ܟܗܢܐ ܥܠ ܟܘܪܣܝܗ. ܘܡܠܟܐ ܕܫܠܡܐ ܢܗܘܐ ܒܝܬ ܬܪܝܗܘܢ.
* ܘܟܠܝܠܐ ܢܗܘܐ ܠܚܘܠܕܝ ܘܠܛܘܒܝܐ ܘܠܝܕܥܝܐ. ܘܠܝܘܫܝܐ ܒܪ ܨܦܢܝܐ. ܠܕܘܟܪܢܐ 14
ܒܗܝܟܠܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܢܐܬܘܢ ܪ̈ܚܝܩܐ ܘܢܒܢܘܢ ܗܝܟܠܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܬܕܥܘܢ ܕܡܪܝܐ 15
ܐܚܝܕܟܠ ܫܕܪܢܝ ܠܘܬܟܘܢ. ܐܢ ܬܫܡܥܘܢ ܒܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܙ *

* ܘܗܘܐ ܒܫܢܬ ܐܪܒܥ ܠܕܪܝܘܫ ܡܠܟܐ. ܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܙܟܪܝܐ. ܒܐܪܒܥܐ 1
ܒܝܪܚܐ ܕܬܫܥܐ ܕܗܘ ܟܢܘܢ. * ܘܫܕܪ ܠܒܝܬ ܐܝܠ. ܠܫܪܐܨܪ ܘܪܒܡܓ. ܘܫܕܪ 2
ܡܠܟܐ ܘܓܢܒܪܘܗܝ ܠܡܬܟܫܦܘ ܠܗ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. * ܘܠܡܐܡܪ ܠܟܗܢܐ 3
ܕܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܐܚܝܕܟܠ. ܘܠܢܒܝܐ. ܕܐܒܟܐ ܒܝܪܚܐ ܚܡܝܫܝܐ. ܐܘ ܐܬܢܙܪ. ܐܝܟ ܡܐ 4
ܕܥܒܕ ܗܘܝܬ ܗܐ ܟܡܐ ܫܢܝܢ. * ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܐܡܪ 5
ܠܟܠܗ ܥܡܐ ܕܐܪܥܐ ܘܠܟܗܢܐ. ܕܨܡܬܘܢ ܘܪܩܕܬܘܢ. ܒܝܪܚܐ ܚܡܝܫܝܐ ܘܫܒܝܥܝܐ.
ܗܐ ܫܒܥܝܢ ܫܢܝܢ: ܕܨܘܡܐ ܨܡܬܘܢ ܠܝ. * ܐܘ ܐܢ ܐܟܠܝܢ ܐܢܬܘܢ 6
ܘܫܬܝܢ: ܠܐ ܗܘܐ ܐܢܬܘܢ ܐܟܠܝܢ ܘܫܬܝܢ: * ܗܠܝܢ ܐܢܝܢ ܡ̈ܠܐ ܕܐܡܪ ܡܪܝܐ ܒܝܕ 7
ܢܒܝܐ ܩܕܡܝܐ. ܟܕ ܡܬܝܬܒܐ ܗܘܬ ܐܘܪܫܠܡ ܘܫܠܝܐ. ܘܩܘܪܝܐ ܚܕܪܝܗ. ܘܛܘܪܐ
ܘܦܩܥܬܐ ܡܬܝܬܒܝܢ ܗܘܘ. * ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܙܟܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܗܟܢܐ 8
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕܟܠ. ܕܝܢܐ ܕܩܘܫܬܐ ܕܘܢܘ. ܘܛܝܒܘܬܐ ܘܪ̈ܚܡܐ ܥܒܕܘ ܐܢܫ 9
ܥܡ ܐܚܘܗܝ.

Et dic ei, Sic dicit Dominus potentiſſimus; 12 Ecce virum cujus nomen eſt Oriens, infernè enim orietur. Is ædificabit templum Domini, 13 idémque gloriam aſſequetur, & ſedebit, ac dominabitur ſuper ſolio ſuo, erítque ſacerdos ſuper ſolio ſuo, & conſilium pacis erit inter utrumque. Et corona erit Holdaio, & 14 Tobiæ, Idaiæ, & Joſiæ filio Sephaniæ, ad monimentum in templo Domini. Et venient 15 remoti, & ædificabunt templum Domini: Ita cognoſcetis quòd Dominus potentiſſimus me miſerit ad vos, dummodo audiatis vocem Domini Dei veſtri.

CAP. VII.

PRæterea contigit anno quarto Darii regis, 1 ut eſſet ſermo Domini ad Zechariam, quartâ *die* menſis noni, nempe Novembris: (Quum 2 expediviſſet ad Beth-il Saraſarem & Rabmogum, miſiſſétque rex & heroes ejus ad orandum pro ſe Dominum, Et dicendum ſacer- 3 dotibus qui erant in domo Domini potentiſſimi, atque prophetis; Flebóne menſe quinto, an abſtinentiam colam, uti facere conſuevi jam tot annis?) Eſſet inquam, ad me 4 ſermo Domini, dicendo; Dic univerſo ter- 5 ræ populo, & ſacerdotibus; Quando jejunâſtis & planxiſtis menſe quinto & ſeptimo per annos ſeptuaginta, num jejunium mihi jejunâſtis? Et cùm comeditis ac bibitis, 6 nonne vos comeditis ac bibitis? Hæc ſunt 7 verba quæ prædicavit Dominus per prophetas ſuos priores, dum Jeruſalem frequens eſſet *populo* & tranquilla, oppida circunſtarent eam, & montes valléſque eſſent habitatæ. Fuit itaque ſermo Domini ad Zecha- 8 riam, dicendo; Sic dicit Dominus poten- 9 tiſſimus; Judicium veritatis judicate, & benignitatem atque miſericordiam exercete quiſque in fratrem ſuum:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ويقول له * هكذا يقول الرب الضابط الكل * ها رجل اسمه مشرق * ومن تحته يشرق * 12
* ويبني بيت الرب * وهو ياخذ فضيلة * ويجلس ويراس على كرسيه * ويكون الكاهن عن 13
يمينه * ويكون مشورة سلامية بينهما كلاهما * ويكون الاكليل للصابرين * ولخبرائه * 14
وللعارفين به * وانعاما لبني صفونيا * وتهليلا في بيت الرب * والمتبعدون منهم ياتون ويبنون 15
في بيت الرب * وتعلمون ان الرب الضابط الكل ارسلني اليكم * ويكون ان كنتم تسمعون
صوت الرب الهكم *

* الفصل السابع *

* وكان في السنة الرابعة لداريوس الملك * كان قول الرب الى زكريا * في الرابع من الشهر 1
التاسع الذي هو كسلو * فارسل الملك ورجاله صاراصار وربماغ الى بيت ايل ليصلوا 2
للرب * قايلا للكهنة الذين في بيت الرب الضابط الكل * وللانبياء قايلا * دخل القدس 3
هاهنا في الشهر الخامس * كما صنع منذ الف سنين كثيرة * وكان قول رب القوات الى 4
قايلا * قل لجميع شعب الارض وللكهنة قايلا * ان كنتم تصومون وتنوحون في الخوامس 5
وفي السوابع فها سبعون سنة * هل صمتم لي صوما * وان اكلتم وشربتم * اليس انتم 6
تاكلون وانتم تشربون * اليس هذه الكلمات هي التي تكلم الرب بها بايدي 7
الانبياء الذين من قبل * لما كانت ايروسليم مسكونة ومخصبة * والمدن من
حولها * والجبال والصحاري عامرات * وكان قول الرب الى زكريا قايلا * هكذا 8 9
يقول الرب الضابط الكل قايلا * احكموا حكما عدلا * واصنعوا رحمة ورافة كل
واحد مع اخيه *

Et dices ei, Sic ait Dominus omnipo- 12 *tens; Ecce vir cui nomen eſt Oriens: nam ſubter eum orietur, Et ædificabit do-* 13 *mum Domini: & ipſe præſtantiam accipiet, & ſedebit imperabitque ſuper ſolio ſuo: & erit ſacerdos ad dexteram ipſius, eritque conſilium pacificum inter utrunque. Erit autem corona pati-* 14 *entibus, & expertis atque peritis rerum illius; & in gratiam filiorum Sophoniæ, & in jubilationem in domo Domini. Et* 15 *remoti inter eos, venient & ædificabunt in domo Domini: Et ſcietis quòd Dominus omnipotens me miſerit ad vos. Atque* id quidem *erit, ſi audieritis vocem Domini Dei veſtri.*

CAP. VII.

P*Oſthac factum eſt anno quarto Darii* 1 *regis, ut eſſet ſermo Domini ad Zachariam, quartâ* die *menſis noni, qui eſt Caſleu: Quum miſiſſet rex & viri* 2 *ejus Saraſarem & Rabmagum in Beth-il ad orandum Dominum: Dicens ad* 3 *ſacerdotes qui erant in domo Domini omnipotentis, & ad prophetas, dicens; Ingreſſa eſt huc ſanctitas menſe quinto, quemadmodum fecerat multis jam abhinc annis. Fuit igitur ſermo Domini* 4 *exercituum ad me, dicens; Dic uni-* 5 *verſo terræ populo & ſacerdotibus, dicens; Si jejunabatis & plangebatis quinto & ſeptimo quoque menſe, en jam ſeptuaginta annis; num jejunium mihi jejunâſtis? Pari modo, ſi vos* 6 *comedatis ac bibatis; nonne vos ipſi comeditis, voſque bibitis? Annon hæc* 7 *ſunt verba quæ locutus eſt Dominus per prophetas priores, quando Jeruſalem erat habitata & abundans; & urbes undique, montes, atque campi eſſent exculti? Fuit igitur ſermo Do-* 8 *mini ad Zachariam, dicens; Sic ait* 9 *Dominus omnipotens, dicens; Judicate judicium æquum, & miſericordiam atque clementiam impendite quiſque in fratrem ſuum:*

זכריה: ח

malum & : opprimatis ne *afflictum* & ,peregrinum,pupillum &,viduam Et
10 וְאַלְמָנָה וְיָתוֹם גֵּר וְעָנִי אַל־תַּעֲשֹׁקוּ וְרָעַת
renuerunt Et .veſtro corde in cogitetis ne *ſui fratris* unuſquiſque
11 אִישׁ אָחִיו אַל־תַּחְשְׁבוּ בִּלְבַבְכֶם׃ וַיְמָאֲנוּ
aggravaverunt ſuas aures & ,*deflectentem* ſcapulam dederunt & ,attendere
לְהַקְשִׁיב וַיִּתְּנוּ כָתֵף סֹרָרֶת וְאָזְנֵיהֶם הִכְבִּידוּ
audiendo ob ,adamantem poſuerunt ſuum cor Et .*audiendo ab*
12 מִשְּׁמוֹעַ׃ וְלִבָּם שָׂמוּ שָׁמִיר מִשְּׁמוֹעַ אֶת־
,ſuo ſpiritu *in* exercituũ Dominus miſit quæ verba & , legem
הַתּוֹרָה וְאֶת־הַדְּבָרִים אֲשֶׁר שָׁלַח יְהוָה צְבָאוֹת בְּרוּחוֹ
Domino à magna ira fuit Et .priorum prophetarum manũ per
בְּיַד הַנְּבִיאִים הָרִאשֹׁנִים וַיְהִי קֶצֶף גָּדוֹל מֵאֵת יְהוָה
; audierunt non & ,prædicavit quemadmodum ,fuit Et .exercituum
13 צְבָאוֹת׃ וַיְהִי כַאֲשֶׁר־קָרָא וְלֹא שָׁמֵעוּ
.exercituum Dominus dixit , exaudiam non & ,clamabunt ſic
כֵּן יִקְרְאוּ וְלֹא אֶשְׁמָע אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת׃
terra & , *illas* neſcierunt quas gentes omnes in eos *exturbavi* Et
14 וְאֵסָעֲרֵם עַל כָּל־הַגּוֹיִם אֲשֶׁר לֹא־יְדָעוּם וְהָאָרֶץ
terram poſuerunt & : *redeunte à & tranſeunte à* , eos poſt eſt deſolata
נָשַׁמָּה אַחֲרֵיהֶם מֵעֹבֵר וּמִשָּׁב וַיָּשִׂימוּ אֶרֶץ־
.deſolationem in *deſiderii*
חֶמְדָּה לְשַׁמָּה׃

CAP. VIII. ח

dixit Sic : dicendo , exercituum DOMINI verbum fuit Et
1 וַיְהִי דְּבַר־יְהוָה צְבָאוֹת לֵאמֹר׃ כֹּה אָמַר 2
:magno zelo Sijon ſum Zelatus : exercituum DOMINUS
יְהוָה צְבָאוֹת קִנֵּאתִי לְצִיּוֹן קִנְאָה גְדוֹלָה
: Dominus dixit Sic .eam ſum zelatus magna ira &
3 וְחֵמָה גְדוֹלָה קִנֵּאתִי לָהּ׃ כֹּה אָמַר יְהוָה
vocabitur & :Jeruſalaim medio in habitabo & ,Sijon ad ſum Reverſus
שַׁבְתִּי אֶל־צִיּוֹן וְשָׁכַנְתִּי בְּתוֹךְ יְרוּשָׁלִָם וְנִקְרְאָה
.*ſanctitatis* mons ,exercituũ Domini mons & ,veritatis Civitas,Jeruſalaim
יְרוּשָׁלִַם עִיר הָאֱמֶת וְהַר־יְהוָה צְבָאוֹת הַר הַקֹּדֶשׁ׃
ſenes habitabunt Adhuc : exercituum Dominus dixit Sic
4 כֹּה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת עֹד יֵשְׁבוּ זְקֵנִים
ſua manu in *ejus fulcrum viri* & ,Jeruſalaim plateis in anus &
וּזְקֵנוֹת בִּרְחֹבוֹת יְרוּשָׁלִַם וְאִישׁ מִשְׁעַנְתּוֹ בְּיָדוֹ
pueris implebuntur civitatis plateæ Et .dierum multitudine præ
5 מֵרֹב יָמִים׃ וּרְחֹבוֹת הָעִיר יִמָּלְאוּ יְלָדִים
DOMINUS dixit Sic .ejus plateis in ludentibus puellis &
6 וִילָדוֹת מְשַׂחֲקִים בִּרְחֹבֹתֶיהָ׃ כֹּה אָמַר יְהוָה
: illis diebus in illius populi reſidui oculis in erit *mirum* Si :exercituũ
צְבָאוֹת כִּי יִפָּלֵא בְּעֵינֵי שְׁאֵרִית הָעָם הַזֶּה בַּיָּמִים הָהֵם
? exercituum DOMINUS dixit ,erit *mirum* meis oculis in etiam
גַּם־בְּעֵינַי יִפָּלֵא נְאֻם יְהוָה צְבָאוֹת׃
meũ populũ *faciens* ſalvũ ego Ecce :exercituum Dominus dixit Sic
7 כֹּה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת הִנְנִי מוֹשִׁיעַ אֶת־עַמִּי
,eos adducam Et .Solis occaſus terra de & , orientis terra de
8 מֵאֶרֶץ מִזְרָח וּמֵאֶרֶץ מְבוֹא הַשָּׁמֶשׁ׃ וְהֵבֵאתִי אֹתָם
ego & ,populũ in mihi erunt & : Jeruſalaim medio in habitabunt &
וְשָׁכְנוּ בְּתוֹךְ יְרוּשָׁלִָם וְהָיוּ־לִי לְעָם וַאֲנִי
dixit Sic .juſtitia in & veritate in Deum in eis ero
9 אֶהְיֶה לָהֶם לֵאלֹהִים בֶּאֱמֶת וּבִצְדָקָה׃ כֹּה־אָמַר
diebus in *audientes* ,veſtræ manus Confortentur : exercituum Dominus
יְהוָה צְבָאוֹת תֶּחֱזַקְנָה יְדֵיכֶם הַשֹּׁמְעִים בַּיָּמִים
die in qui ,prophetarum ore de hæc verba iſtis
הָאֵלֶּה אֵת הַדְּבָרִים הָאֵלֶּה מִפִּי הַנְּבִיאִים אֲשֶׁר בְּיוֹם
.ædificari templum ,exercituum Domini domus eſt fundata
יֻסַּד בֵּית־יְהוָה צְבָאוֹת הַהֵיכָל לְהִבָּנוֹת׃

Verſio VULG. LAT.

10 Et viduam, & pupillum, & advenam, & pauperem nolite calumniari: et malũ vir fratri ſuo non
11 cogitet in corde ſuo. Et noluerunt attendere, & averterunt ſcapulam recedentem, & aures ſuas
12 aggravaverunt ne audirent. Et cor ſuum poſuerunt ut adamantem, ne audirent legem, & verba quæ miſit Dominus exercituum in ſpiritu ſuo per manum prophetarum priorũ: & facta eſt indignatio magna à Domino exercituum.
13 Et factum eſt ſicut locutus eſt, & non audierunt: ſic clamabunt, & non exaudiam, dicit Dominus ex-
14 ercituum. Et diſperſi eos per omnia regna, quæ neſciunt: & terra deſolata eſt ab eis, eò quòd non eſſet tranſiens & revertens: & poſuerunt terram deſiderabilem in deſertum.

CAP. VIII.

1 Et factum eſt verbum Domini
2 exercituum, dicens; Hæc dicit Dominus exercituũ; Zelatus ſum Sion zelo magno, & indignatio-
3 ne magnâ zelatus ſum eam. Hæc dicit Dominus exercituum; Reverſus ſum ad Sion, & habitabo in medio Jeruſalem: & vocabitur Jeruſalem civitas veritatis, & mons Domini exercituum, mons
4 ſanctificatus. Hæc dicit Dominus exercituum; Adhuc habitabunt ſenes & anus in plateis Jeruſalem: & viri baculus in manu e-
5 jus præ multitudine dierum. Et plateæ civitatis complebuntur infantibus & puellis, ludentibus
6 in plateis ejus. Hæc dicit Dominus exercituum; Si videbitur difficile in oculis reliquiarum populi hujus in diebus illis, numquid in oculis meis difficile erit, dicit
7 Dominus exercituum? Hæc dicit Dominus exercituũ; Ecce ego ſalvabo populum meum de terra Orientis, & de terra Occaſûs So-
8 lis. Et adducam eos, & habitabunt in medio Jeruſalem: & erunt mihi in populum, & ego ero eis in Deum, in veritate & in ju-
9 ſtitia. Hæc dicit Dominus exercituum; Confortentur manus veſtræ, qui auditis in his diebus ſermones iſtos per os prophetarum, in die quâ fundata eſt domus Domini exercituum, ut templum ædificaretur.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

10 Καὶ χήραν, καὶ ὀρφανὸν, καὶ προσήλυτον, καὶ πένητα μὴ καταδυναστεύετε, καὶ κακίαν ἕκαστος τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ μὴ μνησικακείτω ἐν
11 ταῖς καρδίαις ὑμῶν. Καὶ ἠπείθησαν τοῦ προσέχειν, καὶ ἔδωκαν νῶτον παραφρονοῦντα, καὶ τὰ ὦτα αὐτῶν ἐβάρυναν τοῦ μὴ εἰσακούειν.
12 Καὶ τὴν καρδίαν αὐτῶν ἔταξαν ἀπειθῆ, τοῦ μὴ (κ) εἰσακούειν τοῦ νόμου μου, καὶ τοὺς λόγους, οὓς ἐξαπέστειλε κύριος παντοκράτωρ ἐν πνεύματι αὐτοῦ ἐν χερσὶ τῶν προφητῶν τῶν ἔμπροσθεν· καὶ ἐγένετο (λ) ὀργὴ
13 μεγάλη παρὰ κυρίου παντοκράτορος. Καὶ ἔσται, ὃν τρόπον εἶπε, καὶ οὐκ εἰσήκουσαν (μ), οὕτως κεκράξονται, καὶ οὐ μὴ εἰσακούσω (ν),
14 λέγει κύριος παντοκράτωρ. Καὶ ἐκβαλῶ αὐτοὺς εἰς πάντα τὰ ἔθνη, ἃ οὐκ ἔγνωσαν· καὶ ἡ γῆ ἀφανισθήσεται κατόπισθεν αὐτῶν ἐκ διοδεύοντος καὶ ἐξ ἀναστρέφοντος· καὶ ἔταξαν γῆν ἐκλεκτὴν εἰς ἀφανισμόν.

MS.A. (κ) εἰσακοῦσαι (λ) ὁρμὴ (μ) αὐτοῦ, (ν) αὐτῶν,

Et viduam, & pupillum, (e) & advenam, & pauperem non opprimatis: & malitiæ unuſquiſque fratris ſui (f) nolite meminiſſe in cordibus veſtris. Et noluerunt attendere, & dederunt dorſum contemnens: & aures ſuas aggravaverunt, ut non audirent: Et cor ſuum poſuerunt inobediens, ut non audirent legem meam, & verba, quæ miſit Dominus omnipotens in ſpiritu ſuo in manibus prophetarum priorum. Et facta eſt ira magna à Domino omnipotente. Et erit, ſicut dixit, et non audierunt; ſic clamabunt, et non exaudiã, dicit Domin⁹ omnipotens: Et ejiciam eos in omnes gentes, quas ignoraverunt: & terra deſolabitur poſt eos à perambulante, & à revertente. Et poſuerunt terram electam in ſolitudinem. 10 11 12 13 14

ΚΕΦ. η'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου παντοκράτο-
2 ρος, λέγων, Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, (α) Ἐζήλωκα τὴν Ἱερουσαλὴμ καὶ τὴν Σιὼν ζῆλον μέγαν, καὶ θυμῷ μεγάλῳ
3 (β) ἐζήλωκα αὐτήν. Τάδε λέγει κύριος, (γ) Ἐπιστρέψω ἐπὶ Σιὼν, καὶ κατασκηνώσω ἐν μέσῳ Ἱερουσαλὴμ, καὶ κληθήσεται (δ) ἡ Ἱερουσαλὴμ πόλις ἀληθινὴ, καὶ τὸ ὄρος
4 κυρίου παντοκράτορος, ὄρος ἅγιον. Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Ἔτι καθήσονται πρεσβύτεροι καὶ πρεσβύτεραι ἐν ταῖς πλατείαις Ἱερουσαλὴμ, ἕκαστος τὴν ῥάβδον αὐτοῦ ἔχων (˜) ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, ἀπὸ πλήθους
5 ἡμερῶν. Καὶ αἱ πλατεῖαι τῆς πόλεως πλησθήσονται παιδαρίων καὶ κορασίων παι-
6 ζόντων ἐν ταῖς πλατείαις αὐτῆς. Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, (ε) Εἰ ἀδυνατήσει ἐνώπιον τῶν καταλοίπων τοῦ λαοῦ τούτου ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, μὴ καὶ (ζ) ἐνώπιόν μου ἀδυνατήσει; λέγει κύριος
7 παντοκράτωρ. Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Ἰδοὺ ἐγὼ (η) σώζω τὸν λαόν μου ἀπὸ γῆς ἀνατολῶν καὶ ἀπὸ γῆς δυσμῶν,
8 Καὶ εἰσάξω αὐτοὺς, καὶ κατασκηνώσω ἐν μέσῳ Ἱερουσαλὴμ, καὶ (θ) ἔσονται ἐμοὶ εἰς λαὸν, (˜) κἀγὼ ἔσομαι αὐτοῖς εἰς θεὸν ἐν
9 ἀληθείᾳ καὶ ἐν δικαιοσύνῃ. Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Κατισχυέτωσαν αἱ χεῖρες ὑμῶν τῶν ἀκουόντων ἐν ταῖς ἡμέραις ταύταις τοὺς λόγους τούτους ἐκ στόματος τῶν προφητῶν, ἀφ' ἧς ἡμέρας τεθεμελίωται ὁ οἶκος κυρίου παντοκράτορος, καὶ ὁ ναὸς ἀφ' οὗ ᾠκοδόμηται.

MA. A. (α) Ἐζήλωσα (β) ἐζήλωσα (γ) Καὶ ἐπιστρέψω (δ) Ἱερουσαλὴμ (˜) ἐν χειρὶ (ε) Διότι εἰ (ζ) ἐνώπιον ἐμοῦ (η) ἀνασώζω (θ) ἔσονταί μοι (˜) καὶ ἐγὼ

CAP. VIII.

Et factus eſt ſermo Domini omnipotentis, dicens; Hæc dicit Dominus omnipotens; Zelatus ſum Hieruſalem, & Sion zelo magno: & furore maximo zelatus ſum eam. Hæc dicit Dominus; Revertar ad Sion, & habitabo in medio Hieruſalem: & vocabitur Hieruſalem civitas vera: & mons Domini omnipotentis, mons ſanctus. Hæc dicit Dominus omnipotens; Adhuc ſedebunt ſenes, & anus in plateis Hieruſalem, unuſquiſque virgam ſuam habens in manu ſua præ multitudine dierum: Et plateæ civitatis replebuntur pueris, & puellis ludentibus in plateis ejus. Hæc dicit Dominus omnipotens; Si impoſſibile erit coram reliquis populi hujus in diebus illis; nunquid & coram me impoſſibile erit? dicit Dominus omnipotens. Hæc dicit Dominus omnipotens; Ecce ego ſalvo populum meum de terra Orientis, & de terra Occaſûs. Et introducam eos, & habitabo in medio Hieruſalem: & erunt mihi in populum: & ego ero eis in Deum in veritate, & in juſtitia. Hæc dicit Dominus omnipotens; Confortentur manus veſtræ, qui auditis in diebus his ſermones iſtos ex ore prophetarum, ex quo die fundata eſt domus Domini omnipotentis, & ex quo templum ædificatum eſt. 1 2 3 4 5 6 7 8 9

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 וְאַרְמְלָא וְיָתַם וְגִיוֹר וּמִסְכֵּן לָא תֵינְסוּן וּבִישַׁת גְּבַר עִם אֲחוּהִי לָא תַחְשְׁבוּן בְּלִבְּכוֹן׃
11 12 וְסָרִיבוּ לְקַבָּלָא וִיהַבוּ כַתְפְּהוֹן מָרֵיד וְאוּדְנֵיהוֹן יַקִּירוּ מִלְמִשְׁמַע׃ וְלִבְּהוֹן שַׁוִּיאוּ תַקִּיף
כְּשָׁמִירָא מִלְקַבָּלָא אוֹרַיְתָא וְיַת פִּתְגָּמַיָּא דִּי שְׁלַח יְיָ צְבָאוֹת בְּמֵימְרֵיהּ בְּיַד נְבִיַּיָּא
13 קַדְמָאֵי וַהֲוָה רְגַז רַב מִן קֳדָם יְיָ צְבָאוֹת׃ וַיְהִי כְּמָא דְאִתְנַבִּיאוּ לְהוֹן נְבִיַּיָּא וְלָא קַבִּילוּ
14 כֵּן יְצַלּוֹן קֳדָמַי וְלָא אֲקַבֵּל אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת׃ וַאֲבַדַּרְנוּן בֵּינֵי עַמְמַיָּא דִּי לָא יְדָעוּנוּן וְאַרְעָא
תִּצְדֵּי בַּתְרֵיהוֹן מִדְּעָדֵי וּמִדְּתָאֵב עַל דְּשַׁוִּיאוּ אַרְעָא דְחֶמְדְּתָא לְצַדּוּ׃

ח

1 2 וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ צְבָאוֹת עִמִּי לְמֵימַר׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת מִתְפְּרַע אֲנָא
3 פּוּרְעֲנוּת צִיּוֹן קִנְאָה רַבָּא וּרְגַז רַב מִן קֳדָמַי עַל עַמְמַיָּא דְאַקְנִיאוּהָ׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֲתוּב
לְצִיּוֹן וְאַשְׁרֵי שְׁכִנְתִּי בְּגוֹ יְרוּשְׁלֵם וְתִתְקְרֵי יְרוּשְׁלֵם קַרְתָּא דְקוּשְׁטָא וְטוּר בֵּית מַקְדְּשָׁא
4 דַּיְיָ צְבָאוֹת טוּרָא קַדִּישָׁא׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת עוֹד יְתִבוּן סָבִין וְסָבָן בִּשְׁוָקֵי יְרוּשְׁלֵם
5 וּגְבַר עוֹבָדוֹהִי תַקְנַיָּא יַגְנוּן עֲלוֹהִי מִסְּגֵי יוֹמַיָּא׃ וּרְחוֹבֵי קַרְתָּא יְרוּשְׁלֵם יִתְמַלְוּן
6 עוּלֵימִין וְעוּלֵימָן מְשַׁבְּחִין בִּפְתָהָא׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת כַּד תֵּיקַר דְּחַלְתִּי בְּעֵינֵי שְׁאָרָא
7 דְעַמָּא הָדֵין בְּיוֹמַיָּא הָאִנּוּן אַף קֳדָמַי יֵיקְרוּן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת הָא
8 אֲנָא פָּרֵיק יַת עַמִּי מֵאַרְעָא מַדִּנְחָא וּמֵאַרְעָא מַעֲלָנֵי שִׁמְשָׁא׃ וְאַעֵל יַתְהוֹן וְיִשְׁרוֹן בְּגוֹ
9 יְרוּשְׁלֵם וִיהוֹן קֳדָמַי לְעַם וַאֲנָא אֱהֵוֵי לְהוֹן לֶאֱלָהָא בִּקְשׁוֹט וּבִזְכוּ׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת
יִתְקְפָן יְדֵיכוֹן דְּשָׁמְעִין בְּיוֹמַיָּא הָאִנּוּן יַת פִּתְגָּמַיָּא הָאִלֵּין מִפּוּם נְבִיַּיָּא דִּי בְּיוֹמָא דְּשָׁרִי
לְאִשְׁתַּכְלָלָא בֵּית מַקְדְּשָׁא דַּיְיָ צְבָאוֹת הֵיכְלָא לְאִתְבְּנָאָה׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et viduam, & pupillum, & advenam, & pauperem ne opprimatis: nec co- 10
gitetis malum vir cum fratre ſuo in cordibus veſtris. Et noluerunt obedire, 11
& dederunt humerum ſuum recedentem, & aures ſuas aggravaverunt ne au-
dirent. Et cor ſuum poſuerunt durum, ſicut adamantem ne ſuſciperent le- 12
gem, & verba quæ miſit Dominus exercituum in verbo ſuo per manum pro-
phetarum priorum: & fuit ira magna à facie Domini exercituum. Et factum 13
eſt ſicut prophetaverunt eis prophetæ, & non obedierunt: ſic orabunt coram
me, & non ſuſcipiam [*orationem eorum,*] dixit Dominus exercituum. Et diſper- 14
gam eos inter populos quos neſcierunt, & terra deſolabitur poſt eos, ita ut
non ſit tranſiens & revertens, eò quòd poſuerunt terram meam deſiderabilem in deſolationem.

CAP. VIII.

Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini exercituum ad me, dicens: 1
Hæc dicit Dominus exercituum, Ultione ego ulciſcar Sion zelo magno, & 2
ira magna à facie mea ſuper populos qui ad æmulationem provocârunt eam.
Hæc dicit Dominus, Revertar ad Sion, & habitare faciam majeſtatem meam 3
in medio Jeruſalem, & vocabitur Jeruſalem civitas veritatis, & mons domus
ſanctuarii Domini exercituum mons ſanctitatis. Hæc dicit Dominus exercituũ, 4
Adhuc habitabunt ſenes et anus in plateis Jeruſalem, et opera recta uniuſcu-
juſque protegent eum præ multitudine dierũ. Et plateæ civitatis Jeruſalẽ im- 5
plebuntur pueris et puellis cantantibus in locis ejus ſpatioſis. Hæc dicit Do- 6
minus exercituũ, Sicut honorabilis erit timor meus in oculis reſidui populi
hujus in diebus illis: ſic etiam coram me erunt pretioſi, dicit Dominus exerci-
tuũ. Hæc dicit Dominus exercituum, Ecce ego redimã populũ meũ de terra 7
Orientali, et de terra occaſus Solis. Et adducam eos ut habitent in medio 8
Jeruſalẽ: et erunt corã me in populũ; et ego ero eis in Deũ in veritate et in
juſtitia. Hæc dicit Dñs exercituũ, Confortentur manus veſtræ qui auditis in 9
his diebus ſermones iſtos ex ore prophetarũ, quia in die quo cœpit fundari
domus ſanctuarii Dñi exercituũ, ut templũ ædificaretur.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܠܐܪܡܠܬܐ ܘܠܝܬܡܐ ܘܠܡܣܟܢܐ. ܘܠܡܬܦܢܝܢܐ ܠܘܬܝ ܠܐ ܬܥܫܩܘܢ ܘܠܐ ܬܛܠܡܘܢ. 10
ܘܒܝܫܬܐ ܐܢܫ ܠܘܬ ܐܚܘܗܝ ܠܐ ܬܬܚܫܒܘܢ ܒܠܒܟܘܢ.* ܘܠܐ ܨܒܘ ܠܡܫܬܡܥܘ ܠܝ. ܘܝܗܒܘ 11
ܟܬܦܗܘܢ ܡܪܘܕܬܐ. ܘܐܕܢܝܗܘܢ ܐܝܩܪܘ. ܕܠܐ ܢܫܡܥܘܢ. * ܘܠܒܗܘܢ ܥܒܕܘ ܐܝܟ ܫܡܝܪܐ. 12
ܕܠܐ ܢܫܡܥܘܢ ܢܡܘܣܐ ܘܦܘܩܕܢܐ. ܕܫܕܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ ܒܪܘܚܗ ܒܝܕ ܢܒܝܐ ܩܕܡܝܐ.
ܘܗܘܐ ܪܘܓܙܐ ܪܒܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. * ܚܠܦ ܕܩܪܝܬ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܫܡܥܘ. ܗܟܢܐ 13
ܢܩܪܘܢܢܝ. ܘܠܐ ܐܫܡܥ ܐܢܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. * ܘܐܒܕܪ ܐܢܘܢ. ܒܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܠܐ 14
ܝܕܥܘ ܐܢܘܢ. ܘܐܪܥܐ ܬܚܪܒ ܡܢ ܒܬܪܗܘܢ. ܡܢ ܚܘܣܪܢܐ ܕܥܒܘܪܐ. ܡܛܠ ܕܥܒܕܘ ܐܪܥܐ ܪܓܝܓܬܐ
ܠܚܘܪܒܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܚ * * ܘܗܘܐ ܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. 1
ܟܕ ܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. ܛܢܢܬ ܠܨܗܝܘܢ ܛܢܢܐ ܪܒܐ. ܘܒܚܡܬܐ ܪܒܬܐ 2
ܛܢܢܬ ܠܗ̇. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܬܒܝܐ ܐܢܐ ܒܨܗܝܘܢ. ܘܫܪܐ ܐܢܐ ܒܓܘܗ̇ ܕܐܘܪܫܠܡ. 3
ܘܬܬܩܪܐ ܐܘܪܫܠܡ. ܡܕܝܢܬܐ ܩܕܝܫܬܐ. ܘܛܘܪܗ ܕܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. ܛܘܪܐ ܩܕܝܫܐ. * ܗܟܢܐ 4
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. ܬܘܒ ܢܬܒܘܢ ܣܒܐ ܘܣܒܬܐ ܒܫܘܩܝܗ̇ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܘܓܒܪ
ܫܒܛܗ ܢܗܘܐ ܐܚܝܕ ܒܐܝܕܗ ܡܢ ܣܘܓܐܐ ܕܝܘܡܬܐ. * ܘܫܘܩܝܗ̇ ܕܡܕܝܢܬܐ. ܢܬܡܠܘܢ 5
ܛܠܝܐ ܘܛܠܝܬܐ ܕܡܫܬܥܝܢ ܒܫܘܩܝܗ̇. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. ܐܢ ܬܬܥܫܢ ܗܕܐ 6
ܒܥܝܢܝܗܘܢ ܕܫܪܟܗ ܕܥܡܐ ܗܢܐ : ܒܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ : ܐܦ ܒܥܝܢܝ ܕܝܠܝ ܬܬܥܫܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܐܚܝܕ ܟܠ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. ܗܐ ܦܪܩ ܐܢܐ ܠܥܡܝ. ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܕܢܚܐ ܘܡܢ 7
ܐܪܥܐ ܕܡܥܪܒ ܫܡܫܐ. * ܘܐܝܬܐ ܐܢܘܢ. ܘܢܫܪܘܢ ܒܐܘܪܫܠܡ. ܘܢܗܘܘܢ ܠܝ ܠܥܡܐ. ܘܐܢܐ 8
ܐܗܘܐ ܠܗܘܢ ܠܐܠܗܐ. ܒܩܘܫܬܐ ܘܒܙܕܝܩܘܬܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. ܬܬܚܝܠܢ 9
ܐܝܕܝܐ ܕܟܠ ܕܫܡܥܝܢ ܒܝܘܡܬܐ ܗܠܝܢ. ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ ܡܢ ܦܘܡܗܘܢ ܕܢܒܝܐ. ܡܢ
ܝܘܡܐ ܕܐܬܬܣܝܡ ܫܬܐܣܬܐ ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. ܠܡܬܒܢܝܘ.

Viduas, pupillos, & pauperes, & eum qui 10 convertitur ad me, moleſtiâ ne afficiatis néve opprimatis : & malum alter in alterum ne cogitetis in corde veſtro : At renuerunt ob- 11 temperare mihi, imò humerum ſuum rebellem reddiderunt, & aures ſuas obturârunt ne audirent ; Et cor ſuum ut adamantem reddi- 12 derunt, ne acquieſcerent legibus & præceptis quæ miſerat Dñs pŏtentiſſim⁹ per ſpiritũ ſuum per prophetas priores : Unde oborta eſt ira magna à conſpectu Domini. Quia vocavi 13 eos, & non audierunt ; ita vocabunt me, & non audiam eos, dicit Dñs potentiſſimus : Et 14 diſperdam eos inter omnes gentes quas non cognoſcunt ; & terra deſolabitur poſt eos, propter penuriam tranſeuntis : eò quòd terram exoptatiſſimam redegerint in deſertum.

CAP. VIII.

Fuit etiam ad me ſermo Domini potentiſſimi, dicendo ; 1 Sic dicit Dñs potentiſſimus ; 2 Zelotypiâ magnâ motus ſum in Sionem, & fervore magno zelotypiâ motus ſum in eam. Sic 3 ait Dominus ; Conſolationem percepturus ſum in Sione, & habitaturus in medio Jeruſalem : & vocabitur Jeruſalem, urbs ſancta ; & mons Domini potentiſſimi, mons ſanctus. Sic ait Dominus potentiſſimus ; Poſthac ſede- 4 bunt ſenes & anus in vicis Jeroſolymæ, & quiſque baculum ſuum tenebit manu ſuâ præ multitudine dierum : Et vici urbis implebun- 5 tur pueris & puellis ludentibus in vicis ejus. Sic ait Dñs potentiſſimus ; Etiamſi arduum 6 ſit hoc in oculis reliquiarum iſtius populi, iis diebus ; an etiam in oculis meis arduum eſſet, dicit Dñs potentiſſimus ? Sic ait Dñs poten- 7 tiſſimus ; Ecce liberaturus ſum populũ meum de terra Orientis & de terra Occaſûs ſolis. Et 8 adducturus eos ut habitent in Jeruſalẽ : eruntque mihi popul⁹, & ego ero ipſis Deus in veritate & juſtitia. Sic ait Dominus potentiſſi- 9 mus ; Confirmentur man⁹ omnium eorum qui iis diebus audierunt ſermones iſtos ex ore prophetarum, ab eo die quo poſitum fuit fundamentum templi Domini potentiſſimi ut ædificaretur.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ولا تسعوا على الارملة واليتيم * والغريب والفقير * وكل واحد لا يحقد سرا على اخيه في 10
قلوبكم * فعصوا ان لا يصغوا * واعطوا ظهرا متهاونا * وثقلوا اذانهم ان لا يسمعوا * 11
* وربوا قلبهم عاصيا ان لا يصغوا لناموسي والاقوال التي ارسلها الرب الضابط الكل 12
بروحه بايدي الانبياء الذين من قبل * وكان رجز عظيم من قبل الرب الضابط الكل *
* ويكون كما قال * ولم يسمعوا * هكذا يصرخون ولا يستجيب لهم * يقول الرب الضابط الكل * 13
* واطرحهم في كل الامم التي لم يعرفوها * والارض تفسد من خلفهم من الوارد والصادر * 14
وربوا الارض المختارة للفساد * * الفصل الثامن *
* وكان قول الرب الضابط الكل قايلا * هكذا يقول الرب الضابط الكل * غرت لايروسليم 1 2
ولصهيون غيرة عظيمة * وبغضب عظيم غرت لها * هكذا يقول الرب * وارجع الى صهيون * 3
واسكن في وسط ايروسليم * وتدعى ايروسليم مدينة حقيقية * وجبل الرب الضابط الكل
مقدس * هكذا يقول الرب الضابط الكل * تجلس الشيوخ والعجاير ايضا في شوارع 4
ايروسليم * كل واحد معه عصا في يده من كثرة الايام * وشوارع المدينة تمتلي صبيانا 5
وجواري يلعبون في رحابها * هكذا يقول الرب الضابط الكل * ان كانت هذه لا تمكن 6
امام بقية هذا الشعب في تلك الايام * العلها امامي لا تمكن يقول الرب الضابط الكل *
* هكذا يقول الرب الضابط الكل * ها انا اخلص شعبي من ارض المشارق * ومن ارض 7
المغارب * وادخلهم الى ارضهم * واسكنهم في وسط ايروسليم * ويكونوا لي شعبا وانا اكون لهم الها 8
بالحق والعدل * هكذا يقول الرب الضابط الكل * لتقوى ايديكم ايها السامعون في هذه الايام 9
الكلمات التي من فم الانبياء * منذ يوم تاسس بيت الرب الضابط الكل * ومنذ بني الهيكل *

Viduam & pupillum, advenam & pauperem ne opprimatis: odium clandeſtinum nemo ſervet contra fratrem ſuum in cordibus veſtris. 10 *Sed rebellârunt quominùs attenderent, dederuntque dorſum contemnens, & aggravaverunt aures ſuas quominùs audirent ;* 11 *Et cor ſuum rebelle reddiderunt, quominùs attenderent ad legem meam & ſermones quos Dominus omnipotens per ſpiritum ſuum miſerat per prophetas priores : proinde fuit indignatio à Domino omniptoente.* 12 *Et erit quemadmodum dixit. Cúmque non audierint, vice verſâ clamabunt, & non exaudiet eos, ait Dominus omnipotens :* 13 *Sed abjiciam eos in omnes gentes quas non cognoverunt : & terra poſt eos deſtituetur eunte & redeunte ; quòd terram electam in vaſtitatem redegerint.* 14

CAP. VIII.

Deinde fuit ſermo Domini omnipotentis, dicens ; 1 *Sic dicit Dominus omnipotens ; Zelo maximo flagravi pro Jeruſalem & pro Sione, & magno cum furore zelo exarſi propter eas.* 2 *Sic ait Dominus ; Revertar etiam in Sionem, & habitabo in medio Jeroſolymæ : vocabiturque Jeroſolyma, urbs vera ; & mons Domini omnipotentis, ſanctus.* 3 *Ita dicit Dominus omnipotens ; Sedebunt adhuc ſenes & anus in vicis Jeroſolymæ, quiſque manu ſuâ baculum tenens ob multitudinem dierum :* 4 *Et vici urbis implebuntur pueris ac puellis ludentibus in plateis ejus.* 5 *Ita dicit Dominus omnipotens ; Si hoc eſt impoſſibile coram reliquiis hujus populi iis diebus, an coram me erit impoſſibile, dicit Dominus omnipotens ?* 6 *Sic ait Dominus omnipotens ; Ecce ego ſalvabo populum meum de terra ortûs & de terra occaſûs,* 7 *Et introducam eos in terram ſuam, faciamque ut habitent in medio Jeroſolymæ: eruntque mihi populus, & ego ero ipſis Deus in veritate & juſtitia.* 8 *Sic ait Dominus omnipotens ; Confortentur manus veſtræ O qui auditis hiſce diebus verba quæ prodeunt ex ore prophetarum, inde ab illa die quâ fundata eſt ædes Domini omnipotentis, & ex quo ædificatum eſt templum.* 9

זכריה : ח

,fuit non hominis merces *illorum* *dierum* *facies ad* Quia
10 כִּי לִפְנֵי הַיָּמִים הָהֵם שְׂכַר הָאָדָם לֹא נִהְיָה
pax non introeunti & ,exeunti & : *ipsi* non animalis merces &
וּשְׂכַר הַבְּהֵמָה אֵינֶנָּה וְלַיּוֹצֵא וְלַבָּא אֵין־שָׁלוֹם
.ſuum *ſocium* in *virum* , *hominem omnem* *miſi* & ,anguſtia præ
מִן־הַצָּר וַאֲשַׁלַּח אֶת־כָּל־הָאָדָם אִישׁ בְּרֵעֵהוּ׃
populi reſiduo *ego* priores dies juxta non nunc Et
11 וְעַתָּה לֹא כַיָּמִים הָרִאשֹׁנִים אֲנִי לִשְׁאֵרִית הָעָם
vitis : pacis ſemen Sed .exercituum Dominus dixit : hujus
12 הַזֶּה נְאֻם יְהוָה צְבָאוֹת׃ כִּי־זֶרַע הַשָּׁלוֹם הַגֶּפֶן
cœli & ,ſuum *germen* dabit terra & ,ſuum fructum dabit
תִּתֵּן פִּרְיָהּ וְהָאָרֶץ תִּתֵּן אֶת־יְבוּלָהּ וְהַשָּׁמַיִם
hujus populi reſiduum faciam poſſidere & : ſuum rorem dabunt
יִתְּנוּ טַלָּם וְהִנְחַלְתִּי אֶת־שְׁאֵרִית הָעָם הַזֶּה
gentibus in maledictio eratis ſicut erit Et .hæc univerſa
13 אֶת־כָּל־אֵלֶּה׃ וְהָיָה כַּאֲשֶׁר הֱיִיתֶם קְלָלָה בַּגּוֹיִם
eritis & , vos ſervabo ſic , Iſrael domus & , Jehudah domus
בֵּית יְהוּדָה וּבֵית יִשְׂרָאֵל כֵּן אוֹשִׁיעַ אֶתְכֶם וִהְיִיתֶם
dixit ſic Quia .veſtræ manus confortentur ,timeatis ne : benedictio
14 בְּרָכָה אַל־תִּירָאוּ תֶּחֱזַקְנָה יְדֵיכֶם׃ כִּי כֹה אָמַר
, vobis *malefacere* cogitavi Quemadmodum : exercituum Dominus
יְהוָה צְבָאוֹת כַּאֲשֶׁר זָמַמְתִּי לְהָרַע לָכֶם
: exercituum Dominus dixit , me *veſtros* patres *faciendo* iraſci in
בְּהַקְצִיף אֲבֹתֵיכֶם אֹתִי אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת
iſtis diebus in cogitavi ,ſum converſus Sic .ſum miſertus non &
15 וְלֹא נִחָמְתִּי׃ כֵּן שַׁבְתִּי זָמַמְתִּי בַּיָּמִים הָאֵלֶּה
.timeatis ne : Jehudah domui & , Jeruſalaim benefacere
לְהֵיטִיב אֶת־יְרוּשָׁלַםִ וְאֶת־בֵּית יְהוּדָה אַל־תִּירָאוּ׃
cum unuſquiſque veritatem Loquimini .facietis quæ verba Hæc
16 אֵלֶּה הַדְּבָרִים אֲשֶׁר תַּעֲשׂוּ דַּבְּרוּ אֱמֶת אִישׁ אֶת־
.veſtris portis in judicate pacis judicium & , veritatem ; ſuo *ſocio*
רֵעֵהוּ אֱמֶת וּמִשְׁפַּט שָׁלוֹם שִׁפְטוּ בְּשַׁעֲרֵיכֶם׃
,veſtris cordibus in cogitetis ne ſui *ſocii* malum unuſquiſque Et
17 וְאִישׁ ׀ אֶת־רָעַת רֵעֵהוּ אַל־תַּחְשְׁבוּ בִּלְבַבְכֶם
quæ hæc omnia quia : diligatis ne *falſitatis* juramentum &
וּשְׁבֻעַת שֶׁקֶר אַל־תֶּאֱהָבוּ כִּי אֶת־כָּל־אֵלֶּה אֲשֶׁר
exercituum Domini verbum fuit Et .Dominus dixit , odi
18 שָׂנֵאתִי נְאֻם־יְהוָה׃ וַיְהִי דְּבַר־יְהוָה צְבָאוֹת
Jejunium : exercituum Dominus dixit Sic : dicendo , me ad
19 אֵלַי לֵאמֹר׃ כֹּה־אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת צוֹם
jejunium & , ſeptimi jejunium & , quinti jejunium & , quarti
הָרְבִיעִי וְצוֹם הַחֲמִישִׁי וְצוֹם הַשְּׁבִיעִי וְצוֹם
, lætitiam in & , gaudium in Jehudah domui erit , decimi
הָעֲשִׂירִי יִהְיֶה לְבֵית־יְהוּדָה לְשָׂשׂוֹן וּלְשִׂמְחָה
dixit Sic .diligite pacem & veritatem Et .*bonas* ſolennitates in &
20 וּלְמֹעֲדִים טוֹבִים וְהָאֱמֶת וְהַשָּׁלוֹם אֱהָבוּ׃ כֹּה אָמַר
habitatores & , populi venient quo Adhuc : exercituum Dominus
יְהוָה צְבָאוֹת עֹד אֲשֶׁר יָבֹאוּ עַמִּים וְיֹשְׁבֵי
: dicendo , *unam* ad unius habitatores ibunt Et .*multarum* urbium
21 עָרִים רַבּוֹת׃ וְהָלְכוּ יֹשְׁבֵי אַחַת אֶל־אַחַת לֵאמֹר
quærendum ad & , Domini *facies* *deprecandum ad* , eundo Eamus
נֵלְכָה הָלוֹךְ לְחַלּוֹת אֶת־פְּנֵי יְהוָה וּלְבַקֵּשׁ
populi venient Et .ego etiam , vadam : exercituum Dominum
22 אֶת־יְהוָה צְבָאוֹת אֵלְכָה גַּם־אָנִי׃ וּבָאוּ עַמִּים
exercituum Dominum quærendum ad robuſtæ gentes & multi
רַבִּים וְגוֹיִם עֲצוּמִים לְבַקֵּשׁ אֶת־יְהוָה צְבָאוֹת
.Domini *facies* deprecandum ad & : Jeruſalaim in
בִּירוּשָׁלָםִ וּלְחַלּוֹת אֶת־פְּנֵי יְהוָה׃

Verſio VULG. LAT.

10 Siquidem ante dies illos merces
hominũ non erat, nec merces jumentorũ
erat, neq; introeunti,
neq; exeunti erat pax præ tribulatione:
& dimiſi omnes homines,
unumquemque contra proximũ
11 ſuum. Nunc autem non juxta
dies priores ego faciam reliquiis
populi hujus, dicit Dñs exercituum,
12 Sed ſemen pacis erit: vinea
dabit fructum ſuum, & terra
dabit germen ſuũ, & cœli dabunt
roré ſuũ: & poſſidere faciam
reliquias populi hujus
13 univerſa hæc. Et erit: ſicut
eratis maledictio in Gentibus,
domus Juda, & domus Iſrael: ſic
ſalvabo vos, & eritis benedictio:
nolite timere, confortentur manus
14 veſtræ. Quia hæc dicit Dominus
exercituum; Sicut cogitavi
ut affligerem vos, cùm ad
iracundiam provocâſſent patres
15 veſtri me, dicit Dominus, Et non
ſum miſertus: ſic converſus cogitavi
in diebus iſtis ut benefaciã
domui Juda, & Jeruſalem: nolite
16 timere. Hæc ſunt ergò verba,
quæ facietis: Loquimini veritatem
unuſquiſque cum proximo
ſuo: veritatem, & judicium
pacis judicate in portis veſtris.
17 Et unuſquiſque malum contra
amicum ſuum ne cogitetis in cordibus
veſtris: & jumentum
mendax ne diligatis: omnia enim
hæc ſunt, quæ odi, dicit Dominus.
18 Et factum eſt verbum Domini
exercituum ad me, dicens;
19 Hæc dicit Dominus exercituũ;
Jejunium quarti, & jejunium
quinti, & jejunium ſeptimi, &
jejunium decimi erit domui Juda
in gaudium, & lætitiam,
& in ſolennitates præclaras:
veritatem tantùm, & pacem
20 diligite. Hæc dicit Dominus
exercituum; Uſquequò veniant
populi, & habitent in civitatibus
21 multis, Et vadant habitatores,
unus ad alterum, dicentes;
Eamus, et deprecemur faciem
Domini, et quæramus Dominum
exercituum: vadam etiam ego.
22 Et venient populi multi, et
gentes robuſtæ ad quærendum
Dominum exercituum in Jeruſalem,
et deprecandam faciem
Domini.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

10 Διότι πρὸ τῶν ἡμερῶν ἐκείνων ὁ μισθὸς
τῶν ἀνθρώπων οὐκ ἔσται εἰς ὄνησιν, καὶ
ὁ μισθὸς τῶν κτηνῶν οὐχ (ι) ὑπάρξει,
καὶ τῷ ἐκπορευομένῳ καὶ τῷ εἰσπορευομένῳ
οὐκ ἔσται εἰρήνη ἀπὸ τῆς θλίψεως· καὶ
ἐξαποστελῶ πάντας τοὺς ἀνθρώπους, ἕκαστον
11 ἐπὶ τὸν πλησίον αὐτοῦ. Καὶ νῦν, οὐ κατὰ τὰς
ἡμέρας τὰς ἔμπροσθεν ἐγὼ ποιῶ τοῖς καταλοίποις
τοῦ λαοῦ τούτου, λέγει κύριος παντοκράτωρ,
12 Ἀλλ' ἢ δείξω εἰρήνην. ἡ ἄμπελος
δώσει τὸν καρπὸν αὐτῆς, καὶ ἡ γῆ
δώσει τὰ (κ) γενήματα αὐτῆς, καὶ ὁ οὐρανὸς
δώσει τὴν δρόσον αὐτοῦ, καὶ κατακληρονομήσω
τοῖς καταλοίποις τοῦ λαοῦ (λ)
13 μου τούτου ταῦτα πάντα. Καὶ ἔσται ὃν
τρόπον ἦτε ἐν κατάρᾳ ἐν τοῖς ἔθνεσιν
(μ) ὁ οἶκος Ἰούδα καὶ οἶκος Ἰσραήλ,
οὕτως διασώσω ὑμᾶς, καὶ ἔσεσθε ἐν εὐλογίᾳ.
θαρσεῖτε, καὶ κατισχύετε ἐν ταῖς χερσὶν
14 ὑμῶν. Διότι τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ,
Ὃν τρόπον διενοήθην τοῦ κακῶσαι
ὑμᾶς ἐν τῷ παροργίσαι με τοὺς πατέρας
15 ὑμῶν, λέγει κύριος παντοκράτωρ, Καὶ οὐ μετενόησα·
οὕτως παρατέταγμαι, καὶ διανενόημαι
ἐν ταῖς ἡμέραις ταύταις, τοῦ
καλῶς ποιῆσαι τὴν Ἰερουσαλὴμ, καὶ τὸν οἶκον
16 Ἰούδα· θαρσεῖτε. Οὗτοι οἱ λόγοι οὓς
ποιήσετε· λαλεῖτε ἀλήθειαν ἕκαστος
πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ, (ν) ἀλήθειαν καὶ
κρίμα εἰρηνικὸν κρίνατε ἐν ταῖς πύλαις ὑμῶν,
17 Καὶ ἕκαστος τὴν κακίαν τοῦ πλησίον
αὐτοῦ μὴ λογίζεσθε ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν,
καὶ ὅρκον ψευδῆ μὴ ἀγαπᾶτε· διότι (ξ)
ταῦτα πάντα ἐμίσησα, λέγει κύριος παντοκράτωρ.
18 Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου παντοκράτορος
19 πρὸς με, λέγων, Τάδε λέγει
κύριος παντοκράτωρ, Νηστεία ἡ τετρὰς, καὶ
νηστεία ἡ πέμπτη, καὶ νηστεία ἡ ἑβδόμη, καὶ
νηστεία ἡ δεκάτη ἔσονται τῷ οἴκῳ Ἰούδα
εἰς χαρὰν καὶ (ο) εὐφροσύνην, καὶ εἰς ἑορτὰς
ἀγαθάς· καὶ εὐφρανθήσεσθε, καὶ τὴν ἀλήθειαν
20 καὶ τὴν εἰρήνην ἀγαπήσατε. Τάδε
λέγει κύριος παντοκράτωρ, Ἔτι ἥξουσι
λαοὶ πολλοὶ, καὶ κατοικοῦντες πόλεις πολλὰς,
21 Καὶ συνελεύσονται κατοικοῦντες πέντε
πόλεις εἰς (π) μίαν πόλιν, λέγοντες, Πορευθῶμεν
δεηθῆναι τοῦ προσώπου κυρίου,
καὶ ἐκζητῆσαι τὸ πρόσωπον κυρίου παντοκράτορος·
22 πορεύσομαι κἀγώ. Καὶ ἥξουσι
λαοὶ πολλοὶ καὶ ἔθνη πολλὰ ἐκζητῆσαι τὸ
πρόσωπον κυρίου παντοκράτορος ἐν Ἰερουσαλὴμ,
καὶ (ρ) ἐξιλάσασθαι τὸ πρόσωπον κυρίου.

Quia ante dies illos merces hominum 10
non erit in lucrum, &
merces jumentorum non ſubſiſtet:
& egredienti, & ingredienti
non erit pax præ tribulatione:
& emittam omnes homines unumquemque
ſuper proximum
ſuum. Et nunc, non juxta dies 11
priores ego facio reliquiis populi
hujus, dicit Dominus omnipotens:
Sed pacem monſtrabo. 12
Vinea dabit fructum ſuum, &
terra dabit germina ſua, &
cœlum dabit rorem ſuum: &
poſſidere faciam reliquos populi
mei hujus hæc omnia. Et erit, 13
ſicut eratis in maledictione inter
gentes domus Juda, et domus
Iſrael; ſic ſalvabo vos, et eritis
in benedictione. Confidite, et
confortamini in manibus veſtris:
Quia hæc dicit Dominus omnipotens; 14
Sicut cogitavi, ut affligerem
vos in eo, quòd me ad
iracundiam provocâſſent patres
veſtri, dicit Dominus omnipotens,
Et non me pœnituit; ſic paratus 15
ſum, et cogitavi in diebus iſtis,
ut benefaciam Hieruſalem, et
domui Juda. Confidite. Iſti 16
ſermones ſunt, quos facietis:
Loquimini veritatem unuſquiſque
ad proximum ſuum: veritatem,
et judicium (a) pacificum
judicate in portis veſtris:
Et unuſquiſque malum proximi 17
ſui non cogitate in cordibus veſtris,
et juramentum mendax ne
diligatis: quia hæc omnia odi,
dicit Dominus omnipotens. Et 18
factus eſt ſermo Domini omnipotentis
ad me, dicens; Hæc dicit 19
Dominus omnipotens; Jejunium
(b) quartum, et jejunium quintum,
et jejunium ſeptimum, et
jejunium decimum erunt domui
Juda in gaudium, et lætitiam,
et in feſtivitates bonas. Et lætamini:
et veritatem, et pacem
diligite. Hæc dicit Dominus 20
omnipotens; Adhuc venient populi
multi, et habitatores urbium
multarum: Et congregabuntur, 21
qui habitant (c) quinque civitates,
in unam civitatem, dicentes;
Eamus, ut deprecemur faciem
Domini, et quæramus vultum
Domini omnipotentis: Vadam 22
etiam ego.' Et venient populi
multi, et gentes plurimæ, ut
quærant faciem Domini omnipotentis
in Hieruſalem, et ut exorent
faciem Domini.

MS. A. (ι) ὑπάρχει, (κ) γεννήματα (λ) μου πάντα ταῦτα. (μ) οἶκος Ἰούδα καὶ ὁ οἶκος Ἰσραήλ, (ν) καὶ κρίμα δίκαιον κρίνατε (ξ) πάντα ταῦτα (ο) εἰς εὐφροσύνην, (π) πόλιν μίαν, (ρ) τοῦ ἐξιλάσκεσθαι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 אֲרֵי קֳדָם מֵיתֵי יוֹמַיָא הָאִנּוּן אַגְרָא דֶאֱנָשָׁא לָא הֲוָה וְאַגְרָא דִבְעִירָא לֵיתוֹהִי וּלְנָפְקַיָא
11 וּלְעָלַיָא לֵית שְׁלָמָא מִן מְעִיקָא וְאַגְרֵית יַת כָּל אֱנָשָׁא גְּבַר בְּחַבְרֵיהּ׃ וּכְעַן לָא כְיוֹמַיָא
12 קַדְמָאֵי אֲנָא לִשְׁאָרָא דְעַמָּא הָדֵין אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת׃ אֲרֵי בְעִדָּנָא הַהִיא זַרְעָא יְהֵי שְׁלֵם
גּוּפְנָא תִתֵּן אִבַּהּ וְאַרְעָא תִתֵּן יַת עֲלַלְתַּהּ וּשְׁמַיָא יְשַׁמְשְׁנוּן בְּטַלְהוֹן וְאַחְסֵין לִשְׁאָרָא
13 דְעַמָּא הָדֵין יַת כָּל בִּרְכָתָא הָאִלֵּין׃ וִיהֵי כְּמָא דַהֲוֵיתוּן לְוָטָא בְּעַמְמַיָא בֵּית יְהוּדָה
14 וּבֵית יִשְׂרָאֵל כֵּן אֶפְרוֹק יַתְכוֹן וּתְהוֹן מְבָרְכִין לָא תִדְחֲלוּן יִתְקְפָן יְדֵיכוֹן׃ אֲרֵי
כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת כְּמָא דַחֲשִׁיבִית לְאַבְאָשָׁא לְכוֹן כַּד אַרְגִיזוּ אֲבָהָתְכוֹן קֳדָמַי
15 אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת וְלָא תָבֵית מִמֵּימְרִי׃ כֵּן תָּבֵית חֲשִׁיבֵית בְּיוֹמַיָא הָאִלֵּין לְאוֹטָבָא לְיָתְבֵי
16 יְרוּשְׁלֵם וּלְדְבֵית יְהוּדָה לָא תִדְחֲלוּן׃ אִלֵּין פִּתְגָמַיָא דִי תַעְבְדוּן מַלִּילוּ קוּשְׁטָא גְּבַר
17 בְּחַבְרֵיהּ קוּשְׁטָא וְדִינָא דִשְׁלָמָא דוּנוּ בְּקִרְוֵיכוֹן׃ וּגְבַר יַת בִּישַׁת חַבְרֵיהּ לָא
תַחְשְׁבוּן בְּלִבְּכוֹן וּשְׁבוּעֲתָא דְשִׁקְרָא לָא תִרְחֲמוּן אֲרֵי יַת כָּל אִלֵּין דִי רְחִיקִית
18 19 אֲמַר יְיָ׃ וַהֲוָה פִּתְגַם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ צְבָאוֹת עִמִּי לְמֵימַר׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ
צְבָאוֹת צוֹמָא רְבִיעָאָה וְצוֹמָא חֲמִישָׁאָה וְצוֹמָא שְׁבִיעָאָה וְצוֹמָא עֲשִׂירָאָה יְהֵי לְבֵית
20 יְהוּדָה לְבִיעַ וּלְחֶדְוָא וּלְמוֹעֲדִין טָבִין וְקוּשְׁטָא וּשְׁלָמָא רְחִימוּ׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ
21 צְבָאוֹת עוֹד דִיֵיתוּן עַמְמִין וְיָתְבֵי קִרְוִין סַגִיאָן׃ וִיהָכוּן יָתְבֵי חֲדָא עִם חֲדָא לְמֵימַר
נֵיזִיל מֵיזַל לְצַלָּאָה קֳדָם יְיָ וּלְמִתְבַּע אוּלְפָן מִן קֳדָם יְיָ צְבָאוֹת דֵין לְדֵין יֵימַר אֵיזִיל
22 אַף אֲנָא׃ וְיֵיתוּן עַמְמִין סַגִיאִין וּמַלְכִין רַבְרְבִין לְמִתְבַּע אוּלְפָן מִן קֳדָם יְיָ צְבָאוֹת
בִּירוּשְׁלֵם וּלְצַלָּאָה קֳדָם יְיָ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quia antequam venirent dies illi, merces hominis non erat, & merces ju- 10
mentorũ non erat, & ingredientibus & egredientibus non erat pax propter
tribulationẽ; & pugnare feci omnes homines unumquemq; contra proxi-
mũ ſuũ. Nunc autẽ non juxta dies antiquos reliquiis populi iſtius [*faciam,*] 11
ait Dñs exercituũ. Quoniã in tempore illo ſemen erit perfectũ; vitis produ- 12
cet fructũ ſuũ, & terra dabit ſuũ proventũ, quib⁹ cœli rore ſuo ſubminiſtra-
bunt, atque pro hæreditate donabo reliquias populi iſtius univerſis hiſce
benedictionibus. Erit ergo non ſecus ac maledicti fuiſtis, inter populos do- 13
mus Jehuda, domus itẽ Iſrael, ſic aſſeram vos, eritiſque benedicti: ne timea-
tis, roborentur manus veſtræ. Sic namque, inquit Dñs exercituum, Quem- 14
admodũ commentus ſum damna vobis inferre, cùm me ad iracundiã pro-
vocâſſent patres veſtri, ait Dñs exercituũ; nec pœnituit *me verbi mei.* Ita 15
converſus propoſui iſtis diebus bona elargiri habitatoribus Jeruſalẽ, & do-
mui Jehuda, ne timeatis. Hæc ſunt verba quæ opere complebitis: veritatẽ 16
loquimini quiſq; cùm proximo ſuo, & judiciũ pacificũ in civitatibus veſtris
judicate. Nec ull⁹ perniciẽ proximi ſui in cordibus veſtris cogitetis, & jura- 17
mentũ falſum ne diligatis, quia hæc ſunt omnia quæ averſor, dicit Dñs. Et 18
factũ eſt propheticũ verbum à Dño exercituũ mecum, dicendo: Sic dicit 19
Dñs exercituum, Jejunium quartum & jejunium quintum, jejuniumq; ſepti-
mum ac jejunium decimum vertetur domui Jehuda in gaudium & læ-
titiam, & in jocundas feſtivitates: veritatis & pacis propterea eſtote
ſtudioſi. Sic dicit Dominus exercituum, Adhuc populi venient & ur- 20
bium habitatores plures. Et ibunt unius incolæ cum alterius [*urbis* 21
habitatoribus,] dicentes: Euntes eamus oratum faciem Domini, & quæ-
ſitum doctrinam à Domino exercituum. Iſte huic dicet, Ibo etiam ego.
Quamobrem populi complures et regna magna confluent in Jeruſalem 22
poſtulandæ doctrinæ causâ à Domino exercituum, et ut conſpectum ejus
exorent.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܕܩܕܡ ܝܘܡܬܐ ܗܠܝܢ ܘܩܕܡ ܙܒܢܐ ܗܘ܂ ܐܓܪܐ ܠܒܢܝܢܫܐ ܠܐ ܗܘܐ܂ ܘܐܦ 10
ܠܐ ܠܒܥܝܪܐ܂ ܘܠܢܦܩ ܘܠܥܐܠ ܠܐ ܗܘܐ ܫܠܡܐ ܡܢ ܩܕܡ ܐܘܠܨܢܐ܂ ܘܗܐ ܡܫܕܪ ܗܘܝܬ
ܠܒܢܝܢܫܐ ܟܠܗܘܢ ܚܕ ܠܘܬ ܚܒܪܗ܂ * ܡܛܠ ܠܐ ܗܘܝܬ ܐܝܟ ܕܒܩܕܡܝܬܐ 11
ܥܡ ܫܪܟܐ܂ ܕܥܡܐ ܗܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ܂ * ܡܛܠ ܕܙܪܥܐ ܢܗܘܐ ܒܫܠܡܐ܂ 12
ܘܓܦܬܐ ܬܬܠ ܦܐܪܗ܂ ܘܐܪܥܐ ܬܬܠ ܥܠܠܬܗ܂ ܘܫܡܝܐ ܢܬܠܘܢ ܛܠܗܘܢ܂ ܘܐܘܪܬ ܠܫܪܟܗ
ܕܥܡܐ ܗܢܐ ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ܂ * ܐܝܟ ܕܗܘܝܬܘܢ ܠܘܛܬܐ ܒܥܡܡܐ ܕܒܝܬ ܝܗܘܕܐ ܘܕܒܝܬ 13
ܐܝܣܪܝܠ܂ ܗܟܢܐ ܐܦܪܘܩܟܘܢ܂ ܘܬܗܘܘܢ ܠܒܘܪܟܬܐ܂ ܘܢܬܚܝܠܢ ܐܝܕܝܟܘܢ܂ ܘܠܐ ܬܕܚܠܘܢ܂
* ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ܂ ܐܝܟ ܕܐܬܚܫܒܬ ܠܡܒܐܫܘ ܠܟܘܢ܂ ܟܕ ܐܪܓܙܘܢܢܝ 14
ܐܒܗܝܟܘܢ܂ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ܂ ܘܐܬܬܘܝܬ܂ * ܗܟܢܐ ܬܒܬ ܘܐܬܚܫܒܬ ܒܝܘܡܬܐ 15
ܗܠܝܢ܂ ܠܡܛܒܘ ܠܐܘܪܫܠܡ ܘܠܒܝܬ ܝܗܘܕܐ܂ ܠܐ ܬܕܚܠܘܢ܂ * ܗܠܝܢ ܦܬܓܡܐ ܕܬܥܒܕܘܢ܂ 16
ܡܠܠܘ ܩܘܫܬܐ ܐܢܫ ܥܡ ܚܒܪܗ܂ ܘܩܘܫܬܐ܃ ܘܕܝܢܐ ܫܠܡܐ ܕܘܢܘ ܒܬܪܥܝܟܘܢ܂
* ܘܐܢܫ ܠܚܒܪܗ ܒܝܫܬܐ܂ ܠܐ ܬܬܚܫܒܘܢ ܒܠܒܘܬܟܘܢ܂ ܘܡܘܡܬܐ ܕܫܘܩܪܐ ܠܐ ܬܪܚܡܘܢ܂ 17
ܡܛܠ ܕܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ ܣܢܝܬ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ܂ * ܘܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ 18
ܐܚܝܕ ܟܠ ܠܡܐܡܪ܂ * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ܂ ܨܘܡܐ ܕܪܒܝܥܝܐ ܘܨܘܡܐ ܕܚܡܝܫܝܐ܂ ܘܨܘܡܐ 19
ܕܫܒܝܥܝܐ ܘܨܘܡܐ ܕܥܣܝܪܝܐ܂ ܢܗܘܘܢ ܠܒܝܬ ܝܗܘܕܐ܂ ܠܚܕܘܬܐ ܘܠܒܣܝܡܘܬܐ ܘܠܥܐܕܐ ܛܒܐ܂
ܘܫܠܡܐ ܘܫܪܪܐ ܐܚܒܘ܂ * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ܂ ܬܘܒ ܢܐܬܘܢ ܥܡܡܐ ܥܡܘܪܐ 20
ܕܡܕܝܢܬܐ ܣܓܝܐܬܐ܂ * ܘܢܐܙܠܘܢ ܥܡܘܪܝ ܚܕܐ ܠܘܬ ܚܕܐ܃ ܘܢܐܡܪܘܢ܂ ܬܘ ܢܐܙܠ ܘܢܨܠܐ ܩܕܡ 21
ܡܪܝܐ܂ ܘܢܒܥܐ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ܂ ܘܐܙܠ ܐܦ ܐܢܐ܂ * ܘܢܐܬܘܢ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ ܘܥܡܡܐ 22
ܥܫܝܢܐ܂ ܠܡܒܥܐ ܠܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ ܒܐܘܪܫܠܡ܂ ܘܠܡܨܠܝܘ ܩܕܡ ܡܪܝܐ܂

* Nam ante dies illos & ante tempus illud nulla 10
erat merces homini aut jumento, neque ulla
egredienti aut ingredienti pax erat à conſpectu
obſidentis; nam ecce committebam
omnes homines alterum cum altero. Poſthac 11
non me geram ut priſtinis diebus, cum reliquiis
hujus populi, dicit Dominus potentiſſimus:
Quoniam ſementis erit in pace, vinea 12
proferet fructum ſuum, terra dabit proventū
ſuum, cœli ſuppeditabunt rorem ſuum; &
efficiam ut reliquiæ hujus populi poſſideant
hæc omnia. Quemadmodum fuiſtis maledictioni 13
inter gentes O Judæi & Iſraelitæ, ita
ſervabo vos, & eritis benedictioni. Itaque
confortentur manus veſtræ, & ne timeatis;
Quia ſic dicit Dominus potentiſſimus; Quemadmodum 14
propoſuerā malo vos afficere quando
ad iram provocaverunt me patres veſtri,
dicit Dominus potentiſſimus, tamen *propoſitū*
revocavi: Ita converſus decrevi diebus iſtis 15
bono afficere Jeroſolymam & Judæos: ne timeatis.
Res iſtas facite: loquimini veritatē 16
alter cum altero: veritatem, judiciū, & pacē
judicate in portis veſtris: Alter in alterum 17
ne cogitetis malum in corde veſtro: & juramenta
falſa ne diligatis: quoniā hæc omnia
odi, ait Dominus potentiſſimus. Et factus eſt 18
ad me ſermo Domini potentiſſimi, dicendo;
Sic ait Dñs potentiſſimus; Jejuniū quartum, 19
jejuniū quintū, jejunium ſeptimum, et jejuniū
decimum, erunt Judæis in exultationem, &
lætitiam, & ſolennitates fauſtas: pacem autem
& veritatē diligite. Sic ait Dominus potentiſſimus; 20
Deinceps venient populi cives urbium
multarū, Ibuntque cives unius ad alteram, 21
et dicent; Agite, eamus ad orandum
coram Domino, et deprecandum Dominum
potentiſſimum: et *reſpondebit*, Ibo etiam ego:
Sic ibunt gentes multæ & ingentes populi ad 22
rogandum Dominum potentiſſimum in Jeruſalem,
et ad orandum coram Domino.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

10 * من اجل انه قبل تلك الايام اجر البشر لم تكن للنفع * واجر البهايم ليست موجوده *
والخارج والداخل ليست له سلامه من المضطهد * وارسل كل البشر كل واحد على صاحبه *
11 * والان ليس كالايام التي من قبل انا اصنع لبقايا هذا الشعب * يقول الرب الضابط
12 الكل * لكني اظهر سلامه * الكرمه تعطي ثمرها * والارض تعطي غلاتها * والسماء تعطي
13 طلها * واورث لبقايا شعبي هذه كلها * ويكون كما كنتم في لعنه في الامم يا بيت يهودا
وبيت اسرايل * هكذا ساخلصكم * وتكونون في بركه * تقووا وتقووا بايديكم *
14 * من اجل انه هكذا يقول الرب الضابط الكل * كما فكرت ان اضربكم عندما
15 اغضبني اباوكم يقول الرب الضابط الكل * ولم ارجع * هكذا امرت وهممت في هذه
16 الايام ان احسن الي ايروسليم وبيت يهودا. تقووا * هذه الاقوال التي تصنعونها. تكلموا بالحق
17 كل واحد مع صاحبه بالحقيقه * واحكموا حكما سلاميا في ابوابكم * وكل واحد
لا يفكر سرا في صاحبه في قلوبكم * ولا تحبوا اليمين الكاذبه * من اجل اني ابغضت هذه
18 19 كلها يقول الرب الضابط الكل * وكان قول الرب الضابط الكل الي قايلا * هكذا يقول
الرب الضابط الكل * الصوم الرابع * والصوم الخامس * والصوم السابع * والصوم العاشر *
يكون لبيت يهودا للفرح والسرور * وللاعياد الصالحه * وتسرون * فاحبوا الحق والسلامه *

* الاصحاح الثامن والعشرون * وهو الرابع من النبوه *

20 * هكذا يقول الرب الضابط الكل * تاتي ايضا شعوب كثيرين * وتسكن مدنا كثيرين *
21 * وتجتمع سكان خمس مدن الي مدينه واحده * قايلين نمضي لنطلب من وجه الرب
22 ونبتغي وجه الرب الضابط الكل * وانطلق انا * وتاتي شعوب كثيرين وامم كثيرين
لتطلب وجه الرب الضابط الكل في ايروسليم * وليستغفروا وجه الرب *

* *Nam ante dies illos merces hominum non* 10
erat in emolumentum, & merces jumentorum
non exiſtebat, & ingrediens atque
egrediens pacem non habebat, propter
perſecutorem: & omnes mortales mittebam
quemque in ſocium ſuum. Nunc 11
autem nequaquam ut præteritis diebus,
faciam reliquiis hujus populi, dicit Dominus
omnipotens; Sed pacem oſtendam. 12
Vitis dabit fructum ſuum, terra dabit
fruges ſuas, & cœlum dabit rorem
ſuum; & poſſidendum dabo reliquiis
populi mei hæc omnia. Et fiet, ut 13
quemadmodum fuiſtis in maledictione inter
gentes, O domus Judæ & domus
Iſraelis; ita liberem vos, & ſitis in
benedictione. Conſortamini, & corroboramini
in manibus veſtris; Quia ſic ait 14
Dominus omnipotens, Quemadmodum
decernebam percutere vos quando irritabant
me patres veſtri, nec à propoſito
diſcedebam: Ita præcipio & ſtudeo hiſce 15
diebus benefacere Jeroſolymis & domui
Judæ: confidite. Hi ſunt ſermones 16
quos facietis: Loquimini veritatem
quiſque cum ſocio ſuo ſinceré: judicate
judicium pacificum in portis veſtris:
Nemo machinetur malum contra 17
ſocium ſuum in cordibus veſtris: & ne
diligatis juramentum falſum: quia hæc
omnia odi, ait Dominus omnipotens.
Et fuit ſermo Domini omnipotentis ad 18
me, dicens; Sic dicit Dominus omnipotens; 19
Jejunium quartū, jejuniū quintum,
jejunium ſeptimū, & jejunium decimum,
erunt domui Judæ in lætitiam & exultationem,
& in ſolennitates bonas; ac
lætamini: verum diligite & pacem.

Textus vigeſimus octavus, hujus
autem prophetiæ quartus.

* *Sic dicit Dominus omnipotens; Venient* 20
adhuc populi multi, & habitabunt
urbes multas: Et convenient cives quinque 21
urbium in urbem unam, dicentes;
Eamus deprecatum vultum Domini, &
quæſitum faciem Domini omnipotentis:
Vadam & ego. Et venient populi multi 22
& gentes copioſæ quæſitum faciem Domini
omnipotentis in Jeruſalem, &
veniam poſtulatum à facie Domini.

זכריה : ט

apprehendent quum ,Illis diebus In : exercituum Dominus dixit Sic
23 כֹּה־אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת בַּיָּמִים הָהֵמָּה אֲשֶׁר יַחֲזִיקוּ
oram in apprehendent & : gentium linguis omnibus ex homines decem
עֲשָׂרָה אֲנָשִׁים מִכֹּל לְשֹׁנוֹת הַגּוֹיִם וְהֶחֱזִיקוּ בִּכְנַף
Deum audivimus quia ,vobiſcum Ibimus : dicendo ,Jehudæi viri
אִישׁ יְהוּדִי לֵאמֹר נֵלְכָה עִמָּכֶם כִּי שָׁמַעְנוּ אֱלֹהִים
.vobiſcum
עִמָּכֶם :

CAP. IX. ט

Dammeſec & ,Chadrach terra in Domini verbi *Onus*
1 מַשָּׂא דְבַר־יְהוָה בְּאֶרֶץ חַדְרָךְ וְדַמֶּשֶׂק
tribuum omnium & ,hominis oculus Dominum ad quia : ejus requiei
מְנֻחָתוֹ כִּי לַיהוָה עֵין אָדָם וְכֹל שִׁבְטֵי
,Sidon & ,Sor ,ea in terminabit Chamath etiam Et .Iſrael
2 יִשְׂרָאֵל : וְגַם־חֲמָת תִּגְבָּל־בָּהּ צֹר וְצִידוֹן
: ſibi munitionem Sor ædificavit Et .valde fuit ſapiens quia
3 כִּי חָכְמָה מְאֹד : וַתִּבֶן צוֹר מָצוֹר לָהּ
lutum ut ,aurum & ,*pulverem* tanquam argentum coacervavit &
וַתִּצְבָּר־כֶּסֶף כֶּעָפָר וְחָרוּץ כְּטִיט
mari in percutiet & ,eam faciet expellere Dominus Ecce .platearum
4 חוּצוֹת : הִנֵּה אֲדֹנָי יוֹרִשֶׁנָּה וְהִכָּה בַיָּם
,Aſchelon Videbit .*comedetur* igni in ipſa & : ejus fortitudinem
5 חֵילָהּ וְהִיא בָּאֵשׁ תֵּאָכֵל : תֵּרֶא אַשְׁקְלוֹן
pudebit quoniam ,Hecron & ; valde dolebit & ,Hazzah & ; timebit &
וְתִירָא וְעַזָּה וְתָחִיל מְאֹד וְעֶקְרוֹן כִּי־הוֹבִישׁ
.habitabitur non Aſchelon & ,Hazzah de rex peribit & : ejus aſpectus
מֶבָּטָהּ וְאָבַד מֶלֶךְ מֵעַזָּה וְאַשְׁקְלוֹן לֹא תֵשֵׁב :
.Peliſtim ſuperbiam faciam ſuccidere & :Aſdod in ſpurius habitabit Et
6 וְיָשַׁב מַמְזֵר בְּאַשְׁדּוֹד וְהִכְרַתִּי גְּאוֹן פְּלִשְׁתִּים :
ejus abominationes & ,ejus ore de ejus *ſanguines* faciam removere Et
7 וַהֲסִרֹתִי דָמָיו מִפִּיו וְשִׁקֻּצָיו
erit & : noſtro Deo ipſe etiam relinquetur & ,ejus *dentes inter* ex
מִבֵּין שִׁנָּיו וְנִשְׁאַר גַּם־הוּא לֵאלֹהֵינוּ וְהָיָה
caſtrametabor Et .Jebuſæus ſicut Hecron & ,Jehudah in dux veluti
8 כְּאַלֻּף בִּיהוּדָה וְעֶקְרוֹן כִּיבוּסִי : וְחָנִיתִי
tranſibit non & ; redeunte à & ,tranſeunte à exercitu ab ,meæ domui
לְבֵיתִי מִצָּבָה מֵעֹבֵר וּמִשָּׁב וְלֹא־יַעֲבֹר
Exulta .meis oculis in vidi nunc quia : exactor ultrà eos ſuper
9 עֲלֵיהֶם עוֹד נֹגֵשׂ כִּי־עַתָּה רָאִיתִי בְעֵינָי : גִּילִי
veniet tuus rex Ecce .Jeruſalaim filia jubila ,Sijon filia valde
מְאֹד בַּת־צִיּוֹן הָרִיעִי בַּת יְרוּשָׁלַםִ הִנֵּה מַלְכֵּךְ יָבוֹא
ſuper & ,aſinum ſuper equitans & ,humilis: ipſe ſalvatus & ,juſtus tibi
לָךְ צַדִּיק וְנוֹשָׁע הוּא עָנִי וְרֹכֵב עַל־חֲמוֹר וְעַל־
,Ephraim de *currum* faciam ſuccidere Et .*aſinarum* filium pullum
10 עַיִר בֶּן־אֲתֹנוֹת : וְהִכְרַתִּי־רֶכֶב מֵאֶפְרַיִם
pacem loquetur & ,*belli* arcus *ſuccidetur* & : Jeruſalaim de *equum* &
וְסוּס מִירוּשָׁלַםִ וְנִכְרְתָה קֶשֶׁת מִלְחָמָה וְדִבֶּר שָׁלוֹם
ad uſque flumine à & ,mare ad uſque mari à ejus poteſtas & : gentibus
לַגּוֹיִם וּמָשְׁלוֹ מִיָּם עַד־יָם וּמִנָּהָר עַד־
emiſi : tui fœderis ſanguine in tu Etiam .terræ *fines*
11 אַפְסֵי־אָרֶץ : גַּם־אַתְּ בְּדַם־בְּרִיתֵךְ שִׁלַּחְתִּי
,*munitionem* ad Convertimini .*ea in* aqua non ciſterna de tuos vinctos
12 אֲסִירַיִךְ מִבּוֹר אֵין מַיִם בּוֹ : שׁוּבוּ לְבִצָּרוֹן
.tibi reddam *duplum* annuntians hodie etiam : *ſpei* vincti
אֲסִירֵי הַתִּקְוָה גַּם־הַיּוֹם מַגִּיד מִשְׁנֶה אָשִׁיב לָךְ :

Verſio VULG. LAT.

23 Hæc dicit Dominus exercituum;
In diebus illis, in quibus apprehendent
decem homines, ex
omnibus linguis gentium, & apprehendent
fimbriam viri Judæi,
dicentes; Ibimus vobiſcum: audivimus
enim quoniam Deus vobiſcum eſt.

CAP. IX.

1 ONus verbi Dñi in terra Hadrach,
& Damaſci requiei ejꝰ:
quia Dñi eſt oculus hominis, &
2 omniũ tribuũ Iſrael. Emath quoque
in terminis ejus, & Tyrus, &
Sidon: aſſumpſerunt quippe ſibi
3 ſapientiam valdè. Et ædificavit
Tyrus munitionem ſuam,
et coacervavit argentum quaſi
humum, & aurum ut lutum platearum.
4 Ecce Dominus poſſidebit
eam, & percutiet in mari fortitudinem
ejus, & hæc igni devorabitur.
5 Videbit Aſcalon, & timebit;
& Gaza, & dolebit nimis; &
Accaron, quoniã confuſa eſt ſpes
ejus: & peribit rex de Gaza, &
6 Aſcalon non habitabitur. Et ſedebit
ſeparator in Azoto, & diſperdam
ſuperbiam Philiſthinorum.
7 Et auferam ſanguinem ejus de
ore ejus, & abominationes ejus
de medio dentium ejus, & relinquetur
etiam ipſe Deo noſtro,
& erit quaſi dux in Juda,
& Accaron quaſi Jebuſæus.
8 Et circumdabo domũ meã ex his
qui militant mihi euntes & revertentes,
& non tranſibit ſuper
eos ultrà exactor: quia nunc vidi
9 in oculis meis. Exulta ſatìs,
filia Sion; jubila, filia Jeruſalem:
ECCE REX TUUS veniet
tibi juſtus, & ſalvator: ipſe pauper,
& aſcendens ſuper aſinam,
& ſuper pullum filium aſinæ.
10 Et diſperdam quadrigam ex Ephraim,
& equum de Jeruſalem,
& diſſipabitur arcus belli: & loquetur
pacem Gentibus, & poteſtas
ejus à mari uſque ad mare,
& à fluminibus uſque ad fines
11 terræ. Tu quoque in ſanguine
teſtamenti tui emiſiſti vinctos
tuos de lacu, in quo non eſt
12 aqua. Convertimini ad munitionem,
vincti ſpei: hodiè quoque
annuntians duplicia reddam tibi.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

23 Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Ἐν ταῖς
ἡμέραις ἐκείναις, ἐὰν ἐπιλάβωνται δέκα
ἄνδρες ἐκ πασῶν τῶν γλωσσῶν τῶν ἐθνῶν,
καὶ ἐπιλάβωνται τοῦ κρασπέδου ἀνδρὸς Ἰουδαίου,
λέγοντες, Πορευσόμεθα μετὰ σοῦ, διότι
ἀκηκόαμεν ὅτι (σ) ὁ θεὸς μεθ᾽ ὑμῶν ἐστίν.

Hæc dicit Dominus omnipotens; 23
In diebus illis, ſi apprehenderint
decem viri de omnibus linguis
gentium, & tenuerint fimbriam
viri Judæi, dicentes; Ibimus
tecum, quia audivimus, quòd
Deus vobiſcum eſt.

MS. A. (σ) θεὸς μετὰ σοῦ ἐστίν.

ΚΕΦ. Θ.

1 Λῆμμα λόγου κυρίου ἐν γῇ (α) Σεδρὰχ,
καὶ Δαμασκοῦ θυσία αὐτοῦ, διότι κύριος ἐφορᾷ
ἀνθρώπους καὶ πάσας φυλὰς τοῦ Ἰσραήλ·
2 Καὶ (β) ἐν Ἡμὰθ ἐν τοῖς ὁρίοις αὐτῆς Τύρος
3 καὶ Σιδὼν, διότι ἐφρόνησαν σφόδρα. Καὶ ᾠκοδόμησε
Τύρος ὀχυρώματα αὐτῇ, καὶ ἐθησαύρισεν
ἀργύριον ὡς χοῦν, καὶ συνήγαγε
4 χρυσίον ὡς πηλὸν ὁδῶν. (γ) Καὶ διὰ τοῦτο
κύριος κληρονομήσει (δ) αὐτοὺς, καὶ πατάξει
εἰς θάλασσαν δύναμιν αὐτῆς, καὶ αὕτη
5 ἐν πυρὶ καταναλωθήσεται. Ὄψεται Ἀσκάλων,
καὶ φοβηθήσεται, καὶ Γάζα, καὶ ὀδυνηθήσεται
σφόδρα, καὶ Ἀκκάρων, ὅτι ᾐσχύνθη
(ε) ἐπὶ τῷ παραπτώματι αὐτῆς. καὶ ἀπολεῖται
(ζ) βασιλεὺς ἐκ Γάζης, καὶ Ἀσκάλων οὐ μὴ
6 κατοικηθῇ. Καὶ κατοικήσουσιν ἀλλογενεῖς
ἐν Ἀζώτῳ, καὶ καθελῶ ὕβριν ἀλλοφύλων,
7 Καὶ ἐξαρῶ τὸ αἷμα αὐτῶν ἐκ στόματος
αὐτῶν, καὶ τὰ βδελύγματα (η) αὐτῶν ἐκ
μέσου ὀδόντων αὐτῶν. καὶ ὑπολειφθήσονται
καὶ οὗτοι τῷ θεῷ ἡμῶν, καὶ ἔσονται ὡς χιλίαρχος
ἐν Ἰούδᾳ, καὶ Ἀκκάρων ὡς ὁ Ἰεβουσαῖος.
8 Καὶ ὑποστήσομαι τῷ οἴκῳ μου (θ) ἀνάστημα τοῦ
μὴ διαπορεύεσθαι, μηδὲ ἀνακάμπτειν, καὶ οὐ
μὴ ἐπέλθῃ ἐπ᾽ αὐτοὺς οὐκέτι ἐξελαύνων,
διότι νῦν ἑώρακα (ι) ἐν τοῖς ὀφθαλμοῖς
9 μου. Χαῖρε σφόδρα θύγατερ Σιὼν, κήρυσσε
θύγατερ Ἱερουσαλήμ· ἰδοὺ ὁ βασιλεύς
σου ἔρχεταί σοι δίκαιος καὶ σώζων,
αὐτὸς πραῢς, καὶ ἐπιβεβηκὼς ἐπὶ ὑποζύγιον
10 καὶ πῶλον νέον. Καὶ (κ) ἐξολοθρεύσει
ἅρματα ἐξ Ἐφραὶμ, καὶ ἵππον ἐξ Ἱερουσαλὴμ,
καὶ (λ) ἐξολοθρεύσεται τόξον
πολεμικὸν, καὶ πλῆθος καὶ εἰρήνη ἐξ ἐθνῶν,
καὶ κατάρξει ὑδάτων ἕως θαλάσσης, καὶ ποταμῶν
11 διεκβολὰς γῆς. Καὶ σὺ ἐν αἵματι
διαθήκης (μ) σου ἐξαπέστειλας δεσμίους σου
12 ἐκ λάκκου οὐκ ἔχοντος ὕδωρ. (ν) Καθήσεσθε
ἐν ὀχυρώμασι δέσμιοι τῆς συναγωγῆς,
καὶ ἀντὶ μιᾶς ἡμέρας παροικεσίας
σου διπλᾶ ἀνταποδώσω σοι,

CAP. IX.

ASſumptio verbi Domini in 1
terra (a) Sedrach, & Damaſci
(b) ſacrificium ejus: quia Dominus
reſpicit homines, & omnes
tribus Iſrael. Et in Emath in 2
(c) finibus ejus Tyrus, & Sidon:
quoniam ſapientes fuerunt nimis:
Et ædificavit Tyrus munitiones 3
ſuas, & theſaurizavit argentum,
ut humum, & congregavit aurum,
ut lutum viarum. Et propterea 4
Dominus poſſidebit eos, et
percutiet in mari fortitudinem
ejus: & ipſa in igne concremabitur.
Videbit Aſcalon, 5
& timebit: & Gaza, & dolebit
nimis: & Accaron, quoniam
confuſa eſt (d) ſuper ruina
ſua. Et peribit rex de Gaza:
& Aſcalon non habitabitur:
Et habitabunt alienigenæ in Azoto. 6
Et deſtruam injuriam alienigenarum,
Et auferam ſanguinem 7
eorum de ore illorum, &
abominationes eorum de medio
dentium illorum. Et relinquentur
& iſti Deo noſtro, & erunt,
ut Chiliarchus in Juda, & Accaron,
ſicut Jebuſæus. Et ſupponam 8
domui meæ elevationem,
ut non pertranſeat, neque (e) revertatur,
& nequaquam ſuperveniat
eis ultrà abactor: quia
nunc vidi in oculis meis. Gaude 9
vehementer, filia Sion; (f) prædica,
filia Hieruſalem. Ecce rex
(g) tuus venit tibi juſtus, & ſalvans,
ipſe (h) manſuetus, & aſcendens
ſuper ſubjugalem, &
pullum (i) novum. Et diſperdet 10
quadrigas ex Ephraim, & equum
de Hieruſalem: & (k) diſperdetur
arcus bellicus, & (l) multitudo,
& pax ex gentibus: &
dominabitur (m) aquis uſque ad
mare, & fluminibus exitus terræ.
Et tu in ſanguine teſtamenti 11
(n) tui emiſiſti vinctos
tuos de lacu, qui non habet aquam.
Sedebitis in munitionibus 12
vincti congregationis: et pro una
die peregrinationis tuæ duplicia
reddam tibi:

MS. A. (α) Σεδρὰκ, (β) Ἡμὰθ (γ) Διὰ τοῦτο (δ) αὐτὴν, καὶ πατάξει
εἰς θάλασσαν τὴν δύναμιν (ε) ἀπὸ τῆς ἐλπίδος αὐτῆς. (ζ) βασιλεία ἀπὸ
Γάζης, (η) * αὐτοῦ (θ) ἀνάστημα, (ι) τοῖς (κ) ἐξολεθρεύσει (λ) ἐξολεθρευθήσεται
(μ) ἐξαπέστειλας τοὺς δεσμίους (ν) Καὶ θήσονται ἐν ὀχυρώμασι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

23 כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת בְּיוֹמַיָּא הָאִנּוּן דִּי יִתְקְפוּן עַשְׂרָא גַבְרִין מִכֹּל לִישָּׁנֵי עַמְמַיָּא וְיִתְקְפוּן
בִּכְנַף גְּבַר יְהוּדִי לְמֵימַר נֵיזֵיל עִמְּכוֹן אֲרֵי שְׁמַעְנָא דְמֵימְרָא דַיְיָ בְּסַעְדְּכוֹן :

ט

1 מַטַּל פִּתְגָמָא דַיְיָ בְּאַרְעָא דָרוֹמָא וְדַמֶּשֶׂק תְּתוּב לְמֶהֱוֵי מֵאֲרַע בֵּית שְׁכִנְתֵּיהּ אֲרֵי קֳדָם יְיָ
2 גְּלַן עוֹבָדֵי בְּנֵי אֱנָשָׁא אִתְרְעֵי בְּכָל שִׁבְטַיָּא דְיִשְׂרָאֵל : וְאַף חֲמָת תְּתוּב לְמֶהֱוֵי מֵאֲרַע בֵּית
3 שְׁכִנְתֵּיהּ צוֹר וְצִידוֹן אֲרֵי תְקִיפַת לַחֲדָא : וּבְנַת צוֹר תּוּקְפָא לַהּ וְכַנְשַׁת כַּסְפָּא כְּעַפְרָא
4 5 וְדַהֲבָא כְּסִין שׁוּקִין : הָא יְיָ מְתָרֵךְ לַהּ וְיִרְמֵי בְּיַמָּא עֻתְרַהּ וְהִיא בְּנוּרָא תִתּוֹקַד : תֶּחֱזֵי
אַשְׁקְלוֹן וְתִדְחַל וְעַזָּה וּתְזוּעַ לַחֲדָא וְעֶקְרוֹן אֲרֵי בְהִיתַת מִבֵּית רוּחְצָנַהּ וְיֵיבַד מַלְכָּא
6 מֵעַזָּה וְאַשְׁקְלוֹן לָא תִתְיְתֵב : וִיתוּבוּן בֵּית יִשְׂרָאֵל בְּאַשְׁדּוֹד דַּהֲווֹ בַהּ כְּנוּכְרָאִין
7 וְאֲבַטֵּל רְבוּת פְּלִשְׁתָּאֵי : וְאֱשֵׁיצֵי אָכְלֵי דְמָא וְשִׁקְצָא מִבֵּינֵיהוֹן וִיסוּף חֵילְהוֹן וְגִיּוֹרִין
דִּי יִשְׁתַּאֲרוּן בְּהוֹן יִתּוֹסְפוּן אַף אִנּוּן עַל עַמָּא דֶאֱלָהָנָא וִיהוֹן כְּרַבְרְבִין דְּבֵית יְהוּדָה
8 וְעֶקְרוֹן תִּתְמְלֵי בֵּית יִשְׂרָאֵל כִּירוּשְׁלֵם : וְאַשְׁרֵי בְּבֵית מַקְדְּשִׁי שְׁכִינַת יְקָרִי וְתָקוֹף
דְּרָע גְּבוּרְתִּי כְּשׁוּר דְּאֶשָּׁא מוּקַף לַהּ סְחוֹר סְחוֹר מִדְּעָדֵי וּמִדְּתָאֵב וְלָא יֶעְבַּר עֲלֵיהוֹן
9 עוֹד שׁוּלְטָן אֲרֵי כְעַן גַּלֵּית גְּבוּרְתִּי לְאוֹטָבָא לְהוֹן : בּוּעִי לַחֲדָא כְּנִשְׁתָּא דְצִיּוֹן
וּבוּעִי כְּנִשְׁתָּא דִירוּשְׁלֵם הָא מַלְכִּיךְ אָתֵי לְנַיְיךְ זַכַּי וּפָרִיק הוּא עִנְוְתָן וְרָכֵב עַל
10 חֲמָרָא וְעַל עֵיר בַּר אֲתָן : וְאֱשֵׁיצֵי רְתִיכִין מֵאֶפְרַיִם וְסוּסְוָן מִירוּשְׁלֵם וְאֶתְבַּר תְּקוֹף עָבְדֵי
קְרָב מַשְׁרְיַת עַמְמַיָּא וִידִין שְׁלָמָא לְמַלְכְוָתָא וְיִשְׁלוֹט מִיַּמָּא עַד מַעְרְבָא וּמִפְּרָת עַד סְיָפֵי
11 אַרְעָא : אַף אַתּוּן דִּי עַל דְּמָא אִתְגְּזַר לְכוֹן קְיָם פְּרָקִית יָתְכוֹן מִשִּׁעְבּוּד מִצְרָאֵי סַפְּקִית
12 צָרְכֵיכוֹן בְּמַדְבַּר צְדֵי הָא כְּגוּב רֵיקָן דְּלֵית מַיִן בֵּיהּ : תּוּבוּ לְמֶהֱוֵי כְּרַכִּין תַּקִּיפִין
אֲסִירַיָּא דִּמְסַבְּרִין לְפוּרְקָנָא אַף יוֹמָא דֵין אֶשְׁלַח לְחַוָּאָה לְכוֹן דִּי עַל חַד תְּרֵין בְּטָבְוָן דִּי
אֲמָרִית לְכוֹן אַיְתֵי לְכוֹן :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Sic dicit Dñs exercituum: In diebus illis in quibus apprehendent decem 23
viri ex omnibus linguis populorum, apprehendent [*inquam*] fimbriam viri
Judæi, dicentes: Ibimus vobiſcum: audivimus enim quòd verbum Domini ſit in adjutorium veſtrum.

CAPUT. IX.

ONus verbi Dñi in terra Auſtrali, & Damaſcꝰ convertetur ut ſit de terra 1
domus majeſtatis ejus, quia coram Dño manifeſta ſunt opera filiorum hominum,
& ſibi complacet in omnibus tribubus Iſrael. Emath quoq; conver- 2
tetur ut ſit de terra domus majeſtatis ejus; & Tyrus & Sidon, quia confortatæ
ſunt valde. Et ædificavit Tyrus munitionem ſibi, & congregavit argen- 3
tum quaſi pulverem, & aurũ quaſi lutum platearum. Ecce Dñs ejiciet eam 4
& projiciet divitias ejus in mare: & ipſa igne ſuccendetur. Videbit Aſcalon 5
& timebit; & Gaza, & contremiſcet nimis; & Acharon, quoniam confuſa
eſt à domo confidentiæ ſuæ: & peribit rex de Gaza, & Aſcalon non habitabitur.
Et habitabunt domus Iſrael in Azoto qui erant in ea quaſi alieni, 6
& ceſſare faciam magnitudinem Philiſtinorum. Et diſperdam comedentes 7
ſanguinem et abominationem de medio eorum, & deficiet virtus eorum: &
proſelyti qui remanſerint in eis, adjicientur etiam ipſi ad populum Dei noſtri;
& erunt quaſi principes domus Juda: & Acharon implebitur de domo
Iſrael ſicut Jeruſalem. Et habitare faciam majeſtatem gloriæ meæ in domo 8
ſanctuarii mei: & fortitudo brachii potentiæ meæ erit ſicut murus ignis in
circuitu ejus propter tranſeuntes & redeuntes: & non tranſibit per eos
ampliùs tyrannus, quia nunc conſpicuam feci potentiam meam ut benefaciam
eis. Exulta vehementer cœtꝰ Sion: *& exulta* cœtus Jeruſalem; ecce rex 9
tuus venit intra te juſtus ipſe & ſalvator manſuetꝰ, equitans in aſino & pullo
filio aſinæ. Et diſperdã quadrigas ex Ephraim & equos de Jeruſalẽ: et 10
conterã fortitudinem bellatorũ et exercitꝰ populorũ: et judicabit in pace
regna et dominabitur à mari et uſq; ad Occidentẽ; et ab Euphrate uſq; ad
fines terræ. Vos quoq; quibuſcũ in ſanguine ſancitũ eſt pactũ, redemi vos de 11
ſubjectione Ægyptiorum: tribui vobis neceſſaria in deſerto ꝙ erat deſolatũ
ſicut lacꝰ vacuus in quo non ſunt aquæ. Convertimini ut ſitis ſicut civitates 12
munitæ, ô vincti qui ſperâſtis redemptionem: hodie quoque mittã ad nunciandum
vobis, quòd duplicia bona quæ dixi vobis, adducam vobis.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. ܒܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ. ܢܐܚܕܘܢ ܥܣܪܐ ܓܒܪܝܢ ܡܢ ܟܠ ܠܫܢܝ 23
ܥܡܡܐ . ܘܢܐܚܕܘܢ ܒܟܢܦܗ ܕܓܒܪܐ ܝܗܘܕܝܐ. ܘܢܐܡܪܘܢ ܠܗ. ܢܐܙܠ ܥܡܟ. ܡܛܠ ܕܫܡܥܢ
ܕܐܠܗܐ ܥܡܟܘܢ.

* ܩܦܠܐܘ * ܛ *

* ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܚܕܪܟ ܘܕܪܡܣܘܩ ܩܘܪܒܢܗ. ܡܛܠ ܕܠܡܪܝܐ ܓܠܝܢ 1
ܒܢܝܢܫܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܫܒܛܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܐܦ ܚܡܬ . ܬܬܬܚܡ ܒܗ. ܘܨܘܪ ܘܨܝܕܢ ܕܛܒ 2
ܐܬܚܟܡܘ : * ܘܒܢܬ ܠܗ ܨܘܪ ܚܘܣܢܐ : ܘܟܢܫܬ ܣܐܡܐ ܐܝܟ ܥܦܪܐ : ܘܕܗܒܐ ܐܝܟ ܛܝܢܐ 3
ܕܫܘܩܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܡܪܝܐ ܢܘܪܬܝܗ. ܘܢܪܡܐ ܒܝܡܐ ܚܝܠܗ. ܘܗܝ ܒܢܘܪܐ ܬܬܐܟܠ. 4
* ܘܬܚܙܐ ܐܫܩܠܘܢ ܘܬܕܚܠ. ܘܥܙܐ ܬܬܚܒܠ ܛܒ. ܘܥܩܪܘܢ ܕܒܗܬ ܒܗ ܣܒܪܗ. 5
ܘܢܐܒܕ ܡܠܟܐ ܡܢ ܥܙܐ. ܘܐܫܩܠܘܢ ܠܐ ܬܬܒ. * ܘܢܬܒܘܢ ܢܘܟܪܝܐ ܒܐܫܕܘܕ. ܘܐܘܒܕ 6
ܫܘܒܗܪܗܘܢ ܕܦܠܫܬܝܐ. * ܘܐܥܒܪ ܕܡܗܘܢ. ܡܢ ܦܘܡܗܘܢ. ܘܛܢܦܘܬܗܘܢ. ܡܢ 7
ܒܝܬ ܫܢܝܗܘܢ. ܘܢܫܬܚܪܘܢ ܐܦ ܗܢܘܢ ܠܐܠܗܢ. ܘܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܪܘܪܒܢܐ ܕܝܗܘܕܐ.
ܘܥܩܪܘܢ ܢܗܘܐ ܐܝܟ ܚܒܪܘܢ. * ܘܐܫܪܐ ܠܘܬ ܒܝܬܝ ܡܫܪܝܬܐ ܡܢ ܕܥܒܪ ܘܡܢ 8
ܕܗܦܟ. ܘܠܐ ܢܥܒܪ ܬܘܒ ܥܠܝܗܘܢ ܡܫܥܒܕܢܐ. ܡܛܠ ܕܗܫܐ ܚܙܝܬ ܒܥܝܢܝ. * ܚܕܝ 9
ܛܒ ܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. ܘܟܪܘܙܝ ܒܪܬ ܐܘܪܫܠܡ. ܗܐ ܡܠܟܟܝ ܐܬܐ ܠܟܝ. ܙܕܝܩܐ : ܘܦܪܘܩܐ.
ܘܡܬܡܟܟ. ܘܪܟܒ ܥܠ ܚܡܪܐ. ܘܥܠ ܥܝܠܐ ܒܪ ܐܬܢܐ. * ܘܢܘܒܕ ܡܪܟܒܬܐ ܡܢ ܐܦܪܝܡ. 10
ܘܣܘܣܝܐ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ. ܢܬܒܪ ܩܫܬܐ ܒܩܪܒܐ . ܘܢܡܠܠ ܫܠܡܐ ܥܡ ܥܡܡܐ.
ܘܢܫܠܘܛ ܡܢ ܝܡܐ ܠܝܡܐ. ܘܡܢ ܢܗܪܐ. ܥܕܡܐ ܠܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. * ܘܐܦ ܐܢܬܝ 11
ܒܕܡܐ ܕܕܝܬܩܝܟܝ ܫܪܝܬܝ . ܐܣܝܪܝܟܝ ܡܢ ܓܘܒܐ ܕܠܝܬ ܒܗ ܡܝܐ. * ܝܬܒܘ ܒܚܣܢܐ 12
ܐܣܝܪܐ .. ܕܟܢܘܫܬܐ. ܘܚܠܦ ܚܕ ܝܘܡ. ܬܪܝܢ ܐܦܪܥ ܠܟܘܢ.

Sic ait Dominus potentiſſimus; Iis diebus 23
prehendent decem homines ex quibuſcunque linguis gentium, fimbriam hominis Judæi, & dicent illi; Tecum ibimus, quoniam audivimus Deum eſſe vobiſcum.

CAP. IX.

SErmo Domini de terra Hadrach & Damaſci oblatione ipſius : quia Domino manifeſti 1
ſunt homines & omnes tribus Iſraelis. Etiam Hemath illâ terminabitur, nec non Ty- 2
rus ac Sidon quæ plurimum ſapiunt. Ædifi- 3
cavit ſibi Tyrus munitionem, & congeſſit argentum ut pulverem, & aurum ut lutum platearum : Propterea Dominus perdet eam, 4
& projiciet in mare divitias ejus, & ipſa igne conſumetur. Aſcalon videns timebit, Aza 5
infirmabitur admodum; & Ecron, quòd ſpes ejus pudefacta ſit : & peribit rex de Aza : & Aſcalon erit inhabitabilis : Et ha- 6
bitabunt exteri in Aſdod : & perdam arrogantiam Paleſtinorum, Auferamque ſangui- 7
nem eorum ex ore ipſorum, & immunditiam eorum è dentibus ipſorum; & manebunt ipſi quoque Deo noſtro, eruntque ſicut principes Judæ : & Ecron erit ſicut Ebron. Et 8
caſtrametari jubebo circa domum meam præfectum, contra tranſeuntem ac redeuntem, ut non tranſeat poſthac ſecus eos domitor : quia nunc vidi oculis meis. Exulta vehementer 9
filia Sionis, & exclama filia Jeruſalem : ecce rex tuus adveniet tibi, juſtus, & ſalvator, & inſidens aſino pulloque aſinæ. Is 10
perdet currum ex Aphremo, & equum de Jeruſalem, franget arcum in bello, & loquetur pacem cum gentibus, & dominabitur à mari ad mare, & à flumine uſque ad extrema terræ. Et tu quoque per ſanguinem fœderis 11
tui dimiſiſti vinctos è fovea in qua non extant aquæ. Manete in arce O vincti eccleſiæ, & 12
pro uno die duos rependam vobis.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* هكذا يقول الرب الضابط الكل . في تلك الايام تاخذ عشرة رجال من جميع 23
السنة الامم . وتمسك ذيل رجل يهودي . قايلين ننطلق معك . من اجل انا سمعنا
ان الله معكم هو .

* الفصل التاسع *

* وحي قول الرب في ارض سدراخ ودمشق ذبيحته . من اجل ان الرب ينظر البشر 1
وجميع اسباط اسرايل * وحماة في حدودها . صور وصيدا . لاجل هذا تعقلوا جدا . 2
* وبنت صور حصونا لها . وكثرت فضة مثل التراب . وجمعت ذهبا مثل طين الطرقات . 3
* لاجل هذا الرب يرثها . ويحدر الي البحر قوتها . وهي توكل بالنار * ترى عسقلان 4 5
وتخاف . غزة وتوجع جدا . وعقرون . لانها خزيت بزلاتها . ويهلك الملك من غزة . وعسقلان
لا تسكن * ويسكن الغرباء الجنس في اشدود . واهدم كبرياء القبايل الغريبة . 6
* وانزع دمهم من فمهم . ورذايلهم من بين اسنانهم . ويبقى هذا لالهنا . ويصيرون 7
مثل رؤساء الوف في يهودا . وعقرون مثل اليابوساني * واثبت لبيتي قواما . ان لا يروح ولا 8
يجي . ولا يمر بهم ايضا مخرج . من اجل اني الان رايت بعيني * افرحي جدا يا ابنة صهيون . 9
نادي يا ابنة ايروسليم . ها ملكك يقبل اليك . عدل ومخلص هو . متواضع وراكب على
اتان وجحش شاب * ويستاصل المركبات من افرام . والفرس من ايروسليم . ويستاصل القوس 10
الحربي والكثرة والسلامة من الامم . ويراس على المياه من البحر الي البحر . ومن الانهار الي منافذ
الارض * وانت بدم عهدك سرحت اسراك من جب لا ماء فيه * اجلسوا في الحصن يا 11 12
اسرى الجماعة . وبدل يوم واحد من غربتك اكافيك اضعافا .

Sic ait Dominus omnipotens; Iis diebus 23
prehendent decem viri ex omnigenis linguis, & tenebunt fimbriam viri Judæi, dicentes; Tecum ibimus, quoniam audivimus Deum vobiſcum eſſe.

CAP. IX.

R*Evelatio ſermonis Domini contra* 1
terram Sedrach & Damaſci victimam ſuam. Quia Dominus videt homines, & omnes tribus Iſraelis, Et Hemath cum 2
terminis ejus, Tyrum, ac Sidonem; ideò vehementer ſapuerunt : Et ædificavit 3
ſibi Tyrus arces, multiplicavit argentum ceu pulverem, & cumulavit aurum ceu lutum viarum. Propterea Dominus poſ- 4
ſidebit eam, detrahetque in mare potentiam ejus, & ipſa igne conſumetur. Vi- 5
debit Aſcalan, & timebit : Gaza, multúmque dolebit unà cum Acrone; quia pudefacta eſt propter iniquitates ſuas : Rex peribit è Gaza : Aſcalan non habitabitur : Habitabunt alienigenæ in Aſ- 6
dod. Et deſtruam arrogantiam alienigenarum, Auferamque ſanguinem eo- 7
rum ex ore ipſorum, & abominationes eorum è dentibus ipſorum; & relinquetur iſte Deo noſtro : fientque ut chiliarchi in Juda, & Acron ut Jebuſæus. Et ſtabiliam domui meæ fulcrum, ne eat 8
redeatque; néve ſuperveniat eis poſthac expulſor : quia nunc vidi oculis meis. Gaude vehementer O filia Sionis, pro- 9
clama O filia Jeruſalem : ecce rex tuus veniet ad te : juſtus & ſalvator eſt, humilis, & inſidens aſinæ pulloque adoleſcenti. Evellet quadrigas ex Aphremo, & 10
equum de Jeruſalem : & eradicabit gladium bellicum, & multitudinem, atque pacem è gentibus : & dominabitur aquis à mari ad mare, & à fluminibus uſque ad penitiſſima terræ. Et tu per ſanguinem teſtamenti tui di- 11
miſiſti vinctos tuos è fovea in qua non eſt aqua. Sedete in arce O vincti 12
congregationis, & pro uno die peregrinationis tuæ multiplices rependam tibi.

זכריה : י

, Ephraim *impl:evi* , arcum Jehudah mihi extendi Quoniam
כִּי־דָרַכְתִּי לִי יְהוּדָה קֶשֶׁת מִלֵּאתִי אֶפְרַיִם 13
te ponam & : Javan tuos filios ſuper Sijon tuos filios ſuſcitavi &
וְעוֹרַרְתִּי בָנַיִךְ צִיּוֹן עַל־בָּנַיִךְ יָוָן וְשַׂמְתִּיךְ
exibit & ,conſpicietur eis *ſuper* Dominus Et .fortis gladium veluti
כְּחֶרֶב גִּבּוֹר׃ וַיהוָה עֲלֵיהֶם יֵרָאֶה וְיָצָא 14
vadet & ,clanget tuba in Deus Dominus & : ejus jaculum fulgur ut
כַבָּרָק חִצּוֹ וַאדֹנָי יֱהוִה בַּשּׁוֹפָר יִתְקָע וְהָלַךְ
, eos *ſuper* proteget exercituum Dominus .auſtri *turbinibus in*
בְּסַעֲרוֹת תֵּימָן׃ יְהוָה צְבָאוֹת יָגֵן עֲלֵיהֶם 15
tumultuabuntur ,bibéntque , fundæ lapidibus ſubjicient & ,*comedent* &
וְאָכְלוּ וְכָבְשׁוּ אַבְנֵי־קֶלַע וְשָׁתוּ הָמוּ
.altaris anguli tanquam , pelvis ut ſe replebunt & : vinum ſicut
כְּמוֹ־יָיִן וּמָלְאוּ כַּמִּזְרָק כְּזָוִיּוֹת מִזְבֵּחַ׃
pecus ſicut , illa die in eorum Deus Dominus eos ſervabit Et
וְהוֹשִׁיעָם יְהוָה אֱלֹהֵיהֶם בַּיּוֹם הַהוּא כְּצֹאן 16
.ejus *humum* ſuper *ſe elevantes* coronæ lapides quia : ſuum populum
עַמּוֹ כִּי אַבְנֵי־נֵזֶר מִתְנוֹסְסוֹת עַל־אַדְמָתוֹ׃
frumentum ? ejus pulchritudo quanta & , ejus bonitas quanta Quia
כִּי מַה־טּוּבוֹ וּמַה־יָּפְיוֹ דָּגָן 17
.virgines faciet *germinare* novum vinum & , juvenes
בַּחוּרִים וְתִירוֹשׁ יְנוֹבֵב בְּתֻלוֹת׃

CAP. X. י

Dominus , ſerotinam tempore *in* pluviam Domino à Petite
שַׁאֲלוּ מֵיְהוָה מָטָר בְּעֵת מַלְקוֹשׁ יְהוָה 1
unicuique , eis dabit imbris pluviam & : coruſcationes *faciens*
עֹשֶׂה חֲזִיזִים וּמְטַר־גֶּשֶׁם יִתֵּן לָהֶם לְאִישׁ
divini & ,vanitatem ſunt *locutæ* imagines Quia .agro in herbam
עֵשֶׂב בַּשָּׂדֶה׃ כִּי הַתְּרָפִים דִּבְּרוּ־אָוֶן וְהַקּוֹסְמִים 2
:conſolabantur vanè ,ſunt locuti *vanitatis* ſomnia & ,mendacium viderunt
חָזוּ שֶׁקֶר וַחֲלֹמוֹת הַשָּׁוְא יְדַבֵּרוּ הֶבֶל יְנַחֵמוּן
.paſtor non quia ,ſe humiliaverunt ,*pecus* ſicut ,ſunt profecti idcirco
עַל־כֵּן נָסְעוּ כְמוֹ־צֹאן יַעֲנוּ כִּי־אֵין רֹעֶה׃
: viſitabo hircos contra & ,meus *naſus* eſt iratus paſtores Contra
עַל־הָרֹעִים חָרָה אַפִּי וְעַל־הָעַתּוּדִים אֶפְקוֹד 3
domum ,ſuum gregem exercituum Dominus viſitavit quia
כִּי־פָקַד יְהוָה צְבָאוֹת אֶת־עֶדְרוֹ אֶת־בֵּית
ipſo Ex .bello in ſuæ gloriæ equum tanquā eos poſuit & ,Jehudah
יְהוּדָה וְשָׂם אוֹתָם כְּסוּס הוֹדוֹ בַּמִּלְחָמָה׃ מִמֶּנּוּ 4
egredietur ipſo ex : bello arcus ipſo ex ,palus ipſo ex ,angulus
פִנָּה מִמֶּנּוּ יָתֵד מִמֶּנּוּ קֶשֶׁת מִלְחָמָה מִמֶּנּוּ יֵצֵא
luto in conculcantes fortes ſicut erunt Et .ſimul *exactor* omnis
כָל־נוֹגֵשׂ יַחְדָּו׃ וְהָיוּ כְגִבֹּרִים בּוֹסִים בְּטִיט 5
: eis cum Dominus quia , pugnabunt & , bello in platearum
חוּצוֹת בַּמִּלְחָמָה וְנִלְחֲמוּ כִּי יְהוָה עִמָּם
domum roborabo Et .equorum aſcenſores afficientur pudore &
וְהֹבִישׁוּ רֹכְבֵי סוּסִים׃ וְגִבַּרְתִּי אֶת־בֵּית 6
quia ,eos convertam & ; ſervabo Joſeph domum & , Jehudah
יְהוּדָה וְאֶת־בֵּית יוֹסֵף אוֹשִׁיעַ וְהוֹשְׁבוֹתִים כִּי
ego quia : eos elongavi non quando ſicut erunt & ,eorum ſum miſertus
רִחַמְתִּים וְהָיוּ כַּאֲשֶׁר לֹא־זְנַחְתִּים כִּי אֲנִי
, Ephraim *fortis ut* erunt Et .eos exaudiam & ,eorum Deus Dominus
יְהוָה אֱלֹהֵיהֶם וְאֶעֱנֵם׃ וְהָיוּ כְגִבּוֹר אֶפְרַיִם 7
;lætabitur &,videbunt eorum filii & : vinum *tanquam* eorū cor lætabitur &
וְשָׂמַח לִבָּם כְּמוֹ־יָיִן וּבְנֵיהֶם יִרְאוּ וְשָׂמֵחוּ
.Domino in eorum cor exultabit
יָגֵל לִבָּם בַּיהוָה׃

Verſio VULG. LAT.

13 Quoniam extendi mihi Judam quaſi arcum,implevi Ephraim: & ſuſcitabo filios tuos,Sion,ſuper filios tuos,Græcia: et ponā te quaſi 14 gladiū fortiū. Et Dominus Deus ſuper eos videbitur ; & exibit ut fulgur, jaculū ejus: & Dominus Deus in tuba canet, & vadet 15 in turbine Auſtri. Dominus exercituum proteget eos: & devorabunt,& ſubjicient lapidibus fundæ : & bibentes inebriabuntur quaſi à vino , & replebuntur ut phialæ , & quaſi cornua altaris. 16 Et ſalvabit eos Dominus Deus eorum in die illa, ut gregem populi ſui : quia lapides ſancti elevabuntur ſuper terram ejus. 17 Quid enim bonum ejus eſt, & quid pulchrum ejus,niſi frumentum electorum,& vinum germinans virgines ?

CAP. X.

1 Petite à Domino pluviam in tempore ſerotino, & Dominus faciet nives , & pluviam imbris dabit eis, ſingulis herbam in 2 agro. Quia ſimulacra locuta ſunt inutile, & divini viderunt mendacium , & ſomniatores locuti ſunt fruſtrá : vanè conſolabantur : idcircò abducti ſunt quaſi grex : affligentur,quia non eſt eis 3 paſtor. Super paſtores iratus eſt furor meus, & ſuper hircos viſitabo : quia viſitavit Dominus exercituum gregem ſuum, domum Juda, & poſuit eos quaſi equum 4 gloriæ ſuæ in bello. Ex ipſo angulus, ex ipſo paxillus , ex ipſo arcus prælii , ex ipſo egredietur 5 omnis exactor ſimul. Et erunt quaſi fortes conculcantes lutum viarū in prælio: et bellabunt,quia Dominus cum eis: & confundentur aſcenſores equorum. 6 Et confortabo domum Juda, & domum Joſeph ſalvabo : et convertam eos, quia miſerebor eorum : et erunt ſicut fuerunt quando non projeceram eos: ego enim Dominus Deus eorum , & exaudiam 7 eos. Et erūt quaſi fortes Ephraim, et lætabitur cor eorum quaſi à vino : et filii eorum videbunt, et lætabuntur, et exultabit cor eorum in Domino.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

13 Διότι ἐνέτεινά σε Ἰούδα ἐμαυτῷ (ξ) τόξον, ἔπλησα τὸν Ἐφραὶμ, ϗ (˚) ἐξεγερῶ τὰ τέκνα σου Σιὼν ἐπὶ τὰ τέκνα τῶν Ἑλλήνων, ϗ ψηλαφήσω σε ὡς ῥομφαίαν μαχητοῦ, 14 Καὶ (ο) κύριος ἔσται ἐπ᾽ αὐτοὺς, ϗ ἐξελεύσεται ὡς ἀστραπὴ βολὶς, ϗ κύριος παντοκράτωρ ἐν σάλπιγγι σαλπιεῖ, ϗ (π) πορεύσεται ἐν σάλῳ ἀπειλῆς αὐτοῦ. 15 Κύριος παντοκράτωρ ὑπερασπιεῖ (ρ) αὐτούς· ϗ καταναλώσουσιν αὐτοὺς, ϗ καταχώσουσιν αὐτοὺς ἐν λίθοις σφενδόνης, ϗ ἐκπίονται (σ) αὐτοὺς ὡς οἶνον, ϗ πλήσουσι (τ) τὰς φιάλας ὡς θυσιαστήριον. 16 Καὶ σώσει αὐτοὺς (υ) κύριος ὁ θεὸς αὐτῶν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ὡς πρόβατα λαὸν αὐτοῦ, διότι λίθοι ἅγιοι κυλίονται 17 ἐπὶ (φ) γῆς αὐτοῦ. Ὅτι εἴ τι ἀγαθὸν αὐτοῦ, ϗ εἴ τι καλὸν (χ) αὐτοῦ, σῖτος νεανίσκοις, ϗ οἶνος εὐωδιάζων εἰς παρθένους.

Quoniam tetendi te, Juda, mihi arcum, implevi Ephræm, & ſuſcitabo filios tuos, Sion, ſuper filios Græcorum, & attrectabo te quaſi gladium pugnatoris : 13 Et Dominus erit ſuper eos : & egredietur, ſicut fulgur, ſagitta : & Dominus omnipotens in tuba ſonabit, & ibit in commotione terroris ſui : 14 Dominus omnipotens proteget eos. Et conſument eos, & obruent eos in lapidibus fundæ : & bibent (o) eos, ſicut vinum : & implebunt (p) phialas, ſicut altare. 15 Et ſalvabit eos Dominus Deus eorum in die illa, ſicut oves, populum ſuum : quia lapides ſancti volvuntur ſuper terram ejus. 16 Quia, ſi quid optimum illius, & ſi quid bonum ejus, frumentum juvenibus, & (q) vinum boni odoris ad virgines. 17

MS.A. (ξ) εἰς τόξον, (˚) ἐπεγερῶ (ο) ἔσται κύριος (π) πορεύσονται (ρ) αὐτῶν· καὶ καταναλώσουσιν (σ) τὸ αἷμα αὐτῶν ὡς (τ) ὡς φιάλας θυσιαστηρίου. (υ) κύριος ἐν τῇ ἡμέρᾳ (φ) τῆς γῆς (χ) παρ᾽ αὐτοῦ,

ΚΕΦ. ι΄.

1 Αἰτεῖσθε (α) παρὰ κυρίου ὑετὸν καθ᾽ ὥραν, πρώϊμον ϗ ὄψιμον. κύριος ἐποίησε φαντασίας, ϗ ὑετὸν χειμερινὸν δώσει αὐ- 2 τοῖς, ἑκάστῳ βοτάνην ἐν ἀγρῷ. Διότι οἱ ἀποφθεγγόμενοι ἐλάλησαν κόπους, ϗ οἱ μάντεις ὁράσεις ψευδεῖς, ϗ τὰ ἐνύπνια ψευδῆ ἐλάλουν, μάταια παρεκάλουν· διὰ τοῦτο ἐξήρθησαν ὡς πρόβατα, ϗ ἐκα- 3 κώθησαν, (β) διότι οὐκ ἦν ἴασις. Ἐπὶ τοὺς ποιμένας παρωξύνθη ὁ θυμός μου, καὶ ἐπὶ τοὺς ἀμνοὺς ἐπισκέψομαι. ϗ (γ) ἐπισκέψεται κύριος ὁ θεὸς ὁ παντοκράτωρ τὸ ποίμνιον αὐτοῦ, τὸν οἶκον Ἰούδα, ϗ τάξει αὐτοὺς ὡς ἵππον εὐπρεπῆ αὐτοῦ ἐν πολέμῳ, 4 Καὶ (δ) ἀπ᾽ αὐτοῦ ἐπέβλεψε, ϗ (ε) ἀπ᾽ αὐτοῦ ἔταξε, ϗ (ζ) ἀπ᾽ αὐτοῦ τόξον ἐν θυμῷ, (η) ἀπ᾽ αὐτοῦ ἐξελεύσεται πᾶς ὁ (θ) ἐξελαύ- 5 νων ἐν τῷ αὐτῷ. Καὶ ἔσονται ὡς μαχηταὶ πατοῦντες πηλὸν ἐν ταῖς ὁδοῖς ἐν πολέμῳ, ϗ παρατάξονται, διότι (ι) κύριος μετ᾽ αὐτῶν· ϗ καταισχυνθήσονται ἀναβάται ἵπ- 6 πων. Καὶ κατισχύσω τὸν οἶκον Ἰούδα, καὶ τὸν οἶκον Ἰωσὴφ σώσω, ϗ κατοικιῶ αὐτοὺς, ὅτι (κ) ἠγάπησα αὐτοὺς, ϗ ἔσονται, ὃν τρόπον οὐκ ἀπεστρεψάμην αὐτούς· διότι ἐγὼ κύριος ὁ θεὸς αὐτῶν, ϗ ἐπακούσομαι 7 αὐτοῖς, Καὶ ἔσονται ὡς μαχηταὶ τοῦ Ἐφραὶμ, ϗ χαρήσεται ἡ καρδία αὐτῶν ὡς ἐν οἴνῳ· ϗ τὰ τέκνα αὐτῶν (λ) ὄψονται, ϗ εὐφρανθήσονται, ϗ χαρεῖται (μ) ἡ καρδία αὐτῶν ἐπὶ τῷ κυρίῳ.

CAP. X.

Petite à Domino pluviam opportunam, temporaneam, & ſerotinam. Dominus fecit phantaſias : & pluviam hyemalem dabit eis, unicuique herbam in agro. 1 Quoniam hi qui loquebantur, loquuti ſunt labores, & divini viſiones falſas, & ſomnia falſa loquebantur : vana conſolabantur. Idcò areſacti ſunt, ſicut oves : & afflicti ſunt, quia non erat ſanatio. 2 Super paſtores concitatus eſt furor meus : & ſuper agnos viſitabo. Et viſitabit Dominus Deus omnipotens gregem ſuum, domum Juda : & ponet eos ſicut equum decorum ſuum in prælio : 3 Et ex ipſo reſpexit, & ex ipſo poſuit, (a) & ex ipſo arcum in furore : ex ipſo egredietur omnis, qui abigit in eo. 4 Et erunt quaſi bellatores conculcantes lutum in viis in prælio : & in acie ſtabunt, quia Dominus cum eis eſt. Et confundentur aſcenſores equorū : 5 Et confortabo domū Juda : et domū Joſeph ſalvabo : & habitare eos faciam, quia dilexi eos ; & erunt, (b) ſicut non evertiſſem eos. Quia ego Dominus Deus eorum, & exaudiam eos, 6 Et erunt quaſi bellatores Ephræm. & lætabitur cor eorum, quaſi in vino : & filii eorum videbunt, & lætabuntur : et gaudebit cor eorum in Domino. 7

MS.A. (α) ὑετὸν παρὰ κυρίου (β) ὅτι (γ) ἐπισκέψεται (δ) ἐξ αὐτοῦ (ε) ἐξ αὐτοῦ (ζ) ἐξ αὐτοῦ τὸ τόξον (η) ἐξ αὐτοῦ (θ) ἐλαύνων (ι) κύριος παντοκράτωρ μεθ᾽ (κ) ἠγάπηκα αὐτοὺς, ϗ ἔσται, ὃν (λ) ὄψονται, ϗ εὐφρανθήσεται, (μ) αὐτῶν καρδία

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ארי תקפית קדמי דבית יהודה כקשת מתיחא בבית אזינין מלית גבורא בית ישראל 13
ואגבר בנך ציון על בני עממיא ואשונך כחרבא ביד גברא : ויי עליהון יתגלי 14
ויהון נפקין כברקין פתגמוהי ומן קדם יי אלהים בשופרא יתקע וידבר בעלעול רוח
מדרומא : יי צבאות ירחם עליהון וישלטון בעממיא ויקטלונון ושארהון יגמרון 15
כמא דשדן אבנא בקלעא ויבזון ית נכסיהון ויסבעון מנהון כשתי חמר ותהי נפשהון
מליא תפנוקין כמזרק דמלי סלתא ומשח ויהון מזהרין כדמא דמזהר על כתלא
דמדבחא : ויפרקנון יי אלההון בעדנא ההיא על דאתבדרו כענא עמיה ארי יבחרנון 16
כאבני איפודא ויקרבנון לארעהון : ארי מה טב ומה יאי אולפן אוריתא לנגודיא ודין 17
דקשוט מתקן בכנשתא : י

שאילו מן קדם יי מטרא בעדן לקיש יי עביד רוחין ומחית מטרא לבני אנשא למתן להון 1
עבורא למיכל ועסבא לבעירא בחקלא : ארי פלחי צלמיא ממללין אונס וקוסמיא 2
מתנבן שקר ונביי שקרא בנבואת שקריהון שקרא ממללין לא מדעם מנחמין על כן
אתבדרו כבדור ענא גלו ארי לית מלך : על מלכיא הוה רוגזי ועל שלטוניא אנא מסער 3
עליהון חוביהון ארי דכיר יי צבאות ית עמיה ית דבית יהודה וישוי יתהון כסוסי תקוף
דזותן בקרבא : מניה מלכיה מניה משיחיה מניה תקוף קרביה מניה יתרבון כל 4
פרנסוהי כחדא : ויהון גברי בית ישראל דישין קטילי עממיא כסין שוקין בקרבא ויגחון 5
קרב ארי מימרא דיי בסעדהון ויבהתון רכבי סוסון : ואגבר ית דבית יהודה וית דבית 6
יוסף אפרוק ואכנוש גלותהון וארחם עליהון ויהון כדלא טלטלתנון ארי אנא יי אלההון
ואקבל צלותהון : ויהון כגברין דבית אפרים ויחדי לבהון כשתי חמר ובניהון יחזון 7
ויחדון יבוע לבהון במימרא דיי :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quoniam roboravi coram me domū Juda, ſicut arcum extenſum *in domo* armorum, replevi fortitudine domū Iſrael, & prævalere faciam filios tuos Sion ſuper filios populorum,& ponam te quaſi gladium in manu fortis. 13 Et Dn̄s ſuper eos revelabitur , & verba ejus egredientur quaſi fulgura : & à facie Domini Dei clangetur tuba, & ducet in turbine venti Auſtralis. 14 Dn̄s exercituum miſerebitur eorum, & dominabuntur populis & occident eos, & reliquias eorum conſument, ſicut qui mittunt lapidem funda,& diripient ſubſtantias eorum,& ſaturabuntur ex eis,in morem bibentium vinū : & erit anima eorum plena deliciis, ſicut phiala quæ plena eſt ſimila & oleo ; & ſplendebunt ſicut ſanguis qui ſplendet in pariete altaris. 15 Et redimet eos Dominus Deus ſuus in tempore illo , eò quòd diſperſus eſt ſicut oves populus ejus, quoniam eliget eos ſicut lapides ſuperhumeralis, & congregabit eos in terram ſuam. 16 Quoniam quàm bona & quàm pulchra eſt doctrina legis ducibus,& judicium veritatis directum in congregatione ! 17

CAP. X.

Petite à facie Dn̄i pluviā in tempore ſerotino: Dn̄s faciet ventos, & deducet pluviam filiis hominū ,ut det eis frumentū ad comedendū,& herbam jumentis in agro. 1 Quoniā cultores ſimulachrorum loquuntur rapinā,et divini prophetant falſitatem,et pſeudoprophetæ in prophetia ſua falſa mendacia loquuntur,et vanè conſolantur.Ideo diſperſi ſunt ſicut diſperguntur oves,tranſlati ſunt quia non eſt eis rex. 2 In reges factus eſt furor meus et in principes , ego viſitabo eorum peccata , quia recordatus eſt Dominus exercituū populi ſui domus Juda, et ponet eos quaſi equum fortem, ſplendentem in bello. 3 Ex ipſo rex ejus , ex ipſo Chriſtus ejus, et ex ipſo fortitudo belli ſui , ex ipſo magnificabuntur omnes gubernatores ejus ſimul. 4 Et fortes domus Iſrael triturabunt interfectos populorum quaſi lutum viarum in bello, et prælia committent : quia Verbum Domini erit in auxilium eorum:et confundentur aſcenſores equorum. 5 Et roborabo domum Juda,& domū Joſeph redimam,et congregabo captivitatem eorū,& miſerebor eorū ; et erunt quaſi non tranſmigrare feciſſem eos,quia ego Dominus Deus eorum ſuſcipiam orationem eorum. 6 Et erunt quaſi fortes viri domus Ephraim, et lætabitur cor eorum in morem bibentium vinum : et filii eorum videbunt et lætabuntur, et exultabit cor eorum in verbo Domini. 7

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

13 * ܡܛܠ ܕܡܬܚܬ ܩܫܬܝ ܥܠ ܝܗܘܕܐ. ܘܡܠܝܬܗ ܥܠ ܐܦܪܝܡ. ܘܫܓܪܬ ܒܢܝܟܝ ܨܗܝܘܢ
14 ܥܠ ܒܢܝ ܝܘܢ. ܘܥܒܕܬܟܝ ܐܝܟ ܣܝܦܐ ܕܓܢܒܪܐ. * ܘܡܪܝܐ ܥܠܝܗܘܢ ܢܬܓܠܐ.
ܘܢܦܘܩ ܓܐܪܗ ܐܝܟ ܒܪܩܐ. ܘܡܪܐ ܡܪܘܬܐ ܢܩܥ ܒܩܪܢܐ. ܘܢܐܙܠ ܒܥܠܥܠܐ ܕܬܝܡܢܐ.
15 * ܘܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܢܛܝܢ ܥܠܝܗܘܢ. ܘܢܐܟܠܘܢ. ܘܢܟܒܫܘܢ ܟܐܦܐ ܕܩܠܥܐ. ܘܢܫܬܘܢ
16 ܕܘܘܕܐ ܐܝܟ ܚܡܪܐ. ܘܢܬܡܠܘܢ ܐܝܟ ܡܙܓܐ. ܘܐܝܟ ܙܘܝܬܐ ܕܡܕܒܚܐ. * ܘܢܦܪܘܩ ܐܢܘܢ
ܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܠܥܡܗ ܐܝܟ ܥܢܐ. ܡܛܠ ܕܟܐܦܐ ܗܘܝ ܩܕܝܫܬܐ ܕܡܬܪܡܝܢ ܗܘܘ
17 ܒܐܪܥܗ. * ܡܐ ܛܒ ܗܘ. ܘܡܐ ܫܦܝܪ ܥܒܘܪܐ ܠܥܠܝܡܐ. ܘܚܡܪܐ ܡܒܣܡ ܠܒܬܘܠܬܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝ *

1 * ܫܐܠܘ ܡܛܪܐ ܡܢ ܡܪܝܐ ܒܙܒܢܐ ܕܠܩܝܫܐ. ܘܡܪܝܐ ܢܥܒܕ ܢܛܦܐ. ܘܡܛܪܐ ܕܒܟܝܪܐ
2 ܢܬܠ ܠܟܘܢ. ܕܢܪܒܐ ܥܣܒܐ ܒܡܕܒܪܐ. * ܡܛܠ ܕܩܣܘܡܐ ܡܠܠܘ ܥܘܠܐ. ܘܚܪܫܐ ܚܙܘ
ܕܓܠܐ. ܘܚܠܡܐ ܕܓܠܐ ܡܠܠܘ. ܘܒܣܪܝܩܘܬܐ ܒܝܐܘ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܫܢܝܘ ܐܝܟ ܥܢܐ.
3 ܘܐܬܡܟܟܘ ܕܠܝܬ ܠܗܘܢ ܪܥܝܐ. * ܥܠ ܪܥܘܬܐ ܐܪܝܡܬ ܚܡܬܝ. ܘܥܠ ܥܪܒܐ ܐܦܩܘܕ. ܡܛܠ
ܕܦܩܕ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܠܥܢܗ ܠܒܝܬܗ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܥܒܕ ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܣܘܣܝܐ ܕܫܘܒܗܪܐ ܒܩܪܒܐ.
4 * ܡܢܗܘܢ ܙܘܝܬܐ. ܘܡܢܗܘܢ ܣܟܬܐ. ܘܡܢܗܘܢ ܩܫܬܐ ܒܩܪܒܐ. ܘܡܢܗܘܢ ܢܦܩܘܢ
5 ܟܠܗܘܢ ܫܠܝܛܢܝܗܘܢ ܐܟܚܕܐ: * ܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܓܢܒܪܐ ܕܕܝܫܝܢ ܛܝܢܐ ܒܫܘܩܐ. ܒܩܪܒܐ
6 ܢܬܟܬܫܘܢ. ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܥܡܗܘܢ. ܘܢܒܗܬܘܢ ܪܟܒܝ ܪܟܫܐ. * ܘܐܚܝܠ ܠܒܝܬܗ
ܕܝܗܘܕܐ. ܘܐܦܪܘܩ ܠܒܝܬܗ ܕܝܘܣܦ. ܘܐܗܦܟ ܐܢܘܢ. ܡܛܠ ܕܡܪܚܡ ܐܢܐ ܥܠܝܗܘܢ.
7 ܘܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܕܠܐ ܛܥܝܬ ܐܢܘܢ. ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ ܐܥܢܐ ܐܢܘܢ. * ܘܢܗܘܘܢ
ܐܝܟ ܓܢܒܪܐ ܕܐܦܪܝܡ. ܘܢܚܕܐ ܠܒܗܘܢ ܐܝܟ ܕܡܢ ܚܡܪܐ. ܘܒܢܝܗܘܢ ܢܚܙܘܢ. ܘܢܚܕܘܢ.
ܘܢܪܘܙ ܠܒܗܘܢ ܒܡܪܝܐ.

Nam tetendi arcum meum contra Judam, & 13
eum ſagittâ implevi contra Aphremum, & jaculatus
ſum filios tuos Sion in filios tuos Javan,
reddidique te ſicut gladium gigantis.
Dominus ſuper eos apparebit, & egredietur 14
ſagitta ejus ut fulgur, & Dominus dominorum
clanget buccinâ, & ibit in turbine ad
Auſtrum. Hos autem proteget Dñs poten- 15
tiſſimus; & comedent, petraſque fundâ domabunt;
& bibent perturbationem ut vinum,
& implebuntur ut *vinum* miſtum, & ut angulus
altaris. Et redimet Dñs Deus eorum eâ die 16
populum ſuum tanquam oves; quia lapides
erant ſancti projecti in terra ipſius. Quàm 17
bonum & quàm utile eſt frumentum adoleſcentibus!
et vinum jucundas reddit virgines.

CAP. X.

POſtulate pluviam à Domino tempore ſe- 1
rotino, & Dominus edet ſtillas; & pluviam
primitiam dabit vobis, ut herba nutriatur in
deſerto. Quia divini locuti ſunt iniquitatem, 2
& harioli viderunt mendacium, ſomnia falſa
locuti ſunt, & vanitate conſolati: idcirco migrârunt
ut oves, & humiliati ſunt quia non habent
paſtorem. Contra paſtores extuli iram 3
meam, & greges viſitabo: viſitabit enim
Dominus potentiſſimus gregem ſuum, familiàm
Judæ, & efficiet eos velut equum in bello
ſuperbum. Ex ipſis erit angulus ex ipſis cla- 4
vus, ex ipſis arcus in bello, ex ipſis prodibunt
omnes principes eorum ſimul. Erunt 5
ſicut viri conculcantes lutum in plateis: in
bello dimicabunt, quia Dominus aderit illis:
& pudefient conſcenſores equorum. Corro- 6
borabo domum Judæ, & liberabo domum
Joſephi, & reducam eos: quia miſerturus ſum
eis, & erunt perinde ac ſi non oblitus eſſem
eorum. Nam ego Dominus Deus exaudiam
eos, Et erunt ſicut gigantes Aphremi, 7
& lætabitur cor eorum perinde ut ex vino, &
filii eorum videbunt & lætabuntur, & exultabit
cor eorum in Domino.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

13 * من اجل اني مددتك يا يهودا لذاتي مثل قوس * ملأت افرام * وانهض اولادك يا صهيون
14 على اولاد اليونانيين * وافتشك مثل سيف محارب * والرب يظهر عليهم * ويبرز سهمه
15 مثل البرق * والرب الاله الضابط الكل يبوق ببوق * ويسير بزعزع وعيده * والرب الضابط
الكل يسترهم * ويفنونهم بحجارة المقلاع * ويشربونهم مثل الخمر * ويملون المذبح مثل آنيته *
16 * ويخلصهم الرب في ذلك اليوم شعبه مثل خراف * من اجل ان الحجارة المقدسة يتدحرجون
17 على ارضه * لانه ان كان خير ما منه * وان كان حسن ما من قبله * قمح الشبان * والخمر
يطيب العذارى *

* الفصل العاشر *

1 * سلوا مطرا من قبل الرب كل ساعة * اولا واخيرا * الرب صنع خيالات * ومطرا شتويا
2 يعطيهم * لكل واحد نباتا في الحقل * من اجل ان المتوهمين يتكلمون اتعابا * والعرافين
مرايا كاذبة * واحلام كاذبة تكلموا * طلبوا الاباطيل * لاجل هذا جفوا كالغنم * وانضروا
3 من اجل انه لم يكن شفا * على الرعاة احد غضبي * وعلى الحملان اتعهد * ويتعهد الرب
4 الضابط الكل قطيعه بيت يهودا * ويرتبهم مثل فرس لائق في حربه * ومنه نظر * ومنه
5 رتب * ومنه القوس * بغضب يخرج كل من يطرد بذاته * ويصيرون مثل محاربين يدوسون
طينا في الطرق في الحرب * ويصطفون * من اجل ان الرب معهم * ويخزي ركاب الخيل *
6 * وساقوي بيت يهودا * وساخلص بيت يوسف * واسكنهم * لاني احببتهم * ويكونون كما لم
7 اصرفهم * من اجل اني انا الرب الههم واستجيب لهم * ويصيرون مثل محاربي افرام * ويفرح
قلبهم كالخمر ويرى اولادهم ويسر * ويفرح قلبهم بالرب *

Nam tetendi te O Juda mihi ſicut ar- 13
cum, implevi Aphremum; & ſuſcitabo
filios tuos O Sion contra filios Græcorum,
& perquiram te ut gladium belligerantis.
Et Dominus apparebit ſuper 14
eos, & prodibit fulguris inſtar ſagitta
ipſius: & Domino omnipotente buccinâ
clangente, procedet cum tremitu minarum
ejus. Dominus omnipotens proteget illos, 15
& perdent eos lapidibus fundæ, bibentque
eos ut vinum, & implebunt altare ut
vaſa. Et ſalvabit eos Dominus eâ die, 16
nempè populum ſuum, ſicut agnos; quia
lapides ſancti volvuntur ſuper terram
ejus. Nam ſiquid ab eo eſt, & ſiquid 17
pulchri eſt ab ipſo; frumentum adoleſcentium,
& vinum, ſuavem confert odorem
virginibus.

CAP. X.

PEtite pluviam à Domino quâlibet 1
horâ, temporaneam & ſerotinam. Dominus
fecit phantaſias: & pluviam hyemalem
dabit eis, cuique herbam in agro.
Quoniam qui loquuntur, labores lo- 2
quuntur; & divini viſiones falſa,
& ſomnia falſa loquuti ſunt, quæſierunt
vanitates: ideò exaruerunt ſicut
oves, & detrimentum paſſi ſunt,
quia non erat medela. Contra paſtores 3
acuam iram meam, & agnos viſitabo:
& viſitabit Dominus omnipotens gregem
ſuum, domum Judæ, & diſponet
eos velut equum decorum in prælio ſuo.
Ex ipſo proſpiciet, & ex ipſa diſponet, 4
& ex ipſo erit arcus: cum furore prodibit
quicunque per ſeipſum perſequetur.
Et erunt ſicut bellatores conculcantes 5
lutum in viis, in pugna, & inſtruent
ſeſe; quia Dominus erit cum eis, &
pudefient conſcenſores equorum. Con- 6
fortabo enim domum Judæ, & ſalvabo
domum Joſephi, & habitare faciam
eos; quia dilexi eos: & erit ac ſi non
ejeciſſem eos; quoniam ego ſum Dominus
Deus eorum, & exaudiam eos.
Eruntque ſicut bellatores Aphræmi, & 7
lætabitur cor eorum quaſi vino: & videbunt
filii eorum, & exultabunt, &
gaudebit cor eorum in Domino.

זכריה : יא

,multiplicabũtur & :eos redemi quia ,illos congregabo & ,eis Sibilabo
אשרקה להם ואקבצם כי פדיתים ורבו 8
longinquis in & ,populos in eos ſeminabo Et .fuerunt multiplicati ſicut
כמו רבו : ואזרעם בעמים ובמרחקים 9
eos reducam Et .revertentur & ,ſuis filiis cum vivent & :mei recordabũtur
יזכרוני וחיו את־בניהם ושבו : והשבותים 10
,Ghilhad terram ad & :eos congregabo Aſſur de & ,Ægypti terra è
מארץ מצרים ומאשור אקבצם ואל־ארץ גלעד
mare in tranſibit Et .eis invenietur non & ,eos adducam Lebanon &
ולבנון אביאם ולא ימצא להם : ועבר בים 11
profunda omnia ſiccabuntur & ,fluctus mari in percutiet & ,anguſtia
צרה והכה בים גלים והבישו כל מצולות
.recedet Ægypti ſceptrum & ,Aſſur ſuperbia deponetur & :fluminis
יאור והורד גאון אשור ושבט מצרים יסור :
dixit ,ambulabunt ejus nomine in & ,Domino in eos roborabo Et
וגברתים ביהוה ובשמו יתהלכו נאם 12
Dominus
יהוה :

CAP. XI. יא

Ulula .tuas cedros in ignis comedat & :tuas fores Lebanon Aperi
פתח לבנון דלתיך ותאכל אש בארזיך : הילל 1
ululate :ſunt vaſtati magnifici quoniam ,cedrus cecidit quia ,abies
ברוש כי־נפל ארז אשר אדירים שדדו הילילו 2
ululatus Vox .munita ſylva cecidit quoniam ,Baſan quercus
אלוני בשן כי ירד יער הבצור : קול יללת 3
,leunculorum rugitus vox :eorum fortitudo eſt vaſtata quoniam ,paſtorum
הרעים כי שדדה אדרתם קול שאגת כפירים
Dominus dixit Sic .Jarden ſuperbia eſt vaſtata quoniam
כי שדד גאון הירדן : כה אמר יהוה 4
,eas occident ea ementes Quæ .occiſionis pecus Paſce :meus Deus
אלהי רעה את־צאן ההרגה : אשר קניהן יהרגן 5
,Dominus benedictus ;dicet ,ea vendentes & ,delinquent non &
ולא יאשמו ומכריהן יאמר ברוך יהוה
non Nam .eis ſuper parcet non eorum paſtor & :ſum ditatus &
ואעשר ורעיהם לא יחמול עליהן : כי לא 6
ecce & :Dominus dixit ,terræ habitatoribus ſuper ultrà parcam
אחמול עוד על־יושבי הארץ נאם־יהוה והנה
manu in & ,ſui ſocii manu in virum hominem faciens inveniri ego
אנכי ממציא את־האדם איש ביד־רעהו וביד
paſcam Et .eorum manu de eruam non & ,terram contundent & ,ſui regis
מלכו וכתתו את־הארץ ולא אציל מידם : וארעה 7
duas mihi aſſumpſi & :pecoris afflictos profectò ,occiſionis pecus
את־צאן ההרגה לכן עניי הצאן ואקח־לי שני
,Chobelim vocavi unam & ,Noham vocavi unam ,virgas
מקלות לאחד קראתי נעם ולאחד קראתי חבלים
menſe in paſtores tres feci ſuccidere Et .pecus pavi &
וארעה את־הצאן : ואכחד את־שלשת הרעים בירח 8
nauſeavit eorum anima etiam & ,eis in mea anima eſt abbreviata & :uno
אחד ותקצר נפשי בהם וגם־נפשם בחלה
:moriatur moribundum :vos paſcam Non :dixi Et .me in
בי : ואמר לא ארעה אתכם המתה תמות 9
unaquæque ,devorent reliquæ & :ſuccidatur abſcindendum &
והנכחדת תכחד והנשארות תאכלנה אשה את־
.ſuæ ſociæ carnem
בשר רעותה :

Verſio VULG. LAT.

8 Sibilabo eis,& congregabo illos,
quia redemi eos: & multiplicabo
eos ſicut antè fuerant multiplicati.
9 Et ſeminabo eos in populis,
& de longè recordabuntur
meî : & vivent cum filiis ſuis, &
10 revertentur. Et reducam eos de
terra Ægypti, & de Aſſyriis congregabo
eos, & ad terram Galaad
& Libani adducam eos, &
11 non invenietur eis locus : Et
tranſibit in maris freto, & percutiet
in mari fluctus, & confundentur
omnia profunda fluminis,
& humiliabitur ſuperbia Aſſur,
& ſceptrum Ægypti recedet.
12 Confortabo eos in Domino, &
in nomine ejus ambulabunt,dicit
Dominus.

CAP. XI.

1 APeri, Libane, portas tuas, &
2 comedat ignis cedros tuas. Ulula,
abies, quia cecidit cedrus, quoniam
magnifici vaſtati ſunt : ululate,quercus
Baſan, quoniam ſucciſus
3 eſt ſaltus munitus. Vox ululatûs
paſtorum, quia vaſtata eſt
magnificentia eorum : vox rugitûs
leonum, quoniam vaſtata eſt
4 ſuperbia Jordanis. Hæc dicit Dominus
Deus meus ; Paſce pecora
5 occiſionis, Quæ qui poſſederant,
occidebant, & non dolebant,
& vendebant ea , dicentes;
Benedictus Dominus, divites
facti ſumus : & paſtores eorum
6 non parcebant eis. Et ego non
parcam ultrà ſuper habitantes
terram, dicit Dominus: ecce ego
tradam homines, unumquemque
in manu proximi ſui, & in manu
regis ſui : & concîdent terram,
7 & non eruam de manu eorum.Et
paſcam pecus occiſionis propter
hoc,ô pauperes gregis. Et aſſumpſi
mihi duas virgas, unam vocavi
Decôrem, & alteram vocavi Funiculum
8 : & pavi gregem. Et
ſuccîdi tres paſtores in menſe
uno, & contracta eſt anima mea
in eis : ſiquidem & anima eorũ
9 variavit in me. Et dixi; Non
paſcam vos : quod moritur, moriatur
: & quod ſucciditur, ſuccidatur:
& reliqui devorent unuſquiſque
carnem proximi ſui.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

8 Σημανῶ (ν) αὐτοῖς, καὶ εἰσδέξομαι αὐτοὺς,
διότι λυτρώσομαι αὐτοὺς, καὶ πληθυνθήσονται
9 καθότι ἦσαν πολλοί. Καὶ σπερῶ
αὐτοὺς ἐν (ξ) λαοῖς, καὶ οἱ μακρὰν μνησθήσονταί
μου, (ο) ἐκθρέψουσι τὰ τέκνα αὐτῶν,
10 καὶ ἐπιστρέψουσι. Καὶ ἐπιστρέψω αὐτοὺς
ἐκ γῆς Αἰγύπτου, καὶ ἐξ Ἀσσυρίων εἰσδέξομαι
αὐτοὺς, καὶ εἰς τὴν Γαλααδῖτιν, καὶ εἰς
τὸν Λίβανον εἰσάξω αὐτοὺς, καὶ οὐ μὴ ὑπολειφθῇ
11 ἐξ αὐτῶν οὐδὲ εἷς. Καὶ διελεύσονται
ἐν θαλάσσῃ στενῇ, καὶ πατάξουσιν ἐν
θαλάσσῃ κύματα, καὶ (π) ξηρανθήσεται
πάντα τὰ βάθη ποταμῶν, καὶ ἀφαιρεθήσεται
πᾶσα ὕβρις Ἀσσυρίων, καὶ σκῆπτρον
12 Αἰγύπτου περιαιρεθήσεται. Καὶ κατισχύσω
αὐτοὺς ἐν κυρίῳ θεῷ αὐτῶν, καὶ ἐν τῷ ὀνόματι
αὐτοῦ κατακαυχήσονται, λέγει κύριος.

Significabo eis, & ſuſcipiam 8
illos, quia redimam eos: &
multiplicabuntur, ſicut erant
plurimi: Et ſeminabo eos in 9
populis: & qui de longè, recordabuntur
mei: nutrient filios
ſuos, & convertentur. Et convertam 10
eos de terra Ægypti: &
de Aſſyriis ſuſcipiam illos: &
in Galaaditin & in Libanum introducam
eos, & nullus ex eis
deerit. Et pertranſibunt in mari 11
anguſto, & percutient in mari
fluctus, & ſiccabuntur omnia
profunda fluviorum, & auferetur
univerſa injuria Aſſyriorum:
& ſceptrum Ægypti tolletur. Et 12
confortabo eos in Domino Deo
ſuo: & in nomine ejus (c)gloriabuntur,
dicit Dominus.

MS. A. (ν) αὐτοὺς, διότι λυτρώσομαι αὐτοὺς, καὶ εἰσδέξομαι αὐτοὺς, καὶ πληθυνθήσονται (ξ) * ἀλλήλοις, καὶ (ο) καὶ ἐκθρέψουσιν (π) ξηρανθήσονται

ΚΕΦ. ιά.

1 ΔΙάνοιξον ὁ Λίβανος τὰς θύρας σου,
2 καὶ καταφαγέτω πῦρ τὰς κέδρους σου. Ὀλολυξάτω
πίτυς, διότι πέπτωκε κέδρος,
ὅτι μεγάλως μεγιστᾶνες ἐταλαιπώρησαν·
ὀλολύξατε δρύες τῆς Βασανίτιδος, ὅτι
3 κατεσπάσθη ὁ δρυμὸς ὁ σύμφυτος. Φωνὴ
θρηνούντων ποιμένων, ὅτι τεταλαιπώρηκεν
ἡ μεγαλωσύνη αὐτῶν· φωνὴ ὠρυομένων
λεόντων, ὅτι τεταλαιπώρηκε τὸ φρύαγμα
4 τοῦ Ἰορδάνου. Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ,
Ποιμαίνετε τὰ πρόβατα τῆς
5 σφαγῆς, Ἃ οἱ κτησάμενοι κατέσφαζον,
καὶ οὐ (α)μετεμέλλοντο, καὶ οἱ πωλοῦντες αὐτὰ
ἔλεγον, Εὐλογητὸς κύριος, καὶ πεπλουτήκαμεν·
καὶ οἱ ποιμένες αὐτῶν οὐκ ἔπασχον
6 οὐδὲν ἐπ᾽ αὐτοῖς. Διατοῦτο οὐ φείσομαι
οὐκέτι ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας τὴν γῆν, λέγει
(β) κύριος. καὶ ἰδοὺ ἐγὼ παραδίδωμι
τοὺς ἀνθρώπους, ἕκαστον εἰς χεῖρα τοῦ πλησίον
αὐτοῦ, καὶ εἰς χεῖρα βασιλέως αὐτοῦ, καὶ
κατακόψουσι τὴν γῆν, καὶ οὐ μὴ (γ) ἐξέλωμαι
7 ἐκ χειρὸς αὐτῶν· Καὶ ποιμανῶ
τὰ πρόβατα τῆς σφαγῆς εἰς τὴν (δ)
Χαναανῖτιν. καὶ λήψομαι ἐμαυτῷ δύο ῥάβδους,
(ε) τὴν μὲν μίαν ἐκάλεσα Κάλλος,
καὶ τὴν ἑτέραν ἐκάλεσα Σχοίνισμα, καὶ
8 ποιμανῶ τὰ πρόβατα. Καὶ ἐξαρῶ τοὺς
τρεῖς ποιμένας ἐν μηνὶ ἑνὶ, καὶ βαρυνθήσεται
ἡ ψυχή μου ἐπ᾽ αὐτοὺς, καὶ γὰρ αἱ ψυχαὶ
9 αὐτῶν ἐπωρύοντο ἐπ᾽ ἐμέ. Καὶ εἶπα, Οὐ
ποιμανῶ ὑμᾶς. τὸ ἀποθνῆσκον ἀποθνησκέτω,
καὶ τὸ ἐκλεῖπον ἐκλιπέτω, καὶ τὰ
κατάλοιπα κατεσθιέτωσαν ἕκαστος τὰς
σάρκας τοῦ πλησίον αὐτοῦ.

CAP. XI.

APeri,Libane,portas tuas, & 1
comedat ignis cedros tuas. Ululet
pinus, quia cecidit cedrus;
quia valdè miſeri facti ſunt optimates. 2
Ululate,quercus Baſanitidis,
quia ſucciſus eſt ſaltus conſitus.
Vox lugentium paſtorum: 3
quoniam miſera facta eſt magnificentia
eorum. Vox rugientium
leonum: quia afflictus eſt fremitus
Jordanis. Hæc dicit Dominus 4
omnipotens; Paſcite oves
occiſionis, Quas qui poſſederunt, 5
interficiebant, & non egebant
pœnitentiam: & qui vendebant
eas, dicebant; Benedictus Dominus,
& divites facti ſumus.
Et paſtores earum nihil patiebantur
ſuper eis. Ideò non parcã 6
ultrà ſuper habitatores terræ, dicit
Dominus. Et ecce ego trado
homines; unumquemque in manum
proximi ſui, & in manum
regis ejus. Et concîdent terram;
& non eruam de manu eorum:
Et paſcam oves occiſionis in 7
(a) Chanaanitide. Et aſſumam
mihi duas (b)virgas: unam vocavi
Decorem: & alteram vocavi
Funiculum. Et paſcam oves.
Et auferam tres paſtores in menſe 8
uno: & ingraveſcet anima
mea ſuper eos: ſiquidem & animæ
eorum (c) rugiebant ſuper
me. Et dixi; Non paſcam 9
vos. Quod moritur; moriatur:
& quod deficit; deficiat: &
reliquiæ, devorent unuſquiſque
carnes proximi ſui.

MS. A. (α) μετεμέλοντο, (β) κύριος παντοκράτωρ. (γ) ἐξελοῦμαι (δ) Χανανῖτιν. (ε) τὴν μίαν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

אכלי לכנשא גלותהון ואקרבנון ארי פרקתנון ויסגון כמא די אמר עליהון יסגון : וכמא 8
דבדרתנון ביני עממיא ובארעא רחיקא הוו דכירין לדחלתי ויורכון שני חיין עם בניהון 9
ויתובון : וכמא דאפקתנון מארעא דמצרים כן מאתור אקרב גלותהון ולארעא גלעד 10
ומקדשא אעלנון ולא יספק להון : ויתעבדון להון נסין וגבורן כמא דאתעבידו 11
לאבהתהון בימא ויחזון בפורענות סנאיהון כמא דאטרפו גבריא בגלי ימא ויבהתון
כל מלכי עממיא ויבטל תוקפא מאתוראה ושלטן מצרים יעדי : ואגברנון במימרא דיי 12
ובשמיה יהכון פריקין אמר יי :

יא

פתחו עממיא תרעיכון ותשיצי אשתא תוקפיכון : אילילו מלכיא ארי אתברו שלטוניא 1
דעתירי נכסיא מתבזזין אילילו טורני מדינתא ארי אתבזיז מחוז תוקפיכון : קל צוחת 2 3
מלכיא ארי אתבזיזו מחוזיהון קל ניהמתהון כבני אריון כד יביש עליהון רום ירדנא :
כדנן אמר יי אלהי אתנבי על פרנסיא דאתמניאו לפרנסא עמא ואנון שליטו בהון כענא 4
לנכסתא : די קניהין קטלין להין אמרין לא עלנא חובא ומזבניהין אמרין בריך יי די 5
אעתרנא ורעיהן לא חיסין עליהין : ארי לא אחוס עוד על יתבי ארעא אמר יי הא אנא 6
מגרי ית אנשא גבר ביד חבריה וביד מלכיה ויבזון ית ארעא ולא אשיזיב מידהון :
ומניתי פרנסיא על עמא ואנון שלטו בהון כענא לנכסתא מסכינו וטלטלו ית עמי 7
ואתפליגו קדמי לתרתין פלגון אתפליגו בית ישראל על דבית יהודה וקצו במלכותא
דבית דוד די בהון רעוא קדמי למהוי פרנסין על עמי : ושציתי ית תלתא פרנסיא בירחא 8
חד ורחיק מימרי יתהון על דנפשתהון קצת בפולחני : ואמרית דלא למנאה עליכון 9
פרנס דמיתין ימותון ודמשתיצן ישתיצון ודישתארון יבזון גבר ית נכסי קריביה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Clamabo ut congregẽ captivitatem eorum;& coadunabo eos quia redemi 8
eos:& multiplicabuntur ſicut dictum eſt eos multiplicatum iri.Et ſicut diſperſi 9
eos inter populos,& in terra longinqua recordabantur timoris mei:&
prolongabunt annos vitæ cum filiis ſuis,& revertentur.Et ſicut eduxi eos de 10
terra Ægypti, ſic congregabo captivitatem eorum de Aſſur;& ad terrã Galaad,
& ſanctuarii adducã eos, & non ſufficiet eis. Et fient eis miracula & 11
magnalia ſicut facta ſunt patrib⁹ eorũ in *mari*; & videbũt ultionẽ inimicorũ
ſuorũ, ut involuti ſunt viri in fluctib⁹ maris, & confundentur omnes reges
populorũ,& ceſſabit fortitudo ab Aſſyriis ; & dominiũ Ægyptiorũ auferetur.
Et roborabo eos in verbo Dñi,& in nomine ej⁹ ambulabunt redempti, 12
dicit Dominus.

CAP. XI.

APerite populi portas veſtras,& conſumet ignis munitiones veſtras.Ululate 1
reges quia contriti ſunt principes,qui opib⁹ erant divites, vaſtati 2
ſunt.Ululate ſatrapæ provinciarũ quia vaſtata eſt regio fortitudinis veſtræ.
Vox clamoris regũ quia vaſtatæ ſunt provinciæ eorũ: vox rugit⁹ eorũ ut catulorũ 3
leonũ,quoniã exiccata eſt propter eos elatio Jordanis.Sic dicit Dñs 4
Deus, Vaticinare adverſ⁹ gubernatores qui conſtituti ſunt ad gubernãdum
populũ meũ,& ipſi dominati ſunt in eos quaſi in oves occiſionis. Qui poſſident 5
eas occidunt eas,dicentes: Non imputabitur nobis peccatũ : & vendentes
eas dicunt,Benedict⁹ Dñs quia divites facti ſum⁹, & paſtores earum
non parcunt eis. Non enim parcã ultrà habitatorib⁹ terræ,ait Dñs:Ecce ego 6
tradam unumquemq; in manũ proximi ſui,& in manũ regis ſui:& diripient
terrã,& non eruam de manib⁹ eorũ.Et conſtitui gubernatores ſuper populũ, 7
& ipſi dominati ſunt in eos,ſicut in oves occiſioni[*deſtinatas.*]& depauperaverunt
& migrare fecerunt populũ meũ. Et diviſi ſunt corã me in
duas diviſiones:et diviſa eſt dom⁹Iſrael à domo Juda:et deteſtati ſunt regnũ
dom⁹David,ex qua placitũ erat mihi ut eſſent gubernatores ſuper populum
meũ. Et conſumpſi tres gubernatores in menſe uno. Et projecit eos Verbũ 8
meũ, eò quòd deteſtata eſt anima eorum cultum meum. Et dixi quòd non 9
conſtituerem ſuper vos gubernatorẽ: qui moriuntur moriantur,& qui conſumuntur
conſumantur, et qui reliqui fuerint, diripiat unuſquiſque ſubſtantiã proximi ſui.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܐܫܪܩ ܠܗܘܢ. ܘܐܟܢܫ ܐܢܘܢ. ܡܛܠ ܕܦܪܩܬ ܐܢܘܢ. ܘܢܣܓܘܢ. ܐܝܟ ܕܣܓܝܐܝܢ ܗܘܘ. 8
* ܘܐܙܪܥ ܐܢܘܢ ܒܥܡܡܐ .· ܘܒܐܬܪܘܬܐ ܪܚܝܩܐ ܢܫܒܚܘܢܢܝ. ܘܢܪܒܘܢ ܒܢܝܗܘܢ. 9
ܘܢܬܦܢܘܢ. * ܘܐܗܦܟ ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܡܢ ܐܬܘܪ ܐܟܢܫ ܐܢܘܢ. ܘܠܐܪܥܐ 10
ܕܓܠܥܕ ܘܠܠܒܢܢ ܐܝܬܐ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܢܣܦܩܘܢ ܠܗܘܢ. * ܘܢܥܒܪ ܒܝܡܐ ܐܘܠܨܢܐ. 11
ܘܢܡܚܐ ܒܝܡܐ ܓܠܠܐ. ܘܢܒܗܬܘܢ ܟܠܗܘܢ ܥܘܡܩܝܗܘܢ ܕܢܗܪܐ. ܘܢܒܛܠ ܫܘܒܗܪܗ
ܕܐܬܘܪ. ܘܫܘܠܛܢܗ ܕܡܨܪܝܢ ܢܥܒܪ. * ܘܐܚܝܠ ܐܢܘܢ ܒܡܪܝܐ .· ܘܒܫܡܗ 12
ܢܣܒܪܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.

* Sibilabo eis, & congregabo eos, quandoqui- 8
dem redemi eos: & multiplicabuntur quem-
admodum multi erant. Et diſſeminabo eos 9
inter gentes, & in regionibus remotis lauda-
bunt me, & educabunt filios ſuos, & reverten-
tur. Et reducam eos de terra Ægypti, & ex 10
Aſſyria colligam eos; adducámque ad terram
Galaadis & Libani, & non ſufficient eis. Per 11
mare tranſibit anguſtia, & fluctus volutabit in
mari, & obſtupeſcent cuncta profunda flumi-
nis, ceſſabit faſtus Aſſyrii, & dominium Æ-
gyptii deficiet. Eos autem in Domino cor- 12
roborabo, & nomen ejus ſperabunt, dicit
Dominus.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܐ *

* ܦܬܚ ܠܒܢܢ ܬܪܥܝܟ. ܘܬܐܟܘܠ ܢܘܪܐ ܠܐܪܙܝܟ. * ܢܝܠܠ ܒܪܘܬܐ ܡܛܠ 1 2
ܕܢܦܠ ܐܪܙܐ. ܘܥܫܝܢܐ ܐܬܒܙܘ. ܢܝܠܠܘܢ ܒܠܘܛܐ ܕܡܬܢܢ .· ܕܢܦܠ ܥܒܐ ܥܫܝܢܐ.
* ܩܠ ܕܝܠܠܬܐ ܕܪܥܘܬܐ. ܕܐܬܒܙܙ ܝܩܪܗܘܢ .· ܩܠ ܕܢܗܡܬܐ ܕܐܪܝܘܬܐ. ܕܐܬܒܙܙ ܫܘܒܗܪܗ 3
ܕܝܘܪܕܢܢ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ. * ܪܥܝ ܥܢܐ ܕܢܟܣܬܐ. ܕܩܢܘܝܗܝܢ 4 5
ܩܛܠܝܢ ܠܗܝܢ. ܘܠܐ ܡܬܚܝܒܝܢ. ܘܡܙܒܢܢܝܗܝܢ ܐܡܪܝܢ. ܒܪܝܟ ܡܪܝܐ ܕܐܥܬܪܢ.
ܘܪܥܘܬܗܝܢ. ܠܐ ܚܝܣܝܢ ܥܠܝܗܝܢ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܚܘܣ ܬܘܒ ܥܠ ܥܡܘܪܝܗ 6
ܕܐܪܥܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܗܐ ܡܫܠܡ ܐܢܐ ܠܗܘܢ ܠܒܢܝܢܫܐ .· ܐܢܫ ܒܐܝܕ ܚܒܪܗ. ܘܒܐܝܕ
ܡܠܟܗ. ܘܢܟܬܬܘܢܗ ܠܐܪܥܐ .· ܘܠܐ ܐܦܪܘܩܝܗ ܡܢ ܐܝܕܝܗܘܢ. * ܘܪܥܝܬ ܠܥܢܐ 7
ܕܢܟܣܬܐ ܡܛܠ ܟܢܫܐ ܕܥܢܐ. ܘܢܣܒܬ ܠܝ ܬܪܝܢ ܚܘܛܪܝܢ. ܠܚܕ ܩܪܝܬ
ܫܘܦܪܐ. ܘܠܚܕܐ ܩܪܝܬ ܚܒܠܐ .· ܘܪܥܝܬ ܠܥܢܐ. * ܘܐܘܒܕܬ ܬܠܬܐ ܪܥܘܬܐ ܒܝܪܚܐ ܚܕ. ܘܐܬܥܝܩܬ 8
ܢܦܫܝ ܒܗܘܢ. ܘܐܦ ܢܦܫܗܘܢ. ܐܬܬܢܚܬ ܥܠܝ. * ܘܐܡܪܬ ܕܠܐ ܐܪܥܐ ܠܟܘܢ. ܕܡܝܬܐ. ܬܡܘܬ 9
ܘܕܐܒܕܐ. ܬܐܒܕ ܘܕܡܫܬܚܪܐ. ܬܐܟܘܠ ܒܣܪܐ ܕܚܒܪܬܗ.

CAP. XI.

* APeri Libane portas tuas, ut devoret ignis 1
cedros tuas: Ejulet abies, quia corruit cedrus, 2
& potentes direpti ſunt: ejulent quercus Bai-
ſanis, quia concidit ſylva illa ingens. Vox 3
ululatûs paſtorum, quia vaſtata eſt magnifi-
centia eorum: vox leonum rugientium, quia
vaſtatum eſt robur Jordanis. Sic dicit mihi 4
Dominus Deus meus; Paſce oves tenues, quas 5
emptores interficiunt, nec rei ſunt; quarum
venditores dicunt, Benedictus Dominus qui
ditavit nos; quarum paſtores nullâ erga eas
utuntur clementiâ. Non ſum enim poſthac 6
uſurus clementiâ erga habitatores terræ, dicit
Dominus; ſed ecce traditurus ſum eos homi-
nibus, alterum in alterius manum, & in ma-
num regis ſui: dividéntque terram, & non
eripiam eam de manibus eorum. Itaque pavi 7
oves tenues propter congregationem ovium:
& aſſumptis mihi duobus baculis, quorum
unum vocavi Benignum, alterũ verò Funem;
pavi oves illas. Et perdidi tres paſtores uno 8
menſe, abhorruerat enim ab eis anima mea,
& animæ ipſorum contra me gemuerant: Et 9
dixi, Non paſcam vos: quæ moritura eſt, mo-
riatur; & quæ peritura, pereat; & quæ reſidua
fuerit, comedat carnem ſociarum ſuarum.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* واعطيهم علامة واقبلهم * من اجل اني انقذهم * ويكثرون كما كانوا كثيرين * وابذرهم 8 9
في الشعوب * والذين بعيدا يذكروني * يعولون اولادهم ويرجعون * واردهم من ارض 10
مصر * ومن الموصليين اقبلهم * والي الارض الجلعادية والي لبنان ادخلهم * ولا يتخلف
منهم ولا واحد * ويجوزون في بحر ضيق * ويضربون في البحر امواجا * ويجف كل اعماق 11
الانهار * وينزع كل كبرياء الموصليين * ويزول لواء مصر * وساقويهم بالرب الههم * وباسمه 12
يفتخرون يقول الرب *

* *Signum dabo eis, & recipiam eos; quia* 8
redimam eos: & multiplicabuntur quem-
admodum erant plurimi; Et diſſemi- 9
nabo eos inter populos; & qui procul
ſunt, recordabuntur mei: nutrient filios
ſuos, & revertentur. Et reducam eos 10
de terra Ægypti, & ex Aſſyriis recipi-
am eos: & in terram Galaaditis & in
Libanum introducam eos, & ne unus qui-
dem ex eis relinquetur. Et tranſibunt 11
per mare anguſtum, & percutient in ma-
ri fluctus, & areſcent omnia profunda
fluviorum, & auferetur tota ſuperbia
Aſſyriorum, deficiétque vexillum Ægy-
pti. Et confortabo eos in Domino 12
Deo ſuo, & in nomine ejus gloriabun-
tur, dicit Dominus.

* الفصل الحادي عشر *

* افتح يا لبنان ابوابك * ولتاكل النار ارزاتك * ليولول الصنوبر * من اجل ان 1 2
الارز سقطت * لان العظماء شقيوا عظيما * ولولوا يا بلوط البيسانية * لان الغابة العرين
سقطت * صوت رعاة باكين لان عظمهم شقيت * صوت اسود زائرة * لان رجة الاردن 3
شقيت * هكذا يقول الرب الضابط الكل * ارعوا غنم الذبيحة اللاتي ذبحوهن المفسدون 4 5
ولم يشفقوا * وباعوهن قالوا مبارك الرب قد استغنينا * ورعاتهن لم يتالموا عليهن شيا *
* لاجل هذا لا اشفق بعد على سكان الارض يقول الرب * وها انا ادفع الناس كل واحد 6
في يدي صاحبه وفي يدي ملكه * ويقطعون الارض ولا اخلصها من يديهم * وارعى 7
غنم الذبيحة بالكنعانية * واخذ عليهم عصايين * الواحدة دعوتها حسنا * والاخرى
دعوتها حبلا * وارعى الغنم * وانزع الثلاثة رعاة في شهر واحد * ويثقل نفسي عليهم * 8
لان نفوسهم عوت على * وقلت لا ارعاكم * المايت ليمت * والهالك ليهلك * والتي تبقى 9
لياكل كل واحد لحوم صاحبه *

CAP. XI.

* *APeri O Libane portas tuas, devo-* 1
rétque ignis cedros tuas: ululet pinus, 2
quia cedrus cecidit, quia magnates miſer-
rimi facti ſunt: ululate O quercus Bai-
ſanitidis, quia ſylva defixa concidit.
Vox paſtorum lugentium, quia magnifi- 3
centia eorum miſera facta eſt: vox leo-
num rugientium, quia fremitus Jorda-
nis miſer factus eſt. Sic dicit Dominus 4
omnipotens; Paſcite oves mactationis 5
quas mactaverunt depravatores, nec pe-
percerunt; quarum venditores dixerunt,
Benedictus ſit Dominus, jam divites fa-
cti ſumus; quarum paſtores nullo propter
eas tangebantur dolore. Propterea non 6
parcam ampliùs habitatoribus terræ, di-
cit Dominus; ſed ecce ego tradam homi-
num quemque in manus ſocii ſui, & in
manus regis ſui: excindéntque terram,
nec eruam eam de manu eorum. Et pa- 7
ſcam oves mactationis in Chanaanitide:
aſſumptíſque ſuper eas duabus virgis,
quarum unam vocavi Pulchritudinem, al-
teram vocavi Funiculum; paſcam oves.
Et auferam tres paſtores uno menſe; & 8
gravis erit ſuper eos anima mea, quia a-
nimæ ipſorum ululaverunt contra me. Et 9
dixi, Non paſcam vos: qui moriturus
eſt, moriatur; qui periturus, pereat; &
eorum qui ſuperfuerint, comedat quiſque
carnes ſocii ſui.

זכריה׃ יב

diſſipandum ad : eam abſcidi & , *Noham* meam virgam tuli Et
10 ואקח את־מקלי את־נעם ואגדע אתו להפיר
eſt irritum Et .populis omnibus cum pepigi quod , meum pactum
11 את־בריתי אשר כרתי את־כל־העמים׃ ותפר
, me *cuſtodientes* , *pecoris afflicti* ſic cognoverunt & : illa die In
ביום ההוא וידעו כן עניי הצאן השמרים אתי
,veſtris oculis in bonum Si : eos ad dixi Et .*ipſum* Domini verbum quod
12 כי דבר־יהוה הוא׃ ואמר אליהם אם־טוב בעיניכם
appenderunt & : ceſſate , *non ſi &* , meam mercedem afferte
הבו שכרי ואם־לא חדלו וישקלו את־
: me ad Dominus dixit Et .argenteis triginta meam mercedem
13 שכרי שלשים כסף׃ ויאמר יהוה אלי
ſum appretiatus *qua gloriæ magnificentiam* ,*fictorem* ad *illum* Projice
השליכהו אל־היוצר אדר היקר אשר יקרתי
domum *illud* projeci & ; argenteos triginta tuli & : eis *deſuper*
מעליהם ואקחה שלשים הכסף ואשליך אתו בית
, ſecundam meam virgam præcidi Et .*fictorem* ad Domini
14 יהוה אל־היוצר׃ ואגדע את־מקלי השני את
.Iſrael inter &,Jehudah inter fraternitatem *diſſipandum ad* , *Chobelim*
החבלים להפר את־האחוה בין יהודה ובין ישראל׃
.ſtulti paſtoris vas tibi ſume Adhuc : me ad Dominus dixit Et
15 ויאמר יהוה אלי עוד קח־לך כלי רעה אולי׃
non ſuccifa , terra in paſtorem *ſuſcitans* ego ecce Quia
16 כי־הנה־אנכי מקים רעה בארץ הנכחדות לא־
ſtantem : ſanabit non contritum & , quæret non *juvenem* , viſitabit
יפקד הנער לא־יבקש והנשברת לא ירפא הנצבה
.abrumpet eorũ ungulas & ,comedet pinguis carnem & ,*ſuſtentabit* non
לא יכלכל ובשר הבריאה יאכל ופרסיהן יפרק׃
, ejus brachium ſuper Gladius .*pecoris* derelictor , *vani* paſtor *Væ*
17 הוי רעי האליל עזבי הצאן חרב על־זרועו
oculus & ,areſcet areſcendo ejus brachium:ejus dextrum oculum ſuper &
ועל־עין ימינו זרעו יבוש תיבש ועין
.*caligabit caligando* ejus dexter
ימינו כהה תכהה׃

CAP. XII. יב

extendens Dominus Dixit : Iſrael ad Domini verbi *Onus*
1 משא דבר־יהוה על־ישראל נאם־יהוה נטה
.ejus *interiori* in hominis ſpiritum *formans* & , terram *fundans* & , cœlos
שמים ויסד ארץ ויצר רוח־אדם בקרבו׃
omnibus *ſoporis ſcyphum* Jeruſalaim *ponens* ego Ecce
2 הנה אנכי שם את־ירושלם סף־רעל לכל־
contra obſidione in erit Jehudah ſuper etiam & : *circum* populis
העמים סביב וגם על־יהודה יהיה במצור על־
Jeruſalaim ponam , illa die in erit Et .Jeruſalaim
3 ירושלם׃ והיה ביום־ההוא אשים את־ירושלם
:*incidentur incidendo,eo ſe onerantes* omnes:populis omnibus *oneris* lapidem
אבן מעמסה לכל־העמים כל־עמסיה שרוט ישרטו
illa die In .terræ gentes omnes eum adverſus colligentur &
4 ונאספו עליה כל גויי הארץ׃ ביום ההוא
ejus aſcenſorem & ,ſtupore in equum omnem Percutiam ,Dominus dixit
נאם־יהוה אכה כל־סוס בתמהון ורכבו
omnem & ,meos oculos aperiam Jehudah domum ſuper & : amentia in
בשגעון ועל־בית יהודה אפקח את־עיני וכל־
.cæcitate in percutiam populorum equum
סוס העמים אכה בעורון׃

Verſio VULG. LAT.

10 Et tuli virgam meam, quæ vocabatur Decus; & abſcidi eam, ut irritum facerem fœdus meum, quod percuſſi cum omnibus populis. 11 Et in irritum deductum eſt in die illa: & cognoverunt ſic pauperes gregis, qui cuſtodiunt mihi, quia verbum Domini eſt. 12 Et dixi ad eos; Si bonum eſt in oculis veſtris, afferte mercedem meam, & ſi non, quieſcite. Et appenderunt mercedem meam triginta argenteos. 13 Et dixit Dominus ad me; Projice illud ad ſtatuarium, decorum pretium, quo appretiatus ſum ab eis. Et tuli triginta argenteos, & projeci illos in domum Domini ad ſtatuarium. 14 Et præcidi virgam meam ſecundam, quæ appellatur Funiculus, ut diſſolverem germanitatem inter Judam & Iſrael. 15 Et dixit Dominus ad me; Adhuc ſume tibi vaſa paſtoris ſtulti. 16 Quia ecce ego ſuſcitabo paſtorem in terra, qui derelicta non viſitabit, diſperſum non quæret, & contritum non ſanabit; & id quod ſtat non enutriet, & carnes pinguium comedet, & ungulas eorum diſſolvet. 17 O paſtor, & idolum derelinquens gregem: gladius ſuper brachium ejus, & ſuper oculum dextrum ejus: brachium ejus ariditate ſiccabitur, & oculus dexter ejus tenebreſcens obſcurabitur.

CAP. XII.

1 ONus verbi Domini ſuper Iſrael. Dicit Dominus extendens cœlum, & fundans terram, & fingens ſpiritum hominis in eo; 2 Ecce ego ponam Jeruſalem ſuperliminare crapulæ omnibus populis in circuitu: ſed & Juda erit in obſidione contra Jeruſalem. 3 Et erit: in die illa ponam Jeruſalem lapidem oneris cunctis populis: omnes, qui levabunt eam, conciſione lacerabuntur: & colligentur adverſus eam omnia regna terræ. 4 In die illa, dicit Dominus, percutiam omnem equum in ſtuporem, & adſcenſorẽ ejus in amentiam: & ſuper domum Juda aperiam oculos meos, & omnem equum populorum percutiam cæcitate.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

10 Καὶ λήψομαι τὴν ῥάβδον μου τὴν καλὴν, καὶ ἀπορρίψω αὐτὴν, τοῦ διασκεδάσαι τὴν διαθήκην μου, ἣν διεθέμην πρὸς πάντας τοὺς λαοὺς, 11 Καὶ (ζ) διασκεδασθήσεται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ γνώσονται οἱ Χαναναῖοι τὰ πρόβατα τὰ (η) φυλασσόμενά μοι, διότι λόγος κυρίου ἐστί. 12 Καὶ ἐρῶ πρὸς αὐτοὺς, Εἰ καλὸν ἐνώπιον ὑμῶν ἐστι, δότε (θ) τὸν μισθόν μου, ἢ ἀπείπασθε. καὶ ἔστησαν τὸν μισθόν μου τριάκοντα ἀργυροῦς. 13 Καὶ εἶπε κύριος πρὸς μὲ, Κάθες αὐτοὺς εἰς τὸ χωνευτήριον, καὶ (ι) σκέψομαι εἰ δόκιμόν ἐστιν, ὃν τρόπον ἐδοκιμάσθην ὑπὲρ αὐτῶν. καὶ ἔλαβον τοὺς τριάκοντα ἀργυροῦς, καὶ ἐνέβαλον αὐτοὺς (κ) εἰς τὸν οἶκον κυρίου εἰς τὸ χωνευτήριον. 14 Καὶ ἀπέρριψα τὴν ῥάβδον τὴν δευτέραν τὸ Σχοίνισμα, τοῦ διασκεδάσαι τὴν (λ) κατάσχησιν ἀναμέσον Ἰούδα, καὶ ἀναμέσον (*) Ἰσραήλ. 15 Καὶ εἶπε κύριος πρὸς μὲ, Ἔτι λάβε σεαυτῷ (μ) σκεύη ποιμενικὰ ποιμένος ἀπείρου. 16 Διότι ἰδοὺ ἐγὼ ἐξεγείρω ποιμένα ἐπὶ τὴν γῆν, τὸ ἐκλιμπάνον οὐ μὴ ἐπισκέψηται, καὶ τὸ (ν) ἐσκορπισμένον οὐ μὴ ζητήσῃ, καὶ τὸ συντετριμμένον οὐ μὴ ἰάσηται, καὶ τὸ ὁλόκληρον οὐ μὴ κατευθύνῃ, καὶ τὰ κρέα τῶν ἐκλεκτῶν καταφάγεται, καὶ τοὺς ἀστραγάλους αὐτῶν (ξ) ἐκστρέψει. 17 Ὦ οἱ ποιμαίνοντες τὰ μάταια, (ο) καταλελοιπότες τὰ πρόβατα, μάχαιρα ἐπὶ τοὺς βραχίονας αὐτοῦ, καὶ ἐπὶ τὸν ὀφθαλμὸν τὸν δεξιὸν αὐτοῦ, ὁ βραχίων αὐτοῦ ξηραινόμενος ξηρανθήσεται, καὶ ὁ ὀφθαλμὸς (π) ὁ δεξιὸς αὐτοῦ ἐκτυφλούμενος ἐκτυφλωθήσεται.

Et aſſumam virgam meam Pulchram, & projiciam eam: ut diſſipem teſtamentum meum, quod diſpoſui ad omnes populos. 11 Et diſſipabitur in die illa: & cognoſcent Chananæi oves, quæ cuſtodiuntur mihi, quia verbum Domini eſt. 12 Et dicam ad eos; Si bonum eſt in conſpectu veſtro; date mercedem meam, aut renuite. Et ſtatuerunt mercedem meam triginta argenteos. 13 Et dixit Dominus ad me; Depone eos in (d) conflatorium: & (e) conſiderabo, ſi probatum eſt; ſicut probatus ſum pro eis. Et tuli triginta argenteos, & miſi eos in domum Domini in conflatorium. 14 Et abjeci virgam [meam] ſecundam, Funiculum, ut diſſiparem (f) poſſeſſionem inter Judam & Iſrael. 15 Et dixit Dominus ad me; Adhuc ſume tibi vaſa paſtoralia paſtoris (g) imperiti: 16 Quia ecce ego ſuſcito paſtorem ſuper terram: quod deficit, non viſitabit: & diſperſum non requiret, & contritum non ſanabit, & integrum non diriget: & carnes electorum devorabit, & talos eorum pervertet. 17 O qui paſcitis vana, qui dereliquiſtis oves, gladius ſuper brachium ejus, & ſuper oculum ejus dextrum: brachium ejus areſcens areſiet, & oculus dexter ejus excæcatus excæcabitur.

MS. A. διασκεδασθήσονται (η) φυλασσόμενα, διότι (θ) στήσατε τὸν (ι) σκέψαι αὐτὸ (κ) εἰς οἶκον (λ) διαθήκην μου ἀναμέσον (*) τοῦ Ἰσραήλ. (μ) *σκεῦος ποιμαίνος ἀπείρου ποιμαινικά· (ν) διεσκορπισμένον (ξ) ἐκρίψει. (ο) καὶ οἱ καταλελοιπότες (π) αὐτοῦ ὁ δεξιὸς

ΚΕΦ. ιβʹ.

1 ΛΗμμα λόγου κυρίου ἐπὶ τὸν Ἰσραήλ. λέγει κύριος, ἐκτείνων οὐρανὸν, καὶ θεμελιῶν γῆν, καὶ πλάσσων πνεῦμα (α) ἀνθρώπου ἐν αὐτῷ, 2 Ἰδοὺ ἐγὼ τίθημι τὴν Ἱερουσαλὴμ ὡς πρόθυρα σαλευόμενα πᾶσι τοῖς λαοῖς κύκλῳ, καὶ ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ (β) ἔσται περιοχὴ ἐπὶ Ἱερουσαλήμ. 3 Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ θήσομαι τὴν Ἱερουσαλὴμ λίθον καταπατούμενον πᾶσι τοῖς ἔθνεσι· πᾶς ὁ καταπατῶν αὐτὴν ἐμπαίζων ἐμπαίξεται, καὶ ἐπισυναχθήσονται ἐπ᾽ αὐτὴν πάντα τὰ ἔθνη τῆς γῆς. 4 Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγει κύριος παντοκράτωρ, πατάξω πάντα ἵππον ἐν ἐκστάσει, καὶ τὸν ἀναβάτην αὐτοῦ ἐν παραφρονήσει, ἐπὶ δὲ τὸν οἶκον Ἰούδα διανοίξω τοὺς ὀφθαλμούς μου, καὶ πάντας τοὺς ἵππους τῶν λαῶν πατάξω ἐν ἀποτυφλώσει.

CAP. XII.

1 ASſumptio verbi Domini ſuper Iſrael. Dicit Dominus extendens cœlum, & fundans terram, & fingens ſpiritum hominis in eo; 2 Ecce ego pono Hieruſalem, ut ſuperliminaria, quæ moventur, omnibus populis in circuitu. Et in Judæa erit obſidio ſuper Hieruſalem. 3 Et erit, in die illo ponam Hieruſalem lapidem, qui conculcatur, cunctis gentibus: omnis, qui conculcaverit eam illudens illudet. Et congregabuntur ſuper eam omnes gentes terræ. 4 In die illa, dicit Dominus omnipotens, percutiam omnem equum in ſtupore, & aſcenſorem ejus in amentia: ſuper domum autem Juda aperiam oculos meos: & omnes equos populorum percutiam in cæcitate.

MS.A. (α) αὐτοῦ ἐν (β) καὶ ἔσται

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 ואיתיתי ית סנחריב מלכא דאתור על מלכא דישראל ואגליתי יתיה על די אשניאו קימא דגזר עמהון דלא למפלח לטעותא בכן גלו בני עממיא׃ 11 ועל דאשניאו קימא גלן בעדנא ההיא וידעון כן ענותניא חשיכי עמא די עבדו רעותי ארי פתגמא דיי הוא׃ 12 ואמרית להון אם תקין בעיניכון עבידו רעותי ואם לא אתמנעו ועבדו ית רעותי גברין מקצת׃ 13 ואמר יי לי כתוב דכרן עובדיהון בחילש כתבא ורמי יתיה לבית מקדשא ורמי לתחות יד אמרכלא חלף דיקרית דחלתי בעיניהון וכתבית דכרן עובדיהון בחילש כתבא ורמיתי יתיה לבית מקדשא דיי לתחות יד אמרכלא רבא׃ 14 ואיתיתי נבוכדנצר מלכא דבבל על צדקיה מלך שבטא דבית יהודה ואגליתי יתיה על דאשניאו קימא אף אנון דבית יהודה כאחיהון בית ישראל׃ 15 ואמר יי לי עוד איזל אתנבי על פרנסא טפשא׃ 16 ארי הא אנא מקים פרנסא בארעא דשנן לא יבעי דאטלטלו לא יתבע דתבירין לא יסי דקימין לא יסובר ונכסי עתיריא יבוז ושארהון יגמר׃ 17 וי על פרנסא טפשא דאתפקיד ליה עמא לפרנסא די הוא דמי לטבחא די סכיניה בידיה ועיניה על שמינתא למכס דרעיה מיבש תיבש ועיניה דימינא מכהא תכהי׃

יב

1 מטל פתגמא דיי על ישראל אמר יי דתלא שמיא ושכליל ארעא וברא רוחא דאנשא במעוהי׃ 2 הא אנא משוי ית ירושלם מן מלי מרוי לכל עממיא סחור סחור ואף דבית יהודה ייתונון עממיא ביד אניסין בצירא לירושלם׃ 3 ויהי בעדנא ההיא אשוי ית ירושלם אבן תקלא לכל עממיא כל אנסהא אתבוזא יתבזזון ויתכנשון עלה כל עממי ארעא׃ 4 בעדנא ההיא אמר יי אמחי כל סוסות עממיא בטפשותא ורוכביהון בשעממותא ועל דבית יהודה אגלי ית גבורתי לאטבא להון וכל סוסות עממיא אמחי בסמיותא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

10 Et adduxi Senacherib regem Aſſur contra regem Iſrael, & migrare feci eum, eò quòd irritum fecerunt pactum quod pepigi cum eis, ut non ſervirent idolis: ideò migraverunt *filii populorum*. 11 Et quia irritum fecerunt pactum, migraverunt in tempore illo: ut ſcirent poſtea manſueti pauperes populi, qui fecerunt voluntatem meam, quia verbum Dñi eſt. 12 Et dixi eis, Si rectum eſt in oculis veſtris, facite voluntatem meam; ſi non, ſinite: & fecerunt voluntatem meam viri ex parte. 13 Et dixit Dñs ad me, Scribe memoriam operum eorum in archivo ſcripturarum, & projice illud in domo ſanctuarii Domini, *projice inquam* ſub manu præpoſiti: pro eo quòd pretioſum feci timorem mei in oculis eorum, & ſcripſi memoriam operum eorum in archivo ſcripturarum: & projeci illud in domo ſancturii Dñi ſub manu præpoſiti magni. 14 Et adduxi Nabuchodonoſor regem Babyloniæ contra Sedechiam regem tribus domus Juda: & captivum *duxi* eum, eò quòd irritum fecerant pactum etiam illi viri domus Juda, ſicut fratres eorum viri domus Iſrael. 15 Et dixit Dñs ad me, Adhuc vade, vaticinare ſuper gubernatorem inſipientem. 16 Quia ecce ego inſtituo gubernatorem in terra: illos qui erraverunt, non quæret; & illos qui migraverunt, non requiret; & illos qui contriti ſunt non ſanabit; & illos qui ſtant non ſuſtentabit, & ſubſtantias divitum diripiet, & reliquias eorum conſumet. 17 Væ ſuper gubernatorem inſipientem, qui commendatus eſt populo ut gubernet illum: qui ſimilis eſt lanioni, qui habet gladium in manu ſua, & oculus ipſius reſpicit ad pinguia ut jugulet ea. Brachium ej⁹ ariditate areſcet, & ocul⁹ ej⁹ dexter obſcuratione obſcurabitur.

CAP. XII.

1 ONus verbi Dñi ſuper Iſrael, dixit Dñs qui appendit cœlos, et fundavit terram, et creavit ſpiritum hominis in viſceribus ejus. 2 Ecce ego ponam Jeruſalem vas plenum ebrietate omnibus populis in circuitu, et etiam viros domus Juda adducent populi per vim in obſidione Jeruſalem. 3 Et erit in tempore illo, ponam Jeruſalem lapidem offenſionis omnib⁹ populis. Omnes qui vim intulerint ei, vaſtatione vaſtabuntur: congregabuntur autem contra eam omnes populi terræ. 4 In tempore illo, dicit Dñs, percutiam omnes equos populorum amentia, et aſcenſores eorum ſtupore; et ſuper viros domus Juda revelabo potentiam meam, ut benefaciam eis; et omnes equos populorum percutiam cæcitate.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

10 * ܘܢܣܒܬ ܚܘܛܪܝ ܫܦܝܪܐ. ܘܬܒܪܬܗ. ܕܐܦܣܘܩ ܩܝܡܐ ܕܩܝܡܬ ܥܡ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ.
11 * ܘܐܬܦܣܩ ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܘܝܕܥܘ ܡܣܟܢܐ ܕܥܢܐ ܕܢܛܪܝܢ ܗܘܘ ܠܝ. ܕܦܬܓܡܗ ܗܘ
12 ܕܡܪܝܐ. * ܘܐܡܪܬ ܠܗܘܢ. ܐܢ ܫܦܝܪ ܒܥܝܢܝܟܘܢ. ܗܒܘ ܠܝ ܐܓܪܝ. ܘܐܢ ܟܠܝܢ ܐܢܬܘܢ
13 ܠܗ. ܘܬܩܠܘ ܠܝ ܐܓܪܝ. ܬܠܬܝܢ ܕܟܣܦܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܐܪܡܝܘܗܝ ܒܒܝܬ ܓܙܐ.
ܝܩܪܐ ܘܫܘܒܚܐ ܕܐܫܬܒܚܬ ܡܢܗܘܢ. ܘܢܣܒܬ ܬܠܬܝܢ ܕܟܣܦܐ. ܘܐܪܡܝܬ ܐܢܘܢ ܒܒܝܬ
14 ܓܙܐ. ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܬܒܪܬ ܚܒܠܐ ܚܘܛܪܝ ܐܚܪܢܐ. ܕܐܦܣܘܩ ܐܚܘܬܐ ܕܒܝܢ
15 16 ܝܗܘܕܐ ܠܐܝܣܪܐܝܠ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܬܘܒ ܣܒ ܠܟ ܡܐܢܝ ܕܪܥܝܐ ܣܟܠܐ. * ܡܛܠ
ܕܗܐ ܐܢܐ ܡܩܝܡ ܐܢܐ ܪܥܝܐ ܒܐܪܥܐ. ܐܒܝܕܐ ܠܐ ܢܣܥܘܪ. ܘܛܥܝܐ ܠܐ ܢܒܥܐ. ܘܬܒܝܪܐ ܠܐ
ܢܚܒܘܫ. ܘܟܪܝܗܐ ܠܐ ܢܐܣܐ. ܘܚܠܝܡܐ ܠܐ ܢܬܪܣܐ. ܘܒܣܪܐ ܕܫܡܝܢܬܐ ܢܐܟܘܠ.
17 ܘܦܪܣܬܗܝܢ ܢܓܪܘܡ. * ܐܘ ܪܥܝܐ ܣܟܠܐ. ܕܫܒܩܬ ܥܢܐ ܥܠ ܕܪܥܟ. ܘܥܠ ܥܝܢܟ
ܝܡܝܢܝܬܐ. ܕܪܥܟ ܝܡܝܢܝܐ ܢܝܒܫ. ܘܥܝܢܟ ܝܡܝܢܝܬܐ ܬܥܘܪ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܒ *

1 * ܚܙܘܐ ܕܦܬܓܡܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܝܣܪܐܝܠ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܕܡܬܚ ܫܡܝܐ. ܘܐܩܝܡ
2 ܫܬܐܣܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܘܒܪܐ ܪܘܚܗ ܕܒܪܢܫܐ ܒܓܘܗ. * ܗܐ ܐܢܐ ܥܒܕ ܐܢܐ ܠܐܘܪܫܠܡ.
ܐܣܦܐ ܕܪܘܥܠܐ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܚܕܪܝܗ ܠܗ̇. ܘܐܦ ܥܠ ܝܗܘܕܐ ܢܗܘܐ ܨܪܐ
3 ܥܡ ܐܘܪܫܠܡ. * ܘܢܗܘܐ ܒܗܘ ܝܘܡܐ ܗܘ. ܐܥܒܕܝܗ̇ ܠܐܘܪܫܠܡ ܟܐܦܐ
ܕܕܝܫܐ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܕܕܝܫܝܢ ܠܗ̇. ܡܫܪܛܘ ܢܫܬܪܛܘܢ. ܘܢܬܟܢܫܘܢ
4 ܥܠܝܗ̇ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܐܪܥܐ. * ܒܗܘ ܝܘܡܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܡܚܐ
ܠܟܠܗܘܢ ܪܟܫܐ ܒܬܡܗܐ. ܘܠܪܟܒܝܗܘܢ ܒܫܘܪܐ. ܘܥܠ ܒܝܬܗ ܕܝܗܘܕܐ ܐܦܬܚ
ܥܝܢܝ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܪܟܫܐ ܕܥܡܡܐ ܐܡܚܐ ܒܥܘܪܝܐ.

* Tuli deinde baculum meum Benignum, & fregi eum; ut irritum facerem fœdus quod pepigeram cum omnibus populis: 10 Irritóque facto eodem die, cognoverunt humiles inter oves quæ me obſervabant, ſermonem eſſe Domini. 11 Et dixi eis; Si rectum vobis videtur, date mihi mercedem meam: an verò denegaretis mihi? & appenderunt mercedem meam triginta argenteos. 12 Dixit autem mihi Dominus; Injice eam in ærarium, gloriam *ſcilicet* illam & honorem quo honeſtatus ſum ab eis; accepi ergò illos triginta argenteos, & injeci in ærarium in domo Domini. 13 Poſtea fregi Funem, *nempè* baculum meum alterum; ut irritam facerem concordiam quæ erat inter Judam & Iſraelem. 14 Et dixit mihi Dominus; Iterum ſume tibi inſtrumenta paſtoris ſtolidi: 15 Quoniam ecce ego ſuſcitaturus ſum paſtorem in terra, qui pereuntes non inviſet, errantes non requiret, fractas non conſolidabit, infirmis non mědebitur, integras non alet; ſed carnem pinguium comedet, & crura earum corrodet. 16 Heus paſtor ſtolide, cujus brachio & oculo dextero oves commiſi, brachium tuum dexterum areſcet, & oculus tuus dexter excæcabitur. 17

CAP. XII.

* Viſio ſermonum Domini de Iſraele. Dicit Dominus qui cœlos extendit, & firmavit fundamenta terræ, & creavit ſpiritum hominis intra ipſum: 1 En ego effecturus ſum Jeroſolymam, oſtium tremoris omnibus gentibus circunjacentibus ei. 2 Quin etiam contra Judam cum Jeroſolymis erit obſidio. Erítque eo die, ut efficiam Jeroſolymam lapidem conculcationis omnibus gentibus; 3 omnes tamen conculcantes eam planè dilanientur: etiamſi congregentur adverſùs eam omnes terræ populi. Eodem die, dicit Dominus, omnes equos ejus ſtupore percutiam, et conſcenſores eorum ſtupiditate: 4 at ſuper domum Judæ aperiam oculos meos, et omnes populorum equos cæcitate percutiam.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الاصحاح التسع والعشرون * وهو الخامس من النبوة *

10 * واخذ عصاي الجيدة واطرحها * لابطل عهدي الذي عهدته مع جميع الشعوب *
11 * ويبطل في ذلك اليوم * ويعلم الكنعانيون الاغنام المحروسة لي * من اجل ان قول الرب
12 هو * واقول لهم ان كان هو حسن امامكم اعطوني اجرتي * او تظلموني * فاقاموا اجرتي
13 ثلاثين من الفضة * وقال الرب لي * القها في الكور * وتعهد ان كان هو مجربا كما جربت
من اجلهم * واخذت الثلاثين الفضة * ووضعتها والقيتها في بيت الرب في الكور * كما امرني
14 15 الرب * وطرحت عصاي الثانية الحبل * لابطل الضبط بين يهودا وبين اسرائيل * وقال الرب
16 لي ايضا * خذ لك آنية راع ابله رعيه * من اجل اني ها انا اقيم راعيا على الارض لا يرد
الهالك * ولا يطلب الشارد * ولا يشفي المكسور * ولا يقوم الصحيح * وياكل لحوم المختار *
17 ويعرق اكارعها * الا يا ايها الذين يرعون الاباطيل وتاركي الغنم * السيف على ذراعه وعلى
عينه اليمني * ذراعه يابس ييبس * وعينه اليمني عميا تعمي *

* الفصل الثاني عشر *

1 * وحي قول الرب على اسرائيل * هكذا يقول الرب الذي مد السماء * واسس الارض * وجبل
2 روح الانسان فيها * ها انا اصنع ايروسليم مثل دهاليز مزعزعة لكل الشعوب المحيطين *
3 ويكون في اليهودية زمام على ايروسليم * ويكون في ذلك اليوم اصنع ايروسليم حجرا
4 مداسا عند الامم * كل من يدوسها يلعب لعبا * ويجمع عليها كل امم الارض * في ذلك
اليوم يقول الرب الضابط الكل * اضرب كل فرس بالبهتة * وراكبه بالجهل * على بيت يهودا
افتح عيني * وجميع خيول الشعب اضربهم بالعما *

Textus vigeſimus nonus, hujus autem prophetiæ quintus.

* *Et accipiam virgam meam Bonam, et projiciam eam; ut irritum faciam fœdus meum quod inieram cum omnibus populis:* 10 * *Et cùm irritum factum fuerit eo die, cognoſcent Chananæi oves mihi reſervatas: quia ſermo Domini eſt.* 11 *Et dicam eis, Si conſentaneum eſt apud vos, date mihi mercedem meam; alioqui fraudaretis me. Et ſtatuerunt mercedem meam triginta argenteos.* 12 *Dixitque mihi Dominus: Injice eos in furnum, & explora utrùm illi ſint probati; quemadmodum probatus ſum propter eos: quare accepi triginta illos argenteos, poſuique & injeci eos in domo Domini in furnum, quemadmodum præceperat mihi Dominus.* 13 *Deinde abjeci virgam meam ſecundam,* nempe *Funiculum, ut abolerem cohærentiam inter Judam & inter Iſraelem.* 14 *Dixit etiam mihi Dominus; Accipe tibi vaſa paſtoris ſtolidi in paſcendo.* 15 *Ecce enim ego ſuſcitabo ſuper terram paſtorem, qui pereuntem non reducet, errantem non quæret, fractam non medebitur, & integram non diriget; ſed carnes electarum comedet, & earum crura corrodet.* 16 *Annon O qui paſcitis vanitates, & derelinquitis oves, gladius imminet brachio ejus & oculo ejus dextro? brachium ejus penitùs areſcet, & oculus ejus dexter penitùs excæcabitur.* 17

CAP. XII.

* *Revelatio ſermonis Domini de Iſraele. Sic dicit Dominus qui cœlum extendit, terram fundavit, & ſpiritum hominis formavit in ea;* 1 *Ecce ego ponam Jeruſalem ut podia vacillantia omnibus populis adjacentibus: & erit in Judæa obſidio contra Jeroſolymam.* 2 *Fietque eo die, ut ponam Jeroſolymam lapidem conculcatum apud gentes: quicunque conculcabit eam, ludum ludet: & congregabuntur adverſùs eam omnes terræ gentes.* 3 *Eo die, dicit Dominus omnipotens, omnem equum ſtupore percutiam, & conſcenſorem ejus amentiâ. Super domum Judæ aperiam oculos meos, omnes autem populi equos cæcitate percutiam.* 4

זכריה : יג

habitatores mihi Robur : ſuo corde in Jehudah duces dicent Et
וְאָמְרוּ אַלֻּפֵי יְהוּדָה בְּלִבָּם אַמְצָה לִי יֹשְׁבֵי 5
illa die In ſuo Deo exercituum Domino in Jeruſalaim
יְרוּשָׁלִַם בַּיהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵיהֶם׃ בַּיּוֹם הַהוּא 6
, ligna inter ignis focum ſicut , Jehudah duces ponam
אָשִׂים אֶת־אַלֻּפֵי יְהוּדָה כְּכִיּוֹר אֵשׁ בְּעֵצִים
ſuper &,dexteram ſuper devorabunt & ,manipulo in ignis lampadem ſicut &
וּכְלַפִּיד אֵשׁ בְּעָמִיר וְאָכְלוּ עַל־יָמִין וְעַל־
adhuc Jeruſalaim habitabitur &:circum populos omnes ſiniſtram
שְׂמֹאול אֶת־כָּל־הָעַמִּים סָבִיב וְיָשְׁבָה יְרוּשָׁלִַם עוֹד
Jehudah tentoria Dominus ſervabit Et .Jeruſalaim in ſe ſubter
תַּחְתֶּיהָ בִּירוּשָׁלִָם׃ וְהוֹשִׁיעַ יְהוָה אֶת־אָהֳלֵי יְהוּדָה 7
, David domus gloria magnificetur non ut : principio in
בָּרִאשֹׁנָה לְמַעַן לֹא־תִגְדַּל תִּפְאֶרֶת בֵּית־דָּוִיד
illa die In .Jehudah contra Jeruſalaim habitatoris gloria &
וְתִפְאֶרֶת יֹשֵׁב יְרוּשָׁלִַם עַל־יְהוּדָה׃ בַּיּוֹם הַהוּא 8
corruens erit & , Jeruſalaim habitatorem ſuper Dominus proteget
יָגֵן יְהוָה בְּעַד יוֹשֵׁב יְרוּשָׁלִַם וְהָיָה הַנִּכְשָׁל
, Deus tanquam David domus & : David ſicut illa die in eis in
בָּהֶם בַּיּוֹם הַהוּא כְּדָוִיד וּבֵית דָּוִיד כֵּאלֹהִים
quæram : illa die in ,erit Et .eorum facies ad Domini angelus tanquam
כְּמַלְאַךְ יְהוָה לִפְנֵיהֶם׃ וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא אֲבַקֵּשׁ 9
.Jeruſalaim contra venientes ,gentes omnes diſperdendum ad
לְהַשְׁמִיד אֶת־כָּל־הַגּוֹיִם הַבָּאִים עַל־יְרוּשָׁלִָם׃
Jeruſalaim habitatorem ſuper & , David domum ſuper effundam Et
וְשָׁפַכְתִּי עַל־בֵּית דָּוִיד וְעַל יוֹשֵׁב יְרוּשָׁלִַם 10
quem me ad aſpicient & , miſerationum & , gratiæ ſpiritum
רוּחַ חֵן וְתַחֲנוּנִים וְהִבִּיטוּ אֵלַי אֵת אֲשֶׁר־
,unigenitum ſuper planctum veluti eum ſuper plangent &:transfixerunt
דָּקָרוּ וְסָפְדוּ עָלָיו כְּמִסְפֵּד עַל־הַיָּחִיד
illa die In .primogenitum ſuper amariſicare ut,eum ſuper amariſicare &
וְהָמֵר עָלָיו כְּהָמֵר עַל־הַבְּכוֹר׃ בַּיּוֹם הַהוּא 11
Hadadrimmon planctus ſicut , Jeruſalaim in planctus erit magnus
יִגְדַּל הַמִּסְפֵּד בִּירוּשָׁלִַם כְּמִסְפַּד הֲדַדְרִמּוֹן
familiæ familiæ , terra planget Et .Meghiddon campo in
בְּבִקְעַת מְגִדּוֹן׃ וְסָפְדָה הָאָרֶץ מִשְׁפָּחוֹת מִשְׁפָּחוֹת 12
: ſeorſum eorum mulieres &,ſeorſum David domus familia : ſeorſum
לְבָד מִשְׁפַּחַת בֵּית־דָּוִיד לְבָד וּנְשֵׁיהֶם לְבָד
Familia .ſeorſum eorum mulieres &,ſeorſum Nathan domus familia
מִשְׁפַּחַת בֵּית־נָתָן לְבָד וּנְשֵׁיהֶם לְבָד׃ מִשְׁפַּחַת 13
Simei familia : ſeorſum eorum mulieres & ,ſeorſum Levi domus
בֵּית־לֵוִי לְבָד וּנְשֵׁיהֶם לְבָד מִשְׁפַּחַת הַשִּׁמְעִי
, reliquæ familiæ Omnes .ſeorſum eorum mulieres & ,ſeorſum
לְבָד וּנְשֵׁיהֶם לְבָד׃ כֹּל הַמִּשְׁפָּחוֹת הַנִּשְׁאָרוֹת 14
.ſeorſum eorum mulieres & ,ſeorſum familiæ familia
מִשְׁפָּחֹת מִשְׁפָּחֹת לְבָד וּנְשֵׁיהֶם לְבָד׃

CAP. XIII. יג

David domui patens vena erit illa die In
בַּיּוֹם הַהוּא יִהְיֶה מָקוֹר נִפְתָּח לְבֵית דָּוִיד 1
die in erit Et .menſtruum in &,peccatum in Jeruſalaim habitatoribus &
וּלְיֹשְׁבֵי יְרוּשָׁלִָם לְחַטַּאת וּלְנִדָּה׃ וְהָיָה בַיּוֹם 2
faciam ſuccidere , exercituum DOMINUS dixit , illa
הַהוּא נְאֻם יְהוָה צְבָאוֹת אַכְרִית
memorabuntur non & , terra è idolorum nomina
אֶת־שְׁמוֹת הָעֲצַבִּים מִן־הָאָרֶץ וְלֹא יִזָּכְרוּ
immundum ſpiritum & , prophetas etiam & : amplius
עוֹד וְגַם אֶת־הַנְּבִיאִים וְאֶת־רוּחַ הַטֻּמְאָה
.terra è faciam tranſire
אַעֲבִיר מִן־הָאָרֶץ׃

Verſio VULG. LAT.

5 Et dicent duces Juda in corde ſuo;
Confortentur mihi habitatores
Jeruſalem in Domino exercituum
6 Deo eorum. In die illa ponam
duces Juda ſicut caminum ignis in
lignis, & ſicut facem ignis in fœno;
& devorabunt ad dexteram
& ad ſiniſtram omnes populos in
circuitu: & habitabitur Jeruſalem
rurſus in loco ſuo in Jeruſalem.
7 lem. Et ſalvabit Dominus tabernacula
Juda, ſicut in principio: ut
non magnificè glorietur domus
David, & gloria habitantium Jeruſalem
8 contra Judam. In die illa
proteget Dominus habitatores
Jeruſalem, & erit qui offenderit
ex eis in die illa, quaſi David, &
domus David quaſi Dei, ſicut angelus
Domini in conſpectu eorum.
9 Et erit in die illa: quæram
conterere omnes Gentes, quæ veniunt
10 contra Jeruſalem. Et effundam
ſuper domum David, & ſuper
habitatores Jeruſalem ſpiritum
gratiæ & precum: & aſpicient
ad me, quem confixerunt: et
plangent eum planctu quaſi ſuper
unigenitum, & dolebunt ſuper
eum, ut doleri ſolet in morte primogeniti.
11 In die illa magnus erit
planctus in Jeruſalem, ſicut planctus
Adrademmon in campo Mageddon.
12 Et planget terra: familiæ
& familiæ ſeorſum: familiæ
domûs David ſeorſum, & mulieres
13 eorum ſeorſum: Familiæ
domûs Nathan ſeorſum, & mulieres
eorum ſeorſum: familiæ
domûs Levi ſeorſum, & mulieres
eorum ſeorſum: familiæ Semei
ſeorſum, & mulieres eorum
14 ſeorſum. Omnes familiæ reliquæ,
familiæ & familiæ ſeorſum,
& mulieres eorum ſeorſum.

CAP. XIII.

1 IN die illa erit fons patens domui
David, & habitantibus Jeruſalem,
in ablutionem peccatoris
2 & menſtruatæ. Et erit in die illa,
dicit Dominus exercituum:
Diſperdam nomina idolorum de
terra, & non memorabuntur ultrá:
& pſeudoprophetas, & ſpiritum
immundum auferam de
terra:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

5 Καὶ ἐροῦσιν οἱ χιλίαρχοι Ἰούδα ἐν ταῖς καρδίαις
αὐτῶν, Εὑρήσομεν ἑαυτοῖς τοὺς κατοικοῦντας
Ἱερουσαλὴμ ἐν κυρίῳ παντοκράτορι
6 θεῷ αὐτῶν. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ θήσομαι
τοὺς χιλιάρχους Ἰούδα ὡς δαλὸν πυρὸς
ἐν ξύλοις, καὶ ὡς λαμπάδα πυρὸς ἐν
καλάμῃ, καὶ καταφάγονται ἐκ δεξιῶν, καὶ
ἐξ εὐωνύμων πάντας τοὺς λαοὺς κυκλόθεν,
καὶ κατοικήσει Ἱερουσαλὴμ ἔτι καθ' (γ) ἑαυτὴν
7 ἐν Ἱερουσαλήμ. Καὶ σώσει κύριος τὰ
σκηνώματα Ἰούδα, καθὼς ἀπ' ἀρχῆς,
ὅπως μὴ μεγαλύνηται καύχημα οἴκου Δαυὶδ
καὶ (δ) ἔπαρσις τῶν κατοικούντων Ἱερουσαλὴμ
8 ἐπὶ τὸν (ε) Ἰούδα. Καὶ ἔσται ἐν τῇ
ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ὑπερασπιεῖ κύριος ὑπὲρ τῶν
κατοικούντων Ἱερουσαλήμ, καὶ ἔσται ὁ ἀσθενῶν
ἐν αὐτοῖς ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ ὡς (ζ)
Δαυίδ, ὁ δὲ οἶκος Δαυὶδ ὡς οἶκος θεοῦ, ὡς
9 ἄγγελος κυρίου ἐνώπιον αὐτῶν. Καὶ ἔσται ἐν
τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ζητήσω (η) ἐξᾶραι πάντα
τὰ ἔθνη τὰ (θ) ἐρχόμενα ἐπὶ Ἱερουσαλήμ.
10 Καὶ ἐκχεῶ ἐπὶ τὸν οἶκον Δαυίδ, καὶ ἐπὶ τοὺς
κατοικοῦντας Ἱερουσαλὴμ πνεῦμα χάριτος καὶ
οἰκτιρμοῦ. καὶ ἐπιβλέψονται πρός με, ἀνθ'
ὧν κατωρχήσαντο. καὶ κόψονται ἐπ' (ι) αὐτὸν
κοπετόν, ὡς ἐπ' (κ) ἀγαπητῷ, καὶ ὀδυνηθήσονται
ὀδύνην, ὡς (′) ἐπὶ τῷ πρωτοτόκῳ.
11 Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ μεγαλυνθήσεται ὁ
κοπετὸς ἐν Ἱερουσαλήμ, ὡς κοπετὸς
12 ῥοῶνος ἐν πεδίῳ ἐκκοπτομένου. Καὶ
κόψεται ἡ γῆ κατὰ φυλὰς φυλάς. (λ) φυλὴ
οἴκου Δαυὶδ καθ' ἑαυτήν, καὶ αἱ γυναῖκες
13 αὐτῶν καθ' ἑαυτάς· Φυλὴ οἴκου Νάθαν καθ'
ἑαυτήν, καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν καθ' ἑαυτάς.
φυλὴ οἴκου Λευὶ καθ' ἑαυτήν, καὶ αἱ γυναῖκες
αὐτῶν καθ' ἑαυτάς· φυλὴ τοῦ Συμεὼν
καθ' ἑαυτήν, καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν καθ'
14 ἑαυτάς. Πᾶσαι (μ) αἱ ὑπολελειμμέναι
φυλαί, φυλὴ καθ' ἑαυτήν, καὶ αἱ γυναῖκες
αὐτῶν καθ' ἑαυτάς.

Et dicent Tribuni Juda in cordibus 5
ſuis; (a) Inveniemus nobis
eos, qui habitant Hieruſalem in
Domino omnipotente Deo eorum.
In die illa ponam tribunos Iuda, 6
ſicut torrem ignis in lignis, &
ſicut facem ignis in ſtipula: &
devorabunt à dextris, & à ſiniſtris
omnes populos per circuitum:
& habitabit adhuc Hieruſalem
(b) per ſeipſam in Hieruſalem. Et 7
ſalva faciet Dominus tabernacula
Juda, ſicut à principio: ut
non magnificetur gloria domûs
David, & elatio habitatorum
Hieruſalem ſuper Judam. Et erit, 8
in die illa proteget Dominus
habitatores Hieruſalem: & qui
infirmus in eis fuerit; in die illa
erit ſicut (c) David, & domus
David, quaſi domus Dei, (d) ſicut
angelus Domini in conſpectu eorum:
Et erit, in die illa quæram 9
auferre omnes gentes, quæ veniunt
contra Hieruſalem. Et effundam 10
ſuper domum David, & ſuper
habitatores Hieruſalem ſpiritum
gratiæ, et miſericordiæ. Et aſpicient
in me pro eo, quòd (e) inſultaverunt:
et plangent ſuper eum
planctum, quaſi ſuper dilectum,
et dolebunt dolore, quaſi ſuper
primogenito. In die illa magnus 11
erit planctus in Hieruſalem: ſicut
planctus (f) malogranati,
quod in campo ſucciditur. Et 12
planget terra per tribus tribus: tribus
domus David ſeorſum, et mulieres
eorum (g) ſeorſum: Tribus 13
domûs Nathan ſeorſum, et mulieres
eorum ſeorſum: tribus domûs
Levi ſeorſum, et mulieres
eorum ſeorſum: tribus Syneon
ſeorſum, et mulieres eorum ſeorſum:
Omnes reliquæ tribus, tribus 14
ſeorſum, et mulieres eorum
ſeorſum.

MS. A. (γ) ἑαυτήν. Καὶ σώσει κύριος τὰ (δ) ἔπαρξις (ε) Ἰούδαν. (ζ) οἶκος Δαυίδ, ὡς οἶκος θεοῦ, (η) τοῦ ἐξᾶραι (θ) ἐπερχόμενα (ι) αὐτοὺς (κ) ἀγαπητόν, (′) ἐπὶ πρωτοτόκῳ. (λ) φυλὴ φυλὴ καθ' ἑαυτήν, καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν καθ' ἑαυτάς. φυλὴ οἴκου Δαυίδ (μ) αἱ φυλαὶ αἱ ὑπολελειμμέναι, φυλὴ

ΚΕΦ. ιγʹ.

1 Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσται πᾶς τόπος
διανοιγόμενος (α) τῷ οἴκῳ Δαυίδ, καὶ
τοῖς κατοικοῦσιν Ἱερουσαλὴμ εἰς τὴν μετακίνησιν,
2 καὶ εἰς τὸν (β) χωρισμόν. Καὶ ἔσται
ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγει (γ) κύριος σαβαώθ,
ἐξολεθρεύσω τὰ ὀνόματα τῶν εἰδώλων
ἀπὸ τῆς γῆς, καὶ οὐκ ἔτι (δ) αὐτῶν
ἔσται μνεία· καὶ τοὺς ψευδοπροφήτας, καὶ τὸ
πνεῦμα τὸ ἀκάθαρτον ἐξαρῶ ἀπὸ τῆς γῆς.

CAP. XIII.

IN die illa erit omnis locus apertus 1
(a) domui David, et habitantibus
Hieruſalem in tranſmutationem
et in (b) ſeparationem.
Et erit in die illa, dicit 2
Dominus Sabaoth, diſperdam
nomina idolorum de terra: et
non erit ultrà eorum memoria.
Et pſeudoprophetas, et ſpiritum
immundum auferam de terra.

MS. A. (α) ἐν τῷ (β) ῥαντισμόν. (γ) κύριος, ἐξολεθρεύσω (β) ἔσται αὐτῶν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

וְיֵימְרוּן רַבְרְבֵי יְהוּדָה בְּלִבְּהוֹן אִשְׁתְּכַח פּוּרְקָן לְיָתְבֵי יְרוּשְׁלֵם בְּמֵימְרָא דַיְיָ צְבָאוֹת 5
אֱלָהָהוֹן׃ בְּעִדָּנָא הַהִיא אֲשַׁוֵּי יָת רַבְרְבֵי יְהוּדָה כִּלְבוּשׁ דִּי נוּר בְּאָעַיָּא וּכְבַעוּר דְּאִשָּׁא 6
בְּעַמִּירָא וְיִבְזוּן מִן דָּרוֹמָא וּמִן צִפּוּנָא יָת כָּל נִכְסֵי עַמְמַיָּא סְחוֹר סְחוֹר וְתִתֵּיב יְרוּשְׁלֵם
עוֹד בְּאַתְרַהּ וְתִצְלַח יְרוּשְׁלֵם׃ וְיִפְרוֹק יְיָ יָת קִרְוַיָּא דְּבֵית יְהוּדָה בְּקַדְמֵיתָא בְּדִיל דְּלָא 7
תִסְגֵּי אִתְרַבְרְבוּת בֵּית דָּוִד וְאִתְרַבְרְבוּת יָתְבֵי יְרוּשְׁלֵם עַל דְּבֵית יְהוּדָה׃ בְּעִדָּנָא 8
הַהִיא יְרַחֵים יְיָ עַל יָתְבֵי יְרוּשְׁלֵם וִיהֵי דְּחַלָּשׁ בְּהוֹן בְּעִדָּנָא הַהִיא כְּדָוִד וּבֵית דָּוִד
כְּרַבְרְבִין יַצְלְחוּן כְּמַלְאֲכָא דַיְיָ קֳדָמֵיהוֹן׃ וִיהֵי בְּעִדָּנָא הַהִיא אֶתְבַּע לְשֵׁיצָאָה יָת כָּל 9
עַמְמַיָּא דִּי מִתְכַּנְשִׁין וְאָתַן עַל יְרוּשְׁלֵם׃ וְאֶשְׁפּוֹךְ עַל דְּבֵית דָּוִד וְעַל יָתְבֵי יְרוּשְׁלֵם 10
רוּחַ חִסְדָּא וְרַחֲמִין וְיִבְעוּן מִן קֳדָמַי עַל דִּי אִטַּלְטָלוּ וְיִסְפְּדוּן עֲלוֹהִי כְּמָא דְסָפְדִין עַל
יְחִידָא וְיֵימְרוּן עֲלוֹהִי כְּמָא דְמַמְרִין עַל בּוּכְרָא׃ בְּעִדָּנָא הַהִיא יִסְגֵּי מִסְפְּדָא בִּירוּשְׁלֵם 11
כְּמִסְפְּדָא דְאַחְאָב בַּר עָמְרִי דִּי קְטַל יָתֵיהּ הֲדַדְרִמּוֹן בַּר טַבְרִמּוֹן וּכְמִסְפַּד יֹאשִׁיָּה בַּר
אָמוֹן דִּי קְטַל יָתֵיהּ פַּרְעֹה חֲגִירָא בְּבִקְעַת מְגִדּוֹן׃ וְיִסְפְּדוּן דָּיְרֵי אַרְעָא זַרְעִין זַרְעִין גַּבְרֵיהוֹן 12
לְחוֹד וּנְשֵׁיהוֹן לְחוֹד זַרְעִית בֵּית דָּוִד לְחוֹד גַּבְרֵיהוֹן לְחוֹד וּנְשֵׁיהוֹן לְחוֹד זַרְעִית בֵּית
נָתָן גַּבְרֵיהוֹן לְחוֹד וּנְשֵׁיהוֹן לְחוֹד׃ זַרְעִית בֵּית לֵוִי לְחוֹד גַּבְרֵיהוֹן לְחוֹד וּנְשֵׁיהוֹן לְחוֹד 13
זַרְעִית בֵּית שִׁמְעִי גַּבְרֵיהוֹן לְחוֹד וּנְשֵׁיהוֹן לְחוֹד׃ כָּל זַרְעִיתָא דִּי אִשְׁתְּאָרָא זַרְעִין זַרְעִין 14
גַּבְרֵיהוֹן לְחוֹד וּנְשֵׁיהוֹן לְחוֹד׃

יג

בְּעִדָּנָא הַהִיא יְהֵי אוּלְפַן אוֹרַיְתָא גְּלֵי כְּמַבּוּעַ דְּמַיִּין לְבֵית דָּוִד וּלְיָתְבֵי יְרוּשְׁלֵם וְאֶשְׁבּוֹק 1
לְחוֹבֵיהוֹן כְּמָא דְמִדַּכַּן בְּמֵי אַדִּיוּתָא וּבִקְטַם תּוֹרְתָא דְחַטָּאתָא׃ וִיהֵי בְּעִדָּנָא הַהִיא 2
אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת אֲשֵׁיצֵי יָת שׁוּם טַעֲוַת עַמְמַיָּא מִן אַרְעָא וְלָא יְהֵי דִּכְרָן מִשּׁוּמְהוֹן עוֹד וְאַף
יָת נְבִיֵּי שִׁקְרָא וְיָת רוּחַ מְסָאֲבָא אֲבַטֵּל מִן אַרְעָא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et dicent principes Juda in cordibꝰ ſuis, Inventa eſt ſalus habitatoribꝰ Jeru- 5
ſalem per verbum Domini exercituum Dei ipſorum. In tempore illo ponam 6
principes Juda ſicut veſtimentū ignitum inter ligna, & quaſi lampadem ignis
inter manipulos: & vaſtabunt ab Auſtro, & ab Aquilone omnes ſubſtantias
populorum per circuitum, habitabitúrq; rurſus Jeruſalem in loco ſuo, & pro-
ſperabitur Jeruſalem. Et ſalvabit Dn̄s civitates domus Juda in principio, ut 7
non multiplicetur magnitudo domꝰ David, & magnitudo habitatorum Je-
ruſalem ſuper viros domꝰ Juda. In tempore illo miſerebitur Dn̄s habitato- 8
rum Jeruſalem: & qui infirmꝰ fuerit in eis, in tempore illo erit ſicut David,
& domꝰ David inſtar heroum feliciter agent, acſi angelus Dn̄i in conſpectu
eorum eſſet. Et erit in tempore illo, quæram conſumere omnes populos qui 9
congregantur ut veniant contra Jeruſalem. Et effundam ſuper domum David, 10
& ſuper habitatores Jeruſalem, ſpiritum miſericordiæ & miſerationum: &
rogabunt à facie mea, eò quòd tranſlati fuerint: & plangent ſuper eum, ſic-
ut qui plangunt ſuper unigenitum: & mœrebunt ſuper eum ſicut ii qui con-
triſtantur ſuper primogenitum. In tempore illo multiplicabitur planctus in 11
Jeruſalem ſicut planctus Achab filii Amri quem occîdit Hadar Remon filius
Tabremon in Ramoth Galaad: & ſicut planctus Joſiæ filii Amon quem oc-
cîdit Pharao claudus in campo Magedo. Et plangent habitatores terræ per 12
familias ſingulas, viri ſeorſum, & uxores eorum ſeorſum. Viri familiæ domꝰ 13
David ſeorſum, & uxores eorum ſeorſum. Viri familiæ domus Nathan ſeor-
ſum, & uxores eorum ſeorſum. Viri familiæ domus Levi ſeorſum, & uxores
eorum ſeorſum: viri domꝰ Simghi ſeorſum, & uxores eorū ſeorſum. Omnes 14
familiæ quæ reliquæ fuerint per familias, viri ſeorſum, & uxores ſeorſum.

CAP. XIII.

IN tempore illo erit doctrina legis patens ſicut ſcaturigo aquarum domui 1
David, & habitatoribus Jeruſalem, & dimittam peccata eorum ſicut mun-
dantur aqua aſperſionis & cinere vaccæ quæ [*oblata*] eſt pro peccato. Et 2
erit in tempore illo, dicit Dn̄s exercituum, diſperdam nomen idolorum po-
pulorum de terra, & non erit ultrà memoria nominis eorum: & etiam pſeu-
doprophetas, et ſpiritum immundum abolebo de terra.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܢܐܡܪܘܢ ܪܘܪ̈ܒܢܐ ܕܝܗܘܕܐ ܒܠܒܗܘܢ ܥܫܢܘ ܡܢܢ ܥܡܘܪ̈ܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܒܡܪܝܐ 5
ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗܘܢ. * ܒܗܘ ܝܘܡܐ ܗܘ. ܐܥܒܕ ܠܪܘܪ̈ܒܢܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܐܝܟ ܓܘܡܪܬܐ 6
ܕܢܘܪܐ ܒܩܝ̈ܣܐ. ܘܐܝܟ ܠܡܦܝܕܐ ܕܢܘܪܐ ܒܥܡܝܪܐ. ܘܢܐܟܠܘܢ ܠܝܡܝܢܐ ܘܠܣܡܠܐ.
ܠܟܠܗܘܢ ܥܡ̈ܡܐ ܕܚܕܪ̈ܝܗܘܢ ܠܗܘܢ. ܘܬܬܒ ܐܘܪܫܠܡ ܬܘܒ ܒܕܘܟܬܗ ܒܐܘܪܫܠܡ.
* ܘܢܦܩܘܕ ܡܪܝܐ ܠܡܫܟܢ̈ܐ ܕܝܗܘܕܐ ܐܝܟ ܕܡܢ ܩܕܝܡ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܬܣܓܐ ܬܫܒܘܚܬܐ 7
ܕܒܝܬ ܕܘܝܕ. ܘܬܫܒܘܚܬܐ ܕܥܡܘܪ̈ܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ ܥܠ ܕܒܝܬ ܝܗܘܕܐ. * ܘܒܗܘ ܝܘܡܐ 8
ܗܘ. ܢܓܢ ܡܪܝܐ ܥܠ ܥܡܘܪ̈ܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܘܢܗܘܐ ܟܪܝܗܐ ܕܒܗܘܢ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܐܝܟ
ܕܘܝܕ. ܘܒܝܬ ܕܘܝܕ ܐܝܟ ܐܠܗܐ. ܐܝܟ ܡܠܐܟܗ ܕܡܪܝܐ ܕܩܕܡܝܗܘܢ. * ܘܢܗܘܐ ܒܗܘ ܝܘܡܐ 9
ܗܘ. ܐܒܥܐ ܠܡܘܒܕܘ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡ̈ܡܐ ܕܐܬܝܢ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ. * ܘܐܫܘܕ ܥܠ ܕܒܝܬ ܕܘܝܕ 10
ܘܥܠ ܥܡܘܪ̈ܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܪܘܚܐ ܕܛܝܒܘܬܐ ܘܕܪ̈ܚܡܐ. ܘܢܚܘܪܘܢ ܠܘܬܝ ܒܡܢ ܕܕܩܪܘ.
ܘܢܪܩܕܘܢ ܥܠܘܗܝ ܐܝܟ ܕܪܩܕܝܢ ܥܠ ܝܚܝܕܐ. ܘܢܬܟܪܝܢ ܥܠܘܗܝ ܐܝܟ ܕܡܬܟܪܝܢ ܥܠ
ܒܘܟܪܐ. * ܒܗܘ ܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܣܓܐ ܡܪܩܕܐ ܒܐܘܪܫܠܡ. ܐܝܟ ܡܪܩܕܐ ܕܒܪ ܐܡܘܢ 11
ܕܒܦܩܥܬܐ ܕܡܓܕܘ. * ܘܬܪܩܘܕ ܐܪܥܐ ܫܪ̈ܒܢ ܫܪ̈ܒܢ ܒܠܚܘܕ. ܫܪܒܬܐ ܕܒܝܬ ܕܘܝܕ ܒܠܚܘܕ. 12
ܘܢܫ̈ܝܗܘܢ ܒܠܚܘܕ. ܫܪܒܬܐ ܕܒܝܬ ܢܬܢ ܒܠܚܘܕ. ܘܢܫ̈ܝܗܘܢ ܒܠܚܘܕ. * ܫܪܒܬܐ ܕܒܝܬ ܠܘܝ 13
ܒܠܚܘܕ. ܘܢܫ̈ܝܗܘܢ ܒܠܚܘܕ. ܫܪܒܬܐ ܕܒܝܬ ܫܡܥܘܢ ܒܠܚܘܕ. ܘܢܫ̈ܝܗܘܢ ܒܠܚܘܕ. * ܟܠܗܝܢ 14
ܫܪ̈ܒܬܐ ܕܡܫܬܚܪ̈ܢ. ܢܪܩܕܢ ܫܪ̈ܒܢ ܫܪ̈ܒܢ ܒܠܚܘܕ. ܘܢܫ̈ܝܗܘܢ ܒܠܚܘܕ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܓ *

* ܒܗܘ ܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܗܘܐ ܡܒܘܥܐ ܕܡܬܦܬܚ ܠܒܝܬ ܕܘܝܕ ܘܠܥܡܘܪ̈ܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. 1
ܠܡܪܣܣܘ ܘܠܡܕܟܝܘ. * ܒܗܘ ܝܘܡܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܐܘܒܕ ܫܡܐ ܕܦܬܟܪ̈ܐ ܡܢ 2
ܐܪܥܐ. ܘܠܗܘܢ ܠܐ ܢܬܕܟܪܘܢ. ܘܐܥܒܪ ܡܢ ܐܪܥܐ. ܢܒܝ̈ܐ ܕܓܠܐ. ܘܪܘܚܐ ܛܢܦܬܐ.

* Dicéntque magnates Judæ in corde ſuo; Præ- 5
valuerunt nobis cives Jeruſalem per Domi-
num fortiſſimum Deum ſuum. Eodem die ef- 6
ficiam magnates Judæ tanquam carbonē ignis
inter ligna, & quaſi facem ignis inter ſtipulas;
comedéntque dextrorſum & ſiniſtrorſum po-
pulos omnes ſibi circumjacentes: & perma-
nebit adhuc Jeruſalem in loco ſuo in Jeruſa-
lem; Viſitabítq; Dominus tabernaculum Judæ, 7
ut antea, ut non ſit amplior gloria domûs Da-
vidis & gloria civium Jeroſolymæ, quàm Ju-
dæ. Eodémque die proteget Dominus cives 8
Jeroſolymæ, & erit imbecillimus eorum illo
die ſimilis Davidi, & domus Davidis ut Deus,
ut angelus Domini qui adeſt coram ipſis. Et 9
fiet eodem die ut quæram perdere omnes gen-
tes quæ invadent Jeroſolymam: Super do- 10
mum autem Davidis, & ſuper cives Jeruſalem
effundam ſpiritum clementiæ & miſericor-
diæ: & reſpicient ad me per eum quem tranſ-
fixerint; & plangent eum, ut plangi ſolet uni-
genitus; & *dolore* frangentur propter eum,
ut frangi ſolet propter primogenitum. Eo die 11
multus erit planctus in Jeruſalem, ſimilis plan-
ctui filii Amonis in valle Mageddo. Luge- 12
bítque terra per ſingulas familias ſeorſim: fa-
milia domûs Davidis ſeorſim, & fœminæ eo-
rum ſeorſim: familia domûs Nathanis ſeor-
ſim, & fœminæ eorū ſeorſim: Familia domûs 13
Levi ſeorſim, & fœminæ eorum ſeorſim: fa-
milia domûs Simeonis ſeorſim, & fœminæ
eorum ſeorſim: Omnes familiæ quæ ſuper- 14
ſunt, plangent per ſingulas familias ſeorſim, &
fœminæ eorum ſeorſim.

CAP. XIII.

Eo die erit fons qui aperietur pro domo 1
Davidis & civibus Jeruſalem, in aſperſionem
& emundationem. Eodem die, dicit Domi- 2
nus potentiſſimus, perdam nomen idolorum
de terra, ita ut poſthac nulla ſit eorum me-
moria: & auferam de terra prophetas men-
daces & ſpiritus immundos;

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ويقول روساء الوف يهودا في قلوبهم * سنجد لنا السكان في ايروسليم بالرب الضابط الكل 5
الههم * في ذلك اليوم اصير روساء الوف يهودا مثل جمر نار في الحطب * ومثل مصباح نار 6
في القصب * وياكلون عن اليمين وعن اليسار جميع الشعوب من حولهم * ويسكن ايروسليم
ايضا في ذاتها * ويخلص الرب مساكن يهودا كما منذ القديم * كيلا يعظم فخر داود * 7
وارتفاع سكان ايروسليم على يهودا * ويكون في ذلك اليوم يستر الرب على سكان ايروسليم * 8
ويكون الضعيف فيهم في ذلك اليوم مثل بيت داود * وبيت داود مثل بيت الله * مثل ملاك
الرب امامهم * ويكون في ذلك اليوم ساطلب لانزع جميع الامم الاتيين الى ايروسليم * 9
* واصب على بيت داود على سكان ايروسليم روح النعمة والرافة * وينظرون الي * من اجل 10
انهم رقصوا * وينوحون عليهم مناحة مثل على وحيد * ويتوجعون وجعا مثل على بكر * في 11
ذلك اليوم تعظم المناحة علي ايروسليم مثل مناحة الرمان التي في صحراء المقطوع * وتنوح 12
الارض * كلها قبايل قبايل * القبيلة علي ذاتها * ونساوهم على ذواتهن * قبيلة بيت يهودا على
ذاتها * ونساوهم على ذواتهن * قبيلة بيت ناثان علي ذاتها * ونساوهم علي ذواتهن * قبيلة بيت 13
لاوي علي ذاتها * ونساوهم علي ذواتهن * قبيلة سمعون علي ذاتها * ونساوهم علي ذواتهن * جميع 14
القبايل المتبقيات القبيلة علي ذاتها * ونساوهم علي ذواتهن *

* الفصل الثالث عشر *

* في ذلك اليوم يكون كل موضع مفتوحا في بيت داود * ويكون في ذلك اليوم يستاصل 1 2
الرب اسماء الاوثان من الارض * ولا يكون لهم ذكر بعد * والانبياء الكذبة والروح النجس
احرقهم من الارض *

* *Dicéntque tribuni Judæ in cordibus* 5
ſuis; Inveniemus nobis habitantes in Je-
ruſalem in omnipotente Domino Deo ipſo-
rum. Eo die ponam tribunos Judæ ſic- 6
ut carbonem ignis in lignis, & ſicut fa-
cem ignitam in arundinibus; devora-
búntque à dextera & à ſiniſtra omnes
undequaque populos: & habitabit ad-
huc Jeruſalem in ſemetipſa. Et libera- 7
bit Dominus habitacula Judæ, ut olim;
ne magnificetur faſtus Davidis & ſu-
perbia civium Jeroſolymæ ſupra Ju-
dam. Et erit eo die, ut protegat Do- 8
minus cives Jeruſalem, & infirmus in-
ter eos ſit illo die, ut domus Davidis;
domus autem Davidis, ut domus Dei, ut
angelus Domini ante ipſos. Erit etiam 9
eo die, ut quæram auferre omnes gentes
venientes in Jeruſalem: Super do- 10
mum verò Davidis, ſuper cives Jeruſa-
lem, effundam ſpiritum gratiæ & cle-
mentiæ; & reſpiciant ad me, eò quòd
ſaltaverint; & lugeant illos quaſi luctu
unigeniti, & afficiantur dolore quaſi pro
primogenito. Eo die magnus erit plan- 11
ctus de Jeruſalem, quaſi planctus malo-
granatorum quæ ſunt in deſerto, ampu-
tatorum. Et lugebit univerſa terra per 12
ſingulas familias; quælibet familia ſe-
orſim, & mulieres eorum ſeorſim: fami-
lia domûs Judæ ſeorſim, & mulieres
eorum ſeorſim: familia domûs Natha-
nis ſeorſim, & mulieres eorum ſeorſim:
Familia domûs Levi ſeorſim, & mulie- 13
res eorum ſeorſim: familia Simeonis
ſeorſim, & mulieres eorum ſeorſim: O- 14
mnium reliquarum familiarum quæli-
bet familia ſeorſim, & mulieres eorum
ſeorſim.

CAP. XIII.

In illo erit omnis locus apertus in domo 1
Davidis. Et erit in illo die, ut extirpet 2
Dominus nomina idolorum è terra, neque
remaneat eis ampliùs memoria: & pro-
phetas mendaces ſpiritúmque immundum
è terra comburam.

זכריה : יד

eum ad dicent & , ultrà quiſpiam prophetaverit cùm , erit Et
וְהָיָה כִּי־יִנָּבֵא אִישׁ עוֹד וְאָמְרוּ אֵלָיו 3
mendacium quia , vives Non :ejus genitores ejus mater & ,ejus pater
אָבִיו וְאִמּוֹ יֹלְדָיו לֹא תִחְיֶה כִּי שֶׁקֶר
ejus mater & ,ejus pater eum configent &:Domini nomine In es locutus
דִּבַּרְתָּ בְּשֵׁם יְהוָה וּדְקָרֻהוּ אָבִיהוּ וְאִמּוֹ
afficientur pudore , illa die in erit Et .*ipſum prophetando in*,ejus genitores
יֹלְדָיו בְּהִנָּבְאוֹ׃ וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא יֵבֹשׁוּ 4
non & : *ipſum prophetando in* , ſua viſione à unuſquiſque , prophetæ
הַנְּבִיאִים אִישׁ מֵחֶזְיֹנוֹ בְּהִנָּבְאֹתוֹ וְלֹא
Non : dicet Et .*mentiendum ad* , *pili* pallio induentur
יִלְבְּשׁוּ אַדֶּרֶת שֵׂעָר לְמַעַן כַּחֵשׁ׃ וְאָמַר לֹא 5
Adam quoniam , *ego humum colens* vir : *ego* propheta
נָבִיא אָנֹכִי אִישׁ עֹבֵד אֲדָמָה אָנֹכִי כִּי אָדָם
plagæ Quid : eum ad dicet Et .*meis pueritiis à* me *fecit acquirere*
הִקְנַנִי מִנְּעוּרָי׃ וְאָמַר אֵלָיו מָה הַמַּכּוֹת 6
domo ſum percuſſus quibus : dicet & ? tuas manus inter iſtæ
הָאֵלֶּה בֵּין יָדֶיךָ וְאָמַר אֲשֶׁר הֻכֵּיתִי בֵּית
ſuper & ,meum paſtorem ſuper te ſuſcita ,gladie O .me diligentium
מְאַהֲבָי׃ חֶרֶב עוּרִי עַל־רֹעִי וְעַל־ 7
percute : exercituum DOMINUS dixit ,meum proximum virum
גֶּבֶר עֲמִיתִי נְאֻם יְהוָה צְבָאוֹת הַךְ
meam manum convertam & , *pecus* diſpergentur & , paſtorem
אֶת־הָרֹעֶה וּתְפוּצֶיןָ הַצֹּאן וַהֲשִׁבֹתִי יָדִי
, DOMINUS dixit , terra omni in erit Et .parvulos ſuper
עַל־הַצֹּעֲרִים׃ וְהָיָה בְכָל־הָאָרֶץ נְאֻם־יְהוָה 8
.ea in relinquetur tertia & : *obibunt* , ſuccidentur ea in *duorum os*
פִּי־שְׁנַיִם בָּהּ יִכָּרְתוּ יִגְוָעוּ וְהַשְּׁלִישִׁית יִוָּתֶר בָּהּ׃
conflare juxta eos conflabo & ,ignem per *partem* tertiam inducam Et
וְהֵבֵאתִי אֶת־הַשְּׁלִישִׁית בָּאֵשׁ וּצְרַפְתִּים כִּצְרֹף 9
invocabit Ipſe .aurum *probare juxta* eos probabo & ; argentum
אֶת־הַכֶּסֶף וּבְחַנְתִּים כִּבְחֹן אֶת־הַזָּהָב הוּא יִקְרָא
: ipſe meus Populus , Dixi .eum exaudiam ego &,*meo nomine in*
בִשְׁמִי וַאֲנִי אֶעֱנֶה אֹתוֹ אָמַרְתִּי עַמִּי הוּא
.meus Deus DOMINUS , dicet ipſe &
וְהוּא יֹאמַר יְהוָה אֱלֹהָי׃

CAP. XIV. יד

tuo interiore in tuum ſpolium dividetur & : Domini venit dies Ecce
הִנֵּה יוֹם־בָּא לַיהוָה וְחֻלַּק שְׁלָלֵךְ בְּקִרְבֵּךְ׃ 1
, prælium in Jeruſalaim *ad* gentes omnes congregabo Et
וְאָסַפְתִּי אֶת־כָּל־הַגּוֹיִם אֶל־יְרוּשָׁלִַם לַמִּלְחָמָה 2
.violabuntur mulieres & , domus diripientur & ,civitas capietur &
וְנִלְכְּדָה הָעִיר וְנָשַׁסּוּ הַבָּתִּים וְהַנָּשִׁים תִּשָּׁגַלְנָה
populi reliquum & , captivitatem in civitatis dimidium egredietur Et
וְיָצָא חֲצִי הָעִיר בַּגּוֹלָה וְיֶתֶר הָעָם
præliabitur & , Dominus egredietur Et .urbe ex ſuccidetur non
לֹא יִכָּרֵת מִן־הָעִיר׃ וְיָצָא יְהוָה וְנִלְחַם 3
.*conflictus* die in *eum bellare* diem ſecundùm : illas gentes contra
בַּגּוֹיִם הָהֵם כְּיוֹם הִלָּחֲמוֹ בְּיוֹם קְרָב׃
qui , olivarum montem ſuper illa die in ejus pedes ſtabunt &
וְעָמְדוּ רַגְלָיו בַּיּוֹם־הַהוּא עַל־הַר הַזֵּיתִים אֲשֶׁר 4
olivarum mons ſcindetur & ; oriente ab Jeruſalaim *facies ſuper*
עַל־פְּנֵי יְרוּשָׁלִַם מִקֶּדֶם וְנִבְקַע הַר הַזֵּיתִים
recedet & : valde grandi valle ,*mare ad & orientem ad* ſui *dimidio de*
מֵחֶצְיוֹ מִזְרָחָה וָיָמָּה גֵּיא גְּדוֹלָה מְאֹד וּמָשׁ
.meridiem ad ejus medium & ,aquilonem ad montis dimidium
חֲצִי הָהָר צָפוֹנָה וְחֶצְיוֹ נֶגְבָּה׃

Verſio VULG. LAT.

3 Et erit, cùm prophetaverit quiſpiam ultrà, dicent ei pater ejus & mater ejus, qui genuerunt eum; Non vives: quia mendacium locutus es in nomine Domini, & configent eum pater ejus & mater ejus, genitores ejus, cùm prophetaverit. 4 Et erit: In die illa confundentur prophetæ, unuſquiſque ex viſione ſua cùm prophetaverit: nec operientur pallio 5 ſaccino, ut mentiantur: Sed dicet; Non ſum propheta, homo agricola ego ſum: quoniam Adam exemplum meum ab adoleſcentia 6 mea. Et dicetur ei; Quid ſunt plagæ iſtæ in medio manuum tuarum? Et dicet; His plagatus ſum in domo eorum, qui diligebant 7 me. Framea, ſuſcitare ſuper paſtorem meum, & ſuper virum cohærentem mihi, dicit Dominus exercituum: percute paſtorem, & diſpergentur oves: & convertam 8 manum meam ad parvulos. Et erunt in omni terra, dicit Dominus: partes duæ in ea diſpergentur, & deficient; & tertia pars 9 relinquetur in ea. Et ducam tertiam partem per ignem, & uram eos ſicut uritur argentum, & probabo eos ſicut probatur aurum. Ipſe vocabit nomen meum, & ego exaudiam eum. Dicam; Populus meus es: & ipſe dicet; Dominus Deus meus.

CAP. XIV.

1 Ecce venient dies Domini, & dividentur ſpolia tua in medio 2 tuî. Et congregabo omnes Gentes ad Jeruſalem in prælium, & capietur civitas, & vaſtabuntur domus, & mulieres violabuntur: & egredietur media pars civitatis in captivitatem, & reliquum po- 3 puli non auferetur ex urbe. Et egredietur Dominus, & præliabitur contra Gentes illas, ſicut 4 præliatus eſt in die certaminis. Et ſtabunt pedes ejus in die illa ſuper Montem olivarũ, qui eſt contra Jeruſalem ad Orientem: & ſcindetur Mons olivarum ex media parte ſui ad Orientem, & ad Occidentem, prærupto grandi valdè; & ſeparabitur medium montis ad Aquilonem, & mediũ ejus ad Meridiem.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

3 Καὶ ἔσται ἐὰν προφητεύσῃ ἄνθρωπος ἔτι, καὶ ἐρεῖ πρὸς αὐτὸν ὁ πατὴρ αὐτοῦ, καὶ ἡ μήτηρ αὐτοῦ, οἱ γεννήσαντες αὐτὸν, (ε) Οὐ ζήσῃ, ὅτι ψευδῆ ἐλάλησας (*) ἐπ' ὀνόματι κυρίου· καὶ συμποδιοῦσιν αὐτὸν ὁ πατὴρ αὐτοῦ, καὶ ἡ μήτηρ αὐτοῦ, οἱ γεννήσαντες αὐτὸν, ἐν τῷ προφητεύειν αὐτόν. 4 Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ καταισχυνθήσονται οἱ προφῆται, ἕκαστος ἐκ τῆς ὁράσεως αὐτοῦ, ἐν τῷ προφητεύειν αὐτὸν, καὶ ἐνδύσονται δέρριν τριχίνην, ἀνθ' ὧν 5 ἐψεύσαντο. Καὶ ἐρεῖ, Οὐκ εἰμὶ προφήτης ἐγὼ, διότι (ζ) ἄνθρωπος ἐργαζόμενος τὴν γῆν ἐγώ εἰμι, ὅτι ἄνθρωπος ἐγέννησέ 6 με ἐκ νεότητός μου. Καὶ ἐρῶ πρὸς αὐτὸν, Τί αἱ πληγαὶ αὗται ἀναμέσον τῶν χειρῶν σου; καὶ ἐρεῖ, Ἃς ἐπλήγην ἐν τῷ οἴκῳ (η) 7 τῷ ἀγαπητῷ μου. Ῥομφαία ἐξεγέρθητι ἐπὶ (θ) τοὺς ποιμένας μου, καὶ ἐπὶ ἄνδρα πολίτην μου, λέγει κύριος παντοκράτωρ, (ι) πατάξατε τοὺς ποιμένας, καὶ ἐκσπάσατε 8 τὰ πρόβατα· καὶ ἐπάξω τὴν χεῖρά μου ἐπὶ τοὺς (κ) μικρούς. Καὶ ἔσται ἐν πάσῃ τῇ γῇ, λέγει κύριος, τὰ δύο μέρη αὐτῆς (λ) ἐξολοθρευθήσονται, καὶ ἐκλείψει, τὸ δὲ τρί- 9 τον ὑπολειφθήσεται ἐν αὐτῇ. Καὶ διάξω τὸ τρίτον διὰ πυρὸς, καὶ πυρώσω αὐτοὺς, ὡς πυροῦται τὸ ἀργύριον, καὶ δοκιμῶ αὐτοὺς, ὡς δοκιμάζεται τὸ χρυσίον. αὐτὸς ἐπικαλέσεται τὸ ὄνομά μου, (μ) κἀγὼ ἐπακούσομαι αὐτῷ, καὶ ἐρῶ, Λαός μου οὗτός ἐστι· καὶ αὐτὸς ἐρεῖ, Κύριος ὁ θεός μου.

MS. A. (ε) ἐν τῷ προφητεύειν αὐτὸν, Οὐ ζήσῃ, ὅτι (*) ἐν ὀνόματι (ζ) ἄνθρωπος * ἐγέννησέν με ἐκ (η) τοῦ ἀγαπητοῦ μου. (θ) τὸν ποιμένα μου, καὶ ἐπ' ἄνδρα πολίτην αὐτοῦ, (ι) πάταξον τὸν ποιμένα, καὶ διασκορπισθήσονται τὰ πρόβατα τῆς ποίμνης· καὶ ἐπάξω (κ) ποιμένας. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγει (λ) ἐξολεθρευθήσεται, (μ) καὶ ἐγὼ

Et erit, ſi prophetaverit homo ultrà; & dicet ad eum pater ſuus, & mater ſua, qui genuerunt eum; Non vives: quoniam mendacia loquutus es in nomine Domini: & (c) compedient eum pater ejus, & mater ejus, qui genuerunt eum, dum ipſe prophetat. Et erit, in die illa con- 4 fundentur prophetæ, unuſquiſque ex viſione ſua, cùm ipſe prophetaverit: & induentur pelle cilicinâ, quia mentiti ſunt. Et dicet; 5 Non ſum propheta ego, quia homo operans terram ego ſum: quia homo genuit me à juventute mea. Et dicam ad eum; Quid ſunt 6 plagæ iſtæ in medio manuum tuarum? Et dicet; Quibus percuſſus ſum in domo (d) dilecta mea. (e) Framea, conſurge ſuper 7 (f) paſtores meos, & ſuper virum (g) civem meum, dicit Dominus omnipotens: (h) percutite paſtores, & avellite oves. Et inducam manum meam ſuper (i) parvulos. Et erit, (k) in omni 8 terra, dicit Dominus, duæ partes ejus peribunt, & deficient: & tertia relinquetur in ea. Et tranſ- 9 ducã tertiam [partem] per ignem: & uram eos, ſicut uritur argentum: & probabo eos, ſicut probatur aurum. Ipſe invocabit nomen meum: & ego exaudiam eum: & dicam; Populus meus iſte eſt: Et ipſe dicet; Dominus Deus meus.

ΚΕΦ. ιδ'.

1 Ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται (α) κυρίου, καὶ διαμερισθήσονται τὰ σκῦλά σου ἐν σοί. 2 Καὶ ἐπισυνάξω πάντα τὰ ἔθνη ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ εἰς πόλεμον, καὶ ἁλώσεται ἡ πόλις, καὶ διαρπαγήσονται αἱ οἰκίαι, καὶ αἱ γυναῖκες μολυνθήσονται, καὶ ἐξελεύσεται τὸ ἥμισυ τῆς πόλεως ἐν αἰχμαλωσίᾳ, οἱ δὲ κατάλοιποι τοῦ λαοῦ μου οὐ μὴ (β) ἐξολο- 3 θρευθῶσιν ἐκ τῆς πόλεως. Καὶ ἐξελεύσεται κύριος, καὶ παρατάξεται ἐν τοῖς ἔθνεσιν ἐκείνοις, καθὼς (γ) ἡμέρα παρα- 4 τάξεως αὐτοῦ ἐν ἡμέρᾳ πολέμου. Καὶ στήσονται οἱ πόδες αὐτοῦ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐπὶ τὸ ὄρος τῶν (δ) ἐλαιῶν, τὸ κατέναντι Ἱερουσαλὴμ ἐξ ἀνατολῶν. καὶ σχισθήσεται τὸ ὄρος τῶν ἐλαιῶν, τὸ ἥμισυ αὐτοῦ πρὸς ἀνατολὰς (ε) καὶ θάλασσαν, χάος μέγα σφόδρα· καὶ κλινεῖ τὸ ἥμισυ τοῦ ὄρους (ζ) πρὸς τὸν Βοῤῥᾶν, καὶ τὸ ἥμισυ αὐτοῦ πρὸς Νότον.

MS. A. (α) τοῦ κυρίου, (β) ἐξολεθρευθῶσιν (γ) ἡμέραι (δ) ἐλαιῶν, *τὸ ἥμισυ (ε) καὶ τὸ ἥμισυ αὐτοῦ πρὸς θάλασσαν, (ζ) πρὸς Βοῤῥᾶν,

CAP. XIV.

Ecce dies (a) Domini veniunt: 1 & dividentur ſpolia tua in te: Et congregabo omnes gentes ſuper 2 Hieruſalem ad bellum: & capietur civitas, & diripientur domus, & mulieres polluentur, & egredietur dimidia pars civitatis in captivitate: reliqui autem populi mei non peribunt de civitate. Et egredietur Dominus, & præ- 3 liabitur contra gentes illas, ſicut dies commiſſionis ejus in die prælii. Et ſtabunt pedes ejus in die 4 illa ſuper montem Olivarum, qui eſt contra Hieruſalem ab Oriente. Et ſcindetur mons Olivarum: dimidium ejus ad Orientem, (b) & mare, voragine magnâ nimis: & inclinabit dimidium montis ad Aquilonem, & dimidium ejus ad Auſtrum.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ויהי ארי אתנבי גבר עוד ויימרון ליה אבוהי ואמיה ילדוהי לא תתקים ארי שקרא 3
אתנביתא בשמא דיי ויחרון ביה אבוהי ואמיה ילדוהי באתנביותיה : ויהי בעדנא 4
ההיא יבהתון נביי שקרא גבר מנבואתיה באתנביותיה ולא יתנבון עוד שקר בדיל
לאלפא כדיבין : ויימר לא נביא אנא גבר פלח בארעא אנא ארי אנשא אקנני 5
מזעורי : ויימר ליה מה מחתא האלין דאתאה עלנא הלא בעובדי ידך ויימר יאות 6
לקינא בחובין דרחמנא : חרבא אתגלא על מלכא ועל שלטונא חבריה דכותיה 7
דדמי ליה אמר יי צבאות קטול ית מלכא ויתבדרון שלטוניא ואתיב ית מחת גבורתי
על תניניא : ויהי בכל ארעא אמר יי תרין חולקין דבה ישתיצון יסופון ותלתא 8
ישתאר בה : ואעיל ית תלתא בעקא בכור דאשא ואצרופנון כמא דצרפין ית כספא 9
ואבחרנון כמא דבחרין ית דהבא הוא יצלי בשמי ואנא אקבל צלותיה אמרית
עמי הוא והוא יימר יי אלהי :

יד

הא יומא דעתיד למיתי מן קדם יי ויפלגון בית ישראל נכסי עממיא בגויך ירושלם : 1
ואכניש ית כל עממיא לירושלם לאגחא קרבא ותתכביש קרתא ויתבזון בתיא 2
ונשיא ישתכבן ויפוק פלגא דקרתא בגלותא ושאר עמא לא יפסוק מן קרתא :
ויתגלי יי ויגיח קרבא בעממיא האנון כיום אגחותיה קרב על ימא דסוף : ויתגלי 3
בגבורתיה בעדנא ההיא על טור זיתיא דעל אפי ירושלם ממדינחא ויתבזע טור זיתיא 4
מפלגיה למדינחא ולמערבא חילא רבא לחדא ויתלש פלגיה דטורא לצפונא
ופלגוהי לדרומא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et erit ſi prophetaverit aliquis ultrà, dicent ei pater & mater ejus genitores 3 ejus; Non vives, quia mendacium prophetâſti in nomine Dñi: & configent eum pater ejus & mater ejus genitores ejus, cùm prophetaverit. Eritque 4 in tempore illo, confundentur pſeudoprophetæ quiſq; à prophetia ſua cùm prophetaverit: & non prophetabunt ultrà mendacium, ut doceant mendacia. Et dicet, Non ſum ego propheta, vir agricola ego ſum, quia homo do- 5 cuit me ut eſſem paſtor ab adoleſcentia mea. Et dicetur ei, Quæ ſunt pla- 6 gæ iſtæ, quæ venerunt ſuper nos? nónne propter opera manuum tuarum? & dicet, Meritò percuſſi ſumus propter peccata quæ dileximus. Gladie de- 7 nudare ſuper regem & *principem*, & ſuper ſocium ejus qui eſt ſimilis ei, dicit Dñs exercituum: Interfice regem & diſpergentur principes: & convertam plagam potentiæ meæ ſuper ſecundos. Et erit in omni terra, dicit 8 Dñs, Duæ partes quæ in ea ſunt conſumentur & deficient, & tertia pars relinquetur in ea. Et inducam tertiam partem in tribulationem in caminum 9 ignis, & conflabo eos more eorum qui conflant argentum, & probabo eos more eorum qui probant aurum: ipſe preces fundet in nomine meo, & ego ſuſcipiã orationem ejus: dicam, Popul⁹ meus eſt: & ipſe dicet, Dñs Deus meus.

CAP. XIV.

Ecce dies venturus à facie Dñi, & divident domus Iſrael ſubſtantias po- 1 pulorum in medio tui Jeruſalem. Et congregabo omnes gentes ad Jeruſa- 2 lem oppugnandam, & capietur civitas, & vaſtabuntur domus, & cum mulieribus dormient, & ibit media pars urbis in captivitatem, & reliquus populus non ſuccidetur ab urbe. Et revelabitur Dñs, & præliabitur contra 3 populos illos, ſicut in die quo præliatus eſt in mari carectoſo. Et revelabitur 4 in fortitudine ſuâ tempore illo ſuper montem Olivarum, qui eſt è regione Jeruſalem ab Oriente, & ſcindetur mons Olivarum ex media parte ſui ad Orientem & ad Occidentem valle magna admodum: & evelletur media pars montis ad Aquilonem, & media pars ejus ad Auſtrum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܗܘܐ ܐܢ ܢܬܢܒܐ ܓܒܪܐ. ܢܐܡܪܘܢ ܠܗ ܐܒܘܗܝ ܘܐܡܗ. ܠܐ ܬܚܐ. ܡܛܠ ܕܕܓܠܘܬܐ 3
ܡܠܠܬ ܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܢܐܣܪܘܢܗ ܐܒܘܗܝ ܘܐܡܗ ܕܝܠܕܘܗܝ. ܟܕ ܡܬܢܒܐ. * ܒܗܘ 4
ܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܒܗܬܘܢ ܢܒܝܐ ܕܓܠܐ. ܐܢܫ ܡܢ ܚܙܘܐ ܕܢܒܝܘܬܗ. ܘܠܐ ܢܬܟܪܟܘܢ
ܡܫܟܐ ܕܣܥܪܐ. ܡܛܠ ܕܟܕܒܘ. * ܘܢܐܡܪ. ܠܐ ܗܘܝܬ ܢܒܝܐ. ܐܠܐ ܓܒܪܐ ܐܢܐ ܕܦܠܚ 5
ܐܪܥܐ. ܘܛܢܢܐ ܐܛܢܢܝ ܡܢ ܛܠܝܘܬܝ. * ܘܢܐܡܪܘܢ ܠܗ. ܡܢܐ ܐܢܝܢ ܗܠܝܢ 6
ܡܚܘܬܐ ܕܒܝܬ ܐܝܕܝܟ. ܘܢܐܡܪ. ܗܠܝܢ ܡܚܘܬܐ ܕܐܬܡܚܝܬ ܒܝܬ ܪܚܡܝ. * ܚܪܒܐ ܐܬܬܥܝܪܝ ܥܠ 7
ܪܥܝܐ ܕܝܠܝ. ܘܥܠ ܓܒܪܐ ܩܪܝܒܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܡܚܝ ܠܪܥܝܐ. ܘܢܬܒܕܪ ܥܢܗ.
ܘܐܗܦܘܟ ܐܝܕܝ ܥܠ ܪܘܪܒܢܐ. * ܘܢܗܘܐ ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܬܪܬܝܢ ܡܢܘܬܐ ܕܒܗ 8
ܢܬܦܣܩܢ ܘܢܐܒܕܢ. ܘܬܠܝܬܝܬܐ ܬܫܬܚܪ ܒܗ. * ܘܐܥܠܝܗ ܠܬܠܝܬܝܬܐ ܕܫܚܪܬ 9
ܒܢܘܪܐ. ܘܐܨܪܘܦ ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܕܨܪܦܝܢ ܟܣܦܐ. ܘܐܒܚܘܪ ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܕܒܚܪܝܢ ܕܗܒܐ. ܗܘ
ܢܩܪܐ ܒܫܡܝ ܘܐܢܐ ܐܥܢܝܘܗܝ. ܘܐܡܪ. ܥܡܝ ܗܘ. ܘܗܘ ܢܐܡܪ. ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ.

* Ut ſiquis deinceps prophetet, dicant ei pater 3
ac mater ipſius; Ne vivas, quandoquidem mendacium
locutus es in nomine Dñi: & vincient
eum pater ac mater ipſius qui genuerunt eum,
cùm prophetaverit. Eo die pudefient falſi prophetæ 4
quiſq; à viſione prophetiæ ſuæ, & non
involvent ſe pellibus villoſis; eò quòd mentiti
ſint: Sed dicat, Non ſum propheta, ſed homo 5
ſum terræ cultor, zelum autem mihi movit homo
quidam à pueritia mea. Quòd ſi dixerint 6
ei, Quid ſibi vulnera iſta quæ ſunt in manibus
tuis? dicat, Hæc ſunt vulnera quibus ſauciatus
ſum in domo amantium me. Gladie, evigila 7
contra paſtorē meum, & contra virum amicum
meum, dicit Dñs potentiſſimus: percute
paſtorē, ut diſſipetur grex ejus: reducámque
manum meam contra ſuperiores. Erítq; id in 8
tota terra, dicit Dominus: adeò ut duæ partes
quæ ſunt in ea, conſumantur ac pereant; &
tertia pars ſuperſit in ea: Et hanc tertiam partem 9
quæ ſupererit, inducam in ignem, & conflabo
eos quemadmodum conflatur argentum,
& probabo eos quemadmodum probatur aurum.
Ipſe invocabit nomen meum, & ego exaudiam
eum: dicámque, Hic eſt populus meus;
& ipſe dicet, Dominus eſt Deus meus.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܕ *

* ܗܐ ܝܘܡܐ ܕܡܪܝܐ ܐܬܐ. ܘܢܬܦܠܓ ܥܕܝܟܝ ܒܓܘܟܝ. * ܘܐܟܢܫ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ 1 2
ܠܐܘܪܫܠܡ ܠܩܪܒܐ. ܘܬܬܐܚܕ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܢܬܒܙܙܘܢ ܒܬܐ. ܘܢܫܐ ܢܬܛܢܦܢ. ܘܢܦܩ
ܦܠܓܗ ܕܡܕܝܢܬܐ ܠܫܒܝܐ. ܘܦܠܓܗ ܕܥܡܐ. ܠܐ ܢܐܒܕ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ. * ܘܢܦܘܩ 3
ܡܪܝܐ ܘܢܬܟܬܫ ܥܡ ܥܡܡܐ ܗܢܘܢ. ܐܝܟ ܝܘܡܐ ܕܐܬܟܬܫ ܒܝܘܡܐ ܕܩܪܒܐ. * ܘܢܩܘܡܢ 4
ܪܓܠܘܗܝ ܥܠ ܛܘܪܐ ܕܙܝܬܐ. ܕܠܘܩܒܠ ܐܘܪܫܠܡ ܡܢ ܡܕܢܚܐ. ܘܢܬܦܠܓ ܛܘܪܐ
ܕܙܝܬܐ. ܦܠܓܗ ܠܡܕܢܚܐ. ܘܦܠܓܗ ܠܡܥܪܒܐ. ܘܢܗܘܐ ܒܗ ܚܠܠܐ ܪܒܐ ܛܒ.
ܘܢܦܢܐ ܦܠܓܗ ܕܛܘܪܐ ܠܓܪܒܝܐ. ܘܦܠܓܗ ܠܬܝܡܢܐ.

CAP. XIV.

* Ecce dies Domini venit, & ſpolia tua in 1
medio tui dividentur. Congregabo enim 2
omnes gentes contra Jeruſalem ad bellum, &
capietur urbs, diripientur domus, fœminæ ſtuprabuntur
& egredietur media pars urbis in
captivitatem, media verò pars populi non peribit
ab urbe. Et procedens Dominus pugnabit 3
contra gentes illas, ut die quâ pugnavit
in die belli. Et ſtabunt pedes ejus ſuper 4
montem Olearum qui eſt è regione Jeruſalem
ad plagam ipſius Orientalem, & ſcindetur
mons Olearum, media pars ejus ad Orientem,
& media pars ad Occidentem; ita ut
fiat in eo vallis perquam magna, manente mediâ
parte montis ad Aquilonem, et mediâ
parte ad Auſtrum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ويكون ان يتنبا انسان ايضا * ويقول له ابوه وامه اللذان ولداه * لا تعش لانك تكلمت 3
كذبا باسم الرب * ويوثقاه ابوه وامه اللذان ولداه عند ما يتنبي * ويكون في ذلك اليوم 4
يخزي الانبياء كل واحد من رؤياه عند ما يتنبي * ويلبسون جلدا شعريا من اجل انهم
كذبوا * ويقول لست انا نبيا * من اجل ان انسانا ولدني منذ صباي * واقول له ما 5 6
هذه الضربات وسط يديك * فيقول هذه التي ضربت بها في بيتي الحبيب * استيقظ ايها 7
السيف علي راعي وعلي رجل بلدي يقول الرب الضابط الكل * اضرب الراعي فتتفرق
الغنم * واجلب يدي علي الرعاة * ويكون في كل الارض يقول الرب * الجزوان يستاصلان 8
ويفنيان * والثالث يبقي فيها * فادخل الثالث في النار * واحميهم كما تحمي الفضة * 9
واسبكهم كما تسبك الذهب * وهو يدعو اسمي * وانا اسمعه * واقول هذا هو شعبي * وهو
يقول * الرب الهي *

Et erit ut ſiquis adhuc prophetet, dicant 3
ei pater ac mater ipſius, qui genuerunt
ipſum; Ne vivas, quia falsò locutus es
in nomine Domini: imò vinculis addicant
eum pater ac mater ipſius, qui genuerunt
ipſum, cùm prophetaverit. Erit 4
etiam eo die, ut pudefiat quiſque prophetarum
à viſione ſua, cùm prophetaverit;
& induantur pelle villoſâ, eò quòd
mentiti ſint: Dicatque, Non ſum ego 5
propheta; quia homo genuit me ob adoleſcentia
mea. Et dicam illi, Quid ſunt 6
hæ plagæ in medio manuum tuarum?
Dicétque, Hæ ſunt quibus vapulavi in
domo mea dilecta. Expergiſcere O gladie 7
contra paſtorem meum, & contra virum
concivem meum, dicit Dominus omnipotens:
percutiam paſtorem, & diſpergentur
oves: & adducam manum
meam ſuper paſtores, Et erit in tota 8
terra, dicit Dominus, ut duabus partibus
exciſis perditiſque, tertia remaneat in
illa: Et hanc tertiam immittam in i- 9
gnem, ſuccendámque eos quemadmodum
ſuccenditur argentum, & probem illos
quemadmodum probatur aurum: ipſa
invocet nomen meum, & ego exaudiam
illam; dicámque, Hic eſt populus
meus; & ipſe dicat, Dominus eſt
Deus meus.

* الفصل الرابع عشر *

* ها ايام الرب تاتي * ويقسم غنايمك فيك * واجمع جميع الامم الي اورشليم للحرب * 1 2
وتسلب المدينة وتخطف المنازل وتنجس النساء * ويخرج نصف المدينة في السبي * والمتبقون
من شعبي لا يستاصلون من المدينة * ويخرج الرب ويجاهد في اوليك الامم * كيوم 3
مصافة في يوم الحرب * وتقف قدماه في ذلك اليوم * علي جبل الزيتون تجاه اورشليم 4
من المشارق * وينشق جبل الزيتون * نصفه الي المشارق ونصفه الي البحر * فضاء عظيم جدا *
ويميل نصف الجبل الي الجربياء ونصفه الي الجنوب *

CAP. XIV.

Ecce dies Domini venturi ſunt, qui- 1
bus dividentur ſpolia tua in te: Et con- 2
gregabo omnes gentes in Jeruſalem ad
bellum, & ſpoliabitur urbs, & diripientur
habitationes, & polluentur mulieres;
egredietur dimidia pars urbis in captivitatem,
qui autem reſidui manſerint
ex populo meo, non evellentur ex urbe.
Nam egredietur Dominus & pugnabit in 3
illas gentes, ut die inſtructionis aciei in
die belli. Et ſtabunt pedes ejus in illa 4
die ſuper montem Olivarum contra Jeruſalem
ab Oriente, & ſcindetur mons Olivarum,
dimidia pars ejus ad Orientem,
& dimidia pars ad Mare, ſpatio valdè
amplo; vergétque media pars montis ad
Aquilonem, & media pars ad Auſtrum.

זכריה : יד

montium vallis pertinget quia , montium vallem fugietis Et
וְנַסְתֶּם גֵּיא־הָרַי כִּי־יַגִּיעַ גֵּיא־הָרִים 5
terræmotus *faciebus* à fugistis quemadmodum fugietis Et . Asal ad
אֶל־אָצַל וְנַסְתֶּם כַּאֲשֶׁר נַסְתֶּם מִפְּנֵי הָרַעַשׁ
DOMINUS veniet & : Jehudah regis Huzziah diebus in
בִּימֵי עֻזִּיָּה מֶלֶךְ־יְהוּדָה וּבָא יְהוָה
, illa die in , erit Et *secum* sancti omnes , meus Deus
אֱלֹהַי כָּל־קְדֹשִׁים עִמָּךְ׃ וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא 6
, unus dies erit Et . *coagulationis &, pretiositatum* lux erit non
לֹא־יִהְיֶה אוֹר יְקָרוֹת יִקְפָּאוֹן׃ וְהָיָה יוֹם־אֶחָד 7
erit sed : nox neque dies non , DOMINO *erit* notus ipse
הוּא יִוָּדַע לַיהוָה לֹא־יוֹם וְלֹא־לָיְלָה וְהָיָה
egredientur , illa die in , erit Et . lux erit *vesperæ* tempore in
לְעֶת־עֶרֶב יִהְיֶה־אוֹר׃ וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא יֵצְאוּ 8
, orientale mare ad earum medium ; Jerusalaim de vivæ aquæ
מַיִם־חַיִּים מִירוּשָׁלַםִ חֶצְיָם אֶל־הַיָּם הַקַּדְמוֹנִי
. erit hyeme in & æstate in : novissimum mare ad earum medium &
וְחֶצְיָם אֶל־הַיָּם הָאַחֲרוֹן בַּקַּיִץ וּבָחֹרֶף יִהְיֶה׃
die In . terram omnem super *regem in* DOMINUS erit Et
וְהָיָה יְהוָה לְמֶלֶךְ עַל־כָּל־הָאָרֶץ בַּיּוֹם 9
. unum ejus nomen & , unus DOMINUS erit illa
הַהוּא יִהְיֶה יְהוָה אֶחָד וּשְׁמוֹ אֶחָד׃
Rimmon ad Ghebah à planities veluti terra omnis *Circundabitur*
יִסּוֹב כָּל־הָאָרֶץ כָּעֲרָבָה מִגֶּבַע לְרִמּוֹן 10
se sub habitabitur & , exaltabitur *&* : Jerusalaim austrum ad
נֶגֶב יְרוּשָׁלַםִ וְרָאֲמָה וְיָשְׁבָה תַחְתֶּיהָ
ad usque , prioris portæ locum ad usque Binjamin porta à
לְמִשַּׁעַר בִּנְיָמִן עַד־מְקוֹם שַׁעַר הָרִאשׁוֹן עַד־
. regia torcularia ad usque Chananel turre à & , angulorum portam
שַׁעַר הַפִּנִּים וּמִגְדַּל חֲנַנְאֵל עַד יִקְבֵי הַמֶּלֶךְ׃
habitabitur & : amplius erit non *anathema* & , ea in habitabunt Et
וְיָשְׁבוּ בָהּ וְחֵרֶם לֹא יִהְיֶה־עוֹד וְיָשְׁבָה 11
qua , plaga erit hæc Et . *fiducia in* Jerusalaim
יְרוּשָׁלַםִ לָבֶטַח׃ וְזֹאת תִּהְיֶה הַמַּגֵּפָה אֲשֶׁר 12
militaverunt qui , populos omnes DOMINUS percutiet
יִגֹּף יְהוָה אֶת־כָּל־הָעַמִּים אֲשֶׁר צָבְאוּ
super *stans* ipse & , ejus *carnem tabefacere* : Jerusalaim adversus
עַל־יְרוּשָׁלַםִ הָמֵק בְּשָׂרוֹ וְהוּא עֹמֵד עַל־
ejus lingua & , suis foraminibus in liquefient ejus oculi & , suos pedes
רַגְלָיו וְעֵינָיו תִּמַּקְנָה בְחֹרֵיהֶן וּלְשׁוֹנוֹ
contritio erit , illa die in , erit Et . eorum ore in liquescet
תִּמַּק בְּפִיהֶם׃ וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא תִּהְיֶה מְהוּמַת־ 13
manum unusquisque *apprehendent* Et : eis in magna DOMINI
יְהוָה רַבָּה בָּהֶם וְהֶחֱזִיקוּ אִישׁ יַד
etiam Et . sui *sodalis* manum super ejus manus *ascendet* & , sui *socii*
רֵעֵהוּ וְעָלְתָה יָדוֹ עַל־יַד רֵעֵהוּ׃ וְגַם־ 14
omnium *facultas colligetur* & : Jerusalaim in pugnabit Jehudah
יְהוּדָה תִּלָּחֵם בִּירוּשָׁלָםִ וְאֻסַּף חֵיל כָּל־
multitudine in vestes & , argentum & , aurum , *circum* gentium
הַגּוֹיִם סָבִיב זָהָב וָכֶסֶף וּבְגָדִים לָרֹב
, *asini &* , *cameli* , *muli* , *equi* plaga erit sic Et . valde
מְאֹד׃ וְכֵן תִּהְיֶה מַגֵּפַת הַסּוּס הַפֶּרֶד הַגָּמָל וְהַחֲמוֹר 15
plaga sicut , illis castris in *erit quod animalis omnis &*
וְכָל־הַבְּהֵמָה אֲשֶׁר יִהְיֶה בַּמַּחֲנוֹת הָהֵמָּה כַּמַּגֵּפָה
venientibus gentibus universis de residuum omne , erit Et . hæc
הַזֹּאת׃ וְהָיָה כָּל־הַנּוֹתָר מִכָּל־הַגּוֹיִם הַבָּאִים 16
se incurvandum ad annum in *anni sufficientia* à ascendent & : Jerusalaim contra
עַל־יְרוּשָׁלַםִ וְעָלוּ מִדֵּי שָׁנָה בְשָׁנָה לְהִשְׁתַּחֲוֺת
festivitatem celebrandum ad &, exercituum DOMINO *regi*
לְמֶלֶךְ יְהוָה צְבָאוֹת וְלָחֹג אֶת־חַג
. tabernaculorum
הַסֻּכּוֹת׃

Versio VULG. LAT.

5 Et fugietis ad vallem montium
eorum, quoniam conjungetur vallis
montiũ usque ad proximũ : &
fugietis sicut fugistis à facie terræmotûs
in diebus Oziæ regis Juda:
& veniet Dominus Deus meᵒ,
6 omnésque Sancti cum eo. Et erit
in die illa : Non erit lux, sed frigus
7 & gelu. Et erit dies una, quæ
nota est Domino, non dies neque
nox : & in tempore vesperi
8 erit lux. Et erit in die illa : Exibunt
aquæ vivæ de Jerusalem :
medium earum ad mare Orientale,
& medium earum ad mare novissimum
: in æstate & in hyeme
9 erunt. Et erit Dominus Rex super
omnem terram : in die illa
erit Dominus unus, & erit nomen
10 ejus unum. Et revertetur
omnis terra usque ad desertum,
de colle Remmon ad Austrum Jerusalem
: & exaltabitur, & habitabit
in loco suo, à porta Benjamin
usque ad locum portæ prioris,
& usque ad portam angulorum
: & à turre Hananeel usque
11 ad torcularia regis. Et habitabunt
in ea, & anathema non erit
amplius : sed sedebit Jerusalem
12 secura. Et hæc erit plaga, quâ
percutiet Dominus omnes Gentes,
quæ pugnaverunt adversùs
Jerusalem : tabescet caro uniuscujusque
stantis super pedes suos,
& oculi ejus contabescent in foraminibus
suis, & lingua eorum
13 contabescet in ore suo. In die illa
erit tumultus Domini magnus
in eis : & apprehendet vir manum
proximi sui, & conseretur
manus ejus super manum proxi-
14 mi sui. Sed & Judas pugnabit
adversùs Jerusalem : & congregabuntur
divitiæ omnium Gentium
in circuitu, aurum, & argen-
15 tum, & vestes multæ satis. Et sic
erit ruina equi, & muli, & cameli,
& asini, & omnium jumentorum,
quæ fuerint in castris illis,
16 sicut ruina hæc. Et omnes qui
reliqui fuerint de universis Gentibus,
quæ venerunt contra Jerusalem,
ascendent ab anno in annum,
ut adorent Regem, Dominum
exercituum, & celebrent festivitatem
tabernaculorum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

5 Καὶ (η) φραχθήσεται ἡ φάραγξ τῶν ὀρέων
μȣ, ϗ ἐγκολληθήσεται φάραγξ (θ) ὀρέων
ἕως Ἰασὸδ, ϗ ἐμφραχθήσεται καθὼς ἐνεφράγη
ἐν ταῖς ἡμέραις τοῦ (ι) συσσεισμοῦ,
ἐν ἡμέραις Ὀζίου βασιλέως Ἰούδα. ϗ ἥξει
κύριος ὁ θεός μȣ, ϗ πάντες οἱ ἅγιοι μετ'
6 αὐτοῦ. (κ) Καὶ ἔσται ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ οὐκ
7 ἔσται φῶς, ϗ ψύχη ϗ πάγος Ἔσται μίαν
ἡμέραν, ϗ ἡ ἡμέρα ἐκείνη γνωστὴ τῷ κυρίῳ,
ϗ οὐχ ἡμέρα, ϗ οὐ νύξ, (λ) ϗ πρὸς ἑσπέραν
8 ἔσται φῶς. Καὶ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐξελεύσεται
ὕδωρ ζῶν ἐξ Ἱερουσαλήμ, τὸ ἥμισυ
αὐτοῦ εἰς τὴν θάλασσαν τὴν πρώτην, ϗ τὸ
ἥμισυ αὐτοῦ εἰς τὴν θάλασσαν τὴν ἐσχάτην· ϗ
9 ἐν θέρει ϗ ἐν (μ) ἔαρι ἔσται οὕτως. Καὶ ἔσται
κύριος εἰς βασιλέα ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν. ἐν
τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσται κύριος εἷς, ϗ τὸ
10 ὄνομα αὐτοῦ ἕν, (ν) Κυκλῶν πᾶσαν τὴν γῆν,
ϗ τὴν ἔρημον ἀπὸ (ξ) Γαβὲ ἕως Ῥεμμὼν
κατὰ Νότον Ἱερουσαλήμ. Ῥαμὰ δὲ ἐπὶ τόπου
μενεῖ· ἀπὸ τῆς πύλης Βενιαμὶν (ο) ἕως τοῦ
τόπου τῆς πύλης τῆς πρώτης, ἕως τῆς πύλης
τῶν γωνιῶν, ϗ ἕως τοῦ πύργου Ἀναμεὴλ,
11 (π) ἕως τῶν ὑποληνίων τοῦ βασιλέως (ρ)
Κατοικήσουσιν ἐν αὐτῇ, ϗ (σ) ἀνάθεμα
οὐκ ἔσται ἔτι, ϗ κατοικήσει Ἱερουσαλὴμ
12 πεποιθότως. Καὶ αὕτη ἔσται ἡ πτῶσις ἣν
κόψει κύριος πάντας τοὺς λαοὺς, ὅσοι
ἐπεστράτευσαν ἐπὶ Ἱερουσαλήμ· τακήσονται
αἱ σάρκες αὐτῶν, ἑστηκότων (τ) ἐπὶ τοὺς
πόδας αὐτῶν, ϗ οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτῶν ῥυήσονται
(υ) ἐκ τῶν ὀπῶν αὐτῶν, ϗ ἡ γλῶσσα αὐτῶν
13 τακήσεται ἐν τῷ στόματι αὐτῶν· Καὶ ἔσται
ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔκστασις κυρίου (φ) μεγάλη
ἐπ' αὐτούς· ϗ (') ἐπιλήψονται ἕκαστος
τῆς χειρὸς τοῦ πλησίον αὐτοῦ, ϗ συμπλακήσεται
ἡ χεὶρ αὐτοῦ (χ) πρὸς τὴν χεῖρα τοῦ
14 πλησίον αὐτοῦ. Καὶ (ψ) Ἰούδας παρατάξεται ἐν
Ἱερουσαλήμ, ϗ συνάξει τὴν ἰσχὺν πάντων
τῶν λαῶν κυκλόθεν, χρυσίον ϗ ἀργύριον
15 ϗ ἱματισμὸν εἰς πλῆθος σφόδρα. (ω) Καὶ
αὕτη ἔσται ἡ πτῶσις τῶν ἵππων, ϗ τῶν
ἡμιόνων, ϗ τῶν καμήλων, ϗ τῶν ὄνων,
ϗ πάντων τῶν κτηνῶν τῶν ὄντων ἐν ταῖς
παρεμβολαῖς ἐκείναις, κατὰ τὴν πτῶσιν
16 ταύτην. Καὶ ἔσται, ὅσοι (α) ἐὰν καταλειφθῶσιν
ἐκ πάντων τῶν ἐθνῶν τῶν ἐλθόντων
ἐπὶ Ἱερουσαλήμ, ϗ ἀναβήσονται
κατ' ἐνιαυτὸν, τοῦ προσκυνῆσαι τῷ βασιλεῖ
κυρίῳ παντοκράτορι, ϗ τοῦ (β) ἑορτάσαι
τὴν ἑορτὴν τῆς σκηνοπηγίας.

Et (c) obturabitur vallis montium 5
meorum : & adjungetur
vallis montium usque (d) Jasod,
& replebitur, sicut repleta
est (e) in diebus terræmotûs, in
diebus Oziæ regis Juda. Et (f)
veniet Dominus Deus meus, &
omnes Sancti cum eo. Et erit, 6
in illa die non erit lux ; (g) &
frigus, & gelu Erit unâ die : 7
& dies illa nota Domino : &
non dies, neque nox : & ad vesperam
erit lux. Et in die illa 8
egredietur aqua vivens de Hierusalem,
dimidium ejus ad mare
primum, & dimidium ejus ad
mare novissimum: et in æstate, &
in vere erit sic. Et erit Dominus 9
in regem super omnem terram.
In die illa erit Dominus unus, &
nomen ejus unum, Circumiens 10
omnem terram, & desertum à
Gabee usque Remmon ad Austrum
Hierusalem. Rhama verò
in loco permanebit ; à porta Benjamin
usque ad locum portæ
primæ, usque ad portam angulorum ;
& usque ad turrim (h)
Anameel, usque ad torcularia
regis Habitabunt in ea : & ana- 11
thema ultrà non erit : & habitabit
Hierusalem confidenter.
Et hæc erit ruina, quâ percutiet 12
Dominus omnes populos, quicunque
militaverunt contra
Hierusalem. Tabescent carnes
eorum, stantium super pedes
suos : & oculi eorum defluent
de foraminibus suis : & lingua
eorum tabescet in ore eorum.
Et erit in die illa stupor Domini 13
magnus super eos, et apprehendent
unusquisque manum proximi
sui. et complicabitur manus ejus
manui proximi sui. *Et Judas* 14
præparabitur in Hierusalem : et
congregabit robur omniũ populorum
per circuitum, aurum, et
argentũ, et vestes in multitudine 15
nimis. Et hæc erit ruina equorum,
et mulorum, et camelorum, et asinorum,
et omnium jumentorum,
quæ fuerint in castris illis juxta 16
ruinam hanc. Et erit, quicunque
relicti fuerint de cunctis gentibus,
quæ venerint contra Hierusalem;
et ascendent per annos singulos;
ut adorent regem Dominum omnipotentem,
et celebrent festivitatem
tabernaculorum.

MS. A. (η) ἐμφραχθήσεται φάραγξ ὀρέων (θ) ὀρέων ἕως Ἀσαὴλ, καθὼς (ι) σεισμοῦ, (κ) Ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ οὐκ ἔσται φῶς, ϗ ψύχος ϗ πάγος Ἔσται μιᾷ ἡμέρᾳ, (λ) πρὸς ἑσπέραν (μ) *ἀέρς (ν) Κυκλοῦν (ξ) Γαβεὲ (ο) ἕως τῆς πύλης (π) ϗ ἕως τῶν ὑποληνίων (ρ) Κατοικοῦσιν (σ) οὐκ ἔσται ἀνάθεμα ἔτι, (τ) αὐτῶν ἐπὶ (υ) ἀπὸ (φ) ἐπ' αὐτοὺς μεγάλη· (') ἐπιλήμψεται (χ) πρὸς χεῖρα (ψ) ὁ Ἰούδας (ω) Αὕτη (α) ἂν καταλημφθῶσιν (β) ἑορτάζειν

תרגם יונתן Targum JONATHAN.

5 וְיִסְתַּתִּים חֵילָא דְטוּרַיָּא אֲרֵי יִמְטֵי חֵילָא דְטוּרַיָּא לְאָצַל וְתֶעֶרְקוּן כְּמָא דַעֲרַקְתּוּן
מִן קֳדָם זִיעָא דַהֲוָה בִּימֵי עֻזִּיָּה מֶלֶךְ שִׁבְטָא דְבֵית יְהוּדָה וְיִתְגְּלֵי יְיָ אֱלָהַי וְכָל קַדִּישׁוֹהִי
6 עִמֵּיהּ׃ וִיהֵי בְּעִדָּנָא הַהִיא לָא יְהֵי נְהוֹרָא אֱלָהֵין עֲדִי וּגְלִיד׃ וִיהֵי יוֹמָא חַד הוּא 7
8 יְדִיעַ קֳדָם יְיָ לָא כִנְהוֹר יֵימָם וְלָא כְקְבֵל לֵילֵי וִיהֵי לְעִדָּן רַמְשָׁא יְהֵי נְהוֹרָא׃ וִיהֵי
בְּעִדָּנָא הַהִיא יִפְּקוּן מֵי מַבּוּעַ מִירוּשְׁלֵם פַּלְגֵיהוֹן לְיַמָּא מַדִּנְחָא וּפַלְגֵהוֹן לְיַמָּא
9 מַעַרְבָאָה בְּקַיְטָא וּבְסִתְוָא יְהוֹן נָפְקִין׃ וְתִתְגְּלֵי מַלְכוּתָא דַיְיָ עַל כָּל יָתְבֵי אַרְעָא בְּעִדָּנָא
10 הַהִיא יִפְלְחוּן קֳדָם יְיָ כְּתֵף חַד אֲרֵי שְׁמֵיהּ יַצִּיב בְּעָלְמָא וְלֵית בַּר מִנֵּיהּ׃ יִקְפָּא כָל
אַרְעָא כְּמֵישְׁרָא מִגֶּבַע לְרִמּוֹן דָּרוֹם יְרוּשְׁלֵם וְתִתְרַבֵּי וְתִתֵּב בְּאַתְרֵיהּ לְמִתְּרַע שִׁבְטָא
11 בִּנְיָמִן עַד אֲתַר תְּרַע קַדְמָאָה עַד תְּרַע זָוְיָתָא וּמִגְדַּל פִּקּוּס עַד שִׁיחֵי מַלְכָּא׃ וְיִתְּבוּן
12 בַּהּ קְטָלָא לָא יְהֵי עוֹד וְתֵיתֵב יְרוּשְׁלֵם לְרוּחֲצָן׃ וְדָא תְהֵי מַחֲתָא דְיִמְחֵי יְיָ יָת כָּל
עַמְמַיָּא דְמִתְכַּנְשִׁין וְאָתַן עַל יְרוּשְׁלֵם יִתְמְסֵי בִּסְרֵיהּ וְהוּא קָאֵם עַל רִגְלוֹהִי וְעֵינוֹהִי
13 יִתְמַסְיָן בִּגְלְגִלֵּיהוֹן וְלִישָּׁנְהוֹן יִתְמְסֵי בְּפוּמְהוֹן׃ וִיהֵי בְּעִדָּנָא הַהִיא יְהֵי שִׁגּוּשׁ קְטָלָא
14 קֳדָם יְיָ סַגִּי בְּהוֹן וְיִתְקְפוּן גְּבַר בְּיַד חַבְרֵיהּ וְתִתְלַשׁ יְדֵיהּ עִם יְדָא דְחַבְרֵיהּ׃ וְאַף
דְּבֵית יְהוּדָה יַיְתוֹנוּן עַמְמַיָּא כַּד אֲנִיסִין לְאַגָּחָא קְרָבָא בִּירוּשְׁלֵם וְיִתְכַּנְשׁוּן נִכְסֵי
15 חֵיל כָּל עַמְמַיָּא סְחוֹר סְחוֹר דַּהֲבָא וְכַסְפָּא וּלְבוּשִׁין סַגִּי לַחֲדָא׃ וְכֵן תְּהֵי מְחַת סוּסַיָּא
16 כּוּדְנַיָּא גַּמְלַיָּא וַחֲמָרַיָּא וְכָל בְּעִירָא דִיהֵי בְּמַשְׁרְיָתָא הָאִנּוּן כְּמַחְתָא הָדָא׃ וִיהֵי כָל
דְיִשְׁתְּאַר מִכָּל עַמְמַיָּא דְמִתְכַּנְשִׁין וְאָתַן עַל יְרוּשְׁלֵם יִסְּקוּן בִּזְמַן שְׁנָא בִשְׁנָא לְמִסְגַּד
קֳדָם מֶלֶךְ עָלְמַיָּא יְיָ צְבָאוֹת וּלְמֵחַג יָת חַגָּא דִמְטַלַּיָּא׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et obturabitur vallis montium, quia pertinget vallis montium ad Asal: fu- 5
gietisque sicut fugistis à facie terræmotus qui fuit in diebus Oziæ regis tribus
domus Juda, & revelabitur Dñs Deus meus, & omnes sancti ejus cum eo. 6
Et fiet in tempore illo, non erit lux, sed præda & gelu. Eritq; dies una quæ 7
nota est coram Dño, non sicut lux diei, nec sicut tenebræ noctis : verùm fiet
ut in tempore vespertino sit lux. Et erit in tempore illo, egredientur aquæ 8
scaturiginis de Jerusalem ; medium earum ad mare Orientale, & medium
earum ad mare Occidentale : in æstate, & in hyeme erunt promanantes. Et 9
revelabitur regnum Dñi super omnes habitatores terræ : in tempore illo ser-
vient coram Dño humero uno, quia nomen ejus verum est in æternum, nec
est præter illud. Et circundabitur omnis terra quasi valle à Gabaa usque ad 10
Remon ad Austrũ Jerusalẽ, & magnificabitur & inhabitabitur in loco suo,
à porta tribᵒ Benjamin, usq; ad locum portæ prioris & usq; ad portam angu-
lorum, & à turre Peches usq; ad torcularia regis. Et habitabunt in ea, nec 11
occisio erit amplius: sed sedebit Jerusalem confidenter. Et hæc erit percussio 12
qua percutiet Dñs omnes populos qui congregantur & veniunt contra Jeru-
salem ; tabescet caro ejus ipso stante super pedes suos, & oculi ejus tabescent
in orbibᵒ suis ; & lingua eorum tabescet in ore ipsorum. Eritq; in tempore 13
illo, erit conturbatio stragis coram Dño magna in eis, & apprehendet unus-
quisq; manum proximi sui, & evelletur manus ejus cum manu proximi sui.
Et etiam viros domûs Juda adducent populi quasi violenter, ut oppugnent 14
Jerusalem : & congregabuntur substantiæ *roboris* omnium populorum in cir-
cuitu, aurum & argentum, & vestes multæ nimis. Et sic fiet percussio 15
equorum, mulorum, camelorum, & asinorum, omnium deniq; jumentorum
quæ fuerint in castris illis, sicut percussio hæc. Et erit, omnes qui remanse- 16
rint ex omnibus populis qui congregati sunt & veniunt contra Jerusalem,
ascendent in tempore ab anno in annum, ut adorent coram rege seculorum
Dño exercituum, & celebrent festivitatem tabernaculorum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

5 * ܘܬܥܪܩܘܢ ܠܢܚܠܐ ܕܛܘܪܐ. ܡܛܠ ܕܢܡܛܐ ܢܚܠܗܘܢ ܕܛܘܪܐ ܠܐܘܚܕܢܐ. ܘܬܥܪܩܘܢ
ܐܝܟ ܕܥܪܩܬܘܢ ܡܢ ܩܕܡ ܙܘܥܐ ܕܗܘܐ ܒܝܘܡܝ ܥܘܙܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܢܐܬܐ
ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ. ܘܟܠܗܘܢ ܩܕܝܫܘܗܝ ܥܡܗ. * ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܠܐ ܢܗܘܐ ܢܘܗܪܐ. 6
ܐܠܐ ܩܪܝܪܐ ܘܓܠܝܕܐ. * ܘܢܗܘܐ ܝܘܡܐ ܚܕ. ܘܝܘܡܐ ܗܘ ܝܕܝܥ ܠܡܪܝܐ. ܠܐ ܠܠܝܐ 7
ܘܠܐ ܐܝܡܡܐ. ܘܒܥܕܢ ܪܡܫܐ ܢܗܘܐ ܢܘܗܪܐ. * ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܦܩܘܢ ܡܝܐ ܚܝܐ 8
ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ. ܦܠܓܗܘܢ ܠܝܡܐ ܡܕܢܚܝܐ. ܘܦܠܓܗܘܢ ܠܝܡܐ ܐܚܪܝܐ.
ܒܩܝܛܐ ܘܒܣܬܘܐ. * ܘܢܗܘܐ ܡܪܝܐ ܡܠܟܐ ܥܠ ܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܗܘܐ ܡܪܝܐ 9
ܚܕ. ܘܫܡܗ ܚܕ. * ܘܢܚܕܪܝܗ ܠܟܠܗ ܐܪܥܐ ܐܝܟ ܦܩܥܬܐ. ܡܢ ܓܒܥ. ܘܥܕܡܐ 10
ܠܪܡܘܢ ܕܒܬܝܡܢܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܘܬܬܪܝܡ ܘܬܬܒ ܒܕܘܟܬܗ. ܡܢ ܬܪܥܐ ܕܒܢܝܡܝܢ.
ܘܥܕܡܐ ܠܐܬܪܐ ܕܬܪܥܐ ܩܕܡܝܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܬܪܥܐ ܕܙܘܝܬܐ. ܘܡܢ ܡܓܕܠܐ ܕܚܢܢܐܝܠ.
ܘܥܕܡܐ ܠܡܥܨܪܬܐ ܕܡܠܟܐ. * ܘܢܥܡܪܘܢ ܒܗ. ܘܬܘܒ ܚܪܡܐ ܠܐ ܢܗܘܐ. ܘܬܬܒ ܐܘܪܫܠܡ 11
ܒܫܠܝܐ. * ܘܗܕܐ ܬܗܘܐ ܡܚܘܬܐ ܕܢܡܚܐ ܡܪܝܐ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܐܬܟܢܫܘ ܥܠ 12
ܐܘܪܫܠܡ. ܢܬܡܣܐ ܒܣܪܗܘܢ. ܟܕ ܩܝܡܝܢ ܥܠ ܪܓܠܝܗܘܢ. ܘܥܝܢܝܗܘܢ. ܢܬܡܣܝܢ
ܒܚܘܪܝܗܘܢ. ܘܠܫܢܗܘܢ. ܢܬܡܣܐ ܒܦܘܡܗܘܢ. * ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܗܘܐ ܒܗܘܢ 13
ܫܓܘܫܝܐ ܪܒܐ ܡܢ ܡܪܝܐ. ܘܢܐܚܕܘܢ ܐܢܫ ܠܚܒܪܗ. ܘܬܬܢܩܦ ܐܝܕܗ ܒܐܝܕܐ ܕܚܒܪܗ. * ܘܐܦ 14
ܝܗܘܕܐ ܢܬܟܬܫ ܒܐܘܪܫܠܡ. ܘܢܬܟܢܫ ܚܝܠܗܘܢ ܕܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܚܕܪܝܢ ܠܗ. ܕܗܒܐ
ܘܣܐܡܐ. ܘܢܚܬܐ ܣܓܝܐܐ ܛܒ ܛܒ. * ܘܗܟܢܐ ܬܗܘܐ ܡܚܘܬܐ ܕܣܘܣܝܐ ܘܕܟܘܕܢܐ: ܘܕܓܡܠܐ 15
ܘܕܚܡܪܐ. ܘܕܟܠܗ ܒܥܝܪܐ ܕܢܗܘܐ ܒܡܫܪܝܬܐ ܗܠܝܢ. ܐܝܟ ܡܚܘܬܐ ܗܕܐ. * ܘܢܗܘܐ. ܟܠ 16
ܕܢܫܬܚܪ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܐܬܘ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ. ܢܣܩܘܢ ܡܢ ܫܢܐ ܠܫܢܐ.
ܠܡܣܓܕ ܠܡܠܟܐ ܡܪܝܐ ܚܣܝܢܐ: ܘܠܡܥܒܕ ܥܐܕܐ ܕܡܛܠܠܐ.

5 Fugietiſque ad vallem montium: (perveniet enim vallis montium ad anguſtum uſque locum) fugietis inquam, quemadmodum fugiſtis à terræmotu qui contigit diebus Uziæ regis Judæ: & ingredietur Dominus Deus meus, omneſque ſancti ejus cum eo. 6 Eo die non erit lux, ſed frigus & gelu: 7 Eritque dies ille unicus: & dies ille notus erit Domino: neque nox erit, neque dies: & ſub tempus veſpertinum erit lux. 8 Eodem die effluent aquæ vivæ è Jeruſalem: dimidium earum ad mare Orientale, dimidium verò ad mare Occidentale, tam æſtate quàm hyeme: 9 Eritque Dominus rex ſuper univerſam terram. Eo die erit Dominus unus, & nomen ejus unum. 10 Et circundabit univerſam terram quaſi planities, à Gebaa uſque ad Remmon quæ eſt in Auſtrali plaga Jeroſolymæ: & exaltabitur *urbs*, manebitq; in loco ſuo, à porta Benjaminis uſq; ad locũ portæ primæ, uſq; ad portã anguli: & à turri Hananaelis uſq; ad torcular regis: 11 Et habitabunt in ea, nec erit amplius anathema, ſed reſidebit Jeruſalem in tranquillitate. 12 Hæc autem erit plaga quâ percutiet Dominus cunctas gentes quæ nitentur contra Jeruſalem: putreſcet caro eorum ipſis adhuc ſtantibus ſuper pedes ſuos, oculi eorũ putreſcent in locis ſuis, & lingua eorum putreſcet in ore ipſorum. 13 Eodem die erit in eis horror ingens à Domino; nam altero alterum apprehendente, hærebit manus unius manui alterius. 14 Juda quoque pugnabit in Jeruſalem, colligetque opes omnium gentium illi *urbi* circunjacentium, aurum, argentum, & veſtes multas admodúm. 15 Eademque erit plaga equi, muli, cameli, aſini, & cujuſcunque jumenti quod fuerit in iis caſtris; qualis plaga prædicta. 16 Eritque ut quicunque reſidui fuerint ex omnibus gentibus quæ invaſuræ ſunt Jeruſalem, aſcendant annuatim ad adorandũ regem Dominum potentiſſimum, & ad celebrandum feſtum tabernaculorum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

5 * ويسد وادي جبالي * ويلتصق وادي الجبال الي ياصود * كما سد في ايام الزلزلة * في ايام عوزيا
ملك يهودا * وياتي الرب الهي وجميع قديسيه معه *

* الاصحاح الثلاثون * وهو السادس من النبوة *

6 * في ذلك اليوم لا يكون نور * وبرد وجليد لا يكون * يوم واحد * وذلك اليوم معروف 7
للرب * وليس نهار ولا ليل * وعند المساء يكون النور * وفي ذلك اليوم يخرج ماء حي من 8
ايروسليم * نصفه الي البحر الاول * ونصفه الي البحر الاخر * وفي صيف وربيع يكون هكذا *
* ويكون الرب ملكا على كل الارض * في ذلك اليوم يكون الرب واحد * واسمه واحد * 9
* يحيط بالارض كلها والبرية * من غابال الي رمون في جنوب ايروسليم * والرامة على الموضع 10
تثبت * من باب بنيامين الي باب الزوايا * والي برج انامايل * الي معاصير الملك يسكنون
فيها * ولا يكون حرم ايضا * وتسكن ايروسليم مطمانة * وهذه السقطة تكون التي 11 12
بها يقطع الرب جميع الشعوب الذين عسكروا على ايروسليم * تذوب لحومهم وهم قايمون
على اقدامهم * وتسيل عيونهم من انقابها * ولسانهم يذوب في فمهم * ويكون في ذلك اليوم 13
بهتة الرب العظيمة عليهم * وياخذ كل واحد بيد صاحبه * وتشتبك يده بيد صاحبه *
* ويهودا يصطف في ايروسليم * ويجمع قوة جميع الشعوب من حوله * ذهبا وفضة وقماشا 14
كثيرا جدا * ويكون هذه سقطة الخيل والبغال والجمال والحمير وجميع البهايم التي 15
تكون في تلك العساكر كسقطة الجميع * ويكون كل من يبقى من جميع الامم 16
الاتيين الي ايروسليم * فيصعدون في السنة ليسجدوا للملك الرب الضابط الكل الاله *
ويعيدوا عيد نصب المظلة *

5 **Et obturabitur vallis montium meorum, & connectetur vallis montium cum Jaſod; quemadmodum obturata fuit in diebus terræmotûs, in diebus Oziæ regis Judæ: venietque Dominus Deus meus, & omnes Sancti ejus cum eo.*

Textus trigeſimus, hujus prophetiæ ſextus.

6 In illa die non erit lux, & frigus ac gelu non erit. 7 Dies eſt unica, eáque dies nota Domino: neque dies erit, neque nox: & ad veſperam erit lux. 8 Et eâ die egredietur aqua viva de Jeruſalem, cujus media pars effluet ad mare primum, media verò pars ad mare poſtremum: & tam æſtivo quàm verno tempore ſic erit: 9 Eritque Dominus rex ſuper univerſam terram. In illa die erit Dominus unus, & nomen ejus unum, 10 Complectens totam terram & deſertum à Gabel ad Remmon, verſùs Meridionalem plagam Jeroſolymorum: Rama verò loco conſiſtet: à porta Benjamin ad portam angulorum uſque, & ad turrim Anameelis, ad torcularia regis habitabunt in ea. 11 Et non erit ampliùs anathema, ſed habitabit Jeruſalem securé. 12 Hujuſmodi autem erit ruina quâ exſcindet Dominus omnes populos qui caſtrametati fuerint contra Jeruſalem: liquefient carnes eorum ipſis ſtantibus ſuper pedes ſuos, effluent oculi eorum è foraminibus ſuis, & lingua eorum liqueſcet in ore ipſorum. 13 Erit etiam eâ die ſtupor Domini maximus ſuper eos: & apprehendet quiſque manum proximi ſui, & agglutinabitur manus ejus ad manum proximi ſui. 14 Et Juda inſtruet acies ſuas in Jeruſalem, & congeret undique robur omnium populorum, aurum, & argentum, & ſupellectilem ſummâ copiâ. 15 Ejuſmodi quoque erit ruina equorum, mulorum, camelorum, aſinorum, omniúmque jumentorum quæ fuerint in iis exercitibus; qualis ſcilicet omnium ruina. 16 Et erit ut quicunque remanſerint ex omnibus gentibus venturis in Jeruſalem, aſcendant in annum ad adorandum regem Dominum omnipotentem, Deum; & celebrandum ſolennitatem erectionis tabernaculi.

מלאכי : א

in terræ familiis de aſcenderit non qui , erit Et
17 וְהָיָה אֲשֶׁר לֹא־יַעֲלֶה מֵאֵת מִשְׁפְּחוֹת הָאָרֶץ אֶל־
: exercituum DOMINO *regi ſe incurvandum ad* , Jeruſalaim
יְרוּשָׁלַםִ לְהִשְׁתַּחֲוֹת לְמֶלֶךְ יְהֹוָה צְבָאוֹת
Ægypti familia ſi Et .imber erit eos ſuper non Et
18 וְלֹא עֲלֵיהֶם יִהְיֶה הַגָּשֶׁם׃ וְאִם־מִשְׁפַּחַת מִצְרַיִם
erit , eos ſuper neque , venerit non & aſcenderit non
לֹא־תַעֲלֶה וְלֹא בָאָה וְלֹא עֲלֵיהֶם תִּהְיֶה
non quæ , gentes DOMINUS percutiet qua , plaga
הַמַּגֵּפָה אֲשֶׁר יִגֹּף יְהֹוָה אֶת־הַגּוֹיִם אֲשֶׁר לֹא
Hoc .tabernaculorum feſtivitatem celebrandum ad aſcenderint
19 יַעֲלוּ לָחֹג אֶת־חַג הַסֻּכּוֹת׃ זֹאת
quæ , gentium omnium *peccatum* & : Ægypti *peccatum* erit
תִּהְיֶה חַטַּאת מִצְרָיִם וְחַטַּאת כָּל־הַגּוֹיִם אֲשֶׁר
die In .tabernaculorum feſtivitatem celebrandum ad aſcenderint non
20 לֹא יַעֲלוּ לָחֹג אֶת־חַג הַסֻּכּוֹת׃ בַּיּוֹם
: DOMINO ſanctitas *equi* tintinnabula ſuper erit illa
הַהוּא יִהְיֶה עַל־מְצִלּוֹת הַסּוּס קֹדֶשׁ לַיהֹוָה
.altari coram pelves ſicut , DOMINI domo in lebetes *erit* &
וְהָיָה הַסִּירוֹת בְּבֵית יְהֹוָה כַּמִּזְרָקִים לִפְנֵי הַמִּזְבֵּחַ׃
ſanctitas Jehudah in & , Jeruſalaim in lebes omnis erit Et
21 וְהָיָה כָּל־סִיר בִּירוּשָׁלַםִ וּבִיהוּדָה קֹדֶשׁ
ſument & , immolantes omnes venient Et .exercituum DOMINO
לַיהֹוָה צְבָאוֹת וּבָאוּ כָּל־הַזֹּבְחִים וְלָקְחוּ
domo in ultra *mercator* erit non Et .eis *in* coquent & , eis ex
מֵהֶם וּבִשְּׁלוּ בָהֶם וְלֹא־יִהְיֶה כְנַעֲנִי עוֹד בְּבֵית־
.illa die in exercituum DOMINI
יְהֹוָה צְבָאוֹת בַּיּוֹם הַהוּא׃

Verſio VULG. LAT.

17 Et erit : qui non aſcenderit de familiis terræ ad Jeruſalem, ut adoret Regem, Dominum exercituū,
18 non erit ſuper eos imber. Quòd & ſi familia Ægypti non aſcenderit, & non venerit : nec ſuper eos erit, ſed erit ruina, quâ percutiet Dominus omnes Gentes, quæ non aſcenderint ad celebrandam feſtivitatem tabernaculorum.
19 Hoc erit peccatum Ægypti, & hoc peccatū omniū Gentium, quæ non aſcenderint ad celebrandam feſtivitatem tabernaculorum.
20 In die illa erit quod ſuper frænum equi eſt, ſanctum Domino : & erunt lebetes in domo Domini quaſi phialæ coram altari.
21 Et erit omnis lebes in Jeruſalem & in Juda ſanctificatus Domino exercituum : & venient omnes immolantes, & ſument ex eis, & coquent in eis: & non erit mercator ultrà in domo Domini exercituum in die illo.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

17 Καὶ ἔσται, ὅσοι ἐὰν μὴ ἀναβῶσιν (γ) ἐκ πασῶν τῶν φυλῶν τῆς γῆς εἰς Ἱερουσαλὴμ, τοῦ προσκυνῆσαι τῷ βασιλεῖ κυρίῳ παντοκράτορι, καὶ οὗτοι ἐκείνοις προστεθήσονται.
18 Ἐὰν δὲ φυλὴ Αἰγύπτου μὴ ἀναβῇ, μηδὲ (δ) ἔλθῃ, καὶ ἐπὶ τούτους ἔσται ἡ πτῶσις, ἣν πατάξει κύριος πάντα τὰ ἔθνη, ὅσα (ε) ἂν μὴ ἀναβῇ, τοῦ ἑορτάσαι τὴν ἑορτὴν τῆς σκηνοπηγίας.
19 Αὕτη (ζ) ἔσται ἡ ἁμαρτία Αἰγύπτου, καὶ ἡ ἁμαρτία πάντων τῶν ἐθνῶν, (η) ὃς ἂν μὴ ἀναβῇ (θ) ἑορτάσαι τὴν ἑορτὴν τῆς σκηνοπηγίας.
20 Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσται τὸ ἐπὶ τὸν χαλινὸν τοῦ ἵππου ἅγιον τῷ κυρίῳ παντοκράτορι· καὶ ἔσονται οἱ λέβητες (ι) ἐν τῷ οἴκῳ κυρίου ὡς φιάλαι πρὸ προσώπου τοῦ θυσιαστηρίου.
21 Καὶ ἔσται πᾶς λέβης ἐν Ἱερουσαλὴμ καὶ ἐν τῷ Ἰούδᾳ (κ) ἅγιος τῷ κυρίῳ παντοκράτορι. καὶ ἥξουσι πάντες οἱ θυσιάζοντες, καὶ λήψονται ἐξ αὐτῶν, καὶ ἑψήσουσιν ἐν αὐτοῖς. καὶ οὐκ ἔσται Χαναναῖος (λ) ἔτι ἐν τῷ οἴκῳ κυρίου παντοκράτορος ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ.

Et erit , qui non aſcenderint ex omnibus tribubus terræ ad Hieruſalem, ut adorent regem Dominum omnipotentem ; & (i) iſti illis apponentur. 17
Sin autem tribus Ægypti non aſcenderit, nec venerit ; & ſuper eos erit ruina, quâ percutiet Dominus omnes gentes, quæ non aſcenderunt , ut agerent ſolennitatem ſcenopegiæ. 18
Hoc erit peccatum Ægypti, et peccatum omnium gentium, quicunque non aſcenderit, ut celebret feſtivitatem ſcenopegiæ. 19
In die illa erit, quod ſuper (k) frænum equi eſt, ſanctum Domino omnipotenti. Et erunt lebetes in domo Domini, ſicut phialæ ante faciem altaris. 20
Et erit omnis lebes in Hieruſalem, & in Juda ſanctus Domino omnipotenti. Et venient omnes, qui immolant, & ſument ex iis, et coquent in illis: & non erit (l) Chananæus ultrà in domo Domini (m) omnipotentis in die illa. 21

ΖΑΧΑΡΙ'ΑΣ ΙΑ'.

MS. A. (γ) ἐκεῖ οὐκ (δ) ἔλθῃ ἐκεῖ, ἐπὶ τούτοις (ε) ἐὰν (ζ) ἐστὶν (η) ὅσα ἐὰν (θ) τοῦ ἑορτάσαι (ι) οἱ ἐν τῷ (κ) ἅγιον (λ) οὐκέτι

ΖΑΧΑΡΙ'ΑΣ ΙΑ'.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

17 וִיהֵי דְלָא יִסַּק מִן זַרְעִית עַמְמֵי אַרְעָא לִירוּשְׁלֵם לְמִסְגַּד קֳדָם מֶלֶךְ עָלְמָא יְיָ צְבָאוֹת וְלָא
18 עֲלֵיהוֹן יְהֵי מִטְרָא׃ וְאִם מַלְכוּת מִצְרַיִם לָא תִסַּק וְלָא תֵיתֵי לָא לְהוֹן יִסַּק נִילוּס בְּרַם
19 עֲלֵיהוֹן תְּהֵי מַחְתָּא דְּיִמְחֵי יְיָ יָת עַמְמַיָּא דְלָא יִסְּקוּן לְמֵחַג יָת חַגָּא דִמְטַלַּיָּא׃ דָא תְהֵי
20 פּוּרְעֲנוּת מִצְרַיִם וּפוּרְעֲנוּת כָּל עַמְמַיָּא דְלָא יִסְּקוּן לְמֵחַג יָת חַגָּא דִמְטַלַּיָּא׃ בְּעִדָּנָא הַהִיא
יְהֵי עַל פְּרוּבַת סוּסַיָּא קוּדְשָׁא קֳדָם יְיָ וִיהוֹן דּוּדַיָּא בְּבֵית מַקְדְּשָׁא דַייָ סַגִּיאִין כְּמִזְרְקַיָּא
21 קֳדָם מַדְבְּחָא׃ וִיהֵי כָּל דּוּד בִּירוּשְׁלֵם וּבִיהוּדָה קוּדְשָׁא קֳדָם יְיָ צְבָאוֹת וְיֵיתוֹן כָּל
דָּבְחִין וְיִסְּבוּן מִנְּהוֹן וִיבַשְּׁלוּן בְּהוֹן וְלָא יְהֵי עָבֵיד תַּגְרָא עוֹד בְּבֵית מַקְדְּשָׁא דַייָ
צְבָאוֹת בְּעִדָּנָא הַהִיא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Eritque qui de cognationibus gentium terræ non aſcenderint Jeruſalem, ad 17
adorandum coram rege *ſeculi* Domino exercituum : non erit ſuper eos pluvia.
Et ſi regnum Ægypti non aſcenderit nec venerit, non creſcet eis Nilus. 18
Veruntamen erit ſuper eos percuſſio qua percutiet Dominus populos
qui non aſcenderint ut celebrent feſtivitatem tabernaculorum. Ejuſmodi 19
erit ultio Ægyptiorum & punitio omnium populorum qui non aſcenderint
ut celebrent diem feſtum tabernaculorum. In tempore illo *erit ſuper phalerας equorum ſanctitas* coram Domino, & erunt lebetes domᵒ ſanctuarii 20
Domini multæ quaſi phialæ coram altari. Et erit omnis lebes in Jeruſalem 21
& in Juda ſanctificatus coram Dño exercituum, & venient omnes immolantes, & tollent ex eis & coquent in eis : & non erit mercator ultrà in domo
ſanctuarii Domini exercituum in tempore illo.

ספר מלאכי : א

CAP. I. א

.Malachi manum per Iſrael ad DOMINI verbi *Onus*
1 מַשָּׂא דְבַר־יְהֹוָה אֶל־יִשְׂרָאֵל בְּיַד מַלְאָכִי׃
quo In : dixiſtis Et .DOMINUS dixit , vos Dilexi
2 אָהַבְתִּי אֶתְכֶם אָמַר יְהֹוָה וַאֲמַרְתֶּם בַּמָּה
, DOMINUS dixit , Jahacob *ipſi* Eſau frater Nónne ? nos dilexiſti
אֲהַבְתָּנוּ הֲלוֹא־אָח עֵשָׂו לְיַעֲקֹב נְאֻם־יְהֹוָה
poſui & , odivi Heſau Et ? Jahacob dilexi &
3 וָאֹהַב אֶת־יַעֲקֹב׃ וְאֶת־עֵשָׂו שָׂנֵאתִי וָאָשִׂים אֶת־
.deſerti dracones in ejus hæreditatem & ,ſolitudinem ejus montes
הָרָיו שְׁמָמָה וְאֶת־נַחֲלָתוֹ לְתַנּוֹת מִדְבָּר׃
ædificabimus & ,revertemur & ,ſumus pauperes Effecti :Edom dixerit *Cùm*
4 כִּי־תֹאמַר אֱדוֹם רֻשַּׁשְׁנוּ וְנָשׁוּב וְנִבְנֶה
Ipſi : exercituum DOMINUS dixit ſic : deſolata
חֳרָבוֹת כֹּה אָמַר יְהֹוָה צְבָאוֹת הֵמָּה
, impietatis Terminum eos vocabunt & : deſtruam ego & , ædificabunt
יִבְנוּ וַאֲנִי אֶהֱרוֹס וְקָרְאוּ לָהֶם גְּבוּל רִשְׁעָה
.ſeculum in uſque DOMINUS eſt deteſtatus quem , populum &
וְהָעָם אֲשֶׁר־זָעַם יְהֹוָה עַד־עוֹלָם׃
DOMINUS Magnificetur : dicetis vos & , videbunt veſtri oculi Et
5 וְעֵינֵיכֶם תִּרְאֶינָה וְאַתֶּם תֹּאמְרוּ יִגְדַּל יְהֹוָה
.Iſrael terminum *deſuper*
מֵעַל לִגְבוּל יִשְׂרָאֵל׃

Verſio VULG. LAT.

PROPHETIA MALACHIÆ.

CAP. I.

1 ONus verbi Domini ad Iſrael
2 in manu Malachiæ. Dilexi vos, dicit Dominus: & dixiſtis; In quo dilexiſti nos? Nónne frater erat Eſau Jacob, dicit Dominus; & di-
3 lexi Jacob, Eſau autem odio habui? & poſui montes ejus in ſolitudinem, & hæreditatem ejus in
4 dracones deſerti. Quòd ſi dixerit Idumæa; Deſtructi ſumus, ſed revertentes ædificabimus quæ deſtructa ſunt : Hæc dicit Dominus exercituum ; Iſti ædificabunt, & ego deſtruam: & vocabuntur termini impietatis, & populus cui iratus eſt Dominus uſque in æter-
5 num. Et oculi veſtri videbunt: & vos dicetis ; Magnificetur Dominus ſuper terminum Iſrael.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

ΜΑΛΑΧΙ'ΑΣ ΙΒ'.
ΚΕΦ. α'.

1 Λῆμμα λόγου κυρίου ἐπὶ τὸν Ἰσραὴλ ἐν χειρὶ ἀγγέλου αὐτοῦ, Θέσθε δὴ ἐπὶ τὰς
2 καρδίας ὑμῶν. Ἠγάπησα ὑμᾶς, λέγει κύριος· καὶ εἴπατε, Ἐν τίνι ἠγάπησας ἡμᾶς; οὐκ ἀδελφὸς ἦν Ἡσαῦ τοῦ Ἰακώβ, λέγει κύριος, καὶ ἠγάπησα τὸν Ἰακώβ,
3 Τὸν δὲ Ἡσαῦ ἐμίσησα, καὶ ἔταξα τὰ ὅρια αὐτοῦ εἰς ἀφανισμὸν, καὶ τὴν κληρονομίαν
4 αὐτοῦ εἰς δώματα ἐρήμου; Διότι ἐρεῖ, Ἡ Ἰδουμαία κατέστραπται, καὶ ἐπιστρέψωμεν, καὶ ἀνοικοδομήσωμεν τὰς (α) ἐρήμους· τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Αὐτοὶ οἰκοδομήσουσι, καὶ ἐγὼ καταστρέψω· καὶ ἐπικληθήσεται αὐτοῖς ὅρια ἀνομίας, καὶ λαὸς ἐφ᾽ ὃν
5 παρατέτακται κύριος ἕως αἰῶνος. Καὶ οἱ ὀφθαλμοὶ ὑμῶν ὄψονται, καὶ ὑμεῖς ἐρεῖτε, Ἐμεγαλύνθη κύριος ὑπεράνω τῶν ὁρίων τοῦ Ἰσραήλ.

MALACHIAS.
CAP. I.

Aſſumptio verbi Domini ſuper Iſrael in manu (a) angeli ejus. (b) Ponite nunc ſuper corda veſtra. 1
Dilexi vos, dicit Dominus. Et dixiſtis ; In quo dilexiſti nos? Nónne frater erat Eſau Jacob, dicit Dominus ; & dilexi Jacob, 2
Eſau autem odio habui : & poſui terminos ejus in deſolationem, & hæreditatem ejus in domata deſerti? 3
Quia dicet ; Idumæa deſtructa eſt : & revertamur, & reædificemus deſerta. Hæc dicit Dominus omnipotens ; Ipſi ædificabunt, & ego deſtruam : & vocabuntur eis termini iniquitatis, & populus ſuper quem (c) præparatus eſt Dominus uſque in æternum. 4
Et oculi veſtri videbunt : & vos dicetis ; Magnificatus eſt Dominus ſuper terminos Iſrael. 5

MS. A. ΜΑΛΑΧΙ'ΑΣ ΙΒ'. (α) ἠρημωμένας·

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

1 מַטַּל פִּתְגָמָא דַייָ עַל יִשְׂרָאֵל בְּיַד מַלְאָכִי דְּיִתְקְרֵי שְׁמֵיהּ עֶזְרָא סָפְרָא׃ רְחֵימִית יַתְכוֹן
2 אֲמַר יְיָ וְאִם תֵּימְרוּן בְּמָה רְחֵמְתָּנָא הֲלָא אַח עֵשָׂו לְיַעֲקֹב אֲמַר יְיָ וּרְחֵימִית יָת
3 יַעֲקֹב׃ וְיָת עֵשָׂו רְחֵיקִית וְשַׁוִּיתִי יָת טוּרוֹהִי לְצָדוּ וְיָת אַחְסַנְתֵּיהּ לְצָדוּת מַדְבְּרָא׃
4 אֲרֵי יֵימְרוּן אֱדוֹמָאֵי אִתְמַסְכֵּנְנָא כְּעַן עַתַּרְנָא נְתוּב וְנִבְנֵי חָרְבָתָא כִּדְנַן אֲמַר יְיָ
צְבָאוֹת אִנּוּן יִבְנוּן וַאֲנָא אֲפַגַּר וְיִקְרוֹן לְהוֹן תְּחוּמָא דְעַמֵּיהּ רַשִׁיעָא וְעַמָּא דְאַיְתֵי
5 עֲלֵיהוֹן לוּט עַד עָלְמָא׃ וְעֵינֵיכוֹן יֶחֶזְיָן וְאַתּוּן תֵּימְרוּן יִסְגֵּי יְקָרָא דַייָ וְאַפְּתֵּי יָת
תְּחוּם יִשְׂרָאֵל׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAPUT I.

ONus verbi Domini ſuper Iſrael per manum Malachiæ, *qui appellatus eſt* 1
Ezra ſcriba. Amavi vos, dixit Dominus : quod ſi dixeritis, In quo ama- 2
viſti nos? Nónne erat frater Eſau ipſi Jacob, ait Dñs? At dilexi Jaacob. Eſau 3
verò reprobavi, & redegi montes ejus in deſolationem, & poſſeſſionem ejus
in vaſtationem deſerti. Quòd ſi dixerint Ædumæi, Ad paupertatem redacti 4
fuimus, nunc divites facti revertamur, & ædificemus quæ deſtructa ſunt : Sic
ait Dñs exercituum, Ipſi ædificabunt, ego verò demoliar ; & vocabunt
eos Terminum populi impii, & populum ſuper quem *adducam* maledictionem in perpetuum uſque. Et oculi veſtri videbunt, & vos dicetis, Mul- 5
tiplicetur gloria Domini, etenim dilatavit fines Iſrael.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܢܗܘܐ. ܡܢ ܕܠܐ ܢܣܩ ܡܢ ܫܪ̈ܒܬܐ ܕܐܪܥܐ ܠܐܘܪܫܠܡ : ܠܡܣܓܕ ܠܡܠܟܐ 17
ܡܪܝܐ ܐܚܝܕܟܠ.· ܠܐ ܢܚܘܬ ܥܠܝܗܘܢ ܡܛܪܐ. * ܘܐܢ ܫܪܒܬܐ ܕܡܨܪܝܢ ܠܐ ܬܣܩ ܘܠܐ ܬܐܬܐ.· ܐܦ 18
ܥܠܝܗܘܢ. ܬܗܘܐ ܡܚܘܬܐ ܕܢܡܚܐ ܡܪܝܐ ܠܥܡ̈ܡܐ.· ܐܝܠܝܢ ܕܠܐ ܣܠܩܝܢ ܠܡܥܒܕ ܥܐܕܐ
ܕܡܛܠ̈ܠܐ. * ܘܗܕܐ ܬܗܘܐ ܚܛܝܬܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܚܛܝܬܐ ܕܟܠܗܘܢ ܥܡ̈ܡܐ.· ܐܝܠܝܢ ܕܠܐ ܣܠܩܝܢ 19
ܠܡܥܒܕ ܥܐܕܐ ܕܡܛܠ̈ܠܐ. * ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ.· ܢܗܘܐ ܥܠ ܦܓܘܕܐ ܕܣܘܣܝܐ. ܩܘܕܫܐ 20
ܠܡܪܝܐ. ܘܢܗܘܘܢ ܩܕ̈ܣܐ ܕܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ.· ܐܝܟ ܦܝ̈ܠܣܐ ܕܩܕܡ ܡܕܒܚܐ. * ܘܢܗܘܘܢ ܟܠ 21
ܩܕ̈ܣܐ ܕܒܐܘܪܫܠܡ ܘܒܝܗܘܕܐ.· ܩܘܕܫܐ ܠܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܘܢܐܬܘܢ ܟܠ ܕܡܕܒܚܝܢ.·
ܘܢܣܒܘܢ. ܡܢܗܘܢ. ܘܢܒܫܠܘܢ ܒܗܘܢ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܬܘܒ ܟܢܥܢܝܐ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ
ܚܝܠܬܢܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ.

* ܫܠܡܬ ܢܒܝܘܬܗ ܕܙܟܪܝܐ ܢܒܝܐ *

* Et erit ut ſuper eos qui ex omnibus terræ na- 17
tionib⁹ non aſcenderint Jeroſolymam ad ado-
randum regem Dominum potentiſſimum, non
decidat pluvia. Quòd ſi natio Ægyptia non 18
aſcenderit, neque venerit; etiam ipſis ſuper-
veniet plaga quâ percutiet Dominus gentes
illas quæ non aſcendent ad celebrandũ feſtum
tabernaculorum. Atque hoc erit peccatum 19
Ægyptiorum & peccatum omnium gentium
quæ non aſcenderint ad celebrandum feſtum
tabernaculorum. Eo die erit *inſcriptum* fræno 20
equi, Sacrum Domino: & lebetes qui ſunt
in domo Domini, erunt ut pelves quæ ſunt
ante altare: Imò lebetes omnes qui ſunt in 21
Jeruſalem & in Juda, erunt ſacri Domino po-
tentiſſimo: & venientes omnes qui ſacrifica-
verint, accipient ex eis, & coquent in eis:
& non erit ampliùs Chananæus in domo Do-
mini potentiſsimi, eo die.

Prophetiæ Zechariæ prophetæ finis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ويكون الذين لا يصعدون من جميع قبايل الارض الي ايروسليم ليسجدوا للرب الضابط 17
الكل * فهولاء لاوليك يضافون * وان لم تصعد قبيلة مصر ولا تاتي هناك * وعلي هاولاء 18
تكون السقطة * ويضرب الرب كل الامم التي لم تصعد لتعيد عيد نصب المظلة * هذه 19
تكون خطية مصر وخطية جميع الامم التي لم تصعد وتعيد عيد نصب المظلة * في 20
ذلك اليوم يكون الذي علي لجام الفرس قدسا للرب الضابط الكل. وتصير المراجل التي
في بيت الرب مثل اهنية امام وجه المذبح * ويكون كل مرجل في ايروسليم وفي يهودا قدسا 21
للرب الضابط الكل * ويأتي جميع الذين يذبحون * فياخذون منها ويطبخون فيها. ولا يكون
كنعاني ايضا في بيت الرب الضابط الكل في ذلك اليوم *

* تمت نبوة زكرياء النبي *

* *Et erit ut qui non aſcenderint ex omni-* 17
bus terræ nationibus in Jeruſalem, ad
adorandum Dominum omnipotentem; ii
illis adjungantur. Item niſi aſcenderit 18
gens Ægypti, eóque venerit; ſuper iſtos
quoque erit ruina: percutiétque Dominus
cunctas gentes quæ non aſcenderint ad ce-
lebrandum feſtum erectionis tabernaculi.
Hoc erit peccatum Ægypti & peccatum 19
cunctarum gentium quæ non aſcendent
& celebrabunt feſtum erectionis taber-
naculi. In illa die, quod fuerit ſuper 20
habenas equi, ſacrum erit Domino omni-
potenti: & lebetes qui ſunt in domo Do-
mini, erunt ut vaſa ante faciem altaris:
Et omnes lebetes qui ſunt in Jeruſalem 21
& in Juda, erunt ſacri Domino omnipo-
tenti: & venient omnes qui ſacrifica-
bunt, & accipient ex eis, coquéntque in
eis: & non erit ampliùs Chananæus in
domo Domini omnipotentis in die illa.

Prophetiæ Zachariæ prophetæ finis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܬܘܒ ܢܒܝܘܬܗ ܕܡܠܐܟܝ ܢܒܝܐ *

* ܩܦܠܐܘܢ * ܐ̄ *

* ܫܩܠܐ ܕܦܬܓܡܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܝܣܪܝܠ ܒܝܕ ܡܠܐܟܝ. * ܐܚܒܬܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. 1
ܘܐܡܪܬܘܢ ܐܝܟܢܐ. ܒܡܢܐ ܐܚܒܬܢ. ܕܠܡܐ ܠܐ ܗܘܐ ܥܣܘ ܐܚܘܗܝ ܕܝܥܩܘܒ ܐܡܪ 2
ܡܪܝܐ.· ܘܐܚܒܬܗ ܠܝܥܩܘܒ. ܘܠܥܣܘ ܣܢܝܬ.· * ܘܣܡܬ ܛܘܪ̈ܘܗܝ ܠܚܘܪܒܐ.· 3
ܘܝܪܬܘܬܗ. ܠܬܢ̈ܝܢܐ ܕܡܕܒܪܐ. * ܘܐܢ ܢܐܡܪܘܢ ܐܕܘܡܝܐ: ܐܬܡܣܟܢܢ.· ܢܗܦܘܟ ܢܒܢܐ 4
ܚܪ̈ܒܬܐ.· ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܢܘܢ ܢܒܢܘܢ. ܘܐܢܐ ܐܣܚܘܦ. ܘܢܩܪܘܢ ܐܢܘܢ.
ܬܚܘܡܐ ܕܚܛܝܬܐ. ܘܥܡܐ ܕܪܓܙ ܥܠܘܗܝ ܡܪܝܐ ܠܥܠܡ. * ܘܥܝ̈ܢܝܟܘܢ ܢܚܙܝܢ. 5
ܘܐܢܬܘܢ ܬܐܡܪܘܢ.· ܢܪܒܐ ܡܪܝܐ ܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܐܝܣܪܝܠ.

Sequitur Prophetia
MALACHIÆ
PROPHETÆ.

CAP. I.

* Viſio ſermonum Domini de Iſraele per Ma- 1
lachiam, Dilexi vos, dicit Dominus: vos au- 2
tem dicitis, Quâ in re dilexiſti nos? Annon
Eſau frater erat Jacobi, dicit Dominus? & ta-
men Jacobum dilexi, Eſau verò odio habui:
Redegi montes ejus in deſtructionem, & hæ- 3
reditatem ejus in turguria deſerta. Quòd ſi 4
dicant Adumæi, Depauperati ſumus, iterum
ædificemus ruinas; ita dicit Dominus; Ipſi
ædificabunt, ego verò deſtruam: & vocabunt
eos terminũ peccati & populum cui indigna-
tus eſt Dominus in perpetuum: Et quidem 5
oculi veſtri ſpectabunt. Vos autem dicetis,
Magnificetur Dominus ſupra terminum Iſ-
raelis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بسم الله الروف الرحيم *

* نبدا بترجمة نبوة ملاخيا النبي * بركاته علينا * امين *

* الفصل الاول *   * الاصحاح الحادي والثلثون * وهو الاول من النبوة *

* وحي قول الرب على اسرايل بيد ملاكه * ضعوا الان في قلوبكم * احببتكم 1 2
فقلتم باي شي احببتنا * اليس عيسوا كان اخو يعقوب يقول الرب * فاحببت يعقوب
وابغضت عيسوا * وربيت حدوده للفساد * وميراثه عطايا القفر * من اجل انه يقول * 3 4
الادومية خربت * فنرجع ونبني البراري * هكذا يقول الرب الضابط الكل. هم يبنون وانا
اهدم * ويدعى لهم حدود الاثم * والشعب الذي عليه غضب الرب الي الدهر * واعينكم 5
ترى * وانتم تقولون عظم الرب فوق حدود اسرايل *

IN NOMINE DEI
Clementis, Miſericordis,

Aggredimur Interpretationem
prophetiæ MALACHIÆ pro-
phetæ, cujus benedictiones adſint
nobis, Amen.

CAP. I.

Textus trigeſimus primus, hujus au-
tem prophetiæ primus.

Revelatio ſermonis Domini de Iſraele 1
per angelum ſuum. Ponite jam in 2
cordibus veſtris: Dilexi vos; & dixiſtis,
Quâ in re dilexiſti nos? Nónne Eſau e-
rat frater Jacobi, dicit Dominus, & di-
lexi Jacobum, Eſau verò odi, Et redegi 3
terminos ejus in corruptionem, & hæredi-
tatem ejus in dona deſerti. Quia dicit, 4
Edomæa ſubverſa eſt, revertamur, & æ-
dificemus deſerta; ſic dicit Dominus omni-
potens, Ipſi ædificabunt, ego verò deſtru-
am: & vocabuntur eis termini iniquita-
tis, & populus cui iratus eſt Dominus in
æternum. Oculi veſtri ſpectabunt, et vos 5
dicetis, Magnificetur Dominus ſuper ter-
minos Iſraelis.

מלאכי : ב

ubi , ego pater si & : suum dominum servus & ,patrem *honorabit* Filius
6 בֵּן יְכַבֵּד אָב וְעֶבֶד אֲדֹנָיו וְאִם־אָב אָנִי אַיֵּה
Dominus dixit ? mei timor ubi , ego Dominus si & ? meus honor
כְבוֹדִי וְאִם־אֲדוֹנִים אָנִי אַיֵּה מוֹרָאִי אָמַר׀ יְהוָה
: dixistis Et .meum nomen despicientibus sacerdotibus vobis exercituum
צְבָאוֹת לָכֶם הַכֹּהֲנִים בּוֹזֵי שְׁמִי וַאֲמַרְתֶּם
panem meum altare super *accedere Facientes* ? tuum nomẽ despexim⁹ quo In
7 בַּמֶּה בָזִינוּ אֶת־שְׁמֶךָ׃ מַגִּישִׁים עַל־מִזְבְּחִי לֶחֶם
Domini Mensa : *vos dicendo In*? te polluimus quo In : dixistis & ,pollutum
מְגֹאָל וַאֲמַרְתֶּם בַּמֶּה גֵאַלְנוּךָ בֶּאֱמָרְכֶם שֻׁלְחַן יְהוָה
Non ,immolandum ad cæcum *facietis accedere* quando Et *ipsa* despecta
8 נִבְזֶה הוּא׃ וְכִי־תַגִּשׁוּן עִוֵּר לִזְבֹּחַ אֵין
illud Offer.malum Non:*morbidum* &,claudũ *facietis accedere cum* Et.malum
רָע וְכִי תַגִּישׁוּ פִּסֵּחַ וְחֹלֶה אֵין רָע הַקְרִיבֵהוּ
, *tuas facies* suscipiet nunquid vel,tibi complacebit nunquid:tuo duci nunc
נָא לְפֶחָתֶךָ הֲיִרְצְךָ אוֹ הֲיִשָּׂא פָנֶיךָ
, Dei *facies* quæso deprecamini nunc Et ? exercituum Dominus dixit
9 אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת׃ וְעַתָּה חַלּוּ־נָא פְנֵי־אֵל
suscipiet Nunquid .hoc fuit vestra manu De .nostri miserebitur &
וִיחָנֵנוּ מִיֶּדְכֶם הָיְתָה זֹּאת הֲיִשָּׂא
vobis in etiam Quis ? exercituum Dominus dixit , *facies* vobis ex
10 מִכֶּם פָּנִים אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת׃ מִי גַם־בָּכֶם 10
mihi Non ? gratis meum altare *facietis lucere* non & ? ostia claudet &
וְיִסְגֹּר דְּלָתַיִם וְלֹא־תָאִירוּ מִזְבְּחִי חִנָּם אֵין־לִי
volam non munus & exercituum Dominus dixit ,vobis in voluntas
חֵפֶץ בָּכֶם אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת וּמִנְחָה לֹא־אֶרְצֶה
magnum ejus occasum ad usque & , Solis ortu ab Nam.vestra manu de
11 מִיֶּדְכֶם׃ כִּי מִמִּזְרַח־שֶׁמֶשׁ וְעַד־מְבוֹאוֹ גָּדוֹל
,meo nomini *oblatum suffumigatum* loco omni in & ,gentes inter meũ nomẽ
שְׁמִי בַּגּוֹיִם וּבְכָל־מָקוֹם מֻקְטָר מֻגָּשׁ לִשְׁמִי
dixit ,gentes inter meum nomen magnum quia : munda oblatio &
וּמִנְחָה טְהוֹרָה כִּי־גָדוֹל שְׁמִי בַּגּוֹיִם אָמַר
Mensa : *vos dicendo in* ,illud *polluentes* vos Et .exercituum Dominus
12 יְהוָה צְבָאוֹת׃ וְאַתֶּם מְחַלְּלִים אוֹתוֹ בֶּאֱמָרְכֶם שֻׁלְחַן
: dixistis Et .ejus esca *contempta* ejus *fructus* & ,*ipsa* contaminata Domini
13 יְהוָה מְגֹאָל הוּא וְנִיבוֹ נִבְזֶה אָכְלוֹ׃ וַאֲמַרְתֶּם
,exercituum Dominus dixit , *illam efflastis* & , *defatigatio* Ecce
הִנֵּה מַתְּלָאָה וְהִפַּחְתֶּם אוֹתוֹ אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת
intulistis & , *morbidum* & , claudum & , raptum intulistis &
וַהֲבֵאתֶם גָּזוּל וְאֶת־הַפִּסֵּחַ וְאֶת־הַחוֹלֶה וַהֲבֵאתֶם אֶת־
? Dominus dixit , vestra manu de illud volam num : munus
הַמִּנְחָה הַאֶרְצֶה אוֹתָהּ מִיֶּדְכֶם אָמַר יְהוָה׃
immolans & vovens & ,masculus *ejus* grege in *est &* dolosus maledictus Et
14 וְאָרוּר נוֹכֵל וְיֵשׁ בְּעֶדְרוֹ זָכָר וְנֹדֵר וְזֹבֵחַ
Dominus dixit , *ego* magnus rex quia : Domino corruptum
מָשְׁחָת לַאדֹנָי כִּי מֶלֶךְ גָּדוֹל אָנִי אָמַר יְהוָה
.gentes inter terribile meum nomen & ,exercituum
צְבָאוֹת וּשְׁמִי נוֹרָא בַגּוֹיִם׃

CAP. II. ב

non Si .sacerdotes ,hoc mandatum vos ad nunc Et
1 וְעַתָּה אֲלֵיכֶם הַמִּצְוָה הַזֹּאת הַכֹּהֲנִים׃ אִם־לֹא 1
2 gloriam *dandum ad* ,cor super posueritis non si & , audieritis
תִשְׁמְעוּ וְאִם־לֹא תָשִׂימוּ עַל־לֵב לָתֵת כָּבוֹד
vos in mittam & , exercituum Dominus dixit ,meo nomini
לִשְׁמִי אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת וְשִׁלַּחְתִּי בָכֶם אֶת־
:ei maledixi etiam &: vestris benedictionibus maledicam & maledictionem
הַמְּאֵרָה וְאָרוֹתִי אֶת־בִּרְכוֹתֵיכֶם וְגַם אָרוֹתִיהָ
.cor super *ponentes vos* non quoniam
כִּי אֵינְכֶם שָׂמִים עַל־לֵב׃

Versio VULG. LAT.

6 Filius honorat patrem, & servus dominum suum: si ergò Pater ego sum, ubi est honor meus? & si Dominus ego sum, ubi est timor meus? dicit Dominus exercituum, ad vos, ô sacerdotes, qui despicitis no[illegible]um, & dixistis; In quo despeximus nomen tuum? 7 Offertis super altare meum panẽ pollutum, & dicitis; In quo polluimus te? In eo quòd dicitis; 8 Mensa Domini despecta est. Si offeratis cæcum ad immolandum, nónne malum est? & si offeratis claudum, & languidum, nónne malum est? offer illud duci tuo, si placuerit ei, aut si susceperit faciem tuam, dicit Dominus exer- 9 cituum. Et nunc deprecamini vultum Dei, ut misereatur vestrî (de manu enim vestra factum est hoc) si quomodò suscipiat facies vestras, dicit Domin⁹ exercituum. 10 Quis est in vobis, qui claudat ostia, & incendat altare meum gratuitó? non est mihi voluntas in vobis, dicit Dominus exercituum: & munus non suscipiam 11 de manu vestra. Ab ortu enim Solis usque ad occasum, magnum est nomen meum in Gentibus: & in omni loco sacrificatur, & offertur nomini meo oblatio munda: quia magnũ est nomen meum in Gentibus, dicit Dominus exerci- 12 tuum. Et vos polluistis illud in eo quòd dicitis; Mensa Domini contaminata est: & quod superponitur, contemptibile est, cum 13 igne qui illud devorat. Et dixistis; Ecce de labore, & exufflâstis illud, dicit Dominus exercituum, & intulistis de rapinis claudum, & languidum, & intulistis munus: numquid suscipiam illud de 14 manu vestra, dicit Dominus? Maledictus dolosus, qui habet in grege suo masculum, & votum faciens immolat debile Domino: quia Rex magnus ego, dicit Dominus exercituũ, & nomen meum horribile in Gentibus.

CAP. II.

1 ET nunc ad vos mandatum hoc, 2 ô sacerdotes. Si nolueritis audire, & si nolueritis ponere super cor ut detis gloriam nomini meo, ait Dominus exercituum: mittam in vos egestatem, & maledicam benedictionibus vestris, & maledicam illis: quoniam non posuistis super cor.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

6 Υἱὸς δοξάζει πατέρα, καὶ δοῦλος τὸν κύριον (β) ἑαυτοῦ. καὶ εἰ πατήρ εἰμι ἐγὼ, ποῦ ἐστιν ἡ δόξα μου; καὶ εἰ κύριός εἰμι ἐγὼ, ποῦ ἐστιν ὁ φόβος μου; λέγει κύριος παντοκράτωρ. ὑμεῖς οἱ ἱερεῖς οἱ φαυλίζοντες τὸ ὄνομά μου, καὶ εἴπατε, Ἐν τίνι ἐφαυλίσαμεν 7 τὸ ὄνομά σου; Προσάγοντες πρὸς τὸ θυσιαστήριόν μου ἄρτους ἠλισγημένους, καὶ εἴπατε, Ἐν τίνι ἠλισγήσαμεν αὐτούς; ἐν τῷ λέγειν ὑμᾶς, Τράπεζα κυρίου ἠλισγημένη ἐστὶ, 8 καὶ τὰ ἐπιτιθέμενα (γ) ἐξουδενώσατε. Διότι ἐὰν προσαγάγητε τυφλὸν εἰς (δ) θυσίας, οὐ κακόν; καὶ ἐὰν προσαγάγητε χωλὸν ἢ ἄρρωστον, οὐ κακόν; προσάγαγε δὴ αὐτὸ τῷ ἡγουμένῳ σου, εἰ (ε) προσδέξεταί σε, εἰ λήψεται πρόσωπόν σου, λέγει κύριος 9 παντοκράτωρ· Καὶ νῦν ἐξιλάσκεσθε τὸ πρόσωπον τοῦ θεοῦ ὑμῶν, καὶ δεήθητε αὐτοῦ. Ἐν χερσὶν ὑμῶν γέγονε ταῦτα, εἰ λήψομαι ἐξ ὑμῶν πρόσωπα ὑμῶν; λέγει κύριος 10 παντοκράτωρ. Διότι καὶ ἐν ὑμῖν συγκλεισθήσονται θύραι, καὶ οὐκ ἀνάψεται τὸ θυσιαστήριόν μου δωρεάν. οὐκ ἔστι μου θέλημα ἐν ὑμῖν, λέγει κύριος παντοκράτωρ, καὶ θυσίαν οὐ προσδέξομαι ἐκ τῶν χειρῶν ὑμῶν. 11 Διότι ἀπὸ ἀνατολῶν ἡλίου (ζ) καὶ ἕως δυσμῶν τὸ ὄνομά μου δεδόξασται ἐν τοῖς ἔθνεσι, καὶ ἐν παντὶ τόπῳ θυμίαμα (η) προσάγεται τῷ ὀνόματί μου, καὶ θυσία καθαρά· διότι μέγα τὸ ὄνομά μου ἐν 12 τοῖς ἔθνεσι, λέγει κύριος παντοκράτωρ. Ὑμεῖς δὲ βεβηλοῦτε αὐτὸ ἐν τῷ λέγειν ὑμᾶς, Τράπεζα κυρίου ἠλισγημένη ἐστὶ, καὶ τὰ ἐπιτιθέμενα (θ) ἐξουδένωται βρώματα αὐτοῦ· 13 Καὶ εἴπατε, Ταῦτα ἐκ κακοπαθείας ἐστὶ· καὶ ἐξεφύσησα αὐτὰ, λέγει κύριος παντοκράτωρ. καὶ εἰσεφέρετε (ι) ἁρπάγματα, καὶ τὰ χωλὰ, καὶ τὰ ἐνοχλούμενα· καὶ ἐὰν φέρητε (κ) τὴν θυσίαν, εἰ προσδέξομαι αὐτὰ ἐκ τῶν χειρῶν ὑμῶν; λέγει κύριος 14 παντοκράτωρ. Καὶ ἐπικατάρατος, ὃς ἦν δυνατὸς, καὶ ὑπῆρχεν (λ) ἐν τῷ ποιμνίῳ αὐτοῦ ἄρσεν, καὶ εὐχὴ αὐτοῦ ἐπ᾽ αὐτῷ, καὶ θύει διεφθαρμένον τῷ κυρίῳ· διότι (μ) βασιλεὺς μέγας ἐγώ εἰμι, λέγει κύριος παντοκράτωρ, καὶ τὸ ὄνομά μου ἐπιφανὲς ἐν τοῖς ἔθνεσι.

MS.A. (β) αὐτοῦ. (γ) βρώματα ἐξουδενώμενα. (δ) θυσίαν, (ε) προσδέξεται αὐτὸ, (ζ) ἕως (η) προσάγεται ἐπὶ τῷ (θ) ἐξουδένωνται (ι) τὰ ἁρπάγματα (κ) θυσίαν, (λ) αὐτῷ ἐν τῷ ποιμνίῳ ἄρσεν, (μ) μέγας βασιλεὺς

ΚΕΦ. β'.

1 Καὶ νῦν ἡ ἐντολὴ αὕτη πρὸς ὑμᾶς οἱ 2 ἱερεῖς· Ἐὰν μὴ (α) ἀκούσητε, καὶ ἐὰν μὴ θῆσθε εἰς τὴν καρδίαν ὑμῶν, τοῦ δοῦναι δόξαν τῷ ὀνόματί μου, λέγει κύριος παντοκράτωρ· καὶ ἐξαποστελῶ ἐφ᾽ ὑμᾶς τὴν κατάραν, καὶ ἐπικαταράσομαι τὴν εὐλογίαν ὑμῶν, καὶ καταράσομαι αὐτήν· καὶ διασκεδάσω τὴν εὐλογίαν ὑμῶν, καὶ οὐκ ἔσται ἐν ὑμῖν, ὅτι ὑμεῖς οὐ τίθεσθε εἰς τὴν καρδίαν ὑμῶν·

MS. A. (α) εἰσακούσητε,

Filius glorificat patrem, & servus dominum (d) suum. Et, si pater ego sum; ubi est gloria mea? Et, si Dominus sum ego; ubi est timor meus? dicit Dominus omnipotens. Vos sacerdotes, qui despicitis nomen meum: & dixistis; In quo despeximus nomen tuum? 6 *Offerentes ad altare meum panes (e) pollutos: & dixistis; In quo polluimus ipsos? In eo, quòd dicitis; Mensa Domini (f) polluta est: & (g) quæ superposita sunt, despexistis.* 7 *Quia, si offeratis cæcum in sacrificia; nonne malum est? Et, si offeratis claudum, aut languidum; nonne malum est? Offer nunc * illud duci tuo; si suscipiet te, si accipiet faciem tuam, dicit Dominus omnipotens.* 8 *Et nunc deprecamini faciem Dei vestri, & rogate eum. In manibus vestris facta sunt hæc: si accipiam ex vobis facies vestras, dicit Dominus omnipotens?* 9 *Quia & in vobis claudentur ostia: & non succendetur altare meum gratis. Non est voluntas mea in vobis, dicit Dominus omnipotens: & sacrificium (h) non suscipiam de manibus vestris:* 10 *Quia ab ortu Solis, et usque ad occasum clarificatum est nomen meum in gentibus: & in omni loco (i) incensum offertur nomini meo, & sacrificium mundum: quia (k) magnum est nomen meum in gentibus, dicit Dominus omnipotens.* 11 *Vos autem contaminatis illud in eo quòd dicitis; Mensa Domini polluta est: & qui superponuntur, despecti sunt cibi ejus:* 12 *Et dixistis: Hæc de afflictione sunt. Et (l) exufflavi ea, dicit Dominus omnipotens. Et inferebatis rapinas, & clauda, & debilia: &, (m) si afferatis sacrificium: si suscipiam ea de manibus vestris, dicit Dominus omnipotens?* 13 *Et maledictus, qui erat potens, & habebat in grege suo masculum, & votum ejus super eo: & immolat corruptum Domino. Quia rex magnus ego sum, dicit Dominus omnipotens: et nomen meum illustre in gentibus.* 14

CAP. II.

ET nunc mandatum hoc ad vos, ô sacerdotes. Si non audieritis, & si non posueritis in cor vestrum, ut detis gloriam nomini meo, dicit Dominus omnipotens; & mittam super vos maledictionem, & maledicam benedictioni vestræ, & maledicam ei: & dissipabo benedictionem vestram: & non erit in vobis: quia vos non ponitis in cor vestrum. 1 2

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

6 הָא עַל בְּרָא אֲמִיר לְיַקָּרָא יַת אַבָּא וְעַבְדָּא לְמִדְחַל מִן קֳדָם רִבּוֹנֵיהּ אִם כְּאַב אֲנָא אָן
דְּאַתּוּן מְיַקְּרִין קֳדָמַי וְאִם כְּרִבּוֹן אֲנָא אָן דְּאַתּוּן דָּחֲלִין מִן קֳדָמַי אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת לְכוֹן
7 כָּהֲנַיָּא דִּמְבַסְּרִין עַל שְׁמִי וְאִם תֵּימְרוּן בְּמָה בַּסַּרְנָא עַל שְׁמָךְ׃ מְקָרְבִין אַתּוּן עַל מַדְבְּחִי
קֻרְבַּן מְרַחַק וְאִם תֵּימְרוּן בְּמָה מְרַחַק כַּד אַתּוּן אָמְרִין פָּתוֹרָא דַּיְיָ בְּסִיר הוּא׃
8 וְדִי אַתּוּן מְקָרְבִין דְּעַוִּיר לְדַבָּחָא הֲלָא בִישׁ וְדִי אַתּוּן מְקָרְבִין דַּחֲגִיר וְדִמְרִיעַ הֲלָא בִישׁ
9 קָרִיבוֹהִי כְעַן לְשִׁלְטוֹנָךְ דַּעֲלָךְ הֲיִתְרְעֵי בָךְ אוֹ הֲיִסַּב אַפָּךְ אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת׃ וּכְעַן צַלּוֹ
כְעַן קֳדָם אֱלָהָא וִיקַבֵּל צְלוֹתְנָא מִיֶּדְכוֹן הֲוָת דָּא הֲיִתְנַסְּבוּן לְכוֹן אַפִּין אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת׃
10 מַן אַף הָכָא בְּכוֹן וִיגוּף דָּשֵׁי בֵית מַקְדְּשִׁי וְלָא תְקָרְבוּ עַל מַדְבְּחִי קֻרְבַּן מְרַחַק לָא
11 רַעֲוָא קֳדָמַי בְּכוֹן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת וְקוּרְבַּן לְרַעֲוָא לָא אֲקַבֵּל מִיֶּדְכוֹן׃ אֲרֵי מִמַּדְנַח שִׁמְשָׁא
וְעַד מֶעֱלֵיהּ רַב שְׁמִי בֵּינֵי עַמְמַיָּא וּבְכָל עִדָּן דְּאַתּוּן עָבְדִין רְעוּתִי אֲנָא אֲקַבֵּל צְלוֹתְכוֹן
וּשְׁמִי רַבָּא מִתְקַדַּשׁ עַל יְדֵיכוֹן וּצְלוֹתְכוֹן כְּקוּרְבַּן דְּכֵי קֳדָמַי אֲרֵי רַב שְׁמִי בֵּינֵי עַמְמַיָּא
12 אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת׃ וְאַתּוּן מְחַלְּלִין יָתֵיהּ בְּדְאַתּוּן אָמְרִין פָּתוֹרָא דַּיְיָ בְּסִיר הוּא וּבְסִירָן
13 מַתְּנָתָא מִנֵּיהּ׃ וְאִם תֵּימְרוּן הָא דְאַיְתֵינָא מִלֵּאוּתָנָא וְשַׁנִּיקְתּוּן יָתֵיהּ אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת
וּמַיְתָן אַתּוּן דַּאֲנִיס וְדַחֲגִיר וְדִמְרִיעַ וּמַיְתָן אַתּוּן לֵיהּ בְּקוּרְבְּנָא הַאֲקַבֵּל יָתֵיהּ בְּרַעֲוָא
14 מִיֶּדְכוֹן אֲמַר יְיָ׃ וְלֵיט דְּיַעֲבֵיד בִּנְכִיל וְאִית בְּעֶדְרֵיהּ דְּכַר וְהוּא חַיָּב לְנִדַּר וְדָבַח דִּמְחַבַּל
קֳדָם יְיָ אֲרֵי מֶלֶךְ רַב אֲנָא אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת וּשְׁמִי חֲסִין בְּעַמְמַיָּא׃

ב

1 וּכְעַן לְכוֹן תַּפְקֵדְתָּא הָדָא כָּהֲנַיָּא׃ אִם לָא תְקַבְּלוּן וְאִם לָא תְשַׁוּוּן דַּחַלְתִּי עַל לִבָּא 2
לְמִתַּן יְקָרָא לִשְׁמִי אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת וַאֲשַׁלַּח בְּכוֹן יַת מְאֵרְתָא וַאֲלוּט יַת בִּרְכָתְכוֹן
וְאַף אֲלוּטְנַּיהּ אֲרֵי לֵיתְכוֹן מְשַׁוִּין דַּחַלְתִּי עַל לִבָּא׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

6 Ecce de filio edictum est ut honoret patrem, & de servo ut revereatur conspectum heri sui: si tanquam pater ego sum, ubinam *vos honorem præstatis mibi*? & si tanquam Dn̄s ego sum, ubinam vos reveremini præsentiam meam, dixit Dn̄s exercituum? vobis sacerdotes qui contemnitis nomen meum: quòd si dixeritis, In quo contemnimus nomen tuum? 7 Vos offertis super altare meum oblationem execrandam: quòd si dixeritis, In quo execrandam? quando vos dicitis, Mensa Dn̄i despectui habetur. 8 Et quòd vos offeratis quod cæcum est ad immolandum, nonne malum est? & quod vos offeratis quod claudum est, & quod infirmum, nónne malum est? offerte illud nunc principi tuo qui tibi [*præest*,] num sibi complacebit in te; aut num accipiet faciem tuam, dicit Dn̄s exercituum? 9 Nunc itaq; orate nunc coram Deo, ut recipiat orationem nostram: à manibus vestris hoc factum est: num recipientur vobis facies dicit Dn̄s exercituum? 10 Quis est etiam hic inter vos qui claudat ostium ædis sanctuarii mei, & non offeratis super altare meum oblationem execrandam: non est voluntas coram me in vobis, ait Dn̄s exercituum; & oblationem gratam non accipiam à manibus vestris. 11 Quoniam ab ortu Solis & usq; ad occasum ejus magnum est nomen meum inter gentes: sed quocunq; tempore vos executuri estis voluntatem meam; ego recipiam preces vestras, & nomen meum magnum sanctificabitur per manus vestras, & oratio vestra [*erit*] sicut oblatio munda coram me, quoniam magnum est nomen meum inter gentes, dicit Dominus exercituum. 12 Vos autem prophanatis illud, quando vos dicitis, Mensa Dn̄i despicatui habita est, ac despiciuntur dona ex ea. 13 Quòd si dixeritis, Ecce quod attulimus, ex labore nostro [*est*;] & suffocatis illud, ait Dn̄s exercituum: at affertis quod raptum & quod claudum, & quod infirmũ est; & affertis illud in oblationẽ: num illud gratum accipiam de manu vestra, ait Dn̄s? 14 Et maledict⁹ qui agit cum fraude cùm habeat in grege suo masculũ, & abnoxi⁹ sit voto, tamen immolat quod corruptũ est coram Dn̄o. Enimverò rex magn⁹ ego sum, ait Dn̄s exercituũ, & nomen meũ potens est inter gentes.

CAP. II.

1 NUnc autem ad vos præceptum hoc sacerdotes: 2 Nisi recipiatis, & nisi ponatis timorem mei super cor ad dandum gloriam nomini meo, ait Dn̄s exercituum; tunc immittam in vos maledictionem, & maledicam benedictioni vestræ, & etiam execrabor eam, quoniam vos non ponitis timorem mei super cor.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

6 * ܒܪܐ ܡܝܩܪ ܠܐܒܘܗܝ܂ ܘܥܒܕܐ ܠܡܪܗ܂ ܐܢ ܐܒܐ ܐܢܐ܂ ܐܝܟܢܐ ܡܝܩܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܝ܂ ܘܐܢ
ܡܪܐ ܐܢܐ܂ ܐܝܟܢܐ ܕܕܚܠܝܢ ܐܢܬܘܢ ܡܢܝ܀ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ܂ ܠܟܘܢ ܟܗܢܐ܂ ܕܒܐܙܝܢ
7 ܐܢܬܘܢ ܫܡܝ܂ ܘܐܢ ܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ܂ ܒܡܢܐ ܒܙܝܢ ܫܡܟ܀ * ܡܛܠ ܕܡܩܪܒܝܢ ܐܢܬܘܢ ܥܠ
ܡܕܒܚܝ ܠܚܡܐ ܛܢܦܐ܂ ܘܐܢ ܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ܂ ܒܡܢܐ ܛܢܦܢܝܟ܀ ܒܕܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܕܫܝܛܐ ܗܝ
8 ܦܬܘܪܗ ܕܡܪܝܐ܂ * ܘܡܩܪܒܝܢ ܐܢܬܘܢ ܥܘܝܪܐ ܠܡܕܒܚܐ܂ ܕܒܚܐ ܠܐ ܒܝܫ܀ ܘܡܩܪܒܝܢ
ܐܢܬܘܢ ܚܓܝܪܐ ܘܟܪܝܗܐ܂ ܕܒܚܐ ܠܐ ܒܝܫ܂ ܩܪܒܝܗܝ ܠܫܠܝܛܟ܂ ܢܚܕܐ ܐܢܐ ܠܟ܀ ܐܘ
9 ܢܣܒ ܒܐܦܝܟ܂ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ܀ * ܘܗܫܐ ܒܥܘ ܩܕܡ ܡܪܝܐ܂ ܘܢܪܚܡ ܥܠܝܢ܂
10 ܕܡܢ ܐܝܕܝܟܘܢ ܗܘܬ ܗܕܐ܂ ܠܐ ܐܣܒ ܒܐܦܝܟܘܢ܂ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ * ܡܢܘ ܐܦ ܒܟܘܢ܀ ܕܢܐܚܘܕ
ܬܪܥܐ܂ ܠܐ ܬܩܪܒܘܢ ܥܠ ܡܕܒܚܝ ܡܓܢ܂ ܠܐ ܨܒܐ ܐܢܐ ܒܟܘܢ܂ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ܂ ܘܩܘܪܒܢܐ
11 ܠܐ ܐܩܒܠ ܡܢܟܘܢ܂ * ܡܛܠ ܕܡܢ ܡܕܢܚܘܗܝ ܕܫܡܫܐ܀ ܘܥܕܡܐ ܠܡܥܪܒܘܗܝ܂ ܪܒ ܗܘ
ܫܡܝ ܒܥܡܡܐ܂ ܘܒܟܠ ܐܬܪ ܡܣܩܝܢ ܒܣܡܐ܂ ܘܡܩܪܒܝܢ ܠܫܡܝ ܩܘܪܒܢܐ ܕܟܝܐ܂ ܡܛܠ
12 ܕܪܒ ܗܘ ܫܡܝ ܒܥܡܡܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ܂ * ܘܐܢܬܘܢ܀ ܡܛܢܦܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܗ ܟܕ ܐܡܪܝܢ
13 ܐܢܬܘܢ܀ ܕܦܬܘܪܗ ܕܡܪܝܐ܂ ܡܛܢܦܐ ܗܝ܂ ܘܡܐܟܠܗ ܐܝܟ ܡܣܠܝܐ ܗܘ܂ * ܘܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ܀ ܗܢܐ
ܡܢ ܕܥܡܠܢ ܗܘ܂ ܘܢܦܚܬ ܒܗ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ܂ ܕܡܝܬܝܢ ܐܢܬܘܢ ܡܢ ܚܛܘܦܝܐ
ܩܘܪܒܢܐ ܚܓܝܪܐ ܘܟܪܝܗܐ܂ ܠܐ ܡܩܒܠ ܐܢܐ ܠܗܘܢ ܡܢ ܐܝܕܝܟܘܢ܀ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ܂
14 * ܘܠܝܛ ܡܢ ܕܐܝܬ ܠܗ ܒܥܢܗ ܕܟܪܐ܂ ܘܢܕܪ ܘܡܩܪܒ ܕܟܪܝܗ ܠܡܪܝܐ܂ ܡܛܠ ܕܡܠܟܐ
ܐܢܐ ܪܒܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ܂ ܘܫܡܝ ܕܚܝܠ ܒܥܡܡܐ܂ * ܩܦܠܐܘܢ * ܒ *

1 * ܘܗܫܐ ܦܘܩܕܢܐ ܗܢܐ ܠܟܘܢ ܗܘ ܟܗܢܐ܀ * ܐܢ ܠܐ ܬܫܡܥܘܢ܂ ܘܐܢ ܠܐ ܬܣܝܡܘܢ
2 ܒܠܒܟܘܢ܀ ܠܡܬܠ ܐܝܩܪܐ ܠܫܡܝ܂ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ܀ ܐܫܕܪ ܒܟܘܢ ܠܘܛܬܐ܂
ܘܐܠܘܛ ܠܒܘܪܟܬܟܘܢ܂ ܡܛܠ ܕܠܐ ܣܡܬܘܢ ܐܢܬܘܢ ܒܠܒܟܘܢ܂

6 Filius honorat patrem ſuũ, & ſervus dominum ſuum. Si pater ſum, quomodo honoratis me? ſi dñs ſum, quomodo metuitis me, dicit Dñs potentiſſimus? Heus ſacerdotes qui diripitis nomen meum. Quòd ſi dicatis, Quâ in re diripiſivimus nomen tuum? 7 Quia offertis ſuper altare meum panem pollutum. Quòd ſi dicatis, Quâ in re polluimus te? in eo quòd dicitis, Contemptibilis eſt menſa Dñi. 8 Et quandoquidem offertis cæcum ad altare, annon malũ eſt? & cùm offertis claudum & ægrotũ, annon malum eſt? Offer illud quæſo duci tuo, an applauſurus ſit tibi, aut vultũ tuum acceptum habiturus, dicit Dñs potentiſſimus. 9 Jam deprecamini Dñm, ut miſereatur noſtri; quoniam per vos id factum eſt, acceptos non habebo vultus veſtros, ait Dñs potentiſſimus. 10 Quis inter vos eſt qui claudat oſtium meum? Ne offeratis ſuper altare meũ quod eſt gratuitum. (i. *nihilo ſtetit.*) Non delector vobis, ait Dñs potentiſſimus, & oblationem haud accipiam à vobis. 11 Nam ab ortu ſolis uſque ad occaſum ejus magnum erit nomen meum inter gentes, & in omni loco thus adolebunt, & offerent nomini meo oblationes puras: quia magnum erit nomen meum inter gentes, ait Dominus potentiſſimus. 12 Vos autem polluitis illud, quum dicatis menſam Domini eſſe pollutam, ejuſque cibos eſſe contemptibiles. 13 Et dicitis, Hoc ex labore noſtro eſt; at ego inſufflavi in illud, ait Dominus potentiſſimus. Quoniam ex rapina defertis oblationes claudas & ægrotas, non accipiam eas de manibus veſtris, ait Dominus potentiſſimus. 14 Imò maledictus ille qui habet in grege ſuo arietem *ſanum*, tamen vovet & ſacrificat ægrotum Domino; nam rex ſum magnus, ait Dñs potentiſſimus, & nomen meum formidabile eſt inter populos.

CAP. II.

1 Nunc præceptum hoc ad vos ſpectat ſacerdotes. 2 Si non audieritis, ſi non adhibueritis animũ veſtrum ad exhibendũ honorẽ nomini meo, dicit Dñs potentiſſimus; immittam in vos maledictiones, & maledicam benedictionibus veſtris, eò quòd non adhibeatis animum veſtrum.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

6 * الابن يمجد اباه * والعبد سيده * فان كنت انا ابا اين هو مجدي * وان كنت انا سيدا
اين هو خوفي يقول الرب الضابط الكل * وانتم ايها الكهنة الذين يسيون الي اسمي ويقولون
7 عمادا اسينا لاسمك * تقدمون على مذبحي خبزا نجسه * ويقولون عمادا نجسناهم * عند ما تقولون
8 مايدة الرب حقيرة هي * والاطعمة الموضوعة محقورة * من اجل انكم ان قدمتم اعمي
للذبيحة * اليس رديا * وان قدمتم اعرجا او مريضا * اليس رديا ، قدمه لمقدمك ان كان
9 يقبله او ياخذ بوجهك يقول الرب الضابط الكل * والان استغفروا لوجه الاهكم * واطلبوا
10 منه * بايديكم صارت هذه ءاأخذ منكم لوجوهكم يقول الرب الضابط الكل * من اجل
انه بكم تغلق الابواب * ولا تقدموا على مذبحي مجانا ليست هذه ارادتي فيكم يقول الرب
11 الضابط الكل * ولا اقبل ذبيحة من ايديكم * من اجل انه من مشارق الشمس الي المغارب
تمجد اسمي في الامم * وفي كل موضع يقدم بخور لاسمي في الامم يقول الرب الضابط
12 الكل * وانتم تنجسوه عند ما تقولون مايدة الرب نجسة هي وتحقرون اطعمته الموضوعة *
13 * ويقولون هذه من الم رديء * ونفختها يقول الرب الضابط الكل * وتدخلون الاختطاف
والعرج والسقيمين * وان قدمتم ذبيحة لن اقبلها من يديكم يقول الرب الضابط الكل *
14 * وملعون الذي هو قوي * وعنده في القطيع ذكر * وينذر به ويذبح الفاسدات للرب * من
اجل اني ملك عظيم انا انا يقول الرب الضابط الكل * واسمي ظاهر في الامم *

1 * الفصل الثاني * * والان هذه الوصية لكم ايها الكهنة * وان لم تسمعوا وان لم
2 تضعوا في قلوبكم لتعطوا مجدا لاسمي يقول الرب الضابط الكل * فارسل عليكم اللعنة *
والعن بركتكم * وابطل بركتكم * وليست تكون فيكم * لانكم انتم لم تضعوا في قلوبكم *

6 *Filius glorificat patrem ſuum, & ſervus dominum ſuum. Quòd ſi ego pater ſum, ubi eſt gloria mea? quòd ſi dominus ego ſum, ubi eſt reverentia mea, dicit Dominus omnipotens? Jam vos O ſacerdotes, qui injuriam facitis nomini meo, & dicitis; Qua in re injuriam fecimus nomini tuo?* 7 *Offertis ſuper altare meum panes pollutos; & dicitis, Quâ in re polluimus eos? quando dicitis, Menſa Domini contemptibilis eſt, & cibi ſuperpoſiti viles ſunt.* 8 *Nam cùm cæcum offertis in ſacrificium, nonne malum eſt? cùmque claudum aut ægrotum offertis, nonne malum eſt? Offer illud duci tuo, an accipiat illud, an ſuſcipiat vultum tuum, dicit Dominus omnia tenens.* 9 *Itaque veniam petite à Deo veſtro, cùmque deprecamini: Per manum veſtram factum eſt hoc: num accipiam à vobis propter vultus veſtros, dicit Dominus omnia tenens?* 10 *Nam per vos clauduntur portæ: & ne offeratis gratuitum ſuper altare meum. Non eſt hæc voluntas mea in vobis, dicit Dominus omnia tenens: neque ſuſcipiam ſacrificium de manibus veſtris.* 11 *Ab ortu enim ſolis ad occaſum uſque glorificabitur nomen meum inter gentes, & in omni loco offeretur incenſum nomini meo inter gentes dicit Dominus omnia tenens.* 12 *Vos autem profanatis illud, cùm dicitis; Menſa Domini immunda eſt; & contemnitis cibos ſuperpoſitos,* 13 *Ac dicitis, Hæc ſunt ex dolore peſſimo: ideò expui illa, dicit Dominus omnipotens. Et infertis rapinam, & clauda, atque ægrota; ideò licèt offeratis ſacrificium, non accipiam illud è manibus veſtris, ait Dominus omnipotens.* 14 *Verùm maledictus ille qui cùm potens ſit, habeátque in grege maſculum, & de eo ſit votum ipſius; tamen vitioſa Domino ſacrificat. Nam rex maximus ego ſum, ait Dominus omnipotens; & nomen meum illuſtre inter gentes.*

CAP. II.

1 *Hoc igitur mandatum vos ſpectat O ſacerdotes.* 2 *Quòd ſi non audieritis, & niſi ex animo ſtudueritis gloriam dare nomini meo, dicit Dominus omnipotens; mittam ſuper vos maledictionem, & maledicam benedictioni veſtræ, veſtrámque benedictionem abolebo, ut non ſit in vobis: eò quòd non adhibeatis animum veſtrum.*

מלאכי : ב

ſuper ſtercus diſpergam & , ſemen vobis *corrumpens ego* Ecce
הִנְנִי גֹעֵר לָכֶם אֶת־הַזֶּרַע וְזֵרִיתִי פֶרֶשׁ עַל־ 3
.ſe ad vos aſſumet & : veſtrarum ſolennitatum ſtercus, veſtros vult*
פְּנֵיכֶם פֶּרֶשׁ חַגֵּיכֶם וְנָשָׂא אֶתְכֶם אֵלָיו׃
eſſendum ad , hoc mandatum vos ad miſi quòd ſcietis Et
וִידַעְתֶּם כִּי שִׁלַּחְתִּי אֲלֵיכֶם אֵת הַמִּצְוָה הַזֹּאת לִהְיוֹת 4
meum Pactum .exercituum Dominus dixit , Levi cum meum pactum
בְּרִיתִי אֶת־לֵוִי אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת׃ בְּרִיתִי 5
, timorem illi ea dedique , pacis & , *vitarum* eo cum fuit
הָיְתָה אִתּוֹ הַחַיִּים וְהַשָּׁלוֹם וָאֶתְּנֵם־לוֹ מוֹרָא
Lex .*ipſe* eſt contritus mei nominis *faciebus* à &,me timuit &
וַיִּירָאֵנִי וּמִפְּנֵי שְׁמִי נִחַת הוּא׃ תּוֹרַת 6
:ejus labiis in eſt inventa non iniquitas & ,ejus ore in fuit veritatis
אֱמֶת הָיְתָה בְּפִיהוּ וְעַוְלָה לֹא־נִמְצָא בִשְׂפָתָיו
avertit multos & , mecum ambulavit *rectitudine* in & pace in
בְּשָׁלוֹם וּבְמִישׁוֹר הָלַךְ אִתִּי וְרַבִּים הֵשִׁיב
legem & , ſcientiam cuſtodient ſacerdotis labia Nam .iniquitate ab
מֵעָוֺן׃ כִּי־שִׂפְתֵי כֹהֵן יִשְׁמְרוּ־דַעַת וְתוֹרָה 7
vos Et .*ipſe* exercituum Domini angelus quia : ejus ore ex requirent
יְבַקְשׁוּ מִפִּיהוּ כִּי מַלְאַךְ יְהוָה־צְבָאוֹת הוּא׃ וְאַתֶּם 8
pactum corrupiſtis : lege in multis fuiſtis offendiculo ,via de receſſiſtis
סַרְתֶּם מִן־הַדֶּרֶךְ הִכְשַׁלְתֶּם רַבִּים בַּתּוֹרָה שִׁחַתֶּם בְּרִית
vos dedi ego etiam Et .exercituum Dominus dixit , Levi
הַלֵּוִי אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת׃ וְגַם־אֲנִי נָתַתִּי אֶתְכֶם 9
vos non quòd *os* ſecundùm , populo omni humiles & contemptibiles
נִבְזִים וּשְׁפָלִים לְכָל־הָעָם כְּפִי אֲשֶׁר אֵינְכֶם
pater Nónne .lege in *facies aſſumentes* & ,meas vias *ſervantes*
שֹׁמְרִים אֶת־דְּרָכַי וְנֹשְׂאִים פָּנִים בַּתּוֹרָה׃ הֲלוֹא אָב 10
fraudatur Cur ? nos creavit unus Deus nónne ? nobis omnibus unus
אֶחָד לְכֻלָּנוּ הֲלוֹא אֵל אֶחָד בְּרָאָנוּ מַדּוּעַ נִבְגַּד
fecit Fraudem ? noſtrorum patrum pactum violando ,*ſuo fratre in* vir
אִישׁ בְּאָחִיו לְחַלֵּל בְּרִית אֲבֹתֵינוּ׃ בָּגְדָה 11
quia : Jeruſalaim in & , Iſrael in eſt facta abominatio & , Jehudah
יְהוּדָה וְתוֹעֵבָה נֶעֶשְׂתָה בְיִשְׂרָאֵל וּבִירוּשָׁלָםִ כִּי
uxorem duxit & ,dilexit *quam* ,Domini *ſanctitatem* Jehudah contaminavit
חִלֵּל יְהוּדָה קֹדֶשׁ יְהוָה אֲשֶׁר אָהֵב וּבָעַל
vigilantem,hoc fecit qui virum Dominus Succidet .alieni Dei *filiam*
בַּת־אֵל נֵכָר׃ יַכְרֵת יְהוָה לָאִישׁ אֲשֶׁר יַעֲשֶׂנָּה עֵר 12
.exercituum Domino munus offerentem &,Jahacob *tentoriis de reſpondentē &*
וְעֹנֶה מֵאָהֳלֵי יַעֲקֹב וּמַגִּישׁ מִנְחָה לַיהוָה צְבָאוֹת׃
fletu ,Domini altare *lachryma operire* , *facietis* ſecundò hoc Et
וְזֹאת שֵׁנִית תַּעֲשׂוּ כַּסּוֹת דִּמְעָה אֶת־מִזְבַּח יְהוָה בְּכִי 13
capiendum ad & , *munus* ad *reſpiciendo* ultrà non *à* ,clamore &
וַאֲנָקָה מֵאֵין עוֹד פְּנוֹת אֶל־הַמִּנְחָה וְלָקַחַת
quòd Propterea ? quid Propter : dixiſtis Et .veſtra manu de *beneplacitum*
רָצוֹן מִיֶּדְכֶם׃ וַאֲמַרְתֶּם עַל־מָה עַל כִּי־ 14
quam ,*tuarum pueritiarum* uxorem inter & te inter ſit teſtificatus Dominus
יְהוָה הֵעִיד בֵּינְךָ וּבֵין אֵשֶׁת נְעוּרֶיךָ אֲשֶׁר
ne Et .tui fœderis uxor & , tua ſocia *ipſa & ,eam in es prævaricatus* tu
אַתָּה בָּגַדְתָּה בָּהּ וְהִיא חֲבֶרְתְּךָ וְאֵשֶׁת בְּרִיתֶךָ׃ וְלֹא־ 15
ſemen *quærens* ? unus quid & , ei ſpiritus *reſiduum* & , fecit unus
אֶחָד עָשָׂה וּשְׁאָר רוּחַ לוֹ וּמָה הָאֶחָד מְבַקֵּשׁ זֶרַע
ne *tuarum pueritiarum* uxorem in & ,*veſtro ſpiritu in cauti eſtote* Et .Dei
אֱלֹהִים וְנִשְׁמַרְתֶּם בְּרוּחֲכֶם וּבְאֵשֶׁת נְעוּרֶיךָ אַל־
, Iſrael Deus Dominus dixit , dimitte , *oderit Cum* .*prævaricetur*
יִבְגֹּד׃ כִּי־שָׂנֵא שַׁלַּח אָמַר יְהוָה אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל 16
: exercituum Dominus dixit ,ejus veſtimentum *ſuper rapina* operiet &
וְכִסָּה חָמָס עַל־לְבוּשׁוֹ אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת
.fraudetis ne & ,veſtro ſpiritu in vos *cuſtodietis* &
וְנִשְׁמַרְתֶּם בְּרוּחֲכֶם וְלֹא תִבְגֹּדוּ׃

Verſio VULG. LAT.

3 Ecce ego projiciam vobis brachium, & diſpergam ſuper vultũ
veſtrum ſtercus ſolennitatum ve-
4 ſtrarum, & aſſumet vos ſecum. Et
ſcietis quia miſi ad vos mandatũ
iſtud, ut eſſet pactum meum cum
Levi, dicit Dominus exercituum.
5 Pactum meum fuit cum eo vitæ &
pacis : & dedi ei timorem, & timuit me, à facie nominis mei pa-
6 vebat. Lex veritatis fuit in ore
ejus, & iniquitas non eſt inventa
in labiis ejus: in pace & in æquitate ambulavit mecum, & mul-
7 tos avertit ab iniquitate. Labia
enim ſacerdotis cuſtodient ſcientiam, & legem requirent ex ore
ejus : quia Angelus Domini exer-
8 cituum eſt. Vos autem receſſiſtis
de via, & ſcandalizâſtis plurimos
in lege : irritum feciſtis pactum
Levi, dicit Dominus exercituum.
9 Propter quod & ego dedi vos
contemptibiles, & humiles omnibus populis, ſicut non ſervâſtis
vias meas, & accepiſtis faciem in
10 lege. Numquid non pater unus
omnium noſtrûm ? numquid non
Deus unus creavit nos ? quarè
ergò deſpicit unuſquiſque noſtrûm fratrem ſuum, violans pa-
11 ctum patrum noſtrorum? Tranſgreſſus eſt Juda, & abominatio
facta eſt in Iſrael, & in Jeruſalem:
quia contaminavit Judas ſanctificationem Domini, quam dilexit;
12 & habuit filiam dei alieni. Diſperdet Dominus virum qui fecerit hoc, magiſtrum & diſcipulum
de tabernaculis Jacob, & offerentem munus Domino exercituum.
13 Et hoc rurſum feciſtis, operiebatis lachrymis altare Domini, fletu, & mugitu, ita ut non reſpiciam ultrà ad ſacrificium, nec accipiam placabile quid de manu
14 veſtra. Et dixiſtis; Quam ob cauſam ? quia Dominus teſtificatus
eſt inter te, & uxorem pubertatis
tuæ, quam tu deſpexiſti : & hæc
particeps tua, & uxor fœderis
15 tui. Nónne unus fecit ; & reſiduũ ſpiritûs ejus eſt ? Et quid unus quærit, niſi ſemen Dei ? Cuſtodite ergo ſpiritum veſtrum, &
uxorem adoleſcentiæ tuæ noli de-
16 ſpicere. Cùm odio habueris, dimitte, dicit Dominus Deus Iſrael : operiet autem iniquitas veſtimentũ ejus, dicit Dominus exercituum: cuſtodite ſpiritũ veſtrum,
& nolite deſpicere.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

3 Ἰδοὺ ἐγὼ ἀφορίζω ὑμῖν τὸν ὦμον, καὶ σκορπιῶ
ἔνυστρον ἐπὶ τὰ πρόσωπα ὑμῶν, ἔνυστρον (α)
4 ἑορτῶν ὑμῶν, καὶ λήψομαι ὑμᾶς (β) εἰς τὸ αὐτό.
Καὶ ἐπιγνώσεσθε διότι ἐγὼ (γ) ἐξαπέσταλκα
πρὸς ὑμᾶς τὴν ἐντολὴν ταύτην, τοῦ εἶναι τὴν
διαθήκην μου πρὸς τοὺς Λευίτας, λέγει
5 κύριος παντοκράτωρ. Ἡ διαθήκη μου ἦν
μετ᾽ αὐτοῦ τῆς ζωῆς καὶ τῆς εἰρήνης, καὶ ἔδωκα αὐτῷ
ἐν φόβῳ φοβεῖσθαί με, καὶ ἀπὸ προσώπου
6 (δ) ὀνόματός μου στέλλεσθαι αὐτόν. Νόμος ἀληθείας
ἦν ἐν τῷ στόματι αὐτοῦ, καὶ ἀδικία
οὐχ εὑρέθη ἐν χείλεσιν αὐτοῦ· ἐν εἰρήνῃ
κατευθύνων ἐπορεύθη μετ᾽ ἐμοῦ, καὶ πολλοὺς
7 ἐπέστρεψεν ἀπὸ ἀδικίας. Ὅτι χείλη ἱερέως
φυλάξεται γνῶσιν, καὶ νόμον ἐκζητήσουσιν
ἐκ στόματος αὐτοῦ, διότι ἄγγελος
8 κυρίου παντοκράτορός ἐστιν. Ὑμεῖς δὲ ἐξεκλίνατε
ἐκ τῆς ὁδοῦ, καὶ (ε) ἠσθενήσατε πολλοὺς ἐν
νόμῳ, (ʺ) διεφθείρατε τὴν διαθήκην τοῦ Λευί,
9 λέγει κύριος παντοκράτωρ. (ζ) Κἀγὼ δέδωκα
ὑμᾶς ἐξουδενωμένους καὶ ἀπερριμμένους
εἰς πάντα τὰ ἔθνη, ἀνθ᾽ ὧν ὑμεῖς οὐκ ἐφυλάξασθε
τὰς ὁδούς μου, (ʺ) ἀλλὰ ἐλαμβάνετε
10 πρόσωπα ἐν νόμῳ. (η) Οὐχὶ πατὴρ εἷς
πάντων ὑμῶν; οὐχὶ θεὸς εἷς ἔκτισεν ὑμᾶς;
τί ὅτι ἐγκατελίπετε ἕκαστος τὸν ἀδελφὸν
αὐτοῦ, τοῦ βεβηλῶσαι τὴν διαθήκην τῶν πατέρων
11 ὑμῶν; Ἐγκατελείφθη Ἰούδας, καὶ βδέλυγμα
ἐγένετο ἐν τῷ Ἰσραὴλ καὶ ἐν Ἱερουσαλήμ,
διότι ἐβεβήλωσεν Ἰούδας τὰ ἅγια
κυρίου, ἐν οἷς ἠγάπησε, καὶ ἐπετήδευσεν εἰς
12 θεοὺς ἀλλοτρίους. (θ) Ἐξολοθρεύσει κύριος τὸν
ἄνθρωπον τὸν ποιοῦντα ταῦτα, ἕως καὶ ταπεινωθῇ
ἐκ σκηνωμάτων Ἰακώβ, καὶ ἐκ προσαγόντων
θυσίαν (ι) τῷ κυρίῳ παντοκράτορι.
13 Καὶ ταῦτα, ἃ ἐμίσουν, ἐποιεῖτε· ἐκαλύπτετε
δάκρυσι τὸ θυσιαστήριον κυρίου, καὶ κλαυθμῷ
καὶ στεναγμῷ ἐκ κόπων. ἔτι ἄξιον ἐπιβλέψαι
εἰς θυσίαν, ἢ λαβεῖν δεκτὸν ἐκ τῶν χειρῶν
14 ὑμῶν; Καὶ εἴπατε, (κ) Ἕνεκεν τίνος;
ὅτι κύριος διεμαρτύρατο ἀναμέσον σοῦ,
καὶ ἀναμέσον γυναικὸς νεότητός σου, ἣν ἐγκατέλιπες,
καὶ αὕτη κοινωνός σου, καὶ γυνὴ
15 διαθήκης σου. Καὶ οὐ (λ) καλὸν ἐποίησε;
καὶ ὑπόλειμμα πνεύματος αὐτοῦ. καὶ εἴπατε,
Τί ἄλλο ἢ σπέρμα ζητεῖ ὁ θεός; καὶ φυλάξασθε
ἐν τῷ πνεύματι ὑμῶν, καὶ γυναῖκα
16 νεότητός σου μὴ ἐγκαταλίπῃς· (ʺ) Ἀλλὰ ἐὰν
μισήσας ἐξαποστείλῃς, λέγει κύριος ὁ θεὸς
(μ) τοῦ Ἰσραήλ, καὶ καλύψει ἀσέβεια ἐπὶ
τὰ ἐνθυμήματά σου, λέγει κύριος παντοκράτωρ.
καὶ φυλάξασθε ἐν τῷ πνεύματι
ὑμῶν, καὶ οὐ μὴ ἐγκαταλίπητε,

Ecce ego (a) ſeparo vobis humerum, & diſpergam ventricu- 3
lum ſuper facies veſtras, ventriculum ſolennitatum veſtrarum :
& ſuſcipiam vos ſimul. Et cog- 4
noſcetis, quia ego miſi ad vos
mandatum hoc, ut eſſet (b) teſtamentum meum ad Levitas,
dicit Dominus omnipotens. Teſta- 5
mentum meum fuit cum eo vitæ
& pacis: & dedi ei ut in timore timeret me, & à facie nominis
mei formidaret. Lex veritatis 6
fuit in ore ejus : & iniquitas
non eſt inventa in labiis ejus. In
(c) pace dirigens ambulavit mecum: & multos convertit ab ini-
quitate: Quoniam labia ſacerdo- 7
tis cuſtodient ſcientiam : et legem
requirent ex ore ejus : quia angelus Domini omnipotentis eſt.
Vos autem declinâſtis de via, & 8
(d) infirmos feciſtis multos in
lege : corrupiſtis teſtamentum
Levi, dicit Dominus omnipotens.
Et ego dedi vos contemptos, & 9
(e) abjectos in omnes gentes, pro
eo quòd vos non cuſtodiſtis vias
meas, ſed (f) accipiebatis perſonas
in lege. Nonne pater unus omniũ 10
veſtrûm? nónne Deus unus creavit vos? Quarè reliquiſtis u-
nuſquiſque fratrem ſuum: ut
abominabile faceret teſtamentum
patrum veſtrorum? Derelictus 11
eſt Judas: & abominatio facta
eſt in Iſrael, & in Hieruſalem :
quia contaminavit Judas Sancta
Domini, in quibus dilexit, &
adinvenit in diis alienis. Diſ- 12
perdet Dominus hominem, qui
facit hæc ; donec & humilietur
de tabernaculis Jacob, & de his
qui offerunt ſacrificium Domino
omnipotenti. Et hæc, quæ oderam, 13
faciebatis : operiebatis lachrymis
altare Domini, & planctu, &
gemitu de (g) laboribus. Adhuc
dignum reſpicere ſacrificium, aut
ſuſcipere acceptabile de manibus
veſtris? Et dixiſtis ; Propter 14
quid? Quia Dominus teſtificatus eſt inter te & uxorem ado-
leſcentiæ tuæ, quam reliquiſti: &
hæc particeps tua, & uxor teſtamenti tui. Et (h) nónne bonum 15
fecit, et reliquiæ ſpiritûs (i) ejus?
Et dixiſtis ; Quid aliud præter
ſemen quærit Deus? Et cuſtodite
in ſpiritu veſtro: & uxorem ad-
oleſcentiæ tuæ ne derelinquas.
Sed, ſi odio habẽs dimiſeris [eam], 16
dicit Dominus Deus Iſrael ; &
operiet impietas ſuper cogitationes tuas, dicit Dominus omni-
potens. Et cuſtodite in ſpiritu
veſtro, & nolite derelinquere:

MS. A. (α) ἑορτῆς (β) ἐπὶ (γ) κύριος (δ) τοῦ ὀνόματος (ε) πολλοὺς ἠσθενήσατε (ʺ) καὶ* διέφθειρε (ζ) Καὶ ἐγὼ (ʺ) ἀλλ᾽ (η) Οὐχὶ θεὸς εἷς ἔκτισεν ὑμᾶς; οὐχὶ πατὴρ εἷς πάντων ὑμῶν; τί ὅτι (θ) Ἐξολεθρεύσει (ι) κυρίῳ (κ) Ἕνεκα τίνος; ὁ κύριος (λ) κάλλος (ʺ) Ἀλλ᾽ (μ) ὁ παντοκράτωρ θεὸς Ἰσραήλ,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

הָא אֲנָא נָזֵיף לְכוֹן בַּעֲלָלַת בַּר זַרְעָא וַאֲגַלֵּי בַהֲתַת חוֹבֵיכוֹן עַל אַפֵּיכוֹן וַאֲבַטֵּל רְבוּת 3
חַגֵּיכוֹן וְיִתְמְנַע חוּלָקְכוֹן מִנֵּיהּ׃ וְתִדְעוּן אֲרֵי שַׁלְחֵית לְוָתְכוֹן יָת תַּפְקֶדְתָּא הָדָא 4
לְמֶהֱוֵי קְיָמִי דְעִם לֵוִי אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת׃ קְיָמִי הֲוָה עִמֵּיהּ חַיֵּי וּשְׁלָמָא וִיהַבִית לֵיהּ אוּלְפַן 5
אוֹרַיְתִי שְׁלִים וּדְחִיל מִן קֳדָמַי וּמִן קֳדָם שְׁמִי דְחִיל הוּא׃ אוֹרַיְתָא דְקוּשְׁטָא הֲוָת 6
בְּפוּמֵּיהּ וְשִׁקְרָא לָא אִשְׁתְּכַח בְּסִפְוָתֵיהּ בִּשְׁלָמָא וּבִרְעוּתָא הֲלַךְ קֳדָמַי וּסְגִיאִין אֲתֵיב
מֵחוֹבָא׃ אֲרֵי שִׂפְתֵי כָהֵין יִטְּרוּן מַדַּע וְאוֹרָאָה יִבְעוּן מִפּוּמֵּיהּ אֲרֵי מְשַׁמֵּשׁ קֳדָם יְיָ צְבָאוֹת 7
הוּא׃ וְאַתּוּן סְטֵיתוּן מִן אוֹרְחָא אַתְקֵילְתּוּן סַגִּיאִין בְּאוֹרַיְתָא חַבֵּילְתּוּן קְיָמָא דְעִם לֵוִי 8
אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת׃ וְאַף אֲנָא יְהַבִית יַתְכוֹן בְּסִירִין וְחַלָּשִׁין לְכָל עַמָּא כְּמָא דְלֵיתְכוֹן 9
נָטְרִין יָת אוֹרְחָן דְתַקְנָן קֳדָמַי וְנָסְבִין אַפִּין בְּאוֹרַיְתָא׃ הֲלָא אַבָּא חַד לְכֻלָּנָא הֲלָא אֱלָהָא 10
חַד בְּרָא יָתָנָא מָא דֵין נְשַׁקַּר גְּבַר בַּאֲחוּהִי לְאַפָּסָא קְיָמָא דִי עִם אֲבָהָתָנָא׃ שְׁקַרוּ 11
דְבֵית יְהוּדָה וְתוֹעֵבְתָּא אִתְעֲבִידַת בְּיִשְׂרָאֵל וּבִירוּשְׁלֵם אֲרֵי אַפִּיסוּ דְבֵית יְהוּדָה
נַפְשְׁהוֹן דַהֲוָת קַדִּישָׁא קֳדָם יְיָ דִרְחֵם וְאִתְרְעִיאוּ לְמִסַּב לְהוֹן נְשִׁין בְּנַת עַמְמַיָּא׃
יְשֵׁצֵי יְיָ לִגְבַר דְיַעְבְּדִנַּהּ בַּר וּבַר בַּר מִקִּרְוֵי יַעֲקֹב וְאִם כָּהֵין הוּא לָא יְהֵי לֵיהּ מַקְרִיב 12
קוּרְבָּנָא בְּבֵית מַקְדְּשָׁא דַיְיָ צְבָאוֹת׃ וְדָא תִנְיָנוּת דִי אַתּוּן עָבְדִין חָפַת דִמְעֲתָא יָת 13
מַדְבְּחָא דַיְיָ דִי בָכַן וְדִי מִתְאַנְּחִין מִדְּלֵית עוֹד אִתְפְּנָאָה לְקוּרְבָּנָא וּלְקַבָּלָא יָתֵיהּ
בְּרַעֲוָא מִיֶּדְכוֹן׃ וְאִם תֵּימְרוּן עַל מָה עַל דַיְיָ אַסְהִיד בֵּינָךְ וּבֵין אִתַּת יַנְקוּתָךְ דִי אַתְּ שַׁקַּרְתְּ 14
בַּהּ וְהִיא שׁוּתָפוּתָךְ וְאִתַּת קְיָמָךְ׃ הֲלָא חַד הֲוָה אַבְרָהָם יְחִידִי דִי מִנֵּיהּ אִתְבְּרֵי עָלְמָא 15
וּמָה חַד בָּעֵי אֱלָהֵן דִי יִתְקַיֵּם לֵיהּ וְלַד מִן קֳדָם יְיָ וְתִסְתַּמְּרוּן בְּנַפְשָׁתְכוֹן וּבְאִתַּת
יַנְקוּתָךְ לָא תְשַׁקַּר׃ אֲרֵי אִם סְנֵיתָ לַהּ פַּטְרַהּ אֲמַר יְיָ אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל וְלָא תְכַסֵּי חֶטְאָה 16
בִּלְבוּשָׁךְ אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת וְתִסְתַּמְּרוּן בְּנַפְשָׁתְכוֹן וְלָא תְשַׁקְּרוּן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ecce ego increpo vos ob proventum natum è ſemine, & patefaciam confu- 3
ſionem ſcelerum veſtrorum in facies veſtras, & abolebo magnificentiam ſo-
lennitatum veſtrarum; ac prohibebitur pars veſtra ab eo. Et ſcietis quòd ego 4
miſerim ad vos præceptum hoc, ut ſit pactum meum cum Levi, dicit Dñs ex-
ercituum. Pactum meum fuit cum eo vitæ & pacis: & dedi ei doctrinam le- 5
gis perfectam ut timeret à facie mea: & à facie nominis mei timuit ipſe. Lex 6
veritatis fuit in ore ejus, & falſitas non eſt inventa in labiis ejus: in pace & in
æquitate ambulavit coram me, & multos avertit ab iniquitate. Labia enim 7
ſacerdotis cuſtodient ſcientiam, & diſciplinam requirent ab ore ejus; quia
miniſter eſt coram Dño exercituum. Vos autem declinâſtis à via, & ſcanda- 8
lizâſtis plurimos in lege : corrupiſtis pactum quod erat cum Levi, dicit Dñs
exercituum. Ego quoq; dedi vos contemptibiles & infirmos omnibus popu- 9
lis, ſicut vos non ſervâſtis vias quæ rectæ ſunt coram me; & accepiſtis faciem
in lege. Nónne pater unus eſt omnium noſtrûm ? nónne unus Deus creavit 10
nos ? quare igitur iniquè agimus quiſque contra fratrem ſuum, violando
pactum quod eſt cum patribus noſtris ? Iniquè egerunt viri domus Juda, & 11
abominatio facta eſt in Iſrael, & in Jeruſalem ; quia violaverunt viri do-
mus Juda animam ſuam, quæ erat ſanctificata coram Dño, & dilecta : & vo-
luerunt accipere ſibi uxores filias populorum. Diſperdet Dñs viro qui fece- 12
rit hoc, filium & nepotem de urbibus Jacob : & ſi fuerit ſacerdos, *non erit*
ei qui offerat oblationem in domo ſanctuarii Domini exercituum. Et hoc 13
ſecundò facitis : Operitis lachrymis altare Dñi plorantium & gementium,
ita ut ultrà non reſpiciam oblationem nec ſuſcipiam illam cum beneplacito
de manibus veſtris. Et ſi dixeritis, Quamobrem? Eò quòd Dñs teſtificatus eſt 14
inter te & uxoré adoleſcentiæ tuæ, contra quam tu iniquè egiſti, & ipſa eſt
particeps tui, & uxor fœderis tui. Nónne unꝰ fuit Abraham ſolꝰ, ex quo pro- 15
pagatũ eſt ſeculũ? & quid unꝰ quæſivit, niſi ut permaneret ſibi proles in con-
ſpectu Dñi ? Cavete igitur vobiſmetipſis : & contra uxoré adoleſcentiæ tuæ
ne iniquè agas. Quòd ſi oderis eam , dimitte eam ; dicit Dñs exercituum 16
Deus Iſrael , & ne operias peccatum veſtimento tuo , dicit Dominus exer-
cituum. Cavete igitur animabus veſtris, & ne iniquè agatis.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

ܗܐ * ܡܟܐܐ ܐܢܐ ܙܪܥܐ ܕܐܪܥܐ . ܘܐܙܪܐ ܦܪܬܐ ܥܠ ܐܦܝܟܘܢ . ܘܦܪܬܐ ܥܠ ܥܐܕܝܟܘܢ . 3
ܘܐܫܩܘܠܟܘܢ ܠܘܬܗ . * ܘܬܕܥܘܢ ܕܫܕܪܬ ܠܟܘܢ ܦܘܩܕܢܐ ܗܢܐ . ܕܢܗܘܐ ܩܝܡܝ ܥܡ ܠܘܝ 4
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ . * ܩܝܡܝ ܗܘܐ ܥܡܗ . ܚܝܐ ܘܫܝܢܐ ܡܫܠܡܐ . ܝܗܒܬ ܠܗ ܕܢܕܚܠܢܝ 5
ܩܕܡܝ . ܘܡܢ ܩܕܡ ܫܡܝ ܙܐܥ ܗܘܐ . * ܢܡܘܣܐ ܕܩܘܫܬܐ ܗܘܐ ܒܦܘܡܗ . ܘܥܘܠܐ ܠܐ ܐܫܬܟܚ 6
ܒܣܦܘܬܗ . ܒܫܠܡܐ . ܘܒܬܪܝܨܘܬܐ ܗܠܟ ܥܡܝ . ܘܣܓܝܐܐ ܐܗܦܟ ܡܢ ܥܘܠܐ . * ܡܛܠ 7
ܕܣܦܘܬܗ ܕܟܘܡܪܐ ܢܛܪܢ ܝܕܥܬܐ . ܘܢܡܘܣܐ ܢܒܥܘܢ ܡܢ ܦܘܡܗ ܡܛܠ ܕܡܠܐܟܗ ܗܘ
ܕܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ . * ܐܢܬܘܢ ܕܝܢ ܣܛܝܬܘܢ ܡܢ ܐܘܪܚܐ . ܘܐܬܩܠܬܘܢ ܠܣܓܝܐܐ ܡܢ ܢܡܘܣܐ . 8
ܘܚܒܠܬܘܢ ܩܝܡܐ ܕܠܘܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ . * ܐܦ ܐܢܐ ܝܗܒܬܟܘܢ ܫܝܛܝܢ 9
ܘܡܟܝܟܝܢ ܒܟܠܗ ܥܡܡ . ܕܠܐ ܢܛܪܬܘܢ ܐܘܪܚܬܝ . ܘܢܣܒܬܘܢ ܒܐܦܐ ܒܢܡܘܣܐ . * ܕܠܡܐ 10
ܠܐ ܗܘܐ ܚܕ ܐܒܐ ܠܟܠܢ . ܐܘ ܠܐ ܗܘܐ ܚܕ ܐܠܗܐ ܒܪܢ . ܠܡܢܐ ܡܕܓܠܝܢܢ ܚܕ ܒܚܕ .
ܘܡܛܢܦܝܢܢ ܩܝܡܐ ܕܐܒܗܝܢ . * ܕܓܠ ܝܗܘܕܐ . ܘܛܢܦܘܬܐ ܐܬܥܒܕܬ ܒܐܝܣܪܐܝܠ 11
ܘܒܐܘܪܫܠܡ . ܡܛܠ ܕܛܢܦ ܝܗܘܕܐ ܩܘܕܫܗ ܕܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ . ܘܪܚܡ ܘܦܠܚ ܠܐܠܗܐ
ܢܘܟܪܝܐ . * ܢܘܒܕ ܡܪܝܐ ܠܓܒܪܐ ܕܥܒܕ ܗܕܐ . ܘܠܒܪܗ ܘܠܒܪ ܒܪܗ . ܡܢ ܡܫܟܢܗ 12
ܕܝܥܩܘܒ . ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗ ܕܡܩܪܒ ܩܘܪܒܢܐ ܠܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ . * ܘܗܕܐ ܐܚܪܢܐ ܕܥܒܕܬܘܢ . 13
ܟܣܝܐ ܕܡܥܬܐ ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ . ܘܒܟܝܬܐ ܘܬܢܚܬܐ . ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܬܦܢܐ ܠܘܬ ܩܘܪܒܢܝܟܘܢ .
ܘܠܐ ܡܩܒܠ ܠܗ ܒܪܥܝܢܐ ܡܢ ܐܝܕܝܟܘܢ . * ܘܐܢ ܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܥܠ ܡܢܐ . ܥܠ ܕܐܣܗܕ ܡܪܝܐ 14
ܒܝܢܝܟ ܠܒܝܢ ܐܢܬܬ ܛܠܝܘܬܟ . ܕܐܢܬ ܕܓܠܬ ܒܗ . ܘܗܝ ܫܘܬܦܬܟ ܘܐܢܬܬ ܩܝܡܟ . * ܕܠܡܐ ܠܐ 15
ܗܘܐ ܚܕ ܥܒܕ . ܘܫܪܟܐ ܕܪܘܚܐ ܕܝܠܗ ܗܘ . ܚܕ ܒܥܐ ܙܪܥܐ ܡܢ ܐܠܗܐ . ܐܙܕܗܪܘ ܒܪܘܚܟܘܢ . 16
ܘܐܢܫ ܒܐܢܬܬ ܛܠܝܘܬܗ ܠܐ ܢܕܓܘܠ . * ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܐܝܠ . ܘܥܘܠܐ .
ܒܡܪܛܘܛܗ ܠܐ ܢܟܣܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ . ܐܙܕܗܪܘ ܒܪܘܚܟܘܢ . ܘܠܐ ܬܕܓܠܘܢ .

Ecce increpabo ſemen terræ, ſpargamque fimum 3
in facies veſtras, & fimum in ſolennitates
veſtras, eoque tollam vos : Et ſcietis me 4
præceptum iſtud ad vos miſiſſe, ut ſit fœdus
cum Levi, dicit Dominus potentiſſimus. Fœdus 5
meum fuit cum ipſo, vitam & pacem ipſi
dedi, reverentèr coluit me, & nomen meum
extimeſcebat : Lex veritatis erat in ore ipſius, 6
& iniquitas non eſt inventa in labiis ejus, pacificè
& rectè ambulavit mecum, & multos
ab iniquitate retraxit. Nam labia ſacerdotis 7
ſtillant ſcientiam, & legem poſtulant ab
ore ejus, quippe qui ſit angelus Domini potentiſſimi.
At vos aberrâſtis à via, & ſcandalizaviſtis 8
multos *ut recederent* à lege, & corrupiſtis
fœdus Levi, dicit Dominus potentiſſimus.
Ego viciſſim reddam vos contemptibiles 9
& abjectos in omni gente, eò quòd non
obſervaveritis vias meas, & vultuum rationē
habueritis in lege. Annon idem pater eſt nobis 10
omnibus ? annon idem Deus creavit nos ?
quarè perfidi ſumus alter in alterū, & polluimus
fœdus patrum noſtrorum ? Perfidè egit 11
Juda, & abominatio cōmiſſa eſt in Iſraele &
Jeroſolyma : profanavit enim Juda Sanctuarium
Domini potentiſſimi, & dilexit coluitque
deos alienos. Perdat Dominus hominem 12
illum qui hoc fecerit, & filium ac nepotem
ejus, de tabernaculo Jacobi, & non ſit ei
quiſquam offerens oblationem Domino potentiſſimo.
Hoc aliud etiam facitis : operit 13
lachryma domum Domini, & fletus atque
ſuſpiria, adeo ut non reſpiciat ad oblationes
veſtras, neque ſuſcipiat ſpontaneum de manibus
veſtris. Quòd ſi dicatis, Qua de cauſa ? 14
Quia teſtatus eſt Dominus inter te & uxorem
adoleſcentiæ tuæ, in quam tu perfidè agis,
quum ipſa ſit conſors tua & uxor tibi fœderata.
Annon vir unus, cujus ſunt reliqui ſpiritus, 15
unus *inquam* poſtulavit ſemen à Deo ?
Cavete vobis ipſis, & nemo in uxorem adoleſcentiæ
ſuæ perfidè agat, Dicit Dominus 15
potentiſſimus Deus Iſraelis ; & iniquitatem
pallio ſuo ne tegat, dicit Dñs potentiſſimus,
Cavete vobisipſis, & perfidè ne agatis.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* الاصحاح الثاني والثلثون * وهو الثاني من النبوة *

* ها انا افرز لكم اليمين * وافرق رجيعا على وجوهكم * رجيع اعيادكم * واخذكم به * 3
* وتعلمون اني انا ارسلت اليكم هذه الوصية * ليكون عهدي مع اللاويين يقول الرب 4
الضابط الكل * عهدي كان معه للحياة والسلامة * واعطيته خوفا ليخافني وليرتجف من وجه 5
اسمي * ناموس حق كان في فمه * وظلم لم يوجد في شفتيه * بسلامة سار معي مقوما * ورد 6
كثيرين من الظلم * لان شفاه الكاهن تحفظ العلم. ويطلبون الناموس من فمه * من اجل 7
انه ملاك الرب الضابط الكل هو * وانتم حدتم عن الطريق * واسقمتم كثيرين بالناموس * 8
وافسدتم عهدي اللاوي يقول الرب الضابط الكل * وانا دفعتكم محقورين ومطرحين 9
في كل الامم * من اجل انكم انتم لم تحفظوا طرقي * بل اخذتم بالوجوه في الناموس * اليس 10
اله واحد خلقكم * اليس اب واحد لجميعكم لماذا انتم تركتم كل واحد اخاه لينجس عهد
ابائكم * ترك يهودا * والرذله صارت في اسرائيل وفي اورشليم * من اجل ان يهودا نجس اقداس 11
الرب التي بها احب * وعمل للالهة الغرباء * يستاصل الرب الانسان الذي يصنع هذه * 12
حتى يذل من مساكن يعقوب * ومن الذين يقدمون ذبيحة للرب الضابط الكل * فهذه 13
التي ابغضها تصنعون * غطيتم بالدموع مذبح الرب وبالبكاء والتنهد من الاتعاب * ايضا
واجب ان ينظر للذبيحة او ياخذ مقبولا من ايديكم * وتقولون من اجل ماذا * من اجل 14
ان الرب شهد بينك وبين امراة صباك التي تركتها وهي شريكتك وامراة عهدك *
* وليس اخر صنع * وبقية روحه * وتقولون لماذا يطلب الله زرعا اخر لاخرى * فاحتفظوا 15
بروحكم * وامراة شبابك لا تترك * لكن ان ابغضتها سرحها يقول الرب اله اسرائيل * ويغطي 16
النفاق على ثيابك يقول الرب الضابط الكل * واحتفظوا بروحكم * ولا تتركوا *

Textus trigeſimus ſecundus, hujus
autem Prophetiæ ſecundus.

Ecce ego ſeparabo vobis dexteram, & 3
ſpargam ſtercus ſuper facies veſtras,
ſtercus ſolennitatum veſtrarum, eoque
ſuſcipiam vos. Et ſcietis quòd ego miſerim 4
ad vos mandatum iſtud, ut ſit fœdus
meum cum Levitis, ait Dominus omnipotens.
Fœdus meum fuit cum ipſo 5
ad vitam & pacem, & dedi ei timorem,
ut me timeret, & à facie nominis mei
trepidaret. Lex veritatis fuit in ore 6
ipſius, & iniquitas non eſt inventa in labiis
ejus : cum pace ambulavit mecum
rectè : & multos ab iniquitate revocavit.
Nam labia ſacerdotis doctrinam cuſtodiunt, 7
& legem poſtulant ab ore ipſius ;
quoniam ipſe eſt angelus Domini omnipotentis,
Vos autem deflexiſtis à via, 8
& multos per legem reddidiſtis ægrotos,
& violâſtis fœdus meum Leviticum,
dicit Dominus omnipotens. Ideò deſpectos 9
reddam vos & abjectos inter omnes
gentes ; eò quòd vos non ſervaveritis
vias meas, ſed perſonas acceperitis in
lege. Nónne Deus unus creavit vos ? 10
nónne unus eſt omnium veſtrûm pater ?
quarè vos relinquitis unuſquiſque fratrem
ſuum, ut contaminet fœdus patrum
veſtrorum ? Derelictus eſt Juda, & 11
abominatio facta eſt in Iſraele & in Jeruſalem ;
quoniam Juda contaminavit
ſancta Domini, quæ diligebat, & fecit
diis alienis. Evellat Dominus hominem 12
talia facientem, ita ut deponatur de habitaculis
Jacobi, & de iis qui ſacrificium
offerunt Domino omnipotenti. Hæc quæ 13
odi, facitis : altare Domini lachrymis
operitis, & fletu atque ſuſpiriis de laboribus :
& adhuc decens eſſet ut ſacrificium
reſpiceret, aut quicquam gratum acciperet
è manibus veſtris ? Et dicitis, 14
Quam ob cauſam ? Quia Dominus teſtatus
eſt inter te & inter uxorem adoleſcentiæ
tuæ, quam reliquiſti ; quum ipſa ſit
conſors tua & uxor fœderis tui : Nec 15
alius fecerit, & reliquiæ ſpiritûs ejus.
Et dicitis, Cur petit Deus ſemen aliud
alteri fœminæ ? Cavete igitur vobiſipſis,
et uxorem adoleſcentiæ tuæ ne reliqueris.
Sed ſi oderis eam, dimitte illam, dicit Dominus 16
Deus Iſraelis, & operiet impietas
veſtimenta tua, dicit Dominus omnipotens.
Cavete igitur vobiſipſis, & ne relinquatis.

quo In : dixistis & , vestris verbis *in* Dominum fecistis Laborare
17 הוֹגַעְתֶּם יְהוָה בְּדִבְרֵיכֶם וַאֲמַרְתֶּם בַּמָּה
oculis in bonus ,malum *faciens* Omnis *: vos dicendo In* ? fecimus laborare
הוֹגָעְנוּ בֶּאֱמָרְכֶם כָּל־עֹשֵׂה רָע טוֹב ׀ בְּעֵינֵי
? judicii Deus ubi aut ,placuit ipse eis in & , Domini
יְהוָה וּבָהֶם הוּא חָפֵץ אוֹ אַיֵּה אֱלֹהֵי הַמִּשְׁפָּט׃

CAP. III. ג

statim & , *mei ad faciem* viam vertet & , meum angelum *mittens. ego* Ecce
1 הִנְנִי שֹׁלֵחַ מַלְאָכִי וּפִנָּה־דֶרֶךְ לְפָנָי וּפִתְאֹם
angelus & , *quærentes* vos quem ,Dominator suum *palatium* ad veniet
יָבוֹא אֶל־הֵיכָלוֹ הָאָדוֹן ׀ אֲשֶׁר־אַתֶּם מְבַקְשִׁים וּמַלְאַךְ
.exercituum Dominus dixit ,venit ecce *: volentes* vos quem ,fœderis
הַבְּרִית אֲשֶׁר־אַתֶּם חֲפֵצִים הִנֵּה־בָא אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת׃
? eum conspici in *statu* quis & *? eum veniendi* diem *sustinens* quis Et
2 וּמִי מְכַלְכֵּל אֶת־יוֹם בּוֹאוֹ וּמִי הָעֹמֵד בְּהֵרָאוֹתוֹ
.fullonum borith tanquam & , conflans ignis tanquam ipse nam
כִּי־הוּא כְּאֵשׁ מְצָרֵף וּכְבֹרִית מְכַבְּסִים׃
,Levi filios purgabit & , argentum emundans & , conflans sedebit Et
3 וְיָשַׁב מְצָרֵף וּמְטַהֵר כֶּסֶף וְטִהַר אֶת־בְּנֵי־לֵוִי
offerentes Domino *erunt* & : argentum sicut & aurum sicut eos *excoquet* &
וְזִקַּק אֹתָם כַּזָּהָב וְכַכָּסֶף וְהָיוּ לַיהוָה מַגִּישֵׁי
, Jehudah *munus* Domino dulcescet Et .justitia in munus
מִנְחָה בִּצְדָקָה׃ 4 וְעָרְבָה לַיהוָה מִנְחַת יְהוּדָה
.antiquos annos secundùm & , seculi dies secundùm , Jerusalaim &
וִירוּשָׁלִָם כִּימֵי עוֹלָם וּכְשָׁנִים קַדְמֹנִיּוֹת׃
, maleficos in velox testis ero & , judicium ad vos ad accedam Et
5 וְקָרַבְתִּי אֲלֵיכֶם לַמִּשְׁפָּט וְהָיִיתִי ׀ עֵד מְמַהֵר בַּמְכַשְּׁפִים
mercedem *subtrahentes in &* ; *falsitate in* jurantes in & , adulteros in &
וּבַמְנָאֲפִים וּבַנִּשְׁבָּעִים לַשָּׁקֶר וּבְעֹשְׁקֵי שְׂכַר־
nec ,peregrinum pervertentes & ,pupillum & , viduam , mercenarii
שָׂכִיר אַלְמָנָה וְיָתוֹם וּמַטֵּי־גֵר וְלֹא
non Dominus ego Nam .exercituum Dominus dixit , me timuerunt
יְרֵאוּנִי אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת׃ 6 כִּי אֲנִי יְהוָה לֹא
diebus A .estis consumpti non Jahacob filii vos & : sum mutatus
שָׁנִיתִי וְאַתֶּם בְּנֵי־יַעֲקֹב לֹא כְלִיתֶם׃ 7 לְמִימֵי
.custodistis non & , meis institutis ab recessistis vestrorum patrum
אֲבֹתֵיכֶם סַרְתֶּם מֵחֻקַּי וְלֹא שְׁמַרְתֶּם
.exercituum Dominus dixit , vos ad revertar & , me ad Revertimini
שׁוּבוּ אֵלַי וְאָשׁוּבָה אֲלֵיכֶם אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת
quia *: Deum* homo *vi auferet* Nunquid ? revertemur quo In : dixistis Et
וַאֲמַרְתֶּם בַּמֶּה נָשׁוּב׃ 8 הֲיִקְבַּע אָדָם אֱלֹהִים כִּי
decima *? te vi abstulimus* quo In : dixistis Et *? me vi auferentes* vos
אַתֶּם קֹבְעִים אֹתִי וַאֲמַרְתֶּם בַּמֶּה קְבַעֲנוּךָ הַמַּעֲשֵׂר
vos me & , maledicti *vos* maledictione *In* .oblatione &
וְהַתְּרוּמָה׃ 9 בַּמְּאֵרָה אַתֶּם נֵאָרִים וְאֹתִי אַתֶּם
domum *ad* decimam omnem Auferte *.ipsa* omnis gens ,*vi rapientes*
קֹבְעִים הַגּוֹי כֻּלּוֹ׃ 10 הָבִיאוּ אֶת־כָּל־הַמַּעֲשֵׂר אֶל־בֵּית
dixit , hoc in *nunc* me probent & , mea domo in *præda* sit & , thesauri
הָאוֹצָר וִיהִי טֶרֶף בְּבֵיתִי וּבְחָנוּנִי נָא בָּזֹאת אָמַר
cataractas vobis aperuero non si : exercituum Dominus
יְהוָה צְבָאוֹת אִם־לֹא אֶפְתַּח לָכֶם אֵת אֲרֻבּוֹת
.*sufficiens non ad usque* , benedictionem vobis evacuavero & , cœlorum
הַשָּׁמַיִם וַהֲרִיקֹתִי לָכֶם בְּרָכָה עַד־בְּלִי־דָי׃
vobis corrumpet non & , devorantem *in* vobis increpabo Et
11 וְגָעַרְתִּי לָכֶם בָּאֹכֵל וְלֹא־יַשְׁחִת לָכֶם אֶת־
dixit , agro in vitis vobis orbabit nec , *humi* fructum
פְּרִי הָאֲדָמָה וְלֹא־תְשַׁכֵּל לָכֶם הַגֶּפֶן בַּשָּׂדֶה אָמַר
.exercituum Dominus
יְהוָה צְבָאוֹת׃

Versio VULG. LAT.

17 Laborare fecistis Dominum in sermonibus vestris, & dixistis; In quo eum fecimus laborare? In eo quòd dicitis; Omnis qui facit malum, bonus est in conspectu Domini, & tales ei placent: aut certè ubi est Deus judicii?

CAP. III.

1 Ecce ego mitto angelũ meum, & præparabit viam ante faciem meam. Et statim veniet ad templum suum Dominator, quem vos quæritis; & angelus testamenti, quem vos vultis. Ecce venit, di- 2 cit Dominus exercituum: Et quis poterit cogitare diem adventûs ejus, & quis stabit ad videndum eum? Ipse enim quasi ignis conflans, & quasi herba fullonum: 3 Et sedebit conflans, & emundans argentum, & purgabit filios Levi, & colabit eos quasi aurum, & quasi argentum, & erunt Domino offerentes sacrificia in justitia. 4 Et placebit Domino sacrificium Juda & Jerusalem, sicut dies se- 5 culi, & sicut anni antiqui. Et accedam ad vos in judicio, & ero testis velox maleficis, & adulteris, & perjuris, & qui calumniantur mercedem mercenarii, viduas, & pupillos: & opprimunt peregrinum, nec timuerunt me, 6 dicit Dominus exercituum. Ego enim Dominus, & non mutor: & vos filii Jacob non estis consum- 7 pti. A diebus enim patrum vestrorũ recessistis à legitimis meis, & non custodîstis. Revertimini ad me, & revertar ad vos, dicit Dominus exercituum. Et dixistis; 8 In quo revertemur? Si affiget homo Deum, quia vos configitis me? Et dixistis; In quo configimus te? In decimis, & in primitiis. 9 Et in penuria vos maledicti estis, & me vos configitis gens tota. 10 Inferte omnem decimam in horreum, & sit cibus in domo mea, & probate me super hoc, dicit Dominus: si non aperuero vobis cataractas cœli, & effudero vobis benedictionem usque ad ab- 11 undantiam, Et increpabo pro vobis devorantem, & non corrumpet fructum terræ vestræ; nec erit sterilis vinea in agro, dicit Dominus exercituum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

17 Οἱ (ν) παροξύναντες τὸν Θεὸν ἐν τοῖς λόγοις ὑμῶν· καὶ εἴπατε, Ἐν τίνι (ξ) παρωξύναμεν αὐτόν; ἐν τῷ λέγειν ὑμᾶς, Πᾶς ποιῶν πονηρόν, καλὸν ἐνώπιον κυρίου, καὶ ἐν αὐτοῖς αὐτὸς εὐδόκησε, καὶ, Ποῦ ἐστιν ὁ Θεὸς τῆς δικαιοσύνης; MS. A. (ν) παροξύνοντες (ξ) παρωξύναμεν; ἐν τῷ

ΚΕΦ. γʹ.

1 Ἰδοὺ (α) ἐξαποστέλλω τὸν ἄγγελόν μου, καὶ ἐπιβλέψεται ὁδὸν πρὸ προσώπου μου, καὶ ἐξαίφνης ἥξει εἰς τὸν ναὸν (β) ἑαυτοῦ κύριος, ὃν ὑμεῖς ζητεῖτε, καὶ ὁ ἄγγελος τῆς διαθήκης, ὃν ὑμεῖς θέλετε· ἰδοὺ ἔρχεται, 2 λέγει κύριος παντοκράτωρ. Καὶ τίς ὑπομενεῖ ἡμέραν εἰσόδου αὐτοῦ; (γ) ἢ τίς ὑποστήσεται ἐν τῇ ὀπτασίᾳ αὐτοῦ; διότι αὐτὸς εἰσπορεύεται ὡς πῦρ χωνευτηρίου, 3 καὶ ὡς ποία πλυνόντων. (δ) Καθιεῖται χωνεύων καὶ καθαρίζων ὡς τὸ ἀργύριον, καὶ ὡς τὸ χρυσίον, καὶ καθαριεῖ τοὺς υἱοὺς Λευί, καὶ (ε) χεεῖ αὐτοὺς ὥσπερ τὸ χρυσίον καὶ τὸ ἀργύριον· καὶ ἔσονται τῷ κυρίῳ προσάγοντες 4 θυσίαν ἐν δικαιοσύνῃ. Καὶ ἀρέσει τῷ κυρίῳ θυσία Ἰούδα καὶ Ἱερουσαλήμ, καθὼς αἱ ἡμέραι τοῦ αἰῶνος, καὶ καθὼς τὰ ἔτη τὰ 5 ἔμπροσθεν. Καὶ προσάξω (ζ) πρὸς ὑμᾶς ἐν κρίσει, καὶ ἔσομαι μάρτυς ταχὺς ἐπὶ * τὰς φαρμακοὺς, καὶ ἐπὶ τὰς μοιχαλίδας, καὶ ἐπὶ τοὺς ὀμνύοντας τῷ ὀνόματί μου ἐπὶ ψεύδει, καὶ ἐπὶ τοὺς ἀποστεροῦντας μισθὸν μισθωτοῦ, καὶ τοὺς καταδυναστεύοντας χήραν, καὶ τοὺς κονδυλίζοντας ὀρφανοὺς, καὶ τοὺς ἐκκλίνοντας κρίσιν προσηλύτου, καὶ τοὺς μὴ φοβουμένους με, λέγει κύριος παντοκρά- 6 τωρ. Διότι ἐγὼ κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν (η), καὶ οὐκ ἠλλοίωμαι. καὶ ὑμεῖς (θ) οἱ υἱοὶ Ἰακὼβ οὐκ (ι) ἀπέχεσθε ἀπὸ τῶν ἀδικιῶν 7 Τῶν πατέρων ὑμῶν, ἐξεκλίνατε νόμιμά μου, καὶ οὐκ ἐφυλάξασθε. (κ) Ἐπιστρέψατε πρός με, καὶ ἐπιστραφήσομαι πρὸς ὑμᾶς, λέγει κύριος παντοκράτωρ. καὶ εἴπατε, Ἐν 8 τίνι (λ) ἐπιστρέψομεν; Μήτι πτερνιεῖ ἄνθρωπος Θεόν; διότι ὑμεῖς πτερνίζετέ με· καὶ (μ) ἐρεῖτε, Ἐν τίνι (ʹ) ἐπτερνίσαμέν σε; ὅτι τὰ ἐπιδέκατα, καὶ αἱ ἀπαρχαὶ 9 μεθ' ὑμῶν εἰσιν. Καὶ ἀποβλέποντες ὑμεῖς 10 ἀποβλέπετε, καὶ ἐμὲ ὑμεῖς πτερνίζετε. Τὸ ἔτος συνετελέσθη, καὶ εἰσηνέγκατε πάντα τὰ ἐκφόρια εἰς τοὺς θησαυρούς, (ν) καὶ ἔσται ἡ διαρπαγὴ αὐτοῦ ἐν τῷ οἴκῳ αὐτοῦ. ἐπιστρέψατε δὴ ἐν τούτῳ, λέγει κύριος παντοκράτωρ· ἐὰν μὴ ἀνοίξω ὑμῖν τοὺς (ʺ) καταρράκτας τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἐκχεῶ (ξ) τὴν εὐλογίαν μου ὑμῖν, ἕως τοῦ ἱκανωθῆναι. 11 Καὶ διαστελῶ ὑμῖν (ο) εἰς βρῶσιν, καὶ οὐ μὴ (ʺ) διαφθείρω ὑμῶν τὸν καρπὸν τῆς γῆς, καὶ οὐ μὴ (π) ἀσθενήσῃ ὑμῶν ἡ ἄμπελος ἡ ἐν τῷ ἀγρῷ, λέγει κύριος παντοκράτωρ.

MS.A. (α) ἐγὼ ἐξαποστέλλω (β) αὐτοῦ (γ) καὶ τίς (δ) Καὶ καθιεῖται (ε) χεεῖ αὐτοὺς ὡς τὸ ἀργύριον καὶ ὥσπερ τὸ χρυσίον· (ζ) ὑμᾶς (η) οὐκ ἠλλοίωμαι. (θ) υἱοὶ (ι) ἀπέχεσθε (κ) Ἐπιστράφητε (λ) ἐπιστρέψωμεν; Εἰ (μ) εἴπατε, (ʹ) ἐπτερνίκαμέν (ν) καὶ ἐν τῷ οἴκῳ αὐτοῦ ἔσται ἡ διαρπαγὴ αὐτοῦ. (ʺ) καταρράκτας, (ξ) ὑμῖν τὴν εὐλογίαν μου, (ο) τὴν βρῶσιν, (ʺ) διαφθερῶ (π) ἀσθενήσει ἡ ἄμπελος ὑμῶν ἡ ἐν ἀγρῷ,

17 *Qui provocâstis Deum in sermonibus vestris, & dixistis; In quo provocavimus eum? In eo quòd dicitis; Omnis qui facit malum, (k) bonum est in conspectu Domini: & in his sibi complacuit: &, Ubi est Deus justitiæ?*

CAP. III.

1 *Ecce (a) mitto angelum meum, & (b) respiciet viam ante faciem meam: & subitò veniet ad templum suum Dominus, quem vos quæritis, & angelus testamenti, quem vos vultis. Ecce venit, dicit Dominus omnipotens:* 2 *Et quis sustinebit diem introitûs ejus? aut quis ferre poterit, ut aspiciat eum? Quia ipse ingreditur, quasi ignis conflatorii, & quasi (c) herba lavantium.* 3 *Sedebit conflans, & emundans sicut argentum, & sicut aurum: & emundabit filios Levi, & fundet eos, sicut aurum, & argentum. Et erunt Domino offerentes (d) hostiam in justitia.* 4 *Et placebit Domino sacrificium Juda, & Hierusalem, sicut dies seculi, & sicut anni pristini.* 5 *Et accedam ad vos in judicio: & ero testis velox super maleficos, & super (e) adulteras, & super eos qui jurãt nomine meo in mẽdacio & super eos qui fraudãt mercedẽ mercenarii, & qui opprimunt per potentiam viduam, & percutiunt pupillos, & pervertunt judicium advenæ, et qui non timent me, dicit Dominus omnipotens.* 6 *Quoniam ego Dominus Deus vester, et non mutor. Et vos filii Jacob non recessistis ab (f) injustitiis Patrum* 7 *vestrorum, declinâstis legitima mea, et non custodîstis. Revertimini ad me: et revertar ad vos, dicit Dominus omnipotens. Et dixistis; In quo revertemur?* 8 *(g) Nunquid supplantabit homo Deum; quia vos supplantatis me? Et (h) dicetis; In quo supplantavimus te? Quia decimæ, et primitiæ vobiscum sunt:* 9 *Et vos respicientes respicitis: et me vos supplantatis.* 10 *Annus impletus est: et intulistis omnes fructus in thesauros: et erit rapina (i) ejus in domo ejus. (k) Revertimini ergò in hoc, dicit Dominus omnipotens; nisi aperuero vobis cataractas cœli, et effudero benedictionem meam vobis, usque dum sufficiat:* 11 *Et dividam vobis in (l) cibum: et non disperdam fructum terræ vestræ: et non infirmabitur vinea vestra in agro, dicit Dominus omnipotens.*

תַּרְגּוּם יוֹנָתָן Targum JONATHAN.

17 אַלְהֵיתוּן קֳדָם יְיָ בְּפִתְגָמֵיכוֹן וְאִם תֵּימְרוּן בְּמָה אַלְהֵינָא קֳדָמוֹהִי כַּד אַתּוּן אָמְרִין
כָּל דְעָבֵיד בִּישׁ תָּקִין קֳדָם יְיָ וּבְהוֹן רַעֲוָא קֳדָמוֹהִי אוֹ אֵכָא אֱלָהָא דְעָבֵיד דִּינָא׃

ג

1 הָא אֲנָא שָׁלַח מַלְאֲכָא וִיפַנֵּי אוֹרְחָא קֳדָמַי וּבִתְכֵּיף יֵעוֹל לְהֵיכְלֵיהּ רִבּוֹנָא דִּי אַתּוּן בָּעַן
בֵּיהּ וּמַלְאַךְ קְיָמָא דִּי אַתּוּן צָבַן בֵּיהּ הָא אָתֵי אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת׃ 2 וּמַן מְסוֹבַר יַת יוֹם
מֵיתוֹהִי וּמַן יְקוּם בְּאִתְגְּלִיוּתֵיהּ אֲרֵי רוּגְזֵיהּ כְּאֶשָּׁתָא מַמְסֵי וּכְבוֹרִיתָא דִּמְחַוְּרִין בַּהּ׃
3 וְיִתְגְּלֵי לְצָרְפָא וּלְדַכָּאָה כִּגְבַר דִּי מְצָרֵף וּמְדַכֵּי כַסְפָּא וִידַכֵּי יַת בְּנֵי לֵוִי וִיזַקֵּיק יַתְהוֹן
כְּדַהֲבָא וּכְכַסְפָּא וִיהוֹן קֳדָם יְיָ מְקָרְבִין קוּרְבַּן בִּזְכוּ׃ 4 וְיִתְגְּלֵי קֳדָם יְיָ קוּרְבַּן אֱנָשׁ
יְהוּדָה וְיָתְבֵי יְרוּשְׁלֵם כְּיוֹמֵי עָלְמָא וּכְשְׁנִין דְּמִלְקַדְמִין׃ 5 וְאִתְגְּלֵי עֲלֵיכוֹן לְמֶעְבַּד דִּינָא
וִיהֵי מֵימְרִי בְּכוֹן לְסָהִיד מוֹחֵי בַּחֲרָשַׁיָּא וּבְנָיְפַיָּא וּבִדְמִשְׁתַּבְעִין לְשִׁקְרָא וּבְאָנְסֵי אַגְרָא
דַאֲגִירָא אַרְמְלָא וְיִתָּם וּמַסְטַן דִּין גִּיּוֹרָא וְלָא דְחִילוּ מִן קֳדָמַי אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת׃ 6 אֲרֵי אֲנָא
יְיָ לָא אַשְׁנֵיתִי קְיָמִי דְמִן עָלְמָא וְאַתּוּן בְּנֵי יִשְׂרָאֵל אַתּוּן מְדַמַּן דְּמַן דְּמָאֵית בְּעָלְמָא
הָדֵין דִּינֵיהּ פָּסִיק׃ 7 לְמִיּוֹמֵי אֲבָהָתְכוֹן סְטֵיתוּן מִן קְיָמַי וְלָא נְטַרְתּוּן תּוּבוּ לְפוּלְחָנִי
וְאֶתְפְּנֵי בְּמֵימְרִי לְאֵיטָבָא לְכוֹן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת וְאִם תֵּימְרוּן בְּמָא נְתוּב׃ 8 הֲיִרְגֵּז גְּבַר
קֳדָם דַּיָּנָא אֲרֵי אַתּוּן מַרְגְּזִין קֳדָמַי וְאִם תֵּימְרוּן בְּמָא אַרְגֵּזְנָא קֳדָמָךְ בְּמַעַשְׂרַיָּא
וּבִתְרוּמָתָא׃ 9 בִּלְוָטָא אַתּוּן מִתְלַטְּטִין וּקְדָמַי אַתּוּן מַרְגְּזִין עַמָּא כּוּלְּהוֹן׃ 10 אֲמַר נְבִיָּא אַיְתוֹ
יַת כָּל מַעַשְׂרַיָּא לְבֵית אוֹצְרָא וִיהֵי פַּרְנוּס לִדְמְשַׁמְּשִׁין בְּבֵית מַקְדְּשִׁי וְנַסּוֹ כְעַן קֳדָמַי
בְּהָדָא אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת אִם לָא אֶפְתַּח לְכוֹן יַת כַּוֵּי שְׁמַיָּא וְאָחֵית לְכוֹן טוּבָא עַד דְּתֵימְרוּן
מְסַת׃ 11 וְאֶזּוֹף לְכוֹן בִּמְחַבְּלָא וְלָא יְחַבֵּל לְכוֹן יַת אִבָּא דְאַרְעָא וְלָא תְתַכֵּיל לְכוֹן גּוּפְנָא
בְּחַקְלָא אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

17 Facessistis negotium coram Domino sermonibus vestris. Et si dixeritis, In quo facessimus negotium coram eo? in eo quod dicitis, Omnis qui operatur malum, rectus est coram Domino, & in ipsis est voluntas coram eo: ubi est ergo Deus qui facit judicium?

CAP. III.

1 Ecce ego mitto angelum & complanabit viam coram me, & subitò veniet ad templum suum Dñs quem vos quæritis: & angelus testamenti quem vos desideratis, ecce venit, dicit Dñs exercituum. 2 Ecquis sustinebit diem adventus ejus, ecquis consistet cùm revelat⁹ fuerit? quia furor ejus sicut ignis *liquefaciens*, & sicut sapo quo [*panni*] dealbantur. 3 Et revelabitur ut conflet & mundet, sicut vir qui conflat et mundat argentum, & mundabit filios Levi, & expurgabit eos, quasi aurum et quasi argentum. Et coram Dño offerent oblationem in justitia. 4 Et *comparebit* coram Dño oblatio virorum Juda, & habitatorum Jerusalem, sicut in diebus seculi, & sicut in annis antiquis. 5 Et revelabor super vos ut faciam judicium: & erit Verbum meum contra vos in testem velocem, contra maleficos, & contra adulteros, & contra eos qui jurant falsò, & contra eos qui auferunt violenter mercedem mercenarii: & [*opprimunt*] viduam & pupillum, & pervertunt judicium peregrini, & non timent à facie mea, dicit Dñs exercituum. 6 Ego enim Dominus non mutavi pactum meum quod à seculo est: vos verò domus Israel putatis quòd quicunque moritur in hoc seculo, judicium ejus cesset. 7 A diebus patrum vestrorum declinâstis à mandatis meis, & non custodistis ea: convertimini ad cultum meum, et respiciam in verbo meo ut bene faciam vobis, dicit Dñs exercituum: quòd si dixeritis, In quo revertemur? 8 Nunquid ad iracundiam provocat vir judicem? quia vos me provocâstis ad iracundiam. Et si dixeritis, In quo provocavimus te? In decimis et in primitiis. 9 Maledictione vos maledicti estis, et vos ad iram me provocatis, popule *universe*. 10 Dixit propheta, Inferte omnes decimas in domum thesauri, ut sit alimentum iis qui ministrant in æde sanctuarii mei, et experiamini nunc coram me in hoc, ait Dñs exercituum, nisi aperiam vobis fenestras cœlorum, & demittam vobis bonum, adeò ut dicatis, Satis est. 11 Et increpabo pro vobis corruptorem, neque corrumpet vobis fructum terræ, nec sterilescet vobis vitis in agro, dicit Dominus exercituum.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

ܐܠܐܝܬܘܢ ܠܡܪܝܐ ܒܡܠܝܟܘܢ. ܘܐܢ ܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ: ܒܡܢܐ ܐܠܐܝܢܝܗܝ .. ܒܕܐܡܪܝܢ * 17
ܐܢܬܘܢ ܕܟܠ ܕܥܒܕ ܒܝܫܬܐ ܫܦܝܪ ܒܥܝܢܝ̈ ܡܪܝܐ. ܘܒܗܘܢ ܗܘ ܨܒܐ. ܘܐܢ ܠܐ ܐܝܟܘ ܐܠܗܐ
ܕܕܐܢ ܕܝܢܐ. * ܦܨܠܐ ܓ * ܗܐ ܐܢܐ ܡܫܕܪ ܐܢܐ ܡܠܐܟܝ .. ܘܢܦܢܐ 1
ܐܘܪܚܐ ܩܕܡܝ. ܘܡܢ ܫܠܝܐ ܢܐܬܐ ܠܗܝܟܠܗ ܕܡܪܝܐ ܕܡܣܟܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܗ. ܘܡܠܐܟܐ ܕܩܝܡܐ
ܕܨܒܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܗ .. ܗܐ ܐܬܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܡܢܘ ܡܣܝܒܪ ܠܝܘܡܐ ܕܐܬܐ ܒܗ. 2
ܐܘ ܡܢܘ ܢܩܘܡ ܒܡܚܙܝܬܗ. ܡܛܠ ܕܐܝܟ ܢܘܪܐ ܕܨܪܘܦܐ. ܘܐܝܟ ܒܘܪܝܬܐ
ܕܡܚܘܪܐ. * ܕܢܬܗܦܟ ܠܡܨܪܦܘ ܘܠܡܕܟܝܘ ܐܝܟ ܣܐܡܐ. ܘܢܕܟܐ ܠܒܢܝ̈ ܠܘܝ. ܘܢܓܒܐ 3
ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܕܗܒܐ ܘܐܝܟ ܣܐܡܐ. ܘܢܗܘܘܢ ܡܩܪܒܝܢ ܩܘܪܒܢܐ ܠܡܪܝܐ ܒܙܕܝܩܘܬܐ. * ܘܬܒܣܡ 4
ܠܡܪܝܐ ܩܘܪܒܢܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܕܐܘܪܫܠܡ. ܐܝܟ ܝܘܡܬܐ ܕܡܢ ܥܠܡ. ܘܐܝܟ ܫܢܝ̈ܐ ܕܡܢ ܩܕܡ.
* ܘܐܬܩܪܒ ܠܘܬܟܘܢ ܒܕܝܢܐ. ܘܐܗܘܐ ܣܗܕܐ ܡܣܪܗܒܐ ܥܠ ܚܪ̈ܫܐ ܘܥܠ ܓܝܪ̈ܐ .. ܘܥܠ ܝܡܝܢ 5
ܒܫܘܩܪܐ .. ܘܥܠ ܕܛܠܡܝܢ ܐܓܪܐ ܕܐܓܝܪܐ: ܘܕܐܪܡܠܬܐ ܘܕܝܬܡܐ ܘܕܓܝܘܪܐ ..
ܘܡܨܠܝܢ ܥܠ ܐܝܢܐ ܕܡܬܗܦܟ ܠܘܬܝ. ܘܠܐ ܕܚܠܝܢ ܡܢܝ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܡܛܠ ܕܐܢܐ 6
ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܐܫܬܚܠܦܬ. ܘܐܢܬܘܢ ܒܢܘܗܝ ܕܝܥܩܘܒ ܠܐ ܫܠܝܬܘܢ ܡܢ ܥܘܠܟܘܢ. * ܡܢ 7
ܝܘܡܝ̈ ܐܒܗܝ̈ܟܘܢ ܣܛܝܬܘܢ ܡܢ ܦܘܩܕ̈ܢܝ. ܘܠܐ ܢܛܪܬܘܢ ܐܢܘܢ. ܬܘܒܘ ܠܘܬܝ.
ܘܐܬܘܒ ܠܘܬܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܘܐܢ ܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ: ܒܡܢܐ ܢܬܘܒ .. * ܕܠܡܐ 8
ܢܛܠܡ ܒܪܢܫܐ ܠܐܠܗܐ .. ܐܝܟ ܕܐܢܬܘܢ ܛܠܡܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܝ .. ܘܐܢ ܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ: ܒܡܢܐ
ܛܠܡܢܟ: ܒܡܥܣܪ̈ܐ ܘܒܪ̈ܫܝܬܐ. * ܒܠܘܛܬܐ ܡܬܠܛܝܬܘܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܠܝ ܛܠܡܝܢ 9
ܐܢܬܘܢ. * ܥܡܐ ܟܠܗ .. ܐܥܠܘ ܡܥܣܪ̈ܐ ܠܐܘܨܪ̈ܝ .. ܘܢܗܘܘܢ ܡܐܟܘܠܬܐ ܒܒܝܬܝ. 10
ܘܒܩܘܢܝ ܒܗܕܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܘܐܦܬܚ ܠܟܘܢ ܟܘܝ̈ ܫܡܝܐ. ܘܐܪܩ ܠܟܘܢ
ܒܘܪܟܬܐ. ܥܕܡܐ ܕܬܐܡܪܘܢ ܣܦܩ. * ܘܐܟܐ ܒܩܠܡܐ ܕܠܐ ܢܚܒܠ ܦܐܪܐ ܕܐܪܥܟܘܢ. ܘܠܐ ܢܐܒܕ 11
ܠܟܘܢ ܐܦ ܠܐ ܚܕܐ ܓܦܬܐ ܒܐܪܥܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ.

17 * Fatigâſtis Dominum ſermonibus veſtris: quòd ſi dicatis, Quâ in re fatigavimus eum? In eo quòd dicitis; Quicunque malum operatur, rectus eſt in oculis Domini, & talibus oblectatur; alioquin ubi eſt Deus judicans judicia?

CAP. III.

1 Ecce ego miſſurus ſum angelum meum qui complanabit viam ante me: & repentè veniet ad templum Domini is quem expectatis; & angelus fœderis quo delectamini, ecce venturus eſt, ait Dominus potentiſſimus. 2 Quis ſuſtineat diem quo veniet? aut quis conſiſtere queat cùm apparebit? erit enim velut ignis conflans, & veluti ſulphur dealbans: 3 Ut revertatur ad conflandum & purgandum velut argentum. Purgabit autem filios Levi, ſeligétque eos tanquam aurum & tanquam argentum: & erunt offerentes oblationem Domino in juſtitia: 4 Et jucunda erit Domino oblatio Judæ & Jeroſolymæ, uti priſtinis diebus & ut annis antiquis. 5 Et accedam contra vos in judicio, eróque teſtis feſtinus contra magos, adulteros, & eos qui falsò jurant, contra eos qui denegant mercedē mercenarii, advenæ, pupilli, & viduæ; & propenſi ſunt adversùs eum qui convertitur ad me, non timentes me, dicit Domin⁹ potentiſſimus. 6 Nam ego Dominus ſum, nec unquam mutatus; & vos filii Jacobi, non deſiſtitis ab iniquitate veſtra. 7 Indè à diebus majorum veſtrorum aberrâſtis à præceptis meis, nec obtemperâſtis eis. Revertimini ad me, & revertar ad vos, ait Dominus potentiſſimus. 8 Quòd ſi dixeritis, Quâ in re revertemur? An fraudaret homo Deum, quemadmodum vos fraudatis me? Quòd ſi dixeritis, Quâ in re fraudavimus te? in decimis & primitiis. 9 Maledictionibus maledicimini quum me fraudatis. 10 Univerſe popule, afferte decimas in horrea mea, ut ſint cibo in domo mea. Probate me in hoc, ait Dñs potentiſſimus, & aperiā vobis cœli feneſtras, effundámque vobis benedictiones, donec dicatis, Sufficit: 11 Et increpabo tineā ne corrumpat fructus terræ, néve vaſtetur vobis ne ulla quidem vitis in terra, dicit Dominus potentiſſimus.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* يا عايظي الله باقوالكم * ويقولون بماذا اعطناه * عند ما يقولون كل صانع شر حسن امام 17
الرب * وبهم هو سر * واين هو اله العدل *   * الفصل الثالث *
ها انا ارسل ملاكي * ويبطر الطريق امام وجهي * وبغتة ياتي الي هيكل الرب الذي انتم 1
تطلبونه * وملك العدل الذي انتم تريدونه * ها يقبل يقول الرب الضابط الكل * فمن 2
يصطبر ليوم مدخله * او من يثبت في ظهوره * من اجل انه هو يدخل مثل نار كور
ومثل حشيشة الغسالين * ويجلس يسبك وينقي مثل الفضة والذهب * وينقي بني لاوي * 3
ويفرغهم مثل الذهب والفضة * ويصيرون للرب يقدمون ذبيحة بالعدل * ويرضي الرب ذبيحة 4
يهودا واورسليم * كمثل ايام الدهر * وكمثل السنين التي من قبل * واقرب اليكم بالحكم * 5
واكون شاهدا عجولا على الساحرات * وعلي الفاسقات * وعلي الذين يحلفون باسمي بالكذب * وعلي
الذين يظلمون اجر الاجير * وعلي الذين يقوون على الارملة ويحيفون على الايتام * والذين
يميلون حكم الغريب * والذين لا يخافوني يقول الرب الضابط الكل * من اجل اني انا الرب 6
الهكم ولست ابتدل * وانتم يا بني يعقوب لستم تبعدون من مظالم ابايكم * املتم شريعتي 7
ولم تحفظوها * ارجعوا الي فارجع اليكم * يقول الرب الضابط الكل * وتقولون بماذا نرجع *
* أيعرقب انسان الله * من اجل انكم انتم تعرقبوني * وتقولون بماذا عرقبناك * لان العشور 8
والاوايل معكم هي * وتتغافلون انتم تتغافلون * ولي تعرقبون * السنة كملت * وادخلتم 9 10
جميع الغلات الي الاهراء * وفي بيته يكون اختطافه * تعهدوا الان بهذا يقول الرب الضابط
الكل * ان لم افتح لكم طاقات السماء * واصب لكم بركتي الي ان تكتفوا * وارسل لكم طعاما 11
ولا افسد عن ارضكم * ولا تضعف كرمتكم التي في الحقل يقول الرب الضابط الكل *

17 *O qui Deum provocatis ad iram ſermonibus veſtris, & dicitis, Quâ in re provocavimus iram ejus? Quum dicitis, Omnis malum agens bonus eſt coram Domino, & talibus ipſe delectatur; & ubi eſt Deus juſtitiæ?*

CAP. III.

1 *En ego mittam angelum meum, & conſiderabit viam ante faciem meam: & confeſtim veniet ad templum Domini is quem vos petitis, & angelus juſtitiæ quem vos vultis. Ecce veniet, dicit Dominus omnipotens:* 2 *At quis patietur diem ingreſsûs ejus? aut quis conſiſtet in apparitione ipſius? nam is ingreſſurus eſt ut ignis fornacis, & ut herba fullonum:* 3 *Et ſedebit conflans & purgans quaſi argentum & aurum: & purgabit filios Levi, & fundet eos ut aurum & argentum: & erunt Domino offerentes ſacrificium juſtè.* 4 *Et gratum habebit Dominus ſacrificium Judæ & Jeroſolymæ, ut diebus ſeculi, & ut annis præcedentibus.* 5 *Et accedam ad vos in judicio, eroque teſtis velox adverſùs maleficas, & adverſùs adulteras, adverſùs eos qui falſò jurant per nomen meum, adverſùs eos qui mercede fraudant mercenarium, adverſùs eos qui vim inferunt viduæ, & opprimunt pupillos, et eos qui pervertunt jus peregrini, et eos qui me non timent, dicit Dominus omnipotens.* 6 *Nam ego ſum Dominus Deus veſter, et non mutor: vos autem O filii Jacobi, non receditis ab iniquitatibus patrum veſtrorum:* 7 *Obliquâſtis legem meam, et non ſervâſtis eam. Revertimini ad me, et revertar ad vos, dicit Dominus omnipotens. Dicitis autem, In quo revertemur?* 8 *An ſupplantaret homo Deum? vos enim ſupplantatis me, et dicitis, In quo ſupplantavimus te? quia decimæ et primitiæ vobiſcum ſunt.* 9 *Et vos omninò negligitis, meque ſupplantatis.* 10 *Annus elapſus eſt, et intuliſtis omnes proventus in horrea: et in domo ejus erit rapina ejus. Memores itaque ſitis hujus rei, dicit Dominus omnipotens; niſi aperuero vobis feneſtras cœli, et infudero vobis benedictionem meam donec ſatis habeatis.* 11 *Mittam vobis cibum, et non corrumpam fructum terræ veſtræ, neque infirmabitur vitis veſtra quæ eſt in agro, dicit Dominus omnipotens.*

מלאכי׃ ד

,beneplaciti terra vos eritis quia : gentes omnes vos beatificabunt Et
וְאִשְּׁרוּ אֶתְכֶם כָּל־הַגּוֹיִם כִּי־תִהְיוּ אַתֶּם אֶרֶץ חֵפֶץ 12
,veſtra verba me contra Invaluerunt .exercituum Dominus dixit
אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת׃ חָזְקוּ עָלַי דִּבְרֵיכֶם 13
? te contra ſumus locuti Quid : dixiſtis Et .Dominus dixit
אָמַר יְהוָה וַאֲמַרְתֶּם מַה־נִּדְבַּרְנוּ עָלֶיךָ׃
quòd ,emolumenti quid & ,*Deo* *ſervire* Vanum ,Dixiſtis
אֲמַרְתֶּם שָׁוְא עֲבֹד אֱלֹהִים וּמַה־בֶּצַע כִּי 14
faciebus à *obſcurè* ambulaverimus quòd & ,ejus cuſtodiam cuſtodierimus
שָׁמַרְנוּ מִשְׁמַרְתּוֹ וְכִי הָלַכְנוּ קְדֹרַנִּית מִפְּנֵי
etiam ,ſuperbos *beatificantes* nos nunc Et .exercituum Domini
יְהוָה צְבָאוֹת׃ וְעַתָּה אֲנַחְנוּ מְאַשְּׁרִים זֵדִים גַּם־ 15
.evaſerunt & ,Deum probaverunt etiam,impietatẽ facientes ſunt ædificati
נִבְנוּ עֹשֵׂי רִשְׁעָה גַּם בָּחֲנוּ אֱלֹהִים וַיִּמָּלֵטוּ׃
: ſuum *ſocium* ad *vir* Dominum timentes ſunt locuti Tunc
אָז נִדְבְּרוּ יִרְאֵי יְהוָה אִישׁ אֶל־רֵעֵהוּ 16
,*ejus facies ad memoriæ* liber eſt ſcriptus &,audivit &,Dominus attendit &
וַיַּקְשֵׁב יְהוָה וַיִּשְׁמָע וַיִּכָּתֵב סֵפֶר זִכָּרוֹן לְפָנָיו
,mihi erunt Et .ejus nomen cogitantibus & , Dominum timentibus
לְיִרְאֵי יְהוָה וּלְחֹשְׁבֵי שְׁמוֹ׃ וְהָיוּ לִי 17
;peculium *faciens* ego qua die in , exercituum Dominus dixit
אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת לַיּוֹם אֲשֶׁר אֲנִי עֹשֶׂה סְגֻלָּה
.ſibi ſervienti ſuo filio *ſuper* vir *parceret* ſicut ,eis *ſuper* parcam &
וְחָמַלְתִּי עֲלֵיהֶם כַּאֲשֶׁר יַחְמֹל אִישׁ עַל־בְּנוֹ הָעֹבֵד אֹתוֹ׃
ſerviente inter ;impiũ *ad* juſtum inter *videbitis* & , convertemini Et
וְשַׁבְתֶּם וּרְאִיתֶם בֵּין צַדִּיק לְרָשָׁע בֵּין עֹבֵד 18
.ei ſervit non qui eum *ad* , Deo
אֱלֹהִים לַאֲשֶׁר לֹא עֲבָדוֹ׃

CAP. IV. ד

omnes erunt & ;clibanus tanquam ardens *veniens* dies ecce Nam
כִּי־הִנֵּה הַיּוֹם בָּא בֹּעֵר כַּתַּנּוּר וְהָיוּ כָל־ 1
eos inflammabit & , ſtipula ,impietatem *faciens omnis* & , ſuperbi
זֵדִים וְכָל־עֹשֵׂה רִשְׁעָה קַשׁ וְלִהַט אֹתָם
derelinquet non quia : exercituum Dominus dixit ,*veniens* dies
הַיּוֹם הַבָּא אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת אֲשֶׁר לֹא־יַעֲזֹב
meũ nomen timentibus vobis orietur Et .ramum & ,radicem eis
לָהֶם שֹׁרֶשׁ וְעָנָף׃ וְזָרְחָה לָכֶם יִרְאֵי שְׁמִי 2
creſcetis & ,egrediemini & :ejus alis in ſanitas & , juſtitiæ Sol
שֶׁמֶשׁ צְדָקָה וּמַרְפֵּא בִּכְנָפֶיהָ וִיצָאתֶם וּפִשְׁתֶּם
pulvis fuerint cùm impios *conculcabitis* Et .*ſaginarii* vituli ſicut
כְּעֶגְלֵי מַרְבֵּק׃ וְעַסּוֹתֶם רְשָׁעִים כִּי־יִהְיוּ אֵפֶר 3
Dominus dixit ,*faciens ego* quam die in ,veſtrorũ pedũ plantis ſub
תַּחַת כַּפּוֹת רַגְלֵיכֶם בַּיּוֹם אֲשֶׁר אֲנִי עֹשֶׂה אָמַר יְהוָה
mandavi quam ,mei ſervi Moſeh legis Mementote .exercituum
צְבָאוֹת׃ זִכְרוּ תּוֹרַת מֹשֶׁה עַבְדִּי אֲשֶׁר צִוִּיתִי 4
.judicia & ,ſtatuta , Iſrael omnem *ſuper* Choreb in ei
אוֹתוֹ בְחֹרֵב עַל־כָּל־יִשְׂרָאֵל חֻקִּים וּמִשְׁפָּטִים׃
diem venire ante , prophetam Elijah vobis *mittens* ego Ecce
הִנֵּה אָנֹכִי שֹׁלֵחַ לָכֶם אֵת אֵלִיָּה הַנָּבִיא לִפְנֵי בּוֹא יוֹם 5
ſuper patrum cor convertet Et .*terribilem* & ,*magnum* DOMINI
יְהוָה הַגָּדוֹל וְהַנּוֹרָא׃ וְהֵשִׁיב לֵב־אָבוֹת עַל־ 6
percutiam & ,veniam fortè ne ,eorũ patres *ſuper* filiorum cor & ,filios
בָּנִים וְלֵב בָּנִים עַל־אֲבוֹתָם פֶּן־אָבוֹא וְהִכֵּיתִי
.*anathemate* terram
אֶת־הָאָרֶץ חֵרֶם׃

Verſio VULG. LAT.

12 Et beatos vos dicent omnes Gen-
tes : eritis enim vos terra deſide-
rabilis, dicit Dominus exercituũ.
13 Invaluerunt ſuper me verba ve-
14 ſtra, dicit Dominus. Et dixiſtis ;
Quid locuti ſumus contra te ? Di-
xiſtis ; Vanus eſt, qui ſervit Deo :
& quod emolumentum quia cu-
ſtodivimus præcepta ejus, & quia
ambulavimus triſtes coram Do-
15 mino exercituum ? Ergò nunc
beatos dicimus arrogantes : ſiqui-
dem ædificati ſunt facientes im-
pietatem ; & tentaverunt Deum,
16 & ſalvi facti ſunt. Tunc locuti
ſunt timentes Dominum, unuſ-
quiſque cum proximo ſuo : Et at-
tendit Dominus, & audivit : &
ſcriptus eſt liber monumenti co-
ram eo timentibus Dominum, &
17 cogitantibus nomen ejus. Erunt
mihi, ait Dominus exercituum, in
die quâ ego facio, in peculium :
& parcam eis, ſicut parcit vir fi-
18 lio ſuo ſervienti ſibi. Et conver-
temini, & videbitis quid ſit inter
juſtum & impium ; & inter ſer-
vientem Deo, & non ſervientem
ei.

CAP. IV.

1 ECce enim dies veniet ſuccen-
ſa quaſi caminus: & erunt omnes
ſuperbi, & omnes facientes im-
pietatem, ſtipula : & inflamma-
bit eos dies veniens, dicit Domi-
nus exercituum, quæ non dere-
linquet eis radicem, & germen.
2 Et orietur vobis timentibus no-
men meum Sol juſtitiæ, & ſani-
tas in pennis ejus : & egredie-
mini, & ſalietis ſicut vituli de
3 armento. Et calcabitis impios,
cùm fuerint cinis ſub planta pe-
dum veſtrorum, in die quâ ego
facio, dicit Dominus exercituũ.
4 Mementote legis Moyſi ſervi
mei, quam mandavi ei in Ho-
reb ad omnem Iſrael, præcepta
5 & judicia. Ecce ego mittam vo-
bis Eliam prophetam, antequàm
veniat dies Domini magnus, &
6 horribilis. Et convertet cor pa-
trum ad filios, & cor filiorum ad
patres eorum : ne fortè veniam,
& percutiam terram anathe-
mate.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

12 Καὶ μακαριοῦσιν ὑμᾶς πάντα τὰ ἔθνη, διότι
ἔσεσθε ὑμεῖς γῆ θελητή, λέγει κύριος παν-
13 τοκράτωρ. Ἐβαρύνατε ἐπ' ἐμὲ τοὺς λόγους
ὑμῶν, λέγει κύριος· Καὶ εἴπατε, Ἐν τίνι
14 κατελαλήσαμεν κατὰ σοῦ; Εἴπατε, Μάται-
ος ὁ δουλεύων θεῷ, καὶ τί πλέον, ὅτι ἐφυ-
λάξαμεν τὰ φυλάγματα αὐτοῦ, (ρ) καὶ διότι ἐ-
πορεύθημεν ἱκέται πρὸ προσώπου κυρίου παν-
15 τοκράτορος; Καὶ νῦν ἡμεῖς μακαρίζομεν
ἀλλοτρίους, καὶ ἀνοικοδομοῦνται (σ) πάντες
ποιοῦντες ἄνομα, καὶ ἀντέστησαν τῷ θεῷ, καὶ
16 ἐσώθησαν. Ταῦτα (τ) κατελάλησαν οἱ φο-
βούμενοι τὸν κύριον, ἕκαστος πρὸς τὸν πλη-
σίον αὐτοῦ. καὶ προσέσχε κύριος, καὶ εἰσήκουσε,
καὶ ἔγραψε βιβλίον μνημοσύνου ἐνώπιον αὐ-
τοῦ τοῖς φοβουμένοις τὸν κύριον, καὶ εὐλαβου-
17 μένοις τὸ ὄνομα αὐτοῦ. Καὶ ἔσονταί μοι,
λέγει κύριος παντοκράτωρ, εἰς ἡμέραν, ἣν
ἐγὼ ποιῶ, εἰς περιποίησιν, καὶ αἱρετιῶ αὐ-
τούς, ὃν τρόπον αἱρετίζει ἄνθρωπος τὸν υἱὸν
18 αὐτοῦ, τὸν δουλεύοντα αὐτῷ. Καὶ ἐπιστρα-
φήσεσθε, καὶ ὄψεσθε ἀναμέσον δικαίου, καὶ ἀνα-
μέσον (υ) ἀνόμου, καὶ ἀναμέσον τοῦ δουλεύ-
οντος (φ) θεῷ, καὶ τοῦ μὴ δουλεύοντος.

MS. A. (ρ) διότι (σ) ποιοῦντες ἄνομα, ἀντέστησαν θεῷ, (τ) ἐλάλησαν
(υ) ἀδίκου, (φ) τῷ θεῷ,

Et beatos vos dicent omnes gen- 12
tes: quia eritis vos terra(m) ac-
cepta, dicit Dominus omnipotens.
Ingravâſtis ſuper me verba ve- 13
ſtra, dicit Dominus: Et dixiſtis; 14
In quo locuti ſumus contra te?
Dixiſtis; Vanus eſt qui ſervit
Deo: & quid amplius, quia cu-
ſtodivimus cuſtodias ejus, &
quia ambulavimus ſupplices ante
faciem Domini omnipotentis? Et 15
nunc nos beatos dicimus alienos:
& ædificantur omnes qui faci-
unt iniqua: & reſtiterunt Deo,
& ſalvi facti ſunt. Hæc oblo- 16
quuti ſunt, qui timent Dominũ,
unuſquiſque ad proximum ſuum.
Et attendit Dominus, & audi- 17
vit, & ſcripſit librum monumen-
ti in conſpectu ſuo his qui timent
Dominum, & qui reverentur
nomẽ ejus. Et erunt mihi, dicit Do-
minus omnipotens, in die quâ ego
facio, in(n)acquiſitionẽ: et(o)eli-
gã eos, ſicut eligit homo filiũ ſu-
um, qui ſervit ei. Et converte- 18
mini, & videbitis inter juſtum,
& iniquum, & inter ſervien-
tem Deo, & non (p) ſervientem.

ΚΕΦ. δ'.

1 Διότι ἰδοὺ (α) ἡμέρα ἔρχεται καιομένη
ὡς κλίβανος, καὶ φλέξει αὐτούς, καὶ ἔσονται
πάντες οἱ ἀλλογενεῖς, καὶ πάντες οἱ ποιοῦντες
ἄνομα, καλάμη, καὶ ἀνάψει αὐτοὺς ἡ ἡμέρα
ἡ ἐρχομένη, λέγει κύριος παντοκράτωρ, καὶ οὐ
μὴ ὑπολειφθῇ ἐξ αὐτῶν ῥίζα οὐδὲ κλῆμα.
2 Καὶ ἀνατελεῖ ὑμῖν τοῖς φοβουμένοις τὸ
ὄνομά μου ἥλιος δικαιοσύνης, καὶ ἴασις ἐν
ταῖς πτέρυξιν (β) αὐτοῦ· καὶ ἐξελεύσεσθε,
καὶ σκιρτήσετε ὡς μοσχάρια ἐκ δεσμῶν ἀνει-
3 μένα. Καὶ (˜) καταπατήσετε ἀνόμους, διότι
ἔσονται σποδὸς ὑποκάτω τῶν ποδῶν ὑμῶν ἐν
τῇ ἡμέρᾳ, ᾗ ἐγὼ ποιῶ, λέγει κύριος παν-
5 τοκράτωρ. Καὶ ἰδοὺ ἐγὼ (γ) ἀποστελῶ ὑ-
μῖν Ἡλίαν τὸν Θεσβίτην, πρὶν ἐλθεῖν (δ)
6 τὴν ἡμέραν κυρίου τὴν μεγάλην καὶ ἐπιφανῆ, Ὃς
ἀποκαταστήσει καρδίαν πατρὸς πρὸς υἱόν, καὶ
καρδίαν ἀνθρώπου πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ,
4 μὴ ἔλθω καὶ πατάξω τὴν γῆν ἄρδην. Μνή-
σθητε νόμου (ε) Μωσῆ τοῦ δούλου μου, καθότι
ἐνετειλάμην αὐτῷ ἐν Χωρὴβ πρὸς πάντα
τὸν Ἰσραήλ, προστάγματα καὶ δικαιώ-
ματα. ΜΑΛΑΧΙ'ΑΣ ΙΒ'.

MS. A. (α) ἡμέρα κυρίου (β) αὐτῶν· (˜) καταπατήσετε (γ) ἀποστέλλω
(δ) ἡμέραν (ε) Μωυσῆ

ΠΡΟΦΗ'ΤΗΣ 'ΑΓΓΕΛΟΣ ΜΑΛΑΧΙ'ΑΣ ΙΒ'.

CAP. IV.

Quia ecce dies venit ardens, 1
ſicut clibanus: & comburet eos:
& erunt omnes (a) alienigenæ,
& univerſi, qui faciunt iniqua,
ſtipula: & ſuccendet eos dies
veniens, dicit Dominus omnipo-
tens: & non relinquetur ex eis
radix, neque ramus. Et orietur 2
vobis, qui timetis nomen meum,
Sol juſtitiæ: & ſanitas in pen-
nis ejus: & egrediemini, & ſa-
lietis, ſicut vituli de vinculis re-
laxati: Et conculcabitis iniquos: 3
(b) quia erunt cinis ſubter pedes
veſtros in die, quâ ego facio, di-
cit Dominus (c) omnipotens. Et 5
ecce ego mittã vobis Eliã Theſ-
biten, antequàm veniat dies Do-
mini magna, & illuſtris, Qui 6
convertet cor patris ad filium,
& cor hominis ad proximum ſu-
um: ne fortè veniam, & percu-
tiam terram penitùs. Memento- 4
te legis Moyſi ſervi mei, ſicut man-
davi ei in Choreb ad omnem Iſ-
rael, præcepta, & juſtificationes.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

וִישַׁבְּחוּן יָתְכוֹן כָּל עַמְמַיָא אֲרֵי תְהוֹן אַתּוּן יָתְבִין בְּאַרַע בֵּית שְׁכִנְתִּי וְעָבְדִין בָּהּ רְעוּתִי 12
אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת׃ תְּקִיפוּ קֳדָמַי פִּתְגָּמֵיכוֹן אֲמַר יְיָ וְאִם תֵּימְרוּן מַה אַסְגֵינָא לְמַלָּלָא קֳדָמָךְ׃ 13
אֲמַרְתּוּן לָא לַהֲנָאָה מַן דְּפָלַח קֳדָם יְיָ וּמָה מָמוֹן נִתְהֲנֵי לָנָא אֲרֵי נְטַרְנָא מַטְּרַת 14
מֵימְרֵיהּ וַאֲרֵי הַלֵּכְנָא בִּסְבִיכוּת רוּחַ מִן קֳדָם יְיָ צְבָאוֹת׃ וּכְעַן אֲנַחְנָא מְשַׁבְּחִין רַשִׁיעִין 15
אַף אִתְקַיָּימוּ עָבְדֵי חֶטְאָה אַף נַסִּיאוּ קֳדָם יְיָ וְאִשְׁתֵּיזָבוּ׃ בְּכֵן מְמַלְּלִין דָּחֲלַיָא דַּיְיָ גְּבַר 16
עִם חַבְרֵיהּ וּשְׁמִיעַ קֳדָם יְיָ וּגְלֵי קֳדָמוֹהִי וְאִתְכְּתִיב סְפַר דָּכְרָנַיָא קֳדָמוֹהִי לְדָחֲלַיָא דַּיְיָ
וּלְדִמְחַשְּׁבִין לִיקָרָא שְׁמֵיהּ׃ וִיהוֹן קֳדָמַי אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת לְיוֹמָא דִּי אֲנָא עָתִיד לְמֶעְבַּד 17
סְגֻלְּתָא וְאֵחוּס עֲלֵיהוֹן כְּמָא דְּאָחֵיס גַּבְרָא עַל בְּרֵיהּ דְּפָלַח יָתֵיהּ׃ וּתְתוּבוּן וְתֶחֱזוּן 18
בֵּין צַדִּיקַיָא לְרַשִׁיעַיָא בֵּין דְּפָלְחוּ קֳדָם יְיָ לִדְלָא פְּלַחוּ קֳדָמוֹהִי׃

ד

אֲרֵי הָא יוֹמָא אָתֵא בָּעֵיר כְּתַנּוּרָא וִיהוֹן כָּל רַשִׁיעַיָא וְכָל עָבְדֵי חֶטְאָה חַלָּשִׁין כְּקַשָּׁא 1
וִילַחֵיךְ יַתְהוֹן יוֹמָא דְּאָתֵי אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת דְּלָא יִשְׁבּוֹק לְהוֹן בַּר וּבַר בַּר׃ וְתִדְנַח לְכוֹן 2
דָּחֲלֵי שְׁמִי שִׁמְשָׁא בִּזְכוּ וְאַסְוָתָא בְּכַנְפָהָא וְתִפְּקוּן וְתִטְלוּן כְּעֶגְלֵי רִבְקָא׃ וְתִדוּשׁוּן 3
רַשִׁיעִין אֲרֵי יְהוֹן קִטְמָא תְּחוֹת פַּרְסַת רַגְלֵיכוֹן בְּיוֹמָא דִּי אֲנָא עָבֵיד אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת׃
אִדְּכַרוּ אוֹרָיְתָא דְּמֹשֶׁה עַבְדִּי דִּי פַּקֵּידִית יָתֵיהּ בְּחוֹרֵב עַל כָּל יִשְׂרָאֵל לְאַלָּפָא יַתְהוֹן 4
קְיָמִין וְדִינִין׃ הָא אֲנָא שָׁלַח לְכוֹן יַת אֵלִיָּה נְבִיָּא קֳדָם מֵיתֵי יוֹמָא דַּעֲתִיד לְמֵיתֵי מִן 5
קֳדָם יְיָ רַבָּא וּדְחִילָא׃ וְיָתִיב לֵב אֲבָהָן עַל בְּנִין וְלֵב בְּנַיָא עַל אֲבָהָתְהוֹן דִּלְמָא אֶתְגְּלֵי 6
וְאֶשְׁכַּח כָּל אַרְעָא בְּחוֹבָהָא וְאֶמְחִינַהּ גְּמִירָא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et laudabunt vos omnes gentes, quoniam vos habitabitis in terra domus ma- 12
jeſtatis meæ, & fiet in ea voluntas mea, dicit Dominus exercituum. Invalue- 13
runt coram me verba veſtra, ait Dominus: quòd ſi dixeritis, In quo multi-
plicavimus ſermonem coram te? Dixiſtis, Nihil lucratur qui colit coram Do- 14
mino: & quid divitiarum nobis lucro ceſſit quòd ſervaverimus cuſtodiam
verbi ejus, & quòd ambulaverimus in depreſſione ſpiritus coram Domino
exercituum? Nunc autem nos laudamus impios, etiam ſtabiliti ſunt facien- 15
tes peccatum, etiam tentaverunt coram Dño, & liberati ſunt. Ideò loquun- 16
tur timentes Dominum unuſquiſque cum ſocio ſuo, & auditum eſt coram Do-
mino, ac manifeſtatum coram eo, & ſcriptus eſt liber memoriarum coram eo
timentibus Dominum, & cogitantibus gloriam nominis ejus. Et erunt co- 17
ram me, ait Dominus exercituum quo die facturus ſum, in peculium; & par-
cam eis ſicut parcit vir filio ſuo ſervienti ſibi. Et convertemini, & diſpicie- 18
tis inter juſtos & impios, inter eos qui colunt coram Domino, & eos qui non
colunt coram eo.

CAP. IV.

SIquidem ecce dies venit ſuccenſa ſicut furnus, & erunt omnes impii omneſ- 1
que patratores ſceleris debiles ſicut ſtipula, atque abſumet eos dies quæ ven-
tura eſt, ait Dominus exercituum: qui non derelinquet eis filium nec nepo-
tem. Cæterùm orietur vobis, qui reveremini nomen meum, Sol *in puritate*; 2
& ſanitas in alis ejus: & exibitis, ac *geſtietis* quaſi vituli ſaginati. Et con- 3
culcabitis impios, erunt enim cinis ſubter plantam pedum veſtrorum in die
quo ego acturus ſum, ait Dominus exercituum. Revocate in memoriam legem 4
Moſis ſervi mei, quam præcepi ei in Oreb ad univerſum Iſrael, ut doceret
eos pacta & judicia. Ecce ego mittam vobis Eliam prophetam, ante adven- 5
tum diei qui venturus eſt à conſpectu Domini, magnus & terribilis. Et reſti- 6
tuet cor patrum in filios, & cor filiorum in patres ſuos, ne reveler, & inve-
niam univerſam terram in ſcelere ſuo, ac feriam eam exterminatione.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

12 * ܘܢܛܘܒܘܢܟܘܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܂ ܟܕ ܬܗܘܘܢ ܐܪܥܐ ܕܨܒܝܢܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ.
13 * ܝܩܪ ܥܠܝ ܡܡܠܠܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܢ ܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܡܢܐ ܐܡܪܢ ܥܠܝܟ : * ܐܡܪܬܘܢ
14 ܕܣܪܝܩܐܝܬ ܦܠܚܝܢܢ ܠܡܪܝܐ. ܘܡܢܐ ܝܘܬܪܢܐ ܕܢܛܪܢ ܢܛܘܪܬܗ ܂ ܘܕܗܠܟܢ
15 ܡܟܝܟܐܝܬ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܘܡܢ ܗܫܐ ܛܘܒܐ ܝܗܒܝܢ ܚܢܢ ܠܥܘܠܐ. ܘܡܬܒܢܝܢ
16 ܥܒܕܝ ܚܛܗܐ. ܘܡܢܣܝܢ ܠܐܠܗܐ ܘܡܫܬܘܙܒܝܢ. * ܗܟܢ ܡܠܠܘ ܕܕܚܠܝܢ ܠܡܪܝܐ ܚܕ
ܥܡ ܚܒܪܗ. ܘܨܬ ܡܪܝܐ ܘܫܡܥ. ܘܟܬܒ ܒܟܬܒܐ ܕܕܘܟܪܢܐ ܩܕܡܘܗܝ. ܠܕܚܠܘܗܝ ܘܠܕܡܫܒܚܝܢ
17 ܠܫܡܗ. * ܘܢܗܘܘܢ ܠܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܂ ܠܝܘܡܐ ܕܐܢܐ ܥܒܕ ܟܢܘܫܬܐ.
18 ܘܐܚܘܣ ܥܠܝܗܘܢ ܂ ܐܝܟ ܕܚܐܣ ܓܒܪܐ ܥܠ ܒܪܗ ܕܦܠܚ ܠܗ. * ܘܬܬܦܢܘܢ
ܘܬܚܙܘܢ ܒܝܢ ܙܕܝܩܐ ܠܥܘܠܐ. ܘܒܝܢ ܕܦܠܚ ܠܐܠܗܐ ܠܕܠܐ ܦܠܚܝܢ ܠܗ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܕ *

1 * ܡܛܠ ܕܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܂ ܘܝܩܕܢ ܐܝܟ ܬܢܘܪܐ ܪܘܓܙܝ. ܘܢܗܘܘܢ ܟܠܗܘܢ ܥܘܠܐ ܘܟܠܗܘܢ
ܥܒܕܝ ܚܛܗܐ ܩܫܐ. ܘܬܘܩܕ ܐܢܘܢ ܝܘܡܐ ܕܐܬܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܘܠܐ ܢܫܒܘܩ
2 ܠܗܘܢ ܥܩܪܐ ܘܣܘܟܐ. * ܘܢܕܢܚ ܠܟܘܢ ܠܕܚܠܝܢ ܫܡܝ ܫܡܫܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܐܣܝܘܬܐ ܥܠ
3 ܠܫܢܗ ܂ ܘܬܦܩܘܢ ܘܬܕܘܨܘܢ. ܐܝܟ ܥܓܠܐ ܕܒܩܪܐ. * ܘܬܕܘܫܘܢ ܥܘܠܐ. ܡܛܠ ܕܢܗܘܘܢ
4 ܩܛܡܐ ܬܚܝܬ ܦܣܬܐ ܕܪܓܠܝܟܘܢ. ܒܝܘܡܐ ܕܐܢܐ ܥܒܕ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܐܬܕܟܪܘ
ܢܡܘܣܗ ܕܡܘܫܐ ܥܒܕܝ ܕܦܩܕܬܗ ܒܚܘܪܒ ܂ ܥܠ ܟܠܗ ܐܝܣܪܝܠ. ܦܘܩܕܢܐ ܘܕܝܢܐ.
5 6 * ܗܐ ܡܫܕܪ ܐܢܐ ܠܟܘܢ ܠܐܠܝܐ ܢܒܝܐ. ܡܢ ܩܕܡ ܕܢܐܬܐ ܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ ܪܒܐ ܘܕܚܝܠܐ. * ܕܢܦܢܐ ܠܒܐ
ܕܐܒܗܐ ܥܠ ܒܢܝܐ ܂ ܘܠܒܐ ܕܒܢܝܐ ܥܠ ܐܒܗܝܗܘܢ. ܕܠܐ ܐܬܐ ܘܐܡܚܝܗ ܠܐܪܥܐ ܠܚܪܒܐ.

* ܫܠܡ ܟܬܒܐ ܕܬܪܥܣܪ ܢܒܝܝܢ *

Ita celebrabunt vos omnes populi, quum fueritis 12
terra mihi grata, dicit Dominus potentiſſimus.
Gravia ſunt mihi verba veſtra, dicit 13
Dominus. Quòd ſi dicatis, Quid contra te
diximus? Dixiſtis, In vanum colimus Dominum; 14
& quid profuit nobis ſtatuta ejus cuſtodiſſe,
& humiliter ambulâſſe coram Domino
potentiſſimo? Ex nunc beatos prædicamus 15
iniquos; nam facientes peccatum ædificantur,
Deum tentant, & liberantur. Hæc 16
locuti ſunt timentes Dominum alter cum altero:
auſcultavítque Dominus, & audivit,
ſcripſitque in libro memorialis coram ſe; in
gratiam timentium eum, & eorum qui laudant
nomen ejus: Ut ſint mei, dicit Dominus 17
potentiſſimus, quo die fecero congregationem;
& clementiâ utar erga eos, quemadmodum
clementiâ utitur quiſpiam erga filiū
ſuum obſequentem ſibi. Tunc converſi videbitis 18
quantum interſit inter juſtos & iniquos,
inter eos qui Deum coluerunt, & eos
qui non coluerunt eum.

CAP. IV.

NAm ecce dies veniunt, quibus ardebit ſicut 1
fornax ira mea: & erunt omnes iniqui &
omnes facientes peccatum, ſtipula; & comburet
eos dies ille venturus, ait Dominus potentiſſimus,
neque relinquet eis radicem aut
frondē. Exorietur autē vobis timentibus nomen 2
meū ſol juſtitiæ, ſanitatē *ferens* ſup linguam
ſuam: & egrediemini atque ſalietis ut
vituli armentorum: Et conculcabitis iniquos; 3
quia cinis erunt ſub veſtigio pedum veſtrorum
in die quo acturus ſum, ait Dominus 4
potentiſſimus. Memores eſtote legis Moſis
ſervi mei, quam præcepi ei in Horib, impoſitam
toti Iſraeli, *continentem* præcepta & judicia. 5
Ecce miſſurus ſum vobis Eliam prophetam,
antequam veniat dies Dñi magnus & formidandus?
Ut reducat cor patrum filios, & 6
cor filiorum in patres ſuos, antequàm veniam
& percutiam terram ad excidium.

Libri duodecim prophetarum finis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

12 * وتطوبكم جميع الامم * من اجل انكم تصيرون انتم ارضا مراده يقول الرب الضابط الكل *
13 14 * ثقلتم على اقوالكم يقول الرب * وتقولون بماذا عبنا عليك * تقولون المتعبد لله باطل *
ولماذا * كثير انا حفظنا محافظاته * ولماذا * انا سرنا سايلين قدام وجه الرب الضابط الكل *
15 16 * والان نحن نطوب الغرباء * ويبنون صانعوا الاثم * قاوموا الله تخلصوا * هناك ثم بها خايفوا
الرب كل واحد مع صاحبه * فنصت الرب وسمع * وكتب سفر الذكر امامه * لخايفي الرب
17 ومتورعي اسمه * ويكونون لي يقول الرب الضابط الكل لليوم الذي انا اصنعه * للاقتناء *
18 وارضيهم كما يرضي الانسان ابنه المتعبد له * وترجعون وتعاينون بين العدل وبين الظلم *
وبين من يتعبد لله والذي لا يتعبد *

* الفصل الرابع *

1 * من اجل انه ها يوم الرب يقبل متوقد مثل التنور ويحرقهم * ويصير جميع الغرباء الجنس
وجميع صانعي الاثم هشيما * ويشعلهم اليوم الاتي يقول الرب الضابط الكل * ولن يبقى منهم
2 اصل ولا فرع * ويشرق لكم يا خايفي اسمي شمس العدل * والشفا في اجنحته * وتخرجون
3 وتطربون مثل عجيلات من رباط محلولين * وتدوسون الاثمة * من اجل انهم يكونون رمادا
5 تحت اسافل ارجلكم * في ذلك اليوم الذي انا اصنعه يقول الرب الضابط الكل * وها انا
6 ارسل لكم ايليا التسبي قبل ان ياتي يوم الرب العظيم الظاهر * هذا يرد قلب الاب للابن *
4 وقلب الانسان لصاحبه * لست اتي فاضرب الارض رديا * اذكروا شريعة موسى عبدي * كما
اوصيته في حوريب لجميع اسرايل * الاوامر والمعادل *

* تمت نبوة ملاخيا النبي *

Et beabunt vos omnes gentes, quia vos eritis 12
terra optabilis, dicit Dominus omnipotens.
Aggravâſtis contra me ſermones 13
veſtros, dicit Dominus. Sed dicitis, Quâ
in re oblocuti ſumus contra te? Dicitis, 14
Religioſus erga Deum vanus eſt: & ad
quid? multum eſt cuſtodire nos cuſtodias
ejus: & ad quid? ſanè ſupplices
ambulamus coram facie Domini omnipotentis.
Jam nos beatos dicimus alienos: 15
ædificantur enim qui faciunt iniquitatem:
reſiſtunt Deo, & ſalvantur. Hæc 16
oblocuti ſunt timentes Dominum, quiſque
cum ſocio ſuo: & auſcultavit Dominus,
audivitque, & ſcripſit librum
memorialis coram ſe, pro timentibus Dominum,
& reverentibus nomen ejus. Et 17
erunt mihi, dicit Dominus omnipotens,
die quem ego facturus ſum, in poſſeſſionem:
& blandiar eis, ut quis blanditur
filio ſuo ſibi obſequenti. Et revertemini, 18
ac videbitis quid interſit *inter juſtitiam*
& inter iniquitatem, inter obſequentem
Deo & eum qui non obſequitur.

CAP. IV.

NAm ecce dies Domini veniet ardens 1
ut clibanus, & comburet eos: & erunt
omnes alieni generis & omnes operantes
iniquitatem, ſtipula: & ſuccendet eos
dies veniens, dicit Dominus omnipotens;
& non relinquetur ex eis radix, neque
ramus. Orietur autem vobis O timentes 2
nomen meum, ſol juſtitiæ, & ſanitas in
alis ejus: & egrediemini, et geſtietis
veluti juvenculæ, vinculo ſoluti: Et 3
conculcabitis iniquos; nam cinis futuri
ſunt ſub imis pedibus veſtris eo die quem
ego facturus ſum, dicit Dominus omnipotens.
Ecce ego mittam vobis Eliam 5
Thesbiten, antequàm veniat dies Domini
magna & illuſtris. Is reducet cor patris 6
ad filium, et cor hominis ad ſocium
ſuum: non veniam ut terram atrociter
percutiam. Mementote legis Moſis ſervi 4
mei, quemadmodum mandavi ei in Horeb
ad omnem Iſraelem, præceptorum ſcilicet
& juſtitiarum.

Prophetiæ Malachiæ prophetæ
Finis.

LONDINI,
EXCUDEBAT THOMAS ROYCROFT.

M DC LVI.